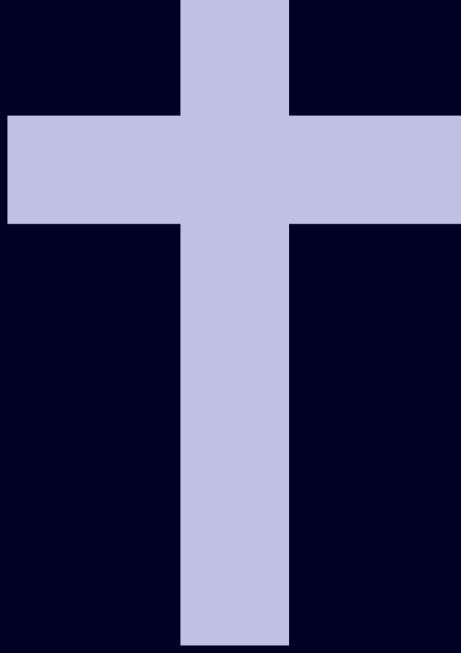


इंडियन रविइज्ड
वर्जन (IRV) उर्दू -
2019



The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन
रविइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

You include the above copyright and source information.

If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.

If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 26 Aug 2023 from source files dated 19 Apr 2023

4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc

Contents

पैदाइश	1
खुरुज	50
अहवार	91
गिनती	122
इस्तिस्ना	164
यशोअ	201
कुजात	226
रुत	251
1 समुएल	255
2 समुएल	288
1 सलातीन	314
2 सलातीन	345
1 तवारीख	375
2 तवारीख	402
एज्रा	436
नहम्याह	446
आस्तेर	460
अय्यूब	468
जबूर	500
अम्साल	573
वाइज	598
गज़लुल गज़लियात	607
यसायाह	613
यर्मयाह	659
नोहा	711
हिज़िकिएल	718
दानिएल	764
होसीअ	779
यूएल	787
आमूस	790
अब्दयाह	796
यूनाह	798
मीकाह	801
नाहूम	806
हबक्कूक	809
सफ़नयाह	812
हज्जी	815
ज़करयाह	817
मलाकी	825
मत्ती	828
मरकुस	859
लूका	878
यूहन्ना	912
रसूलों के आ'माल	938

NT

रोमियों	972
1 कुरिन्थियों	987
2 कुरिन्थियों	1001
गलातियों	1011
इफ़िसियों	1016
फ़िलिप्पियों	1022
कुलुस्सियों	1026
1 थिस्सलुनीकियों	1031
2 थिस्सलुनीकियों	1035
1 तीमुथियुस	1038
2 तीमुथियुस	1043
तितुस	1046
फ़िलेमोन	1048
इब्रानियों	1050
या'कूब	1063
1 पतरस	1068
2 पतरस	1073
1 यूहन्ना	1076
2 यूहन्ना	1081
3 यूहन्ना	1082
यहूदाह	1084
मुक्काशिफ़ा	1086

पैदाइश

पैदाइश 1:1-16

यहूदी रिवायत और दीगर बाइबिल के मुसन्निफों में से एक मूसा है जो नबी और इस्राईल का छुड़ानेवाला, तमाम तौरत का मुसन्निफ है यानी पुराने अहदनामे की पहली पांच किताबें — उस की तालीम कसर — ए — शाही (आमाल 7:22) और उसकी नज़दीकी रिफाक़त यह्हे से थी जो येसु ने खुद ही मूसा के तसनीफ की तस्दीक की है (यूहन्ना 5:45 — 47) जिस तरह फकीही और फरीसियों ने उस के वक़्त में किया (मत्ती 19:7; 22:24)।

पैदाइश 1:1-16

इस के तसनीफ की तारीख 1446 - 1405 कबल मसीह के बीच है।

मुमकिन तौर से उन बरसों के दौरान जिन में बनी इस्राईल कौम बयाबान में सीना पहाड़ के नीचे खेमों में सुकूनत करती थीं उन दिनों मूसा ने गालिबन इस किताब को लिखा होगा।

पैदाइश 1:1-16

बनी इस्राईल वह इब्तिदाई जमाअत जो गुलामी से छूट कर अपने खुरुज के बाद वायदा किए हुए मुल्क — ए — कनान में दाखिल होने से पहले रहा करते थे।

पैदाइश 1:1-16

बनी इस्राईल कौम की “खानदानी — तारिक को समझाने के लिए मूसा ने यह किताब यह बात समझाने के लिए मूसा ने इस किताब को लिखा कि बनी इस्राईल कौम ने किस तरह खुद को मिस्र की गुलामी में पाया (खुरुज 1:8) यह समझाने के लिए कि जिस मुल्क में वह दाखिल होने वाले थे वह उनका वायदा किया हुआ मुल्क” था (खुरुज 17:8) यह जताने के लिए कि खुदा की हुक्मत उन सब बातों पर जो बनी इस्राईल कौम पर वाक़े हुआ और उन की मिस्र की गुलामी एक हादसा नहीं बल्कि खुदा के एक बड़े मनसूबे का हिस्सा था (खुरुज 15:13 — 16, 50:20), यह दिखाने लिए कि अब्राहम, इस्हाक़ और याकूब का खुदा वही खुदा है जिस ने कायनात की तखलीक की थी, (पैदाइश 3:15, 16) इस्राईल का खुदा न सिर्फ़ तमाम देवताओं के ऊपर है बल्कि वह आसमान और ज़मीन का भी खालिक है।

पैदाइश 1:1-16

शुरुआत

बैरूनी खाका

1. तखलीक — 1:1-2:25
2. इंसान का गुनाह — 3:1-24
3. आदम की नसल — 4:1-6:8
4. नूह की नसल — 6:9-11:32
5. अब्रहाम की तारीख — 12:1-25:18
6. इस्हाक़ और उसके बेटों की तारीक़ — 25:19-36:43
7. यूसुफ़ की नसल — 37:1-50:26

पैदाइश 1:1-16

¹ खुदा ने सबसे पहले ज़मीन — ओ — आसमान को पैदा किया। ² और ज़मीन वीरान और सुनसान थी और गहराओ के ऊपर अँधेरा था: और खुदा की रूह* पानी† की सतह पर जुम्बिश करती थी। ³ और खुदा ने कहा कि रोशनी हो जा, और रोशनी हो गई। ⁴ और खुदा ने देखा कि रोशनी अच्छी है, और खुदा ने रोशनी को अँधेरे से जुदा किया। ⁵ और खुदा ने रोशनी को तो दिन कहा और अँधेरे को रात। और शाम हुई और सुबह हुई तब पहला दिन हुआ।‡ ⁶ और खुदा ने कहा कि पानियों के बीच फ़ज़ा हो ताकि पानी, पानी से जुदा हो जाए। ⁷ फिर खुदा ने फ़ज़ा को बनाया और फ़ज़ा के नीचे के पानी को फ़ज़ा के ऊपर के पानी से जुदा किया; और ऐसा ही हुआ। ⁸ और खुदा ने फ़ज़ा को आसमान कहा। और शाम हुई और सुबह हुई — तब दूसरा दिन हुआ। ⁹ और खुदा ने कहा कि आसमान के नीचे का पानी एक जगह जमा हो कि खुशकी नज़र आए, और ऐसा ही हुआ। ¹⁰ और खुदा ने खुशकी को ज़मीन कहा और जो पानी जमा हो गया था उसको समुन्दर; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। ¹¹ और खुदा ने कहा कि ज़मीन घास और बीजदार बूटियों को, और फलदार दरख़्तों को जो अपनी — अपनी किस्म के मुताबिक़ फले और जो ज़मीन पर अपने आप ही में बीज रखें उगाए और ऐसा ही हुआ। ¹² तब ज़मीन ने घास, और बूटियों को, जो अपनी — अपनी किस्म के मुताबिक़ बीज रखें और फलदार दरख़्तों को जिनके बीज उन की किस्म के मुताबिक़ उनमें हैं उगाया; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। ¹³ और शाम हुई और सुबह हुई — तब तीसरा दिन हुआ। ¹⁴ और खुदा ने कहा कि फ़लक पर सितारे हों कि दिन को रात से अलग करें; और वह निशान और ज़मानो और दिनों और बरसों के फ़र्क़ के लिए हों। ¹⁵ और वह फ़लक पर रोशनी के लिए हों कि ज़मीन पर रोशनी डालें, और ऐसा ही हुआ। ¹⁶ फिर खुदा ने दो बड़े चमकदार सितारे बनाए; एक बड़ा चमकदार सितारा, कि

* 1:2 1:2 खुदा की रूह खुदा की कुव्वत या खुदा के ज़रिये भेजी हुई हवा को या एक दिन को जताने का इब्रानी तरीका है

† 1:2 1:2 पानी तूफ़ानी तलातुम समुन्दर

‡ 1:5 1:5 यह पूरे दिन

दिन पर हुक्म करे और एक छोटा चमकदार सितारा कि रात पर हुक्म करे और उसने सितारों को भी बनाया। 17 और खुदा ने उनको फ़लक पर रखवा कि ज़मीन पर रोशनी डालें, 18 और दिन पर और रात पर हुक्म करें, और उजाले को अन्धेरे से जुदा करें; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। 19 और शाम हुई और सुबह हुई — तब चौथा दिन हुआ। 20 और खुदा ने कहा कि पानी जानदारों को कसरत से पैदा करे, और परिन्दे ज़मीन के ऊपर फ़जा में उड़ें। 21 और खुदा ने बड़े बड़े दरियाई जानवरों को, और हर क्रिस्म के जानदार को जो पानी से बकसरत पैदा हुए थे, उनकी क्रिस्म के मुताबिक़ और हर क्रिस्म के परिन्दों को उनकी क्रिस्म के मुताबिक़, पैदा किया; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। 22 और खुदा ने उनको यह कह कर बरकत दी कि फलो और बढ़ो और इन समुन्दरों के पानी को भर दो, और परिन्दे ज़मीन पर बहुत बढ़ जाँ। 23 और शाम हुई और सुबह हुई — तब पाँचवाँ दिन हुआ। 24 और खुदा ने कहा कि ज़मीन जानदारों को, उनकी क्रिस्म के मुताबिक़, चौपाये और रेंगनेवाले जानदार और जंगली जानवर उनकी क्रिस्म के मुताबिक़ पैदा करे, और ऐसा ही हुआ। 25 और खुदा ने जंगली जानवरों और चौपायों को उनकी क्रिस्म के मुताबिक़ और ज़मीन के रेंगने वाले जानदारों को उनकी क्रिस्म के मुताबिक़ बनाया; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। 26 फिर खुदा ने कहा कि हम इंसान को अपनी सूरत पर अपनी शबीह की तरह बनाएँ और वह समुन्दर की मछलियों और आसमान के परिन्दों और चौपायों, और तमाम ज़मीन और सब जानदारों पर जो ज़मीन पर रेंगते हैं इख़्तियार रखें। 27 और खुदा ने इंसान को अपनी सूरत पर पैदा किया खुदा की सूरत पर उसको पैदा किया — नर — ओ — नारी उनको पैदा किया। 28 और खुदा ने उनको बरकत दी और कहा कि फलो और बढ़ो और ज़मीन को भर दो और हुक्मत करो और समुन्दर की मछलियों और हवा के परिन्दों और कुल जानवरों पर जो ज़मीन पर चलते हैं इख़्तियार रखो। 29 और खुदा ने कहा कि देखो, मैं तमाम रू — ए — ज़मीन की कुल बीजदार सब्ज़ी और हर दरख़्त जिसमें उसका बीजदार फल हो, तुम को देता हूँ; यह तुम्हारे खाने को हों। 30 और ज़मीन के कुल जानवरों के लिए, और हवा के कुल परिन्दों के लिए और उन सब के लिए जो ज़मीन पर रेंगने वाले हैं जिनमें ज़िन्दगी का दम है, कुल हरी बूटियाँ खाने को देता हूँ, और ऐसा ही हुआ। 31 और खुदा ने सब पर जो उसने बनाया था नज़र की

और देखा कि बहुत अच्छा है, और शाम हुई और सुबह हुई तब छठा दिन हुआ।

2

1 तब आसमान और ज़मीन और उनके कुल लश्कर* का बनाना ख़त्म हुआ। **2** और खुदा ने अपने काम को, जिसे वह करता था सातवें दिन ख़त्म किया, और अपने सारे काम से जिसे वह कर रहा था, सातवें दिन फ़ारिग हुआ। **3** और खुदा ने सातवें दिन को बरकत दी, और उसे मुक़द्दस ठहराया; क्योंकि उसमें खुदा सारी कायनात से जिसे उसने पैदा किया और बनाया फ़ारिग हुआ।

???? ?? ???? ?? ???? ???? ???? ???? ?

4 यह है आसमान और ज़मीन की पैदाइश, जब वह पैदा हुए जिस दिन खुदावन्द खुदा ने ज़मीन और आसमान को बनाया; 5 और ज़मीन पर अब तक खेत का कोई पौधा न था और न मैदान की कोई सब्जी अब तक उगी थी, क्योंकि खुदावन्द खुदा ने ज़मीन पर पानी नहीं बरसाया था, और न ज़मीन जोतने को कोई इंसान था। 6 बल्कि ज़मीन से कुहर उठती थी, और तमाम रू — ए — ज़मीन को सेराब करती थी। 7 और खुदावन्द खुदा ने ज़मीन की मिट्टी से इंसान को बनाया और उसके नथनों में ज़िन्दगी का दम फूँका इंसान जीती जान हुआ। 8 और खुदावन्द खुदा ने मशरिफ़ की तरफ़ अदन में एक बाग़ लगाया और इंसान को जिसे उसने बनाया था वहाँ रखवा। 9 और खुदावन्द खुदा ने हर दरख़्त को जो देखने में खुशनुमा और खाने के लिए अच्छा था ज़मीन से उगाया और बाग़ के बीच में ज़िन्दगी का दरख़्त और भले और बुरे की पहचान का दरख़्त भी लगाया। 10 और अदन से एक दरिया बाग़ के सेराब करने को निकला और वहाँ से चार नदियों में तक़सीम हुआ। 11 पहली का नाम फ़ैसून है जो हवीला की सारी ज़मीन को जहाँ सोना होता है घेरे हुए है। 12 और इस ज़मीन का सोना चोखा है। और वहाँ मोती और संग-ए-सुलेमानी भी हैं। 13 और दूसरी नदी का नाम जैहून है, जो कूश की सारी ज़मीन को घेरे हुए है। 14 और तीसरी नदी का नाम दिजला है जो असूर के मशरिफ़ को जाती है। और चौथी नदी का नाम फ़रात है। 15 और खुदावन्द खुदा ने आदम को लेकर बाग़ — ए — 'अदन में रखवा के उसकी बाग़वानी और निगहबानी करे। 16 और खुदावन्द खुदा ने आदम को हुक्म दिया और कहा कि तू बाग़ के हर दरख़्त का फल बे रोक टोक खा सकता है। 17 लेकिन भले और बुरे की पहचान के दरख़्त का कभी न खाना क्योंकि जिस रोज़ तूने उसमें से खायेगा तू मर

* **2:1** 2:1 लश्कर पूरी काइनात के साथ, पूरीफौज † **2:6** 2:6 कहर कहा ‡ **2:13** 2:13 कुश इथोपिया

जायेगा। ¹⁸ और खुदावन्द खुदा ने कहा कि आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं मैं उसके लिए एक मददगार उसकी तरह बनाऊँगा। ¹⁹ और खुदावन्द खुदा ने सब जंगली जानवर और हवा के सब परिन्दे मिट्टी से बनाए और उनको आदम के पास लाया कि देखे कि वह उनके क्या नाम रखता है और आदम ने जिस जानवर को जो कहा वही उसका नाम ठहरा। ²⁰ और आदम ने सब चौपायों और हवा के परिन्दों और सब जंगली जानवरों के नाम रखे लेकिन आदम के लिए कोई मददगार उसकी तरह न मिला। ²¹ और खुदावन्द खुदा ने आदम पर गहरी नींद भेजी और वह सो गया और उसने उसकी पसलियों में से एक को निकाल लिया और उसकी जगह गोश्त भर दिया। ²² और खुदावन्द खुदा उस पसली से जो उसने आदम में से निकाली थी एक 'औरत बना कर उसे आदम के पास लाया। ²³ और आदम ने कहा कि यह तो अब मेरी हड्डियों में से हड्डी, और मेरे गोश्त में से गोश्त है; इसलिए वह 'औरत कहलाएगी क्योंकि वह मर्द से निकाली गई। ²⁴ इसलिए आदमी अपने माँ बाप को छोड़ेगा और अपनी बीवी से मिला रहेगा और वह एक तन होंगे। ²⁵ और आदम और उसकी बीवी दोनों नंगे थे और शरमाते न थे।

3

22222 22 22222 22 222222 22222

¹ और साँप सब जंगली जानवरों से, जिनको खुदावन्द खुदा ने बनाया था चालाक था, और उसने 'औरत से कहा क्या वाकई खुदा ने कहा है, कि बाग के किसी दरख्त का फल तुम न खाना? ² 'औरत ने साँप से कहा कि बाग के दरख्तों का फल तो हम खाते हैं। ³ लेकिन जो दरख्त बाग के बीच में है उसके फल के बारे में खुदा ने कहा है कि तुम न तो उसे खाना और न छूना वरना मर जाओगे। ⁴ तब साँप ने 'औरत से कहा कि तुम हरगिज न मरोगे! ⁵ बल्कि खुदा जानता है कि जिस दिन तुम उसे खाओगे, तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम खुदा की तरह भले और बुरे के जानने वाले बन जाओगे। ⁶ 'औरत ने जो देखा कि वह दरख्त खाने के लिए अच्छा और आँखों को खुशनुमा मा'लूम होता है और अक्ल बरख्शने के लिए खूब है तो उसके फल में से लिया और खाया और अपने शौहर को भी दिया और उसने खाया। ⁷ *तब दोनों की आँखें खुल गई और उनको मा'लूम हुआ कि वह नंगे हैं और उन्होंने अंजीर के पत्तों को ठसी कर अपने लिए लूंगियाँ बनाई। ⁸ और उन्होंने खुदावन्द खुदा की आवाज़ जो †ठंडे वक्त्र

बाग में फिरता था सुनी और आदम और उसकी बीवी ने अपने आप को खुदावन्द खुदा के सामने से बाग के दरख्तों में छिपाया। ⁹ तब खुदावन्द खुदा ने आदम को पुकारा और उससे कहा कि तू कहाँ है? ¹⁰ उसने कहा, मैंने बाग में तेरी आवाज़ सुनी और मैं डरा क्योंकि मैं नंगा था और मैंने अपने आप को छिपाया। ¹¹ उसने कहा, तुझे किसने बताया कि तू नंगा है? क्या तूने उस दरख्त का फल खाया जिसके बारे में मैंने तुझे को हुक्म दिया था कि उसे न खाना? ¹² आदम ने कहा कि जिस 'औरत को तूने मेरे साथ किया है उसने मुझे उस दरख्त का फल दिया और मैंने खाया। ¹³ तब खुदावन्द खुदा ने, 'औरत से कहा कि तूने यह क्या किया? 'औरत ने कहा कि साँप ने मुझे को बहकाया तो मैंने खाया। ¹⁴ और खुदावन्द खुदा ने साँप से कहा, इसलिए कि तूने यह किया तू सब चौपायों और जंगली जानवरों में ला'नती ठहरा; तू अपने पेट के बल चलेगा, और अपनी उमर भर खाक चाटेगा। ¹⁵ और मैं तेरे और 'औरत के बीच और तेरी नसल और औरत की नसल के बीच 'अदावत डालूँगा वह तेरे सिर को कुचलेगा और तू उसकी एड़ी पर काटेगा। ¹⁶ फिर उसने 'औरत से कहा कि मैं तेरे दर्द — ए — हम्म को बहुत बढ़ाऊँगा तू दर्द के साथ बच्चे जनेगी और तेरी रगबत अपने शौहर की तरफ होगी और वह तुझे पर हुक्मत करेगा। ¹⁷ और आदम से उसने कहा चूँकि तूने अपनी बीवी की बात मानी और उस दरख्त का फल खाया जिस के बारे में मैंने तुझे हुक्म दिया था कि उसे न खाना इसलिए ज़मीन तेरी वजह से ला'नती हुई। मशक्कत के साथ तू अपनी उमर भर उसकी पैदावार खाएगा ¹⁸ और वह तेरे लिए काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी और तू खेत की सब्जी खाएगा। ¹⁹ तू अपने मुँह के पसीने की रोटी खाएगा जब तक कि ज़मीन में तू फिर लौट न जाए इसलिए कि तू उससे †निकाला गया है क्योंकि तू खाक है और खाक में फिर लौट जाएगा।

2222222 22 2222222 22222: 222222 22 222222222

²⁰ और आदम ने अपनी बीवी का नाम *हव्वा रखवा, इसलिए कि वह सब ज़िन्दों की माँ है। ²¹ और खुदावन्द खुदा ने आदम और उसकी बीवी के लिए चमड़े के कुर्ते बना कर उनको पहनाए। ²² और खुदावन्द खुदा ने कहा, देखो इंसान भले और बुरे की पहचान में हम में से एक की तरह हो गया: अब कहीं ऐसा न हो कि वह अपना हाथ बढ़ाए और ज़िन्दगी के दरख्त से भी कुछ लेकर खाए

§ 2:20 2:20 आदम इब्रानी में आदम को आदमी कहा जाता है * 3:7 3:7 तब उनकी समझ की आँखें खुल गई † 3:7 3:7 बंधकर, जकड़कर, सीकर या जोड़कर ‡ 3:8 3:8 शाम § 3:19 3:19 बनाया गया, घड़ा गया, ढाला गया * 3:20 3:20 ज़िन्दगी

और हमेशा ज़िन्दा रहे। ²³ इसलिए खुदावन्द खुदा ने उसको बाग — ए — 'अदन से बाहर कर दिया, ताकि वह उस ज़मीन की जिसमें से वह †लिया गया था, खेती करे। ²⁴ चुनाँचे उसने आदम को निकाल दिया और बाग — ए — 'अदन के मशरिक की तरफ़ करूबियों को और चारों तरफ़ घूमने वाली शो'लाज़न तलवार को रखवा, कि वह ज़िन्दगी के दरख्त की राह की हिफ़ाज़त करें।

4

????? ?? ?????

¹ और आदम अपनी बीवी हव्वा के पास गया, और वह हामिला हुई और उसके क्राइन पैदा हुआ। तब उसने कहा, *मुझे खुदावन्द से एक फ़र्ज़न्द मिला। ² फिर क्राइन का भाई हाबिल पैदा हुआ; और हाबिल भेड़ बकरियों का चरवाहा और क्राइन किसान था। ³ कुछ दिन के बाद ऐसा हुआ कि क्राइन अपने खेत के फल का हदिया खुदावन्द के लिए लाया। ⁴ और हाबिल भी अपनी भेड़ बकरियों के कुछ पहलौटे बच्चों का और कुछ उनकी चर्बी का हदिया लाया। और खुदावन्द ने हाबिल को और उसके हदिये को कुबूल किया, ⁵ लेकिन क्राइन को और उसके हदिये को कुबूल न किया। इसलिए क्राइन बहुत गुस्सा हुआ और उसका मुँह बिगड़ा। ⁶ और खुदावन्द ने क्राइन से कहा, तू क्यों गुस्सा हुआ? और तेरा मुँह क्यों बिगड़ा हुआ है? ⁷ अगर तू भला करे तो क्या तू मक्बूल न होगा? और अगर तू भला न करे तो गुनाह दरवाजे पर दुबका बैठा है और तेरा मुश्ताक़ है, लेकिन तू उस पर ग़ालिब आ। ⁸ और क्राइन ने अपने भाई हाबिल †को कुछ कहा और जब वह दोनों खेत में थे तो ऐसा हुआ कि क्राइन ने अपने भाई हाबिल पर हमला किया और उसे क़त्ल कर डाला। ⁹ तब खुदावन्द ने क्राइन से कहा कि तेरा भाई हाबिल कहाँ है? उसने कहा, मुझे मा'लूम नहीं; क्या मैं अपने भाई का मुहाफ़िज़ हूँ? ¹⁰ फिर उसने कहा कि तूने यह क्या किया? तेरे भाई का खून ज़मीन से मुझ को पुकारता है। ¹¹ और अब तू ज़मीन की तरफ़ से ला'नती हुआ, जिसने अपना मुँह पसारा कि तेरे हाथ से तेरे भाई का खून ले। ¹² जब तू ज़मीन को जोतेगा, तो वह अब तुझे अपनी पैदावार न देगी और ज़मीन पर तू खानाखराब और आवारा होगा। ¹³ तब क्राइन ने खुदावन्द से कहा कि मेरी सज़ा बर्दाश्त से बाहर है। ¹⁴ देख, आज तूने मुझे रू — ए — ज़मीन से निकाल दिया है, और मैं तेरे सामने से ग़ायब हो जाऊँगा;

और ज़मीन पर खानाखराब और आवारा रहूँगा, और ऐसा होगा कि जो कोई मुझे पाएगा क़त्ल कर डालेगा। ¹⁵ तब खुदावन्द ने उसे कहा, नहीं, बल्कि जो क्राइन को क़त्ल करे उससे सात गुना बदला लिया जाएगा। और खुदावन्द ने क्राइन के लिए एक निशान ठहराया कि कोई उसे पा कर मार न डाले। ¹⁶ इसलिए, क्राइन खुदावन्द के सामने से निकल गया और अदन के मशरिक की तरफ़ †नूद के इलाक़े में जा बसा।

????? ?? ????-?-????

¹⁷ और क्राइन अपनी बीवी के पास गया और वह हामिला हुई और उसके हनूक पैदा हुआ; और उसने एक शहर बसाया और उसका नाम अपने बेटे के नाम पर हनूक रखवा। ¹⁸ और हनूक से ईराद पैदा हुआ, और ईराद से महयाएल पैदा हुआ, और महयाएल से मतूसाएल पैदा हुआ, और मतूसाएल से लमक पैदा हुआ। ¹⁹ और लमक दो औरतें ब्याह लाया: एक का नाम अदा और दूसरी का नाम ज़िल्ला था। ²⁰ और अदा के याबल पैदा हुआ: वह उनका †बाप था जो खेमों में रहते और जानवर पालते हैं। ²¹ और उसके भाई का नाम यूबल था: वह बीन और बांसली बजाने वालों का बाप था। ²² और ज़िल्ला के भी तूबलक्राइन पैदा हुआ: जो पीतल और लोहे के सब तेज़ हथियारों का बनाने वाला था; और नामा तूबलक्राइन की बहन थी। ²³ और लमक ने अपनी बीवियों से कहा कि ऐ अदा और ज़िल्ला मेरी बात सुनो; ऐ लमक की बीवियों, मेरी बात पर कान लगाओ: मैंने एक आदमी को जिसने मुझे ज़ख्मी किया, मार डाला। और एक जवान को जिसने मेरे चोट लगाई, क़त्ल कर डाला। ²⁴ अगर क्राइन का बदला सात गुना लिया जाएगा, तो लमक का सत्तर और सात गुना।

???? ?? ?????

²⁵ और आदम फिर अपनी बीवी के पास गया और उसके एक और बेटा हुआ और उसका नाम सेत रखवा: और वह कहने लगी कि खुदा ने हाबिल के बदले जिसको क्राइन ने क़त्ल किया, मुझे दूसरा फ़र्ज़न्द दिया। ²⁶ और सेत के यहाँ भी एक बेटा पैदा हुआ, जिसका नाम उसने अनूस रखवा; उस वक़्त से लोग यहोवा का नाम लेकर दुआ करने लगे।

5

???? ?? ?????

† 3:23 3:23 बनाया गया * 4:1 4:1 मैं ने यहू की मदद से एक आदमी पाया † 4:8 4:8 तब उनकी समझ की आँखें खुल गई ‡ 4:16 4:16 घूमने वाला मुल्क § 4:20 4:20 1: बापदादा, इन्हें भी देखें: 4:20, 15:15, 46:34, 47:3, 48:21

1 यह आदम का नसबनामा है। जिस दिन खुदा ने आदम को पैदा किया; तो उसे अपनी शबीह पर बनाया। 2 मर्द और औरत उनको पैदा किया और उनको बरकत दी, और जिस दिन वह पैदा हुए उनका नाम आदम रखवा। 3 और आदम एक सौ तीस साल का था जब उसकी सूरत — ओ — शबीह का एक बेटा उसके यहाँ पैदा हुआ; और उसने उसका नाम सेत रखवा। 4 और सेत की पैदाइश के बाद आदम आठ सौ साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई। 5 और आदम की कुल उम्र नौ सौ तीस साल की हुई, तब वह मरा। 6 और सेत एक सौ पाँच साल का था जब उससे अनूस पैदा हुआ। 7 और अनूस की पैदाइश के बाद सेत आठ सौ सात साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई। 8 और सेत की कुल उम्र नौ सौ बारह साल की हुई, तब वह मरा। 9 और अनूस नव्वे साल का था जब उससे क्रीनान पैदा हुआ। 10 और क्रीनान की पैदाइश के बाद अनूस आठ सौ पन्द्रह साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई। 11 और अनूस की कुल उम्र नौ सौ पाँच साल की हुई, तब वह मरा। 12 और क्रीनान सत्तर साल का था जब उससे *महललेल पैदा हुआ। 13 और महललेल की पैदाइश के बाद क्रीनान आठ सौ चालीस साल ज़िन्दा रहा और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई। 14 और क्रीनान की कुल उम्र नौ सौ दस साल की हुई, तब वह मरा। 15 और महललेल पैंसठ साल का था जब उससे यारिद पैदा हुआ। 16 और यारिद की पैदाइश के बाद महललेल आठ सौ तीस साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई। 17 और महललेल की कुल उम्र आठ सौ पचानवे साल की हुई, तब वह मरा। 18 और यारिद एक सौ बासठ साल का था जब उससे हनूक पैदा हुआ। 19 और हनूक की पैदाइश के बाद यारिद आठ सौ साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई। 20 और यारिद की कुल उम्र नौ सौ बासठ साल की हुई, तब वह मरा। 21 और हनूक पैंसठ साल का था उससे मतूसिलह पैदा हुआ। 22 और मतूसिलह की पैदाइश के बाद हनूक तीन सौ साल तक खुदा के साथ — साथ चलता रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई। 23 और हनूक की कुल उम्र तीन सौ पैंसठ साल की हुई। 24 और हनूक खुदा के साथ — साथ चलता रहा, और वह गायब हो गया क्योंकि खुदा ने उसे उठा लिया। 25 और मतूसिलह एक सौ सतासी साल का था जब उससे लमक

पैदा हुआ। 26 और लमक की पैदाइश के बाद मतूसिलह सात सौ बयासी साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई। 27 और मतूसिलह की कुल उम्र नौ सौ उनहत्तर साल की हुई, तब वह मरा। 28 और लमक एक सौ बयासी साल का था जब उससे एक बेटा पैदा हुआ। 29 और उसने उसका नाम नूह रखवा और कहा, कि यह हमारे हाथों की मेहनत और मशक्कत से जो ज़मीन की वजह से है जिस पर खुदा ने ला'नत की है, हमें आराम देगा। 30 और नूह की पैदाइश के बाद लमक पाँच सौ पचानवे साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई। 31 और लमक की कुल उम्र सात सौ सत्तर साल की हुई, तब वह मरा। 32 और नूह पाँच सौ साल का था, जब उससे सिम, हाम और याफ़त, पैदा हुए।

6

2222 2222 22 222222

1 जब रु — ए — ज़मीन पर आदमी बहुत बढ़ने लगे और उनके बेटियाँ पैदा हुई। 2 तो *खुदा के बेटों ने आदमी की बेटियों को देखा कि वह खूबसूरत हैं; और जिनको उन्होंने चुना उनसे ब्याह कर लिया। 3 तब खुदावन्द ने कहा कि मेरी †रूह इंसान के साथ हमेशा मुज़ाहमत न करती रहेगी। क्योंकि वह भी तो इंसान है; तो भी उसकी उम्र एक सौ बीस साल की होगी। 4 उन दिनों में ज़मीन पर जब्बार थे, और बाद में जब खुदा के बेटे इंसान की बेटियों के पास गए, तो उनके लिए उनसे औलाद हुई। यही पुराने ज़माने के सूर्मा हैं, जो बड़े नामवर हुए हैं। 5 और खुदावन्द ने देखा कि ज़मीन पर इंसान की बदी बहुत बढ़ गई, और उसके दिल के तसव्वुर और खयाल हमेशा बुरे ही होते हैं। 6 तब खुदावन्द ज़मीन पर इंसान के पैदा करने से दुखी हुआ और दिल में ग़म किया। 7 और खुदावन्द ने कहा कि मैं इंसान को जिसे मैंने पैदा किया, रु — ए — ज़मीन पर से मिटा डालूँगा; इंसान से लेकर हैवान और रेंगनेवाले जानदार और हवा के परिन्दों तक; क्योंकि मैं उनके बनाने से दुखी हूँ। 8 मगर नूह खुदावन्द की नज़र में मक्बूल हुआ।

2222 22 22222222

9 नूह का नसबनामा यह है: नूह मर्द — ए — रास्तबाज़ और अपने ज़माने के लोगों में बे'ऐब था, और नूह खुदा के साथ — साथ चलता रहा। 10 और उससे तीन बेटे सिम, हाम और याफ़त पैदा हुए। 11 लेकिन ज़मीन खुदा के आगे नापाक हो गई थी, और वह ज़ुल्म से

* 5:12 5:12 खुदा की हम्द — ओ — तारीफ़ हो

* 6:2 6:2 आसमानी रूहें या फ़रिश्ते

† 6:3 6:3 मेरी रूह जो ज़िन्दगी देती है

1 फिर खुदा ने नूह को और सब जानदार और सब चौपायों को जो उसके साथ कशती में थे याद किया; और खुदा ने ज़मीन पर एक हवा चलाई और पानी रुक गया। 2 और समुन्दर के सोते और आसमान के दरीचे बन्द किए गए, और आसमान से जो बारिश हो रही थी थम गई; 3 और पानी ज़मीन पर से घटते — घटते एक सौ पचास दिन के बाद कम हुआ। 4 और सातवें महीने की सत्रहवीं *तारीख को कशती अरारात के पहाड़ों पर टिक गई। 5 और पानी दसवें महीने तक बराबर घटता रहा, और दसवें महीने की पहली तारीख को पहाड़ों की चोटियाँ नज़र आई। 6 और †चालीस दिन के बाद ऐसा हुआ, कि नूह ने कशती की खिड़की जो उसने बनाई थी खोली, 7 और उसने एक कौवे को उड़ा दिया; इसलिए वह निकला और जब तक कि ज़मीन पर से पानी सूख न गया इधर उधर फिरता रहा। 8 फिर उसने एक कबूतरी अपने पास से उड़ा दी, ताकि देखे, कि ज़मीन पर पानी घटा या नहीं। 9 लेकिन कबूतरी ने पंजा टेकने की जगह न पाई और उसके पास कशती को लौट आई, क्योंकि तमाम रू — ए — ज़मीन पर पानी था। तब उसने हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया और अपने पास कशती में रखवा। 10 और सात दिन ठहर कर उसने उस कबूतरी को फिर कशती से उड़ा दिया; 11 और वह कबूतरी शाम के वक़्त उसके पास लौट आई, और देखा तो जैतून की एक ताज़ा पत्ती उसकी चोंच में थी। तब नूह ने मा'लूम किया कि पानी ज़मीन पर से कम हो गया। 12 तब वह सात दिन और ठहरा, इसके बाद फिर उस कबूतरी को उड़ाया, लेकिन वह उसके पास फिर कभी न लौटी। 13 और छः सौ पहले साल के पहले महीने की पहली तारीख को ऐसा हुआ, कि ज़मीन पर से पानी सूख गया; और नूह ने कशती की छत खोली और देखा कि ज़मीन की सतह सूख गई है। 14 और दूसरे महीने की सताईस्वीं तारीख को ज़मीन बिल्कुल सूख गई। 15 तब खुदा ने नूह से कहा कि 16 कशती से बाहर निकल आ; तू और तेरे साथ तेरी बीवी और तेरे बेटे और तेरे बेटों की बीवियाँ। 17 और उन जानदारों को भी बाहर निकाल ला जो तेरे साथ हैं: क्या परिन्दे, क्या चौपाये, क्या ज़मीन के रेंगनेवाले जानदार; ताकि वह ज़मीन पर कसरत से बच्चे दें और फल दायक हों और ज़मीन पर बढ़ जाएँ। 18 तब नूह अपनी बीवी और अपने बेटों और अपने बेटों की बीवियों के साथ बाहर निकला। 19 और सब जानवर, सब रेंगनेवाले जानदार, सब परिन्दे और सब जो ज़मीन पर चलते हैं, अपनी अपनी किस्म के साथ कशती से निकल गए। 20 तब नूह ने खुदावन्द के लिए एक मज़बह बनाया; और सब पाक चौपायों

और पाक परिन्दों में से थोड़े से लेकर उस मज़बह पर सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश कीं। 21 और खुदावन्द ने उसकी राहत अंगेज़ खुशबू ली, और खुदावन्द ने अपने दिल में कहा कि इंसान की वजह से मैं फिर कभी ज़मीन पर ला'नत नहीं भेजूँगा, क्योंकि इंसान के दिल का ख्याल लड़कपन से बुरा है; और न फिर सब जानदारों को जैसा अब किया है, मारूँगा। 22 बल्कि जब तक ज़मीन क्राईम है बीज बोना और फ़सल कटना, सर्दी और तपिश, गर्मी और जाड़ा और रात ख़त्म न होंगे।

9

?????? ?? ???? ?? ???? ?????

1 और खुदा ने नूह और उसके बेटों को बरकत दी और उनको कहा कि फ़ायदेमन्द हो और बढ़ो और ज़मीन को भर दो। 2 और ज़मीन के सब जानदारों और हवा के सब परिन्दों पर तुम्हारी दहशत और तुम्हारा रौब होगा; यह और तमाम कीड़े जिन से ज़मीन भरी पड़ी है, और समुन्दर की कुल मछलियाँ तुम्हारे क़ब्ज़े में की गई। 3 हर चलता फिरता जानदार तुम्हारे खाने को होगा; हरी सब्ज़ी की तरह मैंने सबका सब तुम को दे दिया 4 मगर तुम गोश्त के साथ खून को, जो उसकी जान है न खाना। 5 मैं तुम्हारे खून का बदला जरूर लूँगा, हर जानवर से उसका बदला लूँगा; आदमी की जान का बदला आदमी से और उसके भाई बन्द से लूँगा। 6 जो आदमी का खून करे उसका खून आदमी से होगा, क्योंकि खुदा ने इंसान को अपनी सूरत पर बनाया है। 7 और तुम फल दायक हो और बढ़ो और ज़मीन पर खूब अपनी नसल बढ़ाओ, और बहुत ज्यादा हो जाओ। 8 और खुदा ने नूह और उसके बेटों से कहा, 9 देखो, मैं खुद तुमसे और तुम्हारे बाद तुम्हारी नसल से, 10 और सब जानदारों से जो तुम्हारे साथ हैं, क्या परिन्दे क्या चौपाए क्या ज़मीन के जानवर, या'नी ज़मीन के उन सब जानवरों के बारे में जो कशती से उतरे, 'अहद करता हूँ 11 मैं इस 'अहद को तुम्हारे साथ क्राईम रखूँगा कि सब जानदार तूफ़ान के पानी से फिर हलाक न होंगे, और न कभी ज़मीन को तबाह करने के लिए फिर तूफ़ान आएगा 12 और खुदा ने कहा कि जो अहद मैंने अपने और तुम्हारे बीच और सब जानदारों के बीच जो तुम्हारे साथ हैं, नसल — दर — नसल हमेशा के लिए करता हूँ, उसका निशान यह है कि 13 मैं अपनी कमान को बादल में रखता हूँ, वह मेरे और ज़मीन के बीच 'अहद का निशान होगी 14 और ऐसा होगा कि जब मैं ज़मीन पर बादल लाऊँगा, तो मेरी

* 8:4 8:4 उस वक़्त से जब से कि सैलाब शुरू हुआ था † 8:6 8:6 "तब से" जोड़ें

कमान बादल में दिखाई देगी। ¹⁵ और मैं अपने 'अहद को, जो मेरे और तुम्हारे और हर तरह के जानदार के बीच है, याद करूँगा; और तमाम जानदारों की हलाकत के लिए पानी का तूफ़ान फिर न होगा। ¹⁶ और कमान बादल में होगी और मैं उस पर निगाह करूँगा, ताकि उस अबदी 'अहद को याद करूँ जो खुदा के और ज़मीन के सब तरह के जानदार के बीच है। ¹⁷ तब खुदा ने नूह से कहा कि यह उस 'अहद का निशान है जो मैं अपने और ज़मीन के कुल जानदारों के बीच काईम करता हूँ।

222 22 2222

¹⁸ नूह के बेटे जो कश्ती से निकले, सिम, हाम और याफ़त थे और हाम कनान का बाप था। ¹⁹ यही तीनों नूह के बेटे थे और इन्हीं की नसल सारी ज़मीन फैली। ²⁰ और नूह काश्तकारी करने लगा और उसने एक अँगूर का बाग़ लगाया। ²¹ और *उसने उसकी मय पी और उसे नशा आया और वह अपने डेरे में नंगा हो गया। ²² और कनान के बाप हाम ने अपने बाप को नंगा देखा, और अपने दोनों भाइयों को बाहर आ कर खबर दी। ²³ तब सिम और याफ़त ने एक कपड़ा लिया और उसे अपने कन्धों पर धरा, और पीछे को उल्टे चल कर गए और अपने बाप की नंगे पन को ढाँका, इसलिए उनके मुँह उल्टी तरफ़ थे और उन्होंने अपने बाप की नंगे पन को न देखा। ²⁴ जब नूह अपनी मय के नशे से होश में आया, तो जो उसके छोटे बेटे ने उसके साथ किया था उसे मा'लूम हुआ। ²⁵ और उसने कहा कि कनान मल'ऊन हो, वह अपने भाइयों के गुलामों का गुलाम होगा ²⁶ फिर कहा, खुदावन्द सिम का खुदा मुबारक हो, और कनान सिम का गुलाम हो। ²⁷ खुदा याफ़त को फैलाए, कि वह सिम के डेरों में बसे, और कनान उसका गुलाम ²⁸ और तूफ़ान के बाद नूह साढ़े तीन सौ साल और ज़िन्दा रहा। ²⁹ और नूह की कुल उम्र साढ़े नौ सौ साल की हुई। तब उसने वफ़ात पाई।

10

¹ नूह के बेटों सिम, हाम और याफ़त की औलाद यह हैं। तूफ़ान के बाद उनके यहाँ बेटे पैदा हुए।

222 22222 22 22222222

² बनी *याफ़त यह हैं: जुमर और माजूज और मादी, और यावान और तूबल और मसक और तीरास। ³ और जुमर के बेटे: अशकनाज़ और रीफ़त और तुजरमा। ⁴ और यावान के बेटे: इलिसा और तरसीस, किती और दोदानी। ⁵ क्रौमों के जज़ीरे इन्हीं की नसल में बट कर,

* 9:21 9:21 एक दिन जोड़ें * 10:2 10:2 पुराने अहद में बनी बहिन सी जगहों पर आया है जो लोगों की जमायत या पीढ़ी को ज़ाहिर करता है
† 10:10 10:10 बाबुल

हर एक की ज़बान और क़बीले के मुताबिक़ मुखतलिफ़ मुल्क और गिरोह हो गए।

222 222 22 22222222

⁶ और बनी हाम यह हैं: कूश और मिस्र और फूत और कना'न। ⁷ और बनी कूश यह हैं। सबा और हवीला और सबता और रा'मा और सब्तीका। और बनी रा'मा यह हैं: सबा और ददान। ⁸ और कूश से नमरूद पैदा हुआ। वह रू — ए — ज़मीन पर एक सूर्मा हुआ है। ⁹ खुदावन्द के सामने वह एक शिकारी सूर्मा हुआ है, इसलिए यह मसल चली कि, "खुदावन्द के सामने नमरूद सा शिकारी सूर्मा।" ¹⁰ और उस की बादशाही का पहला मुल्क सिन'आर में †बाबुल और अरक और अक्काद और कलना से हुई।

¹¹ उसी मुल्क से निकल कर वह असूर में आया, और नीनवा और रहोबोत ईर और कलह को, ¹² और नीनवा और कलह के बीच रसन को, जो बड़ा शहर है बनाया। ¹³ और मिस्र से लूदी और अनामी और लिहाबी और नफ़तूही ¹⁴ और फ़तरूसी और कसलूही जिनसे फ़िलिस्ती निकले और कफ़तूरी पैदा हुए। ¹⁵ और कनान से सैदा जो उसका पहलौठा था, और हित, ¹⁶ और यबूसी और अमोरी और जिरजासी, ¹⁷ और हव्वी और अरकी और सीनी, ¹⁸ और अरवादी और समारी और हमती पैदा हुए; और बाद में कना'नी क़बीले फैल गए। ¹⁹ और कना'नियों की हद यह है: सैदा से ग़ज़ज़ा तक जो जिरार के रास्ते पर है, फिर वहाँ से लसा' तक जो सदूम और 'अमूरा और अदमा और ज़िबयान की राह पर है। ²⁰ इसलिए बनी हाम यह हैं, जो अपने — अपने मुल्क और गिरोहों में अपने क़बीलों और अपनी ज़बानों के मुताबिक़ आबाद हैं।

222 22 22222222

²¹ और सिम के यहाँ भी जो तमाम बनी इब्र का बाप और याफ़त का बड़ा भाई था, औलाद हुई। ²² और बनी सिम यह हैं: ऐलाम और असुर और अरफ़कसद और लुद और आराम। ²³ और बनी आराम यह हैं; ऊज़ और हूल और जतर और मस। ²⁴ और अरफ़कसद से सिलह पैदा हुआ और सिलह से इब्र। ²⁵ और इब्र के यहाँ दो बेटे पैदा हुए; एक का नाम फ़लज था क्योंकि ज़मीन उसके दिनों में बटी, और उसके भाई का नाम युक्तान था। ²⁶ और युक्तान से अलमूदाद और सलफ़ और हसारमावत और इराख़। ²⁷ और हदूराम और ऊज़ाल और दिक्ला। ²⁸ और ऊबल और अबीमाएल और सिबा।

29 और ओफ्रीर और हवील और यूबाब पैदा हुए; यह सब बनी युक्तान थे। 30 और इनकी आबादी मेसा से मशरिक के एक पहाड़ सफ़ार की तरफ़ थी। 31 इसलिए बनी सिम यह हैं, जो अपने — अपने मुल्क और गिरोह में अपने कबीलों और अपनी ज़बानों के मुताबिक़ आबाद हैं।

22222222

32 नूह के बेटों के ख़ान्दान उनके गिरोह और नसलों के ऐतबार से यही हैं, और तूफ़ान के बाद जो क़ौम ज़मीन पर इधर उधर बट गई वह इन्हीं में से थीं।

11

222222 22 222222

1 और तमाम ज़मीन पर एक ही ज़बान और एक ही बोली थी। 2 और ऐसा हुआ कि मशरिक की तरफ़ सफ़र करते करते उनको मुल्क — ए — सिन* आर में एक मैदान मिला और वह वहाँ बस गए। 3 और उन्होंने आपस में कहा, 'आओ, हम ईंटें बनाएँ और उनको आग में ख़ूब पकाएँ। तब उन्होंने पत्थर की जगह ईंट से और चूने की जगह गारे से काम लिया। 4 फिर वह कहने लगे, कि आओ हम अपने लिए एक शहर और एक बुर्ज जिसकी चोटी आसमान तक पहुँचे बनाएँ और यहाँ अपना नाम करें, ऐसा न हो कि हम तमाम रु — ए — ज़मीन पर बिखर जाएँ। 5 और खुदावन्द इस शहर और बुर्ज, को जिसे बनी आदम बनाने लगे देखने को उतरा। 6 और खुदावन्द ने कहा, "देखो, यह लोग सब एक हैं और इन सभी की एक ही ज़बान है। वह जो यह करने लगे हैं तो अब कुछ भी जिसका वह इरादा करें उनसे बाक़ी न छूटेगा। 7 इसलिए आओ, हम वहाँ जाकर उनकी ज़बान में इख़िलाफ़ डालें, ताकि वह एक दूसरे की बात समझ न सकें।" 8 तब, खुदावन्द ने उनको वहाँ से तमाम रु — ए — ज़मीन में बिखेर दिया; तब वह उस शहर के बनाने से बाज़ आए। 9 इसलिए उसका नाम †बाबुल हुआ क्योंकि खुदावन्द ने वहाँ सारी ज़मीन की ज़बान में इख़िलाफ़ डाला और वहाँ से खुदावन्द ने उनको तमाम रु — ए — ज़मीन पर बिखेर दिया।

2222 22 22222 22222222 22 22 222222222

10 यह सिम का नसबनामा है: सिम एक सौ साल का था जब उससे तूफ़ान के दो साल बाद अरफ़क़सद पैदा हुआ; 11 और अरफ़क़सद की पैदाइश के बाद सिम पाँच सौ साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 12 जब अरफ़क़सद पैतीस साल का हुआ, तो उससे सिलह पैदा हुआ; 13 और सिलह की पैदाइश के

बाद अरफ़क़सद चार सौ तीन साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 14 सिलह जब तीस साल का हुआ, तो उससे इब् र पैदा हुआ; 15 और इब् र की पैदाइश के बाद सिलह चार सौ तीन साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 16 जब इब् र चौतीस साल का था, तो उससे फ़लज पैदा हुआ; 17 और फ़लज की पैदाइश के बाद इब् र चार सौ तीस साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 18 फ़लज तीस साल का था, जब उससे र'ऊ पैदा हुआ; 19 और र'ऊ की पैदाइश के बाद फ़लज दो सौ नौ साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 20 और र'ऊ बत्तीस साल का था, जब उससे सरूज पैदा हुआ; 21 और सरूज की पैदाइश के बाद र'ऊ दो सौ सात साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 22 और सरूज तीस साल का था, जब उससे नहूर पैदा हुआ। 23 और नहूर की पैदाइश के बाद सरूज दो सौ साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 24 नहूर उन्तीस साल का था, जब उससे तारह पैदा हुआ। 25 और तारह की पैदाइश के बाद नहूर एक सौ उन्नीस साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 26 और तारह सत्तर साल का था, जब उससे इब् रहाम और नहूर और हारान पैदा हुए।

22222 22 22222222

27 और यह तारह का नसबनामा है: तारह से इब् रहाम और नहूर और हारान पैदा हुए और हारान से लूत पैदा हुआ। 28 और हारान अपने बाप तारह के आगे अपनी पैदाइशी जगह यानी कसदियों के ऊर में मरा। 29 और अब्राम और नहूर ने अपना — अपना ब्याह कर लिया। इब् रहाम की बीवी का नाम सारय और नहूर की बीवी का नाम मिल्का था जो हारान की बेटी थी। वही मिल्का का बाप और इस्का का बाप था। 30 और सारय बाँझ थी; उसके कोई बाल — बच्चा न था। 31 और तारह ने अपने बेटे इब् रहाम को और अपने पोते लूत को, जो हारान का बेटा था, और अपनी बहू सारय को जो उसके बेटे इब् रहाम की बीवी थी, साथ लिया और वह सब कसदियों के ऊर से ख़ाना हुए की कनान के मुल्क में जाएँ; और वह हारान तक आए और वहीं रहने लगे। 32 और तारह की उम्र दो सौ पाँच साल की हुई और उस ने हारान में वफ़ात पाई।

* 11:2 11:2 बाबुल † 11:9 11:9 बाबुल

12

?????? ?? ?????? ???? ?

1 खुदावन्द ने इब्रहाम से कहा, कि तू अपने वतन और अपने *नातेदारों के बीच से और अपने बाप के घर से निकल कर उस मुल्क में जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। 2 और मैं तुझे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा और बरकत दूँगा और तेरा नाम सरफ़राज़ करूँगा; इसलिए तू बरकत का ज़रिया' हो। 3 जो तुझे मुबारक कहें उनको मैं बरकत दूँगा, और जो तुझ पर ला'नत करे उस पर मैं ला'नत करूँगा, और ज़मीन के सब क़बीले तेरे वसीले से बरकत पाएँगे। 4 तब इब्रहाम खुदावन्द के कहने के मुताबिक़ चल पड़ा और लूत उसके साथ गया, और अब्राम पच्छत्तर साल का था जब वह हारान से ख़ाना हुआ। 5 और इब्रहाम ने अपनी बीवी सारय, और अपने भतीजे लूत को, और सब माल को जो उन्होंने जमा किया था, और उन आदमियों को जो उनको हारान में मिल गए थे साथ लिया, और वह मुल्क — ए — कनान को ख़ाना हुए और मुल्क — ए — कनान में आए। 6 और इब्रहाम उस मुल्क में से गुज़रता हुआ मक़ाम — ए — सिकम में मोरा के बलूत तक पहुँचा। उस वक़्त मुल्क में कनानी रहते थे। 7 तब खुदावन्द ने इब्रहाम को दिखाई देकर कहा कि यही मुल्क मैं तेरी †नसल को दूँगा। और उसने वहाँ खुदावन्द के लिए जो उसे दिखाई दिया था, एक कुर्बानगाह बनाई। 8 और वहाँ से कूच करके उस पहाड़ की तरफ़ गया जो बैत — एल के मशरिफ़ में है, और अपना डेरा ऐसे लगाया कि बैत — एल मशरिफ़ में और 'ए' मशरिफ़ में पड़ा; और वहाँ उसने खुदावन्द के लिए एक कुर्बानगाह बनाई और खुदावन्द से दुआ की। 9 और इब्रहाम सफ़र करता करता दख्खिन की तरफ़ बढ़ गया।

?????? ?? ?????? ??????-?-????? ???? ?

10 और उस मुल्क में काल पड़ा: और इब्रहाम मिस्र को गया कि वहाँ टिका रहे; क्योंकि मुल्क में सख़्त काल था। 11 और ऐसा हुआ कि जब वह मिस्र में दाख़िल होने को था तो उसने अपनी बीवी सारय से कहा कि देख, मैं जानता हूँ कि तू देखने में खूबसूरत औरत है। 12 और यूँ होगा कि मिस्री तुझे देख कर कहेंगे कि यह उसकी बीवी है, इसलिए वह मुझे तो मार डालेंगे मगर तुझे ज़िन्दा रख लेंगे। 13 इसलिए तू यह कह देना, कि मैं इसकी बहन हूँ, ताकि तेरी वजह से मेरा भला हो और मेरी जान तेरी बदौलत बची रहे। 14 और यूँ हुआ कि जब इब्रहाम मिस्र में आया तो मिस्रियों ने उस

'औरत को देखा कि वह निहायत खूबसूरत है। 15 और फिर'औन के हाकिमों ने उसे देख कर फिर'औन के सामने में उसकी ता'रीफ़ की, और वह 'औरत फिर'औन के घर में पहुँचाई गई। 16 और उसने उसकी खातिर इब्रहाम पर एहसान किया; और भेड़ बकरियाँ और गाय, बैल और गधे और गुलाम और लौंडियाँ और गधियाँ और ऊँट उसके पास हो गए। 17 लेकिन खुदावन्द ने फिर'औन और उसके खानदान पर, इब्रहाम की बीवी सारय की वजह से बड़ी — बड़ी बलाएं नाज़िल कीं। 18 तब फिर'औन ने इब्रहाम को बुला कर उससे कहा, कि तूने मुझ से यह क्या किया? तूने मुझे क्यों न बताया कि यह तेरी बीवी है। 19 तूने यह क्यों कहा कि वह मेरी बहन है? इसी लिए मैंने उसे लिया कि वह मेरी बीवी बने इसलिए देख तेरी बीवी हाज़िर है। उसको ले और चला जा। 20 और फिर'औन ने उसके हक़ में अपने आदमियों को हिदायत की, और उन्होंने उसे और उसकी बीवी को उसके सब माल के साथ ख़ाना कर दिया।

13

?????? ?? ???? ?? ???? ?????? ?? ?????? ?

1 और इब्रहाम मिस्र से अपनी बीवी और अपने सब माल और लूत को साथ ले कर कनान के दख्खिन की तरफ़ चला। 2 और इब्रहाम के पास चौपाए और सोना चाँदी बकसरत था। 3 और वह कनान के दख्खिन से सफ़र करता हुआ बैत — एल में उस जगह पहुँचा जहाँ पहले बैत — एल और 'ए' के बीच उसका डेरा था। 4 या'नी वह मक़ाम जहाँ उसने शुरु' में कुर्बानगाह बनाई थी, और वहाँ इब्रहाम ने खुदावन्द से दुआ की। 5 और लूत के पास भी जो इब्रहाम का हमसफ़र था भेड़ — बकरियाँ, गाय — बैल और *डरे थे। 6 और उस मुल्क में इतनी गुन्जाइश न थी कि वह इकट्ठे रहें, क्योंकि उनके पास इतना माल था कि वह इकट्ठे नहीं रह सकते थे। 7 और इब्रहाम के चरवाहों और लूत के चरवाहों में झगड़ा हुआ; और कना'नी और फ़रिज़्जी उस वक़्त मुल्क में रहते थे। 8 तब इब्रहाम ने लूत से कहा कि मेरे और तेरे बीच और मेरे चरवाहों और तेरे चरवाहों के बीच झगड़ा न हुआ करे, क्योंकि हम भाई हैं। 9 क्या यह सारा मुल्क तेरे सामने नहीं? इसलिए तू मुझ से अलग हो जा: अगर तू बाएँ जाए तो मैं दहने जाऊँगा, और अगर तू दहने जाए तो मैं बाएँ जाऊँगा। 10 तब लूत ने आँख उठाकर यरदन की सारी तराई पर जो ज़ुगर की तरफ़ है नज़र दौड़ाई। क्योंकि वह इससे पहले कि खुदावन्द ने सद्म और 'अमूरा को

* 12:1 12:1 उस जगह से जहाँ तू पैदा हुआ है, या अपने लोगों के बीच में से † 12:7 12:7 बीज * 13:5 13:5 खेम

तबाह किया, खुदावन्द के बाग और मिस्र के मुल्क की तरह खूब सेराब थी। ¹¹ तब लूत ने यरदन की सारी तराई को अपने लिए चुन लिया, और वह मशरिक् की तरफ चला; और वह एक दूसरे से जुदा हो गए। ¹² इब्रहाम तो मुल्क — ए — कना'न में रहा, और लूत ने तराई के शहरों में सुकूनत इस्त्रियार की और सदूम की तरफ अपना डेरा लगाया। ¹³ और सदूम के लोग खुदावन्द की नज़र में निहायत बदकार और गुनहगार थे। ¹⁴ और लूत के जुदा हो जाने के बाद खुदावन्द ने इब्रहाम से कह कि अपनी आँख उठा और जिस जगह तू है वहाँ से शिमाल दख्खिन और मशरिक् और मगरिब की तरफ नज़र दौड़ा। ¹⁵ क्योंकि यह तमाम मुल्क जो तू देख रहा है, मैं तुझ को और तेरी नसल को हमेशा के लिए दूँगा। ¹⁶ और मैं तेरी नसल को खाक के ज़रों की तरह बनाऊँगा, ऐसा कि अगर कोई शख्स खाक के ज़रों को गिन सके तो तेरी नसल भी गिन ली जाएगी। ¹⁷ उठ, और इस मुल्क की लम्बाई और चौड़ाई में घूम, क्योंकि मैं इसे तुझ को दूँगा। ¹⁸ और इब्रहाम ने अपना डेरा उठाया, और ममरे के बलूतों में जो हबर्न में हैं जा कर रहने लगा; और वहाँ खुदावन्द के लिए एक कुर्बानगाह बनाई।

14

222222 22 2222 22 22222222

¹ और सिन'आर के बादशाह अमराफ़िल, और इल्लासर के बादशाह अर्युक, और 'ऐलाम के बादशाह किदरला उमर, और जोइम के बादशाह तिद'आल के दिनों में, ² ऐसा हुआ कि उन्होंने सदूम के बादशाह बर'आ, और 'अमूरा के बादशाह बिरश'आ और अदमा के बादशाह सिनिअब, और ज़िबोईम के बादशाह शिमेबर, और बाला' या'नी ज़ुगर के बादशाह से जंग की। ³ यह सब सिद्दीम या'नी दरिया — ए — शोर की वादी में इकट्ठे हुए। ⁴ बारह साल तक वह किदरला उमर के फ़र्माबरदार रहे, लेकिन तेरहवें साल उन्होंने सरकशी की। ⁵ और चौदहवें साल किदरला उमर और उसके साथ के बादशाह आए, और रिफ़ाईम को 'असतारात क्रनेम में, और ज़ूज़ियों को हाम में, और ऐमीम को सवीक्र्यतैम में, ⁶ और होरियों को उनके कोह — ए — श'ईर में मारते — मारते एल-फ़ारान तक जो वीराने से लगा हुआ है आए। ⁷ फिर वह लौट कर 'ऐन — मिसफ़ात या'नी क़ादिस पहुँचे, और 'अमालीक्रियों के तमाम मुल्क को, और अमोरियों को जो हसेसून तमर में रहते थे मारा। ⁸ तब सदूम का बादशाह, और 'अमूरा का बादशाह, और अदमा का बादशाह, और ज़िबोईम का बादशाह,

और बाला' या'नी ज़ुगर का बादशाह, निकले और उन्होंने सिद्दीम की वादी में लड़ाई की। ⁹ ताकि 'ऐलाम के बादशाह किदरला उमर, और जोइम के बादशाह तिद'आल, और सिन'आर के बादशाह अमराफ़िल, और इल्लासर के बादशाह अर्युक से जंग करें; यह चार बादशाह उन पाँचों के मुक़ाबिले में थे। ¹⁰ और सिद्दीम की वादी में जा — बजा नफ़्त के गढ़े थे; और सदूम और 'अमूरा के बादशाह भागते — भागते वहाँ गिरे, और जो बचे पहाड़ पर भाग गए। ¹¹ तब वह सदूम 'अमूरा का सब माल और वहाँ का सब अनाज लेकर चले गए; ¹² और इब्रहाम के भतीजे लूत को और उसके माल को भी ले गए क्योंकि वह सदूम में रहता था। ¹³ तब एक ने जो बच गया था जाकर इब्रहाम 'इब्रानी को ख़बर दी, जो इस्काल और 'आनेर के भाई ममरे अमोरी के बलूतों में रहता था, और यह अब्राम के हम 'अहद थे। ¹⁴ जब इब्रहाम ने सुना कि उसका भाई गिरफ़्तार हुआ, तो उसने अपने तीन सौ अट्टारह माहिर लड़ाकों को लेकर दान तक उनका पीछा किया। ¹⁵ और रात को उसने और उसके ख़ादिमों ने गोल — गोल होकर उन पर धावा किया और उनको मारा और खूबा तक, जो दमिश्क के बाएँ हाथ है, उनका पीछा किया। ¹⁶ और वह सारे माल को और अपने भाई लूत को और उसके माल और 'औरतों को भी और और लोगों को वापस फेर लाया।

2222-2-222222 22 222222 22 2222 2222

¹⁷ और जब वह किदरला उमर और उसके साथ के बादशाहों को मार कर फिरा तो सदूम का बादशाह उसके इस्तक्रबाल को सवी की वादी तक जो बादशाही वादी है आया। ¹⁸ और मलिक — ए — सिदक, *सालिम का बादशाह, रोटी और मय लाया और वह खुदा ता'ला का काहिन था। ¹⁹ और उसने उसको बरकत देकर कहा कि खुदा ता'ला की तरफ़ से जो आसमान और ज़मीन का मालिक है, इब्रहाम मुबारक हो। ²⁰ और मुबारक है खुदा ता'ला जिसने तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ में कर दिया। तब इब्रहाम ने सबका दसवाँ हिस्सा उसको दिया। ²¹ और सदूम के बादशाह ने इब्रहाम से कहा कि आदमियों को मुझे दे दे और माल अपने लिए रख ले। ²² लेकिन इब्रहाम ने सदूम के बादशाह से कहा कि मैंने खुदावन्द खुदा ता'ला, आसमान और ज़मीन के मालिक, की क़सम खाई है, ²³ कि मैं न तो कोई धागा, न जूती का तस्मा, न तेरी और कोई चीज़ लूँ ताकि तू यह न कह सके कि मैंने इब्रहाम को दौलतमन्द बना दिया। ²⁴ सिवा उसके जो जवानों ने खा लिया और उन आदमियों के हिस्से के जो

* 14:18 14:18 यरूशलेम

मेरे साथ गए; इसलिए 'आनेर और इस्काल और ममरे अपना — अपना हिस्सा ले लें।

15

222222 22 222 222222 22 222 222222

¹ इन बातों के बाद खुदावन्द का कलाम ख्वाब में इब्रहाम पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया, “ऐ अब्राम, तू मत डर; मैं तेरी ढाल और तेरा बहुत बड़ा अज़र हूँ।” ² इब्रहाम ने कहा, “ऐ खुदावन्द खुदा, तू मुझे क्या देगा? क्योंकि मैं तो बेऔलाद जाता हूँ, और मेरे घर का मुख्तार दमिश्की इली'एलियाज़र है।” ³ फिर इब्रहाम ने कहा, “देख, तूने मुझे कोई औलाद नहीं दी और देख मेरा खानाज़ाद मेरा वारिस होगा।” ⁴ तब खुदावन्द का कलाम उस पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया, “यह तेरा वारिस न होगा, बल्कि वह जो तेरे सुल्ब से पैदा होगा वही तेरा वारिस होगा।” ⁵ और वह उसको बाहर ले गया और कहा, कि अब आसमान कि तरफ़ निगाह कर और अगर तू सितारों को गिन सकता है तो गिन। और उससे कहा कि तेरी औलाद ऐसी ही होगी। ⁶ और वह खुदावन्द पर ईमान लाया और इसे उसने उसके हक़ में रास्तबाज़ी शुमार किया। * ⁷ और उसने उससे कहा कि मैं खुदावन्द हूँ जो तुझे कसदियों के ऊर से निकाल लाया, कि तुझ को यह मुल्क मीरास में दूँ। ⁸ और उसने कहा, “ऐ खुदावन्द खुदा! मैं क्यों कर जानूँ कि मैं उसका वारिस हूँगा?” ⁹ उसने उस से कहा कि मेरे लिए तीन साल की एक बछिया, और तीन साल की एक बकरी, और तीन साल का एक मेंढा, और एक कुमरी, और एक कबूतर का बच्चा ले। ¹⁰ उसने उन सभी को लिया और उनके बीच से दो टुकड़े किया, और हर टुकड़े को उसके साथ के दूसरे टुकड़े के सामने रखवा, मगर परिन्दों के टुकड़े न किए। ¹¹ तब शिकारी परिन्दे उन टुकड़ों पर झपटने लगे पर इब्रहाम उनकी हँकता रहा। ¹² सूरज डूबते वक़्त इब्रहाम पर गहरी नींद ग़ालिब हुई और देखो, एक बड़ा ख़तरनाक अँधेरा उस पर छा गया। ¹³ और उसने इब्रहाम से कहा, यक़ीन जान कि तेरी नसल के लोग ऐसे मुल्क में जो उनका नहीं परदेसी होंगे और वहाँ के लोगों की गुलामी करेंगे और वह चार सौ साल तक उनको दुख देंगे। ¹⁴ लेकिन मैं उस कौम की 'अदालत करूँगा जिसकी वह गुलामी करेंगे, और बाद में वह बड़ी दौलत लेकर वहाँ से निकल आएँगे। ¹⁵ और तू सही सलामत अपने बाप — दादा से जा मिलेगा और बहुत ही बुढ़ापे में दफ़न होगा। ¹⁶ और

वह चौथी पुश्त में यहाँ लौट आएँगे, क्योंकि अमोरियों के गुनाह अब तक पूरे नहीं हुए। ¹⁷ और जब सूरज डूबा और अन्धेरा छा गया, तो एक तनूर जिसमें से धुआ उठता था दिखाई दिया, और एक जलती मश'अल उन टुकड़ों के बीच में से होकर गुज़री। ¹⁸ उसी रोज़ खुदावन्द ने इब्रहाम से 'अहद किया और फ़रमाया, यह मुल्क दरिया — ए — †मिस्र से लेकर उस बड़े दरिया या'नी दरियाए — फ़रात तक, ¹⁹ कैनियों और कनीज़ियों और क़दमूनियों, ²⁰ और हित्तियों और फ़रिज़ियों और रिफ़ाईम, ²¹ और अमोरियों और कना'नियों और जिरज़ासियों और यबूसियों समेत मैंने तेरी औलाद को दिया है।

16

222222 22 22 22222222

¹ और इब्रहाम की बीवी सारय के कोई औलाद न हुई। उसकी एक मिस्री लौंडी थी जिसका नाम हाजिरा था। ² और सारय ने इब्रहाम से कहा कि देख, खुदावन्द ने मुझे तो औलाद से महरूम रखवा है, इसलिए तू मेरी लौंडी के पास जा शायद उससे मेरा घर आबाद हो। और इब्रहाम ने सारय की बात मानी। ³ और इब्रहाम को मुल्क — ए — कना'न में रहते दस साल हो गए थे जब उसकी बीवी सारय ने अपनी मिस्री लौंडी उसे दी कि उसकी बीवी बने। ⁴ और वह हाजिरा के पास गया और वह हामिला हुई। और जब उसे मा'लूम हुआ कि वह हामिला हो गई तो अपनी बीवी को हक़ीर जानने लगी। ⁵ तब सारय ने इब्रहाम से कहा, जो जुल्म मुझ पर हुआ वह तेरी गर्दन पर है। मैंने अपनी लौंडी तेरे आगोश में दी और अब जो उसने आपको हामिला देखा तो मैं उसकी नज़रों में हक़ीर हो गई; इसलिए खुदावन्द मेरे और तेरे बीच इन्साफ़ करे। ⁶ इब्रहाम ने सारय से कहा कि तेरी लौंडी तेरे हाथ में है; जो तुझे भला दिखाई दे वैसा ही उसके साथ कर। तब सारय उस पर सख्ती करने लगी और वह उसके पास से भाग गई। ⁷ और वह खुदावन्द के फ़रिश्ता को वीराने में पानी के एक चश्मे के पास मिली। यह वही चश्मा है जो शोर की राह पर है। ⁸ और उसने कहा, “ऐ सारय की लौंडी हाजिरा, तू कहाँ से आई और किधर जाती है?” उसने कहा कि मैं अपनी बीवी सारय के पास से भाग आई हूँ। ⁹ खुदावन्द के फ़रिश्ता ने उससे कहा कि तू अपनी बीवी के पास लौट जा और अपने को उसके कब्ज़े में कर दे ¹⁰ और खुदावन्द के फ़रिश्ता ने उससे कहा, कि मैं तेरी औलाद को बहुत बढ़ाऊँगा यहाँ

* 15:6 15:6 1: देखें गलतियों 3:6, रोमियों 4:3, या'कूब 2:23 † 15:18 15:18 मिस्र की सरहद तक

तक कि कसरत की वजह से उसका शुमार न हो सकेगा।
 11 और खुदावन्द के फ़रिश्ता ने उससे कहा कि तू हामिला है और तेरा बेटा होगा, उसका नाम इस्मा'ईल रखना इसलिए कि खुदावन्द ने तेरा दुख सुन लिया। 12 वह गोरखर की तरह आज़ाद मर्द होगा, उसका हाथ सबके खिलाफ़ और सबके हाथ उसके खिलाफ़ होंगे और वह अपने सब भाइयों के सामने बसा रहेगा। 13 और हाजिरा ने खुदावन्द का जिसने उससे बातें कीं, † अताएल — रोई नाम रखवा या'नी ऐ खुदा तू बसीर है; क्योंकि उसने कहा, क्या मैंने यहाँ भी अपने देखने वाले को जाते हुए देखा?' 14 इसी वजह से उस कुएँ का नाम बैरलही † रोई पड़ गया; वह कादिस और बरिद के बीच है। 15 और इब्रहाम से हाजिरा के एक बेटा हुआ, और इब्रहाम ने अपने उस बेटे का नाम जो हाजिरा से पैदा हुआ इस्मा'ईल रखवा। 16 और जब इब्रहाम से हाजिरा के इस्मा'ईल पैदा हुआ तब इब्रहाम छियासी साल का था।

17

17:1-17:15

1 जब इब्रहाम निनानवे साल का हुआ तब खुदावन्द इब्रहाम को नज़र आया और उससे कहा कि मैं खुदा — ए — कादिर हूँ; तू मेरे सामने में चल और कामिल हो। 2 और मैं अपने और तेरे बीच 'अहद बाँधूंगा और तुझे बहुत ज्यादा बढ़ाऊँगा। 3 तब इब्रहाम सिज्दे में हो गया और खुदा ने उससे हम — कलाम होकर फ़रमाया। 4 कि देख मेरा 'अहद तेरे साथ है और तू बहुत क्रौमों का बाप होगा। 5 और तेरा नाम फिर* इब्रहाम नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा नाम† अब्रहाम होगा, क्योंकि मैंने तुझे बहुत क्रौमों का‡ बाप ठहरा दिया है। 6 और मैं तुझे बहुत कामयाब करूँगा और क्रौमों तेरी नसल से होंगी और बादशाह तेरी औलाद में से निकलेंगे। 7 और मैं अपने और तेरे बीच, और तेरे बाद तेरी नसल के बीच उनकी सब नसलो के लिए अपना 'अहद जो अबदी 'अहद होगा, बाँधूंगा ताकि मैं तेरा और तेरे बाद तेरी नसल का खुदा रहूँ। 8 और मैं तुझ को और तेरे बाद तेरी नसल को, कनान का तमाम मुल्क जिसमें तू परदेसी है ऐसा दूँगा, कि वह हमेशा की मिल्कियत हो जाए; और मैं उनका खुदा हूँगा।

17:16-17:23

9 फिर खुदा ने अब्रहाम से कहा कि तू मेरे 'अहद को मानना और तेरे बाद तेरी नसल पुश्त दर पुश्त उसे माने। 10 और मेरा 'अहद जो मेरे और तेरे बीच और तेरे बाद तेरी नसल के बीच है, और जिसे तुम मानोगे वह यह है: कि तुम में से हर एक फ़र्जन्द — ए — नरीना का खतना किया जाए। 11 और तुम अपने बदन की खलड़ी का खतना किया करना, और यह उस 'अहद का निशान होगा जो मेरे और तुम्हारे बीच है। 12 तुम्हारे यहाँ नसल — दर — नसल हर लड़के का खतना, जब वह आठ रोज़ का हो, किया जाए; चाहे वह घर में पैदा हो चाहे उसे किसी परदेसी से खरीदा हो जो तेरी नसल से नहीं। 13 लाज़िम है कि तेरे खानाज़ाद और तेरे गुलाम का खतना किया जाए, और मेरा 'अहद तुम्हारे जिस्म में अबदी 'अहद होगा। 14 और वह फ़र्जन्द — ए — नरीना जिसका खतना न हुआ हो, अपने लोगों में से § काट डाला जाए क्योंकि उसने मेरा 'अहद तोड़ा।

17:24-17:27

15 और खुदा ने अब्रहाम से कहा, कि* सारय जो तेरी बीवी है इसलिए उसको सारय न पुकारना, उसका नाम † सारा होगा। 16 और मैं उसे बरकत दूँगा और उससे भी तुझे एक बेटा बख्शूँगा; यक्रीनन मैं उसे बरकत दूँगा कि क्रौमों उसकी नसल से होंगी और 'आलम के बादशाह उससे पैदा होंगे। 17 तब अब्रहाम सिज्दे में हुआ और हँस कर दिल में कहने लगा कि क्या सौ साल के बूढ़े से कोई बच्चा होगा, और क्या सारा के जो नव्वे साल की है औलाद होगी? 18 और अब्रहाम ने खुदा से कहा कि काश इस्मा'ईल ही तेरे सामने ज़िन्दा रहे, 19 तब खुदा ने फ़रमाया, कि बेशक तेरी बीवी सारा के तुझ से बेटा होगा, तू उसका नाम इस्हाक़ रखना; और मैं उससे और फिर उसकी औलाद से अपना 'अहद जो अबदी 'अहद है बाँधूँगा। 20 और इस्मा'ईल के हक़ में भी मैंने तेरी दुआ सुनी; देख मैं उसे बरकत दूँगा और उसे कामयाब करूँगा और उसे बहुत बढ़ाऊँगा; और उससे बारह सरदार पैदा होंगे और मैं उसे बड़ी क्रौम बनाऊँगा। 21 लेकिन मैं अपना 'अहद इस्हाक़ से बाँधूँगा जो अगले साल इसी वक़्त — ए — मुक़र्रर पर सारा से पैदा होगा। 22 और जब खुदा अब्रहाम से बातें कर चुका तो उसके पास से ऊपर चला गया। 23 तब अब्रहाम ने अपने बेटे इस्मा'ईल की और सब खानाज़ादों और अपने सब गुलामों को या'नी अपने घर के सब आदमियों

* 16:11 16:11 इस के मायने हैं, खुदा ने सुना है † 16:13 16:13 खुदा जो मुझ को देखता है ‡ 16:14 16:14 ज़िंदा खुदा का कुआँ जो मुझ को देखता है * 17:5 17:5 बड़ा बुज़ुर्ग बाप † 17:5 17:5 यह देखे कि पूरी बाइबिल में अब्रहाम करके ही आया है ‡ 17:5 17:5 कई लोगों की जमाअतों का बाप § 17:14 17:14 वो आगे चल कर मेरे लोगों में से एक नहीं कहलायेगा, या निकल दिया जाएगा * 17:15 17:15 मेरी मलिका † 17:15 17:15 मलिका

को लिया और उसी दिन खुदा के हुक्म के मुताबिक उन का खतना किया। ²⁴ अब्रहाम निनानवे साल का था जब उसका खतना हुआ। ²⁵ और जब उसके बेटे इस्मा'ईल का खतना हुआ तो वह तेरह साल का था। ²⁶ अब्रहाम और उसके बेटे इस्मा'ईल का खतना एक ही दिन हुआ। ²⁷ और उसके घर के सब आदमियों का खतना, खानाज़ादों और उनका भी जो परदेसियों से खरीदे गए थे, उसके साथ हुआ।

18

????? ?? ?? ???? ?? ???? ?

¹ फिर खुदावन्द ममेरे के बलूतों में उसे नज़र आया और वह दिन को गर्मी के वक़्त अपने खेमे के दरवाज़े पर बैठा था। ² और उसने अपनी आँखें उठा कर नज़र की और क्या देखता है कि तीन मर्द उसके सामने खड़े हैं। वह उनको देख कर खेमे के दरवाज़े से उनसे मिलने को दौड़ा और ज़मीन तक झुका। ³ और कहने लगा कि ऐ मेरे खुदावन्द, अगर मुझ पर आपने करम की नज़र की है तो अपने खादिम के पास से चले न जाएँ। ⁴ बल्कि थोड़ा सा पानी लाया जाए, और आप अपने पाँव धो कर उस दरख्त के नीचे आराम करें। ⁵ मैं कुछ रोटी लाता हूँ, आप ताज़ा — दम हो जाएँ; तब आगे बढ़ें क्योंकि आप इसी लिए अपने खादिम के यहाँ आए हैं उन्होंने कहा, जैसा तूने कहा है, वैसा ही कर। ⁶ और अब्रहाम डेरे में सारा के पास दौड़ा गया और कहा, कि तीन *पैमाना बारीक आटा जल्द ले और उसे गूंध कर फुल्के बना। ⁷ और अब्रहाम गल्ले की तरफ़ दौड़ा और एक मोटा ताज़ा बछड़ा लाकर एक जवान को दिया, और उस ने जल्दी — जल्दी उसे तैयार किया। ⁸ फिर उसने मक्खन और दूध और उस बछड़े को जो उस ने पकवाया था, लेकर उनके सामने रखवा; और खुद उनके पास दरख्त के नीचे खड़ा रहा और उन्होंने खाया। ⁹ फिर उन्होंने उससे पूछा कि तेरी बीवी सारा कहाँ है? उसने कहा, वह डेरे में है। ¹⁰ तब† उसने कहा, “मैं फिर मौसम — ए — बहार में तेरे पास आऊँगा, और देख तेरी बीवी सारा के बेटा होगा।” उसके पीछे डेरे का दरवाज़ा था, सारा वहाँ से सुन रही थी। ¹¹ और अब्रहाम और सारा ज़ईफ़ और बड़ी उमर के थे, और सारा की वह हालत नहीं रही थी जो 'औरतों की होती है। ¹² तब सारा ने अपने दिल में हँस कर कहा, खुदावन्द “क्या इस क़दर उम्र — दराज़ होने पर भी मेरे लिए खुशी हो सकती है, जबकि मेरा शौहर भी बूढ़ा है?” ¹³ फिर खुदावन्द ने अब्रहाम से कहा कि सारा क्यों यह कह कर हँसी की क्या मेरे जो ऐसी बुढ़िया हो गई

हूँ वाक़ई बेटा होगा? ¹⁴ क्या खुदावन्द के नज़दीक कोई बात मुश्किल है? मौसम — ए — बहार में मुक़रर वक़्त पर मैं तेरे पास फिर आऊँगा और सारा के बेटा होगा। ¹⁵ तब सारा इन्कार कर गई, कि मैं नहीं हँसी। क्योंकि वह डरती थी, लेकिन उसने कहा, “नहीं, तू ज़रूर हँसी थी।”

????????? ?? ???? ?? ???? ???? ???? ?

¹⁶ तब वह मर्द वहाँ से उठे और उन्होंने सदूम का रुख किया, और अब्रहाम उनको रुखसत करने को उनके साथ हो लिया। ¹⁷ और खुदावन्द ने कहा कि जो कुछ मैं करने को हूँ, क्या उसे अब्रहाम से छिपाए रखूँ ¹⁸ अब्रहाम से तो यकीनन एक बड़ी और ज़बरदस्त क्रौम पैदा होगी, और ज़मीन की सब क्रौमों उसके वसीले से बरकत पाएँगी। ¹⁹ क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह अपने बेटों और घराने को जो उसके पीछे रह जाएँगे, वसीयत करेगा कि वह खुदावन्द की राह में क़ाईम रह कर 'अदल और इन्साफ़ करें; ताकि जो कुछ खुदावन्द ने अब्रहाम के हक़ में फ़रमाया है उसे पूरा करे। ²⁰ फिर खुदावन्द ने फ़रमाया, “चूँकि सदूम और 'अमूरा का गुनाह बढ़ गया और उनका जुर्म निहायत संगीन हो गया है। ²¹ इसलिए मैं अब जाकर देखूँगा कि क्या उन्होंने सरासर वैसा ही किया है जैसा गुनाह मेरे कान तक पहुँचा है, और अगर नहीं किया तो मैं मा'लूम कर लूँगा।” ²² इसलिए वह मर्द वहाँ से मुड़े और सदूम की तरफ़ चले, लेकिन अब्रहाम खुदावन्द के सामने खड़ा ही रहा। ²³ तब अब्रहाम ने नज़दीक जा कर कहा, क्या तू नेक को बद के साथ हलाक करेगा? ²⁴ शायद उस शहर में पचास रास्तबाज़ हों; “क्या तू उसे हलाक करेगा और उन पचास रास्तबाज़ों की खातिर जो उसमें हों उस मक़ाम को न छोड़ेगा? ²⁵ ऐसा करना तुझ से दूर है कि नेक को बद के साथ मार डाले और नेक बद के बराबर हो जाएँ। ये तुझ से दूर है। क्या तमाम दुनिया का इन्साफ़ करने वाला इन्साफ़ न करेगा?” ²⁶ और खुदावन्द ने फ़रमाया, कि अगर मुझे सदूम में शहर के अन्दर पचास रास्तबाज़ मिलें, तो मैं उनकी खातिर उस मक़ाम को छोड़ दूँगा। ²⁷ तब अब्रहाम ने जवाब दिया और कहा, कि देखिए! मैंने खुदावन्द से बात करने की हिम्मत की, अगरचे मैं मिट्टी और राख हूँ। ²⁸ शायद पचास रास्तबाज़ों में पाँच कम हों; क्या उन पाँच की कमी की वजह से तू तमाम शहर को बर्बाद करेगा? उस ने कहा अगर मुझे वहाँ पैतालीस मिलें तो मैं उसे बर्बाद नहीं करूँगा। ²⁹ फिर उसने उससे कहा कि शायद वहाँ चालीस मिलें। तब उसने कहा कि

* 18:6 18:6 किलोग्राम के लगभग † 18:10 18:10 उन में से एक, यहे

मैं उन चालीस की खातिर भी यह नहीं करूँगा।³⁰ फिर उसने कहा, “खुदावन्द नाराज़ न हो तो मैं कुछ और 'अर्ज' करूँ। शायद वहाँ तीस मिलें।” उसने कहा, “अगर मुझे वहाँ तीस भी मिलें तो भी ऐसा नहीं करूँगा।”³¹ फिर उसने कहा, “देखिए! मैंने खुदावन्द से बात करने की हिम्मत की; शायद वहाँ बीस मिलें।” उसने कहा, “मैं बीस के लिए भी उसे बर्बाद नहीं करूँगा।”³² तब उसने कहा, “खुदावन्द नाराज़ न हो तो मैं एक बार और कुछ 'अर्ज' करूँ; शायद वहाँ दस मिलें।” उसने कहा, “मैं दस के लिए भी उसे बर्बाद नहीं करूँगा।”³³ जब खुदावन्द अब्रहाम से बातें कर चुका तो चला गया और अब्रहाम अपने मकान को लौटा।

19

२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२२२ २२२२

1 और वह दोनों फ़रिश्ता शाम को सद्म में आए और लूत सद्म के फाटक पर बैठा था। और लूत उनको देख कर उनके इस्तक्रबाल के लिए उठा और ज़मीन तक झुका, 2 और कहा, “ऐ मेरे खुदावन्द, अपने खादिम के घर तशरीफ़ ले चलिए और रात भर आराम कीजिए और अपने पाँव धोइये और सुबह उठ कर अपनी राह लीजिए।” और उन्होंने कहा, “नहीं, हम चौक ही में रात काट लेंगे।” 3 लेकिन जब वह बहुत बजिद हुआ तो वह उसके साथ चल कर उसके घर में आए; और उसने उनके लिए खाना तैयार की और बेखमीरी रोटी पकाई; और उन्होंने खाया। 4 और इससे पहले कि वह आराम करने के लिए लेटें सद्म शहर के आदमियों ने, जवान से लेकर बूढ़े तक सब लोगों ने, हर तरफ़ से उस घर को घेर लिया। 5 और उन्होंने लूत को पुकार कर उससे कहा कि वह आदमी जो आज रात तेरे यहाँ आए, कहाँ हैं? उनको हमारे पास बाहर ले आ ताकि हम उनसे सोहबत करें। 6 तब लूत निकल कर उनके पास दरवाज़ा पर गया और अपने पीछे किवाड़ बन्द कर दिया। 7 और कहा कि ऐ भाइयो! ऐसी बदी तो न करो। 8 देखो! मेरी दो बेटियाँ हैं जो आदमी से वाकिफ़ नहीं; मर्जी हो तो मैं उनको तुम्हारे पास ले आऊँ और जो तुम को भला मा'लूम हो उनसे करो, मगर इन आदमियों से कुछ न कहना क्योंकि वह इसलिए मेरी पनाह में आए हैं। 9 उन्होंने कहा, यहाँ से हट जा! “फिर कहने लगे, कि यह शख्स हमारे बीच क़याम करने आया था और अब हुकूमत जताता है; इसलिए हम तेरे साथ उनसे ज़्यादा बद सलूकी करेंगे।” तब वह उस आदमी या'नी लूत पर पिल पड़े और नज़दीक आए ताकि किवाड़ तोड़ डालें।

10 लेकिन उन आदमियों ने अपना हाथ बढ़ा कर लूत को अपने पास घर में खींच लिया और दरवाज़ा बन्द कर दिया। 11 और उन आदमियों को जो घर के दरवाज़े पर थे क्या छोटे क्या बड़े, अंधा कर दिया; तब वह दरवाज़ा ढूँडते — ढूँडते थक गए। 12 तब उन आदमियों ने लूत से कहा, क्या यहाँ तेरा और कोई है? दामाद और अपने बेटों और बेटियों और जो कोई तेरा इस शहर में हो, सबको इस मक़ाम से बाहर निकाल ले जा। 13 क्योंकि हम इस मक़ाम को बर्बाद करेंगे, इसलिए कि उनका गुनाह खुदावन्द के सामने बहुत बुलन्द हुआ है और खुदावन्द ने उसे बर्बाद करने को हमें भेजा है। 14 तब लूत ने बाहर जाकर अपने दामादों से जिन्होंने उसकी बेटियाँ ब्याही थीं बातें कीं और कहा कि उठो और इस मक़ाम से निकलो क्योंकि खुदावन्द इस शहर को बर्बाद करेगा। लेकिन वह अपने दामादों की नज़र में मज़ाक़ सा मा'लूम हुआ। 15 जब सुबह हुई तो फ़रिश्तों ने लूत से जल्दी कराई और कहा कि उठ अपनी बीवी और अपनी दोनों बेटियों को जो यहाँ हैं ले जा; ऐसा न हो कि तू भी इस शहर की बदी में गिरफ़्तार होकर हलाक हो जाए। 16 मगर उसने देर लगाई तो उन आदमियों ने उसका और उसकी बीवी और उसकी दोनों बेटियों का हाथ पकड़ा, क्योंकि खुदावन्द की मेहरबानी उस पर हुई और उसे निकाल कर शहर से बाहर कर दिया। 17 और यूँ हुआ कि जब वह उनको बाहर निकाल लाए तो उसने कहा, “अपनी जान बचाने की भाग; न तो पीछे मुड़ कर देखना न कहीं मैदान में ठहरना; उस पहाड़ को चला जा, ऐसा न हो कि तू हलाक हो जाए।” 18 और लूत ने उनसे कहा कि ऐ मेरे खुदावन्द, ऐसा न कर। 19 देख, तूने अपने खादिम पर करम की नज़र की है और ऐसा बड़ा फ़ज़ल किया कि मेरी जान बचाई; मैं पहाड़ तक जा नहीं सकता, कहीं ऐसा न हो कि मुझ पर मुसीबत आ पड़े और मैं मर जाऊँ। 20 देख, यह शहर ऐसा नज़दीक है कि वहाँ भाग सकता हूँ और यह छोटा भी है। इजाज़त हो तो मैं वहाँ चला जाऊँ, वह छोटा सा भी है और मेरी जान बच जाएगी। 21 उसने उससे कहा कि देख, मैं इस बात में भी तेरा लिहाज़ करता हूँ कि इस शहर को जिसका तू ने ज़िक्र किया, बर्बाद नहीं करूँगा। 22 जल्दी कर और वहाँ चला जा, क्योंकि मैं कुछ नहीं कर सकता जब तक कि तू वहाँ पहुँच न जाए। इसीलिए उस शहर का नाम *ज़ुगर कहलाया। 23 और ज़मीन पर धूप निकल चुकी थी, जब लूत ज़ुगर में दाखिल हुआ। 24 तब खुदावन्द ने अपनी तरफ़ से सद्म और 'अमूरा पर गन्धक और

* 19:22 19:22 छोटा

आग आसमान से बरसाई, ²⁵ और उसने उन शहरों को और उस सारी तराई को और उन शहरों के सब रहने वालों को और सब कुछ जो ज़मीन से उगा था बर्बाद किया। ²⁶ मगर उसकी बीवी ने उसके पीछे से मुड़ कर देखा और वह नमक का सुतून बन गई। ²⁷ और अब्रहाम सुबह सवेरे उठ कर उस जगह गया जहाँ वह खुदावन्द के सामने खड़ा हुआ था; ²⁸ और उसने सद्म और 'अमूरा और उस तराई की सारी ज़मीन की तरफ़ नज़र की, और क्या देखता है कि ज़मीन पर से धुवां ऐसा उठ रहा है जैसे भट्टी का धुवां। ²⁹ और यूँ हुआ कि जब खुदा ने उस तराई के शहरों को बर्बाद किया, तो खुदा ने अब्रहाम को याद किया और उन शहरों की जहाँ लूत रहता था, बर्बाद करते वक़्त लूत को उस बला से बचाया।

॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥

³⁰ और लूत जुगरसे निकल कर पहाड़ पर जा बसा और उसकी दोनों बेटियाँ उसके साथ थीं; क्योंकि उसे जुगर में बसते डर लगा, और वह और उसकी दोनों बेटियाँ एक ग़ार में रहने लगे। ³¹ तब पहलौठी ने छोटी से कहा, कि हमारा बाप बूढ़ा है और ज़मीन पर कोई आदमी नहीं जो दुनिया के दस्तूर के मुताबिक़ हमारे पास आए। ³² आओ, हम अपने बाप को मय पिलाएँ और उससे हम — आगोश हों, ताकि अपने बाप से नसल बाक़ी रखें। ³³ इसलिए उन्होंने उसी रात अपने बाप को मय पिलाई और पहलौठी अन्दर गई और अपने बाप से हम — आगोश हुई, लेकिन उसने न जाना कि वह कब लेटी और कब उठ गई। ³⁴ और दूसरे दिन यूँ हुआ कि पहलौठी ने छोटी से कहा कि देख, कल रात को मैं अपने बाप से हम — आगोश हुई, आओ, आज रात भी उसको मय पिलाएँ और तू भी जा कर उससे हम आगोश हो, ताकि हम अपने बाप से नसल बाक़ी रखें। ³⁵ फिर उस रात भी उन्होंने अपने बाप को मय पिलाई और छोटी गई और उससे हम — आगोश हुई, लेकिन उसने न जाना कि वह कब लेटी और कब उठ गई। ³⁶ फिर लूत की दोनों बेटियाँ अपने बाप से हामिला हुई। ³⁷ और बड़ी के एक बेटा हुआ और उसने उसका नाम मोआब रखवा; वही मोआबियों का बाप है जो अब तक मौजूद हैं। ³⁸ और छोटी के भी एक बेटा हुआ और उसने उसका नाम बिन — 'अम्मी रखवा: वही बनी — 'अम्मोन का बाप है जो अब तक मौजूद हैं।

20

॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥

¹ और अब्रहाम वहाँ से दख्खन के मुल्क की तरफ़ चला और कादिस और शोर के बीच ठहरा और जिरार में कयाम किया। ² और अब्रहाम ने अपनी बीवी सारा के हक़ में कहा, कि वह मेरी बहन है, और जिरार के बादशाह अबीमलिक ने सारा को बुलवा लिया। ³ लेकिन रात को खुदा अबीमलिक के पास ख़्वाब में आया और उसे कहा कि देख, तू उस 'औरत की वजह से जिसे तूने लिया है हलाक़ होगा क्योंकि वह शौहर वाली है। ⁴ लेकिन अबीमलिक ने उससे सोहबत नहीं की थी; तब उसने कहा, ऐ खुदावन्द, क्या तू सादिक़ क्रौम को भी मारेगा? ⁵ क्या उसने खुद मुझ से नहीं कहा, कि यह मेरी बहन है? और वह खुद भी यही कहती थी, कि वह मेरा भाई है; मैंने तो अपने सच्चे दिल और पाकीज़ा हाथों से यह किया। ⁶ और खुदा ने उसे ख़्वाब में कहा, "हाँ, मैं जानता हूँ कि तूने अपने सच्चे दिल से यह किया, और मैंने भी तुझे रोका कि तू मेरा गुनाह न करे; इसी लिए मैंने तुझे उसको छूने न दिया। ⁷ अब तू उस आदमी की बीवी को वापस कर दे; क्योंकि वह नबी है और वह तेरे लिए दुआ करेगा और तू ज़िन्दा रहेगा। लेकिन अगर तू उसे वापस न करे तो जान ले कि तू भी और जितने तेरे हैं सब ज़रूर हलाक़ होंगे।" ⁸ तब अबीमलिक ने सुबह सवेरे उठ कर अपने सब नौकरों को बुलाया और उनको ये सब बातें कह सुनाई, तब वह लोग बहुत डर गए। ⁹ और अबीमलिक ने अब्रहाम को बुला कर उससे कहा, कि तूने हम से यह क्या किया? और मुझ से तेरा क्या कुसूर हुआ कि तू मुझ पर और मेरी बादशाही पर एक गुनाह — ए — अज़ीम लाया? तूने मुझ से वह काम किए जिनका करना मुनासिब न था। ¹⁰ अबीमलिक ने अब्रहाम से यह भी कहा कि तूने क्या समझ कर ये बात की? ¹¹ अब्रहाम ने कहा, कि मेरा ख़्याल था कि खुदा का ख़ौफ़ तो इस जगह हरगिज़ न होगा, और वह मुझे मेरी बीवी की वजह से मार डालेंगे। ¹² और फ़िल — हकीक़त वह मेरी बहन भी है, क्योंकि वह मेरे बाप की बेटि है अगरचे मेरी माँ की बेटि नहीं; फिर वह मेरी बीवी हुई। ¹³ और जब खुदा ने मेरे बाप के घर से मुझे आवारा किया तो मैंने इससे कहा कि मुझ पर यह तेरी मेहरबानी होगी कि जहाँ कहीं हम जाएँ तू मेरे हक़ में यही कहना कि यह मेरा भाई है। ¹⁴ तब अबीमलिक ने भेड़ बकरियाँ और गायें बैल और गुलाम और लौंडियाँ अब्रहाम को दीं, और उसकी बीवी सारा को भी उसे वापस कर दिया। ¹⁵ और अबीमलिक ने कहा कि देख, मेरा मुल्क तेरे सामने है, जहाँ जी चाहे रह। ¹⁶ और उसने सारा से कहा कि देख, मैंने तेरे भाई को चाँदी के हज़ार सिक्के दिए हैं, वह उन सब के सामने

जो तेरे साथ हैं तेरे लिए आँख का पर्दा है, और सब के सामने तेरी बड़ाई हो गी। ¹⁷ तब अब्रहाम ने खुदा से दुआ की, और खुदा ने अबीमलिक और उसकी बीवी और उसकी — लौंडियों की शिफा बरूषी और उनके औलाद होने लगी। ¹⁸ क्योंकि खुदावन्द ने अब्रहाम की बीवी सारा की वजह से अबीमलिक के खान्दान के सब रहम बन्द कर दिए थे।

21

?????? ?? ???????

¹ और खुदावन्द ने जैसा उसने फ़रमाया था, सारा पर नज़र की और उसने अपने वादे के मुताबिक़ सारा से किया। ² तब सारा हामिला हुई और अब्रहाम के लिए उसके बुढ़ापे में उसी मुक़रर वक़्त पर जिसका ज़िक़र खुदा ने उससे किया था, उसके बेटा हुआ। ³ और अब्रहाम ने अपने बेटे का नाम जो उससे, सारा के पैदा हुआ इस्हाक़ रखवा। ⁴ और अब्रहाम ने खुदा के हुक्म के मुताबिक़ अपने बेटे इस्हाक़ का ख़तना, उस वक़्त किया जब वह आठ दिन का हुआ। ⁵ और जब उसका बेटा इस्हाक़ उससे पैदा हुआ तो अब्रहाम सौ साल का था। ⁶ और सारा ने कहा, कि खुदा ने मुझे *हँसाया और सब सुनने वाले मेरे साथ हँसेंगे। ⁷ और यह भी कहा कि भला कोई अब्रहाम से कह सकता था कि सारा लड़कों को दूध पिलाएगी? क्योंकि उससे उसके बुढ़ापे में मेरे एक बेटा हुआ।

?????? ?? ??'?????? ?? ??? ???????

⁸ और वह लड़का बढ़ा और उसका दूध छुड़ाया गया और इस्हाक़ के दूध छुड़ाने के दिन अब्रहाम ने बड़ी दावत की। ⁹ और सारा ने देखा कि हाजिरा मिस्री का बेटा जो उसके अब्रहाम से हुआ था, टट्टे मारता है। ¹⁰ तब उसने अब्रहाम से कहा कि इस लौंडी को और उसके बेटे को निकाल दे, क्योंकि इस लौंडी का बेटा मेरे बेटे इस्हाक़ के साथ वारिस न होगा। ¹¹ लेकिन अब्रहाम को उसके बेटे के ज़रिए यह बात निहायत बुरी मा'लूम हुई। ¹² और खुदा ने अब्रहाम से कहा कि तुझे इस लड़के और अपनी लौंडी की वजह से बुरा न लगे; जो कुछ सारा तुझ से कहती है तू उसकी बात मान क्योंकि इस्हाक़ से तेरी नसल का नाम चलेगा। ¹³ और इस लौंडी के बेटे से भी मैं एक क्रौम पैदा करूँगा, इसलिए कि वह तेरी नसल है। ¹⁴ तब अब्रहाम ने सुबह सवेरे उठ कर रोटी और पानी की एक मश्क़ ली और उसे हाजिरा को दिया, बल्कि उसे उसके कन्धे पर रख दिया और लड़के को

भी उसके हवाले करके उसे रुख़सत कर दिया। इसलिए वह चली गई और बैरसबा' के वीराने में आवारा फिरने लगी। ¹⁵ और जब मश्क़ का पानी ख़त्म हो गया तो उसने लड़के को एक झाड़ी के नीचे डाल दिया। ¹⁶ और खुद उसके सामने एक टप्पे के किनारे पर दूर जा कर बैठी और कहने लगी कि मैं इस लड़के का मरना तो न देखूँ। इसलिए वह उसके सामने बैठ गई और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। ¹⁷ और खुदा ने उस लड़के की आवाज़ सुनी और खुदा के फ़रिश्ता ने आसमान से हाजिरा को पुकारा और उससे कहा, “ऐ हाजिरा, तुझ को क्या हुआ? मत डर, क्योंकि खुदा ने उस जगह से जहाँ लड़का पड़ा है उसकी आवाज़ सुन ली है। ¹⁸ उठ, और लड़के को उठा और उसे अपने हाथ से संभाल; क्योंकि मैं उसको एक बड़ी क्रौम बनाऊँगा।” ¹⁹ फिर खुदा ने उसकी आँखें खोलीं और उसने पानी का एक कुआँ देखा, और जाकर मश्क़ को पानी से भर लिया और लड़के को पिलाया। ²⁰ और खुदा उस लड़के के साथ था और वह बढ़ा हुआ और वीराने में रहने लगा और तीरंदाज़ बना। ²¹ और वह फ़ारान के वीराने में रहता था, और उसकी माँ ने मुल्क — ए — मिस्र से उसके लिए बीवी ली।

?????????? ?? ??? ??????????? ?? ???

²² फिर उस वक़्त यूँ हुआ, कि अबीमलिक और उसके लश्कर के सरदार फ़ीकुल ने अब्रहाम से कहा कि हर काम में जो तू करता है खुदा तेरे साथ है। ²³ इसलिए तू अब मुझ से खुदा की क़सम खा, कि तू न मुझ से न मेरे बेटे से और न मेरे पोते से दगा करेगा; बल्कि जो मेहरबानी मैंने तुझ पर की है वैसे ही तू भी मुझ पर और इस मुल्क पर, जिसमें तूने क़याम किया है, करेगा। ²⁴ तब अब्रहाम ने कहा, “मैं क़सम खाऊँगा।” ²⁵ और अब्रहाम ने पानी के एक कुएँ की वजह से, जिसे अबीमलिक के नौकरों ने ज़बरदस्ती छीन लिया था, अबीमलिक को झिड़का। ²⁶ अबीमलिक ने कहा, “मुझे ख़बर नहीं कि किसने यह काम किया, और तूने भी मुझे नहीं बताया, न मैंने आज से पहले इसके बारे में कुछ सुना।” ²⁷ फिर अब्रहाम ने भेड़ बकरियाँ और गाय — बैल लेकर अबीमलिक को दिए और दोनों ने आपस में 'अहद किया। ²⁸ अब्रहाम ने भेड़ के सात मादा बच्चों को लेकर अलग रखवा। ²⁹ और अबीमलिक ने अब्रहाम से कहा कि भेड़ के इन सात मादा बच्चों को अलग रखने से तेरा मतलब क्या है? ³⁰ उसने कहा, कि भेड़ के इन सात मादा बच्चों को तू मेरे हाथ से ले ताकि वह मेरे

* 21:6 21:6 वह हँसता है, देखें 17:17 — 19 † 21:16 21:16 1: वह सिसकियाँ भरने लगी, लड़का बहुत ज़ियादा रोने लगा ‡ 21:31 21:31 सात में से एक कुआँ, या क़सम का कुआँ

गवाह हों कि मैंने यह कुआँ खोदा। ³¹ इसीलिए उसने उस मक़ाम का नाम 'बैरसबा' रखवा, क्योंकि वहीं उन दोनों ने क़सम खाई। ³² तब उन्होंने 'बैरसबा' में 'अहद' किया, तब अबीमलिक और उसके लश्कर का सरदार फ़ीकुल दोनों उठ खड़े हुए और फ़िलिस्तिनियों के मुल्क को लौट गए। ³³ तब अब्रहाम ने 'बैरसबा' में झाऊ का एक दरख्त लगाया और वहाँ उसने खुदावन्द से जो अबदी खुदा है दुआ की। ³⁴ और अब्रहाम बहुत दिनों तक फ़िलिस्तिनियों के मुल्क में रहा।

22

22:1-14 जो तुम्हें ज़रूरत है उसे यहाँ देगा

¹ इन बातों के बाद यूँ हुआ कि खुदा ने अब्रहाम को आजमाया और उसे कहा, 'ऐ अब्रहाम! "उसने कहा, मैं हाज़िर हूँ।" ² तब उसने कहा कि तू अपने बेटे इस्हाक़ को जो तेरा इकलौता है और जिसे तू प्यार करता है, साथ लेकर मोरियाह के मुल्क में जा और वहाँ उसे पहाड़ों में से एक पहाड़ पर जो मैं तुझे बताऊँगा, सोख़्तनी कुर्बानी के तौर पर चढ़ा। ³ तब अब्रहाम ने सुबह सवेरे उठ कर अपने गधे पर चार जामा कसा और अपने साथ दो जवानों और अपने बेटे इस्हाक़ को लिया, और सोख़्तनी कुर्बानी के लिए लकड़ियाँ चीरी और उठ कर उस जगह को जो खुदा ने उसे बताई थी ख़ाना हुआ। ⁴ तीसरे दिन अब्रहाम ने निगाह की और उस जगह को दूर से देखा। ⁵ तब अब्रहाम ने अपने जवानों से कहा, "तुम यहीं गधे के पास ठहरो, मैं और यह लड़का दोनों ज़रा वहाँ तक जाते हैं, और सिज्दा करके फिर तुम्हारे पास लौट आएँगे।" ⁶ और अब्रहाम ने सोख़्तनी कुर्बानी की लकड़ियाँ लेकर अपने बेटे इस्हाक़ पर रखीं, और आग और छुरी अपने हाथ में ली और दोनों इकट्ठे ख़ाना हुए। ⁷ तब इस्हाक़ ने अपने बाप अब्रहाम से कहा, 'ऐ बाप! "उसने जवाब दिया कि 'ऐ मेरे बेटे, मैं हाज़िर हूँ। उसने कहा, देख, आग और लकड़ियाँ तो हैं, लेकिन सोख़्तनी कुर्बानी के लिए बर्बाद कहाँ है?' ⁸ अब्रहाम ने कहा, "ऐ मेरे बेटे खुदा खुद ही अपने लिए सोख़्तनी कुर्बानी के लिए बर्बाद मुहय्या कर लेगा।" तब वह दोनों आगे चलते गए। ⁹ और उस जगह पहुँचे जो खुदा ने बताई थी; वहाँ अब्रहाम ने कुर्बानि गाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ चुनीं और अपने बेटे इस्हाक़ को बाँधा और उसे कुर्बानिगाह पर लकड़ियों के ऊपर रखवा। ¹⁰ और अब्रहाम ने हाथ बढ़ाकर छुरी ली कि अपने बेटे को ज़बह करे। ¹¹ तब खुदावन्द के फ़रिश्ता ने उसे आसमान

से पुकारा, कि 'ऐ अब्रहाम, ऐ अब्रहाम! उसने कहा, "मैं हाज़िर हूँ।" ¹² फिर उसने कहा कि तू अपना हाथ लड़के पर न चला और न उससे कुछ कर; क्योंकि मैं अब जान गया कि तू खुदा से डरता है, इसलिए कि तूने अपने बेटे को भी जो तेरा इकलौता है मुझ से दरेगा न किया। ¹³ और अब्रहाम ने निगाह की और अपने पीछे एक मेंढा देखा जिसके सींग झाड़ी में अटके थे; तब अब्रहाम ने जाकर उस मेंढे को पकड़ा और अपने बेटे के बदले सोख़्तनी कुर्बानी के तौर पर चढ़ाया। ¹⁴ और अब्रहाम ने उस मक़म का नाम 'यहोवा यरी रखवा। चुनाँचे आज तक यह कहावत है कि खुदावन्द के पहाड़ पर मुहय्या किया जाएगा। ¹⁵ और खुदावन्द के फ़रिश्ते ने आसमान से दोबारा अब्रहाम को पुकारा और कहा कि। ¹⁶ "खुदावन्द फ़रमाता है, चूँकि तूने यह काम किया कि अपने बेटे की भी जो तेरा इकलौता है दरेगा न रखवा; इसलिए मैंने भी अपनी ज़ात की क़सम खाई है कि ¹⁷ मैं तुझे बरकत पर बरकत दूँगा, और तेरी नसल को बढ़ाते — बढ़ाते आसमान के तारों और समुन्दर के किनारे की रेत की तरह कर दूँगा, और तेरी औलाद अपने दुश्मनों के फाटक की मालिक होगी। ¹⁸ और तेरी नसल के वसीले से ज़मीन की सब क़ौमों बरकत पाएँगी, क्योंकि तूने मेरी बात मानी।" ¹⁹ तब अब्रहाम अपने जवानों के पास लौट गया, और वह उठे और इकट्ठे 'बैरसबा' को गए; और अब्रहाम 'बैरसबा' में रहा। ²⁰ इन बातों के बाद यूँ हुआ कि अब्रहाम को यह ख़बर मिली, कि मिल्काह के भी तेरे भाई नहूर से बेटे हुए हैं। ²¹ या'नी ऊज़ जो उसका पहलौठा है, और उसका भाई बूज़ और क़रमूल, अराम का बाप, ²² और कसद और हज़ू और फ़िल्दास और इदलाफ़ और बैतूएल। ²³ और बैतूएल से रिब्का पैदा हुई। यह आठों अब्रहाम के भाई नहूर से मिल्काह के पैदा हुए। ²⁴ और उसकी बाँदी से भी जिसका नाम रूमा था, तिबख़ और जाहम और तख़स और मा'का पैदा हुए।

23

23:1-4 जो तुम्हें ज़रूरत है उसे यहाँ देगा

¹ और सारा की उम्र एक सौ सताईस साल की हुई, सारा की ज़िन्दगी के इतने ही साल थे। ² और सारा ने क़यतअरबा' में वफ़ात पाई। यह कनान में है और हबरून भी कहलाता है। और अब्रहाम सारा के लिए मातम और नौहा करने को वहाँ गया। ³ फिर अब्रहाम मय्यत के पास से उठ कर बनी — हित से बातें करने लगा और कहा कि। ⁴ मैं तुम्हारे बीच परदेसी और ग़रीब

* 22:14 22:14 जो तुम्हें ज़रूरत है उसे यहाँ देगा

— उल — वतन हूँ। तुम अपने यहाँ क़ब्रिस्तान के लिए कोई मिलिकयत मुझे दो, ताकि मैं अपने मुर्दे को आँख के सामने से हटाकर दफ़न कर दूँ। ⁵ तब बनीहित ने अब्रहाम को जवाब दिया कि। ⁶ ऐ *खुदावन्द हमारी सुन: तू हमारे बीच † ज़बरदस्त सरदार है। हमारी कब्रों में जो सबसे अच्छी हो उसमें तू अपने मुर्दे को दफ़न कर; हम में ऐसा कोई नहीं जो तुझ से अपनी क़ब्र का इन्कार करे, ताकि तू अपना मुर्दा दफ़न न कर सके। ⁷ अब्रहाम ने उठ कर और बनी — हित के आगे, जो उस मुल्क के लोग हैं, आदाब बजा लाकर ⁸ उनसे यूँ बातें की, कि अगर तुम्हारी मर्जी हो कि मैं अपने मुर्दे को आँख के सामने से हटाकर दफ़न कर दूँ, तो मेरी 'अर्ज़ सुनो, और सुहर के बेटे इफ़रोन से मेरी सिफ़ारिश करो, ⁹ कि वह मक़फ़ीला के ग़ार को जो उसका है और उसके खेत के किनारे पर है, उसकी पूरी कीमत लेकर मुझे दे दे, ताकि वह क़ब्रिस्तान के लिए तुम्हारे बीच मेरी मिलिकयत हो जाए। ¹⁰ और 'इफ़रोन बनी-हित के बीच बैठा था। तब 'इफ़रोन हिच्ची ने बनी हित के सामने, उन सब लोगों के आमने सामने जो उसके शहर के दरवाज़े से दाख़िल होते थे अब्रहाम को जवाब दिया, ¹¹ “ऐ मेरे खुदावन्द! यूँ न होगा, बल्कि मेरी सुन! मैं यह खेत तुझे देता हूँ, और वह ग़ार भी जो उसमें है तुझे दिए देता हूँ। यह मैं अपनी क़ौम के लोगों के सामने तुझे देता हूँ, तू अपने मुर्दे को दफ़न कर।” ¹² तब अब्रहाम उस मुल्क के लोगों के सामने झुका। ¹³ फिर उसने उस मुल्क के लोगों के सुनते हुए 'इफ़रोन से कहा कि अगर तू देना ही चाहता है तो मेरी सुन, मैं तुझे उस खेत का दाम दूँगा; यह तू मुझ से ले ले, तो मैं अपने मुर्दे को वहाँ दफ़न करूँगा। ¹⁴ इफ़रोन ने अब्रहाम को जवाब दिया, ¹⁵ “ऐ मेरे खुदावन्द, मेरी बात सुन; यह ज़मीन ‡चाँदी की चार सौ मिस्काल की है इसलिए मेरे और तेरे बीच यह है क्या? तब अपना मुर्दा दफ़न कर।” ¹⁶ और अब्रहाम ने 'इफ़रोन की बात मान ली; इसलिए अब्रहाम ने इफ़रोन को उतनी ही चाँदी तौल कर दी, जितनी का ज़िक्र उसने बनी — हित के सामने किया था, या'नी चाँदी के चार सौ मिस्काल जो सौदागरों में राइज थी। ¹⁷ इसलिए इफ़रोन का वह खेत जो मक़फ़ीला में ममरे के सामने था, और वह ग़ार जो उसमें था, और सब दरख़्त जो उस खेत में और उसके चारों तरफ़ की हद्द में थे, ¹⁸ यह सब बनी — हित के और उन सबके आमने सामने जो उसके शहर के दरवाज़े

से दाख़िल होते थे, अब्रहाम की खास मिलिकयत करार दिए गए। ¹⁹ इसके बाद अब्रहाम ने अपनी बीवी सारा को मक़फ़ीला के खेत के ग़ार में, जो मुल्कए — कना'न में ममरे या'नी हबरून के सामने है, दफ़न किया। ²⁰ चुनाँचे वह खेत और वह ग़ार जो उसमें था, बनी — हित की तरफ़ से क़ब्रिस्तान के लिए अब्रहाम की मिलिकयत करार दिए गए।

24

24:1-24:12

¹ और अब्रहाम ज़ईफ़ और उम्र दराज़ हुआ और खुदावन्द ने सब बातों में अब्रहाम को बरकत बख़्शी थी। ² और अब्रहाम ने अपने घर के खास नौकर से, जो उसकी सब चीज़ों का मुख्तार था कहा, तू अपना हाथ ज़रा मेरी रान के नीचे रख कि। * ³ मैं तुझ से खुदावन्द की जो ज़मीन — ओ — आसमान का खुदा है क़सम लें, कि तू कना'नियों की बेटियों में से जिनमें मैं रहता हूँ, किसी को मेरे बेटे से नहीं ब्याहेगा। ⁴ बल्कि तू मेरे वतन में मेरे रिश्तेदारों के पास जा कर मेरे बेटे इस्हाक़ के लिए बीवी लाएगा। ⁵ उस नौकर ने उससे कहा, “शायद वह 'औरत इस मुल्क में मेरे साथ आना न चाहे; तो क्या मैं तेरे बेटे को उस मुल्क में जहाँ से तू आया फिर ले जाऊँ?” ⁶ तब अब्रहाम ने उससे कहा खबरदार तू मेरे बेटे को वहाँ हरगिज़ न ले जाना। ⁷ खुदावन्द, आसमान का खुदा, जो मुझे मेरे बाप के घर और मेरी पैदाइशी जगह से निकाल लाया, और जिसने मुझ से बातें कीं और क़सम खाकर मुझ से कहा, कि मैं तेरी नसल को यह मुल्क दूँगा; वही तेरे आगे — आगे अपना फ़िरिश्ता भेजेगा कि तू वहाँ से मेरे बेटे के लिए बीवी लाए। ⁸ और अगर वह 'औरत तेरे साथ आना न चाहे, तो तू मेरी इस क़सम से छूटा, लेकिन मेरे बेटे को हरगिज़ वहाँ न ले जाना। ⁹ उस नौकर ने अपना हाथ अपने आक्रा अब्रहाम की रान के नीचे रख कर उससे इस बात की क़सम खाई। ¹⁰ तब वह नौकर अपने आक्रा के ऊँटों में से दस ऊँट लेकर खाना हुआ, और उसके आक्रा की अच्छी अच्छी चीज़ें उसके पास थीं, और वह उठकर ‡मसोपतामिया में नहूर के शहर को गया। ¹¹ और शाम को जिस वक़्त 'औरतें पानी भरने आती हैं उस ने उस शहर के बाहर बावली के पास ऊँटों को बिठाया। ¹² और कहा, “ऐ खुदावन्द, मेरे आक्रा अब्रहाम के खुदा, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ के आज तू मेरा काम बना दे, और मेरे आक्रा अब्रहाम पर करम

* 23:6 23:6 जनाब, 11, 15 भी देखें † 23:6 23:6 तुम हमारे बीच में बड़े राजकुमार हो ‡ 23:15 23:15 4:6 किलोग्राम चाँदी के बराबर

* 24:2 24:2 क़दीम रिवायत के मुताबिक़ एक निशानी बतोर इशारा है कि खाई गई क़सम नहीं बदली जायेगी † 24:7 24:7 मेरे रिश्तेदारों के मुल्क से, उस मुल्क से जहाँ मैं पैदा हुआ ‡ 24:10 24:10 आराम नहराइम का इलाक़ा, मेसोपोतामियाह

कर।¹³ देख, मैं पानी के चश्मा पर खड़ा हूँ और इस शहर के लोगों की बेटियाँ पानी भरने को आती हैं; ¹⁴ इसलिए ऐ खुदावन्द ऐसा हो कि जिस लड़की से मैं कहूँ, कि तू ज़रा अपना घड़ा झुका दे तो मैं पानी पी लूँ और वह कहे, कि ले पी, और मैं तेरे ऊँटों को भी पिला दूँगी; तो वह वही हो जिसे तूने अपने बन्दे इस्हाक़ के लिए ठहराया है; और इसी से मैं समझ लूँगा कि तूने मेरे आक्रा पर करम किया है।” ¹⁵ वह यह कह ही रहा था कि रिब्का, जो अब्रहाम के भाई नहूर की बीवी मिल्काह के बेटे बैतूएल से पैदा हुई थी, अपना घड़ा कंधे पर लिए हुए निकली। ¹⁶ वह लड़की निहायत खूबसूरत और कुंवारी, और मर्द से नवाकिफ़ थी। वह नीचे पानी के चश्मा के पास गई और अपना घड़ा भर कर ऊपर आई। ¹⁷ तब वह नौकर उससे मिलने को दौड़ा और कहा कि ज़रा अपने घड़े से थोड़ा सा पानी मुझे पिला दे। ¹⁸ उसने कहा, पीजिए साहब; “और फ़ौरन घड़े को हाथ पर उतार उसे पानी पिलाया। ¹⁹ जब उसे पिला चुकी तो कहने लगी, कि मैं तेरे ऊँटों के लिए भी पानी भर — भर लाऊँगी, जब तक वह पी न चुके।” ²⁰ और फ़ौरन अपने घड़े को हौज़ में खाली करके फिर बावली की तरफ़ पानी भरने दौड़ी गई, और उसके सब ऊँटों के लिए भरा। ²¹ वह आदमी चुप — चाप उसे ग़ौर से देखता रहा, ताकि मा'लूम करे कि खुदावन्द ने उसका सफ़र मुबारक किया है या नहीं। ²² और जब ऊँट पी चुके तो उस शख्स ने आधे मिस्काल सोने की एक Sनथ, और दस मिस्काल सोने के दो *कड़े उसके हाथों के लिए निकाले। ²³ और कहा कि ज़रा मुझे बता कि तू किसकी बेटा है? और क्या तेरे बाप के घर में हमारे टिकने की जगह है? ²⁴ उसने उससे कहा कि मैं बैतूएल की बेटा हूँ। वह मिल्काह का बेटा है जो नहूर से उसके हुआ। ²⁵ और यह भी उससे कहा कि हमारे पास भूसा और चारा बहुत है, और टिकने की जगह भी है। ²⁶ तब उस आदमी ने झुक कर खुदावन्द को सिज्दा किया, ²⁷ और कहा, “खुदावन्द मेरे आक्रा अब्रहाम का खुदा मुबारक हो, जिसने मेरे आक्रा को अपने करम और सच्चाई से महरूम नहीं रख्वा और मुझे तो खुदावन्द ठीक राह पर चलाकर मेरे आक्रा के भाइयों के घर लाया।” ²⁸ तब उस लड़की ने दौड़ कर अपनी माँ के घर में यह सब हाल कह सुनाया। ²⁹ और रिब्का का एक भाई था जिसका नाम लाबन था; वह बाहर पानी के चश्मा पर उस आदमी के पास दौड़ा गया। ³⁰ और ऐसा हुआ कि जब उसने वह नथ देखी, और वह कड़े भी जो उसकी बहन के हाथों में थे, और अपनी बहन रिब्का का बयान भी सुन लिया कि उस शख्स ने

मुझ से ऐसी — ऐसी बातें कहीं, तो वह उस आदमी के पास आया और देखा कि वह चश्मा के नज़दीक ऊँटों के पास खड़ा है। ³¹ तब उससे कहा, “ऐ, तू जो खुदावन्द की तरफ़ से मुबारक है। अन्दर चल, बाहर क्यों खड़ा है? मैंने घर को और ऊँटों के लिए भी जगह को तैयार कर लिया है।” ³² तब वह आदमी घर में आया, और उसने उसके ऊँटों को खोला और ऊँटों के लिए भूसा और चारा, और उसके और उसके साथ के आदमियों के पॉव धोने को पानी दिया। ³³ और खाना उसके आगे रख्वा गया, लेकिन उसने कहा कि मैं जब तक अपना मतलब बयान न कर लूँ नहीं खाऊँगा। उसने कहा, अच्छा, कह। ³⁴ तब उसने कहा कि मैं अब्रहाम का नौकर हूँ। ³⁵ और खुदावन्द ने मेरे आक्रा को बड़ी बरकत दी है, और वह बहुत बड़ा आदमी हो गया है; और उसने उसे भेड़ — बकरियाँ, और गाय बैल और सोना चाँदी और लौंडिया और गुलाम और ऊँट और गधे बरख़्शे हैं। ³⁶ और मेरे आक्रा की बीवी सारा के जब वह बुढ़िया हो गई, उससे एक बेटा हुआ। उसी को उसने अपना सब कुछ दे दिया है। ³⁷ और मेरे आक्रा ने मुझे क्रसम दे कर कहा है, कि तू कना'नियों की बेटियों में से, जिनके मुल्क में मैं रहता हूँ किसी को मेरे बेटे से न ब्याहना। ³⁸ बल्कि तू मेरे बाप के घर और मेरे रिश्तेदारों में जाना और मेरे बेटे के लिए बीवी लाना। ³⁹ तब मैंने अपने आक्रा से कहा, 'शायद वह 'औरत मेरे साथ आना न चाहे। ⁴⁰ तब उसने मुझ से कहा, 'खुदावन्द, जिसके सामने मैं चलता रहा हूँ, अपना फ़रिश्ता तेरे साथ भेजेगा और तेरा सफ़र मुबारक करेगा; तू मेरे रिश्तेदारों और मेरे बाप के खान्दान में से मेरे बेटे के लिए बीवी लाना। ⁴¹ और जब तू मेरे खान्दान में जा पहुँचेगा, तब मेरी क्रसम से छूटेगा; और अगर वह कोई लड़की न दे, तो भी तू मेरी क्रसम से छूटा। ⁴² इसलिए मैं आज पानी के उस चश्मा पर आकर कहने लगा, 'ऐ खुदावन्द, मेरे आक्रा अब्रहाम के खुदा, अगर तू मेरे सफ़र को जो मैं कर रहा हूँ मुबारक करता है। ⁴³ तो देख, मैं पानी के चश्मा के पास खड़ा होता हूँ, और ऐसा हो कि जो लड़की पानी भरने निकले और मैं उससे कहूँ, 'ज़रा अपने घड़े से थोड़ा पानी मुझे पिला दे, ⁴⁴ और वह मुझे कहे कि तू भी पी और मैं तेरे ऊँटों के लिए भी भर दूँगी, तो वो वही 'औरत हो जिसे खुदावन्द ने मेरे आक्रा के बेटे के लिए ठहराया है। ⁴⁵ मैं दिल में यह कह ही रहा था कि रिब्का अपना घड़ा कन्धे पर लिए हुए बाहर निकली, और नीचे चश्मा के पास गई, और

12 यह नसबनामा अब्रहाम के बेटे इस्मा'ईल का है जो अब्रहाम से सारा की लौंडी हाजिरा मिस्री के बत्न से पैदा हुआ। 13 और इस्मा'ईल के बेटों के नाम यह है: यह नाम तरतीबवार उनकी पैदाइश के मुताबिक हैं, इस्मा'ईल का पहलौठा नबायोत था, फिर कीदार और अदबिएल और मिवसाम, 14 और मिशमा' और दूमा और मस्सा, 15 हदद और तेमा और यतूर और नफ़ीस और क्रिदमा। 16 यह इस्मा'ईल के बेटे हैं और इन्ही के नामों से इनकी बस्तियां और छावनियां नामजद हुई और यही बारह अपने अपने कबीले के सरदार हुए। 17 और इस्मा'ईल की कुल उम्र एक सौ सैंतीस साल की हुई तब उसने दम छोड़ दिया और वफ़ात पाई और अपने लोगों में जा मिला। 18 और उसकी औलाद हवीला से शोर तक, जो मिस्र के सामने उस रास्ते पर है जिस से असूर को जाते हैं आबाद थी। यह लोग अपने सब भाइयों के सामने बसे हुए थे।

2222 22 222222 22 222222

19 और अब्रहाम के बेटे इस्हाक़ का नसबनामा यह है: अब्रहाम से इस्हाक़ पैदा हुआ: 20 इस्हाक़ चालीस साल का था जब उसने रिब्का से ब्याह किया, जो फ़द्दान अराम के बाशिन्दे बैतूएल अरामी की बेटी और लाबन अरामी की बहन थी। 21 और इस्हाक़ ने अपनी बीवी के लिए खुदावन्द से दुआ की, क्योंकि वह बाँझ थी; और खुदावन्द ने उसकी दुआ कुबूल की, और उसकी बीवी रिब्का हामिला हुई। 22 और उसके पेट में दो लड़के आपस में मुज़ाहमत करने लगे। तब उसने कहा, “अगर ऐसा ही है तो मैं जीती क्यों हूँ?” और वह खुदावन्द से पूछने गई। 23 खुदावन्द ने उससे कहा, “दो कौमें तेरे पेट में हैं, और दो कबीले तेरे बत्न से निकलते ही अलग — अलग हो जाएँगे। और एक कबीला दूसरे कबीले से ताक़तवर होगा, और बड़ा छोटे की खिदमत करेगा।” 24 और जब उसके बच्चा पैदा होने के दिन पूरे हुए, तो क्या देखते हैं कि उसके पेट में जुड़वां बच्चे हैं। 25 और पहला जो पैदा हुआ तो सुर्ख था और ऊपर से ऐसा जैसे ऊनी कपड़ा, और उन्होंने उसका नाम ‘*ऐसौ रखवा। 26 उसके बाद उसका भाई पैदा हुआ और उसका हाथ 'ऐसौ की एड़ी को पकड़े हुए था, और उसका नाम या'कूब रखवा गया; जब वह रिब्का से पैदा हुए तो इस्हाक़ साठ साल का था।

‡ 25:17 25:17 1: वह अपने मरे हुए आबा व अजदाद के साथ जा मिला रहने लगे, वह अपने तमाम भाइयों के साथ मशरिकी इलाके में रहने लगे सुर्खी शख्स बतौर एहतिमाम किया गया जिस के मायने हैं, एदोम

2222 22 22222 222222 22 2222 22 2222 22222

27 और वह लड़के बढ़े, और 'ऐसौ शिकार में माहिर हो गया और जंगल में रहने लगा, और या'कूब सादा मिजाज़ डेरों में रहने वाला आदमी था। 28 और इस्हाक़ 'ऐसौ को प्यार करता था क्योंकि वह उसके शिकार का गोश्त खाता था और रिब्का या'कूब को प्यार करती थी। 29 और या'कूब ने दाल पकाई, और 'ऐसौ जंगल से आया और वह बहुत भूका था। 30 और 'ऐसौ ने या'कूब से कहा, “यह जो लाल — लाल है मुझे खिला दे, क्योंकि मैं बे — दम हो रहा हूँ।” इसी लिए उसका नाम अदोम भी हो गया। 31 तब या'कूब ने कहा, “तू आज अपने पहलौटे का हक़ मेरे हाथ बेच दे।” 32 'ऐसौ ने कहा, “देख, मैं तो मरा जाता हूँ, पहलौटे का हक़ मेरे किस काम आएगा?” 33 तब या'कूब ने कहा कि आज ही मुझ से क़सम खा, उसने उससे क़सम खाई; और उसने अपना पहलौटे का हक़ या'कूब के हाथ बेच दिया। 34 तब या'कूब ने 'ऐसौ को रोटी और मसूर की दाल दी; वह खा — पीकर उठा और चला गया। यूँ 'ऐसौ ने अपने पहलौटे के हक़ की क़दर न जाना।

26

22222222 22 22 22222 22 22222 22222

1 और उस मुल्क में उस पहले काल के 'अलावा जो अब्रहाम के दिनों में पड़ा था, फिर काल पड़ा। तब इस्हाक़ ज़िरार को फ़िलिस्तियों के बादशाह अबीमलिक के पास गया। 2 और खुदावन्द ने उस पर ज़ाहिर हो कर कहा कि मिस्र को न जा; बल्कि जो मुल्क मैं तुझे बताऊँ उसमें रह। 3 तू इसी मुल्क में क़याम रख और मैं तेरे साथ रहूँगा और तुझे बरकत बख़्शूँगा क्योंकि मैं तुझे और तेरी नसल को यह सब मुल्क दूँगा, और मैं उस क़सम को जो मैंने तेरे बाप अब्रहाम से खाई पूरा करूँगा। 4 और मैं तेरी औलाद को बढ़ा कर आसमान के तारों की तरह कर दूँगा, और यह सब मुल्क तेरी नसल को दूँगा, और ज़मीन की सब कौमें तेरी नसल के वसीले से बरकत पाएँगी। 5 इसलिए कि अब्रहाम ने मेरी बात मानी, और मेरी नसीहत और मेरे हुक्मों और कवानीन — ओ — आईन पर 'अमल किया। 6 फिर इस्हाक़ ज़िरार में रहने लगा; 7 और वहाँ के बाशिन्दों ने उससे उसकी बीवी के बारे में पूछा। उसने कहा, वह मेरी बहन है, क्योंकि वह उसे अपनी बीवी बताते डरा, यह सोच कर कि कहीं रिब्का

§ 25:18 25:18 वह अब्रहाम की दूसरी औलाद के साथ दुश्मनी से

* 25:25 25:25 एसोव के मायने हैं, बालों से ढका एक कोट, ऐसौ को

3 इसलिए अब तू ज़रा अपना हथियार, अपना तरकश और अपनी कमान लेकर जंगल को निकल जा और मेरे लिए शिकार मार ला। 4 और मेरी हस्ब — ए पसन्द लज़ीज़ खाना मेरे लिए तैयार करके मेरे आगे ले आ, ताकि मैं खाऊँ और अपने मरने से पहले दिल से तुझे दुआ दूँ। 5 और जब इस्हाक़ अपने बेटे 'ऐसौ' से बातें कर रहा था तो रिब्का सुन रही थी, और 'ऐसौ' जंगल को निकल गया कि शिकार मार कर लाए। 6 तब रिब्का ने अपने बेटे या'कूब से कहा, कि देख, मैंने तेरे बाप को तेरे भाई 'ऐसौ' से यह कहते सुना कि। 7 मेरे लिए शिकार मार कर लज़ीज़ खाना मेरे लिए तैयार कर ताकि मैं खाऊँ और अपने मरने से पहले खुदावन्द के आगे तुझे दुआ दूँ। 8 इसलिए ऐ मेरे बेटे, इस हुक्म के मुताबिक़ जो मैं तुझे देती हूँ मेरी बात को मान। 9 और जाकर रेवड़ में से बकरी के दो अच्छे — अच्छे बच्चे मुझे ला दे, और मैं उनको लेकर तेरे बाप के लिए उसकी हस्ब — ए — पसन्द लज़ीज़ खाना तैयार कर दूँगी। 10 और तू उसे अपने बाप के आगे ले जाना, ताकि वह खाए और अपने मरने से पहले तुझे दुआ दे। 11 तब या'कूब ने अपनी माँ रिब्का से कहा, “देख, मेरे भाई 'ऐसौ' के जिस्म पर बाल हैं और मेरा जिस्म साफ़ है। 12 शायद मेरा बाप मुझे टटोले, तो मैं उसकी नज़र में दगाबाज़ ठहरूँगा; और बरकत नहीं बल्कि ला'नत कमाऊँगा।” 13 उसकी माँ ने उसे कहा, “ऐ मेरे बेटे! तेरी ला'नत मुझ पर आए; तू सिर्फ़ मेरी बात मान और जाकर वह बच्चे मुझे ला दे।” 14 तब वह गया और उनको लाकर अपनी माँ को दिया, और उसकी माँ ने उसके बाप की हस्ब — ए — पसन्द लज़ीज़ खाना तैयार किया। 15 और रिब्का ने अपने बड़े बेटे 'ऐसौ' के नफ़ीस लिबास, जो उसके पास घर में थे लेकर उनकी अपने छोटे बेटे या'कूब को पहनाया। 16 और बकरी के बच्चों की खालें उसके हाथों और उसकी गर्दन पर जहाँ बाल न थे लपेट दीं। 17 और वह लज़ीज़ खाना और रोटी जो उसने तैयार की थी, अपने बेटे या'कूब के हाथ में दे दी। 18 तब उसने बाप के पास आ कर कहा, ऐ मेरे बाप! “उसने कहा, मैं हाज़िर हूँ, तू कौन है मेरे बेटे?” 19 या'कूब ने अपने बाप से कहा, “मैं तेरा पहलौठा बेटा 'ऐसौ' हूँ। मैंने तेरे कहने के मुताबिक़ किया है; इसलिए ज़रा उठ और बैठ कर मेरे शिकार का गोश्त खा, ताकि तू दिल से मुझे दुआ दे।” 20 तब इस्हाक़ ने अपने बेटे से कहा, “बेटा! तुझे यह इस क्रदर जल्द कैसे मिल गया?” उसने कहा, “इसलिए कि खुदावन्द तेरे खुदा ने मेरा काम बना दिया।” 21 तब इस्हाक़ ने या'कूब से कहा, “ऐ मेरे बेटे,

ज़रा नज़दीक आ कि मैं तुझे टटोलूँ कि तू मेरा ही बेटा 'ऐसौ' है या नहीं।” 22 और या'कूब अपने बाप इस्हाक़ के नज़दीक गया; और उसने उसे टटोलकर कहा, “आवाज़ तो या'कूब की है लेकिन हाथ 'ऐसौ' के हैं।” 23 और उसने उसे न पहचाना, इसलिए कि उसके हाथों पर उसके भाई 'ऐसौ' के हाथों की तरह बाल थे; इसलिए उसने उसे दुआ दी। 24 और उसने पूछा कि क्या तू मेरा बेटा “ऐसौ ही है?” उसने कहा, “मैं वही हूँ।” 25 तब उसने कहा, “खाना मेरे आगे ले आ, और मैं अपने बेटे के शिकार का गोश्त खाऊँगा, ताकि दिल से तुझे दुआ दूँ।” तब वह उसे उसके नज़दीक ले आया, और उसने खाया; और वह उसके लिए मय लाया और उसने पी। 26 फिर उसके बाप इस्हाक़ ने उससे कहा, “ऐ मेरे बेटे! अब पास आकर मुझे चूम।” 27 उसने पास जाकर उसे चूमा। तब उसने उसके लिबास की ख़शबू पाई और उसे दुआ दे कर कहा, “देखो! मेरे बेटे की महक उस खेत की महक की तरह है जिसे खुदावन्द ने बरकत दी हो। 28 खुदा आसमान की ओस और ज़मीन की फ़र्बही, और बहुत सा अनाज और मय तुझे बरख़्शे। 29 कौमें तेरी खिदमत करें, और कबीले तेरे सामने झुकें। तू अपने भाइयों का सरदार हो, और तेरी माँ के बेटे तेरे आगे झुकें, जो तुझ पर ला'नत करे वह खुद ला'नती हो, और जो तुझे दुआ दे वह बरकत पाए।” 30 जब इस्हाक़ या'कूब को दुआ दे चुका, और या'कूब अपने बाप इस्हाक़ के पास से निकला ही था कि उसका भाई 'ऐसौ' अपने शिकार से लौटा। 31 वह भी लज़ीज़ खाना पका कर अपने बाप के पास लाया, और उसने अपने बाप से कहा, मेरा बाप उठ कर अपने बेटे के शिकार का गोश्त खाए, ताकि दिल से मुझे दुआ दे। 32 उसके बाप इस्हाक़ ने उससे पूछा कि तू कौन है? उसने कहा, मैं तेरा पहलौठा बेटा “ऐसौ” हूँ।” 33 तब तो इस्हाक़ शिद्दत से काँपने लगा और उसने कहा, “फिर वह कौन था जो शिकार मार कर मेरे पास ले आया, और मैंने तेरे आने से पहले सबमें से थोड़ा — थोड़ा खाया और उसे दुआ दी? और मुबारक भी वही होगा।” 34 ऐसौ अपने बाप की बातें सुनते ही बड़ी बुलन्दी और हसरतनाक आवाज़ से चिल्ला उठा, और अपने बाप से कहा, “मुझ को भी दुआ दे, ऐ मेरे बाप! मुझ को भी।” 35 उसने कहा, “तेरा भाई दगा से आया, और तेरी बरकत ले गया।” 36 तब उसने कहा, “क्या उसका नाम या'कूब ठीक नहीं रख्खा गया? क्योंकि उसने दोबारा मुझे धोखा दिया। उसने मेरा पहलौठे का हक़ तो ले ही लिया था, और देख, अब वह मेरी बरकत भी ले गया।” फिर उसने कहा, “क्या तूने

* 27:36 27:36 1: नाम या'कूब “एडी” के लफ़्ज़ से जुड़ा हुआ है, यहाँ इस लफ़्ज़ के मायने हैं, फरेब देना या धोका देना

मेरे लिए कोई बरकत नहीं रख छोड़ी है?” ³⁷ इस्हाक ने 'ऐसौ को जवाब दिया, कि देख, मैंने उसे तेरा सरदार ठहराया, और उसके सब भाइयों को उसके सुपर्द किया कि खादिम हों, और अनाज और मय उसकी परवरिश के लिए बताई। अब ऐ मेरे बेटे, तेरे लिए मैं क्या करूँ? ³⁸ तब 'ऐसौ ने अपने बाप से कहा, “क्या तेरे पास एक ही बरकत है, ऐ मेरे बाप? मुझे भी दुआ दे, ऐ मेरे बाप, मुझे भी।” और 'ऐसौ ज़ोर — ज़ोर से रोया। ³⁹ तब उसके बाप इस्हाक ने उससे कहा, “देख ज़रखेज ज़मीन में तेरा घर हो, और ऊपर से आसमान की शबनम उस पर पड़े। ⁴⁰ तेरी औकात — बसरी तेरी तलवार से हो, और तू अपने भाई की खिदमत करे, और जब तू आज़ाद हो; तो अपने भाई का जुआ अपनी गर्दन पर से उतार फेंके।”

22 22 22 22 22 22 22 22 22 22

⁴¹ और 'ऐसौ ने या'कूब से, उस बरकत की वजह से जो उसके बाप ने उसे बख्शी, कीना रखवा; और 'ऐसौ ने अपने दिल में कहा, कि “मेरे बाप के मातम के दिन नज़दीक हैं, फिर मैं अपने भाई या'कूब को मार डालूँगा।” ⁴² और रिब्का को उसके बड़े बेटे 'ऐसौ की यह बातें बताई गई; तब उसने अपने छोटे बेटे या'कूब को बुलवा कर उससे कहा, “देख, तेरा भाई 'ऐसौ तुझे मार डालने पर है, और यही सोच — सोचकर अपने को तसल्ली दे रहा है। ⁴³ इसलिए ऐ मेरे बेटे, तू मेरी बात मान, और उठकर हारान को मेरे भाई लाबन के पास भाग जा; ⁴⁴ और थोड़े दिन उसके साथ रह, जब तक तेरे भाई की नाराज़गी उतर न जाए। ⁴⁵ या'नी जब तक तेरे भाई का क्रहर तेरी तरफ़ से ठंडा न हो, और वह उस बात को जो तूने उससे की है भूल न जाए; तब मैं तुझे वहाँ से बुलवा भेजूँगी। मैं एक ही दिन में तुम दोनों को क्यों खो बैटूँ?” ⁴⁶ और रिब्का ने इस्हाक से कहा, मैं हिती लड़कियों की वजह से अपनी जिन्दगी से तंग हूँ, इसलिए अगर या'कूब हिती लड़कियों में से, जैसी इस मुल्क की लड़कियाँ हैं, किसी से ब्याह कर ले तो मेरी जिन्दगी में क्या लुत्फ़ रहेगा?”

28

¹ तब इस्हाक ने या'कूब को बुलाया और उसे दुआ दी और उसे ताकीद की, कि तू कना'नी लड़कियों में से किसी से ब्याह न करना। ² तू उठ कर फ़दान अराम को अपने नाना बैतूएल के घर जा, और वहाँ से अपने मामू लाबन की बेटियों में से एक को ब्याह ला। ³ और क़ादिर — ए — मुतलक़ खुदा तुझे बरकत बख्शे और तुझे कामयाब करे और बढ़ाए, कि तुझ से क़ौमों के क़बीले पैदा हों। ⁴ और वह अब्रहाम की बरकत तुझे और तेरे साथ तेरी नसल

को दे, कि तेरी मुसाफ़िरत की यह सरज़मीन जो खुदा ने अब्रहाम को दी तेरी मीरास हो जाए। ⁵ तब इस्हाक ने या'कूब को रखसत किया और वह फ़दान अराम में लाबन के पास, जो अरामी बैतूएल का बेटा और या'कूब और 'ऐसौ की माँ रिब्का का भाई था गया। ⁶ फिर जब 'ऐसौ ने देखा कि इस्हाक ने या'कूब को दुआ देकर उसे फ़दान अराम भेजा है, ताकि वह वहाँ से बीवी ब्याह कर लाए; और उसे दुआ देते वक़्त यह ताकीद भी की है कि तू कना'नी लड़कियों में से किसी से ब्याह न करना। ⁷ और या'कूब अपने माँ बाप की बात मान कर फ़दान अराम को चला गया। ⁸ और 'ऐसौ ने यह भी देखा कि कना'नी लड़कियाँ उसके बाप इस्हाक को बुरी लगती हैं, ⁹ तो 'ऐसौ इस्मा'ईल के पास गया और महलत को, जो इस्मा'ईल — बिन — अब्रहाम की बेटि और नबायोत की बहन थी, ब्याह कर उसे अपनी और बीवियों में शामिल किया।

22 22 22 22 22 22 22 22 22 22

¹⁰ और या'कूब बैर — सबा' से निकल कर हारान की तरफ़ चला। ¹¹ और एक जगह पहुँच कर सारी रात वहीं रहा क्योंकि सूरज डूब गया था, और उसने उस जगह के पत्थरों में से एक उठा कर अपने सरहाने रख लिया और उसी जगह सोने को लेट गया। ¹² और ख़्वाब में क्या देखता है कि एक सीढ़ी ज़मीन पर खड़ी है, और उसका सिरा आसमान तक पहुँचा हुआ है। और खुदा के फ़रिश्ता उस पर से चढ़ते उतरते हैं। ¹³ और खुदावन्द *उसके ऊपर खड़ा कह रहा है, कि मैं खुदावन्द, तेरे बाप अब्रहाम का खुदा और इस्हाक का खुदा हूँ। मैं यह ज़मीन जिस पर तू लेटा है तुझे और तेरी नसल को दूँगा। ¹⁴ और तेरी नसल ज़मीन की गर्द के ज़रों की तरह होगी और तू मशरिफ़ और मशरिब और शिमाल और दख्खिन में फैल जाएगा, और ज़मीन के सब क़बीले तेरे और तेरी नसल के वसीले से बरकत पाएंगे। ¹⁵ और देख, मैं तेरे साथ हूँ और हर जगह जहाँ कहीं तू जाए तेरी हिफ़ाज़त करूँगा और तुझ को इस मुल्क में फिर लाऊँगा, और जो मैंने तुझ से कहा है जब तक उसे पूरा न कर लें तुझे नहीं छोड़ूँगा। ¹⁶ तब या'कूब जाग उठा और कहने लगा, कि यकीनन खुदावन्द इस जगह है और मुझे मा'लूम न था। ¹⁷ और उसने डर कर कहा, “यह कैसी ख़ौफ़नाक जगह है! तो यह खुदा के घर और आसमान के आसताने के अलावा और कुछ न होगा।” ¹⁸ और या'कूब सुब्ह — सवेरे उठा, और उस पत्थर की जिसे उसने अपने सरहाने रखवा था लेकर सुतून की तरह खड़ा किया और

* 28:13 28:13 उस के नज़दीक खड़ा हुआ

उसके सिरे पर तेल डाला। ¹⁹ और उस जगह का नाम बैतएल रखवा, लेकिन पहले उस बस्ती का नाम लूज़ था। ²⁰ और या'कूब ने मन्त मानी और कहा कि अगर खुदा मेरे साथ रहे, और जो सफ़र मैं कर रहा हूँ उसमें मेरी हिफ़ाज़त करे, और मुझे खाने को रोटी और पहनने की कपड़ा देता रहे, ²¹ और मैं अपने बाप के घर सलामत लौट आऊँ; तो खुदावन्द मेरा खुदा होगा। ²² और यह पत्थर जो मैंने सुतून सा खड़ा किया है, खुदा का घर होगा; और जो कुछ तू मुझे दे उसका दसवाँ हिस्सा ज़रूर ही तुझे दिया करूँगा।

29

29:1-29:29

¹ और या'कूब आगे चल कर मशरिक्की लोगों के मुल्क में पहुँचा। ² और उसने देखा कि मैदान में एक कुआँ है और कुएँ के नज़दीक भेड़ बकरियों के तीन रेवड़ बैठे हैं; क्योंकि चरवाहे इसी कुएँ से रेवड़ों को पानी पिलाते थे और कुएँ के मुँह पर एक बड़ा पत्थर रखवा रहता था। ³ और जब सब रेवड़ वहाँ इकट्ठे होते थे, तब वह उस पत्थर को कुएँ के मुँह पर से ढलकाते और भेड़ों को पानी पिला कर उस पत्थर को फिर उसी जगह कुएँ के मुँह पर रख देते थे। ⁴ तब या'कूब ने उनसे कहा, “ऐ मेरे भाइयों, तुम कहाँ के हो?” उन्होंने कहा, “हम हारान के हैं।” ⁵ फिर उसने पूछा कि तुम नहर के बेटे लाबन से वाकिफ़ हो? उन्होंने कहा, हम वाकिफ़ हैं। ⁶ उसने पूछा, “क्या वह खैरियत से है?” उन्होंने कहा, “खैरियत से है, और वह देख, उसकी बेटी राखिल भेड़ बकरियों के साथ चली आती है।” ⁷ और उसने कहा, देखो, अभी तो दिन बहुत है, और चौपायों के जमा' होने का वक़्त नहीं। तुम भेड़ बकरियों को पानी पिला कर फिर चराने को ले जाओ। ⁸ उन्होंने कहा, “हम ऐसा नहीं कर सकते, जब तक कि सब रेवड़ जमा' न हो जाएँ। तब हम उस पत्थर को कुएँ के मुँह पर से ढलकाते हैं, और भेड़ बकरियों को पानी पिलाते हैं।” ⁹ वह उनसे बातें कर ही रहा था कि राखिल अपने बाप की भेड़ बकरियों के साथ आई, क्योंकि वह उनको चराया करती थी। ¹⁰ जब या'कूब ने अपने मामूँ लाबन की बेटी राखिल को और अपने मामूँ लाबन के रेवड़ को देखा, तो वह नज़दीक गया और पत्थर को कुएँ के मुँह पर से ढलका कर अपने मामूँ लाबन के रेवड़ को पानी पिलाया। ¹¹ और या'कूब ने राखिल को चूमा और ज़ोर ज़ोर से रोया। ¹² और या'कूब ने राखिल से कहा, कि मैं तेरे बाप का रिश्तेदार और रिब्का का बेटा हूँ। तब उसने

दौड़ कर अपने बाप को खबर दी। ¹³ लाबन अपने भांजे की खबर पाते ही उससे मिलने को दौड़ा, और उसको गले लगाया और चूमा और उसे अपने घर लाया; तब उसने लाबन को अपना सारा हाल बताया। ¹⁴ लाबन ने उसे कहा, “तू वाक़'ई मेरी हड्डी और मेरा गोश्त है।” फिर वह एक महीना उसके साथ रहा।

29:1-29:29

¹⁵ तब लाबन ने या'कूब से कहा, “चूँकि तू मेरा रिश्तेदार है, तो क्या इसलिए लाज़िम है कि तू मेरी ख़िदमत मुफ़्त करे? इसलिए मुझे बता कि तेरी मजदूरी क्या होगी?” ¹⁶ और लाबन की दो बेटियाँ थीं, बड़ी का नाम लियाह और छोटी का नाम राखिल था। ¹⁷ लियाह की आखें भूरी थीं लेकिन राखिल हसीन और खूबसूरत थी। ¹⁸ और या'कूब राखिल पर फ़िदा था, तब उसने कहा, “तेरी छोटी बेटी राखिल की खातिर मैं सात साल तेरी ख़िदमत करूँगा।” ¹⁹ लाबन ने कहा, “उसे ग़ैर आदमी को देने की जगह तुझी को देना बेहतर है, तू मेरे पास रह।” ²⁰ चुनाँचे या'कूब सात साल तक राखिल की खातिर ख़िदमत करता रहा लेकिन वह उसे राखिल की मुहब्बत की वजह से चन्द दिनों के बराबर मा'लूम हुए। ²¹ या'कूब ने लाबन से कहा कि मेरी मुद्दत पूरी हो गई, इसलिए मेरी बीवी मुझे दे ताकि मैं उसके पास जाऊँ। ²² तब लाबन ने उस जगह के सब लोगों को बुला कर जमा' किया और उनकी दावत की। ²³ और जब शाम हो गई तो अपनी बेटी लियाह को उसके पास ले आया, और या'कूब उससे हम आगोश हुआ। ²⁴ और लाबन ने अपनी लौंडी ज़िल्फ़ा अपनी बेटी लियाह के साथ कर दी कि उसकी लौंडी हो। ²⁵ जब सुबह को मा'लूम हुआ कि यह तो लियाह है, तब उसने लाबन से कहा, कि तूने मुझ से ये क्या किया? क्या मैंने जो तेरी ख़िदमत की, वह राखिल की खातिर न थी? फिर तूने क्यूँ मुझे धोका दिया? ²⁶ लाबन ने कहा कि हमारे मुल्क में ये दस्तूर नहीं के पहलौटी से पहले छोटी को ब्याह दें। ²⁷ तू इसका हफ़्ता पूरा कर दे, फिर हम दूसरी भी तुझे दे देंगे; जिसकी खातिर तुझे सात साल और मेरी ख़िदमत करनी होगी। ²⁸ या'कूब ने ऐसा ही किया, कि लियाह का हफ़्ता पूरा किया; तब लाबन ने अपनी बेटी राखिल भी उसे ब्याह दी। ²⁹ और अपनी लौंडी बिल्हाह अपनी बेटी राखिल के साथ कर दी कि उसकी लौंडी हो। ³⁰ इसलिए वह राखिल से भी हम आगोश हुआ, और वह लियाह से ज्यादा राखिल को चाहता था; और सात साल और साथ रह कर लाबन की ख़िदमत की।

११ ११११ ११ ११११ ११ ११११११११११

31 और जब खुदावन्द ने देखा कि लियाह से नफ़रत की गई, तो उसने उसका रिहम खोला, मगर राखिल बाँझ रही। 32 और लियाह हामिला हुई और उसके बेटा हुआ, और उसने उसका नाम रूबिन रखवा क्योंकि उसने कहा कि खुदावन्द ने मेरा दुख देख लिया, इसलिए मेरा शौहर अब मुझे प्यार करेगा। 33 वह फिर हामिला हुई और उसके बेटा हुआ तब उसने कहा कि खुदावन्द ने सुना कि मुझ से नफ़रत की गई, इसलिए उसने मुझे यह भी बरूखा। तब उसने उसका नाम शमौन रखवा। 34 और वह फिर हामिला हुई और उसके बेटा हुआ तब उसने कहा, “अब इस बार मेरे शौहर को मुझ से लगन होगी, क्योंकि उससे मेरे तीन बेटे हुए।” इसलिए उसका नाम लावी रखवा गया। 35 और वह फिर हामिला हुई और उसके बेटा हुआ तब उसने कहा कि अब मैं खुदावन्द की हम्द करूँगी। इसलिए उसका नाम यहूदाह रखवा। फिर उसके औलाद होने में देरी हुई।

30

1 और जब राखिल ने देखा कि या'कूब से उसके औलाद नहीं होती तो राखिल को अपनी बहन पर रश्क आया, तब वह या'कूब से कहने लगी, “मुझे भी औलाद दे नहीं तो मैं मर जाऊँगी।” 2 तब या'कूब का क्रहर राखिल पर भड़का और उस ने कहा, “क्या मैं खुदा की जगह हूँ जिसने तुझ को औलाद से महरूम रखवा है?” 3 उसने कहा, “देख, मेरी लौंडी बिल्हाह हाज़िर है, उसके पास जा ताकि मेरे लिए उससे औलाद हो और वह औलाद मेरी ठहरे।” 4 और उसने अपनी लौंडी बिल्हाह को उसे दिया के उसकी बीवी बने, और या'कूब उसके पास गया। 5 और बिल्हाह हामिला हुई, और या'कूब से उसके बेटा हुआ। 6 तब राखिल ने कहा कि खुदा ने मेरा इन्साफ़ किया और मेरी फ़रियाद भी सुनी और मुझ को बेटा बरूखा। इसलिए उसने उसका नाम दान रखवा। 7 और राखिल की लौंडी बिल्हाह फिर हामिला हुई और या'कूब से उसके दूसरा बेटा हुआ। 8 तब राखिल ने कहा, “मैं अपनी बहन के साथ निहायत जोर मार — मारकर कुशती लड़ी और मैंने फ़तह पाई।” इसलिए उसने उसका नाम नफ़ताली रखवा। 9 जब लियाह ने देखा कि वह जनने से रह गई तो उसने अपनी लौंडी ज़िलफ़ा को लेकर या'कूब को दिया कि उसकी बीवी बने। 10 और लियाह की लौंडी ज़िलफ़ा के भी या'कूब से एक बेटा हुआ। 11 तब लियाह

ने कहा, ज़हे — किस्मत! “तब उसने उसका नाम ज़द रखवा। 12 लियाह की लौंडी ज़िलफ़ा के या'कूब से फिर एक बेटा हुआ। 13 तब लियाह ने कहा, मैं खुश किस्मत हूँ: ‘औरतें मुझे खुश किस्मत कहेंगी।’ और उसने उसका नाम आशर रखवा। 14 और रूबिन गेहूँ काटने के मौसम में घर से निकला और उसे खेत में *मदुम गयाह मिल गए, और वह अपनी माँ लियाह के पास ले आया। तब राखिल ने लियाह से कहा कि अपने बेटे के मदुम गयाह में से मुझे भी कुछ दे दे। 15 उसने कहा, “क्या ये छोटी बात है कि तूने मेरे शौहर को ले लिया, और अब क्या मेरे बेटे के मदुम गयाह भी लेना चाहती है?” राखिल ने कहा, “बस तो आज रात वह तेरे बेटे के मदुम गयाह की खातिर तेरे साथ सोएगा।” 16 जब या'कूब शाम को खेत से आ रहा था तो लियाह आगे से उससे मिलने को गई और कहने लगी कि तुझे मेरे पास आना होगा, क्योंकि मैंने अपने बेटे के मदुम गयाह के बदले तुझे मज़दूरी पर लिया है। वह उस रात उसी के साथ सोया। 17 और खुदा ने लियाह की सुनी और वह हामिला हुई, और या'कूब से उसके पाँचवाँ बेटा हुआ। 18 तब लियाह ने कहा कि खुदा ने मेरी मज़दूरी मुझे दी क्योंकि मैंने अपने शौहर को अपनी लौंडी दी। और उसने उसका नाम †इश्कार रखवा। 19 और लियाह फिर हामिला हुई और या'कूब से उसके छटा बेटा हुआ। 20 तब लियाह ने कहा कि खुदा ने अच्छा महर मुझे बरूखा; अब मेरा शौहर मेरे साथ रहेगा क्योंकि मेरे उससे छः बेटे हो चुके हैं। इसलिए उसने उसका नाम ‡ज़बूलून रखवा। 21 इसके बाद उसके एक बेटा हुई और उसने उसका नाम दीना रखवा। 22 और खुदा ने राखिल को याद किया, और खुदा ने उसकी सुन कर उसके रहम को खोला। 23 और वह हामिला हुई और उसके बेटा हुआ, तब उसने कहा कि खुदा ने मुझ से रुस्वाई दूर की। 24 और उस ने उसका नाम यूसुफ़ यह कह कर रखवा कि खुदा वन्द मुझ को एक और बेटा बरूखे।

११ ११११ ११ ११११ ११ ११११११

25 और जब राखिल से यूसुफ़ पैदा हुआ तो या'कूब ने लाबन से कहा, “मुझे रुख़सत कर कि मैं अपने घर और अपने वतन को जाऊँ। 26 मेरी बीवियाँ और मेरे बाल बच्चे जिनकी खातिर मैं ने तेरी ख़िदमत की है मेरे हवाले कर और मुझे जाने दे, क्योंकि तू खुद जानता है कि मैंने तेरी कैसी ख़िदमत की है।” 27 तब लाबन ने

* 30:14 30:14 1 मन्दराके एक इब्री लफ़्ज़ का तर्जुमा हैयह एक पौधे का हवाला देता है जिस के पत्ते लम्बे, और उस के फूल पीले औरबैजनी रंग के होते हैं, इसे मंदराके कोको भी कहा जाता है जिस को खाने से जिंसी खादिश पैदा होती है और औरत को हामला होने में मदद करता है † 30:18 30:18 इनाम ‡ 30:20 30:20 इज्ज़त

उसे कहा, “अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है तो यहीं रह क्योंकि मैं जान गया हूँ कि खुदावन्द ने तेरी वजह से मुझ को बरकत बरूषी है।” ²⁸ और यह भी कहा कि मुझ से तू अपनी मज़दूरी ठहरा ले, और मैं तुझे दिया करूँगा। ²⁹ उसने उसे कहा कि तू खुद जानता है कि मैंने तेरी कैसी खिदमत की और तेरे जानवर मेरे साथ कैसे रहे। ³⁰ क्योंकि मेरे आने से पहले यह थोड़े थे और अब बढ़ कर बहुत से हो गए हैं, और खुदावन्द ने जहाँ जहाँ मेरे क़दम पड़े तुझे बरकत बरूषी। अब मैं अपने घर का बन्दोबस्त कब करूँ? ³¹ उसने कहा, “तुझे मैं क्या दूँ?” या'कूब ने कहा, “तू मुझे कुछ न देना, लेकिन अगर तू मेरे लिए एक काम कर दे तो मैं तेरी भेड़ — बकरियों को फिर चराऊँगा और उनकी निगहबानी करूँगा। ³² मैं आज तेरी सब भेड़ — बकरियों में चक्कर लगाऊँगा, और जितनी भेड़ें चितली और और काली हों और जितनी बकरियाँ और चितली हों उन सबको अलग एक तरफ़ कर दूँगा, इन्हीं को मैं अपनी मज़दूरी ठहराता हूँ। ³³ और आइन्दा जब कभी मेरी मज़दूरी का हिसाब तेरे सामने ही तो मेरी सच्चाई आप मेरी तरफ़ से इस तरह बोल उठेगी, कि जो बकरियाँ चितली और नहीं और जो भेड़े काली नहीं अगर वह मेरे पास हों तो चुराई हुई समझी जाएँगी।” ³⁴ लाबन ने कहा, “मैं राज़ी हूँ, जो तू कहे वही सही।” ³⁵ और उसने उसी रोज़ धारीदार और बकरों की और सब चितली और बकरियों को जिनमें कुछ सफ़ेदी थी, और तमाम काली भेड़ों को अलग करके उनकी अपने बेटों के हवाले किया। ³⁶ और उसने अपने और या'कूब के बीच तीन दिन के सफ़र का फ़ासला ठहराया; और या'कूब लाबन के बाक़ी रेवड़ों को चराने लगा। ³⁷ और या'कूब ने सफ़ेदा और बादाम, और चिनार की हरी हरी छड़ियाँ लीं उनको छील छीलकर इस तरह गन्डेदार बना लिया के उन छड़ियों की सफ़ेदी दिखाई देने लगी। ³⁸ और उसने वह गन्डेदार छड़ियाँ भेड़ — बकरियों के सामने हौज़ों और नालियों में जहाँ वह पानी पीने आती थीं खड़ी कर दीं, और जब वह पानी पीने आई तब गाभिन हो गई। ³⁹ और उन छड़ियों के आगे गाभिन होने की वजह से उन्होंने धारीदार, चितले और बच्चे दिए। ⁴⁰ और या'कूब ने भेड़ बकरियों के उन बच्चों को अलग किया, और लाबन की भेड़ — बकरियों के मुँह धारीदार और काले बच्चों की तरफ़ फेर दिए और उसने अपने रेवड़ों को जुदा किया, और लाबन की भेड़ बकरियों में मिलने न दिया। ⁴¹ और जब मज़बूत भेड़ — बकरियाँ गाभिन होती थीं तो या'कूब छड़ियों को नालियों में उनकी आँखों के सामने रख देता था, ताकि वह उन छड़ियों के आगे गाभिन हों। ⁴² लेकिन जब भेड़ बकरियाँ दुबली होतीं तो वह उनको

वहाँ नहीं रखता था। इसलिए दुबली तो लाबन की रहीं और मज़बूत या'कूब की हो गई। ⁴³ चुनाँचे वह निहायत बढ़ता गया और उसके पास बहुत से रेवड़ और लौंडिया और नौकर चाकर और ऊँट और गधे हो गये।

31

२२ २२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२२

¹ और उसने लाबन के बेटों की यह बातें सुनीं, कि या'कूब ने हमारे बाप का सब कुछ ले लिया और हमारे बाप के माल की बदौलत उसकी यह सारी शान — ओ — शौकत है। ² और या'कूब ने लाबन के चेहरे को देख कर ताड़ लिया कि उसका रुख पहले से बदला हुआ है। ³ और खुदावन्द ने या'कूब से कहा, कि तू अपने बाप दादा के मुल्क को और अपने रिश्तेदारों के पास लौट जा, और मैं तेरे साथ रहूँगा। ⁴ तब या'कूब ने राखिल और लियाह को मैदान में जहाँ उसकी भेड़ — बकरियाँ थीं बुलवाया ⁵ और उनसे कहा, मैं देखता हूँ कि तुम्हारे बाप का रुख पहले से बदला हुआ है, लेकिन मेरे बाप का खुदा मेरे साथ रहा। ⁶ तुम तो जानती हो कि मैंने अपनी ताक़त के मुताबिक़ तुम्हारे बाप की खिदमत की है। ⁷ लेकिन तुम्हारे बाप ने मुझे धोका दे देकर दस बार मेरी मज़दूरी बदली, लेकिन खुदा ने उसको मुझे नुक़सान पहुँचाने न दिया। ⁸ जब उसने यह कहा कि चितले बच्चे तेरी मज़दूरी होंगे, तो भेड़ बकरियाँ चितले बच्चे देने लगीं, और जब कहा कि धारीदार बच्चे तेरे होंगे, तो भेड़ — बकरियों ने धारीदार बच्चे दिए। ⁹ यूँ खुदा ने तुम्हारे बाप के जानवर लेकर मुझे दे दिए। ¹⁰ और जब भेड़ बकरियाँ गाभिन हुई, तो मैंने ख़्वाब में देखा कि जो बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं वो धारीदार, चितले और चितकबरे हैं। ¹¹ और खुदा के फ़रिश्ते ने ख़्वाब में मुझ से कहा, ‘ऐ या'कूब!’ मैंने कहा, ‘मैं हाज़िर हूँ।’ ¹² तब उसने कहा कि अब तू अपनी आँख उठा कर देख, कि सब बकरे जो बकरियों पर चढ़ रहे हैं धारीदार चितले और चितकबरे हैं, क्योंकि जो कुछ लाबन तुझ से करता है मैंने देखा। ¹³ मैं बैतएल का खुदा हूँ, जहाँ तूने सुतून पर तेल डाला और मेरी मन्नत मानी, इसलिए अब उठ और इस मुल्क से निकल कर अपने वतन को लौट जा।’ ¹⁴ तब राखिल और लियाह ने उसे जवाब दिया, “क्या, अब भी हमारे बाप के घर में कुछ हमारा बख़रा या मीरास है? ¹⁵ क्या वह हम को अजनबी के बराबर नहीं समझता? क्योंकि उसने हम को भी बेच डाला और हमारे रुपये भी खा बैठा। ¹⁶ इसलिए अब जो दौलत खुदा ने हमारे बाप से ली वह हमारी और हमारे फ़र्जन्दों की है, फिर जो

कुछ खुदा ने तुझ से कहा है वही कर।” 17 तब या'कूब ने उठ कर अपने बाल बच्चों और बीवियों को ऊँटों पर बिठाया। 18 और अपने सब जानवरों और माल — ओ — अस्बाब को जो उसने इकट्ठा किया था, या'नी वह जानवर जो उसे फ़दान — अराम में मज़दूरी में मिले थे, लेकर चला ताकि मुल्क — ए — कना'न में अपने बाप इस्हाक़ के पास जाए। 19 और लाबन अपनी भेड़ों की ऊन कतरने को गया हुआ था, तब राखिल अपने बाप के बुतों को चुरा ले गई। 20 और या'कूब लाबन अरामी के पास से चोरी से चला गया, क्योंकि उसे उसने अपने भागने की ख़बर न दी। 21 फिर वह अपना सब कुछ लेकर भागा और दरिया पार होकर अपना रुख़ कोह — ए — जिल'आद की तरफ़ किया।

22 और तीसरे दिन लाबन की ख़बर हुई कि या'कूब

भाग गया। 23 तब उसने अपने भाइयों को हमराह लेकर सात मन्ज़िल तक उसका पीछा किया, और जिल'आद के पहाड़ पर उसे जा पकड़ा। 24 और रात को खुदा लाबन अरामी के पास ख़्वाब में आया और उससे कहा कि ख़बरदार, तू या'कूब को बुरा या भला कुछ न कहना। 25 और लाबन या'कूब के बराबर जा पहुँचा और या'कूब ने अपना ख़ेमा पहाड़ पर खड़ा कर रखवा था। इसलिए लाबन ने भी अपने भाइयों के साथ जिल'आद के पहाड़ पर डेरा लगा लिया। 26 तब लाबन ने या'कूब से कहा, कि तूने यह क्या किया कि मेरे पास से चोरी से चला आया, और मेरी बेटियों को भी इस तरह ले आया गोया वह तलवार से क़ैद की गई हैं? 27 तू छिप कर क्यों भागा और मेरे पास से चोरी से क्यों चला आया और मुझे कुछ कहा भी नहीं, वरना मैं तुझे खुशी — खुशी तबले और बरबत के साथ गाते बजाते ख़ाना करता? 28 और मुझे अपने* बेटों और बेटियों को चूमने भी न दिया? यह तूने बेहूदा काम किया। 29 मुझ में इतनी ताक़त है कि तुम को दुख दूँ, लेकिन तेरे बाप के खुदा ने कल रात मुझे यूँ कहा, कि ख़बरदार तू या'कूब को बुरा या भला कुछ न कहना। 30 ख़ैर! अब तू चला आया तो चला आया क्योंकि तू अपने बाप के घर का बहुत ख़्वाहिश मन्द है, लेकिन मेरे देवताओं को क्यों चुरा लाया? 31 तब या'कूब ने लाबन से कहा, “इसलिए कि मैं डरा, क्योंकि कि मैंने सोचा कि कहीं तू अपनी बेटियों को जबरन मुझ से छीन न ले। 32 अब जिसके पास तुझे तेरे बुत मिलें वह ज़िन्दा नहीं बचेगा। तेरा जो कुछ मेरे पास निकले उसे इन भाइयों के आगे पहचान कर ले।” क्योंकि या'कूब को मा'लूम न था कि

राखिल उन देवताओं को चुरा लाई है। 33 चुनांचे लाबन या'कूब और लियाह और दोनों लौंडियों के ख़ेमों में गया लेकिन उनको वहाँ न पाया, तब वह लियाह के ख़ेमा से निकल कर राखिल के ख़ेमे में दाख़िल हुआ। 34 और राखिल उन बुतों को लेकर और उनकी ऊँट के कजावे में रख कर उन पर बैठ गई थी, और लाबन ने सारे ख़ेमों में टटोल टटोल कर देख लिया पर उनको न पाया। 35 तब वह अपने बाप से कहने लगी, “ऐ मेरे आका! तू इस बात से नाराज़ न होना कि मैं तेरे आगे उठ नहीं सकती, क्योंकि मैं ऐसे हाल में हूँ जो 'औरतों का हुआ करता है।” तब उसने ढूँडा पर वह बुत उसको न मिले। 36 तब या'कूब ने गुस्सा होकर लाबन को मलामत की और या'कूब लाबन से कहने लगा कि मेरा क्या जुर्म और क्या कुसूर है कि तूने ऐसी तेज़ी से मेरा पीछा किया? 37 तूने जो मेरा सारा सामान टटोल — टटोल कर देख लिया तो तुझे तेरे घर के सामान में से क्या चीज़ मिली? अगर कुछ है तो उसे मेरे और अपने इन भाइयों के आगे रख, कि वह हम दोनों के बीच इन्साफ़ करें। 38 मैं पूरे बीस साल तेरे साथ रहा; न तो कभी तेरी भेड़ों और बकरियों का गाभ गिरा, और न तेरे रेवड़ के मेंढे मैंने खाए। 39 जिसे दरिन्दों ने फाड़ा मैं उसे तेरे पास न लाया, उसका नुक़सान मैंने सहा; जो दिन की या रात को चोरी गया उसे तूने मुझ से तलब किया। 40 मेरा हाल यह रहा कि मैं दिन को गर्मी और रात को सर्दी में मरा और मेरी आँखों से नींद दूर रहती थी। 41 मैं बीस साल तक तेरे घर में रहा, चौदह साल तक तो मैंने तेरी दोनों बेटियों की खातिर और छः साल तक तेरी भेड़ बकरियों की खातिर तेरी ख़िदमत की, और तूने दस बार मेरी मज़दूरी बदल डाली। 42 अगर मेरे बाप का खुदा अब्रहाम का मा'बूद जिसका रौब इस्हाक़ मानता था, मेरी तरफ़ न होता तो ज़रूर ही तू अब मुझे ख़ाली हाथ जाने देता। खुदा ने मेरी मुसीबत और मेरे हाथों की मेहनत देखी है और कल रात तुझे डाँटा भी।

43 तब लाबन ने या'कूब को जवाब दिया, यह बेटियाँ

भी मेरी और यह लड़के भी मेरे और यह भेड़ बकरियाँ भी मेरी हैं, बल्कि जो कुछ तुझे दिखाई देता है वह सब मेरा ही है। इसलिए मैं आज के दिन अपनी ही बेटियों से या उनके लड़कों से जो उनके हुए क्या कर सकता हूँ? 44 फिर अब आ, कि मैं और तू दोनों मिल कर आपस में एक 'अहद बाँधे और वही मेरे और तेरे बीच गवाह रहे। 45 तब या'कूब ने एक पत्थर लेकर उसे सुतून की तरह खड़ा किया। 46 और या'कूब ने अपने भाइयों से

* 31:28 31:28 नाती पोते और मेरी बेटियाँ

कहा, पत्थर जमा' करो! "उन्होंने पत्थर जमा' करके ढेर लगाया और वहीं उस ढेर के पास उन्होंने खाना खाया। ⁴⁷ और लाबन ने उसका नाम यज़र †शाहदूथा और या'कूब ने जिल'आद रखवा। ⁴⁸ और लाबन ने कहा कि यह ढेर आज के दिन मेरे और तेरे बीच गवाह हो। इसी लिए उसका नाम जिल'आद रखवा गया। ⁴⁹ और ‡मिस्फ़ाह भी क्योंकि लाबन ने कहा कि जब हम एक दूसरे से गैर हाज़िर हों तो खुदावन्द मेरे और तेरे बीच निगरानी करता रहे। ⁵⁰ अगर तू मेरी बेटियों को दुख दे और उनके अलावा और बीवियाँ करे तो कोई आदमी हमारे साथ नहीं है लेकिन देख खुदा मेरे और तेरे बीच में गवाह है। ⁵¹ लाबन ने या'कूब से यह भी कहा कि इस ढेर को देख और उस सुतून को देख जो मैंने अपने और तेरे बीच में खड़ा किया है। ⁵² यह ढेर गवाह हो और ये सुतून गवाह हो, नुक़सान पहुँचाने के लिए न तो मैं इस ढेर से उधर तेरी तरफ़ हद से बढ़ूँ और न तू इस ढेर और सुतून से इधर मेरी तरफ़ हद से बढ़े। ⁵³ अब्रहाम का खुदा और नहूर का खुदा और उनके बाप का खुदा हमारे बीच में इन्साफ़ करे।" और या'कूब ने उस ज्ञात की क्रसम खाई जिसका रौ'ब उसका बाप इस्हाक़ मानता था। ⁵⁴ तब या'कूब ने वहीं पहाड़ पर कुर्बानी पेश की और अपने भाइयों को खाने पर बुलाया, और उन्होंने खाना खाया और रात पहाड़ पर काटी। ⁵⁵ और लाबन सुबह — सवेरे उठा और अपने §बेटों और अपनी बेटियों को चूमा और उनको दुआ देकर रवाना हो गया और अपने मकान को लौटा।

32

¹ और या'कूब ने भी अपनी राह ली और खुदा के फ़रिश्ता उसे मिले। ² और या'कूब ने उनको देख कर कहा, कि यह खुदा का लश्कर है और उस जगह का नाम *महनाइम रखवा।

¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶¶

³ और या'कूब ने अपने आगे — आगे क़ासिदों को अदोम के मुल्क को, जो श'ईर की सर — ज़मीन में है, अपने भाई 'ऐसौ के पास भेजा, ⁴ और उनको हुक्म दिया, कि तुम मेरे †खुदावन्द 'ऐसौ से यह कहना कि आपका बन्दा या'कूब कहता है, कि मैं लाबन के यहाँ मुक़ीम था और अब तक वहीं रहा। ⁵ और मेरे पास गाय बैल गधे और भेड़ बकरियाँ और नौकर चाकर और लौंडियाँ हैं और मैं अपने खुदावन्द के पास इसलिए ख़बर भेजता हूँ कि मुझ पर आप के करम की नज़र हो ⁶ फिर क़ासिद

या'कूब के पास लौट कर आए और कहने लगे कि हम भाई 'ऐसौ के पास गए थे; वह चार सौ आदमियों को साथ लेकर तेरी मुलाक़ात को आ रहा है ⁷ तब या'कूब निहायत डर गया और परेशान हो और उस ने अपने साथ के लोगों और भेड़ बकरियों और गाये बैलों और ऊँटों के दो ग़ोल किए ⁸ और सोचा कि 'ऐसौ एक ग़ोल पर आ पड़े और उसे मारे तो दूसरा ग़ोल बच कर भाग जाएगा ⁹ और या'कूब ने कहा ऐ मेरे बाप अब्रहाम के खुदा और मेरे बाप इस्हाक़ के खुदा! ऐ खुदावन्द जिस ने मुझे यह फ़रमाया कि तू अपने मुल्क को अपने रिश्तेदारों के पास लौट जा और मैं तेरे साथ भलाई करूँगा ¹⁰ मैं तेरी सब रहमतों और वफ़ादारी के मुक़ाबला में जो तूने अपने बन्दा के साथ बरती है बिल्कुल हेच हूँ क्योंकि मैं सिर्फ़ अपनी लाठी लेकर इस यरदन के पार गया था और अब ऐसा हूँ कि मेरे दो ग़ोल हैं ¹¹ मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे मेरे भाई 'ऐसौ के हाथ से बचा ले क्योंकि मैं उस से डरता हूँ कि कहीं वह आकर मुझे और बच्चों को माँ समेत मार न डाले ¹² यह तेरा ही फ़रमान है कि मैं तेरे साथ ज़रूर भलाई करूँगा और तेरी नसल को दरिया की रेत की तरह बनाऊँगा जो कसरत की वजह से गिनी नहीं जा सकती। ¹³ और वह उस रात वही रहा और जो उसके पास था उस में से अपने भाई 'ऐसौ के लिए यह नज़राना लिया। ¹⁴ दो सौ बकरियाँ और बीस बकरे; दो सौ भेड़ें और बीस मेंढे। ¹⁵ और तीस दूध देने वाली ऊँटनीयाँ बच्चों समेत और चालीस गाय और दस बैल बीस गधियाँ और दस गधे ¹⁶ और उनको जुदा — जुदा ग़ोल कर के नौकरों को सौंपना और उन से कहा कि तुम मेरे आगे आगे पार जाओ और ग़ोलों को ज़रा दूर दूर रखना। ¹⁷ और उसने सब से अगले ग़ोल के रखवाले को हुक्म दिया कि जब मेरा भाई 'ऐसौ तुझे मिले और तुझ से पूछे कि तू किस का नौकर है और कहाँ जाता है और यह जानवर जो तेरे आगे आगे हैं किस के हैं? ¹⁸ तू कहना कि यह तेरे खादिम या'कूब के हैं, यह नज़राना है जो मेरे खुदावन्द 'ऐसौ के लिए भेजा गया है और वह खुद भी हमारे पीछे पीछे आ रहा है। ¹⁹ और उस ने दूसरे और तीसरे को ग़ोलों के सब रखवालों को हुक्म दिया कि जब 'ऐसौ तुमको मिले तो तुम यही बात कहना। ²⁰ और यह भी कहना कि तेरा खादिम या'कूब खुद भी हमारे पीछे पीछे आ रहा है, उस ने यह सोचा कि मैं इस नज़राना से जो मुझ से पहले वहाँ जायेगा उसे खुश कर लूँ, तब उस का मुँह देखूँगा, शायद यूँ वह मुझको कुबूल कर ले।

† 31:47 31:47 इस अरामी लफ़्ज़ के मायने हैं गवाह का अंवार ‡ 31:49 31:49 घंटाघर § 31:55 31:55 नाती पोते मेरी बेटियाँ

* 32:2 32:2 दो छावनियाँ † 32:4 32:4 मालिक, इन हवालाजत में भी देखें: — 32:4, 18; 33:8, 13 — 14, 15; 43:20; 44:18

21 चुनौचे वह नज़राना उसके आगे आगे पार गया लेकिन वह खुद उस रात अपने डेरे में रहा।

22 और वह उसी रात उठा और अपनी दोनों बीवियों

दोनों लौंडियों और ग्यारह बेटों को लेकर उनको यबूक के घाट से पार उतारा। 23 और उनको लेकर नदी पार कराया और अपना सब कुछ पार भेज दिया। 24 और या'कूब अकेला रह गया और पौ फटने के वक़्त तक एक शख्स वहाँ उस से कुशती लड़ता रहा। 25 जब उसने देखा कि वह उस पर ग़ालिब नहीं होता, तो उसकी रान को अन्दर की तरफ़ से छुआ और या'कूब की रान की नस उसके साथ कुशती करने में चढ़ गई। 26 और उसने कहा, “मुझे जाने दे क्योंकि पौ फट चली,” या'कूब ने कहा, “जब तक तू मुझे बरकत न दे, मैं तुझे जाने नहीं दूँगा।” 27 तब उसने उससे पूछा, तेरा क्या नाम है? उसने जवाब दिया, “या'कूब।” 28 उसने कहा, “तेरा नाम आगे को या'कूब नहीं बल्कि इस्राईल होगा, क्योंकि तूने खुदा और आदमियों के साथ जोर आजमाई की और ग़ालिब हुआ।” 29 तब या'कूब ने उससे कहा, “मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, तू मुझे अपना नाम बता दे।” उसने कहा, “तू मेरा नाम क्यों पूछता है?” और उसने उसे वहाँ बरकत दी। 30 और या'कूब ने उस जगह का नाम फ़नीएल रखवा और कहा, “मैंने खुदा को आमने सामने देखा, तो भी मेरी जान बची रही।” 31 और जब वह फ़नीएल से गुज़र रहा था तो आफ़ताब तुलू हुआ और वह अपनी रान से लंगड़ाता था। 32 इसी वजह से बनी इस्राईल उस नस की जो रान में अन्दर की तरफ़ है आज तक नहीं खाते, क्योंकि उस शख्स ने या'कूब की रान की नस को जो अन्दर की तरफ़ से चढ़ गई थी छू दिया था।

33

33 और या'कूब ने अपनी आँखें उठा कर नज़र की ओर

क्या देखता है कि 'ऐसौ चार सौ आदमी साथ लिए चला आ रहा है। तब उसने लियाह और राखिल और दोनों लौंडियों को बच्चे बाँट दिए। 2 और लौंडियों और उनके बच्चों को सबसे आगे, और लियाह और उसके बच्चों को पीछे, और राखिल और यूसुफ़ को सबसे पीछे रखवा। 3 और वह खुद उनके आगे — आगे चला और अपने भाई के पास पहुँचते — पहुँचते सात बार ज़मीन तक झुका। 4 और 'ऐसौ उससे मिलने को दौड़ा, और उससे बग़लगीर हुआ और उसे गले लगाया और चूमा, और वह दोनों

रोए। 5 फिर उसने आँखें उठाई और 'औरतों और बच्चों को देखा और कहा कि यह तेरे साथ कौन हैं? उसने कहा, “यह वह बच्चे हैं जो खुदा ने तेरे खादिम को इनायत किए हैं।” 6 तब लौंडियाँ और उनके बच्चे नज़दीक आए और अपने आप को झुकाया। 7 फिर लियाह अपने बच्चों के साथ नज़दीक आई और वह झुके, आखिर को यूसुफ़ और राखिल पास आए और उन्होंने अपने आप को झुकाया। 8 फिर उसने कहा कि उस बड़े गोल से जो मुझे मिला तेरा क्या मतलब है? उसने कहा, यह कि मैं अपने खुदावन्द की नज़र में मक्बूल ठहरूँ। 9 तब 'ऐसौ ने कहा, “मेरे पास बहुत हैं; इसलिए ऐ मेरे भाई जो तेरा है वह तेरा ही रहे।” 10 या'कूब ने कहा, “नहीं अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र हुई है तो मेरा नज़राना मेरे हाथ से कुबूल कर, क्योंकि मैंने तो तेरा मुँह ऐसा देखा जैसा कोई खुदा का मुँह देखता है, और तू मुझ से राज़ी हुआ। 11 इसलिए मेरा नज़राना जो तेरे सामने पेश हुआ उसे कुबूल कर ले, क्योंकि खुदा ने मुझ पर बड़ा फ़ज़ल किया है और मेरे पास सब कुछ है।” ग़र्ज़ उसने उसे मजबूर किया, तब उसने उसे ले लिया। 12 और उसने कहा कि अब हम कूच करें और चल पड़ें, और मैं तेरे आगे — आगे हो लूँगा। 13 उसने उसे जवाब दिया, “मेरा खुदावन्द जानता है कि मेरे साथ नाज़ुक बच्चे और दूध पिलाने वाली भेड़ — बकरियाँ और गाय हैं। अगर उनकी एक दिन भी हद से ज्यादा हंकाएँ तो सब भेड़ बकरियाँ मर जाएँगी। 14 इसलिए मेरा खुदावन्द अपने खादिम से पहले खाना हो जाए, और मैं चौपायों और बच्चों की रफ़्तार के मुताबिक़ आहिस्ता — आहिस्ता चलता हुआ अपने खुदावन्द के पास श'ईर में आ जाऊँगा।” 15 तब 'ऐसौ ने कहा कि मर्जी हो तो मैं जो लोग मेरे साथ हैं उनमें से थोड़े तेरे साथ छोड़ता जाऊँ। उसने कहा, इसकी क्या ज़रूरत है? मेरे खुदावन्द की नज़र — ए — करम मेरे लिए काफ़ी है। 16 तब 'ऐसौ उसी रोज़ उल्टे पाँव श'ईर को लौटा। 17 और या'कूब सफ़र करता हुआ सुक्कात में आया, और अपने लिए एक घर बनाया और अपने चौपायों के लिए झोंपड़े खड़े किए। इसी वजह से इस जगह का नाम सुक्कात पड़ गया। 18 और या'कूब जब फ़द्दान अराम से चला तो मुल्क — ए — कना'न के एक शहर सिकम के नज़दीक सही — ओ — सलामत पहुँचा और उस शहर के सामने अपने डेरे लगाए। 19 और ज़मीन के जिस हिस्से पर उसने अपना खेमा खड़ा किया था, उसे उसने सिकम के बाप हमोर के लड़कों से चाँदी के

सौ सिक्के देकर खरीद लिया। ²⁰ और वहाँ उस ने खुदा, के लिए एक मसबह बनाया और उसका नाम *एल — इलाह — ए — इस्राईल रखवा।

34

????? ??

¹ और लियाह की बेटी दीना जो या'कूब से उसके पैदा हुई थी, उस मुल्क की लड़कियों के देखने को बाहर गई। ² तब उस मुल्क के अमीर हव्वी हमोर के बेटे सिकम ने उसे देखा, और उसे ले जाकर उसके साथ मुबाशरत की और उसे ज़लील किया। ³ और उसका दिल या'कूब की बेटी दीना से लग गया, और उसने उस लड़की से इश्क में मीठी — मीठी बातें कीं। ⁴ और सिकम ने अपने बाप हमोर से कहा कि इस लड़की को मेरे लिए ब्याह ला दे। ⁵ और या'कूब को मा'लूम हुआ कि उसने उसकी बेटी दीना को बे'इज़्जत किया है। लेकिन उसके बेटे चौपायों के साथ जंगल में थे इसलिए या'कूब उनके आने तक चुपका रहा। ⁶ तब सिकम का बाप हमोर निकल कर या'कूब से बातचीत करने को उसके पास गया। ⁷ और या'कूब के बेटे यह बात सुनते ही जंगल से आए। यह शख्स बड़े नाराज़ और खौफ़नाक थे, क्योंकि उसने जो या'कूब की बेटी से मुबाशरत की तो बनी — इस्राईल में ऐसा मकरूह फ़ेल किया जो हरगिज़ मुनासिब न था। ⁸ तब हमोर उन से कहने लगा कि मेरा बेटा सिकम तुम्हारी बेटी को दिल से चाहता है, उसे उसके साथ ब्याह दो। ⁹ हम से समधियाना कर लो; अपनी बेटियाँ हम को दो और हमारी बेटियाँ आप लो। ¹⁰ तो तुम हमारे साथ बसे रहोगे और यह मुल्क तुम्हारे सामने है, इसमें ठहरना और तिजारत करना और अपनी जायदादें खड़ी कर लेना। ¹¹ और सिकम ने इस लड़की के बाप और भाइयों से कहा, कि मुझ पर बस तुम्हारे करम की नज़र हो जाए, फिर जो कुछ तुम मुझ से कहोगे मैं दूँगा। ¹² मैं तुम्हारे कहने के मुताबिक़ जितना मेहर और जहेज़ तुम मुझ से तलब करो, दूँगा लेकिन लड़की को मुझ से ब्याह दो। ¹³ तब या'कूब के बेटों ने इस वजह से कि उसने उनकी बहन दीना को बे'इज़्जत किया था, रिया से सिकम और उसके बाप हमोर को जवाब दिया, ¹⁴ और कहने लगे, “हम यह नहीं कर सकते कि नामरूतून आदमी को अपनी बहन दें, क्योंकि इसमें हमारी बड़ी रुस्वाई है। ¹⁵ लेकिन जैसे हम हैं अगर तुम वैसे ही हो जाओ, कि तुम्हारे हर आदमियों का ख़तना कर दिया जाए तो हम राज़ी हो जाएँगे। ¹⁶ और हम अपनी बेटियाँ तुम्हें देंगे और तुम्हारी बेटियाँ लेंगे और तुम्हारे साथ रहेंगे और हम सब

एक क्रौम हो जाएँगे। ¹⁷ और अगर तुम ख़तना कराने के लिए हमारी बात न मानी तो हम अपनी लड़की लेकर चले जाएँगे।” ¹⁸ उनकी बातें हमोर और उसके बेटे सिकम को पसन्द आई। ¹⁹ और उस जवान ने इस काम में ताख़ीर न की क्योंकि उसे या'कूब की बेटी की चाहत थी, और वह अपने बाप के सारे घराने में सबसे खास था। ²⁰ फिर हमोर और उसका बेटा सिकम अपने शहर के फाटक पर गए और अपने शहर के लोगों से यूँ बातें करने लगे कि, ²¹ यह लोग हम से मेल जोल रखते हैं; तब वह इस मुल्क में रह कर सौदागरी करें, क्योंकि इस मुल्क में उनके लिए बहुत गुन्जाइश है, और हम उनकी बेटियाँ ब्याह लें और अपनी बेटियाँ उनकी दें। ²² और वह भी हमारे साथ रहने और एक क्रौम बन जाने को राज़ी हैं, मगर सिर्फ़ इस शर्त पर कि हम में से हर आदमी का ख़तना किया जाए जैसा उनका हुआ है। ²³ क्या उनके चौपाए और माल और सब जानवर हमारे न हो जाएँगे? हम सिर्फ़ उनकी मान लें और वह हमारे साथ रहने लगेंगे। ²⁴ तब उन सभी ने जो उसके शहर के फाटक से आया — जाया करते थे, हमोर और उसके बेटे सिकम की बात मानी और जितने उसके शहर के फाटक से आया — जाया करते थे उनमें से हर आदमी ने ख़तना कराया। ²⁵ और तीसरे दिन जब वह दर्द में मुब्तिला थे, तो यूँ हुआ कि या'कूब के बेटों में से दीना के दो भाई, शमौन और लावी, अपनी अपनी तलवार लेकर अचानक शहर पर आ पड़े और सब आदमियों को क़त्ल किया। ²⁶ और हमोर और उसके बेटे सिकम को भी तलवार से क़त्ल कर डाला और सिकम के घर से दीना को निकाल ले गए। ²⁷ और या'कूब के बेटे मक्तूलों पर आए और शहर को लूटा, इसलिए कि उन्होंने उनकी बहन को बे'इज़्जत किया था। ²⁸ उन्होंने उनकी भेड़ — बकरियाँ और गाय — बैल, गधे और जो कुछ शहर और खेत में था ले लिया। ²⁹ और उनकी सब दौलत लूटी और उनके बच्चों और बीवियों को क़ब्जे में कर लिया, और जो कुछ घर में था सब लूट — घसूट कर ले गए। ³⁰ तब या'कूब ने शमौन और लावी से कहा, कि तुम ने मुझे कुढ़ाया क्योंकि तुम ने मुझे इस मुल्क के बाशिन्दों, या'नी कना'नियों और फ़रिज़ियों में नफ़रतअंगेज बना दिया, क्योंकि मेरे साथ तो थोड़े ही आदमी हैं; अब वह मिल कर मेरे मुक्काबिले को आएँगे और मुझे क़त्ल कर देंगे, और मैं अपने घराने समेत बर्बाद हो जाऊँगा। ³¹ उन्होंने कहा, “तो क्या उसे मुनासिब था कि वह हमारी बहन के साथ कसबी की तरह बर्ताव करता?”

35

* 33:20 33:20 1: खुदा, इस्राईल का खुदा, इस्राईल का खुदा जोरावर है

२२'२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२२

1 और खुदा ने या'कूब से कहा, कि उठ बैतएल को जा और वहीं रह और वहाँ खुदा के लिए, जो तुझे उस वक्त दिखाई दिया जब तू अपने भाई 'ऐसौ के पास से भागा जा रहा था, एक मज़बह बना। 2 तब या'कूब ने अपने घराने और अपने सब साथियों से कहा "ग़ैर मा'बूदों को जो तुम्हारे बीच हैं दूर करो, और पाकी हासिल करके अपने कपड़े बदल डालो। 3 और आओ, हम खाना हों और बैत — एल को जाएँ, वहाँ मैं खुदा के लिए जिसने मेरी तंगी के दिन मेरी दुआ कुबूल की और जिस राह में मैं चला मेरे साथ रहा, मज़बह बनाऊँगा।" 4 तब उन्होंने सब ग़ैर मा'बूदों को जो उनके पास थे और मुन्दरों को जो उनके कानों में थे, या'कूब को दे दिया और या'कूब ने उनको उस बलूत के दरख्त के नीचे जो सिकम के नज़दीक था दबा दिया। 5 और उन्होंने कूच किया और उनके आस पास के शहरों पर ऐसा बड़ा खौफ़ छाया हुआ था कि उन्होंने या'कूब के बेटों का पीछा न किया। 6 और या'कूब उन सब लोगों के साथ जो उसके साथ थे लूज़ पहुँचा, बैत — एल यही है और मुल्क — ए — कना'न में है। 7 और उसने वहाँ मज़बह बनाया और उस मुक़ाम का नाम एल — *बैतएल रखवा, क्योंकि जब वह अपने भाई के पास से भागा जा रहा था तो खुदा वहीं उस पर ज़ाहिर हुआ था। 8 और रिब्का की दाया दबोरा मर गई और वह बैतएल की उतराई में बलूत के दरख्त के नीचे दफ़न हुई, और उस बलूत का नाम †अल्लोन बकूत रखवा गया। 9 और या'कूब के फ़दान अराम से आने के बाद खुदा उसे फिर दिखाई दिया और उसे बरकत बख़्शी। 10 और खुदा ने उसे कहा कि तेरा नाम या'कूब है; तेरा नाम आगे को या'कूब न कहलाएगा, बल्कि तेरा नाम इस्राईल होगा। तब उसने उसका नाम इस्राईल रखवा। 11 फिर खुदा ने उसे कहा, कि मैं खुदा — ए — कादिर — ए — मुतलक हूँ, तू कामयाब हो और बहुत हो जा। तुझ से एक क्रौम, बल्कि क्रौमों के कबीले पैदा होंगे और बादशाह तेरे सुल्ब से निकलेंगे। 12 और यह मुल्क जो मैंने अब्रहाम और इस्हाक़ को दिया है, वह तुझ को दूँगा और तेरे बाद तेरी नसल को भी यही मुल्क दूँगा। 13 और खुदा जिस जगह उससे हम कलाम हुआ, वहीं से उसके पास से ऊपर चला गया। 14 तब या'कूब ने उस जगह जहाँ वह उससे हम — कलाम हुआ, पत्थर का एक सुतून खड़ा किया और उस पर तपावन किया और तेल डाला। 15 और या'कूब ने उस मक़ाम का नाम जहाँ खुदा उससे हम कलाम हुआ

* 35:7 35:7 बेथेल का खुदा † 35:8 35:8 बलूत का दरख्त जो रोता है ‡ 35:18 35:18 मेरे गम का बेटा § 35:18 35:18 मेरे दायें हाथ का बेटा

'बैतएल' रखवा।

२२२२२ २२ २२'२२२ २२ २२२२

16 और वह बैतएल से चले और इफ़रात थोड़ी ही दूर रह गया था कि राखिल के दर्द — ए — ज़िह लगा, और वज़ा' — ए — हम्ल में निहायत दिक्कत हुई। 17 और जब वह सख्त दर्द में मुब्तिला थी तो दाई ने उससे कहा, "डर मत, अब के भी तेरे बेटा ही होगा।" 18 और यूँ हुआ कि उसने मरते — मरते उसका नाम ‡बिनऊनी रखवा और मर गई, लेकिन उसके बाप ने उसका नाम §बिनयमीन रखवा। 19 और राखिल मर गई और इफ़रात, या'नी बैतलहम के रास्ते में दफ़न हुई। 20 और या'कूब ने उसकी क़बर पर एक सुतून खड़ा कर दिया। राखिल की क़बर का यह सुतून आज तक मौजूद है। 21 और इस्राईल आगे बढ़ा और 'अदर के बुर्ज की परली तरफ़ अपना डेरा लगाया। 22 और इस्राईल के उस मुल्क में रहते हुए ऐसा हुआ कि रूबिन ने जाकर अपने बाप की हरम बिल्हाह से मुबाशरत की और इस्राईल को यह मा'लूम हो गया। 23 उस वक्त या'कूब के बारह बेटे थे लियाह के बेटे यह थे: रूबिन या'कूब का पहलौठा, और शमौन और लावी और यहूदाह, इश्कार और ज़बूलून। 24 और राखिल के बेटे: यूसुफ़ और बिनयमीन थे। 25 और राखिल की लौंडी बिल्हाह के बेटे, दान और नफ़ताली थे। 26 और लियाह की लौंडी ज़िलफ़ा के बेटे, जद् और आशर थे। यह सब या'कूब के बेटे हैं जो फ़दान अराम में पैदा हुए। 27 और या'कूब ममरे में जो करयत अरबा' या'नी हबरून है जहाँ अब्रहाम और इस्हाक़ ने डेरा किया था, अपने बाप इस्हाक़ के पास आया। 28 और इस्हाक़ एक सौ अस्सी साल का हुआ। 29 तब इस्हाक़ ने दम छोड़ दिया और वफ़ात पाई और बूढ़ा और पूरी उम्र का हो कर अपने लोगों में जा मिला, और उसके बेटों 'ऐसौ और या'कूब ने उसे दफ़न किया।

36

'२२२ २२ २२२२२२२

1 और 'ऐसौ या'नी अदोम का नसबनामा यह है। 2 'ऐसौ कना'नी लड़कियों में से हिती ऐलोन की बेटी 'अद्दा को, और हव्वी सबा'ओन की नवासी और 'अना की बेटी ओहलीबामा की, 3 और इस्मा'ईल की बेटी और नवायोत की बहन बशामा को ब्याह लाया। 4 और 'ऐसौ से 'अद्दा के इलिफ़ज़ पैदा हुआ, और बशामा के र'ऊएल पैदा हुआ, 5 और ओहलीबामा के य'ओस और यालाम

और कोरह पैदा हुए। यह 'ऐसौ के बेटे हैं जो मुल्क — ए — कना'न में पैदा हुए। ⁶ और 'ऐसौ अपनी बीवियों और बेटे बेटियों और अपने घर के सब नौकर चाकरों और अपने चौपायों और तमाम जानवरों और अपने सब माल अस्वाब को, जो उसने मुल्कए — कना'न में जमा' किया था, लेकर अपने भाई या'कूब के पास से एक दूसरे मुल्क को चला गया। ⁷ क्योंकि उनके पास इस क्रूर सामान हो गया था कि वह एक जगह रह नहीं सकते थे, और उनके चौपायों की कसरत की वजह से उस ज़मीन में जहाँ उनका क्रयाम था गुंजाइश न थी। ⁸ तब 'ऐसौ जिसे अदोम भी कहते हैं, कोह — ए — श'ईर में रहने लगा। ⁹ और 'ऐसौ का जो कोह — ए — श'ईर के अदोमियों का बाप है यह नसबनामा है। ¹⁰ 'ऐसौ के बेटों के नाम यह हैं: इलिफ़ज़, 'ऐसौ की बीवी 'अद्दा का बेटा; और र'ऊएल, 'ऐसौ की बीवी बशामा का बेटा। ¹¹ इलिफ़ज़ के बेटे, तेमान और ओमर और सफ़ी और जा'ताम और कनज़ थे। ¹² और तिम्ना 'ऐसौ के बेटे इलिफ़ज़ की हरम थी, और इलिफ़ज़ से उसके 'अमालीक पैदा हुआ; और 'ऐसौ की बीवी 'अद्दा के बेटे यह थे। ¹³ र'ऊएल के बेटे यह हैं: नहत और ज़ारह और सम्मा और मिज़्ज़ा, यह 'ऐसौ की बीवी बशामा के बेटे थे। ¹⁴ और ओहलीबामा के बेटे, जो 'अना की बेटी सबा'ओन की नवासी और 'ऐसौ की बीवी थी, यह हैं: 'ऐसौ से उसके य'ओस और यालाम और कोरह पैदा हुए। ¹⁵ और 'ऐसौ की औलाद में जो रईस थे वह यह हैं: 'ऐसी के पहलौटे बेटे इलिफ़ज़ की औलाद में रईस तेमान, रईस ओमर, रईस सफ़ी, रईस कनज़, ¹⁶ रईस कोरह, रईस जा'ताम, रईस 'अमालीक। यह वह रईस हैं जो इलिफ़ज़ से मुल्क — ए — अदोम में पैदा हुए और 'अद्दा के फ़र्ज़न्द थे। ¹⁷ और र'ऊएल — बिन 'ऐसौ के बेटे यह हैं: रईस नहत, रईस ज़ारह, रईस सम्मा, रईस मिज़्ज़ा। यह वह रईस हैं जो र'ऊएल से मुल्क — ए — अदोम में पैदा हुए और 'ऐसौ की बीवी बशामा के फ़र्ज़न्द थे। ¹⁸ और 'ऐसौ की बीवी ओहलीबामा की औलाद यह हैं: रईस य'ऊस, रईस यालाम, रईस कोरह। यह वह रईस हैं जो 'ऐसौ की बीवी ओहलीबामा बिनत 'अना के फ़र्ज़न्द थे। ¹⁹ और 'ऐसौ या'नी अदोम की औलाद और उनके रईस यह हैं।

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

²⁰ और श'ईर होरी के बेटे जो उस मुल्क के बाशिन्दे थे, यह हैं: लोप्तान और सोबल और सबा'ओन और 'अना ²¹ और दीसोन और एसर और दीसान; बनी श'ईर में से जो होरी रईस मुल्क — ए — अदोम में हुए ये हैं।

* 36:24 36:24 खचर

²² होरी और हीमाम लोतान के बेटे, और तिम्ना' लोतान की बहन थी। ²³ और यह सोबल के बेटे हैं: 'अलवान और मानहत और एबाल और सफ़ी और ओनाम। ²⁴ और सबा'ओन के बेटे यह हैं: अय्याह और 'अना; यह वह 'अना है जिसे अपने बाप के गधों को वीराने में चराते वक्त *गर्म चश्मे मिले। ²⁵ और 'अना की औलाद यह हैं: दीसोन और ओहलीबामा बिनत 'अना। ²⁶ और दीसोन के बेटे यह हैं: हमदान और इशबान और यित्रान और किरान। ²⁷ यह एसर के बेटे हैं: बिलहान और ज़ावान और 'अकान। ²⁸ दीसान के बेटे यह है: ऊज़ और इरान। ²⁹ जो होरियों में से रईस हुए वह यह हैं: रईस 'लुतान, रईस, सोबल 'रईस सब'उन और रईस 'अना, ³⁰ रईस दीसोन, रईस एसर, रईस दीसान; यह उन होरियों के रईस हैं जो मुल्कए — श'ईर में थे।

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

³¹ यही वह बादशाह हैं जो मुल्क — ए — अदोम से पहले उससे कि इस्राईल का कोई बादशाह हो, मुसल्लत थे। ³² बाला' — बिनब'ओर अदोम में एक बादशाह था, और उसके शहर का नाम दिन्हाबा था। ³³ बाला' मर गया और यूबाब — बिन ज़ारह जो बसराही था, उसकी जगह बादशाह हुआ। ³⁴ फिर यूबाब मर गया और हुशीम जो तेमानियों के मुल्क का बाशिन्दा था, उसका जानशीन हुआ। ³⁵ और हुशीम मर गया और हदद — बिन — बदद जिसने मोआब के मैदान में मिदियानियों को मारा, उसका जानशीन हुआ और उसके शहर का नाम 'अवीत था। ³⁶ और हदद मर गया और शम्ला जो मुसरिका का था उसका जानशीन हुआ। ³⁷ और शम्ला मर गया और साउल उसका जानशीन हुआ ये रहुबुत का था जो दरियाई फ़ुरात के बराबर है। ³⁸ और साऊल मर गया और बा'लहनानबिन — 'अकबूर उसका जानशीन हुआ। ³⁹ और बा'लहनान — बिन — 'अकबूर मर गया और हदर उसका जानशीन हुआ, और उसके शहर का नाम पाऊ और उसकी बीवी का नाम महेतबएल था, जो मतरिद की बेटी और मेज़ाहाब की नवासी थी। ⁴⁰ फिर 'ऐसौ के रईसों के नाम उनके खान्दानों और मक्रामो और नामों के मुताबिक यह हैं: रईस, तिम्ना, रईस 'अलवा, रईस यतेत, ⁴¹ रईस ओहलीबामा, रईस ऐला, रईस फिनोन, ⁴² रईस कनज़, रईस तेमान, रईस मिबसार, ⁴³ रईस मज्दाएल, रईस इराम; अदोम का रईस यही है, जिनके नाम उनके मक्बूज़ा मुल्क में उनके घर के मुताबिक दिए गए हैं। यह हाल अदोमियों के बाप 'ऐसौ का है।

37

११११११ ११ ११११११

1 और या'कूब मुल्क — ए — कना'न में रहता था, जहाँ उसका बाप मुसाफ़िर की तरह रहा था। 2 या'कूब की नसल का हाल यह है: कि यूसुफ़ सत्रह साल की उम्र में अपने भाइयों के साथ भेड़ — बकरियाँ चराया करता था। यह लड़का अपने बाप की बीवियों, बिल्हाह और ज़िल्फ़ा के बेटों के साथ रहता था और वह उनके बुरे कामों की ख़बर बाप तक पहुँचा देता था। 3 और इस्राईल यूसुफ़ को अपने सब बेटों से ज्यादा प्यार करता था क्योंकि वह उसके बुढ़ापे का बेटा था, और उसने उसे एक बूकलमून क़बा भी बनवा दी। 4 और उसके भाइयों ने देखा कि उनका बाप उसके सब भाइयों से ज्यादा उसी को प्यार करता है, इसलिए वह उससे अदावत रखने लगे और ठीक तौर से बात भी नहीं करते थे। 5 और यूसुफ़ ने एक ख़्वाब देखा जिसे उसने अपने भाइयों को बताया, तो वह उससे और भी अदावत रखने लगे। 6 और उसने उनसे कहा, “ज़रा वह ख़्वाब तो सुनो, जो मैंने देखा है: 7 हम खेत में पूले बांधते थे और क्या देखता हूँ कि मेरा पूला उठा और सीधा खड़ा हो गया, और तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को चारों तरफ़ से घेर लिया और उसे सिज्दा किया।” 8 तब उसके भाइयों ने उससे कहा, कि क्या तू सचमुच हम पर सल्लनत करेगा या हम पर तेरा तसल्लुत होगा? और उन्होंने उसके ख़्वाबों और उसकी बातों की वजह से उससे और भी ज्यादा अदावत रखी। 9 फिर उसने दूसरा ख़्वाब देखा और अपने भाइयों को बताया। उसने कहा, “देखो! मुझे एक और ख़्वाब दिखाई दिया है, कि सूरज और चाँद और ग्यारह सितारों ने मुझे सिज्दा किया।” 10 और उसने इसे अपने बाप और भाइयों दोनों को बताया; तब उसके बाप ने उसे डाँटा और कहा कि यह ख़्वाब क्या है जो तूने देखा है? क्या मैं और तेरी माँ और तेरे भाई सचमुच तेरे आगे ज़मीन पर झुक कर तुझे सिज्दा करेंगे? 11 और उसके भाइयों को उससे हसद हो गया, लेकिन उसके बाप ने यह बात याद रखी। 12 और उसके भाई अपने बाप की भेड़ — बकरियाँ चराने सिकम को गए। 13 तब इस्राईल ने यूसुफ़ से कहा, “तेरे भाई सिकम में भेड़ — बकरियों को चरा रहे होंगे, इसलिए आ कि मैं तुझे उनके पास भेजें।” उसने उसे कहा, “मैं तैयार हूँ।” 14 तब उसने कहा, “तू जा कर देख कि तेरे भाइयों का और भेड़ — बकरियों का क्या हाल है, और आकर मुझे ख़बर दे।” तब उसने उसे हब्रून की वादी से भेजा और वह सिकम में आया।

15 और एक शख्स ने उसे मैदान में इधर — उधर आवारा फिरते पाया; यह देख कर उस शख्स ने उससे पूछा, “तू क्या ढूँडता है?” 16 उसने कहा, “मैं अपने भाइयों को ढूँडता हूँ। ज़रा मुझे बता दे कि वह भेड़ बकरियों को कहाँ चरा रहे हैं?” 17 उस शख्स ने कहा, “वह यहाँ से चले गए, क्योंकि मैंने उनको यह कहते सुना, 'चलो, हम दूतैन को जाएँ।'” चुनाँचे यूसुफ़ अपने भाइयों की तलाश में चला और उनको दूतैन में पाया।

११११११ ११ ११११११ १११ ११११ ११११

18 और जूँ ही उन्होंने उसे दूर से देखा, इससे पहले कि वह नज़दीक पहुँचे, उसके क़त्ल का मन्सूबा बाँधा। 19 और आपस में कहने लगे, “देखो! ख़्वाबों का देखने वाला आ रहा है। 20 आओ, अब हम उसे मार डालें और किसी गढ़े में डाल दें और यह कह देंगे कि कोई बुरा दरिन्दा उसे खा गया; फिर देखेंगे कि उसके ख़्वाबों का अन्जाम क्या होता है।” 21 तब, रूबिन ने यह सुन कर उसे उनके हाथों से बचाया और कहा, “हम उसकी जान न लें।” 22 और रूबिन ने उनसे यह भी कहा कि खून न बहाओ बल्कि उसे इस गढ़े में जो वीराने में है डाल दो, लेकिन उस पर हाथ न उठाओ। वह चाहता था कि उसे उनके हाथ से बचा कर उसके बाप के पास सलामत पहुँचा दे। 23 और यूँ हुआ कि जब यूसुफ़ अपने भाइयों के पास पहुँचा, तो उन्होंने उसकी बू क़लमून क़बा की जो वह पहने था उतार लिया; 24 और उसे उठा कर गढ़े में डाल दिया। वह गढ़ा सूखा था, उसमें ज़रा भी पानी न था। 25 और वह खाना खाने बैठे और आँखें उठाई तो देखा कि इस्माईलियों का एक काफ़िला ज़िल'आद से आ रहा है, और गर्म मसाल्हे और रौग़ान बलसान और मुर्र ऊँटों पर लादे हुए मिस्र को लिए जा रहा है। 26 तब यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा कि अगर हम अपने भाई को मार डालें और उसका खून छिपाएँ तो क्या नफ़ा होगा? 27 आओ, उसे इस्माईलियों के हाथ बेच डालें कि हमारे हाथ उस पर न उठे क्योंकि वह हमारा भाई और हमारा खून है। उसके भाइयों ने उसकी बात मान ली। 28 फिर वह मिदिया'नी सौदागर उधर से गुज़रे, तब उन्होंने यूसुफ़ को खींच कर गढ़े से बाहर निकाला और उसे इस्माईलियों के हाथ *बीस रुपये को बेच डाला और वह यूसुफ़ को मिस्र में ले गए। 29 जब रूबिन गढ़े पर लौट कर आया और देखा कि यूसुफ़ उसमें नहीं है तो अपना लिबास चाक किया। 30 और अपने भाइयों के पास उल्टा फिरा और कहने लगा, कि लड़का तो वहाँ नहीं है, अब मैं कहाँ जाऊँ? 31 फिर उन्होंने यूसुफ़ की

* 37:28 37:28 चांदी के बीस टुकड़े, यह इतनी रकम (कीमत) थी जिससे एक जवान गुलाम खरीदा जाता था

क़बा लेकर और एक बकरा जबह करके उसे उसके खून में तर किया। ³² और उन्होंने उस बूक़लमून क़बा को भिजवा दिया। फिर वह उसे उनके बाप के पास ले आए और कहा, “हम को यह चीज़ पड़ी मिली; अब तू पहचान कि यह तेरे बेटे की क़बा है या नहीं?” ³³ और उसने उसे पहचान लिया और कहा, “यह तो मेरे बेटे की क़बा है। कोई बुरा दरिन्दा उसे खा गया है, यूसुफ़ बेशक फाड़ा गया।” ³⁴ तब या'क़ूब ने अपना लिबास चाक किया और टाट अपनी कमर से लपेटा, और बहुत दिनों तक अपने बेटे के लिए मातम करता रहा। ³⁵ और उसके सब बेटे बेटियाँ उसे तसल्ली देने जाते थे, लेकिन उसे तसल्ली न होती थी। वह यही कहता रहा, कि मैं तो मातम ही करता हुआ क़बर में अपने बेटे से जा मिलूँगा। इसलिए उसका बाप उसके लिए रोता रहा। ³⁶ और मिदियानियों ने उसे मिस्र में फूतीफ़ार के हाथ जो फ़िर'औन का एक हाकिम और जिलौदारों का सरदार था बेचा।

38

?????? ??

¹ उन्ही दिनों में ऐसा हुआ कि यहूदाह अपने भाइयों से जुदा हो कर एक 'अदूल्लामी आदमी के पास, जिसका नाम हीरा था गया। ² और यहूदाह ने वहाँ 'सुवा' नाम किसी कना'नी की बेटी को देखा और उससे ब्याह करके उसके पास गया। ³ वह हामिला हुई और उसके एक बेटा हुआ, जिसका नाम उसने 'एर रखवा। ⁴ और वह फिर हामिला हुई और एक बेटा हुआ और उसका नाम ओनान रखवा। ⁵ फिर उसके एक और बेटा हुआ और उसका नाम सीला रखवा, और यहूदाह कज़ीब में था जब इस 'औरत के यह लड़का हुआ। ⁶ और यहूदाह अपने पहलौठे बेटे 'एर के लिए एक 'औरत ब्याह लाया जिसका नाम तमर था। ⁷ और यहूदाह का पहलौठा बेटा 'एर खुदावन्द की निगाह में शरीर था, इसलिए खुदावन्द ने उसे हलाक कर दिया। ⁸ तब यहूदाह ने ओनान से कहा कि अपने भाई की बीवी के पास जा और देवर का हक़ अदा कर ताकि तेरे भाई के नाम से नसल चले। ⁹ और ओनान जानता था कि यह नसल मेरी न कहलाएगी, इसलिए यूँ हुआ कि जब वह अपने भाई की बीवी के पास जाता तो नुत्फ़े को ज़मीन पर गिरा देता था कि मबादा उसके भाई के नाम से नसल चले। ¹⁰ और उसका यह काम खुदावन्द की नज़र में बहुत बुरा था, इसलिए उसने उसे भी हलाक किया। ¹¹ तब यहूदाह ने अपनी बहू तमर से कहा कि मेरे बेटे सीला के बालिग़ होने तक तू अपने बाप के घर बेवा बैठी रह। क्योंकि उसने सोचा कि कहीं यह भी अपने

भाइयों की तरह हलाक न हो जाए। तब तमर अपने बाप के घर में जाकर रहने लगी। ¹² और एक 'अरसे के बाद ऐसा हुआ कि 'सुवा' की बेटी जो यहूदाह की बीवी थी मर गई, और जब यहूदाह को उसका ग़म भूला तो वह अपने 'अदूल्लामी दोस्त हीरा के साथ अपनी भेड़ों की ऊन के कतरने वालों के पास तिमनत को गया। ¹³ और तमर की यह ख़बर मिली कि तेरा ख़ुसर अपनी भेड़ों की ऊन कतरने के लिए तिमनत को जा रहा है। ¹⁴ तब उसने अपने रंडापे के कपड़ों को उतार फेंका और बुर्का ओढ़ा और अपने को ढाँका और 'ऐनीम के फाटक के बराबर जो तिमनत की राह पर है, जा बैठी क्योंकि उसने देखा कि सीला बालिग़ हो गया मगर यह उससे ब्याही नहीं गई। ¹⁵ यहूदाह उसे देख कर समझा कि कोई कस्बी है, क्योंकि उसने अपना मुँह ढाँक रखवा था। ¹⁶ इसलिए वह रास्ते से उसकी तरफ़ को फिरा और उससे कहने लगा कि जरा मुझे अपने साथ मुबाशरत कर लेने दे, क्योंकि इसे बिल्कुल नहीं मा'लूम था कि वह इसकी बहू है। उसने कहा, तू मुझे क्या देगा ताकि मेरे साथ मुबाशरत करे। ¹⁷ उसने कहा, “मैं रेवड़ में से बकरी का एक बच्चा तुझे भेज दूँगा।” उसने कहा कि उसके भेजने तक तू मेरे पास कुछ रहन कर देगा। ¹⁸ उसने कहा, “तुझे रहन क्या दूँ?” उसने कहा, “अपनी मुहर और अपना बाजू बंद और अपनी लाठी जो तेरे हाथ में है।” उसने यह चीज़ें उसे दीं और उसके साथ मुबाशरत की, और वह उससे हामिला हो गई। ¹⁹ फिर वह उठ कर चली गई और बुरका उतार कर रंडापे का जोड़ा पहन लिया। ²⁰ और यहूदाह ने अपने 'अदूल्लामी दोस्त के हाथ बकरी का बच्चा भेजा ताकि उस 'औरत के पास से अपना रहन वापिस मंगाए, लेकिन वह 'औरत उसे न मिली। ²¹ तब उसने उस जगह के लोगों से पूछा, “वह कस्बी जो ऐनीम में रास्ते के बराबर बैठी थी कहाँ है?” उन्होंने कहा, यहाँ कोई कस्बी नहीं थी। ²² तब उसने यहूदाह के पास लौट कर उसे बताया कि वह मुझे नहीं मिली; और वहाँ के लोग भी कहते थे कि वहाँ कोई कस्बी नहीं थी। ²³ यहूदाह ने कहा, “खैर! उस रहन को वही रखे, हम तो बदनाम न हों; मैंने तो बकरी का बच्चा भेजा लेकिन वह तुझे नहीं मिली।” ²⁴ और करीबन तीन महीने के बाद यहूदाह को यह ख़बर मिली कि तेरी बहू तमर ने ज़िना किया और उसे छिनाले का हम्ल भी है। यहूदाह ने कहा कि उसे बाहर निकाल लाओ कि वह जलाई जाए। ²⁵ जब उसे बाहर निकाला तो उसने अपने ख़ुसर को कहला भेजा कि मेरे उसी शख्स का हम्ल है जिसकी यह चीज़ें हैं। इसलिए तू पहचान तो सही कि यह मुहर और बाजूबन्द और लाठी

मिस्र के मुजरिम हुए।² और फिर'औन अपने इन दोनों हाकिमों से जिनमें एक साकियों और दूसरा नानपज़ों का सरदार था, नाराज़ हो गया।³ और उसने इनको जिलौदारों के सरदार के घर में उसी जगह जहाँ यूसुफ़ हिरासत में था, कैद खाने में नज़रबन्द करा दिया।⁴ जिलौदारों के सरदार ने उनको यूसुफ़ के हवाले किया, और वह उनकी खिदमत करने लगा और वह एक मुदत तक नज़रबन्द रहे।⁵ और शाह — ए — मिस्र के साकी और नानपज़ दोनों ने, जो कैद खाने में नज़रबन्द थे एक ही रात में अपने — अपने होनहार के मुताबिक़ एक — एक ख्वाब देखा।⁶ और यूसुफ़ सुबह को उनके पास अन्दर आया और देखा कि वह उदास हैं।⁷ और उसने फिर'औन के हाकिमों से जो उसके साथ उसके आक्रा के घर में नज़रबन्द थे, पूछा कि आज तुम क्यों ऐसे उदास नज़र आते हो? ⁸ उन्होंने उससे कहा, “हम ने एक ख्वाब देखा है, जिसकी ता'बीर करने वाला कोई नहीं।” यूसुफ़ ने उनसे कहा, “क्या ता'बीर की कुदरत खुदा को नहीं? मुझे ज़रा वह ख्वाब बताओ।”⁹ तब सरदार साकी ने अपना ख्वाब यूसुफ़ से बयान किया। उसने कहा, “मैंने ख्वाब में देखा कि अंगूर की बेल मेरे सामने है।¹⁰ और उस बेल में तीन शाखें हैं, और ऐसा दिखाई दिया कि उसमें कलियाँ लगीं और फूल आए और उसके सब गुच्छों में पक्के — पक्के अंगूर लगे।¹¹ और फिर'औन का प्याला मेरे हाथ में है, और मैंने उन अंगूरों को लेकर फिर'औन के प्याले में निचोड़ा और वह प्याला मैंने फिर'औन के हाथ में दिया।”¹² यूसुफ़ ने उससे कहा, “इसकी ता'बीर यह है कि वह तीन शाखें तीन दिन हैं।¹³ इसलिए अब से तीन दिन के अन्दर फिर'औन तुझे सरफ़राज़ फ़रमाएगा, और तुझे फिर तेरे 'ओहदे पर बहाल कर देगा; और पहले की तरह जब तू उसका साकी था, प्याला फिर'औन के हाथ में दिया करेगा।¹⁴ लेकिन जब तू खुशहाल हो जाए तो मुझे याद करना और ज़रा मुझ से मेहरबानी से पेश आना, और फिर'औन से मेरा ज़िक्र करना और मुझे इस घर से छुटकारा दिलवाना।¹⁵ क्योंकि इब्रानियों के मुल्क से मुझे चुरा कर ले आए हैं, और यहाँ भी मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया जिसकी वजह से कैद खाने में डाला जाऊँ।”¹⁶ जब सरदार नानपज़ ने देखा कि ता'बीर अच्छी निकली तो यूसुफ़ से कहा, “मैंने भी ख्वाब में देखा, कि मेरे सिर पर सफ़ेद रोटी की तीन टोकरियाँ हैं; ¹⁷ और ऊपर की टोकरी में हर किस्म का पका हुआ खाना फिर'औन के लिए है, और परिन्दे मेरे सिर पर की टोकरी में से खा रहे हैं।”¹⁸ यूसुफ़ ने उसे कहा, “इसकी ता'बीर यह है कि वह तीन टोकरियाँ तीन दिन हैं।¹⁹ इसलिए

अब से तीन दिन के अन्दर फिर'औन तेरा सिर तेरे तन से जुदा करा के तुझे एक दरख्त पर टंगवा देगा, और परिन्दे तेरा गोश्त नोंच — नोंच कर खाएँगे।”²⁰ और तीसरे दिन जो फिर'औन की सालगिरह का दिन था, यूँ हुआ कि उसने अपने सब नौकरों की दावत की और उसने सरदार साकी और सरदार नानपज़ को अपने नौकरों के साथ याद फ़रमाया।²¹ और उसने सरदार साकी को फिर उसकी खिदमत पर बहाल किया, और वह फिर'औन के हाथ में प्याला देने लगा।²² लेकिन उसने सरदार नानपज़ को फाँसी दिलवाई, जैसा यूसुफ़ ने ता'बीर करके उनको बताया था।²³ लेकिन सरदार साकी ने यूसुफ़ को याद न किया बल्कि उसे भूल गया।

41

पैदाइश 41:1-13

¹ पूरे दो साल के बाद फिर'औन ने ख्वाब में देखा कि वह दरिया-ए-नील के किनारे खड़ा है; ² और उस दरिया में से सात खूबसूरत और मोटी — मोटी गायें निकल कर सरकंडों के खेत में चरने लगीं। ³ उनके बाद और सात बदशकल और दुबली — दुबली गायें दरिया से निकलीं और दूसरी गायों के बराबर दरिया के किनारे जा खड़ी हुई। ⁴ और यह बदशकल और दुबली दुबली गायें उन सातों खूबसूरत और मोटी मोटी गायों को खा गई, तब फिर'औन जाग उठा। ⁵ और वह फिर सो गया और उसने दूसरा ख्वाब देखा कि एक टहनी में अनाज की सात मोटी और अच्छी — अच्छी बालें निकलीं। ⁶ उनके बाद और सात पतली और पूरबी हवा की मारी मुरझाई हुई बालें निकलीं। ⁷ यह पतली बालें उन सातों मोटी और भरी हुई बालों को निगल गई। और फिर'औन जाग गया और उसे मा'लूम हुआ कि यह ख्वाब था। ⁸ और सुबह को यूँ हुआ कि उसका जी घबराया तब उसने मिस्र के सब जादूगरों और सब अक्लमन्दों को बुलवा भेजा, और अपना ख्वाब उनको बताया। लेकिन उनमें से कोई फिर'औन के आगे उनकी ता'बीर न कर सका। ⁹ उस वक़्त सरदार साकी ने फिर'औन से कहा, मेरी खताएँ आज मुझे याद आईं। ¹⁰ जब फिर'औन अपने खादिमों से नाराज़ था और उसने मुझे और सरदार नानपज़ को जिलौदारों के सरदार के घर में नज़रबन्द करवा दिया। ¹¹ तो मैंने और उसने एक ही रात में एक — एक ख्वाब देखा, यह ख्वाब हम ने अपने अपने होनहार के मुताबिक़ देखे। ¹² वहाँ एक 'इब्री जवान, जिलौदारों के सरदार का नौकर, हमारे साथ था। हम ने उसे अपने ख्वाब बताए और उसने उनकी ता'बीर की, और हम में से हर एक को हमारे ख्वाब के मुताबिक़ उसने ता'बीर बताई। ¹³ और जो ता'बीर उसने बताई थी वैसा ही हुआ, क्योंकि मुझे तो उसने मेरे मन्सब पर

बहाल किया था और उसे फाँसी दी थी। ¹⁴ तब फिर'औन ने यूसुफ़ को बुलवा भेजा: तब उन्होंने जल्द उसे कैद खाने से बाहर निकाला, और उसने हजामत बनवाई और कपड़े बदल कर फिर'औन के सामने आया। ¹⁵ फिर'औन ने यूसुफ़ से कहा, “मैंने एक ख्वाब देखा है जिसकी ता'बीर कोई नहीं कर सकता, और मुझ से तेरे बारे में कहते हैं कि तू ख्वाब को सुन कर उसकी ता'बीर करता है।” ¹⁶ यूसुफ़ ने फिर'औन को जवाब दिया, “मैं कुछ नहीं जानता, खुदा ही फिर'औन को सलामती बख्श जवाब देगा।” ¹⁷ तब फिर'औन ने यूसुफ़ से कहा, मैंने ख्वाब में देखा कि मैं दरिया-ए-नील के किनारे खड़ा हूँ। ¹⁸ और उस दरिया में से सात मोटी और खूबसूरत गायें निकल कर सरकंडों के खेत में चरने लगीं। ¹⁹ उनके बाद और सात खराब और निहायत बदशक्ल और दुबली गायें निकलीं, और वह इस कदर बुरी थीं कि मैंने सारे मुल्क — ए — मिस्र में ऐसी कभी नहीं देखीं। ²⁰ और वह दुबली और बदशक्ल गायें उन पहली सातों मोटी गायों को खा गईं; ²¹ और उनके खा जाने के बाद यह मा'लूम भी नहीं होता था कि उन्होंने उनको खा लिया है, बल्कि वह पहले की तरह जैसी की तैसी बदशक्ल रहीं। तब मैं जाग गया। ²² और फिर ख्वाब में देखा कि एक टहनी में सात भरी और अच्छी — अच्छी बालें निकलीं। ²³ और उनके बाद और सात सूखी और पतली और पूरबी हवा की मारी मुरझाई हुई बालें निकलीं। ²⁴ और यह पतली बाले उन सातों अच्छी — अच्छी बालों को निगल गईं। और मैंने इन जादूगरों से इसका बयान किया लेकिन ऐसा कोई न निकला जो मुझे इसका मतलब बताता। ²⁵ तब यूसुफ़ ने फिर'औन से कहा कि फिर'औन का ख्वाब एक ही है, जो कुछ खुदा करने को है उसे उसने फिर'औन पर जाहिर किया है। ²⁶ वह सात अच्छी — अच्छी गायें सात साल हैं, और वह सात अच्छी अच्छी बालें भी सात साल हैं; ख्वाब एक ही है। ²⁷ और वह सात बदशक्ल और दुबली गायें जो उनके बाद निकलीं, और वह सात खाली और पूरबी हवा की मारी मुरझाई हुई बालें भी सात साल ही हैं; मगर काल के सात बरस। ²⁸ यह वही बात है जो मैं फिर'औन से कह चुका हूँ कि जो कुछ खुदा करने को है उसे उसने फिर'औन पर जाहिर किया है। ²⁹ देख! सारे मुल्क — ए — मिस्र में सात साल तो पैदावार ज्यादा के होंगे। ³⁰ उनके बाद सात साल काल के आएँगे और तमाम मुल्क ए — मिस्र में लोग इस सारी पैदावार को भूल जाएँगे और यह काल मुल्क को तबाह कर देगा। ³¹ और अज्ञानी मुल्क में याद भी नहीं रहेगी, क्योंकि जो काल बाद में पड़ेगा वह निहायत ही सख्त होगा। ³² और फिर'औन ने जो यह ख्वाब दो दफ़ा देखा तो इसकी वजह

यह है कि यह बात खुदा की तरफ़ से मुकर्रर हो चुकी है, और खुदा इसे जल्द पूरा करेगा। ³³ इसलिए फिर'औन को चाहिए कि एक समझदार और 'अक़लमन्द आदमी को तलाश कर ले और उसे मुल्क — ए — मिस्र पर मुस्तार बनाए। ³⁴ फिर'औन यह करे ताकि उस आदमी को इख्तियार हो कि वह मुल्क में नाज़िरों को मुकर्रर कर दे, और अज्ञानी के सात बरसों में सारे मुल्क — ए — मिस्र की पैदावार का पाँचवा हिस्सा ले ले। ³⁵ और वह उन अच्छे बरसों में जो आते हैं सब खाने की चीज़ें जमा करे और शहर — शहर में गल्ला जो फिर'औन के इख्तियार में हो, खुराक के लिए फ़राहम करके उसकी हिफ़ाज़त करें। ³⁶ यही गल्ला मुल्क के लिए ज़ख़ीरा होगा, और सातों साल के लिए जब तक मुल्क में काल रहेगा काफ़ी होगा, ताकि काल की वजह से मुल्क बर्बाद न हो जाए।

222222 22 222222 22 222222 222222 222222

³⁷ य बात फिर'औन और उसके सब खादिमों को पसंद आई। ³⁸ तब फिर'औन ने अपने खादिमों से कहा कि क्या हम को ऐसा आदमी जैसा यह है, जिसमें खुदा का रूह है मिल सकता है? ³⁹ और फिर'औन ने यूसुफ़ से कहा, चूँकि खुदा ने तुझे यह सब कुछ समझा दिया है, इसलिए तेरी तरह समझदार और अक़लमन्द कोई नहीं। ⁴⁰ इसलिए तू मेरे घर का मुस्तार होगा और मेरी सारी रि'आया तेरे हुक्म पर चलेगी, सिर्फ़ तख़्त का मालिक होने की वजह से मैं बुजुर्गतर हूँगा। ⁴¹ और फिर'औन ने यूसुफ़ से कहा कि देख, मैं तुझे सारे मुल्क — ए — मिस्र का हाकिम बनाता हूँ ⁴² और फिर'औन ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से निकाल कर यूसुफ़ के हाथ में पहना दी, और उसे बारीक कतान के लिबास में आरास्ता करवा कर सोने का हार उसके गले में पहनाया। ⁴³ और उसने उसे अपने दूसरे रथ में सवार करा कर उसके आगे — आगे यह 'ऐलान करवा दिया, कि घुटने टेको और उसने उसे सारे मुल्क — ए — मिस्र का हाकिम बना दिया। ⁴⁴ और फिर'औन ने यूसुफ़ से कहा, “मैं फिर'औन हूँ और तेरे हुक्म के बग़ैर कोई आदमी इस सारे मुल्क — ए — मिस्र में अपना हाथ या पाँव हिलाने न पाएगा।” ⁴⁵ और फिर'औन ने यूसुफ़ का नाम सिफ़नात फ़ानेह रखवा, और उसने ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा की बेटी आसिनाथ को उससे ब्याह दिया, और यूसुफ़ मुल्क — ए — मिस्र में दौरा करने लगा। ⁴⁶ और यूसुफ़ तीस साल का था जब वह मिस्र के बादशाह फिर'औन के सामने गया, और उसने फिर'औन के पास से रखसत हो

कर सारे मुल्क — ए — मिस्र का दौरा किया। ⁴⁷ और अज़ानी के सात बरसों में इफ़रात से फ़स्तल हुई। ⁴⁸ और वह लगातार सातों साल हर क्रिस्म की खुराक, जो मुल्क — ए — मिस्र में पैदा होती थी, जमा' कर करके शहरों में उसका ज़खीरा करता गया। हर शहर की चारों तरफ़ों की खुराक वह उसी शहर में रखता गया। ⁴⁹ और यूसुफ़ ने गल्ला समुन्दर की रेत की तरह निहायत कसरत से ज़खीरा किया, यहाँ तक कि हिसाब रखना भी छोड़ दिया क्यूँ कि वह बे — हिसाब था। ⁵⁰ और काल से पहले ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा' की बेटी आसिनाथ के यूसुफ़ से दो बेटे पैदा हुए। ⁵¹ और यूसुफ़ ने पहलौटे का नाम *मनस्सी यह कह कर रखवा, कि 'खुदा ने मेरी और मेरे बाप के घर की सब मुसीबत मुझ से भुला दी। ⁵² और दूसरे का नाम †इफ़राईम यह कह कर रखवा, कि 'खुदा ने मुझे मेरी मुसीबत के मुल्क में फलदार किया। ⁵³ और अज़ानी के वह सात साल जो मुल्क — ए — मिस्र में हुए तमाम हो गए, और यूसुफ़ के कहने के मुताबिक़ काल के सात साल शुरू हुए। ⁵⁴ और सब मुल्कों में तो काल था लेकिन मुल्क — ए — मिस्र में हर जगह खुराक मौजूद थी। ⁵⁵ और जब मुल्क — ए — मिस्र में लोग भूकों मरने लगे तो रोटी के लिए फ़िर'औन के आगे चिल्लाए। फ़िर'औन ने मिस्रियों से कहा कि यूसुफ़ के पास जाओ, जो कुछ वह तुम से कहे वह करो। ⁵⁶ और तमाम रू — ए — ज़मीन पर काल था; और यूसुफ़ अनाज के ज़खीरह को खुलवा कर मिस्रियों के हाथ बेचने लगा, और मुल्क — ए — मिस्र में सख्त काल हो गया। ⁵⁷ और सब मुल्कों के लोग अनाज मोल लेने के लिए यूसुफ़ के पास मिस्र में आने लगे, क्यूँकि सारी ज़मीन पर सख्त काल पड़ा था।

42

22 22222 22 22 222222 22 222222 22

¹ और या'कूब को मा'लूम हुआ कि मिस्र में गल्ला है, तब उसने अपने बेटों से कहा कि तुम क्यूँ एक दूसरे का मुँह ताकते हो? ² देखो, मैंने सुना है कि मिस्र में गल्ला है। तुम वहाँ जाओ और वहाँ से हमारे लिए अनाज मोल ले आओ, ताकि हम ज़िन्दा रहें और हलाक न हों। ³ तब यूसुफ़ के दस भाई गल्ला मोल लेने को मिस्र में आए। ⁴ लेकिन या'कूब ने यूसुफ़ के भाई बिनयमीन को उसके भाइयों के साथ न भेजा, क्यूँकि उसने कहा, कि कहीं उस पर कोई आफ़त न आ जाए। ⁵ इसलिए जो लोग गल्ला खरीदने आए उनके साथ इस्राईल के बेटे भी

आए, क्यूँकि कनान के मुल्क में काल था। ⁶ और यूसुफ़ मुल्क — ए — मिस्र का हाकिम था और वही मुल्क के सब लोगों के हाथ गल्ला बेचता था। तब यूसुफ़ के भाई आए और अपने सिर ज़मीन पर टेक कर उसके सामने आदाब बजा लाए। ⁷ यूसुफ़ अपने भाइयों को देख कर उनको पहचान गया; लेकिन उसने उनके सामने अपने आप को अन्जान बना लिया और उनसे सख्त लहजे में पूछा, “तुम कहाँ से आए हो?” उन्होंने कहा, “कना'न के मुल्क से अनाज मोल लेने को।” ⁸ यूसुफ़ ने तो अपने भाइयों को पहचान लिया था लेकिन उन्होंने उसे न पहचाना। ⁹ और यूसुफ़ उन ख़्वाबों को जो उसने उनके बारे में देखे थे याद करके उनसे कहने लगा कि तुम जासूस हो। तुम आए हो कि इस मुल्क की बुरी हालत दरियाफ़्त करो। ¹⁰ उन्होंने उससे कहा, “नहीं खुदाबन्द! तेरे गुलाम अनाज मोल लेने आए हैं। ¹¹ हम सब एक ही शख्स के बेटे हैं। हम सच्चे हैं; तेरे गुलाम जासूस नहीं हैं।” ¹² उसने कहा, “नहीं; बल्कि तुम इस मुल्क की बुरी हालत दरियाफ़्त करने को आए हो।” ¹³ तब उन्होंने कहा, “तेरे गुलाम बारह भाई एक ही शख्स के बेटे हैं जो मुल्क — ए — कना'न में है। सबसे छोटा इस वक़्त हमारे बाप के पास है और एक का कुछ पता नहीं।” ¹⁴ तब यूसुफ़ ने उनसे कहा, “मैं तो तुम से कह चुका कि तुम जासूस हो। ¹⁵ इसलिए तुम्हारी आजमाइश इस तरह की जाएगी कि फ़िर'औन की हयात की क्रसम, तुम यहाँ से जाने न पाओगे; जब तक तुम्हारा सबसे छोटा भाई यहाँ न आ जाए। ¹⁶ इसलिए अपने में से किसी एक को भेजो कि वह तुम्हारे भाई को ले आए और तुम कैद रहो, ताकि तुम्हारी बातों की तसदीक़ हो कि तुम सच्चे हो या नहीं; वरना फ़िर'औन की हयात की क्रसम तुम ज़रूर ही जासूस हो।” ¹⁷ और उसने उन सब को तीन दिन तक इकट्ठे नज़रबन्द रखवा। ¹⁸ और तीसरे दिन यूसुफ़ ने उनसे कहा, “एक काम करो तो ज़िन्दा रहोगे; क्यूँकि मुझे खुदा का ख़ौफ़ है। ¹⁹ अगर तुम सच्चे हो तो अपने भाइयों में से एक को कैद खाने में बन्द रहने दो, और तुम अपने घरवालों के खाने के लिए अनाज ले जाओ। ²⁰ और अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ, यूँ तुम्हारी बातों की तसदीक़ हो जाएगी और तुम हलाक न होगे।” इसलिए उन्होंने ऐसा ही किया। ²¹ और वह आपस में कहने लगे, “हम दरअसल अपने भाई की वजह से मुजरिम ठहरे हैं; क्यूँकि जब उसने हम से मिन्नत की तो हम ने यह देखकर भी, कि उसकी जान कैसी मुसीबत में है उसकी न सुनी; इसी लिए यह मुसीबत हम पर

* 41:51 41:51 फ़रामोश † 41:52 41:52 दो बार फलदार होना

आ पड़ी है।” 22 तब रूबिन बोल उठा, “क्या मैंने तुम से न कहा था कि इस बच्चे पर जुल्म न करो, और तुम ने न सुना; इसलिए देख लो, अब उसके खून का बदला लिया जाता है।” 23 और उनको मा'लूम न था कि यूसुफ़ उनकी बातें समझता है, इसलिए कि उनके बीच एक तरजुमान था। 24 तब वह उनके पास से हट गया और रोया, और फिर उनके पास आकर उनसे बातें कीं और उनमें से शमौन को लेकर उनकी आँखों के सामने उसे बन्धवा दिया। 25 फिर यूसुफ़ ने हुक्म किया, कि उनके बोरों में अनाज भरें और हर शख्स की नकदी उसी के बोरे में रख दें, और उनको सफ़र का सामान भी दे दें। चुनांचे उनके लिए ऐसा ही किया गया। 26 और उन्होंने अपने गधों पर गल्ला लाद लिया और वहाँ से रवाना हुए। 27 जब उनमें से एक ने मन्जिल पर अपने गधे को चारा देने के लिए अपना बोरा खोला, तो अपनी नकदी बोरे के मुँह में रखी देखी। 28 तब उसने अपने भाइयों से कहा कि मेरी नकदी वापस कर दी गई है, वह मेरे बोरे में है, देख लो!” फिर तो वह घबरा गए और हक्का — बक्का होकर एक दूसरे को देखने और कहने लगे, खुदा ने हम से यह क्या किया? 29 और वह मुल्क — ए — कना'न में अपने बाप या'कूब के पास आए, और सारी वारदात उसे बताई और कहने लगे कि 30 उस शख्स ने जो उस मुल्क का मालिक है हम से सख्त लहजे में बातें कीं, और हम को उस मुल्क के जासूस समझा। 31 हम ने उससे कहा कि हम सच्चे आदमी हैं; हम जासूस नहीं। 32 हम बारह भाई एक ही बाप के बेटे हैं; हम में से एक का कुछ पता नहीं और सबसे छोटा इस वक्त हमारे बाप के पास मुल्क — ए — कना'न में है। 33 तब उस शख्स ने जो मुल्क का मालिक है हम से कहा, ‘मैं इसी से जान लूँगा कि तुम सच्चे हो कि अपने भाइयों में से किसी को मेरे पास छोड़ दो और अपने घरवालों के खाने के लिए अनाज लेकर चले जाओ। 34 और अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ; तब मैं जान लूँगा कि तुम जासूस नहीं बल्कि सच्चे आदमी हो। और मैं तुम्हारे भाई को तुम्हारे हवाले कर दूँगा, फिर तुम मुल्क में सौदागरी करना’। 35 और यूँ हुआ कि जब उन्होंने अपने अपने बोरे खाली किए तो हर शख्स की नकदी की थैली उसी के बोरे में रखी देखी, और वह और उनका बाप नकदी की थैलियाँ देख कर डर गए। 36 और उनके बाप या'कूब ने उनसे कहा, “तुम ने मुझे बेऔलाद कर दिया। यूसुफ़ नहीं रहा और शमौन भी नहीं है, और अब बिनयमीन को भी ले जाना चाहते हो। ये सब बातें मेरे खिलाफ़ हैं।” 37 तब रूबिन ने अपने बाप से कहा, “अगर मैं उसे तेरे पास न ले आऊँ तो तू मेरे दोनों बेटों को क़त्ल कर डालना। उसे मेरे हाथ में

सौंप दे और मैं उसे फिर तेरे पास पहुँचा दूँगा।” 38 उसने कहा, मेरा बेटा तुम्हारे साथ नहीं जाएगा; क्योंकि उसका भाई मर गया और वह अकेला रह गया है। अगर रास्ते में जाते — जाते उस पर कोई आफ़त आ पड़े तो तुम मेरे सफ़ेद बालों को ग़म के साथ क़ब्र में उतारोगे।

43

पैदाइश 43:1-13

1 और काल मुल्क में और भी सख्त हो गया। 2 और यूँ हुआ कि जब उस ग़ल्ले को जिसे मिस्र से लाए थे, खा चुके तो उनके बाप ने उनसे कहा कि जाकर हमारे लिए फिर कुछ अनाज मोल ले आओ। 3 तब यहूदाह ने उसे कहा कि उस शख्स ने हम को निहायत ताकीद से कह दिया था कि तुम मेरा मुँह न देखोगे, जब तक तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो। 4 इसलिए अगर तू हमारे भाई को हमारे साथ भेज दे, तो हम जाएँगे और तेरे लिए अनाज मोल लाएँगे। 5 और अगर तू उसे न भेजे तो हम नहीं जाएँगे; क्योंकि उस शख्स ने कह दिया है कि तुम मेरा मुँह न देखोगे जब तक तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो’। 6 तब इस्राईल ने कहा कि तुम ने मुझ से क्यों यह बदसलूकी की, कि उस शख्स को बता दिया कि हमारा एक भाई और भी है? 7 उन्होंने कहा, “उस शख्स ने बजिद हो कर हमारा और हमारे खानदान का हाल पूछा कि ‘क्या तुम्हारा बाप अब तक ज़िन्दा है? और क्या तुम्हारा कोई और भाई है?’ तो हम ने इन सवालों के मुताबिक़ उसे बता दिया। हम क्या जानते थे कि वह कहेगा, ‘अपने भाई को ले आओ’।” 8 तब यहूदाह ने अपने बाप इस्राईल से कहा कि उस लड़के को मेरे साथ कर दे तो हम चले जाएँगे; ताकि हम और तू और हमारे बाल बच्चे ज़िन्दा रहें और हलाक न हों। 9 और मैं उसका ज़िम्मेदार होता हूँ, तू उसको मेरे हाथ से वापस माँगना। अगर मैं उसे तेरे पास पहुँचा कर सामने खड़ा न कर दूँ, तो मैं हमेशा के लिए गुनहगार ठहरूँगा। 10 अगर हम देर न लगाते तो अब तक दूसरी दफ़ा लौट कर आ भी जाते। 11 तब उनके बाप इस्राईल ने उनसे कहा, “अगर यही बात है तो ऐसा करो कि अपने बर्तनों में इस मुल्क की मशहूर पैदावार में से कुछ उस शख्स के लिए नज़राना लेते जाओ; जैसे थोड़ा सा रौग़ान — ए — बलसान, थोड़ा सा शहद, कुछ गर्म मसाले, और मुर और पिस्ता और बादाम, 12 और दूना दाम अपने हाथ में ले लो, और वह नकदी जो फेर दी गई और तुम्हारे बोरों के मुँह में रखी मिली अपने साथ वापस ले जाओ; क्योंकि शायद भूल हो गई होगी। 13 और अपने भाई को भी साथ

लो, और उठ कर फिर उस शख्स के पास जाओ। ¹⁴ और खुदा — ए — कादिर उस शख्स को तुम पर मेहरबानी करे, ताकि वह तुम्हारे दूसरे भाई को और बिनयमीन को तुम्हारे साथ भेज दे। मैं अगर बे — औलाद हुआ तो हुआ।” ¹⁵ तब उन्होंने नज़राना लिया और दूना दाम भी हाथ में ले लिया, और बिनयमीन को लेकर चल पड़े; और मिस्र पहुँच कर यूसुफ़ के सामने जा खड़े हुए। ¹⁶ जब यूसुफ़ ने बिनयमीन को उनके साथ देखा तो उसने अपने घर के मुन्तज़िम से कहा, “इन आदमियों को घर में ले जा, और कोई जानवर जबह करके खाना तैयार करवा; क्योंकि यह आदमी दोपहर को मेरे साथ खाना खाएँगे।” ¹⁷ उस शख्स ने जैसा यूसुफ़ ने फ़रमाया था किया, और इन आदमियों को यूसुफ़ के घर में ले गया। ¹⁸ जब इनको यूसुफ़ के घर में पहुँचा दिया तो डर के मारे कहने लगे, “वह नक्रदी जो पहली दफ़ा हमारे बोरों में रख कर वापस कर दी गई थी, उसी की वजह से हम को अन्दर करवा दिया है; ताकि उसे हमारे खिलाफ़ बहाना मिल जाए और वह हम पर हमला करके हम को गुलाम बना ले और हमारे गधों को छीन ले।”

?????? ?? ???? ???? ???? ???? ???? ?

¹⁹ और वह यूसुफ़ के घर के मुन्तज़िम के पास गए और दरवाज़े पर खड़े होकर उससे कहने लगे, ²⁰ “जनाब, हम पहले भी यहाँ अनाज मोल लेने आए थे; ²¹ और यूँ हुआ कि जब हम ने मंज़िल पर उतर कर अपने बोरों को खोला, तो अपनी अपनी पूरी तौली हुई नक्रदी अपने अपने बोरों के मुँह में रखी देखी, इसलिए हम उसे अपने साथ वापस लेते आए हैं। ²² और हम अनाज मोल लेने को और भी नक्रदी साथ लाए हैं, ये हम नहीं जानते के हमारी नक्रदी किसने हमारे बोरों में रख दी।” ²³ उसने कहा कि तुम्हारी सलामती हो, मत डरो! तुम्हारे खुदा और तुम्हारे बाप के खुदा ने तुम्हारे बोरों में तुम को खज़ाना दिया होगा, मुझे तो तुम्हारी नक्रदी मिल चुकी। फिर वह शमौन को निकाल कर उनके पास ले आया। ²⁴ और उस शख्स ने उनको यूसुफ़ के घर में लाकर पानी दिया, और उन्होंने अपने पाँव धोए; और उनके गधों को चारा दिया। ²⁵ फिर उन्होंने यूसुफ़ के इन्तिज़ार में कि वह दोपहर को आएगा, नज़राना तैयार करके रखवा; क्योंकि उन्होंने सुना था कि उनको वहीं रोटी खानी है। ²⁶ जब यूसुफ़ घर आया, तो वह उस नज़राने को जो उनके पास था उसके सामने ले गए, और ज़मीन पर झुक कर उसके सामने आदाब बजा लाए। ²⁷ उसने उनसे खैर — ओ — ‘आफ़ियत पूछी और कहा कि तुम्हारा बूढ़ा बाप जिसका तुम ने ज़िक्र किया था अच्छा तो है? क्या वह अब तक

ज़िन्दा है? ²⁸ उन्होंने जवाब दिया, “तेरा खादिम हमारा बाप खैरियत से है; और अब तक ज़िन्दा है।” फिर वह सिर झुका — झुका कर उसके सामने आदाब बजा लाए। ²⁹ फिर उसने आँख उठा कर अपने भाई बिनयमीन को जो उसकी माँ का बेटा था, देखा और कहा कि तुम्हारा सबसे छोटा भाई जिसका ज़िक्र तुम ने मुझ से किया था यही है? फिर कहा कि ऐ मेरे बेटे! खुदा तुझ पर मेहरबान रहे। ³⁰ तब यूसुफ़ ने जल्दी की क्योंकि भाई को देख कर उसका जी भर आया, और वह चाहता था कि कहीं जाकर रोए। तब वह अपनी कोठरी में जा कर वहाँ रोने लगा। ³¹ फिर वह अपना मुँह धोकर बाहर निकला और अपने को बर्दाश्त करके हुक्म दिया कि खाना लगाओ। ³² और उन्होंने उसके लिए अलग और उनके लिए जुदा, और मिस्रियों के लिए, जो उसके साथ खाते थे, जुदा खाना लगाया; क्योंकि मिस्र के लोग इब्रानियों के साथ खाना नहीं खा सकते थे, क्योंकि मिस्रियों को इससे कराहियत है। ³³ और यूसुफ़ के भाई उसके सामने तरतीबवार अपनी उम्र की बड़ाई और छोटाई के मुताबिक़ बैठे और आपस में हैरान थे। ³⁴ फिर वह अपने सामने से खाना उठा कर हिस्से कर — कर के उनको देने लगा, और बिनयमीन का हिस्सा उनके हिस्सों से पाँच गुना ज्यादा था। और उन्होंने मय पी और उसके साथ खुशी मनाई।

44

?????? ?? ???? ???? ???? ???? ?

¹ फिर उसने अपने घर के मुन्तज़िम को यह हुक्म किया कि इन आदमियों के बोरों में जितना अनाज वह लेजा सकें भर दे, और हर शख्स की नक्रदी उसी के बोरों के मुँह में रख दे; ² और मेरा चाँदी का प्याला सबसे छोटे के बोरों के मुँह में उसकी नक्रदी के साथ रखना। चुनाँचे उसने यूसुफ़ के फ़रमाने के मुताबिक़ ‘अमल किया। ³ सुबह रौशनी होते ही यह आदमी अपने गधों के साथ रुख़सत कर दिए गए। ⁴ वह शहर से निकल कर अभी दूर भी नहीं गए थे कि यूसुफ़ ने अपने घर के मुन्तज़िम से कहा, जा! उन लोगों का पीछा कर; और जब तू उनको पा ले तो उनसे कहना, ‘नेकी के बदले तुम ने बदी क्यूँ की? ⁵ क्या यह वही चीज़ नहीं जिससे मेरा आक्रा पीता और इसी से ठीक फ़ाल भी खोला करता है? तुम ने जो यह किया इसलिए बुरा किया’ ⁶ और उसने उनको पा लिया और यही बातें उनसे कहीं। ⁷ तब उन्होंने उससे कहा कि हमारा खुदावन्द, ऐसी बातें क्यूँ कहता है? खुदा न करे कि तेरे खादिम ऐसा काम करें ⁸ भला, जो नक्रदी हम को अपने बोरों के मुँह में मिली, उसे तो हम मुल्क — ए — कना‘न से तेरे पास वापस ले आए; फिर तेरे आक्रा के

घर से चाँदी या सोना क्यूँ कर चुरा सकते हैं? 9 इसलिए तेरे खादिमों में से जिस किसी के पास वह निकले वह मार दिया जाए, और हम भी अपने खुदावन्द के गुलाम हो जाएँगे। 10 उसने कहा कि तुम्हारा ही कहना सही, जिसके पास वह निकल आए वह मेरा गुलाम होगा, और तुम बेगुनाह ठहरोगे। 11 तब उन्होंने जल्दी की, और एक — एक ने अपना बोरा ज़मीन पर उतार लिया और हर शख्स ने अपना बोरा खोल दिया। 12 तब वह ढूँढ़ने लगा और सबसे बड़े से शुरू करके सबसे छोटे पर तलाशी खत्म की, और प्याला बिनयमीन के बोरे में मिला। 13 तब उन्होंने अपने लिबास चाक किए और हर एक अपने गधे को लादकर उल्टा शहर को फिरा। 14 और यहूदाह और उसके भाई यूसुफ़ के घर आए, वह अब तक वहीं था; तब वह उसके आगे ज़मीन पर गिरे। 15 तब यूसुफ़ ने उनसे कहा, “तुम ने यह कैसा काम किया? क्या तुम को मा'लूम नहीं कि मुझ सा आदमी ठीक फ़ाल खोलता है?” 16 यहूदाह ने कहा कि हम अपने खुदावन्द से क्या कहें? हम क्या बात करें? या क्यूँ कर अपने को बरी ठहराएँ? खुदा ने तेरे खादिमों की बदी पकड़ ली। इसलिए देख, हम भी और वह भी जिसके पास प्याला निकला, दोनों अपने खुदावन्द के गुलाम हैं। 17 उसने कहा कि खुदा न करे कि मैं ऐसा करूँ; जिस शख्स के पास यह प्याला निकला वही मेरा गुलाम होगा, और तुम अपने बाप के पास सलामत चले जाओ।

222222 22 2222 222222 22 2222 222222

18 तब यहूदाह उसके नज़दीक जाकर कहने लगा, “ऐ मेरे खुदावन्द! ज़रा अपने खादिम को इजाज़त दे कि अपने खुदावन्द के कान में एक बात कहे; और तेरा ग़ज़ब तेरे खादिम पर न भड़के, क्यूँकि तू फिर'औन की तरह है। 19 मेरे खुदावन्द ने अपने खादिमों से सवाल किया था कि तुम्हारा बाप या तुम्हारा भाई है? 20 और हम ने अपने खुदावन्द से कहा था, 'हमारा एक बूढ़ा बाप है और उसके बुढ़ापे का एक छोटा लड़का भी है; और उसका भाई मर गया है और वह अपनी माँ का एक ही रह गया है, इसलिए उसका बाप उस पर जान देता है। 21 तब तूने अपने खादिमों से कहा, 'उसे मेरे पास ले आओ कि मैं उसे देखूँ। 22 हम ने अपने खुदावन्द को बताया, 'वह लड़का अपने बाप को छोड़ नहीं सकता, क्यूँकि अगर वह अपने बाप को छोड़े तो उसका बाप मर जाएगा। 23 फिर तूने अपने खादिमों से कहा कि जब तक तुम्हारा छोटा भाई तुम्हारे साथ न आए, तुम फिर मेरा मुँह न देखोगे।’ 24 और यँहुआ कि जब हम अपने बाप के पास,

जो तेरा खादिम है, पहुँचे तो हम ने अपने खुदावन्द की बातें उससे कहीं। 25 हमारे बाप ने कहा, “फिर जा कर हमारे लिए कुछ अनाज मोल लाओ।” 26 हम ने कहा, “हम नहीं जा सकते; अगर हमारा सबसे छोटा भाई हमारे साथ हो तो हम जाएँगे। क्यूँकि जब तक हमारा सबसे छोटा भाई हमारे साथ न हो, हम उस शख्स का मुँह न देखेंगे।” 27 और तेरे खादिम मेरे बाप ने हम से कहा, “तुम जानते हो कि मेरी बीवी के मुझ से दो बेटे हुए। 28 एक तो मुझे छोड़ ही गया और मैंने ख्याल किया कि वह ज़रूर फाड़ डाला गया होगा; और मैंने उसे उस वक़्त से फिर नहीं देखा। 29 अब अगर तुम इसको भी मेरे पास से ले जाओ और इस पर कोई आफ़त आ पड़े, तो तुम मेरे सफ़ेद बालों को ग़म के साथ क़ब्र में उतारोगे।” 30 “इसलिए अब अगर मैं तेरे खादिम अपने बाप के पास जाऊँ और यह लड़का हमारे साथ न हो, तो चूँकि उसकी जान इस लड़के की जान के साथ जुड़ी है। 31 वह यह देख कर कि लड़का नहीं आया मर जाएगा, और तेरे खादिम अपने बाप के, जो तेरा खादिम है, सफ़ेद बालों को ग़म के साथ क़ब्र में उतारेंगे। 32 और तेरा खादिम अपने बाप के सामने इस लड़के का ज़िम्मेदार भी हो चुका है और यह कहा है कि अगर मैं इसे तेरे पास वापस न पहुँचा दूँ तो मैं हमेशा के लिए अपने बाप का गुनहगार ठहरूँगा। 33 इसलिए अब तेरे खादिम की इजाज़त हो कि वह इस लड़के के बदले अपने खुदावन्द का गुलाम हो कर रह जाए, और यह लड़का अपने भाइयों के साथ चला जाए। 34 क्यूँकि लड़के के बग़ैर मैं क्या मुँह लेकर अपने बाप के पास जाऊँ? कहीं ऐसा न हो कि मुझे वह मुसीबत देखनी पड़े, जो ऐसे हाल में मेरे बाप पर आएगी।”

45

222222 22 2222 2222 222222 222222 222222

1 तब यूसुफ़ उनके आगे जो उसके आस पास खड़े थे, अपने को रोक न कर सका और चिल्ला कर कहा, “हर एक आदमी को मेरे पास से बाहर कर दो।” चुनांचे जब यूसुफ़ ने अपने आप को अपने भाइयों पर ज़ाहिर किया उस वक़्त और कोई उसके साथ न था। 2 और वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगा; और मिस्रियों ने सुना, और फिर'औन के महल में भी आवाज़ गई। 3 और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं यूसुफ़ हूँ! क्या मेरा बाप अब तक ज़िन्दा है?” और उसके भाई उसे कुछ जवाब न दे सके, क्यूँकि वह उसके सामने घबरा गए। 4 और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, “ज़रा नज़दीक आ जाओ।” और वह नज़दीक आए। तब उसने कहा, “मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़

हूँ, जिसको तुम ने बेच कर मिस्र पहुँचाया। ⁵ और इस बात से कि तुम ने मुझे बेच कर यहाँ पहुँचाया, न तो ग़मगीन हो और न अपने — अपने दिल में परेशान हो; क्योंकि खुदा ने जानों को बचाने के लिए मुझे तुम से आगे भेजा। ⁶ इसलिए कि अब दो साल से मुल्क में काल है, और अभी पाँच साल और ऐसे हैं जिनमें न तो हल चलेगा और न फसल कटेगी। ⁷ और खुदा ने मुझ को तुम्हारे आगे भेजा, ताकि तुम्हारा बकिया ज़मीन पर सलामत रखे और तुम को बड़ी रिहाई के वसीले से ज़िन्दा रखे। ⁸ फिर तुम ने नहीं बल्कि खुदा ने मुझे यहाँ भेजा, और उसने मुझे गोया फ़िर'औन का बाप और उसके सारे घर का खुदावन्द और सारे मुल्क — ए — मिस्र का हाकिम बनाया। ⁹ इसलिए तुम जल्द मेरे बाप के पास जाकर उससे कहो, 'तेरा बेटा यूसुफ़ यूँ कहता है, कि खुदावन्द ने मुझ को सारे मिस्र का मालिक कर दिया है। तू मेरे पास चला आ, देर न कर।' ¹⁰ तू ज़शन के इलाक़े में रहना, और तू और तेरे बेटे और तेरे पोते और तेरी भेड़ बकरियाँ और गायें बैल और तेरा माल ओ — मता'अ, यह सब मेरे नज़दीक होंगे। ¹¹ और वहीं मैं तेरी परवरिश करूँगा; ऐसा न हो कि तुझ को और तेरे घराने और तेरे माल — ओ — मता'अ को ग़रीबी आ दबाए, क्योंकि काल के अभी पाँच साल और हैं। ¹² और देखो, तुम्हारी आँखें और मेरे भाई बिनयमीन की आँखें देखती हैं कि खुद मेरे मुँह से ये बातें तुम से हो रही हैं। ¹³ और तुम मेरे बाप से मेरी सारी शान — ओ — शौकत का जो मुझे मिस्र में हासिल है, और जो कुछ तुम ने देखा है सबका ज़िक्र करना; और तुम बहुत जल्द मेरे बाप को यहाँ ले आना।' ¹⁴ और वह अपने भाई बिनयमीन के गले लग कर रोया और बिनयमीन भी उसके गले लगकर रोया। ¹⁵ और उसने सब भाइयों को चूमा और उनसे मिल कर रोया, इसके बाद उसके भाई उससे बातें करने लगे।

॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥

¹⁶ और फ़िर'औन के महल में इस बात का ज़िक्र हुआ कि यूसुफ़ के भाई आए हैं और इस से फ़िर'औन के नौकर चाकर बहुत खुश हुए। ¹⁷ और फ़िर'औन ने यूसुफ़ से कहा कि अपने भाइयों से कह, 'तुम यह काम करो कि अपने जानवरों को लाद कर मुल्क — ए — कना'न को चले जाओ।' ¹⁸ और अपने बाप को और अपने — अपने घराने को लेकर मेरे पास आ जाओ, और जो कुछ मुल्क — ए — मिस्र में अच्छे से अच्छा है वह मैं तुम को दूँगा और तुम इस मुल्क की उम्दा उम्दा चीज़ें खाना। ¹⁹ तुझे हुक्म मिल गया है, कि उनसे कहे, 'तुम यह करो कि अपने

बाल बच्चों और अपनी बीवियों के लिए मुल्क — ए — मिस्र से अपने साथ गाड़ियाँ ले जाओ, और अपने बाप को भी साथ लेकर चले आओ।' ²⁰ और अपने अस्बाब का कुछ अफ़सोस न करना, क्योंकि मुल्क — ए — मिस्र की सब अच्छी चीज़ें तुम्हारे लिए हैं।' ²¹ और इस्राईल के बेटों ने ऐसा ही किया; और यूसुफ़ ने फ़िर'औन के हुक्म के मुताबिक़ उनको गाड़ियाँ दी और सफ़र का सामान भी दिया। ²² और उसने उनमें से हर एक को एक — एक जोड़ा कपड़ा दिया, लेकिन बिनयमीन को चाँदी के *तीन सौ सिक्के और पाँच जोड़े कपड़े दिए। ²³ और अपने बाप के लिए उसने यह चीज़ें भेजीं, या'नी दस गधे जो मिस्र की अच्छी चीज़ों से लदे हुए थे, और दस गधियाँ जो उसके बाप के रास्ते के लिए गल्ला और रोटी और सफ़र के सामान से लदी हुई थीं। ²⁴ चुनांचे उसने अपने भाइयों को खाना किया और वह चल पड़े; और उसने उनसे कहा, 'देखना, कहीं रास्ते में तुम झगड़ा न करना।' ²⁵ और वह मिस्र से खाना हुए और मुल्क — ए — कना'न में अपने बाप या'कूब के पास पहुँचे, ²⁶ और उससे कहा, 'यूसुफ़ अब तक ज़िन्दा है और वही सारे मुल्क — ए — मिस्र का हाकिम है।' और या'कूब का दिल धक से रह गया, क्योंकि उसने उनका यकीन न किया। ²⁷ तब उन्होंने उसे वह सब बातें जो यूसुफ़ ने उनसे कही थीं बताई, और जब उनके बाप या'कूब ने वह गाड़ियाँ देख लीं जो यूसुफ़ ने उसके लाने को भेजीं थीं, तब उसकी जान में जान आई। ²⁸ और इस्राईल कहने लगा, 'यह बस है कि मेरा बेटा यूसुफ़ अब तक ज़िन्दा है। मैं अपने मरने से पहले जाकर उसे देख तो लूँगा।'

46

॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥

¹ और इस्राईल अपना सब कुछ लेकर चला और बैरसबा' में आकर अपने बाप इस्हाक़ के खुदा के लिए कुर्बानियाँ पेश कीं। ² और खुदा ने रात को ख्वाब में इस्राईल से बातें कीं और कहा, ऐ या'कूब, ऐ या'कूब! 'उसने जवाब दिया, मैं हाज़िर हूँ।' ³ उसने कहा, 'मैं खुदा, तेरे बाप का खुदा हूँ! मिस्र में जाने से न डर, क्योंकि मैं वहाँ तुझ से एक बड़ी क्रौम पैदा करूँगा।' ⁴ मैं तेरे साथ मिस्र को जाऊँगा और फिर तुझे ज़रूर लौटा भी लाऊँगा, और यूसुफ़ अपना हाथ तेरी आँखों पर लगाएगा।' ⁵ तब या'कूब बैरसबा' से खाना हुआ, और इस्राईल के बेटे अपने बाप या'कूब को और अपने बाल बच्चों और अपनी बीवियों को उन गाड़ियों पर ले गए

* 45:22 45:22 1: 3:5 किलोग्राम चांदी

जो फिर'औन ने उनके लाने को भेजी थीं। ⁶ और वह अपने चौपायों और सारे माल — ओ — अस्बाब को जो उन्होंने मुल्क — ए — कना'न में जमा किया था लेकर मिस्र में आए, और या'कूब के साथ उसकी सारी औलाद थी। ⁷ वह अपने बेटों और बेटियों और पोतों और पोतियों, और अपनी कुल नसल को अपने साथ मिस्र में ले आया। ⁸ और या'कूब के साथ जो इस्राईली या'नी उसके बेटे वगैरा मिस्र में आए उनके नाम यह हैं: रूबिन, या'कूब का पहलौटा। ⁹ और बनी रूबिन यह हैं: हनूक और फ़ल्लू और हसरोन और करमी। ¹⁰ और बनी शमौन यह हैं: यमूएल और यमीन और उहद और यकीन और सुहर और साऊल, जो एक कना'नी 'औरत से पैदा हुआ था। ¹¹ और बनी लावी यह हैं: जैरसोन और किहात और मिरारी। ¹² और बनी यहूदाह यह हैं: 'एर और ओनान और सीला, और फ़ारस और ज़ारह — इनमें से 'एर और ओनान मुल्क — ए — कना'न में मर चुके थे। और फ़ारस के बेटे यह हैं: हसरोन और हमूल। ¹³ और बनी इश्कार यह हैं: तोला' और फूवा और योब और सिमरोन। ¹⁴ और बनी ज़बूलून यह हैं: सरद और एलोन और यहलीएल। ¹⁵ यह सब या'कूब के उन बेटों की औलाद हैं जो फ़द्दान अराम में लियाह से पैदा हुए, इसी के बत्न से उसकी बेटी दीना थी। यहाँ तक तो उसके सब बेटे बेटियों का शुमार तैंतीस हुआ। ¹⁶ बनी ज़द यह हैं: सफ़्रियान और हज्जी और सूनी और असवान और 'एरी और अरूदी और अरेली। ¹⁷ और बनी आशर यह हैं: यिमना और इसवाह और इसवी और बरि'आह और सिराह उनकी बहन और बनी बरी'आह यह हैं: हिब्र और मलकीएल। ¹⁸ यह सब या'कूब के उन *बेटों की औलाद हैं जो ज़िल्फ़ा लौंडी से पैदा हुए, जिसे लाबन ने अपनी बेटी लियाह को दिया था। उनका शुमार सोलह था। ¹⁹ और या'कूब के बेटे यूसुफ़ और बिनयमीन राखिल से पैदा हुए थे। ²⁰ और यूसुफ़ से मुल्क — ए — मिस्र में ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा' की बेटी आसिनाथ के मनस्सी और इफ़्राईम पैदा हुए। ²¹ और बनी बिनयमीन यह हैं: बाला' और बकर और अशबेल और जीरा और ना'मान, अखी और रोस, मुफ़फ़ीम और हुफ़फ़ीम और अरद। ²² यह सब या'कूब के उन बेटों की औलाद हैं जो राखिल से पैदा हुए। यह सब शुमार में चौदह थे। ²³ और दान के बेटे का नाम हशीम था। ²⁴ और बनी नफ़्ताली यह हैं: यहसीएल और जूनी और यिस्र और सलीम। ²⁵ यह सब या'कूब के उन बेटों की औलाद हैं जो

बिल्हाह लौंडी से पैदा हुए, जिसे लाबन ने अपनी बेटी राखिल को दिया था। इनका शुमार सात था। ²⁶ या'कूब के सुल्ब से जो लोग पैदा हुए और उसके साथ मिस्र में आए वह उसकी बहुओं को छोड़ कर शुमार में छियासठ थे। ²⁷ और यूसुफ़ के दो बेटे थे जो मिस्र में पैदा हुए, इसलिए या'कूब के घराने के जो लोग मिस्र में आए वह सब मिल कर सत्तर हुए।

२२'२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२२ २२२ २२२२२२२

²⁸ और उसने यहूदाह को अपने से आगे यूसुफ़ के पास भेजा ताकि वह उसे जशन का रास्ता दिखाए, और वह जशन के 'इलाक़े में आए। ²⁹ और यूसुफ़ अपना रथ तैयार करवा के अपने बाप इस्राईल के इस्तक़बाल के लिए जशन को गया, और उसके पास जाकर उसके गले से लिपट गया और वहीं लिपटा हुआ देर तक रोता रहा। ³⁰ तब इस्राईल ने यूसुफ़ से कहा, “अब चाहे मैं मर जाऊँ; क्योंकि तेरा मुँह देख चुका कि तू अभी ज़िन्दा है।” ³¹ और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से और अपने बाप के घराने से कहा, मैं अभी जाकर फिर'औन को खबर कर दूँगा और उससे कह दूँगा कि मेरे भाई और मेरे बाप के घराने के लोग, जो मुल्क — ए — कना'न में थे मेरे पास आ गए हैं। ³² और वह चौपान हैं; क्योंकि बराबर चौपायों को पालते आए हैं, और वह अपनी भेड़ बकरियाँ और गाय — बैल और जो कुछ उनका है सब ले आए हैं। ³³ तब जब फिर'औन तुम को बुला कर पूछे कि तुम्हारा पेशा क्या है? ³⁴ तो तुम यह कहना कि तेरे खादिम, हम भी और हमारे बाप दादा भी, लड़कपन से लेकर आज तक चौपाये पालते आए हैं। तब तुम जशन के इलाक़े में रह सकोगे, इसलिए कि मिस्रियों को चौपानों से नफ़रत है।

47

२२'२२२ २२ २२२२'२२ २२ २२२ २२२२

¹ तब यूसुफ़ ने आकर फिर'औन को खबर दी कि मेरा बाप और मेरे भाई और उनकी भेड़ बकरियाँ और गाय बैल और उनका सारा माल — ओ — सामान' मुल्क — ए — कना'न से आ गया है, और अभी तो वह सब जशन के 'इलाक़े में हैं। ² फिर उसने अपने भाइयों में से पाँच को अपने साथ लिया और उनको फिर'औन के सामने हाज़िर किया। ³ और फिर'औन ने उसके भाइयों से पूछा, “तुम्हारा पेशा क्या है?” उन्होंने फिर'औन से कहा, “तेरे खादिम चौपान हैं जैसे हमारे बाप दादा थे।” ⁴ फिर उन्होंने फिर'औन से कहा कि हम इस मुल्क में

* 46:18 46:18 बच्चे, नाती पोते

मुसाफिराना तौर पर रहने आए हैं, क्योंकि मुल्क — ए — कना'न में सख्त काल होने की वजह से वहाँ तेरे खादिमों के चौपायों के लिए चराई नहीं रही। इसलिए करम करके अपने खादिमों को जशन के 'इलाके में रहने दे।⁵ तब फिर'औन ने यूसुफ़ से कहा कि तेरा बाप और तेरे भाई तेरे पास आ गए हैं।⁶ मिस्र का मुल्क तेरे आगे पड़ा है, यहाँ के अच्छे से अच्छे इलाके में अपने बाप और भाइयों को बसा दे, या'नी जशन ही के 'इलाके में उनको रहने दे, और अगर तेरी समझ में उनमें होशियार आदमी भी हों तो उनको मेरे चौपायों पर मुकर्रर कर दे।⁷ और यूसुफ़ अपने बाप या'कूब को अन्दर लाया और उसे फिर'औन के सामने हाज़िर किया, और या'कूब ने फिर'औन को दुआ दी।⁸ और फिर'औन ने या'कूब से पूछा कि तेरी उमर कितने साल की है? ⁹ या'कूब ने फिर'औन से कहा कि मेरी मुसाफिरत के साल एक सौ तीस हैं; मेरी ज़िन्दगी के दिन थोड़े और दुख से भरे हुए रहे, और अभी यह इतने हुए भी नहीं हैं जितने मेरे बाप दादा की ज़िन्दगी के दिन उनके दौर — ए — मुसाफिरत में हुए।¹⁰ और या'कूब फिर'औन को दुआ दे कर उसके पास से चला गया।¹¹ और यूसुफ़ ने अपने बाप और अपने भाइयों को बसा दिया और फिर'औन के हुक्म के मुताबिक़ रा'मसीस के इलाके को, जो मुल्क — ए — मिस्र का निहायत हरा भरा 'इलाका है उनकी जागीर ठहराया।¹² और यूसुफ़ अपने बाप और अपने भाइयों और अपने बाप के घर के सब आदमियों की परवरिश, एक — एक के खान्दान की ज़रूरत के मुताबिक़ अनाज से करने लगा।

???? ???? ??????? ?? ????????

¹³ और उस सारे मुल्क में खाने को कुछ न रहा, क्योंकि काल ऐसा सख्त था कि मुल्क — ए — मिस्र और मुल्क — ए — कना'न दोनों काल की वजह से तबाह हो गए थे।¹⁴ और जितना रुपया मुल्क — ए — मिस्र और मुल्क — ए — कना'न में था वह सब यूसुफ़ ने उस ग़ल्ले के बदले, जिसे लोग खरीदते थे, ले ले कर जमा' कर लिया और सब रुपये को उसने फिर'औन के महल में पहुँचा दिया।¹⁵ और जब वह सारा रुपया, जो मिस्र और कनान के मुल्कों में था, खर्च हो गया तो मिस्री यूसुफ़ के पास आकर कहने लगे, “हम को अनाज दे; क्योंकि रुपया तो हमारे पास रहा नहीं। हम तेरे होते हुए क्यूँ मरें?” ¹⁶ यूसुफ़ ने कहा कि अगर रुपया नहीं है तो अपने चौपाये दो; और मैं तुम्हारे चौपायों के बदले तुम को अनाज दूँगा।¹⁷ तब वह अपने चौपाये

यूसुफ़ के पास लाने लगे और गाय बैलों और गधों के बदले उनको अनाज देने लगा; और पूरे साल भर उनको उनके सब चौपायों के बदले अनाज खिलाया।¹⁸ जब यह साल गुज़र गया तो वह दूसरे साल उसके पास आ कर कहने लगे कि इसमें हम अपने खुदावन्द से कुछ नहीं छिपाते कि हमारा सारा रुपया खर्च हो चुका और हमारे चौपायों के गल्लों का मालिक भी हमारा खुदावन्द हो गया है। और हमारा खुदावन्द देख चुका है कि अब हमारे जिस्म और हमारी ज़मीन के अलावा कुछ बाक़ी नहीं।¹⁹ फिर ऐसा क्यूँ हो कि तेरे देखते — देखते हम भी मरें और हमारी ज़मीन भी उजड़ जाए? इसलिए तू हम को और हमारी ज़मीन को अनाज के बदले खरीद ले कि हम फिर'औन के गुलाम बन जाएँ, और हमारी ज़मीन का मालिक भी वही हो जाए और हम को बीज दे ताकि हम हलाक न हों बल्कि ज़िन्दा रहें और मुल्क भी वीरान न हो।²⁰ और यूसुफ़ ने मिस्र की सारी ज़मीन फिर'औन के नाम पर खरीद ली; क्योंकि काल से तंग आ कर मिस्रियों में से हर शख्स ने अपना खेत बेच डाला। तब सारी ज़मीन फिर'औन की हो गई।²¹ और मिस्र के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक जो लोग रहते थे उनको उसने शहरों में बसाया। * ²² लेकिन पुजारियों की ज़मीन उसने न खरीदी, क्योंकि फिर'औन की तरफ़ से पुजारियों को खुराक मिलती थी। इसलिए वह अपनी — अपनी खुराक, जो फिर'औन उनको देता था खाते थे इसलिए उन्होंने अपनी ज़मीन न बेची।²³ तब यूसुफ़ ने वहाँ के लोगों से कहा, कि देखो, मैंने आज के दिन तुम को और तुम्हारी ज़मीन को फिर'औन के नाम पर खरीद लिया है। इसलिए तुम अपने लिए यहाँ से बीज लो और खेत बो डालो।²⁴ और फ़सल पर पाँचवाँ हिस्सा फिर'औन को दे देना और बाक़ी चार तुम्हारे रहे, ताकि खेती के लिए बीज के भी काम आएँ, और तुम्हारे और तुम्हारे घर के आदमियों और तुम्हारे बाल बच्चों के लिए खाने को भी हो।²⁵ उन्होंने कहा, कि तूने हमारी जान बचाई है, हम पर हमारे खुदावन्द के करम की नज़र रहे और हम फिर'औन के गुलाम बने रहेंगे।²⁶ और यूसुफ़ ने यह कानून जो आज तक है मिस्र की ज़मीन के लिए ठहराया, के फिर'औन पैदावार का पाँचवाँ हिस्सा लिया करे। इसलिए सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन ऐसी थी जो फिर'औन की न हुई।²⁷ और इस्राईली मुल्क — ए — मिस्र में जशन के इलाके में रहते थे, और उन्होंने अपनी जायदादें खड़ी कर लीं और वह बढ़े और बहुत ज्यादा हो गए।²⁸ और या'कूब मुल्क — ए — मिस्र में

* 47:21 47:21 और यूसुफ़ ने मिस्र के एक किनारे से लेकर दूसरे किनारे तक लोगों को गुलाम बनाया; और यूसुफ़ ने लोगों को सबब बनाया कि वह मिस्र के फ़रक़ फ़रक़ शहरों में बसे रहें

सत्रह साल और जिया; तब या'कूब की कुल उम्र एक सौ सैंतालीस साल की हुई। ²⁹ और इस्राईल के मरने का वक्त नज़दीक आया; तब उसने अपने बेटे यूसुफ़ को बुला कर उससे कहा, “अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है तो अपना हाथ मेरी रान के नीचे रख, और देख, मेहरबानी और सच्चाई से मेरे साथ पेश आना; मुझ को मिस्र में दफ़न न करना। ³⁰ बल्कि जब मैं अपने बाप — दादा के साथ सो जाऊँ तो मुझे मिस्र से ले जाकर उनके कब्रिस्तान में दफ़न करना।” उसने जवाब दिया, “जैसा तूने कहा है मैं वैसा ही करूँगा।” ³¹ और उसने कहा कि तू मुझ से क्रसम खा। और उसने उससे क्रसम खाई, तब इस्राईल अपने बिस्तर पर सिरहाने की तरफ़ सिजदे में हो गया।

48

२२ २२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२ २२२२

¹ इन बातों के बाद यँहुआ कि किसी ने यूसुफ़ से कहा, “तेरा बाप बीमार है।” तब वह अपने दोनो बेटों, मनस्सी और इफ़राईम को साथ लेकर चला। ² और या'कूब से कहा गया, तेरा बेटा यूसुफ़ तेरे पास आ रहा है, और इस्राईल अपने को संभाल कर पलंग पर बैठ गया। ³ और या'कूब ने यूसुफ़ से कहा, “खुदा — ए — कादिर — ए — मुतलक मुझे लूज़ में जो मुल्क — ए — कना'न में है, दिखाई दिया और मुझे बरकत दी। ⁴ और उसने मुझ से कहा मैं तुझे कामयाब करूँगा और बढ़ाऊँगा और तुझ से कौमों का एक गिरोह पैदा करूँगा; और तेरे बाद यह ज़मीन तेरी नसल को दूँगा, ताकि यह उनकी हमेशा की जायदाद हो जाए। ⁵ तब तेरे दोनों बेटे, जो मुल्क — ए — मिस्र में मेरे आने से पहले पैदा हुए मेरे हैं, या'नी रूबिन और शमौन की तरह इफ़राईम और मनस्सी भी मेरे ही होंगे। ⁶ और जो औलाद अब उनके बाद तुझ से होगी वह तेरी ठहरेगी, लेकिन अपनी मीरास में अपने भाइयों के नाम से वह लोग नामज़द होंगे। ⁷ और मैं जब फ़दान से आता था तो राखिल ने रास्ते ही में जब इफ़रात थोड़ी दूर रह गया था, मेरे सामने मुल्क — ए — कना'न में वफ़ात पाई। और मैंने उसे वहीं इफ़रात के रास्ते में दफ़न किया। बैतलहम वही है।” ⁸ फिर इस्राईल ने यूसुफ़ के बेटों को देख कर पूछा, “यह कौन हैं?” ⁹ यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा, “यह मेरे बेटे हैं जो खुदा ने मुझे यहाँ दिए हैं।” उसने कहा, “उनको ज़रा मेरे पास ला, मैं उनको बरकत दूँगा।” ¹⁰ लेकिन इस्राईल

की आँखें बुढ़ापे की वजह से धुन्धला गई थीं, और उसे दिखाई नहीं देता था। तब यूसुफ़ उनको उसके नज़दीक ले आया। तब उसने उनको चूम कर गले लगा लिया। ¹¹ और इस्राईल ने यूसुफ़ से कहा, “मुझे तो ख्याल भी न था कि मैं तेरा मुँह देखूँगा लेकिन खुदा ने तेरी औलाद भी मुझे दिखाई।” ¹² और यूसुफ़ उनको अपने घुटनों के बीच से हटा कर मुँह के बल ज़मीन तक झुका। ¹³ और यूसुफ़ उन दोनों को लेकर, या'नी इफ़राईम को अपने दहने हाथ से इस्राईल के बाएँ हाथ के सामने और मनस्सी को अपने बाएँ हाथ से इस्राईल के दहने हाथ के सामने करके, उनको उसके नज़दीक लाया। ¹⁴ और इस्राईल ने अपना दहना हाथ बढ़ा कर इफ़राईम के सिर पर जो छोटा था, और बाँया हाथ मनस्सी के सिर पर रख दिया। उसने जान बूझ कर अपने हाथ यँ रखे, क्योंकि पहलौटा तो मनस्सी ही था। ¹⁵ और उसने यूसुफ़ को बरकत दी और कहा कि खुदा, जिसके सामने मेरे बाप अब्रहाम और इस्हाक़ ने अपना दौर पूरा किया; वह खुदा, जिसने सारी उम्र आज के दिन तक मेरी रहनुमाई की। ¹⁶ और वह फ़रिश्ता, जिसने मुझे सब बलाओं से बचाया, इन लड़कों को बरकत दे; और जो मेरा और मेरे बाप दादा अब्रहाम और इस्हाक़ का नाम है उसी से यह नामज़द हों, और ज़मीन पर बहुत कसरत से बढ़ जाएँ। ¹⁷ और यूसुफ़ यह देखकर कि उसके बाप ने अपना दहना हाथ इफ़राईम के सिर पर रखवा, नाखुश हुआ और उसने अपने बाप का हाथ थाम लिया, ताकि उसे इफ़राईम के सिर पर से हटाकर मनस्सी के सिर पर रखे। ¹⁸ और यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा कि ऐ मेरे बाप, ऐसा न कर; क्योंकि पहलौटा यह है, अपना दहना हाथ इसके सिर पर रख। ¹⁹ उसके बाप ने न माना, और कहा, “ऐ मेरे बेटे, मुझे ख़ूब मा'लूम है। इससे भी एक गिरोह पैदा होगी और यह भी बुज़ुर्ग होगा, लेकिन इसका छोटा भाई इससे बहुत बड़ा होगा और उसकी नसल से बहुत सी कौमें होंगी।” ²⁰ और उसने उनको उस दिन बरकत बख़्शी और कहा, इस्राईली तेरा नाम ले लेकर यँहुआ दिया करेंगे, 'खुदा तुझ को इफ़राईम और मनस्सी को तरह कामयाब करे!' तब उसने इफ़राईम को मनस्सी पर फ़ज़ीलत दी। ²¹ और इस्राईल ने यूसुफ़ से कहा, मैं तो मरता हूँ लेकिन खुदा तुम्हारे साथ होगा और तुम को फिर तुम्हारे बाप दादा के मुल्क में ले जाएगा। ²² और मैं तुझे तेरे भाइयों से ज्यादा एक हिस्सा, जो मैंने अमोरियों के हाथ से अपनी तलवार और कमान से लिया देता हूँ।

† 47:30 47:30 1: मैं वहाँ दफ़न होना चाहता हूँ जहाँ मेरे बाप दादा दफ़न हुए थे खुदा की इबादत करता रहा — इस्राईल अपने बिछोने के सिरहाने सर्निगु होगया

‡ 47:31 47:31 उसके बैसाखी का सहारा लेने तक इस्राईल

49

२२' २२२२ २२ २२२२ २२२२ २२ २२२ २२२२२
२२२ २२२ २२२२

1 और या'कूब ने अपने बेटों को यह कह कर बुलवाया कि तुम सब जमा' हो जाओ, ताकि मैं तुम को बताऊँ कि आखिरी दिनों में तुम पर क्या — क्या गुज़रेगा। 2 ऐ, या'कूब के बेटों जमा' हो कर सुनो, और अपने बाप इस्राईल की तरफ़ कान लगाओ। 3 ऐ रूबिन! तू मेरा पहलौठा, मेरी कुव्वत और मेरी शहजोरी का पहला फल है। तू मेरे रौब की और मेरी ताक़त की शान है। 4 तू पानी की तरह बे सबात है, इसलिए मुझे फ़ज़ीलत नहीं मिलेगी क्योंकि तू अपने बाप के बिस्तर पर चढ़ा तूने उसे नापाक किया; रूबिन मेरे बिछोने पर चढ़ गया। 5 शमौन और लावी तो भाई — भाई हैं, उनकी तलवारें ज़ुल्म के हथियार हैं। 6 ऐ मेरी जान! उनके मधरे में शरीक न हो, ऐ मेरी बुज़ुर्गी! उनकी मजलिस में शामिल न हो, क्योंकि उन्होंने अपने ग़ज़ब में एक आदमी को क़त्ल किया, और अपनी खुदराई से बैलों की कूँचें काटीं। 7 ला'नत उनके ग़ज़ब पर, क्योंकि वह तुन्द था। और उनके क़हर पर, क्योंकि वह सख़्त था; मैं उन्हें या'कूब में अलग अलग और इस्राईल में बिखेर दूँगा। 8 ऐ यहूदाह, तेरे भाई तेरी मदद करेंगे, तेरा हाथ तेरे दुश्मनों की गर्दन पर होगा। तेरे बाप की औलाद तेरे आगे सिज्दा करेगी। 9 यहूदाह शेर — ए — बबर का बच्चा है ऐ मेरे बेटे! तू शिकार मार कर चल दिया है। वह शेर — ए — बबर, बल्कि *शेरनी की तरह दुबक कर बैठ गया, कौन उसे छेड़े? 10 यहूदाह से सल्लनत नहीं छूटेगी। और न उसकी नसल से हुकूमत का 'असा मौकूफ़ होगा। †जब तक शीलोह न आए और क्रौमें उसकी फ़रमाबरदार होंगी। 11 वह अपना जवान गधा अंगूर के दरख़्त से, और अपनी गधी का बच्चा 'आला दरजे के अंगूर के दरख़्त से बाँधा करेगा; वह अपना लिबास मय में, और अपनी पोशाक आब — ए अंगूर में धोया करेगा 12 उसकी आँखें मय की वजह से लाल, और उसके दाँत दूध की वजह से सफ़ेद रहा करेंगे। 13 ज़बूलून समुन्दर के किनारे बसेगा, और जहाज़ों के लिए बन्दरगाह का काम देगा, और उसकी हद सैदा तक फैली होगी। 14 इश्कार मज़बूत गधा है, ‡जो दो भेड़सालों के बीच बैठा है; 15 उसने एक अच्छी आरामगाह और खुशनुमा ज़मीन को देख कर अपना कन्धा बोझ उठाने को झुकाया, और बेगार में गुलाम की तरह काम करने लगा। 16 दान इस्राईल के क़बीलों

में से एक की तरह अपने लोगों का इन्साफ़ करेगा। 17 दान रास्ते का साँप है, वह राहगुज़र का अज़दह है, जो घोड़े के 'अकब को ऐसा डसता है कि उसका सवार पछाड़ खा कर गिर पड़ता है। 18 ऐ खुदावन्द, मैं तेरी नजात की राह देखता आया हूँ। 19 जद्द पर एक फौज़ हमला करेगी लेकिन वह उसके दुम्बाला पर छापा मारेगा। 20 आशर नफ़ीस अनाज पैदा किया करेगा और बादशाहों के लायक लज़ीज़ सामान मुहय्या करेगा। 21 नफ़ताली ऐसा है जैसा छूटी हुई हिरनी, वह मीठी — मीठी बातें करता है। 22 यूसुफ़ एक फलदार पौधा है, ऐसा फलदार पौधा जो पानी के चश्में के पास लगा हुआ हो, और उसकी शाखें। दीवार पर फैल गई हों। 23 तीरंदाज़ों ने उसे बहुत छेड़ा और मारा और सताया है; 24 लेकिन उसकी कमान मज़बूत रही, और उसके हाथों और बाजुओं ने या'कूब के क़ादिर के हाथ से ताक़त पाई, वहीं से वह चौपान उठा है जो इस्राईल की चट्टान है। 25 यह तेरे बाप के §खुदा का काम है, जो तेरी मदद करेगा, उसी क़ादिर — ए — मुतलक का काम जो ऊपर से आसमान की बरकतें, और नीचे से गहरे समुन्दर कि बरकतें 'अता करेगा। 26 तेरे बाप की बरकतें, *मेरे बाप दादा की बरकतों से कहीं ज्यादा हैं, और क़दीम पहाड़ों की इन्तिहा तक पहुँची हैं; वह यूसुफ़ के सिर, बल्कि उसके सिर की चाँदी पर जो अपने भाइयों से जुदा हुआ नाज़िल होंगी। 27 बिनयमीन फाड़ने वाला भेड़िया है, वह सुबह को शिकार खाएगा और शाम को लूट का माल बाँटेगा। 28 इस्राईल के बारह क़बीले यही हैं: और उनके बाप ने जो — जो बातें कह कर उनको बरकत दीं वह भी यही हैं; हर एक को, उसकी बरकत के मुवाफ़िक़ उसने बरकत दी।

२२' २२२२ २२ २२२ २२ २२२२ २२२२ २२२२

29 फिर उसने उनको हुक्म किया और कहा, कि मैं अपने लोगों में शामिल होने पर हूँ; मुझे मेरे बाप दादा के पास उस मग़ारह मारे में जो इफ़रोन हित्ती के खेत में है दफ़न करना, 30 या'नी उस मग़ारे में जो मुल्क — ए — कना'न में ममरे के सामने मक़बीला के खेत में है, जिसे अबरहाम ने खेत के साथ 'इफ़रोन हित्ती से मोल लिया था, ताकि क़ब्रिस्तान के लिए वह उसकी मिलिकयत बन जाए। 31 वहाँ उन्होंने अबरहाम को और उसकी बीवी सारा को दफ़न किया, वहीं उन्होंने इस्हाक़ और उसकी बीवी रिबका को दफ़न किया, और वहीं मैंने भी लियाह को दफ़न किया, 32 या'नी उसी खेत के माग़ारे में

* 49:9 49:9 बड़ा बबर शेर, शेरनी † 49:10 49:10 जब तक कि वह (खुदा) न आए जिस का मैं हूँ ‡ 49:14 49:14 या दो बोझें § 49:25 49:25 कादिर — ए — मुतलक खुदा * 49:26 49:26 या अब्दी पहाड़ों

जो बनी हित्ती से खरीदा था।³³ और जब या'कूब अपने बेटों को वसीयत कर चुका तो, उसने अपने पाँव बिछौने पर समेट लिए और दम छोड़ दिया और अपने लोगों में जा मिला।

50

¹ तब यूसुफ़ अपने बाप के मुँह से लिपट कर उस पर रोया और उसको चूमा।² और यूसुफ़ ने उन हकीमों को जो उसके नौकर थे, अपने बाप की लाश में खुशबू भरने का हुक्म दिया। तब हकीमों ने इस्राईल की लाश में खुशबू भरी।³ और उसके चालीस दिन पूरे हुए, क्योंकि खुशबू भरने में इतने ही दिन लगते हैं। और मिस्री उसके लिए सत्तर दिन तक मातम करते रहे।⁴ और जब मातम के दिन गुज़र गए तो यूसुफ़ ने फिर'औन के घर के लोगों से कहा, अगर मुझ पर तुम्हारे करम की नज़र है तो फिर'औन से ज़रा 'अर्ज़ कर दो,⁵ कि मेरे बाप ने यह मुझ से कसम लेकर कहा है, “मैं तो मरता हूँ, तू मुझ को मेरी क़ब्र में जो मैंने मुल्क — ए — कना'न में अपने लिए खुदवाई है, दफ़न करना। इसलिए ज़रा मुझे इजाज़त दे कि मैं वहाँ जाकर अपने बाप को दफ़न करूँ, और मैं लौट कर आ जाऊँगा।”⁶ फिर'औन ने कहा, कि जा और अपने बाप को जैसे उसने तुझ से कसम ली है दफ़न कर।⁷ तब यूसुफ़ अपने बाप को दफ़न करने चला, और फिर'औन के सब खादिम और उसके घर के बुज़ुर्ग, और मुल्क — ए — मिस्र के सब बुज़ुर्ग,⁸ और यूसुफ़ के घर के सब लोग और उसके भाई, और उसके बाप के घर के आदमी उसके साथ गए; वह सिर्फ़ अपने बाल बच्चे और भेड़ बक़रियाँ और गाय — बैल ज़शन के 'इलाक़े में छोड़ गए।⁹ और उसके साथ रथ और सवार भी गए, और एक बड़ा क़ाफ़िला उसके साथ था।¹⁰ और वह अतद के खलिहान पर जो यरदन के पार है पहुंचे, और वहाँ उन्होंने बुलन्द और दिलसोज़ आवाज़ से नौहा किया; और यूसुफ़ ने अपने बाप के लिए सात दिन तक मातम कराया।¹¹ और जब उस मुल्क के बाशिन्दों या'नी कना'नियों ने अतद में खलिहान पर इस तरह का मातम देखा, तो कहने लगे, “मिस्रियों का यह बड़ा दर्दनाक मातम है।” इसलिए वह जगह *अबील मिस्रयीम कहलाई, और वह यरदन के पार है।¹² और या'कूब के बेटों ने जैसा उसने उनको हुक्म किया था, वैसा ही उसके लिए किया।¹³ क्योंकि उन्होंने उसे मुल्क — ए — कना'न में ले जाकर ममरे के सामने मक़फ़ीला के खेत के मज़ारे में, जिसे अब्रहाम ने 'इफ़रोन हित्ती से खरीदकर क़ब्रिस्तान के लिए अपनी मिल्कियत बना लिया था दफ़न किया।

* 50:11 50:11 मिस्रियों का मातम

२२२२२२ २२ २२२२ २२२२२२ २२ २२२२२२ २२२२

¹⁴ और यूसुफ़ अपने बाप को दफ़न करके अपने भाइयों, और उनके साथ जो उसके बाप को दफ़न करने के लिए उसके साथ गए थे, मिस्र को लौटा।¹⁵ और यूसुफ़ के भाई यह देख कर कि उनका बाप मर गया कहने लगे, कि यूसुफ़ शायद हम से दुश्मनी करे, और सारी बुराई का जो हम ने उससे की है पूरा बदला ले।¹⁶ तब उन्होंने यूसुफ़ को यह कहला भेजा, “तेरे बाप ने अपने मरने से आगे ये हुक्म किया था,¹⁷ ‘तुम यूसुफ़ से कहना कि अपने भाइयों की ख़ता और उनका गुनाह अब बख़्श दे, क्योंकि उन्होंने तुझ से बुराई की; इसलिए अब तू अपने बाप के खुदा के बन्दों की ख़ता बख़्श दे।’” और यूसुफ़ उनकी यह बातें सुन कर रोया।¹⁸ और उसके भाइयों ने खुद भी उसके सामने जाकर अपने सिर टेक दिए और कहा, “देख! हम तेरे खादिम हैं।”¹⁹ यूसुफ़ ने उनसे कहा, “मत डरो! क्या मैं खुदा की जगह पर हूँ?²⁰ तुम ने तो मुझ से बुराई करने का इरादा किया था, लेकिन खुदा ने उसी से नेकी का क़स्द किया, ताकि बहुत से लोगों की जान बचाए चुनाँचे आज के दिन ऐसा ही हो रहा है।²¹ इसलिए तुम मत डरो, मैं तुम्हारी और तुम्हारे बाल बच्चों की परवरिश करता रहूँगा।” इस तरह उसने अपनी मुलायम बातों से उनको तसल्ली दी।

२२२२२२ २२ २२२

²² और यूसुफ़ और उसके बाप के घर के लोग मिस्र में रहे, और यूसुफ़ एक सौ दस साल तक ज़िन्दा रहा।²³ और यूसुफ़ ने इफ़राईम की औलाद तीसरी नसल तक देखी, और मनस्सी के बेटे मकीर की औलाद को भी यूसुफ़ ने अपने घुटनों पर खिलाया।²⁴ और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं मरता हूँ; और खुदा यक़ीनन तुम को याद करेगा, और तुम को इस मुल्क से निकाल कर उस मुल्क में पहुँचाएगा जिसके देने की क़सम उसने अब्रहाम और इस्हाक़ और या'कूब से खाई थी।”²⁵ और यूसुफ़ ने बनी — इस्राईल से क़सम लेकर कहा, खुदा यक़ीनन तुम को याद करेगा, इसलिए तुम ज़रूर ही मेरी हडिडियों को यहाँ से ले जाना।²⁶ और यूसुफ़ ने एक सौ दस साल का होकर वफ़ात पाई; और उन्होंने उसकी लाश में खुशबू भरी और उसे मिस्र ही में ताबूत में रखवा।

खुरुज

खुरुज 1:1-14

रिवायती तौर से मूसा ही मख्सूस किया हुआ मुसन्निफ़ है दो मा'कूल सबब हैं कि क्यूँ बगैर सवाल किए या बिना किसी एतराज़ के इलाही तौर से इल्हाम शुदा मुसन्निफ़ बतौर कबूल किया गया है पहला खुरुज की किताब खुद ही मूसा के लिखने की बाबत बताती है खुरुज 34:27 खुदा मूसा को हुक्म देता है कि “इन बातों को लिख ले” दूसरी इबारत हम से कहती है कि खुदा के हुक्म की फ़र्मान्बदारी करते हुए मूसा ने खुदावंद की सब बातें लिख ली (खुरुज 24:4) यह सबब बनता है कि इन आयतों को मूसा की लिखी हुई बातों कबूल करें जो इस किताब में बयान की गई हैं दूसरा खुरुज की किताब में जिन वाक़ियात का ज़िक्र या तो मूसा ने उन्हें अंजाम दी या उन में खुद हिस्सा लिया मूसा ने फ़िरोन के घराने में तालीम हासिल की थी और लिखने की क़ाबिलियत से क़ाबिल — ए — इंतकाब हुआ था।

खुरुज 1:1-14

इस के तसनीफ़ की तारीख़ तक्ररीबन 1446 - 1405 क़बल मसीह है।

बनी इस्राईल की कौम इस तारीख़ से लेकर आगे तक उन की अपनी गैर वफ़ादारी के सबब से उसी बयाबान में भटकते रहे — इस किताब को लिखने के लिए यह मा'कूल वक़्त था।

खुरुज 1:1-14

इस किताब को कबूल करने वाले खुद खुरुज की छुड़ाई हुई नसल रही होगी मूसा ने खुरुज की किताब को सीना के लोगों के लिए लिखा था जो मिस्र से रहनुमाई पाते हुए आये थे (खुरुज 17:14; 24:4; 34:27,28)।

खुरुज 1:1-14

खुरुज की किताब बयान में वाज़ेह करती है की किस तरह बनी इस्राईल यह्दे के लोग बन गए और अहद के ज़ामिन ठहराए जाकर खुदा के लोग बातौर रहने लगे खुरुज की किताब एक वफ़ादार, मुहीब, बचानेवाला मुक़द्दस खुदा की सीरत और ख़ासियत को ज़ाहिर करती है जिस ने बनी इस्राईल कौम के लिए एक अहद को क़ायम किया खुदा की सीरत ख़ासियत जो खुदा का नाम और उसके अफ़ आल दोनों से ज़ाहिर होता है, वह यह जताने के लिए खुदा ने अब्राहम से किया हुआ वायदा (पैदाइश 15:12 — 16) पूरा हुआ था जब उस ने उस

की औलाद को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया था — यह अकेले खानदान की एक कहानी है जो आगे चल कर एक कौम बन गई (खुरुज 2:24; 6:5; 12:37) इब्रियों की ता'दाद जो मिस्र से बाहर निकली उन की जब गिनती हुई तो वह दो से तीन लाख निकली।

खुरुज 1:1-14

छुटकारा

बैरूनी खाका

1. इफ़तिताहिया — 1:1-2:25
2. इस्राएल के बनी इस्राईल का छुटकारा — 3:1-8:27
3. सीना पहाड़ में अहकाम दिए गए — 19:1-24:18
4. खुदा का शाही खैमा — 25:1-31:18
5. बगावत के अंजाम बतौर खुदा से अलाहिदगी — 32:1-34:35
6. खुदा के खैम की शाही साख़्त — 35:1-40:38

खुरुज 1:1-14

1 इस्राईल के बेटों के नाम जो अपने — अपने घराने को लेकर या'कूब के साथ मिस्र में आए यह हैं: ²रूबिन, शमौन, लावी, यहूदाह, ³इश्कार, ज़बूलून, बिनयमीन, ⁴दान, नफ़ताली, ज़ेवुलून, आशर ⁵और सब जानें जो या'कूब के सुल्ब से पैदा हुई सत्तर थीं, और यूसुफ़ तो मिस्र में पहले ही से था। ⁶और यूसुफ़ और उसके सब भाई और उस नसल के सब लोग मर मिटे। ⁷और इस्राईल की औलाद क़ामयाब और ज़्यादा ता'दाद और फ़िरावान और बहुत ताक़तवर हो गई और वह मुल्क उनसे भर गया। ⁸तब मिस्र में *एक नया बादशाह हुआ जो यूसुफ़ को नहीं जानता था। ⁹और उसने अपनी कौम के लोगों से कहा, “देखो इस्राईली हम से ज़्यादा और ताक़तवर हो गए हैं। ¹⁰इसलिए आओ, हम उनके साथ हिकमत से पेश आएँ, ऐसा न हो कि जब वह और ज़्यादा हो जाएँ और उस वक़्त जंग छिड़ जाए तो वह हमारे दुश्मनों से मिल कर हम से लड़ें और मुल्क से निकल जाएँ।” ¹¹इसलिए उन्होंने उन पर बेगार लेने वाले मुक़र्रर किए जो उनसे सख़्त काम लेकर उनको सताएँ। तब उन्होंने फ़िर'औन के लिए ज़ख़ीरे के शहर पितोम और रा'मसीस बनाए। ¹²तब उन्होंने जितना उनको सताया वह उतना ही ज़्यादा बढ़ते और फैलते गए, इसलिए वह लोग बनी — इस्राईल की तरफ़ से फ़िक्रमन्द ही गए। ¹³और मिस्रियों ने बनी — इस्राईल पर तशद्दुद कर — कर के उनसे काम कराया। ¹⁴और उन्होंने उनसे सख़्त मेहनत से गारा और ईंट बनवा — बनवाकर और खेत में हर क़िस्म

* 1:8 1:8 एक नया बादशाह मिस्र में हुकूमत करने लगा जो यूसुफ़ को नहीं जानता था

की खिदमत ले — लेकर उनकी ज़िन्दगी कड़वी की; उनकी सब खिदमतें जो वह उनसे कराते थे दुख की थीं। 15 तब मिस्र के बादशाह ने 'इब्रानी दाइयों से जिनमें एक का नाम सफ़रा और दूसरी का नाम फू'आ था बातें की, 16 और कहा, “जब 'इब्रानी 'औरतों के तुम बच्चा जनाओ और उनको पत्थर की बैठकों पर बैठी देखो, तो अगर बेटा हो तो उसे मार डालना, और अगर बेटी हो तो वह जीती रहे।” 17 लेकिन वह दाइयाँ खुदा से डरती थीं, तब उन्होंने मिस्र के बादशाह का हुक्म न माना बल्कि लड़कों को ज़िन्दा छोड़ देती थीं। 18 फिर मिस्र के बादशाह ने दाइयों को बुलवा कर उनसे कहा, “तुम ने ऐसा क्यों किया कि लड़कों को ज़िन्दा रहने दिया?” 19 दाइयों ने फिर'औन से कहा, “'इब्रानी 'औरतें मिस्री 'औरतों की तरह नहीं हैं। वह ऐसी मज़बूत होती हैं कि दाइयों के पहुँचने से पहले ही जनकर फ़ारिग हो जाती हैं।” 20 तब खुदा ने दाइयों का भला किया और लोग बढ़े और बहुत ज़बरदस्त हो गए। 21 और इस वजह से कि दाइयाँ खुदा से डरी, उसने उनके घर आबाद कर दिए। 22 और फिर'औन ने अपनी क़ौम के सब लोगों को ताकीदन कहा, † “उनमें जो बेटा पैदा हो तुम उसे ‡दरिया में डाल देना, और जो बेटी हो उसे ज़िन्दा छोड़ना।”

2

¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶

1 और लावी के घराने के एक शख्स ने जाकर लावी की नसल की एक 'औरत से ब्याह किया। 2 वह 'औरत हामिला हुई और उसके बेटा हुआ, और उस ने यह देखकर कि बच्चा खूबसूरत है तीन महीने तक उसे छिपा कर रखा। 3 और जब उसे और ज्यादा छिपा न सकी तो उसने सरकंडों का एक टोकरा लिया, और उस पर चिकनी मिट्टी और राल लगा कर लड़के को उसमें रखवा, और उसे दरिया के किनारे झाऊ में छोड़ आई। 4 और उसकी बहन दूर खड़ी रही ताकि देखे कि उसके साथ क्या होता है। 5 और फिर'औन की बेटी दरिया पर गुस्ल करने आई और उसकी सहेलियाँ दरिया के किनारे — किनारे टहलने लगीं। तब उसने झाऊ में वह टोकरा देख कर अपनी सहेली की भेजा कि उसे उठा लाए। 6 जब उसने उसे खोला तो लड़के को देखा, और वह बच्चा रो रहा था। उसे उस पर रहम आया और कहने लगी, “यह किसी 'इब्रानी का बच्चा है।” 7 तब उसकी बहन ने फिर'औन की बेटी से कहा, “क्या मैं जा कर 'इब्रानी 'औरतों में से एक दाई तेरे पास बुला लाऊँ, जो तेरे लिए इस बच्चे को दूध पिलाया करे?” 8 फिर'औन की बेटी ने उसे कहा,

“जा!” वह लड़की जाकर उस बच्चे की माँ को बुला लाई। 9 फिर'औन की बेटी ने उसे कहा, “तू इस बच्चे को ले जाकर मेरे लिए दूध पिला, मैं तुझे तेरी मज़दूरी दिया करूँगी।” वह 'औरत उस बच्चे को ले जाकर दूध पिलाने लगी। 10 जब बच्चा कुछ बड़ा हुआ तो वह उसे फिर'औन की बेटी के पास ले गई और वह उसका बेटा ठहरा और उसने उसका नाम *मूसा यह कह कर रखवा, “मैंने उसे पानी से निकाला।”

¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶ ¶¶¶¶

11 इतने में जब मूसा बड़ा हुआ तो बाहर अपने भाइयों के पास गया। और उनकी मशक्कतों पर उसकी नज़र पड़ी और उसने देखा कि एक मिस्री उसके एक 'इब्रानी भाई को मार रहा है। 12 फिर उसने इधर उधर निगाह की और जब देखा कि वहाँ कोई दूसरा आदमी नहीं है, तो उस मिस्री को जान से मार कर उसे रेत में छिपा दिया। 13 फिर दूसरे दिन वह बाहर गया और देखा कि दो 'इब्रानी आपस में मार पीट कर रहे हैं। तब उसने उसे जिसका कुसूर था कहा, कि “तू अपने साथी को क्यों मारता है?” 14 उसने कहा, “तुझे किसने हम पर हाकिम या मुन्सिफ़ मुक़र्रर किया? क्या जिस तरह तूने उस मिस्री को मार डाला, मुझे भी मार डालना चाहता है?” तब मूसा यह सोच कर डरा, “बिला शक यह राज़ खुल गया।” 15 जब फिर'औन ने यह सुना तो चाहा कि मूसा को क़त्ल करे। पर मूसा फिर'औन के सामने से भाग कर मुल्क — ए — मिदियान में जा बसा। वहाँ वह एक कुएँ के नज़दीक बैठा था। 16 और मिदियान के काहिन की सात बेटियाँ थी। वह आई और पानी भर — भर कर कठरों में डालने लगीं ताकि अपने बाप की भेड़ — बकरियों को पिलाएँ। 17 और गड़रिये आकर उनको भगाने लगे, लेकिन मूसा खड़ा हो गया और उसने उनकी मदद की और उनकी भेड़ — बकरियों को पानी पिलाया। 18 और जब वह अपने बाप र'ऊएल के पास लौटीं तो उसने पूछा, “आज तुम इस क़दर जल्द कैसे आ गई?” 19 उन्होंने कहा, “एक मिस्री ने हम को गड़रियों के हाथ से बचाया, और हमारे बदले पानी भर — भर कर भेड़ बकरियों को पिलाया।” 20 उसने अपनी बेटियों से कहा, “वह आदमी कहाँ है? तुम उसे क्यों छोड़ आई? उसे बुला लाओ कि रोटी खाए।” 21 और मूसा उस शख्स के साथ रहने को राज़ी हो गया। तब उसने अपनी बेटी सफ़फ़ूरा मूसा को ब्याह दी। 22 और उसके एक बेटा हुआ, और मूसा ने उसका नाम जैरसोम यह कहकर रखवा, “मैं अजनबी मुल्क में मुसाफ़िर हूँ।” 23 और एक मुद्दत के

† 1:22 1:22 इब्री बेटा

‡ 1:22 1:22 बहर — ए — कुलजुम (नील नदी)

* 2:10 2:10 निकाला हुआ

बाद यूँ हुआ कि मिस्र का बादशाह मर गया। और बनी — इस्राईल अपनी गुलामी की वजह से आह भरने लगे और रोए; और उनका रोना जो उनकी गुलामी की वजह था खुदा तक पहुँचा। ²⁴ और खुदा ने उनका कराहना सुना, और खुदा ने अपने 'अहद को जो अब्रहाम और इस्हाक और या'कूब के साथ था† याद किया। ²⁵ और खुदा ने बनी — इस्राईल पर नज़र की और उनके हाल को मा'लूम किया।

3

ॐॐॐॐ ॐॐ ॐॐॐॐ ॐॐॐ ॐॐॐॐॐ

¹ और मूसा के ससुर यित्रो कि जो मिदियान का काहिन था, भेड़ — बकारियाँ चराता था। और वह भेड़ — बकरियों को हंकाता हुआ उनको वीराने की परली तरफ़ से *खुदा के पहाड़ होरिब के नज़दीक ले आया। ² और खुदावन्द का फ़रिश्ता एक झाड़ी में से आग के शो'ले में उस पर जाहिर हुआ। उसने निगाह की और क्या देखता है, कि एक झाड़ी में आग लगी हुई है पर वह झाड़ी भसम नहीं होती। ³ तब मूसा ने कहा, “मैं अब ज़रा उधर कतरा कर इस बड़े मन्ज़र को देखूँ कि यह झाड़ी क्यों नहीं जल जाती।” ⁴ जब खुदावन्द ने देखा कि वह देखने को कतरा कर आ रहा है, तो खुदा ने उसे झाड़ी में से पुकारा और कहा, ऐ मूसा! ऐ मूसा! “उसने कहा, मैं हाज़िर हूँ।” ⁵ तब उसने कहा, “इधर पास मत आ। अपने पाँव से जूता उतार, क्योंकि जिस जगह तू खड़ा है वह पाक ज़मीन है।” ⁶ फिर उसने कहा कि मैं तेरे बाप का खुदा, या'नी अब्रहाम का खुदा और इस्हाक का खुदा और या'कूब का खुदा हूँ। मूसा ने अपना मुँह छिपाया क्योंकि वह खुदा पर नज़र करने से डरता था। ⁷ और खुदावन्द ने कहा, “मैंने अपने लोगों की तकलीफ़ जो मिस्र में हैं खूब देखी, और उनकी फ़रियाद जो बेगार लेने वालों की वजह से है सुनी, और मैं उनके दुखों को जानता हूँ। ⁸ और मैं उतरा हूँ कि उनको मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊँ, और उस मुल्क से निकाल कर उनको एक अच्छे और बड़े मुल्क में जहाँ †दूध और शहद बहता है या'नी कना'नियों और हित्तियों और अमोरियों और फ़रिज़्ज़ियों और हव्वियों और यबूसियों के मुल्क में पहुँचाऊँ। ⁹ देख बनी — इस्राईल की फ़रियाद मुझ तक पहुँची है, और मैंने वह जुल्म भी जो मिस्री उन पर करते हैं देखा है। ¹⁰ इसलिए अब आ मैं तुझे फ़िर'औन के पास

भेजता हूँ कि तू मेरी क्रौम बनी — इस्राईल को मिस्र से निकाल लाए।” ¹¹ मूसा ने खुदा से कहा, “मैं कौन हूँ जो फ़िर'औन के पास जाऊँ और बनी — इस्राईल को मिस्र से निकाल लाऊँ?” ¹² उसने कहा, “मैं ज़रूर तेरे साथ रहूँगा और इसका कि मैंने तुझे भेजा है तेरे लिए यह निशान होगा, कि जब तू उन लोगों को मिस्र से निकाल लाएगा तो तुम इस पहाड़ पर खुदा की इबादत करोगे।” ¹³ तब मूसा ने खुदा से कहा, “जब मैं बनी — इस्राईल के पास जाकर उनको कहूँ कि तुम्हारे बाप — दादा के खुदा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, और वह मुझे कहे कि उसका नाम क्या है? तो मैं उनको क्या बताऊँ?” ¹⁴ खुदा ने मूसा से कहा, “मैं जो हूँ सो मैं हूँ। इसलिए तू बनी — इस्राईल से यूँ कहना, ‘मैं जो हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।’” ¹⁵ फिर खुदा ने मूसा से यह भी कहा कि तू बनी — इस्राईल से यूँ कहना कि खुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा के खुदा, अब्रहाम के खुदा और इस्हाक के खुदा और या'कूब के खुदा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। हमेशा तक मेरा यही नाम है और सब नसलों में इसी से मेरा ज़िक्र होगा। ¹⁶ जा कर इस्राईली बुज़ुर्गों को एक जगह जमा' कर और उनको कह, 'खुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा के खुदा, अब्रहाम और इस्हाक और या'कूब के खुदा ने मुझे दिखाई देकर यह कहा है कि मैंने तुम को भी, और जो कुछ बरताव तुम्हारे साथ मिस्र में किया जा रहा है उसे भी खूब देखा है। ¹⁷ और मैंने कहा है कि मैं तुम को मिस्र के दुख में से निकाल कर कना'नियों और हित्तियों और अमोरियों और फ़रिज़्ज़ियों और हव्वियों और यबूसियों के मुल्क में ले चलूँगा, जहाँ †दूध और शहद बहता है। ¹⁸ और वह तेरी बात मानेंगे और तू इस्राईली बुज़ुर्गों को साथ लेकर मिस्र के बादशाह के पास जाना और उससे कहना कि 'खुदावन्द इब्रानियों के खुदा की हम से मुलाक़ात हुई। अब तू हम को *तीन दिन की मंज़िल तक वीराने में जाने दे ताकि हम खुदावन्द अपने खुदा के लिए कुर्बानी करें। ¹⁹ और मैं जानता हूँ कि मिस्र का बादशाह तुम को न यूँ जाने देगा, †न बड़े ज़ोर से। ²⁰ तब मैं अपना हाथ बढ़ाऊँगा और मिस्र को उन सब 'अजायब से जो मैं उसमें करूँगा, मुसीबत में डाल दूँगा। इसके बाद वह तुम को जाने देगा। ²¹ और मैं उन †लोगों को मिस्रियों की नज़र में इज़्ज़त बख्शूँगा और यूँ होगा कि जब तुम निकलोगे तो खाली हाथ न निकलोगे। ²² बल्कि तुम्हारी

† 2:24 2:24 दिमाग में लाया गया * 3:1 3:1 मुक़द्दस पहाड़ † 3:8 3:8 अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क † 3:10 3:10 मिस्र का बादशाह † 3:17 3:17 अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क * 3:18 3:18 तीन दिन का पैदल रास्ता † 3:19 3:19 जब तक कि खुदा का एक ज़बरदस्त हाथ उसे मजबूर न कर दे † 3:21 3:21 इस में बनी इस्राईल जोड़ें

एक — एक 'औरत अपनी अपनी पड़ौसन से और अपने — अपने घर की मेहमान से सोने चाँदी के ज़ेवर और लिबास माँग लेगी। इनको तुम अपने बेटों और बेटियों को पहनाओगे और मिस्रियों को लूट लोगे।

4

22222 22 2222 22 2222222222

1 तब मूसा ने जवाब दिया, “लेकिन वह तो मेरा यक्रीन ही नहीं करेंगे न मेरी बात सुनेंगे। वह कहेंगे, 'खुदावन्द तुझे दिखाई नहीं दिया'।” 2 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि यह तेरे हाथ में क्या है? उसने कहा, “लाठी।” 3 फिर उसने कहा कि उसे ज़मीन पर डाल दे। उसने उसे ज़मीन पर डाला और वह साँप बन गई, और मूसा उसके सामने से भागा। 4 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, हाथ बढ़ा कर उसकी दम पकड़ ले। उसने हाथ बढ़ाया और उसे पकड़ लिया, वह उसके हाथ में लाठी बन गया। 5 ताकि वह यक्रीन करें कि खुदावन्द उनके बाप — दादा का खुदा, अब्रहाम का खुदा, इस्हाक़ का खुदा और याक़ूब का खुदा तुझ को दिखाई दिया। 6 फिर खुदावन्द ने उसे यह भी कहा, कि तू अपना हाथ अपने सीने पर रख कर ढाँक ले। उसने अपना हाथ अपने सीने पर रख कर उसे ढाँक लिया, और जब उसने उसे निकाल कर देखा तो उसका हाथ कोढ़ से बर्फ़ की तरह सफ़ेद था। 7 उसने कहा कि तू अपना हाथ फिर अपने सीने पर रख कर ढाँक ले। उसने फिर उसे सीने पर रख कर ढाँक लिया। जब उसने उसे सीने पर से बाहर निकाल कर देखा तो वह फिर उसके बाकी जिस्म की तरह हो गया। 8 और यूँ होगा कि अगर वह तेरा यक्रीन न करें और पहले निशान और मोअजिज़े को भी न मानें तो वह दूसरे निशान और मोअजिज़े की वजह से यक्रीन करेंगे। 9 और अगर वह इन दोनों निशान और मोअजिज़ों की वजह से भी यक्रीन न करें और तेरी बात न सुनें, तो तू दरिया-ए-नील से पानी लेकर खुश्क ज़मीन पर छिड़क देना और वह पानी जो तू दरिया से लेगा खुश्क ज़मीन पर खून हो जाएगा। 10 तब मूसा ने खुदावन्द से कहा, “ऐ खुदावन्द! मैं फ़सीह नहीं, न तो पहले ही था और न जब से तूने अपने बन्दे से कलाम किया बल्कि रुक — रुक कर बोलता हूँ और मेरी ज़बान कुन्द है।” 11 तब खुदावन्द ने उसे कहा कि आदमी का मुँह किसने बनाया है? और कौन गूँगा या बहरा या बीना या अन्धा करता है? क्या मैं ही जो खुदावन्द हूँ यह नहीं करता? 12 इसलिए अब तू जा और मैं तेरी ज़बान का ज़िम्मा लेता हूँ और तुझे सिखाता रहूँगा कि तू क्या — क्या कहे। 13 तब उसने कहा कि ऐ खुदावन्द! मैं तेरी

मिन्नत करता हूँ, किसी और के हाथ से जिसे तू चाहे यह पैग़ाम भेज। 14 तब खुदावन्द का क्रहर मूसा पर भड़का और उसने कहा, क्या लावियों में से हारून तेरा भाई नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह फ़सीह है और वह तेरी मुलाकात को आ भी रहा है, और तुझे देख कर दिल में खुश होगा। 15 इसलिए तू उसे सब कुछ बताना और यह सब बातें उसे सिखाना और मैं तेरी और उसकी ज़बान का ज़िम्मा लेता हूँ, और तुम को सिखाता रहूँगा कि तुम क्या — क्या करो। 16 और वह तेरी तरफ़ से लोगों से बातें करेगा और वह तेरा मुँह बनेगा और तू उसके लिए जैसे खुदा होगा। 17 और तू इस लाठी को अपने हाथ में लिए जा और इसी से यह निशान और मोअजिज़ों को दिखाना।

2222 22 22222 22 22222

18 तब मूसा लौट कर अपने ससुर यित्रो के पास गया और उसे कहा, “मुझे ज़रा इजाज़त दे कि अपने भाइयों के पास जो मिस्र में हैं, जाऊँ और देखूँ कि वह अब तक जिन्दा हैं कि नहीं।” यित्रो ने मूसा से कहा, कि सलामत जा। 19 और खुदावन्द ने मिदियान में मूसा से कहा, कि “मिस्र को लौट जा, क्योंकि वह सब जो तेरी जान के स्वाहाँ थे मर गए।” 20 तब मूसा अपनी बीवी और अपने बेटों को लेकर और उनको एक गधे पर चढ़ा कर मिस्र को लौटा, और मूसा ने खुदा की लाठी अपने हाथ में ले ली। 21 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “जब तू मिस्र में पहुँचे तो देख वह सब करामात जो मैंने तेरे हाथ में रखी हैं फिर'औन के आगे दिखाना, लेकिन मैं उसके दिल को सख्त करूँगा, और वह उन लोगों को जाने नहीं देगा। 22 तू फिर'औन से कहना, कि 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि इस्राईल मेरा बेटा बल्कि मेरा पहलौटा है। 23 और मैं तुझे कह चुका हूँ कि मेरे बेटे को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करे, और तूने अब तक उसे जाने देने से इन्कार किया है; और देख मैं तेरे बेटे को बल्कि तेरे पहलौटे को मार डालूँगा।” 24 और रास्ते में मंज़िल पर खुदावन्द उसे मिला और चाहा कि उसे मार डाले। 25 तब सफ़फ़ूरा ने चक्रमक्र का एक पत्थर लेकर अपने बेटे की खलड़ी काट डाली और उसे मूसा के *पाँव पर फेंक कर कहा, “तू बेशक मेरे लिए खूनी दूल्हा ठहरा।” 26 तब उसने उसे छोड़ दिया। लेकिन उसने कहा, कि “खतने की वजह से तू खूनी दूल्हा है।” 27 और खुदावन्द ने हारून से कहा, कि “वीराने में जा कर मूसा से मुलाकात कर।” वह गया और खुदा के पहाड़ पर उससे मिला और उसे बोसा दिया। 28 और मूसा ने हारून को बताया, कि खुदा ने क्या —

* 4:25 4:25 यहाँ पाँव का मतलब मूसा का आज्ञा — ए — तनासुल भी हो सकता है

क्या बातें कह कर उसे भेजा और कौन — कौन से निशान और मुअजिजे दिखाने का उसे हुक्म दिया है। ²⁹ तब मूसा और हारून ने जाकर बनी — इस्राईल के सब बुजुर्गों को एक जगह जमा किया। ³⁰ और हारून ने सब बातें जो खुदावन्द ने मूसा से कहीं थीं उनको बताई और लोगों के सामने निशान और मो'जिजे किए। ³¹ तब लोगों ने उनका यकीन किया और यह सुन कर कि खुदावन्द ने बनी — इस्राईल की खबर ली और उनके दुखों पर नज़र की, उन्होंने अपने सिर झुका कर सिज्दा किया।

5

[????](#)
[????????](#)
[??](#)
[????????](#)
[??](#)
[???](#)
[?????](#)

1 इसके बाद मूसा और हारून ने जाकर फिर औन से कहा कि, “खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है, कि ‘मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह वीराने में मेरे लिए ‘ईद करें।’” 2 फिर औन ने कहा, कि “खुदावन्द कौन है कि मैं उसकी बात को मान कर बनी — इस्राईल को जाने दूँ? मैं खुदावन्द को नहीं जानता और मैं बनी — इस्राईल को जाने भी नहीं दूँगा।” 3 तब उन्होंने कहा, कि “‘इब्रानियों का खुदा हम से मिला है; इसलिए हम को इजाज़त दे कि हम तीन दिन की मन्ज़िल वीराने में जा कर खुदावन्द अपने खुदा के लिए कुर्बानी करें, ऐसा न हो कि वह हम पर बर्बाद भेज दे या हम को तलवार से मरवा दे।” 4 तब मिस्र के बादशाह ने उनको कहा, कि “ऐ मूसा और ऐ हारून! तुम क्यों इन लोगों को इनके काम से छुड़वाते हो? तुम जाकर अपने — अपने बोझ को उठाओ।” 5 और फिर औन ने यह भी कहा, कि “देखो, यह लोग इस मुल्क में बहुत हो गए हैं, और तुम इनको इनके काम से बिठाते हो।”

□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□

6 और उसी दिन फ़िर'औन ने बेगार लेने वालों और सरदारों को जो लोगों पर थे हुक्म किया, 7 “अब आगे को तुम इन लोगों को ईंटें बनाने के लिए भुस न देन जैसे अब तक देते रहे, वह खुद ही जाकर अपने लिए भुस बटोरें। 8 और इनसे उतनी ही ईंटें बनवाना जितनी वह अब तक बनाते आए हैं; तुम उसमें से कुछ न घटाना क्योंकि वह काहिल हो गए हैं, इसीलिए चिल्ला — चिल्ला कर कहते हैं, 'हम को जाने दो कि हम अपने खुदा के लिए कुर्बानी करें। 9 इसलिए इनसे ज्यादा सख्त मेहनत ली जाए, ताकि काम में मशगूल रहें और झूठी बातों से दिल न लगाएँ।” 10 तब बेगार लेने वालों और सरदारों ने जो लोगों पर थे जाकर उनसे कहा, कि फ़िर'औन कहता है, कि 'मैं तुम को भुस नहीं देने का। 11 तुम खुद ही जाओ और जहाँ कहीं तुम को भुस मिले

वहाँ से लाओ, क्योंकि तुम्हारा काम कुछ भी घटाया नहीं जाएगा। ¹² चुनाँचे वह लोग तमाम मुल्क — ए — मिस्र में मारे — मारे फिरने लगे कि भुस के 'बदले खूँटी जमा' करें। ¹³ और बेगार लेने वाले यह कह कर जल्दी कराते थे कि तुम अपना रोज़ का काम जैसे भुस पा कर करते थे अब भी करो। ¹⁴ और बनी — इस्राईल में से जो — जो फ़िर'औन के बेगार लेने वालों की तरफ़ से इन लोगों पर सरदार मुक़र्रर हुए थे, उन पर मार पड़ी और उनसे पूछा गया, कि “क्या वजह है कि तुम ने पहले की तरह आज और कल पूरी — पूरी ईंटें नहीं बनवाई?” ¹⁵ तब उन सरदारों ने जो बनी — इस्राईल में से मुक़र्रर हुए थे फ़िर'औन के आगे जा कर फ़रियाद की और कहा कि तू अपने खादिमों से ऐसा सुलूक क्यों करता है? ¹⁶ तेरे खादिमों को भुस तो दिया नहीं जाता और वह हम से कहते रहते हैं 'ईंटें बनाओ', और देख तेरे खादिम मार भी खाते हैं पर कुसूर तेरे लोगों का है। ¹⁷ उसने कहा, “तुम सब काहिल हो काहिल, इसी लिए तुम कहते हो कि हम को जाने दे कि खुदावन्द के लिए कुर्बानी करें। ¹⁸ इसलिए अब तुम जाओ और काम करो, क्योंकि भुस तुम को नहीं मिलेगा और ईंटों को तुम्हें उसी हिसाब से देना पड़ेगा।” ¹⁹ जब बनी — इस्राईल के सरदारों से यह कहा गया, कि तुम अपनी ईंटों और रोज़ मर्रा के काम में कुछ भी कमी नहीं करने पाओगे तो वह जान गए कि वह कैसे वबाल में कैसे हुए हैं। ²⁰ जब वह फ़िर'औन के पास से निकले आ रहे थे तो उनको मूसा और हारून मुलाकात के लिए रास्ते पर खड़े मिले। ²¹ तब उन्होंने उन से कहा, कि खुदावन्द ही देखे और तुम्हारा इन्साफ़ करे, क्योंकि तुम ने हम को फ़िर'औन और उसके खादिमों की निगाह में ऐसा घिनौना किया है, कि हमारे क़त्ल के लिए उनके हाथ में तलवार दे दी है। ²² तब मूसा खुदावन्द के पास लौट कर गया और कहा, कि ऐ खुदावन्द! तूने इन लोगों को क्यों दुख में डाला और मुझे क्यों भेजा? ²³ क्योंकि जब से मैं फ़िर'औन के पास तेरे नाम से बातें करने गया, उसने इन लोगों से बुराई ही बुराई की और तूने अपने लोगों को ज़रा भी रिहाई न बख़्शी।

6

????? ?? ???? ?

¹ तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि 'अब तू देखेगा कि मैं फिर औन के साथ क्या करता हूँ, तब वह ताक़तवर हाथ की वजह से उनको जाने देगा और ताक़तवर हाथ ही की वजह से वह उनको अपने मुल्क से निकाल देगा। ² फिर खुदा ने मूसा से कहा, कि मैं खुदावन्द हूँ। ³ और मैं

अब्रहाम और इस्हाक और या'कूब को *खुदा — ए — कादिर — ए — मुतलक के तौर पर दिखाई दिया, लेकिन अपने यहोवा नाम से उन पर ज़ाहिर न हुआ।⁴ और मैंने उनके साथ अपना 'अहद भी बाँधा है कि मुल्क — ए — कना'न जो उनकी मुसाफ़िरत का मुल्क था और जिसमें वह परदेसी थे उनको दूँगा।⁵ और मैंने बनी — इस्राईल के कराहने को भी सुन कर, जिनको मिस्रियों ने गुलामी में रख छोड़ा है, अपने उस 'अहद को याद किया है।⁶ इसलिए तू बनी — इस्राईल से कह, कि 'मैं खुदावन्द हूँ, और मैं तुम को मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकाल लूँगा और मैं तुम को उनकी गुलामी से आज़ाद करूँगा, और मैं अपना हाथ बढ़ा कर और उनको बड़ी — बड़ी सज़ाएँ देकर तुम को रिहाई दूँगा।⁷ और मैं तुम को ले लूँगा कि मेरी क़ौम बन जाओ और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा, और तुम जान लोगे के मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकालता हूँ।⁸ और जिस मुल्क को अब्रहाम और इस्हाक और या'कूब को देने की क़सम मैंने खाई थी उसमें तुम को पहुँचा कर उसे तुम्हारी मीरास कर दूँगा। खुदावन्द मैं हूँ।⁹ और मूसा ने बनी — इस्राईल को यह बातें सुना दीं, लेकिन उन्होंने दिल की कुढ़न और गुलामी की सख्ती की वजह से मूसा की बात न सुनी।¹⁰ फिर खुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया, ¹¹ कि जा कर मिस्र के बादशाह फ़िर'औन से कह कि बनी — इस्राईल को अपने मुल्क में से जाने दे।¹² मूसा ने खुदावन्द से कहा, कि “देख, बनी — इस्राईल ने तो मेरी सुनी नहीं; तब मैं जो ना मख़्तून होंट रखता हूँ फ़िर'औन मेरी क्यूँ कर सुनेगा?”¹³ तब खुदावन्द ने मूसा और हारून को बनी — इस्राईल और मिस्र के बादशाह फ़िर'औन के हक़ में इस मज़मून का हुक्म दिया कि वह बनी — इस्राईल को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल ले जाएँ।

2222 22 22222 22 222222 22 2222 222222

¹⁴ उनके आबाई खान्दानों के सरदार यह थे: रूबिन, जो इस्राईल का पहलौठा था, उसके बेटे: हनूक और फ़लतू और हसरोन और करमी थे; यह रूबिन के घराने थे।¹⁵ बनी शमौन यह थे: यमूएल और यमीन और उहद और यकीन और सुहर और साऊल, जो एक कना'नी 'औरत से पैदा हुआ था; यह शमौन के घराने थे।¹⁶ और बनी लावी जिनसे उनकी नसल चली उनके नाम यह हैं:

* 6:3 6:3 एल — शडडाइ † 6:12 6:12 मैं कलाम करने में अच्छा नहीं हूँ — मैं एक ना मख़्तून होंटों वाला शख्स हूँ ‡ 6:30 6:30 1: मैं कलम करने में अच्छा नहीं हूँ — मैं एक ना मख़्तून होंटों वाला शख्स हूँ

जैरसोन और क्रिहात और मिरारी; और लावी की उम्र एक सौ सैंतीस बरस की हुई।¹⁷ बनी जैरसोन: लिबनी और सिम'ई थे; इन ही से इनके खान्दान चले।¹⁸ और बनी क्रिहात: 'अमराम और इज़हार और हवरून और 'उज्ज़ीएल थे; और क्रिहात की उम्र एक सौ तैतीस बरस की हुई।¹⁹ और बनी मिरारी: महली और मूर्शी थे। लावियों के घराने जिनसे उनकी नसल चली यही थे।²⁰ और 'अमराम ने अपने बाप की बहन यूकबिद से ब्याह किया, उस 'औरत के उससे हारून और मूसा पैदा हुए; और 'अमराम की उम्र एक सौ सैंतीस बरस की हुई।²¹ बनी इज़हार: क्रोरह और नफ़ज और ज़िकरी थे।²² और बनी उज्ज़ीएल: मीसाएल और इलसफ़न और सितरी थे।²³ और हारून ने नहसोन की बहन 'अमीनदाब की बेटी इलिशीबा' से ब्याह किया; उससे नदब और अबीहू और इली'एलियाज़र और ऐतामर पैदा हुए।²⁴ और बनी क्रोरह: अस्सीर और इलाकना और अबियासफ़ थे, और यह कोरहियों के घराने थे।²⁵ और हारून के बेटे इली'एलियाज़र ने फूतिएल की बेटियों में से एक के साथ ब्याह किया, उससे फ़ीन्हास पैदा हुआ; लावियों के बाप — दादा के घरानों के सरदार जिनसे उनके खान्दान चले यही थे।²⁶ यह वह हारून और मूसा हैं जिनको खुदावन्द ने फ़रमाया: कि बनी — इस्राईल को उनके लश्कर के मुताबिक़ मुल्क — ए — मिस्र से निकाल ले जाओ।²⁷ यह वह हैं जिन्होंने मिस्र के बादशाह फ़िर'औन से कहा, कि हम बनी — इस्राईल को मिस्र से निकाल ले जाएँगे; यह वही मूसा और हारून हैं।²⁸ जब खुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस्र में मूसा से बातें कीं तो यूँ हुआ, ²⁹ कि खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि मैं खुदावन्द हूँ जो कुछ मैं तुझे कहूँ तू उसे मिस्र के बादशाह फ़िर'औन से कहना।³⁰ मूसा ने खुदावन्द से कहा, कि देख, मेरे तो होटों का खतना नहीं हुआ। फ़िर'औन क्यूँ कर मेरी सुनेगा?

7

22222 22 2222 22 2222 22 2222

¹ फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, “देख, मैंने तुझे फ़िर'औन के लिए जैसे खुदा ठहराया और तेरा भाई हारून पैग़म्बर होगा।² जो — जो हुक्म मैं तुझे दूँ तब तू कहना, और तेरा भाई हारून उसे फ़िर'औन से कहे कि वह बनी — इस्राईल को अपने मुल्क से जाने दे।³ और मैं फ़िर'औन के दिल को सख़्त करूँगा और अपने निशान

अजाईब मुल्क — ए — मिस्र में कसरत से दिखाऊंगा। 4 तो भी फिर'औन तुम्हारी न सुनेगा, तब मैं मिस्र को हाथ लगाऊंगा और उसे बड़ी — बड़ी सजाएँ देकर अपने लोगों, बनी — इस्राईल के लश्करो को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाऊंगा। 5 और मैं जब मिस्र पर हाथ चलाऊंगा और बनी — इस्राईल को उनमें से निकाल लाऊंगा, तब मिस्री जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।” 6 मूसा और हारून ने जैसा खुदावन्द ने उनको हुक्म दिया वैसा ही किया। 7 और मूसा अस्सी बरस और हारून तिरासी बरस का था, जब वह फिर'औन से हम कलाम हुए। 8 और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा, 9 “जब फिर'औन तुम को कहे, कि अपना मो'अजिजा दिखाओ, तो हारून से कहना, कि अपनी लाठी को लेकर फिर'औन के सामने डाल दे, ताकि वह साँप बन जाए।” 10 और मूसा और हारून फिर'औन के पास गए और उन्होंने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक किया; और हारून ने अपनी लाठी फिर'औन और उसके खादिमों के सामने डाल दी और वह साँप बन गई। 11 तब फिर'औन ने भी 'अक्लमन्दों और जादूगरों को बुलवाया, और मिस्र के जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया। 12 क्योंकि उन्होंने भी अपनी — अपनी लाठी सामने डाली और वह साँप बन गई, लेकिन हारून की लाठी उनकी लाठियों को निगल गई। 13 और फिर'औन का दिल सख्त हो गया और जैसा खुदावन्द ने कह दिया था उसने उनकी न सुनी।

॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥

14 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि फिर'औन का दिल मुतास्सिब है, वह इन लोगों को जाने नहीं देता। 15 अब तू सुबह को फिर'औन के पास जा। वह दरिया पर जाएगा इसलिए तू दरिया के किनारे उसकी मुलाकात के लिए खड़ा रहना, और जो लाठी साँप बन गई थी उसे हाथ में ले लेना। 16 और उससे कहना, कि 'खुदावन्द 'इब्रानियों के खुदा ने मुझे तेरे पास यह कहने को भेजा है कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह वीराने में मेरी इबादत करें; और अब तक तूने कुछ सुनी नहीं। 17 तब खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू इसी से जान लेगा कि मैं खुदावन्द हूँ, देख, मैं अपने हाथ की लाठी को दरिया के पानी पर मारूँगा और वह खून हो जाएगा। 18 और जो मछलियाँ दरिया में हैं मर जाएँगी, और दरिया से झाग उठेगा और मिस्रियों को दरिया का पानी पीने से कराहियत होगी। 19 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि हारून से कह, अपनी लाठी ले और मिस्र में जितना

पानी है, या'नी दरियाओं और नहरों और झीलों और तालाबों पर, अपना हाथ बढ़ा ताकि वह खून बन जाएँ; और सारे मुल्क — ए — मिस्र में पत्थर और लकड़ी के बर्तनों में भी खून ही खून होगा। 20 और मूसा और हारून ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक किया; उसने लाठी उठाकर उसे फिर'औन और उसके खादिमों के सामने दरिया के पानी पर मारा, और दरिया का पानी सब खून हो गया। 21 और दरिया की मछलियाँ मर गई, और दरिया से झाग उठने लगा और मिस्री दरिया का पानी पी न सके, और तमाम मुल्क — ए — मिस्र में खून ही खून हो गया। 22 तब मिस्र के जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया, लेकिन फिर'औन का दिल सख्त हो गया; और जैसा खुदावन्द ने कह दिया था उसने उनकी न सुनी। 23 और फिर'औन लौट कर अपने घर चला गया, और उसके दिल पर कुछ असर न हुआ। 24 और सब मिस्रियों ने दरिया के आस पास पीने के पानी के लिए कुएँ खोद डाले, क्योंकि वह दरिया का पानी नहीं पी सकते थे। 25 और जब से खुदावन्द ने दरिया को मारा उसके बाद सात दिन गुज़रे।

8

॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥

1 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि फिर'औन के पास जा और उससे कह कि 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करें। 2 और अगर तू उनको जाने न देगा, तो देख, मैं तेरे मुल्क को मेंढकों से मारूँगा। 3 और दरिया बेशुमार मेंढकों से भर जाएगा, और वह आकर तेरे घर में और तेरी आरामगाह में और तेरे पलंग पर और तेरे मुलाजिमों के घरों में और तेरी र'इयत पर और तेरे तनूरों और आटा गूँधने के लगनों में घुसते फिरेंगे, 4 और तुझ पर और तेरी र'इयत और तेरे नौकरों पर चढ़ जाएँगे। 5 और खुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया, हारून से कह, कि अपनी लाठी लेकर अपने हाथ दरियाओं और नहरों और झीलों पर बढ़ा और मेंढकों को मुल्क — ए — मिस्र पर चढ़ा ला। 6 चुनाँचे जितना *पानी मिस्र में था उस पर हारून ने अपना हाथ बढ़ाया, और मेंढक चढ़ आए और मुल्क — ए — मिस्र को ढाँक लिया। 7 और जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया और मुल्क — ए — मिस्र पर मेंढक चढ़ा लाए 8 तब फिर'औन ने मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, कि “खुदावन्द से सिफ़ारिश करो के मेंढकों को मुझ से और मेरी र'इयत से दफ़ा' करे, और मैं इन लोगों को जाने दूँगा ताकि वह खुदावन्द के लिए कुर्बानी करें।” 9 मूसा

* 8:6 8:6 पानी के अज्जाम या तमाम पानियों

ने फिर'औन से कहा, कि तुझे मुझ पर यही फ़ख़र रहे! मैं तेरे और तेरे नौकरों और तेरी र'इयत के वास्ते कब के लिए सिफ़ारिश करूँ कि मेंढक तुझ से और तेरे घरों से दफ़ा हों और दरिया ही में रहें? ¹⁰ उसने कहा, “कल के लिए।” तब उसने कहा, “तेरे ही कहने के मुताबिक़ होगा ताकि तू जाने कि खुदावन्द हमारे खुदा की तरह कोई नहीं ¹¹ और मेंढक तुझ से और तेरे घरों से और तेरे नौकरों से और तेरी र'इयत से दूर होकर दरिया ही में रहा करेंगे।” ¹² फिर मूसा और हारून फिर'औन के पास से निकल कर चले गए; और मूसा ने खुदावन्द से मेंढकों के बारे में जो उसने फिर'औन पर भेजे थे फ़रियाद की। ¹³ और खुदावन्द ने मूसा की दरखास्त के मुवाफ़िक़ किया, और सब घरों और सहनों और खेतों के मेंढक मर गए। ¹⁴ और लोगों ने उनको जमा कर करके उनके ढेर लगा दिए, और ज़मीन से बदबू आने लगी। ¹⁵ फिर जब फिर'औन ने देखा कि छुटकारा मिल गया तो उसने अपना दिल सख़्त कर लिया, और जैसा खुदावन्द ने कह दिया था उनकी न सुनी।

22222 22 2222

¹⁶ तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, “हारून से कह, 'अपनी लाठी बढ़ा कर ज़मीन की गर्द को मार, ताकि वह तमाम मुल्क — ए — मिस्र में जूँ बन जाएँ।’” ¹⁷ उन्होंने ऐसा ही किया, और हारून ने अपनी लाठी लेकर अपना हाथ बढ़ाया और ज़मीन की गर्द को मारा, और इंसान और हैवान पर जूँ हो गई और तमाम मुल्क — ए — मिस्र में ज़मीन की सारी गर्द जूँ बन गई। ¹⁸ और जादूगरों ने कोशिश की कि अपने जादू से जूँ पैदा करें लेकिन न कर सके। और इंसान और हैवान दोनों पर जूँ चढ़ी रहीं। ¹⁹ तब जादूगरों ने फिर'औन से कहा, कि “यह खुदा का काम है।” लेकिन फिर'औन का दिल सख़्त हो गया, और जैसा खुदावन्द ने कह दिया था उसने उनकी न सुनी।

22222222 22 2222

²⁰ तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, “सुबह — सवेरे उठ कर फिर'औन के आगे जा खड़ा होना, वह दरिया पर आएगा तब तू उससे कहना, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि मेरे लोगों को जाने दे कि वह मेरी इबादत करें।’” ²¹ वर्ना अगर तू उनको जाने न देगा तो देख मैं तुझ पर और तेरे नौकरों और तेरी र'इयत पर और तेरे घरों में मच्छरों के गोल के गोल भेजूँगा; और मिस्रियों के घर और तमाम ज़मीन जहाँ जहाँ वह हैं, मच्छरों के गोलों से भर जाएगी। ²² और मैं उस दिन जशन के इलाक़े को उसमें मच्छरों के गोल न होंगे; ताकि तू जान ले कि

† 8:23 8:23 एक छुटकारे का काम या नजात

दुनिया में खुदावन्द मैं ही हूँ। ²³ और मैं और अपने लोगों और तेरे लोगों में फ़र्क़ करूँगा और कल तक यह निशान ज़ुहूर में आएगा।” ²⁴ चुनाँचे खुदावन्द ने ऐसा ही किया, और फिर'औन के घर और उसके नौकरों के घरों और सारे मुल्क — ए — मिस्र में मच्छरों के गोल के गोल भर गए, और इन मच्छरों के गोलों की वजह से मुल्क का नास हो गया। ²⁵ तब फिर'औन ने मूसा और हारून को बुलवा कर कहा, कि तुम जाओ और अपने खुदा के लिए इसी मुल्क में कुर्बानी करो। ²⁶ मूसा ने कहा, “ऐसा करना मुनासिब नहीं, क्योंकि हम खुदावन्द अपने खुदा के लिए उस चीज़ की कुर्बानी करेंगे जिससे मिस्री नफ़रत रखते हैं; तब अगर हम मिस्रियों की आँखों के आगे उस चीज़ की कुर्बानी करें जिससे वह नफ़रत रखते हैं तो क्या वह हम को संगसार न कर डालेंगे? ²⁷ तब हम तीन दिन की राह वीराने में जाकर खुदावन्द अपने खुदा के लिए जैसा वह हम को हुक्म देगा कुर्बानी करेंगे।” ²⁸ फिर'औन ने कहा, “मैं तुम को जाने दूँगा ताकि तुम खुदावन्द अपने खुदा के लिए वीराने में कुर्बानी करो, लेकिन तुम बहुत दूर मत जाना और मेरे लिए सिफ़ारिश करना।” ²⁹ मूसा ने कहा, “देख, मैं तेरे पास से जाकर खुदावन्द से सिफ़ारिश करूँगा के मच्छरों के गोल फिर'औन और उसके नौकरों और उसकी र'इयत के पास से कल ही दूर हो जाएँ, सिर्फ़ इतना हो कि फिर'औन आगे को दगा करके लोगों को खुदावन्द के लिए कुर्बानी करने को जाने देने से इन्कार न कर दे।” ³⁰ और मूसा ने फिर'औन के पास से जा कर खुदावन्द से सिफ़ारिश की। ³¹ खुदावन्द ने मूसा की दरखास्त के मुवाफ़िक़ किया; और उसने मच्छरों के गोलों को फिर'औन और उसके नौकरों और उसकी र'इयत के पास से दूर कर दिया, यहाँ तक कि एक भी बाक़ी न रहा। ³² फिर फिर'औन ने इस बार भी अपना दिल सख़्त कर लिया, और उन लोगों को जाने न दिया।

9

222222 22222222 22 22222222 2222

¹ तब खुदावन्द ने मूसा से कहा कि फिर'औन के पास जाकर उससे कह, खुदावन्द 'इब्रानियों का खुदा यूँ फ़रमाता है, कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करें। ² क्योंकि अगर तू इन्कार करे और उनको जाने न दे और अब भी उनको रोके रखे, ³ तो देख, खुदावन्द का हाथ तेरे चौपायों पर जो खेतों में हैं या 'नी घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय बैलों और भेड़ — बकरियों पर ऐसा पड़ेगा कि उनमें बड़ी भारी मरी फैल जाएगी। ⁴ और खुदावन्द इस्राईल के चौपायों को मिस्रियों के

चौपायों से जुदा करेगा, और जो बनी — इस्राईल के हैं उनमें से एक भी नहीं मरेगा।⁵ और खुदावन्द ने एक वक्त्र मुक्रर कर दिया और बता दिया कि कल खुदावन्द इस मुल्क में यही काम करेगा।⁶ और खुदावन्द ने दूसरे दिन ऐसा ही किया और मिस्रियों के सब चौपाए मर गए लेकिन बनी — इस्राईल के चौपायों में से एक भी न मरा।⁷ चुनाँचे फिर'औन ने आदमी भेजे तो मा'लूम हुआ कि इस्राईलियों के चौपायों में से एक भी नहीं मरा है, लेकिन फिर'औन का दिल ता'अस्सुब में था और उसने लोगों को जाने न दिया।

22222 22 22222 22 222

8 और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा कि तुम दोनों भट्टी की राख अपनी मुट्ठियों में ले लो, और मूसा उसे फिर'औन के सामने आसमान की तरफ उड़ा दे।⁹ और वह सारे मुल्क — ए — मिस्र में बारीक गर्द हो कर मिस्र के आदमियों और जानवरों के जिस्म पर फोड़े और फफोले बन जाएगी।¹⁰ फिर वह भट्टी की राख लेकर फिर'औन के आगे जा खड़े हुए, और मूसा ने उसे आसमान की तरफ उड़ा दिया और वह आदमियों और जानवरों के जिस्म पर फोड़े और फफोले बन गयी।¹¹ और जादूगर फोड़ों की वजह से मूसा के आगे खड़े न रह सके, क्योंकि जादूगरों और सब मिस्रियों के फोड़े निकले हुए थे।¹² और खुदावन्द ने फिर'औन के दिल को सख्त कर दिया, और उसने जैसा खुदावन्द ने मूसा से कह दिया था उनकी न सुनी।

2222 22 222

13 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि “सुबह — सवेरे उठ कर फिर'औन के आगे जा खड़ा हो और उसे कह, कि 'खुदावन्द 'इब्रानियों का खुदा यूँ फ़रमाता है, कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करें।¹⁴ क्योंकि मैं अब की बार अपनी सब बलाएँ तेरे दिल और तेरे नौकरों और तेरी र'इयत पर नाज़िल करूँगा, ताकि तू जान ले कि तमाम दुनिया में मेरी तरह कोई नहीं है।¹⁵ और मैंने तो अभी हाथ बढ़ा कर तुझे और तेरी र'इयत को वबा से मारा होता और तू ज़मीन पर से हलाक हो जाता।¹⁶ लेकिन मैंने तुझे हकीकत में इसलिए क़ाईम रखवा है कि अपनी ताक़त तुझे दिखाऊँ, ताकि मेरा नाम सारी दुनिया में मशहूर हो जाए।¹⁷ क्या तू अब भी मेरे लोगों के मुकाबले में तकबुर करता है कि उनको जाने नहीं देता? ¹⁸ देख, मैं कल इसी वक्त्र ऐसे बड़े — बड़े ओले बरसाऊँगा जो मिस्र में जब से उसकी बुनियाद डाली गई आज तक नहीं पड़े।¹⁹ तब आदमी भेज कर अपने चौपायों को, जो कुछ तेरा माल खेतों में है उसको

अन्दर कर ले; क्योंकि जितने आदमी और जानवर मैदान में होंगे और घर में नहीं पहुँचाए जाएँगे, उन पर ओले पड़ेंगे और वह हलाक हो जाएँगे।”²⁰ तब फिर'औन के खादिमों में जो — जो खुदावन्द के कलाम से डरता था, वह अपने नौकरों और चौपायों को घर में भगा ले आया।²¹ और जिन्होंने खुदावन्द के कलाम का लिहाज़ न किया, उन्होंने अपने नौकरों और चौपायों को मैदान में रहने दिया।²² और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि अपना हाथ आसमान की तरफ बढ़ा ताकि सब मुल्क — ए — मिस्र में इंसान और हैवान और खेत की सब्जी पर जो मुल्क — ए — मिस्र में है ओले गिरें।²³ और मूसा ने अपनी लाठी आसमान की तरफ उठाई, और खुदावन्द ने रा'द और ओले भेजे और आग ज़मीन तक आने लगी, और खुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस्र पर ओले बरसाए।²⁴ तब ओले गिरे और ओलों के साथ आग मिली हुई थी, और वह ओले ऐसे भारी थे कि जब से मिस्री क्रौम आबाद हुई ऐसे ओले मुल्क में कभी नहीं पड़े थे।²⁵ और ओलों ने सारे मुल्क — ए — मिस्र में उनको जो मैदान में थे क्या इंसान, क्या हैवान, सबको मारा और खेतों की सारी सब्जी को भी ओले मार गए और मैदान के सब दरख़्तों को तोड़ डाला।²⁶ मगर जशन के 'इलाक़ा में जहाँ बनी — इस्राईल रहते थे ओले नहीं गिरे।²⁷ तब फिर'औन ने मूसा और हारून को बुला कर उनसे कहा, कि मैंने इस दफ़ा गुनाह किया; खुदावन्द सच्चा है और मैं और मेरी क्रौम हम दोनों बदकार हैं।²⁸ खुदावन्द से सिफ़ारिश करो क्योंकि यह ज़ोर का गरजना और ओलों का बरसना बहुत हो चुका, और मैं तुम को जाने दूँगा और तुम अब रुके नहीं रहोगे।²⁹ तब मूसा ने उसे कहा, कि मैं शहर से बाहर निकलते ही खुदावन्द के आगे हाथ फैलाऊँगा और गरज ख़त्म हो जाएगा और ओले भी फिर न पड़ेंगे, ताकि तू जान ले कि दुनिया खुदावन्द ही की है।³⁰ लेकिन मैं जानता हूँ कि तू और तेरे नौकर अब भी खुदावन्द खुदा से नहीं डरोगे।³¹ अब सुन और जौ को तो ओले मार गए, क्योंकि जौ की बालें निकल चुकी थीं और सन में फूल लगे हुए थे;³² पर गेहूँ और कठिया गेहूँ मारे न गए क्योंकि वह बढ़े न थे।³³ और मूसा ने फिर'औन के पास से शहर के बाहर जाकर खुदावन्द के आगे हाथ फैलाए, तब गरज और ओले ख़त्म हो गए और ज़मीन पर बारिश थम गई।³⁴ जब फिर'औन ने देखा कि मेंह और ओले और गरज ख़त्म हो गए, तो उसने और उसके खादिमों ने और ज्यादा गुनाह किया कि अपना दिल सख्त कर लिया।³⁵ और फिर'औन का दिल सख्त हो गया, और उसने बनी — इस्राईल को जैसा खुदावन्द

ने मूसा के ज़रिए' कह दिया था जाने न दिया।

10

22222222 22 222

¹ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि फिर'औन के पास जा; क्योंकि मैं ही ने उसके दिल और उसके नौकरों के दिल को सख्त कर दिया है, ताकि मैं अपने यह निशान उनके बीच दिखाऊँ; ² और तू अपने बेटे और अपने पोते को मेरे निशान और वह काम जो मैंने मिस्र में उनके बीच किए सुनाए और तुम जान लो कि खुदावन्द मैं ही हूँ। ³ और मूसा और हारून ने फिर'औन के पास जाकर उससे कहा कि खुदावन्द, 'इब्रानियों का खुदा यूँ फ़रमाता है, कि 'तू कब तक मेरे सामने नीचा बनने से इन्कार करेगा? मेरे लोगों को जाने दे कि वह मेरी इबादत करें। ⁴ वर्ना, अगर तू मेरे लोगों को जाने न देगा, तो देख, कल मैं तेरे मुल्क में टिड्डियाँ ले आऊँगा। ⁵ और वह ज़मीन की सतह को ऐसा ढाँक लेंगी कि कोई ज़मीन को देख भी न सकेगा; और तुम्हारा जो कुछ ओलों से बच रहा है वह उसे खा जाएँगी, और तुम्हारे जितने दरख्त मैदान में लगे हैं उनको भी चट कर जाएँगी, ⁶ और वह तेरे और तेरे नौकरों बल्कि सब मिस्रियों के घरों में भर जाएँगी; और ऐसा तेरे *बाप दादाओं ने जब से वह पैदा हुए उस वक्त से आज तक नहीं देखा होगा। और वह लौट कर फिर'औन के पास से चला गया। ⁷ तब फिर'औन के नौकर फिर'औन से कहने लगे कि "ये शख्स कब तक हमारे लिए फन्दा बना रहेगा? इन लोगों को जाने दे ताकि वह खुदावन्द अपने खुदा की इबादत करें। क्या तुझे खबर नहीं कि मिस्र बर्बाद हो गया?" ⁸ तब मूसा और हारून फिर'औन के पास फिर बुला लिए गए, और उसने उनको कहा, कि "जाओ, और खुदावन्द अपने खुदा की इबादत करो, लेकिन वह कौन — कौन हैं जो जाएँगे?" ⁹ मूसा ने कहा, कि "हम अपने जवानों और बूढ़ों और अपने बेटों और बेटियों और अपनी भेड़ बकरियों और अपने गाये बैलों समेत जाएँगे, क्योंकि हम को अपने खुदा की 'ईद करनी है।" ¹⁰ तब उसने उनको कहा कि "खुदावन्द ही तुम्हारे साथ रहे, मैं तो ज़रूर ही तुम को बच्चों समेत जान दूँगा, खबरदार हो जाओ इसमें तुम्हारी खराबी है। ¹¹ नहीं, ऐसा नहीं होने पाएगा; तब तुम मर्द ही मर्द जाकर खुदावन्द की इबादत करो क्योंकि तुम यही चाहते थे।" और वह फिर'औन के पास से निकाल दिए गए। ¹² तब खुदावन्द ने मूसा से कहा कि "मुल्क — ए — मिस्र पर अपना हाथ बढ़ा ताकि टिड्डियाँ मुल्क — ए — मिस्र पर आएँ और हर किस्म की सब्जी को

जो इस मुल्क में ओलों से बच रही है चट कर जाएँ।" ¹³ तब मूसा ने मुल्क — ए — मिस्र पर अपनी लाठी बढ़ाई, और खुदावन्द ने उस सारे दिन और सारी रात पुरवा आँधी चलाई; और सुबह होते होते पुरवा आँधी टिड्डियाँ ले आई। ¹⁴ और टिड्डियाँ सारे मुल्क — ए — मिस्र पर छा गई और वहीं मिस्र की हदों में बसेरा किया, और उनका दल ऐसा भारी था कि न तो उनसे पहले ऐसी टिड्डियाँ कभी आई न उनके बाद फिर आएँगी। ¹⁵ क्योंकि उन्होंने इस ज़मीन को ढाँक लिया, ऐसा कि मुल्क में अन्धेरा हो गया; और उन्होंने उस मुल्क की एक — एक सब्जी को और दरख्तों के मेवह को, जो ओलों से बच गए थे चट कर लिया। और मुल्क — ए — मिस्र में न तो किसी दरख्त की, न खेत की किसी सब्जी की हरियाली बाक़ी रही। ¹⁶ तब फिर'औन ने जल्द मूसा और हारून को बुलवा कर कहा कि "मैं खुदावन्द तुम्हारे खुदा का और तुम्हारा गुनहगार हूँ। ¹⁷ इसलिए सिर्फ़ इस बार मेरा गुनाह बख़्शो, और खुदावन्द अपने खुदा से सिफ़ारिश करो कि वह सिर्फ़ इस मौत को मुझ से दूर कर दे।" ¹⁸ फिर उसने फिर'औन के पास से निकल कर खुदावन्द से सिफ़ारिश की। ¹⁹ और खुदावन्द ने पछुवा आँधी भेजी जो टिड्डियों को उड़ा कर ले गई और उनको बहर — ए — कुलजुम में डाल दिया, और मिस्र की हदों में एक टिड्डि भी बाक़ी न रही। ²⁰ लेकिन खुदावन्द ने फिर'औन के दिल को सख्त कर दिया और उसने बनी — इस्राईल को जाने न दिया।

22222222 22 222

²¹ फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि अपना हाथ आसमान की तरफ़ बढ़ा ताकि मुल्क — ए — मिस्र में तारीकी छा जाए, ऐसी तारीकी जिसे टटोल सके। ²² और मूसा ने अपना हाथ आसमान की तरफ़ बढ़ाया और तीन दिन तक सारे मुल्क — ए — मिस्र में गहरी तारीकी रही। ²³ तीन दिन तक न तो किसी ने किसी को देखा और न कोई अपनी जगह से हिला, लेकिन सब बनी — इस्राईल के मकानों में उजाला रहा। ²⁴ तब फिर'औन ने मूसा को बुलवा कर कहा कि "तुम जाओ और खुदावन्द की इबादत करो सिर्फ़ अपनी भेड़ बकरियों और गाये बैलों को यहीं छोड़ जाओ और जो तुम्हारे बाल — बच्चे हैं उनको भी साथ लेते जाओ।" ²⁵ मूसा ने कहा, कि तुझे हम को कुर्बानियों और सोख्तनी कुर्बानियों के लिए जानवर देने पड़ेंगे, ताकि हम खुदावन्द अपने खुदा के आगे कुर्बानी करें। ²⁶ इसलिए हमारे चौपाये भी हमारे साथ जाएँगे और उनका एक खुर तक भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा, क्योंकि उन्हीं में से हम को खुदावन्द

* 10:6 10:6 इस में बाप जोड़ें

अपने खुदा की इबादत का सामान लेना पड़ेगा, और जब तक हम वहाँ पहुँच न जाएँ हम नहीं जानते कि क्या — क्या लेकर हम को खुदावन्द की इबादत करनी होगी। ²⁷ लेकिन खुदावन्द ने फिर'औन के दिल को सख्त कर दिया और उसने उनको जाने ही न दिया। ²⁸ और फिर'औन ने उसे कहा, “मेरे सामने से चला जा; और होशियार रह, फिर मेरा मुँह देखने को मत आना क्योंकि जिस दिन तूने मेरा मुँह देखा तो मारा जाएगा।” ²⁹ तब मूसा ने कहा, कि तूने ठीक कहा है, मैं फिर तेरा मुँह कभी नहीं देखूँगा।

11

22222 22 2222 222222 22 222

¹ और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि “मैं फिर'औन और मिस्रियों पर एक बला और लाऊँगा, उसके बाद वह तुम को यहाँ से जाने देगा, और जब वह तुम को जाने देगा तो यकीनन तुम सब को यहाँ से बिल्कुल निकाल देगा। ² इसलिए अब तू लोगों के कान में यह बात डाल दे कि उनमें से हर शख्स अपने पड़ोसी और हर 'औरत अपनी पड़ोसन से सोने, चाँदी के जेवर ले।” ³ और खुदावन्द ने उन लोगों पर मिस्रियों को मेहरबान कर दिया, और यह आदमी मूसा भी मुल्क — ए — मिस्र में फिर'औन के खादिमों के नज़दीक और उन लोगों की निगाह में बड़ा बुज़ुर्ग था। ⁴ और मूसा ने कहा, कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मैं आधी रात को निकल कर मिस्र के बीच में जाऊँगा; ⁵ और मुल्क — ए — मिस्र के सब पहलौटे, फिर'औन जो तख्त पर बैठा है उसके पहलौटे से लेकर वह लौंडी जो चक्की पीसती है उसके पहलौटे तक और सब चौपायों के पहलौटे मर जाएँगे। ⁶ और सारे मुल्क — ए — मिस्र में ऐसा बड़ा मातम होगा जैसा न कभी पहले हुआ और न फिर कभी होगा। ⁷ लेकिन इस्राईल में से किसी पर चाहे इंसान हो चाहे हैवान एक कुत्ता भी नहीं भौकेगा, ताकि तुम जान लो कि खुदावन्द मिस्रियों और इस्राईलियों में कैसा फ़र्क करता है। ⁸ और तेरे यह सब नौकर मेरे पास आकर मेरे आगे सर झुकाएँगे और कहेंगे, कि 'तू भी निकल और तेरे सब पैरों भी निकलें, इसके बाद मैं निकल जाऊँगा। यह कह कर वह बड़े गुस्से में फिर'औन के पास से निकल कर चला गया। ⁹ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि फिर'औन तुम्हारी इसी वजह से नहीं सुनेगा; ताकि 'अजायब मुल्क — ए — मिस्र में बहुत ज्यादा हो जाएँ। ¹⁰ और मूसा और हारून

ने यह करामात फिर'औन को दिखाई, और खुदावन्द ने फिर'औन के दिल को सख्त कर दिया कि उसने अपने मुल्क से बनी — इस्राईल को जाने न दिया।

12

22-2-222

¹ फिर खुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस्र में मूसा और हारून से कहा कि ² “यह महीना तुम्हारे लिए महीनों का शुरू और साल का पहला महीना हो। ³ तब इस्राईलियों की सारी जमा'अत से यह कह दो कि इसी महीने के दसवें दिन, हर शख्स अपने आबाई खानदान के मुताबिक़ घर पीछे एक बर्त ले; ⁴ और अगर किसी के घराने में बरें को खाने के लिए आदमी कम हों, तो वह और उसका पड़ोसी जो उसके घर के बराबर रहता हो, दोनों मिल कर नफ़री के शुमार के मुताबिक़ एक बर्त ले रखें, तुम हर एक आदमी के खाने की मिक्दार के मुताबिक़ बरें का हिसाब लगाना। ⁵ तुम्हारा बर्त बे “ऐब और यक साला नर हो, और ऐसा बच्चा या तो भेड़ों में से चुन कर लेना या बकरियों में से। ⁶ और तुम उसे इस महीने की चौदहवीं तक रख छोड़ना, और इस्राईलियों के कबीलों की सारी जमा'अत शाम को उसे ज़बह करे। ⁷ और थोड़ा सा खून लेकर जिन घरों में वह उसे खाएँ, उनके दरवाज़ों के दोनों बाज़ुओं और ऊपर की चौखट पर लगा दें। ⁸ और वह उसके गोश्त को उसी रात आग पर भून कर बेखमीरी रोटी और कड़वे साग पात के साथ खा ले। ⁹ उसे कच्चा या पानी में उबाल कर हरगिज़ न खाना, बल्कि उसको सिर और पाये और अन्दरूनी 'आज़ा समेत आग पर भून कर खाना। ¹⁰ और उसमें से कुछ भी सुबह तक बाक़ी न छोड़ना और अगर कुछ उसमें से सुबह तक बाक़ी रह जाए तो उसे आग में जला देना। ¹¹ और तुम उसे इस तरह खाना अपनी कमर बाँधे और अपनी जूतियाँ पाँव में पहने और अपनी लाठी हाथ में लिए हुए तुम उसे *जल्दी — जल्दी खाना, क्योंकि यह †फ़सह खुदावन्द की है। ¹² इसलिए कि मैं उस रात मुल्क — ए — मिस्र में से होकर गुज़रूँगा और इंसान और हैवान के सब पहलौटों को जो मुल्क — ए — मिस्र में हैं, मारूँगा और मिस्र के सब मा'बूदों को भी सज़ा दूँगा; मैं खुदावन्द हूँ। ¹³ और जिन घरों में तुम हो उन पर वह खून तुम्हारी तरफ़ से निशान ठहरेगा और मैं उस खून को देख कर तुम को छोड़ता जाऊँगा, और जब मैं मिस्रियों को मारूँगा तो वबा तुम्हारे पास फटकने की भी नहीं कि

* 12:11 12:11 1: सफ़र पर खाना होने की तय्यारी † 12:11 12:11 फाश फसह की ईद मनाई जाती थी यह याद करने के लिए कि बर्बाद करने वाला फ़रिश्ता बनी इस्राईल को बचाने के लिए हर एक दहलीज़ से होकर गुज़रता गया ‡ 12:12 12:12 1: मैं बनी इस्राईल के सामने साबित करूँगा कि सारे मिसरी देवता झूठे माबूद हैं

तुम को हलाक करे। ¹⁴ और वह दिन तुम्हारे लिए एक यादगार होगा और तुम उसको खुदावन्द की 'ईद का दिन समझ कर मानना। तुम उसे हमेशा की रस्म करके उस दिन को नसल दर नसल 'ईद का दिन मानना। ¹⁵ 'सात दिन तक तुम बेखमीरी रोटी खाना, और पहले ही दिन से खमीर अपने अपने घर से बाहर कर देना; इसलिए कि जो कोई पहले दिन से सातवें दिन तक खमीरी रोटी खाए वह शख्स इस्राईल में से काट डाला जाएगा। ¹⁶ और पहले दिन तुम्हारा मुकद्दस मजमा' हो, और सातवें दिन भी मुकद्दस मजमा' हो; उन दोनों दिनों में कोई काम न किया जाए सिवा उस खाने के जिसे हर एक आदमी खाए, सिर्फ़ यही किया जाए। ¹⁷ और तुम बेखमीरी रोटी की यह 'ईद मनाना, क्योंकि मैं उसी दिन तुम्हारे लश्कर को मुल्क — ए — मिस्र से निकालूँगा; इस लिए तुम उस दिन को हमेशा की रस्म करके नसल दर नसल मानना। ¹⁸ पहले महीने की चौदहवीं तारीख की शाम से इक्कीसवीं तारीख की शाम तक तुम बेखमीरी रोटी खाना। ¹⁹ सात दिन तक तुम्हारे घरों में कुछ भी खमीर न हो, क्योंकि जो कोई किसी खमीरी चीज़ को खाए, वह चाहे मुसाफ़िर हो चाहे उसकी पैदाइश उसी मुल्क की हो, इस्राईल की जमा'अत से काट डाला जाएगा। ²⁰ तुम कोई खमीरी चीज़ न खाना बल्कि अपनी सब बस्तियों में बेखमीरी रोटी खाना।" ²¹ तब मूसा ने इस्राईल के सब बुजुर्गों को बुलवाकर उनको कहा, कि अपने — अपने खान्दान के मुताबिक़ एक — एक बर्ग निकाल रखो, और यह फ़सह का बर्ग ज़बह करना। ²² और तुम ज़ूफ़े का एक गुच्छा लेकर उस खून में जो तसले में होगा डुबोना और उसी तसले के खून में से कुछ ऊपर की चौखट और दरवाज़े के दोनों बाज़ुओं पर लगा देना; और तुम में से कोई सुबह तक अपने घर के दरवाज़े से बाहर न जाए। ²³ क्योंकि खुदावन्द मिस्रियों को मारता हुआ गुज़रेगा, और जब खुदावन्द ऊपर की चौखट और दरवाज़े के दोनों बाज़ुओं पर खून देखेगा तो वह उस दरवाज़े को छोड़ जाएगा; और हलाक करने वाले को तुम को मारने के लिए घर के अन्दर आने न देगा। ²⁴ और तुम इस बात को अपने और अपनी औलाद के लिए हमेशा की रिवायत करके मानना। ²⁵ और जब तुम उस मुल्क में जो खुदावन्द तुम को अपने वा'दे के मुवाफ़िक़ देगा दाखिल हो जाओ, तो इस इबादत को बराबर जारी रखना। ²⁶ और जब तुम्हारी औलाद तुम से पूछे, कि इस इबादत से तुम्हारा मक़सद क्या है? ²⁷ तो तुम यह कहना, कि 'यह खुदावन्द की फ़सह की कुर्बानी है, जो मिस्र में मिस्रियों को मारते वक़्त बनी — इस्राईल के घरों को छोड़ गया और यूँ

हमारे घरों को बचा लिया'। तब लोगों ने सिर झुका कर सिज्दा किया। ²⁸ और बनी — इस्राईल ने जाकर, जैसा खुदावन्द ने मूसा और हारून को फ़रमाया था वैसा ही किया। ²⁹ और आधी रात को खुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस्र के सब पहलौठों को फ़िर'औन जो अपने तख़्त पर बैठा था उसके पहलौठे से लेकर वह कैदी जो कैदखानों में था उसके पहलौठे तक, बल्कि चौपायों के पहलौठों को भी हलाक कर दिया। ³⁰ और फ़िर'औन और उसके सब नौकर और सब मिस्री रात ही को उठ बैठे और मिस्र में बड़ा कोहराम मचा, क्योंकि एक भी ऐसा घर न था जिसमें कोई न मरा हो।

२२२२२२२२ २२ २२२२२२ २२२ २२ २२२२२२२

³¹ तब उसने रात ही रात में मूसा और हारून को बुलवा कर कहा, कि "तुम बनी — इस्राईल को लेकर मेरी कौम के लोगों में से निकल जाओ और जैसा कहते हो जाकर खुदावन्द की इबादत करो। ³² और अपने कहने के मुताबिक़ अपनी भेड़ बकरियाँ और गाय बैल भी लेते जाओ और मेरे लिए भी दुआ' करना।" ³³ और मिस्री उन लोगों से बजिद होने लगे, ताकि उनको मुल्क — ए — मिस्र से जल्द बाहर चलता करें, क्योंकि वह समझे कि हम सब मर जाएँगे। ³⁴ तब इन लोगों ने अपने गुन्धे गुन्धाए आटे को बग़ैर खमीर दिए लगनों समेत कपड़ों में बाँध कर अपने कंधों पर धर लिया। ³⁵ और बनी — इस्राईल ने मूसा के कहने के मुवाफ़िक़ यह भी किया, कि मिस्रियों से सोने चाँदी के ज़ेवर और कपड़े माँग लिए। ³⁶ और खुदावन्द ने उन लोगों को मिस्रियों की निगाह में ऐसी 'इज़्जत बख़्शी कि जो कुछ उन्होंने माँगा उन्होंने दे दिया। तब उन्होंने मिस्रियों को लूट लिया। ³⁷ और बनी — इस्राईल ने रा'मसीस से सुक्कात तक पैदल सफ़र किया और बाल बच्चों को छोड़ कर वह कोई छः लाख मर्द थे। ³⁸ और उनके साथ एक मिली — जुली गिरोह भी गई और भेड़ — बकरियाँ और गाय — बैल और बहुत चौपाये उनके साथ थे। ³⁹ और उन्होंने उस गुन्धे हुए आटे की जिसे वह मिस्र से लाए थे बेखमीरी रोटियाँ पकाई, क्योंकि वह उसमें खमीर देने न पाए थे इसलिए कि वह मिस्र से ऐसे जबरन निकाल दिए गए कि वहाँ ठहर न सके और न कुछ खाना अपने लिए तैयार करने पाए। ⁴⁰ और बनी — इस्राईल को मिस्र में रहते हुए चार सौ तीस बरस हुए थे। ⁴¹ और उन चार सौ तीस बरसों के गुज़र जाने पर ठीक उसी दिन खुदावन्द का सारा लश्कर मुल्क — ए — मिस्र से निकल गया। ⁴² ये वह रात है जिसे खुदावन्द की खातिर मानना बहुत मुनासिब है क्योंकि इसमें वह उनको मुल्क — ए — मिस्र

से निकाल लाया, खुदावन्द की यह वही रात है जिसे ज़रूरी है कि सब बनी इस्राईल नसल — दर — नसल खूब मानें।

2222 22 222222

43 फिर खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा, कि 'फ़सह की रिवायत यह है, कि कोई बेगाना उसे खाने न पाए। 44 लेकिन अगर कोई शख्स किसी का खरीदा हुआ गुलाम हो, और तूने उसका खतना कर दिया हो तो वह उसे खाए। 45 पर अजनबी और मज़दूर उसे खाने न पाए। 46 और उसे एक ही घर में खाएँ या'नी उसका ज़रा भी गोश्त तू घर से बाहर न ले जाना और न तुम उसकी कोई हड्डी तोड़ना। 47 इस्राईल की सारी जमा'अत इस पर 'अमल करे। 48 और अगर कोई अजनबी तेरे साथ मुक़ीम हो और खुदावन्द की फ़सह को मानना चाहता हो उसके यहाँ के सब मर्द अपना खतना कराएँ, तब वह पास आकर फ़सह करे; यूँ वह ऐसा समझा जाएगा जैसे उसी मुल्क की उसकी पैदाइश है लेकिन कोई नामख़तून आदमी उसे खाने न पाए। 49 वतनी और उस अजनबी के लिए जो तुम्हारे बीच मुक़ीम हो एक ही शरी'अत होगी। 50 तब सब बनी — इस्राईल ने जैसा खुदावन्द ने मूसा और हारून को फ़रमाया वैसा ही किया। 51 और ठीक उसी दिन खुदावन्द बनी — इस्राईल के सब लश्क़रों को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल ले गया।

13

2222 222222 22 2222-2-222222 2222

1 और खुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया, कि। 2 “सब पहलौठों को या'नी जो बनी — इस्राईल में, चाहे इंसान हो चाहे हैवान पहलौठे बच्चे हों उनको मेरे लिए पाक ठहरा क्योंकि वह मेरे हैं।” 3 और मूसा ने लोगों से कहा, कि “तुम इस दिन को याद रखना जिस में तुम मिस्र से जो गुलामी का घर है निकले, क्योंकि खुदावन्द अपनी ताक़त से तुम को वहाँ से निकाल लाया; इसमें ख़मीरी रोटी खाई न जाए। 4 तुम अबीब के महीने में आज के दिन निकले हो। 5 फिर जब खुदावन्द तुझ को कना'नियों और हित्तियों और अमोरियों और हव्वियों और यबूसियों के मुल्क में पहुँचा दे जिसे तुझ को देने की क़सम उसने तेरे बाप दादा से खाई थी और जिसमें *दूध और शहद बहता है, तो तू इसी महीने में यह इबादत किया करना। 6 सात दिन तक तो तू बेख़मीरी रोटी खाना और सातवें दिन खुदावन्द की 'ईद मनाना। 7 बेख़मीरी रोटी सातों दिन खाई जाए, और ख़मीरी रोटी तेरे पास दिखाई भी

न दे और न तेरे मुल्क की हदों में कहीं कुछ ख़मीर नज़र आए। 8 और तू उस दिन अपने बेटे को यह बताना, कि इस दिन को मैं उस काम की वजह से मानता हूँ जो खुदावन्द ने मेरे लिए उस वक़्त किया जब मैं मुल्क — ए — मिस्र से निकला। 9 और यही तेरे पास जैसे तेरे हाथ में एक निशान और तेरी दोनों आँखों के सामने एक यादगार ठहरे, ताकि खुदावन्द की शरी'अत तेरी ज़बान पर हो; क्योंकि खुदावन्द ने तुझ को अपनी ताक़त से मुल्क — ए — मिस्र से निकाला। 10 तब तू इस रिवायत को इसी वक़्त — ए — मु'अय्यन में हर साल माना करना। 11 “और जब खुदावन्द उस क़सम के मुताबिक़, जो उसने तुझ से और तेरे बाप दादा से खाई, तुझ को कना'नियों के मुल्क में पहुँचा कर वह मुल्क तुझ को दे दे। 12 तो तू पहलौठे बच्चों को और जानवरों के पहलौठों को खुदावन्द के लिए अलग कर देना। सब नर बच्चे खुदावन्द के होंगे। 13 और गधे के पहले बच्चे के फ़िदिये में बर्ग़ देना, और अगर तू उसका फ़िदिया न दे तो उसकी गर्दन तोड़ डालना। और तेरे बेटों में जितने पहलौठे हों उन सबका फ़िदिया तुझ को देना होगा। † 14 और जब अगले ज़माने में तेरा बेटा तुझसे सवाल करे, कि 'यह क्या है?’ तो तू उसे यह जवाब देना, 'खुदावन्द हम को मिस्र से जो गुलामी का घर है अपनी ताक़त से निकाल लाया। 15 और जब फ़िर'औन ने हम को जाने देना न चाहा, तो खुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस्र में इंसान और हैवान दोनों के पहलौठे मार दिए। इसलिए मैं जानवरों के सब नर बच्चों को जो अपनी अपनी माँ के रिहम को खोलते हैं खुदावन्द के आगे कुर्बानी करता हूँ, लेकिन अपने बेटों के सब पहलौठों का फ़िदिया देता हूँ। 16 और यह तेरे हाथ पर एक निशान और तेरी पेशानी पर टीकों की तरह हों, क्योंकि खुदावन्द अपने ताक़त से हम को मिस्र से निकाल लाया।”

222222222222 22 22222222 222 222222 2222

17 और जब फ़िर'औन ने उन लोगों को जाने की इजाज़त दे दी तो खुदा इनको फ़िलिस्तीनों के मुल्क के रास्ते से नहीं ले गया, अगरचे उधर से नज़दीक पड़ता; क्योंकि खुदा ने कहा, ऐसा न हो कि यह लोग लड़ाई — भिड़ाई देख कर पछताने लगें और मिस्र को लौट जाएँ। 18 बल्कि खुदा इनको चक्कर खिला कर बहर — ए — कुलज़ुम के वीरान के रास्ते से ले गया और बनी — इस्राईल मुल्क — ए — मिस्र से हथियार बन्द निकले थे। ‡ 19 और मूसा यूसुफ़ की हड्डियों को साथ लेता

* 13:5 13:5 अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क † 13:13 13:13 कबूल करने के लिए बरें की कुर्बानी जायज़ है मगर गधे की कुर्बानी जायज़ नहीं है

‡ 13:18 13:18 या बनी इस्राईल अपने इन्फ़रादी क़बीलों में चले गए

गया, क्योंकि उसने बनी — इस्राईल से यह कह कर, कि खुदा जरूर तुम्हारी खबर लेगा इस बात की सख्त कसम ले ली थी, कि तुम यहाँ से मेरी हड्डियाँ अपने साथ लेते जाना। ²⁰ और उन्होंने सुक्कात से रवाना करके वीराने के किनारे ईताम में खेमा लगाया। ²¹ और खुदावन्द उनको दिन को रास्ता दिखाने के लिए बादल के सुतून में और रात को रौशनी देने के लिए आग के सुतून में हो कर उनके आगे — आगे चला करता था, ताकि वह दिन और रात दोनों में चल सके। ²² वह बादल का सुतून दिन को और आग का सुतून रात को उन लोगों के आगे से हटता न था।

14

¹ और खुदावन्द ने मूसा से फ़रमाया, कि ² “बनी — इस्राईल को हुक्म दे कि वह लौट कर मिजदाल और समुन्दर के बीच फ़ी हखीरोत के सामने बाल — सफ़ोन के आगे खेमे लगाएँ, उसी के आगे समुन्दर के किनारे किनारे खेमें लगाना। ³ फिर'औन बनी — इस्राईल के हक़ में कहेगा कि वह ज़मीन की उलझनों में आकर वीरान में घिर गए हैं। ⁴ और मैं फिर'औन के दिल को सख्त करूँगा और वह उनका पीछा करेगा, और मैं फिर'औन और उसके सारे लश्कर पर मुस्ताज़ हूँगा और मिस्री जान लेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ।” और उन्होंने ऐसा ही किया।

२२२२२२२२२२ २२ २२२२२२२२२२२२ २२ २२२२ २२२२

⁵ जब मिस्र के बादशाह को खबर मिली कि वह लोग चल दिए, तो फिर'औन और उसके खादिमों का दिल उन लोगों की तरफ़ से फिर गया, और वह कहने लगे कि हम ने यह क्या किया, कि इस्राईलियों को अपनी खिदमत से छुट्टी देकर उनको जाने दिया? ⁶ तब उसने अपना रथ तैयार करवाया और अपनी क्रौम के लोगों को साथ लिया, ⁷ और उसने छः सौ चुने हुए रथ बल्कि मिस्र के सब रथ लिए और उन सभी में सरदारों को बिठाया। ⁸ और खुदावन्द ने मिस्र के बादशाह फिर'औन के दिल को सख्त कर दिया और उसने बनी इस्राईल का पीछा किया, क्योंकि बनी — इस्राईल बड़े फ़ख़र से निकले थे। ⁹ और मिस्री फ़ौज ने फिर'औन के सब घोड़ों और रथों और सवारों समेत उनका पीछा किया और उनको जब वह समुन्दर के किनारे फ़ी — हखीरोत के पास बाल सफ़ोन के सामने खेमा लगा रहे थे जा लिया। ¹⁰ और जब फिर'औन नज़दीक आ गया तब बनी — इस्राईल ने आँख उठा कर देखा कि मिस्री उनका पीछा किए चले आते हैं, और वह बहुत खौफ़ज़दा हो गए। तब बनी — इस्राईल ने खुदावन्द से फ़रियाद की, ¹¹ और मूसा से

कहने लगे, “क्या मिस्र में क़बरे न थीं जो तू हम को वहाँ से मरने के लिए वीराने में ले आया है? तूने हम से यह क्या किया कि हम को मिस्र से निकाल लाया? ¹² क्या हम तुझ से मिस्र में यह बात न कहते थे कि हम को रहने दे कि हम मिस्रियों की खिदमत करें? क्योंकि हमारे लिए मिस्रियों की खिदमत करना वीराने में मरने से बेहतर होता।” ¹³ तब मूसा ने लोगों से कहा, “डरो मत, चुपचाप खड़े होकर खुदावन्द की नज़ात के काम को देखो जो वह आज तुम्हारे लिए करेगा। क्योंकि जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो उनको फिर कभी हमेशा तक न देखोगे। ¹⁴ खुदावन्द तुम्हारी तरफ़ से जंग करेगा और तुम खामोश रहोगे।”

२२२२ २२२२२२२२२२ २२२२ २२ २२२२२२२२

¹⁵ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि तू क्यूँ मुझ से फ़रियाद कर रहा है? बनी — इस्राईल से कह कि वह आगे बढ़ें। ¹⁶ और तू अपनी लाठी उठा कर अपना हाथ समुन्दर के ऊपर बढ़ा और उसे दो हिस्से कर, और बनी इस्राईल समुन्दर के बीच में से खुशक ज़मीन पर चल कर निकल जाएँगे। ¹⁷ और देख, मिस्रियों के दिल सख्त कर दूँगा और वह उनका पीछा करेंगे, और मैं फिर'औन और उसकी सिपाह और उसके रथों और सवारों पर मुस्ताज़ हूँगा। ¹⁸ और जब मैं फिर'औन और उसके रथों और सवारों पर मुस्ताज़ हो जाऊँगा तो मिस्री जान लेंगे कि मैं ही खुदावन्द हूँ। ¹⁹ और खुदा उसका फ़रिश्ता जो इस्राईली लश्कर के आगे — आगे चला करता था जा कर उनके पीछे हो गया और बादल का वह सुतून उनके सामने से हट कर उनके पीछे जा ठहरा। ²⁰ इस तरह वह मिस्रियों के लश्कर और इस्राईली लश्कर के बीच में हो गया, तब वहाँ बादल भी था और अन्धेरा भी तो भी रात को उससे रौशनी रही। तब वह रात भर एक दूसरे के पास नहीं आए। ²¹ फिर मूसा ने अपना हाथ समुन्दर के ऊपर बढ़ाया और खुदावन्द ने रात भर तुन्द पूरबी आँधी चला कर और समुन्दर को पीछे हटा कर उसे खुशक ज़मीन बना दिया और पानी दो हिस्से हो गया। ²² और बनी — इस्राईल समुन्दर के बीच में से खुशक ज़मीन पर चल कर निकल गए और उनके दाहने और बाएँ हाथ पानी दीवार की तरह था। ²³ और मिस्रियों ने पीछा किया और फिर'औन सब घोड़े और रथ और सवार उनके पीछे — पीछे समुन्दर के बीच में चले गए। ²⁴ और रात के पिछले पहर खुदावन्द ने आग और बादल के सुतून में से मिस्रियों के लश्कर पर नज़र की और उनके लश्कर को घबरा दिया। ²⁵ और उसने उनके रथों के पहियों को निकाल डाला इसलिए उनका चलना मुश्किल हो

गया तब मिस्री कहने लगे, “आओ, हम इस्राईलियों के सामने से भागें, क्योंकि खुदावन्द उनकी तरफ से मिस्रियों के साथ जंग करता है।” ²⁶ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि अपना हाथ समुन्दर के ऊपर बढ़ा, ताकि पानी मिस्रियों और उनके रथों और सवारों पर फिर बहने लगे। ²⁷ और मूसा ने अपना हाथ समुन्दर के ऊपर बढ़ाया, और सुबह होते होते समुन्दर फिर अपनी असली ताकत पर आ गया; और मिस्री उल्टे भागने लगे और खुदावन्द ने समुन्दर के बीच ही में मिस्रियों को हलाक कर दिया। ²⁸ और पानी पलट कर आया और उसने रथों और सवारों और फिर'औन सारे लश्कर जो इस्राईलियों का पीछा करता हुआ समुन्दर में गया था डुबो दिया और उसमे से एक भी बाक़ी न छोड़ा। ²⁹ लेकिन बनी — इस्राईल समुन्दर के बीच में खुशक ज़मीन पर चलकर निकल गए और पानी उनके दहने और बाएँ हाथ दीवार की तरह रहा। ³⁰ फिर खुदावन्द ने उस दिन इस्राईलियों को मिस्रियों को हाथ से इस तरह बचाया, और इस्राईलियों ने मिस्रियों को समुन्दर के किनारे मरे हुए पड़े देखा। ³¹ और इस्राईलियों ने बड़ी कुदरत जो खुदावन्द ने मिस्रियों पर ज़ाहिर की देखी, और वह लोग खुदावन्द से डर गये और खुदावन्द पर और उसके बन्दे मूसा पर ईमान लाए।

15

????? ??

¹ तब मूसा और बनी — इस्राईल ने खुदावन्द के लिए यह गीत गाया और यूँ कहने लगे, “मैं खुदा वन्द की सना गाऊँगा क्योंकि वह जलाल के साथ फ़तहमन्द हुआ; उस ने घोड़े को सवार समेत समुन्दर में डाल दिया। ² खुदावन्द मेरी ताक़त और राग है, वही मेरी नज़ात भी ठहरा। वह मेरा खुदा है, मैं उसकी बड़ाई करूँगा, वह मेरे बाप का खुदा है मैं उसकी बुजुर्गी करूँगा। ³ खुदावन्द साहिब — ए — जंग है, यही उसका नाम है। ⁴ फिर'औन के रथों और लश्कर को उसने समुन्दर में डाल दिया; और उसके चुने सरदार बहर — ए — कुलज़ुम में डूब गये। ⁵ गहरे पानी ने उनको छिपा लिया; वह पत्थर की तरह तह में चले गए। ⁶ ऐ खुदावन्द, तेरा दहना हाथ कुदरत की वजह से जलाली है। ऐ खुदावन्द तेरा दहना हाथ दुश्मन को चकनाचूर कर देता है। ⁷ तू अपनी 'अज़मत के ज़ोर से अपने मुखालिफ़ों को हलाक करता है; तू अपना क्रहर भेजता है, और वह उनको खूँटी की तरह भस्म कर डालता है। ⁸ तेरे नथनों के दम से पानी का ढेर लग गया, सैलाब तूदे

की तरह सीधे खड़े हो गए, और गहरा पानी समन्दर के बीच में जम गया। ⁹ दुश्मन ने तो यह कहा था, मैं पीछा करूँगा, मैं जा पकड़ूँगा, मैं लूट का माल बाटूँगा, उनकी तबाही से मेरा कलेजा ठंडा होगा। मैं अपनी तलवार खींच कर अपने ही हाथ से उनको हलाक करूँगा। ¹⁰ तूने अपनी आँधी की फूँक मारी, तो समन्दर ने उनको छिपा लिया। वह ज़ोर के पानी में शीसे की तरह डूब गए। ¹¹ मा'बूदों में ऐ खुदावन्द तेरी तरह कौन है? कौन है जो तेरी तरह अपनी पाकीज़गी की वजह से जलाली और अपनी मदह की वजह से रौ'ब वाला और साहिब — ए — करामात है? ¹² तूने अपना दहना हाथ बढ़ाया, तो ज़मीन उनको निगल गई। ¹³ “अपनी रहमत से तूने उन लोगों की जिनको तूने छुटकारा बख़्शा रहनुमाई की, और अपने ज़ोर से तू उनको अपने मुक़द्दस मकान को ले चला है। ¹⁴ कौमें सुन कर काँप गई हैं। और फ़िलिस्तीन के रहने वालों की जान पर आ बनी है। ¹⁵ अदोम के उहदे दार हैरान हैं, मोआब के पहलवानों को कपकपी लग गई है; कनान के सब रहने वालों के दिल पिघले जाते हैं। ¹⁶ ख़ौफ़ — ओ — हिरास उन पर तारी है; तेरे बाजू की 'अज़मत की वजह से वह पत्थर की तरह बेहिस — ओ — हरकत हैं। जब तक ऐ खुदावन्द, तेरे लोग निकल न जाएँ, जब तक तेरे लोग जिनको तूने ख़रीदा है पार न हो जाएँ, ¹⁷ तू उनको वहाँ ले जाकर अपनी मीरास के पहाड़ पर दरख़्त की तरह लगाएगा, तू उनको उसी जगह ले जाएगा जिसे तूने अपनी सुकूनत के लिए बनाया है। ऐ खुदावन्द! वह तेरी जा — ए — मुक़द्दस है, जिसे तेरे हाथों ने क़ाईम किया है। ¹⁸ खुदावन्द हमेशा से हमेशा तक सलतनत करेगा।” ¹⁹ इस हम्द की वजह यह थी कि फिर'औन के सवार घोड़ों और रथों समेत समन्दर में गए, और खुदावन्द समन्दर के पानी को उन पर लौटा लाया; लेकिन बनी — इस्राईल समन्दर के बीच में से खुशक ज़मीन पर चल कर निकल गए। ²⁰ तब हारून की बहन मरियम नबिया ने दफ़ हाथ में लिया, और सब 'औरतें दफ़ लिए नाचती हुई उसके पीछे चलीं। ²¹ और मरियम उनके हम्द के जवाब में यह गाती थी, “खुदावन्द की हम्द — ओ — सना गाओ, क्योंकि वह जलाल के साथ फ़तहमन्द हुआ है; उसने घोड़े को उसके सवार समेत समन्दर में डाल दिया है।”

????? ??

²² फिर मूसा बनी — इस्राईल को बहर — ए — कुलज़ुम से आगे ले गया और वह शोर के वीराने में आए, और वीराने में चलते हुए तीन दिन तक उनको कोई पानी

का चश्मा न मिला। ²³ और जब वह *मारह में आए तो मारह का पानी पी न सके क्योंकि वह कड़वा था, इसीलिए उस जगह का नाम मारह पड़ गया। ²⁴ तब वह लोग मूसा पर बड़बड़ा कर कहने लगे, कि हम क्या पिऐं? ²⁵ उसने खुदावन्द से फ़रियाद की; खुदावन्द ने उसे एक पेड़ दिखाया जिसे जब उसने पानी में डाला तो पानी मीठा हो गया। वहीं खुदावन्द ने उनके लिए एक कानून और शरी'अत बनाई और वहीं यह कह कर उनकी आजमाइश की, ²⁶ कि “अगर तू दिल लगा कर खुदावन्द अपने खुदा की बात सुने और वही काम करे जो उसकी नज़र में भला है और उसके हुक्मों को माने और उसके कानूनों पर 'अमल करे, तो मैं उन बीमारियों में से जो मैंने मिस्रियों पर भेजीं तुझ पर कोई न भेजूंगा क्योंकि मैं खुदावन्द तेरा शाफ़ी हूँ।” ²⁷ फिर वह एलीम में आए जहाँ पानी के बारह चश्मे और खज़ूर के सत्तर दरख्त थे, और वहीं पानी के करीब उन्होंने अपने खेमे लगाए।

16

????? ?? ?????? ?? ?????? ??????

¹ फिर वह एलीम से खाना हुए और बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत मुल्क — ए — मिस्र से निकलने के बाद दूसरे महीने की पंद्रहवीं तारीख को सीन के वीराने में जो एलीम और सीना के बीच है पहुँची। ² और उस वीराने में बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत मूसा और हारून पर बड़बड़ाने लगी। ³ और बनी — इस्राईल कहने लगे, “काश कि हम खुदावन्द के हाथ से मुल्क — ए — मिस्र में जब ही मार दिए जाते जब हम गोश्त की हाँडियों के पास बैठ कर दिल भर कर रोटी खाते थे, क्योंकि तुम तो हम को इस वीराने में इसीलिए ले आए हो कि सारे मजमे' को भूका मारो।” ⁴ तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, “मैं आसमान से तुम लोगों के लिए रोटियाँ बरसाऊँगा, फिर यह लोग निकल निकल कर सिर्फ़ एक — एक दिन का हिस्सा हर दिन बटोर लिया करें कि इस से मैं इनकी आजमाइश करूँगा कि वह मेरी शरी'अत पर चलेंगे या नहीं।” ⁵ और छूटे *दिन ऐसा होगा कि जितना वह ला कर पकाएँगे वह उससे जितना रोज़ जमा' करते हैं दूना होगा।” ⁶ तब मूसा और हारून ने सब बनी — इस्राईल से कहा, कि “शाम को तुम जान लोगे कि जो तुम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया है वह खुदावन्द है।” ⁷ और सुबह को तुम खुदावन्द का जलाल देखोगे, क्योंकि तुम जो खुदावन्द पर बड़बड़ाने लगते हो उसे वह सुनता है। और हम कौन हैं जो तुम हम पर

बड़बड़ाते हो?” ⁸ और मूसा ने यह भी कहा, कि “शाम को खुदावन्द तुम को खाने को गोश्त और सुबह को रोटी पेट भर के देगा; क्योंकि तुम जो खुदावन्द पर बड़बड़ाते हो उसे वह सुनता है। और हमारी क्या हकीकत है? तुम्हारा बड़बड़ाना हम पर नहीं बल्कि खुदावन्द पर है।” ⁹ फिर मूसा ने हारून से कहा, कि “बनी इस्राईल की सारी जमा'अत से कह, कि तुम खुदावन्द के नज़दीक आओ क्योंकि उसने तुम्हारा बड़बड़ाना सुन लिया है।” ¹⁰ और जब हारून बनी — इस्राईल की जमा'अत से यह बातें कह रहा था, तो उन्होंने वीराने की तरफ़ नज़र की और उनको खुदावन्द का जलाल बादल में दिखाई दिया। ¹¹ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, ¹² “मैंने बनी — इस्राईल का बड़बड़ाना सुन लिया है, इसलिए तू उनसे कह दे कि शाम को तुम गोश्त खाओगे और सुबह को तुम रोटी से सेर होगे, और तुम जान लोगे कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।” ¹³ और यँ हुआ कि शाम को इतनी बटेरें आई कि उनकी खेमागाह को ढाँक लिया, और सुबह को खेमागाह के आस पास ओस पड़ी हुई थी। ¹⁴ और जब वह ओस जो पड़ी थी। सूख गई तो क्या देखते हैं, कि वीराने में एक छोटी — छोटी गोल गोल चीज़ ऐसी छोटी जैसे पाले के दाने होते हैं ज़मीन पर पड़ी है। ¹⁵ बनी — इस्राईल उसे देखकर आपस में कहने लगे, मन्न? क्योंकि वह नहीं जानते थे कि वह क्या है। तब मूसा ने उनसे कहा, यह वही रोटी है जो खुदावन्द ने खाने को तुम को दी है। ¹⁶ इसलिए खुदावन्द का हुक्म यह है कि तुम उसे अपने — अपने खाने की मिक्दार के मुताबिक़ या'नी अपने — अपने आदमियों के शुमार के मुताबिक़ हर शख्स एक ओमर जमा' करना, और हर शख्स उतने ही आदमियों के लिए जमा' करे जितने उसके खेमे में हों। † ¹⁷ चुनाँचे बनी — इस्राईल ने ऐसा ही किया और किसी ने ज़्यादा और किसी ने कम जमा' किया। ¹⁸ और जब उन्होंने उसे ओमर से नापा तो जिसने ज़्यादा जमा' किया था कुछ ज़्यादा न पाया और उसका जिसने कम जमा' किया था कम न हुआ। उनमें से हर एक ने अपने खाने की मिक्दार के मुताबिक़ जमा' किया था। ¹⁹ और मूसा ने उनसे कह दिया था कि कोई उसमें से कुछ सुबह तक बाक़ी न छोड़े। ²⁰ तोभी उन्होंने मूसा की बात न मानी बल्कि बा'ज़ों ने सुबह तक कुछ रहने दिया, इसलिए उसमें कीड़े पड़ गए और वह सड़ गया; तब मूसा उनसे नाराज़ हुआ। ²¹ और वह हर सुबह को अपने — अपने खाने की मिक्दार के मुताबिक़ जमा' कर लेते थे और धूप तेज़ होते ही वह पिघल जाता था। ²² और

* 16:5 16:5 हर हफ़्ते का छटा दिन † 16:16 16:16 16:36 भी देखें

17

छठे दिन ऐसा हुआ कि जितनी रोटी वह रोज़ जमा' करते थे उससे दूनी जमा' की या'नी हर शख्स दो ओमर, और जमा'अत के सब सरदारों ने आकर यह मूसा को बताया। ²³ उसने उनको कहा, कि “खुदावन्द का हुक्म यह है कि कल खास आराम का दिन या'नी खुदावन्द का मुक़द्दस सबत है, जो तुम को पकाना हो पका लो और जो उबालना हो उबाल लो और वह जो बच रहे उसे अपने लिए सुबह तक महफूज़ रख्खो।” ²⁴ चुनाँचे उन्होंने जैसा मूसा ने कहा था उसे सुबह तक रहने दिया, और वह न तो सड़ा और न उसमें कीड़े पड़े। ²⁵ और मूसा ने कहा कि आज उसी को खाओ क्योंकि आज खुदावन्द का सबत है, इसलिए वह आज तुम को मैदान में नहीं मिलेगा। ²⁶ छः दिन तक तुम उसे जमा' करना लेकिन सातवें दिन सबत है, उसमें वह नहीं मिलेगा। ²⁷ और सातवें दिन ऐसा हुआ कि उनमें से कुछ आदमी मन बटोरने गए पर उनको कुछ नहीं मिला। ²⁸ तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “तुम लोग कब तक मेरे हुक्मों और शरी'अत के मानने से इन्कार करते रहोगे? ²⁹ देखो, चूँकि खुदावन्द ने तुम को सबत का दिन दिया है, इसीलिए वह तुम को छठे दिन दो दिन का खाना देता है। इसलिए तुम अपनी — अपनी जगह रहो और सातवें दिन कोई अपनी जगह से बाहर न जाए।” ³⁰ चुनाँचे लोगों ने सातवें दिन आराम किया। ³¹ और बनी — इस्राईल ने उसका नाम मन्न रख्खा, और वह धनिये के बीज की तरह सफ़ेद और उसका मज़ा शहद के बने हुए पूए की तरह था। ³² और मूसा ने कहा, “खुदावन्द यह हुक्म देता है, कि इसका एक ओमर भर कर अपनी नसल के लिए रख लो, ताकि वह उस रोटी को देखें जो मैंने तुम को वीराने में खिलाई जब मैं तुम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया।” ³³ और मूसा ने हारून से कहा, “एक मर्तबान ले और एक ओमर मन उसमें भर कर उसे खुदावन्द के आगे रख दे, ताकि वह तुम्हारी नसल के लिए रख्खा रहे।” ³⁴ और जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था उसी के मुताबिक हारून ने उसे शहादत के सन्दूक के आगे रख दिया ताकि वह रख्खा रहे। † ³⁵ और बनी — इस्राईल जब तक आबाद मुल्क में न आए या'नी चालीस बरस तक मन्न खाते रहे, अलगरज़ जब तक वह मुल्क — ए — कना'न की हद तक न आए मन्न खाते रहे। ³⁶ और एक ओमर ऐफ़ा का षदसवाँ हिस्सा है।

□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□

1 फिर बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत सीन के वीराने से चली और खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक सफ़र करती हुई रफ़ीदीम में आकर खेमा लगाया; वहाँ उन लोगों के पीने को पानी न मिला। 2 वहाँ वह लोग मूसा से झगड़ा करके कहने लगे, कि “हम को पीने को पानी दे।” मूसा ने उनसे कहा, कि “तुम मुझ से क्यों झगड़ते हो और खुदावन्द को क्यों आज़माते हो?” 3 वहाँ उन लोगों को बड़ी प्यास लगी, तब वह लोग मूसा पर बड़बड़ाने लगे और कहा, कि तू हम को और हमारे बच्चों और चौपायों को प्यासा मारने के लिए हम लोगों को क्यों मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया? 4 मूसा ने खुदावन्द से फ़रियाद करके कहा कि मैं इन लोगों से क्या करूँ? वह सब तो अभी मुझे संगसार करने को तैयार हैं। 5 खुदावन्द ने मूसा से कहा कि लोगों के आगे होकर चल और बनी — इस्राईल के बुज़ुर्गों में से कुछ को अपने साथ ले ले और जिस लाठी से तूने दरिया पर मारा था उसे अपने हाथ में लेता जा। 6 देख, मैं तेरे आगे जाकर वहाँ होरिब की एक चट्टान पर खड़ा रहूँगा, और तू उस चट्टान पर मारना तो उसमें से पानी निकलेगा कि यह लोग पिएँ। चुनाँचे मूसा ने बनी — इस्राईल के बुज़ुर्गों के सामने यही किया, 7 और उसने उस जगह का नाम *मस्सा और †मरीबा रखवा; क्योंकि बनी — इस्राईल ने वहाँ झगड़ा किया और यह कह कर खुदावन्द का इम्तिहान किया, “खुदावन्द हमारे बीच में है या नहीं?”

111111111111111111 11 1111111111111111 11 111111
 111111

8 तब 'अमालीकी आकर रफ़ीदीम में बनी — इस्राईल से लड़ने लगे। 9 और मूसा ने यशू⁴अ से कहा, “हमारी तरफ़ के कुछ आदमी चुन कर ले जा और 'अमालीकियों से लड़, और मैं कल खुदा की लाठी अपने हाथ में लिए हुए पहाड़ की चोटी पर खड़ा रहूँगा।” 10 फिर मूसा के हुक्म के मुताबिक़ यशू'अ 'अमालीकियों से लड़ने लगा, और मूसा और हारून और हर पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। 11 और जब तक मूसा अपना हाथ उठाए रहता था बनी — इस्राईल ग़ालिब रहते थे, और जब वह हाथ लटका देता था तब 'अमालीकी ग़ालिब होते थे। 12 और जब मूसा के हाथ भर गए तो उन्होंने एक पत्थर लेकर मूसा के नीचे रख दिया और वह उस पर बैठ गया, और हारून और हर एक इधर से दूसरा

‡ 16:34 16:34 यह अहद का संदूक है जिस की तफ़सील 25:10 — 12 में दी गई है § 16:36 16:36 23 लीटर * 17:7 17:7 आज्ञामाना
† 17:7 17:7 बहस करना या शिकायत करना ‡ 17:9 17:9 यशो सबूत के साथ मूसा के हक़म के मातेहत फ़ौजी रहनुमा था, देखें 33:11

उधर से उसके हाथों को संभाले रहे। तब उसके हाथ आफ़ताब के गुरूब होने तक मज़बूती से उठे रहे। ¹³ और यशू'अ ने 'अमालीक और उसके लोगों की तलवार की धार से शिकस्त दी। ¹⁴ तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, “इस बात की यादगारी के लिए किताब में लिख दे और यशू'अ को सुना दे कि मैं 'अमालीक का नाम — ओ — निशान दुनिया से बिल्कुल मिटा दूँगा।” ¹⁵ और मूसा ने एक कुर्बानगाह बनाई और उसका नाम 'स्यहोवा निस्सी' रखवा। ¹⁶ * और उसने कहा खुदावन्द ने कसम खाई है; इसलिए खुदावन्द 'अमालीकियों से नसल दर नसल जंग करता रहेगा।

18

§§§§§§ §§ §§§§ §§ §§§§§§

¹ और जो कुछ खुदावन्द ने मूसा और अपनी क्रौम इस्राईल के लिए किया और जिस तरह से खुदावन्द ने इस्राईल को मिस्र से निकाला, सब मूसा के ससुर यित्रो ने जो मिदियान का काहिन था सुना। ² और मूसा के ससुर यित्रो ने मूसा की बीवी सफ़ूरा को जो मायके भेज दी गई थी, ³ और उसके दोनों बेटों को साथ लिया। इनमें से एक का नाम मूसा ने यह कह कर *जैरसोम रखवा था कि “मैं परदेस में मुसाफ़िर हूँ।” ⁴ और दूसरे का नाम यह कह कर इली'एलियाज़र रखवा था कि “मेरे बाप का खुदा मेरा मददगार हुआ, और उसने मुझे फ़िर'औन की तलवार से बचाया।” ⁵ और मूसा का ससुर यित्रो उसके बेटों और बीवी को लेकर मूसा के पास उस वीराने में आया, जहाँ खुदा के पहाड़ के पास उसका खेमा लगा था, ⁶ और मूसा से कहा, कि “मैं तेरा ससुर यित्रो तेरी बीवी को और उसके साथ उसके दोनों बेटों को लेकर तेरे पास आया हूँ।” ⁷ तब मूसा अपने ससुर से मिलने को बाहर निकला और कोर्निश बजा लाकर उसको चूमा, और वह एक दूसरे की खैर — ओ — 'आफ़ियत पूछते हुए खेमे में आए। ⁸ और मूसा ने अपने ससुर को बताया कि खुदावन्द ने इस्राईल की खातिर फ़िर'औन के साथ क्या क्या किया, और इन लोगों पर रास्ते में क्या — क्या मुसीबतें पड़ीं और खुदावन्द उनको किस किस तरह बचाता आया। ⁹ और यित्रो इन सब एहसानों की वजह से जो खुदावन्द ने इस्राईल पर किए कि उनको मिस्रियों के हाथ से नजात बख़्शी बहुत खुश हुआ। ¹⁰ और यित्रो ने कहा, “खुदावन्द मुबारक हो, जिसने तुम को मिस्रियों के हाथ और फ़िर'औन के हाथ

से नजात बख़्शी, और जिसने इस क्रौम को मिस्रियों के पंजे से छुड़ाया। ¹¹ अब मैं जान गया कि खुदावन्द सब मा'बूदों से बड़ा है, क्योंकि वह उन कामों में जो उन्होंने गुरुर से किए उन पर गालिब हुआ।” ¹² और मूसा के ससुर यित्रो ने खुदा के लिए सोख्तनी कुर्बानी और ज़बीहे चढ़ाए, और हारून और इस्राईल के सब बुजुर्ग मूसा के ससुर के साथ खुदा के सामने खाना खाने आए।

§§§§§§ §§ §§§§

¹³ और दूसरे दिन मूसा लोगों की 'अदालत करने बैठा और लोग मूसा के आसपास सुबह से शाम तक खड़े रहे। ¹⁴ और जब मूसा के ससुर ने सब कुछ जो वह लोगों के लिए करता था देख लिया तो उससे कहा, “यह क्या काम है जो तू लोगों के लिए करता है? तू क्यों आप अकेला बैठता है और सब लोग सुबह से शाम तक तेरे आस — पास खड़े रहते हैं?” ¹⁵ मूसा ने अपने ससुर से कहा, “इसकी वजह यह है कि लोग मेरे पास खुदा से मा'लूम करने के लिए आते हैं।” ¹⁶ जब उनमें कुछ झगड़ा होता है तो वह मेरे पास आते हैं, और मैं उनके बीच इन्साफ़ करता और खुदा के अहकाम और शरी'अत उनको बताता हूँ।” ¹⁷ तब मूसा के ससुर ने उससे कहा, कि “तू अच्छा काम नहीं करता।” ¹⁸ इससे तू क्या बल्कि यह लोग भी जो तेरे साथ हैं क्रत'ई घुल जाएँगे, क्योंकि यह काम तेरे लिए बहुत भारी है। ¹⁹ तू अकेला इसे नहीं कर सकता। इसलिए अब तू मेरी बात सुन, मैं तुझे सलाह देता हूँ और खुदा तेरे साथ रहे! तू इन लोगों के लिए खुदा के सामने जाया कर और इनके सब मु'आमिले खुदा के पास पहुँचा दिया कर। ²⁰ और तू रिवायतों और शरी'अत की बातें इनको सिखाया कर, और जिस रास्ते इनको चलना और जो काम इनको करना हो वह इनको बताया कर। ²¹ और तू इन लोगों में से ऐसे लायक शख्सों को चुन ले जो खुदातरस और सच्चे और रिश्वत के दुश्मन हों, और उनको हज़ार — हज़ार और सौ — सौ और पचास — पचास और दस — दस आदमियों पर हाकिम बना दे; ²² कि वह हर वक़्त लोगों का इन्साफ़ किया करें और ऐसा हो कि बड़े — बड़े मुक़दमों तो वह तेरे पास लाएँ और छोटी — छोटी बातों का फ़ैसला खुद ही कर दिया करें। यूँ तेरा बोझ हल्का हो जाएगा और वह भी उसके उठाने में तेरे शरीक होंगे। ²³ अगर तू यह काम करे और खुदा भी तुझे ऐसा ही हुक्म दे, तो तू सब कुछ

§ 17:15 17:15 यहे मेरा झंडा है * 17:16 17:16 इसलिए कि उस के हाथ खुदावन्द की तख़्त की तरफ़ उठे हुए थे, सो खुदावन्द जंग में अमालिकियों के खिलाफ़ नसल दर नसल रहने लगा था — अमालिकियों का हाथ * 18:3 18:3 गैर मुल्की † 18:4 18:4 मेरा खुदा मददगार है

झेल सकेगा और यह लोग भी अपनी जगह इत्मीनान से जाएँगे।” ²⁴ और मूसा ने अपने ससुर की बात मान कर जैसा उसने बताया था वैसा ही किया। ²⁵ चुनाँचे मूसा ने सब इस्राईलियों में से लायक शख्सों को चुना और उन को हजार — हजार और सौ — सौ और पचास — पचास और दस — दस आदमियों के ऊपर हाकिम मुकर्रर किया। ²⁶ इसलिए यही हर वक्त लोगों का इन्साफ़ करने लगे, मुश्किल मुकद्दमात तो वह मूसा के पास ले आते थे पर छोटी — छोटी बातों का फ़ैसला खुद ही कर देते थे। ²⁷ फिर मूसा ने अपने ससुर को रुख़सत किया और वह अपने वतन को रवाना हो गया।

19

22222 22 22222 22 22222 22 2222 22
222222 22222

¹ और बनी — इस्राईल को जिस दिन मुल्क — ए — मिस्र से निकले तीन महीने हुए उसी दिन वह सीना के वीराने में आए। ² और जब वह रफ़ीदीम से रवाना होकर सीना के वीरान में आए तो वीरान ही में खेमे लगा लिए, इसलिए वहीं पहाड़ के सामने इस्राईलियों के डेरे लगे। ³ और मूसा उस पर चढ़ कर खुदा के पास गया और खुदावन्द ने उसे पहाड़ पर से पुकार कर कहा, “तू या'कूब के खान्दान से यूँ कह और बनी — इस्राईल को यह सुना दे: ⁴ 'तुम ने देखा कि मैंने मिस्रियों से क्या — क्या किया, और तुम को जैसे 'उक्काब के परों पर बैठा कर अपने पास ले आया। ⁵ इसलिए अब अगर तुम मेरी बात मानो और मेरे 'अहद पर चलो तो सब क्रौमों में से तुम ही मेरी खास मिल्कियत ठहरोगे क्योंकि सारी ज़मीन मेरी है। ⁶ और तुम मेरे लिए काहिनों की एक मम्लुकत और एक मुकद्दस क्रौम होगे, इन्हीं बातों को तू बनी — इस्राईल को सुना देना।” ⁷ तब मूसा ने आ कर और उन लोगों के बुज़ुर्गों को बुलाकर उनके आमने — सामने वह सब बातें जो खुदावन्द ने उसे फ़रमाई थीं बयान कीं। ⁸ और सब लोगों ने मिल कर जवाब दिया, “जो कुछ खुदावन्द ने फ़रमाया है वह सब हम करेंगे।” और मूसा ने लोगों का जवाब खुदावन्द को जाकर सुनाया। ⁹ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “देख, मैं काले बादल में इसलिए तेरे पास आता हूँ कि जब मैं तुझ से बातें करूँ तो यह लोग सुनें और हमेशा तेरा यक़ीन करें।” और मूसा ने लोगों की बातें खुदावन्द से बयान कीं। ¹⁰ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, “लोगों के पास जा, और आज और कल उनको पाक कर, और वह अपने कपड़े धो लें, ¹¹ और तीसरे दिन तैयार रहें, क्योंकि खुदावन्द तीसरे दिन सब

लोगों के देखते देखते कोह-ए-सीना पर उतरेगा। ¹² और तू लोगों के लिए चारों तरफ़ हद बाँध कर उनसे कह देना, खबरदार तुम न तो इस पहाड़ पर चढ़ना और न इसके दामन को छूना; जो कोई पहाड़ को छुए ज़रूर जान से मार डाला जाए। ¹³ मगर उसे कोई हाथ न लगाए बल्कि वह ला — कलाम संगसार किया जाए, या तीर से छेदा जाए चाहे वह इंसान हो चाहे हैवान, वह जीता न छोड़ा जाए; और जब नरसिंगा देर तक फूँका जाए तो वह सब पहाड़ के पास आ जाएँ।” ¹⁴ तब मूसा पहाड़ पर से उतरकर लोगों के पास गया और उसने लोगों को पाक साफ़ किया, और उन्होंने अपने कपड़े धो लिए। ¹⁵ और उसने लोगों से कहा कि “तीसरे दिन तैयार रहना और 'औरत के नज़दीक न जाना।” ¹⁶ जब तीसरा दिन आया तो सुबह होते ही बादल गरजने और बिजली चमकने लगी, और पहाड़ पर काली घटा छा गई और करना की आवाज़ बहुत बुलन्द हुई और सब लोग खेमों में काँप गए। ¹⁷ और मूसा लोगों को खेमा गाह से बाहर लाया कि खुदा से मिलाए, और वह पहाड़ से नीचे आ खड़े हुए। ¹⁸ और कोह-ए-सीना ऊपर से नीचे तक धुएँ से भर गया क्योंकि खुदावन्द शोले में होकर उस पर उतरा, और धुआँ तनूर के धुएँ की तरह ऊपर को उठ रहा था और वह *सारा पहाड़ ज़ोर से हिल रहा था। ¹⁹ और जब करना की आवाज़ निहायत ही बुलन्द होती गई तो मूसा बोलने लगा और खुदा ने आवाज़ के ज़रिए' से उसे जवाब दिया। ²⁰ और खुदावन्द कोह-ए-सीना की चोटी पर उतरा, और खुदावन्द ने पहाड़ की चोटी पर मूसा को बुलाया; तब मूसा ऊपर चढ़ गया। ²¹ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, “नीचे उतर कर लोगों को ताकीदन समझा देता ऐसा न हो कि वह देखने के लिए हदों को तोड़ कर खुदावन्द के पास आ जाएँ और उनमें से बहुत से हलाक हो जाएँ। ²² और काहिन भी जो खुदावन्द के नज़दीक आया करते हैं अपने आपको पाक करें, कहीं ऐसा न हो कि खुदावन्द उन पर टूट पड़े।” ²³ तब मूसा ने खुदावन्द से कहा, “लोग कोह-ए-सीना पर नहीं चढ़ सकते क्योंकि तूने तो हम को ताकीदन कहा है, कि पहाड़ के चौगिर्द हद बन्दी करके उसे पाक रखो।” ²⁴ खुदावन्द ने उसे कहा, नीचे उतर जा, और हारून को अपने साथ लेकर ऊपर आ; लेकिन काहिन और अवाम हदें तोड़कर खुदावन्द के पास ऊपर न आए, ऐसा न हो कि वह उन पर टूट पड़े। ²⁵ चुनाँचे मूसा नीचे उतर कर लोगों के पास गया और यह बातें उन को बताई।

* 19:18 19:18 तमाम लोग शदीद तरीके से कांपने लगे थे

20

११११ ११ ११११११११ ११ १११११ ११ १११११

१ और खुदा ने यह सब बातें फ़रमाई कि २ “खुदावन्द तेरा खुदा जो तुझे मुल्क — ए — मिस्र से और गुलामी के घर से निकाल लाया मैं हूँ। ३ “मेरे सामने तू ग़ैर मा'बूदों को न मानना। ४ “तू अपने लिए कोई तराशी हुई मूरत न बनाना, न किसी चीज़ की मूरत बनाना जो ऊपर आसमान में या नीचे ज़मीन पर या ज़मीन के नीचे पानी में है। ५ तू उनके आगे सिज्दा न करना और न उनकी इबादत करना, क्योंकि मैं खुदावन्द तेरा खुदा ग़य्यूर खुदा हूँ और जो मुझ से 'अदावत रखते हैं उनकी औलाद को तीसरी और चौथी नसल तक बाप दादा की बदकारी की सज़ा देता हूँ। ६ और हज़ारों पर जो मुझ से मुहब्बत रखते और मेरे हुक्मों को मानते हैं। रहम करता हूँ। ७ “तू खुदावन्द अपने खुदा का नाम बेफ़ाईदान लेना, क्योंकि जो उसका नाम बेफ़ायदा लेता है खुदावन्द उसे बेगुनाह न ठहराएगा। ८ “याद कर कि तू सबत का दिन पाक मानना। ९ छः दिन तक तू मेहनत करके अपना सारा काम — काज करना। १० लेकिन सातवाँ दिन खुदावन्द तेरे खुदा का सबत है; उसमें न तू कोई काम करे न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा गुलाम, न तेरी लौंडी, न तेरा चौपाया, न कोई मुसाफ़िर जो तेरे यहाँ तेरे फाटकों के अन्दर हो ११ क्योंकि खुदावन्द ने छः दिन में आसमान और ज़मीन और समन्दर और जो कुछ उनमें है वह सब बनाया, और सातवें दिन आराम किया; इसलिए खुदावन्द ने सबत के दिन को बरकत दी और उसे पाक ठहराया। १२ “तू अपने बाप और अपनी माँ की इज्जत करना ताकि तेरी उम्र उस मुल्क में जो खुदावन्द तेरा खुदा तुझे देता है दराज़ हो। १३ “तू खून न करना। १४ “तू ज़िना न करना। १५ “तू चोरी न करना। १६ “तू अपने पड़ोसी के खिलाफ़ झूठी गवाही न देना। १७ “तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना; तू अपने पड़ोसी की बीवी का लालच न करना, और न उसके गुलाम और उसकी लौंडी और उसके बैल और उसके गधे का, और न अपने पड़ोसी की किसी और चीज़ का लालच करना।” १८ और सब लोगों ने बादल गरजते और बिजली चमकते और करना की आवाज़ होते और पहाड़ से धुआँ उठते देखा, और जब लोगों ने यह देखा तो काँप उठे और दूर खड़े हो गए; १९ और मूसा से कहने लगे, “तू ही हम से बातें किया कर और हम सुन लिया करेंगे; लेकिन खुदा हम से बातें न करे, ऐसा न हो कि हम मर जाएँ।” २० मूसा

* 20:24 20:24 1:सलामती की कुरबानी यारि फाकतीकुरबानी, या सेहतमंदी की कुर्बानी, यह सब जानवरों की कुरबानी को ज़ाहिर करते हैं जो जलाए नहीं जाते — इन का गोशत काहिनों और परिस्तारों में तक्रसीम करदिया जाता था — इस कुरबानी का मकसद था कि किसी के साथ मेलजोल या रिफाक़त बहाल रखी जाए — इन कुर्बानियों का ज़िक्र अहबार के तीसरे बाब में किया गया है —

ने लोगों से कहा, “तुम डरो मत, क्योंकि खुदा इसलिए आया है कि तुम्हारा इम्तिहान करे और तुम को उसका खौफ़ हो ताकि तुम गुनाह न करो।” २१ और वह लोग दूर ही खड़े रहे और मूसा उस गहरी तारीकी के नज़दीक गया जहाँ खुदा था।

११११११११११११ ११ ११११ ११११११११११

२२ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, तू बनी — इस्राईल से यह कहना कि 'तुम ने खुद देखा कि मैंने आसमान पर से तुम्हारे साथ बातें कीं। २३ तुम मेरे साथ किसी को शरीक न करना, या'नी चाँदी या सोने के देवता अपने लिए न गढ़ लेना। २४ और तू मिट्टी की एक कुर्बानगाह मेरे लिए बनाया करना, और उस पर अपनी भेंड़ बकरियों और गाय — बैल की सोख्तनी कुर्बानियाँ और *सलामती की कुर्बानियाँ पेश करना और जहाँ — जहाँ मैं अपने नाम की यादगारी कराऊँगा वहाँ मैं तेरे पास आकर तुझे बरकत दूँगा। २५ और अगर तू मेरे लिए पत्थर की कुर्बानगाह बनाए तो तराशे हुए पत्थर से न बनाना, क्योंकि अगर तू उस पर अपने औज़ार लगाए तो तू उसे नापाक कर देगा। २६ और तू मेरी कुर्बानगाह पर सीढ़ियों से हरगिज़ न चढ़ना ऐसा न हो कि तेरा नंगापन उस पर ज़ाहिर हो।

21

११११११११११११ ११ ११११ ११११११११११

१ “वह अहकाम जो तुझे उनको बताने हैं यह हैं: २ अगर तू कोई 'इब्रानी गुलाम खरीदे तो वह छः बरस खिदमत करे और सातवें बरस मुफ़्त आज़ाद होकर चला जाए। ३ अगर वह अकेला आया हो तो अकेला ही चला जाए और अगर वह शादी शुदा हो तो उसकी बीवी भी उसके साथ जाए। ४ अगर उसके आक्रा ने उसकी शादी कराया हो और उस 'औरत के उससे बेटे और बेटियाँ हुई हों तो वह 'औरत और उसके बच्चे उस आक्रा के होकर रहें और वह अकेला चला जाए। ५ पर अगर वह गुलाम साफ़ कह दे कि मैं अपने आक्रा से और अपनी बीवी और बच्चों से मुहब्बत रखता हूँ, मैं आज़ाद होकर नहीं जाऊँगा। ६ तो उसका आक्रा उसे खुदा के पास ले जाए, और उसे दरवाज़े पर या दरवाज़े की चौखट पर लाकर सुतारी से उसका कान छेदे; तब वह हमेशा उसकी खिदमत करता रहे। ७ 'और अगर कोई शख्स अपनी बेटी को लौंडी होने के लिए बेच डाले तो वह गुलामों की तरह चली न जाए। ८ अगर उसका आक्रा जिसने उससे निस्वत की है उससे

खुश न हो, तो वह उसका फ़िदिया मंजूर करे पर उसे यह इस्तिथार न होगा कि उसको किसी अजनबी क्रौम के हाथ बेचे, क्योंकि उसने उससे दगाबाजी की।⁹ और अगर वह उसकी निस्वत अपने बेटे से कर दे तो वह उससे बेटियों का सा सुलूक करे।¹⁰ अगर वह दूसरी 'औरत' कर ले तो भी वह उसके खाने, कपड़े और शादी के फ़र्ज में कासिर न हो।¹¹ और अगर वह उससे यह तीनों बातें न करे तो वह मुफ़्त बे — रुपये दिए चली जाए।

???????? ???? ? ? ?

¹² 'अगर कोई किसी आदमी को ऐसा मारे कि वह मर जाए तो वह क़तई' जान से मारा जाए।¹³ लेकिन अगर वह शस्त्र घात लगाकर न बैठा हो बल्कि खुदा ही ने उसे उसके हवाले कर दिया हो, तो मैं ऐसे हाल में एक जगह बता दूँगा जहाँ वह भाग जाए।¹⁴ और अगर कोई दीदा — ओ — दानिस्ता अपने पड़ोसी पर चढ़ आए ताकि उसे धोखे से मार डाले, तो तू उसे मेरी कुर्बानगाह से जुदा कर देना ताकि वह मारा जाए।¹⁵ "और जो कोई अपने बाप या अपनी माँ को मारे वह क़तई' जान से मारा जाए।¹⁶ "और जो कोई किसी आदमी को चुराए चाहे वह उसे बेच डाले चाहे वह उसके यहाँ मिले, वह क़तई' मार डाला जाए।¹⁷ 'और जो अपने बाप या अपनी माँ पर ला'नत करे वह क़तई' मार डाला जाए।¹⁸ "और अगर दो शस्त्र झगड़ें और एक दूसरे को पत्थर या मुक्का मारे और वह मरे तो नहीं पर बिस्तर पर पड़ा रहे,¹⁹ तो जब वह उठ कर अपनी लाठी के सहारे बाहर चलने — फिरने लगे, तब वह जिसने मारा था बरी हो जाए और सिर्फ़ उसका हरजाना भर दे और उसका पूरा 'इलाज करा दे।²⁰ "और अगर कोई अपने गुलाम या लौंडी को लाठी से ऐसा मारे कि वह उसके हाथ से मर जाए तो उसे ज़रूर सज़ा दी जाए।²¹ लेकिन अगर वह एक — दो दिन जीता रहे तो आक्रा को सज़ा न दी जाए, इसलिए कि वह गुलाम उसका माल है।²² "अगर लोग आपस में मार पीट करें और किसी हामिला को ऐसी चोट पहुँचाएँ कि उसे इस्कात हो जाए, लेकिन और कोई नुक़सान न हो तो उससे जितना जुर्माना उसका शौहर तजवीज़ करे लिया जाए, और वह जिस तरह क़ाज़ी फ़ैसला करें जुर्माना भर दे।²³ लेकिन अगर नुक़सान हो जाए तो तू जान के बदले जान ले,²⁴ और आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, और हाथ के बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव,²⁵ जलाने के बदले जलाना, ज़ख़्म के बदले ज़ख़्म और चोट के बदले चोट।²⁶ "और अगर कोई अपने गुलाम या अपनी लौंडी की आँख पर ऐसा मारे कि वह फूट जाए, तो वह उसकी आँख के बदले उसे आज़ाद कर दे।²⁷ अगर कोई अपने

गुलाम या अपनी लौंडी का दाँत मार कर तोड़ दे, तो वह उसके दाँत के बदले उसे आज़ाद कर दे।²⁸ 'अगर बैल किसी मर्द या 'औरत को ऐसा सींग मारे कि वह मर जाए, तो वह बैल ज़रूर संगसार किया जाय और उसका गोशत खाया न जाए, लेकिन बैल का मालिक बेगुनाह ठहरे।²⁹ लेकिन अगर उस बैल की पहले से सींग मारने की 'आदत थी और उसके मालिक को बता भी दिया गया था तो भी उसने उसे बाँध कर नहीं रख्खा, और उसने किसी मर्द या 'औरत को मार दिया हो तो बैल संगसार किया जाए और उसका मालिक भी मारा जाए।³⁰ और अगर उससे खूनबहा माँगा जाए, तो उसे अपनी जान के फ़िदिया में जितना उसके लिए ठहराया जाए उतना ही देना पड़ेगा।³¹ चाहे उसने किसी के बेटे को मारा हो या बेटा को, इसी हुक्म के मुवाफ़िक़ उसके साथ 'अमल किया जाए।³² अगर बैल किसी के गुलाम या लौंडी को सींग से मारे तो मालिक उस गुलाम या लौंडी के मालिक को *तीस मिस्काल रुपये दे और बैल संगसार किया जाए।³³ 'और अगर कोई आदमी गढ़ा खोले या खोदे और उसका मुँह न ढाँपे, और कोई बैल या गधा उसमें गिर जाए;³⁴ तो गढ़े का मालिक इसका नुक़सान भर दे और उनके मालिक को क़ीमत दे और मरे हुए जानवर को खुद ले ले।³⁵ "और अगर किसी का बैल दूसरे के बैल को ऐसी चोट पहुँचाए के वह मर जाए, तो वह जीते बैल को बेचें और उसका दाम आधा आधा आपस में बाँट लें और इस मरे हुए बैल को भी ऐसे ही बाँट लें।³⁶ और अगर मा'लूम हो जाए कि उस बैल की पहले से सींग मारने की 'आदत थी और उसके मालिक ने उसे बाँध कर नहीं रख्खा, तो उसे क़तई' बैल के बदले बैल देना होगा और वह मरा हुआ जानवर उसका होगा।

22

???????? ? ? ?

¹ "अगर कोई आदमी बैल या भेड़ चुरा ले और उसे ज़बह कर दे या बेच डाले, तो वह एक बैल के बदले पाँच बैल और एक भेड़ के बदले चार भेड़े भरे।² अगर चोर सेंध मारते हुए पकड़ा जाए और उस पर ऐसी मार पड़े कि वह मर जाए तो उसके खून का कोई जुर्म नहीं।³ अगर सूरज निकल चुके तो उसका खून जुर्म होगा; बल्कि उसे नुक़सान भरना पड़ेगा और अगर उसके पास कुछ न हो तो वह चोरी के लिए बेचा जाए।⁴ अगर चोरी का माल उसके पास जीता मिले चाहे वह बैल हो या गधा या भेड़ तो वह उसका दूना भर दे।⁵ 'अगर कोई आदमी किसी खेत या ताकिस्तान को खिलवा दे और अपने जानवर

* 21:32 21:32 342 ग्राम चांदी

को छोड़ दे कि वह दूसरे के खेत को चर लें, तो अपने खेत या ताकिस्तान की अच्छी से अच्छी पैदावार में से उसका मु'आवज़ा दे। ⁶ 'अगर आग भड़के और कांटों में लग जाए और अनाज के ढेर या खड़ी फ़सल या खेत को जला कर भस्म कर दे, तो जिस ने आग जलाई हो वह ज़रूर मु'आवज़ा दे। ⁷ "अगर कोई अपने पड़ोसी की नक़्द या जिन्स रखने को दे और वह उस शख्स के घर से चोरी हो जाए, तो अगर चोर पकड़ा जाए तो दूना उसको भरना पड़ेगा। ⁸ लेकिन अगर चोर पकड़ा न जाए तो उस घर का *मालिक खुदा के आगे लाया जाए, ताकि मालूम हो जाए कि उसने अपने पड़ोसी के माल को हाथ नहीं लगाया। ⁹ हर किसिम की ख़ियानत के मु'आमिले में चाहे बैल का चाहे गधे या भेड़ या कपड़े या किसी और खोई हुई चीज़ का हो, जिसकी निस्वत कोई बोल उठे कि वह चीज़ यह है तो फ़रीकीन का मुक़द्मा खुदा के सामने लाया जाए और जिसे खुदा मुजरिम ठहराए वह अपने पड़ोसी को दूना भर दे। ¹⁰ 'अगर कोई अपने पड़ोसी के पास गधा या बैल या भेड़ या कोई और जानवर अमानत रखे और वह बग़ैर किसी के देखे मर जाए या चोट खाए या हंका दिया जाए, ¹¹ तो उन दोनों के बीच खुदावन्द की क़सम हो कि उसने अपने हमसाथे के माल को हाथ नहीं लगाया, और मालिक इसे सच माने और दूसरा उसका मु'आवज़ा न दे। ¹² लेकिन अगर वह उसके पास से चोरी हो जाए तो वह उसके मालिक को मु'आवज़ा दे। ¹³ और अगर उसको किसी दरिन्दे ने फाड़ डाला हो तो वह उसको गवाही के तौर पर पेश कर दे और फाड़े हुए का नुक़सान न भरे। ¹⁴ 'अगर कोई शख्स अपने पड़ोसी से कोई जानवर 'आरियत ले और वह ज़ख्मी हो जाए या मर जाए, और मालिक वहाँ मौजूद न हो तो वह ज़रूर उसका मु'आवज़ा दे। ¹⁵ लेकिन अगर मालिक साथ हो तो उसका नुक़सान न भरे और अगर किराया की हुई चीज़ हो तो उसका नुक़सान उसके किराये में आ गया।

¹⁶ "अगर कोई आदमी किसी कुंवारी को जिसकी निस्वत न हुई हो, फ़सला कर उससे मुबाशरत करे तो वह ज़रूर ही उसे महर देकर उससे शादी करे। ¹⁷ लेकिन अगर उसका बाप हरगिज़ राज़ी न हो कि उस लड़की को उसे दे, तो वह कुंवारियों के महर के मुवाफ़िक़ उसे नक़्दी दे। ¹⁸ "तू जादूगरनी को जीने न देना। ¹⁹ "जो कोई किसी जानवर से मुबाशरत करे वह क़तई जान से मारा जाए। ²⁰ "जो कोई एक खुदावन्द को छोड़ कर किसी और मा'बूद के आगे कुर्बानी चढ़ाए वह बिल्कुल नाबूद कर दिया जाए। ²¹ "और तू मुसाफ़िर को न तो सताना

न उस पर सितम करना, इस लिए के तुम भी मुल्क — ए — मिस्र में मुसाफ़िर थे। ²² तुम किसी बेवा या यतीम लड़के को दुख न देना। ²³ अगर तू उनको किसी तरह से दुख दे और वह मुझ से फ़रियाद करें तो मैं ज़रूर उनकी फ़रियाद सुनूँगा। ²⁴ और मेरा क्रहर भड़केगा और मैं तुम को तलवार से मार डालूँगा और तुम्हारी बीवियाँ बेवा और तुम्हारे बच्चे यतीम हो जाएँगे। ²⁵ "अगर तू मेरे लोगों में से किसी मोहताज को जो तेरे पास रहता हो कुछ क़र्ज़ दे तो उससे क़र्ज़दार की तरह सुलूक न करना और न उससे सूद लेना। ²⁶ अगर तू किसी वक़्त अपने पड़ोसी के कपड़े गिरवी रख भी ले तो सूरज के डूबने तक उसको वापस कर देना। ²⁷ क्योंकि सिर्फ़ वही उसका एक ओढ़ना है, उसके जिस्म का वही लिबास है फिर वह क्या ओढ़ कर सोएगा? फिर जब वह फ़रियाद करेगा तो मैं उसकी सुनूँगा क्योंकि मैं मेहरबान हूँ। ²⁸ "तू खुदा को न कोसना और न अपनी क़ौम के सरदार पर ला'नत भेजना। ²⁹ "तू अपनी ज़्यादा पैदावार और अपने कोल्हू के रस में से मुझे नज़र — ओ — नियाज़ देने में देर न करना और अपने बेटों में से पहलौटे को मुझे देना। ³⁰ अपनी गायों और भेड़ों से भी ऐसा ही करना; सात दिन तक तो बच्चा अपनी माँ के साथ रहे, आठवें दिन तू उसे मुझ को देना। ³¹ "और तू मेरे लिए पाक आदमी होना, इसी वजह से दरिन्दों के फाड़े हुए जानवर का गोश्त जो मैदान में पड़ा हुआ मिले मत खाना; तुम उसे कुत्तों के आगे फेंक देना।

23

¹ तू झूठी बात ना फैलाना और नारास्त गवाह होने के लिए शरीरों का साथ न देना। ² बुराई करने के लिए किसी भीड़ की पैरवी न करना, और न किसी मुक़दमें में इन्साफ़ का खून कराने के लिए भीड़ का मुँह देखकर कुछ कहना। ³ और न मुक़दमों में कंगाल की तरफ़दारी करना। ⁴ 'अगर तेरे दुश्मन का बैल या गधा तुझे भटकता हुआ मिले, तो तू ज़रूर उसे उसके पास फेर कर ले आना। ⁵ अगर तू अपने दुश्मन के गधे को बोझ के नीचे दबा हुआ देखे और उसकी मदद करने को जी भी न चाहता हो तो भी ज़रूर उसे मदद देना। ⁶ "तू अपने कंगाल लोगों के मुक़दमों में इन्साफ़ का खून न करना। ⁷ झूटे मु'आमिले से दूर रहना और बेगुनाहों और सादिकों को क़त्ल न करना क्योंकि मैं शरीर को रास्त नहीं ठहराऊँगा। ⁸ तू रिश्वत न लेना क्योंकि रिश्वत बीनाओं को अन्धा

कर देती है और सादिकों की बातों को पलट देती है।
 9 “परदेसी पर जुल्म न करना क्योंकि तुम परदेसी के दिल को जानते हो, इसलिए कि तुम खुद भी मुल्क — ए — मिस्र में परदेसी थे। 10 “छः बरस तक तू अपनी ज़मीन में बोना और उसका गल्ला जमा' करना, 11 पर सातवें बरस उसे यूँ ही छोड़ देना कि पड़ती रहे, ताकि तेरी क़ौम के ग़रीब उसे खाएँ और जो उनसे बचे उसे जंगल के जानवर चर लें। अपने अंगूर और जैतून के बाग़ से भी ऐसा ही करना। 12 छः दिन तक अपना काम काज करना और सातवें दिन आराम करना, ताकि तेरे बैल और गधे को आराम मिले और तेरी लौंडी का बेटा और परदेसी ताज़ा दम हो जाएँ। 13 और तुम सब बातों में जो मैंने तुम से कहीं हैं होशियार रहना और दूसरे मा'बूदों का नाम तक न लेना बल्कि वह तेरे मुँह से सुनाई भी न दे।

२२२ २२२२२२ २२

14 'तू साल भर में तीन बार मेरे लिए 'ईद मनाना। 15 ईद — ए — फ़तीर को मानना, उसमें मेरे हुक्म के मुताबिक़ अबीव महीने के मुकर्ररा वक़्त पर सात दिन तक बेख़मीरी रोटियाँ खाना क्योंकि उसी महीने में तू मिस्र से निकला था और कोई मेरे आगे ख़ाली हाथ न आए। 16 और जब तेरे खेत में जिसे तूने मेहनत से बोया पहला फल आए तो फ़स्त काटने की 'ईद मानना, और साल के आखिर में जब तू अपनी मेहनत का फल खेत से जमा' करे तो जमा' करने की 'ईद मनाना। 17 और साल में तीनों मर्तबा तुम्हारे यहाँ के सब मर्द खुदावन्द खुदा के आगे हाज़िर हुआ करें। 18 “तू ख़मीरी रोटि की साथ मेरे ज़बीहे का खून न चढ़ाना और मेरी 'ईद की चर्बी सुबह तक बाक़ी न रहने देना। 19 तू अपनी ज़मीन के पहले फलों का पहला हिस्सा खुदावन्द अपने खुदा के घर में लाना। तू हलवान को उसकी माँ के दूध में न पकाना।

२२२२२ २२ २२२२२२२ २२ २२२

20 “देख, मैं एक फ़रिश्ता तेरे आगेआगे भेजता हूँ कि रास्ते में तेरा निगहबान हो और तुझे उस जगह पहुँचा दे जिसे मैंने तैयार किया है। 21 तुम उसके आगे होशियार रहना और उसकी बात मानना, उसे नाराज़ न करना क्योंकि वह तुम्हारी ख़ता नहीं बख़्शेगा इसलिए कि *मेरा नाम उसमें रहता है। 22 लेकिन अगर तू सचमुच उसकी बात माने और जो मैं कहता हूँ वह सब करे, तो मैं तेरे दुश्मनों का दुश्मन और तेरे मुख़ालिफ़ों का मुख़ालिफ़ हूँगा। 23 इसलिए कि मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे — आगे चलेगा और तुझे अमोरियों और हित्तियों और

फ़रिज़ियों और कना'नियों और हव्वियों यबूसियों में पहुँचा देगा और मैं उनको हलाक कर डालूँगा। 24 तू उनके मा'बूदों को सिज्दा न करना, न उनकी इबादत करना, न उनके से काम करना बल्कि तू उनको बिल्कुल उलट देना और उनके सुतूनो को टुकड़े टुकड़े कर डालना। 25 और तुम खुदावन्द अपने खुदा की इबादत करना, तब वह तेरी रोटी और पानी पर बरकत देगा और मैं तेरे बीच से बीमारी को दूर कर दूँगा। 26 और तेरे मुल्क में न तो किसी के इस्कात होगा और न कोई बाँझ रहेगी और मैं तेरी उमर पूरी करूँगा। 27 मैं अपने ख़ौफ़ को तेरे आगे — आगे भेजूँगा और मैं उन सब लोगों को जिनके पास तू जाएगा शिकस्त दूँगा, और मैं ऐसा करूँगा कि तेरे सब दुश्मन तेरे आगे अपनी पुश्त फेर देंगे। 28 मैं तेरे आगे ज़म्बूरो को भेजूँगा, जो हव्वी और कना'नी और हित्ती को तेरे सामने से भगा देंगे। 29 मैं उनको एक ही साल में तेरे आगे से दूर नहीं करूँगा ऐसा न हो के ज़मीन वीरान हो जाए और जंगली दरिन्दे ज़्यादा होकर तुझे सताने लगें। 30 बल्कि मैं थोड़ा थोड़ा करके उनको तेरे सामने से दूर करता रहूँगा, जब तक तू शुमार में बढ़ कर मुल्क का वारिस न हो जाए। 31 मैं बहर — ए — कुलजुम से लेकर फ़िलिस्तियों के समन्दर तक और वीरान से लेकर नहर — ए — फ़ुरात तक तेरी हदें बाँधूँगा। क्योंकि मैं उस मुल्क के बाशिन्दों को तुम्हारे हाथ में कर दूँगा और तू उनको अपने आगे से निकाल देगा। 32 तू उनसे या उनके मा'बूदों से कोई 'अहद न बाँधना। 33 वह तेरे मुल्क में रहने न पाएँ ऐसा न हो कि वह तुझ से मेरे खिलाफ़ गुनाह कराएँ, क्योंकि अगर तू उनके मा'बूदों की इबादत करे तो यह तेरे लिए ज़रूर फंदा हो जाएगा।”

24

२२२२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२ २२ २२२२२२

1 और उसने मूसा से कहा, कि “तू हारून और नदब और अबीहू और बनी इस्राईल के सत्तर बुज़ुर्गों को लेकर खुदावन्द के पास ऊपर आ, और तुम दूर ही से सिज्दा करना। 2 और मूसा अकेला खुदावन्द के नज़दीक आए पर वह नज़दीक न आएँ और लोग उसके साथ ऊपर न चढ़ें।” 3 और मूसा ने लोगों के पास जाकर खुदावन्द की सब बातें और अहक़ाम उनको बता दिए और सब लोगों ने हम आवाज़ होकर जवाब दिया, “जितनी बातें खुदावन्द ने फ़रमाई हैं, हम उन सब को मानेंगे।” 4 और मूसा ने खुदावन्द की सब बातें लिख लीं और सुब्ह को सवेरे उठ कर पहाड़ के नीचे एक कुर्बानगाह और

* 23:21 23:21 मैं ने उसको अपना इस्त्रियार दिया है, मेरा नाम उस पर है
 † 23:24 23:24 देवताओं

‡ 23:33 23:33 वह जो अपने

देवताओं को पूजते हैं उन के लिए एक फन्दा होगा

बनी — इस्राईल के बारह कबीलों के हिसाब से बारह सुतून बनाए। ⁵ और उसने बनी इस्राईल के जवानों को भेजा, जिन्होंने सोख्तनी कुर्बानियाँ चढ़ाई और बैलों को ज़बह करके सलामती के ज़बीहे खुदावन्द के लिए पेश किया। ⁶ और मूसा ने आधा खून लेकर तसलों में रखवा और आधा कुर्बानगाह पर छिड़क दिया। ⁷ फिर उसने 'अहदनामा लिया और लोगों को पढ़ कर सुनाया। उन्होंने कहा, कि “जो कुछ खुदावन्द ने फ़रमाया है उस सब को हम करेंगे और ताबे” रहेंगे।” ⁸ तब मूसा ने उस खून को लेकर लोगों पर छिड़का और कहा, “देखो, यह उस 'अहद का खून है जो खुदावन्द ने इन सब बातों के बारे में तुम्हारे साथ बाँधा है।” ⁹ तब मूसा और हारून और नदब और अबीहू और बनी — इस्राईल के सत्तर बुज़ुर्ग ऊपर गए। ¹⁰ और उन्होंने इस्राईल के खुदा को देखा, और उसके पाँव के नीचे नीलम के पत्थर का चबूतरा सा था जो आसमान की तरह शफ़फ़ाफ़ था। ¹¹ और उसने बनी इस्राईल के शरीफ़ों पर अपना हाथ न बढ़ाया। फिर उन्होंने खुदा को देखा और खाया और पिया। ¹² और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “पहाड़ पर मेरे पास आ और वहीं ठहरा रह; और मैं तुझे पत्थर की लोहें और शरी'अत और अहकाम जो मैंने लिखे हैं दूँगा ताकि तू उनको सिखाए।” ¹³ और मूसा और उसका खादिम यशू'अ उठे और मूसा खुदा के पहाड़ के ऊपर गया। ¹⁴ और बुज़ुर्गों से कह गया कि “जब तक हम लौट कर तुम्हारे पास न आ जाएँ तुम हमारे लिए यहीं ठहरे रहो, और देखो हारून और हूर तुम्हारे साथ हैं, जिस किसी का कोई मुक़दमा हो वह उनके पास जाए।” ¹⁵ तब मूसा पहाड़ के ऊपर गया और पहाड़ पर घटा छा गई। ¹⁶ और खुदावन्द का जलाल कोह-ए-सीना पर आकर ठहरा और छः दिन तक घटा उस पर छाई रही और सातवें दिन उसने घटा में से मूसा को बुलाया। ¹⁷ और बनी — इस्राईल की निगाह में पहाड़ की चोटी पर खुदावन्द के जलाल का मन्ज़र भसम करने वाली आग की तरह था। ¹⁸ और मूसा घटा के बीच में होकर पहाड़ पर चढ़ गया और वह पहाड़ पर चालीस दिन और चालीस रात रहा।

25

2222 22 2222 222222

¹ और खुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया, ² 'बनी — इस्राईल से यह कहना कि मेरे लिए नज़र लाएँ, और तुम उन्हीं से मेरी नज़र लेना जो अपने दिल की खुशी से दें। ³ और जिन चीज़ों की नज़र तुम को उनसे लेनी है वह यह हैं: सोना और चाँदी और पीतल, ⁴ और आसमानी और अर्गवानी और सुख रंग का कपड़ा और बारीक कतान और बकरी की पश्म, ⁵ और मेंदों की सुख रंगी हुई खालें और तुखस की खालें और कीकर की लकड़ी, ⁶ और चराग़ के लिए तेल और मसह करने के तेल के लिए और खुशबूदार खुशबू के लिए मसालहे, ⁷ और संग-ए-सुलेमानी और अफ़ोद और सीनाबन्द में जड़ने के नगीने। ⁸ और वह मेरे लिए एक मक़दिस बनाएँ ताकि मैं उनके बीच सुकूनत करूँ। ⁹ और घर और उसके सारे सामान का जो नमूना मैं तुझे दिखाऊँ ठीक उसी के मुताबिक़ तुम उसे बनाना।

222 22 2222 22 222222 22 2222 222222

¹⁰ और वह कीकर की लकड़ी का एक सन्दूक बनाये जिस की लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊँचाई डेढ़ हाथ हो। ¹¹ और तू उसके अन्दर और बाहर खालिस सोना मंढ़ना और उसके ऊपर चारों तरफ़ एक ज़रीन ताज बनाना। ¹² और उसके लिए सोने के चार कड़े ढालकर उसके चारों पायों में लगाना, दो कड़े एक तरफ़ हों और दो ही दूसरी तरफ़। ¹³ और कीकर की लकड़ी की चोबें बना कर उन पर सोना मंढ़ना। ¹⁴ और इन चोबों को सन्दूक के पास के कड़ों में डालना कि उनके सहारे सन्दूक उठ जाए। ¹⁵ चोबें सन्दूक के कड़ों के अन्दर लगी रहें और उससे अलग न की जाएँ। ¹⁶ और तू उस शहादत नामे को जो मैं तुझे दूँगा उसी सन्दूक में रखना। ¹⁷ “और †तू कफ़फ़ारे का ‡सरपोश खालिस सोने का बनाना जिसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ हो। ¹⁸ और सोने के दो करूबी सरपोश के दोनों सिरों पर गढ़ कर बनाना। ¹⁹ एक करूबी को एक सिरे पर और दूसरे करूबी को दूसरे सिरे पर लगाना, और तुम सरपोश को और दोनों सिरों के करूबियों को एक ही टुकड़े से बनाना। ²⁰ और वह करूबी इस तरह ऊपर को अपने पर फैलाए हुए हों कि सरपोश को अपने परों से ढाँक लें और उनके मुँह आमने — सामने सरपोश की तरफ़ हों। ²¹ और तू उस सरपोश को उस सन्दूक के ऊपर लगाना और वह 'अहदनामा जो मैं तुझे दूँगा उसे उस सन्दूक

* 24:8 24:8 यह वह खून है जो अहद को कायम करता है जिस को यह्ने ने तुम्हारे साथ तब बाँधा जब वह तुम को यह सारी हिदायतें देता था
 * 25:7 25:7 और दोनों पत्थरों को अफ़ूद के दोनों मूढ़ोंपर लगाना (28:12) और दूसराइन बारह पत्थरों में से एक पत्थर सरदार काहिन के सीनाबंद में बांधना (28:22) और यह अफ़ोद एक पटका था जिसे सरदार काहिन कपड़े की तरह पहिनता था — इस का ज़िक्र 28:6 — 14 में किया गया है
 † 25:17 25:17 कफ़फ़ारे का सर्पोश ‡ 25:17 25:17 ढाँकने की चीज़

के अन्दर रखना। ²² वहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा और उस सरपोश के ऊपर से और करुबियों के बीच में से जो 'अहदनामे' के सन्दूक के ऊपर होंगे, उन सब अहकाम के बारे में जो मैं बनी — इस्राईल के लिए तुझे दूँगा तुझ से बातचीत किया करूँगा।

2222 22 2222 22222222

²³ “और तू दो हाथ लम्बी और एक हाथ चौड़ी और डेढ़ हाथ ऊँची कीकर की लकड़ी की एक मेज़ भी बनाना। ²⁴ और उसको खालिस सोने से मँढ़ना और उसके चारों तरफ़ एक ज़रीन ताज बनाना। ²⁵ और उसके चौगिर्द चार उंगल चौड़ी एक कंगनी लगाना और उस कंगनी के चारों तरफ़ एक ज़रीन ताज बनाना। ²⁶ और सोने के चार कड़े उसके लिए बना कर उन कड़ों को उन चारों कोनों में लगाना जो चारों पायों के सामने होंगे। ²⁷ वह कड़े कंगनी के पास ही हों, ताकि चोबों के लिए जिनके सहारे मेज़ उठाई जाए घरों का काम दें। ²⁸ और कीकर की लकड़ी की चोबें बना कर उनको सोने से मँढ़ना ताकि मेज़ उन्हीं से उठाई जाए। ²⁹ और तू उसके तबाक़ और चमचे और आफ़ताबे और उडेलने के बड़े — बड़े कटोरे सब खालिस सोने के बनाना। ³⁰ और तू उस मेज़ पर नज़र की रोटियाँ हमेशा मेरे सामने रखना।

22222222 22 2222 22222222

³¹ “और तू खालिस सोने का एक शमा'दान बनाना। वह शमा'दान और उसका पाया और डन्डी सब घड़ कर बनाए जाएँ और उसकी प्यालियाँ और लट्टू और उसके फूल सब एक ही टुकड़े के बने हों। ³² और उसके दोनों पहलुओं से छः शाखें बाहर को निकलती हों, तीन शाखें शमा'दान के एक पहलू से निकलें और तीन दूसरे पहलू से। ³³ एक शाख में बादाम के फूल की सूरत की तीन प्यालियाँ, एक लट्टू और एक फूल हो; और दूसरी शाख में भी बादाम के फूल की सूरत की तीन प्यालियाँ, एक लट्टू और एक फूल हो; इसी तरह शमा'दान की छहों शाखों में यह सब लगा हुआ हो। ³⁴ और खुद शमादान में बादाम के फूल की सूरत की चार प्यालियाँ अपने — अपने लट्टू और फूल समेत हों। ³⁵ और दो शाखों के नीचे एक लट्टू, सब एक ही टुकड़े के हों और फिर दो शाखों के नीचे एक लट्टू, सब एक ही टुकड़े के हों और फिर दो शाखों के नीचे एक लट्टू, सब एक ही टुकड़े के हों शमा'दान की छहों बाहर को निकली हुई शाखें ऐसी ही हों। ³⁶ या'नी लट्टू और शाखें और शमा'दान सब एक ही टुकड़े के बने हों, यह सबका सब खालिस सोने के एक ही टुकड़े से गढ़ कर बनाया जाए। ³⁷ और तू उसके लिए सात चराग़ बनाना, यही चराग़ जलाए जाएँ ताकि

शमा'दान के सामने रौशनी हो। ³⁸ और उसके गुलगीर और गुलदान खालिस सोने के हों। ³⁹ शमा'दान और यह सब बर्तन एक षकिन्तार खालिस सोने के बने हुए हों। ⁴⁰ और देख, तू इनको ठीक इनके नमूने के मुताबिक़ जो तुझे पहाड़ पर दिखाया गया है बनाना।

26

2222 22 2222 22222222

¹ “और तू घर के लिए दस पर्दे बनाना; यह बटे हुए बारीक कतान और आसमानी किरमिज़ी और सुख़ रंग के कपड़ों के हों और इनमें किसी माहिर उस्ताद से करुबियों की सूरत कढ़वाना। ² हर पर्दे की लम्बाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ हो और सब पर्दे एक ही नाप के हों। ³ और पाँच पर्दे एक दूसरे से जोड़े जाएँ और बाक़ी पाँच पर्दे भी एक दूसरे से जोड़े जाएँ। ⁴ और तू एक बड़े पर्दे के हाशिये में बटे हुए किनारे की तरफ़ जो जोड़ा जाएगा आसमानी रंग के तुकमे बनाना और ऐसे ही दूसरे बड़े पर्दे के हाशिये में जो इसके साथ मिलाया जाएगा तुकमे बनाना। ⁵ पचास तुकमे एक बड़े पर्दे में बनाना और पचास ही दूसरे बड़े पर्दे के हाशिये में जो इसके साथ मिलाया जाएगा बनाना, और सब तुकमे एक दूसरे के आमने सामने हों। ⁶ और सोने की पचास घुन्डियाँ बना कर इन पर्दों को इन्हीं घुन्डियों से एक दूसरे के साथ जोड़ देना, तब वह घर एक हो जाएगा। ⁷ और तू बकरी के बाल के पर्दे बनाना ताकि घर के ऊपर खेमा का काम दें, ऐसे पर्दे ग्यारह हों। ⁸ और हर पर्दे की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ हो, वह ग्यारह हों, पर्दे एक ही नाप के हों। ⁹ और तू पाँच पर्दे एक जगह और छः पर्दे एक जगह आपस में जोड़ देना, और छूटे पर्दे को खेमे के सामने मोड़ कर दोहरा कर देना। ¹⁰ और तू पचास तुकमे उस पर्दे के हाशिये में, जो बाहर से मिलाया जाएगा और पचास ही तुकमे दूसरी तरफ़ के पर्दे के हाशिये में जो बाहर से मिलाया जाएगा बनाना। ¹¹ और पीतल की पचास घुन्डियाँ बना कर इन घुन्डियों को तुकमों में पहना देना और खेमे को जोड़ देना ताकि वह एक हो जाए। ¹² और खेमे के पर्दों का लटका हुआ हिस्सा, या'नी आधा पर्दा जो बचा रहेगा वह घर की पिछली तरफ़ लटका रहे। ¹³ और खेमे के पर्दों की लम्बाई के बाक़ी हिस्से में से एक हाथ पर्दा इधर से और एक हाथ पर्दा उधर से घर की दोनों तरफ़ इधर और उधर लटका रहे ताकि उसे ढाँक ले। ¹⁴ और तू इस खेमे के लिए मेंढों की सुख़ रंगी हुई खालों का गिलाफ़ और उसके ऊपर *तुख़्सों की खालों का गिलाफ़ बनाना। ¹⁵ “और तू घर के लिए कीकर की

लकड़ी के तख्ते बनाना कि खड़े किए जाएँ। ¹⁶ हर तख्ते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ हो। ¹⁷ और हर तख्ते में दो — दो चूलें हों जो एक दूसरे से मिली हुई हों, घर के सब तख्ते इसी तरह के बनाना। ¹⁸ और घर के लिए जो तख्ते तू बनाएगा उनमें से बीस तख्ते दाख्खनी रुख के लिए हों। ¹⁹ और इन बीसों तख्तों के नीचे चाँदी के चालीस खाने बनाना या'नी हर एक तख्ते के नीचे उसकी दोनों चूलों के लिए दो — दो खाने। ²⁰ और घर की दूसरी तरफ या'नी उत्तरी रुख के लिए बीस तख्ते हों। ²¹ और उनके लिए भी चाँदी के चालीस ही खाने हों, या'नी एक — एक तख्ते के नीचे दो — दो खाने। ²² और घर के पिछले हिस्से के लिए पश्चिमी रुख में छः तख्ते बनाना। ²³ और उसी पिछले हिस्से में घर के कोनों के लिए दो तख्ते बनाना। ²⁴ यह नीचे से दोहरे हों और इसी तरह ऊपर के सिरे तक आकर एक हल्के में मिलाए जाएँ, दोनों तख्ते इसी ढब के हों, यह तख्ते दोनों कोनों के लिए होंगे। ²⁵ तब आठ तख्ते और चाँदी के सोलह खाने होंगे, या'नी एक एक तख्ते के लिए दो दो खाने। ²⁶ “और तू कीकर की लकड़ी के बेन्डे बनाना, पाँच बेन्डे घर के एक पहलू के तख्तों के लिए, ²⁷ और पाँच बेन्डे घर के दूसरे पहलू के तख्तों के लिए, और पाँच बेन्डे घर के पिछले हिस्से या'नी पश्चिमी रुख के तख्तों के लिए, ²⁸ और वस्ती बेन्डा जो तख्तों के बीच में हो, वह खेमे की एक हद से दूसरी हद तक पहुँचे। ²⁹ और तू तख्तों को सोने से मढ़ना और बेन्डों के घरों के लिए सोने के कड़े बनाना और बेन्डों को भी सोने से मढ़ना। ³⁰ और तू घर को उसी नमूने के मुताबिक बनाना जो पहाड़ पर दिखाया गया है। ³¹ “और तू आसमानी — अर्गवानी और सुख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का एक पर्दा बनाना, और उसमें किसी माहिर उस्ताद से करुबियों की सूरत कढ़वाना। ³² और उसे सोने से मढ़े हुए कीकर के चार सुतूनों पर लटकाना, इनके कुन्डे सोने के हों और चाँदी के चार खानों पर खड़े किए जाएँ, ³³ और पर्दे को घुन्डियों के नीचे लटकाना और शहादत के सन्दूक को वहीं पर्दे के अन्दर ले जाना और यह पर्दा तुम्हारे लिए पाक मक्काम को पाकतरीन मक्काम से अलग करेगा। ³⁴ और तू सरपोश को पाकतरीन मक्काम में शहादत के सन्दूक पर रखना। ³⁵ और मेज़ को पर्दे के बाहर रख कर शमा'दान को उसके सामने घर की दाख्खनी रुख में रखना या'नी मेज़ उत्तरी रुख में रखना। ³⁶ और तू एक पर्दा खेमे के दरवाज़े के लिए आसमानी अर्गवानी और सुख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाना और उस पर बेल बूटे कढ़े हुए हों। ³⁷ और इस पर्दे के लिए कीकर की लकड़ी के पाँच

सुतून बनाना और उनको सोने से मढ़ना और उनके कुन्डे सोने के हों, जिनके लिए तू पीतल के पाँच खाने ढाल कर बनाना।

27

१ ११११ ११११ ११११११११ ११ ११११११११११
११ ११११११११

¹ “और तू कीकर की लकड़ी की कुर्बानगाह पाँच हाथ लम्बी और पाँच हाथ चौड़ी बनाना; वह कुर्बानगाह चौखुन्टी और उसकी ऊँचाई तीन हाथ हो। ² और तू उसके लिए उसके चारों कोनों पर सींग बनाना, और वह सींग और कुर्बानगाह सब एक ही टुकड़े के हों और तू उनको पीतल से मढ़ना। ³ और तू उसकी राख उठाने के लिए देगें और बेलचे और कटोरे और सीखें और अन्गुठियाँ बनाना; उसके सब बर्तन पीतल के बनाना। ⁴ और उसके लिए पीतल की जाली की झंजरी बनाना और उस जाली के चारों कोनों पर पीतल के चार कड़े लगाना। ⁵ और उस झंजरी को कुर्बानगाह की चारों तरफ के किनारे के नीचे इस तरह लगाना कि वह ऊँचाई में कुर्बानगाह की आधी दूर तक पहुँचे। ⁶ और तू कुर्बानगाह के लिए कीकर की लकड़ी की चोबें बनाकर उनको पीतल से मढ़ना। ⁷ और तू उन चोबों को कड़ों में पहना देना कि जब कभी कुर्बानगाह उठाई जाए, वह चोबें उसकी दोनों तरफ रहें। ⁸ तख्तों से वह कुर्बानगाह बनाना और वह खोखली हो। वह उसे ऐसी ही बनाएँ जैसी तुझे पहाड़ पर दिखाई गई है।

११११ ११ ११११ ११११११११

⁹ “फिर तू घर के लिए सहन बनाना, उस सहन की दाख्खनी तरफ के लिए बारीक बटे हुए कतान के पर्दे हों जो मिला कर सौ हाथ लम्बे हों; यह सब एक ही रुख में हों। ¹⁰ और उनके लिए बीस सुतून बनें और सुतूनों के लिए पीतल के बीस ही खाने बनें और इन सुतूनों के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की हों। ¹¹ इसी तरह उत्तरी रुख के लिए पर्दे सब मिला कर लम्बाई में सौ हाथ हों, उनके लिए भी बीस ही सुतून और सुतूनों के लिए बीस ही पीतल के खाने बनें और सुतूनों के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की हों। ¹² और सहन की पश्चिमी रुख की चौड़ाई में पचास हाथ के पर्दे हों, उनके लिए दस सुतून और सुतूनों के लिए दस ही खाने बनें। ¹³ और पूर्वी रुख में सहन हो। ¹⁴ और सहन के दरवाज़े के एक पहलू के लिए पन्द्रह हाथ के पर्दे हों, जिनके लिए तीन सुतून और सुतून के लिए तीन ही खाने बनें। ¹⁵ और दूसरे पहलू के लिए भी पन्द्रह हाथ के पर्दे और तीन सुतून और तीन ही खाने बनें। ¹⁶ और सहन के दरवाज़े के लिए बीस हाथ

का एक पर्दा हो जो आसमानी, अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बना हुआ हो और उस पर बेल — बूटे कढ़े हों, उसके सुतून चार और सुतूनों के खाने भी चार ही हों। ¹⁷ और सहन के आस पास सब सुतून चाँदी की पट्टियों से जड़े हुए हों और उनके कुन्डे चाँदी के और उनके खाने पीतल के हों। ¹⁸ सहन की लम्बाई सौ हाथ और चौड़ाई हर जगह पचास हाथ और कनात की ऊँचाई पाँच हाथ ही, पर्दे बारीक बटे हुए कतान के और सुतूनों के खाने पीतल के हों। ¹⁹ घर के तरह तरह के काम के सब सामान और वहाँ की मेखें और सहन की मेखें यह सब पीतल के हों।

२२२२२ २२ २२२२ २२२२२

²⁰ 'और तू बनी — इस्राईल को हुक्म देना कि वह तेरे पास कूट कर निकाला हुआ जैतून का खालिस तेल रोशनी के लिए लाएँ ताकि चराग हमेशा जलता रहे। ²¹ खेमा-ए-इजितमा'अ में उस पर्दे के बाहर, जो शहादत के सन्दूक के सामने होगा, हारून और उसके बेटे शाम से सुबह तक शमा 'दान को खुदावन्द के सामने अरास्ता रखें, यह दस्तूर — उल'अमल बनी — इस्राईल के लिए नसल — दर — नसल हमेशा काईम रहेगा।

28

२२२२२२ २२ २२२२२२

¹ “और तू बनी — इस्राईल में से हारून को जो तेरा भाई है, और उसके साथ उसके बेटों को अपने नजदीक कर लेना; ताकि हारून और उसके बेटे नदब और अबीहू और इली'एलियाज़र और ऐतामर कहानत के 'उहदे पर होकर मेरी खिदमत करें। ² और तू अपने भाई हारून के लिए 'इज्जत और ज़ीनत के लिए पाक लिबास बना देना। ³ और तू उन सब रोशन ज़मीरों से जिनको मैंने हिकमत की रूह से भरा है, कह कि वह हारून के लिए लिबास बनाएँ ताकि वह पाक होकर मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दे। ⁴ और जो लिबास वह बनाएँगे यह है: या'नी सीना बन्द और अफ़ूद और जुब्बा और चार खाने का कुरता, और 'अमामा, और कमरबन्द, वह तेरे भाई हारून और उसके बेटों के लिए यह पाक लिबास बनाएँ, ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दे। ⁵ और वह सोना और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़े और महीन कतान लें।

२२२२२ २२ २२२२२२

⁶ “और वह अफ़ोद सोने और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाएँ, जो किसी माहिर उस्ताद के हाथ का काम हो।

⁷ और वह इस तरह से जोड़ा जाए कि उसके दोनों मोँदों के सिरे आपस में मिला दिए जाएँ। ⁸ और उसके ऊपर जो कारीगरी से बना हुआ पटका उसके बाँधने के लिए होगा, उस पर अफ़ोद की तरह काम हो और वह उसी कपड़े का हो, और सोने और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बुना हुआ हो। ⁹ और तू दो संग-ए-सुलेमानी लेकर उन पर इस्राईल के बेटों के नाम कन्दा कराना। ¹⁰ उनमें से छः के नाम तो एक पत्थर पर और बाक़ियों के छः नाम दूसरे पत्थर पर उनकी पैदाइश की तरतीब के मुवाफ़िक हों। ¹¹ तू पत्थर के कन्दाकार को लगा कर अँगूठी के नक्श की तरह इस्राईल के बेटों के नाम उन दोनों पत्थरों पर खुदवा कर के उनको सोने के खानों में जड़वाना। ¹² और दोनों पत्थरों को अफ़ोद के दोनों मोँदों पर लगाना ताकि यह पत्थर इस्राईल के बेटों की यादगारी के लिए हों, और हारून उनके नाम खुदावन्द के सामने अपने दोनों कन्धों पर यादगारी के लिए लगाए रहे। ¹³ और तू सोने के खाने बनाना, ¹⁴ और खालिस सोने की दो ज़ज़ीरें डोरी की तरह गुन्धी हुई बनाना और इन गुन्धी हुई ज़ंजीरों को खानों में जड़ देना।

२२२२२२२२ २२ २२२२२२

¹⁵ “और 'अदल का सीना बन्द किसी माहिर उस्ताद से बनवाना और अफ़ोद की तरह सोने और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाना। ¹⁶ वह चौखुन्टा और दोहरा हो, उसकी लम्बाई एक बालिशत और चौड़ाई भी एक ही बालिशत हो। ¹⁷ और चार कतारों में उस पर जवाहर जड़ना, पहली कतार में याकूत — ए — सुर्ख और पुखराज और गौहर — ए — शब चराग हो ¹⁸ दूसरी कतार में ज़मूरुद और नीलम और हीरा, ¹⁹ तीसरी कतार में लश्म और यश्म और याकूत, ²⁰ चौथी कतार में फ़ीरोज़ा और संग — ए — सुलेमानी और ज़बरजद; यह सब सोने के खानों में जड़े जाएँ। ²¹ यह जवाहर इस्राईल के बेटों के नामों के मुताबिक़ शुमार में बारह हों और अँगूठी के नक्श की तरह यह नाम जो बारह क़बीलों के नाम होंगे, उन पर खुदवाए जाएँ। ²² और तू सीनाबन्द पर डोरी की तरह गुन्धी हुई खालिस सोने की दो ज़ंजीरें लगाना। ²³ और सीनाबन्द के लिए सोने के दो हल्के बना कर उनको सीनाबन्द के दोनों सिरों पर लगाना; ²⁴ और सोने की दोनों गुन्धी हुई ज़ंजीरों को उन दोनों हल्कों में जो सीनाबन्द के दोनों सिरों पर होंगे लगा देना। ²⁵ और दोनों गुन्धी हुई ज़ंजीरों के बाक़ी दोनों सिरों को दोनों पत्थरों के खानों में जड़ कर उनको अफ़ोद के दोनों मोँदों पर सामने की तरफ़ लगा देना।

26 और सोने के और दो हल्के बनाकर उनको सीनाबन्द के दोनों सिरों के उस हाशिये में लगाना जो अफ़ोद के अन्दर की तरफ़ है। 27 फिर सोने के दो हल्के और बनाकर उनको अफ़ोद के दोनों मोंदों के नीचे उसके अगले हिस्से में लगाना जहाँ अफ़ोद जोड़ा जाएगा, ताकि वह अफ़ोद के कारीगरी से बुने हुए पटके के ऊपर रहे। 28 और वह सीनाबन्द को लेकर उसके हल्कों को एक नीले फ़ीते से बाँधे, ताकि यह सीनाबन्द अफ़ोद के कारीगरी से बने हुए पटके के ऊपर भी रहे और अफ़ोद से भी अलग न होने पाए। 29 और हारून इस्राईल के बेटों के नाम 'अदल के सीनाबन्द पर अपने सीने पर पाक मक़ाम में दाख़िल होने के वक़्त खुदावन्द के आमने सामने लगाए रहे, ताकि हमेशा उनकी यादगारी हुआ करे। 30 और तू 'अदल के सीनाबन्द में *ऊरीम और तुम्मीम को रखना और जब हारून खुदावन्द के सामने जाए तो यह उसके दिल के ऊपर हों, यूँ हारून बनी — इस्राईल के फ़ैसले को अपने दिल के ऊपर खुदावन्द के आमने सामने हमेशा लिए रहेगा।

28:26-27 28:28-29 28:30-31

31 “और तू अफ़ोद का जुब्बा बिल्कुल आसमानी रंग का बनाना। 32 और उसका गिरेबान बीच में हो, और ज़िरह के गिरेबान की तरह उसके गिरेबान के चारों तरफ़ बुनी हुई गोट हो ताकि वह फटने न पाए। 33 और उसके दामन के घेर में चारों तरफ़ आसमानी, अर्ग़वानी और सुख़ रंग के अनार बनाना और उनके बीच चारों तरफ़ सोने की घंटियाँ लगाना। 34 या'नी जुब्बे के दामन के पूरे घेर में एक सोने की घन्टी हो और उसके बाद अनार, फिर एक सोने की घन्टी हो और उसके बाद अनार। 35 इस जुब्बे को हारून ख़िदमत के वक़्त पहना करे, ताकि जब — जब वह पाक मक़ाम के अन्दर खुदावन्द के सामने जाए या वहाँ से निकले तो उसकी आवाज़ सुनाई दे, कहीं ऐसा न हो कि वह मर जाए। 36 “और तू ख़ालिस सोने का एक पत्तर बना कर उस पर अँगूठी के नक्श की तरह यह खुदवाना, खुदावन्द के लिए मुक़द्दस। 37 और उसे नीले फ़ीते से बाँधना, ताकि वह 'अमामे पर या'नी 'अमामे के सामने के हिस्से पर हो। 38 और यह हारून की पेशानी पर रहे ताकि जो कुछ बनी — इस्राईल अपने पाक हृदियों के ज़रिए' से पाक ठहराएँ, उन पाक ठहराई हुई चीज़ों की बदी हारून उठाए और यह उसकी पेशानी पर हमेशा रहे, ताकि वह खुदावन्द के सामने मक़बूल हों। 39 “और कुरता बारीक कतान का बुना हुआ और चार खाने का हो और 'अमामा भी बारीक कतान ही का

बनाना, और एक कमरबन्द बनाना जिस पर बेल बूटे कढ़े हों। 40 “और हारून के बेटों के लिए कुरते बनाना और 'इज्जत और ज़ीनत के लिए उनके लिए कमरबन्द और पगड़ियाँ बनाना। 41 और तू यह सब अपने भाई हारून और उसके साथ उसके बेटों को पहनाना, और उनको मसह और मख्सूस और पाक करना ताकि वह सब मेरे लिए काहिन की ख़िदमत को अन्जाम दें। 42 और तू उनके लिए कतान के पाजामे बना देना ताकि उनका बदन ढंका रहे, यह कमर से रान तक के हों। 43 और हारून और उसके बेटे जब — जब खेमा — ए — इजितमा'अ में दाख़िल हों या ख़िदमत करने को पाक मक़ाम के अन्दर कुर्बानगाह के नज़दीक जाएँ, उनको पहना करें कहीं ऐसा न हो कि गुनाहगार ठहरें और मर जाएँ। यह दस्तूर — उल — 'अमल उसके और उसकी नसल के लिए हमेशा रहेगा।

29

29:1-2 29:3-4 29:5-6 29:7-8 29:9-10 29:11-12 29:13-14 29:15-16 29:17-18 29:19-20 29:21-22 29:23-24 29:25-26 29:27-28 29:29-30 29:31-32 29:33-34 29:35-36 29:37-38 29:39-40 29:41-42 29:43-44 29:45-46 29:47-48 29:49-50 29:51-52 29:53-54 29:55-56 29:57-58 29:59-60 29:61-62 29:63-64 29:65-66 29:67-68 29:69-70 29:71-72 29:73-74 29:75-76 29:77-78 29:79-80 29:81-82 29:83-84 29:85-86 29:87-88 29:89-90 29:91-92 29:93-94 29:95-96 29:97-98 29:99-100

1 और उनको पाक करने की खातिर ताकि वह मेरे लिए काहिन की ख़िदमत को अन्जाम दें, तू उनके लिए यह करना कि एक बछड़ा और दो बे — 'ऐब मेंढे लेना, 2 और बेख़मीरी रोटी और बे — ख़मीर के कुल्चे जिनके साथ तेल मिला हो और तेल की चुपड़ी हुई बे — ख़मीरी चपातियाँ लेना। यह सब गेहूँ के मेदे की बनाना। 3 और इनको एक टोकरी में रख कर उस टोकरी को बछड़े और दोनों मेंढों समेत आगे ले आना। 4 फिर हारून और उसके बेटों को खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर लाकर उनको पानी से नहलाना। 5 और वह लिबास लेकर हारून को कुरता और अफ़ोद का जुब्बा और अफ़ोद और सीनाबन्द पहनाना, और अफ़ोद का कारीगरी से बुना हुआ कमरबन्द उसके बांध देना। 6 और 'अमामे को उसके सिर पर रख कर उस 'अमामे के ऊपर पाक ताज लगा देना। * 7 और मसह करने का तेल लेकर उसके सिर पर डालना और उसको मसह करना। 8 फिर उसके बेटों को आगे लाकर उनको कुरते पहनाना। 9 और हारून और उसके बेटों के कमरबन्द लपेट कर उनके पगड़ियाँ बाँधना ताकि कहानत के 'उहदे पर हमेशा के लिए उनका हक़ रहे; और हारून और उसके बेटों को मख्सूस करना। 10 “फिर तू उस बछड़े को खेमा — ए — इजितमा'अ के सामने लाना, और हारून और उसके बेटे अपने हाथ उस बछड़े के सिर पर रखें। 11 फिर उस बछड़े को खुदावन्द के आगे खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर ज़बह करना। 12 और उस बछड़े के खून में

* 28:30 28:30 उरिम और तुमीम के ज़रीये सरदार काहिन खुदा की मर्ज़ी का फ़ैसला कर सकते थे

* 29:6 29:6 आयत 26:36 को देखें

से कुछ लेकर उसे अपनी उंगली से कुर्बानगाह के सींगों पर लगाना और बाक़ी सारा खून कुर्बानगाह के पाये पर उडेल देना। ¹³ फिर उस चर्बी को जिससे अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं, और जिगर पर की झिल्ली को और दोनों गुदाँ को और उनके ऊपर की चर्बी को लेकर सब कुर्बानगाह पर जलाना। ¹⁴ लेकिन उस बछड़े के गोश्त और खाल और गोबर को खेमागाह के बाहर आग से जला देना इसलिए कि यह खता की कुर्बानी है। ¹⁵ “फिर तू एक मेंढे को लेना, और हारून और उसके बेटे अपने हाथ उस मेंढे के सिर पर रखें। ¹⁶ और तू उस मेंढे को जबह करना और उसका खून लेकर कुर्बानगाह पर चारों तरफ़ छिड़कना। ¹⁷ और तू मेंढे को टुकड़े — टुकड़े काटना और उसकी अंतड़ियों और पायों को धो कर उसके टुकड़ों और उसके सिर के साथ मिला देना। ¹⁸ फिर इस पूरे मेंढे को कुर्बानगाह पर जलाना। यह खुदावन्द के लिए सोख्तनी कुर्बानी है। यह राहतअंगेज़ खुशबू या'नी खुदावन्द के लिए आतिशीन कुर्बानी है। ¹⁹ “फिर दूसरे मेंढे को लेना और हारून और उसके बेटे अपने हाथ उस मेंढे के सिर पर रखें। ²⁰ और तू इस मेंढे को जबह करना और उसके खून में से कुछ लेकर हारून और उसके बेटों के दहने कान की लौ पर और दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाना, और खून को कुर्बानगाह पर चारों तरफ़ छिड़क देना। ²¹ और कुर्बानगाह पर के खून और मसह करने के तेल में से कुछ कुछ लेकर हारून और उसके लिबास पर, और उसके साथ उसके बेटों और उनके लिबास पर छिड़कना, तब वह अपने लिबास समेत और उसके साथ ही उसके बेटे अपने — अपने लिबास समेत पाक होंगे। ²² और तू मेंढे की चर्बी और मोटी दुम को, और जिस चर्बी से अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं उसको और जिगर पर की झिल्ली को, और दोनों गुदाँ को और उनके ऊपर की चर्बी को और दहनी रान को लेना; इस लिए कि यह खास मेंढा है। ²³ और बेखमीरी रोटी की टोकरी में से जो खुदावन्द के आगे रखी होगी, रोटी का एक गिरदा और एक कुल्चा जिसमें तेल मिला हुआ हो और एक चपाती लेना। ²⁴ और इन सभी को हारून और उसके बेटों के हाथों पर रख कर इनको खुदावन्द के सामने हिलाना, ताकि यह हिलाने का हदिया हो। ²⁵ फिर इनको उनके हाथों से लेकर कुर्बानगाह पर सोख्तनी कुर्बानी के ऊपर जला देना, ताकि वह खुदावन्द के आगे राहतअंगेज़ खुशबू हो; यह खुदावन्द के लिए आतिशीन कुर्बानी है। ²⁶ “और तू हारून के खास मेंढे का सीना लेकर उसको खुदावन्द के सामने हिलाना ताकि वह हिलाने का हदिया हो, यह तेरा हिस्सा ठहरेगा। ²⁷ और तू हारून और

उसके बेटों के खास मेंढे के हिलाने के हदिये के सीने को जो हिलाया जा चुका है, और उठाए जाने के हदिये की रान को जो उठाई जा चुकी है, लेकर उन दोनों को पाक ठहराना, ²⁸ ताकि यह सब बनी — इस्राईल की तरफ़ से हमेशा के लिए हारून और उसके बेटों का हक़ हो क्योंकि यह उठाए जाने का हदिया है। इसलिए यह बनी — इस्राईल की तरफ़ से उनकी सलामती के ज़बीहों में से उठाए जाने का हदिया होगा, जो उनकी तरफ़ से खुदावन्द के लिए उठाया गया है। ²⁹ और हारून के बाद उसके पाक लिबास उसकी औलाद के लिए होंगे ताकि उन ही में वह मसह — ओ — मख्सूस किए जाएँ। † ³⁰ उसका जो बेटा उसकी जगह काहिन हो वह जब पाक मक़ाम में खिदमत करने को खेमा — ए — इजितमा'अ में दाखिल हो तो उनको सात दिन तक पहने रहे। ³¹ “और तू खास मेंढे को लेकर उसके गोश्त को किसी पाक जगह में उबालना। ³² और हारून और उसके बेटे मेंढे का गोश्त और टोकरी की रोटियाँ खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर खाएँ। ³³ और जिन चीज़ों से उनको मख्सूस और पाक करने के लिए कफ़ारा दिया जाए वह उनको भी खाएँ, लेकिन अजनबी शख्स उनमें से कुछ न खाने पाए क्योंकि यह चीज़ें पाक हैं। ³⁴ और अगर मख्सूस करने के गोश्त या रोटी में से कुछ सुबह तक बचा रह जाए तो उस बचे हुए को आग से जला देना, वह हरगिज़ न खाया जाए इसलिए कि वह पाक है। ³⁵ “और तू हारून और उसके बेटों के साथ जो कुछ मैंने हुक्म दिया है वह सब 'अमल में लाना, और सात दिन तक उनको मख्सूस करते रहना। ³⁶ और तू हर रोज़ खता की कुर्बानी के बछड़े को कफ़ारे के लिए जबह करना; और तू कुर्बानगाह को उसके कफ़ारा देने के वक़्त साफ़ करना, और उसे मसह करना ताकि वह पाक हो जाए, ³⁷ तू सात दिन तक कुर्बानगाह के लिए कफ़ारा देना और उसे पाक करना तो कुर्बानगाह निहायत पाक हो जाएगी, और जो कुछ उससे छू जाएगा वह भी पाक ठहरेगा ³⁸ “और तू हर रोज़ सदा एक — एक बरस के दो — दो बर्रे कुर्बानगाह पर चढ़ाया करना। ³⁹ एक बर्रा सुबह को और दूसरा बर्रा ज़वाल और गुरुब के बीच चढ़ाना। ⁴⁰ और एक बर्रे के साथ ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा देना, जिसमें हीन के चौथे हिस्से की मिक्दार में कूट कर निकाला हुआ तेल मिला हुआ हो और हीन के चौथे हिस्से की मिक्दार में तपावन के लिए मय भी देना। ⁴¹ और तू दूसरे बर्रे को ज़वाल और गुरुब के बीच चढ़ाना और उसके साथ सुबह की तरह नज़र की कुर्बानी और वैसा ही तपावन देना,

† 29:29 29:29 कहानत उन के लिए अब्दी मख्सूसियत होगी

जिससे वह खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू और आतिशीन कुर्बानी ठहरे। ⁴² ऐसी ही सोख्तनी कुर्बानी तुम्हारी नसल दर नसल खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर खुदावन्द के आगे हमेशा हुआ करे। वहाँ मैं तुम से मिलूँगा और तुझ से बातें करूँगा। ⁴³ और वहीं मैं बनी इस्राईल से मुलाकात करूँगा और वह मक़ाम मेरे जलाल से पाक होगा। ⁴⁴ और मैं खेमा — ए — इजितमा'अ को और कुर्बानगाह को पाक करूँगा, और मैं हारून और उसके बेटों को पाक करूँगा ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत की अन्जाम दें। ⁴⁵ और मैं बनी — इस्राईल के बीच सुकूनत करूँगा और उनका खुदा हूँगा। ⁴⁶ तब वह जान लेंगे कि मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँ जो उनको मुल्क — ए — मिस्र से इसलिए निकाल कर लाया कि मैं उनके बीच सुकूनत करूँ। मैं ही खुदावन्द उनका खुदा हूँ।

30

खुर्ज 30:1-10

¹ और तू खुशबू जलाने के लिए कीकर की लकड़ी की एक कुर्बानगाह बनाना। ² उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ हो, वह चौखुन्टी रहे और उसकी ऊँचाई दो हाथ हो और उसके सींग उसी टुकड़े से बनाए जाएँ। ³ और तू उसकी ऊपर की सतह और चारों पहलूओं को जो उसके चारों ओर हैं, और उसके सींगों को खालिस सोने से मढ़ना और उसके लिए चारों ओर एक ज़रीन ताज बनाना। ⁴ और तू उस ताज के नीचे उसके दोनों पहलूओं में सोने के दो कड़े उसकी दोनों तरफ़ बनाना। वह उसके उठाने की चोबों के लिए खानों का काम देंगे। ⁵ और चोबों कीकर की लकड़ी की बना कर उनको सोने से मढ़ना। ⁶ और तू उसको उस पर्दे के आगे रखना जो शहादत के सन्दूक के सामने है; वह सरपोश के सामने रहे जो शहादत के सन्दूक के ऊपर है, जहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा*। ⁷ “इसी पर हारून खुशबूदार खुशबू जलाया करे, हर सुबह चरागों को ठीक करते वक़्त खुशबू जलाएँ। ⁸ और ज़वाल और गुरुब के बीच भी जब हारून चरागों को रोशन करे तब खुशबू जलाए, यह खुशबू खुदावन्द के सामने तुम्हारी नसल — दर — नसल हमेशा जलाया जाए। ⁹ और तुम उस पर और तरह की खुशबू न जलाना, न उस पर सोख्तनी कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी चढ़ाना और कोई तपावन भी उस पर न तपाना। ¹⁰ और हारून

साल में एक बार उसके सींगों पर कफ़फ़ारा दे। तुम्हारी नसल — दर — नसल साल में एक बार इस ख़ता की कुर्बानी के खून से जो कफ़फ़ारे के लिए हो, उसके लिए कफ़फ़ारा दिया जाए। यह खुदावन्द के लिए सबसे ज्यादा पाक है।”

खुर्ज 30:11-12

¹¹ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, ¹² “जब तू बनी — इस्राईल का शुमार करे तो जितनों का शुमार हुआ हो वह फ़ी — मर्द शुमार के वक़्त अपनी जान का फ़िदिया खुदावन्द के लिए दें, ताकि जब तू उनका शुमार कर रहा हो उस वक़्त कोई वबा उनमें फैलने न पाए। ¹³ हर एक जो निकल — निकल कर शुमार किए हुआओं में मिलता जाए, वह मक़दिस की मिस्काल के हिसाब से नीम मिस्काल दे। मिस्काल बीस †ज़ीरहों की होती है। यह नीम मिस्काल खुदावन्द के लिए नज़र है। ¹⁴ जितने बीस बरस के या इससे ज्यादा उम्र के निकल निकल कर शुमार किए हुआओं में मिलते जाएँ, उनमें से हर एक खुदावन्द की नज़र दे। ¹⁵ जब तुम्हारी जानों के कफ़फ़ारे के लिए खुदावन्द की नज़र दी जाए, तो दौलतमन्द नीम मिस्काल से ज्यादा न दे और न ग़रीब उससे कम दे। ¹⁶ और तू बनी — इस्राईल से कफ़फ़ारे की नक़दी लेकर उसे खेमा — ए — इजितमा'अ के काम में लगाना। ताकि वह बनी — इस्राईल की तरफ़ से तुम्हारी जानों के कफ़फ़ारे के लिए खुदावन्द के सामने यादगार हो।”

खुर्ज 30:17-18

¹⁷ फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, ¹⁸ “तू धोने के लिए पीतल का एक हौज़ और पीतल ही की उसकी कुर्सी बनाना, और उसे खेमा — ए — इजितमा'अ और कुर्बानगाह के बीच में रख कर उसमें पानी भर देना। ¹⁹ और हारून और उसके बेटे अपने हाथ पाँव उससे धोया करें। ²⁰ खेमा — ए — इजितमा'अ में दाख़िल होते वक़्त पानी से धो लिया करें ताकि हलाक न हों, या जब वह कुर्बानगाह के नज़दीक खिदमत के लिए या'नी खुदावन्द के लिए सोख्तनी कुर्बानी पेश करने को आएँ, ²¹ तो अपने — अपने हाथ पाँव धो लें ताकि मर न जाएँ। यह उसके और उसकी औलाद के लिए नसल — दर — नसल हमेशा की रिवायत हो।”

खुर्ज 30:22-23

²² और खुदावन्द ने मूसा से कहा, ²³ कि तू मक़दिस की मिस्काल के हिसाब से खास — खास खुशबूदार

* 30:6 30:6 तू इस कुर्बानगाह को लटके हुए परदे के मद्ख़ल पर पाक मक़ाम और पाक तरीन मक़ाम के बीच रखना, और शहादत का संदुक और कफ़फ़ारे का सर्पोशजो सोने का बना है उन्हें परदे के अंदर रखना, वहाँ मैं तुम से मिला करूँगा — † 30:13 30:13 बीस ज़ीर कातोल सब से कम होता था लगभग 0:6 ग्रामबीस ज़ीर कातोल सब से कम होता था लगभग 0:6 ग्राम ‡ 30:23 30:23 6 किलोग्राम

मसाल्ले लेना; या'नी अपने आप निकला हुआ मुर
पाँच सौ मिस्काल, और उसका आधा या'नी ढाई
सौ मिस्काल दारचीनी, और खुशबूदार अगर ढाई सौ
मिस्काल, ²⁴ और तज पाँच सौ मिस्काल, और जैतून का
तेल एक हीन; ²⁵ और तू उनसे मसह करने का पाक तेल
बनाना, या'नी उनकी गन्धी की हिकमत के मुताबिक
मिला कर एक खुशबूदार रौगन तैयार करना। यही मसह
करने का पाक तेल होगा। ²⁶ इसी से तू खेमा — ए —
इजितमा'अ को, और शहादत के सन्दूक को, ²⁷ और
मेज़ को उसके बर्तन के साथ, और शमा'दान को उसके
बर्तन के साथ, और खुशबू जलाने की कुर्बानगाह को
²⁸ और सोख्तनी कुर्बानी पेश करने के मज़बह को उसके
सब बर्तन के साथ, और हौज़ को और उसकी कुर्सी को
मसह करना; ²⁹ और तू उनको पाक करना ताकि वह
निहायत पाक हो जाएँ, जो कुछ उनसे छू जाएगा वह
पाक ठहरेगा। ³⁰ “और तू हारून और उसके बेटों को
मसह करना और उनको पाक करना ताकि वह मेरे लिए
काहिन की खिदमत को अन्जाम दें। ³¹ और तू बनी —
इस्राईल से कह देना, ‘यह तेल मेरे लिए तुम्हारी नसल
दर नसल मसह करने का पाक तेल होगा। ³² यह किसी
आदमी के जिस्म पर न डाला जाए, और न तुम कोई और
रौगन इसकी तरकीब से बनाना; इस लिए के यह पाक है
और तुम्हारे नज़दीक पाक ठहरे। ³³ जो कोई इसकी तरह
कुछ बनाए या इसमें, से कुछ किसी अजनबी पर लगाए
वह अपनी कौम में से काट डाला जाए।”

XXXXXXXXXX XXXXXXXXXXXX XXXXXXX

³⁴ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, “तू खुशबूदार
मसाल्ले मुर और मस्तकी और लौन और खुशबूदार
मसाल्ले के साथ खालिस लुबान वज्ज में बराबर —
बराबर लेना, ³⁵ और नमक मिलाकर उनसे गन्धी की
हिकमत के मुताबिक खुशबूदार रोगन की तरह साफ़
और पाक खुशबू बनाना। ³⁶ और इसमें से कुछ खूब
बारीक पीस कर खेमा — ए — इजितमा'अ में शहादत
के सन्दूक के सामने जहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा रखना।
यह तुम्हारे लिए निहायत पाक ठहरे। ³⁷ और जो खुशबू
तू बनाए उसकी तरकीब के मुताबिक तुम अपने लिए
कुछ न बनाना। वह खुशबू तेरे नज़दीक खुदावन्द के
लिए पाक हो। ³⁸ जो कोई सूघने के लिए भी उसकी तरह
कुछ बनाए वह अपनी कौम में से काट डाला जाए।”

31

XXXXXXXXXX: XXXXXXXXXXXX XX XXXXXXXXXXXX

¹ फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, ² “देख मैंने
बज़लीएल — बिन — ऊरी, बिन हूर को यहूदाह के
कबीले में से नाम लेकर बुलाया है। ³ और मैंने उसको
हिकमत और समझ और 'इल्म और हर तरह की कारिगरी
में अल्लाह के रूह से मा'भूर किया है। ⁴ ताकि हुनरमन्दी
के कामों को ईजाद करे, और सोने और चाँदी और पीतल
की चीज़ें बनाए। ⁵ और पत्थर को जड़ने के लिए काटे
और लकड़ी को तराशे, जिससे सब तरह की कारिगरी का
काम हो। ⁶ और देख, मैंने अहलियाब को जो अखीसमक
का बेटा और दान के कबीले में से है उसका साथी मुकर्रर
किया है, और मैंने सब रौशन ज़मीरो के दिल में ऐसी
समझ रखी है कि जिन — जिन चीज़ों का मैंने तुझ
को हुक्म दिया है उन सभी को वह बना सके। ⁷ या'नी
खेमा — ए — इजितमा'अ और शहादत का सन्दूक
और सरपोश जो उसके ऊपर रहेगा, और खेमें का सब
सामान, ⁸ और मेज़ और उसके बर्तन, और खालिस सोने
का शमा'दान और उसके सब बर्तन, और खुशबू जलाने
की कुर्बानगाह, ⁹ और सब बर्तन, और हौज़ और उसकी
कुर्सी, ¹⁰ और बेल — बूटे कढ़े हुए जामे और हारून
काहिन के पाक लिबास और उसके बेटों के लिबास, ताकि
काहिन की खिदमत को अन्जाम दें। ¹¹ और मसह करने
का तेल, और मक़दिस के लिए खुशबूदार मसाल्ले का
खुशबू; इन सभी को वह जैसा मैंने तुझे हुक्म दिया है
वैसा ही बनाएँ।”

XXXXXX XX XXXXXXX

¹² और खुदावन्द ने मूसा से कहा, ¹³ कि तू बनी —
इस्राईल से यह भी कह देना, ‘तुम मेरे सबतों को ज़रूर
मानना, इस लिए कि यह मेरे और तुम्हारे बीच तुम्हारी
नसल दर नसल एक निशान रहेगा, ताकि तुम जानों कि
मैं खुदावन्द तुम्हारा पाक करने वाला हूँ। ¹⁴ “फिर तुम
सबत को मानना इस लिए कि वह तुम्हारे लिए पाक
है, जो कोई उसकी बे हुरमती करे वह ज़रूर मार डाला
जाए। जो उसमें कुछ काम करे वह अपनी कौम में से
काट डाला जाए। ¹⁵ छः दिन काम काज किया जाए
लेकिन सातवाँ दिन आराम का सबत है जो खुदावन्द के
लिए पाक है, जो कोई सबत के दिन काम करे वह ज़रूर
मार डाला जाए। ¹⁶ तब बनी — इस्राईल सबत को
मानें और नसल दर नसल उसे हमेशा का 'अहद' जानकर
उसका लिहाज़ रखें। ¹⁷ मेरे और बनी — इस्राईल के
बीच यह हमेशा के लिए एक निशान रहेगा, इस लिए कि
छः दिन मैं खुदावन्द ने आसमान और ज़मीन को पैदा
किया और सातवें दिन आराम करके ताज़ा दम हुआ।”

¹⁸ और जब खुदावन्द कोह-ए-सीना पर मूसा से बातें

कर चुका तो उसने उसे शहादत की दो तख्तियाँ दीं, वह तख्तियाँ पत्थर की और खुदा के हाथ की लिखी हुई थीं।

32

????? ??

¹ और जब लोगों ने देखा कि मूसा ने पहाड़ से उतरने में देर लगाई तो वह हारून के पास जमा होकर उससे कहने लगे, कि “उठ, हमारे लिए *देवता बना दे जो हमारे आगे — आगे चले; क्योंकि हम नहीं जानते कि इस मर्द मूसा को, जो हम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया क्या हो गया?” ² हारून ने उनसे कहा, “तुम्हारी बीवियों और लड़कों और लड़कियों के कानों में जो सोने की बालियाँ हैं उनको उतार कर मेरे पास ले आओ।” ³ चुनाँचे सब लोग उनके कानों से सोने की बालियाँ उतार — उतार कर उनको हारून के पास ले आए। ⁴ और उसने उनको उनके हाथों से लेकर एक ढाला हुआ बछड़ा बनाया, जिसकी सूरत छेनी से ठीक की। तब वह कहने लगे, “ऐ इस्राईल, यही तेरा वह देवता है जो तुझ को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया।” ⁵ यह देख कर हारून ने उसके आगे एक कुर्बानगाह बनाई और उसने ऐलान कर दिया कि “कल खुदावन्द के लिए 'ईद होगी।” ⁶ और दूसरे दिन सुबह सवेरे उठ कर उन्होंने कुर्बानियाँ पेश कीं और सलामती की कुर्बानियाँ पेश अदा कीं फिर उन लोगों ने बैठ कर खाया — पिया और उठकर खेल — कूद में लग गए। ⁷ तब खुदावन्द ने मूसा को कहा, नीचे जा, क्योंकि तेरे लोग जिनको तू मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया बिगड़ गए हैं। ⁸ वह उस राह से जिसका मैंने उनको हुक्म दिया था बहुत जल्द फिर गए हैं; उन्होंने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बनाया और उसे पूजा और उसके लिए कुर्बानी चढ़ाकर यह भी कहा, कि “ऐ इस्राईल, यह तेरा वह देवता है जो तुझ को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया।” ⁹ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “मैं इस क्रौम को देखता हूँ कि यह बागी क्रौम है। ¹⁰ इसलिए तू मुझे अब छोड़ दे कि मेरा ग़ज़ब उन पर भड़के और मैं उनको भसम कर दूँ, और मैं तुझे एक बड़ी क्रौम बनाऊँगा।” ¹¹ तब मूसा ने खुदावन्द अपने खुदा के आगे मिन्नत करके कहा, ऐ खुदावन्द, क्यों तेरा ग़ज़ब अपने लोगों पर भड़कता है जिनको तू कुव्वत — ए — अज़ीम और ताक़तवर हाथों से मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया है? ¹² मिस्री लोग यह क्यों कहने पाएँ, कि 'वह उनको बुराई के लिए निकाल ले गया, ताकि उनको पहाड़ों में

मार डाले और उनको इस ज़मीन पर से फ़ना कर दे'? इसलिए तू अपने क्रहर — ओ — ग़ज़ब से बाज़ रह और अपने लोगों से इस बुराई करने के खयाल को छोड़ दे। ¹³ तू अपने बन्दों, अब्रहाम और इस्हाक़ और इस्राईल, को याद कर जिनसे तूने अपनी ही क्रसम खा कर यह कहा था, कि मैं तुम्हारी नसल को आसमान के तारों की तरह बढ़ाऊँगा; और यह सारा मुल्क जिसका मैंने ज़िक्र किया है तुम्हारी नसल को बरूँगा कि वह सदा उसके मालिक रहें।” ¹⁴ तब खुदावन्द ने उस बुराई के खयाल को छोड़ दिया जो उसने कहा था कि अपने लोगों से करेगा। ¹⁵ और मूसा शहादत की दोनों तख्तियाँ हाथ में लिए हुए उल्टा फिरा और पहाड़ से नीचे उतरा; और वह तख्तियाँ इधर से और उधर से दोनों तरफ़ से लिखी हुई थीं। ¹⁶ और वह तख्तियाँ खुदा ही की बनाई हुई थीं, और जो लिखा हुआ था वह भी खुदा ही का लिखा और उन पर खुदा हुआ था। ¹⁷ और जब यशू'अ ने लोगों की ललकार की आवाज़ सुनी तो मूसा से कहा, कि “लश्करगाह में लड़ाई का शोर हो रहा है।” ¹⁸ मूसा ने कहा, यह आवाज़ न तो फ़तहमन्दों का नारा है, न मग़लूबों की फ़रियाद; बल्कि मुझे तो गाने वालों की आवाज़ सुनाई देती है।” ¹⁹ और लश्करगाह के नज़दीक आकर उसने वह बछड़ा और उनका नाचना देखा। तब मूसा का ग़ज़ब भड़का, और उसने उन तख्तियाँ को अपने हाथों में से पटक दिया और उनकी पहाड़ के नीचे तोड़ डाला। ²⁰ और उसने उस बछड़े को जिसे उन्होंने बनाया था लिया, और उसको आग में जलाया और उसे बारीक पीस कर पानी पर छिड़का और उसी में से बनी — इस्राईल को पिलवाया। ²¹ और मूसा ने हारून से कहा, कि “इन लोगों ने तेरे साथ क्या किया था जो तूने इनको इतने बड़े गुनाह में फँसा दिया?” ²² हारून ने कहा, कि “मेरे मालिक का ग़ज़ब न भड़के; तू इन लोगों को जानता है कि गुनाह पर तुले रहते हैं,” ²³ चुनाँचे इन्हीं ने मुझ से कहा, कि 'हमारे लिए देवता बना दे जो हमारे आगे — आगे चले, क्योंकि हम नहीं जानते कि इस आदमी मूसा को जो हम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया क्या हो गया? ²⁴ तब मैंने इनसे कहा, कि “जिसके यहाँ सोना हो वह उसे उतार लाए। तब इन्होंने उसे मुझ को दिया और मैंने उसे आग में डाला, तो यह बछड़ा निकल पड़ा।” ²⁵ जब मूसा ने देखा कि लोग बेक्राबू हो गए, क्योंकि हारून ने उनको बेलगाम छोड़कर उनको उनके दुश्मनों के बीच ज़लील कर दिया, ²⁶ तो मूसा ने लश्करगाह के दरवाज़े पर खड़े होकर कहा, जो — जो खुदावन्द की तरफ़ है

* 32:1 32:1 इस जुमले को जमा के सेगे में बदलें † 32:9 32:9 सरकश लोग

वह मेरे पास आ जाए।” तब सभी बनी लावी उसके पास जमा हो गए।²⁷ और उसने उनसे कहा, कि “खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है, कि तुम अपनी — अपनी रान से तलवार लटका कर फाटक — फाटक घूम — घूम कर सारी लश्करगाह में अपने अपने भाइयों और अपने अपने साथियों और अपने अपने पड़ोसियों को क़त्ल करते फ़िरो।”²⁸ और बनी लावी ने मूसा के कहने के मुवाफ़िक़ ‘अमल किया; चुनाँचे उस दिन लोगों में से करीबन तीन हज़ार मर्द मारे गए।²⁹ और मूसा ने कहा, कि “आज खुदावन्द के लिए अपने आपको मख़सूस करो; बल्कि हर शख्स अपने ही बेटे और अपने ही भाई के खिलाफ़ हो ताकि वह तुम को आज ही बरकत दे।”

२२२२ २२ २२२२२२२ २२ २२२२ २२२२२२२ २२२२

³⁰ और दूसरे दिन मूसा ने लोगों से कहा, कि “तुम ने बड़ा गुनाह किया; और अब मैं खुदावन्द के पास ऊपर जाता हूँ शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़ारा दे सकूँ।”³¹ और मूसा खुदावन्द के पास लौट कर गया और कहने लगा, ‘हाय, इन लोगों ने बड़ा गुनाह किया कि अपने लिए सोने का देवता बनाया।’³² और अब अगर तू इनका गुनाह मु’आफ़ कर दे तो ख़ैर वरना मेरा नाम उस किताब में से जो तूने लिखी है मिटा दे।”³³ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “जिसने मेरा गुनाह किया है मैं उसी के नाम को अपनी किताब में से मिटाऊँगा।³⁴ अब तू ख़ाना हो और लोगों को उस जगह ले जा जो मैंने तुझे बताई है। देख, मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे — आगे चलेगा। लेकिन मैं अपने मुतालबे के दिन उनको उनके गुनाह की सज़ा दूँगा।”³⁵ और खुदावन्द ने उन लोगों में वबा भेजी, क्योंकि जो बछड़ा हारून ने बनाया वह उन्हीं का बनवाया हुआ था।

33

¹ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “उन लोगों को अपने साथ लेकर, जिनको तू मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया, यहाँ से उस मुल्क की तरफ़ ख़ाना हो जिसके बारे में अब्रहाम और इस्हाक़ और याक़ूब से मैंने क़सम खाकर कहा था कि इसे मैं तेरी नसल को दूँगा।² और मैं तेरे आगे — आगे एक फ़रिश्ते को भेजूँगा; और मैं कना’नियों और अमोरियों और हित्तियों और फ़रिज़ियों और हव्वियों और यबूसियों को निकाल दूँगा।³ उस मुल्क में *दूध और शहद बहता है; और चूँकि तू बागी क़ौम है इस लिए मैं तेरे बीच में होकर न चलूँगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं तुझ को राह में फ़ना कर डालूँ।”

* 33:3 33:3 अजहद ज़रखेज़ मुल्क † 33:5 33:5 सरकश लोग

⁴ लोग इस दहशतनाक ख़बर को सुन कर ग़मगीन हुए और किसी ने अपने ज़ेवर न पहने।⁵ क्योंकि खुदावन्द ने मूसा से कह दिया था, कि “बनी — इस्राईल से कहना, कि ‘तुम बागी लोग हो, अगर मैं एक लम्हा भी तेरे बीच में होकर चलूँ तो तुझ को फ़ना कर दूँगा। फिर तू अपने ज़ेवर उतार डाल ताकि मुझे मा’लूम हो कि तेरे साथ क्या करना चाहिए।”⁶ चुनाँचे बनी — इस्राईल होरिब पहाड़ से लेकर आगेआगे अपने ज़ेवरों को उतारे रहे।⁷ और मूसा खेमें को लेकर उसे लश्करगाह से बाहर बल्कि लश्करगाह से दूर लगा लिया करता था, और उसका नाम खेमा — ए — इजितमा’अ रख्खा। और जो कोई खुदावन्द का तालिब होता वह लश्करगाह के बाहर उसी खेमे की तरफ़ चला जाता था।⁸ और जब मूसा बाहर खेमे की तरफ़ जाता तो सब लोग उठकर अपने — अपने खेमे के दरवाज़े पर खड़े हो जाते और मूसा के पीछे देखते रहते थे, जब तक वह खेमे के अन्दर दाखिल न हो जाता।⁹ और जब मूसा खेमे के अन्दर चला जाता तो बादल का सुतून उतरकर खेमे के दरवाज़े पर ठहरा रहता, और खुदावन्द मूसा से बातें करने लगता।¹⁰ और सब लोग बादल के सुतून को खेमे के दरवाज़े पर ठहरा हुआ देखते थे, और सब लोग उठ — उठकर अपने — अपने खेमे के दरवाज़े पर से उसे सिज्दा करते थे।¹¹ और जैसे कोई शख्स अपने दोस्त से बात करता है वैसे ही खुदावन्द आमने सामने होकर मूसा से बातें करता था। और मूसा लश्करगाह को लौट आता था, लेकिन उसका खादिम यशू’अ जो नून का बेटा और जवान आदमी था खेमे से बाहर नहीं निकलता था।

२२२२ २२ २२२२२२२ २२ २२२२२२२ २२२२२२

¹² और मूसा ने खुदावन्द से कहा, देख, तू मुझ से कहता है, कि “इन लोगों को ले चल, लेकिन मुझे यह नहीं बताया कि तू किसको मेरे पास भेजेगा। हालाँकि तूने यह भी कहा है, कि मैं तुझ को नाम से जानता हूँ और तुझ पर मेरे करम की नज़र है।¹³ तब अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है तो मुझ को अपनी राह बता, जिससे मैं तुझे पहचान लूँ ताकि मुझ पर तेरे करम की नज़र रहे; और यह ख़याल रख कि यह क़ौम तेरी ही उम्मत है।”¹⁴ तब उसने कहा, “मैं साथ चलूँगा और तुझे आराम दूँगा।”¹⁵ मूसा ने कहा, अगर तू साथ न चले तो हम को यहाँ से आगे न ले जा।¹⁶ क्योंकि यह क्यूँ कर मा’लूम होगा कि मुझ पर और तेरे लोगों पर तेरे करम की नज़र है? क्या इसी तरह से नहीं कि तू हमारे साथ — साथ चले, ताकि मैं और तेरे लोग इस ज़मीन की सब

क्रौमों से निराले ठहरें? ¹⁷ खुदावन्द ने मूसा से कहा, “मैं यह काम भी जिसका तूने जिक्र किया है, करूँगा क्योंकि तुझ पर मेरे करम की नज़र है और मैं तुझ को नाम से पहचानता हूँ।” ¹⁸ तब वह बोल उठा, कि “मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, मुझे अपना जलाल दिखा दे।” ¹⁹ उसने कहा, “मैं अपनी सारी नेकी तेरे सामने ज़ाहिर करूँगा और तेरे ही सामने खुदावन्द के नाम का 'ऐलान करूँगा'; और मैं जिस पर मेहरबान होना चाहूँ मेहरबान हूँगा, और जिस पर रहम करना चाहूँ रहम करूँगा।” ²⁰ और यह भी कहा, “तू मेरा चेहरा नहीं देख सकता, क्योंकि इंसान मुझे देख कर ज़िन्दा नहीं रहेगा।” ²¹ फिर खुदावन्द ने कहा, “देख, मेरे करीब ही एक जगह है, इसलिए तू उस चट्टान पर खड़ा हो।” ²² और जब तक मेरा जलाल गुज़रता रहेगा मैं तुझे उस चट्टान के शिगाफ़ में रखूँगा, और जब तक मैं निकल न जाऊँ तुझे अपने हाथ से ढाँके रहूँगा। ²³ इसके बाद मैं अपना हाथ उठा लूँगा, और तू मेरा पीछा देखेगा लेकिन मेरा चेहरा दिखाई नहीं देगा।”

34

२२२२ २२ २२ २२२२ २२२२ २२२२२२

¹ फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा पहली तख्तियों की तरह दो तख्तियाँ अपने लिए तराश लेना; और मैं उन तख्तियों पर वही बातें लिख दूँगा जो पहली तख्तियों पर, जिनको तूने तोड़ डाला मरकूम थीं। ² और सुबह तक तैयार हो जाना, और सवेरे ही कोह-ए-सीना पर आकर वहाँ पहाड़ की चोटी पर मेरे सामने हाज़िर होना। ³ लेकिन तेरे साथ कोई और आदमी न आए, और न पहाड़ पर कहीं कोई दूसरा शख्स दिखाई दे। भेड़ बकरियाँ और गाय — बैल भी पहाड़ के सामने चरने न पाएँ। ⁴ और मूसा ने पहली तख्तियों की तरह पत्थर की दो तख्तियाँ तराशीं, और सुबह सवेरे उठ कर पत्थर की दोनों तख्तियाँ हाथ में लिए हुए खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ कोह-ए-सीना पर चढ़ गया। ⁵ तब खुदावन्द बादल में हो कर उतरा और उसके साथ वहाँ खड़े हो कर खुदावन्द के नाम का 'ऐलान किया। ⁶ और खुदावन्द उसके आगे से यह पुकारता हुआ गुज़रा “खुदावन्द, खुदावन्द खुदा — ए — रहीम और मेहरबान, क्रहर करने में धीमा और शफ़क़त और वफ़ा में ग़नी। ⁷ हज़ारों पर फ़ज़ल करने वाला, गुनाह और तक़सीर और ख़ता का बरूषने वाला; लेकिन वह मुजरिम को हरगिज़ बरी नहीं करेगा, बल्कि बाप — दादा के गुनाह की सज़ा उनके बेटों और पोतों को तीसरी और चौथी नसल तक देता

है।” ⁸ तब मूसा ने जल्दी से सिर झुका कर सिज्दा किया, ⁹ और कहा, ऐ खुदावन्द, “अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है, तो ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि हमारे बीच में होकर चल, अगरचे यह *क्रौम बागी है, और तू हमारे गुनाह और ख़ता को मु'आफ़ कर और हम को अपनी मीरास कर ले।” ¹⁰ उसने कहा, देख, मैं 'अहद बाँधता हूँ, कि तेरे सब लोगों के सामने ऐसी करामात करूँगा जो दुनिया भर में और किसी क्रौम में कभी की नहीं गई; और वह सब लोग जिनके बीच तू रहता है, खुदावन्द के काम को देखेंगे क्योंकि जो मैं तुम लोगों से करने को हूँ वह हैबतनाक काम होगा। ¹¹ आज के दिन जो हुक्म मैं तुझे देता हूँ, तू उसे याद रखना। देख, मैं अमोरियों और कना'नियों और हित्तियों और फ़रिज़्जियों और हव्वियों और यबूसियों को तेरे आगे से निकालता हूँ। ¹² इसलिए ख़बरदार रहना कि जिस मुल्क को तू जाता है उसके बाशिन्दों से कोई 'अहद न बाँधना, ऐसा न हो कि वह तेरे लिए फ़न्दा ठहरें। ¹³ बल्कि तुम उनकी कुर्बानगाहों को ढा देना, और उनके सुतूनों के टुकड़े — टुकड़े कर देना, और उनकी यसीरतों को काट डालना। ¹⁴ क्योंकि तुझ को किसी दूसरे मा'बूद की परस्तिश नहीं करनी होगी, इसलिए कि खुदावन्द जिसका नाम ग़य्यूर है वह खुदा — ए — ग़य्यूर है भी। ¹⁵ कहीं ऐसा न हो कि तू उस मुल्क के बाशिन्दों से कोई 'अहद बाँध ले और जब वह अपने मा'बूदों की पैरवी में ज़िनाकार ठहरें और अपने मा'बूदों के लिए कुर्बानी करें, और कोई तुझ को दा'वत दे और तू उसकी कुर्बानी में से कुछ खा ले; ¹⁶ और तू उनकी बेटियाँ अपने बेटों से ब्याहे और उनकी बेटियाँ अपने मा'बूदों की पैरवी में ज़िनाकार ठहरें, और तेरे बेटों को भी अपने मा'बूदों की पैरवी में ज़िनाकार बना दें। ¹⁷ “तू अपने लिए ढाले हुए देवता न बना लेना। ¹⁸ “तू बेख़मीरी रोटी की 'ईद माना करना। मेरे हुक्म के मुताबिक़ सात दिन तक अबीब के महीने में वक़्त — ए — मुअय्यना पर बेख़मीरी रोटियाँ खाना; क्योंकि माह — ए — अबीब में तू मिस्र से निकला था। ¹⁹ सब पहलौठे मेरे हैं: और तेरे चौपायों में जो नर पहलौठे हों, क्या बच्छड़े, क्या बरें सब मेरे होंगे। ²⁰ लेकिन गधे के पहले बच्चे का फ़िदिया बर्ग़ा देकर होगा, और अगर तू फ़िदिया देना न चाहे तो उसकी गर्दन तोड़ डालना; लेकिन अपने सब पहलौठे बेटों का फ़िदिया ज़रूर देना। और कोई मेरे सामने ख़ाली हाथ दिखाई न दे। ²¹ “छः दिन काम काज करना लेकिन सातवें दिन आराम करना,

हल जोतने और फ़सल काटने के मौसम में भी आराम करना। ²² और तू गेहूँ के पहले फल के काटने के वक़्त हफ़्तों की 'ईद, और साल के आखिर में फ़सल जमा' करने की 'ईद माना करना। ²³ तेरे सब मर्द साल में तीन बार खुदावन्द खुदा के आगे जो इस्राईल का खुदा है, हाज़िर हों। ²⁴ क्योंकि मैं क्रौमों को तेरे आगे से निकाल कर तेरी सरहदों को बढ़ा दूँगा, और जब साल में तीन बार तू खुदावन्द अपने खुदा के आगे हाज़िर होगा तो कोई शख्स तेरी ज़मीन का लालच न करेगा। ²⁵ “तू मेरी कुर्बानी का खून ख़मीरी रोटी के साथ न पेश करना, और 'ईद — ए — फ़सल की कुर्बानी में से कुछ सुबह तक बाक़ी न रहने देना। ²⁶ अपनी ज़मीन की पहली पैदावार का पहला फल खुदावन्द अपने खुदा के घर में लाना। हलवान को उसकी माँ के दूध में न पकाना।” ²⁷ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “तू यह बातें लिख; क्योंकि इन्हीं बातों के मतलब के मुताबिक़ मैं तुझ से और इस्राईल से 'अहद बाँधता हूँ।” ²⁸ तब वह चालीस दिन और चालीस रात वहीं खुदावन्द के पास रहा और न रोटी खाई और न पानी पिया, और उसने उन तख़्तियों पर उस 'अहद की बातों को या'नी दस अहक़ाम को लिखा। ²⁹ और जब मूसा शहादत की दोनों तख़्तियाँ अपने हाथ में लिए हुए कोह-ए-सीना से उतरा आता था, तो पहाड़ से नीचे उतरते वक़्त उसे ख़बर न थी कि खुदावन्द के साथ बातें करने की वजह से उसका चेहरा चमक रहा है। ³⁰ और जब हारून और बनी इस्राईल ने मूसा पर नज़र की और उसके चेहरे को चमकते देखा तो उसके नज़दीक आने से डरे। ³¹ तब मूसा ने उनको बुलाया; और हारून और जमा'अत के सब सरदार उसके पास लौट आए और मूसा उन से बातें करने लगा। ³² और बाद में सब बनी इस्राईल नज़दीक आए और उसने वह सब अहक़ाम जो खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर बातें करते वक़्त उसे दिए थे उनको बताए। ³³ और जब मूसा उनसे बातें कर चुका तो उसने अपने मुँह पर नक्राब डाल लिया। ³⁴ और जब मूसा खुदावन्द से बातें करने के लिए उसके सामने जाता तो बाहर निकलने के वक़्त तक नक्राब को उतारे रहता था; और जो हुक्म उसे मिलता था, वह उसे बाहर आकर बनी — इस्राईल को बता देता था। ³⁵ और बनी — इस्राईल मूसा के चेहरे को देखते थे कि उसके चेहरे की जिल्द चमक रही है; और जब तक मूसा खुदावन्द से बातें करने न जाता तब तक अपने मुँह पर नक्राब डाले रहता।

35

???? ? ? ? ? ? ?

* 35:7 35:7 दर्याई घोड़े का चमड़ा

¹ और मूसा ने बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत को जमा' करके कहा, जिन बातों पर 'अमल करने का हुक्म खुदावन्द ने तुम को दिया है वह यह हैं। ² छः दिन काम लिए रोज़ — ए — मुक़द्दस या'नी खुदावन्द के आराम का सबत हो; जो कोई उसमें कुछ काम करे वह मार डाला जाए। ³ तुम सबत के दिन अपने घरों में कहीं भी आग न जलाना।”

???? ? ? ? ? ? ?

⁴ और मूसा ने बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत से कहा, जिस बात का हुक्म खुदावन्द ने दिया है वह यह है, कि ⁵ तुम अपने पास से खुदावन्द के लिए हदिया लाया करो। जिस किसी के दिल की खुशी हो वह खुदावन्द का हदिया लाये सोना और चाँदी और पीतल, ⁶ और आसमानी रंग और अर्गवानी रंग और सुर्ख रंग के कपड़े, और महीन कतान, और बकरियों की पश्म, ⁷ और *मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खालें और तुख्स की खालें और कीकर की लकड़ी, ⁸ और जलाने का तेल, और मसह करने के तेल के लिए और खुशबूदार खुशबू के लिए मसाल्ले, ⁹ और अफ़ोद और सीनाबन्द के लिए सुलेमानी पत्थर और और जड़ाऊ पत्थर। ¹⁰ “और तुम्हारे बीच जो रौशन जमीर हैं, वह आकर वह चीजें बनाएँ जिनका हुक्म खुदावन्द ने दिया है। ¹¹ या'नी घर और उसका खेमा और ग़िलाफ़ और उसकी घुन्डियाँ और तख़्तें और बेंडे और उसके सुतून, और खाने, ¹² सन्दूक और उसकी चोबें, सरपोश और बीच का पर्दा, ¹³ मेज़ और उसकी चोबें और उसके सब बर्तन, और नज़र की रोटियाँ, ¹⁴ और रोशनी के लिए शमा 'दान और उसके बर्तन और चराग़ और जलाने का तेल; ¹⁵ और खुशबू जलाने की कुर्बान गाह और उसकी चोबें और मसह करने का तेल, और खुशबूदार खुशबू; और घर के दरवाज़े के लिए दरवाज़े का पर्दा, ¹⁶ और सोख्तनी कुर्बानी का मज़बह, और उसके लिए पीतल की झंजरी और उसकी चोबें और उसके सब बर्तन, और हौज़ और उसकी कुर्सी; ¹⁷ और सहन के पर्दे सुतूनों के साथ और उनके खाने, और सहन के दरवाज़े का पर्दा, ¹⁸ और घर की मेंखे, और सहन की मेंखे, और उन दोनों की रस्सियाँ, ¹⁹ और मक़दिस की खिदमत के लिए बेल बूटे कढ़े हुए लिबास, और हारून काहिन के लिए पाक लिबास और उसके बेटों के लिबास, ताकि वह काहिन की खिदमत को अन्जाम दें।” ²⁰ तब बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत मूसा के पास से रुख़्सत हुई। ²¹ और जिस जिस का जी चाहा और जिस — जिस के दिल में रग़बत। हुई, वह खेमा-ए-इजितमा'अ के काम और वहाँ की

इबादत और पाक लिबास के लिए खुदावन्द का हदिया लाया। ²² और क्या मर्द, क्या 'औरत, जितनों का दिल चाहा वह सब जुगनू बालियाँ, अँगूठियाँ और बाजूबन्द, जो सब सोने के ज़ेवर थे लाने लगे। इस तरीके से लोगों ने खुदावन्द को सोने का हदिया दिया। ²³ और जिस — जिस के पास आसमानी रंग और अर्गवानी रंग और सुर्ख रंग के कपड़े, और महीन कतान और बकरियों की पश्म और मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खाले और तुखस की खालें थीं, वह उनको ले आए। ²⁴ जिसने चाँदी या पीतल का हदिया देना चाहा वह वैसा ही हदिया खुदावन्द के लिए लाया, और जिस किसी के पास कीकर की लकड़ी थी वह उसी को ले आया। ²⁵ और जितनी 'औरतें होशियार थीं उन्होंने अपने हाथों से कात — कात कर आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के और महीन कतान के तार लाकर दिए। ²⁶ और जितनी 'औरतों के दिल हिकमत की तरफ़ मायल थे उन्होंने बकरियों की पश्म काती। ²⁷ और जो सरदार थे वह अफ़ोद और सीना बन्द के लिए सुलेमानी पत्थर और जड़ाऊ पत्थर, ²⁸ और रोशनी और मसह करने के तेल, और खुशबूदार खुशबू के लिए मसाल्ले और तेल लाए। ²⁹ यूँ बनी — इस्राईल अपनी ही खुशी से खुदावन्द के लिए हदिये लाए, या'नी जिस — जिस मर्द या 'औरत का जी चाहा कि इन कामों के लिए जिनके बनने का हुक्म खुदावन्द ने मूसा के ज़रिए' दिया था, कुछ दे वह उन्होंने दिया ³⁰ और मूसा ने बनी — इस्राईल से कहा, देखो, खुदावन्द ने बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर को जो यहूदाह के क़बीले में से है नाम लेकर बुलाया है। ³¹ और उसने उसे हिकमत और समझ और अक्ल और हर तरह की कारीगरी के लिए रूह उल्लाह से मा'मूर किया है। ³² और कारीगरी में और सोना, चाँदी और पीतल के काम में, ³³ और जड़ाऊ पत्थर और लकड़ी के तराशने में गरज़ हर एक नादिर काम के बनाने में माहिर किया है। ³⁴ और उसने उसे और अखीसमक के बेटे अहलियाब को भी जो दान के क़बीले का है, हुनर सिखाने की क़ाबिलियत बख़शी है। ³⁵ और उनके दिलों में ऐसी हिकमत भर दी है जिससे वह हर तरह की कारीगरी में माहिर हों, और कन्दाकार का और माहिर उस्ताद का और ज़रदोज़ का जो आसमानी, अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और महीन कतान पर गुलकारी करता है, और जूलाहे का और हर तरह के दस्तकार का काम कर सके और 'अजीब और नादिर चीज़ें ईजाद करें।

36

¹ फिर बज़लीएल और अहलियाब और सब रोशन ज़मीर आदमी काम करें, जिनको खुदावन्द ने हिकमत

और समझ से मालामाल किया है ताकि वह मक़दिस की' इबादत के सब काम को खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ अन्जाम दें। ² तब मूसा ने बज़लीएल और अहलियाब और सब रोशन ज़मीर आदमियों को बुलाया, जिनके दिल में खुदावन्द ने हिकमत भर दी थी, या'नी जिनके दिल में तहरीक हुई कि जाकर काम करें। ³ और जो — जो हदिये बनी — इस्राईल लाए थे कि उनसे मक़दिस की इबादत की चीज़ें बनाई जाएँ, वह सब उन्होंने मूसा से ले लिए, और लोग फिर भी अपनी खुशी से हर सुबह उसके पास हदिये लाते रहे। ⁴ तब वह सब 'अक्लमन्द कारीगर जो मक़दिस के सब काम बना रहे थे, अपने — अपने काम को छोड़कर मूसा के पास आए, ⁵ और वह मूसा से कहने लगे, “कि लोग इस काम के सरअन्जाम के लिए, जिसके बनाने का हुक्म खुदावन्द ने दिया है, ज़रूरत से बहुत ज़्यादा ले आए हैं।” ⁶ तब मूसा ने जो हुक्म दिया उसका 'ऐलान उन्होंने तमाम लश्करगाह में करा दिया: “कि कोई मर्द या 'औरत अब से मक़दिस के लिए हदिया देने की गर्ज से कुछ और काम न बनाएँ।” यूँ वह लोग और लाने से रोक दिए गए। ⁷ क्योंकि जो सामान उनके पास पहुँच चुका था वह सारे काम को तैयार करने के लिए न सिर्फ़ काफ़ी बल्कि ज़्यादा था।

2222 22 222222

⁸ और काम करनेवालों में जितने रोशन ज़मीर थे, उन्होंने मक़दिस के लिए बारीक बटे हुए कतान के और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों के दस पर्दे बनाए, जिन पर माहिर उस्ताद के हाथ के कढ़े हुए करूबी थे। ⁹ हर पर्दे की लम्बाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई चार हाथ थी और वह सब पर्दे एक ही नाप के थे। ¹⁰ और उसने पाँच पर्दे एक दूसरे के साथ जोड़ दिए और दूसरे पाँच पर्दे भी एक दूसरे के साथ जोड़ दिए। ¹¹ और उसने एक बड़े पर्दे के हाशिये में उसके मिलाने के रुख़ पर आसमानी रंग के तुकमे बनाए। ऐसे ही तुकमे उसने दूसरे बड़े पर्दे की उस तरफ़ के हाशिये में बनाए जिधर मिलाने का रुख़ था। ¹² पचास तुकमे उसने एक पर्दे में और पचास ही दूसरे पर्दे के हाशिये में उसके मिलाने के रुख़ पर बनाए, यह तुकमे आपस में एक दूसरे के सामने थे। ¹³ और उसने सोने की पचास घुन्डियाँ बनाई और उन्हीं घुन्डियों से पर्दों को आपस में ऐसा जोड़ दिया कि घर मिलकर एक हो गया। ¹⁴ और बकरी के बालों से ग्यारह पर्दे घर के ऊपर के खेमे के लिए बनाए। ¹⁵ हर पर्दे की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ थी, और वह ग्यारह पर्दे एक ही नाप के थे। ¹⁶ और उसने पाँच पर्दे तो एक साथ जोड़े और छः एक साथ। ¹⁷ और पचास तुकमे उन जुड़े हुए पर्दों में

से किनारे के पर्दे के हाशिये में बनाए और पचास ही तुकमे उन दूसरे जुड़े हुए पर्दों में से किनारे के पर्दे के हाशिये में बनाए। ¹⁸ और उसने पीतल की पचास घुन्डियाँ भी बनाई ताकि उनसे उस खेमे को ऐसा जोड़ दे कि वह एक हो जाए। ¹⁹ और खेमे के लिए एक गिलाफ़ *मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खालों का और उसके लिए गिलाफ़ तुखस की खालों का बनाया। ²⁰ और उसने घर के लिए कीकर की लकड़ी के तख्ते बनाए कि खड़े किए जाएँ। ²¹ हर तख्ते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ थी। ²² और उसने एक एक तख्ते के लिए दो — दो जुड़ी हुई चूलें बनाई, घर के सब तख्तों की चूलें ऐसी ही बनाई। ²³ और घर के लिए जो तख्ते बने थे उनमें से बीस तख्ते दाख्खनी रुख में लगाए। ²⁴ और उसने उन बीसों तख्तों के नीचे चाँदी के चालीस खाने बनाए, या'नी हर तख्ते की दोनों चूलों के लिए दो — दो खाने। ²⁵ और घर की दूसरी तरफ़ या'नी उत्तरी रुख के लिए बीस तख्ते बनाए। ²⁶ और उनके लिए भी चाँदी के चालीस ही खाने बनाए, या'नी एक — एक तख्ते के नीचे दो — दो खाने। ²⁷ और घर के पिछले हिस्से या'नी पश्चिमी रुख के लिए छः तख्ते बनाए। ²⁸ और दो तख्ते घर के दोनों कोनों के लिए पिछले हिस्से में बनाए। ²⁹ यह नीचे से दोहरे थे और इसी तरह ऊपर के सिरे तक आकर एक ही हल्के में मिला दिए गए थे, उसने दोनों कोनों के दोनों तख्ते इसी ढब के बनाए। ³⁰ वह, आठ तख्ते थे और उनके लिए चाँदी के सोलह खाने, या'नी एक — एक तख्ते के लिए दो — दो खाने। ³¹ और उसने कीकर की लकड़ी के बेन्डे बनाये पाँच बेन्डे घर के एक तरफ़ के तख्तों के लिए, ³² और पाँच बेन्डे घर के दूसरी तरफ़ के तख्तों के लिए, और पाँच बेन्डे घर के पिछले हिस्से में पश्चिम की तरफ़ के तख्तों के लिए बनाए। ³³ और उसने वस्ती बेन्डे को ऐसा बनाया कि तख्तों के बीच में से होकर एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचे। ³⁴ और तख्तों को सोने से मंदा और सोने के कड़े बनाए, ताकि बेन्डों के लिए खानों का काम दें और बेन्डों को सोने से मंदा। ³⁵ और उसने बीच का पर्दा आसमानी, अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाया जिस पर माहिर उस्ताद के हाथ के करूबी कढ़े हुए थे। ³⁶ और उसके लिए कीकर के चार सुतून बनाए और उनको सोने से मंदा, उनके कुन्डे सोने के थे और उसने उनके लिए चाँदी के चार खाने ढाल कर बनाए। ³⁷ और उसने खेमे के दरवाज़े के लिए एक पर्दा आसमानी, अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाया, वह बेल — बूटेदार

था। ³⁸ और उसके लिए पाँच सुतून कुन्डों समेत बनाए और उनके सिरोँ और पट्टियों को सोने से मंदा, उनके लिए जो पाँच खाने थे वह पीतल के बने हुए थे।

37

2222 22 222222 22 222222

¹ और बज़लीएल ने वह सन्दूक कीकर की लकड़ी का बनाया, उसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊँचाई डेढ़ हाथ थी। ² और उसने उसके अन्दर और बाहर खालिस सोना मंदा और उसके लिए चारों तरफ़ एक सोने का ताज बनाया। ³ और उसने उसके चारों पायों पर लगाने को सोने के चार कड़े ढाले, दो कड़े तो उसकी एक तरफ़ और दो दूसरी तरफ़ थे। ⁴ और उसने कीकर की लकड़ी की चोबें बनाकर उनको सोने से मंदा। ⁵ और उन चोबों को सन्दूक के दोनों तरफ़ के कड़ों में डाला ताकि सन्दूक उठाया जाए। ⁶ और उसने *सरपोश खालिस सोने का बनाया, उसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ थी। ⁷ और उसने सरपोश के दोनों सिरोँ पर सोने के दो करूबी गढ़ कर बनाए। ⁸ एक करूबी को उसने एक सिरे पर रखवा और दूसरे को दूसरे सिरे पर, दोनों सिरोँ के करूबी और सरपोश एक ही टुकड़े से बने थे। ⁹ और करूबियों के बाजू ऊपर से फैले हुए थे और उनके बाजूओं से सरपोश ढका हुआ था, और उन करूबियों के चेहरे सरपोश की तरफ़ और एक दूसरे के सामने थे।

2222 22 222222

¹⁰ और उसने वह मेज़ कीकर की लकड़ी की बनाई, उसकी लम्बाई दो हाथ और चौड़ाई एक हाथ और ऊँचाई डेढ़ हाथ थी। ¹¹ और उसने उसको खालिस सोने से मंदा और उसके लिए चारों तरफ़ सोने का एक ताज बनाया। ¹² और उसने एक कंगनी चार उंगल चौड़ी उसके चारों तरफ़ रखवी और उस कंगनी पर चारों तरफ़ सोने का एक ताज बनाया। ¹³ और उसने उसके लिए सोने के चार कड़े ढाल कर उनको उसके चारों पायों के चारों कोनों में लगाया। ¹⁴ यह कड़े कंगनी के पास थे, ताकि मेज़ उठाने की चोबों के खानों का काम दें। ¹⁵ और उसने मेज़ उठाने की वह चोबें कीकर की लकड़ी की बनाई और उनको सोने से मंदा। ¹⁶ और उसने मेज़ पर के सब बर्तन, या'नी उसके तवाक़ और चमचे और बड़े — बड़े प्याले और उँडेलने के लोटे खालिस सोने के बनाए।

2222 2222 22 222222

¹⁷ और उसने शमा'दान खालिस सोने का बनाया। वह शमा'दान और उसका पाया और उसकी डन्डी गढ़े हुए थे। यह सब और उसकी प्यालियाँ और लट्टू और फूल एक ही टुकड़े के बने हुए थे। ¹⁸ और छः शाखें उसकी

* 36:19 36:19 दर्याई घोड़े का चमड़ा * 37:6 37:6 कपफारे का सर्पोश, ढक्कन

दोनों तरफ़ से निकली हुई थीं। शमा'दान की तीन शाखें तो उसकी एक तरफ़ से और तीन शाखें उसकी दूसरी तरफ़ से।¹⁹ और एक शाख में बादाम के फूल की शकल की तीन प्यालियाँ और एक लट्टू और एक फूल था, और दूसरी शाख में भी बादाम के फूल की शकल की तीन प्यालियाँ और एक लट्टू और एक फूल था। गर्ज उस शमा'दान की छहों शाखों में सब कुछ ऐसा ही था।²⁰ और खुद शमा'दान में बादाम के फूल की शकल की चार प्यालियाँ अपने — अपने लट्टू और फूल समेत बनी थीं।²¹ और शमा'दान की छहों निकली हुई शाखों में से हर दो — दो शाखें और एक — एक लट्टू एक ही टुकड़े के थे।²² उनके लट्टू और उनकी शाखें सब एक ही टुकड़े के थे। सारा शमा'दान खालिस सोने का और एक ही टुकड़े का गढ़ा हुआ था।²³ और उसने उसके लिए सात चरागा बनाए और उसके गुलगीर और गुलदान खालिस सोने के थे।²⁴ और उसने उसको और उसके सब बर्तन को एक किन्तार खालिस सोने से बनाया

२२२२२२ २२२२२ २२ २२२२२२२२२२२ २२ २२२२२

²⁵ और उसने खुशबू जलाने की कुर्बानगाह कीकर की लकड़ी की बनाई, उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ थी। वह चौकोर थी और उसकी ऊँचाई दो हाथ थी और वह और उसके सींग एक ही टुकड़े के थे।²⁶ और उसने उसके ऊपर की सतह और चारों तरफ़ की अतराफ़ और सींगों को खालिस सोने से मढ़ा और उसके लिए सोने का एक ताज चारों तरफ़ बनाया।²⁷ और उसने उसकी दोनों तरफ़ के दोनों पहलुओं में ताज के नीचे सोने के दो कड़े बनाए जो उसके उठाने की चोबों के लिए खानों का काम दें।²⁸ और चोबों कीकर की लकड़ी की बनाई और उनको सोने से मढ़ा।²⁹ और उसने मसह करने का पाक तेल और खुशबूदार मसालहे का खालिस खुशबू गन्धी की हिकमत के मुताबिक़ तैयार किया।

38

२२२२२२२२ २२२२२२२२२ २२ २२२२२ २२२२२

¹ और उसने सोख्तनी कुर्बानी का मज़बह कीकर की लकड़ी का बनाया; उसकी लम्बाई पाँच हाथ और चौड़ाई पाँच हाथ थी, वह चौकोर था और उसकी ऊँचाई तीन हाथ थी।² और उसने उसके चारों कोनों पर सींग बनाए सींग और वह मज़बह दोनों एक ही टुकड़े के थे, और उसने उसको पीतल से मढ़ा।³ और उसने मज़बह के सब बर्तन, या'नी देगें और बेलचे और कटोरे और सीहें और अंगूठियाँ बनायीं उसके सब बर्तन पीतल के थे।⁴ और

उसने मज़बह के लिए उसकी चारों तरफ़ किनारे के नीचे पीतल की जाली की झंजरी इस तरह लगाई कि वह उसकी आधी दूर तक पहुँचती थी।⁵ और उसने पीतल की झंजरी के चारों कोनों में लगाने के लिए चार कड़े ढाले ताकि चोबों के लिए खानों का काम दें।⁶ और चोबों कीकर की लकड़ी की बनाकर उनको पीतल से मढ़ा।⁷ और उसने वह चोबें मज़बह की दोनों तरफ़ के कड़ों में उसके उठाने के लिए डाल दीं। वह खोखला तख्तों का बना हुआ था।

२२२२ २२ २२२२२२

⁸ और जो खिदमत गुज़ार 'औरतें खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर खिदमत करती थीं, उनके आईनों के पीतल से उसने पीतल का हौज़ और पीतल ही की उसकी कुर्सी बनाई।

२२२ २२ २२२२२२

⁹ फिर उसने सहन बनाया, और दख्खनी रुख के लिए उस सहन के पर्दे बारीक बटे हुए कतान के थे और सब मिला कर सौ हाथ लम्बे थे।¹⁰ उनके लिए बीस सुतून और उनके लिए पीतल के बीस खाने थे, और सुतून के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की थीं।¹¹ और उत्तरी रुख में भी वह सौ हाथ लम्बे और उनके लिए बीस सुतून और उनके लिए बीस ही पीतल के खाने थे, और सुतूनों के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की थीं।¹² और पश्चिमी रुख के लिए सब पर्दे मिला कर पचास हाथ के थे, उनके लिए दस सुतून और दस ही उनके खाने थे और सुतूनों के कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की थीं।¹³ और पूर्वी रुख में भी वह पचास ही हाथ के थे।¹⁴ उसके दरवाज़े की एक तरफ़ पन्द्रह हाथ के पर्दे और उनके लिए तीन सुतून और तीन खाने थे।¹⁵ और दूसरी तरफ़ भी वैसा ही था तब सहन के दरवाज़े के इधर और उधर पन्द्रह — पन्द्रह हाथ के पर्दे थे। उनके लिए तीन — तीन सुतून और तीन ही तीन खाने थे।¹⁶ सहन के चारों तरफ़ के सब पर्दे बारीक बटे हुए कतान के बुने हुए थे।¹⁷ और सुतूनों के खाने पीतल के और उनके कुन्डे और पट्टियाँ चाँदी की थी। उनके सिरे चाँदी से मढ़े हुए और सहन के कुल सुतून चाँदी की पट्टियों से जड़े हुए थे।¹⁸ और सहन के दरवाज़े के पर्दे पर बेल बूटे का काम था, और वह आसमानी और अर्गवानी और सुख रंग के कपड़े और बारीक बटे हुए कतान का बुना हुआ था; उसकी लम्बाई बीस हाथ और ऊँचाई सहन के पर्दे की चौड़ाई के मुताबिक़ पाँच हाथ थी।¹⁹ उनके लिए चार सुतून और चार ही उनके लिए पीतल के खाने थे, उनके कुन्डे चाँदी के थे और उनके सिरों पर चाँदी मढ़ी हुई थी और उनकी पट्टियाँ भी चाँदी की

थीं। ²⁰ और घर के और सहन के चारों तरफ़ की सब मेखें पीतल की थीं

॥२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२॥

²¹ और घर या'नी मस्कन — ए — शहादत के जो सामान लावियों की खिदमत के लिए बने और जिनको मूसा के हुक्म के मुताबिक़ हारून काहिन के बेटे ऐतामर ने गिना, उनका हिसाब यह है। ²² बज़लीएल बिन — ऊरी बिन — हूर ने जो यहूदाह के कबीले का था, सब कुछ जो खुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया था बनाया। ²³ और उसके साथ दान के कबीले का अहलियाब बिन अखीसमक था जो खोदने में माहिर कारीगर था और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक कतान पर बेल — बूटे काढ़ता था ²⁴ सब सोना जो मक़दिस की चीज़ों के काम में लगा, या'नी हृदिये का सोना *उन्तीस किन्तार और मक़दिस की मिस्काल के हिसाब से एक हजार सात सौ पिछ्छतर मिस्काल था। ²⁵ और जमा'त में से गिने हुए लोगों के हृदिये की चाँदी एक सौ किन्तार और मक़दिस की मिस्काल के हिसाब से एक हजार सात सौ पिछ्छतर मिस्काल थी। ²⁶ मक़दिस की मिस्काल के हिसाब से हरआदमी जो निकल कर शुमार किए हुआ में मिल गया एक बिका, या'नी नीम मिस्काल बीस बरस और उससे ज़्यादा उम्र लोगों से लिया गया था यह छः लाख तीन हजार साढ़े पाँच सौ मर्द थे। ²⁷ इस सौ किन्तार चाँदी से मक़दिस के और बीच के पर्दे के खाने ढाले गए, सौ किन्तार से सौ ही खाने बने या'नी एक — एक किन्तार। एक — एक खाने में लगा ²⁸ और एक हजार सात सौ पिछ्छतर मिस्काल चाँदी से सुतूनों के कुन्डे बने और उनके सिरे मंडे गए और उनके लिए पट्टियाँ तैयार हुई। ²⁹ और हृदिये का पीतल सत्तर किन्तार और *दो हजार चार सौ मिस्काल था। ³⁰ इससे उसने खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े के खाने और पीतल का मज़बह और उसके लिए पीतल की झंजरी और मज़बह के सब बर्तन, ³¹ और सहन के चारों तरफ़ के खाने और सहन के दरवाज़े के खाने और घर की मेखें और सहन के चारों तरफ़ की मेखें बनाई।

39

॥२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२॥

¹ और उन्होंने मक़दिस में खिदमत करने के लिए आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख बेल बूटे कढ़े हुए लिबास और हारून के लिए पाक लिबास, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था बनाए।

* 38:24 38:24 191 किलोग्राम † 38:25 38:25 3400 किलोग्राम के लगभग ‡ 38:25 38:25 30 किलोग्राम § 38:29 38:29 2425 किलोग्राम * 38:29 38:29 25 किलोग्राम

॥२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२॥

² और उसने सोने, और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का अफ़ोद बनाया। ³ और उन्होंने सोना पीट पीट कर पतले — पतले पत्तर और पतरों को काट — काट कर तार बनाए, ताकि आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान पर माहिर उस्ताद की तरह उनसे ज़रदोज़ी करें। ⁴ और अफ़ोद को जोड़ने के लिए उन्होंने दो मोढ़े बनाए और उनके दोनों सिरों को मिलाकर बाँध दिया। ⁵ और उसके कसने के लिए कारीगरी से बुना हुआ कमरबन्द जो उसके ऊपर था, वह भी उसी टुकड़े और बनावट का था, या'नी सोने और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बना हुआ था; जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। ⁶ और उन्होंने सुलेमानी पत्थर काट कर साफ़ किए जो सोने के खानों में जड़े गए, और उन पर अँगूठी के नक्श की तरह बनी इस्राईल के नाम खुदे थे। ⁷ और उसने उनको अफ़ोद के मोढ़ों पर लगाया ताकि वह बनी — इस्राईल की यादगारी के पत्थर हों, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।

॥२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२॥

⁸ और उसने अफ़ोद की बनावट का सीनाबन्द तैयार किया जो माहिर उस्ताद के हाथ का काम था, या'नी वह सोने और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बना हुआ था। ⁹ वह चौकोर था; उन्होंने उस सीनाबन्द को दोहरा बनाया और दोहरा होने पर उसकी लम्बाई एक बालिशत और चौड़ाई एक बालिशत थी। ¹⁰ इस पर चार कतारों में उन्होंने जवाहर जड़े। याकूत — ए — सुर्ख, और पुखराज, और ज़मुरद की कतार तो पहली कतार थी। ¹¹ और दूसरी कतार में गौहर — ए — शब चराग़, और नीलम, और हीरा: ¹² तीसरी कतार में लश्म, और यश्म, और याकूत: ¹³ चौथी कतार में फ़ीरोज़ा, और संग — ए — सुलेमानी, और ज़बरजद; यह सब अलग — अलग सोने के खानों में जड़े हुए थे। ¹⁴ और यह पत्थर इस्राईल के बेटों के नामों के शुमार के मुताबिक़ बारह थे और अँगूठी के नक्श की तरह बारह कबीलों में से एक — एक का नाम अलग — अलग एक एक पत्थर पर खुदा था। ¹⁵ और उन्होंने सीना बन्द पर डोरी की तरह गुन्धी हुई खालिस सोने की ज़न्जीरें बनाई। ¹⁶ और उन्होंने सोने के दो खाने और सोने के दो कड़े बनाए और दोनों कड़ों को सीनाबन्द के दोनों सिरों पर लगाया। ¹⁷ और

सोने की दोनों गुन्धी हुई जन्जीरें उन कड़ों में पहनाई जो सीनाबन्द के सिरों पर थे 18 और दोनों गुन्धी हुई जन्जीरों के बाक़ी दोनों सिरों को दोनों खानों में जड़कर उनको अफ़ोद के दोनों मोंदों पर सामने के रुख लगाया। 19 और उन्होंने सोने के दो कड़े और बना कर उनको सीना बन्द के दोनों सिरों के उस हाशिये में लगाया जिस का रुख अन्दर अफ़ोद की तरफ़ था। 20 और उन्होंने सोने के दो कड़े और बना कर उनको अफ़ोद के दोनों मोंदों के सामने के हिस्से में अन्दर के रुख जहाँ अफ़ोद जुड़ा था लगाया ताकि वह अफ़ोद के कारीगरी से बुने हुए पटके के ऊपर रहे। 21 और उन्होंने सीना बन्द को लेकर उसके कड़े को अफ़ोद के कड़ों के साथ एक नीले फ़ीते से इस तरह बाँधा कि वह अफ़ोद के कारीगरी से बने हुए पटके के ऊपर रहे और सीना बन्द ढीला होकर अफ़ोद से अलग न होने पाए जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था।

22 और उसने अफ़ोद का जुब्बा बुन कर बिल्कुल

आसमानी रंग का बनाया। 23 और उसका गिरेबान ज़िरह के गिरेबान की तरह बीच में था और उसके चारों तरफ़ गोटा लगी हुई थी ताकि वह फट न जाए। 24 और उन्होंने उसके दामन के घेरे में आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के बटे हुए तार से अनार बनाये। 25 और खालिस सोने की घंटियाँ बना कर उनको जुब्बे के दामन के घेरे में चारों तरफ़ अनारों के बीच लगाया। 26 तब जुब्बे के दामन के सारे घेरे में खिदमत करने के लिए एक — एक घन्टी थी और फिर एक — एक अनार जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था। 27 और उन्होंने बारीक कतान के बुने हुए कुरते हारून और उसके बेटों के लिए बनाये। 28 और बारीक कतान का 'अमामा, और बारीक कतान की खूबसूरत पगड़ियाँ, और बारीक बटे हुए कतान के पजामे, 29 और बारीक बटे हुए कतान, और आसमानी अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों का बेल बूटेदार कमरबन्द भी बनाया; जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 30 और उन्होंने पाक ताज का पत्तर खालिस सोने का बनाकर उस पर अँगूठी के नक्श की तरह यह खुदावाया: खुदावन्द के लिए पाक। 31 और उसे 'अमामे के साथ ऊपर बाँधने के लिए उसमें एक नीला फ़ीता लगाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।

32 इस तरह खेमा — ए — इजितमा'अ के घर का सब

काम खत्म हुआ और बनी इस्राईल ने सब कुछ जैसा

खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था वैसा ही किया। 33 और वह घर को मूसा के पास लाए, या'नी खेमा, और उसका सारा सामान, उसकी घुन्डियाँ, और तख्ते, बेन्डे और सुतून और खाने; 34 और घटा टोप, मोंदों की *सुर्ख रंगी हुई खालों का गिलाफ़ और तुख्स की खालों का गिलाफ़ और बीच का पर्दा; 35 शहादत का सन्दूक और उसकी चोबें और सरपोश, 36 और मेज़ और उसके सब बर्तन और नज़र की रोटी; 37 और पाक शमा'दान और उसकी सजावट के चराग़ और उसके सब बर्तन और जलाने का तेल; 38 और ज़रीन कुर्बानगाह, और मसह करने का तेल और खुशबूदार खुशबू और खेमे के दरवाज़े का पर्दा; 39 और पीतल मढ़ा हुआ मज़बह, और पीतल की झंजरी, और उसकी चोबें और उसके सब बर्तन और हौज़ और उसकी कुर्सी; 40 सहन के पर्दे और उनके सुतून और खाने और सहन के दरवाज़े का पर्दा और उसकी रस्सियाँ और मेखे और खेमा — ए — इजितमा'अ के काम के लिए घर की इबादत के सब सामान; 41 और पाक मुक़ाम कि खिदमत के लिए कढ़े हुए लिबास और हारून काहिन के पाक लिबास और उसके बेटों के लिबास जिनको पहन कर उनको काहिन की खिदमत को अन्जाम देना था। 42 जो कुछ खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था उसी के मुताबिक़ बनी इस्राईल ने सब काम बनाया। 43 और मूसा ने सब काम का मुलाहज़ा किया और देखा कि उन्होंने उसे कर लिया है जैसा खुदावन्द ने हुक्म दिया था उन्होंने सब कुछ वैसा ही किया, और मूसा ने उनको बरकत दी।

40

1 और खुदावन्द ने मूसा से कहा; 2 “पहले महीने की

पहली *तारीख़ को तू खेमा — ए — इजितमा'अ के घर को खड़ा कर देना। 3 और उस में शहादत का सन्दूक रख कर सन्दूक पर बीच का पर्दा खींच देना। 4 और मेज़ को अन्दर ले जाकर उस पर की सब चीज़ें तरतीब से सजा देना और शमा'दान को अन्दर करके उसके चराग़ रोशन कर देना। 5 और खुशबू जलाने की ज़रीन कुर्बानगाह को शहादत के सन्दूक के सामने रखना और घर के दरवाज़े का पर्दा लगा देना। 6 और सोख्तनी कुर्बानी का मज़बह खेमा — ए — इजितमा'अ के घर के दरवाज़े के सामने रखना। 7 और हौज़ को खेमा — ए — इजितमा'अ और मज़बह के बीच में रख कर उसमें पानी भर देना 8 और सहन के चारों तरफ़ से घेर कर सहन के दरवाज़े में पर्दा लटका देना। 9 और मसह करने का तेल लेकर घर को

* 39:34 39:34 दर्याई घोड़े का चमड़ा * 40:2 40:2 इस में नया साल का” जोड़ना है

और उसके अन्दर के सब चीजों को मसह करना; और यूँ उसे और उसके सब बर्तन को पाक करना तब वह पाक ठहरेगा। ¹⁰ और तू सोख्तनी कुर्बानी के मज़बह और उसके सब बर्तन को मसह करके मज़बह को पाक करना, और मज़बह निहायत ही पाक ठहरेगा ¹¹ और तू हौज़ और उसकी कुर्सी को भी मसह करके पाक करना। ¹² और हारून और उसके बेटे को खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर लाकर उसको पानी से गुस्ल दिलाना ¹³ और हारून को पाक लिबास पहनाना और उसे मसह और पाक करना, ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दे ¹⁴ और उनके बेटों को लाकर उनको कुरते पहनाना, ¹⁵ और जैसा उनके बाप को मसह करे वैसा ही उनको भी मसह करना, ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दे; और उनका मसह होना उनके लिए नसल — दर — नसल हमेशा की कहानत का निशान होगा।” ¹⁶ और मूसा ने सब कुछ जैसा खुदावन्द ने उसको हुक्म किया था उसके मुताबिक़ किया। ¹⁷ और दूसरे साल के पहले महीने की पहली तारीख़ को घर खड़ा किया गया। ¹⁸ और मूसा ने घर को खड़ा किया और खानों को रख कर उनमें तख्ते लगा उनके बेन्डे खींच दिए और उसके सुतनों खड़ा कर दिया। ¹⁹ और घर के ऊपर खेमे को तान दिया और खेमा पर उसका गिलाफ़ चढ़ा दिया, जैसे खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। ²⁰ और शहादतनामे को लेकर सन्दूक में रखवा, और चोबों को सन्दूक में लगा सरपोश को सन्दूक के ऊपर रखवा; ²¹ फिर उस सन्दूक को घर के अन्दर लाया, और बीच का पर्दा लगा कर शहादत के सन्दूक को पर्दे के अन्दर किया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। ²² और मेज़ को उस पर्दे के बाहर घर को उत्तरी रुख में खेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर रखवा, ²³ और उस पर खुदावन्द के आमने सामने रोटी सजाकर रखवी, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। ²⁴ और खेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर ही मेज़ के सामने घर की दाखिलनी रुख में शमा'दान को रखवा, ²⁵ और चराग़ खुदावन्द के सामने रोशन कर दिए, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। ²⁶ और ज़रीन कुर्बानगाह को खेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर पर्दे के सामने रखवा, ²⁷ और उस पर खुशबूदार मसाल्हे का खुशबू जलाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था ²⁸ और उसने घर के दरवाज़े में पर्दा लगाया था। ²⁹ और खेमा — ए — इजितमा'अ के घर के दरवाज़े पर सोख्तनी कुर्बानी का मज़बह रखकर उस पर सोख्तनी कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी पेश कीं, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया, ³⁰ और उसने हौज़ को खेमा — ए

— इजितमा'अ और मज़बह के बीच में रखकर उसमें धोने के लिए पानी भर दिया। ³¹ और मूसा और हारून और उसके बेटों ने अपने — अपने हाँथ — पाँव उसमें धोए। ³² जब — जब वह खेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर दाखिल होते, और जब — जब वह मज़बह के नज़दीक जाते तो अपने आपको धोकर जाते थे, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। ³³ और उसने घर और मज़बह के चारों तरफ़ सहन को घेर कर सहन के दरवाज़े का पर्दा डाल दिया यूँ मूसा ने उस काम को ख़त्म किया।

22222 22 222222 22 22222 22 22 22222

³⁴ तब खेमा — ए — इजितमा'अ पर बादल छा गया, और घर खुदावन्द के जलाल से भरा हो गया। ³⁵ और मूसा खेमा — ए — इजितमा'अ में दाखिल न हो सका क्योंकि वह बादल उस पर ठहरा हुआ था, और घर खुदावन्द के जलाल से भरा था। ³⁶ और बनी — इस्राईल के सारे सफ़र में यह होता रहा कि जब वह बादल घर के ऊपर से उठ जाता तो वह आगे बढ़ाते, ³⁷ लेकिन अगर वह बादल न उठता तो उस दिन तक सफ़र नहीं करते थे जब तक वह उठ न जाता। ³⁸ क्योंकि खुदावन्द का बादल इस्राईल के सारे घराने के समाने और उनके सारे सफ़र में दिन के वक़्त तो घर के ऊपर ठहरा रहता और रात को उसमें आग़ रहती थी।

अहबार

?????????? ?? ?????

मुसन्निफ़ की पहचान का मुआमला किताब की इखतितामी आयत से तहवील किया जाता है, जो यह बताती ही कि जो अहकाम खुदावंद ने कोह — ए — सीने पर बनी इस्राईल के लिए मूसा को दिए वह यही हैं (27:34, 7:38; 25:1; 26:46) तवारीख की किताब कई एक तारीखी कैफ़ियतें पेश करती है जो शरीयत से ताल्लुक रखती हैं (8:10; 24:10 — 23) अहबार का लफ़्ज़ लावी के कबीले से लिया गया है जिस के अरकान खुदावंद की तरफ़ से काहिन और इबादत के रहनुमा बतौर मुकर्रर थे — अहबार की किताब लावियों के मुआमलात ज़िम्मेवारियों और दीगर कई एक बातों से मुखातब है — अहम् तौर से तमाम काहिनों को सिखाया और समझाया गया था कि किस तरह लोगों को उनकी इबादत में रहनुमाई करें, और लोगों को मतला किया था कि किस तरह एक पाक ज़िन्दगी जियें।

????? ?????? ?? ?????????? ?? ???? ?

इसके तसनीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 1446 - 1405 क़ब्ल मसीह है।

अहबार की किताब में जो शरीयत के क़ानून पाए जाते हैं वह खुदा के ज़रिये मूसा को कहे गए थे या सीना पहाड़ के नज़दीक कहे गए थे जहां बनी इस्राईल कुछ दिनों के लिए क़याम किए हुए थे।

?????? ?????????????? ????? ?

इस किताब को काहिनों, लावियों, बनी इस्राईल कौम और उन की आने वाली पीढ़िके लिए लिखा गया था।

??? ?????????

अहबार की किताब खेमा — ए — इज्जितमा से मूसा को बुलाये जाने से शुरू होता है अहबार की किताब इन छुड़ाए हुए लोगों की बाबत वाज़ेह करती है कि किस तरह उन्हें अपने जलाली खुदा के साथ जो अब उन के दरमियान रहता है रिफ़ाक़त रखें — बनी इस्राईल कौम ने अभी हाल ही में मिस्र और उस की तहज़ीब और मज़हब को छोड़ा है और कनान में दाख़िल हुए हैं जहां दूसरी तहज़ीब और मज़हब कौम पर तासीर करेगी अहबार की किताब बनी इस्राईल के लिए यह मुआहदा फ़राहम करता है कि यहाँ की तहज़ीब से अलग होकर पाक बने रहें और यह्दे के लिए वफ़ादार बने रहें।

???????

सिखाना और समझाना।

बैरूनी खाका

1. नज़रों की बाबत हिदायात — 1:1-7:38
2. खुदा के काहिनों के लिए हिदायात — 8:1-10:20
3. खुदा के लोगों के लिए हिदायात — 11:1-15:33
4. कुर्बान्गाह और कफ़फ़ारा के दिन के लिए हिदायात — 16:1-34
5. पाकीज़गी को अमली जामा पहनाना — 17:1-22:33
6. सबतें, ईदें, सालाना मज़हबी तेहवार — 23:1-25:55
7. खुदा की बरकत हासिल करने के लिए शर्तें — 26:1-27:34

????? ?????? ?????? ?????????????? ?? ??????

1 और खुदावन्द ने खेमा — ए — इज्जितमा'अ में से मूसा को बुलाकर उससे कहा, ² बनी — इस्राईल से कह, कि जब तुम में से कोई खुदावन्द के लिए चढ़ावा चढ़ाए, तो तुम चौपायों या'नी गाय — बैल और भेड़ — बकरी का हदिया देना। ³ अगर उसका चढ़ावा गाय — बैल की सोख्तनी कुर्बानी हो, तो वह बे'ऐब नर को लाकर उसे खेमा — ए — इज्जितमा'अ के दरवाज़े पर चढ़ाए ताकि वह खुद खुदावन्द के सामने मक़बूल ठहरे। ⁴ और वह सोख्तनी कुर्बानी के जानवर के सिर पर अपना हाथ रखे, तब वह उसकी तरफ़ से मक़बूल होगा ताकि उसके लिए कफ़फ़ारा हो। ⁵ और वह उस बछड़े को खुदावन्द के सामने ज़बह करे, और हारून के बेटे जो काहिन हैं खून को लाकर उसे उस मज़बह पर चारों तरफ़ छिड़कें जो खेमा — ए — इज्जितमा'अ के दरवाज़े पर है। ⁶ तब वह उस सोख्तनी कुर्बानी के जानवर की खाल खींचे और उसके 'उज्व — 'उज्व को काट कर जुदा — जुदा करे। ⁷ फिर हारून काहिन के बेटे मज़बह पर आग रखें, और आग पर लकड़ियाँ तरतीब से चुन दें। ⁸ और हारून के बेटे जो काहिन हैं, उसके 'आज़ा को और सिर और चर्बी को उन लकड़ियों पर जो मज़बह की आग पर होंगी तरतीब से रख दें। ⁹ लेकिन वह उसकी अंतड़ियों और पायों को पानी से धो ले, तब काहिन सबको मज़बह पर जलाए कि वह सोख्तनी कुर्बानी या'नी खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी हों। ¹⁰ और अगर उसका चढ़ावा रेवड़ में से भेड़ या बकरी की सोख्तनी कुर्बानी हो, तो वह बे — 'ऐब नर को लाए। ¹¹ और वह उसे मज़बह की उत्तरी सिम्त में खुदावन्द के आगे ज़बह करे, और हारून के बेटे जो काहिन हैं उसके खून को मज़बह पर चारों तरफ़ छिड़कें। ¹² फिर वह उसके 'उज्व — 'उज्व को और सिर और चर्बी को काट कर जुदा — जुदा करे, और काहिन उनकी तरतीब

से उन लकड़ियों पर जो मज़बह की आग पर होंगी चुन दे; ¹³ लेकिन वह अंतड़ियों और पायों को पानी से धो ले। तब काहिन सबको लेकर मज़बह पर जला दे, वह सोख्तनी कुर्बानी या'नी खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी है। ¹⁴ “और अगर उसका चढ़ावा खुदावन्द के लिए परिन्दों की सोख्तनी कुर्बानी हो, तो वह कुमरियों या कबूतर के बच्चों का चढ़ावा चढ़ाए। ¹⁵ और काहिन उसको मज़बह पर लाकर उसका सिर मरोड़ डाले, और उसे मज़बह पर जला दे; और उसका खून मज़बह के पहलू पर गिर जाने दे। ¹⁶ और उसके पोटे को आलाइश के साथ ले जाकर मज़बह की पूरबी सिम्त में राख की जगह में डाल दे। ¹⁷ और वह उसके दोनों बाज़ुओं को पकड़ कर उसे चिर पर अलग — अलग न करे। तब काहिन उसे मज़बह पर उन लकड़ियों के ऊपर रख कर जो आग पर होंगी जला दे, वह सोख्तनी कुर्बानी या'नी खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी है।

2

?????? ?? ??????????? ?? ???????

¹ और अगर कोई खुदावन्द के लिए नज़र की कुर्बानी का हदिया लाए, तो अपने हदिये के लिए मैदा ले और उसमें तेल डाल कर उसके ऊपर लुबान रखे; ² और वह उसे हारून के बेटों के पास जो काहिन हैं लाए, और तेल मिले हुए मैदे में से इस तरह अपनी मुट्ठी भर कर निकाले कि सब लुबान उसमें आ जाए। तब काहिन उसे नज़र की कुर्बानी की यादगारी के तौर पर मज़बह के ऊपर जलाए। यह खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी होगी। ³ और जो कुछ उस नज़र की कुर्बानी में से बाकी रह जाए, वह हारून और उसके बेटों का होगा। यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में पाकतरीन चीज़ है। ⁴ “और जब तू तनूर का पका हुआ नज़र की कुर्बानी का हदिया लाए, तो वह तेल मिले हुए मैदे के बेखमीरी गिरदे या तेल चुपड़ी हुई बेखमीरी चपातियाँ हों। ⁵ और अगर तेरी नज़र की कुर्बानी का चढ़ावा तवे का पका हुआ हो, तो वह तेल मिले हुए बेखमीरी मैदे का हो। ⁶ उसको टुकड़े — टुकड़े करके उस पर तेल डालना, तो वह नज़र की कुर्बानी होगी। ⁷ और अगर तेरी नज़र की कुर्बानी का चढ़ावा कढ़ाई का तला हुआ हो, तो वह मैदे से तेल में बनाया जाए। ⁸ तू इन चीज़ों की नज़र की कुर्बानी का चढ़ावा खुदावन्द के पास

लाना, वह काहिन को दिया जाए। और वह उसे मज़बह के पास लाए। ⁹ और काहिन उस नज़र की कुर्बानी में से उसकी यादगारी का हिस्सा उठा कर मज़बह पर जलाए, यह खुदावन्द के लिए राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी होगी। ¹⁰ और जो कुछ उस नज़र की कुर्बानी में से बच रहे वह हारून और उसके बेटों का होगा। यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में पाकतरीन चीज़ है। ¹¹ कोई नज़र की कुर्बानी जो तुम खुदावन्द के सामने चढ़ाओ, वह खमीर मिला कर न बनाई जाए; तुम कभी आतिशी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने खमीर या शहद न जलाना। ¹² तुम इनको पहले फलों के हदिये के तौर पर खुदावन्द के सामने लाना, लेकिन राहतअंगेज़ खुशबू के लिए वह मज़बह पर न पेश किये जाएँ। ¹³ और तू अपनी नज़र की कुर्बानी के हर हदिये को *नमकीन बनाना, और अपनी किसी नज़र की कुर्बानी को अपने खुदा के 'अहद के नमक बगैर न रहने देना; अपने सब हदियों के साथ नमक भी पेश करना। ¹⁴ 'और अगर तू पहले फलों की नज़र का हदिया खुदावन्द के सामने पेश करे तो अपने पहले फलों की नज़र के चढ़ावे के लिए अनाज की भुनी हुई बालें, या'नी हरी — हरी बालों में से हाथ से मलकर निकाले हुए अनाज को चढ़ाना। ¹⁵ और उसमें तेल डालना और उसके ऊपर लुबान रखना, तो वह नज़र की कुर्बानी होगी। ¹⁶ और काहिन उसकी यादगारी के हिस्से को, या'नी थोड़े से मल कर निकाले हुए दानों को और थोड़े से तेल को और सारे लुबान को जला दे; यह खुदावन्द के लिए आतिशी कुर्बानी होगी।

3

???????? ?? ??????? ?? ???????

¹ और अगर उसका हदिया सलामती का ज़बीहा हो और वह गाय बैल में से किसी को अदा करे, तो चाहे वह नर हो या मादा; लेकिन जो बे — 'ऐब हो उसी को वह खुदावन्द के सामने पेश करे। ² और वह अपना हाथ अपने हदिये के जानवर के सिर पर रखे, और खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर उसे ज़बह करे; और हारून के बेटे जो काहिन हैं उसके खून को मज़बह पर चारों तरफ छिड़कें। ³ और वह सलामती के ज़बीहे में से खुदावन्द के लिए आतिशी कुर्बानी पेश करे, या'नी जिस चर्बी से अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं, ⁴ और वह सारी चर्बी जो अंतड़ियों पर लिपटी रहती है, और दोनों गुद और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और जिगर पर

* 2:13 2:13 नमक का मतलब है अब्दी अहद का बाँधा जाना जो किन तोड़ा जा सकता था और न मु'तदलकिया जा सकता था — यह इस हकीकत को ज़ाहिर करता था कि कुर्बानी में नमक डालना खुदा के साथ अहद बांधना हुआ, देखें गिनती की किताब 18:19 और 2 तवारीक 13:5

की झिल्ली गुदों के साथ; इन सभी को वह जुदा करे।⁵ और हारून के बेटे उन्हें मजबूह पर सोखनी कुर्बानी के ऊपर जलाएँ जो उन लकड़ियों पर होगी जो आग के ऊपर हैं; यह खुदावन्द के लिए राहतअंगेज खुशबू की अतिशी कुर्बानी है।⁶ और अगर उसका सलामती के ज़बीहे का हृदया खुदावन्द के लिए भेड़ — बकरी में से हो, तो चाहे नर हो या मादा, लेकिन जो बे — 'ऐब हो उसी को वह अदा करे।⁷ अगर वह बरी पेश करता हो, तो उसे खुदावन्द के सामने अदा करे,⁸ और अपना हाथ अपने चढ़ावे के जानवर के सिर पर रखे, और उसे खेमा — ए — इजितमा'अ के सामने ज़बह करे; और हारून के बेटे उसके खून को मजबूह पर चारों तरफ छिड़के।⁹ और वह सलामती के ज़बीहे में से खुदावन्द के लिए अतिशी कुर्बानी पेश करे; या'नी उसकी पूरी चर्बी भरी दुम को वह रीढ़ के पास से अलग करे, और जिस चर्बी से अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं, और वह सारी चर्बी जो अंतड़ियों पर लिपटी रहती है,¹⁰ और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और जिगर पर की झिल्ली गुदों के साथ; इन सभी को वह अलग करे।¹¹ और काहिन इन्हें मजबूह पर जलाए; यह उस अतिशी कुर्बानी की गिज़ा है जो खुदावन्द को पेश की जाती है।¹² “और अगर वह बकरा या बकरी पेश करता हो, तो उसे खुदावन्द के सामने अदा करे।¹³ और वह अपना हाथ उसके सिर पर रखे, और उसे खेमा — ए — इजितमा'अ के सामने ज़बह करे; और हारून के बेटे उसके खून को मजबूह पर चारों तरफ छिड़के।¹⁴ और वह उसमें से अपना चढ़ावा अतिशी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करे; या'नी जिस चर्बी से अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं, और वह सब चर्बी जो अंतड़ियों पर लिपटी रहती है,¹⁵ और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और जिगर पर की झिल्ली गुदों के साथ; इन सभी को वह अलग करे।¹⁶ और काहिन इनको मजबूह पर जलाए; यह उस अतिशी कुर्बानी की गिज़ा है, जो राहतअंगेज खुशबू के लिए होती है; सारी चर्बी खुदावन्द की है।¹⁷ यह तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में नसल — दर — नसल एक हमेशा का क़ानून रहेगा, कि तुम चर्बी या खून मुतलक न खाओ।”

4

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

¹ और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, ² बनी इस्राईल से कह कि अगर कोई उन कामों में से जिनको खुदावन्द

ने मना' किया है, किसी काम को करे और उससे अनजाने में ख़ता हो जाए।³ अगर *काहिन — ए — मम्सूह ऐसी ख़ता करे जिससे क़ौम मुजरिम ठहरती हो, तो वह अपनी उस ख़ता के लिए जो उसने की है, एक बे — 'ऐब बछड़ा ख़ता की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करे।⁴ वह उस बछड़े को खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर खुदावन्द के आगे लाए, और बछड़े के सिर पर अपना हाथ रखे और उसको खुदावन्द के आगे ज़बह करे।⁵ और वह काहिन — ए — मम्सूह उस बछड़े के खून में से कुछ लेकर उसे खेमा — ए — इजितमा'अ में ले जाए।⁶ और काहिन अपनी उँगली खून में डुबो — डुबो कर, और खून में से ले लेकर उसे हैकल के पर्दे के सामने सात बार खुदावन्द के आगे छिड़के।⁷ और काहिन उसी खून में से खुशबूदार खुशबू जलाने की कुर्बानगाह के सींगों पर, जो खेमा — ए — इजितमा'अ में है, खुदावन्द के आगे लगाए; और उस बछड़े के बाक़ी सब खून को सोखनी कुर्बानी के मजबूह के पाये पर, जो खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर है उँडेल दे।⁸ फिर वह ख़ता की कुर्बानी के बछड़े की सब चर्बी को उससे अलग करे; या'नी जिस चर्बी से अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं, और वह सब चर्बी जो अंतड़ियों पर लिपटी रहती है,⁹ और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और जिगर पर की झिल्ली गुदों के साथ; इन सभी को वह वैसे ही अलग करे।¹⁰ जैसे सलामती के ज़बीहे के बछड़े से वह अलग किए जाते हैं; और काहिन उनको सोखनी कुर्बानी के मजबूह पर जलाए।¹¹ और उस बछड़े की खाल, और उसका सब गोश्त, और सिर और पाये, और अंतड़ियाँ और गोबर;¹² या'नी पूरे बछड़े को लश्कर गाह के बाहर किसी साफ़ जगह में जहाँ राख पड़ती है, ले जाए; और सब कुछ लकड़ियों पर रख कर आग से जलाए, वह वहीं जलाया जाए जहाँ राख डाली जाती है।¹³ 'अगर 'बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत से अनजाने चूक हो जाए, और यह बात जमा'अत की आँखों से छिपी तो हो तो भी वह उन कामों में से जिन्हें खुदावन्द ने मना' किया है, किसी काम को करके मुजरिम हो गई हो,¹⁴ तो उस ख़ता के जिसके वह कुसूरवार हों, मा'लूम हो जाने पर जमा'अत एक बछड़ा ख़ता की कुर्बानी के तौर पर चढ़ाने के लिए खेमा — ए — इजितमा'अ के सामने लाए।¹⁵ और जमा'अत के बुज़ुर्ग अपने — अपने हाथ खुदावन्द के आगे उस बछड़े के सिर पर रखें, और बछड़ा खुदावन्द के आगे ज़बह किया जाए।¹⁶ और

* 4:3 4:3 सरदार काहिन † 4:13 4:13 जमा'शुदा तमाम बनी इस्राईल ‡ 4:14 4:14 इस्राईली लोग

काहिन — ए — मम्सूह उस बछड़े के खून में से कुछ खेमा — ए — इजितमा'अ में ले जाए; ¹⁷ और काहिन अपनी उँगली उस खून में डुबो — डुबो कर उसे पर्दे के सामने सात बार खुदावन्द के आगे छिड़के, ¹⁸ और उसी खून में से मज़बह के सींगों पर जो खुदावन्द के आगे खेमा — ए — इजितमा'अ में है लगाए, और बाक़ी सारा खून सोख़्तनी कुर्बानी के मज़बह के पाये पर, जो खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर है, उँडेल दे। ¹⁹ और उसकी सब चर्बी उससे अलग करके उसे मज़बह पर जलाए। ²⁰ वह बछड़े से यही करे, या'नी जो कुछ ख़ता की कुर्बानी के बछड़े से किया था, वही इस बछड़े से करे। यूँ काहिन उनके लिए कफ़ारा दे, तो उन्हें मु'आफ़ी मिलेगी; ²¹ और वह उस बछड़े को लश्करगाह के बाहर ले जा कर जलाए, जैसे पहले बछड़े को जलाया था; यह जमा'अत की ख़ता की कुर्बानी है। ²² और जब किसी सरदार से ख़ता हो जाए, और वह उन कामों में से जिन्हें खुदावन्द ने मना' किया है किसी काम को अनजाने में कर बैठे और मुजरिम हो जाए। ²³ तो जब वह ख़ता जो उससे सरज़द हुई है उसे बता दी जाए, तो वह एक बे — 'ऐब बकरा अपनी कुर्बानी के लिए लाए; ²⁴ और अपना हाथ उस बकरे के सिर पर रखे, और उसे उस जगह ज़बह करे जहाँ सोख़्तनी कुर्बानी के जानवर खुदावन्द के आगे ज़बह करते हैं; यह ख़ता की कुर्बानी है। ²⁵ और काहिन ख़ता की कुर्बानी का कुछ खून अपनी उँगली पर लेकर उसे सोख़्तनी कुर्बानी के मज़बह के सींगों पर लगाए, और उसका बाक़ी सब खून सोख़्तनी कुर्बानी के मज़बह के पाए पर उँडेल दे। ²⁶ और सलामती के ज़बीहे की चर्बी की तरह उसकी सब चर्बी मज़बह पर जलाए। यूँ काहिन उसकी ख़ता का कफ़ारा दे, तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी। ²⁷ 'और अगर कोई 'आम आदमियों में से अनजाने में ख़ता करे, और उन कामों में से जिन्हें खुदावन्द ने मना' किया है किसी काम को करके मुजरिम हो जाए; ²⁸ तो जब वह ख़ता जो उसने की है उसे बता दी जाए, तो वह अपनी उस ख़ता के लिए जो उससे सरज़द हुई है, एक बे — 'ऐब बकरी लाए। ²⁹ और वह अपना हाथ ख़ता की कुर्बानी के जानवर के सिर पर रखे, और ख़ता की कुर्बानी के उस जानवर को सोख़्तनी कुर्बानी की जगह पर ज़बह करे। ³⁰ और काहिन उसका कुछ खून अपनी उँगली पर ले कर उसे सोख़्तनी कुर्बानी के मज़बह के सींगों पर लगाए, और उसका बाक़ी सब खून मज़बह के पाए पर उँडेल दे; ³¹ और वह उसकी सारी चर्बी को अलग करे जैसे सलामती के ज़बीहे की चर्बी अलग की जाती है,

और काहिन उसे मज़बह पर राहतअंगेज़ खुशबू के तौर पर खुदावन्द के लिए जलाए। यूँ काहिन उसके लिए कफ़ारा दे, तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी। ³² और अगर ख़ता की कुर्बानी के लिए उसका हृदया बर्रा हो, तो वह बे — 'ऐब मादा लाए; ³³ और अपना हाथ ख़ता की कुर्बानी के जानवर के सिर पर रखे; और उसे ख़ता की कुर्बानी के तौर पर उस जगह ज़बह करे जहाँ सोख़्तनी कुर्बानी ज़बह करते हैं। ³⁴ और काहिन ख़ता की कुर्बानी का कुछ खून अपनी उँगली पर लेकर उसे सोख़्तनी कुर्बानी के मज़बह के सींगों पर लगाए, और उसका बाक़ी सब खून मज़बह के पाये पर उँडेल दे। ³⁵ और उसकी सब चर्बी को अलग करे जैसे सलामती के ज़बीहे के बर्रा की चर्बी अलग की जाती है। और काहिन उसको मज़बह पर खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों के ऊपर जलाए। यूँ काहिन उसके लिए उसकी ख़ता का जो उससे हुई है कफ़ारा दे, तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी।

5

११ ११११११ १११११ ११११ १११११ ११११ ११

¹ और अगर कोई इस तरह ख़ता करे कि वह ग़वाह हो और उसे क़सम दी जाए कि जैसे उसने कुछ देखा या उसे कुछ मा'लूम है, और वह न बताए, तो उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा। ² या अगर कोई शख्स किसी *नापाक चीज़ को छू ले, चाहे वह नापाक जानवर या नापाक चौपाये या नापाक रेंगनेवाले जानदार की लाश हो, तो चाहे उसे मा'लूम भी न हो कि वह नापाक हो गया है तो भी वह मुजरिम ठहरेगा। ³ या अगर वह इंसान की उन नज़ासतों में से जिनसे वह नज़िस हो जाता है, किसी नज़ासत को छू ले और उसे मा'लूम न हो, तो वह उस वक़्त मुजरिम ठहरेगा जब उसे मा'लूम हो जाएगा। ^{† 4} या अगर कोई बग़ैर सोचे अपनी ज़बान से बुराई या भलाई करने की क़सम खाले, तो क़सम खा कर वह आदमी चाहे कैसी ही बात बग़ैर सोचे कह दे, बशर्ते कि उसे मा'लूम न हो, तो ऐसी बात में मुजरिम उस वक़्त ठहरेगा जब उसे मा'लूम हो जाएगा। ⁵ और जब वह इन बातों में से किसी में मुजरिम हो, तो जिस अम्र में उससे ख़ता हुई है वह उसका इकरार करे, ⁶ और खुदावन्द के सामने अपने जुर्म की कुर्बानी लाए; या'नी जो ख़ता उससे हुई है उसके लिए रेवड़ में से एक मादा, या'नी एक भेड़ या बकरी ख़ता की कुर्बानी के तौर पर पेश करे, और काहिन उसकी ख़ता का कफ़ारा दे ⁷ 'और अगर उसे भेड़ देने का मक़दूर न हो, तो वह अपनी ख़ता के लिए जुर्म की कुर्बानी के तौर पर दो कुमरियाँ या कबूतर

* 5:2 5:2 रस्मी तौर से — नापाक † 5:3 5:3 12 से 14 बाब देखें

के दो बच्चे खुदावन्द के सामने पेश करे; एक खता की कुर्बानी के लिए और दूसरा सोख्तनी कुर्बानी के लिए।⁸ वह उन्हें काहिन के पास ले आए जो पहले उसे जो खता की कुर्बानी के लिए है पेश करे, और उसका सिर गर्दन के पास से मरोड़ डाले पर उसे अलग न करे,⁹ और खता की कुर्बानी का कुछ खून मजबह के पहलू पर छिड़के और बाकी खून को मजबह के पाये पर गिर जाने दे; यह खता की कुर्बानी है।¹⁰ और दूसरे परिन्दे को हुक्म के मुवाफ़िक़ सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर अदा करे यूँ काहिन उसकी खता का जो उसने की है कफ़ारा दे, तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी।¹¹ और अगर उसे दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे लाने का भी मक़दूर न हो, तो अपनी खता के लिए अपने हृदिये के तौर पर, § ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा खता की कुर्बानी के लिए लाए। उस पर न तो वह तेल डाले, न लुबान रखे, क्योंकि यह खता की कुर्बानी है।¹² वह उसे काहिन के पास लाए, और काहिन उसमें से अपनी मुट्ठी भर कर उसकी यादगारी का हिस्सा मजबह पर खुदावन्द की आतिशीन कुर्बानी के ऊपर जलाए। यह खता की कुर्बानी है।¹³ यूँ काहिन उसके लिए इन बातों में से, जिस किसी में उससे खता हुई है उस खता का कफ़ारा दे, तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी; और जो कुछ बाकी रह जाएगा, वह नज़र की कुर्बानी की तरह काहिन का होगा।”

¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶

¹⁴ और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; ¹⁵ अगर खुदावन्द की पाक चीज़ों में किसी से तक़सीर हो और वह अनजाने में खता करे, तो वह अपने जुर्म की कुर्बानी के तौर पर रेवड़ में से बे — 'ऐब मेंढा खुदावन्द के सामने अदा करे। *जुर्म की कुर्बानी के लिए उसकी कीमत हैकल की मिस्काल के हिसाब से चाँदी की उतनी ही मिस्कालें हों, जितनी तू मुक़र्रर कर दे।¹⁶ और जिस पाक चीज़ में उससे तक़सीर हुई है वह उसका मु'आवज़ा दे, और उसमें पाँचवाँ हिस्सा और बढ़ा कर उसे काहिन के हवाले करे। यूँ काहिन जुर्म की कुर्बानी का मेंढा पेश कर उसका कफ़ारा दे, तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी।¹⁷ 'और अगर कोई खता करे, और उन कामों में से जिन्हें खुदावन्द ने मना' किया है किसी काम को करे, तो चाहे वह यह बात जानता भी न हो तो भी मुजरिम ठहरेगा; और उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा।¹⁸ तब वह रेवड़ में से एक बे — 'ऐब मेंढा उतने ही दाम का, जो तू मुक़र्रर कर दे, जुर्म की कुर्बानी के तौर पर काहिन के पास लाए। यूँ काहिन उसकी उस बात का, जिसमें उससे अनजाने में चूक हो गई

कफ़ारा दे, तो उसे मु'आफ़ी मिलेगी।¹⁹ यह जुर्म की कुर्बानी है, क्योंकि वह यक़ीनन खुदावन्द के आगे मुजरिम है।”

6

¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶¶ ¶¶

¹ फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, ² “अगर किसी से यह खता हो कि वह खुदावन्द का कुसूर करे, और अमानत या लेन — देन या लूट के मु'आमिले में अपने पड़ोसी को धोखा दे, या अपने पड़ोसी पर जुल्म करे,³ या किसी खोई हुई चीज़ को पाकर धोखा दे, और झूठी कसम भी खा ले; तब इनमें से चाहे कोई बात हो जिसमें किसी शख्स से खता हो गई है,⁴ इसलिए अगर उससे खता हुई है और वह मुजरिम ठहरा है, तो जो चीज़ उसने लूटी, या जो चीज़ उसने जुल्म करके छीनी, या जो चीज़ उसके पास अमानत थी, या जो खोई हुई चीज़ उसे मिली,⁵ या जिस चीज़ के बारे में उसने झूठी कसम खाई; उस चीज़ को वह ज़रूर पूरा — पूरा वापस करे, और असल के साथ पाँचवाँ हिस्सा भी बढ़ा कर दे। जिस दिन यह मा'लूम हो कि वह मुजरिम है, उसी दिन वह उसे उसके मालिक को वापस दे;⁶ और अपने जुर्म की कुर्बानी खुदावन्द के सामने अदा करे, और जितना दाम तू मुक़र्रर करे उतने दाम का एक बे — 'ऐब मेंढा रेवड़ में से जुर्म की कुर्बानी के तौर पर काहिन के पास लाए।⁷ यूँ काहिन उसके लिए खुदावन्द के सामने कफ़ारा दे, तो जिस काम को करके वह मुजरिम ठहरा है उसकी उसे मु'आफ़ी मिलेगी।”

¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶¶¶¶¶¶¶¶¶ ¶¶ ¶¶¶¶¶¶

⁸ फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, ⁹ “हारून और उसके बेटों को यूँ हुक्म दे कि सोख्तनी कुर्बानी के बारे में शरा' यह है, कि सोख्तनी कुर्बानी मजबह के ऊपर आतिशदान पर तमाम रात सुबह तक रहे, और मजबह की आग उस पर जलती रहे।¹⁰ और काहिन अपना कतान का लिबास पहने और कतान के पाजामे को अपने तन पर डाले और आग ने जो सोख्तनी कुर्बानी को मजबह पर भसम करके राख कर दिया है, उस राख को उठा कर उसे मजबह की एक तरफ़ रखे।¹¹ फिर वह अपने लिबास को उतार कर दूसरे कपड़े पहने, और उस राख को उठा कर लश्करगाह के बाहर किसी साफ़ जगह में ले जाए।¹² और मजबह पर आग जलती रहे, और कभी बुझने न पाए; और काहिन हर सुबह को उस पर लकड़ियाँ जला कर सोख्तनी कुर्बानी को उसके ऊपर चुन दे, और सलामती के ज़बीहों की चर्बी को उसके ऊपर जलाया

‡ 5:10 5:10 जो दिया गया था जोड़ें § 5:11 5:11 1 किलोग्राम

* 5:15 5:15 या दोबारा अदाएगी की कुरबानी

करे। ¹³ मज़बह पर आग हमेशा जलती रखी जाए; वह कभी बुझने न जाए।

॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥

¹⁴ “नज़र की कुर्बानी 'और नज़र की कुर्बानी के बारे में शरा' यह है, कि हारून के बेटे उसे मज़बह के आगे खुदावन्द के सामने पेश करें। ¹⁵ और वह नज़र की कुर्बानी में से अपनी मुट्ठी भर इस तरह निकाले कि उसमें थोड़ा सा मैदा और कुछ तेल जो उसमें पड़ा होगा और नज़र की कुर्बानी का सब लुबान आ जाए, और इस यादगारी के हिस्से को मज़बह पर खुदावन्द के सामने राहतअंगेज खुशबू के तौर पर जलाए। ¹⁶ और जो बाक़ी बचे उसे हारून और उसके बेटे खाएँ, वह बग़ैर खमीर के पाक जगह में खाया जाए, या'नी वह खेमा — ए — इजितमा'अ के सहन में उसे खाएँ। ¹⁷ वह खमीर के साथ पकाया न जाए; मैंने यह अपनी आतिशीन कुर्बानियों में से उनका हिस्सा दिया है, और यह खता की कुर्बानी और जुर्म की कुर्बानी की तरह बहुत पाक है। ¹⁸ हारून की औलाद के सब मर्द उसमें से खाएँ। तुम्हारी नसल — दर — नसल की आतिशी कुर्बानियाँ जो खुदावन्द को पेश करेंगे उनमें से यह उनका हक़ होगा। जो कोई उन्हें छुए वह पाक ठहरेगा।”

॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥

¹⁹ और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, ²⁰ “जिस दिन हारून को मसह किया जाए उस दिन वह और उसके बेटे खुदावन्द के सामने यह हदिया अदा करें, कि ऐफ़्रा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा, आधा सुबह को और आधा शाम को, हमेशा नज़र की कुर्बानी के लिए लाएँ। ²¹ वह तवे पर तेल में पकाया जाए; जब वह तर हो जाए तो तू उसे ले आना। इस नज़र की कुर्बानी को पकवान के टुकड़ों की सूरत में पेश करना ताकि वह खुदावन्द के लिए राहतअंगेज खुशबू भी हो। ²² और जो उसके बेटों में से उसकी जगह काहिन मम्सूह हो वह उसे पेश करे। यह हमेशा का क़ानून होगा कि वह खुदावन्द के सामने बिल्कुल जलाया जाए। ²³ काहिन की हर एक नज़र की कुर्बानी बिल्कुल जलाई जाए; वह कभी खाई न जाए।”

॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥

²⁴ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, ²⁵ “हारून और उसके बेटों से कह कि खता की कुर्बानी के बारे में शरा' यह है, कि जिस जगह सोख़्तनी कुर्बानी का जानवर ज़बह किया जाता है, वहीं खता की कुर्बानी का जानवर भी खुदावन्द के आगे ज़बह किया जाए; वह बहुत पाक है। ²⁶ जो काहिन उसे खता के लिए पेश करे वह उसे खाए; वह पाक जगह में, या'नी खेमा — ए — इजितमा'अ

के सहन में खाया जाए। ²⁷ जो कुछ उसके गोशत से छू जाए वह पाक ठहरेगा, और अगर किसी कपड़े पर उसके खून की छिट पड़ जाए, तो जिस कपड़े पर उसकी छींट पड़ी है तू उसे किसी पाक जगह में धोना। ²⁸ और मिट्टी का वह बर्तन जिसमें वह पकाया जाए तोड़ दिया जाए, लेकिन अगर वह पीतल के बर्तन में पकाया जाए तो उस बर्तन की माँज कर पानी से धो लिया जाए। ²⁹ और काहिनों में से हर मर्द उसे खाए; वह बहुत पाक है। ³⁰ लेकिन जिस खता की कुर्बानी का कुछ खून खेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर पाक मक़ाम में कफ़़ारे के लिए पहुँचाया गया है, उसका गोशत कभी न खाया जाए; बल्कि वह आग से जला दिया जाए।

7

॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥

¹ “और जुर्म की कुर्बानी के बारे में शरा' यह है। वह बहुत पाक है। ² जिस जगह सोख़्तनी कुर्बानी के जानवर को ज़बह करते हैं, वहीं वह जुर्म की कुर्बानी के जानवर को भी ज़बह करें; और वह उसके खून को मज़बह के चारों तरफ़ छिड़के। ³ और वह उसकी सब चर्बी को चढ़ाए, या'नी उसकी मोटी दुम को, और उस चर्बी को जिससे अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं ⁴ और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और जिगर पर की झिल्ली गुर्दों के साथ: इन सबको वह अलग करे। ⁵ और काहिन उनको मज़बह पर खुदावन्द के सामने आतिशीन कुर्बानी के तौर पर जलाए, यह जुर्म की कुर्बानी है। ⁶ और काहिनों में से हर मर्द उसे खाए और किसी पाक जगह में उसे खाएँ; वह बहुत पाक है। ⁷ जुर्म की कुर्बानी वैसी ही है जैसी खता की कुर्बानी है और उनके लिए एक ही शरा' है, और उन्हें वही काहिन ले जो उनसे कफ़़ारा देता है ⁸ और जो काहिन किसी शख्स की तरफ़ से सोख़्तनी कुर्बानी पेश करता है वही काहिन उस सोख़्तनी कुर्बानी की खाल को जो उसने पेश की, अपने लिए ले — ले। ⁹ और हर एक नज़र की कुर्बानी जो तनूर में पकाई जाए, और वह भी जी कड़ाही में तैयार की जाए, और तवे की पकी हुई भी उसी काहिन की है जो उसे पेश करे। ¹⁰ और हर एक नज़र की कुर्बानी चाहे उसमें तेल मिला हुआ हो या वह खुशक हो, बराबर — बराबर हारून के सब बेटों के लिए हो।

॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥

¹¹ 'और सलामती के ज़बीहे के बारे में जिसे कोई खुदावन्द के सामने चढ़ाए शरा' यह है, ¹² कि वह अगर शुक्राने के तौर पर उसे अदा करे तो वह शुक्राने के

जबीहे के साथ, तेल मिले हुए बे — खमीरी कुल्चे और तेल चुपड़ी हुई बे — खमीरी चपातियाँ और तेल मिले हुए मैदे के तर कुल्चे भी पेश करे। ¹³ और सलामती के जबीहे की कुर्बानी के साथ जो शुक्राने के लिए होगी, वह खमीरी रोटी के गिर्द अपने हृदिये पर पेश करे। ¹⁴ और हर हृदिये में से वह एक को लेकर उसे खुदावन्द के सामने हिलाने की कुर्बानी के तौर पर अदा करे; और यह उस काहिन का ही जो सलामती के जबीहे का खून छिड़कता है। ¹⁵ और सलामती के जबीहों की उस कुर्बानी का गोश्त, जो उस की तरफ़ से शुक्राने के तौर पर होगी, कुर्बानी अदा करने के दिन ही खा लिया जाए; वह उसमें से कुछ सुबह तक बाकी न छोड़े। ¹⁶ लेकिन अगर उसके चढ़ावे की कुर्बानी मिन्नत का या रज़ा का हृदिया हो, तो वह उस दिन खाई जाए जिस दिन वह अपनी कुर्बानी पेश करे; और जो कुछ उस में से बच रहे, वह दूसरे दिन खाया जाए। ¹⁷ लेकिन जो कुछ उस कुर्बानी के गोश्त में से तीसरे दिन तक रह जाए वह आग में जला दिया जाए। ¹⁸ और उसके सलामती के जबीहों की कुर्बानी के गोश्त में से अगर कुछ तीसरे दिन खाया जाए तो वह मंज़ूर न होगा, और न उस का सवाब कुर्बानी देने वाले की तरफ़ मन्सूब होगा, बल्कि यह मकरूह बात होगी; और जो उस में से खाए उस का गुनाह उसी के सिर लगेगा। ¹⁹ “और जो गोश्त किसी नापाक चीज़ से छू जाए, खाया न जाए; वह आग में जलाया जाए। और जबीहे के गोश्त को, जो पाक है वह तो खाए, ²⁰ लेकिन जो शरूख नापाकी की हालत में खुदावन्द की सलामती के जबीहे का गोश्त खाए, वह अपने लोगों में से काट डाला जाए। ²¹ और जो कोई किसी नापाक चीज़ को छुए, चाहे वह इंसान की नापाकी हो या नापाक जानवर हो या कोई नजिस मकरूह शय हो, और फिर खुदावन्द के सलामती के जबीहे के गोश्त में से खाए, वह भी अपने लोगों में से काट डाला जाए।”

~~~~~

<sup>22</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>23</sup> “बनी — इस्राईल से कह, कि तुम लोग न तो बैल की न भेड़ की और न बकरी की कुछ चर्बी खाना। <sup>24</sup> जो जानवर खुद — ब — खुद मर गया हो और जिस को दरिन्दों ने फाड़ा हो, उनकी चर्बी और — और काम में लाओ तो लाओ पर उसे तुम किसी हाल में न खाना। <sup>25</sup> क्योंकि जो कोई ऐसे चौपाये की चर्बी खाए, जिसे लोग आतिशी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने चढ़ाते हैं, वह खाने वाला आदमी अपने लोगों में से काट डाला जाए। <sup>26</sup> और तुम अपनी सुकूनतगाहों में कहीं भी किसी तरह का खून चाहे

परिन्दे का हो या चौपाये का, हरगिज़ न खाना। <sup>27</sup> जो कोई किसी तरह का खून खाए, वह शरूख अपने लोगों में से काट डाला जाए।”

~~~~~

²⁸ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, ²⁹ “बनी — इस्राईल से कह कि जो कोई अपना सलामती का जबीहा खुदावन्द के सामने पेश करे, वह खुद ही अपने सलामती के जबीहे की कुर्बानी में से अपना हृदिया खुदावन्द के सामने लाए।” ³⁰ वह अपने ही हाथों में खुदावन्द की आतिशी कुर्बानी को लाए, या'नी चर्बी को सीने के साथ लाए कि सीना हिलाने की कुर्बानी के तौर पर हिलाया जाए। ³¹ और काहिन चर्बी को मज़बह पर जलाए, लेकिन सीना हारून और उसके बेटों का हो। ³² और तुम सलामती के जबीहों की दहनी रान उठाने की कुर्बानी के तौर पर काहिन को देना। ³³ हारून के बेटों में से जो सलामती के जबीहों का खून और चर्बी पेश करे, वही वह दहनी रान अपना हिस्सा ले। ³⁴ क्योंकि बनी इस्राईल के सलामती के जबीहों में से हिलाने की कुर्बानी का सीना और उठाने की कुर्बानी की रान को लेकर, मैंने हारून काहिन और उसके बेटों को दिया है, कि यह हमेशा बनी इस्राईल की तरफ़ से उन का हक़ हो। ³⁵ “यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में से हारून के मन्सूह होने का और उसके बेटों के मन्सूह होने का हिस्सा है, जो उस दिन मुक़र्रर हुआ जब वह खुदावन्द के सामने काहिन की खिदमत को अंजाम देने के लिए हाज़िर किए गए। ³⁶ या'नी जिस दिन खुदावन्द ने उन्हें मसह किया, उस दिन उसने यह हुक्म दिया कि बनी — इस्राईल की तरफ़ से उन्हें यह मिला करे; इसलिए उन की नसल — दर — नसल यह उन का हक़ रहेगा।” ³⁷ सोख्तनी कुर्बानी, और नज़र की कुर्बानी, और ख़ता की कुर्बानी, और जुर्म की कुर्बानी, और तख़सीस और सलामती के जबीहे के बारे में शरा' यह है। ³⁸ जिसका हुक्म खुदावन्द ने मूसा को उस दिन कोह-ए-सीना पर दिया जिस दिन उसने बनी — इस्राईल को फ़रमाया, कि सीना के वीराने में खुदावन्द के सामने अपनी कुर्बानी पेश करें।

8

~~~~~

<sup>1</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “हारून और उसके साथ उसके बेटों को, और लिबास को और मसह करने के तेल को, और ख़ता की कुर्बानी के बछड़े और दोनों मेंढों और बे — खमीरी रोटियों की टोकरी को ले; <sup>3</sup> और सारी जमा'अत को खेमा — ए — इजितमा'अ

के दरवाजे पर जमा' कर।" 4 चुनाँचे मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक 'अमल किया; और सारी जमा'अत खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर जमा' हुई। 5 तब मूसा ने जमा'अत से कहा, "यह वह काम है, जिसके करने का हुक्म खुदावन्द ने दिया है।" 6 फिर मूसा हारून और उसके बेटों को आगे लाया और उन को पानी से गुस्ल दिलाया। 7 और उसको कुरता पहना कर उस पर कमरबन्द लपेटा, और उसको जुब्बा पहना कर उस पर अफ़ोद लगाया और अफ़ोद के कारीगरी से बुने हुए कमरबन्द को उस पर लपेटा, और उसी से उसको उसके ऊपर कस दिया। 8 और सीनाबन्द को उसके ऊपर लगा कर सीनाबन्द में ऊरीम और तुम्मीम लगा दिए। 9 और उसके सिर पर 'अमामा रखवा और 'अमामे पर सामने सोने के पत्तर या'नी पाक ताज को लगाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 10 और मूसा ने मसह करने का तेल लिया; और घर को और जो कुछ उसमें था सब को मसह कर के पाक किया। 11 और उस में से थोड़ा सा लेकर मज़बह पर सात बार छिड़का; और मज़बह और उसके सब बर्तनों को, और हौज़ और उसकी कुर्सी को मसह किया, ताकि उन्हें पाक करे। 12 और मसह करने के तेल में से थोड़ा सा हारून के सिर पर डाला और उसे मसह किया ताकि वह पाक हो। 13 फिर मूसा हारून के बेटों को आगे लाया और उन को कुरते पहनाए, और उन पर कमरबन्द लपेटे, और उनको पगड़ियाँ पहनाई जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 14 और वह खता की कुर्बानी के बछड़े को आगे लाया, और हारून और उसके बेटों ने अपने — अपने हाथ खता की कुर्बानी के बछड़े के सिर पर रखे। 15 फिर उसने उसको ज़बह किया, और मूसा ने खून को लेकर मज़बह के चारों तरफ़ उसके सींगों पर अपनी उँगली से लगाया और मज़बह को पाक किया; और बाक़ी खून मज़बह के पाये पर उँडेल कर उसका कफ़ारा दिया, ताकि वह पाक हो। 16 और मूसा ने अंतड़ियों के ऊपर की सारी चर्बी, और जिगर पर की झिल्ली, और दोनों गुर्दे और उन की चर्बी को लिया और उन्हें मज़बह पर जलाया; 17 लेकिन बछड़े को, उसकी खाल और गोश्त और गोबर के साथ, लश्करगाह के बाहर आग में जलाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 18 फिर उसने सोख्तनी कुर्बानी के मेंढे को हाज़िर किया, और हारून और उसके बेटों ने अपने — अपने हाथ उस मेंढे के सिर पर रखे। 19 और उसने उसको ज़बह किया, और मूसा ने खून को मज़बह के ऊपर चारों तरफ़ छिड़का। 20 फिर उसने मेंढे के 'उज्व — 'उज्व को काट कर अलग किया, और मूसा ने सिर और 'आज़ा और चर्बी को जलाया। 21 और उसने अंतड़ियों

और पायों को पानी से धोया, और मूसा ने पूरे मेंढे को मज़बह पर जलाया। यह सोख्तनी कुर्बानी राहतअंगेज़ खुशबू के लिए थी, यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानी थी, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 22 और उसने दूसरे मेंढे को जो तख्सीसी मेंढा था हाज़िर किया, और हारून और उसके बेटों ने अपने — अपने हाथ उस मेंढे के सिर पर रखे। 23 और उसने उस को ज़बह किया, और मूसा ने उसका कुछ खून लेकर उसे हारून के दहने कान की लौ पर, और दहने हाथ के अंगूठे और दहने पाँव के अंगूठे पर लगाया। 24 फिर वह हारून के बेटों को आगे लाया, और उसी खून में से कुछ उनके दहने कान की लौ पर और दहने हाथ के अंगूठे और दहने पाँव के अंगूठे पर लगाया; और बाक़ी खून को उसने मज़बह के ऊपर चारों तरफ़ छिड़का। 25 और उसने चर्बी और मोटी दुम, और अंतड़ियों के ऊपर की चर्बी, और जिगर पर की झिल्ली, और दोनों गुर्दे और उन की चर्बी, और दहनी रान इन सभी को लिया, 26 और बे — खमीरी रोटियों की टोकरी में से जो खुदावन्द के सामने रहती थी, बे — खमीरी रोटी का एक गिर्दा, और तेल चुपड़ी हुई रोटी का एक गिर्दा, और एक चपाती निकाल कर उन्हें चर्बी और दहनी रान पर रखवा। 27 और इन सभी को हारून और उसके बेटों के हाथों पर रखकर उन्हें हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाया। 28 फिर मूसा ने उनको उनके हाथों से ले लिया, और उनको मज़बह पर सोख्तनी कुर्बानी के ऊपर जलाया। यह राहतअंगेज़ खुशबू के लिए तख्सीसी कुर्बानी थी। यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानी थी। 29 फिर मूसा ने सीने को लिया, और उसको हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाया। उस तख्सीसी मेंढे में से यही मूसा का हिस्सा था, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 30 और मूसा ने मसह करने के तेल और मज़बह के ऊपर के खून में से कुछ — कुछ लेकर उसे हारून और उसके लिबास पर, और साथ ही उसके बेटों पर और उनके लिबास पर छिड़का; और हारून और उसके लिबास को, और उसके बेटों को और उनके लिबास को पाक किया। 31 और मूसा ने हारून और उसके बेटों से कहा कि, ये गोश्त खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर पकाओ, और इसको वहीं उस रोटी के साथ जो तख्सीसी टोकरी में है, खाओ, जैसा मैंने हुक्म किया है कि हारून और उसके बेटे उसे खाएँ। 32 और इस गोश्त और रोटी में से जो कुछ बच रहे उसे आग में जला देना; 33 और जब तक तुम्हारी तख्सीस के दिन पूरे न हों, तब तक या'नी सात दिन तक, तुम खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे से बाहर न जाना;

क्योंकि सात दिन तक वह तुम्हारी तस्सीस करता रहेगा।  
 34 जैसा आज किया गया है, वैसा ही करने का हुक्म खुदावन्द ने दिया है ताकि तुम्हारे लिए कफ़ारा हो।  
 35 इसलिए तुम खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर सात रोज़ तक दिन रात ठहरे रहना, और खुदावन्द के हुक्म को मानना, ताकि तुम मर न जाओ; क्योंकि ऐसा ही हुक्म मुझको मिला है।  
 36 तब हारून और उसके बेटों ने सब काम खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ किया जो उस ने मूसा के ज़रिए दिया था।

## 9

०००००००० ०० ०००० ००० ०००० ००००

1 \*आठवें दिन मूसा ने हारून और उसके बेटों को और बनी — इस्राईल के बुजुर्गों को बुलाया और हारून से कहा कि, 2 “ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बै — 'ऐब बछड़ा और सोख़्तनी कुर्बानी के लिए एक बै — 'ऐब मेंढा तू अपने वास्ते ले और उन को खुदावन्द के सामने पेश कर। 3 और बनी — इस्राईल से कह, कि तुम ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा, और सोख़्तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, और एक बर्षा जो यकसाला और बै — 'ऐब हों लो। 4 और सलामती के ज़बीहे के लिए खुदावन्द के सामने चढ़ाने के वास्ते एक बैल और एक मेंढा, और तेल मिली हुई नज़र की कुर्बानी भी लो; क्योंकि आज खुदावन्द तुम पर ज़ाहिर होगा।” 5 और वह जो कुछ मूसा ने हुक्म किया था सब खेमा — ए — इजितमा'अ के सामने ले आए, और सारी जमा'अत नज़दीक आकर खुदावन्द के सामने खड़ी हुई। 6 मूसा ने कहा, “ये वह काम है जिसके बारे में खुदावन्द ने हुक्म दिया है कि तुम उसे करो, और खुदावन्द का जलाल तुम पर ज़ाहिर होगा।” 7 और मूसा ने हारून से कहा, कि मज़बह के नज़दीक जा और अपनी ख़ता की कुर्बानी और अपनी सोख़्तनी कुर्बानी पेश कर और अपने लिए और क्रौम के लिए कफ़ारा दे, और जमा'अत के हृदिये को पेश कर और उनके लिए कफ़ारा दे जैसा खुदावन्द ने हुक्म किया है। 8 तब हारून ने मज़बह के पास जाकर उस बछड़े को जो उसकी ख़ता की कुर्बानी के लिए था ज़बह किया। 9 और हारून के बेटे खून को उसके पास ले गए, और उस ने अपनी उँगली उस में डुबो — डुबो कर उसे मज़बह के सींगों पर लगाया और बाक़ी खून मज़बह के पाये पर उँडेल दिया। 10 लेकिन ख़ता की कुर्बानी की चर्बी, और गुर्दों और जिगर पर की झिल्ली को उसने मज़बह पर जलाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म

किया था। 11 और गोश्त और खाल को लश्करगाह के बाहर आग में जलाया। 12 फिर उसने सोख़्तनी कुर्बानी के जानवर को ज़बह किया, और हारून के बेटों ने खून उसे दिया और उसने उसको मज़बह के चारों तरफ़ छिड़का। 13 और सोख़्तनी कुर्बानी को एक — एक टुकड़ा कर के, सिर के साथ उसको दिया और उसने उन्हें मज़बह पर जलाया। 14 और उसने अंतड़ियों और पायों को धोया और उनको मज़बह पर सोख़्तनी कुर्बानी के उपर जलाया। 15 फिर जमा'अत के हृदिये को आगे लाकर, और उस बकरे को जो जमा'अत की ख़ता की कुर्बानी के लिए था लेकर उस को ज़बह किया, और पहले की तरह उसे भी ख़ता के लिए पेश करा। 16 और सोख़्तनी कुर्बानी के जानवर को आगे लाकर, उसने उसे हुक्म के मुताबिक़ पेश किया। 17 फिर नज़र की कुर्बानी को आगे लाया, और उसमें से एक मुट्ठी लेकर सुबह की सोख़्तनी कुर्बानी के 'अलावा उसे जलाया। 18 और उसने बैल और मेंढे को, जो लोगों की तरफ़ से सलामती के ज़बीहे थे, ज़बह किया; और हारून के बेटों ने खून उसे दिया, और उसने उसको मज़बह पर चारों तरफ़ छिड़का। 19 और उन्होंने बैल की चर्बी को, और मेंढे की मोटी दुम को, और उस चर्बी को जिससे अंतड़ियाँ ढकी रहती हैं, और दोनों गुर्दों, और जिगर पर की झिल्ली को भी उसे दिया; 20 और चर्बी सीनों पर धर दी। तब उसने वह चर्बी मज़बह पर जलाई, 21 और सीना और दहनी रान को हारून ने मूसा के हुक्म के मुताबिक़ हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाया। 22 और हारून ने जमा'अत की तरफ़ अपने हाथ बढ़ाकर उनको बरकत दी; और ख़ता की कुर्बानी और सोख़्तनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानी पेश करके नीचे उतर आया। 23 और मूसा और हारून खेमा — ए — इजितमा'अ में दाख़िल हुए, और बाहर निकल कर लोगों को बरकत दी; तब सब लोगों पर खुदावन्द का जलाल नमूदार हुआ। 24 और खुदावन्द के सामने से आग निकली और सोख़्तनी कुर्बानी और चर्बी को मज़बह के ऊपर भसम कर दिया; लोगों ने यह देख कर ना'रे मारे और सरनगूँ हो गए।

## 10

००० ०० ००००० ०० ०००००

1 और नदब और अबीहू ने जो हारून के बेटे थे, अपने — अपने खुशबूदान को लेकर उनमें आग भरी, और उस पर और ऊपरी आग जिस का हुक्म खुदावन्द ने उनको नहीं दिया था, खुदावन्द के सामने पेश कीं। 2 और खुदावन्द के सामने से आग निकली और उन दोनों को

\* 9:1 9:1 सात दिन के रसम के बाद जोड़ें



खा गई, और वह खुदावन्द के सामने मर गए। <sup>3</sup>\* तब मूसा ने हारून से कहा, “यह वही बात है जो खुदावन्द ने कही थी, कि जो मेरे नजदीक आएँ ज़रूर है कि वह मुझे पाक जानें, और सब लोगों के आगे मेरी तम्जीद करें।” और हारून चुप रहा <sup>4</sup> फिर मूसा ने मीसाएल और अलसफ़न को जो हारून के चचा उज्ज़ीएल के बेटे थे, बुला कर उन से कहा, “नज़दीक आओ, और अपने भाइयों को हैकल के सामने से उठा कर लश्करगाह के बाहर ले जाओ।” <sup>5</sup> तब वह नज़दीक गए, और उन्हें उनके कुरतों के साथ उठाकर मूसा के हुक्म के मुताबिक़ लश्करगाह के बाहर ले गए। <sup>6</sup> और मूसा ने हारून और उसके बेटों, इली'एलियाज़र और ऐतामर से कहा, कि न तुम्हारे सिर के बाल बिखरने पाएँ, और न तुम अपने कपड़े फाड़ना, ताकि न तुम ही मरो, और न सारी जमा'अत पर उसका ग़ज़ब नाज़िल हो; लेकिन इस्राईल के सब घराने के लोग जो तुम्हारे भाई हैं, उस आग पर जो खुदावन्द ने लगाई है नोहा करें। <sup>7</sup> और तुम खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े से बाहर न जाना, ता ऐसा न हो कि तुम मर जाओ; क्योंकि खुदावन्द का मसह करने का तेल तुम पर लगा हुआ है। इसलिए उन्होंने मूसा के कहने के मुताबिक़ 'अमल किया।

?????? ?? ??????? ?? ????? ?????

<sup>8</sup> और खुदावन्द ने हारून से कहा, कि <sup>9</sup> “तू या तेरे बेटे मय या शराब पीकर कभी खेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर दाखिल न होना, ताकि तुम मर न जाओ। यह तुम्हारे लिए नसल — दर — नसल हमेशा तक एक क़ानून रहेगा; <sup>10</sup> ताकि तुम पाक और 'आम अशिया में, और पाक और नापाक में तमीज़ कर सको; <sup>11</sup> और बनी — इस्राईल को वह सब तौर — तरीक़े सिखा सको जो खुदावन्द ने मूसा के ज़रिए' उनको फ़रमाए हैं।” <sup>12</sup> फिर मूसा ने हारून और उसके बेटों, इली'एलियाज़र और ऐतामर से जो बाक़ी रह गए थे कहा, कि “खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में से जो नज़र की कुर्बानी बच रही है उसे ले लो, और बग़ैर खमीर के उसको मज़बह के पास खाओ, क्योंकि यह बहुत पाक है; <sup>13</sup> और तुम उसे किसी पाक जगह में खाना, इसलिए खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में से तेरा और तेरे बेटों का यह हक़ है; क्योंकि मुझे ऐसा ही हुक्म मिला है। <sup>14</sup> और हिलाने की कुर्बानी के सीने को, और उठाने की कुर्बानी की रान को तुम लोग या'नी तेरे साथ तेरे बेटे और बेटियाँ भी, किसी साफ़ जगह में खाना; क्योंकि बनी — इस्राईल

की सलामती के ज़बीहों में से यह तेरा और तेरे बेटों का हक़ है जो दिया गया है। <sup>15</sup> और उठाने की कुर्बानी की रान और हिलाने की कुर्बानी का सीना, जिसे वह चर्बी की आतिशी कुर्बानियों के साथ लाएँगे, ताकि वह खुदावन्द के सामने हिलाने की कुर्बानी के तौर पर हिलाए जाएँ। यह दोनों हमेशा के लिए खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ तेरा और तेरे बेटों का हक़ होगा।” <sup>16</sup> फिर मूसा ने खता की कुर्बानी के बकरे को जो बहुत तलाश किया, तो क्या देखता है कि वह जल चुका है। तब वह हारून के बेटों इली'एलियाज़र और ऐतामर पर, जो बच रहे थे, नाराज़ हुआ और कहने लगा कि, <sup>17</sup> “खता की कुर्बानी जो बहुत पाक है और जिसे खुदावन्द ने तुम को इसलिए दिया है कि तुम जमा'अत के गुनाह को अपने ऊपर उठा कर खुदावन्द के सामने उनके लिए कफ़ारा दो, तुम ने उसका गोश्त हैकल में क्यूँ न खाया? <sup>18</sup> देखो, उसका खून हैकल में तो लाया ही नहीं गया था। पस तुम्हें लाज़िम था कि मेरे हुक्म के मुताबिक़ तुम उसे हैकल में खा लेते।” <sup>19</sup> तब हारून ने मूसा से कहा, “देख, आज ही उन्होंने अपनी खता की कुर्बानी और अपनी सोख़्तनी कुर्बानी खुदावन्द के सामने पेश कीं, और मुझ पर ऐसे — ऐसे हादसे गुज़र गए। तब अगर मैं आज खता की कुर्बानी का गोश्त खाता तो क्या यह बात खुदावन्द की नज़र में भली होती?” <sup>20</sup> जब मूसा ने यह सुना तो उसे पसन्द आया।

## 11

?????? ??????? ?? ??????? ?????

<sup>1</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा, <sup>2</sup> “तुम बनी — इस्राईल से कहो कि ज़मीन के सब हैवानात में से जिन जानवरों को तुम खा सकते हो वह यह हैं। <sup>3</sup> जानवरों में जिनके पाँव अलग और चिरे हुए हैं और वह जुगाली करते हैं, तुम उनको खाओ। <sup>4</sup> मगर जो जुगाली करते हैं या जिनके पाँव अलग हैं, उन में से तुम इन जानवरों को न खाना; या'नी ऊँट को, क्योंकि वह जुगाली करता है लेकिन उसके पाँव अलग नहीं, इसलिए वह तुम्हारे लिए नापाक है। <sup>5</sup> और साफ़ान को, क्योंकि वह जुगाली करता है लेकिन उसके पाँव अलग नहीं, वह भी तुम्हारे लिए नापाक है। <sup>6</sup> और खरगोश को, क्योंकि वह जुगाली तो करता है लेकिन उसके पाँव अलग नहीं, वह भी तुम्हारे लिए नापाक है। <sup>7</sup> और सूअर को, क्योंकि उसके पाँव अलग और चिरे हुए हैं लेकिन वह

\* 10:3 10:3 तब मूसा ने हारून से कहा यह वही बात है जो खुदावन्द ने कही थी कि जो मेरे नज़दीक आयेँ उन्हें मैं खुद ही पाक ज़ाहिर करूँगा और सब लोगों के सामने मेरी तम्जीद होगी सो हारून चुप रहा —

जुगाली नहीं करता, वह भी तुम्हारे लिए नापाक है।<sup>8</sup> तुम उनका गोश्त न खाना और उन की लाशों को न छूना, वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।<sup>9</sup> “जो जानवर पानी में रहते हैं उन में से तुम इनको खाना, या'नी समन्दरों और दरियाओं वगैरह के जानवरों में, जिनके पर और छिल्के हों तुम उन्हें खाओ।<sup>10</sup> लेकिन वह सब जानदार जो पानी में या'नी समन्दरों और दरियाओं वगैरह में चलते फिरते और रहते हैं, लेकिन उनके पर और छिल्के नहीं होते, वह तुम्हारे लिए मकरूह हैं।<sup>11</sup> और वह तुम्हारे लिए मकरूह ही रहें। तुम उनका गोश्त न खाना और उन की लाशों से कराहियत करना।<sup>12</sup> पानी के जिस किसी जानदार के न पर हों और न छिल्के, वह तुम्हारे लिए मकरूह हैं।<sup>13</sup> और परिन्दों में जो मकरूह होने की वजह से कभी खाए न जाएँ और जिन से तुम्हें कराहियत करना है वो यह हैं। उक्काब और उस्तस्वान ख्वार और लगड़,<sup>14</sup> और चील और हर क्रिस्म का बाज़,<sup>15</sup> और हर क्रिस्म के कव्वे,<sup>16</sup> और शुतरमुर्ग और चुगद और कोकिल और हर क्रिस्म के शाहीन,<sup>17</sup> और बूम और हड़गीला और उल्लू,<sup>18</sup> और क्राज़ और हवासिल और गिद्ध,<sup>19</sup> और लकलक और सब क्रिस्म के बगुले और हुद — हुद, और चमगादड़।<sup>20</sup> “और सब परदार रेंगने वाले जानदार जितने चार पाँवों के बल चलते हैं, वह तुम्हारे लिए मकरूह हैं।<sup>21</sup> मगर परदार रेंगने वाले जानदारों में से जो चार पाँव के बल चलते हैं तुम उन जानदारों को खा सकते हो, जिनके ज़मीन के ऊपर कूदने फाँदने को पाँव के ऊपर टाँगें होती हैं,<sup>22</sup> वह जिन्हें तुम खा सकते हो यह हैं, हर क्रिस्म की टिड्डी और हर क्रिस्म का सुलि'आम और हर क्रिस्म का झींगर और हर क्रिस्म का टिड्डा।<sup>23</sup> लेकिन सब परदार रेंगने वाले जानदार जिनके चार पाँव हैं, वह तुम्हारे लिए मकरूह हैं।<sup>24</sup> और इन से तुम नापाक ठहरोगे, जो कोई इन में से किसी की लाश को छुए वह शाम तक नापाक रहेगा।<sup>25</sup> और जो कोई इन की लाश में से कुछ भी उठाए वह अपने कपड़े धो डाले और वह शाम तक नापाक रहेगा।<sup>26</sup> और सब चारपाए जिनके पाँव अलग हैं लेकिन वह चिरे हुए नहीं और न वह जुगाली करते हैं, वह तुम्हारे लिए नापाक हैं; जो कोई उन को छुए वह नापाक ठहरेगा।<sup>27</sup> और चार पाँवों पर चलने वाले जानवरों में से जितने अपने पंजों के बल चलते हैं, वह भी तुम्हारे लिए नापाक हैं। जो कोई उन की लाश को छुए वह शाम तक नापाक रहेगा।<sup>28</sup> और जो कोई उन की लाश को उठाए वह अपने कपड़े धो डाले और वह शाम तक नापाक रहेगा। यह सब तुम्हारे लिए नापाक हैं।<sup>29</sup> “और ज़मीन पर के

रेंगने वाले जानवरों में से जो तुम्हारे लिए नापाक हैं वह यह हैं, या'नी नेवला और चूहा और हर क्रिस्म की बड़ी छिपकली,<sup>30</sup> और हिरज़ून और गोह और छिपकली और सान्डा और गिरगिट।<sup>31</sup> सब रेंगने वाले जानदारों में से यह तुम्हारे लिए नापाक हैं, जो कोई उनके मरे पीछे उन को छुए वह शाम तक नापाक रहेगा।<sup>32</sup> और जिस चीज़ पर वह मरे पीछे गिरें वह चीज़ नापाक होगी, चाहे वह लकड़ी का बर्तन हो या कपड़ा या चमड़ा या बोरा हो, चाहे किसी का कैसा ही बर्तन हो, ज़रूर है कि वह पानी में डाला जाए और वह शाम तक नापाक रहेगा, इस के बाद वह पाक ठहरेगा।<sup>33</sup> और अगर इनमें से कोई किसी मिट्टी के बर्तन में गिर जाए तो जो कुछ उस में है वह नापाक होगा, और बर्तन को तुम तोड़ डालना।<sup>34</sup> उसके अन्दर अगर खाने की कोई चीज़ हो जिस में पानी पड़ा हुआ हो, तो वह भी नापाक ठहरेगी; और अगर ऐसे बर्तन में पीने के लिए कुछ हो तो वह नापाक होगा।<sup>35</sup> और जिस चीज़ पर उनकी लाश का कोई हिस्सा गिरे, चाहे वह तनूर हो या चूल्हा, वह नापाक होगी और तोड़ डाली जाए। ऐसी चीज़ें नापाक होती हैं और वह तुम्हारे लिए भी नापाक हों,<sup>36</sup> मगर चश्मा या तालाब जिस में बहुत पानी हो वह पाक रहेगा, लेकिन जो कुछ उन की लाश से छू जाए वह नापाक होगा।<sup>37</sup> और अगर उन की लाश का कुछ हिस्सा किसी बोन के बीज पर गिरे तो वह बीज पाक रहेगा;<sup>38</sup> लेकिन अगर बीज पर पानी डाला गया हो और इसके बाद उन की लाश में से कुछ उस पर गिरा हो, तो वह तुम्हारे लिए नापाक होगा।<sup>39</sup> “और जिन जानवरों को तुम खा सकते हो, अगर उन में से कोई मर जाए तो जो कोई उस की लाश को छुए वह शाम तक नापाक रहेगा।<sup>40</sup> और जो कोई उनकी लाश में से कुछ खाए, वह अपने कपड़े धो डाले और वह शाम तक नापाक रहेगा; और जो कोई उन की लाश को उठाए, वह अपने कपड़े धो डाले और वह शाम तक नापाक रहेगा।<sup>41</sup> और सब रेंगने वाले जानदार जो ज़मीन पर रेंगते हैं, मकरूह हैं और कभी खाए न जाएँ।<sup>42</sup> और ज़मीन पर के सब रेंगने वाले जानदारों में से, जितने पेट या चार पाँवों के बल चलते हैं या जिनके बहुत से पाँव होते हैं, उनको तुम न खाना क्योंकि वह मकरूह हैं।<sup>43</sup> और तुम किसी रेंगने वाले जानदार की वजह से जो ज़मीन पर रेंगता है, अपने आप को मकरूह न बना लेना और न उन से अपने आप को नापाक करना के नजिस हो जाओ; <sup>44</sup> क्योंकि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, इसलिए अपने आप को पाक करना और पाक होना क्योंकि मैं कुदूस हूँ, इसलिए तुम किसी तरह के रेंगने वाले जानदार से जो ज़मीन पर

चलता है, अपने आप को नापाक न करना; <sup>45</sup> क्योंकि मैं खुदावन्द हूँ, और तुमको मुल्क — ए — मिस्र से इसी लिए निकाल कर लाया हूँ कि मैं तुम्हारा खुदा ठहरूँ। इसलिए तुम पाक होना क्योंकि मैं कुदुस हूँ।” <sup>46</sup> हैवानात, और परिन्दों, और आबी जानवरों, और ज़मीन पर के सब रेंगने वाले जानदारों के बारे में शरा' यही है; <sup>47</sup> ताकि पाक और नापाक में, और जो जानवर खाए जा सकते हैं और जो नहीं खाए जा सकते, उनके बीच इम्तियाज़ किया जाए।

## 12

????? ?? ??????? ?? ??? ???? ???? ?

<sup>1</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “बनी — इस्राईल से कह कि अगर कोई 'औरत हामिला हो, और उसके लड़का हो तो वह सात दिन तक नापाक रहेगी; जैसे हैज़ के दिनों में रहती है। <sup>3</sup> और आठवें दिन लड़के का खतना किया जाए। <sup>4</sup> इसके बाद तैतीस दिन तक वह तहारत के खून में रहे, और जब तक उसकी तहारत के दिन पूरे न हों तब तक न तो किसी पाक चीज़ को छुए और न हैकल में दाखिल हो। <sup>5</sup> और अगर उसके लड़की हो तो वह दो हफ्ते नापाक रहेगी, जैसे हैज़ के दिनों में रहती है। इसके बाद वह छियासठ दिन तक तहारत के खून में रहे। <sup>6</sup> और जब उसकी तहारत के दिन पूरे हो जाएँ, तो चाहे उसके बेटा हुआ हो या बेटी, वह सोख्तनी कुर्बानी के लिए एक यक — साला बरा, और खता की कुर्बानी के लिए कबूतर का एक बच्चा या एक कुमरी खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर काहिन के पास लाए; <sup>7</sup> और काहिन उसे खुदावन्द के सामने पेश करे और उसके लिए कफ़ारा दे। तब वह अपने जिरयान — ए — खून से पाक ठहरेगी। जिस 'औरत के लड़का या लड़की हो उसके बारे में शरा' यह है। <sup>8</sup> और अगर उस को बरा लाने का मक़दूर न हो तो वह दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे, एक सोख्तनी कुर्बानी के लिए और दूसरा खता की कुर्बानी के लिए लाए। यूँ काहिन उसके लिए कफ़ारा दे तो वह पाक ठहरेगी।”

## 13

????? ?? ??????? ?

<sup>1</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा, <sup>2</sup> “अगर किसी के जिस्म की जिल्द में वर्म, या पपड़ी, या सफ़ेद चमकता हुआ दाग़ हो, और उसके जिस्म की जिल्द में कोढ़ जैसी बला हो, तो उसे हारून काहिन के पास या उसके बेटों में से जो काहिन हैं किसी के पास ले जाएँ। <sup>3</sup> और काहिन उसके जिस्म की जिल्द की बला को देखे,

अगर उस बला की जगह के बाल सफ़ेद हो गए हों और वह बला देखने में खाल से गहरी हो, तो वह कोढ़ का मर्ज़ है; और काहिन उस शख्स को देख कर उसे नापाक करार दे। <sup>4</sup> और अगर उसके जिस्म की जिल्द का चमकता हुआ दाग़ सफ़ेद तो हो लेकिन खाल से गहरा न दिखाई दे, और न उसके ऊपर के बाल सफ़ेद हो गए हों, तो काहिन उस शख्स को सात दिन तक बन्द रखे; <sup>5</sup> और सातवें दिन काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर वह बला उसे वही के वही दिखाई दे और जिल्द पर फैल न गई हो, तो काहिन उसे सात दिन और बन्द रखे; <sup>6</sup> और सातवें दिन काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि उस बला की चमक कम है और वह जिल्द के ऊपर फैली भी नहीं है; तो काहिन उसे पाक करार दे क्योंकि वह पपड़ी है। इसलिए वह अपने कपड़े धो डाले और साफ़ हो जाए। <sup>7</sup> लेकिन अगर काहिन के उस मुलाहिज़े के बाद जिस में वह साफ़ करार दिया गया था, वह पपड़ी उसकी जिल्द पर बहुत फैल जाए, तो वह शख्स काहिन को फिर दिखाया जाए; <sup>8</sup> और काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि वह पपड़ी जिल्द पर फैल गई है तो वह उसे नापाक करार दे; क्योंकि वह कोढ़ है। <sup>9</sup> “अगर किसी शख्स को कोढ़ का मर्ज़ हो, तो उसे काहिन के पास ले जाएँ, <sup>10</sup> और काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि जिल्द पर सफ़ेद वर्म है और उसने बालों को सफ़ेद कर दिया है, और उस वर्म की जगह का गोश्त ज़िन्दा और कच्चा है, <sup>11</sup> तो यह उसके जिस्म की जिल्द में पुराना कोढ़ है, इसलिए काहिन उसे नापाक करार दे लेकिन उसे बन्द न करे क्योंकि वह नापाक है। <sup>12</sup> और अगर कोढ़ जिल्द में चारों तरफ़ फूट आए, और जहाँ तक काहिन को दिखाई देता है, यही मा'लूम हो कि उस की जिल्द सिर से पाँव तक कोढ़ से ढंक गई है; <sup>13</sup> तो काहिन ग़ौर से देखे और अगर उस शख्स का सारा जिस्म कोढ़ से ढका हुआ निकले, तो काहिन उस मरीज़ को पाक करार दे, क्योंकि वह सब सफ़ेद हो गया है और वह पाक है। <sup>14</sup> लेकिन जिस दिन जीता और कच्चा गोश्त उस पर दिखाई दे, वह नापाक होगा। <sup>15</sup> और काहिन उस कच्चे गोश्त को देख कर उस शख्स को नापाक करार दे, कच्चा गोश्त नापाक होता है; वह कोढ़ है। <sup>16</sup> और अगर वह कच्चा गोश्त फिर कर सफ़ेद हो जाए, तो वह काहिन के पास जाए; <sup>17</sup> और काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि मर्ज़ की जगह सब सफ़ेद हो गई है तो काहिन मरीज़ को पाक करार दे; वह पाक है। <sup>18</sup> और अगर किसी के जिस्म की जिल्द पर फोड़ा हो कर अच्छा हो जाए, <sup>19</sup> और फोड़े की जगह सफ़ेद वर्म या सुर्खी माइल चमकता हुआ सफ़ेद दाग़ हो तो वह दिखाया जाए; <sup>20</sup> और काहिन उसे मुलाहिज़ा

करे, और अगर देखे कि वह खाल से गहरा नज़र आता है और उस पर के बाल भी सफ़ेद हो गए हैं, तो काहिन उस शख्स को नापाक करार दे; क्योंकि वह कोढ़ है जो फोड़े में से फूट कर निकला है। <sup>21</sup> लेकिन अगर काहिन देखे कि उस पर सफ़ेद बाल नहीं, और वह खाल से गहरा भी नहीं है और उसकी चमक कम है; तो काहिन उसे सात दिन तक बन्द रखे। <sup>22</sup> और अगर वह जिल्द पर चारों तरफ़ फैल जाए, तो काहिन उसे नापाक करार दे; क्योंकि वह कोढ़ की बला है। <sup>23</sup> लेकिन अगर वह चमकता हुआ दाग अपनी जगह पर वहीं का वहीं रहे, और फैल न जाए तो वह फोड़े का दाग़ है; तब काहिन उस शख्स को पाक करार दे। <sup>24</sup> “या अगर जिस्म की खाल कहीं से जल जाए, और उस जली हुई जगह का ज़िन्दा गोश्त एक सुखी माइल चमकता हुआ सफ़ेद दाग़ या बिल्कुल ही सफ़ेद दाग़ बन जाए <sup>25</sup> तो काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि उस चमकते हुए दाग़ के बाल सफ़ेद हो गए हैं और वह खाल से गहरा दिखाई देता है; तो वह कोढ़ है जो उस जल जाने से पैदा हुआ है; और काहिन उस शख्स को नापाक करार दे क्योंकि उसे कोढ़ की बीमारी है। <sup>26</sup> लेकिन अगर काहिन देखे कि उस चमकते हुए दाग़ पर सफ़ेद बाल नहीं, और न वह खाल से गहरा है बल्कि उसकी चमक भी कम है, तो वह उसे सात दिन तक बन्द रखे; <sup>27</sup> और सातवें दिन काहिन उसे देखे, अगर वह जिल्द पर बहुत फैल गया हो तो काहिन उस शख्स को नापाक करार दे; क्योंकि उसे कोढ़ की बीमारी है। <sup>28</sup> और अगर वह चमकता हुआ दाग़ अपनी जगह पर वहीं का वहीं रहे और जिल्द पर फैला हुआ न हो, बल्कि उसकी चमक भी कम हो, तो वह सिर्फ़ जल जाने की वजह से फूला हुआ है; और काहिन उस शख्स को पाक करार दे क्योंकि वह दाग़ जल जाने की वजह से है। <sup>29</sup> “अगर किसी मर्द या 'औरत के सिर या ठोड़ी में दाग़ हो, <sup>30</sup> तो काहिन उस दाग़ को मुलाहिज़ा करे और अगर देखे कि वह खाल से गहरा मा'लूम होता है और उस पर ज़र्द — ज़र्द बारीक रोंगटे हैं तो काहिन उस शख्स को नापाक करार दे क्योंकि वह सा'फ़ा है जो सिर या ठोड़ी का कोढ़ है। <sup>31</sup> और अगर काहिन देखे कि वह सा'फ़ा की बला खाल से गहरी नहीं मा'लूम होती और उस पर स्याह बाल नहीं हैं, तो काहिन उस शख्स को जिसे सा'फ़ा का मर्ज़ है, सात दिन तक बन्द रखे; <sup>32</sup> और सातवें दिन काहिन उस बला का मुलाहिज़ा करे और अगर देखे कि सा'फ़ा फैला नहीं और उस पर कोई ज़र्द बाल भी नहीं और सा'फ़ा खाल से गहरा नहीं मा'लूम होता; <sup>33</sup> तो उस शख्स के बाल मूँड़े जाएँ, लेकिन जहाँ सा'फ़ा हो वह

जगह न मूँड़ी जाए। और काहिन उस शख्स को जिसे सा'फ़ा का मर्ज़ है, सात दिन और बन्द रखे। <sup>34</sup> फिर सातवें रोज़ काहिन सा'फ़े का मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि सा'फ़ा जिल्द में फैला नहीं और न वह खाल से गहरा दिखाई देता है तो काहिन उस शख्स को पाक करार दे; और वह अपने कपड़े धोए और साफ़ हो जाए। <sup>35</sup> लेकिन अगर उस की सफ़ाई के बाद सा'फ़ा उसकी जिल्द पर बहुत फैल जाए तो काहिन उसे देखे, <sup>36</sup> और अगर सा'फ़ा उसकी जिल्द पर फैला हुआ नज़र आए तो काहिन ज़र्द बाल को न ढूँढ़े क्योंकि वह शख्स नापाक है। <sup>37</sup> लेकिन अगर उस को सा'फ़ा अपनी जगह पर वहीं का वहीं दिखाई दे और उस पर स्याह बाल निकले हुए हों, तो सा'फ़ा अच्छा हो गया; वह शख्स पाक है और काहिन उसे पाक करार दे। <sup>38</sup> और अगर किसी मर्द या 'औरत के जिस्म की जिल्द में चमकते हुए दाग़ या सफ़ेद चमकते हुए दाग़ हों, <sup>39</sup> तो काहिन देखे, और अगर उनके जिस्म की जिल्द के दाग़ स्याही माइल सफ़ेद रंग के हों, तो वह छीप है जो जिल्द में फूट निकली है; वह शख्स पाक है। <sup>40</sup> 'और जिस शख्स के सिर के बाल गिर गए हों, वह गंजा तो है मगर पाक है। <sup>41</sup> और जिस शख्स के सर के बाल पेशानी की तरफ़ से गिर गए हों, वह चँदुला तो है मगर पाक है। <sup>42</sup> लेकिन उस गंजे या चँदले सिर पर सुखी माइल सफ़ेद दाग़ हों, तो यह कोढ़ है जो उसके गंजे या चँदले सिर पर निकला है; <sup>43</sup> इसलिए काहिन उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर वह देखे कि उसके गंजे या चँदले सिर पर वह दाग़ ऐसा सुखी माइल सफ़ेद रंग लिए हुए है, जैसा जिल्द के कोढ़ में होता है, <sup>44</sup> तो वह आदमी कोढ़ी है, वह नापाक है और काहिन उसे ज़रूर ही नापाक करार दे क्योंकि वह मर्ज़ उसके सिर पर है। <sup>45</sup> और जो कोढ़ी इस बला में मुब्तिला हो, उसके कपड़े फटे और उसके सिर के बाल बिखरे रहें, और वह अपने ऊपर के होंट को ढाँके और चिल्ला — चिल्ला कर कहे, नापाक, नापाक। <sup>46</sup> जितने दिनों तक वह इस बला में मुब्तिला रहे, वह नापाक रहेगा और वह है भी नापाक। तब वह अकेला रहा करे, उसका मकान लश्करगाह के बाहर हो।

२२२२ २२ २२२ २२२२ २२२२ २२ २२२२२२

<sup>47</sup> 'और वह कपड़ा भी जिस में कोढ़ की बला हो, चाहे वह ऊन का हो या कतान का; <sup>48</sup> और वह बला भी चाहे कतान या ऊन के कपड़े के ताने में या उसके बाने में हो, या वह चमड़े में हो या चमड़े की बनी हुई किसी चीज़ में हो; <sup>49</sup> अगर वह बला कपड़े में या चमड़े में, कपड़े के ताने में या बाने में या चमड़े की किसी चीज़ में सब्जी माइल या सुखी माइल रंग की हो, तो वह कोढ़ की बला है और काहिन को दिखाई जाए। <sup>50</sup> और काहिन उस बला को



देखे, और उस चीज़ को जिस में वह बला है सात दिन तक बन्द रखे; <sup>51</sup> और सातवें दिन उस को देखें। अगर वह बला कपड़े के ताने में या बाने में, या चमड़े पर या चमड़े की बनी हुई किसी चीज़ पर फैल गई हो, तो वह खा जाने वाला कोढ़ है और नापाक है। <sup>52</sup> और उस ऊन या कतान के कपड़े को जिसके ताने में या बाने में वह बला है, या चमड़े की उस चीज़ को जिस में वह है जला दे; क्योंकि यह खा जाने वाला कोढ़ है। वह आग में जलाया जाए। <sup>53</sup> “और अगर काहिन देखे, कि वह बला कपड़े के ताने में या बाने में, या चमड़े की किसी चीज़ में फैली हुई नज़र नहीं आती, <sup>54</sup> तो काहिन हुक्म करे कि उस चीज़ को जिस में वह बला है धोएँ, और वह फिर उसे और सात दिन तक बन्द रखे; <sup>55</sup> और उस बला के धोए जाने के बाद काहिन फिर उसे मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि उस बला का रंग नहीं बदला और वह फैली भी नहीं है, तो वह नापाक है। तू उस कपड़े को आग में जला देना; क्योंकि वह खा जाने वाली बला है, चाहे उस का फ़साद अन्दरूनी हो या बैरूनी। <sup>56</sup> और अगर काहिन देखे कि धोने के बाद उस बला की चमक कम हो गई है, तो वह उसे उस कपड़े से या चमड़े से, ताने या बाने से, फाड़ कर निकाल फेंके। <sup>57</sup> और अगर वह बला फिर भी कपड़े के ताने या बाने में या चमड़े की चीज़ में दिखाई दे, तो वह फूटकर निकल रही है। तब तू उस चीज़ को जिस में वह बला है आग में जला देना। <sup>58</sup> और अगर उस कपड़े के ताने या बाने में से, या चमड़े की चीज़ में से, जिसे तूने धोया है, वह बला जाती रहे तो वह चीज़ दोबारा धोई जाए और वह पाक ठहरेगी।” <sup>59</sup> ऊन या कतान के ताने या बाने में, या चमड़े की किसी चीज़ में अगर कोढ़ की बला हो, तो उसे पाक या नापाक करार देने के लिए शरा' यही है।

## 14

????? ?? ??????? ?? ???????

<sup>1</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> 'कोढ़ी के लिए जिस दिन वह पाक करार दिया जाए यह शरा' है, कि उसे काहिन के पास ले जाएँ, <sup>3</sup> और काहिन लश्करगाह के बाहर जाए, और काहिन खुद कोढ़ी को मुलाहिज़ा करे और अगर देखे कि उसका कोढ़ अच्छा हो गया है, <sup>4</sup> तो काहिन हुक्म दे कि वह जो पाक करार दिए जाने को है, उसके लिए दो ज़िन्दा पाक परिन्दे और देवदार की लकड़ी और सुर्ख कपड़ा और जूफ़ा लें। <sup>5</sup> और काहिन हुक्म दे कि उनमें से एक परिन्दा किसी मिट्टी के बर्तन में बहते हुए पानी के ऊपर ज़बह किया जाए। <sup>6</sup> फिर

वह ज़िन्दा परिन्दे को और देवदार की लकड़ी और सुर्ख कपड़े और जूफ़े को ले, और इन को और उस ज़िन्दा परिन्दे को उस परिन्दे के खून में गोता दे जो बहते पानी पर ज़बह हो चुका है। <sup>7</sup> और उस शस्स पर जो कोढ़ से पाक करार दिया जाने को है, सात बार छिड़क कर उसे पाक करार दे और ज़िन्दा परिन्दे को खुले मैदान में छोड़ दे। <sup>8</sup> और वह जो पाक करार दिया जाएगा अपने कपड़े धोए और सारे बाल मुन्डाए और पानी में गुस्ल करे, तब वह पाक ठहरेगा; इसके बाद वह लश्करगाह में आए, लेकिन सात दिन तक अपने खेमे के बाहर ही रहे। <sup>9</sup> और सातवें रोज़ अपने सिर के सब बाल और अपनी दाढ़ी और अपने अबरू ग़र्ज अपने सारे बाल मुन्डाए, और अपने कपड़े धोए और पानी में नहाए, तब वह पाक ठहरेगा। <sup>10</sup> और वह आठवें दिन दो बे — 'ऐब नर बरें और एक बे — 'ऐब यक — साला मादा बर्रा और नज़र की कुर्बानी के लिए \*ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर तेल मिला हुआ मैदा और †लोज भर तेल ले। <sup>11</sup> तब वह काहिन जो उसे पाक करार देगा, उस शस्स को जो पाक करार दिया जाएगा और इन चीज़ों को खुदावन्द के सामने खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर हाज़िर करे। <sup>12</sup> और काहिन नर बरों में से एक को लेकर जुर्म की कुर्बानी के लिए उसे और उस लोज भर तेल की नज़दीक लाए, और उनको हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाए; <sup>13</sup> और उस बरें को हैकल में उस जगह ज़बह करे जहाँ खता की कुर्बानी और सोख्तनी कुर्बानी के जानवर ज़बह किए जाते हैं, क्योंकि जुर्म की कुर्बानी खता की कुर्बानी की तरह काहिन का हिस्सा ठहरेगी; वह बहुत पाक है। <sup>14</sup> और काहिन जुर्म की कुर्बानी का कुछ खून ले और जो शस्स पाक करार दिया जाएगा उसके दहने कान की लौ पर और दहने हाथ के अंगूठे पर और दहने पाँव के अंगूठे पर उसे लगाए, <sup>15</sup> और काहिन उस लोज भर तेल में से कुछ लेकर अपने बाएँ हाथ की हथेली में डाले; <sup>16</sup> और काहिन अपनी दहनी उँगली को अपने बाएँ हाथ के तेल में डुबोए, और खुदावन्द के सामने कुछ तेल सात बार अपनी उँगली से छिड़के। <sup>17</sup> और काहिन अपने हाथ के बाक़ी तेल में से कुछ ले और जो शस्स पाक करार दिया जाएगा उसके दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ के अंगूठे और दहने पाँव के अंगूठे पर, जुर्म की कुर्बानी के खून के ऊपर लगाए। <sup>18</sup> और जो तेल काहिन के हाथ में बाक़ी बचे उसे वह उस शस्स के सिर में डाल दे जो पाक करार दिया जाएगा, यँ काहिन उसके लिए खुदावन्द के सामने कफ़ारा दे। <sup>19</sup> और

\* 14:10 14:10 3 किलोग्राम † 14:10 14:10 335 ग्राम

काहिन खता की कुर्बानी भी पेश करे, और उसके लिए जो अपनी नापाकी से पाक करार दिया जाएगा कफ़ारा दे; इसके बाद वह सोख्तनी कुर्बानी के जानवर को ज़बह करे। 20 फिर काहिन सोख्तनी कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी को मज़बह पर अदा करे। यूँ काहिन उसके लिए कफ़ारा दे तो वह पाक ठहरेगा। 21 “और अगर वह ग़रीब हो और इतना उसे मक़दूर न हो तो वह हिलाने के लिए जुर्म की कुर्बानी के लिए एक नर बरी ले ताकि उसके लिए कफ़ारा दिया जाए और नज़र की कुर्बानी के लिए ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर तेल मिला हुआ मैदा और लोज़ भर तेल, 22 और अपने मक़दूर के मुताबिक़ दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे भी ले, जिन में से एक तो खता की कुर्बानी के लिए और दूसरा सोख्तनी कुर्बानी के लिए हो। 23 इन्हें वह आठवें दिन अपने पाक करार दिए जाने के लिए काहिन के पास खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर खुदावन्द के सामने लाए। 24 और काहिन जुर्म की कुर्बानी के बर्र को और उस लोज़ भर तेल को लेकर उनको खुदावन्द के सामने हिलाने की कुर्बानी के तौर पर हिलाए। 25 फिर काहिन जुर्म की कुर्बानी के बर्र को ज़बह करे, और वह जुर्म की कुर्बानी का कुछ खून लेकर जो शख्स पाक करार दिया जाएगा, उसके दहने कान की लौ पर और दहने हाथ के अंगूठे और दहने पाँव के अंगूठे पर उसे लगाए। 26 फिर काहिन उस तेल में से कुछ अपने बाएँ हाथ की हथेली में डाले, 27 और वह अपने बाएँ हाथ के तेल में से कुछ अपनी दहनी उँगली से खुदावन्द के सामने सात बार छिड़के। 28 फिर काहिन कुछ अपने हाथ के तेल में से ले, और जो शख्स पाक करार दिया जाएगा उसके दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ के अंगूठे और दहने पाँव के अंगूठे पर, जुर्म की कुर्बानी के खून की जगह उसे लगाए; 29 और जो तेल काहिन के हाथ में बाक़ी बचे उसे वह उस शख्स के सिर में डाल दे जो पाक करार दिया जाएगा, ताकि उसके लिए खुदावन्द के सामने कफ़ारा दिया जाए। 30 फिर वह कुमरियों या कबूतर के बच्चों में से जिन्हें वह ला सका हो एक को अदा करे, 31 या'नी जो कुछ उसे मयस्सर हुआ हो उस में से एक को खता की कुर्बानी के तौर पर और दूसरे को सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर, नज़र की कुर्बानी के साथ पेश करे। यूँ काहिन उस शख्स के लिए जो पाक करार दिया जाएगा, खुदावन्द के सामने कफ़ारा दे। 32 उस कोढ़ी के लिए जो अपने पाक करार दिए जाने के सामान को लाने का मक़दूर न रखता हो शरा' यह है।”

33 फिर खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा, 34 “जब तुम मुल्क — ए — कनान में जिसे मैं तुम्हारी मिल्कियत किए देता हूँ दाखिल हो, और मैं तुम्हारे मीरासी मुल्क के किसी घर में कोढ़ की बला भेजूँ। 35 तो उस घर का मालिक जाकर काहिन को ख़बर दे कि मुझे ऐसा मा'लूम होता है कि उस घर में कुछ बला सी है। 36 तब काहिन हुक्म करे कि इससे पहले कि उस बला को देखने के लिए काहिन वहाँ जाए लोग उस घर को खाली करें, ताकि जो कुछ घर में हो वह नापाक न ठहराया जाए। इसके बाद काहिन घर देखने को अन्दर जाए। 37 और उस बला को मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि वह बला उस घर की दीवारों में सब्जी या सुख्खीमाइल गहरी लकीरों की सूरत में है, और दीवार में सतह के अन्दर नज़र आती है, 38 तो काहिन घर से बाहर निकल कर घर के दरवाज़े पर जाए और घर को सात दिन के लिए बन्द कर दे; 39 और वह सातवें दिन फिर आकर उसे देखे। अगर वह बला घर की दीवारों में फैली हुई नज़र आए, 40 तो काहिन हुक्म दे कि उन पत्थरों को जिन में वह बला है, निकालकर उन्हें शहर के बाहर किसी नापाक जगह में फेंक दें। 41 फिर वह उस घर को अन्दर ही अन्दर चारों तरफ़ से खुरचवाए, और उस खुरची हुई मिट्टी को शहर के बाहर किसी नापाक जगह में डालें। 42 और वह उन पत्थरों की जगह और पत्थर लेकर लगाए और काहिन ताज़ा गारे से उस घर की अस्तरकारी कराए। 43 और अगर पत्थरों के निकाले जाने और उस घर के खुरच और अस्तरकारी कराए जाने के बाद भी वह बला फिर आ जाए और उस घर में फूट निकले, 44 तो काहिन अन्दर जाकर मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि वह बला घर में फैल गई है तो उस घर में खा जाने वाला कोढ़ है; वह नापाक है। 45 तब वह उस घर को, उसके पत्थरों और लकड़ियों और उसकी सारी मिट्टी को गिरा दे; और वह उनको शहर के बाहर निकाल कर किसी नापाक जगह में ले जाए। 46 इसके सिवा, अगर कोई उस घर के बन्द कर दिए जाने के दिनों में उसके अन्दर दाखिल हो तो वह शाम तक नापाक रहेगा; 47 और जो कोई उस घर में सोए वह अपने कपड़े धो डाले, और जो कोई उस घर में कुछ खाए वह भी अपने कपड़े धोए। 48 “और अगर काहिन अन्दर जाकर मुलाहिज़ा करे और देखे कि घर की अस्तरकारी के बाद वह बला उस घर में नहीं फैली, तो वह उस घर को पाक करार दे क्योंकि वह बला दूर हो गई। 49 और वह उस घर को पाक करार देने के लिए दो परिन्दे और देवदार की लकड़ी और सुख्ख कपड़ा और जूफ़ा ले, 50 और वह उन परिन्दों में से एक को मिट्टी के किसी बर्तन में बहते

हुए पानी पर जबह करे; <sup>51</sup> फिर वह देवदार की लकड़ी और जूफ़ा और सुख कपड़े और उस ज़िन्दा परिन्दे को लेकर उनको उस जबह किए हुए परिन्दे के खून में और उस बहते हुए पानी में गोता दे, और सात बार उस घर पर छिड़के। <sup>52</sup> और वह उस परिन्दे के खून से, और बहते हुए पानी और ज़िन्दा परिन्दे और देवदार की लकड़ी और जूफ़े और सुख कपड़े से उस घर को पाक करे; <sup>53</sup> और उस ज़िन्दा परिन्दे को शहर के बाहर खुले मैदान में छोड़ दे; यूँ वह घर के लिए कफ़फ़ारा दे, तो वह पाक ठहरेगा।” <sup>54</sup> कोढ़ की हर किस्म की बला के, और साफ़े के लिए, <sup>55</sup> और कपड़े और घर के कोढ़ के लिए, <sup>56</sup> और वर्म और पपड़ी, और चमकते हुए दाग़ के लिए शरा’ यह है; <sup>57</sup> ताकि बताया जाए कि कब वह नापाक और कब पाक करार दिए जाएँ। कोढ़ के लिए शरा’ यही है।

## 15

### 22222222 222222

<sup>1</sup> और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा कि; <sup>2</sup> “बनी — इस्राईल से कहो कि अगर किसी शख्स की जिरयान का मरीज़ हो तो वह जिरयान की वजह से नापाक है; <sup>3</sup> और जिरयान की वजह से उसकी नापाकी यूँ होगी, कि चाहे धात बहती हो या धात का बहना खत्म हो गया हो वह नापाक है। <sup>4</sup> जिस बिस्तर पर जिरयान का मरीज़ सोए वह बिस्तर नापाक होगा, और जिस चीज़ पर वह बैठे वह चीज़ नापाक होगी। <sup>5</sup> और जो कोई उसके बिस्तर को छुए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे। <sup>6</sup> और जो कोई उस चीज़ पर बैठे जिस पर जिरयान का मरीज़ बैठा हो, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे। <sup>7</sup> और जो कोई जिरयान के मरीज़ के जिस्म को छुए, वह भी अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे। <sup>8</sup> और अगर जिरयान का मरीज़ किसी शख्स पर जो पाक है। थूक दे, तो वह शख्स अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे। <sup>9</sup> और जिस ज़ीन पर जिरयान का मरीज़ सवार हो, वह ज़ीन नापाक होगा। <sup>10</sup> और जो कोई किसी चीज़ को जो उस मरीज़ के नीचे रही हो छुए, वह शाम तक नापाक रहे; और जो कोई उन चीज़ों को उठाए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे। <sup>11</sup> और जिस शख्स की जिरयान का मरीज़ बग़ैर हाथ धोए छुए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे। <sup>12</sup> और मिट्टी के जिस बर्तन को जिरयान का मरीज़ छुए, वह तोड़

डाला जाए; लेकिन चोबी बर्तन पानी से धोया जाए। <sup>13</sup> 'और जब जिरयान के मरीज़ को शिफ़ा हो जाए, तो वह अपने पाक ठहरने के लिए सात दिन गिने; इस के बाद वह अपने कपड़े धोए और बहते हुए पानी में नहाए तब वह पाक होगा। <sup>14</sup> और आठवें दिन दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे लेकर वह खुदावन्द के सामने खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर जाए, और उन को काहिन के हवाले करे; <sup>15</sup> और काहिन एक को खता की कुर्बानी के लिए, और दूसरे को सोख्तनी कुर्बानी के लिए पेश करे। यूँ काहिन उसके लिए उसके जिरयान की वजह से खुदावन्द के सामने कफ़फ़ारा दे। <sup>16</sup> 'और अगर किसी मर्द की धात बहती हो, तो वह पानी में नहाए और शाम तक नापाक रहे। <sup>17</sup> और जिस कपड़े या चमड़े पर नुफ़ा लग जाए, वह कपड़ा या चमड़ा पानी से धोया जाए और शाम तक नापाक रहे। <sup>18</sup> और वह 'औरत भी जिसके साथ मर्द सुहबत करे और मुन्ज़िल हो, तो वह दोनों पानी से गुस्ल करें और शाम तक नापाक रहे। <sup>19</sup> 'और अगर किसी 'औरत को ऐसा जिरयान हो कि उसे हैज़ का खून आए, तो वह सात दिन तक नापाक रहेगी, और जो कोई उसे छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। <sup>20</sup> और जिस चीज़ पर वह अपनी नापाकी की हालत में सोए वह चीज़ नापाक होगी, और जिस चीज़ पर बैठे वह भी नापाक हो जाएगी। <sup>21</sup> और जो कोई उसके बिस्तर को छुए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे। <sup>22</sup> और जो कोई उस चीज़ को जिस पर वह बैठी हो छुए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से नहाए और शाम तक नापाक रहे। <sup>23</sup> और अगर उसका खून उसके बिस्तर पर या जिस चीज़ पर वह बैठी हो उस पर लगा हुआ हो और उस वक़्त कोई उस चीज़ को छुए, तो वह शाम तक नापाक रहे। <sup>24</sup> और अगर मर्द उसके साथ सुहबत करे और उसके हैज़ का खून उसे लग जाए, तो वह सात दिन तक नापाक रहेगा और हर एक बिस्तर जिस पर वह मर्द सोएगा नापाक होगा। <sup>25</sup> 'और अगर किसी 'औरत को हैज़ के दिन को छोड़कर यूँ बहुत दिनों तक खून आए या हैज़ की मुद्दत गुज़र जाने पर भी खून जारी रहे, तो जब तक उस को यह मैला खून आता रहेगा तब तक वह ऐसी ही रहेगी जैसी हैज़ के दिनों में रहती है, वह नापाक है। <sup>26</sup> और इस जिरयान — ए — खून के कुल दिनों में जिस — जिस बिस्तर पर वह सोएगी, वह हैज़ के बिस्तर की तरह नापाक होगा; और जिस — जिस चीज़ पर वह बैठेगी, वह चीज़ हैज़ की नजासत की तरह नापाक होगी। <sup>27</sup> और जो कोई उन चीज़ों को छुए वह नापाक होगा, वह अपने कपड़े धोए

और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे।<sup>28</sup> और जब वह अपने जिरयान से शिफ़ा पा जाए तो सात दिन गिने, तब इसके बाद वह पाक ठहरेगी।<sup>29</sup> और आठवें दिन वह दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे लेकर उनको खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर काहिन के पास लाए।<sup>30</sup> और काहिन एक को खता की कुर्बानी के लिए और दूसरे को सोख्तनी कुर्बानी के लिए पेश करे, यूँ काहिन उसके नापाक खून के जिरयान के लिए खुदावन्द के सामने उस की तरफ़ से कफ़फ़ारा दे।<sup>31</sup> “इस तरीक़े से तुम बनी — इस्राईल को उन की नजासत से अलग रखना, ताकि वह मेरे हैकल की जो उनके बीच है नापाक करने की वजह से अपनी नजासत में हलाक न हों।”<sup>32</sup> उसके लिए जिसे जिरयान का मर्ज़ हो, और उसके लिए जिस की धात बहती हो, और वह उसकी वजह से नापाक हो जाए,<sup>33</sup> और उसके लिए जो हैज़ से हो, और उस मर्द और 'औरत के लिए जिनको जिरयान का मर्ज़ हो, और उस मर्द के लिए जो नापाक 'औरत के साथ सुहबत करे शरा' यही है।

## 16

222222 22 222

<sup>1</sup> और हारून के दो बेटों की वफ़ात के बाद जब वह खुदावन्द के नज़दीक आए और मर गए।<sup>2</sup> खुदावन्द मूसा से हम कलाम हुआ; और खुदावन्द ने मूसा से कहा, अपने भाई हारून से कह कि वह हर वक़्त पर्दे के अन्दर के पाकतरीन मक़ाम में सरपोश के पास जो सन्दूक के ऊपर है न आया करे, ताकि वह मर न जाए; क्योंकि मैं सरपोश पर बादल में दिखाई दूँगा।<sup>3</sup> और हारून पाकतरीन मक़ाम में इस तरह आए कि खता की कुर्बानी के लिए एक बछड़ा और सोख्तनी कुर्बानी के लिए एक मेंढा लाए।<sup>4</sup> और वह कतान का पाक कुरता पहने, और उसके तन पर कतान का पाजामा हो, और कतान के कमरबन्द से उसकी कमर कसी हुई हो, और कतान ही का 'अमामा उसके सिर पर बाँधा हो; यह पाक लिबास है और वह इन को पानी से नहा कर पहने<sup>5</sup> और बनी — इस्राईल की जमा'अत से खता की कुर्बानी के लिए दो बकरे और सोख्तनी कुर्बानी के लिए एक मेंढा ले।<sup>6</sup> और हारून खता की कुर्बानी के बछड़े को जो उसकी तरफ़ से है पेश कर अपने और अपने घर के लिए कफ़फ़ारा दे।<sup>7</sup> फिर उन दोनों बकरों को लेकर उन को खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर खुदावन्द के सामने खड़ा करे।<sup>8</sup> और हारून उन दोनों बकरों पर चिट्ठियाँ डाले, एक चिट्ठी खुदावन्द के लिए और दूसरी 'अज़ाज़ेल के

लिए हो।<sup>9</sup> और जिस बकरे पर खुदावन्द के नाम की चिट्ठी निकले उसे हारून लेकर खता की कुर्बानी के लिए अदा करे;<sup>10</sup> लेकिन जिस बकरे पर 'अज़ाज़ेल के नाम की चिट्ठी निकले वह खुदावन्द के सामने ज़िन्दा खड़ा किया जाए, ताकि उससे कफ़फ़ारा दिया जाए और वह 'अज़ाज़ेल के लिए वीराने में छोड़ दिया जाए।<sup>11</sup> “और हारून खता की कुर्बानी के बछड़े की जो उस की तरफ़ से है, आगे लाकर अपने और अपने घर के लिए कफ़फ़ारा दे, और उस बछड़े को जो उस की तरफ़ से खता की कुर्बानी के लिए है जबह करे।<sup>12</sup> और वह एक खुशबूदान को ले जिसमें खुदावन्द के मज़बह पर की आग के अंगारे भर हों और अपनी मुठ्ठियाँ बारीक खुशबूदार खुशबू से भर ले और उसे पर्दे के अन्दर लाए।<sup>13</sup> और उस खुशबू को खुदावन्द के सामने आग में डाले, ताकि खुशबू का धुआँ सरपोश को जो शहादत के सन्दूक के ऊपर है छिपा ले, कि वह हलाक न हो।<sup>14</sup> फिर वह उस बछड़े का कुछ खून लेकर उसे अपनी उँगली से पूरब की तरफ़ सरपोश के ऊपर छिड़के, और सरपोश के आगे भी कुछ खून अपनी उँगली से सात बार छिड़के।<sup>15</sup> फिर वह खता की कुर्बानी के उस बकरे को जबह करे जो जमा'अत की तरफ़ से है और उसके खून को पर्दे के अन्दर लाकर जो कुछ उसने बछड़े के खून से किया था वही इससे भी करे, और उसे सरपोश के ऊपर और उसके सामने छिड़के।<sup>16</sup> और बनी — इस्राईल की सारी नापाकियों, और गुनाहों, और खताओं की वजह से पाकतरीन मक़ाम के लिए कफ़फ़ारा दे; और ऐसा ही वह खेमा — ए — इजितमा'अ के लिए भी करे जो उनके साथ उन की नापाकियों के बीच रहता है।<sup>17</sup> और जब वह कफ़फ़ारा देने को पाकतरीन मक़ाम के अन्दर जाए, तो जब तक वह अपने और अपने घराने और बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत के लिए कफ़फ़ारा देकर बाहर न आ जाए उस वक़्त तक कोई आदमी खेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर न रहे।<sup>18</sup> फिर वह निकल कर उस मज़बह के पास जो खुदावन्द के सामने है जाए और उसके लिए कफ़फ़ारा दे, और उस बछड़े और बकरे का थोड़ा — थोड़ा सा खून लेकर मज़बह के सींगों पर चारों तरफ़ लगाए;<sup>19</sup> और कुछ खून उसके ऊपर सात बार अपनी उँगली से छिड़के और उसे बनी — इस्राईल की नापाकियों से पाक और पाक करे।<sup>20</sup> और जब वह पाकतरीन मक़ाम और खेमा — ए — इजितमा'अ और मज़बह के लिए कफ़फ़ारा दे चुके तो उस ज़िन्दा बकरे को आगे लाए;<sup>21</sup> और हारून अपने दोनों हाथ उस ज़िन्दा बकरे के सिर पर रख कर उसके ऊपर बनी —

\* 16:1 16:1 खुदावन्द तक पहुँचते वक़्त जब हारून के दोनों बेटे मर चुके थे तब खुदावन्द ने मूसा से बात की



इस्राईल की सब बदकारियों, और उनके सब गुनाहों, और खताओं का इकरार करे और उन को उस बकरे के सिर पर धर कर उसे किसी शख्स के हाथ जो इस काम के लिए तैयार ही वीरान में भिजवा दे। <sup>22</sup> और वह बकरा उनकी सब बदकारियाँ अपने ऊपर लादे हुए किसी वीरान में ले जाएगा, इसलिए वह उस बकरे को वीरान में छोड़े दे। <sup>23</sup> “फिर हारून खेमा — ए — इजितमा'अ में आकर कतान के सारे लिबास को जिसे उसने पाकतरीन मक़ाम में जाते वक्त पहना था उतारे और उसकी वहीं रहने दे। <sup>24</sup> फिर वह किसी पाक जगह में पानी से गुस्त करके अपने कपड़े पहन ले, और बाहर आ कर अपनी सोख्तनी कुर्बानी और जमा'त की सोख्तनी कुर्बानी पेश करे और अपने लिए और जमा'त के लिए कफ़ारा दे। <sup>25</sup> और खता की कुर्बानी की चर्बी को मज़बह पर जलाए। <sup>26</sup> और जो आदमी बकरे को 'अज़ाज़ेल के लिए छोड़ कर आए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से नहाए, इसके बाद वह लश्करगाह में दाखिल हो। <sup>27</sup> और खता की कुर्बानी के बछड़े को और खता की कुर्बानी के बकरे को जिन का खून पाकतरीन मक़ाम में कफ़ारे के लिए पहुँचाया जाए, उन को वह लश्करगाह से बाहर ले जाएँ, और उनकी खाल और गोश्त और फुज़लात को आग में जला दें: <sup>28</sup> और जो उन को जलाए वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्त करे, उसके बाद वह लश्करगाह में दाखिल हो। <sup>29</sup> “और यह तुम्हारे लिए एक हमेशा का क़ानून हो कि सातवें महीने की दसवीं तारीख को तुम अपनी अपनी जान को दुख देना, और उस दिन कोई चाहे वह देसी हो या परदेसी जो तुम्हारे बीच बूद — ओ — बाश रखता हो किसी तरह का काम न करे; <sup>30</sup> क्योंकि उस रोज़ तुम्हारे लिए तुम को पाक करने के लिए कफ़ारा दिया जाएगा, इसलिए तुम अपने सब गुनाहों से खुदावन्द के सामने पाक ठहरोगे। <sup>31</sup> यह तुम्हारे लिए खास आराम का सबत होगा। तुम उस दिन अपनी अपनी जान को दुख देना; यह हमेशा का क़ानून है। <sup>32</sup> और जो अपने बाप की जगह काहिन होने के लिए मसह और मख्सूस किया जाए, वह काहिन कफ़ारा दिया करे; या'नी कतान के पाक लिबास को पहनकर <sup>33</sup> वह हैकल के लिए कफ़ारा दे, और खेमा — ए — इजितमा'अ और मज़बह के लिए कफ़ारा दे, और काहिनों और जमा'त के सब लोगों के लिए कफ़ारा दे। <sup>34</sup> इसलिए यह तुम्हारे लिए एक हमेशा क़ानून हो कि तुम बनी — इस्राईल के लिए साल

में एक दफ़ा' उनके सब गुनाहों का कफ़ारा दो।” और उसने जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था वैसा ही किया।

## 17

2222 2222 22 222222

<sup>1</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> हारून और उसके बेटों से और सब बनी — इस्राईल से कह कि खुदावन्द ने यह हुक्म दिया है कि <sup>3</sup> इस्राईल के घराने का जो कोई शख्स बैल या बरें या बकरे को चाहे लश्करगाह में या लश्करगाह के बाहर ज़बह कर के <sup>4</sup> उसे खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर, खुदावन्द के घर के आगे, खुदावन्द के सामने चढ़ाने को न ले जाए, उस शख्स पर खून का इल्ज़ाम होगा कि उसने खून किया है; और वह शख्स अपने लोगों में से काट डाला जाए। <sup>5</sup> इससे मक़सूद यह है कि बनी — इस्राईल अपनी कुर्बानियाँ, जिनको वह खुले मैदान में ज़बह करते हैं, उन्हें खुदावन्द के सामने खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर काहिन के पास लाएँ और उनको खुदावन्द के सामने सलामती के ज़बीहों के तौर पर पेश करें, <sup>6</sup> और काहिन उस खून को खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर खुदावन्द के मज़बह के ऊपर छिड़के और चर्बी को जलाए, ताकि खुदावन्द के लिए राहत अंगेज़ खुशबू हो। <sup>7</sup> \*और आइन्दा कभी वह उन बकरों के लिए जिनके पैरौ होकर वह ज़िनाकार ठहरें हैं, अपनी कुर्बानियाँ न पेश करे। उनके लिए नसल — दर — नसल यह हमेशा क़ानून होगा। <sup>8</sup> “इसलिए तू उन से कह दे कि इस्राईल के घराने का या उन परदेसियों में से जो उनमें क़याम करते हैं जो कोई सोख्तनी कुर्बानी या कोई ज़बीहा पेश कर, <sup>9</sup> उसे खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर खुदावन्द के सामने चढ़ाने को न लाए; वह अपने लोगों में से काट डाला जाए। <sup>10</sup> “और इस्राईल के घराने का या उन परदेसियों में से जो उनमें क़याम करते हैं जो कोई किसी तरह का खून खाए, मैं उस खून खाने वाले के खिलाफ़ हूँगा और उसे उसके लोगों में से काट डालूँगा। <sup>11</sup> क्योंकि जिस्म की जान खून में है; और मैंने मज़बह पर तुम्हारी जानों के कफ़ारे के लिए उसे तुम को दिया है कि उससे तुम्हारी जानों के लिए कफ़ारा हो; क्योंकि जान रखने ही की वजह से खून कफ़ारा देता है। <sup>12</sup> इसीलिए मैंने बनी — इस्राईल से कहा है कि तुम में से कोई शख्स

† 16:31 16:31 यह सबत के आराम का दिन है और तुमको खुद का इनकार करना ज़रूरी है, यह हमेशा का हुक्म है — \* 17:7 17:7 बकरों की मूर्तियाँ — — — अफरियत, भूत (शैतान) † 17:7 17:7 खुदावन्द का वफ़ादारहोने का दावा करते वक्त एक शख्स जब दीगर माबूद की परस्तिश करे या कुरबानी गुजराने तो वह एक ज़िनाकार की मानिंद है जो अपनी बीबी को धोका देता और अपने वायदे में ग़ैर वफ़ादार है, इसी लिए पुराना अहदनामा अक्सर इस तस्वीर को पेश करता है — देखें: खुरज 20:4 — 6; 34:15 — 16 और होशे की किताब का असल मक़सद भी यही है

खून कभी न खाए, और न कोई परदेसी जो तुम में क्रयाम करता हो कभी खून को खाए। <sup>13</sup> “और बनी — इस्राईल में से या उन परदेसियों में से जो उनमें क्रयाम करते हैं जो कोई शिकार में ऐसे जानवर या परिन्दे को पकड़े जिसका खाना ठीक है, तो वह उसके खून को निकाल कर उसे मिट्टी से ढाँक दे। <sup>14</sup> क्योंकि जिस्म की जान जो है वह उस का खून है, जो उसकी जान के साथ एक है। इसीलिए मैंने बनी — इस्राईल को हुक्म किया है कि तुम किसी क्रिस्म के जानवर का खून न खाना, क्योंकि हर जानवर की जान उसका खून ही है; जो कोई उसे खाए वह काट डाला जाएगा। <sup>15</sup> और जो शरूस् मुरदार को या दरिन्दे के फाड़े हुए जानवर को खाए, वह चाहे देसी हो या परदेसी अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे और शाम तक नापाक रहे; तब वह पाक होगा। <sup>16</sup> लेकिन अगर वह उनको न धोए और न गुस्ल करे, तो उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा।”

## 18

?????? ???? ? ? ?

<sup>1</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> बनी — इस्राईल से कह कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। <sup>3</sup> तुम मुल्क — ए — मिस्र के से काम जिसमें तुम रहते थे, न करना और मुल्क — ए — कना'न के से काम भी जहाँ मैं तुम्हें लिए जाता हूँ, न करना और न उनकी रस्मों पर चलना। <sup>4</sup> तुम मेरे हुक्मों पर 'अमल करना और मेरे कानून को मान कर उन पर चलना। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। <sup>5</sup> इसलिए तुम मेरे आईन और अहकाम मानना, जिन पर अगर कोई 'अमल करे तो वह उन ही की बदौलत ज़िन्दा रहेगा। मैं खुदावन्द हूँ। <sup>6</sup> “तुम में से कोई अपनी किसी क़रीबी रिश्तेदार के पास उसके बदन को बे — पर्दा करने के लिए न जाए। मैं खुदावन्द हूँ। <sup>7</sup> तू अपनी माँ के बदन को जो तेरे बाप का बदन है बे — पर्दा न करना; क्योंकि वह तेरी माँ है, तू उसके बदन को बे — पर्दा न करना। <sup>8</sup> तू अपने बाप की बीवी के बदन को बे — पर्दा न करना, क्योंकि वह तेरे बाप का बदन है। <sup>9</sup> तू अपनी बहन के बदन को, चाहे वह तेरे बाप की बेटी हो चाहे तेरी माँ की और चाहे वह घर में पैदा हुई हो चाहे और कहीं, बे — पर्दा न करना। <sup>10</sup> तू अपनी पोती या नवासी के बदन को बे — पर्दा न करना क्योंकि उनका बदन तो तेरा ही बदन है। <sup>11</sup> तेरे बाप की बीवी की बेटी, जो तेरे बाप से पैदा हुई है, तेरी बहन है; तू उसके बदन को बे — पर्दा न करना। <sup>12</sup> तू अपनी फूफी के बदन को बे — पर्दा न करना, क्योंकि वह तेरे बाप की क़रीबी रिश्तेदार है। <sup>13</sup> तू अपनी खाला के

बदन को बेपर्दा न करना, क्योंकि वह तेरी माँ की क़रीबी रिश्तेदार है। <sup>14</sup> तू अपने बाप के भाई के बदन को बे — पर्दा न करना, या'नी उस की बीवी के पास न जाना, वह तेरी चची है। <sup>15</sup> तू अपनी बहू के बदन को बे — पर्दा न करना, क्योंकि वह तेरे बेटे की बीवी है, इसलिए तू उसके बदन को बे — पर्दा न करना। <sup>16</sup> तू अपनी भावज के बदन को बे — पर्दा न करना, क्योंकि वह तेरे भाई का बदन है। <sup>17</sup> तू किसी 'औरत और उसकी बेटी दोनों के बदन को बेपर्दा न करना; और न तू उस 'औरत की पोती या नवासी से ब्याह कर के उस में से किसी के बदन को बे — पर्दा करना, क्योंकि वह दोनों उस 'औरत की क़रीबी रिश्तेदार हैं: यह बड़ी ख़बासत है। <sup>18</sup> तू अपनी साली से ब्याह कर के उसे अपनी बीवी की सौतन न बनाना, कि दूसरी के जीते जी उसके बदन को भी बेपर्दा करे। <sup>19</sup> “और तू 'औरत के पास जब तक वह हैज़ की वजह से नापाक है, उसके बदन को बे — पर्दा करने के लिए न जाना। <sup>20</sup> और तू अपने को नजिस करने के लिए अपने पड़ोसी की बीवी से सुहबत न करना। <sup>21</sup> तू अपनी औलाद में से किसी को मोलक की खातिर आग में से पेश करने के लिए न देना, और न अपने खुदा के नाम को नापाक ठहराना। मैं खुदावन्द हूँ। <sup>22</sup> तू मर्द के साथ सुहबत न करना जैसे 'औरत से करता है; यह बहुत मकरूह काम है। <sup>23</sup> तू अपने को नजिस करने के लिए किसी जानवर से सुहबत न करना, और न कोई 'औरत किसी जानवर से हम — सुहबत होने के लिए उसके आगे खड़ी हो; क्योंकि यह औंधी बात है। <sup>24</sup> “तुम इन कामों में से किसी में फँस कर आलूदा न हो जाना, क्योंकि जिन क़ौमों को मैं तुम्हारे आगे से निकालता हूँ वह इन सब कामों की वजह से आलूदा हैं। <sup>25</sup> और उन का मुल्क भी आलूदा हो गया है; इसलिए मैं उसकी बदकारी की सज़ा उसे देता हूँ, ऐसा कि वह अपने बाशिन्दों को उगले देता है। <sup>26</sup> लिहाज़ा तुम मेरे आईन और अहकाम को मानना और तुम में से कोई, चाहे वह देसी हो या परदेसी जो तुम में क्रयाम रखता हो, इन मकरूहात में से किसी काम को न करे; <sup>27</sup> क्योंकि उस मुल्क के बाशिन्दों ने जो तुमसे पहले थे यह सब मकरूह काम किये हैं और मुल्क आलूदा हो गया है। <sup>28</sup> इसलिए ऐसा न हो कि जिस तरह उस मुल्क ने उस क़ौम को जो तुमसे पहले वहाँ थी उगल दिया, उसी तरह तुम को भी जब तुम उसे आलूदा करो तो उगल दे। <sup>29</sup> क्योंकि जो इन मकरूह कामों में से किसी को करेगा, वह अपने लोगों में से काट डाला जाएगा। <sup>30</sup> इसलिए मेरी शरी'अत को मानना, और यह मकरूह रस्में जो तुमसे पहले अदा की जाती थीं, इनमें से किसी को 'अमल में न लाना और इन

में फँस कर आलूदा न हो जाना। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।”

## 19

????? ?????????? ??? ?????????????

1 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “बनी — इसराईल की सारी जमा'अत से कह कि तुम पाक रहो; क्योंकि मैं जो खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ पाक हूँ <sup>3</sup> तुम में से हर एक अपनी माँ और अपने बाप से डरता रहे, और तुम मेरे सबतों को मानना; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। <sup>4</sup> तुम बुतों की तरफ रुजू' न होना, और न अपने लिए ढाले हुए मा'बूद बनाना; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। <sup>5</sup> “और जब तुम खुदावन्द के सामने सलामती के ज़बीहे पेश करो, तो उनको इस तरह पेश करना कि तुम मक़बूल हो। <sup>6</sup> और जिस दिन उसे पेश करो उस दिन और दूसरे दिन वह खाया जाए, और अगर तीसरे दिन तक कुछ बचा रह जाए तो वह आग में जला दिया जाए। <sup>7</sup> और अगर वह ज़रा भी तीसरे दिन खाया जाए, तो मकरूह ठहरेगा और मक़बूल न होगा; <sup>8</sup> बल्कि जो कोई उसे खाए उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा, क्योंकि उसने खुदावन्द की पाक चीज़ को नजिस किया; इसलिए वह शख्स अपने लोगों में से काट डाला जाएगा। <sup>9</sup> “और जब तुम अपनी ज़मीन की पैदावार की फ़स्तल काटो, तो अपने खेत के कोने — कोने तक पूरा — पूरा न काटना और न कटाई की गिरी — पड़ी बालों को चुन लेना। <sup>10</sup> और तू अपने अंगूरिस्तान का दाना — दाना न तोड़ लेना, और न अपने अंगूरिस्तान के गिरे हुए दानों को जमा' करना; उनको ग़रीबों और मुसाफ़िरों के लिए छोड़ देना। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। <sup>11</sup> “तुम चोरी न करना और न दगा देना और न एक दूसरे से झूट बोलना। <sup>12</sup> और तुम मेरा नाम लेकर झूटी कसम न खाना जिससे तू अपने खुदा के नाम को नापाक ठहराए; मैं खुदावन्द हूँ। <sup>13</sup> “तू अपने पड़ोसी पर न ज़ुल्म करना, न उसे लूटना। मज़दूर की मज़दूरी तेरे पास सारी रात सुबह तक रहने न पाए। <sup>14</sup> तू बहरे को न कोसना, और न अन्धे के आगे ठोकर खिलाने की चीज़ को धरना, बल्कि अपने खुदा से डरना। मैं खुदावन्द हूँ। <sup>15</sup> “तुम फ़ैसले में नारास्ती न करना, न तो ग़रीब की रि'आयत करना और न बड़े आदमी का लिहाज़; बल्कि रास्ती के साथ अपने पड़ोसी का इन्साफ़

करना। <sup>16</sup> तू अपनी क़ौम में इधर — उधर लुतरापन न करते फिरना, और \*न अपने पड़ोसी का खून करने पर आमादा होना; मैं खुदावन्द हूँ। <sup>17</sup> तू अपने दिल में अपने भाई से बुग़ज़ न रखना; और अपने पड़ोसी को ज़रूर डाँटते भी रहना, ताकि उसकी वजह से तेरे सिर गुनाह न लगे। <sup>18</sup> तू इन्तक़ाम न लेना, और न अपनी क़ौम की नसल से कीना रखना, बल्कि अपने पड़ोसी से अपनी तरह मुहब्बत करना; मैं खुदावन्द हूँ। <sup>19</sup> “तू मेरी शरी'अतों को मानना: तू अपने चौपायों को ग़ैर जिन्स से भरवाने न देना, और अपने खेत में दो क्रिस्म के बीज एक साथ न बोना, और न तुझ पर दो क्रिस्म के मिले जुले तार का कपड़ा हो। <sup>20</sup> “अगर कोई ऐसी 'औरत से सुहबत करे जो लौंडी और किसी शख्स की मंगेतर हो, और न तो उसका फ़िदिया ही दिया गया हो और न वह आज़ाद की गई हो, तो उन दोनों की सज़ा मिले लेकिन वह जान से मारे न जाएँ इसलिए कि वह 'औरत आज़ाद न थी। <sup>21</sup> और वह आदमी अपने जुर्म की कुर्बानी के लिए खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर खुदावन्द के सामने एक मेंढा लाए कि वह उसके जुर्म की कुर्बानी हो। <sup>22</sup> और काहिन उसके जुर्म की कुर्बानी के मेंढे से उसके लिए खुदावन्द के सामने कफ़ारा दे, तब जो खता उसने की है वह उसे मु'आफ़ की जाएगी। <sup>23</sup> और जब तुम उस मुल्क में पहुँचकर क्रिस्म — क्रिस्म के फल के दरख्त लगाओ तो तुम उनके फल को जैसे† नामख़तून समझना वह तुम्हारे लिए तीन बरस तक नामख़तून के बराबर हों और खाए न जाएँ। <sup>24</sup> और चौथे साल उनका सारा फल खुदावन्द की तम्ज़ीद करने के लिए पाक होगा। <sup>25</sup> तब पाँचवे साल से उनका फल खाना ताकि वह तुम्हारे लिए इफ़रात के साथ पैदा हों। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। <sup>26</sup> “तुम किसी चीज़ को खून के साथ न खाना। और न जादू मंतर करना, न शगुन निकालना। <sup>27</sup> तुम अपने अपने सिर के गोशों को बाल काट कर गोल न बनाना, और न तू अपनी दाढ़ी के कोनों को बिगाड़ना। ‡ <sup>28</sup> तुम मुर्दों की वजह से अपने जिस्म को ज़ख्मी न करना, और न अपने ऊपर कुछ गुदवाना। मैं खुदावन्द हूँ। <sup>29</sup> तू अपनी बेटी को षक़्बी बना कर नापाक न होने देना, कहीं ऐसा न हो कि मुल्क में रण्डी बाज़ी फैल जाए और सारा मुल्क बदकारी से भर जाए। <sup>30</sup> तुम मेरे सबतों को मानना और मेरे हैकल की ता'ज़ीम करना; मैं खुदावन्द हूँ। <sup>31</sup> जो जिन्नात के

\* 19:16 19:16 तू अपने पड़ोसी के खून का मुजरिम न टहरना, या ऐसा कुछ न कर्नाजिस से तेरे पड़ोसी की ज़िन्दगी को खतरा हो — † 19:23 19:23 मना किया हुआ, ना मख़तून ‡ 19:27 19:27 1: ग़ैर क़ौम के लोग जो बनी इसराईल के आसपास रहते थे ग़ालिबन उन की तहजीब के मुताबिक़ ढालना पड़ रहा था — इन में से एक मुर्दों के लिए मातम कर्नाकारना भी जुड़ा हुआ था जिसतरह कि 28 आयत में वाज़ेह किया गया है § 19:29 19:29 अपनी बेटी को कस्बियों में शामिल करने के ज़रिये

यार हैं और जो जादूगर हैं, तुम उनके पास न जाना और न उनके तालिब होना कि वह तुम को नजिस बना दें। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। <sup>32</sup> “जिनके सिर के बाल सफ़ेद हैं, तुम उनके सामने उठ खड़े होना और बड़े — बूढ़े का अदब करना, और अपने खुदा से डरना। मैं खुदावन्द हूँ। <sup>33</sup> ‘और अगर कोई परदेसी तेरे साथ तुम्हारे मुल्क में क़याम करता हो तो तुम उसे आज़ार न पहुँचाना; <sup>34</sup> बल्कि जो परदेसी तुम्हारे साथ रहता हो उसे देसी की तरह समझना, बल्कि तू उससे अपनी तरह मुहब्बत करना; इसलिए कि तुम मुल्क — ए — मिस्र में परदेसी थे। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। <sup>35</sup> “तुम इन्साफ़, और पैमाइश, और वज़न, और पैमाने में नारास्ती न करना। <sup>36</sup> ठीक तराजू, ठीक तौल बाट पूरा ऐफ़ा और पूरा हीन रखना। जो तुम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया मैं ही हूँ, खुदावन्द तुम्हारा खुदा। <sup>37</sup> इसलिए तुम मेरे सब आईन और सब अहकाम मानना और उन पर ‘अमल करना; मैं खुदावन्द हूँ।”

## 20

?? ???? ?? ???? ?

<sup>1</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “तू बनी — इस्राईल से यह भी कह दे कि बनी — इस्राईल में से या उन परदेसियों में से जो इस्राईलियों के बीच क़याम करते हैं, जो कोई शख्स अपनी औलाद में से किसी की \*मोलक की नज़र करे वह ज़रूर जान से मारा जाए; अहल — ए — मुल्क उसे संगसार करें। <sup>3</sup> और मैं भी उस शख्स का मुखालिफ़ हूँगा और उसे उसके लोगों में से काट डालेंगा, इसलिए कि उस ने अपनी औलाद को मोलक की नज़र कर के मेरे हैकल और मेरे पाक नाम को नापाक ठहराया। <sup>4</sup> और अगर उस वक़्त जब वह अपनी औलाद में से किसी की मोलक की नज़र करे, अहल — ए — मुल्क उस शख्स की तरफ़ से चश्मपोशी कर के उसे जान से न मारें <sup>5</sup> तो मैं खुद उस शख्स का और उसके घराने का मुखालिफ़ हो कर उसको और उन सभी को जो उसकी पैरवी में ज़िनाकार बनें और मोलक के साथ ज़िना करें, उनकी क्रौम में से काट डालूँगा। <sup>6</sup> ‘और जो शख्स जिन्नात के यारों और जादूगरों के पास जाए कि उनकी पैरवी में ज़िना करे, मैं उसका मुखालिफ़ हूँगा और उसे उस की क्रौम में से काट डालूँगा। <sup>7</sup> इसलिए तुम अपने आप को पाक करो और पाक रहो, मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। <sup>8</sup> और तुम मेरे क़ानून को मानना और उस पर ‘अमल करना। मैं खुदावन्द हूँ जो तुम को पाक करता हूँ।

<sup>9</sup> और जो कोई अपने बाप या अपनी माँ पर ला'नत करे वह ज़रूर जान से मारा जाए, उसने अपने बाप या माँ पर ला'नत की है, इसलिए उस का खून उसी की गर्दन पर होगा। <sup>10</sup> ‘और जो शख्स दूसरे की बीवी से या'नी अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करे, वह ज़ानी और ज़ानिया दोनों ज़रूर जान से मार दिए जाएँ। <sup>11</sup> और जो शख्स अपनी सौतेली माँ से सुहबत करे उसने अपने बाप के बदन को बे — पर्दा किया, वह दोनों ज़रूर जान से मारे जाएँ, उन का खून उन ही की गर्दन पर होगा। <sup>12</sup> और अगर कोई शख्स अपनी बहू से सुहबत करे तो वह दोनों ज़रूर जान से मारे जायें उन्होंने औंधी बात की है उनका खून उन ही की गर्दन पर होगा। <sup>13</sup> और अगर कोई मर्द से सुहबत करे जैसे ‘औरत से करते हैं तो उन दोनों ने बहुत मकरूह काम किया है, इसलिए वह दोनों ज़रूर जान से मारे जाएँ, उनका खून उनही की गर्दन पर होगा। <sup>14</sup> और अगर कोई शख्स अपनी बीवी और अपनी सास दोनों को रखे तो यह बड़ी ख़बासत है, इसलिए वह आदमी और वह ‘औरतें तीनों के तीनों जला दिए जाएँ ताकि तुम्हारे बीच ख़बासत न रहे; <sup>15</sup> और अगर कोई मर्द किसी जानवर से जिमा'अ करे तो वह ज़रूर जान से मारा जाए और तुम उस जानवर को भी मार डालना। <sup>16</sup> और अगर कोई ‘औरत किसी जानवर के पास जाए और उससे हम सुहबत हो तो उस ‘औरत और जानवर दोनों को मार डालना, वह ज़रूर जान से मारे जाएँ; उनका खून उन ही की गर्दन पर होगा। <sup>17</sup> ‘और अगर कोई मर्द अपनी बहन को जो उसके बाप की या उसकी माँ की बेटी हो, लेकर उसका बदन देखे और उसकी बहन उसका बदन देखे, तो यह शर्म की बात है; वह दोनों अपनी क्रौम के लोगों की आँखों के सामने क़त्ल किए जाएँ, उसने अपनी बहन के बदन को बे — पर्दा किया, उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा। <sup>18</sup> और अगर मर्द उस ‘औरत से जो कपड़ों से हो सुहबत कर के उसके बदन को बे — पर्दा करे, तो उसने उसका चश्मा खोला और उस ‘औरत ने अपने खून का चश्मा खुलवाया। इसलिए वह दोनों अपनी क्रौम में से काट डाले जाएँ। <sup>19</sup> और तू अपनी ख़ाला या फूफी के बदन को बे — पर्दा न करना, क्योंकि जो ऐसा करे उसने अपनी क़रीबी रिश्तेदार को बे — पर्दा किया; इसलिए उन दोनों का गुनाह उन ही के सिर लगेगा। <sup>20</sup> और अगर कोई अपनी चची या ताई से सुहबत करे तो उसने अपने चचा या ताऊ के बदन को बे — पर्दा किया; इसलिए उनका गुनाह उनके सिर लगेगा, वह बे — औलाद मरेगा। <sup>21</sup> अगर कोई शख्स अपने भाई की बीवी को रखे तो यह नजासत है, उसने अपने भाई के बदन को बे — पर्दा

\* 20:2 20:2 मोलक के साथमाबूद (देवता) जोड़ें



किया है; वह बे — औलाद रहेंगे। <sup>22</sup> इसलिए तुम मेरे सब आईन और अहकाम मानना और उन पर 'अमल करना, ताकि वह मुल्क जिसमें मैं तुम को बसाने को लिए जाता हूँ तुम को उगल न दे। <sup>23</sup> तुम उन क्रौमों के दस्तूरो पर जिनको मैं तुम्हारे आगे से निकालता हूँ मत चलना, क्योंकि उन्होंने यह सब काम किए इसीलिए मुझे उन से नफरत हो गई। <sup>24</sup> लेकिन मैंने तुमसे कहा है कि तुम उनके मुल्क के वारिस होगे, और मैं तुम को वह मुल्क जिसमें दूध और शहद बहता है तुम्हारी मिल्कियत होने के लिए दूंगा। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, जिसने तुम को और क्रौमों से अलग किया है। <sup>25</sup> इसलिए तुम पाक और नापाक चौपायों में, और पाक और नापाक परिन्दों में फ़र्क करना, और तुम किसी जानवर या परिन्दे या ज़मीन पर के रेंगनेवाले जानदार से, जिनको मैंने तुम्हारे लिए नापाक ठहराकर अलग किया है अपने आप को मकरूह न बना लेना। <sup>26</sup> और तुम मेरे लिए पाक बने रहना, क्योंकि मैं जो खुदावन्द हूँ पाक हूँ; और मैंने तुम को और क्रौमों से अलग किया है ताकि तुम मेरे ही रहो। <sup>27</sup> और वह मर्द या 'औरत जिसमें जिन्न हो या वह जादूगर हो तो वह ज़रूर जान से मारा जाए, ऐसी को लोग संगसार करें; उनका खून उन ही की गर्दन पर होगा।”

## 21

?????????? ?? ????? ?????

<sup>1</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि 'हारून के बेटों से जो काहिन हैं कह कि अपने कबीले के मुर्दे की वजह से कोई अपने आप को नजिस न कर ले। <sup>2</sup> अपने करीबी रिश्तेदारों की वजह से जैसे अपनी माँ की वजह से, और अपने बाप की वजह से, और अपने बेटे — बेटों की वजह से, और अपने भाई की वजह से, <sup>3</sup> और अपनी सगी कुंवारी बहन की वजह से जिसने शौहर न किया हो, इन की खातिर वह अपने को नजिस कर सकता है। <sup>4</sup> चूँकि वह अपने लोगों में सरदार है, इसलिए \*वह अपने आप को ऐसा आलूदा न करे कि नापाक हो जाए। <sup>5</sup> वह न अपने सिर उनकी खातिर बीच से घुटवाएँ और न अपनी दाढ़ी के कोने मुण्डवाएँ, और न अपने को ज़ख्मी करें। <sup>6</sup> वह अपने खुदा के लिए पाक बने रहें और अपने खुदा के नाम को बेहुरमत न करें, क्योंकि वह खुदावन्द की आतिशीन कुर्बानियाँ जो उनके खुदा की गिज़ा है पेश करते हैं; इसलिए वह पाक रहें। <sup>7</sup> वह किसी फ़ाहिशा या नापाक 'औरत से ब्याह न करें, और न उस 'औरत से ब्याह करें जिसे उसके शौहर ने तलाक़ दी हो; क्योंकि

काहिन अपने खुदा के लिए पाक है। <sup>8</sup> तब तू काहिन को पाक जानना क्योंकि वह तेरे खुदा की गिज़ा पेश करता है; इसलिए वह तेरी नज़र में पाक ठहरे, क्योंकि मैं खुदावन्द जो तुम को पाक करता हूँ कुदूस हूँ। <sup>9</sup> और अगर काहिन की बेटा फ़ाहिशा बनकर अपने आप को नापाक करे तो वह अपने बाप को नापाक ठहराती है, वह 'औरत आग में जलाई जाए। <sup>10</sup> और वह जो अपने भाइयों के बीच सरदार काहिन हो, जिसके सिर पर मसह करने का तेल डाला गया और जो पाक लिबास पहनने के लिए मख्सूस किया गया, वह अपने सिर के बाल बिखरने न दे और अपने कपड़े न फाड़े। <sup>11</sup> वह किसी मुर्दे के पास न जाए, और न अपने बाप या माँ की खातिर अपने आप को नजिस करे। <sup>12</sup> और वह हैकल के बाहर भी न निकले और न अपने खुदा के हैकल को बेहुरमत करे, क्योंकि उसके खुदा के मसह करने के तेल का ताज उस पर है; मैं खुदावन्द हूँ। <sup>13</sup> और वह कुंवारी 'औरत से ब्याह करे; <sup>14</sup> जो बेवा या मुतल्लका या नापाक 'औरत या फ़ाहिशा हो, उनसे वह ब्याह न करे बल्कि वह अपनी ही क्रौम की कुंवारी को ब्याह ले। <sup>15</sup> और वह अपने तुल्म को अपनी क्रौम में नापाक न ठहराए, क्योंकि मैं खुदावन्द हूँ जो उसे पाक करता हूँ। <sup>16</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, <sup>17</sup> “हारून से कह दे कि तेरी नसल में नसल — दर — नसल अगर कोई किसी तरह का 'ऐब रखता हो, तो वह अपने खुदा की गिज़ा पेश करने को नज़दीक न आए; <sup>18</sup> चाहे कोई हो जिसमें 'ऐब हो वह नज़दीक न आए चाहे वह अन्धा हो या लंगड़ा, या नकचपटा हो, या ज़ाइद — उल — 'आज़ा, <sup>19</sup> या उसका पाँव टूटा हो, या हाथ टूटा हो <sup>20</sup> या वह कुबड़ा या बौना हो, या उसकी आँख में कुछ नुक्स हो, या खुजली भरा हो, या उसके पपड़ियाँ हों, या उसके खुसिए पिचके हों। <sup>21</sup> हारून काहिन की नसल में से कोई जो 'ऐबदार हो खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियाँ पेश करने को नज़दीक न आए, वह 'ऐबदार है; वह हरगिज़ अपने खुदा की गिज़ा पेश करने को पास न आए। <sup>22</sup> वह अपने खुदा की बहुत ही मुक़द्दस और पाक दोनों तरह की रोटी खाए, <sup>23</sup> लेकिन पर्दे के अन्दर दाखिल न हो, न मज़बह के पास आए इसलिए कि वह 'ऐबदार है; कहीं ऐसा न हो कि वह मेरे पाक मक़ामों को बे — हुरमत करे, क्योंकि मैं खुदावन्द उनका पाक करने वाला हूँ।” <sup>24</sup> तब मूसा ने हारून और उसके बेटों और सब बनी — इस्राईल से यह बातें कहीं।

† 20:24 20:24 अज़हद ज़रखेज़ मुल्क  
19:27 — 28 पदें

\* 21:4 21:4 दीगर रिश्तेदारों के लिए जोड़ें, शादी के ज़रिये उस के दीगर रिश्तेदार † 21:5 21:5

## 22

1 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 2 “हारून और उसके बेटों से कह कि वह बनी — इस्राईल की पाक चीजों से जिनको वह मेरे लिए पाक करते हैं अपने आप को बचाए रखें, और मेरे पाक नाम को बे — हरमत न करें; मैं खुदावन्द हूँ। 3 उनको कह दे कि तुम्हारी नसल — दर — नसल जो कोई तुम्हारी नसल में से अपनी नापाकी की हालत में उन पाक चीजों के पास जाए, जिनको बनी — इस्राईल खुदावन्द के लिए पाक करते हैं, वह शख्स मेरे सामने से काट डाला जाएगा; मैं खुदावन्द हूँ। 4 हारून की नसल में जो कोढ़ी, या जिरयान का मरीज़ हो वह जब तक पाक न हो जाए, पाक चीजों में से कुछ न खाए; और जो कोई ऐसी चीज़ को जो मुर्दे की वजह से नापाक हो गई है, या उस शख्स की जिस की धात बहती हो छुए 5 या जो कोई किसी रेंगने वाले जानदार को जिसके छूने से वह नापाक हो सकता है, छुए या किसी ऐसे शख्स को छुए जिससे उसकी नापाकी चाहे वह किसी क्रिस्म की हो उसको भी लग सकती हो; 6 तो वह आदमी जो इनमें से किसी को छुए शाम तक नापाक रहेगा, और जब तक पानी से गुस्ल न कर ले पाक चीजों में से कुछ न खाए; 7 और वह उस वक़्त पाक ठहरेगा जब आफ़ताब गुरुब हो जाए, इसके बाद वह पाक चीजों में से खाए, क्योंकि यह उसकी खुराक है। 8 और मुरदार या दरिन्दों के फाड़े हुए जानवर को खाने से वह अपने आप को नजिस न कर ले; मैं खुदावन्द हूँ 9 इसलिए वह मेरी शरा' को माने, ऐसा न हो कि उस की वजह से उनके सिर गुनाह लगे और उसकी बेहरमती करने की वजह से वह मर भी जाएँ, मैं खुदावन्द उनका पाक करने वाला हूँ। 10 'कोई अजनबी पाक चीज़ की न खाने पाए चाहे वह काहिन ही के यहाँ ठहरा हो, या उसका नौकर हो तो भी वह कोई पाक चीज़ न खाए; 11 लेकिन वह जिसे काहिन ने अपने ज़र से खरीदा हो उसे खा सकता है, और वह जो उसके घर में पैदा हुए हों वह भी उसके खाने में से खाएँ। 12 अगर काहिन की बेटी किसी अजनबी से ब्याही गई हो, तो वह पाक चीज़ों की कुर्बानी में से कुछ न खाए। 13 लेकिन अगर काहिन की बेटी बेवा हो जाए, या मुतल्लका हो और बे — औलाद हो, और लड़कपन के दिनों की तरह अपने बाप के घर में फिर आ कर रहे तो वह अपने बाप के खाने में से खाए;

लेकिन कोई अजनबी उसे न खाए। 14 और अगर कोई अनजाने में पाक चीज़ को खा जाए तो वह उसके पाँचवें हिस्से के बराबर अपने पास से उस में मिला कर वह पाक चीज़ काहिन को दे 15 और वह बनी — इस्राईल की पाक चीज़ों को जिनको वह खुदावन्द की नज़र करते हों बेहरमत करके, 16 \*उनके सिर उस गुनाह का जुर्म न लादें जो उनकी पाक चीज़ों को खाने से होगा; क्योंकि मैं खुदावन्द उनका पाक करने वाला हूँ।”

22:22-27

17 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 18 “हारून और उसके बेटों और सब बनी — इस्राईल से कह कि इस्राईल के घराने का या उन परदेसियों में से जो इस्राईलियों के बीच रहते हैं, जो कोई शख्स अपनी कुर्बानी लाए, चाहे वह कोई मिन्नत की कुर्बानी हो या रज़ा की कुर्बानी, जिसे वह सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करते हैं; 19 तो अपने मक़बूल होने के लिए तुम बैलों या बरों या बकरों में से बे — 'ऐब नर चढ़ाना। 20 और जिसमें 'ऐब हो उसे न अदा करना क्योंकि वह तुम्हारी तरफ़ से मक़बूल न होगा। 21 और जो कोई अपनी मिन्नत पूरी करने के लिए या रज़ा की कुर्बानी के तौर पर गाय, बैल या भेड़ बकरी में से सलामती का ज़बीहा खुदावन्द के सामने पेश करे, तो वह जानवर मक़बूल ठहरने के लिए बे — 'ऐब हो; उसमें कोई नुक्स न हो। 22 जो अन्धा या शिकस्ता — ए — 'उज्व या लूला हो, जिसके रसौली या खुजली या पपड़ियाँ हों, ऐसों को खुदावन्द के सामने न चढ़ाना और न मज़बह पर उनकी आतिशी कुर्बानी खुदावन्द के सामने पेश करना। 23 जिस बछड़े या बरें का कोई 'उज्व ज्यादा या कम हो उसे तो रज़ा की कुर्बानी के तौर पर पेश कर सकता है, लेकिन मिन्नत पूरी करने के लिए वह मक़बूल न होगा। 24 जिस जानवर के खुसिए कुचले हुए या चूर किए हुए या टूटे या कटे हुए हों, उसे तुम खुदावन्द के सामने न चढ़ाना और न अपने मुल्क में ऐसा काम करना; 25 और न इनमें से किसी को लेकर तुम अपने खुदा की गिज़ा परदेसी या अजनबी के हाथ से अदा करवाना, क्योंकि उनका बिगाड़ उनमें मौजूद होता है, उनमें 'ऐब है इसलिए वह तुम्हारी तरफ़ से मक़बूल न होंगे।” † 26 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 27 “जिस

\* 22:16 22:16 मुक़द्दस कुरबानी को खाने देने के ज़रिये ताकि उन पर जुर्म साबित कर सके जिस के लिए खम्याज़ा की ज़रूरत है — मैं खुदावन्द हूँ जो लोगों को पाक करता हूँ — मैं खुदावन्द हूँ जो उन कुर्बानियों को पाक करता हूँ † 22:25 22:25 पहले से जो लोग मुल्क — ए — कनान में रहते थे उनकी खुदा के लोगों को नक़ल करने से बाज़ रहना और उनसे मुता'सिर होने से परहेज़ करना था उन में एक खास ऐब यह था किबोह काट छांट करने वाले थे — उनकी इस काट छांट सबब से कनानियों को जानवरों की क़ससी करने वाले बतोरहवाला दिया जाता था — इसलिए यह तर्जुमा करना ज़रूरी है की यह लोग जानवरों की कुरबानी के लिए ना क़ाबिल थे — उन्हें कुरबानी के लिए कबूल नहीं किया जायेगा

वक्त्र बछड़ा या भेड़ या बकरी का बच्चा पैदा हो, तो सात दिन तक वह अपनी माँ के साथ रहे और आठवें दिन से और उसके बाद से वह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानी के लिए मक़बूल होगा। <sup>28</sup> और चाहे गाय हो या भेड़, बकरी, तुम उसे और उसके बच्चे दोनों को एक ही दिन ज़बह न करना। <sup>29</sup> और जब तुम खुदावन्द के शुक्राने का ज़बीहा कुर्बानी करो, तो उसे इस तरह कुर्बानी करना कि तुम मक़बूल ठहरो; <sup>30</sup> और वह उसी दिन खा भी लिया जाए, तुम उसमें से कुछ भी दूसरे दिन की सुबह तक बाक़ी न छोड़ना; मैं खुदावन्द हूँ। <sup>31</sup> “इसलिए तुम मेरे हुक्मों को मानना और उन पर अमल करना; मैं खुदावन्द हूँ। <sup>32</sup> तुम मेरे पाक नाम को नापाक न ठहराना, क्योंकि मैं बनी — इस्राईल के बीच ज़रूर ही पाक माना जाऊँगा; मैं खुदावन्द तुम्हारा पाक करने वाला हूँ, <sup>33</sup> जो तुम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा खुदा बना रहूँ, मैं खुदावन्द हूँ।”

## 23

22222222 2222

<sup>1</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि <sup>2</sup> “बनी — इस्राईल से कह कि खुदावन्द की 'ईदें जिनका तुम को पाक मजम'ओं के लिए 'ऐलान देना होगा, मेरी वह 'ईदें यह हैं। <sup>3</sup> छः दिन काम — काज किया जाए लेकिन सातवाँ दिन खास आराम का और पाक मजमे' का सबत है, उस रोज़ किसी तरह का काम न करना; वह तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में खुदावन्द का सबत है। <sup>4</sup> “खुदावन्द की 'ईदें जिनका 'ऐलान तुम को पाक मजम'ओं के लिए वक्त्र — ए — मु'अय्यन पर करना होगा इसलिए यह हैं।

2222 22 22-2222 2222 22 22

<sup>5</sup> \*पहले महीने की चौदहवीं तारीख की शाम के वक्त्र खुदावन्द की फ़सह हुआ करे। <sup>6</sup> और उसी महीने की पंद्रहवीं तारीख को खुदावन्द के लिए 'ईद — ए — फ़तीर हो, उसमें तुम सात दिन तक बे — खमीरी रोटी खाना। <sup>7</sup> पहले दिन तुम्हारा पाक मजमा' हो उसमें तुम कोई खादिमाना काम न करना। <sup>8</sup> और सातों दिन तुम खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी पेश करना और और सातवें दिन फिर पाक मजमा' हो उस रोज़ तुम कोई खादिमाना काम न करना।”

2222 2222 22 2222

\* <sup>23:5</sup> 23:5 इब्रियों का पहला महीना मोसम — ए — बहार की शुरुआत है, यह मार्च के आधे महीने से शुरू होकर एप्रैल के आधे महीने तक रहता है — इब्रानी महीने चाँद से अख़्तकिए जाते हैं — इसलिए उनके कैलंडर के महीने हमारी मौजूदा कैलंडर से बदलते रहते हैं — † <sup>23:13</sup> 23:13 एक लीटर के लगभग, देखें ख़ुरज 29:40

<sup>9</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>10</sup> “बनी — इस्राईल से कह कि जब तुम उस मुल्क में जो मैं तुम को देता हूँ दाखिल हो जाओ और उसकी फ़सल काटो, तो तुम अपनी फ़सल के पहले फलों का एक पूला काहिन के पास लाना; <sup>11</sup> और वह उसे खुदावन्द के सामने हिलाए, ताकि वह तुम्हारी तरफ़ से कुबूल हो और काहिन उसे सबत के दूसरे दिन सुबह को हिलाए। <sup>12</sup> और जिस दिन तुम पूले को हिलाओ उसी दिन एक नर बे — 'ऐब यक — साला बरी सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करना। <sup>13</sup> और उसके साथ नज़र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा ऐफ़ा के दो दहाई हिस्से के बराबर हो, ताकि वह आतिशी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ ख़ुशबू के लिए जलाई जाए; और उसके साथ मय का तपावन †हीन के चौथे हिस्से के बराबर मय लेकर करना। <sup>14</sup> और जब तक तुम अपने खुदा के लिए यह हदिया न ले आओ, उस दिन तक नई फ़सल की रोटी या भुना हुआ अनाज, या हरी बालें हरगिज़ न खाना। तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में नसल — दर — नसल हमेशा यही क़ानून रहेगा।

2222 22 22

<sup>15</sup> “और तुम सबत के दूसरे दिन से जिस दिन हिलाने की कुर्बानी के लिए पूला लाओगे गिनना शुरू करना, जब तक सात सबत पूरे न हो जाएँ। <sup>16</sup> और सातवें सबत के दूसरे दिन तक पचास दिन गिन लेना, तब तुम खुदावन्द के लिए नज़र की नई कुर्बानी पेश करना। <sup>17</sup> तुम अपने घरों में से ऐफ़ा के दो दहाई हिस्से के वज़न के मैदे के दो गिर्दे हिलाने की कुर्बानी के लिए ले आना; वह खमीर के साथ पकाए जाएँ ताकि खुदावन्द के लिए पहले फल ठहरें। <sup>18</sup> और उन गिर्दों के साथ ही तुम सात यक — साला बे — 'ऐब बर्रे और एक बछड़ा और दो मेंढे लाना, ताकि वह अपनी अपनी नज़र की कुर्बानी और तपावन के साथ खुदावन्द के सामने सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर पेश करे जाएँ, और खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ ख़शबू की आतिशी कुर्बानी ठहरें। <sup>19</sup> और तुम ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा और सलामती के ज़बीहे के लिए दो यकसाला नर बर्रे चढ़ाना। <sup>20</sup> और काहिन इनको पहले फल के दोनों गिर्दों के साथ लेकर उन दोनों बरों के साथ हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाए, वह खुदावन्द के लिए पाक और काहिन का हिस्सा ठहरें। <sup>21</sup> और तुम ऐन उसी दिन

'ऐलान कर देना, उस रोज़ तुम्हारा पाक मजमा' हो, तुम उस दिन कोई खादिमाना काम न करना; तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में नसल — दर — नसल सदा यही तौर तरीका रहेगा। <sup>22</sup> “और जब तुम अपनी ज़मीन की पैदावार की फ़सल काटो, तो तू अपने खेत को कोने — कोने तक पूरा न काटना और न अपनी फ़सल की गिरी — पड़ी बालों को जमा' करना, बल्कि उनको गरीबों और मुसाफ़िरों के लिए छोड़ देना; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।”

222222 22 22

<sup>23</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>24</sup> “बनी — इस्राईल से कह कि सातवें महीने की पहली तारीख़ तुम्हारे लिए खास आराम का दिन हो, उसमें यादगारी के लिए नरसिंगे फूँके जाएँ और पाक मजमा' हो। <sup>25</sup> तुम उस रोज़ कोई खादिमाना काम न करना और खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी पेश करना।”

222222 22 2222

<sup>26</sup> खुदावन्द ने मूसा से कहा <sup>27</sup> ‡“उसी सातवें महीने की दसवीं तारीख़ की कफ़फ़ारे का दिन है; उस रोज़ तुम्हारा पाक मजमा' हो, और तुम अपनी जानों को दुख देना और खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी पेश करना। <sup>28</sup> तुम उस दिन किसी तरह का काम न करना, क्योंकि वह कफ़फ़ारे का दिन है जिसमें खुदावन्द तुम्हारे खुदा के सामने तुम्हारे लिए कफ़फ़ारा दिया जाएगा। <sup>29</sup> जो शख्स उस दिन अपनी जान को दुख ने दे वह अपने लोगों में से काट डाला जाएगा। <sup>30</sup> और जो शख्स उस दिन किसी तरह का काम करे, उसे मैं उसके लोगों में से फ़ना कर दूँगा। <sup>31</sup> तुम किसी तरह का काम मत करना, तुम्हारी सब सुकूनत गाहों में नसल — दर — नसल हमेशा यही तौर तरीके रहेंगे। <sup>32</sup> यह तुम्हारे लिए खास आराम का सबत हो, इसमें तुम अपनी जानों को दुख देना; तुम उस महीने की नौवीं तारीख़ की शाम से दूसरी शाम तक अपना सबत मानना।”

22 — 2 — 2222222

<sup>33</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>34</sup> 'बनी — इस्राईल से कह कि उसी सातवें महीने की पंद्रहवीं तारीख़ से लेकर सात दिन तक खुदावन्द के लिए 'ईद — ए — ख़ियाम होगी। <sup>35</sup> पहले दिन पाक मजमा हो; तुम उस दिन कोई खादिमाना काम न करना। <sup>36</sup> तुम सातों दिन बराबर खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी

पेश करना। आठवें दिन तुम्हारा पाक मजमा' हो और फिर खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी पेश करना; वह खास मजमा' है, उसमें कोई खादिमाना काम न करना। <sup>37</sup> “यह खुदावन्द की मुक़र्ररा 'ईदें हैं जिनमें तुम पाक मजम'ओं का 'ऐलान करना; ताकि खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी, और सोख्तनी कुर्बानी, और नज़र की कुर्बानी और जबीहा और तपावन हर एक अपने अपने मुअ'य्यन दिन में पेश किया जाए। <sup>38</sup> इनके अलावा खुदावन्द के सबतों को मानना, और अपने हृदियों और मिन्नतों और रज़ा की कुर्बानियों को जो तुम खुदावन्द के सामने लाते हो पेश करना। <sup>39</sup> “और सातवें महीने की पंद्रहवीं तारीख़ से, जब तुम ज़मीन की पैदावार जमा' कर चुको तो सात दिन तक खुदावन्द की 'ईद मानना। पहला दिन खास आराम का हो, और अट्ठारहवें दिन भी खास आराम ही का हो। <sup>40</sup> इसलिए तुम पहले दिन खुशनुमा दरख्तों के फल और खजूर की डालियाँ, और घने दरख्तों की शाखे और नदियों की बेद — ए — मजनों लेना; और तुम खुदावन्द अपने खुदा के आगे सात दिन तक खुशी मनाना। <sup>41</sup> और तुम हर साल खुदावन्द के लिए सात रोज़ तक यह 'ईद माना करना। तुम्हारी नसल दर नसल हमेशा यही क़ानून रहेगा कि तुम सातवें महीने इस 'ईद को मानो। <sup>42</sup> सात रोज़ तक बराबर तुम सायबानों में रहना, जितने इस्राईल की नसल के हैं सब के सब सायबानों में रहें; <sup>43</sup> ताकि तुम्हारी नसल को मा'लूम हो कि जब मैं बनी — इस्राईल को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर ला रहा था तो मैंने उनको सायबानों में टिकाया था; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।” <sup>44</sup> इसलिए मूसा ने बनी — इस्राईल को खुदावन्द की मुक़र्ररा 'ईदें बता दीं।

## 24

222222 222 22 2222 22222

<sup>1</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “बनी — इस्राईल को हुक्म कर कि वह तेरे पास ज़ैतून का कूट कर निकाला हुआ ख़ालिस तेल रोशनी के लिए लाएँ, ताकि चरागा हमेशा जलता रहे। <sup>3</sup> \*हारून उसे शहादत के पर्दे के बाहर खेमा — ए — इज्जिमा'अ में शाम से सुबह तक खुदावन्द के सामने करीने से रखवा करे; तुम्हारी नसल — दर — नसल सदा यही क़ानून रहेगा। <sup>4</sup> वह हमेशा उन चरागों की तरतीब से पाक शमा'दान पर खुदावन्द

‡ 23:27 23:27 सातवें महीने का दसवां दिन कफ़फ़ारे का दिन है, उस दिन मजमा' बुलाना, अपने आप का इनकार करना और खुदावन्द के लिए खाने की कुर्बानी पेश करना \* 24:3 24:3 शहादत के पर्दे के बाहर खेमा — ए — इज्जिमा'अ में जो अहद के सद्क़ को डाल बनाए हुए है वहाँ पर हारून को शाम से लेकर सुबह तक लगातार शमादानों को करीने से रखना होगा — तुम्हारी नसल दर नसल सदा यही आईन रहेगा —



के सामने रखवा करे। <sup>5</sup> “और तू मैदा लेकर बारह गिर्दे पकाना, हर एक गिर्दे में ऐफ़ा के दो दहाई हिस्से के बराबर मैदा हो; <sup>6</sup> और तू उनको दो क़तारें कर कि हर क़तार में छः छः रोटियाँ, पाक मेज़ पर खुदावन्द के सामने रखना। <sup>7</sup> और तू हर एक क़तार पर खालिस लुबान रखना, ताकि वह रोटि पर यादगारी या 'नी खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी के तौर पर हो। <sup>8</sup> वह हमेशा हर सबत के रोज़ उनको खुदावन्द के सामने तरतीब दिया करे, क्योंकि यह बनी — इस्राईल की जानिब से एक हमेशा 'अहद है। <sup>9</sup> और यह रोटियाँ हारून और उसके बेटों की होंगी वह इन को किसी पाक जगह में खाएँ, क्योंकि वह एक जाविदानी क़ानून के मुताबिक़ खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में से हारून के लिए बहुत पाक हैं।”

22222 2222 22 22222

<sup>10</sup> और एक इस्राईली 'औरत का बेटा जिसका बाप मिस्री था, इस्राईलियों के बीच चला गया और वह इस्राईली 'औरत का बेटा और एक इस्राईली लश्करगाह में आपस में मार पीट करने लगे; <sup>11</sup> और इस्राईली 'औरत के बेटे ने पाक नाम पर कुफ़र बका और ला'नत की। तब लोग उसे मूसा के पास ले गए। उसकी माँ का नाम सलोमीत था, जो दिब्री की बेटि थी जो दान के कबीले का था। <sup>12</sup> और उन्होंने उसे हवालात में डाल दिया ताकि खुदावन्द की जानिब से इस बात का फ़ैसला उन पर ज़ाहिर किया जाए। <sup>13</sup> तब खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; <sup>14</sup> 'उस ला'नत करने वाले को लश्करगाह के बाहर निकाल कर ले जा: और जितनों ने उसे ला'नत करते सुना, वह सब अपने — अपने हाथ उसके सिर पर रखें और सारी जमा'अत उसे संगसार करे। <sup>15</sup> और तू बनी — इस्राईल से कह दे कि जो कोई अपने खुदा पर ला'नत करे उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा। <sup>16</sup> और वह जो खुदावन्द के नाम पर कुफ़र बके, ज़रूर जान से मारा जाए; सारी जमा'अत उसे कत'ई संगसार करे, चाहे वह देसी हो या परदेसी; जब वह पाक नाम पर कुफ़र बके तो वह ज़रूर जान से मारा जाए। <sup>17</sup> 'और जो कोई किसी आदमी को मार डाले वह ज़रूर जान से मारा जाए। <sup>18</sup> और जो कोई किसी चौपाए को मार डाले, वह उसका मु'आवज़ा जान के बदले जान दे। <sup>19</sup> “और अगर कोई शख्स अपने पड़ोसी को 'ऐबदार बना दे, जो जैसा उसने किया वैसा ही उससे किया जाए; <sup>20</sup> या 'नी 'उज्व तोड़ने के बदले 'उज्व तोड़ना हो, और आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत। जैसा ऐब उसने

दूसरे आदमी में पैदा कर दिया है वैसा ही उसमें भी कर दिया जाए <sup>21</sup> अलगज़, जो कोई किसी चौपाए को मार डाले वह उसका मु'आवज़ा दे; लेकिन इंसान का क़ातिल जान से मारा जाए। <sup>22</sup> तुम एक ही तरह का क़ानून देसी और परदेसी दोनों के लिए रखना, क्योंकि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।” <sup>23</sup> और मूसा ने यह बनी — इस्राईल को बताया। तब वह उस ला'नत करने वाले को निकाल कर लश्करगाह के बाहर ले गए और उसे संगसार कर दिया। इसलिए बनी — इस्राईल ने जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था वैसा ही किया।

## 25

2222 22 2222

<sup>1</sup> और खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर मूसा से कहा कि; <sup>2</sup> “बनी — इस्राईल से कहा कि, जब तुम उस मुल्क में जो मैं तुम को देता हूँ दाखिल हो जाओ, तो उसकी ज़मीन भी खुदावन्द के लिए सबत को माने। <sup>3</sup> तू अपने खेत को छः बरस बोना, और अपने अंगूरिस्तान को छः बरस छाँटना और उसका फल जमा' करना। <sup>4</sup> लेकिन सातवें साल ज़मीन के लिए खास आराम का सबत हो। यह सबत खुदावन्द के लिए हो। इसमें तू न अपने खेत को बोना और न अपने अंगूरिस्तान को छाँटना। <sup>5</sup> और न अपनी खुदरो फ़सल को काटना और न अपनी बे — छटी ताकों के अंगूरों को तोड़ना; यह ज़मीन के लिए खास आराम का साल हो। <sup>6</sup> और ज़मीन का यह सबत तेरे, और तेरे गुलामों और तेरी लौंडी और मज़दूरों और उन परदेसियों के लिए जो तेरे साथ रहते हैं, तुम्हारी खुराक का ज़रिया' होगा; <sup>7</sup> और उसकी सारी पैदावार तेरे चौपायों और तेरे मुल्क के और जानवरों के लिए खुराक ठहरेगी।

22222222 22 2222

<sup>8</sup> “और तू बरसों के सात सबतों को, या 'नी सात गुना सात साल गिन लेना, और तेरे हिसाब से बरसों के सात सबतों की मुद्दत कुल उन्चास साल होंगे। <sup>9</sup> तब तू सातवें महीने की दसवीं तारीख की बड़ा नरसिंगा ज़ोर से फूँकवाना, तुम कफ़ारे के रोज़ अपने सारे मुल्क में यह नरसिंगा फूँकवाना। <sup>10</sup> और तुम \*पचासवें बरस को पाक जानना और तमाम मुल्क में सब बाशिन्दों के लिए आज्ञादी का 'ऐलान कराना, यह तुम्हारे लिए यूबली हो। इसमें तुम में से हर एक अपनी मिल्कियत का मालिक हो, और हर शख्स अपने खान्दान में फिर शामिल हो

\* 25:10 25:10 पचासवां बरस: इब्रानी ज़बान में असली मायने 'मैंदे के सींग से है, देखें यशौ 6:5 जिस में मैंदे के सींग का इस्तेमाल बजानेका औज़ार बतोर किया गया है, खुरुज 19:13 में जहाँ नरसिंगा फूँकनेका जिक्र है वह इसी से फूँका जाता था — इस को बहाली के साल के ज़शन में भी इस्तेमाल किया जाता था —

जाए। 11 वह पचासवाँ बरस तुम्हारे लिए यूबली हो, तुम उसमें कुछ न बोना और न उसे जो अपने आप पैदा हो जाए काटना और न बे — छटी ताकों का अंगूर जमा' करना। 12 क्योंकि वह साल — ए — यूबली होगा; इसलिए वह तुम्हारे लिए पाक ठहरे, तुम उसकी पैदावार की खेत से लेकर खाना। 13 “उस साल — ए — यूबली में तुम में से हर एक अपनी मिल्कियत का फिर मालिक हो जाए। 14 और अगर तू अपने पड़ोसी के हाथ कुछ बेचे या अपने पड़ोसी से कुछ खरीदे, तो तुम एक दूसरे पर अन्धेर न करना। 15 यूबली के बाद जितने बरस गुज़रें हो उनके शुमार के मुताबिक तू अपने पड़ोसी से उसे खरीदना, और वह उसे फ़सल के बरसों के शुमार के मुताबिक तेरे हाथ बेचे। 16 जितने ज्यादा बरस हों उतना ही दाम ज्यादा करना और जितने कम बरस हों उतनी ही उस की कीमत घटाना; क्योंकि बरसों के शुमार के मुताबिक वह उनकी फ़सल तेरे हाथ बेचता है। 17 और तुम एक दूसरे पर अन्धेर न करना, बल्कि अपने खुदा से डरते रहना; क्योंकि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 18 इसलिए तुम मेरी शरी'अत पर 'अमल करना और मेरे हुक्मों को मानना और उन पर चलना, तो तुम उस मुल्क में अम्न के साथ बसे रहोगे। 19 और ज़मीन फलेगी और तुम पेट भर कर खाओगे, और वहाँ अम्न के साथ रहा करोगे। 20 और अगर तुम को खयाल हो कि हम सातवें बरस क्या खाएँगे? क्योंकि देखो, हम को न तो बोना है और न अपनी पैदावार की जमा' करना है। 21 तो मैं छूटे ही बरस ऐसी बरकत तुम पर नाज़िल करूँगा कि तीनों साल के लिए काफ़ी ग़ल्ला पैदा हो जाएगा। 22 और आठवें बरस फिर जीतना बोना और पिछला ग़ल्ला खाते रहना, बल्कि जब तक नौवें साल के बोए हुए की फ़सल न काट लो उस वक़्त तक वही पिछला ग़ल्ला खाते रहोगे।

2222 22 2222222

23 “और ज़मीन हमेशा के लिए बेची न जाए क्योंकि ज़मीन मेरी है, और तुम मेरे मुसाफ़िर और मेहमान हो। 24 बल्कि तुम अपनी मिल्कियत के मुल्क में हर जगह ज़मीन को छुड़ा लेने देना। 25 “और अगर तुम्हारा भाई ग़रीब हो जाए और अपनी मिल्कियत का कुछ हिस्सा बेच डाले, तो जो उस का सबसे करीबी रिश्तेदार है वह आकर उस को जिसे उसके भाई ने बेच डाला है छुड़ा ले। 26 और अगर उस आदमी का कोई न हो जो उसे छुड़ाए, और वह खुद मालदार हो जाए और उसके छुड़ाने के लिए उसके पास काफ़ी हो। 27 तो वह फ़रोस्त के बाद के बरसों को गिन कर बाक़ी दाम उसकी जिसके हाथ ज़मीन बेची है फेर दे; तब वह फिर अपनी मिल्कियत का

मालिक हो जाए। 28 लेकिन अगर उसमें इतना मक़दूर न हो कि अपनी ज़मीन वापस करा ले, तो जो कुछ सन बेच डाला है वह साल — ए — यूबली तक खरीदार के हाथ में रहे; और साल — ए — यूबली में छुट जाए, तब यह आदमी अपनी मिल्कियत का फिर मालिक हो जाए। 29 और अगर कोई शख्स रहने के ऐसे मकान को बेचे जो किसी फ़सीलदार शहर में हो, तो वह उसके बिक जाने के बाद साल भर के अन्दर — अन्दर उसे छुड़ा सकेगा; या'नी पूरे एक साल तक वह उसे छुड़ाने का हक़दार रहेगा। 30 और अगर वह पूरे एक साल की मी'आद के अन्दर छुड़ाया न जाए, तो उस फ़सीलदार शहर के मकान पर खरीदार का नसल — दर — नसल हमेशा का कब्ज़ा हो जाए और वह साल — ए — यूबली में भी न छूटे। 31 लेकिन जिन देहात के गिर्द कोई फ़सील नहीं उनके मकानों का हिसाब मुल्क के खेतों की तरह होगा, वह छुड़ाए भी जा सकेंगे और साल — ए — यूबली में वह छूट भी जाएँगे। 32 तो भी लावियों के जो शहर हैं, लावी अपनी मिल्कियत के शहरों के मकानों को चाहे किसी वक़्त छुड़ा लें। 33 और अगर कोई दूसरा लावी उनको छुड़ा ले, तो वह मकान जो बेचा गया और उसकी मिल्कियत का शहर दोनों साल ए — यूबली में छूट जाएँ; क्योंकि जो मकान लावियों के शहरों में हैं वही बनी — इस्राईल के बीच लावियों की मिल्कियत हैं। 34 लेकिन उनके शहरों की 'इलाक़े के खेत नहीं बिक सकते, क्योंकि वह उनकी हमेशा की मिल्कियत हैं।

2222 22 2222222 22 2222222

35 और अगर तेरा कोई भाई ग़रीब हो जाए और वह तेरे सामने तंगदस्त हो, तो तू उसे संभालना। वह परदेसी और मुसाफ़िर की तरह तेरे साथ रहे। 36 तू उससे सूद या नफ़ा' मत लेना बल्कि अपने खुदा का खौफ़ रखना, ताकि तेरा भाई तेरे साथ ज़िन्दगी बसर कर सके। 37 तू अपना रुपया उसे सूद पर मत देना और अपना खाना भी उसे नफ़े' के खयाल से न देना। 38 मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, जो तुम को इसी लिए मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया कि मुल्क — ए — कना'न तुम को दूँ और तुम्हारा खुदा ठहरूँ। 39 और अगर तेरा कोई भाई तेरे सामने ऐसा ग़रीब हो जाए कि अपने को तेरे हाथ बेच डाले, तो तू उससे गुलाम की तरह ख़िदमत न लेना। 40 बल्कि वह मजदूर और मुसाफ़िर की तरह तेरे साथ रहे और साल — ए — यूबली तक तेरी ख़िदमत करे। 41 उसके बाद वह बाल — बच्चों के साथ तेरे पास से चला जाए, और अपने घराने के पास और अपने बाप दादा की मिल्कियत की जगह को लौट जाए।

42 इसलिए कि वह मेरे खादिम हैं जिनको मैं मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया हूँ, वह गुलामों की तरह बेचे न जाएँ। 43 तू उन पर सख्ती से हुक्मरानी न करना, बल्कि अपने खुदा से डरते रहना। 44 और तेरे जो गुलाम और तेरी जो लौंडियाँ हों, वह उन क्रौमों में से हों जो तुम्हारे चारों तरफ़ रहती हैं; उन ही में से तुम गुलाम और लौंडियाँ खरीदा करना। 45 इनके सिवा उन परदेसियों के लड़के बालों में से भी जो तुम में क़ायम करते हैं और उनके घरानों में से जो तुम्हारे मुल्क में पैदा हुए और तुम्हारे साथ हैं तुम खरीदा करना और वह तुम्हारी ही मिल्कियत होंगे। 46 और तुम उनको मीरास के तौर पर अपनी औलाद के नाम कर देना कि वह उनकी मौरूसी मिल्कियत हों। इनमें से तुम हमेशा अपने लिए गुलाम लिया करना; लेकिन बनी — इस्राईल जो तुम्हारे भाई हैं, उनमें से किसी पर तुम सख्ती से हुक्मरानी न करना। 47 “और अगर कोई परदेसी या मुसाफ़िर जो तेरे साथ हो, दौलतमन्द हो जाए और तेरा भाई उसके सामने गरीब हो कर अपने आप को उस परदेसी या मुसाफ़िर या परदेसी के खान्दान के किसी आदमी के हाथ बेच डाले, 48 तो बिक जाने के बाद वह छुड़ाया जा सकता है, उसके भाइयों में से कोई उसे छुड़ा सकता है, 49 या उसका चचा या ताऊ, या उसके चचा या ताऊ का बेटा, या उसके खान्दान का कोई और आदमी जो उसका करीबी रिश्तेदार हो वह उस को छुड़ा सकता है; या अगर वह मालदार हो जाए, तो वह अपना फ़िदिया दे कर छूट सकता है। 50 वह अपने खरीदार के साथ अपने को फ़रोख्त कर देने के साल से लेकर साल — ए — यूबली तक हिसाब करे और उसके बिकने की कीमत बरसों की ता'दाद के मुताबिक़ हो; या'नी उसका हिसाब मज़दूर के दिनों की तरह उसके साथ होगा। 51 अगर यूबली के अभी बहुत से बरस बाक़ी हों, तो जितने रुपयों में वह खरीदा गया था उनमें से अपने छूटने की कीमत उतने ही बरसों के हिसाब के मुताबिक़ फेर दे। 52 और अगर साल — ए — यूबली के थोड़े से बरस रह गए हों, तो वह उसके साथ हिसाब करे और अपने छूटने की कीमत उतने ही बरसों के मुताबिक़ उसे फेर दे; 53 और वह उस मज़दूर की तरह अपने आका के साथ रहे जिसकी मज़दूरी साल — ब — साल ठहराई जाती हो, और उसका आका उस पर तुम्हारे सामने सख्ती से हुक्मत न करने पाए। 54 और अगर वह इन तरीक़ों से छुड़ाया न जाए तो साल — ए — यूबली में बाल बच्चों के साथ छूट जाए। 55 क्यूँकि बनी — इस्राईल मेरे लिए खादिम हैं, वह मेरे खादिम हैं जिनको मैं मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया

हूँ; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।

## 26

26:1-26:16

1 तुम अपने लिए बुत न बनाना और न कोई तराशी हुई मूरत या लाट अपने लिए खड़ी करना, और न अपने मुल्क में कोई शबीहदार पत्थर रखना कि उसे सिज्दा करो; इसलिए कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 2 तुम मेरे सबतों को मानना और मेरे हैकल की ता'ज़ीम करना; मैं खुदावन्द हूँ। 3 “अगर तुम मेरी शरी'अत पर चलो और मेरे हुक्मों को मानो और उन पर 'अमल करो, 4 तो मैं तुम्हारे लिए सही वक़्त में बरसाऊँगा और ज़मीन से अनाज पैदा होगा और मैदान के दरख़्त फलेंगे; 5 यहाँ तक कि अंगूर जमा' करने के वक़्त तक तुम दावते रहोगे, और जोतने बोन के वक़्त तक अंगूर जमा' करोगे, और पेट भर अपनी रोटी खाया करोगे, और चैन से अपने मुल्क में बसे रहोगे। 6 और मैं मुल्क में अमन बख़्शूँगा, और तुम सोओगे और तुम को कोई नहीं डराएगा; और मैं बुरे दरिन्दों को मुल्क से हलाक कर दूँगा, और तलवार तुम्हारे मुल्क में नहीं चलेगी। 7 और तुम अपने दुश्मनों का पीछा करोगे, और वह तुम्हारे आगे — आगे तलवार से मारे जाएँगे। 8 और तुम्हारे पाँच आदमी सौ को दौड़ाएँगे, और तुम्हारे सौ आदमी दस हज़ार को खदेड़ देंगे, और तुम्हारे दुश्मन तलवार से तुम्हारे आगे — आगे मारे जाएँगे; 9 और मैं तुम पर नज़र — ए — 'इनायत रखूँगा, और तुम को कामयाब करूँगा और बढ़ाऊँगा, और जो मेरा 'अहद तुम्हारे साथ है उसे पूरा करूँगा। 10 और तुम 'अरसे का ज़खीरा किया हुआ पुराना अनाज खाओगे, और नये की वजह से पुराने को निकाल बाहर करोगे। 11 और मैं अपना घर तुम्हारे बीच क़ायम रखूँगा और मेरी रूह तुमसे नफ़रत न करेगी। 12 और मैं तुम्हारे बीच चला फिरा करूँगा, और तुम्हारा खुदा हूँगा, और तुम मेरी क्रौम होगे। 13 मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, जो तुम को मुल्क — ए — मिस्र से इसलिए निकाल कर ले आया कि तुम उनके गुलाम न बने रहो; और मैंने तुम्हारे जूए की चोबें तोड़ डाली हैं और तुम को सीधा खड़ा करके चलाया।

26:17-26:26

14 लेकिन अगर तुम मेरी न सुनो और इन सब हुक्मों पर 'अमल न करो, 15 और मेरी शरी'अत को छोड़ दो, और तुम्हारी रूहों को मेरे फ़ैसलों से नफ़रत हो, और तुम मेरे सब हुक्मों पर 'अमल न करो बल्कि मेरे 'अहद को तोड़ो; 16 तो मैं भी तुम्हारे साथ इस तरह पेश आऊँगा

कि दहशत और तप — ए — दिक्क और बुखार को तुम पर मुकर्रर कर दूँगा, जो तुम्हारी आँखों को चौपट कर देंगे और तुम्हारी जान को घुला डालेंगे, और तुम्हारा बीज बोना फ़िज़ूल होगा क्योंकि तुम्हारे दुश्मन उसकी फ़सल खाएँगे; <sup>17</sup> और मैं खुद भी तुम्हारा मुखालिफ़ हो जाऊँगा, और तुम अपने दुश्मनों के आगे शिकस्त खाओगे; और जिनको तुमसे 'अदावत है वही तुम पर हुक्मरानी करेंगे, और जब कोई तुमको दौड़ाता भी न होगा तब भी तुम भागोगे। <sup>18</sup> और अगर इतनी बातों पर भी तुम मेरी न सुनो तो मैं तुम्हारे गुनाहों के ज़रिए' तुम को सात गुनी सज़ा और दूँगा। <sup>19</sup> और मैं तुम्हारी शहज़ोरी के फ़ख़र को तोड़ डालूँगा, और तुम्हारे लिए आसमान को लोहे की तरह और ज़मीन को पीतल की तरह कर दूँगा। <sup>20</sup> और तुम्हारी कुव्वत बेफ़ायदा सफ़ होगी क्योंकि तुम्हारी ज़मीन से कुछ पैदा न होगा और मैदान के दरख़्त फलने ही के नहीं। <sup>21</sup> और अगर तुम्हारा चलन मेरे खिलाफ़ ही रहे और तुम मेरा कहा न मानो, तो मैं तुम्हारे गुनाहों के मुवाफ़िक़ तुम्हारे ऊपर और सातगुनी बलाएँ लाऊँगा। <sup>22</sup> जंगली दरिन्दे तुम्हारे बीच छोड़ दूँगा जो तुम को बेऔलाद कर देंगे और तुम्हारे चौपायों को हलाक करेंगे और तुम्हारा शुमार घटा देंगे, और तुम्हारी सड़कें सूनी पड़ जाएँगी। <sup>23</sup> और अगर इन बातों पर भी तुम मेरे लिए न सुधरो बल्कि मेरे खिलाफ़ ही चलते रहो, <sup>24</sup> तो मैं भी तुम्हारे खिलाफ़ चलूँगा, और मैं आप ही तुम्हारे गुनाहों के लिए तुम को और सात गुना मारूँगा। <sup>25</sup> और तुम पर एक ऐसी तलवार चलवाऊँगा जो 'अहदशिकनी का पूरा पूरा इन्तक़ाम ले लेगी, और जब तुम अपने शहरों के अन्दर जा जाकर इकट्ठे हो जाओ, तो मैं वबा को तुम्हारे बीच भेजूँगा और तुम ग़नीम के हाथ में सौंप दिए जाओगे। <sup>26</sup> और जब मैं तुम्हारी रोटी का सिलसिला तोड़ दूँगा, तो दस 'औरतें एक ही तनूर में तुम्हारी रोटी पकाएँगी। और तुम्हारी उन रोटियों को तोल — तोल कर देती जाएँगी; और तुम खाते जाओगे पर सेर न होगे। <sup>27</sup> “और अगर तुम इन सब बातों पर भी मेरी न सुनो और मेरे खिलाफ़ ही चलते रहो, <sup>28</sup> तो मैं अपने ग़ज़ब में तुम्हारे बरखिलाफ़ चलूँगा, और तुम्हारे गुनाहों के ज़रिए' तुम को सात गुनी सज़ा भी दूँगा। <sup>29</sup> और तुम को अपने बेटों का गोश्त और अपनी बेटियों का गोश्त खाना पड़ेगा। <sup>30</sup> और मैं तुम्हारी परस्तिश के बलन्द मक़ामों को ढा दूँगा, और तुम्हारी सूरज की मूरतों को काट डालूँगा और तुम्हारी

लाशें तुम्हारे शिकस्ता बुतों पर डाल दूँगा, और मेरी रूह को तुमसे नफ़रत हो जाएगी। <sup>31</sup> और मैं तुम्हारे शहरों को वीरान कर डालूँगा, और तुम्हारे हैकलों को उजाड़ बना दूँगा, और तुम्हारी खुशबू — ए — शीरीन की लपट को मैं सूघने का भी नहीं। <sup>32</sup> और मैं मुल्क को सूना कर दूँगा, और तुम्हारे दुश्मन जो वहाँ रहते हैं इस बात से हैरान होंगे। <sup>33</sup> और मैं तुम को ग़ैर क़ौमों में बिखेर दूँगा और तुम्हारे पीछे — पीछे तलवार खींचे रहूँगा; और तुम्हारा मुल्क सूना हो जाएगा, और तुम्हारे शहर वीरान बन जाएँगे। <sup>34</sup> 'और यह ज़मीन जब तक वीरान रहेगी और तुम दुश्मनों के मुल्क में होगे, तब तक वह अपने सबत मनाएगी; तब ही इस ज़मीन को आराम भी मिलेगा और वह अपने सबत भी मनाने पाएगी। <sup>35</sup> ये जब तक वीरान रहेगी तब ही तक आराम भी करेगी, जो इसे कभी तुम्हारे सबतों में जब तुम उसमें रहते थे नसीब नहीं हुआ था। <sup>36</sup> और जो तुम में से बच जाएँगे और अपने दुश्मनों के मुल्कों में होंगे, उनके दिल के अन्दर मैं बेहिम्मती पैदा कर दूँगा उड़ती हुई पट्टी की आवाज़ उनको खदेड़ेगी, और वह ऐसे भागेंगे जैसे कोई तलवार से भागता हो और हालाँकि कोई पीछा भी न करता होगा तो भी वह गिर — गिर पड़ेगे। <sup>37</sup> और वह तलवार के खौफ़ से एक दूसरे से टकरा — टकरा जाएँगे बावजूद यह कि कोई खदेड़ता न होगा, और तुम को अपने दुश्मनों के मुक़ाबले की ताब न होगी। <sup>38</sup> और तुम ग़ैर क़ौमों के बीच बिखर कर हलाक हो जाओगे, और तुम्हारे दुश्मनों की ज़मीन तुम को खा जाएगी। <sup>39</sup> और तुम में से जो बाक़ी बचेंगे वह अपनी बदकारी की वजह से तुम्हारे दुश्मनों के मुल्कों में घुलते रहेंगे, और अपने बाप दादा की बदकारी की वजह से भी वह उन्हीं की तरह घुलते जाएँगे। <sup>40</sup> 'तब वह अपनी और अपने बाप दादा की इस बदकारी का इक़रार करेंगे कि उन्होंने मुझ से खिलाफ़वर्ज़ी कर कि मेरी हुक्म — उदूली की; और यह भी मान लेंगे कि चूँकि वह मेरे खिलाफ़ चले थे, <sup>41</sup> \*इसलिए मैं भी उनका मुखालिफ़ हुआ और उनको उनके दुश्मनों के मुल्क में ला छोड़ा। अगर उस वक़्त उनका नामख़तून दिल 'आज़िज़ बन जाए और वह अपनी बदकारी की सज़ा को मन्ज़ूर करें, <sup>42</sup> तब मैं अपना 'अहद जो या'क़ूब के साथ था याद करूँगा, और जो 'अहद मैंने इस्हाक़ के साथ, और जो 'अहद मैंने अब्रहाम के साथ बान्धा था उनको भी याद करूँगा, और इस मुल्क को याद करूँगा। <sup>43</sup> और वह ज़मीन भी उनसे छूट कर जब तक उनकी ग़ैर हाज़िरी में सूनी पड़ी रहेगी तब

\* 26:41 26:41 जो मुझे उन की तरफ़ मुखाल फाना लगा ताकि मैं उन्हें उनके दुश्मनों के मुल्क में भेजूं — तब उनके ना — मख़तून दिल हलीम किए जाएँगे, और वह अपने गुनाहों के लिए कीमत अदा करेंगे —



तक अपने सबतों को मनाएंगी; और वह अपनी बदकारी की सजा को मन्जूर कर लेंगे, इसी वजह से कि उन्होंने मेरे हुक्मों को छोड़ दिया था, और उनकी रूहों को मेरी शरी'अत से नफ़रत ही गई थी। <sup>44</sup> इस पर भी जब वह अपने दुश्मनों के मुल्क में होंगे तो मैं उनको ऐसा नहीं छोड़ूंगा करूंगा और न मुझे उनसे ऐसी नफ़रत होगी कि मैं उनकी बिल्कुल फ़ना कर दूँ, और मेरा जो 'अहद उनके साथ है उसे तोड़ दूँ क्योंकि मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँ। <sup>45</sup> बल्कि मैं उनकी खातिर उनके बाप दादा के 'अहद की याद करूंगा, जिनको मैं ग़ैरक़ौमों की आँखों के सामने मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया ताकि मैं उनका खुदा ठहरूँ; मैं खुदावन्द हूँ।” <sup>46</sup> यह वह शरी'अत और अहकाम और क़वानीन हैं जो खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर अपने और बनी — इस्राईल के बीच मूसा की जरिए\* मुक़र्रर किए।

## 27

27:3 27:3 मक़दिस मक़ाम की मिस्क़ाल के मुताबिक़ एक मिस्क़ाल कीक़ीमत 8 से लेकर 16 ग्राम चांदी था † 27:16 27:16 1: तुम को फ़सल से कितना बीज हासिल हो रहा है? ‡ 27:16 27:16 1: एक खोमर, 300 किलोग्राम, एक खोमर बराबर है 10 एफ़ा के

<sup>1</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; <sup>2</sup> “बनी — इस्राईल से कह, कि जब कोई शख्स अपनी मिन्नत पूरी करने लगे, तो मिन्नत के आदमी तेरी क़ीमत ठहराने के मुताबिक़ खुदावन्द के होंगे। <sup>3</sup> इसलिए बीस बरस की उम्र से लेकर साठ बरस की उम्र तक के मर्द के लिए तेरी ठहराई हुई क़ीमत हैकल की मिस्क़ाल के हिसाब से \*चाँदी की पचास मिस्क़ाल हों। <sup>4</sup> और अगर वह 'औरत हो, तो तेरी ठहराई हुई क़ीमत तीस मिस्क़ाल हों। <sup>5</sup> और अगर पाँच बरस से लेकर बीस बरस तक की उम्र हो, तो तेरी ठहराई हुई क़ीमत मर्द के लिए बीस मिस्क़ाल और 'औरत के लिए दस मिस्क़ाल हों। <sup>6</sup> लेकिन अगर उम्र एक महीने से लेकर पाँच बरस तक की हो, तो लड़के के लिए चाँदी के पाँच मिस्क़ाल और लड़की के लिए चाँदी के तीन मिस्क़ाल ठहराई जाएँ। <sup>7</sup> और अगर साठ बरस से लेकर ऊपर ऊपर की उम्र हो, तो मर्द के लिए पन्द्रह मिस्क़ाल और 'औरत के लिए दस मिस्क़ाल मुक़र्रर हों। <sup>8</sup> लेकिन अगर कोई तेरे अन्दाज़े की निस्वत कम मक़दूर रखता हो, तो वह काहिन के सामने हाज़िर किया जाए और काहिन उसकी क़ीमत ठहराए, या 'नी जिस शख्स ने मिन्नत मानी है उसकी जैसी हैसियत ही वैसी ही क़ीमत काहिन उसके लिए ठहराए। <sup>9</sup> और अगर वह मिन्नत किसी ऐसे जानवर की है जिसकी कुर्बानी लोग खुदावन्द के सामने चढ़ाया करते हैं, तो जो जानवर

कोई खुदावन्द की नज़र करे वह पाक ठहरेगा। <sup>10</sup> वह उसे फिर किसी तरह न बदले, न तो अच्छे की बदले बुरा दे और न बुरे की बदले अच्छा दे; और अगर वह किसी हाल में एक जानवर के बदले दूसरा जानवर दे तो वह और उसका बदल दोनों पाक ठहरेंगे। <sup>11</sup> और अगर वह कोई नापाक जानवर हो जिसकी कुर्बानी खुदावन्द के सामने नहीं पेश करते, तो वह उसे काहिन के सामने खड़ा करे, <sup>12</sup> और चाहे वह अच्छा हो या बुरा काहिन उसकी क़ीमत ठहराए और ऐ काहिन, जो कुछ तू उसका दाम ठहराएगा वही रहेगा। <sup>13</sup> और अगर वह चाहे कि उसका फ़िदिया देकर उसे छोड़ाए, तो जो क़ीमत तूने ठहराई है उसमें उसका पाँचवा हिस्सा वह और मिला कर दे। <sup>14</sup> और अगर कोई अपने घर को पाक करार दे ताकि वह खुदावन्द के लिए पाक हो, तो ख्वाह वह अच्छा हो या बुरा काहिन उसकी क़ीमत ठहराए, और जो कुछ वह ठहराए वही उसकी क़ीमत रहेगी। <sup>15</sup> और जिसने उस घर को पाक करार दिया है अगर वह चाहे कि घर का फ़िदिया देकर उसे छोड़ाए, तो तेरी ठहराई हुई क़ीमत में उसका पाँचवाँ हिस्सा और मिला दे तब वह घर उसी का रहेगा। <sup>16</sup> और अगर कोई शख्स अपने मौरूसी खेत का कोई हिस्सा खुदावन्द के लिए पाक करार दे, तो तू क़ीमत का अन्दाज़ा करते यह देखना कि उसमें कितना बीज बोया जाएगा। जितनी ज़मीन में एक खोमर के वज़न के बराबर जौ बो सके उसकी क़ीमत चाँदी की पचास मिस्क़ाल हो। <sup>17</sup> अगर कोई साल — ए — यूबली से अपना खेत पाक करार दे, तो उसकी क़ीमत जो तू ठहराए वही रहेगी। <sup>18</sup> लेकिन अगर वह साल — ए — यूबली के बाद अपने खेत को पाक करार दे, तो जितने बरस दूसरे साल — ए — यूबली के बाकी हों उन्ही के मुताबिक़ काहिन उसके लिए रुपये का हिसाब करे; और जितना हिसाब में आए उतना तेरी ठहराई हुई क़ीमत से कम किया जाए। <sup>19</sup> और अगर वह जिसने उस खेत को पाक करार दिया है यह चाहे कि उसका फ़िदिया देकर उसे छोड़ाए, वह तेरी ठहराई हुई क़ीमत का पाँचवाँ हिस्सा उसके साथ और मिला कर दे तो वह खेत उसी का रहेगा। <sup>20</sup> और अगर वह उस खेत का फ़िदिया देकर उसे न छोड़ाए या किसी दूसरे शख्स के हाथ उसे बेच दे, तो फिर वह खेत कभी न छोड़ाया जाए; <sup>21</sup> बल्कि वह खेत जब साल — ए — यूबली में छूटे तो वक़फ़ किए हुए खेत की तरह वह खुदावन्द के लिए पाक होगा, और काहिन की मिल्कियत ठहरेगा <sup>22</sup> और अगर कोई शख्स किसी

\* 27:3 27:3 मक़दिस मक़ाम की मिस्क़ाल के मुताबिक़ एक मिस्क़ाल कीक़ीमत 8 से लेकर 16 ग्राम चांदी था † 27:16 27:16 1: तुम को फ़सल से कितना बीज हासिल हो रहा है? ‡ 27:16 27:16 1: एक खोमर, 300 किलोग्राम, एक खोमर बराबर है 10 एफ़ा के

खरीदे हुए खेत को जो उसका मौरूसी नहीं, खुदावन्द के लिए पाक करार दे, <sup>23</sup> तो काहिन जितने बरस दूसरे साल — ए — यूबली के बाकी हों उनके मुताबिक तेरी ठहराई हुई क्रीमत का हिसाब उसके लिए करे, और वह उसी दिन तेरी ठहराई हुई क्रीमत को खुदावन्द के लिए पाक जानकर दे दे। <sup>24</sup> और साल — ए — यूबली में वह खेत उसी को वापस हो जाए जिससे वह खरीदा गया था और जिसकी वह मिल्कियत है। <sup>25</sup> और तेरे सारे क्रीमत के अन्दाज़े हैकल की मिस्काल के हिसाब से हों; और एक मिस्काल बीस जीरह का हो। <sup>26</sup> लेकिन सिर्फ चौपायों के पहलौठों को जो पहलौठे होने की वजह से खुदावन्द के ठहर चुके हैं, कोई शख्स पाक करार न दे, चाहे वह बैल हो या भेड़ — बकरी वह तो खुदावन्द ही का है। § <sup>27</sup> लेकिन अगर वह किसी नापाक जानवर का पहलौठा हो तो वह शख्स तेरी ठहराई हुई क्रीमत का पाँचवा हिस्सा क्रीमत में और मिलाकर उसका फ़िदिया दे और उसे छुड़ाए; और अगर उसका फ़िदिया न दिया जाए तो वह तेरी ठहराई हुई क्रीमत पर बेचा जाए। <sup>28</sup> “तोभी कोई मख्सूस की हुई चीज़ जिसे कोई शख्स अपने सारे माल में से खुदावन्द के लिए मख्सूस करे, चाहे वह उसका आदमी या जानवर या मौरूसी ज़मीन ही बेची न जाए और न उसका फ़िदिया दिया जाए; हर एक मख्सूस की हुई चीज़ खुदावन्द के लिए बहुत पाक है। <sup>29</sup> अगर आदमियों में से कोई मख्सूस किया जाए तो उसका फ़िदिया न दिया जाए, वह ज़रूर जान से मारा जाए। <sup>30</sup> और ज़मीन की पैदावार की सारी दहेकी चाहे वह ज़मीन के बीज की या दरख्त के फल की हो, खुदावन्द की है और खुदावन्द के लिए पाक है। <sup>31</sup> और अगर कोई अपनी दहेकी में से कुछ छुड़ाना चाहे, तो वह उसका पाँचवाँ हिस्सा उसमें और मिला कर उसे छुड़ाए। <sup>32</sup> और गाय, बैल और भेड़ बकरी, या जो जानवर चरवाहे की लाठी के नीचे से गुज़रता हो, उनकी दहेकी या'नी दस पीछे एक — एक जानवर खुदावन्द के लिए पाक ठहरे। <sup>33</sup> कोई उसकी देख भाल न करे कि वह अच्छा है या बुरा है और न उसे बदलें और अगर कहीं कोई उसे बदले तो वह असल और बदल दोनों के दोनों पाक ठहरे और उसका फ़िदिया भी न दिया जाए। <sup>34</sup> जो हुक्म खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर बनी इस्राईल के लिए मूसा को दिए वह यही हैं।

## गिनती

गिनती 1:1-17

आलमगीर यहूदी मसीही रिवायत मूसा को गिनती की किताब का मुसन्निफ़ होने के लिए मनसूब करते हैं — इस किताब में कई एक ए' दाद व शुमार, आबादी की गिनतियाँ, कबीलों और काहिनों के शुमार और दीगर लोगों की ता'दाद की मालूमात है — गिनती की किताब बनी इस्राईल के खुरुज के दूसरे साल से लेकर माजिद 35 साल यानी 40 साल तक भटकते हुए आखिर — ए — कार सीना पहाड़ पर खेमा जन होने की बाबत बताती है उसवक्त नई पीढ़ी वायदा किए हुए मुल्क में दाखिल होने को तैयार थे इस के अलावा इस किताब में खुरुज के दूसरे साल से लेकर चालीसवें साल का बयान मिलता है — बाक़ी 38 साल बयाबान में भटकने की बाबत है।

गिनती 1:1-17

इस के तसनीफ़ की तारीख़ तकर्रीबन 1446 - 1405 क़ब्ल मसीह है।

किताब के वाक़ियात इस्राईलियों के मिस्र से अलग होने के दूसरे साल से शुरू हुआ जब वह सीना पहाड़ के नीचे आकर खेमा जन हुए (1:1)।

गिनती 1:1-17

गिनती की किताब बनी इस्राईल को लिखी गई थी ताकि वायदा किए हुए मुल्क की तरफ़ उन के सफ़र की तहरीरी शहादत हो सके — मगर यह इस बात को भी याद दिलाती है कि मुस्तक़बिल के तमाम बाइबिल के कारियीन मालूम करे की जिस तरह ख़ुदा मुल्क — ए — कनान में पहुँचने तक उनके सफ़र में साथ रहा वैसे ही जन्नत पहुँचने तक के सफ़र में हमारे साथ रहेगा।

गिनती 1:1-17

मूसा ने गिनती की किताब इस लिए लिखी क्यूँकि दूसरी पीढ़ी वादा किए हुए मुल्क में दाखिल होने वाली थी (गिनती 32:2) उस पीढ़ी की हौसला अफ़जाई के लिए कि वायदा किया मुल्क को अपने मातहत कर ले — गिनती की किताब ख़ुदा के बिला शर्तिया वफ़ादारी जो बनी इस्राईल के लिए थी उस को इज़हार करती है जबकि पहली पीढ़ी ने अहद की बर्कत का इनकार किया फिर भी ख़ुदा दूसरी पीढ़ी के लिए अपने वादे में वफ़ादार रहा उन के शिकायत करने बगावत करने और सरकशी करने के बावजूद ख़ुदा ने उस कौम को बरकत दी और दूसरी पीढ़ी को वायदा किए हुए मुल्क में पहुँचाया।

गिनती 1:1-17

बनी इस्राईल का सफ़र।

बैरूनी खाका

- 1 वादा किया हुआ मुल्क की तरफ़ ख़ाना होने की तैयारी — 1:1-10:10
- 2 सीना के जंगल से ले कर कादेश बरने तक का सफ़र — 10:11-12:16
- 3 बगावत का अंजाम ताखीर होना — 13:1-20:13
- 4 कदेश बरने से लेकर मोआब के मैदानी इलाक़े का सफ़र — 20:14-22:1
- 5 बनी इस्राईल मोआब में वादा किया हुआ मुल्क लेने का तवक्को — 22:2-32:42
- 6 कई एक बातों के साथ किताब का ज़मीमा — 33:1-36:13

गिनती 1:1-17

- 1 बनी — इस्राईल के मुल्क — ए — मिस्र से निकल आने के दूसरे बरस के दूसरे महीने की पहली तारीख़ को सीना के वीरान में ख़ुदावन्द ने खेमा — ए — इजितमा'अ में मूसा से कहा कि, <sup>2</sup> “तुम एक — एक मर्द का नाम ले लेकर गिनो, और उनके नामों की ता'दाद से बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत की मर्दुमशुमारी का हिसाब उनके कबीलों और आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक़ करो। <sup>3</sup> बीस बरस और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के जितने इस्राईली जंग करने के क़ाबिल हों, उन सभी के अलग — अलग दलों को तू और हारून दोनों मिल कर गिन डालो। <sup>4</sup> और हर कबीले से एक — एक आदमी जो अपने आबाई ख़ान्दान का सरदार है तुम्हारे साथ हो। <sup>5</sup> और जो आदमी तुम्हारे साथ होंगे उनके नाम यह हैं: रूबिन के कबीले से इलिसूर बिन शदियूर <sup>6</sup> शमौन के कबीले से सलूमीएल बिन सूरीशद्दी, <sup>7</sup> यहूदाह के कबीले से नहसोन बिन 'अम्मीनदाब, <sup>8</sup> इश्कार के कबीले से नतनीएल बिन ज़ुगर, <sup>9</sup> ज़बूलून के कबीले से इलियाब बिन हेलोन, <sup>10</sup> यूसुफ़ की नसल में से इफ़्राईम के कबीले का इलीसमा'अ बिन 'अम्मीहूद, और मनस्सी के कबीले का जमलीएल बिन फ़दाहसूर, <sup>11</sup> बिनयमीन के कबीले से अबिदान बिन जिदा'ऊनी <sup>12</sup> दान के कबीले से अखी'अज़र बिन 'अम्मीशद्दी, <sup>13</sup> आशर के कबीले से फ़ज'ईएल बिन 'अकरान, <sup>14</sup> ज़द के कबीले से इलियासफ़ बिन द'ऊएल, <sup>15</sup> नफ़ताली के कबीले से अखीरा' बिन 'एनान।” <sup>16</sup> यही अश्खास जो अपने आबाई कबीलों के रईस और \*बनी — इस्राईल में हज़ारों के सरदार थे जमा'अत में से बुलाए गए। <sup>17</sup> और मूसा और हारून ने इन अश्खास को जिनके नाम

\* 1:16 1:16 वह बनी इस्राईल के कबीलों के सरदार थे, वह एकएकहज़ार लोगों पर सरदार थे —

मज़कूर हैं अपने साथ लिया। <sup>18</sup> और उन्होंने दूसरे महीने की पहली तारीख को सारी जमा'अत को जमा' किया, और इन लोगों ने बीस बरस और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के सब आदमियों का शुमार करवा के अपने — अपने कबीले, और आबाई खान्दान के मुताबिक अपना अपना हस्ब — ओ — नसब लिखवाया। <sup>19</sup> इसलिए जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था उसी के मुताबिक उसने उनको दशत — ए — सीना में गिना। <sup>20</sup> और इस्राईल के पहलौटे रूबिन की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक अपने नाम से गिना गया। <sup>21</sup> इसलिए रूबिन के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह छियालीस हजार पाँच सौ थे। <sup>22</sup> और शमौन की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक अपने नाम से गिना गया। <sup>23</sup> इसलिए शमौन के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह उन्सठ हजार तीन सौ थे। <sup>24</sup> और जद्व की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। <sup>25</sup> इसलिए जद्व के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह पैतालीस हजार छः सौ पचास थे। <sup>26</sup> और यहूदाह की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। <sup>27</sup> इसलिए यहूदाह के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह चौहत्तर हजार छः सौ थे। <sup>28</sup> और इश्कार की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। <sup>29</sup> इसलिए इश्कार के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह चव्वन हजार चार सौ थे। <sup>30</sup> और ज़बूलून की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। <sup>31</sup> इसलिए ज़बूलून के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह सतावन हजार चार सौ थे। <sup>32</sup> और यूसुफ़ की औलाद या'नी इफ़राईम की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे

ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। <sup>33</sup> इसलिए इफ़राईम के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह चालीस हजार पाँच सौ थे। <sup>34</sup> और मनस्सी की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। <sup>35</sup> इसलिए मनस्सी के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह बत्तीस हजार दो सौ थे। <sup>36</sup> और बिनयमीन की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। <sup>37</sup> इसलिए बिनयमीन के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह पैतिस हजार चार सौ थे। <sup>38</sup> और दान की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। <sup>39</sup> इसलिए दान के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह बासठ हजार सात सौ थे। <sup>40</sup> और आशर की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। <sup>41</sup> इसलिए आशर के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह इकतालीस हजार पाँच सौ थे। <sup>42</sup> और नफ़ताली की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के क़ाबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। <sup>43</sup> इसलिए, नफ़ताली के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह तिरपन हजार चार सौ थे। <sup>44</sup> यही वह लोग हैं जो गिने गए। इन ही को मूसा और हारून और बनी — इस्राईल के बारह रईसों ने जो अपने — अपने आबाई खान्दान के सरदार थे, गिना। <sup>45</sup> इसलिए बनी — इस्राईल में से जितने आदमी बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के और जंग करने के क़ाबिल थे, वह सब गिने गए। <sup>46</sup> और उन सभी का शुमार छः लाख तीन हजार पाँच सौ पचास था। <sup>47</sup> पर लावी अपने आबाई कबीले के मुताबिक उनके साथ गिने नहीं गए। <sup>48</sup> क्योंकि खुदावन्द ने मूसा से कहा था कि, <sup>49</sup> 'तू लावियों के कबीले को न गिनना और न बनी — इस्राईल के शुमार में उनका शुमार दाखिल करना, <sup>50</sup> बल्कि तू लावियों को शहादत के घर और उसके सब बर्तनों और उसके सब लवाज़िम के मुतवल्ली मुक़रर करना। वही घर और उसके सब बर्तनों





खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था, बनी — इस्राईल के साथ गिने नहीं गए। <sup>34</sup> इसलिए बनी — इस्राईल ने ऐसा ही किया और जो — जो हुक्म खुदावन्द ने मूसा को दिया था उसी के मुताबिक वह अपने — अपने झंडे के पास और अपने आबाई खान्दानों के मुताबिक, अपने — अपने घराने के साथ खेमे लगाते और खाना होते थे।

### 3

~~~~~

¹ और जिस दिन खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर मूसा से बातें कीं, तब हारून और मूसा के पास यह औलाद थी। ² और हारून के बेटों के नाम यह हैं: नदब जो पहलौठा था, और अबीहू और इली'एलियाज़र और ऐतामर। ³ हारून के बेटे जो कहानत के लिए मस्सूह हुए और जिनको उसने कहानत की खिदमत के लिए मस्सूस किया था उनके नाम यही हैं। ⁴ और नदब और अबीहू तो जब उन्होंने दशत — ए — सीना में खुदावन्द के सामने ऊपरी आग पेश कीं तब ही खुदावन्द के सामने मर गए, और वह बे — औलाद भी थे। और इली'एलियाज़र और ऐतामर अपने बाप हारून के सामने कहानत की खिदमत को अन्जाम देते थे। ⁵ और खुदावन्द ने मूसा से कहा, ⁶ “लावी के कबीले को नज़दीक लाकर हारून काहिन के आगे हाज़िर कर ताकि वह उसकी खिदमत करें। ⁷ और जो कुछ उसकी तरफ़ से और जमा'अत की तरफ़ से उनको सौंपा जाए वह सब की खेमा — ए — इजितमा'अ के आगे निगहबानी करें ताकि घर की खिदमत बजा लाएँ। ⁸ और वह खेमा — ए — इजितमा'अ के सब सामान की और बनी — इस्राईल की सारी अमानत की हिफ़ाज़त करें ताकि घर की खिदमत बजा लाएँ। ⁹ और तू लावियों को हारून और उसके बेटों के हाथ में सुपर्द कर; बनी — इस्राईल की तरफ़ से वह बिल्कुल उसे दे दिए गए हैं। ¹⁰ और हारून और उसके बेटों को मुक्रर कर, और वह अपनी कहानत को महफूज़ रखे और अगर कोई अजनबी नज़दीक आये तो वह जान से मारा जाए।” ¹¹ और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; ¹² “देख, मैंने बनी — इस्राईल में से लावियों को उन सभों के बदले में ले लिया है जो इस्राईलियों में पहलौठी के बच्चे हैं, इसलिए लावी मेरे हों। ¹³ क्योंकि सब पहलौठे मेरे हैं, इसलिए कि जिस दिन मैंने मुल्क — ए — मिस्र में सब पहलौठों को मारा, उसी दिन मैंने बनी — इस्राईल के सब पहलौठों को, क्या इंसान और क्या हैवान, अपने लिए पाक किया; इसलिए वह ज़रूर मेरे हों। मैं खुदावन्द हूँ।”

~~~~~

<sup>14</sup> फिर खुदावन्द ने दशत — ए — सीना में मूसा से कहा, <sup>15</sup> “बनी लावी को उनके आबाई खान्दानों और घरानों के मुताबिक़ शुमार कर, या'नी एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर के हर लड़के को गिनना।” <sup>16</sup> चुनाँचे मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ जो उसने उसे दिया, उनको गिना। <sup>17</sup> और लावी के बेटों के नाम यह हैं: जैरसोन और क्रिहात और मिरारी। <sup>18</sup> जैरसोन के बेटों के नाम जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं: लिबनी और सिम'ई। <sup>19</sup> और क्रिहात के बेटों के नाम जिनसे उनके खान्दान चले 'अमराम और इज़हार और हब्रून और 'उज़्ज़ीएल हैं। <sup>20</sup> और मिरारी के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले, महली और मूशी हैं। लावियों के घराने उनके आबाई खान्दानों के मुताबिक़ यही हैं। <sup>21</sup> और जैरसोन से लिबनियों और सिम'ईयों के खान्दान चले; यह जैरसोनियों के खान्दान हैं। <sup>22</sup> इनमें जितने फ़रज़न्द — ए — नरीना एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर के थे वह सब गिने गए और उनका शुमार सात हजार पाँच सौ था। <sup>23</sup> जैरसोनियों के खान्दानों के आदमी घर के पीछे पश्चिम की तरफ़ अपने खेमे लगाया करें। <sup>24</sup> और लाएल का बेटा इलियासफ़, जैरसोनियों के आबाई खान्दानों का सरदार हो। <sup>25</sup> और खेमा — ए — इजितमा'अ के जो सामान बनी जैरसोन की हिफ़ाज़त में सौंपे जाएँ वह यह हैं: घर और खेमा, और उसका गिलाफ़, और खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े का पर्दा, <sup>26</sup> और घर और मज़बह के गिर्द के सहन के पर्दे, और सहन के दरवाज़े का पर्दा, और वह सब रस्सियाँ जो उसमें काम आती हैं। <sup>27</sup> और क्रिहात से 'अमरामियों और इज़हारियों और हब्रूनियों और 'उज़्ज़ीएलियों के खान्दान चले; ये क्रिहातियों के खान्दान हैं। <sup>28</sup> उनके फ़र्ज़न्द — ए — नरीना एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर के आठ हजार छः सौ थे। हैकल की निगहबानी इनके ज़िम्मे थी। <sup>29</sup> बनी क्रिहात के खान्दानों के आदमी घर की दख्खनी सिम्त में अपने खेमे डाला करें। <sup>30</sup> और 'उज़्ज़ीएल का बेटा इलिसफ़न क्रिहातियों के घरानों के आबाई खान्दान का सरदार हो। <sup>31</sup> और सन्दूक और मेज़ और शमा'दान और दोनों मज़बहे और हैकल के बर्तन, जो इबादत के काम में आते हैं, और पर्दे और हैकल में बर्तन का सारा सामान, यह सब उनके ज़िम्मे हों। <sup>32</sup> और हारून काहिन का बेटा इली'एलियाज़र लावियों के सरदारों का सरदार और हैकल के मुत्वल्लियों का नाज़िर हो। <sup>33</sup> मिरारी से महलियों और मूशियों के खान्दान चले; यह मिरारियों के खान्दान हैं। <sup>34</sup> इनमें जितने फ़रज़न्द — ए — नरीना एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर के थे वह छः हजार

दो सौ थे। <sup>35</sup> और अबीखैल का बेटा सूरीएल मिरारियों के घरानों के आबाई खान्दान का सरदार हो। यह लोग घर की उत्तरी सिम्त में अपने खेमे डाला करें। <sup>36</sup> और घर के तख्तों और उसकी बेड़ों और सुतूनों और खानों और उसके सब आलात, और उसकी खिदमत के सब लवाज़िम की मुहाफ़िज़त, <sup>37</sup> और सहन के चारों तरफ़ के सुतूनों, और खानों और मेखों और रस्सियों की निगरानी बनी मिरारी के ज़िम्मे हो। <sup>38</sup> और घर के आगे पश्चिम की तरफ़ जिधर से सूरज निकलता है, या'नी खेमा — ए — इजितमा'अ के आगे, मूसा और हारून और उसके बेटे अपने खेमे लगाया करें और बनी — इस्राईल के बदले हैकल की हिफ़ाज़त किया करें; और जो अजनबी शख्स उसके नज़दीक आए वह जान से मारा जाए। <sup>39</sup> इसलिए लावियों में से जितने एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के थे उनको मूसा और हारून ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ उनके घरानों के मुताबिक़ गिना, वह शुमार में बाईस हज़ार थे।

~~~~~

⁴⁰ और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि “बनी इस्राईल के सब नरीना पहलौटे, एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर के गिन ले और उनके नामों का शुमार लगा। ⁴¹ और बनी — इस्राईल के सब पहलौटों के बदले लावियों को, और बनी — इस्राईल के चौपायों के सब पहलौटों के बदले लावियों के चौपायों को मेरे लिए ले। मैं खुदावन्द हूँ।” ⁴² चुनाँचे मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ बनी — इस्राईल के सब पहलौटों को गिना। ⁴³ तब जितने नरीना पहलौटे एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के गिने गए, वह नामों के शुमार के मुताबिक़ बाईस हज़ार दो सौ तिहतर थे। ⁴⁴ और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; ⁴⁵ “बनी — इस्राईल के सब पहलौटों के बदले लावियों को, और उनके चौपायों के बदले लावियों के चौपायों को ले; और लावी मेरे हों, मैं खुदावन्द हूँ। ⁴⁶ और बनी — इस्राईल के पहलौटों में जो दो सौ तिहतर लावियों के शुमार से ज्यादा हैं, उनके फ़िदिये के लिए ⁴⁷ तू हैकल की मिस्काल के हिसाब से हर शख्स पाँच मिस्काल लेना एक मिस्काल बीस जीरह का होता है। ⁴⁸ और इनके फ़िदिये का रुपया जो शुमार में ज्यादा हैं तू हारून और उसके बेटों को देना।” ⁴⁹ तब जो उनसे जिनको लावियों ने छुड़ाया था, शुमार में ज्यादा निकले थे उनके फ़िदिये का रुपया मूसा ने उनसे लिया। ⁵⁰ ये रुपया उसने बनी — इस्राईल के पहलौटों से लिया, इसलिए हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक

हज़ार तीन सौ पैसठ मिस्कालें वसूल हुई। ⁵¹ और मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ फ़िदिये का रुपया जैसा खुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया था, हारून और उसके बेटों को दिया।

4

~~~~~

<sup>1</sup> और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा कि, <sup>2</sup> “बनी लावी में से क्रिहातियों को उनके घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक़, <sup>3</sup> तीस बरस से लेकर पचास बरस की उम्र तक के जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत में शामिल हैं, उन सभी को गिनो। <sup>4</sup> और खेमा — ए — इजितमा'अ में पाकतरीन चीज़ों की निस्वत बनी क्रिहात का यह काम होगा, <sup>5</sup> कि जब लश्कर खाना हो तो हारून और उसके बेटे आएँ और बीच के पर्दे को उतारें और उससे शहादत के सन्दूक को ढाँकें, <sup>6</sup> और उस पर तुखस की खालों का एक गिलाफ़ \*डालें, और उसके ऊपर बिल्कुल आसमानी रंग का कपड़ा बिछाएँ, और उसमें उसकी चोबें लगाएँ। <sup>7</sup> और नज़र की रोटी की मेज़ पर आसमानी रंग का कपड़ा बिछाकर, उसके ऊपर तबाक़ और चमचे और उँडेलने के कटोरे और प्याले रखें; और दाइमी रोटी भी उस पर हो। <sup>8</sup> फिर वह उन पर सुख़ रंग का कपड़ा बिछाएँ और उसे तुखस की खालों के एक गिलाफ़ से ढाँकें, और मेज़ में उसकी चोबें लगा दें। <sup>9</sup> फिर आसमानी रंग का कपड़ा लेकर उससे रोशनी देने वाले शमा'दान को, और उसके चराग़ों और गुलगीरों और गुलदानों और तेल के सब बर्तनों को, जो शमा'दान के लिए काम में आते हैं ढाँकें; <sup>10</sup> और उसको और उसके सब बर्तनों को तुखस की खालों के एक गिलाफ़ के अन्दर रख कर उस गिलाफ़ को चौखटे पर धर दें। <sup>11</sup> और ज़रीन मज़बह पर आसमानी रंग का कपड़ा बिछाएँ और उसे तुखस की खालों के एक गिलाफ़ से ढाँकें और उसकी चोबें उसमें लगाएँ। <sup>12</sup> और सब बर्तनों को जो हैकल की खिदमत के काम में आते हैं लेकर उनको आसमानी रंग के कपड़े में लपेटें और उनको तुखस की खालों के एक गिलाफ़ से ढाँक कर चौखटे पर धरें। <sup>13</sup> फिर वह मज़बह पर से सब राख को उठाकर उसके ऊपर अर्गवानी रंग का कपड़ा बिछाएँ। <sup>14</sup> उसके सब बर्तन जिनसे उसकी खिदमत करते हैं जैसे अंगीठियाँ और सेखें और बेल्चे और कटोरे, गर्ज मज़बह के सब बर्तन उस पर रखें, और उस पर तुखस की खालों का एक गिलाफ़ बिछाएँ और मज़बह में चोबें लगा दें। <sup>15</sup> और जब हारून और उसके बेटे हैकल की और हैकल के सब अस्बाब को ढाँक चुकें, तब खेमागाह

\* 4:6 4:6 पढ़ें खुरज 25:5

के खानगी के वक्त बनी क्रिहात उसके उठाने के लिए आएँ लेकिन वह हैकल को न छुएँ, ऐसा न हो कि वह मर जाएँ। खेमा — ए — इजितमा'अ की यही चीज़ें बनी क्रिहात के उठाने की हैं। <sup>16</sup> “और रोशनी के तेल, और खुशबूदार खुशबू और दाइमी नज़र की कुर्बानी और मसह करने के तेल, और सारे घर, और उसके लवाज़िम और हैकल और उसके सामान की निगहबानी हारून काहिन के बेटे इली'एलियाज़र के ज़िम्मे हो।” <sup>17</sup> और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा कि; <sup>18</sup> “तुम लावियों में से क्रिहातियों के कबीले के खान्दानों को मुनक़ता' होने न देना; <sup>19</sup> बल्कि इस मक़सूद से कि जब वह पाकतरीन चीज़ों के पास आएँ तो ज़िन्दा रहें, और मर न जाएँ, तुम उनके लिए ऐसा करना कि हारून और उसके बेटे अन्दर आ कर उनमें से एक — एक का काम और बोझ मुक़र्रर कर दें। <sup>20</sup> लेकिन वह हैकल को देखने की खातिर दम भर के लिए भी अन्दर न आने पाएँ, ऐसा न हो कि वह मर जाएँ।”

???????? ???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>21</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>22</sup> 'बनी जैरसोन में से भी उनके आबाई खान्दानों और घरानों के मुताबिक़, <sup>23</sup> तीस बरस से लेकर पचास बरस तक की उम्र के जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत के वक्त हाज़िर रहते हैं उन सभी को गिन। <sup>24</sup> जैरसोनियों के खान्दानों का काम खिदमत करने और बोझ उठाने का है। <sup>25</sup> वह घर के पर्दों को, और खेमा — ए — इजितमा'अ और उसके गिलाफ़ को, और उसके ऊपर के गिलाफ़ को जो तुख़स की खालों का है, और खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े के पर्दे को, <sup>26</sup> और घर और मज़बह के चारों तरफ़ के सहन के पर्दों को, और सहन के दरवाज़े के पर्दे को और उनकी रस्सियों को, और खिदमत के सब बर्तनों को उठाया करें; और इन चीज़ों से जो — जो काम लिया जाता है वह भी यही लोग किया करें। <sup>27</sup> जैरसोनियों की औलाद का खिदमत करने और बोझ उठाने का सारा काम हारून और उसके बेटों के हुक्म के मुताबिक़ हो, और तुम उनमें से हर एक का बोझ मुक़र्रर करके उनके सुपुर्द करना। <sup>28</sup> खेमा — ए — इजितमा'अ में बनी जैरसोन के खान्दानों का यही काम रहे और वह हारून काहिन के बेटे ऐतामर के मातहत होकर खिदमत करें।

???????? ???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>29</sup> “और बनी मिरारी में से उनके आबाई खान्दानों और घरानों के मुताबिक़, <sup>30</sup> तीस बरस से लेकर पचास बरस तक की उम्र के जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत के वक्त हाज़िर

रहते हैं उन सभी को गिन। <sup>31</sup> और खेमा — ए — इजितमा'अ में जिन चीज़ों के उठाने की खिदमत उनके ज़िम्मे हो वह यह हैं: घर के तख्ते और उसके बेंडे, और सुतून और सुतूनों के खाने, <sup>32</sup> और चारों तरफ़ के सहन के सुतून और उनके सब आलात और सारे सामान; और जो चीज़ें उनके उठाने के लिए तुम मुक़र्रर करो उनमें से एक — एक का नाम लेकर उसे उनके सुपुर्द करो। <sup>33</sup> बनी मिरारी के खान्दानों को जो कुछ खिदमत खेमा — ए — इजितमा'अ में हारून काहिन के बेटे ऐतामर के मातहत करना है वह यही है।”

???????? ? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>34</sup> चुनाँचे मूसा और हारून और जमा'अत के सरदारों ने क्रिहातियों की औलाद में से उनके घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक़, <sup>35</sup> तीस बरस की उम्र से लेकर पचास बरस की उम्र तक के जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत में शामिल थे, उन सभी की गिन लिया; <sup>36</sup> और उनमें से जितने अपने घरानों के मुवाफ़िक़ गिने गए वह दो हजार सात सौ पचास थे। <sup>37</sup> क्रिहातियों के खान्दानों में से जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में खिदमत करते थे उन सभी का शुमार इतना ही है; जो हुक्म खुदावन्द ने मूसा के ज़रिए' दिया था उसके मुताबिक़ मूसा और हारून ने उनको गिना। <sup>38</sup> और बनी जैरसोन में से अपने घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक़, <sup>39</sup> तीस बरस से लेकर पचास बरस की उम्र तक के जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत में शामिल थे, वह सब गिने गए; <sup>40</sup> और जितने अपने घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक़ गिने गए वह दो हजार छः सौ तीस थे। <sup>41</sup> इसलिए बनी जैरसोन के खान्दानों में से जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में खिदमत करते थे और जिनको मूसा और हारून ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ शुमार किया वह इतने ही थे। <sup>42</sup> और बनी मिरारी के घरानों में से अपने घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक़, <sup>43</sup> तीस बरस से लेकर पचास बरस की उम्र तक के जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत में शामिल थे, <sup>44</sup> वह सब गिने गए; और जितने उनमें से अपने घरानों के मुवाफ़िक़ गिने गए वह तीन हजार दो सौ थे। <sup>45</sup> इसलिए खुदावन्द के उस हुक्म के मुताबिक़ जो उसने मूसा के ज़रिए' दिया था, जितनों को मूसा और हारून ने बनी मिरारी के खान्दानों में से गिना वह यही है। <sup>46</sup> अलगरज़ लावियों में से जिनको मूसा और हारून और इस्राईल के सरदारों ने उनके घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक़ गिना, <sup>47</sup> या'नी तीस बरस



से लेकर पचास बरस की उम्र तक के जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में खिदमत करने और बोझ उठाने के काम के लिए हाज़िर होते थे, <sup>48</sup> उन सभी का शुमार आठ हजार पाँच सौ अस्सी था। <sup>49</sup> वह खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक मूसा के ज़रिए अपनी अपनी खिदमत और बोझ उठाने के काम के मुताबिक गिने गए। यूँ वह मूसा के ज़रिए जैसा खुदावन्द ने उसको हुक्म दिया था गिने गए।

## 5

????????? ?????? ?? ???????????

<sup>1</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; <sup>2</sup> “बनी — इस्राईल को हुक्म दे कि वह हर कोढ़ी को, और जिरयान के मरीज़ को, और जो मुर्दे की वजह से नापाक हो, उसको लश्करगाह से बाहर कर दें; <sup>3</sup> ऐसी को चाहे वह मर्द हों या 'औरत, तुम निकाल कर उनको लश्करगाह के बाहर रखो ताकि वह उनकी लश्करगाह को जिसके बीच मैं रहता हूँ, नापाक न करें।” <sup>4</sup> चुनाँचे बनी — इस्राईल ने ऐसा ही किया और उनको निकाल कर लश्करगाह के बाहर रखवा; जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था वैसा ही बनी — इस्राईल ने किया। <sup>5</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; <sup>6</sup> “बनी — इस्राईल से कह कि अगर कोई मर्द या 'औरत खुदावन्द की हुक्म उदली करके कोई ऐसा गुनाह करे जो आदमी करते हैं और कुसूरवार हो जाए, <sup>7</sup> तो जो गुनाह उसने किया है वह उसका इक्क़ार करे, और अपनी तकसीर के मु'आवज़े में पूरा दाम और उसमें पाँचवाँ हिस्सा और मिलकर उस शख्स को दे जिसका उसने कुसूर किया है। <sup>8</sup> लेकिन अगर उस शख्स का कोई रिश्तेदार न हो जिसे उस तकसीर का मु'आवज़ा दिया जाए, तो तकसीर का जो मु'आवज़ा खुदावन्द को दिया जाए वह काहिन का हो 'अलावा कफ़फ़ारे के उस मेंढे के जिससे उसका कफ़फ़ारा दिया जाए। <sup>9</sup> और जितनी पाक चीज़ें बनी इस्राईल उठाने की कुर्बानी के तौर पर काहिन के पास लाएँ वह उसी की हों। <sup>10</sup> और हर शख्स की पाक की हुई चीज़ें उसकी हों और जो चीज़ कोई शख्स काहिन को दे वह भी उसी की हो।”

????? ?? ?????????? ??????????? ??  
?????????? ??????

<sup>11</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि “बनी इस्राईल से कह कि <sup>12</sup> अगर किसी की बीवी गुमराह हो कर उससे बेवफ़ाई करे, <sup>13</sup> और कोई दूसरा आदमी उस 'औरत के साथ मुबाशरत करे और उसके शौहर को मा'लूम न हो बल्कि यह उससे पोशीदा रहे, और वह नापाक हो गई

हो लेकिन न तो कोई शाहिद ही और न वह 'ऐन फ़ेल के वक़्त पकड़ी गई हो। <sup>14</sup> और उसके शौहर के दिल में ग़ैरत आए: और वह अपनी बीवी से ग़ैरत खाने लगे हालाँकि वह नापाक हुई हो, या उसके शौहर के दिल में ग़ैरत आए और वह अपनी बीवी से ग़ैरत खाने लगे हालाँकि वह नापाक नहीं हुई। <sup>15</sup> तो वह शख्स अपनी बीवी को काहिन के पास हाज़िर करे, और उस 'औरत के चढ़ावे के लिए ऐफ़ा के दस्वें हिस्से के बराबर जौ का आटा लाए लेकिन उस पर न तेल डाले न लुबान रखे; क्योंकि यह नज़र की कुर्बानी ग़ैरत की है, या'नी यह यादगारी की नज़र की कुर्बानी है जिससे गुनाह याद दिलाया जाता है। <sup>16</sup> “तब काहिन उस 'औरत की नज़दीक लाकर खुदावन्द के सामने खड़ी करे, <sup>17</sup> और काहिन मिट्टी के एक बासन में पाक पानी ले और घर के फ़र्श की गर्द लेकर उस पानी में डाले। <sup>18</sup> फिर काहिन उस 'औरत को खुदावन्द के सामने खड़ी करके उसके सिर के बाल खुलवा दे, और यादगारी की नज़र की कुर्बानी को जो ग़ैरत की नज़र की कुर्बानी है उसके हाथों पर धरे, और काहिन अपने हाथ में उस कड़वे पानी को ले जो ला'नत को लाता है। <sup>19</sup> फिर काहिन उस 'औरत को क्रसम खिला कर कहे कि अगर किसी शख्स ने तुझसे सुहबत नहीं की है और तू अपने शौहर की होती हुई नापाकी की तरफ़ माइल नहीं हुई, तो तू इस कड़वे पानी की तासीर से जो ला'नत लाता है बची रह। <sup>20</sup> लेकिन अगर तू अपने शौहर की होती हुई गुमराह होकर नापाक हो गई है और तेरे शौहर के 'अलावा किसी दूसरे शख्स ने तुझ से सुहबत की है, <sup>21</sup> तो काहिन उस 'औरत को ला'नत की क्रसम खिला कर उससे कहे, कि खुदावन्द तुझे तेरी क्रौम में तेरी रान को सड़ा कर और तेरे \*पेट को फुला कर ला'नत और फटकार का निशाना बनाए; <sup>22</sup> और यह पानी जो ला'नत लाता है तेरी अंतड़ियों में जा कर तेरे पेट को फुलाए और तेरी रान को सड़ाए। और 'औरत आमीन, आमीन कहे। <sup>23</sup> “फिर काहिन उन ला'नतों को किसी किताब में लिख कर उनको उसी कड़वे पानी में धो डाले। <sup>24</sup> और वह कड़वा पानी जो ला'नत को लाता है उस 'औरत को पिलाए, और वह पानी जो ला'नत को लाता है उस 'औरत के पेट में जा कर कड़वा हो जाएगा। <sup>25</sup> और काहिन उस 'औरत के हाथ से ग़ैरत की नज़र की कुर्बानी को लेकर खुदावन्द के सामने उसको हिलाए, और उसे मज़बह के पास लाए, <sup>26</sup> फिर काहिन उस नज़र की कुर्बानी में से उसकी यादगारी के तौर पर एक मुट्ठी लेकर उसे मज़बह पर जलाए, बाद उसके वह पानी उस 'औरत को पिलाए। <sup>27</sup> और जब वह उसे वह

पानी पिला चुकेगा, तो ऐसा होगा कि अगर वह नापाक हुई और उसने अपने शौहर से बेवफ़ाई की, तो वह पानी जो ला'नत को लाता है उसके पेट में जा कर कड़वा हो जाएगा और उसका पेट फूल जाएगा और उसकी रान सड़ जाएगी; और वह 'औरत अपनी क्रौम में ला'नत का निशाना बनेगी। <sup>28</sup> पर अगर वह नापाक नहीं हुई बल्कि पाक है, तो बे — इल्जाम ठहरेगी और उससे औलाद होगी। <sup>29</sup> “औरत के बारे में यही शरा” है, चाहे 'औरत अपने शौहर की होती हुई गुमराह होकर नापाक हो जाए या मर्द पर ग़ैरत सवार हो, <sup>30</sup> और वह अपनी बीवी से ग़ैरत खाने लगे; ऐसे हाल में वह उस 'औरत को खुदावन्द के आगे खड़ी करे और काहिन उस पर यह सारी शरी'अत 'अमल में लाए। <sup>31</sup> तब मर्द गुनाह से बरी ठहरेगा और उस 'औरत का गुनाह उसी के सिर लगेगा।”

## 6

222222 222222

<sup>1</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; <sup>2</sup> 'बनी — इस्राईल से कह कि जब कोई मर्द या 'औरत \*नज़ीर की मिन्नत, या'नी अपने आप को खुदावन्द के लिए अलग रखने की खास मिन्नत माने, <sup>3</sup> तो वह मय और शराब से परहेज़ करे, और मय का या शराब का सिरका न पिए और न अंगूर का रस पिए और न ताज़ा या खुश्क अंगूर खाए। <sup>4</sup> और अपनी नज़ारत के तमाम दिनों में बीज से लेकर छिल्के तक जो कुछ अंगूर के दरख्त में पैदा हो उसे न खाए। <sup>5</sup> 'और उसकी नज़ारत की मिन्नत के दिनों में उसके सिर पर उस्तरा न फेरा जाए; जब तक वह मुद्दत जिसके लिए वह खुदावन्द का नज़ीर बना है पूरी न हो, तब तक वह पाक रहे और अपने सिर के बालों की लटों को बढ़ने दे। <sup>6</sup> उन तमाम दिनों में जब वह खुदावन्द का नज़ीर हो वह किसी लाश के नज़दीक न जाए। <sup>7</sup> वह अपने बाप या माँ या भाई या बहन की खातिर भी जब वह मरें, अपने आप को नजिस न करे। क्योंकि उसकी नज़ारत जो खुदा के लिए है, उसके सिर पर है। <sup>8</sup> वह अपनी नज़ारत की पूरी मुद्दत तक खुदावन्द के लिए पाक है। <sup>9</sup> “और अगर कोई आदमी नागहान उसके पास ही मर जाए और उसकी नज़ारत के सिर को नापाक कर दे, तो वह अपने पाक होने के दिन अपना सिर मुण्डवाए, या'नी सातवें दिन सिर मुण्डवाए। <sup>10</sup> और आठवें दिन दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर काहिन के पास लाए। <sup>11</sup> और काहिन एक को खता की कुर्बानी के

लिए और दूसरे को सोख्तनी कुर्बानी के लिए पेश करे और उसके लिए कफ़ारा दे, क्योंकि वह मुर्दे की वजह से गुनहगार ठहरा है; और उसके सिर को उसी दिन पाक करे। <sup>12</sup> फिर वह अपनी नज़ारत की मुद्दत को खुदावन्द के लिए पाक करे, और एक यकसाला नर बर्षा जुर्म की कुर्बानी के लिए लाए; लेकिन जो दिन गुज़र गए हैं वह गिने नहीं जाएंगे क्योंकि उसकी नज़ारत नापाक हो गई थी। <sup>13</sup> 'और नज़ीर के लिए शरा' यह है, कि जब उसकी नज़ारत के दिन पूरे हो जाएँ तो वह खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर हाज़िर किया जाए। <sup>14</sup> और वह खुदावन्द के सामने अपना चढ़ावा चढ़ाए, या'नी सोख्तनी कुर्बानी के लिए एक बे — 'एब यक — साला नर बर्षा, और खता की कुर्बानी के लिए एक बे — 'एब यक — साला मादा बर्षा, और सलामती की कुर्बानी के लिए एक बे — 'एब मेंढा, <sup>15</sup> और बेखमीरी रोटियों की एक टोकरी, और तेल मिले हुए मैदे के कुल्चे, और तेल चुपड़ी हुई बे — खमीरी रोटियाँ, और उनकी नज़र की कुर्बानी, और उनके तपावन लाए। <sup>16</sup> और काहिन उनको खुदावन्द के सामने ला कर उसकी तरफ़ से खता की कुर्बानी और सोख्तनी कुर्बानी पेश करे। <sup>17</sup> और उस मेंढे को बेखमीरी रोटियों की टोकरी के साथ खुदावन्द के सामने सलामती की कुर्बानी के तौर पर पेश करे, और काहिन उसकी नज़र की कुर्बानी और उसका तपावन भी अदा करे। <sup>18</sup> फिर वह नज़ीर खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर अपनी नज़ारत के बाल मुण्डवाए, और नज़ारत के बालों को उस आग में डाल दे जो सलामती की कुर्बानी के नीचे होगी। <sup>19</sup> और जब नज़ीर अपनी नज़ारत के बाल मुण्डवा चुके, तो काहिन उस मेंढे का उबाला हुआ शाना और एक बे — खमीरी रोटी टोकरी में से और एक बे — खमीरी कुल्चा लेकर उस नज़ीर के हाथों पर उनको धरे। <sup>20</sup> फिर काहिन उनको हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाए। हिलाने की कुर्बानी के सीने और उठाने की कुर्बानी के शाने के साथ यह भी काहिन के लिए पाक हैं। इसके बाद नज़ीर मय पी सकेगा। <sup>21</sup> “नज़ीर जो मिन्नत माने और जो चढ़ावा अपनी नज़ारत के लिए खुदावन्द के सामने लाये 'अलावा उसके जिसका उसे मक़दूर हो उन सभों के बारे में शरा' यह है। जैसी मिन्नत उसने मानी हो वैसा ही उसको नज़ारत की शरा' के मुताबिक 'अमल करना पड़ेगा।”

222222 222222

<sup>22</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; <sup>23</sup> “हारून और उसके बेटों से कह कि तुम बनी — इस्राईल को इस तरह

† 5:30 5:30 मज़हबी पेशवा (पादरी) \* 6:2 6:2 नज़ीर का मतलब है, वह जो अलग किया हुआ —

दुआ दिया करना। तुम उनसे कहना: <sup>24</sup> 'खुदावन्द तुझे बरकत दे और तुझे महफूज रखे'। <sup>25</sup> 'खुदावन्द अपना चेहरा तुझ पर जलवागर फरमाए, और तुझ पर मेहरबान रहे। <sup>26</sup> 'खुदावन्द अपना चेहरा तेरी तरफ़ मुतवज्जिह करे, और तुझे सलामती बख़्शे। <sup>27</sup> 'इस तरह वह मेरे नाम को बनी — इस्राईल पर रखे और मैं उनको बरकत बख़्शूंगा।'

## 7

22222-2-2222222 22 222222

<sup>1</sup> और जिस दिन मूसा घर को खड़ा करने से फ़ारिग़ हुआ और उसको और उसके सब सामान को मसह और पाक किया, और मज़बह और उसके सब मसह को भी मसह और पाक किया; <sup>2</sup> तो इस्राईली रईस जो अपने आबाई खान्दानों के सरदार और क़बीलों के रईस और शुमार किए हुआ के ऊपर मुक़रर थे नज़राना लाए। <sup>3</sup> वह अपना हदिया छः पर्देदार गाड़ियाँ और बारह बैल खुदावन्द के सामने लाये दो — दो रईसों की तरफ़ से एक — एक गाड़ी और हर रईस की तरफ़ से एक बैल था, इनको उन्होंने घर के सामने हाज़िर किया। <sup>4</sup> तब खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; <sup>5</sup> 'तू इनको उनसे ले ताकि वह खेमा — ए — इजितमा'अ के काम में आएँ, और तू लावियों में हर शख्स की खिदमत के मुताबिक़ उनको तक्रसीम कर दे।' <sup>6</sup> तब मूसा ने वह गाड़ियाँ और बैल लेकर उनको लावियों को दे दिया। <sup>7</sup> बनी जैरसोन को उसने उनकी खिदमत के लिहाज़ से दो गाड़ियाँ और चार बैल दिए। <sup>8</sup> और चार गाड़ियाँ और आठ बैल उसने बनी मिरारी को उनकी खिदमत के लिहाज़ से हारून काहिन के बेटे ऐतामर के माताहत करके दिए। <sup>9</sup> लेकिन बनी क्रिहात को उसने कोई गाड़ी नहीं दी, क्यूँकि उनके ज़िम्मे हैकल की खिदमत थी; वह उसे अपने कन्धों पर उठाते थे, <sup>10</sup> और जिस दिन मज़बह मसह किया गया उस दिन वह रईस उसकी तक्रदीस के लिए हदिये लाए, और अपने हदियों को वह रईस मज़बह के आगे ले जाने लगे। <sup>11</sup> तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, 'मज़बह की तक्रदीस के लिए एक — एक रईस एक — एक दिन अपना हदिया पेश करे।' <sup>12</sup> इसलिए पहले दिन यहूदाह के क़बीले में से 'अम्मीनदाब के बेटे नहसोन ने अपना हदिया पेश करा। <sup>13</sup> और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक सौ तीस मिस्काल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्काल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था; <sup>14</sup> दस मिस्काल सोने का एक चम्मच, जो खुशबू से भरा था; <sup>15</sup> सोख़्तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा,

एक नर यक — साला बर्रा, <sup>16</sup> ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा; <sup>17</sup> और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यक — साला बर्रा। यह 'अम्मीनदाब के बेटे नहसोन का हदिया था। <sup>18</sup> दूसरे दिन ज़ुगर के बेटे नतनीएल ने जो इश्कार के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा। <sup>19</sup> और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक सौ तीस मिस्काल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्काल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था; <sup>20</sup> दस मिस्काल सोने का एक चम्मच, जो खुशबू से भरा था; <sup>21</sup> सोख़्तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर यक — साला बर्रा; <sup>22</sup> ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा; <sup>23</sup> और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यक — साला बर्रा। यह ज़ुगर के बेटे नतनीएल का हदिया था। <sup>24</sup> और तीसरे दिन हेलोन के बेटे इलियाब ने जो ज़बूलून के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा। <sup>25</sup> और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक सौ तीस मिस्काल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्काल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था; <sup>26</sup> दस मिस्काल सोने का एक चम्मच, जो खुशबू से भरा था; <sup>27</sup> सोख़्तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर यक — साला बर्रा; <sup>28</sup> ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा; <sup>29</sup> और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यक — साला बर्रा। यह हेलोन के बेटे इलियाब का हदिया था। <sup>30</sup> चौथे दिन शदियूर के बेटे इलीसूर ने जो रूबिन के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा। <sup>31</sup> और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक सौ तीस मिस्काल चाँदी का एक तबाक़, और सत्तर मिस्काल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था; <sup>32</sup> दस मिस्काल सोने का एक चम्मच, जो खुशबू से भरा था; <sup>33</sup> सोख़्तनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंढा, एक नर यक — साला बर्रा; <sup>34</sup> ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा; <sup>35</sup> और सलामती की कुर्बानी लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यक — साला बर्रा। यह शदियूर के बेटे इलीसूर का हदिया था। <sup>36</sup> और पाँचवे दिन सूरिशद्दी के बेटे सलूमीएल ने जो शमौन के क़बीले का सरदार था, अपना हदिया पेश करा। <sup>37</sup> और उसका हदिया यह था: हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक सौ तीस मिस्काल चाँदी का एक तबाक़ और सत्तर मिस्काल





मेंढा, एक नर यक — साला बर्रा; <sup>82</sup> खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा; <sup>83</sup> और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे, पाँच नर यकसाला बर्रे। यह 'एनान के बेटे अखीरा' का हदिया था। <sup>84</sup> मजबह के मम्सूह होने के दिन जो हदिये उसकी तकदीस के लिए इस्राईली रईसों की तरफ़ से पेश करे गए वह यही थे: या'नी चाँदी के बारह तबाक़, चाँदी के बारह कटोरे, सोने के बारह चम्मच। <sup>85</sup> चाँदी का हर तबाक़ वज़न में एक सौ तीस मिस्काल और हर एक कटोरा सत्तर मिस्काल का था। इन बर्तनों की सारी चाँदी हैकल की मिस्काल के हिसाब से दो हजार चार सौ मिस्काल थी। <sup>86</sup> खुशबू से भरे हुए सोने के बारह चम्मच जो हैकल की मिस्काल की तौल के मुताबिक़ वज़न में दस — दस मिस्काल के थे, इन चम्मचों का सारा सोना एक सौ बीस मिस्काल था। सोख्तनी कुर्बानी के लिए कुल बारह बछड़े, बारह मेंढे, बारह नर यक — साला बर्रे अपनी — अपनी नज़र की कुर्बानी के साथ थे; और खता की कुर्बानी के लिए बारह बकरे थे; <sup>87</sup> सोख्तनी कुर्बानी के लिए कुल बारह बछड़े, बारह मेंढे, बारह नर यक — साला बर्रे अपनी — अपनी नज़र की कुर्बानी के साथ थे; और खता की कुर्बानी के लिए बारह बकरे थे; <sup>88</sup> और सलामती की कुर्बानी के लिए कुल चौबीस बैल, साठ मेंढे, साठ बकरे, साठ नर यक — साला बर्रे थे। मजबह की तकदीस के लिए जब वह मम्सूह हुआ इतना हदिया पेश करा गया। <sup>89</sup> और जब मूसा खुदा से बातें करने को खेमा — ए — इजितमा'अ में गया, तो उसने सरपोश पर से जो शहादत के सन्दूक के ऊपर था, दोनों करुबियों के बीच से वह आवाज़ सुनी जो उससे मुखातिब थी; और उसने उससे बातें की।

## 8

222222 222222 222222

<sup>1</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; <sup>2</sup> “हारून से कह, जब तू चरागों को रोशन करे तो सातों चरागों की रोशनी शमा'दान के सामने हो।” <sup>3</sup> चुनाँचे हारून ने ऐसा ही किया, उसने चरागों को इस तरह जलाया कि शमा'दान के सामने रोशनी पड़े, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था। <sup>4</sup> और शमा'दान की बनावट ऐसी थी कि वह पाये से लेकर फूलों तक गढ़े हुए सोने का बना हुआ था। जो नमूना खुदावन्द ने मूसा को दिखाया उसी के मुवाफ़िक़ उसने शमा'दान को बनाया।

22222222 22 22222-2-22222222

<sup>5</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि <sup>6</sup> “लावियों को बनी — इस्राईल से अलग करके उनको पाक कर।

<sup>7</sup> और उनको पाक करने के लिए उनके साथ यह करना, कि खता का पानी लेकर उन पर छिड़कना; फिर वह अपने सारे जिस्म पर उस्तरा फिरवाएँ, और अपने कपड़े धोएँ, और अपने को साफ़ करें। <sup>8</sup> तब वह एक बछड़ा और उसके साथ की नज़र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा लें, और तू खता की कुर्बानी के लिए एक दूसरा बछड़ा भी लेना। <sup>9</sup> और तू लावियों को खेमा — ए — इजितमा'अ के आगे हाज़िर करना और बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत को जमा' करना। <sup>10</sup> फिर लावियों को खुदावन्द के आगे लाना, तब बनी — इस्राईल अपने — अपने हाथ लावियों पर रखें। <sup>11</sup> और हारून लावियों की बनी — इस्राईल की तरफ़ से हिलाने की कुर्बानी के लिए खुदावन्द के सामने पेश करे, ताकि वह खुदावन्द की खिदमत करने पर रहें। <sup>12</sup> फिर लावी अपने — अपने हाथ बछड़ों के सिरों पर रखें, और तू एक को खता की कुर्बानी और दूसरे को सोख्तनी कुर्बानी के लिए खुदावन्द के सामने पेश करना, ताकि लावियों के वास्ते कफ़ारा दिया जाए। <sup>13</sup> फिर तू लावियों को हारून और उसके बेटों के आगे खड़ा करना और उनको हिलाने की कुर्बानी के लिए खुदावन्द के सामने पेश करना। <sup>14</sup> “तू लावियों को बनी — इस्राईल से अलग करना और लावी मेरे ही ठहरेंगे। <sup>15</sup> इसके बाद लावी खेमा — ए — इजितमा'अ की खिदमत के लिए अन्दर आया करें, इसलिए तू उनको पाक कर और हिलाने की कुर्बानी के लिए उनको पेश करना। <sup>16</sup> इसलिए कि वह सब बनी — इस्राईल में से मुझे बिल्कुल दे दिए गए हैं, क्योंकि मैंने इन ही को उन सभी के बदले जो इस्राईलियों में पहलौठी के बच्चे हैं, अपने लिए ले लिया है। <sup>17</sup> इसलिए कि बनी — इस्राईल के सब पहलौठे, क्या इंसान क्या हैवान मेरे हैं, मैंने जिस दिन मुल्क — ए — मिस्र के पहलौठों को मारा उसी दिन उनको अपने लिए पाक किया। <sup>18</sup> और बनी — इस्राईल के सब पहलौठों के बदले मैंने लावियों को ले लिया है। <sup>19</sup> और मैंने बनी — इस्राईल में से लावियों को लेकर उनको हारून और उसके बेटों को 'अता किया है, ताकि वह खेमा — ए — इजितमा'अ में बनी — इस्राईल की जगह खिदमत करें और बनी — इस्राईल के लिए कफ़ारा दिया करें; ताकि जब बनी — इस्राईल हैकल के नज़दीक आएँ तो उनमें कोई वबा न फैले।” <sup>20</sup> चुनाँचे मूसा और हारून और बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत ने लावियों से ऐसा ही किया; जो कुछ खुदावन्द ने लावियों के बारे में मूसा को हुक्म दिया था, वैसा ही बनी — इस्राईल ने उनके साथ किया। <sup>21</sup> और

लावियों ने अपने आप को गुनाह से पाक करके अपने कपड़े धोए, और हारून ने उनको हिलाने की कुर्बानी के लिए खुदावन्द के सामने पेश करा, और हारून ने उनकी तरफ से कफ़ारा दिया ताकि वह पाक हो जाएँ।<sup>22</sup> इसके बाद लावी अपनी खिदमत बजा लाने को हारून और उसके बेटों के सामने खेमा — ए — इजितमा'अ में जाने लगे। इसलिए जैसा खुदावन्द ने लावियों के बारे में मूसा को हुक्म दिया था उन्होंने वैसा ही उनके साथ किया।<sup>23</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>24</sup> “लावियों के मुत'अल्लिक जो बात है वह यह है, कि पच्चीस बरस से लेकर उससे ऊपर — ऊपर की उम्र में वह खेमा — ए — इजितमा'अ की खिदमत के काम के लिए अन्दर हाज़िर हुआ करें।<sup>25</sup> और जब पचास बरस के हों तो फिर उस काम के लिए न आएँ और न खिदमत करें, <sup>26</sup> बल्कि खेमा — ए — इजितमा'अ में अपने भाइयों के साथ निगहबानी के काम में मशगूल हों, और कोई खिदमत न करें। लावियों को जो — जो काम सौंपे जाएँ उनके मुत'अल्लिक तू उनसे ऐसा ही करना।”

## 9

????? 22-2-????

<sup>1</sup> बनी — इस्राईल के मुल्क — ए — मिस्र से निकलने के दूसरे बरस के पहले महीने में खुदावन्द ने दशत — ए — सीना में मूसा से कहा कि; <sup>2</sup> “बनी इस्राईल 'ईद — ए — फ़सह उसके मु'अय्यन वक्त पर मनाएँ।<sup>3</sup> इसी महीने की चौदहवीं तारीख की शाम को तुम वक्त — ए — मु'अय्यन पर यह 'ईद मनाना, और जितने उसके तौर तरीक़े और रसूम हैं, उन सभी के मुताबिक़ उसे मनाना।” <sup>4</sup> इसलिए मूसा ने बनी — इस्राईल को हुक्म किया कि 'ईद — ए — फ़सह करें।<sup>5</sup> और उन्होंने पहले महीने की चौदहवीं तारीख की शाम को दशत — ए — सीना में 'ईद — ए — फ़सह की और बनी — इस्राईल ने सब पर, जो खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था 'अमल किया। <sup>6</sup> और कई आदमी ऐसे थे जो किसी लाश की वजह से नापाक हो गए थे, वह उस दिन फ़सह न कर सके। इसलिए वह उसी दिन मूसा और हारून के पास आए, <sup>7</sup> और मूसा से कहने लगे, “हम एक लाश की वजह से नापाक हो रहे हैं; फिर भी हम और इस्राईलियों के साथ वक्त — ए — मु'अय्यन पर खुदावन्द की कुर्बानी पेश करने से क्यूँ रोके जाएँ?” <sup>8</sup> मूसा ने उनसे कहा, “ठहर जाओ, मैं ज़रा सुन लूँ कि खुदावन्द तुम्हारे हक़ में क्या हुक्म करता है।” <sup>9</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>10</sup> “बनी — इस्राईल से कह

कि अगर कोई तुम में से या तुम्हारी नसल में से, किसी लाश की वजह से नापाक हो जाए या वह कहीं दूर सफ़र में हो तोभी वह खुदावन्द के लिए 'ईद — ए — फ़सह करे।<sup>11</sup> वह दूसरे महीने की चौदहवीं तारीख की शाम को यह 'ईद मनाएँ और कुर्बानी के गोश्त को बे — खमीरी रोटियों और कड़वी तरकारियों के साथ खाएँ।<sup>12</sup> वह उसमें से कुछ भी सुबह के लिए बाक़ी न छोड़ें, और न उसकी कोई हड्डी तोड़ें, और फ़सह को उसके सारे तौर तरीक़े के मुताबिक़ मानें।<sup>13</sup> लेकिन जो आदमी पाक हो और सफ़र में भी न हो, अगर वह फ़सह करने से बाज़ रहे तो वह आदमी अपनी क़ौम में से अलग कर डाला जाएगा; क्यूँकि उसने मु'अय्यन वक्त पर खुदावन्द की कुर्बानी नहीं पेश की इसलिए उस आदमी का गुनाह उसी के सिर लगेगा।<sup>14</sup> और अगर कोई परदेसी तुम में क़याम करता हो और वह खुदावन्द के लिए फ़सह करना चाहे, तो वह फ़सह के तौर तरीक़े और रसूम के मुताबिक़ उसे माने; तुम देसी और परदेसी दोनों के लिए एक ही क़ानून रखना।”

????? ???? ?

<sup>15</sup> और जिस दिन घर या'नी खेमा — ए — शहादत नस्ब हुआ उसी दिन बादल उस पर छा गया, और शाम को वह घर पर आग सा दिखाई दिया और सुबह तक वैसा ही रहा। <sup>16</sup> और हमेशा ऐसा ही हुआ करता था, कि बादल उस पर छाया रहता और रात को आग दिखाई देती थी। <sup>17</sup> और जब घर पर से वह बादल उठ जाता तो बनी — इस्राईल खाना होते थे, और जिस जगह वह बादल जा कर ठहर जाता वहीं बनी — इस्राईल खेमा लगाते थे। <sup>18</sup> खुदावन्द के हुक्म से बनी — इस्राईल खाना होते, और खुदावन्द ही के हुक्म से वह खेमे लगाते थे; और जब तक बादल घर पर ठहरा रहता वह अपने खेमे डाले पड़े रहते थे। <sup>19</sup> और जब बादल घर पर बहुत दिनों ठहरा रहता, तो बनी — इस्राईल खुदावन्द के हुक्म को मानते और खाना नहीं होते थे। <sup>20</sup> और कभी — कभी वह बादल चंद दिनों तक घर पर रहता, और तब भी वह खुदावन्द के हुक्म से खेमे लगाये रहते और खुदावन्द ही के हुक्म से वह खाना होते थे। <sup>21</sup> फिर कभी — कभी वह बादल शाम से सुबह तक ही रहता, तो जब वह सुबह को उठ जाता तब वह खाना ते थे; और अगर वह रात दिन बराबर रहता, तो जब वह उठ जाता तब ही वह खाना होते थे। <sup>22</sup> और जब तक वह बादल घर पर ठहरा रहता, चाहे दो दिन या एक महीने या एक बरस हो, तब तक बनी — इस्राईल अपने खेमों में मक़ीम रहते और खाना नहीं होते थे; पर जब वह उठ जाता तो वह खाना होते थे। <sup>23</sup> गरज़ वह खुदावन्द के हुक्म से मक़ाम

करते और खुदावन्द ही के हुक्म से खाना होते थे; और जो हुक्म खुदावन्द मूसा के ज़रिए देता, वह खुदावन्द के उस हुक्म \*को माना करते थे।

## 10

????? ?? ?????

1 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 2 “अपने लिए चाँदी के दो नरसिंगे बनवा; वह दोनों गढ़कर बनाए जाएँ, तू उनको जमा'अत के बुलाने और लश्करों की खानगी के लिए काम में लाना। 3 और जब वह दोनों नरसिंगे फूँके, तो सारी जमा'अत खेमा-ए-इजितमा'अके दरवाजे पर तेरे पास इकट्ठी हो जाए। 4 और अगर एक ही फूँके, तो वह रईस जो हज़ारों इस्राईलियों के सरदार हैं तेरे पास जमा' हो। 5 और जब तुम साँस बाँध कर ज़ोर से फूँको, तो वह लश्कर जो पश्चिम की तरफ़ हैं खानगी करें। 6 जब तुम दोबारा साँस बाँध कर ज़ोर से फूँको, तो उन लश्करों को जो दख्खिन की तरफ़ हैं खाना हो। इसलिए खानगी के लिए साँस बाँध कर ज़ोर से नरसिंगा फूँका करें। 7 लेकिन जब जमा'अत को जमा' करना हो तब भी फूँकना, लेकिन साँस बाँध कर ज़ोर से न फूँकना। 8 और हारून के बेटे जो काहिन हैं वह नरसिंगे फूँका करें। यही तौर तरीके हमेशा तुम्हारी नसल — दर — नसल काईम रहे। 9 और जब तुम अपने मुल्क में ऐसे दुश्मन से जो तुम को सताता हो लड़ने को निकलो, तो तुम नरसिंगों को साँस बाँध कर ज़ोर से फूँकना। इस हाल में खुदावन्द तुम्हारे खुदा के सामने तुम्हारी याद होगी और तुम अपने दुश्मनों से नजात पाओगे। 10 और तुम अपनी खुशी के दिन और अपनी मुक़ररा 'ईदों के दिन और अपने महीनों के शुरू' में अपनी सोख्तनी कुर्बानियों और सलामती की कुर्बानियों के वक़्त नरसिंगे फूँकना ताकि उनसे तुम्हारे खुदा के सामने तुम्हारी यादगारी हो; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।”

?????????????? ?? ????? ?? ???????

11 \*और दूसरे साल के दूसरे महीने की बीसवीं तारीख को वह बादल शहादत के घर पर से उठ गया। 12 तब बनी — इस्राईल सीना के जंगल से खाना होकर निकले और वह बादल फारान के जंगल में ठहर गया। 13 इसलिए खुदावन्द के उस हुक्म के मुताबिक़ जो उसने मूसा के ज़रिए दिया था, उनकी पहली खानगी हुई। 14 और सब से पहले बनी यहूदाह के लश्कर का झंडा खाना हुआ और वह अपने दलों के मुताबिक़ चले, उनके लश्कर का सरदार 'अम्मीनदाब का बेटा नहसोन था। 15 और

इश्कार के कबीले के लश्कर का सरदार जुगर का बेटा नतनीएल था। 16 और जबूलून के कबीले के लश्कर का सरदार हेलोन का बेटा इलियाब था। 17 फिर घर उतारा गया और बनी जैरसोन और बनी मिरारी, जो घर को उठाते थे खाना हुए। 18 फिर रूबिन के लश्कर का झंडा आगे बढ़ा और वह अपने दलों के मुताबिक़ चले, शदियूर का बेटा इलीसूर उनके लश्कर का सरदार था। 19 और शमौन के कबीले के लश्कर का सरदार सूरीशदी का बेटा सलूमीएल था। 20 और जद के कबीले के लश्कर का सरदार द'ऊएल का बेटा इलियासफ़ था। 21 फिर क्रिहातियों ने जो हैकल को उठाते थे खानगी की, और उनके पहुँचने तक घर खड़ा कर दिया जाता था। 22 फिर बनी इफ़राईम के लश्कर का झंडा निकला और वह अपने दलों के मुताबिक़ चले, उनके लश्कर का सरदार 'अम्मीहूद का बेटा इलीसमा' था। 23 और मनस्सी के कबीले के लश्कर का सरदार फ़दाहसूर का बेटा जमलीएल था। 24 और बिनयमीन के कबीले के लश्कर का सरदार जिद'औनी का बेटा अबिदान था। 25 और बनी दान के लश्कर का झंडा उनके सब लश्करों के पीछे — पीछे खाना हुआ और वह अपने दलों के मुताबिक़ चले, उनके लश्कर का सरदार 'अम्मीशदी का बेटा अखी'अज़र था। 26 और आशर के कबीले के लश्कर का सरदार 'अकरान का बेटा फ़ज'ईएल था। 27 और नफ़्ताली के कबीले के लश्कर का सरदार एनान का बेटा अखीरा' था। 28 तब बनी — इस्राईल इसी तरह अपने दलों के मुताबिक़ कूच करते और आगे खाना होते थे। 29 इसलिए मूसा ने अपने ससुर र'ऊएल मिदियानी के बेटे होबाब से कहा कि “हम उस जगह जा रहे हैं जिसके बारे में खुदावन्द ने कहा है कि मैं उसे तुम को दूँगा; इसलिए तू भी साथ चल और हम तेरे साथ नेकी करेंगे, क्योंकि खुदावन्द ने बनी — इस्राईल से नेकी का वा'दा किया है।” 30 उसने उसे जवाब दिया, “मैं नहीं चलता, बल्कि मैं अपने वतन को और अपने रिश्तेदारों में लौट कर जाऊँगा।” 31 तब मूसा ने कहा, “हम को छोड़ मत, क्योंकि यह तुझ को मा'लूम है कि हमको वीराने में किस तरह खेमाज़न होना चाहिए, इसलिए तू हमारे लिए आँखों का काम देगा; 32 और अगर तू हमारे साथ चले, तो इतनी बात ज़रूर होगी कि जो नेकी खुदावन्द हम से करे वही हम तुझ से करेंगे।” 33 फिर वह खुदावन्द के पहाड़ से सफ़र करके तीन दिन की राह चले, और तीनों दिन के सफ़र में खुदावन्द के 'अहद का संदूक उनके लिए आरामगाह तलाश करता हुआ उनके आगे — आगे चलता रहा। 34 और जब वह लश्करगाह से

\* 9:23 9:23 खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ \* 10:11 10:11 बनी इस्राईल के मिस्र से निकलने के बाद

खाना होते तो खुदावन्द का बादल दिन भर उनके ऊपर छाया रहता था। <sup>35</sup> और संदूक की खानगी के वक्रत मूसा यह कहा करता, “उठ, ऐ खुदावन्द, तेरे दुश्मन तितर — बितर हो जाएँ, और जो तुझ से कीना रखते हैं वह तेरे आगे से भागें।” <sup>36</sup> और जब वह ठहर जाता तो वह यह कहता था, “ऐ खुदावन्द, हजारों — हजार इस्राईलियों में लौट कर आ जा।”

## 11

११:१-११:११

<sup>1</sup> फिर वह लोग कुड़कुड़ाने और खुदावन्द के सुनते बुरा कहने लगे; चुनाँचे खुदावन्द ने सुना और उसका ग़ज़ब भड़का और खुदावन्द की आग उनके बीच जल उठी, और लश्करगाह को एक किनारे से भसम करने लगी। <sup>2</sup> तब लोगों ने मूसा से फ़रियाद की; और मूसा ने खुदावन्द से दुआ की, तो आग बुझ गई। <sup>3</sup> और उस जगह का नाम तबे'रा पड़ा, क्योंकि खुदावन्द की आग उनमें जल उठी थी। <sup>4</sup> और जो मिली — जुली भीड़ इन लोगों में थी वह तरह — तरह की लालच करने लगी, और बनी — इस्राईल भी फिर रोने और कहने लगे, हम को कौन गोश्त खाने को देगा? <sup>5</sup> हम को वह मछली याद आती है जो हम मिस्र में मुफ़्त खाते थे; और हाय! वह खीरे, और वह खरबूजे, और वह गन्दने, और प्याज़, और लहसन; <sup>6</sup> लेकिन अब तो हमारी जान खुश्क हो गई, यहाँ कोई चीज़ मयस्सर नहीं और मन के अलावा हम को और कुछ दिखाई नहीं देता। <sup>7</sup> और मन धनिये की तरह था और ऐसा नज़र आता था जैसे मोती। <sup>8</sup> लोग इधर — उधर जा कर उसे जमा' करते और उसे चक्की में पीसते या ओखली में कूट लेते थे, फिर उसे हाण्डियों में उबाल कर रोटियाँ बनाते थे; उसका मज़ा ताज़ा तेल का सा था। <sup>9</sup> और रात को जब लश्करगाह में ओस पड़ती तो उसके साथ मन भी गिरता था। <sup>10</sup> और मूसा ने सब घरानों के आदमियों को अपने — अपने खेमे के दरवाजे पर रोते सुना, और खुदावन्द का क्रहर बहुत भड़का और मूसा ने भी बुरा माना। <sup>11</sup> तब मूसा ने खुदावन्द से कहा, “तूने अपने खादिम से यह सख्त बर्ताव क्यों किया? और मुझ पर तेरे करम की नज़र क्यों नहीं हुई, जो तू इन सब लोगों का बोझ मुझ पर डालता है? <sup>12</sup> क्या यह सब लोग मेरे पेट में पड़े थे? क्या यह मुझ ही से पैदा हुए थे जो तू मुझे कहता है कि जिस तरह से बाप दूध पीते बच्चे को उठाए — उठाए फिरता है, उसी तरह मैं इन लोगों को अपनी गोद में उठा कर उस मुल्क में ले जाऊँ जिसके देने की क़सम तूने उनके बाप दादा से खाई है? <sup>13</sup> मैं इन सब

लोगों को कहाँ से गोश्त ला कर दूँ? क्योंकि वह यह कह — कह कर मेरे सामने रोते हैं, कि हम को गोश्त खाने को दे। <sup>14</sup> मैं अकेला इन सब लोगों को नहीं सम्भाल सकता, क्योंकि यह मेरी ताक़त से बाहर है। <sup>15</sup> और जो तुझे मेरे साथ यही बर्ताव करना है तो मेरे ऊपर अगर तेरे करम की नज़र हुई है, तो मुझे एक ही बार में जान से मार डाल ताकि मैं अपनी बुरी हालत देखने न पाऊँ।”

११:१२-११:२५

<sup>16</sup> खुदावन्द ने मूसा से कहा, “बनी — इस्राईल के बुज़ुर्गों में से सत्तर मर्द, जिनको तू जानता है कि क्रौम के बुज़ुर्ग और उनके सरदार हैं मेरे सामने जमा' कर और उनको खेमा — ए — इजितमा'अ के पास ले आ; ताकि वह तेरे साथ वहाँ खड़े हों। <sup>17</sup> और मैं उतर कर तेरे साथ वहाँ बातें करूँगा, और मैं उस रूह में से जो तुझ में है, कुछ लेकर उनमें डाल दूँगा कि वह तेरे साथ क्रौम का बोझ उठाएँ, ताकि तू उसे अकेला न उठाए। <sup>18</sup> और लोगों से कह कि कल के लिए अपने को पाक कर रखो तो तुम गोश्त खाओगे, क्योंकि तुम खुदावन्द के सुनते हुए यह कह — कह कर रोए हो कि हम को कौन गोश्त खाने को देगा? हम तो मिस्र ही में मौज से थे। इसलिए खुदावन्द तुम को गोश्त देगा और तुम खाना। <sup>19</sup> और तुम एक या दो दिन नहीं और न पाँच या दस या बीस दिन, <sup>20</sup> बल्कि एक महीना कामिल उसे खाते रहोगे, जब तक वह तुम्हारे नथुनों से निकलने न लगे और तुम उससे घिन न खाने लगे; क्योंकि तुम ने खुदावन्द को जो तुम्हारे बीच है छोड़ दिया, और उसके सामने यह कह — कह कर रोए हो कि हम मिस्र से क्यों निकल आए?” <sup>21</sup> फिर मूसा कहने लगा, “जिन लोगों में मैं हूँ उनमें छः लाख तो प्यादे ही हैं; और तू ने कहा है कि मैं उनको इतना गोश्त दूँगा कि वह महीने भर उसे खाते रहेंगे। <sup>22</sup> इसलिए क्या भेड़बकरियों के यह रेवड़ और गाय — बैलों के झुण्ड उनकी खातिर ज़बह हों कि उनके लिए बस हो? या समन्दर की सब मछलियाँ उनकी खातिर इकट्ठी की जाएँ कि उन सब के लिए काफ़ी हो?” <sup>23</sup> खुदावन्द ने मूसा से कहा, “क्या खुदावन्द का हाथ छोटा हो गया है? अब तू देख लेगा कि जो मैंने तुझ से कहा है वह पूरा होता है या नहीं।” <sup>24</sup> तब मूसा ने बाहर जाकर खुदावन्द की बातें उन लोगों को कह सुनाई, और क्रौम के बुज़ुर्गों में से सत्तर शख्स इकट्ठे करके उनको खेमे के चारों तरफ़ खड़ा कर दिया। <sup>25</sup> तब खुदावन्द बादल में होकर उतरा और उसने मूसा से बातें कीं, और उस रूह में से जो उसमें थी कुछ लेकर उसे उन सत्तर बुज़ुर्गों में डाला; चुनाँचे

\* 11:3 11:3 मतलब जलता हुआ



जब रूह उनमें आई तो वह नबुव्वत करने लगे, लेकिन बाद में फिर कभी न की। <sup>26</sup> लेकिन उनमें से दो शख्स लश्करगाह ही में रह गए, एक का नाम इलदाद और दूसरे का मेदाद था, उनमें भी रूह आई; यह भी उन्हीं में से थे जिनके नाम लिख लिए गए थे लेकिन यह खेमे के पास न गए, और लश्करगाह ही में नबुव्वत करने लगे। <sup>27</sup> तब किसी जवान ने दौड़ कर मूसा को खबर दी और कहने लगा, कि इलदाद और मेदाद लश्करगाह में नबुव्वत कर रहे हैं। <sup>28</sup> इसलिए मूसा के खादिम नून के बेटे यशू'आ ने, जो उसके चुने हुए जवानों में से था मूसा से कहा, “ऐ मेरे मालिक मूसा, तू उनको रोक दे।” <sup>29</sup> मूसा ने उससे कहा, “क्या तुझे मेरी खातिर रश्क आता है? काश खुदावन्द के सब लोग नबी होते, और खुदावन्द अपनी रूह उन सब में डालता।” <sup>30</sup> फिर मूसा और वह इस्राईली बुजुर्ग लश्करगाह में गए।

????? ?? ??????? ??????

<sup>31</sup> और खुदावन्द की तरफ से एक आँधी चली और समन्दर से बटेरें उड़ा लाई, और उनको लश्करगाह के बराबर और उसके चारों तरफ एक दिन की राह तक इस तरफ और एक ही दिन की राह तक दूसरी तरफ ज़मीन से करीबन दो — दो हाथ ऊपर डाल दिया। <sup>32</sup> और लोगों ने उठ कर उस सारे दिन और उस सारी रात और उसके दूसरे दिन भी बटेरें जमा कीं, और जिसने कम से कम जमा की थीं उसके पास भी दस खोमर के बराबर जमा हो गई; और उन्होंने अपने लिए लश्करगाह की चारों तरफ उनको फैला दिया। <sup>33</sup> और उनका गोश्त उन्होंने दाँतों से काटा ही था और उसे चबाने भी नहीं पाए थे कि खुदावन्द का क्रूर उन लोगों पर भड़क उठा, और खुदावन्द ने उन लोगों को बड़ी सख्त वबा से मारा। <sup>34</sup> इसलिए उस मक़ाम का नाम 'कबरोत हतावा रखा गया, क्योंकि उन्होंने उन लोगों को जिन्होंने लालच किया था वहीं दफ़न किया। <sup>35</sup> और वह लोग कबरोत हतावा से सफ़र करके हसेरात को गए और वहीं हसेरात में रहने लगे।

## 12

????? ?? ??????? ?? ???????????

<sup>1</sup> और मूसा ने एक कूशी 'औरत से ब्याह कर लिया। तब उस कूशी 'औरत की वजह से जिसे मूसा ने ब्याह लिया था, मरियम और हारून उसकी बदगोई करने लगे। <sup>2</sup> वह कहने लगे, “क्या खुदावन्द ने सिर्फ़ मूसा ही से बातें की हैं? क्या उसने हम से भी बातें नहीं कीं?” और खुदावन्द ने यह सुना। <sup>3</sup> और मूसा तो इस ज़मीन के सब आदमियों से ज्यादा हलीम था। <sup>4</sup> तब खुदावन्द ने

† 11:34 11:34 मतलब लालचियों की कब्रें

अचानक मूसा और हारून और मरियम से कहा, “तुम तीनों निकल कर खेमा — ए — इजितमा'अ के पास हाज़िर हो।” तब वह तीनों वहाँ आए। <sup>5</sup> और खुदावन्द बादल के सुतून में होकर उतरा और खेमे के दरवाज़े पर खड़े होकर हारून और मरियम को बुलाया। वह दोनों पास गए। <sup>6</sup> तब उसने कहा, “मेरी बातें सुनो, अगर तुम में कोई नबी हो, तो मैं जो खुदावन्द हूँ उसे रोया में दिखाई दूँगा और ख्वाब में उससे बातें करूँगा। <sup>7</sup> पर मेरा खादिम मूसा ऐसा नहीं है, वह मेरे सारे खान्दान में अमानत दार है; <sup>8</sup> मैं उससे राज़ों में नहीं बल्कि आमने — सामने और सरीह तौर पर बातें करता हूँ, और उसे खुदावन्द का दीदार भी नसीब होता है। इसलिए तुम को मेरे खादिम मूसा की बदगोई करते खौफ़ क्यों न आया?” <sup>9</sup> और खुदावन्द का ग़ज़ब उन पर भड़का और वह चला गया। <sup>10</sup> और बादल खेमे के ऊपर से हट गया, और मरियम कोढ़ से बर्फ़ की तरह सफ़ेद हो गई; और हारून ने जो मरियम की तरफ़ नज़र की तो देखा कि वह कोढ़ी हो गई है। <sup>11</sup> तब हारून मूसा से कहने लगा, “हाय मेरे मालिक, इस गुनाह को हमारे सिर न लगा, क्योंकि हम से नादानी हुई और हम ने खता की। <sup>12</sup> और मरियम की उस मरे हुए की तरह न रहने दे, जिसका जिस्म उसकी पैदाइश ही के वक़्त आधा गला हुआ होता है।” <sup>13</sup> तब मूसा खुदावन्द से फ़रियाद करने लगा, “ऐ खुदा, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, उसे शिफ़ा दे।” <sup>14</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा, “अगर उसके बाप ने उसके मुँह पर सिर्फ़ थूका ही होता, तो क्या सात दिन तक वह शर्मिन्दा न रहती? इसलिए वह सात दिन तक लश्करगाह के बाहर बन्द रहे, इसके बाद वह फिर अन्दर आने पाए।” <sup>15</sup> चुनाँचे मरियम सात दिन तक लश्करगाह के बाहर बन्द रही, और लोगों ने जब तक वह अन्दर आने न पाई खाना न हुए। <sup>16</sup> इसके बाद वह लोग हसेरात से खाना हुए और फ़ारान के जंगल में पहुँच कर उन्होंने खेमे लगाए।

## 13

????? ??????????? ?? ?????? ??????

<sup>1</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, <sup>2</sup> “तू आदमियों को भेज कि वह मुल्क — ए — कना'न का, जो मैं बनी — इस्राईल को देता हूँ हाल दरियाफ़्त करें; उनके बाप — दादा के हर कबीले से एक आदमी भेजना जो उनके यहाँ का रईस हो।” <sup>3</sup> चुनाँचे मूसा ने खुदावन्द के इरशाद के मुवाफ़िक़ फ़ारान के जंगल से ऐसे आदमी खाना किए

जो बनी — इस्राईल के सरदार थे।<sup>4</sup> उनके यह नाम थे: रुबिन के कबीले से ज़कूर का बेटा सम्मूअ,<sup>5</sup> और शमौन के कबीले से होरी का बेटा साफ़त,<sup>6</sup> और यहूदाह के कबीले से यफुना का बेटा कालिब,<sup>7</sup> और इश्कार के कबीले से युसुफ़ का बेटा इज़ाल,<sup>8</sup> और इफ़राईम के कबीले से नून का बेटा होसे'अ,<sup>9</sup> और बिनयमीन के कबीले से रफू का बेटा फ़ल्ली,<sup>10</sup> और जबूलून के कबीले से सोदी का बेटा जदीएल,<sup>11</sup> और यूसुफ़ के कबीले या'नी मनस्सी के कबीले से सूसी का बेटा जदी,<sup>12</sup> और दान के कबीले से जमल्ली का बेटा 'अम्मीएल,<sup>13</sup> और आशर के कबीले से मीकाएल का बेटा सतूर,<sup>14</sup> और नफ़ताली के कबीले से वुफ़सी का बेटा नखबी,<sup>15</sup> और जद के कबीले से माकी का बेटा ज्यूएल।<sup>16</sup> यही उन लोगों के नाम हैं जिनको मूसा ने मुल्क का हाल दरियाफ़्त करने को भेजा था। और नून के बेटे होसे'अ का नाम मूसा ने यशू'अ रखवा।<sup>17</sup> और मूसा ने उनको खाना किया ताकि मुल्क — ए — कना'न का हाल दरियाफ़्त करें और उनसे कहा, “तुम इधर दख्खन की तरफ़ से जाकर पहाड़ों में चले जाना।<sup>18</sup> और देखना कि वह मुल्क कैसा है, और जो लोग वहाँ बसे हुए हैं वह कैसे हैं, ज़ोरावर हैं या कमज़ोर और थोड़े से हैं या बहुत।<sup>19</sup> और जिस मुल्क में वह आबाद हैं वह कैसा है, अच्छा है या बुरा; जिन शहरों में वह रहते हैं वह कैसे हैं, आया वह खेतों में रहते हैं या किलों में।<sup>20</sup> और वहाँ की ज़मीन कैसी है, ज़रखेज़ है या बंजर और उसमें दरख़्त हैं या नहीं; तुम्हारी हिम्मत बन्धी रहे और तुम उस मुल्क का कुछ फल लेते आना।” और वह मौसम अंगूर की पहली फ़सल का था।<sup>21</sup> तब वह खाना हुए और दशत — ए — सीन से रहोब तक जो हमात के रास्ते में है, मुल्क को खूब देखा भाला।<sup>22</sup> और वह दख्खन की तरफ़ से होते हुए हबरून तक गए, जहाँ 'अनाक के बेटे अखीमान और सीसी और तलमी रहते थे और हबरून जुअन से जो मिस्र में है, सात बरस आगे बसा था।<sup>23</sup> और वह वादी — ए — इस्काल में पहुँचे, वहाँ से उन्होंने अंगूर की एक डाली काट ली जिसमें एक ही गुच्छा था, और जिसे दो आदमी एक लाठी पर लटकाए हुए लेकर गए; और वह कुछ अनार और अंजीर भी लाए।<sup>24</sup> उसी गुच्छे की वजह से जिसे इस्राईलियों ने वहाँ से काटा था, उस जगह का नाम वादी — ए — \*इस्काल पड़ गया।

\*\*\*\*\*

<sup>25</sup> और चालीस दिन के बाद वह उस मुल्क का हाल दरियाफ़्त करके लौटे।<sup>26</sup> और वह चले और मूसा और हारून और बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत के पास दशत — ए — फ़ारान के कादिस में आए, और उनकी और सारी जमा'अत को सब हाल सुनाया, और उस मुल्क का फल उनको दिखाया।<sup>27</sup> और मूसा से कहने लगे, “जिस मुल्क में तूने हम को भेजा था हम वहाँ गए; वाक़'ई दूध और शहद उसमें बहुत है, और यह वहाँ का फल है।<sup>28</sup> लेकिन जो लोग वहाँ बसे हुए हैं वह ज़ोरावर हैं और उनके शहर बड़े — बड़े और फ़सीलदार हैं, और हम ने बनी 'अनाक को भी वहाँ देखा।<sup>29</sup> उस मुल्क के दख्खनी हिस्से में तो अमालीकी आबाद हैं, और हिती और यबूसी और अमोरी पहाड़ों पर रहते हैं, और समन्दर के साहिल पर और यरदन के किनारे — किनारे कना'नी बसे हुए हैं।”<sup>30</sup> तब कालिब ने मूसा के सामने लोगों को चुप कराया और कहा, “चलो, हम एक दम जा कर उस पर कब्ज़ा करें, क्योंकि हम इस काबिल हैं कि उस पर हासिल कर लें।”<sup>31</sup> लेकिन जो और आदमी उसके साथ गए थे वह कहने लगे, “हम इस लायक नहीं हैं कि उन लोगों पर हमला करें, क्योंकि वह हम से ज्यादा ताक़तवर हैं।”<sup>32</sup> इन आदमियों ने बनी — इस्राईल को उस मुल्क की, जिसे वह देखने गए थे बुरी खबर दी, और यह कहा, “वह मुल्क जिसका हाल दरियाफ़्त करने को हम उसमें से गुज़रे, एक ऐसा मुल्क है जो अपने बाशिन्दों को खा जाता है; और वहाँ जितने आदमी हम ने देखे वह सब बड़े क्रदावर हैं।<sup>33</sup> और हम ने वहाँ बनी 'अनाक को भी देखा जो जब्बार है और जब्बारों की नसल से है, और हम तो अपनी ही निगाह में ऐसे थे जैसे टिड्डे होते हैं और ऐसे ही उनकी निगाह में थे।”

## 14

\*\*\*\*\*

<sup>1</sup> तब सारी जमा'अत ज़ोर ज़ोर से चीखने लगी और वह लोग उस रात रोते ही रहे।<sup>2</sup> और कुल बनी — इस्राईल मूसा और हारून की शिकायत करने लगे, और सारी जमा'अत उनसे कहने लगी हाय काश हम मिस्र ही में मर जाते या काश इस वीरान ही में मरते।<sup>3</sup> खुदावन्द क्यूँ हम को उस मुल्क में ले जा कर तलवार से क़त्ल कराना चाहता है? <sup>4</sup> “फिर तो हमारी बीवियाँ और बाल बच्चे लूट का माल ठहरेंगे, क्या हमारे लिए बेहतर न होगा कि हम मिस्र को वापस चले जाएँ?” फिर वह आपस में कहने लगे, “आओ हम किसी को अपना सरदार बना लें, और मिस्र को लौट चलें।”<sup>5</sup> तब मूसा

\* 13:24 13:24 मतलब गुच्छा, खोशा, झुरमुट † 13:27 13:27 अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क

और हारून बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत के सामने औधे मुँह हो गए। <sup>6</sup> और नून का बेटा यशू'अ और यफुन्ना का बेटा कालिब, जो उस मुल्क का हाल दरियाफ्त करने वालों में से थे, अपने — अपने कपड़े फाड़ कर <sup>7</sup> बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत से कहने लगे कि “वह मुल्क जिसका हाल दरियाफ्त करने को हम उसमें से गुजरे, बहुत अच्छा मुल्क है। <sup>8</sup> अगर खुदा हम से राज़ी रहे तो वह हम को उस मुल्क में पहुँचाएगा, और वही मुल्क जिस में दूध और शहद बहता है हम को देगा। <sup>9</sup> सिर्फ़ इतना हो कि तुम खुदावन्द से बगावत न करो और न उस मुल्क के लोगों से डरो; वह तो हमारी खुराक हैं, उनकी पनाह उनके सिर पर से जाती रही है और हमारे साथ खुदावन्द है; इसलिए उनका खौफ़ न करो।” <sup>10</sup> तब सारी जमा'अत बोल उठी कि इनको संगसार करो। उस वक़्त खेमा — ए — इजितमा'अ में सब बनी — इस्राईल के सामने खुदावन्द का जलाल नुमायाँ हुआ। <sup>11</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि “यह लोग कब तक मेरी तौहीन करते रहेंगे? और बावजूद उन सब निशान — आत को जो मैंने इनके बीच किए हैं, कब तक मुझ पर ईमान नहीं लाएँगे? <sup>12</sup> मैं इनको वबा से मारूँगा और मीरास से खारिज करूँगा, और तुझे एक ऐसी क़ौम बनाऊँगा जो इनसे कहीं बड़ी और ज्यादा ज़ोरावर हो।”

2222 22 22222 22 2222 22222222 2222

<sup>13</sup> मूसा ने खुदावन्द से कहा, “तब तो मिस्री, जिनके बीच से तू इन लोगों को अपने ज़ोर — ए — बाज़ू से निकाल ले आया यह सुनेंगे, <sup>14</sup> और उसे इस मुल्क के बाशिन्दों को बताएँगे। उन्होंने सुना है कि तू जो खुदावन्द है इन लोगों के बीच रहता है, क्योंकि तू ऐ खुदावन्द सरीह तौर पर दिखाई देता है, और तेरा बादल इन पर साया किए रहता है, और तू दिन को बादल के सुतून में और रात को आग के सुतून में हो कर इनके आगे — आगे चलता है। <sup>15</sup> तब अगर तू इस क़ौम को एक अकेले आदमी की तरह जान से मार डाले, तो वह क़ौम जिन्होंने तेरी शोहरत सुनी कहेंगी; <sup>16</sup> कि चूँकि खुदावन्द इस क़ौम को उस मुल्क में, जिसे उसने इनको देने की क़सम खाई थी पहुँचा न सका, इसलिए उसने इनको वीरान में हलाक कर दिया। <sup>17</sup> तब खुदावन्द की कुदरत की 'अज़मत तेरे ही इस क़ौल के मुताबिक़ ज़ाहिर हो, <sup>18</sup> कि खुदावन्द क्रहर करने में धीमा और शफ़क़त में ग़नी है, वह गुनाह और ख़ता को बख़्श देता है लेकिन मुजरिम को हरगिज़ बरी नहीं करेगा, क्योंकि वह बाप

दादा के गुनाह की सज़ा उनकी औलाद को तीसरी और चौथी नसल तक देता है। <sup>19</sup> इसलिए तू अपनी रहमत की फ़िरावानी से इस उम्मत का गुनाह, जैसे तू मिस्र से लेकर यहाँ तक इन लोगों को मु'आफ़ करता रहा है अब भी मु'आफ़ कर दे।” <sup>20</sup> खुदावन्द ने कहा, “मैंने तेरी दरख़्वास्त के मुताबिक़ मुआफ़ किया; <sup>21</sup> लेकिन मुझे अपनी हयात की क़सम और खुदावन्द के जलाल की क़सम जिससे सारी ज़मीन मा'मूर होगी, <sup>22</sup> चूँकि इन सब लोगों ने जिन्होंने बावजूद मेरे जलाल के देखने के, और बावजूद उन निशान — आत को जो मैंने मिस्र में और इस वीरान में दिखाए, फिर भी दस बार मुझे आजमाया और मेरी बात नहीं मानी; <sup>23</sup> इसलिए वह उस मुल्क को जिसके देने की क़सम मैंने उनके बाप दादा से खाई थी देखने भी न पायेंगे और जिन्होंने मेरी तौहीन की है उन में से भी कोई उसे देखने नहीं पाएगा। <sup>24</sup> लेकिन इसलिए कि मेरे बन्दे कालिब का कुछ और ही मिज़ाज था और उसने मेरी पूरी पैरवी की है, मैं उसको उस मुल्क में जहाँ वह हो आया है पहुँचाऊँगा और उसकी औलाद उसकी वारिस होगी। <sup>25</sup> और वादी में तो 'अमालीकी और कना'नी बसे हुए हैं, इसलिए कल तुम घूम कर उस रास्ते से जो बहर — ए — कुलजुम को जाता है वीरान में दाख़िल हो जाओ।”

22222 22 22222222222 22 2222 2222

<sup>26</sup> और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा, <sup>27</sup> “मैं कब तक इस ख़बीस गिरोह की जो मेरी शिकायत करती रहती है, बर्दाश्त करूँ? बनी — इस्राईल जो मेरे बरख़िलाफ़ शिकायतें करते रहते हैं, मैंने वह सब शिकायतें सुनी हैं। <sup>28</sup> इसलिए तुम उससे कह दो, खुदावन्द कहता है, मुझे अपनी हयात की क़सम है कि जैसा तुम ने मेरे सुनते कहा है, मैं तुम से ज़रूर वैसा ही करूँगा। <sup>29</sup> तुम्हारी लाशें इसी वीरान में पड़ी रहेंगी, और तुम्हारी सारी ता'दाद में से या 'नी बीस बरस से लेकर उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के तुम सब जितने गिने गए, और मुझ पर शिकायत करते रहे, <sup>30</sup> इनमें से कोई उस मुल्क में, जिसके बारे में मैंने क़सम खाई थी कि तुमको वहाँ बसाऊँगा, जाने न पाएगा, अलावा यफुन्ना के बेटे कालिब और नून के बेटे यशू'अ के। <sup>31</sup> और तुम्हारे बाल — बच्चे जिनके बारे में तुम ने यह कहा कि वह तो लूट का माल ठहरेंगे, उनको मैं वहाँ पहुँचाऊँगा, और जिस मुल्क को तुम ने हक़ीर जाना वह उसकी हक़ीक़त पहचानेंगे। <sup>32</sup> और तुम्हारा यह हाल होगा कि तुम्हारी लाशें इसी वीरान में पड़ी रहेंगी। <sup>33</sup> और तुम्हारे लड़के बाले चालीस बरस तक

वीरान में आवारा फिरते और तुम्हारी जिनाकारियों का फल पाते रहेंगे, जब तक कि तुम्हारी लाशें वीरान में गल न जाएँ। <sup>34</sup> उन चालीस दिनों के हिसाब से जिनमें तुम उस मुल्क का हाल दरियाफ्त करते रहे थे, अब दिन पीछे एक — एक बरस या'नी चालीस बरस तक, तुम अपने गुनाहों का फल पाते रहोगे; तब तुम मेरे मुखालिफ़ हो जाने को समझोगे। <sup>35</sup> मैं खुदावन्द यह कह चुका हूँ कि मैं इस पूरी खबीस गिरोह से जो मेरी मुखालिफ़त पर मुत्तफ़िक्क है क़त'ई ऐसा ही करूँगा, इनका खातमा इसी वीरान में होगा और वह यहीं मरेंगे।” <sup>36</sup> और जिन आदमियों को मूसा ने मुल्क का हाल दरियाफ्त करने को भेजा था, जिन्होंने लौट कर उस मुल्क की ऐसी बुरी ख़बर सुनाई थी, जिससे सारी जमा'अत मूसा पर कुड़कुड़ाने लगी, <sup>37</sup> इसलिए वह आदमी जिन्होंने मुल्क की बुरी ख़बर दी थी खुदावन्द के सामने वबा से मर गए। <sup>38</sup> लेकिन जो आदमी उस मुल्क का हाल दरियाफ्त करने गए थे उनमें से नून का बेटा यशू'अ और यफ़ुन्ना का बेटा कालिब दोनों जीते बचे रहे। <sup>39</sup> और मूसा ने यह बातें सब बनी इस्राईल से कहीं, तब वह लोग ज़ार — ज़ार रोए। <sup>40</sup> और वह दूसरे दिन सुबह सवेरे उठ कर यह कहते हुए पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगे, कि हम हाज़िर हैं और जिस जगह का वा'दा खुदावन्द ने किया है वहाँ जाएँगे क्योंकि हम से ख़ता हुई है। <sup>41</sup> मूसा ने कहा, “तुम क्यों अब खुदावन्द की हुक्म उदूली करते हो? इससे कोई फ़ाइदा न होगा। <sup>42</sup> ऊपर मत चढ़ो क्योंकि खुदावन्द तुम्हारे बीच नहीं है ऐसा न हो कि अपने दुश्मनों के मुकाबले में शिकस्त खाओ। <sup>43</sup> क्योंकि वहाँ तुम से आगे 'अमालीकी और कना'नी लोग हैं, इसलिए तुम तलवार से मारे जाओगे; क्योंकि खुदावन्द से तुम फिर गए हो, इसलिए खुदावन्द तुम्हारे साथ नहीं रहेगा।” <sup>44</sup> लेकिन वह शोखी करके पहाड़ की चोटी तक चढ़े चले गए, लेकिन खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक और मूसा लश्करगाह से बाहर न निकले। <sup>45</sup> तब 'अमालीकी और कना'नी जो उस पहाड़ पर रहते थे, उन पर आ पड़े और उनको क़त्ल किया और हरमा तक उनको मारते चले आए।

## 15

?????????????? ?? ???? ?????

<sup>1</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “बनी — इस्राईल से कह कि जब तुम अपने रहने के मुल्क में जो मैं तुम को देता हूँ पहुँचो <sup>3</sup> और खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी, या'नी सोख्तनी कुर्बानी या ख़ास

मिन्नत का ज़बीहा या रज़ा की कुर्बानी पेश करो, या अपनी मु'अय्यन 'ईदों में राहतअंगेज़ खुशबू के तौर पर खुदावन्द के सामने गाय बैल या भेड़ बकरी चढ़ाओ। <sup>4</sup> तो जो शख्स अपना हृदिया लाए, वह खुदावन्द के सामने नज़र की कुर्बानी के तौर पर ऐफ़ा के दस्वें हिस्से के बराबर मैदा जिसमें चौथाई हीन के बराबर तेल मिला हुआ हो, <sup>5</sup> और तपावन के तौर पर चौथाई हीन के बराबर मय भी लाए; तू अपनी सोख्तनी कुर्बानी या अपने ज़बीहे के हर बर्रे के साथ इतना ही तैयार किया करना। <sup>6</sup> और हर मेंढे के साथ ऐफ़ा के पाँचवे हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तिहाई हीन के बराबर तेल मिला हुआ हो, नज़र की कुर्बानी के तौर पर लाना। <sup>7</sup> और तपावन के तौर पर तिहाई हीन के बराबर मय देना, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू ठहरे। <sup>8</sup> और जब तू खुदावन्द के सामने सोख्तनी कुर्बानी या ख़ास मिन्नत के ज़बीहे या सलामती के ज़बीहे के तौर पर बछड़ा पेश करे, <sup>9</sup> तो वह उस बछड़े के साथ नज़र की कुर्बानी के तौर पर ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें आधे हीन के बराबर तेल मिला हुआ हो चढ़ाए। <sup>10</sup> और तू तपावन के तौर पर आधे हीन के बराबर मय पेश करना, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी ठहरे। <sup>11</sup> “हर बछड़े, और हर मेंढे, और हर नर बर्रे या बकरी के बच्चे के लिए ऐसा ही किया जाए। <sup>12</sup> तुम जितने जानवर लाओ, उनके शुमार के मुताबिक़ एक — एक के साथ ऐसा ही करना। <sup>13</sup> जितने देसी खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी पेश करें वह उस वक़्त यह सब काम इसी तरीक़े से करें। <sup>14</sup> और अगर कोई परदेसी तुम्हारे साथ क़याम करता हो या जो कोई नसलों से तुम्हारे साथ रहता आया हो, और वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी पेश करना चाहे तो जैसा तुम करते हो वह भी वैसा ही करे। <sup>15</sup> मजमे' के लिए, या'नी तुम्हारे लिए और उस परदेसी के लिए जो तुम में रहता हो नसल — दर — नसल हमेशा एक ही क़ानून रहेगा; खुदावन्द के आगे परदेसी भी वैसे ही हों जैसे तुम हो। <sup>16</sup> तुम्हारे लिए और परदेसियों के लिए जो तुम्हारे साथ रहते हैं एक ही शरी'अत और एक ही क़ानून हो।” <sup>17</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; <sup>18</sup> “बनी — इस्राईल से कह, जब तुम उस मुल्क में पहुँचो, जहाँ मैं तुम को लिए जाता हूँ, <sup>19</sup> और उस मुल्क की रोटी खाओ तो खुदावन्द के सामने उठाने की कुर्बानी पेश करना। <sup>20</sup> तुम अपने पहले गूँधे हुए आटे का एक गिर्दा उठाने की कुर्बानी के तौर पर अदा करना, जैसे खलीहान की उठाने की कुर्बानी



को लेकर उठाते हो वैसे ही इसे भी उठाना। <sup>21</sup> तुम अपनी नसल — दर — नसल अपने पहले ही गूँधे हुए आटे में से कुछ लेकर उसे खुदावन्द के सामने उठाने की कुर्बानी के तौर पर पेश करना। <sup>22</sup> “और अगर तुम से भूल हो जाए और तुमने उन सब हुक्मों पर जो खुदावन्द ने मूसा को दिए ‘अमल न किया हो,’ <sup>23</sup> या ‘नी जिस दिन से खुदावन्द ने हुक्म देना शुरू किया उस दिन से लेकर आगे — आगे, जो कुछ हुक्म खुदावन्द ने तुम्हारी नसल — दर — नसल मूसा के ज़रिए’ तुम को दिया है, <sup>24</sup> उसमें अगर अनजाने में कोई खता हो गई हो और जमा’अत उससे वाकिफ़ न हो तो सारी जमा’अत एक बछड़ा सोख्तनी कुर्बानी के लिए पेश करे, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज खुशबू हो, और उसके साथ शरा’ के मुताबिक़ उसकी नज़र की कुर्बानी और उसका तपावन भी चढ़ाए, और खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा पेश करे। <sup>25</sup> यूँ काहिन बनी — इस्राईल की सारी जमा’अत के लिए कफ़फ़ारा दे तो उनकी मु’आफ़ी मिलेगी, क्योंकि यह महज़ भूल थी और उन्होंने उस भूल के बदले वह कुर्बानी भी चढ़ाई जो खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी ठहरती है, और खता की कुर्बानी भी खुदावन्द के सामने पेश की। <sup>26</sup> तब बनी — इस्राईल की सारी जमा’अत को और उन परदेसियों को भी जो उनमें रहते हैं मु’आफ़ी मिलेगी, क्योंकि जमा’अत के ऐतबार से यह अनजाने में हुआ। <sup>27</sup> और अगर एक ही शख्स अनजाने में खता करे तो वह यक — साला बकरी खता की कुर्बानी के लिए चढ़ाए।” <sup>28</sup> यूँ काहिन उस शख्स की तरफ़ से जिसने अनजाने में खता की, उसकी खता के लिए खुदावन्द के सामने कफ़फ़ारा दे तो उसे मु’आफ़ी मिलेगी। <sup>29</sup> जिस शख्स ने अनजाने में खता की हो, उसके लिए तुम एक ही शरा’ रखना चाहे वह बनी — इस्राईल में से देसी हो या परदेसी जो उनमें रहता हो। <sup>30</sup> लेकिन जो शख्स बेख़ौफ़ हो कर गुनाह करे, चाहे वह देसी हो या परदेसी, वह खुदावन्द की बे’इज़्ज़ती करता है; वह शख्स अपने लोगों में से अलग किया जाएगा। <sup>31</sup> क्योंकि उसने खुदावन्द के कलाम की हिक़ारत की और उसके हुक्म को तोड़ डाला, वह शख्स बिल्कुल अलग कर दिया जाएगा, उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा।”

2222 22 22 22222222 2222 22 22222

<sup>32</sup> और जब बनी — इस्राईल वीरान में रहते थे, उन दिनों एक आदमी उनको सबत के दिन लकड़ियाँ जमा’ करता हुआ मिला। <sup>33</sup> और जिनकी वह लकड़ियाँ जमा’ करता हुआ मिला वह उसे मूसा और हारून और सारी जमा’अत के पास ले गए। <sup>34</sup> उन्होंने उसे हवालात

में रखवा, क्योंकि उनको यह नहीं बताया गया था कि उसके साथ क्या करना चाहिए <sup>35</sup> तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, “यह शख्स ज़रूर जान से मारा जाए; सारी जमा’अत लश्करगाह के बाहर उसे पथराव करे।” <sup>36</sup> चुनाँचे जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था, उसके मुताबिक़ सारी जमा’अत ने उसे लश्करगाह के बाहर ले जाकर पथराव किया और वह मर गया।

22222222 22 22222222

<sup>37</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>38</sup> “बनी — इस्राईल से कह कि वह नसल — दर — नसल अपने लिबासों के किनारों पर झालर लगाएँ, और हर किनारे की झालर के ऊपर आसमानी रंग का डोरा टाँके। <sup>39</sup> यह झालर तुम्हारे लिए ऐसी हो कि जब तुम उसे देखो तो खुदावन्द के सारे हुक्मों को याद करके उन पर ‘अमल करो और अपने दिल और आँखों की ख्वाहिशों की पैरवी में ज़िनाकारी न करते फ़िरो जैसा करते आएं हो; <sup>40</sup> बल्कि मेरे सब हुक्मों को याद करके उनको ‘अमल में लाओ और अपने खुदा के लिए पाक हो। <sup>41</sup> मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, जो तुम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया ताकि तुम्हारा खुदा ठहरूँ। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।”

## 16

22222 22 2222222

<sup>1</sup> और क्रोरह बिन इज़हार बिन क्रिहात बिन लावी ने बनी रूबिन में से इलियाब के बेटों दातन और अबीराम, और पलत के बेटे ओन के साथ मिल कर और आदमियों को साथ लिया; <sup>2</sup> और वह और बनी — इस्राईल में से ढाई सौ और अशखास जो जमा’अत के सरदार और चीदा और मशहूर आदमी थे, मूसा के मुकाबले में उठे; <sup>3</sup> और वह मूसा और हारून के खिलाफ़ इकट्ठे होकर उनसे कहने लगे, “तुम्हारे तो बड़े दावे हो चले, क्योंकि जमा’अत का एक — एक आदमी पाक है और खुदावन्द उनके बीच रहता है। इसलिए तुम अपने आप को खुदावन्द की जमा’अत से बड़ा क्योंकर ठहराते हो?” <sup>4</sup> मूसा यह सुन कर मुँह के बल गिरा। <sup>5</sup> फिर उसने क्रोरह और उसके कुल फ़रीक़ से कहा कि “कल सुबह खुदावन्द दिखा देगा कि कौन उसका है और कौन पाक है और वह उसी को अपने नज़दीक़ आने देगा, क्योंकि जिसे वह खुद चुनेगा उसे वह अपनी कुरबत भी देगा। <sup>6</sup> इसलिए ऐ क्रोरह और उसके फ़रीक़ के लोगों, तुम यूँ करो कि अपना अपना खुशबूदान लो, <sup>7</sup> और उनमें आग भरो और खुदावन्द के सामने कल उनमें खुशबू जलाओ, तब जिस शख्स को खुदावन्द चुन ले वही पाक ठहरेगा।

ऐ लावी के बेटो, बड़े — बड़े दा'वे तो तुम्हारे हैं।”<sup>8</sup> फिर मूसा ने क्रोरह की तरफ़ मुखातिब होकर कहा, ऐ बनी लावी सुनो,<sup>9</sup> क्या यह तुम को छोटी बात दिखाई देती है कि इस्राईल के खुदा ने तुम को बनी — इस्राईल की जमा'अत में से चुन कर अलग किया, ताकि तुम को वह अपनी कुरबत बरूखे और तुम खुदावन्द के घर की खिदमत करो, और जमा'अत के आगे खड़े हो कर उसकी भी खिदमत बजा लाओ।<sup>10</sup> और तुझे और तेरे सब भाइयों को जो बनी लावी हैं, अपने नज़दीक आने दिया? इसलिए क्या अब तुम कहानत को भी चाहते हो? <sup>11</sup> इसीलिए तू और तेरे फ़रीक़ के लोग, यह सब के सब खुदावन्द के खिलाफ़ इकट्ठे हुए हैं; और हारून कौन है जो तुम उस की शिकायत करते हो?” <sup>12</sup> फिर मूसा ने दातन और अबीराम को जो इलियाब के बेटे थे बुलवा भेजा; उन्होंने कहा, “हम नहीं आते; <sup>13</sup> क्या यह छोटी बात है कि तू हम को एक ऐसे मुल्क से, जिसमें \*दूध और शहद बहता है निकाल लाया है, कि हमको वीरान में हलाक करे, और उस पर भी यह तुरा है कि अब तू सरदार बन कर हम पर हुकूमत जताता है? <sup>14</sup> इसके अलावा तूने हम को उस मुल्क में भी नहीं पहुँचाया जहाँ \*दूध और शहद बहता है, और न हम को खेतों और ताकिस्तानों का वारिस बनाया; क्या तू इन लोगों की \*आँखें निकाल डालेगा? हम तो नहीं आने के।” <sup>15</sup> तब मूसा बहुत तैश में आ कर खुदावन्द से कहने लगा, “तू उनके हृदिये की तरफ़ तवज्जुह मत कर। मैंने उनसे एक गधा भी नहीं लिया, न उनमें से किसी को कोई नुक़सान पहुँचाया है।” <sup>16</sup> फिर मूसा ने क्रोरह से कहा, “कल तू अपने सारे फ़रीक़ के लोगों को लेकर खुदावन्द के आगे हाज़िर हो; तू भी हो और वह भी हों, और हारून भी हो। <sup>17</sup> और तुम में से हर शख्स अपना खुशबूदान लेकर उसमें खुशबू डाले, और तुम अपने — अपने खुशबूदान को जो शुमार में ढाई सौ होंगे, खुदावन्द के सामने लाओ और तू भी अपना खुशबूदान लाना और हारून भी लाए।” <sup>18</sup> तब उन्होंने अपना अपना खुशबूदान लेकर और उनमें आग रख कर उस पर खुशबू डाला, और खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर मूसा और हारून के साथ आ कर खड़े हुए। <sup>19</sup> और क्रोरह ने सारी जमा'अत को उनके खिलाफ़ खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर जमा' कर लिया था। तब खुदावन्द का जलाल सारी जमा'अत के सामने नुमायाँ हुआ। <sup>20</sup> और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा; <sup>21</sup> कि “तुम अपने आप को इस जमा'अत

से बिल्कुल अलग कर लो, ताकि मैं उनको एक पल में भसम कर दूँ।” <sup>22</sup> तब वह मुँह के बल गिर कर कहने लगे, “ऐ खुदा, सब बशर की रूहों के खुदा! क्या एक आदमी के गुनाह की वजह से तेरा क्रूर सारी जमा'अत पर होगा?” <sup>23</sup> तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>24</sup> “तू जमा'अत से कह कि तुम क्रोरह और दातन और अबीराम के खेमों के आस पास से दूर हट जाओ।” <sup>25</sup> और मूसा उठ कर दातन और अबीराम की तरफ़ गया, और बनी — इस्राईल के बुजुर्ग उसके पीछे पीछे गए। <sup>26</sup> और उसने जमा'अत से कहा, “इन शरीर आदमियों के खेमों से निकल जाओ और उनकी किसी चीज़ को हाथ न लगाओ, ऐसा न हो कि तुम भी उनके सब गुनाहों की वजह से हलाक हो जाओ।” <sup>27</sup> तब वह लोग क्रोरह और दातन और अबीराम के खेमों के आस पास से दूर हट गए; और दातन और अबीराम अपनी बीवियों और बेटों और बाल — बच्चों समेत निकल कर अपने खेमों के दरवाज़ों पर खड़े हुए। <sup>28</sup> तब मूसा ने कहा, “इस से तुम जान लोगे के खुदावन्द ने मुझे भेजा है कि यह सब काम करूँ, क्योंकि मैंने अपनी मर्जी से कुछ नहीं किया। <sup>29</sup> अगर यह आदमी वैसी ही मौत से मरे जो सब लोगों को आती है, या इन पर वैसे ही हादसे गुज़रे जो सब पर गुज़रते हैं, तो मैं खुदावन्द का भेजा हुआ नहीं हूँ। <sup>30</sup> लेकिन अगर खुदावन्द कोई नया करिश्मा दिखाए, और ज़मीन अपना मुँह खोल दे और इनको इनके घर — बार के साथ निगल जाए और यह जीते जी पाताल में समा जाएँ, तो तुम जानना कि इन लोगों ने खुदावन्द की तहकीर की है।” <sup>31</sup> उसने यह बातें खत्म ही की थीं कि ज़मीन उनके पाओं तले फट गई। <sup>32</sup> और ज़मीन ने अपना मुँह खोल दिया और उनको और उनके घर — बार को, और क्रोरह के यहाँ के सब आदमियों को और उनके सारे माल — ओ — अस्बाब को निगल गई। <sup>33</sup> तब वह और उनका सारा घर — बार जीते जो पाताल में समा गए और ज़मीन उनके ऊपर बराबर हो गई, और वह जमा'अत में से खत्म हो गए। <sup>34</sup> और सब इस्राईली जो उनके आस पास थे उनका चिल्लाना सुन कर यह कहते हुए भागे, कि कहीं ज़मीन हम को भी निगल न ले। <sup>35</sup> और खुदावन्द के सामने से आग निकली और उन ढाई सौ आदमियों को जिन्होंने खुशबू पेश करा था भसम कर डाला। <sup>36</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; <sup>37</sup> “हारून काहिन के बेटे इली'एलियाज़र से कह कि वह खुशबूदान को शोलों में से उठा ले और आग के अंगारों को उधर ही बिखेर दे क्योंकि वह पाक हैं। <sup>38</sup> जो खताकार अपनी ही जान के दुश्मन हुए, उनके

\* 16:13 16:13 अज हद ज़रखेज मुल्क † 16:14 16:14 अज हद ज़रखेज मुल्क ‡ 16:14 16:14 धोका देगा

खुशबूदानों के पीट पीट कर पत्तर बनाए जाएँ ताकि वह मज़बह पर मंडे जाएँ, क्योंकि उन्होंने उनको खुदावन्द के सामने रखवा था इसलिए वह पाक हैं, और वह बनी — इस्राईल के लिए एक निशान भी ठहरेंगे।” 39 तब इली'एलियाज़र काहिन ने पीतल के उन खुशबूदानों को उठा लिया जिनमें उन्होंने जो भसम कर दिए गए थे खुशबू पेश करा था, और मज़बह पर मंडने के लिए उनके पत्तर बनवाए: 40 ताकि बनी — इस्राईल के लिए एक यादगार हो कि कोई ग़ैर शख्स जो हारून की नसल से नहीं, खुदावन्द के सामने खुशबू जलाने को नज़दीक न जाए, ऐसा न हो कि वह क्रोह और उसके फ़रीक़ की तरह हलाक हो, जैसा खुदावन्द ने उसको मूसा के ज़रिए' बता दिया था। 41 लेकिन दूसरे ही दिन बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत ने मूसा और हारून की शिकायत की और कहने लगे, कि तुम ने खुदावन्द के लोगों को मार डाला है। 42 और जब वह जमा'अत मूसा और हारून के खिलाफ़ इकट्ठी हो रही थी तो उन्होंने खेमा — ए — इजितमा'अ की तरफ़ निगाह की, और देखा कि बादल उस पर छाया हुआ है और खुदावन्द का जलाल नुमायाँ है। 43 तब मूसा और हारून खेमा — ए — इजितमा'अ के सामने आए। 44 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 45 “तुम इस जमा'अत के बीच से हट जाओ, ताकि मैं इनको एक पल में भसम कर डालूँ।” तब वह मुँह के बल गिरे। 46 और मूसा ने हारून से कहा, “अपना खुशबूदान ले और मज़बह पर से आग लेकर उसमें डाल और उस पर खुशबू जला, और जल्द जमा'अत के पास जाकर उनके लिए कफ़ारा दे क्योंकि खुदावन्द का क्रहर नाज़िल हुआ है और वबा शुरू हो गई।” 47 मूसा के कहने के मुताबिक़ हारून खुशबूदान लेकर जमा'अत के बीच में दौड़ता हुआ गया और देखा कि वबा लोगों में फैलने लगी है, तब उसने खुशबू जलायी और उन लोगों के लिए कफ़ारा दिया। 48 और वह मुर्दाँ और ज़िन्दों के बीच में खड़ा हुआ, तब वबा ख़त्म हुई। 49 तब 'अलावा उनके जो क्रोह के मुआ'मिले की वजह से हलाक हुए थे, चौदह हजार सात सौ आदमी वबा से हलाक गए। 50 फिर हारून लौट कर खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर मूसा के पास आया और वबा ख़त्म हो गई।

## 17

1 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 2 “बनी —

इस्राईल से गुप्तगू करके उनके सब सरदारों से उनके

आबाई खान्दानों के मुताबिक, हर खान्दान एक लाठी के हिसाब से बारह लाठियाँ ले; और हर सरदार का नाम उसी की लाठी पर लिख, 3 और लावी की लाठी पर हारून का नाम लिखना। क्योंकि उनके आबाई खान्दानों के हर सरदार के लिए एक लाठी होगी। 4 और उनको लेकर खेमा — ए — इजितमा'अ में \*शहादत के सन्दूक के सामने जहाँ मैं तुम से मुलाक़ात करता हूँ रख देना। 5 और जिस शख्स को मैं चुनूँगा उसकी लाठी से कलियाँ फूट निकलेंगी, और बनी — इस्राईल जो तुम पर कुड़कुड़ाते रहते हैं, वह कुड़कुड़ाना मैं अपने पास से दफ़ा' करूँगा।” 6 तब मूसा ने बनी — इस्राईल से गुप्तगू की, और उनके सब सरदारों ने अपने आबाई खान्दानों के मुताबिक़ हर सरदार एक लाठी के हिसाब से बारह लाठियाँ उस को दीं; और हारून की लाठी भी उनकी लाठियों में थी। 7 और मूसा ने उन लाठियों को शहादत के खेमे में खुदावन्द के सामने रख दिया। 8 और दूसरे दिन जब मूसा शहादत के खेमे में गया, तो देखा कि हारून की लाठी में जो लावी के खान्दान के नाम की थी कलियाँ फूटी हुई और शगूफ़े खिले हुए और पक्के बादाम लगे हैं। 9 और मूसा उन सब लाठियों को खुदावन्द के सामने से निकाल कर सब बनी — इस्राईल के पास ले गया, और उन्होंने देखा और हर शख्स ने अपनी लाठी ले ली। 10 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, “हारून की लाठी शहादत के सन्दूक के आगे धर दे, ताकि वह फ़ित्नाअंगेज़ों के लिए एक निशान के तौर पर रखी रहे, और इस तरह तू उनकी शिकायतें जो मेरे खिलाफ़ होती रहती हैं बन्द कर दे ताकि वह हलाक न हों।” 11 और मूसा ने जैसा खुदावन्द ने उसे हुक्म दिया था वैसा ही किया। 12 और बनी — इस्राईल ने मूसा से कहा, “देख, हम हलाक हुए जाते, हम हलाक हुए जाते, हम सब के सब हलाक हुए जाते हैं। 13 जो कोई खुदावन्द के घर के नज़दीक जाता है, मर जाता है। तो क्या हम सब के सब हलाक ही हो जाएंगे?”

## 18

1 और खुदावन्द ने हारून से कहा कि, हैकल का बार

— ए — गुनाह तुझ पर और तेरे बेटों और तेरे आबाई खान्दान पर होगा, और तुम्हारी कहानत का बार — ए — गुनाह भी तुझ पर और तेरे बेटों पर होगा। 2 और तू लावी के कबीले या'नी अपने बाप के कबीले के लोगों को भी जो तेरे भाई हैं अपने साथ ले आया कर, ताकि वह तेरे

\* 17:4 17:4 देखें, खुरुज 31:18; 32:15; 25:15, 21; 25:22; 26:33 — 34

साथ होकर तेरी खिदमत करें; लेकिन शहादत के खेमे के आगे तू और तेरे बेटे ही आया करें। <sup>3</sup> वह तेरी खिदमत और सारे खेमे की मुहाफ़िज़त करें; सिर्फ़ वह हैकल के बर्तनों और मज़बह के नज़दीक न जाएँ, ऐसा न हो कि वह भी और तुम भी हलाक हो जाओ। <sup>4</sup> इसलिए वह तेरे साथ होकर खेमा — ए — इजितमा'अ और खेमे के इस्ते'माल की सब चीज़ों की मुहाफ़िज़त करें, और कोई ग़ैर शख्स तुम्हारे नज़दीक न आने पाए। <sup>5</sup> और तुम हैकल और मज़बह की मुहाफ़िज़त करो ताकि आगे को फिर बनी इस्राईल पर क़हर नाज़िल न हो। <sup>6</sup> और देखो, मैंने बनी लावी को जो तुम्हारे भाई हैं बनी — इस्राईल से अलग करके खुदावन्द की खातिर बख़्शिश के तौर पर तुम को सुपुर्द किया, ताकि वह खेमा — ए — इजितमा'अ की खिदमत करें। <sup>7</sup> लेकिन मज़बह की और पर्दे के अन्दर की खिदमत तेरे और तेरे बेटों के ज़िम्मे है; इसलिए उसके लिए तुम अपनी कहानत की हिफ़ाज़त करना, वहाँ तुम ही खिदमत किया करना, कहानत की खिदमत का शर्फ़ मैं तुम को बख़्शता हूँ और जो ग़ैर शख्स नज़दीक आए वह जान से मारा जाए।

१८:१० १८:१० १८:१० १८:१० १८:१० १८:१० १८:१० १८:१० १८:१० १८:१०

<sup>8</sup> फिर खुदावन्द ने हारून से कहा, देख, मैंने बनी — इस्राईल की सब पाक चीज़ों में से उठाने की कुर्बानियाँ तुझे दे दीं; मैंने उनको तेरे मम्सूह होने का हक़ ठहराकर तुझे और तेरे बेटों को हमेशा के लिए दिया। <sup>9</sup> सबसे पाक चीज़ों में से जो कुछ आग से बचाया जाए वह तेरा होगा; उनके सब चढ़ावे, या'नी नज़र की कुर्बानी और ख़ता की कुर्बानी और जुर्म की कुर्बानी जिनको वह मेरे सामने गुज़राने, वह तेरे और तेरे बेटों के लिए बहुत पाक ठहरें। <sup>10</sup> और तू उनको \*बहुत पाक जान कर खाना; मर्द ही मर्द उनको खाएँ, वह तेरे लिए पाक हैं। <sup>11</sup> और अपने हृदिये में से जो कुछ बनी — इस्राईल उठाने की कुर्बानी और हिलाने की कुर्बानी के तौर पर पेश करें वह भी तेरा ही हो, इनको मैं तुझ को और तेरे बेटे — बेटियों को हमेशा के हक़ के तौर पर देता हूँ; तेरे घराने में जितने पाक हैं वह उनको खाएँ। <sup>12</sup> अच्छे से अच्छा तेल और अच्छी से अच्छी मय और अच्छे से अच्छा गेहूँ, या'नी इन चीज़ों में से जो कुछ वह पहले फल के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करें वह सब मैंने तुझे दिया। <sup>13</sup> उनके मुल्क की सारी पैदावार के पहले पक्के फल, जिनको वह खुदावन्द के सामने लाएँ तेरे होंगे; तेरे घराने में जितने पाक हैं वह उनको खाएँ। <sup>14</sup> बनी — इस्राईल

की हर एक मख्सूस की हुई चीज़ तेरी होगी। <sup>15</sup> उन जानदारों में से जिनको वह खुदावन्द के सामने पेश करते हैं, जितने पहलौठी के बच्चे हैं चाहे वह इंसान के हों चाहे हैवान के वह सब तेरे होंगे; लेकिन इंसान के पहलौठों का फ़िदिया लेकर उनको ज़रूर छोड़ देना और नापाक जानवरों के पहलौठे भी फ़िदिये से छोड़ दिए जाएँ। <sup>16</sup> और जिनका फ़िदिया दिया जाए वह जब एक महीने के हों, तो उनको अपनी ठहराई हुई कीमत के मुताबिक़ हैकल की मिस्काल के हिसाब से जो बीस जीरे की होती है चाँदी की पाँच मिस्काल लेकर छोड़ देना। <sup>17</sup> लेकिन गाय और भेड़ — बकरी के पहलौठों का फ़िदिया न लिया जाए, वह पाक हैं; तू उनका खून मज़बह पर छिड़कना और उनकी चर्बी आतिशीन कुर्बानी के तौर पर जला देना, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू ठहरे। <sup>18</sup> और उनका गोश्त तेरा होगा जिस तरह हिलाई हुई कुर्बानी का सीना और दहनी रान तेरे हैं। <sup>19</sup> जितनी पाक चीज़ें बनी — इस्राईल उठाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करें, उन सभी को मैंने तुझे और तेरे बेटे — बेटियों को हमेशा के हक़ के तौर पर दिया; यह खुदावन्द के सामने तेरे और तेरी नसल के लिए नमक का दाइमी 'अहद है।' <sup>20</sup> और खुदावन्द ने हारून से कहा, उनके मुल्क में तुझे कोई मीरास नहीं मिलेगी और न उनके बीच तेरा कोई हिस्सा होगा क्योंकि बनी — इस्राईल में तेरा हिस्सा और तेरी मीरास मैं हूँ। <sup>21</sup> 'और बनी लावी को उस खिदमत के मु'आवज़े में जो वह खेमा — ए — इजितमा'अ में करते हैं मैंने बनी इस्राईल की सारी दहेकी मौरूसी हिस्से के तौर पर दी। <sup>22</sup> और आगे को बनी — इस्राईल खेमा — ए — इजितमा'अ के नज़दीक हरगिज़ न आएँ, ऐसा न हो कि गुनाह उनके सिर लगे और वह मर जाएँ। <sup>23</sup> बल्कि बनी लावी खेमा — ए — इजितमा'अ की खिदमत करें और वहीं उनका बार — ए — गुनाह उठाएँ; तुम्हारी नसल — दर — नसल यह एक दाइमी क़ानून हो, और बनी इस्राईल के बीच उनको कोई मीरास न मिले। <sup>24</sup> क्योंकि मैंने बनी — इस्राईल की दहेकी को, जिसे वह उठाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करेंगे उनका मौरूसी हिस्सा कर दिया है; इसी वजह से मैंने उनके हक़ में कहा है कि बनी — इस्राईल के बीच उनकी कोई मीरास न मिले।' <sup>25</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, <sup>26</sup> 'तू लावियों से इतना कह देना कि जब तुम बनी — इस्राईल से उस दहेकी को लो जिसे मैंने उनकी तरफ़ से तुम्हारा मौरूसी हिस्सा कर दिया है, तो तुम उस

\* 18:10 18:10 तुम्हें उनको एक मुक़द्दस मक़ाम में खाना है † 18:16 18:16 55 ग्राम



दहेकी की दहेकी खुदावन्द के सामने उठाने की कुर्बानी के लिए पेश करना। <sup>27</sup> और यह तुम्हारी उठाई हुई कुर्बानी तुम्हारी तरफ से ऐसी ही समझी जाएगी जैसे खलिहान का गल्ला और कोल्हू की मय समझी जाती है। <sup>28</sup> इस तरीके से तुम भी अपनी सब दहेकियों में से जो तुम को बनी इस्राईल की तरफ से मिलेगी खुदावन्द के सामने उठाने की कुर्बानी पेश करना, और खुदावन्द की यह उठाई हुई कुर्बानी हारून काहिन को देना। <sup>29</sup> जितने नज़राने तुम को मिलें उनमें से उनका अच्छे से अच्छा हिस्सा, जो पाक किया गया है और खुदावन्द का है, तुम उठाने की कुर्बानी के तौर पर पेश करना। <sup>30</sup> इसलिए तू उनसे कह देना कि जब तुम इनमें से उनका अच्छे से अच्छा हिस्सा उठाने की कुर्बानी के तौर पर पेश करोगे, तो वह लावियों के हक में खलिहान के भरे गल्ले और कोल्हू की भरी मय के बराबर का हिसाब होगा। <sup>31</sup> और इनको तुम अपने घरानों के साथ हर जगह खा सकते हो, क्योंकि यह उस खिदमत के बदले तुम्हारा मजदूरी है जो तुम खेमा — ए — इजितमा'अ में करोगे। <sup>32</sup> और जब तुम उसमें से अच्छे से अच्छा हिस्सा उठाने की कुर्बानी के तौर पर पेश करोगे, तो तुम उसकी वजह से गुनाहगार न ठहरोगे; और खबरदार बनी इस्राईल की पाक चीजों को नापाक न करना ताकि तुम हलाक न हो।”

## 19

?????? ??

<sup>1</sup> और खुदावन्द ने मूसा और हारून से कहा, <sup>2</sup> कि शरी'अत के जिस क़ानून का हुक्म खुदावन्द ने दिया है वह यह है, कि तू बनी — इस्राईल से कह कि वह तेरे पास एक बेदाग और बे — 'ऐब सुर्ख रंग की बछिया लाएँ, जिस पर कभी बोझ न रखवा गया हो। <sup>3</sup> और तुम उसे लेकर इली'एलियाज़र काहिन को देना कि वह उसे लश्करगाह के बाहर ले जाए, और कोई उसे उसी के सामने ज़बह कर दे; <sup>4</sup> और इली'एलियाज़र काहिन अपनी उंगली से उसका कुछ खून लेकर उसे खेमा — ए — इजितमा'अ के आगे की तरफ सात बार छिड़के। <sup>5</sup> फिर कोई उसकी आँखों के सामने उस गाय को जला दे; या'नी उसका चमड़ा, और गोश्त, और खून, और गोबर, इन सब को वह जलाए। <sup>6</sup> फिर काहिन देवदार की लकड़ी और जूफ़ा और सुर्ख कपड़ा लेकर उस आग में जिसमें गाय जलती हो डाल दे। <sup>7</sup> तब काहिन अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्ल करे; इसके बाद वह लश्करगाह के अन्दर आए, फिर भी काहिन शाम तक नापाक रहेगा। <sup>8</sup> और जो उस गाय को जलाए वह भी अपने कपड़े पानी

से धोए और पानी से गुस्ल करे और वह भी शाम तक नापाक रहेगा। <sup>9</sup> और कोई पाक शख्स उस गाय की राख को बटोरे, और उसे लश्करगाह के बाहर किसी पाक जगह में धर दे; यह बनी — इस्राईल की जमा'अत के लिए नापाकी दूर करने के पानी के लिए रखी रहे, क्योंकि यह खता की कुर्बानी है। <sup>10</sup> और जो उस गाय की राख को बटोरे वह भी अपने कपड़े धोए और वह भी शाम तक नापाक रहेगा, और यह बनी — इस्राईल के और उन परदेसियों के लिए जो उनमें क़याम करते हैं एक दाइमी क़ानून होगा। <sup>11</sup> 'जो कोई किसी आदमी की लाश को छुए वह सात दिन तक नापाक रहेगा। <sup>12</sup> ऐसा आदमी तीसरे दिन उस राख से अपने को साफ़ करे तो वह सातवें दिन पाक ठहरेगा लेकिन अगर वह तीसरे दिन अपने को साफ़ न करे तो वह सातवें दिन पाक नहीं ठहरेगा। <sup>13</sup> जो कोई आदमी की लाश को छूकर अपने को साफ़ न करे वह खुदावन्द के घर को नापाक करता है, वह शख्स इस्राईल में से अलग किया जाएगा क्योंकि नापाकी दूर करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया इसलिए वह नापाक है उसकी नापाकी अब तक उस पर है। <sup>14</sup> अगर कोई आदमी किसी खेमे में मर जाए तो उसके बारे में शरा' यह है, कि जितने उस खेमे में आएँ और जितने उस खेमे में रहते हों वह सात दिन तक नापाक रहेंगे। <sup>15</sup> और हर एक खुला बर्तन जिसका ढकना उस पर बन्धा न हो नापाक ठहरेगा। <sup>16</sup> और जो कोई मैदान में तलवार के मकतूल को या मुर्दे को या आदमी की हड्डी को या किसी क़बर को छुए वह सात दिन तक नापाक रहेगा। <sup>17</sup> और नापाक आदमी के लिए उस जली हुई खता की कुर्बानी की राख को किसी बर्तन में लेकर उस पर बहता पानी डालें। <sup>18</sup> फिर कोई पाक आदमी जूफ़ा लेकर और उसे पानी में डुबो — डुबोकर उस खेमे पर, और जितने बर्तन और आदमी वहाँ हों उन पर और जिस शख्स ने हड्डी को, या मकतूलको, या मुर्दे को, या क़बर को छुआ है उस पर छिड़के। <sup>19</sup> वह पाक आदमी तीसरे दिन और सातवें दिन उस नापाक आदमी पर इस पानी को छिड़के और सातवें दिन उसे साफ़ करे फिर वह अपने कपड़े धोए और पानी से नहाए, तो वह शाम को पाक होगा। <sup>20</sup> 'लेकिन जो कोई नापाक हो और अपनी सफ़ाई न करे, वह शख्स जमा'अत में से अलग किया जाएगा क्योंकि उसने खुदावन्द के हैकल को नापाक किया नापाकी दूर करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया इसलिए वह नापाक है। <sup>21</sup> और यह उनके लिए एक दाइमी क़ानून हो; जो नापाकी दूर करने के पानी को लेकर छिड़के वह अपने कपड़े धोए, और जो कोई नापाकी दूर करने के पानी को छुए वह भी शाम तक नापाक रहेगा। <sup>22</sup> और

जिस किसी चीज़ को वह नापाक आदमी छुए वह चीज़ नापाक ठहरेगी, और जो कोई उस चीज़ को छू ले वह भी शाम तक नापाक रहेगा।

## 20

20:1-20:20

1 और पहले महीने में बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत सीन के जंगल में आ गई और वह लोग क्रादिस में रहने लगे, और मरियम ने वहाँ वफ़ात पाई और वहीं दफ़न हुई। 2 और जमा'अत के लोगों के लिए वहाँ पानी न मिला, इसलिए वह मूसा और हारून के बरखिलाफ़ इकट्ठे हुए। 3 और लोग मूसा से झगड़ने और यह कहने लगे, “हाय, काश हम भी उसी वक़्त मर जाते जब हमारे भाई खुदावन्द के सामने मरे। 4 तुम खुदावन्द की जमा'अत को इस जंगल में क्यों ले आए हो कि हम भी और हमारे जानवर भी यहाँ मरें? 5 और तुम ने क्यों हम को मिस्र से निकाल कर इस बुरी जगह पहुँचाया है? यह तो बोन की और अंजीरों और ताकों और अनार की जगह नहीं है बल्कि यहाँ तो पीने के लिए पानी तक हासिल नहीं।” 6 और मूसा और हारून जमा'अत के पास से जाकर खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर औंधे मुँह गिरे। तब खुदावन्द का जलाल उन पर ज़ाहिर हुआ, 7 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 8 “उस लाठी को ले और तू और तेरा भाई हारून, तुम दोनों जमा'अत को इकट्ठा करो और उनकी आँखों के सामने उस चट्टान से कहो कि वह अपना पानी दे; और तू उनके लिए चट्टान ही से पानी निकालना, यूँ जमा'अत को और उनके चौपायों को पिलाना।” 9 चुनांचे मूसा ने खुदावन्द के सामने से उसी के हुक्म के मुताबिक़ वह लाठी ली। 10 और मूसा और हारून ने जमा'अत को उस चट्टान के सामने इकट्ठा किया, और उसने उनसे कहा, “सुनो, ऐ बाग़ियों, क्या हम तुम्हारे लिए इसी चट्टान से पानी निकालें?” 11 तब मूसा ने अपना हाथ उठाया और उस चट्टान पर दो बार लाठी मारी, और कसरत से पानी बह निकला और जमा'अत ने और उनके चौपायों ने पिया। 12 लेकिन मूसा और हारून से खुदावन्द ने कहा, “चूँकि तुम ने मेरा यक़ीन नहीं किया कि बनी — इस्राईल के सामने मेरी तकदीस करते, इसलिए तुम इस जमा'अत को उस मुल्क में जो मैंने उनको दिया है नहीं पहुँचाने पाओगे।” 13 \*मरीबा का चश्मा यही है क्योंकि बनी — इस्राईल ने खुदावन्द से झगड़ा किया और वह उनके बीच कुदूस साबित हुआ।

\* 20:13 20:13 बहस करना

20:21-20:26

14 और मूसा ने क्रादिस से अदोम के बादशाह के पास क्रासिद खाना किए और कहला भेजा कि “तेरा भाई इस्राईल यह 'अर्ज़ करता है, कि तू हमारी सारी मुसीबतों से जो हम पर आई वाकिफ़ है; 15 कि हमारे बाप दादा मिस्र में गए और हम बहुत मुद्दत तक मिस्र में रहे, और मिस्रियों ने हम से और हमारे बाप दादा से बुरा सुलूक किया। 16 और जब हमने खुदावन्द से फ़रियाद की तो उसने हमारी सुनी, और एक फ़रिश्ते को भेज कर हम को मिस्र से निकाल ले आया है, और अब हम क्रादिस शहर में हैं जो तेरी सरहद के आखिर में वाक़े है। 17 इसलिए हम को अपने मुल्क में से होकर जाने की इजाज़त दे। हम खेतों और ताकिस्तानों में से होकर नहीं गुज़रेंगे, और न कुओं का पानी पीएँगे; हम शाहराह पर चल कर जाएँगे और दहने या बाएँ हाथ नहीं मुड़ेंगे, जब तक तेरी सरहद से बाहर निकल न जाएँ।” 18 लेकिन शाह — ए — अदोम ने कहला भेजा, “तू मेरे मुल्क से होकर जाने नहीं पाएगा, वरना मैं तलवार लेकर तेरा सामना करूँगा।” 19 बनी — इस्राईल ने उसे फिर कहला भेजा कि “हम सड़क ही सड़क जाएँगे, और अगर हम या हमारे चौपाये तेरा पानी भी पीएँ तो उसका दाम देंगे; हम को और कुछ नहीं चाहिए अलावा इसके कि हम को पाँव — पाँव चल कर निकल जाने दे।” 20 लेकिन उसने कहा, “तू हरगिज़ निकलने नहीं पाएगा।” और अदोम उसके मुक़ाबले के लिए बहुत से आदमी और हथियार लेकर निकल आया। 21 यूँ अदोम ने इस्राईल को अपनी हदों से गुज़रने का रास्ता देने से इन्कार किया, इसलिए इस्राईल उसकी तरफ़ से मुड़ गया।

20:27-20:31

22 और बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत क्रादिस से खाना होकर कोह — ए — हूर पहुँची। 23 और खुदावन्द ने कोह — ए — हूर पर, जो अदोम की सरहद से मिला हुआ था, मूसा और हारून से कहा, 24 “हारून अपने लोगों में जा मिलेगा, क्योंकि वह उस मुल्क में जो मैंने बनी — इस्राईल को दिया है जाने नहीं पाएगा, इसलिए कि मरीबा के चश्मे पर तुम ने मेरे कलाम के ख़िलाफ़ 'अमल किया। 25 इसलिए तू हारून और उसके बेटे इली'एलियाज़र को अपने साथ लेकर कोह — ए — हूर के ऊपर आ जा। 26 और हारून के लिबास को उतार कर उसके बेटे इली'एलियाज़र को पहना देना, क्योंकि हारून वहीं वफ़ात पाकर अपने लोगों में जा मिलेगा।”

27 और मूसा ने खुदा के हुक्म के मुताबिक 'अमल किया, और वह सारी जमा'अत की आँखों के सामने कोह — ए — हूर पर चढ़ गए। 28 और मूसा ने हारून के लिबास को उतार कर उस के बेटे इली'एलियाज़र को पहना दिया, और हारून ने वहीं पहाड़ की चोटी पर रहलत की। तब मूसा और इली'अजर पहाड़ पर से उतर आए। 29 जब जमा'अत ने देखा कि हारून ने वफ़ात पाई तो इस्राईल के सारे घराने के लोग हारून पर तीस दिन तक मातम करते रहे।

## 21

?????????? ?? ??? ?????? ?????

1 और जब 'अराद के कना'नी बादशाह ने जो दख्खन की तरफ़ रहता था सुना, कि इस्राईली अथारिम की राह से आ रहे हैं, तो वह इस्राईलियों से लड़ा और उनमें से कई एक को गुलाम कर लिया। 2 तब इस्राईलियों ने खुदावन्द के सामने मिन्नत मानी और कहा कि “अगर तू सचमुच उन लोगों को हमारे हवाले कर दे तो हम उनके शहरों को बर्बाद कर देंगे।” 3 और खुदावन्द ने इस्राईल की फ़रियाद सुनी और कना'नियों को उन के हवाले कर दिया; और उन्होंने उनको और उनके शहरों को बर्बाद कर दिया, चुनाँचे उस जगह का नाम भी \*हुरमा पड़ गया।

?????? ?? ?????

4 फिर उन्होंने कोह — ए — होर से खाना होकर बहर — ए — कुलजुम का रास्ता लिया, ताकि मुल्क — ए — अदोम के बाहर — बाहर घूम कर जाएँ; लेकिन उन लोगों की जान उस रास्ते से 'आजिज़ आ गई। 5 और लोग खुदा की और मूसा की शिकायत करके कहने लगे कि “तुम क्यूँ हम को मिस्र से वीरान में मरने के लिए ले आए? यहाँ तो न रोटी है, न पानी, और हमारा जी इस निकम्मी खुराक से कराहियत करता है।” 6 तब खुदावन्द ने उन लोगों में जलाने वाले साँप भेजे, उन्होंने लोगों को काटा और बहुत से इस्राईली मर गए। 7 तब वह लोग मूसा के पास आकर कहने लगे कि “हम ने गुनाह किया, क्यूँकि हम ने खुदावन्द की और तेरी शिकायत की; इसलिए तू खुदावन्द से दुआ कर कि वह इन साँपों को हम से दूर करे।” चुनाँचे मूसा ने लोगों के लिए दुआ की। 8 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा कि “एक जलाने वाला साँप बना ले और उसे एक बल्ली पर लटका दे, और जो साँप का डसा हुआ उस पर नज़र करेगा वह ज़िन्दा बचेगा।” 9 चुनाँचे मूसा ने पीतल का एक साँप बनवाकर उसे बल्ली पर लटका दिया; और ऐसा हुआ

कि जिस जिस साँप के डसे हुए आदमी ने उस पीतल के साँप पर निगाह की वह ज़िन्दा बच गया।

???????????????? ?? ????? ?? ?????

10 और बनी — इस्राईल ने वहाँ से खानगी की और ओबूत में आकर खेमे डाले। 11 फिर ओबूत से कूच किया और 'अय्ये 'अबारीम में, जो पश्चिम की तरफ़ मोआब के सामने के वीरान में वाके' है खेमे डाले। 12 और वहाँ से खाना होकर वादी — ए — ज़रद में खेमे डाले। 13 जब वहाँ से चले तो अरनोन से पार हो कर, जो अमोरियों की सरहद से निकल कर वीरान में बहती है, खेमे डाले: क्यूँकि मोआब और अमोरियों के बीच अरनोन मोआब की सरहद है। 14 इसी वजह से खुदावन्द के जंग नामे में यूँ लिखा है: “वाहेब जो सूफ़ा में है, और अरनोन के नाले 15 और उन नालों का ढलान जो 'आर शहर तक जाता है, और मोआब की सरहद से मुतसिल है।” 16 फिर इस जगह से वह बैर को गए; यह वही कुवाँ है जिसके बारे में खुदावन्द ने मूसा से कहा था कि “इन लोगों को एक जगह जमा' कर, और मैं इनको पानी दूँगा।” 17 तब इस्राईल ने यह गीत गाया: 'ऐ कुएँ, तू उबल आ! तुम इस कुएँ की ता'रीफ़ गाओ। 18 यह वही कुआँ है जिसे रईसों ने बनाया, और क्रौम के अमीरों ने अपने 'असा और लाठियों से खोदा।” तब वह उस जंगल से मत्तना को गए, 19 और मत्तना से नहलीएल को, और नहलीएल से बामात को, 20 और बामात से उस वादी में पहुँच कर जो मोआब के मैदान में है, पिसगा की उस चोटी तक निकल गए जहाँ से यशीमोन नज़र आता है।

?????? ?? ?? ?? ?? ??? ?????? ?????

21 और इस्राईलियों ने अमोरियों के बादशाह सीहोन के पास कासिद खाना किए और यह कहला भेजा कि; 22 “हम को अपने मुल्क से गुज़र जाने दे; हम खेतों और अँगूर के बाग़ों में नहीं घुसेंगे, और न कुओं का पानी पीएँगे, बल्कि शाहराह से सीधे चले जाएँगे जब तक तेरी हद के बाहर न हो जाएँ।” 23 लेकिन सीहोन ने इस्राईलियों को अपनी हद में से गुज़रने न दिया; बल्कि सीहोन अपने सब लोगों को इकट्ठा करके इस्राईलियों के मुकाबले के लिए वीरान में पहुँचा, और उसने यहज़ में आकर इस्राईलियों से जंग की। 24 और इस्राईल ने उसे तलवार की धार से मारा और उसके मुल्क पर, अरनोन से लेकर यब्बोक तक जहाँ बनी 'अम्मोन की सरहद है कब्ज़ा कर लिया; क्यूँकि बनी 'अम्मोन की सरहद मज़बूत थी। 25 तब बनी — इस्राईल ने यहाँ के सब शहरों को ले लिया और अमोरियों के सब शहरों में, या'नी हस्बोन और उसके आस पास के कस्बों में बनी

\* 21:3 21:3 बर्बादी

— इस्राईल बस गए। <sup>26</sup> हस्बोन अमोरियों के बादशाह सीहोन का शहर था, इसने मोआब के अगले बादशाह से लड़कर उसके सारे मुल्क को, अरनोन तक उससे छीन लिया था। <sup>27</sup> इसी वजह से मिसाल कहने वालों की यह कहावत है कि “हस्बोन में आओ, ताकि सीहोन का शहर बनाया और मज़बूत किया जाए।” <sup>28</sup> क्योंकि हस्बोन से आग निकली, सीहोन के शहर से शोला बरामद हुआ, इसने मोआब के 'आर शहर को और †अरनोन के ऊँचे मक़ामात के ‡सरदारों को भसम कर दिया। <sup>29</sup> ऐ, मोआब! तुझ पर नोहा है। ऐ कमोस के मानने वालों! तुम हलाक हुए, उसने अपने बेटों को जो भागे थे और अपनी बेटियों को गुलामों की तरह अमोरियों के बादशाह सीहोन के हवाले किया। <sup>30</sup> हमने उन पर तीर चलाए, इसलिए †हस्बोन \*दीबोन तक तबाह हो गया, बल्कि हम ने नुफ़ा तक सब कुछ उजाड़ दिया। वह नुफ़ा जो मीदबा से मुत्तसिल है।” <sup>31</sup> तब बनी — इस्राईल अमोरियों के मुल्क में रहने लगे। <sup>32</sup> और मूसा ने या'ज़ेर की जासूसी कराई; फिर उन्होंने उसके गाँव ले लिए और अमोरियों को जो वहाँ थे निकाल दिया। <sup>33</sup> और वह घूम कर बसन के रास्ते से आगे को बढ़े और बसन का बादशाह 'ओज अपने सारे लश्कर को लेकर निकला, ताकि अदराई में उनसे जंग करे। <sup>34</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा, “उससे मत डर, क्योंकि मैंने उसे और उसके सारे लश्कर को और उसके मुल्क को तेरे हवाले कर दिया है। इसलिए जैसा तूने अमोरियों के बादशाह सीहोन के साथ जो हस्बोन में रहता था किया है, वैसा ही इसके साथ भी करना।” <sup>35</sup> चुनाँचे उन्होंने उसको और उसके बेटों और सब लोगों को यहाँ तक मारा कि उसका कोई बाक़ी न रहा, और उसके मुल्क को अपने क़ब्ज़े में कर लिया।

## 22

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>1</sup> फिर बनी — इस्राईल खाना हुआ और दरिया — ए — यरदन के पार मोआब के मैदानों में यरीहू के सामने खेमे खड़े किए। <sup>2</sup> और जो कुछ बनी — इस्राईल ने अमोरियों के साथ किया था वह सब बलक़ बिन सफ़ोर ने देखा था। <sup>3</sup> इसलिए मोआबियों को इन लोगों से बड़ा खौफ़ आया, क्योंकि यह बहुत से थे; गर्ज मोआबी बनी — इस्राईल की वजह से परेशान हुए। <sup>4</sup> तब मोआबियों ने मिदियानी बुज़ुर्गों से कहा, “जो कुछ हमारे आस पास है उसे यह लश्कर ऐसा चट कर जाएगा जैसे बैल मैदान की घास को चट कर जाता है।” उस वक़्त बलक़ बिन

सफ़ोर मोआबियों का बादशाह था। <sup>5</sup> इसलिए उस ने ब'ओर के बेटे बल'आम के पास फ़तोर को, जो बड़े दरिया कि किनारे उसकी क़ौम के लोगों का मुल्क था, कासिद खाना किए कि उसे बुला लाएँ और यह कहला भेजा, “देख, एक क़ौम मिस्र से निकलकर आई है, उनसे ज़मीन की सतह छिप गई है; अब वह मेरे सामने ही आकर जम गए हैं।” <sup>6</sup> इसलिए अब तू आकर मेरी खातिर इन लोगों पर ला'नत कर, क्योंकि यह मुझ से बहुत क़वी हैं; फिर मुम्किन है कि मैं ग़ालिब आऊँ, और हम सब इनको मार कर इस मुल्क से निकाल दें; क्योंकि यह मैं जानता हूँ कि जिसे तू बरक़त देता है उसे बरक़त मिलती है, और जिस पर तू ला'नत करता है वह मला'ऊन होता है।” <sup>7</sup> तब मोआब के बुज़ुर्ग और मिदियान के बुज़ुर्ग फ़ाल खोलने का इनाम साथ लेकर खाना हुआ और बल'आम के पास पहुँचे और बलक़ का पैग़ाम उसे दिया। <sup>8</sup> उसने उनसे कहा, “आज रात यहीं ठहरो और जो कुछ खुदावन्द मुझ से कहेगा, उसके मुताबिक़ मैं तुम को जवाब दूँगा।” चुनाँचे मोआब के हाकिम बल'आम के साथ ठहर गए। <sup>9</sup> और खुदा ने बल'आम के पास आकर कहा, “तेरे यहाँ यह कौन आदमी है?” <sup>10</sup> बल'आम ने खुदा से कहा, “मोआब के बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर ने मेरे पास कहला भेजा है, कि <sup>11</sup> जो क़ौम मिस्र से निकल कर आई है उससे ज़मीन की सतह छिप गई है, इसलिए तू अब आकर मेरी खातिर उन पर ला'नत कर, फिर मुम्किन है कि मैं उनसे लड़ सकूँ और उनको निकाल दूँ।” <sup>12</sup> खुदा ने बल'आम से कहा, “तू इनके साथ मत जाना, तू उन लोगों पर ला'नत न करना, इसलिए कि वह मुबारक हैं।” <sup>13</sup> बल'आम ने सुबह को उठ कर बलक़ के हाकिमों से कहा, “तुम अपने मुल्क को लौट जाओ, क्योंकि खुदावन्द मुझे तुम्हारे साथ जाने की इजाज़त नहीं देता।” <sup>14</sup> और मोआब के हाकिम चले गए और जाकर बलक़ से कहा, “बल'आम हमारे साथ आने से इंकार करता है।” <sup>15</sup> तब दूसरी दफ़ा बलक़ ने और हाकिमों को भेजा, जो पहलों से बढ़ कर मु'अज़िज़ और शुमार में भी ज्यादा थे। <sup>16</sup> उन्होंने बल'आम के पास जाकर उस से कहा, “बलक़ बिन सफ़ोर ने यूँ कहा है, कि मेरे पास आने में तेरे लिए कोई रुकावट न हो; <sup>17</sup> क्योंकि मैं बहुत 'आला मन्सब पर तुझे मुम्ताज़ करूँगा, और जो कुछ तू मुझ से कहे मैं वही करूँगा; इसलिए तू आ जा और मेरी खातिर इन लोगों पर ला'नत कर।” <sup>18</sup> बल'आम ने बलक़ के खादिमों को जवाब दिया, “अगर बलक़ अपना घर भी चाँदी और

† 21:28 21:28 नफ़रत करता है ‡ 21:28 21:28 पहाड़ों § 21:30 21:30 हस्बोन से दीबोन तक हम उन्हें संगसार करते हैं कि वह मर जाए

\* 21:30 21:30 दीबोनक़स्बा



सोने से भर कर मुझे दे, तो भी मैं खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म से तजावुज नहीं कर सकता, कि उसे घटाकर या बढ़ा कर मानूँ।<sup>19</sup> इसलिए अब तुम भी आज रात यहीं ठहरो, ताकि मैं देखूँ कि खुदावन्द मुझ से और क्या कहता है।”<sup>20</sup> और खुदा ने रात को बल'आम के पास आ कर उससे कहा, “अगर यह आदमी तुझे बुलाने को आए हुए हैं तो तू उठ कर उनके साथ जा; मगर जो बात मैं तुझ से कहूँ उसी पर 'अमल करना।”

२२:२२ २३ २२२२ २२२

<sup>21</sup> तब बल'आम सुबह को उठा, और अपनी गधी पर जीन रख कर मोआब के हाकिमों के साथ चला।<sup>22</sup> और उसके जाने की वजह से खुदा का गजब भड़का, और खुदावन्द का फ़रिश्ता उससे मुज़ाहमत करने के लिए रास्ता रोक कर खड़ा हो गया। वह तो अपनी गधी पर सवार था और उसके साथ उसके दो मुलाज़िम थे।<sup>23</sup> और उस गधी ने खुदावन्द के फ़रिश्ते को देखा, कि वह अपने हाथ में नंगी तलवार लिए हुए रास्ता रोके खड़ा है; तब गधी रास्ता छोड़कर एक तरफ़ हो गई और खेत में चली गई। तब बल'आम ने गधी को मारा ताकि उसे रास्ते पर ले आए।<sup>24</sup> तब खुदावन्द का फ़रिश्ता एक नीची राह में जा खड़ा हुआ, जो ताकिस्तानों के बीच से होकर निकलती थी और उसकी दोनों तरफ़ दीवारें थीं।<sup>25</sup> गधी खुदावन्द के फ़रिश्ते को देख कर दीवार से जा लगी और बल'आम का पाँव दीवार से पिचा दिया, इसलिए उसने फिर उसे मारा।<sup>26</sup> तब खुदावन्द का फ़रिश्ता आगे बढ़ कर एक ऐसे तंग मक़ाम में खड़ा हो गया, जहाँ दहनी या बाई तरफ़ मुड़ने की जगह न थी।<sup>27</sup> फिर जो गधी ने खुदावन्द के फ़रिश्ते को देखा तो बल'आम को लिए हुए बैठ गई; फिर तो बल'आम झल्ला उठा और उसने गधी को अपनी लाठी से मारा।<sup>28</sup> तब खुदावन्द ने गधी की ज़बान खोल दी और उसने बल'आम से कहा, “मैंने तेरे साथ क्या किया है कि तूने मुझे तीन बार मारा?”<sup>29</sup> बल'आम ने गधी से कहा, “इसलिए कि तूने मुझे चिढ़ाया; काश मेरे हाथ में तलवार होती, तो मैं तुझे अभी मार डालता।”<sup>30</sup> गधी ने बल'आम से कहा, “क्या मैं तेरी वही गधी नहीं हूँ जिस पर तू अपनी सारी उम्र आज तक सवार होता आया है? क्या मैं तेरे साथ पहले कभी ऐसा करती थी?” उसने कहा, “नहीं।”<sup>31</sup> तब खुदावन्द ने बल'आम की आँखें खोलीं, और उसने खुदावन्द के फ़रिश्ते को देखा कि वह अपने हाथ में नंगी तलवार लिए हुए रास्ता रोके खड़ा है, तब उसने अपना सिर झुका लिया और औंधा हो गया।<sup>32</sup> खुदावन्द के

फ़रिश्ते ने उसे कहा, “तू ने अपनी गधी को तीन बार क्यों मारा? देख, मैं तुझ से मुज़ाहमत करने को आया हूँ, इसलिए कि तेरी चाल मेरी नज़र में टेढ़ी है।<sup>33</sup> और गधी ने मुझ को देखा, और वह तीन बार मेरे सामने से मुड़ गई। अगर वह मेरे सामने से न हटती तो मैं ज़रूर तुझ को मार ही डालता, और उसको ज़िन्दा छोड़ देता।”<sup>34</sup> बल'आम ने खुदावन्द के फ़रिश्ते से कहा, “मुझ से खता हुई, क्योंकि मुझे मा'लूम न था कि तू मेरा रास्ता रोके खड़ा है। इसलिए अगर अब तुझे बुरा लगता है तो मैं लौट जाता हूँ।”<sup>35</sup> खुदावन्द के फ़रिश्ते ने बल'आम से कहा, “तू इन आदमियों के साथ चला ही जा, लेकिन सिर्फ़ वही बात कहना जो मैं तुझ से कहूँ।” तब बल'आम बलक़ के हाकिमों के साथ गया।<sup>36</sup> जब बलक़ ने सुना कि बल'आम आ रहा है, तो वह उसके इस्तक़बाल के लिए मोआब के उस शहर तक गया जो अरनोन की सरहद पर उसकी हदों के इन्तिहाई हिस्से में वाक़े था।<sup>37</sup> तब बलक़ ने बल'आम से कहा, “क्या मैंने बड़ी उम्मीद के साथ तुझे नहीं बुलवा भेजा था? फिर तू मेरे पास क्यों न चला आया? क्या मैं इस क़ाबिल नहीं कि तुझे 'आला मन्सब पर मुस्ताज़ करूँ?”<sup>38</sup> बल'आम ने बलक़ को जवाब दिया, “देख, मैं तेरे पास आ तो गया हूँ लेकिन क्या मेरी इतनी मज़ाल है कि मैं कुछ बोलूँ? जो बात खुदा मेरे मुँह में डालेगा, वही मैं कहूँगा।”<sup>39</sup> और बल'आम बलक़ के साथ — साथ चला और वह करयत हुसात में पहुँचे।<sup>40</sup> बलक़ ने बैल और भेड़ों की कुर्बानी पेश की, और बल'आम और उन हाकिमों के पास जो उसके साथ थे कुर्बानी का गोश्त भेजा।<sup>41</sup> दूसरे दिन सुबह को बलक़ बल'आम को साथ लेकर उसे \*बा'ल के बुलन्द मक़ामों पर ले गया। वहाँ से उसने दूर दूर के इस्राईलियों को देखा।

## 23

२३:२२ २३ २२२२२२२ २२ २२२२ २२२२

<sup>1</sup> और बल'आम ने बलक़ से कहा, “मेरे लिए यहाँ सात मज़बहे बनवा दे, और सात बछड़े और सात मेंढे मेरे लिए यहाँ तैयार कर रख।”<sup>2</sup> बलक़ ने बल'आम के कहने के मुताबिक़ किया, और बलक़ और बल'आम ने हर मज़बह पर एक बछड़ा और एक मेंढा चढ़ाया।<sup>3</sup> फिर बल'आम ने बलक़ से कहा, “तू अपनी सोख़्तनी कुर्बानी के पास खड़ा रह, और मैं जाता हूँ, मुम्किन है कि खुदावन्द मुझ से मुलाक़ात करने को आए। इसलिए जो कुछ वह मुझ पर ज़ाहिर करेगा, मैं तुझे बताऊँगा।” और वह एक

\* 22:41 22:41 बामोथ बाल नाम की जगह, बाल के बुलन्द मक़ामों

बरहना पहाड़ी पर चला गया।<sup>4</sup> और खुदा बल'आम से मिला; उसने उससे कहा “मैंने सात मजबूहे तैयार किए हैं और उन पर एक — एक बछड़ा और एक — एक मेंढा चढ़ाया है।”<sup>5</sup> तब खुदावन्द ने एक बात बल'आम के मुँह में डाली और कहा कि “बलक के पास लौट जा, और यूँ कहना।”<sup>6</sup> तब वह उसके पास लौट कर आया और क्या देखता है, कि वह अपनी सोख्तनी कुर्बानी के पास मोआब के सब हाकिमों के साथ खड़ा है।<sup>7</sup> तब उसने अपनी मिसाल शुरू की, और कहने लगा, “बलक ने मुझे अराम से, या'नी शाह — ए — मोआब ने पश्चिम के पहाड़ों से बुलवाया, कि आ जा, और मेरी खातिर या'कूब पर ला'नत कर, आ, इस्राईल को फटकार! <sup>8</sup> मैं उस पर ला'नत कैसे करूँ, जिस पर खुदा ने ला'नत नहीं की? मैं उसे कैसे फटकाऊँ, जिसे खुदावन्द ने नहीं फटकारा <sup>9</sup> चट्टानों की चोटी पर से वह मुझे नज़र आते हैं, और पहाड़ों पर से मैं उनको देखता हूँ। देख, यह वह क्रौम है जो अकेली बसी रहेगी, और दूसरी क्रौमों के साथ मिल कर इसका शुमार न होगा। <sup>10</sup> या'कूब की गर्द के ज़रों को कौन गिन सकता है, और बनी इस्राईल की चौथाई को कौन शुमार कर सकता है? काश, मैं सादिकों की मौत मरूँ और मेरी 'आक़बत भी उन ही की तरह हो।” <sup>11</sup> तब बलक ने बल'आम से कहा, “ये तूने मुझ से क्या किया? मैंने तुझे बुलवाया ताकि तू मेरे दुश्मनों पर ला'नत करे, और तू ने उनको बरकत ही बरकत दी।” <sup>12</sup> उसने जवाब दिया और कहा क्या मैं उसी बात का खयाल न करूँ, जो खुदावन्द मेरे मुँह में डाले?”

२२२२ २२२२२ २२२२२

<sup>13</sup> फिर बलक ने उससे कहा, “अब मेरे साथ दूसरी जगह चल, जहाँ से तू उनको देख भी सकेगा; वह सब के सब तो तुझे नहीं दिखाई देंगे, लेकिन जो दूर दूर पड़े हैं उनको देख लेगा; फिर तू वहाँ से मेरी खातिर उन पर ला'नत करना।” <sup>14</sup> तब वह उसे पिसगा की चोटी पर, जहाँ ज़ोफ़ीम का मैदान है ले गया; वहीं उसने सात मजबूहे बनाए और हर मजबूह पर एक — एक बछड़ा और एक मेंढा चढ़ाया। <sup>15</sup> तब उसने बलक से कहा, “तू यहाँ अपनी सोख्तनी कुर्बानी के पास ठहरा रह, जब कि मैं उधर जाकर खुदावन्द से मिल कर आऊँ।” <sup>16</sup> और खुदावन्द बल'आम से मिला, और उसने उसके मुँह में एक बात डाली, और कहा, “बलक के पास लौट जा, और यूँ कहना।” <sup>17</sup> और जब वह उसके पास लौटा तो क्या देखता है, कि वह अपनी सोख्तनी कुर्बानी के पास मोआब के हाकिमों के साथ खड़ा है। तब बलक ने उससे पूछा, “खुदावन्द ने क्या कहा है?” <sup>18</sup> तब उसने अपनी

मिसाल शुरू की और कहने लगा, “उठ ऐ बलक, और सुन, ऐ सफ़ोर के बेटे! मेरी बातों पर कान लगा, <sup>19</sup> खुदा इंसान नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमज़ाद है कि अपना इरादा बदले। क्या, जो कुछ उसने कहा उसे न करे? या, जो फ़रमाया है उसे पूरा न करे? <sup>20</sup> देख, मुझे तो बरकत देने का हुक्म मिला है; उसने बरकत दी है, और मैं उसे पलट नहीं सकता। <sup>21</sup> वह या'कूब में बदी नहीं पाता, और न इस्राईल में कोई खराबी देखता है। खुदावन्द उसका खुदा उसके साथ है, और बादशाह के जैसी ललकार उन लोगों के बीच में है। <sup>22</sup> खुदा उनको मिस्र से निकाल कर लिए आ रहा है, उनमें जंगली साँड के जैसी ताक़त है। <sup>23</sup> या'कूब पर कोई जादू नहीं चलता, और न इस्राईल के खिलाफ़ फ़ाल कोई चीज़ है; बल्कि या'कूब और इस्राईल के हक़ में अब यह कहा जाएगा, कि खुदा ने कैसे कैसे काम किए। <sup>24</sup> देख, यह गिरोह शेरनी की तरह उठती है। और शेर की तरह तन कर खड़ी होती है। वह अब नहीं लेटने को, जब तक शिकार न खा ले। और मक़तूलों का खून न पी ले।” <sup>25</sup> तब बलक ने बल'आम से कहा, “न तो तू उन पर ला'नत ही कर और न उनको बरकत ही दे।” <sup>26</sup> बल'आम ने जवाब दिया, और बलक से कहा, “क्या मैंने तुझ से नहीं कहा कि जो कुछ खुदावन्द कहे, वही मुझे करना पड़ेगा?”

२२२२ २२ २२२२२ २२२२२

<sup>27</sup> तब बलक ने बल'आम से कहा, “अच्छा आ, मैं तुझ को एक और जगह ले जाऊँ; शायद खुदा को पसन्द आए कि तू मेरी खातिर वहाँ से उन पर ला'नत करे।” <sup>28</sup> तब बलक बल'आम को फ़गूर की चोटी पर, जहाँ से यशीमोन नज़र आता है ले गया। <sup>29</sup> और बल'आम ने बलक से कहा कि “मेरे लिए यहाँ सात मजबूहे बनवा और सात बैल और सात ही मेंढे मेरे लिए तैयार कर रख।” <sup>30</sup> चुनाँचे बलक ने, जैसा बल'आम ने कहा वैसा ही किया और हर मजबूह पर एक बैल और एक मेंढा चढ़ाया।

## 24

<sup>1</sup> जब बल'आम ने देखा कि खुदावन्द को यही मन्ज़ूर है कि इस्राईल को बरकत दे, तो वह पहले की तरह शगून देखने को इधर उधर न गया, बल्कि वीरान की तरफ़ अपना मुँह कर लिया। <sup>2</sup> और बल'आम ने निगाह की, और देखा कि बनी — इस्राईल अपने — अपने कबीले की तरतीब से मुक़ीम हैं। और खुदा की रूह उस पर नाज़िल हुई। <sup>3</sup> और उसने अपनी मसल शुरू की और कहने लगा, “ब'ओर का बेटा बल'आम कहता है, या'नी वही शख्स जिसकी आँखें बन्द थीं यह कहता है,

4 बल्कि यह उसी का कहना है जो खुदा की बातें सुनता है, और सिज्दे में पड़ा हुआ खुली आँखों से क्रादिर — ए — मुतलक का ख़्वाब देखता है। 5 ऐ या'कूब, तेरे डेरे, ऐ इस्राईल, तेरे खेमें कैसे खुशनुमा हैं! 6 वह ऐसे फैले हुए हैं, जैसे वादियाँ और दरिया कि किनारे बाग़, और खुदावन्द के लगाए हुए 'ऊद के दरख्त और नदियों के किनारे देवदार के दरख्त। 7 उसके चरसों से पानी बहेगा, और सेराब खेतों में उसका बीज पड़ेगा। उसका बादशाह अजाज से बढ़कर होगा, और उसकी सल्तनत को 'उरूज हासिल होगा। 8 खुदा उसे मिस्र से निकाल कर लिए आ रहा उसमें जंगली सांड के जैसी ताकत है, वह उन क्रौमों को जो उसकी दुश्मन हैं, चट कर जाएगा, और उनकी हड्डियों को तोड़ डालेगा और उनको अपने तीरों से छेद — छेद कर मारेगा। 9 वह दुबक कर बैठा है, वह शेर की तरह बल्कि शेरनी की तरह लेट गया है, अब कौन उसे छेड़े? जो तुझे बरकत दे वह मुबारक, और जो तुझ पर ला'नत करे वह मला'ऊन हो। 10 तब बलक़ को बल'आम पर बड़ा गुस्सा आया, और वह अपने हाथ पीटने लगा। फिर उसने बल'आम से कहा, “मैंने तुझे बुलाया कि तू मेरे दुश्मनों पर ला'नत करे, लेकिन तू ने तीनों बार उनको बरकत ही बरकत दी। 11 इसलिए अब तू अपने मुल्क को भाग जा। मैंने तो सोचा था कि तुझे 'आला मन्सब पर मुस्ताज़ करूँ, लेकिन खुदावन्द ने तुझे ऐसे ऐजाज़ से महरूम रखवा।” 12 बल'आम ने बलक़ को जवाब दिया, “क्या मैंने तेरे उन क्रासिदों से भी जिनको तूने मेरे पास भेजा था। यह नहीं कह दिया था, कि 13 अगर बलक़ अपना घर चाँदी और सोने से भर कर मुझे दे तोभी मैं अपनी मर्जी से भला या बुरा करने की खातिर खुदावन्द के हुक्म से तजावुज़ नहीं कर सकता, बल्कि जो कुछ खुदावन्द कहे मैं वही कहूँगा? 14 'और अब मैं अपनी क्रौम के पास लौट कर जाता हूँ, इसलिए तू आ, मैं तुझे आगाह कर दूँ कि यह लोग तेरी क्रौम के साथ आखिरी दिनों में क्या क्या करेंगे।”

22'22 22 2222222 222222

15 चुनौचे उसने अपनी मिसाल शुरू की और कहने लगा, “ब'ओर का बेटा बल'आम कहता है, या'नी वही शख्स जिसकी आँखें बन्द थी यह कहता है, 16 बल्कि यह उसी का कहना है जो \*खुदा की बातें सुनता है, और हक़ता'ला का इरफ़ान रखता है, और सिज्दे में पड़ा हुआ खुली आँखों से क्रादिर — ए — मुतलक का ख़्वाब देखता है; 17 मैं उसे देखूँगा तो सही, लेकिन अभी नहीं; वह मुझे

नज़र भी आएगा, लेकिन नज़दीक से नहीं; या'कूब में से एक सितारा निकलेगा और इस्राईल में से एक 'असा उठेगा, और †मोआब के 'इलाक़े को मार मार कर साफ़ कर देगा, और सब ‡हंगामा करने वालों को हलाक कर डालेगा। 18 और उसके दुश्मन अदोम और श'ईर दोनों उसके क़ब्ज़े में होंगे, और इस्राईल दिलावरी करेगा। 19 और या'कूब ही की नसल से वह फ़रमाँवाँ उठेगा, जो शहर के बाक़ी मान्दा लोगों को हलाक कर डालेगा।” 20 फिर उसने 'अमालीक पर नज़र करके अपनी यह मसल शुरू की, और कहने लगा, “क्रौमों में पहली क्रौम 'अमालीक की थी, लेकिन उसका अन्जाम हलाकत है।” 21 और कीनियों की तरफ़ निगाह करके यह मिसाल शुरू की, और कहने लगा “तेरा घर मज़बूत है और तेरा आशियाना भी चट्टान पर बना हुआ है। 22 तोभी कीन खाना ख़राब होगा, यहाँ तक कि असूर तुझे गुलाम करके ले जाएगा।” 23 और उसने यह मसल भी शुरू की, और कहने लगा, हाय, अफ़सोस! जब खुदा यह करेगा तो कौन जीता बचेगा? 24 लेकिन कितीम के साहिल से जहाज़ आएँगे, और वह असूर और इब्र दोनों को दुख देंगे। फिर वह भी हलाक हो जाएगा।” 25 इसके बाद बल'आम उठ कर ख़वाना हुआ और अपने मुल्क को लौटा, और बलक़ ने भी अपनी राह ली।

## 25

2222 22 2222222 22 2222222

1 और इस्राईली शिक्तीम में रहते थे, और लोगों ने मोआबी 'औरतों के साथ हरामकारी शुरू कर दी। 2 क्योंकि वह 'औरतें इन लोगों को अपने मा'बूदों की कुर्बानियों में आने की दावत देती थीं, और यह लोग जाकर खाते और उनके मा'बूदों को सिज्दा करते थे। 3 यूँ इस्राईली बा'ल फ़ग़ूर की इबादत लगे। तब खुदावन्द का क्रहर बनी इस्राईल पर भड़का, 4 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, “क्रौम के सब सरदारों को पकड़कर खुदावन्द के \*सामने धूप में टाँग दे, ताकि खुदावन्द का शदीद क्रहर इस्राईल पर से टल जाए।” 5 तब मूसा ने बनी — इस्राईल के हाकिमों से कहा, “तुम्हारे जो — जो आदमी बा'ल फ़ग़ूर की इबादत करने लगे हैं उनको क़त्ल कर डालो।” 6 और जब बनी — इस्राईल की जमा'अत खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर रो रही थी, तो एक इस्राईली मूसा और तमाम लोगों की आँखों के सामने एक मिदियानी 'औरत को अपने साथ अपने भाइयों के पास ले आया। 7 जब फ़ीन्हास

\* 24:16 24:16 खुदा † 24:17 24:17 मोआब के लोगों की पेशानी ‡ 24:17 24:17 सेत की तमाम नस्लें, वह तमाम तशहद भरे लोग जो सेत की तरफ़ हैं \* 25:4 25:4 हर एक के सामने, सूरज की रौशनी से पहले

बिन इली'एलियाज़र बिन हारून काहिन ने यह देखा, तो उसने जमा'अत में से उठ हाथ में एक बर्छी ली, <sup>8</sup> और उस मर्द के पीछे जाकर खेमे के अन्दर घुसा और उस इस्राईली मर्द और उस 'औरत दोनों का पेट छेद दिया। तब बनी — इस्राईल में से वबा जाती रही। <sup>9</sup> और जितने इस वबा से मरे उनका शुमार चौबीस हजार था। <sup>10</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; <sup>11</sup> “फ्रीन्हास बिन इली'एलियाज़र बिन हारून काहिन ने मेरे क्रहर को बनी — इस्राईल पर से हटाया क्योंकि उनके बीच उसे मेरे लिए गैरत आई, इसीलिए मैंने बनी — इस्राईल को अपनी गैरत के जोश में हलाक नहीं किया। <sup>12</sup> इसलिए तू कह दे कि मैंने उससे अपना सुलह का 'अहद बाँधा, <sup>13</sup> और वह उसके लिए और उसके बाद उसकी नसल के लिए कहानत का 'दाइमी 'अहद होगा; क्योंकि वह अपने खुदा के लिए गैरतमन्द हुआ और उसने बनी — इस्राईल के लिए कफ़ारा दिया।” <sup>14</sup> उस इस्राईली मर्द का नाम जो उस मिदियानी 'औरत के साथ मारा गया ज़िमरी था, जो सलू का बेटा और शमौन के कबीले के एक आबाई खान्दान का सरदार था। <sup>15</sup> और जो मिदियानी 'औरत मारी गई उसका नाम कज़बी था, वह सूर की बेटी थी जो मिदियान में एक आबाई खान्दान के लोगों का सरदार था। <sup>16</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, <sup>17</sup> “मिदियानियों को सताना और उनको मारना, <sup>18</sup> क्योंकि वह तुम को अपने धोखे के दाम में फँसाकर सताते हैं, जैसा फ़गूर के मु'आमिले में हुआ और कज़बी के मु'आमिले में भी हुआ।” जो मिदियान के सरदार की बेटी और मिदियानियों की बहन थी, और फ़गूर ही के मु'आमिले में वबा के दिन मारी गई।

## 26

२२२२२२२ २२ २२२२ २२ २२२२२ २२२२२२२

<sup>1</sup> और वबा के बाद खुदावन्द ने मूसा और हारून काहिन के बोटे इली'एलियाज़र से कहा कि, <sup>2</sup> “बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत में बीस बरस और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के जितने इस्राईली जंग करने के काबिल हैं, उन सभी को उनके आबाई खान्दानों के मुताबिक गिनो।” <sup>3</sup> चुनाँचे मूसा और इली'एलियाज़र काहिन ने मोआब के मैदानों में जो यरदन के किनारे किनारे यरीहू के सामने हैं, उन लोगों से कहा, <sup>4</sup> कि “बीस बरस और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के आदमियों को वैसे ही गिन लो जैसे खुदावन्द ने मूसा और बनी — इस्राईल को, जब वह मुल्क — ए — मिस्र से निकल आए थे हुक्म किया था।”

२२२२२ २२ २२२२२२

<sup>5</sup> रूबिन जो इस्राईल का पहलौठा था उसके बेटे यह हैं, या'नी हनूक, जिससे हनूकियों का खान्दान चला; और फ़ल्लू, जिससे फ़लवियों का खान्दान चला; <sup>6</sup> और हसरोन, जिससे हसरोनियों का खान्दान चला; और करमी, जिससे करमियों का खान्दान चला। <sup>7</sup> ये बनी रूबिन के खान्दान हैं, और इनमें से जो गिने गए वह तैन्तालीस हजार सात सौ तीस थे। <sup>8</sup> और फ़ल्लू का बेटा इलियाब था, <sup>9</sup> और इलियाब के बेटे नमूएल और दातन और अबीराम थे। यह वही दातन और अबीराम हैं जो जमा'अत के चुने हुए थे, और जब क्रोरह के फ़रीक़ ने खुदावन्द से झगड़ा किया तो यह भी उस फ़रीक़ के साथ मिल कर मूसा और हारून से झगड़े; <sup>10</sup> और जब उन ढाई सौ आदमियों के आग में भसम हो जाने से वह फ़रीक़ हलाक हो गया, उसी मौक़े पर ज़मीन ने मुँह खोल कर क्रोरह के साथ उनको भी निगल लिया था; और वह सब 'इब्रत का निशान ठहरे। <sup>11</sup> लेकिन क्रोरह के बेटे नहीं मरे थे।

२२२२ २२ २२२२२२

<sup>12</sup> और शमौन के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी नमूएल, जिससे नमूएलियों का खान्दान चला; और यमीन, जिससे यमीनियों का खान्दान चला; और यकीन, जिससे यकीनियों का खान्दान चला; <sup>13</sup> और ज़ारह, जिससे ज़ारहियों का खान्दान चला; और साऊल, जिससे साऊलियों का खान्दान चला। <sup>14</sup> तब बनी शमौन के खान्दानों में से बाईस हजार दो सौ आदमी गिने गए।

२२२२ २२ २२२२२२

<sup>15</sup> और जद् के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी सफ़ोन, जिससे सफ़ोनियों का खान्दान चला; और हज्जी, जिससे हज्जियों का खान्दान चला; और सूनी, जिससे सूनियों का खान्दान चला; <sup>16</sup> और उज़नी जिससे उज़नियों का खान्दान चला; और 'एरी, जिससे 'एरियों का खान्दान चला; <sup>17</sup> और अरूद, जिससे अरूदियों का खान्दान चला; और अरेली, जिससे अरेलियों का खान्दान चला। <sup>18</sup> बनी जद् के यही घराने हैं, जो इनमें से गिने गए वह चालीस हजार पाँच सौ थे।

२२२२२२२ २२ २२२२२२

<sup>19</sup> यहूदाह के बेटों में से 'एर और ओनान तो मुल्क — ए — कना'न ही में मर गए। <sup>20</sup> और यहूदाह के और बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी सीला, जिससे सीलानियों का खान्दान चला; और फ़ारस, जिससे फ़ारसियों का खान्दान चला; और ज़ारह, जिससे ज़ारहियों का खान्दान चला। <sup>21</sup> फ़ारस के बेटे यह हैं,



या'नी हसरोन, जिससे हसरोनियों का खान्दान चला; और हमूल, जिससे हमूलियों का खान्दान चला। <sup>22</sup> ये बनी यहूदाह के घराने हैं। इनमें से छिहत्तर हजार पाँच सौ आदमी गिने गए।

???????? ?? ???????

<sup>23</sup> और इश्कार के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी तोला, जिससे तोल'इयों का खान्दान चला; और फुव्वा, जिससे फुवियों का खान्दान चला; <sup>24</sup> यसूब, जिससे यसूबियों का खान्दान चला; सिमरोन, जिससे सिमरोनियों का खान्दान चला। <sup>25</sup> यह बनी इश्कार के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह चौंसठ हजार तीन सौ थे।

???????? ?? ???????

<sup>26</sup> और ज़बूलून के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी सरद, जिससे सरदियों का खान्दान चला; एलोन, जिससे एलोनियों का खान्दान चला; यहलीएल, जिससे यहलीएलियों का खान्दान चला। <sup>27</sup> यह बनी ज़बूलून के घराने हैं। इनमें से साठ हजार पाँच सौ आदमी गिने गए।

???????? ?? ???????

<sup>28</sup> और यूसुफ़ के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी मनस्सी और इफ़राईम। <sup>29</sup> और मनस्सी का बेटा मकीर था, जिससे मकीरियों का खान्दान चला; और मकीर से जिल'आद पैदा हुआ, जिससे जिल'आदियों का खान्दान चला। <sup>30</sup> और जिल'आद के बेटे यह हैं, या'नी ई'एलियाज़र, जिससे ई'अज़रियों का खान्दान चला; और खलक, जिससे खलकियों का खान्दान चला; <sup>31</sup> और असरीएल, जिससे असरीएलियों का खान्दान चला; और सिकम, जिससे सिकमियों का खान्दान चला; <sup>32</sup> और समीदा, जिससे समीदा'इयों का खान्दान चला; और हिफ़र, जिससे हिफ़रियों का खान्दान चला। <sup>33</sup> और हिफ़र के बेटे सिलाफ़िहाद के यहाँ कोई बेटा नहीं बल्कि बेटियाँ ही हुई, और सिलाफ़िहाद की बेटियों के नाम यह हैं: महलाह, और नू'आह, और हुजलाह, और मिल्काह, और तिरज़ाह। <sup>34</sup> यह बनी मनस्सी के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह बावन हजार सात सौ थे।

???????? ?? ???????

<sup>35</sup> और इफ़राईम के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी सुतलह, जिससे सुतलहियों का खान्दान चला; और बकर, जिससे बकरियों का खान्दान चला; और तहन जिससे तहनियों का खान्दान चला। <sup>36</sup> और सुतलह का बेटा 'ईरान था, जिससे 'ईरानियों का खान्दान चला। <sup>37</sup> यह बनी इफ़राईम के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए

वह बत्तीस हजार पाँच सौ थे। यूसुफ़ के बेटों के खान्दान यही हैं।

???????? ?? ???????

<sup>38</sup> और बिनयमीन के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी बला, जिससे बला'इयों का खान्दान चला; और अशबील, जिससे अशबीलियों का खान्दान चला; और अखीराम, जिससे अखीरामियों का खान्दान चला; <sup>39</sup> और सूफ़ाम, जिससे सूफ़ामियों का खान्दान चला; और हूफ़ाम, जिससे हूफ़ामियों का खान्दान चला। <sup>40</sup> बाला' के दो बेटे थे एक अर्द, जिससे अर्दियों का खान्दान चला; दूसरा ना'मान, जिससे ना'मानियों का खान्दान चला। <sup>41</sup> यह बनी बिनयमीन के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह पैतालस हजार छः सौ थे।

???? ?? ???????

<sup>42</sup> और दान का बेटा जिससे उसका खान्दान चला सुहाम था, उससे सूहामियों खान्दान चला। दानियों का खान्दान यही था। <sup>43</sup> सूहामियों के खान्दान के जो आदमी गिने गए वह चौंसठ हजार चार सौ थे।

???? ?? ???????

<sup>44</sup> और आशर के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी यिमना, जिससे यिमनियों का खान्दान चला; और इसवी, जिससे इसवियों का खान्दान चला; और बरी'अह, जिससे बरी'अहियों का खान्दान चला। <sup>45</sup> बनी बरी'आह यह हैं, या'नी हिबर, जिससे हिब्रियों का खान्दान चला; और मलकीएल, जिससे मलकीएलियों का खान्दान चला। <sup>46</sup> और आशर की बेटा का नाम सारा था। <sup>47</sup> यह बनी आशर के घराने हैं, और जो इनमें से गिने गए वह तिरपन हजार चार सौ थे।

???????? ?? ???????

<sup>48</sup> और नफ़्ताली के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, या'नी यहसीएल, जिससे यहसीएलियों का खान्दान चला; और जूनी, जिससे जूनियों का खान्दान चला; <sup>49</sup> और यिस्र, जिससे यिस्रियों का खान्दान चला; और सलीम, जिससे सलीमियों का खान्दान चला। <sup>50</sup> यह बनी नफ़्ताली के घराने हैं, और जितने इनमें से गिने गए वह पैतालीस हजार चार सौ थे।

???????? ?? ???????

<sup>51</sup> फिर बनी — इस्राईल में से जितने गिने गए वह सब मिला कर छः लाख एक हजार सात सौ तीस थे। <sup>52</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>53</sup> “इन ही को, इनके नामों के शुमार के मुवाफ़िक़ वह ज़मीन मीरास के तौर पर बाँट दी जाए। <sup>54</sup> जिस कबीले में ज्यादा आदमी हों उसे ज्यादा हिस्सा मिले, और जिसमें कम हों उसे कम हिस्सा मिले। हर कबीले की मीरास उसके गिने

हुए आदमियों के शुमार पर खत्म हो।<sup>55</sup> लेकिन ज़मीन पर्वी से तक्सीम की जाए। वह अपने आबाई कबीलों के नामों के मुताबिक मीरास पाएँ।<sup>56</sup> और चाहे ज्यादा आदमियों का कबीला हो या थोड़ों का, पर्वीसे उनकी मीरास तक्सीम की जाए।”

???? ?? ?????

57 और जो लावियों में से अपने — अपने खान्दान के मुताबिक गिने गए वह यह हैं, या'नी जैरसोन से जैरसोनियों का घराना, किहात से किहातियों का घराना, मिरारी से मिरारियों का घराना। 58 और यह भी लावियों के घराने हैं, या'नी लिबनी का घराना, हबरून का घराना, महली का घराना, और मूशी का घराना, और कोरह का घराना। और क किहात से अमराम पैदा हुआ। 59 और अमराम की बीवी का नाम यूकबिद था, जो लावी की बेटी थी और मिस्र में लावी के यहाँ पैदा हुई; इसी के हारून और मूसा और उनकी बहन मरियम अमराम से पैदा हुए। 60 और हारून के बेटे यह थे: नदब और अबीहू और इली'एलियाज़र और ऐतामर। 61 और नदब और अबीहू तो उसी वक्त मर गए जब उन्होंने खुदावन्द के सामने ऊपरी आग पेश की थी। 62 फिर उनमें से जितने एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर के नरीना फ़र्ज़न्द गिने गए वह तेईस हज़ार थे। यह बनी — इस्राईल के साथ नहीं गिने गए क्योंकि इनको बनी — इस्राईल के साथ मीरास नहीं मिली। 63 तब मूसा और इली'एलियाज़र काहिन ने जिन बनी — इस्राईल को मोआब के मैदानों में जो यरदन के किनारे किनारे यरीहू के सामने हैं शुमार किया वह यही हैं। 64 लेकिन जिन इस्राईलियों को मूसा और हारून काहिन ने सीना के जंगल में गिना था, उनमें से एक शख्स भी इनमें न था। 65 क्योंकि खुदावन्द ने उनके हक्क में कह दिया था कि वह यक्रीनन वीरान में मर जाएँगे, चुनाँचे उनमें से अलावा युफ़न्ना के बेटे कालिब और नून के बेटे यशू'अ के एक भी बाकी नहीं बचा था।

## 27

?????????? ?? ???? ?????

1 तब यूसुफ़ के बेटे मनस्सी की औलाद के घरानों में से सिलाफ़िहाद बिन हिफ़र बिन जिल'आद बिन मकीर बिन मनस्सी की बेटियाँ, जिनके नाम महलाह और नो'आह और हुजलाह और मिलकाह और तिरज़ाह हैं, पास आकर 2 खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर मूसा और इली'एलियाज़र काहिन और अमीरों और सब जमा'अत के सामने खड़ी हुई और कहने लगीं कि; 3 "हमारा बाप

वीरान में मरा, लेकिन वह उन लोगों में शामिल न था जिन्होंने क्रौरह के फ़रीक से मिल कर खुदावन्द के खिलाफ़ सिर उठाया था; बल्कि वह अपने गुनाह में मरा और उसके कोई बेटा न था। <sup>4</sup> इसलिए बेटा न होने की वजह से हमारे बाप का नाम उसके घराने से क्यूँ मिटने पाए? इसलिए हम को भी हमारे बाप के भाइयों के साथ हिस्सा दो।” <sup>5</sup> मूसा उनके मु'आमिले को खुदावन्द के सामने ले गया। <sup>6</sup> खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>7</sup> “सिलाफ़िहाद की बेटियाँ ठीक कहती हैं; तू उनको उनके बाप के भाइयों के साथ ज़रूर ही मीरास का हिस्सा देना, या'नी उनको उनके बाप की मीरास मिले। <sup>8</sup> और बनी — इस्राईल से कह, कि अगर कोई शख्स मर जाए और उसका कोई बेटा न हो, तो उस की मीरास उसकी बेटी को देना। <sup>9</sup> अगर उसकी कोई बेटी भी न हो, तो उसके भाइयों को उसकी मीरास देना। <sup>10</sup> अगर उसके भाई भी न हों, तो तुम उसकी मीरास उसके बाप के भाइयों को देना। <sup>11</sup> अगर उसके बाप का भी कोई भाई न हो, तो जो शख्स उसके घराने में उसका सब से करीबी रिश्तेदार हो उसे उसकी मीरास देना; वह उसका वारिस होगा। और यह हुक्म बनी — इस्राईल के लिए, जैसा खुदावन्द ने मूसा को फ़रमाया वाजिबी फ़र्ज़ होगा।”

11111 11 11111111111 11 11111111  
 11111 11 11111 11111 11111

12 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, “तू 'अबारीम के इस पहाड़ पर चढ़कर उस मुल्क को, जो मैंने बनी — इस्राईल को 'इनायत किया है देख ले। 13 और जब तू उसे देख लेगा, तो तू भी अपने लोगों में अपने भाई हारून की तरह जा मिलेगा। 14 क्योंकि सीन के जंगल में जब जमा'अत ने मुझ से झगड़ा किया, तो बरअक्स इसके कि वहाँ पानी के चश्मे पर तुम दोनों उनकी आँखों के सामने मेरी तक्रदीस करते, तुम ने मेरे हुक्म से सरकशी की।” यह वही मरीबा का चश्मा है जो दशत — ए — सीन के क़ादिस में है। 15 मूसा ने खुदावन्द से कहा कि; 16 “खुदावन्द सारे बशर की रूहों का खुदा, किसी आदमी को इस जमा'अत पर मुक़र्रर करे; 17 जिसकी आमद — ओ — रफ़्त उनके सामने हो और वह उनको बाहर ले जाने और अन्दर ले आने में उनका रहबर हो, ताकि खुदावन्द की जमा'अत उन भेड़ों की तरह न रहे जिनका कोई चरवाहा नहीं।” 18 खुदावन्द ने मूसा से कहा, “तू नून के बेटे यशू'अ को लेकर उस पर अपना हाथ रख, क्योंकि उस शख्स में रूह है; 19 और उसे इली'एलियाज़र काहिन और सारी जमा'अत के आगे खड़ा करके उनकी आँखों के सामने उसे वसीयत कर। 20 और अपने रोबदाब से उसे बहरावर कर दे, ताकि बनी

— इस्राईल की सारी जमा'अत उसकी फ़रमाबरदारी करे। <sup>21</sup> वह इली'एलियाज़र काहिन के आगे खड़ा हुआ करे, जो उसकी जानिब से खुदावन्द के सामने \*ऊरीम का हुक्म दरियाफ़्त किया करेगा। उसी के कहने से वह और बनी — इस्राईल की सारी जमा'अत के लोग निकला करें, और उसी के कहने से लौटा भी करें।" <sup>22</sup> इसलिए मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ 'अमल किया, और उसने यशू'अ को लेकर उसे इली'एलियाज़र काहिन और सारी जमा'अत के सामने खड़ा किया; <sup>23</sup> और उसने अपने हाथ उस पर रखे, और जैसा खुदावन्द ने उसको हुक्म दिया था उसे वसीयत की।

## 28

१ और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; <sup>2</sup> "बनी —

इस्राईल से कह कि मेरा हृदया, या'नी मेरी वह गिज़ा जो राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशीन कुर्बानी है, तुम याद करके मेरे सामने वक्रत — ए — मु'अय्यन पर पेश करा करना। <sup>3</sup> तू उन से कह दे कि जो आतिशी कुर्बानी तुम को खुदावन्द के सामने पेश करना है वह यह है: कि दो बे — 'ऐब यक — साला नर बरें हर दिन दाइमी सोख्तनी कुर्बानी के लिए 'अदा करो। <sup>4</sup> एक बरा सुबह और दूसरा बरा शाम को चढ़ाना; <sup>5</sup> और साथ ही ऐफ़ा के \*दसवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें कूट कर निकाला हुआ तेल †चौथाई हीन के बराबर मिला हो, नज़र की कुर्बानी के तौर पर पेश करना। <sup>6</sup> यह वही दाइमी सोख्तनी कुर्बानी है जो कोह-ए-सीना पर मुकर्रर की गई, ताकि खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी ठहरे। <sup>7</sup> और हीन की चौथाई के बराबर मय हर एक बरा तपावन के लिए लाना। हैकल ही में खुदावन्द के सामने मय का यह तपावन चढ़ाना। <sup>8</sup> और दूसरे बरें को शाम के वक्रत चढ़ाना, और उसके साथ भी सुबह की तरह वैसी ही नज़र की कुर्बानी और तपावन हो, ताकि यह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी ठहरे।

१ और सबत के दिन दो बे — 'ऐब यकसाला नर बरें

और नज़र की कुर्बानी के तौर पर ऐफ़ा के पाँचवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो, तपावन के साथ पेश

करना। <sup>10</sup> दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसके तपावन के 'अलावा यह हर सबत की सोख्तनी कुर्बानी है।

११ "और अपने महीनों के शुरू में हर माह दो। बछड़े

और एक मेंढा और सात बे'ऐब यक — साला नर बरें सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने चढ़ाया करना। <sup>12</sup> और ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो, हर बछड़े के साथ; और ऐफ़ा के पाँचवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो, हर मेंढे के साथ; और ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो, <sup>13</sup> हर बरें के साथ नज़र की कुर्बानी के तौर पर लाना। ताकि यह राहतअंगेज़ खुशबू की सोख्तनी कुर्बानी, या'नी खुदावन्द के सामने आतिशीन कुर्बानी ठहरे। <sup>14</sup> और इन के साथ तपावन के लिए मय हर एक बछड़ा आधे हीन के बराबर, और हर एक मेंढा तिहाई हीन के बराबर, और हर एक बरा चौथाई हीन के बराबर हो। यह साल भर के हर महीने की सोख्तनी कुर्बानी है। <sup>15</sup> और उस दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसके तपावन के 'अलावा एक बकरा खता की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करा जाए।

१६ और पहले महीने की चौदहवीं तारीख को खुदावन्द

की फ़सह हुआ करे। <sup>17</sup> और उसी महीने की पंद्रहवीं तारीख को 'ईद हो, और सात दिन तक बेखमीरी रोटी खाई जाए। <sup>18</sup> पहले दिन लोगों का पाक मजमा हो, तुम उस दिन कोई खादिमाना काम न करना। <sup>19</sup> बल्कि तुम आतिशी कुर्बानी, या'नी खुदावन्द के सामने सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर दो बछड़े और एक मेंढा और सात यक — साला नर बरें चढ़ाना। यह सब के सब बे — 'ऐब हों। <sup>20</sup> और उनके साथ नज़र की कुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ मैदा; हर एक बछड़ा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर एक मेंढा पाँचवें हिस्से के बराबर। <sup>21</sup> और सातों बरों में से हर बरा पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर पेश करा करना। <sup>22</sup> और खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा हो, ताकि उससे तुम्हारे लिए कफ़ारा दिया जाए। <sup>23</sup> तुम सुबह की सोख्तनी कुर्बानी के 'अलावा, जो दाइमी सोख्तनी कुर्बानी है, इनको भी पेश करना। <sup>24</sup> इसी तरह तुम हर दिन सात दिन तक आतिशी कुर्बानी की यह गिज़ा चढ़ाना, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू ठहरे; दिन

\* 27:21 27:21 उरीम और तुमीम यह दोनों परस्तिश की चीज़ें हैं, (मुमकिन तौर से पत्थर या लकड़ी की तराशी हुई चीज़ जैसे पासा या ठप्पा) जिस से सरदारकाहिन, हाँ यया नहीं का जवाब उस वक्रत हासिल करता था जिस वक्रत उसे खुदा की मर्ज़ी जानने की ज़रूरत महसूस होती थी — यह मुक़द्दस कुरे थे जिन्हें सरदार काहिन अपने चमड़े की थैली में हमेशा रखता था † 28:5 28:5 एक किलोग्राम ‡ 28:5 28:5 एक चौथाई हीन बराबर है एक लीटर के † 28:25 28:25 ईद का दिन

— मर्रा की दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और तपावन के 'अलावा यह भी पेश करा जाए। <sup>25</sup> और सातवें दिन फिर तुम्हारा पाक मजमा हो उसमें कोई खादिमाना काम न करना।

22-2-222222 22 222222

<sup>26</sup> 'और पहले फलों के दिन, जब तुम नई नज़र की कुर्बानी हफ्तों की 'ईद में खुदावन्द के सामने पेश करो, तब भी तुम्हारा पाक मजमा' हो; उस दिन कोई खादिमाना काम न करना। <sup>27</sup> बल्कि तुम सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर दो बछड़े, एक मेंढा और सात यक — साला नर बरें पेश करना; ताकि यह खुदावन्द के सामने राहत अंगेज़ खुशबू हो, <sup>28</sup> और इनके साथ नज़र की कुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ मैदा; हर बछड़ा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर मेंढा पाँचवें हिस्से के बराबर, <sup>29</sup> और सातों बरों में से हर बरें पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर हो। <sup>30</sup> और एक बकरा हो ताकि तुम्हारे लिए कफ़ारा दिया जाए। <sup>31</sup> दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसकी नज़र की कुर्बानी के 'अलावा तुम इनको भी पेश करना। यह सब बे — 'ऐब हों और इनके तपावन साथ हों।

## 29

222222 22 22 22 222222

<sup>1</sup> और सातवें महीने की पहली तारीख को तुम्हारा पाक मजमा' हो, उसमें कोई खादिमाना काम न करना। यह तुम्हारे लिए नरसिंगे फूँकने का दिन है। \* <sup>2</sup> तुम सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर एक बछड़ा, एक मेंढा और सात बे — 'ऐब यक — साला नर बरें चढ़ाना ताकि यह खुदावन्द के सामने राहत अंगेज़ खुशबू ठहरे। <sup>3</sup> और इनके साथ नज़र की कुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ मैदा; बछड़ा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर मेंढा पाँचवें हिस्से के बराबर, <sup>4</sup> और सातों बरों में से हर बरें पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर हो। <sup>5</sup> और एक बकरा ख़ता की कुर्बानी के लिए हो, ताकि तुम्हारे वास्ते कफ़ारा दिया जाए। <sup>6</sup> नये चाँद की सोख्तनी कुर्बानी और उसकी नज़र की कुर्बानी, और दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसकी नज़र की कुर्बानी और उनके तपावनों के 'अलावा, जो अपने — अपने क़ानून के मुताबिक़ पेश करे जाएँगे, यह भी राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने अदा किये जाए।

222222 22 2222 22 222222

<sup>7</sup> 'फिर उसी सातवें महीने की दसवीं तारीख को तुम्हारा पाक मजमा' हो; तुम अपनी अपनी जान को दुःख देना और किसी तरह का काम न करना, <sup>8</sup> बल्कि सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर एक बछड़ा, एक मेंढा और सात यक — साला नर बरें खुदावन्द के सामने चढ़ाना, ताकि यह राहतअंगेज़ खुशबू ठहरे; यह सब के सब बे — 'ऐब हों, <sup>9</sup> और इनके साथ नज़र की कुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ मैदा; हर बछड़ा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर मेंढा पाँचवें हिस्से के बराबर, <sup>10</sup> और सातों बरों में से हर बरें पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर हो, <sup>11</sup> और ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा हो; यह भी उस ख़ता की कुर्बानी के 'अलावा, जो कफ़ारे के लिए है और दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसकी नज़र की कुर्बानी, और तपावनों के 'अलावा अदा किये जाएँ।

22-2-222222 22 222222222222

<sup>12</sup> और सातवें महीने की पन्द्रहवीं तारीख को फिर तुम्हारा पाक मजमा' हो; उस दिन तुम कोई खादिमाना काम न करना, और सात दिन तक खुदावन्द की खातिर 'ईद मनाना। <sup>13</sup> और तुम सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर तेरह बछड़े, दो मेंढे, और चौदह यक — साला नर बरें चढ़ाना ताकि यह राहत अंगेज़ खुशबू खुदावन्द के लिए आतिशीन कुर्बानी ठहरे; यह सब के सब बे — 'ऐब हों। <sup>14</sup> और इनके साथ नज़र की कुर्बानी के तौर पर तेरह बछड़ों में से हर बछड़े पीछे तेल मिला हुआ मैदा ऐफ़ा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और दोनों मेंढों में से हर मेंढे पीछे पाँचवें हिस्से के बराबर, <sup>15</sup> और चौदह बरों में से हर बरें पीछे ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर हो। <sup>16</sup> और एक बकरा ख़ता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसकी नज़र की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा चढ़ाए जाएँ। <sup>17</sup> "और दूसरे दिन बारह बछड़े, दो मेंढे और चौदह बे — 'ऐब यक — साला नर बरें चढ़ाना। <sup>18</sup> और बछड़ों और मेंढों और बरों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीक़े के मुताबिक़ उनकी नज़र की कुर्बानी और तपावन हों, <sup>19</sup> और एक बकरा ख़ता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसकी नज़र की कुर्बानी और तपावनों के 'अलावा चढ़ाए जाएँ। <sup>20</sup> और तीसरे दिन ग्यारह बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला बे — 'ऐब नर बरें हों। <sup>21</sup> और बछड़ों और मेंढों और बरों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीक़े के मुताबिक़ उनकी नज़र की कुर्बानी और तपावन हों, <sup>22</sup> और एक बकरा ख़ता की कुर्बानी के

\* <sup>29:1</sup> 29:1 इब्री कैलेंडर का सातवां महिना सितम्बर और अक्टूबर के बीच पड़ता है, यह इब्री साल का मुक़द्दस महिना हुआ करता था —

† <sup>29:7</sup> 29:7 रोज़ा रखना



लिए हो। यह सब दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसकी नज़र की कुर्बानी और तपावन के अलावा चढ़ाए जाएँ।

23 'और चौथे दिन दस बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला बे — 'ऐब नर बरें हों। 24 और बछड़ों और मेंढों और बरों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीके के मुताबिक उनकी नज़र की कुर्बानी और तपावन हों, 25 और एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसकी नज़र की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा चढ़ाए जाएँ। 26 "और पाँचवे दिन नौ बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला बे — 'ऐब नर बरें हों। 27 और बछड़ों और मेंढों और बरों के साथ, उनके शुमार और क़ानून के मुताबिक उनकी नज़र की कुर्बानी और तपावन हों, 28 और एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसकी नज़र की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा चढ़ाए जाएँ। 29 'और छठे दिन आठ बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला बे — 'ऐब नर बरें हों। 30 और बछड़ों और मेंढों और बरों के साथ, उनके शुमार और क़ानून के मुताबिक उनकी नज़र की कुर्बानी और तपावन हों; 31 और एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसकी नज़र की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा अदा की जाएँ। 32 "और सातवें दिन सात बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला बे — 'ऐब नर बरें हों। 33 और बछड़ों और मेंढों और बरों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीके के मुताबिक उनकी नज़र की कुर्बानी और तपावन हों, 34 और एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसकी नज़र की कुर्बानी और तपावन के अलावा अदा की जाएँ 35 "और आठवें दिन तुम्हारा पाक मजमा' हो; तुम उस दिन कोई खादिमाना काम न करना, 36 बल्कि तुम एक बछड़ा, एक मेंढा, और सात यक — साला बे — 'ऐब नर बरें सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर चढ़ाना ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज़ खुशबू की आतिशी कुर्बानी ठहरे। 37 और बछड़े और मेंढे और बरों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीके के मुताबिक उनकी नज़र की कुर्बानी और तपावन हों, 38 और एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोख्तनी कुर्बानी और उसकी नज़र की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा चढ़ाए जाएँ। 39 "तुम अपनी मुकर्ररा 'ईदों में अपनी मिन्नतों और रज़ा की कुर्बानियों के 'अलावा यही सोख्तनी कुर्बानियाँ और नज़र की कुर्बानियाँ और तपावन और सलामती की कुर्बानियाँ खुदावन्द को पेश करना।" 40 और जो कुछ

खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया, वह सब मूसा ने बनी इस्राईल को बता दिया।

## 30

2222 22 222222222 222222

1 और मूसा ने बनी — इस्राईल के क़बीलों के सरदारों से कहा, "जिस बात का खुदावन्द ने हुक्म दिया है वह यह है, कि 2 जब कोई मर्द खुदावन्द की मिन्नत माने या क़सम खाकर अपने ऊपर कोई खास फ़र्ज़ ठहराए, तो वह अपने 'अहद को न तोड़े; बल्कि जो कुछ उसके मुँह से निकला है उसे पूरा करे। 3 और अगर कोई 'औरत खुदावन्द की मिन्नत माने और अपनी नौ जवानी के दिनों में अपने बाप के घर होते हुए अपने ऊपर कोई फ़र्ज़ ठहराए। 4 और उसका बाप उसकी मिन्नत और उसके फ़र्ज़ का हाल जो उसने अपने ऊपर ठहराया है सुनकर चुप हो रहे, तो वह सब मिन्नतें और सब फ़र्ज़ जो उस 'औरत ने अपने ऊपर ठहराए हैं क़ाईम रहेंगे। 5 लेकिन अगर उसका बाप जिस दिन यह सुने उसी दिन उसे मना' करे, तो उसकी कोई मिन्नत या कोई फ़र्ज़ जो उसने अपने ऊपर ठहराया है, क़ाईम नहीं रहेगा; और खुदावन्द उस 'औरत को मा'ज़ूर रखेगा क्यूँकि उसके बाप ने उसे इजाज़त नहीं दी। 6 और अगर किसी आदमी से उसकी निस्वत हो जाए, हालाँकि उसकी मिन्नतें या मुँह की निकली हुई बात जो उसने अपने ऊपर फ़र्ज़ ठहराई है, अब तक पूरी न हुई हो; 7 और उसका आदमी यह हाल सुनकर उस दिन उससे कुछ न कहे तो उसकी मनतें क़ाईम रहेंगी, और जो बातें उसने अपने ऊपर फ़र्ज़ ठहराई हैं वह भी क़ाईम रहेंगी। 8 लेकिन अगर उसका आदमी जिस दिन यह सब सुने, उसी दिन उसे मना' करे तो उसने जैसे उस 'औरत की मिन्नत को और उसके मुँह की निकली हुई बात को जो उसने अपने ऊपर फ़र्ज़ ठहराई थी तोड़ दिया; और खुदावन्द उस 'औरत को मा'ज़ूर रखेगा। 9 लेकिन बेवा और तलाक़शुदा की मिन्नतें और फ़र्ज़ ठहरायी हुई बातें क़ाईम रहेंगी। 10 और अगर उसने अपने शौहर के घर होते हुए कुछ मिन्नत मानी या क़सम खाकर अपने ऊपर कोई फ़र्ज़ ठहराया हो, 11 और उसका शौहर यह हाल सुन कर खामोश रहा हो और उसे मना' न किया हो, तो उसकी मिन्नतें और सब फ़र्ज़ जो उसने अपने ऊपर ठहराए क़ाईम रहेंगे। 12 लेकिन अगर उसके शौहर ने जिस दिन यह सब सुना उसी दिन उसे बातिल ठहराया हो, तो जो कुछ उस 'औरत के मुँह से उसकी मिन्नतों और ठहराए हुए फ़र्ज़ के बारे में निकला है, वह क़ाईम नहीं रहेगा; उसके शौहर ने उनको तोड़ डाला है, और खुदावन्द उस

'औरत को मा'ज़ूर रखेगा। <sup>13</sup> उसकी हर मिन्नत को और अपनी जान को दुख देने की हर क्रसम को उसका शौहर चाहे तो काईम रखे, या अगर चाहे तो बातिल ठहराए। <sup>14</sup> लेकिन अगर उसका शौहर दिन — ब — दिन खामोश ही रहे, तो वह जैसे उसकी सब मिन्नतों और ठहराए हुए फ़र्ज़ों को काईम कर देता है; उसने उनको काईम यँ किया कि जिस दिन से सब सुना वह खामोश ही रहा। <sup>15</sup> लेकिन अगर वह उनको सुन कर बाद में उनको बातिल ठहराए तो वह उस 'औरत का गुनाह उठाएगा।" <sup>16</sup> शौहर और बीवी के बीच और बाप बेटी के बीच, जब बेटी नौ — जवानी के दिनों में बाप के घर हो, इन ही तौर तरीके का हुक्म खुदावन्द ने मूसा को दिया।

### 31

?????????? ??

<sup>1</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> "मिदियानियों से बनी — इस्राईल का इन्तक़ाम ले; इसके बाद तू अपने लोगों में जा मिलेगा।" <sup>3</sup> तब मूसा ने लोगों से कहा, "अपने में से जंग के लिए आदमियों को हथियारबन्द करो, ताकि वह मिदियानियों पर हमला करें और मिदियानियों से खुदावन्द का इन्तक़ाम लें।" <sup>4</sup> और इस्राईल के सब क़बीलों में से हर क़बीला एक हज़ार आदमी लेकर जंग के लिए भेजना।" <sup>5</sup> फिर हज़ारों हज़ार बनी — इस्राईल में से हर क़बीला एक हज़ार के हिसाब से बारह हज़ार हथियारबन्द आदमी जंग के लिए चुने गए। <sup>6</sup> यँ मूसा ने हर क़बीले से एक हज़ार आदमियों को जंग के लिए भेजा और इली'एलियाज़र काहिन के बेटे फ़ीन्हास को भी जंग पर खाना किया, और हैकल के बर्तन और बलन्द आवाज़ के नरसिंगे उसके साथ कर दिए। <sup>7</sup> और जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था, उसके मुताबिक़ उन्होंने मिदियानियों से जंग की और सब मर्दों को क़त्ल किया। <sup>8</sup> और उन्होंने उन मक्तूलों के अलावा ईव्वी और रक़म और सूर और होर और रबा' को भी, जो मिदियान के पाँच बादशाह थे, जान से मारा और ब'ओर के बेटे बल'आम को भी तलवार से क़त्ल किया। <sup>9</sup> और बनी — इस्राईल ने मिदियान की 'औरतों और उनके बच्चों को गुलाम किया, और उनके चौपाये और भेड़ बकरियाँ और माल — ओ — अस्बाब सब कुछ लूट लिया। <sup>10</sup> और उनकी सुकुनतगाहों के सब शहरों को जिनमें वह रहते थे, और उनकी सब छावनियों को आग से फूँक दिया। <sup>11</sup> और उन्होंने सारा माल —

ए — ग़नीमत और सब गुलाम, क्या इंसान और क्या हैवान साथ लिए, <sup>12</sup> और उन गुलामों और माल — ए — ग़नीमत को मूसा और इली'एलियाज़र काहिन और बनी इस्राईल की सारी जमा'अत के पास उस लश्करगाह में ले आए जो यरीहू के सामने यरदन के किनारे किनारे मोआब के मैदानों में थी। <sup>13</sup> तब मूसा और इली'एलियाज़र काहिन और जमा'अत के सब सरदार उनके इस्तक़बाल के लिए लश्करगाह के बाहर गए। <sup>14</sup> और मूसा उन फ़ौजी सरदारों पर जो हज़ारों और सैकड़ों के सरदार थे और जंग से लौटे थे झल्लाया, <sup>15</sup> और उनसे कहने लगा, "क्या तुम ने सब 'औरतें जीती बचा रखी हैं? <sup>16</sup> \*देखो, इन ही ने बल'आम की सलाह से फ़गूर के मु'आमिले में बनी — इस्राईल से खुदावन्द की हुक्म उदूली कराई, और यँ खुदावन्द की जमा'अत में वबा फैली। <sup>17</sup> इसलिए इन बच्चों में जितने लड़के हैं सब को मार डालो, और जितनी 'औरतें मर्द का मुँह देख चुकी हैं उनको क़त्ल कर डालो। <sup>18</sup> लेकिन उन लड़कियों को जो मर्द से वाकिफ़ नहीं और अच्छी हैं, अपने लिए ज़िन्दा रखो। <sup>19</sup> और तुम सात दिन तक लश्करगाह के बाहर ही खेमे डाले पड़े रहो, और तुम में से जितनों ने किसी आदमी की जान से मारा हो और जितनों ने किसी मक्तूल को छुआ हो, वह सब अपने आप को और अपने कैदियों को तीसरे दिन और सातवें दिन पाक करें। <sup>20</sup> तुम अपने सब कपड़ों और चमड़े की सब चीज़ों को और बकरी के बालों की बुनी हुई चीज़ों को और लकड़ी के सब बर्तनों को पाक करना।" <sup>21</sup> और इली'एलियाज़र काहिन ने उन सिपाहियों से जो जंग पर गए थे कहा, शरी'अत का वह क़ानून जिसका हुक्म खुदावन्द ने मूसा को दिया यही है, कि <sup>22</sup> सोना और चाँदी और पीतल और लोहा और रांगा और सीसा; <sup>23</sup> गरज़ जो कुछ आग में ठहर सके वह सब तुम आग में डालना तब वह साफ़ होगा, तो भी नापाकी दूर करने के पानी से उसे पाक करना पड़ेगा; और जो कुछ आग में न ठहर सके उसे तुम पानी में डालना। <sup>24</sup> †और तुम सातवें दिन अपने कपड़े धोना तब तुम पाक ठहरोगे, इसके बाद लश्करगाह में दाख़िल होना।

??????

<sup>25</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, <sup>26</sup> "इली'एलियाज़र काहिन और जमा'अत के आबाई खान्दानों के सरदारों को साथ लेकर, तू उन आदमियों

\* **31:16** 31:16 मायने की जांच करें, अगर साफ़ नहीं है तो सलाह के पीछे चलें — सलाह: यह वह लोग थे जो बलाम की नसीहत पर चलते थे और बनी इस्राईल को सबब बनाते थे कि वह पीओर पहाड़ पर खुदावन्द के खिलाफ़ बगावत करें — यह वह लोग थे जिन के सबब से खुदावन्द के लोगों पर वबा की मार पड़ी — देखें गिनती का 25 बाब † **31:24** 31:24 छावनी के बाहर क़ैद रहो

और जानवरों को शुमार कर जो लूट में आए हैं। <sup>27</sup> और लूट के इस माल को दो हिस्सों में तक्सीम कर कि, एक हिस्सा उन जंगी मर्दों को दे जो लड़ाई में गए थे और दूसरा हिस्सा जमा'अत को दे। <sup>28</sup> और उन जंगी मर्दों से जो लड़ाई में गए थे, खुदावन्द के लिए चाहे आदमी हों या गाय — बैल या गधे या भेड़ बकरियाँ, हर पाँच सौ पीछे एक को हिस्से के तौर पर ले; <sup>29</sup> इनही के आधे में से इस हिस्से को लेकर इली'एलियाज़र काहिन को देना, ताकि यह खुदावन्द के सामने उठाने की कुर्बानी ठहरे। <sup>30</sup> और बनी — इस्राईल के आधे में से चाहे आदमी हों या गाय — बैल या गधे या भेड़ — बकरियाँ, या'नी सब क्रिस्म के चौपायों में से पचास — पचास पीछे एक — एक को लेकर लावियों को देना जो खुदावन्द के घर की मुहाफ़िज़त करते हैं।” <sup>31</sup> चुनाँचे मूसा और इली'एलियाज़र काहिन ने जैसा खुदावन्द ने मूसा से कहा था वैसा ही किया। <sup>32</sup> और जो कुछ माल — ए — गनीमत जंगी मर्दों के हाथ आया था उसे छोड़कर लूट के माल में छः लाख पिछतर हजार भेड़ — बकरियाँ थीं; <sup>33</sup> और बहतर हजार गाय — बैल, <sup>34</sup> और इकसठ हजार गधे, <sup>35</sup> और नुफूस — ए — इंसानी में से बतीस हजार ऐसी 'औरतें जो मर्द से नावाक्रिफ़ और अच्छूती थीं। <sup>36</sup> और लूट के माल के उस आधे में जो जंगी मर्दों का हिस्सा था, तीन लाख सैंतीस हजार पाँच सौ भेड़ — बकरियाँ थीं, <sup>37</sup> जिनमें से छः सौ पिछतर भेड़ — बकरियाँ खुदावन्द के हिस्से के लिए थीं। <sup>38</sup> और छत्तीस हजार गाय — बैल थे, जिनमें से बहतर खुदावन्द के हिस्से के थे। <sup>39</sup> और तीस हजार पाँच सौ गधे थे, जिनमें से इकसठ गधे खुदावन्द के हिस्से के थे। <sup>40</sup> और नुफूस — ए — इंसानी का शुमार सोलह हजार था, जिनमें से बतीस जाने खुदावन्द के हिस्से की थीं। <sup>41</sup> तब मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुवाफ़िक उस हिस्से को जो खुदावन्द के उठाने की कुर्बानी थी, इली'एलियाज़र काहिन को दिया। <sup>42</sup> अब रहा बनी — इस्राईल का आधा हिस्सा, जिसे मूसा ने जंगी मर्दों के हिस्से से अलग रखवा था; <sup>43</sup> फिर इस आधे में भी जो जमा'अत को दिया गया तीन लाख सैंतीस हजार पाँच सौ भेड़ — बकरियाँ थीं, <sup>44</sup> और छत्तीस हजार गाय — बैल <sup>45</sup> और तीस हजार पाँच सौ गधे, <sup>46</sup> और सोलह हजार नुफूस — ए — इंसानी। <sup>47</sup> और बनी — इस्राईल के इस आधे में से मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुवाफ़िक, क्या इंसान और क्या हैवान हर पचास पीछे एक को लेकर लावियों को दिया जो खुदावन्द के घर की मुहाफ़िज़त करते थे। <sup>48</sup> तब वह फ़ौजी सरदार जो हजारों और सैकड़ों सिपाहियों के सरदार थे, मूसा के पास आकर

<sup>49</sup> उससे कहने लगे, “तेरे खादिमों ने उन सब जंगी मर्दों को जो हमारे मातहत हैं गिना, और उनमें से एक जवान भी कम न हुआ। <sup>50</sup> इसलिए हम में से जो कुछ जिसके हाथ लगा, या'नी सोने के ज़ेवर और पाज़ेब और कंगन और अंगूठियाँ और मुन्दरें और बाज़ूबन्द यह सब हम खुदावन्द के हृदिये के तौर पर ले आए हैं ताकि हमारी जानों के लिए खुदावन्द के सामने कफ़ारा दिया जाए।” <sup>51</sup> चुनाँचे मूसा और इली'एलियाज़र काहिन ने उनसे यह सब सोने के घड़े हुए ज़ेवर ले लिए। <sup>52</sup> और उस हृदिये का सारा सोना जो हजारों और सैकड़ों के सरदारों ने खुदावन्द के सामने पेश कर, वह या'नी, तकरीबन 190 कि. ग्रा. या'नीसोलह हजार सात सौ पचास मिस्काल था। <sup>53</sup> क्यूँकि जंगी मर्दों में से हर एक कुछ न कुछ लूट कर ले आया था। <sup>54</sup> तब मूसा और इली'एलियाज़र काहिन उस सोने को जो उन्होंने हजारों और सैकड़ों के सरदारों से लिया था, खेमा — ए — इजितमा'अ में लाए ताकि वह खुदावन्द के सामने बनी — इस्राईल की यादगार ठहरे।

## 32

????? ???? ?? ?????

<sup>1</sup> और बनी रूबिन और बनी जद्द के पास चौपायों के बहुत बड़े बड़े गोल थे। इसलिए जब उन्होंने या'ज़ेर और जिल'आद के मुल्कों को देखा कि यह मक़ाम चौपायों के लिए बहुत अच्छे हैं, <sup>2</sup> तो उन्होंने जाकर मूसा और इली'एलियाज़र काहिन और जमा'अत के सरदारों से कहा कि, <sup>3</sup> 'अतारात और दीबोन और या'ज़ेर और निमरा और हस्बोन, इली'आली और शबाम और नबू और बऊन, <sup>4</sup> या'नी वह मुल्क जिस पर खुदावन्द ने इस्राईल की जमा'अत को फ़तह दिलाई है, चौपायों के लिए बहुत अच्छा है और तेरे खादिमों के पास चौपाये हैं। <sup>5</sup> इसलिए अगर हम पर तेरे करम की नज़र है तो इसी मुल्क को अपने खादिमों की मीरास कर दे, और हम को यरदन पार न ले जा। <sup>6</sup> मूसा ने बनी रूबिन और बनी जद्द से कहा, “क्या तुम्हारे भाई लड़ाई में जाएँ और तुम यहीं बैठे रहो? <sup>7</sup> तुम क्यूँ बनी — इस्राईल को पार उतर कर उस मुल्क में जाने से, जो खुदावन्द ने उन को दिया है, बेदिल करते हो? <sup>8</sup> तुम्हारे बाप दादा ने भी, जब मैंने उनको क़ादिस बरनी' से भेजा कि मुल्क का हाल दरियाफ़्त करें तो ऐसा ही किया था। <sup>9</sup> क्यूँकि जब वह वादी — ए — इस्काल में पहुँचे और उस मुल्क को देखा, तो उन्होंने बनी — इस्राईल को बे — दिल कर दिया, ताकि वह उस मुल्क में जो खुदावन्द ने उनको 'इनायत किया न जाएँ। <sup>10</sup> और

उसी दिन खुदावन्द का ग़ज़ब भड़का और उसने क्रसम खाकर कहा, कि <sup>11</sup> उन लोगों में से जो मिस्र से निकल कर आये हैं बीस बरस और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का कोई शख्स उस मुल्क को नहीं देखने पाएगा, जिसके देने की क्रसम मैंने अब्रहाम और इस्हाक और या'कूब से खाई; क्योंकि उन्होंने मेरी पूरी पैरवी नहीं की। <sup>12</sup> मगर युफ़ना किन्ज़ी का बेटा कालिब और नून का बेटा यशू'अ उसे देखेंगे, क्योंकि उन्होंने खुदावन्द की पूरी पैरवी की है। <sup>13</sup> सो खुदावन्द का क्रहर इस्राईल पर भड़का और उसने उनकी वीरान में चालीस बरस तक आवारा फिराया, जब तक कि उस नसल के सब लोग जिन्होंने खुदावन्द के सामने गुनाह किया था, नाबूद न हो गए। <sup>14</sup> और देखो, तुम जो गुनाहगारों की नसल हो, अब अपने बाप दादा की जगह उठे हो, ताकि खुदावन्द के क्रहर — ए — शदीद की इस्राईलियों पर ज्यादा कराओ। <sup>15</sup> क्योंकि अगर तुम उस की पैरवी से फिर जाओ तो वह आपको फिर वीरान में छोड़ देगा, और तुम इन सब लोगों को हलाक कराओगे।” <sup>16</sup> तब वह उसके नज़दीक आकर कहने लगे, हम अपने चौपायों के लिए यहाँ भेड़साले और अपने बाल — बच्चों के लिए शहर बनाएँगे, <sup>17</sup> लेकिन हम खुद हथियार बाँधे हुए तैयार रहेंगे के बनी — इस्राईल के आगे आगे चले, जब तक कि आपको उनकी जगह तक न पहुँचा दें; और हमारे बाल — बच्चे इस मुल्क के बाशिन्दों की वजह से फ़सीलदार शहरों में रहेंगे। <sup>18</sup> और हम अपने घरों को फिर वापस नहीं आएँगे जब तक बनी — इस्राईल का एक — एक आदमी अपनी मीरास का मालिक न हो जाए। <sup>19</sup> और हम उनमें शामिल होकर यरदन के उस पार या उससे आगे, मीरास न लेंगे क्योंकि हमारी मीरास यरदन के इस पार पश्चिम की तरफ़ हम को मिल गई।” <sup>20</sup> मूसा ने उनसे कहा, अगर तुम यह काम करो और खुदावन्द के सामने हथियारबन्द होकर लड़ने जाओ, <sup>21</sup> और तुम्हारे हथियार बन्द जवान खुदावन्द के सामने यरदन पार जाएँ, जब तक कि खुदावन्द अपने दुश्मनों को अपने सामने से दफ़ा' न करे, <sup>22</sup> और वह मुल्क खुदावन्द के सामने क़ब्ज़े में न आ जाए; तो इसके बाद तुम वापस आओ, फिर तुम खुदावन्द के सामने और इस्राईल के आगे बेगुनाह ठहरोगे और यह मुल्क खुदावन्द के सामने तुम्हारी मिल्कियत हो जाएगा। <sup>23</sup> लेकिन अगर तुम ऐसा न करो तो तुम खुदावन्द के गुनाहगार ठहरोगे; और यह जान लो कि तुम्हारा गुनाह तुम को पकड़ेगा। <sup>24</sup> इसलिए तुम अपने बाल बच्चों के लिए शहर और अपनी भेड़ — बकरियों के लिए भेड़साले बनाओ; जो

तुम्हारे मुँह से निकला है वही करो।” <sup>25</sup> तब बनी जद्द और बनी रूबिन ने मूसा से कहा कि “तेरे खादिम, जैसा हमारे मालिक का हुक्म है वैसा ही करेंगे। <sup>26</sup> हमारे बाल बच्चे और हमारी बीवियाँ, हमारी भेड़ बकरियाँ और हमारे सब चौपाये जिल'आद के शहरों में रहेंगे; <sup>27</sup> लेकिन हम जो तेरे खादिम हैं, इसलिए हमारा एक — एक हथियारबन्द जवान खुदावन्द के सामने लड़ने को पार जाएगा, जैसा हमारा मालिक कहता है।” <sup>28</sup> तब मूसा ने उनके बारे में इली'एलियाज़र काहिन और नून के बेटे यशू'अ और इस्राईली क़बाइल के आबाई खान्दानों के सरदारों को वसीयत की <sup>29</sup> और उनसे यह कहा कि “अगर बनी जद्द और बनी रूबिन का एक — एक मर्द खुदावन्द के सामने तुम्हारे साथ यरदन के पार हथियारबन्द होकर लड़ाई में जाए और उस मुल्क पर तुम्हारा क़ब्ज़ा हो जाए, तो तुम जिल'आद का मुल्क उनकी मीरास कर देना। <sup>30</sup> लेकिन अगर वह हथियार बाँध कर तुम्हारे साथ पार न जाएँ, तो आपको भी मुल्क — ए — कना'न ही में तुम्हारे बीच मीरास मिले।” <sup>31</sup> तब बनी जद्द और बनी रूबिन ने जवाब दिया, जैसा खुदावन्द ने तेरे खादिमों को हुक्म दिया है, हम वैसा ही करेंगे। <sup>32</sup> हम हथियार बाँध कर खुदावन्द के सामने उस पार मुल्क — ए — कना'न को जाएँगे, लेकिन यरदन के इस पार ही हमारी मीरास रहे।” <sup>33</sup> तब मूसा ने अमोरियों के बादशाह सीहोन की मम्मलकत और बसन के बादशाह 'ओज की मम्मलकत को, या'नी उनके मुल्कों को और शहरों को जो उन अतराफ़ में थे, और उस सारी नवाही के शहरों को बनी जद्द और बनी रूबिन और मनस्सी बिन यूसुफ़ के आधे क़बीले को दे दिया। <sup>34</sup> तब बनी जद्द ने तब बनी जद्द ने दिबोन और 'अतारात और अरो'ईर, <sup>35</sup> और 'अतारात, शोफ़ान, और या'ज़ेर, और युगबिहा, <sup>36</sup> और बैत निमरा, और बैत हारन, फ़सीलदार शहर और भेड़साले बनाए। <sup>37</sup> और बनी रूबिन ने हस्बोन, और इली'आली, और करयताइम, <sup>38</sup> और नबो, और बालम'ऊन के नाम बदलकर उनको और शिबमाह को बनाया, और उन्होंने अपने बनाए हुए शहरों के दूसरे नाम रखे। <sup>39</sup> और मनस्सी के बेटे मकीर की नसल के लोगों ने जाकर जिल'आद को ले लिया, और अमोरियों को जो वहाँ बसे हुए थे निकाल दिया। <sup>40</sup> तब मूसा ने जिल'आद मकीर बिन मनस्सी को दे दिया। तब उसकी नसल के लोग वहाँ सुकूनत करने लगे। <sup>41</sup> और मनस्सी के बेटे याईर ने उस नवाही की बस्तियों की जाकर ले लिया और उनका नाम \*हव्वहत या'ईर रखवा <sup>42</sup> और नूबह ने कनात और उसके देहात को अपने क़ब्ज़े में कर लिया और अपने ही नाम पर उस का भी नाम

\* 32:41 32:41 मतलब जेर का गाँव



नूबह रखवा।

### 33

???????? ?? ????? ?? ??? ?????

<sup>1</sup> जब बनी — इस्राईल मूसा और हारून के मातहत दल बाँधे हुए मुल्क — ए — मिस्र से निकल कर चले तो जैल की मंजिलों पर उन्होंने क्रयाम किया। <sup>2</sup> और मूसा ने उनके सफ़र का हाल उनकी मंजिलों के मुताबिक़ खुदावन्द के हुक्म से लिखा किया; इसलिए उनके सफ़र की मंजिलें यह हैं। <sup>3</sup> पहले महीने की पंद्रहवीं तारीख़ की उन्होंने \*रा'मसीस से खानगी की। फ़सह के दूसरे दिन सब बनी — इस्राईल के लोग सब मिस्रियों की आँखों के सामने बड़े फ़ख़र से खाना हुआ। <sup>4</sup> उस वक़्त मिस्री अपने पहलौठों को, जिनको खुदावन्द ने मारा था दफ़न कर रहे थे। खुदावन्द ने उनके मा'बूदों को भी सज़ा दी थी। <sup>5</sup> इसलिए बनी — इस्राईल ने रा'मसीस से खाना होकर सुक्कात में खेमे डाले। <sup>6</sup> और सुक्कात से खाना होकर एताम में, जो वीरान से मिला हुआ है मुक्रीम हुए। <sup>7</sup> फिर एताम से खाना होकर हर हखीरोत को, जो बा'ल सफ़ोन के सामने है मुड़ गए और मिजदाल के सामने खेमे डाले। <sup>8</sup> फिर उन्होंने फ़ी हखीरोत के सामने से कूच किया और समन्दर के बीच से गुज़र कर वीरान में दाख़िल हुए, और दशत — ए — एताम में तीन दिन की राह चल कर मारा में पड़ाव किया। <sup>9</sup> और मारा से खाना होकर एलीम में आए। और एलीम में पानी के बारह चश्मे और खज़ूर के सत्तर दरख़्त थे, इसलिए उन्होंने यहीं खेमे डाल लिए। <sup>10</sup> और एलीम से खाना होकर उन्होंने बहर — ए — कुलजुम के किनारे खेमे खड़े किए। <sup>11</sup> और बहर — ए — कुलजुम से चल कर सीन के जंगल में खेमाज़न हुए। <sup>12</sup> और सीन के जंगल से खाना होकर दफ़का में ठहरे। <sup>13</sup> और दफ़का से खाना होकर अलूस में मुक्रीम हुए। <sup>14</sup> और अलूस से चल कर रफ़ीदीम में खेमे डाले। यहाँ इन लोगों को पीने के लिए पानी न मिला। <sup>15</sup> और रफ़ीदीम से खाना होकर दशत — ए — सीना में ठहरे। <sup>16</sup> और सीना के जंगल से चल कर क़बरोत हतावा में खेमें खड़े किए। <sup>17</sup> और क़बरोत हतावा से खाना होकर हसीरात में खेमे डाले। <sup>18</sup> और हसीरात से खाना होकर रितमा में खेमे डाले। <sup>19</sup> और रितमा से खाना होकर रिम्मोन फ़ारस में खेमें खड़े किए। <sup>20</sup> और रिम्मोन फ़ारस से जो चले तो लिबना में जाकर मुक्रीम हुए। <sup>21</sup> और लिबना से खाना होकर रैस्सा में खेमे डाले। <sup>22</sup> और रैस्सा से चलकर कहीलाता में खेमे खड़े

किए। <sup>23</sup> और कहीलाता से चल कर कोह — ए — साफ़र के पास खेमा किया। <sup>24</sup> कोह — ए — साफ़र से खाना होकर हरादा में खेमाज़न हुए। <sup>25</sup> और हरादा से सफ़र करके मकहीलोत में क्रयाम किया। <sup>26</sup> और मकहीलोत से खाना होकर तहत में खेमें खड़े किए। <sup>27</sup> तहत से जो चले तो तारह में आकर खेमे डाले। <sup>28</sup> और तारह से खाना होकर मितका में क्रयाम किया। <sup>29</sup> और मितका से खाना होकर हशमूना में खेमे डाले। <sup>30</sup> और हशमूना से चल कर मौसीरोत में खेमे खड़े किए। <sup>31</sup> और मौसीरोत से खाना होकर बनी या'कान में खेमे डाले। <sup>32</sup> और बनी या'कान से चल कर होर हज्जिदजाद में खेमाज़न हुए। <sup>33</sup> और हीर हज्जिदजाद से खाना होकर यूतबाता में खेमें खड़े किए। <sup>34</sup> और यूतबाता से चल कर 'अबरूना में खेमे डाले। <sup>35</sup> और 'अबरूना से चल कर 'अस्यून जाबर में खेमा किया। <sup>36</sup> और 'अस्यून जाबर से खाना होकर सीन के जंगल में, जो क़ादिस है क्रयाम किया। <sup>37</sup> और क़ादिस से चल कर कोह — ए — होर के पास, जो मुल्क — ए — अदोम की सरहद है खेमाज़न हुए। <sup>38</sup> यहाँ हारून काहिन खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ कोह — ए — होर पर चढ़ गया और उसने बनी — इस्राईल के मुल्क — ए — मिस्र से निकलने के चालीसवें बरस के पाँचवें महीने की पहली तारीख़ को वहीं वफ़ात पाई। <sup>39</sup> और जब हारून ने कोह — ए — होर पर वफ़ात पाई तो वह एक सौ तेईस बरस का था। <sup>40</sup> और 'अराद के कना'नी बादशाह को, जो मुल्क — ए — कना'न के दख्खिन में रहता था, बनी इस्राईल की आमद की ख़बर मिली। <sup>41</sup> और इस्राईली कोह — ए — होर से खाना होकर ज़लमूना में ठहरे। <sup>42</sup> और ज़लमूना से खाना होकर फूनोन में खेमे डाले। <sup>43</sup> और फूनोन से खाना होकर ओबूत में क्रयाम किया। <sup>44</sup> और ओबूत से खाना होकर 'अय्यी अबारीम में जो मुल्क — ए — मोआब की सरहद पर है खेमे डाले, <sup>45</sup> और 'अय्यीम से खाना होकर दीबोन जद् में खेमाज़न हुए। <sup>46</sup> और दीबोन जद् से खाना होकर 'अलमून दबलातायम में खेमे खड़े किए। <sup>47</sup> और 'अलमून दबलातायम से खाना होकर 'अबारीम के कोहिस्तान में, जो नबी के सामने है खेमा किया। <sup>48</sup> और 'अबारीम के कोहिस्तान से चल कर मोआब के मैदानों में, जो यरीहू के सामने यरदन के किनारे वाके' है खेमाज़न हुए। <sup>49</sup> और यरदन के किनारे बैत यसीमोत से लेकर अबील सतीम तक मोआब के मैदानों में उन्होंने खेमे डाले। <sup>50</sup> और खुदावन्द ने मोआब के मैदानों में, जो यरीहू के सामने

\* 33:3 33:3 रामसीस के साथ शहर जोड़े † 33:3 33:3 इब्री कैलेंडर का पहला महीना मार्च और अप्रैल के बीच पड़ता है, फ़सेह का दूसरा दिन पहले महीने का पन्द्रहवादिन करार दिया जाता है —

यरदन के किनारे वाके' है, मूसा से कहा कि, <sup>51</sup> “बनी — इस्राईल से यह कह दे कि जब तुम यरदन को उबूर करके मुल्क — ए — कना'न में दाखिल हो, <sup>52</sup> तो तुम उस मुल्क के सारे बाशिन्दों को वहाँ से निकाल देना, और उनके शबीहदार पत्थरों को और उनके ढाले हुए बुतों को तोड़ डालना, और उनके सब ऊँचे मक़ामों को तबाह कर देना। <sup>53</sup> और तुम उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उसमें बसना, क्योंकि मैंने वह मुल्क तुम को दिया है कि तुम उसके मालिक बनो। <sup>54</sup> और तुम पर्ची डाल कर उस मुल्क को अपने घरानों में मीरास के तौर पर बाँट लेना। जिस ख़ान्दान में ज्यादा आदमी हों उसको ज्यादा, और जिसमें थोड़े हों उसको थोड़ी मीरास देना; और जिस आदमी का पर्चा जिस जगह के लिए निकले वही उसके हिस्से में मिले। तुम अपने आबाई क़बाइल के मुताबिक़ अपनी अपनी मीरास लेना। <sup>55</sup> लेकिन अगर तुम उस मुल्क के बाशिन्दों को अपने आगे से दूर न करो, तो जिनको तुम बाक़ी रहने दोगे वह तुम्हारी आँखों में ख़ार और तुम्हारे पहलुओं में काँटे होंगे, और उस मुल्क में जहाँ तुम बसोगे तुम को दिक्क़ करेंगे। <sup>56</sup> और आख़िर को यूँ होगा कि जैसा मैंने उनके साथ करने का इरादा किया वैसा ही तुम से करूँगा।”

### 34

११११११ ११ १११११११

<sup>1</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, <sup>2</sup> “बनी — इस्राईल को हुक्म कर, और उनको कह दे कि जब तुम मुल्क — ए — कना'न में दाखिल हो; यह वही मुल्क है जो तुम्हारी मीरास होगा, या'नी कनान का मुल्क म'ए अपनी हुदूद — ए — अरबा' के <sup>3</sup> तो तुम्हारी दख्खिनी सिम्त सीन के जंगल से लेकर मुल्क — ए — अदोम के किनारे किनारे हो, और तुम्हारी दख्खिनी सरहद दरिया — ए — शोर के आख़िर से शुरू' होकर पश्चिम को जाए। <sup>4</sup> वहाँ से तुम्हारी सरहद 'अक्राबियम की चढ़ाई के दख्खिन तक पहुँच कर मुड़े, और सीन से होती हुई क़ादिस बर्नी'अ के दख्खिन में जाकर निकले, और हसर अद्वार से होकर 'अज़मून तक पहुँचे। <sup>5</sup> फिर यही सरहद 'अज़मून से होकर घूमती हुई मिस्र की नहर तक जाए और समन्दर के किनारे पर ख़त्म हो। <sup>6</sup> “और पश्चिमी सिम्त में बड़ा समन्दर और उसका साहिल हो, इसलिए यही तुम्हारी पश्चिमी सरहद ठहरे। <sup>7</sup> “और उत्तरी सिम्त में तुम बड़े समन्दर से कोह — ए — होर तक अपनी हद रखना। <sup>8</sup> फिर कोह — ए — होर से हमात के मदख़ल तक तुम इस तरह अपनी हद मुक़र्रर करना कि वह सिदाद से जा मिले। <sup>9</sup> और वहाँ से होती हुई ज़िफ़रून को निकल

जाए और हसर 'एनान पर जाकर ख़त्म हो, यह तुम्हारी उत्तरी सरहद हो। <sup>10</sup> “और तुम अपनी पूरबी सरहद हसर 'एनान से लेकर सफ़ाम तक बाँधना। <sup>11</sup> और यह सरहद सफ़ाम से रिबला तक जो 'एन के पश्चिम में है जाए, और वहाँ से नीचे को उतरती हुई किन्नरत की झील के पूरबी किनारे तक पहुँचे: <sup>12</sup> और फिर यरदन के किनारे किनारे नीचे को जाकर दरिया — ए — शोर पर ख़त्म हो। इन हदों के अन्दर का मुल्क तुम्हारा होगा।” <sup>13</sup> तब मूसा ने बनी — इस्राईल को हुक्म दिया, “यही वह ज़मीन है जिसे तुम पर्ची डाल कर मीरास में लोगे, और इसी के बारे में खुदावन्द ने हुक्म दिया है कि वह साढ़े नौ क़बीलों को दी जाए। <sup>14</sup> क्योंकि बनी रूबिन के क़बीले ने अपने आबाई ख़ान्दानों के मुवाफ़िक़, और बनी जद के क़बीले ने भी अपने आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक़ मीरास पा ली, और बनी मनस्सी के आधे क़बीले ने भी अपनी मीरास पा ली; <sup>15</sup> या'नी इन ढाई क़बीलों को यरदन के इसी पार यरीहू के सामने पश्चिम की तरफ़ जिधर से सूरज निकलता है मीरास मिल चुकी है।”

११११११ ११ १११११११ ११११ ११११ १११११११

<sup>16</sup> और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, <sup>17</sup> “जो अश्खास इस मुल्क को मीरास के तौर पर तुम को बाँट देंगे उन के नाम यह हैं, या'नी इली'एलियाज़र काहिन और नून का बेटा यशू'अ। <sup>18</sup> और तुम ज़मीन को मीरास के तौर पर बाँटने के लिए हर क़बीले से एक सरदार को लेना। <sup>19</sup> और उन आदमियों के नाम यह हैं: यहूदाह के क़बीले से यफ़ुना का बेटा कालिब, <sup>20</sup> और बनी शमौन के क़बीले से अम्मीहूद का बेटा समूएल, <sup>21</sup> और बिनयमीन के क़बीले से किसलून का बेटा इलीदाद, <sup>22</sup> और बनी दान के क़बीले से एक सरदार बुक्की बिन युगली, <sup>23</sup> और बनी यूसुफ़ में से या'नी बनी मनस्सी के क़बीले से एक सरदार हनीएल बिन अफ़ूद, <sup>24</sup> और बनी इफ़राईम के क़बीले से एक सरदार क़मूएल बिन सिफ़तान, <sup>25</sup> और बनी ज़बूलून के क़बीले से एक सरदार इलिसफ़न बिन फ़रनाक, <sup>26</sup> और बनी इश्कार के क़बीले से एक सरदार फ़लतीएल बिन 'अज़्ज़ान, <sup>27</sup> और बनी आशर के क़बीले से एक सरदार अखीहूद बिन शलूमी, <sup>28</sup> और बनी नफ़ताली के क़बीले से एक सरदार फ़िदाहेल बिन 'अम्मीहूद।” <sup>29</sup> यह वह लोग हैं जिनको खुदावन्द ने हुक्म दिया कि मुल्क — ए — कना'न में बनी — इस्राईल को मीरास तक्सीम कर दें।

### 35

११११११११ ११ १११११११

1 फिर खुदावन्द ने मोआब के मैदानों में, जो यरीहू के सामने \*यरदन के किनारे वाके हैं, मूसा से कहा कि, 2 “बनी इस्राईल को हुक्म कर, कि अपनी मीरास में से जो उनके कब्जे में आए लावियों की रहने के लिए शहर दें, और उन शहरों के इलाके भी तुम लावियों को दे देना। 3 यह शहर उनके रहने के लिए हों; उनके इलाके उनके चौपायों और माल और सारे जानवरों के लिए हों। 4 और शहरों के इलाके जो तुम लावियों को दो वह हर शहर की दीवार से शुरू करके बाहर चारों तरफ हज़ार — हज़ार हाथ के फेर में हों। 5 और तुम शहर के बाहर पश्चिम की तरफ दो हज़ार हाथ, और दख्खन की तरफ दो हज़ार हाथ, और पश्चिम की तरफ दो हज़ार हाथ, और उत्तर की तरफ दो हज़ार हाथ इस तरह पैमाइश करना के शहर उनके बीच में आ जाए। उनके शहरों के इतनी ही इलाके हों। 6 और लावियों के उन शहरों में से जो तुम उनको दो, छः पनाह के शहर ठहरा देना जिनमें खूनी भाग जाएँ। इन शहरों के अलावा बयालीस शहर और उनको देना; 7 या 'नी सब मिला कर अठतालीस शहर लावियों की देना और इन शहरों के साथ इनके इलाके भी हों। 8 और वह शहर बनी — इस्राईल की मीरास में से यूँ दिए जाएँ। जिनके कब्जे में बहुत से हों उनसे थोड़े शहर लेना। हर कबीला अपनी मीरास के मुताबिक जिसका वह वारिस हो लावियों के लिए शहर दे।”

222222222 22 222

9 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 10 “बनी — इस्राईल से कह दे कि जब तुम यरदन को पार करके मुल्क — ए — कना'न में पहुँच जाओ, 11 तो तुम कई ऐसे शहर मुक़र्र करना जो तुम्हारे लिए पनाह के शहर हों, ताकि वह खूनी जिससे अनजाने में खून हो जाए वहाँ भाग जा सके। 12 इन शहरों में तुम को इन्तक़ाम लेने वाले से पनाह मिलेगी, ताकि खूनी जब तक वह फ़ैसले के लिए जमा'अत के आगे हाज़िर न हो तब तक मारा न जाए। 13 और पनाह के जो शहर तुम दोगे वह छः हों। 14 तीन शहर तो यरदन के पार और तीन मुल्क — ए — कना'न में देना। यह पनाह के शहर होंगे। 15 इन छहों शहरों में बनी — इस्राईल को और उन मुसाफ़ि़रों और परदेसियों को जो तुम में क़याम करते हैं, पनाह मिलेगी ताकि जिस किसी से अनजाने में खून हो जाए वह वहाँ भाग जा सके। 16 और अगर कोई किसी को लोहे के हथियार से ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो वह खूनी ठहरेगा और वह खूनी ज़रूर मारा जाए। 17 या अगर कोई ऐसा पत्थर हाथ में लेकर जिससे आदमी मर

सकता हो, किसी को मारे और वह मर जाए, तो वह खूनी ठहरेगा और वह खूनी ज़रूर मारा जाए। 18 या अगर कोई चोबी आला हाथ में लेकर जिससे आदमी मर सकता हो, किसी को मारे और वह मर जाए, तो वह खूनी ठहरेगा और वह खूनी ज़रूर मारा जाए। 19 खून का इन्तक़ाम लेने वाला खूनी को आप ही क़त्ल करे; जब वह उसे मिले तब ही उसे मार डाले। 20 और अगर कोई किसी को 'अदावत से धकेल दे या घात लगा कर कुछ उस पर फेंक दे और वह मर जाए, 21 या दुश्मनी से उसे अपने हाथ से ऐसा मारे कि वह मर जाए; तो वह जिसने मारा हो ज़रूर क़त्ल किया जाए क्योंकि वह खूनी है। खून का इन्तक़ाम लेने वाला इस खूनी को जब वह उसे मिले मार डाले। 22 लेकिन अगर कोई किसी को बग़ैर 'अदावत के नाग़हान धकेल दे या बग़ैर घात लगाए उस पर कोई चीज़ डाल दे, 23 या उसे बग़ैर देखे कोई ऐसा पत्थर उस पर फेंके जिससे आदमी मर सकता हो, और वह मर जाए; लेकिन यह न तो उसका दुश्मन और न उसके नुक़सान का ख़्वाहान था; 24 तो जमा'अत ऐसे क़ातिल और खून के इन्तक़ाम लेने वाले के बीच इन ही हुक्मों के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करे; 25 और जमा'अत उस क़ातिल को खून के इन्तक़ाम लेने वाले के हाथ से छुड़ाए और जमा'अत ही उसे पनाह के उस शहर में जहाँ वह भाग गया था वापस पहुँचा दे, और जब तक सरदार काहिन जो पाक तेल से मम्सूह हुआ था मर न जाए तब तक वह वहीं रहे। 26 लेकिन अगर वह खूनी अपने पनाह के शहर की सरहद से, जहाँ वह भाग कर गया हो किसी वक़्त बाहर निकले, 27 और खून के इन्तक़ाम लेने वाले की वह पनाह के शहर की सरहद के बाहर मिल जाए और इन्तक़ाम लेने वाला क़ातिल को क़त्ल कर डाले, तो वह खून करने का मुजरिम न होगा; 28 क्योंकि खूनी को लाज़िम था कि सरदार काहिन की वफ़ात तक उसी पनाह कि शहर में रहता, लेकिन सरदार काहिन के मरने के बाद खूनी अपनी मौरूसी जगह को लौट जाए। 29 “इसलिए तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में नसल — दर — नसल यह बातें फ़ैसले के लिए क़ानून ठहरेंगी। 30 अगर कोई किसी को मार डाले तो क़ातिल गवाहों की शहादत पर क़त्ल किया जाए, लेकिन एक गवाह की शहादत से कोई मारा न जाए। 31 और तुम उस क़ातिल से जो वाज़िब — उल — क़त्ल हो दियत न लेना बल्कि वह ज़रूर ही मारा जाए। 32 और तुम उससे भी जो किसी पनाह के शहर को भाग गया हो, इस ग़र्ज़ से दियत न लेना कि वह सरदार काहिन की मौत से पहले फिर मुल्क में रहने को लौटने पाए। 33 इसलिए तुम उस मुल्क को जहाँ तुम

\* 35:1 35:1 यरदन नदी

रहोगे नापाक न करना, क्योंकि खून मुल्क को नापाक कर देता है; और उस मुल्क के लिए जिसमें खून बहाया जाए अलावा क्रांतिल के खून के और किसी चीज़ का कफ़ारा नहीं लिया जा सकता। <sup>34</sup> और तुम अपनी क्रयाम के मुल्क को जिसके अन्दर मैं रहूँगा, गन्दा भी न करना; क्योंकि मैं जो खुदावन्द हूँ, इसलिए बनी — इस्राईल के बीच रहता हूँ।”

### 36

११११ ११११११ ११ ११११ १११११११ ११११

<sup>1</sup> और बनी यूसुफ़ के घरानों में से बनी जिल'आद बिन मकीर बिन मनस्सी के आबाई खान्दानों के सरदार मूसा और उन अमीरों के पास जाकर जो बनी इस्राईल के आबाई खान्दानों के सरदार थे कहने लगे, <sup>2</sup> “खुदावन्द ने हमारे मालिक को हुक्म दिया था कि पर्ची डाल कर यह मुल्क मीरास के तौर पर बनी — इस्राईल को देना; और हमारे मालिक को खुदावन्द की तरफ़ से हुक्म मिला था, कि हमारे भाई सिलाफ़िहाद की मीरास उसकी बेटियों को दी जाए। <sup>3</sup> लेकिन अगर वह बनी — इस्राईल के और कबीलों के आदमियों से ब्याही जाएँ, तो उनकी मीरास हमारे बाप — दादा की मीरास से निकल कर उस कबीले की मीरास में शामिल की जाएगी जिसमें वह ब्याही जाएँगी; यूँ वह हमारे हिस्से की मीरास से अलग हो जाएगी। <sup>4</sup> और जब बनी — इस्राईल का साल — ए — यूबली आएगा, तो उनकी मीरास उसी कबीले की मीरास से मुल्हक की जाएगी जिसमें वह ब्याही जाएँगी। यूँ हमारे बाप — दादा के कबीले की मीरास से उनका हिस्सा निकल जाएगा।” <sup>5</sup> तब मूसा ने खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ बनी — इस्राईल को हुक्म दिया और कहा कि “बनी यूसुफ़ के कबीले के लोग ठीक कहते हैं। <sup>6</sup> इसलिए सिलाफ़िहाद की बेटियों के हक़ में खुदावन्द का हुक्म यह है कि वह जिनको पसन्द करें उन्हीं से ब्याह करें, लेकिन अपने बापदादा के कबीले ही के खान्दानों में ब्याही जाएँ। <sup>7</sup> यूँ बनी — इस्राईल की मीरास एक कबीले से दूसरे कबीले में नहीं जाने पाएगी; क्योंकि हर इस्राईली को अपने बाप — दादा के कबीले की मीरास को अपने कब्जे में रखना होगा। <sup>8</sup> और अगर बनी इस्राईल के किसी कबीले में कोई लड़की हो जो मीरास की, मालिक हो तो वह अपने बाप के कबीले के किसी खानदान में ब्याह करे ताकि हर इस्राईली अपने बाप दादा की मीरास पर क़ाईम रहे। <sup>9</sup> यूँ किसी की मीरास एक कबीले से दूसरे कबीले में नहीं जाने पाएगी; क्योंकि बनी — इस्राईल के कबीलों को लाज़िम है कि अपनी

अपनी मीरास अपने — अपने कब्जे में रखें।” <sup>10</sup> और सिलाफ़िहाद की बेटियों ने जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था वैसा ही किया। <sup>11</sup> क्योंकि महलाह और तिरज़ाह और हुजलाह और मिल्काह और नू'आह जो सिलाफ़िहाद की बेटियाँ थीं, वह अपने चचेरे भाइयों के साथ ब्याही गई, <sup>12</sup> या'नी वह यूसुफ़ के बेटे मनस्सी की नसल के खान्दानों में ब्याही गई, और उनकी मीरास, उनके आबाई खान्दान के कबीले में क़ाईम रही। <sup>13</sup> जो हुक्म और फ़ैसले खुदावन्द ने मूसा के ज़रिए' मोआब के मैदानों में जो यरीहू के सामने यरदन के किनारे वाक़े' है बनी इस्राईल को दिए वह यही हैं।



## इस्तिस्ना

इस्तिस्ना की किताब

मूसा ने इस्तिस्ना की किताब को लिखा दरअसल यह यरदन नदी को पार करने से पहले बनी इस्राईल के लिए उसकी तकरीरों का मजमुआ है — “यह वही बातें हैं जो मूसा ने बनी इस्राईल से कहीं।” (1:1) किसी और ने (शायद यशोअ ने) इस के आखरी बाब को लिखा किताब खुद ही मूसा के लिए उस के मजमून की बाबत बयान करती है (1:1, 5; 31:24) इस्तिस्ना की किताब मूसा और बनी इस्राईल को मोआब के मुल्क में उस इलाके में जहाँ यरदन नदी बहती है — ए — मुरदार में बहती है (1:5) इस्तिस्ना का मतलब है “दूसरी शरीयत” खुदा और उसके लोग बनी इस्राईल के बीच अहद की बाबत दुबारा से कहना इस्तिस्ना का सार है।

इस की तसनीफ़ तकरीबन 1446 - 1405 क़ब्ल मसीह

है इस किताब को बनी इस्राईल के वायदा किया हुआ मुल्क में दाखिल होने से पहले चालीस दिनों के दौरान लिखा गया था।

बनी इस्राईल कौम की नई पीढ़ी जो वायदा किया

हुआ मुल्क में दाखिल होने के लिए तैयार थी, चालीस साल बाद जब उनके मांबाप मिस्र की गुलामी से बच निकले थे, और वह तमाम मुताखिर कारिर्न।

इस्तिस्ना की किताब

बनी इस्राईल कौम के लिए मूसा का अलविदाई पैग़ाम है — बनी इस्राईल कौम को वायदा किए मुल्क में दाखिल होने के लिए सहारा देकर संभाले रखना — मिस्र से खुर्रुज के चालीस साल बाद बनी इस्राईल कौम यरदन नदी को पार करती है ताकि मुल्क — ए — कनान को फ़तेह कर सके — मूसा किसी तरह मरने पर था और बनी इस्राईल के साथ मुल्क में नहीं जा सकता था — मूसा का अलविदाई पैग़ाम बनी इस्राईल कौम के लिए एक पुरजोश उज़र खुदा के अहकाम ताबेदारी करें ताकि वही अहकाम उन के साथ उन के नए मुल्क में जाए (6:1 — 3, 17 — 19) मूसा का पैग़ाम बनी इस्राईल को याद दिलाता है की उनका खुदा कौन है (6:4) और उस ने उन के लिए क्या कुछ किया है (6:10 — 12, 20 — 23) मूसा बनी

इस्राईल से इल्तिमास करता है कि उन अहकाम को अपनी अगली पीढ़ी तक पहुंचाए (6:6-9)।

फ़र्मान्बदारी

बैरूनी खाका

1. मिस्र से बनी इस्राईल का सफ़र — 1:1-3:29
2. खुदा के साथ बनी इस्राईल का रिश्ता — 4:1-5:33
3. खुदा के साथ वफ़ादारी की अहमियत — 6:1-11:32
4. किस तरह खुदा से मोहब्बत की जाए और उस का हुक्म बजा लाए — 12:1-26:19
5. बरकतें और लानतें — 27:1-30:20
6. मूसा की वफ़ात — 31:1-34:12

यह वही बातें हैं जो मूसा ने \*यरदन के उस

पार वीराने में, या'नी उस मैदान में जो सूफ़ के सामने और फ़ारान और तोफ़ल और लाबन और हसीरात और दीज़हब के बीच है, सब इस्राईलियों से कहीं।<sup>2</sup> कोह — ए — श'ईर की राह से होरिब से क़ादिस बर्नी'अ तक § ग्यारह दिन की मन्ज़िल है।<sup>3</sup> और चालीसवें बरस के ग्यारहवें महीने की पहली तारीख़ को मूसा ने उन सब अहकाम के मुताबिक़ जो खुदावन्द ने उसे बनी — इस्राईल के लिए दिए थे, उनसे यह बातें कहीं: <sup>4</sup> या'नी जब उसने अमोरियों के बादशाह सीहोन को जो हस्बोन में रहता था मारा, और बसन के बादशाह 'ओज को जो 'इस्तारात में रहता था, अदराई में क़त्ल किया; <sup>5</sup> तो इसके बाद यरदन के पार मोआब के मैदान में मूसा इस शरी'अत को यूँ बयान करने लगा कि,

“खुदावन्द हमारे खुदा ने होरिब में हमसे यह कहा

था, कि तुम इस पहाड़ पर बहुत रह चुके हो <sup>7</sup> इसलिए अब फ़िरो और कूच करो और अमोरियों के पहाड़ी मुल्क, और उसके आस — पास के मैदान और पहाड़ी क़ता'अ और नशेब की ज़मीन और दख्खिनी अतराफ़ में, और समन्दर के साहिल तक जो कना'नियों का मुल्क है बल्कि कोह — ए — लुबनान और दरिया — ए — फ़रात तक जो एक बड़ा दरिया है, चले जाओ। <sup>8</sup> देखो, मैंने इस मुल्क को तुम्हारे सामने कर दिया है। इसलिए जाओ और उस मुल्क को अपने क़ब्ज़े में कर लो, जिसके बारे में खुदावन्द ने तुम्हारे बाप — दादा अब्रहाम, इस्हाक़, और या'क़ूब से क़सम खाकर यह कहा था, कि वह उसे उनको और उनके बाद उनकी नसल को देगा।”

\* 1:1 1:1 यरदन नदी † 1:1 1:1 यरदन के मशरिफ़ की तरफ़ ‡ 1:2 1:2 पैदल रास्ता § 1:2 1:2 260 किलोमीटर के करीब

2222 22 22 22222 22 22222222 22  
22222

9 उस वक़्त मैंने तुमसे कहा था, कि मैं अकेला तुम्हारा बोझ नहीं उठा सकता। 10 खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुमको बढ़ाया है और आज के दिन आसमान के तारों की तरह तुम्हारी कसरत है। 11 खुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा का खुदा तुमको इससे भी हजार चंद बढ़ाए, और जो वा'दा उसने तुमसे किया है उसके मुताबिक़ तुमको बरकत बरख़ो। 12 मैं अकेला तुम्हारे जंजाल और बोझ और झंझट को कैसे उठा सकता हूँ? 13 इसलिए तुम अपने — अपने क़बीले से ऐसे आदमियों को चुनो जो दानिश्वर और 'अक्लमन्द और मशहूर हों, और मैं उनको तुम पर सरदार बना दूंगा। 14 इसके जवाब में तुमने मुझसे कहा था, कि जो कुछ तूने फ़रमाया है उसका करना बेहतर है। 15 इसलिए मैंने तुम्हारे क़बीलों के सरदारों को जो 'अक्लमन्द और मशहूर थे, लेकर उनको तुम पर मुक़र्रर किया ताकि वह तुम्हारे क़बीलों के मुताबिक़ हजारों के सरदार, और सैकड़ों के सरदार, और पचास — पचास के सरदार, और दस — दस के सरदार हाकिम हों। 16 और उसी मौक़े पर मैंने तुम्हारे क़ाज़ियों से ताकीदन ये कहा, कि तुम अपने भाइयों के मुक़द्दमों को सुनना, पर चाहे भाई — भाई का मुआ'मिला हो या परदेसी का तुम उनका फैसला इन्साफ़ के साथ करना। 17 तुम्हारे फ़ैसले में किसी की रू — रि'आयत न हो, जैसे बड़े आदमी की बात सुनोगे वैसे ही छोटे की सुनना और किसी आदमी का मुँह देख कर डर न जाना; क्यूँकि यह 'अदालत खुदा की है; और जो मुक़द्दमा तुम्हारे लिए मुश्किल हो उसे मेरे पास ले आना मैं उसे सुनूँगा 18 और मैंने उसी वक़्त सब कुछ जो तुमको करना है बता दिया।

22222222 22 2222 2222 222222

19 और हम खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म के मुताबिक़ होरिब से सफ़र करके उस बड़े और ख़तरनाक वीराने में से होकर गुज़रे, जिसे तुमने अमोरियों के पहाड़ी मुल्क के रास्ते में देखा। फिर हम क़ादिस बर्नी'अ में पहुँचे। 20 वहाँ मैंने तुमको कहा, कि तुम अमोरियों के पहाड़ी मुल्क तक आ गए हो जिसे खुदावन्द हमारा खुदा हमको देता है। 21 देख, उस मुल्क को खुदावन्द तेरे खुदा ने तेरे सामने कर दिया है। इसलिए तू जा, और जैसा खुदावन्द तेरे बाप — दादा के खुदा ने तुझ से कहा है तू उस पर क़ब्ज़ा कर और न ख़ौफ़ खा न हिरासान हो। 22 तब तुम सब मेरे पास आकर मुझसे कहने लगे, कि हम अपने जाने से पहले वहाँ आदमी भेजें, जो जाकर हमारी खातिर उस

मुल्क का हाल दरियाफ़्त करें और आकर हमको बताएँ के हमको किस राह से वहाँ जाना होगा और कौन — कौन से शहर हमारे रास्ते में पड़ेंगे। 23 यह बात मुझे बहुत पसन्द आई चुनाँचे मैंने क़बीले पीछे एक — एक आदमी के हिसाब से बारह आदमी चुने। 24 और वह ख़ाना हुए और पहाड़ पर चढ़ गए और वादी — ए — इसकाल में पहुँच कर उस मुल्क का हाल दरियाफ़्त किया। 25 और उस मुल्क का कुछ फल हाथ में लेकर उसे हमारे पास लाए, और हमको यह ख़बर दी कि जो मुल्क खुदावन्द हमारा खुदा हमको देता है वह अच्छा है।

22222222 22 222222 22 22222222 22222222  
22222

26 "तो भी तुम वहाँ जाने पर राज़ी न हुए, बल्कि तुमने खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म से सरकशी की, 27 और अपने खेमों में कुड़कुड़ाने और कहने लगे, कि खुदावन्द को हमसे नफ़रत है इसीलिए वह हमको मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया ताकि वह हमको अमोरियों के हाथ में गिरफ़्तार करा दे और वह हमको हलाक कर डालें। 28 हम किधर जा रहे हैं? हमारे भाइयों ने तो यह बता कर हमारा हौसला तोड़ दिया है, कि वहाँ के लोग हमसे बड़े — बड़े और लम्बे हैं; और उनके शहर बड़े — बड़े और उनकी फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं। इसके अलावा हमने वहाँ 'अनाक़ीम की औलाद को भी देखा। 29 तब मैंने तुमको कहा, कि ख़ौफ़ज़दा मत हो और न उनसे डरो। 30 खुदावन्द तुम्हारा खुदा जो तुम्हारे आगे आगे चलता है, वही तुम्हारी तरफ़ से जंग करेगा जैसे उसने तुम्हारी खातिर\* मिस्र में तुम्हारी आँखों के सामने सब कुछ किया 31 और वीराने में भी तुमने यही देखा के जिस तरह इंसान अपने बेटे को उठाए हुए चलता है उसी तरह खुदावन्द तुम्हारा खुदा तेरे इस जगह पहुँचने तक सारे रास्ते जहाँ — जहाँ तुम गए तुमको उठाए रहा 32 तो भी इस बात में तुमने खुदावन्द अपने खुदा का यक़ीन न किया, 33 जो राह में तुमसे आगे — आगे तुम्हारे वास्ते खेमे लगाने की जगह तलाश करने के लिए, रात को आग में और दिन को बादल में होकर चला, ताकि तुमको वह रास्ता दिखाए जिस से तुम चलो। 34 'और खुदावन्द तुम्हारी बातें सुन कर ग़ज़बनाक हुआ और उसने क़सम खाकर कहा, कि 35 इस बुरी नसल के लोगों में से एक भी उस अच्छे मुल्क को देखने नहीं पाएगा, जिसे उनके बाप — दादा को देने की क़सम मैंने खाई है, 36 सिवा यफुना के बेटे कालिब के; वह उसे देखेगा, और जिस ज़मीन पर उसने क़दम रखा

\* 1:30 1:30 मुल्क — ए — मिस्र

है उसे मैं उसकी और उसकी नसल को दूँगा; इसलिए के उसने खुदावन्द की पैरवी पूरे तौर पर की, <sup>37</sup> और तुम्हारी ही वजह से खुदावन्द मुझ पर भी नाराज़ हुआ और यह कहा, कि तू भी वहाँ जाने न पाएगा। <sup>38</sup> नून का बेटा यशू'अ जो तेरे सामने खड़ा रहता है वहाँ जाएगा, इसलिए तू उसकी हौसला अफ़जाई कर क्योंकि वही बनी इस्राईल को उस मुल्क का मालिक बनाएगा। <sup>39</sup> और तुम्हारे बाल — बच्चे जिनके बारे में तुमने कहा था, कि लूट में जाएँगे, और तुम्हारे लड़के बाले जिनको आज भले और बुरे की भी तमीज़ नहीं, यह वहाँ जाएँगे; और यह मुल्क मैं इन ही को दूँगा और यह उस पर क़ब्ज़ा करेंगे। <sup>40</sup> पर तुम्हारे लिए यह है, कि तुम लौटो और बहर — ए — कुलजुम की राह से वीराने में जाओ। <sup>41</sup> “तब तुमने मुझे जवाब दिया, कि हमने खुदावन्द का गुनाह किया है और अब जो कुछ खुदावन्द हमारे खुदा ने हमको हुक्म दिया है, उसके मुताबिक़ हम जाएँगे और जंग करेंगे। इसलिए तुम सब अपने — अपने जंगी हथियार बाँध कर पहाड़ पर चढ़ जाने को तैयार हो गए। <sup>42</sup> तब खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि उनसे कह दे के ऊपर मत चढ़ो और न जंग करो क्योंकि मैं तुम्हारे बीच नहीं हूँ; कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने दुश्मनों से शिकस्त खाओ। <sup>43</sup> और मैंने तुमसे कह भी दिया पर तुमने मेरी न सुनी, बल्कि तुमने खुदावन्द के हुक्म से सरकशी की और शोखी से पहाड़ पर चढ़ गए। <sup>44</sup> तब अमोरी जो उस पहाड़ पर रहते थे तुम्हारे मुक्काबले को निकले, और उन्होंने शहद की मक्खियों की तरह तुम्हारा पीछा किया और श'ईर में मारते — मारते तुमको हुरमा तक पहुँचा दिया। <sup>45</sup> तब तुम लौट कर खुदावन्द के आगे रोने लगे, लेकिन खुदावन्द ने तुम्हारी फ़रियाद न सुनी और न तुम्हारी बातों पर कान लगाया। <sup>46</sup> इसलिए तुम क़ादिस में बहुत दिनों तक पड़े रहे, यहाँ तक के एक ज़माना हो गया।

## 2

???????? ?? ?????? ?????? ?? ????? ?????

<sup>1</sup> “और जैसा खुदावन्द ने मुझे हुक्म दिया था, उसके मुताबिक़ हम लौटो और बहर — ए — कुलजुम की राह से वीराने में आए और बहुत दिनों तक कोह — ए — श'ईर के बाहर — बाहर चलते रहे। <sup>2</sup> तब खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि: <sup>3</sup> तुम इस पहाड़ के बाहर — बाहर बहुत चल चुके; उत्तर की तरफ़ मुड़ जाओ, <sup>4</sup> और तू इन लोगों को ताकीद कर दे कि तुमको बनी 'ऐसौ, तुम्हारे

भाई जो श'ईर में रहते हैं उनकी सरहद के पास से होकर जाना है, और वह तुमसे हिरासान होंगे। इसलिए तुम खूब एहतियात रखना, <sup>5</sup> और उनको मत छेड़ना; क्योंकि मैं उनकी ज़मीन में से पाँव धरने तक की जगह भी तुमको नहीं दूँगा, इसलिए कि मैंने कोह — ए — श'ईर 'ऐसौ को मीरास में दिया है। <sup>6</sup> तुम रुपये देकर अपने खाने के लिए उनसे खुराक खरीदना, और पीने के लिए पानी भी रुपया देकर उनसे मोल लेना। <sup>7</sup> क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तेरे हाथ की कमाई में बरकत देता रहा है, और इस बड़े वीराने में जो तुम्हारा चलना फिरना है वह उसे जानता है। इन चालीस बरसों में खुदावन्द तेरा खुदा बराबर तुम्हारे साथ रहा और तुझको किसी चीज़ की कमी नहीं हुई। <sup>8</sup> इसलिए हम अपने भाइयों बनी 'ऐसौ के पास से जो श'ईर में रहते हैं, कतरा कर मैदान की राह से ऐलात और 'अस्यून जाबर होते हुए गुज़रे।” फिर हम मुड़े और मोआब के वीराने के रास्ते से चले। <sup>9</sup> फिर खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि मोआबियों को न तो सताना और न उनसे जंग करना; इसलिए कि मैं तुझको उनकी ज़मीन का कोई हिस्सा मिलिक्यत के तौर पर नहीं दूँगा, क्योंकि मैंने 'आर को बनी लूट की मीरास कर दिया है। <sup>10</sup> वहाँ पहले ऐमीम बसे हुए थे जो 'अनाक्रीम की तरह बड़े — बड़े और लम्बे — लम्बे और शुमार में बहुत थे। <sup>11</sup> और 'अनाक्रीम ही की तरह वह भी\* रिफ़ाईम में गिने जाते थे, लेकिन मोआबी उनको ऐमीम कहते हैं। <sup>12</sup> और पहले श'ईर में होरी क्रौम के लोग बसे हुए थे, लेकिन बनी 'ऐसौ ने उनको निकाल दिया और उनको अपने सामने से बर्बाद करके आप उनकी जगह बस गए, जैसे इस्राईल ने अपनी मीरास के मुल्क में किया जिसे खुदावन्द ने उनको दिया। <sup>13</sup> अब उठो और वादी — ए — ज़रद के पार जाओ। चुनाँचे हम वादी — ए — ज़रद से पार हुए। <sup>14</sup> और हमारे क़ादिस बनी'अ से खाना होने से लेकर वादी — ए — ज़रद के पार होने तक अठतीस बरस का 'अरसा गुज़रा। इस असना में खुदावन्द की क़सम के मुताबिक़ उस नसल के सब जंगी मर्द लश्कर में से मर खप गए। <sup>15</sup> और जब तक वह नाबूद न हो गए तब तक खुदावन्द का हाथ उनको लश्कर में से हलाक करने को उनके खिलाफ़ बढ़ा ही रहा। <sup>16</sup> जब सब जंगी मर्द मर गए और क्रौम में से फ़ना हो गए <sup>17</sup> तो खुदावन्द ने मुझसे कहा, <sup>18</sup> आज तुझे 'आर शहर से होकर जो मोआब की सरहद है गुज़रना है। <sup>19</sup> और जब तू बनी 'अम्मोन के करीब जा पहुँचे, तो उन को मत सताना और न उनको छेड़ना, क्योंकि मैं बनी 'अम्मोन की ज़मीन का

\* 2:11 2:11 गैर मामूली बड़े क्रुद — ओ — कामत का शख्स (दयो)

कोई हिस्सा तुझे मीरास के तौर पर नहीं दूँगा इसलिए कि उसे मैंने बनी लूत को मीरास में दिया है। <sup>20</sup> वह मुल्क भी रफ़ाईम का गिना जाता था, क्योंकि पहले रफ़ाईम जिनको 'अम्मोनी लोग ज़मज़मीम कहते थे वहाँ बसे हुए थे। <sup>21</sup> यह लोग भी 'अनाक्रीम की तरह बड़े — बड़े और लम्बे — लम्बे और शुमार में बहुत थे, लेकिन खुदावन्द ने उनको 'अम्मोनियों के सामने से हलाक किया, और वह उनको निकाल कर उनकी जगह आप बस गए। <sup>22</sup> ठीक वैसे ही जैसे उसने बनी 'ऐसौ के सामने से जो श'ईर में रहते थे होरियों को हलाक किया, और वह उनको निकाल कर आज तक उन ही की जगह बसे हुए हैं। <sup>23</sup> ऐसे ही 'अवियों को जो अपनी बस्तियों में गज़्ज़ा तक बसे हुए थे, कफ़तूरियों ने जो कफ़तूरा से निकले थे हलाक किया और उनकी जगह आप बस गए <sup>24</sup> इसलिए उठो, और वादी — ए — अरनून के पार जाओ। देखो, मैंने हस्बोन के बादशाह सीहोन को, जो अमोरी है उसके मुल्क समेत तुम्हारे हाथ में कर दिया है; इसलिए उस पर क़ब्ज़ा करना शुरू करो और उससे जंग छेड़ दो। <sup>25</sup> मैं आज ही से तुम्हारा खौफ़ और रौब उन क्रौमों के दिल में डालना शुरू करूँगा जो इस ज़मीन पर रहती हैं, वह तुम्हारी ख़बर सुनेंगी और काँपेंगी, और तुम्हारी वजह से बेताब हो जाएंगी।

26 “और मैंने दशत — ए — क़दीमात से हस्बोन के

बादशाह सीहोन के पास सुलह के पैग़ाम के साथ क़ासिद रवाना किए और कहला भेजा, कि <sup>27</sup> मुझे अपने मुल्क से गुज़र जाने दे; मैं शाहराह से होकर चलूँगा और दहने और बाएँ हाथ नहीं मुड़ूँगा <sup>28</sup> तू रुपये लेकर मेरे हाथ मेरे खाने के लिए खुराक बेचना, और मेरे पीने के लिए पानी भी मुझे रुपया लेकर देना; सिर्फ़ मुझे पाँव — पाँव निकल जाने दे, <sup>29</sup> जैसे बनी 'ऐसौ ने जो श'ईर में रहते हैं, और मोआबियों ने जो 'आर शहर में बसते हैं। मेरे साथ किया; जब तक कि मैं †यरदन को उबूर करके उस मुल्क में पहुँच न जाऊँ जो खुदावन्द हमारा खुदा हमको देता है। <sup>30</sup> लेकिन हस्बोन के बादशाह सीहोन ने हमको अपने हाँ से गुज़रने न दिया; क्योंकि खुदावन्द तेरे खुदा ने उसका मिज़ाज कड़ा और उसका दिल सख़्त कर दिया ताकि उसे तेरे हाथ में हवाले कर दे, जैसा आज ज़ाहिर है। <sup>31</sup> और खुदावन्द ने मुझसे कहा, देख, मैं सीहोन और उसके मुल्क को तेरे हाथ में हवाले करने को हूँ, इसलिए तू उस पर क़ब्ज़ा करना शुरू कर, ताकि वह तेरी मीरास ठहरे। <sup>32</sup> तब सीहोन अपने सब आदमियों

को लेकर हमारे मुकाबले में निकला और जंग करने के लिए यहज़ में आया। <sup>33</sup> और खुदावन्द हमारे खुदा ने उसे हमारे हवाले कर दिया; और हमने उसे, और उसके बेटों को, और उसके सब आदमियों को मार लिया। <sup>34</sup> और हमने उसी वक़्त उसके सब शहरों को ले लिया, और हर आबाद शहर को 'औरतों और बच्चों समेत बिल्कुल नाबूद कर दिया और किसी को बाक़ी न छोड़ा; <sup>35</sup> लेकिन चौपायों को और शहरों के माल को जो हमारे हाथ लगा लूट कर हमने अपने लिए रख लिया। <sup>36</sup> और 'अरो'ईर से जो वादी — ए — अरनोन के किनारे है, और उस शहर से जो वादी में है, ज़िल'आद तक ऐसा कोई शहर न था जिसको सर करना हमारे लिए मुश्किल हुआ; खुदावन्द हमारे खुदा ने सबको हमारे क़ब्ज़े में कर दिया। <sup>37</sup> लेकिन बनी 'अम्मोन के मुल्क के नज़दीक और दरिया — ए — यबोक़ का 'इलाक़ा और कोहिस्तान के शहरों में और जहाँ — जहाँ खुदावन्द हमारे खुदा ने हमको मना' किया था तो नहीं गया।

### 3

1 “फिर हमने मुड़ कर बसन का रास्ता लिया और

बसन का बादशाह 'ओज अदराई में अपने सब आदमियों को लेकर हमारे मुकाबले में जंग करने को आया। <sup>2</sup> और खुदावन्द ने मुझसे कहा, 'उससे मत डर, क्योंकि मैंने उसको और उसके सब आदमियों और मुल्क को तेरे क़ब्ज़े में कर दिया है; जैसा तूने अमोरियों के बादशाह सीहोन से जो हस्बोन में रहता था किया, वैसा ही तू इससे भी करेगा। <sup>3</sup> चुनाँचे खुदावन्द हमारे खुदा ने बसन के बादशाह 'ओज को भी उसके सब आदमियों समेत हमारे क़ाबू में कर दिया, और हमने उनको यहाँ तक मारा के उनमें से कोई बाक़ी न रहा। <sup>4</sup> और हमने उसी वक़्त उसके सब शहर ले लिए, और एक शहर भी ऐसा न रहा जो हमने उनसे ले न लिया हो। यूँ अरज़ूब का सारा मुल्क जो बसन में 'ओज की सल्तनत में शामिल था और उसमें साठ शहर थे, हमारे क़ब्ज़े में आया। <sup>5</sup> यह सब शहर फ़सीलदार थे और इनकी ऊँची — ऊँची दीवारें और फाटक और बेंडे थे। इनके 'अलावा बहुत से ऐसे क़स्बे भी हमने ले लिए जो फ़सीलदार न थे। <sup>6</sup> और जैसा हमने हस्बोन के बादशाह सीहोन के यहाँ किया वैसा ही इन सब आबाद शहरों को म'ए 'औरतों और बच्चों के बिल्कुल नाबूद कर डाला। <sup>7</sup> लेकिन सब चौपायों और शहरों के माल को लूट कर हमने अपने लिए रख लिया। <sup>8</sup> यूँ हमने उस वक़्त अमोरियों के दोनों बादशाहों के हाथ

† 2:29 2:29 यरदन नदी



से, जो यरदन पार रहते थे उनका मुल्क वादी — ए — अरनोन से कोह — ए — हरमून तक ले लिया। <sup>9</sup> इस हरमून को सैदानी सिरयून, और अमोरी सनीर कहते हैं <sup>10</sup> और सलका और अदराई तक मैदान के सब शहर और सारा जिल'आद और सारा बसन या'नी 'ओज की सल्लतनत के सब शहर जो बसन में शामिल थे हमने ले लिए। <sup>11</sup> क्योंकि रिफ़ाईम की नसल में से सिर्फ़ बसन का बादशाह 'ओज बाक़ी रहा था। उसका पलंग लोहे का बना हुआ था और वह बनी अम्मोन के शहर रब्बा में मौजूद है, और आदमी के हाथ के नाप के मुताबिक़ नौ हाथ लम्बा और चार हाथ चौड़ा है।

22222 2222 22 22222222

<sup>12</sup> इसलिए इस मुल्क पर हमने उस वक़्त कब्ज़ा कर लिया, और 'अरो'ईर जो वादी — ए — अरनोन के किनारे है और जिल'आद के पहाड़ी मुल्क का आधा हिस्सा और उसके शहर मैंने रूबीनियों और जददियों को दिए। <sup>13</sup> और जिल'आद का बाक़ी हिस्सा और सारा बसन या'नी अरज़ूब का सारा मुल्क जो 'ओज की कलमरौ में था, मैंने मनस्सी के आधे कबीले को दिया। बसन रिफ़ाईम का मुल्क कहलाता था। <sup>14</sup> और मनस्सी के बेटे याईर ने जसूरियों और मा'कातियों की सरहद तक अरज़ूब के सारे मुल्क को ले लिया और अपने नाम पर बसन के शहरों को 'हव्वत याईर का नाम दिया, जो आज तक चला आता है <sup>15</sup> और जिल'आद मैंने मकीर को दिया, <sup>16</sup> और रूबीनियों और जददियों को मैंने जिल'आद से वादी — ए — अरनोन तक का मुल्क, या'नी उस वादी के बीच के हिस्से को उनकी एक हद ठहरा कर दरिया — ए — यबोक तक, जो 'अम्मोनियों की सरहद है उनको दिया। <sup>17</sup> और मैदान को और किन्नरत से लेकर मैदान के दरिया या'नी दरिया — ए — शोर तक, जो पूरब में पिसगा के ढाल तक फैला हुआ है और यरदन और उसका सारा इलाके को भी मैंने इन ही को दे दिया। <sup>18</sup> “और मैंने उस वक़्त तुमको हुक्म दिया, कि खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुमको यह मुल्क दिया है कि तुम उस पर कब्ज़ा करो। इसलिए तुम सब जंगी मर्द हथियारबंद होकर अपने भाइयों बनी — इस्राईल के आगे — आगे पार चलो; <sup>19</sup> मगर तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे बाल बच्चे और चौपाये क्यूँकि मुझे मा'लूम है कि तुम्हारे पास चौपाये बहुत हैं, इसलिए यह सब तुम्हारे उन ही शहरों में रह जाँएँ जो मैंने तुमको दिए हैं; <sup>20</sup> आखीर तक कि खुदावन्द तुम्हारे भाइयों को चैन न बरूँ जैसा तुमको बरूँ, और वह भी उस मुल्क पर जो खुदावन्द तुम्हारा

खुदा यरदन के उस पार तुमको देता है कब्ज़ा न कर लें। तब तुम सब अपनी मिल्लियत में जो मैंने तुमको दी है लौट कर आने पाओगे।

2222 22 222222 222 2222 22 222222

<sup>21</sup> और उसी मौक़े पर मैंने यशू'अ को हुक्म दिया, कि जो कुछ खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने इन दो बादशाहों से किया वह सब तूने अपनी आँखों से देखा; खुदावन्द ऐसा ही उस पार उन सब सल्लतनतों का हाल करेगा जहाँ तू जा रहा है। <sup>22</sup> तुम उनसे न डरना, क्यूँकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हारी तरफ़ से आप जंग कर रहा है। <sup>23</sup> उस वक़्त मैंने खुदावन्द से 'आजिजी के साथ दरखास्त की कि, <sup>24</sup> ऐ खुदावन्द खुदा तूने अपने बन्दे को अपनी 'अज़मत और अपना ताक़तवर हाथ दिखाना शुरू किया है क्यूँकि आसमान में या ज़मीन पर ऐसा कौन मा'बूद है जो तेरे से काम या करामात कर सके। <sup>25</sup> इसलिए मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे पार जाने दे कि मैं भी अच्छे मुल्क को जो यरदन के पार है और उस खुशनुमा पहाड़ और लुबनान को देखूँ। <sup>26</sup> लेकिन खुदावन्द तुम्हारी वजह से मुझसे नाराज़ था और उसने मेरी न सुनी; बल्कि खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि बस कर इस मज़मून पर मुझसे फिर कभी कुछ न कहना। <sup>27</sup> तू कोह — ए — पिसगा की चोटी पर चढ़ जा और पश्चिम और उत्तर और दख्खिन और पूरब की तरफ़ नज़र दौड़ा कर उसे अपनी आँखों से देख ले, क्यूँकि तू इस यरदन के पार नहीं जाने पाएगा। <sup>28</sup> पर यशू'अ को वसीयत कर और उसकी हौसला अफ़जाई करके उसे मज़बूत कर क्यूँकि वह इन लोगों के आगे पार जाएगा; और वही इनको उस मुल्क का, जिसे तू देख लेगा मालिक बनाएगा। <sup>29</sup> चुनाँचे हम उस वादी में जो बैत फ़गूर है ठहरे रहे।

## 4

2222 22 2222222222 22 2222 222222 22 2222 222222

<sup>1</sup> “और अब ऐ इस्राईलियों, जो आईन और अहकाम मैं तुमको सिखाता हूँ तुम उन पर 'अमल करने के लिए उनको सुन लो, ताकि तुम जिन्दा रहो और उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा का खुदा तुमको देता है, दाख़िल हो कर उस पर कब्ज़ा कर लो। <sup>2</sup> जिस बात का मैं तुमको हुक्म देता हूँ, उसमें न तो कुछ बढ़ाना और न कुछ घटाना; ताकि तुम खुदावन्द अपने खुदा के हुक्मों को जो मैं तुमको बताता हूँ मान सको। <sup>3</sup> जो कुछ खुदावन्द ने बा'ल फ़गूर की वजह से \*किया, वह

\* 3:12 3:12 एरोईर शहरके शुमाल से † 3:14 3:14 इस के मायने हैं याईर के सुकूनत का मक़ाम ‡ 3:17 3:17 यरदन नदी \* 4:3 4:3 देखें गिनती 25:1 — 9

तुमने अपनी आँखों से देखा है; क्योंकि उन सब आदमियों को जिन्होंने बा'ल फ़गूर की पैरवी की, खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्हारे बीच से नाबूद कर दिया। <sup>4</sup> पर तुम जो खुदावन्द अपने खुदा से लिपटे रहे हो, सब के सब आज तक ज़िन्दा हो। <sup>5</sup> देखो, जैसा खुदावन्द मेरे खुदा ने मुझे हुक्म दिया, उसके मुताबिक मैंने तुमको आईन और अहकाम सिखा दिए हैं; ताकि उस मुल्क में उन पर 'अमल करो जिस पर क़ब्ज़ा करने के लिए जा रहे हो। <sup>6</sup> इसलिए तुम इनको मानना और 'अमल में लाना, क्योंकि और क्रौमों के सामने यही तुम्हारी 'अक़ल और दानिश ठहरेंगे। वह इन तमाम क़वानीन को सुन कर कहेंगी, कि यकीनन ये बुज़ुर्ग क्रौम निहायत 'अक़लमन्द और समझदार है। <sup>7</sup> क्योंकि ऐसी बड़ी क्रौम कौन है जिसका मा'बूद इस क़दर उसके नज़दीक हो जैसा खुदावन्द हमारा खुदा, कि जब कभी हम उससे दुआ करें हमारे नज़दीक है? <sup>8</sup> और कौन ऐसी बुज़ुर्ग क्रौम है जिसके आईन और अहकाम ऐसे रास्त हैं जैसी ये सारी शरी'अत है, जिसे मैं आज तुम्हारे सामने रखता हूँ। <sup>9</sup> “इसलिए तुम ज़रूर ही अपनी एहतियात रखना और बड़ी हिफ़ाज़त करना, ऐसा न हो कि तुम वह बातें जो तुमने अपनी आँख से देखी हैं भूल जाओ और वह ज़िन्दगी भर के लिए तुम्हारे दिल से जाती रहें; बल्कि तुम उनको अपने बेटों और पोतों को सिखाना। <sup>10</sup> खासकर उस दिन की बातें, जब तू खुदावन्द अपने खुदा के सामने होरिब में खड़ा हुआ; क्योंकि खुदावन्द ने मुझसे कहा था, कि क्रौम को मेरे सामने जमा' कर और मैं उनको अपनी बातें सुनाऊँगा ताकि वह ये सीखें कि ज़िन्दगी भर, जब तक ज़मीन पर ज़िन्दा रहें मेरा खौफ़ मानें और अपने बाल — बच्चों को भी यही सिखाएँ। <sup>11</sup> चुनाँचे तुम नज़दीक जाकर उस पहाड़ के नीचे खड़े हुए, और वह पहाड़ आग से दहक रहा था और उसकी लौ आसमान तक पहुँचती थी और चारों तरफ़ तारीकी और घटा और ज़ुलमत थी। <sup>12</sup> और खुदावन्द ने उस आग में से होकर तुमसे कलाम किया; तुमने बातें तो सुनीं लेकिन कोई सूरत न देखी, सिर्फ़ आवाज़ ही आवाज़ सुनी। <sup>13</sup> और उसने तुमको अपने 'अहद के दसों अहकाम बताकर उनके मानने का हुक्म दिया, और उनको पत्थर की दो तख़्तियों पर लिख भी दिया। <sup>14</sup> उस वक़्त खुदावन्द ने मुझे हुक्म दिया, कि तुमको यह आईन और अहकाम सिखाऊँ ताकि तुम उस मुल्क में जिस पर क़ब्ज़ा करने के लिए जा रहे हो, उन पर 'अमल करो।

२२२-२२२२२२ २२ २२२२२२२ २२२२ २२२२

† 4:26 4:26 मुल्क — ए — मिस्र

<sup>15</sup> “इसलिए तुम अपनी खूब ही एहतियात रखना; क्योंकि तुमने उस दिन जब खुदावन्द ने आग में से होकर होरिब में तुमसे कलाम किया, किसी तरह की कोई सूरत नहीं देखी। <sup>16</sup> ऐसा न हो कि तुम बिगड़कर किसी शक़ल या सूरत की खोदी हुई मूरत अपने लिए बना लो, जिसकी शबीह किसी मर्द या 'औरत, <sup>17</sup> या ज़मीन के किसी हैवान या हवा में उड़ने वाले परिन्दे, <sup>18</sup> या ज़मीन के रेंगनेवाले जानदार या मछली से, जो ज़मीन के नीचे पानी में रहती है मिलती हो; <sup>19</sup> या जब तू आसमान की तरफ़ नज़र करे और तमाम अजराम — ए — फ़लक या 'नी सूरज और चाँद और तारों को देखे, तो गुमराह होकर उन्हीं को सिज्दा और उनकी इबादत करने लगे जिनको खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने इस ज़मीन की सब क्रौमों के लिए रखवा है। <sup>20</sup> लेकिन खुदावन्द ने तुमको चुना, और तुमको जैसे लोहे की भट्टी या 'नी मिस्र से निकाल ले आया है ताकि तुम उसकी मीरास के लोग ठहरो, जैसा आज ज़ाहिर है। <sup>21</sup> और तुम्हारी ही वजह से खुदावन्द ने मुझसे नाराज़ होकर क्रसम खाई, कि मैं यरदन पार न जाऊँ और न उस अच्छे मुल्क में पहुँचने पाऊँ, जिसे खुदावन्द तुम्हारा खुदा मीरास के तौर पर तुझको देता है; <sup>22</sup> बल्कि मुझे इसी मुल्क में मरना है, मैं यरदन पार नहीं जा सकता; लेकिन तुम पार जाकर उस अच्छे मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे। <sup>23</sup> इसलिए तुम एहतियात रखो, ऐसा न हो कि तुम खुदावन्द अपने खुदा के उस 'अहद को जो उसने तुमसे बाँधा है भूल जाओ, और अपने लिए किसी चीज़ की शबीह की खोदी हुई मूरत बना लो जिसे खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको मना' किया है। <sup>24</sup> क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा भसम करने वाली आग है; वह ग़य्यूर खुदा है। <sup>25</sup> और जब तुझसे बेटे और पोते पैदा हों और तुमको उस मुल्क में रहते हुए एक ज़माना हो जाए, और तुम बिगड़कर किसी चीज़ की शबीह की खोदी हुई मूरत बना लो, और खुदावन्द अपने खुदा के सामने शरारत करके उसे गुस्सा दिलाओ; <sup>26</sup> तो मैं आज के दिन तुम्हारे बरख़िलाफ़ आसमान और ज़मीन को गवाह बनाता हूँ कि तुम उस मुल्क से, जिस पर क़ब्ज़ा करने को† यरदन पार जाने पर हो, जल्द बिल्कुल फ़ना हो जाओगे; तुम वहाँ बहुत दिन रहने न पाओगे बल्कि बिल्कुल नाबूद कर दिए जाओगे। <sup>27</sup> और खुदावन्द तुमको क्रौमों में तितर बितर करेगा; और जिन क्रौमों के बीच खुदावन्द तुमको पहुँचाएगा उनमें तुम थोड़े से रह जाओगे। <sup>28</sup> और वहाँ तुम आदमियों के हाथ के बने हुए लकड़ी और पत्थर के मा'बूदों की इबादत करोगे, जो न

देखते न सुनते न खाते न सूँघते हैं। <sup>29</sup> लेकिन वहाँ भी अगर तुम खुदावन्द अपने खुदा के तालिब हो तो वह तुझको मिल जाएगा, बशर्ते कि तुम अपने पूरे दिल से और अपनी सारी जान से उसे ढूँढो। <sup>30</sup> जब तू मुसीबत में पड़ेगा और यह सब बातें तुझ पर गुज़रेंगी तो आखिरी दिनों में तू खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ फिरेगा और उसकी मानेगा; <sup>31</sup> क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा, रहीम खुदा है, वह तुझको न तो छोड़ेगा और न हलाक करेगा और न उस 'अहद को भूलेगा जिसकी कसम उसने तुम्हारे बाप — दादा से खाई।

?????? ?? ?? ??????? ??

<sup>32</sup> “और जब से खुदा ने इंसान को ज़मीन पर पैदा किया, तब से शुरू करके तुम उन गुज़रे दिनों का हाल जो तुमसे पहले हो चुके पूछ, और आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दरियाफ़्त कर, कि इतनी बड़ी वारदात की तरह कभी कोई बात हुई या सुनने में भी आई? <sup>33</sup> क्या कभी कोई क्रौम खुदा की आवाज़ जैसे तू ने सुनी, आग में से आती हुई सुन कर ज़िन्दा बची है? <sup>34</sup> या कभी खुदा ने एक क्रौम को किसी दूसरी क्रौम के बीच से निकालने का इरादा करके, इम्तिहानों और निशान और मो'जिज़ों और जंग और ताक़तवर हाथ और बलन्द बाज़ू और हौलनाक माजरो' के वसीले से, उनको अपनी खातिर बरगुज़ीदा करने के लिए वह काम किए जो खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्हारी आँखों के सामने मिस्र में तुम्हारे लिए किए? <sup>35</sup> यह सब कुछ तुझको दिखाया गया, ताकि तू जाने कि खुदावन्द ही खुदा है और उसके अलावा और कोई है ही नहीं। <sup>36</sup> उसने अपनी आवाज़ आसमान में से तुमको सुनाई ताकि तुझको तरबियत करे, और ज़मीन पर उसने तुझको अपनी बड़ी आग दिखाई; और तुमने उसकी बातें आग के बीच में से आती हुई सुनी। <sup>37</sup> और चूँकि उसे तेरे बाप — दादा से मुहब्बत थी, इसीलिए उसने उनके बाद उनकी नसल को चुन लिया, और तेरे साथ होकर अपनी बड़ी कुदरत से तुझको मिस्र से निकाल लाया; <sup>38</sup> ताकि तुम्हारे सामने से उन क्रौमों को जो तुझ से बड़ी और ताक़तवर हैं दफ़ा' करे, और तुझको उनके मुल्क में पहुँचाए, और उसे तुझको मीरास के तौर पर दे, जैसा आज के दिन ज़ाहिर है। <sup>39</sup> इसलिए आज के दिन तू जान ले और इस बात को अपने दिल में जमा ले, कि ऊपर आसमान में और नीचे ज़मीन पर खुदावन्द ही खुदा है और कोई दूसरा नहीं। <sup>40</sup> इसलिए तू उसके आईन और अहकाम को जो मैं तुझको आज बताता हूँ मानना, ताकि

तेरा और तेरे बाद तेरी औलाद का भला हो, और हमेशा उस मुल्क में जो खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है तेरी उम्र दराज़ हो।”

?????????? ?? ???????

<sup>41</sup> फिर मूसा ने यरदन के पार पूरब की तरफ़ तीन शहर अलग किए, <sup>42</sup> ताकि ऐसा खूनी जो अनजाने बग़ैर कदीमी 'अदावत के अपने पड़ोसी को मार डाले, वह वहाँ भाग जाए और इन शहरों में से किसी में जाकर जीता बच रहे। <sup>43</sup> या'नी रूबीनियों के लिए तो शहर — ए — बसर हो जो तराई में वीरान के बीच वाक़े' है, और जददियों के लिए शहर — ए — रामात जो जिल'आद में है, और मनस्सियों के लिए बसन का शहर — ए — जौलान।

???? ?? ??????? ?? ?? ???????

<sup>44</sup> यह वह शरी'अत है जो मूसा ने बनी — इस्राईल के आगे पेश की। <sup>45</sup> यही वह शहादतें और आईन और अहकाम हैं जिनको मूसा ने बनी — इस्राईल को उनके मिस्र से निकलने के बाद, <sup>46</sup> यरदन के पार उस वादी में जो बैत फ़गूर के सामने है, कह सुनाया; या'नी अमोरियों के बादशाह सीहोन के मुल्क में जो हस्बोन में रहता था, जिसे मूसा और बनी इस्राईल ने मुल्क — ए — मिस्र से निकलने के बाद मारा। <sup>47</sup> और फिर उसके मुल्क को, और बसन के बादशाह 'ओज के मुल्क को अपने कब्ज़े में कर लिया। अमोरियों के इन दोनों बादशाहों का यह मुल्क \*यरदन पार पूरब की तरफ़, <sup>48</sup> 'अरो'ईर से जो वादी — ए — अरनोन के किनारे वाक़े' है, कोह — ए — सियून तक जिसे हरमून भी कहते हैं, फैला हुआ है। <sup>49</sup> इसी में †यरदन पार पूरब की तरफ़ मैदान के दरिया तक जो पिसगा की ढाल के नीचे बहता है, वहाँ का सारा मैदान शामिल है।

## 5

???? ?? ??????? ?? ???????

<sup>1</sup> फिर मूसा ने सब इसराईलियों को बुलावा कर उनको कहा, ऐ इसराईलियों। तुम उन आईन और अहकाम को सुन लो, जिनको मैं आज तुमको सुनाता हूँ, ताकि तुम उनको सीख कर उन पर 'अमल करो। <sup>2</sup> खुदावन्द हमारे खुदा ने होरिब में हमसे एक 'अहद बाँधा। <sup>3</sup> खुदावन्द ने यह 'अहद हमारे बाप — दादा से नहीं, बल्कि खुद हम सब से जो यहाँ आज के दिन जीते हैं बाँधा। <sup>4</sup> खुदावन्द ने तुमसे उस पहाड़ पर, आमने — सामने आग के बीच में से बातें कीं। <sup>5</sup> उस वक़्त मैं तुम्हारे और खुदावन्द के बीच खड़ा हुआ ताकि खुदावन्द

का कलाम तुम पर जाहिर करूँ क्योंकि तुम आग की वजह से डरे हुए थे और पहाड़ पर न चढ़े। <sup>6</sup> तब उसने कहा, 'खुदावन्द तेरा खुदा, जो तुझको मुल्क — ए — मिस्र या 'नी गुलामी के घर से निकाल लाया, मैं हूँ। <sup>7</sup> मेरे आगे तू और मा'बूदों को न मानना। <sup>8</sup> 'तू अपने लिए कोई तराशी हुई मूरत न बनाना, न किसी चीज़ की सूरत बनाना जो ऊपर आसमान में या नीचे ज़मीन पर या ज़मीन के नीचे पानी में है। <sup>9</sup> तू उनके आगे सिज्दा न करना और न उनकी इबादत करना, क्योंकि मैं खुदावन्द तेरा खुदा शय्यूर खुदा हूँ। और जो मुझसे 'अदावत रखते हैं उनकी औलाद को तीसरी और चौथी नसल तक बाप — दादा की बदकारी की सज़ा देता हूँ <sup>10</sup> और हजारों पर जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे हुक्मों को मानते हैं, रहम करता हूँ। <sup>11</sup> 'तू खुदावन्द अपने खुदा का नाम बेफ़ायदा न लेना; क्योंकि खुदावन्द उसको जो उसका नाम बेफ़ायदा लेता है, बेगुनाह न ठहराएगा। <sup>12</sup> 'तू खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म के मुताबिक़ सबत के दिन को याद करके पाक मानना। <sup>13</sup> छः दिन तक तू मेहनत करके अपना सारा काम — काज करना; <sup>14</sup> लेकिन सातवाँ दिन खुदावन्द तेरे खुदा का सबत है उसमें न तू कोई काम करे, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा गुलाम, न तेरी लौंडी, न तेरा बैल, न तेरा गधा, न तेरा और कोई जानवर और न कोई मुसाफ़िर जो तेरे फाटकों के अन्दर हों; ताकि तेरा गुलाम और तेरी लौंडी भी तेरी तरह आराम करें। <sup>15</sup> और याद रखना कि तू मुल्क — ए — मिस्र में गुलाम था, और वहाँ से खुदावन्द तेरा खुदा अपने ताक़तवर हाथ और बलन्द बाज़ू से तुझको निकाल लाया; इसलिए खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको सबत के दिन को मानने का हुक्म दिया। <sup>16</sup> अपने बाप और अपनी माँ की 'इज़ज़त करना, जैसा खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझे हुक्म दिया है; ताकि तेरी उम्र दराज़ हो और जो तेरा मुल्क खुदावन्द तेरा खुदा तुझे देता है उसमें तेरा भला हो। <sup>17</sup> तू खून न करना। <sup>18</sup> 'तू ज़िना न करना। <sup>19</sup> 'तू चोरी न करना। <sup>20</sup> 'तू अपने पड़ोसी के खिलाफ़ झूठी गवाही न देना। <sup>21</sup> 'तू अपने पड़ोसी की बीवी का लालच न करना, और न अपने पड़ोसी के घर, या उसके खेत, या गुलाम, या लौंडी, या बैल, या गधे, या उसकी किसी और चीज़ का ख्वाहिश मन्द होना। <sup>22</sup> 'यही बातें खुदावन्द ने उस पहाड़ पर, आग और घटा और ज़ुलमत में से तुम्हारी सारी जमा'अत को बलन्द आवाज़ से कहीं, और इससे ज्यादा और कुछ न कहा और इन ही को उसने पत्थर की दो तख़्तियों पर लिखा और उनको मेरे

सुपुर्द किया। <sup>23</sup> 'और जब वह पहाड़ आग से दहक रहा था, और तुमने वह आवाज़ अन्धेरे में से आती सुनी तो तुम और तुम्हारे कबीलों के सरदार और बुज़ुर्ग मेरे पास आए। <sup>24</sup> और तुम कहने लगे, कि खुदावन्द हमारे खुदा ने अपनी शौकत और 'अज़मत हमको दिखाई, और हमने उसकी आवाज़ आग में से आती सुनी; आज हमने देख लिया के खुदावन्द इंसान से बातें करता है तो भी इंसान ज़िन्दा रहता है। <sup>25</sup> इसलिए अब हम क्यों अपनी जान दें? क्योंकि ऐसी बड़ी आग हमको भसम कर देगी, अगर हम खुदावन्द अपने खुदा की \*आवाज़ फिर सुनें तो मर ही जाएँगे। <sup>26</sup> क्योंकि ऐसा कौन सा बशर है जिसने ज़िन्दा खुदा की आवाज़ हमारी तरह आग में से आती सुनी हो और फिर भी ज़िन्दा रहा? <sup>27</sup> इसलिए तू ही नज़दीक जाकर जो कुछ खुदावन्द हमारा खुदा कहे उसे सुन ले, और तू ही वह बातें जो खुदावन्द हमारा खुदा तुझ से कहे हमको बताना; और हम उसे सुनेंगे और उस पर 'अमल करेंगे। <sup>28</sup> 'और जब तुम मुझसे गुफ़्तगू कर रहे थे तो खुदावन्द ने तुम्हारी बातें सुनीं। तब खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि मैंने इन लोगों की बातें, जो उन्होंने तुझ से कहीं सुनी हैं; जो कुछ उन्होंने कहा ठीक कहा। <sup>29</sup> काश उनमें ऐसा ही दिल हो ताकि वह मेरा खौफ़ मान कर हमेशा मेरे सब हुक्मों पर 'अमल करते, ताकि हमेशा उनका और उनकी औलाद का भला होता। <sup>30</sup> इसलिए तू जाकर उनसे कह दे, कि तुम अपने खेमों को लौट जाओ। <sup>31</sup> लेकिन तू यहीं मेरे पास खड़ा रह और मैं वह सब फ़रमान और सब आईन और अहकाम जो तुझे उनको सिखाने हैं, तुझको बताऊँगा; ताकि वह उन पर उस मुल्क में जो मैं उनको क़ब्ज़ा करने के लिए देता हूँ, 'अमल करें। <sup>32</sup> इसलिए तुम एहतियात रखना और जैसा खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुमको हुक्म दिया है वैसा ही करना, और दहने या बाएँ हाथ को न मुड़ना। <sup>33</sup> तुम उस सारे रास्ते पर जिसका हुक्म खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुमको दिया है चलना; ताकि तुम ज़िन्दा रहो और तुम्हारा भला हो, और तुम्हारी उम्र उस मुल्क में जिस पर तुम क़ब्ज़ा करोगे दराज़ हो।

## 6

???? ???? ?? ?????? ????? ?? ?????

<sup>1</sup> यह वह फ़रमान और आईन और अहकाम हैं, जिनको खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुमको सिखाने का हुक्म दिया है; ताकि तुम उन पर उस मुल्क में 'अमल करो, जिस पर क़ब्ज़ा करने के लिए पार जाने को हो। <sup>2</sup> और



तुम अपने बेटों और पोतों समेत खुदावन्द अपने खुदा का खौफ़ मान कर उसके तमाम आईन और अहकाम पर, जो मैं तुमको बताता हूँ, ज़िन्दगी भर 'अमल करना ताकि तुम्हारी उम्र दराज़ हो।' <sup>3</sup> इसलिए, ऐ इस्राईल सुन, और एहतियात करके उन पर 'अमल कर, ताकि तेरा भला हो और तुम खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा के वादे के मुताबिक़ उस मुल्क में, जिस में \*दूध और शहद बहता है बहुत बढ़ जाओ।' <sup>4</sup> सुन, ऐ इस्राईल, खुदावन्द हमारा खुदा एक ही खुदावन्द है। <sup>5</sup> तू अपने सारे दिल, और अपनी सारी जान, और अपनी सारी ताक़त से खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रख। <sup>6</sup> और ये बातें जिनका हुक्म आज मैं तुझे देता हूँ तेरे दिल पर नक़्श रहें। <sup>7</sup> और तू इनको अपनी औलाद के ज़हन नशीं करना, और घर बैठे और राह चलते और लेटते और उठते वक़्त इनका ज़िक्र किया करना। <sup>8</sup> और तू निशान के तौर पर इनको अपने हाथ पर बाँधना, और वह तेरी पेशानी पर टीकों की तरह हों। <sup>9</sup> और तू उनको अपने घर की चौखटों और अपने फाटकों पर लिखना। <sup>10</sup> और जब खुदावन्द तेरा खुदा तुझको उस मुल्क में पहुँचाए, जिसे तुझको देने की क़सम उसने तेरे बाप — दादा अब्रहाम और इस्हाक़ और या'क़ूब से खाई, और जब वह तुझको बड़े — बड़े और अच्छे शहर जिनको तूने नहीं बनाया, <sup>11</sup> और अच्छी — अच्छी चीज़ों से भरे हुए घर जिनको तूने नहीं भरा, और खोदे — खुदाए हौज़ जो तूने नहीं खोदे, और अंगूर के बाग़ और ज़ैतून के दरख़्त जो तूने नहीं लगाए 'इनायत करे, और तू खाए और सेर हो, <sup>12</sup> तो तू होशियार रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू खुदावन्द को जो तुझको मुल्क — ए — मिस्र या'नी गुलामी के घर से निकाल लाया भूल जाए। <sup>13</sup> तू खुदावन्द अपने खुदा का खौफ़ मानना, और उसी की इबादत करना, और उसी के नाम की क़सम खाना। <sup>14</sup> तुम और मा'बूदों की या'नी उन क़ौमों के मा'बूदों की, जो तुम्हारे आस — पास रहती हैं पैरवी न करना। <sup>15</sup> क्यूँकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा जो तुम्हारे बीच है गय्यूर खुदा है। इसलिए ऐसा न हो कि खुदावन्द तुम्हारे खुदा का ग़ज़ब तुझ पर भड़के, और वह तुझको इस ज़मीन पर से फ़ना कर दे। <sup>16</sup> "तुम खुदावन्द अपने खुदा को मत आज़माना, जैसा तुमने उसे मस्सा में आज़माया था। <sup>17</sup> तुम मेहनत से खुदावन्द अपने खुदा के हुक्मों और शहादतों और आईन को, जो उसने तुझको फ़रमाए हैं मानना। <sup>18</sup> और तुम वह ही करना जो खुदावन्द की नज़र में दुरुस्त और अच्छा है ताकि

तेरा भला हो और जिस अच्छे मुल्क के बारे में खुदावन्द ने तुम्हारे बाप — दादा से क़सम खाई तू उसमें दाख़िल होकर उस पर क़ब्ज़ा कर सके। <sup>19</sup> और खुदावन्द तेरे सब दुश्मनों को तुम्हारे आगे से दफ़ा' करे, जैसा उसने कहा है। <sup>20</sup> "और जब आइन्दा ज़माने में तुम्हारे बेटे तुझसे सवाल करें, कि जिन शहादतों और आईन और फ़रमान के मानने का हुक्म खुदावन्द हमारे खुदा ने तुमको दिया है उनका मतलब क्या है? <sup>21</sup> तो तू अपने बेटों को यह जवाब देना, कि जब हम मिस्र में फ़िर'औन के गुलाम थे, तो खुदावन्द अपने ताक़तवर हाथ से हमको मिस्र से निकाल लाया; <sup>22</sup> और खुदावन्द ने बड़े — बड़े और हौलनाक अजायब — ओ — निशान हमारे सामने अहल — ए — मिस्र, और फ़िर'औन और उसके सब घराने पर करके दिखाए; <sup>23</sup> और हमको वहाँ से निकाल लाया ताकि हमको इस मुल्क में, जिसे हमको देने की क़सम उसने हमारे बाप दादा से खाई पहुँचाए। <sup>24</sup> इसलिए खुदावन्द ने हमको इन सब हुक्मों पर 'अमल करने और हमेशा अपनी भलाई के लिए खुदावन्द अपने खुदा का खौफ़ मानने का हुक्म दिया है, ताकि वह हमको ज़िन्दा रखे, जैसा आज के दिन ज़ाहिर है। <sup>25</sup> और अगर हम एहतियात रखें कि खुदावन्द अपने खुदा के सामने इन सब हुक्मों को मानें, जैसा उस ने हमसे कहा है, तो इसी में हमारी सदाक़त होगी।

## 7

?????????? ?? ???????

<sup>1</sup> "जब खुदावन्द तेरा खुदा तुझको उस मुल्क में, जिस पर क़ब्ज़ा करने के लिए तू जा रहा है पहुँचा दे, और तेरे आगे से उन बहुत सी क़ौमों को या'नी हित्तियों, और जिरज़ासियों, और अमोरियों, और कना'नियों, और फ़रिज़ियों, और हव्वियों, और यबूसियों को, जो सातों क़ौमों तुझसे बड़ी और ताक़तवर हैं निकाल दे। <sup>2</sup> और जब खुदावन्द तेरा खुदा उनको तेरे आगे शिकस्त दिलाए और तू उनको मार ले, तो तू उनको बिल्कुल हलाक कर डालना; तू उनसे कोई 'अहद न बांधना और न उन पर रहम करना। <sup>3</sup> तू उनसे ब्याह शादी भी न करना, न उनके बेटों को अपनी बेटियाँ देना और न अपने बेटों के लिए उनकी बेटियाँ लेना। <sup>4</sup> क्यूँकि वह तेरे बेटों को मेरी पैरवी से बरग़स्ता कर देंगी, ताकि वह और मा'बूदों की इबादत करें। यूँ खुदावन्द का ग़ज़ब तुम पर भड़केगा और वह तुझको जल्द हलाक कर देगा। <sup>5</sup> बल्कि तुम उनसे यह सुलूक करना, कि उन के मज़बहों को ढा देना,

\* 6:3 6:3 अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क † 6:16 6:16 देखें खुरुज 17:1 — 7 ‡ 6:21 6:21 मुल्क — ए — मिस्र



पर इन चालीस बरसों में खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको इस वीराने में चलाया, ताकि वह तुझको 'आजिज़ कर के आजमाए और तेरे दिल की बात दरियाफ्त करे कि तू उसके हुक्मों को मानेगा या नहीं।<sup>3</sup> और उसने तुझको 'आजिज़ किया भी और तुझको भूका होने दिया, और वह मन्न जिसे न तू न तेरे बाप — दादा जानते थे तुझको खिलाया; ताकि तुझको सिखाए कि इंसान सिर्फ़ रोटी ही से ज़िन्दा नहीं रहता, बल्कि हर बात से जो खुदावन्द के मुँह से निकलती है वह ज़िन्दा रहता है।<sup>4</sup> इन चालीस बरसों में न तो तेरे तन पर तेरे कपड़े पुराने हुए और न तुम्हारे पाँव सूजे।<sup>5</sup> और तू अपने दिल में खयाल रखना कि जिस तरह आदमी अपने बेटों को तम्बीह करता है, वैसे ही खुदावन्द तेरा खुदा तुमको तम्बीह करता है।<sup>6</sup> इसलिए तू खुदावन्द अपने खुदा की राहों पर चलने और उसका खौफ़ मानने के लिए उसके हुक्मों पर 'अमल करना।<sup>7</sup> क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा तुझको एक अच्छे मुल्क में लिए जाता है। वह पानी की नदियों और ऐसे चश्मों और सोतों का मुल्क है जो वादियों और पहाड़ों से फूट कर निकलते हैं।<sup>8</sup> वह ऐसा मुल्क है जहाँ गेहूँ और जौ और अंगूर और अंजीर के दरख्त और अनार होते हैं। वह ऐसा मुल्क है जहाँ रौशनदार ज़ैतून और शहद भी है।<sup>9</sup> उस मुल्क में तुझको रोटी इफ़रात से मिलेगी और तुझको किसी चीज़ की कमी न होगी, क्योंकि उस मुल्क के पत्थर भी लोहा हैं और वहाँ के पहाड़ों से तू ताँबा खोद कर निकाल सकेगा।<sup>10</sup> और तू खाएगा और सेर होगा, और उस अच्छे मुल्क के लिए जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है उसका शुक्र बजा लाएगा।<sup>11</sup> इसलिए खबरदार रहना, कि कहीं ऐसा न हो कि तू खुदावन्द अपने खुदा को भूलकर, उसके फ़रमानों और हुक्मों और आईन को जिनको आज मैं तुझको सुनाता हूँ मानना छोड़ दे; <sup>12</sup> ऐसा न हो कि जब तू खाकर सेर हो और खुशनुमा घर बना कर उनमें रहने लगे, <sup>13</sup> और तेरे गाय — बैल के गल्ले और भेड़ बकरियाँ बढ़ जाएँ और तेरे पास चाँदी, और सोना और माल बा — कसरत हो जाए; <sup>14</sup> तो तेरे दिल में गुरूर समाए और तू खुदावन्द अपने खुदा को भूल जाए जो तुझ को मुल्क — ए — मिस्र या 'नी गुलामी के घर से निकाल लाया है, <sup>15</sup> और ऐसे बड़े और हौलनाक वीराने में तेरा रहबर हुआ जहाँ जलाने वाले साँप और बिच्छू थे; और जहाँ की ज़मीन बग़ैर पानी के सूखी पड़ी थी, वहाँ उसने तेरे लिए चक्रमक्र की चट्टान से पानी निकाला। <sup>16</sup> और तुझको वीरान में वह मन्न

खिलाया जिसे तेरे बाप — दादा जानते भी न थे; ताकि तुझको 'आजिज़ करे और तेरी आजमाइश करके आखिर में तेरा भला करे। <sup>17</sup> और ऐसा न हो कि तू अपने दिल में कहने लगे, कि मेरी ही ताक़त और हाथ के ज़ोर से मुझको यह दौलत नसीब हुई है। <sup>18</sup> बल्कि तू खुदावन्द अपने खुदा को याद रखना, क्योंकि वही तुझको दौलत हासिल करने की कुव्वत इसलिए देता है कि अपने उस 'अहद को जिसकी क़सम उसने तेरे बाप — दादा से खाई थी, क़ाईम रखे जैसा आज के दिन ज़ाहिर है। <sup>19</sup> और अगर तू कभी खुदावन्द अपने खुदा को भूले, और और मा'बूदों के पैरों बन कर उनकी इबादत और परस्तिश करे, तो मैं आज के दिन तुमको आगाह किए देता हूँ कि तुम ज़रूर ही हलाक हो जाओगे। <sup>20</sup> जिन क़ौमों को खुदावन्द तुम्हारे सामने हलाक करने को है, उन्हीं की तरह तुम भी खुदावन्द अपने खुदा की \*बात न मानने की वजह से हलाक हो जाओगे।

## 9

222222 22 22222 22 22222 22222

<sup>1</sup> सुन ले ऐ इस्राईल, आज तुझे \*यरदन पार इसलिए जाना है, कि तू ऐसी क़ौमों पर जो तुझ से बड़ी और ताक़तवर हैं, और ऐसे बड़े शहरों पर जिनकी फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं, क़ब्ज़ा करे। <sup>2</sup> वहाँ 'अनाक़ीम की औलाद हैं जो बड़े — बड़े और क्रदआवर लोग हैं। तुझे उनका हाल मा'लूम है, और तूने उनके बारे में यह कहते सुना है कि बनी 'अनाक का मुकाबला कौन कर सकता है? <sup>3</sup> फिर तू आज कि दिन जान ले, कि खुदावन्द तेरा खुदा तेरे आगे आगे भसम करने वाली आग की तरह पार जा रहा है। वह उनको फ़ना करेगा और वह उनको तेरे आगे पस्त करेगा, ऐसा कि तू उनको निकाल कर जल्द हलाक कर डालेगा, जैसा खुदावन्द ने तुझ से कहा है। <sup>4</sup> “और जब खुदावन्द तेरा खुदा उनको तेरे आगे से निकाल चुके, तो तू अपने दिल में यह न कहना कि मेरी सदाक़त की वजह से खुदावन्द मुझे इस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने को यहाँ लाया क्योंकि हकीक़त में इनकी शरारत की वजह से खुदावन्द इन क़ौमों को तेरे आगे से निकालता है। <sup>5</sup> तू अपनी सदाक़त या अपने दिल की रास्ती की वजह से उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने को नहीं जा रहा है बल्कि खुदावन्द तेरा खुदा इन क़ौमों की शरारत की वजह से इनको तेरे आगे से ख़ारिज़ करता है, ताकि यूँ वह उस वा'दे को जिसकी क़सम उसने तेरे बाप — दादा अब्रहाम और इस्हाक़ और या'क़ूब से खाई पूरा

\* 8:20 8:20 हुक्म \* 9:1 9:1 यरदन नदी

करे। <sup>6</sup> “शरज़ तू समझ ले कि खुदावन्द तेरा खुदा तेरी सदाक़त की वजह से यह अच्छा मुल्क तुझे क़ब्ज़ा करने के लिए नहीं दे रहा है, क्योंकि तू एक बागी क्रौम है।

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>7</sup> इस बात को याद रख और कभी न भूल, कि तूने खुदावन्द अपने खुदा को वीराने में किस किस तरह गुस्सा दिलाया; बल्कि जब से तुम मुल्क — ए — मिस्र से निकले हो तब से इस जगह पहुँचने तक, तुम बराबर खुदावन्द से बगावत ही करते रहे। <sup>8</sup> और होरिब में भी तुमने खुदावन्द को गुस्सा दिलाया, चुनौचे खुदावन्द नाराज़ होकर तुमको हलाक करना चाहता था। <sup>9</sup> जब मैं पत्थर की दोनों तख्तियों को, या'नी उस अहद की तख्तियों को जो खुदावन्द ने तुमसे बाँधा था लेने को पहाड़ पर चढ़ गया; तो मैं चालीस दिन और चालीस रात वहीं पहाड़ पर रहा और न रोटी खाई न पानी पिया। <sup>10</sup> और खुदावन्द ने अपने हाथ की लिखी हुई पत्थर की दोनों तख्तियाँ मेरे सुपुर्द की, और उन पर वही बातें लिखी थीं जो खुदावन्द ने पहाड़ पर आग के बीच में से मजमे' के दिन तुमसे कही थीं। <sup>11</sup> और चालीस दिन और चालीस रात के बाद खुदावन्द ने पत्थर की वह दोनों तख्तियाँ या'नी 'अहद की तख्तियाँ मुझको दीं। <sup>12</sup> और खुदावन्द ने मुझसे कहा, 'उठ कर जल्द यहाँ से नीचे जा, क्योंकि तेरे लोग जिनको तू 'मिस्र से निकाल लाया है बिगड़ गए हैं वह उस राह से जिसका मैंने उनको हुक्म दिया जल्द नाफ़रमान हो गए, और अपने लिए एक मूरत ढाल कर बना ली है।' <sup>13</sup> “और खुदावन्द ने मुझसे यह भी कहा, कि मैंने इन लोगों को देख लिया, ये बागी लोग हैं। <sup>14</sup> इसलिए अब तू मुझे इनको हलाक करने दे ताकि मैं इनका नाम सफ़ह — ए — रोज़गार से मिटा डालूँ, और मैं तुझ से एक क्रौम जो इन से ताक़तवर और बड़ी हो बनाऊँगा। <sup>15</sup> तब मैं उल्टा फिरा और पहाड़ से नीचे उतरा, और पहाड़ आग से दहक रहा था; और 'अहद की वह दोनों तख्तियाँ मेरे दोनों हाथों में थीं। <sup>16</sup> और मैंने देखा कि तुमने खुदावन्द अपने खुदा का गुनाह किया; और अपने लिए एक बछड़ा ढाल कर बना लिया है, और बहुत जल्द उस राह से जिसका हुक्म खुदावन्द ने तुमको दिया था, नाफ़रमान हो गए। <sup>17</sup> तब मैंने उन दोनों तख्तियों को अपने दोनों हाथों से लेकर फेंक दिया और तुम्हारी आँखों के सामने उनको तोड़ डाला <sup>18</sup> और मैं पहले की तरह चालीस दिन और चालीस रात खुदावन्द के आगे औंधा पड़ा रहा, मैंने न रोटी खाई न पानी पिया; क्योंकि तुमसे बड़ा गुनाह सरज़द

हुआ था, और खुदावन्द को गुस्सा दिलाने के लिए तुमने वह काम किया जो उसकी नज़र में बुरा था। <sup>19</sup> और मैं खुदावन्द के क्रहर और ग़ज़ब से डर रहा था, क्योंकि वह तुमसे सख़्त नाराज़ होकर तुमको हलाक करने को था; लेकिन खुदावन्द ने उस बार भी मेरी सुन ली। <sup>20</sup> और खुदावन्द हारून से ऐसे गुस्सा था कि उसे हलाक करना चाहा, लेकिन मैंने उस वक़्त हारून के लिए भी दुआ की। <sup>21</sup> और मैंने तुम्हारे गुनाह को या'नी उस बछड़े को, जो तुमने बनाया था लेकर आग में जलाया; फिर उसे कूट कूटकर ऐसा पीसा कि वह गर्द की तरह बारीक हो गया; और उसकी उस राख को उस नदी में जो पहाड़ से निकल कर नीचे बहती थी डाल दिया। <sup>22</sup> “और तबे'रा और मस्सा और क़बरोत हत्तावा में भी तुमने खुदावन्द को गुस्सा दिलाया। <sup>23</sup> और जब खुदावन्द ने तुमको क़ादिस बर्नी'अ से यह कह कर खाना किया, कि जाओ और उस मुल्क को जो मैंने तुमको दिया है क़ब्ज़ा करो, तो उस वक़्त भी तुमने खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म को 'उदूल किया, और उस पर ईमान न लाए और उसकी बात न मानी। <sup>24</sup> जिस दिन से मेरी तुमसे वाक़फ़ियत हुई है, तुम बराबर खुदावन्द से सरकशी करते रहे हो। <sup>25</sup> “इसलिए वह चालीस दिन और चालीस रात जो मैं खुदावन्द के आगे औंधा पड़ा रहा, इसी लिए पड़ा रहा क्योंकि खुदावन्द ने कह दिया था कि वह तुमको हलाक करेगा। <sup>26</sup> और मैंने खुदावन्द से यह दुआ की, कि ऐ खुदावन्द खुदा तू अपनी क्रौम और अपनी मीरास के लोगों को, जिनको तूने अपनी कुदरत से नजात बख़्शी और जिनको तू ताक़तवर हाथ से 'मिस्र से निकाल लाया, हलाक न कर। <sup>27</sup> अपने खादिमों अब्रहाम और इस्हाक़ और या'क़ूब को याद फ़रमा, और इस क्रौम की खुदसरी और शरारत और गुनाह पर नज़र न कर, <sup>28</sup> कहीं ऐसा न हो कि जिस मुल्क से तू हमको निकाल लाया है वहाँ के लोग कहने लगें, कि चूँकि खुदावन्द उस मुल्क में जिसका वा'दा उसने उनसे किया था पहुँचा न सका, और चूँकि उसे उनसे नफ़रत भी थी, इसलिए वह उनको निकाल ले गया ताकि उनको वीराने में हलाक कर दे। <sup>29</sup> आखिर यह लोग तेरी क्रौम और तेरी मीरास हैं जिनको तू अपने बड़े ज़ोर और बलन्द बाज़ू से निकाल लाया है।

## 10

???? ? ? ? ? ? ? ? ?



1 “उस वक्त खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि पहली तख्तियों की तरह पत्थर की दो और तख्तियों तराश ले, और मेरे पास पहाड़ पर आ जा, और एक चोबी संदूक भी बना ले।<sup>2</sup> और जो बातें पहली तख्तियों पर जिनको तूने तोड़ डाला लिखी थीं, वही मैं इन तख्तियों पर भी लिख दूँगा; फिर तू इनको उस सन्दूक में रख देना।<sup>3</sup> इसलिए मैंने कीकर की लकड़ी का एक संदूक बनाया और पहली तख्तियों की तरह पत्थर की दो तख्तियाँ तराश लीं, और उन दोनों तख्तियों को अपने हाथ में लिये हुए पहाड़ पर चढ़ गया।<sup>4</sup> और जो दस हुक्म खुदावन्द ने मजमे' के दिन पहाड़ पर आग के बीच में से तुमको दिए थे, उन ही को पहली तहरीर के मुताबिक उसने इन तख्तियों पर लिख दिया; फिर इनको खुदावन्द ने मेरे सुपुर्द किया।<sup>5</sup> तब मैं पहाड़ से लौट कर नीचे आया और इन तख्तियों को उस संदूक में जो मैंने बनाया था रख दिया, और खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक जो उसने मुझे दिया था, वह वहीं रखी हुई हैं।<sup>6</sup> फिर बनी — इस्राईल \*बेरोत — ए — बनी या'कान से रवाना होकर मौसीरा में आए। वहीं हारून ने वफ़ात पाई और दफ़न भी हुआ, और उसका बेटा इली'एलियाज़र कहानत के 'उहदे पर मुकर्र होकर उसकी जगह खिदमत करने लगा।<sup>7</sup> वहाँ से वह जुदजूदा को और जुदजूदा से यूतबाता को चले, इस मुल्क में पानी की नदियाँ हैं।<sup>8</sup> उसी मौक़े' पर खुदावन्द ने लावी के कबीले को इस वजह से अलग किया, कि वह खुदावन्द के 'अहद के संदूक को उठाया करे और खुदावन्द के सामने खड़ा होकर उसकी खिदमत को अन्जाम दे, और उसके नाम से बरकत दिया करे, जैसा आज तक होता है।<sup>9</sup> इसीलिए लावी को कोई हिस्सा या मीरास उसके भाइयों के साथ नहीं मिली, क्योंकि खुदावन्द उसकी मीरास है, जैसा खुद खुदावन्द तेरे खुदा ने उससे कहा है।<sup>10</sup> और मैं पहले की तरह चालीस दिन और चालीस रात पहाड़ पर ठहरा रहा, और इस दफ़ा' भी खुदावन्द ने मेरी सुनी और न चाहा कि तुझको हलाक करे।<sup>11</sup> फिर खुदावन्द ने मुझसे कहा, 'उठ, और इन लोगों के आगे रवाना हो, ताकि ये उस मुल्क पर जाकर कब्ज़ा कर लें जिसे उनको देने की क़सम मैंने उनके बाप — दादा से खाई थी।

222222 2222 22 222222 22 222222 22 2222

12 “इसलिए ऐ इस्राईल, खुदावन्द तेरा खुदा तुझ से इसके अलावा और क्या चाहता है कि तू खुदावन्द अपने खुदा का ख़ौफ़ माने, और उसकी सब राहों पर

चले, और उससे मुहब्बत रखे, और अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से खुदावन्द अपने खुदा की बन्दगी करे,<sup>13</sup> और खुदावन्द के जो अहकाम और आईन मैं तुझको आज बताता हूँ उन पर 'अमल करो, ताकि तेरी ख़ैर हो? <sup>14</sup> देख, आसमान और आसमानों का आसमान, और ज़मीन और जो कुछ ज़मीन में है, यह सब खुदावन्द तेरे खुदा ही का है।<sup>15</sup> तो भी खुदावन्द ने तेरे बाप — दादा से खुश होकर उनसे मुहब्बत की, और उनके बाद उनकी औलाद को या'नी तुमको सब क़ौमों में से बरगुज़ीदा किया, जैसा आज के दिन ज़ाहिर है।<sup>16</sup> इसलिए अपने दिलों का ख़तना करो और आगे को बागी न रहो।<sup>17</sup> क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा इलाहों का इलाह खुदावन्दों का खुदावन्द है, वह बुजुर्गवार और क़ादिर और मुहीब खुदा है, जो रुरि'आयत नहीं करता और न रिश्वत लेता है।<sup>18</sup> वह यतीमों और बेवाओं का इन्साफ़ करता है, और परदेसी से ऐसी मुहब्बत रखता है कि उसे खाना और कपड़ा देता है।<sup>19</sup> इसलिए तुम परदेसियों से मुहब्बत रखना क्योंकि तुम भी मुल्क — ए — मिस्र में परदेसी थे।<sup>20</sup> तुम खुदावन्द अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना, उसकी बन्दगी करना और उससे लिपटे रहना और उसी के नाम की क़सम खाना।<sup>21</sup> वही तेरी हम्द का सज़ावार है और वही तेरा खुदा है जिसने तेरे लिए वह बड़े और हौलनाक काम किए जिनको तू ने अपनी आँखों से देखा।<sup>22</sup> तेरे बाप — दादा जब †मिस्र में गए तो सत्तर आदमी थे, लेकिन अब खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुझको बढ़ा कर आसमान के सितारों की तरह कर दिया है।

## 11

1 “इसलिए तुम खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखना, और उसकी शरी'अत और आईन और अहकाम और फ़रमानों पर सदा 'अमल करना।<sup>2</sup> और तुम आज के दिन ख़ूब समझ लो, क्योंकि मैं तुम्हारे बाल बच्चों से कलाम नहीं कर रहा हूँ, जिनको न तो मा'लूम है और न उन्होंने देखा कि खुदावन्द तुम्हारे खुदा की तम्बीह, और उसकी 'अज़मत, और ताक़तवर हाथ और बलन्द बाज़ू से क्या क्या हुआ; <sup>3</sup> और \*मिस्र के बीच मिस्र के बादशाह फ़िर'औन और उसके मुल्क के लोगों को कैसे कैसे निशान और कैसी करामात दिखाई।<sup>4</sup> और उसने मिस्र के लश्कर और उनके घोड़ों और रथों का क्या हाल किया, और कैसे उसने बहर — ए — कुलजुम के पानी में उनको डुबो दिया जब वह तुम्हारा पीछा कर रहे थे, और

\* 10:6 10:6 याक़ान के लोगों के कुओं से † 10:22 10:22 मुल्क — ए — मिस्र \* 11:3 11:3 मुल्क — ए — मिस्र

खुदावन्द ने उनको कैसा हलाक किया कि आज के दिन तक वह नाबूद हैं; <sup>5</sup> और तुम्हारे इस जगह पहुँचने तक उसने वीराने में तुमसे क्या क्या किया; <sup>6</sup> और दातन और अबीराम का जो इलियाव बिन रुबिन के बेटे थे, क्या हाल बनाया कि सब इस्राईलियों के सामने ज़मीन ने अपना मुँह पसार कर उनको और उनके घरानों और खेमो और हर आदमी को जो उनके साथ था निगल लिया; <sup>7</sup> लेकिन खुदावन्द के इन सब बड़े — बड़े कामों को तुमने अपनी आँखों से देखा है।

2222 22222 22 222222

<sup>8</sup> “इसलिए इन सब हुक्मों को जो आज मैं तुमको देता हूँ तुम मानना, ताकि तुम मज़बूत होकर उस मुल्क में जिस पर कब्ज़ा करने के लिए तुम पार जा रहे हो, पहुँच जाओ और उस पर कब्ज़ा भी कर लो। <sup>9</sup> और उस मुल्क में तुम्हारी उम्र दराज़ हो जिसमें दूध और शहद बहता है, और जिसे तुम्हारे बाप — दादा और उनकी औलाद को देने की कसम खुदावन्द ने उनसे खाई थी। <sup>10</sup> क्योंकि जिस मुल्क पर तू कब्ज़ा करने को जा रहा है वह मुल्क मिस्र की तरह नहीं है, जहाँ से तुम निकल आए हो वहाँ तो तू बीज बोकर उसे सब्जी के बाग़ की तरह पाँव से नालियाँ बना कर सींचता था। <sup>11</sup> लेकिन जिस मुल्क पर कब्ज़ा करने के लिए तुम पार जाने को हो वह पहाड़ों और वादियों का मुल्क है, और बारिश के पानी से सेराब हुआ करता है। <sup>12</sup> उस मुल्क पर खुदावन्द तेरे खुदा की तवज्जुह रहती है, और साल के शुरू से साल के आखिर तक खुदावन्द तेरे खुदा की आँखें उस पर लगी रहती हैं। <sup>13</sup> 'और अगर तुम मेरे हुक्मों को जो आज मैं तुमको देता हूँ दिल लगा कर सुनो, और खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखो, और अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से उसकी बन्दगी करो, <sup>14</sup> तो मैं तुम्हारे मुल्क में सही वक़्त पर पहला और पिछला मेंह बरसाऊँगा, ताकि तू अपना ग़ल्ला और मय और तेल जमा' कर सके। <sup>15</sup> और मैं तेरे चौपायों के लिए मैदान में घास पैदा करूँगा, और तू खायेगा और सेर होगा। <sup>16</sup> इसलिए तुम खबरदार रहना कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे दिल धोका खाएँ और तुम बहक कर और मा'बूदों की इबादत और परस्तिश करने लगो। <sup>17</sup> और खुदावन्द का ग़ज़ब तुम पर भड़के और वह आसमान को बन्द कर दे ताकि मेंह न बरसे, और ज़मीन में कुछ पैदावार न हो, और तुम इस अच्छे मुल्क से जो खुदावन्द तुमको देता है जल्द फ़ना हो जाओ। <sup>18</sup> इसलिए मेरी इन बातों को तुम अपने दिल और अपनी जान में महफूज़ रखना

और निशान के तौर पर इनको अपने हाथों पर बाँधना, और वह तुम्हारी पेशानी पर टीकों की तरह हों। <sup>19</sup> और तुम इनको अपने लड़कों को सिखाना, और तुम घर बैठे और राह चलते और लेटते और उठते वक़्त इन ही का जिक्र किया करना। <sup>20</sup> और तुम इनको अपने घर की चौखटों पर और अपने फाटकों पर लिखा करना, <sup>21</sup> ताकि जब तक ज़मीन पर आसमान का साया है, तुम्हारी और तुम्हारी औलाद की उम्र उस मुल्क में दराज़ हो, जिसको खुदावन्द ने तुम्हारे बाप — दादा को देने की कसम उनसे खाई थी। <sup>22</sup> क्योंकि अगर तुम उन सब हुक्मों को जो मैं तुमको देता हूँ, पूरी जान से मानो और उन पर 'अमल करो, और खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखो, और उसकी सब राहों पर चलो, और उससे लिपटे रहो; <sup>23</sup> तो खुदावन्द इन सब क्रौमों को तुम्हारे आगे से निकाल डालेगा, और तुम उन क्रौमों पर जो तुमसे बड़ी और ताक़तवर हैं काबिज़ होगे। <sup>24</sup> जहाँ जहाँ तुम्हारे पाँव का तलवा टिके वह जगह तुम्हारी हो जाएगी, या'नी वीराने और लुबनान से और दरिया — ए — फ़रात से पश्चिम के समन्दर तक तुम्हारी सरहद होगी। <sup>25</sup> और कोई शस्त्र वहाँ तुम्हारा मुकाबला न कर सकेगा, क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हारा रौब और खौफ़ उस तमाम मुल्क जहाँ कहीं तुम्हारे क़दम पड़े पैदा कर देगा जैसा उसने तुमसे कहा है। <sup>26</sup> “देखो, मैं आज के दिन तुम्हारे आगे बरकत और ला'नत दोनों रखे देता हूँ <sup>27</sup> बरकत उस हाल में जब तुम खुदावन्द अपने खुदा के हुक्मों को जो आज मैं तुमको देता हूँ मानो; <sup>28</sup> और ला'नत उस वक़्त जब तुम खुदावन्द अपने खुदा की फ़रमाँबरदारी न करो, और उस राह को जिसके बारे में मैं आज तुमको हुक्म देता हूँ छोड़ कर और मा'बूदों की पैरवी करो, जिनसे तुम अब तक वाकिफ़ नहीं। <sup>29</sup> और जब खुदावन्द तेरा खुदा तुझको उस मुल्क में जिस पर कब्ज़ा करने को तू जा रहा है पहुँचा दे, तो कोह — ए — गरिज़ीम पर से बरकत और कोह — ए — 'एबाल पर से ला'नत सुनाना। <sup>30</sup> वह दोनों पहाड़ यरदन पार पश्चिम की तरफ़ उन कना'नियों के मुल्क में वाके' हैं जो जिलज़ाल के सामने मोरा के बलूतों के करीब मैदान में रहते हैं। <sup>31</sup> और तुम यरदन पार इसी लिए जाने को हो, कि उस मुल्क पर जो खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुमको देता है कब्ज़ा करो, और तुम उस पर कब्ज़ा करोगे भी और उसी में बसोगे। <sup>32</sup> इसलिए तुम एहतियात कर के उन सब आईन और अहकाम पर 'अमल करना जिनको मैं आज तुम्हारे सामने पेश करता हूँ।



पर उँडेल देना; <sup>25</sup> तू उसे न खाना; ताकि तेरे उस काम के करने से जो खुदावन्द की नज़र में ठीक है, तेरा और तेरे साथ तेरी औलाद का भी भला हो। <sup>26</sup> लेकिन अपनी पाक चीज़ों को जो तेरे पास हों और अपनी मन्नतो की चीज़ों को उसी जगह ले जाना जिसे खुदावन्द चुन ले। <sup>27</sup> और वहीं अपनी सोख्तनी कुर्बानियों का गोश्त और खून दोनों खुदावन्द अपने खुदा के मज़बह पर पेश करना; और खुदावन्द तेरे खुदा ही के मज़बह पर तेरे ज़बीहों का खून उँडला जाए, मगर उनका गोश्त तू खाना। <sup>28</sup> इन सब बातों को जिनका मैं तुझको हुक्म देता हूँ ग़ौर से सुन ले, ताकि तेरे उस काम के करने से जो खुदावन्द तेरे खुदा की नज़र में अच्छा और ठीक है, तेरा और तेरे बाद तेरी औलाद का भला हो। <sup>29</sup> “जब खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सामने से उन क्रौमों को उस जगह जहाँ तू उनके वारिस होने को जा रहा है काट डाले, और तू उनका वारिस होकर उनके मुल्क में बस जाये, <sup>30</sup> तो तू खबरदार रहना, कहीं ऐसा न हो कि जब वह तेरे आगे से खत्म हो जाएँ तो तू इस फंदे में फँस जाये, कि उनकी पैरवी करे और उनके मा'बूदों के बारे में ये दरियाफ़्त करे कि ये क्रौमों किस तरह से अपने मा'बूदों की पूजा करती है? मैं भी वैसा ही करूँगा। <sup>31</sup> तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए ऐसा न करना, क्योंकि जिन जिन कामों से खुदावन्द को नफ़रत और 'अदावत है वह सब उन्होंने अपने मा'बूदों के लिए किए हैं, बल्कि अपने बेटों और बेटियों को भी वह अपने मा'बूदों के नाम पर आग में डाल कर जला देते हैं। <sup>32</sup> “जिस जिस बात का मैं हुक्म करता हूँ, तुम एहतियात करके उस पर 'अमल करना और उसमें न तो कुछ बढ़ाना और न उसमें से कुछ घटाना।

### 13

222 222222 2222 22 22222222 2222  
2222

<sup>1</sup> अगर तेरे बीच कोई नबी या ख़्वाब देखने वाला जाहिर हो और तुझको किसी निशान या अजीब बात की ख़बर दे। <sup>2</sup> और वह निशान या 'अजीब बात जिसकी उसने तुझको ख़बर दी वजूद में आए और वह तुझ से कहे, कि आओ हम और मा'बूदों की जिनसे तुम वाकिफ़ नहीं पैरवी करके उनकी पूजा करें; <sup>3</sup> तो तू हरगिज़ उस नबी या ख़्वाब देखने वाले की बात को न सुनना; क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुमको आजमाएगा, ताकि जान ले कि तुम खुदावन्द अपने खुदा से अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से मुहब्बत रखते हो या नहीं। <sup>4</sup> तुम खुदावन्द अपने खुदा की पैरवी करना, और उसका ख़ौफ़ मानना, और उसके हुक्मों पर चलना, और उसकी

बात सुनना; तुम उसी की बन्दगी करना और उसी से लिपटे रहना। <sup>5</sup> वह नबी या ख़्वाब देखने वाला क़त्ल किया जाए, क्योंकि उसने तुमको खुदावन्द तुम्हारे खुदा से जिसने तुमको मुल्क — ए — मिस्र से निकाला और तुझको गुलामी के घर से रिहाई बख़्शी, बगावत करने की तरगीब दी ताकि तुझको उस राह से जिस पर खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको चलने का हुक्म दिया है बहकाए। यूँ तुम अपने बीच में से ऐसे गुनाह को दूर कर देना। <sup>6</sup> “अगर तेरा भाई, या तेरी माँ का बेटा, या तेरा बेटा या बेटी, या तेरी हमआग़ोश बीवी, या तेरा दोस्त जिसको तू अपनी जान के बराबर 'अज़ीज़ रखता है, तुझको चुपके चुपके फुसलाकर कहे, कि चलो, हम और मा'बूदों की पूजा करें जिनसे तू और तेरे बाप — दादा वाकिफ़ भी नहीं, <sup>7</sup> या 'नी उन लोगों के मा'बूद जो तेरे चारों तरफ़ तेरे नज़दीक रहते हैं, या तुझ से दूर ज़मीन के इस सिरे से उस सिरे तक बसे हुए हैं; <sup>8</sup> तो तू इस पर उसके साथ रज़ामन्द न होना, और न उनकी बात सुनना। तू उस पर तरस भी न खाना और न उसकी रि'आयत करना और न उसे छिपाना। <sup>9</sup> बल्कि तू उसको ज़रूर क़त्ल करना और उसको क़त्ल करते वक़्त पहले तेरा हाथ उस पर पड़े, इसके बाद सब क्रौम का हाथ। <sup>10</sup> और तू उसे संगसार करना ताकि वह मर जाए; क्योंकि उसने तुझको खुदावन्द तेरे खुदा से, जो तुझको मुल्क — ए — मिस्र से या 'नी गुलामी के घर से निकाल लाया, नाफ़रमान करना चाहा। <sup>11</sup> तब सब इस्राईल सुन कर डरेंगे और तेरे बीच फिर ऐसी शरारत नहीं करेंगे। <sup>12</sup> “और जो शहर खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको रहने को दिए हैं, अगर उनमें से किसी के बारे में तू ये अफ़वाह सुने, कि, <sup>13</sup> कुछ ख़बीस आदमियों ने तेरे ही बीच में से निकलकर अपने शहर के लोगों को ये कहकर गुमराह कर दिया है, कि चलो, हम और मा'बूदों की जिनसे तू वाकिफ़ नहीं पूजा करें; <sup>14</sup> तो तू दरियाफ़्त और खूब तफ़्तीश करके पता लगाना; और देखो, अगर ये सच हो और क़त'ई यही बात निकले, कि ऐसा मकरूह काम तेरे बीच किया गया, <sup>15</sup> तो तू उस शहर के बाशिन्दों को तलवार से ज़रूर क़त्ल कर डालना, और वहाँ का सब कुछ और चौपाये वग़ैरा तलवार ही से हलाक कर देना। <sup>16</sup> और वहाँ की सारी लूट को चौक के बीच जमा' कर के उस शहर को और वहाँ की लूट को, तिनका तिनका खुदावन्द अपने खुदा के सामने आग में जला देना; और वह हमेशा को एक ढेर सा पड़ा रहे, और फिर कभी बनाया न जाए। <sup>17</sup> और उनकी मख़सूस की हुई चीज़ों में से कुछ भी तेरे हाथ में न रहे; ताकि खुदावन्द अपने क्रहर — ए — शदीद से बाज़ आए, और जैसा उसने तेरे



बाप — दादा से क्रसम खाई है, उस के मुताबिक तुझ पर रहम करे और तरस खाए और तुझको बढ़ाए। <sup>18</sup> ये तब ही होगा जब तू खुदावन्द अपने खुदा की \*बात मान कर उसके हुक्मों पर जो आज मैं तुझको देता हूँ चले, और जो कुछ खुदावन्द तेरे खुदा की नज़र में ठीक है उसी को करे।

## 14

११११११ १११ ११ ११११ ११११ ११ ११११११  
११११११

<sup>1</sup> “तुम खुदावन्द अपने खुदा के फ़र्ज़न्द हो, तुम मुर्दों की वजह से अपने आप को ज़ख्मी न करना, और न अपने अबरू के बाल मुंडवाना। <sup>2</sup> क्योंकि तू खुदावन्द अपने खुदा की मुक़द्दस क्रौम है और खुदावन्द ने तुझको इस ज़मीन की और सब क्रौमों में से चुन लिया है ताकि तू उसकी खास क्रौम ठहरे। <sup>3</sup> “तू किसी धिनौनी चीज़ को मत खाना। <sup>4</sup> जिन चौपायों को तुम खा सकते हो वह ये हैं, या'नी गाय — बैल, और भेड़, और बकरी, <sup>5</sup> और चिकारे और हिरन, और छोटा हिरन और बुज़कोही और साबिर और नीलगाय और, जंगली भेड़। <sup>6</sup> और चौपायों में से जिस जिस के पाँव अलग और चिरे हुए हैं और वह जुगाली भी करता हो तुम उसे खा सकते हो। <sup>7</sup> लेकिन उनमें से जो जुगाली करते हैं या उनके पाँव चिरे हुए हैं तुम उनको, या'नी ऊँट, और खरगोश, और साफ़ान को न खाना, क्योंकि ये जुगाली करते हैं लेकिन इनके पाँव चिरे हुए नहीं हैं; इसलिए ये तुम्हारे लिए नापाक हैं। <sup>8</sup> और सूअर तुम्हारे लिए इस वजह से नापाक है कि उसके पाँव तो चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। तुम न तो उनका गोश्त खाना और न उनकी लाश को हाथ लगाना। <sup>9</sup> 'आबी जानवरों में से तुम उन ही को खाना जिनके पर और छिल्के हों। <sup>10</sup> लेकिन जिसके पर और छिल्के न हों तुम उसे मत खाना, वह तुम्हारे लिए नापाक है। <sup>11</sup> “पाक परिन्दों में से तुम जिसे चाहो खा सकते हो, <sup>12</sup> लेकिन इनमें से तुम किसी को न खाना, या'नी 'उकाब, और उस्तुख्वानख्वार, और बहरी 'उकाब, <sup>13</sup> और चील और बाज़ और गिद्ध और उनकी क्रिस्म के: <sup>14</sup> हर क्रिस्म का कौवा, <sup>15</sup> और शतुरमुर्ग और चुग़द और कोकिल और क्रिस्म क्रिस्म के शाहीन, <sup>16</sup> और बूम, और उल्लू, और क्राज़, <sup>17</sup> और हवासिल, और रखम, और हड़गीला, <sup>18</sup> और लक़ — लक़, और हर क्रिस्म का बगुला, और हुद — हुद, और चमगादड़। <sup>19</sup> और सब परदार रेंगने वाले जानदार तुम्हारे लिए नापाक हैं, वह खाए न जाएँ। <sup>20</sup> और पाक परिन्दों में से तुम जिसे चाहो

\* 13:18 13:18 हुक्म

खाओ। <sup>21</sup> “जो जानवर आप ही मर जाए तू उसे मत खाना; तू उसे किसी परदेसी को, जो तेरे फाटकों के अन्दर हो खाने को दे सकता है, या उसे किसी अजनबी आदमी के हाथ बेच सकता है; क्योंकि तू खुदावन्द अपने खुदा की मुक़द्दस क्रौम है। तू हलवान को उसकी माँ के दूध में न उबालना।

११११११ ११११११

<sup>22</sup> “तू अपने गल्ले में से, जो हर साल तुम्हारे खेतों में पैदा हो दहेकी देना। <sup>23</sup> और तू खुदावन्द अपने खुदा के सामने उसी मक़ाम में जिसे वह अपने नाम के घर के लिए चुने, अपने गल्ले और मय और तेल की दहेकी को, और अपने गाय — बैल और भेड़ — बकरियों के पहलौठों को खाना, ताकि तू हमेशा खुदावन्द अपने खुदा का खौफ़ मानना सीखे। <sup>24</sup> और अगर वह जगह जिसको खुदावन्द तेरा खुदा अपने नाम को वहाँ क़ाईम करने के लिए चुने तेरे घर से बहुत दूर हो, और रास्ता भी इस क़दर लम्बा हो कि तू अपनी दहेकी को उस हाल में जब खुदावन्द तेरा खुदा तुझको बरकत बख़्शे वहाँ तक न ले जा सके, <sup>25</sup> तो तू उसे बेच कर रुपये को बाँध, हाथ में लिए हुए उस जगह चले जाना जिसे खुदावन्द तेरा खुदा चुने। <sup>26</sup> और इस रुपये से जो कुछ तेरा जी चाहे, चाहे गाय — बैल, या भेड़ — बकरी, या मय, या शराब मोल लेकर उसे अपने घराने समेत वहाँ खुदावन्द अपने खुदा के सामने खाना और खुशी मनाना। <sup>27</sup> और लावी को जो तेरे फाटकों के अन्दर है छोड़ न देना, क्योंकि उसका तेरे साथ कोई हिस्सा या मीरास नहीं है। <sup>28</sup> 'तीन तीन बरस के बाद तू तीसरे बरस के माल की सारी दहेकी निकाल कर उसे अपने फाटकों के अन्दर इकट्ठा करना। <sup>29</sup> तब लावी जिसका तेरे साथ कोई हिस्सा या मीरास नहीं, और परदेसी और युतीम और बेवा 'औरतें जो तेरे फाटकों के अन्दर हों आएँ, और खाकर सेर हों, ताकि खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सब कामों में जिनको तू हाथ लगाये तुझको बरकत बख़्शे।

## 15

१११११११११११ ११ ११११११११

<sup>1</sup> 'हर सात साल के बाद तू छुटकारा दिया करना। <sup>2</sup> और छुटकारा देने का तरीका ये हो, कि अगर किसी ने अपने पड़ोसी को कुछ क़र्ज़ दिया हो तो वह उसे छोड़ दे, और अपने पड़ोसी से या भाई से उसका मुताल्बा न करे; क्योंकि खुदावन्द के नाम से इस छुटकारे का 'ऐलान हुआ है। <sup>3</sup> परदेसी से तू उसका मुताल्बा कर सकता है, पर जो कुछ तेरा तेरे भाई पर आता हो उसकी

तरफ़ से दस्तबर्दार हो जाना। <sup>4</sup> तेरे बीच कोई कंगाल न रहे; क्योंकि खुदावन्द तुझको इस मुल्क में ज़रूर बरकत बरख़ोगा, जिसे खुद खुदावन्द तेरा खुदा मीरास के तौर पर तुझको क़ब्ज़ा करने को देता है। <sup>5</sup> बशर्ते कि तू खुदावन्द अपने खुदा की \*बात मान कर इन सब अहकाम पर चलने की एह्तियात रखे, जो मैं आज तुझको देता हूँ। <sup>6</sup> क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा, जैसा उसने तुझ से वा'दा किया है, तुझको बरकत बरख़ोगा और तू बहुत सी क़ौमों को क़र्ज़ देगा, पर तुझको उनसे क़र्ज़ लेना न पड़ेगा; और तू बहुत सी क़ौमों पर हुक्मरानी करेगा, लेकिन वह तुझ पर हुक्मरानी करने न पाएँगी।

<sup>7</sup> जो मुल्क खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है, अगर उसमें कहीं तेरे फाटकों के अन्दर तेरे भाइयों में से कोई गरीब हो, तो तू अपने उस गरीब भाई की तरफ़ से न अपना दिल सख्त करना और न अपनी मुट्ठी बन्द कर लेना; <sup>8</sup> बल्कि उसकी ज़रूरत दूर करने को जो चीज़ उसे दरकार हो, उसके लिए तू ज़रूर खुले दिल से उसे क़र्ज़ देना। <sup>9</sup> खबरदार रहना कि तेरे दिल में ये बुरा खयाल न गुज़रने पाए कि सातवाँ साल, जो छुटकारे का साल है, नज़दीक है और तेरे गरीब भाई की तरफ़ से तेरी नज़र बद हो जाए और तू उसे कुछ न दे; और वह तेरे खिलाफ़ खुदावन्द से फ़रियाद करे और ये तेरे लिए गुनाह ठहरे। <sup>10</sup> बल्कि तुझको उसे ज़रूर देना होगा; और उसको देते वक़्त तेरे दिल को बुरा भी न लगे, इसलिए कि ऐसी बात की वजह से खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सब कामों में, और सब मु'आमिलों में जिनको तू अपने हाथ में लेगा तुझको बरकत बरख़ोगा। <sup>11</sup> और चूँकि मुल्क में कंगाल हमेशा पाए जाएँगे, इसलिए मैं तुझको हुक्म करता हूँ कि तू अपने मुल्क में अपने भाई या 'नी कंगालों और मुहताजों के लिए अपनी मुट्ठी खुली रखना।

22 222222 22 222222 22 222222 2222

<sup>12</sup> 'अगर तेरा कोई भाई, चाहे वह 'इब्रानी मर्द हो या 'इबरानी 'औरत तेरे हाथ बिके और वह छः बरस तक तेरी ख़िदमत करे, तो तू सातवें साल उसको आज़ाद होकर जाने देना। <sup>13</sup> और जब तू उसे आज़ाद कर के अपने पास से रुख़्सत करे, तो उसे ख़ाली हाथ न जाने देना। <sup>14</sup> बल्कि तू अपनी भेड़ बकरी और खत्ते और कोल्हू में से दिल खोलकर उसे देना, या 'नी खुदावन्द तेरे खुदा ने जैसी बरकत तुझको दी हो उसके मुताबिक़ उसे देना। <sup>15</sup> और याद रखना कि मुल्क — ए — मिस्र में तू भी गुलाम था, और खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको छुड़ाया;

इसीलिए मैं तुझको इस बात का हुक्म आज देता हूँ। <sup>16</sup> और अगर वह इस वजह से कि उसे तुझसे और तेरे घराने से मुहब्बत हो और वह तेरे साथ खुशहाल हो, तुझ से कहने लगे कि मैं तेरे पास से नहीं जाता। <sup>17</sup> तो तू एक सुतारी लेकर उसका कान दरवाज़े से लगाकर छेद देना, तो वह हमेशा तेरा गुलाम बना रहेगा। और अपनी लौंडी से भी ऐसा ही करना। <sup>18</sup> और अगर तू उसे आज़ाद करके अपने पास से रुख़्सत करे तो उसे मुश्किल न गरदानना; क्योंकि उसने दो मज़दूरों के बराबर छः बरस तक तेरी ख़िदमत की, और खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सब कारोबार में तुझको बरकत बरख़ोगा।

22 222222 22 222222 22 222222 2222

<sup>19</sup> 'तेरे गाय — बैल और भेड़ — बकरियों में जितने पहलौठे नर पैदा हों, उन सब को खुदावन्द अपने खुदा के लिए मुक़द्दस करना, अपने गाय — बैल के पहलौठे से कुछ काम न लेना और न अपनी भेड़ — बकरी के पहलौठे के बाल कतरना। <sup>20</sup> तू उसे अपने घराने समेत खुदावन्द अपने खुदा के सामने उसी जगह जिसे खुदावन्द चुन ले, साल — ब — साल खाया करना। <sup>21</sup> और अगर उसमें कोई नुक्स हो मसलन वह लंगड़ा या अन्धा हो या उसमें और कोई बुरा ऐब हो, तो खुदावन्द अपने खुदा के लिए उसकी कुर्बानी न गुज़रानना। <sup>22</sup> तू उसे अपने फाटकों के अन्दर खाना। पाक और नापाक दोनों तरह के आदमी जैसे चिकारे और हिरन को खाते हैं वैसे ही उसे खाएँ। <sup>23</sup> लेकिन उसके खून को हरगिज़ न खाना; बल्कि तू उसको पानी की तरह ज़मीन पर उँडेल देना।

## 16

2222 22 22-2222 2222 22 22

<sup>1</sup> तू \*अबीब के महीने को याद रखना और उसमें खुदावन्द अपने खुदा की फ़सह करना क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा अबीब के महीने में रात के वक़्त तुझको †मिस्र से निकाल लाया। <sup>2</sup> और जिस जगह को खुदावन्द अपने नाम के घर के लिए चुने, वहीं तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए अपने गाय — बैल और भेड़ — बकरी में से फ़सह की कुर्बानी पेश करना। <sup>3</sup> तू उसके साथ ख़मीरी रोटी न खाना, बल्कि सात दिन तक उसके साथ बेख़मीरी रोटी जो दुख की रोटी है खाना; क्योंकि तू मुल्क — ए — मिस्र से हड़बड़ी में निकला था। य़ूँतू उम्र भर उस दिन को जब तू मुल्क — ए — मिस्र से निकले याद रख सकेगा। <sup>4</sup> और तेरी हदों के अन्दर सात दिन तक कहीं ख़मीर

\* 15:5 15:5 हुक्म  
नाम निसान पड़ गया

\* 16:1 16:1 अबीब, इब्री कैलेंडर का पहला माहिना था, मसावी तोर से मार्च से अप्रैल का माहिना, मगर बाद में इस का  
† 16:1 16:1 मुल्क — ए — मिस्र

नज़र न आए, और उस कुर्बानी में से जिसको तू पहले दिन की शाम को चढ़ाए कुछ गोश्त सुबह तक बाक़ी न रहने पाए। <sup>5</sup> तू फ़सह की कुर्बानी को अपने फाटकों के अन्दर, जिनको खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको दिया हो कहीं न चढ़ाना; <sup>6</sup> बल्कि जिस जगह को खुदावन्द तेरा खुदा अपने नाम के घर के लिए चुनेगा, वहाँ तू फ़सह की कुर्बानी को उस वक़्त जब तू मिस्र से निकला था, या 'नी शाम को सूरज डूबते वक़्त अदा करना। <sup>7</sup> और जिस जगह को खुदावन्द तेरा खुदा चुने वहीं उसे भून कर खाना और फिर सुबह को अपने — अपने खेमे को लौट जाना। <sup>8</sup> छः दिन तक बेख़मीरी रोटी खाना और सातवें दिन खुदावन्द तेरे खुदा की खातिर पाक मजमा' हो, उसमें तू कोई काम न करना।

२२२२ २२ २२

<sup>9</sup> फिर तू सात हफ़्ते यूँ गिनना, कि जब से हँसुआ लेकर फ़सल काटनी शुरू' करे तब से सात हफ़्ते गिन लेना। <sup>10</sup> तब जैसी बरकत खुदावन्द तेरे खुदा ने दी हो, उसके मुताबिक़ अपने हाथ की रज़ा की कुर्बानी का हदिया लाकर खुदावन्द अपने खुदा के लिए हफ़्तों की 'ईद मनाना। <sup>11</sup> और उसी जगह जिसे खुदावन्द तेरा खुदा अपने नाम के घर के लिए चुनेगा, तू और तेरे बेटे बेटियाँ और तेरे गुलाम और लौंडियाँ और वह लावी जो तेरे फाटकों के अन्दर हो, और मुसाफ़िर और यतीम और बेवा जो तेरे बीच हों, सब मिल कर खुदावन्द अपने खुदा के सामने खुशी मनाना। <sup>12</sup> और याद रखना के तू मिस्र में गुलाम था और इन हुक्मों पर एहतियात करके 'अमल करना।

२२ — २ — २२२२२२ २२२२

<sup>13</sup> जब तू अपने खलीहान और कोल्हू का माल जमा' कर चुके, तो सात दिन तक 'ईद — ए — ख़ियाम करना। <sup>14</sup> और तू और तेरे बेटे बेटियाँ और गुलाम और लौंडियाँ और लावी, और मुसाफ़िर और यतीम और बेवा जो तेरे फाटकों के अन्दर हों, सब तेरी इस 'ईद में खुशी मनाएँ। <sup>15</sup> सात दिन तक तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए उसी जगह जिसे खुदावन्द चुने, 'ईद करना, इसलिए कि खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सारे माल में और सब कामों में जिनको तू हाथ लगाये तुझको बरकत बख़्शेगा, इसलिए तू पूरी — पूरी खुशी करना। <sup>16</sup> और साल में तीन बार, या 'नी बेख़मीरी रोटी की 'ईद और हफ़्तों की 'ईद और 'ईद — ए — ख़ियाम के मौक़े' पर तेरे यहाँ के सब मर्द खुदावन्द अपने खुदा के आगे, उसी जगह हाज़िर हुआ करें जिसे वह चुनेगा। और जब आएँ तो खुदावन्द के सामने खाली हाथ न आएँ; <sup>17</sup> बल्कि हर मर्द जैसी

बरकत खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको बख़्शी हो अपनी तौफ़ीक़ के मुताबिक़ दे।

२२२२२ २२ २२२२ २२२२२२२

<sup>18</sup> तू अपने क़बीलों की सब बस्तियों में जिनको खुदावन्द तेरा खुदा तुझको दे, काज़ी और हाकिम मुक़र्रर करना जो सदाक़त से लोगों की 'अदालत करें। <sup>19</sup> तू इन्साफ़ का खून न करना। तू न तो किसी की रू'आयत करना और न रिश्वत लेना, क्यूँकि रिश्वत 'अक़लमन्द की आँखों को अन्धा कर देती है और सादिक़ की बातों को पलट देती है। <sup>20</sup> जो कुछ बिल्कुल हक़ है तू उसी की पैरवी करना, ताकि तू ज़िन्दा रहे और उस मुल्क का मालिक बन जाये जो खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है। <sup>21</sup> जो मज़बह तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए बनाये उसके क़रीब किसी क़िस्म के दरख़्त की यसीरत न लगाना, <sup>22</sup> और न कोई सुतून अपने लिए खड़ा कर लेना, जिससे खुदावन्द तेरे खुदा को नफ़रत है।

## 17

<sup>1</sup> तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए कोई बैल या भेड़ — बकरी, जिसमें कोई 'ऐब या बुराई हो, ज़बह मत करना क्यूँकि यह खुदावन्द तेरे खुदा के नज़दीक़ मकरूह है। <sup>2</sup> 'अगर तेरे बीच तेरी बस्तियों में जिनको खुदावन्द तेरा खुदा तुझको दे, कहीं कोई मर्द या 'औरत मिले जिसने खुदावन्द तेरे खुदा के सामने यह बदकारी की हो कि उसके 'अहद को तोड़ा हो, <sup>3</sup> और जाकर और मा'बूदों की या सूरज या चाँद या अजराम — ए — फ़लक में से किसी की, जिसका हुक्म मैंने तुझको नहीं दिया, इबादत और परस्तिश की हो, <sup>4</sup> और यह बात तुझको बताई जाए और तेरे सुनने में आए, तो तू जाँफ़िशानी से तहक़ीक़ात करना और अगर यह ठीक़ हो और कत'ई तौर पर साबित हो जाए कि इस्राईल में ऐसा मकरूह काम हुआ, <sup>5</sup> तो तू उस मर्द या उस 'औरत को जिसने यह बुरा काम किया हो, बाहर अपने फाटकों पर निकाल ले जाना और उनको ऐसा संगसार करना कि वह मर जाएँ। <sup>6</sup> जो वाज़िब — उल — क़त्ल ठहरे वह दो या तीन आदमियों की गवाही से मारा जाए, सिर्फ़ एक ही आदमी की गवाही से वह मारा न जाए। <sup>7</sup> उसको क़त्ल करते वक़्त गवाहों के हाथ पहले उस पर उठे उसके बाद बाक़ी सब लोगों के हाथ, यूँ तू अपने बीच से शरारत को दूर किया करना। <sup>8</sup> अगर तेरी बस्तियों में कहीं आपस के खून या आपस के दा'वे या आपस की मार पीट के बारे में कोई झगड़े की बात उठे, और उसका फ़ैसला करना तेरे लिए निहायत ही मुश्किल हो, तो तू उठ कर उस जगह जिसे खुदावन्द तेरा खुदा चुनेगा जाना। <sup>9</sup> और लावी काहिनों और उन दिनों

के क्राजियों के पास पहुँच कर उनसे दरियाफ्त करना, और वह तुझको फ़ैसले की बात बताएँगे; <sup>10</sup> और तू उसी फ़ैसले के मुताबिक़ जो वह तुझको उस जगह से जिसे खुदावन्द चुनेगा बताए 'अमल करना। जैसा वह तुमको सिखाएँ उसी के मुताबिक़ सब कुछ एहतियात करके मानना। <sup>11</sup> शरी'अत की जो बात वह तुझको सिखाएँ और जैसा फ़ैसला तुझको बताएँ, उसी के मुताबिक़ करना और जो कुछ फ़तवा वह दें उससे दहने या बाएँ न मुड़ना। <sup>12</sup> और अगर कोई शख्स गुस्ताखी से पेश आए कि उस काहिन की बात, जो खुदावन्द तेरे खुदा के सामने ख़िदमत के लिए खड़ा रहता है या उस क्राज़ी का कहा न सुने, तो वह शख्स मार डाला जाए और तू इस्राईल में से ऐसी बुराई को दूर कर देना। <sup>13</sup> और सब लोग सुन कर डर जाएँगे और फिर गुस्ताखी से पेश नहीं आएँगे।

२२२२२२ २२ २२२२२२

<sup>14</sup> जब तू उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है पहुँच जाये, और उस पर क़ब्ज़ा कर के वहाँ रहने और कहने लगे, कि उन क़ौमों की तरह जो मेरे चारों तरफ़ हैं मैं भी किसी को अपना बादशाह बनाऊँ। <sup>15</sup> तो तू बहरहाल सिर्फ़ उसी को अपना बादशाह बनाना जिसको खुदावन्द तेरा खुदा चुन ले, तू अपने भाइयों में से ही किसी को अपना बादशाह बनाना, और परदेसी को जो तेरा भाई नहीं अपने ऊपर हाकिम न कर लेना। <sup>16</sup> इतना ज़रूर है कि वह अपने लिए बहुत घोड़े न बढ़ाए, \*और न लोगों को 'मिस्र में भेजे ताकि उसके पास बहुत से घोड़े हो जाएँ, इसलिए कि खुदावन्द ने तुमसे कहा है कि तुम उस राह से फिर कभी उधर न लौटना। <sup>17</sup> और वह बहुत सी बीवियाँ भी न रखे ऐसा न हो कि उसका दिल फिर जाए, और न वह अपने लिए सोना चाँदी ज़ख़ीरा करे। <sup>18</sup> और जब वह तख़्त — ए — सल्तनत पर बैठा करे तो उस शरी'अत की जो लावी काहिनों के पास रहेगी, एक नक़ल अपने लिए एक किताब में उतार ले। <sup>19</sup> और वह उसे अपने पास रखे और अपनी सारी उम्र उसको पढ़ा करे, ताकि वह खुदावन्द अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना और उस शरी'अत और आईन की सब बातों पर 'अमल करना सीखे; <sup>20</sup> जिससे उसके दिल में ग़ुरूर न हो कि वह अपने भाइयों को हक़ीर जाने, और इन अहक़ाम से न तो दहने न बाएँ मुड़े; ताकि इस्राईलियों के बीच उसकी और उसकी औलाद की सल्तनत ज़माने तक रहे।

\* 17:16 17:16 घोड़ों के बदल गुलामों को मत भेजो † 17:16 17:16 मुल्क — ए — मिस्र

## 18

२२२२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२ २२२२ २२२२२२

<sup>1</sup> लावी काहिनों या 'नी लावी के क़बीले का कोई हिस्सा और मीरास इस्राईल के साथ न हो; वह खुदावन्द की आतिशीन कुर्बानियाँ और उसी की मीरास खाया करें। <sup>2</sup> इसलिए उनके भाइयों के साथ उनको मीरास न मिले; खुदावन्द उनकी मीरास है, जैसा उसने खुद उनसे कहा है। <sup>3</sup> और जो लोग गाय — बैल या भेड़ या बकरी की कुर्बानी गुज़रानते हैं उनकी तरफ़ से काहिनों का यह हक़ होगा, कि वह काहिन को शाना और कनपटियाँ और झोझ दें। <sup>4</sup> और तू अपने अनाज और मय और तेल के पहले फल में से, और अपनी भेड़ों के बाल में से जो पहली दफ़ा कतरे जाएँ उसे देना। <sup>5</sup> क्यूँकि खुदावन्द तेरे खुदा ने उसको तेरे सब क़बीलों में से चुन लिया है, ताकि वह और उसकी औलाद हमेशा खुदावन्द के नाम से ख़िदमत के लिए हाज़िर रहें। <sup>6</sup> और तेरी जो बस्तियाँ सब इस्राईलियों में हैं उनमें से अगर कोई लावी किसी बस्ती से जहाँ वह बूद — ओ — बाश करता था आए, और अपने दिल की पूरी चाहत से उस जगह हाज़िर हो जिसको खुदावन्द चुनेगा: <sup>7</sup> तो अपने सब लावी भाइयों की तरह जो वहाँ खुदावन्द के सामने खड़े रहते हैं, वह भी खुदावन्द अपने खुदा के नाम से ख़िदमत करे। <sup>8</sup> और उन सबको खाने को बराबर हिस्सा मिले, 'अलावा उस क़ीमत के जो उसके बाप — दादा की मीरास बेचने से उसे हासिल हो।

२२ २२२ २२२२२२२२२ २२२२ २२ २२२२२

<sup>9</sup> जब तू उस मुल्क में जो खुदावन्द तेरा खुदा तुमको देता है पहुँच जाओ, तो वहाँ की क़ौमों की तरह मकरूह काम करने न सीखना। <sup>10</sup> तुझमें हरगिज़ कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे या बेटी को आग में चलवाए, या फ़ालगीर या शगुन निकालने वाला या अफ़सूनगर या जादूगर <sup>11</sup> या मंतरी या जिन्नात का आशना या रम्माल या साहिर हो। <sup>12</sup> क्यूँकि वह सब जो ऐसा काम करते हैं खुदावन्द के नज़दीक मकरूह हैं, और इन ही मकरूहात की वजह से खुदावन्द तेरा खुदा उनको तेरे सामने से निकालने पर है। <sup>13</sup> तू खुदावन्द अपने खुदा के सामने कामिल रहना। <sup>14</sup> क्यूँकि वह क़ौमों जिनका तू वारिस होगा शगुन निकालने वालों और फ़ालगीर की सुनती हैं; लेकिन तुझको खुदावन्द तेरे खुदा ने ऐसा करने न दिया।

२२२२२२ २२ २२२२२ २२२२



15 खुदावन्द तेरा खुदा तेरे लिए तेरे ही बीच से, या'नी तेरे ही भाइयों में से मेरी तरह एक नबी खड़ा करेगा तुम उसकी सुनना; 16 यह तेरी उस दरखास्त के मुताबिक होगा जो तूने खुदावन्द अपने खुदा से मजमे' के दिन होरिब में की थी, 'मुझको न तो खुदावन्द अपने खुदा की \*आवाज़ फिर सुननी पड़े और न ऐसी बड़ी आग ही का नज़ारा हो, ताकि मैं मर न जाऊँ। 17 और खुदावन्द ने मुझसे कहा कि "वह जो कुछ कहते हैं इसलिए ठीक कहते हैं। 18 मैं उनके लिए उन ही के भाइयों में से तेरी तरह एक नबी खड़ा करूँगा, और अपना कलाम उसके मुँह में डालूँगा, और जो कुछ मैं उसे हुक्म दूँगा वही वह उनसे कहेगा। 19 और जो कोई मेरी उन बातों की जिनकी वह मेरा नाम लेकर कहेगा न सुने, तो मैं उनका हिसाब उनसे लूँगा। 20 लेकिन जो नबी गुस्ताख बन कर कोई ऐसी बात मेरे नाम से कहे, जिसके कहने का मैंने उसको हुक्म नहीं दिया या और मा'बूदों के नाम से कुछ कहे, तो वह नबी क़त्ल किया जाए। 21 और अगर तू अपने दिल में कहे कि 'जो बात खुदावन्द ने नहीं कही है, उसे हम क्यों कर पहचानें?' 22 तो पहचान यह है, कि जब वह नबी खुदावन्द के नाम से कुछ कहे और उसके कहे कि मुताबिक कुछ वाक़े' या पूरा न हो, तो वह बात खुदावन्द की कही हुई नहीं; बल्कि उस नबी ने वह बात खुद गुस्ताख बन कर कही है, तू उससे ख़ौफ़ न करना।

## 19

?????????? ??

1 जब खुदावन्द तेरा खुदा उन क़ौमों को, जिनका मुल्क खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है काट डाले, और तू उनकी जगह उनके शहरों और घरों में रहने लगे, 2 तो तू उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको क़ब्ज़ा करने को देता है, तीन शहर अपने लिए अलग कर देना। 3 और \*तू एक रास्ता भी अपने लिए तैयार करना, और अपने उस मुल्क की ज़मीन को जिस पर खुदावन्द तेरा खुदा तुझको क़ब्ज़ा दिलाता है तीन हिस्से करना, ताकि हर एक खूनी वहीं भाग जाए। 4 और उस क़ातिल का जो वहाँ भाग कर अपनी जान बचाए हाल यह हो, कि उसने अपने पड़ोसी को अनजाने में और बग़ैर उससे पुरानी दुश्मनी रखे मार डाला हो। 5 मसलन कोई शख्स अपने पड़ोसी के साथ लकड़ियाँ काटने को जंगल में जाए और कुल्हाड़ा हाथ में उठाए ताकि दरख़्त काटे, और कुल्हाड़ा दस्ते से निकल कर उसके पड़ोसी के जा लगे और वह मर जाए, तो वह इन शहरों में से किसी में भाग कर ज़िन्दा

बचे। 6 कहीं ऐसा न हो कि रास्ते की लम्बाई की वजह से खून का इन्तक़ाम लेने वाला अपने जोश — ए — ग़ज़ब में क़ातिल का पीछा करके उसको जा पकड़े और उसको क़त्ल करे, हालाँकि वह वाजिब — उल — क़त्ल नहीं क्योंकि उसे मक्तूल से पुरानी दुश्मनी न थी। 7 इसलिए मैं तुझको हुक्म देता हूँ कि तू अपने लिए तीन शहर अलग कर देना। 8 और अगर खुदावन्द तेरा खुदा उस क़सम के मुताबिक जो उसने तेरे बाप — दादा से खाई, तेरी सरहद को बढ़ाकर वह सब मुल्क जिसके देने का वा'दा उसने तेरे बाप दादा से किया था तुझको दे। 9 और तू इन सब हुक्मों पर जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ ध्यान करके 'अमल करे और खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखे और हमेशा उसकी राहों पर चले, तो इन तीन शहरों के आलावा तीन शहर और अपने लिए अलग कर देना। 10 ताकि तेरे मुल्क के बीच जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको मीरास में देता है, बेगुनाह का खून बहाया न जाए और वह खून यूँ तेरी गर्दन पर हो। 11 लेकिन अगर कोई शख्स अपने पड़ोसी से दुश्मनी रखता हुआ उसकी घात में लगे, और उस पर हमला कर के उसे ऐसा मारे कि वह मर जाए और वह खुद उन शहरों में से किसी में भाग जाए। 12 तो उसके शहर के बुज़ुर्ग लोगों को भेजकर उसे वहाँ से पकड़वा मँगवाएँ, और उसको खून के इन्तक़ाम लेने वाले के हाथ में हवाले करें ताकि वह क़त्ल हो। 13 तुझको उस पर ज़रा तरस न आए, बल्कि तू इस तरह बेगुनाह के खून को इस्राईल से दफ़ा' करना ताकि तेरा भला हो।

?????????? ??

14 तू उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको क़ब्ज़ा करने को देता है, अपने पड़ोसी की हद का निशान जिसको अगले लोगों ने तेरी मीरास के हिस्से में ठहराया हो मत हटाना। 15 किसी शख्स के खिलाफ़ उसकी किसी बदकारी या गुनाह के बारे में जो उससे सरज़द हो, एक ही गवाह बस नहीं बल्कि दो गवाहों या तीन गवाहों के कहने से बात पक्की समझी जाए। 16 अगर कोई झूटा गवाह उठ कर किसी आदमी की बदी की निस्बत गवाही दे, 17 तो वह दोनों आदमी जिनके बीच यह झगड़ा हो, खुदावन्द के सामने काहिनों और उन दिनों के क़ाज़ियों के आगे खड़े हों, 18 और क़ाज़ी खूब तहक़ीक़ात करें, और अगर वह गवाह झूटा निकले और उसने अपने भाई के खिलाफ़ झूटी गवाही दी हो; 19 तो जो हाल उसने अपने भाई का करना चाहा था, वही तुम उसका करना; और यूँ तू ऐसी बुराई को अपने बीच से दफ़ा' कर देना। 20 और

\* 18:16 18:16 हुक्म \* 19:3 19:3 या वहाँ जाने के लिए फ़ासले को नापो

दूसरे लोग सुन कर डरेंगे और तेरे बीच फिर ऐसी बुराई नहीं करेंगे। <sup>21</sup> और तुझको ज़रा तरस न आए; जान का बदला जान, आँख का बदला आँख, दाँत का बदला दाँत, हाथ का बदला हाथ, और पाँव का बदला पाँव हो।

## 20

2022 22 202222

<sup>1</sup> जब तू अपने दुश्मनों से जंग करने को जाये, और घोड़ों और रथों और अपने से बड़ी फ़ौज को देखे तो उनसे डर न जाना; क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा जो तुझको मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया तेरे साथ है। <sup>2</sup> और जब मैदान — ए — जंग में तुम्हारा मुकाबला होने को हो तो काहिन फ़ौज के आदमियों के पास जाकर उनकी तरफ़ मुखातिब हो, <sup>3</sup> और उनसे कहे, 'सुनो ऐ इस्राईलियों, तुम आज के दिन अपने दुश्मनों के मुकाबले के लिए मैदान — ए — जंग में आए हो; इसलिए तुम्हारा दिल परेशान न हो, तुम न खौफ़ करो, न काँपों, न उनसे दहशत खाओ। <sup>4</sup> क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हारे साथ — साथ चलता है, ताकि तुमको बचाने को तुम्हारी तरफ़ से तुम्हारे दुश्मनों से जंग करे।' <sup>5</sup> फिर फ़ौजी अफ़सरान लोगों से यूँ कहें कि 'तुम में से जिस किसी ने नया घर बनाया हो और उसे मख्सूस न किया हो तो वह अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह जंग में क़त्ल हो और दूसरा शख्स उसे मख्सूस करे। <sup>6</sup> और जिस किसी ने ताकिस्तान लगाया हो लेकिन अब तक उसका फल इस्तेमाल न किया हो वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और दूसरा आदमी उसका फल खाए। <sup>7</sup> और जिसने किसी औरत से अपनी मंगनी तो कर ली हो लेकिन उसे ब्याह कर नहीं लाया है वह अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह लड़ाई में मारा जाए और दूसरा मर्द उससे ब्याह करे। <sup>8</sup> और फ़ौजी हाकिम लोगों की तरफ़ मुखातिब हो कर उनसे यह भी कहें कि 'जो शख्स डरपोक और कच्चे दिल का हो वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि उसकी तरह उसके भाइयों का हौसला भी टूट जाए। <sup>9</sup> और जब फ़ौजी हाकिम यह सब कुछ लोगों से कह चुकें, तो लश्कर के सरदारों को उन पर मुकर्रर कर दें। <sup>10</sup> जब तू किसी शहर से जंग करने को उसके नज़दीक पहुँचे, तो पहले उसे सुलह का पैग़ाम देना। <sup>11</sup> और अगर वह तुझको सुलह का जवाब दे और अपने फाटक तेरे लिए खोल दे, तो वहाँ के सब बाशिन्दे तेरे बाजगुज़ार बन कर तेरी खिदमत करें। <sup>12</sup> और अगर वह तुझसे सुलह न करें बल्कि तुझसे लड़ना चाहें, तो तुम उसका मुहासिरा करना; <sup>13</sup> और जब खुदावन्द तेरा खुदा

उसे तेरे क़ब्ज़े में कर दे तो वहाँ के हर मर्द को तलवार से क़त्ल कर डालना। <sup>14</sup> लेकिन 'औरतों और बाल बच्चों और चौपायों और उस शहर का सब माल और लूट को अपने लिए रख लेना, और तू अपने दुश्मनों की उस लूट को जो खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको दी हो खाना। <sup>15</sup> उन सब शहरों का यही हाल करना जो तुझसे बहुत दूर हैं और इन क़ौमों के शहर नहीं हैं। <sup>16</sup> लेकिन इन क़ौमों के शहरों में जिनको खुदावन्द तेरा खुदा मीरास के तौर पर तुझको देता है, किसी आदमी को ज़िन्दा न बाक़ी रखना। <sup>17</sup> बल्कि तू इनको या'नी हित्ती और अमोरी और कना'नी और फ़रिज़्ज़ी और हव्वी और यबूसी क़ौमों को, जैसा खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको हुक्म दिया है बिल्कुल हलाक कर देना। <sup>18</sup> ताकि वह तुमको अपने से मकरूह काम करने न सिखाएँ जो उन्होंने अपने मा'बूदों के लिए किए हैं, और यूँ तुम खुदावन्द अपने खुदा के खिलाफ़ गुनाह करने लगो। <sup>19</sup> जब तू किसी शहर को फ़तह करने के लिए उससे जंग करे और ज़माने तक उसको घेरे रहे, तो उसके दरख्तों को कुल्हाड़ी से न काट डालना क्योंकि उनका फल तेरे खाने के काम में आएगा इसलिए तू उनको मत काटना। क्योंकि क्या मैदान का दरख्त इंसान है कि तू उसको घेरे रहे? <sup>20</sup> इसलिए सिर्फ़ उन्हीं दरख्तों को काट कर उड़ा देना जो तेरी समझ में खाने के मतलब के न हों, और तू उस शहर के सामने जो तुझसे जंग करता हो बुर्जों को बना लेना जब तक वह सर न हो जाए।

## 21

2022-22-20222 202222 22 20222 20222

<sup>1</sup> अगर उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको क़ब्ज़ा करने को देता है, किसी मक्तूल की लाश मैदान में पड़ी हुई मिले और यह मा'लूम न हो कि उसका क़ातिल कौन है; <sup>2</sup> तो तेरे बुज़ुर्ग और क़ाज़ी निकल कर उस मक्तूल के चारों तरफ़ के शहरों के फ़ासले को नापें, <sup>3</sup> और जो शहर उस मक्तूल के सब से नज़दीक हो, उस शहर के बुज़ुर्ग एक बछिया लें जिससे कभी कोई काम न लिया गया हो और न वह जुए में जोती गई हो; <sup>4</sup> और उस शहर के बुज़ुर्ग उस बछिया को बहते पानी की वादी में, जिसमें न हल चला हो और न उसमें कुछ बोया गया हो ले जाएँ, और वहाँ उस वादी में उस बछिया की गर्दन तोड़ दें। <sup>5</sup> तब बनी लावी जो काहिन है नज़दीक आयें क्योंकि खुदावन्द तेरे खुदा ने उनको चुन लिया है कि खुदावन्द की खिदमत करें और उसके नाम से बरकत दिया करें, और उन ही के कहने के मुताबिक़ हर झगड़े और मार पीट के



बीज न बोना, ऐसा न हो कि सारा फल या'नी जो बीज तूने बोया और ताकिस्तान की पैदावार \*दोनों जब्त कर लिए जाएँ। <sup>10</sup> तू बैल और गधे दोनों को एक साथ जोत कर हल न चलाना। <sup>11</sup> तू ऊन और सन दोनों की मिलावट का बुना हुआ कपड़ा न पहनना। <sup>12</sup> तू अपने ओढ़ने की चादर के चारों किनारों पर झालर लगाया करना।

22:21 22:21 22:21 22:21 22:21 22:21 22:21 22:21 22:21 22:21

<sup>13</sup> 'अगर कोई मर्द किसी 'औरत को ब्याह और उसके पास जाए, और बाद उसके उससे नफ़रत करके, <sup>14</sup> शर्मनाक बातें उसके हक़ में कहे और उसे बदनाम करने के लिए यह दा'वा करे कि 'मैंने इस 'औरत से ब्याह किया, और जब मैं उसके पास गया तो मैंने कुंवारेपन के निशान उसमें नहीं पाए। <sup>15</sup> तब उस लड़की का बाप और उसकी माँ उस लड़की के कुंवारेपन के निशानों को उस शहर के फाटक पर बुज़ुर्गों के पास ले जाएँ, <sup>16</sup> और उस लड़की का बाप बुज़ुर्गों से कहे कि 'मैंने अपनी बेटी इस शख्स को ब्याह दी, लेकिन यह उससे नफ़रत रखता है; <sup>17</sup> और शर्मनाक बातें उसके हक़ में कहता है, और यह दा'वा करता है कि मैंने तेरी बेटी में कुंवारेपन के निशान नहीं पाए; हालाँकि मेरी बेटी के कुंवारेपन के निशान यह मौजूद हैं। फिर वह उस चादर को शहर के बुज़ुर्गों के आगे फैला दें। <sup>18</sup> तब शहर के बुज़ुर्ग उस शख्स को पकड़ कर उसे कोड़े लगाएँ, <sup>19</sup> और उससे चाँदी के सौ मिस्काल जुर्माना लेकर उस लड़की के बाप को दें, इसलिए कि उसने एक इसराईली कुंवारी को बदनाम किया; और वह उसकी बीवी बनी रहे और वह जिन्दगी भर उसको तलाक़ न देने पाए। <sup>20</sup> लेकिन अगर यह बात सच हो कि लड़की में कुंवारेपन के निशान नहीं पाए गए, <sup>21</sup> तो वह उस लड़की को† उसके बाप के घर के दरवाज़े पर निकाल लाएँ, और उसके शहर के लोग उसे संगसार करें कि वह मर जाए; क्योंकि उसने इसराईल के बीच शरारत की, कि अपने बाप के घर में फ़ाहिशापन किया। यूँ तू ऐसी बुराई को अपने बीच से दफ़ा' करना। <sup>22</sup> अगर कोई मर्द किसी शौहर वाली 'औरत से ज़िना करते पकड़ा जाए तो वह दोनों मार डाले जाएँ, या'नी वह मर्द भी जिसने उस 'औरत से सुहबत की और वह 'औरत भी; यूँ तू इसराईल में से ऐसी बुराई को दफ़ा' करना। <sup>23</sup> अगर कोई कुंवारी लड़की किसी शख्स से मन्सूब हो गई हो, और कोई दूसरा आदमी उसे शहर में पाकर उससे सुहबत करे; <sup>24</sup> तो तू उन दोनों को उस शहर के फाटक पर निकाल लाना, और उनको तू संगसार कर देना कि वह मर जाएँ, लड़की को इसलिए कि वह

शहर में होते हुए न चिल्लाई, और मर्द को इसलिए कि उसने अपने पड़ोसी की बीवी को बेहुरमत किया। यूँ तू ऐसी बुराई को अपने बीच से दफ़ा' करना। <sup>25</sup> लेकिन अगर उस आदमी को वही लड़की जिसकी निस्वत हो चुकी हो किसी मैदान या खेत में मिल जाए, और वह आदमी जबरन उससे सुहबत करे, तो सिर्फ़ वह आदमी ही जिसने सुहबत की मार डाला जाए: <sup>26</sup> लेकिन उस लड़की से कुछ न करना क्योंकि लड़की का ऐसा गुनाह नहीं जिससे वह क़त्ल के लायक ठहरे, इसलिए कि यह बात ऐसी है जैसे कोई अपने पड़ोसी पर हमला करे और उसे मार डाले। <sup>27</sup> क्योंकि वह लड़की उसे मैदान में मिली और वह मन्सूबा लड़की चिल्लाई भी लेकिन वहाँ कोई ऐसा न था जो उसे छुड़ाता। <sup>28</sup> अगर किसी आदमी को कोई कुंवारी लड़की मिल जाए जिसकी निस्वत न हुई हो, और वह उसे पकड़कर उससे सुहबत करे और दोनों पकड़े जाएँ, <sup>29</sup> तो वह मर्द जिसने उससे सुहबत की हो, लड़की के बाप को चाँदी के पचास मिस्काल दे और वह लड़की उसकी बीवी बने; क्योंकि उसने उसे बेहुरमत किया, और वह उसे अपनी जिन्दगी भर तलाक़ न देने पाए। <sup>30</sup> कोई शख्स‡ अपने बाप की बीवी से †ब्याह न करे और अपने बाप के दामन को न खोले।

## 23

22:21 22:21 22:21 22:21 22:21 22:21 22:21 22:21 22:21 22:21

<sup>1</sup> जिसके खुसिये कुचले गए हों या आलत काट डाली गई हो, वह खुदावन्द की जमा'अत में आने न पाए। <sup>2</sup> कोई हरामज़ादा खुदावन्द की जमा'अत में दाखिल न हो, दसवीं नसल तक उसकी नसल में से कोई खुदावन्द की जमा'अत में आने न पाए। <sup>3</sup> कोई 'अम्मोनी या मोआबी खुदावन्द की जमा'अत में दाखिल न हो, दसवीं नसल तक उनकी नसल में से कोई खुदावन्द की जमा'अत में कभी आने न पाए; <sup>4</sup> इसलिए कि जब तुम मिस्र से निकल कर आ रहे थे तो उन्होंने रोटी और पानी लेकर रास्ते में तुम्हारा इस्तक़बाल नहीं किया, बल्कि ब'ओर के बेटे बल'आम को मसोपतामिया के फ़तोर से उजरत पर बुलवाया ताकि वह तुझ पर ला'नत करे। <sup>5</sup> लेकिन खुदावन्द तेरे खुदा ने तेरे लिए उस ला'नत को बरकत से बदल दिया इसलिए कि खुदावन्द तेरे खुदा को तुझसे मुहब्बत थी। <sup>6</sup> तू अपनी जिन्दगी भर कभी उनकी सलामती या स'आदत की चाहत न रखना। <sup>7</sup> तू किसी अदोमी से नफ़रत न रखना, क्योंकि वह तेरा भाई

† 22:21 22:21 उस के बापके गौर — ओ — खौसके मातहत या अभी भी गौर शादीशुदा ‡ 22:30 22:30 उस के बाप की कई बीवियों में से एक § 22:30 22:30 मतलब नसोए



है; तू किसी मिस्री से भी नफ़रत न रखना, क्योंकि तू उसके मुल्क में परदेसी हो कर रहा था।<sup>8</sup> उनकी तीसरी नसल के जो लड़के पैदा हों वह खुदावन्द की जमा'अत में आने पाएँ।

????? ?????

<sup>9</sup> जब तू अपने दुश्मनों से लड़ने के लिए दल बाँध कर निकले तो अपने को हर बुरी चीज़ से बचाए रखना।<sup>10</sup> अगर तुम्हारे बीच कोई ऐसा आदमी हो जो रात को एहतिलाम की वजह से नापाक हो गया हो, तो वह खेमागाह से बाहर निकल जाए और खेमागाह के अन्दर न आए; <sup>11</sup> लेकिन जब शाम होने लगे तो वह पानी से गुस्ल करे, और जब आफ़ताब गुरुब हो जाए तो खेमागाह में आए। <sup>12</sup> और खेमागाह के बाहर तू कोई जगह ऐसी ठहरा देना, जहाँ तू अपनी हाजत के लिए जा सके; <sup>13</sup> और अपने साथ अपने हथियारों में एक मेख भी रखना, ताकि जब बाहर तुझे हाजत के लिए बैठना हो तो उससे जगह खोद लिया करे और लौटते वक़्त अपने फुज़ले को ढाँक दिया करे। <sup>14</sup> इसलिए कि खुदावन्द तेरा खुदा तेरी खेमागाह में फिरा करता है ताकि तुझको बचाए, और तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ में कर दे; इसलिए तेरी खेमागाह पाक रहे, ऐसा न हो कि वह तुझमें नजासत को देख कर तुझ से फिर जाए। <sup>15</sup> अगर किसी का गुलाम अपने आक्रा के पास से भाग कर तेरे पास पनाह ले, तो तू उसे उसके आक्रा के हवाले न कर देना; <sup>16</sup> बल्कि वह तेरे साथ तेरे ही बीच तेरी बस्तियों में से, जो उसे अच्छी लगे उसे चुन कर उसी जगह रहे; इसलिए तू उसे हरगिज़ न सताना। <sup>17</sup> इस्राईली लड़कियों में कोई फ़ाहिशा न हो, और न इस्राईली लड़कों में कोई लूती हो। \* <sup>18</sup> तू किसी फ़ाहिशा की खर्ची या कुत्ते की मज़दूरी, किसी मिन्नत के लिए खुदावन्द अपने खुदा के घर में न लाना; क्योंकि ये दोनों खुदावन्द तेरे खुदा के नज़दीक मकरूह हैं। <sup>19</sup> तू अपने भाई को सूद पर क़र्ज़ न देना, चाहे वह रुपये का सूद हो या अनाज का सूद या किसी ऐसी चीज़ का सूद हो जो ब्याज पर दी जाया करती है। <sup>20</sup> तू परदेसी को सूद पर क़र्ज़ दे तो दे, लेकिन अपने भाई को सूद पर क़र्ज़ न देना; ताकि खुदावन्द तेरा खुदा उस मुल्क में जिस पर तू क़ब्ज़ा करने जा रहा है, तेरे सब कामों में जिनको तू हाथ लगाए तुझको बरकत दे। <sup>21</sup> जब तू खुदावन्द अपने खुदा की खातिर मिन्नत माने तो उसके पूरा करने में देर न करना,

इसलिए कि खुदावन्द तेरा खुदा ज़रूर उसको तुझसे तलब करेगा तब तू गुनाहगार ठहरेगा। <sup>22</sup> लेकिन अगर तू मिन्नत न माने तो तेरा कोई गुनाह नहीं। <sup>23</sup> जो कुछ तेरे मुँह से निकले उसे ध्यान कर के पूरा करना, और जैसी मिन्नत तूने खुदावन्द अपने खुदा के लिए मानी हो, उसके मुताबिक़ रज़ा की कुर्बानी जिसका वा'दा तेरी ज़बान से हुआ अदा करना। <sup>24</sup> जब तू अपने पड़ोसी के ताकिस्तान में जाए, तो जितने अंगूर चाहे पेट भर कर खाना, लेकिन कुछ अपने बर्तन में न रख लेना। <sup>25</sup> जब तू अपने पड़ोसी के खड़े खेत में जाए, तो अपने हाथ से बालें तोड़ सकता है लेकिन अपने पड़ोसी के खड़े खेत को हँसुआ न लगाना।

## 24

<sup>1</sup> अगर कोई मर्द किसी औरत से ब्याह करे और पीछे उसमें कोई ऐसी बेहूदा बात पाए जिससे उस 'औरत की तरफ़ उसकी उनसियत न रहे, तो वह उसका तलाक़ नामा लिख कर उसके हवाले करे और उसे अपने घर से निकाल दे। <sup>2</sup> और जब वह उसके घर से निकल जाए, तो वह दूसरे मर्द की हो सकती है। <sup>3</sup> लेकिन अगर दूसरा शौहर भी उससे नाखुश रहे, और उसका तलाक़नामा लिखकर उसके हवाले करे और उसे अपने घर से निकाल दे या वह दूसरा शौहर जिसने उससे ब्याह किया हो मर जाए, <sup>4</sup> तो उसका पहला शौहर जिसने उसे निकाल दिया था उस 'औरत के नापाक हो जाने के बाद फिर उससे ब्याह न करने पाए, क्योंकि ऐसा काम खुदावन्द के नज़दीक मकरूह है। इसलिए तू उस मुल्क को जिसे खुदावन्द तेरा खुदा मीरास के तौर पर तुझको देता है, गुनाहगार न बनाना। <sup>5</sup> जब किसी ने कोई नई 'औरत ब्याही हो, तो वह जंग के लिए न जाए और न कोई काम उसके सुपुर्द हो। वह साल भर तक अपने ही घर में आज़ाद रह कर अपनी ब्याही हुई बीवी को खुश रखे। <sup>6</sup> कोई शख्स चक्की को या उसके ऊपर के पाट को गिरवी न रखे, क्योंकि यह तो जैसे आदमी की जान को गिरवी रखना है। <sup>7</sup> अगर कोई शख्स अपने इस्राईली भाइयों में से किसी को गुलाम बनाए या बेचने की नियत से चुराता हुआ पकड़ा जाए, तो वह चोर मार डाला जाए। यूँ तू ऐसी बुराई अपने बीच से दफ़ा' करना। <sup>8</sup> तू कोढ़ की बीमारी की तरफ़ से होशियार रहना, और लावी काहिनों की सब बातों को जो वह तुमको बताएँ जानफ़िशानी से मानना और उनके मुताबिक़ 'अमल करना; जैसा मैंने

\* 23:17 23:17 कसबी तरीक़: अहूबार 19:29 भी देखें, कनानी मज़हब के मंदिरों में कसबी लोग परिस्तारों से जिंसी तालुकात रखते थे ताकि उन्हें यह यकीन होजाए कि उनके खेत ज़रखेज़ और मवेशी सलामत रहे, ऐसा शख्स कनानियों के मंदिरों में पाया गया जहाँ ज़रखेज़ रखने वाले देवता की परस्तिश होती थी, ऐसा मन जाता है कि कस्बियोंसे जिंसी तालुकात रखने से उनके खेत ज़रखेज़ रहेंगे और जानवर सलामत रहेंगे —

उनको हुक्म किया है वैसा ही ध्यान देकर करना। <sup>9</sup> तू याद रखना कि खुदावन्द तेरे खुदा ने जब तुम मिस्र से निकलकर आ रहे थे, तो रास्ते में मरियम से क्या किया। <sup>10</sup> जब तू अपने भाई को कुछ कर्ज दे, तो गिरवी की चीज़ लेने को उसके घर में न घुसना। <sup>11</sup> तू बाहर ही खड़े रहना, और वह शख्स जिसे तू कर्ज दे खुद गिरवी की चीज़ बाहर तेरे पास लाए। <sup>12</sup> और अगर वह शख्स गरीब हो, तो उसकी गिरवी की चीज़ को पास रखकर सो न जाना; <sup>13</sup> बल्कि जब आफ़ताब गुरुब होने लगे, तो उसकी चीज़ उसे लौटा देना ताकि वह अपना ओढ़ना ओढ़कर सोए और तुझको दुआ दे; और यह बात तेरे लिए खुदावन्द तेरे खुदा के सामने रास्तबाज़ी ठहरेगी। <sup>14</sup> तू अपने गरीब और मोहताज खादिम पर जुल्म न करना, चाहे वह तेरे भाइयों में से हो चाहे उन परदेसियों में से जो तेरे मुल्क के अन्दर तेरी बस्तियों में रहते हों। <sup>15</sup> तू उसी दिन इससे पहले कि आफ़ताब गुरुब हो उसकी मज़दूरी उसे देना, क्योंकि वह गरीब है और उसका दिल मज़दूरी में लगा रहता है; ऐसा न हो कि वह खुदावन्द से तेरे खिलाफ़ फ़रियाद करे और यह तेरे हक़ में गुनाह ठहरे। <sup>16</sup> बेटों के बदले बाप मारे न जाएँ न बाप के बदले बेटे मारे जाएँ। हर एक अपने ही गुनाह की वजह से मारा जाए। <sup>17</sup> तू परदेसी या यतीम के मुक़द्दमे को न बिगाड़ना, और न बेवा के कपड़े को गिरवी रखना; <sup>18</sup> बल्कि याद रखना कि तू मिस्र में गुलाम था, और खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको वहाँ से छुड़ाया; इसीलिए मैं तुझको इस काम के करने का हुक्म देता हूँ। <sup>19</sup> जब तू अपने खेत की फ़सल काटे और कोई पूला खेत में भूल से रह जाए, तो उसके लेने को वापस न जाना, वह परदेसी और यतीम और बेवा के लिए रहे; ताकि खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सब कामों में जिनको तू हाथ लगाये तुझको बरकत बख़्शे। <sup>20</sup> जब तू अपने ज़ैतून के दरख़्त को झाड़े, तो उसके बाद उसकी शाखों को दोबारा न झाड़ना; बल्कि वह परदेसी और यतीम और बेवा के लिए रहें। <sup>21</sup> जब तू अपने ताकिस्तान के अंगूरों को जमा करे, तो उसके बाद उसका दाना — दाना न तोड़ लेना; वह परदेसी और यतीम और बेवा के लिए रहे। <sup>22</sup> और याद रखना कि तू मुल्क — ए — मिस्र में गुलाम था; इसी लिए मैं तुझको इस काम के करने का हुक्म देता हूँ।

## 25

<sup>1</sup> अगर लोगों में किसी तरह का झगड़ा हो और वह 'अदालत में आएँ ताकि क़ाज़ी उनका इन्साफ़ करें, तो वह सादिक को बेगुनाह ठहराएँ और शरीर पर फ़तवा दें।

\* 25:15 25:15 ज़िन्दगी के साल

<sup>2</sup> और अगर वह शरीर पिटने के लायक़ निकले, तो क़ाज़ी उसे ज़मीन पर लिटवाकर अपनी आँखों के सामने उसकी शरारत के मुताबिक़ उसे गिन गिनकर कोड़े लगवाए। <sup>3</sup> वह उसे चालीस कोड़े लगाए, इससे ज्यादा न मारे; ऐसा न हो कि इससे ज्यादा कोड़े लगाने से तेरा भाई तुझको हकीर मा'लूम देने लगे। <sup>4</sup> तू दाएँ में चलते हुए बैल का मुँह न बाँधना। <sup>5</sup> अगर कोई भाई मिलकर साथ रहते हों और एक उनमें से बे — औलाद मर जाए, तो उस मरहूम की बीवी किसी अजनबी से ब्याह न करे; बल्कि उसके शौहर का भाई उसके पास जाकर उसे अपनी बीवी बना ले, और शौहर के भाई का जो हक़ है वह उसके साथ अदा करे। <sup>6</sup> और उस 'औरत के जो पहला बच्चा हो वह इस आदमी के मरहूम भाई के नाम का कहलाए, ताकि उसका नाम इस्राईल में से मिट न जाए। <sup>7</sup> और अगर वह आदमी अपनी भावज से ब्याह करना न चाहे, तो उसकी भावज फाटक पर बुज़ुर्गों के पास जाए और कहे, 'मेरा देवर इस्राईल में अपने भाई का नाम बहाल रखने से इनकार करता है, और मेरे साथ देवर का हक़ अदा करना नहीं चाहता। <sup>8</sup> तब उसके शहर के बुज़ुर्ग उस आदमी को बुलवाकर उसे समझाएँ, और अगर वह अपनी बात पर क़ाईम रहे और कहे, 'मुझको उससे ब्याह करना मंज़ूर नहीं। <sup>9</sup> तो उसकी भावज बुज़ुर्गों के सामने उसके पास जाकर उसके पावों से जूती उतारे, और उसके मुँह पर थूक दे और यह कहे, 'जो आदमी अपने भाई का घर आबाद न करे उससे ऐसा ही किया जाएगा। <sup>10</sup> तब इस्राईलियों में उसका नाम यह पड़ जाएगा, कि यह उस शख्स का घर है जिसकी जूती उतारी गई थी। <sup>11</sup> जब दो शख्स आपस में लड़ते हों और एक की बीवी पास जाकर अपने शौहर को उस आदमी के हाथ से छुड़ाने के लिए जो उसे मारता हो अपना हाथ बढ़ाए और उसकी शर्मगाह को पकड़ ले, <sup>12</sup> तो तू उसका हाथ काट डालना और ज़रा तरस न खाना। <sup>13</sup> तू अपने थैले में तरह — तरह के छोटे और बड़े तौल बाट न रखना। <sup>14</sup> तू अपने घर में तरह — तरह के छोटे और बड़े पैमाना भी न रखना। <sup>15</sup> तेरा तौल बाट पूरा और ठीक और तेरा पैमाना भी पूरा और ठीक हो, ताकि उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है तेरी \*उम्र दराज़ हो। <sup>16</sup> इसलिए कि वह सब जो ऐसे ऐसे फ़रेब के काम करते हैं, खुदावन्द तेरे खुदा के नज़दीक मकरूह हैं। <sup>17</sup> याद रखना कि जब तुम मिस्र से निकलकर आ रहे थे तो रास्ते में 'अमालीकियों ने तेरे साथ क्या किया। <sup>18</sup> क्योंकि वह रास्ते में तेरे सामने आए और जबकि तू थका माँदा था, तोभी उन्होंने उनको जो कमज़ोर और

सब से पीछे थे मारा, और उनको खुदा का खौफ़ न आया।  
 19 इसलिए जब खुदावन्द तेरा खुदा उस मुल्क में, जिसे खुदावन्द तेरा खुदा मीरास के तौर पर तुझको क़ब्ज़ा करने को देता है, तेरे सब दुश्मनों से जो आस — पास हैं तुझको राहत बख़्शे, तो तू 'अमालीकियों के नाम — ओ — निशान को सफ़ह — ए — रोज़गार से मिटा देना; तू इस बात को न भूलना।

## 26

26:1-26:14

1 और जब तू उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको मीरास के तौर पर देता है पहुँचे, और उस पर क़ब्ज़ा कर के उस में बस जाये; 2 तब जो मुल्क खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है उसकी ज़मीन में जो क़िस्म — क़िस्म की चीज़ें तू लगाये, उन सब के पहले फल को एक टोकरे में रख कर उस जगह ले जाना जिसे खुदावन्द तेरा खुदा अपने नाम के घर के लिए चुने। 3 और उन दिनों के काहिन के पास जाकर उससे कहना, 'आज के दिन मैं खुदावन्द तेरे खुदा के सामने इक़रार करता हूँ, कि मैं उस मुल्क में जिसे हमको देने की क़सम खुदावन्द ने हमारे बाप — दादा से खाई थी आ गया हूँ। 4 तब काहिन तेरे हाथ से उस टोकरे को लेकर खुदावन्द तेरे खुदा के मज़बह के आगे रखे। 5 फिर तू खुदावन्द अपने खुदा के सामने यूँ कहना, 'मेरा \*बाप †एक अरामी था ‡जो मरने पर था, वह मिस्र में जाकर वहाँ रहा और उसके लोग थोड़े से थे, और वहीं वह एक बड़ी और ताक़तवर और ज्यादा ता'दाद वाली क़ौम बन गयी। 6 फिर मिस्रियों ने हमसे बुरा सुलूक किया और हमको दुख दिया और हमसे सख़्त — ख़िदमत ली। 7 और हमने खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा के सामने फ़रियाद की, तो खुदावन्द ने हमारी फ़रियाद सुनी और हमारी मुसीबत और मेहनत और मज़लूमी देखी। 8 और खुदावन्द क़वी हाथ और बलन्द बाज़ू से बड़ी हैबत और निशान और मो'जिज़ों के साथ हमको §मिस्र से निकाल लाया। 9 और हमको इस जगह लाकर उसने यह मुल्क जिसमें \*दूध और शहद बहता है हमको दिया है। 10 इसलिए अब ऐ खुदावन्द, देख, जो ज़मीन तूने मुझको दी है, उसका पहला फल मैं तेरे पास ले आया हूँ। फिर तू उसे खुदावन्द अपने खुदा के आगे रख देना और खुदावन्द अपने खुदा को सिज्दा करना। 11 और तू और लावी और जो मुसाफ़िर तेरे बीच रहते हों, सब के सब मिल कर उन सब ने'मतों के लिए,

जिनको खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको और तेरे घराने को बख़्शा हो खुशी करना। 12 और जब तू तीसरे साल जो दहेकी का साल है अपने सारे माल की दहेकी निकाल चुके, तो उसे लावी और मुसाफ़िर और यतीम और बेवा को देना ताकि वह उसे तेरी बस्तियों में खाएँ और सेर हों। 13 फिर तू खुदावन्द अपने खुदा के आगे यूँ कहना, 'मैंने तेरे हुक्मों के मुताबिक़ जो तूने मुझे दिए मुक़द्दस चीज़ों को अपने घर से निकाला और उनको लावियों और मुसाफ़िरों और यतीमों और बेवाओं को दे भी दिया: और मैंने तेरे किसी हुक्म को नहीं टाला और न उनको भूला। 14 और मैंने अपने मातम के वक़्त उन चीज़ों में से कुछ नहीं खाया, और नापाक हालत में उनको अलग नहीं किया, और न उनमें से कुछ मुर्दों के लिए दिया। मैंने खुदावन्द अपने खुदा की †बात मानी है, और जो कुछ तूने हुक्म दिया उसी के मुताबिक़ 'अमल किया। 15 आसमान पर से जो तेरा मुक़द्दस घर है नज़र कर और अपनी क़ौम इस्राईल को और उस मुल्क को बरकत दे, जिस मुल्क में ‡दूध और शहद बहता है और जिसको तूने उस क़सम के मुताबिक़ जो तूने हमारे बाप दादा से खाई हमको 'अता किया है।

26:15-26:27

16 खुदावन्द तेरा खुदा, आज तुझको इन आईन और अहक़ाम के मानने का हुक्म देता है; इसलिए तू अपने सारे दिल और सारी जान से इनको मानना और इन पर 'अमल करना। 17 तूने आज के दिन इक़रार किया है कि खुदावन्द तेरा खुदा है, और तू उसकी राहों पर चलेगा, और उसके आईन और फ़रमान और अहक़ाम को मानेगा, और उसकी बात सुनेगा। 18 और खुदावन्द ने भी आज के दिन तुझको, जैसा उसने वा'दा किया था, अपनी खास क़ौम क़रार दिया है ताकि तू उसके सब हुक्मों को माने; 19 और वह सब क़ौमों से, जिनको उसने पैदा किया है, ता'रीफ़ और नाम और 'इज़ज़त में तुझको मुस्ताज़ करे; और तू उसके कहने के मुताबिक़ खुदावन्द अपने खुदा की पाक क़ौम बन जाये।”

## 27

27:1-27:2

1 फिर मूसा ने बनी — इस्राईल के बुज़ुर्गों के साथ हो कर लोगों से कहा कि “जितने हुक्म आज के दिन मैं तुमको देता हूँ उन सब को मानना। 2 और जिस दिन तुम \*यरदन पार हो कर उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा

\* 26:5 26:5 बाप दादा † 26:5 26:5 घूमने वाला ‡ 26:5 26:5 टेक्स्ट सेसे निकालें § 26:8 26:8 मुल्क \* 26:9 26:9 अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क † 26:14 26:14 हुक्म ‡ 26:15 26:15 अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क \* 27:2 27:2 नदी

खुदा तुझको देता है पहुँचो, तो तू बड़े — बड़े पत्थर खड़े करके उन पर चूने की अस्तरकारी करना; <sup>3</sup> और पार हो जाने के बाद इस शरी'अत की सब बातें उन पर लिखना, ताकि उस वा'दे के मुताबिक जो खुदावन्द तेरे बाप — दादा के खुदा ने तुझ से किया, उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है या'नी उस मुल्क में जहाँ दूध और शहद बहता है तू पहुँच जाये। <sup>4</sup> इसलिए तुम यरदन के पार हो कर उन पत्थरों को जिनके बारे में मैं तुमको आज के दिन हुक्म देता हूँ, कोह — ए — 'ऐबाल पर नस्ब करके उन पर चूने की अस्तरकारी करना। <sup>5</sup> और वहीं तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए पत्थरों का एक मजबह बनाना, और लोहे का कोई औज़ार उन पर न लगाना। <sup>6</sup> और तू खुदावन्द अपने खुदा का मजबह बे तराशे पत्थरों से बनाना, और उस पर खुदावन्द अपने खुदा के लिए सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश करना। <sup>7</sup> और वहीं सलामती की कुर्बानियाँ अदा करना और उनको खाना और खुदावन्द अपने खुदा के सामने खुशी मनाना। <sup>8</sup> और उन पत्थरों पर इस शरी'अत की सब बातें साफ़ — साफ़ लिखना।" <sup>9</sup> फिर मूसा और लावी काहिनों ने सब बनी — इस्राईल से कहा, ऐ इस्राईल, खामोश हो जा और सुन, तू आज के दिन खुदावन्द अपने खुदा की क़ौम बन गया है। <sup>10</sup> इसलिए तू खुदावन्द अपने खुदा की बात सुनना और उसके सब आईन और अहकाम पर जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ 'अमल करना।"

§§§§ §§ §§§§§§ §§ §§§§

<sup>11</sup> और मूसा ने उसी दिन लोगों से ताकीद करके कहा कि; <sup>12</sup> "जब तुम §यरदन पार हो जाओ, तो कोह — ए — गरिज़ीम पर शमौन, और लावी, और यहूदाह, और इश्कार, और यूसुफ़, और बिनयमीन खड़े हों और लोगों को बरकत सुनाएँ। <sup>13</sup> और रूबिन, और जह्द, और आशर, और ज़बूलून, और दान, और नफ़्ताली कोह — ए — 'ऐबाल पर खड़े होकर ला'नत सुनाएँ। <sup>14</sup> और लावी बलन्द आवाज़ से सब इस्राईली आदमियों से कहें कि: <sup>15</sup> 'ला'नत उस आदमी पर जो कारीगरी की सन'अत की तरह खोदी हुई या ढाली हुई मूरत बना कर जो खुदावन्द के नज़दीक मकरूह है, उसको किसी पोशीदा जगह में नस्ब करे। और सब लोग जवाब दें और कहें, 'आमीन। <sup>16</sup> 'ला'नत उस पर जो अपने बाप या माँ को हक़ीर जाने। और सब लोग कहें, 'आमीन। <sup>17</sup> 'ला'नत उस पर जो अपने पड़ोसी की हद के निशान को हटाये। और सब लोग कहें, 'आमीन। <sup>18</sup> 'ला'नत उस पर जो अन्धे को रास्ते से गुमराह करे। और सब लोग कहें, 'आमीन। <sup>19</sup> 'ला'नत

उस पर जो परदेसी और यतीम और बेवा के मुक़द्दमे को बिगाड़े।" और सब लोग कहें, 'आमीन। <sup>20</sup> 'ला'नत उस पर जो अपने बाप की बीवी से मुबाशरत करे, क्योंकि वह अपने बाप के दामन को बेपर्दा करता है। और सब लोग कहें, 'आमीन। <sup>21</sup> 'ला'नत उस पर जो किसी चौपाए के साथ जिमा'अ करे। और सब लोग कहें, 'आमीन। <sup>22</sup> 'ला'नत उस पर जो अपनी बहन से मुबाशरत करे, चाहे वह उसके बाप की बेटी हो चाहे माँ की। और सब लोग कहें, 'आमीन। <sup>23</sup> 'ला'नत उस पर जो अपनी सास से मुबाशरत करे। और सब लोग कहें, 'आमीन। <sup>24</sup> 'ला'नत उस पर जो अपने पड़ोसी को पोशीदगी में मारे। और सब लोग कहें, 'आमीन। <sup>25</sup> 'लानत उस पर जो बे — गुनाह को क़त्ल करने के लिए इनाम ले। और सब लोग कहें, 'आमीन। <sup>26</sup> 'ला'नत उस पर जो इस शरी'अत की बातों पर 'अमल करने के लिए उन पर क़ाईम न रहे।" और सब लोग कहें, 'आमीन।

## 28

§§§§ §§§§§§ §§ §§§§§§§

<sup>1</sup> और अगर तू खुदावन्द अपने खुदा की \*बात को जांफिशानी से मान कर उसके इन सब हुक्मों पर, जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ, एहतियात से 'अमल करे तो खुदावन्द तेरा खुदा दुनिया की सब क़ौमों से ज्यादा तुझको सरफ़राज़ करेगा। <sup>2</sup> और अगर तू खुदावन्द अपने खुदा की बात सुने तो यह सब बरकतें तुझ पर नाज़िल होंगी और तुझको मिलेंगी। <sup>3</sup> शहर में भी तू मुबारक होगा, और खेत में भी मुबारक होगा। <sup>4</sup> तेरी औलाद, और तेरी ज़मीन की पैदावार, और तेरे चौपायों के बच्चे, या'नी गाय — बैल की बढ़ती और तेरी भेड़ — बकरियों के बच्चे मुबारक होंगे। <sup>5</sup> तेरा टोकरा और तेरी कठौती दोनों मुबारक होंगे। <sup>6</sup> और तू अन्दर आते वक़्त मुबारक होगा, और बाहर जाते वक़्त भी मुबारक होगा। <sup>7</sup> खुदावन्द तेरे दुश्मनों को जो तुझ पर हमला करें, तेरे सामने शिकस्त दिलाएगा; वह तेरे मुक़ाबले को तो एक ही रास्ते से आएँगे, लेकिन सात सात रास्तों से हो कर तेरे आगे से भागेंगे। <sup>8</sup> खुदावन्द तेरे अम्बारखानों में और सब कामों में जिनमें तू हाथ लगाये बरकत का हुक्म देगा, और खुदावन्द तेरा खुदा उस मुल्क में जिसे वह तुझको देता है तुझको बरकत बख़्शेगा। <sup>9</sup> अगर तू खुदावन्द अपने खुदा के हुक्मों को माने और उसकी राहों पर चले, तो खुदावन्द अपनी उस क़सम के मुताबिक जो उसने तुझ से खाई तुझको अपनी पाक क़ौम बना कर क़ाईम रखेगा। <sup>10</sup> और दुनिया की सब क़ौमों यह

† 27:10 27:10 अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क में    § 27:10 27:10 हुक्म

§ 27:12 27:12 नदी    \* 28:1 28:1 हुक्म



देखकर कि तू खुदावन्द के नाम से कहलाता है, तुझ से डर जाएँगी। <sup>11</sup> और जिस मुल्क को तुझको देने की कसम खुदावन्द ने तेरे बाप — दादा से खाई थी, उसमें खुदावन्द तेरी औलाद को और तेरे चौपायों के बच्चों को और तेरी ज़मीन की पैदावार को खूब बढ़ा कर तुझको बढ़ाएगा। <sup>12</sup> खुदावन्द आसमान को जो उसका अच्छा खज़ाना है तेरे लिए खोल देगा कि तेरे मुल्क में वक़्त पर मेंह बरसाए, और वह तेरे सब कामों में जिनमें तू हाथ लगाए बरकत देगा; और तू बहुत सी क़ौमों को क़र्ज़ देगा, लेकिन खुद क़र्ज़ नहीं लेगा। <sup>13</sup> और खुदावन्द तुझको दुम नहीं बल्कि सिर ठहराएगा, और तू पस्त नहीं बल्कि सरफ़राज़ ही रहेगा; बशर्ते कि तू खुदावन्द अपने खुदा के हुक्मों को, जो मैं तुझको आज के दिन देता हूँ, सुनो और एहतियात से उन पर 'अमल करो, <sup>14</sup> और जिन बातों का मैं आज के दिन तुझको हुक्म देता हूँ, उनमें से किसी से दहने या बाएँ हाथ मुड़ कर और मा'बूदों की पैरवी और इबादत न करे।

22 22 22 22 22 22 22 22 22 22

<sup>15</sup> “लेकिन अगर तू ऐसा न करे, कि खुदावन्द अपने खुदा की बात सुनकर उसके सब अहकाम और आईन पर जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ एहतियात से 'अमल करे, तो यह सब ला'नतें तुझ पर नाज़िल होंगी और तुझको लगेंगी। <sup>16</sup> शहर में भी तू ला'नती होगी, और खेत में भी ला'नती होगी। <sup>17</sup> तेरा टोकरा और तेरी कठौती दोनों ला'नती ठहरेंगे। <sup>18</sup> तेरी औलाद और तेरी ज़मीन की पैदावार, और तेरे गाय — बैल की बढ़ती और तेरी भेड़ — बकरियों के बच्चे ला'नती होंगे। <sup>19</sup> तू अन्दर आते ला'नती ठहरेगा, और बाहर जाते भी ला'नती ठहरेगा। <sup>20</sup> खुदावन्द उन सब कामों में जिनको तू हाथ लगाए, ला'नत और इज़तिराब और फटकार को तुझ पर नाज़िल करेगा जब तक कि तू हलाक होकर जल्द बर्बाद न हो जाए, यह तेरी उन बद'आमालियों की वजह से होगा जिनको करने की वजह से तू मुझको छोड़ देगा। <sup>21</sup> खुदावन्द ऐसा करेगा कि वबा तुझ से लिपटी रहेगी, जब तक कि वह तुझको उस मुल्क से जिस पर क़ब्ज़ा करने को तू वहाँ जा रहा है फ़ना न कर दे। <sup>22</sup> खुदावन्द तुझको तप — ए — दिक्क और बुखार और सोज़िश और शदीद हरारत और तलवार और बाद — ए — समूम और गेरूई से मारेगा, और यह तेरे पीछे पड़े रहेंगे जब तक कि तू फ़ना न हो जाये। <sup>23</sup> और आसमान जो तेरे सिर पर है पीतल का, और ज़मीन जो तेरे नीचे है लोहे की हो जाएगी। <sup>24</sup> खुदावन्द मेंह के बदले तेरी ज़मीन पर खाक

और धूल बरसाएगा; यह आसमान से तुझ पर पड़ती ही रहेगी, जब तक कि तू हलाक न हो जाये। <sup>25</sup> “खुदावन्द तुझको तेरे दुश्मनों के आगे शिकस्त दिलाएगा; तू उनके मुकाबले के लिए तो एक ही रास्ते से जाएगा, और उनके सामने से सात — सात रास्तों से होकर भागेगा, और दुनिया की तमाम सल्तनतों में तू मारा — मारा फिरेगा। <sup>26</sup> और तेरी लाश हवा के परिन्दों और ज़मीन के दरिन्दों की खुराक होगी, और कोई उनको हंका कर भगाने को भी न होगा। <sup>27</sup> खुदावन्द तुझको सिमसर के फोड़ों, और बवासीर, और खुजली, और खारिश में ऐसा मुब्तिला करेगा कि तू कभी अच्छा भी नहीं होने का। <sup>28</sup> खुदावन्द तुझको जुनून और नाबीनाई और दिल की घबराहट में भी मुब्तिला कर देगा। <sup>29</sup> और जैसे अंधा अँधेरे में टटोलता है वैसे ही तू दोपहर दिन को टटोलता फिरेगा और तू अपने धन्धों में नाकाम रहेगा; और तुझ पर हमेशा जुल्म ही होगा, और तू लुटता ही रहेगा और कोई न होगा जो तुझको बचाए। <sup>30</sup> और तू से मंगनी तो तू करेगा लेकिन दूसरा उससे मुबाशरत करेगा, तू घर बनाएगा लेकिन उसमें बसने न पाएगा, तू ताकिस्तान लगाएगा लेकिन उसका फल इस्तेमाल न करेगा। <sup>31</sup> तेरा बैल तेरी आँखों के सामने जबह किया जाएगा लेकिन तू उसका गोश्त खाने न पाएगा, तेरा गधा तुझ से जबरन छीन लिया जाएगा और तुझको फिर न मिलेगा, तेरी भेड़ें तेरे दुश्मनों के हाथ लगेंगी और कोई न होगा जो तुझको बचाए। <sup>32</sup> तेरे बेटे और बेटियाँ दूसरी क़ौम को दी जाएँगी, और तेरी आँखें देखेंगी और सारे दिन उनके लिए तरसते — तरसते रह जाएँगी; और तेरा कुछ बस नहीं चलेगा। <sup>33</sup> तेरी ज़मीन की पैदावार और तेरी सारी कमाई को एक ऐसी क़ौम खाएगी जिससे तू वाकिफ़ नहीं; और तू हमेशा मज़लूम और दबा ही रहेगा, <sup>34</sup> यहाँ तक कि इन बातों को अपनी आँखों से देख देखकर दीवाना हो जाएगा। <sup>35</sup> खुदावन्द तेरे घुटनों और टाँगों में ऐसे बुरे फोड़े पैदा करेगा, कि उनसे तू पाँव के तलवे से लेकर सिर की चाँद तक शिफ़ा न पा सकेगा। <sup>36</sup> खुदावन्द तुझको और तेरे बादशाह को, जिसे तू अपने ऊपर मुक़रर करेगा, एक ऐसी क़ौम के बीच ले जाएगा जिसे तू और तेरे बाप — दादा जानते भी नहीं; और वहाँ तू और मा'बूदों की जो महज़ लकड़ी और पत्थर है इबादत करेंगे। <sup>37</sup> और उन सब क़ौमों में, जहाँ — जहाँ खुदावन्द तुझको पहुँचाएगा, तू बाइस — ए — हैरत और ज़र्ब — उल — मसल और अंगुशत नुमा बनेगा। <sup>38</sup> तू खेत में बहुत सा बीज ले जाएगा

लोकन थोड़ा सा जमा' करेगा, क्योंकि टिड्डी उसे चाट लेंगी। <sup>39</sup> तू ताकिस्तान लगाएगा और उन पर मेहनत करेगा, लेकिन न तो मय पीने और न अंगूर जमा' करने पायेगा; क्योंकि उनको कीड़े खा जाएँगे। <sup>40</sup> तेरी सब हदों में ज़ैतून के दरख्त लगे होंगे, लेकिन तू उनका तेल नहीं लगाने पाएगा; क्योंकि तेरे ज़ैतून के दरख्तों का फल झड़ जाया करेगा। <sup>41</sup> तेरे बेटे और बेटियाँ पैदा होंगी लेकिन वह सब तेरे न रहेंगे, क्योंकि वह गुलाम हो कर चले जाएँगे। <sup>42</sup> तेरे सब दरख्तों और तेरी सब ज़मीन की पैदावार पर टिड्डियाँ क़ब्ज़ा कर लेंगी। <sup>43</sup> परदेसी जो तेरे बीच होगा वह तुझसे बढ़ता और सरफ़राज़ होता जाएगा, लेकिन तू पस्त ही पस्त होता जाएगा। <sup>44</sup> वह तुझको क़र्ज़ देगा, लेकिन तू उसे क़र्ज़ न दे सकेगा; वह सिर होगा और तू दुम ठहरेगा। <sup>45</sup> और चूँकि तू खुदावन्द अपने खुदा के उन हुक्मों और आईन पर जिनको उसने तुझको दिया है, 'अमल करने के लिए उसकी बात नहीं सुनेंगे; इसलिए यह सब ला'नें तुझ पर आएँगी और तेरे पीछे पड़ी रहेंगी और तुझको लगेंगी, जब तक तेरा नास न हो जाए। <sup>46</sup> और वह तुझ पर और तेरी औलाद पर हमेशा निशान और अचम्भे के तौर पर रहेंगी। <sup>47</sup> और चूँकि तू बावजूद सब चीज़ों की फ़िरावानी के फ़रहत और खुशदिली से खुदावन्द अपने खुदा की इबादत नहीं करेगा। <sup>48</sup> इसलिए भूका और प्यासा और नंगा और सब चीज़ों का मुहताज होकर तू अपने दुश्मनों की खिदमत करेगा जिनको खुदावन्द तेरे बरखिलाफ़ भेजेगा; और ग़नीम तेरी गरदन पर लोहे का जुआ रखे रहेगा, जब तक \*वह तेरा नास न कर दे। <sup>49</sup> खुदावन्द दूर से बल्कि ज़मीन के किनारे से एक क्रौम को तुझ पर चढ़ा जाएगा जैसे 'उकाब टूट कर आता है, उस क्रौम की ज़बान को तू नहीं समझेगा; <sup>50</sup> उस क्रौम के लोग तुर्शरू होंगे, जो न बुड़्डों का लिहाज़ करेंगे न जवानों पर तरस खाएँगे। <sup>51</sup> और वह तेरे चौपायों के बच्चों और तेरी ज़मीन की पैदावार को खाते रहेंगे, जब तक तेरा नास न हो जाए और वह तेरे लिए अनाज, या मय, या तेल, या गाय — बैल की बढ़ती, या तेरी भेड़ — बकरियों के बच्चे कुछ नहीं छोड़ेंगे, जब तक वह तुझको फ़ना न कर दें। <sup>52</sup> और वह तेरे तमाम मुल्क में तेरा घिराव तेरी ही बस्तियों में किए रहेंगे; जब तक तेरी ऊँची — ऊँची फ़सीलें जिन पर तेरा भरोसा होगा, गिर न जाएँ। तेरा घिराव वह तेरे ही उस मुल्क की सब बस्तियों में करेंगे, जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है। <sup>53</sup> तब उस घिराव के मौक़े' पर और उस आड़े वक़्त में तू अपने दुश्मनों से तंग आकर

अपने ही जिस्म के पहले फल को, या'नी अपने ही बेटों और बेटियों का गोशत जिनको खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको 'अता किया होगा खायेगा। <sup>54</sup> वह शख्स जो तुम में नाज़ुक मिज़ाज और नाज़ुक बदन होगा, उसकी भी अपने भाई और अपनी हमआगोश बीवी और अपने बाक़ी मांदा बच्चों की तरफ़ बुरी नज़र होगी; <sup>55</sup> यहाँ तक कि वह इनमें से किसी को भी अपने ही बच्चों के गोशत में से, जिनको वह खुद खाएगा कुछ नहीं देगा; क्योंकि उस घिराव के मौक़े' पर और उस आड़े वक़्त में जब तेरे दुश्मन तुझको तेरी ही सब बस्तियों में तंग कर मारेंगे, तो उसके पास और कुछ बाक़ी न रहेगा। <sup>56</sup> वह 'औरत भी जो तुम्हारे बीच ऐसी नाज़ुक मिज़ाज और नाज़ुक बदन होगी कि नर्मी — ओ — नज़ाकत की वजह से अपने पाँव का तलवा भी ज़मीन से लगाने की जुर'अत न करती हो, उसकी भी अपने पहलू के शौहर और अपने ही बेटे और बेटा, <sup>57</sup> और अपने ही नौज़ाद बच्चे की तरफ़ जो उसकी रानों के बीच से निकला हो, बल्कि अपने सब लड़के बालों की तरफ़ जिनको वह जनेगी बुरी नज़र होगी; क्योंकि वह तमाम चीज़ों की क़िल्लत की वजह से उन्हीं को छुप — छुप कर खाएगी, जब उस घिराव के मौक़े' पर और उस आड़े वक़्त में तेरे दुश्मन तेरी ही बस्तियों में तुझको तंग कर मारेंगे। <sup>58</sup> अगर तू उस शरी'अत की उन सब बातों पर जो इस किताब में लिखी हैं, एहतियात रख कर इस तरह 'अमल न करे कि तुमको खुदावन्द अपने खुदा के जलाली और मुहीब नाम का खौफ़ हो; <sup>59</sup> तो खुदावन्द तुम पर 'अजीब आफ़तें नाज़िल करेगा, और तुम्हारी औलाद की आफ़तों को बढ़ा कर बड़ी और देरपा आफ़तें और सख़्त और देरपा बीमारियाँ कर देगा। <sup>60</sup> और मिस्र के सब रोग जिनसे तू डरता था तुझको लगाएगा और वह तुझको लगे रहेंगे। <sup>61</sup> और उन सब बीमारियों और आफ़तों को भी जो इस शरी'अत की किताब में मज़कूर नहीं हैं, खुदावन्द तुझको लगाएगा जब तक तेरा नास न हो जाए। <sup>62</sup> और चूँकि तू खुदावन्द अपने खुदा की बात नहीं सुनेगा, इसलिए कहाँ तो तुम कसरत में आसमान के तारों की तरह हो, और कहाँ शुमार में थोड़े ही से रह जाओगे। <sup>63</sup> तब यह होगा कि जैसे तुम्हारे साथ भलाई करने और तुमको बढ़ाने से खुदावन्द खुशनूद हुआ, ऐसे ही तुमको फ़ना कराने और हलाक कर डालने से खुदावन्द खुशनूद होगा; और तुम उस मुल्क से उखाड़ दिए जाओगे, जहाँ तू उस पर क़ब्ज़ा करने को जा रहा है। <sup>64</sup> और खुदावन्द तुझको ज़मीन के एक सिरे से दूसरे सिरे तक तमाम क्रौमों में तितर — बितर करेगा, वहाँ तू लकड़ी और पत्थर के और मा'बूदों को

\* 28:48 28:48 हुक्म

जिनको तू या तेरे बाप — दादा जानते भी नहीं इबादत करेगा। <sup>65</sup> उन क्रौमों के बीच तुझको चैन नसीब न होगा और न तेरे पाँव के तलवे को आराम मिलेगा, बल्कि खुदावन्द तुझको वहाँ दिल — ए — लरजाँ और आँखों को धुंधलाहट और जी को कुढ़न देगा। <sup>66</sup> और तेरी जान शक में अटकी रहेगी और तू रात — दिन डरता रहेगा, और तुम्हारी ज़िन्दगी का कोई ठिकाना न होगा। <sup>67</sup> और तू अपने दिली खौफ़ के और उन नज़ारों की वजह से जिनको तू अपनी आँखों से देखेगा, सुबह को कहेगा कि ऐ काश कि शाम होती और शाम को कहेगा ऐ काश कि सुबह होती। <sup>68</sup> और खुदावन्द तुझको किशितियों में चढ़ा कर उस रास्ते से† मिस्र में लौटा ले जाएगा, जिसके बारे में मैंने तुझसे कहा कि तू उसे फिर कभी न देखना; और वहाँ तुम अपने दुश्मनों के गुलाम और लौंडी होने के लिए अपने को बेचोगे लेकिन कोई खरीदार न होगा।”

## 29

<sup>1</sup> इस्राईलियों के साथ जिस 'अहद के बाँधने का हुक्म खुदावन्द ने मूसा को मोआब के मुल्क में दिया उसी की यह बातें हैं। यह उस 'अहद से अलग हैं जो उसने उनके साथ\* होरिब में बाँधा था।

2222 22 222 22 222222 2222

<sup>2</sup> इसलिए मूसा ने सब इस्राईलियों को बुलवा कर उनसे कहा, तुमने सब कुछ जो खुदावन्द ने तुम्हारी आँखों के सामने, मुल्क — ए — मिस्र में फ़िरा'औन और उसके सब खादिमों और उसके सारे मुल्क से किया देखा है। <sup>3</sup> इम्तिहान के वह बड़े — बड़े काम और निशान और बड़े — बड़े करिश्मे, तुमने अपनी आँखों से देखे। <sup>4</sup> लेकिन खुदावन्द ने तुमको आज तक न तो ऐसा दिल दिया जो समझे, और न देखने की आँखें और सुनने के कान दिए। <sup>5</sup> और मैं चालीस बरस वीराने में तुमको लिए फिरा, और न तुम्हारे तन के कपड़े पुराने हुए और न तुम्हारे पाँव की जूती पुरानी हुई। <sup>6</sup> और तुम इसी लिए रोटी खाने और मय या शराब पीने नहीं पाए ताकि तुम जान लो कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। <sup>7</sup> और जब तुम इस जगह आए तो हस्बोन का बादशाह सीहोन और बसन का बादशाह 'ओज हमारा मुकाबला करने को निकले, और हमने उनको मारकर <sup>8</sup> उनका मुल्क ले लिया और उसे रूबीनियों को और जददियों को और मनस्सियों के आधे कबीले को मीरास के तौर पर दे दिया। <sup>9</sup> तब तुम इस 'अहद की बातों को मानना और उन पर 'अमल करना, ताकि जो कुछ

तुम करो उसमें कामयाब हो। <sup>10</sup> आज के दिन तुम और तुम्हारे सरदार, तुम्हारे कबीले और तुम्हारे बुज़ुर्ग और तुम्हारे 'उहदेदार और सब इस्राईली मर्द, <sup>11</sup> और तुम्हारे बच्चे और तुम्हारी बीवियाँ और वह परदेसी भी जो तेरी खेमागाह में रहता है, चाहे वह तेरा लकड़हारा हो चाहे सक्का, सबके सब खुदावन्द अपने खुदा के सामने खड़े हों, <sup>12</sup> ताकि तू खुदावन्द अपने खुदा के 'अहद में, जिसे वह तेरे साथ आज बाँधता और उसकी क़सम में जिसे वह आज तुझसे खाता है शामिल हो। <sup>13</sup> और वह तुझको आज के दिन अपनी क़ौम क़रार दे और वह तेरा खुदा हो, जैसा उसने तुझसे कहा, जैसी उसने तेरे बाप — दादा अब्रहाम और इस्हाक़ और या'कूब से क़सम खाई। <sup>14</sup> और मैं इस 'अहद और क़सम में सिर्फ़ तुम्हीं को नहीं, <sup>15</sup> लेकिन उसको भी जो आज के दिन खुदावन्द हमारे खुदा के सामने यहाँ हमारे साथ खड़ा है, और उसकी भी जो आज के दिन यहाँ हमारे साथ नहीं, उनमें शामिल करता हूँ। <sup>16</sup> तुम खुद जानते हो कि मुल्क — ए — मिस्र में हम कैसे रहे और क्यूँ कर उन क्रौमों के बीच से होकर आए, जिनके बीच से तुम गुज़रे। <sup>17</sup> और तुमने खुद उनकी मकरूह चीज़ें और लकड़ी और पत्थर और चाँदी और सोने की मूर्तें देखीं जो उनके यहाँ थीं। <sup>18</sup> इसलिए ऐसा न हो कि तुम में कोई मर्द या 'औरत या खान्दान या कबीला ऐसा हो जिसका दिल आज के दिन खुदावन्द हमारे खुदा से बरग़श्ता हो, और वह जाकर उन क्रौमों के मा'बूदों की इबादत करे या ऐसा न हो कि तुम में कोई ऐसी जड़ हो जो इन्द्रायन और नागदौना पैदा करे; <sup>19</sup> और ऐसा आदमी क़सम की यह बातें सुनकर दिल ही दिल में अपने को मुबारकबाद दे और कहे, कि चाहे मैं कैसा ही ज़िद्दी हो कर तर के साथ खुशक को फ़ना कर डालूँ तोभी मेरे लिए सलामती है। <sup>20</sup> लेकिन खुदावन्द उसे मु'आफ़ नहीं करेगा, बल्कि उस वक़्त खुदावन्द का क्रहर और उसकी ग़ैरत उस आदमी पर नाज़िल होगी और सब ला'नतें जो इस किताब में लिखी हैं उस पर पड़ेंगी, और खुदावन्द उसके नाम को सफ़ह — ए — रोज़गार से मिटा देगा। <sup>21</sup> और खुदावन्द इस 'अहद की उन सब ला'नतों के मुताबिक़ जो इस शरी'अत की किताब में लिखी हैं, उसे इस्राईल के सब कबीलों में से बुरी सज़ा के लिए ‡जुदा करेगा। <sup>22</sup> और आने वाली नसलों में तुम्हारी नसल के लोग जो तुम्हारे बाद पैदा होंगे और परदेसी भी जो दूर के मुल्क से आएँगे, जब वह इस मुल्क की बलाओं और खुदावन्द की लगाई हुई बीमारियों को देखेंगे, <sup>23</sup> और यह भी देखेंगे कि सारा

† 28:68 28:68 मुल्क \* 29:1 29:1 होरेब † 29:1 29:1 पहाड़ ‡ 29:21 29:21 उस को एक नमूना बनाएं

मुल्क जैसे गन्धक और नमक बना पड़ा है और ऐसा जल गया है कि इसमें न तो कुछ बोया जाता न पैदा होता, और न किसी क्रिस्म की घास उगती है और वह सद्म और 'अमूरा और 'अदमा और ज़िबोईम की तरह उजड़ गया जिनको खुदावन्द ने अपने ग़ज़ब और क्रहर में तबाह कर डाला। <sup>24</sup> तब वह बल्कि सब क्रौमे पूछेंगी, 'खुदावन्द ने इस मुल्क से ऐसा क्या किया? और ऐसे बड़े क्रहर के भड़कने की वजह क्या है?' <sup>25</sup> उस वक़्त लोग जवाब देंगे, 'खुदावन्द इनके बाप — दादा के खुदा ने जो 'अहद इनके साथ इनको मुल्क — ए — मिस्र से निकालते वक़्त बाँधा था, उसे इन लोगों ने छोड़ दिया; <sup>26</sup> और जाकर और मा'बूदों की इबादत और परस्तिश की, जिनसे वह वाकिफ़ न थे और जिनको खुदावन्द ने इनको दिया भी न था। <sup>27</sup> इसीलिए इस किताब की लिखी हुई सब ला'नतों को इस मुल्क पर नाज़िल करने के लिए खुदावन्द का ग़ज़ब इस पर भड़का। <sup>28</sup> और खुदावन्द ने क्रहर और गुस्से और बड़े ग़ज़ब में इनको इनके मुल्क से उखाड़कर दूसरे मुल्क में फेंका, जैसा आज के दिन ज़ाहिर है। <sup>29</sup> ग़ैब का मालिक तो खुदावन्द हमारा खुदा ही है; लेकिन जो बातें ज़ाहिर की गई हैं वह हमेशा तक हमारे और हमारी औलाद के लिए हैं, ताकि हम इस शरी'अत की सब बातों पर 'अमल करें।

**30**

*????? ?? ???? ???? ???? ??*

1 और जब यह सब बातें या'नी बरकत और ला'नत जिनको मैंने आज तेरे आगे रखवा है तुझ पर आएँ, और तू उन क़ौमों के बीच जिनमें खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको हँका कर पहुँचा दिया हो उनको याद करें। 2 और तू और तेरी औलाद दोनों खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ फिरे, और उसकी बात इन सब हुक्मों के मुताबिक़ जो मैं आज तुझको देता हूँ अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से माने। 3 तो खुदावन्द तेरा खुदा तेरी गुलामी को पलटकर तुझ पर रहम करेगा, और फिरकर तुझको सब क़ौमों में से, जिनमें खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको तितर — बितर किया हो जमा' करेगा। 4 अगर तेरे आवारागर्द \*दुनिया के इन्तिहाई हिस्सों में भी हों, तो वहाँ से भी खुदावन्द तेरा खुदा तुझको जमा' करके ले आएगा। 5 और खुदावन्द तेरा खुदा उसी मुल्क में तुमको लाएगा जिस पर तुम्हारे बाप — दादा ने क़ब्ज़ा किया था, और तू उसको अपने क़ब्ज़े में लाएगा; फिर वह तुझसे भलाई करेगा और तेरे बाप — दादा से ज़्यादा तुमको बढ़ाएगा।

6 और खुदावन्द तेरा खुदा तेरे और तेरी औलाद के दिल का खतना करेगा, ताकि तू खुदावन्द अपने खुदा से अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से मुहब्बत रखे और ज़िन्दा रहे। 7 और खुदावन्द तेरा खुदा यह सब ला'नतें तुम्हारे दुश्मनों और कीना रखने वालों पर, जिन्होंने तुझको सताया नाज़िल करेगा। 8 और तू लौटेगा और खुदावन्द की बात सुनेगा, और उसके सब हुक्मों पर जो मैं आज तुझको देता हूँ 'अमल करेगा। 9 और खुदावन्द तेरा खुदा तुझको तेरे कारोबार और आस औलाद और चौपायों के बच्चों और ज़मीन की पैदावार के लिहाज़ से तेरी भलाई की खातिर तुझको बढ़ाएगा; फिर तुझसे खुश होगा, जैसे वह तेरे बाप — दादा से खुश था। 10 बशर्ते कि तू खुदावन्द अपने खुदा की बात को सुनकर उसके अहकाम और आईन को माने जो शरी'अत की इस किताब में लिखे हैं, और अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ फिरे।

[\[?\]\[?\]\[?\]\[?\]\[?\]\[?\]\[?\]\[?\]](#)
[\[?\]\[?\]](#)
[\[?\]\[?\]\[?\]](#)
[\[?\]\[?\]](#)
[\[?\]\[?\]\[?\]\[?\]\[?\]\[?\]\[?\]\[?\]](#)

11 क्योंकि वह हुक्म जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ, तेरे लिए बहुत मुश्किल नहीं और न वह दूर है। 12 वह आसमान पर तो है नहीं कि तू कहे कि 'आसमान पर कौन हमारी खातिर चढ़े, और उसको हमारे पास लाकर सुनाए ताकि हम उस पर 'अमल करें?' 13 और न वह समन्दर पार है कि तू कहे, 'समन्दर पर कौन हमारी खातिर जाए, और उसको हमारे पास ला कर सुनाए ताकि हम उस पर 'अमल करें?' 14 बल्कि वह कलाम तेरे बहुत नज़दीक है; वह तुम्हारे मुँह में और तुम्हारे दिल में है, ताकि तुम उस पर 'अमल करो। 15 देखो, मैंने आज के दिन ज़िन्दगी और भलाई को, और मौत और बुराई को तुम्हारे आगे रखखा है। 16 क्योंकि मैं आज के दिन तुमको हुक्म करता हूँ, कि तू खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखे और उसकी राहों पर चले, और उसके फ़रमान और आईन और अहकाम को माने ताकि तू ज़िन्दा रहे और बढ़े; और खुदावन्द तेरा खुदा उस मुल्क में तुझको बरकत बख़्से, जिस पर क़ब्ज़ा करने को तू वहाँ जा रहा है। 17 लेकिन अगर तेरा दिल फिर जाए और तू न सुने, बल्कि गुमराह होकर और मा'बूदों की परस्तिश और इबादत करने लगे; 18 तो आज के दिन मैं तुमको जता देता हूँ कि तुम ज़रूर फ़ना हो जाओगे, और उस मुल्क में जिस पर क़ब्ज़ा करने को तुम शरदन पार जा रहे हो तुम्हारी उम्र दराज़ न होगी। 19 मैं आज के दिन आसमान और ज़मीन को तुम्हारे बरखिलाफ़ गवाह बनाता हूँ, कि मैंने ज़िन्दगी

\* **30:4** 30:4 आसमानतले सब से दूर जगहों † **30:8** 30:8 हकूम

‡ 30:10 30:10 हव्म § 30:18 30:18 नदी



और मौत की और बरकत और ला'नत को तुम्हारे आगे रखवा है; इसलिए तुम ज़िन्दगी को इस्तिस्नार करो कि तुम भी ज़िन्दा रहो और तुम्हारी औलाद भी; <sup>20</sup> ताकि तू खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखे, और उसकी बात सुने और उसी से लिपटा रहे; क्योंकि वही तेरी ज़िन्दगी और तेरी उम्र की दराज़ी है, ताकि तू उस मुल्क में बसा रहे जिसको तेरे बाप — दादा अब्रहाम और इस्हाक और या'कूब को देने की क़सम खुदावन्द ने उनसे खाई थी।”

## 31

222222 22 22222222 22 2222222 22222

<sup>1</sup> और मूसा ने जा कर यह बातें सब इस्राईलियों को सुनाई, <sup>2</sup> और उनको कहा कि “मैं तो आज कि दिन एक सौ बीस बरस का हूँ, मैं अब चल फिर नहीं सकता; और खुदावन्द ने मुझसे कहा है कि तू इस यरदन पार नहीं जाएगा। <sup>3</sup> इसलिए खुदावन्द तेरा खुदा ही तेरे आगे — आगे पार जाएगा, और वही उन क्रौमों को तेरे आगे से फ़ना करेगा और तू उसका वारिस होगा; और जैसा खुदावन्द ने कहा है, यशू'अ तुम्हारे आगे — आगे पार जाएगा। <sup>4</sup> और खुदावन्द उनसे वही करेगा जो उसने अमोरियों के बादशाह सीहोन और 'ओज और उनके मुल्क से किया, कि उनको फ़ना कर डाला। <sup>5</sup> और खुदावन्द उनको तुमसे शिकस्त दिलाएगा, और तुम उनसे उन सब हुकमों के मुताबिक़ पेश आना जो मैंने तुमको दिए हैं। <sup>6</sup> तू मज़बूत हो जा और हौसला रख; मत डर और न उनसे खौफ़ खा, क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा खुद ही तेरे साथ जाता है; वह तुझसे दस्तबरदार नहीं होगा, और न तुमको छोड़ेगा।” <sup>7</sup> फिर मूसा ने यशू'अ को बुलाकर सब इस्राईलियों के सामने उससे कहा, “तू मज़बूत हो जा और हौसला रख; क्योंकि तू इस क्रौम के साथ उस मुल्क में जाएगा, जिसको खुदावन्द ने उनके बाप — दादा से क़सम खाकर देने को कहा था, और तू उनको उसका वारिस बनाएगा। <sup>8</sup> और खुदावन्द ही तेरे आगे — आगे चलेगा; वह तेरे साथ रहेगा, वह तुझ से न दस्तबरदार होगा, न तुझे छोड़ेगा; इसलिए तू खौफ़ न कर और बे — दिल न हो।”

222222 222222 22 222222 22 222222

<sup>9</sup> और मूसा ने इस शरी'अत को लिखकर उसे काहिनों के, जो बनी लावी और खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के उठाने वाले थे, और इस्राईल के सब बुज़ुर्गों के सुपद किया। <sup>10</sup> फिर मूसा ने उनको यह हुकम दिया, हर सात बरस के आखिर में छुटकारे के साल के मु'अय्यन वक़्त

पर झोपड़ियों के 'ईद में, <sup>11</sup> जब सब इस्राईली खुदावन्द तुम्हारे खुदा के सामने उस जगह आ कर हाज़िर हों जिसे वह खुद चुनेगा, तो तुम इस शरी'अत को पढ़कर सब इस्राईलियों को सुनाना। <sup>12</sup> तुम सारे लोगों को, या'नी मर्दों और 'औरतों और बच्चों और अपनी बस्तियों के मुसाफ़िरों को जमा' करना, ताकि वह सुनें और सीखें और खुदावन्द तुम्हारे खुदा का खौफ़ मानें और इस शरी'अत की सब बातों पर एहतियात रखकर 'अमल करें; <sup>13</sup> और उनके लड़के जिनको कुछ मा'लूम नहीं वह भी सुनें, और जब तक तुम उस मुल्क में जीते रहो जिस पर क़ब्ज़ा करने को तुम \*यरदन पार जाते हो, तब तक वह बराबर खुदावन्द तुम्हारे खुदा का खौफ़ मानना सीखें।”

22222222 22 22'22222222 22 2222'2222 22222

<sup>14</sup> फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, “देख, तेरे मरने के दिन आ पहुँचे। इसलिए तू यशू'अ को बुला ले और तुम दोनों खेमा — ए — इजितमा'अ में हाज़िर हो जाओ, ताकि मैं उसे हिदायत करूँ।” चुनाँचे मूसा और यशू'अ खाना होकर खेमा — ए — इजितमा'अ में हाज़िर हुए। <sup>15</sup> और खुदावन्द बादल के सुतून में होकर खेमे में नमूदार हुआ, और बादल का सुतून खेमे के दरवाज़े पर ठहर गया। <sup>16</sup> तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, “देख, तू अपने बाप — दादा के साथ †सो जाएगा; और यह लोग उठकर उस मुल्क के अजनबी मा'बूदों की पैरवी में, जिनके बीच वह जाकर रहेंगे ज़िनाकार हो जाएँगे और मुझको छोड़ देंगे, और उस 'अहद को जो मैंने उनके साथ बाँधा है तोड़ डालेंगे। <sup>17</sup> तब उस वक़्त मेरा क्रहर उन पर भड़केगा, और मैं उन को छोड़ दूँगा और उनसे अपना मुँह छिपा लूँगा; और वह निगल लिए जाएँगे और बहुत सी बलाएँ और मुसीबतें उन पर आएँगी, चुनाँचे वह उस दिन कहेंगे, 'क्या हम पर यह बलाएँ इसी वजह से नहीं आई कि हमारा खुदा हमारे बीच नहीं?’” <sup>18</sup> उस वक़्त उन सब बदियों की वजह से, जो और मा'बूदों की तरफ़ माइल होकर उन्होंने की होंगी मैं ज़रूर अपना मुँह छिपा लूँगा। <sup>19</sup> इसलिए तुम यह गीत अपने लिए लिख लो, और तुम उसे बनी — इस्राईल को सिखाना और उनको हिफ़ज़ करा देना, ताकि यह गीत बनी इस्राईल के खिलाफ़ मेरा गवाह रहे। <sup>20</sup> इसलिए कि जब मैं उनको उस मुल्क में, जिस की क़सम मैंने उनके बाप — दादा से खाई और जहाँ ‡दूध और शहद बहता है पहुँचा दूँगा, और वह खूब खा — खाकर मोटे हो जाएँगे; तब वह और मा'बूदों की तरफ़ फिर जाएँगे और उनकी इबादत

\* 31:13 31:13 नदी † 31:16 31:16 जैसे मर जाएगा ‡ 31:20 31:20 अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क में

करेंगे और मुझको हकीर जानेंगे और मेरे 'अहद को तोड़ डालेंगे। <sup>21</sup> और यूँ होगा कि जब बहुत सी बलाएँ और मुसीबतें उन पर आएँगी, तो ये गीत गवाह की तरह उन पर शहादत देगा; इसलिए कि इसे उनकी औलाद कभी नहीं भूलेगी, क्योंकि इस वक़्त भी उनको उस मुल्क में पहुँचाने से पहले जिसकी क़सम मैंने खाई है, मैं उनके खयाल को जिसमें वह हैं जानता हूँ।” <sup>22</sup> इसलिए मूसा ने उसी दिन इस गीत को लिख लिया और उसे बनी — इस्राईल को सिखाया। <sup>23</sup> और उसने नून के बेटे यशू'अ को हिदायत की और कहा, “मज़बूत हो जा, और हौसला रख; क्योंकि तू बनी — इस्राईल को उस मुल्क में ले जाएगा जिसकी क़सम मैंने उनसे खाई थी, और मैं तेरे साथ रहूँगा।” <sup>24</sup> और ऐसा हुआ कि जब मूसा इस शरी'अत की बातों को एक किताब में लिख चुका और वह ख़त्म हो गई, <sup>25</sup> तो मूसा ने लावियों से, जो खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को उठाया करते थे कहा, <sup>26</sup> “इस शरी'अत की किताब को लेकर खुदावन्द अपने खुदा के 'अहद के सन्दूक के पास रख दो, ताकि वह तुम्हारे बरखिलाफ़ गवाह रहे। <sup>27</sup> क्योंकि मैं तुम्हारी बगावत और गर्दनकशी को जानता हूँ। देखो, अभी तो मेरे जीते जी तुम खुदावन्द से बगावत करते रहे हो, तो मेरे मरने के बाद कितना ज्यादा न करोगे? <sup>28</sup> तुम अपने क़बीले के सब बुज़ुर्गों और 'उहदेदारों को मेरे पास जमा' करो, ताकि मैं यह बातें उनके कानों में डाल दूँ और आसमान और ज़मीन को उनके बरखिलाफ़ गवाह बनाऊँ। <sup>29</sup> क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरे मरने के बाद तुम अपने को बिगाड़ लोगे, और उस रास्ते से जिसका मैंने तुमको हुक्म दिया है फिर जाओगे; तब आखिरी दिनों में तुम पर आफ़त टूटेगी, क्योंकि तुम अपने कामों से खुदावन्द को गुस्सा दिलाने के लिए वह काम करोगे जो उसकी नज़र में बुरा है।”

???? ? ? ? ? ?

<sup>30</sup> इसलिए मूसा ने इस गीत की बातें इस्राईल की सारी जमा'अत को आखिर तक कह सुनाई।

### 32

<sup>1</sup> कान लगाओ, ऐ आसमानो, और मैं बोलूँगा; और ज़मीन मेरे मुँह की बातें सुने। <sup>2</sup> मेरी ता'लीम मेह की तरह बरसेगी, मेरी तक़रीर शबनम की तरह टपकेगी; जैसे नर्म घास पर फुआर पड़ती हो, और सब्ज़ी पर झड़ियाँ। <sup>3</sup> क्योंकि मैं खुदावन्द के नाम का इश्तिहार

दूँगा। तुम हमारे खुदा की ता'जीम करो। <sup>4</sup> “वह वही चट्टान है, उसकी सन'अत कामिल है; क्योंकि उसकी सब राहें इन्साफ़ की हैं, वह वफ़ादार खुदा, और बदी से मुबरा है, वह मुन्सिफ़ और बर — हक़ है। <sup>5</sup> \*यह लोग उसके साथ बुरी तरह से पेश आए, यह उसके फ़र्ज़न्द नहीं। यह उनका 'ऐब है, यह सब कजरौ और टेढ़ी नसल हैं। <sup>6</sup> क्या तुम ऐ बेवकूफ़ और कम'अक़ल लोगों, इस तरह खुदावन्द को बदला दोगे? क्या वह तुम्हारा बाप नहीं, जिसने तुमको ख़रीदा है? उस ही ने तुमको बनाया और क़याम बरखा। <sup>7</sup> क़दीम दिनों को याद करो, नसल दर नसल के बरसों पर ग़ौर करो; अपने बाप से पूछो, वह तुमको बताएगा; बुज़ुर्गों से सवाल करो, वह तुमसे बयान करेंगे। <sup>8</sup> जब हक़ त'आला ने क़ौमों को मीरास बाँटी, और बनी आदम को जुदा — जुदा किया, तो उसने क़ौमों की सरहदें, बनी इस्राईल के शुमार के मुताबिक़ ठहराई। <sup>9</sup> क्योंकि खुदावन्द का हिस्सा उसी के लोग हैं। या'कूब उसकी मीरास का हिस्सा है। <sup>10</sup> वह खुदावन्द को वीराने और सूने ख़तरनाक वीराने में मिला; खुदावन्द उसके चारों तरफ़ रहा, उसने उसकी ख़बर ली, और उसे अपनी आँख की पुतली की तरह रखवा। <sup>11</sup> जैसे 'उकाब अपने घोंसले को हिला हिलाकर अपने बच्चों पर मण्डलाता है, वैसे ही उसने अपने बाज़ूओं को फैलाया, और उनको लेकर अपने परों पर उठा लिया। <sup>12</sup> सिर्फ़ खुदावन्द ही ने उनकी रहबरी की, और उसके साथ कोई अजनबी मा'बूद न था। <sup>13</sup> उसने उसे ज़मीन की ऊँची — ऊँची जगहों पर सवार कराया, और उसने खेत की पैदावार खाई; उसने उसे चट्टान में से शहद, और मुश्किल जगह में से तेल चुसाया। <sup>14</sup> और गायों का मक्खन और भेड़ — बकरियों का दूध और बरों की चर्बी, और बसनी नसल के मेंढे और बकरे, और खालिस गेंहू का आटा भी; और तू अंगूर के खालिस रस की मय पिया करता था। <sup>15</sup> लेकिन \*यसरून मोटा हो कर लातें मारने लगा; तू मोटा हो कर सुस्त हो गया है, और तुझ पर चर्बी छा गई है; तब उसने खुदा को जिसने उसे बनाया छोड़ दिया, और अपनी नजात की चट्टान की हिक़ारत की। <sup>16</sup> उन्होंने अजनबी मा'बूदों के ज़रिए' उसे ग़ैरत, और मकरूहात से उसे गुस्सा दिलाया। <sup>17</sup> उन्होंने जिन्नात के लिए जो खुदा न थे, बल्कि ऐसे मा'बूदों के लिए जिनसे वह वाकिफ़ न थे, या'नी नये — नये मा'बूदों के लिए जो हाल ही में ज़ाहिर हुए थे, जिनसे उनके बाप दादा कभी डरे नहीं कुर्बानी की। <sup>18</sup> तू उस चट्टान से

\* 32:5 32:5 इस्राईली लोग † 32:6 32:6 खुदा ‡ 32:6 32:6 बनाया § 32:8 32:8 खुदा \* 32:15 32:15 यसरूनके मायने है, सीधे मन वाला शख्स, यह इस्राईल है देखें 33:5, यस'या ह 44:2

गाफ़िल हो गया, जिसने तुझे पैदा किया था; तू खुदा को भूल गया, जिसने तुझे पैदा किया। <sup>19</sup> “खुदावन्द ने यह देख कर उनसे नफ़रत की, क्योंकि उसके बेटों और बेटियों ने उसे गुस्सा दिलाया। <sup>20</sup> तब उसने कहा, 'मैं अपना मुँह उनसे छिपा लूँगा, और देखूँगा कि उनका अन्जाम कैसा होगा; क्योंकि वह बागी नसल और बेवफ़ा औलाद हैं। <sup>21</sup> उन्होंने उस चीज़ के ज़रिए' जो खुदा नहीं, मुझे ग़ैरत और अपनी बातिल बातों से मुझे गुस्सा दिलाया; इसलिए मैं भी उनके ज़रिए' से जो कोई उम्मत नहीं उनको ग़ैरत और एक नादान क्रौम के ज़रिए' से उनको गुस्सा दिलाऊँगा। <sup>22</sup> इसलिए कि मेरे गुस्से के मारे आग भड़क उठी है, जो पाताल की तह तक जलती जाएगी, और ज़मीन को उसकी पैदावार समेत भसम कर देगी, और पहाड़ों की बुनियादों में आग लगा देगी। <sup>23</sup> मैं उन पर आफ़तों का ढेर लगाऊँगा, और अपने तीरों को उन पर ख़त्म करूँगा। <sup>24</sup> वह भूक के मारे घुल जाएँगे, और शदीद हारत और सख़्त हलाकत का लुक़्मा हो जाएँगे; और मैं उन पर दरिन्दों के दाँत और ज़मीन पर के सरकने वाले कीड़ों का ज़हर छोड़ दूँगा। <sup>25</sup> बाहर वह तलवार से मरेंगे, और कोठरियों के अन्दर ख़ौफ़ से, जवान मर्द और कुँवारियों, दूध पीते बच्चे और पक्के बाल वाले सब यूँ ही हलाक होंगे। <sup>26</sup> मैंने कहा, मैं उनको दूर — दूर तितर — बितर करूँगा, और उनका तज़क़िरा नौ' — ए — बशर में से मिटा डालूँगा। <sup>27</sup> लेकिन मुझे दुश्मन की छेड़ छाड़ का अन्देश था, कि कहीं मुख़ालिफ़ उल्टा समझ कर, यूँ न कहने लगें, कि हमारे ही हाथ वाला हैं और यह सब खुदावन्द से नहीं हुआ।” <sup>28</sup> “वह एक ऐसी क्रौम हैं जो मसलहत से ख़ाली हो उनमें कुछ समझ नहीं। <sup>29</sup> काश वह 'अक़लमन्द होते कि इसको समझते, और अपनी 'आक़बत पर ग़ौर करते। <sup>30</sup> क्यूँ कर एक आदमी हज़ार का पीछा करता, और दो आदमी दस हज़ार को भगा देते, अगर उनकी चट्टान ही उनको बेच न देती, और खुदावन्द ही उनको हवाले न कर देता? <sup>31</sup> क्यूँकि उनकी चट्टान ऐसी नहीं जैसी हमारी चट्टान है, चाहे हमारे दुश्मन ही क्यूँ न मुन्सिफ़ हों। <sup>32</sup> क्यूँकि उनकी ताक़ सदूम की ताकों में से और 'अमूरा के खेतों की है; उनके अंगूर हलाहल के बने हुए हैं, और उनके गुच्छे कड़वे हैं। <sup>33</sup> उनकी मय अज़दहाओं का बिस, और काले नागों का ज़हर — ए — क़ातिल है <sup>34</sup> क्या यह मेरे ख़ज़ानों में सर — ब — मुहर होकर भरा नहीं पड़ा है? <sup>35</sup> उस वक़्त जब उनके पाँव फिसलें, तो इन्तक़ाम लेना और बदला देना मेरा काम होगा: क्यूँकि उनकी आफ़त

का दिन नज़दीक है, और जो हादिसे उन पर गुज़रने वाले हैं वह जल्द आएँगे। <sup>36</sup> क्यूँकि खुदावन्द अपने लोगों का इन्साफ़ करेगा, और अपने बन्दों पर तरस खाएगा; जब वह देखेगा कि उनकी कुव्वत जाती रही, और कोई भी, न कैदी और न आज़ाद बाक़ी बचा। <sup>37</sup> और वह कहेगा, उन के मा'बूद कहाँ हैं? वह चट्टान कहाँ, जिस पर उनका भरोसा था; <sup>38</sup> जो उनके कुर्बानियों की चर्बी खाते, और उनके तपावन की मय पीते थे? वही उठ कर तुम्हारी मदद करें, वही तुम्हारी पनाह हों। <sup>39</sup> इसलिए अब तुम देख लो, कि मैं ही वह हूँ। और मेरे साथ कोई मा'बूद नहीं। मैं ही मार डालता और मैं ही जिलाता हूँ। मैं ही ज़ख्मी करता और मैं ही चंगा करता हूँ, और कोई नहीं जो मेरे हाथ से छुड़ाए। <sup>40</sup> क्यूँकि मैं अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर कहता हूँ, कि चूँकि मैं हमेशा हमेशा ज़िन्दा हूँ, <sup>41</sup> इसलिए अगर मैं अपनी झलकती तलवार को, तेज़ करूँ, और 'अदालत को अपने हाथ में ले लूँ, तो अपने मुख़ालिफ़ों से इन्तक़ाम लूँगा, और अपने कीना रखने वालों को बदला दूँगा। <sup>42</sup> मैं अपने तीरों को खून पिला — पिलाकर मस्त कर दूँगा, और मेरी तलवार गोशत खाएगी — वह खून मक्तूलों और गुलामों का, और वह गोशत दुश्मन के सरदारों के सिर का होगा। <sup>43</sup> ऐ क्रौमों, उसके लोगों के साथ खुशी मनाओ क्यूँकि वह अपने बन्दों के खून का बदला लेगा, और अपने मुख़ालिफ़ों को बदला देगा, और अपने मुल्क और लोगों के लिए कफ़़ारा देगा।” <sup>44</sup> तब मूसा और नून के बेटे होसे'अ ने आ कर इस गीत की सारी बातें लोगों को कह सुनाई। <sup>45</sup> और जब मूसा यह सब बातें सब इस्राईलियों को सुना चुका, <sup>46</sup> तो उसने उनसे कहा, “जो बातें मैंने तुमसे आज के दिन बयान की हैं, उन सब से तुम दिल लगाना और अपने लड़कों को हुक्म देना कि वह एहतियात रखकर इस शरी'अत की सब बातों पर 'अमल करें। <sup>47</sup> क्यूँकि यह तुम्हारे लिए कोई बे फ़ायदा बात नहीं, बल्कि यह तुम्हारी ज़िन्दगानी है; और इसी से उस मुल्क में, जहाँ तुम थ़रदन पार जा रहे हो कि उस पर कब्ज़ा करो, तुम्हारी 'उम्र दराज़ होगी।”

22222 22 2222 22 22222 2222

<sup>48</sup> और उसी दिन खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, <sup>49</sup> “तू इस कोह — ए — 'अबारीम पर चढ़ कर नबू की चोटी को जा, जो यरीहू के सामने मुल्क — ए — मोआब में है; और कनान के मुल्क की जिसे मैं मीरास के तौर पर बनी — इस्राईल को देता हूँ देख ले। <sup>50</sup> और उसी पहाड़ पर

जहाँ तू जाए वफ़ात पाकर अपने लोगों में शामिल हो, जैसे तेरा भाई हारून होर के पहाड़ पर मरा और अपने लोगों में जा मिला। <sup>51</sup> इसलिए कि तुम दोनों ने बनी — इस्राईल के बीच सीन के जंगल के क्रादिस में मरीबा के चश्मे पर मेरा गुनाह किया, क्योंकि तुमने बनी — इस्राईल के बीच मेरी बड़ाई न की। <sup>52</sup> इसलिए तू उस मुल्क को अपने आगे देख लेगा, लेकिन तू वहाँ उस मुल्क में जो मैं बनी — इस्राईल को देता हूँ जाने न पाएगा।”

### 33

22222 22 222222 22 22'2-2-222 2222

<sup>1</sup> और मर्द — ए — खुदा मूसा ने जो दु'आ — ए — खैर देकर अपनी वफ़ात से पहले बनी — इस्राईल को बरकत दी, वह यह है। <sup>2</sup> और उसने कहा: “खुदावन्द सीना से आया और श'ईर से उन पर जाहिर हुआ, वह कोह — ए — फ़ारान से जलवागर हुआ, और लाखों फ़रिश्तों में से आया; उसके दहने हाथ पर उनके लिए आतिशी शरी'अत थी। <sup>3</sup> वह बेशक क्रौमों से मुहब्बत रखता है, उसके सब मुक़द्दस लोग तेरे हाथ में हैं, और वह तेरे क्रदमों में बैठे, एक एक तेरी बातों से मुस्तफ़ीज़ होगा। <sup>4</sup> मूसा ने हमको शरी'अत और या'कूब की जमा'अत के लिए मीरास दी। <sup>5</sup> और वह उस वक़्त यसूरून में बादशाह था, जब क्रौम के सरदार इकट्ठे और इस्राईल के कबीले जमा' हुए। <sup>6</sup> “रूबिन ज़िन्दा रहे और मर न जाए, तोभी उसके आदमी थोड़े ही हों।” <sup>7</sup> और यहूदाह के लिए यह है जो मूसा ने कहा, “ऐ खुदावन्द, तू यहूदाह की सुन, और उसे उसके लोगों के पास पहुँचा; वह अपने लिए आप अपने हाथों से लड़ा, और तू ही उसके दुश्मनों के मुक़ाबले में उसका मददगार होगा।” <sup>8</sup> और लावी के हक़ में उसने कहा, तेरे तुम्मीन और ऊरीम उस मर्द — ए — खुदा के पास हैं जिसे तूने मस्सा पर आजमा लिया, और जिसके साथ मरीबा के चश्मे पर तेरा तनाज़ा' हुआ; <sup>9</sup> जिसने अपने माँ बाप के बारे में कहा, कि मैंने इन को देखा नहीं; और न उसने अपने भाइयों को अपना माना, और न अपने बेटों को पहचाना। क्योंकि उन्होंने तेरे कलाम की एहतियात की और वह तेरे 'अहद को मानते हैं। <sup>10</sup> वह या'कूब को तेरे हुक्मों और इस्राईल को तेरी शरी'अत सिखाएँगे। वह तेरे आगे खुशबू और तेरे मज़बह पर पूरी सोख्तनी कुर्बानी रखेंगे। <sup>11</sup> ऐ खुदावन्द, तू उसके माल में बरकत दे और उसके हाथों की खिदमत को कुबूल कर; जो उसके खिलाफ़ उठे उनकी कमर तोड़ दे, और उनकी कमर भी

जिनको उससे 'अदावत है ताकि वह फिर न उठे। <sup>12</sup> और बिनयमीन के हक़ में उस ने कहा, “खुदावन्द का प्यारा, सलामती के साथ उसके पास रहेगा; वह सारे दिन उसे ढाँके रहता है, और वह उसके कन्धों के बीच सुकूनत करता है।” <sup>13</sup> और यूसुफ़ के हक़ में उसने कहा, “उसकी ज़मीन खुदावन्द की तरफ़ से मुबारक हो, आसमान की बेशक़ीमत अशया और शबनम और वह गहरा पानी जो नीचे है, <sup>14</sup> और सूरज के पकाए हुए बेशक़ीमत फल, और \*चाँद की उगाई हुई बेशक़ीमती चीज़ें। <sup>15</sup> और क़दीम पहाड़ों की बेशक़ीमत चीज़ें, और अबदी पहाड़ियों की बेशक़ीमत चीज़ें। <sup>16</sup> और ज़मीन और उसकी मा'मूरी की बेशक़ीमती चीज़ें और उसकी खुशनूदी जो झाड़ी में रहता था, इन सबके ऐतबार से यूसुफ़ के सिर पर या'नी उसी के सिर के चाँद पर, जो अपने भाइयों से जुदा रहा बरकत नाज़िल हो। <sup>17</sup> उसके बैल के पहलौटे की सी उसकी शौकत है; और उसके सींग जंगली साँड के से हैं; उन्हीं से वह सब क्रौमों को, बल्कि ज़मीन की इन्तिहा के लोगों को ढकेलेगा; वह इफ़राईम के लाखों लाख, और मनस्सी के हज़ारों हज़ार हैं।” <sup>18</sup> “और ज़बूलून के बारे में उसने कहा, ऐ ज़बूलून, तू अपने बाहर जाते वक़्त और ऐ इश्कार, तू अपने खेमों में खुश रह। <sup>19</sup> वह लोगों को पहाड़ों पर बुलाएँगे, और वहाँ सदाक़त की कुर्बानियाँ पेश करेंगे; क्योंकि वह समन्दरों के फ़ैज़ और रेत के छिपे हुए खज़ानों से बहरावर होंगे।” <sup>20</sup> और जद्द के हक़ में उसने कहा, “जो कोई जद्द को बढ़ाए वह मुबारक हो। वह शेरनी की तरह रहता है, और बाज़ू बल्कि सिर के चाँद तक को फाड़ डालता है <sup>21</sup> और उसने पहले हिस्से को अपने लिए चुन लिया, क्योंकि शरा' देने वाले का हिस्सा वहाँ अलग किया हुआ था; और उसने लोगों के सरदारों के साथ आकर खुदावन्द के इन्साफ़ को और उसके हुक्मों को जो इस्राईल के लिए था पूरा किया।” <sup>22</sup> “और दान के हक़ में उसने कहा, दान उस शेर — ए — बबर का बच्चा है जो बसन से कूद कर आता है।” <sup>23</sup> और नफ़ताली के हक़ में उसने कहा, “ऐ नफ़ताली, जो लुत्फ़ — ओ — करम से आसूदा, और खुदावन्द की बरकत से मा'मूर है; तू पश्चिम और दख्खन का मालिक हो।” <sup>24</sup> और आशर के हक़ में उसने कहा, आशर आस — औलाद से मालामाल हो; वह अपने भाइयों का मक्बूल हो और अपना पाँव तेल में डुबोए। <sup>25</sup> तेरे बेन्डे लोहे और पीतल के होंगे, और जैसे तेरे दिन वैसी ही तेरी कुव्वत हो। <sup>26</sup> “ऐ यसूरून, खुदा की तरह और कोई नहीं, जो तेरी मदद के लिए आसमान पर और अपने जाह — ओ —



जलाल में आसमानों पर सवार है। <sup>27</sup> अबदी खुदा तेरी सुकूनतगाह है और नीचे दाइमी बाज़ू है, उसने इनीम को तेरे सामने से निकाल दिया और कहा, उनको हलाक कर दे। <sup>28</sup> और इस्राईल सलामती के साथ †या'कूब का सोता, अकेला अनाज और मय के मुल्क में बसा हुआ है; बल्कि आसमान से उस पर ओस पड़ती रहती है <sup>29</sup> मुबारक है तू, ऐ इस्राईल; तू खुदावन्द की बचाई हुई क्रौम है, इसलिए कौन तेरी तरह है? वही तेरी मदद की सिपर, और तेरे जाह — ओ — जलाल की तलवार है। तेरे दुश्मन तेरे मुती' होंगे और तू उन के ‡ऊँचे मक्रामों को पस्त करेगा।”

## 34

???? ?? ???

<sup>1</sup> और मूसा मोआब के मैदानों से कोह ए — नबू के ऊपर पिसगा की चोटी पर, जो यरीहू के सामने है चढ़ गया; और खुदावन्द ने जिल'आद का सारा मुल्क दान तक, और नफ़ताली का सारा मुल्क, <sup>2</sup> और इफ़राईम और मनस्सी का मुल्क, और यहूदाह का सारा मुल्क पिछले समन्दर तक, <sup>3</sup> और दख्खन का मुल्क, और वादी — ए — यरीहू जो खुरमों का शहर है उसकी वादी का मैदान जुगार तक उसको दिखाया। <sup>4</sup> और खुदावन्द ने उससे कहा, “यही वह मुल्क है, जिसके बारे में मैंने अब्रहाम और इस्हाक़ और या'कूब से क़सम खाकर कहा था, कि इसे मैं तुम्हारी नसल को दूँगा। इसलिए मैंने ऐसा किया कि तू इसे अपनी आँखों से देख ले, लेकिन तू उस पार वहाँ जाने न पाएगा।” <sup>5</sup> तब खुदावन्द के बन्दे मूसा ने खुदावन्द के कहे के मुवाफ़िक़, वही मोआब के मुल्क में वफ़ात पाई, <sup>6</sup> और उसने उसे मोआब की एक वादी में बैत फ़गूर के सामने दफ़न किया; लेकिन आज तक किसी आदमी को उसकी क़बर मा'लूम नहीं। <sup>7</sup> और मूसा अपनी वफ़ात के वक़्त एक सौ बीस बरस का था, और न तो उसकी आँख धुंधलाने पाई और न उसकी अपनी कुव्वत कम हुई। <sup>8</sup> और बनी इस्राईल मूसा के लिए मोआब के मैदानों में तीस दिन तक रोते रहे; फिर मूसा के लिए मातम करने और रोने — पीटने के दिन ख़त्म हुए। <sup>9</sup> और नून का बेटा यशू'अ 'अक़्लमन्दी की रूह से मा'मूर था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रखे थे; और बनी — इस्राईल उसकी बात मानते रहे, और जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था उन्होंने वैसा ही किया। <sup>10</sup> और उस वक़्त से अब तक बनी — इस्राईल में कोई नबी मूसा की तरह, जिससे खुदावन्द ने आमने — सामने बातें

की नहीं उठा। <sup>11</sup> और उसको खुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस्र में फिर'औन और उसके सब खादिमों और उसके सारे मुल्क के सामने, सब निशान और 'अजीब कामों के दिखाने को भेजा था। <sup>12</sup> यूँ मूसा ने सब इस्राईलियों के सामने ताक़तवर हाथ और बड़ी हैबत के काम कर दिखाए।

† 33:28 33:28 याकूब का चश्मा    ‡ 33:29 33:29 उनके पीठ

## यशोअ

यशोअ की किताब अपने मुसन्निफ़ के नाम को वाज़ेह

नहीं करती — इस के अलावा यशोअ बिन नून मूसा का जानशीन पुरे इस्राईल का रहनुमा उस ने इस किताब में बहुत कुछ लिखा इस किताब के आखरी हिस्से को कम अज़ कम एक और शख्स नेने यशोअ की मौत के बाद लिखा यह भी मुमकिन है कि कई एक हिस्से मदवन किए गए हों या यशोअ के मरने के बाद उन्हें तालीफ़ व तरतीब दिए गए हों — इस किताब में मूसा की मौत से लेकर वायदा किया हुआ मुल्क पर फ़तेह पाने तक के सारे वाकियात को शामिल किया गया है जो यशोअ की रहनुमाई के मातहत वुकूअ में आये थे।

इस के तसनीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 1405 - 1385

क्रब्ल मसीह है।

किताब की असल इबारत गालिबन मुमकिन तौर से मुल्क — ए — कनान से आगाज़ किया गया जहाँ यशोअ फ़तेह वाके' हुई।

यशोअ की किताब बनी इस्राईल के लिए और

मुस्तक़बिल के तमाम बाइबिल के कारईन के लिये लिखी गई।

यशोअ की किताब फौजी मुहीम में शरीक होने के

लिए एक आम जायज़ा को पेश करती है की उन इलाकों पर फ़तेह पायें जिन्हें देने के लिए खुदा ने वायदा किया था — मिस्र से खुरुज करने और चालीस साल जंगल में भटकने के बाद नए तौर से बसाई गई कौम अब तवाज़ुन काइम किए हुई थी की वादा किए हुए मुल्क में दाखिल हों, वहाँ बसे हुए लोगों पर फ़तेह पायेनौर इलाके पर क़ब्ज़ा कर लें — यशोअ की किताब यह बताने के लिए आगे बढ़ती है कि किस तरह यह चुने हुए लोग अहद के मातहत रहकर वायदा किए हुए मुल्क को मुस्तक़बिल की बुन्याद पर कायम किया — इस किताब के अन्दर अहद के जामिनों के लिए यद्दे की वफ़ादारी पाई जाती है मतलब क़बीलों के सरदारों बुज़ुर्गान — ए — इस्राईल के साथ जिन्हें सीना के इलाके में दिया गया था — यह नविश्ता इल्हाम देने और खुदा के लोगों की रहनुमाई के लिए है कि अहद और इतिहाद को कायम

रखे और आने वाली पीढ़ी के लिए एक ऊंचा मज़हबी नमूना पेश करे।

फ़तेह

बैरूनी खाका

1. वादा किए हुए मुल्क में दाखिला — 1:1-5:12

2. मुल्क पर फ़तेह — 5:13-12:24

3. मुल्क की तक़सीम — 13:1-21:45

4. क़बीलों का इतिहाद और खुदावन्द के लिए वफ़ादारी — 22:1-24:33

1 और खुदावन्द के बन्दे मूसा की वफ़ात के बाद ऐसा

हुआ कि खुदावन्द ने उसके खादिम नून के बेटे यशू'अ से कहा, <sup>2</sup>“मेरा बन्दा मूसा मर गया है इसलिए अब तू उठ और इन सब लोगों को साथ लेकर इस \*यरदन के पार उस मुल्क में जा जिसे मैं उनको या'नी, बनी इस्राईल को देता हूँ। <sup>3</sup>जिस — जिस जगह तुम्हारे पाँव का तलुवा टिके उसको, जैसा मैंने मूसा से कहा, मैंने तुमको दिया है। <sup>4</sup>वीराने और उस लुबनान से लेकर बड़े दरिया — ए — फ़रात तक हित्तियों का सारा मुल्क और पश्चिम की तरफ़ बड़े समन्दर तक तुम्हारी हद होगी। <sup>5</sup>तेरी ज़िन्दगी भर कोई शख्स तेरे सामने खड़ा न रह सकेगा; जैसे मैं मूसा के साथ था वैसे ही तेरे साथ रहूँगा मैं न तुझ से अलग हूँगा और न तुझे छोड़ूँगा। <sup>6</sup>इसलिए मज़बूत हो जा और हौसला रख, क्योंकि तू इस क़ौम को उस मुल्क का वारिस करायेगा जिसे मैंने उनको देने की क़सम उनके बाप दादा से खाई। <sup>7</sup>तू सिर्फ़ मज़बूत और निहायत दिलेर हो जा कि एहतियात रख कर उस सारी शरी'अत पर 'अमल करे जिसका हुक्म मेरे बन्दे मूसा ने तुझ को दिया; उस से न दहिने मुड़ना न बायें ताकि जहाँ कहीं तू जाये तुझे खूब कामयाबी हासिल हो। <sup>8</sup>शरी'अत की यह किताब तेरे मुँह से न हटे, बल्कि तुझे दिन और रात इसी का ध्यान हो ताकि जो कुछ उस में लिखा है उस सब पर तू एहतियात करके 'अमल कर सके; क्योंकि तब ही तुझे कामयाबी की राह नसीब होगी और तू खूब कामयाब होगा। <sup>9</sup>क्या मैंने तुझको हुक्म नहीं दिया? इसलिए मज़बूत हो जा और हौसला रख; ख़ौफ़ न खा और बेदिल न हो, क्योंकि खुदावन्द तेरा खुदा जहाँ तू जाए तेरे साथ रहेगा।”

यशोअ की किताब फौजी मुहीम में शरीक होने के

\* 1:2 1:2 यरदन नदी, देखें 1:11; 2:7; 2:23; 3:8 † 1:4 1:4 बहीरा — ए — रोम ‡ 1:8 1:8 1: शरीयत की किताब में लिखी हुई बातें

10 तब यशू'अ ने लोगों के मनसबदारों को हुक्म दिया कि। 11 तुम लश्कर के बीच से होकर गुज़रो और लोगों को यह हुक्म दो कि तुम अपने अपने लिए सफ़र का सामान तैयार कर लो क्योंकि तीन दिन के अन्दर तुम को इस यरदन के पार होकर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने को जाना है जिसे खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुमको देता है ताकि तुम उसके मालिक हो जाओ। 12 और बनी रुबिन और बनी जद और मनस्सी के आधे क़बीले से यशू'अ ने यह कहा कि। 13 उस बात को जिसका हुक्म खुदावन्द के बन्दे मूसा ने तुमको दिया याद रखना कि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुमको आराम बख़्शता है और वह यह मुल्क तुमको देगा। 14 तुम्हारी बीवियां और तुम्हारे बाल बच्चे और चौपाये इसी मुल्क में जिसे मूसा ने यरदन के इस पार तुमको दिया है रहें, लेकिन तुम सब जितने बहादुर और सूरमा हो हथियार लगाए हुए अपने भाइयों के आगे आगे पार जाओ और उनकी मदद करो। 15 जब तक खुदावन्द तुम्हारे भाइयों को तुम्हारी तरह आराम न बख़्शे और वह उस मुल्क पर जिसे खुदावन्द तुम्हारा खुदा उनको देता है क़ब्ज़ा न कर लें। बाद में तुम अपनी मिल्लियत के मुल्क में लौटना जिसे खुदावन्द के बन्दे मूसा ने यरदन के इस पार पूरब की तरफ़ तुम को दिया है और उसके मालिक होना। 16 और उन्होंने यशू'अ को जवाब दिया कि जिस जिस बात का तूने हम को हुक्म दिया है हम वह सब करेंगे, और जहाँ जहाँ तू हमको भेजे वहाँ हम जाएँगे। 17 जैसे हम सब उमूर में मूसा की बात सुनते थे वैसे ही तेरी सुनेंगे; सिर्फ़ इतना हो कि खुदावन्द तेरा खुदा जिस तरह मूसा के साथ रहता था तेरे साथ भी रहे। 18 जो कोई तेरे हुक्म की मुखालिफ़त करे और सब मु'आमिलों में जिनकी तू ताकीद करे तेरी बात न माने वह जान से मारा जाए। तू सिर्फ़ मज़बूत हो जा और हौसला रख।

## 2

????? ?? ????????? ?? ??????

1 तब नून के बेटे यशू'अ ने शिस्तीम से दो आदमियों को चुपके से जासूस के तौर पर भेजा और उन से कहा, कि जा कर उस मुल्क को और\* यरीहू को देखो भालो। चुनाँचे वह खाना हुआ और एक कस्बी के घर में जिसका नाम राहब था आए और वहीं सोए। 2 और यरीहू के बादशाह को ख़बर मिली कि देख आज की रात बनी इस्राईल में से कुछ आदमी इस मुल्क की जासूसी करने को यहाँ आए हैं। 3 और यरीहू के बादशाह ने राहब को

कहला भेजा कि उन लोगों को जो तेरे पास आये और तेरे घर में दाख़िल हुए हैं निकाल ला इस लिए कि वह इस सारे मुल्क की जासूसी करने को आए हैं। 4 तब उस 'औरत ने उन दोनों आदमियों को लेकर और उनको छिपा कर यूँ कह दिया कि वह आदमी मेरे पास आए तो थे लेकिन मुझे मा'लूम न हुआ कि वह कहाँ के थे। 5 और फ़ाटक बंद होने के वक़्त के करीब जब अँधेरा हो गया, वह आदमी चल दिए और मैं नहीं जानती हूँ कि वह कहाँ गये। इसलिए जल्द उनका पीछा करो क्योंकि तुम ज़रूर उनको पा लोगे। 6 लेकिन उसने उनको अपनी छत पर चढ़ा कर सन की लकड़ियों के नीचे जो छत पर तरतीब से धरी थीं छिपा दिया था। 7 और यह लोग यरदन के रास्ते पर पाँव के निशानों तक उनके पीछे गये और जूँही उनका पीछा करने वाले फ़ाटक से निकले उन्होंने फ़ाटक बंद कर लिया। 8 तब राहब छत पर उन आदमियों के लेट जाने से पहले उन के पास गई 9 और उन से यूँ कहने लगी कि मुझे यकीन है कि खुदावन्द ने यह मुल्क तुमको दिया है और तुम्हारा रौ'ब हम लोगों पर छा गया है और इस मुल्क के सब बाशिन्दे तुम्हारे आगे डरे जा रहे हैं। 10 क्योंकि हम ने सुन लिया है कि जब तुम मिस्र से निकले तो खुदावन्द ने तुम्हारे आगे बहर — ए — कुलज़ुम के पानी को सुखा दिया, और तुम ने अमूरियों के दोनों बादशाहों सीहोन और 'ओज़ से जो यरदन के उस पार थे और जिनको तुमने बिल्कुल हलाक कर डाला क्या क्या किया। 11 यह सब कुछ सुनते ही हमारे दिल पिघल गये और तुम्हारी वजह से फिर किसी शख्स में जान बाक़ी न रही क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा ही ऊपर आसमान का और नीचे ज़मीन का खुदा है। 12 इसलिए अब मैं तुम्हारी मिन्नत करती हूँ कि मुझ से खुदावन्द की क़सम खाओ कि चूँकि मैंने तुम पर मेहरबानी की है तुम भी मेरे बाप के घराने पर मेहरबानी करोगे और मुझे कोई सच्चा निशान दो; 13 कि तुम मेरे बाप और माँ और भाइयों और बहनों को और जो कुछ उनका है सबको सलामत बचा लोगे और हमारी जानों को मौत से महफूज़ रखोगे। 14 उन आदमियों ने उस से कहा कि हमारी जान तुम्हारी जान की ज़िम्मेदार होगी बशर्ते कि तुम हमारे इस काम का ज़िक्र न कर दो और ऐसा होगा कि जब खुदावन्द इस मुल्क को हमारे क़ब्ज़े में कर देगा तो हम तेरे साथ मेहरबानी और वफ़ादारी से पेश आयेंगे। 15 तब उस 'औरत ने उनको खिड़की के रास्ते रस्सी से नीचे उतार दिया क्योंकि उस का घर शहर की दीवार पर बना था और वह दीवार पर रहती थी। 16 और उस ने उस से कहा कि पहाड़ को चल दो ऐसा न हो कि

\* 2:1 2:1 शहरजोड़ें, ऐसे ही 6:1 में † 2:5 2:5 शहर जोड़ें, ऐसे ही 2:7 और 7:5 में — उनके शहर के फ़ाटक, 8:29; 20:4

पीछा करने वाले तुम को मिल जायें; और तीन दिन तक वहीं छिपे रहना जब तक पीछा करने वाले लौट न आयें, इस के बाद अपना रास्ता लेना। <sup>17</sup> तब उन आदमियों ने उस से कहा कि हम तो उस क्रसम की तरफ़ से जो तूने हम को खिलाई है बे इलज़ाम रहेंगे। <sup>18</sup> इसलिए देख! जब हम इस मुल्क में आँएँ तो तू सुख रंग के सूत की इस डोरी को उस खिड़की में जिससे तूने हम को नीचे उतारा है बांध देना; और अपने बाप और माँ और भाईयों बल्कि अपने बाप के सारे घराने को अपने पास घर में जमा' कर रखना। <sup>19</sup> फिर जो कोई तेरे घर के दरवाज़ों से निकल कर गली में जाये, उस का खून उसी के सर पर होगा और हम बे गुनाह ठहरेंगे; और जो कोई तेरे साथ घर में होगा उस पर अगर किसी का हाथ चले, तो उसका खून हमारे सर पर होगा। <sup>20</sup> और अगर तू हमारे इस काम का ज़िक्र कर दे, तो हम उस क्रसम की तरफ़ से जो तूने हम को खिलाई है बेइलज़ाम हो जाएँगे। <sup>21</sup> उसने कहा, “जैसा तुम कहते हो वैसा ही हो।” इसलिए उसने उनको खाना किया और वह चल दिए; तब उसने सुख रंग की वह डोरी खिड़की में बांध दी। <sup>22</sup> और वह जाकर पहाड़ पर पहुँचे और तीन दिन तक वहीं ठहरे रहे, जब तक उनका पीछा करने वाले लौट न आए; और उन पीछा करने वालों ने उनको सारे रास्ते ढूँढा पर कहीं न पाया। <sup>23</sup> फिर यह दोनों आदमी लौटे और पहाड़ से उतर कर पार गये, और नून के बेटे यशु'अ के पास जाकर सब कुछ जो उन पर गुज़रा था उसे बताया। <sup>24</sup> और उन्होंने यशु'अ से कहा “यक्रीनन खुदावन्द ने वह सारा मुल्क हमारे कब्जे में कर दिया है क्योंकि उस मुल्क के सब बाशिंदे हमारे आगे डरे जा रहे हैं।”

## 3

???????????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 तब यशू'अ सुबह सवेरे उठा, और वह सब बनी इसराईल शिक्तीम से खाना हो कर यरदन पर आए, और पार उतरने से पहले वहीं टिके। 2 और तीन दिन के बाद मनसबदार लश्कर के बीच होकर गुजरे। 3 और उन्होंने लोगों को हुक्म दिया कि जब तुम खुदावन्द अपने खुदा के अहद के सन्दूक को देखो और काहिनों और लावी उसे उठाये हुए हों, तो तुम अपनी जगह से उठ कर उसके पीछे पीछे चलना। 4 लेकिन तुम्हारे और उस के बीच पैमाइश करके करीब दो हज़ार \*हाथ का फ़ासला रहे, उसके नज़दीक न जाना; ताकि तुम को मा'लूम हो कि किस रास्ते तुमको चलना है, क्यूँकि तुम अब तक इस राह से कभी नहीं गुज़रे। 5 और यशू'अ ने

लोगों से कहा, “तुम अपने आप को पाक करो क्योंकि कल के दिन खुदावन्द तुम्हारे बीच 'अजीब — ओ — गरीब काम करेगा।” <sup>6</sup> फिर यशू'अ ने काहिनों से कहा कि तुम 'अहद के सन्दूक को ले कर लोगों के आगे आगे पार उतरो। चुनाँचे वह 'अहद के सन्दूक को लेकर लोगों के आगे आगे चले। <sup>7</sup> और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा, “आज के दिन से मैं तुझे सब इस्राईलियों के सामने सरफ़ाराज़ करना शुरू” करूँगा, ताकि वह जान लें कि जैसे मैं मूसा के साथ रहा वैसे ही तेरे साथ रहूँगा। <sup>8</sup> और तू उन काहिनों को जो 'अहद के सन्दूक को उठाये यह हुक्म देना, कि जब तुम यरदन के पानी के किनारे पहुँचो तो यरदन में खड़े रहना।” <sup>9</sup> और यशू'अ ने बनी इस्राईल से कहा कि पास आकर खुदावन्द अपने खुदा की बातें सुनो। <sup>10</sup> और यशू'अ कहने लगा कि इस से तुम जान लोगे कि ज़िन्दा खुदा, तुम्हारे बीच है, और वही ज़रूर कना'नियों और हित्तियों और हव्वियों, और फ़रिज़ियों और जरजासियों, और अमोरियों और यबूसियों को तुम्हारे आगे से दफ़ा करेगा। <sup>11</sup> देखो, सारी ज़मीन के मालिक के 'अहद का सन्दूक तुम्हारे आगे आगे यरदन में जाने को है। <sup>12</sup> इसलिए अब तुम हर कबीला पीछे एक आदमी के हिसाब से बारह आदमी इस्राईल के कबीलों में से चुन लो। <sup>13</sup> और जब यरदन के पानी में उन काहिनों के पाँव के तलवे टिक जाएँगे, जो खुदावन्द या'नी सारी दुनिया के मालिक के 'अहद का सन्दूक उठाते हैं तो यरदन का पानी या'नी वह पानी जो उपर से बहता हुआ नीचे आता है थम जायेगा, और उस का ढेर लग जाएगा। <sup>14</sup> और जब लोगों ने यरदन के पार जाने को अपने खेमों से खानगी की और वह काहिन जो 'अहद का सन्दूक उठाये हुए थे, लोगों के आगे आगे हो लिए। <sup>15</sup> और जब 'अहद के सन्दूक के उठाने वाले यरदन पर पहुँचे और उन काहिनों के पाँव जो सन्दूक को उठाये हुए थे, किनारे के पानी में डूब गए क्योंकि फ़सल के तमाम दिनों में यरदन का पानी चारों तरफ़ अपने किनारों से ऊपर चढ़कर बहा करता है, <sup>16</sup> तो जो पानी ऊपर से आता था वह खूब दूर आदम के पास जो ज़रतान के बराबर एक शहर है, रुक कर एक ढेर हो गया; और वह पानी जो मैदान के दरिया या'नी दरिया — ए — शोर की तरफ़ बह कर गया था बिल्कुल अलग हो गया और लोग 'ऐन यरीहू के मुक्काबिल पार उतरे। <sup>17</sup> और वह काहिन जो खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक उठाये हुए थे यरदन के बीच में सूखी ज़मीन पर खड़े रहे; और सब इस्राईली शुष्क ज़मीन पर हो कर गज़रे, यहाँ तक कि सारी कौम साफ़

\* **3:4** 3:4 आधे मील के करीब या 1 किलोमीटर



यरदन के पार हो गयी।

## 4

□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□

1 और जब सारी कौम यरदन के पार हो गई तो खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि। 2 कबीला पीछे एक आदमी के हिसाब से बारह आदमी लोगों में से चुन लो। 3 और उन को हुक्म दो कि तुम यरदन के बीच में से जहाँ काहिनों के पाँव जमे हुए थे बारह पत्थर लो और उनको अपने साथ ले जा कर उस मंज़िल पर जहाँ तुम आज की रात टिकोगे रख देना। 4 तब यशू'अ ने उन बारह आदमियों को जिनको उस ने बनी इस्राईल में से कबीला पीछे एक आदमी के हिसाब से तैयार कर रखा था बुलाया। 5 और यशू'अ ने उन से कहा, “तुम खुदावन्द अपने खुदा के 'अहद के सन्दूक के आगे आगे यरदन के बीच में जाओ, और तुम में से हर शख्स बनी इस्राईल के कबीलों के शुमार के मुताबिक एक एक पत्थर अपने कन्धे पर उठा ले। 6 ताकि यह तुम्हारे बीच एक निशान हो, और जब तुम्हारी औलाद आइन्दा ज़माने में तुम से पूछे, कि इन पत्थरों से तुम्हारा क्या मतलब है? 7 तो तुम उन को जवाब देना कि यरदन का पानी खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के आगे दो हिस्से हो गया था; क्योंकि जब वह यरदन पार आ रहा था तब यरदन का पानी दो हिस्से होगया। यूँ यह पत्थर हमेशा के लिए बनी इस्राईल के वास्ते यादगार ठहरेंगे।” 8 चुनाँचे बनी इस्राईल ने यशू'अ के हुक्म के मुताबिक किया, और जैसा खुदावन्द ने यशू'अ से कहा था उन्होंने बनी इस्राईल के कबीलों के शुमार के मुताबिक यरदन के बीच में से बारह पत्थर उठा लिए; और उन को उठा कर अपने साथ उस जगह ले गये जहाँ वह टिके और वहीं उनको रख दिया। 9 और यशू'अ ने यरदन के बीच में उस जगह जहाँ 'अहद के सन्दूक के उठाने वाले काहिनों ने पाँव जमाये थे बारह पत्थर खड़े किये; चुनाँचे वह आज के दिन तक वहीं हैं। 10 क्योंकि वह काहिन जो सन्दूक को उठाये हुए थे यरदन के बीच ही में खड़े रहे, जब तक उन सब बातों के मुताबिक जिनका हुक्म मूसा ने यशू'अ को दिया था हर एक बात पूरी न हो चुकी, जिसे लोगों को बताने का हुक्म खुदावन्द ने यशू'अ को किया था; और लोगों ने जल्दी की और पार उतरे। 11 और ऐसा हुआ कि जब सब लोग साफ़ पार हो गये, तो खुदावन्द का सन्दूक और काहिन भी लोगों के रूबरू पार हुए। 12 और \*बनी रूबिन और बनी जहू और मनस्सी के आधे कबीले

के लोग मूसा के कहने के मुताबिक हथियार बांधे हुए बनी इस्राईल के आगे पार गये; <sup>13</sup> या'नी करीब चालीस हज़ार आदमी लड़ाई के लिए तैयार और हथियार बांधे हुए खुदावन्द के सामने पार होकर यरीहू के मैदान में पहुँचे ताकि जंग करें। <sup>14</sup> उस दिन खुदावन्द ने सब इस्राईलियों के सामने यशू'अ को सरफ़राज़ किया; और जैसा वह मूसा से डरते थे, वैसे ही उससे उसकी ज़िन्दगी भर डरते रहे। <sup>15</sup> और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि। <sup>16</sup> इन काहिनो को जो 'अहद का सन्दूक उठाये हुए हैं, हुक्म कर कि वह यरदन में से निकल आयें। <sup>17</sup> चुनाँचे यशू'अ ने काहिनो को हुक्म दिया कि यरदन में से निकल आओ। <sup>18</sup> और जब वह काहिन जो खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक उठाये हुए थे यरदन के बीच में से निकल आए, और उनके पाँव के तलवे खुशकी पर आ टिके तो यरदन का पानी फिर अपनी जगह पर आ गया और पहले की तरह अपने सब किनारों पर बहने लगा। <sup>19</sup> और लोग पहले महीने की दसवीं तारीख को यरदन में से निकल कर यरीहू की पूरबी सरहद पर जिल्लाजल में खेमाज़न हुए। <sup>20</sup> और यशू'अ ने उन बारह पत्थरों को जिनको उन्होंने यरदन में से लिया था जिल्लाजल में खड़ा किया। <sup>21</sup> और उस ने बनी इस्राईल से कहा कि जब तुम्हारे लड़के आइन्दा ज़माने में अपने अपने बाप दादा से पूछें, कि इन पत्थरों का मतलब क्या है? <sup>22</sup> तो तुम अपने लड़कों को यही बताना कि इस्राईली खुशकी खुशकी हो कर इस यरदन के पार आए थे। <sup>23</sup> क्योंकि खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने जब तक तुम पार न हो गये, यरदन के पानी को तुम्हारे सामने से हटा कर सुखा दिया; जैसा खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने बहर — ए — कुलज़ुम से किया, कि उसे हमारे सामने से हटा कर सुखा दिया जब तक हम पार न हो गये। <sup>24</sup> ताकि ज़मीन की सब क़ौमें जान लें कि खुदावन्द का हाथ ताक़तवर है। और खुदावन्द तुम्हारे खुदा से हमेशा डरती रहें।

## 5

1 और जब उन अमोरियों के सब बादशाहों ने जो यरदन के पार पश्चिम की तरफ़ थे, और उन कना'नियों के तमाम बादशाहों ने जो समन्दर के नज़दीक थे सुना, कि खुदावन्द ने बनी इस्राईल के सामने से यरदन के पानी को हटा कर सुखा दिया, जब तक हम पार न आ गये तो उनके दिल डर गये और उन में बनी इस्राईल की वजह से जान बाकी न रही।

2022年12月22日 星期二  
 2022年12月22日 星期二

\* **4:12** 4:12 इसे रुबेन का कबिला करें

2 उस वक़्त खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि चक्रमक्र की छुरियां बना कर बनी इस्राईल का खतना फिर दूसरी बार कर दे। 3 और यशू'अ ने चक्रमक्र की छुरियां बनायीं और \*खलिड़ियों की पहाड़ी पर बनी इस्राईल का खतना किया। 4 और यशू'अ ने जो खतना किया उसकी वजह यह है, कि वह लोग जो मिस्र से निकले, उन में जितने जंगी मर्द थे वह सब वीराने में मिस्र से निकलने के बाद रास्ते ही में मर गये। 5 तब वह सब लोग जो निकले थे उनका खतना हो चुका था, लेकिन वह सब लोग जो वीराने में मिस्र से निकलने के बाद रास्ते ही में पैदा हुए थे उनका खतना नहीं हुआ था। 6 क्योंकि बनी इस्राईल चालीस बरस तक वीराने में फिरते रहे, जब तक सारी क्रौम या'नी सब जंगी मर्द जो मिस्र से निकले थे फ़ना न हो गये। इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द की बात नहीं मानी थी। उन ही से खुदावन्द ने क्रसम खा कर कहा था, कि वह उनको उस मुल्क को देखने भी न देगा जिसे हमको देने की क्रसम उस ने उनके बाप दादा से खाई और जहाँ दूध और शहद बहता है। 7 तब उन ही के लड़कों का जिनको उस ने उनकी जगह बरपा किया था, यशू'अ ने खतना किया क्योंकि वह नामख़तून थे इसलिए कि रास्ते में उनका खतना नहीं हुआ था। 8 और जब सब लोगों का खतना कर चुके तो यह लोग खेमागाह में अपनी अपनी जगह रहे जब तक अच्छे न हो गये। 9 फिर खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि आज के दिन में मिस्र की मलामत को तुम पर से ढलका दिया। इसी वजह से आज के दिन तक उस जगह का नाम जिल्लजाल है। 10 और बनी इस्राईल ने जिल्लजाल में डेरे डाल लिए, और उन्होंने यरीहू के मैदानों में उसी महीने की चौदहवीं तारीख़ को शाम के वक़्त ईद — ए — फ़सह मनाई। 11 और ईद — ए — फ़सह के दूसरे दिन उस मुल्क के पुराने अनाज की बेख़मीरी रोटियां और उसी रोज़ भुनी हुई बालें भी खायीं। 12 और दूसरे ही दिन से उनके उस मुल्क के पुराने अनाज के खाने के बाद मन्न रोक दिया गया और आगे फिर बनी इस्राईल को मन्न कभी न मिला, लेकिन उस साल उन्होंने स मुल्क कनान की पैदावार खाई।

                                         -                    

13 और जब यशू'अ यरीहू के नज़दीक था तो उस ने अपनी आँखें उठायीं और क्या देखा कि उसके मुक़ाबिल एक शख्स हाथ में अपनी नंगी तलवार लिए खड़ा है; और यशू'अ ने उस के पास जा कर उस से कहा, “तु

हमारी तरफ़ है या हमारे दुश्मनों की तरफ़?" <sup>14</sup> उस ने कहा, "नहीं! बल्कि मैं इस वक्त खुदावन्द के लश्कर का सरदार हो कर आया हूँ।" तब यशू'अ ने ज़मीन पर सरनगूँ हो कर सिज्दा किया और उससे कहा, "मेरे मालिक का अपने खादिम से क्या इरशाद है?" <sup>15</sup> और खुदावन्द के लश्कर के सरदार ने यशू'अ से कहा कि तू अपने पाँव से अपनी जूती उतार दे क्योंकि यह जगह जहाँ तू खड़ा है पाक है। इसलिए यशू'अ ने ऐसा ही किया।

## 6

*????? ?? ???? ?????*

1 और यरीहू बनी इस्राईल की वजह से निहायत मज़बूती से बंद था और न तो कोई बाहर जाता और न कोई अन्दर आता था। 2 और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि देख मैं ने यरीहू को और उसके बादशाह और ज़बरदस्त सूरमाओं को तेरे हाथ में कर दिया है 3 इसलिए तुम जंगी मर्द शहर को घेर लो, और एक दफ़ा उसके चौगिर्द गश्त करो। छः दिन तक तुम ऐसा ही करना। 4 और सात काहिन सन्दूक के आगे आगे मेंढों के सींगों के सात नरसिंगे लिए हुए चलें! और सातवें दिन तुम शहर की चारों तरफ़ सात बार घूमना, और काहिन नरसिंगे फूँकें। 5 और यूँ होगा कि जब वह मेंढे के सींग को ज़ोर से फूँकें और तुम नरसिंगे की आवाज़ सुनो तो सब लोग निहायत ज़ोर से ललकारें; तब शहर की दीवार बिल्कुल गिर जायेगी और लोग अपने अपने सामने सीधे चढ़ जायें। 6 और नून के बेटे यशू'अ ने काहिनों को बुला कर उन से कहा कि 'अहद के सन्दूक को उठाओ, और सात काहिन मेंढों के सींगों के सात नरसिंगे लिए हुए खुदावन्द के सन्दूक के आगे आगे चलें। 7 और उन्होंने लोगों से कहा, “बढ़ कर शहर को घेर लो और जो आदमी हथियार लिए हैं वह खुदा के सन्दूक के आगे आगे चलें।” 8 और जब यशू'अ लोगों से यह बातें कह चुका, तो सात काहिन मेंढों के सींगों के सात नरसिंगे लिए हुए खुदावन्द के आगे आगे चले और वह नरसिंगे फूँकते गये और खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक उनके पीछे पीछे चला। 9 और वह हथियार लिए आदमी उन काहिनों के आगे आगे चले जो नरसिंगे फूँक रहे थे, और दुम्बाला सन्दूक के पीछे पीछे चला, और काहिन चलते चलते नरसिंगे फूँकते जाते थे। 10 और यशू'अ ने लोगों को हुक्म दिया कि न तुम ललकारना, और न तुम्हारी आवाज़ सुनायी दे और न तुम्हारे मुँह से

\* 5:3 5:3 गिबीथ हारालोथ, वह पहाड़ जहाँ खतना किया जाता था † 5:6 5:6 अज हद ज़रखेज मुल्क, देखें खुर्रुज 3:8 ‡ 5:9 5:9 जिल्लाजाल के मायने हैं हटाना § 5:12 5:12 मुल्क — ए — कनान, देखें 6:27

कोई बात निकले। जब मैं तुम को ललकारने को कहूँ तब तुम ललकारना। <sup>11</sup> इसलिए उसने खुदावन्द के सन्दूक को शहर के गिर्द एक बार फिरवाया। तब वह खेमागाह में आए और वहीं रात काटी। <sup>12</sup> और यशू'अ सुबह सवेरे उठा और काहिनों ने खुदावन्द का सन्दूक उठा लिया। <sup>13</sup> और वह सात काहिन मेंढों के सींगों के सात नरसिंगे लिए हुए खुदावन्द के सन्दूक के आगे आगे बराबर चलते और नरसिंगे फूँकते जाते थे और वह हथियार लिए आदमी आगे आगे हो लिए और दुम्बाला खुदावन्द के सन्दूक के पीछे पीछे चला, और काहिन चलते चलते नरसिंगे फूँकते जाते थे। <sup>14</sup> और दूसरे दिन भी वह एक बार शहर के गिर्द घूम कर खेमागाह में फिर आए। उन्होंने छे दिन तक ऐसा ही किया। <sup>15</sup> और सातवें दिन यूँ हुआ कि वह सुबह को पौ फटने के वक़्त उठे और उसी तरह शहर के गिर्द सात बार फिरे; सात बार शहर के गिर्द सिर्फ़ उसी दिन फिरे। <sup>16</sup> और सातवीं बार ऐसा हुआ कि जब काहिनों ने नरसिंगे फूँके तो यशू'अ ने लोगों से कहा, “ललकारो! क्योंकि खुदावन्द ने यह शहर तुम को दे दिया है। <sup>17</sup> और वह शहर और जो कुछ उस में है सब खुदावन्द की खातिर बर्बाद होगा। सिर्फ़ राहब कस्बी और जितने उसके साथ घर में हों वह सब जीते बचेंगे, इसलिए कि उस ने उन क्रासिदों को जिनको हम ने भेजा छुपा रखा था। <sup>18</sup> और तुम बहरहाल अपने आप को \*मख्सूस की हुई चीज़ों से बचाए रखना, ऐसा न हो कि उनको मख्सूस करने के बाद तुम किसी मख्सूस की हुई चीज़ को लो और यूँ इस्राईल की खेमागाह को ला'नती कर डालो और उसे दुख दो। <sup>19</sup> लेकिन सब चाँदी और सोना और बरतन जो पीतल और लोहे के हों खुदावन्द के लिए पाक हैं इसलिए वह खुदावन्द के खज़ाने में दाखिल किये जाएँ।” <sup>20</sup> तब लोगों ने ललकारा और काहिनों ने नरसिंगे फूँके, और ऐसा हुआ कि जब लोगों ने नरसिंगे की आवाज़ सुनी तो उन्होंने बुलंद आवाज़ से ललकारा और दीवार बिल्कुल गिर पड़ी और लोगों में से हर एक आदमी अपने सामने से चढ़ कर शहर में घुसा और उन्होंने उस को ले लिया। <sup>21</sup> और उन्होंने उन सब को जो शहर में थे क्या मर्द क्या 'औरत, क्या जवान क्या बुढ़े, क्या बैल क्या भेड़ क्या गधे सब को तलवार की धार से बिल्कुल हलाक कर दिया। <sup>22</sup> और यशू'अ ने उन दोनों आदमियों से जिन्होंने उस मुल्क की जासूसी की थी कहा कि उस कस्बी के घर जाओ, और वहाँ से जैसी तुम ने उस से क़सम खाई है उसके मुताबिक़ उस 'औरत को और जो कुछ उसके पास है सब को निकाल लाओ। <sup>23</sup> तब वह

दोनों जवान जासूस अन्दर गये और राहब को और उसके बाप और उसकी माँ और उसके भाइयों को, और उसके अस्बाब बल्कि उसके सारे खानदान को निकाल लाये, और उनको बनी इस्राईल की खेमागाह के बाहर बिठा दिया। <sup>24</sup> फिर उन्होंने उस शहर को और जो कुछ उस में था सब को आग से फूँक दिया और सिर्फ़ चाँदी और सोने को और पीतल और लोहे के बरतनों को खुदावन्द के घर के खज़ाने में दाखिल किया। <sup>25</sup> लेकिन यशू'अ ने राहब कस्बी और उस के बाप के घराने को और जो कुछ उसका था सब को सलामत बचा लिया। उसकी रिहाइश आज के दिन तक इस्राईल में है, क्योंकि उस ने उन क्रासिदों को जिनको यशू'अ ने यरीहू में जासूसी के लिए भेजा था छिपा रखा था। <sup>26</sup> और यशू'अ ने उस वक़्त उन को क़सम दे कर ताकीद की और कहा कि जो शख्स उठ कर इस यरीहू शहर को फिर बनाये वह खुदावन्द के सामने मला'ऊन हो। वह अपने पहलौटे को उसकी नींव डालते वक़्त और अपने सब से छोटे बेटे को उसके फाटक लगवाते वक़्त खो बैठेगा। <sup>27</sup> इसलिए खुदावन्द यशू'अ के साथ था और उस सारे मुल्क में उसकी शोहरत फैल गयी।

## 7

**2 22 222222222222 22 222222 2222**

<sup>1</sup> लेकिन बनी इस्राईल ने मख्सूस की हुई चीज़ में ख़यानत की, क्योंकि 'अकन बिन करमी बिन ज़ब्दी बिन ज़ारह ने जो यहूदाह के कबीले का था उन मख्सूस की हुई चीज़ों में से कुछ ले लिया; इसलिए खुदावन्द का क्रहर बनी इस्राईल पर भड़का। <sup>2</sup> और यशू'अ ने यरीहू से 'ए' को जो बैतएल की पूरबी सिम्त में बैतआवन के करीब आबाद है, कुछ लोग यह कहकर भेजे, कि जाकर मुल्क का हाल दरियाफ़्त करो! और इन लोगों ने जाकर 'ए' का हाल दरियाफ़्त किया। <sup>3</sup> और वह यशू'अ के पास लौटे और उस से कहा, “सब लोग न जाएँ सिर्फ़ दो तीन हज़ार मर्द चढ़ जाएँ और 'ए' को मार लें। सब लोगों को वहाँ जाने की तकलीफ़ न दे, क्योंकि वह थोड़े से हैं” <sup>4</sup> चुनाँचे लोगों में से तीन हज़ार मर्द के करीब वहाँ चढ़ गये, और 'ए' के लोगों के सामने से भाग आए। <sup>5</sup> और 'ए' के लोगों ने उन में से तकरीबन छत्तीस आदमी मार लिए; और फाटक के सामने से लेकर \*शबरीम तक उनको खदेड़ते आए और उतार पर उनको मारा। इसलिए उन लोगों के दिल पिघल कर पानी की तरह हो गये। <sup>6</sup> तब यशू'अ और सब इस्राईली बुज़ुर्गों ने अपने अपने कपड़े

\* 6:18 6:18 यह्ने को जोड़ें, 7:1, 15 को भी देखें \* 7:5 7:5 पत्थर की कानें

फाड़े और खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के आगे शाम तक ज़मीन पर औंधे पड़े रहे, और अपने अपने सर पर खाक डाली। <sup>7</sup> और यशू'अ ने कहा, “हाय ऐ मालिक खुदावन्द! तू हमको अमोरियों के हाथ में हवाला करके, हमारा नास कराने की खातिर इस क्रौम को यरदन के इस पार क्यों लाया? काश कि हम सब्र करते और यरदन के उस पार ही ठहरे रहते। <sup>8</sup> ऐ मालिक, इस्राईलियों के अपने दुश्मनों के आगे पीठ फेर देने के बाद मैं क्या कहूँ! <sup>9</sup> क्योंकि कना'नी और इस मुल्क के सब बाशिन्दे यह सुन कर हम को घेर लेंगे, और हमारा नाम मिटा डालेंगे। फिर तू अपने बुजुर्ग नाम के लिए क्या करेगा?” <sup>10</sup> और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा, उठ खड़ा हो। तू क्यों इस तरह औंधा पड़ा है? <sup>11</sup> इस्राईलियों ने गुनाह किया, और उन्होंने उस 'अहद को जिसका मैंने उनको हुक्म दिया तोड़ा है; उन्होंने मख्सूस की हुई चीज़ों में से कुछ ले भी लिया, और चोरी भी की और रियाकारी भी की और अपने सामान में उसे मिला भी लिया है। <sup>12</sup> इस लिए बनी इस्राईल अपने दुश्मनों के आगे ठहर नहीं सकते। वह अपने दुश्मनों के आगे पीठ फेरते हैं, क्योंकि वह मल'ऊन हो गये मैं आगे को तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा, जब तक तुम मख्सूस की हुई चीज़ को अपने बीच से मिटा न दो। <sup>13</sup> उठ लोगों को पाक कर और कह कि तुम अपने को कल के लिए पाक करो, क्योंकि खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि ऐ इस्राईलियों! तुम्हारे बीच मख्सूस की हुई चीज़ मौजूद है तुम अपने दुश्मनों के आगे ठहर नहीं सकते जब तक तुम उस मख्सूस की हुई चीज़ को अपने बीच से दूर न कर दो। <sup>14</sup> इसलिए तुम कल सुबह को अपने कबीले के मुताबिक हाज़िर किये जाओगे; और जिस कबीले को खुदावन्द पकड़े वह एक एक खानदान कर के पास आए; और जिस खानदान को खुदावन्द पकड़े वह एक एक घर कर के पास आए; और जिस घर को खुदावन्द पकड़े वह एक — एक आदमी करके पास आए। <sup>15</sup> तब जो कोई मख्सूस की हुई चीज़ रखता हुआ पकड़ा जाये, वह और जो कुछ उसका हो सब आग से जला दिया जाये; इस लिए कि उस ने खुदावन्द के 'अहद को तोड़ डाला और बनी इस्राईल के बीच शरारत का काम किया।

॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥

<sup>16</sup> तब यशू'अ ने सुबह सवेरे उठ कर इस्राईलियों को कबीला बा कबीला हाज़िर किया, और यहूदाह का कबीला पकड़ा गया। <sup>17</sup> फिर वह यहूदाह के खानदानों

को नज़दीक लाया, और ज़ारह का खानदान पकड़ा गया। फिर वह ज़ारह के खानदान के एक एक आदमी को नज़दीक लाया, और ज़ब्दी पकड़ा गया। <sup>18</sup> फिर वह उसके घराने के एक एक आदमी को नज़दीक लाया, और 'अकन बिन करमी बिन ज़ब्दी बिन ज़ारह जो यहूदाह के कबीले का था पकड़ा गया। <sup>19</sup> तब यशू'अ ने 'अकन से कहा, “ऐ मेरे फ़र्जन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि खुदावन्द इस्राईल के खुदा की तमजीद कर और उसके आगे इकरार कर, अब तू मुझे बता दे कि तूने क्या किया है और मुझ से मत छिपा।” <sup>20</sup> और 'अकन ने यशू'अ को जवाब दिया, “हक्रीकत में मैंने खुदावन्द इस्राईल के खुदा का गुनाह किया है, और यह यह मुझ से सरज़द हुआ है। <sup>21</sup> कि जब मैंने लूट के माल में बाबुल की एक नफ़ीस चादर, और दो सौ मिस्काल चाँदी और पचास मिस्काल सोने की एक ईंट देखी तो मैंने ललचा कर उन को ले लिया; और देख वह मेरे खेमे में ज़मीन में छिपाई हुई हैं और चाँदी उनके नीचे है।” <sup>22</sup> तब यशू'अ ने कासिद भेजे; वह उस डेरे को दौड़े गये, और क्या देखा कि वह उसके डेरे में छिपाई हुई हैं और चाँदी उनके नीचे है। <sup>23</sup> वह उनको डेरे में से निकाल कर यशू'अ और सब बनी इस्राईल के पास लाये, और उनको खुदावन्द के सामने रख दिया। <sup>24</sup> तब यशू'अ और सब इस्राईलियों ने ज़ारह के बेटे 'अकन को, और उस चाँदी और चादर और सोने की ईंट को, और उसके बेटों और बेटियों को, और उसके बैलों और गधों और भेड़ बकरियों और डेरे को, और जो कुछ उसका था सबको लिया और वादी — ए — अकूर में उनको ले गये। <sup>25</sup> और यशू'अ ने कहा कि तूने हम को क्यों दुख दिया? खुदावन्द आज के दिन तुझे दुख देगा! तब सब इस्राईलियों ने उसे संगसार किया; और उन्होंने उनको आग में जलाया और उनको पत्थरों से मारा। <sup>26</sup> और उन्होंने उसके पत्थरों का एक बड़ा ढेर लगा दिया जो आज तक है तब खुदावन्द अपने क्रहर — ए — शदीद से बा'ज़ आया। इस लिए उस जगह का नाम आज तक वादी — ए — 'अकूर है।

## 8

॥॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥

<sup>1</sup> और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा, “खौफ़ न खा और न हिरासों हो सब जंगी मर्दों को साथ ले और उठ कर ए' पर चढ़ाई कर देख मैंने 'ए के बादशाह और उसकी क्रौम और उसके शहर और उसके 'इलाके को तेरे कब्जे में कर दिया है। <sup>2</sup> और तू ए' और उसके बादशाह से

† 7:19 7:19 उसके सामने हम्द — ओ — तारीफ़ करो, उसके सामने इकरार करो    ‡ 7:26 7:26 वादी — ए — अकूर का मतलब है, मुसीबत की वादी



वही करना जो तुने यरीहू और उसके बादशाह से किया। सिर्फ वहाँ के माल — ए — गनीमत और चौपायों को तुम अपने लिए लूट के तौर पर ले लेना। इसलिए तू उस शहर के लिए उसी के पीछे अपने आदमी घात में लगा दे।”<sup>3</sup> तब यशू'अ और सब जंगी मर्द ए' के पर चढ़ाई करने को उठे; और यशू'अ ने तीस हजार मर्द जो जबरदस्त सूरमा थे, चुन कर रात ही को उनको खाना किया।<sup>4</sup> और उनको यह हुक्म दिया कि देखो! तुम उस शहर के मुकाबिल शहर ही के पीछे घात में बैठना; शहर से बहुत दूर न जाना बल्कि तुम सब तैयार रहना।<sup>5</sup> और मैं उन सब आदमियों को लेकर जो मेरे साथ हैं, शहर के नज़दीक आऊँगा; और ऐसा होगा कि जब वह हमारा सामना करने को पहले की तरह निकल आएंगे, तो हम उनके सामने से भागेंगे।<sup>6</sup> और वह हमारे पीछे पीछे निकल चले आयेंगे, यहाँ तक कि हम उनको शहर से दूर निकाल ले जायेंगे; क्योंकि वह कहेंगे कि यह तो पहले की तरह हमारे सामने से भागे जातें हैं; इसलिए हम उनके आगे से भागेंगे।<sup>7</sup> और तुम घात में से उठ कर शहर पर कब्ज़ा कर लेना, क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा उसे तुम्हारे कब्ज़े में कर देगा।<sup>8</sup> और जब तुम उस शहर को ले लो तो उसे आग लगा देना; खुदावन्द के कहने के मुताबिक काम करना। देखो, मैंने तुमको हुक्म कर दिया।<sup>9</sup> और यशू'अ ने उनको खाना किया, और वह आराम गाह में गये और बैत — एल और ए' के पश्चिम की तरफ जा बैठे; लेकिन यशू'अ उस रात को लोगों के बीच टिका रहा।<sup>10</sup> और यशू'अ ने सुबह सवेरे उठ कर लोगों की मौजूदात ली, और वह बनी इस्राईल के बुज़ुर्गों को साथ लेकर लोगों के आगे आगे ए' की तरफ चला।<sup>11</sup> और सुब जंगी मर्द जो उसके साथ थे चले, और नज़दीक पहुँचकर शहर के सामने आए और ए' के उत्तर में डेरे डाले, और यशू'अ और 'ए के बीच एक वादी थी।<sup>12</sup> तब उस ने कोई पाँच हजार आदमियों को लेकर बैतएल और ए' के बीच शहर के पश्चिम की तरफ उनको आराम गाह में बिठाया।<sup>13</sup> इसलिए उन्होंने लोगों को या'नी सारी फ़ौज जो शहर के उत्तर में थी, और उनको जो शहर की पश्चिमी तरफ घात में थे ठिकाने पर कर दिया; और यशू'अ उसी रात उस वादी में गया।<sup>14</sup> और जब ए' के बादशाह ने देखा, तो उन्होंने जल्दी की और सवेरे उठे और शहर के आदमी या'नी वह और उसके सब लोग निकल कर मु'अय्यन वक्त पर लड़ाई के लिए बनी इस्राईल के मुकाबिल मैदान के सामने आए; और उसे खबर न थी कि शहर के पीछे उसकी घात में लोग बैठे हुए हैं।<sup>15</sup> तब यशू'अ और सब इस्राईलियों

ने ऐसा दिखाया, गोया उन्होंने उन से शिकस्त खाई और वीराने के रास्ते होकर भागे।<sup>16</sup> और जितने लोग शहर में थे वह उनका पीछा करने के लिए बुलाये गये; और उन्होंने यशू'अ का पीछा किया और शहर से दूर निकले चले गये।<sup>17</sup> और ए' और बैतएल में कोई आदमी बाक़ी न रहा जो इस्राईलियों के पीछे न गया हो; और उन्होंने शहर को खुला छोड़ कर इस्राईलियों का पीछा किया।<sup>18</sup> तब खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि जो बरछा तेरे हाथ में है उसे ए' की तरफ बढ़ा दे, क्योंकि मैं उसे तेरे कब्ज़े में कर दूँगा और यशू'अ ने उस बरछे को जो उसके हाथ में था शहर की तरफ बढ़ाया।<sup>19</sup> तब उसके हाथ बढ़ाते ही जो घाट में थे अपनी जगह से निकले, और दौड़ कर शहर में दाखिल हुए और उसे सर कर लिया, और जल्द शहर में आग लगा दी।<sup>20</sup> और जब ए' के लोगों ने पीछे मुड़ कर नज़र की, तो देखा, कि शहर का धुआ आसमान की तरफ उठ रहा है और उनका बस न चला कि वह इधर या उधर भागें, और जो लोग वीराने की तरफ भागे थे वह पीछा करने वालों पर उलट पड़े।<sup>21</sup> और जब यशू'अ और सब इस्राईलियों ने देखा कि घात वालों ने शहर ले लिया और शहर का धुआ उठ रहा है, तो उन्होंने पलट कर ए' के लोगों को क़त्ल किया।<sup>22</sup> और वह दूसरे भी उनके मुकाबले को शहर से निकले; इसलिए वह सब के सब इस्राईलियों के बीच में, जो कुछ तो इधर और उधर थे पड़ गये, और उन्होंने उनको मारा यहाँ तक कि किसी को न बाक़ी छोड़ा न भागने दिया।<sup>23</sup> और वह ए' के बादशाह को ज़िन्दा गिरफ़्तार करके यशू'अ के पास लाये।<sup>24</sup> और जब इस्राईली ए' के सब बाशिंदों को मैदान में उस वीराने के बीच जहाँ उन्होंने इनका पीछा किया था क़त्ल कर चुके, और वह सब तलवार से मारे गये यहाँ तक कि बिल्कुल फ़ना हो गये, तो सब इस्राईली ए' को फिरे और उसे बर्बाद कर दिया।<sup>25</sup> चुनाँचे वह जो उस दिन मारे गये, मर्द औरत मिला कर बारह हजार या'नी ए' के सब लोग थे।<sup>26</sup> क्योंकि यशू'अ ने अपना हाथ जिस से वह बरछे को बढ़ाये हुए था नहीं खींचा, जब तक कि उस ने ए' के सब रहने वालों को बिल्कुल हलाक न कर डाला।<sup>27</sup> और इस्राईलियों ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक, जो उस ने यशू'अ को दिया था अपने लिए सिर्फ शहर के चौपायों और माल — ए — गनीमत को लूट में लिया।<sup>28</sup> तब यशू'अ ने ए' को जला कर हमेशा के लिए उसे एक ढेर और वीराना बना दिया, जो आज के दिन तक है।<sup>29</sup> और उस ने ए' के बादशाह को शाम तक दरख्त पर टांग रखा; और जूँ ही सूरज डूबने लगा, उन्होंने यशू'अ के हुक्म से उसकी लाश को दरख्त से

उतार कर शहर के फाटक के सामने डाल दिया, और उस पर पत्थरों का एक बड़ा ढेर लगा दिया जो आज के दिन तक है।

॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥ ॥॥॥

30 तब यशू'अ ने कोह — ए — 'एबाल पर खुदावन्द इस्राईल के खुदा के लिए एक मज़बह बनाया। 31 जैसा खुदावन्द के बन्दे मूसा ने बनी इस्राईल को हुक्म दिया था, और जैसा मूसा की शरी'अत की किताब में लिखा है; यह मज़बह वे खड़े पत्थरों का था जिस पर किसी ने लोहा नहीं लगाया था, और उन्होंने उस पर खुदावन्द के सामने सोख्तनी कुर्बानियाँ और सलामती के ज़बीहे पेश किये। 32 और उस ने वहाँ उन पत्थरों पर मूसा की शरी'अत की जो उस ने लिखी थीं, सब बनी इस्राईल के सामने एक नक़ल कन्दा की। 33 और सब इस्राईली और उनके बुज़ुर्ग और मनसबदार और क़ाज़ी, या'नी देसी और परदेसी दोनों लावी काहिनों के आगे जो खुदावन्द के आगे, जो खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के उठाने वाले थे, सन्दूक के इधर और उधर खड़े हुए। इन में से आधे तो कोह — ए — गरज़ीम के मुक्राबिल थे जैसा खुदावन्द के बन्दे मूसा ने पहले हुक्म दिया था कि वह इस्राईली लोगों को बरकत दें। 34 इसके बाद उस ने शरी'अत की सब बातें, या'नी बरकत और ला'नत जैसी वह शरी'अत की किताब में लिखी हुई हैं, पढ़ कर सुनायीं। 35 चुनाँचे जो कुछ मूसा ने हुक्म दिया था, उस में से एक बात भी ऐसी न थी जिसे यशू'अ ने बनी इस्राईल की सारी जमा'अत, और 'औरतों और बाल बच्चों और उन मुसाफ़िरों के सामने जो उनके साथ मिल कर रहते थे न पढ़ा हो।

## 9

॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥

1 और जब उन सब हित्ती, अमोरी, कना'नी, फ़रिज़्जी, हव्वी और यवूसी बादशाहों ने जो यरदन के उस पार पहाड़ी मुल्क और नशेब की ज़मीन और बड़े समन्दर के उस साहिल पर जो लुबनान के सामने है रहते थे यह सुना। 2 तो वह सब के सब इकट्ठा हुए ताकि मुत्तफ़िक़ हो कर यशू'अ और बनी इस्राईल से जंग करें। 3 और जब जिबा'ऊन के बाशिंदों ने सुना कि यशू'अ ने यरीह और ए' से क्या क्या किया है। 4 तो उन्होंने भी हीला बाज़ी की और जाकर \*सफ़ीरों का भेस भरा, और पुराने बोरे और पुराने फटे हुए और मरम्मत किये हुए शराब

के मशकीज़े अपने गधों पर लादे। 5 और पाँव में पुराने पैवन्द लगे हुए जूते और तन पर पुराने कपड़े डाले, और उनके सफ़र का खाना सूखी फफूँदी लगी हुई रोटियां थीं।

6 और वह जिल्लाल में खेमागाह को यशू'अ के पास जाकर उस से और इस्राईली मर्दों से कहने लगे, “हम एक दूर मुल्क से आये हैं; इसलिए अब तुम हम से 'अहद बाँधो।” 7 तब इस्राईली मर्दों ने उन हव्वियों से कहा, कि शायद तुम हमारे बीच ही रहते हो; फिर हम तुम से क्यूँकर 'अहद बाँधें? 8 उन्होंने यशू'अ से कहा, “हम तेरे खादिम हैं। तब यशू'अ ने उन से पूछा, तुम कौन हो और कहाँ से आए हो?” 9 उन्होंने ने उस से कहा, तेरे खादिम एक बहुत दूर मुल्क से खुदावन्द तेरे खुदा के नाम के ज़रिये आए हैं क्यूँकि हम ने उसकी शोहरत और जो कुछ उस ने मिस्र में किया। 10 और जो कुछ उस ने अमोरियों के दोनों बादशाहों से जो यरदन के उस पार थे, या'नी हसबून के बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह 'ओज़ से जो असतारात में था किया सब सुना है। 11 इसलिए हमारे बुज़ुर्गों और हमारे मुल्क के सब बाशिंदों ने हम से यह कहा कि तुम सफ़र के लिए अपने हाथ में खाना ले लो और उन से मिलने को जाओ और उन से कहो कि हम तुम्हारे खादिम हैं इसलिए तुम अब हमारे साथ 'अहद बाँधो। 12 जिस दिन हम तुम्हारे पास आने को निकले हमने अपने अपने घर से अपने खाने की रोटी गरम गरम ली, और अब देखो वह सूखी है और उसे फफूँदी लग गई। 13 और मय के यह मशकीज़े जो हम ने भर लिए थे नये थे, और देखो यह तो फट गये; और यह हमारे कपड़े और जूते दूर — ओ — दराज़ सफ़र की वजह से पुराने हो गये। 14 तब इन लोगों ने उनके खाने में से कुछ लिया और खुदावन्द से मशवरत न की। 15 और यशू'अ ने उन से सुलह की और उनकी जान बख़्शी करने के लिए उन से 'अहद बाँधा, और जमा'अत के अमीरों ने उन से क़सम खाई। 16 और उनके साथ 'अहद बाँधने से तीन दिन के बाद उनके सुनने में आया, कि यह उनके पड़ोसी हैं और उनके बीच ही रहते हैं। 17 और बनी इस्राईल खाना हो कर तीसरे दिन †उनके शहरों में पहुँचे; जिबा'ऊन और कफ़ीरह और बैरूत और करयत या'रीम उनके शहर थे। 18 और बनी इस्राईल ने उनको क़त्ल न किया इसलिए कि जमा'अत के अमीरों ने उन से खुदावन्द इस्राईल के खुदा की क़सम खाई थी; और सारी जमा'अत उन अमीरों पर कुड़कुड़ाने लगी 19 लेकिन उन सब अमीरों ने सारी जमा'अत से कहा कि हम ने उन से खुदावन्द इस्राईल के खुदा की क़सम खाई है, इसलिए हम उन्हें

\* 9:4 9:4 उन्होंने इस का फ़राहम किया † 9:17 9:17 ज़िबोनियों

छू नहीं सकते। <sup>20</sup> हम उन से यही करेंगे और उनको जीता छोड़ेंगे ऐसा न हो कि उस क्रसम की वजह से जो हम ने उन से खाई है, हम पर गज़ब टूटे। <sup>21</sup> इसलिए अमीरों ने उन से यही कहा कि उनको जीता छोड़ो। तब वह सारी जमा'अत के लिए लकड़हारे और पानी भरने वाले बने जैसा अमीरों ने उन से कहा था। <sup>22</sup> तब यशू'अ ने उनको बुलवा कर उन से कहा जिस हाल कि तुम हमारे बीच रहते हो, तुम ने यह कह कर हमको क्यों फ़रेब दिया कि हम तुम से बहुत दूर रहते हैं? <sup>23</sup> इसलिए अब तुम ला'नती ठहरे, और तुम में से कोई ऐसा न रहेगा जो गुलाम या'नी मेरे खुदा के घर के लिए लकड़हारा और पानी भरने वाला न हो। <sup>24</sup> उन्होंने यशू'अ को जवाब दिया कि तेरे खादिमों को तहकीक़ यह ख़बर मिली थी, कि खुदावन्द तेरे खुदा ने अपने बन्दे मूसा को फ़रमाया कि सारा मुल्क तुमको दे और उस मुल्क के सब बाशिंदों को तुम्हारे सामने से हलाक करे। इसलिए हमको तुम्हारी वजह से अपनी अपनी जानों के लाले पड़ गये, इस लिए हम ने यह काम किया। <sup>25</sup> और अब देख, हम तेरे हाथ में हैं जो कुछ तू हम से करना भला और ठीक जाने सो कर। <sup>26</sup> फिर उसने उन से वैसा ही किया, और बनी इस्राईल के हाथ से उसको ऐसा बचाया कि उन्होंने उनको क़त्ल न किया। <sup>27</sup> और यशू'अ ने उसी दिन उनको जमा'अत के लिए और उस मुक़ाम पर जिसे खुदावन्द खुद चुने उसके मज़बूह के लिए, लकड़हारे और पानी भरने वाले मुक़रर किया जैसा आज तक है।

## 10

???????? ?? ????? ?? ????? ?? ?????

<sup>1</sup> और जब येरूशलेम के बादशाह अदूनी सिदक़ ने सुना कि यशू'अ ने एे को सर करके उसे हलाक कर दिया और जैसा उस ने यरीहू और वहाँ के बादशाह से किया वैसा ही एे और उसके बादशाह से किया; और जिबा'ऊन के बाशिंदों ने बनी इस्राईल से सुलह कर ली और उनके बीच रहने लगे हैं। <sup>2</sup> तो वह सब बहुत ही डरे, क्योंकि जिबा'ऊन एक बड़ा शहर बल्कि बादशाही शहरों में से एक की तरह और एे से बड़ा था और उसके सब मर्द बड़े बहादुर थे। <sup>3</sup> इस लिए येरूशलेम के बादशाह अदूनी सिदक़ ने हबरून के बादशाह हुहाम, और यरमूत के बादशाह पीराम, और लकीस के बादशाह याफ़ी और अजलून के बादशाह दबीर को यूँ कहला भेजा कि। <sup>4</sup> मेरे पास आओ और मेरी मदद करो और चलो हम जिबा'ऊन को मारें; क्योंकि उस ने यशू'अ और बनी इस्राईल से

सुलह कर ली है। <sup>5</sup> इसलिए अमोरियों के पाँच बादशाह, या'नी येरूशलेम का बादशाह और हबरून का बादशाह और यरमूत का बादशाह और लकीस का बादशाह और 'अजलून का बादशाह इकट्ठे हुए; और उन्होंने अपनी सब फ़ौजों के साथ चढ़ाई की और जिबा'ऊन के मुक़ाबिल डेरे डाल कर उस से जंग शुरू की। <sup>6</sup> तब जिबा'ऊन के लोगों ने यशू'अ को जो जिलजाल में खेमाज़न था कहला भेजा कि अपने खादिमों की तरफ़ से अपना हाथ मत खींच। जल्द हमारे पास पहुँच कर हमको बचा और हमारी मदद कर, इसलिए कि सब अमूरी बादशाह जो पहाड़ी मुल्क में रहते हैं हमारे खिलाफ़ इकट्ठे हुए हैं। <sup>7</sup> तब यशू'अ सब जंगी मर्दों और सब ज़बरदस्त सूरमाओं को हमराह लेकर जिलजाल से चल पड़ा। <sup>8</sup> और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा, “उन से न डर इस लिए कि मैंने उनको तेरे क़ब्ज़े में कर दिया है; उन में से एक आदमी भी तेरे सामने खड़ा न रह सकेगा।” <sup>9</sup> तब यशू'अ रातों रात जिलजाल से चल कर अचानक उन पर आ पड़ा। <sup>10</sup> और खुदावन्द ने उनको बनी इस्राईल के सामने शिकस्त दी; और उस ने उनको जिबा'ऊन में बड़ी खून रेज़ी के साथ क़त्ल किया और बैत हौरून की चढ़ाई के रास्ते पर उनको दौड़ाया और 'अज़ीकाह और मुक़क़ीदा तक उनको मारता गया। <sup>11</sup> और जब वह इस्राईलियों के सामने से भागे और बैतहोरून के उतार पर थे, तो खुदावन्द ने 'अज़ीकाह तक आसमान से उन पर बड़े बड़े पत्थर बरसाए और वह मर गये; और जो ओलों से मरे वह उनसे जिनको बनी इस्राईल ने तलवार से मारा कहीं ज्यादा थे। <sup>12</sup> और उस दिन जब खुदावन्द ने अमोरियों को बनी इस्राईल के क़ाबू में कर दिया यशू'अ ने खुदावन्द के हुज़ूर बनी इस्राईल के सामने यह कहा कि, ऐ सूरज तू जिबा'ऊन पर और ऐ चाँद! तू वादी — ए — अय्यालोन में ठहरा रह। <sup>13</sup> और सूरज ठहर गया और चाँद थमा रहा। जब तक क़ौम ने अपने दुश्मनों से अपना इन्तिक़ाम न ले लिया। क्या यह आशर की किताब में नहीं लिखा है? और सूरज आसमान के बीच ठहरा रहा, और तक्ररीबन सारे दिन डूबने में जल्दी न की। <sup>14</sup> और ऐसा दिन कभी उस से पहले हुआ और न उसके बाद, जिस में खुदावन्द ने किसी आदमी की बात सुनी हो; क्योंकि खुदावन्द इस्राईलियों की खातिर लड़ा। <sup>15</sup> फिर यशू'अ और उसके साथ सब इस्राईली जिलजाल को खेमागाह में लौटे।

???? ?? ????? ?? ????? ??????????? ??  
???? ?????

16 और वह पाँचों बादशाह भाग कर मुक्कैदा के गार में जा छिपे। 17 और यशू'अ को यह खबर मिली कि वह पाँचों बादशाह मुक्कैदा के गार में छिपे हुए मिले हैं। 18 यशू'अ ने हुक्म किया कि बड़े बड़े पत्थर उस गार के मुँह पर लुढ़का दो और आदमियों को उसके पास उनकी निगहबानी के लिए बिठा दो। 19 लेकिन तुम न रुको, तुम अपने दुश्मनों का पीछा करो और उन में के जो जो पीछे रह गए हैं उनको मार डालो, उनको मोहलत न दो कि वह अपने अपने शहर में दाखिल हों; इसलिए कि खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने उनको तुम्हारे क़ब्जे में कर दिया है। 20 और जब यशू'अ और बनी इस्राईल बड़ी खूरज़ी के साथ उनको क़त्ल कर चुके, यहाँ तक कि वह हलाक — ओ — बर्बाद हो गये; और वह जो उन में से बाक़ी बचे फ़सील दार शहरों में दाखिल हो गये। 21 तो सब लोग मुक्कैदा में यशू'अ के पास लश्कर गाह को सलामत लौटे, और किसी ने बनी इस्राईल में से किसी के बरखिलाफ़ ज़बान न हिलाई। 22 फिर यशू'अ ने हुक्म दिया कि गार का मुँह खोलो और उन पाँचों बादशाहों को गार से बाहर निकाल कर मेरे पास लाओ 23 उन्होंने ऐसा ही किया और वह पाँचों बादशाहों को या'नी शाह येरूशलेम और शाह — ए — हबरोन और शाह — ए — यरमूत और शाह — ए — लकीस और शाह — ए — अजलून को गार से निकाल कर उसके पास लाये। 24 और जब वह उनको यशू'अ के सामने लाये तो यशू'अ ने सब इस्राईलियों को बुलवाया और उन जंगी मर्दों के सरदारों से जो उसके साथ गये थे यह कहा कि नज़दीक आकर अपने अपने पाँव इन बादशाहों की गरदनो पर रखो। 25 और यशू'अ ने उन से कहा खौफ़ न करो और हिरासाँ मत हो मज़बूत हो जाओ और हौसला रखो इसलिए कि खुदावन्द तुम्हारे सब दुश्मनों से जिनका मुक्काबिला तुम करोगे ऐसा ही करेगा। 26 इसके बाद यशू'अ ने उनको मारा और क़त्ल किया और पाँच दरख्तों पर उनको टांग दिया। इसलिए वह शाम तक दरख्तों पर टंगे रहे। 27 और सूरज डूबते वक़्त उन्होंने यशू'अ के हुक्म से उनको दरख्तों पर से उतार कर उसी गार में जिस में वह जा छिपे थे डाल दिया, और गार के मुँह पर बड़े बड़े पत्थर रख दिए जो आज तक हैं।

22222222 22 222222 22 22222222 22  
22222222 222222

28 और उसी दिन यशू'अ ने मुक्कैदा को घेर कर के उसे हलाक किया, और उसके बादशाह को और उसके सब लोगों को बिल्कुल हलाक कर डाला और एक भी बाक़ी

न छोड़ा; और मुक्कैदा के बादशाह से उसने वही किया जो यरीहू के बादशाह से किया था। 29 फिर यशू'अ और उसके साथ सब इस्राईली मुक्कैदा से लिबनाह को गये, और वह लिबनाह से लड़ा। 30 और खुदावन्द ने उसको भी और उसके बादशाह को भी बनी इस्राईल के क़ब्जे में कर दिया; और उस ने उसे और उसके सब लोगों को हलाक किया और एक को भी बाक़ी न छोड़ा, और वहाँ के बादशाह से वैसा ही किया जो यरीहू के बादशाह से किया था। 31 फिर लिबनाह से यशू'अ और उसके साथ सब इस्राईली लकीस को गये और उसके मुक्काबिल डेरे डाल लिए और वह उस से लड़ा। 32 और खुदावन्द ने लकीस को इस्राईल के क़ब्जे में कर दिया उस ने दूसरे दिन उस पर फ़तह पायी और उसे हलाक किया और सब लोगों को जो उस में थे क़त्ल किया जिस तरह उस ने लिबनाह से किया था। 33 उस वक़्त जज़र का बादशाह हुरम लकीस को मदद करने को आया इसलिए यशू'अ ने उसको और उसके आदमियों को मारा यहाँ तक कि उसका एक भी जीता न छोड़ा। 34 और यशू'अ और उसके साथ सब इस्राईली लकीस से 'अजलून को गये और उसके मुक्काबिल डेरे डालकर उस से जंग शुरू की। 35 और उसी दिन उसे घेर लिया उसे हलाक किया और उन सब लोगों को जो उस में थे उस ने उसी दिन बिल्कुल हलाक कर डाला जैसा उस ने लकीस से किया था। 36 फिर 'अजलून से यशू'अ और उसके साथ सब इस्राईली हबरून को गये और उस से लड़े। 37 और उन्होंने उसे घेर करके उसे और उसके बादशाह और उसकी सब बस्तियों और वहाँ के सब लोगों को बर्बाद किया और जैसा उस ने 'अजलून से किया था एक को भी जीता न छोड़ा बल्कि उसे और वहाँ के सब लोगों को बिल्कुल हलाक कर डाला। 38 फिर यशू'अ और उसके साथ सब इस्राईली दबीर को लौटे और उससे लड़े। 39 और उसने उसे और उसके बादशाह और उसकी सब बस्तियों को फ़तह कर लिया और उन्होंने उनको बर्बाद किया और सब लोगों को जो उस में थे बिल्कुल हलाक कर दिया उसने एक को भी बाक़ी न छोड़ा जैसा उसने हबरून और उसके बादशाह से किया था वैसा ही दबीर और उसके बादशाह से किया, ऐसा ही उस ने लिबनाह और उसके बादशाह से भी किया था। 40 तब यशू'अ ने सारे मुल्क को या'नी पहाड़ी मुल्क और दख्खिनी हिस्सा और नशीब की ज़मीन और ढलानों और वहाँ के सब बादशाहों को मारा। उस ने एक को भी जीता न छोड़ा बल्कि वहाँ के हर इंसान को जैसा खुदावन्द इस्राईल के खुदा ने हुक्म किया था बिल्कुल हलाक कर डाला। 41 और यशू'अ ने उनको क़ादिस बरनी'



से लेकर गज्जा तक और जशन के सारे मुल्क के लोगों को जिबा'ऊन तक मारा। <sup>42</sup> और यशू'अ ने \*उन सब बादशाहों पर और उनके मुल्क पर एक ही वक्रत में कब्जा हासिल किया इसलिए कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा इस्राईल की खातिर लड़ा। <sup>43</sup> फिर यशू'अ और सब इस्राईली उसके साथ जिल्जाल को खेमागाह में लौटे।

## 11

00000000 00 000000 00 0000 00 000000

<sup>1</sup> जब हसूर के बादशाह याबीन ने \*यह सुना तो उस ने मदून के बादशाह यूआब और समरून के बादशाह और इक्शाफ के बादशाह को। <sup>2</sup> और उन बादशाहों को जो उत्तर की तरफ पहाड़ी मुल्क और किन्नरत के दख्खिनी मैदान और नशेब की ज़मीन और पश्चिम की तरफ डोर की मुर्तफ़ा ज़मीन में रहते थे। <sup>3</sup> और पूरबी और पश्चिम के कनानियों और अमूरीयों और हित्तियों और फ़रिज्जियों और पहाड़ी मुल्क के यबूसियों और हव्वियों को जो हरमून के नीचे मिस्फ़ाह के मुल्क में रहते थे बुलवा भेजा। <sup>4</sup> तब वह और उनके साथ उनके लश्कर या'नी एक बड़ी भीड़ जो ता'दाद में समन्दर के किनारे की रेत की तरह थे बहुत से घोड़ों और रथों को साथ लेकर निकले। <sup>5</sup> और यह सब बादशाह मिलकर आए और उन्होंने मेरूम की झील पर इकट्ठे डेरें डाले ताकि इस्राईलियों से लड़ें। <sup>6</sup> तब खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि उन से न डरो क्योंकि कल इस वक्रत में उन सब को इस्राईलियों के सामने मार कर डाल दूंगा तू उनके घोड़ों की कूचें काट डालना और उनके रथ आग से जला देना। <sup>7</sup> चुनाँचे यशू'अ और सब जंगी मर्द उसके साथ मेरूम की झील पर अचानक उनके मुकाबिले को आए और उन पर टूट पड़े। <sup>8</sup> और खुदावन्द ने उनको इस्राईलियों के कब्जे में कर दिया इसलिए उन्होंने उनको मारा और बड़े सैदा और मिसरफ़ात अलमाइम और पूरब में मिस्फ़ाह की वादी तक उनको दौड़ाया और क़त्ल किया यहाँ तक कि उन में से एक भी बाक़ी न छोड़ा। <sup>9</sup> और यशू'अ ने खुदावन्द के हुक्म के मुवाफ़िक़ उन से किया कि उनके घोड़ों की कूचें काट डालीं और उनके रथ आग से जला दिए। <sup>10</sup> फिर यशू'अ उसी वक्रत लौटा और उस ने हसूर को घेर करके उसके बादशाह को तलवार से मारा, क्योंकि अगले वक्रत में हसूर उन सब सल्लतनों का सरदार था। <sup>11</sup> और उन्होंने उन सब लोगों को जो वहाँ थे तहस नहस करके उनको, बिल्कुल हलाक कर दिया; वहाँ कोई आदमी बाक़ी न रहा, फिर उस ने हसूर को आग से जला दिया। <sup>12</sup> और यशू'अ

ने उन बादशाहों के सब शहरों को और उन शहरों के सब बादशाहों को लेकर और उनको तहस नहस कर के बिल्कुल हलाक कर दिया, जैसा खुदावन्द के बन्दे मूसा ने हुक्म किया था। <sup>13</sup> लेकिन जो शहर अपने टीलों पर बने हुए थे उन में से किसी को इस्राईलियों ने नहीं जलाया, सिवा हसूर के जिसे यशू'अ ने फूँक दिया था। <sup>14</sup> और उन शहरों के तमाम माल — ए — गनीमत और चौपायों को बनी इस्राईल ने अपने वास्ते लूट में ले लिया, लेकिन हर एक आदमी को तलवार की धार से क़त्ल किया, यहाँ तक कि उनको ख़त्म कर दिया और एक आदमी को भी न छोड़ा। <sup>15</sup> जैसा खुदावन्द ने अपने बन्दे मूसा को हुक्म दिया था वैसा ही मूसा ने यशू'अ को हुक्म दिया, और यशू'अ ने वैसा ही किया; और जो हुक्म खुदावन्द ने मूसा को दिया था उन में से किसी को उस ने बग़ैर पूरा किये न छोड़ा। <sup>16</sup> इसलिए यशू'अ ने उस सारे मुल्क को, या'नी पहाड़ी मुल्क, और सारे दख्खिनी हिस्से और जशन के सारे मुल्क, और नशेब की ज़मीन, और मैदान और इस्राईलियों के पहाड़ी मुल्क, और उसी के नशेब की ज़मीन, <sup>17</sup> कोह — ए — खल्लक से लेकर जो श'ईर की तरफ़ जाता है, बा'ल जद्द तक जो वादी — ए — लुबनान में कोह — ए — हरमून के नीचे है सब को ले लिया, और उनके बादशाहों पर फ़तह हासिल करके उस ने उनको मारा और क़त्ल किया। <sup>18</sup> और यशू'अ मुद्दत तक उन सब बादशाहों से लड़ता रहा। <sup>19</sup> सिवा हव्वियों के जो जिबा'ऊन के बाशिंदे थे और किसी शहर ने बनी इस्राईल से सुलह नहीं की, बल्कि सब को उन्होंने लड़ कर फ़तह किया। <sup>20</sup> क्योंकि यह खुदावन्द ही की तरफ़ से था कि वह उनके दिलों को ऐसा सख़्त कर दे कि वह जंग में इस्राईल का मुकाबला करें ताकि वह उनको बिल्कुल हलाक कर डाले और उन पर कुछ मेहरबानी न हो बल्कि वह उनको बर्बाद कर दे, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था। <sup>21</sup> फिर उस वक्रत यशू'अ ने आकर, अनाक़ीम की पहाड़ी मुल्क, या'नी हबरून और दबीर और 'अनाब से बल्कि यहूदाह के सारे पहाड़ी मुल्क और इस्राईल के सारे पहाड़ी मुल्क से काट डाला; यशू'अ ने उनको उनके शहरों के साथ बिल्कुल हलाक कर दिया। <sup>22</sup> इसलिए अनाक़ीम में से कोई बनी इस्राईल के मुल्क में बाक़ी न रहा, सिर्फ़ गज्जा और जात और अशदूद में थोड़े से बाक़ी रहे। <sup>23</sup> तब जैसा खुदावन्द ने मूसा से कहा था, उसके मुताबिक़ यशू'अ ने सारे मुल्क को लिया यशू'अ ने उसे इस्राईलियों को उनके क़बीलों के हिस्से के मुवाफ़िक़ मीरास के तौर पर दिया, और मुल्क को जंग से फरागत

\* 11:1 11:1 इस्राईलियों की फ़तेह की बाबत खबर

मिली।

## 12

१२२२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२ २२ २२२२२२ २२२२

१ उस मुल्क के वह बादशाह जिनको बनी इस्राईल ने क़त्ल करके उनके मुल्क पर, यरदन के उस पार पूरब की तरफ़ अरनोन की वादी से लेकर कोह — ए — हरमून तक और तमाम पूरबी मैदान पर, क़ब्ज़ा कर लिया यह हैं। २ अमूरियों का बादशाह सीहोन जो हसबून में रहता था और 'अरो'ईर से लेकर जो वादी — ए — अरनून के किनारे है, और उस वादी के बीच के शहर से वादी — ए — यब्बूक तक जो बनी 'अम्मून की सरहद है आधे जिल'आद पर, ३ और मैदान से बहरे — ए — किन्नरत तक जो पूरब की तरफ़ है, बल्कि पूरब ही की तरफ़ बैत यसीमोत से होकर मैदान के दरिया तक जो दरयाई शोर है, और दख्खिन में पिसगा के दामन के नीचे नीचे हुकूमत करता था। ४ और बसन के बादशाह 'ऊज़ की सरहद, जो रिफ़ाईम की बक्रिया नसल से था और 'असतारात और अदराई में रहता था, ५ और वह कोह — ए — हरमून और सलका और सारे बसन में जसूरियों और मा'कातियों की सरहद तक, आधे जिल'आद में जो हसबून के बादशाह सीहोन की सरहद थी, हुकूमत करता था। ६ उनको खुदावन्द के बन्दे मूसा और बनी इस्राईल ने मारा, और खुदावन्द के बन्दा मूसा ने बनीरुबिन और बनीजद और मनस्सी के आधे क़बीले को उनका मुल्क, मीरास के तौर पर दे दिया।

२२२२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२ २२ २२२२२२ २२२२

७ और यरदन के इस पार पश्चिम की तरफ़ बा'ल जद से जो वादी — ए — लुबनान में है, कोह — ए — खल्क तक जो श'ईर को निकल गया है, जिन बादशाहों को यशू'अ और बनी इस्राईल ने मारा और जिनके मुल्क को यशू'अ ने इस्राईलियों के क़बीलों को उनकी तक्रसीम के मुताबिक़ मीरास के तौर पर दे दिया वह यह हैं। ८ पहाड़ी मुल्क और नशीब की ज़मीन और मैदान और ढलानों में और वीरान और दख्खिनी हिस्से में हित्ती और अमूरी और कना'नी और फ़रिज़्जी और हव्वी और यबूसी क़ौमों में से; ९ एक यरीहू का बादशाह, एक ए'े का बादशाह जो बैतएल के नज़दीक़ आबाद है। १० एक येरूशलेम का बादशाह, एक हबरून का बादशाह, ११ एक यरमूत का बादशाह, एक लकीस का बादशाह, १२ एक 'अजलून का बादशाह, एक जज़र का बादशाह, १३ एक दबीर का बादशाह, एक जदर का बादशाह, १४ एक हुरमा का

बादशाह, एक 'अराद का बादशाह, १५ एक लिब्नाह का बादशाह, एक 'अदल्लाम का बादशाह, १६ एक मक्कीदा का बादशाह, एक बैत — एल का बादशाह, १७ एक तफूह का बादशाह, एक हफ़र का बादशाह, १८ एक अफ़ीक़ का बादशाह, एक लशरून का बादशाह, १९ एक मदन का बादशाह, एक हसूर का बादशाह, २० एक सिमरून मरून का बादशाह, एक इक्शाफ़ का बादशाह, २१ एक ता'नक़ का बादशाह, एक मजिदो का बादशाह, २२ एक क़ादिस का बादशाह, एक कर्मिल के यक़'नियाम का बादशाह, २३ एक दोर की मुर्तफ़ा' ज़मीन के दोर का बादशाह, एक गोइम का बादशाह, जो जिलजाल में था। २४ एक तिरज़ा का बादशाह, यह सब इकतीस बादशाह, थे।

## 13

२२२२२२ २२२ २२२२ २२२२ २२२२ २२२२ २२२२ २२२२२२

१ और यशू'अ बूढ़ा और उम्र रसीदा हुआ और खुदावन्द ने उस से कहा, कि तू बूढ़ा और उम्र रसीदा है और क़ब्ज़ा करने को अभी बहुत सा मुल्क बाक़ी है। २ और वह मुल्क जो बाक़ी है इसलिए ये है; फ़िलिस्तिनों की सब इक्लीम और सब हबसूरी। ३ सीहूर से जो मिस्र के सामने है उत्तर की तरफ़ 'अकरून की हद तक जो कना'नियों का गिना जाता है, फ़िलिस्तिनों के पाँच सरदार या'नी ग़ज़ी और अशदूदी असक़लूनी और जातीऔर अकरूनी और 'अव्वीम भी। ४ जो दख्खिन की तरफ़ हैं और कना'नियों का सारा मुल्क और मशारह जो सैदानियों का है, अफ़ीक़ या'नी अमूरियों की सरहद तक। ५ और जिब्लियों का मुल्क और पूरब की तरफ़ बा'ल जद से जो कोह — ए — हरमून के नीचे है, हिमात के मदख़ल तक सारा लुबनान। ६ फिर लुबनान से मिस्रफ़ात अलमाईम तक पहाड़ी मुल्क के सब बाशिंदे या'नी सब सैदानी। उनको मैं बनी इस्राईल के सामने से निकाल डालूँगा, तू सिर्फ़ जैसा मैंने तुझको हुक्म दिया है, मीरास के तौर पर उसे इस्राईलियों को तक्रसीम कर दे, ७ इसलिए तू इस मुल्क को उन नौ क़बीलों और मनस्सी के आधे क़बीले को मीरास के तौर पर बाँट दे,

२२२२ २२ २२२२२२ २२२ २२२२ २२२ २२२२२२

८ मनस्सी के साथ बनी रुबिन और बनी जद ने अपनी अपनी मीरास पा ली थी जिसे मूसा ने यरदन के उस पार पूरब की तरफ़ उनको दिया था, क्योंकि खुदावन्द के बन्दे मूसा ने उसे उन ही को दिया था, या'नी:। ९ 'अरो'ईर से जो वादी — ए — अरनून के किनारे आबाद है शुरू', करके वह शहर जो वादी के बीच में है, मिदबा का सारा मैदान दीबोन तक, १० और अमूरियों के बादशाह सीहोन

के सब शहर जो हसबून में सल्लनत करता था बनी 'अम्मून की सरहद तक। <sup>11</sup> और जिल'आद और जसूरियों और मा'कातियों की नवाही और सारा कोह — ए — हरमून और सारा बसन सलका तक। <sup>12</sup> और 'ओज जो रिफ्राईम की बक्रिया नसल से था और 'इस्तारात और अदराई में हुक्मरान था उसका सारा 'इलाका जो बसन में था क्योंकि मूसा ने उनको मार कर अलग कर दिया था। <sup>13</sup> तो भी बनी इस्राईल ने जसूरियों और मा'कातियों को नहीं निकाला चुनाँचे जसूरी और मा'काती आज तक इस्राईलियों के बीच बसे हुए हैं।

१३:११-१३:१३

<sup>14</sup> सिर्फ लावी के कबीले को उस ने कोई मीरास नहीं दी; क्योंकि खुदावन्द इस्राईल के खुदा की आतिशीन कुर्बानियाँ उसकी मीरास हैं, \*जैसा उसने उससे कहा था।

१३:१४-१३:१६

<sup>15</sup> और मूसा ने बनी रूबिन के कबीले को उनके घरानों के मुताबिक मीरास दी, <sup>16</sup> और उनकी सरहद यह थी: या'नी 'अरो'ईर से जो वादी — ए — अरनोन के किनारे आबाद है, और वह शहर जो पहाड़ के बीच में है, और मिदबा के पास का सारा मैदान; <sup>17</sup> हस्बोन और उसके सब शहर जो मैदान में हैं, दीबोन और बामात बा'ल, बैत बा'ल म'ऊन, <sup>18</sup> और यहसाह, और कदीमात, और मफ़'अत, <sup>19</sup> और करीताईम, और सिबमाह, और ज़रत — उल — सहर जो पहाड़ के किनारे में हैं, <sup>20</sup> और बैत फ़गूर, और पिसगा के दामन की ज़मीन, और बैत यसीमोट, <sup>21</sup> और मैदान के सब शहर और अमोरियों के बादशाह सीहोन का सारा मुल्क जो हसबोन में सल्लनत करता था, जिसे मूसा ने मिदियान के रईसों ईव्वी और रकुम और सूर और हूर और रब्बा, सीहोन के रईसों के साथ जो उस मुल्क में बसते थे, क़त्ल किया था। <sup>22</sup> और ब'ओर के बेटे बल'आम को भी जो नज़ूमी था, बनी इस्राईल ने तलवार से क़त्ल करके उनके मक़तूलों के साथ मिला दिया था। <sup>23</sup> और यरदन और उसके 'इलाके बनी रूबिन की सरहद थी। यही शहर और उनके गाँव बनी रूबिन के घरानों के मुताबिक उनके वारिस ठहरे।

१३:१४-१३:१६

<sup>24</sup> और मूसा ने जह्द के कबीले या'नी बनी जह्द को उनके घरानों के मुताबिक मीरास दी। <sup>25</sup> और उनकी सरहद यह थी: या'ज़ेर और जिल'आद के सब शहर और बनी 'अम्मोन का आधा मुल्क, 'अरो'ईर तक जो रब्बा के सामने है। <sup>26</sup> और हसबोन से रामात उल मिसफ़ाह और बतूनीम तक, और महनाईम से दबीर की सरहद

तक। <sup>27</sup> और वादी में बैत हारम, और बैत निमरा, और सुक्कात, और सफ़ोन, या'नी हस्बोन के बादशाह सीहोन की अक़लीम का बाकी हिस्सा, और यरदन के उस पार पूरब की तरफ़ किन्नरत की झील के उस सिरे तक, यरदन और उस की सारी नवाही। <sup>28</sup> यही शहर और इनके गाँव बनी जह्द के घरानों के मुताबिक उनकी मीरास ठहरे।

१३:१७-१३:१९

<sup>29</sup> और मूसा ने मनस्सी के आधे कबीले को भी मीरास दी, यह बनी मनस्सी के घरानों के मुताबिक उनके आधे कबीले के लिए थी। <sup>30</sup> और उनकी सरहद यह थी: महनाईम से लेकर सारा बसन और बसन के बादशाह 'ओज़ की तमाम अक़लीम, और याईर के सब क़स्बे जो बसन में हैं वह साठ शहर हैं, <sup>31</sup> और आधा जिल'आद और 'इस्तारात और अदराई जो बसन के बादशाह 'ओज़ के शहर थे, मनस्सी के बेटे मकीर की औलाद को मिले, या'नी मकीर की औलाद के आधे को उनके घरानों के मुताबिक यह मिले। <sup>32</sup> यही वह हिस्से हैं जिनको मूसा ने यरीहू के पास मोआब के मैदानों में यरदन के उस पार पूरब की तरफ़ मीरास के तौर पर तक्सीम किया। <sup>33</sup> लेकिन लावी के कबीले को मूसा ने कोई मीरास नहीं दी; क्योंकि खुदावन्द इस्राईल का खुदा उनकी मीरास है, जैसा उसने उनसे खुद कहा।

## 14

१४:१-१४:३

<sup>1</sup> और वह हिस्से जिनको कन'आन के मुल्क में बनी इस्राईल ने वारिस के तौर पर पाया, और जिनको इली'एलियाज़र काहिन और नून के बेटे यशू'अ और बनी इस्राईल के कबीलों के आबाई खानदानों के सरदारों ने उनको तक्सीम किया यह हैं। <sup>2</sup> उनकी मीरास पर्ची से दी गयी, जैसा खुदावन्द ने साढ़े नौ कबीलों के हक़ में मूसा को हुक्म दिया था। <sup>3</sup> क्योंकि मूसा ने यरदन के उस पार ढाई कबीलों की मीरास उनको दे दी थी, लेकिन उसने लावियों को उनके बीच कुछ मीरास नहीं दी। <sup>4</sup> क्योंकि बनी यूसुफ़ के दो कबीले थे, मनस्सी और इफ़्राईम, इसलिए लावियों को उस मुल्क में कुछ हिस्सा न मिला सिवा शहरों के जो उनके रहने के लिए थे और उनकी नवाही के जो उनके चौपायों और माल के लिए थी। <sup>5</sup> जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था, वैसा ही बनी इस्राईल ने किया और मुल्क को बाँट लिया।

१४:४-१४:५

\* 13:14 13:14 जिस तरह इस्राईल के खुदा ने मूसा से कहा, जिस तरह इस्राईल के खुदा ने उनसे कहा

6 तब बनी यहूदाह जिल्लाजाल में यशू'अ के पास आये; और क्रिन्जी युफ़न्ना के बेटे कालिब ने उससे कहा, तुझे मा'लूम है कि खुदावन्द ने मर्द — ए — खुदा मूसा से मेरी और तेरी बारे में क़ादिस बरनी' में क्या कहा था। 7 जब खुदावन्द के बन्दे मूसा ने क़ादिस बरनी' से मुझको इस मुल्क का हाल दरियाफ़्त करने को भेजा उस वक़्त मैं चालीस बरस का था; और मैंने उसको वही ख़बर ला कर दी जो मेरे दिल में थी। 8 तो भी मेरे भाइयों ने जो मेरे साथ गये थे, लोगों के दिलों को पिघला दिया; लेकिन मैंने खुदावन्द अपने खुदा की पूरी पैरवी की है। 9 तब मूसा ने उस दिन क़सम खा कर कहा, “जिस ज़मीन पर तेरा क़दम पड़ा है वह हमेशा के लिए तेरी और तेरे बेटों की मीरास ठहरेगी, क्योंकि तूने खुदावन्द मेरे खुदा की पूरी पैरवी की है”। 10 और अब देख जब से खुदावन्द ने यह बात मूसा से कही तब से इन पैतालीस बरसों तक, जिनमें बनी इस्राईल वीराने में आवारा फ़िरते रहे, खुदावन्द मुझे अपने क़ौल के मुताबिक़ जीता रखा और अब देख, मैं आज के दिन पिचासी बरस का हूँ। 11 और आज के दिन भी मैं वैसा ही हूँ जैसा उस दिन था, जब मूसा ने मुझे \*भेजा था और जंग के लिए और बाहर जाने और लौटने के लिए जैसी कुव्वत मुझ में उस वक़्त थी वैसी ही अब भी है। 12 इसलिए यह पहाड़ी जिसका ज़िक्र खुदावन्द ने उस रोज़ किया था मुझ को दे दे, क्योंकि तूने उस दिन सुन लिया था कि 'अनाकीम वहाँ बसते हैं और वहाँ के शहर बड़े फ़सील दार हैं; यह मुमकिन है कि खुदावन्द मेरे साथ हो और मैं उनको खुदावन्द के क़ौल के मुताबिक़ निकाल दूँ।’ 13 तब यशू'अ ने युफ़न्ना के बेटे कालिब को दुआ दी, और उसको हबरून मीरास के तौर पर दे दिया। 14 इसलिए हबरून उस वक़्त से आज तक क्रिन्जी युफ़न्ना के बेटे कालिब की मीरास है, इस लिए कि उस ने खुदावन्द इस्राईल के खुदा की पूरी पैरवी की। 15 और अगले वक़्त में हबरून का नाम करयत अरबा' था, और वह अरबा' 'अनाकीम में सब से बड़ा आदमी था। और उस मुल्क को जंग से फ़रागत मिली।

## 15

?????? ?? ???? ?? ?? ???? ???? ?

1 और बनी यहूदाह के क़बीले का हिस्सा उनके घरानों के मुताबिक़ पर्ची डालकर अदोम की सरहद तक, और दख्खिन में दशत — ए — सीन तक जो जुनुब के इन्तिहाई हिस्से में आबाद है ठहरा। 2 और उनकी

दख्खिनी हद दरिया — \*ए — शोर के इन्तिहाई हिस्से की उस खाड़ी से जिसका रुख दख्खिन की तरफ़ है शुरू" हुई; 3 और वह 'अकरब्बीम की चढ़ाई की दख्खिनी सिम्त से निकल सीन होती हुई क़ादिस बरनी' के दख्खिन को गयी, फिर हसरून के पास से अदार को जाकर करक्रा' को मुड़ी, 4 और वहाँ से 'अज़मून होती हुई मिस्र के नाले को जा निकली, और उस हद का खातिमा समन्दर पर हुआ; यही तुम्हारी दख्खिनी सरहद होगी। 5 और पूरबी सरहद यरदन के दहाने तक दरिया — ए — शोर ही ठहरा, और उसकी उत्तरी हद उस दरिया की उस खाड़ी से जो यरदन के दहाने पर है शुरू" हुई, 6 और यह हद बैत हजला को जाकर और बैत उल 'अराबा के उत्तर से गुज़र कर रूबिन के बेटे बोहन के पत्थर को पहुँची; 7 फिर वहाँ से वह हद 'अकूर की वादी होती हुई दबीर को गई और वहाँ से उत्तर की सिम्त चल कर जिलजाल के सामने जो अदुम्मीम की चढ़ाई के मुक्काबिल है जा निकली, यह चढ़ाई नदी के दख्खिन में है; फिर वह हद 'ऐन शम्स के चश्मों के पास होकर 'ऐन राजिल पहुँची। 8 फिर वही हद हिन्नूम के बेटे की वादी में से होकर यबूसियों की बस्ती के दख्खिन को गयी, येरूशलेम वही है; और वहाँ से उस पहाड़ की चोटी को जा निकली, जो वादी — ए — हिन्नूम के मुक्काबिल पश्चिम की तरफ़ और रिफ़ाईम की वादी के उत्तरी इन्तिहाई हिस्से में आबाद है; 9 फिर वही हद पहाड़ की चोटी से आब — ए — नफ़तूह के चश्में को गयी, और वहाँ से कोह — ए — 'अफ़रोन के शहरों के पास जा निकली, और उधर से बा'ला तक जो करयत या'रीम है पहुँची; 10 और बा'ला से होकर पश्चिम की सिम्त कोह — ए — श'ईर को फिरी, और कोह — ए — या'रीम के जो कसलून भी कहलाता है, उत्तरी दामन के पास से गुज़र कर बैत शम्स की तरफ़ उतरती हुई तिमना को गयी; 11 और वहाँ से वह हद 'अकरून के उत्तर को जा निकली; फिर वह सिकूरून से हो कर कोह — ए — बा'ला के पास से गुज़रती हुई यबनीएल पर जा निकली; और इस हद का खातिमा समन्दर पर हुआ 12 और पश्चिमी सरहद बड़ा समन्दर और उसका साहिल था। बनी यहूदाह की चारों तरफ़ की हद उनके घरानों के मुताबिक़ यही है। 13 और यशू'अ ने उस हुक्म के मुताबिक़ जो खुदावन्द ने उसे दिया था, युफ़न्ना के बेटे कालिब को बनी यहूदाह के बीच 'अनाक के बाप अरबा' का शहर करयत अरबा' जो हबरून है हिस्सा दिया। 14 इसलिए कालिब ने वहाँ से

\* 14:11 14:11 सफ़र के लिए \* 15:2 15:2 बहिरा — ए — मुरदार



'अनाक के तीनों बेटों, या'नी सीसी और अखीमान और तलमी को जो बनी 'अनाक हैं निकाल दिया। <sup>15</sup> और वह वहाँ से दबीर के बाशिंदों पर चढ़ गया। दबीर का कदीमी नाम करयत सिफ़र था। <sup>16</sup> और कालिब ने कहा, “जो कोई करयत सिफ़र को मार कर उसको सर करले, उसे मैं अपनी बेटी 'अकसा ब्याह दूँगा”। <sup>17</sup> तब कालिब के भाई कनज के बेटे गतनीएल ने उसको सर कर लिया, इसलिए उसने अपनी बेटी 'अकसा उसे ब्याह दी। <sup>18</sup> जब वह उसके पास आई, तो उसने उस आदमी को उभारा कि वह उसके बाप से एक खेत माँगे; इसलिए वह अपने गधे पर से उतर पड़ी, तब कालिब ने उससे कहा, “तू क्या चाहती है?” <sup>19</sup> उस ने कहा, “मुझे बरकत दे; क्योंकि तूने दख्खन के मुल्क में कुछ ज़मीन मुझे 'इनायत की है, इसलिए मुझे पानी के चश्में भी दे।” तब उसने उसे ऊपर के चश्में और नीचे के चश्में 'इनायत किये।

यशोअ 15:15-19

<sup>20</sup> बनी यहूदाह के कबीले की मीरास उनके घरानों के मुताबिक यह है। <sup>21</sup> और अदोम की सरहद की तरफ़ दख्खन में बनी यहूदाह के इन्तिहाई शहर यह हैं: कबज़ीएल और 'एदर और यज़ूर, <sup>22</sup> और कैना और दैमूना और 'अद 'अदा, <sup>23</sup> और कादिस और हसूर और इतनान, <sup>24</sup> ज़ीफ़ और तलम और बा'लूत, <sup>25</sup> और हसूर और हदता और करयत और हसरून जो हसूर हैं, <sup>26</sup> और अमाम और समा' और मोलादा, <sup>27</sup> और हसार जद्दा और हिशमोन और बैत फ़लत, <sup>28</sup> और हसर सु'आल और बैरसबा' और बिज़योत्याह, <sup>29</sup> बा'ला और 'इय्मीम और 'अज़म, <sup>30</sup> और इलतोलद और कसील और हुरमा, <sup>31</sup> और सिक़लाज और मदमन्ना और सनसन्ना, <sup>32</sup> और लबाऊत और सिलहीम और 'ऐन और रिम्मोन; यह सब उन्तीस शहर हैं, और इनके गाँव भी हैं। <sup>33</sup> और नशेब की ज़मीन में इस्ताल और सुर'आह और असनाह, <sup>34</sup> और ज़नोआह और 'ऐन जन्नीम, तफूह और 'एनाम, <sup>35</sup> यरमूत और 'अदूल्लाम, शोको और 'अज़ीका, <sup>36</sup> और शा'रीम और अदीतीम और जदीरा और जदीरतीम; और यह चौदह शहर हैं और इनके गाँव भी हैं। <sup>37</sup> ज़िनान और हदाशा और मिजदल जद, <sup>38</sup> और दिल'आन और मिस्फ़ाह और यक्तीएल, <sup>39</sup> लकीस और बसक़त और 'इज़लून, <sup>40</sup> और कब्बून और लहमान और कितलीस, <sup>41</sup> और जदीरोत और बैत दज़ून और ना'मा और मुक्कैदा; यह सोलह शहर हैं, और इनके गाँव भी हैं। <sup>42</sup> लिबना और 'अतूर और 'असन, <sup>43</sup> और यफ़ताह और असना और नसीब; <sup>44</sup> और क'ईला और अकज़ीब और मरेसा; यह नौ शहर हैं और इनके गाँव भी हैं। <sup>45</sup> अकरून और उसके कस्बे और गाँव। <sup>46</sup> अकरून से समन्दर तक अशदूद के

पास के सब शहर और उनके गाँव। <sup>47</sup> अशदूद अपने शहरों और गाँवों के साथ, और गज़ज़ा अपने शहरों और गाँव के साथ; मिस्र की नदी और बड़े समन्दर और साहिल तक। <sup>48</sup> और पहाड़ी मुल्क में समीर और यतीर और शोको, <sup>49</sup> और दन्ना और करयत सन्ना जो दबीर है, <sup>50</sup> और 'अनाब और इस्मतोह और 'इनीम, <sup>51</sup> और जशन और हौलून और जिलोह; यह ग्यारह शहर हैं और इनके गाँव भी हैं। <sup>52</sup> अराब और दोमाह और इश'आन, <sup>53</sup> और यनीम और बैत तफ़ूह और अफ़ीका, <sup>54</sup> और हुमता और करयत अरबा' जो हवरून है और सी'ऊर; यह नौ शहर हैं और इनके गाँव भी हैं। <sup>55</sup> म'ऊन, कर्मिल और ज़ीफ़ और यूत्ता, <sup>56</sup> और यज़रएल और याक़दि'आम और ज़नोआह, <sup>57</sup> कैन, जिब'आ और तिमना; यह दस शहर हैं और इनके गाँव भी हैं। <sup>58</sup> हालहूल और बैत सूर और जदूर, <sup>59</sup> और मा' रात और बैत 'अनोत और इलतिकून; यह छह शहर हैं और इनके गाँव भी हैं। <sup>60</sup> करयत बा'ल जो करयत या'रीम है, और रब्बा; यह दो शहर हैं और इनके गाँव भी हैं। <sup>61</sup> और वीराने में बैत 'अराबा और मदीन और सकाका, <sup>62</sup> और नबसान और नमक का शहर और 'ऐन जदी; यह छः शहर हैं और इनके गाँव भी हैं। <sup>63</sup> और यबूसियों को जो येरूशलेम के बाशिन्दे थे, बनी यहूदाह निकाल न सके; इसलिए यबूसी बनी यहूदाह के साथ आज के दिन तक येरूशलेम में बसे हुए हैं।

## 16

यशोअ 16:1-6

<sup>1</sup> और बनी यूसुफ़ का हिस्सा पर्ची डालकर यरीहू के पास के यरदन से शुरू हुआ, या'नी पूरब की तरफ़ यरीहू के चश्में बल्कि वीराना पड़ा। फिर उसकी हद यरीहू से पहाड़ी मुल्क होती हुई बैत — एल को गयी। <sup>2</sup> फिर बैत — एल से निकल कर लूज़ को गई और अर्कियों की सरहद के पास से गुज़रती हुई 'अतारात पहुँची; <sup>3</sup> और वहाँ से पश्चिम की तरफ़ यफ़लीतियों की सरहद से होती हुई नीचे के बैत हौरून बल्कि जज़र को निकल गयी, और उसका खातिमा समन्दर पर हुआ। <sup>4</sup> तब बनी यूसुफ़ या'नी मनस्सी और इफ़राईम ने अपनी अपनी मीरास पर कब्ज़ा किया।

यशोअ 16:1-6

<sup>5</sup> और बनी इफ़राईम की सरहद उनके घरानों के मुताबिक यह थी: पूरब की तरफ़ ऊपर के बैत हौरून तक 'अतारात अदार उनकी हद ठहरी; <sup>6</sup> मैं उत्तर की तरफ़ वह हद पश्चिम के मिकमता होती हुई पूरब की

तरफ़ तानत सैला को मुड़ी, और वहाँ से यनूहाह के पूरब को गयी; <sup>7</sup> और यनूहाह से 'अतारात और ना'राता होती हुई यरीहू पहुँची, और फिर यरदन को जा निकली; <sup>8</sup> और वह हद तफूह से निकल कर पश्चिम की तरफ़ क़ानाह के नाले को गई और उसका खातिमा समन्दर पर हुआ। बनी इफ़राईम के क़बीला की मीरास उनके घरानों के मुताबिक़ यही है। <sup>9</sup> और इसके साथ बनी इफ़राईम के लिए बनी मनस्सी की मीरास में भी शहर अलग किए गये और उन सब शहरों के साथ उनके गाँव भी थे। <sup>10</sup> और उन्होंने कना'नियों को जो जज़र में रहते थे न निकाला, बल्कि वह कना'नी आज के दिन तक इफ़राईमियों में बसे हुए हैं, और खादिम बनकर बेगार का काम करते हैं।

## 17

यशोअ 17:1-17

<sup>1</sup> और मनस्सी के क़बीले का हिस्सा पर्ची डालकर यह ठहरा। क्योंकि वह यूसुफ़ का पहलौठा था, और चूँकि मनस्सी का पहलौठा बेटा मकीर जो जिल'आद का बाप था जंगी मर्द था इसलिए उस को जिल'आद और बसन मिले। <sup>2</sup> इसलिए यह हिस्सा बनी मनस्सी के बाक़ी लोगों के लिए उनके घरानों के मुताबिक़ था या'नी बनी अबी'अएज़र और बनी खलक़ और बनी इसरीएल और बनी सिकम और बनी हिफ़र और बनी समीदा' के लिए, यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के फ़र्ज़न्द — ए — नरीना अपने अपने घराने के मुताबिक़ यही थे। <sup>3</sup> और सिलाफ़िहाद बिन हिफ़र बिन जिल'आद बिन मकीर बिन मनस्सी के बेटे नहीं बल्कि बेटियाँ थी और उसकी बेटियों के नाम यह हैं, महलाह और नू'आह और हुजला और मिलकाह और तिरज़ाह। <sup>4</sup> इसलिए वह इली'एलियाज़र काहिन और नून के बेटे यशू'अ और सरदारों के आगे आकर कहने लगीं कि खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था कि वह हमको हमारे भाईयों के बीच मीरास दे चुनाँचे खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ उस ने उनके भाईयों के बीच उनको विरासत दी। <sup>5</sup> इसलिए मनस्सी को जिल'आद और बसन के मुल्क को छोड़ कर जो यरदन के उस पार है दस हिस्से और मिले। <sup>6</sup> क्योंकि मनस्सी की बेटियों ने भी बेटों के साथ मीरास पाई और मनस्सी के बेटों को जिल'आद का मुल्क मिला। <sup>7</sup> और आशर से लेकर मिकमताह तक जो सिकम के मुक़ाबिल है मनस्सी की हद थी, और वही हद दहने हाथ पर, 'ऐन तफ़ूह के बाशिन्दों तक चली गयी। <sup>8</sup> यूसू तफ़ूह की ज़मीन तो मनस्सी की हुई लेकिन तफ़ूह शहर जो मनस्सी की सरहद पर था बनी इफ़राईम का हिस्सा ठहरा, <sup>9</sup> फिर वहाँ से वह हद क़ानाह

के नाले को उतर कर उसके दख्खन की तरफ़ पहुँची, यह शहर जो मनस्सी के शहरों के बीच हैं इफ़राईम के ठहरे और मनस्सी की हद उस नाले के उत्तर की तरफ़ से होकर समन्दर पर ख़त्म हुई। <sup>10</sup> इसलिए दख्खन की तरफ़ इफ़राईम की और उत्तर की तरफ़ मनस्सी की मीरास पड़ी और उसकी सरहद समन्दर थी यूसू वह दोनों उत्तर की तरफ़ आशर से और पूरब की तरफ़ इश्कार से जा मिलीं। <sup>11</sup> और इश्कार और आशर की हद में बैत शान और उसके क़स्बे और इबली'आम और उसके क़स्बे और अहल — ए — दोर और उसके क़स्बे और अहल — ए — 'ऐन दोर और उसके क़स्बे और अहल — ए — ता'नक और उसके क़स्बे और अहल — ए — मजिद्दो और उसके क़स्बे बल्कि तीनों मुर्तफ़ा' मक़ामात मनस्सी को मिले। <sup>12</sup> तो भी बनी मनस्सी उन शहरों के रहने वालों को निकाल न सके बल्कि उस मुल्क में कना'नी बसे ही रहे, <sup>13</sup> और जब बनी इस्राईल ताक़तवर हो गये तो उन्होंने कना'नियों से बेगार का काम लिया और उनको बिल्कुल निकाल बाहर न किया। <sup>14</sup> बनी यूसुफ़ ने यशू'अ से कहा कि तूने क्यूँ पर्ची डालकर हम को सिर्फ़ एक ही हिस्सा मीरास के लिए दिया अगरचे हम बड़ी क़ौम हैं क्यूँकि खुदावन्द ने हम को बरकत दी है? <sup>15</sup> यशू'अ ने उनको जवाब दिया कि अगर तुम बड़ी क़ौम हो तो जंगल में जाओ, और वहाँ फ़रिज़्जीयों और रिफ़ाईम के मुल्क को अपने लिए काट कर साफ़ कर लो क्यूँकि इफ़राईम का पहाड़ी मुल्क तुम्हारे लिए बहुत तंग है। <sup>16</sup> बनी यूसुफ़ ने कहा कि यह पहाड़ी मुल्क हमारे लिए काफ़ी नहीं है और सब कना'नियों के पास जो नशेब के मुल्क में रहते हैं या'नी वह जो बैत शान और उसके क़स्बों में और वह जो यज़र'एल की वादी में रहते हैं दोनों के पास लोहे के रथ हैं। <sup>17</sup> यशू'अ ने बनी यूसुफ़ या'नी इफ़राईम और मनस्सी से कहा कि तुम बड़ी क़ौम हो और बड़े ज़ोर रखते हो, इसलिए तुम्हारे लिए सिर्फ़ एक ही हिस्सा न होगा। <sup>18</sup> बल्कि यह पहाड़ी मुल्क भी तुम्हारा होगा क्यूँकि अगरचे वह जंगल है तुम उसे काट कर साफ़ कर डालना और उसके मख़ारिज भी तुम्हारे ही ठहरेंगे क्यूँकि तुम कना'नियों को निकाल दोगे अगरचे उनके पास लोहे के रथ हैं और वह ताक़तवर भी हैं।

## 18

यशोअ 18:1-20

<sup>1</sup> और बनी इस्राईल की सारी जमा'अत ने शीलोह में जमा' होकर खेमा — ए — इजितमा'अ को वहाँ खड़ा किया और वह मुल्क उनके आगे मग़लूब हो चुका था। <sup>2</sup> और बनी इस्राईल में सात क़बीले ऐसे रह गये थे

जिनकी मीरास उनको तक्रसीम होने न पाई थी। <sup>3</sup> और यशू'अ ने बनी इस्राईल से कहा, कि तुम कब तक उस मुल्क पर कब्जा करने से जो खुदावन्द तुम्हारे बाप दादा के खुदा ने तुम को दिया है सुस्ती करोगे? <sup>4</sup> इसलिए तुम अपने लिए हर कबीले में से तीन शख्स चुन लो, मैं उनको भेजूंगा और वह जाकर उस मुल्क में सैर करेंगे और अपनी अपनी मीरास के मुवाफ़िक़ उसका हाल लिख कर मेरे पास आएँगे। <sup>5</sup> वह उसके सात हिस्से करेंगे, यहूदाह अपनी सरहद में दख्खिन की तरफ़ और यूसुफ़ का खानदान अपनी सरहद में उत्तर की तरफ़ रहेगा। <sup>6</sup> इसलिए तुम उस मुल्क के सात हिस्से लिख कर मेरे पास यहाँ लाओ ताकि मैं खुदावन्द के आगे जो हमारा खुदा है तुम्हारे लिए पर्ची डालूँ। <sup>7</sup> क्योंकि तुम्हारे बीच लावियों का कोई हिस्सा नहीं इसलिए कि खुदावन्द की कहानत उनकी मीरास है और जद् और रूबिन और मनस्सी के आधे कबीले को यरदन के उस पार पूरब की तरफ़ मीरास मिल चुकी है जिसे खुदावन्द के बन्दे मूसा ने उनको दिया। <sup>8</sup> तब वह आदमी उठ कर खाना हुए और यशू'अ ने उनको जो उस मुल्क का हाल लिखने के लिए गये ताकीद की कि तुम जाकर उस मुल्क में सैर करो और उसका हाल लिख कर फिर मेरे पास आओ और मैं शीलोह में खुदावन्द के आगे तुम्हारे लिए पर्ची डालूँगा। <sup>9</sup> चुनाँचे उन्होंने जाकर उस मुल्क में सैर की और शहरों के सात हिस्से कर के उनका हाल किताब में लिखा और शीलोह की खेमागाह में यशू'अ के पास लौटे। <sup>10</sup> तब यशू'अ ने शीलोह में उनके लिए खुदावन्द के सामने पर्ची डाली और वहीं यशू'अ ने उस मुल्क को बनी इस्राईल की हिस्सों के मुताबिक़ उनको बाँट दिया।

॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥

<sup>11</sup> और बनी बिन यमीन के कबीले की पर्ची उनके घरानों के मुताबिक़ निकली और उनके हिस्से की हद बनी यहूदाह और बनी यूसुफ़ के बीच पड़ी। <sup>12</sup> इसलिए उनकी उत्तरी हद यरदन से शुरू हुई और यह हद यरीहू के पास से उत्तर की तरफ़ गुज़र कर पहाड़ी मुल्क से होती हुई पश्चिम की तरफ़ बैत आवन के वीराने तक पहुँची। <sup>13</sup> और वह हद वहाँ से लूज़ को जो बैत — एल है गयी और लूज़ के दख्खिन से उस पहाड़ के बराबर होती हुई जो नीचे के बैत हौरून के दख्खिन में है 'अतारात अदार को जा निकली। <sup>14</sup> और वह पश्चिम की तरफ़ से मुड़ कर दख्खिन को झुकी और बैत हौरून के सामने के पहाड़ से होती हुई दख्खिन की तरफ़ बनी यहूदाह के एक शहर करयत बा'ल तक जो करयत या'रीम है चली गयी, यह पश्चिमी हिस्सा था। <sup>15</sup> और दख्खिनी हद करयत

या'रीम की इन्तिहा से शुरू हुई और वह हद पश्चिम की तरफ़ आब — ए — नफ़तूह के चश्मे तक चली गयी; <sup>16</sup> और वहाँ से वह हद उस पहाड़ के सिरे तक जो हिन्नूम के बेटे की वादी के सामने है गयी, यह रिफ़ाईम की वादी के उत्तर में है और वहाँ से दख्खिन की तरफ़ हिन्नूम की वादी और यबूसियों के बराबर से गुज़रती हुई 'ऐन राजिल पहुँची; <sup>17</sup> वहाँ से वह उत्तर की तरफ़ मुड़ कर और 'ऐन शम्स से गुज़रती हुई जलीलोत को गयी जो अदुम्मीम की चढ़ाई के मुक्काबिल है और वहाँ से रूबिन के बेटे बोहन के पत्थर तक पहुँची; <sup>18</sup> और फिर उत्तर को जाकर मैदान के मुक्काबिल के रुख से निकलती हुयी मैदान ही में जा उतरी। <sup>19</sup> फिर वह हद वहाँ से बैत हुजला के उत्तरी पहलू तक पहुँची और उस हद का खातिमा दरिया — ए — शोर की उत्तरी खाड़ी पर हुआ जो यरदन के दख्खिनी सिरे पर है, यह दख्खिन की हद थी। <sup>20</sup> और उसकी पूरबी सिम्त की हद यरदन ठहरा, बनी बिनयमीन की मीरास उनकी चौगिर्द की हदों के 'ऐतबार से और उनके घरानों के मुवाफ़िक़ यह थी।

॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥

<sup>21</sup> और बनी बिन यमीन के कबीले के शहर उनके घरानों के मुवाफ़िक़ यह थे, यरीहू और बैत हुजला और 'ईमक़ कसीस। <sup>22</sup> और बैत 'अराबा और समरीम और बैतएल। <sup>23</sup> और 'अव्वीम और फ़ारा और 'उफ़रा। <sup>24</sup> और कफ़रउल'उम्मूनी और 'उफ़नी और जबा', यह बारह शहर थे और इनके गाँव भी थे। <sup>25</sup> और जिबा'ऊन और रामा और बैरोत। <sup>26</sup> मिस्फ़ाह और कफ़ीरह और मोज़ा <sup>27</sup> और रक़म और अरफ़ील और तराला। <sup>28</sup> और ज़िला', अलिफ़ और यबूसियों का शहर जो येरूशलेम है और जिब'अत और करयत, यह चौदह शहर हैं और इनके गाँव भी हैं, बनी बिनयमीन की मीरास उनके घरानों के मुताबिक़ यह है।

## 19

॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥

<sup>1</sup> और दूसरा पर्चा शमौन के नाम पर बनी शमौन के कबीले के वास्ते उनके घरानों के मुवाफ़िक़ निकला और उनकी मीरास बनी यहूदाह की मीरास के बीच थी। <sup>2</sup> और उनकी मीरास में बैरसबा' यासबा' था और मोलादा। <sup>3</sup> और हसार स'ऊल और बालाह और 'अज़म। <sup>4</sup> और इलतोलद और बतूल और हुरमा <sup>5</sup> और सिक़लाज और बैत मरकबोत और हसार सूसा। <sup>6</sup> और बैत लिबाउत और सरोहन, यह तेरह शहर थे और इनके गाँव भी थे। <sup>7</sup> 'ऐन और रिम्मोन और 'अतर और 'असन, यह चार

शहर थे और इनके गाँव भी थे।<sup>8</sup> और वह सब गाँव भी इनके थे जो इन शहरों के आस पास बा'लात बैर या'नी दख्खिन के रामा तक हैं, बनी शमौन के कबीले की मीरास उनके घरानों के मुताबिक यह ठहरी।<sup>9</sup> बनी यहूदाह की मिल्कियत में से बनी शमौन की मीरास ली गयी क्योंकि बनी यहूदाह का हिस्सा उनके वास्ते बहुत ज्यादा था, इसलिए बनी शमौन को उनकी मीरास के बीच मीरास मिली।

२२२२२२२ २२ २२२ २२ २२२२२

<sup>10</sup> और तीसरा पर्चा बनी जबूलून का उनके घरानों के मुवाफिक निकला और उनकी मीरास की हद सारीद तक थी।<sup>11</sup> और उनकी हद पश्चिम की तरफ मर'अला होती हुई दब्बासत तक गयी, और उस नदी से जो यक'नियाम के आगे है जा मिली।<sup>12</sup> और सारीद से पूरब की तरफ मुड़ कर वह किसलोत तबूर की सरहद को गई और वहाँ से दबरत होती हुई यफी'को जा निकली।<sup>13</sup> और वहाँ से पूरब की तरफ जिता हीफूर और इत्ता काज़ीन से गुज़रती हुई रिम्मोन को गयी, जो नी'आ तक फैला हुआ है।<sup>14</sup> और वह हद उस के उत्तर से मुड़ कर हन्नातोन को गई, और उसका खातिमा इफ़ताएल की वादी पर हुआ।<sup>15</sup> और क़त्तात और नहलाल और सिमरोन और इदाला और बैतलहम, यह बारह शहर और उनके गाँव इन लोगों के ठहरे।<sup>16</sup> यह सब शहर और इनके गाँव बनी जबूलून के घरानों के मुवाफिक उनकी मीरास है।

२२२२२२२ २२ २२२ २२ २२२२२

<sup>17</sup> और चौथा पर्चा इश्कार के नाम पर बनी इश्कार के लिए उनके घरानों के मुवाफिक निकला।<sup>18</sup> और उनकी हद यज़र'एल और किसूलोत और शूनीम।<sup>19</sup> और हफ़ारीम और शियून और अनाखरात।<sup>20</sup> और रबैत क़सयोन और अबीज़।<sup>21</sup> और रीमत और 'ऐन जन्नीम और 'ऐन हद्दा और बैत क़सीस तक थी।<sup>22</sup> और वह हद तबूर और शख़सीमाह और बैत शम्स से जा मिली और उनकी हद का खातिमा यरदन पर हुआ, यह सोलह शहर थे और इनके गाँव भी थे।<sup>23</sup> यह शहर और इनके गाँव बनी इश्कार के घरानों के मुवाफिक उनकी मीरास है।

२२२२ २२ २२२ २२ २२२२२

<sup>24</sup> और पाँचवां पर्चा बनी आशर के कबीले के लिए उनके घरानों के मुताबिक निकला।<sup>25</sup> और खिलक़त और हली और बतन और इक्शाफ़।<sup>26</sup> और अलम्मलक और 'अमाद और मिसाल उनकी हद ठहरे और पश्चिम की तरफ वह कर्मिल और सैहूर लिबनात तक पहुँची।<sup>27</sup> और वह पूरब की तरफ मुड़ कर बैत दज़ून को गयी और फिर जबूलून तक और वादी — ए — इफ़ताहएल

के उत्तर से होकर बैत उल 'अमक़ और नगीएल तक पहुँची और फिर कबूल के बाएँ को गयी।<sup>28</sup> और 'अबरून और रहोब और हम्मून और क़ानाह बल्कि बड़े सैदा तक पहुँची।<sup>29</sup> फिर वह हद रामा सूर के फ़सील दार शहर की तरफ को झुकी और वहाँ से मुड़ कर हूसा तक गयी और उसका खातिमा अकज़ीब की नवाही के समन्दर पर हुआ।<sup>30</sup> और 'उम्मा और अफ़ीक़ और रहोब भी इनको मिले, यह बाईस शहर थे और इनके गाँव भी थे।<sup>31</sup> बनी आशर के कबीले की मीरास उनके घरानों के मुताबिक यह शहर और इनके गाँव थे।

२२२२२२२ २२ २२२ २२ २२२२२

<sup>32</sup> छठा पर्चा बनी नफ़ताली के नाम पर बनी नफ़ताली के कबीले के लिए उनके घरानों के मुताबिक निकला।<sup>33</sup> और उनकी सरहद हलफ़ से ज़ा'नन्नीम के बलूत से अदामी नक़ब और यबनीएल होती हुई लकूम तक थी और उसका खातिमा यरदन पर हुआ।<sup>34</sup> और वह हद पश्चिम की तरफ मुड़ कर अज़नूततबूर से गुज़रती हुई हुक्कूक़ को गई और दख्खिन में जबूलून तक और पश्चिम में आशर तक और पूरब में यहूदाह के हिस्सा के यरदन तक पहुँची।<sup>35</sup> और फ़सील दार शहर यह हैं या'नी सिद्दीम और सैर और हम्मात और रक़त और किन्नरत।<sup>36</sup> और अदमा और रामा और हसूर।<sup>37</sup> और क़ादिस और अदराई और 'ऐन हसूर।<sup>38</sup> और इरून और मिजदालएल और हुरीम और बैत 'अनात और बैत शम्स, यह उन्तीस शहर थे और इनके गाँव भी थे।<sup>39</sup> यह शहर और इनके गाँव बनी नफ़ताली के कबीले के घरानों के मुताबिक उनकी मीरास हैं।

२२२ २२ २२२ २२ २२२२२

<sup>40</sup> और सातवां पर्चा बनी दान के कबीले के लिए उनके घरानों के मुवाफिक निकला।<sup>41</sup> और उनकी मीरास की हद यह है, सुर'आह और इस्ताल और 'ईर शम्स।<sup>42</sup> और शा'लबीन और अय्यालोन और इतलाह।<sup>43</sup> और ऐलोन और तिमनाता और 'अक़रून।<sup>44</sup> और इलतिक्रिया और जिब्बातोन और बा'लात।<sup>45</sup> और यहूदी और बनी बरक़ और जात रिम्मोन।<sup>46</sup> और मेयरकून और रिक्कूनमा' उस सरहद के जो याफ़ा के मुकाबिल है।<sup>47</sup> और बनी दान की हद उनकी इस हद के' अलावा भी थी, क्योंकि बनी दान ने जाकर लशम से जंग की और उसे घेर करके उसको तलवार की धार से मारा और उस पर क़ब्ज़ा करके वहाँ बसे, और अपने बाप दान के नाम पर लशम का नाम दान रखा।<sup>48</sup> यह सब शहर और इनके गाँव बनी दान के कबीले के घरानों के मुताबिक उनकी मीरास है।

२२२'२ २२ २२२ २२ २२२२२



49 तब वह उस मुल्क को मीरास के लिए उसकी सरहदों के मुताबिक तक्रसीम करने से फ़ारिग़ हुए और बनी इस्राईल ने नून के बेटे यशू'अ को अपने बीच मीरास दी। 50 उन्होंने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक वही शहर जिसे उसने माँगा था या'नी इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क का तिमनत सरह उसे दिया और वह उस शहर को ता'मीर करके उसमें बस गया। 51 यह वह मीरासी हिस्से हैं जिनको इली'एलियाज़र काहिन और नून के बेटे यशू'अ और बनी इस्राईल के कबीलों के आबाई खानदानों के सरदारों ने शीलोह में खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर खुदावन्द के सामने पर्ची डालकर मीरास के लिए तक्रसीम किया, यूँ वह उस मुल्क की तक्रसीम से फ़ारिग़ हुए।

## 20

???????? ??

1 और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि, 2 बनी इस्राईल से कह कि अपने लिए पनाह के शहर जिनकी वजह मैं ने मूसा के बारे में तुमको हुक्म किया मुक़र्रर करो, 3 ताकि वह खूनी जो भूल से और ना दानिस्ता किसी को मार डाले वहाँ भाग जाए और वह खून के बदला लेने वाले से तुम्हारी पनाह ठहरें। 4 वह उन शहरों में से किसी में भाग जाए, और उस शहर के दरवाज़े पर खड़ा हो कर उस शहर के बुज़ुर्गों को अपना हाल कह सुनाए; तब वह उसे शहर में अपने हाँ ले जाकर कोई जगह दें ताकि वह उनके बीच रहे। 5 और अगर खून का बदला लेने वाला उसका पीछा करे तो वह उस खूनी को उसके हवाला न करें क्यूँकि उस ने अपने पड़ोसी को अन्जाने में मारा और पहले से उसकी उस से 'अदावत न थी। 6 और वह जब तक फ़ैसले के लिए जमा'त के आगे खड़ा न हो, और उन दिनों का सरदार काहिन मर न जाये तब तक उसी शहर में रहे इसके बाद वह खूनी लौट कर अपने शहर और अपने घर में या'नी उस शहर में आए जहाँ से वह भागा था। 7 तब उन्होंने नफ़्ताली के पहाड़ी मुल्क में जलील के क़ादिस को और इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में सिकम को और यहूदाह के पहाड़ी मुल्क में क़रयत अरबा' को जो हबरून है अलग किया। 8 और यरीहू के पास के यरदन के पूरब की तरफ़ रूबिन के क़बीले के मैदान में बसर को जो वीराने में है और जद के क़बीले के हिस्से में रामा को जो जिल'आद में है और मनस्सी के क़बीले के हिस्सा में जो लान को जो बसन में है मुक़र्रर किया। 9 यही वह शहर हैं जो सब बनी इस्राईल और उन मुसाफ़िरों के लिए जो उनके बीच बसते हैं इसलिए

ठहराये गये कि जो कोई अन्जाने में किसी को क़त्ल करे वह वहाँ भाग जाये, और जब तक वह जमा'त के आगे खड़ा न हो तब तक खून के बदला लेने वाले के हाथ से मारा न जाये।

## 21

???????? ??

1 तब लावियों के आबाई खानदानों के सरदार इली'एलियाज़र काहिन और नून के बेटे यशू'अ और बनी इस्राईल के क़बीलों के आबाई खानदानों के सरदारों के पास आये। 2 और मुल्क — ए — कना'न के शीलोह में उन से कहने लगे कि खुदावन्द ने मूसा के बारे में हमारे रहने के लिए शहर और हमारे चौपायों के लिए उनकी नवाही के देने का हुक्म किया था। 3 इसलिए बनी इस्राईल ने अपनी अपनी मीरास में से खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक यह शहर और उनकी नवाही लावियों को दीं। 4 और पर्चा क़िहातियों के नाम पर निकला और हारून काहिन की औलाद को जो लावियों में से थी पर्ची से यहूदाह के क़बीले और शमौन के क़बीले और बिनयमीन के क़बीले में से तेरह शहर मिले। 5 और बाक़ी बनी क़िहात को इफ़राईम के क़बीले के घरानों और दान के क़बीले और मनस्सी के आधे क़बीले में से दस शहर पर्ची से मिले। 6 और बनी जेरसोन को इश्कार के क़बीले के घरानों और आशर के क़बीले और नफ़्ताली के क़बीले और मनस्सी के आधे क़बीले में से जो बसन में है तेरह शहर पर्ची से मिले। 7 और बनी मिरारी को उनके घरानों के मुताबिक रूबिन के क़बीले और जद के क़बीले और जबूलून के क़बीले में से बारह शहर मिले। 8 और बनी इस्राईल ने पर्ची डालकर इन शहरों और इनकी नवाही को जैसा खुदावन्द ने मूसा के बारे में फ़रमाया था लावियों को दिया। 9 उन्होंने बनी यहूदाह के क़बीले और बनी शमौन के क़बीले में से यह शहर दिए जिनके नाम यहाँ मज़कूर हैं। 10 और यह क़हातियों के खानदानों में से जो लावी की नसल में से थे बनी हारून को मिले क्यूँकि पहला पर्चा उनके नाम का था। 11 इसलिए उन्होंने यहूदाह के पहाड़ी मुल्क में 'अनाक़ के बाप अरबा' का शहर क़रयत अरबा' जो हबरून कहलाता है म'ए उसके 'इलाक़े के उनको दिया। 12 लेकिन उस शहर के खेतों और गाँव को उन्होंने युफ़न्ना के बेटे कालिब को मीरास के तौर पर दिया। 13 इसलिए उन्होंने हारून का काहिन की औलाद को हबरून जो खूनी की पनाह का शहर था और उसके 'इलाक़े और लिबनाह और उसके 'इलाक़े। 14 और यतीर और उसके 'इलाक़े और इस्तिमू'अ और उसके 'इलाक़े। 15 और हौलून और उसके 'इलाक़े और

दबीर और उसके 'इलाके'।<sup>16</sup> और 'ऐन और उसके 'इलाके और यूत्ता और उसके 'इलाके और बैत शम्स और उसके 'इलाके या'नी यह नौ शहर उन दोनों कबीलों से ले कर दिए।<sup>17</sup> और बिनयमीन के कबीले से जिबा'ऊन और उसके 'इलाके और जिबा' और उसके 'इलाके'।<sup>18</sup> और अनतोत और उसके 'इलाके और 'अलमोन और उसके 'इलाके यह चार शहर दिए गए।<sup>19</sup> इसलिए बनी हारून के जो काहिन हैं सब शहर तेरह थे जिनके साथ उनकी नवाही भी थी।<sup>20</sup> और बनी क्रिहात के घरानों को जो लावी थे या'नी बाक्री बनी क्रिहात को इफ़राईम के कबीले से यह शहर पर्ची से मिले।<sup>21</sup> और उन्होंने इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में उनको सिकम शहर और उसके 'इलाके तो खूनी की पनाह के लिए और जज़र और उसके 'इलाके'।<sup>22</sup> और क्रिबज़ैम और उसके 'इलाके और बैत हौरून और उसके 'इलाके यह चार शहर दिए।<sup>23</sup> और दान के कबीला से इलतिक्रिया और उसके 'इलाके और जिब्वतून और उसके 'इलाके'।<sup>24</sup> और अय्यालोन और उसके 'इलाके और जात रिम्मोन और उसके 'इलाके यह चार शहर दिए।<sup>25</sup> और मनस्सी के आधे कबीले से ता'नक और उसके 'इलाके और जात रिम्मोन और उसके 'इलाके, यह दो शहर दिए।<sup>26</sup> बाक्री बनी क्रिहात के घरानों के सब शहर अपनी अपनी नवाही के साथ दस थे।<sup>27</sup> और बनी जैरसोन को जो लावियों के घरानों में से हैं मनस्सी के दूसरे आधे कबीले में से उन्होंने बसन में जो लान और उसके 'इलाके तो खूनी की पनाह के लिए और बि'अस्ताराह और उसके 'इलाके यह दो शहर दिए।<sup>28</sup> और इश्कार के कबीले से किसयून और उसके 'इलाके और दबरत और उसके 'इलाके'।<sup>29</sup> यरमोत और उसके 'इलाके और 'ऐन जन्नीम और उसके 'इलाके, यह चार शहर दिए।<sup>30</sup> और आशर के कबीले से मसाल और उसके 'इलाके और अबदोन और उसके 'इलाके'।<sup>31</sup> खिलकत और उसके 'इलाके और रहोब और उसके 'इलाके यह चार शहर दिए।<sup>32</sup> और नफ़ताली के कबीले से जलील में कादिस और उसके 'इलाके तो खूनी की पनाह के लिए और हम्मात दूर और उसके 'इलाके और करतान और उसके 'इलाके, यह तीन शहर दिए।<sup>33</sup> इसलिए जैरसोनियों के घरानों के मुताबिक़ उनके सब शहर अपनी अपनी नवाही के साथ तेरह थे।<sup>34</sup> और बनी मिरारी के घरानों को जो बाक्री लावी थे ज़बूलून के कबीला से यक़'नियाम और उसके 'इलाके, करताह और उसके 'इलाके'।<sup>35</sup> दिमना और उसके 'इलाके, नहलाल और उसके 'इलाके, यह चार शहर दिए।<sup>36</sup> और रूबिन के कबीले से बसर और उसके 'इलाके, यहसा और उसके 'इलाके'।<sup>37</sup> कदीमात और उसके 'इलाके और मिफ़'अत और उसके 'इलाके, यह चार शहर दिये।<sup>38</sup> और जद् के

कबीले से जिल'आद में रामा और उसके 'इलाके तो खूनी की पनाह के लिए और महनाइम और उसके 'इलाके'।<sup>39</sup> हस्वोन और उसके 'इलाके, या'जेर और उसके 'इलाके, कुल चार शहर दिए।<sup>40</sup> इसलिए ये सब शहर उनके घरानों के मुताबिक़ बनी मिरारी के थे, जो लावियों के घरानों के बाक्री लोग थे उनको पर्ची से बारह शहर मिले।<sup>41</sup> तब बनी इसराईल की मिलिक्यत के बीच लावियों के सब शहर अपनी अपनी नवाही के साथ अठतालीस थे।<sup>42</sup> उन शहरों में से हर एक शहर अपने गिर्द की नवाही के साथ था सब शहर ऐसे ही थे।<sup>43</sup> यूँ खुदावन्द ने इस्राईलियों को वह सारा मुल्क दिया जिसे उनके बाप दादा को देने की क़सम उस ने खाई थी और वह उस पर क़ाबिज़ हो कर उसमें बस गये।<sup>44</sup> और खुदावन्द ने उन सब बातों के मुताबिक़ जिनकी क़सम उस ने उनके बाप दादा से खाई थी चारों तरफ़ से उनको आराम दिया और उनके सब दुश्मनों में से एक आदमी भी उनके सामने खड़ा न रहा, खुदावन्द ने उनके सब दुश्मनों को उनके कब्ज़े में कर दिया।<sup>45</sup> और जितनी अच्छी बातें खुदावन्द ने इस्राईल के घराने से कही थीं उन में से एक भी न छूटी, सब की सब पूरी हुई।

## 22

यशोअ 22:1-22

<sup>1</sup> उस वक़्त यशू'अ ने रोबिनियों और जददियों और मनस्सी के आधे कबीले को बुला कर।<sup>2</sup> उन से कहा कि सब कुछ जो खुदावन्द के बन्दे मूसा ने तुम को फ़रमाया तुम ने माना, और जो कुछ मैं ने तुम को हुक्म दिया उस में तुम ने मेरी बात मानी।<sup>3</sup> तुमने अपने भाईयों को इस मुद्दत में आज के दिन तक नहीं छोड़ा बल्कि खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म की ताकीद पर 'अमल किया।<sup>4</sup> और अब खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्हारे भाईयों को जैसा उस ने उन से कहा था आराम बरूषा है इसलिए तुम अब लौट कर अपने अपने ख़ेमे को अपनी मीरासी सर ज़मीन में जो खुदावन्द के बन्दे मूसा ने यरदन के उस पार तुम को दी है चले जाओ।<sup>5</sup> सिर्फ़ उस फ़रमान और शरा' पर 'अमल करने की निहायत एहतियात रखना जिसका हुक्म खुदावन्द के बन्दे मूसा ने तुम को दिया, कि तुम खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखो और उसकी सब राहों पर चलो, और उसके हुक्मों को मानो और उस से लिपटे रहो और अपने सारे दिल, और सारी जान, से उसकी बन्दगी करो।<sup>6</sup> और यशू'अ ने बरकत दे कर उनको रुख़्सत किया और वह अपने अपने ख़ेमे को चले गये।<sup>7</sup> मनस्सी के आधे कबीले को तो मूसा ने बसन में मीरास दी, थी लेकिन उस के दूसरे आधे को यशू'अ

ने उनके भाईयों के बीच यरदन के इस पार पश्चिम की तरफ हिस्सा दिया; और जब यशू'अ ने उनको रुखसत किया की अपने अपने खेमे को जाएँ, तो उनको भी बरकत देकर। <sup>8</sup> उन से कहा कि, बड़ी दौलत और बहुत से चौपाये, और चाँदी और सोना और पीतल और लोहा और बहुत सी पोशाक लेकर तुम अपने अपने खेमे को लौटो; और अपने दुश्मनों के माल — ए — गनीमत को अपने भाईयों के साथ बाँट लो। <sup>9</sup> तब बनी रूबिन और बनी जद् और मनस्सी का आधा कबीला लौटा और वह बनी इस्राईल के पास से शीलोह से जो मुल्क — ए — कना'न में है खाना हुए, ताकि वह अपने मीरासी मुल्क जिल'आद को लौट, जाएँ जिसके मालिक वह खुदावन्द के उस हुक्म के मुताबिक हुए थे जो उस ने मूसा के बारे में दिया था।

२२:१० २२:१० २२ २२:१० २२ २२  
२२:२० २२:२०

<sup>10</sup> और जब वह यरदन के पास के उस मुकाम में पहुँचे जो मुल्क कनान में है, तो बनी रूबिन और बनी जद् और मनस्सी के आधे कबीले ने वहाँ यरदन के पास एक मजबह जो देखने में बड़ा मजबह था बनाया। <sup>11</sup> और बनी इस्राईल के सुनने में आया की देखो बनी रूबिन और बनी जद् और मनस्सी के आधे कबीला ने मुल्क — ए — कना'न के सामने, यरदन के गिर्द के मुकाम में उस रुख पर जो बनी इस्राईल का है एक मजबह बनाया है। <sup>12</sup> जब बनी इस्राईल ने यह सुना तो बनी इस्राईल की सारी जमा'त शीलोह में इकट्ठा हुई, ताकि उन पर चढ़ जाये और लड़े, <sup>13</sup> और बनी इस्राईल ने इली'एलियाज़र काहिन के बेटे फ्रीन्हास को बनी रूबिन और बनी जद् और मनस्सी के आधे कबीला के पास जो मुल्क जिल'आद में थे भेजा। <sup>14</sup> और बनी इस्राईल के कबीलों से हर एक के आबाई खानदान से एक अमीर के हिसाब से दस अमीर उसके साथ किये, उन में से हर एक हजार दर हजार इस्राईलियों में अपने आबाई खानदान का सरदार था। <sup>15</sup> इसलिए वह बनी रूबिन और बनी जद् और मनस्सी के आधे कबीले के पास मुल्क जिल'आद में आये और उन से कहा कि, <sup>16</sup> खुदावन्द की सारी जमा'त यह कहती, है कि तुम ने इस्राईल के खुदा से यह क्या सरकशी की कि, आज के दिन खुदावन्द की पैरवी से फिरकर अपने लिए एक मजबह बनाया, और आज के दिन तुम खुदावन्द से बागी हो गये? <sup>17</sup> क्या हमारे लिए फ़गूर की बदकारी कुछ कम थी जिस से हम आज के दिन तक पाक नहीं

हुए, अगरचे खुदावन्द की जमा'त में वबा भी आई कि। <sup>18</sup> तुम आज के दिन खुदावन्द की पैरवी से फिर जाते हो? और चूँकि तुम आज खुदावन्द से बागी होते हो, इसलिए कल यह होगा कि इस्राईल की सारी जमा'त पर उसका क्रहर नाज़िल होगा <sup>19</sup> और अगर तुम्हारा मीरासी मुल्क नापाक है, तो तुम खुदावन्द के मीरासी मुल्क में पार आ जाओ जहाँ खुदावन्द का घर है और हमारे बीच मीरास लो, लेकिन खुदावन्द हमारे खुदा के मजबह के सिवा अपने लिए कोई और मजबह बना कर, न तो खुदावन्द से बागी हो और न हम से बगावत करो। <sup>20</sup> क्या ज़ारह के बेटे 'अकन की ख़यानत की वजह से जो उस ने मरखूस की हुई चीज़ में इस्राईल की सारी जमा'त पर ग़ज़ब नाज़िल न हुआ? वह शख्स अकेला ही अपनी बदकारी में हलाक नहीं हुआ। <sup>21</sup> तब बनी रूबिन और बनी जद् और मनस्सी के आधे कबीला ने हजार दर हजार इस्राईलियों के सरदारों को जवाब दिया कि। <sup>22</sup> खुदावन्द खुदा — ओं का खुदा, खुदावन्द खुदा — ओं का खुदा, जानता है और इस्राईली भी जान लेंगे, अगर इस में बगावत या खुदावन्द की मुखालिफ़त है तूने तो हमको आज जीता न छोड़ा। <sup>23</sup> अगर हम ने आज के दिन इसलिए यह मजबह बनाया हो कि खुदावन्द से फिर जाएँ या उस पर सोख्तनी कुर्बानी या नज़र की कुर्बानी या सलामती के ज़बीहे चढ़ाएँ तो खुदावन्द ही इसका हिसाब ले। <sup>24</sup> बल्कि हम ने इस ख़याल और ग़रज़ से यह किया कि कहीं आइन्दा ज़माना में तुम्हारी औलाद हमारी औलाद से यह न कहने लगे, कि तुम को खुदावन्द इस्राईल के खुदा से क्या लेना है? <sup>25</sup> क्यूँकि खुदावन्द तो हमारे और तुम्हारे बीच 'ऐ बनी रूबिन और बनी जद् यरदन को हद ठहराया है इसलिए खुदावन्द में तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं है, यूँ तुम्हारी औलाद हमारी औलाद से खुदावन्द का ख़ौफ़ छुड़ा देगी। <sup>26</sup> इसलिए हम ने कहा कि आओ हम अपने लिए एक मजबह बनाना शुरू करें जो न सोख्तनी कुर्बानी के लिए हो और न ज़बीहे के लिए। <sup>27</sup> बल्कि वह हमारे और तुम्हारे और हमारे बाद हमारी नसलों के बीच गवाह ठहरे, ताकि हम खुदावन्द के सामने उसकी "इबादत अपनी सोख्तनी कुर्बानियों और अपने ज़बीहों और सलामती के हृदियों से करें, और आइन्दा ज़माना में तुम्हारी औलाद हमारी औलाद से कहने न पाए कि खुदावन्द में तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं। <sup>28</sup> इसलिए हम ने कहा कि, जब वह हम से या हमारी औलाद से आइन्दा ज़माना में यूँ कहेंगे तो हम उनको

\* 22:10 22:10 यरदन नदी † 22:17 22:17 देखें गिनती 25:1 — 9; ज़बूर 1, 6, 8 ‡ 22:17 22:17 फ़गूर पहाड़ पर किया गया गुनाह

§ 22:20 22:20 देखें बाब 7:1 — 26

जवाब देंगे कि देखो खुदावन्द के मज़बह का नमूना जिसे हमारे बाप दादा ने बनाया, यह न सोख्तनी कुर्बानी के लिए है न ज़बीहा के लिए बल्कि यह हमारे और तुम्हारे बीच गवाह है।<sup>29</sup> खुदा न करे कि हम खुदावन्द से बागी हों और आज खुदावन्द की पैरवी से फिर कर खुदावन्द अपने खुदा के मज़बह के सिवा जो उसके खेमों के सामने है सोख्तनी कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी और ज़बीहा के लिए कोई मज़बह बनाएँ।<sup>30</sup> जब फ़ीन्हास काहिन और जमा'त के अमीरों या'नी हज़ार दर हज़ार इस्राईलियों के सरदारों ने जो उसके साथ आए थे यह बातें सुनीं जो बनी रूबिन और बनी जद् और बनी मनस्सी ने कहीं तो वह बहुत खुश हुए।<sup>31</sup> तब इली'एलियाज़र के बेटे फ़ीन्हास काहिन ने बनी रूबिन और बनी जद् और बनी मनस्सी से कहा आज हम ने जान लिया कि खुदावन्द हमारे बीच है क्योंकि तुम से खुदावन्द की यह ख़ता नहीं हुई, इसलिए तुम ने बनी इस्राईल को खुदावन्द के हाथ से छुड़ा लिया है।<sup>32</sup> और इली'एलियाज़र काहिन का बेटा फ़ीन्हास और वह सरदार जिल'आद से बनी रूबिन और बनी जद् के पास से मुल्क — ए — कना'न में बनी इस्राईल के पास लौट आये और उनको यह माजरा सुनाया? <sup>33</sup> तब बनी इस्राईल इस बात से खुश हुए और बनी इस्राईल ने खुदा की हम्द की और फिर जंग के लिए उन पर चढ़ाई करने और उस मुल्क को तबाह करने का नाम न लिया जिस में बनी रूबिन और बनी जद् रहते थे।<sup>34</sup> तब बनी रूबिन और बनी जद् ने उस मज़बह का नाम 'ईद यह कह कर रखा की वह हमारे बीच \*गवाह है कि यहोवाह खुदा है।

## 23

१११११ ११ ११११११११ ११ ११११११ १११११११११

<sup>1</sup> इसके बहुत दिनों बाद जब खुदावन्द ने बनी इस्राईल को उनके सब चारों तरफ़ के दुश्मनों से आराम दिया और यशू'अ बुढ़ा और उम्र रसीदा हुआ।<sup>2</sup> तो यशू'अ ने सब इस्राईलियों और उनके बुज़ुर्गों और सरदारों और क़ाज़ियों और मनसबदारों को बुलवा कर उन से कहा कि, मैं बूढ़ा और उम्र रसीदा हूँ।<sup>3</sup> और जो कुछ खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्हारे वजह से इन सब क़ौमों के साथ किया वह सब तुम देख चुके हो क्योंकि खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने आप तुम्हारे लिए जंग की।<sup>4</sup> देखो मैं ने पर्ची डाल कर इन क़ौमों को तुम में तक़सीम किया कि यह इन सब क़ौमों के साथ जिनको मैंने काट डाला यरदन से लेकर पश्चिम की तरफ़ बड़े समन्दर

तक तुम्हारे क़बीलों की मीरास ठहरें।<sup>5</sup> और खुदावन्द तुम्हारा खुदा ही उनको तुम्हारे सामने से निकालेगा और तुम्हारी नज़र से उनको दूर कर देगा और तुम उनके मुल्क पर क़ाबिज़ होगे जैसा खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम से कहा है,<sup>6</sup> इसलिए तुम खूब हिम्मत बाँध कर जो कुछ मूसा की शरी'अत की किताब में लिखा है उस पर चलना और 'अमल करना ताकि तुम उस से दहने या बाएँ हाथ को न मुड़ो।<sup>7</sup> और उन क़ौमों में जो तुम्हारे बीच हुनूज़ बाक़ी हैं न जाओ और न उनके म'बूदों के नाम का ज़िक्र करो और न उनकी क़सम खिलाओ और न उनकी इबादत करो और न उनको सिज्दा करो।<sup>8</sup> बल्कि खुदावन्द अपने खुदा से लिपटे रहो जैसा तुम ने आज तक किया है।<sup>9</sup> क्योंकि खुदावन्द ने बड़ी बड़ी और ज़ोरावर क़ौमों को तुम्हारे सामने से दफ़ा' किया बल्कि तुम्हारा यह हाल रहा कि आज तक कोई आदमी तुम्हारे सामने ठहर न सका।<sup>10</sup> तुम्हारा एक — एक आदमी एक — एक हज़ार को दौड़ायेगा, क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा ही तुम्हारे लिए लड़ता है जैसा उसने तुम से कहा।<sup>11</sup> इसलिए तुम खूब चौकसी करो कि खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखो।<sup>12</sup> वरना अगर तुम किसी तरह फिर कर उन क़ौमों के बक़िया से या'नी उन से जो तुम्हारे बीच बाक़ी हैं घुल मिल जाओ और उनके साथ ब्याह शादी करो और उन से मिलो और वह तुम से मिलें।<sup>13</sup> तो यकीन जानो कि खुदावन्द तुम्हारा खुदा फिर इन क़ौमों को तुम्हारे सामने से दफ़ा' नहीं करेगा; बल्कि यह तुम्हारे लिए जाल और फंदा और तुम्हारे पहलुओं के लिए कोड़े, और तुम्हारी आँखों में काँटों की तरह होंगी, यहाँ तक कि तुम इस अच्छे मुल्क से जिसे खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम को दिया है मिट जाओगे।<sup>14</sup> और देखो, \*मैं आज उसी रास्ते जाने वाला हूँ जो सारे जहान का है और तुम खूब जानते हो कि उन सब अच्छी बातों में से जो खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्हारे हक़ में कहीं एक बात भी न छूटी, सब तुम्हारे हक़ में पूरी हुई और एक भी उन में से न रह गयी।<sup>15</sup> इसलिए ऐसा होगा कि जिस तरह वह सब भलाइयाँ जिनका खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम से ज़िक्र किया था तुम्हारे आगे आयीं उसी तरह खुदावन्द सब बुराईयाँ तुम पर लाएगा जब तक इस अच्छे मुल्क से जो खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम को दिया है वह तुम को बर्बाद न कर डाले।<sup>16</sup> जब तुम खुदावन्द अपने खुदा के उस 'अहद को जिसका हुक्म उस ने तुम को दिया तोड़ डालो और जाकर और मा'बूदों की इबादत करने और उनको सिज्दा

\* 22:34 22:34 गवाही \* 23:14 23:14 अब मेरे मरने का वक़्त आ चूका है जिस तरह दुनिया के लोग मरते हैं



करने लगे तो खुदावन्द का क्रहर तुम पर भड़केगा और तुम इस अच्छे मुल्क से जो उस ने तुम को दिया है जल्द हलाक हो जाओगे।

## 24

24:1-24:23

<sup>1</sup> इसके बाद यशू'अ ने इस्राईल के सब कबीलों को सिकम में जमा किया, और इस्राईल के बुजुर्गों और सरदारों और काजियों और मनसबदारों को बुलवाया, और वह खुदा के सामने हाज़िर हुए। <sup>2</sup> तब यशू'अ ने उन सब लोगों से कहा कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि तुम्हारे आबा या'नी अब्रहाम और नहूर का बाप तारह वगैरह पुराने ज़माने में \*बड़े दरिया के पार रहते और दूसरे मा'बूदों की इबादत करते थे। <sup>3</sup> और मैंने तुम्हारे बाप अब्रहाम को बड़े दरिया के पार से लेकर कनान के सारे मुल्क में उसकी रहबरी की, और उसकी नसल को बढ़ाया और उसे इज्हाक़ 'इनायत किया। <sup>4</sup> और मैंने इस्हाक़ को या'क़ूब और 'ऐसौ बरख़ो; और 'ऐसौ को कोह — ए — श'ईर दिया की वह उसका मालिक हो, और या'क़ूब अपनी औलाद के साथ मिस्र में गया। <sup>5</sup> और मैंने मूसा और हारून को भेजा, और मिस्र पर जो मैंने उस में किया उसके मुताबिक़ मेरी मार पड़ी और उसके बाद मैं तुमको निकाल लाया। <sup>6</sup> तुम्हारे बाप दादा को मैंने मिस्र से निकाला, और तुम समन्दर पर आये, तब मिस्रियों ने रथों और सवारों को लेकर बहर — ए — कुलजुम तक तुम्हारे बाप दादा का पीछा किया। <sup>7</sup> और जब उन्होंने खुदावन्द से फ़रियाद की तो उसने तुम्हारे और मिस्रियों के बीच अन्धेरा कर दिया, और समन्दर को उन पर चढ़ा लाया और उनको छिपा दिया और तुमने जो कुछ मैंने मिस्र में किया अपनी आँखों से देखा और तुम बहुत दिनों तक वीराने में रहे। <sup>8</sup> फिर मैं तुम को अमोरियों के मुल्क में जो यरदन के उस पार रहते थे ले आया, वह तुमसे लड़े और मैंने उनको तुम्हारे हाथ में कर दिया; और तुमने उनके मुल्क पर कब्ज़ा कर लिया, और मैंने उनको तुम्हारे आगे से हलाक किया। <sup>9</sup> फिर सफ़ोर का बेटा बलक़, मोआब का बादशाह, उठ कर इस्राईलियों से लड़ा और तुम पर ला'नत करने को ब'ऊर के बेटे बिल'आम को बुलवा भेजा। <sup>10</sup> और मैंने न चाहा बिल'आम की सुनूँ; इसलिए वह तुम को बरकत ही देता गया, इसलिए मैंने तुम को उसके हाथ से छुड़ाया। <sup>11</sup> फिर तुम यरदन पार हो कर यरीहू को आये, और यरीहू के लोग या'नी अमोरी और फ़रिज़्जी और

कना'नी और हिती और जिरजासी और हव्वी और यबूसी तुम से लड़े, और मैंने उनको तुम्हारे कब्ज़ा में कर दिया। <sup>12</sup> †और मैंने तुम्हारे आगे जम्बूओं को भेजा, जिन्होंने दोनों अमोरी बादशाहों को तुम्हारे सामने से भगा दिया; यह न तुम्हारी तलवार और न तुम्हारी कमान से हुआ। <sup>13</sup> और मैंने तुम को वह मुल्क जिस पर तुम ने मेहनत न की, और वह शहर जिनको तुम ने बनाया न था 'इनायत किये, और तुम उन में बसे हो और तुम ऐसे ताकिस्तानो और ज़ैतून के बाग़ों का फल खाते हो जिनको तुमने नहीं लगाया। <sup>14</sup> इसलिए अब तुम खुदावन्द का खौफ़ रखो और नेक नियती और सदाक़त से उसकी इबादत करो; और उन मा'बूदों को दूर कर दो जिनकी इबादत तुम्हारे बाप दादा बड़े दरिया के पार और मिस्र में करते थे, और खुदावन्द की इबादत करो। <sup>15</sup> और अगर खुदावन्द की इबादत तुम को बुरी मा'लूम होती हो, तो आज ही तुम उसे जिसकी इबादत करोगे चुन लो, ख्वाह वह वही मा'बूद हों जिनकी इबादत तुम्हारे बाप दादा †बड़े दरिया के उस पार करते थे या अमोरी के मा'बूद हों जिनके मुल्क में तुम बसे हो; अब रही मेरी और मेरे घराने की बात इसलिए हम तो खुदावन्द की इबादत करेंगे। <sup>16</sup> तब लोगों ने जवाब दिया कि खुदा न करे कि हम खुदावन्द को छोड़ कर और मा'बूदों की इबादत करें। <sup>17</sup> क्यूँकि खुदावन्द हमारा खुदा वही है जिस ने हमको और हमारे बाप दादा को मुल्क मिस्र या'नी गुलामी के घर से निकाला और वह बड़े — बड़े निशान हमारे सामने दिखाए और सारे रास्ते जिस में हम चले और उन सब क्रौमों के बीच जिन में से हम गुज़रे हम को महफूज़ रखा। <sup>18</sup> और खुदावन्द ने सब क्रौमों या'नी अमोरियों को जो उस मुल्क में बसते थे हमारे सामने से निकाल दिया, इसलिए हम भी खुदावन्द की इबादत करेंगे क्यूँकि वह हमारा खुदा है। <sup>19</sup> यशू'अ ने लोगों से कहा, “तुम खुदावन्द की इबादत नहीं कर सकते; क्यूँकि वह पाक़ खुदा है, वह ग़य्यूर खुदा है, वह तुम्हारी ख़ताएँ और तुम्हारे गुनाह नहीं बरख़ोगा। <sup>20</sup> अगर तुम खुदावन्द को छोड़ कर अजनबी मा'बूदों की इबादत करो तो अगरचे वह तुम से नेकी करता रहा है तो भी वह फिर कर तुम से बुराई करेगा और तुम को फ़ना कर डालेगा।” <sup>21</sup> लोगों ने यशू'अ से कहा, “नहीं बल्कि हम खुदावन्द ही की इबादत करेंगे।” <sup>22</sup> यशू'अ ने लोगों से कहा, “तुम आप ही अपने गवाह हो कि तुम ने खुदावन्द को चुना है कि उसकी इबादत करो।” उन्होंने ने कहा, “हम गवाह हैं।” <sup>23</sup> तब उसने कहा, “इसलिए अब तुम अजनबी मा'बूदों

\* 24:2 24:2 अफ़रात नदी † 24:12 24:12 दहशत, देखें खुरूज 23:28 ‡ 24:15 24:15 अफ़रात नदी

को जो तुम्हारे बीच हैं दूर कर दो और अपने दिलों को खुदावन्द इस्राईल के खुदा की तरफ़ लाओ।” <sup>24</sup> लोगों ने यशू'अ से कहा, “हम खुदावन्द अपने खुदा की इबादत करेंगे और उसी की बात मानेंगे।” <sup>25</sup> इसलिए यशू'अ ने उसी रोज़ लोगों के साथ 'अहद बांधा, और उनके लिए सिकम में कायदा और क़ानून ठहराया। <sup>26</sup> और यशू'अ ने यह बातें खुदा की शरी'अत की किताब में लिख दीं, और एक बड़ा पत्थर लेकर उसे वहीं उस बलूत के दरख्त के नीचे जो खुदावन्द के मक्बिदस के पास था खड़ा किया। <sup>27</sup> और यशू'अ ने सब लोगों से कहा कि देखो यह पत्थर हमारा गवाह रहे, क्योंकि उस ने खुदावन्द की सब बातें जो उस ने हम से कहीं सुनी हैं इसलिए यही तुम पर गवाह रहे ऐसा न हो की तुम अपने खुदा का इन्कार कर जाओ। <sup>28</sup> फिर यशू'अ ने लोगों को उनकी अपनी अपनी मीरास की तरफ़ रुख़सत कर दिया।

२२२२२२२२ २२ २२२ २२ २२२२२ २२२ २२२२ २२२२

<sup>29</sup> और इन बातों के बाद यूँ हुआ कि नून का बेटा यशू'अ खुदावन्द का बन्दा एक सौ दस बरस का होकर वफ़ात कर गया। <sup>30</sup> और उन्होंने उसी की मीरास की हद पर तिमनत सिरह में जो इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में कोह — ए — जा'स की उत्तर की तरफ़ को है उसे दफ़न किया <sup>31</sup> और इस्राईली खुदावन्द की इबादत यशू'अ के जीते जी और उन बुज़ुर्गों के जीते जी करते रहे जो यशू'अ के बाद ज़िन्दा रहे, और खुदावन्द के सब कामों से जो उस ने इस्राईलियों के लिए किये वाक़िफ़ थे <sup>32</sup> और उन्होंने यूसुफ़ की हड्डियों को, जिनको बनी इस्राईल मिस्र से ले आये थे, सिकम में उस ज़मीन के हिस्से में दफ़न किया जिसे या'क़ूब ने सिकम के बाप हमोर के बेटों से चाँदी के सौ सिक्कों में ख़रीदा था; और वह ज़मीन बनी यूसुफ़ की मीरास ठहरी। <sup>33</sup> और हारून के बेटे इली'एलियाज़र ने वफ़ात की और उन्होंने उसे उसके बेटे फ़ीन्हास की पहाड़ी पर दफ़न किया, जो इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में उसे दी गयी थी।

## कुजात

कुजात 1:1-11

कुजात की किताब की असली इबारत से ऐसा कोई इशारा नहीं मिलता कि यह किताब किस ने लिखी मगर यहूदी रिवायत नबी समुएल को मुसन्निफ़ बतौर नामजद करती है — क्योंकि समुएल नबी बनी इस्राईल का आखरी क्राज़ी था कुजात का मुसन्निफ़ यकीनी तौर से हुकूमत के आगाज़ी दिनों में रहता था — बार बार इस जुमले को दुहराया गया है कि उन दिनों इस्राईल में कोई बादशाह नहीं था (कुजात 17:6; 18:1; 19:1; 21:25) यह जुमला उस मुकाबले की तरफ़ इशारा करता है जो इस किताब में वाक़े होने और लिखे जाने के दौरान थे-कुजात' लफ़्ज़ के मायने हैं "रिहाई दिलाने वाले" खास तौर से कुजात बनी इस्राईल को उन के बाहरी सितमगरों से नजात दिलाने वाले (छुड़ाने वाले) थे — कम अज़ कम उन में से कुछ हुकुमरान थे और कुछ लड़ाई झगड़ों को निपटाने वाले क्राज़ी बतौर किरदार निभाते थे।

कुजात 1:1-11

इस किताब के तसनीफ़ की तारीख़ तक़रीबन 1043 - 1000 क़ब्ल मसीह है।

ऐसा लगता है कि गालिलन कुजात की किताब दाउद के दौर — ए — हुकूमत में तालीफ़ व तरतीब की गई और यह इसका इंसानी मक़सद था कि हुकूमत की बहतरी के लिए मज़ाहिरा करे एक बेअसरकारी निज़ाम के मुकाबले में जो यशोअ की मौत से चली आती थी।

कुजात 1:1-11

बनी इस्राईल और तमाम मुस तकबिल के कारिर्दन।

कुजात 1:1-11

मुल्क पर फ़तेह से लेकर इस्राईल का पहला बादशाह मुक़र्रर होने तक तारीख़ी दौर की तरक्की के लिए न कि सिर्फ़ तारीख़ पेश करने के लिए जैसा वह था — — बल्कि एक इल्म — ए — इलाही का ज़ाहिरा तनासुब पेश करने के लिए जिसकी ज़रूरत कुजात के दिनों में थी (कुजात 24:14 — 28; 26 — 13), अब्रहाम के साथ खुदा ने जो अहद बाँधी थी यहाँ तक कि लोगों के ज़रीये से भी उस यह्दे को वफ़ादार पेश करने के लिए लोगों को यह याद दिलाए कि यह्दे अपने अहद में वफ़ादार है और यह जताने के लिए कि वह न उनका क्राज़ी है न उनका बादशाह अगर खुदा हर एक

पीढ़ी में किसी शख्स को खड़ा करता है की वह बुराई से लड़े (पैदाइश 3:15) तो फिर कई एक क्राज़ी कई एक पीढ़ियों के बराबर होते।

कुजात 1:1-11

जवाल और छुटकारा।

बैरूनी खाका

1. कुजात के मातहत बनी इस्राईल की हालत — 1:1-3:6
2. बनी इस्राईल के कुजात — 3:7-16:31
3. वाक़ियात बनी इस्राईल की गुनहगारी का मज़ाहिरा पेश करते हैं — 17:1-21:25।

कुजात 1:1-11

1 और यशूअ की मौत के बाद यूँ हुआ कि बनी — इस्राईल ने खुदावन्द से पूछा कि हमारी तरफ़ से कन'आनियों से जंग करने को पहले कौन चढ़ाई करे? 2 खुदावन्द ने कहा कि यहूदाह चढ़ाई करे; और देखो, मैंने यह मुल्क उसके हाथ में कर दिया है। 3 तब यहूदाह ने अपने भाई शमौन से कहा कि तू मेरे साथ मेरे बँटवारे के हिस्से में चल, ताकि हम कन'आनियों से लड़ें: और इसी तरह मैं भी तेरे बँटवारे के हिस्से में तेरे साथ चलूँगा। इसलिए शमौन उसके साथ गया। 4 और यहूदाह ने चढ़ाई की, और खुदावन्द ने कन'आनियों और फ़रिज़्जियों को उनके क़ब्ज़े में कर दिया; और उन्होंने बज़क में उनमें से दस हज़ार आदमी क़त्ल किए। 5 और \*अदूनी बज़क को बज़क में पाकर वह उससे लड़े, और कन'आनियों और फ़रिज़्जियों को मारा। 6 लेकिन अदूनी बज़क भागा, और उन्होंने उसका पीछा करके उसे पकड़ लिया, और उसके हाथ और पाँव के अँगूठे काट डाले। 7 तब अदूनी बज़क ने कहा कि हाथ और पाँव के अँगूठे कटे हुए सत्तर बादशाह मेरी मेज़ के नीचे रेज़ाचीनी करते थे, इसलिए जैसा मैंने किया वैसा ही खुदा ने मुझे बदला दिया। फिर वह उसे येरूशलेम में लाए और वह वहाँ मर गया। 8 और बनी यहूदाह ने येरूशलेम से लड़ कर उसे ले लिया, और उसे बर्बाद करके शहर को आग से फूँक दिया। 9 इसके बाद बनी यहूदाह उन कन'आनियों से जो पहाड़ी मुल्क और दक्खिनी हिस्से और नशेब की ज़मीन में रहते थे, लड़ने को गए। 10 और यहूदाह ने उन कन'आनियों पर जो हबरून में रहते थे चढ़ाई की और हबरून का नाम पहले करयत अरबा' था; वहाँ उन्होंने सीसी और अखीमान और तलमी को मारा। 11 वहाँ से वह दबीर के बाशिदों पर चढ़ाई करने को गया दबीर का

\* 1:5 1:5 बज़क का बादशाह

नाम पहले करयत सिफ़र था। <sup>12</sup> तब कालिब ने कहा, “जो कोई करयत सिफ़र को मार कर उसे ले ले, मैं उसे अपनी बेटी 'अकसा ब्याह दूँगा।” <sup>13</sup> और कालिब के छोटे भाई क्रनज़ के बेटे गुतनीएल ने उसे ले लिया; फिर उसने अपनी बेटी 'अकसा उसे ब्याह दी। <sup>14</sup> और जब वह उसके पास गई, तो उसने उसे सलाह दी कि वह उसके बाप से एक खेत माँगे; फिर वह अपने गधे पर से उतर पड़ी, तब कालिब ने उससे कहा, “तू क्या चाहती है?” <sup>15</sup> उसने उससे कहा, “मुझे बरकत दे; चूँकि तूने मुझे दख्खिन के मुल्क में रखवा है, इसलिए पानी के चश्मे भी मुझे दे।” तब कालिब ने ऊपर के चश्मे और नीचे के चश्मे उसे दिए। <sup>16</sup> और मूसा के साले क्रीनी की औलाद खजूरों के शहर में बनी यहूदाह के साथ याहूदाह के वीराने को जो 'अराद के दख्खिन में है, चली गयी और जाकर लोगों के साथ रहने लगी। <sup>17</sup> और यहूदाह अपने भाई शमौन के साथ गया और उन्होंने उन कन'आनियों को जो सफ़त में रहते थे मारा, और शहर को मिटा दिया; इसलिए उस शहर का नाम 'हुरमा'‡ कहलाया। <sup>18</sup> और यहूदाह ने गज़ज़ा और उसका 'इलाक्का, और अस्कलोन और उसका 'इलाक्का अक़रून और उसका 'इलाक्का को भी ले लिया।

२२२२२२२२ २२२२२ २२ २२२२ २२२२२ २२२२ २२२ २२२२२२२२

<sup>19</sup> और खुदावन्द यहूदाह के साथ था, इसलिए उसने पहाड़ियों को निकाल दिया, लेकिन वादी के बाशिंदों को निकाल न सका, क्योंकि उनके पास लोहे के रथ थे। <sup>20</sup> तब उन्होंने मूसा के कहने के मुताबिक़ हबरून कालिब को दिया; और उसने वहाँ से 'अनाक के तीनों बेटों को निकाल दिया। <sup>21</sup> और बनी बिनयमीन ने उन यबूसियों को जो येरूशलेम में रहते थे न निकाला, इसलिए यबूसी बनी बिनयमीन के साथ आज तक येरूशलेम में रहते हैं। <sup>22</sup> और यूसुफ़ के घराने ने भी बैतएल लेकिन चढ़ाई की, और खुदावन्द उनके साथ था। <sup>23</sup> और यूसुफ़ के घराने ने बैतएल का हाल दरियाफ़्त करने को जासूस भेजे और उस शहर का नाम पहले लूज़ था। <sup>24</sup> और जासूसों ने एक शख्स को उस शहर से निकलते देखा और उससे कहा, कि शहर में दाख़िल होने की राह हम को दिखा दे, तो हम तुझ से मेहरबानी से पेश आएँगे। <sup>25</sup> इसलिए उसने शहर में दाख़िल होने की राह उनको दिखा दी। उन्होंने शहर को बर्बाद किया, पर उस शख्स और उसके सारे घराने को छोड़ दिया। <sup>26</sup> और वह शख्स हित्तियों के मुल्क में गया, और उसने वहाँ एक शहर बनाया और उसका नाम लूज़

रख़वा; चुनौचे आज तक उसका यही नाम है। <sup>27</sup> और मनस्सी ने भी बैत शान और उसके क़स्बों और ता'नक़ और उसके क़स्बों और दोर और उसके क़स्बों के बाशिंदों, और इबली'आम और उसके क़स्बों के बाशिंदों, और मजिदो और उसके क़स्बों के बाशिंदों को न निकाला; बल्कि कन'आनी उस मुल्क में बसे ही रहे। <sup>28</sup> लेकिन जब इस्राईल ने ज़ोर पकड़ा, तो वह कन'आनियों से बेगार का काम लेने लगे लेकिन उनको बिल्कुल निकाल न दिया। <sup>29</sup> और इफ़राईम ने उन कन'आनियों को जो जज़र में रहते थे न निकाला, इसलिए कन'आनी उनके बीच जज़र में बसे रहे। <sup>30</sup> और ज़बूलून ने क़ितरोन और नहलाल के लोगों को न निकाला, इसलिए कन'आनी उनमें क़याम करते रहे और उनके फ़रमाबरदार हो गए। <sup>31</sup> और आशर ने 'अक्को और सैदा और अहलाब और अकज़ीब और हिलबा और अफ़ीक़ और रहोब के बाशिंदों को न निकाला; <sup>32</sup> बल्कि आशरी उन कन'आनियों के बीच जो उस मुल्क के बाशिंदे थे बस गए, क्योंकि उन्होंने उनको निकाला न था। <sup>33</sup> और नफ़ताली ने बैत शम्स और बैत 'अनात के बाशिंदों को न निकाला, बल्कि वह उन कन'आनियों में जो वहाँ रहते थे बस गया; तो भी बैत शम्स और बैत 'अनात के बाशिंदे उनके फ़रमाबरदार हो गए। <sup>34</sup> और अमोरियों ने बनी दान को पहाड़ी मुल्क में भगा दिया, क्योंकि उन्होंने उनको वादी में आने न दिया। <sup>35</sup> बल्कि अमोरी कोह — ए — हरिस पर और अय्यालोन और सा'लबीम में बसे ही रहे, तो भी बनी यूसुफ़ का हाथ ग़ालिब हुआ, ऐसा कि यह फ़रमाबरदार हो गए। <sup>36</sup> और अमोरियों की सरहद 'अक़रबीम की चढ़ाई से या'नी चट्टान से शुरू' करके ऊपर ऊपर थी।

## 2

२२२२२२२२२२ २२ २२२२२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२२२

<sup>1</sup> और खुदावन्द का फ़रिश्ता जिलज़ाल से बोकीम को आया और कहने लगा, मैं तुम को मिस्र से निकाल कर, उस मुल्क में जिसके बारे में मैं ने तुम्हारे \*बाप — दादा से क़सम खाई थी, ले आया और मैंने कहा, मैं हरगिज़ तुम से वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं करूँगा। <sup>2</sup> और तुम उस मुल्क के बाशिंदों के साथ 'अहद न बाँधना, बल्कि तुम उनके मज़बहों को ढा देना। लेकिन तुम ने मेरी बात नहीं मानी। तुमने क्यूँ ऐसा किया? <sup>3</sup> इसी लिए मैंने भी कहा, 'कि मैं उनको तुम्हारे आगे से दफ़ा' न करूँगा, बल्कि वह तुम्हारे पहलुओं के काँटे और उनके मा'बूद तुम्हारे लिए फंदा होंगे'। <sup>4</sup> जब खुदावन्द के फ़रिश्ते ने सब बनी इस्राईल

† 1:16 1:16 यरीहो का शहर ‡ 1:17 1:17 बर्बादी \* 2:1 2:1 1: इन्हें भी देखें 2:12, 17, 19, 22; 3:4; 6:13 † 2:5 2:5 बोकीम के मायने हैं रोना



से यह बातें कहीं, तो वह ज़ोर — ज़ोर रोने से लगे।  
 5 और उन्होंने उस जगह का नाम 'बोकीम रखवा; और वहाँ उन्होंने खुदावन्द के लिए कुर्बानी अदा की।

2222 22 2222

6 और जिस वक्त यशू'अ ने जमा'अत को रुखसत किया था, तब बनी — इस्राईल में से हर एक अपनी मीरास को लौट गया था ताकि उस मुल्क पर कब्ज़ा करे।  
 7 और वह लोग खुदावन्द की इबादत यशू'अ के जीते जी और उन बुज़ुर्गों के जीते जी करते रहे, जो यशू'अ के बाद ज़िन्दा रहे और जिन्होंने खुदावन्द के सब बड़े काम जो उसने इस्राईल के लिए किए देखे थे।  
 8 और नून का बेटा यशू'अ, खुदावन्द का बंदा, एक सौ दस बरस का होकर वफ़ात कर गया।  
 9 और उन्होंने उसी की मीरास की हद पर, तिमनत हरिस में इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में जो कोह — ए — जा'स के उत्तर की तरफ़ है, उसको दफ़न किया।

22222222 22 222222 22 22'2222222 22222

10 और वह सारी नसल भी अपने बाप — दादा से जा मिली; और उनके बाद एक और नसल पैदा हुई, जो न खुदावन्द को और न उस काम को जो उसने इस्राईल के लिए किया जानती थी।  
 11 और बनी — इस्राईल ने खुदावन्द के आगे बुराई की, और बा'लीम की इबादत करने लगे।  
 12 और उन्होंने खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा को जो उनको मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया था छोड़ दिया, और दूसरे मा'बूदों की जो उनके चारों तरफ़ की क्रौमों के मा'बूदों में से थे पैरवी करने और उनको सिज्दा करने लगे और खुदावन्द को गुस्सा दिलाया।  
 13 और वह खुदावन्द को छोड़ कर बा'ल और 'इस्तारात की इबादत करने लगे।  
 14 और खुदावन्द का क्रहर इस्राईल पर भड़का, और उसने उनको ग़ारतग़रों के हाथ में कर दिया जो उनको लूटने लगे; और उसने उनको उनके दुश्मनों के हाथ जो आस पास थे बेचा, इसलिए वह फिर अपने दुश्मनों के सामने खड़े न हो सके।  
 15 और वह जहाँ कहीं जाते खुदावन्द का हाथ उनकी तकलीफ़ ही पर तुला रहता था, जैसा खुदावन्द ने कह दिया था और उनसे क्रसम खाई थी; इसलिए वह निहायत तंग आ गए।

2222222222 22 22222 222222 22 222222

16 फिर खुदावन्द ने उनके लिए ऐसे क़ाज़ी खड़े किए, जिन्होंने उनको उनके ग़ारतग़रों के हाथ से छुड़ाया।  
 17 लेकिन उन्होंने अपने क़ाज़ियों की भी न सुनी, बल्कि और मा'बूदों की पैरवी में ज़िना करते और उनको सिज्दा

करते थे; और वह उस राह से जिस पर उनके बाप — दादा चलते और खुदावन्द की फ़रमाँबरदारी करते थे, बहुत जल्द फिर गए और उन्होंने उनके से काम न किए।  
 18 और जब खुदावन्द उनके लिए क़ाज़ियों को बरपा करता तो खुदावन्द उस क़ाज़ी के साथ होता, और उस क़ाज़ी के जीते जी उनको उनके दुश्मनों के हाथ से छुड़ाया करता था; इसलिए कि जब वह अपने सताने वालों और दुख देने वालों के ज़रिए' कुदते थे, तो खुदावन्द ग़मगीन होता था।  
 19 लेकिन जब वह क़ाज़ी मर जाता, तो वह फिरकर और मा'बूदों की पैरवी में अपने बाप — दादा से भी ज़्यादा बिगड़ जाते और उनकी इबादत करते और उनको सिज्दा करते थे; वह न तो अपने कामों से और न अपनी घमंडी के चाल — चलन से बाज़ आए।  
 20 इसलिए खुदावन्द का ग़ज़ब इस्राईल पर भड़का और उसने कहा, “चूँकि इन लोगों ने मेरे उस 'अहद को जिसका हुक्म मैं ने उनके बाप — दादा को दिया था, तोड़ डाला और मेरी बात नहीं सुनी।  
 21 इसलिए मैं भी अब उन क्रौमों में से जिनको यशू'अ छोड़ कर मरा है, किसी को भी इनके आगे से दफ़ा' नहीं करूँगा।  
 22 ताकि मैं इस्राईल को उन ही के ज़रिए' से आजमाऊँ, कि वह खुदावन्द की राह पर चलने के लिए अपने बाप — दादा की तरह काईम रहेंगे या नहीं।”  
 23 इसलिए खुदावन्द ने उन कौमों को रहने दिया और उनको जल्द न निकाल दिया और यशू'अ के हाथ में भी उनको हवाले न किया।

### 3

222222 2222 222222 2222 22222222

1 और यह वह क्रौम हैं जिनको खुदावन्द ने रहने दिया, ताकि उनके वसीले से इस्राईलियों में से उन सब को जो कन'आन की सब लड़ाइयों से वाकिफ़ न थे आजमाए,  
 2 सिर्फ़ मक़सद यह था कि बनी — इस्राईल की नसल के खासकर उन लोगों को, जो पहले लड़ना नहीं जानते थे लड़ाई सिखाई जाए ताकि वह वाकिफ़ हो जाएँ,  
 3 या'नी फ़िलिस्तिनियों के पाँचों सरदार, और सब कन'आनी और सैदानी, और कोह — ए — बा'ल हरमून से हम़ात के मदख़ल तक के सब हव्वी जो कोह — ए — लुबनान में बसते थे।  
 4 यह इसलिए थे कि इनके वसीले से इस्राईली आजमाए जाएँ, ताकि मा'लूम हो जाएँ के वह खुदावन्द के हुक्मों को जो उसने मूसा के ज़रिए' उनके बाप — दादा को दिए थे सुनेंगे या नहीं।  
 5 इसलिए बनी — इस्राईल कन'आनियों और हित्तियों और अमूरियों और फ़रिज़िज़ियों और हव्वियों और यबूसियों के बीच बस

गए; 6 और उनकी बेटियों से आप निकाह करने और अपनी बेटियाँ उनके बेटों को देने, और उनके मा'बूदों की इबादत करने लगे।

22222222 22222222 22 222222 2222

7 और बनी — इस्राईल ने खुदावन्द के आगे बुराई की, और खुदावन्द अपने खुदा को भूल कर बा'लीम और यसीरतों की इबादत करने लगे। 8 इसलिए खुदावन्द का क्रूर इस्राईलियों पर भड़का, और उसने उनको \*मसोपतामिया के बादशाह कोशन रिसा'तीम के हाथ बेच डाला; इसलिए वह आठ बरस तक कोशन रिसा'तीम के फ़रमाँवरदार रहे। 9 और जब बनी — इस्राईल ने खुदावन्द से फ़रियाद की तो खुदावन्द ने बनी — इस्राईल के लिए एक रिहाई देने वाले को खड़ा किया, और कालिब के छोटे भाई क्रनज़ के बेटे गुतनीएल ने उनको छुड़ाया। 10 और खुदावन्द की रूह उस पर उतरी और वह इस्राईल का क्राज़ी हुआ और जंग के लिए निकला; तब खुदावन्द ने मसोपतामिया के बादशाह कोशन रिसा'तीम को उसके हाथ में कर दिया, इसलिए उसका हाथ कोशन रिसा'तीम पर गालिब हुआ। 11 और उस मुल्क में चालीस बरस तक चैन रहा और क्रनज़ के बेटे गुतनीएल ने वफ़ात पाई।

2222 22222222 22 222222 2222

12 और बनी — इस्राईल ने फिर खुदावन्द के आगे बुराई की; तब खुदावन्द ने मोआब के बादशाह 'अजलून को इस्राईलियों के खिलाफ़ जोर बरूशा, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द के आगे बदी की थी। 13 और उसने बनी 'अम्मून और बनी 'अमालीक को अपने यहाँ जमा किया और जाकर इस्राईल को मारा, और उन्होंने खजूरों का शहर ले लिया। 14 इसलिए बनी इस्राईल अठारह बरस तक मोआब के बादशाह 'अजलून के फ़रमाँवरदार रहे। 15 लेकिन जब बनी — इस्राईल ने खुदावन्द से फ़रियाद की तो खुदावन्द ने बिनयमीनी जीरा के बेटे अहूद को जो बेसहारा था, उनका छुड़ाने वाले मुक़रर किया और बनी इस्राईल ने उसके ज़रिए मोआब के बादशाह 'अजलून के लिए हदिया भेजा। 16 और अहूद ने अपने लिए एक दोधारी तलवार एक हाथ लम्बी बनवाई, और उसे अपने जामे के नीचे दहनी रान पर बाँध लिया। 17 फिर उसने मोआब के बादशाह 'अजलून के सामने वह हदिया पेश किया, और 'अजलून बड़ा मोटा आदमी था। 18 और जब वह हदिया पेश कर चुका तो उन लोगों को जो हदिया लाए थे रुखसत किया। 19 और वह उस पत्थर के कान के पास जो जिल्ला में है, कहने लगा, “ऐ बादशाह

मेरे पास तेरे लिए एक खूफ़िया पैग़ाम है।” उसने कहा, “खामोश रह।” तब वह पास सब जो उसके खड़े थे उसके पास से बाहर चले गए। 20 फिर अहूद उसके पास आया, उस वक्त वह अपने हवादार बालाखाने में अकेला बैठा था। तब अहूद ने कहा, “तेरे लिए मेरे पास खुदा की तरफ़ से एक पैग़ाम है।” तब वह कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ। 21 और अहूद ने अपना बायाँ हाथ बढ़ा कर अपनी दहनी रान पर से वह तलवार ली और उसकी पेट में घुसेड़ दी। 22 और फल कब्जे समेत दाखिल हो गया, और चर्बी फल के ऊपर लिपट गई; क्योंकि उसने तलवार को उसकी पेट से न निकाला, बल्कि वह पार हो गई। 23 तब अहूद ने बरआमदे में आकर और बालाखाने के दरवाज़ों के अन्दर उसे बन्द कर के ताला लगा दिया। 24 और जब वह चलता बना तो उसके खादिम आए और उन्होंने देखा कि बालाखाने के दरवाज़ों में ताला लगा है; वह कहने लगे, “वह ज़रूर हवादार कमरे में फरागत कर रहा है।” 25 और वह ठहरे ठहरे शरमा भी गए, और जब देखा के वह बालाखाने के दरवाज़े नहीं खोलता, तो उन्होंने कुंजी ली और दरवाज़े खोले, और देखा कि उनका आक्रा ज़मीन पर मरा पड़ा है। 26 और वह ठहरे ही हुए थे के अहूद इतने में भाग निकला, और पत्थर की कान से आगे बढ़ कर स'ईरत में जा पनाह ली। 27 और वहाँ पहुँच कर उसने इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में नरसिंगा फूँका। तब बनी इस्राईल उसके साथ पहाड़ी मुल्क से उतरे, और वह उनके आगे आगे हो लिया। 28 उसने उनको कहा, “मेरे पीछे पीछे चले चलो, क्योंकि खुदावन्द ने तुम्हारे दुश्मनों या'नी मोआबियों को तुम्हारे कब्ज़ा में कर दिया है।” इसलिए उन्होंने उसके पीछे पीछे जाकर यरदन के घाटों को जो मोआब की तरफ़ थे अपने कब्जे में कर लिया, और एक को भी पार उतरने न दिया। 29 उस वक्त उन्होंने मोआब के दस हजार शख्स के करीब जो सब के सब मोटे ताजे और बहादुर थे, क़त्ल किए और उनमें से एक भी न बचा। 30 इसलिए मोआब उस दिन इस्राईलियों के हाथ के नीचे दब गया, और उस मुल्क में अस्सी बरस चैन रहा।

2222 22222222 22 222222 2222

31 इसके बाद 'अनात का बेटा शमजर खड़ा हुआ, और उसने फ़िलिस्तियों में से छः सौ आदमी बैल के पैने से मारे; और उसने भी इस्राईल को रिहाई दी।

## 4

222222 22222222 22 222222 2222

\* 3:8 3:8 मसोपोतामिया † 3:8 3:8 हमला करने और लूटने दिया

‡ 3:22 3:22 तलवार की नोक उसकी पीठ से बाहर आ गई

1 और अहूद की वफात के बाद बनी इस्राईल ने फिर खुदावन्द के सामने बुराई की। 2 इसलिए खुदावन्द ने उनको कन'आन के बादशाह याबीन के हाथ जो हसूर में सलत्तनत करता था \*बेचा, और उसके लश्कर के सरदार का नाम सीसरा था; वह दीगर अक्रवाम के शहर हरूसत में रहता था। 3 तब बनी — इस्राईल ने खुदावन्द से फ़रियाद की; क्योंकि उसके पास लोहे के नौ सौ रथ थे, और उसने बीस बरस तक बनी — इस्राईल को शिद्दत से सताया। 4 उस वक़्त लफ़ीदोत की बीवी दबोरा नबिया, बनी — इस्राईल का इन्साफ़ किया करती थी। 5 और वह इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में रामा और बैतएल के बीच दबोरा के खज़ूर के दरख़्त के नीचे रहती थी, और बनी इस्राईल उसके पास इन्साफ़ के लिए आते थे। 6 और उसने क़ादिस नफ़ताली से अबीनू'अम के बेटे बरक़ को बुला भेजा और उससे कहा, “क्या खुदावन्द इस्राईल के खुदा ने हुक्म नहीं किया, कि तू तबूर के पहाड़ पर चढ़ जा, और बनी नफ़ताली और बनी ज़बूलून में से दस हज़ार आदमी अपने साथ ले ले? 7 और मैं नहर — ए — क्रीसोन पर याबीन के लश्कर के सरदार सीसरा को और उसके रथों और फ़ौज को तेरे पास खींच लाऊँगा, और उसे तेरे हाथ में कर दूँगा।” 8 और बरक़ ने उससे कहा, “अगर तू मेरे साथ चलेगी तो मैं जाऊँगा, लेकिन अगर तू मेरे साथ नहीं चलेगी तो मैं नहीं जाऊँगा।” 9 उसने कहा, “मैं ज़रूर तेरे साथ चलूँगी; लेकिन इस सफ़र से जो तू करता है तुझे कुछ इज़्जत हासिल न होगी, क्योंकि खुदावन्द सीसरा को एक 'औरत के हाथ बेच डालेगा।” और दबोरा उठ कर बरक़ के साथ क़ादिस को गई। 10 और बरक़ ने ज़बूलून और नफ़ताली को क़ादिस में बुलाया; और दस हज़ार आदमी अपने साथ लेकर चढ़ा, और दबोरा भी उसके साथ चढ़ी। 11 और हिब्र क्रीनी ने जो मूसा के साले हुबाब की नसल से था, क्रीनियों से अलग होकर क़ादिस के करीब ज़ाननीम में बलूत के दरख़्त के पास अपना डेरा डाल लिया था। 12 तब उन्होंने सीसरा को ख़बर पहुँचाई कि बरक़ बिन अबीनू'अम कोह — ए — तबूर पर चढ़ गया है। 13 और सीसरा ने अपने सब रथों को, या'नी लोहे के नौ सौ रथों और अपने साथ के सब लोगों को दीगर अक्रवाम के शहर हरूसत से क्रीसोन की नदी पर जमा किया। 14 तब दबोरा ने बरक़ से कहा कि उठ! क्योंकि यही वह दिन है, जिसमें खुदावन्द ने सीसरा को तेरे क़ब्ज़े में कर दिया है। क्या खुदावन्द तेरे आगे नहीं गया है? तब बरक़ और वह दस हज़ार आदमी उसके पीछे पीछे कोह — ए — तबूर से

उतरे। 15 और खुदावन्द ने सीसरा को और उसके सब रथों और सब लश्कर को, तलवार की धार से बरक़ के सामने शिकस्त दी; और सीसरा रथ पर से उतर कर पैदल भागा। 16 और बरक़ रथों और लश्कर को दीगर अक्रवाम के हरूसत शहर तक दौड़ाता गया; चुनाँचे सीसरा का सारा लश्कर तलवार से मिटा, और एक भी न बचा। 17 लेकिन सीसरा हिब्र क्रीनी की बीवी या'एल के डेरे को पैदल भाग गया, इसलिए कि हसूर के बादशाह याबीन और हिब्र क्रीनी के घराने में सुलह थी। 18 तब या'एल सीसरा से मिलने को निकली, और उससे कहने लगी, “ऐ मेरे खुदावन्द, आ मेरे पास आ, और परेशान न हो।” इसलिए वह उसके पास डेरे में चला गया, और उसने उसको कम्बल उढ़ा दिया। 19 तब सीसरा ने उससे कहा कि ज़रा मुझे थोड़ा सा पानी पीने को दे, क्योंकि मैं प्यासा हूँ। तब उसने दूध का मश्कीज़ा खोलकर उसे पिलाया, और फिर उसे उढ़ा दिया। 20 तब उसने उससे कहा कि तू डेरे के दरवाज़े पर खड़ी रहना, और अगर कोई शख्स आकर तुझ से पूछे कि यहाँ कोई आदमी है? तो कह देना कि नहीं। 21 तब हिब्र की बीवी या'एल डेरे की एक मेख और एक मेखचू को हाथ में ले, दबे पाँव उसके पास गई और मेख उसकी कनपट्टियों पर रख कर ऐसी ठोंकी कि वह पार होकर ज़मीन में जा धँसी, क्योंकि वह गहरी नींद में था, पस वह बेहोश होकर मर गया। 22 और जब बरक़ सीसरा को दौड़ाता आया तो या'एल उससे मिलने को निकली और उससे कहा, “आ जा, और मैं तुझे वही शख्स जिसे तू ढूँडता है दिखा दूँगी।” पस उसने उसके पास आकर देखा कि सीसरा मरा पड़ा है, और मेख उसकी कनपट्टियों में है। 23 इसलिए खुदा ने उस दिन कन'आन के बादशाह याबीन को बनी — इस्राईल के सामने नीचा दिखाया। 24 और बनी — इस्राईल का हाथ कन'आन के बादशाह याबीन पर ज़्यादा ग़ालिब ही होता गया, यहाँ तक कि उन्होंने शाह — ए — कन'आन याबीन को बर्बाद कर डाला।

## 5

?????? ??

1 उसी दिन दबोरा और अबीनू'अम के बेटे बरक़ ने यह गीत गाया कि: 2 \*पेशवाओं ने जो इस्राईल की पेशवाई की और लोग खुशी खुशी भर्ती हुए इसके लिए खुदावन्द को मुबारक कहो। 3 ऐ बादशाहों, सुनो! ऐ शाहज़ादों, कान लगाओ! मैं खुद खुदावन्द की तारीफ़ करूँगी, मैं खुदावन्द, इस्राईल के खुदा की बड़ाई गाऊँगी। 4 ऐ खुदावन्द, जब तू श'ईर से चला, जब तू अदोम के मैदान

\* 4:2 4:2 (बेचा) हमला करने और लूटने दिया, (हरूसत) होगईम, गैर कौमों का शहर  
रस्त्बाज़ी क़ाइम की

\* 5:2 5:2 रहनुमाओं, यह्ने ने इस्राईल के लिए

से बाहर निकला, तो जमीन काँप उठी, और आसमान टूट पड़ा, हाँ, बादल बरसे।<sup>5</sup> पहाड़ खुदावन्द की हुजुरी की वजह से, और वह सीना भी खुदावन्द इस्राईल के खुदा की हुजुरी की वजह से काँप गए।<sup>6</sup> 'अनात के बेटे शमजर के दिनों में, और या'एल के दिनों में शाहराहें सूनी पड़ी थीं, और मुसाफिर पगडंडियों से आते जाते थे।<sup>7</sup> इस्राईल में हाकिम बन्द रहे, वह बन्द रहे, जब तक कि मैं दबोरा खड़ी न हुई, जब तक कि मैं इस्राईल में माँ होकर न उठी।<sup>8</sup> उन्होंने नए नए मा'बूद चुन लिए, तब जंग फाटकों ही पर होने लगी। क्या चालीस हजार इस्राईलियों में भी कोई ढाल या बर्छी दिखाई देती थी? <sup>9</sup> मेरा दिल इस्राईल के हाकिमों की तरफ लगा है जो लोगों के बीच खुशी खुशी भर्ती हुए। तुम खुदावन्द को मुबारक कहो।<sup>10</sup> ऐ तुम सब जो सफेद गधों पर सवार हुआ करते हो, और तुम जो नफ्रीस गालीचों पर बैठते हो, और तुम लोग जो रास्ते चलते हो, सब इसका चर्चा करो।<sup>11</sup> तीरअंदाजों के शोर से दूर पनघटों में, वह खुदावन्द के सच्चे कामों का, या'नी उसकी हुकूमत के उन सच्चे कामों का जो इस्राईल में हुए जिक्र करेंगे। उस वक़्त खुदावन्द के लोग उतर उतर कर फाटकों पर गए।<sup>12</sup> “जाग, जाग, ऐ दबोरा! जाग, जाग और गीत गा! उठ, ऐ बरक, और अपने गुलामों को बाँध ले जा, ऐ अबीनू'अम के बेटे।<sup>13</sup> उस वक़्त थोड़े से रईस और लोग उतर आए: खुदावन्द मेरी तरफ से ताक़तवरों के मुकाबिले के लिए आया।<sup>14</sup> इफ़राईम में से वह लोग आए जिनकी जड़ 'अमालीक में है; तेरे पीछे पीछे ऐ बिनयमीन, तेरे लोगों के बीच, मकीर में से हाकिम उतर कर आए; और जबूलून में से वह लोग आए जो सिपहसालार की लाठी लिए रहते हैं; <sup>15</sup> और इश्कार के सरदार दबोरा के साथ साथ थे, जैसा इश्कार वैसा ही बरक था; वह लोग उसके साथी झपट कर वादी में गए। रुबिन की नदियों के पास बड़े बड़े इरादे दिल में ठाने गए।<sup>16</sup> तू उन सीटियों को सुनने के लिए, जो भेड़ बकरियों के लिए बजाते हैं भेड़ सालों के बीच क्यों बैठा रहा? रुबिन की नदियों के पास दिलों में बड़ी घबराहट थी।<sup>17</sup> जिल'आद यरदन के पार रहा; और दान किशतियों में क्यों रह गया? आशर समुन्दर के बन्दर के पास बैठा ही रहा, और अपनी खाड़ियों के आस पास जम गया।<sup>18</sup> जबूलून अपनी जान पर खेलने वाले लोग थे; और नफ़्ताली भी मुल्क के ऊँचे ऊँचे मक़ामों पर ऐसा ही निकला।<sup>19</sup> बादशाह आकर लड़े, तब कन'आन के बादशाह ता'नक में मजिदो के चश्मों के पास लड़े:

लेकिन उनको कुछ रुपये हासिल न हुए।<sup>20</sup> आसमान की तरफ़ से भी लड़ाई हुई; बल्कि सितारे भी अपनी अपनी मंजिल में सीसरा से लड़े।<sup>21</sup> क्रीसोन नदी उनको बहा ले गई, या'नी वही पुरानी नदी जो क्रीसोन नदी है। ऐ मेरी जान! तू ज़ोरों में चल।<sup>22</sup> उनके कूदने, उन ताक़तवर घोड़ों के कूदने की वजह से, खुरों की टांप की आवाज़ होने लगी।<sup>23</sup> खुदावन्द के फ़रिश्ते ने कहा, कि तुम मीरोज़ पर ला'नत करो, उसके बाशिंदों पर सख़्त ला'नत करो क्योंकि वह खुदावन्द की मदद को ताक़तवर के मुकाबिल खुदावन्द की मदद को आए।<sup>24</sup> हिब्र कीनी की बीवी या'एल, सब 'औरतों से मुबारक ठहरेगी; जो 'औरतें डेरों में हैं उन से वह मुबारक होगी।<sup>25</sup> सीसरा ने पानी माँगा, उसने उसे दूध दिया, अमीरों की थाल में वह उसके लिए मक्खन लाई।<sup>26</sup> उसने अपना हाथ मेख को, और अपना दहना हाथ बड़इयों के मेखचू को लगाया; और मेखचू से उसने सीसरा को मारा, उसने उसके सिर को फोड़ डाला, और उसकी कनपट्टियों को आर पार छेद दिया।<sup>27</sup> उसके पाँव पर वह झुका, वह गिरा, और पड़ा रहा; उसके पाँव पर वह झुका और गिरा; जहाँ वह झुका था, वहीं वह मर कर गिरा।<sup>28</sup> सीसरा की माँ खिड़की से झाँकी और चिल्लाई, उसने झिलमिली की ओट से पुकारा, 'उसके रथ के आने में इतनी देर क्यों लगी? उसके रथों के पहिए क्यों अटक गए?' <sup>29</sup> उसकी अक़लमन्द 'औरतों ने जवाब दिया, बल्कि उसने अपने को आप ही जवाब दिया, <sup>30</sup> 'क्या उन्होंने लूट को पाकर उसे बाँट नहीं लिया है? क्या हर आदमी को एक एक बल्कि दो दो कुँवारियाँ, और सीसरा को रंगारंग कपड़ों की लूट, बल्कि बेल बूटे कढ़े हुए रंगारंग कपड़ों की लूट, और दोनों तरफ़ बेल बूटे कढ़े हुए जो गुलामों की गरदनो पर लदी हों, नहीं मिली?' <sup>31</sup> ऐ खुदावन्द, तेरे सब दुश्मन ऐसे ही हलाक हो जाएँ! लेकिन उसके प्यार करने वाले आफ़ताब की तरह हों जब वह जोश के साथ उगता है।” और मुल्क में चालीस बरस अमन रहा।

## 6

?????? ???? ? ? ???? ?

<sup>1</sup> और बनी — इस्राईल ने खुदावन्द के आगे बुराई की, और खुदावन्द ने उनको सात बरस तक मिदियानियों के हाथ में रखवा।<sup>2</sup> और मिदियानियों का हाथ इस्राईलियों पर गालिब हुआ; और मिदियानियों की वजह से बनी — इस्राईल ने अपने लिए पहाड़ों में खोह और ग़ार और क़िले बना लिए।<sup>3</sup> और ऐसा

† 5:11 5:11 गाने वालों की आवाज़ें

‡ 5:30 5:30 1: मेरी गर्दन, उन लोगों की गर्दन जो ग़ारतगिरी करते और लूटमार करते हैं



होता था कि जब बनी — इस्राईल कुछ बोते थे, तो मिदियानी और 'अमालीकी और मशरिक के लोग उन पर चढ़ आते थे; <sup>4</sup> और उनके मुकाबिल डेर लगा कर गज्जा तक खेतों की पैदावार को बर्बाद कर डालते, और बनी — इस्राईल के लिए न तो कुछ खुराक, न भेड़ — बकरी, न गाय बैल, न गधा छोड़ते थे। <sup>5</sup> क्योंकि वह अपने चौपायों और डेरों को साथ लेकर आते, और टिड्डियों के दल की तरह आते; और वह और उनके ऊँट बेशुमार होते थे। यह लोग मुल्क को तबाह करने के लिए आ जाते थे। <sup>6</sup> इसलिए इस्राईली मिदियानियों की वजह से निहायत बर्बाद हो गए, और बनी — इस्राईल खुदावन्द से फ़रियाद करने लगे। <sup>7</sup> और जब बनी — इस्राईल मिदियानियों की वजह से खुदावन्द से फ़रियाद करने लगे, <sup>8</sup> तो खुदावन्द ने बनी — इस्राईल के पास एक नबी को भेजा। उसने उनसे कहा कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है: मैं तुम को मिस्र से लाया, और मैंने तुम को गुलामी के घर से बाहर निकाला। <sup>9</sup> मैंने मिस्त्रियों के हाथ से और उन सभी के हाथ से जो तुम को सताते थे तुम को छुड़ाया, और तुम्हारे सामने से उनको दफ़ा किया और उनका मुल्क तुम को दिया। <sup>10</sup> और मैंने तुम से कहा था कि खुदावन्द तुम्हारा खुदा मैं हूँ; इसलिए तुम उन अमोरियों के मा'बूदों से जिनके मुल्क में बसते हो, मत डरना। लेकिन तुम ने मेरी बात न मानी। <sup>11</sup> फिर खुदावन्द का फ़रिश्ता आकर उफ़रा में बलूत के एक दरख्त के नीचे जो यू'आस अबी'अज़र का था बैठा, और उसका बेटा जिदाऊन मय के एक कोल्हू में गेहूँ झाड़ रहा था ताकि उसको मिदियानियों से छिपा रखे। <sup>12</sup> और खुदावन्द का फ़रिश्ता उसे दिखाई देकर उससे कहने लगा कि ऐ ताक़तवर सूर्मा, खुदावन्द तेरे साथ है। <sup>13</sup> जिदाऊन ने उससे कहा, “ऐ मेरे मालिक! अगर खुदावन्द ही हमारे साथ है तो हम पर यह सब हादसे क्यों गुज़रे? और उसके वह सब 'अजीब काम कहाँ गए, जिनका ज़िक्र हमारे बाप — दादा हम से यूँ करते थे, कि क्या खुदावन्द ही हम को मिस्र से नहीं निकाल लाया? लेकिन अब तो खुदावन्द ने हम को छोड़ दिया, और हम को मिदियानियों के हाथ में कर दिया।” <sup>14</sup> तब खुदावन्द ने उस पर निगाह की और कहा कि तू अपने इसी ताक़त में जा, और बनी — इस्राईल की मिदियानियों के हाथ से छुड़ा। क्या मैंने तुझे नहीं भेजा? <sup>15</sup> उसने उससे कहा, “ऐ मालिक! मैं किस तरह बनी — इस्राईल को बचाऊँ? मेरा घराना मनस्सी में सब से गरीब है, और मैं अपने बाप के घर में सब से छोटा हूँ।” <sup>16</sup> खुदावन्द ने उससे

कहा, “मैं जरूर तेरे साथ हूँगा, और तू मिदियानियों को ऐसा मार लेगा जैसे एक आदमी को।” <sup>17</sup> तब उसने उससे कहा कि अगर अब मुझ पर तेरे करम की नज़र हुई है, तो इसका मुझे कोई निशान दिखा कि मुझ से तू ही बातें करता है। <sup>18</sup> और मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, कि तू यहाँ से न जा जब तक मैं तेरे पास फिर न आऊँ और अपना हृदया निकाल कर तेरे आगे न रखूँ। उसने कहा कि जब तक तू फिर आ न जाए, मैं ठहरा रहूँगा। <sup>19</sup> तब जिदाऊन ने जाकर बकरी का एक बच्चा और एक ऐफ़ा आटे की फ़तीरी रोटियाँ तैयार कीं, और गोश्त को एक टोकरी में और शोरबा एक हॉण्डी में डालकर उसके पास बलूत के दरख्त के नीचे लाकर पेश किया। <sup>20</sup> तब खुदा के फ़रिश्ते ने उससे कहा, “इस गोश्त और फ़तीरी रोटियों को ले जाकर उस चट्टान पर रख, और शोरबे को उंडेल दे।” उसने वैसा ही किया। <sup>21</sup> तब खुदावन्द के फ़रिश्ते ने उस लाठी की नोक से जो उसके हाथ में थी, गोश्त और फ़तीरी रोटियों को छुआ; और उस पत्थर से आग निकली और उसने गोश्त और फ़तीरी रोटियों को भसम कर दिया। तब खुदावन्द का फ़रिश्ता उसकी नज़र से ग़ायब हो गया। <sup>22</sup> और जिदाऊन ने जान लिया कि वह खुदावन्द का फ़रिश्ता था; इसलिए जिदाऊन कहने लगा, “अफ़सोस है ऐ मालिक, खुदावन्द, कि मैंने खुदावन्द के फ़रिश्ते को आमने — सामने देखा।” <sup>23</sup> खुदावन्द ने उससे कहा, “तेरी सलामती हो, ख़ौफ़ न कर, तू मरेगा नहीं।” <sup>24</sup> तब जिदाऊन ने वहाँ खुदावन्द के लिए मज़बह बनाया, और उसका नाम \*यहोवा सलोम रखवा; वह अबी'अज़रियों के उफ़रा में आज तक मौजूद है। <sup>25</sup> और उसी रात खुदावन्द ने उसे कहा कि अपने बाप का जवान बैल, या'नी वह दूसरा बैल जो सात बरस का है ले, और बा'ल के मज़बह को जो तेरे बाप का है ढा दे, और उसके पास की यसीरत को काट डाल; <sup>26</sup> और खुदावन्द अपने खुदा के लिए इस गद्दी की चोटी पर क्रा'इदे के मुताबिक़ एक मज़बह बना; और उस दूसरे बैल को लेकर, उस यसीरत की लकड़ी से जिसे तू काट डालेगा, सोख़्तनी कुर्बानी गुज़ार। <sup>27</sup> तब जिदाऊन ने अपने नौकरों में से दस आदमियों को साथ लेकर जैसा खुदावन्द ने उसे फ़रमाया था किया; और चूँकि वह यह काम अपने बाप के खान्दान और उस शहर के बाशिंदों के डर से दिन को न कर सका, इसलिए उसे रात को किया। <sup>28</sup> जब उस शहर के लोग सुबह सवेरे उठे तो क्या देखते हैं, कि बा'ल का मज़बह ढाया हुआ, और उसके पास की यसीरत कटी हुई, और उस मज़बह पर जो बनाया

गया था वह दूसरा बैल चढ़ाया हुआ है। 29 और वह आपस में कहने लगे, “किसने यह काम किया?” और जब उन्होंने तहकीकात और पूछ — ताछ की तो लोगों ने कहा, “यूआस के बेटे जिदा'ऊन ने यह काम किया है।” 30 तब उस शहर के लोगों ने यूआस से कहा, “अपने बेटे को निकाल ला ताकि क़त्ल किया जाए, इसलिए कि उसने बा'ल का मज़बह ढा दिया, और उसके पास की यसीरत काट डाली है।” 31 यूआस ने उन सभी को जो उसके सामने खड़े थे कहा, “क्या तुम बा'ल के वास्ते झगड़ा करोगे? या तुम उसे बचा लोगे? जो कोई उसकी तरफ़ से झगड़ा करे वह इसी सुबह मारा जाए। अगर वह खुदा है तो आप ही अपने लिए झगड़े, क्योंकि किसी ने उसका मज़बह ढा दिया है।” 32 इसलिए उसने उस दिन जिदा'ऊन का नाम यह कहकर यरुब्बा'ल रखवा, कि बा'ल आप इससे झगड़ ले, इसलिए कि इसने उसका मज़बह ढा दिया है।

222222 22 222222 222222

33 तब सब मिदियानी और 'अमालीकी और मशरिक़ के लोग इकट्ठे हुए, और पार होकर यज़र'एल की वादी में उन्होंने डेरा किया। 34 तब खुदावन्द की रूह जिदा'ऊन पर नाज़िल हुई, इसलिए उसने नरसिंगा फूँका और अबी'अएज़र के लोग उसकी पैरवी में इकट्ठे हुए। 35 फिर उसने सारे मनस्सी के पास क़ासिद भेजे, तब वह भी उसकी पैरवी में इकट्ठे हुए। और उसने आशर और ज़बूलून और नफ़्ताली के पास भी क़ासिद रवाना किए, इसलिए वह उनके इस्तक्रबाल को आए। 36 तब जिदा'ऊन ने खुदा से कहा, “अगर तू अपने क़ौल के मुताबिक़ मेरे हाथ के वसीले से बनी — इस्राईल को रिहाई देना चाहता है, 37 तो देख, मैं भेड़ की ऊन खलिहान में रख दूँगा; इसलिए अगर ओस सिर्फ़ ऊन ही पर पड़े और आस — पास की ज़मीन सब सूखी रहे, तो मैं जान लूँगा कि तू अपने क़ौल के मुताबिक़ बनी — इस्राईल को मेरे हाथों के वसीले से रिहाई बख़्शेगा।” 38 और ऐसा ही हुआ। क्योंकि वह सुबह को जूँ ही सवेरे उठा, और उस ऊन को दबाया और ऊन में से ओस निचोड़ी तो प्याला भर पानी निकला। 39 तब जिदा'ऊन ने खुदा से कहा कि तेरा गुस्सा मुझ पर न भड़के, मैं सिर्फ़ एक बार और 'अर्ज़ करता हूँ, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि सिर्फ़ एक बार और इस ऊन से आजमाइश कर लूँ, अब सिर्फ़ ऊन ही ऊन खुश्क रहे और आस पास की सब ज़मीन पर ओस पड़े। 40 तब खुदा ने उस रात ऐसा ही किया क्योंकि ऊन ही खुश्क रही और सारी ज़मीन पर ओस पड़ी।

## 7

222222 22 222222222222 22 222222 222222

1 तब यरुब्बा'ल या'नी जिदा'ऊन और सब लोग जो उसके साथ थे सवेरे ही उठे, और हरोद के चश्मे के पास डेरा किया, और मिदियानियों की लश्कर गाह उनके उत्तर की तरफ़ कोह — ए — मोरा के मुत्तसिल वादी में थी 2 तब खुदावन्द ने जिदा'ऊन से कहा, तेरे साथ के लोग इतने ज्यादा हैं, कि मैं मिदियानियों को उनके हाथ में नहीं कर सकता; ऐसा न हो कि इस्राईली मेरे सामने अपने ऊपर फ़ख़र कर के कहने लगें कि हमारी ताक़त ने हम को बचाया। 3 इसलिए तू लोगों में सुना सुना कर ऐलान कर दे कि जो कोई तरसान और हिरासान हो, वह लौट कर कोह — ए — जिल'आद से चला जाए। चुनाचें उन लोगों में से बाइस हज़ार तो लौट गए, और दस हज़ार बाक़ी रह गए। 4 तब खुदावन्द ने जिदा'ऊन से कहा कि लोग अब भी ज्यादा हैं; इसलिए तू उनको चश्मे के पास नीचे ले आ, और वहाँ मैं तेरी खातिर उनको आजमाऊँगा; और ऐसा होगा कि जिसके बारे में तुझ से कहूँ, 'यह तेरे साथ जाए, वही तेरे साथ जाए; और जिसके हक़ में मैं कहूँ कि यह तेरे साथ न जाए,' वह न जाए। 5 इसलिए वह उन लोगों को चश्मे के पास नीचे ले गया, और खुदावन्द ने जिदा'ऊन से कहा कि जो जो अपनी ज़बान से पानी चपड़ चपड़ कर के कुत्ते की तरह पिए उसको अलग रख, और वैसे ही हर ऐसे शख्स को जो घुटने टेक कर पिए। 6 इसलिए जिन्होंने अपना हाथ अपने मुँह से लगा कर चपड़ चपड़ कर के पिया वह गिनती में तीन सौ शख्स थे, और बाक़ी सब लोगों ने घुटने टेक कर पानी पिया। 7 तब खुदावन्द ने जिदा'ऊन से कहा कि मैं इन तीन सौ आदमियों के वसीले से जिन्होंने चपड़ चपड़ कर के पिया तुम को बचाऊँगा, और मिदियानियों को तेरे हाथ में कर दूँगा; और बाक़ी सब लोग अपनी अपनी जगह को लौट जाएँ। 8 तब उन लोगों ने अपना — अपना खाना और नरसिंगा अपने अपने हाथ में लिया; और उसने सब इस्राईली आदमियों को उनके डेरों की तरफ़ रवाना कर दिया पर उन तीन सौ आदमियों रख लिया; और मिदियानियों की लश्कर गाह उसके नीचे वादी में थी। 9 और उसी रात खुदावन्द ने उससे कहा, उठ, और नीचे लश्कर गाह में उतर जा: क्योंकि मैंने उसे तेरे क़ब्ज़ा में कर दिया है। 10 लेकिन अगर तू नीचे जाते डरता है, तो तू अपने नौकर फ़ूराह के साथ लश्कर गाह में उतर जा, 11 और तू सुन लेगा कि वह क्या कह रहे हैं; इसके बाद तुझ को हिम्मत होगी कि तू उस लश्कर गाह में उतर जाए। चुनाचें वह

अपने नौकर फूराह को साथ लेकर उन सिपाहियों के पास जो उस लश्कर गाह के किनारे थे गया। <sup>12</sup> और मिदियानी और 'अमालीकी और मशरिक के लोग कसरत से वादी के बीच टिड्डियों की तरह फैले पड़े थे; और उनके ऊँट कसरत की वजह से समुन्दर के किनारे की रेत की तरह बेशुमार थे। <sup>13</sup> और जब जिदा'ऊन पहुँचा तो देखो, वहाँ एक शख्स अपना ख्वाब अपने साथी से बयान करता हुआ कह रहा था, “देख, मैंने एक ख्वाब देखा है कि जौ की एक रोटी मिदियानी लश्कर गाह में गिरी और लुढ़कती हुई डेरे के पास पहुँची, और उससे ऐसी टकराई कि वह गिर गया और उसको ऐसा उलट दिया कि वह डेरा फर्श हो गया।” <sup>14</sup> तब उसके साथी ने जवाब दिया कि यह यूआस के बेटे जिदा'ऊन इस्राईली आदमी की तलवार के 'अलावा और कुछ नहीं; खुदा ने मिदियान की और सारे लश्कर को उसके कब्जे में कर दिया है। <sup>15</sup> जब जिदा'ऊन ने ख्वाब का मज़मून और उसकी ता'बीर सुनी तो सिज्दा किया, और इस्राईली लश्कर में लौट कर कहने लगा, “उठो, क्योंकि खुदावन्द ने मिदियानी लश्कर को तुम्हारे कब्जे में कर दिया है।” <sup>16</sup> और उसने उन तीन सौ आदमियों के तीन गोल किए, और उन सभी के हाथ में एक एक नरसिंगा, और उसके साथ एक एक खाली घड़ा दिया हर घड़े के अन्दर एक मशाल थी। <sup>17</sup> और उसने उनसे कहा कि मुझे देखते रहना और वैसा ही करना; और देखो, जब मैं लश्कर गाह के किनारे जा पहुँचूँ, तो जो कुछ मैं करूँ तुम भी वैसा ही करना। <sup>18</sup> जब मैं और वह सब जो मेरे साथ हैं। नरसिंगा फूँके, तो तुम भी लश्कर गाह की हर तरफ़ नरसिंगे फूँकना और ललकारना, “यहोवा की और जिदा'ऊन की तलवार।” <sup>19</sup> इसलिए \*बीच के पहर के शुरू' में जब नए पहर वाले बदले गए, तो जिदा'ऊन और वह सौ आदमी जो उसके साथ थे लश्कर गाह के किनारे आए; और उन्होंने नरसिंगे फूँके और उन घड़ों को जो उनके हाथ में थे तोड़ा। <sup>20</sup> और उन तीनों गोलों ने नरसिंगे फूँके और घड़े तोड़े और मशालों को अपने बाएँ हाथ में और नरसिंगों को फूँकने के लिए अपने दहने हाथ में ले लिया और चिल्ला उठे कि यहोवा की और जिदा'ऊन की तलवार। <sup>21</sup> और यह सब के सब लश्कर गाह के चारों तरफ़ अपनी अपनी जगह खड़े हो गए, तब सारा लश्कर दौड़ने लगा और उन्होंने चिल्ला चिल्लाकर उनको भगाया। <sup>22</sup> और उन्होंने तीन सौ नरसिंगों को

फूँका, और खुदावन्द ने हर शख्स की तलवार उसके साथी और सब लश्कर पर चलवाई और सारा लश्कर सरीरात की तरफ़ बैत — सित्ता तक और तब्बात के करीब अबील महोला की सरहद तक भागा। <sup>23</sup> तब इस्राईली आदमी नफ़्ताली और आशर और †मनस्सी की सरहदों से जमा' होकर निकले और मिदियानियों का पीछा किया। <sup>24</sup> और जिदा'ऊन ने इफ़राईम के तमाम पहाड़ी मुल्क में कासिद खाना किए और कहला भेजा कि मिदियानियों के मुक्काबिले को उतर आओ, और उनसे पहले पहले दरिया — ए — यरदन के घाटों पर बैतबरा तक काबिज़ हो जाओ। तब सब इफ़राईमी जमा' होकर दरिया — ए — यरदन के घाटों पर बैतबरा तक काबिज़ हो गए। <sup>25</sup> और उन्होंने मिदियान के दो सरदारों 'ओरेब और ज़ईब को पकड़ लिया, और 'ओरेब को 'ओरेब की चट्टान पर और ज़ईब को ज़ईब के कोल्हू के पास क़त्ल किया; और मिदियानियों को दौड़ाया और 'ओरेब और ज़ईब के सिर यरदन पार जिदा'ऊन के पास ले आए।

## 8

२२२२२२ २२ २२२२२ २२ २२२२२

<sup>1</sup> और इफ़राईम के बाशिन्दों ने उससे कहा कि तूने हम से यह सलूक क्यों किया, कि जब तू मिदियानियों से लड़ने को चला तो हम को न बुलवाया? इसलिए उन्होंने उसके साथ बड़ा झगड़ा किया। <sup>2</sup> उसने उनसे कहा, “मैंने तुम्हारी तरह भला किया ही क्या है? क्या इफ़राईम के छोड़े हुए अंगूर भी अबी'अएज़र की फ़सल से बेहतर नहीं हैं? <sup>3</sup> खुदा ने मिदियान के सरदार 'ओरेब और ज़ईब को तुम्हारे कब्जे में कर दिया; इसलिए तुम्हारी तरह मैं कर ही क्या सका हूँ?” जब उसने यह कहा, तो उनका गुस्सा उसकी तरफ़ से धीमा हो गया। <sup>4</sup> तब जिदा'ऊन और उसके साथ के तीन सौ आदमी जो बावजूद थके माँदे होने के फिर भी पीछा करते ही रहे थे, यरदन पर आकर पार उतरे। <sup>5</sup> तब उसने सुक्कात के बाशिन्दों से कहा कि इन लोगों को जो मेरे पैरों हैं, रोटी के गिर्दे दो क्योंकि यह थक गए हैं; और मैं मिदियान के दोनों बादशाहों ज़िबह और ज़िलमना' का पीछा कर रहा हूँ। <sup>6</sup> सुक्कात के सरदारों ने कहा, “क्या ज़िबह और ज़िलमना' के हाथ अब तेरे कब्जे में आ गए हैं, जो हम तेरे लश्कर को रोटियाँ दें?” <sup>7</sup> जिदा'ऊन ने कहा, “जब खुदावन्द ज़िबह और ज़िलमना' को मेरे कब्जे में कर देगा, तो मैं

\* 7:19 7:19 इब्रानी बाइबिल में यह दोपहर की शुरूआत है, इस्राईल में रात को के वक़्त को तीन हिस्सों में तक्सीम किया गया है, और हर एक हिस्सा चार चार घंटों में बटा हुआ है, इन चार हिस्सों के अलग अलग पहरेदार होते थे जो अपनी ज़िम्मेवारी निभाते थे, पहली पहरेदारी शुरू — ए — आफ़ताब से और दूसरी रात के दस बजे से शुरू होती थी — † 7:23 7:23 सब जोड़ा जा सकता, ‡ 7:23 7:23 मनस्सी के कबीले में आधे लोग मशरिक की तरफ़ रहते थे और दूसरे आधे यरदन नदी के मगरिब की तरफ़ रहते थे § 7:24 7:24 यरदन के साथ नदी जोड़ें \* 8:4 8:4 मिदियानी दुश्मन लोग

तुम्हारे गोशत को बबूल और हमेशा गुलाब के काँटों से नुचवाऊँगा।”<sup>8</sup> फिर वहाँ से वह फ़नूएल को गया, और वहाँ के लोगों से भी ऐसी ही बात कही; और फ़नूएल के लोगों ने भी उसे वैसा ही जवाब दिया जैसा सुक्कातियों ने दिया था।<sup>9</sup> इसलिए उसने फ़नूएल के बाशिंदों से भी कहा कि जब मैं सलामत लौटूँगा, तो इस बुर्ज को ढा दूँगा।<sup>10</sup> और ज़िबह और ज़िलमना अपने क़रीबन पंद्रह हजार आदमियों के लश्कर के साथ करकूर में थे, क्योंकि सिर्फ़ इतने ही मशरिक के लोगों के लश्कर में से बच रहे थे; इसलिए कि एक लाख बीस हजार शमशीर ज़न आदमी क़त्ल हो गए थे।<sup>11</sup> तब जिदा'ऊन उन लोगों के रास्ते से जो नुबह और युगबिहा के मशरिक की तरफ़ डेरों में रहते थे गया, और उस लश्कर को मारा क्योंकि वह लश्कर बेफ़िक़र पड़ा था।<sup>12</sup> और ज़िबह और ज़िलमना भागे, और उसने उनका पीछा करके उन दोनों मिदियानी बादशाहों, ज़िबह और ज़िलमना को पकड़ लिया और सारे लश्कर को भगा दिया।<sup>13</sup> और यूआस का बेटा जिदा'ऊन हर्स की चढ़ाई के पास से जंग से लौटा।<sup>14</sup> और उसने सुक्कातियों में से एक जवान को पकड़ कर उससे दरियाफ़्त किया; इसलिए उसने उसे सुक्कात के सरदारों और बुज़ुर्गों का हाल बता दिया जो शुमार में सत्तर थे।<sup>15</sup> तब वह सुक्कातियों के पास आकर कहने लगा कि ज़िबह और ज़िलमना को देख लो, जिनके बारे में तुम ने तन्ज़न मुझ से कहा था, 'क्या ज़िबह और ज़िलमना के हाथ तेरे क़ब्जे में आ गए हैं, कि हम तेरे आदमियों को जो थक गए हैं रोटियाँ दें?'<sup>16</sup> तब उसने शहर के बुज़ुर्गों को पकड़ा और बबूल और सदा गुलाब के काँटों लेकर उनसे सुक्कातियों की तादीब की।<sup>17</sup> और उसने फ़नूएल का बुर्ज ढा कर उस शहर के लोगों को क़त्ल किया।<sup>18</sup> फिर उसने ज़िबह और ज़िलमना से कहा कि वह लोग जिनको तुम ने तबूर में क़त्ल किया कैसे थे? उन्होंने जवाब दिया, जैसा तू है वैसे ही वह थे; उनमें से हर एक शहज़ादों की तरह था।<sup>19</sup> तब उसने कहा कि वह मेरे भाई, मेरी माँ के बेटे थे, इसलिए खुदावन्द की हयात की क़सम, अगर तुम उनको जीता छोड़ते तो मैं भी तुम को न मारता।<sup>20</sup> फिर उसने अपने बड़े बेटे यतर को हुक्म किया कि उठ, उनको क़त्ल कर। लेकिन उस लड़के ने अपनी तलवार न खींची, क्योंकि उसे डर लगा, इसलिए कि वह अभी लड़का ही था।<sup>21</sup> तब ज़िबह और ज़िलमना ने कहा, “तू आप उठ कर हम पर वार कर, क्योंकि जैसा आदमी होता है वैसी ही उसकी ताक़त होती

है।” इसलिए जिदा'ऊन ने उठ कर ज़िबह और ज़िलमना को क़त्ल किया, और उनके ऊँटों के गले के चन्दन हार ले लिए।

22 तब बनीं — इस्राईल ने जिदा'ऊन से कहा कि

तू हम पर हुक्मत कर, तू और तेरा बेटा और तेरा पोता भी; क्योंकि तूने हम को मिदियानियों के हाथ से छुड़ाया।<sup>23</sup> तब जिदा'ऊन ने उनसे कहा कि न मैं तुम पर हुक्मत करूँ और न मेरा बेटा, बल्कि खुदावन्द ही तुम पर हुक्मत करेगा।<sup>24</sup> और जिदा'ऊन ने उनसे कहा कि मैं तुम से यह 'अर्ज करता हूँ, कि तुम में से हर शख्स अपनी लूट की बालियाँ मुझे दे दे। यह लोग इस्माईली थे, इसलिए इनके पास सोने की बालियाँ थीं।<sup>25</sup> उन्होंने जवाब दिया कि हम इनको बड़ी खुशी से देंगे। फिर उन्होंने एक चादर बिछाई और हर एक ने अपनी लूट की बालियाँ उस पर डाल दीं।<sup>26</sup> इसलिए वह सोने की बालियाँ जो उसने माँगी थीं, वज़न में एक हजार सात सौ मिस्काल थीं; 'अलावह उन चन्दन हारों और झुमकों और मिदियानी बादशाहों की इर्गवानी पोशाक के जो वह पहने थे, और उन ज़न्जीरों के जो उनके ऊँटों के गले में पड़ी थीं।<sup>27</sup> और जिदा'ऊन ने उनसे एक अफ़ूद बनवाया और उसे अपने शहर उफ़रा में रखवा; और वहाँ सब इस्राईली उसकी पैरवी में ज़िनाकारी करने लगे, और वह जिदा'ऊन और उसके घराने के लिए फ़ंदा ठहरा।<sup>28</sup> यूँ मिदियानी बनी — इस्राईल के आगे मगलूब हुए और उन्होंने फिर कभी सिर न उठाया। और जिदा'ऊन के दिनों में चालीस बरस तक उस मुल्क में अमन रहा।<sup>29</sup> और यूआस का बेटा यरूब्बा'ल जाकर अपने घर में रहने लगा।<sup>30</sup> और जिदा'ऊन के सत्तर बेटे थे जो उस ही के सुल्ब से पैदा हुए थे, क्योंकि उसकी बहुत सी बीवियाँ थीं।<sup>31</sup> और उसकी एक हरम के भी जो सिकम में थी उस से एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम अबीमलिक रखवा।<sup>32</sup> और यूआस के बेटे जिदा'ऊन ने खूब उम्र रसीदा होकर वफ़ात पाई, और अबी'अज़रियों के उफ़रा में अपने बाप यूआस की क़बर में दफ़न हुआ।<sup>33</sup> और जिदा'ऊन के मरते ही बनी इस्राईल फिर कर बा'लीम की पैरवी में ज़िनाकारी करने लगे, और \*बा'ल बरीत को अपना मा'बूद बना लिया।<sup>34</sup> और बनी इस्राईल ने खुदावन्द अपने खुदा को, जिसने उनको हर तरफ़ उनके दुश्मनों के हाथ से रिहाई दी थी याद न रखवा;<sup>35</sup> और न वह यरूब्बा'ल या'नी जिदा'ऊन के ख़ान्दान के साथ,

† 8:9 8:9 मीनारों, शहरपनाहकी दीवारों पर बनाया जाता था    ‡ 8:27 8:27 एफ़ोद के मायने जानने के लिए देखें खुर्रज का 28 बाब    § 8:29 8:29 1: यरूबबाल जिदौन के लिए दूसरा नाम है    \* 8:33 8:33 अहद का बा'लदेवता



उन सब नेकियों के बदले में जो उसने बनी इस्राईल से की थीं महेरबानी से पेश आए।

## 9

22222222 22 22222 22 2222222 22222

1 तब यरुब्बा'ल का बेटा अबीमलिक सिकम में \*अपने मामुओं के पास गया, और उनसे और अपने सब ननिहाल के लोगों से कहा कि; 2 सिकम के सब आदमियों से पूछ देखो कि तुम्हारे लिए क्या बेहतर है, यह कि यरुब्बा'ल के सब बेटे जो सत्तर आदमी हैं वह तुम पर सल्तनत करें, या यह कि एक ही की तुम पर हुक्मत हो? और यह भी याद रखो, कि मैं तुम्हारी ही हड्डी और तुम्हारा ही गोश्त हूँ। 3 और उसके मामुओं ने उसके बारे में सिकम के सब लोगों के कानों में यह बातें डालीं; और उनके दिल अबीमलिक की पैरवी पर माइल हुए, क्योंकि वह कहने लगे कि यह हमारा भाई है। 4 और उन्होंने बा'ल बरीत के घर में से चाँदी के सत्तर सिक्के उसको दिए, जिनके वसीले से अबीमलिक ने शुहदे और बदमाश लोगों को अपने यहाँ लगा लिया, जो उसकी पैरवी करने लगे। 5 और वह उफ़रा में अपने बाप के घर गया और उसने अपने भाइयों यरुब्बा'ल के बेटों को जो सत्तर आदमी थे, एक ही पत्थर पर क़त्ल किया; लेकिन यरुब्बा'ल का छोटा बेटा यूताम बचा रहा, क्योंकि वह छिप गया था। 6 तब सिकम के सब आदमी और सब अहल — ए — मिल्लो जमा' हुए, और जाकर उस सुतून के बलूत के पास जो सिकम में था अबीमलिक को बादशाह बनाया।

22222 22 222222

7 जब यूताम को इसकी खबर हुई तो वह जाकर कोह — ए — गरिज़ीम की चोटी पर खड़ा हुआ और अपनी आवाज़ बुलन्द की, और पुकार पुकार कर उनसे कहने लगा, ऐ सिकम के लोगों, मेरी सुनो। ताकि खुदा तुम्हारी सुने। 8 एक ज़माने में दरख्त चले, ताकि किसी को मसह करके अपना बादशाह बनाएँ; इसलिए उन्होंने ज़ैतून के दरख्त से कहा, 'तू हम पर सल्तनत कर। 9 तब ज़ैतून के दरख्त ने उनसे कहा, 'क्या मैं अपनी चिकनाहट की, जिसके ज़रिए मेरे वसीले से लोग खुदा और इंसान की बड़ाई करते हैं, छोड़ कर दरख्तों पर हुक्मरानी करने जाऊँ?' 10 तब दरख्तों ने अंजीर के दरख्त से कहा, 'तू आ और हम पर सल्तनत कर। 11 लेकिन अंजीर के दरख्त ने उनसे कहा, 'क्या मैं अपनी मिठास और अच्छे अच्छे फलों को छोड़ कर दरख्तों पर हुक्मरानी करने जाऊँ?' 12 तब दरख्तों ने अंगूर की बेल से कहा कि तू आ और हम

पर सल्तनत कर। 13 अंगूर की बेल ने उनसे कहा, 'क्या मैं अपनी मय को जो खुदा और इंसान दोनों को खुश करती है, छोड़ कर दरख्तों पर हुक्मरानी करने जाऊँ?'

14 तब उन सब दरख्तों ने ऊँटकटारे से कहा, 'चल, तू ही हम पर सल्तनत कर।' 15 ऊँटकटारे ने दरख्तों से कहा, 'अगर तुम सचमुच मुझे अपना बादशाह मसह करके बनाओ, तो आओ, मेरे साये में पनाह लो; और अगर नहीं, तो ऊँटकटारे से आग निकलकर लुबनान के देवदारों को खा जाए।' 16 इसलिए बात यह है कि तुम ने जो अबीमलिक को बादशाह बनाया है, इसमें अगर तुम ने सच्चाई और ईमानदारी बरती है, और यरुब्बा'ल और उसके घराने से अच्छा सुलूक किया और उसके साथ उसके एहसान के हक़ के मुताबिक़ सुलूक किया है। 17 क्योंकि मेरा बाप तुम्हारी खातिर लड़ा, और उसने अपनी जान खतरे में डाली, और तुम को मिदियान के कब्जे से छुड़ाया। 18 और तुम ने आज मेरे बाप के घराने से बगावत की, और उसके सत्तर बेटे एक ही पत्थर पर क़त्ल किए, और उसकी लौंडी के बेटे अबीमलिक को सिकम के लोगों का बादशाह बनाया इसलिए कि वह तुम्हारा भाई है। 19 इसलिए अगर तुम ने यरुब्बा'ल और उसके घराने के साथ आज के दिन सच्चाई और ईमानदारी बरती है, तो तुम अबीमलिक से खुश रहो और वह तुम से खुश रहे। 20 और अगर नहीं, तो अबीमलिक से आग निकलकर सिकम के लोगों को और अहल — ए — मिल्लो खा जाए; और सिकम के लोगों और अहल — ए — मिल्लो के बीच से आग निकलकर अबीमलिक को खा जाए। 21 फिर यूताम दौड़ता हुआ भागा और बैर को चलता बना, और अपने भाई अबीमलिक के खौफ़ से वहीं रहने लगा।

22222 22 22222222 22 22222222 22222222 22222

22 और अबीमलिक इस्राईलियों पर तीन बरस हाकिम रहा। 23 तब खुदा ने अबीमलिक और सिकम के लोगों के बीच एक बुरी रूह भेजी, और सिकम के लोग अबीमलिक से दगा बाज़ी करने लगे; 24 ताकि जो ज़ुल्म उन्होंने यरुब्बा'ल के सत्तर बेटों पर किया था वह उन ही पर आए, और उनका खून उनके भाई अबीमलिक के सिर पर जिस ने उनको क़त्ल किया, और सिकम के लोगों के सिर पर हो जिन्होंने उसके भाइयों के क़त्ल में उसकी मदद की थी। 25 तब सिकम के लोगों ने पहाड़ों की चोटियों पर उसकी घात में लोग बिठाए, और वह उनको जो उस रास्ते के पास से गुज़रते लूट लेते थे; और अबीमलिक को इसकी खबर हुई। 26 तब

\* 9:1 9:1 अपनी मां के रिश्तेदारों के पास † 9:4 9:4 800 ग्राम

जा'ल बिन 'अबद अपने भाइयों के साथ सिकम में आया; और सिकम के लोगों ने उस पर भरोसा किया।<sup>27</sup> और वह खेतों में गए और अपने अपने ताकिस्तानों का फल तोड़ा और अंगूरों का रस निकाला और खूब खुशी मनाई, और अपने मा'बूद के हैकल में जाकर खाया — पिया और अबीमलिक पर ला'नतें बरसाई।<sup>28</sup> और जा'ल बिन 'अबद कहने लगा, “अबीमलिक कौन है, और सिकम कौन है कि हम उसकी फ़रमाँबरदारी करें? क्या वह यरूब्बा'ल का बेटा नहीं, और क्या ज़बूल उसका मन्सबदार नहीं? तुम ही सिकम के बाप हमोर के लोगों की फ़रमाँबरदारी करो, हम उसकी फ़रमाँबरदारी क्यों करें?”<sup>29</sup> काश कि यह लोग मेरे कब्जे में होते, तो मैं अबीमलिक को किनारे कर देता।” और उसने अबीमलिक से कहा, “तू अपने लश्कर को बढ़ा और निकल आ।”<sup>30</sup> जब उस शहर के हाकिम ज़बूल ने ज़ाल बिन 'अबद की यह बातें सुनीं तो उसका क्रूर भड़का।<sup>31</sup> और उसने चालाकी से अबीमलिक के पास कासिद खाना किए और कहला भेजा, “देख, जा'ल बिन 'अबद और उसके भाई सिकम में आए हैं, और शहर को तुझ से बगावत करने की तहरीक कर रहे हैं।”<sup>32</sup> इसलिए तू अपने साथ के लोगों को लेकर रात को उठ, और मैदान में घात लगा कर बैठ जा।<sup>33</sup> और सुबह को सूरज निकलते ही सवेरे उठ कर शहर पर हमला कर, और जब वह और उसके साथ के लोग तेरा सामना करने को निकलें तो जो कुछ तुझ से बन आए तू उन से कर।”<sup>34</sup> इसलिए अबीमलिक और उसके साथ के लोग रात ही को उठ चार गोल हो सिकम के मुक्राबिल घात में बैठ गए।<sup>35</sup> और जा'ल बिन 'अबद बाहर निकल कर उस शहर के फाटक के पास जा खड़ा हुआ; तब अबीमलिक और उसके साथ के आदमी आरामगाह से उठे।<sup>36</sup> और जब जा'ल ने फ़ौज को देखा तो वह ज़बूल से कहने लगा, “देख, पहाड़ों की चोटियों से लोग उतर रहे हैं।” ज़बूल ने उससे कहा कि तुझे पहाड़ों का साया ऐसा दिखाई देता है जैसे आदमी।<sup>37</sup> जा'ल फिर कहने लगा, “देख, मैदान के बीचों बीच से लोग उतरे आते हैं; और एक गोल म'ओननीम के बलूत के रास्ते आ रहा है।”<sup>38</sup> तब ज़बूल ने उससे कहा, “अब तेरा वह मुँह कहाँ है जो तू कहा करता था, कि अबीमलिक कौन है कि हम उसकी फ़रमाँबरदारी करें? क्या यह वही लोग नहीं हैं जिनकी तूने हिकारत की है? इसलिए अब ज़रा निकल कर उनसे लड़ तो सही।”<sup>39</sup> तब जा'ल सिकम के \*लोगों के सामने बाहर †निकला और अबीमलिक से लड़ा।<sup>40</sup> और अबीमलिक ने उसको

दौड़ाया और वह उसके सामने से भागा, और शहर के फाटक तक बहुत से ज़ख्मी हो हो कर गिरे।<sup>41</sup> और अबीमलिक ने ‡अरोमा में क़याम किया; और ज़बूल ने जा'ल और उसके भाइयों को निकाल दिया, ताकि वह सिकम में रहने न पाएँ।<sup>42</sup> और दूसरे दिन सुबह को ऐसा हुआ कि लोग निकल कर मैदान को जाने लगे, और अबीमलिक को खबर हुई।<sup>43</sup> इसलिए अबीमलिक ने फ़ौज लेकर उसके तीन गोल किए और मैदान में घात लगाई; और जब देखा कि लोग शहर से निकले आते हैं, तो वह उनका सामना करने को उठा और उनको मार लिया।<sup>44</sup> और अबीमलिक उस गोल समेत जो उसके साथ था आगे लपका, और शहर के फाटक के पास आकर खड़ा हो गया; और वह दो गोल उन सभी पर जो मैदान में थे झपटे और उनको काट डाला।<sup>45</sup> और अबीमलिक उस दिन शाम तक शहर से लड़ता रहा, और शहर को घेर कर के उन लोगों को जो वहाँ थे क़त्ल किया, और शहर को बर्बाद कर के उसमें नमक छिड़कवा दिया।<sup>46</sup> और जब सिकम के बुर्ज के सब लोगों ने यह सुना, तो वह अलबरीत के हैकल के क़िले में जा घुसे।<sup>47</sup> और अबीमलिक को यह खबर हुई कि सिकम के बुर्ज के सब लोग इकट्ठे हैं।<sup>48</sup> तब अबीमलिक अपनी फ़ौज समेत ज़लमोन के पहाड़ पर चढ़ा; और अबीमलिक ने कुल्हाड़ा अपने हाथ में ले दरख्तों में से एक डाली काटी और उसे उठा कर अपने कन्धे पर रख लिया, और अपने साथ के लोगों से कहा, “जो कुछ तुम ने मुझे करते देखा है, तुम भी जल्द वैसा ही करो।”<sup>49</sup> तब उन सब लोगों में से हर एक ने उसी तरह एक डाली काट ली, और वह अबीमलिक के पीछे हो लिए और उनको क़िले पर डालकर क़िले में आग लगा दी; चुनाँचे सिकम के बुर्ज के सब आदमी भी जो शख्स और 'औरत मिलाकर क़रीबन एक हजार थे मर गए।<sup>50</sup> फिर अबीमलिक तैबिज़ को जा तैबिज़ के मुक्राबिल खेमाज़न हुआ और उसे ले लिया।<sup>51</sup> लेकिन वहाँ शहर के अन्दर एक बड़ा मज़बूत बुर्ज था, इसलिए सब शख्स और 'औरतें और शहर के सब बाशिन्दे भाग कर उस में जा घुसे और दरवाज़ा बन्द कर लिया, और बुर्ज की छत पर चढ़ गए।<sup>52</sup> और अबीमलिक बुर्ज के पास आकर उसके मुक्राबिल लड़ता रहा, और बुर्ज के दरवाज़े के नज़दीक गया ताकि उसे जला दे।<sup>53</sup> तब किसी 'औरत ने चक्की का ऊपर का पाट अबीमलिक के सिर पर फेंका, और उसकी खोपड़ी को तोड़ डाला।<sup>54</sup> तब अबीमलिक ने फ़ौरन एक जवान को जो उसका सिलाहबरदार था बुला कर उससे कहा कि

‡ 9:29 9:29 मैं अबीमलिक से कहूँगा § 9:37 9:37 बलूत के रास्ते से आना जहाँ गैबदान रहते हैं \* 9:39 9:39 रहनुमाओं † 9:39 9:39 वह शचिम क्र रहनुमाओं के सामने बाहर आकर आमीजूद हुआ ‡ 9:41 9:41 यह शहर शचीम से 8 किलोमीटर की दूरी पर था

अपनी तलवार खींच कर मुझे कत्ल कर डाल, ताकि मेरे हक़ में लोग यह न कहने पाएँ कि एक 'औरत ने उसे मार डाला। इसलिए उस जवान ने उसे छेद दिया और वह मर गया।<sup>55</sup> जब इस्राईलियों ने देखा के अबीमलिक मर गया, तो हर शख्स अपनी जगह चला गया।<sup>56</sup> यूँ खुदा ने अबीमलिक की उस बुराई का बदला जो उसने अपने सत्तर भाइयों को मार कर अपने बाप से की थी उसको दिया।<sup>57</sup> और सिकम के लोगों की सारी बुराई खुदा ने उन ही के सिर पर डाली, और यरुब्बा'ल के बेटे यूताम की ला'नत उनको लगी।

## 10

११११ ११११११११ ११ ११११११ ११११

१ और अबीमलिक के बाद तोला' बिन फुव्वा बिन दोदो जो इश्कार के कबीले का था, इस्राईलियों की हिमायत करने को उठा; वह इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में समीर में रहता था।<sup>2</sup> वह तेईस बरस इस्राईलियों का काज़ी रहा; और मर गया और समीर में दफ़न हुआ।

११११ ११११११११ ११ ११११११ ११११

३ इसके बाद जिल'आदी याईर उठा, और वह बाइस बरस इस्राईलियों का काज़ी रहा।<sup>4</sup> उसके तीस बेटे थे जो तीस जवान गधों पर सवार हुआ करते थे; और उनके तीस शहर थे जो आज तक हव्वोत याईर कहलाते हैं, और जिल'आद के मुल्क में हैं।<sup>5</sup> और याईर मर गया और कामोन में दफ़न हुआ।

१११११११ ११११११११ ११ १११११११ ११११

६ और बनी — इस्राईल खुदावन्द के हुज़ूर फिर बुराई करने, और बा'लीम और 'इस्तारात और अराम के मा'बूदों और सैदा के मा'बूदों और मोआब के मा'बूदों और बनी 'अम्मोन के मा'बूदों और फ़िलिस्तियों के मा'बूदों की इबादत करने लगे, और खुदावन्द को छोड़ दिया और उसकी इबादत न की।<sup>7</sup> तब खुदावन्द का क्रहर इस्राईल पर भड़का, और उसने उनको फ़िलिस्तियों के हाथ और बनी 'अम्मोन के \*हाथ बेच डाला।<sup>8</sup> और उन्होंने उस साल बनी इस्राईल को तंग किया और सताया, बल्कि अठारह बरस तक वह सब बनी — इस्राईल पर ज़ुल्म करते रहे, जो †यरदन पार अमोरियों के मुल्क में जो जिल'आद में है रहते थे।<sup>9</sup> और बनी 'अम्मून यरदन पार होकर यहूदाह और बिनयमीन और इफ़राईम के खान्दान से लड़ने को भी आ जाते थे, इसलिए इस्राईली बहुत तंग आ गए।<sup>10</sup> और बनी इस्राईल खुदावन्द से फ़रियाद करके कहने लगे, “हमने

तेरा गुनाह किया कि अपने खुदा को छोड़ा और बा'लीम की इबादत की।”<sup>11</sup> और खुदावन्द ने बनी — इस्राईल से कहा, “क्या मैंने तुम को मिस्रियों और अमोरियों और बनी 'अम्मोन और फ़िलिस्तियों के हाथ से रिहाई नहीं दी? <sup>12</sup> और सैदानियों और 'अमालीकियों और मा'ओनियों ने भी तुम को सताया, और तुम ने मुझ से फ़रियाद की और मैंने तुम को उनके हाथ से छुड़ाया।<sup>13</sup> तो भी तुम ने मुझे छोड़ कर और मा'बूदों की इबादत की, इसलिए अब मैं तुम को रिहाई नहीं दूँगा।<sup>14</sup> तुम जाकर उन मा'बूदों से, जिनको तुम ने इस्तिथार किया है फ़रियाद करो, वही तुम्हारी मुसीबत के वक़्त तुम को छुड़ाएँ।”<sup>15</sup> बनी इस्राईल ने खुदावन्द से कहा, “हम ने तो गुनाह किया, इसलिए जो कुछ तेरी नज़र में अच्छा हो हम से कर; लेकिन आज हम को छुड़ा ही ले।”<sup>16</sup> और वह अजनबी मा'बूदों को अपने बीच से दूर करके खुदावन्द की इबादत करने लगे; तब उसका जी इस्राईल की परेशानी से ग़मगीन हुआ।<sup>17</sup> फिर बनी 'अम्मून इकट्ठे होकर जिल'आद में खेमाज़न हुए; और बनी — इस्राईल भी फ़राहम होकर मिस्र'आह में खेमाज़न हुए।<sup>18</sup> तब जिल'आद के लोग और सरदार एक दूसरे से कहने लगे, “वह कौन शख्स है जो बनी 'अम्मून से लड़ना शुरू करेगा? वही जिल'आद के सब बाशिदों का हाकिम होगा।”

## 11

११११११११ ११११११११ ११ १११११११ ११११

१ और जिल'आदी इफ़ताह बड़ा ज़बरदस्त सूमा और कस्बी का बेटा था; और जिल'आद से इफ़ताह पैदा हुआ था।<sup>2</sup> और जिल'आद की बीवी के भी उससे बेटे हुए, और जब उसकी बीवी के बेटे बड़े हुए, तो उन्होंने इफ़ताह को यह कहकर निकाल दिया कि हमारे बाप के घर में तुझे कोई मीरास नहीं मिलेगी, क्योंकि तू ग़ैर 'औरत का बेटा है।<sup>3</sup> तब इफ़ताह अपने भाइयों के पास से भाग कर तोब के मुल्क में रहने लगा और इफ़ताह के पास शुहदे जमा' हो गए, और उसके साथ फिरने लगे।<sup>4</sup> और कुछ 'अरसे के बाद बनी 'अम्मून ने बनी — इस्राईल से जंग छेड़ दी।<sup>5</sup> और जब बनी 'अम्मून बनी — इस्राईल से लड़ने लगे, तो जिल'आदी बुज़ुर्ग चले कि इफ़ताह को तोब के मुल्क से ले आएँ।<sup>6</sup> इसलिए वह इफ़ताह से कहने लगे कि हम बनी 'अम्मून से लड़ें।<sup>7</sup> और इफ़ताह ने जिल'आदी बुज़ुर्गों से कहा, “क्या तुम ने मुझ से 'अदावत करके मुझे मेरे बाप के घर से

\* 10:7 10:7 हमला करने और लूटने दिया † 10:8 10:8 यरदन नदी

निकाल नहीं दिया? इसलिए अब जो तुम मुसीबत में पड़ गए हो तो मेरे पास क्यों आए?” 8 जिल'आदी बुजुर्गों ने इफ़ताह से कहा कि अब हम ने फिर इसलिए तेरी तरफ़ रुख किया है, कि तू हमारे साथ चलकर बनी 'अम्मून से जंग करे; और तू ही जिल'आद के सब बाशिंदों पर हमारा हाकिम होगा। 9 और इफ़ताह ने जिल'आदी बुजुर्गों से कहा, “अगर तुम मुझे बनी 'अम्मून से लड़ने को मेरे घर ले चलो, और खुदावन्द उनको मेरे हवाले कर दे, तो क्या मैं तुम्हारा हाकिम हूँगा?” 10 जिल'आदी बुजुर्गों ने इफ़ताह को जवाब दिया कि खुदावन्द हमारे बीच गवाह हो, यकीनन जैसा तूने कहा, हम वैसा ही करेंगे। 11 तब इफ़ताह जिल'आदी बुजुर्गों के साथ रवाना हुआ, और लोगों ने उसे अपना हाकिम और सरदार बनाया; और इफ़ताह ने मिस्फ़ाह में खुदावन्द के आगे अपनी सब बातें कह सुनाई। 12 और इफ़ताह ने बनी 'अम्मून के बादशाह के पास क़ासिद रवाना किए और कहला भेजा कि तुझे मुझ से क्या काम, जो तू मेरे मुल्क में लड़ने को मेरी तरफ़ आया है? 13 बनी 'अम्मून के बादशाह ने इफ़ताह के क़ासिदों को जवाब दिया, “इसलिए कि जब इस्राईली मिस्र से निकल कर आए, तो अरनून से यब्बूक और यरदन तक जो मेरा मुल्क था उसे उन्होंने छीन लिया; इसलिए अब तू उन 'इलाकों को सुलह — ओ — सलामती से मुझे लौटा दे।” 14 तब इफ़ताह ने फिर क़ासिदों को बनी 'अम्मून के बादशाह के पास रवाना किया, 15 और यह कहला भेजा कि इफ़ताह यूँ कहता है कि; इस्राईलियों ने न तो मोआब का मुल्क और न बनी 'अम्मोन का मुल्क छीना; 16 बल्कि इस्राईली जब मिस्र से निकले और वीराने छानते हुए बहर — ए — कुलजुम तक आए और क़ादिस में पहुँचे, 17 तो इस्राईलियों ने अदोम के बादशाह के पास क़ासिद रवाना किए और कहला भेजा कि हम को ज़रा अपने मुल्क से होकर गुज़र जाने दे, लेकिन अदोम का बादशाह न माना। इसी तरह उन्होंने मोआब के बादशाह को कहला भेजा, और वह भी राज़ी न हुआ। चुनाँचे इस्राईली क़ादिस में रहे। 18 तब वह वीराने में होकर चले, और अदोम के मुल्क और मोआब के मुल्क के बाहर बाहर चक्कर काट कर मोआब के मुल्क के मशरिफ़ की तरफ़ आए, और अरनून के उस पार डेर डाले, पर मोआब की सरहद में दाख़िल न हुए, इसलिए कि मोआब की सरहद अरनून था। 19 फिर इस्राईलियों ने अमोरियों के बादशाह सीहोन के पास जो हस्बोन का बादशाह था, क़ासिद रवाना किए; और इस्राईलियों ने उसे कहला भेजा कि 'हम

को ज़रा इजाज़त दे दे, कि तेरे मुल्क में से होकर अपनी जगह को चले जाएँ। 20 लेकिन सीहोन ने इस्राईलियों का इतना ऐ'तबार न किया कि उनको अपनी सरहद से गुज़रने दे, बल्कि सीहोन अपने सब लोगों को जमा करके यहसा में खेमाज़न हुआ और इस्राईलियों से लड़ा। 21 और खुदावन्द इस्राईल के खुदा ने सीहोन और उसके सारे लश्कर को इस्राईलियों के क़ब्ज़े में कर दिया, और उन्होंने उनको मार लिया; इसलिए इस्राईलियों ने अमोरियों के जो वहाँ के बाशिंदे थे, सारे मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया। 22 और वह अरनून से यब्बूक तक, और वीरान से यरदन तक अमोरियों की सब सरहदों पर क़ाबिज़ हो गए। 23 तब खुदावन्द इस्राईल के खुदा ने अमोरियों को उनके मुल्क से अपनी कौम इस्राईल के सामने से खारिज किया; इसलिए क्या तू अब उस पर क़ब्ज़ा करने पाएगा? 24 क्या जो कुछ तेरा मा'बूद क़मोस तुझे क़ब्ज़ा करने को दे, तू उस पर क़ब्ज़ा न करेगा? इसलिए जिस जिस को खुदावन्द हमारे खुदा ने हमारे सामने से खारिज कर दिया है, हम भी उनके मुल्क पर क़ब्ज़ा करेंगे। 25 और क्या तू सफ़ोर के बेटे बलक़ से जो मोआब का बादशाह था, कुछ बेहतर है? क्या उसने इस्राईलियों से कभी झगड़ा किया या कभी उन से लड़ा? 26 जब इस्राईली हस्बोन और उसके क़स्बों, और 'अरो'ईर और उसके क़स्बों और उन सब शहरों में जो अरनून के किनारे — किनारे हैं तीन सौ बरस से बसे हैं, तो इस 'अरसे में तुम ने उनको क्यों न छुड़ा लिया? 27 गरज़ मैंने तेरी ख़ता नहीं की, बल्कि तेरा मुझ से लड़ना तेरी तरफ़ से मुझ पर ज़ुल्म है; इसलिए खुदावन्द ही जो मुन्सिफ़ है, बनी — इस्राईल और बनी 'अम्मोन के बीच आज इन्साफ़ करे। 28 लेकिन बनी 'अम्मोन के बादशाह ने इफ़ताह की यह बातें, जो उसने उसे कहला भेजी थीं न मानीं।

~~~~~

29 तब खुदावन्द की रूह इफ़ताह पर नाज़िल हुई, और वह जिल'आद और मनस्सी से गुज़र कर जिल'आद के मिस्फ़ाह में आया; और जिल'आद के मिस्फ़ाह से बनी 'अमोन की तरफ़ चला। 30 और इफ़ताह ने खुदावन्द की मिन्नत मानी और कहा कि अगर तू यकीनन बनी 'अम्मोन को मेरे हाथ में कर दे; 31 तो जब मैं बनी 'अम्मोन की तरफ़ से सलामत लौटूँगा, उस वक़्त जो कोई पहले मेरे घर के दरवाज़े से निकलकर मेरे इस्तक़बाल को आए वह खुदावन्द का होगा; और मैं उसको सोख़्तनी कुर्बानी के तौर पर पेश करूँगा। 32 तब इफ़ताह बनी 'अम्मून की तरफ़ उनसे लड़ने को गया, और

खुदावन्द ने उनको उसके हाथ में कर दिया।³³ और उसने 'अरो'ईर से मिनियत तक जो बीस शहर हैं, और अबील करामीम तक बड़ी खूँरेजी के साथ उनको मारा; इस तरह बनी 'अम्मून बनी — इस्राईल से मग़लूब हुए।³⁴ और इफ़ताह मिस्फ़ाह को अपने घर आया, और उसकी बेटी तबले बजाती और नाचती हुई उसके इस्तक्रबाल को निकलकर आई; और वही एक उसकी औलाद थी, उसके सिवा उसके कोई बेटी बेटा न था।³⁵ जब उसने उसको देखा, तो अपने कपड़े फाड़ कर कहा, “हाय, मेरी बेटी! तूने मुझे पस्त कर दिया, और जो मुझे दुख देते हैं उनमें से एक तू है; क्योंकि मैंने खुदावन्द को जबान दी है, और मैं पलट नहीं सकता।”³⁶ उसने उससे कहा, “ऐ मेरे बाप, तूने खुदावन्द को जबान दी है, इसलिए जो कुछ तेरे मुँह से निकला वही मेरे साथ कर, इसलिए कि खुदावन्द ने तेरे दुश्मनों बनी 'अम्मून से तेरा इन्तक़ाम लिया।”³⁷ फिर उसने अपने बाप से कहा, “मेरे लिए इतना कर दिया जाए कि दो महीने की मोहलत मुझ को मिले, ताकि मैं जाकर पहाड़ों पर अपनी हमजोलियों के साथ अपने कुँवारेपन पर मातम करती फिरूँ।”³⁸ उसने कहा, “जा!” और उसने उसे दो महीने की रुख़्तस दी, और वह अपनी हमजोलियों को लेकर गई, और पहाड़ों पर अपने कुँवारेपन पर मातम करती फिरी।³⁹ और दो महीने के बाद वह अपने बाप के पास लौट आई, और वह उसके साथ वैसा ही पेश आया जैसी मिन्नत उसने मानी थी। इस लड़की ने शख्स का मुँह न देखा था; इसलिए बनी इस्राईल में यह दस्तूर चला,⁴⁰ कि साल — ब — साल इस्राईली 'औरतें जाकर बरस में चार दिन तक इफ़ताह जिल'आदी की बेटी की यादगारी करती थीं।

12

॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥

1 तब इफ़राईम के लोग जमा' होकर उत्तर की तरफ़ गए और इफ़ताह से कहने लगे कि जब तू बनी 'अम्मून से जंग करने को गया तो हम को साथ चलने को क्यों न बुलवाया? इसलिए हम तेरे घर को तुझ समेत जलाएँगे।² इफ़ताह ने उनको जवाब दिया कि मेरा और मेरे लोगों का बड़ा झगड़ा बनी 'अम्मून के साथ हो रहा था, और जब मैंने तुम को बुलवाया तो तुम ने उनके हाथ से मुझे न बचाया।³ और जब मैंने यह देखा कि तुम मुझे नहीं बचाते, तो मैंने अपनी जान हथेली पर रखी और बनी 'अम्मून के मुक्काबिले को चला, और खुदावन्द ने उनको मेरे कब्जे में कर दिया; फिर तुम आज के दिन मुझ से लड़ने को मेरे पास क्यों चले आए? ⁴ तब इफ़ताह सब जिल'आदियों को जमा' करके इफ़राईमियों से लड़ा,

और जिल'आदियों ने इफ़राईमियों को मार लिया क्योंकि वह कहते थे कि तुम जिल'आदी इफ़राईम ही के भगोड़े हो, जो इफ़राईमियों और मनस्सियों के बीच रहते हो।⁵ और जिल'आदियों ने इफ़राईमियों का रास्ता रोकने के लिए यरदन के घाटों को अपने कब्जे में कर लिया, और जो भागा हुआ इफ़राईमी कहता कि मुझे पार जाने दो तो जिल'आदी उससे कहते क्या कि तू इफ़राईमी है? और अगर वह जवाब देता, “नहीं।”⁶ तो वह उससे कहते, शिबुलत तो बोल, तो वह “शिबुलत” कहता, क्योंकि उससे उसका सही तलफ़ुज नहीं हो सकता था। तब वह उसे पकड़कर यरदन के घाटों पर कत्ल कर देते थे। इसलिए उस वक़्त बयालीस हजार इफ़राईमी कत्ल हुए।⁷ और इफ़ताह छः बरस तक बनी इस्राईल का काज़ी रहा। फिर जिल'आदी इफ़ताह ने वफ़ात पाई, और जिल'आद के शहरों में से एक में दफ़न हुआ।

॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥

8 उसके बाद बैतलहमी इबसान इस्राईलियों का काज़ी हुआ।⁹ उसके तीस बेटे थे; और तीस बेटियाँ उसने बाहर ब्याह दीं, और बाहर से अपने बेटों के लिए तीस बेटियाँ ले आया। वह सात बरस तक इस्राईलियों का काज़ी रहा।¹⁰ और इबसान मर गया और बैतलहम में दफ़न हुआ।

॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥

11 और उसके बाद जबूलूनी ऐलोन इस्राईल का काज़ी हुआ; और वह दस बरस इस्राईल का काज़ी रहा।¹² और जबूलूनी ऐलोन मर गया, और अय्यालोन में जो जबूलून के मुल्क में है दफ़न हुआ।

'॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥

13 इसके बाद फिर'अतोनी हिल्लेल का बेटा 'अबदोन इस्राईल का काज़ी हुआ।¹⁴ और उसके चालीस बेटे और तीस पोते थे जो सत्तर जवान गधों पर सवार होते थे; और वह आठ बरस इस्राईलियों का काज़ी रहा।¹⁵ और फिर'आतोनी हिल्लेल का बेटा 'अबदोन मर गया, और 'अमालीकियों के पहाड़ी 'इलाके में, फिर'आतोन में जो इफ़राईम के मुल्क में है दफ़न हुआ।

13

॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥

1 और बनी — इस्राईल ने फिर खुदावन्द के आगे बुराई की, और खुदावन्द ने उनकी चालीस बरस तक फ़िलिस्तियों के हाथ में कर रखवा।² और दानियों के घराने में सुर'आ का एक शख्स था जिसका नाम मनोहा था। उसकी बीवी बाँझ थी, इसलिए उसके कोई बच्चा न हुआ।³ और खुदावन्द के फ़रिश्ते ने उस 'औरत को

दिखाई देकर उससे कहा, “देख, तू बाँझ है और तेरे बच्चा नहीं होता; लेकिन तू हामिला होगी और तेरे बेटा होगा।⁴ इसलिए खबरदार, मय या नशे की चीज़ न पीना, और न कोई नापाक चीज़ खाना।⁵ क्योंकि देख, तू हामिला होगी और तेरे बेटा होगा। उसके सिर पर कभी उस्तरा न फिरे, इसलिए कि वह लड़का पेट ही से खुदा का *नज़ीर होगा; और वह इस्राईलियों को फ़िलिस्तिनियों के हाथ से रिहाई देना शुरू करेगा।”⁶ उस 'औरत ने जाकर अपने शौहर से कहा कि एक शख्स — ए — खुदा मेरे पास आया, उसकी सूरत खुदा के फ़रिश्ते की सूरत की तरह निहायत खौफ़नाक थी; और मैंने उससे नहीं पूछा कि तू कहाँ का है? और न उसने मुझे अपना नाम बताया।⁷ लेकिन उसने मुझ से कहा, “देख, तू हामिला होगी और तेरे बेटा होगा; इसलिए तू मय या नशे की चीज़ न पीना, और न कोई नापाक चीज़ खाना, क्योंकि वह लड़का पेट ही से अपने मरने के दिन तक खुदा का नज़ीर रहेगा।”⁸ तब मनोहा ने खुदावन्द से दरखास्त की और कहा, “ऐ मेरे मालिक, मैं तेरी मित्तरत करता हूँ कि वह शख्स — ए — खुदा जिसे तूने भेजा था, हमारे पास फिर आए और हम को सिखाए कि हम उस लड़के से जो पैदा होने को है क्या करें।”⁹ और खुदा ने मनोहा की 'अर्ज़ सुनी, और खुदा का फ़रिश्ता उस 'औरत के पास जब वह खेत में बैठी थी फिर आया, लेकिन उसका शौहर मनोहा उसके साथ नहीं था।¹⁰ इसलिए उस 'औरत ने जल्दी की और दौड़ कर अपने शौहर को खबर दी और उससे कहा कि देख, वही शख्स जो उस दिन मेरे पास आया था अब फिर मुझे दिखाई दिया।¹¹ तब मनोहा उठ कर अपनी बीवी के पीछे पीछे चला, और उस शख्स के पास आकर उससे कहा, “क्या तू वही शख्स है जिसने इस 'औरत से बातें की थीं?” उसने कहा, “मैं वही हूँ।”¹² तब मनोहा ने कहा, “तेरी बातें पूरी हों, लेकिन उस लड़के का कैसा तौर — ओ — तरीक़ और क्या काम होगा?”¹³ खुदावन्द के फ़रिश्ते ने मनोहा से कहा, “उन सब चीज़ों से जिनका ज़िक्र मैंने इस 'औरत से किया यह परहेज़ करे।¹⁴ वह ऐसी कोई चीज़ जो ताक से पैदा होती है न खाए, और मय या नशे की चीज़ न पिए, और न कोई नापाक चीज़ खाए; और जो कुछ मैंने उसे हुक्म दिया यह उसे माने।”¹⁵ मनोहा ने खुदावन्द के फ़रिश्ते से कहा कि इजाज़त हो तो हम तुझ को रोक लें, और बकरी का एक बच्चा तेरे लिए तैयार करें।¹⁶ तब खुदावन्द के फ़रिश्ते ने मनोहा को जवाब दिया, “अगर तू मुझे रोक भी ले, तो भी मैं तेरी रोटी नहीं खाने का; लेकिन अगर तू सोख्तनी कुर्बानी

तैयार करना चाहे, तो तुझे लाज़िम है कि उसे खुदावन्द के लिए पेश करे।”¹⁷ क्योंकि मनोहा नहीं जानता था कि वह खुदावन्द का फ़रिश्ता है।¹⁷ फिर मनोहा ने खुदावन्द के फ़रिश्ते से कहा कि तेरा नाम क्या है? ताकि जब तेरी बातें पूरी हों तो हम तेरा इकराम कर सकें।¹⁸ खुदावन्द के फ़रिश्ते ने उससे कहा, “तू क्यूँ। मेरा नाम पूछता है? क्यूँकि वह तो 'अजीब है।”¹⁹ तब मनोहा ने बकरी का वह बच्चा म'ए उसकी नज़र की कुर्बानी के लेकर एक चट्टान पर खुदावन्द के लिए उनको पेश किया, और फ़रिश्ते ने मनोहा और उसकी बीवी के देखते देखते 'अजीब काम किया।²⁰ क्यूँकि ऐसा हुआ कि जब शो'ला मज़बह पर से आसमान की तरफ़ उठा, तो खुदावन्द का फ़रिश्ता मज़बह के शो'ले में होकर ऊपर चला गया, और मनोहा और उसकी बीवी देखकर औंधे मुँह ज़मीन पर गिरे।²¹ लेकिन खुदावन्द का फ़रिश्ता न फिर मनोहा को दिखाई दिया न उसकी बीवी को। तब मनोहा ने जाना कि वह खुदावन्द का फ़रिश्ता था।²² और मनोहा ने अपनी बीवी से कहा कि हम अब ज़रूर मर जाएँगे, क्यूँकि हम ने खुदा को देखा।²³ उसकी बीवी ने उससे कहा, “अगर खुदावन्द यही चाहता कि हम को मार दे, तो सोख्तनी और नज़र की कुर्बानी हमारे हाथ से कुबूल न करता, और न हम को यह वाकि'आत दिखाता और न हम से ऐसी बातें कहता।”²⁴ और उस 'औरत के एक बेटा हुआ और उसने उसका नाम समसून रखवा; और वह लड़का बढ़ा, और खुदावन्द ने उसे बरकत दी।²⁵ और खुदावन्द की रूह उसे †महने दान में, जो सुर'आ और इस्ताल के बीच में है तहरीक देने लगी।

14

????? ?? ?????

¹ और समसून तिमनत को गया, और तिमनत में उसने फ़िलिस्तिनियों की बेटियों में से एक 'औरत देखी।² और उसने आकर अपने माँ बाप से कहा, “मैंने फ़िलिस्तिनियों की बेटियों में से तिमनत में एक 'औरत देखी है, इसलिए तुम उससे मेरा ब्याह करा दो।”³ उसके माँ बाप ने उससे कहा, “क्या तेरे भाइयों की बेटियों में, या मेरी सारी कौम में कोई 'औरत नहीं है जो तू नामख़ून फ़िलिस्तिनियों में ब्याह करने जाता है?” समसून ने अपने बाप से कहा, “उसी से मेरा ब्याह करा दे, क्यूँकि वह मुझे बहुत पसंद आती है।”⁴ लेकिन उसके माँ बाप को मा'लूम न था, यह खुदावन्द की तरफ़ से है; क्यूँकि वह फ़िलिस्तिनियों के खिलाफ़ बहाना ढ़ंडता था। उस वक़्त

* 13:5 13:5 गिनतीका बाब 6 देखें † 13:25 13:25 दान का खैमा

फिलिस्ती इसराईलियों पर हुक्मरान थे।⁵ फिर समसून और उसके माँ बाप तिमनत को चले, और तिमनत के ताकिस्तानों में पहुँचे, और देखो, एक जवान शेर समसून के सामने आकर गरजने लगा।⁶ तब खुदावन्द की रूह उस पर जोर से नाज़िल हुई, और उसने उसे बकरी के बच्चे की तरह चीर डाला, गो उसके हाथ में कुछ न था। लेकिन जो उसने किया उसे अपने बाप या माँ को न बताया।⁷ और उसने जाकर उस 'औरत से बातें की और वह समसून को बहुत पसंद आई।⁸ और कुछ 'अरसे के बाद वह उसे लेने को लौटा; और शेर की लाश देखने को कतरा गया, और देखा कि शेर के पिंजरे में शहद की मक्खियों का हुजूम और शहद है।⁹ उसने उसे हाथ में ले लिया और खाता हुआ चला, और अपने माँ बाप के पास आकर उनको भी दिया और उन्होंने भी खाया, लेकिन उसने उनको न बताया कि यह शहद उसने शेर के पिंजरे में से निकाला था।¹⁰ फिर उसका बाप उस 'औरत के यहाँ गया, वहाँ समसून ने बड़ी ज़ियाफ़त की क्योंकि जवान ऐसा ही करते थे।¹¹ वह उसे देखकर उसके लिए तीस साथियों को ले आए कि उसके साथ रहें।¹² समसून ने उनसे कहा, “मैं तुम से एक पहेली पूछता हूँ; इसलिए अगर तुम ज़ियाफ़त के सात दिन के अन्दर अन्दर उसे बूझकर मुझे उसका मतलब बता दो, तो मैं तीस कतानी कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े तुम को दूँगा।¹³ और अगर तुम न बता सको, तो तुम तीस कतानी कुर्ते और तीस जोड़े कपड़े मुझ को देना।” उन्होंने उससे कहा कि तू अपनी पहेली बयान कर, ताकि हम उसे सुनें।¹⁴ उसने उनसे कहा, खाने वाले में से तो खाना निकला, और ज़बरदस्त में से मिठास निकली और वह तीन दिन तक उस पहेली को हल न कर सके।¹⁵ और *सातवें दिन उन्होंने समसून की बीवी से कहा कि अपने शौहर को फुसला, ताकि इस पहेली का मतलब वह हम को बता दे; नहीं तो हम तुझ को और तेरे बाप के घर को आग से जला देंगे। क्या तुम ने हम को इसीलिए बुलाया है कि हम को फ़कीर कर दो? क्या बात भी यूँ ही नहीं? ¹⁶ और समसून की बीवी उसके आगे रो कर कहने लगी, “तुझे तो मुझ से नफ़रत है, तू मुझ को प्यार नहीं करता। तूने मेरी क़ौम के लोगों से पहेली पूछी, लेकिन वह मुझे न बताई।” उसने उससे कहा, “खूब! मैंने उसे अपने माँ बाप को तो बताया नहीं और तुझे बता दूँ?” ¹⁷ इसलिए वह उसके आगे जब तक ज़ियाफ़त रही सातों दिन रोती रही; और सातवें दिन ऐसा हुआ कि उसने उसे बता ही दिया, क्योंकि उसने उसे निहायत परेशान किया था। और उस

'औरत ने वह पहेली अपनी क़ौम के लोगों को बता दी।¹⁸ और उस शहर के लोगों ने सातवें दिन सूरज के डूबने से पहले उससे कहा, “शहद से मीठा और क्या होता है? और शेर से ताक़तवर और कौन है?” उसने उनसे कहा, †“अगर तुम मेरी बछिया को हल में न जोतते, तो मेरी पहेली कभी न बूझते।” ¹⁹ फिर खुदावन्द की रूह उस पर जोर से नाज़िल हुई, और वह अस्कलोन को गया। वहाँ उसने उनके तीस आदमी मारे, और उनको लूट कर कपड़ों के जोड़े पहेली बूझने वालों को दिए। और उसका क्रहर भड़क उठा, और वह अपने माँ बाप के घर चला गया।²⁰ लेकिन समसून की बीवी उसके एक साथी को, जिसे समसून ने दोस्त बनाया था दे दी गई।

15

222222 22 22222222222222 22 22222 22222

¹ लेकिन कुछ 'अरसे बाद गेहूँ की फ़सल के मौसम में, समसून बकरी का एक बच्चा लेकर अपनी बीवी के यहाँ गया और कहने लगा, “मैं अपनी बीवी के पास कोठरी में जाऊँगा।” लेकिन उसके बाप ने उसे अन्दर जाने न दिया।² और उसके बाप ने कहा, “मुझ को यकीनन यह खयाल हुआ कि तुझे उससे सख़्त नफ़रत हो गई है, इसलिए मैंने उसे तेरे साथी को दे दिया। क्या उसकी छोटी बहन उससे कहीं खूबसूरत नहीं है? इसलिए उसके बदले तू इसी को ले ले।” ³ समसून ने उनसे कहा, “इस बार मैं फिलिस्तीयों की तरफ़ से, जब मैं उनसे बुराई करूँ बेकुसूर ठहरूँगा।” ⁴ और समसून ने जाकर तीन सौ लोमड़ियाँ पकड़ीं; और मशा'लें ली और दुम से दुम मिलाई, और दो दो दुमों के बीच में एक एक मशा'ल बाँध दी।⁵ और मशा'लों में आग लगा कर उसने लोमड़ियों को फिलिस्तीयों के खड़े खेतों में छोड़ दिया, और पूलियों और खड़े खेतों दोनों को, बल्कि ज़ैतून के बाग़ों को भी जला दिया।⁶ तब फिलिस्तीयों ने कहा, “किसने यह किया है?” लोगों ने बताया कि तिमनती के दामाद समसून ने; इसलिए कि उसने उसकी बीवी छीन कर उस के साथी को दे दी। तब फिलिस्तीयों ने आकर उस 'औरत को और उसके बाप को आग में जला दिया।⁷ समसून ने उनसे कहा कि तुम जो ऐसा काम करते हो, तो ज़रूर ही मैं तुम से बदला लूँगा और इसके बाद बाज़ आऊँगा।⁸ और उस ने उनको बड़ी ख़ूबसूरती के साथ मार मार कर उनका कचूर कर डाला; और वहाँ से जाकर 'ऐताम की चट्टान की दराड़ में रहने लगा।⁹ तब फिलिस्ती जाकर यहूदाह में खेमाज़न हुए और लही में फैल गए।¹⁰ और यहूदाह के लोगों ने उनसे कहा, “तुम

* 14:15 14:15 चौथे दिन † 14:18 14:18 तुम ने सिर्फ़ मेरी बीवी से ही

हम पर क्यूँ चढ़ आए हो?” उन्होंने कहा, “हम समसून को बाँधने आए हैं, ताकि जैसा उसने हम से किया हम भी उससे वैसा ही करें।” ¹¹ तब यहूदाह के तीन हज़ार आदमी ऐताम की चट्टान की दराड़ में उतर गए, और समसून से कहने लगे, “क्या तू नहीं जानता के फ़िलिस्ती हम पर हुक्मरान हैं? इसलिए तूने हम से यह क्या किया है?” उसने उनसे कहा, “जैसा उन्होंने मुझ से किया, मैंने भी उनसे वैसा ही किया।” ¹² उन्होंने उससे कहा, “अब हम आए हैं कि तुझे बाँध कर फ़िलिस्तियों के हवाले कर दें।” समसून ने उनसे कहा, “मुझ से क्रसम खाओ के तुम खुद मुझ पर हमला न करोगे।” ¹³ उन्होंने उसे जवाब दिया, “नहीं! बल्कि हम तुझे कस कर बाँधेगे और उनके हवाले कर देंगे; लेकिन हम हरगिज़ तुझे जान से न मारेंगे।” फिर उन्होंने उसे दो नई रस्सियों से बाँधा और चट्टान से उसे ऊपर लाए। ¹⁴ जब वह लही में पहुँचा, तो फ़िलिस्ती उसे देख कर ललकारने लगे। तब खुदावन्द की रूह उस पर ज़ोर से नाज़िल हुई, और उसके बाज़ुओं पर की रस्सियाँ आग से जले हुए सन की तरह हो गई, और उसके बन्धन उसके हाथों पर से उतर गए। ¹⁵ और उसे एक गधे के जबड़े की नई हड्डी मिल गई इसलिए उसने हाथ बढ़ा कर उसे उठा लिया, और उससे उसने एक हज़ार आदमियों को मार डाला। ¹⁶ फिर समसून ने कहा, “गधे के जबड़े की हड्डी से ढेर के ढेर लग गए, गधे के जबड़े की हड्डी से मैंने एक हज़ार आदमियों को मारा।” ¹⁷ और जब वह अपनी बात खत्म कर चुका, तो उसने जबड़ा अपने हाथ में से फेंक दिया; और उस जगह का नाम *रामत लही पड़ गया। ¹⁸ और उसको बड़ी प्यास लगी, तब उसने खुदावन्द को पुकारा और कहा, “तूने अपने बन्दे के हाथ से ऐसी बड़ी रिहाई बख्शी। अब क्या मैं प्यास से मरूँ, और नामख़तूनों के हाथ में पड़ूँ?” ¹⁹ लेकिन खुदा ने उस गढ़े को जो लही में है चाक कर दिया, और उसमें से पानी निकला; और जब उसने उसे पी लिया तो उसकी जान में जान आई, और वह ताज़ा दम हुआ। इसलिए उस जगह का नाम †ऐन हक्कोरे रखवा गया, वह लही में आज तक है। ²⁰ और वह फ़िलिस्तियों के दिनों में बीस बरस तक इस्राईलियों का क़ाज़ी रहा।

16

११११११११११११ ११ ११११११११ ११ ११११११११ ११ ११११११११ ११ ११११११११

¹ फिर समसून *गज़ज़ा को गया। वहाँ उसने एक कस्बी देखी, और उसके पास गया। ² और गज़ज़ा के

* 15:17 15:17 जबड़े की हड्डी का पहाड़

† 15:19 15:19 उस एक का मज़ाहरा जो बुलाता है

* 16:1 16:1 फ़िलिस्तीन का एक शहर

† 16:5 16:5 लगभग 60 किलोग्राम

लोगों को खबर हुई के समसून यहाँ आया है। उन्होंने उसे घेर लिया और सारी रात शहर के फाटक पर उसकी घात में बैठे रहे; लेकिन रात भर चुप चाप रहे और कहा कि सुबह की रोशनी होते ही हम उसे मार डालेंगे। ³ और समसून आधी रात तक लेटा रहा, और आधी रात को उठ कर शहर के फाटक के दोनों पल्लों और दोनों बाज़ुओं को पकड़कर चौखट समेत उखाड़ लिया; और उनको अपने कंधों पर रख कर उस पहाड़ की चोटी पर, जो हबरून के सामने है ले गया।

११११११११११११११ ११ ११११११११

⁴ इसके बाद सूरिक की वादी में एक 'औरत से जिसका नाम दलीला था, उसे इशक हो गया। ⁵ और फ़िलिस्तियों के सरदारों ने उस 'औरत के पास जाकर उससे कहा कि तू उसे फुसलाकर दरियाफ़्त कर ले कि उसकी ताक़त का राज़ क्या है और हम क्यूँकर उस पर ग़ालिब आएँ, ताकि हम उसे बाँधकर उसको अज़िय्यत पहुँचाएँ; और हम में से हर एक ग़य़ारह सौ चाँदी के सिक्के तुझे देगा। ⁶ तब दलीला ने समसून से कहा कि मुझे तो बता दे तेरी ताक़त का राज़ क्या है, और तुझे तकलीफ़ पहुँचाने के लिए किस चीज़ से तुझे बाँधना चाहिए। ⁷ समसून ने उससे कहा कि अगर वह मुझ को सात हरी हरी बेदों से जो सुखाई न गई हों बाँधे, तो मैं कमज़ोर होकर और आदमियों की तरह हो जाऊँगा। ⁸ तब फ़िलिस्तियों के सरदार सात हरी हरी बेदें जो सुखाई न गई थीं, उस 'औरत के पास ले आए और उसने समसून को उनसे बाँधा। ⁹ और उस 'औरत ने कुछ आदमी अन्दर की कोठरी में घात में बिठा लिए थे। इसलिए उस ने समसून से कहा कि ऐ समसून, फ़िलिस्ती तुझ पर चढ़ आए! तब उसने उन बेदों को ऐसा तोड़ा जैसे सन का सूत आग पाते ही टूट जाता है; इसलिए उसकी ताक़त का राज़ न खुला। ¹⁰ तब दलीला ने समसून से कहा, देख, तूने मुझे धोका दिया और मुझ से झूट बोला। “अब तू ज़रा मुझ को बता दे, कि तू किस चीज़ से बाँधा जाए।” ¹¹ उसने उससे कहा, “अगर वह मुझे नई नई रस्सियों से जो कभी काम में न आई हों, बाँधे तो मैं कमज़ोर होकर और आदमियों की तरह हो जाऊँगा।” ¹² तब दलीला ने नई रस्सियाँ लेकर उसको उनसे बाँधा और उससे कहा, “ऐ समसून, फ़िलिस्ती तुझ पर चढ़ आए!” और घात वाले अन्दर की कोठरी में ठहरे ही हुए थे। तब उसने अपने बाज़ुओं पर से धागे की तरह उनको तोड़ डाला। ¹³ तब दलीला समसून से कहने लगी, “अब तक तो तूने

मुझे धोका ही दिया और मुझ से झूट बोला; अब तो बता दे, कि तू किस चीज़ से बँध सकता है?” उसने उसे कहा, “अगर तू मेरे सिर की सातों लटें ताने के साथ बुन दे।” ¹⁴ तब उसने खूँटे से उसे कसकर बाँध दिया और उससे कहा, ऐ समसून, फ़िलिस्ती तुझ पर चढ़ आए! “तब वह नींद से जाग उठा, और बल्ली के खूँटे को ताने के साथ उखाड़ डाला। ¹⁵ फिर वह उससे कहने लगी, तू क्यूँकर कह सकता है, कि मैं तुझे चाहता हूँ, जब कि तेरा दिल मुझ से लगा नहीं? तूने तीनों बार मुझे धोका ही दिया और न बताया कि तेरी ताक़त का राज़ क्या है।” ¹⁶ जब वह उसे रोज़ अपनी बातों से तंग और मजबूर करने लगी, यहाँ तक कि उसका दम नाक में आ गया। ¹⁷ तो उसने अपना दिल खोलकर उसे बता दिया कि मेरे सिर पर उस्तरा नहीं फ़िरा है, इसलिए कि मैं अपनी माँ के पेट ही से खुदा का नज़ीर हूँ, इसलिए अगर मेरा सिर मूँडा जाए तो मेरी ताक़त मुझ से जाती रहेगा, और मैं कमज़ोर होकर और आदमियों की तरह हो जाऊँगा। ¹⁸ जब दलीला ने देखा के उसने दिल खोलकर सब कुछ बता दिया, तो उसने फ़िलिस्तियों के सरदारों को कहला भेजा कि इस बार और आओ, क्यूँकि उसने दिल खोलकर मुझे सब कुछ बता दिया है। तब फ़िलिस्तियों के सरदार उसके पास आए, और रुपये अपने हाथ में लेते आए। ¹⁹ तब उसे उसने अपने ज्ञानों पर सुला लिया, और एक आदमी को बुलवाकर सातों लटें जो उसके सिर पर थीं, मुण्डवा डालीं, और उसे तकलीफ़ देने लगी; और उसका ज़ोर उससे जाता रहा। ²⁰ फिर उसने कहा, “ऐ समसून, फ़िलिस्ती तुझ पर चढ़ आए!” और वह नींद से जागा और कहने लगा कि मैं और दफ़ा' की तरह बाहर जाकर अपने को झटकुँगा। लेकिन उसे खबर न थी कि खुदावन्द उससे अलग हो गया है। ²¹ तब फ़िलिस्तियों ने उसे पकड़ कर उसकी आँखें निकाल डालीं, और उसे गज़ज़ा में ले आए और पीतल की बेड़ियों से उसे जकड़ा, और वह कैदख़ाने में चक्की पीसा करता था। ²² तो भी उसके सिर के बाल मुण्डवाए जाने के बाद फिर बढ़ने लगे।

????? ? ? ? ? ? ? ?

²³ और फ़िलिस्तियों के सरदार फ़राहम हुए ताकि अपने मा'बूद दजोन के लिए बड़ी कुर्बानी गुज़ारें और खुशी करें क्यूँकि वह कहते थे कि हमारे मा'बूद ने हमारे दुश्मन समसून को हमारे क़ब्ज़े में कर दिया है। ²⁴ और जब लोग उसको देखते तो अपने मा'बूद की तारीफ़ करते और कहते थे कि हमारे मा'बूद ने हमारे दुश्मन और हमारे मुल्क को उजाड़ने वाले को, जिसने हम में से बहुतों

को हलाक किया हमारे हाथ में कर दिया है। ²⁵ और ऐसा हुआ कि जब उनके दिल निहायत शाद हुए, तो वह कहने लगे कि समसून को बुलाओ, कि हमारे लिए कोई खेल करे। इसलिए उन्होंने समसून को कैदख़ाने से बुलवाया, और वह उनके लिए खेल करने लगा; और उन्होंने उसको दो खम्बों के बीच खड़ा किया। ²⁶ तब समसून ने उस लड़के से जो उसका हाथ पकड़े था कहा, “मुझे उन खम्बों को जिन पर यह घर काईम है, थामने दे ताकि मैं उन पर टेक लगाऊँ।” ²⁷ और वह घर शख्सों और 'औरतों से भरा था, और फ़िलिस्तियों के सब सरदार वहीं थे, और छत पर क़रीबन तीन हज़ार शख्स और 'औरत थे जो समसून के खेल देख रहे थे। ²⁸ तब समसून ने खुदावन्द से फ़रियाद की और कहा, “ऐ मालिक, खुदावन्द! मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे याद कर; और मैं तेरी मिन्नत करता हूँ ऐ खुदा सिर्फ़ इस बार और तू मुझे ताक़त बख़्श, ताकि मैं एक बार फ़िलिस्तियों से अपनी दोनों आँखों का बदला लूँ।” ²⁹ और समसून ने दोनों बीच के खम्बों को जिन पर घर काईम था पकड़ कर, एक पर दहने हाथ से और दूसरे पर बाएँ हाथ से ज़ोर लगाया। ³⁰ और समसून कहने लगा कि फ़िलिस्तियों के साथ मुझे भी मरना ही है। इसलिए वह अपने सारी ताक़त से झुका; और वह घर उन सरदारों और सब लोगों पर जो उसमें थे गिर पड़ा। इसलिए वह मुर्दे जिनको उसने अपने मरते दम मारा, उनसे भी ज़्यादा थे जिनको उसने जीते जी क़त्ल किया। ³¹ तब उसके भाई और उसके बाप का सारा घराना आया, और वह उसे उठा कर ले गए और सुर'आ और इस्ताल के बीच उसके बाप मनोहा के क़ब्रिस्तान में उसे दफ़न किया। वह बीस बरस तक इस्राईलियों का क़ाज़ी रहा।

17

????? ? ? ? ? ? ? ?

¹ और इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क का एक शख्स था जिसका नाम मीकाह था। ² उसने अपनी माँ से कहा, *चाँदी के वह ग़्यारह सौ सिक्के जो तेरे पास से लिए गए थे, और जिनके बारे में तूने ला'नत भेजी और मुझे भी यही सुना कर कहा; “इसलिए देख वह चाँदी मेरे पास है, मैंने उसको ले लिया था।” उसकी माँ ने कहा, “मेरे बेटे को खुदावन्द की तरफ़ से बरकत मिले।” ³ और उसने चाँदी के वह ग़्यारह सौ सिक्के अपनी माँ को लौटा दिए, तब उसकी माँ ने कहा, “मैं इस चाँदी को अपने बेटे की खातिर अपने हाथ से खुदावन्द के लिए मुक़द्दस किए देती हूँ, ताकि वह एक बुत तराशा हुआ और एक ढाला हुआ बनाए इसलिए, अब मैं इसको तुझे लौटा देती हूँ।”

* 17:2 17:2 तरह किलोग्राम

4 लेकिन जब उसने वह नक़दी अपनी माँ को लौटा दी, तो उसकी माँ ने चाँदी के दो सौ सिक्के लेकर उनको ढालने वाले को दिया, जिसने उनसे एक तराशा हुआ और एक ढाला हुआ बुत बनाया; और वह मीकाह के घर में रहे। 5 और इस शख्स मीकाह के यहाँ एक बुत खाना था, और उसने एक अफूद और तराफ़ीम को बनवाया; और अपने बेटों में से एक को मख्सूस किया जो उसका काहिन हुआ। 6 उन दिनों इस्राईल में कोई बादशाह न था, और हर शख्स जो कुछ उसकी नज़र में अच्छा मा'लूम होता वही करता था। 7 और बैतलहम यहूदाह में यहूदाह के घराने का एक जवान था जो लावी था; यह वहीं टिका हुआ था। 8 यह शख्स उस शहर या'नी बैतलहम — ए — यहूदाह से निकला, कि और कहीं जहाँ जगह मिले जा टिके। तब वह सफ़र करता हुआ इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में मीकाह के घर आ निकला। 9 और मीकाह ने उससे कहा, “तू कहाँ से आता है?” उसने उससे कहा, “मैं बैतलहम — ए — यहूदाह का एक लावी हूँ, और निकला हूँ कि जहाँ कहीं जगह मिले वहीं रहूँ।” 10 मीकाह ने उससे कहा, “मेरे साथ रह जा, और मेरा बाप और काहिन हो; मैं तुझे चाँदी के दस सिक्के सालाना और एक जोड़ा कपड़ा और खाना दूँगा।” तब वह लावी अन्दर चला गया। 11 और वह उस आदमी के साथ रहने पर राज़ी हुआ; और वह जवान उसके लिए ऐसा ही था जैसा उसके अपने बेटों में से एक बेटा। 12 और मीकाह ने उस लावी को मख्सूस किया, और वह जवान उसका काहिन बना और मीकाह के घर में रहने लगा। 13 तब मीकाह ने कहा, “मैं अब जानता हूँ कि खुदावन्द मेरा भला करेगा, क्योंकि एक लावी मेरा काहिन है।”

18

2222 22 2222222 2222 2222 2222222

1 उन दिनों इस्राईल में कोई बादशाह न था, और उन ही दिनों में दान का क़बीला अपने रहने के लिए मीरास ढूँढता था, क्योंकि उनको उस दिन तक इस्राईल के क़बीलों में मीरास नहीं मिली थी। 2 इसलिए बनी दान ने अपने सारे शुमार में से पाँच सूर्माओं को सुर'आ और इस्ताल से खाना किया, ताकि मुल्क का हाल दरियाफ़्त करें और उसे देखें भालें और उनसे कह दिया कि जाकर उस मुल्क को देखो भालो। इसलिए वह इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में मीकाह के घर आए और वहीं उतरे। 3 जब वह मीकाह के घर के पास पहुँचे, तो उस लावी

जवान की आवाज़ पहचानी, पस वह उधर को मुड़ गए और उससे कहने लगे, “तुझ को यहाँ कौन लाया? तू यहाँ क्या करता है और यहाँ तेरा क्या है?” 4 उसने उनसे कहा, “मीकाह ने मुझे से ऐसा ऐसा सुलूक किया, और मुझे नौकर रख लिया है और मैं उसका काहिन बना हूँ।” 5 उन्होंने उससे कहा कि खुदा से ज़रा सलाह ले, ताकि हम को मा'लूम हो जाए कि हमारा यह सफ़र मुबारक होगा या नहीं। 6 उस काहिन ने उनसे कहा, “सलामती से चले जाओ, क्योंकि तुम्हारा यह सफ़र खुदावन्द के हुज़ूर है।” 7 इसलिए वह पाँचों शख्स चल निकले और लैस में आए। उन्होंने वहाँ के लोगों को देखा कि सैदानियों की तरह कैसे इत्मिनान और अम्न और चैन से रहते हैं; क्योंकि *उस मुल्क में कोई हाकिम नहीं था जो उनको किसी बात में ज़लील करता। वह सैदानियों से बहुत दूर थे, और किसी से उनको कुछ सरोकार न था। 8 इसलिए वह सुर'आ और इस्ताल को अपने भाइयों के पास लौटे, और उनके भाइयों ने उनसे पूछा कि तुम क्या कहते हो? 9 उन्होंने कहा, “चलो, हम उन पर चढ़ जाएँ; क्योंकि हम ने उस मुल्क को देखा कि वह बहुत अच्छा है; और तुम क्या चुप चाप ही रहे? अब चलकर उस मुल्क पर क़ाबिज़ होने में सुस्ती न करो। 10 अगर तुम चले तो एक मुतम'इन क़ौम के पास पहुँचोगे, और वह मुल्क वसी' है; क्योंकि खुदा ने उसे तुम्हारे हाथ में कर दिया है। वह ऐसी जगह है जिसमें दुनिया की किसी चीज़ की कमी नहीं।” 11 तब बनी दान के घराने के छः सौ शख्स जंग के हथियार बाँधे हुए सुर'आ और इस्ताल से खाना हुए। 12 और जाकर यहूदाह के करयत या'रीम में खैमाज़न हुए। इसीलिए आज के दिन तक उस जगह को महने दान कहते हैं, और यह करयत या'रीम के पीछे है। 13 और वहाँ से चलकर इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में पहुँचे और मीकाह के घर आए। 14 तब वह पाँचों शख्स जो लैस के मुल्क का हाल दरियाफ़्त करने गए थे, अपने भाइयों से कहने लगे, “क्या तुम को ख़बर है, कि इन घरों में एक अफूद और तराफ़ीम और एक तराशा हुआ बुत और एक ढाला हुआ बुत है? इसलिए अब सोच लो कि तुम को क्या करना है।” 15 तब वह उस तरफ़ मुड़ गए और उस लावी जवान के मकान में या'नी मीकाह के घर में दाख़िल हुए, और उससे खैर — ओ — सलामती पूछी। 16 और वह छः सौ आदमी जो बनी दान में से थे, जंग के हथियार बाँधे फाटक पर खड़े रहे। 17 और उन पाँचों शख्सों ने जो ज़मीन का हाल दरियाफ़्त करने को निकले

† 17:10 17:10 ग्राम चांदी * 18:7 18:7 मुल्क में किसी तरह की कमी नहीं थी, उन पर कोई हाकिम या क़ाज़ी, हुकूमत करने के लिए नहीं था

थे, वहाँ आकर तराशा हुआ बुत और अफूद और तराफ़ीम और ढाला हुआ बुत सब कुछ ले लिया, और वह काहिन फाटक पर उन छः सौ आदमियों के साथ जो जंग के हथियार बाँधे थे खड़ा था। ¹⁸ जब वह मीकाह के घर में घुस कर तराशा हुआ बुत और अफूद और तराफ़ीम और ढाला हुआ बुत ले आए, तो उस काहिन ने उनसे कहा, “तुम यह क्या करते हो?” ¹⁹ तब उन्होंने उसे कहा, “चुप रह, मुँह पर हाथ रख ले; और हमारे साथ चल और हमारा बाप और काहिन बन। क्या तेरे लिए एक शख्स के घर का काहिन होना अच्छा है, या यह कि तू बनी — इस्राईल के एक कबीले और घराने का काहिन हो?” ²⁰ तब काहिन का दिल खुश हो गया और वह अफूद और तराफ़ीम और तराशे हुए बुत को लेकर लोगों के बीच चला गया। ²¹ फिर वह मुड़े और रवाना हुए, और बाल बच्चों और चौपायों और सामन को अपने आगे कर लिया। ²² जब वह मीकाह के घर से दूर निकल गए, तो जो लोग मीकाह के घर के पास के मकानों में रहते थे वह जमा' हुए और चलकर बनी दान को जा लिया। ²³ और उन्होंने बनी दान को पुकारा, तब उन्होंने उधर मुँह करके मीकाह से कहा, “तुझ को क्या हुआ जो तू इतने लोगों की जमिय'त को साथ लिए आ रहा है?” ²⁴ उसने कहा, “तुम मेरे मा'बूदों को जिनको मैंने बनवाया, और मेरे काहिन को साथ लेकर चले आए, अब मेरे पास और क्या बाकी रहा? इसलिए तुम मुझ से यह क्योंकर कहते हो कि तुझ को क्या हुआ?” ²⁵ बनी दान ने उससे कहा कि तेरी आवाज़ हम लोगों में सुनाई न दे, ऐसा न हो कि झल्ले मिज़ाज के आदमी तुझ पर हमला कर बैठें और तू अपनी जान अपने घर के लोगों की जान के साथ खो बैठे। ²⁶ इसलिए बनी दान तो अपने रास्ते ही चले गए: और जब मीकाह ने देखा, कि वह उसके मुक्काबले में बड़े ज़बरदस्त हैं, तो वह मुड़ा और अपने घर को लौटा। ²⁷ यूँ वह मीकाह की बनवाई हुई चीज़ों को और उस काहिन को जो उसके यहाँ था, लेकर लैस में ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अम्न और चैन से रहते थे; और उनको बर्बाद किया और शहर जला दिया। ²⁸ और बचाने वाला कोई न था, क्योंकि वह सैदा से दूर था और यह लोग किसी आदमी से सरोकार नहीं रखते थे। और वह शहर बैत रहोब के पास की वादी में था। फिर उन्होंने वह शहर बनाया और उसमें रहने लगे। ²⁹ और उस शहर का नाम अपने बाप दान के नाम पर जो इस्राईल की औलाद था दान ही रखवा, लेकिन पहले उस शहर का नाम लैस था। ³⁰ और बनी दान ने वह तराशा हुआ बुत अपने लिए

खड़ा कर लिया; और †यूनतन बिन जैरसोम बिन मूसा और उसके बेटे उस मुल्क की असीरी के दिन तक बनी दान के कबीले के काहिन बने रहे। ³¹ और सारे वक्रत जब तक खुदा का घर शीलोह में रहा, वह मीकाह के तराशे हुए बुत को जो उसने बनवाया था अपने लिए खड़े किए रहे।

19

???? ? ? ???? ???? ???? ?

¹ उन दिनों में जब इस्राईल में कोई बादशाह न था, ऐसा हुआ कि एक शख्स ने जो लावी था और इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क के दूसरे सिरे पर रहता था, बैतलहम — ए — यहूदाह से एक हरम अपने लिए कर ली। ² *उसकी हरम ने उस से बेवफ़ाई की और उसके पास से बैतलहम यहूदाह में अपने बाप के घर चली गई, और चार महीने वहीं रही। ³ और उसका शौहर उठकर और एक नौकर और दो गधे साथ लेकर उसके पीछे रवाना हुआ, कि उसे मना फुसला कर वापस ले आए। इसलिए वह उसे अपने बाप के घर में ले गई, और उस जवान 'औरत का बाप उसे देख कर उसकी मुलाक़ात से खुश हुआ। ⁴ और उसके खुसर या'नी उस जवान 'औरत के बाप ने उसे रोक लिया, और वह उसके साथ तीन दिन तक रहा; और उन्होंने खाया पिया और वहाँ टिके रहे। ⁵ चौथे रोज़ जब वह सुबह सवेरे उठे, और वह चलने को खड़ा हुआ; तो उस जवान 'औरत के बाप ने अपने दामाद से कहा, एक टुकड़ा रोटी खाकर ताज़ा दम हो जा, इसके बाद तुम अपनी राह लेना। ⁶ इसलिए वह दोनों बैठ गए और मिलकर खाया पिया फिर उस जवान 'औरत के बाप ने उस शख्स से कहा कि रात भर और टिकने को राज़ी हो जा, और अपने दिल को खुश कर। ⁷ लेकिन वह शख्स चलने को खड़ा हो गया, लेकिन उसका खुसर उससे बजिद हुआ; इसलिए फिर उसने वहीं रात काटी। ⁸ और पाँचवें रोज़ वह सुबह सवेरे उठा, ताकि रवाना हो; और उस जवान 'औरत के बाप ने उससे कहा, “ज़रा इत्मिनान रख और दिन ढलने तक ठहरे रहो।” तब दोनों ने रोटी खाई। ⁹ और जब वह शख्स और उसकी हरम और उसका नौकर चलने को खड़े हुए, तो उसके खुसर या'नी उस जवान 'औरत के बाप ने उससे कहा, “देख, अब तो दिन ढला और शाम हो चली; इसलिए मैं तुम से मिन्नत करता हूँ कि तुम रात भर ठहर जाओ। देख, दिन तो खातिमें पर है, इसलिए यहीं टिक जा, तेरा दिल खुश हो और कल सुबह ही सुबह तुम अपनी राह

† 18:30 18:30 मनससे की औलाद * 19:2 19:2 वह उससे गुस्सा हो गई

लगाना, ताकि तू अपने घर को जाए।” 10 लेकिन वह शख्स उस रात रहने पर राजी न हुआ, बल्कि उठ कर खाना हुआ और यबूस के सामने पहुँचा येरूशलेम यही है; और दो गधे जीन कसे हुए उसके साथ थे, और उसकी हरम भी साथ थी। 11 जब वह यबूस के बराबर पहुँचे तो दिन बहुत ढल गया था, और नौकर ने अपने आक्रा से कहा, “आ, हम यबूसियों के इस शहर में मुड़ जाएँ और यहीं टिकें।” 12 उसके आक्रा ने उससे कहा, “हम किसी अजनबी के शहर में, जो बनी — इस्राईल में से नहीं दाखिल न होंगे, बल्कि हम जिब'आ को जाएँगे।” 13 फिर उसने अपने नौकर से कहा “आ, हम इन जगहों में से किसी में चले चलें, और जिब'आ या रामा में रात काटें। 14 इसलिए वह आगे बढ़े और रास्ता चलते ही रहे, और बिनयमीन के जिब'आ के नज़दीक पहुँचते पहुँचते सूरज डूब गया। 15 इसलिए वह उधर को मुड़े, ताकि जिब'आ में दाखिल होकर वहाँ टिके। वह दाखिल होकर शहर के चौक में बैठ गया, क्योंकि वहाँ कोई आदमी उनको टिकाने को अपने घर न ले गया। 16 शाम को एक बूढ़ा शख्स अपना काम करके वहाँ आया। यह आदमी इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क का था, और जिब'आ में आ बसा था; लेकिन उस मक़ाम के बाशिंदे बिनयमीनी थे। 17 उसने जो आँखें उठाई तो उस मुसाफ़िर को उस शहर के चौक में देखा, तब उस बूढ़े शख्स ने कहा, तू किधर जाता है और कहाँ से आया है?” 18 उसने उससे कहा, “हम यहूदाह के बैतलहम से इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क के दूसरे सिरे को जाते हैं। मैं वहीं का हूँ, और यहूदाह के बैतलहम को गया हुआ था; और अब खुदावन्द के घर को जाता हूँ, यहाँ कोई मुझे अपने घर में नहीं उतारता। 19 हालाँकि हमारे साथ हमारे गधों के लिए भूसा और चारा है; और मेरे और तेरी लौंडी के वास्ते, और इस जवान के लिए जो तेरे बन्दो के साथ है रोटी और मय भी है, और किसी चीज़ की कमी नहीं।” 20 उस बूढ़े शख्स ने कहा, “तेरी सलामती हो; तेरी सब जरूरतें हरसूरत मेरे ज़िम्मे हों, लेकिन इस चौक में हरगिज़ न टिक।” 21 वह उसे अपने घर ले गया और उसके गधों को चारा दिया, और वह अपने पाँव धोकर खाने पीने लगे। 22 जब वह अपने दिलों को खुश कर रहे थे, तो उस शहर के लोगों में से कुछ ख़बीसों ने उस घर को घेर लिया और दरवाज़ा पीटने लगे, और साहिब — ए — खाना या'नी बूढ़े शख्स से कहा, “उस शख्स को जो तेरे घर में आया है, बाहर ले आ ताकि हम उसके साथ सुहबत करें।” 23 वह आदमी

जो साहिब — ए — खाना था, बाहर उनके पास जाकर उनसे कहने लगा, “नहीं, मेरे भाइयों ऐसी शरारत न करो; चूँकि यह शख्स मेरे घर में आया है, इसलिए यह बेवकूफी न करो। 24 देखो, मेरी कुँवारी बेटी और इस शख्स की हरम यहाँ हैं, मैं अभी उनको बाहर लाए देता हूँ, तुम उनकी आबरू लो और जो कुछ तुम को भला दिखाई दे उनसे करो, लेकिन इस शख्स से ऐसा घिनौना काम न करो।” 25 लेकिन वह लोग उसकी सुनते ही न थे। तब वह शख्स अपनी हरम को पकड़ कर उनके पास बाहर ले आया। उन्होंने उससे सुहबत की और सारी रात सुबह तक उसके साथ बदज़ाती करते रहे, और जब दिन निकलने लगा तो उसको छोड़ दिया। 26 वह 'औरत पौ फटते हुए आई, और उस शख्स के घर के दरवाज़े पर जहाँ उसका खाविन्द था गिरी और रोशनी होने तक पड़ी रही। 27 और उसका खाविन्द सुबह को उठा और घर के दरवाज़े खोले और बाहर निकला कि खाना हों और देखो वह 'औरत जो उसकी हरम थी घर के दरवाज़े पर अपने आस्ताना पर फैलाये हुए पड़ी थी। 28 उसने उससे कहा, “उठ, हम चलें।” लेकिन किसी ने जवाब न दिया। तब उस शख्स ने उसे अपने गधे पर लाद लिया, और वह शख्स उठा और अपने मक़ान को चला गया। 29 और उसने घर पहुँच कर छुरी ली, और अपनी हरम को लेकर उसके आ'ज़ा काटे और उसके बारह टुकड़े करके इस्राईल की सब सरहदों में भेज दिए। 30 और जितनों ने यह देखा, वह कहने लगे कि जब से बनी — इस्राईल मुल्क — ए — मिस्र से निकल आए, उस दिन से आज तक ऐसा बुरा काम न कभी हुआ न कभी देखने में आया, इसलिए इस पर ग़ौर करो और सलाह करके बताओ। *

20

20:1-20:20

1 तब सब बनी इस्राईल निकले और सारी जमा'अत जिल'आद के मुल्क समेत दान से बैरसबा' तक यकतन होकर खुदावन्द के सामने मिस्रफ़ाह में इकट्ठी हुई। 2 और तमाम क्रौम के सरदार बल्कि बनी इस्राईल के सब क़बीलों के लोग जो चार लाख शमशीर ज़न प्यादे थे, खुदा के लोगों के मजमे' में हाज़िर हुए। 3 और बनी बिनयमीन ने सुना कि बनी — इस्राईल मिस्रफ़ाह में आए हैं। और बनी — इस्राईल पूछने लगे कि बताओ तो सही यह शरारत क्यूँकर हुई? 4 तब उस लावी ने जो उस मक्तूल 'औरत का शौहर था जवाब दिया कि

† 19:18 19:18 यह्ने का घर, मैं अपने घर जा रहा हूँ ‡ 19:30 19:30 वह एक दुसरे से कहने लगे § 19:30 19:30 हमें बताओ कि क्या करना है * 19:30 19:30 वह शख्स अपने नौकर से कह रहा है इस्राईलियों से कहो कि क्या ऐसी बात कभी हुई या देखी गई जब से इस्राईली लोग मुल्क — ए — मिस्र से आए, तब से लेकर आज तक?

मैं अपनी हरम को साथ लेकर बिनयमीन के जिब'आ में टिकने को गया था।⁵ और जिब'आ के लोग मुझ पर चढ़ आए, और रात के वक्त उस घर को जिसके अन्दर मैं था चारों तरफ़ से घेर लिया, और मुझे तो वह मार डालना चाहते थे; और मेरी हरम को जबरन ऐसा बेआबरू किया कि वह मर गई।⁶ इसलिए मैंने अपनी हरम को लेकर उसको टुकड़े टुकड़े किया, और उनको इस्राईल की मीरास के सारे मुल्क में भेजा, क्योंकि इस्राईल के बीच उन्होंने शुहदापन और धिनौना काम किया है।⁷ ऐ बनी — इस्राईल, तुम सब के सब देखो, और यहीं अपनी सलाह — ओ — मश्वरत दो।⁸ और सब लोग एकतन होकर उठे और कहने लगे, हम में से कोई अपने डेरे को नहीं जाएगा, और न हम में से कोई अपने घर की तरफ़ रुख करेगा।⁹ बल्कि हम जिब'आ से यह करेंगे, कि पर्ची डाल कर उस पर चढ़ाई करेंगे।¹⁰ और हम इस्राईल के सब क़बीलों में से सौ पीछे दस, और हजार पीछे सौ, और दस हजार पीछे एक हजार आदमी लोगों के लिए रसद लाने को जुदा करें; ताकि वह लोग जब बिनयमीन के जिब'आ में पहुँचें, तो जैसा मकरूह काम उन्होंने इस्राईल में किया है उसके मुताबिक़ उससे कारगुजारी कर सकें।¹¹ तब सब बनी — इस्राईल उस शहर के मुकाबिल गठे हुए एकतन होकर जमा' हुए।¹² और बनी — इस्राईल के क़बीलों ने बिनयमीन के सारे क़बीले में लोग ख़ाना किए और कहला भेजा कि यह क्या शरारत है जो तुम्हारे बीच हुई? ¹³ इसलिए अब उन आदमियों या'नी उन ख़बीसों को जो जिब'आ में हैं हमारे हवाले करो, कि हम उनको क़त्ल करें और इस्राईल में से बुराई को दूर कर डालें। लेकिन बनी बिनयमीन ने अपने भाइयों बनी इस्राईल का कहना न माना।¹⁴ बल्कि बनी बिनयमीन शहरों में से जिब'आ में जमा' हुए, ताकि बनी — इस्राईल से लड़ने को जाएँ।¹⁵ और बनी बिनयमीन जो शहरों में से उस वक्त जमा' हुए, वह शुमार में छब्बीस हजार शमशीर जन शख्स थे, 'अलावा जिब'आ के बाशिंदों के जो शुमार में सात सौ चुने हुए जवान थे।¹⁶ इन सब लोगों में से सात सौ चुने हुए बँहत्थे जवान थे, जिनमें से हर एक फ़लाखन से बाल के निशाने पर बग़ैर ख़ता किए पत्थर मार सकता था।¹⁷ और इस्राईल के लोग, बिनयमीन के 'अलावा, चार लाख शमशीर जन शख्स थे, यह सब साहिब — ए — जंग थे।¹⁸ और बनी — इस्राईल उठ कर *बैतएल को गए और खुदा से मश्वरत चाही और कहने लगे कि हम में से कौन बनी बिनयमीन से लड़ने

को पहले जाए? खुदावन्द ने फ़रमाया, “पहले यहूदाह जाए।”¹⁹ इसलिए बनी — इस्राईल सुबह सवेरे उठे और जिब'आ के सामने डेरे खड़े किए।²⁰ और इस्राईल के लोग बिनयमीन से लड़ने को निकले, और इस्राईल के लोगों ने जिब'आ में उनके मुकाबिल सफ़आराई की।²¹ तब बनी बिनयमीन ने जिब'आ से निकल कर उस दिन बाइस हजार इस्राईलियों को क़त्ल करके खाक में मिला दिया।²² लेकिन बनी — इस्राईल के लोग हौसला करके दूसरे दिन उसी मक़ाम पर जहाँ पहले दिन सफ़ बाँधी थी फिर सफ़आरा हुए।²³ और बनी — इस्राईल जाकर शाम तक खुदावन्द के आगे रोते रहे; और उन्होंने खुदावन्द से पूछा कि हम अपने भाई बिनयमीन की औलाद से लड़ने के लिए फिर बढ़े या नहीं? खुदावन्द ने फ़रमाया, “उस पर चढ़ाई करो।”²⁴ इसलिए बनी — इस्राईल दूसरे दिन बनी बिनयमीन के मुकाबले के लिए नज़दीक आए।²⁵ और उस दूसरे दिन बनी बिनयमीन उनके मुकाबिल जिब'आ से निकले और अठारह हजार इस्राईलियों को क़त्ल करके खाक में मिला दिया, यह सब शमशीर जन थे।²⁶ तब सब बनी — इस्राईल और सब लोग उठे और बैतएल में आए और वहाँ खुदावन्द के हुज़ूर बैठे रोते रहे, और उस दिन शाम तक रोज़ा रखवा और सोख़्तनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानियाँ खुदावन्द के आगे पेश कीं।²⁷ और बनी — इस्राईल ने इस वजह से कि खुदा के 'अहद का सन्दूक उन दिनों वहीं था,²⁸ और हारून के बेटे इली'एलियाज़र का बेटा फ़ीन्हास उन दिनों उसके आगे खड़ा रहता था, खुदावन्द से पूछा कि मैं अपने भाई बिनयमीन की औलाद से एक दफ़ा' और लड़ने को जाऊँ या रहने दूँ? खुदावन्द ने फ़रमाया कि जा, मैं कल उसको तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा।²⁹ इसलिए बनी — इस्राईल ने जिब'आ के चारों तरफ़ लोगों को घात में बिठा दिया।³⁰ और बनी — इस्राईल तीसरे दिन बनी बिनयमीन के मुकाबिले को चढ़ गए, और पहले की तरह जिब'आ के मुकाबिल फिर सफ़आरा हुए।³¹ और बनी बिनयमीन इन लोगों का सामना करने निकले, और शहर से दूर खिंचे चले गए; और उन शाहराहों पर जिनमें से एक बैतएल को और दूसरी मैदान में से जिब'आ को जाती थी, पहले की तरह लोगों को मारना और क़त्ल करना शुरू किया और इस्राईल के तीस आदमी के करीब मार डाले।³² और बनी बिनयमीन कहने लगे कि वह पहले की तरह हम से मगलूब हुए। लेकिन बनी — इस्राईल ने कहा, “आओ, भागें और उन को शहर से दूर शाहराहों पर खींच लाएँ।”³³ तब सब इस्राईली शख्स अपनी अपनी जगह से उठ

* 20:18 20:18 खुदा का घर

खड़े हुए, और बा'ल तमर में सफ़आरा हुए; इस वक़्त वह इस्राईली जो कमीन में बैठे थे, मा'रे जिब'आ से जो उनकी जगह थी निकले। ³⁴ और सारे इस्राईल में से दस हजार चुने हुए आदमी जिब'आ के सामने आए और लड़ाई सख़्त होने लगी; लेकिन उन्होंने न जाना कि उन पर आफ़त आने वाली है। ³⁵ और खुदावन्द ने बिनयमीन को इस्राईल के आगे मारा, और बनी — इस्राईल ने उस दिन पच्चीस हजार एक सौ बिनयमीनियों को क़त्ल किया, यह सब शमशीर ज़न थे। ³⁶ तब बनी बिनयमीन ने देखा कि वह मग़लूब हुए क्योंकि इस्राईली शख्स उन लोगों का भरोसा करके जिनकी उन्होंने जिब'आ के खिलाफ़ घात में बिठाया था, बिनयमीन के सामने से हट गए। ³⁷ तब कमीन वालों ने जल्दी की और जिब'आ पर झपटे, और इन कमीन वालों ने आगे बढ़कर सारे शहर को बर्बाद किया। ³⁸ और इस्राईली आदमियों और उन कमीनवालों में यह निशान मुक़र्रर हुआ था, कि वह ऐसा करें कि धुवें का बहुत बड़ा बादल शहर से उठाएँ। ³⁹ इसलिए इस्राईली शख्स लड़ाई में हटने लगे और बिनयमीन ने उनमें से करीब तीस के आदमी क़त्ल कर दिए क्योंकि उन्होंने कहा कि वह यक़ीनन हमारे सामने मग़लूब हुए जैसे पहली लड़ाई में। ⁴⁰ लेकिन जब धुएँ के सुतून में बादल सा उस शहर से उठा, तो बनी बिनयमीन ने अपने पीछे निगाह की और क्या देखा कि शहर का शहर धुवें में आसमान को उड़ा जाता है। ⁴¹ फिर तो इस्राईली शख्स पलटे और बिनयमीन के लोग हक्का — बक्का हो गए, क्योंकि उन्होंने देखा कि उन पर आफ़त आ पड़ी। ⁴² इसलिए उन्होंने इस्राईली शख्सों के आगे पीठ फेर कर वीराने की राह ली; लेकिन लड़ाई ने उनका पीछा न छोड़ा, और उन लोगों ने जो और शहरों से आते थे उनको उनके बीच में फ़ना कर दिया। ⁴³ यूँ उन्होंने बिनयमीनियों को घेर लिया और उनको दौड़ाया, और मशरिक़ में जिब'आ के मुक़ाबिल उनकी आराम गाहों में उनको लताड़ा। ⁴⁴ इसलिए अठारह हजार बिनयमीनी मारे गए, यह सब सूर्मा थे। ⁴⁵ और वह लौट कर रिम्मोन की चट्टान की तरफ़ वीराने में भाग गए; लेकिन उन्होंने शाहराहों में चुन — चुन कर उनके पाँच हजार और मारे और जिदोम तक उनको खूब दौड़ा कर उनमें से दो हजार शख्स और मार डाले। ⁴⁶ इसलिए सब बनी बिनयमीन जो उस दिन मारे गए पच्चीस हजार शमशीर ज़न शख्स थे, और यह सब के सब सूर्मा थे। ⁴⁷ लेकिन छः सौ आदमी लौट कर और वीराने की तरफ़ भाग कर रिम्मोन की चट्टान को चल दिए, और रिम्मोन की चट्टान में चार महीने रहे। ⁴⁸ और इस्राईली शख्स लौट कर फिर बनी बिनयमीन पर टूट पड़े, और उनको बर्बाद किया,

या'नी सारे शहर और चौपायों और उन सब को जो उनके हाथ आए। और जो — जो शहर उनको मिले उन्होंने उन सबको फूँक दिया।

21

21:1-21:21

¹ और इस्राईल के लोगों ने मिसफ़ाह में क़सम खाकर कहा था कि हम में से कोई अपनी बेटी किसी बिनयमीनी को न देगा। ² और लोग बैतएल में आए, और शाम तक वहाँ खुदा के आगे बुलन्द आवाज़ से ज़ार ज़ार रोते रहे, ³ और उन्होंने कहा, ऐ खुदावन्द, इस्राईल के खुदा! इस्राईल में ऐसा क्यों हुआ, कि इस्राईल में से आज के दिन एक क़बीला कम हो गया? ⁴ और दूसरे दिन वह लोग सुबह सवेरे उठे और उस जगह एक मज़बह बना कर सोख़्तनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ पेश कीं। ⁵ और बनी — इस्राईल कहने लगे कि इस्राईल के सब क़बीलों में ऐसा कौन है जो खुदावन्द के हुज़ूर जमा'अत के साथ नहीं आया क्योंकि उन्होंने सख़्त क़सम खाई थी कि जो खुदावन्द के सामने मिसफ़ाह में हाज़िर न होगा वह ज़रूर क़त्ल किया जाएगा। ⁶ इसलिए बनी — इस्राईल अपने भाई बिनयमीन की वजह से पछताए और कहने लगे कि आज के दिन बनी — इस्राईल का एक क़बीला कट गया। ⁷ और वह जो बाक़ी रहे हैं, हम उनके लिए बीवियों की निस्बत क्या करें? क्योंकि हम ने तो खुदावन्द की क़सम खाई है कि हम अपनी बेटियाँ उनको नहीं ब्याहेंगे। ⁸ इसलिए वह कहने लगे कि बनी — इस्राईल में से वह कौन सा क़बीला है जो मिसफ़ाह में खुदावन्द के सामने नहीं आया? और देखो, लश्कर गाह में जमा'अत में शामिल होने के लिए यबीस जिल'आद से कोई नहीं आया था। ⁹ क्योंकि जब लोगों का शुमार किया गया तो यबीस जिल'आद के बाशिंदों में से वहाँ कोई नहीं मिला। ¹⁰ तब जमा'अत ने बारह हजार सूर्मा खाना किए और उनको हुक्म दिया कि जाकर यबीस जिल'आद के बाशिंदों को 'औरतों और बच्चों समेत क़त्ल करो। ¹¹ और जो तुम को करना होगा वह यह है, कि सब शख्सों और ऐसी 'औरतों को जो शख्ससे वाकिफ़ हो चुकी हों हलाक कर देना। ¹² और उनको यबीस जिल'आद के बाशिंदों में चार सौ कुंवारी 'औरतें मिलीं जो शख्स से नावाकिफ़ और अछूती थीं, और वह उनको मुल्क — ए — कन'आन में शीलोह की लश्करगाह में ले आए। ¹³ तब सारी जमा'अत ने बनी बिनयमीन को जो रिम्मोन की चट्टान में थे कहला भेजा, और सलामती का पैग़ाम उनको दिया। ¹⁴ तब

बिनयमीनी लौटे; और उन्होंने वह 'औरतें उनको दे दीं, जिनको उन्होंने यबीस ज़िल'आद की 'औरतों में से ज़िन्दा बचाया था, लेकिन वह उनके लिए बस न हुई।
 15 और लोग बिनयमीन की वजह से पछताए, इसलिए कि खुदावन्द ने इस्राईल के कबीलों में रखना डाल दिया था। 16 तब जमा'अत के बुज़ुर्ग कहने लगे कि उनके लिए जो बच रहे हैं बीवियों की निस्वत हम क्या करें, क्योंकि बनी बिनयमीन की सब 'औरतें मिट गई? 17 इसलिए उन्होंने कहा, 'बनी बिनयमीन के बाक़ी मान्दा लोगों के लिए मीरास ज़रूरी है, ताकि इस्राईल में से एक कबीला मिट न जाए। 18 तो भी हम तो अपनी बेटियाँ उनको ब्याह नहीं सकते; क्योंकि बनी — इस्राईल ने यह कहकर क़सम खाई थी, कि जो किसी बिनयमीनी को बेटी दे वह ला'नती हो। 19 फिर वह कहने लगे, “देखो, शीलोह में जो बैतएल के उत्तर में, और उस शाहराह की मशरिकी तरफ़ में है जो बैतएल से सिकम को जाती है, और लबूना के दख्खन में है, साल — ब — साल खुदावन्द की एक 'ईद होती है।” 20 तब उन्होंने बनी बिनयमीन को हुक्म दिया कि जाओ, और ताकिस्तानों में घात लगाए बैठे रहो; 21 और देखते रहना, कि अगर शीलोह की लड़कियाँ नाच नाचने को निकलें, तो तुम ताकिस्तानों में से निकलकर सैला की लड़कियों में से एक एक बीवी अपने अपने लिए पकड़ लेना, और बिनयमीन के मुल्क को चल देना। 22 और जब उनके बाप या भाई हम से शिकायत करने को आएँगे, तो हम उनसे कह देंगे कि उनको महेरबानी से हमें 'इनायत करो, क्योंकि उस लड़ाई में हम उनमें से हर एक के लिए बीवी नहीं लाए; और तुम ने उनको अपने आप नहीं दिया, वरना तुम गुनहगार होते। 23 गरज़ बनी बिनयमीन ने ऐसा ही किया, और अपने शुमार के मुताबिक़ उनमें से जो नाच रही थीं जिनको पकड़ कर ले भागे, उनको ब्याह लिया और अपनी मीरास को लौट गए, और उन शहरों को बना कर उनमें रहने लगे। 24 तब बनी — इस्राईल वहाँ से अपने अपने कबीले और घराने को चले गए, और अपनी मीरास को लौटे। 25 और उन दिनों इस्राईल में कोई बादशाह न था; हर एक शख्स जो कुछ उसकी नज़र में अच्छा मा'लूम होता था वही करता था।

रुत

रुत की किताब

रुत की किताब खास तौर से उसके मुसन्नफ़ का नाम पेश नहीं करती — रिवायत के मुताबिक रुत की किताब को समुएल नबी ने लिखी इस को आज भी एक मुस्तसर खूबसूरत कहानी बतोर जाना जाता रहा है — किताब के आखरी अल्फाज़ रुत को अपने चहीते पोते दाऊद से जोड़ते हैं (रुत 4:17 — 22) सो हम जानते हैं कि इस को समुएल नबी के मसाह के बाद लिखा गया।

इस के तसनीफ़ की तारीख़ तक्ररीबन 1030 - 1010 क़ब्ल मसीह है।

वाक़ियात की तारीख़ खुद रुत की किताब में पाए जाते हैं जो बनी इस्राईल के खुरुज से बंधे गए हैं जबकि रुत की किताब के वाक़ियात कुजात के ज़माने से जुड़ी हैं और कुजात का ज़माना मुल्क — ए — कनान के फ़तेह से जुड़ी है।

रुत की किताब के कबूल कुनिंदा (पाने वालों) वाज़ेह

तौर से पहचाना नहीं गया है कयास के तौर पर इस को अस्ली तौर से मुत्तहिद हुकूमत के ज़माने के दौरान लिखा गया था जबकि 4:22 में दाऊद का ज़िक्र किया गया है।

रुत की किताब ने बनी इस्राईल को बताया कि

फर्मानबदारी ही है जो बरकतें ला सकती हैं इस किताब ने उन्हें बताया कि उनका खुदा मुहब्बती और अपनी फितरत में वफ़ादार है यह किताब मज़ाहिरा पेश करता है कि खुदा अपने लोगों के रोने की आवाज़ को सुनता और उन का जवाब देता है — जो कुछ वह मनादी करता है वह उसकी तजवीज़ (रियाज़) करता है — खड़ा की तरफ़ ताकते हुए कि उसने नओमी और रुत जो बेवाएं थीं छोटे मंज़र के साथ एक मुस्तकबिल को वाज़ेह करने के लिए कि वह मुआशिरों से निकाले गए लोगों की परवाह करता है — बिल्कुल उसी तरह वह हम से भी ऐसा ही कराना चाहता है।

छुटकारा

बैरूनी खाका

1. नओमी और उसका खानदान मुसीबत का तजुर्बा करते हैं — 1:1-22

2. बोअज़ के खेत में बालें बटोरते वक़्त रुत बोअज़ से मुलाक़ात करती है जो नओमी का अज़ीज़ रिश्तेदार था — 2:1-23

3. नओमी रुत को सलाह देती है कि वोह बोअज़ के पास जाए — 3:1-18

4. रुत का छुटकारा हो जाता है और नओमी बहाल हो जाती है — 4:1-22

1 उन ही दिनों में जब काज़ी इन्साफ़ किया करते थे, ऐसा हुआ कि उस सरज़मीन में काल पड़ा, यहूदाह बैतलहम का एक आदमी अपनी बीवी और दो बेटों को लेकर चला कि मोआब के मुल्क में जाकर बसे। 2 उस आदमी का नाम इलीमलिक और उसकी बीवी का नाम न'ओमी उसके दोनों बेटों के नाम महलोन और किलयोन थे। ये यहूदाह के बैतलहम के इफ़राती थे। तब वह मोआब के मुल्क में आकर रहने लगे। 3 और न'ओमी का शौहर इलीमलिक मर गया, वह और उसके दोनों बेटे बाक़ी रह गए। 4 उन दोनों ने एक एक मोआबी "औरत ब्याह ली। इनमें से एक का नाम 'उर्फ़ा और दूसरी का रुत था; और वह दस बरस के करीब वहाँ रहे। 5 और महलोन और किलयोन दोनों मर गए, तब वह 'औरत अपने दोनों बेटों और शौहर से महरूम हो गई।

6 तब वह अपनी दोनों बहुओं को लेकर उठी कि

मोआब के मुल्क से लौट जाएँ इसलिए कि उस ने मोआब के मुल्क में यह हाल सुना कि खुदावन्द ने अपने लोगों को रोटी दी और यूँ उनकी ख़बर ली। 7 इसलिए वह उस जगह से जहाँ वह थी, दोनों बहुओं को साथ लेकर चल निकली, और वह सब यहूदाह की सरज़मीन को लौटने के लिए रास्ते पर हो लीं। 8 और न'ओमी ने अपनी दोनों बहुओं से कहा, दोनों अपने अपने मैके को जाओ। जैसा तुम ने मरहूमों के साथ और मेरे साथ किया, वैसा ही खुदावन्द तुम्हारे साथ मेहरबानी से पेश आए। 9 खुदावन्द यह करे कि तुम को अपने अपने शौहर के घर में आराम मिले। तब उसने उनको चूमा और वह ज़ोर — ज़ोर से रोने लगीं। 10 फिर उन दोनों ने उससे कहा, "नहीं! बल्कि हम तेरे साथ लौट कर तेरे लोगों में जाएँगी।" 11 न'ओमी ने कहा, ऐ मेरी बेटियों, लौट जाओ! मेरे साथ क्यूँ चलो? क्या मेरे रिहम में और बेटे हैं जो तुम्हारे शौहर हों? 12 ऐ मेरी बेटियों, लौट जाओ! अपना रास्ता लो, क्यूँकि मैं ज्यादा बुढ़िया हूँ और शौहर करने के लायक नहीं। अगर मैं कहती कि मुझे उम्मीद है

बल्कि अगर आज की रात मेरे पास शौहर भी होता, और मेरे लड़के पैदा होते; ¹³ तो भी क्या तुम उनके बड़े होने तक इंतज़ार करतीं और शौहर कर लेने से बाज़ रहतीं? नहीं मेरी बेटियों मैं तुम्हारी वजह से ज़ियादा दुखी हूँ इसलिए कि खुदावन्द का हाथ मेरे खिलाफ़ बढ़ा हुआ है ¹⁴ वह फिर ज़ोर ज़ोर से रोई, और उर्फ़ा ने अपनी सास को चूमा लेकिन रुत उससे लिपटी रही। ¹⁵ तब उसने कहा, “जिठानी अपने कुन्बे और अपने मा'बूद के पास लौट गई; तू भी अपनी जिठानी के पीछे चली जा।” ¹⁶ रुत ने कहा, “तू मिन्नत न कर कि मैं तुझे छोड़ूँ और तेरे पीछे से लौट जाऊँ; क्योंकि जहाँ तू जाएगी मैं जाऊँगी और जहाँ तू रहेगी मैं रहूँगी, तेरे लोग मेरे लोग और तेरा खुदा मेरा खुदा होगा।” ¹⁷ जहाँ तू मरेगी मैं मरूँगी और वहीं दफ़न भी हूँगी; खुदावन्द मुझ से ऐसा ही बल्कि इस से भी ज़्यादा करे, अगर मौत के अलावा कोई और चीज़ मुझ को तुझ से जुदा न कर दे।” ¹⁸ जब उसने देखा कि उसने उसके साथ चलने की ठान ली है, तो उससे और कुछ न कहा। ¹⁹ इसलिए वह दोनों चलते चलते बैतलहम में आई। जब वह बैतलहम में दाखिल हुई तो सारे शहर में धूम मची, और 'औरतें कहने लगीं, कि क्या ये न'ओमी है? ²⁰ उसने उनसे कहा, “मुझ को न'ओमी नहीं बल्कि मारह कहो, कि* कादिर — ए — मुतलक मेरे साथ बहुत तल्खी से पेश आया है। ²¹ मैं भरी पूरी गई, खुदावन्द मुझ को खाली लौटा लाया। इसलिए तुम क्यूँ मुझे न'ओमी कहती हो, हालाँकि खुदावन्द मेरे खिलाफ़ दा'वेदार हुआ और कादिर — ए — मुतलक ने मुझे दुख दिया?” ²² गरज़ न'ओमी लौटी और उसके साथ उसकी बहू मोआबी रुत थी, जो मोआब के मुल्क से यहाँ आई। और वह दोनों जौ काटने के मौसम में बैतलहम में दाखिल हुई।

2

११११ ११ ११ ११११ ११ ११११ १११ १११ ११११

¹ और न'ओमी के शौहर का एक रिश्तेदार था, जो इलीमलिक के घराने का और बड़ा मालदार था; और उसका नाम बो'अज़ था। ² इसलिए मोआबी रुत ने न'ओमी से कहा, “मुझे इजाज़त दे, तो मैं खेत में जाऊँ और जो कोई करम की नज़र मुझ पर करे, उसके पीछे पीछे बाले चुनूँ।” उस ने उससे कहा, “जा मेरी बेटी।” ³ इसलिए वह गई और खेत में जाकर काटने वालों के पीछे बाले चुनने लगी, इत्फ़ाक से वह बो'अज़ ही के खेत के हिस्से में जा पहुँची जो इलीमलिक के खान्दान

का था। ⁴ और बो'अज़ ने बैतलहम से आकर काटने वालों से कहा, खुदावन्द तुम्हारे साथ हो। उन्होंने उससे जवाब दिया खुदावन्द तुझे बरकत दे!“ ⁵ फिर बो'अज़ ने अपने उस नौकर से जो काटने वालों पर मुकर्रर था पूछा, किसकी लड़की है?” ⁶ उस नौकर ने जो काटने वालों पर मुकर्रर था जवाब दिया, “ये वह मोआबी लड़की है जो न'ओमी के साथ मोआब के मुल्क से आई है।” ⁷ उस ने मुझ से कहा था, 'कि मुझ को ज़रा काटने वालों के पीछे पूलियों के बीच बाले चुनकर जमा' करने दे इसलिए यह आकर सुबह से अब तक यहीं रही, सिर्फ़ ज़रा सी देर घर में ठहरी थी।” ⁸ तब बो'अज़ ने रुत से कहा, “ऐ मेरी बेटी! क्या तुझे सुनाई नहीं देता? तू दूसरे खेत में बाले चुनने को न जाना और न यहाँ से निकलना, मेरी लड़कियों के साथ साथ रहना। ⁹ इस खेत पर जिसे वह काटते हैं तेरी आखें जमी रहें और तू इन्ही के पीछे पीछे चलना। क्या मैंने इन जवानों को हुक्म नहीं किया कि वह तुझे न छुएँ? और जब तू प्यासी हो, बर्तनों के पास जाकर उसी पानी में से पीना जो मेरे जवानों ने भरा है।” ¹⁰ तब वह औधे मुँह गिरी और ज़मीन पर सरनगू होकर उससे कहा, “क्या वजह है कि तू मुझ पर करम की नज़र करके मेरी ख़बर लेता है, हालाँकि मैं परदेसन हूँ?” ¹¹ बो'अज़ ने उसे जवाब दिया, कि “जो कुछ तूने अपने शौहर के मरने के बाद अपनी सास के साथ किया सब मुझे पूरे तौर पर बताया गया तूने कैसे अपने माँ — बाप और रहने की जगह को छोड़ा, उन लोगों में जिनको तू इससे पहले न जानती थी आई। ¹² खुदावन्द तेरे काम का बदला दे, खुदावन्द इस्राईल के खुदा की तरफ़ से, जिसके परों के नीचे तू पनाह के लिए आई है, तुझ को पूरा अज़र मिले।” ¹³ तब उसने कहा, “ऐ मेरे मालिक! तेरे करम की नज़र मुझ पर रहे, क्यूँकि तूने मुझे दिलासा दिया और मेहरबानी के साथ अपनी लौंडी से बातें कीं जब कि मैं तेरी लौंडियों में से एक के बराबर भी नहीं।” ¹⁴ फिर बो'अज़ ने उससे खाने के वक़्त कहा कि यहाँ आ और रोटी खा और अपना निवाला सिरके में भिगो। तब वह काटने वालों के पास बैठ गई, और उन्होंने भुना हुआ अनाज उसके पास कर दिया; तब उसने खाया और सेर हुई और कुछ रख छोड़ा। ¹⁵ और जब वह बाले चुनने उठी, तो बो'अज़ ने अपने जवानों से कहा कि उसे पूलियों के बीच में भी चुनने देना और उसे न डाँटना। ¹⁶ और उसके लिए गट्टरों में से थोड़ा सा निकाल कर छोड़ देना, और उसे चुनने देना और झिड़कना मत। ¹⁷ इसलिए वह शाम तक खेत में चुनती

* 1:20 1:20 कादिर — ए — मुतलक खुदा * 2:17 2:17 12 किलो के लगभग

रही, जो कुछ उसने चुना था उसे फटका और वह क़रीब *एक ऐफ़ा जौ निकला। 18 और वह उसे उठा कर शहर में गई, जो कुछ उसने चुना था उसे उसकी सास ने देखा, और उसने वह भी जो उसने सेर होने के बाद रख छोड़ा था, निकालकर अपनी सास को दिया। 19 उसकी सास ने उससे पूछा, “तूने आज कहाँ बालें चुनीं और कहाँ काम किया? मुबारक हो वह जिसने तेरी ख़बर ली।” तब उसने अपनी सास को बताया कि उसने किसके पास काम किया था, और कहा कि उस शख्स का नाम, जिसके यहाँ आज मैंने काम किया बो'अज़ है। 20 न'ओमी ने अपनी बहू से कहा, वह खुदावन्द की तरफ़ से बरकत पाए, जिसने ज़िंदों और मुर्दों से अपनी मेहरबानी बा'ज़ न रखी! और न'ओमी ने उससे कहा, “ये शख्स हमारे क़रीबी रिश्ते का है और हमारे नज़दीक के क़रीबी रिश्तेदारों में से एक है।” 21 मोआबी रुत ने कहा, उसने मुझ से ये भी कहा था कि तू मेरे जवानों के साथ रहना, जब तक वह मेरी सारी फ़स्तल काट न चुके। 22 न'ओमी ने अपनी बहू रुत से कहा, मेरी बेटी ये अच्छा है कि तू उसकी लड़कियों के साथ जाया करे, और वह तुझे किसी और खेत में न पायें। 23 तब वह बालें चुनने के लिए जौ और गेहूँ की फ़सल के खातिमे तक बो'अज़ की लड़कियों के साथ — साथ लगी रही; और वह अपनी सास के साथ रहती थी।

3

रुत 2:18-23

1 फिर उसकी सास न'ओमी ने उससे कहा, “मेरी बेटी क्या मैं तेरे आराम की तालिब न बनूँ, जिससे तेरी भलाई हो? 2 और क्या बो'अज़ हमारा रिश्तेदार नहीं, जिसकी लड़कियों के साथ तू थी? देख वह आज की रात खलीहान में जौ फटकेगा। 3 इसलिए तू नहा — धोकर खुशबू लगा, अपनी पोशाक पहन और खलीहान को जा जब तक वह मर्द खा पी न चुके, तब तक तू अपने आप उस पर ज़ाहिर न करना। 4 जब वह लेट जाए, तो उसके लेटने की जगह को देख लेना; तब तू अन्दर जा कर और उसके पाँव खोलकर लेट जाना और जो कुछ तुझे करना मुनासिब है वह तुझ को बताएगा।” 5 उसने अपनी सास से कहा, “जो कुछ तू मुझ से कहती है, वह सब मैं करूँगी।” 6 फिर वह खलीहान को गई और जो कुछ उसकी सास ने हुक्म दिया था वह सब किया। 7 और जब बो'अज़ खा पी चुका, उसका दिल खुश हुआ; तो वह गल्ले के ढेर की एक तरफ़ जाकर लेट गया। तब वह चुपके — चुपके आई और उसके पाँव खोलकर लेट गई।

8 और आधी रात को ऐसा हुआ कि वह मर्द डर गया, और उसने करवट ली और देखा कि एक “औरत उसके पाँव के पास पड़ी है। 9 तब उसने पूछा, “तू कौन है?” उस ने कहा, “तेरी लौंडी रुत हूँ; इसलिए *तू अपनी लौंडी पर अपना दामन फैला दे, क्योंकि तू नज़दीक का क़रीबी रिश्तेदार है।” 10 उसने कहा, “तू खुदावन्द की तरफ़ से मुबारक हो, ऐ मेरी बेटी क्योंकि तूने शुरू की तरह आखिर में ज़्यादा मेहरबानी कर दिखाई कि तूने जवानों का चाहे अमीर हों या ग़रीब पीछा न किया। 11 अब ऐ मेरी बेटी, मत डर! मैं सब कुछ जो तू कहती है तुझ से करूँगा क्योंकि मेरी क्रौम का तमाम शहर जानता है कि तू पाक दामन 'औरत है। 12 और यह सच है कि मैं नज़दीक का क़रीबी रिश्तेदार हूँ, लेकिन एक और भी है जो क़रीब के रिश्तों में मुझ से ज़्यादा नज़दीक है। 13 इस रात तू ठहरी रह, सुबह को अगर वह क़रीब के रिश्ते का हक़ अदा करना चाहे, तो खैर वह क़रीब के रिश्ते का हक़ अदा करे; और अगर वह तेरे साथ क़रीबी रिश्ते का हक़ अदा करना न चाहे, तो ज़िन्दा खुदावन्द की क़सम है मैं तेरे क़रीबी रिश्ते का हक़ अदा करूँगा। सुबह तक तो तू लेटी रह।” 14 इसलिए वह सुबह तक उसके पाँव के पास लेटी रही, और पहले इससे कि कोई एक दूसरे को पहचान सके उठ खड़ी हुई; क्योंकि उसने कह दिया था कि ये ज़ाहिर होने न पाए कि खलीहान में ये 'औरत आई थी। 15 फिर उसने कहा, “उस चादर को जो तेरे ऊपर है ला, और उसे थामे रह।” जब उसने उसे थामा तो उसने जौ के छह पैमाने नाप कर उस पर लाद दिए। फिर वह शहर को चला गया। 16 फिर वह अपनी सास के पास आई तो उसने कहा, “ऐ मेरी बेटी, तू कौन है?” तब उसने सब कुछ जो उस मर्द ने उससे किया था उसे बताया, 17 और कहने लगी कि मुझको उसने यह छः पैमाने जौ के दिए, क्योंकि उसने कहा, तू अपनी सास के पास खाली हाथ न जा। 18 तब उसने कहा, “ऐ मेरी बेटी, जब तक इस बात के अंजाम का तुझे पता न लगे, तू चुप चाप बैठी रह इसलिए कि उस शख्स को चैन न मिलेगा जब तक वह इस काम को आज ही तमाम न कर ले।”

4

रुत 2:18-23

1 *तब बो'अज़ बेथलेहम शहर के फाटक के पास जाकर वहाँ बैठ गया और देखो जिस नज़दीक के क़रीबी रिश्ते का ज़िक्र बो'अज़ ने किया था वह आ निकला। उसने उससे कहा अरे भाई इधर आ! ज़रा यहाँ बैठ जा।

* 3:9 3:9 मुझ से शादी करो, अपनी बांदी पर अपना दामन फैला दे

† 3:15 3:15 4 किलोग्राम

* 4:1 4:1 बेथलेहम शहर का फाटक

तब वह उधर आकर बैठ गया। ² फिर उसने शहर के बुजुर्गों में से दस आदमियों को बुला कर कहा, “यहाँ बैठ जाओ।” तब वह बैठ गए। ³ तब उसने उस नज़दीक के करीबी रिश्तेदार से कहा, न'ओमी जो मोआब के मुल्क से लौट आई है ज़मीन के उस टुकड़े को जो हमारे भाई इलीमलिक का माल था बेचती है। ⁴ इसलिए मैंने सोचा कि तुझ पर इस बात को जाहिर करके कहूँगा कि तू इन लोगों के सामने जो बैठे हैं और मेरी क़ौम के बुजुर्गों के सामने उसे मोल ले। अगर तू उसे छुड़ाता है तो छुड़ा और अगर नहीं छुड़ाता तो मुझे बता दे ताकि मुझ को मा'लूम हो जाए क्योंकि तेरे अलावा और कोई नहीं जो उसे छुड़ाए और मैं तेरे बाद हूँ। उसने कहा, “मैं छुड़ाऊँगा।” ⁵ तब बो'अज़ ने कहा, जिस दिन तू वह ज़मीन न'ओमी के हाथ से मोल ले तो तुझे उसको मोआबी रुत के हाथ से भी जो मरहूम की बीवी है मोल लेना होगा ताकि उस मरहूम का नाम उसकी मीरास पर काईम करे। ⁶ तब उसके नज़दीक के करीबी रिश्तेदार ने कहा, “मैं अपने लिए उसे छुड़ा नहीं सकता ऐसा न हो कि मैं अपनी मीरास खराब कर दूँ। उसके छुड़ाने का जो मेरा हक़ है उसे तू ले ले क्योंकि मैं उसे छुड़ा नहीं सकता।” ⁷ और अगले ज़माने में इस्राईल में मु'आमिला पक्का करने के लिए छुड़ाने और बदलने के बारे में यह मा'मूल था कि आदमी अपनी जूती उतार कर अपने पड़ोसी को दे देता था। इस्राईल में तस्दीक़ करने का यही तरीक़ा था ⁸ तब उस नज़दीक के करीबी रिश्तेदार ने बो'अज़ से कहा, “तू आप ही उसे मोल ले ले। फिर उसने अपनी जूती उतार डाली। ⁹ और बो'अज़ ने बुजुर्गों और सब लोगों से कहा, तुम आज के दिन गवाह हो कि मैंने इलीमलिक और किलयोन और महलोन का सब कुछ न'ओमी के हाथ से मोल ले लिया है। ¹⁰ सिर्फ़ इसके मैंने महलोन की बीवी मोआबी रुत को भी अपनी बीवी बनाने के लिए ख़रीद लिया है ताकि उस मरहूम के नाम को उसकी मीरास में कायम करूँ और उस मरहूम का नाम उसके भाइयों और उसके मकान के दरवाज़े से मिट न जाए तुम आज के दिन गवाह हो।” ¹¹ तब सब लोगों ने जो फाटक पर थे और उन बुजुर्गों ने कहा कि हम गवाह हैं। खुदावन्द उस 'औरत को जो तेरे घर में आई है राखिल और लियाह की तरह करे जिन दोनों ने इस्राईल का घर आबाद किया और तू इफ़राता में भलाई का काम करे, और बैतलहम में तेरा नाम हो ¹² और तेरा घर उस नसल से जो खुदावन्द तुझे इस 'औरत से दे फ़ारस के घर की

तरह हो जो यहूदाह से तमर के हुआ।

22 22 22 22 22 22 22 22

¹³ इसलिए बो'अज़ ने रुत को लिया और वह उसकी बीवी बनी और उसने उससे सोहबत की और खुदावन्द के फ़ज़ल से वह हामिला हुई और उसके बेटा हुआ। ¹⁴ और 'औरतों ने न'ओमी से कहा, खुदावन्द मुबारक हो जिसने आज के दिन तुझ को नज़दीक के करीबी रिश्ते के बग़ैर नहीं छोड़ा और उसका नाम इस्राईल में मशहूर हुआ। ¹⁵ और वह तेरे लिए तेरी जान का बहाल करनेवाला और तेरे बुढ़ापे का पालने वाला होगा क्योंकि तेरी बहू जो तुझ से मुहब्बत रखती है और तेरे लिए सात बेटों से भी बढ़ कर है वह उसकी माँ है। ¹⁶ और न'ओमी ने उस लड़के को लेकर उसे अपनी छाती से लगाया और उसकी दाया बनी। ¹⁷ और उसकी पड़ोसनों ने उस बच्चे को एक नाम दिया और कहने लगीं न'ओमी के लिए बेटा पैदा हुआ इसलिए उन्होंने उसका नाम 'ओबेद रखा। वह यस्सी का बाप था जो दाऊद का बाप है। ¹⁸ और फ़ारस का नसबनामा ये है फ़ारस से हसरोन पैदा हुआ ¹⁹ और हसरोन से राम पैदा हुआ और राम से 'अम्मीनदाब पैदा हुआ ²⁰ और 'अम्मीनदाब से नहसोन पैदा हुआ और नहसोन से सलमोन पैदा हुआ, ²¹ और सलमोन से बो'अज़ पैदा हुआ और बो'अज़ से 'ओबेद पैदा हुआ ²² और ओबेद से यस्सी पैदा हुआ और यस्सी से दाऊद पैदा हुआ।

† 4:11 4:11 इस्राईल का घर इस्राईल के तमाम बारह क़बीलों का बुजुर्ग

‡ 4:12 4:12 एफ़राता के बुजुर्ग

1 समुएल

समूह 1:1-2:26

यह किताब एक का दावा पेश नहीं करती किसी तरह समुएल ने इसे लिखा हो और यकीनी तौर से मालूमात फ़राहम की हो क्योंकि 1 समुएल 1:1 — 24:22, में जो उसकी ज़िन्दगी की कहानी है और तरक्की व नशोनुमा की बाबत खुद के आलावा किसी को मालूम नहीं था — यह बहुत ही मुमकिन है कि समुएल नबी इस किताब के कुछ हिस्से खुद ही लिखे हों — 1 समुएल के लिए दीगर मुमकिन मुज्मून निगार नबी या तारिख़दान नातन और जाद भी हो सकते हैं (1 तवारीख़ 29:29)।

समूह 2:27-10:12

इस के तसनीफ़ की तारीख़ तकरीबन 1050 - 722 क़बल मसीह है।

मुसन्निफ़ ने इस किताब को इस्राईल और यहूदिया के बीच हुकूमत की तकसीम के बाद लिखा यह बात साफ़ है क्योंकि इस्राईल और यहूदिया की बाबत कई एक हवालाजात को फ़रक़ फ़रक़ नाम दिए गए हैं — (1 समुएल 11:8; 17:52; 18:16) (2 समुएल 5:5; 11:11; 12:8; 19:42-43; 24:1,9)।

समूह 10:13-17:26

इस किताब के असली कारिर्दन तकसीम शुदःइसराइल और यहूदिया के अरकान थे जिन्हें जायज़ क़रार देने पर और दाउद के शाही सिलसिले के लिए एक इलाही ज़ाहिरी तनासुब की ज़रूरत थी।

समूह 17:27-29:27

पहला समुएल बनी इजराइल की तारीख़ को कनान के मुल्क में काजियों की हुकुमरानी से बादशाहों के मातहत एक मुत्तहिद कौम की तरफ़ होने को कलमबंद करती है — समुएल आखरी काज़ी बतौर ज़हूर में आता है और बनी इस्राएल के पहले दो बादशाहों यानी साउल और दाउद का मसाह करता है।

समूह 29:28-31:13

तबहुल हालात या कैफ़ियात में।

बैरूनी खाका

1. समुएल की ज़िन्दगी और उसकी ख़िदमत — 1:1-8:22
2. इस्राईल का पहला बादशाह बतौर साऊल की नाकामी — 9:1-12:25
3. बादशाह बतौर साऊल की नाकामी — 13:1-15:35

4. दाउद की ज़िन्दगी — 16:1-20:42

5. इस्राईल का बादशाह बतौर दाउद का तजुर्बा — 21:1-31:13

समूह 31:14-32:17

¹ इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में रामातीम सोफ़ीम का एक शख्स था जिसका नाम इल्काना था। वह इफ़राईमी था और यरोहाम बिन इलीहू बिन तूहू बिन सूफ़ का बेटा था। ² उसके दो बीवियाँ थीं, एक का नाम हन्ना था और दूसरी का फ़निन्ना, और फ़निन्ना के औलाद हुई लेकिन हन्ना बे औलाद थी। ³ यह शख्स हर साल अपने शहर से शीलोह में रब्ब — उल — अफ़वाज के हुज़ूर सज्दा करने कुर्बानी पेश करने को जाता था और एली के दोनों बेटे हुफ़नी और फ़ीन्हास जो खुदावन्द के काहिन थे वहीं रहते थे ⁴ और जिस दिन इल्काना कुर्बानी अदा करता वह अपनी बीवी फ़निन्ना को और उस के सब बेटे बेटियों को हिस्से देता था ⁵ लेकिन हन्ना को *दूना हिस्सा दिया करता था इसलिए कि वह हन्ना को चाहता था लेकिन खुदावन्द ने उसका रहम बंद कर रखवा था ⁶ और उसकी सौत उसे कुढ़ाने के लिए बे तरह छेड़ती थी क्योंकि खुदावन्द ने उसका रहम बंद कर रखवा था ⁷ और चूँकि वह हर साल ऐसा ही करता था जब वह खुदावन्द के घर जाती इसलिए फ़निन्ना उसे छेड़ती थी चुनाँचे वह रोती खाना न खाती थी ⁸ इसलिए उसके खाविंद इल्काना ने उससे कहा, “ऐ हन्ना तू क्यों रोती है और क्यों नहीं खाती और तेरा दिल क्यों ग़मगीन है? क्या मैं तेरे लिए दस बेटों से बढ़ कर नहीं?”

समूह 32:18-33:14

⁹ और जब वह शीलोह में खा पी चुके तो हन्ना उठी; उस वक़्त एली काहिन खुदावन्द की हैकल की चौखट के पास कुर्सी पर बैठा हुआ था ¹⁰ और वह निहायत दुखी थी, तब वह खुदावन्द से दुआ करने और ज़ार ज़ार रोने लगी ¹¹ और उसने मिन्नत मानी और कहा, “ऐ रब्ब — उल — अफ़वाज अगर तू अपनी लौंडी की मुसीबत पर नज़र करे और मुझे याद फ़रमाए और अपनी लौंडी को फ़रामोश न करे और अपनी लौंडी को फ़र्जन्द — ए — नरीना बरख़्शे तो मैं उसे ज़िन्दगी भर के लिए खुदावन्द को सुपुर्द कर दूँगी और उस्तरा उसके सर पर कभी न फ़िरेगा।” ¹² और जब वह खुदावन्द के सामने दुआ कर रही थी, तो एली उसके मुँह को ग़ौर से देख रहा था। ¹³ और हन्ना तो दिल ही दिल में कह रही थी सिर्फ़ उसके होंट हिलते थे लेकिन उसकी आवाज़ नहीं सुनाई देती थी तब एली को गुमान हुआ कि वह नशे में है।

* 1:5 1:5 उसने बहुत प्यार किया, हालाँकि उसने हन्ना से प्यार किया, मगर प्यार का एक हिस्सा ही दे पाएगा

14 इसलिए एली ने उस से कहा, कि तू कब तक नशे में रहेगी? अपना नशा उतार। 15 हन्ना ने जवाब दिया “नहीं ऐ मेरे मालिक, मैं तो ग़मगीन औरत हूँ — मैंने न तो मय न कोई नशा पिया लेकिन खुदावन्द के आगे अपना दिल उँडेलता है। 16 तू अपनी लौंडी को ख़बीस 'औरत न समझ, मैं तो अपनी फ़िक्रों और दुखों के हुज़ूम के ज़रिए' अब तक बोलती रही।” 17 तब एली ने जवाब दिया, “तू सलामत जा और इस्राईल का खुदा तेरी मुराद जो तूने उससे माँगी है पूरी करे।” 18 उसने कहा, “तेरी खादिमा पर तेरे करम की नज़र हो।” तब वह 'औरत चली गई और खाना खाया और फिर उसका चेहरा उदास न रहा।

22222 22 2222222 22 2222-2-222222

19 और सुबह को वह सवेरे उठे और खुदावन्द के आगे सज्दा किया और रामा को अपने घर लोट गये। और इल्काना ने अपनी बीवी हन्ना से मुबाशरत की और खुदावन्द ने उसे याद किया। 20 और ऐसा हुआ कि वक़्त पर हन्ना हामिला हुई और उस के बेटा हुआ और उस ने उसका नाम समुएल रखवा क्योंकि वह कहने लगी, “मैंने उसे खुदावन्द से माँग कर पाया है।” 21 और वह शख्स इल्काना अपने सारे घराने के साथ खुदावन्द के हुज़ूर सालाना कुर्बानी पेश करने और अपनी मिन्नत पूरी करने को गया। 22 लेकिन हन्ना न गई क्योंकि उसने अपने खाविंद से कहा, जब तक लड़के का दूध छुड़ाया न जाए मैं यहीं रहूँगी और तब उसे लेकर जाऊँगी ताकि वह खुदावन्द के सामने हाज़िर हो और फिर हमेशा वहीं रहे 23 और उस के खाविन्द इल्काना ने उससे कहा, जो तुझे अच्छा लगे वह कर। जब तक तू उसका दूध न छुड़ाये ठहरी रह सिर्फ़ इतना हो कि खुदावन्द अपनी बात को बरकरार रखे इसलिए वह 'औरत ठहरी रही और अपने बेटे को दूध छुड़ाने के वक़्त तक पिलाती रही। 24 और जब उस ने उसका दूध छुड़ाया तो उसे अपने साथ लिया और तीन बछड़े और एक एफ़ा आटा मय की एक मशक अपने साथ ले गई, और उस लड़के को शीलोह में खुदावन्द के घर लाई, और वह लड़का बहुत ही छोटा था 25 और उन्होंने एक बछड़े को ज़बह किया और लड़के को एली के पास लाए: 26 और वह कहने लगी, “ऐ मेरे मालिक तेरी जान की क़सम ऐ मेरे मालिक मैं वही 'औरत हूँ जिसने तेरे पास यहीं खड़ी होकर खुदावन्द से दुआ की थी। 27 मैंने इस लड़के के लिए दुआ की थी

और खुदावन्द ने मेरी मुराद जो मैंने उससे माँगी पूरी की। 28 इसी लिए मैंने भी इसे खुदावन्द को दे दिया; यह अपनी ज़िन्दगी भर के लिए खुदावन्द को दे दिया गया है” तब उसने वहाँ खुदावन्द के आगे सिज्दा किया।

2

22222 22 2222222222222 22 2222

1 और हन्ना ने दुआ की और कहा, मेरा दिल खुदावन्द में खुश है: मेरा *सींग खुदावन्द के तुफ़ैल से ऊँचा हुआ। मेरा मुँह मेरे दुश्मनों पर खुल गया है क्योंकि मैं तेरी नजात से खुश हूँ। 2 “खुदावन्द की तरह कोई पाक नहीं क्योंकि तेरे सिवा और कोई है ही नहीं और न कोई चटान है जो हमारे खुदा की तरह हो 3 इस क़दर गुरूर से और बातें न करो और बड़ा बोल तुम्हारे मुँह से न निकले; क्योंकि खुदावन्द खुदा — ए — 'अलीम है, और 'आमाल का तोलने वाला है। 4 ताक़तवरों की कमाने टूट गई और जो लड़खड़ाते थे वह ताक़त से कमर बस्ता हुए। 5 वह जो आसूदा थे रोटी की खातिर मज़दूर बनें और जो भूके थे ऐसे न रहे, बल्कि जो बाँझ थी उस के साथ हुए, और जिसके पास बहुत बच्चे हैं वह घुलती जाती है। 6 खुदावन्द मारता है और जिलाता है; वही क़ब्र में उतारता और उससे निकालता है। 7 खुदावन्द ग़रीब कर देता और दौलतमंद बनाता है, वही पस्त करता और बुलंद भी करता है। 8 वह ग़रीब को खाक पर से उठाता, और कंगाल को घूरे में से निकाल खड़ा करता है ताकि इनको शहज़ादों के साथ बिठाए, और जलाल के तख़्त का वारिस बनाए; क्योंकि ज़मीन के सुतून खुदावन्द के हैं उसने दुनिया को उन ही पर काईम किया है। 9 वह अपने मुक़दसों के पाँव को संभाले रहेगा, लेकिन शरीर अँधेरे में खामोश किए जायेंगे क्योंकि ताक़त ही से कोई फ़तह नहीं पाएगा। 10 जो खुदावन्द से झगड़ते हैं वह टुकड़े टुकड़े कर दिए जाएँगे; वह उन के खिलाफ़ आस्मान में गरजेगा खुदावन्द ज़मीन के किनारों का इंसफ़ करेगा, वह अपने बादशाह को ताक़त बख़्शेगा, और अपने †मम्सूह के †सींग को बुलंद करेगा।” 11 तब इल्काना रामा को अपने घर चला गया; और एली काहिन के सामने वह लड़का खुदावन्द की ख़िदमत करने लगा।

2222 22 2222222 22222

12 और एली के बेटे बहुत शरीर थे; उन्होंने खुदावन्द को न पहचाना। 13 और काहिनों का दस्तूर लोगों के साथ

† 1:16 1:16 बलियालकी बेटी, इन हवालाज़ात को भी देखें: 2:12; 10:27 25:17; 30:22, इब्रानी में बलियाल की बेटी का मतलब है बदकार या शैतान, देखें 2 कुरिन्थि 6:15 ‡ 1:19 1:19 खुदा ने उसकी दुआ का जवाब दिया § 1:28 1:28 उन्होंने * 2:1 2:1 ताक़त † 2:10 2:10 मम्सूहका मतलब है मसह किया हुआ ‡ 2:10 2:10 सींग ज़ोर या ताक़त को दिखाता है § 2:12 2:12 बलियाल जैसे

यह था, कि जब कोई शख्स कुर्बानी करता था तो काहिन का नोकर गोश्त उबालने के वक़्त एक सहशखा काँटा अपने हाथ में लिए हुए आता था; ¹⁴ और उसको कढ़ाह या दिग्चे या हांडे या हांडी में डालता और जितना गोश्त उस काँटे में लग जाता उसे काहिन अपने आप लेता था। यूँ ही वह शीलोह में सब इस्राईलियों से किया करते थे जो वहाँ आते थे ¹⁵ बल्कि चर्बी जलाने से पहले काहिन का नोकर आ मौजूद होता, और उस शख्स से जो कुर्बानी पेश करता यह कहने लगता था, “काहिन के लिए कबाब के वास्ते गोश्त दे, क्योंकि वह तुझ से उबला हुआ गोश्त नहीं बल्कि कच्चा लेगा।” ¹⁶ और अगर वह शख्स यह कहता कि अभी वह चर्बी को ज़रूर जलायेंगे तब जितना तेरा जी चाहे ले लेना “तो वह उसे जवाब देता नहीं तू मुझे अभी दे नहीं तो मैं छीन कर ले जाऊँगा।” ¹⁷ इसलिए उन जवानों का गुनाह खुदावन्द के सामने बहुत बड़ा था क्योंकि लोग खुदावन्द की कुर्बानी से नफ़रत करने लगे थे। ¹⁸ लेकिन समुएल जो लड़का था, कतान का अफूद पहने हुए खुदावन्द के सामने खिदमत करता था। ¹⁹ और उस की माँ उस के लिए एक छोटा सा जुब्बा बनाकर साल ब साल लाती जब वह अपने शौहर के साथ सालाना कुर्बानी पेश करने आती थी। ²⁰ और एली ने इल्काना और उस की बीवी को दुआ दी और कहा, “खुदावन्द तुझको इस 'औरत से उस क़र्ज़ के बदले में जो खुदावन्द को दिया गया नसल दे।” फिर वह अपने घर गये। ²¹ और खुदावन्द ने हन्ना पर नज़र की और वह हामिला हुई, और उसके तीन बेटे और दो बेटियाँ हुई, और वह लड़का समुएल खुदावन्द के सामने बढ़ता गया। ²² एली बहुत बुढ़ा हो गया था, और उसने सब कुछ सुना कि उसके बेटे सारे इस्राईल से क्या किया करते हैं और उन 'औरतों से जो खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े पर खिदमत करती थी हम आगोशी करते हैं। ²³ और उस ने उन से कहा, तुम ऐसा क्यों करते हो? क्योंकि मैं तुम्हारी बदज़ातियाँ पूरी क़ौम से सुनता हूँ? ²⁴ नहीं मेरे बेटों ये अच्छी बात नहीं जो मैं सुनता हूँ; तुम खुदावन्द के लोगों से नाफ़रमानी कराते हो। ²⁵ अगर एक आदमी दूसरे का गुनाह करे तो *खुदा उसका इंसफ़ करेगा लेकिन अगर आदमी खुदावन्द का गुनाह करे तो उस की शफ़ा'अत क़ौन करेगा? बावजूद इसके उन्होंने अपने बाप का कहना न माना; क्योंकि खुदावन्द उनको मार डालना चाहता था। ²⁶ और वह लड़का समुएल बढ़ता गया और खुदावन्द और इंसान दोनों का मक़बूल था।

222 22 2222222 22 2222 22222222 2222

²⁷ तब एक नबी एली के पास आया और उससे कहने लगा, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है क्या मैं तेरे आबाई खानदान पर जब वह मिस्र में फ़िर'औन के खानदान की गुलामी में था ज़ाहिर नहीं हुआ? ²⁸ और क्या मैंने उसे बनी इस्राईल के सब कबीलों में से चुन न लिया, ताकि वह मेरा काहिन हो और मेरे मज़बह के पास जाकर खुशबू जलाये और मेरे सामने अफूद पहने और क्या मैंने सब कुर्बानियाँ जो बनी इस्राईल आग से अदा करते हैं तेरे बाप को न दी? ²⁹ तब तुम क्यों मेरे उस कुर्बानी और हृदिये को जिनका हुक्म मैंने अपने घर में दिया लात मारते हो? और क्यों तू अपने बेटों की मुझ से ज्यादा 'इज़्ज़त करता है, ताकि तुम मेरी क़ौम इस्राईल के अच्छे से अच्छे हृदियों को खाकर मोटे बनो। ³⁰ इसलिए खुदावन्द इस्राईल का खुदा फ़रमाता है कि मैंने तो कहा, था कि तेरा घराना और तेरे बाप का घराना हमेशा मेरे सामने चलेगा लेकिन अब खुदावन्द फ़रमाता है कि यह बात अब मुझ से दूर हो, क्योंकि वह जो मेरी 'इज़्ज़त करते हैं मैं उन की 'इज़्ज़त करूँगा लेकिन वह जो मेरी हिक़ारत करते हैं बेक़दर होंगे ³¹ देख वह दिन आते हैं कि मैं तेरा बाज़ू और तेरे बाप के घराने का बाज़ू काट डालूँगा, कि तेरे घर में कोई बुढ़ा होने न पाएगा। ³² और तू मेरे घर की मुसीबत देखेगा बावजूद उस सारी दौलत के जो खुदा इस्राईल को देगा और तेरे घर में कभी कोई बुढ़ा होने न पाएगा ³³ और तेरे जिस आदमी को मैं अपने मज़बह से काट नहीं डालूँगा वह तेरी आँखों को घुलाने और तेरे दिल को दुख देने के लिए रहेगा और तेरे घर की सब बढ़ती अपनी भरी जवानी में मर मिटेगी। ³⁴ और जो कुछ तेरे दोनों बेटों हुफ़नी फ़ीन्हास पर नाज़िल होगा वही तेरे लिए निशान ठहरेगा; वह दोनों एक ही दिन मर जाएँगे। ³⁵ और मैं अपने लिए एक वफ़ादार काहिन पैदा करूँगा जो सब कुछ मेरी मर्ज़ी और मंशा के मुताबिक़ करेगा, और मैं उस के लिए एक पायदार घर बनाऊँगा और वह हमेशा मेरे मम्सूह के आगे आगे चलेगा ³⁶ और ऐसा होगा की हर एक शख्स जो तेरे घर में बच रहेगा, एक टुकड़े चाँदी और रोटी के एक टुकड़े के लिए उस के सामने आकर सिज्दा करेगा और कहेगा, कि कहानत का कोई काम मुझे दीजिए ताकि मैं रोटी का निवाला खा सकूँ।

3

* 2:25 2:25 इस को क़ाज़ी लोग पढ़ें, खुदा † 2:31 2:31 ताक़्त

११११११११११ ११ ११११११ ११ ११११ १११११

1 और वह लड़का समुएल एली के सामने खुदावन्द की खिदमत करता था, और उन दिनों खुदावन्द का कलाम गिराँकदर था कोई ख्वाब ज़ाहिर न होता था। 2 और उस वक़्त ऐसा हुआ कि जब एली अपनी जगह लेटा था उस की आँखें धुन्दलाने लगी थी, और वह देख नहीं सकता था। 3 और खुदा का चराग़ अब तक बुझा नहीं था और समुएल खुदावन्द की हैकल में जहाँ खुदा का संदूक़ था लेटा हुआ था 4 तो खुदावन्द ने समुएल को पुकारा; उसने कहा, “मैं हाज़िर हूँ।” 5 और वह दौड़ कर एली के पास गया और कहा, तूने मुझे पुकारा इसलिए मैं हाज़िर हूँ “उसने कहा, मैंने नहीं पुकारा फिर लेट जा” इसलिए वह जाकर लेट गया। 6 और खुदावन्द ने फिर पुकारा “समुएल।” समुएल उठ कर एली के पास गया और कहा, “तूने मुझे पुकारा इसलिए मैं हाज़िर हूँ।” उसने कहा, “ऐ, मेरे बेटे मैंने नहीं पुकारा; फिर लेट जा।” 7 और समुएल ने अभी खुदावन्द को नहीं पहचाना था और न खुदावन्द का कलाम उस पर ज़ाहिर हुआ था। 8 फिर खुदावन्द ने तीसरी दफ़ा समुएल को पुकारा और वह उठ कर एली के पास गया और कहा, तूने मुझे पुकारा इसलिए मैं हाज़िर हूँ “तब एली जान गया कि खुदावन्द ने उस लड़के को पुकारा। 9 इसलिए एली ने समुएल से कहा, जा लेट रह और अगर वह तुझे पुकारे तो तू कहना ऐ खुदावन्द फ़रमा; क्योंकि तेरा बन्दा सुनता है।” तब समुएल जाकर अपनी जगह पर लेट गया 10 तब खुदावन्द आ मौजूद हुआ, और पहले की तरह पुकारा “समुएल! समुएल! समुएल ने कहा, फ़रमा, क्योंकि तेरा बन्दा सुनता है।” 11 खुदावन्द ने समुएल से कहा, “देख मैं इस्राईल में ऐसा काम करने पर हूँ जिस से हर सुनने वाले के कान भन्ना जाएँगे। 12 उस दिन मैं एली पर सब कुछ जो मैंने उस के घराने के हक़ में कहा है शुरू से आखिर तक पूरा करूँगा 13 क्योंकि मैं उसे बता चुका हूँ कि मैं उस बदकारी की वजह से जिसे वह जानता है हमेशा के लिए उसके घर का फ़ैसला करूँगा क्योंकि उसके *बेटों ने अपने ऊपर ला'नत बुलाई और उसने उनको न रोका। 14 इसी लिए एली के घराने के बारे में मैंने क्रसम खाई कि एली के घराने की बदकारी न तो कभी किसी ज़बीहा से साफ़ होगी न हदिये से।”

११११११ ११ ११११११११११ ११ १११११ ११११११

15 और समुएल सुबह तक लेटा रहा; तब उसने खुदावन्द के घर के दरवाज़े खोले और समुएल एली पर

ख्वाब ज़ाहिर करने से डरा। 16 तब एली ने समुएल को बुलाकर कहा, ऐ मेरे बेटे समुएल “उसने कहा, मैं हाज़िर हूँ।” 17 तब उसने पूछा वह “क्या बात है जो खुदावन्द ने तुझ से कही हैं? मैं तेरी मिन्नत करता हूँ उसे मुझ से पोशीदा न रख, अगर तू कुछ भी उन बातों में से जो उसने तुझ से कहीं हैं छिपाए तो खुदा तुझ से ऐसा ही करे बल्कि उससे भी ज्यादा।” 18 तब समुएल ने उसको पूरा हाल बताया और उससे कुछ न छिपाया, उसने कहा, “वह खुदावन्द है जो वह भला जाने वह करे।” 19 और समुएल बड़ा होता गया और खुदावन्द उसके साथ था और उसने †उसकी बातों में से किसी को मिट्टी में मिलने न दिया। 20 और सब बनी इस्राईल ने दान से बैरसबा तक जान लिया कि समुएल खुदावन्द का नबी मुकर्रर हुआ। 21 और खुदावन्द शीलोह में फिर ज़ाहिर हुआ, क्यूँकि खुदावन्द ने अपने आप को सैला में समुएल पर अपने कलाम के ज़रिए से ज़ाहिर किया।

4

1 और समुएल की बात सब इस्राईलीयों के पास पहुँची,

११११११११११११११ ११ ११११ ११ १११११११ ११ ११११११

और इस्राईली फ़िलिस्तियों से लड़ने को निकले और डबन-अज़र के आस पास डेरे लगाए और फ़िलिस्तियों ने अफ़्रीक़ में खेमे खड़े किए। 2 और फ़िलिस्तियों ने इस्राईल के मुक्काबिले के लिए सफ़ आराई की और जब वह इकट्ठा लड़ने लगे तो इस्राईलियों ने फ़िलिस्तियों से शिकस्त खाई; और उन्होंने उनके लश्कर में से जो मैदान में था क़रीबन चार हज़ार आदमी क़त्ल किए। 3 और जब लोग लश्कर गाह में फिर आए तो इस्राईल के बुज़ुर्गों ने कहा, “कि आज खुदावन्द ने हमको फ़िलिस्तियों के सामने क्यूँ शिकस्त दी आओ हम खुदावन्द के 'अहद का संदूक़ शीलोह से अपने पास ले आयें ताकि *वह हमारे बीच आकर हमको हमारे दुश्मनों से बचाए।” 4 तब उन्होंने शीलोह में लोग भेजे, और वह करुबियों के ऊपर बैठने वाले रब्ब — उल — अफ़वाज़ के 'अहद के संदूक़ को वहाँ से ले आए और एली के दोनों बेटे हुफ़नी और फ़ीन्हास खुदा के 'अहद का संदूक़ के साथ वहाँ हाज़िर थे। 5 और जब खुदावन्द के 'अहद का संदूक़ लश्कर गाह में आ पहुँचा तो सब इस्राईली ऐसे ज़ोर से ललकारने लगे, कि ज़मीन गूँज उठी। 6 और फ़िलिस्तियों ने जो ललकारने की आवाज़ सुनी तो वह कहने लगे, कि इन “इब्रानियों की लश्कर गाह में इस

* 3:13 3:13 उसके बेटों ने खुदा के खिलाफ़ तकफ़ीरकी (कुफ़रबकना)

† 3:19 3:19 उसकी को अपनी करें * 4:3 4:3 यहू

बड़ी ललकार के शोर के क्या मा'ना हैं?" फिर उनको मा'लूम हुआ कि खुदावन्द का संदूक लश्कर गाह में आया है। ⁷ तब फ़िलिस्ती डर गए क्योंकि वह कहने लगे, कि खुदा लश्कर गाह में आया है और उन्होंने कहा, "कि हम पर बर्बादी है इस लिए कि इस से पहले ऐसा कभी नहीं हुआ। ⁸ हम पर बर्बादी है, ऐसे ज़बरदस्त मा'बूदों के हाथ से हमको कौन बचाएगा? यह वहीं मा'बूद हैं जिन्होंने मिसिरियों को वीराने में हर क्रिस्म की बला से मारा। ⁹ ऐ फ़िलिस्तियों तुम मज़बूत हो और मर्दानगी करो ताकि तुम 'इब्रानियों के गुलाम न बनो जैसे वह तुम्हारे बने बल्कि मर्दानगी करो और लड़ो।" ¹⁰ और फ़िलिस्ती लड़े और बनी इस्राईल ने शिकस्त खाई और हर एक अपने डेरे को भागा, और वहाँ बहुत बड़ी ख़ूँजड़ी हुई क्योंकि तीस हज़ार इस्राईली पियादे वहाँ मारे गए। ¹¹ और खुदावन्द का संदूक छिन गया, और 'एली के दोनों बेटे हुफ़्नी और फ़ीन्हास मारे गये।

२२२ २२ २२२

¹² और बिनयमीन का एक आदमी लश्कर में से दौड़ कर अपने कपड़े फाड़े और सर पर खाक डाले हुए उसी दिन शीलोह में आ पहुँचा। ¹³ और जब वह पहुँचा तो एली रास्ते के किनारे कुर्सी पर बैठा इंतज़ार कर रहा था क्योंकि उसका दिल खुदा के संदूक के लिए काँप रहा था और जब उस शख्स ने शहर में आकर हाल सुनाया, तो सारा शहर चिल्ला उठा। ¹⁴ और एली ने चिल्लाने की आवाज़ सुनकर कहा, इस हुल्लड़ की आवाज़ के क्या माने हैं "और उस आदमी ने जल्दी की और आकर एली को हाल सुनाया। ¹⁵ और एली अठानवे साल का था और उसकी आँखें रह गई थीं और उसे कुछ नहीं सूझता था। ¹⁶ तब उस शख्स ने एली से कहा, मैं फ़ौज में से आता हूँ और मैं आज ही फ़ौज के बीच से भागा हूँ, उसने कहा, ऐ मेरे बेटे क्या हाल रहा?" ¹⁷ उस खबर लाने वाले ने जवाब दिया "इस्राईली फ़िलिस्तियों के आगे से भागे और लोगों में भी बड़ी ख़ूँजड़ी हुई और तेरे दोनों बेटे हुफ़्नी और फ़ीन्हास भी मर गये और खुदा का संदूक छिन गया।" ¹⁸ जब उसने खुदा के संदूक का ज़िक्र किया तो वह कुर्सी पर से पछाड़ खाकर फाटक के किनारे गिरा, और उसकी गर्दन टूट गई और वह मर गया क्योंकि वह बुढ़ा और भारी आदमी था, वह चालीस बरस बनी इस्राईल का काज़ी रहा। ¹⁹ और उसकी बहू, फ़ीन्हास की बीवी हमल से थी, और उसके जनने का वक्त नज़दीक था और जब उसने यह खबरें सुनीं कि खुदा का संदूक

छिन गया और उसका ससुर और शौहर मर गये तो वह झुक कर जनी क्योंकि दर्द ऐ ज़िह उसके लग गया था। ²⁰ और उसने उसके मरते वक्त उन 'औरतों ने जो उस के पास खड़ी थीं उसे कहा, "मत डर क्योंकि तेरे बेटा हुआ है।" लेकिन उसने न जवाब दिया और न कुछ तवज्जुह की। ²¹ और उसने उस लड़के का नाम यकबोद रखवा और कहने लगी, "कि हशमत इस्राईल से जाती रही।" इसलिए कि खुदा का संदूक छिन गया था, और उसका ससुर और शौहर जाते रहे थे। ²² इसलिए उसने कहा, "हशमत इस्राईल से जाती रही, क्योंकि खुदा का संदूक छिन गया है।"

5

२२२२२२२२२२ २२२ २२२२२२२

¹ और फ़िलिस्तियों ने खुदा का संदूक छिन लिया और वह उसे इबन-'अज़र से अशदूद को ले गए; ² और फ़िलिस्ती खुदा के संदूक को लेकर उसे दजोन के घर में लाए और *दजोन के पास उसे रखवा; ³ और अशदूदी जब सुबह को सवेरे उठे, तो देखा कि दजोन खुदावन्द के संदूक के आगे औंधे मुहँ ज़मीन पर गिरा पड़ा है। तब उन्होंने दजोन को लेकर उसी की जगह उसे फिर खड़ा कर दिया। ⁴ फिर वह जो दूसरे दिन की सुबह को सवेरे उठे, तो देखा कि दजोन खुदावन्द के संदूक के आगे औंधे मुहँ ज़मीन पर गिरा पड़ा है, और दजोन का सर और उसकी हथेलियाँ दहलीज़ पर कटी पड़ी थीं, सिर्फ़ दजोन का धड़ ही धड़ रह गया था; ⁵ तब दजोन के पुजारी और जितने दजोन के घर में आते हैं, आज तक अशदूद में दजोन की दहलीज़ पर पाँव नहीं रखते। ⁶ तब खुदावन्द का हाथ अशदूदियों पर भारी हुआ, और वह उनको हलाक करने लगा, और अशदूद और उसकी 'इलाक़े के लोगों को गिल्टियों से मारा। ⁷ और अशदूदियों ने जब यह हाल देखा तो कहने लगे, "कि इस्राईल के खुदा का संदूक हमारे साथ न रहे, क्योंकि उसका हाथ बुरी तरह हम पर और हमारे मा'बूद दजोन पर है।" ⁸ तब उन्होंने फ़िलिस्तियों के सब सरदारों को बुलवा कर अपने यहाँ जमा किया और कहने लगे, "हम इस्राईल के खुदा के संदूक को क्या करें?" उन्होंने जवाब दिया, "कि इस्राईल के खुदा का संदूक जात को पहुँचाया जाए।" इसलिए वह इस्राईल के खुदा के संदूक को वहाँ ले गए। ⁹ और जब वह उसे ले गए तो ऐसा हुआ कि खुदावन्द का हाथ उस शहर के खिलाफ़ ऐसा उठा कि उस में बड़ी भारी हल चल मच गई; और उसने उस शहर के लोगों को छोटे से बड़े तक मारा और

उनके गिल्टियाँ निकलने लगीं। ¹⁰ जब उन्होंने खुदा का संदूक 'अकरून को भेज दिया। और जैसे ही खुदा का संदूक अकरून को पहुँचा, अकरूनी चिल्लाने लगे, “वह इस्राईल के खुदा का संदूक हम में इसलिए लाए हैं, कि हमको और हमारे लोगों को मरवा डालें।” ¹¹ तब उन्होंने फ़िलिस्तिनों के सरदारों को बुलवा कर जमा किया और कहने लगे, “कि इस्राईल के खुदा के संदूक को खाना कर दो कि वह फिर अपनी जगह पर जाए, और हमको और हमारे लोगों को मार डालने न पाए।” क्योंकि वहाँ सारे शहर में मौत की हलचल मच गई थी, और खुदा का हाथ वहाँ बहुत भारी हुआ। ¹² और जो लोग मरे नहीं वह गिल्टियों के मारे पड़े रहे, और शहर की फ़रियाद आसमान तक पहुँची।

6

?????????????? ?? ??????? ?? ???????

¹ इसलिए खुदावन्द का संदूक सात महीने तक फ़िलिस्तिनों के मुल्क में रहा। ² तब फ़िलिस्तिनों ने काहिनों और नजूमियों को बुलवाया और कहा, “कि हम खुदावन्द के इस संदूक को क्या करें? हमको बताओ कि हम क्या साथ कर के उसे उसकी जगह भेजें?” ³ उन्होंने कहा, “कि अगर तुम इस्राईल के खुदा के संदूक को वापस भेजते हो, तो उसे खाली न भेजना बल्कि जुर्म की कुर्बानी उसके लिए जरूर ही साथ करना तब तुम शिफ़ा पाओगे और तुमको मा'लूम हो जाएगा कि वह तुम से किस लिए अलग नहीं होता।” ⁴ उन्होंने पूछा कि वह जुर्म की कुर्बानी जो हम उसको दें क्या हो उन्होंने जवाब दिया, “कि फ़िलिस्ती सरदारों के शुमार के मुताबिक़ सोने की पाँच गिल्टियाँ और सोने की पाँच चुहियाँ क्योंकि तुम सब और तुम्हारे सरदार दोनों एक ही दुख में मुब्तिला हुए। ⁵ इसलिए तुम अपनी गिल्टियों की मूरतें और उन चुहियों की मूरतें, जो मुल्क को खराब करती हैं बनाओ और इस्राईल के खुदा की बड़ाई करो; शायद यूँ वह तुम पर से और तुम्हारे मा'बूदों पर से और तुम्हारे मुल्क पर से अपना हाथ हल्का कर ले।” ⁶ तुम क्यों अपने दिल को सख़्त करते हो, जैसे मिस्रियों ने और फ़िर'औन ने अपने दिल को सख़्त किया? जब उसने उनके बीच 'अजीब काम किए, तो क्या उन्होंने लोगों को जाने न दिया और क्या वह चले न गये? ⁷ अब तुम एक नई गाड़ी बनाओ, और दो दूध वाली गायों को जिनके जुआ न लगा हो लो, और उन गायों को गाड़ी में जोतो और उनके बच्चों को घर लौटा लाओ। ⁸ और खुदावन्द का संदूक लेकर उस गाड़ी

पर रखो, और सोने की चीज़ों को जिनको तुम जुर्म की कुर्बानी के तौर पर साथ करोगे एक सन्दूक में करके उसके पहलू में रख दो और उसे खाना न कर दो कि चला जाए। ⁹ और देखते रहना, अगर वह अपनी ही सरहद के रास्ते बैत शम्स को जाए, तो उसी ने हम पर यह बलाए 'अजीम भेजी और अगर नहीं तो हम जान लेंगे कि उसका हाथ हम पर नहीं चला, बल्कि यह हादसा जो हम पर हुआ इत्तिफ़ाकी था।” ¹⁰ तब उन लोगों ने ऐसा ही किया, और दो दूध वाली गायें लेकर उनको गाड़ी में जोता और उनके बच्चों को घर में बन्द कर दिया। ¹¹ और खुदावन्द के सन्दूक और सोने की चुहियों और अपनी गिल्टियों की मूरतों के सन्दूक को गाड़ी पर रख दिया। ¹² उन गायों ने बैत शम्स का सीधा रास्ता लिया, वह सड़क ही सड़क डकारती गई, और दहने या बाएँ हाथ न मुड़ी, और फ़िलिस्ती सरदार उनके पीछे — पीछे बैत शम्स की सरहद तक गये। ¹³ और बैत शम्स के लोग वादी में गेहूँ की फ़सल काट रहे थे। उन्होंने ने जो आँख उठाई तो संदूक को देखा, और देखते ही खुश हो गए। ¹⁴ और गाड़ी बैत शम्सी यशौ के खेत में आकर वहाँ खड़ी हो गई, जहाँ एक बड़ा पत्थर था। तब उन्होंने गाड़ी की लकड़ियों को चीरा और गायों को सोखतनी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश किया। ¹⁵ और लावियों ने खुदावन्द के संदूक को और उस संदूक को जो उसके साथ था, जिसमें सोने की चीज़ें थीं, नीचे उतारा और उनको उस बड़े पत्थर पर रखा। और बैत शम्स के लोगों ने उसी दिन खुदावन्द के लिए सोखतनी कुर्बानियाँ पेश कीं और ज़बीहे पेश किए। ¹⁶ जब उन पाँचों फ़िलिस्ती सरदारों ने यह देख लिया तो वह उसी दिन अकरून को लौट गए। ¹⁷ सोने की गिल्टियाँ जो फ़िलिस्तिनों ने जुर्म की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द को पेश कीं वह यह हैं, एक अशद़ की तरफ़ से, एक गज्ज़ा की तरफ़ से, एक अस्क़लोन की तरफ़ से, एक जात की तरफ़ से, और एक अकरून की तरफ़ से। ¹⁸ और वह सोने की चुहियाँ फ़िलिस्तिनों के उन पाँचों सरदारों के शहरों के शुमार के मुताबिक़ थीं, जो फ़सीलदार शहरों और दिहात के मालिक उस बड़े पत्थर तक थे जिस पर उन्होंने खुदावन्द के संदूक को रखा था जो आज के दिन तक बैत शम्सी यशौ के खेत में मौजूद है।

?????????? ?? ??????? ?? ??????? ?? ?? ???????

¹⁹ और उसने बैत शम्स के लोगों को मारा इस लिए कि उन्होंने खुदावन्द के संदूक के अंदर झाँका था तब उसने उनके *पचास हज़ार और सत्तर आदमी मार डाले,

† 5:11 5:11 खुदा उनको सख़्ती से सज़ा दे रहा था * 6:19 6:19 कुछ इब्रानी तूमार कहते हैं 70

कुछ यह लोग तुझ से कहते हैं, तू उसको मान क्योंकि उन्होंने तेरी नहीं बल्कि मेरी हिकारत की है कि मैं उनका बादशाह न रहूँ।⁸ जैसे काम वह उस दिन से जब से मैं उनको मिस्र से निकाल लाया आज तक करते आए हैं, कि मुझे छोड़ करके और मा'बूदों की इबादत करते रहे हैं, वैसा ही वह तुझ से करते हैं।⁹ इसलिए तू उसकी बात मान, तो भी तू संजीदगी से उनको खूब जता दे और उनको बता भी दे, कि जो बादशाह उनपर हुकूमत करेगा उसका तरीका कैसा होगा।”

१० और समुएल ने उन लोगों को जो उससे बादशाह के तालिब थे, खुदावन्द की सब बातें कह सुनाई।¹¹ और उसने कहा, कि जो बादशाह तुम पर हुकूमत करेगा उसका तरीका यह होगा, कि वह तुम्हारे बेटों को लेकर अपने रथों के लिए और अपने रिसाले में नौकर रखेगा और वह उसके रथों के आगे आगे दौड़ेंगे।¹² और वह उनको हजार — हजार के सरदार और पचास — पचास के जमा'दार बनाएगा और कुछ से हल जुतवायेगा और फ़सल कटवाएगा और अपने लिए जंग के हथियार और अपने रथों के साज़ बनवाएगा।¹³ और तुम्हारी बेटियों को लेकर गंधिन और बावरचिन और नानबज़ बनाएगा।¹⁴ और तुम्हारे खेतों और ताकिस्तानों और ज़ैतून के बाग़ों को जो अच्छे से अच्छे होंगे लेकर अपने खिदमत गारों को 'अता करेगा,¹⁵ और तुम्हारे खेतों और ताकिस्तानों का दसवाँ हिस्सा लेकर अपने खोजों और खादिमों को देगा।¹⁶ और तुम्हारे नौकर चाकरों और लौडियों और तुम्हारे खूबसूरत *जवानों और तुम्हारे गदहों को लेकर अपने काम पर लगाएगा।¹⁷ और वह तुम्हारी भेड़ बकरियों का भी दसवाँ हिस्सा लेगा इस लिए तुम उसके गुलाम बन जाओगे।¹⁸ और तुम उस दिन उस बादशाह की वजह से जिसे तुमने अपने लिए चुना होगा, फ़रियाद करोगे पर उस दिन खुदावन्द तुम को जवाब न देगा।¹⁹ तो भी लोगों ने समुएल की बात न सुनी और कहने लगे, “नहीं हम तो बादशाह चाहते हैं जो हमारे ऊपर हो।²⁰ ताकि हम भी और सब क्रौमों की तरह हों और हमारा बादशाह हमारी 'अदालत करे, और हमारे आगे आगे चले और हमारी तरफ़ से लड़ाई करे।”²¹ और समुएल ने लोगों की सब बातें सुनीं और उनको खुदावन्द के कानों तक पहुँचाया।²² और खुदावन्द ने समुएल को फ़रमाया तू उनकी बात मान और उनके लिए एक बादशाह मुकर्रर कर तब समुएल ने इस्राईल के

लोगों से कहा कि तुम सब अपने अपने शहर को चले जाओ।

9

१ और बिनयमीन के कबीले का एक शख्स था जिसका नाम क्रीस, बिन अबीएल, बिन सरोर, बिन बकोरत, बिन अफ़ीख़ था वह एक बिनयमीनी का बेटा और ज़बरदस्त सूरमा था।² उसका एक जवान और खूबसूरत बेटा था जिसका नाम साऊल था, और बनी — इस्राईल के बीच उससे खूबसूरत कोई शख्स न था। वह ऐसा लम्बा था कि लोग उसके कंधे तक आते थे।³ और साऊल के बाप क्रीस के गंधे खी गए, इसलिए क्रीस ने अपने बेटे साऊल से कहा, “कि नौकरों में से एक को अपने साथ ले और उठ कर गंधों को ढूँड ला।”⁴ इसलिए वह इफ़राइम के पहाड़ी मुल्क और सलीसा की सर ज़मीन से होकर गुज़रा, लेकिन वह उनको न मिले। तब वह सा'लीम की सर ज़मीन में गए और वह वहाँ भी न थे, फिर वह बिनयमीनी के मुल्क में आए लेकिन उनको वहाँ भी न पाया।⁵ जब वह सूफ़ के मुल्क में पहुँचे तो साऊल अपने नौकर से जो उसके साथ था कहने लगा, “आ हम लौट जाएँ, ऐसा न हो कि मेरा बाप गंधों की फ़िक्र छोड़ कर हमारी फ़िक्र करने लगे।”⁶ उसने उससे कहा, “देख इस शहर में खुदा एक नबी है जिसकी बड़ी 'इज़ज़त होती है, जो कुछ वह कहता है, वह सब ज़रूर ही पूरा होता है। इसलिए हम उधर चलें, शायद वह हमको बता दे कि हम किधर जाएँ।”⁷ साऊल ने अपने नौकर से कहा, “लेकिन देख अगर हम वहाँ चलें तो उस शख्स के लिए क्या लेते जाएँ? रोटियाँ तो हमारे तोशेदान की हो चुकीं और कोई चीज़ हमारे पास है नहीं, जिसे हम उस नबी को पेश करें हमारे पास है किया?”⁸ नौकर ने साऊल को जवाब दिया, “देख, *पाव मिस्काल चाँदी मेरे पास है, उसी को मैं उस नबी को दूँगा ताकि वह हमको रास्ता बता दे।”⁹ अगले ज़माने में इस्राईलियों में जब कोई शख्स खुदा से मशवरा करने जाता तो यह कहता था, कि आओ, हम ग़ैबबीन के पास चलें, क्योंकि जिसको अब नबी कहते हैं, उसको पहले ग़ैबबीन कहते थे।¹⁰ तब साऊल ने अपने नौकर से कहा, तू ने क्या खूब कहा, आ हम चलें इस लिए वह उस शहर को जहाँ वह नबी था चले।¹¹ और उस शहर की तरफ़ टीले पर चढ़ते हुए, उनको कई जवान लड़कियाँ मिलीं जो पानी भरने जाती थीं; उन्होंने उन से पूछा, “क्या ग़ैबबीन यहाँ है?”¹² उन्होंने उनको जवाब दिया, “हाँ है, देखो वह तुम्हारे

* 8:16 8:16 मवेशी * 9:8 9:8 3 ग्राम का चाँदी का एक छोटा सिक्का

सामने ही है, इसलिए जल्दी करो क्योंकि वह आज ही शहर में आया है, इसलिए कि आज के दिन ऊँचे मक़ाम में लोगों की तरफ़ से कुर्बानी होती है। ¹³ जैसे ही तुम शहर में दाख़िल होगे, वह तुमको पहले उससे कि वह ऊँचे मक़ाम में खाना खाने जाए मिलेगा, क्योंकि जब तक वह न पहुँचे लोग खाना नहीं खायेंगे, इसलिए कि वह कुर्बानी को बरक़त देता है, उसके बाद मेहमान खाते हैं, इसलिए अब तुम चढ़ जाओ, क्योंकि इस वक़्त वह तुमको मिल जाएगा।” ¹⁴ इसलिए वह शहर को चले और शहर में दाख़िल होते ही देखा कि समुएल उनके सामने आ रहा है कि वह ऊँचे मक़ाम को जाए। ¹⁵ और खुदावन्द ने साऊल के आने से एक दिन पहले समुएल पर ज़ाहिर कर दिया था कि ¹⁶ कल इसी वक़्त मैं एक शख्स को बिन यमीन के मुल्क से तेरे पास भेजूँगा, तू उसे मसह करना ताकि वह मेरी क़ौम इस्राईल का सरदार हो, और वह मेरे लोगों को फ़िलिस्तिनों के हाथ से बचाएगा, क्योंकि मैंने अपने लोगों पर नज़र की है, इसलिए कि उनकी फ़रियाद मेरे पास पहुँची है। ¹⁷ इसलिए जब समुएल साऊल से मिला, तो खुदावन्द ने उससे कहा, “देख यही वह शख्स है जिसका ज़िक्र मैंने तुझ से किया था, यही मेरे लोगों पर हुक्मत करेगा।” ¹⁸ फिर साऊल ने फाटक पर समुएल के नज़दीक जाकर उससे कहा, “कि मुझको ज़रा बता दे कि ग़ैबबीन का घर कहा, है?” ¹⁹ समुएल ने साऊल को जवाब दिया कि वह ग़ैबबीन मैं ही हूँ; मेरे आगे आगे ऊँचे मक़ाम को जा, क्योंकि तुम आज के दिन मेरे साथ खाना खाओगे और सुबह को मैं तुझे रुख़्सत करूँगा, और जो कुछ तेरे दिल में है सब तुझे बता दूँगा। ²⁰ और तेरे गधे जिनको खोए हुए तीन दिन हुए, उनका ख्याल मत कर, क्योंकि वह मिल गए और इस्राईलियों में जो कुछ दिलकश हैं वह किसके लिए हैं, क्या वह तेरे और तेरे बाप के सारे घराने के लिए नहीं? ²¹ साऊल ने जवाब दिया “क्या मैं बिन यमीनी, या'नी इस्राईल के सब से छोटे क़बीले का नहीं? और क्या मेरा घराना बिन यमीन के क़बीले के सब घरानों में सब से छोटा नहीं? इस लिए तू मुझ से ऐसी बातें क्यों कहता है?” ²² और समुएल साऊल और उसके नौकर को मेहमानखाने में लाया, और उनको मेहमानों के बीच जो कोई तीस आदमी थे सद्दर जगह में बिठाया। ²³ और समुएल ने बावर्ची से कहा “कि वह टुकड़ा जो मैंने तुझे दिया, जिसके बारे में तुझ से कहा, था कि उसे अपने पास रख छोड़ना, लेआ।” ²⁴ बावर्ची ने वह रान म'अ उसके

जो उसपर था, उठा कर साऊल के सामने रख दी, तब समुएल ने कहा, यह देख जो रख लिया गया था, उसे अपने सामने रख कर खा ले क्योंकि वह इसी मु'अय्यन वक़्त के लिए, तेरे लिए रखी रही क्योंकि मैंने कहा कि मैंने इन लोगों की दा'वत की है “इस लिए साऊल ने उस दिन समुएल के साथ खाना खाया।” ²⁵ और जब वह ऊँचे मक़ाम से उतर कर शहर में आए तो उसने साऊल से उस के घर की छत पर बातें कीं ²⁶ और वह सवेरे उठे, और ऐसा हुआ, कि जब दिन चढ़ने लगा, तो समुएल ने साऊल को फिर घर की छत पर बुलाकर उससे कहा, उठ कि मैं तुझे रुख़्सत करूँ।” इस लिए साऊल उठा, और वह और समुएल दोनों बाहर निकल गए। ²⁷ और शहर के सिरे के उतार पर चलते चलते समुएल ने साऊल से कहा कि अपने नौकर को हुक्म कर कि वह हम से आगे बढ़े, इसलिए वह आगे बढ़ गया, लेकिन तू अभी ठहरा रह ताकि मैं तुझे खुदा की बात सुनाऊँ।

10

22222 22 2222 22 222222 2222 22
2222 222 2222

¹ फिर समुएल ने तेल की कुप्पी ली और उसके सर पर उँडेली और उसे चूमा और कहा, कि क्या यही बात नहीं कि खुदावन्द ने तुझे मसह किया, ताकि तू उसकी *मीरास का रहनुमा हो? ² जब तू आज मेरे पास से चला जाएगा, तो ज़िलज़ह में जो बिनयमीन की सरहद में है, राख़िल की क़ब्र के पास दो शख्स तुझे मिलेंगे, और वह तुझ से कहेंगे, कि वह गधे जिनको तू ढूँढ़ने गया था मिल गए; और देख अब तेरा बाप गधों की तरफ़ से बेफ़िक्र होकर तुम्हारे लिए फ़िक्र मंद है, और कहता है, कि मैं अपने बेटे के लिए क्या करूँ? ³ फिर वहाँ से आगे बढ़ कर जब तू तबूर के बलूत के पास पहुँचेगा, तो वहाँ तीन शख्स जो बैतएल को खुदा के पास जाते होंगे तुझे मिलेंगे, एक तो बकरी के तीन बच्चे, दूसरा रोटी के तीन टुकड़े, और तीसरा मय का एक मशकीज़ा लिए जाता होगा। ⁴ और वह तुझे सलाम करेंगे, और रोटी के दो टुकड़े तुझे देंगे, तू उनको उनके हाथ से ले लेना। ⁵ और बाद उसके तू खुदा के पहाड़ को पहुँचेगा, जहाँ फ़िलिस्तिनों की चौकी है, और जब तू वहाँ शहर में दाख़िल होगा तो नबियों की एक जमा'अत जो ऊँचे मक़ाम से उतरती होगी, तुझे मिलेगी, और उनके आगे सितार और दफ़ और बाँसुली और बरबत होंगे और वह नबुव्वत करते होंगे। ⁶ तब खुदावन्द की रूह तुझ पर

† 9:25 9:25 समुएल ने साऊल को घर के छत पर लेगाया और वहाँ उसके लिए एक बिछोना तय्यार किया * 10:1 10:1 उसके इस्राईली लोगों के ऊपर

जोर से नाज़िल होगी, और तू उनके साथ नबुव्वत करने लगेगा, और बदल कर और ही आदमी हो जाएगा।⁷ इसलिए जब यह निशान तेरे आगे आएँ, तो फिर जैसा मौक़ा हो वैसा ही काम करना क्योंकि खुदा तेरे साथ है।⁸ और तू मुझ से पहले जिल्लाल को जाना; और देख मैं तेरे पास आऊँगा ताकि सोख्तनी कुर्बानियाँ करूँ और सलामती के ज़बीहों को ज़बह करूँ। तू सात दिन तक वहीं रहना जब तक मैं तेरे पास आकर तुझे बता न दूँ कि तुझको क्या करना होगा।

22222 22 222222222 2222 2222

⁹ और ऐसा हुआ कि जैसे ही उसने समुएल से रुख़सत होकर पीठ फेरी, खुदा ने उसे दूसरी तरह का दिल दिया और वह सब निशान उसी दिन वजूद में आए।¹⁰ और जब वह उधर उस पहाड़ के पास आए तो नबियों की एक जमा'अत उसको मिली, और खुदा की रूह उस पर जोर से नाज़िल हुई, और वह भी उनके बीच नबुव्वत करने लगा।¹¹ और ऐसा हुआ कि जब उसके अगले जान पहचानों ने यह देखा कि वह नबियों के बीच नबुव्वत कर रहा है तो वह एक दूसरे से कहने लगे, “क़ीस के बेटे को क्या हो गया? क्या साऊल भी नबियों में शामिल है?”¹² और वहाँ के एक आदमी ने जवाब दिया, कि भला उनका बाप कौन है? “तब ही से यह मिसाल चली, क्या साऊल भी नबियों में है?”¹³ और जब वह नबुव्वत कर चुका तो ऊँचे मक़ाम में आया।¹⁴ वहाँ साऊल के चचा ने उससे और उसके नौकर से कहा, “तुम कहाँ गए थे?” उसने कहा, “गधे ढूँडने और जब हमने देखा कि वह नहीं मिलते, तो हम समुएल के पास आए।”¹⁵ फिर साऊल के चचा ने कहा, “कि मुझको ज़रा बता तो सही कि समुएल ने तुम से क्या क्या कहा।”¹⁶ साऊल ने अपने चचा से कहा, उसने हमको साफ़ — साफ़ बता दिया, कि गधे मिल गए, लेकिन हुकूमत का मज़मून जिसका ज़िक्र समुएल ने किया था न बताया।

22222 22 2222222 222222 2222

¹⁷ और समुएल ने लोगों को मिसफ़ाह में खुदावन्द के सामने बुलवाया।¹⁸ और उसने बनी इस्राईल से कहा “कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि मैं इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया और मैंने तुमको मिस्रियों के हाथ से और सब सल्तनतों के हाथ से जो तुम पर ज़ुल्म करती थीं रिहाई दी।¹⁹ लेकिन तुमने आज अपने खुदा को जो तुम को तुम्हारी सब मुसीबतों और तकलीफ़ों से रिहाई बख़्शी है, हक़ीर जाना और उससे कहा, हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर

कर, इसलिए अब तुम क़बीला — क़बीला होकर और हज़ार हज़ार करके सब के सब खुदावन्द के सामने हाज़िर हो।”²⁰ जब समुएल इस्राईल के सब क़बीलों को नज़दीक लाया, और पर्ची बिनयमीन के क़बीले के नाम पर निकली।²¹ तब वह बिनयमीन के क़बीला को खानदान — खानदान करके नज़दीक लाया, तो मतरियों के खानदान का नाम निकला और फिर क़ीस के बेटे साऊल का नाम निकला लेकिन जब उन्होंने उसे ढूँढा, तो वह न मिला।²² तब उन्होंने खुदावन्द से फिर पूछा, क्या यहाँ किसी और आदमी को भी आना है, खुदावन्द ने जवाब दिया, देखो वह असबाब के बीच छिप गया है।²³ तब वह दौड़े और उसको वहाँ से लाए, और जब वह लोगों के बीच खड़ा हुआ, तो ऐसा लम्बा था कि लोग उसके कंधे तक आते थे।²⁴ और समुएल ने उन लोगों से कहा तुम उसे देखते हो जिसे खुदावन्द ने चुन लिया, कि उसकी तरह सब लोगो में एक भी नहीं, तब सब लोग ललकार कर बोल उठे, “कि बादशाह जीता रहे।”²⁵ फिर समुएल ने लोगों को हुकूमत का तरीक़ा बताया और उसे किताब में लिख कर खुदावन्द के सामने रख दिया, उसके बाद समुएल ने सब लोगों को रुख़सत कर दिया, कि अपने अपने घर जाएँ।²⁶ और साऊल भी जिबा' को अपने घर गया, और लोगों का एक जत्था, भी जिनके दिल को खुदा ने उभारा था उसके साथ, हो लिया।²⁷ लेकिन शरीरों में से कुछ कहने लगे, “कि यह शख्स हमको किस तरह बचाएगा?” इसलिए उन्होंने उसकी तहक़ीर की और उसके लिए नज़राने न लाए तब वह अनसुनी कर गया।

11

2222 22 22222222 22222 22 22222

¹ तब अम्मूनी नाहस चढ़ाई कर के यबीस जिल'आद के मुकाबिल खेमाज़न हुआ; और यबीस के सब लोगों ने नाहस से कहा, हम से 'अहद — ओ — पैमान कर ले, “और हम तेरी खिदमत करेंगे।”² तब अम्मूनी नाहस ने उनको जवाब दिया, “इस शर्त पर मैं तुम से 'अहद करूँगा, कि तुम सब की दहनी आँख निकाल डाली जाए और मैं इसे सब इस्राईलियों के लिए ज़िल्लत का निशान ठहराऊँ।”³ तब यबीस के बुज़ुर्गों ने उस से कहा, “हमको सात दिन की मोहलत दे ताकि हम इस्राईल की सब सरहदों में क़ासिद भेजें, तब अगर हमारा हिमायती कोई न मिले तो हम तेरे पास निकल आएँगे।”⁴ और वह क़ासिद साऊल के जिबा' में आए और उन्होंने लोगों को यह बातें कह सुनाई और सब लोग चिल्ला चिल्ला कर

रोने लगे।⁵ और साऊल खेत से बैलों के पीछे पीछे चला आता था, और साऊल ने पूछा, “कि इन लोगों को क्या हुआ, कि रोते हैं?” उन्होंने यबीस के लोगों की बातें उसे बताईं।⁶ जब साऊल ने यह बातें सुनीं तो खुदा की रूह उसपर जोर से नाज़िल हुई, और उसका गुस्सा निहायत भड़का।⁷ तब उसने एक जोड़ी बैल लेकर उनको टुकड़े — टुकड़े काटा और कासिदों के हाथ इस्राईल की सब सरहदों में भेज दिया, और यह कहा कि “जो कोई आकर साऊल और समुएल के पीछे न हो ले, उसके बैलों से ऐसा ही किया जाएगा, और खुदावन्द का खौफ़ लोगों पर छा गया, और वह एक तन हो कर निकल आए।⁸ और उसने उनको बज़क में गिना, इसलिए बनी इस्राईल तीन लाख और यहूदाह के आदमी तीस हजार थे।⁹ और उन्होंने उन कासिदों से जो आए थे कहा कि तुम यबीस जिल'आद के लोगों से यूँ कहना कि कल धूप तेज़ होने के वक़्त तक तुम रिहाई पाओगे इस लिए कासिदों ने जाकर यबीस के लोगों को ख़बर दी और वह खुश हुए।¹⁰ तब अहल — ए — यबीस ने कहा, कल हम तुम्हारे पास निकल आएँगे, और जो कुछ तुमको अच्छा लगे, हमारे साथ करना।”¹¹ और दूसरी सुबह को साऊल ने लोगों के तीन गोल किए; और वह रात के पिछले पहर लश्कर में घुस कर 'अम्मूनियों को क़त्ल करने लगे, यहाँ तक कि दिन बहुत चढ़ गया, और जो बच निकले वह ऐसे तितर बितर हो गए, कि दो आदमी भी कहीं एक साथ न रहे।¹² और लोग समुएल से कहने लगे “किसने यह कहा, था कि क्या साऊल हम पर हुकूमत करेगा? उन आदमियों को लाओ, ताकि हम उनको क़त्ल करें।”¹³ साऊल ने कहा “आज के दिन हरगिज़ कोई मारा नहीं जाएगा, इसलिए कि खुदावन्द ने इस्राईल को आज के दिन रिहाई दी है।”¹⁴ तब समुएल ने लोगों से कहा, “आओ जिल्लाज को चलें ताकि वहाँ हुकूमत को नए सिरे से काईम करें।”¹⁵ तब सब लोग जिल्लाज को गए, और वहीं उन्होंने खुदावन्द के सामने साऊल को बादशाह बनाया, फिर उन्होंने वहाँ खुदावन्द के आगे, सलामती के ज़बीहे ज़बह किए, और वहीं साऊल और सब इस्राईली मर्दों ने बड़ी खुशी मनाई।

12

???? ?? ???

¹ तब समुएल ने सब इस्राईलियों से कहा, “देखो जो कुछ तुमने मुझ से कहा, मैंने तुम्हारी एक एक बात मानी और एक बादशाह तुम्हारे ऊपर ठहराया है।² और अब

देखो यह बादशाह तुम्हारे आगे आगे चलता है, मैं तो बुड़ढा हूँ और मेरा सिर सफ़ेद हो गया और देखो मेरे बेटे तुम्हारे साथ हैं, मैं लड़कपन से आज तक तुम्हारे सामने ही चलता रहा हूँ।³ मैं हाज़िर हूँ, इसलिए तुम खुदावन्द और उसके मम्सूह के आगे मेरे मुँह पर बताओ, कि मैंने किसका बैल ले लिया या किसका गधा लिया? मैंने किसका हक़ मारा या किस पर ज़ुल्म किया, या किस के हाथ से मैंने रिश्वत ली, ताकि अंधा बनजाऊँ? बताओ और यह मैं तुमको वापस कर दूँगा।”⁴ उन्होंने जवाब दिया “तूने हमारा हक़ नहीं मारा और न हम पर ज़ुल्म किया, और न तूने किसी के हाथ से कुछ लिया।”⁵ तब उसने उनसे कहा, कि खुदावन्द तुम्हारा गवाह, और उसका मम्सूह आज के दिन गवाह है, “कि मेरे पास तुम्हारा कुछ नहीं निकला।” उन्होंने कहा, “वह गवाह है।”⁶ फिर समुएल लोगों से कहने लगा, वह खुदावन्द ही है जिसने मूसा और हारून को मुक़र्रर किया, और तुम्हारे बाप दादा को मुल्क मिस्र से निकाल लाया।⁷ इस लिए अब ठहरे रहो ताकि मैं खुदावन्द के सामने उन सब नेकियों के बारे में जो खुदावन्द ने तुम से और तुम्हारे बाप दादा से कीं बातें करूँ।⁸ जब या'क़ूब मिस्र में गया, और तुम्हारे बाप दादा ने खुदावन्द से फ़रियाद की तो खुदावन्द ने मूसा और हारून को भेजा, जिन्होंने तुम्हारे बाप दादा को मिस्र से निकाल कर इस जगह बसाया।⁹ लेकिन वह खुदावन्द अपने खुदा को भूल गए, तब उसने उनको हसूर की फ़ौज के सिपह सालार सीसरा के हाथ और फ़िलिस्तियों के हाथ और शाह — ए — मोआब के हाथ बेच डाला, और वह उनसे लड़े।¹⁰ फिर उन्होंने खुदावन्द से फ़रियाद की और कहा कि हमने गुनाह किया, इसलिए कि हमने खुदावन्द को छोड़ा, और बा'लीम और इस्तारात की इबादत की लेकिन अब तू हमको हमारे दुश्मनों के हाथ से छुड़ा, तो हम तेरी इबादत करेंगे।¹¹ इस लिए खुदावन्द ने *यरूब्बा'ल और बिदान और इफ़ताह और समुएल को भेजा और तुम को तुम्हारे दुश्मनों के हाथ से जो तुम्हारी चारों तरफ़ थे, रिहाई दी और तुम चैन से रहने लगे।¹² और जब तुमने देखा कि बनी अम्मून का बादशाह नाहस तुम पर चढ़ आया, तो तुमने मुझ से कहा कि हम पर कोई बादशाह हुकूमत करे हालाँकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हारा बादशाह था।¹³ इसलिए अब उस बादशाह को देखो जिसे तुमने चुन लिया, और जिसके लिए तुमने दरख्वास्त की थी, देखो खुदावन्द ने तुम पर बादशाह मुक़र्रर कर दिया है।¹⁴ अगर तुम खुदावन्द से डरते

* 12:11 12:11 जिदौन † 12:11 12:11 बरक़, बिदान

और उसकी इबादत करते और उस की बात मानते रहो, और खुदावन्द के हुक्म से सरकशी न करो और तुम और वह बादशाह भी जो तुम पर हुक्मत करता है खुदावन्द अपने खुदा के पैरों बने रहो तो भला; ¹⁵ लेकिन अगर तुम खुदावन्द की बात न मानों बल्कि खुदावन्द के हुक्म से सरकशी करो तो खुदावन्द का हाथ तुम्हारे खिलाफ़ होगा, जैसे वह तुम्हारे बाप दादा के खिलाफ़ होता था। ¹⁶ इसलिए अब तुम ठहरे रहो और इस बड़े काम को देखो जिसे खुदावन्द तुम्हारी आँखों के सामने करेगा। ¹⁷ क्या आज गेहूँ काटने का दिन नहीं, मैं खुदावन्द से दरखास्त करूँगा, कि बादल गरजे और पानी बरसे, और तुम जान लोगे, और देख भी लोगे कि तुमने खुदावन्द के सामने अपने लिए, बादशाह माँगने से कितनी बड़ी शरारत की। ¹⁸ चुनाँचे समुएल ने खुदावन्द से दरखास्त की और खुदावन्द की तरफ़ से उसी दिन बादल गरजा और पानी बरसा; तब सब लोग खुदावन्द और समुएल से निहायत डर गए। ¹⁹ और सब लोगों ने समुएल से कहा, कि अपने खादिमों के लिए खुदावन्द अपने खुदा से दुआ कर कि हम मर न जाएँ क्योंकि हमने अपने सब गुनाहों पर यह शरारत भी बढ़ा दी है कि अपने लिए एक बादशाह माँगा। ²⁰ समुएल ने लोगों से कहा, “खौफ़ न करो, यह सब शरारत तो तुमने की है तो भी खुदावन्द की पैरवी से किनारा कशी न करो बल्कि अपने सारे दिल से खुदावन्द की इबादत करो। ²¹ तुम किनारा कशी न करना, वरना बातिल चीज़ों की पैरवी करने लगोगे जो न फ़ायदा पहुँचा सकती न रिहाई दे सकती हैं, इसलिए कि वह सब बातिल हैं। ²² क्योंकि खुदावन्द अपने बड़े नाम के ज़रिए अपने लोगों को नहीं छोड़ेगा, इस लिए कि खुदावन्द को यही पसंद आया कि तुम को अपनी क़ौम बनाए। ²³ अब रहा मैं इसलिए खुदा न करे कि तुम्हारे लिए दुआ करने से बाज़ आकर खुदावन्द का गुनहगार ठहरूँ, बल्कि मैं वही रास्ता जो अच्छा और सीधा है, तुमको बताऊँगा। ²⁴ सिर्फ़ इतना हो कि तुम खुदावन्द से डरो, और अपने सारे दिल और सच्चाई से उसकी इबादत करो क्योंकि सोचो कि उसने तुम्हारे लिए कैसे बड़े काम किए हैं। ²⁵ लेकिन अगर तुम अब भी शरारत ही करते जाओ, तो तुम और तुम्हारा बादशाह दोनों के दोनों मिटा दिए जाओगे।”

13

समुएल तीस बरस की उम्र में हुक्मत करने लगा, और इस्राईल पर दो बरस हुक्मत कर चुका। ² तो

साऊल ने तीन हजार इस्राईली जवान अपने लिए चुने, उनमें से दो हजार मिक्मास में और बैत — एल के पहाड़ पर साऊल के साथ और एक हजार बिनयमीन के जिबा' में यूनतन के साथ रहे और बाक़ी लोगों को उसने रुख़्सत किया, कि अपने अपने डेरे को जाएँ। ³ और यूनतन ने फ़िलिस्तिनों की चौकी के सिपाहियों को जो जिबा' में थे क़त्ल कर डाला और फ़िलिस्तिनों ने यह सुना, और साऊल ने सारे मुल्क में नरसिंगा फ़ुंकवा कर कहला भेजा कि 'इब्रानी लोग सुनें। ⁴ और सारे इस्राईल ने यह कहते सुना, कि साऊल ने फ़िलिस्तिनों की चौकी के सिपाही मार डाले और यह भी कि इस्राईल से फ़िलिस्तिनों को नफ़रत हो गई है, तब लोग साऊल के पीछे चल कर जिल्लाल में जमा' हो गए। ⁵ और फ़िलिस्ती इस्राईलियों से लड़ने को इकट्ठे हुए या'नी तीस हजार रथ और छः हजार सवार और एक बड़ा गिरोह जैसे समन्दर के किनारे की रेत। इसलिए वह चढ़ आए और मिक्मास में बैतआवन के पूरब की तरफ़ खेमाज़न हुए। ⁶ जब बनी इस्राईल ने देखा, कि वह आफ़त में मुब्तिला हो गए, क्योंकि लोग परेशान थे, तो वह ग़ारों और झाड़ियों और चट्टानों और गढ़ियों और गढ़ों में जा छिपे। ⁷ और कुछ 'इब्रानी यरदन के पार जद् और जिल'आद के 'इलाक़े को चले गए लेकिन साऊल जिल्लाल ही में रहा, और सब लोग काँपते हुए उसके पीछे पीछे रहे।

समुएल ने कहा, “तूने मेरे पास से इधर उधर हो गए।”

⁸ और वह वहाँ सात दिन समुएल के मुक़र्रर वक्त के मुताबिक़ ठहरा रहा, लेकिन समुएल जिल्लाल में न आया, और लोग उसके पास से इधर उधर हो गए। ⁹ तब साऊल ने कहा, सोख़्तनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानियों को मेरे पास लाओ, तब उसने सोख़्तनी कुर्बानी अदा की। ¹⁰ और जैसे ही वह सोख़्तनी कुर्बानी अदा कर चुका तो क्या, देखता है, कि समुएल आ पहुँचा और साऊल उसके इस्तक़बाल को निकला ताकि उसे सलाम करे ¹¹ समुएल ने पूछा, “कि तूने क्या किया?” साऊल ने जवाब दिया “कि जब मैंने देखा कि लोग मेरे पास से इधर उधर हो गए, और तू ठहराए, हुए दिनों के अन्दर नहीं आया, और फ़िलिस्ती मिक्मास में जमा' हो गए हैं। ¹² तो मैंने सोचा कि फ़िलिस्ती जिल्लाल में मुझ पर आ पड़ेंगे, और मैंने खुदावन्द के करम के लिए अब तक दुआ भी नहीं की है, इस लिए मैंने मजबूर होकर सोख़्तनी कुर्बानी अदा की।” ¹³ समुएल ने साऊल से कहा, “तूने बेवक़्फ़ी की, तूने खुदावन्द अपने खुदा के

हुक्म को जो उसने तुझे दिया, नहीं माना वना खुदावन्द तेरी बादशाहत बनी इस्राईल में हमेशा तक काईम रखता। ¹⁴ लेकिन अब तेरी हुक्मत काईम न रहेगी क्योंकि खुदावन्द ने एक शख्स को जो उसके दिल के मुताबिक है, तलाश कर लिया है और खुदावन्द ने उसे अपनी कौम का सरदार ठहराया है, इसलिए कि तूने वह बात नहीं मानी जिसका हुक्म खुदावन्द ने तुझे दिया था।”

???????? ???? ? ? ???? ???? ?

¹⁵ और समुएल उठकर जिल्लाल से बिनयमीन के जिबा' को गया तब साऊल ने उन लोगों को जो उसके साथ हाज़िर थे, गिना और वह करीबन छः सौ थे ¹⁶ और साऊल और उसका बेटा यूनतन और उनके साथ के लोग बिनयमीन के जिबा' में रहे, लेकिन फ़िलिस्ती मिक्मास में खेमाज़न थे। ¹⁷ और गारतगर फ़िलिस्तीयों के लश्कर में से तीन गोल होकर निकले एक गोल तो सु'आल के 'इलाक़े को उफ़रह के रास्ते से गया। ¹⁸ और दूसरे गोल ने बैतहोरून की राह ली और तीसरे गोल ने उस सरहद की राह ली जिसका रुख़ वादी — ए — जुबू'ईम की तरफ़ जंगल के सामने है। ¹⁹ और इस्राईल के सारे मुल्क में कहीं लुहार नहीं मिलता था क्योंकि फ़िलिस्तीयों ने कहा था कि, 'इब्रानी लोग अपने लिए तलवारों और भाले न बनाने पाएँ।' ²⁰ इसलिए सब इस्राईली अपनी अपनी फाली और भाले और कुल्हाड़ी और कुदाल को तेज़ कराने के लिए फ़िलिस्तीयों के पास जाते थे। ²¹ *लेकिन कुदालों और फालियों और काँटों और कुल्हाड़ों के लिए, और पैनों को दुरुस्त करने के लिए, वह रेंती रखते थे। ²² इस लिए लड़ाई के दिन साऊल और यूनतन के साथ के लोगों में से किसी के हाथ में न तो तलवार थी न भाला, लेकिन साऊल और उसके बेटे यूनतन के पास तो यह थे। ²³ और फ़िलिस्तीयों की चौकी के सिपाही, निकल कर मिक्मास की घाटी को गए।

14

?????? ? ? ???? ? ? ???? ?

¹ और एक दिन ऐसा हुआ, कि साऊल के बेटे यूनतन ने उस जवान से जो उसका सिलाह बरदार था कहा कि आ हम फ़िलिस्तीयों की चौकी को जो उस तरफ़ है चलें, पर उसने अपने बाप को न बताया। ² और साऊल जिबा' के निकास पर उस अनार के दरख्त के नीचे जो मज़रून में है मुक़ीम था, और करीबन छः सौ आदमी उसके साथ थे। ³ और अखियाह बिन अखीतोब जो यकबोद बिन

फ़ीन्हास बिन 'एली का भाई और शीलोह में खुदावन्द का काहिन था अफूद पहने हुए था और लोगों को ख़बर न थी कि यूनतन चला गया है। ⁴ और उन की घाटियों के बीच जिन से होकर यूनतन फ़िलिस्तीयों की चौकी को जाना चाहता था एक तरफ़ एक बड़ी नुकीली चट्टान थी और दूसरी तरफ़ भी एक बड़ी नुकीली चट्टान थी, एक का नाम बुसीस था दूसरी का सना। ⁵ एक तो शिमाल की तरफ़ मिक्मास के मुक्काबिल और दूसरी जुनूब की तरफ़ जिबा' के मुक्काबिल थी। ⁶ इसलिए यूनतन ने उस जवान से जो उसका सिलाह बरदार था, कहा, “आ हम उधर उन नामख़तूनों की चौकी को चलें — मुम्किन है, कि खुदावन्द हमारा काम बना दे, क्योंकि खुदावन्द के लिए बहुत सारे या थोड़ों के ज़रिए” से बचाने की क़ैद नहीं।” ⁷ उसके सिलाह बरदार ने उससे कहा, “जो कुछ तेरे दिल में है इसलिए कर और उधर चल मैं तो तेरी मज़ी के मुताबिक़ तेरे साथ हूँ।” ⁸ तब यूनतन ने कहा, “देख हम उन लोगों के पास इस तरफ़ जाएँगे, और अपने को उनको दिखाएँगे। ⁹ अगर वह हम से यह कहें, कि हमारे आने तक ठहरो, तो हम अपनी जगह चुप चाप खड़े रहेंगे और उनके पास नहीं जाएँगे। ¹⁰ लेकिन अगर वह यूँ कहें, कि हमारे पास तो आओ, तो हम चढ़ जाएँगे, क्योंकि खुदावन्द ने उनको हमारे क़ब्जे में कर दिया, और यह हमारे लिए निशान होगा।” ¹¹ फिर इन दोनों ने अपने आप को फ़िलिस्तीयों की चौकी के सिपाहियों को दिखाया, और फ़िलिस्ती कहने लगे, “देखो ये 'इब्रानी उन सुराखों में से जहाँ वह छिप गए थे, बाहर निकले आते हैं।” ¹² और चौकी के सिपाहियों ने यूनतन और उसके सिलाह बरदार से कहा, “हमारे पास आओ, तो सही, हम तुमको एक चीज़ दिखाएँ।” इसलिए यूनतन ने अपने सिलाह बरदार से कहा, “अब मेरे पीछे, पीछे चढ़ा, चला आ, क्योंकि खुदावन्द ने उनको इस्राईल के क़ब्जे में कर दिया है।” ¹³ और यूनतन अपने हाथों और पाँव के बल चढ़ गया, और उसके पीछे पीछे उसका सिलाह बरदार था, और वह यूनतन के सामने गिरते गए और उसका सिलाह बरदार उसके पीछे पीछे उनको क़त्ल करता गया। ¹⁴ यह पहली ख़ुरेज़ी जो यूनतन और उसके सिलाह बरदार ने की करीबन बीस आदमियों की थी जो कोई एक बीघा *ज़मीन की रेघारी में मारे गए। ¹⁵ तब लश्कर और मैदान और सब लोगों में †लरज़िश हुई और चौकी के सिपाही, और गारतगर भी काँप गए, और

* **13:21** 13:21 फालियों और कुदालों की क़ीमत एक शेकल का दूसरा हिस्सा था पर कुल्हाड़ों और पैनों की धार लगाने और सीधे करने की मज़दूरी एक शेकल का तीसरा हिस्सा था * **14:14** 14:14 वह इतनी अराज़ी थीजितनी कि एक दिन में एक खेत में एक जोड़ी बैल हल जोत सकते थे

† **14:15** 14:15 एक दहशत, अज़ हद दहशत तारी होना, कपकपी, थरथराहट

साऊल ने खुदावन्द इस्राईल के खुदा से कहा, “हक्र को जाहिर कर दे,” इसलिए पर्ची यूनतन और साऊल के नाम पर निकली, और लोग बच गए।⁴² तब साऊल ने कहा कि “मेरे और मेरे बेटे यूनतन के नाम पर पर्ची डालो, तब यूनतन पकड़ा गया।”⁴³ और साऊल ने यूनतन से कहा, “मुझे बता कि तूने क्या किया है?” यूनतन ने उसे बताया कि “मैंने बेशक अपने हाथ की लाठी के सिरे से ज़रा सा शहद चख्खा था इसलिए देख मुझे मरना होगा।”⁴⁴ साऊल ने कहा, “खुदा ऐसा ही बल्कि इससे भी ज्यादा करे क्योंकि ऐ यूनतन तू ज़रूर मारा जाएगा।”⁴⁵ तब लोगों ने साऊल से कहा, “क्या यूनतन मारा जाए, जिसने इस्राईल को ऐसा बड़ा छुटकारा दिया है ऐसा न होगा, खुदावन्द की हयात की कसम है कि उसके सर का एक बाल भी ज़मीन पर गिरने नहीं पाएगा क्योंकि उसने आज खुदा के साथ हो कर काम किया है।” इसलिए लोगों ने यूनतन को बचा लिया और वह मारा न गया।⁴⁶ और साऊल फ़िलिस्तिनों का पीछा छोड़ कर लौट गया और फ़िलिस्ती अपने मक़ाम को चले गए

22222 22 22222 22 22222222

⁴⁷ जब साऊल बनी इस्राईल पर बादशाहत करने लगा, तो वह हर तरफ़ अपने दुश्मनों या 'नी मोआब और बनी 'अम्मून और अदोम और ज़ोबाह के बादशाहों और फ़िलिस्तिनों से लड़ा और वह जिस जिस तरफ़ फिरता उनका बुरा हाल करता था।⁴⁸ और उसने बहादुरी करके अमालीकियों को मारा, और इस्राईलियों को उनके हाथ से छुड़ाया जो उनको लूटते थे।⁴⁹ साऊल के बेटे यूनतन और इसवी और मलकीशू'अ थे; और उसकी दोनों बेटियों के नाम यह थे, बड़ी का नाम मेरब और छोटी का नाम मीकल था।⁵⁰ और साऊल की बीवी का नाम अखीनु'अम था जो अखीमा'ज़ की बेटी थी, और उसकी फ़ौज के सरदार का नाम अबनेर था, जो साऊल के चचा नेर का बेटा था।⁵¹ और साऊल के बाप का नाम कीस था और अबनेर का बाप नेर अबीएल का बेटा था।⁵² और साऊल की ज़िन्दगी भर फ़िलिस्तिनों से सख़्त जंग रही, इसलिए जब साऊल किसी ताक़तवर मर्द या सूरमा को देखता था तो उसे अपने पास रख लेता था।

15

22222 22 22222222222222 22 22222222 22222

¹ और समुएल ने साऊल से कहा कि “खुदावन्द ने मुझे भेजा है कि मैं तुझे मसह करूँ ताकि तू उसकी क्रौम इस्राईल का बादशाह हो, इसलिए अब तू खुदावन्द की बातें सुन।”² रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता

है कि मुझे इसका ख़्याल है कि 'अमालीक ने इस्राईल से क्या किया और जब यह मिस्र से निकल आए तो वह रास्ते में उनका मुखालिफ़ हो कर आया।’³ इस लिए अब तू जा और 'अमालीक को मार और जो कुछ उनका है, सब को बिलकुल मिटा दे, और उनपर रहम मत कर बल्कि मर्द और 'औरत नन्हे, बच्चे और दूध पीते, गाय बैल और भेड़ बकरियाँ, ऊँट और गधे सब को क़त्ल कर डाल।’⁴ चुनाँचे साऊल ने लोगों को जमा किया और तलाइम में उनको गिना; इस लिए वह दो लाख पियादे, और यहूदाह के दस हज़ार जवान थे।⁵ और साऊल 'अमालीक के शहर को आया और वादी के बीच घात लगा कर बैठा।⁶ और साऊल ने क्रीनियों से कहा कि तुम चल दो 'अमालीकियों के बीच से निकल जाओ; ऐसा न हो कि मैं तुमको उनके साथ हलाक कर डालूँ इसलिए कि तुम सब इस्राईलियों से जब वह मिस्र से निकल आए महेरबानी के साथ पेश आए। इसलिए क्रीनी अमालीकियों में से निकल गए।⁷ और साऊल ने 'अमालीकियों को हवीला से शोर तक जो मिस्र के सामने है मारा।⁸ और 'अमालीकियों के बादशाह अजाज को जीता पकड़ा और सब लोगों को तलवार की धार से मिटा दिया।⁹ लेकिन साऊल ने और उन लोगों ने अजाज को और अच्छी अच्छी भेड़ बकरियाँ गाय — बैलों और मोटे मोटे बच्चों और बरों को और जो कुछ अच्छा था उसे जीता रखवा और उनको बरबाद करना न चाहा लेकिन उन्होंने हर एक चीज़ को जो नाकिस और निकम्मी थी बरबाद कर दिया।

222222222222 22 22222 22 22222222 22222

¹⁰ तब खुदावन्द का कलाम समुएल को पहुँचा कि।¹¹ मुझे अफ़सोस है कि मैंने साऊल को बादशाह होने के लिए मुकर्रर किया है, क्योंकि वह मेरी पैरवी से फिर गया है, और उसने मेरे हुक्म नहीं माने, तब समुएल का गुस्सा भड़का और वह सारी रात खुदावन्द से फ़रियाद करता रहा।¹² और समुएल सवेरे उठा कि सुबह को साऊल से मुलाक़ात करे, और समुएल को खबर मिली, कि साऊल करमिल को आया था, और अपने लिए लाट खड़ी की और फिर गुज़रता हुआ जिल्लाल को चला गया है।¹³ फिर समुएल साऊल के पास गया और साऊल ने उस से कहा, “तू खुदावन्द की तरफ़ से मुबारक हुआ, मैंने खुदावन्द के हुक्म पर 'अमल किया।”¹⁴ समुएल ने कहा, “फिर यह भेड़ बकरियों का मिम्याना और गाय, और बैलों का बनबाना कैसा है, जो मैं सुनता हूँ?”¹⁵ साऊल ने कहा कि “यह लोग उनको 'अमालीकियों के यहाँ से ले आए हैं, इसलिए कि लोगों ने अच्छी अच्छी भेड़ बकरियों और गाय बैलों को जीता रखवा ताकि उनको

खुदावन्द तेरे खुदा के लिए जबह करें और बाकी सब को तो हम ने बरबाद कर दिया।” 16 तब समुएल ने साऊल से कहा, “ठहर जा और जो कुछ खुदावन्द ने आज की रात मुझे से कहा है, वह मैं तुझे बताऊँगा।” उसने कहा, “बताइये।” 17 समुएल ने कहा, “अगर्चे तू अपनी ही नज़र में हकीर था तो भी क्या तू बनी इस्राईल के क़बीलों का सरदार न बनाया गया? और खुदावन्द ने तुझे मसह किया ताकि तू बनी इस्राईल का बादशाह हो। 18 और खुदावन्द ने तुझे सफ़र पर भेजा और कहा कि जा और गुनहगार 'अमालीक्रियों' को मिटा कर और जब तक वह फ़ना न हो जायें उन से लड़ता रह। 19 तब तूने खुदावन्द की बात क्यों न मानी बल्कि लूट पर टूट कर वह काम कर गुज़रा जो खुदावन्द की नज़र में बुरा है?” 20 साऊल ने समुएल से कहा, “मैंने तो खुदावन्द का हुक्म माना और जिस रास्ते पर खुदावन्द ने मुझे भेजा चला, और 'अमालीक्र' के बादशाह अजाज को ले आया हूँ, और 'अमालीक्रियों' को बरबाद कर दिया। 21 जब लोग लूट के माल में से भेड़ बकरियाँ और गाय बैल या'नी अच्छी अच्छी चीज़ें जिनको बरबाद करना था, ले आए ताकि जिल्जाल में खुदावन्द तेरे खुदा के सामने कुर्बानी करें।” 22 समुएल ने कहा, “क्या खुदावन्द सोख्तनी कुर्बानियों और जबीहों से इतना ही खुश होता है जितना इस बात से कि खुदावन्द का हुक्म माना जाए? देख फ़रमा बरदारी कुर्बानी से और बात मानना मेंदों की चर्बी से बेहतर है। 23 क्योंकि बगावत और जादूगरी बराबर हैं और सरकशी ऐसी ही है जैसी मूरतों और बुतों की इबादत इस लिए चूँकि तूने खुदावन्द के हुक्म को रद्द किया है इसलिए उसने भी तुझे रद्द किया है कि बादशाह न रहे।”

22222 22 2222222 2222222

24 साऊल ने समुएल से कहा, मैंने गुनाह किया कि मैंने खुदावन्द के फ़रमान को और तेरी बातों को टाल दिया है, क्योंकि मैं लोगों से डरा और उनकी बात सुनी। 25 इसलिए अब मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मेरा गुनाह बख़्श दे, और मेरे साथ लौट चल ताकि मैं खुदावन्द को सिज्दा करूँ। 26 समुएल ने साऊल से कहा, “मैं तेरे साथ नहीं लौटूँगा क्योंकि तूने खुदावन्द के कलाम को रद्द कर दिया है और खुदावन्द ने तुझे रद्द किया, कि इस्राईल का बादशाह न रहे।” 27 और जैसे ही समुएल जाने को मुड़ा साऊल ने उसके जुब्बा का दामन पकड़ लिया, और वह फट गया। 28 तब समुएल ने उससे कहा, “खुदावन्द ने इस्राईल की बादशाही तुझ से आज ही चाक कर के छीन ली और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से बेहतर है दे

दी है। 29 और जो इस्राईल की ताक़त है, वह न तो झूट बोलता और न पछताता है, क्योंकि वह इंसान नहीं है कि पछताए।” 30 उसने कहा, “मैंने गुनाह तो किया है तो भी मेरी क़ौम के बुज़ुर्गों और इस्राईल के आगे मेरी 'इज्जत' कर और मेरे साथ, लौट कर चल ताकि मैं खुदावन्द तेरे खुदा को सिज्दा करूँ।” 31 तब समुएल लौट कर साऊल के पीछे हो लिया और साऊल ने खुदावन्द को सिज्दा किया।

22222 22 2222222 22222 22 2222222-2222222 22222

32 तब समुएल ने कहा कि 'अमालीक्रियों' के बादशाह अजाज को यहाँ मेरे पास लाओ, इसलिए अजाज खुशी खुशी उसके पास आया और अजाज कहने लगा, हकीकत में मौत की कड़वाहट गुज़र गयी। 33 समुएल ने कहा, जैसे तेरी तलवार ने 'औरतों' को बे औलाद किया वैसे ही तेरी माँ 'औरतों' में बे औलाद होगी और समुएल ने अजाज को जिल्जाल में खुदावन्द के सामने टुकड़े टुकड़े किया। 34 और समुएल रामा को चला गया और साऊल अपने घर साऊल के ज़िबा' को गया। 35 और समुएल अपने मरते दम तक साऊल को फिर देखने न गया क्योंकि साऊल के लिए ग़म खाता रहा, और खुदावन्द साऊल को बनी इस्राईल का बादशाह करके दुखी हुआ।

16

22222 22 22222 22 2222222 22222 22 22222 22222

1 और खुदावन्द ने समुएल से कहा, “तू कब तक साऊल के लिए ग़म खाता रहेगा, जिस हाल कि मैंने उसे बनी इस्राईल का बादशाह होने से रद्द कर दिया है? तू अपने सींग में तेल भर और जा, मैं तुझे बैतलहमी यस्सी के पास भेजता हूँ, क्योंकि मैंने उसके बेटों में से एक को अपनी तरफ़ से बादशाह चुना है।” 2 समुएल ने कहा, मैं क्योंकर जाऊँ? अगर साऊल सुन लेगा, तो मुझे मार ही डालेगा “खुदावन्द ने कहा, एक बछिया अपने साथ लेजा और कहना कि मैं खुदावन्द के लिए कुर्बानी करने को आया हूँ। 3 और यस्सी को कुर्बानी की दा'वत देना फिर मैं तुझे बता दूँगा कि तुझे क्या करना है, और उसी को जिसका नाम मैं तुझे बताऊँ मेरे लिए मसह करना।” 4 और समुएल ने वही जो खुदावन्द ने कहा था किया और बैतलहम में आया, तब शहर के बुज़ुर्ग काँपते हुए उससे मिलने को गए और कहने लगे, “तू सुलह के ख्याल से आया है?” 5 उसने कहा, सुलह के ख्याल से, मैं खुदावन्द के लिए कुर्बानी पेश करने आया हूँ। तुम अपने आप को पाक साफ़ करो और मेरे साथ कुर्बानी के

लिए आओ “और उसने यस्सी को और उसके बेटों को पाक किया और उनको कुर्बानी की दा'वत दी।⁶ जब वह आए तो वह इलियाब को देख कर कहने लगा, यकीनन खुदावन्द का म्मसूह उसके आगे है।”⁷ तब खुदावन्द ने समुएल से कहा कि “तू उसके चेहरा और उसके क्रद की ऊँचाई को न देख इसलिए कि मैंने उसे ना पसंद किया है, क्योंकि खुदावन्द इंसान की तरह नज़र नहीं करता इसलिए कि इंसान जाहिरी सूरत को देखता है, पर खुदावन्द दिल पर नज़र करता है।”⁸ तब यस्सी ने अबीनदाब को बुलाया और उसे समुएल के सामने से निकाला, उसने कहा, “खुदावन्द ने इसको भी नहीं चुना।”⁹ फिर यस्सी ने सम्मा को आगे किया, उसने कहा, “खुदावन्द ने इसको भी नहीं चुना।”¹⁰ और यस्सी ने अपने सात बेटों को समुएल के सामने से निकाला और समुएल ने यस्सी से कहा कि “खुदावन्द ने उनको नहीं चुना है।”¹¹ फिर समुएल ने यस्सी से पूछा, “क्या तेरे सब लड़के यहीं हैं?” उसने कहा, सब से छोटा अभी रह गया, वह भेड़ बकरियाँ चराता है “समुएल ने यस्सी से कहा, उसे बुला भेज क्योंकि जब तक वह यहाँ न आ जाए हम नहीं बैठेंगे।”¹² इसलिए वह उसे बुलवाकर अंदर लाया। वह सुर्ख रंग और खूबसूरत और हसीन था और खुदावन्द ने फ़रमाया, “उठ, और उसे मसह कर क्योंकि वह यही है।”¹³ तब समुएल ने तेल का सींग लिया और उसे उसके भाइयों के बीच मसह किया; और खुदावन्द की रूह उस दिन से आगे को दाऊद पर ज़ोर से नाज़िल होती रही, तब समुएल उठकर रामा को चला गया।

१६६६६ १६ १६६६६ १६ १६६६६६ १६६ १६६६

¹⁴ और खुदावन्द की रूह साऊल से जुदा हो गई और खुदावन्द की तरफ़ से एक बुरी रूह उसे सताने लगी।¹⁵ और साऊल के मुलाज़िमों ने उससे कहा, “देख अब एक बुरी रूह खुदा की तरफ़ तुझे सताती है।”¹⁶ इसलिए हमारा मालिक अब अपने खादिमों को जो उसके सामने हैं, हुक्म दे कि वह एक ऐसे शख्स को तलाश कर लाएँ जो बरबत बजाने में क़ाबिल हो, और जब जब खुदा की तरफ़ से यह बुरी रूह तुझ पर चढ़े वह अपने हाथ से बजाए, और तू बहाल हो जाए।”¹⁷ साऊल ने अपने खादिमों से कहा, “खैर एक अच्छा बजाने वाला मेरे लिए ढूँढो और उसे मेरे पास लाओ।”¹⁸ तब जवानों में से एक यूँ बोल उठा कि “देख मैंने बैतलहम के यस्सी के एक बेटे को देखा जो बजाने में क़ाबिल और ज़बरदस्त सूरमा और जंगी जवान और बात में साहिबे तमीज़ और खूबसूरत आदमी है और खुदावन्द उसके साथ है।”¹⁹ तब साऊल

ने यस्सी के पास क़ासिद खाना किए और कहला भेजा कि “अपने बेटे दाऊद को जो भेड़ बकरियों के साथ रहता है, मेरे पास भेज दे।”²⁰ तब यस्सी ने एक गधा जिस पर रोटियाँ लदीं थीं, और मय का एक मश्कीज़ा और बकरी का एक बच्चा लेकर उनको अपने बेटे दाऊद के हाथ साऊल के पास भेजा।²¹ और दाऊद साऊल के पास आकर उसके सामने खड़ा हुआ, और साऊल उससे मुहब्बत करने लगा, और वह उसका सिलह बरदार हो गया।²² और साऊल ने यस्सी को कहला भेजा कि दाऊद को मेरे सामने रहने दे क्योंकि वह मेरा मंज़ूरे नज़र हुआ है।²³ इसलिए जब वह बुरी रूह खुदा की तरफ़ से साऊल पर चढ़ती थी तो दाऊद बरबत लेकर हाथ से बजाता था, और साऊल को राहत होती और वह बहाल हो जाता था, और वह बुरी रूह उस पर से उतर जाती थी।

17

१११११११ ११ ११११११११ ११ ११११११११

¹ फिर फ़िलिस्तिनों ने जंग के लिए अपनी फ़ौजें जमा कीं, और यहूदाह के शहर शोको में इकट्ठे हुए और शोके और 'अजीक़ा के बीच अफ़सदम्मीम में ख़ैमाज़न हुए।² और साऊल और इस्राईल के लोगों ने जमा होकर एला की वादी में डेरे डाले और लड़ाई के लिए फ़िलिस्तिनों के मुकाबिल सफ़ आराई की।³ और एक तरफ़ के पहाड़ पर फ़िलिस्ती और दूसरी तरफ़ के पहाड़ पर बनी इस्राईल खड़े हुए और इन दोनों के बीच वादी थी।⁴ और फ़िलिस्तिनों के लश्कर से एक पहलवान निकला जिसका नाम जाती जूलियत था, उसका क्रद छ हाथ और एक बालिशत था।⁵ और उसके सर पर पीतल का टोपा था, और वह पीतल ही की ज़िरह पहने हुए था जो तोल में *पाँच हज़ार पीतल की मिस्काल के बराबर थी।⁶ और उसकी टाँगों पर पीतल के दो साकपोश थे और उसके दोनों शानों के बीच पीतल की बरछी थी।⁷ और उसके भाले की छड़ ऐसी थी जैसे जुलाहे का शहतीर और उसके नेज़े का फ़ल छः सौ मिस्काल लोहे का था और एक शख्स ढाल लिए हुए उसके आगे आगे चलता था।⁸ वह खड़ा हुआ, और इस्राईल के लश्करों को पुकार कर उन से कहने लगा कि तुमने आकर जंग के लिए क्यों सफ़ आराई की? क्या मैं फ़िलिस्ती नहीं और तुम साऊल के खादिम नहीं? इसलिए अपने लिए किसी शख्स को चुनो जो मेरे पास उतर आए।⁹ अगर वह मुझे से लड़ सके और मुझे क़त्ल कर डाले तो हम तुम्हारे खादिम हो जाएंगे लेकिन अगर मैं उस पर ग़ालिब आऊँ

* 17:5 17:5 57 किलोग्राम

और उसे क्रतल कर डालूँ तो तुम हमारे खादिम हो जाना और हमारी खिदमत करना। ¹⁰ फिर उस फ़िलिस्ती ने कहा कि मैं आज के दिन इस्राईली फ़ौजों की बे'इज्जती करता हूँ कोई जवान निकालो ताकि हम लड़ें। ¹¹ जब साऊल और सब इस्राईलियों ने उस फ़िलिस्ती की बातें सुनीं, तो परेशान हुए और बहुत डर गए।

११:११ ११ ११:११ ११ ११:११ ११ ११:११ ११ ११:११ ११ ११:११ ११

¹² और दाऊद बैतल हम यहूदाह के उस इफ़राती आदमी का बेटा था जिसका नाम यस्सी था, उसके आठ बेटे थे और वह खुद साऊल के ज़माना के लोगों के बीच बुड़ढा और उम्र दराज़ था। ¹³ और यस्सी के तीन बड़े बेटे साऊल के पीछे पीछे जंग में गए थे और उसके तीनों बेटों के नाम जो जंग में गए थे यह थे इलियाब जो पहलौठा था, और दूसरा अबीनदाब और तीसरा सम्मा। ¹⁴ और दाऊद सबसे छोटा था और तीनों बड़े बेटे साऊल के पीछे पीछे थे। ¹⁵ और दाऊद बैतलहम में अपने बाप की भेड़ बकरियाँ चराने को साऊल के पास से आया जाया करता था। ¹⁶ और वह फ़िलिस्ती सुबह और शाम नज़दीक आता और चालिस दिन तक निकल कर आता रहा। ¹⁷ और यस्सी ने अपने बेटे दाऊद से कहा कि “इस भुने अनाज में से एक ऐफ़ा और यह दस रोटियाँ अपने भाइयों के लिए लेकर इनको जल्द लश्कर गाह, में अपने भाइयों के पास पहुँचा दे। ¹⁸ और उनके हज़ारी सरदार के पास पनीर की यह दस टिकियाँ लेजा और देख कि तेरे भाइयों का क्या हाल है, और उनकी कुछ निशानी ले आ।” ¹⁹ और साऊल और वह भाई और सब इस्राईली जवान एला की वादी में फ़िलिस्तियों से लड़ रहे थे। ²⁰ और दाऊद सुबह को सवेरे उठा, और भेड़ बकरियों को एक रखवाले के पास छोड़ कर यस्सी के हुक्म के मुताबिक़ सब कुछ लेकर खाना हुआ, और जब वह लश्कर जो लड़ने जा रहा था, जंग के लिए ललकार रहा था, उस वक़्त वह छकड़ों के पड़ाव में पहुँचा। ²¹ और इस्राईलियों और फ़िलिस्तियों ने अपने — अपने लश्कर को आमने सामने करके सफ़ आराई की। ²² और दाऊद अपना सामान असबाब के निगहबान के हाथ में छोड़ कर आप लश्कर में दौड़ गया और जाकर अपने भाइयों से ख़ैर — ओ — 'आफ़ियत पूछी। ²³ और वह उनसे बातें करता ही था कि देखो वह पहलवान जात का फ़िलिस्ती जिसका नाम जूलियत था फ़िलिस्ती सफ़ों में से निकला और उसने फिर वैसी ही बातें कहीं और दाऊद ने उनको सुना। ²⁴ और सब इस्राईली जवान उस शख्स को देख कर उसके सामने से भागे और बहुत

डर गए। ²⁵ तब इस्राईली जवान ऐसा कहने लगे, “तुम इस आदमी को जो निकला है देखते हो? यकीनन यह इस्राईल की बे'इज्जती करने को आया है, इसलिए जो कोई उसको मार डाले उसे बादशाह बड़ी दौलत से माला माल करेगा और अपनी बेटी उसे ब्याह देगा, और उसके बाप के घराने को इस्राईल के बीच आज़ाद कर देगा।” ²⁶ और दाऊद ने उन लोगों से जो उसके पास खड़े थे पूछा कि जो शख्स इस फ़िलिस्ती को मार कर यह नंग इस्राईल से दूर करे उस से क्या सुलूक किया जाएगा? क्यूँकि यह ना मख़्तून फ़िलिस्ती होता कौन है कि वह जिंदा खुदा की फ़ौजों की बे'इज्जती करे? ²⁷ और लोगों ने उसे यही जवाब दिया कि उस शख्स से जो उसे मार डाले यह सुलूक किया जाएगा। ²⁸ और उसके सब से बड़े भाई इलियाब ने उसकी बातों को जो वह लोगों से करता था सुना और इलियाब का गुस्सा दाऊद पर भड़का और वह कहने लगा, “तू यहाँ क्यूँ आया है? और वह थोड़ी सी भेड़ बकरियाँ तूने जंगल में किस के पास छोड़ीं? मैं तेरे घमंड और तेरे दिल की शरारत से वाकिफ़ हूँ, तू लड़ाई देखने आया है।” ²⁹ दाऊद ने कहा, “मैंने अब क्या किया? क्या बात ही नहीं हो रही है?” ³⁰ और वह उसके पास से फिर कर दूसरे की तरफ़ गया और वैसी ही बातें करने लगा और लोगों ने उसे फिर पहले की तरह जवाब दिया। ³¹ और जब वह बातें जो दाऊद ने कहीं सुनने में आईं तो उन्होंने साऊल के आगे उनका जिक़र किया और उसने उसे बुला भेजा।

११:११ ११ ११:११ ११ ११:११ ११ ११:११ ११

³² और दाऊद ने साऊल से कहा कि उस शख्स की वजह से किसी का दिल न घबराए, तेरा खादिम जाकर उस फ़िलिस्ती से लड़ेगा। ³³ साऊल ने दाऊद से कहा कि तू इस क़ाबिल नहीं कि उस फ़िलिस्ती से लड़ने को उसके सामने जाए; क्यूँकि तू महज़ लड़का है और वह अपने बचपन से जंगी जवान है। ³⁴ तब दाऊद ने साऊल को जवाब दिया कि तेरा खादिम अपने बाप की भेड़ बकरियाँ चराता था और जब कभी कोई शेर या रीछ आकर झुंड में से कोई बर्रा उठा ले जाता। ³⁵ तो मैं उसके पीछे पीछे जाकर उसे मारता और उसे उसके मुँह से छुड़ाता था और जब वह मुझ पर झपटता तो मैं उसकी दाढ़ी पकड़ कर उसे मारता और हलाक कर देता था। ³⁶ तेरे खादिम ने शेर और रीछ दोनों को जान से मारा इसलिए यह नामख़्तून फ़िलिस्ती उन में से एक की तरह होगा, इसलिए कि उसने जिन्दा खुदा की फ़ौजों की बे'इज्जती की है। ³⁷ फिर दाऊद ने कहा, “खुदावन्द ने मुझे शेर और रीछ के पंजे से बचाया, वही मुझको

इस फ़िलिस्ती के हाथ से बचाएगा।” साऊल ने दाऊद से कहा, “जा खुदावन्द तेरे साथ रहे।” ³⁸ तब साऊल ने अपने कपड़े दाऊद को पहनाए, और पीतल का टोप उसके सर पर रखवा और उसे ज़िरह भी पहनाई। ³⁹ और दाऊद ने उसकी तलवार अपने कपड़ों पर कस ली और चलने की कोशिश की क्योंकि उसने इनको आजमाया नहीं था, तब दाऊद ने साऊल से कहा, “मैं इनको पहन कर चल नहीं सकता क्योंकि मैंने इनको आजमाया नहीं है।” इसलिए दाऊद ने उन सबको उतार दिया। ⁴⁰ और उसने अपनी लाठी अपने हाथ में ली, और उस नाला से पाँच चिकने — चिकने पत्थर अपने वास्ते चुन कर उनको चरवाहे के थैले में जो उसके पास था, या'नी झोले में डाल लिया, और उसका गोफ़न उसके हाथ में था फिर वह फ़िलिस्ती के नज़दीक चला। ⁴¹ और वह फ़िलिस्ती बढ़ा, और दाऊद के नज़दीक आया और उसके आगे — आगे उसका सिपर बरदार था। ⁴² और जब उस फ़िलिस्ती ने इधर उधर निगाह की और दाऊद को देखा तो उसे नाचीज़ जाना क्योंकि वह महज़ लड़का था, और सुर्खरु और नाज़ुक चेहरे का था। ⁴³ तब फ़िलिस्ती ने दाऊद से कहा, “क्या मैं कुत्ता हूँ, जो तू लाठी लेकर मेरे पास आता है?” और उस फ़िलिस्ती ने अपने मा'बूदों का नाम लेकर दाऊद पर ला'नत की। ⁴⁴ और उस फ़िलिस्ती ने दाऊद से कहा, “तू मेरे पास आ, और मैं तेरा गोश्त हवाई परिदों और जंगली जानवरों को दूँगा।” ⁴⁵ और दाऊद ने उस फ़िलिस्ती से कहा कि “तू तलवार भाला और बरछी लिए हुए मेरे पास आता है, लेकिन मैं रब्ब — उल — अफ़वाज के नाम से जो इसराईल के लश्करो का खुदा है, जिसकी तूने बे'इज़्जती की है तेरे पास आता हूँ। ⁴⁶ और आज ही के दिन खुदावन्द तुझको मेरे हाथ में कर देगा, और मैं तुझको मार कर तेरा सर तुझ पर से उतार लूँगा और मैं आज के दिन फ़िलिस्तियों के लश्कर की लाशें हवाई परिदों और ज़मीन के जंगली जानवरों को दूँगा ताकि दुनिया जान ले कि इसराईल में एक खुदा है। ⁴⁷ और यह सारी जमा'अत जान ले कि खुदावन्द तलवार और भाले के ज़रिए' से नहीं बचाता इसलिए कि जंग तो खुदावन्द की है, और वही तुमको हमारे हाथ में कर देगा।” ⁴⁸ और ऐसा हुआ, कि जब वह फ़िलिस्ती उठा, और बढ़ कर दाऊद के मुकाबिला के लिए नज़दीक आया, तो दाऊद ने जल्दी की और लश्कर की तरफ़ उस फ़िलिस्ती से मुकाबिला करने को दौड़ा। ⁴⁹ और दाऊद ने अपने थैले में अपना हाथ डाला और उस में से एक पत्थर लिया और गोफ़न में रख कर उस फ़िलिस्ती के माथे पर मारा और वह पत्थर उसके माथे के अंदर घुस गया और

वह ज़मीन पर मुँह के बल गिर पड़ा। ⁵⁰ इसलिए दाऊद उस गोफ़न और एक पत्थर से उस फ़िलिस्ती पर ग़ालिब आया और उस फ़िलिस्ती को मारा और क़त्ल किया और दाऊद के हाथ में तलवार न थी। ⁵¹ और दाऊद दौड़ कर उस फ़िलिस्ती के ऊपर खड़ा हो गया,

१७३३३३३३ ११ १७३३३३३३३३३३ ११ १७३३३ १७३३३

और उसकी तलवार पकड़ कर मियान से खींची और उसे क़त्ल किया और उसी से उसका सर काट डाला और फ़िलिस्तियों ने जो देखा कि उनका पहलवान मारा गया तो वह भागे। ⁵² और इसराईल और यहूदाह के लोग उठे और ललकार कर फ़िलिस्तियों को गई और 'अकरून के फाटकों तक दौड़ाया और फ़िलिस्तियों में से जो ज़ख्मी हुए थे वह शा'रीम के रास्ते में और §जात और 'अकरून तक गिरते गए। ⁵³ तब बनी इसराईल फ़िलिस्तियों के पीछे से उलटे फिरे और उनके खेमों को लूटा। ⁵⁴ और दाऊद उस फ़िलिस्ती का सर लेकर उसे येरूशलेम में लाया और उसके हथियारों को उसने अपने डेरे में रख दिया। ⁵⁵ जब साऊल ने दाऊद को उस फ़िलिस्ती का मुकाबिला करने के लिए जाते देखा तो उसने लश्कर के सरदार अबनेर से पूछा अबनेर यह लड़का किसका बेटा है? अबनेर ने कहा, ऐ बादशाह तेरी जान की क़सम में नहीं जानता। ⁵⁶ तब बादशाह ने कहा, तू मा'लूम कर कि यह नौजवान किस का बेटा है। ⁵⁷ और जब दाऊद उस फ़िलिस्ती को क़त्ल कर के फ़िरा तो अबनेर उसे लेकर साऊल के पास लाया और फ़िलिस्ती का सर उसके हाथ में था। ⁵⁸ तब साऊल ने उससे कहा, “ऐ जवान तू किसका बेटा है?” दाऊद ने जवाब दिया, “मैं तेरे खादिम बैतलहमी यस्सी का बेटा हूँ।”

18

१७३३३ ११ १७३३३ ११ १७३३३

¹ जब वह साऊल से बातें कर चुका, तो यूनतन का दिल दाऊद के दिल से ऐसा मिल गया कि यूनतन उससे अपनी जान के बराबर मुहब्बत करने लगा। ² और साऊल ने उस दिन से उसे अपने साथ रखवा और फिर उसे उसके बाप के घर जाने न दिया। ³ और यूनतन और दाऊद ने आपस में 'अहद किया, क्योंकि वह उससे अपनी जान के बराबर मुहब्बत रखता था। ⁴ तब यूनतन ने वह क़बा जो वह पहने हुए था उतार कर दाऊद को दी और अपनी पोशाक बल्कि अपनी तलवार और अपनी कमान और अपना कमर बन्द तक दे दिया। ⁵ और जहाँ, कहीं साऊल दाऊद को भेजता वह जाता और 'अक्लमन्दी से काम करता था, और साऊल ने उसे जंगी मर्दों पर मुकर्रर कर दिया और यह बात सारी क्रौम की और साऊल के

मुलाज़िमों की नज़र में अच्छी थी। ⁶ जब दाऊद उस फ़िलिस्ती को क़त्ल कर के लौटा आता था, और वह सब भी आ रहे थे, तो इसराईल के सब शहरों से 'औरतें गाती और नाचती हुई दफ़ों और खुशी के ना'रों और बाजों के साथ साऊल बादशाह के इस्तक्रबाल को निकलीं। ⁷ और वह 'औरतें नाचती हुई गाती जाती थीं, कि साऊल ने तो हज़ारों को पर दाऊद ने लाखों को मारा। ⁸ और साऊल निहायत ख़फ़ा हुआ क्योंकि वह बात उसे बड़ी बुरी लगी, और वह कहने लगा, कि उन्होंने दाऊद के लिए तो लाखों और मेरे लिए सिर्फ़ हज़ारों ही ठहराए। इसलिए बादशाही के 'अलावा उसे और क्या मिलना बाक़ी है? ⁹ इसलिए उस दिन से आगे को साऊल दाऊद को बद गुमानी से देखने लगा। ¹⁰ और दूसरे दिन ऐसा हुआ, कि खुदा कि तरफ़ से बुरी रूह साऊल पर ज़ोर से नाज़िल हुई और वह घर के अंदर नबुव्वत करने लगा, और दाऊद हर दिन की तरह अपने हाथ से बजा रहा था, और साऊल अपने हाथ में अपना भाला लिए था। ¹¹ तब साऊल ने भाला चलाया क्योंकि उसने कहा, कि मैं दाऊद को दीवार के साथ छेद दूँगा, और दाऊद उसके सामने से दो बार हट गया। ¹² इसलिए साऊल दाऊद से डरा करता था क्योंकि खुदावन्द उसके साथ था और साऊल से अलग हो गया था। ¹³ इसलिए साऊल ने उसे अपने पास से अलग कर के उसे हज़ार जवानों का सरदार बना दिया, और वह लोगों के सामने आया जाया करता था। ¹⁴ और दाऊद अपनी सब राहों में 'अक़्लमन्दी के साथ चलता था, और खुदावन्द उसके साथ था। ¹⁵ जब साऊल ने देखा कि वह 'अक़्लमन्दी से काम करता है, तो वह उससे डरने लगा। ¹⁶ लेकिन पूरा इसराईल और यहूदाह के लोग दाऊद को प्यार करते थे, इसलिए कि वह उनके सामने आया जाया करता था।

22222 22 22222 22 22222 222222 22222

¹⁷ तब साऊल ने दाऊद से कहा कि देख मैं अपनी बड़ी बेटी मेरब को तुझ से ब्याह दूँगा, तू सिर्फ़ मेरे लिए बहादुरी का काम कर और खुदावन्द की लड़ाइयाँ लड़, क्योंकि साऊल ने कहा कि मेरा हाथ नहीं बल्कि फ़िलिस्तियों का हाथ उस पर चले। ¹⁸ दाऊद ने साऊल से कहा, मैं क्या हूँ और मेरी हस्ती ही क्या और इसराईल में मेरे बाप का खानदान क्या है, कि मैं बादशाह का दामाद बनूँ? ¹⁹ लेकिन जब वक़्त आ गया कि साऊल की बेटी मेरब दाऊद से ब्याही जाए, तो वह महीलाती 'अदरीएल से ब्याह दी गई। ²⁰ और साऊल की बेटी मीकल दाऊद को चाहती थीं, इसलिए उन्होंने साऊल

को बताया और वह इस बात से खुश हुआ। ²¹ तब साऊल ने कहा, मैं उसी को उसे दूँगा, ताकि यह उसके लिए फंदा हो और फ़िलिस्तियों का हाथ उस पर पड़े, इसलिए साऊल ने दाऊद से कहा कि इस दूसरी दफ़ा तो तू आज के दिन मेरा दामाद हो जाएगा। ²² और साऊल ने अपने खादिमों को हुक्म किया कि दाऊद से चुपके चुपके बातें करो और कहो कि देख बादशाह तुझ से खुश है और उसके सब खादिम तुझे प्यार करते हैं इसलिए अब तू बादशाह का दामाद बन जा। ²³ चुनाँचे साऊल के मुलाज़िमों ने यह बातें दाऊद के कान तक पहुँचाई, दाऊद ने कहा, क्या बादशाह का दामाद बनना तुमको कोई हल्की बात मा'लूम होती है, जिस हाल कि मैं ग़रीब आदमी हूँ और मेरी कुछ औकात नहीं? ²⁴ तब साऊल के मुलाज़िमों ने उसे बताया कि दाऊद ऐसा कहता है। ²⁵ तब साऊल ने कहा, तुम दाऊद से कहना कि बादशाह मेहर नहीं माँगता वह सिर्फ़ फ़िलिस्तियों की सौ खलड़ियाँ चाहता है, ताकि बादशाह के दुश्मनों से इन्तक़ाम लिया जाए, साऊल का यह इरादा था, कि दाऊद को फ़िलिस्तियों के हाथ से मरवा डाले। ²⁶ जब उसके खादिमों ने यह बातें दाऊद से कहीं तो दाऊद बादशाह का दामाद बनने को राज़ी हो गया और अभी दिन पूरे भी नहीं हुए थे। ²⁷ कि दाऊद उठा, और अपने लोगों को लेकर गया और दो सौ फ़िलिस्ती क़त्ल कर डाले और दाऊद उनकी खलड़ियाँ लाया और उन्होंने उनकी पूरी ता'दाद में बादशाह को दिया ताकि वह बादशाह का दामाद हो, और साऊल ने अपनी बेटी मीकल उसे ब्याह दी। ²⁸ और साऊल ने देखा और जान लिया कि खुदावन्द दाऊद के साथ है, और साऊल की बेटी *मीकल उसे चाहती थी। ²⁹ और साऊल दाऊद से और भी डरने लगा, और साऊल बराबर दाऊद का दुश्मन रहा। ³⁰ फिर फ़िलिस्तियों के सरदारों ने धावा किया और जब जब उन्होंने धावा किया साऊल के सब खादिमों की निस्वत दाऊद ने ज़्यादा 'अक़्लमन्दी का काम किया इस से उसका नाम बहुत बड़ा हो गया।

19

22222 22 22222 22 222222 22222 22 222222 22222

¹ और साऊल ने अपने बेटे यूनतन और अपने सब खादिमों से कहा, कि दाऊद को मार डालो। ² लेकिन साऊल का बेटा यूनतन दाऊद से बहुत खुश था इसलिए यूनतन ने दाऊद से कहा, "मेरा बाप तेरे क़त्ल की फ़िक्र में है, इसलिए तू सुबह को अपना खयाल

* 18:28 18:28 तमाम इसराईली लोग भी दाऊद से प्यार करते थे

रखना और किसी पोशीदा जगह में छिपे रहना।³ और मैं बाहर जाकर उस मैदान में जहाँ तू होगा अपने बाप के पास खड़ा हूँगा और अपने बाप से तेरे ज़रिए' बात करूँगा और अगर मुझे कुछ मा'लूम हो जाए तो तुझे बता दूँगा।"⁴ और यूनतन ने अपने बाप साऊल से दाऊद की ता'रीफ की और कहा, कि बादशाह अपने खादिम दाऊद से बुराई न करे क्योंकि उसने तेरा कुछ गुनाह नहीं किया बल्कि तेरे लिए उसके काम बहुत अच्छे रहे हैं।⁵ क्योंकि उसने अपनी जान हथेली पर रखी और उस फ़िलिस्ती को क़त्ल किया और खुदावन्द ने सब इस्राईलियों के लिए बड़ी फ़तह कराई, तूने यह देखा और खुश हुआ, तब तू किस लिए दाऊद को बे वजह क़त्ल करके बे गुनाह के खून का मुजरिम बनना चाहता है?⁶ और साऊल ने यूनतन की बात सुनी और साऊल ने क्रसम खाकर कहा कि खुदावन्द की हयात की क्रसम है वह मारा नहीं जाएगा।⁷ और यूनतन ने दाऊद को बुलाया और उसने वह सब बातें उसको बताई और यूनतन दाऊद को साऊल के पास लाया और वह पहले की तरह उसके पास रहने लगा।⁸ और फिर जंग हुई और दाऊद निकला और फ़िलिस्तियों से लड़ा और बड़ी ख़ैरजी के साथ उनको क़त्ल किया और वह उसके सामने से भागे।⁹ और खुदावन्द की तरफ़ से एक बुरी रूह साऊल पर जब वह अपने घर में अपना भाला अपने हाथ में लिए बैठा था, चढ़ी और दाऊद हाथ से बजा रहा था,¹⁰ और साऊल ने चाहा, कि दाऊद को दीवार के साथ भाले से छेद दे लेकिन वह साऊल के आगे से हट गया, और भाला दीवार में जा घुसा और दाऊद भागा और उस रात बच गया। श

२०२०२० २० २०२०२० २० २०२०२०

¹¹ और साऊल ने दाऊद के घर पर क़ासिद भेजे कि उसकी ताक में रहे और सुबह को उसे मार डालें, इसलिए दाऊद की बीवी मीकल ने उससे कहा, “अगर आज की रात तू अपनी जान न बचाए तो कल मारा जाएगा।”¹² और मीकल ने दाऊद को खिड़की से उतार दिया, इसलिए वह चल दिया और भाग कर बच गया।¹³ और मीकल ने एक बुत को लेकर पलंग पर लिटा दिया, और बकरियों के बाल का तकिया सिरहाने रखकर उसे कपड़ों से ढांक दिया।¹⁴ और जब साऊल ने दाऊद के पकड़ने को क़ासिद भेजे तो वह कहने लगी, कि वह बीमार है।¹⁵ और साऊल ने क़ासिदों को भेजा कि दाऊद को देखें और कहा, कि उसे पलंग समेत मेरे पास लाओ कि मैं उसे क़त्ल करूँ।¹⁶ और जब वह क़ासिद अंदर आए, तो देखा कि पलंग पर बुत पड़ा है और उसके सिरहाने बकरियों के बाल का तकिया है।¹⁷ तब साऊल ने मीकल से कहा,

“कि तू ने मुझ से क्यों ऐसी दगा की और मेरे दुश्मन को ऐसे जाने दिया कि वह बच निकला?” मीकल ने साऊल को जवाब दिया, “कि वह मुझ से कहने लगा, मुझे जाने दे, मैं क्यों तुझे मार डालूँ?”¹⁸ और दाऊद भाग कर बच निकला और रामा में समुएल के पास आकर जो कुछ साऊल ने उससे किया था, सब उसको बताया, तब वह और समुएल दोनों नयोत में जाकर रहने लगे।¹⁹ और साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद रामा के बीच नयोत में है।²⁰ और साऊल ने दाऊद को पकड़ने को क़ासिद भेजे और उन्होंने जो देखा कि नबियों का मजमा' नबुव्वत कर रहा है और समुएल उनका सरदार बना खड़ा है तो खुदा की रूह साऊल के क़ासिदों पर नाज़िल हुई और वह भी नबुव्वत करने लगे।²¹ और जब साऊल तक यह ख़बर पहुँची तो उसने और क़ासिद भेजे और वह भी नबुव्वत करने लगे और साऊल ने फिर तीसरी बार और क़ासिद भेजे और वह भी नबुव्वत करने लगे।²² तब वह खुद रामा को चला और उस बड़े कुवे पर जो सीको में है पहुँच कर पूछने लगा कि समुएल और दाऊद कहाँ हैं? और किसी ने कहा, कि देख वह रामा के बीच नयोत में हैं।²³ तब वह उधर रामा के नयोत की तरफ़ चला और खुदा की रूह उस पर भी नाज़िल हुई और वह चलते चलते नबुव्वत करता हुआ, रामा के नयोत में पहुँचा।²⁴ और उसने भी अपने कपड़े उतारे और वह भी समुएल के आगे नबुव्वत करने लगा, और उस सारे दिन और सारी रात नंगा पड़ा रहा, इसलिए यह कहावत चली, “क्या साऊल भी नबियों में है?”

20

२०२०२० २० २०२०२० २० २०२०२०

¹ और दाऊद रामा के नयोत से भागा, और यूनतन के पास जाकर कहने लगा कि मैंने क्या किया है? मेरा क्या गुनाह है? मैंने तेरे बाप के आगे कौन सी ग़लती की है, जो वह मेरी जान चाहता है?² उसने उससे कहा कि खुदा न करे, तू मारा नहीं जाएगा, देख मेरा बाप कोई काम बड़ा हो या छोटा नहीं करता जब तक उसे मुझ को न बताए, फिर भला मेरा बाप इस बात को क्यों मुझसे छिपाएगा? ऐसा नहीं।³ तब दाऊद ने क्रसम खाकर कहा कि तेरे बाप को अच्छी तरह मा'लूम है, कि मुझ पर तेरे करम की नज़र है इस लिए वह सोचता होगा, कि यूनतन को यह मा'लूम न हो नहीं तो वह दुखी होगा लेकिन यक़ीनन खुदावन्द की हयात और तेरी जान की क्रसम मुझ में और मौत में सिर्फ़ एक ही क़दम का फ़ासला है।⁴ तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि जो कुछ तेरा जी चाहता हो मैं तेरे लिए वही करूँगा।⁵ दाऊद ने यूनतन

से कहा कि देख कल नया चाँद है, और मुझे लाज़िम है कि बादशाह के साथ खाने बैठूँ; लेकिन तू मुझे इजाज़त दे कि मैं परसों शाम तक मैदान में छिपा रहूँ।⁶ अगर मैं तेरे बाप को याद आऊँ तो कहना कि दाऊद ने मुझ से बजिद होकर इजाज़त माँगी ताकि वह अपने शहर बैतलहम को जाए, इसलिए कि वहाँ, सारे घराने की तरफ़ से सालाना कुर्बानी है।⁷ अगर वह कहे कि अच्छा तो तेरे चाकर की सलामती है लेकिन अगर वह गुस्से से भर जाए तो जान लेना कि उसने बदी की ठान ली है।⁸ तब तू अपने खादिम के साथ नरमी से पेश आ, क्योंकि तूने अपने खादिम को अपने साथ खुदावन्द के 'अहद में दाखिल कर लिया है, लेकिन अगर मुझ में कुछ बुराई हो तो तू खुद ही मुझे क़त्ल कर डाल तू मुझे अपने बाप के पास क्यों पहुँचाए? ⁹ यूनतन ने कहा, “ऐसी बात कभी न होगी, अगर मुझे 'इल्म होता कि मेरे बाप का 'इरादा है कि तुझ से बदी करे तो क्या मैं तुझे ख़बर न करता?” ¹⁰ फिर दाऊद ने यूनतन से कहा, “अगर तेरा बाप तुझे सख्त जवाब दे तो कौन मुझे बताएगा?” ¹¹ यूनतन ने दाऊद से कहा, “चल हम मैदान को निकल जाएँ।” चुनाँचे वह दोनों मैदान को चले गए। ¹² तब यूनतन दाऊद से कहने लगा, “खुदावन्द इस्राईल का खुदा गवाह रहे, कि जब मैं कल या परसों 'अनक़रीब इसी वक़्त अपने बाप का राज़ लूँ और देखूँ कि दाऊद के लिए भलाई है तो क्या मैं उसी वक़्त तेरे पास कहला न भेजूँगा और तुझे न बताऊँगा? ¹³ खुदावन्द यूनतन से ऐसा ही बल्कि इससे भी ज़्यादा करे अगर मेरे बाप की यही मर्जी हो कि तुझ से बुराई करे और मैं तुझे न बताऊँ और तुझे रुख़्सत न करदूँ ताकि तू सलामत चला जाए और खुदावन्द तेरे साथ रहे, जैसा वह मेरे बाप के साथ रहा। ¹⁴ और सिर्फ़ यहीं नहीं कि जब तक मैं जीता रहूँ तब ही तक तू मुझ पर खुदावन्द का सा करम करे ताकि मैं मर न जाऊँ; ¹⁵ बल्कि मेरे घराने से भी कभी अपने करम को बाज़ न रखना और जब खुदावन्द तेरे दुश्मनों में से एक एक को ज़मीन पर से मिटा और बर्बाद कर डाले तब भी ऐसा ही करना।” ¹⁶ इसलिए यूनतन ने दाऊद के ख़ानदान से 'अहद किया और कहा कि “खुदावन्द दाऊद के दुश्मनों से बदला ले। ¹⁷ और यूनतन ने दाऊद को उस मुहब्बत की वजह से जो उसको उससे थी दोबारा क़सम खिलाई क्योंकि उससे अपनी जान के बराबर मुहब्बत रखता था।” ¹⁸ तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि “कल नया चाँद है और तू याद आएगा, क्योंकि तेरी जगह ख़ाली रहेगी। ¹⁹ और अपने तीन दिन ठहरने के बाद तू जल्द जाकर

उस जगह आ जाना जहाँ, तू उस काम के दिन छिपा था, और उस पत्थर के नज़दीक रहना जिसका नाम अज़ल है। ²⁰ और मैं उस तरफ़ तीन तीर इस तरह चलाऊँगा, गोया निशाना मारता हूँ। ²¹ और देख, मैं उस वक़्त लड़के को भेजूँगा कि जा तीरों को ढूँड ले आ, इसलिए अगर मैं लड़के से कहूँ कि देख, तीर तेरी इस तरफ़ हैं तो तू उनको उठा, कर ले आना क्योंकि खुदावन्द की हयात की क़सम तेरे लिए सलामती होगी न कि नुक्सान। ²² लेकिन अगर मैं छोकरे से यूँ कहूँ कि देख, तीर तेरी उस तरफ़ हैं तो तू अपनी रास्ता लेना क्योंकि खुदावन्द ने तुझे रुख़्सत किया है। ²³ रहा वह मु'आमिला जिसका ज़िक्र तूने और मैंने किया है इस लिए देख, खुदावन्द हमेशा तक मेरे और तेरे बीच रहे।” ²⁴ तब दाऊद मैदान में जा छिपा और जब नया चाँद हुआ तो बादशाह खाना खाने बैठा। ²⁵ और बादशाह अपने दस्तूर के मुताबिक़ अपनी मसनद पर या'नी उसी मसनद पर जो दीवार के बराबर थी बैठा, और *यूनतन खड़ा हुआ, और अबनेर साऊल के पहलू में बैठा, और दाऊद की जगह ख़ाली रही। ²⁶ लेकिन उस रोज़ साऊल ने कुछ न कहा, क्योंकि उसने गुमान किया कि उसे कुछ हो गया होगा, वह नापाक होगा, वह ज़रूर नापाक ही होगा। ²⁷ और नए चाँद के बाद दूसरे दिन दाऊद की जगह फिर ख़ाली रही, तब साऊल ने अपने बेटे यूनतन से कहा कि “क्या वजह है, कि यस्सी का बेटा न तो कल खाने पर आया न आज आया है?” ²⁸ तब यूनतन ने साऊल को जवाब दिया कि दाऊद ने मुझ से बजिद होकर बैतलहम जाने को इजाज़त माँगी। ²⁹ वह कहने लगा कि “मैं तेरी मिन्नत करता हूँ मुझे जाने दे क्योंकि शहर में हमारे घराने का ज़बीहा है और मेरे भाई ने मुझे हुक़म किया है कि हाज़िर रहूँ, अब अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है तो मुझे जाने दे कि अपने भाइयों को देखूँ, इसीलिए वह बादशाह के दस्तरख़्वान पर हाज़िर नहीं हुआ।” ³⁰ तब साऊल का गुस्सा यूनतन पर भड़का और उसने उससे कहा, “ऐ कज़रफ़्तार चण्डालन के बेटे क्या मैं नहीं जानता कि तूने अपनी शर्मिंदगी और अपनी माँ की बरहनगी की शर्मिंदगी के लिए यस्सी के बेटे को चुन लिया है? ³¹ क्योंकि जब तक यस्सी का यह बेटा इस ज़मीन पर ज़िन्दा है, न तो तुझ को क़याम होगा न तेरी बादशाहत को, इसलिए अभी लोग भेज कर उसे मेरे पास ला क्योंकि उसका मरना ज़रूर है।” ³² तब यूनतन ने अपने बाप साऊल को जवाब दिया “वह क्यों मारा जाए? उसने क्या किया है?” ³³ तब साऊल ने

* 20:25 20:25 योनातन मुकाबिल में बैठ गया

भाला फेंका कि उसे मारे, इससे यूनतन जान गया कि उसके बाप ने दाऊद के क़त्ल का पूरा 'इरादा किया है। 34 इसलिए यूनतन बड़े गुस्सा में दस्तरख़्वान पर से उठ गया और महीना के उस दूसरे दिन कुछ खाना न खाया क्योंकि वह दाऊद के लिए दुखी था इसलिए कि उसके बाप ने उसे रुसवा किया। 35 और सुबह को यूनतन उसी वक़्त जो दाऊद के साथ ठहरा था मैदान को गया और एक लड़का उसके साथ था। 36 और उसने अपने लड़के को हुक्म किया कि दौड़ और यह तीर जो मैं चलाता हूँ ढूँड ला और जब वह लड़का दौड़ा जा रहा था, तो उसने ऐसा तीर लगाया जो उससे आगे गया। 37 और जब वह लड़का उस तीर की जगह पहुँचा जिसे यूनतन ने चलाया था, तो यूनतन ने लड़के के पीछे पुकार कर कहा, “क्या वह तीर तेरी उस तरफ़ नहीं?” 38 और यूनतन उस लड़के के पीछे चिल्लाया, तेज़ जा, ज़ल्दी कर ठहरमत, इस लिए यूनतन के लड़के ने तीरों को जमा किया और अपने आक्रा के पास लौटा। 39 लेकिन उस लड़के को कुछ मा'लूम न हुआ, सिर्फ़ दाऊद और यूनतन ही इसका राज़ जानते थे। 40 फिर यूनतन ने अपने हथियार उस लड़के को दिए और उससे कहा “इनको शहर को ले जा।” 41 जैसे ही वह लड़का चला गया दाऊद जुनूब की तरफ़ से निकला और ज़मीन पर औंधा होकर तीन बार सिज्दा किया और उन्होंने आपस में एक दूसरे को चूमा और आपस में रोए लेकिन दाऊद बहुत रोया। 42 और यूनतन ने दाऊद से कहा कि सलामत चला जा क्योंकि हम दोनों ने खुदावन्द के नाम की क़सम खाकर कहा है कि खुदावन्द मेरे और तेरे बीच और मेरी और तेरी नसल के बीच हमेशा तक रहे, इसलिए वह उठ कर रवाना हुआ और यूनतन शहर में चला गया।

21

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 और दाऊद नोब में अखीमलिक काहिन के पास आया; और अखीमलिक दाऊद से मिलने को काँपता हुआ आया और उससे कहा, “तू क्यों अकेला है, और तेरे साथ कोई आदमी नहीं?” 2 दाऊद ने अखीमलिक काहिन से कहा कि “बादशाह ने मुझे एक काम का हुक्म करके कहा है, कि जिस काम पर मैं तुझे भेजता हूँ, और जो हुक्म मैंने तुझे दिया है वह किसी शख्स पर ज़ाहिर न हो इस लिए मैंने जवानों को फ़ुलानी जगह बिठा दिया है। 3 इसलिए अब तेरे यहाँ क्या है? मेरे हाथ में रोटियों के पाँच टुकड़े या जो कुछ मौजूद हो दे।” 4 काहिन ने दाऊद को जवाब दिया “मेरे यहाँ 'आम

रोटियाँ तो नहीं लेकिन पाक रोटियाँ हैं; बशर्ते कि वह जवान 'औरतों से अलग रहे हों।” 5 दाऊद ने काहिन को जवाब दिया “सच तो यह है कि तीन दिन से 'औरतें हमसे अलग रहीं हैं, और अगरचे यह मा'मूली सफ़र है तोभी जब मैं चला था तब इन जवानों के बर्तन पाक थे, तो आज तो ज़रूर ही वह बर्तन पाक होंगे।” 6 तब काहिन ने पाक रोटि उसको दी क्योंकि और रोटि वहाँ नहीं थी, सिर्फ़ नज़र की रोटि थी, जो खुदावन्द के आगे से उठाई गई थी ताकि उसके बदले उस दिन जब वह उठाई जाए गर्म रोटि रखी जाए। 7 और वहाँ उस दिन साऊल के खादिमों में से एक शख्स खुदावन्द के आगे रुका हुआ था, उसका नाम अदोमी दोएग था। यह साऊल के चरवाहों का सरदार था। 8 फिर दाऊद ने अखीमलिक से पूछा “क्या यहाँ तेरे पास कोई नेज़ह या तलवार नहीं? क्योंकि मैं अपनी तलवार और अपने हथियार अपने साथ नहीं लाया क्योंकि बादशाह के काम की जल्दी थी।” 9 उस काहिन ने कहा, कि “फ़िलिस्ती जोलियत की तलवार जिसे तूने एला की वादी में क़त्ल किया कपड़े में लिपटी हुई अफूद के पीछे रखी है, अगर तु उसे लेना चाहता है तो ले, उसके 'अलावा यहाँ कोई और नहीं है।” दाऊद ने कहा, “वैसे तो कोई है ही नहीं, वही मुझे दे।” 10 और दाऊद उठा, और साऊल के खौफ़ से उसी दिन भागा और जात के बादशाह अकीस के पास चला गया। 11 और अकीस के मुलाज़िमों ने उससे कहा, “क्या यही उस मुल्क का बादशाह दाऊद नहीं? क्या इसी के बारे में नाचते वक़्त गा — गा कर उन्होंने आपस में नहीं कहा था कि साऊल ने तो हज़ारों को लेकिन दाऊद ने लाखों को मारा?” 12 दाऊद ने यह बातें अपने दिल में रखीं और जात के बादशाह अकीस से निहायत डरा। 13 इसलिए वह उनके आगे दूसरी चाल चला और उनके हाथ पड़ कर अपने को दीवाना सा बना लिया, और फाटक के किवाड़ों पर लकीरें खींचने और अपनी थूक को अपनी दाढ़ी पर बहाने लगा। 14 तब अकीस ने अपने नौकरों से कहा, “लो यह आदमी तो दीवाना है, तुम उसे मेरे पास क्यों लाए? 15 क्या मुझे दीवानों की ज़रूरत है जो तुम उसको मेरे पास लाए हो कि मेरे सामने दीवाना पन करे? क्या ऐसा आदमी मेरे घर में आने पाएगा?”

22

'???????? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 और दाऊद वहाँ से चला और 'अदूल्लाम के मग़ारे में भाग आया, और उसके भाई और उसके बाप का सारा घराना यह सुनकर उसके पास वहाँ पहुँचा। 2 और सब कंगाल और सब क़र्ज़दार और सब बिगड़े दिल उसके पास जमा हुए और वह उनका सरदार बना और उसके साथ

करीबन चार सौ आदमी हो गए।³ और वहाँ से दाऊद मोआब के मिसफ़ाह को गया और मोआब के बादशाह से कहा, “मेरे माँ बाप को ज़रा यहीं आकर अपने यहाँ रहने दे जब तक कि मुझे मा'लूम न हो कि खुदा मेरे लिए क्या करेगा।”⁴ और वह उनको शाहे मोआब के सामने ले आया, इसलिए वह जब तक दाऊद गढ़ में रहा, उसी के साथ रहे।⁵ तब जाद नबी ने दाऊद से कहा, इस गढ़ में मत रह, खाना हो और यहूदाह के मुल्क में जा, इसलिए दाऊद खाना हुआ, और हारत के बन में चला गया।⁶ और साऊल ने सुना कि दाऊद और उसके साथियों का पता लगा है, और साऊल उस वक़्त रामा के ज़िब'आ में झाऊ के दरख्त के नीचे अपना भाला अपने हाथ में लिए बैठा था और उसके खादिम उसके चारों तरफ़ खड़े थे।⁷ तब साऊल ने अपने खादिमों से जो उसके चारों तरफ़ खड़े थे कहा, “सुनों तो ऐ बिनयमीनों। क्या यस्सी का बेटा तुम में से हर एक को खेत और ताकिस्तान देगा और तुम सबको हज़ारों और सैकड़ों का सरदार बनाएगा?”⁸ जो तुम सब ने मेरे खिलाफ़ साज़िश की है और जब मेरा बेटा यस्सी के बेटे से 'अहद — ओ — पैमान करता है तो तुम में से कोई मुझ पर ज़ाहिर नहीं करता और तुम में कोई नहीं जो मेरे लिए ग़मगीन हो और मुझे बताए कि मेरे बेटे ने मेरे नौकर को *मेरे खिलाफ़ घात लगाने को उभारा है, जैसा आज के दिन है?”⁹ तब अदोमी दोएग ने जो साऊल के खादिमों के बराबर खड़ा था जवाब दिया कि “मैंने यस्सी के बेटे को नोब में अखीतोब के बेटे अखीमलिक काहिन के पास आते देखा।¹⁰ और उसने उसके लिए खुदावन्द से सवाल किया और उसे ज़ाद — ए — राह दिया और फ़िलिस्ती जूलियत की तलवार दी।”

22:22 22:23 22:24 22:25 22:26 22:27 22:28 22:29 22:30 22:31 22:32 22:33 22:34 22:35 22:36 22:37 22:38 22:39 22:40 22:41 22:42 22:43 22:44 22:45 22:46 22:47 22:48 22:49 22:50 22:51 22:52 22:53 22:54 22:55 22:56 22:57 22:58 22:59 23:1 23:2 23:3 23:4 23:5 23:6 23:7 23:8 23:9 23:10 23:11 23:12 23:13 23:14 23:15 23:16 23:17 23:18 23:19 23:20 23:21 23:22 23:23 23:24 23:25 23:26 23:27 23:28 23:29 23:30 23:31 23:32 23:33 23:34 23:35 23:36 23:37 23:38 23:39 23:40 23:41 23:42 23:43 23:44 23:45 23:46 23:47 23:48 23:49 23:50 23:51 23:52 23:53 23:54 23:55 23:56 23:57 23:58 23:59 24:1 24:2 24:3 24:4 24:5 24:6 24:7 24:8 24:9 24:10 24:11 24:12 24:13 24:14 24:15 24:16 24:17 24:18 24:19 24:20 24:21 24:22 24:23 24:24 24:25 24:26 24:27 24:28 24:29 24:30 24:31 24:32 24:33 24:34 24:35 24:36 24:37 24:38 24:39 24:40 24:41 24:42 24:43 24:44 24:45 24:46 24:47 24:48 24:49 24:50 24:51 24:52 24:53 24:54 24:55 24:56 24:57 24:58 24:59 25:1 25:2 25:3 25:4 25:5 25:6 25:7 25:8 25:9 25:10 25:11 25:12 25:13 25:14 25:15 25:16 25:17 25:18 25:19 25:20 25:21 25:22 25:23 25:24 25:25 25:26 25:27 25:28 25:29 25:30 25:31 25:32 25:33 25:34 25:35 25:36 25:37 25:38 25:39 25:40 25:41 25:42 25:43 25:44 25:45 25:46 25:47 25:48 25:49 25:50 25:51 25:52 25:53 25:54 25:55 25:56 25:57 25:58 25:59 26:1 26:2 26:3 26:4 26:5 26:6 26:7 26:8 26:9 26:10 26:11 26:12 26:13 26:14 26:15 26:16 26:17 26:18 26:19 26:20 26:21 26:22 26:23 26:24 26:25 26:26 26:27 26:28 26:29 26:30 26:31 26:32 26:33 26:34 26:35 26:36 26:37 26:38 26:39 26:40 26:41 26:42 26:43 26:44 26:45 26:46 26:47 26:48 26:49 26:50 26:51 26:52 26:53 26:54 26:55 26:56 26:57 26:58 26:59 27:1 27:2 27:3 27:4 27:5 27:6 27:7 27:8 27:9 27:10 27:11 27:12 27:13 27:14 27:15 27:16 27:17 27:18 27:19 27:20 27:21 27:22 27:23 27:24 27:25 27:26 27:27 27:28 27:29 27:30 27:31 27:32 27:33 27:34 27:35 27:36 27:37 27:38 27:39 27:40 27:41 27:42 27:43 27:44 27:45 27:46 27:47 27:48 27:49 27:50 27:51 27:52 27:53 27:54 27:55 27:56 27:57 27:58 27:59 28:1 28:2 28:3 28:4 28:5 28:6 28:7 28:8 28:9 28:10 28:11 28:12 28:13 28:14 28:15 28:16 28:17 28:18 28:19 28:20 28:21 28:22 28:23 28:24 28:25 28:26 28:27 28:28 28:29 28:30 28:31 28:32 28:33 28:34 28:35 28:36 28:37 28:38 28:39 28:40 28:41 28:42 28:43 28:44 28:45 28:46 28:47 28:48 28:49 28:50 28:51 28:52 28:53 28:54 28:55 28:56 28:57 28:58 28:59 29:1 29:2 29:3 29:4 29:5 29:6 29:7 29:8 29:9 29:10 29:11 29:12 29:13 29:14 29:15 29:16 29:17 29:18 29:19 29:20 29:21 29:22 29:23 29:24 29:25 29:26 29:27 29:28 29:29 29:30 29:31 29:32 29:33 29:34 29:35 29:36 29:37 29:38 29:39 29:40 29:41 29:42 29:43 29:44 29:45 29:46 29:47 29:48 29:49 29:50 29:51 29:52 29:53 29:54 29:55 29:56 29:57 29:58 29:59 30:1 30:2 30:3 30:4 30:5 30:6 30:7 30:8 30:9 30:10 30:11 30:12 30:13 30:14 30:15 30:16 30:17 30:18 30:19 30:20 30:21 30:22 30:23 30:24 30:25 30:26 30:27 30:28 30:29 30:30 30:31 30:32 30:33 30:34 30:35 30:36 30:37 30:38 30:39 30:40 30:41 30:42 30:43 30:44 30:45 30:46 30:47 30:48 30:49 30:50 30:51 30:52 30:53 30:54 30:55 30:56 30:57 30:58 30:59 31:1 31:2 31:3 31:4 31:5 31:6 31:7 31:8 31:9 31:10 31:11 31:12 31:13 31:14 31:15 31:16 31:17 31:18 31:19 31:20 31:21 31:22 31:23 31:24 31:25 31:26 31:27 31:28 31:29 31:30 31:31 31:32 31:33 31:34 31:35 31:36 31:37 31:38 31:39 31:40 31:41 31:42 31:43 31:44 31:45 31:46 31:47 31:48 31:49 31:50 31:51 31:52 31:53 31:54 31:55 31:56 31:57 31:58 31:59 32:1 32:2 32:3 32:4 32:5 32:6 32:7 32:8 32:9 32:10 32:11 32:12 32:13 32:14 32:15 32:16 32:17 32:18 32:19 32:20 32:21 32:22 32:23 32:24 32:25 32:26 32:27 32:28 32:29 32:30 32:31 32:32 32:33 32:34 32:35 32:36 32:37 32:38 32:39 32:40 32:41 32:42 32:43 32:44 32:45 32:46 32:47 32:48 32:49 32:50 32:51 32:52 32:53 32:54 32:55 32:56 32:57 32:58 32:59 33:1 33:2 33:3 33:4 33:5 33:6 33:7 33:8 33:9 33:10 33:11 33:12 33:13 33:14 33:15 33:16 33:17 33:18 33:19 33:20 33:21 33:22 33:23 33:24 33:25 33:26 33:27 33:28 33:29 33:30 33:31 33:32 33:33 33:34 33:35 33:36 33:37 33:38 33:39 33:40 33:41 33:42 33:43 33:44 33:45 33:46 33:47 33:48 33:49 33:50 33:51 33:52 33:53 33:54 33:55 33:56 33:57 33:58 33:59 34:1 34:2 34:3 34:4 34:5 34:6 34:7 34:8 34:9 34:10 34:11 34:12 34:13 34:14 34:15 34:16 34:17 34:18 34:19 34:20 34:21 34:22 34:23 34:24 34:25 34:26 34:27 34:28 34:29 34:30 34:31 34:32 34:33 34:34 34:35 34:36 34:37 34:38 34:39 34:40 34:41 34:42 34:43 34:44 34:45 34:46 34:47 34:48 34:49 34:50 34:51 34:52 34:53 34:54 34:55 34:56 34:57 34:58 34:59 35:1 35:2 35:3 35:4 35:5 35:6 35:7 35:8 35:9 35:10 35:11 35:12 35:13 35:14 35:15 35:16 35:17 35:18 35:19 35:20 35:21 35:22 35:23 35:24 35:25 35:26 35:27 35:28 35:29 35:30 35:31 35:32 35:33 35:34 35:35 35:36 35:37 35:38 35:39 35:40 35:41 35:42 35:43 35:44 35:45 35:46 35:47 35:48 35:49 35:50 35:51 35:52 35:53 35:54 35:55 35:56 35:57 35:58 35:59 36:1 36:2 36:3 36:4 36:5 36:6 36:7 36:8 36:9 36:10 36:11 36:12 36:13 36:14 36:15 36:16 36:17 36:18 36:19 36:20 36:21 36:22 36:23 36:24 36:25 36:26 36:27 36:28 36:29 36:30 36:31 36:32 36:33 36:34 36:35 36:36 36:37 36:38 36:39 36:40 36:41 36:42 36:43 36:44 36:45 36:46 36:47 36:48 36:49 36:50 36:51 36:52 36:53 36:54 36:55 36:56 36:57 36:58 36:59 37:1 37:2 37:3 37:4 37:5 37:6 37:7 37:8 37:9 37:10 37:11 37:12 37:13 37:14 37:15 37:16 37:17 37:18 37:19 37:20 37:21 37:22 37:23 37:24 37:25 37:26 37:27 37:28 37:29 37:30 37:31 37:32 37:33 37:34 37:35 37:36 37:37 37:38 37:39 37:40 37:41 37:42 37:43 37:44 37:45 37:46 37:47 37:48 37:49 37:50 37:51 37:52 37:53 37:54 37:55 37:56 37:57 37:58 37:59 38:1 38:2 38:3 38:4 38:5 38:6 38:7 38:8 38:9 38:10 38:11 38:12 38:13 38:14 38:15 38:16 38:17 38:18 38:19 38:20 38:21 38:22 38:23 38:24 38:25 38:26 38:27 38:28 38:29 38:30 38:31 38:32 38:33 38:34 38:35 38:36 38:37 38:38 38:39 38:40 38:41 38:42 38:43 38:44 38:45 38:46 38:47 38:48 38:49 38:50 38:51 38:52 38:53 38:54 38:55 38:56 38:57 38:58 38:59 39:1 39:2 39:3 39:4 39:5 39:6 39:7 39:8 39:9 39:10 39:11 39:12 39:13 39:14 39:15 39:16 39:17 39:18 39:19 39:20 39:21 39:22 39:23 39:24 39:25 39:26 39:27 39:28 39:29 39:30 39:31 39:32 39:33 39:34 39:35 39:36 39:37 39:38 39:39 39:40 39:41 39:42 39:43 39:44 39:45 39:46 39:47 39:48 39:49 39:50 39:51 39:52 39:53 39:54 39:55 39:56 39:57 39:58 39:59 40:1 40:2 40:3 40:4 40:5 40:6 40:7 40:8 40:9 40:10 40:11 40:12 40:13 40:14 40:15 40:16 40:17 40:18 40:19 40:20 40:21 40:22 40:23 40:24 40:25 40:26 40:27 40:28 40:29 40:30 40:31 40:32 40:33 40:34 40:35 40:36 40:37 40:38 40:39 40:40 40:41 40:42 40:43 40:44 40:45 40:46 40:47 40:48 40:49 40:50 40:51 40:52 40:53 40:54 40:55 40:56 40:57 40:58 40:59 41:1 41:2 41:3 41:4 41:5 41:6 41:7 41:8 41:9 41:10 41:11 41:12 41:13 41:14 41:15 41:16 41:17 41:18 41:19 41:20 41:21 41:22 41:23 41:24 41:25 41:26 41:27 41:28 41:29 41:30 41:31 41:32 41:33 41:34 41:35 41:36 41:37 41:38 41:39 41:40 41:41 41:42 41:43 41:44 41:45 41:46 41:47 41:48 41:49 41:50 41:51 41:52 41:53 41:54 41:55 41:56 41:57 41:58 41:59 42:1 42:2 42:3 42:4 42:5 42:6 42:7 42:8 42:9 42:10 42:11 42:12 42:13 42:14 42:15 42:16 42:17 42:18 42:19 42:20 42:21 42:22 42:23 42:24 42:25 42:26 42:27 42:28 42:29 42:30 42:31 42:32 42:33 42:34 42:35 42:36 42:37 42:38 42:39 42:40 42:41 42:42 42:43 42:44 42:45 42:46 42:47 42:48 42:49 42:50 42:51 42:52 42:53 42:54 42:55 42:56 42:57 42:58 42:59 43:1 43:2 43:3 43:4 43:5 43:6 43:7 43:8 43:9 43:10 43:11 43:12 43:13 43:14 43:15 43:16 43:17 43:18 43:19 43:20 43:21 43:22 43:23 43:24 43:25 43:26 43:27 43:28 43:29 43:30 43:31 43:32 43:33 43:34 43:35 43:36 43:37 43:38 43:39 43:40 43:41 43:42 43:43 43:44 43:45 43:46 43:47 43:48 43:49 43:50 43:51 43:52 43:53 43:54 43:55 43:56 43:57 43:58 43:59 44:1 44:2 44:3 44:4 44:5 44:6 44:7 44:8 44:9 44:10 44:11 44:12 44:13 44:14 44:15 44:16 44:17 44:18 44:19 44:20 44:21 44:22 44:23 44:24 44:25 44:26 44:27 44:28 44:29 44:30 44:31 44:32 44:33 44:34 44:35 44:36 44:37 44:38 44:39 44:40 44:41 44:42 44:43 44:44 44:45 44:46 44:47 44:48 44:49 44:50 44:51 44:52 44:53 44:54 44:55 44:56 44:57 44:58 44:59 45:1 45:2 45:3 45:4 45:5 45:6 45:7 45:8 45:9 45:10 45:11 45:12 45:13 45:14 45:15 45:16 45:17 45:18 45:19 45:20 45:21 45:22 45:23 45:24 45:25 45:26 45:27 45:28 45:29 45:30 45:31 45:32 45:33 45:34 45:35 45:36 45:37 45:38 45:39 45:40 45:41 45:42 45:43 45:44 45:45 45:46 45:47 45:48 45:49 45:50 45:51 45:52 45:53 45:54 45:55 45:56 45:57 45:58 45:59 46:1 46:2 46:3 46:4 46:5 46:6 46:7 46:8 46:9 46:10 46:11 46:12 46:13 46:14 46:15 46:16 46:17 46:18 46:19 46:20 46:21 46:22 46:23 46:24 46:25 46:26 46:27 46:28 46:29 46:30 46:31 46:32 46:33 46:34 46:35 46:36 46:37 46:38 46:39 46:40 46:41 46:42 46:43 46:44 46:45 46:46 46:47 46:48 46:49 46:50 46:51 46:52 46:53 46:54 46:55 46:56 46:57 46:58 46:59 47:1 47:2 47:3 47:4 47:5 47:6 47:7 47:8 47:9 47:10 47:11 47:12 47:13 47:14 47:15 47:16 47:17 47:18 47:19 47:20 47:21 47:22 47:23 47:24 47:25 47:26 47:27 47:28 47:29 47:30 47:31 47:32 47:33 47:34 47:35 47:36 47:37 47:38 47:39 47:40 47:41 47:42 47:43 47:44 47:45 47:46 47:47 47:48 47:49 47:50 47:51 47:52 47:53 47:54 47:55 47:56 47:57 47:58 47:59 48:1 48:2 48:3 48:4 48:5 48:6 48:7 48:8 48:9 48:10 48:11 48:12 48:13 48:14 48:15 48:16 48:17 48:18 48:19 48:20 48:21 48:22 48:23 48:24 48:25 48:26 48:27 48:28 48:29 48:30 48:31 48:32 48:33 48:34 48:35 48:36 48:37 48:38 48:39 48:40 48:41 48:42 48:43 48:44 48:45 48:46 48:47 48:48 48:49 48:50 48:51 48:52 48:53 48:54 48:55 48:56 48:57 48:58 48:59 49:1 49:2 49:3 49:4 49:5 49:6 49:7 49:8 49:9 49:10 49:11 49:12 49:13 49:14 49:15 49:16 49:17 49:18 49:19 49:20 49:21 49:22 49:23 49:24 49:25 49:26 49:27 49:28 49:29 49:30 49:31 49:32 49:33 49:34 49:35 49:36 49:37 49:38 49:39 49:40 49:41 49:42 49:43 49:44 49:45 49:46 49:47 49:48 49:49 49:50 49:51 49:52 49:53 49:54 49:55 49:56 49:57 49:58 49:59 50:1 50:2 50:3 50:4 50:5 50:6 50:7 50:8 50:9 50:10 50:11 50:12 50:13 50:14 50:15 50:16 50:17 50:18 50:19 50:20 50:21 50:22 50:23 50:24 50:25 50:26 50:27 50:28 50:29 50:30 50:31 50:32 50:33 50:34 50:35 50:36 50:37 50:38 50:39 50:40 50:41 50:42 50:43 50:44 50:45 50:46 50:47 50:48 50:49 50:50 50:51 50:52 50:53 50:54 50:55 50:56 50:57 50:58 50:59 51:1 51:2 51:3 51:4 51:5 51:6 51:7 51:8 51:9 51:10 51:11 51:12 51:13 51:14 51:15 51:16 51:17 51:18 51:19 51:20 51:21 51:22 51:23 51:24 51:25 51:26 51:27 51:28 51:29 51:30 51:31 51:32 51:33 51:34 51:35 51:36 51:37 51:38 51:39 51:40 51:41 51:42 51:43 51:44 51:45 51:46 51:47 51:48 51:49 51:50 51:51 51:52 51:53 51:54 51:55 51:56 51:57 51:58 51:59 52:1 52:2 52:3 52:4 52:5 52:6 52:7 52:8 52:9 52:10 52:11 52:12 52:13 52:14 52:15 52:16 52:17 52:18 52:19 52:20 52:21 52:22 52:23 52:24 52:25 52:26 52:27 52:28 52:29 52:30 52:31 52:32 52:33 52:34 52:35 52:36 52:37 52:38 52:39 52:40 52:41 52:42 52:43 52:44 52:45 52:46 52:47 52:48 52:49 52:50 52:51 52:52 52:53 52:54 52:55 52:56 52:57 52:58 52:59 53:1 53:2 53:3 53:4 53:5 53:6 53:7 53:8 53:9 53:10 53:11 53:12 53:13 53:14 53:15 53:16 53:17 53:18 53:19 53:20 53:21 53:22 53:23 53:24 53:25 53:26 53:27 53:28 53:29 53:30 53:31 53:32 53:33 53:34 53:35 53:36 53:37 53:38 53:39 53:40 53:41 53:42 53:43 53:44 53:45 53:46 53:47 53:48 53:49 53:50 53:51 53:52 53:53 53:54 53:55 53:56 53:57 53:58 53:59 54:1 54:2 54:3 54:4 54:5 54:6 54:7 54:8 54:9 54:10 54:11 54:12 54:13 54:14 54:15 54:16 54:17 54:18 54:19 54:20 54:21 54:22 54:23 54:24 54:25 54:26 54:27 54:28 54:29 54:30 54:31 54:32 54:33 54:34 54:35 54:36 54:37 54:38 54:39 54:40 54:41 54:42 54:43 54:44 54:45 54:46 54:47 54:48 54:49 54:50 54:51 54:52 54:53 54:54 54:55 54:56 54:57 54:58 54:59 55:1 55:2 55:3 55:4 55:5 55:6 55:7 55:8 55:9 55:10 55:11 55:12 55:13 55:14 55:15 55:16 55:17 55:18 55:19 55:20 55:21 55:22 55:23 55:24 55:25 55:26 55:27 55:28 55:29 55:30 55:31 55:32 55:33 55:34 55:35 55:36 55:37 55:38 55:39 55:40 55:41 55:42 55:43 55:44 55:45 55:46 55:47 55:48 55:49 55:50 55:51 55:52 55:53 55:5

फिर सवाल किया, खुदावन्द ने जवाब दिया कि “उठ क़'ईला को जा क्योंकि मैं फ़िलिस्तिनों को तेरे क़ब्जे में कर दूँगा।”⁵ इसलिए दाऊद और उसके लोग क़'ईला को गए और फ़िलिस्तिनों से लड़े और उनकी मवाशी ले आए और उनको बड़ी ख़ैरज़ी के साथ क़त्ल किया, यूँ दाऊद ने क़'ईलियों को बचाया।⁶ जब अखीमलिक का बेटा अबीयातर दाऊद के पास क़'ईला को भागा तो उसके हाथ में एक अफूद था जिसे वह साथ ले गया था।⁷ और साऊल को ख़बर हुई कि दाऊद क़'ईला में आया है इसलिए साऊल कहने लगा कि “खुदा ने उसे मेरे क़ब्जे में कर दिया क्योंकि वह जो ऐसे शहर में घुसा है, जिस में फाटक और अड़बंगे हैं तो कैद हो गया है।”⁸ और साऊल ने जंग के लिए अपने सारे लश्कर को बुला लिया ताकि क़'ईला में जाकर दाऊद और उसके लोगों को घेर ले।⁹ और दाऊद को मा'लूम हो गया कि साऊल उसके खिलाफ़ बुराई की तदबीरें कर रहा है, इसलिए उसने अबीयातर काहिन से कहा कि “अफूद यहाँ ले आ।”¹⁰ और दाऊद ने कहा, ऐ खुदावन्द इस्राईल के खुदा तेरे बन्दे ने यह क़त'ई सुना है कि साऊल क़'ईला को आना चाहता है ताकि मेरी वजह से शहर को बरबाद करदे।¹¹ तब क्या क़'ईला के लोग मुझको उसके हवाले कर देंगे? क्या साऊल जैसा तेरे बन्दे ने सुना है आएगा? ऐ खुदावन्द इस्राईल के खुदा मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू अपने बन्दे को बता दे “खुदावन्द ने कहा, वह आएगा।”¹² तब दाऊद ने कहा कि “क्या क़'ईला के लोग मुझे और मेरे लोगों को साऊल के हवाले कर देंगे?” खुदावन्द ने कहा, “वह तुझे हवाले कर देंगे।”

23:28 23:28 जुदाई की चट्टान

¹³ तब दाऊद और उसके लोग जो क़रीबन छः सौ थे उठकर क़'ईला से निकल गए और जहाँ कहीं जा सके चल दिए और साऊल को ख़बर मिली कि दाऊद क़'ईला से निकल गया तब वह जाने से बाज़ रहा।¹⁴ और दाऊद ने वीराने के क़िलों में सुकूनत की और दशत ऐ जीफ़ के पहाड़ी मुल्क में रहा, और साऊल हर रोज़ उसकी तलाश में रहा, लेकिन खुदावन्द ने उसको उसके क़ब्जे में हवाले न किया।¹⁵ और दाऊद ने देखा कि साऊल उसकी जान लेने को निकला है, उस वक़्त दाऊद दशत — ए — जीफ़ के बन में था।¹⁶ और साऊल का बेटा यूनतन उठकर दाऊद के पास बन में गया और खुदा में उसका हाथ मज़बूत किया।¹⁷ उसने उससे कहा, “तू मत डर क्योंकि तू मेरे बाप साऊल के हाथ में नहीं पड़ेगा और तू इस्राईल का बादशाह होगा और मैं तुझ से दूसरे दर्जे पर हूँगा, यह

मेरे बाप साऊल को भी मा'लूम है।”¹⁸ और उन दोनों ने खुदावन्द के आगे 'अहद ओ पैमान किया और दाऊद बन में ठहरा रहा, और यूनतन अपने घर को गया।¹⁹ तब जीफ़ के लोग जिबा में साऊल के पास जाकर कहने लगे, “क्या दाऊद हमारे बीच कोहे हकीला के बन के क़िलों में जंगल के जुनूब की तरफ़ छिपा नहीं है?”²⁰ इसलिए अब ऐ बादशाह तेरे दिल को जो बड़ी आरजू आने की है उसके मुताबिक़ आ और उसको बादशाह के हाथ में हवाले करना हमारा ज़िम्मा रहा।”²¹ तब साऊल ने कहा, “खुदावन्द की तरफ़ से तुम मुबारक हो क्योंकि तुमने मुझ पर रहम किया।”²² इसलिए अब ज़रा जाकर सब कुछ और पक्का कर लो और उसकी जगह को देख, कर जान लो कि उसका ठिकाना कहाँ है, और किसने उसे वहाँ देखा है, क्योंकि मुझ से कहा, गया है कि वह बड़ी चालाकी से काम करता है।²³ इसलिए तुम देख भाल कर जहाँ — जहाँ वह छिपा करता है उन ठिकानों का पता लगा कर ज़रूर मेरे पास फिर आओ और मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और अगर वह इस मुल्क में कहीं भी हो तो मैं उसे यहूदाह के हज़ारों हज़ार में से ढूँड निकालूँगा।”²⁴ इसलिए वह उठे और साऊल से पहले जीफ़ को गए लेकिन दाऊद और उसके लोग म'ऊन के वीराने में थे जो जंगल के जुनूब की तरफ़ मैदान में था।²⁵ और साऊल और उसके लोग उसकी तलाश में निकले और दाऊद को ख़बर पहुँची, इसलिए वह चट्टान पर से उतर आया और म'ऊन के वीराने में रहने लगा, और साऊल ने यह सुनकर म'ऊन के वीराने में दाऊद का पीछा किया।²⁶ और साऊल पहाड़ की इस तरफ़ और दाऊद और उसके लोग पहाड़ की उस तरफ़ चल रहे थे, और दाऊद साऊल के खौफ़ से निकल जाने की जल्दी कर रहा, था इसलिए कि साऊल और उसके लोगों ने दाऊद को और उसके लोगों को पकड़ने के लिए घेर लिया था।²⁷ लेकिन एक कासिद ने आकर साऊल से कहा कि “जल्दी चल क्योंकि फ़िलिस्तिनों ने मुल्क पर हमला किया है।”²⁸ इसलिए साऊल दाऊद का पीछा छोड़ कर फ़िलिस्तिनों का मुकाबिला करने को गया इसलिए उन्होंने उस जगह का नाम *सिला'हम्मखल्कोत रखवा।²⁹ और दाऊद वहाँ से चला गया और 'ऐन जदी के क़िलों में रहने लगा।

24

24:1 24:1 24:1 24:1 24:1 24:1 24:1 24:1 24:1 24:1

¹ जब साऊल फ़िलिस्तिनों का पीछा करके लौटा तो उसे ख़बर मिली कि दाऊद 'ऐन जदी के वीराने में हैं।
² इसलिए साऊल सब इस्राईलियों में से तीन हज़ार

* 23:28 23:28 जुदाई की चट्टान

चुने हुए जवान लेकर जंगली बकरी की चट्टानों पर दाऊद और उसके लोगों की तलाश में चला।³ और वह रास्ता में भेड़ सालो के पास पहुँचा जहाँ एक ग़ार था, और साऊल उस ग़ार में फ़रागत करने घुसा और दाऊद अपने लोगों के साथ उस ग़ार के अंदरूनी खानों में बैठा, था।⁴ और दाऊद के लोगों ने उससे कहा, “देख, यह वह दिन है, जसके बारे में खुदावन्द ने तुझ से कहा, था कि ‘देख, मैं तेरे दुश्मन को तेरे क़ब्जे में कर दूँगा और जो तेरा जी चाहे वह तू उससे करना’” इसलिए दाऊद उठकर साऊल के जुब्बे का दामन चुपके से काट ले गया।⁵ और उसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद का दिल बेचैन हुआ, इसलिए कि उसने साऊल के जुब्बे का दामन काट लिया था।⁶ और उसने अपने लोगों से कहा कि “खुदावन्द न करे कि मैं अपने मालिक से जो खुदावन्द का मम्सूह है, ऐसा काम करूँ कि अपना हाथ उस पर चलाऊँ इसलिए कि वह खुदावन्द का मम्सूह है।”⁷ इसलिए दाऊद ने अपने लोगों को यह बातें कह कर रोका और उनको साऊल पर हमला करने न दिया और साऊल उठ कर ग़ार से निकला और अपनी राह ली।⁸ और बाद उसके दाऊद भी उठा, और उस ग़ार में से निकला और साऊल के पीछे पुकार कर कहने लगा, ऐ मेरे मालिक बादशाह! “जब साऊल ने पीछे फिर कर देखा तो दाऊद ने ओंधे मुँह गिरकर सिज्दा किया।⁹ और दाऊद ने साऊल से कहा, तू क्यों ऐसे लोगों की बातों को सुनता है, जो कहते हैं कि दाऊद तेरी बदी चाहता है? ¹⁰ देख, आज के दिन तूने अपनी आँखों से देखा कि खुदावन्द ने ग़ार में आज ही तुझे मेरे क़ब्जे में कर दिया और कुछ ने मुझ से कहा, भी कि तुझे मार डालूँ लेकिन मेरी आँखों ने तेरा लिहाज़ किया और मैंने कहा कि मैं अपने मालिक पर हाथ नहीं चलाऊँगा क्योंकि वह खुदावन्द का मम्सूह है। ¹¹ अलावा इसके ऐ मेरे बाप देख, यह भी देख, कि तेरे जुब्बे का दामन मेरे हाथ में है, और चूँकि मैंने तेरे जुब्बे का दामन काटा और तुझे मार नहीं डाला इसलिए तू जान ले और देख, ले कि मेरे हाथ में किसी तरह, की बदी या बुराई नहीं और मैंने तेरा कोई गुनाह नहीं किया अगर्चे तू मेरी जान लेने के दर्पे है। ¹² खुदावन्द मेरे और तेरे बीच इन्साफ़ करे और खुदावन्द तुझ से मेरा बदला ले लेकिन मेरा हाथ तुझ पर नहीं उठेगा। ¹³ पुराने लोगों कि मिसाल है, कि बुरों से बुराई होती है लेकिन मेरा हाथ तुझ पर नहीं उठेगा। ¹⁴ इस्राईल का बादशाह किस के पीछे निकला? तू किस के पीछे पड़ा है? एक मेरे हुए कुत्ते के पीछे, एक पिस्सू

के पीछे। ¹⁵ जब खुदावन्द ही मुंसिफ़ हो और मेरे और तेरे बीच फ़ैसला करे और देखे, और मेरा मुक़द्दमा लड़े और तेरे हाथ से मुझे छुड़ाए।” ¹⁶ और ऐसा हुआ, कि जब दाऊद यह बातें साऊल से कह चुका तो साऊल ने कहा, “ऐ मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरी आवाज़ है?” और साऊल चिल्ला कर रोने लगा। ¹⁷ और उसने दाऊद से कहा, “तू मुझ से ज्यादा सच्चा है इसलिए कि तूने मेरे साथ भलाई की है, हालाँकि मैंने तेरे साथ बुराई की। ¹⁸ और तूने आज के दिन ज़ाहिर कर दिया कि तूने मेरे साथ भलाई की है क्योंकि जब खुदावन्द ने मुझे तेरे क़ब्जे में कर दिया तो तूने मुझे क़त्ल न किया। ¹⁹ भला क्या कोई अपने दुश्मन को पाकर उसे सलामत जाने देता है? इसलिए खुदावन्द उसने की के बदले जो तूने मुझ से आज के दिन की तुझ को नेक अज़र दे। ²⁰ और अब देख, मैं खूब जानता हूँ कि तू यकीनन बादशाह होगा और इस्राईल की सल्तनत तेरे हाथ में पड़ कर क़ाईम होगी। ²¹ इसलिए अब मुझ से खुदावन्द की क़सम खा कि तू मेरे बाद मेरी नसल को हलाक नहीं करेगा और मेरे बाप के घराने में से मेरे नाम को मिटा नहीं डालेगा।” ²² इसलिए दाऊद ने साऊल से क़सम खाई और साऊल घर को चला गया पर दाऊद और उसके लोग उस गढ़ में जा बैठे।

25

25:1-25:7

¹ और समुएल मर गया और सब इस्राईली जमा' हुए और उन्होंने उस पर नौहा किया और उसे रामा में उसी के घर में दफ़न किया और दाऊद उठ कर फ़ारान के जंगल को चला गया। ² और म'ऊन में एक शख्स रहता था जिसकी जायदाद करमिल में थी यह शख्स बहुत बड़ा था और उस के पास तीन हज़ार भेड़ें और एक हज़ार बकरियाँ थीं और यह कर्मिल में अपनी भेड़ों के बाल कतर रहा था। ³ इस शख्स का नाम नाबाल और उसकी बीवी का नाम अबीजेल था, यह औरत बड़ी समझदार और खूबसूरत थी लेकिन वह आदमी बड़ा बे अदब और बदकार था और वह कालिब के खानदान से था। ⁴ और दाऊद ने वीराने में सुना कि नाबाल अपनी भेड़ों के बाल कतर रहा, है। ⁵ इसलिए दाऊद ने दस जवान रवाना किए और उसने उन जवानों से कहा, “कि तुम कर्मिल पर चढ़कर नाबाल के पास जाओ, और मेरा नाम लेकर उसे सलाम कहो। ⁶ और उस खुश हाल आदमी से यूँ कहो कि तेरी और तेरे घर कि और तेरे माल असबाब की सलामती हो। ⁷ मैंने अब सुना है कि तेरे यहाँ बाल

* 25:1 25:1 बयावान, कराहने वाला जंगल

कतरने वाले हैं और तेरे चरवाहे हमारे साथ रहे और हमने उनको नुक्सान नहीं पहुँचाया और जब तक वह कर्मिल में हमारे साथ रहे उनकी कोई चीज़ खोई न गई।⁸ तू अपने जवानों से पूछ और वह तुझे बताएँगे, तब इन जवानों पर तेरे करम की नज़र हो इसलिए कि हम अच्छे दिन आए हैं, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि जो कुछ तेरे क़ब्जे में आए अपने खादिमों को और अपने बेटे दाऊद को 'अता कर।'⁹ इसलिए दाऊद के जवानों ने जाकर नाबाल से दाऊद का नाम लेकर यह बातें कहीं और चुप हो रहे।¹⁰ नाबाल ने दाऊद के खादिमों को जवाब दिया "कि दाऊद कौन है? और यस्सी का बेटा कौन है? इन दिनों बहुत से नौकर ऐसे हैं जो अपने आक्रा के पास से भाग जाते हैं।¹¹ क्या मैं अपनी रोटी और पानी और ज़बीहे जो मैंने अपने कतरने वालों के लिए ज़बह किए हैं, लेकर उन लोगों को दूँ जिनको मैं नहीं जानता कि वह कहाँ के हैं?"¹² इसलिए दाऊद के जवान उलटे पाँव फिरे और लौट गए और आकर यह सब बातें उसे बताईं।¹³ तब दाऊद ने अपने लोगों से कहा, अपनी अपनी तलवार बाँध लो, इसलिए हर एक ने अपनी तलवार बाँधी और दाऊद ने भी अपनी तलवार लटकाई, तब करीबन चार सौ जवान दाऊद के पीछे चले और दो सौ सामान के पास रहे।¹⁴ और जवानों में से एक ने नाबाल की बीवी अबीजेल से कहा, "कि देख, दाऊद ने वीराने से हमारे आक्रा को मुबारकबाद देने को कासिद भेजे लेकिन वह उन पर झुंझलाया।¹⁵ लेकिन इन लोगों ने हम से बड़ी नेकी की और हमारा नुक्सान नहीं हुआ, और मैदानों में जब तक हम उनके साथ रहे हमारी कोई चीज़ गुम न हुई।¹⁶ बल्कि जब तक हम उनके साथ भेड़ बकरी चराते रहे वह रात दिन हमारे लिए गोया दीवार थे।¹⁷ इसलिए अब सोच समझ ले कि तू क्या करेगी क्योंकि हमारे आक्रा और उसके सब घराने के खिलाफ़ बदी का मंसूबा बाँधा गया है, क्योंकि यह ऐसा ख़बीस आदमी है कि कोई इस से बात नहीं कर सकता।"¹⁸ तब अबीजेल ने जल्दी की और दो सौ रोटियाँ और मय के दो मश्कीज़े और पाँच पकी पकाई भेंड़ें और भुने हुए अनाज के पाँच पैमाने और किशमिश के एक सौ खोशे और इन्जीर की दो सौ टिकियाँ साथ लीं और उनको गधों पर लाद लिया।¹⁹ और अपने चाकरों से कहा, "तुम मुझ से आगे जाओ, देखो मैं तुम्हारे पीछे पीछे आती हूँ" और उसने अपने शोहर नाबाल को ख़बर न की।²⁰ और ऐसा हुआ, कि जैसे ही वह गधे पर चढ़ कर पहाड़ की आड़ से उतरी दाऊद अपने लोगों के साथ उतरते हुए उसके सामने

आया और वह उनको मिली।²¹ और दाऊद ने कहा, था "कि मैं इस पाजी के सब माल की जो वीराने में था बे फ़ाइदा इस तरह निगहबानी की कि उसकी चीज़ों में से कोई चीज़ गुम न हुई क्योंकि उसने नेकी के बदले मुझ से बदी की।²² इसलिए अगर मैं सुबह की रोशनी होने तक उसके लोगों में से एक लड़का भी बाक़ी छोड़ूँ तो खुदावन्द दाऊद के दुश्मनों से ऐसा ही बल्कि इससे ज़्यादा ही करे।"

222222 22 222222 22 222 222222222 22222

²³ और अबीजेल ने जो दाऊद को देखा, तो जल्दी की और गधे से उतर गई और दाऊद के आगे औंधी गिरी और ज़मीन पर सरनगू हो गई।²⁴ और वह उसके पाँव पर गिर कर कहने लगी, "मुझ पर ऐ मेरे मालिक मुझी पर यह गुनाह हो और ज़रा अपनी लौंडी को इजाज़त दे कि तेरे कान में कुछ कहे और तू अपनी लौंडी की दरख्वास्त सुन।²⁵ मैं तेरी मिन्नत करती हूँ कि मेरा मालिक उस ख़बीस आदमी *नाबाल का कुछ खयाल न करे क्योंकि जैसा उसका नाम है वैसा ही वह है उसका नाम नाबाल है और हिमाक़त उसके साथ है लेकिन मैंने जो तेरी लौंडी हूँ अपने मालिक के जवानों को जिनको तूने भेजा था नहीं देखा।²⁶ और अब ऐ मेरे मालिक! खुदावन्द की हयात की क़सम और तेरी जान ही की क़सम कि खुदावन्द ने जो तुझे ख़ूँरज़ी से और अपने ही हाथों अपना इन्तक़ाम लेने से बाज़ रखवा है इसलिए तेरे दुश्मन और मेरे मालिक के बुराई चाहने वाले नाबाल की तरह ठहरें।²⁷ अब यह हदिया जो तेरी लौंडी अपने मालिक के सामने लाई है, उन जवानों को जो मेरे खुदावन्द की पैरवी करते हैं दिया जाए।²⁸ तू अपनी लौंडी का गुनाह मु'आफ़ कर दे क्योंकि खुदावन्द यकीनन मेरे मालिक का घर काईम रखेगा इसलिए कि मेरे मालिक खुदावन्द की लड़ाईयाँ लड़ता है और तुझ में तमाम उम्र बुराई नहीं पाई जाएगी।²⁹ और जो इंसान तेरा पीछा करने और तेरी जान लेने को उठे तो भी मेरे मालिक की जान ज़िन्दगी के बूक़चे में खुदावन्द तेरे खुदा के साथ बंधी रहेगी लेकिन तेरे दुश्मनों की जानें वह गोया गोफ़न में रखकर फेंक देगा।³⁰ और जब खुदावन्द मेरे मालिक से वह सब नेकियाँ जो उसने तेरे हक़ में फ़रमाई हैं कर चुकेगा और तुझ को इस्राईल का सरदार बना देगा।³¹ तो तुझे इसका ग़म और मेरे मालिक को यह दिली सदमा न होगा कि तूने बे वज़ह खून बहाया या मेरे मालिक ने अपना बदला लिया और जब खुदावन्द मेरे मालिक से भलाई करे तो

† 25:17 25:17 बलियाल का बेटा, बदकार का बेटा, शैतान

‡ 25:18 25:18 20 किलोग्राम

§ 25:25 25:25 बलियाल का बेटा

* 25:25 25:25 बेवकूफ़ या कुंद ज़ेहन

तू अपनी लौंडी को याद करना।”³² दाऊद ने अबीजेल से कहा, “कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा मुबारक हो जिसने तुझे आज के दिन मुझ से मिलने को भेजा।³³ और तेरी 'अकल्मंदी' मुबारक तू खुद भी मुबारक हो जिसने मुझको आज के दिन खूरजी और अपने हाथों अपना बदला लेने से बाज़ रखवा।³⁴ क्योंकि खुदावन्द इस्राईल के खुदा की हयात की कसम जिसने मुझे तुझको नुकसान पहुंचाने से रोका कि अगर तू जल्दी न करती और मुझ से मिलने को न आती तो सुबह की रोशनी तक नाबाल के लिए एक लड़का भी न रहता।”³⁵ और दाऊद ने उसके हाथ से जो कुछ वह उसके लिए लाई थी कुबूल किया और उससे कहा, “अपने घर सलामत जा, देख मैंने तेरी बात मानी और तेरा लिहाज़ किया।”³⁶ और अबीजेल नाबाल के पास आई और देखा कि उसने अपने घर में शाहाना ज़ियाफ़त की तरह दावत कर रखी है और नाबाल का दिल उसके पहलू में खुश है इसलिए कि वह नशे में चूर था, इसलिए उसने उससे सुबह की रोशनी तक न थोड़ा न बहुत कुछ न कहा,³⁷ सुबह को जब नाबाल का नशा उतर गया तो उसकी बीवी ने यह बातें उसे बताईं तब उसका दिल उसके पहलू में मुर्दा हो गया और वह पत्थर की तरह सुन पड़ गया।³⁸ और दस दिन के बाद ऐसा हुआ कि खुदावन्द ने नाबाल को मारा और वह मर गया।³⁹ जब दाऊद ने सुना कि नाबाल मर गया तो वह कहने लगा, “कि खुदावन्द मुबारक हो जो नाबाल से मेरी रुसवाई का मुक़द्दमा लड़ा और अपने बन्दे को बुराई से बाज़ रखवा और खुदावन्द ने नाबाल की शरारत को उसी के सिर पर लादा।” और दाऊद ने अबीजेल के बारे में पैग़ाम भेजा ताकि उससे शादी करे।⁴⁰ और जब दाऊद के खादिम करमिल में अबीजेल के पास आए तो उन्होंने उससे कहा, “कि दाऊद ने हमको तेरे पास भेजा है ताकि हम तुझे उससे शादी करने को लें जाएँ।”⁴¹ इसलिए वह उठी, और ज़मीन पर ओंधे मुँह गिरी और कहने लगी “कि देख, तेरी लौंडी तो नौकर है ताकि अपने मालिक के खादिमों के पाँव धोए।”⁴² और अबीजेल ने जल्दी की और उठकर गधे पर सवार हुई और अपनी पाँच लौंडियाँ जो उसके जिलौ में थीं साथ लेलीं और वह दाऊद के कासिदों के पीछे पीछे गई और उसकी बीवी बनी।⁴³ और दाऊद ने यज़रएल की अखनूअम को भी ब्याह लिया, इसलिए वह दोनों उसकी बीवियाँ बनीं।⁴⁴ और साऊल ने अपनी बेटी मीकल को जो दाऊद की बीवी थी लैस के बेटे जिल्लीमी फिल्ली को दे दिया था।

26

¹ और जीफ़ी जिबा' में साऊल के पास जाकर कहने लगे, “क्या दाऊद हकीला के पहाड़ में जो जंगल के

सामने है, छिपा हुआ, नहीं?”² तब साऊल उठा, और तीन हजार चुने हुए इस्राईली जवान अपने साथ लेकर जीफ़ के जंगल को गया ताकि उस जंगल में दाऊद को तलाश करे।³ और साऊल हकीला के पहाड़ में जो जंगल के सामने है रास्ता के किनारे खेमा ज़न हुआ, पर दाऊद जंगल में रहा, और उसने देखा कि साऊल उसके पीछे जंगल में आया है।⁴ तब दाऊद ने जासूस भेज कर मा'लूम कर लिया कि साऊल हकीकत में आया है? ⁵ तब दाऊद उठ कर साऊल की खेमागाह, में आया और वह जगह देखी जहाँ साऊल और नेर का बेटा अबनेर भी जो उसके लश्कर का सरदार था आराम कर रहे थे और साऊल गाड़ियों की जगह के बीच सोता था और लोग उसके चारों तरफ़ डेर डाले हुए थे।⁶ तब दाऊद ने हिंती अखीमलिक ज़रोयाह के बेटे अबीशै से जो योआब का भाई था कहा “कौन मेरे साथ साऊल के पास खेमागाह में चलेगा?” अबीशय ने कहा, “मैं तेरे साथ चलूँगा।”⁷ इसलिए दाऊद और अबीशै रात को लश्कर में घुसे और देखा कि साऊल गाड़ियों की जगह के बीच में पड़ा सो रहा है और उसका नेज़ा उसके सरहाने ज़मीन में गड़ा हुआ है और अबनेर और लश्कर के लोग उसके चारों तरफ़ पड़े हैं।⁸ तब अबीशै ने दाऊद से कहा, खुदा ने आज के दिन तेरे दुश्मन को तेरे हाथ में कर दिया है इसलिए अब तू ज़रा मुझको इजाज़त दे कि नेज़े के एक ही वार में उसे ज़मीन से पैवंद कर दूँ और मैं उस पर दूसरा वार करने का भी नहीं।⁹ दाऊद ने अबीशै से कहा, “उसे क़त्ल न कर क्योंकि कौन है जो खुदावन्द के मम्सूह पर हाथ उठाए और बे गुनाह ठहरे।”¹⁰ और दाऊद ने यह भी कहा, “कि खुदावन्द की हयात की कसम खुदावन्द आप उसको मारेगा या उसकी मौत का दिन आएगा या वह जंग में जाकर मर जाएगा।¹¹ लेकिन खुदावन्द न करे कि मैं खुदावन्द के मम्सूह पर हाथ चलाऊँ पर ज़रा उसके सरहाने से यह नेज़ा और पानी की सुराही उठा, ले फिर हम चले चलें।”¹² इसलिए दाऊद ने नेज़ा और पानी की सुराही साऊल के सरहाने से उठा ली और वह चल दिए और न किसी आदमी ने यह देखा और न किसी को खबर हुई और न कोई जागा क्योंकि वह सब के सब सोते थे इसलिए कि खुदावन्द की तरफ़ से उन पर गहरी नींद आई हुई थी।¹³ फिर दाऊद दूसरी तरफ़ जाकर उस पहाड़ की चोटी पर दूर खड़ा रहा, और उनके बीच एक बड़ा फ़ासला था।¹⁴ और दाऊद ने उन लोगों को और नेर के बेटे अबनेर को पुकार कर कहा, ऐ अबनेर तु जवाब नहीं देता? अबनेर ने जवाब दिया “तू कौन है जो बादशाह को पुकारता है?”¹⁵ दाऊद ने अबनेर से

से लड़ें और अकीस ने दाऊद से कहा, “तू यक्रीन जान कि तुझे और तेरे लोगों को लश्कर में हो कर मेरे साथ जाना होगा।”² दाऊद ने अकीस से कहा, फिर जो कुछ तेरा खादिम करेगा वह तुझे मा'लूम भी हो जाएगा “अखीस ने दाऊद से कहा, फिर तो हमेशा के लिए तुझ को मैं अपने बुराई का निगहबान ठहराऊँगा।”³ और समुएल मर चुका था और सब इस्राईलियों ने उस पर नौहा कर के उसे उसके शहर रामा में दफन किया था और साऊल ने जिन्नात के आशनाओं और अफसूंगरों को मुल्क से खारिज कर दिया था।⁴ और फ़िलिस्ती जमा'हुए और आकर शूनीम में डेरे डाले और साऊल ने भी सब इस्राईलियों को जमा' किया और वह जिलबु'आ में खेमाज़न हुए।⁵ और जब साऊल ने फ़िलिस्तियों का लश्कर देखा तो परेशान हुआ, और उसका दिल बहुत काँपने लगा।⁶ और जब साऊल ने खुदावन्द से सवाल किया तो खुदावन्द ने उसे न तो ख्वाबों और न उरीम और न नबियों के वसीले से कोई जवाब दिया।⁷ तब साऊल ने अपने मुलाज़िमों से कहा, “कोई ऐसी 'औरत मेरे लिए तलाश करो जिसका आशना जिन्न हो ताकि मैं उसके पास जाकर उससे पूछूँ।” उसके मुलाज़िमों ने उससे कहा, देख, “ऐन दोर में एक 'औरत है जिसका आशना जिन्न है।”⁸ इसलिए साऊल ने अपना भेस बदल कर दूसरी पोशाक पहनी और दो आदमियों को साथ लेकर चला और वह रात को उस 'औरत के पास आए और उसने कहा, “ज़रा मेरी खातिर जिन्न के ज़रिए' से मेरा फ़ाल खोल और जिसका नाम मैं तुझे बताऊँ उसे ऊपर बुला दे।”⁹ तब उस 'औरत ने उससे कहा, “देख, तू जानता है कि साऊल ने क्या किया कि उसने जिन्नात के आशनाओं और अफसूंगरों को मुल्क से काट डाला है, फिर तू क्यूँ मेरी जान के लिए फँदा लगाता है ताकि मुझे मरवा डाले।”¹⁰ तब साऊल ने खुदावन्द की क़सम खा कर कहा, “कि खुदावन्द की हयात की क़सम इस बात के लिए तुझे कोई सज़ा नहीं दी जाएगी।”¹¹ तब उस 'औरत ने कहा, “मैं किस को तेरे लिए ऊपर बुला दूँ?” उसने कहा, “समुएल को मेरे लिए बुला दे।”¹² जब उस 'औरत ने समुएल को देखा तो बुलंद आवाज़ से चिल्लाई और उस 'औरत ने साऊल से कहा, “तूने मुझ से क्यूँ दगा की क्यूँकि तू तो साऊल है।”¹³ तब बादशाह ने उससे कहा, “परेशान मत हो, तुझे क्या दिखाई देता है?” उसने साऊल से कहा, “मुझे एक मा'बूद ज़मीन से उपर आते दिखाई देता है।”¹⁴ तब उसने उससे कहा, “उसकी शकल कैसी है?” उसने कहा, “एक बुड़्ढा ऊपर को आ रहा है और जुब्बा पहने है,” तब साऊल जान गया कि

वह समुएल है और उसने मुँह के बल गिर कर ज़मीन पर सिज्दा किया।¹⁵ समुएल ने साऊल से कहा, “तूने क्यूँ मुझे बेचैन किया कि मुझे ऊपर बुलवाया?” साऊल ने जवाब दिया, “मैं सख्त परेशान हूँ; क्यूँकि फ़िलिस्ती मुझ से लड़ते हैं और खुदा मुझ से अलग हो गया है और न तो नबियों और न तो ख्वाबों के वसीले से मुझे जवाब देता है इसलिए मैंने तुझे बुलाया ताकि तू मुझे बताए कि मैं क्या करूँ।”¹⁶ समुएल ने कहा, फिर तू मुझ से किस लिए पूछता है जिस हाल कि खुदावन्द तुझ से अलग हो गया और तेरा दुश्मन बना है? ¹⁷ और खुदावन्द ने जैसा मेरे ज़रिए' कहा, था वैसा ही किया है, खुदावन्द ने तेरे हाथ से सल्लतनत चाक कर ली और तेरे पड़ोसी दाऊद को 'इनायत की है।¹⁸ इसलिए कि तूने खुदावन्द की बात नहीं मानी और 'अमालीक्रियों से उसके क़हर — ए — शदीद के मुताबिक़ पेश नहीं आया इसी वजह से खुदावन्द ने आज के दिन तुझ से यह बरताव किया।¹⁹ 'अलावा इसके खुदावन्द तेरे साथ इस्राईलियों को भी फ़िलिस्तियों के हाथ में कर देगा और कल तू और तेरे बेटे मेरे साथ होंगे और खुदावन्द इस्राईली लश्कर को भी फ़िलिस्तियों के हाथ में कर देगा।²⁰ तब साऊल फ़ौरन ज़मीन पर लम्बा होकर गिरा और समुएल की बातों की वजह से निहायत डर गया और उस में कुछ ताक़त बाकी न रही क्यूँकि उसने उस सारे दिन और सारी रात रोटी नहीं खाई थी।²¹ तब वह 'औरत साऊल के पास आई और देखा कि वह निहायत परेशान है, इसलिए उसने उससे कहा, “देख, तेरी लौंडी ने तेरी बात मानी और मैंने अपनी जान अपनी हथेली पर रखी और जो बातें तूने मुझ से कहीं मैंने उनको माना है।²² इसलिए अब मैं तेरी मिन्नत करती हूँ कि तू अपनी लौंडी की बात सुन और मुझे 'इजाज़त दे कि रोटी का टुकड़ा तेरे आगे रखूँ, तू खा कि जब तू अपनी राह ले तो तुझे ताक़त मिले।”²³ लेकिन उसने इनकार किया और कहा, कि मैं नहीं खाऊँगा लेकिन उसके मुलाज़िम उस 'औरत के साथ मिलकर उससे बजिद हुए, तब उसने उनका कहा, माना और ज़मीन पर से उठ कर पलंग पर बैठ गया।²⁴ उस 'औरत के घर में एक मोटा बछड़ा था, इसलिए उसने जल्दी की और उसे ज़बह किया और आटा लेकर गूँधा और बे खमीरी रोटियाँ पकाई।²⁵ और उनको साऊल और उसके मुलाज़िमों के आगे लाई और उन्होंने खाया तब वह उठे और उसी रात चले गए।

29

¹ और फ़िलिस्ती अपने सारे लश्कर को अफ्रीक में जमा' करने लगे और इस्राईली उस चश्मा के नज़दीक

जो यज़र'एल में है खेमा ज़न हुए।² और फ़िलिस्तीयों के उमरा सैकड़ों और हज़ारों के साथ आगे — आगे चल रहे थे और दाऊद अपने लोगों के साथ अकीस के साथ पीछे — पीछे जा रहा था।³ तब फ़िलिस्ती अमीरों ने कहा, “इन 'इब्रानियों' का यहाँ क्या काम है?” अकीस ने फ़िलिस्ती अमीरों से कहा “क्या यह इस्राईल के बादशाह साऊल का खादिम दाऊद नहीं जो इतने दिनों बल्कि इतने बरसों से मेरे साथ है और मैंने जब से वह मेरे पास भाग आया है आज के दिन तक उस में कुछ बुराई नहीं पाई?”⁴ लेकिन फ़िलिस्ती हाकिम उससे नाराज़ हुए और फ़िलिस्ती ने उससे कहा, इस शख्स को लौटा दे कि वह अपनी जगह को जो तूने उसके लिए ठहराई है वापस जाए, उसे हमारे साथ जंग पर न जाने दे ऐसा न हो कि जंग में वह हमारा मुखालिफ़ हो क्योंकि वह अपने आक्रा से कैसे मेल करेगा? क्या इन ही लोगों के सिरों से नहीं? ⁵ क्या यह वही दाऊद नहीं जिसके बारे में उन्होंने नाचते वक्रत गा — गा कर एक दूसरे से कहा कि “साऊल ने तो हज़ारों को पर दाऊद ने लाखों को मारा?” ⁶ तब अकीस ने दाऊद को बुला कर उससे कहा, “खुदावन्द की हयात की कसम कि तू सच्चा है और मेरी नज़र में तेरा आना जाना मेरे साथ लश्कर में अच्छा है क्योंकि मैंने जिस दिन से तू मेरे पास आया आज के दिन तक तुझ में कुछ बुराई नहीं पाई तोभी यह हाकिम तुझे नहीं चाहते। ⁷ इसलिए तू अब लौट कर सलामत चला जा ताकि फ़िलिस्ती हाकिम तुझ से नाराज़ न हों।” ⁸ दाऊद ने अकीस से कहा, “लेकिन मैंने क्या किया है? और जब से मैं तेरे सामने हूँ तब से आज के दिन तक मुझ में तूने क्या बात पाई जो मैं अपने मालिक बादशाह के दुश्मनों से जंग करने को न जाऊँ।” ⁹ अकीस ने दाऊद को जवाब दिया “मैं जानता हूँ कि तू मेरी नज़र में खुदा के फ़रिश्ता की तरह नेक है तोभी फ़िलिस्ती हाकिम ने कहा है कि वह हमारे साथ जंग के लिए न जाए। ¹⁰ इसलिए अब तू सुबह सवेरे अपने आक्रा के खादिमों को लेकर जो तेरे साथ यहाँ आए हैं उठना और जैसे ही तुम सुबह सवेरे उठो रोशनी होते होते खाना हो जाना।” ¹¹ इसलिए दाऊद अपने लोगों के साथ तड़के उठा ताकि सुबह को खाना होकर फ़िलिस्तीयों के मुल्क को लौट जाए और फ़िलिस्ती यज़र'एल को चले गए।

30

¹ और ऐसा हुआ, कि जब दाऊद और उसके लोग तीसरे दिन सिक्रलाज में पहुँचे तो देखा कि 'अमालीकियों' ने दख्खनी हिस्से और सिक्रलाज पर चढ़ाई कर के सिक्रलाज को मारा और आग से फूँक दिया। ² और

'औरतों को और जितने छोटे बड़े वहाँ थे सब को कैद कर लिया है, उन्होंने किसी को क़त्ल नहीं किया बल्कि उनको लेकर चल दिए थे। ³ इसलिए जब दाऊद और उसके लोग शहर में पहुँचे तो देखा कि शहर आग से जला पड़ा है, और उनकी बीवियाँ और बेटे और बेटियाँ कैद हो गई हैं। ⁴ तब दाऊद और उसके साथ के लोग ज़ोर ज़ोर से रोने लगे यहाँ तक कि उन में रोने की ताक़त न रही। ⁵ और दाऊद की दोनों बीवियाँ यज़र'एली अखनूअम और कर्मिली नाबाल की बीवी अबीजेल कैद हो गई थीं। ⁶ और दाऊद बड़े शिकंजे में था क्योंकि लोग उसे संगसार करने को कहते थे इसलिए कि लोगों के दिल अपने बेटों और बेटियों के लिए निहायत ग़मगीन थे लेकिन दाऊद ने खुदावन्द अपने खुदा में अपने आप को मज़बूत किया। ⁷ और दाऊद ने अखीमलिक के बेटे अबीयातर काहिन से कहा, कि ज़रा अफूद को यहाँ मेरे पास ले आ, इसलिए अबीयातर अफूद को दाऊद के पास ले आया। ⁸ और दाऊद ने खुदावन्द से पूछा कि “अगर मैं उस फ़ौज का पीछा करूँ तो क्या मैं उनको जा लूँगा?” उसने उससे कहा कि “पीछा कर क्योंकि तू यकीनन उनको पालेगा और ज़रूर सब कुछ छुड़ा लाएगा।” ⁹ इसलिए दाऊद और वह छः सौ आदमी जो उसके साथ थे चले और बसोर की नदी पर पहुँचे जहाँ वह लोग जो पीछे छोड़े गए ठहरे रहे। ¹⁰ लेकिन दाऊद और चार सौ आदमी पीछा किए चले गए क्योंकि दो सौ जो ऐसे थक गए थे कि बसोर की नदी के पार न जा सके पीछे रह गए। ¹¹ और उनको मैदान में एक मिस्री मिल गया, उसे वह दाऊद के पास ले आए और उसे रोटी दी, इसलिए उसने खाई और उसे पीने को पानी दिया। ¹² और उन्होंने अंजीर की टिकया का टुकड़ा और किशमिश के दो खोशे उसे दिए, जब वह खा चुका तो उसकी जान में जान आई क्योंकि उस ने तीन दिन और तीन रात से न रोटी खाई थी न पानी पिया था। ¹³ तब दाऊद ने पूछा “तू किस का आदमी है? और तू कहाँ का है?” उस ने कहा “मैं एक मिस्री जवान और एक 'अमालीकी' का नौकर हूँ और मेरा आक्रा मुझ को छोड़ गया क्योंकि तीन दिन हुए कि मैं बीमार पड़ गया था। ¹⁴ हमने करेतियों के दख्खन में और यहूदाह के मुल्क में और कालिब के दख्खन में लूट मार की और सिक्रलाज को आग से फूँक दिया।” ¹⁵ दाऊद ने उस से कहा “क्या तू मुझे उस फ़ौज तक पहुँचा देगा?” उसने कहा “तू मुझ से खुदा की कसम खा कि न तू मुझे क़त्ल करेगा और न मुझे मेरे आक्रा के हवाले करेगा तो मैं तुझ को उस फ़ौज तक पहुँचा दूँगा।” ¹⁶ जब उसने उसे वहाँ पहुँचा दिया तो देखा कि वह लोग उस सारी

जमीन पर फैले हुए थे और उसे बहुत से माल की वजह से जो उन्होंने फ़िलिस्तीयों के मुल्क और यहूदाह के मुल्क से लूटा था खाते पीते और ज़ियाफतें उड़ा रहे थे।¹⁷ इसलिए दाऊद रात के पहले पहर से लेकर दूसरे दिन की शाम तक उनको मारता रहा, और उन में से एक भी न बचा सिवा चार सौ जवानों के जो ऊँटों पर चढ़ कर भाग गए।¹⁸ और दाऊद ने सब कुछ जो 'अमालीकी' ले गए थे छुड़ा लिया और अपनी दोनों बीवियों को भी दाऊद ने छुड़ाया।¹⁹ और उनकी कोई चीज़ गुम न हुई न छोटी न बड़ी न लड़के न लड़कियाँ न लूट का माल न और कोई चीज़ जो उन्होंने ली थी दाऊद सब का सब लौटा लाया।²⁰ और दाऊद ने सब भेड़ बकरियाँ और गाय और बैल ले लिए और वह उनको बाक़ी जानवर के आगे यह कहते हुए हाँक लाए कि यह दाऊद की लूट है।²¹ और दाऊद उन दो सौ जवानों के पास आया जो ऐसे थक गए थे कि दाऊद के पीछे पीछे न जा सके और जिनको उन्होंने बसोर की नदी पर ठहराया था, वह दाऊद और उसके साथ के लोगों से मिलने को निकले और जब दाऊद उन लोगों के नज़दीक पहुँचा तो उसने उनसे ख़ैर — ओ — 'आफ़्रियत पूछी।²² तब उन लोगों में से जो दाऊद के साथ गए थे सब बड़ जात और ख़बीस लोगों ने कहा, चूँकि यह हमारे साथ न गए, इसलिए हम इनको उस माल में से जो हम ने छुड़ाया है कोई हिस्सा नहीं देंगे 'अलावा हर शख्स की बीवी और बाल बच्चों के ताकि वह उनको लेकर चलें जाएँ। *²³ तब दाऊद ने कहा, "ऐ मेरे भाइयों तुम इस माल के साथ जो खुदावन्द ने हमको दिया है ऐसा नहीं करने पाओगे क्योंकि उसी ने हमको बचाया और उस फ़ौज को जिसने हम पर चढ़ाई की हमारे क़ब्ज़े में कर दिया।²⁴ और इस काम में तुम्हारी मानेगा कौन? क्योंकि जैसा उसका हिस्सा है जो लड़ाई में जाता है वैसा ही उसका हिस्सा होगा जो सामान के पास ठहरता है, दोनों बराबर हिस्सा पाएँगे।"²⁵ और उस दिन से आगे को ऐसा ही रहा कि उसने इस्राईल के लिए यही क़ानून और आईन मुक़र्रर किया जो आज तक है।²⁶ और जब दाऊद सिक़लाज में आया तो उसने लूट के माल में से यहूदाह के बुज़ुर्गों के पास जो उसके दोस्त थे कुछ कुछ भेजा और कहा, कि देखो खुदावन्द के दुश्मनों के माल में से यह तुम्हारे लिए हदिया है।²⁷ यह उनके पास जो बैतएल में और उनके पास जो रामात — उल — जुनूब में और उनके पास जो यतीर में।²⁸ और उनके पास जो 'अरो'ईर में, और उनके पास जो सिक़मोत में और उनके पास जो इस्तिमू'अ में।²⁹ और उनके पास जो

रकिल में और उनके पास जो यरहमीलियों के शहरों में और उनके पास जो क़ीनियों के शहरों में।³⁰ और उनके पास जो हुरमा में और उनके पास जो कोर'आसान में, और उनके पास जो 'अताक में।³¹ और उनके पास जो हबरून में थे और उन सब जगहों में जहाँ जहाँ दाऊद और उसके लोग फ़िरा करते थे, भेजा।

31

¹ और फ़िलिस्ती इस्राईल से लड़े और इस्राईली जवान फ़िलिस्तीयों के सामने से भागे और पहाड़ी — ए — जिल्बू'आ में क़त्ल होकर गिरे।² और फ़िलिस्तीयों ने साऊल और उसके बेटों का खूब पीछा किया और फ़िलिस्तीयों ने साऊल के बेटों यूनतन और अबीनदाब, और मलकीशु'अ को मार डाला।³ और यह जंग साऊल पर निहायत भारी हो गई और तीरअंदाज़ों ने उसे पालिया और वह तीरअंदाज़ों की वजह से सख़्त मुश्किल में पड़ गया।⁴ तब साऊल ने अपने सिलाह बरदार से कहा, अपनी तलवार खींच और उससे मुझे छेद दे ऐसा न हो कि यह नामख़तून आएँ और मुझे छेद लें, और मुझे बे 'इज़ज़त करें लेकिन उसके सिलाह बरदार ऐसा करना न चाहा, क्योंकि वह बहुत डर गया था इसलिए साऊल ने अपनी तलवार ली और उस पर गिरा।⁵ जब उसके सिलाह बरदार ने देखा, कि साऊल मर गया तो वह भी अपनी तलवार पर गिरा और उसके साथ मर गया।⁶ इसलिए साऊल और उसके तीनों बेटे और उसका सिलाह बरदार और उसके सब लोग उसी दिन एक साथ मर मिटे।⁷ जब उन इस्राईली मर्दों ने जो उस वादी की दूसरी तरफ़ और यरदन के पार थे यह देखा कि इस्राईल के लोग भाग गए और साऊल और उसके बेटे मर गए तो वह शहरों को छोड़ कर भाग निकले और फ़िलिस्ती आए और उन में रहने लगे।⁸ दूसरे दिन जब फ़िलिस्ती लाशों के कपड़े उतारने आए तो उन्होंने साऊल और उसके तीनों बेटों को कोहे जिल्बू'आ पर मुर्दा पाया।⁹ इसलिए उन्होंने उसका सर काट लिया और उसके हथियार उतार लिए और फ़िलिस्तीयों के मुल्क में कासिद रवाना कर दिए, ताकि उनके बुतख़ानों और लोगों को यह खुशख़बरी पहुँचा दें।¹⁰ इसलिए उन्होंने उसके हथियारों को 'अस्तारात के मन्दिर में रखवा और उसकी लाश को बैतशान की दीवार पर जड़ दिया।¹¹ जब यबीस जिल'आद के बाशिंदों ने इसके बारे में वह बात जो फ़िलिस्तीयों ने साऊल से की सुनी।¹² तो सब बहादुर उठे, और रातों रात जाकर साऊल और उसके बेटों की लाशें बैतशान की दीवार पर से ले आए और यबीस में पहुँच कर वहाँ उनको जला दिया।

* 30:22 30:22 देखें 1:16

13 और उनकी हड्डियाँ लेकर यबीस में झाऊ के दरख्त के नीचे दफ़न कीं और सात दिन तक रोज़ा रखवा ।

2 समुएल

2222222222 22 222222

2 समुएल की किताब उसके मुसन्निफ़ की पहचान नहीं करती — इसका मुसन्निफ़ नबी समुएल नहीं हो सकता क्योंकि वह मर चुका था असलियत में 1 समुएल और 2 समुएल एक ही किताब थे जिन सत्तर या बहतर लोगों ने पुराने अहदनामे के यूनानी तर्ज का तरजुमा किया था उन्होंने इसको दो किताबों में तक्सीम किया साऊल की मौत के साथ पहली किताब के खतम होने के बाद से लेकर दाउद की हुकूमत के आगाज़ के साथ दूसरी किताब शुरू हुई यह बयान करते हुए कि किस तरह दाउद यहूदिया का बादशाह बना और बाद में तमाम इस्राईल का।

2222 2222 22 2222222 22 2222

इस किताब के तसनीफ़ की तारीख़ तकरीबन 1050 - 722 कबल मसीह है।

इस को बाबुल की गुलामी के दौरान इसतिसना की तारीख़ का एक हिस्सा बतौर लिखा गया।

22222 2222222222 2222 2222

एक तरह से देखा जाये तो इस किताब के असल नाज़रीन व ककारिडन बनी इस्राईल रहे हैं जो दाऊद और सुलेमान के हुकूमत की रियाया और कामयाब नस्ल थी।

222 2222222

2 समुएल की किताब दाउद बादशाह की हुकूमत का कलमबन्द है यह किताब दाउद की स्याक — ए — इबारत में उसके अहद की जगह रखता है — दाउद यरूशलेम को इस्राईल का सियासी और मज़हबी मरकज़ बनाता है — 2 समुएल 5:6 — 12; 6:1 — 17 यहोवा का कलाम (2 समुएल 7:4 — 16) और दाउद के कौल (2 समुएल 23:1 — 17) यह दोनों खुदा की दी हुई बादशाही की अहमियत पर दबाव डालते हैं मसीह की हज़ारसाला बादशाही की नबुव्वत बतौर इशारा किया गया है।

222222

इतिहाद

बैरूनी खाका

1. दाउद की बादशाही का उरूज — 1:1-10:19
2. दाउद की बादशाही का उरूज — 11:1-20:26
3. ज़मीमा — 21:1-24:25

2222 22 2222 22 2222 22 2222 2222

1 और साऊल की मौत के बाद जब दाऊद अमालीक्रियों को मार कर लौटा और दाऊद को सिकलराज में रहते हुए दो दिन हो गए। 2 तो तीसरे दिन ऐसा हुआ कि एक शख्स लश्करगाह में से साऊल के पास से अपने लिबास को फाड़े और सिर पर खाक डाले हुए आया और जब वह दाऊद के पास पहुँचा तो ज़मीन पर गिरा और सिज्दा किया। 3 दाऊद ने उससे कहा, “तू कहाँ से आता है?” उसने उससे कहा, “मैं इस्राईल की लश्करगाह में से बच निकला हूँ।” 4 तब दाऊद ने उससे पूछा, “क्या हाल रहा? ज़रा मुझे बता।” उसने कहा कि “लोग जंग में से भाग गए, और बहुत से गिरे मर गए और साऊल और उसका बेटा यूनतन भी मर गये हैं।” 5 तब दाऊद ने उस जवान से जिसने उसको यह खबर दी कहा, “तुझे कैसे मा'लूम है कि साऊल और उसका बेटा यूनतन मर गये?” 6 वह जवान जिसने उसको यह खबर दी कहने लगा कि मैं कूह — ए — जिलबू'आ पर अचानक पहुँच गया और क्या देखा कि साऊल अपने नेज़ह पर झुका हुआ है रथ और सवार उसका पीछा किए आ रहे हैं। 7 और जब उसने अपने पीछे नज़र की तो मुझको देखा और मुझे पुकारा, मैंने जवाब दिया “मैं हाज़िर हूँ।” 8 उसने मुझे कहा तू कौन है? मैंने उसे जवाब दिया मैं अमालीक्री हूँ। 9 फिर उसने मुझसे कहा, मेरे पास खड़ा होकर मुझे क़त्ल कर डाल क्योंकि मैं बड़े तकलीफ़ में हूँ और अब तक मेरी जान मुझ में है। 10 तब मैंने उसके पास खड़े होकर उसे क़त्ल किया क्योंकि मुझे यक़ीन था कि अब जो वह गिरा है तो बचेगा नहीं और मैं उसके सिर का ताज और बाज़ू पर का कंगन लेकर उनको अपने खुदावन्द के पास लाया हूँ। 11 तब दाऊद ने अपने कपड़ों को पकड़ कर उनको फाड़ डाला और उसके साथ सब आदमियों ने भी ऐसा ही किया। 12 और वह साऊल और उसके बेटे यूनतन और खुदावन्द के लोगों और इस्राईल के घराने के लिये मातम करने लगे और रोने लगे और शाम तक रोज़ा रखा इसलिए कि वह तलवार से मारे गये थे। 13 फिर दाऊद ने उस जवान से जो यह खबर लाया था पूछा कि “तू कहाँ का है?” उसने कहा, “मैं एक परदेसी का बेटा और 'अमालीक्री हूँ।” 14 दाऊद ने उससे कहा, “तू खुदावन्द के ममसूह को हलाक करने के लिए उस पर हाथ चलाने से क्यों न डरा?” 15 फिर दाऊद ने एक जवान को बुलाकर कहा, “नज़दीक जा और उसपर हमला कर।” इसलिए उसने उसे ऐसा मारा कि वह मर गया। 16 और दाऊद ने उससे कहा, “तेरा खून तेरे ही सिर पर हो क्योंकि तू ही ने अपने मुँह से खुद अपने ऊपर गवाही दी। और कहा कि मैंने खुदावन्द के ममसूह को

जान से मारा।”

१७ और दाऊद ने साऊल और उसके बेटे यूनतन

पर इस मर्सिया के साथ मातम किया। १८ और उसने उनको हुकम दिया कि बनी यहूदाह को कमान का गीत सिखायें। देखो वह *याशर की किताब में लिखा है। १९ “ए इस्राईल! तेरे ही ऊँचे मक़ामों पर तेरा गुरुर मारा गया, हाय! पहलवान कैसे मर गए। २० यह जात में न बताना, अस्क़लोन की गलियों में इसकी ख़बर न करना, ऐसा न हो कि फ़िलिस्तिनों की बेटियाँ खुश हों, ऐसा न हो कि नामख़तूनों की बेटियाँ गुरुर करें। २१ ऐ ज़िलबू'आ के पहाड़ों! तुम पर न ओस पड़े और न बारिश हो और न हदिया की चीज़ों के खेत हों, क्योंकि वहाँ पहलवानों की ढाल बुरी तरह से फेंक दी गई, या'नी साऊल की ढाल जिस पर तेल नहीं लगाया गया था। २२ मक़तूलों के खून से ज़बरदस्तों की चर्बी से यूनतन की कमान कभी न टली, और साऊल की तलवार खाली न लौटी। २३ साऊल और यूनतन अपने जीते जी अज़ीज़ और दिल पसन्द थे और अपनी मौत के वक़्त अलग न हुए, वह 'उकाबों से तेज़ और शेर बबरो से ताक़त वर थे। २४ हे इस्राईली औरतों, साऊल के लिए रोओ, जिसने तुमको अच्छे अच्छे अर्ग़वानी लिबास पहनाए और सोने के ज़ेवरों से तुम्हारे लिबास को आरास्ता किया। २५ हाय! लड़ाई में पहलवान कैसे मर गये! यूनतन तेरे ऊँचे मक़ामों पर क़त्ल हुआ। २६ ऐ मेरे भाई यूनतन! मुझे तेरा ग़म है, तू मुझको बहुत ही प्यारा था, तेरी मुहब्बत मेरे लिए 'अजीब थी, औरतों की मुहब्बत से भी ज़्यादा। २७ हाय, पहलवान कैसे मर गये और जंग के हथियार बरबाद हो गये।”

2

१ और इसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद ने खुदावन्द से पूछा कि “क्या मैं यहूदाह के शहरों में से किसी में चला जाऊँ।” खुदावन्द ने उस से कहा, “जा।” दाऊद ने कहा, किधर जाऊँ “उस ने फ़रमाया, हब्रून को।” २ इसलिए दाऊद अपनी दोनों बीवियों यज़र'एली अख़नूअम और कर्मिली नाबाल की बीवी अबीजेल के साथ वहाँ गया। ३ और दाऊद अपने साथ के आदमियों को भी एक एक घराने समेत वहाँ ले गया और वह हब्रून के शहरों में रहने लगे। ४ तब यहूदाह के लोग आए और वहाँ

उन्होंने दाऊद को मसह करके यहूदाह के खानदान का बादशाह बनाया, और उन्होंने दाऊद को बताया कि यबीस ज़िल'आद के लोगों ने साऊल को दफ़न किया था। ५ इसलिए दाऊद ने यबीस ज़िल'आद के लोगों के पास कासिद रवाना किए और उनको कहला भेजा कि खुदावन्द की तरफ़ से तुम मुबारक हो इसलिए कि तुमने अपने मालिक साऊल पर यह एहसान किया और उसे दफ़न किया। ६ इसलिए खुदावन्द तुम्हारे साथ रहमत और सच्चाई को अमल में लाये और मैं भी तुमको इस नेकी का बदला दूँगा इसलिए कि तुमने यह काम किया है। ७ तब तुम्हारे बाज़ू ताक़तवर हों और तुम दिलेर रहो क्योंकि तुम्हारा मालिक साऊल मर गया और यहूदाह के घराने ने मसह कर के मुझे अपना बादशाह बनाया है। ८ लेकिन नेर के बेटे अबनेर ने जो साऊल के लश्कर का सरदार था साऊल के बेटे *इशबोसत को लेकर उसे महनायम में पहुँचाया। ९ और उसे ज़िल'आद और आशर्यों और यज़र'एल और इफ़राईम और बिनयामीन और तमाम इस्राईल का बादशाह बनाया। १० और साऊल के बेटे इशबोसत की उम्र चालीस बरस की थी जब वह इस्राईल का बादशाह हुआ और उसने दो बरस बादशाही की लेकिन यहूदाह के घराने ने दाऊद की पैरवी की। ११ और दाऊद हब्रून में बनी यहूदाह पर सात बरस छः महीने तक हाकिम रहा। १२ फिर नेर का बेटा अबनेर और साऊल के बेटे इशबोसत के खादिम महनायम से ज़िब'ऊन में आए। १३ और ज़रोयाह का बेटा योआब और दाऊद के मुलाज़िम निकले और ज़िब'ऊन के तालाब पर उनसे मिले और दोनों अलग अलग बैठ गये, एक तालाब की इस तरफ़ और दूसरा तालाब की दूसरी तरफ़। १४ तब अबनेर ने योआब से कहा, ज़रा यह जवान उठकर हमारे सामने एक दूसरे का मुक़ाबला करें, योआब ने कहा “ठीक।” १५ तब वह उठकर ता'दाद के मुताबिक़ आमने सामने हुए या'नी साऊल के बेटे इशबोसत और बिनयामीन की तरफ़ से बारह जवान और दाऊद के खादिमों में से बारह आदमी। १६ और उन्होंने एक दूसरे का सिर पकड़ कर अपनी अपनी तलवार अपने मुखालिफ़ के पेट में भोंक दी, इसलिए वह एक ही साथ गिरे इसलिए वह जगह हल्क़त हस्सोरीम कहलाई वह ज़िब'ऊन में है। १७ और उस रोज़ बड़ी सख़्त लड़ाई हुई और अबनेर और इस्राईल के लोगों ने दाऊद के खादिमों से शिकस्त खाई। १८ और ज़रोयाह के तीनों

* 1:18 1:18 आशरकी किताब: यह किताब जो गालिबनक़दीम जंग के गानों का मजमुआ था जिस का हवाला यशौ 10:13 में भी है यह इब्रानी लफ़ज़ है, आशर के मायने हैं, सीधा या खरा * 2:8 2:8 वह इशबोसेथ कहलाता है, इस किताब के 2 — 4 अबवाब में 14 बार इसका नाम आया है — मगर वह 1 तवारीख़ 8:33 और 9:39 में एशबाल भी कहलाता है और 1 समुएल 14:49 में इशवी कहकर आया है, हो सकता है यह इसी नाम का दूसरा तलफ़ूज़ हो, यह किसी तरह से यकीनी है कि इस के नाम का तलफ़ूज़ इशबाल एशबाल था जिस के मायने हैं बाल का शख्स या “बाल मौजूद है” † 2:13 2:13 ज़रुयाह योआब की माँ थी

बेटे योआब, और अबीशै और असाहील वहाँ मौजूद थे और असाहील जंगली हिरन की तरह दौड़ता था। 19 और असाहील ने अबनेर का पीछा किया और अबनेर का पीछा करते वक्त वह दहने या बाएं हाथ न मुड़ा। 20 तब अबनेर ने अपने पीछे नज़र करके उससे कहा, 'ऐ असाहील क्या तू है। उसने कहा, 'हाँ'। 21 अबनेर ने उससे कहा, "अपनी दहनी या बायीं तरफ़ मुड़ जा और जवानों में से किसी को पकड़ कर उसके हथियार लूट ले।" लेकिन 'असाहेल उसका पीछा करने से बाज़ न आया। 22 अबनेर ने असाहील से फिर कहा, "मेरा पीछा करने से बाज़ रह मैं कैसे तुझे ज़मीन पर मार कर डाल दूँ क्योंकि फिर मैं तेरे भाई योआब को क्या मुँह दिखाऊँगा।" 23 इस पर भी उसने मुड़ने से इनकार किया, अबनेर ने अपने भाले के पिछले सिरे से उसके पेट पर ऐसा मारा कि वह पार हो गया तब वह वहाँ गिरा और उसी जगह मर गया और ऐसा हुआ कि जितने उस जगह आए जहाँ 'असाहील गिर कर मरा था वह वहीं खड़े रह गये। 24 लेकिन योआब और अबीशै अबनेर का पीछा करते रहे और जब वह कोह — ए — अम्मा जो दशत — ए — जबऊन के रास्ते में जियाह के मुक्काबिल है पहुँचे तो सूरज डूब गया। 25 और बनी बिनयमीन अबनेर के पीछे इकट्ठे हुए और एक झुण्ड बन गए और एक पहाड़ की चोटी पर खड़े हुए। 26 तब अबनेर ने योआब को पुकार कर कहा, "क्या तलवार हमेशा तक हलाक करती रहे? क्या तू नहीं जानता कि इसका अंजाम कड़वाहट होगा? तू कब लोगों को हुक्म देगा कि अपने भाइयों का पीछा छोड़ कर लौट जायें।" 27 योआब ने कहा, "ज़िन्दा खुदा की क़सम अगर तू न बोला होता तो लोग सुबह ही को ज़रूर चले जाते और अपने भाइयों का पीछा न करते।" 28 फिर योआब ने नरसिंगा फूँका और सब लोग ठहर गये और इस्राईल का पीछा फिर न किया और न फिर लड़े 29 और अबनेर और उसके लोग उस सारी रात मैदान चले, और यरदन के पार हुए, और सब बितारोन से गुज़र कर महनायम में आ पहुँचे। 30 और योआब अबनेर का पीछा छोड़ कर लौटा, और उसने जो सब आदमियों को जमा किया, तो दाऊद के मुलाज़िमों में से उन्नीस आदमी और 'असाहील कम निकले। 31 लेकिन दाऊद के मुलाज़िमों ने बिनयमीन में से और अबनेर के लोगों में से इतने मार दिए कि तीन सौ साठ आदमी मर गये। 32 और उन्होंने 'असाहील को उठा कर उसे उसके बाप की क़बर में जो बैतलहम में थी दफ़न किया और योआब और उसके लोग सारी रात चले और हब्रून पहुँच कर उनको दिन निकला।

3

1 असल में साऊल के घराने और दाऊद के घराने में मुद्दत तक जंग रही और दाऊद रोज़ ब रोज़ ताक़तवर होता गया और साऊल का खानदान कमज़ोर होता गया।

222222 222 2222 22 22 2222 2222 2222

2 और हब्रून में दाऊद के यहाँ बेटे पैदा हुए, अमनून उसका पहलौठा था, जो यज़र ऐली अखनूअम के बतन से था। 3 और दूसरा किलयाब था जो कर्मिली नाबाल की बीवी अबीजेल से हुआ, तीसरा अबीसलोम था जो जसूर के बादशाह तल्मी की बेटी मा'का से हुआ। 4 चौथा अदनियाह था जो हज्जीत का बेटा था और पाँचवाँ सफतियाह जो अबीताल का बेटा था। 5 और छठा इतिर'आम था जो दाऊद की बीवी 'इज्ज़ाह से हुआ, यह दाऊद के यहाँ हब्रून में पैदा हुआ। 6 और जब साऊल के घराने और दाऊद के घराने में जंग हो रही थी, तो अबनेर ने साऊल के घराने में खूब ज़ोर पैदा कर लिया। 7 और साऊल के एक बाँदी थी जिसका नाम रिस्फ़ाह था, वह अय्याह की बेटी थी इसलिए इशबोसत ने अबनेर से कहा, "तू मेरे बाप की बाँदी के पास क्यों गया?" 8 अबनेर इशबोसत की इन बातों से बहुत गुस्सा होकर कहने लगा, "क्या मैं यहूदाह के किसी कुत्ते का सिर हूँ? आज तक मैं तेरे बाप साऊल के घराने और उसके भाइयों और दोस्तों से मेहरबानी से पेश आता रहा हूँ और तुझे दाऊद के हवाले नहीं किया, तो भी तू आज इस 'औरत के साथ मुझ पर 'ऐब लगाता है। 9 खुदा अबनेर से वैसा ही बल्कि उससे ज़्यादा करे अगर मैं दाऊद से वही सुलूक न करूँ जिसकी क़सम खुदावन्द ने उसके साथ खाई थी। 10 ताकि हुक्मत को साऊल के घराने से हटा कर के दाऊद के तख़्त को इस्राईल और यहूदाह दोनों पर दान से बैरसबा' तक काईम करूँ।" 11 और वह अबनेर को एक लफ़्ज़ जवाब न दे सका इसलिए कि उससे डरता था। 12 और अबनेर ने अपनी तरफ़ से दाऊद के पास क़ासिद खाना किए और कहला भेजा कि "मुल्क किसका है? तू मेरे साथ अपना 'अहद बाँध और देख मेरा हाथ तेरे साथ होगा ताकि सारे इस्राईल को तेरी तरफ़ मायल करूँ।" 13 उसने कहा, "अच्छा मैं तेरे साथ 'अहद बाधूँगा पर मैं तुझसे एक बात चाहता हूँ और वह यह है कि जब तू मुझसे मिलने को आए तो जब तक साऊल की बेटी मीकल को पहले अपने साथ न लाये तू मेरा मुँह देखने नहीं पाएगा।" 14 और दाऊद ने साऊल के बेटे इशबोसत को क़ासिदों कि ज़रिए' कहला भेजा कि "मेरी बीवी

मीकल को जिसको मैंने फ़िलिस्तिनों की सौ खलड़ियाँ देकर ब्याहा था मेरे हवाले कर।”¹⁵ इसलिए इशबोसत ने लोग भेज कर उसे उसके शौहर लैस के बेटे फ़लतीएल से छीन लिया।¹⁶ और उसका शौहर उसके साथ चला, और उसके पीछे पीछे बहुरीम तक रोता हुआ चला आया, तब अबनेर ने उससे कहा, “लौट जा।” इसलिए वह “लौट गया।”¹⁷ और अबनेर ने इस्राईली बुजुर्गों के पास खबर भेजी, “गुजरे दिनों में तुम यह चाहते थे कि दाऊद तुम पर बादशाह हो।¹⁸ तब अब ऐसा करलो, क्योंकि खुदावन्द ने दाऊद के हक में फ़रमाया है कि मैं अपने बन्दा दाऊद के ज़रिए अपनी क़ौम इस्राईल को फ़िलिस्तिनों और उनके सब दुश्मनों के हाथ से रिहाई दूँगा।”¹⁹ और अबनेर ने बनी बिनयमीन से भी बातें कीं और अबनेर चला कि जो कुछ इस्राईलियों और बिनयमीन के सारे घराने को अच्छा लगा उसे हब्रून में दाऊद को कह सुनाये।²⁰ इसलिए अबनेर हब्रून में दाऊद के पास आया और बीस आदमी उसके साथ थे तब दाऊद ने अबनेर और उन लोगों की जो उसके साथ थे मेहमान नवाज़ी की।²¹ अबनेर ने दाऊद से कहा, “अब मैं उठकर जाऊँगा और सारे इस्राईल को अपने मालिक बादशाह के पास इकट्ठा करूँगा ताकि वह तुझसे अहद बाँधे और तू जिस जिस पर तेरा जी चाहे हुकूमत करे।” इसलिए दाऊद ने अबनेर को रुखसत किया और वह सलामत चला गया।

22 दाऊद के लोग और योआब किसी जंग से लूट का

बहुत सा माल अपने साथ लेकर आए: लेकिन अबनेर हब्रून में दाऊद के पास नहीं था, क्योंकि उसे उसने रुखसत कर दिया था और वह सलामत चला गया था।²³ और जब योआब और लश्कर के सब लोग जो उसके साथ थे आए तो उन्होंने योआब को बताया कि “नेर का बेटा अबनेर बादशाह के पास आया था और उसने उसे रुखसत कर दिया और वह सलामत चला गया।”²⁴ तब योआब बादशाह के पास आकर कहने लगा, “यह तूने क्या किया? देख! अबनेर तेरे पास आया था, इसलिए तूने उसे क्यूँ रुखसत कर दिया कि वह निकल गया? ²⁵ तू नेर के बेटे अबनेर को जानता है कि वह तुझको धोका देने और तेरे आने जाने और तेरे सारे काम का राज़ लेने आया था।”²⁶ जब योआब दाऊद के पास से बाहर निकला तो उसने अबनेर के पीछे कासिद भेजे और वह उसको सीरह के कुँवें से लौटा ले आए, लेकिन यह दाऊद को मा'लूम नहीं था।²⁷ जब अबनेर हब्रून में लौट आया तो योआब उसे अलग फाटक के अन्दर ले गया, ताकि उसके साथ चुपके चुपके बात करे, और वहाँ अपने भाई 'असाहील के खून के बदले में उसके पेट में ऐसा मारा कि

वह मर गया।²⁸ बाद में जब दाऊद ने यह सुना तो कहा कि “मैं और मेरी हुकूमत दोनों हमेशा तक खुदावन्द के आगे नेर के बेटे अबनेर के खून की तरफ़ से बे गुनाह हैं।²⁹ वह योआब और उसके बाप के सारे घराने के सिर लगे, और योआब के घराने में कोई न कोई ऐसा होता रहे जिसे जरयान हो या कोढ़ी या बैसाखी पर चले या तलवार से मरे या टुकड़े टुकड़े को मोहताज हों।”³⁰ इसलिए योआब और उसके भाई अबीशै ने अबनेर को मार दिया इसलिए कि उसने जिव'ऊन में उनके भाई 'असाहेल को लड़ाई में क़त्ल किया था।³¹ और दाऊद ने योआब से और उन सब लोगों से जो उसके साथ थे कहा कि “अपने कपड़े फाड़ो और टाट पहनो और अबनेर के आगे आगे मातम करो।” और दाऊद बादशाह खुद जनाज़े के पीछे पीछे चला।³² और उन्होंने अबनेर को हब्रून में दफ़न किया और बादशाह अबनेर की क़बर पर ज़ोर ज़ोर से रोया और सब लोग भी रोए।³³ और बादशाह ने अबनेर पर मर्सिया कहा, “क्या अबनेर को ऐसा ही मरना था जैसे बेवकूफ़ मरता है? ³⁴ तेरे हाथ बंधे न थे और न तेरे पाँव बेड़ियों में थे, जैसे कोई बदकारों के हाथ से मरता है वैसे ही तू मारा गया।” तब उसपर सब लोग दोबारह रोए।³⁵ और सब लोग कुछ दिन रहते दाऊद को रोटी खिलाने आए लेकिन दाऊद ने क़सम खाकर कहा, “अगर मैं सूरज के गुरुब होने से पहले रोटी या और कुछ चखूँ तो खुदा मुझ से ऐसा बल्कि इससे ज्यादा करे।”³⁶ और सब लोगों ने इस पर गौर किया और इससे खुश हुए क्योंकि जो कुछ बादशाह करता था सब लोग उससे खुश होते थे।³⁷ तब सब लोगों ने और तमाम इस्राईल ने उसी दिन जान लिया कि नेर के बेटे अबनेर का क़त्ल होना बादशाह की तरफ़ से न था।³⁸ और बादशाह ने अपने मुलाज़िमों से कहा, “क्या तुम नहीं जानते हो कि आज के दिन एक सरदार बल्कि एक बहुत बड़ा आदमी इस्राईल में मरा है? ³⁹ और अगर्चे मैं मम्सूह बादशाह हूँ तो भी आज के दिन बेबस हूँ और यह लोग बनी ज़रोयाह मुझसे ताक़तवर हैं खुदावन्द बदकारों को उसकी गुनाह के मुताबिक़ बदला दे।”

4

1 जब साऊल के बेटे इशबोसत ने सुना कि अबनेर

हब्रून में मर गया तो उसके हाथ ढीले पड़ गए, और सब इस्राईली घबरा गए।² और साऊल के बेटे इशबोसत के दो आदमी थे जो फ़ौजों के सरदार थे, एक का नाम बा'ना और दूसरे का रेकाब था, यह दोनों बिनयमीन की नसल के बैरूती रिम्मोंन के बेटे थे, क्यूँकि बैरूत भी बनी

बिनयमीन का गिना जाता है।³ और बैरूती जिच्तीम को भाग गए थे चुनाँचे आज के दिन तक वह वहीं रहते हैं।⁴ और साऊल के बेटे यूनतन का एक लंगड़ा बेटा था, जब साऊल और यूनतन की खबर यज़र'एल से पहुँची तो एह पाँच बरस का था, तब उसकी दाया उसको उठा कर भागी और उसने जो भागने में जल्दी की तो ऐसा हुआ कि वह गिर पड़ा और वह लंगड़ा हो गया उसका नाम मिफ्रीबोसत था।⁵ और बैरूती रिम्मोन के बेटे रेकाब और बा'ना चले और कड़ी धूप के वक़्त इशबोसत के घर आए जब दोपहर को आराम कर रहा था।⁶ तब वह वहाँ घर के अन्दर गेहूँ लेने के बहाने से घुसे और उसके पेट में मारा और रेकाब और उसका भाई बा'ना भाग निकले।^{*} ⁷ † जब वह घर में घुसे तो वह अपनी आरामगाह में अपने बिस्तर पर सोता था, तब उन्होंने उसे मारा और क़त्ल किया और उसका सिर काट दिया और उसका सिर लेकर तमाम रात मैदान की राह चले।⁸ और इशबोसत का सिर हब्रून में दाऊद के पास ले आए और बादशाह से कहा, “तेरा दुश्मन साऊल जो तेरी जान का तालिब था यह उसके बेटे इशबोसत का सिर है, इसलिए खुदावन्द ने आज के दिन मेरे मालिक बादशाह का बदला साऊल और उसकी नसल से लिया।”⁹ तब दाऊद ने रेकाब और उसके भाई बा'ना को बैरूती रिम्मोन के बेटे थे जवाब दिया कि “खुदावन्द की हयात की क़सम जिसने मेरी जान को हर मुसीबत से रिहाई दी है।¹⁰ जब एक शख्स ने मुझसे कहा कि देख साऊल मर गया और समझा कि खुशखबरी देता है तो मैंने उसे पकड़ा और सिक़लाज में उसे क़त्ल किया यही सज़ा मैंने उसे उसकी ख़बर के बदले दिया।¹¹ तब जब बदकारों ने एक सच्चे इंसान को उसी के घर में उसके बिस्तर पर क़त्ल किया है, तो क्या मैं अब उसके खून का बदला तुमसे ज़रूर न लूँ और तुमको ज़मीन पर से मिटा न डालूँ?”¹² तब दाऊद ने अपने जवानों को हुक्म दिया, और उन्होंने उनको क़त्ल किया और उनके हाथ और पाँव काट डाले, और उनको हब्रून में तालाब के पास टाँग दिया और इशबोसत के सिर को लेकर उन्होंने हब्रून में अबनेर की क़ब्र में दफ़न किया।

5

१ तब इस्राईल के सब क़बीले हब्रून में दाऊद के पास आकर कहने लगे, “देख हम तेरी हड्डी और तेरा

^{*} 4:6 4:6 गेहूँ फटकते वक़्त औरत जो दरवाज़े पर थी वह ऊंचने लगी थी और वह सो गयी थी, सो रेकाब और बा'ना फिसल गए, उन्होंने ने इशबोसत को पेट में मारा और उसे क़त्ल किया, फिर वह वहाँ से बच कर निकल गए महल
† 4:7 4:7 यरदन ‡ 4:7 4:7 अराबह * 5:8 5:8 यह्दे का महल,

गोश्त हैं।² और गुज़रे ज़माने में जब साऊल हमारा बादशाह था, तो तू ही इस्राईलियों को ले जाया और ले आया करता था: और खुदावन्द ने तुझसे कहा कि तू मेरे इस्राईली लोगों की गल्ला बानी करेगा और तू इस्राईल का सरदार होगा।”³ गर्ज इस्राईल के सब बुज़ुर्ग हब्रून में बादशाह के पास आए और दाऊद बादशाह ने हब्रून में उनके साथ खुदावन्द के सामने 'अहद बाँधा और उन्होंने दाऊद को मसह करके इस्राईल का बादशाह बनाया।⁴ और दाऊद जब हुक्मत करने लगा तो तीस बरस का था और उसने चालीस बरस बादशाहत की।⁵ उसने हब्रून में सात बरस छः महीने यहूदाह पर हुक्मत की और येरूशलेम में सब इस्राईल और यहूदाह पर तैंतीस बरस बादशाहत की।

२२२२ २२ २२२२ २२२२२२२ २२ २२२२२२ २२२२

⁶ फिर बादशाह और उसके लोग येरूशलेम को यबूसियों पर जो उस मुल्क के बाशिंदे थे चढ़ाई करने लगे, उन्होंने दाऊद से कहा, “जब तक तू अंधों और लंगड़ों को न ले जाए यहाँ नहीं आने पायेगा।” वह समझते थे कि दाऊद यहाँ नहीं आ सकता है।⁷ तो भी दाऊद ने सिय्यून का क़िला' ले लिया, वही दाऊद का शहर है।⁸ और दाऊद ने उस दिन कहा कि “जो कोई यबूसियों को मारे वह नाले को जाए और उन लंगड़ों और अंधों को मारे जिन से दाऊद के दिल को नफ़रत है।” इसी लिए यह कहावत है कि “अंधे और लंगड़े वहाँ हैं, इसलिए *वह घर में नहीं आ सकता।”⁹ और दाऊद उस क़िला' में रहने लगा और उसने उसका नाम दाऊद का शहर रखा और दाऊद ने चारों तरफ़ मिल्लो से लेकर अन्दर के रुख तक बहुत कुछ ता'मीर किया।¹⁰ और दाऊद बढ़ता ही गया क्यूँकि खुदावन्द लश्क़रों का खुदा उसके साथ था।¹¹ और सूर के बादशाह हेरान ने क़ासिदों को और देवदार की लकड़ियों और बढ़इयों और राजगीरों को दाऊद के पास भेजा और उन्होंने दाऊद के लिए एक महल बनाया।¹² और दाऊद को यकीन हुआ कि खुदावन्द ने उसे इस्राईल का बादशाह बनाकर क़यास बख़्शा, और उसने उसकी हुक्मत को अपनी क़ौम इस्राईल की खातिर मुम्ताज़ किया है।¹³ और हब्रून से चले आने के बाद दाऊद ने येरूशलेम से और बाँदियाँ रख लीं और बीवियाँ कीं और दाऊद के यहाँ और बेटे बेटियाँ पैदा हुईं।¹⁴ और जो येरूशलेम में

उसके यहाँ पैदा हुए, उनके नाम यह हैं सम्मू'आ, और सोबाब और नातन और सुलेमान। ¹⁵ और इबहार और इलिसू'अ और नफ़ज और यफ़ी। ¹⁶ और इलीसमा' और इलीयदा और इलिफ़ालत। ¹⁷ और जब फ़िलिस्तिनों ने सुना कि उन्होंने दाऊद को मसह करके इस्राईल का बादशाह बनाया है, तो सब फ़िलिस्ती दाऊद की तलाश में चढ़ आए और दाऊद को खबर हुई, तब वह किला' में चला गया। ¹⁸ और फ़िलिस्ती आकर रिफ़ाईम की वादी में फ़ैल गये। ¹⁹ तब दाऊद ने खुदा से पूछा, "क्या मैं फ़िलिस्तिनों के मुकाबला को जाऊँ? क्या तू उनको मेरे कब्जे में कर देगा?" खुदावन्द ने दाऊद से कहा कि "जा। क्योंकि मैं ज़रूर फ़िलिस्तिनों को तेरे कब्जे में कर दूँगा।" ²⁰ फिर दाऊद बा'ल प्राज़ीम में आया और वहाँ दाऊद ने उनको मारा और कहने लगा कि "खुदावन्द ने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने तोड़ डाला जैसे पानी टूट कर बह निकलता है।" तब उसने उस जगह का नाम बा'ल प्राज़ीम रखा। ²¹ और वहीं उन्होंने अपने बुतों को छोड़ दिया था तब दाऊद और उसके लोग उनको ले गए। ²² और फ़िलिस्ती फिर चढ़ आए और रिफ़ाईम की वादी में फ़ैल गये। ²³ और जब दाऊद ने खुदावन्द से पूछा तो उसने कहा, "तू चढ़ाई न कर, उनके पीछे से घूम कर तूत के दरख्तों के सामने से उन पर हमला कर। ²⁴ और जब तूत के दरख्तों की फुन्गियों में तुझे फ़ौज के चलने की आवाज़ सुनाई दे तो चुस्त हो जाना, क्योंकि उस वक़्त खुदावन्द तेरे आगे आगे निकल चुका होगा, ताकि फ़िलिस्तिनों के लश्कर को मारे।" ²⁵ और दाऊद ने जैसा खुदावन्द ने उसे फ़रमाया था वैसा ही किया और फ़िलिस्तिनों को जिबा' से जज़र तक मारता गया।

6

॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥

¹ और दाऊद ने फिर इस्राईलियों के सब चुने हुए तीस हज़ार मर्दों को जमा' किया। ² और दाऊद उठा और सब लोगों को जो उसके साथ थे लेकर बा'ला यहूदाह से चला ताकि खुदा के संदूक को उधर से ले आए, जो उस नाम का या'नी रब्ब — उल — अफ़वाज के नाम का कहलाता है, जो करुबियों पर बैठता है। ³ तब उन्होंने खुदा के संदूक को नई गाड़ी पर रखा और उसे अबीनदाब के घर से जो पहाड़ी पर था निकाल लाये, और उस नई गाड़ी को अबीनदाब के बेटे उज़्ज़ह और अखियो हॉकने लगे। ⁴ और वह उसे अबीनदाब के घर से जो पहाड़ी पर था खुदा के संदूक के साथ निकाल लाये, और अखियो संदूक के आगे आगे चल रहा था। ⁵ और दाऊद और इस्राईल का सारा घराना सनोबर की लकड़ी के सब तरह के साज़ और सितार बरबत और दफ़ और खन्जरी और

झाँझ खुदावन्द के आगे आगे बजाते चले। ⁶ और जब वह नकोन के खलियान पर पहुँचे तो उज़्ज़ह ने खुदा के संदूक की तरफ़ हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई थी। ⁷ तब खुदावन्द का गुस्सा उज़्ज़ह पर भड़का और खुदा ने वहीं उसे उसकी खता की वजह से मारा, और वह वहीं खुदा के संदूक के पास मर गया। ⁸ और दाऊद इस वजह से कि खुदा उज़्ज़ह पर टूट पड़ा नाखुश हुआ, और उसने उस जगह का नाम परज़ उज़्ज़ह रखवा जो आज के दिन तक है। ⁹ और दाऊद उस दिन खुदावन्द से डर गया और कहने लगा कि "खुदावन्द का संदूक मेरे यहाँ क्यूँकर आए?" ¹⁰ और दाऊद ने खुदावन्द के संदूक को अपने यहाँ, दाऊद के शहर में ले जाना न चाहा, बल्कि दाऊद उसे एक तरफ़ जाती 'ओबेदअदूम के घर ले गया। ¹¹ और खुदावन्द का संदूक जाती ओबेदअदूम के घर में तीन महीने तक रहा और खुदावन्द ने ओबेदअदूम को और उसके सारे घराने को बरकत दी। ¹² और दाऊद बादशाह को खबर मिली कि खुदावन्द ने 'ओबेदअदूम के घराने को और उसकी हर चीज़ में खुदा के संदूक की वजह से बरकत दी है, तब दाऊद गया और खुदा के संदूक को 'ओबेदअदूम के घर से दाऊद के शहर में खुशी खुशी ले आया। ¹³ और ऐसा हुआ कि जब खुदावन्द के संदूक के उठाने वाले छः क्रदम चले तो दाऊद ने एक बैल और एक मोटा बछड़ा ज़बह किया। ¹⁴ और दाऊद खुदावन्द के सामने अपने सारे ज़ोर से नाचने लगा, और दाऊद कतान का अफूद पहने था। ¹⁵ तब दाऊद और इस्राईल का सारा घराना खुदावन्द के संदूक को ललकारते और नरसिंगा फूँकते हुए लाये।

॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥

¹⁶ और जब खुदावन्द का संदूक दाऊद के शहर के अन्दर आ रहा था, तो साऊल की बेटी मीकल ने खिड़की से निगाह की और दाऊद बादशाह को खुदावन्द के सामने उछलते और नाचते देखा, तब उसने अपने दिल ही दिल में हकीर जाना। ¹⁷ और वह खुदा के संदूक को अन्दर लाये और उसे उसकी जगह पर उस खेमा के बीच जो दाऊद ने उसके लिए खड़ा किया था रखवा, और दाऊद ने सोख्तनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ खुदावन्द के आगे पेश कीं। ¹⁸ और जब दाऊद सोख्तनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानियाँ पेश कर चुका, तो उसने रब्बुल अफ़वाज के नाम से लोगों को बरकत दी। ¹⁹ और उसने सब लोगों या'नी इस्राईल के सारे जमा'त के मर्दों और 'औरतों दोनों को एक एक रोटी और एक एक टुकड़ा गोश्त और किशमिश की एक एक टिकिया बाँटी, फिर सब लोग अपने अपने घर चले

गये। ²⁰ तब दाऊद लौटा ताकि अपने घराने को बरकत दे और साऊल की बेटी मीकल दाऊद के इस्तक़बाल को निकली और कहने लगी कि “इस्राईल का बादशाह आज कैसा शानदार मा'लूम होता था जिसने आज के दिन अपने मुलाज़िमों की लौंडियों के सामने अपने को नंगा किया जैसे कोई नौजवान बेहयाई से नंगा हो जाता है।” ²¹ दाऊद ने मीकल से कहा, “यह तो खुदावन्द के सामने था जिसने तेरे बाप और उसके सारे घराने को छोड़ कर मुझे पसन्द किया, ताकि वह मुझे खुदावन्द की क्रौम इस्राईल का रहनुमा बनाये, इसलिए मैं खुदावन्द के आगे नाचूँगा।” ²² बल्कि मैं इससे भी ज्यादा ज़लील हूँगा और अपनी ही नज़र में नीच हूँगा और जिन लौंडियों का ज़िक्र तूने किया है वहीं मेरी इज़्जत करेगी।” ²³ इसलिए साऊल की बेटी मीकल मरते दम तक बे औलाद रही।

7

2222222222 22 22222 22 2222 2222

¹ जब बादशाह अपने महल में रहने लगा, और खुदावन्द ने उसे उसको चारों तरफ़ के सब दुश्मनों से आराम बरखा। ² तो बादशाह ने नातन नबी से कहा, “देख मैं तो देवदार की लकड़ियों के घर में रहता हूँ लेकिन खुदावन्द का संदूक पर्दों के अन्दर रहता है।” ³ तब नातन ने बादशाह से कहा। “जा जो कुछ तेरे दिल में है कर क्योंकि खुदावन्द तेरे साथ है।” ⁴ और उसी रात को ऐसा हुआ कि खुदावन्द का कलाम नातन को पहुँचा कि। ⁵ “जा और मेरे बन्दा दाऊद से कह, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि क्या तू मेरे रहने के लिए एक घर बनाएगा? ⁶ क्योंकि जब से मैं बनी इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया आज के दिन तक किसी घर में नहीं रहा, बल्कि खेमा और मसकन में फिरता रहा हूँ।” ⁷ और जहाँ जहाँ मैं सब बनी इस्राईल के साथ फिरता रहा, क्या मैं ने कहीं किसी इस्राईली *कबीले से जिसे मैंने हुक्म किया कि मेरी क्रौम इस्राईल की गल्ला बानी करो यह कहा कि तुमने मेरे लिए देवदार की लकड़ियों का घर क्यों नहीं बनाया? ⁸ इसलिए अब तू मेरे बन्दा दाऊद से कहा कि रब्बुल अफ़वाज यूँ फ़रमाता है, कि मैंने तुझे भेड़साला से जहाँ तू भेड़ बकरियों के पीछे पीछे फिरता था लिया, ताकि तू मेरी क्रौम इस्राईल का रहनुमा हो। ⁹ और मैं जहाँ जहाँ तू गया तेरे साथ रहा, और तेरे सब दुश्मनों को तेरे सामने से काट डाला है, और मैं दुनिया के बड़े बड़े लोगों के नाम की तरह तेरा नाम बड़ा

करूँगा। ¹⁰ और मैं अपनी क्रौम इस्राईल के लिए एक जगह मुक़र्रर करूँगा, और वहाँ उनको जमाऊँगा ताकि वह अपनी ही जगह बसें और फिर हटाये न जायें, और शरारत के फ़र्ज़न्द उनको फिर दुख नहीं देने पायेंगे जैसा पहले होता था। ¹¹ और जैसा उस दिन से होता आया, जब मैंने हुक्म दिया, कि मेरी क्रौम इस्राईल पर क़ाज़ी हों और मैं ऐसा करूँगा, कि तुझको तेरे सब दुश्मनों से आराम मिले इसके अलावा खुदावन्द तुझको बताता है कि खुदावन्द तेरे घरको बनाये रखेगा। ¹² और जब तेरे दिन पूरे हो जायेंगे और तू अपने बाप दादा के साथ मर जाएगा, तो मैं तेरे बाद तेरी नसल को जो तेरे सुल्ब से होगी, खड़ा करके उसकी हुकूमत को क़ाईम करूँगा। ¹³ वही मेरे नाम का एक घर बनाएगा और मैं उसकी बादशाहत का तख़्त हमेशा के लिए क़ाईम करूँगा। ¹⁴ और मैं उसका बाप हूँगा और वह मेरा बेटा होगा, अगर वह ख़ता करे तो मैं उसे आदमियों की लाठी और बनी आदम के ताज़िया नों से नसीहत करूँगा। ¹⁵ लेकिन मेरी रहमत उससे जुदा न होगी, जैसे मैंने उसे साऊल से जुदा किया जिसे मैंने तेरे आगे से हटा दिया। ¹⁶ और तेरा घर और तेरी बादशाहत हमेशा बनी रहेगी, तेरा तख़्त हमेशा के लिए क़ाईम किया जायेगा। ¹⁷ जैसी यह सब बातें और यह सारा ख़्वाब था वैसा ही दाऊद से नातन ने कहा। ¹⁸ तब दाऊद बादशाह अन्दर जाकर खुदावन्द के आगे बैठा, और कहने लगा, ऐ मालिक खुदावन्द मैं कौन हूँ और मेरा घराना क्या है कि तूने मुझे यहाँ तक पहुँचाया। ¹⁹ तो भी ऐ मालिक खुदावन्द यह तेरी नज़र में छोटी बात थी क्योंकि तूने अपने बन्दा के घराने के हक़ में बहुत मुद्दत तक का ज़िक्र किया है और वह भी ऐ मालिक खुदावन्द आदमियों के तरीक़े पर। ²⁰ और दाऊद तुझसे और क्या कह सकता है? क्योंकि ऐ मालिक खुदावन्द तू अपने बन्दा को जानता है। ²¹ तूने अपने कलाम की खातिर और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ यह सब बड़े काम किए, ताकि तेरा बन्दा उनसे वाकिफ़ हो जाए। ²² इसलिए तू ऐ खुदावन्द खुदा, बुज़ुर्ग है, क्योंकि जैसा हमने अपने कानों से सुना है उसके मुताबिक़ कोई तेरी तरह नहीं और तेरे 'अलावह कोई खुदा नहीं। ²³ और दुनिया में वह कौन सी एक क्रौम है जो तेरे लोगों या 'नी इस्राईल की तरह है, जिसे खुदा ने जाकर अपनी क्रौम बनाने को छुड़ाया, ताकि वह अपना नाम करे, और तुम्हारी खातिर बड़े बड़े काम और अपने मुल्क के लिए और अपनी क्रौम के आगे जिसे तूने मिस्र की क्रौमों से

* 7:7 7:7 रहनुमाओं, कबीला † 7:11 7:11 तेरी नसल की पीढ़ी मुसलसल हुकूमत करेगी

और उनके मा'बूदों से रिहाई बरूषी होलनाक काम करे।
 24 और तूने अपने लिए अपनी क़ौम बनी इस्राईल को मुक़रर किया, ताकि वह हमेशा के लिए तेरी क़ौम ठहरे और तू खुद ऐ खुदावन्द उनका खुदा हुआ। 25 और अब तू ऐ खुदावन्द उस बात को जो तूने अपने बन्दा और उसके घराने के हक़ में फ़रमाई है, हमेशा के लिए क़ाईम करदे और जैसा तूने फ़रमाया है वैसा ही कर। 26 और हमेशा यह कह कहकर तेरे नाम की बड़ाई की जाए, कि रब्ब — उल — अफ़वाज इस्राईल का खुदा है और तेरे बन्दा दाऊद का घराना तेरे सामने क़ाईम किया जाएगा। 27 क्यूँकि तूने ऐ रब्ब — उल — अफ़वाज इस्राईल के खुदा अपने बन्दा पर ज़ाहिर किया, और फ़रमाया कि मैं तेरा घराना बनाए रखूँगा, तब तेरे बन्दा के दिल में यह आया कि तेरे आगे यह मुनाजात करे। 28 और ऐ मालिक खुदावन्द तू खुदा है और तेरी बातें सच्ची हैं, और तूने अपने बन्दे से इस नेकी का वा'दा किया है। 29 इसलिए अब अपने बन्दा के घराने को बरकत देना मंज़ूर कर, ताकि वह हमेशा तेरे नज़दीक वफ़ादार रहे, कि तू ही ने ऐ मालिक खुदावन्द यह कहा है, और तेरी ही बरकत से तेरे बन्दे का घराना हमेशा मुबारक रहे।”

8

2222 22 2222 22 2222

1 इसके बाद दाऊद ने फ़िलिस्तिनों को मारा, और उनको मग़लूब किया और दाऊद ने दारुल हुकूमत 'इनान फ़िलिस्तिनों के हाथ से छीन ली। 2 और उसने मोआब को मारा और उनको ज़मीन पर लिटा कर रस्सी से नापा, तब उसने क़त्ल करने के लिए दो रस्सियों से नापा और जीता छोड़ने के लिए एक पूरी रस्सी से, यूँ मोआबी दाऊद के खादिम बनकर हदिये लाने लगे। 3 और दाऊद ने ज़ोबाह के बादशाह रहोब के बेटे हदद'अज़र को भी जब वह दरिया — ए — फ़रात पर बादशाहत पर भी क़ब्ज़ा करने को जा रहा था मार लिया। 4 और दाऊद ने उसके एक हज़ार सात सौ सवार और बीस हज़ार पियादे पकड़ लिए और दाऊद ने रथों के सब घोड़ों की नालें काटीं पर उनमें से सौ रथों के लिए घोड़े बचा रखे। 5 और जब दमिश्क के अरामी ज़ोबाह के बादशाह हदद अज़र की मदद को आए तो दाऊद ने अरामियों के बाईस हज़ार आदमी क़त्ल किए। 6 जब दाऊद ने दमिश्क के आराम में सिपाहियों की चौकियाँ बिठाई तब अरामी भी दाऊद के खादिम बन कर हदिये लाने लगे, और खुदावन्द ने दाऊद को जहाँ कहीं वह गया फ़तह बरूषी। 7 और दाऊद ने हदद'अज़र

के मुलाज़िमों की सोने की ढालें छीन लीं और उनको येरूशलेम में ले आया। 8 और दाऊद बादशाह बताह और बैरूती से जो हदद'अज़र के शहर थे बहुत सा पीतल ले आया। 9 और जब हमाल के बादशाह तूगी ने सुना कि दाऊद ने हदद'अज़र का सारा लश्कर मार लिया। 10 तो तूगी ने अपने बेटे यूराम को दाऊद बादशाह के पास भेजा, कि उसे सलाम कहे और मुबारकबाद दे, इसलिए कि उसने हदद'अज़र तूगी से लड़ा करता था और यूराम चाँदी और सोने और पीतल के बरतन अपने साथ लाया। 11 और दाऊद बादशाह ने उनको खुदावन्द के लिए मख्सूस किया, ऐसे ही उसने उनसब क़ौमों के सोने चाँदी को मख्सूस किया जिनको उसने मग़लूब किया था। 12 या'नी अरामियों और मोआबियों और बनी अम्मोन और फ़िलिस्तिनों और 'अमालीकियों के सोने चाँदी और ज़ोबाह के बादशाह रहोब के बेटे हदद'अज़र की लूट को। 13 और दाऊद का बड़ा नाम हुआ जब वह नमक की वादी में अरामियों के अठारह हज़ार आदमी मार कर लौटा। 14 और उसने अदोम में चौकियाँ बिठाईं बल्कि सारे अदोम में चौकियाँ बिठाईं और सब अदमी दाऊद के खादिम बने और खुदावन्द ने दाऊद को जहाँ कहीं वह गया फ़तह बरूषी। 15 और दाऊद ने कुल इस्राईल पर बादशाहत की और दाऊद अपनी सब र'इयत के साथ अदल — ओ — इन्साफ़ करता था 16 और ज़रोयाह का बेटा योआब लश्कर का सरदार था, और अखीलूद का बेटा यहूसफ़त *मुवरिख़ था। 17 और अखीलूद का बेटा सदूक और अबीयातर का बेटा अखीलूद काहिन थे और सिरायाह मुंशी था। 18 और यहूयदाह का बेटा बनायाह करेतियों और फ़िलिस्तिनों का सरदार था, और दाऊद के बेटे †काहिन थे।

9

2222 2222222222 22 2222222222

1 फिर दाऊद ने कहा, “क्या साऊल के घराने में से कोई बाक़ी है, जिस पर मैं यूँनतन की खातिर महेरबानी करूँ।” 2 और साऊल के घराने का एक खादिम जिसका नाम जीबा था, उसे दाऊद के पास बुला लाये, बादशाह ने उससे कहा, “क्या तू जीबा है?” उसने कहा, “हाँ तेरा बन्दा वही है।” 3 तब बादशाह ने उससे कहा, “क्या साऊल के घराने में से कोई नहीं रहता ताकि मैं उसपर खुदा की तरह महेरबानी करूँ?” जीबा ने बादशाह से कहा, “यूँनतन का एक बेटा रह गया है जो लंगड़ा है।” 4 तब बादशाह ने उससे पूछा, “वह कहाँ है?” जीबा ने बादशाह को जवाब दिया, “देख वह लूदबार में अम्मी

* 8:16 8:16 सरकारी रिकॉर्ड का लिखने वाला — शाही नुमाइन्दा † 8:18 8:18 काहिन लोग

ऐल के बेटे मकीर के घर में है।”⁵ तब दाऊद बादशाह ने लोग भेज कर लूदबार से अम्मी ऐल के बेटे मकीर के घर से उसे बुलवा लिया।⁶ और साऊल के बेटे यूनतन का बेटा मिफ्रीबोसत दाऊद के पास आया, और उसने मुँह के बल गिरकर सिज्दा किया, तब दाऊद ने कहा, मिफ्रीबोसत! “उसने जवाब दिया, तेरा बन्दा हाज़िर है।”⁷ दाऊद ने उससे कहा, “मत डर क्योंकि मैं तेरे बाप यूनतन की खातिर ज़रूर तुझ पर महेरबानी करूँगा, और तेरे बाप साऊल की ज़मीन पर तुझे फेर दूँगा, और तू हमेशा मेरे दस्तरख्वान पर खाना खाया कर।”⁸ तब उसने सिज्दा किया और कहा, “कि तेरा बन्दा है क्या चीज़ जो तू मुझ जैसे मरे कुत्ते पर निगाह करे?”⁹ तब बादशाह ने साऊल के खादिम जीबा को बुलाया और उससे कहा कि “मैंने सब कुछ जो साऊल और उसके सारे घराने का था तेरे आका के बेटे को बख़्श दिया।¹⁰ इसलिए तू अपने बेटों और नौकरों समेत ज़मीन को उसकी तरफ़ से जोत कर पैदावार को ले आया कर ताकि तेरे आका के बेटे के खाने को रोटी हो पर मिफ्रीबोसत जो तेरे आका का बेटा है मेरे दस्तरख्वान पर हमेशा खाना खायेगा।” और जीबा के पन्दरह बेटे और बीस नौकर थे।¹¹ तब जीबा ने बादशाह से कहा, “जो कुछ मेरे मालिक बादशाह ने अपने खादिम को हुक्म दिया है तेरा खादिम वैसा ही करेगा।” लेकिन *मिफ्रीबोसत के हक़ में बादशाह ने फ़रमाया कि वह मेरे दस्तरख्वान पर इस तरह खाना खायेगा कि गोया वह बादशाह जादों मेंसे एक है।¹² और मिफ्रीबोसत का एक छोटा बेटा था जिसका नाम मीका था, और जितने जीबा के घर में रहते थे वह सब मिफ्रीबोसत के खादिम थे।¹³ इसलिए मिफ्रीबोसत येरूशलेम में रहने लगा, क्योंकि वह हमेशा बादशाह के दस्तरख्वान पर खाना खाता था और वह दोनों पाँव से लंगड़ा था।

10

???? ?? ????????????? ???? ???? ?

¹ इसके बाद ऐसा हुआ कि बनी अम्मोन का बादशाह मर गया और उसका बेटा हनून उसका जानशीन हुआ।
² तब दाऊद ने कहा कि “मैं नाहस के बेटे हनून के साथ महेरबानी करूँगा, जैसे उसके बाप ने मेरे साथ महेरबानी की।” तब दाऊद ने अपने खादिम भेजे ताकि उनके ज़रिए' उसके बाप के बारे में उसे तसल्ली दे, चुनाँचे दाऊद के खादिम बनी अम्मोन की सर ज़मीन पर आए।
³ बनी अम्मोन के सरदारों ने अपने मालिक हनून से कहा, “तुझे क्या यह गुमान है कि दाऊद तेरे बाप की

ता'ज़ीम करता है कि उसने तसल्ली देने वाले तेरे पास भेजे हैं? क्या दाऊद ने अपने खादिम तेरे पास इसलिए नहीं भेजे हैं कि शहर का हाल दरयाफ़्त करके और इसका भेद लेकर वह इसको बरबाद करे?”⁴ तब हनून ने दाऊद के खादिमों को पकड़ कर उनकी आधी दाढ़ी मुंडवाई और उनकी लिबास बीच से सुरीन तक कटवा कर उनको रूख़सत कर दिया।⁵ जब दाऊद को ख़बर पहुँची तो उसने उनसे मिलने को लोग भेजे इसलिए यह आदमी बहुत ही शर्मिन्दा थे, इसलिए बादशाह ने फ़रमाया कि “जब तक तुम्हारी दाढ़ी न बढ़े यरीहू में रहो, उसके बाद चले आना।”⁶ जब बनी अम्मोन ने देखा कि वह दाऊद के आगे गुस्सा हो गया तो बनी अम्मोन ने लोग भेजे और बैतरहोब के अरामियों और ज़ूबाह के अरामियों में से बीस हज़ार पियादों को और मा'का के बादशाह को एक हज़ार सिपाहियों समेत और तोब के बारह हज़ार आदमियों को मज़दूरी पर बुलाया।⁷ और दाऊद ने यह सुनकर योआब और बहादुरों के सारे लश्कर को भेजा।⁸ तब बनी अम्मोन निकले और उन्होंने फाटक के पास ही लड़ाई के लिए सफ़्र बाँधी और ज़ूबाह और रहोब के अरामी और तोब और मा'का के लोग मैदान में अलग थे।⁹ जब योआब ने देखा कि उसके आगे और पीछे दोनों तरफ़ लड़ाई के लिए सफ़्र बंधी है तो उसने बनी इस्राईल के खास लोगों को चुन लिया और अरामियों के सामने उनकी सफ़्र बाँधी।¹⁰ और बाक़ी लोगों को अपने भाई अबीशै के हाथ सौंप दिया, और उसने बनी अम्मोन के सामने सफ़्र बाँधी।¹¹ फिर उसने कहा, अगर अरामी मुझ पर ग़ालिब होने लगें तो तू मेरी मदद करना और अगर बनी अम्मोन तुझ पर ग़ालिब होने लगें तो मैं आकर तेरी मदद करूँगा।¹² इसलिए ख़ूब हिम्मत रख और हम सब अपनी क़ौम और अपने खुदा के शहरों की खातिर मर्दानगी करें और खुदावन्द जो बेहतर जाने वह करे।¹³ तब योआब और वह लोग जो उसके साथ थे अरामियों पर हमला करने को आगे बढ़े और वह उसके आगे भागे।¹⁴ जब बनी अम्मोन ने देखा कि अरामी भाग गए तो वह भी अबीशै के सामने से भाग कर शहर के अन्दर घुस गए, तब योआब बनी अम्मोन के पास से लौट कर येरूशलेम में आया।¹⁵ जब अरामियों ने देखा कि उन्होंने इस्राईलियों से शिकस्त खाई तो वह सब जमा' हुए।¹⁶ और हदद'अज़र ने लोग भेजे और अरामियों को जो दरिया — ए — फ़रात के पार थे ले आया और वह हिलाम में आए और हदद'अज़र की फ़ौज का सिपह सालार सूबक उनका सरदार था।¹⁷ और दाऊद को ख़बर मिली, इसलिए उसने सब इस्राईलियों

* 9:11 9:11 मफ़िबूसित दाऊद के खाने की मेज़ पर उसके साथ लगातार खता रहा जैसे कि वह उसके अपने बेटों में से एक था —

को इकट्ठा किया और यरदन के पार होकर हिलाम में आया और अरामियों ने दाऊद के सामने सफ़ आराई की और उससे लड़े। ¹⁸ और अरामी इस्राईलियों के सामने से भागे और दाऊद ने अरामियों के सात सौ रथों के आदमी और चालीस हज़ार सवार क़त्ल कर डाले, और उनकी फ़ौज के सरदार सूबक को ऐसा मारा कि वह वहीं मर गया। ¹⁹ और जब बादशाहों ने जो हृदय अज़र के खादिम थे देखा कि वह इस्राईलियों से हार गए, तो उन्होंने इस्राईलियों से सुलह कर ली और उनकी ख़िदमत करने लगे, तब अरामी बनी अम्मोन की फिर मदद करने से डरे।

11

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

¹ और ऐसा हुआ कि दूसरे साल जिस वक़्त बादशाह जंग के लिए निकलते हैं, दाऊद ने योआब और उसके साथ अपने खादिमों और सब इस्राईलियों को भेजा, और उन्होंने बनी अम्मोन को क़त्ल किया और रब्बा को जा घेरा पर दाऊद येरूशलेम ही में रहा। ² और शाम के वक़्त दाऊद अपने पलंग पर से उठकर बादशाही महल की छत पर टहलने लगा, और छत पर से उसने एक 'औरत को देखा जो नहा रही थी, और वह 'औरत निहायत खूबसूरत थी। ³ तब दाऊद ने लोग भेजकर उस 'औरत का हाल दरयाफ़्त किया, और किसी ने कहा, “क्या वह इलीआम की बेटी बतसबा नहीं जो हिती ऊरिय्याह की बीवी है?” ⁴ और दाऊद ने लोग भेजकर उसे बुला लिया, वह उसके पास आई और उसने उससे सोहबत की (क्योंकि वह अपनी नापाकी से पाक हो चुकी थी) फिर वह अपने घर को चली गई। ⁵ और वह औरत हाम्ला हो गई, तब उसने दाऊद के पास खबर भेजी कि “मैं हाम्ला हूँ।” ⁶ और दाऊद ने योआब को कहला भेजा कि “हिती ऊरिय्याह को मेरे पास भेज दे।” इसलिए योआब ने ऊरिय्याह को दाऊद के पास भेज दिया। ⁷ और जब ऊरिय्याह आया तो दाऊद ने पूछा कि योआब कैसा है और लोगों का क्या हाल है और जंग कैसी हो रही है? ⁸ फिर दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा कि “अपने घर जा और अपने पाँव धो।” और ऊरिय्याह बादशाह के महल से निकला और बादशाह की तरफ़ से उसके पीछे पीछे एक ख़्वान भेजा गया। ^{*} ⁹ लेकिन ऊरिय्याह बादशाह के घर के आस्ताना पर अपने मालिक के और सब खादिमों के साथ सोया और

अपने घर न गया। ¹⁰ और जब उन्होंने दाऊद को यह बताया कि “ऊरिय्याह अपने घर नहीं गया। तो दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, क्या तू सफ़र से नहीं आया? तब तू अपने घर क्यों नहीं गया?” ¹¹ ऊरिय्याह ने दाऊद से कहा कि “संदूक और इस्राईल और यहूदाह झोंपड़ियों में रहते हैं और मेरा मालिक योआब और मेरे मालिक के खादिम खुले मैदान में डरे डाले हुए हैं तो क्या मैं अपने घर जाऊँ और खाऊँ पिऊँ और अपनी बीवी के साथ सोऊँ? तेरी हयात और तेरी जान की क़सम मुझसे यह बात न होगी।” ¹² फिर दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा कि “आज भी तू यहीं रह जा, कल मैं तुझे ख़ाना कर दूँगा।” इसलिए ऊरिय्याह उस दिन और दूसरे दिन भी येरूशलेम में रहा। ¹³ और जब दाऊद ने उसे बुलाया तो उसने उसके सामने ख़ाया पिया और उसने उसे पिलाकर मतवाला किया और शाम को वह बाहर जाकर अपने मालिक के और खादिमों के साथ अपने बिस्तर पर सो रहा पर अपने घर को न गया। ¹⁴ सुबह को दाऊद ने योआब के लिए ख़त लिखा और उसे ऊरिय्याह के हाथ भेजा। ¹⁵ और उसने ख़त में यह लिखा कि “ऊरिय्याह को जंग में सबसे आगे रखना और तुम उसके पास से हट जाना ताकि वह मारा जाए और जाँ बहक़ हो।” ¹⁶ और यूँ हुआ कि जब योआब ने उस शहर का जाइज़ा कर लिया तो उसने ऊरिय्याह को ऐसी जगह रखवा जहाँ वह जानता था कि बहादुर मर्द हैं। ¹⁷ और उस शहर के लोग निकले ओर योआब से लड़े और वहाँ दाऊद के खादिमों में से थोड़े से लोग काम आए और हिती ऊरिय्याह भी मर गया। ¹⁸ तब योआब ने आदमी भेज कर जंग का सब हाल दाऊद को बताया। ¹⁹ और उसने क़ासिद को नसीहत कर दी कि “जब तू बादशाह से जंग का सब हाल बयां कर चुके। ²⁰ तब अगर ऐसा हो कि बादशाह को गुस्सा आ जाये और वह तुझसे कहने लगे कि तुम लड़ने को शहर के ऐसे नज़दीक क्यों चले गये? क्या तुम नहीं जानते थे कि वह दीवार पर से तीर मारेंगे? ²¹ यरोब्बुसत के बेटे अबीमलिक को किसने मारा? क्या एक 'औरत ने चक्की का पात दीवार परसे उसके ऊपर ऐसा नहीं फेंका कि वह तैबिज़ में मर गया? इसलिए तुम शहर की दीवार के नज़दीक क्यों गये? तो फिर तू कहना कि तेरा खादिम हिती ऊरिय्याह भी मर गया।” ²² तब वह क़ासिद चला और आकर जिस काम के लिए योआब ने उसे भेजा था वह सब दाऊद को बताया। ²³ और उस क़ासिद ने दाऊद

* ^{11:8} 11:8 हो सकता है ऊरिया के लिए एक दावत हो ताकि एक लंबीसफ़र के बाद मुंह हाथ धोकर खुद से ताज़ा दम होजाए क्योंकि वह धूल भरे रास्ते में वह सिर्फ़ चप्पलपहने हुए था (पैदायश 18:4, 19:2, 24:32, कुज़ात 19:21) दीगर मुफ़ससरीन किसी तरह बयान करते हैं कि किन्हे सयाक़ — ए — इबारत में यह लुत्फ़ आफ़रीनी का जिंसी तालुकात काहवाला देता है — जबकि लफ़ज़ पाँव को भी कभी कभी आज़ा — ए — तनासुल के लिए कहा गया है, मिसाल बतोर देखें रूत 3:4, 7, 8; गज़्तुल गज़्तियात 5:3 — यह हर चाँद मुमकिन है कि दाऊद ने जानबूझ कर इस गुनाह को अंजाम दिया हो और ऊरिया नेने इसे जिंसी तालुकात करार दिया हो — † ^{11:18} 11:18 क़ासिद

से कहा “कि वह लोग हमपर गालिब हुए और निकल कर मैदान में हमारे पास आगए, फिर हम उनको दौड़ाते हुए फाटक के मदखल तक चले गये। ²⁴ तब तीरंदाजों ने दीवार पर से तेरे खादिमों पर तीर छोड़े, इसलिए बादशाह के थोड़े खादिम भी मरे और तेरा खादिम हित्ती ऊरिय्याह भी मर गया।” ²⁵ तब दाऊद ने कासिद से कहा कि, “तू योआब से यूँ कहना कि तुझे इस बात से ना खुशी न हो इसलिए कि तलवार जैसा एक को उड़ाती है वैसा ही दूसरे को, इसलिए तू शहर से और सख्त जंग करके उसे ढा दे और तू उसे हिम्मत देना।” ²⁶ जब और्य्याह की बीवी ने सुना कि उसका शौहर ऊरिय्याह मर गया तो वह अपने शौहर के लिए मातम करने लगी। ²⁷ और जब मातम के दिन गुजर गए तो दाऊद ने बुलवाकर उसको अपने महल में रख लिया और वह उसकी बीवी हो गई और उससे उसके एक लड़का हुआ पर उस काम से जिसे दाऊद ने किया था खुदावन्द नाराज़ हुआ।

12

????? ?? ???? ? ? ???? ?

¹ और खुदावन्द ने नातन को दाऊद के पास भेजा, उसने उसके पास आकर उससे कहा, “किसी शहर में दो शख्स थे, एक अमीर दूसरा गरीब। ² उस अमीर के पास बहुत से रेवड़ और गल्ले थे। ³ लेकिन उस गरीब के पास भेड़ की एक पठिया के 'अलावा कुछ न था, जिसे उसने खरीद कर पाला था और वह उसके और उसके बाल बच्चों के साथ बड़ी थी, वह उसी के नेवाले में से खाती और उसके पियाला से पीती और उसकी गोद में सोती थी, और उसके लिए बतौर बेटी के थी। ⁴ और उस अमीर के यहाँ कोई मुसाफिर आया, इसलिए उसने उस मुसाफिर के लिए जो उसके यहाँ आया था पकाने को अपने रेवड़ और गल्ला में से कुछ न लिया, बल्कि उस गरीब की भेड़ ले ली, और उस शख्स के लिए जो उसके यहाँ आया था पकाई।” ⁵ तब दाऊद का गज़ब उस शख्स पर बशिददत भड़का और उसने नातन से कहा कि “खुदावन्द की हयात की कसम कि वह शख्स जिसने यह काम किया वाजिबुल क़त्ल है। ⁶ इसलिए उस शख्स को उस भेड़ का चौ गुना भरना पड़ेगा क्योंकि उसने ऐसा काम किया और उसे तरस न आया।” ⁷ तब नातन ने दाऊद से कहा, “वह शख्स तुही है, खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि मैंने तुझे मसह करके इस्राईल का बादशाह बनाया और मैंने तुझे साऊल के हाथ से छुड़ाया। ⁸ और मैंने तेरे आक्रा का घर तुझे दिया और तेरे आक्रा की बीवियाँ तेरी गोद में करदीं, और इस्राईल और यहूदाह का घराना तुझको दिया, और अगर यह सब कुछ थोड़ा था तो मैं

तुझको और और चीजें भी देता। ⁹ इसलिए तूने क्यों खुदा की बात की तहकीर करके उसके सामने बुराई की? तूने हित्ती ऊरिय्याह को तलवार से मारा और उसकी बीवी लेली ताकि वह तेरी बीवी बने और उसको बनी अम्मोन की तलवार से क़त्ल करवाया। ¹⁰ इसलिए अब तेरे घरसे तलवार कभी अलग न होगी क्योंकि तूने मुझे हकीर जाना और हित्ती ऊरिय्याह की बीवी लेली ताकि वह तेरी बीवी हो। ¹¹ इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देख मैं बुराई को तेरे ही घर से तेरे खिलाफ़ उठाऊँगा और मैं तेरी बीवियों को लेकर तेरी आँखों के सामने तेरे पड़ोसी को दूँगा, और वह दिन दहाड़े तेरी बीवियों से सोहबत करेगा। ¹² क्योंकि तूने छिपकर यह किया लेकिन मैं सारे इस्राईल के सामने दिन दहाड़े यह करूँगा।” ¹³ तब दाऊद ने नातन से कहा, “मैंने खुदावन्द का गुनाह किया।” नातन ने दाऊद से कहा कि “खुदावन्द ने भी तेरा गुनाह बख़्शा, तू मरेगा नहीं। ¹⁴ तोभी चूँकि तूने इस काम से खुदावन्द के दुश्मनों को कुफ़र बकने का बड़ा मौ'का दिया है इसलिए वह लड़का भी जो तुझसे पैदा होगा मर जाएगा।” ¹⁵ फिर नातन अपने घर चला गया और खुदावन्द ने उस लड़के को जो ऊरिय्याह की बीवी के दाऊद से पैदा हुआ था मारा और वह बहुत बीमार हो गया। ¹⁶ इसलिए दाऊद ने उस लड़के की खातिर खुदा से मिन्नत की और दाऊद ने रोज़ा रखा और अन्दर जाकर सारी रात ज़मीन पर पड़ा रहा। ¹⁷ और उसके घराने के बुज़ुर्ग उठकर उसके पास आए कि उसे ज़मीन पर से उठाये पर वह न उठा और न उसने उनके साथ खाना खाया। ¹⁸ और सातवें दिन वह लड़का मर गया और दाऊद के मुलाज़िम उसे डर के मारे यह न बता सके कि लड़का मर गया, क्योंकि उन्होंने कहा कि “जब वह लड़का ज़िन्दा ही था और हमने उससे बात की तो उसने हमारी बात न मानी तब अगर हम उसे बतायें कि लड़का मर गया तो वह बहुत ही दुखी होगा।” ¹⁹ लेकिन जब दाऊद ने अपने मुलाज़िमों को आपस में फुसफुसाते देखा तो दाऊद समझ गया कि लड़का मर गया, इसलिए दाऊद ने अपने मुलाज़िमों से पूछा, “क्या लड़का मर गया?” उन्होंने जवाब दिया, मर गया। ²⁰ तब दाऊद ज़मीन पर से उठा और उसने गुस्ल करके उसने तेल लगाया और लिबास बदली और खुदावन्द के घर में जाकर सज्दा किया फिर वह अपने घर आया और उसके हुक्म देने पर उन्होंने उसके आगे रोटी रखी और उसने खाई ²¹ तब उसके मुलाज़िमों ने उससे कहा, “यह कैसा काम है जो तूने किया? जब वह लड़का जीता था तो तूने उसके लिए रोज़ा रखा और रोता भी रहा और जब वह लड़का मर गया तो तूने उठकर रोटी खाई।”

22 उसने कहा कि “जब तक वह लड़का ज़िन्दा था मैंने रोज़ा रखवा और मैं रोता रहा क्योंकि मैंने सोचा क्या जाने खुदावन्द को मुझपर रहम आजाये कि वह लड़का जीता रहे? 23 लेकिन अब तो मर गया तब मैं किस लिए रोज़ा रखूँ? क्या मैं उसे लौटा के ला सकता हूँ? मैं तो उसके पास जाऊँगा पर वह मेरे पास नहीं लौटने का।” 24 फिर दाऊद ने अपनी बीवी बत सबा को तसल्ली दी और उसके पास गया और उससे सोहबत की और उसके एक बेटा हुआ और दाऊद ने उसका नाम सुलेमान रखवा और खुदावन्द का प्यारा हुआ। 25 और उसने नातन नबी की ज़रिए पैग़ाम भेजा तब उसने उसका नाम खुदावन्द की खातिर *यदीदियाह रखवा। 26 और योआब बनी अम्मोन के रब्बा से लड़ा और उसने दारुल हुकूमत को ले लिया। 27 और योआब ने कासिदों के ज़रिए दाऊद को कहला भेजा कि “मैं रब्बा से लड़ा और मैंने पानियों के शहर को ले लिया। 28 फिर अब तू बाक़ी लोगों को जमा कर और इस शहर के नज़दीक खेमा ज़न हो और इस पर क़ब्ज़ा कर ले ऐसा न हो कि मैं इस शहर को बरबाद करूँ और वह मेरे नाम से कहलाए।” 29 तब दाऊद ने लोगों को जमा किया और रब्बा को गया और उससे लड़ा और उसे ले लिया। 30 और उसने उनके बादशाह का ताज उसके सर पर से उतार लिया, उसका वज़न सोने का एक किन्तार था और उसमें जवाहर जड़े हुए थे, फिर वह दाऊद के सर पर रखवा गया और वह उस शहर से लूट का बहुत सा माल निकाल लाया। 31 और उसने उन लोगों को जो उसमें थे बाहर निकाल कर उनको आरों और लोहे के हैंगों और लोहे के कुल्हाड़ों के नीचे कर दिया, और उनको ईंटों के पज़ावे में से चलवाया और उसने बनी अम्मोन के सब शहरों से ऐसा ही किया, फिर दाऊद और सब लोग येरूशलेम को लौट आए।

13

????? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 और इसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद के बेटे अबीसलोम की एक खूबसूरत बहन थी, जिसका नाम तमर था, उस पर दाऊद का बेटा अमनून आशिक़ हो गया। 2 और अमनून ऐसा कुढ़ने लगा कि वह अपनी बहन तमर की वजह से बीमार पड़ गया, क्योंकि वह कुंवारी थी इसलिए अमनून को उसके साथ कुछ करना दुशवार मा'लूम हुआ। 3 और दाऊद के भाई सिमआ का बेटा यूनदब अमनून का दोस्त था, और यूनदब बड़ा चालाक आदमी था। 4 फिर उसने उनसे कहा, “ऐ बादशाह ज़ादे! तू क्यूँ दिन ब दिन दुबला होता जाता

है? क्या तू मुझे नहीं बताएगा?” तब अमनून ने उससे कहा कि “मैं अपने भाई अबीसलोम की बहन तमर पर आशिक़ हूँ।” 5 यूनदब ने उससे कहा, “तू अपने बिस्तर पर लेट जा और बीमारी का बहाना कर ले और जब तेरा बाप तुझे देखने आए, तो तू उससे कहना, मेरी बहन तमर को ज़रा आने दे कि वह मुझे खाना दे और मेरे सामने खाना पकाये, ताकि मैं देखूँ और उसके हाथ से खाऊँ।” 6 तब अमनून पड़ गया और उसने बीमारी का बहाना कर लिया और जब बादशाह उसको देखने आया, तो अमनून ने बादशाह से कहा, “मेरी बहन तमर को ज़रा आने दे कि वह मेरे सामने दो पूरियाँ बनाये, ताकि मैं उसके हाथ से खाऊँ।” 7 तब दाऊद ने तमर के घर कहला भेजा कि “तू अभी अपने भाई अमनून के घर जा और उसके लिए खाना पका।” 8 फिर तमर अपने भाई अमनून के घर गई और वह बिस्तर पर पड़ा हुआ था और उसने आटा लिया और गूँधा, और उसके सामने पूरियाँ बनायीं और उनको पकाया। 9 और तवे को लिया और उसके सामने उनको उंडेल दिया, लेकिन उसने खाने से इन्कार किया, तब अमनून ने कहा कि “सब आदमियों को मेरे पास से बाहर कर दो।” तब हर एक आदमी उसके पास से चला गया। 10 तब अमनून ने तमर से कहा कि “खाना कोठरी के अन्दर ले आ ताकि मैं तेरे हाथ से खाऊँ।” इसलिए तमर वह पूरियाँ जो उसने पकाई थीं उठा कर उनको कोठरी में अपने भाई अमनून के पास लायीं। 11 और जब वह उनको उसके नज़दीक ले गई कि वह खाए तो उसने उसे पकड़ लिया और उससे कहा, “ऐ मेरी बहन मुझसे सोहबत कर।” 12 उसने कहा, “नहीं मेरे भाई मेरे साथ ज़बरदस्ती न कर क्योंकि इस्राईलियों में कोई ऐसा काम नहीं होना चाहिए, तू ऐसी हिमाक़त न कर। 13 और भला मैं अपनी रुसवाई कहाँ लिए फिहँगी? और तू भी इस्राईलियों के बेवकूफ़ों में से एक की तरह ठहरेगा, इसलिए तू बादशाह से दरख्वास्त कर क्योंकि वह मुझको तुझसे रोक नहीं रखेगा।” 14 लेकिन उसने उसकी बात न मानी और चूँकि वह उससे ताक़तवर था इसलिए उसने उसके साथ ज़बरदस्ती की, और उससे सोहबत की। 15 फिर अमनून को उससे बड़ी सख़्त नफ़रत हो गई क्योंकि उसकी नफ़रत उसके ज़ज्ब — ए इश्क से कहीं बढ़कर थी, इसलिए अमनून ने उससे कहा, “उठ चली जा।” 16 वह कहने लगी, “ऐसा न होगा क्योंकि यह ज़ुल्म कि तू मुझे निकालता है उस काम से जो तूने मुझसे किया बदतर है।” लेकिन उसने उसकी एक न सुनी। 17 तब उसने अपने एक मुलाज़िम को जो उसकी खिदमत

* 12:25 12:25 मतलबयह्ने का अज़ीज़

करता था बुला कर कहा, “इस 'औरत को मेरे पास से बाहर निकाल दे और पीछे दरवाजे की चटकनी लगा दे।” ¹⁸ और वह रंग बिरंग जोड़ा पहने हुए थी क्योंकि बादशाहों की कुंवारी बेटियाँ ऐसी ही लिबास पहनती थीं फिर उसके खादिम ने उसको बाहर कर दिया और उसके पीछे चटकनी लगा दी ¹⁹ और तमर ने अपने सर पर खाक डाली और अपने रंग बिरंग के जोड़े को जो पहने हुए थी फाड़ लिया, और सर पर हाथ धर कर रोती हुई चली। ²⁰ उसके भाई अबीसलोम ने उससे कहा, “क्या तेरा भाई अमनून तेरे साथ रहा है? खैर ऐ मेरी बहन अब चुप हो रह क्योंकि वह तेरा भाई है और इस बात का गम न कर।” तब तमर अपने भाई अबीसलोम के घर में बे बस पड़ी रही। ²¹ और जब दाऊद बादशाह ने यह सब बातें सुनी तो निहायत गुस्सा हुआ। ²² और अबीसलोम ने अपने भाई अमनून से कुछ बुरा भला न कहा क्योंकि अबीसलोम को अमनून से नफ़रत थी इसलिए कि उसने उसकी बहन तमर के साथ ज़बरदस्ती किया था। ²³ और ऐसा हुआ कि पूरे दो साल के बाद भेड़ों के बाल कतरने वाले अबीसलोम के यहाँ बा'ल हसोर में थे जो इफ़राईम के पास है और अबीसलोम ने बादशाह के सब बेटों को दा'वत दी। ²⁴ तब अबीसलोम बादशाह के पास आकर कहने लगा, “तेरे खादिम के यहाँ भेड़ों के बाल कतरने वाले आए हैं इसलिए मैं मिन्नत करता हूँ कि बादशाह अपने मुलाज़िमों और अपने खादिम के साथ चले।” ²⁵ तब बादशाह ने अबीसलोम से कहा, “नहीं मेरे बेटे हम सबके सब न चलें ऐसा न हो कि तुझ पर हम बोझ हो जाएँ और वह उससे बजिद हुआ तो भी वह न गया पर उसे दुआ दी।” ²⁶ तब अबीसलोम ने कहा, अगर ऐसा नहीं हो सकता तो मेरे भाई अमनून को तो हमारे साथ जाने दे “बादशाह ने उससे कहा, वह तेरे साथ क्यों जाए?” ²⁷ लेकिन अबीसलोम ऐसा बजिद हुआ कि उसने अमनून और सब शहज़ादों को उसके साथ जाने दिया। ²⁸ और अबीसलोम ने अपने खादिमों को हुक्म दिया कि “देखो जब अमनून का दिल मय से सुरूर में हो और मैं तुम को कहूँ कि अमनून को मारो तो तुम उसे मार डालना खौफ़ न करना, क्या मैंने तुमको हुक्म नहीं दिया? हिम्मतवर और बहादुर बने रहो।” ²⁹ चुनाँचे अबीसलोम के नौकरों ने अमनून से वैसा ही किया जैसा अबीसलोम ने हुक्म दिया था, तब सब शहज़ादे उठे और हर एक अपने खच्चर पर चढ़ कर भागा। ³⁰ और वह अभी रास्ते ही में थे कि दाऊद के पास यह ख़बर पहुँची कि “अबीसलोम ने सब शहज़ादों को क़त्ल कर डाला है और उनमें से एक भी बाक़ी नहीं बचा।” ³¹ तब

बादशाह ने उठकर अपने लिबास को फाड़ा और ज़मीन पर गिर पड़ा और उसके सब मुलाज़िम लिबास फाड़े हुए उसके सामने खड़े रहे। ³² तब दाऊद के भाई सिमआ का बेटा यूनदब कहने लगा कि “मेरा मालिक यह ख़्याल न करे, कि उन्होंने सब जवानों को जो बादशाह ज़ादे हैं मार डाला है इसलिए कि सिर्फ़ अमनून ही मरा है, क्योंकि अबीसलोम के इन्तिज़ाम से उसी दिन से यह बात ठान ली गई थी जब उसने उसकी बहन तमर के साथ ज़बरदस्ती की थी।” ³³ इसलिए मेरा मालिक बादशाह ऐसा ख़्याल करके कि सब शहज़ादे मर गये इस बात का ग़म न करे क्योंकि सिर्फ़ अमनून ही मरा है।” ³⁴ और अबीसलोम भाग गया और उस जवान ने जो निगहबान था अपनी आँखें उठाकर निगाह की और क्या देखा कि बहुत से लोग उसके पीछे की तरफ़ से पहाड़ के किनारे के रास्ते से चले आ रहे हैं। ³⁵ तब यूनदब ने बादशाह से कहा कि “देख शहज़ादे आ गए जैसा तेरे खादिम ने कहा था वैसा ही है।” ³⁶ उसने अपनी बात ख़त्म ही की थी कि शहज़ादे आ पहुँचे और ज़ोर ज़ोर से रोने लगे और बादशाह और उसके सब मुलाज़िम भी ज़ोर ज़ोर से रोए। ³⁷ लेकिन अबीसलोम भाग कर जसूर के बादशाह 'अम्मीहूद के बेटे तल्मी के पास चला गया और दाऊद हर रोज़ अपने बेटे के लिए मातम करता रहा। ³⁸ इसलिए अबीसलोम भाग कर जसूर को गया और तीन बरस तक वहीं रहा। ³⁹ और दाऊद बादशाह के दिल में अबीसलोम के पास जाने की बड़ी आरज़ू थी क्योंकि अमनून की तरफ़ से उसे तसल्ली हो गई थी इसलिए कि वह मर चुका था।

14

2222 22 2222222 22 22222 22
2222222 2222

¹ और ज़रोयाह के बेटे योआब ने जान लिया कि बादशाह का दिल अबीसलोम की तरफ़ लगा है। ² तब योआब ने तक्'अ को आदमी भेज कर वहाँ से एक 'अक्लमन्द 'औरत बुलवाई और उससे कहा कि “ज़रा सोग वाली सा भेस करके मातम के कपड़े पहन ले, और तेल न लगा बल्कि ऐसी 'औरत की तरह बन जा, जो बड़ी मुद्दत से मुर्दा के लिए मातम कर रही हो।” ³ और बादशाह के पास जाकर उससे इस तरह कहना। फिर योआब ने जो बातें कहनी थीं सिखायीं। ⁴ और जब तक्'अ की वह 'औरत बादशाह से बातें करने लगी, तो ज़मीन पर औंधे मुँह होकर गिरी और सिज्दा करके कहा, ऐ बादशाह तेरी दुहाई है!।” ⁵ बादशाह ने उससे कहा, “तुझे क्या हुआ?” उसने कहा, “मैं सच मुच एक बेवा

हूँ और मेरा शौहर मर गया है।⁶ तेरी लौंडी के दो बेटे थे, वह दोनों मैदान पर आपस में मार पीट करने लगे, और कोई न था जो उनको छुड़ा देता, इसलिए एक ने दूसरे को ऐसी मार लगाई कि उसे मार डाला।⁷ और अब देख कि सब कुम्बे का कुम्बा तेरी लौंडी के खिलाफ़ उठ खड़ा हुआ है, और वह कहते हैं, कि उसको जिसने अपने भाई को मारा हमारे हवाले कर ताकि हम उसको उसके भाई की जान के बदले, जिसे उसने मार डाला क्रतल करें, और यूँ वारिस को भी हलाक कर दें, इस तरह वह मेरे अंगारे को जो बाक़ी रहा है बुझा देंगे, और मेरे शौहर का न तो नाम न बक़िया रू — ए — ज़मीन पर छोड़ेंगे।”⁸ बादशाह ने उस 'औरत से कहा, “तू अपने घर जा और मैं तेरे बारे में हुक्म करूँगा।”⁹ तब 'अ की उस 'औरत ने बादशाह से कहा, “ऐ मेरे मालिक! ऐ बादशाह! सारा गुनाह मुझ पर और मेरे बाप के घराने पर हुआ और बादशाह और उसका तख़्त बे गुनाह रहे।”¹⁰ तब बादशाह ने फ़रमाया, “जो कोई तुझसे कुछ कहे उसे मेरे पास ले आना और फिर वह तुझको छूने नहीं पायेगा।”¹¹ तब उसने कहा कि “मैं 'अर्ज़ करती हूँ कि बादशाह खुदावन्द अपने खुदा को याद करे, कि खून का बदला लेने वाला और हलाक न करने पाए, ऐसा न हो कि वह मेरे बेटे को हलाक कर दें” उसने जवाब दिया, “खुदावन्द की हयात की क़सम तेरे बेटे का एक बाल भी ज़मीन पर नहीं गिरने पायेगा।”¹² तब उस 'औरत ने कहा, “ज़रा मेरे मालिक बादशाह से तेरी लौंडी एक बात कहे?”¹³ उसने जवाब दिया, “कह” तब उस 'औरत ने कहा “कि तूने खुदा के लोगों के खिलाफ़ ऐसी तदबीर क्यों निकाली है? क्योंकि बादशाह इस बात के कहने से मुजरिम सा ठहरता है, इसलिए कि बादशाह अपने जिला वतन को फिर घर लौटा कर नहीं आता।¹⁴ क्योंकि हम सबको मरना है, और हम ज़मीन पर गिरे हुए पानी कि तरह हो जाते हैं जो फिर जमा' नहीं हो सकता, और खुदा किसी की जान नहीं लेता बल्कि ऐसे ज़रिए' निकालता है, कि जिला वतन उसके यहाँ से निकाला हुआ न रहे।¹⁵ और मैं जो अपने मालिक से यह बात कहने आई हूँ, तो इसकी वजह यह है कि लोगों ने मुझे डरा दिया था, इसलिए तेरी लौंडी ने कहा कि मैं खुद बादशाह से दरखास्त करूँगी, शायद बादशाह अपनी लौंडी की गुज़ारिश पूरी करे।¹⁶ क्योंकि बादशाह सुनकर ज़रूर अपनी लौंडी को उस शख्स के हाथ से छुड़ाएगा, जो मुझे और मेरे बेटे दोनों को खुदा की मीरास में से मिटा डालना चाहता है।’

¹⁷ इसलिए तेरी लौंडी ने कहा कि मेरे मालिक बादशाह की बात तसल्ली बख़्त हो, क्योंकि मेरा मालिक बादशाह नेकी और गुनाह के फ़र्क करने में खुदा के फ़रिश्ता की तरह है, इसलिए खुदावन्द तेरा खुदा तेरे साथ हो।”¹⁸ तब बादशाह ने उस 'औरत से कहा, मैं तुझसे जो कुछ पूछूँ तो उसको ज़रा भी मुझसे मत छिपाना। उस 'औरत ने कहा, “मेरा मालिक बादशाह फ़रमाए।”¹⁹ बादशाह ने कहा, “क्या इस सारे मु'आमले में योआब का हाथ तेरे साथ है?” उस 'औरत ने जवाब दिया, तेरी जान की क़सम “ऐ मेरे मालिक बादशाह कोई इन बातों से जो मेरे मालिक बादशाह ने फ़रमाई हैं दहनी याँ बायीं तरफ़ नहीं मुड़ सकता क्योंकि तेरे खादिम योआब ही ने मुझे हुक्म दिया और उसी ने यह सब बातें तेरी लौंडी को सिखायीं।²⁰ और तेरे खादिम योआब ने यह काम इसलिए किया ताकि उस मज़मून के रंग ही को पलट दे और मेरा मालिक 'अक्लमन्द है, जिस तरह खुदा के फ़रिश्ता में समझ होती है कि दुनिया की सब बातों को जान ले।”²¹ तब बादशाह ने योआब से कहा, “देख, मैंने यह बात मान ली इसलिए तू जा और उस जवान अबीसलोम को फिर ले आ।”²² तब योआब ज़मीन पर औंधे होकर गिरा और सज्दा किया और बादशाह को मुबारक बाद दी और योआब कहने लगा, “आज तेरे बन्दा को यक़ीन हुआ ऐ मेरे मालिक बादशाह मुझ पर तेरे क़रम की नज़र है इसलिए कि बादशाह ने अपने खादिम की गुज़ारिश पूरी की।”²³ फिर योआब उठा, और जसूर को गया और अबीसलोम को येरूशलेम में ले आया।²⁴ तब बादशाह ने फ़रमाया, “वह अपने घर जाए और मेरा मुँह न देखे।” तब अबीसलोम अपने घर गया और वह बादशाह का मुँह देखने न पाया।²⁵ और सारे इस्राईल में कोई शख्स अबीसलोम की तरह उसके हुस्न की वजह से ता'रीफ़ के क़ाबिल न था क्योंकि उसके पाँव के तलवे से सर के चाँद तक उसमें कोई ऐब न था।²⁶ जब वह अपना सिर मुंडवाता था इसलिए कि उसके बाल घने थे, इसलिए वह उनको मुंडवाता था तो अपने सिर के बाल वज़न में शाही तौल बाट के मुताबिक़ *दो सौ मिस्काल के बराबर पाता था।²⁷ और अबीसलोम से तीन बेटे पैदा हुए और एक बेटा जिसका नाम तमर था वह बहुत खूबसूरत 'औरत थी।²⁸ और अबीसलोम पूरे दो बरस येरूशलेम में रहा और बादशाह का मुँह न देखा।²⁹ तब अबीसलोम ने योआब को बुलवाया ताकि उसे बादशाह के पास भेजे, लेकिन उसने उसके पास आने से

* 14:26 14:26 लगभग 2:3 किलोग्राम चांदी

इन्कार किया, और उसने दोबारह बुलवाया लेकिन वह न आया। ³⁰ तब उसने अपने मुलाजिमों से कहा, “देखो योआब का खेत मेरे खेत से लगा है और उसमें जौ हैं इसलिए जाकर उसमें आग लगा दो।” और अबीसलोम के मुलाजिमों ने उस खेत में आग लगा दी। ³¹ तब योआब उठा और अबीसलोम के पास उसके घर जाकर उससे कहने लगा, “तेरे खादिमों ने मेरे खेत में आग क्यों लगा दी?” ³² अबीसलोम ने योआब को जवाब दिया कि “देख मैंने तुझे कहला भेजा कि यहाँ आ ताकि मैं तुझे बादशाह के पास यह कहने को भेजूँ, कि मैं जसूर से यहाँ क्यों आया? मेरे लिए वहीं रहना बेहतर होता, इसलिए बादशाह अब मुझे अपना दीदार दे और अगर मुझमें कोई बुराई हो तो मुझे मार डाले।” ³³ तब योआब ने बादशाह के पास जाकर उसे यह पैगाम दिया और जब उसने अबीसलोम को बुलवाया तब वह बादशाह के पास आया और बादशाह के आगे ज़मीन पर सर झुका दिया, और बादशाह ने अबीसलोम को बोसा दिया।

15

???????? ?? ???????

¹ इसके बाद ऐसा हुआ कि अबीसलोम ने अपने लिए एक रथ और घोड़े और पचास आदमी तैयार किए, जो उसके आगे आगे दौड़ें। ² और अबीसलोम सवेरे उठकर फाटक के रास्ता के बराबर खड़ा हो जाता और जब कोई ऐसा आदमी आता जिसका मुक़द्दमा फ़ैसला के लिए बादशाह के पास जाने को होता, तो अबीसलोम उसे बुलाकर पूछता था कि “तू किस शहर का है?” और वह कहता कि “तेरा खादिम इस्राईल के फ़लाँ कबीले का है?” ³ फिर अबीसलोम उससे कहता, “देख तेरी बातें तो ठीक और सच्ची हैं लेकिन कोई बादशाह की तरफ़ से मुक़र्रर नहीं है जो तेरी सुने।” ⁴ और अबीसलोम यह भी कहा करता था कि “काश मैं मुल्क का काज़ी बनाया गया होता तो हर शख्स जिसका कोई मुक़द्दमा या दा'वा होता मेरे पास आता और मैं उसका इन्साफ़ करता।” ⁵ और जब कोई अबीसलोम के नज़दीक आता था कि उसे सज़्दा करे तो वह हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लेता और उसको बोसा देता था। ⁶ और अबीसलोम सब इस्राईलियों से जो बादशाह के पास फ़ैसला के लिए आते थे, इसी तरह पेश आता था। यूँ अबीसलोम ने इस्राईल के दिल जीत लिए। ⁷ और चालीस बरस के बाद यूँ हुआ कि अबीसलोम ने बादशाह से कहा, “मुझे ज़रा जाने दे कि मैं अपनी मिन्नत जो मैंने खुदावन्द के लिए मानी है हब्रून में पूरी करूँ।” ⁸ क्योंकि जब मैं अराम के जसूर में था तो तेरे खादिम ने यह मिन्नत मानी थी कि अगर खुदावन्द मुझे फिर येरूशलेम में सच

मुच पहुँचा दे, तो मैं खुदावन्द की इबादत करूँगा।” ⁹ बादशाह ने उससे कहा कि “सलामत जा।” इसलिए वह उठा और हब्रून को गया। ¹⁰ और अबीसलोम ने बनी इस्राईल के सब कबीलों में जासूस भेजकर ऐलान करा दिया कि जैसे ही तुम नरसिंगे की आवाज़ सुनो तो बोल उठना कि “अबीसलोम हब्रून में बादशाह हो गया है।” ¹¹ और अबीसलोम के साथ येरूशलेम से दो सौ आदमी जिनको दा'वत दी गई थी गये थे वह सादा दिली से गये थे और उनको किसी बात की ख़बर नहीं थी। ¹² और अबीसलोम ने कुर्बानियाँ अदा करते वक़्त जिलोनी अखीतुफ़ल को जो दाऊद का सलाहकार था, उसके शहर जल्वा से बुलवाया, यह बड़ी भारी साज़िश थी और अबीसलोम के पास लोग बराबर बढ़ते ही जाते थे। ¹³ और एक क़ासिद ने आकर दाऊद को ख़बर दी कि “बनी इस्राईल के दिल अबीसलोम की तरफ़ हैं।” ¹⁴ और दाऊद ने अपने सब मुलाजिमों से जो येरूशलेम में उसके साथ थे कहा, “उठो भाग चलें, नहीं तो हममें से एक भी अबीसलोम से नहीं बचेगा, चलने की जल्दी करो ऐसा न हो कि वह हम को झट आले और हम पर आफ़त लाये और शहर को तहस नहस करे।” ¹⁵ बादशाह के खादिमों ने बादशाह से कहा, “देख तेरे खादिम जो कुछ हमारा मालिक बादशाह चाहे उसे करने को तैयार हैं।” ¹⁶ तब बादशाह निकला और उसका सारा घराना उसके पीछे चला और बादशाह ने दस 'औरतें जो बाँदी थीं घर की निगहबानी के लिए पीछे छोड़ दीं। ¹⁷ और बादशाह निकला और सब लोग उसके पीछे चले और वह बैत मिर्हाक़ में ठहर गये। ¹⁸ और उसके सब खादिम उसके बराबर से होते हुए आगे गए और सब करैती और सब फ़लैती और सब जाती या'नी वह छः सौ आदमी जो जात से उसके साथ आए थे बादशाह के सामने आगे चले। ¹⁹ तब बादशाह ने जाती इती से कहा, “तू हमारे साथ क्यों चलता है? तू लौट जा और बादशाह के साथ रह क्योंकि तू परदेसी और जिला वतन भी है, इसलिए अपनी जगह को लौट जा।” ²⁰ तू कल ही तो आया है, तो क्या आज मैं तुझे अपने साथ इधर उधर फिराऊँ? जिस हाल कि मुझे जिधर जा सकता हूँ जाना है? इसलिए तू लौट जा और अपने भाइयों को साथ लेता जा, रहमत और सच्चाई तेरे साथ हों।” ²¹ तब इती ने बादशाह को जवाब दिया, “खुदावन्द की हयात की क़सम और मेरे मालिक बादशाह की जान की क़सम जहाँ कहीं मेरा मालिक बादशाह चाहे मरते चाहे जीते होगा, वहीं ज़रूर तेरा खादिम भी होगा।” ²² तब दाऊद ने इती से कहा, “चल पार जा।” और जाती इती और उसके सब लोग और सब नन्हे बच्चे जो उसके साथ थे पार गये। ²³ और

सारा मुल्क ऊँची आवाज़ से रोया और सब लोग पार हो गये, और बादशाह खुद नहर किद्रोन के पार हुआ, और सब लोगों ने पार हो कर जंगल की राह ली। ²⁴ और सदूक भी और उसके साथ सब लावी खुदा के 'अहद का संदूक लिए हुए आए और उन्होंने खुदा के संदूक को रख दिया, और *अबीयातर ऊपर चढ़ गया और जब तक सब लोग शहर से निकल न आए वहीं रहा। ²⁵ तब बादशाह ने सदूक से कहा कि “खुदा का संदूक शहर को वापस ले जा, तब अगर खुदावन्द के करम की नज़र मुझ पर होगी तो वह मुझे फिर ले आएगा, और उसे और अपने घर को मुझे फिर दिखाएगा। ²⁶ लेकिन अगर वह यूँ फ़रमाए, कि मैं तुझसे खुश नहीं, तो देख मैं हाज़िर हूँ जो कुछ उसको अच्छा मालूम हो मेरे साथ करे।” ²⁷ और बादशाह ने सदूक काहिन से यह भी कहा, “क्या तू ग़ैब बीन नहीं? शहर को सलामत लौट जा और तुम्हारे साथ तुम्हारे दोनों बेटे हों, अखीमा'ज़ जो तेरा बेटा है और यूनतन जो अबीयातर का बेटा है। ²⁸ और देख, मैं उस जंगल के घाटों के पास ठहरा रहूँगा जब तक तुम्हारे पास से मुझे हकीकत हाल की ख़बर न मिले।” ²⁹ इसलिए सदूक और अबीयातर खुदा का संदूक येरूशलेम को वापस ले गये और वहीं रहे। ³⁰ और दाऊद कोह — ए — ज़ैतून की चढ़ाई पर चढ़ने लगा और रोता जा रहा था, उसका सिर ढका था और वह नंगे पाँव चल रहा था, और वह सब लोग जो उसके साथ थे उनमें से हर एक ने अपना सिर ढाँक रखवा था, वह ऊपर चढ़ते जाते थे और रोते जाते थे। ³¹ और किसी ने दाऊद को बताया कि “अखीतुफ़ल भी फ़सादियों में शामिल और अबीसलोम के साथ है।” तब दाऊद ने कहा, “ऐ खुदावन्द! मैं तुझसे मिन्नत करता हूँ कि अखीतुफ़ल की सलाह को बेवकूफी से बदल दे।” ³² जब दाऊद चोटी पर पहुँचा जहाँ खुदा को सज्दा किया करते थे, तो अरकी हूसी अपनी चोगा फाड़े और सिर पर खाक डाले उसके इस्तक्रबाल को आया। ³³ और दाऊद ने उससे कहा, “अगर तू मेरे साथ जाए तो मुझ पर बोझ होगा। ³⁴ लेकिन अगर तू शहर को लौट जाए और अबीसलोम से कहे कि, ऐ बादशाह मैं तेरा खादिम हूँगा जैसे गुज़रे ज़माना में तेरे बाप का खादिम रहा वैसे ही अब तेरा खादिम हूँ तो तू मेरी खातिर अखीतुफ़ल की सलाह को रद्द कर देगा ³⁵ और क्या वहाँ तेरे साथ सदूक और अबीयातर काहिन न होंगे? इसलिए जो कुछ तू बादशाह के घर से सुने उसे सदूक और अबियातर काहिनों को बता देना। ³⁶ देख

वहाँ उनके साथ उनके दोनों बेटे हैं या'नी सदूक का बेटा अखीमा'ज़ और अबीयातर का बेटा यूनतन इसलिए जो कुछ तुम सुनो, उसे उनके ज़रिए मुझे कहला भेजना।” ³⁷ इसलिए दाऊद का दोस्त हूसी †शहर में आया और अबीसलोम भी ‡येरूशलेम में पहुँच गया।

16

2222 22 222222

¹ और जब दाऊद चोटी से आगे बढ़ा तो मिफ़ीबोसत का खादिम ज़ीबा दो गधे लिए हुए उसे मिला, जिन पर जीन कसे थे और उनके ऊपर दो सौ रोटियाँ और किशमिश के सौ गुच्छे और ताबिस्तानी मेवों के सौ दाने और मय का एक मश्कीज़ा था। ² और बादशाह ने ज़ीबा से कहा, “इन से तेरा क्या मतलब है?” ज़ीबा ने कहा, “यह गधे बादशाह के घराने की सवारी के लिए और रोटियाँ और गर्मी के फल जवानों के खाने के लिए हैं और यह शराब इसलिए है कि जो बयाबान में थक जायें उसे पियें।” ³ और बादशाह ने पूछा, “तेरे आक्रा का बेटा कहाँ है?” ज़ीबा ने बादशाह से कहा, “देख वह येरूशलेम में रह गया है क्योंकि उसने कहा आज इस्राईल का घराना मेरे बाप की बादशाहत मुझे लौटा देगा।” ⁴ तब बादशाह ने ज़ीबा से कहा, “देख! जो कुछ मिफ़ीबोसत का है वह सब तेरा हो गया।” तब ज़ीबा ने कहा, “मैं सिज्दा करता हूँ ऐ मेरे मालिक बादशाह तेरे करम की नज़र मुझ पर रहे!” ⁵ जब दाऊद बादशाह बहूरेम पहुँचा तो वहाँ से साऊल के घर के लोगों में से एक शरस जिसका नाम सिम'ई बिन जीरा था निकला और ला'नत करता हुआ आया। ⁶ और उसने दाऊद पर और दाऊद बादशाह के सब खादिमों पर पत्थर फेंके और सब लोग और सब सूरमा उसके दहने और बायें हाथ थे। ⁷ और सिम'ई ला'नत करते वक़्त यूँ कहता था, “दूर हो! दूर हो! ऐ खूनी आदमी ऐ खबीस! ⁸ खुदावन्द ने साऊल के घराने के सब खून को जिसके बदले तू बादशाह हुआ तेरे ही ऊपर लौटाया, और खुदावन्द बादशाहत तेरे बेटे अबीसलोम के हाथ में दे दी, है और देख तू अपनी ही बुराई में खुद आप फंस गया है इसलिए कि तू खूनी आदमी है।” ⁹ तब ज़रोयाह के बेटे अबीशै ने बादशाह से कहा, “यह मरा हुआ कुत्ता मेरे मालिक बादशाह पर क्यों ला'नत करे? मुझको ज़रा उधर जाने दे कि उसका सिर उड़ा दूँ।” ¹⁰ बादशाह ने कहा, “ऐ ज़रोयाह के बेटो! मुझे तुमसे क्या काम? वह जो ला'नत कर रहा है, और खुदावन्द ने उससे कहा है कि दाऊद

* 15:24 15:24 अबियातर ने कुर्बानियां चढ़ाई, अबियातर ऊपर चढ़ गया † 15:37 15:37 यरूशलेम ‡ 15:37 15:37 वहां

पर ला'नत कर इसलिए कौन कह सकता है कि तूने क्यों ऐसा किया?" ¹¹ और दाऊद ने अबीशै से और अपने सब खादिमों से कहा, "देखो मेरा बेटा ही जो मेरे सुल्ब से पैदा हुआ मेरी जान का तालिब है तब अब यह बिनयमीनी कितना ज्यादा ऐसा न करे? उसे छोड़ दो और ला'नत करने दो क्योंकि खुदावन्द ने उसे हुक्म दिया है ¹² शायद खुदावन्द उस जुल्म पर जो मेरे ऊपर हुआ है, नज़र करे और खुदावन्द आज के दिन उसकी ला'नत के बदले मुझे नेक बदला दे।" ¹³ तब दाऊद और उसके लोग रास्ता चलते रहे और सिम'ई उसके सामने के पहाड़ के किनारे पर चलता रहा और चलते चलते ला'नत करता और उसकी तरफ पत्थर फेंकता और खाक डालता रहा। ¹⁴ और बादशाह और उसके सब साथी थके हुए आए और वहाँ उसने आराम किया। ¹⁵ और अबीसलोम और सब इस्राईली मर्द येरूशलेम में आए और अखीतुफ़ल उसके साथ था। ¹⁶ और ऐसा हुआ कि जब दाऊद का दोस्त अरकी हूसी अबीसलोम के पास आया तो हूसी ने अबीसलोम से कहा, "बादशाह जीता रहे! बादशाह जीता रहे!" ¹⁷ और अबीसलोम ने हूसी से कहा, "क्या तूने अपने दोस्त पर यही महेरबानी की? तू अपने दोस्त के साथ क्यों न गया?" ¹⁸ हूसी ने अबीसलोम से कहा, "नहीं बल्कि जिसको खुदावन्द ने और इस क्रौम ने और इस्राईल के सब आदमियों ने चुन लिया है मैं उसी का हूँगा और उसी के साथ रहूँगा। ¹⁹ और फिर मैं किसकी खिदमत करूँ? क्या मैं उसके बेटे के सामने रह कर खिदमत न करूँ? जैसे मैंने तेरे बाप के सामने रहकर की वैसे ही तेरे सामने रहूँगा।" ²⁰ तब अबीसलोम ने अखीतुफ़ल से कहा, "तुम सलाह दो कि हम क्या करें।" ²¹ तब अखीतुफ़ल ने अबीसलोम से कहा कि "अपने बाप की बाँदियों के पास जा जिनको वह घर की निगह बानी को छोड़ गया है, इसलिए कि जब इस्राईली सुनेंगे कि तेरे बाप को तुझ से नफ़रत है, तो उन सबके हाथ जो तेरे साथ हैं ताक़तवर हो जायेंगे।" ²² फिर उन्होंने महल की छत पर अबीसलोम के लिए एक तम्बू खड़ा कर दिया और अबीसलोम सब इस्राईल के सामने अपने बाप की बाँदियों के पास गया। ²³ और अखीतुफ़ल की सलाह जो इन दिनों होती वह ऐसी समझी जाती थी, कि गोया खुदा के कलाम से आदमी ने बात पूछ ली, यूँ अखीतुफ़ल की सलाह दाऊद और अबीसलोम की खिदमत में ऐसी ही होती थी।

17

¹ और अखीतुफ़ल ने अबीसलोम से यह भी कहा कि "मुझे अभी बारह हजार जवान चुन लेने दे और मैं उठकर

आज ही रात को दाऊद का पीछा करूँगा।" ² और ऐसे हाल में कि वह थका माँदा हो और उसके हाथ ढीले हों, मैं उस पर जा पड़ूँगा और उसे डराऊँगा, और सब लोग जो उसके साथ हैं भाग जायेंगे, और मैं सिर्फ़ बादशाह को मारूँगा। ³ और मैं सब लोगों को तेरे पास लौटा लाऊँगा, जिस आदमी का तू तालिब है वह ऐसा है कि जैसे सब लौट आए, यूँ सब लोग सलामत रहेंगे। ⁴ यह बात अबीसलोम को और इस्राईल के सब बुजुर्गों को बहुत अच्छी लगी।"

2222 22 222222222222 22 2222 22
22222 2222

⁵ और अबीसलोम ने कहा, अब अरकी हूसी को भी बुलाओ और जो वह कहे हम उसे भी सुनें। ⁶ जब हूसी अबीसलोम के पास आया तो अबीसलोम ने उससे कहा कि, "अखीतुफ़ल ने तो यह कहा है, क्या हम उसके कहने के मुताबिक़ 'अमल करें? अगर नहीं तो तू बता।" ⁷ हूसी ने अबीसलोम से कहा कि, "वह सलाह जो अखीतुफ़ल ने इस बार दी है अच्छी नहीं।" ⁸ इसके 'अलावा हूसी ने यह भी कहा कि, "तू अपने बाप को और उसके आदमियों को जानता है कि वह बहादुर लोग हैं, और वह अपने दिल ही दिल में उस रीछनी की तरह, जिसके बच्चे जंगल में छिन गये हों झल्ला रहे होंगे और तेरा बाप जंगी मर्द है, और वह लोगों के साथ नहीं ठहरेगा ⁹ और देख अब तो वह किसी शार में या किसी दूसरी जगह छिपा हुआ होगा। और जब शुरू ही में थोड़े से क़त्ल हों जायेंगे, तो जो कोई सुनेगा यही कहेगा, कि अबीसलोम के पैरोकार के बीच तो ख़ूँजी शुरू है।" ¹⁰ तब वह भी जो बहादुर है और जिसका दिल शेर के दिल की तरह है बिल्कुल पिघल जाएगा क्योंकि सारा इस्राईल जानता है कि तेरा बाप बहादुर आदमी है और उसके साथ के लोग सूरमा हैं। ¹¹ तो मैं यह सलाह देता हूँ कि दान से बेर सबा' तक के सब इस्राईली समुन्दर के किनारे की रेत की तरह तेरे पास कसरत से इकट्ठे किए जायें और तू आप ही लड़ाई पर जा। ¹² यूँ हम किसी न किसी जगह जहाँ वह मिले उस पर जा ही पड़ेंगे और हम उस पर ऐसे गिरेंगे जैसे शबनम ज़मीन पर गिरती है, फिर न तो हम उसे और न उसके साथ के सब आदमियों में से किसी को जीता छोड़ेंगे। ¹³ इसके 'अलावा अगर वह किसी शहर में घुसा हुआ होगा तो सब इस्राईली उस शहर के पास रस्सियाँ ले आयेंगे और हम उसको खींचकर दरया में कर देंगे यहाँ तक कि उसका एक छोटा सा पत्थर भी वहाँ नहीं मिलेगा।" ¹⁴ तब अबीसलोम और सब इस्राईली कहने लगे कि "यह सलाह जो अरकी हूसी ने दी है अखीतुफ़ल की सलाह

से अच्छी है।” क्योंकि यह तो खुदावन्द ही ने ठहरा दिया था कि अखीतुफ़ल की अच्छी सलाह बातिल हो जाए ताकि खुदावन्द अबीसलोम पर बला नाज़िल करे।¹⁵ तब हूसी ने सद्क और अबीयातर काहिनों से कहा कि “अखीतुफ़ल ने अबीसलोम को और बनी इस्राईल के बुज़ुर्गों को ऐसी ऐसी सलाह दी और मैंने यह सलाह दी।¹⁶ इसलिए अब जल्द दाऊद के पास कहला भेजो कि आज रात को जंगल के घाटों पर न ठहर बल्कि जिस तरह हो सके पार उतर जा ताकि ऐसा न हो कि बादशाह और सब लोग जो उसके साथ हैं निगल लिए जायें।”¹⁷ और यूनतन और अखीमा'ज़ 'ऐन राजिल के पास ठहरे थे और एक लौंडी जाती और उनको खबर दे आती थी और वह जाकर दाऊद को बता देते थे क्योंकि मुनासिब न था कि वह शहर में आते दिखाई देते।¹⁸ लेकिन एक लड़के ने उनको देख लिया और अबीसलोम को खबर दी लेकिन वह दोनों जल्दी करके निकल गये और बहरीम में एक शख्स के घर गये जिसके सहन में एक कुआँ था इसलिए वह उसमें उतर गये।¹⁹ और उस 'औरत ने पर्दा ले कर कुवें के मुहँ पर बिछाया और उस पर दला हुआ अनाज फैला दिया और कुछ मा'लूम नहीं होता था।²⁰ और अबीसलोम के खादिम उस घर पर उस 'औरत के पास आए और पूछा कि “अखीमा'ज़ और यूनतन कहाँ हैं?” उस 'औरत ने उनसे कहा, “वह नाले के पार गये।” और जब उन्होंने उनको ढूँडा और न पाया तो येरूशलेम को लौट गये।²¹ और ऐसा हुआ कि जब यह चले गये तो वह कुवें से निकले और जाकर दाऊद बादशाह को खबर दी और वह दाऊद से कहने लगे, कि “उठो और दरया पार हो जाओ क्योंकि अखीतुफ़ल ने तुम्हारे खिलाफ़ ऐसी ऐसी सलाह दी है।”²² तब दाऊद और सब लोग जो उसके साथ थे उठे और यरदन के पार गये, और सुबह की रोशनी तक उनमें से एक भी ऐसा न था जो यरदन के पार न हो गया हो।²³ जब अखीतुफ़ल ने देखा कि उसकी सलाह पर 'अमल नहीं किया गया तो उसने अपने गधे पर जीन कसा और उठ कर अपने शहर को अपने घर गया और अपने घराने का बन्दोबस्त करके अपने को फाँसी दी और मर गया और अपने बाप की कब्र में दफ़न हुआ।²⁴ तब दाऊद महनायम में आया और अबीसलोम और सब इस्राईली जवान जो उसके साथ थे यरदन के पार हुए।²⁵ और अबीसलोम ने योआब के बदले 'अमासा को लश्कर का सरदार किया, यह 'अमासा एक *इस्राईली आदमी का बेटा था जिसका नाम इतरा था उसने नाहस की बेटी अबीजेल से जो योआब की माँ ज़रोयाह की बहन थी सोहबत की थी।²⁶ और इस्राईली

और अबीसलोम जिल'आद के मुल्क में खेमा जन हुए।²⁷ और जब दाऊद महनायम में पहुँचा तो ऐसा हुआ कि नाहस का बेटा सोबी, बनी अम्मोन के रब्बा से और अम्मी ऐल का बेटा मकीर लूदबार से और बरज़िली जिल'आदी राजिलीम से।²⁸ पलंग और चार पाइयाँ और बासन और मिट्टी के बर्तन और गेहूँ और जौ और आटा और भुना हुआ अनाज और लोबिये की फलियाँ और मसूर और भुना हुआ चबेना।²⁹ और शहद और मख्वन और भेड़ और गाय के दूध का पनीर दाऊद के और उसके साथ के लोगों के खाने के लिए लाये क्योंकि उन्होंने कहा कि “लोग बयाबान में भूके और थके और प्यासे हैं।”

18

22222222 22 222 22 222

¹ और दाऊद ने उन लोगों को जो उसके साथ थे गिना और हज़ारों के और सैकड़ों के सरदार मुकर्रर किए।² और दाऊद ने लोगों की एक तिहाई योआब के मातहत और एक तिहाई योआब के भाई अबीशै बिन ज़रोयाह के मातहत और तिहाई जाती इत्ती के मातहत करके उनको खाना किया और बादशाह ने लोगों से कहा कि “मैं खुद भी ज़रूर तुम्हारे साथ चलूँगा।”³ लेकिन लोगों ने कहा कि “तू नहीं जाने पायेगा क्योंकि हम अगर भागें तो उनको कुछ हमारी परवा न होगी और अगर हम में से आधे मारे जायें तो भी उनको कुछ परवा न होगी लेकिन तू हम जैसे दस हज़ार के बराबर है इसलिए बेहतर यह है कि तू शहर में से हमारी मदद करने को तैयार रहे।”⁴ बादशाह ने उनसे कहा, “जो तुमको बेहतर मा'लूम होता है मैं वही करूँगा।” इसलिए बादशाह शहर के फाटक की एक तरफ़ खड़ा रहा और सब लोग सौ सौ और हज़ार हज़ार करके निकलने लगे।⁵ और बादशाह ने योआब और अबीशै और इत्ती को फ़रमाया कि “मेरी खातिर उस जवान अबीसलोम के साथ नरमी से पेश आना।” जब बादशाह ने सब सरदारों को अबीसलोम के हक़ में नसीहत की तो सब लोगों ने सुना।⁶ इसलिए वह लोग निकल कर मैदान में इस्राईल के मुकाबिले को गये और इफ़राईम के जंगल में हुई।⁷ और वहाँ इस्राईल के लोगों ने दाऊद के खादिमों से शिकस्त खाई और उस दिन ऐसी बड़ी ख़ूँरज़ी हुई कि बीस हज़ार आदमी मारे गए।⁸ इसलिए कि उस दिन सारी बादशाहत में जंग थी और लोग इतने तलवार का लुक़मा नहीं बने जितने बन का शिकार हुए।⁹ और अचानक अबीसलोम दौड़ के दाऊद के खादिमों के सामने आ गया और अबीसलोम अपने खच्चर पर सवार था और वह खच्चर एक बड़े बलूत

* 17:25 17:25 इश्माईलियों

के दरख्त की घनी डालियों के नीचे से गया, इसलिए उसका सिर बलूत में अटक गया और वह आसमान और ज़मीन के बीच में लटका रह गया और वह खच्चर जो उसके रान तले था निकल गया। ¹⁰ किसी शख्स ने यह देखा और योआब को खबर दी कि “मैंने अबीसलोम को बलूत के दरख्त में लटका हुआ देखा।” ¹¹ और योआब ने उस शख्स से जिसने उसे खबर दी थी कहा, “तूने यह देखा फिर क्यों नहीं तूने उसे मार कर वहीं ज़मीन पर गिरा दिया? क्योंकि मैं तुझे चाँदी के दस टुकड़े और कमर बंद देता।” ¹² उस शख्स ने योआब से कहा कि “अगर मुझे चाँदी के हजार टुकड़े भी मेरे हाथ में मिलते तो भी मैं बादशाह के बेटे पर हाथ न उठाता क्योंकि बादशाह ने हमारे सुनते तुझे और अबीशै और इती को नसीहत की थी कि खबरदार कोई उस जवान अबीसलोम को न छुए। ¹³ वरना अगर मैं उसकी जान के साथ दगा खेलता और बादशाह से तो कोई बात छुपी भी नहीं तो तू खुद भी किनारा कर लेता।” ¹⁴ तब योआब ने कहा, “मैं तेरे साथ यूँ ही ठहरा नहीं रह सकता।” फिर उसने तीन तीर हाथ में लिए और उनसे अबीसलोम के दिल को जो अभी बलूत के दरख्त के बीच ज़िन्दा ही था छेद डाला। ¹⁵ और दस जवानों ने जो योआब के सलह बरदार थे अबीसलोम को घेर कर उसे मारा और क़त्ल कर दिया। ¹⁶ तब योआब ने नरसिंगा फूँका और लोग इस्राईलियों का पीछा करने से लौटे क्योंकि योआब ने लोगों को रोक लिया। ¹⁷ और उन्होंने अबीसलोम को लेकर बन के उस बड़े गढ़े में डाल दिया और उस पर पत्थरों का एक बहुत बड़ा ढेर लगा दिया और सब इस्राईली अपने अपने डेरे को भाग गये। ¹⁸ और अबीसलोम ने अपने जीते जी एक लाट लेकर खड़ी कराई थी जो शाही वादी में है क्योंकि उसने कहा, मेरे कोई बेटा नहीं जिससे मेरे नाम की यादगार रहे इसलिए उसने उस लाट को अपना नाम दिया। और वह आज तक अबीसलोम की यादगार कहलाती है। ¹⁹ तब सदूक के बेटे अखीमा'ज़ ने कहा कि “मुझे दौड़ कर बादशाह को खबर पहुँचाने दे कि खुदावन्द ने उसके दुश्मनों से उसका बदला ले लिया।” ²⁰ लेकिन योआब ने उससे कहा कि आज के दिन तू कोई खबर न पहुँचा बल्कि दूसरे दिन खबर पहुँचा देना लेकिन आज तुझे कोई खबर नहीं ले जाना होगा इसलिए बादशाह का बेटा मर गया है। ²¹ तब योआब ने कूशी से कहा कि जा कर जो कुछ तूने देखा है इसलिए बादशाह को जाकर बता दे। तब वह कूशी योआब को सज्दा करके दौड़ गया। ²² तब सदूक के बेटे अखीमा'ज़ ने फिर योआब से कहा, “चाहे कुछ ही हो तू मुझे भी उस कूशी के पीछे दौड़ जाने दे।” योआब ने कहा, “ऐ मेरे बेटे तू क्यूँ दौड़ जाना चाहता है जिस हाल

कि इस खबर के बदले तुझे कोई इन'आम नहीं मिलेगा?” ²³ उसने कहा, चाहे कुछ ही हो मैं तो जाऊँगा “उसने कहा, दौड़ जा।” तब अखीमा'ज़ मैदान से होकर दौड़ गया और कूशी से आगे बढ़ गया। ²⁴ और दाऊद दोनों फाटकों के दरमियान बैठा था और पहेरे वाला फाटक की छत से होकर दीवार पर गया और क्या देखता है कि एक शख्स अकेला दौड़ा आता है। ²⁵ उस पहेरे वाले ने पुकार कर बादशाह को खबर दी, बादशाह ने फ़रमाया, “अगर वह अकेला है तो मुँह ज़बानी खबर लाता होगा।” और वह तेज़ आया और नज़दीक पहुँचा। ²⁶ और पहेरे वाले ने एक और आदमी को देखा कि दौड़ा आता है, तब उस पहेरे वाले ने दरबान को पुकार कर कहा कि “देख एक शख्स और अकेला दौड़ा आता है।” बादशाह ने कहा, “वह भी खबर लाता होगा।” ²⁷ और पहेरे वाले ने कहा, “मुझे अगले का दौड़ना सदूक के बेटे अखीमा'ज़ के दौड़ने की तरह मा'लूम देता है।” तब बादशाह ने कहा, “वह भला आदमी है और अच्छी खबर लाता होगा।” ²⁸ और अखीमा'ज़ ने पुकार कर बादशाह से कहा, “खैर है!” और बादशाह के आगे ज़मीन पर झुक कर सिज्दा किया और कहा कि “खुदावन्द तेरा खुदा मुबारक हो जिसने उन आदमियों को जिन्होंने मेरे मालिक बादशाह के खिलाफ़ हाथ उठाये थे क़ाबू में कर दिया है।” ²⁹ बादशाह ने पूछा क्या वह जवान अबीसलोम सलामत है? अखीमा'ज़ ने कहा कि “जब योआब ने बादशाह के खादिम को या'नी मुझको जो तेरा खादिम हूँ खाना किया तो मैंने एक बड़ी हलचल तो देखी लेकिन मैं नहीं जानता कि वह क्या थी।” ³⁰ तब बादशाह ने कहा, “एक तरफ़ हो जा और यहीं खड़ा रह।” इसलिए वह एक तरफ़ होकर चुप चाप खड़ा हो गया। ³¹ फिर वह कूशी आया और कूशी ने कहा, “मेरे मालिक बादशाह के लिए खबर है क्योंकि खुदावन्द ने आज के दिन उन सबसे जो तेरे खिलाफ़ उठे थे तेरा बदला लिया।” ³² तब बादशाह ने कूशी से पूछा, “क्या वह जवान अबीसलोम सलामत है?” कूशी ने जवाब दिया कि “मेरे मालिक बादशाह के दुश्मन और जितने तुझे तकलीफ़ पहुँचाने को तेरे खिलाफ़ उठे वह उसी जवान की तरह हो जायें।” ³³ तब बादशाह बहुत बेचैन हो गया और उस कोठरी की तरफ़ जो फाटक के ऊपर थी रोता हुआ चला और चलते चलते यूँ कहता जाता था, “हाय मेरे बेटे अबीसलोम! मेरे बेटे! मेरे बेटे अबीसलोम! काश मैं तेरे बदले मर जाता! ऐ अबीसलोम! मेरे बेटे! मेरे बेटे!”

19

22222 22 2222222 22 2222222 222222

1 और योआब को बताया गया कि “देख बादशाह अबीसलोम के लिए नौहा और मातम कर रहा है।”
 2 इसलिए तमाम लोगों के लिए उस दिन की फ़तह मातम से बदल गई क्योंकि लोगों ने उस दिन यह कहते सुना कि “बादशाह अपने बेटे के लिए दुखी है।”
 3 इसलिए वह लोग उस दिन चोरी से शहर में घुसे जैसे वह लोग जो लड़ाई से भागते हैं शर्म के मारे चोरी चोरी चलते हैं।
 4 और बादशाह ने अपना मुँह ढाँक लिया और बादशाह ऊँची आवाज़ से चिल्लाने लगा कि “हाय मेरे बेटे अबीसलोम! हाय अबीसलोम मेरे बेटे! मेरे बेटे!”
 5 तब योआब घर में बादशाह के पास जाकर कहने लगा कि “तूने आज अपने सब खादिमों को शर्मिन्दा किया, जिन्होंने आज के दिन तेरी जान और तेरे बेटों और तेरी बेटियों की जानें और तेरी बीवियों की जानें और तेरी बाँदियों की जानें बचायीं।”
 6 क्योंकि तू अपने 'अदावत रखने वालों को प्यार करता है, और अपने दोस्तों से 'अदावत रखता है, इसलिए कि तूने आज के दिन ज़ाहिर कर दिया कि सरदार और खादिम तेरे नज़दीक बेक़दर हैं, क्योंकि आज के दिन मैं देखता हूँ कि अगर अबीसलोम जीता रहता और हम सब मर जाते, तो तू बहुत खुश होता।
 7 इसलिए उठ बाहर निकल और अपने खादिमों से तसल्ली बख़्श बातें कर क्योंकि मैं खुदावन्द की क़सम खाता हूँ कि अगर तू बाहर न जाए तो आज रात को एक आदमी भी तेरे साथ न रहेगा और यह तेरे लिए उन सब आफ़तों से बदतर होगा जो तेरी नौजवानी से लेकर अब तक तुझ पर आई है।”
 8 तब बादशाह उठकर फाटक में जा बैठा और सब लोगों को बताया गया कि देखो बादशाह फाटक में बैठा है, तब सब लोग बादशाह के सामने आए और इस्राईली अपने अपने डेरे को भाग गये थे।
 9 और इस्राईल के क़बीलों के सब लोगों में झगड़ा था और वह कहते थे कि “बादशाह ने हमारे दुश्मनों के हाथ से और फ़िलिस्तिनियों के हाथ से बचाया और अब वह अबीसलोम के सामने से मुल्क छोड़ कर भाग गया।”
 10 और अबीसलोम जिसे हमने मसह करके अपना हाकिम बनाया था, लड़ाई में मर गया है इसलिए तुम अब बादशाह को वापस लाने की बात क्यों नहीं करते?”
 11 तब दाऊद बादशाह ने सद्क़ और अबीयातर काहिनों को कहला भेजा कि “यहूदाह के बुज़ुर्गों से कहो कि तुम बादशाह को उसके महल में पहुँचाने के लिए सबसे पीछे क्यों होते हो जिस हाल कि सारे इस्राईल की बात उसे उसके महल में पहुँचाने के बारे में बादशाह तक पहुँची है।”
 12 तुम तो मेरे भाई और मेरी हड्डी हो फिर तुम बादशाह को वापस ले जाने के लिए सबसे पीछे क्यों हो?”
 13 और 'अमासा से कहना

क्या तू मेरी हड्डी और गोश्त नहीं? इसलिए अगर तू योआब की जगह मेरे सामने हमेशा के लिए लश्कर का सरदार न हो तो खुदा मुझसे ऐसा ही बल्कि इससे भी ज्यादा करे।”
 14 और उसने सब बनी यहूदाह का दिल एक आदमी के दिल की तरह माएल कर लिया चुनाँचे उन्होंने बादशाह को पैग़ाम भेजा कि “तू अपने सब खादिमों को साथ लेकर लौट आ।”
 15 इसलिए बादशाह लौट कर यरदन पर आया और सब बनी यहूदाह ज़िलज़ाल को गये कि बादशाह का इस्तक्रबाल करें और उसे यरदन के पार ले आयें।
 16 और जीरा के बेटे बिनयमीनी सिम'ई ने जो बहूरीम का था जल्दी की और बनी यहूदाह के साथ दाऊद बादशाह के इस्तक्रबाल को आया।
 17 और उसके साथ एक हज़ार बिनयमीनी जवान थे और साऊल के घराने का खादिम ज़ीबा अपने पन्दरह बेटों और बीस नौकरों समेत आया और बादशाह के सामने यरदन के पार उतरे।
 18 और एक क़शती पार गई कि बादशाह के घराने को ले आये और जो काम उसे मुनासिब मा'लूम हो उसे करे और ज़ीरा का बेटा सिम'ई बादशाह के सामने जैसे ही वह यरदन पार हुआ औंधा हो कर गिरा।
 19 और बादशाह से कहने लगा कि मेरा मालिक मेरी तरफ़ गुनाह मंसूब न करे और जिस दिन मेरा मालिक बादशाह येरूशलेम से निकला उस दिन जो कुछ तेरे खादिम ने बद मिज़ाजी से किया उसे ऐसा याद न रख कि बादशाह उसको अपने दिल में रखे।
 20 क्योंकि तेरा बन्दा यह जानता है कि “मैंने गुनाह किया है और देख आज के दिन मैं ही यूसुफ़ के घराने में से पहले आया हूँ कि अपने मालिक बादशाह का इस्तक्रबाल करूँ।”
 21 और ज़रोयाह के बेटे अबीशै ने जवाब, दिया क्या सिम'ई इस वज़ह से मारा न जाए कि उसने खुदावन्द के ममसूह पर ला'नत की?”
 22 दाऊद ने कहा, “ऐ ज़रोयाह के बेटो! मुझे तुमसे क्या काम कि तुम आज के दिन मेरे मुखालिफ़ हुए हो? क्या इस्राईल में से कोई आदमी आज के दिन क़त्ल किया जाए? क्या मैं यह नहीं जानता कि मैं आज के दिन इस्राईल का बादशाह हूँ?”
 23 और बादशाह ने सिम'ई से कहा, तू मारा नहीं जाएगा “और बादशाह ने उससे क़सम खाई।”
 24 फिर साऊल का बेटा मिफ़ीबोसत बादशाह के इस्तक्रबाल को आया, उसने बादशाह के चले जाने के दिन से लेकर उसे सलामत घर आजाने के दिन तक न तो अपने पाँव पर पट्टियाँ बाँधी और न अपनी दाढ़ी कतरवाई और न अपने कपड़े धुलवाए थे।
 25 और ऐसा हुआ कि जब वह येरूशलेम में बादशाह से मिलने आया तो बादशाह ने उससे कहा, ऐ मिफ़ीबोसत तू मेरे साथ क्यों नहीं गया था?”
 26 उसने जवाब दिया,

ऐ मेरे मालिक बादशाह मेरे नौकर ने मुझसे दशा की क्योंकि तेरे खादिम ने कहा था कि मैं अपने लिए गधे पर जीन कसूंगा ताकि मैं सवार हो कर बादशाह के साथ जाऊँ इसलिए कि तेरा खादिम लंगड़ा है।²⁷ तब उसने मेरे मालिक बादशाह के सामने तेरे खादिम पर इल्जाम लगाया, लेकिन मेरा मालिक बादशाह तू खुदावन्द के फ़रिश्ता की तरह है, इसलिए जो कुछ तुझे अच्छा मा'लूम हो वह कर।²⁸ क्योंकि मेरे बाप का सारा घराना, मेरे मालिक बादशाह के आगे मुर्दों के तरह था तो भी तूने अपने खादिम को उन लोगों के बीच बिठाया जो तेरे दस्तरख्वान पर खाते थे तब क्या अब भी मेरा कोई हक़ है कि मैं बादशाह के आगे फिर फ़रयाद करूँ? ²⁹ बादशाह ने उनसे कहा, “तू अपनी बातें क्यों बयान करता जाता है? मैं कहता हूँ कि तू और जीबा दोनों उस ज़मीन को आपस में बाँट लो।” ³⁰ और मिफ़ीबोसत ने बादशाह से कहा, “वही सब ले ले इसलिए कि मेरा मालिक बादशाह अपने घर में फिर सलामत आ गया है।” ³¹ और बरज़िली ज़िल'आदी रज़िलीम से आया और बादशाह के साथ यरदन पार गया ताकि उसे यरदन के पार पहुँचाये। ³² और यह बरज़िली बहुत ही उम्र दराज़ आदमी या'नी अस्सी बरस का था, उसने बादशाह को जब तक वह मेहनायम में रहा खुराक पहुँचाई थी इसलिए कि वह बहुत बड़ा आदमी था। ³³ तब बादशाह ने बरज़िली से कहा कि “तू मेरे साथ चल और मैं येरूशलेम में अपने साथ तेरी परवरिश करूँगा।” ³⁴ और बरज़िली ने बादशाह को जवाब दिया कि “मेरी ज़िन्दगी के दिन ही कितने हैं जो मैं बादशाह के साथ येरूशलेम को जाऊँ? ³⁵ आज मैं अस्सी बरस का हूँ, क्या मैं भले और बुरे में फ़र्क कर सकता हूँ? क्या तेरा बन्दा जो कुछ खाता पीता है उसका मज़ा जान सकता है? क्या मैं गाने वालों और गाने वालियों की फिर आवाज़ सुन सकता हूँ? तब तेरा बन्दा अपने बादशाह पर क्यों बोझ हो? ³⁶ तेरा बन्दा सिर्फ़ यरदन के पार तक बादशाह के साथ जाना चाहता है, इसलिए बादशाह मुझे ऐसा बड़ा बदला क्यों दे? ³⁷ अपने बन्दा को लौट जाने दे ताकि मैं अपने शहर में अपने बाप और माँ की क़ब्र के पास मरूँ लेकिन देख तेरा बन्दा किम्हाम हाज़िर है, वह मेरे मालिक बादशाह के साथ पार जाए और जो कुछ तुझे अच्छा मा'लूम दे उससे कर।” ³⁸ तब बादशाह ने कहा, “किम्हाम मेरे साथ पार चलेगा और जो कुछ तुझे अच्छा मा'लूम हो वही मैं उसके साथ करूँगा और जो कुछ तू चाहेगा मैं तेरे लिए वही करूँगा।” ³⁹ और सब लोग यरदन के पार हो गये और बादशाह भी पार हुआ, फिर बादशाह ने बरज़िली

को चूमा और उसे दुआ दी और वह अपनी जगह को लौट गया। ⁴⁰ तब बादशाह ज़िलज़ाल को खाना हुआ और किम्हाम उसके साथ चला और यहूदाह के सब लोग और इस्राईल के लोगों में से भी आधे बादशाह को पार लाये। ⁴¹ तब इस्राईल के सब लोग बादशाह के पास आकर उससे कहने लगे कि “हमारे भाई बनी यहूदाह तुझे क्यों चोरी से ले आए और बादशाह को और उसके घराने को और दाऊद के साथ जितने थे उनको यरदन के पार से लाये?” ⁴² तब सब बनी यहूदाह ने बनी इस्राईल को जवाब दिया, “इसलिए कि बादशाह का हमारे साथ नज़दीक का रिश्ता है, तब तुम इस बात की वजह से नाराज़ क्यों हुए? क्या हमने बादशाह के दाम का कुछ खा लिया है या उसने हमको कुछ इन'आम दिया है?” ⁴³ फिर बनी इस्राईल ने बनी यहूदाह को जवाब दिया कि “बादशाह में हमारे दस हिस्से हैं और हमारा हक़ भी दाऊद पर तुम से ज्यादा है तब तुमने क्यों हमारी हिक़ारत की, कि बादशाह को लौटा लाने में पहले हमसे सलाह नहीं ली?” और बनी यहूदाह की बातें बनी इस्राईल की बातों से ज्यादा सख़्त थीं।

20

????? ? ? ? ? ? ? ?

¹ और वहाँ एक शरीर बिनयमीनी था और उसका नाम सबा' बिन बिक्री था, उसने नरसिंगा फूँका और कहा कि “दाऊद में हमारा कोई हिस्सा नहीं और न हमारी मीरास यस्सी के बेटे के साथ है, ऐ इस्राईलियों अपने अपने डेरे को चले जाओ।” ² इसलिए सब इस्राईली दाऊद की पैरवी छोड़ कर सबा' बिन बिक्री के पीछे हो लिए लेकिन यहूदाह के लोग यरदन से येरूशलेम तक अपने बादशाह के साथ ही रहे। ³ और दाऊद येरूशलेम में अपने महल में आया और बादशाह ने अपनी उन दस बाँदियों को जिनको वह अपने घर की निगहबानी के लिए छोड़ गया था, लेकर उनको नज़र बंद कर दिया और उनकी परवरिश करता रहा लेकिन उनके पास न गया, इसलिए उन्होंने अपने मरने के दिन तक नज़र बंद रहकर रंडापे की हालत में ज़िन्दगी काटी। ⁴ और बादशाह ने 'अमासा को हुक्म किया कि “तीन दिन के अन्दर बनी यहूदाह को मेरे पास जमा' कर और तू भी यहाँ हाज़िर हो।” ⁵ तब 'अमासा बनी यहूदाह को बुलाने गया, लेकिन वह मुताअय्यन वक़्त से जो उसने उसके लिए मुक़र्रर किया था ज्यादा ठहरा। ⁶ तब दाऊद ने अबीशै से कहा कि “सबा' बिन बिक्री तो हमको अबीसलोम से ज्यादा नुक़सान पहुँचायेगा फिर तू अपने मालिक के खादिमों

को लेकर उसका पीछा कर ऐसा न हो कि वह दीवारदार शहरों को लेकर हमारी नज़र से बच निकले।” 7 तब योआब के आदमी और करैती और फ़लेती और सब बहादुर उसके पीछे हो लिए और येरूशलेम से निकले ताकि सबा' बिन बिक्री का पीछा करें। 8 और जब वह उस बड़े पत्थर के नज़दीक पहुँचे जो ज़िब'ऊन में है तो 'अमासा उनसे मिलने को आया और योआब अपना जंगी लिबास पहने था और उसके ऊपर एक पटका था जिस से एक तलवार मियान में पड़ी हुई उसके कमर में बंधी थी और उसके चलते चलते वह निकल पड़ी। 9 तब योआब ने 'अमासा से कहा, “ऐ मेरे भाई तू खैरियत से है?” और योआब ने 'अमासा की दाढ़ी अपने दहने हाथ से पकड़ी कि उसको बोसा दे। 10 और 'अमासा ने उस तलवार का जो योआब के हाथ में थी ख्याल न किया, इसलिए उसने उससे उसके पेट में ऐसा मारा कि उसकी अंतड़ियाँ ज़मीन पर निकल पड़ीं और उसने दूसरा वार न किया, इसलिए वह मर गया, फिर योआब और उसका भाई अबीशै सबा' बिन बिक्री का पीछा करने चले। 11 और योआब के जवानों में से एक शख्स उसके पास खड़ा हो गया और कहने लगा कि “जो कोई योआब से राज़ी है और जो कोई दाऊद की तरफ़ है वह योआब के पीछे होले।” 12 और 'अमासा सड़क के बीच अपने खून में लोट रहा था और उस शख्स ने देखा कि सब लोग खड़े हो गये हैं, तो वह 'अमासा को सड़क पर से मैदान को उठा ले गया और जब यह देखा कि जो कोई उसके पास आता है खड़ा हो जाता है, तो उस पर एक कपड़ा डाल दिया। 13 और जब वह सड़क पर से हटा लिया गया, तो सब लोग योआब के पीछे सबा' बिन बिक्री का पीछा करने चले। 14 और वह इस्राईल के सब कबीलों में से होता हुआ अबील और बैत मा'का और सब बेरियों तक पहुँचा और वह भी जमा' होकर उसके पीछे चले। 15 और उन्होंने आकर उसे अबील बैत मा'का में घेर लिया शहर के सामने ऐसा दमदमा बाँधा कि वह दीवार के बराबर रहा और सब लोगों ने जो योआब के साथ थे दीवार को तोड़ना शुरू किया ताकि उसे गिरा दें। 16 तब एक 'अक्लमन्द 'औरत शहर में से पुकार कर कहने लगी कि “ज़रा योआब से कह दो कि यहाँ आए ताकि मैं उससे कुछ कहूँ।” 17 तब वह उसके नज़दीक आया, उस 'औरत ने उससे कहा, “क्या तू योआब है?” उसने कहा, “हाँ” तब वह उससे कहने लगी, “अपनी लौंडी की बातें सुन।” उसने कहा, “मैं सुनता हूँ।” 18 तब वह कहने लगी कि “पुराने ज़माना में यूँ कहा करते थे कि वह ज़रूर अबील में सलाह पूछेंगे और इस तरह वह बात को खत्म करते थे। 19 और मैं इस्राईल में उन लोगों में से हूँ जो सुलह पसंद

और दयानतदार हैं, तू चाहता है कि एक शहर और माँ को इस्राईलियों के बीच हलाक करे, फिर तू क्यूँ खुदावन्द की मीरास को निगलना चाहता है?” 20 योआब ने जवाब दिया, “मुझसे हरगिज़ ऐसा न हो कि मैं निगल जाऊँ या हलाक करूँ। 21 बात यह नहीं है बल्कि इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क के एक शख्स ने जिसका नाम सबा' बिन बिक्री है बादशाह या'नी दाऊद के खिलाफ़ हाथ उठाया है इसलिए सिर्फ़ उसी को मेरे हवाले कर देते तो मैं शहर से चला जाऊँगा।” उस 'औरत ने योआब से कहा, “देख उसका सिर दीवार पर से तेरे पास फेंक दिया जाएगा।” 22 तब वह 'औरत अपनी दानाई से सब लोगों के पास गई, फिर उसने सबा'बिन बिक्री का सिर काट कर उसे बाहर योआब की तरफ़ फेंक दिया, तब उसने नरसिंगा फूँका और लोग शहर से अलग होकर अपने अपने डेरे को चले गये और योआब येरूशलेम को बादशाह के पास लौट आया। 23 और योआब इस्राईल के सारे लश्कर का सरदार था, और बिनायाह बिन यहूयदा' करेतियों और फलेतियों का सरदार था। 24 और अद्राम खिराज का दरोगा था और अखीलूद का बेटा यहूसफ़त मुवरिख था। 25 और सिवा मुन्शी था और सदूक और अबीयातर काहिन थे। 26 और ईरा याइरी भी दाऊद का एक काहिन था।

21

21:1-26

1 और दाऊद के दिनों में लगातार तीन साल काल पड़ा, और दाऊद ने खुदावन्द से दरियाफ़्त किया, खुदावन्द ने फ़रमाया, “यह साऊल और उसके खूँरज़ घराने की वजह से है, क्यूँकि उसने ज़िब'ऊनियों को क़त्ल किया।” 2 तब बादशाह ने ज़िब'ऊनियों को बुलाकर उनसे बात की, यह ज़िब'ऊनी बनी इस्राईल में से नहीं बल्कि बचे हुए अमूरियों में से थे और बनी इस्राईल ने उनसे क़सम खाई थी और साऊल ने बनी इस्राईल और बनी यहूदाह की खातिर अपनी गरम जोशी में उनको क़त्ल कर डालना चाहा था। 3 इसलिए दाऊद ने ज़िब'ऊनियों से कहा, “मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ और मैं किस चीज़ से कफ़ारा दूँ, ताकि तुम खुदावन्द की मीरास को दुआ दो?” 4 ज़िब'ऊनियों ने उससे कहा कि “हमारे और साऊल या उसके घराने के दरमियान चाँदी या सोने का कोई मु'आमला नहीं और न हमको यह इस्तियार है कि हम इस्राईल के किसी आदमी को जान से मारें।” उसने कहा, “जो कुछ तुम कहो मैं वही तुम्हारे लिए करूँगा।” 5 उन्होंने बादशाह को जवाब दिया कि “जिस शख्स ने हमारा नास किया और हमारे खिलाफ़ ऐसी

तदबीर निकाली कि हम मिटा दिए जायें, और इस्राईल की किसी बादशाहत में बाक़ी न रहें।⁶ उसी के बेटों में से सात आदमी हमारे हवाले कर दिए जायें, और हम उनको खुदावन्द के लिए चुने हुए साऊल के जिबा' में लटका देंगे।" बादशाह ने कहा, "मैं दे दूंगा।"⁷ लेकिन बादशाह ने मिफ़ीबोसत बिन यूनतन बिन साऊल को खुदावन्द की क़सम की वजह से जो उनके दाऊद और साऊल के बेटे यूनतन के दरमियान हुई थी बचा रखवा।⁸ लेकिन बादशाह ने अय्याह की बेटी रिस्फ़ह के दोनों बेटों अरमोनी और मिफ़ीबोसत को जो साऊल से हुए थे और साऊल की बेटी मीकल के पाँचों बेटों को जो बरज़िली महलाती के बेटे 'अदरीएल से हुए थे लेकर।⁹ उनको जिब'ऊनियों के हवाले किया और उन्होंने उनको पहाड़ पर खुदावन्द के सामने लटका दिया, इसलिए वह सातों एक साथ मारे, यह सब फ़सल काटने के दिनों में या'नी जौ की फ़सल के शुरू' में मारे गये।¹⁰ तब अय्याह की बेटी रिस्फ़ह ने टाट लिया और फ़सल के शुरू' से उसको अपने लिए चट्टान पर बिछाए रही जब तक आसमान से उन पर बारिश न हुई और उसने न तो दिन के वक़्त हवा के परिन्दों को और न रात के वक़्त जंगली दरिन्दों को उन पर आने दिया।¹¹ और दाऊद को बताया गया कि साऊल की बांदी अय्याह की बेटी रिस्फ़ह ने ऐसा ऐसा किया।¹² तब दाऊद ने जाकर साऊल की हड्डियों और उसके बेटे यूनतन की हड्डियों को यबीस जिल'आद के लोगों से लिया जो उनको बैत शान के चौक में से चुरा लाये थे, जहाँ फ़िलिस्तिनों ने उनको जिस दिन कि उन्होंने साऊल को जिलबू'आ में क़त्ल किया टाँग दिया था।¹³ इसलिए वह साऊल की हड्डियों और उसके बेटे यूनतन की हड्डियों को वहाँ से ले आया, और उन्होंने उनकी भी हड्डियाँ जमा' कीं जो लटकाए गये थे।¹⁴ और उन्होंने साऊल और उसके बेटे यूनतन की हड्डियों को जिला' में जो बिनयमीन की सर ज़मीन में है उसी के बाप क़ैस की क़बर में दफ़न किया और उन्होंने जो कुछ बादशाह ने फ़रमाया था सब पूरा किया, इसके बाद खुदा ने उस मुल्क के बारे में दुआ सुनी।¹⁵ और फ़िलिस्ती फिर इस्राईलियों से लड़े और दाऊद अपने खादिमों के साथ निकला और फ़िलिस्तिनों से लड़ा और दाऊद बहुत थक गया।¹⁶ और इश्बी बनोब ने जो देवज़ादों में से था और जिसका नेज़ह वज़न में पीतल की तीन सौ मिस्काल था और वह एक नई तलवार बाँधे था चाहा कि दाऊद को क़त्ल करे।¹⁷ लेकिन ज़रोयाह के बेटे अबीशै ने उसकी मदद की और उस फ़िलिस्ती को ऐसी मार लगाई कि उसे मार दिया, तब दाऊद के लोगों ने क़सम खाकर उससे कहा कि "तू फिर कभी हमारे

साथ जंग पर नहीं जाएगा ऐसा न हो कि तू इस्राईल का चराग़ बुझादे।"¹⁸ इसके बाद फ़िलिस्तिनों के साथ जूब में लड़ाई हुई, तब हूसाती सिब्वकी ने सफ़ को जो देवज़ादों में से था क़त्ल किया।¹⁹ और फिर फ़िलिस्तिनों से जूब में एक और लड़ाई हुई, तब इल्हनान बिन या'अरी अरजीम ने जो बैतुल-हम का था जाती जोलियत को क़त्ल किया जिसके नेज़ह की छड़ जुलाहे के शहतीर की तरह थी।²⁰ फिर जात में लड़ाई हुई और वहाँ एक बड़ा लम्बा शस्त्र था, उसके दोनों हाथों और दोनों पावों में छः छः उंगलियाँ थीं जो सब की सब गिनती में चौबीस थीं और यह भी उस देव से पैदा हुआ था।²¹ जब इसने इस्राईलियों की फ़ज़ीहत की तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे यूनतन ने उसे क़त्ल किया।²² यह चारों उस देव से जात में पैदा हुए थे, और वह दाऊद के हाथ से और उसके खादिमों के हाथ से मारे गये।

22

???? ?

¹ जब खुदावन्द ने दाऊद को उसके सब दुश्मनों और साऊल के हाथ से रिहाई दी तो उसने खुदावन्द के सामने इस मज़मून का हम्द सुनाया।² वह कहने लगा, खुदावन्द मेरी चट्टान और मेरा किला' और मेरा छुड़ाने वाला है।³ खुदा मेरी चट्टान है, मैं उसी पर भरोसा रखूँगा, वही मेरी ढाल और मेरी नज़ात का सींग है, मेरा ऊँचा बुर्ज और मेरी पनाह है, मेरे नज़ात देने वाले! तूही मुझे जुल्म से बचाता है।⁴ मैं खुदावन्द को जो ता'रीफ़ के लायक़ है पुकारूँगा, यूँ मैं अपने दुश्मनों से बचाया जाऊँगा।⁵ क्योंकि मौत की मौजों ने मुझे घेरा, बेदीनी के सैलाबों ने मुझे डराया।⁶ पाताल की रस्सियाँ मेरे चारों तरफ़ थीं मौत के फंदे मुझ पर आते थे।⁷ अपनी मुसीबत में मैंने खुदावन्द को पुकारा, मैं अपने खुदा के सामने चिल्लाया। उसने अपनी हैकल में से मेरी आवाज़ सुनी और मेरी फ़रयाद उसके कान में पहुँची।⁸ तब ज़मीन हिल गई और काँप उठी और आसमान की बुनियादों ने जुम्बिश खाई और हिल गयीं, इसलिए कि वह गुस्सा हुआ।⁹ उसके नथुनों से धुवाँ उठा और उसके मुँह से आग निकल कर भस्म करने लगी, कोयले उससे दहक उठे।¹⁰ उसने आसमानों को भी झुका दिया और नीचे उतर आया और उसके पाँव तले गहरा अँधेरा था।¹¹ वह करूबी पर सवार होकर उदा और हवा के बाज़ुओं पर दिखाई दिया।¹² और उसने अपने चारों तरफ़ अँधेरे को और पानी के इज्तिमा' और आसमान के दलदार बादलों को शामियाने बनाया।¹³ उस झलक से जो उसके आगे आगे थी आग के कोयले सुलग गये।

14 खुदावन्द आसमान से गरजा और हक़ त'आला ने अपनी आवाज़ सुनाई। 15 उसने तीर चला कर उनको तितर बितर किया, और बिजली से उनको शिकस्त दी। 16 तब खुदावन्द की डाँट से; उसके नथुनों के दम के झोंके से, समुन्दर की गहराई दिखाई देने लगी, और जहान की बुनियादें नमूदार हुईं। 17 उसने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया, और मुझे बहुत पानी में से खींच कर बाहर निकाला। 18 उसने मेरे ताक़तवर दुश्मन और मेरे 'अदावत रखने वालों से, मुझे छुड़ा लिया क्योंकि वह मेरे लिए निहायत बहादुर थे। 19 वह मेरी मुसीबत के दिन मुझ पर आ पड़े, पर खुदावन्द मेरा सहारा था। 20 वह मुझे चौड़ी जगह में निकाल भी लाया, उसने मुझे छुड़ाया, इसलिए कि वह मुझसे खुश था। 21 खुदावन्द ने मेरी रास्तबाज़ी के मुवाफ़िक़ मुझे बदला दिया, और मेरे हाथों की पाकीज़गी के मुताबिक़ मुझे बदला दिया। 22 क्योंकि मैं खुदावन्द की राहों पर चलता रहा, और ग़लती से अपने खुदा से अलग न हुआ। 23 क्योंकि उसके सारे फ़ैसले मेरे सामने थे, और मैं उसके क़ानून से अलग न हुआ। 24 मैं उसके सामने कामिल भी रहा, और अपनी बदकारी से बा'ज़ रहा। 25 इसीलिए खुदावन्द ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी के मुवाफ़िक़ बल्कि मेरी उस पाकीज़गी के मुताबिक़ जो उसकी नज़र के सामने थी बदला दिया। 26 रहम दिल के साथ तू रहीम होगा, और कामिल आदमी के साथ कामिल। 27 नेकों के साथ नेक होगा, और टेढ़ों के साथ टेढ़ा। 28 मुसीबत ज़दा लोगों को तू बचाएगा, लेकिन तेरी आँखें मगरूरों पर लगी हैं ताकि तू उन्हें नीचा करे। 29 क्योंकि ऐ खुदावन्द! तू मेरा चरागा है, और खुदावन्द मेरे अँधेरे को उजाला कर देगा। 30 क्योंकि तेरी बदौलत मैं फ़ौज पर जंग करता हूँ, और अपने खुदा की बदौलत दीवार फाँद जाता हूँ। 31 लेकिन खुदा की राह कामिल है, खुदावन्द का कलाम ताया हुआ है, वह उन सबकी ढाल है जो उसपर भरोसा रखते हैं। 32 क्योंकि खुदावन्द के 'अलावा और कौन खुदा है? और हमारे खुदा को छोड़ कर और कौन चटटान है? 33 खुदा मेरा मज़बूत किला' है, वह अपनी राह में कामिल शख्स की रहनुमाई करता है। 34 वह उसके पाँव हिरनी के से बना देता है, और मुझे मेरी ऊँची जगहों में काईम करता है। 35 वह मेरे हाथों को जंग करना सिखाता है, यहाँ तक कि मेरे बाज़ू पीतल की कमान को झुका देते हैं। 36 तूने मुझको अपनी नजात की ढाल भी बख़्शी, और तेरी नरमी ने मुझे बुज़ुर्ग बना दिया। 37 तूने मेरे नीचे मेरे क़दम चौड़े कर दिए, और मेरे पाँव नहीं फिसले। 38 मैंने

अपने दुश्मनों का पीछा करके उनको हलाक किया, और जब तक वह फ़ना न हो गये मैं वापस नहीं आया। 39 मैंने उनको फ़ना कर दिया और ऐसा छेद डाला है कि वह उठ नहीं सकते, बल्कि वह तो मेरे पाँव के नीचे गिरे पड़े हैं। 40 क्योंकि तूने लड़ाई के लिए मुझे ताक़त से तैयार किया, और मेरे मुख़ालिफ़ों को मेरे सामने नीचा किया। 41 तूने मेरे दुश्मनों की पीठ मेरी तरफ़ फेरदी, ताकि मैं अपने 'अदावत रखने वालों को काट डालूँ। 42 उन्होंने इन्तिज़ार किया लेकिन कोई न था जो बचाए, बल्कि खुदावन्द का भी इन्तिज़ार किया, लेकिन उसने उनको जवाब न दिया। 43 तब मैंने उनको कूट कूट कर ज़मीन की गर्द की तरह कर दिया, मैंने उनको गली कूचों के कीचड़ की तरह रौंद कर चारो तरफ़ फैला दिया। 44 तूने मुझे मेरी क्रौम के झगड़ों से भी छुड़ाया, तूने मुझे क्रौमों का सरदार होने के लिए रख छोड़ा है, जिस क्रौम से मैं वाकिफ़ भी नहीं वह मेरी फ़रमा बरदार होगी। 45 परदेसी मेरे ताबे' हो जायेंगे, वह मेरा नाम सुनते ही मेरी फ़रमाबदारी करेंगे। 46 परदेसी मुरझा जायेंगे और अपने किलों'से थरथराते हुए निकलेंगे। 47 खुदावन्द ज़िन्दा है, मेरी चटटान मुबारक हो! और खुदा मेरे नजात की चटटान मुम्ताज़ हो! 48 वही खुदा जो मेरा बदला लेता है, और उम्मतों को मेरे ताबे' कर देता है। 49 और मुझे मेरे दुश्मनों के बीच से निकालता है, हाँ तू मुझे मेरे मुख़ालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता है, तू मुझे टेढ़े आदमियों से रिहाई देता है। 50 इसलिए ऐ खुदावन्द! मैं क्रौमों के बीच तेरी शुक्रगुज़ारी और तेरे नाम की मदह सराई करूँगा। 51 वह अपने बादशाह को बड़ी नजात 'इनायत करता है, और अपने ममसूह दाऊद और उसकी नसल पर हमेशा शफ़क़त करता है।

23

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 दाऊद की आख़री बातें यह हैं: दाऊद बिन यस्सी कहता है, या'नी यह उस शख्स का कलाम है जो सरफ़राज़ किया गया, और या'कूब के खुदा का ममसूह और इस्राईल का शीरीं नग़मा साज़ है। 2 "खुदावन्द की रूह ने मेरी ज़रिए' कलाम किया, और उसका सुखन मेरी ज़बान पर था। 3 इस्राईल के खुदा ने फ़रमाया। इस्राईल की चटटान ने मुझसे कहा। एक है जो सच्चाई से लोगों पर हुकूमत करता है। जो खुदा के खौफ़ के साथ हुकूमत करता है। 4 वह सुबह की रोशनी की तरह होगा जब सूरज निकलता है, ऐसी सुबह जिसमें बादल न हो, जब नरम नरम घास ज़मीन में से, बारिश के बाद की साफ़ चमक के ज़रिए' निकलती है। 5 मेरा घर तो सच

मुच खुदा के सामने ऐसा है भी नहीं, तो भी उसने मेरे साथ एक हमेशा का 'अहद, जिसकी सब बातें मु'अय्यन और पाएदार हैं बाँधा है, क्योंकि यही मेरी सारी नजात और सारी मुराद है, अगरचे वह उसको बढ़ाता नहीं। 6 लेकिन झूठे लोग सब के सब काँटों की तरह ठहरेंगे जो हटा दिए जाते हैं, क्योंकि वह हाथ से पकड़े नहीं जा सकते। 7 बल्कि जो आदमी उनको छुए, जरूर है कि वह लोहे और नेज़ह की छड़ से मुसल्लह हो, इसलिए वह अपनी ही जगह में आग से बिल्कुल भस्म कर दिए जायेंगे। 8 और दाऊद के बहादुरों के नाम यह हैं: या'नी तहकमोनी योशेब बशेबत जो सिपह सालार का सरदार था, वही ऐज़नी अदीनो था जिससे आठ सौ एक ही वक्रत में मक़तूल हुए। 9 उसके बाद एक अखूही के बेटे दोदे का बेटा एलियाज़र था, यह उन तीनों सूरमाओं में से एक था जो दाऊद के साथ उस वक्रत थे, जब उन्होंने उन फ़िलिस्तियों को जो लड़ाई के लिए जमा' हुए थे लल्कारा हालाँकि सब बनी इस्राईल चले गये थे। 10 और उसने उठकर फ़िलिस्तियों को इतना मारा कि उसका हाथ थक कर तलवार से चिपक गया और खुदावन्द ने उस दिन बड़ी फ़तह कराई और लोग फिर कर सिर्फ़ लूटने के लिए उसके पीछे हो लिए। 11 बाद उसके हरारी अजी का बेटा सम्मा था और फ़िलिस्तियों ने उस क़त — ए — ज़मीन के पास जो मसूर के पेड़ों से भरा था जमा' होकर दिल बाँध लिया था और लोग फ़िलिस्तियों के आगे से भाग गये थे। 12 लेकिन उसने उस क़ता' के बीच में खड़े होकर उसको बचाया और फ़िलिस्तियों को क़त्ल किया और खुदावन्द ने बड़ी फ़तह कराई। 13 और उन तीस सरदारों में से तीन सरदार निकले और फ़सल काटने के मौसम में दाऊद के पास 'अदूल्लाम के मग़ारा में आए और फ़िलिस्तियों की फ़ौज रिफ़ाईम की वादी में खेमा ज़न थी। 14 और दाऊद उस वक्रत गद्दी में था और फ़िलिस्तियों के पहरों की चौकी बैतल हम में थी। 15 और दाऊद ने तरसते हुए कहा, ऐ काश कोई मुझे बैतल हम के उस कुँवें का पानी पीने को देता जो फाटक के पास है। 16 और उन तीनों बहादुरों ने फ़िलिस्तियों के लश्कर में से जाकर बैतल हम के कुँवें से जो फाटक के बराबर है पानी भर लिया और उसे दाऊद के पास लाये लेकिन उसने न चाहा कि पिए बल्कि उसे खुदावन्द के सामने उंडेल दिया। 17 और कहने लगा, ऐ खुदावन्द मुझसे यह बात हरगिज़ न हो कि मैं ऐसा करूँ, क्या मैं उन लोगों का खून पियूँ जिन्होंने अपनी जान जोखों में डाली?" इसी लिए उसने न चाहा कि उसे पिए, उन तीनों बहादुरों ने ऐसे ऐसे काम किए। 18 और ज़रोयाह के बेटे योआब का भाई अबीशै उन तीनों में अफ़ज़ल था,

उसने तीन सौ पर अपना भाला चला कर उनको क़त्ल किया और तीनों में नामी था। 19 क्या वह उन तीनों में खास न था? इसीलिए वह उनका सरदार हुआ तो भी वह उन पहले तीनों के बराबर नहीं होने पाया। 20 और यहूयदा' का बेटा बिनायाह क़बज़ील के एक सूरमा का बेटा था, जिसने बड़े बड़े काम किए थे, इसने मोआब के अरीएल के दोनों बेटों को क़त्ल किया और जाकर बर्फ़ के मौसम में एक ग़ार के बीच एक शेर बबर को मारा। 21 और उसने एक जसीम मिस्री को क़त्ल किया, उस मिस्री के हाथ में भला था लेकिन यह लाठी ही लिए हुए उस पर लपका और मिस्री के हाथ से भला छीन लिया और उसी के भाले से उसे मारा। 22 तब यहूयदा' के बेटे बिनायाह ने ऐसे ऐसे काम किए और तीनों बहादुरों में नामी था। 23 वह उन तीनों से ज्यादा खास था लेकिन वह उन पहले तीनों के बराबर नहीं होने पाया और दाऊद ने उसे अपने मुहाफ़िज़ सिपाहियों पर मुक़र्रर किया। 24 और तीनों में योआब का भाई 'असाहील और इल्हनान बैतल हम के दोदो का बेटा। 25 हरोदी सम्मा, हरोदी इलिका। 26 फ़लती खलिस, ईरा बिन 'अक्रीस तकू'अ। 27 अन्तोती अबी'अज़र, हूसाती मबूनी। 28 अखूही ज़ल्मोन, नतोफ़ाती महरी। 29 नतोफ़ाती बा'ना के बेटा हलिब, इती बिन रीबी बनी बिनयमीन के जिब्बा'का। 30 फिर'आतोनी, बिनायाह, और जा'स के नालों कब हिदी। 31 'अरबाती अबी 'अल्बून, बहूमी 'अज़मावत। 32 सा'लाबूनी इलीयाब, बनी यासीन यूनतन। 33 हरारी सम्मा, अख़ीआम बिन सरार हरारी। 34 इलिफ़ालत बिन अहसबी मा'काती का बेटा, इलीआम बिन अख़ीतुफ़ल जिलोनी। 35 कर्मिली हसरो, अरबी फ़ा'री। 36 ज़ोबाह के नातन का बेटा इज़ाल, जद्दी बानी। 37 'अम्मोनी सिलक़, बैरोती नहरी, ज़रोयाह के बेटे योआब के सिलहबरदार। 38 इतरी 'ईरा, इतरी जरीब। 39 और हिक्ती ऊरिय्याह: यह सब सैंतीस थे।

24

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 इसके बाद खुदावन्द का गुस्सा इस्राईल पर फिर भड़का और उसने दाऊद के दिल को उनके खिलाफ़ यह कहकर उभारा कि "जाकर इस्राईल और यहूदाह को गिन।" 2 और बादशाह ने लश्कर के सरदार योआब को जो उसके साथ था हुक्म किया कि "इस्राईल के सब क़बीलों में दान से बेर सबा' तक गश्त करो और लोगों को गिनो ताकि लोगों की ता'दाद मुझे मा'लूम हो।" 3 तब योआब ने बादशाह से कहा कि "खुदावन्द तेरा खुदा उन लोगों को चाहे वह कितने ही हों सौ गुना

बढ़ाए और मेरे मालिक बादशाह की आँखें इसे देखें, लेकिन मेरे मालिक बादशाह को यह बात क्यों भाती है?” 4 तो भी बादशाह की बात योआब और लश्कर के सरदारों पर गालिब ही रही, और योआब और लश्कर के सरदार बादशाह के सामने से इस्राईल के लोगों का शुमार करने निकले। 5 और वह यरदन पार उतरे और उस शहर की दहनी तरफ़ 'अरो'ईर में खेमाज़न हुए जो जद की वादी में या'ज़ेर की जानिब है। 6 फिर जिल'आद और तहतीम हदसी के 'इलाक़े में गए, और दान या'न को गए, और घूम कर सैदा तक पहुँचे। 7 और वहाँ से सूर के क़िला' को और हव्वियों और कन'आनियों के सब शहरों को गए और यहूदाह के जुनूब में बेरसबा' तक निकल गए। 8 चुनाँचे सारी हुकूमत में ग़श्त करके नौ महीने बीस दिन के बाद वह येरूशलेम को लौटे। 9 और योआब ने मर्दुम शुमारी की ता'दाद बादशाह को दी वह इस्राईल में आठ लाख बहादुर मर्द निकले जो शमशीर जन थे और यहूदाह में आदमी पाँच लाख निकले। 10 और लोगों का शुमार करने के बाद दाऊद का दिल बेचैन हुआ और दाऊद ने खुदावन्द से कहा, “यह जो मैंने किया वह बड़ा गुनाह किया, अब ऐ खुदावन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू अपने बन्दा का गुनाह दूर कर दे क्योंकि मुझसे बड़ी बेवकूफी हुई।” 11 इसलिए जब दाऊद सुबह को उठा तो खुदावन्द का कलाम जाद पर जो दाऊद का ग़ैब बीन था नाज़िल हुआ और उसने कहा कि। 12 “जा और दाऊद से कह खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मैं तेरे सामने तीन बलाएँ पेश करता हूँ, तू उनमें से एक को चुन ले ताकि मैं उसे तुझ पर नाज़िल करूँ।” 13 तब जाद ने दाऊद के पास जाकर उसको यह बताया और उस से पुछा, “क्या तेरे मुल्क में सात बरस क्रहत रहे या तू तीन महीने तक अपने दुश्मनों से भागता फिरे और वह तेरा पीछा करें या तेरी हुकूमत में तीन दिन तक मौतें हों? इसलिए तू सोच ले और ग़ौर कर ले कि मैं उसे जिसने मुझे भेजा ने क्या जवाब दूँ।” 14 दाऊद ने जाद से कहा, “मैं बड़े शिकंजे में हूँ, हम खुदावन्द के हाथ में पड़े क्योंकि उसकी रहमतें 'अज़ीम हैं लेकिन मैं इंसान के हाथ में न पड़ूँ।” 15 तब खुदावन्द ने इस्राईल पर वबा भेजी जो उस सुबह से लेकर वक़्त मु'अय्यना तक रही और दान से बेर सबा' तक लोगों मेंसे सत्तर हज़ार आदमी मर गए। 16 और जब फ़रिश्ते ने अपना हाथ बढ़ाया कि येरूशलेम को हलाक करे तो खुदावन्द उस वबा से मलूल हुआ और उस फ़रिश्ते से जो लोगों को हलाक कर रहा था कहा, “यह बस है, अब अपना हाथ रोक ले।” उस वक़्त

खुदावन्द का फ़रिश्ता यबूसी अरोनाह के खलिहान के पास खड़ा था। 17 और दाऊद ने जब उस फ़रिश्ता को जो लोगों को मार रहा था देखा तो खुदावन्द से कहने लगा, “देख गुनाह तो मैंने किया और ख़ता मुझसे हुई लेकिन इन भेड़ों ने क्या किया है? इसलिए तेरा हाथ मेरे और मेरे बाप के घराने के खिलाफ़ हो।” 18 उसी दिन जाद ने दाऊद के पास आकर उससे कहा, “जा और यबूसी अरोनाह के खलिहान में खुदावन्द के लिए एक मज़बह बना।” 19 इसलिए दाऊद जाद के कहने के मुताबिक़ जैसा खुदावन्द का हुक्म था गया। 20 और अरोनाह ने निगाह की और बादशाह और उसके खादिमों को अपनी तरफ़ आते देखा, तब अरोनाह निकला और ज़मीन पर सरनगूँ होकर बादशाह के आगे सज्दा किया। 21 और अरोनाह कहने लगा, “मेरा मालिक बादशाह अपने बन्दा के पास क्यों आया?” दाऊद ने कहा, “यह खलिहान तुझसे ख़रीदने और खुदावन्द के लिए एक मज़बह बनाने आया हूँ ताकि लोगों में से वबा जाती रहे।” 22 अरोनाह ने दाऊद से कहा, मेरा मालिक बादशाह जो कुछ उसे अच्छा मा'लूम हो लेकर पेश करे, देख सोख़्तनी कुर्बानी के लिए बैल हैं और दायें चलाने के औज़ार और बैलों का सामान ईधन के लिए हैं। 23 यह सब कुछ ऐ बादशाह अरोनाह बादशाह की नज़र करता है। और अरोनाह ने बादशाह से कहा कि “खुदावन्द तेरा खुदा तुझको कुबूल फ़रमाए।” 24 तब बादशाह ने अरोनाह से कहा, “नहीं बल्कि मैं ज़रूर क़ीमत देकर उसको तुझसे ख़रीदूँगा और मैं खुदावन्द अपने खुदा के सामने ऐसी सोख़्तनी कुर्बानियाँ अदा करूँगा जिन पर मेरा कुछ खर्च न हुआ हो” फिर दाऊद ने वह खलिहान और वह बैल चाँदी के पचास मिस्कालें देकर ख़रीदे। 25 और दाऊद ने वहाँ खुदावन्द के लिए मज़बह बनाया और सोख़्तनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ पेश कीं और खुदावन्द ने उस मुल्क के बारे में दुआ सुनी और वबा इस्राईल में से जाती रही।

1 सलातीन

?????????? ?? ???????

1 सलातीन की किताब के मुसन्निफ़ की बाबत कोई नहीं जानता — हालांकि कुछ मुफस्सिरों ने राये पेश है कि एज़रा, हिज़िकिएल और यर्मयाह इन तीनों में से कोई इसका मुसन्निफ़ होगा — क्योंकि इस में बयानशुदः सारे काम का बयोर 400 साल से ज्यादा अर्से को घेर लेता है — कलम्बंदो की तालीफ़ व तरतीब के लिए कई एक मा' नवी अश्या का इस्तेमाल किया गया था — तस्नीफ़ व तालीफ़ के तरीके जैसे कुछ एक सुराग मौजूआत पूरी किताब में बुने गए हैं मा'नवी अश्या की फ़ितरी ज़रूरियात का इस्तेमाल किया गया है जो इशारा करता है एक मुअल्लिफ़ या मुसन्निफ़ की तरफ़ न कि एक से ज्यादा मुअल्लिफ़ों या मुसन्निफ़ों की तरफ़।

????? ?????? ?? ?????????? ?? ?????

किताब की तसनीफ़ की तारीख़ तक्ररीबन 590 - 538 क़बल मसीह है।

इसे तब लिखा गया था जब सुलेमान का पहला हैकल पहले से मौजूद था (1 सलातीन 8:8)।

?????? ?????????????? ?????? ??????

बनी इस्राईल और तमाम कलाम के क़रिईन।

????? ??????????

2 सलातीन की किताब 1 सलातीन का खात्मा है जो दाउद की मौत के बाद सुलेमान की बादशाही के उरूज की चर्चा करते हुए शुरू होता है — कहानी एक मुत्तहिद बादशाही से शुरू होती है मगर एक तक्सीम शुदःकौम जो दो हिस्सों में बटकर ख़त्म हो जाती है यानी यहूदा और इस्राईल — 1 और 2 सलातीन इब्रानी कलाम में अभी भी एक जुड़ी हुई किताब है।

???????

तफ़रीक

बैरूनी खाका

1. सुलेमान की हुकूमत — 1:1-11:43

2. सलतनत मुनतशर हो जाती है — 12:1-16:34

3. एलियाह और अखीअब — 17:1-22:53

????? ?? ???????????

1 और दाऊद बादशाह बुड़दा और उम्र दराज़ हुआ; और वह उसे कपड़े उढ़ाते, लेकिन वह गर्म न होता था।

2 तब उसके खादिमों ने उससे कहा, कि हमारे मालिक बादशाह के लिए एक जवान कुंवारी ढूँडी जाए, जो बादशाह के सामने खड़ी रहे और उसकी देख भाल किया

करे, और तेरे पहलू में लेट रहा करे ताकि हमारे मालिक बादशाह को गर्मी पहुँचे। 3 चुनाँचे उन्होंने इस्राईल की सारी हुकूमत में एक खूबसूरत लड़की तलाश करते करते शून्मीत अबीशाग को पाया, और उसे बादशाह के पास लाए। 4 और वह लड़की बहुत हसीन थी, तब वह बादशाह की देख भाल और उसकी खिदमत करने लगी; लेकिन बादशाह उससे वाकिफ़ न हुआ।

????????????? ?? ??????? ?? ?????? ??????

5 तब हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने सर उठाया और कहने लगा, “मैं बादशाह हूँगा।” और अपने लिए रथ और सवार और पचास आदमी, जो उसके आगे — आगे दौड़ें, तैयार किए। 6 उसके बाप ने उसको कभी इतना भी कहकर गमगीन नहीं किया, कि तू ने यह क्यों किया है? और वह बहुत खूबसूरत भी था, और अबीसलोम के बाद पैदा हुआ था। 7 और उसने ज़रोयाह के बेटे योआब और अबीयातर काहिन से बात की; और यह दोनों अदूनियाह के पैरोकार होकर उसकी मदद करने लगे। 8 लेकिन सद्क़ काहिन, और यहूयदा के बेटे बिनायाह, और नातन नबी, और सिम'ई और रे'ई और दाऊद के बहादुर लोगों ने अदूनियाह का साथ न दिया। 9 और अदूनियाह ने भेड़ें और बैल और मोटे — मोटे जानवर जुहलत के पथर के पास, जो 'ऐन राजिल के बराबर है, ज़बह किए, और अपने सब भाइयों या'नी बादशाह के बेटों की, और सब यहूदाह के लोगों की, जो बादशाह के मुलाज़िम थे, दा'वत की; 10 लेकिन नातन नबी और बिनायाह और बहादुर लोगों और अपने भाई सुलेमान को न बुलाया। 11 तब नातन ने सुलेमान की माँ बतसबा' से कहा, क्या तू ने नहीं सुना कि हज्जीत का बेटा अदूनियाह बादशाह बन बैठा है, और हमारे मालिक दाऊद को यह मालूम नहीं? 12 अब तू आ कि मैं तुझे सलाह दूँ, ताकि तू अपनी और अपने बेटे सुलेमान की जान बचा सके। 13 तू दाऊद बादशाह के सामने जाकर उससे कह, “ऐ मेरे मालिक, ऐ बादशाह, क्या तू ने अपनी लौंडी से कसम खाकर नहीं कहा कि यक्रीनन तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद हुकूमत करेगा, और वही मेरे तख्त पर बैठेगा? पस अदूनियाह क्यों बादशाही करता है? 14 और देख, तू बादशाह से बात करती ही होगी कि मैं भी तेरे बाद आ पहुँचूँगा, और तेरी बातों की तस्दीक़ करूँगा।” 15 तब बतसबा' अन्दर कोठरी में बादशाह के पास गई; और बादशाह बहुत बुड़दा था, और शून्मीत अबीशाग बादशाह की खिदमत करती थी। 16 और बतसबा' ने झुककर बादशाह को सिज्दा किया। बादशाह ने कहा, “तू क्या चाहती है?” 17 उसने उससे कहा, “ऐ मेरे मालिक, तू ने खुदावन्द

अपने खुदा की कसम खाकर अपनी लौंडी से कहा था, यकीनन तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद हुकूमत करेगा, और वही मेरे तख्त पर बैठेगा। 18 पर देख, अब तो अदूनियाह बादशाह बन बैठा है, और ऐ मेरे मालिक बादशाह, तुझ को इसकी खबर नहीं। 19 और उसने बहुत से बैल और मोटे मोटे जानवर और भेड़ें ज़बह की हैं; और बादशाह के सब बेटों और अबीयातर काहिन, और लश्कर के सरदार योआब की दा'वत की है, लेकिन तेरे बन्दे सुलेमान को उसने नहीं बुलाया। 20 लेकिन ऐ मेरे मालिक, सारे इस्राईल की निगाह तुझ पर है, ताकि तू उनको बताए कि मेरे मालिक बादशाह के तख्त पर कौन उसके बाद बैठेगा। 21 वरना यह होगा कि जब मेरा मालिक बादशाह अपने बाप — दादा के साथ सो जाएगा, तो मैं और मेरा बेटा सुलेमान दोनों कुसूरवार ठहरेंगे। 22 वह अभी बादशाह से बात ही कर रही थी कि नातन नबी आ गया। 23 और उन्होंने बादशाह को खबर दी, “देख, नातन नबी हाज़िर है।” और जब वह बादशाह के सामने आया, तो उसने मुँह के बल गिर कर बादशाह को सिज्दा किया। 24 और नातन कहने लगा, ऐ मेरे मालिक बादशाह! क्या तू ने फ़रमाया है, कि मेरे बाद अदूनियाह बादशाह हो, और वही मेरे तख्त पर बैठे? 25 क्योंकि उसने आज जाकर बैल और मोटे — मोटे जानवर और भेड़ें कसरत से ज़बह की हैं, और बादशाह के सब बेटों और लश्कर के सरदारों और अबीयातर काहिन की दा'वत की है; और देख, वह उसके सामने खा पी रहे हैं और कहते हैं, 'अदूनियाह बादशाह ज़िन्दा रहे!' 26 लेकिन मुझ तेरे खादिम को, और सदूक काहिन और यहूयदा' के बेटे बिनायाह और तेरे खादिम सुलेमान को उसने नहीं बुलाया। 27 क्या यह बात मेरे मालिक बादशाह की तरफ़ से है? और तू ने अपने खादिमों को बताया भी नहीं कि मेरे मालिक बादशाह के बा'द, उसके तख्त पर कौन बैठेगा?”

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

28 तब दाऊद बादशाह ने जवाब दिया और फ़रमाया, “बतसबा' को मेरे पास बुलाओ।” तब वह बादशाह के सामने आई और बादशाह के सामने खड़ी हुई। 29 बादशाह ने कसम खाकर कहा कि, खुदावन्द की हयात की कसम जिसने मेरी जान को हर तरह की आफ़त से रिहाई दी, 30 कि सचमुच जैसी मैंने खुदावन्द इस्राईल के खुदा की कसम तुझ से खाई और कहा, कि यकीनन तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद बादशाह होगा, और वही मेरी जगह मेरे तख्त पर बैठेगा, तो सचमुच मैं आज के दिन वैसा ही करूँगा। 31 तब बतसबा' ज़मीन पर मुँह के बल गिरी और बादशाह को सिज्दा करके कहा

कि “मेरा मालिक दाऊद बादशाह, हमेशा ज़िन्दा रहे।” 32 और दाऊद बादशाह ने फ़रमाया, “कि सदूक काहिन आयर नातन नबी और यहूयदा' के बेटे बिनायाह को मेरे पास बुलाओ।” तब वह बादशाह के सामने आए। 33 बादशाह ने उनको फ़रमाया कि तुम अपने मालिक के मुलाज़िमों को अपने साथ लो, और मेरे बेटे सुलेमान को मेरे ही खच्चर पर सवार कराओ; और उसे जैहून को ले जाओ; 34 और वहाँ सदूक काहिन और नातन नबी उसे मसह करें, कि वह इस्राईल का बादशाह हो; और तुम नरसिंगा फूँकना और कहना कि सुलेमान बादशाह ज़िन्दा रहे!” 35 फिर तुम उसके पीछे — पीछे चले आना, और वह आकर मेरे तख्त पर बैठे; क्योंकि वही मेरी जगह बादशाह होगा, और मैंने उसे मुकर्रर किया है कि वह इस्राईल और यहूदाह का हाकिम हो।” 36 तब यहूयदा' के बेटे बिनायाह ने बादशाह के जवाब में कहा, “आमीन! खुदावन्द मेरे मालिक बादशाह का खुदा भी ऐसा ही कहे। 37 जैसे खुदावन्द मेरे मालिक बादशाह के साथ रहा, वैसे ही वह सुलेमान के साथ रहे; और उसके तख्त को मेरे मालिक दाऊद बादशाह के तख्त से बड़ा बनाए।” 38 इसलिए सदूक काहिन और नातन नबी और यहूयदा' का बेटा बिनायाह और करेती और फ़लेती गए, और सुलेमान को दाऊद बादशाह के खच्चर पर सवार कराया और उसे जैहून पर लाए। 39 और सदूक काहिन ने खेमे से तेल का सींग लिया और सुलेमान को मसह किया। और उन्होंने नरसिंगा फूँका और सब लोगों ने कहा, सुलेमान बादशाह ज़िन्दा रहे!” 40 और सब लोग उसके पीछे आए और उन्होंने बाँसुलियाँ बजाई और बड़ी खुशी मनाई, ऐसा कि ज़मीन उनके शोरओ — गुल से गूँज उठी। 41 और अदूनियाह और उसके सब मेहमान जो उसके साथ थे, खा ही चुके थे कि उन्होंने यह सुना। और जब योआब को नरसिंगे की आवाज़ सुनाई दी तो उसने कहा, शहर में यह हंगामा और शोर क्यों मच रहा है?” 42 वह यह कह ही रहा था कि देखो, अबीयातर काहिन का बेटा यूनतन आया; और अदूनियाह ने उससे कहा, “भीतर आ; क्योंकि तू लायक शख्स है, और अच्छी खबर लाया होगा।” 43 यूनतन ने अदूनियाह को जवाब दिया, वाक़ई हमारे मालिक दाऊद बादशाह ने सुलेमान को बादशाह बना दिया है। 44 और बादशाह ने सदूक काहिन और नातन नबी और यहूयदा' के बेटे बिनायाह और करेतियों और फ़लेतियों को उसके साथ भेजा। तब उन्होंने बादशाह के खच्चर पर उसे सवार कराया। 45 और सदूक काहिन और नातन नबी ने जैहून पर उसको मसह करके बादशाह बनाया

है; तब वह वहीं से खुशी करते आए हैं, ऐसा कि शहर गूँज गया। वह शोर जो तुम ने सुना यही है। ⁴⁶ और सुलेमान तख्त — ए — हुकूमत पर बैठ भी गया है। ⁴⁷ इसके 'अलावा बादशाह के मुलाजिम हमारे मालिक दाऊद बादशाह को मुबारकबाद देने आए और कहने लगे कि तेरा खुदा, सुलेमान के नाम को तेरे नाम से ज्यादा मुस्ताज करे, और उसके तख्त को तेरे तख्त से बड़ा बनाए; और बादशाह अपने बिस्तर पर सिजदे में हो गया। ⁴⁸ और बादशाह ने भी ऐसा फ़रमाया कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा मुबारक हो, जिसने एक वारिस बरखा कि वह मेरी ही आँखों के देखते हुए आज मेरे तख्त पर बैठे। ⁴⁹ फिर तो अदूनियाह के सब मेहमान डर गए, और उठ खड़े हुए और हर एक ने अपना रास्ता लिया। ⁵⁰ और अदूनियाह सुलेमान की वजह से डर के मारे उठा, और जाकर मज़बह के सींग पकड़ लिए। ⁵¹ और सुलेमान को यह बताया गया कि “देख, अदूनियाह सुलेमान बादशाह से डरता है, क्योंकि उसने मज़बह के सींग पकड़ रखे हैं; और कहता है कि सुलेमान बादशाह आज के दिन मुझ से क्रसम खाए, कि वह अपने खादिम को तलवार से क्रल्ल नहीं करेगा।” ⁵² सुलेमान ने कहा, “अगर वह अपने को लायक साबित करे, तो उसका एक बाल भी ज़मीन पर नहीं गिरेगा; लेकिन अगर उसमें शरारत पाई जाएगी तो वह मारा जाएगा।” ⁵³ तब सुलेमान बादशाह ने लोग भेजे, और वह उसे मज़बह पर से उतार लाए। उसने आकर सुलेमान बादशाह को सिज्दा किया; और सुलेमान ने उससे कहा, “अपने घर जा।”

2

॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥

¹ और दाऊद के मरने के दिन नज़दीक आए, तब उसने अपने बेटे सुलेमान को वसीयत की और कहा कि, ² “मैं उसी रास्ते जाने वाला हूँ जो सारे जहान का है; इसलिए तू मज़बूत हो और मर्दानगी दिखा। ³ और जो मूसा की शरी'अत में लिखा है, उसके मुताबिक़ खुदावन्द अपने खुदा की हिदायत को मानकर उसके रास्तों पर चल; और उसके क़ानून पर और उसके फ़रमानों और हुक्मों और शहादतों पर 'अमल कर, ताकि जो कुछ तू करे और जहाँ कहीं तू जाए, सब में तुझे कामयाबी हो, ⁴ और खुदावन्द अपनी उस बात को क़ाईम रखे, जो उसने मेरे हक़ में कही कि, 'अगर तेरी औलाद अपने रास्ते की हिफ़ाज़त करके अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से मेरे सामने सच्चाई से चले, तो इस्राईल के तख्त पर तेरे यहाँ आदमी की कमी न होगी। ⁵ “और तू खुद जानता है

कि ज़रोयाह के बेटे योआब ने मुझ से क्या — क्या किया, या'नी उसने इस्राईली लश्कर के दो सरदारों, नेर के बेटे अबनेर और यतर के बेटे 'अमासा से क्या किया, जिनको उसने क्रल्ल किया और सुलह के वक्रत खून — ए — जंग बहाया, और खून — ए — जंग को अपने पटके पर जो उसकी कमर में बंधा था और अपनी जूतियों पर जो उसके पाँवों में थी लगाया। ⁶ इसलिए तू अपनी हिकमत से काम लेना और उसके सफ़ेद सर को क़बर में सलामत उतरने न देना। ⁷ लेकिन बरज़िली ज़िल'आदी के बेटों पर महरबानी करना, और वह उनमें शामिल हों जो तेरे दस्तरख़्वान पर खाना खाया करेंगे, क्योंकि वह ऐसा ही करने को मेरे पास आए जब मैं तेरे भाई अबीसलोम की वजह से भागा था। ⁸ और देख, बिनयमीनी जीरा का बेटा बहूरीमी सिम'ई तेरे साथ है, जिसने उस दिन जब कि मैं महनायम को जाता था बहुत बुरी तरह मुझ पर ला'नत की, लेकिन वह यरदन पर मुझ से मिलने को आया, और मैंने खुदावन्द की क्रसम खाकर उससे कहा कि “मैं तुझे तलवार से क्रल्ल नहीं करूँगा। ⁹ तब तू उसको बेगुनाह न ठहराना, क्योंकि तू “अक़्लमन्द आदमी है और तू जानता है कि तुझे उसके साथ क्या करना चाहिए, इसलिए तू उसका सफ़ेद सर लहू लुहान करके क़बर में उतारना।” ¹⁰ और दाऊद अपने बाप — दादा के साथ सो गया और दाऊद के शहर में दफ़न हुआ। ¹¹ और कुल मुद्दत जिसमें दाऊद ने इस्राईल पर हुकूमत की चालीस साल की थी; सात साल तो उसने हबरून में हुकूमत की, और सैंतीस साल येरूशलेम में। ¹² और सुलेमान अपने बाप दाऊद के तख्त पर बैठा और उसकी हुकूमत बहुत ही मज़बूत हुई।

॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥

¹³ तब हज्जीत का बेटा अदूनियाह, सुलेमान की माँ बतसबा' के पास आया; उसने पूछा, “तू सुलह के ख़्याल से आया है?” उसने कहा, “सुलह के ख़्याल से।” ¹⁴ फिर उसने कहा, “मुझे तुझ से कुछ कहना है।” उसने कहा, “कह।” ¹⁵ उसने कहा, “तू जानती है कि हुकूमत मेरी थी, और सब इस्राईली मेरी तरफ़ मुतवज्जिह थे कि मैं हुकूमत करूँ, लेकिन हुकूमत पलट गई और मेरे भाई की हो गई, क्योंकि खुदावन्द की तरफ़ से यह उसी की थी। ¹⁶ इसलिए मेरी तुझ से एक दरख्वास्त है, नामंजूर न कर।” उसने कहा, “बयान कर।” ¹⁷ उसने कहा, “ज़रा सुलेमान बादशाह से कह, क्योंकि वह तेरी बात को नहीं टालेगा, कि अबीशाग शून्मीत को मुझे ब्याह दे।” ¹⁸ बतसबा' ने कहा, “अच्छा, मैं तेरे लिए बादशाह से 'दरख्वास्त करूँगी।” ¹⁹ तब बतसबा' सुलेमान बादशाह

के पास गई, ताकि उससे अदूनियाह के लिए 'दरख्वास्त' करे। बादशाह उसके इस्तक्रबाल के वास्ते उठा और उसके सामने झुका, फिर अपने तख्त पर बैठा; और उसने बादशाह की माँ के लिए एक तख्त लगवाया, तब वह उसके दहने हाथ बैठी; ²⁰ और कहने लगी, “मेरी तुझ से एक छोटी सी दरख्वास्त है; तू मुझ से इन्कार न करना।” बादशाह ने उससे कहा, “ऐ मेरी माँ, इरशाद फ़रमा; मुझे तुझ से इन्कार न होगा।” ²¹ उसने कहा, “अबीशाग शून्मीत तेरे भाई अदूनियाह को ब्याह दी जाए।” ²² सुलेमान बादशाह ने अपनी माँ को जवाब दिया, “तू अबीशाग शून्मीत ही को अदूनियाह के लिए क्यूँ माँगती है? उसके लिए हुक्मत भी माँग, क्यूँकि वह तो मेरा बड़ा भाई है; बल्कि उसके लिए क्या, अबीयातर काहिन और ज़रोयाह के बेटे योआब के लिए भी माँग।” ²³ तब सुलेमान बादशाह ने खुदावन्द की क़सम खाई और कहा कि “अगर अदूनियाह ने यह बात अपनी ही जान के खिलाफ़ नहीं कही, तो खुदा मुझ से ऐसा ही, बल्कि इससे भी ज्यादा करे।” ²⁴ इसलिए अब खुदावन्द की हयात की क़सम जिसने मुझ को क़याम बख़्शा, और मुझ को मेरे बाप दाऊद के तख्त पर बिठाया, और मेरे लिए अपने वा'दे के मुताबिक़ एक घर बनाया, यकीनन अदूनियाह आज ही क़त्ल किया जाएगा।” ²⁵ और सुलेमान बादशाह ने यहूयदा' के बेटे बिनायाह को भेजा: उसने उस पर ऐसा वार किया कि वह मर गया। ²⁶ फिर बादशाह ने अबीयातर काहिन से कहा, “तू अनतोत को अपने खेतों में चला जा क्यूँकि तू क़त्ल के लायक़ है, लेकिन मैं इस वक़्त तुझ को क़त्ल नहीं करता क्यूँकि तू मेरे बाप दाऊद के सामने खुदावन्द यहोवाह का सन्दूक उठाया करता था; और जो जो मुसीबत मेरे बाप पर आई वह तुझ पर भी आई।” ²⁷ तब सुलेमान ने अबीयातर को खुदावन्द के काहिन के उहदे से बरतरफ़ किया, ताकि वह खुदावन्द के उस क़ौल को पूरा करे जो उसने शीलोह में एली के घराने के हक़ में कहा था। ²⁸ और यह ख़बर योआब तक पहुँची: क्यूँकि योआब अदूनियाह का तो पैरोकार हो गया था, अगर्चे वह अबीसलोम का पैरोकार नहीं हुआ था। इसलिए योआब खुदावन्द के ख़ेमे को भाग गया, और मज़बह के सींग पकड़ लिए। ²⁹ और सुलेमान बादशाह को ख़बर हुई, “योआब खुदावन्द के ख़ेमे को भाग गया है; और देख, वह मज़बह के पास है।” तब सुलेमान ने यहूयदा' के बेटे बिनायाह को यह कहकर भेजा कि, “जाकर उस पर वार कर।” ³⁰ तब बिनायाह खुदावन्द के ख़ेमे को गया, और उसने उससे कहा, “बादशाह यूँ फ़रमाता है कि

तू बाहर निकल आ।” उसने कहा, “नहीं, बल्कि मैं यहीं मरूँगा।” तब बिनायाह ने लौट कर बादशाह को ख़बर दी कि “योआब ने ऐसा कहा है, और उसने मुझे ऐसा जवाब दिया।” ³¹ तब बादशाह ने उससे कहा, “जैसा उसने कहा वैसा ही कर, और उस पर वार कर और उसे दफ़न कर दे; ताकि तू उस खून को जो योआब ने बे वज़ह बहाया, मुझ पर से और मेरे बाप के घर पर से दूर कर दे।” ³² और खुदावन्द उसका खून उल्टा उसी के सर पर लाएगा, क्यूँकि उसने दो शख्सों पर जो उससे ज्यादा रास्तबाज़ और अच्छे थे, या'नी नेर के बेटे अबनेर पर जो इस्राईली लश्कर का सरदार था और यतर के बेटे 'अमासा पर जो यहूदाह की फ़ौज का सरदार था, वार किया और उनको तलवार से क़त्ल किया, और मेरे बाप दाऊद को मा'लूम न था। ³³ इसलिए उनका खून योआब के सर पर और उसकी नसल के सर पर हमेशा तक रहेगा, लेकिन दाऊद पर और उसकी नसल पर और उसके घर पर और उसके तख्त पर हमेशा तक खुदावन्द की तरफ़ से सलामती होगी।” ³⁴ तब यहूयदा' का बेटा बिनायाह गया, और उसने उस पर वार करके उसे क़त्ल किया; और वह वीरान के बीच अपने ही घर में दफ़न हुआ। ³⁵ और बादशाह ने यहूयदा' के बेटे बिनायाह को उसकी जगह लश्कर पर मुक़र्रर किया; और सदूक काहिन को बादशाह ने अबीयातर की जगह रखा। ³⁶ फिर बादशाह ने सिम'ई को बुला भेजा और उससे कहा कि “येरूशलेम में अपने लिए एक घर बना ले और वहीं रह, और वहाँ से कहीं न जाना; ³⁷ क्यूँकि जिस दिन तू बाहर निकलेगा और नहर — ए — किद्रोन के पार जाएगा, तू यकीन जान ले कि तू ज़रूर मारा जाएगा, और तेरा खून तेरे ही सर पर होगा।” ³⁸ और सिम'ई ने बादशाह से कहा, “यह बात अच्छी है; जैसा मेरे मालिक बादशाह ने कहा है, तेरा खादिम वैसा ही करेगा।” इसलिए सिम'ई बहुत दिनों तक येरूशलेम में रहा। ³⁹ और तीन साल के आखिर में ऐसा हुआ कि सिम'ई के नौकरों में से दो आदमी जात के बादशाह अकीस — बिन — मा'काह के यहाँ भाग गए। और उन्होंने सिम'ई को बताया कि, “देख, तेरे नौकर जात में है।” ⁴⁰ तब सिम'ई ने उठकर अपने गधे पर ज़ीन कसा, और अपने नौकरों की तलाश में जात को अकीस के पास गया; और सिम'ई जाकर अपने नौकरों को जात से ले आया। ⁴¹ और यह ख़बर सुलेमान को मिली कि सिम'ई येरूशलेम से जात को गया था और वापस आ गया है, ⁴² तब बादशाह ने सिम'ई को बुला भेजा और उससे कहा, “क्या मैंने तुझे खुदावन्द की क़सम न खिलाई और तुझ को बता न दिया कि, 'यकीन जान ले कि जिस दिन तू बाहर निकला और इधर — उधर कहीं गया, तो ज़रूर

मारा जाएगा'? और तू ने मुझ से यह कहा कि जो बात मैंने सुनी, वह अच्छी है।⁴³ इसलिए तूने खुदावन्द की कसम को, और उस हुक्म को जिसकी मैंने तुझे ताकीद की, क्यों न माना?"⁴⁴ और बादशाह ने सिम'ई से यह भी कहा, "तू उस सारी शरारत को जो तू ने मेरे बाप दाऊद से की, जिससे तेरा दिल वाकिफ है जानता है; इसलिए खुदावन्द तेरी शरारत को उल्टा तेरे ही सर पर लाएगा।⁴⁵ लेकिन सुलेमान बादशाह मुबारक होगा, और दाऊद का तख्त खुदावन्द के सामने हमेशा काईम रहेगा।"⁴⁶ और बादशाह ने यहूयदा' के बेटे बिनायाह को हुक्म दिया, तब उसने बाहर जाकर उस पर ऐसा वार किया कि वह मर गया। और हुक्मत सुलेमान के हाथ में मज़बूत हो गई।

3

???????? ?? ?????????????? ???????

¹ और सुलेमान ने मिस्र के बादशाह फ़िर'औन से रिश्तेदारी की, और फ़िर'औन की बेटी ब्याह ली; और जब तक अपना महल और खुदावन्द का घर और येरूशलेम के चारों तरफ़ दीवार न बना चुका, उसे दाऊद के शहर में लाकर रखा।² लेकिन लोग ऊँची जगहों में कुर्बानी करते थे, क्योंकि उन दिनों तक कोई घर खुदावन्द के नाम के लिए नहीं बना था।³ और सुलेमान खुदावन्द से मुहब्बत रखता और अपने बाप दाऊद के क़ानून पर चलता था। इतना ज़रूर है कि वह ऊँची जगहों में कुर्बानी करता और बख़ूर जलाता था।⁴ और बादशाह जिबा'ऊन को गया ताकि कुर्बानी करे, क्योंकि वह खास ऊँची जगह थी, और सुलेमान ने उस मज़बह पर एक हज़ार सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश कीं।⁵ जिबाऊन में खुदावन्द रात के वक़्त सुलेमान को ख़्वाब में दिखाई दिया, और खुदावन्द ने कहा, "माँग, मैं तुझे क्या दूँ।"⁶ सुलेमान ने कहा, "तू ने अपने खादिम मेरे बाप दाऊद पर बड़ा एहसान किया, इसलिए कि वह तेरे सामने सच्चाई और सदाक़त और तेरे साथ सीधे दिल से चलता रहा, और तू ने उसके वास्ते यह बड़ा एहसान रख छोड़ा था कि तू ने उसे एक बेटा इनायत किया जो उसके तख्त पर बैठे, जैसा आज के दिन है।"⁷ और अब ऐ खुदावन्द, मेरे खुदा! तू ने अपने खादिम को मेरे बाप दाऊद की जगह बादशाह बनाया है, और मैं छोटा लड़का ही हूँ और मुझे बाहर जाने और भीतर आने का तमीज़ नहीं।⁸ और तेरा खादिम तेरी क़ौम के बीच में है, जिसे तू ने चुन लिया है; वह ऐसी क़ौम है जो कसरत के ज़रिए न गिनी जा सकती है न शुमार हो सकती है।⁹ तब तू

अपने खादिम को अपनी क़ौम का इन्साफ़ करने के लिए समझने वाला दिल 'इनायत कर, ताकि मैं बुरे और भले में फ़र्क़ कर सकूँ; क्योंकि तेरी इस बड़ी क़ौम का इन्साफ़ कौन कर सकता है?"¹⁰ और यह बात खुदावन्द को पसन्द आई कि सुलेमान ने यह चीज़ माँगी।¹¹ और खुदा ने उससे कहा, "चूँकि तू ने यह चीज़ माँगी, और अपने लिए लम्बी उम्र की दरख्वास्त न की और न अपने लिए दौलत का सवाल किया और न अपने दुश्मनों की जान माँगी, बल्कि इन्साफ़ पसन्दी के लिए तू ने अपने वास्ते 'अक़्लमन्दी की दरख्वास्त की है।"¹² इसलिए देख, मैंने तेरी दरख्वास्त के मुताबिक़ किया; मैंने एक 'अक़्लमन्दी और समझने वाला दिल तुझ को बख़्शा, ऐसा कि तेरी तरह न तो कोई तुझ से पहले हुआ और न कोई तेरे बाद तुझ सा पैदा होगा।¹³ और मैंने तुझ को कुछ और भी दिया जो तू ने नहीं माँगा, या'नी दौलत और 'इज़्जत ऐसा कि बादशाहों में तेरी उम्र भर कोई तेरी तरह न होगा।¹⁴ और अगर तू मेरे रास्तों पर चले, और मेरे क़ानून और मेरे अहक़ाम को माने जैसे तेरा बाप दाऊद चलता रहा, तो मैं तेरी उम्र लम्बी करूँगा।"¹⁵ फिर सुलेमान जाग गया, और देखा कि एक ख़्वाब था; और वह येरूशलेम में आया और खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के आगे खड़ा हुआ और सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश कीं और सलामती की कुर्बानियाँ पेश कीं और अपने सब मुलाज़िमों की दा'वत की।¹⁶ उस वक़्त दो 'औरतें जो कस्बियाँ थीं, बादशाह के पास आईं और उसके आगे खड़ी हुईं।¹⁷ और एक 'औरत कहने लगी, ऐ मेरे मालिक! मैं और यह 'औरत दोनों एक ही घर में रहती हैं; और इसके साथ घर में रहते हुए मेरे एक बच्चा हुआ।¹⁸ और मेरे जच्चा हो जाने के बाद, तीसरे दिन ऐसा हुआ कि यह 'औरत भी जच्चा हो गई; और हम एक साथ ही थीं कोई ग़ैर — शख्स उस घर में न था, सिवा हम दोनों के जो घर ही में थीं।¹⁹ और इस 'औरत का बच्चा रात को मर गया, क्योंकि यह उसके ऊपर ही लेट गई थी।²⁰ तब यह आधी रात को उठी; और जिस वक़्त तेरी लौड़ी सोती थी। मेरे बेटे को मेरी बग़ल से लेकर अपनी गोद में लिटा लिया, और अपने मेरे हुए बच्चे को मेरी गोद में डाल दिया।²¹ सुबह को जब मैं उठी कि अपने बच्चे को दूध पिलाऊँ, तो क्या देखती हूँ कि वह मरा पड़ा है; लेकिन जब मैंने सुबह को ग़ौर किया, तो देखा कि यह मेरा लड़का नहीं है जो मेरे हुआ था।²² "फिर वह दूसरी 'औरत कहने लगी, नहीं, यह जो ज़िन्दा है मेरा बेटा है और मरा हुआ तेरा बेटा है।" इसने जवाब दिया, "नहीं, मरा हुआ तेरा बेटा है और ज़िन्दा मेरा बेटा है।" तब

वह बादशाह के सामने इसी तरह कहती रहीं। ²³ तब बादशाह ने कहा, “एक कहती है, 'यह जो ज़िन्दा है मेरा बेटा है, और जो मर गया है वह तेरा बेटा है, और दूसरी कहती है, 'नहीं, बल्कि जो मर गया है वह तेरा बेटा है, और जो ज़िन्दा है वह मेरा बेटा है।’” ²⁴ तब बादशाह ने कहा, “मुझे एक तलवार ला दो।” तब वह बादशाह के पास तलवार ले आए। ²⁵ फिर बादशाह ने फ़रमाया, “इस जीते बच्चे को चीर कर दो टुकड़े कर डालो, और आधा एक को और आधा दूसरी को दे दो।” ²⁶ तब उस 'औरत ने जिसका वह ज़िन्दा बच्चा था बादशाह से दरख्वास्त की, क्योंकि उसके दिल में अपने बेटे की ममता थी, तब वह कहने लगी, “ऐ मेरे मालिक! यह ज़िन्दा बच्चा उसी को दे दे, लेकिन उसे जान से न मरवा।” लेकिन दूसरी ने कहा, “यह न मेरा हो न तेरा, उसे चीर डालो।” ²⁷ तब बादशाह ने हुक्म किया, “ज़िन्दा बच्चा उसी को दो, और उसे जान से न मारो; क्योंकि वही उसकी माँ है।” ²⁸ और सारे इस्राईल ने यह इन्साफ़ जो बादशाह ने किया सुना, और वह बादशाह से डरने लगे; क्योंकि उन्होंने देखा कि 'अदालत करने के लिए खुदा की हिकमत उसके दिल में है।

4

???????? ?? ????? ?? ???????

¹ और सुलेमान बादशाह तमाम इस्राईल का बादशाह था। ² और जो सरदार उसके पास थे, वह यह थे: सद्क़ का बेटा अज़रियाह काहिन, ³ और सीसा के बेटे इलीहोरिफ़ और अखियाह मुंशी थे, और अखीलूद का बेटा यहूसफ़त मुवरिख़ था; ⁴ और यहूयदा' का बेटा बिनायाह लश्कर का सरदार, और सद्क़ और अबीयातर काहिन थे; ⁵ और नातन का बेटा अज़रियाह मन्सबदारों का दारोगा था, और नातन का बेटा ज़बूद काहिन और बादशाह का दोस्त था; ⁶ और अखीसर महल का दीवान, और 'अबदा का बेटा अदूनिराम बेगार का मुन्सरिम था। ⁷ और सुलेमान ने सब इस्राईल पर बारह मन्सबदार मुक्क़रर किए, जो बादशाह और उसके घराने के लिए खुराक पहुँचाते थे। हर एक को साल में महीना भर खुराक पहुँचानी पड़ती थी। ⁸ उनके नाम यह हैं: इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में बिनहूर; ⁹ और मक़स और सा'लबीम और बैतशम्स और ऐलोन बैतहनान में बिन दिक्क़ ¹⁰ और अरबूत में बिन हसद था, और शोको और हिफ़र की सारी सर — ज़मीन उसके 'इलाक़े में थी; ¹¹ और दोर के सारे मुर्तफ़ा' इलाक़े में बिन अबीनदाब था, और सुलेमान की बेटा ताफ़त उसकी बीवी थी; ¹² और अखीलूद का बेटा बा'ना था, जिसके ज़िम्मा ता'नक और मजिदो और सारा

बैतशान था, जो ज़रतान से मुत्तसिल और यज़र'एल के नीचे बैतशान से अबील महोला तक या'नी युक्रम'आम से उधर तक था; ¹³ और बिन ज़बर रामात जिल'आद में था, और मनस्सी के बेटे याईर की बस्तियाँ जो जिल'आद में हैं उसके ज़िम्मा थीं, और बसन में अरज़ूब का 'इलाक़ा भी इसी के ज़िम्मा था जिसमें साठ बड़े शहर थे जिनकी शहर पनाहें और पीतल के बेंडे थे; ¹⁴ और इददु का बेटा अखीनदाब महनायम में था; ¹⁵ और अखीमा'ज़ नफ़ताली में था, इसने भी सुलेमान की बेटा बसीमत को ब्याह लिया था; ¹⁶ और हूसी का बेटा बा'ना आशर और ब'अलोत में था; ¹⁷ और फ़रूह का बेटा यहूसफ़त इश्कार में था; ¹⁸ और ऐला का बेटा सिमई बिनयमीन में था; ¹⁹ और ऊरी का बेटा ज़बर जिल'आद के 'इलाक़े में था, जो अमोरियों के बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह 'ओज का मुल्क था, उस मुल्क का वही अकेला मन्सबदार था। ²⁰ और यहूदाह और इस्राईल के लोग कसरत में समुन्दर के किनारे की रेत की तरह थे, और खाते — पीते और खुश रहते थे। ²¹ और सुलेमान दरिया — ए — फ़ुरात से फ़िलिस्तियों के मुल्क तक, और मिस्र की सरहद तक सब हुक्मतों पर हाकिम था। वह उसके लिए हदिये लाती थीं, और सुलेमान की उम्र भर उसकी फ़रमावरदार रहीं। ²² और सुलेमान की एक दिन की खुराक यह थी: तीस कोर मैदा और साठ कोर आटा, ²³ और दस मोटे — मोटे बैल और चराई पर के बीस बैल, एक सौ भेड़ें, और इनके 'अलावा चिकारे और हिरन और छोटे हिरन और मोटे ताज़ा मुर्ग। ²⁴ क्योंकि वह दरिया — ए — फ़ुरात की इस तरफ़ के सब मुल्क पर, तिफ़सह से ग़ज्ज़ा तक, या'नी सब बादशाहों पर जो दरिया — ए — फ़ुरात की इस तरफ़ थे फ़रमानरवा था, और उसके चारों तरफ़ सब पास पड़ोस में सबसे उसकी सुलह थी। ²⁵ और सुलेमान की उम्र भर यहूदाह और इस्राईल का एक — एक आदमी अपनी ताक और अपने अंजीर के दरख़्त के नीचे, दान से बैरसबा' तक अमन से रहता था। ²⁶ और सुलेमान के यहाँ उसके रथों के लिए चालीस हज़ार थान और बारह हज़ार सवार थे। ²⁷ और उन मन्सबदारों में से हर एक अपने महीने में सुलेमान बादशाह के लिए, और उन सबके लिए जो सुलेमान बादशाह के दस्तरख़्वान पर आते थे, खुराक पहुँचाता था; वह किसी चीज़ की कमी न होने देते थे। ²⁸ और लोग अपने — अपने फ़र्ज के मुताबिक़ घोड़ों और तेज़ रफ़्तार समन्दों के लिए जौ और भूसा उसी जगह ले आते थे जहाँ वह मन्सबदार होते थे। ²⁹ और खुदा ने सुलेमान को हिकमत और समझ बहुत ही ज़्यादा, और दिल की बड़ाई भी 'इनायत की जैसी समुन्दर के

किनारे की रेत होती है। ³⁰ और सुलेमान की हिकमत सब अहल — ए — मशरिक् की हिकमत, और मिस्र की सारी हिकमत पर फ़ोकियत रखती थी; ³¹ इसलिए कि वह सब आदमियों से, बल्कि अज़राही ऐतान और हैमान और कलकूल और दरदा' से, जो बनी महूल थे, ज्यादा दानिशमन्द था; और चारों तरफ़ की सब क़ौमों में उसकी शोहरत थी। ³² और उसने तीन हज़ार मिसालें कहीं और उसके एक हज़ार पाँच गीत थे; ³³ और उसने दरख्तों का, या'नी लुबनान के देवदार से लेकर ज़ूफ़ा तक का जो दीवारों पर उगता है, बयान किया; और चौपायों और परिन्दों और रेंगने वाले जानदारों और मछलियों का भी बयान किया। ³⁴ और सब क़ौमों में से ज़मीन के सब बादशाहों की तरफ़ से जिन्होंने उसकी हिकमत की शोहरत सुनी थी, लोग सुलेमान की हिकमत को सुनने आते थे।

5

?????????? ???? ? ? ?

¹ और सूर के बादशाह हीराम ने अपने खादिमों को सुलेमान के पास भेजा, क्योंकि उसने सुना था कि उन्होंने उसे उसके बाप की जगह मसह करके बादशाह बनाया है; इसलिए कि हीराम हमेशा दाऊद का दोस्त रहा था। ² और सुलेमान ने हीराम को कहला भेजा, ³ “तू जानता है कि मेरा बाप दाऊद, खुदावन्द अपने खुदा के नाम के लिए घर न बना सका; क्योंकि उसके चारों ओर हर तरफ़ लड़ाइयाँ होती रहीं, जब तक कि खुदावन्द ने उन सब को उसके पाँवों के तलवों के नीचे न कर दिया। ⁴ और अब खुदावन्द मेरे खुदा ने मुझ को हर तरफ़ अमन दिया है; न तो कोई मुखालिफ़ है, न आफ़त की मार। ⁵ इसलिए देख, खुदावन्द अपने खुदा के नाम के लिए एक घर बनाने का मेरा इरादा है, जैसा खुदावन्द ने मेरे बाप दाऊद से कहा था, 'तेरा बेटा, जिसको मैं तेरी जगह तेरे तख़्त पर बिठाऊँगा, वही मेरे नाम के लिए घर बनाएगा। ⁶ इसलिए अब तू हुक्म कर कि वह मेरे लिए लुबनान से देवदार के दरख्तों को काटें; और मेरे मुलाज़िम तेरे मुलाज़िमों के साथ रहेंगे, और मैं तेरे मुलाज़िमों के लिए जितनी मज़दूरी तू कहेगा तुझे दूँगा; क्योंकि तू जानता है कि हम में ऐसा कोई नहीं जो सैदानियों की तरह लकड़ी काटना जानता हो।” ⁷ जब हीराम ने सुलेमान की बातें सुनी, तो बहुत ही खुश हुआ और कहने लगा कि “आज के दिन खुदावन्द मुबारक हो, जिसने दाऊद को इस बड़ी क़ौम के लिए एक 'अक्लमन्द बेटा बरखा।” ⁸ और हीराम ने सुलेमान को कहला भेजा कि “जो पैग़ाम तू ने मुझे भेजा मैंने उसको सुन लिया

है, और मैं देवदार की लकड़ी और सनोबर की लकड़ी के बारे में तेरी मज़ी पूरी करूँगा। ⁹ मेरे मुलाज़िम उनको लुबनान से उतारकर समुन्दर तक लाएँगे, और मैं उनके बेड़े बन्धवा दूँगा; ताकि समुन्दर ही समुन्दर उस जगह जाएँ जिसे तू ठहराए। और वहाँ उनको खुलवा दूँगा, फिर तू उनको ले लेना, और तू मेरे घराने के लिए खुराक देकर मेरी मज़ी पूरी करना।” ¹⁰ फिर हीराम ने सुलेमान को उसकी मज़ी के मुताबिक़ देवदार की लकड़ी और सनोबर की लकड़ी दी; ¹¹ और सुलेमान ने हीराम को उसके घराने के खाने के लिए बीस हज़ार कोर' गेहूँ और बीस कोर खालिस तेल दिया; इसी तरह सुलेमान हीराम को हर साल देता रहा। ¹² और खुदावन्द ने सुलेमान को, जैसा उसने उससे वा'दा किया था हिकमत बरख़्शी; और हीराम और सुलेमान के दर्मियान सुलह थी, और उन दोनों ने बाहम 'अहद बाँध लिया। ¹³ और सुलेमान बादशाह ने सारे इस्राईल में से बेगारी लगाए, वह बेगारी तीस हज़ार आदमी थे, ¹⁴ और वह हर महीने उनमें से दस — दस हज़ार को बारी — बारी से लुबनान भेजता था। तब वह एक महीने लुबनान पर और दो महीने अपने घर रहते; और अदूनिराम उन बेगारियों के ऊपर था। ¹⁵ और सुलेमान के सत्तर हज़ार बोझ उठाने वाले, और अस्सी हज़ार दरख़्त काटने वाले पहाड़ों में थे। ¹⁶ इनके 'अलावा सुलेमान के तीन हज़ार तीन सौ खास मन्सबदार थे, जो इस काम पर मुख़्तार थे और उन लोगों पर जो काम करते थे सरदार थे। ¹⁷ और बादशाह के हुक्म से वह बड़े बड़े बेशक़ीमत पत्थर निकाल कर लाए, ताकि घर की बुनियाद घड़े हुए पत्थरों की डाली जाए। ¹⁸ और सुलेमान के राजगीरों, और हीराम के राजगीरों, और ज़िबलियों ने उनको तराशा और घर की ता'मीर के लिए लकड़ी और पत्थरों को तैयार किया।

6

?????????? ? ? ?

¹ और बनी — इस्राईल के मुल्क — ए — मिस्र से निकल आने के बाद चार सौ अस्सीवें साल, इस्राईल पर सुलेमान की हुक्मत के चौथे साल, जीव के महीने में जो दूसरा महीना है, ऐसा हुआ कि उसने खुदावन्द का घर बनाना शुरू किया। ² और जो घर सुलेमान बादशाह ने खुदावन्द के लिए बनाया उसकी लम्बाई साठ हाथ' और चौड़ाई बीस हाथ और ऊँचाई तीस हाथ थी। ³ और उस घर की हैकल के सामने एक बरआमदा, उस घर की चौड़ाई के मुताबिक़ बीस हाथ लम्बा था, और उस घर के सामने उसकी चौड़ाई दस हाथ थी। ⁴ और उसने उस घर के लिए झरोके बनाए जिनमें जाली जड़ी हुई थी।

5 और उसने चारों तरफ़ घर की दीवार से लगी हुई, या'नी हैकल और इल्हामगाह की दीवारों से लगी हुई, चारों तरफ़ मन्जिलें बनाई और हुजरे भी चारों तरफ़ बनाए। 6 सबसे निचली मन्जिल पाँच हाथ चौड़ी, और बीच की छः हाथ चौड़ी, और तीसरी सात हाथ चौड़ी थी; क्योंकि उसने घर की दीवार के चारों तरफ़ बाहर के रुख पुश्ते बनाए थे, ताकि कड़ियाँ घर की दीवारों को पकड़े हुए न हों। 7 और वह घर जब ता'मीर हो रहा था, तो ऐसे पत्थरों का बनाया गया जो कान पर तैयार किए जाते थे; इसलिए उसकी ता'मीर के वक़्त न मार तोल, न कुल्हाड़ी, न लोहे के किसी औज़ार की आवाज़ उस घर में सुनाई दी। 8 और बीच के हुजरों का दरवाज़ा उस घर की दहनी तरफ़ था, और चक्करदार सीढ़ियों से बीच की मन्जिल के हुजरों में, और बीच की मन्जिल से तीसरी मन्जिल को जाया करते थे। 9 तब उसने वह घर बनाकर उसे पूरा किया, और उस घर को देवदार के शहतीरों और तख़्तों से पाटा। 10 और उसने उस पूरे घर से लगी हुई पाँच — पाँच हाथ ऊँची मन्जिलें बनाई, और वह देवदार की लकड़ियों के सहारे उस घर पर टिकी हुई थीं। 11 और खुदावन्द का कलाम सुलेमान पर नाज़िल हुआ, 12 “यह घर जो तू बनाता है, इसलिए अगर तू मेरे क़ानून पर चले और मेरे हुक्मों को पूरा करे और मेरे फ़रमानों को मानकर उन पर 'अमल करे, तो मैं अपना वह क़ौल जो मैंने तेरे बाप दाऊद से किया तेरे साथ क़ाईम रखूँगा। 13 और मैं बनी — इस्राईल के दर्मियान रहूँगा और अपनी क़ौम इस्राईल को तर्क न करूँगा।” 14 इसलिए सुलेमान ने वह घर बनाकर उसे पूरा किया। 15 और उसने अन्दर घर की दीवारों पर देवदार के तख़्ते लगाए। इस घर के फ़र्श से छत की दीवारों तक उसने उन पर लकड़ी लगाई, और उसने उस घर के फ़र्श को सनोबर के तख़्तों से पाट दिया। 16 और उसने उस घर के पिछले हिस्से में बीस हाथ तक, फ़र्श से दीवारों तक देवदार के तख़्ते लगाए, उसने इसे उसके अन्दर बनाया ताकि वह इल्हामगाह या'नी पाकतरीन मकान हो। 17 और वह घर या'नी इल्हामगाह के सामने की हैकल चालीस हाथ लम्बी थी। 18 और उस घर के अन्दर — अन्दर देवदार था, जिस पर लट्टू और खिले हुए फूल खुदे हुए थे; सब देवदार ही था और पत्थर अलग नज़र नहीं आता था। 19 और उसने उस घर के अन्दर बीच में इल्हामगाह तैयार की, ताकि खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक वहाँ रखा जाए। 20 और इल्हामगाह अन्दर ही अन्दर से बीस हाथ लम्बी और बीस हाथ चौड़ी और बीस हाथ ऊँची थी; और उसने उस पर खालिस सोना मंदा, और मज़बह को देवदार से

पाटा। 21 और सुलेमान ने उस घर को अन्दर खालिस सोने से मंदा, और इल्हामगाह के सामने उसने सोने की ज़र्ज़ीरें तान दीं और उस पर भी सोना मंदा। 22 और उस पूरे घर को, जब तक कि वह सारा घर पूरा न हो गया, उसने सोने से मंदा; और इल्हामगाह के पूरे मज़बह पर भी उसने सोना मंदा। 23 और इल्हामगाह में उसने ज़ैतून की लकड़ी के दो करूबी दस — दस हाथ ऊँचे बनाए। 24 और करूबी का एक बाज़ू पाँच हाथ का और उसका दूसरा बाज़ू भी पाँच ही हाथ का था; एक बाज़ू के सिरे से दूसरे बाज़ू के सिरे तक दस हाथ का फ़ासला था। 25 और दस ही हाथ का दूसरा करूबी था; दोनों करूबी एक ही नाप और एक ही सूरत के थे। 26 एक करूबी की ऊँचाई दस हाथ थी, और इतनी ही दूसरे करूबी की थी। 27 और उसने दोनों करूबियों को भीतर के मकान के अन्दर रखा; और करूबियों के बाज़ू फैले हुए थे, ऐसा कि एक का बाज़ू एक दीवार से, और दूसरे का बाज़ू दूसरी दीवार से लगा हुआ था; और इनके बाज़ू घर के बीच में एक दूसरे से मिले हुए थे। 28 और उसने करूबियों पर सोना मंदा। 29 उसने उस घर की सब दीवारों पर, चारों तरफ़ अन्दर और बाहर करूबियों और खज़ूर के दरख़्तों और खिले हुए फूलों की खुदी हुई सूरतें कन्दा की। 30 और उस घर के फ़र्श पर उसने अन्दर और बाहर सोना मंदा। 31 और इल्हामगाह में दाख़िल होने के लिए उसने ज़ैतून की लकड़ी के दरवाज़े बनाए: ऊपर की चौखट और बाज़ुओं का चौड़ाई दीवार का पाँचवा हिस्सा था। 32 दोनों दरवाज़े ज़ैतून की लकड़ी के थे; और उसने उन पर करूबियों और खज़ूर के दरख़्तों और खिले हुए फूलों की खुदी हुई सूरतें कन्दा कीं, और उन पर सोना मंदा और इस सोने को करूबियों पर और खज़ूर के दरख़्तों पर फैला दिया। 33 ऐसे ही हैकल में दाख़िल होने के लिए उसने ज़ैतून की लकड़ी की चौखट बनाई, जो दीवार का चौथा हिस्सा थी। 34 और सनोबर की लकड़ी के दो दरवाज़े थे; एक दरवाज़े के दोनों पट दुहरे हो जाते, और दूसरे दरवाज़े के भी दोनों पट दुहरे हो जाते थे। 35 और इन पर करूबियों और खज़ूर के दरख़्तों और खिले हुए फूलों को उसने खुदवाया, और खुदे हुए काम पर सोना मंदा। 36 और अन्दर के सहन की तीन सफ़े तराशे हुए पत्थर की बनाई, और एक सफ़े देवदार के शहतीरों की। 37 चौथे साल जीव के महीने में खुदावन्द के घर की बुनियाद डाली गई; 38 और ग्यारहवें साल बूल के महीने में, जो आठवाँ महीना है, वह घर अपने सब हिस्सों समेत अपने नक्शे के मुताबिक़ बनकर तैयार हुआ। ऐसा उसको बनाने में उसे सात साल लगे।

7

११११११११ ११ १११११ १११ ११११११

१ और सुलेमान तेरह साल अपने महल की ता'मीर में लगा रहा, और अपने महल को खत्म किया; २ क्योंकि उसने अपना महल लुबनान के बन की लकड़ी का बनाया, उसकी लम्बाई सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊँचाई तीस हाथ थी, और वह देवदार के सुतूनों की चार क्रतारों पर बना था; और सुतूनों पर देवदार के शहतीर थे। ३ और वह पैंतालीस शहतीरों के ऊपर जो सुतूनों पर टिके थे, पाट दिया गया था। हर क्रतार में पन्द्रह शहतीर थे। ४ और खिड़कियों की तीन क्रतारें थी, और तीनों क्रतारों में हर एक रोशनदान दूसरे रोशनदान के सामने था। ५ और सब दरवाजे और चौखटें मुरब्बा' शकल की थीं, और तीनों क्रतारों में हर एक रोशनदान दूसरे रोशनदान के सामने था। ६ और उसने सुतूनों का बरआमदा बनाया; उसकी लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई तीस हाथ, और इनके सामने एक डयोढ़ी थी, और इनके आगे सुतून और मोटे — मोटे शहतीर थे। ७ और उसने तख्त के लिए एक बरआमदा, या'नी 'अदालत का बरआमदा बनाया जहाँ वह 'अदालत कर सके; और फ़र्श — से — फ़र्श तक उसे देवदार से पाट दिया। ८ और उसके रहने का महल जो उसी बरआमदे के अन्दर दूसरे सहन में था, ऐसे ही काम का बना हुआ था। और सुलेमान ने फिर'औन की बेटी के लिए, जिसे उसने ब्याहा था, उसी बरआमदे के तरह का एक महल बनाया ९ यह सब अन्दर और बाहर बुनियाद से मुन्डेर तक बेशक्रीमत पत्थरों, या'नी तराशे हुए पत्थरों के बने हुए थे, जो नाप के मुताबिक आरों से चीरे गए थे, और ऐसा ही बाहर बाहर बड़े सहन तक था। १० और बुनियाद बेशक्रीमत पत्थरों, या'नी बड़े — बड़े पत्थरों की थी; यह पत्थर दस — दस हाथ और आठ — आठ हाथ के थे। ११ और ऊपर नाप के मुताबिक बेशक्रीमत पत्थर, या'नी घड़े हुए पत्थर और देवदार की लकड़ी लगी हुई थी। १२ और बड़े सहन में चारों तरफ़ घड़े हुए पत्थरों की तीन क्रतारें और देवदार के शहतीरों की एक क्रतार, वैसी ही थी जैसी खुदावन्द के घर के अन्दरूनी सहन और उस घर के बरआमदे में थी। १३ फिर सुलेमान बादशाह ने सूर से हीराम को बुलवा लिया। १४ वह नफ़्ताली के क़बीले की एक बेवा 'औरत का बेटा था, और उसका बाप सूर का बाशिन्दा था और ठठेरा था; और वह पीतल के सब काम की कारीगरी में हिकमत और समझ और महारत रखता था। इसलिए उसने सुलेमान बादशाह के पास आकर उसका सब काम बनाया। १५ क्योंकि उसने अठारह — अठारह हाथ ऊँचे पीतल के दो सुतून बनाए, और एक — एक का घेर बारह

हाथ के सूत के बराबर था यह अन्दर से खोखले और इसके पीतल की मोटाई चार उंगल थी। १६ और उसने सुतूनों की चोटियों पर रखने के लिए पीतल ढाल कर दो ताज बनाये एक ताज की ऊँचाई पाँच और दूसरे ताज की ऊँचाई भी पाँच हाथ थी। १७ और उन ताजों के लिए जो सुतूनों की चोटियों पर थे, चारखाने की जालियाँ और जंजीरनुमा हार थे, सात एक ताज के लिए और सात दूसरे ताज के लिए। १८ तब उसने वह सुतून बनाए, और सुतूनों की चोटी के ऊपर के ताजों को ढाँकने के लिए एक जाली के काम पर चारों तरफ़ दो क्रतारें थीं, और दूसरे ताज के लिए भी उसने ऐसा ही किया। १९ और उन चार — चार हाथ के ताजों पर जो बरआमदे के सुतूनों की चोटी पर थे सोसन का काम था; २० और उन दोनों सुतूनों पर, ऊपर की तरफ़ भी जाली के बराबर की गोलाई के पास ताज बने थे; और उस दूसरे ताज पर क्रतार दर क्रतार चारों तरफ़ दो सौ अनार थे। २१ और उसने हैकल के बरआमदे में वह सुतून खड़े किए; और उसने दहने सुतून को खड़ा करके उसका नाम याकिन रखा, और बाएँ सुतून को खड़ा करके उसका नाम बो'एलियाज़र रखा। २२ और सुतूनों की चोटी पर सोसन का काम था; ऐसे सुतूनों का काम खत्म हुआ। २३ फिर उसने ढाला हुआ एक बड़ा हौज़ बनाया, वह एक किनारे से दूसरे किनारे तक दस हाथ था; वह गोल था, और ऊँचाई उसकी पाँच हाथ थी, और उसका घेर चारों तरफ़ तीस हाथ के सूत के बराबर था। २४ और उसके किनारे के नीचे चारों तरफ़ दसों हाथ तक लट्टू थे, जो उसे या'नी बड़े हौज़ को घेरे हुए थे; यह लट्टू दो क्रतारों में थे, और जब वह ढाला गया तब ही यह भी ढाले गए थे। २५ और वह बारह बैलों पर रखा गया; तीन के मुँह शिमाल की तरफ़, और तीन के मुँह मगरिब की तरफ़, और तीन के मुँह जुनुब की तरफ़, और तीन के मुँह मशरिक् की तरफ़ थे; और वह बड़ा हौज़ उन ही पर ऊपर की तरफ़ था, और उन सभी का पिछला धड़ अन्दर के रुख था। २६ और दिल उसका चार उंगल था, और उसका किनारा प्याले के किनारे की तरह गुल — ए — सोसन की तरह था, और उसमें दो हज़ार बत की समाई थी। २७ और उसने पीतल की दस कुर्सियाँ बनाई, एक एक कुर्सी की लम्बाई चार हाथ और चौड़ाई चार हाथ और ऊँचाई तीन हाथ थी। २८ और उन कुर्सियों की कारीगरी इस तरह की थी; इनके हाशिये थे, और पटरों के दर्मियान भी हाशिये थे; २९ और उन हाशियों पर जो पटरों के दर्मियान थे, शेर और बैल और करूबी बने थे; और उन पटरों पर भी एक कुर्सी ऊपर की तरफ़ थी, और शेरों और बैलों के नीचे लटकते काम के हार थे। ३० और हर कुर्सी के लिए चार चार पीतल के पहिये

था सिवा पत्थर की उन दो लौहों के जिनको वहाँ मूसा ने होरिब में रख दिया था, जिस वक्रत के खुदावन्द ने बनी इस्राईल से जब वह मुल्क — ए — मिस्र से निकल आए, 'अहद बाँधा था।' ¹⁰ फिर ऐसा हुआ कि जब काहिन पाक मकान से बाहर निकल आए, तो खुदावन्द का घर अब्र से भर गया: ¹¹ इसलिए काहिन उस अब्र की वजह से खिदमत के लिए खड़े न हो सके, इसलिए कि खुदावन्द का घर उसके जलाल से भर गया था। ¹² तब सुलेमान ने कहा कि "खुदावन्द ने फ़रमाया था कि वह गहरी तारीकी में रहेगा। ¹³ मैंने हकीकत में एक घर तेरे रहने के लिए, बल्कि तेरी हमेशा की सुकूनत के वास्ते एक जगह बनाई है।" ¹⁴ और बादशाह ने अपना मुँह फेरा और इस्राईल की सारी जमा'अत को बरकत दी, और इस्राईल की सारी जमा'अत खड़ी रही; ¹⁵ और उसने कहा कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा मुबारक हो! जिसने अपने मुँह से मेरे बाप दाऊद से कलाम किया, और उसे अपने हाथ से यह कह कर पूरा किया कि। ¹⁶ "जिस दिन से मैं अपनी क्रौम इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया, मैंने इस्राईल के सब कबीलों में से भी किसी शहर को नहीं चुना कि एक घर बनाया जाए, ताकि मेरा नाम वहाँ हो; लेकिन मैंने दाऊद को चुन लिया कि वह मेरी क्रौम इस्राईल पर हाकिम हो। ¹⁷ और मेरे बाप दाऊद के दिल में था कि खुदावन्द इस्राईल के खुदा के नाम के लिए एक घर बनाए। ¹⁸ लेकिन खुदावन्द ने मेरे बाप दाऊद से कहा, 'चूँकि मेरे नाम के लिए एक घर बनाने का ख्याल तेरे दिल में था, तब तू ने अच्छा किया कि अपने दिल में ऐसा ठाना; ¹⁹ तोभी तू उस घर को न बनाना, बल्कि तेरा बेटा जो तेरे सुल्ब से निकलेगा वह मेरे नाम के लिए घर बनाएगा। ²⁰ और खुदावन्द ने अपनी बात, जो उसने कही थी, काईम की है; क्योंकि मैं अपने बाप दाऊद की जगह उठा हूँ, और जैसा खुदावन्द ने वा'दा किया था, मैं इस्राईल के तख्त पर बैठा हूँ और मैंने खुदावन्द इस्राईल के खुदा के नाम के लिए उस घर को बनाया है। ²¹ और मैंने वहाँ एक जगह उस सन्दूक के लिए मुक़र्रर कर दी है, जिसमें खुदावन्द का वह 'अहद है जो उसने हमारे बाप — दादा से, जब वह उनको मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, बाँधा था।" ²² और सुलेमान ने इस्राईल की सारी जमा'अत के सामने खुदावन्द के मज़बह के आगे खड़े होकर अपने हाथ आसमान की तरफ़ फैलाए ²³ और कहा, ऐ खुदावन्द, इस्राईल के खुदा! तेरी तरह न तो ऊपर आसमान में, न नीचे ज़मीन पर कोई खुदा है; तू अपने उन बन्दों के लिए जो तेरे सामने अपने

सारे दिल से चलते हैं, 'अहद और रहमत को निगाह रखता है। ²⁴ तू ने अपने बन्दा मेरे बाप दाऊद के हक़ में वह बात काईम रखी, जिसका तू ने उससे वा'दा किया था; तू ने अपने मुँह से फ़रमाया और अपने हाथ से उसे पूरा किया, जैसा आज के दिन है। ²⁵ इसलिए अब ऐ खुदावन्द इस्राईल के खुदा! तू अपने बन्दा मेरे बाप दाऊद के साथ उस क्रौल को भी पूरा कर जो तूने उससे किया था कि 'तेरे आदमियों से मेरे सामने इस्राईल के तख्त पर बैठने वाले की कमी न होगी; बशर्ते कि तेरी औलाद, जैसे तू मेरे सामने चलता रहा वैसे ही मेरे सामने चलने के लिए, अपने रास्ते की एहतियात रखे। ²⁶ इसलिए अब ऐ इस्राईल के खुदा, तेरा वह क्रौल सच्चा साबित किया जाए, जो तू ने अपने बन्दे मेरे बाप दाऊद से किया। ²⁷ लेकिन क्या खुदा हकीकत में ज़मीन पर सुकूनत करेगा? देख, आसमान बल्कि आसमानों के आसमान में भी तू समा नहीं सकता, तो यह घर तो कुछ भी नहीं जिसे मैंने बनाया। ²⁸ तोभी, ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, अपने बन्दा की दुआ और मुनाजात का लिहाज़ करके, उस फ़रियाद और दुआ को सुन ले जो तेरा बन्दा आज के दिन तेरे सामने करता है, ²⁹ ताकि तेरी आँखें इस घर की तरफ़, या'नी उसी जगह की तरफ़ जिसकी ज़रिए' तू ने फ़रमाया कि 'मैं अपना नाम वहाँ रखूँगा,' दिन और रात खुली रहें; ताकि तू उस दुआ को सुने जो तेरा बन्दा इस मक़ाम की तरफ़ रुख़ करके तुझ से करेगा। ³⁰ और तू अपने बन्दा और अपनी क्रौम इस्राईल की मुनाजात को, जब वह इस जगह की तरफ़ रुख़ करके करे सुन लेना, बल्कि तू आसमान पर से जो तेरी सुकूनत गाह है सुन लेना, और सुनकर मु'आफ़ कर देना। ³¹ "अगर कोई शख्स अपने पड़ोसी का गुनाह करे, और उसे कसम खिलाने के लिए उसको हल्फ़ दिया जाए, और वह आकर इस घर में तेरे मज़बह के आगे कसम खाए: ³² तो तू आसमान पर से सुनकर 'अमल करना और अपने बन्दों का इन्साफ़ करना, और बदकार पर फ़तवा लगाकर उसके 'आमाल को उसी के सिर डालना, और सादिक को सच्चा ठहराकर उसकी सदाक़त के मुताबिक़ उसे बदला देना। ³³ जब तेरी क्रौम इस्राईल तेरा गुनाह करने के ज़रिए' अपने दुश्मनों से शिकस्त खाए और फिर तेरी तरफ़ रुजू' लाये और तेरे नाम का इकरार करके इस घर में तुझ से दुआ और मुनाजात करे; ³⁴ तो तू आसमान पर से सुनकर अपनी क्रौम इस्राईल का गुनाह मु'आफ़ करना, और उनको इस मुल्क में जो तूने उनके बाप दादा को दिया फिर ले आना। ³⁵ "जब इस वजह से कि उन्होंने तेरा गुनाह किया हो, आसमान बन्द हो जाए और बारिश न

हो, और वह इस मक़ाम की तरफ़ रुख करके दुआ करें और तेरे नाम का इकरार करें, और अपने गुनाह से बाज़ आएँ जब तू उनको दुख दे; ³⁶ तो तू आसमान पर से सुन कर अपने बन्दों और अपनी क्रौम इस्राईल का गुनाह मु'आफ़ कर देना, क्योंकि तू उनको उस अच्छी रास्ते की ता'लीम देता है जिस पर उनको चलना फ़र्ज़ है, और अपने मुल्क पर जिसे तू ने अपनी क्रौम को मीरास के लिए दिया है, पानी बरसाना। ³⁷ “अगर मुल्क में काल हो, अगर वबा हो, अगर बाद — ऐ — समूम या गेरूई या टिड्डी या कमला हो, अगर उनके दुश्मन उनके शहरों के मुल्क में उनको घेर लें, गरज़ कैसी ही बला कैसा ही रोग हो; ³⁸ तो जो दुआ और मुनाजात किसी एक शख्स या तेरी क्रौम इस्राईल की तरफ़ से ही, जिनमें से हर शख्स अपने दिल का दुख जानकर अपने हाथ इस घर की तरफ़ फैलाए; ³⁹ तो तू आसमान पर से जो तेरी सुकूनत गाह है सुनकर मु'आफ़ कर देना, और ऐसा करना कि हर आदमी को, जिसके दिल को तू जानता है, उसी की सारे चाल चलन के मुताबिक़ बदला देना; क्योंकि सिर्फ़ तू ही सब बनी — आदम के दिलों को जानता है; ⁴⁰ ताकि जितनी मुद्दत तक वह उस मुल्क में जिसे तू ने हमारे बाप — दादा को दिया ज़िन्दा रहें, तेरा ख़ौफ़ माने। ⁴¹ 'अब रहा वह परदेसी जो तेरी क्रौम इस्राईल में से नहीं है, वह जब दूर मुल्क से तेरे नाम की खातिर आए, ⁴² क्योंकि वह तेरे बुज़ुर्ग नाम और क़वी हाथ और बुलन्द बाज़ू का हाल सुनेंगे इसलिए जब वह आए और इस घर की तरफ़ रुख करके दुआ करें, ⁴³ तो तू आसमान पर से जो तेरी सुकूनत गाह है सुन लेना, और जिस — जिस बात के लिए वह परदेसी तुझ से फ़रयाद करे तू उसके मुताबिक़ करना, ताकि ज़मीन की सब क्रौमों बनी इस्राईल की मानिन्द तेरे नाम को पहचाने मानें, और जान लें कि यह घर जिसे मैंने बनाया है तेरे नाम का कहलाता है। ⁴⁴ 'अगर तेरे लोग चाहे किसी रास्ते से तू उनको भेजे, अपने दुश्मनों से लड़ने को निकलें, और वह खुदावन्द से उस शहर की तरफ़ जिसे तू ने चुना है, और उस घर की तरफ़ जिसे मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है, रुख करके दुआ करें, ⁴⁵ तो तू आसमान पर से उनकी दुआ और मुनाजात सुनकर उनकी हिमायत करना। ⁴⁶ 'अगर वह तेरा गुनाह करें क्योंकि कोई ऐसा आदमी नहीं जो गुनाह न करता हो और तू उनसे नाराज़ होकर उनको दुश्मन के हवाले कर दे, ऐसा कि वह दुश्मन उनको गुलाम करके अपने मुल्क में ले जाए, ख्वाह वह दूर हो या नज़दीक, ⁴⁷ तो भी अगर वह उस मुल्क में जहाँ वह गुलाम होकर पहुँचाए गए, होश में आयेँ और रुजू लायेँ और अपने

गुलाम करने वालों के मुल्क में तुझसे मुनाजात करें और कहें कि हम ने गुनाह किया, हम टेढ़ी चाल चले, और हम ने शरारत की; ⁴⁸ इसलिए अगर वह अपने दुश्मनों के मुल्क में जो उनको कैद करके ले गए, अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से तेरी तरफ़ फ़िरेँ और अपने मुल्क की तरफ़, जो तू ने उनके बाप — दादा को दिया, और इस शहर की तरफ़, जिसे तू ने चुन लिया, और इस घर की तरफ़, जो मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है, रुख करके तुझ से दुआ करें, ⁴⁹ तो तू आसमान पर से, जो तेरी सुकूनत गाह है, उनकी दुआ और मुनाजात सुनकर उनकी हिमायत करना, ⁵⁰ और अपनी क्रौम को, जिसने तेरा गुनाह किया, और उनकी सब ख़ताओं को, जो उनसे तेरे खिलाफ़ सरज़द हों, मु'आफ़ कर देना, और उनके गुलाम करने वालों के आगे उन पर रहम करना ताकि वह उन पर रहम करें। ⁵¹ क्योंकि वह तेरी क्रौम और तेरी मीरास हैं, जिसे तू मिस्र से लोहे के भट्टे के बीच में से निकाल लाया। ⁵² सो तेरी आँखें तेरे बन्दा की मुनाजात और तेरी क्रौम इस्राईल की मुनाजात की तरफ़ खुली रहें, ताकि जब कभी वह तुझ से फ़रियाद करें, तू उनकी सुने; ⁵³ क्योंकि तू ने ज़मीन की सब क्रौमों में से उनको अलग किया कि वह तेरी मीरास हों, जैसा ऐ मालिक खुदावन्द, तू ने अपने बन्दे मूसा की ज़रिए' फ़रमाया, जिस वक़्त तू हमारे बाप — दादा को मिस्र से निकाल लाया।” ⁵⁴ और ऐसा हुआ कि जब सुलेमान खुदावन्द से यह सब मुनाजात कर चुका, तो वह खुदावन्द के मज़बह के सामने से, जहाँ वह अपने हाथ आसमान की तरफ़ फैलाए हुए घुटने टेके था, उठा। ⁵⁵ और खड़े होकर इस्राईल की सारी जमा'अत को ऊँची आवाज़ से बरकत दी और कहा, ⁵⁶ “खुदावन्द, जिसने अपने सब वा'दों के मुताबिक़ अपनी क्रौम इस्राईल को आराम बख़्शा मुबारक हो; क्योंकि जो सारा अच्छा वा'दा उसने अपने बन्दे मूसा की ज़रिए' किया, उसमें से एक बात भी ख़ाली न गई। ⁵⁷ खुदावन्द हमारा खुदा हमारे साथ रहे जैसे वह हमारे बाप — दादा के साथ रहा, और न हम को तर्क करे न छोड़े। ⁵⁸ ताकि वह हमारे दिलों को अपनी तरफ़ माइल करे कि हम उसकी सब रास्तों पर चलें, और उसके फ़रमानों और क़ानून और अहक़ाम को, जो उसने हमारे बाप — दादा को दिए मानें। ⁵⁹ और यह मेरी बातें जिनको मैंने खुदावन्द के सामने मुनाजात में पेश किया है, दिन और रात खुदावन्द हमारे खुदा के नज़दीक रहें, ताकि वह अपने बन्दा की दाद और अपनी क्रौम इस्राईल की दाद हर दिन की ज़रूरत के मुताबिक़ दे; ⁶⁰ जिससे ज़मीन की सब क्रौमों जान लें कि

खुदावन्द ही खुदा है और उसके सिवा और कोई नहीं।⁶¹ इसलिए तुम्हारा दिल आज की तरह खुदावन्द हमारे खुदा के साथ उसके क़ानून पर चलने, और उसके हुक्मों को मानने के लिए कामिल रहे।”⁶² और बादशाह ने और उसके साथ सारे इस्राईल ने खुदावन्द के सामने कुर्बानी पेश की।⁶³ सुलेमान ने जो सलामती के ज़बीहों की कुर्बानी खुदावन्द के सामने पेश कीं उसमें उसने बाईस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़ें पेश कीं। ऐसे बादशाह ने और सब बनी — इस्राईल ने खुदावन्द का घर मख्सूस किया।⁶⁴ उसी दिन बादशाह ने सहन के दर्मियानी हिस्से को जो खुदावन्द के घर के सामने था मुक़द्दस किया, क्योंकि उसने वहीं सोख्तनी कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी और सलामती के ज़बीहों की चर्बी पेश की, इसलिए कि पीतल का मज़बह जो खुदावन्द के सामने था, इतना छोटा था कि उस पर सोख्तनी कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी और सलामती के ज़बीहों की चर्बी के लिए गुन्जाइश न थी।⁶⁵ इसलिए सुलेमान ने और उसके साथ सारे इस्राईल, या'नी एक बड़ी जमा'अत, ने जो हमात के मदख़ल से लेकर मिस्र की नहर तक की हुदूद से आई थी, खुदावन्द हमारे खुदा के सामने सात दिन और फिर सात दिन और, या'नी चौदह दिन, 'ईद मनाई।⁶⁶ और आठवें दिन उसने उन लोगों को रुख़सत कर दिया। तब उन्होंने बादशाह को मुबारकबाद दी, और उस सारी नेकी के ज़रिए जो खुदावन्द ने अपने बन्दा दाऊद और अपनी क़ौम इस्राईल से की थी, अपने डेरों को दिल में खुश और खुश होकर लौट गए।

9

?????????? ?? ??????? ?? ???????

1 और ऐसा हुआ कि जब सुलेमान खुदावन्द का घर और शाही महल बना चुका, और जो कुछ सुलेमान करना चाहता था वह सब ख़त्म हो गया,² तो खुदावन्द सुलेमान को दूसरी बार दिखाई दिया, जैसे वह जब 'ऊन में दिखाई दिया था।³ और खुदावन्द ने उससे कहा, मैंने तेरी दुआ और मुनाज़ात जो तूने मेरे सामने की है सुन ली, और इस घर में, जिसे तू ने बनाया है, अपना नाम हमेशा तक रखने के लिए मैंने उसे मुक़द्दस किया; और मेरी आँखें और मेरा दिल सदा वहाँ लगे रहेंगे।⁴ अब रहा तू इसलिए अगर तू जैसे तेरा बाप दाऊद चला, वैसे ही मेरे सामने खुलूस — ए — दिल और सच्चाई से चल कर उस सब के मुताबिक़ जो मैंने तुझे फ़रमाया 'अमल करे, और मेरे क़ानून और अहक़ाम को माने; ⁵ तो मैं तेरी हुकूमत का तख़्त इस्राईल के ऊपर

हमेशा क़ाईम रखूँगा, जैसा मैंने तेरे बाप दाऊद से वा'दा किया और कहा कि 'तेरी नस्ल में इस्राईल के तख़्त पर बैठने के लिए आदमी की कमी न होगी।⁶ लेकिन तुम हो या तुम्हारी औलाद, अगर तुम मेरी पैरवी से बरग़श्ता हो जाओ और मेरे अहक़ाम और क़ानून को, जो मैंने तुम्हारे आगे रखे हैं, न मानो बल्कि जाकर और मा'बूदों की इबादत करने और उनको सिज्दा करने लगो,⁷ तो मैं इस्राईल को उस मुल्क से जो मैंने उनको दिया है काट डालूँगा; और उस घर को जिसे मैंने अपने नाम के लिए मुक़द्दस किया है, अपनी नज़र से दूर कर दूँगा; और इस्राईल सब क़ौमों में उसकी मिसाल होगी और उस पर उँगली उठेगी।⁸ और अगरचे यह घर ऐसा मुम्ताज़ है तोभी हर एक जो इसके पास से गुज़रेगा, हैरान होगा और सुसकारेगा, और वह कहेंगे, 'खुदावन्द ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा क्यूँ किया?'⁹ तब वह जवाब देंगे, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने खुदा को, जो उनके बाप — दादा को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, छोड़ दिया और ग़ैर मा'बूदों को थाम कर उनको सिज्दा करने और उनकी इबादत करने लगे; इसी लिए खुदावन्द ने उन पर यह सारी मुसीबत नाज़िल की।”¹⁰ और बीस साल के बाद जिनमें सुलेमान ने वह दोनों घर, या'नी खुदावन्द का घर और शाही महल बनाए, ऐसा हुआ कि¹¹ चूँकि सूर के बादशाह हीराम ने सुलेमान के लिए देवदार की और सनोबर की लकड़ी और सोना उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ इन्तिज़ाम किया था, इसलिए सुलेमान बादशाह ने गलील के मुल्क में बीस शहर हीराम को दिए।¹² और हीराम उन शहरों को जो सुलेमान ने उसे दिए थे, देखने के लिए सूर से निकला पर वह उसे पसन्द न आए।¹³ तब उसने कहा, “ऐ मेरे भाई, यह क्या शहर हैं जो तू ने मुझे दिए?” और उसने उनका नाम कुबूल का मुल्क रखा, जो आज तक चला आता है।¹⁴ और हीराम ने बादशाह के पास एक सौ बीस क़िन्तार सोना भेजा।¹⁵ और सुलेमान बादशाह ने जो बेगारी लगाए, तो इसी लिए कि वह खुदावन्द के घर और अपने महल को और मिल्लो और येरूशलेम की शहरपनाह और हसूर और मजिदो और जज़र को बनाए।¹⁶ मिस्र के बादशाह फ़िर'औन ने हमला करके और जज़र को घेर करके उसे आग से फूँक दिया था, और उन कना'आनियों को जो उस शहर में बसे हुए थे क़त्ल करके उसे अपनी बेटी को, जो सुलेमान की बीवी थी, जहेज़ में दे दिया था,¹⁷ तब सुलेमान ने जज़र और बैतहोरून असफल को,¹⁸ और बालात और बियाबान के तमर को बनाया, जो मुल्क के अन्दर हैं।¹⁹ और

जखीरों के सब शहरों को जो सुलेमान के पास थे, और अपने रथों के लिए शहरों को, और अपने सवारों के लिए शहरों को, और जो कुछ सुलेमान ने अपनी मर्जी से येरूशलेम में और लुबनान में और अपनी मुल्क की सारी ज़मीन में बनाना चाहा बनाया। ²⁰ और वह सब लोग जो अमोरियों और हित्तियों और फ़रिज़्ज़ियों और हव्वियों यबूसियों में से बाक़ी रह गए थे और बनी — इस्राईल में से न थे, ²¹ इसलिए उनकी औलाद को जो उनके बाद मुल्क में बाक़ी रही, जिनको बनी — इस्राईल पूरे तौर पर मिटा न सके, सुलेमान ने गुलाम बनाकर बेगार में लगाया जैसा आज तक है। ²² लेकिन सुलेमान ने बनी — इस्राईल में से किसी को गुलाम न बनाया, बल्कि वह उसके जंगी मर्द और मुलाज़िम और हाकिम और फ़ौजी सरदार और उसके रथों और सवारों के हाकिम थे। ²³ और वह खास मन्सबदार जो सुलेमान के काम पर मुक़र्रर थे, पाँच सौ पचास थे; यह उन लोगों पर जो काम बना रहे थे सरदार थे। ²⁴ और फिर 'औन की बेटी दाऊद के शहर से अपने उस महल में, जो सुलेमान ने उसके लिए बनाया था, आई तब सुलेमान ने मिल्लो की ता'मीर किया। ²⁵ और सुलेमान साल में तीन बार उस मज़बह पर जो उसने खुदावन्द के लिए बनाया था, सोख्तनी कुर्बानियाँ और सलामती के ज़बीहे पेश करता था, और उनके साथ उस मज़बह पर जो खुदावन्द के आगे था खुशबू जलाता था। इस तरह उसने उस घर को पूरा किया। ²⁶ फिर सुलेमान बादशाह ने 'असयोन जाबर में, जो अदोम के मुल्क में बहर — ए — कुलज़ुम के किनारे ऐलोत के पास है, जहाज़ों का बेड़ा बनाया। ²⁷ और हीराम ने अपने मुलाज़िम सुलेमान के मुलाज़िमों के साथ उस बेड़े में भेजे, वह मल्लाह थे जो समुन्दर से वाकिफ़ थे। ²⁸ और वह ओफ़ीर को गए और वहाँ से चार सौ बीस किन्तार सोना लेकर उसे सुलेमान बादशाह के पास लाए।

10

⚔⚔⚔⚔ ⚔⚔ ⚔⚔⚔⚔⚔⚔⚔⚔⚔ ⚔⚔ ⚔⚔⚔⚔⚔⚔⚔⚔⚔ ⚔⚔⚔⚔⚔

¹ और जब सबा की मलिका ने खुदावन्द के नाम के ज़रिए सुलेमान की शोहरत सुनी, तो वह आई ताकि मुशकिल सवालों से उसे आज़माए। ² और वह बहुत बड़ी जिलौ के साथ येरूशलेम में आई; और उसके साथ ऊँट थे, जिन पर मशाल्हे और बहुत सा सोना और क्रीमती जवाहर लदे थे, और जब वह सुलेमान के पास पहुँची तो उसने उन सब बातों के बारे में जो उसके दिल में थीं उससे बात की। ³ सुलेमान ने उसके सब सवालों का जवाब दिया, बादशाह से कोई बात ऐसी छुपी न थी जो उसे न बताई। ⁴ और जब सबा की मलिका ने सुलेमान की सारी

हिकमत और उस महल को जो उसने बनाया था, ⁵ और उसके दस्तरख़्वान की ने'मतों, और उसके मुलाज़िमों के बैठने के तरीक़े, और उसके खादिमों की हुज़ूरी और उनकी पोशाक, और उसके साक़ियों, और उस सीढ़ी को जिससे वह खुदावन्द के घर को जाता था देखा, तो उसके होश उड़ गए। ⁶ उसने बादशाह से कहा कि "वह सच्ची ख़बर थी जो मैंने तेरे कामों और तेरी हिकमत के बारे में अपने मुल्क में सुनी थी। ⁷ तोभी मैंने वह बातों पर यक़ीन न की, जब तक खुद आकर अपनी आँखों से यह देख न लिया, और मुझे तो आधा भी नहीं बताया गया था: क्यूँकि तेरी हिकमत और तेरी कामयाबी उस शोहरत से जो मैंने सुनी बहुत ज्यादा है। ⁸ खुशनसीब हैं तेरे लोग! और खुशनसीब हैं तेरे यह मुलाज़िम, जो बराबर तेरे सामने खड़े रहते और तेरी हिकमत सुनते हैं। ⁹ खुदावन्द तेरा खुदा मुबारक हो, जो तुझ से ऐसा खुश हुआ कि तुझे इस्राईल के तख्त पर बिठाया है; चूँकि खुदावन्द ने इस्राईल से हमेशा मुहब्बत रखी है, इसलिए उसने तुझे 'अदल और इन्साफ़ करने को बादशाह बनाया।" ¹⁰ और उसने बादशाह को एक सौ बीस किन्तार सोना और मसाल्हे का बहुत बड़ा ढेर और क्रीमती जवाहर दिए; और जैसे मसाल्हे सबा की मलिका ने सुलेमान बादशाह को दिए, वैसे फिर कभी ऐसी बहुतायत के साथ न आए। ¹¹ और हीराम का बेड़ा भी जो ओफ़ीर से सोना लाता था, बड़ी कसरत से चन्दन के दरख्त और क्रीमती जवाहर ओफ़ीर से लाया। ¹² तब बादशाह ने खुदावन्द के घर और शाही महल के लिए चन्दन की लकड़ी के सुतून, और बरबत और गाने वालों के लिए सितार बनाए; चन्दन के ऐसे दरख्त न कभी आए थे, और न कभी आज के दिन तक दिखाई दिए। ¹³ और सुलेमान बादशाह ने सबा की मलिका को सब कुछ, जिसकी वह मुश्ताक़ हुई और जो कुछ उसने माँगा दिया; 'अलावा इसके सुलेमान ने उसको अपनी शाहाना सखावत से भी इनायत किया। फिर वह अपने मुलाज़िमों के साथ अपनी मुल्क को लौट गई। ¹⁴ जितना सोना एक साल में सुलेमान के पास आता था, उसका वज़न सोने का छः सौ छियासठ किन्तार था। ¹⁵ 'अलावा इसके ब्योपारियों और सौदागरों की तिजारत और मिली जुली क्रीमों के सब सलातीन, और मुल्क के सूबेदारों की तरफ़ से भी सोना आता था। ¹⁶ और सुलेमान बादशाह ने सोना घड़कर दो सौ ढालें बनाई, छः सौ मिस्काल सोना एक एक ढाल में लगा। ¹⁷ और उसने घड़े हुए सोने की तीन सौ ढालें बनाई; एक एक ढाल में डेढ़ सेर सोना लगा, और बादशाह ने उनको लुबनानी बन के घर में रखवा।

18 इनके 'अलावा बादशाह ने हाथी दाँत का एक बड़ा तख्त बनाया, और उस पर सबसे चोखा सोना मंडा। 19 उस तख्त में छः सीढ़ियाँ थीं, और तख्त के ऊपर का हिस्सा पीछे से गोल था, और बैठने की जगह की दोनों तरफ़ टेकें थीं, और टेकों के पास दो शेर खड़े थे: 20 और उन छः सीढ़ियों के इधर और उधर बारह शेर खड़े थे। किसी हुकूमत में ऐसा कभी नहीं बना। 21 और सुलेमान बादशाह के पीने के सब बरतन सोने के थे, और लुबनानी बन के घर के भी सब बरतन खालिस सोने के थे, चाँदी का एक भी न था, क्योंकि सुलेमान के दिनों में उसकी कुछ क़दर न थी। 22 क्योंकि बादशाह के पास समुन्दर में हीराम के बेड़े के साथ एक तरसीस बेड़ा भी था। यह तरसीसी बेड़ा तीन साल में एक बार आता था, और सोना और चाँदी और हाथी दाँत, और बन्दर, और मोर लाता था। 23 इसलिए सुलेमान बादशाह दौलत और हिकमत में ज़मीन के सब बादशाहों पर सबक़त ले गया। 24 और सारा जहान सुलेमान के दीदार का तालिब था, ताकि उसकी हिकमत को जो खुदा ने उसके दिल में डाली थी सुनें, 25 और उनमें से हर एक आदमी चाँदी के बर्तन, और सोने के बरतन कपड़े और हथियार और मसाल्ले और घोड़े, और खच्चर हदिये के तौर पर अपने हिस्से के मुवाफ़िक़ लाता था। 26 और सुलेमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर लिए; उसके पास एक हजार चार सौ रथ और बारह हजार सवार थे, जिनको उसने रथों के शहरों में और बादशाह के साथ येरूशलेम में रखा। 27 और बादशाह ने येरूशलेम में इफ़रात की वजह से चाँदी को तो ऐसा कर दिया जैसे पत्थर, और देवदारों को ऐसा जैसे नशेब के मुल्क के गूलर के दरख्त होते हैं। 28 और जो घोड़े सुलेमान के पास थे वह मिस्र से मगाए गए थे, और बादशाह के सौदागर एक एक झुण्ड की क़ीमत लगाकर उनके झुण्ड के झुण्ड लिया करते थे। 29 और एक रथ चाँदी की छः सौ मिस्काल में आता और मिस्र से रवाना होता, और घोड़ा डेढ़ सौ मिस्काल में आता था, और ऐसे ही हित्तियों के सब बादशाहों और अरामी बादशाहों के लिए, वह इनको उन्हीं के ज़रिए' से मंगाते थे।

11

???????? ?? ????? ?? ?????????

1 और सुलेमान बादशाह फिर 'औन की बेटा के 'अलावा बहुत सी अजनबी 'औरतों से, या 'नी मोआबी, 'अम्मोनी, अदोमी, सैदानी और हित्ती औरतों से मुहब्बत करने लगा; 2 यह उन क़ौमों की थीं जिनके बारे में खुदावन्द ने बनी — इस्राईल से कहा था कि तुम उनके बीच न जाना, और न वह तुम्हारे बीच आएँ, क्योंकि

वह ज़रूर तुम्हारे दिलों को अपने मा'बूदों की तरफ़ माइल कर लेंगी "सुलेमान इन्हीं के 'इश्क़ का दम भरने लगा। 3 और उसके पास सात सौ शाहज़ादियाँ उसकी बीवियाँ और तीन सौ बाँदी थीं, और उसकी बीवियों ने उसके दिल को फेर दिया। 4 क्योंकि जब सुलेमान बुढ़ा हो गया, तो उसकी बीवियों ने उसके दिल को ग़ैर मा'बूदों की तरफ़ माइल कर लिया; और उसका दिल खुदावन्द अपने खुदा के साथ कामिल न रहा, जैसा उसके बाप दाऊद का दिल था। 5 क्योंकि सुलेमान सैदानियों की देवी इसतारात, और 'अम्मोनियों के नफ़रती मिलकोम की पैरवी करने लगा। 6 और सुलेमान ने खुदावन्द के आगे बदी की, और उसने खुदावन्द की पूरी पैरवी न की जैसी उसके बाप दाऊद ने की थी। 7 फिर सुलेमान ने मोआबियों के नफ़रती क़मोस के लिए उस पहाड़ पर जो येरूशलेम के सामने है, और बनी 'अम्मोन के नफ़रती मोलक के लिए ऊँचा मक़ाम बना दिया। 8 उसने ऐसा ही अपनी सब अजनबी बीवियों की खातिर किया, जो अपने मा'बूदों के सामने खुशबू जलाती और कुर्बानी पेश करती थीं। 9 और खुदावन्द सुलेमान से नाराज़ हुआ, क्योंकि उसका दिल खुदावन्द इस्राईल के खुदा से फिर गया था जिसने उसे दो बार दिखाई देकर 10 उसको इस बात का हुक्म किया था कि वह ग़ैर मा'बूदों की पैरवी न करे; लेकिन उसने वह बात न मानी जिसका हुक्म खुदावन्द ने दिया था। 11 इस वजह से खुदावन्द ने सुलेमान को कहा, चूँकि तुझ से यह काम हुआ, और तू ने मेरे 'अहद और मेरे क़ानून को जिनका मैंने तुझे हुक्म दिया नहीं माना, इसलिए मैं हुकूमत को ज़रूर तुझ से छीनकर तेरे खादिम को दूँगा। 12 तोभी तेरे बाप दाऊद की खातिर मैं तेरे दिनों में यह नहीं करूँगा; बल्कि उसे तेरे बेटे के हाथ से छीनूँगा। 13 फिर भी मैं सारी हुकूमत को नहीं छीनूँगा, बल्कि अपने बन्दे दाऊद की खातिर और येरूशलेम की खातिर, जिसे मैंने चुन लिया है, एक क़बीला तेरे बेटे को दूँगा। 14 तब खुदावन्द ने अदोमी हदद को सुलेमान का मुखालिफ़ बना कर खड़ा किया, यह अदोम की शाही नसल से था। 15 क्योंकि जब दाऊद अदोम में था और लश्कर का सरदार योआब अदोम में हर एक आदमी को क़त्ल करके उन मक्तूलों को दफ़न करने गया, 16 क्योंकि योआब और सब इस्राईल छः महीने तक वहीं रहे, जब तक कि उसने अदोम में हर एक आदमी को क़त्ल न कर डाला। 17 तो हदद कई एक अदोमियों के साथ, जो उसके बाप के मुलाज़िम थे, मिस्र को जाने को भाग निकला, उस वक़्त हदद छोटा लड़का ही था। 18 और वह मिदियान से निकलकर फ़ारान में आए, और फ़ारान

से लोग साथ लेकर शाह — ए — मिस्र फिर'औन के पास मिस्र में गए। उसने उसको एक घर दिया और उसके लिए खुराक मुकर्रर की और उसे जागीर दी।¹⁹ और हदद की फिर'औन के सामने इतना रसूख हासिल हुआ कि उसने अपनी साली, या'नी मलिका तहफनीस की बहन उसी को ब्याह दी।²⁰ और तहफनीस की बहन के उससे उसका बेटा जनूबत पैदा हुआ जिसका दूध तहफनीस ने फिर'औन के महल में छुड़ाया; और जनूबत फिर'औन के बेटों के साथ फिर'औन के महल में रहा।²¹ इसलिए जब हदद ने मिस्र में सुना कि दाऊद अपने बाप — दादा के साथ सो गया और लश्कर का सरदार योआब भी मर गया है, तो हदद ने फिर'औन से कहा, मुझे रखसत कर दे, ताकि मैं अपने मुल्क को चला जाऊँ।”²² तब फिर'औन ने उससे कहा, “भला तुझे मेरे पास किस चीज़ की कमी हुई कि तू अपने मुल्क को जाने के लिए तैयार है?” उसने कहा, “कुछ नहीं, फिर भी तू मुझे जिस तरह हो रखसत ही कर दे।”²³ और खुदा ने उसके लिए एक और मुखालिफ़ इलीयदा के बेटे रज़ोन को खड़ा किया, जो अपने आक्रा ज़ोबाह के बादशाह हदद'एलियाज़र के पास से भाग गया था;²⁴ और उसने अपने पास लोग जमा कर लिए, और जब दाऊद ने ज़ोबाह वालों को क़त्ल किया, तो वह एक फ़ौज का सरदार हो गया; और वह दमिश्क़ को जाकर वहीं रहने और दमिश्क़ में हुकूमत करने लगे।²⁵ इसलिए हदद की शरारत के 'अलावा यह भी सुलेमान की सारी उम्र इस्राईल का दुश्मन रहा; और उसने इस्राईल से नफ़रत रखी और अराम पर हुकूमत करता रहा।²⁶ और सरीदा के इफ़राईमी नबात का बेटा यरूबोआम, जो सुलेमान का मुलाज़िम था और जिसकी माँ का नाम, जो बेवा थी, सरूआ था; उसने भी बादशाह के खिलाफ़ अपना हाथ उठाया।²⁷ और बादशाह के खिलाफ़ उसके हाथ उठाने की यह वजह हुई कि बादशाह मिल्लो को बनाता था, और अपने बाप दाऊद के शहर के रखने की मरम्मत करता था।²⁸ और वह शख्स यरूबोआम एक ताक़तवर सूमा था, और सुलेमान ने उस जवान को देखा कि मेहनती है, इसलिए उसने उसे बनी यूसुफ़ के सारे काम पर मुस्तार बना दिया।²⁹ उस वक़्त जब युरब'आम येरूशलेम से निकल कर जा रहा था, तो सैलानी अखियाह नबी उसे रास्ते में मिला, और अखियाह एक नई चादर ओढ़े हुए था; यह दोनों मैदान में अकेले थे।³⁰ इसलिए अखियाह ने उस नई चादर को जो उस पर थी लेकर उसके बारह टुकड़े फाड़े।³¹ और उसने युरब'आम से कहा कि “तू अपने लिए दस टुकड़े ले ले; क्योंकि खुदावन्द इस्राईल का खुदा ऐसा

कहता है कि देख, मैं सुलेमान के हाथ से हुकूमत छीन लूँगा, और दस क़बीले तुझे दूँगा।³² लेकिन मेरे बन्दे दाऊद की खातिर और येरूशलेम या'नी उस शहर की खातिर, जिसे मैंने बनी — इस्राईल के सब क़बीलों में से चुन लिया है, एक क़बीला उसके पास रहेगा³³ क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और सैदानियों की देवी इस्तारात और मोआबियों के मा'बूद कमोस और बनी 'अमोन के मा'बूद मिलकोम की इबादत की है, और मेरे रास्तों पर न चले कि वह काम करते जो मेरी नज़र में भला था, और मेरे क़ानून और अहक़ाम को मानते जैसा उसके बाप दाऊद ने किया।³⁴ फिर भी मैं सारी मुल्क उसके हाथ से नहीं ले लूँगा, बल्कि अपने बन्दा दाऊद की खातिर, जिसे मैंने इसलिए चुन लिया कि उसने मेरे अहक़ाम और क़ानून माने, मैं इसकी उम्र भर इसे पेशवा बनाए रखूँगा।³⁵ लेकिन उसके बेटे के हाथ से हुकूमत या'नी दस क़बीलों को लेकर तुझे दूँगा;³⁶ और उसके बेटे को एक क़बीला दूँगा, ताकि मेरे बन्दे दाऊद का चरागा येरूशलेम, या'नी उस शहर में जिसे मैंने अपना नाम रखने के लिए चुन लिया है, हमेशा मेरे आगे रहे।³⁷ और मैं तुझे लूँगा, और तू अपने दिल की पूरी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ हुकूमत करेगा और इस्राईल का बादशाह होगा।³⁸ और ऐसा होगा कि अगर तू उन सब बातों को जिनका मैं तुझे हुक्म दूँ सुने, और मेरी रास्तों पर चले, और जो काम मेरी नज़र में भला है उसको करे, और मेरे क़ानून और अहक़ाम को माने, जैसा मेरे बन्दा दाऊद ने किया, तो मैं तेरे साथ रहूँगा, और तेरे लिए एक मज़बूत घर बनाऊँगा, जैसा मैंने दाऊद के लिए बनाया, और इस्राईल को तुझे दे दूँगा।³⁹ और मैं इसी वजह से दाऊद की नसल को दुख दूँगा, लेकिन हमेशा तक नहीं।”⁴⁰ इसलिए सुलेमान युरब'आम के क़त्ल के पीछे पड़ गया, लेकिन युरब'आम उठकर मिस्र को शाह — ए — मिस्र सीसक के पास भाग गया और सुलेमान की वफ़ात तक मिस्र में रहा।⁴¹ सुलेमान का बाक़ी हाल और सब कुछ जो उसने किया और उसकी हिकमत: इसलिए क्या वह सुलेमान के अहवाल की किताब में दर्ज नहीं? ⁴² और वह मुद्दत जिसमें सुलेमान ने येरूशलेम में सब इस्राईल पर हुकूमत की चालीस साल की थी।⁴³ और सुलेमान अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और अपने बाप दाऊद के शहर में दफ़न हुआ, और उसका बेटा रहुब'आम उसकी जगह बादशाह हुआ।

1 और रहुब'आम सिकम को गया, क्योंकि सारा इस्राईल उसे बादशाह बनाने की सिकम को गया था। 2 और जब नबात के बेटे युरब'आम ने, जो अभी मिस्र में था, यह सुना; क्योंकि युरब'आम सुलेमान बादशाह के सामने से भाग गया था, और वह मिस्र में रहता था: 3 इसलिए उन्होंने लोग भेजकर उसे बुलवाया तो यरुब'आम और इस्राईल की सारी जमा'अत आकर रहुब'आम से ऐसे कहने लगी कि। 4 “तेरे बाप ने हमारा बोझ सख्त कर दिया था; तब तू अब अपने बाप की उस सख्त खिदमत को और उस भारी बोझ को, जो उसने हम पर रखा, हल्का कर दे, और हम तेरी खिदमत करेंगे।” 5 तब उसने उनसे कहा, “अभी तुम तीन दिन के लिए चले जाओ, तब फिर मेरे पास आना।” तब वह लोग चले गए। 6 और रहुब'आम बादशाह ने उन उम्र दराज लोगों से जो उसके बाप सुलेमान के जीते जी उसके सामने खड़े रहते थे, सलाह ली और कहा कि “इन लोगों को जवाब देने के लिए तुम मुझे क्या सलाह देते हो?” 7 उन्होंने उससे यह कहा कि “अगर तू आज के दिन इस क्रौम का खादिम बन जाए, और उनकी खिदमत करे और उनको जवाब दे और उनसे मीठी बातें करे, तो वह हमेशा तेरे खादिम बने रहेंगे।” 8 लेकिन उसने उन उम्र दराज लोगों की सलाह जो उन्होंने उसे दी, छोड़कर उन जवानों से जो उसके साथ बड़े हुए थे और उसके सामने खड़े थे, सलाह ली; 9 और उनसे पूछा कि “तुम क्या सलाह देते हो, ताकि हम इन लोगों को जवाब दे सकें जिन्होंने मुझ से ऐसा कहा है कि उस बोझ को जो तेरे बाप ने हम पर रखवा हल्का कर दे?” 10 इन जवानों ने जो उसके साथ बड़े हुए थे उससे कहा, तू उन लोगों को ऐसा जवाब देना जिन्होंने तुझ से कहा है कि तेरे बाप ने हमारे बोझ को भारी किया, तू उसको हमारे लिए हल्का कर दे “तब तू उनसे ऐसा कहना कि मेरी छिगुली मेरे बाप की कमर से भी मोटी है। 11 और अब अगर मेरे बाप ने भारी बोझ तुम पर रखवा है, तो भी मैं तुम्हारे बोझ को और ज्यादा भारी करूँगा, मेरे बाप ने तुम को कोड़ों से ठीक किया, मैं तुम को बिच्छुओं से ठीक बनाऊँगा।” 12 तब युरब'आम और सब लोग तीसरे दिन रहुब'आम के पास हाज़िर हुए, जैसा बादशाह ने उनको हुक्म दिया था कि “तीसरे दिन मेरे पास फिर आना।” 13 और बादशाह ने उन लोगों को सख्त जवाब दिया और उम्र दराज लोगों की उस सलाह को जो उन्होंने उसे दी थी छोड़ दिया, 14 और जवानों की सलाह के मुवाफ़िक़ उनसे यह कहा कि “मेरे बाप ने तो तुम पर भारी बोझ रखा, लेकिन मैं तुम्हारे बोझ को ज्यादा भारी करूँगा; मेरे

बाप ने तुम को कोड़ों से ठीक किया, लेकिन मैं तुम को बिच्छुओं से ठीक बनाऊँगा।” 15 इसलिए बादशाह ने लोगों की न सुनी क्योंकि यह मु'आमिला खुदावन्द की तरफ़ से था, ताकि खुदावन्द अपनी बात को जो उसने सैलानी अखियाह की ज़रिए नबात के बेटे युरब'आम से कही थी पूरा करे। 16 और जब सारे इस्राईल ने देखा कि बादशाह ने उनकी न सुनी तो उन्होंने बादशाह को ऐसा जवाब दिया कि “दाऊद में हमारा क्या हिस्सा है? यस्सी के बेटे में हमारी मीरास नहीं। ऐ इस्राईल, अपने डेरो को चले जाओ; और अब ऐ दाऊद तू अपने घर को संभाल! तब इस्राईली अपने डेरों को चल दिए।” 17 लेकिन जितने इस्राईली यहूदाह के शहरों में रहते थे उन पर रहुब'आम हुक्मत करता रहा। 18 फिर रहुब'आम बादशाह ने अदूराम को भेजा जो बेगारियों के ऊपर था, और सारे इस्राईल ने उस पर पथराव किया और वह मर गया। तब रहुब'आम बादशाह ने अपने रथ पर सवार होने में जल्दी की ताकि येरूशलेम को भाग जाए। 19 ऐसे इस्राईल दाऊद के घराने से बागी हुआ और आज तक है। 20 जब सारे इस्राईल ने सुना कि युरब'आम लौट आया है, तो उन्होंने लोग भेज कर उसे जमा'अत में बुलवाया और उसे सारे इस्राईल का बादशाह बनाया, और यहूदाह के कबीले के अलावा किसी ने दाऊद के घराने की पैरवी न की। 21 जब रहुब'आम येरूशलेम में पहुँचा तो उसने यहूदाह के सारे घराने और बिनयमीन के कबीले को, जो सब एक लाख अस्सी हजार चुने हुए जंगी मर्द थे, इकट्ठा किया ताकि वह इस्राईल के घराने से लड़कर हुक्मत को फिर सुलेमान के बेटे रहुब'आम के कब्जे में करा दें। 22 लेकिन समायह को जो मर्द — ए — खुदा था, खुदा का यह पैग़ाम आया 23 कि “यहूदाह के बादशाह सुलेमान के बेटे रहुब'आम और यहूदाह और बिनयमीन के सारे घराने और क्रौम के बाकी लोगों से कह कि 24 खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि: तुम चढ़ाई न करो और न अपने भाइयों बनी — इस्राईल से लड़ो, बल्कि हर शख्स अपने घर को लौटे, क्योंकि यह बात मेरी तरफ़ से है।” इसलिए उन्होंने खुदावन्द की बात मानी और खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक़ लौटे और अपना रास्ता लिया। 25 तब युरब'आम ने इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क में सिकम को ता'मीर किया और उसमें रहने लगा, और वहाँ से निकल कर उसने फ़नूएल को ता'मीर किया। 26 और युरब'आम ने अपने दिल में कहा कि “अब हुक्मत दाऊद के घराने में फिर चली जाएगी। 27 अगर यह लोग येरूशलेम में खुदावन्द के घर में कुर्बानी अदा करने को

जाया करें, तो इनके दिल अपने मालिक, या'नी यहूदाह के बादशाह रहुब'आम, की तरफ़ माइल होंगे और वह मुझ को क़त्ल करके शाह — ए — यहूदाह रहुब'आम की तरफ़ फिर जाएँगे।” 28 इसलिए उस बादशाह ने सलाह लेकर सोने के दो बछड़े बनाए और लोगों से कहा, “येरूशलेम को जाना तुम्हारी ताक़त से बाहर है; ऐ इस्राईल, अपने मा'बूदों को देख, जो तुझे मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाए।” 29 और उसने एक को बैतएल में क़ाईम किया, दूसरे को दान में रखा। 30 और यह गुनाह का ज़रिए' ठहरा, क्योंकि लोग उस एक की इबादत करने के लिए दान तक जाने लगे। 31 और उसने ऊँची जगहों के घर बनाए, और लोगों में से जोबनी लावी न थे काहिन बनाए। 32 और युरब'आम ने आठवें महीने की पन्द्रहवीं तारीख के लिए, उस ईद की तरह जो यहूदाह में होती है एक ईद ठहराई और उस मज़बह के पास गया, ऐसा ही उसने बैतएल में किया; और उन बछड़ों के लिए जो उसने बनाए थे कुर्बानी पेशकी, और उसने बैतएल में अपने बनाए हुए ऊँचे मक़ामों के लिए काहिनों को रखवा। 33 और आठवें महीने की पन्द्रहवीं तारीख की, या'नी उस महीने में जिसे उसने अपने ही दिल से ठहराया था, वह उस मज़बह के पास जो उसने बैतएल में बनाया था गया, और बनी — इस्राईल के लिए ईद ठहराई और खुशबू जलाने को मज़बह के पास गया।

13

2222 22 22222'22 22 2222222 22 2222222 2222

1 और देखो, खुदावन्द के हुक्म से एक नबी यहूदाह से बैतएल में आया, और युरब'आम खुशबू जलाने को मज़बह के पास खड़ा था। 2 और वह खुदावन्द के हुक्म से मज़बह के खिलाफ़ चिल्लाकर कहने लगा, ऐ मज़बह, ऐ मज़बह! खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि “देख, दाऊद के घराने से एक लड़का बनाम यूसियाह पैदा होगा। तब वह ऊँचे मक़ामों के काहिनों की, जो तुझ पर खुशबू जलाते हैं, तुझ पर कुर्बानी करेगा और वह आदमियों की हड्डियाँ तुझ पर जलाएँगे।” 3 और उसने उसी दिन एक निशान दिया और कहा, वह निशान जो खुदावन्द ने बताया है, “यह है कि देखो, मज़बह फट जाएगा और वह राख जो उस पर है गिर जाएगी।” 4 और ऐसा हुआ कि जब बादशाह ने उस नबी का कलाम, जो उसने बैतएल में मज़बह के खिलाफ़ चिल्ला कर कहा था, सुना तो युरब'आम ने मज़बह पर से पकड़ लो! और उसका वह हाथ जो उसने उसकी तरफ़ बढ़ाया था खुशक हो गया,

ऐसा कि वह उसे फिर अपनी तरफ़ खींच न सका। 5 और उस निशान के मुताबिक़ जो उस नबी ने खुदावन्द के हुक्म से दिया था, वह मज़बह भी फट गया और राख मज़बह पर से गिर गई। 6 तब बादशाह ने उस नबी से कहा कि “अब खुदावन्द अपने खुदा से इल्तिजा कर और मेरे लिए दुआ कर, ताकि मेरा हाथ मेरे लिए फिर बहाल हो जाए।” तब उस नबी ने खुदावन्द से इल्तिजा की और बादशाह का हाथ उसके लिए बहाल हुआ, और जैसा पहले था वैसा ही हो गया। 7 और बादशाह ने उस नबी से कहा कि “मेरे साथ घर चल और ताज़ा दम हो, और मैं तुझे इनाम दूँगा।” 8 उस नबी ने बादशाह को जवाब दिया कि “अगर तू अपना आधा घर भी मुझे दे, तो भी मैं तेरे साथ नहीं जाने का और न मैं इस जगह रोटी खाऊँ और न पानी पियूँ। 9 क्योंकि खुदावन्द का हुक्म मुझे ताकीद के साथ यह हुआ है कि तू न रोटी खाना न पानी पीना, न उस रास्ते से लौटना जिससे तू जाए।” 10 तब वह दूसरे रास्ते से गया और जिस रास्ते से बैतएल में आया था उससे न लौटा। 11 और बैतएल में एक बुढ़ा नबी रहता था, तब उसके बेटों में से एक ने आकर वह सब काम जो उस नबी ने उस दिन बैतएल में किए उसे बताए, और जो बातें उसने बादशाह से कहीं थीं उनको भी अपने बाप से बयान किया। 12 और उनके बाप ने उनसे कहा, “वह किस रास्ते से गया?” उसके बेटों ने देख लिया था कि वह नबी जो यहूदाह से आया था, किस रास्ते से गया है। 13 तब उसने अपने बेटों से कहा, “मेरे लिए गधे पर ज़ीन कस दो।” तब उन्होंने उसके लिए गधे पर ज़ीन कस दिया और वह उस पर सवार हुआ, 14 और उस नबी के पीछे चला और उसे बलूत के एक दरख़्त के नीचे बैठे पाया। तब उसने उससे कहा, “क्या तू वही नबी है जो यहूदाह से आया था?” उसने कहा, “हाँ।” 15 तब उसने उससे कहा, “मेरे साथ घर चल और रोटी खा।” 16 उसने कहा, मैं तेरे साथ लौट नहीं सकता और न तेरे घर जा सकता हूँ, और मैं तेरे साथ इस जगह न रोटी खाऊँ न पानी पियूँ। 17 क्योंकि खुदावन्द का मुझ को यूँ हुक्म हुआ है कि “तू वहाँ न रोटी खाना न पानी पीना, और न उस रास्ते से होकर लौटना जिससे तू जाए।” 18 तब उसने उससे कहा, “मैं भी तेरी तरह नबी हूँ, और खुदावन्द के हुक्म से एक फ़रिश्ते ने मुझ से यह कहा कि उसे अपने साथ अपने घर में लौटा कर ले आ, ताकि वह रोटी खाए और पानी पिए।” लेकिन उसने उससे झूठ कहा। 19 इसलिए वह उसके साथ लौट गया और उसके घर में रोटी खाई और पानी पिया। 20 जब वह दस्तरख़्वान पर बैठे थे तो खुदावन्द का कलाम उस नबी पर, जो उसे

लौटा लाया था, नाज़िल हुआ। ²¹ और उसने उस नबी से, जो यहूदाह से आया था, चिल्ला कर कहा, खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है, “इसलिए कि तू ने खुदावन्द के कलाम से नाफ़रमानी की, और उस हुक्म को नहीं माना जो खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझे दिया था। ²² बल्कि तू लौटा आया और तू ने उसी जगह जिसके ज़रिए खुदावन्द ने तुझे फ़रमाया था कि न रोटी खाना, न पानी पीना, रोटी भी खाई और पानी भी पिया; इसलिए तेरी लाश तेरे बाप दादा की क़ब्र तक नहीं पहुँचेगी।” ²³ जब वह रोटी खा चुका और पानी पी चुका, तो उसने उसके लिए या'नी उस नबी के लिए जिसे वह लौटा लाया था, गधे पर ज़ीन कस दिया। ²⁴ जब वह खाना हुआ तो रास्ते में उसे एक शेर मिला जिसने उसे मार डाला, इसलिए उसकी लाश रास्ते में पड़ी रही और गधा उसके पास खड़ा रहा, शेर भी उस लाश के पास खड़ा रहा। ²⁵ और लोग उधर से गुज़रे और देखा कि लाश रास्ते में पड़ी है और शेर लाश के पास खड़ा है, फिर उन्होंने उस शहर में जहाँ वह बुढ़ा नबी रहता था यह बताया। ²⁶ और जब उस नबी ने, जो उसे रास्ते से लौटा लाया था, यह सुना तो कहा, “यह वही नबी है जिसने खुदावन्द के कलाम की नाफ़रमानी की, इसी लिए खुदावन्द ने उसको शेर के हवाले कर दिया; और उसने खुदावन्द के उस सुखन के मुताबिक़ जो उसने उससे कहा था, उसे फाड़ा और मार डाला।” ²⁷ फिर उसने अपने बेटों से कहा कि “मेरे लिए गधे पर ज़ीन कस दो।” इसलिए उन्होंने ज़ीन कस दिया। ²⁸ तब वह गया और उसने उसकी लाश रास्ते में पड़ी हुई, और गधे और शेर को लाश के पास खड़े पाया; क्योंकि शेर ने न लाश को खाया और न गधे को फाड़ा था। ²⁹ तब उस नबी ने उस नबी की लाश उठाकर उसे गधे पर रखा और ले आया, और वह बुढ़ा नबी उस पर मातम करने और उसे दफ़न करने को अपने शहर में आया। ³⁰ और उसने उसकी लाश को अपनी क़ब्र में रखा, और उन्होंने उस पर मातम किया और कहा, 'हाय, मेरे भाई!’ ³¹ और जब वह उसे दफ़न कर चुका, तो उसने अपने बेटों से कहा कि “जब मैं मर जाऊँ, तो मुझ को उसी क़ब्र में दफ़न करना जिसमें यह नबी दफ़न हुआ है। मेरी हड्डियाँ उसकी हड्डियों के बराबर रखना।” ³² इसलिए कि वह बात जो उसने खुदावन्द के हुक्म से बैतएल के मज़बह के खिलाफ़ और उन सब ऊँचे मक़ामों के घरों के खिलाफ़, जो सामरिया के कस्बों में हैं, कही है ज़रूर पूरी होगी।” ³³ इस माजरे के बाद भी युरब'आम अपनी बुरे रास्ते से बाज़ न आया, बल्कि उसने 'अवाम में से ऊँचे मक़ामों के काहिन ठहराए; जिस किसी ने चाहा उसे उसने मख़सूस

किया, ताकि ऊँचे मक़ामों के लिए काहिन हों। ³⁴ और यह काम युरब'आम के घराने के लिए, उसे काट डालने और उसे रू — ए — ज़मीन पर से मिटा और बरबाद करने के लिए गुनाह ठहरा।

14

???????? ?? ??????? ?? ?????????
???????

¹ उस वक़्त युरब'आम का बेटा अबियाह बीमार पड़ा। ² और युरब'आम ने अपनी बीवी से कहा, “ज़रा उठ कर अपना भेस बदल डाल, ताकि पहचान न हो सके कि तू युरब'आम की बीवी है, और शीलोह को चली जा। देख, अखियाह नबी वहाँ है जिसने मेरे बारे में कहा था कि मैं इस क़ौम का बादशाह हूँगा। ³ और दस रोटियाँ और पपड़ियाँ और शहद का एक मर्तबान अपने साथ ले, और उसके पास जा; वह तुझे बता देगा कि लड़के का क्या हाल होगा।” ⁴ तब युरब'आम की बीवी ने ऐसा ही किया, और उठकर शीलोह को गई और अखियाह के घर पहुँची; लेकिन अखियाह को कुछ नज़र नहीं आता था, क्योंकि बुढ़ापे की वजह से उसकी आँखें रह गई थीं। ⁵ और खुदावन्द ने अखियाह से कहा, “देख, युरब'आम की बीवी तुझ से अपने बेटे के बारे में पूछने आ रही है, क्योंकि वह बीमार है। तब तू उससे ऐसा ऐसा कहना, क्योंकि जब वह अन्दर आएगी तो अपने आपको दूसरी 'औरत बनाएगी।” ⁶ और जैसे ही वह दरवाज़े से अन्दर आई, और अखियाह ने उसके पाँव की आहट सुनी तो उसने उससे कहा, “ऐ युरब'आम की बीवी, अन्दर आ! तू क्यों अपने को दूसरी बनाती है? क्योंकि मैं तो तेरे ही पास सख़्त पैग़ाम के साथ भेजा गया हूँ।” ⁷ इसलिए जाकर युरब'आम से कह, 'खुदावन्द इस्राईल का खुदा ऐसा फ़रमाता है, हालाँकि मैंने तुझे लोगों में से लेकर सरफ़राज़ किया, और अपनी क़ौम इस्राईल पर तुझे बादशाह बनाया। ⁸ और दाऊद के घराने से हुक्मत छीन ली और तुझे दी; तोभी तू मेरे बन्दे दाऊद की तरह न हुआ, जिसने मेरे हुक्म माने और अपने सारे दिल से मेरी पैरवी की ताकि सिर्फ़ वही करे जो मेरी नज़र में ठीक था, ⁹ लेकिन तू ने उन सभी से जो तुझ से पहले हुए ज्यादा बदी की, और जाकर अपने लिए और और मा'बूद और ढाले हुए बुत बनाए ताकि मुझे गुस्सा दिलाए; बल्कि तू ने मुझे अपनी पीठ के पीछे फेंका। ¹⁰ इसलिए देख, मैं युरब'आम के घराने पर बला नाज़िल करूँगा, और युरब'आम की नसल के हर एक लड़के को, यानी हर एक को जो इस्राईल में बन्द है और उसको जो आज़ाद

उसकी सारी उम्र जंग रही; ⁷ और अबियाम का बाक्री हाल और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं है? और अबियाम और युरब'आम में जंग होती रही। ⁸ और अबियाम अपने बाप दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में दफन किया; और उसका बेटा आसा उसकी जगह बादशाह हुआ। ⁹ शाह — ए — इस्राईल युरब'आम के बीसवें साल से आसा यहूदाह पर हुकूमत करने लगा। ¹⁰ उसने इकतालीस साल येरूशलेम में हुकूमत की; उस की माँ का नाम मा'काथा, जो अबीसलोम की बेटी थी। ¹¹ और आसा ने अपने बाप दाऊद की तरह वह काम किया जो खुदावन्द की नज़र में ठीक था। ¹² उसने लूतियों को मुल्क से निकाल दिया, और उन सब बुतों को जिनको उसके बाप दादा ने बनाया था दूर कर दिया। ¹³ और उसने अपनी माँ मा'का को भी मलिका के रुतबे से उतार दिया, क्योंकि उसने एक यसीरत के लिए एक नफ़रत अंगेज़ बुत बनाया था। तब आसा ने उसके बुत को काट डाला और वादी — ए — क्रिद्रोन में उसे जला दिया। ¹⁴ लेकिन ऊँचे मक़ाम ढाए न गए, तोभी आसा का दिल उम्र भर खुदावन्द के साथ कामिल रहा। ¹⁵ और उसने वह चीज़ें जो उसके बाप ने नज़र की थीं, और वह चीज़ें जो उसने आप नज़र की थीं, या'नी चाँदी और सोना और बर्तन, सबको खुदावन्द के घर में दाखिल किया। ¹⁶ आसा और शाह — ए — इस्राईल बाशा में उनकी उम्र भर जंग रही। ¹⁷ और शाह — ए — इस्राईल बाशा ने यहूदाह पर चढ़ाई की और रामा को बनाया, ताकि शाह — ए — यहूदाह आसा के पास किसी की आना जाना न हो सके। ¹⁸ तब आसा ने सब चाँदी और सोने को, जो खुदावन्द के घर के खज़ानों में बाक्री रहा था, और शाही महल के खज़ानों को लेकर उनको अपने खादिमों के हवाले किया, और आसा बादशाह ने उनको शाह — ए — अराम बिनहदद के पास, जो हज़ियून के बेटे तब रिम्मून का बेटा था और दमिश्क में रहता था, रवाना किया और कहला भेजा, ¹⁹ कि “मेरे और तेरे बीच और मेरे बाप और तेरे बाप के बीच 'अहद — ओ — पैमान है। देख, मैंने तेरे लिए चाँदी और सोने का हदिया भेजा है; तब तू आकर शाह — ए — इस्राईल बा'शा से 'अहद को तोड़दे, ताकि वह मेरे पास से चला जाए।” ²⁰ और बिन हदद ने आसा बादशाह की बात मानी और अपने लश्कर के सरदारों को इस्राईली शहरों पर चढ़ाई करने को भेजा, और 'अय्यून और दान और अबील बैत मा'का और सारे किनरत और नफ़ताली के सारे मुल्क को मारा। ²¹ जब बाशा ने यह सुना तो रामा के बनाने से हाथ खींचा

और तिरज़ा में रहने लगा। ²² तब आसा बादशाह ने सारे यहूदाह में 'एलान कराया और कोई छोड़ा न गया; तब वह रामा के पत्थर को और उसकी लकड़ियों को, जिन से बा'शा उसे ता'मीर कर रहा था, उठा ले गए; और आसा बादशाह ने उनसे बिनयमीन के जिबा' और मिसफ़ाह को बनाया। ²³ आसा का बाक्री सब हाल और उसकी सारी ताक़त, और सब कुछ जो उसने किया, और जो शहर उसने बनाए, तो क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में क़लमबन्द नहीं है? लेकिन उसके बुढ़ापे के वक़्त में उसे पाँवों का रोग लग गया। ²⁴ और आसा अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और अपने बाप — दादा के साथ अपने बाप दाऊद के शहर में दफन हुआ; और उसका बेटा यहूसफ़त उसकी जगह बादशाह हुआ। ²⁵ शाह — ए — यहूदाह आसा की हुकूमत के दूसरे साल से युरब'आम का बेटा नदब इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, और उसने इस्राईल पर दो साल हुकूमत की। ²⁶ और उसने खुदावन्द की नज़र में बदी की और अपने बाप की रास्ते और उसके गुनाह के चाल चलन इस्त्रियार किए, जिससे उसने इस्राईल से गुनाह कराया था। ²⁷ अखियाह के बेटे बा'शा ने, जो इश्कार के घराने का था, उसके खिलाफ़ साज़िश की और बाशा ने जिब्बतून में, जो फ़िलिस्तियों का था, उसे क़त्ल किया; क्योंकि नदब और सारे इस्राईल ने जिब्बतून का घेरा कर रखा था। ²⁸ शाह — ए — यहूदाह आसा के तीसरे ही साल बाशा ने उसे क़त्ल किया, और उसकी जगह हुकूमत करने लगा। ²⁹ और जूँही वह बादशाह हुआ उसने युरब'आम के सारे घराने को क़त्ल किया; और जैसा खुदावन्द ने अपने खादिम अखियाह सैलानी की ज़रिए' फ़रमाया था, उसने युरब'आम के लिए किसी साँस लेने वाले को भी, जब तक उसे हलाक न कर डाला, न छोड़ा। ³⁰ युरब'आम के उन गुनाहों की वजह से जो उसने खुद किए, और जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया, और उसके उस गुस्सा दिलाने की वजह से, जिससे उसने खुदावन्द इस्राईल के खुदा के ग़ज़ब को भड़काया। ³¹ और नदब का बाक्री हाल और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में क़लमबन्द नहीं? ³² आसा और शाह — ए — इस्राईल बा'शा के दर्मियान उनकी उम्र भर जंग रही। ³³ शाह — ए — यहूदाह आसा के तीसरे साल से अखियाह का बेटा बा'शा तिरज़ा में सारे इस्राईल पर बादशाही करने लगा, और उसने चौबीस साल हुकूमत की। ³⁴ और उसने खुदावन्द की नज़र में बदी की, और युरब'आम की रास्ते और उसके गुनाह के

चाल चलन इस्लियार किया जिससे उसने इस्राईल से गुनाह कराया।

16

¹ और हनानी के बेटे याहू पर खुदावन्द का यह कलाम बा'शा के खिलाफ़ नाज़िल हुआ, ² “इसलिए के मैंने तुझे खाक पर से उठाया और अपनी क्रौम इस्राईल का पेशवा बनाया, और तू युरब'आम की रास्ते पर चला, और तू ने मेरी क्रौम इस्राईल से गुनाह करा के उनके गुनाहों से मुझे गुस्सा दिलाया। ³ इसलिए देख, मैं बा'शा और उसके घराने की पूरी सफ़ाई कर दूँगा और तेरे घराने को नबात के बेटे युरब'आम के घराने की तरह बना दूँगा। ⁴ बा'शा का जो कोई शहर में मरेगा उसे कुत्ते खाएँगे, और जो मैदान में मरेगा उसे हवा के परिन्दे चट कर जाएँगे।” ⁵ बा'शा का बाक़ी हाल और जो कुछ उसने किया और उसकी ताक़त, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं है? ⁶ और बा'शा अपने बाप दादा के साथ सो गया और तिरज़ा में दफ़न हुआ, और उसका बेटा ऐला उसकी जगह बादशाह हुआ। ⁷ और हनानी के बेटे याहू के ज़रिए' खुदावन्द का कलाम बा'शा और उसके घराने के खिलाफ़ उस सारी बदी की वजह से भी नाज़िल हुआ, जो उसने खुदावन्द की नज़र में की और अपने हाथों के काम से उसे गुस्सा दिलाया, और युरब'आम के घराने की तरह बना, और इस वजह से भी कि उसने उसे क़त्ल किया।

२२२२ २२ २२२२२२२२ २२२ २२२२२२२ २२२२

⁸ शाह — ए — यहूदाह आसा के छब्बीसवें साल से बा'शा का बेटा ऐला तिरज़ा में बनी इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, और उसने दो साल हुकूमत की। ⁹ और उसके खादिम ज़िमरी ने, जो उसके आधे रथों का दारोगा था, उसके खिलाफ़ साज़िश की। उस वक़्त वह तिरज़ा में था, और अरज़ा के घर में जो तिरज़ा में उसके घर का दीवान था, शराब पी कर मतवाला होता जाता था। ¹⁰ तब ज़िमरी ने आसा शाह — ए — यहूदाह के सत्ताइसवें साल अन्दर जाकर उस पर वार किया और उसे क़त्ल कर दिया, और उसकी जगह हुकूमत करने लगा। ¹¹ जब वह बादशाही करने लगा, तो तख़्त पर बैठते ही उसने बा'शा के सारे घराने को क़त्ल किया, और न तो उसके रिश्तेदारों का और न उसके दोस्तों का कोई लड़का बाक़ी छोड़ा। ¹² ऐसे ज़िमरी ने खुदावन्द के उस कहे के मुताबिक़, जो उसने बा'शा के खिलाफ़ याहू नबी के ज़रिए' फ़रमाया था, बाशा के सारे घराने को मिटा दिया। ¹³ बाशा के सब गुनाहों और उसके बेटे ऐला के गुनाहों की वजह से जो उन्होंने

किए, और जिनसे उन्होंने इस्राईल से गुनाह कराया, ताकि खुदावन्द इस्राईल के खुदा को अपने बातिल कामों से गुस्सा दिलाएँ। ¹⁴ ऐला का बाक़ी हाल और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में क़लमबन्द नहीं? ¹⁵ शाह — ए — यहूदाह आसा के सत्ताइसवें साल में ज़िमरी ने तिरज़ा में सात दिन बादशाही की; उस वक़्त लोग जिब्वतून के मुकाबिल, जो फ़िलिस्तियों का था, खेमाज़न थे। ¹⁶ और उन लोगों ने, जो खेमाज़न थे, यह चर्चा सुना के ज़िमरी ने साज़िश की और बादशाह को मार भी डाला है, इसलिए सारे इस्राईल ने उमरी को, जो लश्कर का सरदार था, उस दिन लश्करगाह में इस्राईल का बादशाह बनाया। ¹⁷ तब 'उमरी और उसके साथ सारा इस्राईल जिब्वतून से खाना हुआ और उन्होंने तिरज़ा का घेरा कर लिया। ¹⁸ और ऐसा हुआ कि जब ज़िमरी ने देखा कि शहर का घिराव हो गया, तो शाही महल के मज़बूत हिस्से में जाकर शाही महल में आग लगा दी और जल मरा। ¹⁹ अपने उन गुनाहों की वजह से जो उसने किए, कि खुदावन्द की नज़र में बदी की और युरब'आम के रास्ते और उसके गुनाह के चाल चलन इस्लियार किए जो उसने किया, ताकि इस्राईल से गुनाह कराए। ²⁰ ज़िमरी का बाक़ी हाल और जो बगावत उसने की, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में क़लमबन्द नहीं? ²¹ उस वक़्त इस्राईली दो हिस्से हो गए, आधे आदमी जीनत के बेटे तिबनी के पैरोकार हो गए ताकि उसे बादशाह बनाएँ और आधे 'उमरी के पैरोकार थे। ²² लेकिन जो 'उमरी के पैरोकार थे उन पर, जो जीनत के बेटे तिबनी के पैरोकार थे, ग़ालिब आए। इसलिए तिबनी मर गया और उमरी बादशाह हुआ। ²³ शाह — ए — यहूदाह आसा के इकतीसवें साल में उमरी इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, उसने बारह साल हुकूमत की; तिरज़ा में छः साल उसकी हुकूमत रही। ²⁴ और उसने सामरिया का पहाड़ समर से दो किन्तार' चाँदी में ख़रीदा, और उस पहाड़ पर एक शहर बनाया और उस शहर का नाम, जो उसने बनाया था, पहाड़ के मालिक समर के नाम पर सामरिया रखा। ²⁵ और उमरी ने खुदावन्द की नज़र में बदी की, और उन सब से जो उससे पहले हुए बदतर काम किए। ²⁶ क्यूँकि उसने नबात के बेटे युरब'आम की सब रास्तों और उसके गुनाहों की चाल चलन इस्लियार की, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया ताकि वह खुदावन्द इस्राईल के खुदा को अपने बातिल कामों से गुस्सा दिलाएँ। ²⁷ और उमरी के बाक़ी काम जो उसने किए और उसका ज़ोर जो उसने दिखाया,

मिन्नत करता हूँ कि इस लड़के की जान इसमें फिर आ जाए।” 22 और खुदावन्द ने एलियाह की फ़रयाद सुनी और लड़के की जान उसमें फिर आ गई और वह जी उठा। 23 तब एलियाह उस लड़के को उठाकर बालाखाने पर से नीचे घर के अन्दर ले गया, और उसे उसकी माँ के ज़िम्मे किया, और एलियाह ने कहा, “देख, तेरा बेटा ज़िन्दा है।” 24 तब उस 'औरत ने एलियाह से कहा, “अब मैं जान गई कि तू नबी है, और खुदावन्द का जो कलाम तेरे मुँह में है वह सच है।”

18

???????? ???? ???? ?????????

1 और बहुत दिनों के बाद ऐसा हुआ कि खुदावन्द का यह कलाम तीसरे साल एलियाह पर नाज़िल हुआ, कि “जाकर अखीअब से मिल, और मैं ज़मीन पर मेंह बरसाऊँगा।” 2 इसलिए एलियाह अखीअब से मिलने को चला; और सामरिया में सख्त काल था। 3 और अखीअब ने 'अबदियाह को, जो उसके घर का दीवान था, तलब किया और अबदियाह खुदावन्द से बहुत डरता था, 4 क्योंकि जब ईज़बिल ने खुदावन्द के नबियों को क़त्ल किया तो 'अबदियाह ने सौ नबियों को लेकर, पचास पचास करके उनको एक ग़ार में छिपा दिया, और रोटी और पानी से उनको पालता रहा — 5 इसलिए अखीअब ने 'अबदियाह से कहा, “मुल्क में ग़श्त करता हुआ पानी के सब चश्मों और सब नालों पर जा, शायद हम को कहीं घास मिल जाए, जिससे हम घोड़ों और खच्चरों को ज़िन्दा बचा लें ताकि हमारे सब चौपाए जाया न हों।” 6 तब उन्होंने उस पूरे मुल्क में ग़श्त करने के लिए, उसे आपस में तक्रसीम कर लिया; अखीअब अकेला एक तरफ़ चला और 'अबदियाह अकेला दूसरी तरफ़ गया। 7 और 'अबदियाह रास्ते ही में था कि एलियाह उसे मिला, वह उसे पहचान कर मुँह के बल गिरा और कहने लगा, “ऐ मेरे मालिक एलियाह, क्या तू है?” 8 उसने उसे जवाब दिया, मैं ही हूँ जा अपने मालिक को बता दे कि एलियाह हाज़िर है। 9 उसने कहा, “मुझ से क्या गुनाह हुआ है, जो तू अपने खादिम को अखीअब के हाथ में हवाले करना चाहता है, ताकि वह मुझे क़त्ल करे। 10 खुदावन्द तेरे खुदा की हयात की क़सम, कि ऐसी कोई क़ौम या हुकूमत नहीं जहाँ मेरे मालिक ने तेरी तलाश के लिए न भेजा हो; और जब उन्होंने कहा कि वह यहाँ नहीं, तो उसने उस हुकूमत और क़ौम से क़सम ली कि तू उनको नहीं मिला है। 11 और अब तू कहता है कि जाकर अपने मालिक को ख़बर कर दे कि

एलियाह हाज़िर है। 12 और ऐसा होगा कि जब मैं तेरे पास से चला जाऊँगा, तो खुदावन्द की रूह तुझ को न जाने कहाँ ले जाए; और मैं जाकर अखीअब को ख़बर दूँ और तू उसको कहीं मिल न सके, तो वह मुझको क़त्ल कर देगा। लेकिन मैं तेरा खादिम लड़कपन से खुदावन्द से डरता रहा हूँ। 13 क्या मेरे मालिक को जो कुछ मैंने किया है नहीं बताया गया, कि जब ईज़बिल ने खुदावन्द के नबियों को क़त्ल किया, तो मैंने खुदावन्द के नबियों में से सौ आदमियों को लेकर, पचास — पचास करके उनको एक ग़ार में छिपाया और उनको रोटी और पानी से पालता रहा? 14 और अब तू कहता है कि जाकर अपने मालिक को ख़बर दे कि एलियाह हाज़िर है; तब वह मुझे मार डालेगा।” 15 तब एलियाह ने कहा, “रब्ब — उल — अफ़वाज की हयात की क़सम जिसके सामने मैं खड़ा हूँ, मैं आज उससे ज़रूर मिलूँगा।” 16 तब 'अबदियाह अखीअब से मिलने को गया और उसे ख़बर दी; और अखीअब एलियाह की मुलाक़ात को चला। 17 और जब अखीअब ने एलियाह को देखा, तो उसने उससे कहा, “ऐ इस्राईल के सताने वाले, क्या तू ही है?” 18 उसने जवाब दिया, “मैंने इस्राईल को नहीं सताया, बल्कि तू और तेरे बाप के घराने ने, क्योंकि तुमने खुदावन्द के हुक्मों को छोड़ दिया, और तू बा'लीम का पैरोकार हो गया। 19 इसलिए अब तू कासिद भेज; और सारे इस्राईल को और बा'ल के साढ़े चार सौ नबियों को, और यसीरत के चार सौ नबियों को जो ईज़बिल के दस्तरख़्वान पर खाते हैं कर्मिल की पहाड़ी पर मेरे पास इकट्ठा कर दे।” 20 तब अखीअब ने सब बनी — इस्राईल को बुला भेजा, और नबियों को कर्मिल की पहाड़ी पर इकट्ठा किया। 21 और एलियाह सब लोगों के नज़दीक आकर कहने लगा, “तुम कब तक दो ख़्यालों में डाँवाडोल रहोगे? अगर खुदावन्द ही खुदा है, तो उसकी पैरवी करो; और अगर बा'ल है, तो उसकी पैरवी करो।” लेकिन उन लोगों ने उसे एक हर्फ़ जवाब न दिया। 22 तब एलियाह ने उन लोगों से कहा, “एक मैं ही अकेला खुदावन्द का नबी बच रहा हूँ, लेकिन बा'ल के नबी चार सौ पचास आदमी हैं। 23 इसलिए हम को दो बैल दिए जाएँ, और वह अपने लिए एक बैल को चुन लें और उसे टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ियों पर धरें और नीचे आग न दें; और मैं दूसरा बैल तैयार करके उसे लकड़ियों पर धरूँगा, और नीचे आग नहीं दूँगा। 24 तब तुम अपने मा'बूद से दुआ करना, और मैं खुदावन्द से दुआ करूँगा; और वह खुदा जो आग से जवाब दे, वही खुदा ठहरे।” और सब लोग बोल उठे, “ख़ूब कहा!” 25 तब एलियाह ने बा'ल के

नबियों से कहा कि “तुम अपने लिए एक बैल चुनलो और पहले उसे तैयार करो क्योंकि तुम बहुत से हो; और अपने मा'बूद से दुआ करो, लेकिन आग नीचे न देना।”
 26 इसलिए उन्होंने उस बैल को लेकर जो उनको दिया गया उसे तैयार किया; और सुबह से दोपहर तक बा'ल से दुआ करते और कहते रहे, ऐ बा'ल, हमारी सुन! “लेकिन न कुछ आवाज़ हुई और न कोई जवाब देने वाला था। और वह उस मज़बह के पास जो बनाया गया था कूदते रहे। 27 और दोपहर को ऐसा हुआ कि एलियाह ने उनको चिढ़ाकर कहा, बुलन्द आवाज़ से पुकारो; क्योंकि वह तो मा'बूद है, वह किसी सोच में होगा, या वह तनहाई में है, या कहीं सफ़र में होगा, या शायद वह सोता है, इसलिए ज़रूर है कि वह जगाया जाए।” 28 तब वह बुलन्द आवाज़ से पुकारने लगे, और अपने दस्तूर के मुताबिक अपने आप को छुरियों और नशतरों से घायल कर लिया, यहाँ तक कि लहू लुहान हो गए। 29 वह दोपहर ढले पर भी शाम की कुर्बानी चढ़ाकर नबुव्वत करते रहे; लेकिन न कुछ आवाज़ हुई, न कोई जवाब देने वाला, न ध्यान करने वाला था। 30 तब एलियाह ने सब लोगों से कहा कि “मेरे नज़दीक आ जाओ।” चुनाँचे सब लोग उसके नज़दीक आ गए। तब उसने खुदावन्द के उस मज़बह को, जो ढा दिया गया था, मरम्मत किया। 31 और एलियाह ने या'कूब के बेटों के कबीलों के गिनती के मुताबिक, जिस पर खुदावन्द का यह कलाम नाज़िल हुआ था कि “तेरा नाम इस्राईल होगा,” बारह पत्थर लिए, 32 और उसने उन पत्थरों से खुदावन्द के नाम का एक मज़बह बनाया; और मज़बह के आस पास उसने ऐसी बड़ी खाई खोदी, जिसमें दो पैमाने बीज की समाई थी, 33 और लकड़ियों को तरतीब से चुना और बैल भी टुकड़े — टुकड़े काटकर लकड़ियों पर धर दिया, और कहा, चार मटके पानी से भरकर उस सोख्तनी कुर्बानी पर और लकड़ियों पर उँडेल दो।” 34 फिर उसने कहा, “दोबारा करो।” उन्होंने दोबारा किया; फिर उसने कहा, “तिबारा करो।” तब उन्होंने तिबारा भी किया। 35 और पानी मज़बह के चारों तरफ़ बहने लगा, और उसने खाई भी पानी से भरवा दी। 36 और शाम की कुर्बानी पेश करने के वक़्त एलियाह नबी नज़दीक आया और उसने कहा “ऐ खुदावन्द अब्रहाम और इज़्हाक और इस्राईल के खुदा! आज मा'लूम हो जाए कि इस्राईल में तू ही खुदा है, और मैं तेरा बन्दा हूँ, और मैंने इन सब बातों को तेरे ही हुक्म से किया है। 37 मेरी सुन, ऐ खुदावन्द, मेरी सुन! ताकि यह लोग जान जाएँ कि ऐ खुदावन्द, तू ही खुदा है; और तू ने फिर उनके दिलों को फेर दिया है।” 38 तब

खुदावन्द की आग नाज़िल हुई और उसने उस सोख्तनी कुर्बानी को लकड़ियों और पत्थरों और मिट्टी समेत भसम कर दिया, और उस पानी को जो खाई में था चाट लिया। 39 जब सब लोगों ने यह देखा, तो मुँह के बल गिरे और कहने लगे, “खुदावन्द वही खुदा है, खुदावन्द वही खुदा है।” 40 एलियाह ने उनसे कहा, “बा'ल के नबियों को पकड़ लो, उनमें से एक भी जाने न पाए।” इसलिए उन्होंने उनको पकड़ लिया, और एलियाह उनको नीचे कोसोन के नाले पर ले आया और वहाँ उनको क़त्ल कर दिया। 41 फिर एलियाह ने अखीअब से कहा, “ऊपर चढ़ जा, खा और पी, क्योंकि कसरत की बारिश की आवाज़ है।” 42 इसलिए अखीअब खाने पीने को ऊपर चला गया। और एलियाह कर्मिल की चोटी पर चढ़ गया, और ज़मीन पर सरनगू होकर अपना मुँह अपने घुटनों के बीच कर लिया, 43 और अपने खादिम से कहा, “ज़रा ऊपर जाकर समुन्दर की तरफ़ तो नज़र कर।” इसलिए उसने ऊपर जाकर नज़र की और कहा, “वहाँ कुछ भी नहीं है।” उसने कहा, “फिर सात बार जा।” 44 और सातवें मर्तबा उसने कहा, “देख, एक छोटा सा बादल आदमी के हाथ के बराबर समुन्दर में से उठा है।” तब उसने कहा, “जा और अखीअब से कह कि अपना रथ तैयार कराके नीचे उतर जा, ताकि बारिश तुझे रोक न ले।” 45 और थोड़ी ही देर में आसमान घटा और आँधी से सियाह हो गया और बड़ी बारिश हुई; और अखीअब सवार होकर यज़र'एल को चला। 46 और खुदावन्द का हाथ एलियाह पर था; और उसने अपनी कमर कस ली और अखीअब के आगे — आगे यज़र'एल के मदख़ल तक दौड़ा चला गया।

19

?????? ?? ???? ?? ???? ??

1 और अखीअब ने सब कुछ, जो एलियाह ने किया था और यह भी कि उसने सब नबियों को तलवार से क़त्ल कर दिया, ईज़बिल को बताया। 2 इसलिए ईज़बिल ने एलियाह के पास एक क़ासिद खाना किया और कहला भेजा कि “अगर मैं कल इस वक़्त तक तेरी जान उनकी जान की तरह न बना डालूँ, तो मा'बूद मुझ से ऐसा ही बल्कि इससे ज्यादा करें।” 3 जब उसने यह देखा तो उठकर अपनी जान बचाने को भागा, और बैरसबा' में, जो यहूदाह का है, आया और अपने खादिम को वहीं छोड़ा। 4 और खुद एक दिन की मन्ज़िल दशत में निकल गया और झाऊ के एक पेड़ के नीचे आकर बैठा, और अपने लिए मौत माँगी और कहा, “बस है; अब तू ऐ खुदावन्द, मेरी जान को ले ले, क्योंकि मैं अपने बाप — दादा से बेहतर नहीं हूँ।” 5 और वह झाऊ के एक पेड़

के नीचे लेटा और सो गया; और देखो, एक फ़रिश्ते ने उसे छुआ और उससे कहा, “उठ और खा।” ⁶ उसने जो निगाह की तो क्या देखा कि उसके सिरहाने, अंगारों पर पकी हुई एक रोटी और पानी की एक सुराही रखी है; तब वह खा पीकर फिर लेट गया। ⁷ और खुदावन्द का फ़रिश्ता दोबारा फिर आया, और उसे छुआ और कहा, “उठ और खा, कि यह सफ़र तेरे लिए बहुत बड़ा है।” ⁸ इसलिए उसने उठकर खाया पिया, और उस खाने की ताक़त से चालीस दिन और चालीस रात चल कर खुदा के पहाड़ होरिब तक गया। ⁹ और वहाँ एक ग़ार में जाकर टिक गया, और देखो, खुदावन्द का यह कलाम उस पर नाज़िल हुआ कि “ऐ एलियाह, तू यहाँ क्या करता है?” ¹⁰ उसने कहा, “खुदावन्द लश्क़रों के खुदा के लिए मुझे बड़ी ग़ैरत आई, क्योंकि बनी — इस्राईल ने तेरे 'अहद को छोड़ दिया और तेरे मज़बहों को ढा दिया, और तेरे नबियों को तलवार से क़त्ल किया, और एक मैं ही अकेला बचा हूँ; तब वह मेरी जान लेने को पीछे पड़े हैं।” ¹¹ उसने कहा, “बाहर निकल, और पहाड़ पर खुदावन्द के सामने खड़ा हो।” और देखो, खुदावन्द गुज़रा; और एक बड़ी सख़्त आँधी ने खुदावन्द के आगे पहाड़ों को चीर डाला और चट्टानों के टुकड़े कर दिए, लेकिन खुदावन्द आँधी में नहीं था; और आँधी के बाद ज़लज़ला आया, पर खुदावन्द ज़लज़ले में नहीं था। ¹² और ज़लज़ले के बाद आग आई, लेकिन खुदावन्द आग में भी नहीं था; और आग के बाद एक दबी हुई हल्की आवाज़ आई। ¹³ उसको सुनकर एलियाह ने अपना मुँह अपनी चादर से लपेट लिया, और बाहर निकल कर उस ग़ार के मुँह पर खड़ा हुआ। और देखो, उसे यह आवाज़ आई कि “ऐ एलियाह, तू यहाँ क्या करता है?” ¹⁴ उसने कहा, “मुझे खुदावन्द लश्क़रों के खुदा के लिए बड़ी ग़ैरत आई, क्योंकि बनी — इस्राईल ने तेरे 'अहद को छोड़ दिया और तेरे मज़बहों को ढा दिया, और तेरे नबियों को तलवार से क़त्ल किया; एक मैं ही अकेला बचा हूँ, तब वह मेरी जान लेने को पीछे पड़े हैं।” ¹⁵ खुदावन्द ने उसे फ़रमाया, “तू अपने रास्ते लौट कर दमिश्क़ के बियावान को जा, और जब तू वहाँ पहुँचे तो तू हज़ाएल को मसह कर, कि अराम का बादशाह हो, ¹⁶ और निमसी के बेटे याहू को मसह कर, कि इस्राईल का बादशाह हो, और अबील महोला के इलीशा — बिन — साफ़त को मसह कर, कि तेरी जगह नबी हो। ¹⁷ और ऐसा होगा कि जो हज़ाएल की तलवार से बच जाएगा उसे याहू क़त्ल करेगा, और जो याहू की तलवार से बच रहेगा उसे इलीशा क़त्ल कर

डालेगा। ¹⁸ तो भी मैं इस्राईल में सात हज़ार अपने लिए रख छोड़ूँगा, या'नी वह सब घुटने जो बा'ल के आगे नहीं झुके और हर एक मुँह जिसने उसे नहीं चूमा।” ¹⁹ तब वह वहाँ से रवाना हुआ, और साफ़त का बेटा इलीशा' उसे मिला जो बारह जोड़ी बैल अपने आगे लिए हुए जोत रहा था, और वह खुद बारहवें के साथ था; और एलियाह उसके बराबर से गुज़रा, और अपनी चादर उस पर डाल दी। ²⁰ तब वह बैलों को छोड़कर एलियाह के पीछे दौड़ा और कहने लगा, “मुझे अपने बाप और अपनी माँ को चूम लेने दे, फिर मैं तेरे पीछे हो लूँगा।” उसने उससे कहा कि “लौट जा; मैंने तुझ से क्या किया है?” ²¹ तब वह उसके पीछे से लौट गया, और उसने उस जोड़ी बैल को लेकर ज़बह किया, और उन ही बैलों के सामान से उनका गोश्त उबाला और लोगों को दिया, और उन्होंने खाया; तब वह उठा और एलियाह के पीछे रवाना हुआ, और उसकी ख़िदमत करने लगा।

20

⚔️⚔️⚔️ ⚔️ ⚔️⚔️⚔️⚔️⚔️ ⚔️ ⚔️⚔️⚔️

¹ और अराम के बादशाह बिन हदद ने अपने सारे लश्कर को इकट्ठा किया, और उसके साथ बत्तीस बादशाह और घोड़े और रथ थे; और उसने सामरिया पर चढ़ाई करके उसका घेरा किया और उससे लड़ा। ² और इस्राईल के बादशाह अखीअब के पास शहर में कासिद रवाना किए और उसे कहला भेजा कि “बिन हदद ऐसा फ़रमाता है: कि ³ 'तेरी चाँदी और तेरा सोना मेरा है; तेरी बीवियों और तेरे लड़कों में जो सबसे खूबसूरत हैं वह मेरे हैं।” ⁴ इस्राईल के बादशाह ने जवाब दिया, “ऐ मेरे मालिक, बादशाह! तेरे कहने के मुताबिक़, मैं और जो कुछ मेरे पास है सब तेरा ही है।” ⁵ फिर उन कासिदों ने दोबारा आकर कहा कि “बिनहदद ऐसा फ़रमाता है कि 'मैंने तुझे कहला भेजा था कि तू अपनी चाँदी और अपनी बीवियाँ और अपने लड़के मेरे हवाले कर दे ⁶ लेकिन अब मैं कल इसी वक़्त अपने खादिमों को तेरे पास भेजूँगा; तब वह तेरे घर और तेरे खादिमों के घरों की तलाशी लेंगे, और जो कुछ तेरी निगाह में कीमती होगा वह उसे अपने कब्ज़े में करके ले आएँगे।” ⁷ तब इस्राईल के बादशाह ने मुल्क के सब बुज़ुर्गों को बुला कर कहा, “ज़रा ग़ौर करो और देखो, कि यह शख्स किस तरह बुराई के पीछे पड़ा है; क्योंकि उसने मेरी बीवियाँ और मेरे लड़के और मेरी चाँदी और मेरा सोना, मुझ से मंगा भेजा और मैंने उससे इन्कार नहीं किया।” ⁸ तब सब बुज़ुर्गों और सब लोगों ने उससे कहा कि “तू मत सुन, और मत मान।” ⁹ इसलिए उसने बिनहदद के कासिदों से कहा,

“मेरे मालिक बादशाह से कहना, 'जो कुछ तू ने अपने खादिम से पहले तलब किया, वह तो मैं करूँगा; पर यह बात मुझ से नहीं हो सकती।' तब कासिद खाना हुआ और उसे यह जवाब सुना दिया।¹⁰ तब बिन हदद ने उसको कहला भेजा कि “अगर सामरिया की मिट्टी, उन सब लोगों के लिए जो मेरे पैरोकार हैं, मुट्ठियाँ भरने को भी काफ़ी हो; तो मा'बूद मुझ से ऐसा ही बल्कि इससे भी ज्यादा करे।”¹¹ शाह — ए — इस्राईल ने जवाब दिया, “तुम उससे कहना, 'जो हथियार बाँधता है, वह उसकी तरह फ़ख़र न करे जो उसे उतारता है।’”¹² जब बिन हदद ने, जो बादशाहों के साथ सायबानों में मयनोशी कर रहा था, यह पैग़ाम सुना तो अपने मुलाज़िमों को हुक्म किया कि “सफ़्र बान्ध लो।” इसलिए उन्होंने शहर पर चढ़ाई करने के लिए सफ़्रआराई की।¹³ और देखो, एक नबी ने शाह — ए — इस्राईल अख़ीअब के पास आकर कहा, 'खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि “क्या तू ने इस बड़े हुज़ूम को देख लिया? मैं आज ही उसे तेरे हाथ में कर दूँगा, और तू जान लेगा कि खुदावन्द मैं ही हूँ।”’¹⁴ तब अख़ीअब ने पूछा, “किसके वसीले से?” उसने कहा, खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि सूबों के सरदारों के जवानों के वसीले से! “फिर उसने पूछा कि लड़ाई कौन शुरू करे।” उसने जवाब दिया कि “तू।”¹⁵ तब उसने सूबों के सरदारों के जवानों को शुमार किया, और वह दो सौ बत्तीस निकले; उनके बाद उसने सब लोगों, या'नी सब बनी — इस्राईल की हाजरी ली, और वह सात हज़ार थे।¹⁶ यह सब दोपहर को निकले, और बिन हदद और वह बत्तीस बादशाह, जो उसके मददगार थे, सायबानों में पी पीकर मस्त होते जाते थे।¹⁷ इसलिए सूबों के सरदारों के जवान पहले निकले। और बिन हदद ने आदमी भेजे, और उन्होंने उसे ख़बर दी कि “सामरिया से लोग निकले हैं।”¹⁸ उसने कहा, “अगर वह सुलह के इरादे से निकले हों तो उनको ज़िन्दा पकड़ लो, और अगर वह जंग को निकले हों तो भी उनको ज़िन्दा पकड़ो।”¹⁹ तब सूबों के सरदारों के जवान और वह लश्कर जो उनके पीछे हो लिया था शहर से बाहर निकले;²⁰ और उनमें से एक एक ने अपने मुखालिफ़ को क़त्ल किया; इसलिए अरामी भागे और इस्राईल ने उनका पीछा किया, और शाह — ए — अराम बिन हदद एक घोड़े पर सवार होकर सवारों के साथ भागकर बच गया।²¹ और शाह — ए — इस्राईल ने निकल कर घोड़ों और रथों को मारा, और अरामियों को बड़ी ख़ुर्रजी के साथ क़त्ल किया।²² और वह नबी शाह — ए — इस्राईल के पास आया और उससे कहा, “जा अपने को मज़बूत कर, और जो कुछ तू करे उसे

गौर से देख लेना; क्योंकि अगले साल शाह — ए — अराम फिर तुझ पर चढ़ाई करेगा।”²³ और शाह — ए — अराम के खादिमों ने उससे कहा, “उनका खुदा पहाड़ी खुदा है, इसलिए वह हम पर ग़ालिब आए; लेकिन हम को उनके साथ मैदान में लड़ने दे तो ज़रूर हम उन पर ग़ालिब होंगे।”²⁴ और एक काम यह कर, कि बादशाहों को हटा दे, या'नी हर एक को उसके 'उहदे से हटा दे और उनकी जगह सरदारों को मुक़र्रर कर;²⁵ और अपने लिए एक लश्कर अपनी उस फ़ौज की तरह, जो तबाह हो गई, घोड़े की जगह घोड़ा और रथ की जगह रथ गिन गिनकर तैयार कर ले। हम मैदान में उनसे लड़ेंगे और ज़रूर उन पर ग़ालिब होंगे।” इसलिए उसने उनका कहा माना और ऐसा ही किया।²⁶ और अगले साल बिन हदद ने अरामियों की हाजरी ली, और इस्राईल से लड़ने के लिए अफ़्रीक़ को गया।²⁷ और बनी — इस्राईल की हाजरी भी ली गई, और उनकी ख़ुराक का इन्तज़ाम किया गया और यह उनसे लड़ने को गए; और बनी — इस्राईल उनके बराबर खेमाज़न होकर ऐसे मा'लूम होते थे जैसे हलवानों के दो छोटे रेवड़, लेकिन अरामियों से वह मुल्क भर गया था।²⁸ तब एक नबी इस्राईल के बादशाह के पास आया और उससे कहा, “खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि चूँकि अरामियों ने ऐसा कहा है कि खुदावन्द पहाड़ी खुदा है, और वादियों का खुदा नहीं; इसलिए मैं इस सारे बड़े हुज़ूम को तेरे ज़िम्मे में कर दूँगा, और तुम जान लोगे कि मैं खुदावन्द हूँ।”²⁹ और वह एक दूसरे के मुक़ाबिल सात दिन तक खेमाज़न रहे; और सातवें दिन जंग छिड़ गई, और बनी — इस्राईल ने एक दिन में अरामियों के एक लाख प्यादे क़त्ल कर दिए;³⁰ और बाक़ी अफ़ोक को शहर के अन्दर भाग गए, और वहाँ एक दीवार सताईस हज़ार पर जो बाकी रहे थे गिरी। और बिन हदद भागकर शहर के अन्दर एक अन्दरूनी कोठरी में घुस गया।³¹ और उसके खादिमों ने उससे कहा, “देख, हम ने सुना है कि इस्राईल के घराने के बादशाह रहीम होते हैं; इसलिए हम को ज़रा अपनी कमरों पर टाट और अपने सिरों पर रस्सियाँ बाँध कर शाह — ए — इस्राईल के सामने जाने दे; शायद वह तेरी जान बख़्शी करे।”³² इसलिए उन्होंने अपनी कमरों पर टाट और सिरों पर रस्सियाँ बाँधी, और शाह — ए — इस्राईल के सामने आकर कहा, “तेरा खादिम बिनहदद यह दरख़्वास्त करता है कि 'महेरबानी करके मुझे जीने दे।’” उसने कहा, “क्या वह अब तक ज़िन्दा है? वह मेरा भाई है।”³³ वह लोग बड़ी ध्यान से सुन रहे थे; इसलिए उन्होंने उसका दिली इरादा दरियाफ़्त करने के लिए झट

उससे कहा कि “तेरा भाई बिन हदद।” तब उसने फ़रमाया कि “जाओ, उसे ले आओ।” तब बिन हदद उससे मिलने को निकला, और उसने उसे अपने रथ पर चढ़ा लिया।³⁴ और बिनहदद ने उससे कहा, “जिन शहरों को मेरे बाप ने तेरे बाप से ले लिया था, मैं उनको लौटा दूँगा; और तू अपने लिए दमिश्क में सड़कें बनवा लेना, जैसे मेरे बाप ने सामरिया में बनवाई।” अखीअब ने कहा, “मैं इसी 'अहद पर तुझे छोड़ दूँगा।” इसलिए उसने उससे 'अहद बाँधा और उसे छोड़ दिया।³⁵ इसलिए अम्बियाज़ादों में से एक ने खुदावन्द के हुक्म से अपने साथी से कहा, “मुझे मार।” लेकिन उसने उसे मारने से इन्कार किया।³⁶ तब उसने उससे कहा, “इसलिए कि तू ने खुदावन्द की बात नहीं मानी, सो देख, जैसे ही तू मेरे पास से खाना होगा एक शेर तुझे मार डालेगा।” सो जैसे ही वह उसके पास से खाना हुआ, उसे एक शेर मिला और उसे मार डाला।³⁷ फिर उसे एक और शख्स मिला, उसने उससे कहा, “मुझे मार।” उसने उसे मारा, और मार कर जख्मी कर दिया।³⁸ तब वह नबी चला गया और बादशाह के इन्तज़ार में रास्ते पर ठहरा रहा, और अपनी आँखों पर अपनी पगड़ी लपेट ली और अपना भेस बदल डाला।³⁹ जैसे ही बादशाह उधर से गुज़रा, उसने बादशाह की दुहाई दी और कहा कि “तेरा खादिम जंग होते में वहाँ चला गया था; और देख, एक शख्स उधर मुड़कर एक आदमी को मेरे पास ले आया, और कहा कि “इस आदमी की हिफ़ाज़त कर; अगर यह किसी तरह ग़ायब हो जाए, तो उसकी जान के बदले तेरी जान जाएगी, और नहीं तो तुझे एक किन्तार' चाँदी देनी पड़ेगी।⁴⁰ जब तेरा खादिम इधर उधर मसरूफ़ था, वह चलता बना।” शाह — ए — इस्राईल ने उससे कहा, “तुझ पर वैसा ही फ़तवा होगा, तू ने खुद इसका फ़ैसला किया।”⁴¹ तब उसने झट अपनी आँखों पर से पगड़ी हटा दी, और शाह — ए — इस्राईल ने उसे पहचाना कि वह नबियों में से है।⁴² और उसने उससे कहा, खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है, “इसलिए कि तू ने अपने हाथ से एक ऐसे शख्स को निकल जाने दिया, जिसे मैंने क़त्ल के लायक ठहराया था, इसलिए तुझे उसकी जान के बदले अपनी जान और उसके लोगों के बदले अपने लोग देने पड़ेंगे।”⁴³ इसलिए शाह — ए — इस्राईल उदास और नाखुश होकर अपने घर को चला और सामरिया में आया।

21

???? ? ? ? ? ? ?

¹ इन बातों के बाद ऐसा हुआ कि यज़र'एली नबोत के पास यज़र'एल में एक ताकिस्तान था, जो सामरिया के

बादशाह अखीअब के महल से लगा हुआ था।² इसलिए अखीअब ने नबोत से कहा कि “अपना ताकिस्तान मुझ को दे ताकि मैं उसे तरकारी का बाग बनाऊँ, क्योंकि वह मेरे घर से लगा हुआ है; और मैं उसके बदले तुझ को उससे बेहतर ताकिस्तान दूँगा; या अगर तुझे मुनासिब मा'लूम हो, तो मैं तुझ को उसकी कीमत नक़द दे दूँगा।”³ नबोत ने अखीअब से कहा, “खुदावन्द मुझ से ऐसा न कराए कि मैं तुझ को अपने बाप — दादा की मीरास दे दूँ।”⁴ और अखीअब उस बात की वजह से जो यज़र'एली नबोत ने उससे कही उदास और नाखुश हो कर अपने घर में आया, क्योंकि उसने कहा था मैं तुझ को अपने बाप — दादा की मीरास नहीं दूँगा। इसलिए उसने अपने बिस्तर पर लेट कर अपना मुँह फेर लिया, और खाना छोड़ दिया।⁵ तब उसकी बीवी ईज़बिल उसके पास आकर उससे कहने लगी, “तेरा जी ऐसा क्यों उदास है कि तू रोटी नहीं खाता?”⁶ उसने उससे कहा, “इसलिए कि मैंने यज़र'एली नबोत से बातचीत की, और उससे कहा कि तू अपना ताकिस्तान की कीमत लेकर मुझे दे दे; या अगर तू चाहे तो मैं उसके बदले दूसरा ताकिस्तान तुझे दे दूँगा। लेकिन उसने जवाब दिया, ‘मैं तुझ को अपना ताकिस्तान नहीं दूँगा।’”⁷ उसकी बीवी ईज़बिल ने उससे कहा, “इस्राईल की बादशाही पर यही तेरी हुकुमत है? उठ रोटी खा, और अपना दिल बहला; यज़र'एली नबोत का ताकिस्तान मैं तुझ को दूँगी।”⁸ इसलिए उसने अखीअब के नाम से खत लिखे, और उन पर उसकी मुहर लगाई, और उनको उन बुज़ुर्गों और अमीरों के पास जो नबोत के शहर में थे और उसी के पड़ोस में रहते थे भेज दिया।⁹ उसने उन खतों में यह लिखा कि “रोज़ा का 'एलान कराके नबोत को लोगों में ऊँची जगह पर बिठाओ।¹⁰ और दो आदमियों को, जो बुरें हों, उसके सामने कर दो कि वह उसके खिलाफ़ यह गवाही दें कि तू ने खुदा पर और बादशाह पर ला'नत की, फिर उसे बाहर ले जाकर पथराव करो ताकि वह मर जाए।”¹¹ चुनाँचे उसके शहर के लोगों या'नी बुज़ुर्गों और अमीरों ने, जो उसके शहर में रहते थे, जैसा ईज़बिल ने उनको कहला भेजा वैसा ही उन खुतूत के मज़मून के मुताबिक़, जो उसने उनको भेजे थे, किया।¹² उन्होंने रोज़ा का 'एलान कराके नबोत को लोगों के बीच ऊँची जगह पर बिठाया।¹³ और वह दोनों आदमी जो बुरे थे, आकर उसके आगे बैठ गए; और उन बुरों ने लोगों के सामने उसके, या'नी नबोत के खिलाफ़ यह गवाही दी कि “नबोत ने खुदा पर और बादशाह पर ला'नत की है।” तब वह उसे शहर से बाहर निकाल ले गए, और उसको ऐसा पथराव किया कि

वह मर गया। ¹⁴ फिर उन्होंने ईज़बिल को कहला भेजा कि “नबोत पर पथराव कर दिया गया और मर गया।” ¹⁵ जब ईज़बिल ने सुना कि नबोत पर पथराव कर दिया गया और मर गया, तो उसने अखीअब से कहा, “उठ और यज़र'एली नबोत के ताकिस्तान पर क़ब्ज़ा कर, जिसे उसने कीमत पर भी तुझे देने से इन्कार किया था; क्योंकि नबोत ज़िन्दा नहीं बल्कि मर गया है।” ¹⁶ जब अखीअब ने सुना कि नबोत मर गया है, तो अखीअब उठा ताकि यज़र'एली नबोत के ताकिस्तान को जाकर उस पर क़ब्ज़ा करे। ¹⁷ और खुदावन्द का यह कलाम एलियाह तिशबी पर नाज़िल हुआ कि ¹⁸ उठ और शाहए — इस्राईल अखीअब से, जो सामरिया में रहता है, मिलने को जा। देख, वह नबोत के ताकिस्तान में है, और उस पर क़ब्ज़ा करने को वहाँ गया है। ¹⁹ इसलिए तू उससे यह कहना कि “खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि क्या तू ने जान भी ली और क़ब्ज़ा भी कर लिया?” तब तू उससे यह कहना कि “खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि उसी जगह जहाँ कुत्तों ने नबोत का लहू चाटा, कुत्ते तेरे लहू को भी चाटेंगे।” ²⁰ और अखीअब ने एलियाह से कहा, “ऐ मेरे दुश्मन, क्या मैं तुझे मिल गया?” उसने जवाब दिया कि “तू मुझे मिल गया; इसलिए कि तू ने खुदावन्द के सामने बदी करने के लिए अपने आपको बेच डाला है।” ²¹ देख, मैं तुझ पर बला नाज़िल करूँगा और तेरी पूरी सफ़ाई कर दूँगा, और अखीअब की नसल के हर एक लड़के को, या'नी हर एक को जो इस्राईल में बन्द है, और उसे जो आज़ाद छुटा हुआ है काट डालूँगा। ²² और तेरे घर को नबात के बेटे युरब'आम के घर, और अखियाह के बेटे बाशा के घर की तरह बना दूँगा; उस गुस्सा दिलाने की वजह से जिससे तू ने मेरे ग़ज़ब को भड़काया और इस्राईल से गुनाह कराया। ²³ और खुदावन्द ने ईज़बिल के हक़ में भी यह फ़रमाया कि यज़र'एल की फ़सील के पास कुत्ते ईज़बिल को खाएँगे। ²⁴ अखीअब का जो कोई शहर में मरेगा उसे कुत्ते खाएँगे, और जो मैदान में मरेगा उसे हवा के परिन्दे चट कर जाएँगे।” ²⁵ क्योंकि अखीअब की तरह कोई नहीं हुआ था, जिसने खुदावन्द के सामने बदी करने के लिए अपने आपको बेच डाला था और जिसे उसकी बीवी ईज़बिल उभारा करती थी। ²⁶ और उसने बहुत ही नफ़रतअंगेज़ काम यह किया कि अमोरियों की तरह, जिनको खुदावन्द ने बनी — इस्राईल के आगे से निकाल दिया था, बुतों की पैरवी की। ²⁷ जब अखीअब ने यह बातें सुनीं, तो अपने कपड़े फाड़े और अपने तन पर टाट डाला और रोज़ा रखवा और टाट ही में लेटने और दबे पाँव चलने

लगा। ²⁸ तब खुदावन्द का यह कलाम एलियाह तिशबी पर नाज़िल हुआ कि ²⁹ “तू देखता है कि अखीअब मेरे सामने कैसा खाकसार बन गया है? लेकिन चूँकि वह मेरे सामने खाकसार बन गया है, इसलिए मैं उसके दिनों में यह बला नाज़िल नहीं करूँगा, बल्कि उसके बेटे के दिनों में उसके घराने पर यह बला नाज़िल करूँगा।”

22

???????? ??

¹ तीन साल वह ऐसे ही रहे और इस्राईल और अराम के बीच लड़ाई न हुई; ² और तीसरे साल यहूदाह का बादशाह यहूसफ़त शाह — ए — इस्राईल के यहाँ आया, ³ और शाह — ए — इस्राईल ने अपने मुलाज़िम्ओं से कहा, “क्या तुम को मा'लूम है कि रामात जिल'आद हमारा है? लेकिन हम ख़ामोश हैं और शाह — ए — अराम के हाथ से उसे छीन नहीं लेते?” ⁴ फिर उसने यहूसफ़त से कहा, क्या तू मेरे साथ रामात जिल'आद से लड़ने चलेगा? यहूसफ़त ने शाह — ए — इस्राईल को जवाब दिया, “मैं ऐसा हूँ जैसा तू मेरे लोग ऐसे हैं जैसे तेरे लोग और मेरे घोड़े ऐसे हैं जैसे तेरे घोड़े।” ⁵ और यहूसफ़त ने शाह — ए — इस्राईल से कहा, “ज़रा आज खुदावन्द की मज़ी भी तो मा'लूम कर ले।” ⁶ तब शाह — ए — इस्राईल ने नबियों को जो करीब चार सौ आदमी थे इकट्ठा किया और उनसे पूछा, “मैं रामात जिल'आद से लड़ने जाऊँ, या बाज़ रहूँ?” उन्होंने कहा, जा “क्योंकि खुदावन्द उसे बादशाह के क़ब्ज़े में कर देगा।” ⁷ लेकिन यहूसफ़त ने कहा, “क्या इनको छोड़कर यहाँ खुदावन्द का कोई नबी नहीं है, ताकि हम उससे पूछें?” ⁸ शाह — ए — इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, कि “एक शख्स, इमला का बेटा मीकायाह है तो सही, जिसके ज़रिए' से हम खुदावन्द से पूछ सकते हैं; लेकिन मुझे उससे नफ़रत है, क्योंकि वह मेरे हक़ में नेकी की नहीं बल्कि बदी की पेशीनगोई करता है।” यहूसफ़त ने कहा, “बादशाह ऐसा न कहे।” ⁹ तब शाह — ए — इस्राईल ने एक सरदार को बुलाकर कहा, कि “इमला के बेटे मीकायाह को जल्द ले आ।” ¹⁰ उस वक़्त शाह — ए — इस्राईल और शाह — ए — यहूदाह यहूसफ़त सामरिया के फाटक के सामने, एक खुली जगह में, अपने — अपने तख़्त पर शाहाना लिबास पहने हुए बैठे थे, और सब नबी उनके सामने पेशीनगोई कर रहे थे। ¹¹ और कन'आना के बेटे सिदक्रियाह ने अपने लिए लोहे के सींग बनाए

और कहा, खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि “तू इन से अरामियों को मारेगा, जब तक वह मिट न जाएँ।”¹² और सब नबियों ने यही पेशीनगोई की और कहा कि रामात जिल'आद पर चढ़ाई कर और कामयाब हो, क्योंकि खुदावन्द उसे बादशाह के क़ब्जे में कर देगा।¹³ और उस क़ासिद ने जो मीकायाह को बुलाने गया था उससे कहा, “देख, सब नबी एक ज़बान होकर बादशाह को खुशख़बरी दे रहे हैं, तो ज़रा तेरी बात भी उनकी बात की तरह हो और तू खुशख़बरी ही देना।”¹⁴ मीकायाह ने कहा, “खुदावन्द की हयात की क़सम, जो कुछ खुदावन्द मुझे फ़रमाए मैं वही कहूँगा।”¹⁵ इसलिए जब वह बादशाह के पास आया, तो बादशाह ने उससे कहा, “मीकायाह, हम रामात जिल'आद से लड़ने जाएँ या रहने दें?” उसने जवाब दिया, “जा और कामयाब हो, क्योंकि खुदावन्द उसे बादशाह के क़ब्जे में कर देगा।”¹⁶ बादशाह ने उससे कहा, मैं कितनी मर्तबा तुझे क़सम देकर कहूँ, कि “तू खुदावन्द के नाम से हक़ के 'अलावा और कुछ मुझ को न बताए?”¹⁷ तब उसने कहा, मैंने सारे इस्राईल को उन भेड़ों की तरह, जिनका चौपान न हो, पहाड़ों पर बिखरा देखा; और खुदावन्द ने फ़रमाया कि “इनका कोई मालिक नहीं; तब वह अपने अपने घर सलामत लौट जाएँ।”¹⁸ तब शाह — ए — इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, “क्या मैंने तुझ को बताया नहीं था कि यह मेरे हक़ में नेकी की नहीं बल्कि बदी की पेशीनगोई करेगा?”¹⁹ तब उसने कहा, अच्छा, तू खुदावन्द की बात को सुन ले; मैंने देखा कि खुदावन्द अपने तख़्त पर बैठा है, और सारा आसमानी लश्कर उसके दहने और बाएँ खड़ा है।²⁰ और खुदावन्द ने फ़रमाया, 'कौन अख़ीअब को बहकाएगा, ताकि वह चढ़ाई करे और रामात जिल'आद में मारे जाए?’ तब किसी ने कुछ कहा, और किसी ने कुछ।²¹ लेकिन एक रूह निकल कर खुदावन्द के सामने खड़ी हुई, और कहा, 'मैं उसे बहकाऊँगी।’²² खुदावन्द ने उससे पूछा, “किस तरह?” उसने कहा, “मैं जाकर उसके सब नबियों के मुँह में झूठ बोलने वाली रूह बन जाऊँगी, उसने कहा “तू उसे बहका देगी और ग़ालिब भी होगी, रवाना हो जा और ऐसा ही कर।”²³ इसलिए देख, खुदावन्द ने तेरे इन सब नबियों के मुँह में झूठ बोलने वाली रूह डाली है; और खुदावन्द ने तेरे हक़ में बदी का हुक्म दिया है।”²⁴ तब कन'आना का बेटा सिदक्रियाह नज़दीक आया, और उसने मीकायाह के गाल पर मार कर कहा, “खुदावन्द की रूह तुझ से बात करने को किस रास्ते से होकर मुझ में से गई?”²⁵ मीकायाह ने कहा, “यह तू उसी दिन देख लेगा, जब तू अन्दर की एक

कोठरी में घुसेगा ताकि छिप जाए।”²⁶ और शाह — ए — इस्राईल ने कहा, मीकायाह को लेकर उसे शहर के नाज़िम अमून और यूआस शहजादे के पास लौटा ले जाओ; ²⁷ और कहना, “बादशाह यूँ फ़रमाता है कि इस शख्स को कैदख़ाने में डाल दो, और इसे मुसीबत की रोटी खिलाना और मुसीबत का पानी पिलाना, जब तक मैं सलामत न आऊँ।”²⁸ तब मीकायाह ने कहा, “अगर तू सलामत वापस आ जाए, तो खुदावन्द ने मेरी ज़रिए क़लाम ही नहीं किया।” फिर उसने कहा, “ऐ लोगो, तुम सब के सब सुन लो।”²⁹ इसलिए शाह — ए — इस्राईल और शाह — ए — यहूदाह यहूसफ़त ने रामात जिल'आद पर चढ़ाई की।³⁰ और शाह — ए — इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, “मैं अपना भेस बदलकर लड़ाई में जाऊँगा; लेकिन तू अपना लिबास पहने रह।” तब शाह — ए — इस्राईल अपना भेस बदलकर लड़ाई में गया।³¹ उधर शाह — ए — अराम ने अपने रथों के बत्तीसों सरदारों को हुक्म दिया था, “किसी छोटे या बड़े से न लड़ना, 'अलावा शाह — ए — इस्राईल के।”³² इसलिए जब रथों के सरदारों ने यहूसफ़त को देखा तो कहा, “ज़रूर शाह — ए — इस्राईल यही है।” और वह उससे लड़ने को मुड़े, तब यहूसफ़त चिल्ला उठा।³³ जब रथों के सरदारों ने देखा कि वह शाह — ए — इस्राईल नहीं, तो वह उसका पीछा करने से लौट गए।³⁴ और किसी शख्स ने ऐसे ही अपनी कमान खींची और शाह — ए — इस्राईल को जौशन के बन्दों के बीच मारा, तब उसने अपने सारथी से कहा, बाग “फेर कर मुझे लश्कर से बाहर निकाल ले चल, क्योंकि मैं ज़ख्मी हो गया हूँ।”³⁵ और उस दिन बड़े घमसान का रन पड़ा, और उन्होंने बादशाह को उसके रथ ही में अरामियों के मुक़ाबिल संभाले रखा; और वह शाम को मर गया, और खून उसके ज़ख्म से बह कर रथ के पायदान में भर गया।³⁶ और आफ़ताब गुरुब होते हुए लश्कर में यह पुकार हो गई, “हर एक आदमी अपने शहर, और हर एक आदमी अपने मुल्क को जाए।”³⁷ इसलिए बादशाह मर गया और वह सामरिया में पहुँचाया गया, और उन्होंने बादशाह को सामरिया में दफ़न किया; ³⁸ और उस रथ को सामरिया के तालाब में धोया कस्बियाँ यहीं गुस्त करती थीं, और खुदावन्द के क़लाम के मुताबिक़ जो उसने फ़रमाया था, कुत्तों ने उसका खून चाटा।³⁹ और अख़ीअब की बाक़ी बातें, और सब कुछ जो उसने किया था, और हाथी दाँत का घर जो उसने बनाया था, और उन सब शहरों का हाल जो उसने ता'मीर किए, तो क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में क़लमबन्द नहीं?

40 और अखीअब अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उसका बेटा अखज़ियाह उसकी जगह बादशाह हुआ। 41 और आसा का बेटा यहूसफ़त शाह — ए — इस्राईल अखीअब के चौथे साल से यहूदाह पर हुकूमत करने लगा। 42 जब यहूसफ़त हुकूमत करने लगा तो पैंतीस साल का था, और उसने येरूशलेम में पच्चीस साल हुकूमत की। उसकी माँ का नाम 'अजूबाह था, जो सिल्ही की बेटी थी। 43 वह अपने बाप आसा के नक्श — ए — क़दम पर चला; उससे वह मुड़ा नहीं और जो खुदावन्द की निगाह में ठीक था उसे करता रहा, तोभी ऊँचे मक़ाम ढाए न गए लोग उन ऊँचे मक़ामों पर ही कुर्बानी करते और बख़ूर जलाते थे। 44 और यहूसफ़त ने शाह — ए — इस्राईल से सुलह की। 45 और यहूसफ़त की बाक़ी बातें और उसकी ताक़त जो उसने दिखाई, और उसके जंग करने की कैफ़ियत, तो क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में क़लमबन्द नहीं? 46 और उसने बाक़ी लूतियों को जो उसके बाप आसा के 'अहद में रह गए थे, मुल्क से निकाल दिया। 47 और अदोम में कोई बादशाह न था, बल्कि एक नाइब हुकूमत करता था। 48 और यहूसफ़त ने तरसीस के जहाज़ बनाए ताकि ओफ़ीर को सोने के लिए जाएँ, लेकिन वह गए नहीं, क्यूँकि वह “अस्यून जाबर ही में टूट गए। 49 तब अखीअब के बेटे अखज़ियाह ने यहूसफ़त से कहा, 'अपने खादिमों के साथ मेरे खादिमों को भी जहाज़ों में जाने दे।' लेकिन यहूसफ़त राज़ी न हुआ। 50 और यहूसफ़त अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और अपने बाप दाऊद के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफ़न हुआ; और उसका बेटा यहूराम उसकी जगह बादशाह हुआ। 51 और अखीअब का बेटा अखज़ियाह शाह — ए — यहूदाह यहूसफ़त के सत्तरहवें साल से सामरिया में इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, और उसने इस्राईल पर दो साल हुकूमत की। 52 और उसने खुदावन्द की नज़र में बदी की, और अपने बाप की रास्ते और अपनी माँ के रास्ते और नबात के बेटे युरब'आम की रास्ते पर चला, जिससे उसने बनी — इस्राईल से गुनाह कराया; 53 और अपने बाप के सब कामों के मुताबिक़ बा'ल की इबादत करता और उसको सिज्दा करता रहा, और खुदावन्द इस्राईल के खुदा को गुस्सा दिलाया।

2 सलातीन

2222222222 22 222222

1 सलातीन और 2 सलातीन की किताब असल में एक किताब थीं — जबकि यहूदी रिवायत नबी यर्मयाह को 2 सलातीन का मुसन्निफ़ मानते हैं — हाल के कलाम के आलिम व फ़ाज़िल एक गुमनाम मुसन्निफ़ों की जमाअत के बीच के काम के लिए मंसूब करते हैं जिन्हें इसतिस्नाकरक कहते हैं — 2 सलातीन की किताब इसतिसना के मौजूअ का पीछा करती है: खुदा की फ़र्मानबदारी बरकतें लें आती हैं जबकि नाफ़रमानी खुदा की ला' नतें ले आती हैं।

2222 2222 22 222222 22 2222

इस किताब की तसनीफ़ तारीख़ तकरीबन 590 - 538 क़बल मसीह है।

इसे तब लिखा गया जब हैकल — ए — सुलेमानी मौजूद था (1 सलातीन 8:8)।

222222 2222222222 22222 22222

बनी इस्राईल और तमाम कलाम के क़ारिर्इन।

222 2222222

2 स्लातीन की किताब पहला सलातीन की किताब का खातिम: है — यह किताब (इस्राईल और यहूदिया) की तकसीम शुद:सलतनत के बादशाहों की कहानियाँ जारी रखती है 2 सलातीन की किताब बनी इस्राईल और यहूदा की आख़री शिकस्त और असीरिया और बाबुल में की जिलावतनी पर ख़तम होती है।

222222

इन्तशार

बैरूनी खाका

1. इलीशा नबी की ख़िदमत गुज़ारी — 1:1-8:29
2. अखीअब की नसल का खात्मा — 9:1-11:21
3. योआश से लेकर इस्राईल के खात्मे तक — 12:1-17:41
4. हिज़िकयाह से लेकर यहूदा के खात्मे तक — 18:1-25:30

2222222222 22 2222222 22222222222 22 222222 22222

1 अखीअब के मरने के बाद मोआब इस्राईल से बागी हो गया। 2 और अखज़ियाह उस झिलमिली दार खिड़की में से, जो सामरिया में उसके बालाख़ाने में थी, गिर पड़ा और बीमार हो गया। इसलिए उसने क़ासिदों को भेजा और उनसे ये कहा, “जाकर अक़रून के मा'बूद बा'लज़बूब से पूछो, कि मुझे इस बीमारी से शिफ़ा

हो जाएगी या नहीं।” 3 लेकिन खुदावन्द के फ़रिश्ते ने एलियाह तिश्बी से कहा, उठ और सामरिया के बादशाह के क़ासिदों से मिलने को जा और उनसे कह, ‘क्या इस्राईल में खुदा नहीं जो तुम अक़रून के मा'बूद बा'लज़बूब से पूछने चले हो?’ 4 इसलिए अब खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि “तू उस पलंग पर से, जिस पर तू चढ़ा है, उतरने न पाएगा, बल्कि तू ज़रूर मरेगा।” तब एलियाह ख़वाना हुआ। 5 वह क़ासिद उसके पास लौट आए, तब उसने उनसे पूछा, “तुम लौट क्यों आए?” 6 उन्होंने उससे कहा, एक शख्स हम से मिलने को आया, और हम से कहने लगा, ‘उस बादशाह के पास जिसने तुम को भेजा है फिर जाओ, और उससे कहो: खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि “क्या इस्राईल में कोई खुदा नहीं जो तू अक़रून के मा'बूद बा'लज़बूब से पूछने को भेजता है? इसलिए तू उस पलंग से, जिस पर तू चढ़ा है, उतरने न पाएगा, बल्कि ज़रूर ही मरेगा।” 7 उसने उनसे कहा, “उस शख्स की कैसी शक़्त थी, जो तुम से मिलने को आया और तुम से ये बातें कहीं?” 8 उन्होंने उसे जवाब दिया, “वह बहुत बालों वाला आदमी था, और चमड़े का कमरबन्द अपनी कमर पर कसे हुए था।” तब उसने कहा, “ये तो एलियाह तिश्बी है।” 9 तब बादशाह ने पचास सिपाहियों के एक सरदार को, उसके पचासों सिपाहियों के साथ उसके पास भेजा। जब वह उसके पास गया और देखा कि वह एक टीले की चोटी पर बैठा है। उसने उससे कहा, ऐ नबी, बादशाह ने कहा है, “तू उतर आ।” 10 एलियाह ने उस पचास के सरदार को जवाब दिया, “अगर मैं नबी हूँ, तो आग आसमान से नाज़िल हो और तुझे तेरे पचासों के साथ जला कर भसम कर दे।” तब आग आसमान से नाज़िल हुई, और उसे उसके पचासों के साथ जला कर भसम कर दिया। 11 फिर उसने दोबारा पचास सिपाहियों के दूसरे सरदार को, उसके पचासों सिपाहियों के साथ उसके पास भेजा। उसने उससे मुख़ातिब होकर कहा, ऐ नबी, बादशाह ने यूँ कहा है, “जल्द उतर आ।” 12 एलियाह ने उनको भी जवाब दिया, “अगर मैं नबी हूँ, तो आग आसमान से नाज़िल हो और तुझे तेरे पचासों के साथ जलाकर भसम कर दे।” फिर खुदा की आग आसमान से नाज़िल हुई, और उसे उसके पचासों के साथ जला कर भसम कर दिया। 13 फिर उसने तीसरे पचास सिपाहियों के सरदार को, उसके पचासों सिपाहियों के साथ भेजा; और पचास सिपाहियों का ये तीसरा सरदार ऊपर चढ़कर एलियाह के आगे घुटनों के बल गिरा, और उसकी मिन्नत करके उससे कहने लगा, “ऐ नबी, मेरी जान और इन पचासों

की जानें, जो तेरे खादिम हैं, तेरी निगाह में कीमती हों। ¹⁴ देख, आसमान से आग नाज़िल हुई और पचास सिपाहियों के पहले दो सरदारों को उनके पचासों समेत जला कर भसम कर दिया; इसलिए अब मेरी जान तेरी नज़र में कीमती हो।” ¹⁵ तब खुदावन्द के फ़रिश्ते ने एलियाह से कहा, “उसके साथ नीचे जा, उससे न डर।” तब वह उठकर उसके साथ बादशाह के पास नीचे गया, ¹⁶ और उससे कहा, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, “तूने जो अकरून के मा'बूद बा'लज़बूब से पूछने को लोग भेजे हैं, तो क्या इसलिए कि इस्राईल में कोई खुदा नहीं है जिसकी मज़ी को तू दरियाफ़्त कर सके? इसलिए तू उस पलंग से, जिस पर तू चढ़ा है, उतरने न पाएगा, बल्कि ज़रूर ही मरेगा।” ¹⁷ इसलिए वह खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ जो एलियाह ने कहा था, मर गया; और चूँकि उसका कोई बेटा न था, इसलिए शाह — ए — यहूदाह यहूराम — बिन — यहूसफ़त के दूसरे साल से यहूराम उसकी जगह सल्तनत करने लगा। ¹⁸ और अखज़ियाह के और काम जो उसने किए, क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं?

2

?????????? ?? ?????? ??? ?????? ?????

¹ और जब खुदावन्द एलियाह को शोले में आसमान पर उठा लेने को था, तो ऐसा हुआ कि एलियाह इलीशा को साथ लेकर जिलजाल से चला, ² और एलियाह ने इलीशा से कहा, “तू ज़रा यहीं ठहर जा, इसलिए कि खुदावन्द ने मुझे बैतएल को भेजा है।” इलीशा ने कहा, “खुदावन्द की हयात की क़सम और तेरी जान की क़सम, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा।” इसलिए वह बैतएल को चले गए। ³ और अम्बियाज़ादे जो बैतएल में थे, इलीशा के पास आकर उससे कहने लगे कि “क्या तुझे मा'लूम है कि खुदावन्द आज तेरे सिर से तेरे आका को उठा लेगा?” उसने कहा, “हाँ, मैं जानता हूँ; तुम चुप रहो।” ⁴ एलियाह ने उससे कहा, “इलीशा, तू ज़रा यहीं ठहर जा, क्योंकि खुदावन्द ने मुझे यरीहू को भेजा है।” उसने कहा, “खुदावन्द की हयात की क़सम और तेरी जान की क़सम, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा।” इसलिए वह यरीहू में आए। ⁵ और अम्बियाज़ादे जो यरीहू में थे, इलीशा के पास आकर उससे कहने लगे, “क्या तुझे मा'लूम है कि खुदावन्द आज तेरे आका को तेरे सिर से उठा लेगा?” उसने कहा, “हाँ, मैं जानता हूँ; तुम चुप रहो।” ⁶ और एलियाह ने उससे कहा, “तू ज़रा यहीं ठहर

जा, क्योंकि खुदावन्द ने मुझ को यरदन भेजा है।” उसने कहा, “खुदावन्द की हयात की क़सम और तेरी जान की क़सम, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा।” इसलिए वह दोनों आगे चले। ⁷ और अम्बियाज़ादों में से पचास आदमी जाकर उनके सामने दूर खड़े हो गए; और वह दोनों यरदन के किनारे खड़े हुए। ⁸ और एलियाह ने अपनी चादर को लिया, और उसे लपेटकर पानी पर मारा और पानी दो हिस्से होकर इधर — उधर हो गया; और वह दोनों शुष्क ज़मीन पर होकर पार गए। ⁹ और जब वह पार गए तो एलियाह ने इलीशा से कहा, “इससे पहले कि मैं तुझ से ले लिया जाऊँ, बता कि मैं तेरे लिए क्या करूँ।” इलीशा ने कहा, “मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तेरी रूह का दूना हिस्सा मुझ पर हो।” ¹⁰ उसने कहा, “तू ने मुश्किल सवाल किया; तोभी अगर तू मुझे अपने से जुदा होते देखे, तो तेरे लिए ऐसा ही होगा; और अगर नहीं, तो ऐसा न होगा।” ¹¹ और वह आगे चलते और बातें करते जाते थे, कि देखो, एक आग का रथ और आग के घोड़ों ने उन दोनों को जुदा कर दिया, और एलियाह शोले में आसमान पर चला गया। ¹² इलीशा ये देखकर चिल्लाया, ऐ मेरे बाप, मेरे बाप! इस्राईल के रथ, और उसके सवार! “और उसने उसे फिर न देखा, तब उसने अपने कपड़ों को पकड़कर फाड़ डाला और दो हिस्से कर दिए। ¹³ और उसने एलियाह की चादर को भी, जो उस पर से गिर पड़ी थी उठा लिया, और उल्टा फिरा और यरदन के किनारे खड़ा हुआ। ¹⁴ और उसने एलियाह की चादर को, जो उस पर से गिर पड़ी थी, लेकर पानी पर मारा और कहा, खुदावन्द एलियाह का खुदा कहाँ है?” और जब उसने भी पानी पर मारा, तो वह इधर — उधर दो हिस्से हो गया और इलीशा पार हुआ। ¹⁵ जब उन अम्बियाज़ादों ने जो यरीहू में उसके सामने थे, उसे देखा तो वह कहने लगे, “एलियाह की रूह इलीशा पर ठहरी हुई है।” और वह उसके इस्तक्रबाल को आए और उसके आगे ज़मीन तक झुककर उसे सिज्दा किया। ¹⁶ और उन्होंने उससे कहा, “अब देख, तेरे खादिमों के साथ पचास ताक़तवर जवान हैं, ज़रा उनको जाने दे कि वह तेरे आका को ढूँढ़ें, कहीं ऐसा न हो कि खुदावन्द की रूह ने उसे उठाकर किसी पहाड़ पर या किसी जंगल में डाल दिया हो।” उसने कहा, “मत भेजो।” ¹⁷ जब उन्होंने उससे बहुत ज़िद की, यहाँ तक कि वह शर्मा भी गया, तो उसने कहा, “भेज दो।” इसलिए उन्होंने पचास आदमियों को भेजा, और उन्होंने तीन दिन तक ढूँढ़ा पर उसे न पाया। ¹⁸ और वह अभी यरीहू में ठहरा हुआ था; जब वह उसके पास लौटे, तब उसने उनसे कहा, “क्या मैंने तुमसे न कहा था कि न जाओ?”

२२२२२ २२ २२२२ २२२२२२२

19 फिर उस शहर के लोगों ने इलीशा' से कहा, “जरा देख, ये शहर क्या अच्छे मौक़े' पर है, जैसा हमारा खुदावन्द खुद देखता है; लेकिन पानी खराब और ज़मीन बंजर है।” 20 उसने कहा, “मुझे एक नया प्याला ला दो, और उसमें नमक डाल दो।” वह उसे उसके पास ले आए। 21 और वह निकल कर पानी के चश्मे पर गया, और वह नमक उसमें डाल कर कहने लगा, “खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मैंने इस पानी को ठीक कर दिया है, अब आगे को इससे मौत या बंजरपन न होगा।” 22 देखो इलीशा' के कलाम के मुताबिक़ जो उसने फ़रमाया, वह पानी आज तक ठीक है 23 वहाँ से वह बैतएल को चला, और जब वह रास्ते में जा रहा था तो उस शहर के छोटे लड़के निकले, और उसे चिढ़ाकर कहने लगे, “चढ़ा चला जा, ऐ गंजे सिर वाले: चढ़ा चला जा, ऐ गंजे सिर वाले।” 24 और उसने अपने पीछे नज़र की, और उनको देखा और खुदावन्द का नाम लेकर उन पर ला'नत की; इसलिए जंगल में से दो रीछनियाँ निकली, और उन्होंने उनमें से बयालीस बच्चे फाड़ डाले। 25 वहाँ से वह कर्मिल पहाड़ को गया, फिर वहाँ से सामरिया को लौट आया।

3

२२२२२२२ २२ २२२२ २२ २२२ २२२ २२२

1 और शाह — ए — यहूदाह यहूसफ़त के अटारहवें बरस से अखीअब का बेटा यहूराम सामरिया में इस्राईल पर बादशाहत करने लगा, और उसने बारह साल बादशाहत की। 2 और उसने खुदावन्द के खिलाफ़ गुनाह किया; लेकिन अपने बाप और अपनी माँ की तरह नहीं, क्योंकि उसने बा'ल के उस सुतून को जो उसके बाप ने बनाया था दूर कर दिया। 3 तोभी वह नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया था लिपटा रहा, और उनसे अपने आपको अलग न किया। 4 मोआब का बादशाह मीसा बहुत भेड़ बक़रियाँ रखता था, और इस्राईल के बादशाह को एक लाख बरौँ और एक लाख मेंढों की ऊन देता था। 5 लेकिन जब अखीअब मर गया, तो मोआब का बादशाह इस्राईल के बादशाह से बागी हो गया। 6 उस वक़्त यहूराम बादशाह ने सामरिया से निकलकर सारे इस्राईल का जाएज़ा लिया। 7 और उसने जाकर यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त से पुछ़वा भेजा, “मोआब का बादशाह मुझ से बागी हो गया है; इसलिए क्या तू मोआब से लड़ने के लिए मेरे साथ चलेगा?” उसने जवाब दिया, “मैं चलूँगा; क्योंकि जैसा मैं हूँ। वैसा ही तू है, और जैसे मेरे लोग वैसे ही तेरे लोग, और जैसे

मेरे घोड़े वैसे ही तेरे घोड़े हैं।” 8 तब उसने पूछ़ा, “हम किस रास्ते से जाएँ?” उसने जवाब दिया, “अदोम के रास्ते से।” 9 चुनाँचे इस्राईल के बादशाह और यहूदाह के बादशाह और अदोम के बादशाह निकले; और उन्होंने सात दिन की मन्ज़िल का चक्कर काटा, और उनके लश्कर और चौपायों के लिए, जो पीछे पीछे आते थे, कहीं पानी न था। 10 और इस्राईल के बादशाह ने कहा, “अफ़सोस कि खुदावन्द ने इन तीन बादशाहों को इकट्ठा किया है, ताकि उनको मोआब के बादशाह के हवाले कर दे।” 11 लेकिन यहूसफ़त ने कहा, “क्या खुदावन्द के नबियों में से कोई यहाँ नहीं है, ताकि उसके वसीले से हम खुदावन्द की मर्ज़ी मा'लूम करें?” और इस्राईल के बादशाह के खादिमों में से एक ने जवाब दिया, “इलीशा' — बिन — साफ़त यहाँ है, जो एलियाह के हाथ पर पानी डालता था।” 12 यहूसफ़त ने कहा, “खुदावन्द का कलाम उसके साथ है।” तब इस्राईल के बादशाह और यहूसफ़त और अदोम के बादशाह उसके पास गए। 13 तब इलीशा' ने इस्राईल के बादशाह से कहा, “मुझ को तुझ से क्या काम? तू अपने बाप के नबियों और अपनी माँ के नबियों के पास जा।” पर इस्राईल के बादशाह ने उससे कहा, “नहीं, नहीं, क्योंकि खुदावन्द ने इन तीनों बादशाहों को इकट्ठा किया है, ताकि उनको मोआब के हवाले कर दे।” 14 इलीशा' ने कहा, “रब्ब — उल — अफ़वाज की हयात की क़सम, जिसके आगे मैं खड़ा हूँ, अगर मुझे यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त की हुज़ूरी के नज़दीक न होता, तो मैं तेरी तरफ़ नज़र भी न करता और न तुझे देखता। 15 लेकिन खैर, किसी बजाने वाले को मेरे पास लाओ।” और ऐसा हुआ कि जब उस बजाने वाले ने बजाया, तो खुदावन्द का हाथ उस पर ठहरा। 16 तब उसने कहा, “खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, इस जंगल में खन्दक़ ही खन्दक़ खोद डालो। 17 क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, 'तुम न हवा आती देखोगे और न पानी आते देखोगे, तोभी ये वादी पानी से भर जाएगी, और तुम भी पियोगे और तुम्हारे मवेशी और तुम्हारे जानवर भी। 18 और ये खुदावन्द के लिए एक हल्की सी बात है; वह मोआबियों को भी तुम्हारे हाथ में कर देगा। 19 और तुम हर फ़सीलदार शहर और उम्दा शहर क़ब्ज़ा लोगे, और हर अच्छे दरख़्त को काट डालोगे, और पानी के सब चश्मों को भर दोगे, और हर अच्छे खेत को पत्थरों से खराब कर दोगे।” 20 इसलिए सुबह को कुर्बानी पेश करने के वक़्त ऐसा हुआ, कि अदोम की राह से पानी बहता आया और वह मुल्क पानी से भर गया। 21 जब सब मोआबियों ने ये सुना कि बादशाहों ने उनसे

लड़ने के लिए चढ़ाई की है, तो वह सब जो हथियार बाँधने के काबिल थे, और उम्र दराज भी, इकट्ठे होकर सरहद पर खड़े हो गए; ²² और वह सुबह सवेरे उठे और सूरज पानी पर चमक रहा था, और मोआबियों को वह पानी जो उनके सामने था, खून की तरह सुख दिखाई दिया। ²³ तब वह कहने लगे, “ये तो खून है; वह बादशाह यकीनन हलाक हो गए हैं, और उन्होंने आपस में एक दूसरे को मार दिया है। इसलिए अब ऐ मोआब, लूट को चल।” ²⁴ जब वह इस्राईल की लश्करगाह में आए, तो इस्राईलियों ने उठकर मोआबियों को ऐसा मारा कि वह उनके आगे से भागे; पर वह आगे बढ़ कर मोआबियों को मारते मारते उनके मुल्क में घुस गए। ²⁵ और उन्होंने शहरों को गिरा दिया, और ज़मीन के हर अच्छे खित्ते पर सभी ने एक एक पत्थर डालकर उसे भर दिया, और उन्होंने पानी के सब चश्में बन्द कर दिए, और सब अच्छे दरख्त काट डाले, सिर्फ़ हरासत के पहाड़ ही के पत्थरों को बाक़ी छोड़ा, पर गोफ़न चलाने वालों ने उसको भी जा घेरा और उसे मारा। ²⁶ जब मोआब के बादशाह ने देखा कि जंग उसके लिए निहायत सख्त हो गई, तो उसने सात सौ तलवार वाले मर्द अपने साथ लिए, ताकि सफ़ चीर कर अदोम के बादशाह तक जा पहुँचे; पर वह ऐसा न कर सके। ²⁷ तब उसने अपने पहलौटे बेटे को लिया, जो उसकी जगह बादशाह होता, और उसे दीवार पर सोख़्तनी कुर्बानी के तौर पर पेश किया। यूँ इस्राईल पर बड़ा ग़ज़ब हुआ; तब वह उसके पास से हट गए और अपने मुल्क को लौट आए।

4

०००००० ०० ०० ०००० ०००० ०० ००० ००००

¹ और अम्बियाज़ादों की बीवियों में से एक 'औरत ने इलीशा' से फ़रियाद की और कहने लगी, “तेरा खादिम मेरा शौहर मर गया है, और तू जानता है कि तेरा खादिम खुदावन्द से डरता था; इसलिए अब क़र्ज देने वाला आया है कि मेरे दोनों बेटों को ले जाए ताकि वह गुलाम बनें।” ² इलीशा ने उससे कहा, “मैं तेरे लिए क्या करूँ? मुझे बता, तेरे पास घर में क्या है?” उसने कहा, “तेरी खादिमा के पास घर में एक प्याला तेल के 'अलावा कुछ भी नहीं।” ³ तब उसने कहा, “तू जा, और बाहर से अपने सब पड़ोसियों से बर्तन उजरत पर ले, वह बर्तन खाली हों, और थोड़े बर्तन न लेना।” ⁴ फिर तू अपने बेटों को साथ लेकर अन्दर जाना और पीछे से दरवाज़ा बन्द कर लेना, और उन सब बर्तनों में तेल उँडेलना, और जो भर जाए उसे उठा कर अलग रखना।” ⁵ तब वह उसके पास से गई, और उसने अपने बेटों को अन्दर साथ लेकर

दरवाज़ा बन्द कर लिया; और वह उसके पास लाते जाते थे और वह उँडेलती जाती थी। ⁶ जब वह बर्तन भर गए तो उसने अपने बेटे से कहा, “मेरे पास एक और बर्तन ला।” उसने उससे कहा, “और तो कोई बर्तन रहा नहीं।” तब तेल बन्द हो गया। ⁷ तब उसने आकर मर्द — ए — खुदा को बताया। उसने कहा, “जा, तेल बेच, और क़र्ज अदा कर, और जो बाक़ी रहे उससे तू और तेरे बेटे गुज़ारा करें।” ⁸ एक रोज़ ऐसा हुआ कि इलीशा' शूनीम को गया, वहाँ एक दौलतमन्द 'औरत थी; और उसने उसे रोटी खाने पर मजबूर किया। फिर तो जब कभी वह उधर से गुज़रता, रोटी खाने के लिए वहीं चला जाता था। ⁹ इसलिए उसने अपने शौहर से कहा, “देख, मुझे मा'लूम होता है कि ये मर्द — ए — खुदा, जो अकसर हमारी तरफ़ आता है, मुक़द्दस है।” ¹⁰ हम उसके लिए एक छोटी सी कोठरी दीवार पर बना दें, और उसके लिए एक पलंग और मेज़ और चौकी और चराग़दान लगा दें, फिर जब कभी वह हमारे पास आए तो वहीं ठहरेगा।” ¹¹ फिर एक दिन ऐसा हुआ कि वह उधर गया और उस कोठरी में जाकर वहीं सोया। ¹² फिर उसने अपने खादिम जेहाज़ी से कहा, “इस शूनीमी 'औरत को बुला ले।” उसने उसे बुला लिया और वह उसके सामने खड़ी हुई। ¹³ फिर उसने अपने खादिम से कहा, “तू उससे पूछ कि तूने जो हमारे लिए इस क़दर फ़िक्रें कीं, तो तेरे लिए क्या किया जाए? क्या तू चाहती है कि बादशाह से, या फ़ौज के सरदार से तेरी सिफ़ारिश की जाए?” उसने जवाब दिया, “मैं तो अपने ही लोगों में रहती हूँ।” ¹⁴ फिर उसने कहा, “उसके लिए क्या किया जाए?” तब जेहाज़ी ने जवाब दिया, “सच उसके कोई बेटा नहीं, और उसका शौहर बुढ़ा है।” ¹⁵ तब उसने कहा, “उसे बुला ले।” और जब उसने उसे बुलाया, तो वह दरवाज़े पर खड़ी हुई। ¹⁶ तब उसने कहा, “मौसम — ए — बहार में, वक्रत पूरा होने पर तेरी गोद में बेटा होगा।” उसने कहा, “नहीं, ऐ मेरे मालिक! ऐ मर्द — ए — खुदा, अपनी खादिमा से झूठ न कह।” ¹⁷ फिर वह 'औरत हामिला हुई और जैसा इलीशा' ने उससे कहा था, मौसम — ए — बहार में वक्रत पूरा होने पर उसके बेटा हुआ। ¹⁸ जब वह लड़का बढ़ा, तो एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपने बाप के पास खेत काटने वालों में चला गया। ¹⁹ और उसने अपने बाप से कहा, हाय मेरा सिर, हाय मेरा सिर! “उसने अपने खादिम से कहा, 'उसे उसकी माँ के पास ले जा।” ²⁰ जब उसने उसे लेकर उसकी माँ के पास पहुँचा दिया, तो वह उसके घुटनों पर दोपहर तक बैठा रहा, इसके बाद मर गया। ²¹ तब उसकी माँ ने ऊपर जाकर उसे मर्द — ए

— खुदा के पलंग पर लिटा दिया, और दरवाज़ा बन्द करके बाहर गई।²² और उसने अपने शौहर से पुकार कर कहा, “जल्द जवानों में से एक को, और गधों में से एक को मेरे लिए भेज दे, ताकि मैं मर्द — ए — खुदा के पास दौड़ जाऊँ और फिर लौट आऊँ।”²³ उसने कहा, “आज तू उसके पास क्यों जाना चाहती है? आज न तो नया चाँद है न सब्ब।” उसने जवाब दिया, “अच्छा ही होगा।”²⁴ और उसने गधे पर ज़ीन कसकर अपने खादिम से कहा, “चल, आगे बढ़; और सवारी चलाने में सुस्ती न कर, जब तक मैं तुझ से न कहूँ।”²⁵ तब वह चली और वह कर्मिल पहाड़ को मर्द — ए — खुदा के पास गई। उस मर्द — ए — खुदा ने दूर से उसे देखकर अपने खादिम जेहाज़ी से कहा, देख, उधर वह शूनीमी 'औरत' है।²⁶ अब ज़रा उसके इस्तक्रबाल को दौड़ जा, और उससे पूछ, 'क्या तू खैरियत से है? तेरा शौहर खैरियत से, बच्चा खैरियत से है?' उसने जवाब दिया, ठीक नहीं है।”²⁷ और जब वह उस पहाड़ पर मर्द — ए — खुदा के पास आई, तो उसके पैर पकड़ लिए, और जेहाज़ी उसे हटाने के लिए नज़दीक आया, पर मर्द — ए — खुदा ने कहा, “उसे छोड़ दे, क्योंकि उसका दिल परेशान है, और खुदावन्द ने ये बात मुझ से छिपाई और मुझे न बताया।”²⁸ और वह कहने लगी, क्या मैंने अपने मालिक से बेटे का सवाल किया था? क्या मैंने न कहा था, “मुझे धोका न दे?”²⁹ तब उसने जेहाज़ी से कहा, “कमर बाँध, और मेरी लाठी हाथ में लेकर अपना रास्ता ले; अगर कोई तुझे रास्ते में मिले तो उसे सलाम न करना, और अगर कोई तुझे सलाम करे तो जवाब न देना; और मेरी लाठी उस लड़के के मुँह पर रख देना।”³⁰ उस लड़के की माँ ने कहा, “खुदावन्द की हयात की क़सम और तेरी जान की क़सम, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगी।” तब वह उठ कर उसके पीछे — पीछे चला।³¹ और जेहाज़ी ने उनसे पहले आकर लाठी को उस लड़के के मुँह पर रखा; पर न तो कुछ आवाज़ हुई, न सुना। इसलिए वह उससे मिलने को लौटा, और उसे बताया, “लड़का नहीं जागा।”³² जब इलीशा' उस घर में आया, तो देखो, वह लड़का मरा हुआ उसके पलंग पर पड़ा था।³³ तब वह अकेला अन्दर गया, और दरवाज़ा बन्द करके खुदावन्द से दुआ की।³⁴ और ऊपर चढ़कर उस बच्चे पर लेट गया; और उसके मुँह पर अपना मुँह, और उसकी आँखों पर अपनी आँखें, और उसके हाथों पर अपने हाथ रख लिए, और उसके ऊपर लेट गया; तब उस बच्चे का जिस्म गर्म होने लगा।³⁵ फिर वह उठकर उस घर में एक बार टहला, और ऊपर चढ़कर उस बच्चे के ऊपर लेट गया; और वह बच्चा सात बार छींका और बच्चे ने आँखें खोल दीं।³⁶ तब उसने जेहाज़ी को बुला

कर कहा, “उस शूनीमी 'औरत' को बुला ले।” तब उसने उसे बुलाया, और जब वह उसके पास आई, तो उसने उससे कहा, “अपने बेटे को उठा ले।”³⁷ तब वह अन्दर जाकर उसके क़दमों पर गिरी और ज़मीन पर सिज्दे में हो गई; फिर अपने बेटे को उठा कर बाहर चली गई।³⁸ और इलीशा' फिर ज़िलज़ाल में आया, और मुल्क में काल था, और अम्बियाज़ादे उसके सामने बैठे हुए थे। और उसने अपने खादिम से कहा, “बड़ी देग चढ़ा दे, और इन अम्बियाज़ादों के लिए लप्सी पका।”³⁹ और उनमें से एक खेत में गया कि कुछ सब्ज़ी चुन लाए। तब उसे कोई जंगली लता मिल गई। उसने उसमें से इन्द्रायन तोड़कर दामन भर लिया और लौटा, और उनको काटकर लप्सी की देग में डाल दिया, क्योंकि वह उनको पहचानते न थे।⁴⁰ चुनाँचे उन्होंने उन मर्दों के खाने के लिए उसमें से ऊँडेला। और ऐसा हुआ कि जब वह उस लप्सी में से खाने लगे, तो चिल्ला उठे और कहा, “ऐ मर्द — ए — खुदा, देग में मौत है!” और वह उसमें से खा न सके।⁴¹ लेकिन उसने कहा, “आटा लाओ।” और उसने उस देग में डाल दिया और कहा, “उन लोगों के लिए उँडेलो, ताकि वह खाएँ।” फिर देग में कोई मुज़िर चीज़ बाक़ी न रही।⁴² बाल सलीसा से एक शख्स आया, और पहले फ़सल की रोटियाँ, या 'नी जौ के बीस गिर्दे और अनाज की हरी — हरी बाले मर्द ए — खुदा के पास लाया, उसने कहा, “इन लोगों को दे दे, ताकि वह खाएँ।”⁴³ उसके खादिम ने कहा, “क्या मैं इतने ही को सौ आदमियों के सामने रख दूँ?” फिर उसने फिर कहा, लोगों को दे दे, ताकि वह खाएँ; क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, “वह खाएँगे और उसमें से कुछ छोड़ भी देंगे।”⁴⁴ तब उसने उसे उनके आगे रखवा और उन्होंने खाया; और जैसा खुदावन्द ने फ़रमाया था, उसमें से कुछ छोड़ भी दिया।

5

22222 22 2222 22222222

¹ अराम के बादशाह के लश्कर का सरदार ना'मान, अपने आक्रा के नज़दीक मु'अज़्ज़ज़ — 'इज़्ज़तदार शख्स था; क्योंकि खुदावन्द ने उसके वसीले से अराम को फ़तह बख़्शी थी। वह ज़बरदस्त सूर्मा भी था, लेकिन कोढ़ी था।² और अरामी दल बाँधकर निकले थे, और इस्राईल के मुल्क में से एक छोटी लड़की को कैद करके ले आए थे; वह ना'मान की बीबी की ख़ादमा थी।³ उसने अपनी बीबी से कहा, “काश मेरा आक्रा उस नबी के यहाँ होता, जो सामरिया में है! तो वह उसे उसके कोढ़ से शिफ़ा दे देता।”⁴ तो किसी ने अन्दर जाकर अपने मालिक से कहा, “वह लड़की जो इस्राईल के मुल्क की है, ऐसा — ऐसा कहती है।”⁵ तब अराम के बादशाह

ने कहा, “तू जा, और मैं इस्राईल के बादशाह को खत भेजूंगा।” तब वह खाना खाया, और दस किन्तार चाँदी और छः हजार मिस्काल सोना और दस जोड़े कपड़े अपने साथ ले लिए।⁶ और वह उस खत को इस्राईल के बादशाह के पास लाया जिसका मज़मून ये था, “ये खत जब तुझको मिले, तो जान लेना कि मैंने अपने खादिम ना'मान को तेरे पास भेजा है, ताकि तू उसके कोढ़ से उसे शिफा दे।”⁷ जब इस्राईल के बादशाह ने उस खत को पढ़ा, तो अपने कपड़े फाड़कर कहा, “क्या मैं खुदा हूँ कि मारूँ और जिलाऊँ, जो ये शख्स एक आदमी को मेरे पास भेजता है कि उसको कोढ़ से शिफा दूँ? इसलिए अब ज़रा ग़ौर करो, देखो, कि वह किस तरह मुझ से झगड़ने का बहाना ढूँढता है।”⁸ जब मर्द — ए — खुदा इलीशा' ने सुना कि इस्राईल के बादशाह ने अपने कपड़े फाड़े, तो बादशाह को कहला भेजा, “तूने अपने कपड़े क्यों फाड़े? अब उसे मेरे पास आने दे, और वह जान लेगा कि इस्राईल में एक नबी है।”⁹ तब ना'मान अपने घोड़ों और रथों के साथ आया, और इलीशा' के घर के दरवाज़े पर खड़ा हुआ,¹⁰ और इलीशा' ने एक कासिद के ज़रिए' कहला भेजा, “जा और यरदन में सात बार गोता मार, तो तेरा जिस्म फिर बहाल हो जाएगा और तू पाक साफ़ होगा।”¹¹ पर ना'मान नाराज़ होकर चला गया और कहने लगा, “मुझे यकीन था कि वह निकल कर ज़रूर मेरे पास आएगा, और खड़ा होकर खुदावन्द अपने खुदा से दुआ करेगा, और उस जगह के ऊपर अपना हाथ इधर — उधर हिला कर कोढ़ी को शिफा देगा।¹² क्या दमिश्क के दरिया, अबाना और फ़रफ़र, इस्राईल की सब नदियों से बढ़ कर नहीं हैं? क्या मैं उनमें नहाकर पाक साफ़ नहीं हो सकता?” इसलिए वह लौटा और बड़े गुस्से में चला गया।¹³ तब उसके मुलाज़िम पास आकर उससे यूँ कहने लगे, “ऐं हमारे बाप, अगर वह नबी कोई बड़ा काम करने का हुक्म तुझे देता, तो क्या तू उसे न करता? इसलिए जब वह तुझ से कहता है कि नहा ले और पाक साफ़ हो जा, तो कितना ज्यादा इसे मानना चाहिए?”¹⁴ तब उसने उतरकर नबी के कहने के मुताबिक़ यरदन में सात गोते लगाए, और उसका जिस्म छोटे बच्चे के जिस्म की तरह हो गया और वह पाक साफ़ हुआ।¹⁵ फिर वह अपनी जिलौ के सब लोगों के साथ नबी के पास लौटा, और उसके सामने खड़ा हुआ और कहने लगा, “देख, अब मैंने जान लिया कि इस्राईल को छोड़ और कहीं इस ज़मीन पर कोई खुदा नहीं। इसलिए अब करम फ़रमाकर अपने खादिम का तोहफ़ा कुबूल कर।”¹⁶ लेकिन उसने जवाब दिया, “खुदावन्द की हयात की क़सम जिसके

आगे मैं खड़ा हूँ, मैं कुछ नहीं लूँगा।” और उसने उससे बहुत मजबूर किया कि ले, पर उसने इन्कार किया।¹⁷ तब ना'मान ने कहा, “अच्छा, तो मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, कि तेरे खादिम को दो खच्चरों का बोझ मिट्टी दी जाए' क्योंकि तेरा खादिम अब से आगे खुदावन्द के सिवा किसी ग़ैर — मा'बूद के सामने न तो सोख्तनी कुर्बानी न ज़बीहा पेश करेगा।¹⁸ तब इतनी बात में खुदावन्द तेरे खादिम को मु'आफ़ करे, कि जब मेरा आक्रा इबादत करने को रिम्मोन के बुतखाने में जाए और वह मेरे हाथ का सहारा ले, और मैं रिम्मोन के बुतखाने में सिज्दे में जाऊँ; तो जब मैं रिम्मोन के बुतखाने में सिज्दे में हो जाऊँ, तो खुदावन्द इस बात में तेरे खादिम को मु'आफ़ करे।”¹⁹ उसने उससे कहा, “सलामती जा।” तब वह उससे रुख़सत होकर थोड़ी दूर निकल गया।²⁰ लेकिन उस नबी इलीशा' के खादिम जेहाज़ी ने सोचा, “मेरे आक्रा ने अरामी ना'मान को यूँ ही जाने दिया कि जो कुछ वह लाया था उससे न लिया; इसलिए खुदावन्द की हयात की क़सम, मैं उसके पीछे दौड़ जाऊँगा और उससे कुछ न कुछ लूँगा।”²¹ तब जेहाज़ी ना'मान के पीछे चला। जब ना'मान ने देखा, कि कोई उसके पीछे दौड़ा आ रहा है, तो वह उससे मिलने को रथ पर से उतरा और कहा, “ख़ैर तो है?”²² उसने कहा, “सब ख़ैर है! मेरे मालिक ने मुझे ये कहने को भेजा है कि देख, अम्बियाज़ादों में से अभी दो जवान इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क से मेरे पास आ गए हैं; इसलिए ज़रा एक किन्तार चाँदी, और दो जोड़े कपड़े उनके लिए दे दे।”²³ ना'मान ने कहा, “खुशी से दो किन्तार ले।” और वह उससे बज़िद हुआ, और उसने दो किन्तार चाँदी दो थैलियों में बाँधी और दो जोड़े कपड़ों के साथ उनको अपने दो नौकरों पर लादा, और वह उनको लेकर उसके आगे — आगे चले।²⁴ और उसने टीले पर पहुँचकर उनके हाथ से उनको ले लिया और घर में रख दिया, और उन मर्दों को रुख़सत किया, तब वह चले गए।²⁵ लेकिन खुदा अन्दर जाकर अपने आक्रा के सामने खड़ा हो गया। इलीशा' ने उससे कहा, “जेहाज़ी, तू कहाँ से आ रहा है?” उसने कहा, “तेरा खादिम तो कहीं नहीं गया था।”²⁶ उसने उससे कहा, क्या मेरा दिल उस वक़्त तेरे साथ न था, जब वह शख्स तुझ से मिलने को अपने रथ पर से लौटा? क्या रुपये लेने, और पोशाक, और ज़ैतून के बाग़ों और ताकिस्तानों और भेड़ों और गुलामों, और लौंडियों के लेने का ये वक़्त है? ²⁷ इसलिए ना'मान का कोढ़ तुझे और तेरी नस्ल को हमेशा लगा रहेगा। इसलिए वह बर्फ़ की तरह सफ़ेद कोढ़ी होकर उसके सामने से चला गया।

6

222222 222 222222222222

1 और अम्बियाज़ादों ने इलीशा' से कहा, “देख, ये जगह जहाँ हम तेरे सामने रहते हैं, हमारे लिए छोटी है; 2 इसलिए हम को ज़रा यरदन को जाने दे कि हम वहाँ से एक एक कड़ी लेकर आएँ और अपने रहने के लिए एक घर बना सकें।” उसने जवाब दिया, “जाओ।” 3 तब एक ने कहा, “मेहरबानी से अपने खादिमों के साथ चल।” उसने कहा, “मैं चलूँगा।” 4 चुनाँचे वह उनके साथ गया, और जब वह यरदन पर पहुँचे तो लकड़ी काटने लगे। 5 लेकिन एक की कुल्हाड़ी का लोहा, जब वह कड़ी काट रहा था, पानी में गिर गया। तब वह चित्ला उठा, और कहने लगा, “हाय, मेरे मालिक! यह तो माँगा हुआ था।” 6 नबी ने कहा, “वह किस जगह गिरा?” उसने उसे वह जगह दिखाई। तब उसने एक छड़ी काट कर उस जगह डाल दी, और लोहा तैरने लगा। 7 फिर उसने कहा, “अपने लिए उठा ले।” तब उसने हाथ बढ़ाकर उसे उठा लिया।

222222 22 2222222222 22 22222 22222

8 अराम का बादशाह, इस्राईल के बादशाह से लड़ रहा था; और उसने अपने खादिमों से मशवरा किया कि “मैं इन जगह पर डेरा डालूँगा।” 9 इसलिए मर्द — ए — खुदा ने इस्राईल के बादशाह से कहला भेजा कि “खबरदार तू उन जगहों से मत गुज़रना, क्योंकि वहाँ अरामी आने को हैं।” 10 और इस्राईल के बादशाह ने उस जगह, जिसकी खबर मर्द — ए — खुदा ने दी थी और उसको आगाह कर दिया था, आदमी भेजे और वहाँ से अपने को बचाया, और यह सिर्फ़ एक या दो बार ही नहीं। 11 इस बात की वजह से अराम के बादशाह का दिल निहायत बेचैन हुआ; और उसने अपने खादिमों को बुलाकर उनसे कहा, “क्या तुम मुझे नहीं बताओगे कि हम में से कौन इस्राईल के बादशाह की तरफ़ है?” 12 तब उसके खादिमों में से एक ने कहा, “नहीं, ऐ मेरे मालिक, ऐ बादशाह! बल्कि इलीशा', जो इस्राईल में नबी है, तेरी उन बातों को जो तू अपनी आरामगाह में कहता है, इस्राईल के बादशाह को बता देता है।” 13 उसने कहा, “जाकर देखो वह कहाँ है, ताकि मैं उसे पकड़वाऊँ।” और उसे यह बताया गया, “वह दूतैन में है।” 14 तब उसने वहाँ घोड़ों और रथों, और एक बड़े लश्कर को रवाना किया; तब उन्होंने रातों रात आकर उस शहर को घेर लिया। 15 जब उस मर्द — ए — खुदा का खादिम सुबह को उठ कर बाहर निकला तो देखा, कि एक लश्कर घोड़ों के साथ और रथों के शहर के चारों तरफ़ है। तब उस खादिम ने जाकर उससे कहा, “हाय! ऐ मेरे मालिक, हम क्या करें?” 16 उसने जवाब दिया,

“खौफ़ न कर, क्योंकि हमारे साथ वाले उनके साथ वालों से ज्यादा हैं।” 17 और इलीशा' ने दुआ की और कहा, “ऐ खुदावन्द, उसकी आँखें खोल दे ताकि वह देख सके।” तब खुदावन्द ने उस जवान की आँखें खोल दीं, और उसने जो निगाह की तो देखा कि इलीशा' के चारों तरफ़ का पहाड़ आग के घोड़ों और रथों से भरा है। 18 और जब वह उसकी तरफ़ आने लगे, तो इलीशा' ने खुदावन्द से दुआ की और कहा, “मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, इन लोगों को अन्धा कर दे।” इसलिए उसने जैसा इलीशा' ने कहा था, उनको अन्धा कर दिया। 19 फिर इलीशा' ने उनसे कहा, “यह वह रास्ता नहीं और न ये वह शहर है, तुम मेरे पीछे चले आओ, और मैं तुम को उस शख्स के पास पहुँचा दूँगा जिसकी तुम तलाश करते हो।” और वह उनको सामरिया को ले गया। 20 जब वह सामरिया में पहुँचे तो इलीशा' ने कहा, “ऐ खुदावन्द, इन लोगों की आँखें खोल दे, ताकि वह देख सके।” तब खुदावन्द ने उनकी आँखें खोल दीं, उन्होंने जो निगाह की, तो क्या देखा कि सामरिया के अन्दर हैं। 21 और इस्राईल के बादशाह ने उनको देखकर इलीशा' से कहा, “ऐ मेरे बाप, क्या मैं उनको मार लूँ? मैं उनको मार लूँ?” 22 उसने जवाब दिया, “तू उनको न मार। क्या तू उनको मार दिया करता है, जिनको तू अपनी तलवार और कमान से कैद कर लेता है? तू उनके आगे रोटी और पानी रख, ताकि वह खाएँ — पिएँ और अपने मालिक के पास जाएँ।” 23 तब उसने उनके लिए बहुत सा खाना तैयार किया; और जब वह खा पी चुके तो उसने उनको रुख्सत किया, और वह अपने मालिक के पास चले गए। और अराम के गिरोह इस्राईल के मुल्क में फिर न आए। 24 इसके बाद ऐसा हुआ कि बिनहदद, अराम, का बादशाह अपनी सब फ़ौज इकट्ठी करके चढ़ आया और सामरिया का घेरा कर लिया। 25 और सामरिया में बड़ा काल था, और वह उसे घेरे रहे, यहाँ तक कि गधे का सिर चाँदी के अस्सी सिक्कों में और कबूतर की बीट का एक चौथाई पैमाना' चाँदी के पाँच सिक्कों में बिकने लगा। 26 जब इस्राईल का बादशाह दीवार पर जा रहा था, तो एक 'औरत ने उसकी दुहाई दी और कहा, “ऐ मेरे मालिक, ऐ बादशाह, मदद कर।” 27 उसने कहा, “अगर खुदावन्द ही तेरी मदद न करे, तो मैं कहाँ से तेरी मदद करूँ? क्या खलिहान से, या अंगूर के कोल्हू से?” 28 फिर बादशाह ने उससे कहा, “तुझे क्या हुआ?” उसने जवाब दिया, इस 'औरत ने मुझसे कहा, 'अपना बेटा दे दे, ताकि हम आज के दिन उसे खाएँ; और मेरा बेटा जो है, फिर उसे हम कल खाएँगे। 29 तब मेरे बेटे को हम ने पकाया और उसे खा लिया,

और दूसरे दिन मैंने उससे कहा, 'अपना बेटा ला, ताकि हम उसे खाएँ; "लेकिन उसने अपना बेटा छिपा दिया है।" 30 बादशाह ने उस 'औरत की बातें सुनकर अपने कपड़े फाड़े; उस वक्त वह दीवार पर चला जाता था, और लोगों ने देखा कि अन्दर उसके तन पर टाट है। 31 और उसने कहा, "अगर आज साफ़त के बेटे इलीशा' का सिर उसके तन पर रह जाए, तो खुदावन्द मुझसे ऐसा बल्कि इससे ज्यादा करे।" 32 लेकिन इलीशा' अपने घर में बैठा रहा, और बुजुर्ग लोग उसके साथ बैठे थे, और बादशाह ने अपने सामने से एक शख्स को भेजा, पर इससे पहले कि वह क़ासिद उसके पास आए, उसने बुजुर्गों से कहा, "तुम देखते हो कि उस क़ातिल के बेटे ने मेरा सिर उड़ा देने को एक आदमी भेजा है? इसलिए देखो, जब वह क़ासिद आए, तो दरवाज़ा बन्द कर लेना और मज़बूती से दरवाज़े को उसके सामने पकड़े रहना। क्या उसके पीछे — पीछे उसके मालिक के पैरों की आहट नहीं?" 33 और वह उनसे अभी बातें कर ही रहा था कि देखो, कि वह क़ासिद उसके पास आ पहुँचा, और उसने कहा, "देखो, ये बला खुदावन्द की तरफ़ से है, अब आगे मैं खुदावन्द का रास्ता क्यों देखूँ?"

7

1 तब इलीशा' ने कहा, तुम खुदावन्द की बात सुनो, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि "कल इसी वक्त के करीब सामरिया के फाटक पर एक मिस्काल में एक पैमाना' मैदा, और एक ही मिस्काल में दो पैमाना जौ बिकेगा।" 2 तब उस सरदार ने जिसके हाथ पर बादशाह भरोसा करता था, मर्द — ए — खुदा को जवाब दिया, देख, अगर खुदावन्द आसमान में खिड़कियाँ भी लगा दे, तोभी क्या ये बात हो सकती है उसने कहा, "सुन, तू इसे अपनी आँखों से देखेगा, लेकिन तू उसमें से खाने न पाएगा।"

????? ?? ??????? ?? ?????? ??? ??????

3 और उस जगह जहाँ से फाटक में दाखिल होते थे, चार कोढ़ी थे: उन्होंने एक दूसरे से कहा, हम यहाँ बैठे — बैठे क्यों मरें? 4 अगर हम कहें, "शहर के अन्दर जाएँगे, तो शहर में क्रहत है और हम वहाँ मर जाएँगे; और अगर यहीं बैठे रहें, तोभी मरेंगे। इसलिए आओ, हम अरामी लश्कर में जाएँ, अगर वह हमको जीता छोड़ें तो हम जीते रहेंगे; और अगर वह हम को मार डालें, तो हम को मरना ही तो है।" 5 फिर वह शाम के वक्त उठ कर अरामियों के लश्करगाह को गए, और जब वह अरामियों के लश्करगाह की बाहर की हद पर पहुँचे तो देखा, कि वहाँ कोई आदमी नहीं है। 6 क्योंकि खुदावन्द ने रथों की आवाज़ और घोड़ों की आवाज़ बल्कि एक

बड़ी फ़ौज की आवाज़ अरामियों के लश्कर को सुनवाई, इसलिए वह आपस में कहने लगे, "देखो, इस्राईल के बादशाह ने हित्तियों के बादशाहों और मिसिर्यों के बादशाहों को हमारे खिलाफ़ मज़दूरी पर बुलाया है, ताकि वह हम पर चढ़ आएँ।" 7 इसलिए वह उठे, और शाम को भाग निकले; और अपने खेमे, और अपने घोड़े, और अपने गधे, बल्कि सारी लश्करगाह जैसी की तैसी छोड़ दी और अपनी जान लेकर भागे। 8 चुनाँचे जब ये कोढ़ी लश्करगाह की बाहर की हद पर पहुँचे, तो एक खेमे में जाकर उन्होंने खाया पिया, और चाँदी और सोना और लिबास वहाँ से ले जाकर छिपा दिया, और लौट कर आए और दूसरे खेमे में दाखिल होकर वहाँ से भी ले गए और जाकर छिपा दिया। 9 फिर वह एक दूसरे से कहने लगे, "हम अच्छा नहीं करते; आज का दिन खुशख़बरी का दिन है, और हम ख़ामोश हैं; अगर हम सुबह की रोशनी तक ठहरे रहे तो सज़ा पाएँगे। अब आओ, हम जाकर बादशाह के घराने को ख़बर दें।" 10 फिर उन्होंने आकर शहर के दरबान को बुलाया और उनको बताया, "हम अरामियों की लश्करगाह में गए, और देखो, वहाँ न आदमी है न आदमी की आवाज़, सिर्फ़ घोड़े बन्धे हुए, और गधे बन्धे हुए, और खेमे जैसे थे वैसे ही हैं।" 11 और दरबानों ने पुकार कर बादशाह के महल में ख़बर दी। 12 तब बादशाह रात ही को उठा, और अपने खादिमों से कहा कि "मैं तुम को बताता हूँ, अरामियों ने हम से क्या किया है? वह ख़ूब जानते हैं कि हम भूके हैं; इसलिए वह मैदान में छिपने के लिए लश्करगाह से निकल गए हैं, और सोचा है कि जब हम शहर से निकलें तो वह हम को ज़िन्दा पकड़ लें, और शहर में दाखिल हो जाएँ।" 13 और उसके खादिमों में से एक ने जवाब दिया, "ज़रा कोई उन बचे हुए घोड़ों में से जो शहर में बाक़ी हैं पाँच घोड़े ले वह तो इस्राईल की सारी जमा'अत की तरह हैं जो बाक़ी रह गई है, बल्कि वह उस सारी इस्राईली जमा'अत की तरह हैं जो फ़ना हो गई, और हम उनको भेज कर देखें।" 14 तब उन्होंने दो रथ घोड़ों के साथ लिए, और बादशाह ने उनको अरामियों के लश्कर के पीछे भेजा कि जाकर देखें। 15 और वह उनके पीछे यरदन तक चले गए; और देखो, सारा रास्ता कपड़ों और बर्तनों से भरा पड़ा था जिनको अरामियों ने जल्दी में फेंक दिया था। तब क़ासिदों ने लौट कर बादशाह को ख़बर दी। 16 तब लोगों ने निकल कर अरामियों की लश्करगाह को लूटा। फिर एक मिस्काल में एक पैमाना मैदा, और एक ही मिस्काल में दो पैमाने जौ, खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ बिका। 17 और बादशाह ने उसी सरदार को जिसके हाथ पर भरोसा करता था, फाटक पर मुक़र्रर

किया; और वह फाटक में लोगों के पैरों के नीचे दब कर मर गया, जैसा नबी ने फ़रमाया था, जिसने ये उस वक़्त कहा था जब बादशाह उसके पास आया था।¹⁸ और नबी ने जैसा बादशाह से कहा था, कल इसी वक़्त के करीब एक मिस्क्राल में दो पैमाने जौ, और एक ही मिस्क्राल में एक पैमाना मैदा सामरिया के फाटक पर मिलेगा, वैसा ही हुआ; ¹⁹ और उस सरदार ने नबी को जवाब दिया था, “देख, अगर खुदावन्द आसमान में खिड़कियाँ भी लगा दे, तोभी क्या ऐसी बात हो सकती है?” और इसने कहा था, “तू अपनी आँखों से देखेगा, पर उसमें से खाने न पाएगा।” ²⁰ इसलिए उसके साथ ठीक ऐसा ही हुआ, क्योंकि वह फाटक में लोगों के पैरों के नीचे दबकर मर गया।

8

222222 22 22 222 22 222222

¹ और इलीशा' ने उस 'औरत से जिसके बेटे को उसने ज़िन्दा किया था, ये कहा था, “उठ और अपने खानदान के साथ जा, और जहाँ कहीं तू रह सके वहीं रह; क्योंकि खुदावन्द ने काल का हुक्म दिया है; और वह मुल्क में सात बरस तक रहेगा भी।” ² तब उस 'औरत ने उठ कर नबी के कहने के मुताबिक़ किया, और अपने खानदान के साथ जाकर फ़िलिस्तियों के मुल्क में सात बरस तक रही। ³ सातवें साल के आखिर में ऐसा हुआ कि ये 'औरत फ़िलिस्तियों के मुल्क से लौटी, और बादशाह के पास अपने घर और अपनी ज़मीन के लिए फ़रियाद करने लगी। ⁴ उस वक़्त बादशाह नबी के खादिम जेहाज़ी से बातें कर रहा और ये कह रहा था, “ज़रा वह सब बड़े बड़े काम जो इलीशा' ने किए मुझे बता।” ⁵ और ऐसा हुआ कि जब वह बादशाह को बता ही रहा था, कि उसने एक मुर्दे को ज़िन्दा किया, तो वही 'औरत जिसके बेटे को उसने ज़िन्दा किया था, आकर बादशाह के अपने घर और अपनी ज़मीन के लिए फ़रियाद करने लगी। तब जेहाज़ी बोल उठा, “ऐ मेरे मालिक, ऐ बादशाह! यही वह 'औरत है, यही उसका बेटा है जिसे इलीशा' ने ज़िन्दा किया था।” ⁶ जब बादशाह ने उस 'औरत से पूछा, तो उसने उसे सब कुछ बताया। तब बादशाह ने एक ख्वाजासरा को उसके लिए मुक़र्रर कर दिया और फ़रमाया, सब कुछ जो इसका था, और जब से इसने इस मुल्क को छोड़ा, उस वक़्त से अब तक की खेत की सारी पैदावार इसको दे दो। ⁷ और इलीशा' दमिश्क़ में आया, और अराम का बादशाह बिनहदद बीमार था; और उसकी ख़बर हुई, वह नबी इधर आया है, ⁸ और बादशाह ने हज़ाएल से कहा, “अपने हाथ में तोहफ़ा लेकर नबी के इस्तक्रबाल को जा, और उसके ज़रिए खुदावन्द से दरियाफ़्त कर, मैं इस

बीमारी से शिफ़ा पाऊँगा या नहीं?” ⁹ तब हज़ाएल उससे मिलने को चला और उसने दमिश्क़ की हर उम्दा चीज़ में से चालीस ऊँटों पर तोहफ़े लदवाकर अपने साथ लिया, और आकर उसके सामने खड़ा हुआ और कहने लगा, तेरे बेटे बिनहदद अराम के बादशाह ने मुझे को तेरे पास ये पूछने को भेजा है, 'मैं इस बीमारी से शिफ़ा पाऊँगा या नहीं?' “¹⁰ इलीशा' ने उससे कहा, जा उससे कह तू ज़रूर शिफ़ा पाएगा तोभी खुदावन्द ने मुझे को यह बताया है कि वह यक़ीनन मर जाएगा।” ¹¹ और वह उसकी तरफ़ नज़र लगा कर देखता रहा, यहाँ तक कि वह शर्मा गया; फिर नबी रोने लगा। ¹² और हज़ाएल ने कहा, “मेरे मालिक रोता क्यों है?” उसने जवाब दिया, इसलिए कि मैं उस गुनाह से जो तू बनी — इस्राईल से करेगा, आगाह हूँ; तू उनके क़िलों में आग लगाएगा, और उनके जवानों को हलाक करेगा, और उनके बच्चों को पटख — पटख कर टुकड़े — टुकड़े करेगा, और उनकी हामिला 'औरतों को चीर डालेगा। ¹³ हज़ाएल ने कहा, “तेरे खादिम की जो कुत्ते के बराबर है, हक़ीक़त ही क्या है, जो वह ऐसी बड़ी बात करे?” इलीशा' ने जवाब दिया, खुदावन्द ने मुझे बताया है कि “तू अराम का बादशाह होगा।” ¹⁴ फिर वह इलीशा' से रुख़्सत हुआ, और अपने मालिक के पास आया, उसने पूछा, “इलीशा' ने तुझ से क्या कहा?” उसने जवाब दिया, “उसने मुझे बताया कि तू ज़रूर शिफ़ा पाएगा।” ¹⁵ और दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उसने बाला पोश को लिया, और उसे पानी में भिगोकर उसके मुँह पर तान दिया, ऐसा कि वह मर गया। और हज़ाएल उसकी जगह सल़्तनत करने लगा। ¹⁶ और इस्राईल का बादशाह अख़ीअब के बेटे यूराम के पाँचवें साल, जब यहूसफ़त यहूदाह का बादशाह था, तो यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त का बेटा यहूराम सल़्तनत करने लगा। ¹⁷ जब वह सल़्तनत करने लगा तो बत्तीस साल का था, और उसने येरूशलेम में आठ साल बादशाही की। ¹⁸ उसने भी अख़ीअब के घराने की तरह इस्राईल के बादशाहों के रास्ते की पैरवी की; क्योंकि अख़ीअब की बेटी उसकी बीवी थी और उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया। ¹⁹ तोभी खुदावन्द ने अपने बन्दे दाऊद की खातिर न चाहा कि यहूदाह को हलाक करे। क्योंकि उसने उससे वा'दा किया था कि वह उसे उसकी नस्ल के वास्ते हमेशा के लिए एक चराग़ देगा। ²⁰ उसी के दिनों में अदोम यहूदाह की इता'अत से फिर गया, और उन्होंने अपने लिए एक बादशाह बना लिया। ²¹ तब यूराम' सईर को गया और उसके सब रथ उसके साथ थे, और उसने रात को उठ कर अदोमियों

को जो उसे घेरे हुए थे, और रथों के सरदारों को मारा, और लोग अपने डेरों को भाग गए। ²² ऐसे अदोम यहूदाह की इता'अत से आज तक फिरा है। और उसी वक्त लिबनाह भी फिर गया। ²³ यूराम के बाक्री काम और सब कुछ जो उसने किया, तो क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखे नहीं? ²⁴ और यूराम अपने बाप दादा के साथ सो गया, और दाऊद के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफन हुआ, और उसका बेटा अखज़ियाह उसकी जगह बादशाह हुआ। ²⁵ और इस्राईल के बादशाह अखीअब के बेटे यूराम के बारहवें साल से यहूदाह का बादशाह यहूराम का बेटा अखज़ियाह सल्तनत करने लगा। ²⁶ अखज़ियाह बाईस साल का था, जब वह सल्तनत करने लगा; और उसने येरूशलेम में एक साल सल्तनत की। उसकी माँ का नाम 'अतलियाह था, जो इस्राईल के बादशाह उमरी की बेटी थी। ²⁷ और वह भी अखीअब के घराने के रास्ते पर चला, और उसने अखीअब के घराने की तरह खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया, क्योंकि वह अखीअब के घराने का दामाद था। ²⁸ और वह अखीअब के बेटे यूराम के साथ रामात जिल'आद में अराम के बादशाह हज़ाएल से लड़ने को गया, और अरामियों ने यूराम को ज़ख्मी किया। ²⁹ इसलिए यूराम बादशाह लौट गया ताकि वह यज़र'एल में उन ज़ख्मों का इलाज कराए, जो अराम के बादशाह हज़ाएल से लड़ते वक्त रामा में अरामियों के हाथ से लगे थे। और यहूदाह का बादशाह यहूराम का बेटा अखज़ियाह अखीअब के बेटे यूराम को देखने के लिए यज़र'एल में आया क्योंकि वह बीमार था।

9

2222 22 22222222 22 222222 22 22 2222 2222

¹ और इलीशा' नबी ने अम्बियाज़ादों में से एक को बुलाकर उससे कहा, अपनी कमर बाँध, और तेल की ये कुप्पी अपने हाथ में ले, और रामात जिल'आद को जा। ² और जब तू वहाँ पहुँचे तो याहू — बिन — यहूसफ़त बिन — निमसी को पूछ, और अन्दर जाकर उसे उसके भाइयों में से उठा और अन्दर की कोठरी में ले जा। ³ फिर तेल की यह कुप्पी लेकर उसके सिर पर डाल और कह, "खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि मैंने तुझे मसह करके इस्राईल का बादशाह बनाया है, फिर तू दरवाज़ा खोल कर भागना और ठहरना मत।" ⁴ तब वह जवान, या'नी वह जवान जो नबी था, रामात जिल'आद को गया। ⁵ जब वह पहुँचा तो लश्कर के सरदार बैठे हुए

थे उसने कहा, "ऐ सरदार, मेरे पास तेरे लिए एक पैग़ाम है।" याहू ने कहा, "हम सभी में से किसके लिए?" उसने कहा, "ऐ सरदार, तेरे लिए।" ⁶ तब वह उठ कर उस घर में गया, तब उसने उसके सिर पर वह तेल डाला, और उससे कहा, "खुदावन्द, इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है, कि मैंने तुझे मसह करके खुदावन्द की क्रौम या'नी इस्राईल का बादशाह बनाया है।" ⁷ इसलिए तू अपने मालिक अखीअब के घराने को मार डालना, ताकि मैं अपने बन्दों, नबियों के खून का और खुदावन्द के सब बन्दों के खून का इन्तिक़ाम ईज़बिल के हाथ से लूँ। ⁸ क्योंकि अखीअब का सारा घराना हलाक होगा, और मैं अखीअब की नस्ल के हर एक लड़के को, और उसको जो इस्राईल में बन्द है और उसको जो आज़ाद छूटा हुआ है, काट डालूँगा। ⁹ और मैं अखीअब के घर को नबात के बेटे युरब'आम के घर और अखियाह के बेटे बाशा के घर की तरह कर दूँगा। ¹⁰ और ईज़बिल को यज़र'एल के इलाक़े में कुत्ते खाएँगे, वहाँ कोई न होगा जो उसे दफ़न करे।" फिर वह दरवाज़ा खोल कर भागा। ¹¹ तब याहू अपने मालिक के खादिमों के पास बाहर आया; और एक ने उससे पूछा, "सब ख़ैर तो है? यह दीवाना तेरे पास क्यों आया था?" उसने उनसे कहा, "तुम उस शख्स से और उसके पैग़ाम से वाकिफ़ हो।" ¹² उन्होंने कहा, "यह झूठ है; अब हम को हाल बता।" उसने कहा, "उसने मुझ से इस तरह की बात की और कहा, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि 'मैंने तुझे मसह करके इस्राईल का बादशाह बनाया है।' " ¹³ तब उन्होंने जल्दी की और हर एक ने अपनी पोशाक लेकर उसके नीचे सीढ़ियों की चोटी पर बिछाई, और तुरही फूँककर कहने लगे, "याहू बादशाह है।" ¹⁴ तब याहू — बिन — यहूसफ़त — बिन — निमसी ने यूराम के खिलाफ़ साज़िश की। और यूराम सारे इस्राईल के साथ अराम के बादशाह हज़ाएल की वजह से रामात जिल'आद की हिमायत कर रहा था; ¹⁵ लेकिन यूराम बादशाह लौट गया था, ताकि यज़र'एल में उन ज़ख्मों का इलाज कराए जो अराम के बादशाह हज़ाएल से लड़ते वक्त अरामियों के हाथ से लगे थे। तब याहू ने कहा, "अगर तुम्हारी मर्जी यही है, तो कोई यज़र'एल जाकर ख़बर करने के लिए इस शहर से भागने और निकलने न पाए।" ¹⁶ और याहू रथ पर सवार होकर यज़र'एल को गया, क्योंकि यूराम वहीं पड़ा हुआ था। और यहूदाह का बादशाह अखज़ियाह यूराम की मुलाक़ात को आया हुआ था। ¹⁷ यज़र'एल में निगहबान बुर्ज पर खड़ा था, और उसने जो याहू के लश्कर को आते हुए देखा, तो कहा, "मुझे एक लश्कर

दिखाई देता है।” यूराम ने कहा, एक सवार को लेकर उनसे मिलने को भेज, वह ये पूछे, “खैर है?” 18 चुनाँचे एक शख्स घोड़े पर उससे मिलने को गया और कहा, बादशाह पूछता है, ‘खैर है?’ “याहू ने कहा, तुझे खैर से क्या काम? मेरे पीछे हो ले।” फिर निगहबान ने कहा, “कासिद उनके पास पहुँच तो गया, लेकिन वापस नहीं आता।” 19 तब उसने दूसरे को घोड़े पर रवाना किया, जिसने उनके पास जाकर उनसे कहा, बादशाह यूँ कहता है, ‘खैर है?’ “याहू ने जवाब दिया, तुझे खैर से क्या काम? मेरे पीछे हो ले।” 20 फिर निगहबान ने कहा, “वह भी उनके पास पहुँच तो गया, लेकिन वापस नहीं आता। और रथ का हाँकना ऐसा है जैसे निमसी के बेटे याहू का हाँकना होता है, क्योंकि वही सुस्ती से हाँकता है।” 21 तब यूराम ने फ़रमाया, “जोत ले।” तब उन्होंने उसके रथ को जोत लिया। तब इस्राईल का बादशाह यूराम और यहूदाह का बादशाह अखज़ियाह अपने — अपने रथ पर निकले और याहू से मिलने को गए, और यज़र'एली नबोत की मिल्कियत में उससे दो चार हुए। 22 यूराम ने याहू को देखकर कहा, “ऐ याहू, खैर है?” उसने जवाब दिया, “जब तक तेरी माँ ईज़बिल की ज़िनाकारियाँ और उसकी जादूगरियाँ इस क्रूर हैं, तब तक कैसी खैर?” 23 तब यूराम ने बाग़'मोड़ी और भागा, और अखज़ियाह से कहा, “ऐ अखज़ियाह यह धोखा है।” 24 तब याहू ने अपने सारे ज़ोर से कमान खेंची, और यूराम के दोनों शानों के बीच ऐसा मारा के तीर उसके दिल से पार हो गया और वह अपने रथ में गिरा। 25 तब याहू ने अपने लश्कर के सरदार बिदकर से कहा, उसे लेकर यज़र'एली नबोत की मिल्कियत के खेत में डाल दे; क्योंकि याद कर कि जब मैं और तू उसके बाप अखीअब के पीछे पीछे सवार होकर चल रहे थे, तो खुदावन्द ने ये फ़तवा उस पर दिया था, 26 “यक्रीनन मैंने कल नबोत के खून और उसके बेटों के खून को देखा है, खुदावन्द फ़रमाता है; और मैं इसी खेत में तुझे बदला दूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है। इसलिए जैसा खुदावन्द ने फ़रमाया है, उसे लेकर उसी जगह डाल दे।” 27 लेकिन जब यहूदाह के बादशाह अखज़ियाह ने ये देखा, तो वह बाग़ की बारह दरी के रास्ते से निकल भागा। और याहू ने उसका पीछा किया और कहा, “उसे भी रथ ही में मार दो।” चुनाँचे उन्होंने उसे जूर की चढ़ाई पर, जो इबली'आम के करीब है मारा; और वो मजिही को भागा, और वहीं मर गया। 28 और उसके खादिम उसको एक रथ में येरूशलेम को ले गए, और उसे उसकी क़ब्र में दाऊद के शहर में उसके बाप

— दादा के साथ दफ़न किया। 29 और अखीअब के बेटे यूराम के ग्यारहवें साल अखज़ियाह यहूदाह का बादशाह हुआ। 30 जब याहू यज़र'एल में आया, तो ईज़बिल ने सुना और अपनी आँखों में सुरमा लगा, और अपना सिर संवार खिड़की से झाँकने लगी। 31 और जैसे ही याहू फाटक में दाखिल हुआ, वह कहने लगी, “ऐ ज़िमरी। अपने आका के कातिल, खैर तो है?” 32 पर उसने खिड़की की तरफ़ मुँह उठा कर कहा, “मेरी तरफ़ कौन है, कौन?” तब दो तीन ख्वाजासराओं ने इसकी तरफ़ देखा। 33 इसने कहा, “उसे नीचे गिरा दो।” तब उन्होंने उसे नीचे गिरा दिया, और उसके खून के छींटें दीवार पर और घोड़ों पर पड़ीं, और इसने उसे पैरों तले रौदा। 34 जब ये अन्दर आया, तो इसने खाया पिया; फिर कहने लगा, “जाओ, उस ला'नती औरत को देखो, और उसे दफ़न करो क्योंकि वह शहज़ादी है।” 35 और वह उसे दफ़न करने गए, पर सिर और उसके पैर और हथेलियों के सिवा उसका और कुछ उनको न मिला। 36 इसलिए वह लौट आए और उसे ये बताया, इसने कहा, ये खुदावन्द का वही सुखन है, जो उसने अपने बन्दे एलियाह तिशबी के मा'रिफ़त फ़रमाया था, 'यज़र'एल के इलाक़े में कुत्ते ईज़बिल का गोश्त खाएँगे; 37 और ईज़बिल की लाश यज़र'एल के इलाक़े में खेत में खाद की तरह पड़ी रहेगी, यहाँ तक कि कोई न कहेगा कि “यह ईज़बिल है।”

10

22222 22 22222 22 2222222 22 2222222 22222

1 सामरिया में अखीअब के सत्तर बेटे थे। इसलिए याहू ने सामरिया में यज़र'एल के अमीरों, या'नी बुज़ुर्गों के पास और उनके पास जो अखीअब के बेटों के पालने वाले थे, खत लिख भेजे, 2 कि “जिस हाल में तुम्हारे मालिक के बेटे तुम्हारे साथ हैं, और तुम्हारे पास रथ और घोड़े और फ़सीलदार शहर भी और हथियार भी हैं; इसलिए इस खत के पहुँचते ही, 3 तुम अपने मालिक के बेटों में सबसे अच्छे और लायक़ को चुनकर उसे उसके बाप के तख़्त पर बिठाओ, और अपने मालिक के घराने के लिए जंग करो। 4 लेकिन वह निहायत परेशान हुए और कहने लगे देखो दो बादशाह तो उसका मुक़ाबिला न कर सके; तो हम क्यूँ कर सकेंगे?” 5 इसलिए महल के दीवान ने और शहर के हाकिम ने और बुज़ुर्गों ने भी, और लड़कों के पालने वालों ने याहू को कहला भेजा, “हम सब तेरे खादिम हैं, और जो कुछ तू फ़रमाएगा वह सब हम करेंगे; हम किसी को बादशाह नहीं बनाएँगे, जो कुछ तेरी नज़र में अच्छा है वही कर।” 6 तब उसने

दूसरी बार एक खत उनको लिख भेजा, कि “अगर तुम मेरी तरफ़ हो और मेरी बात मानना चाहते हो, तो अपने मालिक के बेटों के सिर उतार कर कल यज़र'एल में इसी वक़्त मेरे पास आ जाओ।” उस वक़्त शाहज़ादे जो सत्तर आदमी थे, शहर के उन बड़े आदमियों के साथ थे जो उनके पालनेवाले थे।⁷ इसलिए जब यह खत उनके पास आया, तो उन्होंने शाहज़ादों को लेकर उनको, या'नी उन सत्तर आदमियों को क़त्ल किया और उनके सिर टोक़रों में रख कर उनको उसके पास यज़र'एल में भेज दिया।⁸ तब एक क़ासिद ने आकर उसे ख़बर दी, “वह शाहज़ादों के सिर लाए हैं।” उसने कहा, “तुम शहर के फाटक के मदख़ल पर उनकी दो ढेरियाँ लगा कर कल सुबह तक रहने दो।”⁹ और सुबह को ऐसा हुआ कि वह निकल कर खड़ा हुआ और सब लोगों से कहने लगा, “तुम तो रास्त हो। देखो, मैंने तो अपने मालिक के खिलाफ़ बन्दिश बाँधी और उसे मारा; पर इन सभों को किसने मारा?”¹⁰ इसलिए अब जान लो कि खुदावन्द के उस बात में से, जिसे खुदावन्द ने अख़ीअब के घराने के हक़ में फ़रमाया, कोई बात खाक में नहीं मिलेगी; क्योंकि खुदावन्द ने जो कुछ अपने बन्दे एलियाह के ज़रिए फ़रमाया था उसे पूरा किया।”¹¹ इसलिए याहू ने उन सबको जो अख़ीअब के घराने से यज़र'एल में बच रहे थे, और उसके सब बड़े आदमियों और क़रीबी दोस्तों और काहिनों को क़त्ल किया, यहाँ तक कि उसने उसके किसी आदमी को बाक़ी न छोड़ा।¹² फिर वह उठ कर ख़ाना हुआ और सामरिया को चला। और रास्ते में गड़रियों के बाल कतरने के घर तक पहुँचा ही था कि¹³ याहू को यहूदाह के बादशाह अख़ज़ियाह के भाई मिल गए; इसने पूछा, “तुम कौन हो?” उन्होंने कहा, “हम अख़ज़ियाह के भाई हैं; और हम जाते हैं कि बादशाह के बेटों और मलिका के बेटों को सलाम करें।”¹⁴ तब उसने कहा, कि “उनको ज़िन्दा पकड़ लो।” इसलिए उन्होंने उनको ज़िन्दा पकड़ लिया और उनको जो बयालीस आदमी थे बाल कतरने के घर के हौज़ पर क़त्ल किया; उसने उनमें से एक को भी न छोड़ा।¹⁵ फिर जब वह वहाँ से रुख़सत हुआ, तो यहूनादाब — बिन — रैकाब जो उसके इस्तक्रबाल को आ रहा था उसे मिला। तब उसने उसे सलाम किया और उससे कहा “क्या तेरा दिल ठीक है, जैसा मेरा दिल तेरे दिल के साथ है?” यहूनादाब ने जवाब दिया कि है। इसलिए उसने कहा, “अगर ऐसा है, तो अपना हाथ मुझे दे।” तब उसने उसे अपना हाथ दिया; और उसने उसे रथ में अपने साथ बिठा लिया,¹⁶ और कहा, “मेरे साथ चल, और मेरी ग़ैरत को जो खुदावन्द के लिए है, देख।” तब उन्होंने उसे उसके साथ रथ पर सवार कराया,¹⁷ और

जब वह सामरिया में पहुँचा, तो अख़ीअब के सब बाक़ी लोगों को, जो सामरिया में थे क़त्ल किया, यहाँ तक कि उसने, जैसा खुदावन्द ने एलियाह से कहा था, उसको नेस्त — ओ — नाबूद कर दिया।¹⁸ फिर याहू ने सब लोगों को जमा किया, और उनसे कहा, कि “अख़ीअब ने बा'ल की थोड़ी इबादत की, याहू उसकी बहुत इबादत करेगा।¹⁹ इसलिए अब तुम बा'ल के सब नबियों और उसके सब पूजने वालों और पुजारियों को मेरे पास बुला लाओ; उनमें से कोई ग़ैर हाज़िर न रहे, क्योंकि मुझे बा'ल के लिए बड़ी कुर्बानी करना है। इसलिए जो कोई ग़ैर हाज़िर रहे, वह ज़िन्दा न बचेगा।” पर याहू ने इस ग़रज़ से कि बा'ल के पूजनेवालों को हलाक कर दे, ये बहाना निकाला था।²⁰ और याहू ने कहा, कि “बा'ल के लिए एक खास 'ईद का 'एलान करो।” तब उन्होंने उसका 'एलान कर दिया।²¹ और याहू ने सारे इस्राईल में लोग भेजे, और बा'ल के सब पूजनेवाले आए, यहाँ तक कि एक शख्स भी ऐसा न था जो न आया हो। और वह बा'ल के बुतख़ाने में दाख़िल हुए, और बा'ल का बुतख़ाना इस सिरे से उस सिरे तक भर गया।²² फिर उसने उसको जो तोशाख़ाने पर मुक़र्रर था हुक्म किया, कि “बा'ल के सब पूजनेवालों के लिए लिबास निकाल ला।” तब वह उनके लिए लिबास निकाल लाया।²³ तब याहू और यहूनादाब — बिन — रैकाब बा'ल के बुतख़ाने के अन्दर गए, और उसने बा'ल के पूजनेवालों से कहा, “बयान करो, और देख लो कि यहाँ तुम्हारे साथ खुदावन्द के खादिमों में से कोई न हो, सिर्फ़ बा'ल ही के पूजनेवाले हों।”²⁴ और वह ज़बीहे और सोख़्तनी कुर्बानियाँ पेश करने को अन्दर गए। और याहू ने बाहर अस्सी जवान मुक़र्रर कर दिए और कहा, कि “अगर कोई उन लोगों में से जिनको मैं तुम्हारे हाथ में कर दूँ निकल भागे, तो छोड़ने वाले की जान उसकी जान के बदले जाएगी।”²⁵ जब वह सोख़्तनी कुर्बानी अदा कर चुका, तो याहू ने पहरेवालों और सरदारों से कहा, कि “घुस जाओ और उनको क़त्ल करो, एक भी निकलने न पाए।” चुनौचे उन्होंने उनको हलाक किया, और पहरेवालों और सरदारों ने उनको बाहर फेंक दिया और बा'ल के बुतख़ाने के शहर को गए।²⁶ और उन्होंने बा'ल के बुतख़ाने की कड़ियों को बाहर निकाल कर उनको आग में जलाया।²⁷ और बा'ल के सुतूनों को चकनाचूर किया, और बा'ल का बुतख़ाना को गिरा कर उसे बैतुल — ख़ला' बना दिया, जैसा आज तक है।²⁸ इस तरह याहू ने बा'ल को इस्राईल के बीच से हलाक कर दिया।²⁹ तोभी नबात के बेटे युरब'आम

के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया, याहू बाज़ न आया; या'नी उसने सोने के बछड़ों को मानने से जो बैतएल और दान में थे, दूरी इस्त्रियार न की। ³⁰ और खुदावन्द ने याहू से कहा, “चूँकि तू ने ये नेकी की है कि जो कुछ मेरी नज़र में भला था उसे अंजाम दिया है, और अखीअब के घराने से मेरी मज़ी के मुताबिक़ बर्ताव किया है; इसलिए तेरे बेटे चौथी नस्ल तक इस्राईल के तख़्त पर बैठेंगे।” ³¹ लेकिन याहू ने खुदावन्द इस्राईल के खुदा की शरी'अत पर अपने सारे दिल से चलने की फ़िक्र न की; वह युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया, अलग न हुआ। ³² उन दिनों खुदावन्द इस्राईल को घटाने लगा, और हज़ाएल ने उनको इस्राईल की सब सरहदों में मारा, ³³ या'नी यरदन से लेकर पूरब की तरफ़ ज़िल'आद के सारे मुल्क में, और जददियों और रूबीनियों और मनस्सियों को, 'अरो'ईर से जो वादी — ए — अरनून में है, या'नी ज़िल'आद और बसन को भी। ³⁴ याहू के बाक़ी काम और सब जो उसने किया, और उसकी सारी ताक़त का बयान; इसलिए क्या वह सब इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं? ³⁵ और याहू अपने बाप — दादा के साथ मर गया, और उन्होंने उसे सामरिया में दफ़न किया, और उसका बेटा यहूआख़ज़ उसकी जगह बादशाह हुआ। ³⁶ और वह उसी 'अरसे में जिसमें याहू ने सामरिया में बनी — इस्राईल पर सल्तनत की अठाईस साल का था।

11

‘‘‘‘‘‘‘‘ ‘‘ ‘‘‘‘‘‘‘‘ ‘‘‘‘ ‘‘‘‘‘‘ ‘‘‘‘

¹ जब अख़ज़ियाह की माँ 'अतलियाह ने देखा कि उसका बेटा मर गया, तब उसने उठकर बादशाह की सारी नस्ल को हलाक़ किया। ² लेकिन यूराम बादशाह की बेटी यहूसबा' ने जो अख़ज़ियाह की बहन थी, अख़ज़ियाह के बेटे यूआस को लिया, और उसे उन शाहज़ादों से जो क़त्ल हुए चुपके से जुदा किया; और उसे उसकी दवा और बिस्त्रों के साथ बिस्त्रों की कोठरी में कर दिया। और उन्होंने उसे 'अतलियाह से छिपाए रखवा, वह मारा न गया। ³ वह उसके साथ खुदावन्द के घर में छः साल तक छिपा रहा, और 'अतलियाह मुल्क में सल्तनत करती रही।

‘‘‘‘‘‘‘‘ ‘‘ ‘‘‘‘‘‘‘‘ ‘‘‘‘‘‘ ‘‘‘‘

⁴ सातवें साल में यहोयदा' ने काम करने और पहरेवालों के सौ — सौ के सरदारों को बुला भेजा, और उनको खुदावन्द के घर में अपने पास लाकर उनसे 'अहद

— ओ — पैमान किया और खुदावन्द के घर में उनको क़सम खिलाई और बादशाह के बेटे को उनको दिखाया। ⁵ और उसने उनको ये हुक्म दिया, कि “तुम ये काम करना: तुम जो सबत को यहाँ आते हो; इसलिए तुम में से एक तिहाई आदमी बादशाह के महल के पहरे पर रहें, ⁶ और एक तिहाई सूर नाम फाटक पर रहें, और एक तिहाई उस फाटक पर हों जो पहरेवालों के पीछे हैं, यूँ तुम महल की निगहबानी करना और लोगों को रोके रहना। ⁷ और तुम्हारे दो लश्कर, या'नी जो सबत के दिन बाहर निकलते हैं, वह बादशाह के आसपास होकर खुदावन्द के घर की निगहबानी करें। ⁸ और तुम अपने अपने हथियार हाथ में लिए हुए बादशाह को चारों तरफ़ से घेरे रहना, और जो कोई सफ़ों के अन्दर चला आए वह क़त्ल कर दिया जाए, और तुम बादशाह के बाहर जाते और अंदर आते वक़्त उसके साथ साथ रहना।” ⁹ चुनाँचे सौ सौ के सरदारों ने, जैसा यहोयदा' काहिन ने उनको हुक्म दिया था वैसे ही सब कुछ किया; और उनमें से हर एक ने अपने आदमियों को जिनकी सबत के दिन अन्दर आने की बारी थी, उन लोगों के साथ जिनकी सबत के दिन बाहर निकलने की बारी थी लिया, और यहोयदा' काहिन के पास आए। ¹⁰ और काहिन ने दाऊद बादशाह की बछियाँ और सिप्पेरें, जो खुदावन्द के घर में थीं सौ — सौ के सरदारों को दीं। ¹¹ और पहरेवाले अपने अपने हथियार हाथ में लिए हुए, हैकल के दाहिने तरफ़ से लेकर बाएँ तरफ़ मज़बह और हैकल के बराबर — बराबर बादशाह के चारों तरफ़ खड़े हो गए। ¹² फिर उसने शाहज़ादे को बाहर लाकर उस पर ताज रखवा, और शहादत नामा उसे दिया; और उन्होंने उसे बादशाह बनाया और उसे मसह किया, और उन्होंने तालियाँ बजाई और कहा “बादशाह सलामत रहे!” ¹³ जब 'अतलियाह ने पहरेवालों और लोगों का शोर सुना, तो वह उन लोगों के पास खुदावन्द की हैकल में गई; ¹⁴ और देखा कि बादशाह दस्तूर के मुताबिक़ सुतून के करीब खड़ा है और उसके पास ही सरदार और नरसिंगे हैं, और सल्तनत के सब लोग खुश हैं और नरसिंगे फूँक रहे हैं। तब 'अतलियाह ने अपने कपड़े फाड़े और चिल्लाई, “ग़दर है! ग़दर!” ¹⁵ तब यहोयदा काहिन ने सौ — सौ के सरदारों को जो लश्कर के ऊपर थे ये हुक्म दिया, कि “उसको सफ़ों के बीच करके बाहर निकाल ले जाओ, और जो कोई उसके पीछे चले उसको तलवार से क़त्ल कर दो।” क्यूँकि काहिन ने कहा, “वह खुदावन्द के घर के अन्दर क़त्ल न की जाए।” ¹⁶ तब उन्होंने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया, और वह उस रास्ते से गई जिससे घोड़े बादशाह के महल में दाख़िल होते थे, और वहीं क़त्ल

हुई। ¹⁷ और यहोयदा' ने खुदावन्द के, और बादशाह और लोगों के बीच एक 'अहद बाँधा, ताकि वह खुदावन्द के लोग हों, और बादशाह और लोगों के बीच भी 'अहद बाँधा। ¹⁸ और ममलुकत के सब लोग बा'ल के बुतखाने में गए और उसे ढाया, और उन्होंने उसके मज़बहों और बुतों को बिल्कुल चकनाचूर किया, और बा'ल के पुजारी मत्तान को मज़बहों के सामने क़त्ल किया। और काहिन ने खुदावन्द के घर के लिए सरदारों को मुक़र्रर किया; ¹⁹ और उसने सौ — सौ के सरदारों और काम करने वालों और पहरेवालों और सल्लनत के लोगों को लिया, और वह बादशाह को खुदावन्द के घर से उतार लाए और पहरेवालों के फाटक के रास्ते से बादशाह के महल में आए; और उसने बादशाहों के तख्त पर जुलूस फ़रमाया। ²⁰ और सल्लनत के सब लोग खुश हुए, और शहर में अमन हो गया। उन्होंने 'अतलियाह को बादशाह के महल के पास तलवार से क़त्ल किया। ²¹ और जब यूआस सल्लनत करने लगा तो सात साल का था।

12

२२२२२२२२ २२२२२२२२२२ २२ २२ २२ २२२ २२२२

¹ और याहू के सातवें साल यहूआस' बादशाह हुआ और उसने येरूशलेम में चालीस साल सल्लनत की। उसकी माँ का नाम ज़िबियाह था जो बैरसबा' की थी। ² और यहूआस ने इस तमाम 'अर्से में जब तक यहोयदा' काहिन उसकी ता'लीम — व — तरबियत करता रहा, वही काम किया जो खुदावन्द की नज़र में ठीक था। ³ तोभी ऊँचे मक़ाम ढाए न गए, और लोग अभी ऊँचे मक़ामों पर कुर्बानी करते और खुशबू जलाते थे। ⁴ और यहूआस' ने काहिनों से कहा, कि "मुक़द्दस की हुई चीज़ों की सब नक़दी जो मौजूदा सिक्के में खुदावन्द के घर में पहुँचाई जाती है, या'नी उन लोगों की नक़दी जिनके लिए हर शख्स की हैसियत के मुताबिक़ अन्दाज़ा लगाया जाता है, और वह सब नक़दी जो हर एक अपनी खुशी से खुदावन्द के घर में लाता है, ⁵ इन सबको काहिन अपने अपने जान पहचान से लेकर अपने पास रख लें; और हैकल की दरारों की जहाँ कहीं कोई दरार मिले मरम्मत करें।" ⁶ लेकिन यहूआस के तेईसवें साल तक काहिनों ने हैकल की दरारों की मरम्मत न की। ⁷ तब यहूआस बादशाह ने यहोयदा' काहिन को और, और काहिनों को बुलाकर उनसे कहा, "तुम हैकल की दरारों की मरम्मत क्यूँ नहीं करते? इसलिए अब अपने अपने जान — पहचान से नक़दी न लेना, बल्कि इसको हैकल की दरारों के लिए हवाले करो।" ⁸ इसलिए काहिनों ने

मंज़ूर कर लिया कि न तो लोगों से नक़दी लें और न हैकल की दरारों की मरम्मत करें। ⁹ तब यहोयदा' काहिन ने एक सन्दूक लेकर उसके ऊपर में एक सूराख किया, और उसे मज़बह के पास रखवा, ऐसा कि खुदावन्द की हैकल में दाखिल होते वक़्त वह दहनी तरफ़ पड़ता था; और जो काहिन दरवाज़े के निगहबान थे, वह सब नक़दी जो खुदावन्द के घर में लाई जाती थी उसी में डाल देते थे। ¹⁰ जब वह देखते थे कि सन्दूक में बहुत नक़दी हो गई है, तो बादशाह का मुन्शी और सरदार काहिन ऊपर आकर उसे थैलियों में बाँधते थे, और उस नक़दी को जो खुदावन्द के घर में मिलती थी गिन लेते थे। ¹¹ और वह उस नक़दी को जो तोल ली जाती थी, उनके हाथों में सौंप देते थे जो काम करनेवाले, या'नी खुदावन्द की हैकल की देख भाल करते थे; और वह उसे बढ़इयों और मे'मारों पर जो खुदावन्द के घर का काम बनाते थे। ¹² और राजों और संग तराशों पर और खुदावन्द की हैकल की दरारों की मरम्मत के लिए लकड़ी और तराशे हुए पत्थर खरीदने में, और उन सब चीज़ों पर जो हैकल की मरम्मत के लिए इस्ते'माल में आती थी खर्च करते थे। ¹³ लेकिन जो नक़दी खुदावन्द की हैकल में लाई जाती थी, उससे खुदावन्द की हैकल के लिए चाँदी के प्याले, या गुलगीर, या देगचे, या नरसिंगे, या'नी सोने के बर्तन या चाँदी के बर्तन न बनाए गए, ¹⁴ क्यूँकि ये नक़दी कारीगरों को दी जाती थी, और इसी से उन्होंने खुदावन्द की हैकल की मरम्मत की। ¹⁵ इसके अलावा जिन लोगों के हाथ वह इस नक़दी को सुपुर्द करते थे, ताकि वह उसे कारीगरों को दें, उनसे वह उसका कुछ हिसाब नहीं लेते थे इसलिए कि वह ईमानदारी से काम करते थे। ¹⁶ और जुर्म की कुर्बानी की नक़दी और ख़ता की कुर्बानी की नक़दी, खुदावन्द की हैकल में नहीं लाई जाती थी, वह काहिनों की थी। ¹⁷ तब शाह — ए — अराम हज़ाएल ने चढ़ाई की, और जात से लड़कर उसे ले लिया। फिर हज़ाएल ने येरूशलेम का रुख़ किया ताकि उस पर चढ़ाई करे। ¹⁸ तब शाह — ए — यहूदाह यहूआस' ने सब मुक़द्दस चीज़ें जिनको उसके बाप — दादा, यहूसफ़त और यहूराम और अख़ज़ियाह, यहूदाह के बादशाहों ने नज़र किया था, और अपनी सब मुक़द्दस चीज़ों को और सब सोना जो खुदावन्द की हैकल के खज़ानों और बादशाह के महल में मिला, लेकर शाहे अराम हज़ाएल को भेज दिया; तब वह येरूशलेम से हटा। ¹⁹ यूआस के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं? ²⁰ उसके खादिमों ने उठकर साज़िश की और

यूआस को मिल्लो के महल में जो सिल्ला की उतराई पर है, कत्ल किया; ²¹ या'नी उसके खादिमों यूसकार — बिन — समा'अत, और यहूजबद — बिन — शमीर ने उसे मारा और वह मर गया, और उन्होंने उसे उसके बाप — दादा के साथ दाऊद के शहर में दफन किया; और उसका बेटा अमसियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

13

११११११११ ११ १११११११ १११ ११११११

¹ और शाह — ए — यहूदाह अखज़ियाह के बेटे यूआस के तेईसवें बरस से याहू का बेटा यहूआखज़ सामरिया में इस्राईल पर सल्तनत करने लगा और उसने सत्रह बरस सल्तनत की। ² और उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया और नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों की पैरवी की, जिनसे उसने बनी — इस्राईल से गुनाह कराया, उसने उनसे किनारा न किया। ³ और खुदावन्द का गुस्सा बनी इस्राईल पर भड़का, और उसने उनको बार बार शाह — ए — अराम हज़ाएल, और हज़ाएल के बेटे बिनहदद के क़ाबू में कर दिया। ⁴ और यहूआखज़ खुदावन्द के सामने गिड़गिड़ाया और खुदावन्द ने उसकी सुनी, क्योंकि उसने इस्राईल की मज़लूमी को देखा कि अराम का बादशाह उन पर कैसा जुल्म करता है। ⁵ और खुदावन्द ने बनी इस्राईल को एक नजात देनेवाला इनायत किया, इसलिए वह अरामियों के हाथ से निकल गए, और बनी — इस्राईल पहले की तरह अपने खेमों में रहने लगे। ⁶ तोभी उन्होंने युरब'आम के घराने के गुनाहों से, जिनसे उसने बनी — इस्राईल से गुनाह कराया, किनारा न किया बल्कि उन्हीं पर चलते रहे; और यसीरत भी सामरिया में रही! ⁷ और उसने यहूआखज़ के लिए लोगों में से सिर्फ़ पचास सवार और दस रथ और दस हज़ार प्यादे छोड़े; इसलिए कि अराम के बादशाह ने उनको तबाह कर डाला, और रौद — रौद कर खाक की तरह कर दिया। ⁸ और यहूआखज़ के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया और उसकी कुव्वत, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं? ⁹ और यहूआखज़ अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे सामरिया में दफन किया; और उसका बेटा यूआस उसकी जगह बादशाह हुआ। ¹⁰ और शाह — ए — यहूदाह यूआस के सैतीसवें बरस यहूआखज़ का बेटा यहूआस सामरिया में इस्राईल पर सल्तनत करने लगा, और उसने सोलह बरस सल्तनत की। ¹¹ और उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया और नबात के बेटे

युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया, बाज़ न आया बल्कि उन ही पर चलता रहा। ¹² और यहूआस के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया और उसकी कुव्वत जिससे वह शाह — ए — यहूदाह अमसियाह से लड़ा, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं? ¹³ और यूआस अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और युरब'आम उसके तख़्त पर बैठा; और यूआस। सामरिया में इस्राईल के बादशाहों के साथ दफन हुआ। ¹⁴ इलीशा' को वह मर्ज़ लगा जिससे वह मर गया। और शाह — ए — इस्राईल यूआस' उसके पास गया और उसके ऊपर रो कर कहने लगा, ऐ मेरे बाप, ऐ मेरे बाप, इस्राईल के रथ और उसके सवार! ¹⁵ और इलीशा' ने उससे कहा, तीर — ओ — कमान ले ले।" इसलिए उसने अपने लिए तीर — ओ — कमान ले लिया। ¹⁶ फिर उसने शाह — ए — इस्राईल से कहा, "कमान पर अपना हाथ रख।" इसलिए उसने अपना हाथ उस पर रखा; और इलीशा' ने बादशाह के हाथों पर अपने हाथ रखे, ¹⁷ और कहा, "पूरब की तरफ़ की खिड़की खोल।" इसलिए उसने उसे खोला, तब इलीशा' ने कहा, "तीर चला।" तब उसने चलाया। तब वह कहने लगा, "ये फ़तह का तीर खुदावन्द का, या'नी अराम पर फ़तह पाने का तीर है; क्योंकि तू अफ़्रीक़ में अरामियों को मारेगा, यहाँ तक कि उनको हलाक कर देगा।" ¹⁸ फिर उसने कहा, "तीरों को ले।" तब उसने उनको लिया। फिर उसने शाह — ए — इस्राईल से कहा, "ज़मीन पर मार।" इसलिए उसने तीन बार मारा और ठहर गया। ¹⁹ तब मर्द — ए — खुदा उस पर गुस्सा हुआ और कहने लगा, "तुझे पाँच या छः बार मारना चाहिए था, तब तू अरामियों को इतना मारता कि उनको हलाक कर देता; लेकिन अब तू अरामियों को सिर्फ़ तीन बार मारेगा।" ²⁰ और इलीशा' ने वफ़ात पाई, और उन्होंने उसे दफन किया। और नये साल के शुरू में मोआब के लश्कर मुल्क में घुस आए। ²¹ और ऐसा हुआ कि जब वह एक आदमी को दफन कर रहे थे तो उनको एक लश्कर नज़र आया, तब उन्होंने उस शख्स को इलीशा' की क़ब्र में डाल दिया, और वह शख्स इलीशा' की हड्डियों से टकराते ही ज़िन्दा हो गया और अपने पाँव पर खड़ा हो गया। ²² और शाह — ए — अराम हज़ाएल, यहूआखज़ के 'अहद में बराबर इस्राईल को सताता रहा। ²³ और खुदावन्द उन पर मेहरबान हुआ और उसने उन पर तरस खाया, और उस 'अहद की वज़ह से जो उसने अब्रहाम और इस्हाक़ और या'क़ब से बाँधा था, उनकी तरफ़ इलितफ़ात की; और न चाहा कि उनको

हलाक करे, और अब भी उनको अपने सामने से दूर न किया। ²⁴ और शाह — ए — अराम हज़ाएल मर गया, और उसका बेटा बिन हदद उसकी जगह बादशाह हुआ। ²⁵ और यहूआखज़ के बेटे यहूआस ने हज़ाएल के बेटे बिन हदद के हाथ से वह शहर छीन लिए जो उसने उसके बाप यहूआखज़ के हाथ से जंग करके ले लिए थे। तीन बार यूआस ने उसे शिकस्त दी और इस्राईल के शहरों को वापस ले लिया।

14

???????? ?? ??????? ??? ???????

¹ और शाह — ए — इस्राईल यहूआखज़ के बेटे यूआस के दूसरे साल से शाह — ए — यहूदाह यूआस का बेटा अमसियाह सल्तनत करने लगा। ² वह पच्चीस बरस का था जब सल्तनत करने लगा, और उसने येरूशलेम में उन्तीस बरस सल्तनत की। उसकी माँ का नाम यहू'अदान था जो येरूशलेम की थी ³ उसने वह काम किया जो खुदावन्द की नज़र में नेक था, तोभी अपने बाप दाऊद की तरह नहीं; बल्कि उसने सब कुछ अपने बाप यूआस की तरह किया। ⁴ क्योंकि ऊँचे मक़ाम ढाए न गए, लोग अभी ऊँचे मक़ामों पर कुर्बानी करते और खुशबू जलाते थे। ⁵ जब सल्तनत उसके हाथ में मज़बूत हो गई, तो उसने अपने उन मुलाज़िमों को जिन्होंने उसके बाप बादशाह को क़त्ल किया था जान से मारा। ⁶ लेकिन उसने उन क्रातिलों के बच्चों को जान से न मारा; क्योंकि मूसा की शरी'अत की किताब में, जैसा खुदावन्द ने फ़रमाया, लिखा है: “बेटों के बदले बाप न मारे जाएँ, और न बाप के बदले बेटे मारे जाएँ, बल्कि हर शख्स अपने ही गुनाह की वजह से मरे।” ⁷ उसने वादी — ए — शोर में दस हज़ार अदूमी मारे और सिला' को जंग करके ले लिया, और उसका नाम युक्रतील रखवा जो आज तक है। ⁸ तब अमसियाह ने शाह — ए — इस्राईल यहूआस — बिन — यहूआखज़ — बिन — याहू के पास क़ासिद ख़ाना किए और कहला भेजा “ज़रा आ तो, हम एक दूसरे का मुकाबला करें।” ⁹ और शाह — ए — इस्राईल यहूआस ने शाह — ए — यहूदाह अमसियाह को कहला भेजा, लुबनान के ऊँट — कटारे ने लुबनान के देवदार को पैग़ाम भेजा, “अपनी बेटा की मेरे बेटे से शादी कर दे; इतने में एक जंगली जानवर जो लुबनान में था गुज़रा, और ऊँट — कटारे को रौंद डाला। ¹⁰ तू ने बेशक अदोम को मारा, और तेरे दिल में गुरूर बस गया है; इसलिए उसी की डींग मार और घर ही में रह, तू क्यूँ नुक्सान उठाने को छेड़ — छाड़ करता है; जिससे तू भी दुख उठाए और तेरे साथ

यहूदाह भी?” ¹¹ लेकिन अमसियाह ने न माना। तब शाह — ए — इस्राईल यहूआस ने चढ़ाई की, और वह और शाह — ए — यहूदाह अमसियाह बैतशम्स में जो यहूदाह में है, एक दूसरे के सामने हुए। ¹² और यहूदाह ने इस्राईल के आगे शिकस्त खाई, और उनमें से हर एक अपने खेमे को भागा। ¹³ लेकिन शाह — ए — इस्राईल यहूआस ने शाह — ए — यहूदाह अमसियाह — बिन — यहूआस — बिन — अखज़ियाह को बैत — शम्स में पकड़ लिया और येरूशलेम में आया, और येरूशलेम की दीवार इफ़राईम के फाटक से कोने वाले फाटक तक, चार सौ हाथ के बराबर ढा दी। ¹⁴ और उसने सब सोने और चाँदी की, और सब बर्तनों को जो खुदावन्द की हैकल और शाही महल के खज़ानों में मिले, और कफ़ीलों को भी साथ लिया और सामरिया को लौटा। ¹⁵ यहूआस के बाक़ी काम जो उसने किए और उसकी कुव्वत, और जैसे शाह — ए — यहूदाह अमसियाह से लड़ा, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं? ¹⁶ और यहूआस अपने बाप दादा के साथ सो गया और इस्राईल के बादशाहों के साथ सामरिया में दफ़न हुआ, और उसका बेटा युरब'आम उसकी जगह बादशाह हुआ। ¹⁷ और शाह — ए — यहूदाह यूआस का बेटा अमसियाह शाह — ए — इस्राईल यहूआखज़ के बेटे यहूआस के मरने के बाद पन्द्रह बरस जीता रहा। ¹⁸ अमसियाह के बाक़ी काम, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं? ¹⁹ और उन्होंने येरूशलेम में उसके खिलाफ़ साज़िश की, इसलिए वह लकीस को भागा; लेकिन उन्होंने लकीस तक उसका पीछा करके वहीं उसे क़त्ल किया। ²⁰ और वह उसे घोड़ों पर ले आए, और वह येरूशलेम में अपने बाप — दादा के साथ दाऊद के शहर में दफ़न हुआ। ²¹ और यहूदाह के सब लोगों ने अज़रियाह' को जो सोलह बरस का था, उसके बाप अमसियाह की जगह बादशाह बनाया। ²² और बादशाह के अपने बाप — दादा के साथ सो जाने के बाद उसने ऐलात को बनाया, और उसे फिर यहूदाह की मुल्क में दाख़िल कर लिया। ²³ शाह — ए — यहूदाह यूआस के बेटे अमसियाह के पन्द्रहवें बरस से शाह — ए — इस्राईल यूआस का बेटा युरब'आम सामरिया में बादशाही करने लगा; उसने इकतालिस बरस बादशाही की। ²⁴ उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया; वह नवात के बेटे युरब'आम के उन सब गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया, बाज़ न आया। ²⁵ और उसने खुदावन्द इस्राईल

के खुदा के उस बात के मुताबिक, जो उसने अपने बन्दे और नबी यूनाह — बिन — अमित्ते के ज़रिए जो जात हिफ़र का था फ़रमाया था, इस्राईल की हद को हमत के मदखल से मैदान के दरिया तक फिर पहुँचा दिया। ²⁶ इसलिए कि खुदावन्द ने इस्राईल के दुख को देखा कि वह बहुत सख्त है, क्योंकि न तो कोई बन्द किया हुआ, न आज़ाद छूटा हुआ रहा और न कोई इस्राईल का मददगार था। ²⁷ और खुदावन्द ने यह तो नहीं फ़रमाया था कि मैं इस ज़मीन पर से इस्राईल का नाम मिटा दूँगा; इसलिए उसने उनको यूआस के बेटे युरब'आम के वसीले से रिहाई दी। ²⁸ युरब'आम के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया और उसकी कुव्वत, या'नी क्यूँकर उसने लड़ कर दमिश्क और हमत को जो यहूदाह के थे, इस्राईल के लिए वापस ले लिया, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं? ²⁹ और युरब'आम अपने बाप — दादा, या'नी इस्राईल के बादशाहों के साथ सो गया; और उसका बेटा ज़करियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

15

११११११११११११ १११११११ १११ ११११११११ १११११

¹ शाह — ए — इस्राईल युरब'आम के सत्ताइसवें बरस से शाह — ए — यहूदाह अमसियाह का बेटा अज़रियाह सल्तनत करने लगा। ² जब वह सल्तनत करने लगा तो सोलह बरस का था, और उसने येरूशलेम में बावन बरस सल्तनत की। उसकी माँ का नाम यकूलियाह था, जो येरूशलेम की थी। ³ और उसने जैसा उसके बाप अमसियाह ने किया था, ठीक उसी तरह वह काम किया जो खुदावन्द की नज़र में नेक था; ⁴ तोभी ऊँचे मक़ाम ढाए न गए, और लोग अब तक ऊँचे मक़ामों पर कुर्बानी करते और खुशबू जलाते थे। ⁵ और बादशाह पर खुदावन्द की ऐसी मार पड़ी कि वह अपने मरने के दिन तक कोढ़ी रहा और अलग एक घर में रहता था। और बादशाह का बेटा यूताम महल का मालिक था, और मुल्क के लोगों की 'अदालत किया करता था। ⁶ और 'अज़रियाह के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, तो क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं? ⁷ और 'अज़रियाह अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में उसके बाप — दादा के साथ दफ़न किया; और उसका बेटा यूताम उसकी जगह बादशाह हुआ। ⁸ और शाह — ए — यहूदाह 'अज़रियाह के अठतीसवें साल युरब'आम के बेटे ज़करियाह ने इस्राईल पर सामरिया में छः महीने

बादशाही की। ⁹ और उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया, जिस तरह उसके बाप — दादा ने की थी; और नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया बाज़ न आया। ¹⁰ और यबीस के बेटे सलूम ने उसके खिलाफ़ साज़िश की और लोगों के सामने उसे मारा, और क़त्ल किया और उसकी जगह बादशाह हो गया। ¹¹ ज़करियाह के बाक़ी काम इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे हैं। ¹² और खुदावन्द का वह वा'दा जो उसने याहू से किया यही था कि: “चौथी नस्ल तक तेरे फ़र्जन्द इस्राईल के तख़्त पर बैठेंगे।” इसलिए वैसा ही हुआ।

१११११ ११ ११११११११ १११ ११११११११

¹³ शाह — ए — यहूदाह उज़्ज़ियाह के उन्तालीसवें बरस यबीस का बेटा सलूम बादशाही करने लगा, और उसने सामरिया में महीना भर सल्तनत की। ¹⁴ और जादी का बेटा मनाहिम तिरज़ा से चला और सामरिया में आया, और यबीस के बेटे सलूम को सामरिया में मारा, और क़त्ल किया और उसकी जगह बादशाह हो गया। ¹⁵ और सलूम के बाक़ी काम और जो साज़िश उसने की, इसलिए देखो, वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे हैं।

१११११११ ११ ११११११११ १११ ११११११११

¹⁶ फिर मनाहिम ने तिरज़ा से जाकर तिफ़सह को, और उन सभों को जो वहाँ थे और उसकी हुदूद को मारा; और मारने की वजह यह थी कि उन्होंने उसके लिए फाटक नहीं खोले थे; और उसने वहाँ की सब हामिला 'औरतों को चीर डाला। ¹⁷ और शाह — ए — यहूदाह 'अज़रियाह के उन्तालीसवें बरस से जादी का बेटा मनाहिम इस्राईल पर सल्तनत करने लगा, और उसने सामरिया में दस बरस सल्तनत की। ¹⁸ उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया और नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया, अपनी सारी उम्र बाज़ न आया। ¹⁹ और शाह — ए — असूर पूल उसके मुल्क पर चढ़ आया। इसलिए मनाहिम ने हज़ार किन्तार 'चाँदी पूल को नज़र की, ताकि वह उसकी दस्तगीरी करे और सल्तनत को उसके हाथ में मज़बूत कर दे। ²⁰ और मनाहिम ने ये नक़दी शाह — ए — असूर को देने के लिए इस्राईल से या'नी सब बड़े — बड़े दौलतमन्दों से पचास — पचास मिस्काल हर शख्स के हिसाब से जबरन ली। इसलिए असूर का बादशाह लौट गया और उस मुल्क में न ठहरा। ²¹ मनाहिम के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं? ²² और मनाहिम

अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उसका बेटा फकीहयाह उसकी जगह बादशाह हुआ। ²³ शाह — ए — यहूदाह 'अज़रियाह के पचासवीं साल मनाहिम का बेटा फकीयाह सामरिया में इस्राईल पर सल्तनत करने लगा, और उसने दो बरस सल्तनत की। ²⁴ उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया; वह नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया, बाज़ न आया। ²⁵ और फ़िक्रह — बिन — रमलियाह ने जो उसका एक सरदार था, उसके खिलाफ़ साज़िश की और उसको सामरिया में बादशाह के महल के मुहकम हिस्से में अरजूब और अरिया के साथ मारा, और ज़िल'आदियों में से पचास मर्द उसके साथ थे, इसलिए वह उसे क़त्ल करके उसकी जगह बादशाह हो गया। ²⁶ फकीयाह के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा है। ²⁷ शाह — ए — यहूदाह 'अज़रियाह के बावनवें बरस से फ़िक्रह — बिन — रमलियाह सामरिया में इस्राईल पर सल्तनत करने लगा, और उसने बीस बरस सल्तनत की। ²⁸ उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया और नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्राईल से गुनाह कराया, बाज़ न आया। ²⁹ शाह — ए — इस्राईल फ़िक्रह के अय्याम में शाह — ए — असूर तिगलत पिलासर ने आकर अय्यून, और अबील बैत मा'का, और यनूहा, और क़ादिस और हसूर और ज़िल'आद और गलील, और नफ़ताली के सारे मुल्क को ले लिया, और लोगों को गुलाम करके गुलामी में ले गया। ³⁰ और हूसी' — बिन ऐला ने फ़िक्रह — बिन — रमलियाह के खिलाफ़ साज़िश की और उसे मारा, और क़त्ल किया और उसकी जगह, उज़्ज़ियाह के बेटे यूताम के बीसवें बरस, बादशाह हो गया; ³¹ और फ़िक्रह के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, इस्राईल के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे हैं।

२२२२२ २२ २२२२२२ २२२ २२२२२२ २२२२

³² शाह — ए — इस्राईल रमलियाह के बेटे फ़िक्रह के दूसरे साल से शाह — ए — यहूदाह उज़्ज़ियाह का बेटा यूताम सल्तनत करने लगा। ³³ जब वह सल्तनत करने लगा तो पच्चीस बरस का था, उसने सोलह बरस येरूशलेम में सल्तनत की। उसकी माँ का नाम यरूसा था, जो सद्की की बेटी थी। ³⁴ उसने वह काम किया जो खुदावन्द की नज़र में भला है; उसने सब कुछ ठीक वैसे ही किया जैसे उसके बाप 'उज़्ज़ियाह ने किया था। ³⁵ तोभी ऊँचे मक़ाम ढाए न गए लोग अभी ऊँचे मक़ामों पर कुर्बानी करते और खुशबू जलाते थे। खुदावन्द के घर का बालाई दरवाज़ा इसी ने बनाया।

³⁶ यूताम के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं? ³⁷ उन ही दिनों में खुदावन्द शाह — ए — अराम रज़ीन को और फ़िक्रह — बिन — रमलियाह को, यहूदाह पर चढ़ाई करने के लिए भेजने लगा। ³⁸ यूताम अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और अपने बाप दाऊद के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफ़न हुआ; और उसका बेटा आखज़ उसकी जगह बादशाह हुआ।

16

२२२२२ २२ २२२२२२ २२२ २२२२२२ २२२२

¹ और रमलियाह के बेटे फ़िक्रह के सत्तरहवें बरस से शाह — ए — यहूदाह यूताम का बेटा आखज़ सल्तनत करने लगा। ² जब आखज़ सल्तनत करने लगा तो बीस बरस का था, और उसने सोलह बरस येरूशलेम में बादशाही की। और उसने वह काम न किया जो खुदावन्द उसके खुदा की नज़र में सही है, जैसा उसके बाप दाऊद ने किया था। ³ बल्कि वह इस्राईल के बादशाहों के रास्ते पर चला और उसने उन क़ौमों के नफ़रती दस्तूर के मुताबिक़, जिनको खुदावन्द ने बनी — इस्राईल के सामने से ख़ारिज कर दिया था, अपने बेटे को भी आग में चलवाया। ⁴ और ऊँचे मक़ामों और टीलों पर और हर एक हरे दरख़्त के नीचे उसने कुर्बानी की और खुशबू जलाया। ⁵ तब शाह — ए — अराम रज़ीन और शाह — ए — इस्राईल रमलियाह के बेटे फ़िक्रह ने लड़ने को येरूशलेम पर चढ़ाई की, और उन्होंने आखज़ को घेर लिया लेकिन उस पर ग़ालिब न आ सके। ⁶ उस वक़्त शाह — ए — अराम रज़ीन ने ऐलात को फ़तह करके फिर अराम में शामिल कर लिया, और यहूदियों को ऐलात से निकाल दिया; और अरामी ऐलात में आकर वहाँ बस गए जैसा आज तक है। ⁷ इसलिए आखज़ ने शाह — ए — असूर तिगलत पिलासर के पास क़ासिद रवाना किए और कहला भेजा, “मैं तेरा खादिम और बेटा हूँ, इसलिए तू आ और मुझ को शाह — ए — अराम के हाथ से और शाह — ए — इस्राईल के हाथ से जो मुझ पर चढ़ आए हैं, रिहाई दे।” ⁸ और आखज़ ने उस चाँदी और सोने को जो खुदावन्द के घर में और शाही महल के खज़ानों में मिला, लेकर शाह — ए — असूर के लिए नज़राना भेजा। ⁹ और शाह — ए — असूर ने उसकी बात मानी, चुनौचे शाह — ए — असूर ने दमिश्क़ पर लश्करक़शी की और उसे ले लिया, और वहाँ के लोगों को कैद करके कीर में ले गया और रज़ीन को क़त्ल किया। ¹⁰ और आखज़ बादशाह, शाह — ए —

असूर तिगलत पिलासर की मुलाक्रात के लिए दमिश्क को गया, और उस मज़बह को देखा जो दमिश्क में था; और आखज़ बादशाह ने उस मज़बह का नक्रशा और उसकी सारी सन'अत का नमूना ऊरिय्याह काहिन के पास भेजा। ¹¹ और ऊरिय्याह काहिन ने ठीक उसी नमूने के मुताबिक़ जिसे आखज़ ने दमिश्क से भेजा था, एक मज़बह बनाया। और आखज़ बादशाह के दमिश्क से लौटने तक ऊरिय्याह काहिन ने उसे तैयार कर दिया। ¹² जब बादशाह दमिश्क से लौट आया तो बादशाह ने मज़बह को देखा, और बादशाह मज़बह के पास गया और उस पर कुर्बानी पेश की। ¹³ उसने उस मज़बह पर अपनी सोख्तनी कुर्बानी और अपनी नज़र की कुर्बानी जलाई, और अपना तपावन तपाया और अपनी सलामती के ज़बीहों का खून उसी मज़बह पर छिड़का। ¹⁴ और उसने पीतल का वह मज़बह जो खुदावन्द के आगे था, हैकल के सामने से या'नी अपने मज़बह और खुदावन्द की हैकल के बीच में से, उठाकर उसे अपने मज़बह के उत्तर की तरफ़ रखवा दिया। ¹⁵ और आखज़ बादशाह ने ऊरिय्याह काहिन को हुक्म दिया, “बड़े मज़बह पर सुबह की सोख्तनी कुर्बानी, और शाम की नज़र की कुर्बानी, और बादशाह की सोख्तनी कुर्बानी, और उसकी नज़र की कुर्बानी, और ममलुकत के सब लोगों की सोख्तनी कुर्बानी, और उनकी नज़र की कुर्बानी, और उनका तपावन चढ़ाया कर, और सोख्तनी कुर्बानी का सारा खून, और ज़बीहे का सारा खून उस पर छिड़क कर; और पीतल का वह मज़बह मेरे सवाल करने के लिए रहेगा।” ¹⁶ इसलिए जो कुछ आखज़ बादशाह ने फ़रमाया, ऊरिय्याह काहिन ने वह सब किया। ¹⁷ और आखज़ बादशाह ने कुर्सियों के किनारों को काट डाला, और उनके ऊपर के हौज़ को उनसे जुदा कर दिया; और उस बड़े हौज़ को पीतल के बैलों पर से जो उसके नीचे थे उतार कर पत्थरों के फ़र्श पर रख दिया। ¹⁸ और उसने उस रास्ते को जिस पर छत थी, और जिसे उन्होंने सबत के दिन के लिए हैकल के अन्दर बनाया था, और बादशाह के आने के रास्ते को जो बाहर था, शाह — ए — असूर की वजह से खुदावन्द के घर में शामिल कर दिया। ¹⁹ और आखज़ के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं? ²⁰ और आखज़ अपने बाप दादा के साथ सो गया, और दाऊद के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफ़न हुआ; और उसका बेटा हिज़क्रियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

222222 22 22222222 22 22222222

¹ शाह — ए — यहूदाह आखज़ के बारहवें बरस से ऐला का बेटा हूसी'अ इस्राईल पर सामरिया में सलत्तनत करने लगा, और उसने नौ बरस सलत्तनत की। ² उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया, तोभी इस्राईल के उन बादशाहों की तरह नहीं जो उससे पहले हुए। ³ शाह — ए — असूर सलमनसर ने इस पर चढ़ाई की, और हूसी'अ उसका खादिम हो गया और उसके लिए हदिया लाया। ⁴ और शाह — ए — असूर ने हूसी'अ की साज़िश मा'लूम कर ली, क्योंकि उसने शाह — ए — मिस्र के पास इसलिए क़ासिद भेजे, और शाह — ए — असूर को हदिया न दिया जैसा वह साल — ब — साल देता था, इसलिए शाह — ए — असूर ने उसे बन्द कर दिया और कैदखाने में उसके बेड़ियाँ डाल दीं। ⁵ शाह — ए — असूर ने सारी ममलुकत पर चढ़ाई की, और सामरिया को जाकर तीन बरस उसे घेरे रहा। ⁶ और हूसी'अ के नौवें बरस शाह — ए — असूर ने सामरिया को ले लिया और इस्राईल को गुलाम करके असूर में ले गया, और उनको ख़लह में, और जौज़ान की नदी खाबूर पर, और मादियों के शहरों में बसाया। ⁷ और ये इसलिए हुआ कि बनी — इस्राईल ने खुदावन्द अपने खुदा के खिलाफ़, जिसने उनको मुल्क — ए — मिस्र से निकालकर शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन के हाथ से रिहाई दी थी, गुनाह किया और ग़ैर — मा'बूदों का ख़ौफ़ माना। ⁸ और उन क़ौमों के तौर पर जिनको खुदावन्द ने बनी — इस्राईल के आगे से ख़ारिज किया, और इस्राईल के बादशाहों के तौर पर जो उन्होंने खुद बनाए थे चलते रहे। ⁹ और बनी इस्राईल ने खुदावन्द अपने खुदा के खिलाफ़ छिपकर वह काम किए जो भले न थे, और उन्होंने अपने सब शहरों में, निगहबानों के बुर्ज से फ़सीलदार शहर तक, अपने लिए ऊँचे मक़ाम बनाए ¹⁰ और हर एक ऊँचे पहाड़ पर, और हर एक हरे दरख़्त के नीचे उन्होंने अपने लिए सुतूनों और यसीरतों को खड़ा किया। ¹¹ और वहीं उन सब ऊँचे मक़ामों पर, उन क़ौमों की तरह जिनको खुदावन्द ने उनके सामने से दफ़ा' किया, खुशबू जलाया और खुदावन्द को गुस्सा दिलाने के लिए शरारतें कीं; ¹² और बुतों की इबादत की, जिसके बारे में खुदावन्द ने उनसे कहा था, “तुम ये काम न करना।” ¹³ तोभी खुदावन्द सब नबियों और ग़ैबबीनों के ज़रिए' इस्राईल और यहूदाह को आगाह करता रहा, “तुम अपनी बुरी राहों से बाज़ आओ, और उस सारी शरी'अत के मुताबिक़, जिसका हुक्म मैंने तुम्हारे बाप — दादा को दिया और जिसे मैंने अपने बन्दों नबियों के ज़रिए' तुम्हारे

पास भेजा है, मेरे अहकाम और क़ानून को मानो।”
 14 बावजूद इसके उन्होंने न सुना, बल्कि अपने बाप — दादा की तरह जो खुदावन्द अपने खुदा पर ईमान नहीं लाए थे, गर्दनकशी की, 15 और उसके क़ानून को और उसके 'अहद को, जो उसने उनके बाप — दादा से बाँधा था, और उसकी शहादतों को जो उसने उनको दी थीं रद्द किया; और बेकार बातों के पैरौ होकर निकम्मे हो गए, और अपने आस — पास की क़ौमों की पैरवी की, जिनके बारे में खुदावन्द ने उनको ताकीद की थी कि वह उनके से काम न करें। 16 और उन्होंने खुदावन्द अपने खुदा के सब अहकाम छोड़ कर अपने लिए ढाली हुई मूरतें या 'नी दो बछड़े बना लिए, और यसीरत तैयार की, और आसमानी फ़ौज की इबादत की, और बा'ल की इबादत की। 17 और उन्होंने अपने बेटे और बेटियों को आग में चलवाया, और फ़ालगीरी और जादूगरी से काम लिया और अपने को बेच डाला, ताकि खुदावन्द की नज़र में गुनाह करके उसे गुस्सा दिलाएँ। 18 इसलिए खुदावन्द इस्राईल से बहुत नाराज़ हुआ, और अपनी नज़र से उनको दूर कर दिया; इसलिए यहूदाह के क़बीले के अलावा और कोई न छूटा। 19 यहूदाह ने भी खुदावन्द अपने खुदा के अहकाम न माने, बल्कि उन तौर तरीकों पर चले जिनको इस्राईल ने बनाया था। 20 तब खुदावन्द ने इस्राईल की सारी नस्ल को रद्द किया, और उनको दुख दिया और उनको लुटेरों के हाथ में करके आखिरकार उनको अपनी नज़र से दूर कर दिया। 21 क्योंकि उसने इस्राईल को दाऊद के घराने से जुदा किया, और उन्होंने नबात के बेटे युरब'आम को बादशाह बनाया, और युरब'आम ने इस्राईल को खुदावन्द की पैरवी से दूर किया और उनसे बड़ा गुनाह कराया। 22 और बनी इस्राईल उन सब गुनाहों की जो युरब'आम ने किए, पैरवी करते रहे; वह उनसे बाज़ न आए। 23 यहाँ तक कि खुदावन्द ने इस्राईल को अपनी नज़र से दूर कर दिया, जैसा उसने अपने सब बन्दों के ज़रिए, जो नबी थे फ़रमाया था। इसलिए इस्राईल अपने मुल्क से असूर को पहुँचाया गया, जहाँ वह आज तक है।

24 और शाह — ए — असूर ने बाबुल और कूताह और 'अव्वा और हमात और सिफ़वाइम के लोगों को लाकर बनी — इस्राईल की जगह सामरिया के शहरों में बसाया। इसलिए वह सामरिया के मालिक हुए, और उसके शहरों में बस गए। 25 और अपने बस जाने के शुरू में उन्होंने खुदावन्द का ख़ौफ़ न माना; इसलिए खुदावन्द ने उनके बीच शेरों को भेजा, जिन्होंने उनमें से

कुछ को मार डाला। 26 तब उन्होंने शाह — ए — असूर से ये कहा, “जिन क़ौमों को तूने ले जाकर सामरिया के शहरों में बसाया है, वह उस मुल्क के खुदा के तरीके से वाकिफ़ नहीं हैं; चुनाँचे उसने उनमें शेर भेज दिए हैं और देख, वह उनको फाड़ते हैं, इसलिए कि वह उस मुल्क के खुदा के तरीके से वाकिफ़ नहीं हैं।” 27 तब असूर के बादशाह ने ये हुक्म दिया, “जिन काहिनों को तुम वहाँ से ले आए हो, उनमें से एक को वहाँ ले जाओ, और वह जाकर वहीं रहे और ये काहिन उनको उस मुल्क के खुदा का तरीका सिखाए।” 28 इसलिए उन काहिनों में से, जिनको वह सामरिया ले गए थे, एक काहिन आकर बैतएल में रहने लगा, और उनको सिखाया कि उनको खुदावन्द का ख़ौफ़ क्यूँकर मानना चाहिए। 29 इस पर भी हर क़ौम ने अपने मा'बूद बनाए, और उनको सामरियों के बनाए हुए ऊँचे मक़ामों के बुतखानों में रखवा; हर क़ौम ने अपने शहर में जहाँ उसकी सुकूनत थी ऐसा ही किया। 30 इसलिए बाबुलियों ने सुकात बनात को, और कूतियों ने नेरगुल को, और हमातियों ने असीमा को, 31 और 'अवाइयों ने निबहाज़ और तरताक़ को बनाया; और सिफ़वियों ने अपने बेटों को अदरम्मलिक और 'अनम्मलिक के लिए, जो सिफ़वाइम के मा'बूद थे, आग में जलाया। 32 इस तरह वह खुदावन्द से भी डरते थे और अपने लिए ऊँचे मक़ामों के काहिन भी अपने ही में से बना लिए, जो ऊँचे मक़ामों के बुतखानों में उनके लिए कुर्बानी पेश करते थे। 33 इसलिए वह खुदावन्द से भी डरते थे और अपनी क़ौमों के दस्तूर के मुताबिक़, जिनमें से वह निकाल लिए गए थे, अपने — अपने मा'बूद की इबादत भी करते थे। 34 आज के दिन तक वह पहले दस्तूर पर चलते हैं, वह खुदावन्द से डरते नहीं, और न तो अपने आईन — ओ — क़वानीन पर और न उस शरा' और फ़रमान पर चलते हैं, जिसका हुक्म खुदावन्द ने या'कूब की नसल को दिया था, जिसका नाम उसने इस्राईल रखा था। 35 उन ही से खुदावन्द ने 'अहद करके उनको ये ताकीद की थी, “तुम ग़ैर — मा'बूदों से न डरना, और न उनको सिज्दा करना, न इबादत करना, और न उनके लिए कुर्बानी करना; 36 बल्कि खुदावन्द जो बड़ी कुव्वत और बलन्द बाज़ू से तुम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, तुम उसी से डरना और उसी को सिज्दा करना और उसी के लिए कुर्बानी पेश करना। 37 और जो — जो क़ानून, और रवायत, और जो शरी'अत, और हुक्म उसने तुम्हारे लिए लिखे, उनको हमेशा मानने के लिए एहतियात रखना; और तुम ग़ैर — मा'बूदों से न डरना, 38 और उस 'अहद को जो मैंने तुम से किया है

तुम भूल न जाना; और न तुम गैर — मा'बूदों का खौफ मानना; ³⁹ बल्कि तुम खुदावन्द अपने खुदा का खौफ मानना, और वह तुम को तुम्हारे सब दुश्मनों के हाथ से छुड़ाएगा।” ⁴⁰ लेकिन उन्होंने न माना, बल्कि अपने पहले दस्तूर के मुताबिक करते रहे। ⁴¹ इसलिए ये क्रौमें खुदावन्द से भी डरती रहीं, और अपनी खोदी हुई मूरतों को भी पूजती रहीं; इसी तरह उनकी औलाद और उनकी औलाद की नसल भी, जैसा उनके बाप — दादा करते थे, वैसा वह भी आज के दिन तक करती हैं।

18

?????????? ?? ??????? ?? ???????

¹ और शाह — ए इस्राईल होशे' बिन ऐला के तीसरे साल ऐसा हुआ कि शाह — ए — यहूदाह आखज का बेटा हिज्रक्रियाह सलतनत करने लगा। ² जब वह सलतनत करने लगा तो पच्चीस बरस का था, और उसने उन्तीस बरस येरूशलेम में सलतनत की। उसकी माँ का नाम अबी था, जो जक्रियाह की बेटी थी। ³ और जो — जो उसके बाप दाऊद ने किया था, उसने ठीक उसी के मुताबिक वह काम किया जो खुदावन्द की नज़र में अच्छा था। ⁴ उसने ऊँचे मक़ामों को दूर कर दिया, और सुतूनों को तोड़ा और यसीरत को काट डाला; और उसने पीतल के साँप को जो मूसा ने बनाया था चकनाचूर कर दिया, क्योंकि बनी — इस्राईल उन दिनों तक उसके आगे खुशबू जलाते थे; और उसने उसका नाम नहुशतान' रखा। ⁵ वह खुदावन्द इस्राईल के खुदा पर भरोसा करता था, ऐसा कि उसके बाद यहूदाह के सब बादशाहों में उसकी तरह एक न हुआ, और न उससे पहले कोई हुआ था। ⁶ क्योंकि वह खुदावन्द से लिपटा रहा और उसकी पैरवी करने से बाज़ न आया; बल्कि उसके हुक्मों को माना जिनको खुदावन्द ने मूसा को दिया था। ⁷ और खुदावन्द उसके साथ रहा और जहाँ कहीं वह गया कामयाब हुआ; और वह शाह — ए — असूर से फिर गया और उसकी पैरवी न की। ⁸ उसने फ़िलिस्तियों को गज्ज़ा और उसकी सरहदों तक, निगहबानों के बुर्ज से फ़सीलदार शहर तक मारा। ⁹ हिज्रक्रियाह बादशाह के चौथे बरस जो शाह — ए — इस्राईल हूसे'अ — बिन — ऐला का सातवाँ बरस था, ऐसा हुआ कि शाह — ए — असूर सलमनसर ने सामरिया पर चढ़ाई की, और उसको घेर लिया। ¹⁰ और तीन साल के आखिर में उन्होंने उसको ले लिया; या'नी हिज्रक्रियाह के छठे साल जो शाह — ए — इस्राईल हूसे'अ का नौवाँ बरस था, सामरिया ले लिया गया। ¹¹ और शाह — ए — असूर इस्राईल को गुलाम करके असूर को ले गया, और उनको

खलह में और जौज़ान की नदी खाबूर पर, और मादियों के शहरों में रखवा, ¹² इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने खुदा की बात न मानी, बल्कि उसके 'अहद को या'नी उन सब बातों को जिनका हुक्म खुदा के बन्दे मूसा ने दिया था मुखालिफ़त की, और न उनको सुना न उन पर 'अमल किया। ¹³ हिज्रक्रियाह बादशाह के चौदहवें बरस शाह — ए — असूर सनहेरिब ने यहूदाह के सब फ़सीलदार शहरों पर चढ़ाई की और उनको ले लिया। ¹⁴ और शाह — ए — यहूदाह हिज्रक्रियाह ने शाह — ए — असूर को लकीस में कहला भेजा, “मुझ से खता हुई, मेरे पास से लौट जा; जो कुछ तू मेरे सिर करे मैं उसे उठाऊँगा।” इसलिए शाह — ए — असूर ने तीन सौ किन्तार चाँदी और तीस किन्तार सोना शाह — ए — यहूदाह हिज्रक्रियाह के ज़िम्मे लगाया। ¹⁵ और हिज्रक्रियाह ने सारी चाँदी जो खुदावन्द के घर और शाही महल के खज़ानों में मिली उसे दे दी। ¹⁶ उस वक़्त हिज्रक्रियाह ने खुदावन्द की हैकल के दरवाज़ों का और उन सुतूनों पर का सोना, जिनको शाह — ए — यहूदाह हिज्रक्रियाह ने खुद मंढ़वाया था, उतरवा कर शाह — ए — असूर को दे दिया। ¹⁷ फिर भी शाह — ए — असूर ने तरतान और रब सारिस और रबशाक़ी को लकीस से बड़े लश्कर के साथ हिज्रक्रियाह बादशाह के पास येरूशलेम को भेजा। इसलिए वह चले और येरूशलेम को आए, और जब वहाँ पहुँचे तो जाकर ऊपर के तालाब की नाली के पास, जो धोबियों के मैदान के रास्ते पर है, खड़े हो गए। ¹⁸ और जब उन्होंने बादशाह को पुकारा, तो इलियाक़ीम — बिन — ख़िलक्रियाह जो घर का दीवान था और शबनाह मुन्शी और आसफ़ मुहरिर का बेटा यूआख उनके पास निकल कर आए। ¹⁹ और रबशाक़ी ने उनसे कहा, “तुम हिज्रक्रियाह से कहो, कि मलिक — ए — मुअज़्ज़म शाह — ए — असूर यू'फ़रमाता है, 'तू क्या भरोसा किए बैठा है? ²⁰ तू कहता तो है, लेकिन ये सिर्फ़ बातें ही बातें हैं कि जंग की मसलहत भी है और हौसला भी। आखिर किसके भरोसे पर तू ने मुझ से सरकशी की है? ²¹ देख, तुझे इस मसले हुए सरकण्डे के 'असा या'नी मिस्र पर भरोसा है; उस पर अगर कोई टेक लगाए, तो वह उसके हाथ में गड़ जाएगा और उसे छेद देगा।” शाह — ए — मिस्र फिर'औन उन सब के लिए जो उस पर भरोसा करते हैं, ऐसा ही है। ²² और अगर तुम मुझ से कहो कि हमारा भरोसा खुदावन्द हमारे खुदा पर है, तो क्या वह वही नहीं है, जिसके ऊँचे मक़ामों और मज़बहों को हिज्रक्रियाह ने दूर करके यहूदाह और येरूशलेम से कहा है, कि तुम येरूशलेम में इस मज़बह के आगे सिज्दा

किया करो?' 23 इसलिए अब ज़रा मेरे आक्रा शाह — ए — असूर के साथ शर्त बाँध और मैं तुझे दो हजार घोड़े दूँगा, बशर्ते कि तू अपनी तरफ़ से उन पर सवार चढ़ा सके। 24 भला फिर तू क्योंकर मेरे आक्रा के अदना मुलाज़िमों में से एक सरदार का भी मुँह फेर सकता है, और रथों और सवारों के लिए मिस्र पर भरोसा रखता है? 25 और क्या अब मैंने खुदावन्द के बिना कहे ही इस मक़ाम को ग़ारत करने के लिए इस पर चढ़ाई की है? खुदावन्द ही ने मुझ से कहा कि इस मुल्क पर चढ़ाई कर और इसे बर्बाद कर दे।" 26 तब इलियाक़ीम — बिन — ख़िलक़ियाह, और शबनाह, और यूआख़ ने रबशाक़ी से अर्ज़ की कि "अपने खादिमों से अरामी ज़बान में बात कर, क्योंकि हम उसे समझते हैं; और उन लोगों के सुनते हुए जो दीवार पर हैं, यहूदियों की ज़बान में बातें न कर।" 27 लेकिन रबशाक़ी ने उनसे कहा, "क्या मेरे आक्रा ने मुझे ये बातें कहने को तेरे आक्रा के पास, या तेरे पास भेजा है? क्या उसने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा, जो तुम्हारे साथ अपनी ही नज़ासत खाने और अपना ही क़ारूरा पीने को दीवार पर बैठे हैं?" 28 फिर रबशाक़ी खड़ा हो गया और यहूदियों की ज़बान में बलन्द आवाज़ से ये कहने लगा, "मलिक — ए — मुअज़्ज़म शाह — ए — असूर का कलाम सुनो, 29 बादशाह यूँ फ़रमाता है, 'हिज़क़ियाह तुम को धोका न दे, क्योंकि वह तुम को उसके हाथ से छुड़ा न सकेगा। 30 और न हिज़क़ियाह ये कहकर तुम से खुदावन्द पर भरोसा कराए, कि खुदावन्द ज़रूर हमको छुड़ाएगा और ये शहर शाह — ए — असूर के हवाले न होगा। 31 हिज़क़ियाह की न सुनो। क्योंकि शाह — ए — असूर यूँ फ़रमाता है कि तुम मुझसे सुलह कर लो और निकलकर मेरे पास आओ, और तुम में से हर एक अपनी ताक और अपने अंजीर के दरख़्त का फल खाता और अपने हौज़ का पानी पीता रहे। 32 जब तक मैं आकर तुम को ऐसे मुल्क में न ले जाऊँ, जो तुम्हारे मुल्क की तरह ग़ल्ला और मय का मुल्क, रोटी और ताकिस्तानों का मुल्क, ज़ैतूनी तेल और शहद का मुल्क है; ताकि तुम जीते रहो, और मर न जाओ; इसलिए हिज़क़ियाह की न सुनना, जब वह तुमको ये ता'लीम दे कि खुदावन्द हमको छुड़ाएगा। 33 क्या क़ौमों के मा'बूदों में से किसी ने अपने मुल्क को शाह — ए — असूर के हाथ से छुड़ाया है? 34 हमारा और अरफ़ाद के मा'बूद कहाँ हैं? और सिफ़वाइम और हेना' और इवाह के मा'बूद कहाँ हैं? क्या उन्होंने सामरिया को मेरे हाथ से बचा लिया? 35 और मुल्कों के तमाम मा'बूदों में से किस — किस ने अपना मुल्क मेरे हाथ से छुड़ा लिया, जो यहोवा

येरूशलेम को मेरे हाथ से छुड़ा लेगा?" 36 लेकिन लोग ख़ामोश रहे और उसके जवाब में एक बात भी न कही, क्योंकि बादशाह का हुक्म यह था कि उसे जवाब न देना। 37 तब इलियाक़ीम — बिन — ख़िलक़ियाह जो घर का दीवान था, और शबनाह मुन्शी, और यूआख़ बिन — आसफ़ मुहरिर अपने कपड़े चाक किए हुए हिज़क़ियाह के पास आए और रबशाक़ी की बातें उसे सुनाई।

19

???????????? ?? ?????? ?? ??? ???????

1 जब हिज़क़ियाह बादशाह ने यह सुना, तो अपने कपड़े फाड़े और टाट ओढ़कर खुदावन्द के घर में गया। 2 और उसने घर के दीवान और इलियाक़ीम और शबनाह मुन्शी और काहिनों के बुज़ुर्गों को टाट उढ़ाकर आमूस के बेटे यसा'याह नबी के पास भेजा। 3 और उन्होंने उससे कहा, हिज़क़ियाह यूँ कहता है, कि आज का दिन दुख, और मलामत, और तौहीन का दिन है; क्योंकि बच्चे पैदा होने पर हैं, लेकिन विलादत की ताक़त नहीं। 4 शायद खुदावन्द तेरा खुदा रबशाक़ी की सब बातें सुने जिसको उसके आक्रा शाह — ए — असूर ने भेजा है, कि "ज़िन्दा खुदा की तौहीन करे और जो बातें खुदावन्द तेरे खुदा ने सुनी हैं उन पर वह मलामत करेगा। इसलिए तू उस बक़िया के लिए जो मौजूद है दुआ कर।" 5 इसलिए हिज़क़ियाह बादशाह के मुलाज़िम यसा'याह के पास आए। 6 यसा'याह ने उनसे कहा, "तुम अपने मालिक से यूँ कहना, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू उन बातों से जो तूने सुनी हैं, जिनसे शाह — ए — असूर के मुलाज़िमों ने मेरी बुराई की है, न डर। 7 देख, मैं उसमें एक रूह डाल दूँगा, और वह एक अफ़वाह सुनकर अपने मुल्क को लौट जाएगा, और मैं उसे उसी के मुल्क में तलवार से मरवा डालूँगा।" 8 इसलिए रबशाक़ी लौट गया और उसने शाह — ए — असूर को लिबनाह से लड़ते पाया, क्योंकि उसने सुना था कि वह लकीस से चला गया है; 9 और जब उसने कूश के बादशाह तिरहाक़ा के ज़रिए ये कहते सुना कि "देख, वह तुझसे लड़ने को निकला है," तो उसने फिर हिज़क़ियाह के पास क़ासिद रवाना किए और कहा, 10 कि "शाह — ए — यहूदाह हिज़क़ियाह से इस तरह कहना, 'तेरा खुदा, जिस पर तेरा भरोसा है, तुझे यह कहकर धोखा न दे कि येरूशलेम शाह — ए — असूर के क़ब्ज़े में नहीं किया जाएगा। 11 देख, तूने सुना है कि असूर के बादशाहों ने तमाम मुमालिक को बिल्कुल ग़ारत करके उनका क्या हाल बनाया है; इसलिए क्या तू बचा रहेगा? 12 क्या उन क़ौमों के मा'बूदों ने उनको,

या'नी जौजान और हारान और रसफ़ और बनी — 'अदन जो तिल्लसार में थे, जिनको हमारे बाप — दादा ने बर्बाद किया, छुड़ाया? ¹³ हमारा का बादशाह और अरफ़ाद का बादशाह, और शहर सिफ़वाइम और हेना' और इवाह का बादशाह कहाँ है?" ¹⁴ हिज़क्रियाह ने कासिदों के हाथ से ख़त लिया और उसे पढ़ा, और हिज़क्रियाह ने खुदावन्द के घर में जाकर उसे खुदावन्द के सामने फैला दिया। ¹⁵ और हिज़क्रियाह ने खुदावन्द के सामने इस तरह दुआ की, ऐ खुदावन्द, इसराईल के खुदा, करुबियों के ऊपर बैठने वाले! तू ही अकेला ज़मीन की सब सल्तनतों का खुदा है। तू ने ही आसमान और ज़मीन को पैदा किया। ¹⁶ ऐ खुदावन्द, कान लगा और सुन! ऐ खुदावन्द, अपनी आँखें खोल और देख; और सनहेरिब की बातों को, जिनसे जिन्दा खुदा की तौहीन करने के लिए उसने इस आदमी को भेजा है, सुन ले। ¹⁷ ऐ खुदावन्द, असूर के बादशाहों ने दर हकीकत क्रौमों को उनके मुल्कों समेत तबाह किया: ¹⁸ और उनके मा'बूदों को आग में डाला क्योंकि वह खुदा न थे, बल्कि आदमियों की दस्तकारी, या'नी लकड़ी और पत्थर थे; इसलिए उन्होंने उनको बर्बाद किया है। ¹⁹ इसलिए अब ऐ खुदावन्द हमारे खुदा मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, कि तू हमको उसके हाथ से बचा ले, ताकि ज़मीन की सब सल्तनतें जान लें कि तू ही अकेला खुदावन्द खुदा है।" ²⁰ तब यसा'याह — बिन — आमूस ने हिज़क्रियाह को कहला भेजा कि खुदावन्द इसराईल का खुदा यूँ फ़रमाता है: चूँकि तू ने शाह — ए — असूर सनहेरिब के खिलाफ़ मुझसे दू'आ की है, मैंने तेरी सुन ली। ²¹ इसलिए खुदावन्द ने उसके हक़ में यूँ फ़रमाया कि कुंवारी दुख्तरें सिय्यून ने तुझे हकीर जाना और तेरा मज़ाक़ उड़ाया। ²² येरूशलेम की बेटी ने तुझ पर सर हिलाया है, तूने किसकी तौहीन — ओ — बुराई की है? तूने किसके खिलाफ़ अपनी आवाज़ बलन्द की, और अपनी आँखें ऊपर उठाई? इसराईल के कुदूस के खिलाफ़! ²³ तूने अपने कासिदों के ज़रिए' से खुदावन्द की तौहीन की, और कहा, कि मैं बहुत से रथों को साथ लेकर पहाड़ों की चोटियों पर, बल्कि लुबनान के वस्ती हिस्सों तक चढ़ाया हूँ; और मैं उसके ऊँचे — ऊँचे देवदारों और अच्छे से अच्छे सनोबर के दरख़्तों को काट डालूँगा; और मैं उसके दूर से दूर मक़ाम में, जहाँ उसकी बेशक़ीमती ज़मीन का जंगल है घुसा चला जाऊँगा। ²⁴ मैंने जगह — जगह का पानी खोद — खोद कर पिया है और मैं अपने पाँव के तलवे से मिस्र की सब नदियाँ सुखा डालूँगा। ²⁵ क्या तू ने नहीं सुना कि मुझे यह किए हुए मुदत हुई और मैंने इसे गुज़रे दिनों

में ठहरा दिया था? अब मैंने उसको पूरा किया है कि तू फ़सीलदार शहरों को उजाड़ कर खंडर बना देने के लिए खड़ा हो। ²⁶ इसी वजह से उनके बाशिन्दे कमज़ोर हुए और वह घबरा गए, और शर्मिन्दा हुए वह मैदान की घास और हरी पौद और छतों पर की घास, और उस अनाज की तरह हो गए, जो बढ़ने से पहले सूख जाए। ²⁷ "लेकिन मैं तेरी मजलिस और आमद — ओ — रफ़्त और तेरा मुझ पर झुंझलाना मैं जानता हूँ। ²⁸ तेरे मुझ पर झंझलाने की वजह से, और इसलिए कि तेरा घमण्ड मेरे कानों तक पहुँचा है, मैं अपनी नकेल तेरी नाक में, और अपनी लगाम तेरे मुँह में डालूँगा; और तू जिस रास्ते से आया है, मैं तुझे उसी रास्ते से वापस लौटा दूँगा। ²⁹ "और तेरे लिए ये निशान होगा कि तुम इस साल वह चीज़ें जो खुद से उगती हैं, और दूसरे साल वह चीज़ें जो उनसे पैदा हों खाओगे; और तीसरे साल तुम बोना और काटना, और बाग़ लगाकर उनका फल खाना। ³⁰ और वह जो यहूदाह के घराने से बचा रहा है फिर नीचे की तरफ़ जड़ पकड़ेगा और ऊपर कि तरफ़ फल लाएगा। ³¹ क्योंकि एक बक्रिया येरूशलेम से, और वह जो बच रहे हैं कोह — ए — सिय्यून से निकलेंगे। खुदावन्द की ग़य्यूरी ये कर दिखाएगी। ³² "इसलिए खुदावन्द शाह — ए — असूर के हक़ में यूँ फ़रमाता है कि वह इस शहर में आने, या यहाँ तीर चलाने न पाएगा; वह न तो सिपर लेकर उसके सामने आने, और न उसके मुक़ाबिल दमदमा बाँधने पाएगा। ³³ बल्कि खुदावन्द फ़रमाता है कि जिस रास्ते से वह आया, उसी रास्ते से लौट जाएगा; और इस शहर में आने न पाएगा। ³⁴ क्योंकि मैं अपनी खातिर और अपने बन्दे दाऊद की खातिर इस शहर की हिमायत करूँगा ताकि इसे बचा लें।" ³⁵ इसलिए उसी रात को खुदावन्द के फ़रिश्ते ने निकल कर असूर की लश्करगाह में एक लाख पचासी हजार आदमी मार डाले, और सुबह को जब लोग सवेरे उठे तो देखा, कि वह सब मरे पड़े हैं। ³⁶ तब शाह — ए — असूर सनहेरिब वहाँ से चला गया और लौटकर नीनवा में रहने लगा। ³⁷ और जब वह अपने मा'बूद निसरूक के बुतख़ाने में इबादत कर रहा था, तो अदरम्मलिक और शराज़र ने उसे तलवार से क़त्ल किया, और अरारात की सरज़मीन को भाग गए। और उसका बेटा असरहदून उसकी जगह बादशाह हुआ।

20

?????????? ?? ?????? ????? ?? ???
????

¹ उन ही दिनों में हिज़क्रियाह ऐसा बीमार पड़ा कि मरने के करीब हो गया तब यसा'याह नबी आमूस के बेटे

ने उसके पास आकर उस से कहा खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि “तू अपने घर का इन्तज़ाम कर दे; क्योंकि तू मर जाएगा और बचने का नहीं।” ² तब उसने अपना चेहरा दीवार की तरफ़ करके खुदावन्द से यह दुआ की, ³ “ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मितरत करता हूँ, याद फ़रमा कि मैं तेरे सामने सच्चाई और पूरे दिल से चलता रहा हूँ, और जो तेरी नज़र में भला है वही किया है।” और हिज़क्रियाह बहुत रोया। ⁴ और ऐसा हुआ कि यसा'याह निकल कर शहर के बीच के हिस्से तक पहुँचा भी न था कि खुदावन्द का कलाम उस पर नाज़िल हुआ: ⁵ “लौट, और मेरी क्रौम के पेशवा हिज़क्रियाह से कह, कि खुदावन्द तेरे बाप दाऊद का खुदा यूँ फ़रमाता है: मैंने तेरी दुआ सुनी, और मैंने तेरे आँसू देखे। देख, मैं तुझे शिफ़ा दूँगा, और तीसरे दिन तू खुदावन्द के घर में जाएगा। ⁶ और मैं तेरी उम्र पन्द्रह साल और बढ़ा दूँगा, और मैं तुझ को और इस शहर को शाह — ए — असूर के हाथ से बचा लूँगा, और मैं अपनी खातिर और अपने बन्दे दाऊद की खातिर, इस शहर की हिमायत करूँगा।” ⁷ और यसा'याह ने कहा, “अंजीरों की टिकिया लो।” इसलिए वह उन्होंने उसे लेकर फोड़े पर बाँधा, तब वह अच्छा हो गया। ⁸ हिज़क्रियाह ने यसा'याह से पूछा, “इसका क्या निशान होगा कि खुदावन्द मुझे सेहत बख़्शेगा, और मैं तीसरे दिन खुदावन्द के घर में जाऊँगा?” ⁹ यसा'याह ने जवाब दिया, “इस बात का, कि खुदावन्द ने जिस काम को कहा है उसे वह करेगा, खुदावन्द की तरफ़ से तेरे लिए निशान ये होगा कि साया या दस दर्जे आगे को जाए, या दस दर्जे पीछे की लौटे।” ¹⁰ और हिज़क्रियाह ने जवाब दिया, “ये तो छोटी बात है कि साया दस दर्जे आगे की जाए, इसलिए यूँ नहीं बल्कि साया दस दर्जे पीछे को लौटे।” ¹¹ तब यसा'याह नबी ने खुदावन्द से दुआ की; इसलिए उसने साये को आख़ज की धूप घड़ी में दस दर्जे, या'नी जितना वह ढल चुका था उतना ही पीछे को लौटा दिया। ¹² उस वक़्त शाह — ए — बाबुल बरूदक बलादान — बिन — बलादान ने हिज़क्रियाह के पास नामा और तहाइफ़ भेजे; क्योंकि उसने सुना था कि हिज़क्रियाह बीमार हो गया था। ¹³ इसलिए हिज़क्रियाह ने उनकी बातें सुनी, और उसने अपनी बेशबहा चीज़ों का सारा घर, और चाँदी और सोना अपना सिलाहखाना और जो कुछ उसके खज़ानों में मौजूद था उनको दिखाया; उसके घर में और उसकी सारी ममलुकत में ऐसी कोई चीज़ न थी जो हिज़क्रियाह ने उनको न दिखाई। ¹⁴ तब यसा'याह नबी ने हिज़क्रियाह बादशाह के पास आकर उसे कहा, “ये लोग क्या कहते थे? और ये तेरे पास

कहाँ से आए?” हिज़क्रियाह ने कहा, “ये दूर मुल्क से, या'नी बाबुल से आए हैं।” ¹⁵ फिर उसने पूछा, “उन्होंने तेरे घर में क्या देखा?” हिज़क्रियाह ने जवाब दिया, “उन्होंने सब कुछ जो मेरे घर में है देखा; मेरे खज़ानों में ऐसी कोई चीज़ नहीं जो मैंने उनको दिखाई न हो।” ¹⁶ तब यसा'याह ने हिज़क्रियाह से कहा, “खुदावन्द का कलाम सुन ले: ¹⁷ देख, वह दिन आते हैं कि सब कुछ जो तेरे घर में है, और जो कुछ तेरे बाप — दादा ने आज के दिन तक जमा' करके रखा है, बाबुल को ले जाएँगे; खुदावन्द फ़रमाता है, कुछ भी बाकी न रहेगा। ¹⁸ और वह तेरे बेटों में से जो तुझसे पैदा होंगे, और जिनका बाप तू ही होगा ले जाएँगे, और वह बाबुल के बादशाह के महल में ख़ाजासरा होंगे।” ¹⁹ हिज़क्रियाह ने यसा'याह से कहा, “खुदावन्द का कलाम जो तू ने कहा है, भला है।” और उसने ये भी कहा, ‘भला ही होगा, अगर मेरे दिन में अमन और अमान रहे।’ ²⁰ हिज़क्रियाह के बाकी काम और उसकी सारी कुव्वत, और क्यूँकर उसने तालाब और नाली बनाकर शहर में पानी पहुँचाया; इसलिए क्या वह शाहान — ए — यहूदाह की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं? ²¹ और हिज़क्रियाह अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उसका बेटा मनस्सी उसकी जगह बादशाह हुआ।

21

?????? ?? ??????? ??? ???????

¹ जब मनस्सी सल्लतनत करने लगा तो बारह बरस का था, उसने पचपन बरस येरूशलेम में सल्लतनत की, और उसकी माँ का नाम हिफ़सीबाह था। ² उसने उन क्रौमों के नफ़रती कामों की तरह जिनको खुदावन्द ने बनी इस्राईल के आगे से दफ़ा' किया, खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया। ³ क्यूँकि उसने उन ऊँचे मक़ामों को जिनको उसके बाप हिज़क्रियाह ने ढाया था फिर बनाया; और बा'ल के लिए — मज़बह बनाए। और यसीरत बनाई जैसे शाह — ए — इस्राईल अखीअब ने किया था; और आसमान की सारी फ़ौज को सिज्दा करता और उनकी इबादत करता था। ⁴ और उसने खुदावन्द की हैकल में, जिसके ज़रिए' खुदावन्द ने फ़रमाया था, “मैं येरूशलेम में अपना नाम रखूँगा।” मज़बह बनाए। ⁵ और उसने आसमान की सारी फ़ौज के लिए खुदावन्द की हैकल के दोनों सहनों में मज़बह बनाए। ⁶ और उसने अपने बेटे को आग में चलाया, और वह शगून निकालता और अफ़सूंगरी करता, और जिन्नात के प्यारों और जादूगरों से त'अल्लुक़ रखता था। उसने खुदावन्द के आगे उसको गुस्सा दिलाने के लिए बड़ी शरारत की। ⁷ और उसने

यसीरत की खोदी हुई मूरत को, जिसे उसने बनाया था, उस घर में खड़ा किया जिसके ज़रिए' खुदावन्द ने दाऊद और उसके बेटे सुलेमान से कहा था कि "इसी घर में और येरूशलेम में जिसे मैंने बनी — इस्राईल के सब कबीलों में से चुन लिया है, मैं अपना नाम हमेशा तक रखूँगा ⁸ और मैं ऐसा न करूँगा कि बनी — इस्राईल के पाँव उस मुल्क से बाहर आवारा फ़िरें, जिसे मैंने उनके बाप — दादा को दिया, बशर्ते कि वह उन सब हुक्म के मुताबिक़ और उस शरी'अत के मुताबिक़, जिसका हुक्म मेरे बन्दे मूसा ने उनको दिया, 'अमल करने की एह्तियात रखें।" ⁹ लेकिन उन्होंने न माना, और मनस्सी ने उनको बहकाया कि वह उन कौमों के बारे में, जिनको खुदावन्द ने बनी — इस्राईल के आगे से बर्बाद किया, ज्यादा बदी करें। ¹⁰ इसलिए खुदावन्द ने अपने बन्दों, नबियों के ज़रिए' फ़रमाया, ¹¹ "चूँकि बादशाह यहूदाह मनस्सी ने नफ़रती काम किए, और अमोरियों की निस्वत जो उससे पहले हुए ज्यादा बुराई की, और यहूदाह से भी अपने बुतों के ज़रीए' से गुनाह कराया; ¹² इसलिए खुदावन्द इस्राईल का खुदा यँ फ़रमाता है: देखो, मैं येरूशलेम और यहूदाह पर ऐसी बला लाने को हूँ कि जो कोई उसका हाल सुने, उसके कान झन्ना उठेंगे। ¹³ और मैं येरूशलेम पर सामरिया की रस्सी, और अख़ीअब के घराने का साहुल डालूँगा; और मैं येरूशलेम को ऐसा साफ़ करूँगा जैसे आदमी थाली को साफ़ करता है और उसे साफ़कर के उल्टी रख देता है। ¹⁴ और मैं अपनी मीरास के बाक़ी लोगों को तर्क करके, उनको उनके दुश्मनों के हवाले करूँगा; और वह अपने सब दुश्मनों के लिए शिकार और लूट ठहरेंगे। ¹⁵ क्यूँकि जब से उनके बाप — दादा मिस्र से निकले, उस दिन से आज तक वह मेरे आगे बुराई करते और मुझे गुस्सा दिलाते रहे।" ¹⁶ 'अलावा इसके मनस्सी ने उस गुनाह के 'अलावा कि उसने यहूदाह को गुमराह करके खुदावन्द की नज़र में गुनाह कराया, बेगुनाहों का खून भी इस क़दर किया कि येरूशलेम इस सिरे से उस सिरे तक भर गया। ¹⁷ और मनस्सी के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, और वह गुनाह जो उससे सरज़द हुआ; इसलिए क्या वह बनी यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं? ¹⁸ और मनस्सी अपने बाप दादा के साथ सो गया, और अपने घर के बाग़ में जो 'उज़्ज़ा का बाग़ है दफ़न हुआ; और उसका बेटा अमून उसकी जगह बादशाह हुआ। ¹⁹ और अमून जब सल्तनत करने लगा तो बाईस बरस का था। उसने येरूशलेम में दो बरस सल्तनत की; उसकी माँ का नाम मसल्लिमत था, जो

हरूस युतबही की बेटी थी। ²⁰ और उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया जैसे उसके बाप मनस्सी ने की थी। ²¹ और वह अपने बाप के सब रास्तों पर चला, और उन बुतों की इबादत की जिनकी इबादत उसके बाप ने की थी, और उनको सिज्दा किया। ²² और उसने खुदावन्द अपने बाप दादा के खुदा को छोड़ दिया, और खुदावन्द की राह पर न चला। ²³ और अमून के खादिमों ने उसके खिलाफ़ साज़िश की, और बादशाह को उसी के महल में जान से मार दिया। ²⁴ लेकिन उस मुल्क के लोगों ने उन सबको, जिन्होंने अमून बादशाह के खिलाफ़ साज़िश की थी क़त्ल किया। और मुल्क के लोगों ने उसके बेटे यूसियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया। ²⁵ अमून के बाक़ी काम जो उसने किए, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं? ²⁶ और वह अपनी क़ब्र में 'उज़्ज़ा के बाग़ में दफ़न हुआ, और उसका बेटा यूसियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

22

?????? ?? ???? ??? ???? ???? ???? ?

1 जब यूसियाह सल्लतनत करने लगा, तो आठ बरस का था, उसने इकतीस साल येरूशलेम में सल्लतनत की। उसकी माँ का नाम जदीदाह था, जो बुरसकी 'अदायाह की बेटी थी। 2 उसने वह काम किए जो खुदावन्द की नज़र में ठीक था, और अपने बाप दाऊद की सब राहों पर चला और दहने या बाएँ हाथ को न मुड़ा। 3 और यूसियाह बादशाह के अठारहवें बरस ऐसा हुआ कि बादशाह ने साफ़न — बिन असलियाह — बिन — मसुल्लाम मुन्शी को खुदावन्द के घर भेजा और कहा, 4 “तू खिलकियाह सरदार काहिन के पास जा, ताकि वह उस नक़दी को जो खुदावन्द के घर में लाई जाती है, और जिसे दरबानों ने लोगों से लेकर जमा किया है गिने, 5 और वह उसे उन कारगुज़ारों को सौंप दे जो खुदावन्द के घर की निगरानी रखते हैं; और ये लोग उसे उन कारीगरों को दें जो खुदावन्द के घर में काम करते हैं, ताकि हैकल की दरारों की मरम्मत हो; 6 या'नी बढइयों और बादशाहों और मिस्त्रियों को दें, और हैकल की मरम्मत के लिए लकड़ी और तराशे हुए पत्थरों के खरीदने पर खर्च करें। 7 लेकिन उनसे उस नक़दी का जो उनके हाथ में दी जाती थी, कोई हिसाब नहीं लिया जाता था, इसलिए कि वह अमानत दारी से काम करते थे। 8 और सरदार काहिन खिलकियाह ने साफ़न मुन्शी से कहा, मुझे खुदावन्द के घर में तौरेत की किताब मिली है।” और खिलकियाह ने किताब साफ़न को दी और उसने उसको पढ़ा। 9 और साफ़न मुन्शी बादशाह के पास आया और बादशाह को खबर दी कि

“तेरे खादिमों ने वह नक़दी जो हैकल में मिली, लेकर उन कारगुज़ारों के हाथ में सुपुर्द की जो खुदावन्द के घर की निगरानी रखते हैं।” ¹⁰ और साफ़न मुन्शी ने बादशाह को ये भी बताया, “खिलक्रियाह काहिन ने एक किताब मेरे हवाले की है।” और साफ़न ने उसे बादशाह के सामने पढ़ा। ¹¹ जब बादशाह ने तौरत की किताब की बातें सुनीं, तो अपने कपड़े फाड़े; ¹² और बादशाह ने खिलक्रियाह काहिन, और साफ़न के बेटे अखीक़ाम, और मीकायाह के 'अकबूर और साफ़न मुन्शी असायाह को जो बादशाह का मुलाज़िम था ये हुक्म दिया, ¹³ कि “ये किताब जो मिली है, इसकी बातों के बारे में तुम जाकर मेरी और सब लोगों और सारे यहूदाह की तरफ़ से खुदावन्द से दरियाफ़्त करो; क्योंकि खुदावन्द का बड़ा ग़ज़ब हम पर इसी वजह से भड़का है कि हमारे बाप — दादा ने इस किताब की बातों को न सुना, कि जो कुछ उसमें हमारे बारे में लिखा है उसके मुताबिक़ 'अमल करते।” ¹⁴ तब खिलक्रियाह, काहिन और 'अखीक़ाम और अकबूर और साफ़न असायाह खुल्दा नबिया के पास गए, जो तोशाख़ाने के दरोगा सलूम बिन तिक़वा बिन ख़रख़स की बीवी थी, ये येरूशलेम में मिशना नामी महल्ले में रहती थी इसलिए उन्होंने उससे गुफ़्तगू की। ¹⁵ उसने उनसे कहा, “खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है, 'तुम उस शख़्स से जिसने तुम को मेरे पास भेजा है कहना, ¹⁶ कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मैं इस किताब की उन सब बातों के मुताबिक़, जिनको शाह — ए — यहूदाह ने पढ़ा है, इस मक़ाम पर और इसके सब बाशिन्दों पर बला नाज़िल करूँगा। ¹⁷ क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और ग़ैर — मा'बूदों के आगे खुशबू जलाया, ताकि अपने हाथों के सब कामों से मुझे गुस्सा दिलाएँ, इसलिए मेरा क्रूर इस मक़ाम पर भड़केगा और ठण्डा न होगा। ¹⁸ लेकिन शाह — ए — यहूदाह से जिसने तुम को खुदावन्द से दरियाफ़्त करने को भेजा है, यूँ कहना कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि जो बातें तू ने सुनीं हैं उनके बारे में यह है कि; ¹⁹ चूँकि तेरा दिल नर्म है, और जब तू ने वह बात सुनी जो मैंने इस मक़ाम और इसके बशिन्दों के हक़ में कही कि वह तबाह हो जाएँगे और ला'नती भी ठहरेंगे, तो तू ने खुदावन्द के आगे 'आजिज़ी की और अपने कपड़े फाड़े और मेरे आगे रोया; इसलिए मैंने भी तेरी सुन ली, खुदावन्द फ़रमाता है। ²⁰ इसलिए देख मैं तुझे तेरे बाप — दादा के साथ मिला दूँगा, और तू अपनी क़ब्र में सलामती से उतार दिया जाएगा, और उन सब आफ़तों को जो मैं इस मक़ाम पर नाज़िल करूँगा, तेरी आँखें नहीं

देखेंगी।” इसलिए वह यह ख़बर बादशाह के पास लाए।

23

222222 22 2222222 222222

¹ और बादशाह ने लोग भेजे, और उन्होंने यहूदाह और येरूशलेम के सब बुज़ुर्गों को उसके पास जमा किया। ² और बादशाह खुदावन्द के घर को गया, और उसके साथ यहूदाह के सब लोग, और येरूशलेम के सब बाशिन्दे, और काहिन, और नबी, और सब छोटे बड़े आदमी थे, और उसने जो 'अहद की किताब खुदावन्द के घर में मिली थी, उसकी सब बातें उनको पढ़ सुनाई। ³ और बादशाह सुतून के बराबर खड़ा हुआ, और उसने खुदावन्द की पैरवी करने और उसके हुक्मों और शहादतों और तौर तरीक़े को अपने सारे दिल और सारी जान से मानने, और इस 'अहद की बातों पर जो उस किताब में लिखी हैं 'अमल करने के लिए खुदावन्द के सामने 'अहद बाँधा, और सब लोग उस 'अहद पर कायम हुए। ⁴ फिर बादशाह ने सरदार काहिन खिलक्रियाह को, और उन काहिनों को जो दूसरे दर्जे के थे, और दरबानों को हुक्म किया कि उन सब बर्तनों को जो बा'ल और यसीरत और आसमान की सारी फ़ौज के लिए बनाए गए थे, खुदावन्द की हैकल से बाहर निकालें, और उसने येरूशलेम के बाहर क्रिद्रोन के खेतों में उनको जला दिया और उनकी राख बैतएल पहुँचाई। ⁵ और उसने उन बुत परस्त काहिनों को, जिनको शाहान — ए — यहूदाह ने यहूदाह के शहरों के ऊँचे मक़ामों और येरूशलेम के आस — पास के मक़ामों में खुशबू जलाने को मुक़रर किया था, और उनको भी जो बा'ल और चाँद और सूरज और सय्यारे और आसमान के सारे लश्कर के लिए खुशबू जलाते थे, मौकूफ़ किया। ⁶ और वह यसीरत को खुदावन्द के घर से येरूशलेम के बाहर क्रिद्रोन के नाले पर ले गया, और उसे क्रिद्रोन के नाले पर जला दिया और उसे कूट कूटकर खाक बना दिया और उसे 'आम लोगों की क़ब्रों पर फेंक दिया। ⁷ उसने लूतियों के मक़ानों को जो खुदावन्द के घर में थे, जिनमें 'औरतें यसीरत के लिए पर्दे बुना करती थीं, ढा दिया। ⁸ और उसने यहूदाह के शहरों से सब काहिनों को लाकर, जिबा' से बैरसबा' तक उन सब ऊँचे मक़ामों में जहाँ काहिनों ने खुशबू जलाया था, नजासत डलवाई; और उसने फाटकों के उन ऊँचे मक़ामों को जो शहर के नाज़िम यशू'आ के फाटक के मदख़ल, या'नी शहर के फाटक के बाएँ हाथ को थे, गिरा दिया। ⁹ तोभी ऊँचे मक़ामों के काहिन येरूशलेम में खुदावन्द के मज़बह के पास न आए, लेकिन वह अपने भाइयों के साथ बेख़मीरी रोटी खा लेते थे। ¹⁰ और उसने तूफ़त में जो बनी —

हिन्नुम की वादी में है, नजासत फिकवाई ताकि कोई शख्स मोलक के लिए अपने बेटे या बेटी को आग में न जला सके। ¹¹ और उसने उन घोड़ों को दूर कर दिया जिनको यहूदाह के बादशाहों ने सूरज के लिए मख्सूस करके खुदावन्द के घर के आसताने पर, नातन मलिक ख्वाजासरा की कोठरी के बराबर रखवा था जो हैकल की हद के अन्दर थी, और सूरज के रथों को आग से जला दिया। ¹² और उन मजबहों को जो आखज के बालाखाने की छत पर थे, जिनको शाहान — ए — यहूदाह ने बनाया था और उन मजबहों को जिनको मनस्सी ने खुदावन्द के घर के दोनों सहनों में बनाया था, बादशाह ने ढा दिया और वहाँ से उनको चूर — चूर करके उनकी खाक को क्रिदुरो के नाले में फिकवा दिया। ¹³ और बादशाह ने उन ऊँचे मक़ामों पर नजासत डलवाई जो येरूशलेम के मुक़ाबिल कोह — ए — आलायश की दहनी तरफ़ थे, जिनको इस्राईल के बादशाह सुलेमान ने सैदानियों की नफ़रती 'अस्तारात और मोआबियों, के नफ़रती कमूस और बनी 'अम्मोन के नफ़रती मिल्कोम के लिए बनाया था। ¹⁴ और उसने सुतूनों को टुकड़े — टुकड़े कर दिया और यसीरतों को काट डाला, और उनकी जगह में मुर्दों की हड्डियाँ भर दीं। ¹⁵ फिर बैतएल का वह मजबह और वह ऊँचा मक़ाम जिसे नबात के बेटे युरब'आम ने बनाया था, जिसने इस्राईल से गुनाह कराया, इसलिए इस मजबह और ऊँचे मक़ाम दोनों को उसने ढा दिया, और ऊँचे मक़ाम को जला दिया और उसे कूट — कूटकर खाक कर दिया, और यसीरत को जला दिया। ¹⁶ और जब यूसियाह मुड़ा तो उसने उन क़ब्रों को देखा जो वहाँ उस पहाड़ पर थीं, इसलिए उसने लोग भेज कर उन क़ब्रों में से हड्डियाँ निकलवाई, और उनको उस मजबह पर जलाकर उसे नापाक किया। ये खुदावन्द के सुखन के मुताबिक़ हुआ, जिसे उस मर्द — ए — खुदा ने जिसने इन बातों की ख़बर दी थी सुनाया था। ¹⁷ फिर उसने पूछा, “ये कैसी यादगार है जिसे मैं देखता हूँ?” शहर के लोगों ने उसे बताया, “ये उस मर्द — ए — खुदा की क़बर है, जिसने यहूदाह से आकर इन कामों की जो तू ने बैतएल के मजबह से किए, ख़बर दी।” ¹⁸ तब उसने कहा, “उसे रहने दो, कोई उसकी हड्डियों को न सरकाए।” इसलिए उन्होंने उसकी हड्डियाँ उस नबी की हड्डियों के साथ जो सामरिया से आया था रहने दीं। ¹⁹ और यूसियाह ने उन ऊँचे मक़ामों के सब घरों को भी जो सामरिया के शहरों में थे, जिनको इस्राईल के बादशाहों ने खुदावन्द को गुस्सा दिलाने को बनाया था ढाया, और जैसा उसने बैतएल में किया था वैसा ही उनसे भी किया। ²⁰ और

उसने ऊँचे मक़ामों के सब काहिनों को जो वहाँ थे, उन मजबहों पर क़त्ल किया और आदमियों की हड्डियाँ उन पर जलाई; फिर वह येरूशलेम को लौट आया। ²¹ और बादशाह ने सब लोगों को ये हुक्म दिया, कि “खुदावन्द अपने खुदा के लिए फ़सह मनाओ, जैसा 'अहद की इस किताब में लिखा है।” ²² और यकीनन क़ाजियों के ज़माने से जो इस्राईल की 'अदालत करते थे, और इस्राईल के बादशाहों और यहूदाह के बादशाहों के कुल दिनों में ऐसी 'ईद — ए — फ़सह कभी नहीं हुई थी। ²³ यूसियाह बादशाह के अठारहवें बरस ये फ़सह येरूशलेम में खुदावन्द के लिए मनाई गई। ²⁴ इसके सिवा यूसियाह ने जिन्नात के यारों और जादूगरों और मूरतों और बुतों, और सब नफ़रती चीज़ों को जो मुल्क — ए — यहूदाह और येरूशलेम में नज़र आई दूर कर दिया, ताकि वह शरी'अत की उन बातों को पूरा करे जो उस किताब में लिखी थी, जो ख़िलक़ियाह काहिन को खुदावन्द के घर में मिली थी। ²⁵ उससे पहले कोई बादशाह उसकी तरह नहीं हुआ था, जो अपने सारे दिल और अपनी सारी जान और अपने सारे ज़ोर से मूसा की सारी शरी'अत के मुताबिक़ खुदावन्द की तरफ़ रुजू लाया हो; और न उसके बाद कोई उसकी तरह खड़ा हुआ। ²⁶ बावजूद इसके मनस्सी की सब बदकारियों की वजह से, जिनसे उसने खुदावन्द को गुस्सा दिलाया था, खुदावन्द अपने सख्त — ओ — शदीद क्रहर से, जिससे उसका ग़ज़ब यहूदाह पर भड़का था, बाज़ न आया। ²⁷ और खुदावन्द ने फ़रमाया, कि “मैं यहूदाह को भी अपनी आँखों के सामने से दूर करूँगा, जैसे मैंने इस्राईल को दूर किया; और मैं इस शहर को जिसे मैंने चुना या'नी येरूशलेम को, और इस घर को जिसके ज़रिए मैंने कहा था की मेरा नाम वहाँ होगा रद्द कर दूँगा” ²⁸ और यूसियाह के बाक़ी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं? ²⁹ उसी के अय्याम में शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन निकोह शाह — ए — असूर पर चढ़ाई करने के लिए दरिया — ए — फ़रात को गया था; और यूसियाह बादशाह उसका सामना करने को निकला, इसलिए उसने उसे देखते ही मजिदो में क़त्ल कर दिया। ³⁰ और उसके मुलाज़िम उसको एक रथ में मजिदो से मरा हुआ ले गए, और उसे येरूशलेम में लाकर उसी की क़बर में दफ़न किया। और उस मुल्क के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहूआख़ज को लेकर उसे मसह किया, और उसके बाप की जगह उसे बादशाह बनाया। ³¹ और यहूआख़ज जब सल्तनत करने लगा तो तेईस साल का

था, उसने येरूशलेम में तीन महीने सलत्तनत की। उसकी माँ का नाम हमूतल था, जो लिबनाही यरमियाह की बेटी थी। ³² और जो — जो उसके बाप — दादा ने किया था उसके मुताबिक इसने भी खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया। ³³ इसलिए फिर'औन निकोह ने उसे रिबला में, जो मुल्क — ए — हम्मात में है, कैद कर दिया ताकि वह येरूशलेम में सलत्तनत न करने पाए; और उस मुल्क पर सौ किन्तार चाँदी और एक किन्तार सोना खिराज मुकर्रर किया। ³⁴ और फिर'औन निकोह ने यूसियाह के बेटे इलियाक्रीम को उसके बाप यूसियाह की जगह बादशाह बनाया, और उसका नाम बदलकर यहूयक्रीम रखा, लेकिन यहूआखज़ को ले गया, इसलिए वह मिस्र में आकर वहाँ मर गया। ³⁵ यहूयक्रीम ने वह चाँदी और सोना फिर'औन को पहुँचाया, पर इस नक़दी को फिर'औन के हुक्म के मुताबिक देने के लिए उसने ममलुकत पर खिराज मुकर्रर किया; या'नी उसने उस मुल्क के लोगों से हर शख्स के लगान के मुताबिक चाँदी और सोना लिया ताकि फिर'औन निकोह को दे। ³⁶ यहूयक्रीम जब सलत्तनत करने लगा, तो पच्चीस बरस का था, उसने येरूशलेम में ग्यारह बरस सलत्तनत की। उसकी माँ का नाम जबूदा था, जो रूमाह के फ़िदायाह की बेटी थी। ³⁷ और जो — जो उसके बाप — दादा ने किया था, उसी के मुताबिक उसने भी खुदावन्द की नज़र में बुराई की।

24

¹ उसी के दिनों में शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने चढ़ाई की और यहूयक्रीम तीन बरस तक उसका खादिम रहा तब वह फिर कर उससे मुड़ गया। ² और खुदावन्द ने कसदियों के दल, और अराम के दल, और मोआब के दल, और बनी 'अम्मोन के दल उस पर भेजे, और यहूदाह पर भी भेजे ताकि उसे जैसा खुदावन्द ने अपने बन्दों नबियों के ज़रिए' फ़रमाया था हलाक कर दे। ³ यक्रीनन खुदावन्द ही के हुक्म से यहूदाह पर यह सब कुछ हुआ, ताकि मनस्सी के सब गुनाहों के ज़रिए' जो उसने किए, उनको अपनी नज़र से दूर करे ⁴ और उन सब बेगुनाहों के खून के ज़रिए' भी जिसे मनस्सी ने बहाया; क्योंकि उसने येरूशलेम को बेगुनाहों के खून से भर दिया था और खुदावन्द ने मु'आफ़ करना न चाहा। ⁵ यहूयक्रीम के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहूदाह के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखा नहीं? ⁶ और यहूयक्रीम अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उसका बेटा यहूयाकीन उसकी

जगह बादशाह हुआ। ⁷ और शाह — ए — मिस्र फिर कभी अपने मुल्क से बाहर न गया; क्योंकि शाह — ए — बाबुल ने मिस्र के नाले से दरिया — ए — फ़रात तक सब कुछ जो शाह — ए — मिस्र का था ले लिया था।

?????????? ?? ??????? ??? ???????

⁸ यहूयाकीन जब सलत्तनत करने लगा तो अठारह बरस का था, और येरूशलेम में उसने तीन महीने सलत्तनत की। उसकी माँ का नाम नहुशता था, जो येरूशलेमी इलनातन की बेटी थी। ⁹ और जो — जो उसके बाप ने किया था उसके मुताबिक उसने भी खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया। ¹⁰ उस वक़्त शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के खादिमों ने येरूशलेम पर चढ़ाई की और शहर को घेर लिया। ¹¹ और शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र भी, जब उसके खादिमों ने उस शहर को घेर रक्खा था, वहाँ आया। ¹² तब शाह — ए — यहूदाह यहूयाकीन अपनी माँ और और अपने मुलाज़िमों और सरदारों और 'उहदादारों' साथ निकल कर शाह — ए — बाबुल के पास गया, और शाह — ए — बाबुल ने अपनी सलत्तनत के आठवें बरस उसे गिरफ़्तार किया। ¹³ और वह खुदावन्द के घर के सब खज़ानों और शाही महल के सब खज़ानों को वहाँ से ले गया, और सोने के सब बर्तनों को जिनको शाह — ए — इस्राईल सुलेमान ने खुदावन्द की हैकल में बनाया था, उसने काट कर खुदावन्द के कलाम के मुताबिक उनके टुकड़े — टुकड़े कर दिए। ¹⁴ और वह सारे येरूशलेम को और सब सरदारों और सब सूर्माओं को, जो दस हज़ार आदमी थे, और सब कारीगरों और लुहारों को गुलाम करके ले गया; इसलिए वहाँ मुल्क के लोगों में से सिवा कंगालों के और कोई बाकी न रहा। ¹⁵ और यहूयाकीन को वह बाबुल ले गया, और बादशाह की माँ और बादशाह की बीवियों और उसके 'उहदे दारों' और मुल्क के रईसों को वह गुलाम करके येरूशलेम से बाबुल को ले गया। ¹⁶ और सब ताक़तवर आदमियों को जो सात हज़ार थे, और कारीगरों और लुहारों को जो एक हज़ार थे, और सब के सब मज़बूत और जंग के लायक़ थे; शाह — ए — बाबुल गुलाम करके बाबुल में ले आया ¹⁷ और शाह — ए — बाबुल ने उसके बाप के भाई मत्तनियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया और उसका नाम बदलकर सिदक्रियाह रखा।

???????????? ?? ??????? ??? ???????

¹⁸ जब सिदक्रियाह सलत्तनत करने लगा तो इक्कीस बरस का था, और उसने ग्यारह बरस येरूशलेम में सलत्तनत की। उसकी माँ का नाम हमूतल था, जो

लिबनाही यर्मियाह की बेटी थी। ¹⁹ और जो — जो यहू यक्रीम ने किया था उसी के मुताबिक उसने भी खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया। ²⁰ क्योंकि खुदावन्द के ग़ज़ब की वजह से येरूशलेम और यहूदाह की ये नौबत आई, कि आखिर उसने उनको अपने सामने से दूर ही कर दिया; और सिदक्रियाह शाह — ए — बाबुल से फिर गया।

25

¹ और उसकी सल्तनत के नौवें बरस के दसवें महीने के दसवें दिन, यूँ हुआ कि शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने अपनी सारी फ़ौज के साथ येरूशलेम पर चढ़ाई की, और उसके सामने खैमाज़न हुआ, और उन्होंने उसके सामने चारों तरफ़ घेराबन्दी की। ² और सिदक्रियाह बादशाह की सल्तनत के ग्यारहवें बरस तक शहर का मुहासिरा रहा। ³ चौथे महीने के नौवें दिन से शहर में काल ऐसा सख्त हो गया, कि मुल्क के लोगों के लिए कुछ खाने को न रहा। ⁴ तब शहर पनाह में सुराख हो गया, और दोनों दीवारों के बीच जो फाटक शाही बाग़ के बराबर था, उससे सब जंगी मर्द रात ही रात भाग गए, उस वक़्त कसदी शहर को घेरे हुए थे और बादशाह ने वीराने का रास्ता लिया। ⁵ लेकिन कसदियों की फ़ौज ने बादशाह का पीछा किया और उसे यरीहू के मैदान में जा लिया, और उसका सारा लश्कर उसके पास से तितर बितर हो गया था। ⁶ इसलिए वह बादशाह को पकड़ कर रिबला में शाह — ए — बाबुल के पास ले गए, और उन्होंने उस पर फ़तवा दिया। ⁷ और उन्होंने सिदक्रियाह के बेटों को उसकी आँखों के सामने ज़बह किया और सिदक्रियाह की आँखें निकाल डालीं और उसे ज़ंजीरों से जकड़कर बाबुल को ले गए।

०००००००००० ०० ०० ०० ०००००० ००००

⁸ और शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के 'अहद के उन्नीसवें साल के पाँचवें महीने के सातवें दिन, शाह — ए — बाबुल का एक खादिम नबूज़रादान जो जिलौदारों का सरदार था येरूशलेम में आया। ⁹ और उसने खुदावन्द का घर और बादशाह का महल येरूशलेम के सब घर, या'नी हर एक बड़ा घर आग से जला दिया। ¹⁰ और कसदियों के सारे लश्कर ने जो जिलौदारों के सरदार के साथ थे, येरूशलेम की फ़सील को चारों तरफ़ से गिरा दिया। ¹¹ और बाक़ी लोगों को जो शहर में रह गए थे, और उनको जिन्होंने अपनों को छोड़ कर शाह — ए — बाबुल की पनाह ली थी, और 'अवाम में से जितने बाक़ी रह गए थे, उन सबको नबूज़रादान जिलौदारों का सरदार कैद करके ले गया। ¹² पर जिलौदारों के सरदार ने मुल्क के कंगालों को रहने दिया, ताकि खेती और

बाग़ों की बाग़बानी करें। ¹³ और पीतल के उन सुतूनों को जो खुदावन्द के घर में थे, और कुर्सियों को और पीतल के बड़े हौज़ को, जो खुदावन्द के घर में था, कसदियों ने तोड़ कर टुकड़े — टुकड़े किया और उनका पीतल बाबुल को ले गए। ¹⁴ और तमाम देगें और बेल्टचे और गुलगीर और चम्चे, और पीतल के तमाम बर्तन जो वहाँ काम आते थे ले गए। ¹⁵ और अंगीठियाँ और कटोरे, गरज़ जो कुछ सोने का था उसके सोने को, और जो कुछ चाँदी का था उसकी चाँदी को, जिलौदारों का सरदार ले गया। ¹⁶ और दोनों सुतून और वह बड़ा हौज़ और वह कुर्सियाँ, जिनको सुलेमान ने खुदावन्द के घर के लिए बनाया था, इन सब चीज़ों के पीतल का वज़न बेहिसाब था। ¹⁷ एक सुतून अठारह हाथ ऊँचा था, और उसके ऊपर पीतल का एक ताज था और वह ताज तीन हाथ बलन्द था; उस ताज पर चारों तरफ़ जालियाँ और अनार की कलियाँ, सब पीतल की बनी हुई थी; और दूसरे सुतून के लवाज़िम भी जाली समेत इन्हीं की तरह थे। ¹⁸ जिलौदारों के सरदार ने सिरायाह सरदार काहिन को और काहिन — ए — सानी सफ़नियाह को और तीनों दरबानों को पकड़ लिया; ¹⁹ और उसने शहर में से एक सरदार को पकड़ लिया जो जंगी मर्दों पर मुक़र्रर था, और जो लोग बादशाह के सामने हाज़िर रहते थे उनमें से पाँच आदमियों को जो शहर में मिले, और लश्कर के बड़े मुहरिर को जो अहल — ए — मुल्क की मौजूदात लेता था, और मुल्क के लोगों में से साठ आदमियों को जो शहर में मिले। ²⁰ इनको जिलौदारों का सरदार नबूज़रादान पकड़ कर शाह — ए — बाबुल के सामने रिबला में ले गया। ²¹ और शाह — ए — बाबुल ने हमात के 'इलाक़े के रिबला में इनको मारा और क़त्ल किया। इसलिए यहूदाह भी अपने मुल्क से गुलाम होकर चला गया। ²² जो लोग यहूदाह की सर ज़मीन में रह गए, जिनको नबूकदनज़र शाह — ए — बाबुल ने छोड़ दिया, उन पर उसने ज़िदलियाह — बिन अखीक्राम — बिन साफ़न को हाकिम मुक़र्रर किया। ²³ जब लश्करों के सब सरदारों और उनकी सिपाह ने, या'नी इस्माईल — बिन — नतनियाह और यूहनान बिन करीह और सिरायाह बिन ताखूमत नातूफ़ाती और याज़नियाह बिन मा'काती ने सुना कि शाह — ए — बाबुल ने ज़िदलियाह को हाकिम बनाया है, तो वह अपने लोगों समेत मिस्फ़ाह में ज़िदलियाह के पास आए। ²⁴ ज़िदलियाह ने उनसे और उनकी सिपाह से क़सम खाकर कहा, “कसदियों के मुलाज़िमों से मत डरो; मुल्क में बसे रहो और शाह — ए — बाबुल की खिदमत करो और तुम्हारी भलाई होगी।”

25 मगर सातवें महीने ऐसा हुआ कि इस्माईल — बिन — नतनियाह — बिन — इलीसमा' जो बादशाह की नस्ल से था, अपने साथ दस मर्द लेकर आया और जिदलियाह को ऐसा मारा कि वह मर गया; और उन यहूदियों और कसदियों को भी जो उसके साथ मिस्फ़ाह में थे क़त्ल किया। 26 तब सब लोग, क्या छोटे क्या बड़े और लोगों के सरदार उठ कर मिस्र को चले गए क्योंकि वह कसदियों से डरते थे। 27 और यहूयाकीन शाह — ए — यहूदाह की गुलामी के सैंतीसवें साल के बारहवें महीने के सत्ताइसवें दिन ऐसा हुआ, कि शाह — ए — बाबुल ईवील मरदूक़ ने अपनी सल्तनत के पहले ही साल यहूयाकीन शाह — ए — यहूदाह को कैदख़ाने से निकाल कर सरफ़राज़ किया; 28 और उसके साथ मेहरबानी से बातें कीं, और उसकी कुर्सी उन सब बादशाहों की कुर्सियों से जो उसके साथ बाबुल में थे बलन्द की। 29 इसलिए वह अपने कैदख़ाने के कपड़े बदलकर उम्र भर बराबर उसके सामने खाना खाता रहा; 30 और उसको उम्र भर बादशाह की तरफ़ से वज़ीफ़े के तौर पर हर रोज़ ख़र्चा मिलता रहा।

1 तवारीख

1 तवारीख की किताब

1 तवारीख की किताब खास तौर से उसके मुसन्निफ़ का नाम पेश नहीं करती है — 1 तवारीख बनी इस्राईलियों के खानदानों की फेहरिस्त के साथ शुरू करती है — फिर वह दाऊद की हुकूमत मुत्तहिद बादशाही जो बनी इस्राईल के ऊपर थी उसकी कैफ़ीयत को जारी रखती है — सो यह किताब दाऊद बादशाह की कहानी से जुड़ी हुई है जो पुराने अहदनामे की तीर की तरह उड़ने वाली खारीजी सूरत की तरह है — इसका वसी नज़ार: सियासत और खदीम इस्राईल की मज़हबी तारीख को शामिल करती है।

इस किताब की तस्नीफ़ की तारीख़ तकरीबन 450 - 400 क़बल मसीह है।

यह बात साफ़ है कि बनी इस्राईल बाबुल गुलामी से वापस आये — जहाँ तक 1 तवारीख 3:19-24 में जिन की फेहरिस्त दी गई है वह दाऊद के नसबनामे से आगे बढ़ ते हुए ज़रुबाबुल के बाद छटी पीड़ी तक जाती है।

क़दीम यहूदी लोग और बाद में वह तमाम क़ारिर्इन — ए — बाइबल।

1 तवारीख की किताब

1 तवारीख की किताब गुलामी के बाद लिखी गई थी कि वापस लौटे हुआ की मदद करें ताकि वह समझे कि खुदा की किस तरह इबादत करें जुनूबी हुकुमत यानी यहूदा, बिन्यामीन और लावी की तरफ़ तारीख़ पर ज्यादा ध्यान दिया गया है — इन क़बीलों ने खुदा की तरफ़ वफ़ादार होने के लिए मायल हुई दाऊद के साथ खुदा ने अपने अहद की हुकूमत हमेशा के लिए आबाद किया — ज़मीनी बादशाह इसे कर नहीं सकते थे पर दाऊद और सुलेमान के ज़रिए खुदा ने अपनी हैकल को कायम किया जहाँ लोग आकर खुदा की इबादत कर सके — सुलेमान के मंदिर को बाबुल के हमलावरों ने बर्बाद किया।

बनी इस्राईल की रूहानी तारीख़।

बैरूनी खाका

1 नसब नामे — 1:1-9:44

2. साऊल की मौत — 10:1-14

3. दाऊद का मसह और उसकी बादशाही — 11:1-29:30

1 आदम, सेत, उनूस, 2 किनान, महलीएल, यारिद,

3 हनूक, मतूसिलह, लमक, 4 नूह, सिम, हाम, और याफ़त।

5 बनी याफ़त: जुमर और माज़ूज और मादी और यावान और तूबल और मसक और तीरास हैं। 6 और बनी जुमर अशकनाज और रीफ़त और तुजरमा हैं। 7 और बनी यावान, इलिसा और तरसीस, किक्ती और दूदानी हैं।

8 बनी हाम: कूश और मिस्र, फ़ूत और कनान हैं।

9 बनी कूश: सबा और हवीला और सबता और रा'माह सब्का हैं और बनी रामाह सबाह और ददान हैं। 10 कूश से नमरूद पैदा हुआ; ज़मीन पर पहले वही बहादुरी करने लगा। 11 और मिस्र से लूदी और अनामी और लिहाबी और नफ़तूही, 12 और फ़तरूसी और कसलूही जिनसे फ़िलिस्ती निकले, कफ़तूरी पैदा हुए। 13 और कनान से सैदा जो उसका पहलौठा था, और हित्त, 14 और यबूसी और अमोरी और जिरजाशी, 15 और हव्वी और 'अर्की और सीनी, 16 और अरवादी और सिमारी और हिमाती पैदा हुए।

17 बनी सिम: 'एलाम और असूर और अरफ़कसद और लूद और अराम और 'ऊज़ और हूल और जतर और मसक हैं। 18 और अरफ़कसद से सिलह पैदा हुआ और सिलह से इब्र पैदा हुआ। 19 और इब्र से दो बेटे पहले का नाम फ़लज था क्योंकि उसके अय्याम में ज़मीन बटी, और उसके भाई का नाम युक्तान था। 20 और युक्तान से अलमूदाद और सलफ़ और हसर मावत और इराख, 21 और हदूराम और ऊज़ाल और दिक्ला, 22 और 'ऐबाल और अबीमाएल और सबा, 23 और ओफ़ीर और हवीला और यूबाब पैदा हुए; यह सब बनी युक्तान हैं। 24 सिम, अरफ़कसद, सिलह, 25 इब्र, फ़लज, र'ऊ, 26 सरुज, नहूर, तारह, 27 इब्रहाम या'नी अब्रहाम।

28 अब्रहाम के बेटे: इस्हाक़ और इस्मा'ईल थे।

29 उनकी औलाद यह हैं: इस्मा'ईल का पहलौठा नबायोत उसके बाद कीदार और अदबिएल और मिबसाम, 30 मिशमा'अ और दूमा और मसा, हदद और तेमा, 31 यतूर, नाफ़ीस, क्रिदमा; यह बनी इस्मा'ईल हैं।

32 और अब्रहाम की हरम क़तूरा के बेटे यह हैं: उसके बत्न से ज़िमरान युक्सान और मिदान और मिदियान और इस्वाक़ और सूख पैदा हुए और बनी युक्सान: सिबा

और ददान हैं। ³³ और बनी मिदियान: 'एफ़ा और 'इफ़र और हनूक और अबीदा'अ इल्दू'आ हैं; यह सब बनी कतूरा हैं।

२२२२२२२ २२ २२२२२२२

³⁴ और अब्रहाम से इस्हाक पैदा हुआ। बनी इस्हाक: 'ऐसौ और इस्राईल थे।

'२२२ २२ २२२२२२२

³⁵ बनी 'ऐसौ: इलिफ़ज़ और र'ऊएल और य'ऊस और यालाम और क्रोरह हैं। ³⁶ बनी इलिफ़ज़ तेमान और ओमर और सफ़ी और जा'ताम, क्रनज़, और तिम्ना' और 'अमालीक हैं। ³⁷ बनी र'ऊएल: नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा हैं। ³⁸ और बनी श'ईर: लोतान और सोबल और सबा'ऊन और 'अना और दीसोन और एसर और दीसान हैं। ³⁹ और हूरी और होमाम लूतान के बेटे थे, और तिम्ना' लोतान की बहन थी। ⁴⁰ बनी सोबल: 'अल्यान और मानहत 'एबाल सफ़ी और ओनाम हैं। अय्याह और 'अना सबा'ऊन के बेटे थे। ⁴¹ और 'अना का बेटा दीसोन था; और हमरान और इश्बान और यित्दान और किरान दीसोन के बेटे थे। ⁴² और एसर के बेटे: बिलहान और जा'वान और या'क़ान थे और ऊज़ और अरान दीसान के बेटे थे।

२२२२ २२ २२२२२२

⁴³ और जिन बादशाहों ने मुल्क — ए — अदोम पर उस वक़्त हुकूमत की जब बनी — इस्राईल पर कोई बादशाह हुक्मरान न था वह यह हैं: बाला' बिन ब'ओर; उसके शहर का नाम दिन्हाबा था। ⁴⁴ और बाला' मर गया और यूबाब बिन ज़ारह जो बसराही था उसकी जगह बादशाह हुआ। ⁴⁵ और यूबाब मर गया और हशाम जो तेमान के 'इलाके का था उसकी जगह बादशाह हो हुआ। ⁴⁶ और हशाम मर गया और हदद बिन बिदद, जिसने मिदियानियों को मोआब के मैदान में मारा उसकी जगह बादशाह हुआ और उसके शहर का नाम 'अवीत था। ⁴⁷ और हदद मर गया और शमला जो मसरिका का था, उसकी जगह बादशाह हुआ। ⁴⁸ और शमला मर गया और साउल जो दरिया — ए — फ़रात के पास के रहोबोत का बाशिंदा था उसकी जगह बादशाह हुआ। ⁴⁹ और साउल मर गया और बा'ल — हनान बिन अकबूर उसकी जगह बादशाह हुआ। ⁵⁰ और बा'ल — हनान मर गया और हदद उसकी जगह बादशाह हुआ; उसके शहर का नाम फ़ा'ई और उसकी बीवी का नाम महेतबेल था, जो मतरिद बिनत मेज़ाहाब की बेटी थी। ⁵¹ और हदद मर गया। फिर यह अदोम के रईस हुए: रईस तिम्ना', रईस अलियाह, रईस यतीत, ⁵² रईस ओहलीबामा, रईस

ऐला, रईस फ़ीनोन, ⁵³ रईस क्रनज़, रईस तेमान, रईस मिब्सार, ⁵⁴ रईस मज्दिएल, रईस 'इराम; अदोम के रईस यही हैं।

2

२२२२२२२ २२ २२२२२२२

¹ यह बनी इस्राईल हैं: रूबिन, शमौन, लावी, यहूदाह, इश्कार और ज़बूलून, ² दान, यूसुफ़, और बिनयमीन, नफ़ताली, ज़द और आशर।

२२२२२२ २२ २२२२२२२

³ 'एर और ओनान और सीला, यह यहूदाह के बेटे हैं; यह तीनों उससे एक कना'नी 'औरत बतसू'अ के बत्न से पैदा हुए। और यहूदाह का पहलौठा 'एर खुदावंद की नज़र में एक शरीर था, इसलिए उसने उसको मार डाला; ⁴ और उसकी बहू तमर के उससे फ़ारस और ज़ारह हुए। यहूदाह के कुल पांच बेटे थे। ⁵ और फ़ारस के बेटे हसरोन और हमूल थे। ⁶ और ज़ारह के बेटे: ज़िमरी और ऐतान, हैमान और कलकूल और दारा', या'नी कुल पाँच थे। ⁷ और इस्राईल का दुख देने वाला 'अकर जिसने मख्सूस की हुई चीज़ों में ख़यानत की, करमी का बेटा था; ⁸ और ऐतान का बेटा 'अज़रियाह था। ⁹ और हसरोन के बेटे जो उससे पैदा हुए यह हैं: यरहमिएल और राम और कुलूबी। ¹⁰ और राम से 'अम्मीनदाब पैदा हुआ और 'अम्मीनदाब से नहसोन पैदा हुआ, जो बनी यहूदाह का सरदार था। ¹¹ और नहसोन से सलमा पैदा हुआ और सलमा से बो'अज़ पैदा हुआ। ¹² और बो'अज़ से 'ओबेद पैदा हुआ और 'ओबेद से यस्सी पैदा हुआ। ¹³ यस्सी से उसका पहलौठा 'इलियाब पैदा हुआ, और अबीनदाब दूसरा, और सिमआ तीसरा, ¹⁴ नतनिएल चौथा, रद्दी पाँचवाँ, ¹⁵ 'ओज़म छठा, दाऊद सातवाँ, ¹⁶ और उनकी बहनें ज़रोयाह और अबीजेल थीं। अबीशै और योआब और 'असाहेल, यह तीनों ज़रुयाह के बेटे हैं। ¹⁷ और अबीजेल से 'अमासा पैदा हुआ, और 'अमासा का बाप इस्माईली यतर था। ¹⁸ और हसरोन के बेटे कालिब से, उसकी बीवी 'अजूबाह और यरी'ओत के औलाद पैदा हुई। अजूबाह के बेटे यह हैं: यशर और सूबाब और अरदून। ¹⁹ और 'अजूबाह मर गई, और कालिब ने इफ़रात को ब्याह लिया जिसके बत्न से हूर पैदा हुआ। ²⁰ और हूर से ऊरी पैदा हुआ और ऊरी से बज़लिएल पैदा हुआ। ²¹ उसके बाद हसरोन ज़िल'आद के बाप मकीर की बेटी के पास गया; जिससे उसने साठ बरस की उम्र में ब्याह किया था और उसके बत्न से शजूब पैदा हुआ।

22 और शज्बू से याईर पैदा हुआ। जो मुल्क — ए — जिल'आद में तेईस शहरों का मालिक था। 23 और जसूर और अराम ने याईर के शहरों को और कनात को म'ए उसके कस्बों के या'नी साठ शहरों को उन से ले लिया। यह सब जिल'आद के बाप मकीर के बेटे थे। 24 और हसरोन के कालिब इफ़राता में मर जाने के बाद हसरोन की बीवी अबियाह के उससे अशूर पैदा हुआ जो तकू'अ का बाप था। 25 और हसरोन के पहलौटे, यरहमिएल के बेटे यह हैं: राम जो उसका पहलौठा था और बूना और ओरन और ओज़म और अखियाह। 26 और यरहमिएल की एक और बीवी थी जिसका नाम 'अतारा था। वह ओनाम की माँ थी। 27 और यरहमिएल के पहलौटे राम के बेटे मा'ज़ और यमीन 'एकर थे। 28 और ओनाम के बेटे: सम्मी और यदा'; और सम्मी के बेटे: नदब और अबीसूर थे। 29 और अबीसूर की बीवी का नाम अबीखैल था। उसके बत्न से अखबान और मोलिद पैदा हुए। 30 और नदब के बेटे: सिलिद अफ़फ़ाईम थे लेकिन सिलिद बे औलाद मर गया। 31 और अफ़फ़ाईम का बेटा यस'ई; और यस'ई का बेटा सीसान; और सीसान का बेटा अखली था। 32 और सम्मी के भाई यदा' के बेटे: यतर और यूनतन थे; और यतर बे औलाद मर गया। 33 और यूनतन के बेटे: फ़लत और ज़ाज़ा; यह यरहमिएल के बेटे थे। 34 और सीसान के बेटे नहीं सिर्फ़ बेटियाँ थीं और सीसान का एक मिस्री नौकर यरखा' नामी था। 35 इसलिए सीसान ने अपनी बेटी को अपने नौकर यरखा' से ब्याह दिया, और उसके उससे 'अत्ती पैदा हुआ। 36 और अत्ती से नातन पैदा हुआ, और नातन से ज़ाबा'द पैदा हुआ, 37 और ज़ाबा'द से इफ़लाल पैदा हुआ और इफ़लाल से 'ओबेद पैदा हुआ। 38 और 'ओबेद से याहू पैदा हुआ और याहू से 'अज़रयाह पैदा हुआ 39 और अज़रयाह से खलस पैदा हुआ, और खलस से इलि, आसा पैदा हुआ, 40 और इलि'आसा से सिसमी पैदा हुआ, और सिसमी से सलूम पैदा हुआ। 41 और सलूम से यक्रमियाह पैदा हुआ और यक्रमियाह से इलीसमा' पैदा हुआ। 42 यरहमिएल के भाई कालिब के बेटे यह हैं: मीसा उसका पहलौठा जो ज़ीफ़ का बाप है, और हबरून के बाप मरीसा के बेटे। 43 और बनी हबरून: कोरह और तफ़फूह और रक्रम और समा' थे। 44 और समा' से युरक'आम का बाप रखम पैदा हुआ, और रखम से सम्मी पैदा हुआ। 45 और सम्मी का बेटा: म'ऊन था और म'ऊन बैतसूर का बाप था। 46 और कालिब की हरम ऐफ़ा से हरान और मौज़ा और जाज़िज़ पैदा हुए और हरान से जाज़िज़ पैदा हुआ। 47 और बनी यहदी: रजम और

यूताम और जसाम और फ़लत और 'ऐफ़ा और शा'फ़ थे। 48 और कालिब की हरम मा'का से शिब्वर और तिरहनाह पैदा हुए। 49 उसी के बत्न से मदमन्नाह का बाप शा'फ़ और मकबीना का बाप सिवा और रहज और रिजबा' का बाप भी पैदा हुए; और कालिब की बेटी 'अकसा थी। 50 कालिब के बेटे यह थे। इफ़राता के पहलौटे हूर का बेटा करयत — या'रीम का बाप सोबल, 51 बैतलहम का बाप सलमा, और बैतजादिर का बाप ख़ारीफ़। 52 और करयत — यारीम के बाप सोबल के बेटे ही बेटे थे; हराई और मनोखोत के आधे लोग। 53 और करयत या'रीम के घराने यह थे: इतरी और फ़ूती और सुमाती और मिस्रा'ई इन्हीं से सुर'अती और इश्तावली निकले हैं। 54 बनी सलमा यह थे: बैतलहम और नतूफ़ाती और 'अतरात — बैतयुआब और मनूखतियों के आधे लोग और सुर'ई, 55 और या'बीज़ के रहने वाले मुन्शियों के घराने, तिर'आती और सम'आती और सौकाती; यह वह क़ीनी हैं जो रैकाब के घराने के बाप हमात की नसल से थे।

3

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 यह दाऊद के बेटे हैं जो हबरून में उससे पैदा हुए: पहलौठा अमनोन, यज़र'एली अखनूअम के बत्न से; दूसरा दानिएल, कर्मिली अबीजेल के बत्न से; 2 तीसरा अबीसलोम, जो जसूर के बादशाह तल्मी की बेटी मा'का का बेटा था; चौथा अदूनियाह, जो हज्जियत का बेटा था। 3 पाँचवाँ सफ़तियाह, अबीताल ले बत्न से; छठा इतर'आम, उसकी बीवी 'इजला से। 4 यह छः हबरून में उससे पैदा हुए। उसने वहाँ सात बरस छः महीने हुकूमत की, और येरूशलेम में उसने तैंतीस बरस हुकूमत की। 5 और यह येरूशलेम में उससे पैदा हुए: सिम'आ और सोबाब और नातन और सुलेमान, यह चारों 'अम्मीएल की बेटी बतसू'अ के बत्न से थे। 6 और इब्हार और इलीसमा' और इलिफ़ालत, 7 और नुजा और नफ़ज और यफ़ी'आ, 8 और इलीसमा' और इलीयदा' और इलिफ़ालत; यह नौ 9 यह सब हरमों के बेटों के 'अलावा दाऊद के बेटे थे; और तमर इनकी बहन थी 10 और सुलेमान का बेटा रहुब'आम था उसका बेटा अबियाह, उसका बेटा आसा, उसका बेटा यहूसफ़त; 11 उसका बेटा यूराम, उसका बेटा अखज़ियाह उसका बेटा यूआस; 12 उसका बेटा अमसियाह, उसका बेटा अज़रियाह, उसका बेटा यूताम; 13 उसका बेटा आखज़, उसका बेटा हिज़क्रियाह, उसका बेटा मनस्सी। 14 उसका बेटा अमून, उसका बेटा यूसियाह; 15 और यूसियाह के बेटे यह थे:

पहलौठा यूहनान, दूसरा यहूयक्रीम, तीसरा सिदक्रियाह, चौथा सलूम। ¹⁶ और बनी यहूयक्रीम: उसका बेटा यकूनियाह, उसका बेटा सिदक्रियाह। ¹⁷ और यकूनियाह जो गुलाम था, उसके बेटे यह हैं: सियालतिएल, ¹⁸ और मल्कराम और फ़िदायाह और शीनाज़र, यकूमियाह, होसमा' और नदबियाह; ¹⁹ और फ़िदायाह के बेटे यह हैं: ज़रब्बाबुल और सिम'ई और ज़रब्बाबुल के बेटे यह हैं: मुसल्लाम और हनानियाह, और सल्लूमियत उनकी बहन थी, ²⁰ और हसूबा और अहल और बरकियाह और हसदियाह, यूसजसद यह पाँच। ²¹ और हनानियाह के बेटे यह हैं: फ़लतियाह और यसा'याह। बनी रिफ़ायाह, बनी अरनान, बनी 'ईदयाह, बनी सकनियाह, ²² और सकनियाह का बेटा: समा'याह और बनी समा'याह: हतूश और इज़ाल और बरीह और ना'रियाह और साफ़त' यह छः। ²³ और ना'रियाह के बेटे यह थे: इलीहू'ऐनी, और हिज़क्रियाह और 'अज़रिक्काम, यह तीन। ²⁴ और बनी इलीहू'ऐनी यह थे: हूदैवाहू और 'इलियासब और फ़िलायाह और 'अक्कूब और युहनान और दिलायाह 'अनानी, यह सात।

4

११११११ ११ ११११११११

¹ बनी यहूदाह यह हैं: फ़ारस, हसरोन और कर्मी और हूर और सोबल। ² और रियायाह बिन सोबल से यहत पैदा हुआ और यहत से अखूमी और लाहद पैदा हुए, यह सुर'अतियों के खानदान हैं। ³ और यह 'ऐताम के बाप से हैं: यज़र'एल और इसमा' और इदबास और उनकी बहन का नाम हज़िल — इलफूनी था; ⁴ और फ़नूएल ज़दूर का बाप और 'अज़र हूसा का बाप था। यह इफ़राता के पहलौठे हूर के बेटे हैं। जो बैतलहम का बाप था। ⁵ और तकू'अ के बाप अशूर की दो बीवियां थीं हीलाह और ना'रा। ⁶ और ना'रा के उससे अखूसाम और हिफ़ूर और तेमनी और हख़सतरी पैसा हुए। यह ना'रा के बेटे थे। ⁷ और हीलाह के बेटे: ज़रत और यज़ूआर और इतनान थे। ⁸ कूज़ से 'अनूब और ज़ोबीबा और हरूम के बेटे आखरख़ेल के घराने पैदा हुए। ⁹ और या'बीज़ अपने भाइयों से मु'अज़िज़ था और उसकी माँ ने उसका नाम या'बीज़ रक्खा क्योंकि कहती थी, की "मैंने ग़म के साथ उसे जनम दिया है।" ¹⁰ और या'बीज़ ने इस्राईल के खुदा से यह दुआ की, "आह, तू मुझे वाक़'ई बरकत दे, और मेरी हुदूद को बढ़ाए, और तेरा हाथ मुझ पर हो और तू मुझे बदी से बचाए ताकि वह मेरे ग़म का ज़रि'अ न हो!" और जो उसने माँगा खुदा ने उसको

बरख़्शा। ¹¹ और सूखा के भाई कलूब से महीर पैदा हुआ जो इस्तून का बाप था। ¹² और इस्तून से बैतरिफ़ा और फ़ासह और 'ईरनहस जा बाप तखिन्ना पैदा हुए। यही रैका के लोग हैं। ¹³ और क़नज़ के बेटे: गुतनिएल और शिरायाह थे, और गुतनिएल का बेटा हतत था। ¹⁴ और म'ऊनाती से 'उफ़रा पैदा हुआ, और शिरायाह से युआब पैदा हुआ जो जिखराशीम का बाप है; क्योंकि वह कारीगर थे। ¹⁵ और यफ़ुन्ना के बेटे कालिब के बेटे यह हैं: 'ईरु और ऐला और ना'म; और बनी ऐला:क़नज़। ¹⁶ और यहलिलिएल के बेटे यह हैं: जीफ़ और जीफ़ा, तैरयाह और असरिएल। ¹⁷ और 'अज़रा के बेटे यह हैं: यतर और मरद और 'इफ़ूर और यलून और उसके बत्न से मरियम और सम्मी और इस्तिमू'अ का बाप इस्बाह पैदा हुए, ¹⁸ और उसकी यहूदी बीवी के उस से ज़दूर का बाप यरद और शोको का बाप हिबूर और ज़नोआह का बाप यकूतिएल पैदा हुए; और फ़िर'औन की बेटी बित्याह के बेटे जिसे मरद ने ब्याह लिया था यह हैं। ¹⁹ और यहूदियाह की बीवी नहम की बहन के बेटे क़'ईलाजर्मी का बाप और इस्तिमू'अ मा'काती थे। ²⁰ और सीमोन के बेटे यह हैं: अमनून और रिन्ना, बिनहन्नान और तीलोन, और यस'ई के बेटे: ज़ोहित और बिनज़ोहित थे। ²¹ और सीला बिन यहूदाह के बेटे यह हैं: 'एर, लका का बाप; और ला'दा, मरीसा का बाप और बीत — अशबि'अ के घराने, जो बारीक कटान का काम करते थे। ²² और योक्कीम और कोज़ीबा के लोग, और यूआस और शराफ़ जो मोआब के बीच हुक्मरान थे, और यसूबी लहम। यह पुरानी तवारीख़ है। ²³ यह कुम्हार थे और नताईम और गदेरा के बाशिंदे थे। वह वहाँ बादशाह के साथ उसके काम के लिए रहते थे। ²⁴ बनी शमौन यह हैं: नमुएल, और यमीन, यरीब, ज़ारह, साऊल। ²⁵ और सूल का बेटा सलूम और सलूम का बेटा मिब्सांम, और मिब्सांम का बेटा मिशमा'अ। ²⁶ और मिशमा'अ के बेटे यह हैं: हमुएल हमुएल का बेटा ज़कूर, ज़कूर का बेटा सिम'ई। ²⁷ और सिम'ई के सोलह बेटे और छः बेटियाँ थीं, लेकिन उसके भाइयों के बहुत औलाद न हुई और उनके सब घराने बनी यहूदाह की तरह न बढ़े। ²⁸ और वह बैरसबा' और मोलादा और हसरसो'आल, ²⁹ और बिलहा और 'अज़म और तोलाद, ³⁰ और बतुएल और हुरमा और सिक़लाज, ³¹ और मरकबोत और हसर सूसीम और बैतबराई और शा'रीम में रहते थे। दाऊद की हुक्मत तक यही उनके शहर थे। ³² और उनके गाँव: ऐताम और ऐन और रिमोन और तोकन और 'असन, यह पाँच

शहर थे। ³³ और उनके रहने देहात भी, जो बा'ल तक उन शहरों के आस पास थे यह उनके रहने के मुक़ाम थे और उनके नसबनामे हैं। ³⁴ और मिसोबाब, यमलीक और योशा बिन अमसियाह, ³⁵ और यूएल और याहू बिन यूसीबियाह बिन सिरायाह बिन 'असिएल, ³⁶ और इलीयू'एनी और या'कूबा और यसुखाया और 'असायाह और 'अदिएल और यिसीमिएल और बिनायाह, ³⁷ और जीज़ा बिन शिफ़'ई बिन अल्लून बिन यदायाह बिन सिमरी बिन समा'याह: ³⁸ यह जिनके नाम मज़कूर हुए, अपने अपने घराने के सरदार थे और इनके आबाई खानदान बहुत बढ़े। ³⁹ और वह जदूर के मदखल तक या'नी उस वादी के पूरब तक अपने गल्लों के लिए चरागाह ढूँडने गए, ⁴⁰ वहाँ उन्होंने अच्छी और सुथरी चरागाह पायी और मुल्क वसी' और चैन और सुख की जगह था; क्योंकि हाम के लोग क़दीम से उस में रहते थे। ⁴¹ और वह जिनके नाम लिखे गए हैं, शाह — ए — यहूदाह हिज़क्रियाह के दिनों में आये और उन्होंने उनके पड़ाव पर हमला किया और म'ऊनीम को जो वहाँ मिले क़त्ल किया, ऐसा की वह आज के दिन तक मिटे हैं, और उनकी जगह रहने लगे क्योंकि उनके गल्लों के लिए वहाँ चरागाह थी। ⁴² और उनमें से या'नी शमौन के बेटों में से पाँच सौ शख्स कोह — ए — श'ईर को गए और यस'ई के बेटे फ़लतियाह और ना'रियाह और रिफ़ायाह और 'उज़्ज़ीएल उनके सरदार थे; ⁴³ और उन्होंने उन बाक़ी 'अमालीक्रियों को जो बच रहे थे क़त्ल किया और आज के दिन तक वहीं बसे हुए हैं।

5

?????? ? ?

¹ और इस्राईल के पहलौटे रूबिन के बेटे क्योंकि वह उसका पहलौटा था, लेकिन इसलिए की उसने अपने बाप के बिच्छौने को नापाक किया था उसके पहलौटे होने का हक़ इस्राईल के यूसुफ़ की औलाद को दिया गया, ताकि नसबनामा पहलौटे पन के मुताबिक़ न हो। ² क्योंकि यहूदाह अपने भाइयों से ताक़तवर हो गया और सरदार उसी में से निकला लेकिन पहलौटे का यूसुफ़ का हुआ ³ इसलिए इस्राईल के पहलौटे रूबिन के बेटे यह हैं: हनूक और फ़ल्लू और हसरोन और कर्मी। ⁴ योएल के बेटे यह हैं: उसका बेटा समा'याह, सम'याह का बेटा जूज, जूज का बेटा सिम'ई। ⁵ सिम'ई का बेटा मीकाह, मीकाह का बेटा रियायाह, रियायाह का बेटा बा'ल। ⁶ बा'ल का बेटा बईरा जिसको असूर का बादशाह तिलगातपिलनासर गुलाम कर के ले गया। वह

रूबीनियों का सरदार था। ⁷ और उसके भाई अपने अपने घराने के मुताबिक़ जब उनकी औलाद का नसब नामा लिख्वा गया था, सरदार य'ईएल और ज़करियाह, ⁸ और बाला' बिन 'अज़ज़ बिन समा' योएल, वह 'अरो'ईर में नबू और बा'ल म'ऊन तक, ⁹ और पूरब की तरफ़ दरिया — ए — फ़रात से वीरान में दाख़िल होने की जगह तक बसा हुआ था क्योंकि मुल्क — ए — ज़िल'आद में उनके चौपाये बहुत बढ़ गए थे। ¹⁰ और साऊल के दिनों में उन्होंने हाजिरियों से लड़ाई की जो उनके हाथ से क़त्ल हुए, और वह ज़िल'आद के पूरब के सारे 'इलाक़े में उनके डेरों में बस गए। ¹¹ और बनी जद्द उनके सामने मुल्क — ए — बसन में सलका तक बसे हुए थे। ¹² पहला यूएल था, और साफ़म दूसरा, और या'नी और साफ़त बसन में थे। ¹³ और उनके आबाई खानदान के भाई यह हैं: मीकाएल और मुसल्लाम और सबा' और यूरी और या'कान और जी'अ और 'इबूर, यह सातों। ¹⁴ यह बनी अबीख़ेल बिन हूरी बिन यारूआह बिन ज़िल'आद बिन मीकाएल बिन यमीसी बिन यहू बिन बूज़ थे। ¹⁵ अख़ी बिन 'अबदिएल बिन जूनी इनके आबाई खानदानों का सरदार था। ¹⁶ और वह बसन में ज़िल'आद और उसके क़स्बों और शारून की सारे 'इलाक़ा में, जहाँ तक उनकी हद्द थी, बसे हुए थे। ¹⁷ यहूदाह के बादशाह यूताम के दिनों में, और इस्राईल के बादशाह युरब'आम के दिनों में उन सभी के नाम उनके नसबनामों के मुताबिक़ लिखे गए। ¹⁸ और बनी रूबिन और जददियों और मनस्सी के आधे क़बीले में सूर्मा, या'नी ऐसे लोग जो सिपर और तेग़ उठाने के क़ाबिल और तीरअन्दाज़ और जंग आज़मूदा थे, चौवालीस हज़ार सात सौ साठ थे जो जंग पर जाने के लायक़ थे। ¹⁹ यह हजिरियों और यतूर और नफ़ीस और नोदब से लड़े। ²⁰ और उनसे मुक़ाबिला करने के लिए मदद पायी, और हाजिरी और सब जो उनके साथ थे उनके हवाले किए गए क्योंकि उन्होंने लड़ाई में खुदा से दुआ की और उनकी दुआ कुबूल हुई, इसलिए की उन्होंने उस पर भरोसा रख्वा। ²¹ और वह उनकी मवेसी ले गए; उनके ऊँटों में से पचास हज़ार और भेड़ बकरियों में से ढाई लाख और गधों में से दो हज़ार और आदमियों में से एक लाख। ²² क्योंकि बहुत से लोग क़त्ल हुए इसलिए की जंग खुदा की थी और वह गुलामी के वक़्त तक उनकी जगह बसे रहे। ²³ और मनस्सी के आधे क़बीले के लोग मुल्क में बसे। वह बसन से बा'लहरमून और सनीर और हरमून के पहाड़ तक फैल गए। ²⁴ उनके आबाई खानदानों के सरदार यह थे: 'इफ़र और यस'ई और इलीएल, 'अज़रिएल, यरमियाह और हुदावियाह और

यहदएल, जो ताक़तवर सूमा और नामवर और अपने आबाई खानदानों के सरदार थे। ²⁵ और उन्होंने अपने बाप दादा के खुदा की हुक्म 'उदूली की, और जिस मुल्क के बाशिंदों को खुदा ने उनके सामने से हलाक किया था, उन ही के मा'बूदों की पैरवी में उन्होंने ज़िनाकारी की। ²⁶ तब इस्राईल के खुदा ने असूर के बादशाह पूल के दिल को और असूर के बादशाह तिलगातपिलनासर के दिल को उभारा, और वह उनकी या'नी रूबिनियों और जदूदियों और मनस्सी के आधे कबीले को गुलाम कर के ले गए और उनको खलह और खाबूर और हारा और जौज़ान की नदी तक ले आये; यह आज के दिन तक वहीं हैं।

6

?????????? ?? ???????

¹ बनी लावी:जैरसोन, किहात, और मिरारी हैं। ² और बनी किहात:'अमराम और इज़हार और हबरून और 'उज्ज़ीएल। ³ और 'अमराम की औलाद:हारून और मूसा और मरियम। और बनी हारून: नदब और अबीहू इली'एलियाज़र और ऐतामर। ⁴ इली'एलियाज़र से फ़ीनहास पैदा हुआ और फ़ीनहास से अबीसू'आ पैदा हुआ, ⁵ और अबीसू'आ से बुक्की पैदा हुआ, और बुक्की 'उज्ज़ी पैदा हुआ। ⁶ और उज्ज़ी ज़राखियाह पैदा हुआ, और ज़राखियाह से मिरायोत पैदा हुआ। ⁷ मिरायोत से अमरियाह पैदा हुआ, और अमरियाह अखीतोब पैदा हुआ। ⁸ और अखीतोब सदूक पैदा हुआ, और सदूक से अखीमा'ज़ पैदा हुआ। ⁹ और अखीमा'ज़ से 'अज़रियाह पैदा हुआ, और 'अज़रियाह से यूहनान पैदा हुआ, ¹⁰ और यूहनान से अज़रियाह पैदा हुआ यह वह है जो उस हैकल में जिसे सुलेमान ने येरूशलेम में बनाया था, काहिन था। ¹¹ और 'अज़रियाह से अमरियाह पैदा हुआ और अमरियाह से अखीतोब पैदा हुआ। ¹² और अखीतोब से सदूक पैदा हुआ और सदूक से सलूम पैदा हुआ। ¹³ और सलूम से खिलक्रियाह पैदा हुआ और खिलक्रियाह से 'अज़रियाह पैदा हुआ। ¹⁴ और 'अज़रियाह से सिरायाह पैदा हुआ और सिरायाह से यहूसदक पैदा हुआ। ¹⁵ और जब खुदावन्द ने नबूकदनज़र के हाथ यहूदाह और येरूशलेम को जिला वतन कराया, तो यहूसदक भी गुलाम हो गया।

?????????? ?? ???????

¹⁶ बनी लावी:जैरसोन किहात, और मिरारी हैं। ¹⁷ और जैरसोन के बेटों के नाम यह हैं: लिबनी

और सिम'ई। ¹⁸ और बनी किहात:'अमराम और इज़हार और हबरून और 'उज्ज़ीएल थे। ¹⁹ मिरारी के बेटे यह हैं: महली और मूशी और लावियों के घराने उनके आबाई खानदानों के मुताबिक यह हैं। ²⁰ जैरसोन से उसका बेटा लिबनी। लिबनी का बेटा यहत, यहत का बेटा ज़िम्मा। ²¹ ज़िम्मा का बेटा यूआख, यूआख का बेटा 'ईदू, 'ईदू का बेटा ज़ारह, ज़ारह का बेटा यतरी। ²² बनी किहात:किहात का बेटा अम्मीनदाब, का बेटा अम्मीनदाब का बेटा क्रोरह, क्रोरह का बेटा अस्सीर, ²³ अस्सीर का बेटा इल्काना। इल्काना का बेटा अबी आसफ़। अबी आसफ़ का बेटा अस्सीर। ²⁴ अस्सीर का बेटा तहत, तहत का बेटा ऊरिएल। ऊरिएल का बेटा उज्ज़ियाह, 'उज्ज़ियाह का बेटा साऊल। ²⁵ और इल्काना के बेटे यह हैं: 'अमासी और अखीमोत। ²⁶ रहा इल्काना तो, इल्काना के बेटे यह हैं: या'नी उसका बेटा सूफ़ी, सूफ़ी का बेटा नहत। ²⁷ नहत का बेटा इलियाब, इलियाब का बेटा यरोहाम, यरूहाम का बेटा इल्काना। ²⁸ समुएल के बेटों में पहलौटा यूएल, दूसरा अबियाह। ²⁹ बनी मिरारी यह हैं: महली, महली का बेटा लिबनी, लिबनी का बेटा सम'ई, सम'ई का बेटा 'उज्ज़ा, ³⁰ 'उज्ज़ा का बेटा सिम'आ, सिम'आ का बेटा हिज्जियाह, का बेटा 'असायाह। ³¹ वह जिनको दाऊद ने सन्दूक के ठिकाना पाने के बाद खुदावन्द के घर में हम्द के काम पर मुक़रर किया यह हैं: ³² और वह जब तक सुलेमान येरूशलेम में खुदावन्द का घर बनवा न चुका हम्द गा गा कर खेमा — ए — इजितमा'अ के मसकन के सामने खिदमत करते रहे और अपनी अपनी बारी के मुवाफ़िक़ अपने काम पर हाज़िर रहते थे। ³³ और जो हाज़िर रहते थे वह और उनके बेटे यह हैं: किहातियों की औलाद में से हैमान गवय्या बिन यूएल बिन समुएल। ³⁴ बिन इल्काना बिन यरोहाम, बिन इलीएल, बिन तूह। ³⁵ बिन सूफ़ बिन इल्काना बिन महत बिन 'अमासी। ³⁶ बिन इल्काना बिन यूएल बिन 'अज़रियाह बिन सफ़नियाह। ³⁷ बिन तहत बिन अस्सीर बिन अबी आसफ़ बिन क्रोरह। ³⁸ बिन इज़हार बिन किहात बिन लावी बिन इस्राईल। ³⁹ और उसका भाई आसफ़ जो उसके दहने खड़ा होता था, या'नी आसफ़ बिन बरकियाह बिन सिम'आ। ⁴⁰ बिन मीकाएल बिन बा'सियाह बिन मलकियाह। ⁴¹ बिन अतनी बिन जारह बिन 'अदायाह। ⁴² बिन ऐतान बिन ज़िम्मा बिन सिम'ई। ⁴³ बिन यहत बिन जैरसोन बिन लावी। ⁴⁴ और बनी मिरारी उनके भाई बाएं हाथ खड़े होते थे या'नी ऐतान बिन क्रीसी बिन 'अबदी बिन मुलोक। ⁴⁵ बिन हसबियाह बिन अमसियाह बिन खिलक्रियाह। ⁴⁶ बिन अमसी बिन बानी बिन सामर। ⁴⁷ बिन महली बिन मूशी नीं मिरारी बिन लावी। ⁴⁸ और

उनके भाई लावी बैत उल्लाह के घर की सारी खिदमत पर मुकर्रर थे। ⁴⁹ लेकिन हारून और उसके बेटे सोस्तनी कुर्बानी के मजबूह और खुशबू जलाने की कुर्बानगाह दोनों पर पाकतरीन मकान की सारी खिदमत को अंजाम देने और इस्राईल के लिए कफ़ारा देने के लिए जैसा खुदा बन्दे मूसा ने हुक्म किया था कुर्बानी पेश करते थे। ⁵⁰ बनी हारून यह हैं: हारून का बेटा इलीअज़र, इली'एलियाज़र का बेटा फ़ीनहास, फ़ीनहास का बेटा अबीसू'आ। ⁵¹ अबीसू'अ का बेटा बुक्की, बुक्की का बेटा 'उज्ज़ी, 'उज्ज़ी का बेटा ज़राखियाह। ⁵² ज़राखियाह का बेटा मिरायोत, मिरायोत का बेटा अमरियाह, अमरियाह का बेटा अखीतोब। ⁵³ अखीतोब का बेटा सदूक, सदूक का बेटा अखीमा'ज़। ⁵⁴ और उनकी हुदूद में उनकी छावनियों के मुताबिक़ उनकी सुकूनतगाहें यह हैं; बनी हारून में से क्रिहातियों के खानदानों को, जिनकी पर्ची पहली निकली। ⁵⁵ उन्होंने यहूदाह की ज़मीन में हबरून और उसका 'इलाका की दिया। ⁵⁶ लेकिन उस शहर के खेत और उसके देहात युफ़न्ना के बेटे कालिब को दिए। ⁵⁷ और बनी हारून को उन्होंने पनाह के शहर दिए और हबरून और लिबनाह भी और उसका 'इलाका और यतीर और इस्तिमू'अ और उसका 'इलाका। ⁵⁸ और हैलान और उसका 'इलाका, और दबीर और उसका 'इलाका, ⁵⁹ और 'असन और उसका 'इलाका, और बैत समा' और उसका 'इलाका। ⁶⁰ और बिनयमीन के कबीले में से जिबा' और उसका 'इलाका, और 'अलमत और उसका 'इलाका, और 'अन्तोत और उसका 'इलाका, उनके घरानों के सब शहर तेरह थे। ⁶¹ और बाक़ी बनी क्रिहात को आधे कबीले, या'नी मनस्सी के आधे कबीले में से दस शहर पर्ची डालकर दिए गए। ⁶² और जैरसोम के बेटों को उनके घरानों के मुताबिक़ इश्कार के कबीले और और आशर के कबीले और नफ़ताली के कबीले और मनस्सी के कबीले से जो बसन में था तेरह शहर मिले। ⁶³ मिरारी के बेटों को उनके घरानों के मुताबिक़ रूबिन के कबीले, और जद् के कबीले और ज़बूलून के कबीले में से बारह शहर पर्ची डालकर दिए गए। ⁶⁴ फिर बनी इस्राईल ने लावियों को वह शहर उनका 'इलाका समेत दिए। ⁶⁵ और उनोने बनी यहूदाह के कबीले, और बनी शमौन के कबीले, और बनी बिनयमीन के कबीले, में से यह शहर जिनके नाम मजकूर हुए पर्ची डालकर दिए। ⁶⁶ और बनी क्रिहात के कुछ खानदानों के पास उनकी सरहदों के शहर इफ़राईम के कबीले में से थे। ⁶⁷ और उन्होंने उनको पनाह के शहर दिए या'नी इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में सिकम और उसका 'इलाका और जज़र भी और उसका 'इलाका। ⁶⁸ और युक्रम'आम और उसका 'इलाका

और बैतहौरून और उसका 'इलाका। ⁶⁹ और अय्यालोन और उसका 'इलाका, नाफ़ताली और जातरिम्मोन और उसका 'इलाका। ⁷⁰ और मनस्सी के आधे कबीले में से आज़र और उसका 'इलाका, और बिल'आम और उसका 'इलाका बनी क्रिहात के बाक़ी खानदान को मिली। ⁷¹ बनी जैरसोम को मनस्सी के आधे कबीले के खानदान जोलान और उसका 'इलाका, बसन में और असारात और उसका 'इलाका। ⁷² और इश्कार के कबीले में से कादिस और उसका 'इलाका। दाबरात और उसका 'इलाका। ⁷³ और रामात और उसका 'इलाका, और आनीम और उसका 'इलाका। ⁷⁴ और आसर के कबीले में से मसल और उसका 'इलाका, और 'अबदोन और उसका 'इलाका। ⁷⁵ और हकूक और उसका 'इलाका, और रहोब और उसका 'इलाका। ⁷⁶ और नफ़ताली के कबीले में से कादिस और उसका 'इलाका गालील में, और हम्मून और उसकी नवाही, करयताइम और उसका 'इलाका, मिला। ⁷⁷ बाक़ी लावियों, या'नी बनी मिरारी को ज़बूलून के कबीले में से रिम्मोन और उसकी नवाही, और तबूर और उसका 'इलाका, ⁷⁸ यरीहू के नज़दीक यरदन के पार या'नी यरदन की पूरब की तरफ़, रूबिन के कबीले में से वीरान में बसर और उसका 'इलाका, और यहसा और उसका 'इलाका; ⁷⁹ और कदीमात और उसका 'इलाका, और मिफ़'अत और उसका 'इलाका; ⁸⁰ और जद् के कबीले में से रामात और उसका 'इलाका, जिल'आद में, और महनायम और उसका 'इलाका, ⁸¹ और हस्बोन और उसका 'इलाका, और या'जेर और उसका 'इलाका मिली

7

?????? ?? ???????

¹ और बनी इश्कार यह हैं: तोला' और फुव्वा और यसूब और सिमरोन, यह चारों। ² और बनी तोला': 'उज्ज़ी और रिफ़ायाह और यरीएल और यहमी और इबसाम और समुएल, जो तोला' या'नी अपने आबाई खानदानों के सरदार थे। वह अपने ज़माने में ताक़तवर सूर्मा थे और दाऊद के दिनों में उनका शुमार बाइस हज़ार छः सौ था। ³ और 'उज्ज़ी का बेटा इज़राखियाह और इज़राखियाह के बेटे यह हैं: मीकाएल और 'अबदियाह और यूएल और यसय्याह यह पाँचों यह सब के सब सरदार थे। ⁴ और उनके साथ अपनी अपनी पुष्ट और अपने अपने आबाई खानदान के मुताबिक़ जंगी लश्कर के दल थे जिन में छत्तीस हज़ार जवान थे क्योंकि उनके यहाँ बहुत सी बीवियाँ और बेटे थे। ⁵ और उनके भाई इश्कार के सब घरानों में ताक़तवर सूर्मा थे और नसब नामे के हिसाब के मुताबिक़ कुल सत्तासी हज़ार थे।

?????? ?? ???????

6 और बनी बिनयमीन यह हैं: बाला' और बक्र और यदा'एल, यह तीनों 7 और बनी बाला': इसबून और 'उज्जी और 'उज्जीएल और यरीमोट और 'ईरी, यह पाँचों। यह अपने आबाई खानदानों के सरदार और ताक़तवर सूमा थे और नसब नामे के हिसाब के मुताबिक़ बाइस हज़ार चौतीस थे। 8 और बनी बक्र यह हैं: ज़मीरा और यूआस और एलियाज़र और इलीयू'ऐनी और 'उमरी और यरीमोट और अबियाह और 'अन्तोत और 'अलामत यह सब बक्र के बेटे थे। 9 इनकी नसल के लोग नसबनामे के मुताबिक़ बीस हज़ार दो सौ ताक़तवर सूमा और अपने आबाई खानदानों के सरदार थे। 10 और यदा'एल का बेटा: बिलहान था। और बनी बिलहाँ यह हैं: य'ओस और बिनयमीन और अहूद और कना'ना और ज़ैतान और तरसीस और अखीसहर। 11 यह सब यदा'एल के बेटे जो अपने आबाई खानदानों के सरदार और ताक़तवर सूमा थे, सत्तरह हज़ार दो सौ थे जो लश्कर के साथ जंग पर जाने के लायक़ थे। 12 और सुफ़्फ़ीम और हुफ़्फ़ीम 'ईर के बेटे, और हाशीम इहीर का बेटा।

?????????? ?? ?????????

13 बनी नफ़्ताली यह हैं: यहसीएल और जूनी और यिस्र और सलूम बनी बिल्हा।

?????????? ?? ?????????

14 बनी मनस्सी यह हैं: असरीएल और उसकी बीवी के बत्न से था उसकी अरामी हरम से जिल'आद का बाप मकीर पैदा हुआ। 15 और मकीर ने हफ़्फ़ीम और सुफ़्फ़ीम की बहन जिसका नाम मा'का था ब्याह लिया और दूसरे का नाम सिलाफ़हाद था, और सिलाफ़ हाद के पास बेटियाँ थीं। 16 और मकीर की बीवी मा'का के एक बेटा पैदा हुआ उसने उसका नाम फ़रस रखवा और उसके भाई का नाम शरस था, और उसके बेटे औलाम रक़म थे। 17 और औलाम का बेटा विदान था, यह जिल'आद बिन मकीर बिन मनस्सी के बेटे थे। 18 और उसकी बहन हम्मोलिकत से इशहूद और अबी'अएज़र और महला पैदा हुआ। 19 बनी समीदा यह हैं: अखियान और सिकम और लिक्की और अनि'आम।

?????????????? ?? ?????????

20 और बनी इफ़राईम यह हैं: सुतलह, सुतलाह का बेटा बरद, बरद का बेटा तहत, तहत का बेटा इली'अदा, इली'अदा का बेटा तहत, 21 तहत का बेटा ज़बद, ज़बद का बेटा सूतलाह था और 'अज़र और इली'अद भी, जिनको जात के लोगों ने, जो उस मुल्क में पैदा हुए थे, मार डाला क्योंकि वह उनकी मवैशी ले जाने को

उतर आये थे। 22 और उनका बाप इफ़राईम बहुत दिनों तक मातम करता रहा, और उसके भाई तसल्ली देने को आये। 23 और वह अपनी बीवी के पास गया और वह हामला हुई और उसके एक बेटा पैदा हुआ और इफ़राईम ने उसका नाम बरि'आ रखवा क्योंकि उसके घर पर आफ़त आई थी। 24 और उसकी बेटी सराह थी, जिसने नशेब और फ़राज़ के बैतहोरून और ऊज़िन सराह को बनाया। 25 और उसका बेटा रफ़ाह और रसफ़ भी और उसका बेटा तलाह, और तलाह का बेटा तहन, 26 तहन का बेटा ला'दान, ला'दान का बेटा 'अम्मीहूद, 'अम्मीहूद का बेटा इलीसमा'अ, 27 इलीसमा'अ का बेटा नून, नून का बेटा यहूसू'अ। 28 और उनकी मिलिक्यत और बस्तियाँ यह हैं: बैतएल और उसके देहात, और मशरिक् की तरफ़ ना'रान, और मशरिब की तरफ़ जज़र और उसके देहात, और सिकम भी और उसके देहात, 'अय्याह और उसके देहात तक; 29 और बनी मनस्सी की हुदूद के पास बैतशान और उसके देहात, ता'नक और उसके देहात, मजिदो और उसके देहात, दोर और उसके देहात थे। इनमें यूसुफ़ बिन इस्राईल के बेटे रहते थे। 30 बनी आशर यह हैं: यिमना और इस्वाह और इसवी और बरि'आ, और उनकी बहन सिरह। 31 और बरि'आ के बेटे: हिबर बिरज़ावीत का बाप मलकिएल थे। 32 और हिबर से यफ़लीत और सोमिर और खूताम, और उनकी बहन सू'अ पैदा हुए। 33 और बनी यफ़लीत:फ़ासाक और और बिमहाल और 'असवात; यह बनी यफ़लीत हैं। 34 और बनी सामिर: अखी और रूहजा और यहुब्बा और आराम थे। 35 और उसके भाई हीलम के बेटे: सूफ़ह और इमना' और सलस और 'अमल थे। 36 और बनी सूफ़ह: सूह और हरनफ़र और सू'अल और बेरी और इमराह, 37 बसर और हुद और सम्मा और सिलसा और इतरान और बैरा थे। 38 और बनी यतर: युफ़न्ना और फ़िसफ़ाह और अरा थे। 39 और बनी 'उल्ला:अरख और हनीएल और रिज़ियाह थे। 40 यह सब बनी आशर, अपने आबाई खानदानों के, चुने हुए रईस और ताक़तवर सूमा और अमीरों के सरदार थे। उन में से जो अपने नसबनामे के मुताबिक़ जंग करने के लायक़ थे वह शुमार में छब्बीस हज़ार जवान थे।

8

?????????????? ?? ?????????

1 और बिनयमीन से उसका पहलौठा बाला' पैदा हुआ, दूसरा और अशबेल, तीसरा अखिरख, 2 चौथा नूहा और पाँचवाँ रफ़ा। 3 और बाला' के बेटे अदार और जीरा और अबिहूद, 4 और अबिसू' और ना'मान और अखूह, 5 और जीरा और सफ़्फ़ान और हूराम थे। 6 और अहूद के बेटे

यह हैं यह जिबा' के बाशिंदों के बीच आबाई खानदानों के सरदार थे, और इन्हीं को गुलाम करके मुनाहत को ले गए थे। 7 या'नी नामान और अखियाह और और जीरा, यह इनको गुलाम करके ले गया था, और उससे 'उज्जा और अखीहूद पैदा हुए। 8 और सहरीम से, मोआब के मुल्क में अपनी दोनों बीवियों हुसीम और बा'राह को छोड़ देने के बाद लड़के पैदा हुए, 9 और उसकी बीवी हूदस के बत्न से यूबाब और ज़िबिया और मैसा और मलकाम, 10 और य'ऊज और सिक्याह और मिरमा पैदा हुए। यह उसके बेटे थे जो आबाई खानदानों के सरदार थे। 11 और हुसीम से अबीतूब और इलफ़ा'ल पैदा हुए। 12 और बनी इलफ़ा'ल: इबर और मिश'आम और सामिर थे। इसी ने ओनू और लुद और उसके देहात को आबाद किया। 13 और बरि'आ और समा' भी जो अय्यालोन के बाशिंदों के दरमियान आबाई खानदानों के सरदार थे और जिन्होंने जात के बाशिंदों को भगा दिया। 14 और अखियो, शाशक और यरीमोत, 15 और ज़बदियाह और 'अराद और 'अदर, 16 और मीकाएल और इस्फ़ाह और यूखा, जो बनी बरि'आ हैं। 17 और ज़बदयाह और मुसल्लाम और हिज़क्री और हिबर, 18 और यसमरी और यज़लियाह और यूबाब जो बनी इलफ़ा'ल हैं। 19 और यक्रीम और ज़िकरी और ज़ब्दी, 20 और इलियेनी और ज़लती और इलीएल, 21 और 'अदायाह और बरायाह और सिमरात, जो बनी सम'ई हैं। 22 और इसफ़ान और इबर और इलीएल, 23 और 'अबदोन और ज़िकरी और हनान, 24 और हनानियाह और ऐलाम और अंतूतियाह, 25 और यफ़दियाह और फ़नूएल, जो बनी शाशक हैं। 26 और समसरी और शहारियाह और 'अतालियाह, 27 और या'रसियाह और एलियाह और ज़िकरी जो बनी यरोहाम हैं। 28 यह अपनी नसलों में आबाई खानदानों के सरदार और रईस थे और येरूशलेम में रहते थे। 29 और जिबा'ऊन में जिबा'ऊन का बाप रहता था, जिसकी बीवी का नाम मा'का था। 30 और उसका पहलौठा बेटा 'अबदोन, और सूर और क्रीस, और बा'ल और नदब, 31 और जदूर और अखियो और ज़कर, 32 और मिक्लोत से सिमाह पैदा हुआ, और वह भी अपने भाइयों के साथ येरूशलेम में अपने भाइयों के सामने रहते थे। 33 और नयिर से क्रीस पैदा हुआ, क्रीस से साऊल पैदा हुआ, और साऊल से यहूनतन और मलकीशू और अबीनदाब और इशबा'ल पैदा हुए; 34 और यहूनतन का बेटा मरीबबा'ल था, मरीबबा'ल से मीकाह पैदा हुआ। 35 और बनी मीकाह: फ़ीतू और मलिक और तारी' और आखज़ थे। 36 और आखज़ से यहू'अदा पैदा हुआ, और यहू'अदा

से 'अलमत और 'अज़मावत और ज़िमरी पैदा हुए; और ज़िमरी से मौज़ा पैदा हुआ। 37 और मौज़ा से बिन'आ पैदा हुआ; बिन'आ का बेटा राफ़ा', राफ़ा' का बेटा इलि, आसा, और इलि, आसा का बेटा असील, 38 और असील के छः बेटे थे जिनके नाम यह हैं: 'अज़रिकांम, बोकिरू, और इस्मा'ईल और सगरियाह और 'अबदियाह और हनान; यह सब असील के बेटे थे। 39 और उसके भाई 'ईशक के बेटे यह हैं: उसका पहलौठा औलाम दूसरा य'ओस, तीसरा इलिफ़ालत। 40 और औलाम के बेटे ताक़तवर सूर्मा और तीरंदाज़ थे, और उसके बहुत से बेटे और पोते थे जो डेढ़ सौ थे। यह सब बनी बिन यमीन में से थे।

9

1 फिर सारा इस्राईल नसबनामों के मुताबिक़ जो इस्राईल के बादशाहों की किताब में दर्ज हैं गिना गया

२२२२ २२२२ २२ २२२२२२

और यहूदाह अपने गुनाहों की वजह से गुलाम हो के बाबुल गया। 2 और वह जो पहले अपनी मिल्कियत और अपने शहरों में बसे वह इस्राईल और काहिन और लावी और नतनीम थे। 3 और येरूशलेम में बनी यहूदाह से और बनी बिनयमीन में से और बनी इफ़राईम और मनस्सी में से यह लोग रहने लगे या'नी। 4 ऊती बिन 'अम्मीहूद बिन 'उमरी बिन इमरी बिन बानी जो फ़ारस बिन यहूदाह की औलाद में से था। 5 और सैलानियों में से 'असायाह, जो पहलौठा था, और उसके बेटे। 6 और बनी ज़ारह में से, य'ऊएल और उनके छः सौ नव्वे भाई। 7 और बनी बिन यमीन में से सल्लू बिन मुसल्लाम बिन हुदावियाह बिन हसीनुवाह, 8 और इब नियाह बिन यरुहाम और ऐला बिन 'उज्जी बिन मिकरी और मुसल्लाम बिन सफ़तियाह बिन र'ऊएल बिन इबनियाह, 9 और उनके भाई जो अपने नसबनामों के मुताबिक़ नौ सौ छप्पन थे। यह सब आदमी अपने अपने आबाई खानदान के आबाई खानदानों के सरदार थे। 10 और काहिनों में से यद'अइयाह और यहूयरीब और यकीन, 11 और अज़रियाह बिन खिलक्रियाह बिन मुसल्लाम बिन सदोक़ बिन मिरायोत बिन अखितोब, जो खुदा के घर का नाज़िम था। 12 और 'अदायाह बिन यरोहाम बिन फ़शहूर बिन मलकियाह, और मासी बिन 'अदीएल बिन याहज़ीराह बिन मुसल्लाम बिन मुसलमीत बिन इम्मेर, 13 और उनके भाई अपने आबाई खानदानों के रईस एक हज़ार सात सौ आठ थे जो खुदा के घर की ख़िदमत के काम के लिए बड़े क़ाबिल आदमी थे। 14 और लावियों में से यह थे: समा'याह बिन

हसूब बिन 'अज़रिकांम बिन हसबियाह बनी मिरारी में से, 15 और बक्रबकर, हरस और जलाल और मतनियाह बिन मीकाह बिन ज़िकरी बिन आसफ़, 16 और 'अबदियाह बिन समा'याह बिन जलाल बिन यदूतून, और बरकियाह बिन आसा बिन इल्काना, जो नतूफ़ातियों के देहात में बस गए थे। 17 और दरबानों में से सलोम और 'अक्कूब और तलमून अखीमान और उनके भाई; सलूम सरदार था। 18 वह अब तक शाही फाटक पर मशरिक की तरफ़ रहे। बनी लावी की छावनी के दरबान यही थे। 19 और सलोम बिन क्रोरे बिन अबी आसफ़ बिन क्रोह और उसके आबाई खानदान के भाई या'नी क्रोही, खिदमत की कारगुज़ारी पर त'इनात थे, और खेमे के फाटकों के निगहबान थे। उनके बाप दादा खुदावन्द की लश्कर गाह पर तैनात और मदखल के निगहबान थे। 20 और फ़ीनहास बिन इली'एलियाज़र इस से पहले उनका सरदार था, और खुदावन्द उसके साथ था। 21 ज़करियाह बिन मुसलमियाह खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाज़े का निगहबान था। 22 यह सब जो फाटकों के दरबान होने को चुने गए दो सौ बारह थे। यह जिनको दाऊद और समुएल ग़ैब बीन ने इनको ओहदे पर मुकर्रर किया था अपने नसबनामे के मुताबिक़ अपने अपने गाँव में गिने गए थे। 23 फिर वह और उनके बेटे खुदावन्द के घर या'नी मसकन के घर के फाटकों की निगरानी बारी बारी से करते थे। 24 और दरबान चारों तरफ़ थे या'नी पूरब, पश्चिम, उत्तर, और दख्खिन की तरफ़। 25 और उनके भाई जो अपने अपने गाँव में थे उनको सात सात दिन के बाद बारी — बारी उनके साथ रहने को आना पड़ता था। 26 क्योंकि चारों सरदार दरबान जो लावी थे खास ओहदों पर मुकर्रर थे और खुदा के घर की कोठरियों और खज़ानों पर मुकर्रर थे। 27 और वह खुदा के घर के आस — पास रहा करते थे क्योंकि उसकी निगहबानी उनके ज़िम्मे थी और हर सुबह को उसे खोलना उनके ज़िम्मे था। 28 और उनमें से कुछ की तहवील में 'इबा'दत के बर्तन थे क्योंकि वह उनको गिन कर अन्दर लाते और गिन कर निकालते थे। 29 और कुछ उनमें से सामान और मक्खिदस के सब बर्तनों और और मैदा और मय और तेल और लुबान और खुशबूदार मसाल्हे पर मुकर्रर थे। 30 और काहिनों के बेटों में से कुछ खुशबूदार मसाल्हे का तेल तैयार करते थे। 31 और लावियों में से एक शख्स मत्तितियाह जो कुरही सलूम का पहलौठा था, उन चीज़ों पर खास तौर पर मुकर्रर था जो तवे पर पकाई जाती थीं। 32 और उनके कुछ भाई जो क्रिहातियों की औलाद में से थे, नज़र की रोटियों पर तैनात थे कि हर सव्त को उसे तैयार करें। 33 और यह वह हम्द करने वाले

हैं जो लावियों के आबाई खानदानों के सरदार थे और कोठरियों में रहते और और खिदमत से मा'ज़ूर थे, क्योंकि वह दिन रात अपने काम में मशगूल रहते थे। 34 यह अपनी अपनी नसलों में लावियों के आबाई खानदानों के सरदार और रईस थे; और येरूशलेम में रहते थे। 35 और जिबा'ऊन में जिबा'ऊन का बाप य'ईएल रहता था, जिसकी बीवी का नाम मा'का था, 36 और उसका पहलौठा बेटा 'अबदोन, और सूर और क्रीस और बा'ल और नयिर और नदब, 37 और जदूर और अखियो और ज़करियाह और मिक्लोत; 38 मिक्लोत से सिम'आम पैदा हुआ, और वह भी अपने भाइयों के साथ येरूशलेम में अपने भाइयों के सामने रहते थे। 39 और नयिर से क्रीस पैदा हुआ और क्रीस से साऊल पैदा हुआ और साऊल से यूनतन और मलकीशू'अ और अबीनदाब और इशबा'ल पैदा हुए। 40 और यूनतन का बेटा मरीबबा'ल था और मरीबबा'ल से मीकाह पैदा हुआ। 41 और मीकाह के बेटे फ़ीतून और मलिक और तहरी' और आखज़ थे; 42 और आखज़ से या'रा पैदा हुआ, और या'रा से 'अलमत और अज़मावत और ज़िमरी पैदा हुए, और ज़िमरी से मौज़ा पैदा हुआ। 43 और मौज़ा से बिन'आ पैदा हुआ, बिन'आ का बेटा रिफ़ायाह, रिफ़ायाह का बेटा इलि, आसा, इली'असा का बेटा असील, 44 और असील के छः बेटे थे और यह उनके नाम हैं: 'अज़रिकांम, बोकिरू, और इस्मा'ईल और सगरियाह और 'अबदियाह और हनान, यह बनी असील थे।

10

?????? ???? ?? ???

1 और फ़िलिस्ती इस्राईल से लड़े और इस्राईल के लोग फ़िलिस्तियों के आगे से भागे और पहाड़ी जिल्बू'आ में क़त्ल हो कर गिरे। 2 और फ़िलिस्तियों ने साऊल का और उसके बेटों का खूब पीछा किया और फ़िलिस्तियों ने यूनतन और अबीनदाब और मलकीशू'अ को जो साऊल के बेटे थे क़त्ल किया। 3 और साऊल पर जंग दोबर हो गयी और तीरंदाज़ों ने उसे पा लिया और वह तीरंदाज़ों की वजह से परेशान था। 4 तब साऊल ने अपने सिलाहबरदार से कहा, “अपनी तलवार खींच और उससे मुझे छेद दे ऐसा न हो कि यह नामख़तून आकर मेरी बे 'इज़्जती करें।” लेकिन उसके सिलाहबरदार ने न माना, क्योंकि वह बहुत डर गया। तब साऊल ने अपनी तलवार ली और उस पर गिरा। 5 जब उसके सिलाहबरदार ने देखा कि साऊल मर गया तो वह भी तलवार पर गिरा और मर गया। 6 तब साऊल मर गया और उसके तीनों बेटे भी और उसका सारा खानदान एक साथ मर

मिटा। ⁷ जब सब इस्राईली लोगों ने जो वादी में थे देखा कि लोग भाग निकले और साऊल और उसके बेटे मर गए हैं, तो वह अपने शहरों को छोड़कर भाग गए और फ़िलिस्ती आकर उनमें बसे। ⁸ और दूसरे दिन सुबह को जब फ़िलिस्ती मक्कतूलों को नंगा करने आये, तो उन्होंने साऊल और उसके बेटों को कोहे जिल्बू'आ पर पड़े पाया। ⁹ तब उन्होंने उसको नंगा किया और उसका सिर और उसके हथियार ले लिए, और फ़िलिस्तियों के मुल्क में चारों तरफ़ लोग रवाना कर दिए ताकि उनके बुतों और लोगों के पास उस खुशख़बरी को पहुँचायें। ¹⁰ और उन्होंने उसके हथियारों को अपने मा'बूदों के मंदिर में रखवा और उसके सिर को दज़ून के मंदिर में लटका दिया। ¹¹ जब यबीस जिल'आद के सब लोगों ने, जो कुछ फ़िलिस्तियों ने साऊल से किया था सुना। ¹² तो उनमें के सब बहादुर उठे और साऊल की लाश और उसके बेटों की लाशें लेकर उनको यबीस में लाये, और उनकी हड्डियों को यबीस के बलूत के नीचे दफ़न किया और सात दिन तक रोज़ा रखवा। ¹³ फिर साऊल अपने गुनाह की वजह से, जो उसने खुदावन्द के सामने किया था मरा; इसलिए कि उसने खुदावन्द की बात न मानी, और इसलिए भी कि उससे मशविरा किया जिसका यार जिन्न था, ताकि उसके ज़रि'ए से दरियाफ़्त करे। ¹⁴ और उसने खुदावन्द से दरियाफ़्त न किया। इसलिए उसने उसको मार डाला और हुक्मत यस्सी के बेटे दाऊद की तरफ़ बदल दी।

11

०००० ०० ०००० ००००००० ०० ०००००० ००००

¹ तब सब इस्राईली हबरून में दाऊद के पास जमा' होकर कहने लगे, देख हम तेरी ही हड्डी और तेरा ही गोश्त हैं। ² और गुज़रे ज़माने में उस वक़्त भी जब साऊल बादशाह था, तू ही ले जाने और ले आने में इस्राईलियों का रहबर था; और खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझे फ़रमाया, “तू मेरी क्रौम इस्राईल की गल्लेबानी करेगा, और तू ही मेरी क्रौम इस्राईल का सरदार होगा।” ³ गरज़ इस्राईल के सब बुज़ुर्ग हबरून में बादशाह के पास आये, और दाऊद ने हबरून में उनके साथ खुदावन्द के सामने 'अहद किया; और उन्होंने खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ जो समुएल की ज़रि'ए फ़रमाया था, दाऊद को मम्सूह किया ताकि इस्राईलियों का बादशाह हो।

०००० ०० ००००००० ०० ०००००० ००००

⁴ और दाऊद और तमाम इस्राईली येरूशलेम को गए यबूस यही है, और उस मुल्क के बाशिंदे यबूसी

वहाँ थे। ⁵ और यबूस के बाशिंदों ने दाऊद से कहा कि तू यहाँ आने न पाएगा तोभी दाऊद ने सिय्यून का क़िला' ले लिया, यही दाऊद का शहर है। ⁶ और दाऊद ने कहा, “जो कोई पहले यबूसियों को मारे वह सरदार और सिपहसालार होगा।” और योआब बिन ज़रोयाह पहले चढ़ गया और सरदार बना। ⁷ और दाऊद क़िले' में रहने लगा, इसलिए उन्होंने उसका नाम दाऊद का शहर रखवा। ⁸ और उसने शहर को चारों तरफ़ या'नी मिल्तो से लेकर चारों तरफ़ बनाया और योआब ने बाक़ी शहर की मरम्मत की। ⁹ और दाऊद तरक्की पर तरक्की करता गया, क्यूँकि रब्ब — उल — अफ़वाज उसके साथ था। ¹⁰ और दाऊद के सूर्माओं के सरदार यह हैं, जिन्होंने उसकी हुक्मत में सारे इस्राईल के साथ उसे मज़बूती दी ताकि जैसा खुदावन्द ने इस्राईल के हक़ में कहा था उसे बादशाह बनाएँ। ¹¹ दाऊद के सूर्माओं का शुमार यह है: यसुबि'आम बिन हकमूनी जो तीसों का सरदार था। उने तीन सौ पर अपना भाला चलाया और उनको एक ही वक़्त में क़त्ल किया। ¹² उसके बाद अखूही दोदो का बेटा एलियाज़र था जो उन तीनों सूर्माओं में से एक था। ¹³ वह दाऊद के साथ फ़सदम्मीम में था जहाँ फ़िलिस्ती जंग करने को जमा' हुए थे। वहाँ ज़मीन का टुकड़ा जौ से भरा हुआ था, और लोग फ़िलिस्तियों के आगे से भागे। ¹⁴ तब उन्होंने उस ज़मीन क्व टुकड़े के बीच में खड़े हो कर उसे बचाया और फ़िलिस्तियों को क़त्ल किया और खुदावन्द ने बड़ी फ़तह देकर उनको रिहा बरूशी। ¹⁵ और उन तीनों सरदारों में से तीन, दाऊद के साथ थे उस चट्टान पर या'नी 'अदल्लाम के मुग़ारे में उतर गए, और फ़िलिस्तियों की फ़ौज रिफ़ाईम की वादी में खेमाज़न थी। ¹⁶ और दाऊद उस वक़्त गद्दी में था और फ़िलिस्तियों की चौकी उस वक़्त बैतलहम में थी। ¹⁷ और दाऊद ने तरस कर कहा, “ऐ काश कोई बैतलहम के उस कुँए का पानी जो फाटक के करीब है, मुझे पीने को देता!” ¹⁸ तब वह तीनों फ़िलिस्तियों की सफ़ तोड़ कर निकल गए और बैतलहम के उस कुँए में से जो फाटक के करीब है पानी भर लिया और उसे दाऊद के पास लाये लेकिन दाऊद ने न चाहा कि उसे पिए बल्कि उसे खुदावन्द के लिए तपाया। ¹⁹ और कहने लगा कि खुदा न करे कि मैं ऐसा करूँ। क्या मैं इन लोगों का खून पियूँ जो अपनी जानों पर खेले हैं? क्यूँकि वह जानबाज़ी कर के उसको लाये हैं। तब उसने न पिया। वह तीनों सूर्मा ऐसे ऐसे काम करते थे। ²⁰ और योआब का भाई अबीशै तीनों का सरदार था। उसने तीन सौ पर भाला चलाया और उनको मार डाला। वह इन तीनों में मशहूर था। ²¹ यह तीनों में उन दोनों से ज्यादा खास था और

उनका सरदार बना, लेकिन उन पहले तीनों के दर्जे को न पहुँचा। ²² और बिनायाह बिन यहूयदा' एक क़बज़िएली सूर्मा था जिसने बड़ी बहादुरी के काम किये थे; उसने मोआब के अरिएल के दोनों बेटों को क़त्ल किया, और जाकर बर्फ़ के मौसम में एक गढ़े के बीच एक शेर को मारा। ²³ और उसने पाँच हाथ के एक क़दआवर मिस्री को क़त्ल किया हालाँकि उस मिस्री के हाथ में जुलाहे के शहतीर के बराबर एक भाला था, लेकिन वह एक लाठी लिए हुए उसके पास गया और भाले को उस मिस्री के हाथ से छीन कर उसी के भाले से उसको क़त्ल किया। ²⁴ यहूयदा के बेटे बिनायाह ने ऐसे ऐसे काम किये और वह उन तीनों सूर्माओं में नामी था। ²⁵ वह उन तीनों से मु'अज़िज़ था, लेकिन पहले तीनों के दर्जे को न पहुँचा। और दाऊद ने उसे मुहाफ़िज़ सिपाहियों का सरदार बनाया। ²⁶ और लश्करों में सूर्मा यह थे: योआब का भाई 'असाहेल और बैतलहमी दोदो का बेटा इल्हनान, ²⁷ और सम्मोत हरूरी, खलिसफ़लूनी, ²⁸ तकू'अ, 'इक्कीस, का बेटा 'ईरा, अबी'अज़र 'अन्तोती, ²⁹ सिब्वकी हुसाती, 'एली अखूही, ³⁰ महरी नतूफ़ाती, हलिद बिन बा'ना नतूफ़ाती, ³¹ बनी बिनयमीन के जिब'आ के रीबी का बेटा इत्ती, बिनायाह फ़िर'आतोनी, ³² जा'स की नदियों का बाशिंदा हूरी, अबीएल 'अरबाती, ³³ 'अज़मावत बहरूमी, इलीयाब सा'लबूनी, ³⁴ बनी हशीम जिज़ूनी, हरारी शजी का बेटा यूनतन, ³⁵ और हरारी सक्कार का बेटा अखीआम, इलिफ़ाल बिन ऊर, ³⁶ हिफ़र मकीराती, अखियाह फ़लूनी, ³⁷ हसरू कर्मिली, नगरी बिन अज़बी, ³⁸ नातन कला भाई यूएल, मिबख़ार बिन हाजिरी, ³⁹ सिलक़ 'अम्मूनी, नहरी बैरोती जो योआब बिन ज़रोयाह का सिलाहबरदार था, ⁴⁰ 'ईरा ईतरी, जरीब इतरी, ⁴¹ ऊरिय्याह हित्ती, ज़बद बिन अखली, ⁴² सीज़ा रुबीनी का बेटा 'अदीना रुबीनियों का एक सरदार जिसके साथ तीस जवान थे, ⁴³ हनान बिन मा'का, यहूसफ़त मितनी, ⁴⁴ 'उज़िज़याह 'इस्ताराती, खूताम 'अरो'ईरी के बेटे समा'अ और य'ईएल, ⁴⁵ यदी'एलबिन सिमरी और उसका भाई यूखा तीसी, ⁴⁶ इलीएल महावी, और इलनाम के बेटे यरीबी और यूसावियाह, और यितमा मोआबी, ⁴⁷ इलीएल, और 'ओबेद, और या'सीएल मज़ूबाई।

12

~~~~~

<sup>1</sup> यह वह हैं जो सिक़लाज में दाऊद के पास आये जब कि वह हनूज़ क़ीस के बेटे साऊल की वजह से छिपा

रहता था, और उन सूर्माओं में थे जो लड़ाई में उसके मददगार थे। <sup>2</sup> उनके पास कमाने थीं, और वह गुफ़ान से पत्थर मारते और कमान से तीर चलाते वक्रत दहने और बाएं दोनों हाथों को काम में ला सकते थे और साऊल के बिनयमीनी भाइयों में से थे। <sup>3</sup> अखी'अज़र सरदार था। फिर यूआस बनी समा'आ जिब'आती और यज़ीएल और फ़लत जो अज़मावत के बेटे थे और बराक और याहू 'अन्तोती, <sup>4</sup> और इसमा'ईया जिबा'ऊनी जो तीसों में सूर्मा और तीसों का सरदार था; और यरमियाह और यहज़ीएल और युहनान और यूज़बा'द जदीराती, <sup>5</sup> इल'ओज़ी और यरीमोत और बा'लियाह और समरियाह और सफ़तियाह खरूफ़ी, <sup>6</sup> इलक़ाना और यसियाह और 'अज़रिएल और यू'अज़र और यसुबि'आम जो कुरही थे। <sup>7</sup> और यू'ईला और ज़बदियाह जो यरोहाम जदूरी के बेटे थे। <sup>8</sup> और जददियों में से बहुत से अलग होकर बियाबान के क़िले में दाऊद के पास आ गए; वह ताक़तवर सूर्मा और जंग में माहिर लोग थे, जो ढाल और बर्छी का इस्ते'माल जानते थे। उनकी सूरतें ऐसी थीं जैसी शेरों की सूरतें और वह पहाड़ों पर हिरनियों की तरह तेज़ दौड़ते थे: <sup>9</sup> अब्वल 'अज़र था, 'अबदियाह दूसरा, इलियाब तीसरा, <sup>10</sup> मिसमन्ना चौथा, यरमियाह पाँचवाँ, <sup>11</sup> 'अत्ती छठा, इलीएल सातवाँ, <sup>12</sup> यूहनान आठवाँ, इलज़बा'द नवाँ, <sup>13</sup> यरमियाह दसवाँ, मकबानी ग्यारहवाँ। <sup>14</sup> यह बनी जदू में सरलशकर थे। इनमें सबसे छोटा सौ के बराबर और सबसे बड़ा हजार के बराबर था। <sup>15</sup> यह वह हैं जो पहले महीने में यरदन के पार गए जब उसके सब किनारे डूबे हुए थे और उन्होंने वादियों के सब लोगों को पूरब और पश्चिम की तरफ़ भगा दिया। <sup>16</sup> बनी बिनयमीन और यहूदाह में से कुछ लोग क़िले में दाऊद के पास आये। <sup>17</sup> तब दाऊद उनके इस्तक़बाल को निकला और उनसे कहने लगा, “अगर तुम नेक नियती से मेरी मदद के लिए मेरे पास आये हो तो मेरा दिल तुमसे मिला रहेगा लेकिन अगर मुझे मेरे दुश्मनों के हाथ में पकड़वाने आये हो हालाँकि मेरा हाथ जुल्म से پاک है तो हमारे बाप दादा का खुदा यह देखे और मलामत करे।” <sup>18</sup> तब रूह 'अमासी पर नाज़िल हुई और जो उन तीसों का सरदार था और वह कहने लगा, “हम तेरे हैं, ऐ दाऊद! और हम तेरी तरफ़ हैं, ऐ यस्सी के बेटे! सलामती तेरी सलामती, और तेरे मददगारों की सलामती हो, क्यूँकि तेरा खुदा तेरी मदद करता है।” तब दाऊद ने उनको कुबूल किया और उनको फ़ौज़ का सरदार बनाया। <sup>19</sup> और मनस्सी में से कुछ लोग दाऊद से मिल गए जब वह साऊल के मुक़ाबिल जंग के लिए

फ़िलिस्तीनों के साथ निकला, लेकिन उन्होंने उनकी मदद न की क्योंकि फ़िलिस्तीनों के हाकिमों ने सलाह कर के उसे लौटा दिया और कहने लगे कि वह हमारे सिर काटकर अपने आक्रा साऊल से जा मिलेगा। <sup>20</sup> जब वह सिकलाज को जा रहा था मनस्सी में से 'अदना और यूज़बा'द और यदी'एल और मीकाएल और यूज़बा'द और इलीहू और ज़िलती जो बनी मनस्सी में हज़ारों के सरदार थे उससे मिल गए। <sup>21</sup> उन्होंने ग़ारतग़रों के जत्थे के मुक्राबिले में दाऊद की मदद की क्योंकि वह सब ताक़तवर सूर्मा और लश्कर के सरदार थे। <sup>22</sup> बल्कि रोज़ — ब — रोज़ लोग दाऊद के पास उसकी मदद को आते गए, यहाँ तक कि खुदा की फ़ौज की तरह एक बड़ी फ़ौज तैयार हो गयी। <sup>23</sup> और जो लोग जंग के लिए हथियार बाँध कर हबरून में दाऊद के पास आये ताकि खुदावन्द की बात के मुताबिक़ साऊल की ममलुकत को उसकी तरफ़ बदल दें, उनका शुमार यह है। <sup>24</sup> बनी यहूदाह छः हज़ार आठ सौ, जो ढाल और नेज़ा लिए हुए जंग के लिए तैयार थे। <sup>25</sup> बनी शमौन में से जंग के ले लिए सात हज़ार एक सौ ताक़तवर सूर्मा' <sup>26</sup> बनी लावी में से चार हज़ार छः सौ। <sup>27</sup> और यहूयदा' हारून के घराने का सरदार था और उसके साथ तीन हज़ार सात सौ थे। <sup>28</sup> और सदोक्, एल जवान सूर्मा और उसके आबाई घराने के बाइस सरदार। <sup>29</sup> और साऊल के भाई बनी बिनयमीन में से तीन हज़ार लेकिन उस वक़्त तक उनका बहुत बड़ा हिस्सा साऊल के घराने का तरफ़दार था। <sup>30</sup> और बनी इफ़राइम में से बीस हज़ार आठ सौ ताक़तवर सूर्मा जो अपने आबाई खानदानों में नामी आदमी थे। <sup>31</sup> और मनस्सी के आधे क़बीले से अठारह हज़ार, जिनके नाम बताये गए थे कि अगर दाऊद को बादशाह बनायें। <sup>32</sup> और बनी इश्कार में से ऐसे लोग जो ज़माने को समझते और जानते थे कि इस्राईल को क्या करना मुनासिब है उनके सरदार दो सौ थे और उनके सब भाई उनके हुक्म में थे। <sup>33</sup> और ज़बूलून में से ऐसे लोग मैदान में जाने और हर क्रिस्म की जंगी हथियार के साथ मैदान ए जंग के क़ाबिल थे, पचास हज़ार। यह सफ़आराई करना जानते थे और दो दिले न थे। <sup>34</sup> और नफ़्ताली में से एक हज़ार सरदार और उनके साथ सैंतीस हज़ार ढालें और भाले लिए हुए। <sup>35</sup> और दानियों में से अट्ठाईस हज़ार छः सौ मैदान ए जंग करने वाले। <sup>36</sup> और आशर में से चालीस हज़ार जो मैदान में जाने और मा'रका आराई के क़ाबिल थे। <sup>37</sup> और यरदन के पार के रूबीनियों और ज़ददियों और मनस्सी के आधे क़बीले में से एक लाख बीस हज़ार जिनके साथ लड़ाई के लिए हर क्रिस्म के जंगी हथियार थे। <sup>38</sup> यह सब जंगी मर्द

जो मैदान ए जंग कर सकते थे खुलूस — ए — दिल से हबरून को आये ताकि दाऊद को सारे इस्राईल का बादशाह बनायें और बाक़ी सब इस्राईली भी दाऊद को बादशाह बनाने पर रज़ामंद थे। <sup>39</sup> और वह वहाँ दाऊद के साथ तीन दिन तक ठहरे और खाते पीते रहे, क्योंकि उनके भाइयों ने उनके लिए तैयारी की थी। <sup>40</sup> इसके अलावा इनके जो उनके करीब के थे बल्कि इश्कार और ज़बूलून और नफ़्ताली तक के लोग गधों और ऊँटों और खच्चरों और बैलों पर रोटियाँ और मैदे की बनी हुई खाने की चीज़ें और अंजीर की टिकियाँ। और किशमिश के गुच्छे और शराब और तेल लादे हुए और बैल और भेड़ बकरियाँ इफ़रात से लाये इसलिए कि इस्राईल में खुशी थी।

## 13

१ और दाऊद उन सरदारों से जो हज़ार हज़ार और

सौ सौ पर थे या'नी हर एक लश्कर के शख्स से सलाह ली। <sup>2</sup> और दाऊद ने इस्राईल की सारी जमा'अत से कहा कि अगर आप को पसंद हो और खुदावन्द की मर्ज़ी हो तो आओ हम हर जगह इस्राईल के सारे मुल्क में अपने बाक़ी भाइयों को जिनके साथ काहिन और लावी भी अपने नवाहीदार शहरों में रहते हैं, कहला भेजें ताकि वह हमारे पास जमा' हों, <sup>3</sup> और हम अपने खुदा के सन्दूक फिर अपने पास ले आयें क्योंकि हम साऊल के दिनों में उसके तालिब न हुए। <sup>4</sup> तब सारी जमा'अत बोल उठे कि हम ऐसा ही करेंगे क्योंकि यह बात सब लोगों की निगाह में ठीक थी। <sup>5</sup> तब दाऊद ने मिस्र की नदी सीहूर से हम्रात के मदखल तक के सारे इस्राईल को जमा' किया, ताकि खुदा का सन्दूक को करयत या'रीम से ले आयें। <sup>6</sup> और दाऊद और सारा इस्राईल बा'ला को या'नी करयतया'रीम को जो यहूदाह में है गए, ताकि खुदा के सन्दूक को वहाँ ले आयें, जो क़रुबियों पर बैठने वाला खुदावन्द है और इस नाम से पुकारा जाता है। <sup>7</sup> और वह खुदा के सन्दूक को एक नयी पर गाड़ी रख कर अबीनदाब के घर से बाहर निकाल लाये, और 'उज़्ज़ा और अखियो गाड़ी को हाँक रहे थे। <sup>8</sup> और दाऊद और सारा इस्राईल, खुदा के आगे बड़े ज़ोर से हम्द करते और बरबत और सितार और दफ़ और झाँझ और तुरही बजाते चले आते थे। <sup>9</sup> और जब वह कीदून के खलिहान पर पहुँचे, तो 'उज़्ज़ा ने सन्दूक के थामने को अपना बढ़ाया, क्योंकि बैलों ने ठोकर खायी थी। <sup>10</sup> तब खुदावन्द का क्रहर 'उज़्ज़ा पर भड़का और उसने उसको मार डाला इसलिए कि उसने अपना हाथ सन्दूक पर बढ़ाया था और वह वहीं खुदा के सामने मर गया। <sup>11</sup> तब दाऊद



उदास हुआ, इसलिए कि खुदा 'उज्जा' पर टूट पड़ा और उसने उस मुक़ाम का नाम परज 'उज्जा' रखवा जो आज तक है। <sup>12</sup> और दाऊद उस दिन खुदा से डर गया और कहने लगा कि मैं खुदा के सन्दूक को अपने यहाँ क्यों कर लाऊँ? <sup>13</sup> इसलिए दाऊद सन्दूक को अपने यहाँ दाऊद के शहर में न लाया बल्कि उसे बाहर ही जाती 'ओबेदअदोम के घर में ले गया <sup>14</sup> तब खुदा का सन्दूक 'ओबेदअदोम के घराने के साथ उसके घर में तीन महीने तक रहा, और खुदावन्द ने 'ओबेदअदोम और उसकी सब चीज़ों को बरकत दी।

## 14

१२१२२ २२ १२२ २२ १२२२२२

<sup>1</sup> और सूर के बादशाह हीराम ने दाऊद के क़ासिद और उसके लिए महल बनाने के लिए देवदार के लट्ठे और राजगीर और बढ़ई भेजे। <sup>2</sup> और दाऊद जान गया कि खुदावन्द ने उसे बनी — इस्राईल का बादशाह बना कर क़ाईम कर दिया है, क्योंकि उसकी हुकूमत उसके इस्राईली लोगों की खातिर मुम्ताज़ की गई थी। <sup>3</sup> और दाऊद ने येरूशलेम में और 'औरतें व्याह लीं, और उससे और बेटे बेटियाँ पैदा हुए। <sup>4</sup> और उसके उन बच्चों के नाम जो येरूशलेम में पैदा हुए यह हैं: सम्मू'अ और सोबाब और नातन और सुलेमान, <sup>5</sup> और इब्हार और इलिसू'अ और इलफ़ालत, <sup>6</sup> और नौजा और नफ़ज और यफ़ी'आ, <sup>7</sup> और इलिसमा' और और बा'लयद'अ और इलफ़ालत।

१२१२२ २२ १२१२२१२१२२ २२ १२१२२१२ १२१२२

<sup>8</sup> और जब फ़िलिस्तिनों ने सुना कि दाऊद मम्मूह होकर सारे इस्राईल का बादशाह बना है तो सब फ़िलिस्ती दाऊद की तलाश में चढ़ आये और दाऊद यह सुनकर उनके मुक़ाबिले को निकला। <sup>9</sup> और फ़िलिस्तिनों ने आकर रिफ़ाईम की वादी में धावा मारा। <sup>10</sup> तब दाऊद ने खुदा से सवाल किया, “क्या मैं फ़िलिस्तिनों पर चढ़ जाऊँ? क्या तू उनको मेरे हाथ में कर देगा?” खुदावन्द ने उसे फ़रमाया, “चढ़ जा क्योंकि मैं उनको तेरे हाथ में कर दूँगा।” <sup>11</sup> तब वह बा'ल पराज़ीम में आये और दाऊद ने वहीं उनको मारा और दाऊद ने कहा, “खुदा ने मेरे हाथ से दुश्मनों को ऐसा चीरा, जैसे पानी चाक हो जाता है।” इस वजह से उन्होंने उस मुक़ाम का नाम बा'ल पराज़ीम रखवा। <sup>12</sup> और वह अपने बुतों को वहाँ छोड़ गए, और वह दाऊद के हुक्म से आग में जला दिए गए। <sup>13</sup> और फ़िलिस्तिनों ने फिर उस वादी में धावा मारा। <sup>14</sup> और दाऊद ने फिर खुदा से सवाल किया, और खुदा ने उससे कहा, “तू उनका पीछा न कर, बल्कि उनके पास से कतरा कर निकल जा, और तूत के पेड़ों के सामने से उन पर

हमला कर। <sup>15</sup> और जब तू तूत के दरख्तों की फुन्गियों पर चलने की जैसी आवाज़ सुने, तब लड़ाई को निकलना क्योंकि खुदा तेरे आगे आगे फ़िलिस्तिनों के लश्कर को मारने के लिए निकला है।” <sup>16</sup> और दाऊद ने जैसा खुदा ने उसे फ़रमाया था किया और उन्होंने फ़िलिस्तिनों की फ़ौज को जिबा'ऊन से जज़र तक क़त्ल किया। <sup>17</sup> और दाऊद की शोहरत सब मुल्कों में फैल गई, और खुदावन्द ने सब क़ौमों पर उसका ख़ौफ़ बिठा दिया।

## 15

१२१२२२२ २२ २२ १२२२२ २२ १२२२२२२

<sup>1</sup> और दाऊद ने दाऊद के शहर में अपने लिए महल बनाए, और खुदा के सन्दूक के लिए एक जगह तैयार करके उसके लिए एक ख़ैमा खड़ा किया। <sup>2</sup> तब दाऊद ने कहा कि लावियों के 'अलावा और किसी को खुदा के सन्दूक को उठाना नहीं चाहिए, क्योंकि खुदावन्द ने उन्हीं को चुना है कि खुदा सन्दूक को उठाएँ और हमेशा उसकी ख़िदमत करें। <sup>3</sup> और दाऊद ने सारे इस्राईल को येरूशलेम में जमा' किया, ताकि खुदावन्द के सन्दूक को उस जगह जो उसने उसके लिए तैयार की थी ले आएँ। <sup>4</sup> और दाऊद ने बनी हारून को और लावियों को इकट्ठा किया: <sup>5</sup> या'नी बनी क़िहात में से, ऊरिएल सरदार और उसके एक सौ बीस भाइयों को; <sup>6</sup> बनी मिरारी में से, 'असायाह सरदार और उसके दो सौ बीस भाइयों को; <sup>7</sup> बनी जैरसोम में से, यूएल सरदार और उसके एक सौ तीस भाइयों को; <sup>8</sup> बनी इलिसफ़न में से, समायाह सरदार और उसके दो सौ भाइयों को; <sup>9</sup> बनी हबरून में से, इलीएल सरदार और उसके अस्सी भाइयों को; <sup>10</sup> बनी उज्ज़ीएल में से, 'अम्मीनदाब सरदार और उसके एक सौ बारह भाइयों को। <sup>11</sup> और दाऊद ने सदोक और अबीयातर काहिनों की, और ऊरिएल और 'असायाह और यूएल और समायाह और इलीएल और 'अम्मीनदाब लावियों को बुलाया, <sup>12</sup> और उनसे कहा कि तुम लावियों के आबाई खान्दानों के सरदार हो; तुम अपने आपको पाक करो, तुम भी और तुम्हारे भाई भी, ताकि तुम खुदावन्द इस्राईल के खुदा के सन्दूक को उस जगह जो मैंने उसके लिए तैयार की है ला सको। <sup>13</sup> क्योंकि जब तुम ने पहली बार उसे न उठाया, तो खुदावन्द हमारा खुदा हम पर टूट पड़ा, क्योंकि हम क़ानून के मुताबिक़ उसके तालिब नहीं हुए थे। <sup>14</sup> तब काहिनों और लावियों ने खुदावन्द इस्राईल के खुदा के सन्दूक को लाने के लिए अपने आपको पाक किया। <sup>15</sup> और बनी लावी ने खुदा के सन्दूक को, जैसा मूसा ने खुदावन्द के क़लाम के मुवाफ़िक़ हुक्म किया था,

कड़ियों से अपने कन्धों पर उठा लिया। <sup>16</sup> और दाऊद ने लावियों के सरदारों को फ़रमाया कि अपने भाइयों में से हम्द करने वालों को मुक़र्रर करें कि मूसीकी के साज़, या'नी सितार और बरबत और झाँझ बजाएं और आवाज़ बुलन्द करके खुशी से गाएँ। <sup>17</sup> तब लावियों ने हैमान बिन यूएल को मुक़र्रर किया, और उसके भाइयों में से आसफ़ बिन बरकियाह को, और उनके भाइयों बनी मिरारी में से ऐतान बिन कौसियाह को; <sup>18</sup> और उनके साथ उनके दूसरे दर्जे के भाइयों या'नी ज़करियाह, बीन और या'ज़िएल और सिमीरामोत और यहिएल और उन्नी और इलियाब और बिनायाह और मासियाह और मतितियाह और इलिफ़लहू और मिक्किनियाह और 'ओबेदअदोम और य'ईएल को जो दरबान थे। <sup>19</sup> फिर हम्द करने वाले हैमान, आसफ़ और ऐतान मुक़र्रर हुए कि पीतल की झाँझों को ज़ोर से बजाएँ; <sup>20</sup> और ज़करियाह और 'अज़ीएल और सिमीरामीत और यहिएल और उन्नी और इलियाब और मा'सियाह और बिनायाह सितार को 'अलामीत राग पर छेड़े; <sup>21</sup> और मतितियाह और इलिफ़लहू और मिक्किनियाह और 'ओबेदअदोम और य'ईएल और 'अज़ज़ियाह शमीनीत राग पर सितार बजाएँ। <sup>22</sup> और कनानियाह, लावियों का सरदार, हम्द गाने पर मुक़र्रर था; वह हम्द सिखाता था, क्योंकि वह बड़ा ही माहिर था। <sup>23</sup> और बरकियाह और इल्काना सन्दूक के दरबान थे, <sup>24</sup> और शबनियाह और यहूसफ़त और नतनीएल और 'अमासी और ज़करियाह और बिनायाह और इली'एलियाज़र काहिन खुदा के सन्दूक के आगे आगे नरसिंगे फूँकते जाते थे, और 'ओबेदअदोम और यहियाह सन्दूक के दरबान थे। <sup>25</sup> तब दाऊद और इस्राईल के बुज़ुर्ग और हज़ारों के सरदार खाना हुए कि खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को 'ओबेदअदोम के घर से खुशी मनाते हुए लाएँ। <sup>26</sup> और ऐसा हुआ कि जब खुदा ने उन लावियों की, जो खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को उठाए हुए थे मदद की, तो उन्होंने सात बैल और सात मेंढे कुर्बान किए। <sup>27</sup> और दाऊद और सब लावी जो सन्दूक को उठाये हुए थे, और हम्द करने वाले और हम्द करने वालों के साथ कनानियाह जो हम्द करने में उस्ताद था कतानी लिबासों से मुलब्सस थे, और दाऊद कतान का अफूद भी पहने था। <sup>28</sup> यूँ सब इस्राईली नारा मारते और नरसिंगों और तुरहियों और झाँझों की आवाज़ के साथ सितार और बरबत को ज़ोर से बजाते हुए, खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को लाए। <sup>29</sup> और ऐसा हुआ कि जब खुदावन्द का 'अहद का सन्दूक दाऊद के शहर में पहुँचा, तो साऊल की बेटी मीकल ने खिड़की

में से झाँक कर दाऊद बादशाह को खूब नाचते — कूदते देखा, और उसने अपने दिल में उसको हकीर जाना।

## 16

<sup>1</sup> तब वह ख़दा के सन्दूक को ले आए और उसे उस खेमा के बीच में जो दाऊद ने उसके लिए खड़ा किया था रखा, और सोख्तनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ खुदा के सामने पेश कीं। <sup>2</sup> जब दाऊद सोख्तनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानियाँ पेश कर चुका तो उसने खुदावन्द के नाम से लोगों को बरकत दी। <sup>3</sup> और उसने सब इस्राईली लोगों को, क्या आदमी क्या 'औरत, एक एक रोटी और एक एक टुकड़ा गोश्त और किशमिश की एक एक टिकिया दी। <sup>4</sup> और उसने लावियों में से कुछ को मुक़र्रर किया कि खुदावन्द के सन्दूक के आगे खिदमत करें, और खुदावन्द इस्राईल के खुदा का ज़िक्र और शुक्र और उसकी हम्द करें। <sup>5</sup> अब्वल आसफ़ और उसके बाद ज़करियाह और य'ईएल और सिमीरामोत और यहिएल और मतितियाह और इलियाब और बिनायाह और 'ओबेदअदोम और य'ईएल, सितार और बरबत के साथ, और आसफ़ झाँझों को ज़ोर से बजाता हुआ; <sup>6</sup> और बिनायाह और यहज़िएल काहिन हमेशा तुरहियों के साथ खुदा के 'अहद के सन्दूक के आगे रहा करें।

॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥

<sup>7</sup> पहले उसी दिन दाऊद ने यह ठहराया कि खुदावन्द का शुक्र आसफ़ और उसके भाई बजा लाया करें। <sup>8</sup> खुदावन्द की शुक्रगुजारी करो। उससे दुआ करो; क्रौमों के बीच उसके कामों का इश्तिहार दो। <sup>9</sup> उसके सामने हम्द करो, उसकी बड़ाई करो, उसके सब 'अजीब कामों का ज़िक्र करो। <sup>10</sup> उसके पाक नाम पर फ़ख्र करो; जो खुदावन्द के तालिब हैं, उनका दिल खुश रहे। <sup>11</sup> तुम खुदावन्द और उसकी ताक़त के तालिब हो; तुम हमेशा उसके दीदार के तालिब रहो। <sup>12</sup> तुम उसके 'अजीब कामों को जो उसने किए, और उसके मो'जिज़ों और मुँह के क़ानून को याद रखो <sup>13</sup> ऐ उसके बन्दे इस्राईल की नसल, ऐ बनी या'कूब, जो उसके चुने हुए हो। <sup>14</sup> वह खुदावन्द हमारा खुदा है, तमाम रू — ए — ज़मीन पर उसके क़ानून हैं। <sup>15</sup> हमेशा उसके 'अहद को याद रखो, और हज़ार नसलों तक उसके कलाम को जो उसने फ़रमाया। <sup>16</sup> उसी 'अहद को जो उसने अब्रहाम से बाँधा, और उस क़सम को जो उसने इस्हाक़ से खाई, <sup>17</sup> जिसे उसने या'कूब के लिए क़ानून के तौर पर और इस्राईल के लिए हमेशा 'अहद के तौर पर काईम किया, <sup>18</sup> यह कहकर, “मैं कन'आन का मुल्क

तुझको दूँगा, वह तुम्हारा मौरसी हिस्सा होगा।”<sup>19</sup> उस वक्त तुम शुमार में थोड़े थे बल्कि बहुत ही थोड़े और मुल्क में परदेसी थे।<sup>20</sup> वह एक क्रौम से दूसरी क्रौम में और एक मुल्क से दूसरी मुल्क में फिरते रहे।<sup>21</sup> उसने किसी शख्स को उनपर ज़ुल्म करने न दिया; बल्कि उनकी खातिर बादशाहों को तम्बीह की,<sup>22</sup> कि तुम मेरे मम्सूहों को न छुओ और मेरे नबियों को न सताओ।<sup>23</sup> ऐ सब अहल — ए ज़मीन, खुदावन्द के सामने हम्द करो। रोज़ — ब — रोज़ उसकी नजात की बशारत दो।<sup>24</sup> क्रौमों में उसके जलाल का, सब लोगों में उसके 'अजायब का बयान करो।<sup>25</sup> क्योंकि खुदावन्द बूजुर्ग और बहुत ही तारीफ़ के लायक है, वह सब मा'बूदों से ज्यादा बड़ा है।<sup>26</sup> इसलिए कि और क्रौमों के सब मा'बूद महज़ बुत हैं; लेकिन खुदावन्द ने आसमानों को बनाया।<sup>27</sup> 'अज़मत और जलाल उसके सामने में हैं, और उसके यहाँ कुदरत और शादमानी हैं।<sup>28</sup> ऐ क्रौमों के कबीलो! खुदावन्द की, खुदावन्द ही की तम्जीद — ओ — ताज़ीम करो।<sup>29</sup> खुदावन्द की ऐसी बड़ाई करो जो उसके नाम के शायों है। हदिया लाओ, और उसके सामने आओ, पाक आराइश के साथ खुदावन्द को सिज्दा करो।<sup>30</sup> ऐ सब अहल — ए — ज़मीन! उसके सामने काँपते रहो। जहान काईम है, और उसे हिलता नहीं।<sup>31</sup> आसमान खुशी मनाए और ज़मीन खुश हो, वह क्रौमों में ऐलान करें कि खुदावन्द हुकूमत करता है।<sup>32</sup> समन्दर और उसकी मामूरी शोर मचाए, मैदान और जो कुछ उसमें है बाग़ बाग़ हो।<sup>33</sup> तब जंगल के दरख्त खुशी से खुदावन्द के सामने हम्द करने लगेंगे, क्योंकि वह ज़मीन का इन्साफ़ करने को आ रहा है।<sup>34</sup> खुदावन्द का शुक्र करो, इसलिए कि वह नेक है; क्योंकि उसकी शफ़क़त हमेशा है।<sup>35</sup> तुम कहो, “ऐ हमारी नजात के खुदा, हम को बचा ले, और क्रौमों में से हम को जमा' कर और उनसे हम को रिहाई दे, ताकि हम तेरे कुहूस नाम का शुक्र करें, और ललकारते हुए तेरी तारीफ़ करें।<sup>36</sup> खुदावन्द इस्राईल का खुदा, अज़ल से 'हमेश तक मुबारक हो!” और सब लोग बोल उठे “आमीन!” उन्होंने खुदावन्द की तारीफ़ की।<sup>37</sup> उसने वहाँ खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के आगे आसफ़ और उसके भाइयों को, हर रोज़ के ज़रूरी काम के मुताबिक़ हमेशा सन्दूक के आगे खिदमत करने को छोड़ा; <sup>38</sup> और 'ओबेदअदोम और उसके अठासठ भाइयों को, और 'ओबेदअदोम बिन यदूतून और हूसाह को ताकि दरबान हों।<sup>39</sup> और सदूक काहिन और उसके काहिन भाइयों को खुदावन्द के घर के आगे, जिवा'ऊन के ऊँचे मक़ाम पर, इसलिए <sup>40</sup> कि

वह खुदावन्द की शरी'अत की सब लिखी हुई बातों के मुताबिक़ जो उसने इस्राईल को फ़रमाई, हर सुबह और शाम सोख़्तनी कुर्बानी के मज़बह पर खुदावन्द के लिए सोख़्तनी कुर्बानियाँ पेश कीं।<sup>41</sup> उनके साथ हैमान और यदूतून और बाक़ी चुने हुए आदमियों को जो नाम — ब — नाम मज़कूर हुए थे, ताकि खुदावन्द का शुक्र करें क्योंकि उसकी शफ़क़त हमेशा है।<sup>42</sup> उन ही के साथ हैमान और यदूतून थे, जो बजाने वालों के लिए तुरहियाँ और झाँझें और खुदा के हम्द के लिए बाजे लिए हुए थे, और बनी यदूतून दरबान थे।<sup>43</sup> तब सब लोग अपने अपने घर गए, और दाऊद लौटा कि अपने घराने को बरकत दे।

## 17

222222 22 22222 22 222 2222

<sup>1</sup> जब दाऊद अपने महल में रहने लगा, तो उसने नातन नबी से कहा, मैं तो देवदार के महल में रहता हूँ, लेकिन खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक खेमे में है।<sup>2</sup> नातन ने दाऊद से कहा, जो कुछ तेरे दिल में है वह कर, क्योंकि खुदा तेरे साथ है।<sup>3</sup> और उसी रात ऐसा हुआ कि खुदा का कलाम नातन पर नाज़िल हुआ कि,<sup>4</sup> जाकर मेरे बन्दे दाऊद से कह कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू मेरे रहने के लिए घर न बनाना।<sup>5</sup> क्योंकि जब से मैं बनी — इस्राईल को निकाल लाया, आज के दिन तक मैंने किसी घर में सुकूनत नहीं की; बल्कि खेमा — ब — खेमा और मस्कन — ब — मस्कन फिरता रहा हूँ <sup>6</sup> उन जगहों में जहाँ जहाँ मैं सारे इस्राईल के साथ फिरता रहा, क्या मैंने इस्राईली क़ाज़ियों में से जिनको मैंने हुक्म किया था कि मेरे लोगों की गल्लेबानी करें, किसी से एक हर्फ़ भी कहा कि तुम ने मेरे लिए देवदार का घर क्यों नहीं बनाया? <sup>7</sup> तब तू मेरे बन्दे दाऊद से यूँ कहना कि रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि मैंने तुझे भेड़साले में से जब तू भेड़ — बकरियों के पीछे पीछे चलता था लिया, ताकि तू मेरी क्रौम इस्राईल का रहनुमा हो; <sup>8</sup> और जहाँ कहीं तू गया मैं तेरे साथ रहा, और तेरे सब दुश्मनों को तेरे सामने से काट डाला है, और मैं रूए — ज़मीन के बड़े बड़े आदमियों के नाम की तरह तेरा नाम कर दूँगा।<sup>9</sup> और मैं अपनी क्रौम इस्राईल के लिए एक जगह ठहराऊँगा, और उनको काईम कर दूँगा ताकि अपनी जगह बसे रहें और फिर हटाए न जाएँ, और न शरारत के फ़र्ज़न्द फिर उनको दुख देने पाएँगे जैसा शुरू में हुआ।<sup>10</sup> और उस वक्त भी जब मैंने हुक्म दिया कि मेरी क्रौम इस्राईल पर क़ाज़ी मुकर्रर

हों, और मैं तेरे सब दुश्मनों को मगलूब करूँगा। इसके 'अलावा मैं तुझे बताता हूँ कि खुदावन्द तेरे लिए एक घर बनाएगा। <sup>11</sup> जब तेरे दिन पूरे हो जाएँगे ताकि तू अपने बाप — दादा के साथ मिल जाने को चला जाए, तो मैं तेरे बाद तेरी नसल को तेरे बेटों में से खड़ा करूँगा, और उसकी हुकूमत को काईम करूँगा। <sup>12</sup> वह मेरे लिए घर बनाएगा, और मैं उसका तख्त हमेशा के लिए काईम करूँगा। <sup>13</sup> मैं उसका बाप हूँगा और वह मेरा बेटा होगा; और मैं अपनी शफ़क़त उस पर से नहीं हटाऊँगा, जैसे मैंने उस पर से जो तुझ से पहले था हटा ली, <sup>14</sup> बल्कि मैं उसको अपने घर में और अपनी ममलुकत में हमेशा तक काईम रखूँगा, और उसका तख्त हमेशा तक साबित रहेगा। <sup>15</sup> इसलिए नातन ने इन सब बातों और इस सारे ख़ाब के मुताबिक़ ऐसा ही दाऊद से कहा। <sup>16</sup> तब दाऊद बादशाह अन्दर जाकर खुदावन्द के सामने बैठा, और कहने लगा, ऐ खुदावन्द खुदा! मैं कौन हूँ, और मेरा घराना क्या है कि तू ने मुझ को यहाँ तक पहुँचाया? <sup>17</sup> और ये, ऐ खुदा, तेरी नज़र में छोटी बात थी, बल्कि तू ने तो अपने बन्दे के घर के हक़ में आइँदा बहुत दिनों का ज़िक़र किया है, और तू ने ऐ खुदावन्द खुदा, मुझे ऐसा माना कि गोया मैं बड़ा मन्ज़िलत वाला आदमी' हूँ। <sup>18</sup> भला दाऊद तुझ से उस इकराम की निस्बत, जो तेरे खादिम का हुआ और क्या कहे? क्योंकि तू अपने बन्दे को जानता है। <sup>19</sup> ऐ खुदावन्द, तू ने अपने बन्दे की खातिर अपनी ही मर्ज़ी से इन बड़े बड़े कामों को ज़ाहिर करने के लिए इतनी बड़ी बात की। <sup>20</sup> ऐ खुदावन्द, कोई तेरी तरह नहीं और तेरे 'अलावा जिसे हम ने अपने कानों से सुना है और कोई खुदा नहीं। <sup>21</sup> और रू — ए — ज़मीन पर तेरी क़ौम इस्राईल की तरह और कौन सी क़ौम है, जिसे खुदा ने जाकर अपनी उम्मत बनाने को खुद छुड़ाया? ताकि तू अपनी उम्मत के सामने से जिसे तू ने मिस्र से ख़लासी बख़्शी, क़ौमों को दूर करके बड़े और मुहीब कामों से अपना नाम करे। <sup>22</sup> क्योंकि तू ने अपनी क़ौम इस्राईल को हमेशा के लिए अपनी क़ौम ठहराया है, और तू खुद ऐ खुदावन्द, उनका खुदा हुआ है। <sup>23</sup> और अब ऐ खुदावन्द, वह बात जो तू ने अपने बन्दे के हक़ में और उसके घराने के हक़ में फ़रमाई, हमेशा तक साबित रहे और जैसा तू ने कहा है वैसा ही कर। <sup>24</sup> और तेरा नाम हमेशा तक काईम और बुज़ुर्ग हो ताकि कहा जाए कि रब्ब — उल — अफ़वाज इस्राईल का खुदा है, बल्कि वह इस्राईल ही के लिए खुदा है और तेरे बन्दे दाऊद का घराना तेरे सामने काईम रहे। <sup>25</sup> क्योंकि तू ने ऐ मेरे

खुदा, अपने बन्दा पर ज़ाहिर किया है कि तू उसके लिए एक घर बनाएगा; इसलिए तेरे बन्दे को तेरे सामने दुआ करने का हौसला हुआ। <sup>26</sup> और ऐ खुदावन्द तू ही खुदा है, और तू ने अपने बन्दे से इस भलाई का वा'दा किया; <sup>27</sup> और तुझे पसंद आया कि तू अपने बन्दे के घराने को बरकत बख़्शे, ताकि वह हमेशा तक तेरे सामने काईम रहे; क्योंकि तू ऐ खुदावन्द बरकत दे चुका है, इसलिए वह हमेशा तक मुबारक है।

## 18

2222 22 2222 22 2222

<sup>1</sup> इसके बाद यूँ हुआ कि दाऊद ने फ़िलिस्तिनों को मारा और उनको मगलूब किया, और जात को उसके क़स्बों समेत फ़िलिस्तिनों के हाथ से ले लिया। <sup>2</sup> उसने मोआब को मारा, और मोआबी दाऊद के फ़रमाँबरदार हो गए और हदिए लाए। <sup>3</sup> दाऊद ने ज़ोबाह के बादशाह हदर'एलियाज़र को भी, जब वह अपनी हुकूमत दरिया — ए — फ़रात तक काईम करने गया, हमात में मार लिया। <sup>4</sup> और दाऊद ने उससे एक हज़ार रथ और सात हज़ार सवार और बीस हज़ार प्यादे ले लिए, और उसने रथों के सब घोड़ों की नालें कटवा दीं, लेकिन उनमें से एक सौ रथों के लिए घोड़े बचा लिए। <sup>5</sup> जब दमिशक़ के अरामी ज़ोबाह के बादशाह हदर'एलियाज़र की मदद करने को आए, तो दाऊद ने अरामियों में से बाइस हज़ार आदमी क़त्ल किए। <sup>6</sup> तब दाऊद ने दमिशक़ के अराम में सिपाहियों की चौकियाँ बिठाई, और अरामी दाऊद के फ़रमाँबरदार हो गए और हदिए लाए। और जहाँ कहीं दाऊद जाता खुदावन्द उसे फ़तह बख़्शता था। <sup>7</sup> और दाऊद हदर'एलियाज़र के नौकरों की सोने की ढालें लेकर उनको येरूशलेम में लाया; <sup>8</sup> और हदर'एलियाज़र के शहरों, तिबखत और कून से दाऊद बहुत सा पीतल लाया, जिससे सुलेमान ने पीतल का बड़ा हौज़ और खम्भा और पीतल के बर्तन बनाए। <sup>9</sup> जब हमात के बादशाह तू'ऊ ने सुना के दाऊद ने ज़ोबाह के बादशाह हदर'एलियाज़र का सारा लश्कर मार लिया, <sup>10</sup> तो उसने अपने बेटे हदूराम को दाऊद बादशाह के पास भेजा ताकि उसे सलाम करे और मुबारक बाद दे, इसलिए के उसने जंग करके हदर'एलियाज़र को मारा क्योंकि हदर'एलियाज़र तू'ऊ से लड़ा करता था, और हर तरह के सोने और चाँदी और पीतल के बर्तन उसके साथ थे। <sup>11</sup> इनकी भी दाऊद बादशाह ने उस चाँदी और सोने के साथ, जो उसने और सब क़ौमों या'नी अदोम और मोआब और बनी 'अम्मून और फ़िलिस्तिनों और 'अमालीक से लिया था, खुदावन्द को नज़र किया।



12 और अबीशै। बिन ज़रोयाह ने वादी — ए — शोर में अठारह हजार अदोमियों को मारा। 13 और उसने अदोम में सिपाहियों की चौकियाँ बिठाई, और सब अदमी दाऊद के फ़रमाँबरदार हो गए। और जहाँ कहीं दाऊद जाता खुदावन्द उसे फ़तह बख़्शता था। 14 तब दाऊद सारे इस्राईल पर हुकूमत करने लगा, और अपनी सारी र'इयत के साथ अदल — ओ — इन्साफ़ करता था। 15 और योआब बिन ज़रोयाह लश्कर का सरदार था, और यहूसफ़त बिन अखीलूद मुवरिख़ था; 16 और सद्क़ बिन अखीतोब और अबीमलिक बिन अबीयातर काहिन थे, और शौशा मुन्शी था; 17 और बिनायाह बिन यहूयदा' करेतियों और फ़लेतियों पर था; और दाऊद के बेटे बादशाह के खास मुसाहिब थे।

## 19

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 इसके बाद ऐसा हुआ कि बनी 'अम्मून का बादशाह नाहस मर गया, और उसका बेटा उसकी जगह हुकूमत करने लगा। 2 तब दाऊद ने कहा कि मैं नाहस के बेटे हनून के साथ नेकी करूँगा क्योंकि उसके बाप ने मेरे साथ नेकी की, तब दाऊद ने कासिद भेजे ताकि उसके बाप के बारे में उसे तसल्ली दें। इसलिए दाऊद के खादिम बनी अम्मून के मुल्क में हनून के पास आये कि उसे तसल्ली दें। 3 लेकिन बनी 'अम्मून के अमीरों ने हनून से कहा, “क्या तेरा ख्याल है कि दाऊद तेरे बाप की 'इज़्जत करता है, तो उसने तेरे पास तसल्ली देनेवाले भेजे हैं? क्या उसके खादिम तेरे मुल्क का हाल दरियाफ़्त करने, और उसे तबाह करने, और राज़ लेने नहीं आए हैं?” 4 तब हनून ने दाऊद के खादिमों को पकड़ा और उनकी दाढ़ी मूँछें मुंडवाकर, उनकी आधी लिबास उनके सुरीनों तक कटवा डाली, और उनको खाना कर दिया। 5 तब कुछ ने जाकर दाऊद को बताया कि उन आदमियों से कैसा सुलूक किया गया। तब उसने उनके इस्तक्रबाल को लोग भेजे इसलिए कि वह निहायत शरमाते थे, और बादशाह ने कहा कि जब तक तुम्हारी दाढ़ियाँ न बढ़ जाएँ यरीह में ठहरे रहो, इसके बाद लौट आना। 6 जब बनी 'अम्मून ने देखा कि वह दाऊद के सामने नफ़रत अंगेज़ हो गए हैं, तो हनून और बनी 'अम्मून ने मसोपतामिया और अराम, माका और ज़ोबाह से रथों और सवारों को किराया करने के लिए एक हजार किन्तार चाँदी भेजी। 7 इसलिए उन्होंने बत्तीस हजार रथों और मा'का के बादशाह और उसके लोगों को अपने लिए किराया कर लिया, जो आकर मीदबा के सामने ख़ैमाज़न हो गए। और बनी 'अम्मून अपने अपने शहर से जमा' हुए और लड़ने को

आए। 8 जब दाऊद ने यह सुना तो उसने योआब और सूमाओं के सारे लश्कर को भेजा। 9 तब बनी 'अम्मून ने निकलकर शहर के फाटक पर लड़ाई के लिए सफ़ बाँधी, और वह बादशाह जो आए थे सो उनसे अलग मैदान में थे। 10 जब योआब ने देखा कि उसके आगे और पीछे लड़ाई के लिए सफ़ बाँधी है, तो उसने सब इस्राईल के खास लोगों में से आदमी चुन लिए और अरामियों के मुक्काबिल उनकी सफ़ आराई की; 11 और बाक़ी लोगों को अपने भाई अबीशै के सुपुर्द किया, और उन्होंने बनी 'अम्मून के सामने अपनी सफ़ बाँधी। 12 और उसने कहा कि अगर अरामी मुझ पर गालिब आएँ, तो तू मेरी मदद करना; और अगर बनी 'अम्मून तुझ पर गालिब आएँ, तो मैं तेरी मदद करूँगा। 13 इसलिए हिम्मत बाँधो, और आओ हम अपनी क्रौम और अपने खुदा के शहरों की खातिर मर्दानगी करें; और खुदावन्द जो कुछ उसे भला मा'लूम हो करे। 14 तब योआब अपने लोगों समेत अरामियों से लड़ने को आगे बढ़ा, और वह उसके सामने से भागे। 15 जब बनी 'अम्मून ने अरामियों को भागते देखा, तो वह भी उसके भाई अबीशै के सामने से भाग कर शहर में घुस गए। तब योआब येरूशलेम को लौट आया। 16 जब अरामियों ने देखा कि उन्होंने बनी — इस्राईल से शिकस्त खाई, तो उन्होंने कासिद भेज कर दरिया — ए — फ़ुरात के पार के अरामियों को बुलवाया; और हदर'एलियाज़र का सिपहसालार सोफ़क़ उनका सरदार था। 17 और इसकी ख़बर दाऊद को मिली तब वह सारे इस्राईल को जमा' करके यरदन के पार गया, और उनके करीब पहुँचा और उनके मुक्काबिल सफ़ बाँधी, फिर जब दाऊद ने अरामियों के मुक्काबिले में जंग के लिए सफ़ बाँधी तो वह उससे लड़े। 18 और अरामी इस्राईल के सामने से भागे, और दाऊद ने अरामियों के सात हजार रथों के सवारों और चालीस हजार प्यादों को मारा, और लश्कर के सरदार सोफ़क़ को क़त्ल किया। 19 जब हदर'एलियाज़र के मुलाज़िमों ने देखा कि वह इस्राईल से हार गए, तो वह दाऊद से सुलह करके उसके फ़रमाँबरदार हो गए; और अरामी बनी 'अम्मून की मदद पर फिर कभी राज़ी न हुए।

## 20

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 फिर नए साल के शुरू' में जब बादशाह जंग के लिए निकलते हैं, योआब ने ताक़तवर लश्कर ले जाकर बनी 'अम्मून के मुल्क को उजाड़ डाला और आकर रब्बा को घेर लिया; लेकिन दाऊद येरूशलेम में रह गया था, और योआब ने रब्बा को घेर करके उसे ढा दिया। 2 और दाऊद

ने उनके बादशाह के ताज को उसके सिर पर से उतार लिया, और उसका वजन एक किन्तार सोना पाया, और उसमें बेशकीमत जवाहर जड़े थे; इसलिए वह दाऊद के सिर पर रखा गया, और वह उस शहर में से बहुत सा लूट का माल निकाल लाया।<sup>3</sup> उसने उन लोगों को जो उसमें थे, बाहर निकाल कर आरों और लोहे के हींगों और कुल्हाड़ों से काटा, और दाऊद ने बनी 'अम्मून के सब शहरों से ऐसा ही किया। तब दाऊद और सब लोग येरूशलेम को लौट आए।<sup>4</sup> इसके बाद जज़र में फ़िलिस्तीयों से जंग हुई; तब हूसाती सिब्वकी ने सफ़्फ़ी को जो पहलवान के बेटों में से एक था क़त्ल किया, और फ़िलिस्ती मग़लूब हुए।<sup>5</sup> और फ़िलिस्तीयों से फिर जंग हुई; तब य'ऊर के बेटे इल्हनान ने जाती जूलियत के भाई लहमी को, जिसके भाले की छड़ जुलाहे के शहतीर के बराबर थी, मार डाला।<sup>6</sup> फिर जात में एक और जंग हुई जहाँ एक बड़ा क्रदआवर आदमी था जिसके चौबीस उंगलियाँ, या'नी हाथों में छः छः और पाँव में छः छः थीं, और वह भी उसी पहलवान का बेटा था।<sup>7</sup> जब उसने इस्राईल की फ़ज़ीहत की तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे योनतन ने उसको मार डाला।<sup>8</sup> यह जात में उस पहलवान से पैदा हुए थे, और दाऊद और उसके खादिमों के हाथ से क़त्ल हुए।

## 21

???? ? ? ???? ???? ???? ???? ?

<sup>1</sup> और शैतान ने इस्राईल के खिलाफ़ उठकर दाऊद को उभारा कि इस्राईल का शुमार करें <sup>2</sup> तब दाऊद ने योआब से और लोगों के सरदारों से कहा कि जाओ बैरसबा से दान तक इस्राईल का शुमार करो, और मुझे ख़बर दो ताकि मुझे उनकी ता'दाद मा'लूम हो। <sup>3</sup> योआब ने कहा, “खुदावन्द अपने लोगों को जितने हैं, उससे सौ गुना ज्यादा करे; लेकिन ऐ मेरे मालिक बादशाह, क्या वह सब के सब मेरे मालिक के खादिम नहीं हैं? फिर मेरा खुदावन्द यह बात क्यूँ चाहता है? वह इस्राईल के लिए ख़ता का ज़रिए' क्यूँ बने?” <sup>4</sup> तो भी बादशाह का फ़रमान योआब पर ग़ालिब रहा चुनाँचे यूआब रुख़सत हुआ और तमाम इस्राईल में फिरा और येरूशलेम की लौटा; <sup>5</sup> और योआब ने लोगों के शुमार की मीज़ान दाऊद को बतायी और सब इस्राईली ग्यारह लाख शमशीर ज़न मर्द, और यहूदाह चार लाख सत्तर हज़ार शमशीर ज़न शख्स थे। <sup>6</sup> लेकिन उसने लावी और बिनयमीन का शुमार उनके साथ नहीं किया था, क्यूँकि बादशाह का हुक्म योआब के नज़दीक़ नफ़रतअंगेज़ था। <sup>7</sup> लेकिन

खुदा इस बात से नाराज़ हुआ, इसलिए उसने इस्राईल को मारा। <sup>8</sup> तब दाऊद ने खुदा से कहा कि मुझसे बड़ा गुनाह हुआ कि मैंने यह काम किया। अब मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि अपने बन्दा कुसूर मु'आफ़ कर, क्यूँकि मैंने बेहूदा काम किया है। <sup>9</sup> और खुदावन्द ने दाऊद के ग़ैबबीन जाद से कहा; <sup>10</sup> कि जाकर दाऊद से कह कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मैं तेरे सामने तीन चीज़ें पेश करता हूँ, उनमें से एक चुन ले, ताकि मैं उसे तुझ पर भेजूँ। <sup>11</sup> तब जाद ने दाऊद के पास आकर उससे कहा, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू जिसे चाहे उसे चुन ले: <sup>12</sup> या तो क़हत के तीन साल; या अपने दुश्मनों के आगे तीन महीने तक हलाक होते रहना, ऐसे हाल में कि तेरे दुश्मनों की तलवार तुझ पर वार करती रहे; या तीन दिन खुदावन्द की तलवार या'नी मुल्क में वबा रहे, और खुदावन्द का फ़रिश्ता इस्राईल की सब सरहदों में मारता रहे। अब सोच ले कि मैं अपने भेजेनेवाले को क्या जवाब दूँ। <sup>13</sup> दाऊद ने जाद से कहा, मैं बड़े शिकंजे में हूँ मैं खुदावन्द के हाथ में पड़ूँ क्यूँकि उसकी रहमतें बहुत ज्यादा हैं लेकिन इंसान के हाथ में न पड़ूँ। <sup>14</sup> तब खुदावन्द ने इस्राईल में वबा भेजी, और इस्राईल में से सत्तर हज़ार आदमी मर गए। <sup>15</sup> और खुदा ने एक फ़रिश्ता येरूशलेम को भेजा कि उसे हलाक करे; और जब वह हलाक करने ही को था, तो खुदावन्द देख कर उस बला से मलूल हुआ और उस हलाक करनेवाले फ़रिश्ते से कहा, बस, अब अपना हाथ खींच। और खुदावन्द का फ़रिश्ता यबूसी उरनान के खलिहान के पास खड़ा था। <sup>16</sup> और दाऊद ने अपनी आँखें उठा कर आसमान — ओ — ज़मीन के बीच खुदावन्द के फ़रिश्ते को खड़े देखा, और उसके हाथ में नंगी तलवार थी जो येरूशलेम पर बढ़ाई हुई थी; तब दाऊद और बुज़ुर्ग टाट ओढ़े हुए मुँह के गिरे सिज्दा किया। <sup>17</sup> और दाऊद ने खुदा से कहा, क्या मैं ही ने हुक्म नहीं किया था कि लोगों का शुमार किया जाए? गुनाह तो मैंने किया, और बड़ी शरारत मुझ से हुई, लेकिन इन भेड़ों ने क्या किया है? ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, तेरा हाथ मेरे और मेरे बाप के घराने के खिलाफ़ हो न कि अपने लोगों के खिलाफ़ के वह वबा में मुब्तिला हों। <sup>18</sup> तब खुदावन्द के फ़रिश्ते ने जाद को हुक्म किया कि दाऊद से कहे कि दाऊद जाकर यबूसी उरनान के खलिहान में खुदावन्द के लिए एक कुर्बानगाह बनाए। <sup>19</sup> और दाऊद जाद के कलाम के मुताबिक़, जो उसने खुदावन्द के नाम से कहा था गया, <sup>20</sup> और उरनान ने मुड़ कर उस फ़रिश्ते को देखा, और उसके चारों बेटे जो उसके साथ थे छिप गए। उस वक़्त उरनान गेहूँ दाउता

था। <sup>21</sup> जब दाऊद उरनान के पास आया, तब उरनान ने निगाह की और दाऊद को देखा, और खलिहान से बाहर निकल कर दाऊद के आगे झुका और ज़मीन पर सिज्दा किया। <sup>22</sup> तब दाऊद ने उरनान से कहा कि इस खलिहान की यह जगह मुझे दे दे, ताकि मैं इसमें खुदावन्द के लिए एक कुर्बानगाह बनाऊँ; तू इसका पूरा दाम लेकर मुझे दे, ताकि वबा लोगों से दूर कर दी जाए। <sup>23</sup> उरनान ने दाऊद से कहा, “तू इसे ले ले और मेरा मालिक बादशाह जो कुछ उसे भला मा'लूम हो करे। देख, मैं इन बैलों को सोख्तनी कुर्बानियों के लिए और दाउने के सामान ईधन के लिए, और यह गेहूँ नज़र की कुर्बानी के लिए देता हूँ; मैं यह सब कुछ दिए देता हूँ।” <sup>24</sup> दाऊद बादशाह ने उरनान से कहा, “नहीं नहीं, बल्कि मैं ज़रूर पूरा दाम देकर तुझ से खरीद लूँगा, क्योंकि मैं उसे जो तेरा माल है खुदावन्द के लिए नहीं लेने का, और बग़ैर खर्च किये सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश करूँगा।” <sup>25</sup> तब दाऊद ने उरनान को उस जगह के लिए छः सौ मिस्काल सोना तौल कर दिया। <sup>26</sup> और दाऊद ने वहाँ खुदावन्द के लिए मज़बह बनाया और सोख्तनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ पेश कीं और खुदावन्द से दुआ की; और उसने आसमान पर से सोख्तनी कुर्बानी के मज़बह पर आग भेज कर उसको जवाब दिया। <sup>27</sup> और खुदावन्द ने उस फ़रिश्ते को हुक्म दिया, तब उसने अपनी तलवार फिर मियान में कर ली। <sup>28</sup> उस वक़्त जब दाऊद ने देखा के खुदावन्द ने यबूसी उरनान के खलिहान में उसको जवाब दिया था, तो उसने वहीं कुर्बानी चढ़ाई। <sup>29</sup> क्योंकि उस वक़्त खुदावन्द का घर जिसे मूसा ने वीरान में बनाया था, और सोख्तनी कुर्बानी का मज़बह जिबा ऊन की ऊँची जगह में थे। <sup>30</sup> लेकिन दाऊद खुदा से पूछने के लिए उसके आगे न जा सका, क्योंकि वह खुदावन्द के फ़रिश्ता की तलवार की वजह से डर गया।

## 22

<sup>1</sup> और दाऊद ने कहा, “यही खुदावन्द खुदा का घर और यही इस्राईल की सोख्तनी कुर्बानी का मज़बह है।”

?????????? ?? ?? ?? ???????

<sup>2</sup> दाऊद ने हुक्म दिया कि उन परदेसियों को जो इस्राईल के मुल्क में थे जमा करें, और उसने पत्थरों को तराशने वाले मुक़र्रर किए कि खुदा के घर के बनाने के लिए पत्थर काट कर घड़ें। <sup>3</sup> और दाऊद ने दरवाज़ों के किवाड़ों की कीलों और क़ब्ज़ों के लिए बहुत सा लोहा, और इतना पीतल कि तौल से बाहर था, <sup>4</sup> और देवदार के बेशुमार लट्ठे तैयार किए, क्योंकि सैदानी और सूरी देवदार के लट्ठे कसरत से दाऊद के पास लाते थे। <sup>5</sup> और

दाऊद ने कहा कि मेरा बेटा सुलेमान लड़का और ना तज़ुरबेकार है, और ज़रूर है कि वह घर जो खुदावन्द के लिए बनाया जाए निहायत 'अज़ीम — उश — शान हो, और सब मुल्कों में उसका नाम और शोहरत हो। इसलिए मैं उसके लिए तैयारी करूँगा। चुनाँचे दाऊद ने अपने मरने से पहले बहुत तैयारी की। <sup>6</sup> तब उसने अपने बेटे सुलेमान को बुलाया और उसे ताकीद की कि खुदावन्द इस्राईल के खुदा के लिए एक घर बनाए। <sup>7</sup> दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान से कहा, यह तो खुद मेरे दिल में था कि खुदावन्द अपने खुदा के नाम के लिए एक घर बनाऊँ। <sup>8</sup> लेकिन खुदावन्द का कलाम मुझे पहुँचा, कि तू ने बहुत ख़ूबेज़ी की है और बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ लड़ा है; इसलिए तू मेरे नाम के लिए घर न बनाना, क्योंकि तू ने ज़मीन पर मेरे सामने बहुत खून बहाया है। <sup>9</sup> देख, तुझ से एक बेटा पैदा होगा, वह मर्द — ए — सुलह होगा; और मैं उसे चारों तरफ़ के सब दुश्मनों से अम्न बख़्शूँगा, क्योंकि सुलेमान उसका नाम होगा और मैं उसके दिनों में इस्राईल को अम्न — ओ — अमान बख़्शूँगा। <sup>10</sup> वही मेरे नाम के लिए घर बनाएगा। वह मेरा बेटा होगा और मैं उसका बाप हूँगा, और मैं इस्राईल पर उसकी हुक्मत का तख़्त हमेशा तक — काईम रखूँगा। <sup>11</sup> अब ऐ मेरे बेटे खुदावन्द तेरे साथ रहे और तू कामयाब हो और खुदावन्द अपने खुदा का घर बना, जैसा उसने तेरे हक़ में फ़रमाया है। <sup>12</sup> अब खुदावन्द तुझे अक़्ल — ओ — दानाई बख़्शे और इस्राईल के बारे में तेरी हिदायत करे, ताकि तू खुदावन्द अपने खुदा की शरी'अत को मानता रहे। <sup>13</sup> तब तू कामयाब होगा, बशर्ते कि तू उन क़ानून और अहक़ाम पर जो खुदावन्द ने मूसा को इस्राईल के लिए दिए एहतियात करके 'अमल करे। इसलिए हिम्मत बाँध और हौसला रख, ख़ौफ़ न कर, परेशान न हो। <sup>14</sup> देख, मैंने मशक्क़त से खुदावन्द के घर के लिए एक लाख किन्तार सोना और दस लाख किन्तार चाँदी, और बेअंदाज़ा पीतल और लोहा तैयार किया है क्योंकि वह कसरत से है, और लकड़ी और पत्थर भी मैंने तैयार किए हैं, और तू उनको और बढ़ा सकता है। <sup>15</sup> बहुत से कारीगर पत्थर और लकड़ी के काटने और तराशने वाले, और सब तरह के हुनरमन्द जो किस्म किस्म के काम में माहिर हैं तेरे पास हैं। <sup>16</sup> सोने और चाँदी और पीतल और लोहे का कुछ हिसाब नहीं है। इसलिए उठ और काम में लग जा, और खुदावन्द तेरे साथ रहे। <sup>17</sup> इसके 'अलावा दाऊद ने इस्राईल के सब सरदारों को अपने बेटे सुलेमान की मदद का हुक्म दिया

और कहा, <sup>18</sup> क्या खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हारे साथ नहीं है? और क्या उसने तुम को चारों तरफ़ चैन नहीं दिया है? क्योंकि उसने इस मुल्क के बाशिंदों को मेरे हाथ में कर दिया है, और मुल्क खुदावन्द और उसके लोगों के आगे मगलूब हुआ है। <sup>19</sup> इसलिए अब तुम अपने दिल को और अपनी जान को खुदावन्द अपने खुदा की तलाश में लगाओ, और उठो और खुदावन्द खुदा का मक़दिस बनाओ, ताकि तुम खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को और खुदा के पाक बर्तनों को उस घर में, जो खुदावन्द के नाम का बनेगा ले आओ।

## 23

???????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>1</sup> अब दाऊद बुढ़ा और उम्र — दराज़ हो गया था, तब उसने अपने बेटे सुलेमान को इस्राईल का बादशाह बनाया। <sup>2</sup> उसने इस्राईल के सब सरदारों को, काहिनों और लावियों समेत इकट्ठा किया। <sup>3</sup> तीस बरस के और उससे ज़्यादा उम्र के लावी गिने गए, और उनकी गिनती एक एक आदमी को शुमार करके अठतीस हजार थी। <sup>4</sup> इनमें से चौबीस हजार खुदावन्द के घर के काम की निगरानी पर मुक़र्रर हुए, और छः हजार सरदार और मुन्सिफ़ थे, <sup>5</sup> और चार हजार दरबान थे, और चार हजार उन साज़ों से खुदावन्द की ता'रीफ़ करते थे जिनको मैंने या'नी दाऊद ने ता'रीफ़ और बड़ाई के लिए बनाया था <sup>6</sup> और दाऊद ने उनको जैरसोन, क्रिहात और मिरारी नाम बनी लावी के फ़रीकों में तक्सीम किया।

????????

<sup>7</sup> जैरसोनियों में से यह थे: ला'दान और सिम'ई। <sup>8</sup> ला'दान के बेटे: सरदार यहीएल और जैताम और यूएल, यह तीन थे। <sup>9</sup> सिम'ई के बेटे: सलूमियत और हज़ीएल और हारान, यह तीन थे। यह ला'दान के आबाई खान्दानों के सरदार थे। <sup>10</sup> और सिम'ई के बेटे यहत, जीना और य'ऊस और बरी'आ, यह चारों सिम'ई के बेटे थे। <sup>11</sup> पहला यहत था, और ज़ीज़ा दूसरा, और य'ऊस और बरी'आ के बेटे बहुत न थे, इस वजह से वह एक ही आबाई खान्दान में गिने गए।

???????? ? ? ? ? ?

<sup>12</sup> क्रिहात के बेटे: 'अमराम, इज़हार, हबरून और 'उज़्ज़ीएल, यह चार थे। <sup>13</sup> अमराम के बेटे: हारून और मूसा थे। हारून अलग किया गया, ताकि वह और उसके बेटे हमेशा पाकतरीन चीज़ों की पाक किया करें, और हमेशा खुदावन्द के आगे खुशबू जलाएँ और उसकी खिदमत करें, और उसका नाम लेकर बरकत दें। <sup>14</sup> रहा मर्द — ए — खुदा मूसा, इसलिए उसके

बेटे लावी के कबीले में गिने गए। <sup>15</sup> मूसा के बेटे: जैरसोन और इली'एलियाज़र थे। <sup>16</sup> और जैरसोन का बेटा सबुएल सरदार था, <sup>17</sup> और इली'एलियाज़र का बेटा रहबियाह सरदार था; और इली'एलियाज़र के और बेटे न थे, लेकिन रहबियाह के बहुत से बेटे थे। <sup>18</sup> इज़हार का बेटा सलूमीत सरदार था। <sup>19</sup> हबरून के बेटों में पहला यरयाह, अमरियाह दूसरा, यहज़ीएल तीसरा, और यकीमि'आम चौथा था। <sup>20</sup> उज़्ज़ीएल के बेटों में अब्वल मीकाह सरदार और यस्सियाह दूसरा था। <sup>21</sup> मिरारी के बेटे: महली और मूशी। महली के बेटे: इली'एलियाज़र और क्रीस थे। <sup>22</sup> और इली'एलियाज़र मर गया और उसके कोई बेटा न था सिर्फ़ बेटियाँ थीं, और उनके भाई क्रीस के बेटों ने उनसे ब्याह किया। <sup>23</sup> मूशी के बेटे: महली और 'ऐदर और यरीमोत, ये तीन थे। <sup>24</sup> लावी के बेटे यही थे, जो अपने अपने आबाई खान्दान के मुताबिक़ थे। उनके आबाई खान्दानों के सरदार जैसा वह नाम — ब — नाम एक एक करके गिने गए यही हैं। वह बीस बरस और उससे ऊपर की उम्र से खुदावन्द के घर की खिदमत का काम करते थे। <sup>25</sup> क्योंकि दाऊद ने कहा कि खुदावन्द इस्राईल के खुदा ने अपने लोगों को आराम दिया है, और वह हमेशा तक येरूशलेम में सुकूनत करेगा। <sup>26</sup> और लावियों को भी घर और उसकी खिदमत के सब बर्तनों को फिर कभी उठाना न पड़ेगा। <sup>27</sup> क्योंकि दाऊद की पिछली बातों के मुताबिक़ बनी लावी जो बीस बरस और उससे ज़्यादा उम्र के थे, गिने गए। <sup>28</sup> क्योंकि उनका काम यह था कि खुदावन्द के घर की खिदमत के वक़्त, सहनों और कोठरियों में और सब मुक़दस चीज़ों के पाक करने में, या'नी खुदा के घर की खिदमत के काम में, बनी हारून की मदद करें; <sup>29</sup> और नज़र की रोटी का, और मैदे की नज़र की कुर्बानी का ख्वाह वह बेख़मीरी रोटियों या तवे पर की पकी हुई चीज़ों या तली हुई चीज़ों की हो, और हर तरह के तौल और नाप का काम करें। <sup>30</sup> और हर सुबह और शाम को खड़े होकर खुदावन्द की शुक्रगुज़ारी और बड़ाई करें, <sup>31</sup> और सब्तों और नये चाँदों और मुक़र्ररा 'ईदों में, हमेशा खुदावन्द के सामने पूरी ता'दाद में सब सोख़्तनी कुर्बानियाँ उस क़ाइदे के मुताबिक़ जो उनके बारे में है पेश करें। <sup>32</sup> और खुदावन्द के घर की खिदमत को अन्जाम देने के लिए खेमा — ए — इजितमा'अ की हिफ़ाज़त और मक़दिस की निगरानी और अपने भाई बनी हारून की इता'अत करें।

## 24

???????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?



1 और बनी हारून के फ़रीक़ यह थे हारून के बेटे नदब, अबीहू और इली'एलियाज़र और ऐतामर थे। 2 नदब और अबीहू अपने बाप से पहले मर गए और उनके औलाद न थी, इसलिए इली'एलियाज़र और ऐतामर ने कहानत का काम किया। 3 दाऊद ने इली'एलियाज़र के बेटों में से सदोक़, और ऐतामर के बेटों में से अख़ीमलिक को उनकी ख़िदमत की तरतीब के मुताबिक़ तक्सीम किया। 4 इतमर के बेटों से ज़्यादा इली'एलियाज़र के बेटों में रईस मिले, और इस तरह से वह तक्सीम किए गए के इली'एलियाज़र के बेटों में आबाई ख़ान्दानों के सोलह सरदार थे; और ऐतामर के बेटों में से आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक़ आठ। 5 इस तरह पर्ची डाल कर और एक साथ खल्लत मल्लत होकर वह तक्सीम हुए, क्योंकि मक़दिस के सरदार और खुदा के सरदार बनी इली'एलियाज़र और बनी ऐतामर दोनों में से थे। 6 और नतनीएल मुन्शी के बेटे समायाह ने जो लावियों में से था, उनके नामों को बादशाह और अमीरों और सदोक़ काहिन और अख़ीमलिक बिन अबीयातर और काहिनों और लावियों के आबाई ख़ान्दानों के सरदारों के सामने लिखा। जब इली'एलियाज़र का एक आबाई ख़ान्दान लिया गया, तो ऐतामर का भी एक आबाई ख़ान्दान लिया गया। 7 और पहली चिट्ठी यहूयरीब की निकली, दूसरी यद'अयाह की, 8 तीसरी हारिम की, चौथी श'ऊरीम, 9 पाँचवीं मलकियाह की, छठी मियामीन की 10 सातवीं हक्कूज़ की, आठवीं अबियाह की, 11 नवीं यशू'आ की, दसवीं सिकानियाह की, 12 ग्यारहवीं इलियासब की, बारहवीं यक्कीम की, 13 तेरहवीं खुफ़ाह की, चौदहवीं यसबाब की, 14 पन्द्रहवीं बिल्ज़ाह की, सोलहवीं इम्मेर की, 15 सत्रहवीं हज़ीर की, अठारहवीं फ़ज़ीज़ की, 16 उन्नीसवीं फ़तहियाह की, बीसवीं यहज़िकेल की, 17 इक्कीसवीं यकिन की, बाइसवीं जम्मूल की, 18 तेइसवीं दिलायाह की, चौबीसवीं माज़ियाह की। 19 यह उनकी ख़िदमत की तरतीब थी, ताकि वह खुदावन्द के घर में उस क़ानून के मुताबिक़ आएँ जो उनको उनके बाप हारून की ज़रिए' वैसा ही मिला, जैसा खुदावन्द इस्राईल के खुदा ने उसे हुक्म किया था। 20 बाक़ी बनी लावी में से: 'अमराम के बेटों में से सूबाएल, सूबाएल के बेटों में से यहदियाह; 21 रहा रहबियाह, सो रहबियाह के बेटों में से पहला यस्सियाह। 22 इज़हारियों में से सलूमोत, बनी सलूमोत में से यहत। 23 बनी हबरून में से: यरियाह पहला, अमरियाह दूसरा, यहज़िएल तीसरा, यक़मि'आम चौथा। 24 बनी उज़्ज़ीएल में से: मीकाह; बनी मीकाह में से: समीर।

25 मीकाह का भाई यस्सियाह, बनी यस्सियाह में से ज़करियाह। 26 मिरारी के बेटे: महली और मूशी। बनी याज़ियाह में से बिनू 27 रहे बनी मिरारी, सो याज़ियाह से बिनू और सूहम और ज़क्कूर और 'इब्री। 28 महली से: इली'एलियाज़र, जिसके कोई बेटा न था। 29 क़ीस से, क़ीस का बेटा: यरहमिएल। 30 और मूशी के बेटे: महली और 'ऐदर और यरीमीत। लावियों की औलाद अपने आबाई ख़ान्दानों के मुताबिक़ यही थी। 31 इन्होंने भी अपने भाई बनी हारून की तरह, दाऊद बादशाह और सदक़ और अख़ीमलिक और काहिनों और लावियों के आबाई ख़ान्दानों के सरदारों के सामने अपना अपनी पर्ची डाला, या'नी सरदार के आबाई ख़ान्दानों का जो हक़ था वही उसके छोटे भाई के ख़ान्दानों का था।

## 25

?????????? ?? ???????????????????

1 फिर दाऊद और लश्कर के सरदारों ने आसफ़ और हैमान और यदूतून के बेटों में से कुछ को ख़िदमत के लिए अलग किया, ताकि वह बरबत और सितार और झाँझ से नबुव्वत करें; और जो उस काम को करते थे उनका शुमार उनकी ख़िदमत के मुताबिक़ यह था: 2 आसफ़ के बेटों में से ज़क्कूर, यूसुफ़, नतनियाह और असरीलाह; आसफ़ के यह बेटे आसफ़ के मातहत थे, जो बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ नबुव्वत करता था। 3 यदूतून से बनी यदूतून, सो जिदलियाह, ज़री और यसा'याह, हसबियाह और मतितियाह, यह छः अपने बाप यदूतून के मातहत थे जो बरबत लिए रहता और खुदावन्द की शुक्रगुज़ारी और हम्द करता हुआ नबुव्वत करता था। 4 रहा हैमान, वह हैमान के बेटे: बुक्क़याह, मत्तनियाह, 'उज़्ज़ीएल, सबूएल यरीमोत, हनानियाह, हनानी, इलियाता, जिद्दाल्ती, रूमन्ती'अज़र, यसबिकाशा, मल्लूती, हौतीर, और महाज़ियोत; 5 यह सब हैमान के बेटे थे, जो खुदा की बातों में सींग बुलन्द करने के लिए बादशाह का ग़ैबबीन था; और खुदा ने हैमान को चौदह बेटे और तीन बेटियाँ दी थीं। 6 यह सब खुदावन्द के घर में हम्द करने के लिए अपने बाप के मातहत थे, और झाँझ और सितार और बरबत से खुदा के घर की ख़िदमत करते थे। आसफ़ और यदूतून और हैमान बादशाह के हुक्म के ताबे' थे 7 उनके भाइयों समेत जो खुदावन्द की ता'रीफ़ और बड़ाई की ता'लीम पा चुके थे, या'नी वह सब जो माहिर थे, उनका शुमार दो सौ अठासी था। 8 और उन्होंने क्या छोटे क्या बड़े क्या उस्ताद क्या शागिर्द, एक ही तरीक़े से अपनी अपनी ख़िदमत के लिए पर्ची डाला। 9 पहली चिट्ठी

आसफ़ की यूसुफ़ को मिली, दूसरी जिदलियाह को, और उसके भाई और बेटे उस समेत बारह थे। 10 तीसरी ज़क्कूर को, और उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 11 चौथी यिज़री को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 12 पाँचवीं नतनियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 13 छठी बुक्कयाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 14 सातवीं यसरीलाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 15 आठवीं यसा'याह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 16 नवीं मत्तनियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 17 दसवीं सिमई को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 18 ग्यारहवीं 'अज़रएल को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 19 बारहवीं हसबियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 20 तेरहवीं सबूएल को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 21 चौदहवीं मत्तितियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 22 पंद्रहवीं यरीमोत को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 23 सोलहवीं हनानियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 24 सत्रहवीं यसबिकाशा को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 25 अठारहवीं हनानी को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 26 उन्नीसवीं मल्लूती को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 27 बीसवीं इलियाता को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 28 इक्कीसवीं हौतीर को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 29 बाइसवीं जिद्दाल्ती को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 30 तेइसवीं महाज़ियोत को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 31 चौबीसवीं रूमन्ती 'एलियाज़र को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे।

## 26

?????? ?? ???? ?????????????????

1 दरबानों के फ़रीक़ यह थे: कुरहियों में मसलमियाह बिन कूरे, जो बनी आसफ़ में से था; 2 और मसलमियाह के यहाँ बेटे थे: ज़करियाह पहलौठा, यदी'एल दूसरा, जबदियाह तीसरा, यतनीएल चौथा, 3 ऐलाम पाँचवाँ, यहूहानान छटा, इलीहू'ऐनी सातवाँ था। 4 और 'ओबेदअदोम के यहाँ बेटे थे: समायाह पहलौठा, यहूज़बा'द दूसरा, यूआख तीसरा, और सकार चौथा, और नतनीएल पाँचवाँ, 5 'अम्मीएल छटा, इश्कार सातवाँ, फ़'उलती आठवाँ; क्यूँकि खुदा ने उसे बरकत बरख़्शी थी। 6 उसके बेटे समायाह के यहाँ भी बेटे पैदा हुए, जो अपने आबाई खानदान पर सरदारी करते थे क्यूँकि वह ताक़तवर सर्मा थे। 7 समायाह के बेटे: उतनी और

रफ़ाएल और 'ओबेद और इलज़बा'द, जिनके भाई इलीहू और समाकियाह सूर्मा थे। 8 यह सब 'ओबेदअदोम की औलाद में से थे। वह और उनके बेटे और उनके भाई खिदमत के लिए ताक़त के 'ऐतबार से क़ाबिल आदमी थे, यूँ 'ओबेदअदोमी बासठ थे। 9 मसलमियाह के बेटे और भाई अठारह सूर्मा थे। 10 और बनी मिरारी में से हूसा के हाँ बेटे थे: सिमरी सरदार था वह पहलौटा तो न था, लेकिन उसके बाप ने उसे सरदार बना दिया था, 11 दूसरा खिलक्रियाह, तीसरा तबलयाह, चौथा ज़करियाह; हूसा के सब बेटे और भाई तेरह थे। 12 इन्ही में से या'नी सरदारों में से दरबानों के फ़रीक़ थे, जिनका ज़िम्मा अपने भाइयों की तरह खुदावन्द के घर में खिदमत करने का था। 13 और उन्होंने क्या छोटे क्या बड़े, अपने अपने आबाई ख़ान्दान के मुताबिक़ हर एक फाटक के लिए पर्ची डाला। 14 पूरब की तरफ़ का पर्ची सलमियाह के नाम निकला। फिर उसके बेटे ज़करियाह के लिए भी, जो 'अक़्लमन्द सलाहकार था, पर्चा डाला गया और उसका पर्चा शिमाल की तरफ़ का निकला। 15 'ओबेदअदोम के लिए जुनूब की तरफ़ का था, और उसके बेटों के लिए ग़ल्लाखाना का। 16 सुफ़्फ़ीम और हूसा के लिए पश्चिम की तरफ़ सलकत के फाटक के नज़दीक का, जहाँ से ऊँची सड़क ऊपर जाती है ऐसा कि आमने सामने होकर पहरा दें। 17 पूरब की तरफ़ छः लावी थे, उत्तर की तरफ़ हर रोज़ चार, दक्खिन की तरफ़ हर रोज़ चार, और तोशाखाने के पास दो दो। 18 पश्चिम की तरफ़ परबार के लिए चार तो ऊँची सड़क पर और दो परबार के लिए। 19 बनी कोरही और बनी मिरारी में से दरबानों के फ़रीक़ यही थे। 20 लावियों में से अखियाह खुदा के घर के खज़ानों और नज़र की चीज़ों के खज़ानों पर मुक़र्रर था। 21 बनी ला'दान: इसलिए ला'दान के ख़ान्दान के ज़ैरसोनियों के बेटे, जो उन आबाई ख़ान्दानों के सरदार थे, जो ज़ैरसोनी ला'दान से त'अल्लुक रखते थे यह थे: यहीएली। 22 और यहीएली के बेटे: जैताम और उसका भाई यूएल, खुदावन्द के घर के खज़ानों पर थे। 23 अमरामियों, इज़हारियों, हबरूनियों और उज़्ज़ीएलियों में से: 24 सबुएल बिन ज़ैरसोम बिन मूसा, बैत — उल — माल पर मुख्तार था। 25 और उसके भाई इली'एलियाज़र की तरफ़ से: उसका बेटा रहबियाह, रहबिया का बेटा यसा'याह, यसा'याह का बेटा यूराम, यूराम का बेटा ज़िकरी, ज़िकरी का बेटा सल्लूमीत। 26 यह सल्लूमीत और उसके भाई नज़र की हुई चीज़ों के सब खज़ानों पर मुक़र्रर थे, जिनको दाऊद बादशाह और आबाई ख़ान्दानों के सरदारों और हज़ारों और सैकड़ों के सरदारों और लश्कर के सरदारों ने नज़र किया था।

27 लड़ाइयों की लूट में से उन्होंने खुदावन्द के घर की मरम्मत के लिए कुछ नज़र किया था। 28 समुएल गैबबीन और साऊल बिन क्रीस और अबनेर बिन नेर और योआब बिन ज़रोयाह की सारी नज़र, गरज़ जो कुछ किसी ने नज़र किया था वह सब सल्लूमीत और उसके भाइयों के हाथ में सुपुर्द था। 29 इज़हारियों में से कनानियाह और उसके बेटे, इस्राईलियों पर बाहर के काम के लिए हाकिम और काज़ी थे। 30 हबरूनियों में से हसबियाह और उसके भाई, एक हजार सात सौ सूर्मा, मगरिब की तरफ़ यरदन पार के इस्राईलियों की निगरानी की खातिर खुदावन्द के सब काम और बादशाह की खिदमत के लिए तैनात थे। 31 हबरूनियों में यरयाह, हबरूनियों का उनके आबाई खान्दानों के नस्बों के मुताबिक़ सरदार था। दाऊद की हुकूमत के चालीसवें बरस में वह ढूँड निकाले गए, और ज़िल'आद के या'ज़ेर में उनके बीच ताक़तवर सूर्मा मिले। 32 उसके भाई, दो हजार सात सौ सूर्मा और आबाई खान्दानों के सरदार थे, जिनकी दाऊद बादशाह ने रूबीनियों और जहियों और मनस्सी के आधे क़बीले पर खुदा के हर एक काम और शाही मु'आमिलात के लिए सरदार बनाया।

## 27

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 और बनी इस्राईल अपने शुमार के मुवाफ़िक़ या'नी आबाई खान्दानों के रईस और हज़ारों और सैकड़ों के सरदार और उनके मन्सबदार जो उन फ़रीक़ों के हर हाल में बादशाह की खिदमत करते थे, जो साल के सब महीनों में माह — ब — माह आते और रुख़्सत होते थे, हर फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे। 2 पहले महीने के पहले फ़रीक़ पर यसुबि'आम बिन ज़बदिएल था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे। 3 वह बनी फ़ारस में से था और पहले महीने के लश्कर के सब सरदारों का रईस था। 4 दूसरे महीने के फ़रीक़ पर दूदे अखूही था, और उसके फ़रीक़ में मिकलोत भी सरदार था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे। 5 तीसरे महीने के लश्कर का खास तीसरा सरदार यहूयदा' काहिन का बेटा बिनायाह था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे। 6 यह वह बिनायाह है जो तीसों में ज़बरदस्त और उन तीसों के ऊपर था; उसी के फ़रीक़ में उसका बेटा 'अम्मीज़बा'द भी शामिल था। 7 चौथे महीने के लिए योआब का भाई 'असाहील था, और उसके पीछे उसका बेटा ज़बदियाह था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे। 8 पाँचवें महीने के लिए पाँचवाँ सरदार समहूत इज़राखी था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे। 9 छठे महीने के लिए छटा

सरदार तकू'अ 'इक्कीस का बेटा ईरा था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे। 10 सातवें महीने के लिए सातवाँ सरदार बनी इफ़राईम में से फ़लूनीखलस था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे। 11 आठवें महीने के लिए आठवाँ सरदार ज़ारहियों में से हूसाती सिब्वकी था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे। 12 नवें महीने के लिए नवाँ सरदार बिनयमीनियों में से 'अन्तोती अबी'अज़र था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे। 13 दसवें महीने के लिए दसवाँ सरदार ज़ारहियों में से नतूफ़ाती महीरी था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे। 14 ग्यारहवें महीने के लिए ग्यारहवाँ सरदार बनी इफ़राईम में से फ़र'आतीनी बिनायाह था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे। 15 बारहवें महीने के लिए बारहवाँ सरदार गुतनीएलियों में से नतूफ़ाती खल्दी था, और उसके फ़रीक़ में चौबीस हज़ार थे। 16 इस्राईल के क़बीलों पर रूबीनियों का सरदार इली'एलियाज़र बिन ज़िकरी था, शमौनियों का सफ़तियाह बिन मा'का; 17 लावियों का हसबियाह बिन क्रमूएल, हारून के घराने का सदोक़; 18 यहूदाह का इलीहू, जो दाऊद के भाइयों में से था; इश्कार का 'उमरी बिन मीकाएल; 19 ज़बूलून का इसमाइयाह बिन 'अबदियाह, नफ़ताली का यरीमोत बिन 'अज़रिएल; 20 बनी इफ़राईम का हूसी'अ बिन 'अज़ाज़ियाह, मनस्सी के आधे क़बीले का यूएल बिन फ़िदायाह; 21 ज़िल'आद में मनस्सी के आधे क़बीले का 'ईदू बिन ज़करियाह, बिनयमीन का या'सीएल बिन अबनेर; 22 दान का 'अज़रिएल बिन यरोहाम। यह इस्राईल के क़बीलों के सरदार थे। 23 लेकिन दाऊद ने उनका शुमार नहीं किया था जो बीस बरस या कम उम्र के थे, क्यूँकि खुदावन्द ने कहा था कि मैं इस्राईल को आसमान के तारों की तरह बढ़ाऊँगा। 24 ज़रोयाह के बेटे योआब ने गिनना तो शुरू किया, लेकिन ख़त्म नहीं किया था कि इतने में इस्राईल पर क़हर नाज़िल हुआ, और न वह ता'दाद दाऊद बादशाह की तवारीखी ता'दादों में दर्ज हुई। 25 शाही ख़ज़ानों पर 'अज़मावत बिन 'अदिएल मुक़रर था, और खेतों और शहरों और गाँव और क़िलों के ख़ज़ानों पर यूनतन बिन उज़्जियाह था; 26 और काशतकारी के लिए खेतों में काम करनेवालों पर 'अज़री बिन कलूब था; 27 और अंगूरिस्तानों पर सिम'ई रामाती था, और मय के ज़ख़ीरों के लिए अंगूरिस्तानों की पैदावार पर ज़बदी शिफ़मी था; 28 और ज़ैतून के बाग़ों और गूलर के दरख़्तों पर जो नशेब के मैदानों में थे, बा'ल हनान जदरी था; और यूआस तेल के गोदामों पर; 29 और गाय — बैल के गल्लों पर जो

शारून में चरते थे, सितरी शारूनी था; और साफ़त बिन 'अदली गाय — बैल के उन गल्लों पर था जो वादियों में थे; <sup>30</sup> और ऊँटों पर इस्माईली ओबिल था, और गधों पर यहूदियाह मरूनोती था; <sup>31</sup> और भेड़ — बकरी के रेवड़ों पर याज़ीज़ हाज़िर था। यह सब दाऊद बादशाह के माल पर मुकर्रर थे। <sup>32</sup> दाऊद का चचा योनतन सलाह कार और अक्लमंद और मुन्शी था, और यहीएल बिन हकमूनी शहज़ादों के साथ रहता था। <sup>33</sup> अखीतुफ़ल बादशाह का सलाह कार था, और हूसीअरकी बादशाह का दोस्त था। <sup>34</sup> और अखीतुफ़ल से नीचे यहूयदा' बिन बिनायाह और अबीयातर थे, और शाही फ़ौज का सिपहसालार योआब था।

## 28

28:1-28:28

<sup>1</sup> दाऊद ने इस्राईल के सब हाकिमों को जो क़बीलों के सरदार थे, और उन फ़रीकों के सरदारों को जो बारी बारी बादशाह की खिदमत करते थे, और हज़ारों के सरदारों और सैकड़ों के सरदारों, और बादशाह के और उसके बेटों के सब माल और मवेशी के सरदारों, और ख़्वाज़ा सराओं और बहादुरों बल्कि सब ताक़तवर सूमाओं को येरूशलेम में इकट्ठा किया। <sup>2</sup> तब दाऊद बादशाह अपने पाँव पर उठ खड़ा हुआ, और कहने लगा, ऐ मेरे भाइयों और मेरे लोगों, मेरी सुनो! मेरे दिल में तो था कि खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के लिए आरामगाह, और अपने खुदा के लिए पाँव की कुर्सी बनाऊँ, और मैंने उसके बनाने की तैयारी भी की; <sup>3</sup> लेकिन खुदा ने मुझ से कहा कि तू मेरे नाम के लिए घर नहीं बनाने पाएगा, क्योंकि तू जंगी मर्द है और तू ने खूनबहाया है। <sup>4</sup> तो भी खुदावन्द इस्राईल के खुदा ने मुझे मेरे बाप के सारे घराने में से चुन लिया कि मैं हमेशा इस्राईल का बादशाह रहूँ, क्योंकि उसने यहूदाह को रहनुमा होने के लिए मुन्तख़ब किया; और यहूदाह के घराने में से मेरे बाप के घराने को चुना है, और मेरे बाप के बेटों में से मुझे पसंद किया ताकि मुझे सारे इस्राईल का बादशाह बनाए। <sup>5</sup> और मेरे सब बेटों में से क्योंकि खुदावन्द ने मुझे बहुत से बेटे दिए हैं उसने मेरे बेटे सुलेमान को पसंद किया, ताकि वह इस्राईल पर खुदावन्द की हुकूमत के तख़्त पर बैठे। <sup>6</sup> उसने मुझ से कहा, 'तेरा बेटा सुलेमान मेरे घर और मेरी बारगाहों को बनाएगा, क्योंकि मैंने उसे चुन लिया है कि वह मेरा बेटा हो और मैं उसका बाप हूँगा। <sup>7</sup> और अगर वह मेरे हुक्मों और फ़रमानों पर 'अमल करने में साबित क़दम रहे जैसा आज के दिन है, तो मैं उसकी बादशाही हमेशा तक क़ाईम रखूँगा। <sup>8</sup> फिर अब सारे

इस्राईल या'नी खुदावन्द की जमा'अत के सामने और हमारे खुदा के सामने, तुम खुदावन्द अपने खुदा के सब हुक्मों को मानो और उनके तालिब हो, ताकि तुम इस अच्छे मुल्क के वारिस हो; और उसे अपने बाद अपनी औलाद के लिए हमेशा के लिए मीरास छोड़ जाओ। <sup>9</sup> और तू ऐ मेरे बेटे सुलेमान, अपने बाप के खुदा को पहचान और पूरे दिल और रूह की मुस्त'इदी से उसकी 'इबा'दत कर; क्योंकि खुदावन्द सब दिलों को जाँचता है, और जो कुछ ख़्याल में आता है उसे पहचानता है। अगर तू उसे ढूँढ़े तो वह तुझ को मिल जाएगा, और अगर तू उसे छोड़े तो वह हमेशा के लिए तुझे रद्द कर देगा। <sup>10</sup> इसलिए होशियार हो, क्योंकि खुदावन्द ने तुझ को मक़दिस के लिए एक घर बनाने को चुना है, इसलिए हिम्मत बाँध कर काम कर। <sup>11</sup> तब दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को हैकल के उसारे और उसके मकानों और खज़ानों और बालाख़ानों और अन्दर की कोठरियों और कफ़ारागाह की जगह का नमूना, <sup>12</sup> और उन सब चीज़ों, या'नी खुदावन्द के घर के सहनों और आस पास की कोठरियों और खुदा के घर के खज़ानों और नज़र की हुई चीज़ों के खज़ानों का नमूना भी दिया जो, उसको रूह' से मिला था; <sup>13</sup> और काहिनों और लावियों के फ़रीकों और खुदावन्द के घर की इबादत के सब काम और खुदावन्द के घर की इबादत के सब बर्तन के लिए, <sup>14</sup> या'नी सोने के बर्तनों के वास्ते सोना तोल कर हर तरह की खिदमत के सब बर्तनों के लिए, और चाँदी के सब बर्तनों के वास्ते चाँदी तौल कर हर तरह की खिदमत के सब बर्तनों के लिए, <sup>15</sup> और सोने के शमा'दानों और उसके चिराग़ों के लिए एक एक शमा'दान, और उसके चराग़ों का सोना तोल कर; और चाँदी के शमा'दानों के लिए एक एक शमा'दान, और उसके चराग़ों के लिए हर शमा'दान के इस्ते'माल के मुताबिक़ चाँदी तौल कर; <sup>16</sup> और नज़र की रोटी की मेज़ों के वास्ते एक एक मेज़ के लिए सोना तोल कर, और चाँदी की मेज़ों के लिए चाँदी; <sup>17</sup> और काँटों और कटोरों और प्यालों के लिए ख़ालिस सोना दिया, और सुनहले प्यालों के लिए एक एक प्याले के लिए तौल कर, और चाँदी के प्यालों के वास्ते एक एक प्याले के लिए तौल कर; <sup>18</sup> और खुशबू की कुर्बानगाह के लिए चोखा सोना तौल कर, और रथ के नमूने या'नी उन क़रबियों के लिए जो पर फैलाए खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को ढाँके हुए थे, सोना दिया। <sup>19</sup> यह सब या'नी इस नमूने के सब काम खुदावन्द के हाथ की तहरीर से मुझे समझाए गए। <sup>20</sup> दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान से कहा, हिम्मत बाँध और हौसले से काम कर, ख़ौफ़ न कर,



परेशान न हो, क्योंकि खुदावन्द खुदा जो मेरा खुदा है तेरे साथ है। वह तुझ को न छोड़ेगा और न छोड़ा करेगा, जब तक खुदावन्द के घर की खिदमत का सारा काम तमाम न हो जाए। <sup>21</sup> और देख, काहिनों और लावियों के फ़रीक़ खुदा के घर की सारी खिदमत के लिए हाज़िर हैं, और हर क्रिस्म की खिदमत के लिए सब तरह के काम में हर शख्स जो माहिर है बखुशी तेरे साथ हो जाएगा; और लश्कर के सरदार और सब लोग भी तेरे हुक्म में होंगे।

## 29

???????????? ?? ?? ?? ?????? ?? ?????  
??????

<sup>1</sup> और दाऊद बादशाह ने सारी जमा'अत से कहा कि खुदा ने सिर्फ़ मेरे बेटे सुलेमान को चुना है, और वह अभी लड़का और नातज़ुरबेकार है; और काम बड़ा है, क्योंकि वह महल इंसान के लिए नहीं बल्कि खुदावन्द खुदा के लिए है। <sup>2</sup> और मैंने तो अपने मक़दूर भर अपने खुदा की हैकल के लिए सोने की चीज़ों के लिए सोना, और चाँदी की चीज़ों के लिए चाँदी, और पीतल की चीज़ों के लिए पीतल, लोहे की चीज़ों के लिए लोहा, और लकड़ी की चीज़ों के लिए लकड़ी, और 'अक्रीक़ और जड़ाऊ पत्थर और पच्ची के काम के लिए रंग बिरंग के पत्थर, और हर क्रिस्म के बेशक़ीमत जवाहिर और बहुत सा संग — ए — मरमर तैयार किया है। <sup>3</sup> और चूँकि मुझे अपने खुदा के घर की लौ लगी है और मेरे पास सोने और चाँदी का मेरा अपना खज़ाना है, इसलिए मैं उसकी भी उन सब चीज़ों के 'अलावा जो मैंने उस मुक़द्दस हैकल के लिए तैयार की हैं, अपने खुदा के घर के लिए देता हूँ। <sup>4</sup> या'नी तीन हज़ार किन्तार सोना जो ओफ़ीर सोना है, और सात हज़ार किन्तार खालिस चाँदी 'इमारतों की दीवारों पर मढ़ने के लिए; <sup>5</sup> और कारीगरों के हाथ के हर क्रिस्म के काम के लिए सोने की चीज़ों के लिए सोना, और चाँदी की चीज़ों के लिए चाँदी है। तो कौन तैयार है कि अपनी खुशी से अपने आपको आज खुदावन्द के लिए मख्सूस' करे? <sup>6</sup> तब आबाई खान्दानों के सरदारों और इस्राईल के क़बीलों के सरदारों और हज़ारों और सैंकड़ों के सरदारों और शाही काम के नाज़िम्ओं ने अपनी खुशी से तैयार होकर, <sup>7</sup> खुदा के घर के काम के लिए, सोना पाँच हज़ार किन्तार और दस हज़ार दिरहम, और चाँदी दस हज़ार किन्तार, और पीतल अठारह हज़ार किन्तार, और लोहा एक लाख किन्तार दिया। <sup>8</sup> और जिनके पास जवाहर थे, उन्होंने उनकी जैरसोनी यही एल के हाथ में खुदावन्द के घर के खज़ाने के लिए दे डाला। <sup>9</sup> तब लोग शादमान हुए, इसलिए कि उन्होंने अपनी खुशी से दिया क्योंकि

उन्होंने पूरे दिल से रज़ामन्दी से खुदावन्द के लिए दिया था; और दाऊद बादशाह भी निहायत शादमान हुआ। <sup>10</sup> फिर दाऊद ने सारी जमा'अत के आगे खुदावन्द का शुक्र किया, और दाऊद कहने लगा, ऐ खुदावन्द, हमारे बाप इस्राईल के खुदा! तू हमेशा से हमेशा तक मुबारक हो। <sup>11</sup> ऐ खुदावन्द, 'अज़मत और कुदरत और जलाल और ग़लबा और हशमत तेरे ही लिए हैं, क्योंकि सब कुछ जो आसमान और ज़मीन में है तेरा है। ऐ खुदावन्द, बादशाही तेरी है, और तू ही बहैसियत — ए — सरदार सभी से मुस्ताज़ है। <sup>12</sup> और दौलत और 'इज़ज़त तेरी तरफ़ से आती है, और तू सभी पर हुकूमत करता है, और तेरे हाथ में कुदरत और तवानाई हैं, और सरफ़राज़ करना और सभी को ज़ोर बख़्शना तेरे हाथ में है। <sup>13</sup> और अब ऐ हमारे खुदा, हम तेरा शुक्र और तेरे जलाली नाम की ता'रीफ़ करते हैं। <sup>14</sup> लेकिन मैं कौन और मेरे लोगों की हक़ीक़त क्या कि हम इस तरह से खुशी खुशी नज़राना देने के क़ाबिल हों? क्योंकि सब चीज़ें तेरी तरफ़ से मिलती हैं, और तेरी ही चीज़ों में से हम ने तुझे दिया है। <sup>15</sup> क्योंकि हम तेरे आगे परदेसी और मुसाफ़िर हैं जैसे हमारे सब बाप — दादा थे। हमारे दिन रू — ए — ज़मीन पर साये की तरह हैं, और क़याम नसीब नहीं। <sup>16</sup> ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, यह सारा ज़ख़ीरा जो हम ने तैयार किया है कि तेरे पाक नाम के लिए एक घर बनाएँ, तेरे ही हाथ से मिला है और सब तेरा ही है। <sup>17</sup> ऐ मेरे खुदा, मैं यह भी जानता हूँ कि तू दिल को जाँचता है, और रास्ती में तेरी खुशनूदी है। मैंने तो अपने दिल की रास्ती से यह सब कुछ रज़ामन्दी से दिया, और मुझे तेरे लोगों को जो यहाँ हाज़िर हैं, तेरे सामने खुशी खुशी देते देख कर खुशी हासिल हुई। <sup>18</sup> ऐ खुदावन्द, हमारे बाप — दादा अब्रहाम, इज़्हाक और इस्राईल के खुदा, अपने लोगों के दिल के ख़्याल और तसव्वुर में यह बात सदा जमाए रख, और उनके दिल को अपनी जानिब मुसत'ईद कर। <sup>19</sup> और मेरे बेटे सुलेमान को ऐसा कामिल दिल 'अता कर कि वह तेरे हुक्मों और शहादतों और क़ानून को माने और इन सब बातों पर 'अमल करे, और उस हैकल को बनाए जिसके लिए मैंने तैयारी की है। <sup>20</sup> फिर दाऊद ने सारी जमा'अत से कहा, अब अपने खुदावन्द खुदा को मुबारक कहो। तब सारी जमा'अत ने खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा को मुबारक कहा, और सिर झुकाकर उन्होंने खुदावन्द और बादशाह के आगे सिज्दा किया। <sup>21</sup> दूसरे दिन खुदावन्द के लिए ज़बीहों को ज़बह किया और खुदावन्द के लिए सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश कीं, या'नी एक हज़ार बैल और एक हज़ार

मेंढे और एक हजार बर्रे म'ए उनके तपावनों के चढ़ाए, और बकसरत कुर्बानियाँ कीं जो सारे इस्राईल के लिए थीं। <sup>22</sup> और उन्होंने उस दिन निहायत खुशी के साथ खुदावन्द के आगे खाया — पिया और उन्होंने दूसरी बार दाऊद के बेटे सुलेमान को बादशाह बनाकर, उसको खुदावन्द की तरफ से पेशवा होने और सदोक को काहिन होने के लिए मसह किया। <sup>23</sup> तब सुलेमान खुदावन्द के तख्त पर अपने बाप दाऊद की जगह बादशाह होकर बैठा और कामयाब हुआ, और सारा इस्राईल उसका फरमाँवरदार हुआ। <sup>24</sup> और सब हाकिम और बहादुर और दाऊद बादशाह के सब बेटे भी सुलेमान बादशाह के फरमाँवरदार हुए। <sup>25</sup> और खुदावन्द ने सारे इस्राईल की नज़र में सुलेमान को निहायत सरफ़राज़ किया, और उसे ऐसा शाहाना दबदबा 'इनायत किया जो उससे पहले इस्राईल में किसी बादशाह को नसीब न हुआ था। <sup>26</sup> दाऊद बिन यस्सी ने सारे इस्राईल पर हुकूमत की; <sup>27</sup> और वह 'अर्सा जिसमें उसने इस्राईल पर हुकूमत की चालीस बरस का था। उसने हबरून में सात बरस और येरूशलेम में तैतीस बरस हुकूमत की। <sup>28</sup> और उसने निहायत बुढ़ापे में खूब उम्र रसीदा और दौलत — ओ — इज्जत से आसूदा होकर वफ़ात पाई, और उसका बेटा सुलेमान उसकी जगह बादशाह हुआ। <sup>29</sup> दाऊद बादशाह के काम शुरू' सर तक, आखिर सब के सब समुएल नबी की तवारीख में और नातन नबी की तवारीख में और जाद नबी की तवारीख में, <sup>30</sup> या'नी उसकी सारी हुकूमत और ज़ोर और जो ज़माने उस पर और इस्राईल पर और ज़मीन की सब ममलुकतों पर गुज़रे, सब उनमें लिखे हैं।

## 2 तवारीख

?????????? ?? ?????

यहूदी रियायत एज्रा कातिब को मुसन्निफ़ बतौर मंसूब करती है — 2 तवारीख सुलेमान की हुकूमत तकसीम हो चुकी थी — सुलेमान की मौत के बाद हुकूमत तकसीम हो चुकी थी — 2 तवारीख की किताब 1 तवारीख के साथ सुलेमान बादशाह की हुकूमत से लेकर बाबुल की गुलामी तक इब्रिं लोगों की तारीख को जारी रखती है।

????? ????? ?? ??????? ?? ???

इसकी तसनीफ़ की तारीख़ तकरीबन 450 - 425 क़बल मसीह है।

2 तवारीख की किताब इस बात के लिए मशहूर है की इस के लिखे जाने की तारीख़ जानना मुश्किल है हलाकि यह साफ़ है कि यह बनी इस्राईल की बाबुल की गुलामी से वापसी पर ही लिखी गई है।

????? ?????????? ?????

खदीम यहूदी लोग और बाद में कलाम के तमाम कारिर्न।

??? ???????

2 तवारीख अक्सर वही मालूमात पेश करता है जो 2 समुएल और 2 सलातीन में पाया जाता है — 2 तवारीख में वहीं बातें हैं जो उन दिनों काहिन से तवक्को रखी जाती थीं — 2 तवारीख खास तौर से बनी इस्राईल कौम की मज़हबी तारीख की तश्खीस है।

?????

बनी इस्राईल की रूहानी मीरास।

**बैरूनी खाका**

1. सुलेमान के मातहत बनी इस्राईल की कहानी — 1:1-9:31
2. रेहुबोआम से आखज़ तक — 10:1-28:27
3. हिज़िकयाह से यहूदा का आखिर — 29:1-36:23।

?????????? ?? ?????????????? ?????

1 और सुलेमान बिन दाऊद अपनी ममलुकत में ठहरा हुआ और खुदावन्द उसका खुदा उसके साथ रहा और उसे बहुत बुलन्द किया। 2 और सुलेमान ने सारे इस्राईल या'नी हज़ारों और सैकड़ों के सरदारों और क़ाज़िओं, और सब इस्राईलियों के रईसों से जो आबाई खानदानों के सरदार थे बातें कीं। 3 और सुलेमान सारी ज़मा'अत साथ जिबा'उन के ऊँचे मक़ाम को गया क्योंकि खुदा का खेमा

— ए — इजितमा'अ जैसे खुदावन्द के बन्दे मूसा ने विराने में बनाया था वहीं था। 4 लेकिन खुदा के सन्दूक को दाऊद करीयत — या'रीम से उस मक़ाम में उठा लाया था जो उस ने उसके लिए तैयार किया था क्योंकि उसने उस के लिए येरूशलेम में एक खेमा खड़ा किया था। 5 लेकिन पीतल का वह मज़बह जिसे बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर ने बनाया था वहीं खुदावन्द के मस्कन के आगे था। फिर सुलेमान उस जमा'अत के साथ वहीं गया। 6 और सुलेमान वहाँ पीतल के मज़बह के पास जो खुदावन्द के आगे खेमा — ए — इजितमा'अ में था गया और उस पर एक हज़ार सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश कीं। 7 उसी रात खुदा सुलेमान को दिखाई दिया और उस से कहा, माँग मैं तुझे क्या दूँ? 8 सुलेमान ने खुदा से कहा, तूने मेरे बाप दाऊद पर बड़ी मेहरबानी की और मुझे उसकी जगह बादशाह बनाया। 9 अब ऐ खुदावन्द खुदा, जो वा'दा तूने मेरे बाप दाऊद से किया वह बरकरार रहे, क्योंकि तूने मुझे एक ऐसी क़ौम का बादशाह बनाया है जो कसरत में ज़मीन की खाक के ज़रों की तरह है। 10 इसलिए मुझे हिकमत — ओ — मा'रिफ़त इनायत कर ताकि मैं इन लोगों के आगे अन्दर बाहर आया जाया करूँ क्योंकि तेरी इस बड़ी क़ौम का इन्साफ़ कौन कर सकता है? 11 तब खुदा ने सुलेमान से कहा चुँकि तेरे दिल में यह बात थी और तूने न तो दौलत न माल न इज़्ज़त न अपने दुश्मनों की मौत माँगी और न लम्बी उम्र की तलब की बल्कि अपने लिए हिकमत — ओ — मा'रिफ़त की दरख्वास्त की ताकि मेरे लोगों का जिन पर मैंने तुझे बादशाह बनाया है इन्साफ़ करें। 12 इसलिए हिकमत — ओ — मा'रिफ़त तुझे 'अता हुई है और मैं तुझे इस क़दर दौलत और माल और 'इज़्ज़त बख्शूँगा कि न तू उन बादशाहों में से जो तुझ से पहले हुए किसी को नसीब हुई और न किसी को तेरे बाद नसीब होगी। 13 चुनाँचे सुलेमान जिबा'उन के ऊँचे मक़ाम से या'नी खेमा — ए — इजितमा'अ के आगे से येरूशलेम को लौट आया और बनी इस्राईल पर बादशाहत करने लगा। 14 और सुलेमान ने रथ और सवार जमा कर लिए और उसके पास एक हज़ार चार सौ रथ और बारह हज़ार सवार थे, जिनको उसने रथों के शहरों में और येरूशलेम में बादशाह के पास रखा। 15 और बादशाह ने येरूशलेम में चाँदी और सोने को कसरत की वज़ह से पत्थरों की तरह और देवदारों को नशेब की ज़मीन के गूलर के दरख्तों की तरह बना दिया। 16 और सुलेमान के घोड़े मिस्र से आते थे और बादशाह के सौदागर उनके झुंड के झुंड या'नी हर झुंड का मोल करके उनको लेते थे। 17 और वह एक रथ छः सौ मिस्काल चाँदी और एक

घोड़ा डेढ़ सौ मिस्काल में लेते और मिस्र से ले आते थे और इसी तरह हित्तियों के सब बादशाहों और आराम के बादशाहों के लिए उन ही के वसीला से उन को लाते थे।

## 2

१ और सुलेमान ने इरादा किया कि एक घर खुदावन्द के नाम के लिए और एक घर अपनी हुकूमत के लिए बनाए। २ और सुलेमान ने सत्तर हजार भोज उठाने वाले और पहाड़ में अस्सी हजार पत्थर काटाने वाले और तीन हजार छः सौ आदमी उनकी निगरानी के लिए गिनकर ठहरा दिए। ३ और सुलेमान ने सूर के बादशाह हूराम के पास कहला भेजा कि जैसा तूने मेरे बाप दाऊद के साथ किया और उसके पास देवदार की लकड़ी भेजी कि वह अपने रहने के लिए एक घर बनाए वैसा ही मेरे साथ भी कर ४ मैं खुदावन्द अपने खुदा के नाम के लिए एक घर बनाने को हूँ कि उसके लिए पाक करूँ और उसके आगे खुशबूदार मसाले का खुशबू जलाऊँ, और वह सबतों और नए चाँदों और खुदावन्द हमारे खुदा की मुक़र्रर 'ईदों पर हमेशा नज़र की रोटी और सुबह और शाम की सोख्तनी कुर्बानियों के लिए हो क्योंकि यह हमेशा तक इस्राईल पर फ़र्ज है। ५ और वह घर जो मैं बनाने को हूँ अज़ीम उश शान होगा क्योंकि हमारा खुदा सब मा'बूदों से 'अज़ीम है। ६ लेकिन उसके लिए कौन घर बनाने के लिए काबिल है जिस हाल के आसमान में बल्कि आसमानों के आसमान में भी वह समा नहीं सकता तो भला मैं कौन हूँ जो उसके सामने खुशबू जलाने के 'अलावा किसी और ख्याल से उसके लिए घर बनाऊँ? ७ इसलिए अब तू मेरे पास एक ऐसे शख्स को भेज दे जो सोने और चाँदी और पीतल और लोहे के काम में और अर्गवानी और क़िर्मिज़ी और नीले कपड़े के काम में माहिर हो और नक्काशी भी जानता हो ताकि वह उन कारीगरों के साथ रहे जो मेरे बाप दाऊद के ठहराए हुए यहूदाह और येरूशलेम में मेरे पास हैं। ८ और देवदार और सनोबर और सन्दल के लट्ठे लुबनान से मेरे पास भेजना क्योंकि मैं जनता हूँ तेरे नौकर लुबनान की लकड़ी कटाने में होशियार है और मेरे नौकर तेरे नौकरों के साथ रहकर, ९ मेरे लिए बहुत सी लकड़ी तैयार करेंगे क्योंकि वह घर जो मैं बनाने को हूँ बहुत आलिशान होगा १० और मैं तेरे नौकरों या'नी लकड़ी कटाने वालों को बीस हजार कुर साफ़ किया हुआ गेहूँ और बीस हजार कुर जौ, और बीस हजार बत मय और बीस हजार बत तेल दूँगा। ११ तब

सूर के बादशाह हूराम ने जवाब लिखकर उसे सुलेमान के पास भेजा कि चूँकि खुदावन्द को अपने लोगों से मुहब्बत है इसलिए उस ने तुझको उन का बादशाह बनाया है। १२ और हूराम ने यह भी कहा खुदावन्द इस्राईल का खुदा जिस ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया मुबारक हो कि उस ने दाऊद बादशाह को एक दाना बेटा फ़हम — व — मा'रिफ़त से मा'मूर बख़्शा ताकि वह खुदावन्द के लिए एक घर और अपनी हुकूमत के लिए एक घर बनाए। १३ तब मैंने अपने बाप हूराम के एक होशियार शख्स को जो अक्ल से मा'मूर है भेज दिया है। १४ वह दान की बेटियों में से एक 'औरत का बेटा है और उसका बाप सूर का बाशिन्दा था वह सोने और चाँदी और पीतल और लोहे और पत्थर और लकड़ी के काम में और अर्गवानी और नीले और क़िर्मिज़ी और कतानी कपड़े के काम में माहिर और हर तरह की नक्काशी और हर क़िस्म की सन'अत में ताक़ है ताकि तेरे हुनरमन्दों और मेरे मख़दूम तेरे बाप दाऊद के हुनरमंदों के साथ उसके लिए जगह मुक़र्रर हो जाए। १५ और अब गेहूँ और जौ और तेल और शराब जिनका मेरे मालिक ने ज़िक्र किया है वह उनको अपने खादिमों के लिए भेजे। १६ और जितनी लकड़ी तुझको ज़रूरत है हम लुबनान से काटेंगे और उनके बेड़े बनवाकर समुन्दर ही समुन्दर तेरे पास याफ़ा में पहुँचाएँगे, फिर तू उनको येरूशलेम को ले जाना। १७ और सुलेमान ने इस्राईल के मुल्क में के सब परदेसियों को शुमार किया जैसे उसके बाप दाऊद ने उनको शुमार किया था और वह एक लाख तिरपन हजार छः सौ निकले। १८ और उसने उन में से सत्तर हजार को बोझ उठाने वालों पर और अस्सी हजार को पहाड़ पर पत्थर काटने के लिए और तीन हजार छः सौ को लोगों से काम लेने के लिए नज़ीर ठहराया।

## 3

१ और सुलेमान येरूशलेम में कोह — ए — मोरियाह पर जहाँ उसके बाप दाऊद ने ख़ाब देखा उसी जगह जैसे दाऊद ने तैयारी कर के मुक़र्रर किया या'नी उरनान यबूसी के खलीहान में खुदावन्द का घर बनाने लगा। २ और उसने अपनी हुकूमत के चौथे साल के दूसरे महीने की दूसरी तारीख को बनाना शुरू किया। ३ और जो बुनियाद सुलेमान ने खुदा के घर की तामीर के लिए डाली वह यह है उसका तूल हाथों के हिसाब से पहले नाप के मवाफ़िक़ साठ हाथ और 'अरज बीस हाथ था। ४ और घर के सामने के उसारा की लम्बाई घर की चौड़ाई



के मुताबिक बीस हाथ और ऊँचाई एक सौ बीस हाथ थी और उसने उसे अन्दर से खालिस सोने से मँदा।<sup>5</sup> और उसने बड़े घर की छत सनोबर के तख्तों से पटवाई, जिन पर चोखा सोना मँदा था और उसके ऊपर खजूर के दरख्त और ज़न्जीरे बनाई।<sup>6</sup> और जो खूबसूरती के लिए उसने उस घर को बेशकीमत जवाहर से दुरुस्त किया और सोना परवाइम का सोना था।<sup>7</sup> और उसने घर को यानी उसके शहतीरों, चौखटों, दिवारों और किवाड़ों को सोने से मँदा और दीवारों पर करुबियों की सूरत कंदा की।<sup>8</sup> और उसने पाक तरीन मकान बनाया जिसकी लम्बाई घर के चौड़ाई के मुताबिक बीस हाथ और उसकी चौड़ाई बीस हाथ थी और उसने उसे छः सौ किन्तार चोखे सोने से मँदा।<sup>9</sup> और कीलों का वज़न पचास मिस्काल सोने का था और उसमें ऊपर की कोठरियाँ भी सोने से मँदा।<sup>10</sup> और उसने पाकतरिन मकान में दो करुबियों को तराशकर बनाया और उन्होंने उनको सोने से मँदा।<sup>11</sup> और करुबियों के बाजू बीस हाथ लम्बे थे, एक करुबी का एक बाजू पाँच हाथ का घर की दीवार तक पहुँचा हुआ और दूसरा बाजू भी पाँच हाथ का दूसरे करुबी के बाजू तक पहुँचा हुआ था।<sup>12</sup> और दूसरे करुबी का एक बाजू पाँच हाथ का घर की दीवार तक पहुँचा हुआ और दूसरा बाजू भी पाँच हाथ का दूसरे करुबी के बाजू से मिला हुआ था।<sup>13</sup> इन करुबियों के पर बीस हाथ तक फैले हुए थे और वह अपने पाँव पर खड़े थे और उनके मुँह उस घर की तरफ थे।<sup>14</sup> और उसने पर्दः आसमानी और अर्गवानी और क्रिमिज़ी कपड़े और महीन कतान से बनाया उस पर करुबियों को कढ़वाया।<sup>15</sup> और उसने घर के सामने पैतीस पैतीस हाथ ऊँचे दो सुतून बनाए, और हर एक के सिरे पर पाँच हाथ का ताज़ था।<sup>16</sup> और उसने इल्हामगाह में ज़ंजीरे बनाकर सुतूनों के सिरों पर लगाए और एक सौ अनार बनाकर ज़ंजीरों में लगा दिए।<sup>17</sup> और उसने हैकल के आगे उन सुतूनों को एक दाहिनी और दूसरे को बाई तरफ खड़ा किया और जो दहिने था उसका नाम यक्कीन और जो बाएँ था उसका नाम बो'अज़ रखा।

## 4

?????????? ?? ?? ?? ????-?-??????

<sup>1</sup> और उसने पीतल का एक मजबह बनाया, उसकी लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई बीस हाथ और ऊँचाई दस हाथ थी।<sup>2</sup> और उसने एक ढाला हुआ बड़ा हौज़ बनाया जो एक किनारा से दूसरे किनारे तक दस हाथ था, वह गोल था और उसकी ऊँचाई पाँच हाथ थी और उसका घर तीस हाथ के नाप का था।<sup>3</sup> और उसके नीचे बैलों की सूरते उसके आस पास दस — दस हाथ तक थी

और उस बड़े हौज़ को चारों तरफ से घेरे हुए थी, यह बैल दो क़तारों में थे और उसी के साथ ढाले गए थे।<sup>4</sup> और वह बारह बैलों पर धरा हुआ था, तीन का चेहरा उत्तर की तरफ और तीन का चेहरा पश्चिम की तरफ और तीन का चेहरा दक्खिन की तरफ और तीन का चेहरा पूरब की तरफ था और वह बड़ा हौज़ उनके ऊपर था, और उन सब के पिछले 'आज़ा अन्दर के चेहरा थे।<sup>5</sup> उसकी मोटाई चार उंगल की थी और उसका किनारा प्याला के किनारह की तरह और सोसन के फूल से मुशाबह था, उसमें तीन हजार बत की समाई थी।<sup>6</sup> और उसने दस हौज़ भी बनाने और पाँच दहनी और पाँच बाई तरफ रखें ताकि उन में सोस्तनी कुर्बानी की चीज़ें धोई जाएँ, उनमें वह उन्हीं चीज़ों को धोते थे लेकिन वह बड़ा हौज़ काहिनों के नहाने के लिए था।<sup>7</sup> और उसने सोने के दस शमा'दान उस हुक्म के मुताबिक बनाए जो उनके बारे में मिला था उसने उनको हैकल में पाँच दहनी और पाँच बाई तरफ रखा।<sup>8</sup> और उसने दस मेज़े भी बनाई और उनको हैकल में पाँच दहनी पाँच बाई तरफ रखा और उसने सोने के सौ कटोरे बनाए।<sup>9</sup> और उसने काहिनों का सहन और बड़ा सहन और उस सहन के दरवाज़ों को बनाया और उनके किवाड़ों को पीतल से मँदा।<sup>10</sup> और उसने उस बड़े हौज़ को पूरब की तरफ दहिने हाथ दक्खिन चेहरा पर रखा।<sup>11</sup> और हूराम ने बर्तन और बेल्चे और कटोरे बनाए, इसलिए हूराम ने उस काम को जिसे वह सुलेमान बादशाह के लिए खुदा के घर में कर रहा था तमाम किया।<sup>12</sup> या'नी दोनों सुतूनों और कुरे और दोनों ताज़ जो उन दोनों सुतूनों पर थे और सुतूनों की चोटी पर के ताज़ों के दोनों कुरों को ढाकने की दोनों जालियाँ;<sup>13</sup> और दोनों जालियों के लिए चार सौ अनार या'नी हर जाली के लिए अनारों की दो दो क़तारें ताकि सुतूनों पर के ताज़ों के दोनों कुरें ढक जाए।<sup>14</sup> और उसने कुर्सियाँ भी बनाई और उन कुर्सियों पर हौज़ लगाये।<sup>15</sup> और एक बड़ा हौज़ और उसके नीचे बारह बैल;<sup>16</sup> और देगें, बेल्चे और काँटे और उसके सब बर्तन उसके बाप हूराम ने सुलेमान बादशाह के लिए खुदावन्द के घर के लिए झलकते हुए पीतल के बनाए।<sup>17</sup> और बादशाह ने उन सब को यरदन के मैदान में सुक्कात और सरीदा के बीच की चिकनी मिट्टी में ढाला।<sup>18</sup> और सुलेमान ने यह सब बर्तन इस कशरत से बनाए कि उस पीतल का वज़न मा'लूम न हो सका।<sup>19</sup> और सुलेमान ने उन सब बर्तन को जो खुदा के घर में थे बनाया, या'नी सोने की कुर्बानगाह और वह मेज़े भी जिन पर नज़र की रोटियाँ रखी जाती थीं।<sup>20</sup> और खालिस सोने के शमा'दान चिरागों के साथ ताकि वह दस्तूर के मुताबिक इल्हामगाह के आगे रोशन

रहें। <sup>21</sup> और सोने बल्कि कुन्दन के फूल और चिरागों और चमटे; <sup>22</sup> और गुलगीर और कटोरे और चमचे और खुशबू दान खालिस सोने के और घर का मदखल या'नी उसके अन्दरूनी दरवाजे पाकतरीन मकान के लिए और घर या'नी हैकल के दरवाजे सोने के थे।

## 5

<sup>1</sup> इस तरह सब काम जो सुलेमान ने खुदावन्द के घर के लिए बनवाया खत्म हुआ और सुलेमान अपने बाप दाऊद की पाक की हुई चीजों या'नी सोने और चाँदी और सब बर्तन को अन्दर ले आया और उनको खुदा के घर के खजाना में रख दिया।

222222 22 2222222222 22 22 2222 2222 2222

<sup>2</sup> तब सुलेमान ने इस्राईल के बुजुर्गों और कबीलों के सब रईसों या'नी बनी — इस्राईल के आबाई खानदानों के सरदार को येरुशलेम में इकट्ठा किया ताकि वह दाऊद के शहर से जो सिय्यून है खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक ले आएँ। <sup>3</sup> और इस्राईल के सब लोग सातवे महीने की 'ईद में बादशाह के पास जमा' हुए। <sup>4</sup> इस्राईल के सब बुजुर्ग आए और लावी ने सन्दूक उठाया। <sup>5</sup> और वह सन्दूक को खेमा — ए — इजितमा'अ को और सब पाक बर्तन को जो उस खेमा में थे ले आए। इनको लावी काहिन लाए थे। <sup>6</sup> और सुलेमान बादशाह और इस्राईल की सारी जमा'अत ने जो उसके पास इकट्ठी हुई थी सन्दूक के आगे खड़ा होकर भेड़ बकरियाँ और बैल जबह किए ऐसा कि कसरत की वजह से उनका शुमार — ओ — हिसाब नहीं हो सकता था। <sup>7</sup> और काहिनों ने खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को उसकी जगह घरकी इल्हामगाह में जो पाकतरीन मकान है या'नी करुबियों के बाजुओं के नीचे लाकर रखा <sup>8</sup> और करुबी अपने कुछ सन्दूक की जगह के ऊपर फैलाए हुए थे और यूँ करुबी सन्दूक और उसकी चोबों को ऊपर से ढाँके हुए थे। <sup>9</sup> और चोबें ऐसी लम्बी थीं कि उनके सिरे सन्दूक से निकले हुए इल्हामगाह के आगे दिखाई देते थे लेकिन बाहर से नज़र नहीं आते थे और वह आज के दिन तक वहीँ है। <sup>10</sup> और उस सन्दूक में कुछ न था 'अलावा पत्थर की उन दो लौहों के जिनको मूसा ने होरेब पर उस में रखा था जब खुदावन्द ने बनी इस्राईल से जिस वक्त वह मिस्र से निकले थे 'अहद बाँधा। <sup>11</sup> और ऐसा हुआ कि जब काहिन पाक मकान से निकले क्योंकि सब काहिन जो हाज़िर थे अपने को पाक कर के आए थे और बारी बारी से खिदमत नहीं करते थे। <sup>12</sup> और लावी जो गाते थे वह सब के सब जैसे आसफ़ और हैमान और यदूतून और उनके बेटे और

उनके भाई कतानी कपड़े से मुलव्वस होकर और झांझ और सितार और बरबत लिए हुए मजबह के पूरबी किनारे पर खड़े थे और उनके साथ एक सौ बीस काहिन थे जो नरसिंगे फूँक रहे थे। <sup>13</sup> तो ऐसा हुआ कि जब नरसिंगे फूँकने वाले और गाने वाले मिल गए ताकि खुदावन्द की हम्द और शुक्रगुजारी में उन सब की एक आवाज़ सुनाई दे और जब नरसिंगे और झांझों और मूसीकी के सब साजों के साथ उन्होंने अपनी आवाज़ बलन्द कर के खुदावन्द की तारीफ़ की कि वह अच्छा है क्योंकि उसकी रहमत हमेशा हैं तो वह घर जो खुदावन्द का घर है अब्र से भर गया। <sup>14</sup> यहाँ तक कि काहिन अब्र की वजह से खिदमत के लिए खड़े न रह सके इसलिए कि खुदा का घर खुदावन्द के जलाल से भर गया था।

## 6

22222222 22 222222 22 22222222 2222

<sup>1</sup> तब सुलेमान ने कहा, खुदावन्द ने फ़रमाया है कि वह गहरी तारीकी में रहेगा। <sup>2</sup> लेकिन मैंने एक घर तेरे रहने के लिए बल्कि तेरी हमेशा सुकूनत के वास्ते एक जगह बनाई है। <sup>3</sup> और बादशाह ने अपना मुँह फेरा और इस्राईल की जमा'अत को बरकत दी और इस्राईल की सारी जमा'अत खड़ी रही। <sup>4</sup> तब उसने कहा, खुदावन्द इस्राईल का खुदा मुबारक हो जिस ने अपने मुँह से मेरे बाप दाऊद से कलाम किया “और उसे अपने हाथों से यह कहकर पूरा किया।” <sup>5</sup> कि जिस दिन मैं अपनी क्रौम को मुल्के मिस्र से निकाल लाया तब से मैं ने इस्राईल के सब कबीलों में से न तो किसी शहर को चुना ताकि उसमें घर बनाया जाए और वहाँ मेरा नाम हो और न किसी आदमी को चुना ताकि वह मेरी क्रौम इस्राईल का पेशवा हो। <sup>6</sup> लेकिन मैंने येरुशलेम को चुना कि वहाँ मेरा नाम हो और दाऊद को चुना ताकि वह मेरी क्रौम इस्राईल पर हाकिम हों। <sup>7</sup> और मेरे बाप दाऊद के दिल में था की खुदावन्द इस्राईल के खुदा के नाम के लिए एक घर बनाए। <sup>8</sup> लेकिन खुदावन्द ने मेरे बाप दाऊद से कहा, “चूँकि मेरे नाम के लिए एक घर बनाने का ख्याल तेरे दिल में था इसलिए तूने अच्छा किया कि अपने दिल में ऐसा ठाना।” <sup>9</sup> तू भी तो इस घर को न बनाना बल्कि तेरा बेटा जो तेरे सुल्ब से निकलेगा वही मेरे नाम के लिए घर बनाएगा। <sup>10</sup> और खुदावन्द ने अपनी वह बात जो उसने कही थी पूरी की क्योंकि मैं अपने बाप दाऊद की जगह उठा हूँ और जैसा खुदावन्द ने वा'दा किया था मैं इस्राईल के तख्त पर बैठा हूँ और मैंने खुदावन्द इस्राईल के खुदा के नाम के लिए उस

घर को बनाया है। <sup>11</sup> और वही मैंने वह सन्दूक रखा है जिस में खुदावन्द का वह 'अहद है जो उसने बनी इसराईल से किया। <sup>12</sup> और सुलेमान ने इसराईल की सारी जमा'अत के आमने सामने खुदावन्द के मजबह के आगे खड़े होकर अपने हाथ फैलाए। <sup>13</sup> क्योंकि सुलेमान ने पाँच हाथ लम्बा और पाँच हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊँचा पीतल का एक मिम्बर बना कर सहन के नीचे में उसे रखा था, उसी पर वह खड़ा था, तब उसने इसराईल की सारी जमा'अत के आमने सामने घुटने टेके और आसमान की तरफ अपने हाथ फैलाए। <sup>14</sup> और कहने लगा ऐ खुदावन्द इसराईल के खुदा तेरी तरह न तो आसमान में न ज़मीन पर कोई खुदा है। तू अपने उन बन्दों के लिए जो तेरे सामने अपने सारे दिल से चलते हैं 'अहद और रहमत को निगाह रखता है। <sup>15</sup> तूने अपने बन्दे मेरे बाप दाऊद के हक में वह बात काईम रखी जिसका तूने उससे वा'दा किया था, तूने अपने मुँह से फ़रमाया उसे अपने हाथ से पूरा किया जैसा आज के दिन है। <sup>16</sup> अब ऐ खुदावन्द इसराईल के खुदा अपने बन्दा मेरे बाप दाऊद के साथ उस क़ौल को भी पूरा कर जो तूने उस से किया था कि तेरे हाथ मेरे सामने इसराईल के तख़्त पर बैठने के लिए आदमी की कमी न होगी बशर्ते कि तेरी औलाद जैसे तू मेरे सामने चलता रहा वैसे ही मेरी शरी'अत पर अमल करने के लिए अपनी रास्ते की एहतियात रखें। <sup>17</sup> और अब ऐ खुदावन्द इसराईल के खुदा जो क़ौल तूने अपने बन्दा दाऊद से किया था वह सच्चा साबित किया जाए। <sup>18</sup> लेकिन क्या खुदा फ़िलहकीकत आदमियों के साथ ज़मीन पर सुकूनत करेगा? देख आसमान बल्कि आसमानों के आसमान में भी तू रुक नहीं सकता तू यह घर तो कुछ भी नहीं जिसे मैंने बनाया! <sup>19</sup> तो भी ऐ खुदावन्द मेरे खुदा अपने बन्दे की दुआ और मुनाजात का लिहाज़ कर कि उस फ़रियाद दुआ को सून ले जो तेरा बन्दा तेरे सामने करता है। <sup>20</sup> ताकि तेरी आँखें इस घर की तरफ़ यानी उसी जगह की तरफ़ जिसकी बारे में तूने फ़रमाया कि मैं अपना नाम वहाँ रखूँगा दिन और रात खुली रहे ताकि तू उस दुआ को सूने जो तेरा बन्दा इस मक़ाम की तरफ़ चेहरा कर के तुझ से करेगा। <sup>21</sup> और तू अपने बन्दा और अपनी क़ौम इसराईल की मुनाजात को जब वह इस जगह की तरफ़ चेहरा कर के करें तो सून लेना बल्कि तू आसमान पर से जो तेरी सुकूनत गाह है सून लेना और सुनकर मु'आफ़ कर देना। <sup>22</sup> अगर कोई शख्स अपने पड़ोसी का गुनाह करे और उसे क़सम खिलाने के लिए उसको हल्फ़ दिया जाए और वह आकर इस घर में तेरे मजबह के आगे क़सम खाए। <sup>23</sup> तो तू

आसमान पर से सुनकर 'अमल करना और अपने बन्दों का इन्साफ़ कर के बदकार को सज़ा देना ताकि उसके 'आमाल को उसी कि सर डाले और सादिक को सच्चा ठहराना ताकि उसकी सदाक़त के मुताबिक़ उसे बदला दे। <sup>24</sup> और अगर तेरी क़ौम इसराईल तेरा गुनाह करने के ज़रिए अपने दुश्मनों से शिकस्त खाए और फिर तेरी तरफ़ रुजू' लाए और तेरे नाम का इकरार कर के इस घर में तेरे सामने दुआ और मुनाजात करे। <sup>25</sup> तो तू आसमान पर से सुनकर अपनी क़ौम इसराईल के गुनाह को बख़्श देना और उनको इस मुल्क में जो तूने उनको और उनके बाप दादा को दिया है फिर ले आना। <sup>26</sup> और जब इस वजह से कि उन्होंने तेरा गुनाह किया हों आसमान बंद हो जाए और बारिश न हो और वह इस मक़ाम की तरफ़ चेहरा कर के दुआ करें और तेरे नाम का इकरार करे और अपने गुनाह से बाज़ आए जब तू उनको दुःख दे। <sup>27</sup> तो तू आसमान पर से सुनकर अपने बन्दों और अपनी क़ौम इसराईल का गुनाह मु'आफ़ कर देना क्योंकि तूने उनको उस अच्छी रास्ते की ता'लिम दी जिस पर उनको चलना फ़र्ज़ है और अपने मुल्क पर जैसे तूने अपनी क़ौम के मीरास के लिए दिया है पानी न बरसाना। <sup>28</sup> अगर मुल्क में काल हो, अगर वबा हो, अगर बा'द — ए — समूम या गेरुई टिड्डी या कमला हो, अगर उनके दुश्मन उनके शहरों के मुल्क में उनको घेर ले गरज़ कैसी ही बला या कैसा ही रोग हो। <sup>29</sup> तू जो दु'आ और मुनाजात किसी एक शख्स या तेरी सारी क़ौम इसराईल की तरफ़ से हों जिन में से हर शख्स अपने दुःख और रन्ज को जानकर अपने हाथ इस घर की तरफ़ फैलाए। <sup>30</sup> तू तो आसमान पर से जो तेरी रहने की जगह है सुनकर मु'आफ़ कर देना और हर शख्स को जिसके दिल को तू जनता है उसकी सब चालचलन के मुताबिक़ बदला देना क्योंकि सिर्फ़ तू ही बनी आदम के दिलों को जनता है। <sup>31</sup> ताकि जब तक वह उस मुल्क में जिसे तूने हमारे बाप दादा को दिया जीते रहे तेरा ख़ौफ़ मानकर तेरे रास्तों में चलें। <sup>32</sup> और वह परदेसी भी जो तेरी क़ौम इसराईल में से नहीं है जब वह तेरे बुज़ुर्ग नाम और क़ौमी हाथ और तेरे बुलन्द बाज़ू की वजह से दूर मुल्क से आए और आकर इस घर की तरफ़ चेहरा कर के दुआ करें। <sup>33</sup> तो तू आसमान पर से जो तेरी रहने की जगह है सून लेना और जिस जिस बात के लिए वह परदेसी तुझ से फ़रियाद करे उसके मुताबिक़ करना ताकि ज़मीन की सब क़ौम तेरे नाम को पहचाने और तेरी क़ौम इसराईल की तरह तेरा ख़ौफ़ माने और जान ले कि यह घर जिसे मैंने बनाया है तेरे नाम का कहलाता है। <sup>34</sup> अगर तेरे लोग चाहे किसी रास्ते से तू उनको भेजे अपने दुश्मन से लड़ने को निकले और इस

शहर की तरफ जिसे तूने चुना है और इस घर की तरफ जिसे मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है चेहरा करके तुझ से दुआ करें। <sup>35</sup> तो तू आसमान पर से उनकी दुआ और मुनाजात को सुनकर उनकी हिमा'अत करना। <sup>36</sup> अगर वह तेरा गुनाह करें क्योंकि कोई इंसान नहीं जो गुनाह न करता हो और तू उन से नाराज़ होकर उनको दुश्मन के हवाले कर दे ऐसा कि वह दुश्मन उनको कैद करके दूर या नज़दीक मुल्क में ले जाए। <sup>37</sup> तो भी अगर वह उस मुल्क में जहाँ कैद होकर पहुँचाए गए, होश में आए और रुजू' लाए और अपनी गुलामी के मुल्क में तुझ से मुनाजात करें और कहें कि हम ने गुनाह किया है हम टेढ़ी चाल चले और हम ने शरारत की। <sup>38</sup> इसलिए अगर वह अपनी गुलामी के मुल्क में जहाँ उनको गुलाम कर के ले गए हों अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से तेरी तरफ फिरे और अपने मुल्क की तरफ जो तूने उनको बाप दादा को दिया और इस शहर की तरफ जिसे तूने चुना है और इस घर की तरफ जो मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है चेहरा कर के दुआ कर। <sup>39</sup> तो तू आसमान पर से जो तेरी रहने की जगह है उनकी दुआ और मुनाजात सुनकर उनकी हिमायत करना और अपनी क्रौम को जिस ने तेरा गुनाह किया हो मु'आफ़ कर देना। <sup>40</sup> इसलिए ऐ मेरे खुदा मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि उस दुआ की तरफ जो इस मक़ाम में की जाए तेरी आँखें खुली और तेरे कान लगे रहें। <sup>41</sup> इसलिए अब ऐ खुदावन्द खुदा तू अपनी ताक़त के सन्दूक के साथ उठकर अपनी आरामगाह में दाखिल हो, ऐ खुदावन्द खुदा तेरे काहिन नजात से मुलव्वस हों और तेरे मुक़द्दस नेकी में मगन रहें। <sup>42</sup> ऐ खुदावन्द खुदा तू अपने मम्सूह की दुआ नामंजूर न कर, तू अपने बन्दा दाऊद पर की रहमतें याद फ़रमा।

## 7

2222222222 22 22 22 2222-2-222222

<sup>1</sup> और जब सुलेमान दुआ कर चुका तो आसमान पर से आग उतरी और सोख्तनी कुर्बानी और ज़बीहो को भस्म कर दिया और मस्कन खुदावन्द के जलाल से मा'मूर हो गया। <sup>2</sup> और काहिन खुदावन्द के घर में दाखिल न हों सके इसलिए कि खुदावन्द का घर खुदावन्द के जलाल से मा'मूर था। <sup>3</sup> और जब आग नाज़िल हुई और खुदावन्द का जलाल उस घर पर छा गया तो सब बनी इसराईल देख रहे थे, तब उन्होंने वही फ़र्श पर मुँह के बल ज़मीन तक झुक कर सिज्दा किया और खुदावन्द का शुक्र अदा किया कि वह भला है क्योंकि उसकी रहमत हमेशा है। <sup>4</sup> तब बादशाह और सब लोगो ने खुदावन्द के आगे

ज़बीहे ज़बह किए। <sup>5</sup> और सुलेमान बादशाह ने ज़रिए' हजार बैलों और एक लाख बीस हजार भेड़ बकरियों की कुर्बानी पेश कीं, यूँ बादशाह और सब लोगो ने खुदा के घर को मख्सूस किया। <sup>6</sup> और काहिन अपने अपने मन्सब के मुताबिक़ खड़े थे और लावी भी खुदावन्द के लिए मुसीक़ी के साज़ लिए हुए थे जिनको दाऊद बादशाह ने खुदावन्द का शुक्र बजा लेने को बनाया था जब उसने उनके ज़रिए' से उसकी तारीफ़ की थी क्योंकि उसकी रहमत हमेशा है और काहिन उनके आगे नरसिंगे फूकते रहे और सब इसराईली खड़े रहे हैं। <sup>7</sup> और सुलेमान ने उस सहन के बीच के हिस्से को जो खुदावन्द के घर के सामने था पाक किया क्योंकि उसने वहाँ सोख्तनी कुर्बानियों और सलामती की कुर्बानियों की चर्बी पेश कीं क्योंकि पीतल के उस मज़बह पर जैसे सुलेमान ने बनाया था सोख्तनी कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी और चर्बी के लिए गुंजाइश न थीं। <sup>8</sup> और सुलेमान और उसके साथ हमात के मदख़ल से मिस्र तक के सब इसराईलियों की बहुत बड़ी जमा'अत ने उस मौक़ा पर सात दिन तक 'ईद मनाई। <sup>9</sup> और आठवे दिन उनका पाक मजमा' जमा' हुआ क्योंकि वह सात दिन मज़बह के मख्सूस करने में और सात दिन ईद मानाने में लगे रहे। <sup>10</sup> और सातवे महीने की तेइसवी तारीख़ को उसने लोगो को रुख़्शत किया, ताकि वह उस नेकी की वजह से जो खुदावन्द ने दाऊद और सुलेमान और अपनी क्रौम इसराईल से की थी खुश और शादमान होकर अपने खेमों को जाएँ। <sup>11</sup> यूँ सुलेमान ने खुदावन्द का घर और बादशाह का घर तमाम किया और जो कुछ सुलेमान ने खुदावन्द के घर में और अपने घर में बनाना चाहा उस ने उसे बख़्शी अंजाम तक पहुँचाया। <sup>12</sup> और खुदावन्द रात को सुलेमान पर ज़ाहिर हुआ और उससे कहा, कि मैंने तेरी दुआ सुनी और इस जगह को अपने वास्ते चुन लिया कि यह कुर्बानी का घर हो। <sup>13</sup> अगर मैं आसमान को बंद कर दूँ कि बारिश न हो या टिड्डियों को हुक्म दूँ कि मुल्क को उजाड़ डालें या अपने लोगो के बीच वबा भेजूँ। <sup>14</sup> तब अगर मेरे लोग जो मेरे नाम से कहलाते हैं खाकसार बनकर दुआ करें और मेरे दीदार के तालिब हों और अपनी बुरी रास्तों से फिरे तो मैं आसमान पर से सुनकर उनका गुनाह मु'आफ़ करूँगा और उनके मुल्क को बहाल कर दूँगा। <sup>15</sup> अब जो दुआ इस जगह की जाएगी उस पर मेरी आँखें खुली और मेरे कान लगे रहेंगे। <sup>16</sup> क्योंकि मैंने इस घर को चुना और पाक किया कि मेरा नाम यहाँ हमेशा रहे और मेरी आँखें और मेरा दिल बराबर यहीं लगे रहेंगे। <sup>17</sup> और तू अगर मेरे सामने वैसे ही चले जैसे तेरा बाप दाऊद चलता रहा



और जो कुछ मैंने तुझे हुक्म किया उसके मुताबिक अम्ल करे और मेरे क़ानून और हुक्मों को माने। <sup>18</sup> तो मैं तेरे तख़्त — ए — हुक्मत को क़ाईम रखूँगा जैसा मैंने तेरे बाप दाऊद से 'अहद कर के कहा था कि इस्राईल का सरदार होने के लिए तेरे हाथ मर्द की कभी कमी न होगी। <sup>19</sup> लेकिन अगर तुम बरग़श्ता हो जाओ और मेरे क़ानून — व — हुक्मों को जिनको मैंने तुम्हारे आगे रखवा है छोड़ कर दो, और जाकर ग़ैर मा'बूदों की इबादत करो और उनको सिज्दा करो, <sup>20</sup> तो मैं उनको अपने मुल्क से जो मैंने उनको दिया है जड़ से उखाड़ डालूँगा और इस घर को मैंने अपने नाम के लिए पाक किया है अपने सामने से दूर कर दूँगा और इसको सब कोमों में ज़र्ब — उल — मसल और बदनाम कर दूँगा। <sup>21</sup> और यह घर जो ऐसा आलीशान है, इसलिए हर एक जो इसके पास से गुज़रेगा हैरान होकर कहेगा कि खुदावन्द ने इस मुल्क और इस घर के साथ ऐसा क्यों किया? <sup>22</sup> तब वह जवाब देंगे इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने बाप दादा के खुदा को जो उनको मुल्के मिस्र से निकाल लाया था छोड़ दिया और ग़ैर मा'बूदों को इस्तिथार कर के उनको सिज्दा किया और उनकी इबादत की इसीलिए खुदावन्द ने उन पर यह सारी मुसीबत नाज़िल की।

## 8

???????? ?? ????? ?? ?????

<sup>1</sup> और बीस साल के आखिर में जिन सुलेमान ने खुदावन्द का घर और अपना घर बनाया था यूँ हुआ कि। <sup>2</sup> सुलेमान ने उन शहर को जो हुराम ने सुलेमान को दिए थे फिर ता'मीर किया और बनी इस्राईल को वहाँ बसाया। <sup>3</sup> और सुलेमान हमात ज़ूबाह को जाकर उस पर ग़ालिब हुआ। <sup>4</sup> और उसने वीरान में तदमूर को बनाया और खज़ाना के सब शहरों को भी जो उस ने हमात में बनाए थे। <sup>5</sup> और उसने ऊपर के बैत हौरून और नीचे के बैत हौरून को बनाया जो दीवारों और फाटकों और अड़बंगों से मज़बूत किए हुए शहर थे। <sup>6</sup> और बा'लत और खज़ाना के सब शहर जो सुलेमान के थे और रथों के सब शहर और सवारों के शहर जो कुछ सुलेमान चाहता था कि येरूशलेम और लुबनान और अपनी ममलुकत की सारी सर ज़मी बनाए वह सब बनाया। <sup>7</sup> और वह सब लोग जो हित्तियों और अमोरियों और फ़रिज़्ज़ियों और हव्वियों और यबूसियों में से बाक़ी रह गए थे और इस्राईली न थे। <sup>8</sup> उन ही की औलाद जो उनके बाद मुल्क में बाक़ी रह गई थी जिसे बनी इस्राईल ने नाबूद नहीं किया, उसी में से सुलेमान ने बेगारी मुक़र्रर किए

जैसा आज के दिन है। <sup>9</sup> लेकिन सुलेमान ने अपने काम के लिए बनी इस्राईल में से किसी को गुलाम न बनाया बल्कि वह जंगी मर्द और उसके लस्करों के सदर और उसके रथों और सवारों पर हुक्मरान थें। <sup>10</sup> और सुलेमान बादशाह के खास मनसबदार जो लोगों पर हुक्मत करते थे दो सौ पचास थें। <sup>11</sup> और सुलेमान फ़िर'औन की बेटी को दाऊद के शहर से उस घर में जो उसके लिए बनाया था ले आया क्यूँकि उसने कहाँ, कि मेरी बीवी इस्राईल के बादशाह दाऊद के घर में नहीं रहेंगी क्यूँकि वह मक़ाम मुक़द्दस है जिन में खुदावन्द का सन्दूक आ गया है। <sup>12</sup> तब सुलेमान खुदावन्द के लिए खुदावन्द उस मज़बूत पर जिसको उसने उसारें के सामने बनाया था सोख़्तनी कुर्बानीयाँ अदा करने लगा। <sup>13</sup> वह हर दिन के फ़र्ज के मुताबिक़ जैसा मूसा ने हुक्म दिया था सब्तों और नए चाँदों और साल में तीन बार मुक़र्रर 'ईद या'नी फ़तीरी रोटी की 'ईद और हफ़्तों की 'ईद और खेमों की 'ईद पर कुर्बानी करता था। <sup>14</sup> और उस ने बाप दाऊद के हुक्म के मुताबिक़ काहिनों के फ़रीक़ो को हर दिन के फ़र्ज के मुताबिक़ उनके काम पर और लावीयों को उनकी ख़िदमत पर मुक़र्रर किया ताकि वह काहिनों के आमने सामने हम्द और ख़िदमत करें और दरबानों को भी उनके फ़रीक़ो के मुताबिक़ हर फाटक पर मुक़र्रर किया क्यूँकि मर्दे खुदा दाऊद ने ऐसा ही हुक्म दिया था। <sup>15</sup> और वह बादशाह के हुक्म से जो उसने काहिनों और लावीयों को किसी बात की निस्वत या खज़ानों के हक़ में दिया था बाहर न हुए। <sup>16</sup> और सुलेमान का सारा काम खुदावन्द के घर की बुनियाद डालने के दिन से उसके तैयार होने तक तमाम हुआ और खुदावन्द का घर पूरा बन गया। <sup>17</sup> तब सुलेमान अस्यून जाबर और ऐलोत को गया जो मुल्क — ए — अदोम में समुन्दर के किनारे है। <sup>18</sup> और हुराम ने अपने नौकरों के हाथ से जहाज़ों और मलाहों को जो समुन्दर से वाकिफ़ थे उसके पास भेजा और वह सुलेमान के मुलाज़िमों के साथ ओफ़ीर में आए और वहाँ से साढ़े चार सौ किन्तार सोना लेकर बादशाह के पास लाए।

## 9

???? ?? ????????? ?? ?????????

<sup>1</sup> जब सबा की मलिका ने सुलेमान की शोहरत सुनी तो वह मुश्किल सवालों से सुलेमान को आजमाने के लिए बहुत बड़ी जिलौ और ऊटों के साथ जिन पर मसाल्हे और बाइफ़रात सोना और जवाहर थे येरूशलेम में आई और सुलेमान के पास आकर जो कुछ उसके दिल में था उस सब की बारे में उससे बातें की। <sup>2</sup> सुलेमान ने

उसके सब सवालो का जवाब उसे दिया और सुलेमान से कोई बात छिपी हुई न थी कि वह उसको बता न सका। 3 जब सबा की मलिका ने सुलेमान की 'अक़्लमन्दी को और उस घर को जो उसने बनाया था। 4 और उसके दस्तरख्वान की ने'मत और उसके खादिमों की निश्चत और उसके मुलाज़िमों की हाज़िर बाशी और उनके लिबास और उसके साक्रियों और उनके लिबास को और उस ज़ीने को जिस से वह खुदावन्द को घर को जाता था देखा तो उस के होश उड़ गए। 5 और उसने बादशाह से कहाँ, कि वह सच्ची ख़बर थी जो मैंने तेरे कामों और तेरी हिकमत की बारे में अपने मुल्क में सुनी थी। 6 तो भी जब तक मैंने आकर अपनी आँखों से न देख लिया उनकी बातों का यकीन न किया और देख जितनी बड़ी तेरी हिकमत है उसका आधा बयान भी मेरे आगे नहीं हुआ तो उस शहर से बढ़कर है जो मैंने सुनी थी। 7 खुश नसीब है तेरे लोग और खुश नसीब है तेरे यह मलाज़िम जो हमेशा तेरे सामने खड़े रहते और और तेरी हिकमत सुनते हैं। 8 खुदावन्द तेरा खुदा मुबारक हो जो तुझ से ऐसा राज़ी हुआ कि तुझको अपने तख्त पर बिठाया ताकि तू खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ से बादशाहों चूँकि तेरे खुदा को इस्राईल से मुहब्बत थी कि उनको हमेशा के लिए क्राईम करे इसलिए उस ने तुझे उनका बादशाह बनाया ताकि तू 'अदल — ओ — इन्साफ़ करे। 9 और उस ने एक सौ बीस किन्तार सोना और मसाल्हे का बहुत बड़ा ढेर और जवाहर सुलेमान को दिए और जो मसाल्हे सबा की मलिका ने सुलेमान बादशाह को दिए वैसे फिर कभी मयस्सर न आए। 10 और हुराम के नौकर भी और सुलेमान के नौकर जो ओफ़ीर से सोना लाते थे, वह चन्दन के दरख्त और जवाहर भी लाते थे। 11 और बादशाह ने चन्दन की लकड़ी से खुदावन्द के घर के लिए और शाही महल के लिए चबूतरे और गाने वालों के लिए बरबत और सितार तैयार कराए; और ऐसी चीज़ें यहूदाह के मुल्क में पहले कभी देखने में नहीं आई थी। 12 और सुलेमान बादशाह ने सबा की मलिका को जो कुछ उसने चाहा और माँगा उस से ज्यादा जो वह बादशाह के लिए लाई थी दिया और वह लौटकर अपने मुलाज़िमों समेत अपनी ममलुकत को चली गई। 13 और जितना सोना सुलेमान के पास एक साल में आता था उसका वज़न छे; सौ छियासठ किन्तार सोने का था। 14 यह उसके 'अलावा था जो ब्यापारी और सौदागर लाते थे और अरब के सब बादशाह और मुल्क के हाकिम सुलेमान के पास सोना और चाँदी लाते थे। 15 और सुलेमान बादशाह ने पिटे हुए सोने की दो सौ बड़ी ढालें बनवाई, छे; सौ मिस्काल पिटा हुआ सोना

एक एक ढाल में लगा। 16 और उसने पिटे हुए सोने की तीन सौ ढालें और बनवाई, एक एक ढाल में तीन सौ मिस्काल सोना लगा, और बादशाह ने उनको लुबनानी बन के घर में रखा। 17 उसके 'अलावा बादशाह ने हाथी दांत का एक बड़ा तख्त बनवाया और उस पर खालिस सोना मढ़वाया। 18 और उस तख्त के लिए छे; सीढ़ियाँ और सोने का एक पायदान था, यह सब तख्त से जुड़े हुए थे और बैठने की जगह की दोनों तरफ़ एक एक टेक थी और उन टेकों के बराबर दो शेर — ए — बबर खड़े थे। 19 और उन छेओ सीढ़ियों पर इधर और उधर बारह शेर — ए — बबर खड़े थे किसी हुकूमत में कभी नहीं बना था। 20 और सुलेमान बादशाह के पीने के सब बर्तन सोने के थे और लुबनानी बन के घर सब बर्तन खालिस सोने के थे सुलेमान के अय्याम में चाँदी की कुछ क़दर न थी। 21 क्योंकि बादशाह के पास जहाज़ थे जो हुराम के नौकारों के साथ तरसीस को जाते थे, तरसीस के यह जहाज़ तीन साल में एक बार सोना और चाँदी और हाथी के दांत और बंदर और मोर लेकर आते थे। 22 सुलेमान बादशाह दौलत और हिकमत में रु — ए — ज़मीन के सब बादशाहों से बढ़ गया। 23 और रु — ए — ज़मीन के सब बादशाह सुलेमान के दीदार के मुशताक़ थे ताकि वह उसकी हिकमत जो खुदा ने उसके दिल में डाली थी सुनें। 24 और वह साल — ब — साल अपना अपना हदिया, या'नी चाँदी के बर्तन और सोने के बर्तन और लिबास और हथियार और मसाल्हे और घोड़े और खच्चर जितने मुक़र्रर थे लाते थे। 25 और सुलेमान के पास घोड़े और रथों के लिए चार हज़ार थान और बारह हज़ार सवार थे जिनको उस ने रथों के शहरों और येरूशलेम, में बादशाह के पास रखा। 26 और वह दरिया — ए — फ़रात से फ़िलिस्तियों के मुल्क बल्कि मिस्र की हद तक सब बादशाहों पर हुक़मरान था। 27 और बादशाह ने येरूशलेम में इफ़रात की वजह से चाँदी को पत्थरों की तरह और देवदार के दरख्तों को गूलर के उन दरख्तों के बराबर कर दिया जो नशीब की सर ज़मीन में है। 28 और वह मिस्र से और और सब मुल्को से सुलेमान के लिए घोड़े लाया करते थे। 29 और सुलेमान के बाक़ी काम शुरू से आख़िर तक किया वह नातन नबी की किताब में और सैलानी अखियाह की पेशीनगोई में और 'ईदू ग़ैबबीन की रोयतों की किताब में जो उसने युरब'आम बिन नाबत के ज़रिए देखी थी, मुन्दर्ज़ नहीं है? 30 और सुलेमान ने येरूशलेम में सारे इस्राईल पर चालीस साल हुकूमत की। 31 और सुलेमान अपने बाप दादा के साथ सो गया और अपने बाप दाऊद के शहर में दफ़न हुआ और उसका

बेटा रहुब 'आम उसकी जगह हुकूमत करने लगा।

## 10

?????? ?? ???? ?? ???? ??

<sup>1</sup> और रहुब 'आम सिकम को गया, इसलिए कि सब इस्राईली उसे बादशाह बनाने को सिकम में इकट्ठे हुए थे <sup>2</sup> जब नबात के बेटे युरब'आम ने यह सुना क्योंकि वह मिस्र में था जहाँ वह सुलेमान बादशाह के आगे से भाग गया था तो युरब'आम मिस्र से लौटा। <sup>3</sup> और लोगों ने उसे बुलवा भेजा। तब युरब'आम और सब इस्राईली आए और रहुब'आम से कहने लगे। <sup>4</sup> कि तेरे बाप ने हमारा बोझ सख्त कर रखा था। इसलिए अब तू अपने बाप की उस सख्त खिदमत को और उस भारी बोझ को जो उस ने हम पर डाल रखा था; कुछ हल्का कर दे और हम तेरी खिदमत करेंगे। <sup>5</sup> और उसने उन से कहा, तीन दिन के बाद फिर मेरे पास आना “चुनाँचे वह लोग चले गए <sup>6</sup> तब रहुब'आम बादशाह ने उन बुजुर्गों से जो उसके बाप सुलेमान के सामने उसके जीते जी खड़े रहते थे, सलाह की और कहा तुम्हारी क्या सलाह है? मैं इन लोगो को क्या जवाब दूँ? <sup>7</sup> उन्होंने उससे कहा कि अगर तू इन लोगों पर मेहरबान हो और उनको राजी करें और इन से अच्छी अच्छी बातें कहे, तो वह हमेशा तेरी खिदमत करेंगे। <sup>8</sup> लेकिन उस ने उन बुजुर्गों की सलाह को जो उन्होंने उसे दी थी छोड़कर कर उन जवानों से जिन्होंने उसके साथ परवरिश पाई थी और उसके आगे हाज़िर रहते थे सलाह की। <sup>9</sup> और उन से कहा तुम मुझे क्या सलाह देते हो कि हम इन लोगों को क्या जवाब दे जिन्होंने मुझ से यह दरखवास्त की है कि उस बोझ को जो तेरे बाप ने हम पर रखा कुछ हल्का कर? <sup>10</sup> उन जवानों ने जिन्होंने उसके साथ परवरिश पाई थी उस से कहा, तू उन लोगों को जिन्होंने तुझ से कहा तेरे बाप ने हमारे बोझ को भारी किया लेकिन तू उसको हमारे लिए कुछ हल्का कर दे यूँ जवाब देना और उन से कहना कि मेरी छिगुली मेरे बाप के कमर से भी मोटी है। <sup>11</sup> और मेरे बाप ने तो भारी बोझ तुम पर रखा ही था लेकिन मैं उस बोझ को और भी भारी करूँगा। मेरे बाप ने तुम्हें कोड़ों से ठीक किया लेकिन मैं तुम को बिच्छुओं से ठीक करूँगा।” <sup>12</sup> और जैसा बादशाह ने हुक्म दिया था कि तीसरे दिन मेरे पास फिर आना तीसरे दिन युरब'आम और सब लोग रहुब'आम के पास हाज़िर हुए। <sup>13</sup> तब बादशाह उनको सख्त जवाब दिया और रहुब'आम बादशाह ने बुजुर्गों की सलाह को छोड़कर। <sup>14</sup> जवानों की सलाह के मुताबिक उनसे कहा कि मेरे बाप ने तुम्हारा बोझ भारी

किया लेकिन मैं उसको और भी भारी करूँगा। मेरे बाप ने तुमको कोड़ों से ठीक किया लेकिन मैं तुम को बिच्छुओं से ठीक करूँगा। <sup>15</sup> तब बादशाह ने लोगों की न मानी क्योंकि यह खुदा ही की तरफ से था ताकि खुदावन्द उस बात को जो उसने सैलानी अखियाह की ज़रिए नबात के बेटे युरब'आम को फ़रमाई थी पूरा करे। <sup>16</sup> जब सब इस्राईलियों ने यह देखा कि बादशाह ने उनकी न मानी तो लोगों ने बादशाह को जवाब दिया और यूँ कहा कि दाऊद के साथ हमारा क्या हिस्सा है? यस्सी के बेटे के साथ हमारी कुछ मीरास नहीं। ऐ इस्राईलियों! अपने अपने डेरे को चले जाओ। अब ऐ दाऊद अपने ही घराने को संभाल। इसलिए सब इस्राईली अपने खेमों को चल दिए। <sup>17</sup> लेकिन उन बनी इस्राईल पर जो यहूदाह के शहरों में रहते थे रहुब'आम हुकूमत करता रहा। <sup>18</sup> तब रहुब'आम बादशाह ने हदुराम को जो बेगारियों का दरोगा था भेजा लेकिन बनी इस्राईल ने उसको पथराव किया और वह मर गया। तब रहुब'आम येरूशलेम को भाग जाने के लिए झट अपने रथ पर सवार हो गया। <sup>19</sup> तब इस्राईली आज के दिन तक दाऊद के घराने से बाँगी है।

## 11

?????? ?? ???? ??

<sup>1</sup> और जब रहुब'आम येरूशलेम में आ गया तो उसने इस्राईल से लड़ने के लिए यहूदाह और बिनयमीन के घराने में से एक लाख अस्सी हजार चुने हुए जवान, जो जंगी जवान थे इकट्ठा किए, ताकि वह फिर ममलुकत को रहुब'आम के कब्जे में करा दें। <sup>2</sup> लेकिन खुदा वन्द का कलाम नबी समा'याह को पहुँचा कि; <sup>3</sup> यहूदाह के बादशाह सुलेमान के बेटे रहुब'आम से और सारे इस्राईल से जो यहूदाह और बिनयमीन में हैं, कह, <sup>4</sup> 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तुम चढ़ाई न करना और न अपने भाइयों से लड़ना। तुम अपने अपने घर को लौट जाओ, क्योंकि यह मु'आमिला मेरी तरफ से है। तब उन्होंने खुदावन्द की बातें मान लीं, और युरब'आम पर हमला किए बग़ैर लौट गए। <sup>5</sup> रहुब'आम येरूशलेम में रहने लगा, और उसने यहूदाह में हिफ़ाज़त के लिए शहर बनाए। <sup>6</sup> चुनाँचे उसने बैतलहम और ऐताम और तकू'अ, <sup>7</sup> और बैत सूर और शोको और 'अदूल्ताम, <sup>8</sup> और जात और मरीसा और ज़ीफ़, <sup>9</sup> और अदूरैम और लकीस और 'अज़ीका, <sup>10</sup> और सुर'आ और अय्यालोन और हबरून को जो यहूदाह और बिनयमीन में हैं, बना कर किला' बन्द कर दिया। <sup>11</sup> और उसने किलों' को बहुत मज़बूत

किया और उनमें सरदारों को मुक्ररर किया, और खुराक और तेल और शराब के जखीरे को रखा। <sup>12</sup> और एक एक शहर में ढालें और भाले रखवाकर उनको बहुत ही मजबूत कर दिया; और यहूदाह और बिनयमीन उसी के रहे। <sup>13</sup> और काहिन और लावी जो सारे इस्राईल में थे, अपनी अपनी सरहद से निकल कर उसके पास आ गए। <sup>14</sup> क्योंकि लावी अपनी पास के 'इलाकों और जायदादों को छोड़ कर यहूदाह और येरूशलेम में आए, इसलिए के युरब'आम और उसके बेटों ने उन्हें निकाल दिया था ताकि वह खुदावन्द के सामने कहानत की खिदमत को अंजाम न देने पाएँ, <sup>15</sup> और उसने अपनी तरफ से ऊँचे मक़ामों और बकरों और अपने बनाए हुए बछड़ों के लिए काहिन मुक्ररर किए। <sup>16</sup> और लावियों के पीछे इस्राईल के सब कबीलों में से ऐसे लोग जिन्होंने खुदावन्द इस्राईल के खुदा की तलाश में अपना दिल लगाया था, येरूशलेम में आए कि खुदावन्द अपने बाप दादा के खुदा के सामने कुर्बानी पेश करें। <sup>17</sup> इसलिए उन्होंने यहूदाह की हुकूमत को ताक़तवर बना दिया, और तीन साल तक सुलेमान के बेटे रहब'आम को ताक़तवर बना रखा, क्योंकि वह तीन साल तक दाऊद और सुलेमान की रास्ते पर चलते रहे। <sup>18</sup> रहब'आम ने महालात को जो यरीमोत बिन दाऊद और इलियाब बिन यस्सी की बेटी अबीखैल की बेटी थी, ब्याह लिया। <sup>19</sup> उसके उससे बेटे पैदा हुए, या'नी य'ऊस और समरियाह और ज़हम। <sup>20</sup> उसके बाद उसने अबीसलोम की बेटी मा'का को ब्याह लिया, जिसके उससे अबियाह और 'अत्ती और जीज़ा और सलूमियत पैदा हुए। <sup>21</sup> रहब'आम अबीसलोम की बेटी मा'का को अपनी सब बीवियों और बाँदियों से ज्यादा प्यार करता था क्योंकि उसकी अठारह बीवियाँ और साठ बाँदी थीं; और उससे अठाईस बेटे और साठ बेटियाँ पैदा हुई। <sup>22</sup> और रहब'आम ने अबियाह बिन मा'का को रहनुमा मुक्ररर किया ताकि अपने भाइयों में सरदार हो, क्योंकि उसका इरादा था कि उसे बादशाह बनाए। <sup>23</sup> और उसने होशियारी की, और अपने बेटों को यहूदाह और बिनयमीन की सारी ममलुकत के बीच हर फ़सीलदार शहर में अलग अलग कर दिया; और उनको बहुत खुराक दी, और उनके लिए बहुत सी बीवियाँ तलाश कीं।

## 12

????? ?? ??????? ?? ????? ???? ?

<sup>1</sup> और ऐसा हुआ कि जब रहब'आम की हुकूमत मजबूत हो गई और वह ताक़तवर बन गया, तो उसने और उसके साथ सारे इस्राईल ने खुदावन्द की शरी'अत

को छोड़ दिया। <sup>2</sup> रहब'आम बादशाह के पाँचवें साल में ऐसा हुआ कि मिस्र का बादशाह सीसक येरूशलेम पर चढ़ आया, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द की हुकूम 'उदली की थी, <sup>3</sup> और उसके साथ बारह सौ रथ और साठ हज़ार सवार थे, और लूबी और सूकी और कूशी लोग जो उसके साथ मिस्र से आए थे बेशुमार थे। <sup>4</sup> और उसने यहूदाह के फ़सीलदार शहर ले लिए, और येरूशलेम तक आया। <sup>5</sup> तब समायाह नबी रहब'आम के और यहूदाह के हाकिमों के पास जो सीसक के डर के मारे येरूशलेम में जमा हो गए थे, आया और उनसे कहा, "खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तुम ने मुझ को छोड़ दिया, इसी लिए मैंने भी तुम को सीसक के हाथ में छोड़ दिया है।" <sup>6</sup> तब इस्राईल के हाकिमों ने और बादशाह ने अपने को खाकसार बनाया और कहा, "खुदावन्द सच्चा है।" <sup>7</sup> जब खुदावन्द ने देखा के उन्होंने अपने को खाकसार बनाया, तो खुदा वन्द का कलाम समायाह पर नाज़िल हुआ: "उन्होंने अपने को खाकसार बनाया है, इसलिए मैं उनको हलाक नहीं करूँगा बल्कि उनको कुछ रिहाई दूँगा; और मेरा क्रहर सीसक के हाथ से येरूशलेम पर नाज़िल न होगा। <sup>8</sup> तोभी वह उसके खादिम होंगे, ताकि वह मेरी खिदमत को और मुल्क मुल्क की सल्लतनों की खिदमत को जान लें।" <sup>9</sup> इसलिए मिस्र का बादशाह सीसक येरूशलेम पर चढ़ आया, और खुदावन्द के घर के खज़ाने और बादशाह के घर के खज़ाने ले गया। बल्कि वह सब कुछ ले गया, और सोने की वह ढालें भी जो सुलेमान ने बनवाई थीं ले गया। <sup>10</sup> और रहब'आम बादशाह ने उनके बदले पीतल की ढालें बनवाई और उनको मुहाफ़िज़ सिपाहियों के सरदारों को जो शाही महल की निगहबानी करते थे सौंपा। <sup>11</sup> और जब बादशाह खुदावन्द के घर में जाता था, तो वह मुहाफ़िज़ सिपाही आते और उनको उठाकर चलते थे, और फिर उनको वापस लाकर सिलाहखाने में रख देते थे। <sup>12</sup> और जब उसने अपने को खाकसार बनाया, तो खुदा वन्द का क्रहर उस पर से टल गया और उसने उसको पूरे तौर से तबाह न किया; और भी यहूदाह में खूबियाँ भी थीं। <sup>13</sup> इसलिए रहब'आम बादशाह ने ताक़तवर होकर येरूशलेम में हुकूमत की। रहब'आम जब हुकूमत करने लगा तो इकतालीस साल का था और उसने येरूशलेम में, या'नी उस शहर में जो खुदावन्द ने इस्राईल के सब कबीलों में से चुन लिया था कि अपना नाम वहाँ रखे, सत्रह साल हुकूमत की। उसकी माँ का नाम ना'मा अम्मूनिया था। <sup>14</sup> और उसने बुराई की, क्योंकि उसने खुदावन्द की तलाश में अपना



दिल न लगाया। <sup>15</sup> और रहब'आम के काम अव्वल से आखिर तक, क्या वह समायाह नबी और 'ईद ग़ौबबीन की तवारीखों' में नसबनामों के मुताबिक लिखा नहीं? रहब'आम और युरब'आम के बीच हमेशा जंग रही। <sup>16</sup> और रहब'आम अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और दाऊद के शहर में दफ़न हुआ; और उसका बेटा अबियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

## 13

222222 22 222222 22 2222

<sup>1</sup> युरब'आम बादशाह के अठारहवें साल से अबियाह यहूदाह पर हुकूमत करने लगा। <sup>2</sup> उसने येरूशलेम में तीन साल हुकूमत की। उसकी माँ का नाम मीकायाह था जो ऊरिएल जिबई की बेटी थी। और अबियाह और युरब'आम के बीच जंग हुई। <sup>3</sup> अबियाह जंगी सूमाओं का लश्कर, या'नी चार लाख चुने हुए जंगी सूमाओं का लश्कर लेकर लड़ाई में गया। और युरब'आम ने उसके मुक्राबिले में आठ लाख चुने हुए आदमी लेकर, जो ताक़तवर सूमा थे सफ़आराई की। <sup>4</sup> और अबियाह समरेम के पहाड़ पर जो इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में है, खड़ा हुआ और कहने लगा, “ऐ युरब'आम और सब इस्राईलियो, मेरी सुनो! <sup>5</sup> क्या तुम को मा'लूम नहीं कि खुदा वन्द इस्राईल के खुदा ने इस्राईल की हुकूमत दाऊद ही को और उसके बेटों को, नमक के अहद से हमेशा के लिए दी है? <sup>6</sup> तोभी नबात का बेटा युरब'आम, जो सुलेमान बिन दाऊद का खादिम था, उठकर अपने आक्रा से बागी हुआ। <sup>7</sup> उसके पास निकम्मे और खबीस आदमी जमा' हो गए, जिन्होंने सुलेमान के बेटे रहब'आम के मुक्राबिले में ज़ोर पकड़ा, जब रहब'आम अभी जवान और नर्म दिल था और उनका मुक्राबिला नहीं कर सकता था। <sup>8</sup> और अब तुम्हारा ख्याल है कि तुम खुदावन्द की बादशाही का, जो दाऊद की औलाद के हाथ में है, मुक्राबिला करो; और तुम भारी गिरोह हो और तुम्हारे साथ वह सुनहले बछड़े हैं जिनको युरब'आम ने बनाया कि तुम्हारे मा'बूद हों। <sup>9</sup> क्या तुम ने हारून के बेटों और लावियों को जो खुदावन्द के काहिन थे, खारिज नहीं किया, और मुल्कों की क्रौमों के तरीके पर अपने लिए काहिन मुक्ररर नहीं किए? ऐसा कि जो कोई एक बछड़ा और सात मेंढे लेकर अपनी तक्दीस करने आए, वह उनका जो हकीकत में खुदा नहीं हैं काहिन हो सके। <sup>10</sup> लेकिन हमारा यह हाल है कि खुदा वन्द हमारा खुदा है और हम ने उसे छोड़ नहीं दिया है, और हमारे यहाँ हारून के बेटे काहिन हैं जो खुदावन्द की खिदमत

करते हैं, और लावी अपने अपने काम में लगे रहते हैं। <sup>11</sup> और वह हर सुबह और हर शाम को खुदावन्द के सामने सोख्तनी कुर्बानियाँ और खुशबूदार खुशबू जलाते हैं, और पाक मेज़ पर नज़ की रोटियाँ काइदे के मुताबिक रखते और सुनहले शमा'दान और उसके चिरागों को हर शाम को रौशन करते हैं, क्योंकि हम खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म को मानते हैं; लेकिन तुम ने उसको छोड़ दिया है। <sup>12</sup> देखो, खुदा हमारे साथ हमारा रहनुमा है, और उसके काहिन तुम्हारे खिलाफ़ साँस बांधकर ज़ोर से फूँकने को नरसिंगे लिए हुए हैं। ऐ बनी — इस्राईल, खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा से मत लड़ो, क्योंकि तुम कामयाब न होगे।” <sup>13</sup> लेकिन युरब'आम ने उनके पीछे कमीन लगवा दी। इसलिए वह बनी यहूदाह के आगे रहे और कमीन पीछे थी। <sup>14</sup> जब बनी यहूदाह ने पीछे नज़र की, तो क्या देखा कि लड़ाई उनके आगे और पीछे दोनों तरफ़ से है; और उन्होंने खुदावन्द से फ़रियाद की, और काहिनों ने नरसिंगे फूँके। <sup>15</sup> तब यहूदाह के लोगों ने ललकारा, और जब उन्होंने ललकारा तो ऐसा हुआ कि खुदा ने अबियाह और यहूदाह के आगे युरब'आम को और सारे इस्राईल को मारा। <sup>16</sup> और बनी इस्राईल यहूदाह के आगे से भागे, और खुदा ने उनको उनके हाथ में कर दिया। <sup>17</sup> और अबियाह और उसके लोगों ने उनको बड़ी खूनरेज़ी के साथ क़त्ल किया, तब इस्राईल के पाँच लाख चुने हुए मर्द मारे गए। <sup>18</sup> ऐसे बनी — इस्राईल उस वक़्त मग़लूब हुए और बनी यहूदाह ग़ालिब आए, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने बाप दादा के खुदा पर यक़ीन किया। <sup>19</sup> और अबियाह ने युरब'आम का पीछा किया और इन शहरों को उससे ले लिया, या'नी बैतएल और उसके देहात। यसाना और उसके देहात इफ़रोन और उसके देहात। <sup>20</sup> अबियाह के दिनों में युरब'आम ने फिर ज़ोर न पकड़ा, और खुदावन्द ने उसे मारा और वह मर गया। <sup>21</sup> लेकिन अबियाह ताक़तवर हो गया और उसने चौदह बीवियाँ ब्याही, और उस के ज़रिए बेटे और सोलह बेटियाँ पैदा हुई। <sup>22</sup> अबियाह के बाक़ी काम और उसके हालात और उसकी कहावतें 'ईदू नबी की तफ़सीर में लिखी हैं।

## 14

2222 22 22222222 22 22222222 2222

<sup>1</sup> और अबियाह अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में दफ़न किया; और उसका बेटा आसा उसकी जगह बादशाह हुआ। उसके दिनों में दस साल तक मुल्क में अमन रहा। <sup>2</sup> और आसा

ने वही किया जो खुदावन्द उसके खुदा के सामने अच्छा और ठीक था। <sup>3</sup> क्योंकि उसने अजनबी मज़बहों और ऊँचे मक़ामों को दूर किया, और लाटों को गिरा दिया, और यसीरतों को काट डाला, <sup>4</sup> और यहूदाह को हुक्म किया कि खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा के तालिब हों, और शरी'अत और फ़रमान पर 'अमल करें। <sup>5</sup> उसने यहूदाह के सब शहरों में से ऊँचे मक़ामों और सूरज की मूरतों को दूर कर दिया, और उसके सामने हुक्मत में अमन रहा। <sup>6</sup> उसने यहूदाह में फ़सीलदार शहर बनाए, क्योंकि मुल्क में अमन था। उन बरसों में उसे जंग न करना पड़ा, क्योंकि खुदावन्द ने उसे अमान बरूषी थी। <sup>7</sup> इसलिए उसने यहूदाह से कहा, कि “हम यह शहर ता'मीर करें और उनके पास दीवार और बुर्ज बनायें और फाटक और अड़बंगे लगाएँ। यह मुल्क अभी हमारे क़ाबू में है, क्योंकि हम खुदावन्द अपने खुदा के तालिब हुए हैं। हम उसके तालिब हुए और उसने हम को चारों तरफ़ अमान बरूषी है।” इसलिए उन्होंने उनको ता'मीर किया और कामयाब हुए। <sup>8</sup> और आसा के पास बनी यहूदाह के तीन लाख आदमियों का लश्कर था जो ढाल और भाला उठाते थे, और बिनयमीन के दो लाख अस्सी हजार थे जो ढाल उठाते और तीर चलाते थे। यह सब ज़बरदस्त सूर्मा थे। <sup>9</sup> और इनके मुक्काबिले में ज़ारह कूशी दस लाख की फ़ौज और तीन सौ रथों को लेकर निकला, और मरीसा में आया। <sup>10</sup> और आसा उसके मुक्काबिले को गया, और उन्होंने मरीसा के बीच सफ़ाता की वादी में जंग के लिए सफ़ बाँधी। <sup>11</sup> और आसा ने खुदावन्द अपने खुदा से फ़रियाद की और कहा, “ऐ खुदावन्द, ताक़तवर और कमज़ोर के मुक्काबिले में मदद करने को तेरे 'अलावा और कोई नहीं। ऐ खुदावन्द हमारे खुदा तू हमारी मदद कर क्योंकि हम तुझ पर भरोसा रखते हैं और तेरे नाम से इस ग़िरोह का सामना करने आए हैं। तू ऐ खुदा हमारा खुदा है इंसान तेरे मुक्काबिले में ग़ालिब होने न पाए।” <sup>12</sup> फिर खुदावन्द ने आसा और यहूदाह के आगे कूशियों को मारा और कूशी भागे, <sup>13</sup> और आसा और उसके लोगों ने उनको ज़िरार तक दौड़ाया, और कूशियों में से इतने क़त्ल हुए कि वह फिर संभल न सके, क्योंकि वह खुदावन्द और उसके लश्कर के आगे हलाक हुए; और वह बहुत सी लूट ले आए। <sup>14</sup> उन्होंने ज़िरार के आसपास के सब शहरों को मारा, क्योंकि खुदावन्द का ख़ौफ़ उन पर छा गया था। और उन्होंने सब शहरों को लूट लिया, क्योंकि उनमें बड़ी लूट थी। <sup>15</sup> और उन्होंने मवैशी के डेरों पर भी हमला किया, और कसरत से भेड़ें और ऊँट लेकर येरूशलेम को लौटे।

## 15

?? ? ???? ???? ?

1 और खुदा की रूह अज़रियाह बिन ओदद पर नाज़िल हुई, 2 और वह आसा से मिलने को गया और उससे कहा, 'ऐ आसा और सारे यहूदाह और बिनयमीन, मेरी सुनो। खुदा वन्द तुम्हारे साथ है जब तक तुम उसके साथ हो, और अगर तुम उसके तालिब हो तो वह तुम को मिलेगा; लेकिन अगर तुम उसे छोड़ दो तो वह तुम को छोड़ देगा। 3 अब बड़ी मुद्दत से बनी — इस्राईल बग़ैर सच्चे खुदा और बग़ैर सिखाने वाले काहिन और बग़ैर शरी'अत के रहे हैं, 4 लेकिन जब वह अपने दुख में खुदावन्द इस्राईल के खुदा की तरफ़ फिर कर उसके तालिब हुए तो वह उनको मिल गया। 5 और उन दिनों में उसे जो बाहर जाता था और उसे जो अन्दर आता था बिल्कुल चैन न था, बल्कि मुल्कों के सब बाशिंदों पर बड़ी तकलीफ़ें थीं। 6 क्रौम क्रौम के मुक्काबिले में, और शहर शहर के मुक्काबिले में पिस गए, क्योंकि खुदा ने उनको हर तरह मुसीबत से तंग किया। 7 लेकिन तुम मज़बूत बनो और तुम्हारे हाथ ढीले न होने पाएँ, क्योंकि तुम्हारे काम का अज़र मिलेगा।' 8 जब आसा ने इन बातों और 'ओदद नबी की नबुव्वत को सुना, तो उसने हिम्मत बाँधकर यहूदाह और बिनयमीन के सारे मुल्क से, और उन शहरों से जो उसने इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में से ले लिए थे, मकरूह चीज़ों को दूर कर दिया, और खुदावन्द के मज़बह को जो खुदावन्द के उसारे के सामने था फिर बनाया। 9 और उसने सारे यहूदाह और बिनयमीन को, और उन लोगों को जो इफ़राईम और मनस्सी और शमौन में से उनके बीच रहा करते थे, इकट्ठा किया, क्योंकि जब उन्होंने देखा कि खुदावन्द उसका खुदा उसके साथ है, तो वह इस्राईल में से बकसरत उसके पास चले आए। 10 वह आसा की हुकूमत के पन्द्रहवें साल के तीसरे महीने में, येरूशलेम में जमा' हुए; 11 और उन्होंने उसी वक़्त उस लूट में से जो वह लाए थे, खुदावन्द के सामने सात सौ बैल और सात हज़ार भेड़ें कुर्बान कीं। 12 और वह उस 'अहद में शामिल हो गए, ताकि अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा के तालिब हों, 13 और जो कोई, क्या छोटा क्या बड़ा क्या मर्द क्या 'औरत, खुदावन्द इस्राईल के खुदा का तालिब न हो वह क़त्ल किया जाए। 14 उन्होंने बड़ी आवाज़ से ललकार कर तुरहियों और नरसिंगों के साथ खुदावन्द के सामने क़सम खाई; 15 और सारा यहूदाह उस क़सम से बहुत ख़ुश हो गए, क्योंकि उन्होंने अपने सारे दिल से क़सम

खाई थी, और कमाल आरजू से खुदावन्द के तालिब हुए थे और वह उनको मिला, और खुदावन्द ने उनको चारों तरफ़ अमान बख़्शी। <sup>16</sup> और आसा बादशाह की माँ मा'का को भी उसने मलिका के 'ओहदे से उतार दिया, क्योंकि उसने यसीरत के लिए एक मकरूह बुत बनाया था। इसलिए आसा ने उसके बुत को काटकर उसे चूर चूर किया, और वादी — ए — क्रिद्रोन में उसको जला दिया। <sup>17</sup> लेकिन ऊँचे मक्राम इस्राईल में से दूर न किए गए, तो भी आसा का दिल उम्र भर कामिल रहा। <sup>18</sup> और उसने खुदा के घर में वह चीजें जो उसके बाप ने पाक की थीं, और जो कुछ उसने खुद पाक किया था दाखिल कर दिया, या'नी चाँदी और सोना और बर्तन। <sup>19</sup> और आसा की हुकूमत के पैंतीसवें साल तक कोई जंग न हुई।

## 16

११११ ११ ११११११ ११ १११११ ११११

<sup>1</sup> और इस्राईल का बादशाह बाशा यहूदाह पर चढ़ आया, और रामा को ता'मीर किया ताकि यहूदाह के बादशाह आसा के यहाँ किसी को आने — जाने न दे। <sup>2</sup> तब आसा ने खुदावन्द के घर और शाही महल के खज़ानों में से चाँदी और सोना निकालकर, अराम के बादशाह बिन — हदद के पास जो दमिश्क में रहता था रवाना किया और कहला भेजा कि, <sup>3</sup> “मेरे और तेरे बीच और मेरे बाप और तेरे बाप के बीच 'अहद — ओ — पैमान है; देख, मैंने तेरे लिए चाँदी और सोना भेजा है, इसलिए तू जाकर इस्राईल के रहने वाले बाशा से वा'दा खिलाफी कर ताकि वह मेरे पास से चला जाए।” <sup>4</sup> और बिन — हदद ने आसा बादशाह की बात मानी और अपने लश्करों के सरदारों को इस्राईली शहरों पर हमला करने को भेजा, तब उन्होंने 'अयून और दान और अबील माइम और नफ़ताली के जखीरे के सब शहरों को तबाह किया। <sup>5</sup> जब बाशा ने यह सुना तो रामा का बनाना छोड़ा, और अपना काम बंद कर दिया। <sup>6</sup> तब आसा बादशाह ने सारे यहूदाह को साथ लिया, और वह रामा के पत्थरों और लकड़ियों को जिनसे बाशा ता'मीर कर रहा था उठा ले गए, और उसने उनसे जिब'आ और मिसफ़ाह को ता'मीर किया। <sup>7</sup> उस वक़्त हनानी ग़ैबबीन यहूदाह के बादशाह आसा के पास आकर कहने लगा, “चूँकि तू ने अराम के बादशाह पर भरोसा किया और खुदावन्द अपने खुदा पर भरोसा नहीं रखा, इसी वजह से अराम के बादशाह का लश्कर तेरे हाथ से बच निकला है। <sup>8</sup> क्या कूशी और लूबी बहुत बड़ा गिरोह न थे, जिनके साथ गाड़ियाँ और सवार बड़ी कसरत से न थे? तो भी चूँकि तू ने खुदावन्द पर भरोसा रखा, उसने उनको तेरे

कब्ज़ा में कर दिया; <sup>9</sup> क्योंकि खुदावन्द की आँखें सारी ज़मीन पर फिरती हैं, ताकि वह उनकी इमदाद में जिनका दिल उसकी तरफ़ कामिल है, अपनी ताक़त दिखाए। इस बात में तू ने बेवकूफी की, क्योंकि अब से तेरे लिए जंग ही जंग है।” <sup>10</sup> तब आसा ने उस ग़ैबबीन से खफ़ा होकर उसे क्रैदखाने में डाल दिया, क्योंकि वह उस कलाम की वजह से बहुत ही गुस्सा हुआ; और आसा ने उस वक़्त लोगों में से कुछ औरों पर भी जुल्म किया। <sup>11</sup> और देखो, आसा के काम शुरू से आखिर तक यहूदाह और इस्राईल के बादशाहों की किताब में लिखा हैं। <sup>12</sup> और आसा की हुकूमत के उनतालीसवें साल उसके पाँव में एक रोग लगा और वह रोग बहुत बढ़ गया, तो भी अपनी बीमारी में वह खुदावन्द का तालिब नहीं बल्कि हकीमों का तालिब हुआ। <sup>13</sup> और आसा अपने बाप — दादा के साथ सो गया; उसने अपनी हुकूमत के इकतालीसवें साल में वफ़ात पाई। <sup>14</sup> उन्होंने उसे उन क़ब्रों में, जो उसने अपने लिए दाऊद के शहर में खुदावाई थीं दफ़न किया। उसे उस ताबूत में लिटा दिया जो इत्रों और क्रिस्म क्रिस्म के मसाल्ले से भरा था, जिनको 'अतारों की हिकमत के मुताबिक़ तैयार किया था, और उन्होंने उसके लिए उनको खूब जलाया।

## 17

१११११११ ११ ११११११ १११ ११११११११

<sup>1</sup> और उसका बेटा यहूसफ़त उसकी जगह बादशाह हुआ, और उसने इस्राईल के मुक्काबिल अपने आपको मज़बूत किया। <sup>2</sup> उसने यहूदाह के सब फ़सीलदार शहरों में फ़ौजें रखी, और यहूदाह के मुल्क में और इफ़्राईम के उन शहरों में जिनको उसके बाप आसा ने ले लिया था, चौकियाँ बिठाई। <sup>3</sup> और खुदावन्द यहूसफ़त के साथ था, क्योंकि उसका चाल चलन उसके बाप दाऊद के पहले तरीक़ों पर थी, और वह बा'लीम का तालिब न हुआ, <sup>4</sup> बल्कि अपने बाप — दादा के खुदा का तालिब हुआ और उसके हुक़्मों पर चलता रहा, और इस्राईल के से काम न किए। <sup>5</sup> इसलिए खुदावन्द ने उसके हाथ में हुकूमत को मज़बूत किया; और सारा यहूदाह यहूसफ़त के पास हदिए लाया, और उसकी दौलत और 'इज़्ज़त बहुत फ़रावान हुई। <sup>6</sup> उसका दिल खुदावन्द के रास्तों में बहुत खुश था, और उसने ऊँचे मक्रामों और यसीरतों को यहूदाह में से दूर कर दिया। <sup>7</sup> और अपनी हुकूमत के तीसरे साल उसने बिनखैल और अबदियाह और ज़करियाह और नतनीएल और मीकायाह को, जो

उसके हाकिम थे, यहूदाह के शहरों में ता'लीम देने को भेजा: 8 और उनके साथ यह लावी थे या'नी समा'याह और नतनियाह और ज़बदियाह और 'असाहेल और समीरामोत और यहूनतन और अदूनियाह और तूबियाह और तूब अदूनियाह लावियों में से, और इनके साथ इलीसमा' और यहूराम काहिनों में से थे। 9 इसीलिए उन्होंने खुदावन्द की शरी'अत की किताब साथ रख कर यहूदाह को ता'लीम दी, और वह यहूदाह के सब शहरों में गए और लोगों को ता'लीम दी। 10 और खुदावन्द का खौफ़ यहूदाह के पास पास की मुल्कों की सब हुकूमतों पर छा गया, यहाँ तक कि उन्होंने यहूसफ़त से कभी जंग न की। 11 बा'ज़ कुछ फ़िलिस्ती यहूसफ़त के पास हदिए और खिराज में चाँदी लाए, और 'अरब के लोग भी उसके पास रेवड़ लाए, या'नी सात हजार सात सौ मेंढे और सात हजार सात सौ बकरे। 12 और यहूसफ़त बहुत ही बढ़ा और उसने यहूदाह में क़िले' और ज़ख़ीरे के शहर बनाए, 13 और यहूदाह के शहरों में उसके बहुत से कारोबार और येरूशलेम में उसके जंगी जवान या'नी ताक्रतवर सूर्मा थे, 14 और उनका शुमार अपने अपने आबाई खान्दान के मुवाफ़िक़ यह था: यहूदाह में से हजारों के सरदार यह थे, सरदार 'अदना और उसके साथ तीन लाख ताक्रतवर सूर्मा, 15 और उससे दूसरे दर्जे पर सरदार यूहनान और उसके साथ दो लाख अस्सी हजार, 16 और उससे नीचे 'अमसियाह बिन ज़िकरी था, जिसने अपने को बखुशी खुदावन्द के लिए पेश किया था, और उस के साथ दो लाख ताक्रतवर सूर्मा थे; 17 और बिनयमीन में से, इलीयदा' एक ताक्रतवर सूर्मा था और उसके साथ कमान और सिपर से मुसल्लह दो लाख थे; 18 और उससे नीचे यहूजबद था, और उसके साथ एक लाख अस्सी हजार थे जो जंग के लिए तैयार रहते थे। 19 यह बादशाह के खिदमत गुज़ार थे, और उनसे अलग थे जिनको बादशाह ने तमाम यहूदाह के फ़सीलदार शहरों में रखवा था।

## 18

???????? ??

1 और यहूसफ़त की दौलत और 'इज़्जत फरावान थी और उसने अख़ीअब के साथ रिस्ता जोड़ा। 2 और कुछ सालों के बाद वह अख़ीअब के पास सामरिया को गया, और अख़ीअब ने उसके और उसके साथियों के लिए भेड़ — बकरियाँ और बैल कसरत से ज़बह किए, और उसे अपने साथ रामात ज़िल'आद पर चढ़ायी करने की सलाह दी। 3 और इस्राईल के बादशाह अख़ीअब ने

यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त से कहा, “क्या तू मेरे साथ रामात ज़िल'आद को चलेगा? उसने जवाब दिया, मैं वैसा ही हूँ जैसा तू है, और मेरे लोग ऐसे हैं जैसे तेरे लोग। इसलिए हम लड़ाई में तेरे साथ होंगे।” 4 और यहूसफ़त ने इस्राईल के बादशाह से कहा, “आज ज़रा खुदावन्द की बात पूछ लें।” 5 तब इस्राईल के बादशाह ने नबियों को जो चार सौ जवान थे, इकट्ठा किया और उनसे पूछा, “हम रामात ज़िल'आद को जंग के लिए जाएँ या मैं बाज़ रहूँ?” उन्होंने कहा, “हमला कर क्योंकि खुदा उसे बादशाह के क़ब्ज़े में कर देगा।” 6 लेकिन यहूसफ़त ने कहा, “क्या यहाँ इनके 'अलावा खुदावन्द का कोई नबी नहीं ताकि हम उससे पूछें?” 7 शाह — ए — इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, “एक शख्स है तो सही, है; जिसके ज़रिए' से हम खुदावन्द से पूछ सकते लेकिन मुझे उससे नफ़रत है, क्योंकि वह मेरे हक़ में कभी नेकी की नहीं बल्कि हमेशा बुराई की पेशीनगोई करता है। वह शख्स मीकायाह बिन इमला है।” यहूसफ़त ने कहा, “बादशाह ऐसा न कहे।” 8 तब शाह — ए — इस्राईल ने एक 'उहदेदार को बुला कर हुक्म किया, “मीकायाह बिन इमला को जल्द ले आ।” 9 और शाह — ए — इस्राईल और शाह — ए — यहूदाह यहूसफ़त अपने अपने तख़्त पर अपना अपना लिबास पहने बैठे थे। वह सामरिया के फाटक के सहन पर खुली जगह में बैठे थे, और सब अम्बिया उनके सामने नबुव्वत कर रहे थे। 10 और सिदक्रियाह बिन कना'नान ने अपने लिए लोहे के सींग बनाए और कहा, “खुदावन्द ऐसा फ़रमाता है कि तू इनसे अरामियों को ढक लेगा, जब तक कि वह ख़त्म न हो जाएँ।” 11 और सब नबियों ने ऐसी ही नबुव्वत की और कहते रहे कि रामात ज़िल'आद को जा और कामयाब हो, क्योंकि खुदावन्द उसे बादशाह के क़ब्ज़े में कर देगा। 12 और उस क़ासिद ने जो मीकायाह को बुलाने गया था, उससे यह कहा, “देख, सब अम्बिया एक ज़बान होकर बादशाह को खुश ख़बरी दे रहे हैं, इसलिए तेरी बात भी ज़रा उनकी बात की तरह हो; और तू खुशख़बरी ही देना।” 13 मीकायाह ने कहा, “खुदावन्द की हयात की क़सम, जो कुछ मेरा खुदा फ़रमाएगा मैं वही कहूँगा।” 14 जब वह बादशाह के पास पहुँचा, तो बादशाह ने उससे कहा, “मीकायाह, हम रामात ज़िल'आद को जंग के लिए जाएँ या मैं बाज़ रहूँ?” उसने कहा, “तुम चढ़ाई करो और कामयाब हो, और वह तुम्हारे हाथ में कर दिए जाएँगे।” 15 बादशाह ने उससे कहा, “मैं तुझे कितनी बार क़सम देकर कहूँ कि तू मुझे खुदावन्द के नाम से हक़ के 'अलावा



और कुछ न बताए?” 16 उसने कहा, “मैंने सब बनी — इस्राईल को पहाड़ों पर उन भेड़ों की तरह बिखरा देखा जिनका कोई चरवाहा न हो, और खुदावन्द ने कहा इनका कोई मालिक नहीं, इसलिए इनमें से हर शख्स अपने घर को सलामत लौट जाए।” 17 तब शाह — ए — इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, “क्या मैंने तुझ से कहा न था कि वह मेरे हक़ में नेकी की नहीं बल्कि बदी की पेशीनगोई करेगा?” 18 तब वह बोल उठा, अच्छा, तुम खुदावन्द के बात को सुनो: मैंने देखा कि खुदावन्द अपने तख़्त पर बैठा है और सारा आसमानी लश्कर उसके दहने और बाएँ हाथ खड़ा है। 19 और खुदावन्द ने फ़रमाया, 'शाह — ए — इस्राईल अखी अब को कौन बहकाएगा, ताकि वह चढ़ाई करे और रामात जिल'आद में मक्तूल हो? और किसी ने कुछ और किसी ने कुछ कहा। 20 तब एक रूह निकलकर खुदावन्द के सामने खड़ी हुई, और कहने लगी, “मैं उसे बहकाऊँगी। खुदावन्द ने उससे पूछा, किस तरह?” 21 उसने कहा, “मैं जाऊँगी, और उसके सब नबियों के मुँह में झूट बोलने वाली रूह बन जाऊँगी। खुदावन्द ने कहा, 'तू उसे बहकाएगी, और गालिब भी होगी; जा और ऐसा ही कर। 22 इसलिए देख, खुदावन्द ने तेरे इन सब नबियों के मुँह में झूट बोलने वाली रूह डाली है, और खुदावन्द ने तेरे हक़ में बुराई का हुक्म दिया है।’” 23 तब सिदक्रियाह बिन कना'ना ने पास आकर मीकायाह के गाल पर मारा और कहने लगा, खुदावन्द की रूह तुझ से कलाम करने को किस रास्ते मेरे पास से निकल कर गई? 24 मीकायाह ने कहा, “तू उस दिन देख लेगा, जब तू अन्दर की कोठरी में छिपने को घुसेगा।” 25 और शाह — ए — इस्राईल ने कहा, मीकायाह को पकड़ कर उसे शहर के नाज़िम अमून और यूआस शहजादे के पास लौटा ले जाओ, 26 और कहना, “बादशाह यूँ फ़रमाता है कि जब तक मैं सलामत वापस न आ जाऊँ, इस आदमी को कैदखाने में रखो, और उसे मुसीबत की रोटी खिलाना और मुसीबत का पानी पिलाना।” 27 मीकायाह ने कहा, “अगर तू कभी सलामत वापस आए, तो खुदावन्द ने मेरे ज़रिए कलाम ही नहीं किया।” और उसने कहा, “ऐ लोगों, तुम सब के सब सुन लो।” 28 इसलिए शाह — ए — इस्राईल और शाह — ए — यहूदाह यहूसफ़त ने रामात जिल'आद पर चढ़ाई की। 29 और शाह — ए — इस्राईल ने यहूसफ़त से कहा, “मैं अपना भेस बदलकर लड़ाई में जाऊँगा, लेकिन तू अपना लिबास पहने रह।” इसलिए शाह — ए — इस्राईल ने भेस बदल लिया, और वह लड़ाई में गए। 30 इधर शाह — ए — अराम ने अपने रथों के सरदारों

को हुक्म दिया था, “शाह — ए — इस्राईल के सिवा, किसी छोटे या बड़े से जंग न करना।” 31 और ऐसा हुआ कि जब रथों के सरदारों ने यहूसफ़त को देखा तो कहने लगे, “शाह — ए — इस्राईल यही है।” इसलिए वह उससे लड़ने को मुड़े। लेकिन यहूसफ़त चिल्ला उठा, और खुदावन्द ने उसकी मदद की; और खुदा ने उनको उसके पास से लौटा दिया। 32 जब रथों के सरदारों ने देखा कि वह शाह — ए — इस्राईल नहीं है, तो उसका पीछा छोड़कर लौट गए। 33 और किसी शख्स ने यूँ ही कमान खींची और शाह — ए — इस्राईल को जौशन के बन्दों के बीच मारा। तब उसने अपने सारथी से कहा, “बाग मोड़ और मुझे लश्कर से निकाल ले चल, क्योंकि मैं बहुत ज़ख्मी हो गया हूँ।” 34 और उस दिन जंग खूब ही हुई, तो भी शाम तक शाह — ए — इस्राईल अरामियों के मुक्काबिल अपने को अपने रथ पर संभाले रहा, और सूरज डूबने के वक़्त के करीब मर गया।

## 19

यहूसफ़त यहूसफ़त यहूसफ़त यहूसफ़त यहूसफ़त यहूसफ़त यहूसफ़त यहूसफ़त यहूसफ़त यहूसफ़त

1 और शाह — ए — यहूदाह यहूसफ़त येरूशलेम को अपने महल में सलामत लौटा। 2 तब हनानी गैबबीन का बेटा याहू उसके इस्तक्रबाल को निकला, और यहूसफ़त बादशाह से कहने लगा, क्या मुनासिब है कि तू शरीरों की मदद करे, और खुदावन्द के दुश्मनों से मुहब्बत रखे? इस बात की वजह से खुदावन्द की तरफ़ से तुझ पर ग़ज़ब है। 3 तो भी तुझ में खूबियाँ हैं; क्योंकि तू ने यसीरतों को मुल्क में से दफ़ा किया, और खुदा की तलाश में अपना दिल लगाया है। 4 यहूसफ़त येरूशलेम में रहता था, और उसने फिर बैरसबा' से इफ़राईम के पहाड़ी तक लोगों के बीच दौरा करके, उनको खुदावन्द उनके बाप — दादा के खुदा की तरफ़ फिर मोड़ दिया। 5 उसने यहूदाह के सब फ़सीलदार शहरों में शहर — ब — शहर क़ाज़ी मुक़रर किए, 6 और क़ाज़ियों से कहा, जो कुछ करो सोच समझकर करो, क्योंकि तुम आदमियों की तरफ़ से नहीं, बल्कि खुदावन्द की तरफ़ से 'अदालत करते हो; और वह फ़ैसले में तुम्हारे साथ है। 7 फिर खुदावन्द का खौफ़ तुम में रहे; इसलिए खबरदारी से काम करना, क्योंकि खुदावन्द हमारे खुदा में बेइन्साफ़ी नहीं है, और न किसी की रूदारी न रिश्वत खोरी। 8 और येरूशलेम में भी यहूसफ़त ने लावियों और काहिनों और इस्राईल के आबाई खान्दानों के सरदारों में से लोगों को, खुदावन्द की 'अदालत और मुक़द्दमों के लिए मुक़रर किया; और वह येरूशलेम को लौटे 9 और उसने

उनको ताकीद की और कहा कि तुम खुदावन्द के खौफ से दियानतदारी और कामिल दिल से ऐसा करना। <sup>10</sup> जब कभी तुम्हारे भाइयों की तरफ से जो अपने शहरों में रहते हैं, कोई मुकद्दमा तुम्हारे सामने आए, जो आपस के खून से या शरी'अत और फ़रमान या क़ानून और 'अदालत से ता'अल्लुक्र रखता हो, तो तुम उनको आगाह कर देना कि वह खुदावन्द का गुनाह न करें, जिससे तुम पर और तुम्हारे भाइयों पर ग़ज़ब नाज़िल हो। यह करो तो तुम से ख़ता न होगी। <sup>11</sup> और देखो, खुदावन्द के सब मु'आमिलों में अमरियाह काहिन तुम्हारा सरदार है, और बादशाह के सब मु'आमिलों में जबदियाह बिन इस्माईल है, जो यहूदाह के खान्दान का रहनुमा है; और लावी भी तुम्हारे आगे सरदार होंगे। हौसले के साथ काम करना और खुदावन्द नेकों के साथ हो।

## 20

२२२२ २२२२ २२ २२२२२ २२ २२२

<sup>1</sup> उसके बाद ऐसा हुआ कि बनी मोआब और बनी 'अम्मून और उनके साथ कुछ 'अम्मूनियों ने यहूसफ़त से लड़ने को चढ़ाई की। <sup>2</sup> तब चन्द लोगों ने आकर यहूसफ़त को खबर दी, “दरिया के पार अराम की तरफ से एक बड़ा गिरोह तेरे मुक़ाबिले को आ रहा है; और देख, वह हसासून — तमर में हैं, जो ऐनजदी है।” <sup>3</sup> और यहूसफ़त डर कर दिल से खुदावन्द का तालिब हुआ, और सारे यहूदाह में रोज़ा का ऐलान कराया। <sup>4</sup> और बनी यहूदाह खुदावन्द से मदद माँगने को इकट्ठे हुए, बल्कि यहूदाह के सब शहरों में से खुदावन्द से मदद माँगने को आए। <sup>5</sup> और यहूसफ़त यहूदाह और येरूशलेम की जमा'अत के बीच, खुदावन्द के घर में नए सहन के आगे खड़ा हुआ <sup>6</sup> और कहा, “ऐ खुदावन्द, हमारे बाप — दादा के खुदा! क्या तू ही आसमान में खुदा नहीं? और क्या क़ौमों की सब मुल्कों पर हुकूमत करने वाला तू ही नहीं? ज़ोर और कुदरत तेरे हाथ में है, ऐसा कि कोई तेरा सामना नहीं कर सकता। <sup>7</sup> ऐ हमारे खुदा, क्या तू ही ने इस सरज़मीन के बाशिंदों को अपनी क़ौम इस्राईल के आगे से निकाल कर इसे अपने दोस्त अब्रहाम की नसल को हमेशा के लिए नहीं दिया? <sup>8</sup> चुनाँचे वह उसमें बस गए, और उन्होंने तेरे नाम के लिए उसमें एक मक़दिस बनाया है और कहते हैं कि; <sup>9</sup> अगर कोई बला हम पर आ पड़े, जैसे तलवार या आफ़त या वबा या काल, तो हम इस घर के आगे और तेरे सामने खड़े होंगे क्योंकि तेरा नाम इस घर में है, और हम अपनी मुसीबत में तुझ से फ़रियाद करेंगे और तू सुनेगा और बचा लेगा।

<sup>10</sup> इसलिए अब देख, 'अम्मून और मोआब और कोह — ए — श'ईर के लोग जिन पर तू ने बनी — इस्राईल को, जब वह मुल्क — ए — मिस्र से निकलकर आ रहे थे, हमला करने न दिया बल्कि वह उनकी तरफ से मुड़ गए और उनको हलाक न किया। <sup>11</sup> देख, वह हम को कैसा बदला देते हैं कि हम को तेरी मीरास से, जिसका तू ने हम को मालिक बनाया है, निकालने को आ रहे हैं। <sup>12</sup> ऐ हमारे खुदा क्या तू उनकी 'अदालत नहीं करेगा? क्योंकि इस बड़े गिरोह के मुक़ाबिले जो हम पर चढ़ा आता है, हम कुछ ताक़त नहीं रखते और न हम यह जानते हैं कि क्या करें? बल्कि हमारी आँखें तुझ पर लगी हैं।” <sup>13</sup> और सारा यहूदाह अपने बच्चों और बीवियों और लड़कों समेत खुदावन्द के सामने खड़ा रहा। <sup>14</sup> तब जमा'अत के बीच यहज़ीएल बिन ज़करियाह बिन बिनायाह बिन यईएल बिन मत्तनियाह, एक लावी पर जो बनी आसफ़ में से था, खुदावन्द की रूह नाज़िल हुई <sup>15</sup> और वह कहने लगा, ऐ तमाम यहूदाह और येरूशलेम के बाशिन्दों, और ऐ बादशाह यहूसफ़त, तुम सब सुनो! खुदावन्द तुम को यूँ फ़रमाता है कि तुम इस बड़े गिरोह की वजह से न तो डरो और न घबराओ, क्योंकि यह जंग तुम्हारी नहीं बल्कि खुदा की है। <sup>16</sup> तुम कल उनका सामना करने को जाना। देखो, वह सीस की चढ़ाई से आ रहे हैं, और यरूएल के जंगल के सामने वादी के किनारे पर तुम को मिलेंगे <sup>17</sup> तुम को इस जगह में लड़ना नहीं पड़ेगा। ऐ यहूदाह और येरूशलेम, तुम क्रतार बाँधकर चुपचाप खड़े रहना और खुदावन्द की नजात जो तुम्हारे साथ है देखना। खौफ़ न करो और न घबराओ; कल उनके मुक़ाबिला को निकलना, क्योंकि खुदावन्द तुम्हारे साथ है। <sup>18</sup> और यहूसफ़त सिज्दे होकर ज़मीन तक झुका, और तमाम यहूदाह और येरूशलेम के रहने वालों ने खुदावन्द के आगे गिरकर उसको सिज्दा किया। <sup>19</sup> और बनी क्रिहात और बनी क्रोरह के लावी बुलन्द आवाज़ से खुदावन्द इस्राईल के खुदा की हम्द करने को खड़े हो गए। <sup>20</sup> और वह सुबह सवेरे उठ कर तकू'अ के जंगल में निकल गए, और उनके चलते वक़्त यहूसफ़त ने खड़े होकर कहा, “ऐ यहूदाह और येरूशलेम के बाशिन्दों, मेरी सुनो। खुदावन्द अपने खुदा पर ईमान रखों, तो तुम क़ाइम किए जाओगे; उसके नबियों का यक़ीन करो, तो तुम कामयाब होगे।” <sup>21</sup> जब उसने क़ौम से सलाह कर लिया, तो उन लोगों को मुक़र्रर किया जो लश्कर के आगे आगे चलते हुए खुदावन्द के लिए गए, और पाकीज़गी की खूबसूरती के साथ उसकी हम्द करें और

कहें, कि खुदावन्द की शुक्रगुजारी करो क्योंकि उसकी रहमत हमेशा तक है। <sup>22</sup> जब वह गाने और हम्द करने लगे, तो खुदावन्द ने बनी 'अम्मून और मोआब और कोह — ए — श'ईर के बाशिन्दों पर जो यहूदाह पर चढ़े आ रहे थे, कमीन वालों को बैठा दिया इसलिए वह मारे गए। <sup>23</sup> क्योंकि बनी 'अम्मून और मोआब कोह — ए — श'ईर के बाशिन्दों के मुक्काबिले में खड़े हो गए कि उनको बिल्कुल तह — ए — तेग और हलाक करें, और जब वह श'ईर के बाशिन्दों का खातिमा कर चुके, तो आपस में एक दूसरे को हलाक करने लगे। <sup>24</sup> और जब यहूदाह ने पहरेदारों के बुर्ज पर जो बियाबान में था, पहुँच कर उस गिरोह पर नज़र की तो क्या देखा कि उनकी लाशें ज़मीन पर पड़ी हैं, और कोई न बचा। <sup>25</sup> जब यहूसफ़त और उसके लोग उनका माल लूटने आए, तो उनको इस कसरत से दौलत और लाशे और क्रीमती जवाहिर जिनकी उन्होंने अपने लिए उतार लिया, मिले कि वह इनको ले जा भी न सके, और माल — ए — गनीमत इतना था कि वह तीन दिन तक उसके बटोर ने में लगे रहे। <sup>26</sup> चौथे दिन वह बराकाह की वादी में इकट्ठे हुए क्योंकि उन्होंने वहाँ खुदावन्द को मुबारक कहा; इसलिए कि उस मक़ाम का नाम आज तक बराकाह की वादी है। <sup>27</sup> तब वह लौटे, या'नी यहूदाह और येरूशलेम का हर शख्स उनके आगे आगे यहूसफ़त ताकि वह खुशी खुशी येरूशलेम को वापस जाएँ, क्योंकि खुदावन्द ने उनको उनके दुश्मनों पर खुश किया था। <sup>28</sup> इसलिए वह सितार और बरबत और नरसिंगे लिए येरूशलेम में खुदावन्द के घर में आए। <sup>29</sup> और खुदा का खौफ़ उन मुल्कों की सब सल्लतनतों पर छा गया, जब उन्होंने सुना कि इस्राईल कि दुश्मनों से खुदावन्द ने लड़ाई की है। <sup>30</sup> इसलिए यहूसफ़त की हुकूमत में अम्न रहा, क्योंकि उसके खुदा ने उसे चारों तरफ़ अमान बरख़्शी। <sup>31</sup> यहूसफ़त यहूदाह पर हुकूमत करता रहा। जब वह हुकूमत करने लगा तो पैतीस साल का था, और उसने येरूशलेम में पच्चीस साल हुकूमत की। उसकी माँ का नाम 'अज़ूबाह था, जो सिलही की बेटी थी। <sup>32</sup> वह अपने बाप आसा के रास्ते पर चला और उससे न मुड़ा, या'नी वही किया जो खुदावन्द की नज़र में ठीक है। <sup>33</sup> तो भी ऊँचे मक़ाम दूर न किए गए थे, और अब तक लोगों ने अपने बाप — दादा के खुदा से दिल नहीं लगाया था। <sup>34</sup> और यहूसफ़त के बाक़ी काम शुरू से आख़िर तक याहू बिन हनानी की तारीख़ में दर्ज हैं, जो इस्राईल के सलातीन की किताब में शामिल है <sup>35</sup> इसके बाद यहूदाह के बादशाह यहूसफ़त ने इस्राईल

के बादशाह अखज़ियाह से, जो बड़ा बदकार था, सुलह किया; <sup>36</sup> और इसलिए उससे सुलह किया कि तरसीस जाने को जहाज़ बनाए, और उन्होंने 'अस्यूनजाबर में जहाज़ बनाए। <sup>37</sup> तब एलियाज़र बिन दूदावाहू ने, जो मरीसा का था, यहूसफ़त के बरख़िलाफ़ नबुव्वत की और कहा, “इसलिए कि तू ने अखज़ियाह से सुलह कर लिया है, खुदावन्द ने तेरे बनाए को तोड़ दिया है।” फिर वह जहाज़ ऐसे टूटे कि तरसीस को न जा सके।

## 21

?????? ?? ??????? ??? ??????? ?????

<sup>1</sup> और यहूसफ़त अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और दाऊद के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफ़न हुआ; और उसका बेटा यहूराम उसकी जगह हुकूमत करने लगा। <sup>2</sup> उसके भाई जो यहूसफ़त के बेटे यह थे: या'नी 'अज़रियाह और यहीएल और ज़करियाह और 'अज़रियाह और मीकाईल और सफ़तियाह, यह सब शाह — ए — इस्राईल यहूसफ़त के बेटे थे। <sup>3</sup> और उनके बाप ने उनको चाँदी और सोने और बेशक्रीमत चीज़ों के बड़े इनाम और फ़सीलदार शहर यहूदाह में 'अता किए, लेकिन हुकूमत यहूराम को दी क्योंकि वह पहलौठा था। <sup>4</sup> जब यहूराम अपने बाप की हुकूमत पर क़ाईम हो गया और अपने को ताक़तवर कर लिया, तो उसने अपने सब भाइयों को और इस्राईल के कुछ सरदारों को भी तलवार से क़त्ल किया <sup>5</sup> यहूराम जब हुकूमत करने लगा तो बत्तीस साल का था, और उसने आठ साल येरूशलेम में हुकूमत की। <sup>6</sup> और वह अख़ीअब के घराने की तरह इस्राईल के बादशाहों के रास्ते पर चला, क्योंकि अख़ीअब की बेटी उसकी बीवी थी; और उसने वही किया जो खुदावन्द की नज़र में बुरा है। <sup>7</sup> तो भी खुदावन्द ने दाऊद के ख़ान्दान को हलाक करना न चाहा, उस 'अहद की वजह से जो उसने दाऊद से बाँधा था, और जैसा उसने उसे और उसकी नसल को हमेशा के लिए एक चिराग़ देने का वा'दा किया था। <sup>8</sup> उसी के दिनों में अदोम यहूदाह की हुकूमत से अलग हो गया और अपने ऊपर एक बादशाह बना लिया। <sup>9</sup> तब यहूराम अपने अमीरों और अपने सब रथों को साथ लेकर उबूर कर गया और रात को उठकर अदोमियों को, जो उसे और रथों के सरदारों को घेरे हुए थे मारा। <sup>10</sup> इसलिए अदोमी यहूदाह से आज तक अलग हैं, और उसी वक़्त लिबनाह भी उसके हाथ से निकल गया, क्योंकि उसने खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा को छोड़ दिया था। <sup>11</sup> और इसके 'अलावा उसने यहूदाह

के पहाड़ों पर ऊँचे मक़ाम बनाए और येरूशलेम के बाशिन्दों को ज़िनाकार बनाया, और यहूदाह को गुमराह किया। <sup>12</sup> और एलियाह नबी से उसे इस मज्मून का खत मिला, “खुदावन्द तेरे बाप दाऊद का खुदा ऐसा फ़रमाता है, इसलिए कि तू न अपने बाप यहूसफ़त के रास्तों पर और न यहूदाह के बादशाह आसा के रास्तों पर चला, <sup>13</sup> बल्कि इस्राईल के बादशाहों के रास्ते पर चला है, और यहूदाह और येरूशलेम के बाशिन्दों को ज़िनाकार बनाया जैसा अखीअब के खान्दान ने किया था; और अपने बाप के घराने में से अपने भाइयों को जो तुझ से अच्छे थे क़त्ल भी किया। <sup>14</sup> इसलिए देख, खुदावन्द तेरे लोगों को और तेरे बेटों और तेरी बीवियों को और तेरे सारे माल को बड़ी आफ़तों से मारेगा। <sup>15</sup> और तू अन्तड़ियों के मर्ज़ की वजह से सख़्त बीमार हो जाएगा, यहाँ तक कि तेरी अन्तड़ियाँ उस मर्ज़ की वजह से हर दिन निकलती जाएँगी।” <sup>16</sup> और खुदावन्द ने यहूराम के खिलाफ़ फ़िलिस्तियों और उन 'अरबों का, जो कूशियों की सिम्त में रहते हैं दिल उभारा। <sup>17</sup> इसलिए वह यहूदाह पर चढ़ाई करके उसमें घुस आए, और सारे माल को जो बादशाह के घर में मिला और उसके बेटों और उसकी बीवियों को भी ले गए, ऐसा कि यहूआखज़ के 'अलावा जो उसके बेटों में सबसे छोटा था उसका कोई बेटा बाकी न रहा। <sup>18</sup> और इस सबके बाद खुदावन्द ने एक लाइलाज मर्ज़ उसकी अन्तड़ियों में लगा दिया। <sup>19</sup> कुछ मुद्दत के बाद, दो साल के आख़िर में ऐसा हुआ कि उसके रोग के मारे उसकी अन्तड़ियाँ निकल पड़ी और वह बुरी बीमारियों से मर गया। उसके लोगों ने उसके लिए आग न जलाई, जैसा उसके बाप — दादा के लिए जलाते थे। <sup>20</sup> वह बत्तीस साल का था जब हुकूमत करने लगा और उसने आठ साल येरूशलेम में हुकूमत की; और वह बग़ैर मातम के रुख़सत हुआ और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में दफ़न किया, लेकिन शाही क़ब्रों में नहीं।

## 22

२२:१-२२:२२

<sup>1</sup> और येरूशलेम के बाशिन्दों ने उसके सबसे छोटे बेटे अखज़ियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया; क्योंकि लोगों के उस ज़त्थे ने जो 'अरबों के साथ छावनी में आया था, सब बड़े बेटों को क़त्ल कर दिया था। इसलिए शाह — ए — यहूदाह यहूराम का बेटा अखज़ियाह बादशाह हुआ। <sup>2</sup> अखज़ियाह बयालीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने येरूशलेम में एक

साल हुकूमत की। उसकी माँ का नाम 'अतलियाह था, जो 'उमरी की बेटी थी। <sup>3</sup> वह भी अखीअब के खान्दान के रास्ते पर चला, क्योंकि उसकी माँ उसको बुराई की सलाह देती थी। <sup>4</sup> उसने खुदावन्द की नज़र में बुराई की जैसा अखीअब के खान्दान ने किया था, क्योंकि उसके बाप के मरने के बाद वही उसके सलाहकार थे, जिससे उसकी बर्बादी हुई। <sup>5</sup> और उसने उनके सलाह पर 'अमल भी किया, और शाह — ए — इस्राईल अखीअब के बेटे यहूराम के साथ शाह — ए — अराम हज़ाएल से रामात ज़िल'आद में लड़ने को गया, और अरामियों ने यहूराम को ज़ख्मी किया; <sup>6</sup> और वह यज़र'एल को उन ज़ख्मों के इलाज के लिए लौटा जो उसे रामा में शाह — ए — अराम हज़ाएल के साथ लड़ते वक़्त उन लोगों के हाथ से लगे थे, और शाह — ए — यहूदाह यहूराम का बेटा 'अज़रियाह, यहूराम बिन अखीअब को यज़र'एल में देखने गया क्योंकि वह बीमार था। <sup>7</sup> अखज़ियाह की हलाकत खुदा की तरफ़ से ऐसी हुई कि वह यहूराम के पास गया, क्योंकि जब वह पहुँचा तो यहूराम के साथ याहू बिन निमसी से लड़ने को गया, जिसे खुदावन्द ने अखीअब के खान्दान को काट डालने के लिए मसह किया था। <sup>8</sup> और जब याहू अखीअब के खान्दान को सज़ा दे रहा था तो उसने यहूदाह के सरदारों और अज़ज़ियाह के भाइयों के बेटों को अखज़ियाह की खिदमत करते पाया और उनको क़त्ल किया। <sup>9</sup> और उसने अखज़ियाह को ढ़ंडा यह सामरिया में छिपा था इसलिए वह उसे पकड़ कर याहू के पास लाये और उसे क़त्ल किया और उन्होंने उसे दफ़न किया क्योंकि वह कहने लगे, “वह यहूसफ़त का बेटा है, जो अपने सारे दिल से खुदावन्द का तालिब रहा।” और अखज़ियाह के घराने में हुकूमत संभालने की ताक़त किसी में न रही। <sup>10</sup> जब अखज़ियाह की माँ 'अतलियाह ने देखा कि उसका बेटा मर गया, तो उसने उठ कर यहूदाह के घराने की सारी शाही नसल को मिटा दिया। <sup>11</sup> लेकिन बादशाह की बेटी यहूसब'अत अखज़ियाह के बेटे यूआस को बादशाह के बेटों के बीच से जो क़त्ल किए गए, चुरा ले गई और उसे और उसकी दाया को बिस्तरों की कोठरी में रखा। इसलिए यहूराम बादशाह की बेटी यहूयदा'काहिन की बीवी यहूसब'अत ने चूँकि वह अखज़ियाह की बहन थी उसे अतलियाह से ऐसा छिपाया कि वह उसे क़त्ल करने न पायी। <sup>12</sup> और वह उनके पास खुदा की हैकल में छः साल तक छिपा रहा, और 'अतलियाह मुल्क पर हुकूमत करती रही।



## 23

?????????? ?? ?????????? ???????

1 सातवे साल यहूयदा' ने ज़ोर पकड़ा और सैकड़ों के सरदारों या'नी 'अज़रियाह बिन यहूराम और इस्मा'ईल बिन यहूहनान और अज़रियाह बिन 'ओबेद और मासियाह बिन 'अदायाह और इलीसाफ़त बिन ज़िकरी से 'अहद बाँधा। 2 वह यहूदाह में फिरे, और यहूदाह के सब शहरों में से लावियों को, और इस्राईल के आबाई खान्दानों के सरदारों को इकट्ठा किया, और वह येरूशलेम में आए। 3 और सारी जमा'अत ने खुदा के घर में बादशाह के साथ 'अहद बाँधा, और यहूयदा' ने उनसे कहा, "देखो! यह शाहज़ादा जैसा खुदावन्द ने बनी दाऊद के हक़ में फ़रमाया है, हुकूमत करेगा। 4 जो काम तुम को करना है वह यह है कि तुम काहिनों और लावियों में से जो सब्ब को आते हो, एक तिहाई दरबान हो, 5 और एक तिहाई शाही महल पर, और एक तिहाई बुनियाद के फाटक पर; और सब लोग खुदावन्द के घर के सहनों में हो। 6 पर खुदावन्द के घर में सिवा काहिनों के और उनके जो लावियों में से खिदमत करते हैं, और कोई न आने पाए वही अन्दर आए क्योंकि वह मुक़द्दस है लेकिन सब लोग खुदावन्द का पहरा देते रहें। 7 और लावी अपने अपने हाथ में अपने हथियार लिए हुए बादशाह को चारों तरफ़ से घेरे रहे, और जो कोई हैकल में आए क़त्ल किया जाए और बादशाह जब अन्दर आए और बाहर निकले तो तुम उसके साथ रहना।" 8 इसलिए लावियों और सारे यहूदाह ने यहूयदा' काहिन के हुक्म के मुताबिक़ सब कुछ किया, और उनमें से हर शख्स ने अपने लोगों को लिया, या'नी उनको जो सब्ब को अन्दर आते थे और उनको जो सब्ब को बाहर चले जाते थे; क्योंकि यहूयदा' काहिन ने बारी वालों को रुख़सत नहीं किया था। 9 और यहूयदा' काहिन ने दाऊद बादशाह की बर्छियाँ और ढालें और फरियाँ, जो खुदा के घर में थीं, सैकड़ों सरदारों को दीं। 10 और उसने सब लोगों को जो अपना अपना हथियार हाथ में लिए हुए थे, हैकल की दहनी तरफ़ से उसकी बाई तरफ़ तक, मज़बह और हैकल के पास बादशाह के चारो तरफ़ खड़ा कर दिया। 11 फिर वह शाहज़ादे को बाहर लाए, और उसके सिर पर ताज रखकर गवाही नामा दिया और उसे बादशाह बनाया; और यहूयदा' और उसके बेटों ने उसे मसह किया, और वह बोल उठे, "बादशाह सलामत रहे।" 12 जब 'अतलियाह ने लोगों का शोर सुना, जो दौड़ दौड़ कर बादशाह की तारीफ़ कर रहे थे, तो वह खुदावन्द के घर में लोगों के पास आई। 13 और उसने निगाह की और क्या देखा कि

बादशाह फाटक में अपने सुतून के पास खड़ा है, और बादशाह के नज़दीक हाकिम और नरसिंगे हैं और सारी ममलकत के लोग खुश हैं और नरसिंगे फूँक रहे हैं, और गानेवाले बाजों को लिए हुए मदहसराई करने में पेशवाई कर रहे हैं। तब 'अतलियाह ने अपने कपड़े फाड़े और कहा, "ग़दर है! ग़दर!" 14 तब यहूयदा' काहिन सैकड़ों के सरदारों को जो लश्कर पर मुक़र्रर थे, बाहर ले आया और उनसे कहा कि उसको सफ़ों के बीच करके निकाल ले जाओ, और जो कोई उसके पीछे चले वह तलवार से मारा जाए। क्योंकि काहिन कहने लगा कि खुदावन्द के घर में उसे क़त्ल न करो। 15 इसलिए उन्होंने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया, और वह शाही महल के घोड़ा फाटक के सहन को गई, और वहाँ उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया 16 फिर यहूयदा' ने अपने और सब लोगों और बादशाह के बीच 'अहद बाँधा कि वह खुदावन्द के लोग हों। 17 तब सब लोग बा'ल के मन्दिर को गए और उसे ढाया; और उन्होंने उसके मज़बहों और उसकी मूरतों को चकनाचूर किया, और बा'ल के पुजारी मतान को मज़बहों के सामने क़त्ल किया। 18 और यहूयदा' ने खुदावन्द की हैकल की खिदमत लावी काहिनों के हाथ में सौंपी, जिनको दाऊद' ने खुदावन्द की हैकल में अलग अलग ठहराया था कि खुदावन्द की सोख़्तनी कुर्बानियाँ जैसा मूसा की तौरेत में लिखा है, खुशी मनाते हुए और गाते हुए दाऊद के दस्तूर के मुताबिक़ अदा करेंगे। 19 और उसने खुदावन्द की हैकल के फाटकों पर दरबानों को बिठाया, ताकि जो कोई किसी तरह से नापाक हो, अन्दर आने न पाए। 20 और उसने सैकड़ों के सरदारों और हाकिम और क्रौम के हाकिमों और मुल्क के सब लोगों को साथ लिया, और बादशाह को खुदावन्द की हैकल से ले आया, और वह ऊपर के फाटक से शाही महल में आए और बादशाह की तख़्त — ए — हुकूमत पर बिठाया। 21 तब मुल्क के सब लोगों ने खुशी मनाई और शहर में अमन हुआ। उन्होंने 'अतलियाह को तलवार से क़त्ल कर दिया।

## 24

?????? ?? ??????????????? ?? ?? ?? ??? ?????

1 यूआस सात साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने चालीस साल येरूशलेम में हुकूमत की। उसकी माँ का नाम ज़िबियाह था, जो बैरसबा' की थी। 2 और यूआस यहूयदा' काहिन के जीते जी वही, जो खुदावन्द की नज़र में ठीक है, करता रहा। 3 यहूयदा' ने उसे दो बीवियाँ ब्याह दीं, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 4 इसके बाद यूँ हुआ कि यूआस ने खुदावन्द

के घर की मरम्मत का 'इरादा किया।<sup>5</sup> इसलिए उसने काहिनों और लावियों को इकट्ठा किया और उनसे कहा कि यहूदाह के शहरों में जा जा कर, सारे इस्राईल से साल — ब — साल अपने खुदा के घर की मरम्मत के लिए रुपये जमा' किया करो, और इस काम में तुम जल्दी करना। तो भी लावियों ने कुछ जल्दी न की।<sup>6</sup> तब बादशाह ने यहूयदा सरदार को बुलाकर उससे कहा कि तू ने लावियों से क्यूँ तकाज़ा नहीं किया कि वह शहादत के खेमे के लिए, यहूदाह और येरूशलेम से खुदावन्द के बन्दे और इस्राईल की जमा'अत के खादिम मूसा का महसूल लाया करें? <sup>7</sup> क्यूँकि उस शरीर 'औरत' अतलियाह के बेटों ने खुदा के घर में छेद कर दिए थे, और खुदावन्द के घर की सब पाक की हुई चीजें भी उन्होंने बालीम को दे दी थीं।<sup>8</sup> तब बादशाह ने हुक्म दिया, और उन्होंने एक सन्दूक बना कर उसे खुदावन्द के घर के दरवाज़े के बाहर रखा; <sup>9</sup> और यहूदाह और येरूशलेम में 'ऐलान किया कि लोग वह महसूल जिसे बन्दा — ए — खुदा मूसा ने वीरान में इस्राईल पर लगाया था, खुदावन्द के लिए लाएँ।<sup>10</sup> और सब सरदार और सब लोग खुश हुए, और लाकर उस सन्दूक में डालते रहे जब तक पूरा न कर दिया।<sup>11</sup> जब सन्दूक लावियों के हाथ से बादशाह के मुख्तारों के पास पहुँचा, और उन्होंने देखा कि उसमें बहुत नकदी है, तो बादशाह के मुन्शी और सरदार काहिन के नाइब ने आकर सन्दूक को खाली किया और उसे लेकर फिर उसकी जगह पहुँचा दिया; और हर दिन ऐसा ही कर के उन्होंने बहुत सी नकदी जमा' कर ली।<sup>12</sup> फिर बादशाह और यहूयदा' ने उसे उनको दे दिया जो खुदावन्द के घर की इबादत के काम पर मुक्क़रर थे, और उन्होंने पत्थर तराशों और बढइयों को खुदावन्द के घर को बहाल करने के लिए और लोहारों और ठठेरों को भी खुदावन्द के घर की मरम्मत के लिए मज़दूरी पर रखा।<sup>13</sup> इसलिए कारीगर लग गए और काम उनके हाथ से पूरा होता गया, और उन्होंने खुदा के घर को उसकी पहली हालत पर करके उसे मज़बूत कर दिया।<sup>14</sup> और जब उसे पूरा कर चुके तो बाक़ी रुपया बादशाह और यहूयदा' के पास ले आए, जिससे खुदावन्द के घर के लिए बर्तन या'नी खिदमत के और कुर्बानी पेश करने के बर्तन और चमचे और सोने और चाँदी के बर्तन बने। और वह यहूयदा' के जीते जी खुदावन्द के घर में हमेशा सोख्तनी कुर्बानियाँ अदा करते रहे।<sup>15</sup> लेकिन यहूयदा' ने बुढ़ा और उम्र दराज़ होकर वफ़ात पाई; और जब वह मरा तो एक सौ तीस साल का

था।<sup>16</sup> और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में बादशाहों के साथ दफ़न किया, क्यूँकि उसने इस्राईल में, और खुदा और उसके घर की खातिर नेकी की थी।<sup>17</sup> यहूयदा' के मरने के बाद यहूदाह के सरदार आकर बादशाह के सामने कोर्निश बजा लाए; तब बादशाह ने उनकी सुनी,<sup>18</sup> और वह खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा के घर को छोड़ कर यसीरतों और बुतों की इबादत करने लगे। और उनकी इस ख़ता की वजह से यहूदाह और येरूशलेम पर ग़ज़ब नाज़िल हुआ।<sup>19</sup> तो भी खुदावन्द ने नबियों को उनके पास भेजा ताकि उनको उसकी तरफ़ फेर लाएँ, और वह उनको इल्ज़ाम देते रहे, पर उन्होंने कान न लगाया।<sup>20</sup> तब खुदा की रूह यहूयदा' काहिन के बेटे ज़करियाह पर नाज़िल हुई, इसलिए वह लोगों से बुलन्द जगह पर खड़ा होकर कहने लगा, खुदा ऐसा फ़रमाता है कि “तुम क्यूँ खुदावन्द के हुक्मों से बाहर जाते हो कि ऐसे खुशहाल नहीं रह सकते? चूँकि तुम ने खुदावन्द को छोड़ा है, उसने भी तुम को छोड़ दिया।”<sup>21</sup> तब उन्होंने उसके खिलाफ़ साज़िश की, और बादशाह के हुक्म से खुदावन्द के घर के सहन में उसे पत्थराव कर दिया।<sup>22</sup> ऐसे यूआस बादशाह ने उसके बाप यहूयदा' के एहसान को जो उसने उस पर किया था, याद न रखा बल्कि उसके बेटे को क़त्ल किया। और मरते वक़्त उसने कहा, “खुदावन्द इसको देखे, और इन्तक़ाम ले।”<sup>23</sup> उसी साल के आखिर में ऐसा हुआ कि अरामियों की फ़ौज ने उस पर चढ़ाई की, और यहूदाह और येरूशलेम में आकर लोगों में से क़ौम के सब सरदारों को हलाक़ किया और उनका सारा माल लूटकर दमिश्क़ के बादशाह के पास भेज दिया।<sup>24</sup> अगरचे अरामियों के लश्कर से आदमियों का छोटा ही जत्था आया, तो भी खुदावन्द ने एक बहुत बड़ा लश्कर उनके हाथ में कर दिया, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा को छोड़ दिया था। इसलिए उन्होंने यूआस को उसके किए का बदला दिया।<sup>25</sup> और जब वह उसके पास से लौट गए उन्होंने उसे बड़ी बीमारियों में मुब्तला छोड़ा, तो उसी के मुलाज़िमों ने यहूयदा' काहिन के बेटों के खून की वजह से उसके खिलाफ़ साज़िश की और उसे उसके बिस्तर पर क़त्ल किया, और वह मर गया; और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में तो दफ़न किया, लेकिन उसे बादशाहों की कब्रों में दफ़न न किया।<sup>26</sup> उसके खिलाफ़ साज़िश करने वाले यह हैं: 'अम्मूनिया समा'अत का बेटा ज़बद, और मो'आबिया सिमरियत का बेटा यहूज़बद।<sup>27</sup> अब रहे उसके बेटे और वह बड़े बोझ जो उस पर रखे गए, और खुदा के घर का दोबारा बनाना; इसलिए देखो, यह सब

कुछ बादशाहों की किताब की तफ़सीर में लिखा है। और उसका बेटा अमसियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

## 25

???????? ?? ??????? ??? ??????? ?????

1 अमसियाह पच्चीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने उनतीस साल येरूशलेम में हुकूमत की। उसकी माँ का नाम यहूअदान था, जो येरूशलेम की थी। 2 उसने वही किया जो खुदावन्द की नज़र में ठीक है, लेकिन कामिल दिल से नहीं। 3 जब वह हुकूमत पर ज़म गया तो उसने अपने उन मुलाज़िमों को, जिन्होंने उसके बाप बादशाह को मार डाला था क़त्ल किया, 4 लेकिन उनकी औलाद को जान से नहीं मारा बल्कि उसी के मुताबिक़ किया जो मूसा की किताब तौरेत में लिखा है, जैसा खुदावन्द ने फ़रमाया कि बेटों के बदले बाप — दादा न मारे जाएँ, और न बाप — दादा के बदले बेटे मारे जाएँ, बल्कि हर आदमी अपने ही गुनाह के लिए मारा जाए। 5 इसके 'अलावा अमसियाह ने यहूदाह को इकट्ठा किया, और उनको उनके आबाई खान्दानों के मुताबिक़ तमाम मुल्क — ए — यहूदाह और बिनयमीन में हज़ार हज़ार के सरदारों और सौ सौ के सरदारों के नीचे ठहराया; और उनमें से जिनकी उम्र बीस साल या उससे ऊपर थी उनको शुमार किया, और उनको तीन लाख चुने हुए जवान पाया जो जंग में जाने के क़ाबिल और बर्छी और ढाल से काम ले सकते थे। 6 और उसने सौ क्रिन्तार चाँदी देकर इस्राईल में से एक लाख ज़बरदस्त सूर्मा नौकर रखे। 7 लेकिन एक नबी ने उसके पास आकर कहा, “ऐ बादशाह, इस्राईल की फ़ौज तेरे साथ जाने न पाए, क्योंकि खुदावन्द इस्राईल या'नी सब बनी इफ़राईम के साथ नहीं है। 8 लेकिन अगर तू जाना ही चाहता है तो जा और लड़ाई के लिए मज़बूत हो, खुदा तुझे दुश्मनों के आगे गिराएगा क्योंकि खुदा में संभालने और गिराने की ताक़त है।” 9 अमसियाह ने उस नबी से कहा, “लेकिन सौ क्रिन्तारों के लिए जो मैंने इस्राईल के लश्कर को दिए, हम क्या करें?” उस नबी ने जवाब दिया, “खुदावन्द तुझे इससे बहुत ज़्यादा दे सकता है।” 10 तब अमसियाह ने उस लश्कर को जो इफ़राईम में से उसके पास आया था जुदा किया, ताकि वह फिर अपने घर जाएँ। इस वजह से उनका गुस्सा यहूदाह पर बहुत भड़का, और वह बहुत गुस्से में घर को लौटे। 11 और अमसियाह ने हौसला बाँधा और अपने लोगों को लेकर वादी — ए — शोर को गया, और बनी श'ईर में से दस हज़ार को मार दिया; 12 और दस हज़ार को बनी यहूदाह ज़िन्दा

पकड़ कर ले गए, और उनको एक चट्टान की चोटी पर पहुँचाया और उस चट्टान की चोटी पर से उनको नीचे गिरा दिया, ऐसा कि सब के सब टुकड़े टुकड़े हो गए। 13 लेकिन उस लश्कर के लोग जिनको अमसियाह ने लौटा दिया था कि उसके साथ जंग में न जाएँ, सामरिया से बैतहौरून तक यहूदाह के शहरों पर टूट पड़े और उनमें से तीन हज़ार जवानों को मार डाला और बहुत सी लूट ले गए। 14 जब अमसियाह अदोमियों के क़िताल से लौटा, तो बनी श'ईर के मा'बूदों को लेता आया और उनको नस्ब किया ताकि वह उसके मा'बूद हों, और उनके आगे सिज्दा किया और उनके आगे खुशबू जलाया। 15 इसलिए खुदावन्द का ग़ज़ब अमसियाह पर भड़का और उसने एक नबी को उसके पास भेजा, जिसने उससे कहा, “तू उन लोगों के मा'बूदों का तालिब क्यों हुआ, जिन्होंने अपने ही लोगों को तेरे हाथ से न छुड़ाया?” 16 वह उससे बातें कर ही रहा था कि उसने उससे कहा कि क्या हम ने तुझे बादशाह का सलाहकार बनाया है? चुप रह, तू क्यों मार खाए? तब वह नबी यह कहकर चुप हो गया कि मैं जानता हूँ कि खुदा का इरादा यह है कि तुझे हलाक करे, इसलिए कि तू ने यह किया है और मेरी सलाह नहीं मानी। 17 तब यहूदाह के बादशाह अमसियाह ने सलाह करके इस्राईल के बादशाह यूआस बिन यहूआखज़ बिन याहू के पास कहला भेजा कि ज़रा आ तो, हम एक दूसरे का मुक़ाबिला करें। 18 इसलिए इस्राईल के बादशाह यूआस ने यहूदाह के बादशाह अमसियाह को कहला भेजा, कि लुबनान के ऊँट — कटारे ने लुबनान के देवदार को पैगाम भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे को ब्याह दे; इतने में एक जंगली दरिदा जो लुबनान में रहता था, गुज़रा और उसने ऊँटकटारे को रौंद डाला। 19 तू कहता है, “देख मैंने अदोमियों को मारा, इसलिए तेरे दिल में घमण्ड समाया है कि फ़ख़र करे; घर ही में बैठा रह तू क्यों अपने नुक़सान के लिए दस्तअन्दाज़ी करता है कि तू भी गिरे और तेरे साथ यहूदाह भी?” 20 लेकिन अमसियाह ने न माना; क्योंकि यह खुदा की तरफ़ से था कि वह उनको उनके दुश्मनों के हाथ में कर दे, इसलिए कि वह अदोमियों के मा'बूदों के तालिब हुए थे। 21 इसलिए इस्राईल का बादशाह यूआस चढ़ आया, और वह और शाह — ए — यहूदाह अमसियाह यहूदाह के बैतशम्स में एक दूसरे के मुक़ाबिल हुए। 22 और यहूदाह ने इस्राईल के मुक़ाबिले में शिकस्त खाई, और उनमें से हर एक अपने डेरे को भागा। 23 और शाह — ए — इस्राईल

यूआस ने शाह — ए — यहूदाह अमसियाह बिन यूआस बिन यहूआखज़ को बैतशम्स में पकड़ लिया और उसे येरूशलेम में लाया, और येरूशलेम की दीवार इफ़राईम के फाटक से कोने के फाटक तक चार सौ हाथ ढा दी।<sup>24</sup> और सारे सोने और चाँदी और सब बर्तनों को जो 'ओबेद अदोम के पास खुदा के घर में मिले, और शाही महल के खज़ानों और कफ़ीलों को भी लेकर सामरिया को लौटा।<sup>25</sup> और शाह — ए — यहूदाह अमसियाह बिन यूआस, शाह — ए — इस्राईल यूआस बिन यहूआखज़ के मरने के बाद पंद्रह साल ज़िन्दा रहा।<sup>26</sup> अमसियाह के बाक़ी काम शुरू से आख़िर तक, क्या वह यहूदाह और इस्राईल के बादशाहों की किताब में क़लमबन्द नहीं हैं? <sup>27</sup> जब से अमसियाह खुदाबन्द की पैरवी से फिरा, तब ही से येरूशलेम के लोगों ने उसके खिलाफ़ साज़िश की, इसलिए वह लकीस को भाग गया। लेकिन उन्होंने लकीस में उसके पीछे लोग भेजकर उसे वहाँ क़त्ल किया।<sup>28</sup> और वह उसे घोड़ों पर ले आए, और यहूदाह के शहर में उसके बाप — दादा के साथ उसे दफ़न किया।

## 26

'????????? ???? ???? ???? ???? ????'

1 तब यहूदाह के सब लोगों ने 'उज्जियाह' को जो सोलह साल का था, लेकर उसे उसके बाप अमसियाह की जगह बादशाह बनाया। 2 उसने बादशाह के अपने बाप — दादा के साथ सो जाने के बाद ऐलोत को ता'मीर किया और उसे फिर यहूदाह में शामिल कर दिया। 3 'उज्जियाह' सोलह साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने येरूशलेम में बावन साल हुकूमत की। उसकी माँ का नाम यकूलियाह था, जो येरूशलेम की थी। 4 उसने वही जो खुदावन्द की नज़र में दुरुस्त है, ठीक उसी के मुताबिक़ किया जो उसके बाप अमसियाह ने किया था। 5 और वह ज़करियाह के दिनों में जो खुदा के ख़्वाबों में माहिर था, खुदा का तालिब रहा और जब तक वह खुदावन्द का तालिब रहा खुदा ने उसे कामयाब रखा। 6 और वह निकला और फ़िलिस्तियों से लड़ा, और जात की दीवार को और यबना की दीवार को और अशदूद की दीवार को ढा दिया, और अशदूद के मुल्क में और फ़िलिस्तियों के बीच शहर ता'मीर किए। 7 और खुदा ने फ़िलिस्तियों और जूरबाल के रहने वाले 'अरबों' और मऊनियों के मुक्काबिले में उसकी मदद की। 8 और 'अम्मूनी' 'उज्जियाह' को नज़राने देने लगे और उसका नाम मिस्र की सरहद तक फैल गया, क्योंकि वह बहुत ताक़तवर हो गया था। 9 और उज्जियाह ने येरूशलेम

में कोने के फाटक और वादी के फाटक और दीवार के मोड़ पर बुर्ज बनवाए और उनको मजबूत किया। <sup>10</sup> और उसने वीरान में बुर्ज बनवाए और बहुत से हौज खुदवाए, क्योंकि नशेब की ज़मीन में भी और मैदान में उसके बहुत चौपाए थे। और पहाड़ों और ज़रखेज खेतों में उसके किसान और ताकिस्तानों के माली थे, क्योंकि काश्त कारी उसे बहुत पसंद थी। <sup>11</sup> इसके 'अलावा उज्जियाह के पास जंगी जवानों का लश्कर था जो य'ईएल मुन्शी और मासियाह नाज़िम के शुमार के मुताबिक़, गोल गोल होकर बादशाह के एक सरदार हनानियाह के मातहत लड़ाई पर जाता था। <sup>12</sup> और आबाई खान्दानों के सरदारों या'नी ज़बरदस्त सूमाओं का कुल शुमार दो हज़ार छः सौ था। <sup>13</sup> और उनके मातहत तीन लाख साढ़े सात हज़ार का ज़बरदस्त लश्कर था, जो दुश्मन के मुक़ाबिले में बादशाह की मदद करने को बड़े ज़ोर से लड़ता था। <sup>14</sup> और उज्जियाह ने उनके लिए या'नी सारे लश्कर के लिए ढालें और बछ्छे और खूद और बकतर और कमानें और फ़लाखन के लिए पत्थर तैयार किए <sup>15</sup> और उसने येरूशलेम में हुनरमंद लोगों की ईजाद की हुई कीलें बनवायीं ताकि वह तीर चलाने और बड़े बड़े पत्थर फेंकने के लिए बुर्जों और फ़सीलों पर हों। इसलिए उसका नाम दूर तक फ़ैल गया क्योंकि उसकी मदद ऐसी 'अजीब तरह से हुई कि वह ताक़तवर हो गया <sup>16</sup> लेकिन जब वह ताक़तवर हो गया, तो उसका दिल इस क्रूर फूल गया कि वह ख़राब हो गया और खुदावन्द अपने खुदा की नाफ़रमानी करने लगा; चुनाँचे वह खुदावन्द की हैकल में गया ताकि खुशबू की कुर्बानगाह पर खुशबू जलाए। <sup>17</sup> तब 'अज़रियाह काहिन उसके पीछे पीछे गया और उसके साथ खुदावन्द के अस्सी काहिन और थे जो बहादुर आदमी थे, <sup>18</sup> और उन्होंने 'उज्जियाह बादशाह का सामना किया और उससे कहने लगे, "ऐ 'उज्जियाह, खुदावन्द के लिए खुशबू जलाना तेरा काम नहीं, बल्कि काहिनों या'नी हारून के बेटों का काम है, जो खुशबू जलाने के लिए पाक किए गए हैं। इसलिए मक़दिस से बाहर जा, क्योंकि तू ने ख़ता की है, और खुदावन्द खुदा की तरफ़ से यह तेरी 'इज़ज़त का ज़रिया' न होगा।" <sup>19</sup> तब 'उज्जियाह गुस्सा हुआ, और खुशबू जलाने को बख़ूरदान अपने हाथ में लिए हुए था; और जब वह काहिनों पर झुंझला रहा था, तो काहिनों के सामने ही खुदावन्द के घर के अन्दर खुशबू की कुर्बानगाह के पास उसकी पेशानी पर कोढ़ फूट निकला। <sup>20</sup> और सरदार काहिन 'अज़रियाह और सब काहिनों ने उस पर नज़र की और क्या देखा कि उसकी पेशानी पर कोढ़ निकल



है। इसलिए उन्होंने उसे जल्द वहाँ से निकाला, बल्कि उसने खुद भी बाहर जाने में जल्दी की क्योंकि खुदावन्द की मार उस पर पड़ी थी। <sup>21</sup> चुनाँचे 'उज्जियाह बादशाह अपने मरने के दिन तक कोढ़ी रहा, और कोढ़ी होने की वजह से एक अलग घर में रहता था; क्योंकि वह खुदावन्द के घर से काट डाला गया था। और उसका बेटा यूताम बादशाह के घर का मुख्तार था और मुल्क के लोगों का इन्साफ़ करता था। <sup>22</sup> और 'उज्जियाह के बाक़ी काम शुरू' से आखिर तक आमूस के बेटे यसायाह नबी ने लिखे। <sup>23</sup> इसलिए 'उज्जियाह अपने बाप — दादा के साथ सो गया; और उन्होंने क़ब्रिस्तान के मैदान में जो बादशाहों का था, उसके बाप — दादा के साथ उसे दफ़न किया क्योंकि वह कहने लगे, “वह कोढ़ी है।” और उसका बेटा यूताम उसकी जगह बादशाह हुआ।

## 27

27:1-28:12

<sup>1</sup> यूताम पच्चीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने सोलह साल येरूशलेम में हुकूमत की। उसकी माँ का नाम यरूसा था जो सदोक् की बेटी थी। <sup>2</sup> और उसने वही जो खुदावन्द की नज़र में दुरुस्त है, ठीक ऐसा ही किया जैसा उसके बाप उज्जियाह ने किया था, मगर वह खुदावन्द की हैकल में न घुसा, लेकिन लोग गुनाह करते ही रहे। <sup>3</sup> और उसने खुदावन्द के घर का बालाई दरवाज़ा बनाया, और ओफ़ल की दीवार पर उसने बहुत कुछ ता'मीर किया। <sup>4</sup> और यहूदाह के पहाड़ी मुल्क में उसने शहर ता'मीर किए, और जंगलों में 'किले' और बुर्ज बनवाए। <sup>5</sup> वह बनी 'अम्मून के बादशाह से भी लड़ा और उन पर ग़ालिब हुआ। और उसी साल बनी 'अम्मून ने एक सौ किन्तार चाँदी और दस हज़ार कुर गेहूँ और दस हज़ार कुर जौ उसे दिए, और उतना ही बनी 'अम्मून ने दूसरे और तीसरे साल भी उसे दिया। <sup>6</sup> इसलिए यूताम ज़बरदस्त हो गया, क्योंकि उसने खुदावन्द अपने खुदा के आगे अपने रास्ते दुरुस्त किए थे। <sup>7</sup> और यूताम के बाक़ी काम और उसकी सब लड़ाईयाँ और उसके तौर तरीक़े इस्राईल और यहूदाह के बादशाहों की किताब में लिखा हैं। <sup>8</sup> वह पच्चीस साल का था जब हुकूमत करने लगा और उसने सोलह साल येरूशलेम में हुकूमत की। <sup>9</sup> और यूताम अपने बाप दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में दफ़न किया; और उसका बेटा आखज़ उसकी जगह बादशाह हुआ।

## 28

28:1-29:1

<sup>1</sup> आखज़ बीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने सोलह साल येरूशलेम में हुकूमत की। और उसने वह न किया जो खुदावन्द की नज़र में दुरुस्त है जैसा उसके बाप दाऊद ने किया था <sup>2</sup> बल्कि इस्राईल के बादशाहों के रास्तों पर चला, और बा'लीम की ढाली हुई मूरतें भी बनवाई। <sup>3</sup> इसके 'अलावा उसने हिनुम के बेटे की वादी में खुशबू जलाया, और उन कौमों के नफ़रती दस्तूरों के मुताबिक़ जिनको खुदावन्द ने बनी — इस्राईल के सामने से ख़ारिज किया था, अपने ही बेटों को आग में झोंका। <sup>4</sup> उसने ऊँचे मक़ामों और पहाड़ों पर, और हर एक हरे दरख़्त के नीचे कुर्बानियाँ कीं और खुशबू जलायी। <sup>5</sup> इसलिए खुदावन्द उसके खुदा ने उसको शाह — ए — अराम के हाथ में कर दिया, इसलिए उन्होंने उसे मारा और उसके लोगों में से गुलामों की भीड़ की भीड़ ले गए, और उनको दमिश्क़ में लाए; और वह शाह — ए — इस्राईल के हाथ में भी कर दिया गया, जिसने उसे मारा और बड़ी ख़ूनरेज़ी की। <sup>6</sup> और फ़िक़ह बिन रमलियाह ने एक ही दिन में यहूदाह में से एक लाख बीस हज़ार को, जो सब के सब सूर्मा थे क़त्ल किया, क्योंकि उन्होंने खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा को छोड़ दिया था। <sup>7</sup> और ज़िकरी ने जो इफ़राईम का एक पहलवान था, मासियाह शाहज़ादे को और महल के नाज़िम 'अज़रिक़ाम को और बादशाह के वज़ीर इल्क़ाना को मार डाला। <sup>8</sup> और बनी — इस्राईल अपने भाइयों में से दो लाख 'औरतों और बेटे — बेटियों को गुलाम करके ले गए, और उनका बहुत सा माल लूट लिया और लूट को सामरिया में लाए। <sup>9</sup> लेकिन वहाँ खुदावन्द का एक नबी था जिसका नाम 'ओदिद था, वह उस लश्कर के इस्तक़बाल को गया जो सामरिया को आ रहा था और उनसे कहने लगा, “देखो, इसलिए कि खुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा का खुदा यहूदाह से नाराज़ था, उसने आपको तुम्हारे हाथ में कर दिया और तुम ने आपको ऐसे तैश में क़त्ल किया है जो आसमान तक पहुँचा। <sup>10</sup> और अब तुम्हारा 'इरादा है कि बनी यहूदाह और येरूशलेम को अपने गुलाम और लौंडियाँ बना कर आपको दबाए रखो। लेकिन क्या तुम्हारे ही गुनाह जो तुमने खुदा वन्द अपने खुदा के खिलाफ़ किए हैं, तुम्हारे सिर नहीं हैं? <sup>11</sup> इसलिए तुम अब मेरी सुनो और उन गुलामों को, जिनको तुम ने अपने भाइयों में से गुलाम कर लिया है, आज़ाद करके लौटा दो क्योंकि खुदावन्द का क़हर — ए — शदीद तुम पर है।” <sup>12</sup> तब

बनी इफ़राईम के सरदारों में से 'अज़रियाह बिन यूहनान और बरकियाह बिन मसल्लीमोत और यहज़क्रियाह बिन सलूम और 'अमासा बिन खदली, उनके सामने जो जंग से आ रहे थे खड़े हो गए।<sup>13</sup> और उनसे कहा कि "तुम गुलामों को यहाँ नहीं लाने पाओगे, क्योंकि जो तुम ने ठाना है उससे हम खुदावन्द के गुनाहगार बनेंगे और हमारे गुनाह और खताएं बढ़ जायेंगी क्योंकि हमारी खता बड़ी है और इस्राईल पर क्रहर — ए — शदीद है।<sup>14</sup> इसलिए उन हथियारबन्द लोगों ने गुलामों और माल — ए — गनीमत को, अमीरों और सारी जमा'अत के आगे छोड़ दिया।<sup>15</sup> और वह आदमी जिनके नाम मज़कूर हुए, उठे और गुलामों को लिया और लूट के माल में से उन सभी को जो उनमें नंगे थे, लिबास से आरास्ता किया और उनको जूते पहनाए और उनको खाने — पीने को दिया और उन पर तेल मला, और जितने उनमें कमज़ोर थे उनको गधों पर चढ़ा कर खज़ूर के दरख्तों के शहर यरीहू में उनके भाइयों के पास पहुँचा दिया। तब सामरिया को लौट गए।<sup>16</sup> उस वक़्त आख़ज़ बादशाह ने असूर के बादशाहों के पास कहला भेजा के उसकी मदद करें।<sup>17</sup> इसलिए कि अदोमियों ने फिर चढ़ाई करके यहूदाह को मार लिया और गुलामों को ले गए थे।<sup>18</sup> और फ़िलिस्तिनियों ने भी नशेब की ज़मीन के और यहूदाह के जुनूब के शहरों पर हमला करके बैतशम्स और अय्यालोन और जदीरोत को, और शोको और उसके देहात को, और तिमना और उसके देहात को, और जिमसू और उसके देहात को भी ले लिया था और उनमें बस गए थे।<sup>19</sup> क्योंकि खुदावन्द ने शाह — ए — इस्राईल आख़ज़ की वजह से यहूदाह को पस्त किया, इसलिए कि उसने यहूदाह में बेहयाई की चाल चलकर खुदावन्द का बड़ा गुनाह किया था;<sup>20</sup> और शाह — ए — असूर तिलगातपिलनासर उसके पास आया, लेकिन उसने उसको तंग किया और उसकी मदद न की।<sup>21</sup> क्योंकि आख़ज़ ने खुदावन्द के घर और बादशाह और सरदारों के महलों से माल लेकर शाह — ए — असूर को दिया, तो भी उसकी कुछ मदद न हुई।<sup>22</sup> अपनी तंगी के वक़्त में भी उसने, या'नी इसी आख़ज़ बादशाह ने खुदावन्द का और भी ज्यादा गुनाह किया;<sup>23</sup> क्योंकि उसने दमिश्क के मा'बूदों के लिए जिन्होंने उसे मारा था, कुर्बानियाँ कीं और कहा, चूँकि अराम के बादशाहों के मा'बूदों ने उनकी मदद की है, इसलिए मैं उनके लिए कुर्बानी करूँगा ताकि वह मेरी मदद करें।" लेकिन वह उसकी और सारे इस्राईल की तबाही की वजह हुए।<sup>24</sup> और आख़ज़ ने खुदा के घर के बर्तनों को जमा' किया और खुदा के घर

के बर्तनों को टुकड़े टुकड़े किया और खुदावन्द के घर के दरवाज़ों को बन्द किया और अपने लिए येरूशलेम के हर कोने में मज़बूत बनाए।<sup>25</sup> और यहूदाह के एक एक शहर में ग़ैर — मा'बूदों के आगे खुशबू जलाने के लिए ऊँचे मक़ाम बनाए, और खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा को गुस्सा दिलाया।<sup>26</sup> और उसके बाक़ी काम और उसके सब तौर तरीक़े शुरू से आख़िर तक यहूदाह और इस्राईल के बादशाहों की किताब में लिखा है।<sup>27</sup> और आख़ज़ अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे शहर में या'नी येरूशलेम में दफ़न किया क्योंकि वह उसे इस्राईल के बादशाहों की क़ब्रों में न लाए और उसका बेटा हिज़क्रियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

## 29

?????????? ?? ??????? ??? ???????  
??????

<sup>1</sup> हिज़क्रियाह पच्चीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने उन्तीस साल येरूशलेम में हुकूमत की। उसकी माँ का नाम अबियाह था, जो ज़क्रियाह की बेटी थी।<sup>2</sup> उसने वही काम जो खुदावन्द की नज़र में दुरुस्त है, ठीक उसी के मुताबिक़ जो उसके बाप — दादा ने किया था, किया।

?????????????? ??????????????? ?? ?? ??  
?? ???????

<sup>3</sup> उसने अपनी हुकूमत के पहले साल के पहले महीने में, खुदावन्द के घर के दरवाज़ों को खोला और उनकी मरम्मत की।<sup>4</sup> और वह काहिनों और लावियों को ले आया और उनको मशरिक़ की तरफ़ मैदान में इकट्ठा किया,<sup>5</sup> और उनसे कहा, ऐ लावियो, मेरी सुनो! तुम अब अपने को पाक करो और खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा के घर को पाक करो, और इस पाक मक़ाम में से सारी नापाकी को निकाल डालो;<sup>6</sup> क्योंकि हमारे बाप — दादा ने गुनाह किया और जो खुदावन्द हमारे खुदा की नज़र में बुरा है वही किया, और खुदा को छोड़ दिया और खुदावन्द के घर से मुँह फेर लिया और अपनी पीठ उसकी तरफ़ कर दी<sup>7</sup> और उसारे के दरवाज़ों को भी बन्द कर दिया, और चिराग़ बुझा दिए, और इस्राईल के खुदा के मक़दिस में न तो खुशबू जलायी और न सोख़्तनी कुर्बानियाँ पेश कीं<sup>8</sup> इस वजह से खुदावन्द का क्रहर यहूदाह और येरूशलेम पर नाज़िल हुआ, और उसने उनको ऐसा हवाले किया कि मारे मारे फ़िरें और हैरत और सुसकार का ज़रिए' हों, जैसा तुम अपनी आँखों से देखते हो।<sup>9</sup> देखो, इसी वजह से हमारे बाप — दादा

तलवार से मारे गए, और हमारे बेटे बेटियाँ और हमारी बीवियाँ गुलामी में हैं। <sup>10</sup> अब मेरे दिल में है कि खुदावन्द इस्राईल के खुदा के साथ 'अहद बाँधूँ, ताकि उसका क्रहर — ए — शदीद हम पर से टल जाए। <sup>11</sup> ऐ मेरे फ़र्जन्दो, तुम अब गाफ़िल न रहो; क्योंकि खुदावन्द ने तुम को चुन लिया है कि उसके सामने खड़े रहो और उसकी खिदमत करो और उसके खादिम बनो और खुशबू जलाओ। <sup>12</sup> तब यह लावी उठे: या'नी बनी क्रिहात में से महत बिन 'अमासी और यूएल बिन 'अज़रियाह, और बनी मिरारी में से क्रीस बिन 'अबदी और अज़रियाह बिन यहलीएल और जैरसोनियों में से यूआख़ बिन जिम्मा और अदन बिन यूआख़, <sup>13</sup> और बनी इलिसफ़न में से सिमरी और य'ऊएल, और बनी आसफ़ में से ज़करियाह और मत्तनियाह, <sup>14</sup> और बनी हैमान में से यहीएल और सिमई, और बनी यदूतून में से समा'याह और 'उज़िएल। <sup>15</sup> और उन्होंने अपने भाइयों को इकट्ठा करके अपने को पाक किया, और बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ जो खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ था, खुदावन्द के घर को पाक करने के लिए अन्दर गए। <sup>16</sup> और काहिन खुदावन्द के घर के अन्दरूनी हिस्से में उसे पाक — साफ़ करने को दाख़िल हुए, और सारी नापाकी को जो खुदावन्द की हैकल में उनको मिली निकाल कर बाहर खुदावन्द के घर के सहन में ले आए, और लावियों ने उसे उठा लिया ताकि उसे बाहर क्रिदरून के नाले में पहुँचा दें। <sup>17</sup> पहले महीने की पहली तारीख़ को उन्होंने तक्दीस का काम शुरू किया, और उस महीने की आठवीं तारीख़ को खुदावन्द के उसारे तक पहुँचे, और उन्होंने आठ दिन में खुदावन्द के घर को पाक किया; इसलिए पहले महीने की सोलहवीं तारीख़ को उसे पूरा किया। <sup>18</sup> तब उन्होंने महल के अन्दर हिज़क्रियाह बादशाह के पास जाकर कहा कि “हमने खुदावन्द के सारे घर को, और सोख़तनी कुर्बानी के मज़बह को और उसके सब बर्तन को, और नज़र की रोटियों की मेज़ को और उसके सब बर्तन को पाक — साफ़ कर दिया। <sup>19</sup> इसके 'अलावा हम ने उन सब बर्तन को जिनकी आख़ज़ बादशाह ने अपने दौर — ए — हुक्मत में ख़ता करके रद्द कर दिया था, फिर तैयार करके उनको पाक किया है, और देख, वह खुदावन्द के मज़बह के सामने हैं।” <sup>20</sup> तब हिज़क्रियाह बादशाह सवेरे उठकर और शहर के रईसों को इकट्ठा करके खुदावन्द के घर को गया। <sup>21</sup> और वह सात बैल और सात मेंढे, और सात बरें और सात बकरे मुल्क के लिए और मक्कदिस के लिए और यहूदाह के लिए ख़ता की कुर्बानी के लिए ले आए, और उसने काहिनों या'नी बनी हारून को

हुक्म किया के उनको खुदावन्द के मज़बह पर चढ़ाएँ। <sup>22</sup> इसलिए उन्होंने बैलों को ज़बह किया और काहिनों ने खून को लेकर उसे मज़बह पर छिड़का, फिर उन्होंने मेंढों को ज़बह किया और खून को मज़बह पर छिड़का, और बरों को भी ज़बह किया और खून मज़बह पर छिड़का। <sup>23</sup> और वह ख़ता की कुर्बानी के बकरों को बादशाह और जमा'अत के आगे नज़दीक ले आए और उन्होंने अपने हाथ उन पर रखे। <sup>24</sup> फिर काहिनों ने उनको ज़बह किया और उनके खून को मज़बह पर छिड़क कर ख़ता की कुर्बानी की, ताकि सारे इस्राईल के लिए कफ़ारा हो; क्योंकि बादशाह ने फ़रमाया था कि सोख़तनी कुर्बानी और ख़ता की कुर्बानी सारे इस्राईल के लिए पेश की जाएँ। <sup>25</sup> और उसने दाऊद और बादशाह के ग़ैबबीन जद्द और नातन नबी के हुक्म के मुताबिक़ खुदावन्द के घर में लावियों को झाँझ और सितार और बरबत के साथ मुक़र्रर किया, क्योंकि यह नबियों के ज़रिए खुदावन्द का हुक्म था। <sup>26</sup> और लावी दाऊद ने बाजों को और काहिन नरसिंगों को लेकर खड़े हुए, <sup>27</sup> और हिज़क्रियाह ने मज़बह पर सोख़तनी कुर्बानी अदा करने का हुक्म दिया, और जब सोख़तनी कुर्बानी शुरू हुई तो खुदावन्द का हम्द भी नरसिंगों और शाह — ए — इस्राईल दाऊद ने बाजों के साथ शुरू हुआ, <sup>28</sup> और सारी जमा'अत ने सिज्दा किया, और गानेवाले गाने और नरसिंगे वाले नरसिंगे फूँकने लगे। जब तक सोख़तनी कुर्बानी जल न चुकी, यह सब होता रहा; <sup>29</sup> और जब वह कुर्बानी अदा कर चुके, तो बादशाह और उसके साथ सब हाज़रीन ने झुक कर सिज्दा किया। <sup>30</sup> फिर हिज़क्रियाह बादशाह और रईसों ने लावियों को हुक्म किया कि दाऊद और आसफ़ ग़ैबबीन के हम्द गाकर खुदावन्द की हम्द करें; और उन्होंने खुशी से बड़ाई की और सिर झुकाए और सिज्दा किया। <sup>31</sup> और हिज़क्रियाह कहने लगा, “अब तुम ने अपने आपको खुदावन्द के लिए पाक कर लिया है। इसलिए नज़दीक आओ, और खुदावन्द के घर में ज़बीहे और शुक्रगुज़ारी की कुर्बानियाँ लाओ।” तब जमा'अत ज़बीहे और शुक्रगुज़ारी की कुर्बानियाँ लाई, और जितने दिल से राज़ी थे सोख़तनी कुर्बानियाँ लाए। <sup>32</sup> और सोख़तनी कुर्बानियों का शुमार जो जमा'अत लाई यह था: सत्तर बैल और सौ मेंढे और दो सौ बरें, यह सब खुदावन्द की सोख़तनी कुर्बानी के लिए थे। <sup>33</sup> और पाक किए हुए जानवर यह थे: छः सौ बैल और तीन हज़ार भेड़ — बकरियाँ। <sup>34</sup> मगर काहिन ऐसे थोड़े थे कि वह सारी सोख़तनी कुर्बानी के जानवरों की खालें उतार न सके, इसलिए उनके भाई लावियों ने

उनकी मदद की जब तक काम पूरा न हो गया; और काहिनों ने अपने को पाक न कर लिया, क्योंकि लावी अपने आपको पाक करने में काहिनों से ज्यादा सच्चे दिल थे। <sup>35</sup> और सोख्तनी कुर्बानियाँ भी कसरत से थीं, और उनके साथ सलामती की कुर्बानियों की चर्बी और सोख्तनी कुर्बानियों के तपावन थे। यूँ खुदावन्द के घर की खिदमत की तरतीब दुरुस्त हुई। <sup>36</sup> और हिजक्रियाह और सब लोग उस काम की वजह से, जो खुदा ने लोगों के लिए तैयार किया था, बाग़ बाग़ हुए क्योंकि वह काम यकवारगी किया गया था।

### 30

????? ?? ???????

<sup>1</sup> और हिजक्रियाह ने सारे इस्राईल और यहूदाह को कहला भेजा, और इफ़राईम और मनस्सी के पास भी खत लिख भेजे कि वह खुदावन्द के घर में येरूशलेम को, खुदावन्द इस्राईल के खुदा के लिए 'ईद — ए — फ़सह करने को आएँ; <sup>2</sup> क्योंकि बादशाह और सरदारों और येरूशलेम की सारी जमा'अत ने दूसरे महीने में 'ईद — ए — फ़सह मनाने की सलाह कर लिया था। <sup>3</sup> क्योंकि वह उस वक़्त उसे इसलिए नहीं मना सके कि काहिनों ने काफ़ी ता'दाद में अपने आपको पाक नहीं किया था, और लोग भी येरूशलेम में इकट्ठे नहीं हुए थे। <sup>4</sup> यह बात बादशाह और सारी जमा'अत की नज़र में अच्छी थी। <sup>5</sup> इसलिए उन्होंने हुक्म जारी किया कि 'बैरसबा' से दान तक सारे इस्राईल में 'ऐलान किया जाए कि लोग येरूशलेम में आकर खुदावन्द इस्राईल के खुदा के लिए 'ईद — ए — फ़सह करें, क्योंकि उन्होंने ऐसी बड़ी तादाद में उसको नहीं मनाया था जैसे लिखा है। <sup>6</sup> इसलिए बादशाह के क़ासिद और उसके सरदारों से खत लेकर बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ सारे इस्राईल और यहूदाह में फ़िरे, और कहते गए, "ऐ बनी — इस्राईल! अब्रहाम और इस्हाक़ और इस्राईल के खुदावन्द खुदा की तरफ़ दोबारा फिर जाओ, ताकि वह तुम्हारे बाक़ी लोगों की तरफ़ जो असूर के बादशाहों के हाथ से बच रहे हैं, फिर मुतवज्जिह हों। <sup>7</sup> और तुम अपने बाप — दादा और अपने भाइयों की तरह मत हो, जिन्होंने खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा की नाफ़रमानी की, यहाँ तक कि उसने उनको छोड़ दिया कि बर्बाद हो जाएँ, जैसा तुम देखते हो। <sup>8</sup> तब तुम अपने बाप — दादा की तरह मगरूर न बनो, बल्कि खुदावन्द के ताबे' हो जाओ और उसके मक़दिस में आओ, जिसे उसने हमेशा के लिए पाक किया है, और खुदावन्द अपने खुदा की इबादत करो ताकि उसका क्रहर — ए — शदीद तुम पर से टल जाए।

<sup>9</sup> क्योंकि अगर तुम खुदावन्द की तरफ़ दोबारा मुड़ो, तो तुम्हारे भाई और तुम्हारे बेटे अपने गुलाम करने वालों की नज़र में क़ाबिल — ए — रहम ठहरेंगे और इस मुल्क में फिर आएँगे, क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा ग़फ़ूर — ओ — रहीम है, और अगर तुम उसकी तरफ़ फ़िरो तो वह तुम से अपना मुँह फेर न लेगा।" <sup>10</sup> इसलिए क़ासिद इफ़राईम और मनस्सी के मुल्क में शहर — ब — शहर होते हुए ज़बूलून तक गए, पर उन्होंने उनका मज़ाक़ किया और उनको ठट्ठों में उड़ाया। <sup>11</sup> फिर भी आशर और मनस्सी और ज़बूलून में से कुछ लोगों ने फ़िरोतनी की और येरूशलेम को आए। <sup>12</sup> और यहूदाह पर भी खुदावन्द का हाथ था कि उनको यकदिल बना दे, ताकि वह खुदावन्द के क़लाम के मुताबिक़ बादशाह और सरदारों के हुक्म पर 'अमल करें। <sup>13</sup> इसलिए बहुत से लोग येरूशलेम में जमा' हुए कि दूसरे महीने में फ़तीरी रोटी की 'ईद करें; यूँ बहुत बड़ी जमा'अत हो गई। <sup>14</sup> वह उठे और उन मज़बहों को जो येरूशलेम में थे और खुशबू की सब कुर्बानगाहों को दूर किया, और उनकी क़िदरून न के नाले में डाल दिया। <sup>15</sup> फिर दूसरे महीने की चौदहवीं तारीख़ को उन्होंने फ़सह को ज़बह किया, और काहिनों और लावियों ने शर्मिन्दा होकर अपने आपको पाक किया और खुदावन्द के घर में सोख्तनी कुर्बानियाँ लाए। <sup>16</sup> वह अपने दस्तूर पर मर्द — ए — खुदा मूसा की शरी'अत के मुताबिक़ अपनी अपनी जगह खड़े हुए, और काहिनों ने लावियों के हाथ से खून लेकर छिड़का। <sup>17</sup> क्योंकि जमा'अत में बहुत से लोग ऐसे थे जिन्होंने अपने आपको पाक नहीं किया था, इसलिए यह काम लावियों के सुपुर्द हुआ कि वह सब नापाक शख्सों के लिए फ़सह के बरों को ज़बह करें, ताकि वह खुदावन्द के लिए पाक हों। <sup>18</sup> क्योंकि इफ़राईम और मनस्सी और इश्कार और ज़बूलून में से बहुत से लोगों ने अपने आपको पाक नहीं किया था, तो भी उन्होंने फ़सह को जिस तरह लिखा है उस तरह से न खाया, क्योंकि हिजक्रियाह ने उनके लिए यह दुआ की थी, कि खुदावन्द जो नेक है, हर एक को <sup>19</sup> जिसने खुदावन्द खुदा अपने बाप — दादा के खुदा की तलब में दिल लगाया है मु'आफ़ करे, अगर वह मक़दिस की तहारत के मुताबिक़ पाक न हुआ हो। <sup>20</sup> और खुदावन्द ने हिजक्रियाह की सुनी और लोगों को शिफ़ा दी। <sup>21</sup> और जो बनी — इस्राईल येरूशलेम में हाज़िर थे, उन्होंने बड़ी खुशी से सात दिन तक 'ईद — ए — फ़तीर मनाई, और लावी और काहिन बलन्द आवाज़ के बाजों के साथ खुदावन्द के सामने गा गाकर हर दिन खुदावन्द की हम्द करते रहे। <sup>22</sup> और हिजक्रियाह



ने सब लावियों से जो खुदावन्द की खिदमत में माहिर थे, तसल्लीबख्श बातें कीं। इसलिए वह 'ईद के सातों दिन तक खाते और सलामती के ज़बीहों की कुर्बानियाँ पेश करते और खुदावन्द अपने बाप दादा के खुदा के सामने इक़रार करते रहे। <sup>23</sup> फिर सारी जमा'अत ने और सात दिन मानने की सलाह की, और खुशी से और सात दिन माने। <sup>24</sup> क्योंकि शाह — ए — यहूदाह हिज़क्रियाह ने जमा'अत को कुर्बानियों के लिए एक हज़ार बछड़े और सात हज़ार भेड़ें 'इनायत कीं, और सरदारों ने जमा'अत को एक हज़ार बछड़े और दस हज़ार भेड़ें दीं, और बहुत से काहिनों ने अपने आपको पाक किया। <sup>25</sup> और यहूदाह की सारी जमा'अत ने काहिनों और लावियों समेत और उस सारी जमा'अत ने जो इस्राईल में से आई थी, और उन परदेसियों ने जो इस्राईल के मुल्क से आए थे, और जो यहूदाह में रहते थे खुशी मनाई। <sup>26</sup> इसलिए येरूशलेम में बड़ी खुशी हुई, क्योंकि शाह — ए — इस्राईल सुलेमान बिन दाऊद के ज़माने से येरूशलेम में ऐसा नहीं हुआ था। <sup>27</sup> तब लावी काहिनों ने उठ कर लोगों को बरकत दी, और उनकी सुनी गई, और उनकी दुआ उसके पाक मकान, आसमान तक पहुँची।

## 31

?????????? ?? ??????? ???????

<sup>1</sup> जब यह हो चुका तो सब इस्राईली जो हाज़िर थे, यहूदाह के शहरों में गए और सारे यहूदाह और बिनयमीन के बल्कि इफ़्राईम और मनस्सी के भी सुतूनों को टुकड़े — टुकड़े किया, और यसीरतों को काट डाला, और ऊँचे मक़ामों और मज़बहों को ढा दिया; यहाँ तक कि उन सभी को मिटा दिया। तब सब बनी — इस्राईल अपने अपने शहर में अपनी अपनी मिल्लियत को लौट गए। <sup>2</sup> और हिज़क्रियाह ने काहिनों के फ़रीकों को और लावियों को उनके फ़रीकों के मुताबिक़, या'नी काहिनों और लावियों दोनों के हर शख्स को उसकी खिदमत के मुताबिक़ खुदावन्द की खेमागाह के फाटकों के अन्दर सोख्तनी कुर्बानियों और सलामती की कुर्बानियों के लिए, और इबादत और शुक्रगुज़ारी और तारीफ़ करने के लिए मुक़र्रर किया। <sup>3</sup> उसने अपने माल में से बादशाही हिस्सा सोख्तनी कुर्बानियों के लिए, या'नी सुबह — ओ — शाम की सोख्तनी कुर्बानियों के लिए, और सब्तों और नए चाँदों और मुक़र्रर 'ईदों की सोख्तनी कुर्बानियों के लिए ठहराया, जैसा खुदावन्द की शरी'अत में लिखा है। <sup>4</sup> और उसने उन लोगों को जो येरूशलेम में रहते थे, हुक्म किया कि काहिनों और लावियों का

हिस्सा दें ताकि वह खुदावन्द की शरी'अत में लगे रहें। <sup>5</sup> इस फ़रमान के जारी होते ही बनी — इस्राईल अनाज और मय और तेल और शहद और खेत की सब पैदावार के पहले फल बहुतायत से देने, और सब चीज़ों का दसवाँ हिस्सा कसरत से लाने लगे। <sup>6</sup> और बनी — इस्राईल और यहूदाह जो यहूदाह के शहरों में रहते थे, वह भी बैलों और भेड़ बकरियों का दसवाँ हिस्सा, और उन पाक चीज़ों का दसवाँ हिस्सा जो खुदावन्द उनके खुदा के लिए पाक की गई थीं, लाए और उनको ढेर ढेर कके लगा दिया। <sup>7</sup> उन्होंने तीसरे महीने में ढेर लगाना शुरू किया और सातवें महीने में पूरा किया। <sup>8</sup> जब हिज़क्रियाह और सरदारों ने आकर ढेरों को देखा, तो खुदावन्द को और उसकी क्रौम इस्राईल को मुबारक कहा। <sup>9</sup> और हिज़क्रियाह ने काहिनों और लावियों से उन ढेरों के बारे में पूछा। <sup>10</sup> तब सरदार काहिन 'अज़रियाह ने जो सद्क़ के खान्दान का था, उसे जवाब दिया, “जब से लोगों ने खुदावन्द के घर में हदिये लाना शुरू किया, तब से हम खाते रहे और हम को काफ़ी मिला और बहुत बच रहा है; क्योंकि खुदावन्द ने अपने लोगों को बरकत बख्शी है, और वही बचा हुआ यह बड़ा ढेर है।” <sup>11</sup> तब हिज़क्रियाह ने हुक्म किया कि खुदावन्द के घर में कोठरियाँ तैयार करें, इसलिए उन्होंने उनको तैयार किया। <sup>12</sup> और वह हदिये और वह दहेकियाँ और पाक की हुई चीज़ें ईमानदारी से लाते रहे, और उन पर कनानियाह लावी मुख्तार था और उसका भाई सिमई नाइब था, <sup>13</sup> और इलीएल और अज़ज़ियाह और नहात और 'असाहील और यरीमोट और यूज़बद और इलीएल और इस्माकियाह और महत और बिनायाह हिज़क्रियाह बादशाह और खुदा के घर के सरदार 'अज़रियाह के हुक्म से कनानियाह और उसके भाई सिमई के मातहत पेशकार थे। <sup>14</sup> और मशरिकी फाटक का दरबान यिमना लावी का बेटा कोरे खुदा की खुशी की कुर्बानियों पर मुक़र्रर था, ताकि खुदावन्द के हदियों और पाक तरीन चीज़ों को बाँट दिया करे। <sup>15</sup> और उसके मातहत अदन और बिनयमीन और यशू'अ और समा'याह और अमरियाह और सकनियाह, काहिनों के शहरों में इस 'उहदे पर मुक़र्रर थे कि अपने भाइयों को, क्या बड़े क्या छोटे उनके फ़रीकों के मुताबिक़ हिस्सा दिया करें, <sup>16</sup> और इनके 'अलावा उनको भी दें जो तीन साल की उम्र से और उससे ऊपर ऊपर मर्दों के नसबनामे में शुमार किए गए, या'नी उनको जो अपने अपने फ़रीक़ की बारियों पर अपने अपने ज़िम्मे की खिदमत को हर दिन के फ़र्ज़ के मुताबिक़ अन्जाम देने को खुदावन्द के घर में जाते थे। <sup>17</sup> और उनको भी जो अपने अपने आबाई खान्दान के मुताबिक़ काहिनों के नसबनामे में

शुमार किए गए, और उन लावियों को जो बीस साल के और उससे ऊपर थे, और अपने अपने फ़रीक़ की बारी पर खिदमत करते थे।<sup>18</sup> और उनको जो सारी जमा'अत में से अपने अपने बाल — बच्चों और बीवियों और बेटों और बेटियों के नसबनामे के मुताबिक़ शुमार किए गए, क्योंकि अपने अपने मुक़र्रर काम पर वह अपने आप को तक्रहुस के लिए पाक करते थे।<sup>19</sup> और बनी हारून के काहिनों के लिए भी, जो शहर — ब — शहर अपने शहरों के चारोंतरफ़ के खेतों में थे, कई आदमी जिनके नाम बता दिए गए थे, मुक़र्रर हुए कि काहिनों के सब आदमियों को और उन सभी को जो लावियों के बीच नसबनामे के मुताबिक़ शुमार किए गए थे, हिस्सा दें।<sup>20</sup> इसलिए हिज़क्रियाह ने सारे यहूदाह में ऐसा ही किया, और जो कुछ खुदावन्द उसके खुदा की नज़र में भला और सच्चा और हक़ था वही किया।<sup>21</sup> और खुदा के घर की खिदमत और शरी'अत और अहकाम के ऐतबार से जिस जिस काम को उसने अपने खुदा का तालिब होने के लिए किया, उसे अपने सारे दिल से किया और कामयाब हुआ।

## 32

2222 22 222222 22 2222 2222

<sup>1</sup> इन बातों और इस ईमानदारी के बाद शाह — ए — असूर सनहेरिब चढ़ आया और यहूदाह में दाखिल हुआ, और फ़सीलदार शहरों के मुक़ाबिल खेमाज़न हुआ और उनको अपने क़ब्जे में लाना चाहा।<sup>2</sup> जब हिज़क्रियाह ने देखा कि सनहेरिब आया है और उसका 'इरादा है कि येरूशलेम से लड़े<sup>3</sup> तो उसने अपने सरदारों और बहादुरों के साथ सलाह की कि उन चश्मों के पानी को जो शहर से बाहर थे बन्द कर दे, और उन्होंने उसकी मदद की।<sup>4</sup> बहुत लोग जमा' हुए और सब चश्मों को और उस नदी को जो उस सरज़मीन के बीच बहती थी, यह कह कर बन्द कर दिया, “असूर के बादशाह आकर बहुत सा पानी क्यूँ पाएँ?”<sup>5</sup> और उसने हिम्मत बाँधी और सारी दीवार को जो टूटी थी बनाया, और उसे बुर्जों के बराबर ऊँचा किया और बाहर से एक दूसरी दीवार उठाई, और दाऊद के शहर में मिल्लो को मज़बूत किया और बहुत से हथियार और ढालें बनाई।<sup>6</sup> और उसने लोगों पर सर लश्कर ठहराए और शहर के फाटक के पास के मैदान में उनको अपने पास इकट्ठा किया, और उनसे हिम्मत अफ़जाई की बातें कीं और कहा,<sup>7</sup> “हिम्मत बाँधो और हौसला रखो, और असूर के बादशाह और उसके साथ के सारे गिरोह की वजह से न डरो न हिरासा न हो; क्यूँकि वह जो हमारे साथ है, उससे बड़ा है जो उसके साथ है।<sup>8</sup> उसके साथ बशर का हाथ है लेकिन हमारे

साथ खुदावन्द हमारा खुदा है कि हमारी मदद करे और हमारी लड़ाईयाँ लड़े।” तब लोगों ने शाह — ए — यहूदाह हिज़क्रियाह की बातों पर भरोसा किया।<sup>9</sup> उसके बाद शाह — ए — असूर सनहेरिब ने जो अपने सारे लश्कर के साथ लकीस के मुक़ाबिल पड़ा था, अपने नौकर येरूशलेम को शाह — ए — यहूदाह हिज़क्रियाह के पास और पूरे यहूदाह के पास जो येरूशलेम में थे, यह कहने को भेजे कि;<sup>10</sup> शाह — ए — असूर सनहेरिब यू फ़रमाता है कि तुम्हारा किस पर भरोसा है कि तुम येरूशलेम में घेरे को झेल रहे हो? <sup>11</sup> क्या हिज़क्रियाह तुम को कहत और प्यास की मौत के हवाले करने को तुम को नहीं बहका रहा है कि “खुदा वन्द हमारा खुदा हम को शाह — ए — असूर के हाथ से बचा लेगा?” <sup>12</sup> क्या इसी हिज़क्रियाह ने उसके ऊँचे मक़ामों और मज़बहों को दूर करके, यहूदाह और येरूशलेम को हुक्म नहीं दिया कि तुम एक ही मज़बह के आगे सिज्दा करना और उसी पर खुशबू जलाना? <sup>13</sup> क्या तुम नहीं जानते कि मैंने और मेरे बाप — दादा ने और मुल्कों के सब लोगों से क्या क्या किया है? क्या उन मुल्कों की क़ौमों के मा'बूद अपने मुल्क को किसी तरह से मेरे हाथ से बचा सके? <sup>14</sup> जिन क़ौमों को मेरे बाप — दादा ने बिल्कुल हलाक कर डाला, उनके मा'बूदों में कौन ऐसा निकला जो अपने लोगों को मेरे हाथ से बचा सका कि तुम्हारा मा'बूद तुम को मेरे हाथ से बचा सकेगा? <sup>15</sup> फिर हिज़क्रियाह तुम को फ़रेब न देने पाए और न इस तौर पर बहकाए और न तुम उसका यक़ीन करो; क्यूँकि किसी क़ौम या मुल्क का मा'बूद अपने लोगों को मेरे हाथ से और मेरे बाप — दादा के हाथ से बचा नहीं सका, तो कितना कम तुम्हारा मा'बूद तुम को मेरे हाथ से बचा सकेगा। <sup>16</sup> उसके नौकरों ने खुदावन्द खुदा के खिलाफ़ और उसके बन्दे हिज़क्रियाह के खिलाफ़ बहुत सी और बातें कहीं। <sup>17</sup> और उसने खुदावन्द इस्राईल के खुदा की बे'इज़्जती करने और उसके हक़ में कुफ़र बकने के लिए, इस मज़मून के खत भी लिखे: “जैसे और मुल्कों की क़ौमों के मा'बूदों ने अपने लोगों को मेरे हाथ से नहीं बचाया है, वैसे ही हिज़क्रियाह का मा'बूद भी अपने लोगों को मेरे हाथ से नहीं बचा सकेगा।” <sup>18</sup> और उन्होंने बड़ी आवाज़ से पुकार कर यहूदियों की ज़बान में येरूशलेम के लोगों को जो दीवार पर थे यह बातें कह सुनाये ताकि उनको डराएँ और परेशान करें और शहर को ले लें। <sup>19</sup> उन्होंने येरूशलेम के खुदा का ज़िक़र ज़मीन की क़ौमों के मा'बूदों की तरह किया, जो आदमी के हाथ की कारीगरी हैं। <sup>20</sup> इसी वजह से हिज़क्रियाह बादशाह

और आमूस के बेटे यसायाह नबी ने दुआ की, और आसमान की तरफ चिल्लाए। <sup>21</sup> और खुदावन्द ने एक फ़रिश्ते को भेजा, जिसने शाह — ए — असूर के लश्कर में सब ज़बरदस्त सूर्माओं और रहनुमाओं और सरदारों को हलाक कर डाला। फिर वह शर्मिन्दा होकर अपने मुल्क को लौटा; और जब वह अपने मा'बूद के इबादत खाना में गया तो उन ही ने जो उसके सुल्ब से निकले थे, उसे वहीं तलवार से क़त्ल किया। <sup>22</sup> यूँ खुदावन्द ने हिज़क्रियाह को और येरूशलेम के बाशिन्दों को शाह — ए — असूर सनहेरिब के हाथ से और सभी के हाथ से बचाया और हर तरफ़ उनकी रहनुमाई की। <sup>23</sup> और बहुत लोग येरूशलेम में खुदावन्द के लिए हृदिये और शाह — ए — यहूदाह हिज़क्रियाह के लिए क्रीमती चीज़ें लाए, यहाँ तक कि वह उस वक़्त से सब क़ौमों की नज़र में मुम्ताज़ हो गया। <sup>24</sup> उन दिनों में हिज़क्रियाह ऐसा बीमार पड़ा कि मरने के करीब हो गया, और उसने खुदावन्द से दुआ की तब उसने उससे बातें कीं और उसे एक निशान दिया। <sup>25</sup> लेकिन हिज़क्रियाह ने उस एहसान के लायक़ जो उस पर किया गया 'अमल न किया, क्यूँकि उसके दिल में घमण्ड समा गया; इसलिए उस पर, और यहूदाह और येरूशलेम पर क्रहर भड़का। <sup>26</sup> तब हिज़क्रियाह और येरूशलेम के बाशिन्दों ने अपने दिल के गुरूर के बदले खाकसारी इस्तिyar की, इसलिए हिज़क्रियाह के दिनों में खुदावन्द का क्रहर उन पर नाज़िल न हुआ। <sup>27</sup> और हिज़क्रियाह की दौलत और 'इज़ज़त बहुत फ़रावान थी और उसने चाँदी और सोने और जवाहर और मसाले और ढालों और सब तरह की क्रीमती चीज़ों के लिए ख़ज़ाने <sup>28</sup> और अनाज और शराब और तेल के लिए अम्बारखाने, और सब क्रिस्म के जानवरों के लिए थान, और भेड़ — बकरियों के लिए बाड़े बनाए। <sup>29</sup> इसके 'अलावा उसने अपने लिए शहर बसाए और भेड़ बकरियों और गाय — बैलों को कसरत से मुहय्या किया, क्यूँकि खुदा ने उसे बहुत माल बख़्शा था। <sup>30</sup> इसी हिज़क्रियाह ने जैहून के पानी के ऊपर के सोते को बंद कर दिया, और उसे दाऊद के शहर के मगरिब की तरफ़ सीधा पहुँचाया, और हिज़क्रियाह अपने सारे काम में कामयाब हुआ। <sup>31</sup> तो भी बाबुल के हाकिमों के मु'आमिले में, जिन्होंने अपने कासिद उसके पास भेजे ताकि उस मोज़िज़ा का हाल जो उस मुल्क में किया गया था दरियाफ़्त करें; खुदा ने उसे आजमाने के लिए छोड़ दिया, ताकि मा'लूम करे के उसके दिल में क्या है। <sup>32</sup> और हिज़क्रियाह के बाक़ी काम और उसके नेक आ'माल आमूस के बेटे यसायाह नबी की ख़्वाब में और यहूदाह और इस्राईल के बादशाहों की किताब में

लिखा है। <sup>33</sup> और हिज़क्रियाह अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे बनी दाऊद की क़ब्रों की चढ़ाई पर दफ़न किया, और सारे यहूदाह और येरूशलेम के सब बाशिन्दों ने उसकी मौत पर उसकी ताज़ीम की; और उसका बेटा मनस्सी उसकी जगह बादशाह हुआ।

### 33

?????? ?? ??????? ?? ??????? ?????

<sup>1</sup> मनस्सी बारह साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने येरूशलेम में पचपन साल हुकूमत की। <sup>2</sup> उसने उन क़ौमों के नफ़रतअंगेज़ कामों के मुताबिक़ जिनको खुदावन्द ने बनी — इस्राईल के आगे से हटा दिया था, वही किया जो खुदावन्द की नज़र में बुरा था। <sup>3</sup> क्यूँकि उसने उन ऊँचे मक़ामों को, जिनको उसके बाप हिज़क्रियाह ने ढाया था, फिर बनाया और बा'लीम के लिए मज़बहे बनाए और यसीरतें तैयार कीं और सारे आसमानी लश्कर को सिज्दा किया और उनकी इबादत की। <sup>4</sup> और उसने खुदा वन्द के घर में जिसके बारे में खुदावन्द ने फ़रमाया था कि मेरा नाम येरूशलेम में हमेशा रहेगा, मज़बहे बनाए; <sup>5</sup> और उसने खुदावन्द के घर के दोनों सहनों में, सारे आसमानी लश्कर के लिए मज़बहे बनाए। <sup>6</sup> और उसने बिन हलूम की वादी में अपने फ़र्ज़न्दों को भी आग में चलवाया, और वह शगून मानता और जादू और अफ़सून करता और बदरूहों के आशनाओं और जादूगरों से ता'अल्लुक रखता था। उसने खुदावन्द की नज़र में बहुत बदकारी की, जिससे उसे गुस्सा दिलाया; <sup>7</sup> और जो तराशी हुई मूरत उसने बनवाई थी उसको खुदा के घर में नस्ब किया, जिसके बारे में खुदा ने दाऊद और उसके बेटे सुलेमान से कहा था कि मैं इस घर में और येरूशलेम में जिसे मैंने बनी — इस्राईल के सब क़बीलों में से चुन लिया है, अपना नाम हमेशा तक रखूँगा; <sup>8</sup> और मैं बनी — इस्राईल के पाँव को उस सरज़मीन से जो मैंने उनके बाप — दादा को 'इनायत की है, फिर कभी नहीं हटाऊँगा बशर्ते कि वह उन सब बातों को जो मैंने उनकी फ़रमाई, या'नी उस सारी शरी'अत और क़ानून और हुक्मों को जो मूसा के जरिए मिले, मानने की एहतियात रखें। <sup>9</sup> और मनस्सी ने यहूदाह और येरूशलेम के बाशिन्दों को यहाँ तक गुमराह किया कि उन्होंने उन क़ौमों से भी ज्यादा बुराई की, जिनको खुदावन्द ने बनी — इस्राईल के सामने से हलाक किया था। <sup>10</sup> और खुदा वन्द ने मनस्सी और उसके लोगों से बातें की लेकिन उन्होंने कुछ ध्यान न दिया। <sup>11</sup> इसलिए खुदावन्द उन पर शाह — ए — असूर के सिपह सालारों को चढ़ा लाया, जो मनस्सी को

जँजीरों से जकड़ कर और बेड़ियाँ डाल कर बाबुल को ले गए। <sup>12</sup> जब वह मुसीबत में पड़ा तो उसने खुदावन्द अपने खुदा से मिन्नत की और अपने बाप — दादा के खुदा के सामने बहुत खाकसार बना, <sup>13</sup> और उसने उससे दुआ की; तब उसने उसकी दुआ उसे क़बूल करके उसकी फ़रयाद सुनी ममलुकत में येरूशलेम को वापस लाया। तब मनस्सी ने जान लिया कि खुदा वन्द ही खुदा है। <sup>14</sup> इसके बाद उसने दाऊद के शहर के लिए जैहून के मगरिब की तरफ़ वादी में मछली फाटक के मदखल तक एक बाहर की दीवार उठाई, और 'ओफल को घेरा और उसे बहुत ऊँचा किया; और यहूदाह के सब फ़सीलदार शहरों में बहादुर जंगी सरदार रखे। <sup>15</sup> और उसने अजनबी मा'बूदों को, और खुदावन्द के घर से उस मूरत को, और सब मज़बहों को जो उसने खुदावन्द के घर के पहाड़ पर और येरूशलेम में बनवाए थे दूर किया और उनको शहर के बाहर फेंक दिया। <sup>16</sup> और उसने खुदावन्द के मज़बह की मरम्मत की और उस पर सलामती के ज़बीहों की और शुक्रगुज़ारी की कुर्बानियाँ अदा कीं और यहूदाह को इस्राईल के खुदावन्द अपने खुदा की इबादत का हुक्म दिया। <sup>17</sup> तो भी लोग ऊँचे मक़ामों में कुर्बानी करते रहे, लेकिन सिर्फ़ खुदावन्द अपने खुदा के लिए। <sup>18</sup> और मनस्सी के बाकी काम और अपने खुदा से उसकी दुआ, और उन ग़ैबबीनों की बातें जिन्होंने खुदावन्द इस्राईल के खुदा के नाम से उसके साथ कलाम किया, वह सब इस्राईल के बादशाहों के आ'माल के साथ लिखा हैं। <sup>19</sup> उसकी दुआ और उसका क़बूल होना, और उसकी खाकसारी से पहले की सब ख़ताएँ और उसकी बेईमानी और वह जगह जहाँ उसने ऊँचे मक़ाम बनवाये और यसीरतें और तराशी हुई मूरतें खड़ी कीं, यह सब बातें हज़ी की तारीख़ में क़लमबन्द हैं। <sup>20</sup> और मनस्सी अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे उसी के घर में दफ़न किया; और उसका बेटा अमून उसकी जगह बादशाह हुआ। <sup>21</sup> अमून बाइस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने दो साल येरूशलेम में हुकूमत की। <sup>22</sup> और जो खुदावन्द की नज़र में बुरा है वही उसने किया, जैसा उसके बाप मनस्सी ने किया था। और अमून ने उन सब तराशी हुई मूरतों के आगे जो उसके बाप मनस्सी ने बनवाई थीं, कुर्बानियाँ कीं और उनकी इबादत की। <sup>23</sup> और वह खुदा वन्द के सामने खाकसार न बना, जैसा उसका बाप मनस्सी खाकसार बना था; बल्कि अमून ने गुनाह पर गुनाह किया। <sup>24</sup> तब उसके खादिमों ने उसके खिलाफ़ साज़िश की और उसी के घर में उसे मार डाला। <sup>25</sup> लेकिन

अहल — ए — मुल्क ने उन सबको क़त्ल किया जिन्होंने अमून बादशाह के खिलाफ़ साज़िश की थी, और अहल — ए — मुल्क ने उसके बेटे यूसियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया।

## 34

यूसियाह आठ साल का था, जब वह हुकूमत करने

लगा, और उसने इकतीस साल येरूशलेम में हुकूमत की। <sup>2</sup> उसने वह काम किया जो खुदावन्द की नज़र में ठीक था, और अपने बाप दाऊद के रास्तों पर चला और दहने या बाएँ हाथ को न मुड़ा। <sup>3</sup> क्योंकि अपनी हुकूमत के आठवें साल जब वह लड़का ही था, वह अपने बाप दाऊद के खुदा का तालिब हुआ, और बारहवें साल में यहूदाह और येरूशलेम को ऊँचे मक़ामों और यसीरतों और तराशे हुए बुतों और ढाली हुई मूरतों से पाक करने लगा। <sup>4</sup> और लोगों ने उसके सामने बा'लीम के मज़बहों को ढा दिया, और सूरज की मूरतों को जो उनके ऊपर ऊँचे पर थीं उसने काट डाला, और यासीरतों और तराशी हुई और ढाली हुई मूरतों को उसने टुकड़े टुकड़े करके उनको धूल बना दिया, और उसको उनकी क़बरों पर बिथराया जिन्होंने उनके लिए कुर्बानियाँ अदा की थीं। <sup>5</sup> उसने उन काहिनों की हड्डियाँ उन्हीं के मज़बहों पर जलाई, और यहूदाह और येरूशलेम को पाक किया। <sup>6</sup> और मनस्सी और इफ़राईम और शमौन के शहरों में, बल्कि नफ़ताली तक उनके आस — पास खण्डरों में उसने ऐसा ही किया, <sup>7</sup> और मज़बहों को ढा दिया, और यसीरतों और तराशी हुई मूरतों को तोड़ कर धूल कर दिया, और इस्राईल के पूरे मुल्क में सूरज की सब मूरतों को काट डाला, तब येरूशलेम को लोटा। <sup>8</sup> अपनी हुकूमत के अठारहवें बरस, जब वह मुल्क और हैकल को पाक कर चुका, तो उसने असलियाह के बेटे साफ़न को और शहर के हाकिम मासियाह और यूआखज़ के बेटे यूआख मुवरिख को भेजा कि खुदावन्द अपने खुदा के घर की मरम्मत करें। <sup>9</sup> वह खिलक्रियाह सरदार काहिन के पास आए, और वह नक़दी जो खुदा के घर में लाई गई थी जिसे दरबान लावियों ने मनस्सी और इफ़राईम और इस्राईल के सब बाकी लोगों से और पूरे यहूदाह और विनयमीन और येरूशलेम के बाशिंदों से लेकर जमा किया था, उसके सुपुर्द की। <sup>10</sup> और उन्होंने उसे उन कारिदों के हाथ में सौंपा जो खुदावन्द के घर की निगरानी करते थे, और उन कारिदों ने जो खुदावन्द के घर में काम करते थे उसे उस घर की मरम्मत और दुरुस्त करने में लगाया; <sup>11</sup> या'नी उसे बढ़ाईयों



और राजगीर को दिया की गढ़े हुए पत्थर और जोड़ों के लिए लकड़ी खरीदें, और उन घरों के लिए जिनको यहूदाह के बादशाहों ने उजाड़ दिया था शहतीर बनाई।<sup>12</sup> वह आदमी दियानत से काम करते थे, और यहत और 'अबदियाह लावी जो बनी मिरारी में से थे उनकी निगरानी करते थे, और बनी क्रिहात में से ज़करियाह और मुसल्लाम काम कराते थे, और लावियों में से वह लोग थे जो बाजों में माहिर थे।<sup>13</sup> और वह बारबरदारों के भी दारोगा थे और सब क्रिस्म क्रिस्म के काम करने वालों से काम कराते थे, और मुन्शी और मुहतमिम और दरबान लावियों में से थे।<sup>14</sup> जब वह उस नक़दी को जो खुदावन्द के घर में लाई गई थी निकाल रहे थे, तो खिलक्रियाह काहिन को खुदावन्द की तौरेत की किताब, जो मूसा की ज़रिए दी गई थी मिली।<sup>15</sup> तब खिलक्रियाह ने साफ़न मुन्शी से कहा, "मैंने खुदा वन्द के घर में तौरेत की किताब पाई है।" और खिलक्रियाह ने वह किताब साफ़न को दी।<sup>16</sup> और साफ़न वह किताब बादशाह के पास ले गया; फिर उसने बादशाह को यह बताया कि सब कुछ जो तू ने अपने नौकरों के सुपुर्द किया था, उसे वह कर रहे हैं।<sup>17</sup> और वह नक़दी जो खुदावन्द के घर में मौजूद थी, उन्होंने लेकर नाज़िरो और कारिदों के हाथ में सौंपी है।<sup>18</sup> फिर साफ़न मुन्शी ने बादशाह से कहा कि खिलक्रियाह काहिन ने मुझे यह किताब दी है। और साफ़न ने उसमें से बादशाह के सामने पढ़ा।<sup>19</sup> और ऐसा हुआ कि जब बादशाह ने तौरेत की बातें सुनीं तो अपने कपड़े फाड़े।<sup>20</sup> फिर बादशाह ने खिलक्रियाह और अखीक़ाम बिन साफ़न और अबदून बिन मीकाह और साफ़न मुन्शी और बादशाह के नौकर असायाह को यह हुक्म दिया,<sup>21</sup> कि जाओ, और मेरी तरफ़ से और उन लोगों की तरफ़ से जो इस्राईल और यहूदाह में बाक़ी रह गए हैं, इस किताब की बातों के हक़ में जो मिली है खुदावन्द से पूछो; क्योंकि खुदावन्द का क्रहर जो हम पर नाज़िल हुआ है बड़ा है, इसलिए कि हमारे बाप — दादा ने खुदावन्द के कलाम को नहीं माना है कि सब कुछ जो इस किताब में लिखा है उसके मुताबिक़ करते।<sup>22</sup> तब खिलक्रियाह और वह जिनकी बादशाह ने हुक्म किया था, खुल्दा नबिया के पास जो तोशाख़ाने के दारोगा सलूम बिन तोकहत बिन ख़सरा की बीवी थी गए। वह येरूशलेम में मिशना नामी महल्ले में रहती थी, इसलिए उन्होंने उससे वह बातें कहीं।<sup>23</sup> उसने उनसे कहा, खुदा वन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि तुम उस शख्स से जिसने तुम को मेरे पास भेजा है कहो कि;<sup>24</sup> 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है देख, मैं इस जगह पर और

इसके बाशिंदों पर आफ़त लाऊँगा, या'नी सब ला'नतें जो इस किताब में लिखी हैं जो उन्होंने शाह — ए — यहूदाह के आगे पढ़ी है।<sup>25</sup> क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और ग़ैर — मा'बूदों के आगे खुशबू जलाई और अपने हाथों के सब कामों से मुझे गुस्सा दिलाया, तब मेरा क्रहर इस मक़ाम पर नाज़िल हुआ है और धीमा न होगा।<sup>26</sup> रहा शाह — ए — यहूदाह जिसने तुम को खुदावन्द से दरियाफ़्त करने को भेजा है, तब तुम उससे ऐसा कहना कि खुदावन्द इसराईल का खुदा ऐसा फ़रमाता है कि उन बातों के बारे में जो तूने सुनी हैं,<sup>27</sup> "चूँकि तेरा दिल मोम हो गया, और तू ने खुदा के सामने आजिज़ी की जब तू ने उसकी वह बातें सुनीं जो उसने इस मक़ाम और इसके बाशिंदों के खिलाफ़ कही हैं, और अपने को मेरे सामने ख़ाक़सार बनाया और अपने कपड़े फाड़ कर मेरे आगे रोया, इसलिए मैंने भी तेरी सुन ली है। खुदावन्द फ़रमाता है,<sup>28</sup> देख, मैं तुझे तेरे बाप — दादा के साथ मिलाऊँगा और तू अपनी क़ब्र में सलामती से पहुँचाया जाएगा, और सारी आफ़त को जो मैं इस मक़ाम और इसके बाशिंदों पर लाऊँगा तेरी आँखें नहीं देखेंगी।" इसलिए उन्होंने यह जवाब बादशाह को पहुँचा दिया।<sup>29</sup> तब बादशाह ने यहूदाह और येरूशलेम के सब बुज़ुर्गों को बुलवा कर इकट्ठा किया।<sup>30</sup> और बादशाह और सब अहल — ए — यहूदाह और येरूशलेम के बाशिंदे, काहिन और लावी और सब लोग क्या छोटे क्या बड़े, खुदावन्द के घर को गए, और उसने जो 'अहद की किताब खुदावन्द के घर में मिली थी, उसकी सब बातें उनको पढ़ सुनाई।<sup>31</sup> और बादशाह अपनी जगह खड़ा हुआ, और खुदावन्द के आगे 'अहद किया के वह खुदावन्द की पैरवी करेगा और उसके हुक्मों और उसकी शहादतों और क़ानून को अपने सारे दिल और सारी जान से मानेगा, ताकि उस 'अहद की उन बातों को जो उस किताब में लिखी थीं पूरा करे।<sup>32</sup> और उसने उन सबको जो येरूशलेम और बिनयमीन में मौजूद थे, उस 'अहद में शरीक किया; और येरूशलेम के बाशिंदों ने खुदा अपने बाप — दादा के खुदा के 'अहद के मुताबिक़ 'अमल किया।<sup>33</sup> और यूसियाह ने बनी — इस्राईल के सब 'इलाक़ों में से सब मकरूहात को दफ़ा किया और जितने इस्राईल में मिले उन सभी से 'इबादत, या'नी खुदा वन्द उनके खुदा की 'इबादत, कराई और वह उसके जीते जी खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा की पैरवी से न हटे।

22222222 22 2222 222222

1 और यूसियाह ने येरूशलेम में खुदावन्द के लिए ईद — ए — फ़सह की, और उन्होंने फ़सह को पहले महीने की चौदहवीं तारीख को ज़बह किया। 2 उसने काहिनों को उनकी खिदमत पर मुक़रर किया, और उनको खुदावन्द के घर की खिदमत की तरगीब दी; 3 और उन लावियों से जो खुदावन्द के लिए पाक होकर तमाम इस्राईल को ता'लीम देते थे कहा कि पाक सन्दूक को उस घर में, जिसे शाह — ए — इस्राईल सुलेमान बिन दाऊद ने बनाया था रखो; आगे को तुम्हारे कंधों पर कोई बोझ न होगा। इसलिए अब तुम खुदावन्द अपने खुदा की और उसकी क़ौम इस्राईल की खिदमत करो। 4 और अपने आबाई खान्दानों और फ़रीक़ों के मुताबिक़ जैसा शाह — ए — इस्राईल दाऊद ने लिखा और जैसा उसके बेटे सुलेमान ने लिखा है, अपने आपको तैयार कर लो। 5 और तुम मक़दिस में अपने भाइयों या'नी क़ौम के फ़र्ज़न्दों के आबाई खान्दानों की तक्रसीम के मुताबिक़ खड़े हो, ताकि उनमें से हर एक के लिए लावियों के किसी न किसी आबाई खान्दान की कोई शाख़ हो। 6 और फ़सह को ज़बह करो, और खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ जो मूसा के ज़रिए मिला, 'अमल करने के लिए अपने आपको पाक करके अपने भाइयों के लिए तैयार हो। 7 और यूसियाह ने लोगों के लिए जितने वहाँ मौजूद थे, रेवड़ों में से बर्रे और हलवान सब के सब फ़सह की कुर्बानियों के लिए दिए, जो गिनती में तीस हज़ार थे और तीन हज़ार बछड़े थे; यह सब बादशाही माल में से दिए गए। 8 और उसके सरदारों ने खुशी की कुर्बानी के तौर पर लोगों को और काहिनों को और लावियों को दिया। खिलक़ियाह और ज़करियाह और यहीएल ने जो खुदा के घर के नाज़िम थे, काहिनों को फ़सह की कुर्बानी के लिए दो हज़ार छः सौ बकरी और तीन सौ बैल दिए। 9 और कनानियाह ने भी और उसके भाइयों समा'याह और नतनीएल ने, और हसबियाह और यईएल और यूज़बद ने जो लावियों के सरदार थे, लावियों को फ़सह की कुर्बानी के लिए पाँच हज़ार भेड़ बकरी और पाँच सौ बैल दिए। 10 ऐसी इबादत की तैयारी हुई, और बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ काहिन अपनी अपनी जगह पर और लावी अपने अपने फ़रीक़ के मुताबिक़ खड़े हुए। 11 उन्होंने फ़सह को ज़बह किया, और काहिनों ने उनके हाथ से खून लेकर छिड़का और लावी खाल खींचते गए। 12 फिर उन्होंने सोख़्तनी कुर्बानियाँ अलग कीं ताकि वह लोगों के आबाई खान्दानों की तक्रसीम के मुताबिक़ खुदावन्द के सामने पेश करने को उनको दें, जैसा मूसा की किताब में लिखा है; और बैलों से भी उन्होंने ऐसा

ही किया। 13 और उन्होंने दस्तूर के मुताबिक़ फ़सह को आग पर भूना और पाक हड्डियों को देगों और हण्डों और कढ़ाइयों में पकाया और उनको जल्द लोगों को पहुँचा दिया। 14 इसके बाद उन्होंने अपने लिए और काहिनों के लिए तैयार किया, क्यूँकि काहिन या'नी बनी हारून सोख़्तनी कुर्बानियों और चर्बी के चढ़ाने में रात तक मशगूल रहे। इसलिए लावियों ने अपने लिए और काहिनों के लिए जो बनी हारून थे तैयार किया। 15 और गानेवाले जो बनी आसफ़ थे, दाऊद और आसफ़ और हैमान और बादशाह के ग़ैबबीन यदूतोन के हुक्म के मुताबिक़ अपनी अपनी जगह में थे, और हर दरवाज़े पर दरबान थे। उनको अपना अपना काम छोड़ना न पड़ा, क्यूँकि उनके भाई लावियों ने उनके लिए तैयार किया। 16 इसलिए उसी दिन यूसियाह बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ फ़सह मानने और खुदावन्द के मज़बह पर सोख़्तनी कुर्बानियाँ पेश करने के लिए खुदावन्द की पूरी इबादत की तैयारी की गई। 17 और बनी — इस्राईल ने जो हाज़िर थे, फ़सह को उस वक़्त और फ़तीरी रोटी की 'ईद की सात दिन तक मनाया। 18 इसकी तरह कोई फ़सह समुएल नबी के दिनों से इस्राईल में नहीं मनाया गया था, और न शाहान — ए — इस्राईल में से किसी ने ऐसी ईद फ़सह की जैसी यूसियाह और काहिनों और लावियों और सारे यहूदाह और इस्राईल ने जो हाज़िर थे, और येरूशलेम के बाशिंदों ने की। 19 ये फ़सह यूसियाह की हुकूमत के अठारहवें साल में मनाया गया। 20 इस सबके बाद जब यूसियाह हैकल को तैयार कर चुका, तो शाह — ए — मिस्र निकोह ने करकमीस से जो फ़रात के किनारे है, लड़ने के लिए चढ़ाई की और यूसियाह उसके मुक़ाबिला को निकला। 21 लेकिन उसने उसके पास कासिदों से कहला भेजा कि ऐ यहूदाह के बादशाह, तुझ से मेरा क्या काम? मैं आज के दिन तुझ पर नहीं बल्कि उस खान्दान पर चढ़ाई कर रहा हूँ जिससे मेरी जंग है, और खुदा ने मुझ को जल्दी करने का हुक्म दिया है; इसलिए तू खुदा से जो मेरे साथ है मुज़ाहिम न हो, ऐसा न हो कि वह तुझे हलाक कर दे। 22 लेकिन यूसियाह ने उससे मुँह न मोड़ा, बल्कि उससे लड़ने के लिए अपना भेस बदला, और निकोह की बात जो खुदा के मुँह से निकली थी न मानी और मजिद्दो की वादी में लड़ने को गया। 23 और तीरअंदाज़ों ने यूसियाह बादशाह को तीर मारा, और बादशाह ने अपने नौकरों से कहा, “मुझे ले चलो, क्यूँकि मैं बहुत ज़ख्मी हो गया हूँ।” 24 इसलिए उसके नौकरों ने उसे उस रथ पर से उतार कर उसके दूसरे रथ पर चढ़ाया, और उसे येरूशलेम को ले गए; और वह

मर गया और अपने बाप — दादा की कब्रों में दफन हुआ, और सारे यहूदाह और येरूशलेम ने यूसियाह के लिए मातम किया। <sup>25</sup> और यरमियाह ने यूसियाह पर नौहा किया, और गानेवाले और गानेवालियाँ सब अपने मर्सियों में आज के दिन तक यूसियाह का जिक्र करते हैं। यह उन्होंने इस्राईल में एक दस्तूर बना दिया, और देखो वह बातें नौहों में लिखी हैं। <sup>26</sup> यूसियाह के बाकी काम, और जैसा खुदावन्द की शरी'अत में लिखा है उसके मुताबिक उसके नेक आ'माल, <sup>27</sup> और उसके काम, शुरू' से आखिर तक इस्राईल और यहूदाह के बादशाहों की किताब में लिखा है।

### 36

22222222 22 222222 222 222222 2222

<sup>1</sup> और मुल्क के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहूआखज़ को उसके बाप की जगह येरूशलेम में बादशाह बनाया। <sup>2</sup> यहूआखज़ तेईस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा; उसने तीन महीने येरूशलेम में हुकूमत की। <sup>3</sup> और शाह — ए — मिस्र ने उसे येरूशलेम में तख्त से उतार दिया, और मुल्क पर सौ क्रिन्तार' चाँदी और एक क्रिन्तार सोना जुर्माना किया।

22222222 22 222222 222 222222 2222

<sup>4</sup> और शाह — ए — मिस्र ने उसके भाई इलियाकीम को यहूदाह और येरूशलेम का बादशाह बनाया, और उसका नाम बदलकर यहूयकीम रखा; और निकोह उसके भाई यहूआखज़ को पकड़कर मिस्र को ले गया। <sup>5</sup> यहूयकीम पच्चीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने ग्यारह साल येरूशलेम में हुकूमत की। उसने वही किया जो खुदावन्द उसके खुदा की नज़र में बुरा था। <sup>6</sup> उस पर शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने चढ़ाई की और उसे बाबुल ले जाने के लिए उसके बेड़ियाँ डालीं <sup>7</sup> और नबूकदनज़र खुदावन्द के घर के कुछ बर्तन भी बाबुल को ले गया और उनको बाबुल में अपने मन्दिर में रखवा, <sup>8</sup> यहूयकीम के बाकी काम और उसके नफ़रतअंगेज़ 'आमाल, और जो कुछ उसमें पाया गया, वह इस्राईल और यहूदाह के बादशाहों की किताब में लिखा है; और उसका बेटा यहूयाकीन उसकी जगह बादशाह हुआ।

22222222 22 222222 222 222222 2222

<sup>9</sup> यहूयाकीन आठ साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने तीन महीने दस दिन येरूशलेम में हुकूमत की। उसने वही किया जो खुदावन्द की

नज़र में बुरा था। <sup>10</sup> और नए साल के शुरू' होते ही नबूकदनज़र बादशाह ने उसे खुदावन्द के घर के नफ़ीस बर्तनों के साथ बाबुल को बुलवा लिया, और उसके भाई सिदक्रियाह को यहूदाह और येरूशलेम का बादशाह बनाया। <sup>11</sup> सिदक्रियाह इक्कीस साल का था जब वह हुकूमत करने लगा, और उसने ग्यारह साल येरूशलेम में हुकूमत की। <sup>12</sup> उसने वही किया जो खुदावन्द उसके खुदा की नज़र में बुरा था। और उसने यरमियाह नबी के सामने जिसने खुदावन्द के मुँह की बातें उससे कहीं, 'आजिजी न की। <sup>13</sup> उसने नबूकदनज़र बादशाह से भी जिसने उसे खुदा की कसम खिलाई थी, बगावत की बल्कि वह गर्दनकश हो गया, और उसने अपना दिल ऐसा सख्त कर लिया कि खुदावन्द इस्राईल के खुदा की तरफ़ न मुड़ा। <sup>14</sup> इसके 'अलावा काहिनों के सब सरदारों और लोगों ने और कौमों के सब नफ़रती कामों के मुताबिक बड़ी बदकारियाँ की, और उन्होंने खुदावन्द के घर को जिसे उसने येरूशलेम में पाक ठहराया था नापाक किया। <sup>15</sup> खुदावन्द उनके बाप — दादा के खुदा ने अपने पैगम्बरों को उनके पास बर वक्त भेज भेज कर पैगाम भेजा क्योंकि उसे अपने लोगों और अपने घर पर तरस आता था; <sup>16</sup> लेकिन उन्होंने खुदा के पैगम्बरों को टूटों में उड़ाया, और उसकी बातों को नाचीज़ जाना और उसके नबियों की हँसी उड़ाई यहाँ तक कि खुदावन्द का ग़ज़ब अपने लोगों पर ऐसा भड़का कि कोई चारा न रहा। <sup>17</sup> चुनाँचे वह कसदियों के बादशाह को उन पर चढ़ा लाया, जिसने उनके मक़दिस के घर में उनके जवानों को तलवार से क़त्ल किया; और उसने क्या जवान मर्द क्या कुंवारी, क्या बुढ़दा या उम्र दराज़, किसी पर तरस न खाया। उसने सबको उसके हाथ में दे दिया। <sup>18</sup> और खुदा के घर के सब बर्तन, क्या बड़े क्या छोटे, और खुदावन्द के घर के खज़ाने और बादशाह और उसके सरदारों के खज़ाने; यह सब वह बाबुल को ले गया। <sup>19</sup> और उन्होंने खुदा के घर को जला दिया, और येरूशलेम की फ़सील ढा दी, और उसके सारे महल आग से जला दिए और उसके सब क्रीमती बर्तन को बर्बाद किया। <sup>20</sup> जो तलवार से बचे वह उनको बाबुल ले गया, और वहाँ वह उसके और उसके बेटों के गुलाम रहे, जब तक फ़ारस की हुकूमत शुरू' न हुई <sup>21</sup> ताकि खुदावन्द का वह कलाम जो यरमियाह की ज़बानी आया था पूरा हो कि मुल्क अपने सब्तों का आराम पा ले; क्योंकि जब तक वह सुनसान पड़ा रहा तब तक, या'नी सत्तर साल तक उसे सब्त का आराम मिला। <sup>22</sup> और शाह — ए — फ़ारस ख़ोरस की हुकूमत के पहले साल, इसलिए के खुदावन्द का कलाम जो यरमियाह की ज़बानी आया था पूरा हो, खुदावन्द ने शाह —

ए — फ़ारस ख़ोरस का दिल उभारा; तो उसने अपनी सारी ममलुकत में 'ऐलान करवाया और इस मज़मून का फ़रमान भी लिखा कि: <sup>23</sup> शाह — ए — फ़ारस ख़ोरस ऐसा फ़रमाता है, 'खुदावन्द आसमान के खुदा ने ज़मीन की सब हुकूमतें मुझे बख़्शी हैं, और उसने मुझ को ताकीद की है कि मैं येरूशलेम में, जो यहूदाह में है उसके लिए एक घर बनाऊँ; इसलिए तुम्हारे बीच जो कोई उसकी सारी क्रौम में से हो, खुदावन्द उसका खुदा उसके साथ हो और वह खाना हो जाए।



## एज्रा

एज्रा की किताब का मुसन्निफ़ बतौर

यहूदी रिवायत एज्रा को किताब का मुसन्निफ़ बतौर मंसूब करता है इससे मुताल्लिक अनजान मगर हकीकत यह है कि एज्रा सरदार काहिन बराहे रास्त हारून के नसल का था (7:1 — 5) इस तरह वह एक काहिन और अपने आप में एक कातिब था — उसका शौक और जोश खुदा की शरीअत के लिए था — वह एज्रा की रहनुमाई करी कि यहूदियों को गुलामी से मुल्क — ए — इस्राईल में वापस ले आएँ — जब अर्तिक शिश्ता बादशाह फारस की सलतनत में हुकूमत करता था।

इस किताब की तस्नीफ़ की तारीख़ तकरीबन 457 - 440 क़बल मसीह है।

एज्रा के काम बाबुल से लौटने के बाद यहूदिया में गालिलन येरूशलेम में लिखे गए थे।

गुलामी से लौटने के बाद बनी इस्राईल जो

येरूशलेम में थे उनके लिए और मुस्तक़बिल में कलाम के क़ारिर्दन के लिए लिखे गए।

खुदा ने एज्रा को एक नमूना बतौर इस्तेमाल किया,

जिस्मानी तौर से अपने मादिर ए वतन में लौटने के ज़रिए और रूहानी तौर से अपने गुनाहों से फिर कर तौबा करने के ज़रिए — जब हम खुदावंद की खिदमत करते हैं तो हम गैर ईमानदारों की तरफ़ से और रूहानी ताकतों के ज़रिए मुख़ालफ़त की तवक्को कर सकते हैं, पर अगर हम वक्त से पहले इस की तैयारी करें तो हम बेहतर तरीके से मुख़ालफ़त का सामना करने के लिए हथियार बन्द हो सकते हैं — ईमान के ज़रिये हम अपने तरक्की का रास्ता रोकने वालों को रोक सकते हैं — एज्रा की किताब एक बड़ी याद दिहानी पेश करती है कि पस्तहिम्मत और खौफ़ हमारी ज़िंदगियों के लिए खुदा के मंसूबे को पूरा करने के लिए दो बड़ी रुकावटें हैं।

बहाली

बैरूनी खाका

1. ज़रुबाबुल के मातहत गुलामी से पहली वापसी — 1:1-6:22
2. एज्रा के मातहत गुलामी से दूसरी वापसी — 7:1-10:44

1 और शाह — ए — फ़ारस ख़ोरस की सलतनत के

पहले साल में इसलिए कि खुदावन्द का कलाम जो यरमियाह की ज़बानी आया था पूरा हुआ, खुदावन्द ने शाह — ए — फ़ारस ख़ोरस का दिल उभारा, इसलिए उस ने अपने पूरे मुल्क में 'ऐलान कराया और इस मज़मून का फ़रमान लिखा कि। 2 शाह — ए — फ़ारस ख़ोरस यूँ फ़रमाता है कि खुदावन्द आसमान के खुदा ने ज़मीन की सब मुल्कें मुझे बख़्शी हैं, और मुझे ताकीद की है कि मैं येरूशलेम में जो यहूदाह में है उसके लिए एक घर बनाऊँ। 3 तब तुम्हारे बीच जो कोई उसकी सारी क्रौम में से हो उसका खुदा उसके साथ हो और वह येरूशलेम को जो यहूदाह में है जाए, और खुदावन्द इस्राईल के खुदा का घर जो येरूशलेम में है, बनाए खुदा वही है; 4 और जो कोई किसी जगह जहाँ उसने क़याम किया बाक़ी रहा हो तो उसी जगह के लोग चाँदी और सोने और माल मवेशी से उसकी मदद करें, और 'अलावा इसके वह खुदा के घर के लिए जो येरूशलेम में है खुशी के हदिये दें। 5 तब यहूदाह और बिनयमीन के आबाई खानदानों के सरदार और काहिन और लावी और वह सब जिनके दिल को खुदा ने उभारा, उठे कि जाकर खुदावन्द का घर जो येरूशलेम में है बनाएँ, 6 और उन सभी ने जो उनके पड़ोस में थे, 'अलावा उन सब चीज़ों के जो खुशी से दी गई, चाँदी के बर्तनों और सोने और सामान और मवाशी और कीमती चीज़ों से उनकी मदद की। 7 और ख़ोरस बादशाह ने भी खुदावन्द के घर के उन बर्तनों को निकलवाया जिनको नबूकदनज़र येरूशलेम से ले आया था और अपने मा'बूदों के इबादत खाने में रखा था। 8 इन ही को शाह — ए — फ़ारस ख़ोरस ने ख़ज़ान्ची मित्रदात के हाथ से निकलवाया, और उनको गिनकर यहूदाह के अमीर शेषबज़्ज़र को दिया। 9 और उनकी गिनती ये है: सोने की तीस थालियाँ, और चाँदी की हजार थालियाँ और उनतीस छुरियाँ। 10 और सोने के तीस प्याले, और चाँदी के दूसरी किस्म के चार सौ दस प्याले और, और किस्म के बर्तन एक हजार। 11 सोने और चाँदी के कुल बर्तन पाँच हजार चार सौ थे। शेषबज़्ज़र इन सभी को, जब गुलामी के लोग बाबुल से येरूशलेम को पहुँचाए गए, ले आया।

## 2

2 और शाह — ए — फ़ारस ख़ोरस की सलतनत के

1 मुल्क के जिन लोगों को शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र बाबुल को ले गया था, उन गुलामों की गुलामी में से वह जो निकल आए और येरूशलेम और यहूदाह में अपने अपने शहर को वापस आए ये हैं: 2 वह ज़रुब्बाबुल, यशू'अ, नहमियाह, सिरायाह, रा'लायाह, मर्दकी, बिलशान, मिसफ़ार, बिगवई, रहूम और बा'ना के साथ आए। इस्राईली क्रौम के आदमियों का ये शुमार हैं। 3 बनी पर'ऊस, दो हजार एक सौ बहत्तर; 4 बनी सफ़तियाह, तीन सौ बहत्तर; 5 बनी अरख, सात सौ पिच्छत्तर; 6 बनी पखतमोआब, जो यशू'अ और यूआब की औलाद में से थे, दो हजार आठ सौ बारह; 7 बनी 'ऐलाम, एक हजार दो सौ चव्वन, 8 बनी ज़त्तू, नौ सौ पैतालीस; 9 बनी ज़क्की, सात सौ साठ 10 बनी बानी, छः सौ बयालीस; 11 बनी बबई, छः सौ तेईस; 12 बनी 'अज़जाद, एक हजार दो सौ बाईस 13 बनी अदुनिक्राम छः सौ छियासठ: 14 बनी बिगवई, दो हजार छप्पन; 15 बनी 'अदीन, चार सौ चव्वन, 16 बनी अतीर, हिज़क्रियाह के घराने के अठानवे 17 बनी बज़ई, तीन सौ तेईस; 18 बनी यूरह, एक सौ बारह; 19 बनी हाशूम, दो सौ तेईस; 20 बनी जिब्बार, पच्चानवे, 21 बनी बैतलहम, एक सौ तेईस, 22 अहल — ए — नत्फ़ा, छप्पन: 23 अहल — ए — 'अन्तोत, एक सौ अट्ठाईस; 24 बनी 'अज़मावत, बयालीस; 25 क़रयत — 'अरीम और कफ़रा और बैरोत के लोग, सात सौ तैतालीस, 26 रामा और जिबा' के लोग, छः सौ इक्कीस, 27 अहल — ए — मिक्मास, एक सौ बाईस; 28 बैतएल और ए' के लोग, दो सौ तेईस; 29 बनी नबू, बावन, 30 बनी मजबीस, एक सौ छप्पन; 31 दूसरे 'ऐलाम की औलाद, एक हजार दो सौ चव्वन; 32 बनी हारेम, तीन सौ बीस; 33 लूद और हादीद और ओनू की औलाद सात सौ पच्चीस: 34 यरीहू के लोग, तीन सौ पैन्तालीस; 35 सनाआह के लोग, तीन हजार छः सौ तीस। 36 फिर काहिनों या'नी यशू'अ के खानदान में से: यदा'याह की औलाद, नौ सौ तिहत्तर; 37 बनी इम्मेर, एक हजार बावन; 38 बनी फ़शहूर, एक हजार दो सौ सैतालीस; 39 बनी हारिम, एक हजार सत्रह। 40 लावियों या'नी हूदावियाह की नस्ल में से यशू'अ और क़दमीएल की औलाद, चौहत्तर, 41 गानेवालों में से बनी आसफ़, एक सौ अट्ठाईस; 42 दरबानों की नसल में से बनी सलूम, बनी अतीर, बनी तलमून, बनी 'अक्कोब, बनी खतीता, बनी सोबै सब मिल कर, एक सौ उन्तालीस। 43 और नतीनीम' में से बनी जिहा, बनी हसूफ़ा, बनी तब'ऊत, 44 बनी क़रूस, बनी सीहा, बनी फ़दून, 45 बनी लिबाना, बनी

हजाबा, बनी 'अक्कूब, 46 बनी हजाब, बनी शमलै, बनी हनान, 47 बनी जिद्देल, बनी हजर, बनी रआयाह, 48 बनी रसीन, बनी नक्कूदा बनी जज़्जाम, 49 बनी 'उज़्जा, बनी फ़ासेख, बनी बसैई, 50 बनी असनाह, बनी म'ओनीम, बनी नफ़ीसीम, 51 बनी बक्रबोक्र, बनी हकूफ़ा, बनी हरहूर, 52 बनी बज़लूत, बनी महीदा, बनी हरशा, 53 बनी बरकूस, बनी सीसरा, बनी तामह, 54 बनी नज़याह, बनी खतीफ़ा। 55 सुलेमान के खादिमों की औलाद बनी सूती बनी हसूफ़िरत बनी फ़रूदा: 56 बनी या'ला, बनी दरकून, बनी जिद्देल, 57 बनी सफ़तियाह, बनी खितेल, बनी फ़ूकरत ज़बाइम, बनी अमी। 58 सब नतीनीम और सुलेमान के खादिमों की औलाद तीन सौ बानवे। 59 और जो लोग तल — मिलह और तल — हरसा और करुब और अद्दान और अमीर से गए थे, वह ये हैं; लेकिन ये लोग अपने अपने आबाई खान्दान और नस्ल का पता नहीं दे सके कि इस्राईल के हैं या नहीं: 60 या'नी बनी दिलायाह, बनी तूबियाह, बनी नकूदा छः सौ बावन। 61 और काहिनों की औलाद में से बनी हबायाह, बनी हकूस, बनी बरज़िल्ली जिसने जिल'आदी बरज़िल्ली की बेटियों में से एक को ब्याह लिया और उनके नाम से कहलाया 62 उन्होंने अपनी सनद उनके बीच जो नसबनामों के मुताबिक़ गिने गए थे ढूँडी लेकिन न पाई, इसलिए वह नापाक समझे गए और कहानत से खारिज हुए; 63 और हाकिम ने उनसे कहा कि जब तक कोई काहिन ऊरीम — ओ — तम्मीम लिए हुए न उठे, तब तक वह पाक तरीन चीज़ों में से न खाएँ। 64 सारी जमा'अत मिल कर बयालीस हजार तीन सौ साठ की थी। 65 इनके 'अलावा उनके गुलामों और लौंडियों का शुमार सात हजार तीन सौ सैंतीस था, और उनके साथ दो सौ गानेवाले और गानेवालियाँ थीं। 66 उनके घोड़े, सात सौ छत्तीस; उनके खच्चर, दो सौ पैतालीस; 67 उनके ऊँट, चार सौ पैतीस और उनके गधे, छः हजार सात सौ बीस थे। 68 और आबाई खान्दानों के कुछ सरदारों ने जब वह खुदावन्द के घर में जो येरूशलेम में है आए, तो खुशी से खुदा के मस्कन के लिए हृदिये दिए, ताकि वह फिर अपनी जगह पर ता'मीर किया जाए। 69 उन्होंने अपने ताक़त के मुताबिक़ काम के खज़ाना में सोने के इकसठ हजार दिरहम और चाँदी के पाँच हजार मनहाँ और काहिनों के एक सौ लिबास दिए। 70 इसलिए काहिन, और लावी, और कुछ लोग, और गानेवाले और दरबान, और नतीनीम अपने अपने शहर में और सब इस्राईली अपने अपने शहर में बस गए।

॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥

1 जब सातवाँ महीना आया, और बनी इस्राईल अपने अपने शहर में बस गए तो लोग यकतन होकर येरूशलेम में इकट्ठे हुए। 2 तब यशू'अ बिन यूसदक और उसके भाई जो काहिन थे, और ज़रुब्बाबुल बिन सियालतिएल और उसके भाई उठ खड़े हुए और उन्होंने इस्राईल के खुदा का मज़बूह बनाया ताकि उस पर सोख्तनी कुर्बानियाँ चढ़ाएँ, जैसा मर्द — ए — खुदा मूसा की शरी'अत में लिखा है। 3 और उन्होंने मज़बूह को उसकी जगह पर रखा, क्योंकि उन अतराफ़ की कौमों की वजह से उनको खोफ़ रहा; और वह उस पर खुदावन्द के लिए सोख्तनी कुर्बानियाँ या'नी सुबह और शाम की सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश करने लगे। 4 और उन्होंने लिखे हुए के मुताबिक़ खैमों की ईद मनाई, और रोज़ की सोख्तनी कुर्बानियाँ गिन गिन कर जैसा जिस दिन का फ़र्ज़ था, दस्तूर के मुताबिक़ पेश कीं: 5 उसके बाद दाइमी सोख्तनी कुर्बानी, और नये चाँद की, और खुदावन्द की उन सब मुकर्ररा ईदों की जो मुक़द्दस ठहराई गई थीं, और हर शख्स की तरफ़ से ऐसी कुर्बानियाँ पेश कीं जो रज़ा की कुर्बानी खुशी से खुदावन्द के लिए अदा करता था। 6 सातवें महीने की पहली तारीख़ से वह खुदावन्द के लिए सोख्तनी कुर्बानियाँ पेश करने लगे। लेकिन खुदावन्द की हैकल की बुनियाद अभी तक डाली न गई थी। 7 और उन्होंने मिस्त्रियों और बड़इयों को नक़दी दी, और सैदानियों और सूरियों को खाना — पीना और तेल दिया, ताकि वह देवदार के लट्ठे लुबनान से याफ़ा को समन्दर की राह से लाएँ, जैसा उनको शाह — ए — फ़ारस खोरस से परवाना मिला था। 8 फिर उनके खुदा के घर में जो येरूशलेम में है आ पहुँचने के बाद, दूसरे बरस के दूसरे महीने में, ज़रुब्बाबुल बिन सियालतिएल और यशू'अ बिन यूसदक ने, और उनके बाक़ी भाई काहिनों और लावियों और सभी ने जो गुलामी से लौट कर येरूशलेम को आए थे काम शुरू किया और लावियों को जो बीस बरस के और उससे ऊपर थे मुकर्रर किया कि खुदावन्द के घर के काम की निगरानी करें। 9 तब यशू'अ और उसके बेटे और भाई, और क़दमीएल और उसके बेटे जो यहूदाह की नसल से थे, मिल कर उठे कि खुदा के घर में कारीगरों की निगरानी करें; और बनी हनदाद भी और उनके बेटे और भाई जो लावी थे उनके साथ थे। 10 इसलिए जब मिस्त्री खुदावन्द की हैकल की बुनियाद डालने लगे, तो उन्होंने काहिनों को अपने अपने लिबास पहने और नरसिंगे लिए हुए और आसफ़ की नसल के लावियों को झाँझ लिए हुए खड़ा किया, कि शाह — ए — इस्राईल

दाऊद की तरतीब के मुताबिक़ खुदावन्द की हम्द करें। 11 इसलिए वह एक हो कर बारी — बारी से खुदावन्द की ता'रीफ़ और शुक्रगुज़ारी में गा — गा कर कहने लगे कि वह भला है, क्योंकि उसकी रहमत हमेशा इस्राईल पर है। जब वह खुदावन्द की ता'रीफ़ कर रहे थे, तो सब लोगों ने बलन्द आवाज़ से नारा मारा, इसलिए कि खुदावन्द के घर की बुनियाद पड़ी थी। 12 लेकिन काहिनों और लावियों और आबाई खान्दानों के सरदारों में से बहुत से उमर दराज़ लोग, जिन्होंने पहले घर को देखा था, उस वक़्त जब इस घर की बुनियाद उनकी आँखों के सामने डाली गई, तो बड़ी आवाज़ से ज़ोर से रोने लगे; और बहुत से खुशी के मारे ज़ोर ज़ोर से ललकारे। 13 इसलिए लोग खुशी की आवाज़ के शोर और लोगों के रोने की आवाज़ में फ़र्क़ न कर सके, क्योंकि लोग बुलन्द आवाज़ से नारे मार रहे थे, और आवाज़ दूर तक सुनाई देती थी।

## 4

॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥

1 जब यहूदाह और बिनयमीन के दुश्मनों ने सुना कि वह जो गुलाम हुए थे, खुदावन्द इस्राईल के खुदा के लिए हैकल को बना रहे हैं; 2 तो वह ज़रुब्बाबुल और आबाई कबीलों के सरदारों के पास आकर उनसे कहने लगे कि हम को भी अपने साथ बनाने दो; क्योंकि हम भी तुम्हारे खुदा के तालिब हैं जैसे तुम हो, और हम शाह — ए — असूर असरहदून के दिनों से जो हम को यहाँ लाया, उसके लिए कुर्बानी पेश करते हैं। 3 लेकिन ज़रुब्बाबुल और यशू'अ और इस्राईल के आबाई खान्दानों के बाक़ी सरदारों ने उनसे कहा कि तुम्हारा काम नहीं, कि हमारे साथ हमारे खुदा के लिए घर बनाओ, बल्कि हम खुद ही मिल कर खुदावन्द इस्राईल के खुदा के लिए उसे बनाएँगे, जैसा शाह — ए — फ़ारस खोरस ने हम को हुक्म किया है। 4 तब मुल्क के लोग यहूदाह के लोगों की मुखालिफ़त करने और बनाते वक़्त उनको तकलीफ़ देने लगे। 5 और शाह — ए — फ़ारस खोरस के जीते जी, बल्कि शाह — ए — फ़ारस दारा की सल्तनत तक उनके मक़सदों को रद्द करने के लिए उनके खिलाफ़ सलाहकारों को उजरत देते रहे। 6 और अख्सूयर्स के हुक्मत के ज़माने, या'नी उसकी सल्तनत के शुरू में उन्होंने यहूदाह और येरूशलेम के बाशिन्दों की शिकायत लिख भेजी। 7 फिर अरतख़शता के दिनों में बिशलाम और मित्रदात और ताबिएल और उसके बाक़ी साथियों ने शाह — ए — फ़ारस अरतख़शता को लिखा। उनका खत अरामी हुरूफ़ और अरामी ज़बान

में लिखा था। <sup>8</sup> रहूम दीवान और शम्सी मुन्शी ने अरतखशशता बादशाह को येरूशलेम के खिलाफ़ यूँ खत लिखा। <sup>9</sup> इसलिए रहूम दीवान और शम्सी मुन्शी और उनके बाक़ी साथियों ने जो दीना और अफ़ार — सतका और तरफ़ीला और फ़ारस और अरक और बाबुल और सोसन और दिह और 'ऐलाम के थे, <sup>10</sup> और बाक़ी उन कौमों ने जिनको उस बुज़ुर्ग — ओ — शरीफ़ असनफ़र ने पार लाकर शहर — ए — सामरिया और दरिया के इस पार के बाक़ी 'इलाके में बसाया था, वग़ैरा वग़ैरा इसको लिखा। <sup>11</sup> उस खत की नक़ल जो उन्होंने अरतखशशता बादशाह के पास भेजा। ये है: “आपके गुलाम, या'नी वह लोग जो दरिया पार रहते हैं, वग़ैरा। <sup>12</sup> बादशाह को मा'लूम हो कि यहूदी लोग जो हुज़ूर के पास से हमारे बीच येरूशलेम में आए हैं, वह उस बाग़ी और फ़सादी शहर को बना रहे हैं; चुनाँचे दीवारों को ख़त्म और बुनियादों की मरम्मत कर चुके हैं। <sup>13</sup> इसलिए बादशाह को मा'लूम हो जाए कि अगर ये शहर बन जाए और फ़सील तैयार हो जाए, तो वह ख़िराज चुंगी, या महसूल नहीं देंगे और आख़िर बादशाहों को नुक़सान होगा। <sup>14</sup> इसलिए चूँकि हम हुज़ूर के दौलतख़ाने का नमक खाते हैं और मुनासिब नहीं कि हमारे सामने बादशाह की तहक़ीर हो, इसलिए हम ने लिखकर बादशाह को ख़बर दी है। <sup>15</sup> ताकि हुज़ूर के बाप — दादा के दफ़्तर की किताब से मा'लूम की जाए, तो उस दफ़्तर की किताब से हुज़ूर को मा'लूम होगा और यक़ीन हो जाएगा कि ये शहर फ़ितना अंगेज है जो बादशाहों और सूबों को नुक़सान पहुँचाता रहा है; और पुराने ज़माने से उसमें फ़साद खड़ा करते रहे हैं। इसी वजह से ये शहर उजाड़ दिया गया था। <sup>16</sup> और हम बादशाह को यक़ीन दिलाते हैं कि अगर ये शहर तामीर हो और इसकी फ़सील बन जाए, तो इस सूरत में हुज़ूर का हिस्सा दरिया पार कुछ न रहेगा।” <sup>17</sup> तब बादशाह ने रहूम दीवान और शम्सी मुन्शी और उनके बाक़ी साथियों को, जो सामरिया और दरिया पार के बाक़ी मुल्क में रहते हैं यह जवाब भेजा कि “सलाम वग़ैरा। <sup>18</sup> जो खत तुम ने हमारे पास भेजा, वह मेरे सामने साफ़ साफ़ पढ़ा गया। <sup>19</sup> और मैंने हुक्म दिया और मा'लूमात की गयी, और मा'लूम हुआ कि इस शहर ने पुराने ज़माने से बादशाहों से बगावत की है, और फ़ितना और फ़साद उसमें होता रहा है। <sup>20</sup> और येरूशलेम में ताक़तवर बादशाह भी हुए हैं जिन्होंने दरिया पार के सारे मुल्क पर हुक्मत की है, और ख़िराज, चुंगी और महसूल उनको दिया जाता था। <sup>21</sup> इसलिए

तुम हुक्म जारी करो कि ये लोग काम बन्द करें और ये शहर न बने, जब तक मेरी तरफ़ से फ़रमान जारी न हों। <sup>22</sup> ख़बरदार, इसमें सुस्ती न करना; बादशाहों के नुक़सान के लिए ख़राबी क्यूँ बढ़ने पाए?” <sup>23</sup> इसलिए जब अरतखशशता बादशाह के खत की नक़ल रहूम और शम्सी मुन्शी और उनके साथियों के सामने पढ़ी गई, तो वह जल्द यहूदियों के पास येरूशलेम को गए, और अपनी ताक़त से उनको रोक दिया। <sup>24</sup> तब खुदा के घर का जो येरूशलेम में है काम बन्द हुआ, और शाह — ए — फ़ारस दारा की सल्तनत के दूसरे बरस तक बन्द रहा।

## 5

<sup>1</sup> फिर नबी या'नी हज्जे नबी और ज़करियाह बिन 'इहूउन यहूदियों के सामने जो यहूदाह और येरूशलेम में थे, नबुव्वत करने लगे; उन्होंने इस्राईल के खुदा के नाम से उनके सामने नबुव्वत की। <sup>2</sup> तब ज़रुब्बाबुल बिन सियालतिएल और यशू'अ बिन यूसदक़ उठे, और खुदा के घर को जो येरूशलेम में है बनाने लगे; और खुदा के वह नबी उनके साथ होकर उनकी मदद करते थे। <sup>3</sup> उन्हीं दिनों दरिया पार का हाकिम, तत्तने और शतर — बोज़ने और उनके साथी उनके पास आकर उनसे कहने लगे कि किसके फ़रमान से तुम इस घर को बनाते, और इस फ़सील को पूरा करते हो? <sup>4</sup> तब हम ने उनसे इस तरह कहा कि उन लोगों के क्या नाम हैं, जो इस 'इमारत को बना रहे हैं? <sup>5</sup> लेकिन यहूदियों के बुज़ुर्गों पर उनके खुदा की नज़र थी; इसलिए उन्होंने उनको न रोका जब तक कि वह मुआ'मिला दारा तक न पहुँचा, और फिर इसके बारे में खत के ज़रिए' से जवाब न आया।

~~~~~

⁶ उस खत की नक़ल जो दरिया पार के हाकिम तत्तने और शतर — बोज़ने और उसके अफ़ारसकी साथियों ने जो दरिया पार थे, दारा बादशाह को भेजा, ⁷ उन्होंने उसके पास एक खत भेजा जिसमें यूँ लिखा था: “दारा बादशाह की हर तरह सलामती हो! ⁸ बादशाह को मा'लूम हो कि हम यहूदाह के सूबा में खुदा — ए — ताला के घर को गए; वह बड़े बड़े पत्थरों से बन रहा है और दीवारों पर कड़ियाँ धरी जा रही हैं, और काम खूब मेहनत से हो रहा है और उनके हाथों तरक्की पा रहा है। ⁹ तब हम ने उन बुज़ुर्गों से सवाल किया और उनसे यूँ कहा, 'कि तुम किस के फ़रमान से इस घर को बनाते, और इस दीवार को पूरा करते हो? ¹⁰ और हम ने उनके नाम भी पूछे, ताकि हम उन लोगों के नाम लिख कर हुज़ूर को ख़बर दें कि उनके सरदार कौन हैं। ¹¹ और उन्होंने हम

को यूँ जवाब दिया कि हम ज़मीन — ओ — आसमान के खुदा के बन्दे हैं, और वही घर बना रहे हैं जिसे बने बहुत बरस हुए, और जिसे इस्राईल के एक बड़े बादशाह ने बना कर तैयार किया था। ¹² लेकिन जब हमारे बाप — दादा ने आसमान के खुदा को गुस्सा दिलाया, तो उसने उनको शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र कसदी के हाथ में कर दिया; जिसने इस घर को उजाड़ दिया, और लोगों को बाबुल को ले गया। ¹³ लेकिन शाह — ए — बाबुल खोरस के पहले साल खोरस बादशाह ने हुक्म दिया कि खुदा का ये घर बनाया जाए। ¹⁴ और खुदा के घर के सोने और चाँदी के बर्तनों को भी, जिनको नबूकदनज़र येरूशलेम की हैकल से निकाल कर बाबुल के इबादत गाह में ले आया था, उनको खोरस बादशाह ने बाबुल के इबादत गाह से निकाला और उनको शेषबज़र नामी एक शख्स को जिसे उसने हाकिम बनाया था सौंप दिया, ¹⁵ और उससे कहा कि इन बर्तनों को ले और जा, और इनको येरूशलेम की हैकल में रख, और खुदा का मस्कन अपनी जगह पर बनाया जाए। ¹⁶ तब उसी शेषबज़र ने आकर खुदा के घर की जो येरूशलेम में है बुनियाद डाली; और उस वक़्त से अब तक ये बन रहा है, लेकिन अभी तैयार नहीं हुआ। ¹⁷ इसलिए अब अगर बादशाह मुनासिब जाने, तो बादशाह के दौलतखाने में जो बाबुल में है, मा'लूमात की जाए कि खोरस बादशाह ने खुदा के इस घर को येरूशलेम में बनाने का हुक्म दिया था या नहीं। और इस मुआ'मिले में बादशाह अपनी मर्ज़ी हम पर ज़ाहिर करे।”

6

एजरा 6:1-17

¹ तब दारा बादशाह के हुक्म से बाबुल के उस तवारीखी कुतुबखाने में जिसमें खज़ाने धरे थे, मा'लूमात की गई। ² चुनाँचिं अखमता के महल में जो मादै के सूबे में वाक़े है, एक तूमार मिला जिसमें ये हुक्म लिखा हुआ था: ³ “खोरस बादशाह के पहले साल खोरस बादशाह ने खुदा के घर के बारे में जो येरूशलेम में है हुक्म किया, कि वह घर या'नी वह मक़ाम जहाँ कुर्बानियाँ करते हैं बनाया जाए और उसकी बुनियादें मज़बूती से डाली जाएँ। उसकी ऊँचाई साठ हाथ और चौड़ाई साठ हाथ हो, ⁴ तीन रद्दे भारी पत्थरों के और एक रद्दा नई लकड़ी का हो; और खर्च शाही महल से दिया जाए। ⁵ और खुदा के घर के सोने और चाँदी के बर्तन भी, जिनको नबूकदनज़र उस हैकल से जो येरूशलेम में है निकाल कर बाबुल को लाया, वापस दिए जाएँ और येरूशलेम की

हैकल में अपनी अपनी जगह पहुँचाए जाएँ, और तू उनको खुदा के घर में रख देना।” ⁶ इसलिए तू ऐ दरिया पार के हाकिम, तत्तने और शतर — बोज़ने और तुम्हारे अफ़ारसकी साथी जो दरिया पार हैं तुम वहाँ से दूर रहो। ⁷ खुदा के इस घर के काम में दख़लअन्दाज़ी न करो। यहूदियों का हाकिम और यहूदियों के बुज़ुर्ग खुदा के घर को उसकी जगह पर ता'मीर करें। ⁸ अलावा इसके खुदा के इस घर के बनाने में यहूदियों के बुज़ुर्गों के साथ तुम को क्या करना है, इसलिए उसके बारे में मेरा ये हुक्म है कि शाही माल में से, या'नी दरिया पार के खिराज में से उन लोगों को बिला देरी किये खर्च दिया जाए, ताकि उनको रुकना न पड़े। ⁹ और आसमान के खुदा की सोख़्तनी कुर्बानियों के लिए जिस जिस चीज़ की उनको ज़रूरत हो — या'नी बछड़े और मेंढ़े और हलवान और जितना गेहूँ और नमक और मय और तेल, वह काहिन जो येरूशलेम में हैं बताएँ, वह सब बिला — नागा रोज़ — ब — रोज़ उनको दिया जाए; ¹⁰ ताकि वह आसमान के खुदा के हुज़ूर राहत अंगेज कुर्बानियाँ पेश करें और बादशाह और शहज़ादों की उम्र दराज़ी के लिए दुआ करें। ¹¹ मैंने ये हुक्म भी दिया है, कि जो शख्स इस फ़रमान को बदल दे, उसके घर में से कड़ी निकाली जाए और उसे उसी पर चढ़ाकर सूली दी जाए, और इस बात की वजह से उसका घर कूड़ाखाना बना दिया जाए। ¹² और वह खुदा जिसने अपना नाम वहाँ रखा है, सब बादशाहों और लोगों को जो खुदा के उस घर को जो येरूशलेम में है, ढाने की गरज़ से इस हुक्म को बदलने के लिए अपना हाथ बढ़ाएँ, ग़ारत करे। मुझ दारा ने हुक्म दे दिया, इस पर बड़ी कोशिश से 'अमल हो। ¹³ तब दरिया पार के हाकिम, तत्तने और शतर — बोज़ने, और उनके साथियों ने दारा बादशाह के फ़रमान भेजने की वजह से बिना देर किये हुए उसके मुताबिक़ 'अमल किया। ¹⁴ तब यहूदियों के बुज़ुर्ग, हज्जै नबी और ज़करियाह बिन इहू की नबुव्वत की वजह से, ता'मीर करते और कामयाब होते रहे। उन्होंने इस्राईल के खुदा के हुक्म, और खोरस और दारा, और शाह — ए — फ़ारस अरतख़शता के हुक्म के मुताबिक़ उसे बनाया और पूरा किया। ¹⁵ इसलिए ये घर अदार के महीने की तीसरी तारीख में, दारा बादशाह की सल्तनत के छठे बरस पूरा हुआ। ¹⁶ और बनी — इस्राईल, और काहिनों और लावियों और गुलामी के बाक़ी लोगों ने खुशी के साथ खुदा के इस घर की हम्द की। ¹⁷ और उन्होंने खुदा के इस घर की तक्दीस के मौक़े पर सौ बैल और दो

सौ मेंढे और चार सौ बर्रे, और सारे इस्राईल की खता की कुर्बानी के लिए इस्राईल के कबीलों के शुमार के मुताबिक बारह बकरे पेश किये। ¹⁸ और जैसा मूसा की किताब में लिखा है, उन्होंने काहिनों को उनकी तक्सीम, और लावियों को उनके फ़रीकों के मुताबिक, खुदा की इबादत के लिए जो येरूशलेम में होती है मुकर्रर किया। ¹⁹ और पहले महीने की चौदहवीं तारीख को उन लोगों ने जो गुलामी से आए थे 'ईद — ए — फ़सह मनाई: ²⁰ क्योंकि काहिनों और लावियों ने यकतन होकर अपने आपको पाक किया था, वह सबके सब पाक थे, और उन्होंने उन सब लोगों के लिए जो गुलामी से आए थे, और अपने भाई काहिनों के लिए और अपने वास्ते फ़सह को ज़बह किया। ²¹ और बनी — इस्राईल ने जो गुलामी से लौटे थे, और उन सभी ने जो खुदावन्द इस्राईल के खुदा के तालिब होने के लिए उस सरज़मीन की अजनबी क्रौमों की नापाकियों से अलग हो गए थे, फ़सह खाया, ²² और खुशी के साथ सात दिन तक फ़तीरी रोटी की 'ईद मनाई, क्योंकि खुदावन्द ने उनको खुश किया था, और शाह — ए — असूर के दिल को उनकी तरफ़ मोड़ा था ताकि वह खुदा या'नी इस्राईल के खुदा के घर के बनाने में उनकी मदद करें।

7

?????? ?? ??????? ?? ?????

¹ इन बातों के बाद शाह — ए — फ़ारस अरतख़शशता के दौर — ए — हुकूमत में एजरा बिन सिरायाह बिन अज़रियाह बिन ख़िलक्रियाह ² बिन सलूम बिन सदूक़ बिन अखीतोब, ³ बिन अमरियाह बिन 'अज़रियाह बिन मिरायोत ⁴ बिन ज़राख़ियाह बिन 'उज़्ज़ी बिन बुक्की ⁵ बिन अबीसू'आ बिन फ़ीन्हास बिन इली'एलियाज़र बिन हारून सरदार काहिन। ⁶ यही 'एजरा बाबुल से गया और वह मूसा की शरी'अत में, जिसे खुदावन्द इस्राईल के खुदा ने दिया था, माहिर 'आलिम था; और चूँकि खुदावन्द उसके खुदा का हाथ उस पर था, बादशाह ने उसकी सब दरखास्तें मन्ज़ूर कीं। ⁷ और बनी — इस्राईल और काहिनों और लावियों और गाने वालों और दरबानों नतीनीम में से कुछ लोग, अरतख़शशता बादशाह के सातवें साल येरूशलेम में आए। ⁸ और वह बादशाह की हुकूमत के सातवें बरस के पाँचवें महीने येरूशलेम में पहुँचा। ⁹ क्योंकि पहले महीने की पहली तारीख को तो बाबुल से चला और पाँचवें महीने की पहली तारीख को येरूशलेम में आ पहुँचा। क्योंकि उसके खुदा की शफ़क़त का हाथ उसपर था। ¹⁰ इसलिए कि 'एजरा आमादा हो गया था कि खुदावन्द

की शरी'अत का तालिब हो, और उस पर 'अमल करे और इस्राईल में आईन और अहकाम की तालीम दे। ¹¹ और एजरा काहिन और 'आलिम, या'नी खुदावन्द के इस्राईल को दिए हुए अहकाम और आईन की बातों के 'आलिम को जो ख़त अरतख़शशता बादशाह ने 'इनायत किया, उसकी नक़ल ये है: ¹² “अरतख़शशता शहंशाह की तरफ़ से एजरा काहिन, या'नी आसमान के खुदा की शरी'अत के 'आलिम — ए — कामिल वग़ैरा वग़ैरा को। ¹³ मैं ये फ़रमान जारी करता हूँ कि इस्राईल के जो लोग और उनके काहिन और लावी मेरे मुल्क में हैं, उनमें से जितने अपनी खुशी से येरूशलेम को जाना चाहते हैं तेरे साथ जाएँ। ¹⁴ चूँकि तू बादशाह और उसके सातों सलाहकारों की तरफ़ से भेजा जाता है, ताकि अपने खुदा की शरी'अत के मुताबिक़ जो तेरे हाथ में है, यहूदाह और येरूशलेम का हाल दरियाफ़्त करे; ¹⁵ और जो चाँदी और सोना बादशाह और उसके सलाहकारों ने इस्राईल के खुदा को, जिसका घर येरूशलेम में है, अपनी खुशी से नज़र किया है ले जाए; ¹⁶ और जिस क़दर चाँदी सोना बाबुल के सारे सूबे से तुझे मिलेगा, और जो खुशी के हदिये लोग और काहिन अपने खुदा के घर के लिए जो येरूशलेम में है अपनी खुशी से दें उनको ले जाए। ¹⁷ इसलिए उस रुपये से बैल और मेंढे और हलवान और उनकी नज़र की कुर्बानियाँ, और उनके तपावन की चीज़ें तू बड़ी कोशिश से ख़रीदना, और उनको अपने खुदा के घर के मज़बह पर जो येरूशलेम में है पेश करना। ¹⁸ और तुझे और तेरे भाइयों को बाक़ी चाँदी सोने के साथ जो कुछ करना मुनासिब मा'लूम हो, वही अपने खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ करना। ¹⁹ और जो बर्तन तुझे तेरे खुदा के घर की इबादत के लिए सौंपे जाते हैं, उनको येरूशलेम के खुदा के सामने दे देना। ²⁰ और जो कुछ और तेरे खुदा के घर के लिए ज़रूरी हो जो तुझे देना पड़े, उसे शाही ख़ज़ाने से देना। ²¹ और मैं अरतख़शशता बादशाह, खुद दरिया पार के सब ख़ज़ान्चियों को हुक्म करता हूँ, कि जो कुछ एजरा काहिन, आसमान के खुदा की शरी'अत का 'आलिम, तुम से चाहे वह बिना देर किये किया जाए; ²² या'नी सौ किन्तार चाँदी, और सौ कुर गेहूँ, और सौ बत मय, और सौ बत तेल तक, और नमक बेअन्दाज़ा। ²³ जो कुछ आसमान के खुदा ने हुक्म किया है, इसलिए ठीक वैसा ही आसमान के खुदा के घर के लिए किया जाए; क्योंकि बादशाह और शाहजादों की ममलुकत पर ग़ज़ब क्यूँ भड़के? ²⁴ और तुम को हम आगाह करते हैं कि काहिनों और लावियों और गानेवालों और दरबानों और नतीनीम और खुदा के इस घर के खादिमों में से

किसी पर खिराज, चुंगी या महसूल लगाना जायज़ न होगा। ²⁵ और ऐ 'अज़रा, तू अपने खुदा की उस समझ के मुताबिक़ जो तुझ को 'इनायत हुई हाकिमों और क्राज़ियों को मुक़र्रर कर, ताकि दरिया पार के सब लोगों का जो तेरे खुदा की शरी'अत को जानते हैं इन्साफ़ करें; और तुम उसको जो न जानता हो सिखाओ। ²⁶ और जो कोई तेरे खुदा की शरी'अत पर और बादशाह के फ़रमान पर 'अमल न करे, उसको बिना देर किये क़ानूनी सज़ा दी जाए, चाहे मौत या ज़िलावतनी या माल की ज़ब्ती या कैद की।' ²⁷ खुदावन्द हमारे बाप — दादा का खुदा मुबारक हो, जिसने ये बात बादशाह के दिल में डाली कि खुदावन्द के घर को जो येरूशलेम में है आरास्ता करे; ²⁸ और बादशाह और उसके सलाहकारों के सामने, और बादशाह के सब 'आली क़दर सरदारों के आगे अपनी रहमत मुझ पर की; और मैंने खुदावन्द अपने खुदा के हाथ से जो मुझ पर था, ताक़त पाई और मैंने इस्राईल में से ख़ास लोगों को इकट्ठा किया कि वह मेरे हमराह चलें।

8

एज़रा 8:25-28

¹ अरतख़शशता बादशाह के दौर — ए — सल्लनत में जो लोग मेरे साथ बाबुल से निकले, उनके अबाई ख़ान्दानों के सरदार ये हैं और उनका नसबनामा ये है: ² बनी फ़ीन्हास में से, ज़ैरसोन; बनी ऐतामर में से, दानीएल; बनी दाऊद में से हत्तूश; ³ बनी सिकनियाह की नस्ल के बनी पर'ऊस में से, ज़करियाह, और उसके साथ डेढ़ सौ आदमी नसबनामे के तौर से गिने हुए थे; ⁴ बनी पख़त — मोआब में से, इलीहू'ऐनी बिन ज़राखियाह, और उसके साथ दो सौ आदमी; ⁵ और बनी सिकनियाह में से, यहज़ीएल का बेटा, और उसके साथ तीन सौ आदमी; ⁶ और बनी 'अदीन में से, 'अबद — बिन यूनतन, और उसके साथ पचास आदमी, ⁷ और बनी 'ऐलाम में से, यसायाह बिन 'अतलियाह, और उसके साथ सत्तर आदमी; ⁸ और बनी सफ़तियाह में से, जबदियाह बिन मीकाएल, और उसके साथ अस्सी आदमी, ⁹ और बनी योआब में से 'अबदियाह बिन यहीएल, और उसके साथ दो सौ अट्ठारह आदमी, ¹⁰ और बनी सलूमीत में से, यूसिफ़ियाह का बेटा, और उसके साथ एक सौ साठ आदमी; ¹¹ और बनी बबई में से ज़करियाह बिन बबई, और उसके साथ अट्ठाईस आदमी; ¹² और बनी 'अज़ज़ाद में से यूहनान बिन हक्कातान, और उसके साथ एक सौ दस आदमी, ¹³ और बनी अदुनिक़ाम में से जो सबसे पीछे गए, उनके नाम ये हैं: इलिफ़ालत, और

य'ईएल, और समा'याह, और उनके साथ साठ आदमी; ¹⁴ और बनी बिगवई में से, ऊती और ज़ब्बूद, और उनके साथ सत्तर आदमी। ¹⁵ फिर मैंने उनको उस दरिया के पास जो अहावा की सिम्त को बहता है इकट्ठा किया, और वहाँ हम तीन दिन ख़ैमों में रहे; और मैंने लोगों और काहिनों का मुलाहज़ा किया पर बनी लावी में से किसी को न पाया। ¹⁶ तब मैंने एलियाज़र और अरीएल और समा'याह और इलनातन और यरीब और इलनातन और नातन और ज़करियाह और मसुल्लाम को जो रईस थे, और यूयरीब और इलनातन को जो मु'अल्लिम थे बुलवाया। ¹⁷ और मैंने उनको क़सीफ़िया नाम एक मक़ाम में इद्दो सरदार के पास भेजा; और जो कुछ उनको इद्दो और उसके भाइयों नतीनीम से क़सीफ़िया में कहना था बताया, कि वह हमारे खुदा के घर के लिए ख़िदमत करने वाले हमारे पास ले आएँ। ¹⁸ और चूँकि हमारे खुदा की शफ़क़त का हाथ हम पर था, इसलिए वह महली बिन लावी बिन इस्राईल की औलाद में से एक 'अक्लमन्द शख्स को, और सरीबियाह को और उसके बेटों और भाइयों, या'नी अट्ठारह आदमियों को ¹⁹ और हसबियाह की, और उसके साथ बनी मिरारी में से यसायाह को, और उसके भाइयों और उनके बेटों को, या'नी बीस आदमियों को; ²⁰ और नतीनीम में से, जिनको दाऊद और अमीरों ने लावियों की ख़िदमत के लिए मुक़र्रर किया था, दो सौ बीस नतीनीम को ले आए। इन सभी के नाम बता दिए गए थे। ²¹ तब मैंने अहावा के दरिया पर रोज़े का ऐलान कराया, ताकि हम अपने खुदा के सामने उस से अपने और अपने बाल बच्चों और अपने माल के लिए सीधी राह तलब करने को फ़रोतन बने। ²² क्यूँकि मैंने शर्म की वज़ह से बादशाह से सिपाहियों के जत्थे और सवारों के लिए दरख़्वास्त न की थी, ताकि वह राह में दुश्मन के मुक़ाबिले में हमारी मदद करें; क्यूँकि हम ने बादशाह से कहा था, कि हमारे खुदा का हाथ भलाई के लिए उन सब के साथ है जो उसके तालिब हैं, और उसका ज़ोर और क़हर उन सबके खिलाफ़ है जो उसे छोड़ देते हैं। ²³ इसलिए हम ने रोज़ा रखकर इस बात के लिए अपने खुदा से मिन्नत की, और उसने हमारी सुनी। ²⁴ तब मैंने सरदार काहिनों में से बारह को, या'नी सरीबियाह और हसबियाह और उनके साथ उनके भाइयों में से दस को अलग किया, ²⁵ और उनको वह चाँदी सोना और बर्तन, या'नी वह हृदिया जो हमारे खुदा के घर के लिए बादशाह और उसके वज़ीरों और अमीरों और तमाम इस्राईल ने जो वहाँ हाज़िर थे, नज़र किया था तोल दिया। ²⁶ मैं ही ने उनके हाथ में साढ़े छः सौ किन्तार चाँदी, और सौ किन्तार चाँदी के बर्तन, और सौ

क्रिन्तार सोना, ²⁷ और सोने के बीस प्याले जो हज़ार दिरहम के थे, और चोखे चमकते हुए पीतल के दो बर्तन जो सोने की तरह कीमती थे तौल कर दिए। ²⁸ और मैंने उनसे कहा, कि तुम खुदावन्द के लिए मुक़द्दस हो, और ये बर्तन भी मुक़द्दस हैं, और ये चाँदी और सोना खुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा के खुदा के लिए खुशी की कुर्बानी है। ²⁹ इसलिए होशियार रहना, जब तक येरूशलेम में खुदावन्द के घर की कोठरियों में सरदार काहिनों और लावियों और इस्राईल के आबाई खान्दानों के अमीरों के सामने उनको तौल न दो, उनकी हिफ़ाज़त करना। ³⁰ तब काहिनों और लावियों ने सोने और चाँदी और बर्तनों को तौलकर लिया, ताकि उनको येरूशलेम में हमारे खुदा के घर में पहुँचाएँ। ³¹ फिर हम पहले महीने की बारहवीं तारीख को अहावा के दरिया से खाना हुए कि येरूशलेम को जाएँ, और हमारे खुदा का हाथ हमारे साथ था, और उसने हम को दुश्मनों और रास्ते में घात लगानेवालों के हाथ से बचाया। ³² और हम येरूशलेम पहुँचकर तीन दिन तक ठहरे रहे। ³³ और चौथे दिन वह चाँदी और सोना और बर्तन हमारे खुदा के घर में तौल कर काहिन मरीमोत बिन ऊरिय्याह के हाथ में दिए गए, और उसके साथ इली'एलियाज़र बिन फ़ीन्हास था, और उनके साथ ये लावी थे, या'नी यूज़बाद बिन यशू'अ और नौ इंदियाह बिन बिनवी। ³⁴ सब चीज़ों को गिन कर और तौल कर पूरा वज़न उसी वक़्त लिख लिया गया। ³⁵ और गुलामों में से उन लोगों ने जो जिलावतनी से लौट आए थे, इस्राईल के खुदा के लिए सोख़्तनी कुर्बानियाँ पेश कीं; या'नी सारे इस्राईल के लिए बारह बछड़े और छियानवे मेंढे, और सतत्तर बरें, और ख़ता की कुर्बानी के लिए बारह बकरे; ये सब खुदावन्द के लिए सोख़्तनी कुर्बानी थी। ³⁶ और उन्होंने बादशाह के फ़रमानों को बादशाह के नाइबों, और दरिया पार के हाकिमों के हवाले किया; और उन्होंने लोगों की और खुदा के घर की हिमायत की।

9

11111 11 1111 11111 11 1111 11111
 11 1111

1 जब ये सब काम हो चुके तो सरदारों ने मेरे पास आकर कहा कि इस्राईल के लोग और काहिन और लावी इन अतराफ़ की क़ौमों से अलग नहीं रहे, क्योंकि कना'नियों और हित्तियों और फ़रिज़्जियों और यबूसियों 'अम्मोनियों और मोआबियों और मिस्रियों और अमोरियों के से नफ़रती काम करते हैं।² चुनांचे उन्होंने अपने और अपने बेटों के लिए उनकी बेटियाँ

ली हैं; इसलिए मुकद्दस नसल इन अतराफ़ की क़ौमों के साथ खल्लत — मल्ल हो गई, और सरदारों और हाकिमों का हाथ इस बदकारी में सब से बढ़ा हुआ है। ³ जब मैंने ये बात सुनी तो अपने लिबास और अपनी चादर को फाड़ दिया, और सिर और दाढ़ी के बाल नोचे और हैरान हो बैठा। ⁴ तब वह सब जो इस्राईल के खुदा की बातों से काँपते थे, गुलामों की इस बदकारी के ज़रिए मेरे पास जमा हुए; और मैं शाम की कुर्बानी तक हैरान बैठा रहा। ⁵ और शाम की कुर्बानी के वक़्त मैं अपना फटा लिबास पहने, और अपनी फटी चादर ओढ़े हुए अपनी शर्मिन्दगी की हालत से उठा, और अपने घुटनों पर गिर कर खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ अपने हाथ फैलाए, ⁶ और कहा, ऐ मेरे खुदा, मैं शर्मिन्दा हूँ, और तेरी तरफ़, ऐ मेरे खुदा, अपना मुँह उठाते मुझे शर्म आती है; क्यूँकि हमारे गुनाह बढ़ते बढ़ते हमारे सिर से बुलन्द हो गए, और हमारी खताकारी आसमान तक पहुँच गई है। ⁷ अपने बाप — दादा के वक़्त से आज तक हम बड़े खताकार रहे; और अपनी बदकारी के ज़रिए हम और हमारे बादशाह और हमारे काहिन, और मुल्कों के बादशाहों और तलवार और गुलामी और ग़ारत और शर्मिन्दगी के हवाले हुए हैं, जैसा आज के दिन है। ⁸ अब थोड़े दिनों से खुदावन्द हमारे खुदा की तरफ़ से हम पर फ़ज़ल हुआ है, ताकि हमारा कुछ बक़िया बच निकलने को छूटे, और उसके मकान — ए — मुकद्दस में हम को एक खूँटी मिले, और हमारा खुदा हमारी आँखें रोशन करे और हमारी गुलामी में हम को कुछ ताज़गी बरूख़े। ⁹ क्यूँकि हम तो गुलाम हैं लेकिन हमारे खुदा ने हमारी गुलामी में हम को छोड़ा नहीं, बल्कि हम को ताज़गी बरूख़ने और अपने खुदा के घर को बनाने और उसके खण्डरों की मरम्मत करने, और यहूदाह और येरूशलेम में हम को शहर — ए — पनाह देने को फ़ारस के बादशाहों के सामने हम पर रहमत की। ¹⁰ और अब ऐ हमारे खुदा, हम इसके बाद क्या कहें? क्यूँकि हम ने तेरे उन हुक्मों को छोड़ दिया है, ¹¹ जो तू ने अपने ख़ादिमों या 'नी नबियों के ज़रिए' फ़रमाए कि वह मुल्क जिसे तुम मीरास में लेने को जाते हो और मुल्कों की क़ौमों की नापाकी और नफ़रती कामों की वजह से नापाक मुल्क है, क्यूँकि उन्होंने अपनी नापाकी से उसको इस सिरे से उस सिरे तक भर दिया है। ¹² इसलिए तुम अपनी बेटियाँ उनके बेटों को न देना और उनकी बेटियाँ अपने बेटों के लिए न लेना, और न कभी उनकी सलामती या भलाई चाहना, ताकि तुम मज़बूत बनो और उस मुल्क की अच्छी — अच्छी चीज़ें खाओ, और अपनी औलाद

के वास्ते हमेशा की मीरास के लिए उसे छोड़ जाओ।
 13 और हमारे बुरे कामों और बड़े गुनाह की वजह से जो कुछ हम पर गुज़रा, उसके बाद ऐ हमारे खुदा, हकीकत ये है कि तू ने हमारे गुनाहों के अन्दाज़े से हम को कम सज़ा दी और हम में से ऐसा बक़िया छोड़ा; 14 क्या हम फिर तेरे हुक्मों को तोड़ें, और उन क़ौमों से नाता जोड़ें जो इन नफ़रती कामों को करती हैं? क्या तू हम से ऐसा गुस्सा न होगा कि हम को बर्बाद कर दे, यहाँ तक कि न कोई बक़िया रहे और न कोई बचे? 15 ऐ खुदावन्द, इस्राईल के खुदा! तू सादिक है, क्योंकि हम एक बक़िया हैं जो बच निकला है, जैसा आज के दिन है। देख, हम अपनी ख़ताकारी में तेरे सामने हाज़िर हैं, क्योंकि इसी वजह से कोई तेरे सामने खड़ा रह नहीं सकता।

10

????? ?? ????? ?????

1 जब एज्ज़ा खुदा के घर के आगे रो रो कर और सिज्दा में गिरकर दुआ और इक़रार कर रहा था, तो इस्राईल में से मर्दों और 'औरतों और बच्चों की एक बहुत बड़ी जमा'अत उसके पास इकट्ठा हो गई; और लोग फूट फूटकर रो रहे थे। 2 तब सिकनियाह बिन यहीएल जो बनी 'ऐलाम में से था, एज्ज़ा से कहने लगा, "हम अपने खुदा के गुनाहगार तो हुए हैं, और इस सरज़मीन की क़ौमों में से अजनबी 'औरतें ब्याह ली हैं, तो भी इस मु'आमिले में अब भी इस्राईल के लिए उम्मीद है। 3 इसलिए अब हम अपने मख़दूम की और उनकी सलाह के मुताबिक़, जो हमारे खुदा के हुक्म से काँपते हैं, सब बीवियों और उनकी औलाद को दूर करने के लिए अपने खुदा से 'अहद बाँधे, और ये शरी'अत के मुताबिक़ किया जाए। 4 अब उठ, क्योंकि ये तेरा ही काम है, और हम तेरे साथ हैं, हिम्मत बाँध कर काम में लग जा।" 5 तब एज्ज़ा ने उठकर सरदार काहिनों और लावियों और सारे इस्राईल से क़सम ली कि वह इस इक़रार के मुताबिक़ 'अमल करेंगे; और उन्होंने क़सम खाई। 6 तब एज्ज़ा खुदा के घर के सामने से उठा और यहूहानान बिन इलियासब की कोठरी में गया, और वहाँ जाकर न रोटी खाई न पानी पिया; क्योंकि वह गुलामी के लोगों की ख़ता की वजह से मातम करता रहा। 7 फिर उन्होंने यहूदाह और येरूशलेम में गुलामी के सब लोगों के बीच 'ऐलान किया, कि वह येरूशलेम में इकट्ठे हो जाएँ; 8 और जो कोई सरदारों और बुज़ुर्गों की सलाह के मुताबिक़ तीन दिन के अन्दर न आए, उसका सारा माल ज़ब्त हो और वह खुद गुलामों की जमा'अत से

अलग किया जाए। 9 तब यहूदाह और बिनयमीन के सब आदमी उन तीन दिनों के अन्दर येरूशलेम में इकट्ठे हुए; महीना नवाँ था, और उसकी बीसवीं तारीख़ थी; और सब लोग इस मु'आमिले और बड़ी बारिश की वजह से खुदा के घर के सामने के मैदान में बैठे काँप रहे थे। 10 तब एज्ज़ा काहिन खड़ा होकर उनसे कहने लगा कि तुम ने ख़ता की है और इस्राईल का गुनाह बढ़ाने को अजनबी 'औरतें ब्याह ली हैं। 11 फिर खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा के आगे इक़रार करो, और उसकी मर्ज़ी पर 'अमल करो, और इस सरज़मीन के लोगों और अजनबी 'औरतों से अलग हो जाओ। 12 तब सारी जमा'अत ने जवाब दिया, और बुलन्द आवाज़ से कहा कि जैसा तू ने कहा, वैसा ही हम को करना लाज़िम है। 13 लेकिन लोग बहुत हैं, और इस वक़्त ज़ोर की बारिश हो रही है और हम बाहर खड़े नहीं रह सकते, और न ये एक दो दिन का काम है; क्योंकि हम ने इस मु'आमिले में बड़ा गुनाह किया है। 14 अब सारी जमा'अत के लिए हमारे सरदार मुक़र्रर हों, और हमारे शहरों में जिन्होंने अजनबी 'औरतें ब्याह ली हैं, वह सब मुक़र्रर वक़्तों पर आएँ और उनके साथ हर शहर के बुज़ुर्ग और क़ाज़ी हों, जब तक कि हमारे खुदा का क्रहर — ए — शदीद हम पर से टल न जाए और इस मु'आमिले का फ़ैसला न हो जाए। 15 सिर्फ़ यूनतन बिन 'असाहेल और यहाज़ियाह बिन तिकवह इस बात के खिलाफ़ खड़े हुए, और मसुल्लाम और सब्बती लावी ने उनकी मदद की। 16 लेकिन गुलामी के लोगों ने वैसा ही किया। और एज्ज़ा काहिन और आबाई खान्दानों के सरदारों में से कुछ अपने अपने आबाई खान्दानों की तरफ़ से सब नाम — ब — नाम अलग किए गए, और वह दसवें महीने की पहली तारीख़ को इस बात की तहकीकात के लिए बैठे; 17 और पहले महीने के पहले दिन तक, उन सब आदमियों के मु'आमिले का फ़ैसला किया जिन्होंने अजनबी 'औरतें ब्याह ली थीं। 18 और काहिनों की औलाद में ये लोग मिले जिन्होंने अजनबी 'औरतें ब्याह ली थीं: या'नी, बनी यशू'अ में से, यूसदक़ का बेटा, और उसके भाई मासियाह और इली'एलियाज़र और यारिब और ज़िदलियाह। 19 उन्होंने अपनी बीवियों को दूर करने का वा'दा किया, और गुनाहगार होने की वजह से उन्होंने अपने गुनाह के लिए अपने अपने रेवड़ में से एक एक मेंढा कुर्बान किया। 20 और बनी इम्मेर में से, हनानी और ज़बदियाह; 21 और बनी हारिम में से, मासियाह और एलियाह, और समा'याह और यहीएल और 'उज़्ज़ियाह; 22 और बनी फ़शहूर में से, इलीयू'ऐनी

और मासियाह और इस्मा'ईल और नतनीएल और यूज़बाद और 'इलिसा। ²³ और लावियों में से, यूज़बाद और सिमई और क़िलायाह जो क़लीता भी कहलाता है, फ़तहयाह और यहूदाह और इली'एलियाज़र; ²⁴ और गानेवालों में से, इलियासब; और दरबानों में से, सलूम और तलम और ऊरी। ²⁵ और इस्रा'ईल में से: बनी पर'ऊस में से, रमियाह और यज़ियाह और मलकियाह और मियामीन और इली'एलियाज़र और मलकियाह और बिनायाह ²⁶ और बनी 'एलाम में से, मतनियाह और ज़करियाह और यहीएल और 'अबदी और यरीमोट और एलियाह; ²⁷ और बनी ज़त्तू में से, इलीयू'एनी और इलियासब और मत्तनियाह और यरीमोट और ज़ाबाद और 'अज़ीज़ा, ²⁸ और बनी बबई में से, यहूहानान और हननियाह और ज़ब्बी और 'अतलै ²⁹ और बनी बानी में से, मसुल्लाम और मलूक और 'अदायाह और यासूब और सियाल और यरामोट। ³⁰ और बनी पख़त — मोआब में से, 'अदना और क़िलाल और बिनायाह और मासियाह और मत्तनियाह और बज़लीएल और बिनवी और मनस्सी, ³¹ और बनी हारिम में से, इली'एलियाज़र और यशियाह और मलकियाह और समा'याह और शमौन, ³² बिनयमीन और मलूक और समरियाह; ³³ और बनी हाशूम में से, मत्तने और मतताह और ज़ाबाद और इलिक़ालत और यरीमै और मनस्सी और सिमई, ³⁴ और बनी बानी में से, मा'दै और 'अमराम और ऊएल, ³⁵ बिनायाह और बदियाह और कलूह, ³⁶ और वनियाह और मरीमोट और इलियासब, ³⁷ और मत्तनियाह और मतने और या'सौ, ³⁸ और बानी और बिनवी और सिमई, ³⁹ और सलमियाह और नातन और 'अदायाह, ⁴⁰ मकनदबै, सासै, सारै ⁴¹ 'अज़रिएल और सलमियाह, समरियाह, ⁴² सलूम, अमरियाह, यूसुफ़। ⁴³ बनी नबू में से, य'ईएल, मत्तितियाह, ज़ाबाद, ज़बीना, यद्दो और यूएल, बिनायाह। ⁴⁴ ये सब अजनबी 'औरतों को ब्याह लाए थे, और कुछ की बीवियाँ ऐसी थीं जिनसे उनके औलाद थी।

नहेम्याह

नहेम्याह 1:1-12:47

यहूदी रिवायत नहेम्याह (यहोवा शान्ति देता है) को खुद ही उस के इस पहली तारीखी किताब का मुसन्निफ़ बतौर पहचानती है — इस किताब का ज्यादातर हिस्सा उस की पहली शख्सी ज़ाहिरी तनासुब से लिखी गई है उस की जवानी या गोशा — ए — गुमनामी की बाबत कोई मालूमात नहीं है — उसको हम बराह — ए — रास्त बालिग़ जवानी की हालत में फ़ारस के शाही महल में अतिरिक्तशिक्षता बादशाह का शख्सी साक़ी बतौर खिदमत करते हुए पाते हैं — (नहेम्याह 1:11 — 2:1) नहेम्याह की इस किताब को एज़रा की किताब का आखरी हिस्सा बतौर भी पढ़ा जा सकता है — और कुछ उलमा का मानना है कि असल में ये दोनों एक ही किताब थी।

नहेम्याह 1:1-12:47

किताब की तस्नीफ़ की तारीख़ तक्ररीबन 457 - 400 क़ब्ल मसीह के बीच है।

नहेम्याह के कामों का बयान गालिबन बाबुल की गुलामी से वापस लौटने के कुछ अर्से बाद यहूदिया के यरूशलेम में लिखा गया था।

नहेम्याह 1:1-12:47

मखसूस करदा नहेम्याह के नाज़रीन व कारईन लोग बनी इस्राईल की कौम थी जो बाबुल की गुलामी से वापस लौटी थी।

नहेम्याह 1:1-12:47

मुसन्निफ़ साफ़ तौर से अपने कारईन से चाहता था कि वे खुदा की कुव्वत और मुहब्बत को पहचानें और अहद की ज़िम्मेवारियों को जो खुदा की तरफ़ हैं जानें — खुदा दुआओं का जवाब देता है वह लोगों की ज़िंदगियों में दिलचस्पी लेता है, उस के अहकाम मानने के लिए जिन बातों की ज़रूरत है वह सब उन्हें मुहैया करता है खुदा के लोगों को मिलकर काम करने चाहिए और अपने ज़रायों को बांटने चाहिए — खुदा के पीछे चलने वालों की ज़िंदगियों में खुदगर्ज़ी के लिए कोई जगह नहीं — नहेम्याह ने दौलतमंद लोगों और ओहदेदारों को याद दिलाया कि गरीब लोगों का फाईदा न उठाएं।

नहेम्याह 1:1-12:47

येरूशलेम के शहरपनाह की दुबारा तामीर।

बैरूनी खाका

1. नहेम्याह की पहली बारी में गवर्नर बतौर होना — 1:1-12:47

2. नहेम्याह की दूसरी बारी में गवर्नर बतौर होना — 13:1-31

1 नहमियाह बिन हकलियाह का कलाम।

नहेम्याह 1:1-12:47

बीसवें बरस किसलेव के महीने में, जब मैं क़सर — ए — सोसन में था तो ऐसा हुआ, ² कि हनानी जो मेरे भाइयों में से एक है और चन्द आदमी यहूदाह से आए; और मैंने उनसे उन यहूदियों के बारे में जो बच निकले थे और गुलामों में से बाक़ी रहे थे, और येरूशलेम के बारे में पूछा। ³ उन्होंने मुझ से कहा कि वह बाक़ी लोग जो गुलामी से छूट कर उस सूबे में रहते हैं, बहुत मुसीबत और ज़िल्लत में पड़े हैं; और येरूशलेम की फ़सील टूटी हुई, और उसके फाटक आग से जले हुए हैं। ⁴ जब मैंने ये बातें सुनीं तो बैठ कर रोने लगा और कई दिनों तक मातम करता रहा, और रोज़ा रखवा और आसमान के खुदा के सामने दुआ की, ⁵ और कहा, “ऐ खुदावन्द, आसमान के खुदा — ए — ‘अज़ीम — ओ — मुहीब जो उनके साथ जो तुझसे मुहब्बत रखते और तेरे हुक्मों को मानते हैं ‘अहद — ओ — फ़ज़ल को क़ाईम रखता है, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, ⁶ कि तू कान लगा और अपनी आँखें खुली रख ताकि तू अपने बन्दे की उस दुआ को सुने जो मैं अब रत दिन तेरे सामने तेरे बन्दों बनी इस्राईल के लिए करता हूँ और बनी इस्राईल की खताओं को जो हमने तेरे बर ख़िलाफ़ की मान लेता हूँ, और मैं और मेरे आबाई ख़ान्दान दोनों ने गुनाह किया है। ⁷ हमने तेरे ख़िलाफ़ बड़ी बुराई की है और उन हुक्मों और क़ानून और फ़रमानों को जो तूने अपने बन्दे मूसा को दिए नहीं माना ⁸ मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि अपने उस क़ौल को याद कर जो तूने अपने बन्दे मूसा को फ़रमाया अगर तुम नाफ़रमानी करो, मैं तुम को क़ौमों में तितर — बितर करूँगा ⁹ लेकिन अगर तुम मेरी तरफ़ फिरकर मेरे हुक्मों को मानों और उन पर ‘अमल करो तो गो तुम्हारे आवारागर्द आसमान के किनारों पर भी हो मैं उनको वहाँ से इकट्ठा करके उस मक़ाम में पहुँचाऊँगा जिसे मैंने चुन लिया ताकि अपना नाम वहाँ रखूँ ¹⁰ वह तो तेरे बन्दे और तेरे लोग है जिनको तूने अपनी बड़ी कुदरत और क़वी हाथ से छुड़ाया है ¹¹ ऐ खुदावन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि अपने बन्दे की दुआ पर, और अपने बन्दों की दुआ पर जो तेरे नाम से डरना पसन्द करते हैं कान लगा और आज मैं तेरे मिन्नत करता हूँ अपने बन्दे को कामयाब कर और इस शख्स के सामने उसपर फ़ज़ल कर।” (मैं तो बादशाह का साक़ी था)

2

?????????? ?? ??????? ?? ?????

1 अरतखशशता बादशाह के बीसवें बरस नेसान के महीने में, जब मय उसके आगे थी तों मैंने मय उठा कर बादशाह को दी। इससे पहले मैं कभी उसके सामने मायूस नहीं हुआ था। 2 इसलिए बादशाह ने मुझसे कहा, “तेरा चेहरा क्यूँ मायूस है, बावजूद ये कि तू बीमार नहीं है? तब ये दिल के गम के अलावा और कुछ न होगा।” तब मैं बहुत डर गया। 3 मैंने बादशाह से कहा कि “बादशाह हमेशा ज़िन्दा रहे! मेरा चेहरा मायूस क्यूँ न हो, जबकि वह शहर जहाँ मेरे बाप — दादा की कब्रें हैं उजाड़ पड़ा है, और उसके फाटक आग से जले हुए हैं?” 4 बादशाह ने मुझसे फ़रमाया, “किस बात के लिए तेरी दरख्वास्त है?” तब मैंने आसमान के खुदा से दुआ की, 5 फिर मैंने बादशाह से कहा, “अगर बादशाह की मर्जी हो, और अगर तेरे खादिम पर तेरे कर्म की नज़र है, तो तू मुझे यहूदाह में मेरे बाप — दादा की कब्रों के शहर को भेज दे ताकि मैं उसे ता'मीर करूँ।” 6 तब बादशाह ने (मलिका भी उस के पास बैठी थी) मुझ से कहा, “तेरा सफ़र कितनी मुद्दत का होगा और तू कब लौटेगा?” गरज़ बादशाह की मर्जी हुई कि मुझे भेजे: और मैंने वक़्त मुक़र्रर करके उसे बताया। 7 और मैंने बादशाह से ये भी कहा, “अगर बादशाह की मर्जी हो, तो दरिया पार हाकिमों के लिए मुझे परवाने 'इनायत हों कि वह मुझे यहूदाह तक पहुँचने के लिए गुज़र जाने दें।” 8 और आसफ़ के लिए जो शाही जंगल का निगहबान है, एक शाही खत मिले कि वह हैकल के क़िले के फाटकों के लिए, और शहरपनाह और उस घर के लिए जिस में रहूँगा, कड़ियाँ बनाने को मुझे लकड़ी दे और चूँकि मेरे खुदा की शफ़क़त का हाथ मुझ पर था, बादशाह ने 'अर्ज कुबूल की। 9 तब मैंने दरिया पार के हाकिमों के पास पहुँचकर बादशाह के परवाने उनको दिए और बादशाह ने फ़ौजी सरदारों और सवारों को मेरे साथ कर दिया था। 10 जब सनबल्लत हूरूनी और 'अम्मोनी गुलाम तूबियाह ने ये सुना, कि एक शख्स बनी — इस्राईल की बहबूदी का तलबगार आया है, तो वह बहुत रंजीदा हुए। 11 और येरूशलेम पहुँच कर तीन दिन रहा। 12 फिर मैं रात को उठा, मैं भी और मेरे साथ चन्द आदमी; लेकिन जो कुछ येरूशलेम के लिए करने को मेरे खुदा ने मेरे दिल में डाला था, वह मैंने किसी को न बताया; और जिस जानवर पर मैं सवार था, उसके अलावा और कोई जानवर मेरे साथ न था। 13 मैं रात को वादी के फाटक से निकल कर अज़दह के कुएँ और कूड़े के फाटक को गया;

और येरूशलेम की फ़सील को, जो तोड़ दी गई थी और उसके फाटकों को, जो आग से जले हुए थे देखा। 14 फिर मैं चश्मे के फाटक और बादशाह के तालाब को गया, लेकिन वहाँ उस जानवर के लिए जिस पर मैं सवार था, गुज़रने की जगह न थी। 15 फिर मैं रात ही को नाले की तरफ़ से फ़सील को देखकर लौटा, और वादी के फाटक से दाखिल हुआ और यूँ वापस आ गया। 16 और हाकिमों को मा'लूम न हुआ कि मैं कहाँ — कहाँ गया, या मैंने क्या — क्या किया; और मैंने उस वक़्त तक न यहूदियों, न काहिनों, न अमीरों, न हाकिमों, न बाक़ियों को जो कारगुज़ार थे कुछ बताया था। 17 तब मैंने उनसे कहा, “तुम देखते हो कि हम कैसी मुसीबत में हैं, कि येरूशलेम उजाड़ पड़ा है, और उसके फाटक आग से जले हुए हैं। आओ, हम येरूशलेम की फ़सील बनाएँ, ताकि आगे को हम ज़िल्लत का निशान न रहें।” 18 और मैंने उनको बताया कि खुदा की शफ़क़त का हाथ मुझ पर कैसे रहा, और ये कि बादशाह ने मुझ से क्या क्या बातें कहीं थीं। उन्होंने कहा, “हम उठकर बनाने लगें। इसलिए इस अच्छे काम के लिए उन्होंने अपने हाथों को मज़बूत किया। 19 लेकिन जब सनबल्लत हूरूनी और अम्मूनी गुलाम तूबियाह और अरबी जशम ने सुना, तो वह हम को ठट्ठों में उड़ाने और हमारी हिकारत करके कहने लगे, तुम ये क्या काम करते हो? क्या तुम बादशाह से बग़ावत करोगे?” 20 तब मैंने जवाब देकर उनसे कहा, “आसमान का खुदा, वही हम को कामयाब करेगा; इसी वजह से हम जो उसके बन्दे हैं, उठकर ता'मीर करेंगे; लेकिन येरूशलेम में तुम्हारा न तो कोई हिस्सा, न हक़, न यादगार है।”

3

?????????? ?? ??????? ?? ????? ?? ?????

1 तब इलियासब सरदार काहिन अपने भाइयों या'नी काहिनों के साथ उठा, और उन्होंने भेड़ फाटक को बनाया; और उसे पाक किया, और उसके किवाड़ों को लगाया। उन्होंने हमियाह के बुर्ज बल्कि हननएल के बुर्ज तक उसे पाक किया। 2 उससे आगे यरीह के लोगों ने बनाया, और उनसे आगे ज़क्कूर बिन इमरी ने बनाया। 3 मछली फाटक को बनी हसन्नाह ने बनाया उन्होंने उसकी कड़ियाँ रखीं और उसके किवाड़े और चटकनियाँ और अड़बंगे लगाए। 4 और उनसे आगे मरीमोत बिन ऊरिय्याह बिन हक्कूस ने मरम्मत की। और उनसे आगे मुसल्लाम बिन बरकियाह बिन मशीज़बेल ने मरम्मत की। और उनसे आगे सदोक बिन बा'ना ने मरम्मत की। 5 और उनसे आगे तकू'अ लोगों ने मरम्मत की, लेकिन

उनके अमीरों ने अपने मालिक के काम के लिए गर्दन न झुकाई। ⁶ और पुराने फाटक की यहूयदा बिन फ़ासख और मुसल्लाम बिन बसूदियाह ने मरम्मत की उन्होंने उसकी कड़ियाँ रखीं और उसके किवाड़े और चटकनियाँ और अड़बंगे लगाए। ⁷ और उनसे आगे मलतियाह जिबा'ऊनी और यदून मरूनोती, और जिबा'ऊन और मिस्फ़ाह के लोगों ने जो दरिया पार के हाकिम की 'अमलदारी में से थे मरम्मत की। ⁸ और उनसे आगे सुनारों की तरफ़ से उज़्ज़ीएल बिन हररहियाह ने, और उससे आगे 'अत्तारों में से हननियाह ने मरम्मत की, और उन्होंने येरूशलेम को चौड़ी दीवार तक मज़बूत किया। ⁹ और उनसे आगे रिफ़ायाह ने, जो हूर का बेटा और येरूशलेम के आधे हल्के का सरदार था मरम्मत की। ¹⁰ और उससे आगे यदायाह बिन हरूमफ़ ने अपने ही घर के सामने तक की मरम्मत की। और उससे आगे हतूश बिन हसबनियाह ने मरम्मत की। ¹¹ मलकियाह बिन हारिम और हसूब बिन पख़त — मोआब ने दूसरे हिस्से की और तनूरों के बुर्ज की मरम्मत की। ¹² और उससे आगे सलूम बिन हलूहेश ने जो येरूशलेम के आधे हल्के का सरदार था, और उसकी बेटियों ने मरम्मत की। ¹³ वादी के फाटक की मरम्मत हनून और जनोआह के बाशिन्दों ने की; उन्होंने उसे बनाया और उसके किवाड़े और चटकनियाँ और अड़बंगे लगाए, और कूड़े के फाटक तक एक हजार हाथ दीवार तैयार की। ¹⁴ और कूड़े के फाटक की मरम्मत मलकियाह बिन रैकाब ने की जो बैत — हक्करम के हल्के का सरदार था; उसने उसे बनाया और उसके किवाड़े और चटकनियाँ और अड़बंगे लगाए। ¹⁵ और चश्मा फाटक की सलूम बिन कलहूज़ा ने जो मिस्फ़ाह के हल्के का सरदार था, मरम्मत की; उसने उसे बनाया और उसको पाटा और उसके किवाड़े चटकनियाँ और उसके अड़बंगे लगाये और बादशाही बाग़ के पास शीलोख के हौज़ की दीवार को उस सीढ़ी तक, जो दाऊद के शहर से नीचे आती है बनाया। ¹⁶ फिर नहमियाह बिन 'अज़बूक ने जो बैतसूर के आधे हल्के का सरदार था, दाऊद की क़ब्रों के सामने की जगह और उस हौज़ तक जो बनाया गया था, और सूर्माओं के घर तक मरम्मत की। ¹⁷ फिर लावियों में से रहूम बिन बानी ने मरम्मत की। उससे आगे हसबियाह ने जो क'ईलाह के आधे हल्के का सरदार था, अपने हल्के की तरफ़ से मरम्मत की। ¹⁸ फिर उनके भाइयों में से बवी बिन हनदाद ने जो क'ईलाह के आधे हल्के का सरदार था, मरम्मत की। ¹⁹ और उससे आगे ईज़र बिन यशू'अ मिस्फ़ाह के सरदार ने दूसरे टुकड़े की जो मोड़ के पास सिलाहखाने की चढ़ाई के सामने है, मरम्मत की। ²⁰ फिर बारूक बिन ज़ब्बी

ने सरगर्मी से उस मोड़ से सरदार काहिन इलियासब के घर के दरवाज़े तक, एक और टुकड़े की मरम्मत की। ²¹ फिर मरीमोत बिन ऊरिय्याह बिन हक्कूस ने एक और टुकड़े की इलियासब के घर के दरवाज़े से इलियासब के घर के आखिर तक मरम्मत की। ²² फिर नशेब के रहनेवाले काहिनो ने मरम्मत की। ²³ फिर बिनयमीन और हसूब ने अपने घर के सामने तक मरम्मत की। फिर 'अज़रियाह बिन मा'सियाह बिन 'अननियाह ने अपने घर के बराबर तक मरम्मत की। ²⁴ फिर बिनवी बिन हनदाद ने 'अज़रियाह के घर से दीवार के मोड़ और कोने तक, एक और टुकड़े की मरम्मत की। ²⁵ फ़ालाल बिन ऊज़ी ने मोड़ के सामने के हिस्से की, और उस बुर्ज की जो कैदखाने के सहन के पास के शाही महल से बाहर निकला हुआ है मरम्मत की। फिर फ़िदायाह बिन पर'ऊस ने मरम्मत की। ²⁶ और नतीनीम पूरब की तरफ़ ओफल में पानी फाटक के सामने और उस बुर्ज तक बसे हुए थे, जो बाहर निकला हुआ है ²⁷ फिर तकू'इयों ने उस बड़े बुर्ज के सामने जो बाहर निकला हुआ है, और ओफल की दीवार तक एक और टुकड़े की मरम्मत की। ²⁸ घोड़ा फाटक के ऊपर काहिनो ने अपने अपने घर के सामने मरम्मत की। ²⁹ उनके पीछे सदोक बिन इम्मीर ने अपने घर के सामने मरम्मत की। और फिर पूरबी फाटक के दरबान समा'याह बिन सिकनियाह ने मरम्मत की। ³⁰ फिर हननियाह बिन सलमियाह और हनून ने जो सलफ़ का छठा बेटा था, एक और टुकड़े की मरम्मत की। फिर मुसल्लाम बिन बरकियाह ने अपनी कोठरी के सामने मरम्मत की। ³¹ फिर सुनारों में से एक शख्स मलकियाह ने नतीनीम और सौदागरों के घर तक हिम्मीफ़काद के फाटक के सामने और कोने की चढ़ाई तक मरम्मत की। ³² और उस कोने की चढ़ाई और भेड़ फाटक के बीच सुनारों और सौदागरों ने मरम्मत की।

4

?????? ???? ???? ? ? ???? ? ?
????????

¹ लेकिन ऐसा हुआ जब सनबल्लत ने सुना के हम शहरपनाह बना रहे हैं, तो वह जल गया और बहुत गुस्सा हुआ और यहूदियों को ठट्ठों में उड़ाने लगा। ² और वह अपने भाइयों और सामरिया के लश्कर के आगे यूँ कहने लगा, “ये कमज़ोर यहूदी क्या कर रहे हैं? क्या ये अपने गिर्द मोर्चाबन्दी करेंगे? क्या वह कुर्बानी चढ़ाएँगे? क्या वह एक ही दिन में सब कुछ कर चुकेंगे? क्या वह जले हुए पत्थरों को कूड़े के ढेरों में से निकाल कर फिर नये कर देंगे?” ³ और तूबियाह 'अम्मोनी उसके पास खड़ा था, तब वह कहने लगा, “जो

कुछ वह बना रहे हैं, अगर उसपर लोमड़ी चढ़ जाए तो वह उनके पत्थर की शहरपनाह को गिरा देगी।”⁴ सुन ले, ऐ हमारे खुदा क्योंकि हमारी हिकारत होती है और उनकी मलामत उन ही के सिर पर डाल:और गुलामी के मुल्क में उनको गारतगरो के हवाले कर दे।⁵ और उनकी बुराई को न ढाँक, और उनकी खता तेरे सामने से मिटाई न जाए; क्योंकि उन्होंने मे'मारों के सामने तुझे गुस्सा दिलाया है।⁶ गरज हम दीवार बनाते रहे, और सारी दीवार आधी बलन्दी तक जोड़ी गई; क्योंकि लोग दिल लगा कर काम करते थे।⁷ लेकिन जब सनबल्लत और तूबियाह और अरबों और 'अम्मोनियों और अशदूदियों ने सुना कि येरूशलेम की फ़सील मरम्मत होती जाती है, और दराड़े बन्द होने लगिं, तो वह जल गए।⁸ और सभी ने मिल कर बन्दिश बाँधी कि आकर येरूशलेम से लड़ें, और वहाँ परेशानी पैदा कर दें।⁹ लेकिन हम ने अपने खुदा से दुआ की, और उनकी वजह से दिन और रात उनके मुक्राबले में पहरा बिठाए रखा¹⁰ और यहूदाह कहने लगा कि बोझ उठाने वालों की ताक़त घट गयी और मलबा बहुत है, इसलिए हम दीवार नहीं बना सकते हैं।¹¹ और हमारे दुश्मन कहने लगे, “जब तक हम उनके बीच पहुँच कर उनको क़त्ल न कर डालें और काम ख़त्म न कर दें, तब तक उनको न मा'लूम होगा न वह देखेंगे।”¹² और जब वह यहूदी जो उनके आस — पास रहते थे आए, तो उन्होंने सब जगहों से दस बार आकर हम से कहा कि तुम को हमारे पास लौट आना ज़रूर है।¹³ इसलिए मैंने शहरपनाह के पीछे की जगह के सबसे नीचे हिस्सों में जहाँ जहाँ खुला था, लोगों को अपनी अपनी तलवार और बर्छी और कमान लिए हुए उनके घरानों के मुताबिक़ बिठा दिया।¹⁴ तब मैं देख कर उठा, और अमीरों और हाकिमों और बाक़ी लोगों से कहा कि तुम उनसे मत डरो; खुदावन्द को जो बुज़ुर्ग और बड़ा है याद करो, और अपने भाइयों और बेटे बेटियों और अपनी बीवियों और घरों के लिए लड़ो।¹⁵ और जब हमारे दुश्मनों ने सुना कि ये बात हम को मा'लूम हो गई और खुदा ने उनका मन्सूबा बेकार कर दिया, तो हम सबके सब शहरपनाह को अपने अपने काम पर लौटे।¹⁶ और ऐसा हुआ कि उस दिन से मेरे आधे नौकर काम में लग जाते, और आधे बर्छियाँ और और ढालें और कमाने लिए और बख़्तर पहने रहते थे; और वह जो हाकिम थे यहूदाह के सारे खान्दान के पीछे मौजूद रहते थे।¹⁷ इसलिए जो लोग दीवार बनाते थे और जो बोझ उठाते और ढोते थे, हर एक अपने एक हाथ से काम करता था और दूसरे में अपना हथियार लिए रहता था।¹⁸ और मे'मारों में से हर एक आदमी अपनी तलवार अपनी कमर से बाँधे हुए काम करता था,

और वह जो नरसिंगा फूँकता था मेरे पास रहता था।¹⁹ और मैंने अमीरों और हाकिमों और बाक़ी लोगों से कहा कि काम तो बड़ा और फैला हुआ है, और हम दीवार पर अलग अलग एक दूसरे से दूर रहते हैं।²⁰ इसलिए जिधर से नरसिंगा तुम को सुनाई दे, उधर ही तुम हमारे पास चले आना। हमारा खुदा हमारे लिए लड़ेगा।²¹ यूँ हम काम करते रहे, और उनमें से आधे लोग पौ फटने के वक़्त से तारों के दिखाई देने तक बर्छियाँ लिए रहते थे।²² और मैंने उसी मौक़े पर लोगों से ये भी कह दिया था कि हर शख्स अपने नौकर को लेकर येरूशलेम में रात काटा करे, ताकि रात को वह हमारे लिए पहरा दिया करें और दिन को काम करें।²³ इसलिए न तो मैं न मेरे भाई न मेरे नौकर और न पहरे के लोग जो मेरे पैरौ थे, कभी अपने कपड़े उतारते थे; बल्कि हर शख्स अपना हथियार लिए हुए पानी के पास जाता था।

5

यहूदाह ने कहा कि मैंने अपने भाइयों को बुलाया कि वे मेरे साथ आएं और मैंने उनसे कहा कि वे मेरे साथ आएं और मैंने उनसे कहा कि वे मेरे साथ आएं

¹ फिर लोगों और उनकी बीवियों की तरफ़ से उनके यहूदी भाइयों पर बड़ी शिकायत हुई।² क्योंकि कई ऐसे थे जो कहते थे कि हम और हमारे बेटे — बेटियाँ बहुत हैं; इसलिए हम अनाज ले लें, ताकि खाकर ज़िन्दा रहें।³ और कुछ ऐसे भी थे जो कहते थे कि हम अपने खेतों और अंगूरिस्तानों और मकानों को गिरवी रखते हैं, ताकि हम काल में अनाज ले लें।⁴ और कितने कहते थे कि हम ने अपने खेतों और अंगूरिस्तानों पर बादशाह के खिराज के लिए रुपया कर्ज़ लिया है।⁵ लेकिन हमारे जिस्म तो हमारे भाइयों के जिस्म की तरह हैं, और हमारे बाल बच्चे ऐसे जैसे उनके बाल बच्चे और देखो, हम अपने बेटे — बेटियों को नौकर होने के लिए गुलामी के सुपुर्द करते हैं, और हमारी बेटियों में से कुछ लौडियाँ बन चुकी हैं; और हमारा कुछ बस नहीं चलता, क्योंकि हमारे खेत और अंगूरिस्तान औरों के क़ब्ज़े में हैं।⁶ जब मैंने उनकी फ़रियाद और ये बातें सुनीं, तो मैं बहुत गुस्सा हुआ।⁷ और मैंने अपने दिल में सोचा, और अमीरों और हाकिमों को मलामत करके उनसे कहा, “तुम में से हर एक अपने भाई से सूद लेता है।” और मैंने एक बड़ी जमा'अत को उनके खिलाफ़ जमा' किया; ⁸ और मैंने उनसे कहा कि हम ने अपने मक़दूर के मुवाफ़िक़ अपने यहूदी भाइयों को जो और क़ौमों के हाथ बेच दिए गए थे, दाम देकर छुड़ाया; इसलिए क्या तुम अपने ही भाइयों को बेचोगे? और क्या वह हमारे ही हाथ में बेचे जाएँगे? तब वह चुप रहे और उनको कुछ जवाब न सूझा।⁹ और मैंने

ये भी कहा कि ये काम जो तुम करते हो ठीक नहीं; क्या और क्रौमों की मलामत की वजह से जो हमारी दुश्मन हैं, तुम को खुदा के खौफ में चलना लाज़िम नहीं? 10 मैं भी और मेरे भाई और मेरे नौकर भी उनको रुपया और गल्ला सूद पर देते हैं, लेकिन मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि हम सब सूद लेना छोड़ दें। 11 मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि आज ही के दिन उनके खेतों और अंगूरिस्तानों और जैतून के बागों और घरों को, और उस रुपये और अनाज और मय और तेल के सौवें हिस्से को, जो तुम उनसे जबरन लेते हो उनको वापस कर दो। 12 तब उन्होंने कहा कि हम इनको वापस कर देंगे और उनसे कुछ न माँगेंगे, जैसा तू कहता है हम वैसा ही करेंगे। फिर मैंने काहिनों को बुलाया और उनसे कसम ली कि वह इसी वादे के मुताबिक करेंगे। 13 फिर मैंने अपना दामन झाड़ा और कहा कि इसी तरह से खुदा हर शख्स को जो अपने इस वादे पर 'अमल न करे, उसके घर से और उसके कारोबार से झाड़ डाले; वह इसी तरह झाड़ दिया और निकाल फेंका जाए। तब सारी जमा'अत ने कहा, 'आमीन!' और खुदावन्द की हम्द की। और लोगों ने इस वादे के मुताबिक काम किया। 14 'अलावा इसके जिस वक़्त से मैं यहूदाह के मुल्क में हाकिम मुक़र्रर हुआ, या'नी अरतखशशता बादशाह के बीसवें बरस से बत्तीसवें बरस तक, गरज़ बारह बरस मैंने और मेरे भाइयों ने हाकिम होने की रोटी न खाई। 15 लेकिन अगले हाकिम जो मुझ से पहले थे र'इयत पर एक बार थे, और 'अलावा चालीस मिस्काल चाँदी के रोटी और मय उनसे लेते थे, बल्कि उनके नौकर भी लोगों पर हुकूमत जताते थे; लेकिन मैंने खुदा के खौफ की वजह से ऐसा न किया। 16 बल्कि मैं इस शहरपनाह के काम में बराबर मशगूल रहा, और हम ने कुछ ज़मीन भी नहीं खरीदी, और मेरे सब नौकर वहाँ काम के लिए इकट्ठे रहते थे। 17 इसके अलावा उन लोगों के 'अलावा जो हमारे आस पास की क्रौमों में से हमारे पास आते थे, यहूदियों और सरदारों में से डेढ़ सौ आदमी मेरे दस्तरख्वान पर होते थे। 18 और एक बैल और छः मोटी मोटी भेड़ें एक दिन के लिए तैयार होती थी, मुर्गियाँ भी मेरे लिए तैयार की जाती थीं, और दस दिन के बाद हर क्रिस्म की मय का ज़खीरा तैयार होता था, बावजूद इस सबके मैंने हाकिम होने की रोटी तलब न की क्योंकि इन लोगों पर गुलामी गिराँ थी। 19 ऐ मेरे खुदा, जो कुछ मैंने इन लोगों के लिए किया है, उसे तू मेरे हक़ में भलाई के लिए याद रख।

6

२२२२२ २२२२२ २२ २२२२२२२ २२२२ २२२२

1 जब सनबल्लत और तूबियाह और जशम 'अरबी और हमारे बाक़ी दुश्मनों ने सुना कि मैं शहरपनाह को बना चुका, और उसमें कोई रखना बाक़ी नहीं रहा अगरचे उस वक़्त तक मैंने फाटकों में किवाड़े नहीं लगाए थे। 2 तो सनबल्लत और जशम ने मुझे ये कहला भेजा कि आ, हम ओनू के मैदान के किसी गाँव में आपस में मुलाकात करें। लेकिन वह मुझ से बुराई करने की फ़िक्र में थे। 3 इसलिए मैंने उनके पास कासिदों से कहला भेजा कि मैं बड़े काम में लगा हूँ और आ नहीं सकता; मेरे इसे छोड़कर तुम्हारे पास आने से ये काम क्यूँ बन्द रहे? 4 उन्होंने चार बार मेरे पास ऐसा ही पैग़ाम भेजा और मैंने उनको इसी तरह का जवाब दिया। 5 फिर सनबल्लत ने पाँचवीं बार उसी तरह से अपने नौकर को मेरे पास हाथ में खुली चिट्ठी लिए हुए भेजा: 6 जिसमें लिखा था कि और क्रौमों में ये अफ़वाह है और जशम यही कहता है, कि तेरा और यहूदियों का इरादा बगावत करने का है, इसी वजह से तू शहरपनाह बनाता है; और तू इन बातों के मुताबिक़ उनका बादशाह बनना चाहता है। 7 और तूने नबियों को भी मुक़र्रर किया कि येरूशलेम में तेरे हक़ में 'ऐलान करें और कहें, 'यहूदाह में एक बादशाह है। तब इन बातों के मुताबिक़ बादशाह को इत्तला' की जाएगी। इसलिए अब आ हम आपस में मशवरा करें। 8 तब मैंने उसके पास कहला भेजा, "जो तू कहता है, इस तरह की कोई बात नहीं हुई, बल्कि तू ये बातें अपने ही दिल से बनाता है।" 9 वह सब तो हम को डराना चाहते थे, और कहते थे कि इस काम में उनके हाथ ऐसे ढीले पड़ जाएँगे कि वह होने ही का नहीं। लेकिन अब ऐ खुदा, तू मेरे हाथों को ताक़त बरख़्श। 10 फिर मैं समा'याह बिन दिलायाह बिन मुहेतबेल के घर गया, वह घर में बन्द था; उसने कहा, "हम खुदा के घर में, हैकल के अन्दर मिलें, और हैकल के दरवाज़ों को बन्द कर लें। क्यूँकि वह तुझे क़त्ल करने को आएँगे, वह ज़रूर रात को तुझे क़त्ल करने को आएँगे।" 11 मैंने कहा, "क्या मुझसा आदमी भागे? और कौन है जो मुझ सा हो और अपनी जान बचाने को हैकल में घुसे?" मैं अन्दर नहीं जाने का।" 12 और मैंने मा'लूम कर लिया कि खुदा ने उसे नहीं भेजा था, लेकिन उसने मेरे खिलाफ़ पेशीनगोई की बल्कि सनबल्लत और तूबियाह ने उसे मजदूरी पर रखवा था। 13 और उसको इसलिए मजदूरी दी गई ताकि मैं डर जाऊँ और ऐसा काम करके खताकार ठहरूँ, और उनको बुरी ख़बर फैलाने का मज़मून मिल जाए, ताकि मुझे मलामत करें। 14 ऐ मेरे खुदा! तूबियाह और सनबल्लत को उनके इन कामों के लिहाज़ से, और नौ'ईदियाह नबिया को भी और बाक़ी नबियों को

जो मुझे डराना चाहते थे याद रख। ¹⁵ गरज बावन दिन में, अलूल महीने की पच्चीसवीं तारीख को शहरपनाह बन चुकी। ¹⁶ जब हमारे सब दुश्मनों ने ये सुना, तो हमारे आस — पास की सब क्रौमे डरने लगीं और अपनी ही नज़र में खुद ज़लील हो गईं; क्योंकि उन्होंने जान लिया कि ये काम हमारे खुदा की तरफ़ से हुआ। ¹⁷ इसके अलावा उन दिनों में यहूदाह के अमीर बहुत से ख़त तूबियाह को भेजते थे, और तूबियाह के ख़त उनके पास आते थे। ¹⁸ क्योंकि यहूदाह में बहुत लोगों ने उससे क्रौल — ओ — करार किया था, इसलिए कि वह सिकनियाह बिन अरख का दामाद था; और उसके बेटे यहूहानान ने मुसल्लाम बिन बरकियाह की बेटी को ब्याह लिया था। ¹⁹ और वह मेरे आगे उसकी नेकियों का बयान भी करते थे और मेरी बातें उसे सुनाते थे, और तूबियाह मुझे डराने को चिट्ठियाँ भेजा करता था।

7

¹ जब शहरपनाह बन चुकी और मैंने दरवाज़े लगा लिए, और दरबान और गानेवाले और लावी मुक़र्रर हो गए, ² तो मैंने येरूशलेम को अपने भाई हनानी और क़िले' के हाकिम हनानियाह के सुपुर्द किया, क्योंकि वह अमानत दार और बहुतों से ज़्यादा खुदा तरस था। ³ और मैंने उनसे कहा कि जब तक धूप तेज़ न हो येरूशलेम के फाटक न खुलें, और जब वह पहरे पर खड़े हों तो किवाड़े बन्द किए जाएँ, और तुम उनमें अड़बंगे लगाओ और येरूशलेम के बाशिन्दों में से पहेरेवाले मुक़र्रर करो कि हर एक अपने घर के सामने अपने पहेरे पर रहे।

?????????? ?? ?????? ?? ?????????? ?????

⁴ और शहर तो वसी' और बड़ा था, लेकिन उसमें लोग कम थे और घर बने न थे। ⁵ और मेरे खुदा ने मेरे दिल में डाला कि अमीरों और सरदारों और लोगों को इकट्ठा करूँ ताकि नसबनामे के मुताबिक़ उनका शुमार किया जाए और मुझे उन लोगों का नसबनामा मिला जो पहले आए थे, और उसमें ये लिखा हुआ पाया: ⁶ मुल्क के जिन लोगों को शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र बाबुल को ले गया था, उन गुलामों की गुलामी में से वह जो निकल आए, और येरूशलेम और यहूदाह में अपने अपने शहर को गए ये हैं, ⁷ जो ज़रुब्बाबुल, यशू'अ, नहमियाह, 'अज़रियाह, रा'मियाह, नहमानी, मर्दकी बिलशान मिसफ़रत, बिगवई, नहूम और बा'ना के साथ आए थे। बनी — इस्राईल के लोगों का शुमार ये था: ⁸ बनी पर'ऊस, दो हज़ार एक सौ बहतर; ⁹ बनी सफ़तियाह, तीन सौ बहतर; ¹⁰ बनी अरख, छः

सौ बावन; ¹¹ बनी पख़त — मोआब जो यशू'अ और योआब की नसल में से थे, दो हज़ार आठ सौ अठारह; ¹² बनी 'ऐलाम, एक हज़ार दो सौ चव्वन, ¹³ बनी ज़त्तू, आठ सौ पैन्तालीस; ¹⁴ बनी ज़क्की, सात सौ साठ; ¹⁵ बनी बिनबी, छः सौ अठतालीस; ¹⁶ बनी बबई, छः सौ अठाईस; ¹⁷ बनी 'अज़जाद, दो हज़ार तीन सौ बाईस; ¹⁸ बनी अदुनिकाम छः सौ सड़सठ; ¹⁹ बनी बिगवई, दो हज़ार सड़सठ; ²⁰ बनी 'अदीन, छः सौ पचपन, ²¹ हिज़क्रियाह के खान्दान में से बनी अतीर, अट्टानवे; ²² बनी हशूम, तीन सौ अठाईस; ²³ बनी बज़ै, तीन सौ चौबीस; ²⁴ बनी खारिफ़, एक सौ बारह, ²⁵ बनी जिबा'ऊन, पचानवे; ²⁶ बैतलहम और नतूफ़ाह के लोग, एक सौ अठासी, ²⁷ 'अन्तोत के लोग, एक सौ अट्ठाईस; ²⁸ बैत 'अज़मावत के लोग, बयालीस, ²⁹ करयतया'रीम, कफ़ीरा और बैरोत के लोग, सात सौ तैन्तालीस; ³⁰ रामा और जिबा' के लोग, छः सौ इक्कीस; ³¹ मिक्मास के लोग, एक सौ बाईस; ³² बैतएल और ए' के लोग, एक सौ तेईस; ³³ दूसरे नबू के लोग, बावन; ³⁴ दूसरे 'ऐलाम की औलाद, एक हज़ार दो सौ चव्वन; ³⁵ बनी हारिम, तीन सौ बीस; ³⁶ यरीहू के लोग, तीन सौ पैन्तालीस; ³⁷ लूद और हादीद और ओनू के लोग, सात सौ इक्कीस; ³⁸ बनी सनाआह, तीन हज़ार नौ सौ तीस। ³⁹ फिर काहिन या'नी यशू'अ के घराने में से बनी यदा'याह, नौ सौ तिहत्तर; ⁴⁰ बनी इम्मेर, एक हज़ार बावन; ⁴¹ बनी फ़शहूर, एक हज़ार दो सौ सैन्तालीस; ⁴² बनी हारिम, एक हज़ार सत्तरह। ⁴³ फिर लावी या'नी बनी होदावा में से यशू'अ और क़दमीएल की औलाद, चौहत्तर; ⁴⁴ और गानेवाले या'नी बनी आसफ़, एक सौ अठतालीस; ⁴⁵ और दरबान जो सलूम और अतीर और तलमून और 'अक्कूब और खतीता और सोबै की औलाद थे, एक सौ अठतीस। ⁴⁶ और नतीनीम, या'नी बनी ज़ीहा, बनी हसूफ़ा, बनी तब'ओत, ⁴⁷ बनी क़रूस, बनी सीगा, बनी फ़दून, ⁴⁸ बनी लिबाना, बनी हज़ाबा, बनी शलमी, ⁴⁹ बनी हनान, बनी जिद्देल, बनी ज़हार, ⁵⁰ बनी रियायाह, बनी रसीन, बनी नकूदा, ⁵¹ बनी जज़्जाम, बनी उज्ज़ा, बनी फ़ासख, ⁵² बनी बसै, बनी म'ऊनीम, बनी नफूशसीम ⁵³ बनी बक़बूक, बनी हकूफ़ा, बनी हरहूर, ⁵⁴ बनी बज़लीत, बनी महीदा, बनी हरशा ⁵⁵ बनी बरकूस, बनी सीसरा, बनी तामह, ⁵⁶ बनी नज़ियाह, बनी खतीफ़ा। ⁵⁷ सुलेमान के खादिमों की औलाद: बनी सूती, बनी सूफ़िरत, बनी फ़रीदा, ⁵⁸ बनी या'ला, बनी दरकून, बनी जिद्देल, ⁵⁹ बनी सफ़तियाह, बनी खतील, बनी फूकरत ज़बाइम और बनी अमून।

60 सबनतीनीम और सुलेमान के खादिमों की औलाद, तीन सौ बानवे। 61 और जो लोग तल — मलह और तलहरसा और करोब और अदून और इम्मेर से गए थे, लेकिन अपने आबाई खान्दानों और नसल का पता न दे सके कि इस्राईल में से थे या नहीं, सो ये हैं: 62 बनी दिलायाह, बनी तूबियाह, बनी नकूदा, छः सौ बयालिस। 63 और काहिनों में से बनी हबायाह, बनी हक्कूस और बरज़िल्ली की औलाद जिसने जिल'आदी बरज़िल्ली की बेटियों में से एक लड़की को ब्याह लिया और उनके नाम से कहलाया। 64 उन्होंने अपनी सनद उनके बीच जो नसबनामों के मुताबिक गिने गए थे ढूँडी, लेकिन वह न मिली। इसलिए वह नापाक माने गए और कहानत से खारिज हुए; 65 और हाकिम ने उनसे कहा कि वह पाकतरीन चीजों में से न खाएँ, जब तक कोई काहिन ऊरीम — ओ — तुम्मीम लिए हुए खड़ा न हो। 66 सारी जमा'अत के लोग मिलकर बयालीस हजार तीन सौ साठ थे; 67 अलावा उनके गुलामों और लौंडियों का शुमार सात हजार तीन सौ सैन्तीस था, और उनके साथ दो सौ पैन्तालिस गानेवाले और गानेवालियाँ थीं। 68 उनके घोड़े, सात सौ छत्तीस; उनके खच्चर, दो सौ पैन्तालीस; 69 उनके ऊँट, चार सौ पैन्तीस; उनके गधे, छः हजार सात सौ बीस थे। 70 और आबाई खान्दानों के सरदारों में से कुछ ने उस काम के लिए दिया। हाकिम ने एक हजार सोने के दिरहम, और पचास प्याले, और काहिनों के पाँच सौ तीस लिबास खजाने में दाखिल किए। 71 और आबाई खान्दानों के सरदारों में से कुछ ने उस कम के खजाने में बीस हजार सोने के दिरहम, और दो हजार दो सौ मना चाँदी दी। 72 और बाक़ी लोगों ने जो दिया वह बीस हजार सोने के दिरहम, और दो हजार मना चाँदी, और काहिनों के सड़सठ पैराहन थे। 73 इसलिए काहिन और लावी और दरबान और गाने वाले और कुछ लोग, और नतीनीम, और तमाम इस्राईल अपने — अपने शहर में बस गए।

8

1 और जब सातवाँ महीना आया, तो बनी — इस्राईल अपने — अपने शहर में थे। और सब लोग यकतन होकर पानी फाटक के सामने के मैदान में इकट्ठा हुए, और उन्होंने एज़रा फ़कीह से 'अर्ज की कि मूसा की शरी'अत की किताब को, जिसका खुदावन्द ने इस्राईल को हुक्म दिया था लाए। 2 और सातवें महीने की पहली तारीख को एज़रा काहिन तौरैत को जमा'अत के, या'नी मर्दों और 'औरतों और उन सबके सामने ले आया जो सुनकर समझ सकते थे। 3 और वह उसमें से पानी फाटक के सामने के मैदान में, सुबह से दोपहर तक मर्दों और

'औरतों और सभी के आगे जो समझ सकते थे पढ़ता रहा; और सब लोग शरी'अत की किताब पर कान लगाए रहे। 4 और एज़रा फ़कीह एक चौबी मिम्बर पर, जो उन्होंने इसी काम के लिए बनाया था खड़ा हुआ; और उसके पास मत्तितियाह, और समा', और 'अनायाह, और ऊरिय्याह, और खिलक्रियाह, और मासियाह उसके दहने खड़े थे; और उसके बाएँ फ़िदायाह, और मिसाएल, और मलकियाह, और हाशूम, और हसबदाना, और ज़करियाह और मुसल्लाम थे। 5 और एज़रा ने सब लोगों के सामने किताब खोली क्योंकि वह सब लोगों से ऊपर था, और जब उसने उसे खोला तो सब लोग उठ खड़े हुए; 6 और एज़रा ने खुदावन्द खुदा — ए — 'अज़ीम को मुबारक कहा; और सब लोगों ने अपने हाथ उठाकर जवाब दिया, आमीन — आमीन “और उन्होंने औंधे मुँह ज़मीन तक झुककर खुदावन्द को सिज्दा किया। 7 यशू'अ, और बानी, और सरीबियाह, और यामिन और 'अक्कूब, और सब्बती, और हूदियाह, और मासियाह, और क़लीता, और 'अज़रियाह, और यूज़बाद, और हनान, और फ़िलायाह और लावी लोगों को शरी'अत समझाते गए; और लोग अपनी — अपनी जगह पर खड़े रहे। 8 और उन्होंने उस किताब या'नी खुदा की शरी'अत में से साफ़ आवाज़ से पढ़ा, फिर उसके मानी बताए और उनको 'इबारत समझा दी। 9 और नहमियाह ने जो हाकिम था, और एज़रा काहिन और फ़कीह ने, और उन लावियों ने जो लोगों को सिखा रहे थे सब लोगों से कहा, आज का दिन खुदावन्द तुम्हारे खुदा के लिए पाक है, न ग़म करो न रो।” क्योंकि सब लोग शरी'अत की बातें सुनकर रोने लगे थे। 10 फिर उसने उनसे कहा, “अब जाओ, और जो मोटा है खाओ, और जो मीठा है पियो और जिनके लिए कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास भी भेजो; क्योंकि आज का दिन हमारे खुदावन्द के लिए पाक है; और तुम मायूस मत हो, क्योंकि खुदावन्द की खुशी तुम्हारी पनाहगाह है।” 11 और लावियों ने सब लोगों को चुप कराया और कहा, “खामोश हो जाओ, क्योंकि आज का दिन पाक है; और ग़म न करो।” 12 तब सब लोग खाने पीने और हिस्सा भेजने और बड़ी खुशी करने को चले गए; क्योंकि वह उन बातों को जो उनके आगे पढ़ी गई, समझे थे। 13 और दूसरे दिन सब लोगों के आबाई खान्दानों के सरदार और काहिन और लावी, एज़रा फ़कीह के पास इकट्ठे हुए कि तौरैत की बातों पर ध्यान लगाएँ। 14 और उनको शरी'अत में ये लिखा मिला, कि खुदावन्द ने मूसा के ज़रिए फ़रमाया है कि बनी — इस्राईल सातवें महीने की 'ईद में झोपड़ियों में

रहा करें, ¹⁵ और अपने सब शहरों में और येरूशलेम में ये 'ऐलान और मनादी कराएँ कि पहाड़ पर जाकर जैतून की डालियाँ और जंगली जैतून की डालियाँ और मेहंदी की डालियाँ और खजूर की शाखें, और घने दरख्तों की डालियाँ झोपड़ियों के बनाने को लाओ, जैसा लिखा है। ¹⁶ तब लोग जा — जा कर उनको लाए, और हर एक ने अपने घर की छत पर, और अपने अहाते में, और खुदा के घर के सहनों में, और पानी फाटक के मैदान में, और इफ़राईमी फाटक के मैदान में अपने लिए झोपड़ियाँ बनाई। ¹⁷ और उन लोगों की सारी जमा'अत ने जो गुलामी से फिर आए थे, झोपड़ियाँ बनाई और उन्हीं झोपड़ियों में रहे; क्योंकि यशू'अ बिन नून के दिनों से उस दिन तक बनी — इस्राईल ने ऐसा नहीं किया था। चुनाँचे बहुत बड़ी खुशी हुई। ¹⁸ और पहले दिन से आखिरी दिन तक रोज़ — ब — रोज़ उसने खुदा की शरी'अत की किताब पढ़ी। और उन्होंने सात दिन 'ईद मनाई, और आठवें दिन दस्तूर के मुवाफ़िक़ पाक मजमा' इकट्ठा हुआ।

9

????? ?? ????? ?????

¹ फिर इसी महीने की चौबीसवीं तारीख को बनी — इस्राईल रोज़ा रखकर और टाट ओढ़कर और मिट्टी अपने सिर पर डालकर इकट्ठे हुए। ² और इस्राईल की नसल के लोग सब परदेसियों से अलग हो गए, और खड़े होकर अपने गुनाहों और अपने बाप — दादा की खताओं का इक्रार किया। ³ और उन्होंने अपनी अपनी जगह पर खड़े होकर एक पहर तक खुदावन्द अपने खुदा की किताब पढ़ी; और दूसरे पहर में, इक्रार करके खुदावन्द अपने खुदा को सिज्दा करते रहे। ⁴ तब क़दमीएल, यशू'अ, और बानी, और सबनियाह, बुन्नी और सरीबियाह, और बानी, और कना'नी ने लावियों की सीढ़ियों पर खड़े होकर बलन्द आवाज़ से खुदावन्द अपने खुदा से फ़रियाद की। ⁵ फिर यशू'अ, और क़दमिएल और बानी और हसबनियाह और सरीबियाह और हूदियाह, और सबनियाह, और फ़तहियाह लावियों ने कहा, खड़े हो जाओ, और कहो, खुदावन्द हमारा खुदा इब्तिदा से हमेशा तक मुबारक है; तेरा जलाली नाम मुबारक हो, जो सब हम्द — ओ — ता'रीफ़ से बाला है। ⁶ तू ही अकेला खुदावन्द है; तूने आसमान और आसमानों के आसमान को और उनके सारे लश्कर को, और ज़मीन को और जो कुछ उसपर है, और समन्दरों को और जो कुछ उनमें है बनाया और तू उन सभी का परवरदिगार है; और आसमान का लश्कर तुझे सिज्दा करता है। ⁷ तू

वह खुदावन्द खुदा है जिसने इब्रहाम को चुन लिया, और उसे कसदियों के ऊर से निकाल लाया, और उसका नाम अब्रहाम रखवा; ⁸ तूने उसका दिल अपने सामने वफ़ादार पाया, और कना'नियों हित्तियों और अमोरियों फ़रिज्जियों और यबूसियों और जिरज़ासियों का मुल्क देने का 'अहद उससे बाँधा ताकि उसे उसकी नसल को दे; और तूने अपने सुखन पूरे किए क्योंकि तू सादिक़ है। ⁹ और तूने मिस्र में हमारे बाप — दादा की मुसीबत पर नज़र की, और बहर — ए — कुलज़ुम के किनारे उनकी फ़रियाद सुनी। ¹⁰ और फिर 'औन और उसके सब नौकरों, और उसके मुल्क की सब र'इयत पर निशान और 'अजायब कर दिखाए; क्योंकि तू जानता था कि वह गुरुर के साथ उनसे पेश आए। इसलिए तेरा बड़ा नाम हुआ, जैसा आज है। ¹¹ और तूने उनके आगे समन्दर को दो हिस्से किया, ऐसा कि वह समन्दर के बीच सूखी ज़मीन पर होकर चले; और तूने उनका पीछा करनेवालों को गहराओ में डाला, जैसा पत्थर समन्दर में फेंका जाता है। ¹² और तूने दिन को बादल के सुतून में होकर उनकी रहनुमाई की और रात को आग के सुतून में, ताकि जिस रास्ते उनको चलना था उसमें उनको रोशनी मिले। ¹³ और तू कोह-ए-सीना पर उतर आया, और तूने आसमान पर से उनके साथ बातें की, और रास्त अहकाम और सच्चे क़ानून और अच्छे आईन — ओ — फ़रमान उनको दिए, ¹⁴ और उनको अपने पाक सबत से वाक़िफ़ किया, और अपने बन्दे मूसा के ज़रिए' उनको अहकाम और आईन और शरी'अत दी। ¹⁵ और तूने उनकी भूक मिटाने को आसमान पर से रोटी दी, और उनकी प्यास बुझाने को चट्टान में से उनके लिए पानी निकाला, और उनको फ़रमाया कि वह जाकर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करें जिसको उनको देने की तूने क़सम खाई थी। ¹⁶ लेकिन उन्होंने और हमारे बाप — दादा ने गुरुर किया, और बागी बने और तेरे हुक्मों को न माना; ¹⁷ और फ़रमाँबरदारी से इन्कार किया, और तेरे 'अजायब को जो तूने उनके बीच किए याद न रखवा; बल्कि बागी बने और अपनी बगावत में अपने लिए एक सरदार मुक़र्रर किया, ताकि अपनी गुलामी की तरफ़ लौट जाएँ। लेकिन तू वह खुदा है जो रहीम — ओ — करीम मु'आफ़ करने को तैयार, और क्रहर करने में धीमा, और शफ़क़त में ग़नी है, इसलिए तूने उनको छोड़ न दिया। ¹⁸ लेकिन जब उन्होंने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बनाकर कहा, 'ये तेरा खुदा है, जो तुझे मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, और यँ गुस्सा दिलाने के बड़े बड़े काम किए; ¹⁹ तो भी तूने अपनी गूनागूँ रहमतों से उनको वीराने में छोड़

न दिया; दिन को बादल का सुतून उनके ऊपर से दूर न हुआ, ताकि रास्ते में उनकी रहनुमाई करे, और न रात को आग का सुतून दूर हुआ, ताकि वह उनको रोशनी और वह रास्ता दिखाए जिससे उनको चलना था। ²⁰ और तूने अपनी नेक रूह भी उनकी तरबियत के लिए बरख्शी, और मन को उनके मुँह से न रोका, और उनको प्यास को बुझाने को पानी दिया। ²¹ चालीस बरस तक तू वीराने में उनकी परवरिश करता रहा; वह किसी चीज़ के मुहताज न हुए, न तो उनके कपड़े पुराने हुए और न उनके पाँव सूजे। ²² इसके सिवा तूने उनको ममलुकतें और उम्मतें बरख्शीं, जिनको तूने उनके हिस्सों के मुताबिक उनको बाँट दिया; चुनाँचे वह सीहोन के मुल्क, और शाह — ए — हस्वोन के मुल्क, और बसन के बादशाह 'ओज के मुल्क पर क्राबिज़ हुए। ²³ तूने उनकी औलाद को बढ़ाकर आसमान के सितारों की तरह कर दिया, और उनको उस मुल्क में लाया जिसके बारे में तूने उनके बाप — दादा से कहा था कि वह जाकर उसपर कब्ज़ा करें। ²⁴ तब उनकी औलाद ने आकर इस मुल्क पर कब्ज़ा किया, और तूने उनके आगे इस मुल्क के बाशिन्दों या 'नी कना'नियों को मग़लूब किया, और उनको उनके बादशाहों और इस मुल्क के लोगों के साथ उनके हाथ में कर दिया कि जैसा चाहें वैसा उनसे करें। ²⁵ तब उन्होंने फ़सीलदार शहरों और ज़रखेज़ मुल्क को ले लिया, और वह सब तरह के अच्छे माल से भरे हुए घरों और खोदे हुए कुँवों, और बहुत से अंगूरिस्तानों और ज़ैतून के बाग़ों और फलदार दरख़्तों के मालिक हुए; फिर वह खा कर सेर हुए और मोटे ताज़े हो गए, और तेरे बड़े एहसान से बहुत हज़ उठाया। ²⁶ तो भी वह ना — फ़रमान होकर तुझ से बागी हुए, और उन्होंने तेरी शरी'अत को पीठ पीछे फेंका, और तेरे नबियों को जो उनके खिलाफ़ गवाही देते थे ताकि उनको तेरी तरफ़ फ़िरा लायें क़त्ल किया और उन्होंने गुस्सा दिलाने के बड़े — बड़े काम किए। ²⁷ इसलिए तूने उनको उनके दुश्मनों के हाथ में कर दिया, जिन्होंने उनको सताया; और अपने दुख के वक़्त में जब उन्होंने तुझ से फ़रियाद की, तो तूने आसमान पर से सुन लिया और अपनी गूँगागूँ रहमतों के मुताबिक उनको छुड़ाने वाले दिए जिन्होंने उनको उनके दुश्मनों के हाथ से छुड़ाया। ²⁸ लेकिन जब उनको आराम मिला तो उन्होंने फिर तेरे आगे बदकारी की, इसलिए तूने उनको उनके दुश्मनों के कब्ज़े में छोड़ दिया इसलिए वह उन पर मुसल्लत रहे; तो भी जब वह रुजू' लाए और तुझ से फ़रियाद की, तो तूने आसमान पर से सुन लिया और अपनी रहमतों के मुताबिक उनको बार —

बार छुड़ाया; ²⁹ और तूने उनके खिलाफ़ गवाही दी, ताकि अपनी शरी'अत की तरफ़ उनको फेर लाए। लेकिन उन्होंने गुरूर किया और तेरे फ़रमान न माने, बल्कि तेरे अहकाम के बरखिलाफ़ गुनाह किया जिनको अगर कोई माने, तो उनकी वजह से जीता रहेगा, और अपने कन्धे को हटाकर बागी बन गए और न सुना। ³⁰ तो भी तू बहुत बरसों तक उनकी बर्दाश्त करता रहा, और अपनी रूह से अपने नबियों के ज़रिए' उनके खिलाफ़ गवाही देता रहा; तो भी उन्होंने कान न लगाया, इसलिए तूने उनको और मुल्को के लोगों के हाथ में कर दिया। ³¹ बावजूद इसके तूने अपनी गूँगागूँ रहमतों के ज़रिए' उनको नाबूद न कर दिया और न उनको छोड़ा, क्योंकि तू रहीम — ओ — करीम खुदा है। ³² "इसलिए अब, ऐ हमारे खुदा, बुजुर्ग, और क़ादिर — ओ — मुहीब खुदा जो 'अहद — ओ — रहमत को क़ाईम रखता है। वह दुख जो हम पर और हमारे बादशाहों पर, और हमारे सरदारों और हमारे काहिनों पर, और हमारे नबियों और हमारे बाप — दादा पर, और तेरे सब लोगों पर असूर के बादशाहों के ज़माने से आज तक पड़ा है, इसलिए तेरे सामने हल्का न मा'लूम हो; ³³ तो भी जो कुछ हम पर आया है उस सब में तू 'आदिल है क्योंकि तू सच्चाई से पेश आया, लेकिन हम ने शरारत की। ³⁴ और हमारे बादशाहों और सरदारों और हमारे काहिनों और बाप — दादा ने न तो तेरी शरी'अत पर 'अमल किया और न तेरे अहकाम और शहादतों को माना, जिनसे तू उनके खिलाफ़ गवाही देता रहा। ³⁵ क्योंकि उन्होंने अपनी ममलुकत में, और तेरे बड़े एहसान के वक़्त जो तूने उन पर किया, और इस वसी' और ज़रखेज़ मुल्क में जो तूने उनके हवाले कर दिया, तेरी इबादत न की और न वह अपनी बदकारियों से बाज़ आए। ³⁶ देख, आज हम गुलाम हैं, बल्कि उसी मुल्क में जो तूने हमारे बाप — दादा को दिया कि उसका फल और पैदावार खाएँ; इसलिए देख, हम उसी में गुलाम हैं। ³⁷ वह अपनी कसीर पैदावार उन बादशाहों को देता है, जिनको तूने हमारे गुनाहों की वजह से हम पर मुसल्लत किया है; वह हमारे जिस्मों और हमारी मवाशी पर भी जैसा चाहते हैं इस्तिyar रखते हैं, और हम सख़्त मुसीबत में हैं।" ³⁸ "इन सब बातों की वजह से हम सच्चा 'अहद करते और लिख भी देते हैं, और हमारे हाकिम, और हमारे लावी, और हमारे काहिन उसपर मुहर करते हैं।"

10

1 और वह जिन्होंने मुहर लगाई ये हैं: नहमियाह बिन हकलियाह हाकिम, और सिदक्रियाह ² सिरायाह, 'अज़रियाह, यरमियाह, ³ फ़शहूर, अमरियाह,

मलकियाह, ⁴ हत्तूश, सबनियाह, मल्लूक, ⁵ हारिम, मरीमोट, 'अबदियाह, ⁶ दानीएल, जिन्नतून, बारूक, ⁷ मुसल्लाम, अबियाह, मियामीन, ⁸ माज़ियाह, बिलजी, समा'याह; ये काहिन थे। ⁹ और लावी ये थे: यशू'अ बिन अज़नियाह, बिनवी बनी हनदाद में से क़दमीएल ¹⁰ और उनके भाई सबनियाह, हूदियाह, कलीताह, फ़िलायाह, हनान, ¹¹ मीका, रहोब, हसाबियाह, ¹² ज़क्कूर, सरीबियाह, सबनियाह, ¹³ हूदियाह, बानी, बनीनू। ¹⁴ लोगों के रईस ये थे: पर'ऊस, पख़त — मोआब, 'ऐलाम, ज़त्तू, बानी, ¹⁵ बुनी, 'अज़जाद, बबई, ¹⁶ अदूनियाह, बिगवई, 'अदीन, ¹⁷ अतीर, हिज़क्रियाह, 'अज़ज़ूर, ¹⁸ हूदियाह, हाशम, बज़ी, ¹⁹ ख़ारीफ़, 'अन्तोत, नूबै, ²⁰ मगफ़ी'आस, मुसल्लाम, हज़ीर, ²¹ मशेज़बेल, सदोक़, यदू' ²² फ़िलतियाह, हनान, 'अनायाह, ²³ होसे', हननियाह, हसूब, ²⁴ हलूहेस, फ़िलहा, सोबेक, ²⁵ रहूम, हसबनाह, मासियाह, ²⁶ अख़ियाह, हनान, 'अनान, ²⁷ मल्लूक, हारिम, बानाह।

?????? ??

²⁸ बाक़ी लोग, और काहिन, और लावी, और दरबान और गाने वाले और नतनीम और सब जो खुदा की शरी'अत की खातिर और मुल्कों की क़ौमों से अलग हो गए थे, और उनकी बीवियाँ और उनके बेटे और बेटियाँ गरज़ जिनमें समझ और 'अक्ल थी ²⁹ वह सबके सब अपने भाई अमीरों के साथ मिलकर ला'नत ओ क़सम में शामिल हुए, ताकि खुदावन्द की शरी'अत पर जो बन्दा — ए — खुदावन्द मूसा के ज़रिए' मिली, चलें और यहोवाह हमारे खुदावन्द के सब हुक्मों और फ़रमानों और आईन को मानें और उन पर 'अमल करें। ³⁰ और हम अपनी बेटियाँ मुल्क के बाशिन्दों को न दें, और न अपने बेटों के लिए उनकी बेटियाँ लें; ³¹ और अगर मुल्क के लोग सबत के दिन कुछ माल या खाने की चीज़ बेचने को लाएँ, तो हम सबत को या किसी पाक दिन को उनसे मोल न लें। और सातवाँ साल और हर क़र्ज़ का मुतालबा छोड़ दें। ³² और हम ने अपने लिए क़ानून ठहराए कि अपने खुदा के घर की ख़िदमत के लिए साल — ब — साल मिस्क़ाल का तीसरा हिस्सा' दिया करें; ³³ या'नी सबतों और नये चाँदों की नज़र की रोटी, और हमेशा की नज़र की कुर्बानी, और हमेशा की सोख़्तनी कुर्बानी के लिए और मुक़र्ररा 'ईदों और पाक चीज़ों और ख़ता की कुर्बानियों के लिए कि इस्राईल के वास्ते कफ़़ारा हो, और अपने खुदा के घर के सब कामों के लिए। ³⁴ और हम ने या'नी काहिनों, और लावियों, और लोगों ने, लकड़ी

के हदिए के बारे में पर्ची डाली, ताकि उसे अपने खुदा के घर में बाप — दादा के घरानों के मुताबिक़ मुक़र्ररा वक्त्रों पर साल — ब — साल खुदावन्द अपने खुदा के मज़बह पर जलाने को लाया करें, जैसा शरी'अत में लिखा है। ³⁵ और साल — ब — साल अपनी — अपनी ज़मीन के पहले फल, और सब दरख़्तों के सब मेवों में से पहले फल खुदावन्द के घर में लाएँ; ³⁶ और जैसा शरी'अत में लिखा है, अपने पहलौटे बेटों को और अपनी मवाशी या'नी गाय, बैल और भेड़ — बकरी के पहलौटे बच्चों को अपने खुदा के घर में काहिनों के पास जो हमारे खुदा के घर में ख़िदमत करते हैं लाएँ। ³⁷ और अपने गूँधे हुए आटे और अपनी उठाई हुई कुर्बानियों और सब दरख़्तों के मेवों, और मय और तेल में से पहले फल को अपने खुदा के घर की कोठरियों में काहिनों के पास, और अपने खेत की दहेकी लावियों के पास लाया करें; क्यूँकि लावी सब शहरों में जहाँ हम काशतकारी करते हैं, दसवाँ हिस्सा लेते हैं। ³⁸ और जब लावी दहेकी लें तो कोई काहिन जो हारून की औलाद से हो, लावियों के साथ हो, और लावी दहेकियों का दसवाँ हिस्सा हमारे खुदा के बैत — उल — माल की कोठरियों में लाएँ। ³⁹ क्यूँकि बनी — इस्राईल और बनी लावी अनाज और मय और तेल की उठाई हुई कुर्बानियाँ उन कोठरियों में लाया करेंगे जहाँ हैकल के बर्तन और ख़िदमत गुज़ार काहिन और दरबान और गानेवाले हैं; और हम अपने खुदा के घर को नहीं छोड़ेंगे।

11

?????? ??

¹ और लोगों के सरदार येरूशलेम में रहते थे; और बाक़ी लोगों ने पर्ची डाली कि हर दस शख्सों में से एक को शहर — ए — पाक, येरूशलेम, में बसने के लिए लाएँ; और नौ बाक़ी शहरों में रहें। ² और लोगों ने उन सब आदमियों को, जिन्होंने खुशी से अपने आपको येरूशलेम में बसने के लिए पेश किया दुआ दी। ³ उस सूबे के सरदार, जो येरूशलेम में आ बसे ये हैं; लेकिन यहूदाह के शहरों में हर एक अपने शहर में अपनी ही मिल्कियत में रहता था, या'नी अहल — ए — इस्राईल और काहिन और लावी और नतीनीम, और सुलेमान के मुलाज़िमों की औलाद। ⁴ और येरूशलेम में कुछ बनी यहूदाह और कुछ बनी बिनयमीन रहते थे। बनी यहूदाह में से, 'अतायाह बिन 'उज़्ज़ियाह बिन ज़करियाह बिन अमरियाह बिन सफ़तियाह बिन महललएल बनी फ़ारस में से; ⁵ और मा'सियाह बिन बारूक बिन कुलहोज़ा, बिन हजायाह, बिन 'अदायाह, बिन यूयरीब बिन ज़करियाह

बिन शिलोनी। ⁶ सब बनी फ़ारस जो येरूशलेम में बसे चार सौ अठासठ सूमा थे। ⁷ और ये बनी बिनयमीन हैं, सल्लू बिन मुसल्लाम बिन यूऐद बिन फ़िदायाह बिन कूलायाह बिन मासियाह बिन एतीएल बिन यसायाह। ⁸ फिर जब्बै सल्लै और नौ सौ अट्ठाईस आदमी। ⁹ और यूएल बिन ज़िकरी उनका नाज़िम था, और यहूदाह बिन हस्सनूह शहर के हाकिम का नाइब था। ¹⁰ काहिनों में से यदा'याह बिन यूयरीब और यकीन, ¹¹ शिरायाह बिन खिलक्रियाह बिन मुसल्लाम बिन सदोक बिन मिरायोत बिन अखितोब, खुदा के घर का नाज़िम, ¹² और उनके भाई जो हैकल में काम करते थे, आठ सौ बाईस; और 'अदायाह बिन यरोहाम, बिन फ़िल्लियाह बिन अम्जी बिन ज़करियाह, बिन फ़शहूर बिन मलकियाह, ¹³ और उसके भाई आबाई खान्दानों के रईस, दो सौ बयालीस; और अमसी बिन 'अज़राएल बिन अखसी बिन मसल्लीमोत बिन इम्मेर, ¹⁴ और उनके भाई ज़बरदस्त सूमा, एक सौ अट्ठाईस; और उनका सरदार ज़बदीएल बिन हजदलीम था। ¹⁵ और लावियों में से, समा'याह बिन हुसूक बिन 'अज़रिकाम बिन हसबियाह बिन बूनी; ¹⁶ और सब्बतै और यूज़बाद लावियों के रईसों में से, खुदा के घर के बाहर के काम पर मुक़र्रर थे; ¹⁷ और मत्तनियाह बिन मीका बिन ज़ब्दी बिन आसफ़ सरदार था, जो दुआ के वक्त शुक्रगुज़ारी शुरू करने में पेशवा था; और बक्रबूक्रियाह उसके भाइयों में से दूसरे दर्जे पर था, और 'अबदा बिन सम्मू' बिन जलाल बिन यदूतून। ¹⁸ पाक शहर में कुल दो सौ चौरासी लावी थे। ¹⁹ और दरबान 'अक्रब, तलमून और उनके भाई जो फाटकों की निगहबानी करते थे, एक सौ बहतर थे। ²⁰ और इस्राईलियों और काहिनों और लावियों के बाक़ी लोग यहूदाह के सब शहरों में अपनी — अपनी मिल्कियत में रहते थे। ²¹ लेकिन नतीनीम 'ओफल में बसे हुए थे; और जीहा और जिसफ़ा नतीनीम पर मुक़र्रर थे। ²² और उज़्ज़ी बिन बानी बिन हसबियाह बिन मत्तनियाह बिन मीका जो आसफ़ की औलाद या'नी गानेवालों में से था, येरूशलेम में उन लावियों का नाज़िम था, जो खुदा के घर के काम पर मुक़र्रर थे। ²³ क्यूँकि उनके बारे में बादशाह की तरफ़ से हुक्म हो चुका था, और गानेवालों के लिए हर रोज़ की ज़रूरत के मुताबिक़ मुक़र्ररा रसद थी। ²⁴ और फ़तहयाह बिन मशेज़बेल जो ज़ारह बिन यहूदाह की औलाद में से था, र'इयत के सब मुआ'मिलात के लिए बादशाह के सामने रहता था। ²⁵ रहे गाँव और उनके खेत, इसलिए बनी यहूदाह में से कुछ लोग करयत — अरबा' और उसके क़स्बों में, और

दीबोन और उसके क़स्बों में, और यक्रबज़ीएल और उसके गाँवों में रहते थे; ²⁶ और यशू'अ और मोलादा और बैत फ़लत में, ²⁷ और हसर — सू'आल और बैरसबा' और उसके क़स्बों में, ²⁸ और सिकलाज और मकुनाह और उस के क़स्बों में ²⁹ और 'ऐन — रिम्मोन और सुर'आह में, और यरमूत में, ³⁰ ज़नोआह, 'अदूल्लाम, और उनके गाँवों में; लकीस और उसके खेतों में, 'अज़ीक्रा और उसके क़स्बों में, यूँ वह बैरसबा' से हिनूम की वादी तक डेरों में रहते थे। ³¹ बनी बिनयमीन भी जिबा' से लेकर आगे मिकमास और 'अय्याह और बैतएल और उसके क़स्बों में, ³² और 'अन्तोत और नूब और 'अननियाह, ³³ और हासूर और रामा और जितेम, ³⁴ और हादीद और ज़िबोईम और नबल्लात, ³⁵ और लूद और ओनू, या'नी कारीगरों की वादी में रहते थे। ³⁶ और लावियों में से कुछ फ़रीक़ जो यहूदाह में थे, वह बिनयमीन से मिल गए।

12

~~~~~

<sup>1</sup> वह काहिन और लावी जो ज़रुब्बाबुल बिन सियालतिएल और यशू'अ के साथ गए, सो ये हैं: सिरायाह, यरमियाह, एज़रा, <sup>2</sup> अमरियाह, मल्लूक, हत्तूश, <sup>3</sup> सिकनियाह, रहूम, मरीमोत, <sup>4</sup> इद्द, जिन्नतू, अबियाह, <sup>5</sup> मियामीन, मा'दियाह, बिल्जा, <sup>6</sup> समा'याह और यूयरीब, यदा'याह <sup>7</sup> सल्लू, 'अमुक़ खिलक्रियाह, यदा'याह, ये यशू'अ के दिनों में काहिनों और उनके भाइयों के सरदार थे <sup>8</sup> और लावी ये थे: यशू'अ, बिनवी, क़दमिएल सरीबियाह यहूदाह और मत्तनियाह जो अपने भाइयों के साथ शुक्रगुज़ारी पर मुक़र्रर था; <sup>9</sup> और उनके भाई बक्रबूक्रियाह और 'उन्नी उनके सामने अपने — अपने पहरे पर मुक़र्रर थे। <sup>10</sup> और यशू'अ से यूयक़ीम पैदा हुआ, और यूयक़ीम से इलियासिब पैदा हुआ, और इलियासब से यूयदा' पैदा हुआ, <sup>11</sup> और यूयदा' से यूनतन पैदा हुआ, और यूनतन से यद्' पैदा हुआ, <sup>12</sup> और यूयक़ीम के दिनों में ये काहिन आबाई खान्दानों के सरदार थे: सिरायाह से मिरायाह; यरमियाह से हननियाह; <sup>13</sup> एज़रा से मुसल्लाम; अमरियाह से यहूहानान; <sup>14</sup> मलकू से यूनतन, सबनियाह से यूसुफ़; <sup>15</sup> हारिम से 'अदना; मिरायोत से खलकै; <sup>16</sup> इद्द से ज़करियाह; जिन्नतून से मुसल्लाम: <sup>17</sup> अबियाह से ज़िकरी; बिनयमीन से' मौ'अदियाह से फ़िल्ली; <sup>18</sup> बिलजाह से सम्मू'आ; समा'याह से यहूनतन; <sup>19</sup> यूयरीब से मत्तने; यदा'याह से 'उज़्ज़ी; <sup>20</sup> सल्लै से कल्लै; 'अमोक से इब्; <sup>21</sup> खिलक्रियाह से

हसबियाह; यदा'याह से नतनीएल। <sup>22</sup> इलियासब और यूयदा' और यूहनान और यद्' के दिनों में, लावियों के आबाई खान्दानों के सरदार लिखे जाते थे; और काहिनों के, दारा फ़ारसी की सल्लनत में। <sup>23</sup> बनी लावी के आबाई खान्दानों के सरदार यूहनान बिन इलियासब के दिनों तक, तवारीख की किताब में लिखे जाते थे। <sup>24</sup> और लावियों के रईस: हसबियाह, सरीबियाह और यशू'अ बिन क्रदमीएल, अपने भाइयों के साथ आमने सामने बारी — बारी से मर्द — ए — खुदा दाऊद के हुक्म के मुताबिक हम्द और शुक्रगुजारी के लिए मुक़र्रर थे। <sup>25</sup> मत्तनियाह और बक्रूकियाह और अब्दियाह और मुसल्लाम और तलमून और अक्कूब दरबान थे, जो फाटकों के मखज़नों के पास पहरा देते थे। <sup>26</sup> ये यूयक्रीम बिन यशू'अ बिन यूसदक के दिनों में, और नहमियाह हाकिम और एज़रा काहिन और फ़कीह के दिनों में थे। <sup>27</sup> और येरूशलेम की शहरपनाह की तक्रदीस के वक़्त, उन्होंने लावियों को उनकी सब जगहों से ढूँड निकाला कि उनको येरूशलेम में लाएँ, ताकि वह खुशी — खुशी झाँझ और सितार और बरबत के साथ शुक्रगुजारी करके और गाकर तक्रदीस करें। <sup>28</sup> इसलिए गानेवालों की नसल के लोग येरूशलेम को आस — पास के मैदान से और नतूफ़ातियों के देहात से, <sup>29</sup> और बैत — उल — ज़िलजाल से भी, और जिबा' और 'अज़मावत के खेतों से इकट्ठे हुए; क्योंकि गानेवालों ने येरूशलेम के चारों तरफ़ अपने लिए देहात बना लिए थे। <sup>30</sup> और काहिनों और लावियों ने अपने आपको पाक किया, और उन्होंने लोगों को और फाटकों को और शहरपनाह को पाक किया। <sup>31</sup> तब मैं यहूदाह के अमीरों को दीवार पर लाया, और मैंने दो बड़े गोल मुक़र्रर किए जो हम्द करते हुए जुलूस में निकले। एक उनमें से दहने हाथ की तरफ़ दीवार के ऊपर — ऊपर से कूड़े के फाटक की तरफ़ गया, <sup>32</sup> और ये उनके पीछे — पीछे गए, या'नी हुसा'याह और यहूदाह के आधे सरदार। <sup>33</sup> 'अज़रियाह, एज़रा और मुसल्लाम, <sup>34</sup> यहूदाह और बिनयमीन और समा'याह और यरमियाह, <sup>35</sup> और कुछ काहिनज़ादे नरसिंगे लिए हुए, या'नी ज़करियाह बिन यूनतन, बिन समा'याह, बिन मत्तनियाह, बिन मीकायाह, बिन ज़क्कूर बिन आसफ़; <sup>36</sup> और उसके भाई समा'याह और 'अज़रएल, मिल्ले, जिल्लै, मा'ऐ, नतनीएल और यहूदाह और हनानी, मर्द — ए — खुदा दाऊद के बाजों को लिए हुए जाते थे और एज़रा फ़कीह उनके आगे — आगे था। <sup>37</sup> और वह चश्मा फाटक से होकर सीधे आगे गए, और दाऊद के शहर की सीढ़ियों पर चढ़कर शहरपनाह की ऊँचाई पर

पहुँचे, और दाऊद के महल के ऊपर होकर पानी फाटक तक पूरब की तरफ़ गए। <sup>38</sup> और शुक्रगुजारी करनेवालों का दूसरा गोल और उनके पीछे — पीछे मैं और आधे लोग उनसे मिलने को दीवार पर तनूरों के बुर्ज के ऊपर चौड़ी दीवार तक <sup>39</sup> और इफ़राईमी फाटक के ऊपर पुराने फाटक और मच्छली फाटक, और हननएल के बुर्ज और हमियाह के बुर्ज पर से होते हुए भेड़ फाटक तक गए; और पहरेवालों के फाटक पर खड़े हो गए। <sup>40</sup> तब शुक्रगुजारी करनेवालों के दोनों गोल और मैं और मेरे साथ आधे हाकिम खुदा के घर में खड़े हो गए। <sup>41</sup> और काहिन इलियाक्रीम, मासियाह, बिनयमीन, मीकायाह, इलीयू'ऐनी, ज़करियाह, हननियाह नरसिंगे लिए हुए थे; <sup>42</sup> और मासियाह और समा'याह और एलियाज़र और 'उज़्ज़ी और यहहनान और मल्कियाह और 'ऐलाम और एज़रा अपने सरदार गानेवाले, इज़रखियाह के साथ बलन्द आवाज़ से गाते थे। <sup>43</sup> और उस दिन उन्होंने बहुत सी कुर्बानियाँ चढ़ाई और उसी दिन खुशी की क्योंकि खुदा ने ऐसी खुशी उनको बरूखी कि वह बहुत खुश हुए; और 'औरतों और बच्चों ने भी खुशी मनाई। इसलिए येरूशलेम की खुशी की आवाज़ दूर तक सुनाई देती थी। <sup>44</sup> उसी दिन लोग खज़ाने की, और उठाई हुई कुर्बानियों और पहले फलों और दहेकियों की कोठरियों पर मुक़र्रर हुए, ताकि उनमें शहर शहर के खेतों के मुताबिक, जो हिस्से काहिनों और लावियों के लिए शरा' के मुताबिक मुक़र्रर हुए उनको जमा' करें क्योंकि बनी यहूदाह काहिनों और लावियों की वजह से जो हाज़िर रहते थे खुश थे। <sup>45</sup> इसलिए वह अपने खुदा के इन्तज़ाम और तहारत के इन्तज़ाम की निगरानी करते रहे; और गानेवालों और दरबानों ने भी दाऊद और उसके बेटे सुलेमान के हुक्म के मुताबिक ऐसा ही किया। <sup>46</sup> क्योंकि पुराने ज़माने से दाऊद और आसफ़ के दिनों में एक सरदार मुग़न्नी होता था, और खुदा की हम्द और शुक्र के गीत गाए जाते थे। <sup>47</sup> और तमाम इस्राईल ज़रूबाबुल के और नहमियाह के दिनों में हर रोज़ की ज़रूरत के मुताबिक गानेवालों और दरबानों के हिस्से देते थे; यँ वह लावियों के लिए चीज़ें मख्सूस करते, और लावी बनी हारून के लिए मख्सूस करते थे।

## 13

?????????? ?? ????? ?? ???????

<sup>1</sup> उस दिन उन्होंने लोगों को मूसा की किताब में से पढ़कर सुनाया, और उसमें ये लिखा मिला कि 'अम्मोनी और मोआबी खुदा की जमा'अत में कभी न आने पाएँ;

2 इसलिए कि वह रोटी और पानी लेकर बनी — इस्राईल के इस्तक्रबाल को न निकले, बल्कि बल'आम को उनके खिलाफ मजदूरी पर बुलाया ताकि उन पर ला'नत करे — लेकिन हमारे खुदा ने उस ला'नत को बरकत से बदल दिया। 3 और ऐसा हुआ कि शरी'अत को सुनकर उन्होंने सारी मिली जुली भीड़ को इस्राईल से जुदा कर दिया। 4 इससे पहले इलियासब काहिन ने जो हमारे खुदा के घर की कोठरियों का मुख्तार था, तूबियाह का रिश्तेदार होने की वजह से, 5 उसके लिए एक बड़ी कोठरी तैयार की थी जहाँ पहले नज़र की कुर्बानियाँ और लुबान और बर्तन, और अनाज की और मय की और तेल की दहेकियाँ, जो हुक्म के मुताबिक लावियों और गानेवालों और दरबानों को दी जाती थीं, और काहिनों के लिए उठाई हुई कुर्बानियाँ भी रखी जाती थीं। 6 लेकिन इन दिनों में मैं येरूशलेम में न था, क्योंकि शाह — ए — बाबुल अरतखशशता के बत्तीसवें बरस में बादशाह के पास गया था। और कुछ दिनों के बाद मैंने बादशाह से रुख्सत की दरखास्त की, 7 और मैं येरूशलेम में आया, और मा'लूम किया कि खुदा के घर के सहनों में तूबियाह के वास्ते एक कोठरी तैयार करने से इलियासब ने कैसी खराबी की है। 8 इससे मैं बहुत रंजीदा हुआ इसलिए मैंने तूबियाह के सब खानगी सामान को उस कोठरी से बाहर फेंक दिया। 9 फिर मैंने हुक्म दिया और उन्होंने उन कोठरियों को साफ़ किया, और मैं खुदा के घर के बर्तनों और नज़र की कुर्बानियों और लुबान को फिर वहीं ले आया। 10 फिर मुझे मा'लूम हुआ कि लावियों के हिस्से उनको नहीं दिए गए, इसलिए खिदमतगुज़ार लावी और गानेवाले अपने अपने खेत को भाग गए हैं। 11 तब मैंने हाकिमों से झगड़कर कहा कि खुदा का घर क्यों छोड़ दिया गया है? और मैंने उनको इकट्ठा करके उनको उनकी जगह पर मुर्कर किया। 12 तब सब अहल — ए — यहूदाह ने अनाज और मय और तेल का दसवाँ हिस्सा खज़ानों में दाखिल किया। 13 और मैंने सलमियाह काहिन और सदोक़ फ़कीह, और लावियों में से फ़िदायाह को खज़ानों के खज़ांची मुर्कर किया; और हनान बिन ज़क्कूर बिन मत्तनियाह उनके साथ था; क्योंकि वह दियानतदार माने जाते थे, और अपने भाइयों में बाँट देना उनका काम था। 14 ए मेरे खुदा इसके लिए याद कर और मेरे नेक कामों को जो मैंने अपने खुदा के घर और उसके रसूम के लिए किये मिटा न डाल। 15 उन ही दिनों में मैंने यहूदाह में कुछ को देखा, जो सबत के दिन हौजों में पाँव से अंगूर कुचल रहे थे, और पूले लाकर उनको गधों पर लादते थे। इसी तरह मय

और अंगूर और अंजीर, और हर किस्म के बोझ सबत को येरूशलेम में लाते थे; और जिस दिन वह खाने की चीज़ें बेचने लगे मैंने उनको टोका। 16 वहाँ सूर के लोग भी रहते थे, जो मछली और हर तरह का सामान लाकर सबत के दिन येरूशलेम में यहूदाह के लोगों के हाथ बेचते थे। 17 तब मैंने यहूदाह के हाकिम से झगड़कर कहा, ये क्या बुरा काम है जो तुम करते, और सबत के दिन की बेहुरमती करते हो? 18 क्या तुम्हारे बाप — दादा ने ऐसा ही नहीं किया? और क्या हमारा खुदा हम पर और इस शहर पर ये सब आफ़तें नहीं लाया? तो भी तुम सबत की बेहुरमती करके इस्राईल पर ज्यादा ग़ज़ब लाते हो। 19 इसलिए जब सबत से पहले येरूशलेम के फाटकों के पास अन्धेरा होने लगा, तो मैंने हुक्म दिया कि फाटक बन्द कर दिए जाएँ, और हुक्म दे दिया कि जब तक सबत गुज़र न जाए, वह न खुलें, और मैंने अपने कुछ नौकरों को फाटकों पर रखवा कि सबत के दिन कोई बोझ अन्दर आने न पाए। 20 इसलिए ताजिर और तरह — तरह के माल के बेचनेवाले एक या दो बार येरूशलेम के बाहर टिके। 21 तब मैंने उनको टोका, और उनसे कहा कि तुम दीवार के नज़दीक क्यों टिक जाते हो? अगर फिर ऐसा किया तो मैं तुम को गिरफ़्तार कर लूँगा। उस वक़्त से वह सबत को फिर न आए। 22 और मैंने लावियों को हुक्म किया कि अपने आपको पाक करें, और सबत के दिन की तक्दीस की गरज़ से आकर फाटकों की रखवाली करें। ए मेरे खुदा, इसे भी मेरे हक़ में याद कर, और अपनी बड़ी रहमत के मुताबिक़ मुझ पर तरस खा। 23 उन्ही दिनों में मैंने उन यहूदियों को भी देखा, जिन्होंने अशदूदी और 'अम्मोनी और मोआबी 'औरतें ब्याह ली थीं। 24 और उनके बच्चों की ज़बान आधी अशदूदी थी और वह यहूदी ज़बान में बात नहीं कर सकते थे, बल्कि हर क्रौम की बोली के मुताबिक़ बोलते थे। 25 इसलिए मैंने उनसे झगड़कर उनको ला'नत की, और उनमें से कुछ को मारा, और उनके बाल नोच डाले, और उनको खुदा की क्रसम खिलाई, कि तुम अपनी बेटियाँ उनके बेटों को न देना, और न अपने बेटों के लिए और न अपने लिए उनकी बेटियाँ लेना। 26 क्या शाह — ए — इस्राईल सुलेमान ने इन बातों से गुनाह नहीं किया? अगरचे अकसर क्रौमों में उसकी तरह कोई बादशाह न था, और वह अपने खुदा का प्यारा था, और खुदा ने उसे सारे इस्राईल का बादशाह बनाया, तो भी अज़नबी 'औरतों ने उसे भी गुनाह में फँसाया। 27 इसलिए क्या हम तुम्हारी सुनकर ऐसी बड़ी बुराई करें कि अज़नबी 'औरतों को ब्याह कर अपने खुदा का गुनाह करें? 28 और

इलियासब सरदार काहिन के बेटे यूयदा' के बेटों में से एक बेटा, हूरोनी सनबल्लत का दामाद था, इसलिए मैंने उसको अपने पास से भगा दिया <sup>29</sup> ऐ मेरे खुदा, उनको याद कर, इसलिए कि उन्होंने कहानत को और कहानत और लावियों के 'अहद को नापाक किया है। <sup>30</sup> यूँ ही मैंने उनको कुल अजनबियों से पाक किया, और काहिनों और लावियों के लिए उनकी खिदमत के मुताबिक, <sup>31</sup> और मुक्रररा वक्तों पर लकड़ी के हदिए और पहले फलों के लिए हल्के मुक्ररर कर दिए। ऐ मेरे खुदा, भलाई के लिए मुझे याद कर।



## आस्तेर

?????????? ?? ?????

आस्तेर की किताब का मुसन्निफ़ जिसे हम नहीं जानते जो अनजान है वह बहुत मुमकिन यहूदी था, वह फारस के शाही महल से अच्छी तरह से वाकिफ़ था शाही महल की सारी तफ़सीलें और रिवायात साथ वह सारी वाकियात जो इस किताब में ज़िक्र हैं वह मुसन्निफ़ की आँखों देखी हालात बतोर इशारा करती हैं — उलमा यकीन करते कि हैं कि मुसन्निफ़ एक यहूदी था जो गुलामी से बाक़ी मांदा लोगों को लिख रहा था जो ज़रुबाबुल के मातहत यहूदा से लौट रहे थे — कुछ उलमा ने सलाह दी है कि मुर्दकई खुद ही इस किताब का मुसन्निफ़ था, हालांकि उसके लिए मुआइना करने की रसम जो इस किताब की असली इबारत में है सलाह देती है कि मुसन्निफ़ कोई दूसरा शख्स है शायद उस का हमउम्र था जो मुसन्निफ़ था।

????? ????? ?? ??????? ?? ???

इसके तसनीफ़ की तारिख़ तक्रीबन 464 - 331 क़ब्ल मसीह के बीच है।

फ़ारस का बादशाह अख्सोयरस अव्वल के दौर — ए — हुकूमत में ये कहानी वाक़े होती है — इब्तिदाई तौर से क़स्र सोसन में जो फारस की सल्तनत का दारुल ख़िलाफ़ा (पाय तख़्त) था।

?????? ??????????? ?????? ?????

आस्तेर की किताब यहूदी लोगों के लिए लिखी गई थी कि लात और पूरिम जैसे खदीम यहूदी तह्वारों को क़लमबंद करे जो दीगर किताबों में नहीं मिलती — ये सालाना ईद यहूदी लोगों के लिए खुदा की नज़ात को याद दिलाती है बिल्कुल उसी तरह जिस तरह उन्होंने ने मिस्र की गुलामी से छुटकारा हासिल किया था।

???? ?????????

इस किताब को लिखे जाने का असल मक़सद ये है कि इंसान की मर्ज़ी के साथ खुदा के तफ़ाइल को दिखाए, उसकी नफ़रत किसी नसल के मुखालिफ़ में, उस की कुव्वत हिकमत के देने में और खतरों के औक्रात में मदद देने के लिए — ये यकीन दिलाने के लिए कि खुदा अपने लोगों की ज़िंदगियों में काम करता है — खुदा ने आस्तेर की ज़िन्दगी में हालात का इस्तेमाल किया जिस तरह वह तमाम बनी इंसान के फैसलों और अमल दोनों को अपने इलाही मंसूबों और मकासिद के लिए इस्तेमाल करता है — आस्तेर की किताब पूरिम की ईद का इम

किए जाने को क़लमबंद करती है और आज भी यहूदी लोग पूरिम की ईद में आस्तेर की किताब पढ़ते हैं।

??????

मुहाफ़िज़त

बैरूनी खाका

1. आस्तेर मलिका बन जाती है — 1:1-2:23
2. खुदा के यहूदियों के लिए खतरा — 3:1-15
3. आस्तेर और मोर्देकई दोनों एक बड़ा क़दम उठाते हैं — 4:1-5:14
4. यहूदियों का छुटकारा — 6:1-10:3

????????? ?? ?????? ???????????

<sup>1</sup> अख्सूयरस के दिनों में ऐसा हुआ यह वही अख्सूयरस है जो हिन्दोस्तान से कूश तक एक सौ सताईस सूबों पर हुकूमत करता था <sup>2</sup> कि उन दिनों में जब अख्सूयरस बादशाह अपने तख़्त — ए — हुकूमत पर, जो क़स्र — सोसन में था बैठा। <sup>3</sup> तो उसने अपनी हुकूमत के तीसरे साल अपने सब हाकिमों और खादिमों की मेहमान नवाज़ी की। और फ़ारस और मादै की ताक़त और सूबों के हाकिम और सरदार उसके सामने हाज़िर थे। <sup>4</sup> तब वह बहुत दिन या'नी एक सौ अस्सी दिन तक अपनी जलीलुल क़दर हुकूमत की दौलत अपनी 'आला 'अज़मत की शान उनको दिखाता रहा <sup>5</sup> जब यह दिन गुज़र गए तो बादशाह ने सब लोगों की, क्या बड़े क्या छोटे जो क़स्र — ए — सोसन में मौजूद थे, शाही महल के बाग़ के सहन में सात दिन तक मेहमान नवाज़ी की। <sup>6</sup> वहाँ सफ़ेद और सब्ज़ और आसमानी रंग के पर्दे थे, जो कतानी और अर्गवानी डोरियों से चाँदी के हल्कों और संग — ए — मरमर के सुतूनों से बन्धे थे; और सुर्ख और सफ़ेद और ज़र्द और सियाह संग — ए — मरमर के फ़र्श पर सोने और चाँदी के तख़्त थे। <sup>7</sup> उन्होंने उनको सोने के प्यालों में, जो अलग अलग शक्लों के थे, पीने को दिया और शाही मय बादशाह के क़रम के मुताबिक़ कसरत से पिलाई। <sup>8</sup> और मय नौशी इस काइदे से थी कि कोई मजबूर नहीं कर सकता था; क्योंकि बादशाह ने अपने महल के सब 'उहदे दारों को नसीहत फ़रमाई थी, कि वह हर शख्स की मर्ज़ी के मुताबिक़ करें। <sup>9</sup> वशती मलिका ने भी अख्सूयरस बादशाह के शाही महल में 'औरतों की मेहमान नवाज़ी की। <sup>10</sup> सात दिन जब बादशाह का दिल मय से मसरूर था, तो उसने सातों ख़्वाजा सराओं या'नी महमान और बिज़ता और ख़रबूनाह और बिगता और अबग़ता और ज़ितार और करकस को, जो अख्सूयरस बादशाह के सामने ख़िदमत करते थे हुक्म दिया, <sup>11</sup> कि वशती मलिका को शाही ताज पहनाकर बादशाह के

सामने लाएँ, ताकि उसकी खूबसूरती लोगों और हाकिमों को दिखाएँ क्योंकि वह देखने में खूबसूरत थी।<sup>12</sup> लेकिन वशती मलिका ने शाही हुक्म पर जो ख्वाजासराओं की ज़रिए मिला था, आने से इन्कार किया। इसलिए बादशाह बहुत झल्लाया और दिल ही दिल में उसका गुस्सा भड़का।<sup>13</sup> तब बादशाह ने उन 'अक्लमन्दों' से जिनको वक्तों के जानने का 'इल्म' था पूछा, 'क्योंकि बादशाह का दस्तूर सब क़ानून दानों और 'अदलशनासों' के साथ ऐसा ही था,<sup>14</sup> और फ़ारस और मादै के सातों अमीर या'नी कारशीना और सितार और अदमाता और तरसीस और मरस और मरसिना और ममूकान उसके नज़दीकी थे, जो बादशाह का दीदार हासिल करते और ममलुकत में 'उहदे पर थे'<sup>15</sup> "क़ानून के मुताबिक़ वशती मलिका से क्या करना चाहिए; क्योंकि उसने अख़्सूरस बादशाह का हुक्म जो ख्वाजासराओं के ज़रिए मिला नहीं माना है?"<sup>16</sup> और ममूकान ने बादशाह और अमीरों के सामने जवाब दिया, वशती मलिका ने सिर्फ़ बादशाह ही का नहीं, बल्कि सब उमरा और सब लोगों का भी जो अख़्सूरस बादशाह के कुल सूबों में हैं कुसूर किया है।<sup>17</sup> क्योंकि मलिका की यह बात बाहर सब 'औरतों तक पहुँचेगी जिससे उनके शौहर उनकी नज़र में ज़लील हो जाएँगे, जब यह ख़बर फैलेगी, 'अख़्सूरस बादशाह ने हुक्म दिया कि वशती मलिका उसके सामने लाई जाए, लेकिन वह न आई।<sup>18</sup> और आज के दिन फ़ारस और मादै की सब बेग़में जो मलिका की बात सुन चुकी हैं, बादशाह के सब उमरा से ऐसा ही कहने लगेंगी। यूँ बहुत नफ़रत और गुस्सा पैदा होगा।<sup>19</sup> अगर बादशाह को मन्ज़ूर हो तो उसकी तरफ़ से शाही फ़रमान निकले, और वो फ़ारसियों और मादियों के क़ानून में दर्ज हो, ताकि बदला न जाए कि वशती अख़्सूरस बादशाह के सामने फिर कभी न आए, और बादशाह उसका शाहाना रुतबा किसी और को जो उससे बेहतर है 'इनायत करे।<sup>20</sup> और जब बादशाह का फ़रमान जिसे वह लागू करेगा, उसकी सारी हुक्मत में जो बड़ी है शोहरत पाएगा तो सब बीवियाँ अपने अपने शौहर की क्या बड़ा क्या छोटा 'इज़्जत करेंगी।<sup>21</sup> यह बात बादशाह और हाकिमों को पसन्द आई, और बादशाह ने ममूकान के कहने के मुताबिक़ किया;<sup>22</sup> क्योंकि उसने सब शाही सूबों में सूबे — सूबे के हुरूफ़, और क़ौम — क़ौम की बोली के मुताबिक़ ख़त भेज दिए, कि हर आदमी अपने घर में हुक्मत करे, और अपनी क़ौम की ज़बान में इसका चर्चा करे।

## 2

### 22222 22 2222222 2222

<sup>1</sup> इन बातों के बाद जब अख़्सूरस बादशाह का गुस्सा ठंडा हुआ, तो उसने वशती को और जो कुछ उसने किया था, और जो कुछ उसके खिलाफ़ हुक्म हुआ था याद किया।<sup>2</sup> तब बादशाह के मुलाज़िम जो उसकी ख़िदमत करते थे कहने लगे, "बादशाह के लिए जवान खूबसूरत कुंवारीयाँ ढूँढी जाएँ।"<sup>3</sup> और बादशाह अपनी बादशाहत के सब सूबों में मन्सबदारों को मुक़र्रर करे, ताकि वह सब जवान खूबसूरत कुंवारीयों को क़सूर — ए — सोसन के बीच हरमसरा में इकट्ठा करके बादशाह के ख्वाजासरा हैजा के ज़िम्मा करें, जो 'औरतों का मुहाफ़िज़ है; और पाकी के लिए उनका सामान उनको दिया जाए।<sup>4</sup> और जो कुंवारी बादशाह को पसन्द हो, वह वशती की जगह मलिका हो।" यह बात बादशाह को पसन्द आई, और उसने ऐसा ही किया।<sup>5</sup> क़सूर — ए — सोसन में एक यहूदी था जिसका नाम मर्दकै था, जो या'इर बिन सिम'ई बिन क़ीस का बेटा था, जो बिनयमीनी था;<sup>6</sup> और येरूशलेम से उन गुलामों के साथ गया था जो शाह — ए — यहूदाह यकूनियाह के साथ गुलामी में गए थे, जिनको शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र गुलाम करके ले गया था।<sup>7</sup> उसने अपने चचा की बेटी हदस्साह या'नी आस्तेर को पाला था; क्योंकि उसके माँ — बाप न थे, और वह लड़की हसीन और खूबसूरत थी; और जब उसके माँ — बाप मर गए तो मर्दकै ने उसे अपनी बेटी करके पाला।<sup>8</sup> तब ऐसा हुआ कि जब बादशाह का हुक्म और फ़रमान सुनने में आया, और बहुत सी कुंवारीयाँ क़सूर — ए — सोसन में इकट्ठी होकर हैजा के ज़िम्मा हुईं, तो आस्तेर भी बादशाह के महल में पहुँचाई गई, और 'औरतों के मुहाफ़िज़ हैजा के ज़िम्मा हुई।<sup>9</sup> और वह लड़की उसे पसन्द आई और उसने उस पर महेरबानी की, और फ़ौरन उसे शाही महल में से पाकी के लिए उसके सामान और खाने के हिस्से, और ऐसी सात सहेलियाँ जो उसके लायक़ थीं उसे दीं, और उसे और उसकी सहेलियों को हरमसरा की सबसे अच्छी जगह में ले जाकर रखवा।<sup>10</sup> आस्तेर ने न अपनी क़ौम न अपना ख़ान्दान ज़ाहिर किया था; क्योंकि मर्दकै ने उसे नसीहत कर दी थी कि न बताए;<sup>11</sup> और मर्दकै हर रोज़ हरमसरा के सहन के आगे फिरता था, ताकि मा'लूम करे कि आस्तेर कैसी है और उसका क्या हाल होगा।<sup>12</sup> जब एक एक कुंवारी की बारी आई कि 'औरतों के दस्तूर के मुताबिक़ बारह महीने की सफ़ाई के बाद अख़्सूरस बादशाह के पास जाए क्योंकि इतने ही दिन उनकी पाकिज़गी में लग जाते थे, या'नी छः महीने मुर्र का तेल लगाने में और छः महीने इत्र

और 'औरतों की सफ़ाई की चीज़ों के लगाने में' <sup>13</sup> तब इस तरह से वह कुँवारी बादशाह के पास जाती थी कि जो कुछ वो चाहती कि हरमसरा से बादशाह के महल में ले जाए, वह उसको दिया जाता था। <sup>14</sup> शाम को वह जाती थी और सुबह को लौटकर दूसरे बाँदीसरा में बादशाह के ख्वाजासरा शासजज़ के ज़िम्मा हो जाती थी, जो बाँदियों का मुहाफ़िज़ था; वह बादशाह के पास फिर नहीं जाती थी, मगर जब बादशाह उसे चाहता तब वह नाम लेकर बुलाई जाती थी। <sup>15</sup> जब मर्दकै के चचा अबीख़ैल की बेटी आस्तेर की, जिसे मर्दकै ने अपनी बेटी करके रखवा था, बादशाह के पास जाने की बारी आई तो जो कुछ बादशाह के ख्वाजासरा और 'औरतों के मुहाफ़िज़ हैजा ने ठहराया था, उसके अलावा उसने और कुछ न माँगा। और आस्तेर उन सबकी जिनकी निगाह उस पर पड़ी, मन्ज़ूर — ए — नज़र हुई। <sup>16</sup> इसलिए आस्तेर अख़्सूयरस बादशाह के पास उसके शाही महल में उसकी हुकूमत के सातवें साल के दसवें महीने में, जो तैबत महीना है पहुँचाई गई। <sup>17</sup> और बादशाह ने आस्तेर को सब 'औरतों से ज्यादा प्यार किया, और वह उसकी नज़र में उन सब कुँवारियों से ज्यादा प्यारी और पसंदीदा ठहरी; तब उसने शाही ताज उसके सिर पर रख दिया, और वशती की जगह उसे मलिका बनाया। <sup>18</sup> और बादशाह ने अपने सब हाकिमों और मुलाज़िमों के लिए एक बड़ी मेहमान नवाज़ी, या'नी आस्तेर की मेहमान नवाज़ी की; और सूबों में मु'आफ़ी की, और शाही करम के मुताबिक़ इन'आम बाँटे। <sup>19</sup> जब कुँवारियाँ दूसरी बार इकट्ठी की गई, तो मर्दकै बादशाह के फाटक पर बैठा था। <sup>20</sup> आस्तेर ने न तो अपने खान्दान और न अपनी क्रौम का पता दिया था, जैसा मर्दकै ने उसे नसीहत कर दी थी; इसलिए कि आस्तेर मर्दकै का हुक्म ऐसा ही मानती थी जैसा उस वक़्त जब वह उसके यहाँ परवरिश पा रही थी। <sup>21</sup> उन ही दिनों में, जब मर्दकै बादशाह के फाटक पर बैठा करता था, बादशाह के ख्वाजासराओं में से जो दरवाज़े पर पहरा देते थे, दो शख्सों या'नी बिगतान और तरश ने बिगड़कर चाहा कि अख़्सूयरस बादशाह पर हाथ चलाएँ। <sup>22</sup> यह बात मर्दकै को मा'लूम हुई और उसने आस्तेर मलिका को बताई, और आस्तेर ने मर्दकै का नाम लेकर बादशाह को ख़बर दी। <sup>23</sup> जब उस मु'आमिले की तहकीकात की गई और वह बात साबित हुई, तो वह दोनों एक दरख़्त पर लटका दिए गए; और यह बादशाह के सामने तवारीख़ की किताब में लिख लिया गया।

### 3

222222 22 2222222222 22 22222222 2222

<sup>1</sup> इन बातों के बाद अख़्सूयरस बादशाह ने अजाज़ी हम्मदाता के बेटे हामान को मुस्ताज़ और सरफ़राज़ किया और उसकी कुर्सी को सब हाकिम से जो उसके साथ थे ऊँचा किया। <sup>2</sup> और बादशाह के सब मुलाज़िम जो बादशाह के फाटक पर थे, हामान के आगे झुककर उसकी ता'ज़ीम करते थे; क्योंकि बादशाह ने उसके बारे में ऐसा ही हुक्म किया था। लेकिन मर्दकै न झुकता, न उसकी ता'ज़ीम करता था। <sup>3</sup> तब बादशाह के मुलाज़िमों ने जो बादशाह के फाटक पर थे मर्दकै से कहा, “तू क्यूँ बादशाह के हुक्म को तोड़ता है?” <sup>4</sup> जब वो उससे रोज़ कहते रहे, और उसने उनकी न मानी, तो उन्होंने हामान को बता दिया, ताकि देखें कि मर्दकै की बात चलेगी या नहीं, क्यूँकि उसने उनसे कह दिया था कि मैं यहूदी हूँ। <sup>5</sup> जब हामान ने देखा कि मर्दकै न झुकता, न मेरी ता'ज़ीम करता है, तो हामान गुस्से से भर गया। <sup>6</sup> लेकिन सिर्फ़ मर्दकै ही पर हाथ चलाना अपनी शान से नीचे समझा; क्यूँकि उन्होंने उसे मर्दकै की क्रौम बता दी थी, इसलिए हामान ने चाहा कि मर्दकै की क्रौम, या'नी सब यहूदियों को जो अख़्सूयरस की पूरी बादशाहत में रहते थे। हलाक करे। <sup>7</sup> अख़्सूयरस बादशाह की बादशाहत के बारहवें बरस के पहले महीने से, जो नेसान महीना है, वह रोज़ — ब — रोज़ और माह — ब — माह बारहवें महीने या'नी अदार के महीने तक हामान के सामने पर या'नी पर्ची डालते रहे। <sup>8</sup> और हामान ने अख़्सूयरस बादशाह से दरख़्वास्त की कि “हुज़ूर की बादशाहत के सब सूबों में एक क्रौम सब क्रौमों के दर्मियान इधर उधर फैली हुई है, उसके काम हर क्रौम से निराले हैं, और वह बादशाह के क़वानीन नहीं मानते हैं, इसलिए उनको रहने देना बादशाह के लिए फ़ाइदे मन्द नहीं। <sup>9</sup> अगर बादशाह को मन्ज़ूर हो, तो उनको हलाक करने का हुक्म लिखा जाए; और मैं तहसीलदारों के हाथ में शाही खज़ानों में दाखिल करने के लिए चाँदी के दस हज़ार तोड़े दूँगा।” <sup>10</sup> और बादशाह ने अपने हाथ से अंगूठी उतार कर यहूदियों के दुश्मन अजाज़ी हम्मदाता के बेटे हामान को दी। <sup>11</sup> और बादशाह ने हामान से कहा, “वह चाँदी तुझे बख़्शी गई और वह लोग भी, ताकि जो तुझे अच्छा मा'लूम हो उनसे करे।” <sup>12</sup> तब बादशाह के मुंशी पहले महीने की तेरहवीं तारीख़ को बुलाए गए, और जो कुछ हामान ने बादशाह के नवाबों, और हर सूबे के हाकिमों, और हर क्रौम के सरदारों को हुक्म किया उसके मुताबिक़ लिखा गया; सूबे सूबे के हुरूफ़ और क्रौम क्रौम की ज़बान में अख़्सूयरस के नाम से यह लिखा गया, और उस पर

बादशाह की अँगूठी की मुहर की गई।<sup>13</sup> और कासिदों के हाथ बादशाह के सब सूबों में खत भेजे गए कि बारहवें महीने, या'नी अदार महीने की तेरहवीं तारीख को सब यहूदियों को, क्या जवान क्या बुढ़े क्या बच्चे क्या 'औरतें, एक ही दिन में हलाक और क़त्ल करें और मिटा दें और उनका माल लूट लें।<sup>14</sup> इस लिखाई की एक एक नक़ल सब क़ौमों के लिए जारी की गई, कि इस फ़रमान का ऐलान हर सूबे में किया जाए, ताकि उस दिन के लिए तैयार हो जाएँ।<sup>15</sup> बादशाह के हुक्म से कासिद फ़ौरन खाना हुए और वह हुक्म क़सूर — ए — सोसन में दिया गया। बादशाह और हामान मय नौशी करने को बैठ गए, पर सोसन शहर परेशान था।

#### 4

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

१ जब मर्दकै को वह सब जो किया गया था मा'लूम हुआ, तो मर्दकै ने अपने कपड़े फाड़े और टाट पहने और सिर पर राख डालकर शहर के बीच में चला गया, और ऊँची और पुरदर आवाज़ से चिल्लाने लगा; २ और वह बादशाह के फाटक के सामने भी आया, क्योंकि टाट पहने कोई बादशाह के फाटक के अन्दर जाने न पाता था। ३ और हर सूबे में जहाँ कहीं बादशाह का हुक्म और फ़रमान पहुँचा, यहूदियों के दर्मियान बड़ा मातम और रोज़ा और गिरयाजारी और नौहा शुरू हो गया, और बहुत से टाट पहने राख में बैठ गए। ४ और आस्तर की सहेलियों और उसके ख्वाजासराओं ने आकर उसे खबर दी तब मलिका बहुत ग़मगीन हुई, और उसने कपड़े भेजे कि मर्दकै को पहनाएँ और टाट उस पर से उतार लें, लेकिन उसने उनको न लिया। ५ तब आस्तर ने बादशाह के ख्वाजासराओं में से हताक को, जिसे उसने आस्तर के पास हाज़िर रहने को मुक़रर किया था बुलवाया, और उसे ताकीद की कि मर्दकै के पास जाकर दरियाफ़्त करे कि यह क्या बात है और किस वजह से है। ६ इसलिए हताक निकल कर शहर के चौक में, जो बादशाह के फाटक के सामने था मर्दकै के पास गया। ७ तब मर्दकै ने अपनी पूरी आप बीती, और रुपये की वह ठीक रक़म उसे बताई जिसे हामान ने यहूदियों को हलाक करने के लिए बादशाह के खज़ानों में दाख़िल करने का वा'दा किया था। ८ और उस फ़रमान की लिखी हुई तहरीर की एक नक़ल भी, जो उनको हलाक करने के लिए सोसन में दी गई थी उसे दी, ताकि उसे आस्तर को दिखाए और बताए और उसे ताकीद करे कि बादशाह के सामने जाकर उससे मिन्नत करे, और उसके सामने अपनी क़ौम के

लिए दरख्वास्त करे। ९ चुनाँचे हताक ने आकर आस्तर को मर्दकै की बातें कह सुनाई। १० तब आस्तर हताक से बातें करने लगी, और उसे मर्दकै के लिए यह पैग़ाम दिया कि ११ “बादशाह के सब मुलाज़िम और बादशाही सूबों के सब लोग जानते हैं कि जो कोई, मर्द हो या 'औरत बिन बुलाए बादशाह की बारगाह — ए — अन्दरूनी में जाए, उसके लिए बस एक ही क़ानून है कि वह मारा जाए, अलावा उसके जिसके लिए बादशाह सोने की लाठी उठाए ताकि वह जीता रहे, लेकिन तीस दिन हुए कि मैं बादशाह के सामने नहीं बुलाई गई।” १२ उन्होंने मर्दकै से आस्तर की बातें कहीं। १३ तब मर्दकै ने उनसे कहा कि “आस्तर के पास यह जवाब ले जायें कि तू अपने दिल में यह न समझ कि सब यहूदियों मेंसे तू बादशाह के महल में बची रहेगी। १४ क्योंकि अगर तू इस वक़्त खामोशी अख़्तियार करे तो छुटकारा और नजात यहूदियों के लिए किसी और जगह से आएगी, लेकिन तू अपने बाप के खान्दान के साथ हलाक हो जाएगी। और क्या जाने कि तू ऐसे ही वक़्त के लिए बादशाहत को पहुँची है?” १५ तब आस्तर ने उनको मर्दकै के पास यह जवाब ले जाने का हुक्म दिया, १६ कि “जा, और सोसन में जितने यहूदी मौजूद हैं उनको इकट्ठा कर, और तुम मेरे लिए रोज़ा रखो, और तीन रोज़ तक दिन और रात न कुछ खाओ न पियो। मैं भी और मेरी सहेलियाँ इसी तरह से रोज़ा रखेंगी; और ऐसे ही मैं बादशाह के सामने जाऊँगी जो क़ानून के खिलाफ़ है; और अगर मैं हलाक हुई तो हलाक हुई।” १७ चुनाँचे मर्दकै खाना हुआ और आस्तर के हुक्म के मुताबिक़ सब कुछ किया।

#### 5

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८



बादशाह को मन्ज़ूर हो, तो बादशाह उस जश्न में जो मैंने उसके लिए तैयार किया है, हामान को साथ लेकर आज तशरीफ़ लाए।”<sup>5</sup> बादशाह ने फ़रमाया कि “हामान को जल्द लाओ, ताकि आस्तेर के कहे के मुताबिक़ किया जाए।” तब बादशाह और हामान उस जश्न में आए, जिसकी तैयारी आस्तेर ने की थी<sup>6</sup> और बादशाह ने जश्न में मयनौशी के वक्त्र आस्तेर से पूछा, “तेरा क्या सवाल है? वह मन्ज़ूर होगा। तेरी क्या दरखास्त है? आधी बादशाहत तक वह पूरी की जाएगी।”<sup>7</sup> आस्तेर ने जवाब दिया, “मेरा सवाल और मेरी दरखास्त यह है,<sup>8</sup> अगर मैं बादशाह की नज़र में मक़बूल हूँ, और बादशाह को मन्ज़ूर हो कि मेरा सवाल कुबूल और मेरी दरखास्त पूरी करे, तो बादशाह और हामान मेरे जश्न में जो मैं उनके लिए तैयार करूँगी आयें और कल जैसा बादशाह ने इरशाद किया है मैं करूँगी।”<sup>9</sup> उस दिन हामान शादमान और खुश होकर निकला। लेकिन जब हामान ने बादशाह के फाटक पर मर्दकै को देखा कि उसके लिए न खड़ा हुआ न हटा, तो हामान मर्दकै के खिलाफ़ गुस्से से भर गया।<sup>10</sup> तोभी हामान अपने आपको बरदाश्त करके घर गया, और लोग भेजकर अपने दोस्तों को और अपनी बीवी ज़रिश को बुलवाया।<sup>11</sup> और हामान उनके आगे अपनी शान — ओ — शौकत, और बेटों की कसरत का क्रिस्सा कहने लगा, और किस किस तरह बादशाह ने उसकी तरक्की की, और उसको हाकिम और बादशाही मुलाज़िमों से ज्यादा सरफ़राज़ किया।<sup>12</sup> हामान ने यह भी कहा, “देखो, आस्तेर मलिका ने अलावा मेरे किसी को बादशाह के साथ अपने जश्न में, जो उसने तैयार किया था आने न दिया; और कल के लिए भी उसने बादशाह के साथ मुझे दावत दी है।<sup>13</sup> तोभी जब तक मर्दकै यहूदी मुझे बादशाह के फाटक पर बैठा दिखाई देता है, इन बातों से मुझे कुछ हासिल नहीं।”<sup>14</sup> तब उसकी बीवी ज़रिश और उसके सब दोस्तों ने उससे कहा, “पचास हाथ ऊँची सूली बनाई जाए, और कल बादशाह से 'दरखास्त करके मर्दकै उस पर चढ़ाया जाए; तब खुशी खुशी बादशाह के साथ जश्न में जाना।” यह बात हामान को पसन्द आई, और उसने एक सूली बनवाई।

## 6

११११११ ११ ११११११ ११ ११११११११ — १ — १११११ १११११

<sup>1</sup> उस रात बादशाह को नींद न आई, तब उसने तवारीख़ की किताबों के लाने का हुक्म दिया और वह बादशाह के सामने पढ़ी गई।<sup>2</sup> और यह लिखा मिला कि मर्दकै ने दरबानों में से बादशाह के दो ख्वाजासराओं,

बिगताना और तरश की मुखबरी की थी, जो अख़सूयरस बादशाह पर हाथ चलाना चाहते थे।<sup>3</sup> बादशाह ने कहा, “इसके लिए मर्दकै की क्या इज्जत — ओ — हुमत की गई है?” बादशाह के मुलाज़िमों ने जो उसकी ख़िदमत करते थे कहा, “उसके लिए कुछ नहीं किया गया।”<sup>4</sup> और बादशाह ने पूछा, “बारगाह में कौन हाज़िर है?” उधर हामान शाही महल की बाहरी बारगाह में आया हुआ था कि मर्दकै को उस सूली पर चढ़ाने के लिए, जो उसने उसके लिए तैयार की थी। बादशाह से दरखास्त करे।<sup>5</sup> इसलिए बादशाह के मुलाज़िमों ने उससे कहा, “हुज़ूर बारगाह में हामान खड़ा है। बादशाह ने फ़रमाया, उसे अन्दर आने दो।”<sup>6</sup> तब हामान अन्दर आया, और बादशाह ने उससे कहा, “जिसकी ताज़ीम बादशाह करना चाहता है, उस शख्स से क्या किया जाए?” हामान ने अपने दिल में कहा, “मुझे से ज्यादा बादशाह किसकी ताज़ीम करना चाहता होगा?”<sup>7</sup> इसलिए हामान ने बादशाह से कहा कि “उस शख्स के लिए, जिसकी ताज़ीम बादशाह को मन्ज़ूर हो,<sup>8</sup> शाहाना लिबास जिसे बादशाह पहनता है, और वह घोड़ा जो बादशाह की सवारी का है, और शाही ताज़ जो उसके सिर पर रखवा जाता है लाया जाए।<sup>9</sup> और वह लिबास और वह घोड़ा बादशाह के सबसे ऊँचे 'ओहदा के उमरा में से एक के हाथ में ज़िम्मा हों, ताकि उस लिबास से उस शख्स को पहनायी जाए जिसकी ताज़ीम बादशाह को मन्ज़ूर है; और उसे उस घोड़े पर सवार करके शहर के 'आम रास्तों में फिराएँ और उसके आगे आगे 'ऐलान करें, जिस शख्स की ताज़ीम बादशाह करना चाहता है, उससे ऐसा ही किया जाएगा।”<sup>10</sup> तब बादशाह ने हामान से कहा, “जल्दी कर, और अपने कहे के मुताबिक़ वह लिबास और घोड़ा ले, और मर्दकै यहूदी से जो बादशाह के फाटक पर बैठा है ऐसा ही कर। जो कुछ तूने कहा है उसमें कुछ भी कमी न होने पाए।”<sup>11</sup> तब हामान ने वह लिबास और घोड़ा लिया और मर्दकै को पहना करके घोड़े पर सवार शहर के 'आम रास्तों में फिराया, और उसके आगे आगे ऐलान करता गया कि “जिस शख्स की ताज़ीम बादशाह करना चाहता है, उससे ऐसा ही किया जाएगा।”<sup>12</sup> और मर्दकै तो फिर बादशाह के फाटक पर लौट आया, लेकिन हामान ग़मगीन और सिर ढाँके हुए जल्दी जल्दी अपने घर गया।<sup>13</sup> और हामान ने अपनी बीवी ज़रिश और अपने सब दोस्तों को एक एक बात जो उस पर गुज़री थी बताई। तब उसके दानिशमन्दों और उसकी बीवी ज़रिश ने उससे कहा, “अगर मर्दकै, जिसके आगे तू पस्त होने लगा है, यहूदी नसल में से है तो तू उस पर ग़ालिब न

होगा, बल्कि उसके आगे जरूर पस्त होता जाएगा।”  
 14 वह उससे अभी बातें कर ही रहे थे कि बादशाह के  
 ख्वाजासरा आ गए, और हामान को उस जश्न में ले जाने  
 की जल्दी की जिसे आस्तर ने तैयार किया था।

## 7

?????? ?? ????? ?? ?????

1 तब बादशाह और हामान आए कि आस्तर मलिका के साथ खाएँ — पिएँ। 2 और बादशाह ने दूसरे दिन मेहमान नवाज़ी पर मयनौशी के वक्त आस्तर से फिर पूछा, “आस्तर मलिका, तेरा क्या सवाल है? वह मन्ज़ूर होगा। और तेरी क्या दरखास्त है? आधी बादशाहत तक वह पूरी की जाएगी।” 3 आस्तर मलिका ने जवाब दिया, “ऐ बादशाह, अगर मैं तेरी नज़र में मक़बूल हूँ और बादशाह को मंज़ूर हो, तो मेरे सवाल पर मेरी जान बख़्शी हो और मेरी दरखास्त पर मेरी क़ौम मुझे मिले। 4 क्योंकि मैं और मेरे लोग हलाक और क़त्ल किए जाने, और नेस्त — ओ — नाबूद होने को बेच दिए गए हैं। अगर हम लोग गुलाम और लौंडियाँ बनने के लिए बेच डाले जाते तो मैं चुप रहती, अगरचे उस दुश्मन को बादशाह के नुक़सान का मु'आवज़ा देने की ताक़त न होती।” 5 तब अख़सूयरस बादशाह ने आस्तर मलिका से कहा “वह कौन है और कहाँ है जिसने अपने दिल में ऐसा ख़्याल करने की हिम्मत की?” 6 आस्तर ने कहा, वह मुख़ालिफ़ और वह दुश्मन, यही ख़बीस हामान है! “तब हामान बादशाह और मलिका के सामने परेशान हुआ। 7 और बादशाह गुस्सा होकर मयनौशी से उठा, और महल के बाग़ में चला गया; और हामान आस्तर मलिका से अपनी जान बख़्शी की दरखास्त करने को उठ खड़ा हुआ, क्योंकि उसने देखा कि बादशाह ने मेरे खिलाफ़ बदी की ठान ली है। 8 और बादशाह महल के बाग़ से लौटकर मयनौशी की जगह आया, और हामान उस तख़्त के ऊपर जिस पर आस्तर बैठी थी पड़ा था। तब बादशाह ने कहा, क्या यह घर ही में मेरे सामने मलिका पर ज़बर करना चाहता है?” इस बात का बादशाह के मुँह से निकलना था कि उन्होंने हामान का मुँह ढाँक दिया। 9 फिर उन ख्वाजासराओं में से जो ख़िदमत करते थे, एक ख्वाजासरा ख़रबूनाह ने दरखास्त की, “हुज़ुर! इसके अलावा हामान के घर में वह पचास हाथ ऊँची सूली खड़ी है, जिसको हामान ने मर्दकै के लिए तैयार किया जिसने बादशाह के फ़ाइदे की बात बताई।” बादशाह ने फ़रमाया, “उसे उस पर टाँग दो।” 10 तब उन्होंने हामान को उसी सूली पर, जो उसने मर्दकै के लिए तैयार की थी टाँग दिया। तब बादशाह का गुस्सा ठंडा हुआ।

## 8

?????????? ?? ??? ?????? ?? ????? ?????  
 ????? ?????

1 उसी दिन अख़सूयरस बादशाह ने यहूदियों के दुश्मन हामान का घर आस्तर मलिका को बख़्शा। और मर्दकै बादशाह के सामने आया, क्योंकि आस्तर ने बता दिया था कि उसका उससे क्या रिश्ता था। 2 और बादशाह ने अपनी अँगूठी जो उसने हामान से ले ली थी, उतार कर मर्दकै को दी। और आस्तर ने मर्दकै को हामान के घर पर मुख़्तार बना दिया। 3 और आस्तर ने फिर बादशाह के सामने दरखास्त की और उसके क़दमों पर गिरी और आसू बहा बहाकर उसकी मिन्नत की कि हामान अजाजी की बदख़्वाही और साज़िश को, जो उसने यहूदियों के बरख़िलाफ़ की थी बातिल कर दे। 4 तब बादशाह ने आस्तर की तरफ़ सुनहली लाठी बढ़ाई, फिर आस्तर बादशाह के सामने उठ खड़ी हुई 5 और कहने लगी, “अगर बादशाह को मन्ज़ूर हो और मैं उसकी नज़र में मक़बूल हूँ, और यह बात बादशाह को मुनासिब मा'लूम हो और मैं उसकी निगाह में प्यारी हूँ, तो उन फ़रमानों को रद करने को लिखा जाए जिनकी अजाजी हम्मदाता के बेटे हामान ने, उन सब यहूदियों को हलाक करने के लिए जो बादशाह के सब सूबों में बसते हैं, पसन्द किया था। 6 क्योंकि मैं उस बला को जो मेरी क़ौम पर नाज़िल होगी, क्योंकर देख सकती हूँ? या कैसे मैं अपने रिश्तेदारों की हलाकत देख सकती हूँ?” 7 तब अख़सूयरस बादशाह ने आस्तर मलिका और मर्दकै यहूदी से कहा कि “देखो, मैंने हामान का घर आस्तर को बख़्शा है, और उसे उन्होंने सूली पर टाँग दिया, इसलिए कि उसने यहूदियों पर हाथ चलाया। 8 तुम भी बादशाह के नाम से यहूदियों को जैसा चाहते हो लिखो, और उस पर बादशाह की अँगूठी से मुहर करो, क्योंकि जो लिखाई बादशाह के नाम से लिखी जाती है, उस पर बादशाह की अँगूठी से मुहर की जाती है, उसे कोई रद नहीं कर सकता।” 9 तब उसी वक्त तीसरे महीने, या'नी सैवान महीने की तेइसवीं तारीख़ को, बादशाह के मुन्शी तलब किए गए और जो कुछ मर्दकै ने हिन्दोस्तान से कूश तक एक सौ सताईस सूबों के यहूदियों और नवाबों और हाकिमों और सूबों के अमीरों को हुक्म दिया, वह सब हर सूबे को उसी के हुरूफ़ और हर क़ौम को उसी की ज़बान, और यहूदियों को उनके हुरूफ़ और उनकी ज़बान के मुताबिक़ लिखा गया। 10 और उसने अख़सूयरस बादशाह के नाम से ख़त लिखे, और बादशाह की अँगूठी से उन पर मुहर की, और

उनको सवार कासिदों के हाथ खाना किया, जो अच्छी नसल के तेज़ रफ़्तार शाही घोड़ों पर सवार थे। <sup>11</sup> इनमें बादशाह ने यहूदियों को जो हर शहर में थे, इजाज़त दी कि इकट्ठे होकर अपनी जान बचाने के लिए मुक़ाबिले पर अड़ जाएँ, और उस क्रौम और उस सूबे की सारी फ़ौज को जो उन पर और उनके छोटे बच्चों और बीवियों पर हमलावर हो हलाक और क़त्ल करें और बरबाद कर दें, और उनका माल लूट लें। <sup>12</sup> यह अख़्सूयरस बादशाह के सब सूबों में बारहवें महीने, या'नी अदार महीने की तेरहवीं तारीख़ की एक ही दिन में हो। <sup>13</sup> इस तहरीर की एक एक नक़ल सब क्रौमों के लिए जारी की गई कि इस फ़रमान का ऐलान हर सूबे में किया जाए, ताकि यहूदी इस दिन अपने दुश्मनों से अपना इन्तक़ाम लेने को तैयार रहें। <sup>14</sup> इसलिए वह कासिद जो तेज़ रफ़्तार शाही घोड़ों पर सवार थे खाना हुए, और बादशाह के हुक्म की वजह से तेज़ निकले चले गए, और वह फ़रमान सोसन के महल में दिया गया। <sup>15</sup> और मर्दकै बादशाह के सामने से आसमानी और सफ़ेद रंग का शाहाना लिबास और सोने का एक बड़ा ताज, और कतानी और अर्ग़वानी चोगा पहने निकला और सोसन शहर ने ना'रा मारा और खुशी मनाई। <sup>16</sup> यहूदियों को रौनक़ और खुशी और शादमानी और इज्ज़त हासिल हुई। <sup>17</sup> और हर सूबे और हर शहर में जहाँ कहीं बादशाह का हुक्म और उसका फ़रमान पहुँचा, यहूदियों को ख़ुरमी और शादमानी और ईद और खुशी का दिन नसीब हुआ; और उस मुल्क के लोगों में से बहुतेरे यहूदी हो गए, क्योंकि यहूदियों का ख़ौफ़ उन पर छा गया था।

## 9

?????????? ??

<sup>1</sup> अब बारहवें महीने या'नी अदार महीने की तेरहवीं तारीख़ को, जब बादशाह के हुक्म और फ़रमान पर 'अमल करने का वक़्त नज़दीक़ आया, और उस दिन यहूदियों के दुश्मनों को उन पर ग़ालिब होने की उम्मीद थी, हालाँकि इसके अलावा यह हुआ कि यहूदियों ने अपने नफ़रत करनेवालों पर ग़लबा पाया; <sup>2</sup> तो अख़्सूयरस बादशाह के सब सूबों के यहूदी अपने अपने शहर में इकट्ठे हुए कि उन पर जो उनका नुक़सान चाहते थे, हाथ चलाएँ और कोई आदमी उनका सामना न कर सका, क्योंकि उनका ख़ौफ़ सब क्रौमों पर छा गया था। <sup>3</sup> और सूबों के सब अमीरों और नवाबों और हाकिमों और बादशाह के कार गुज़ारों ने यहूदियों की मदद की, इसलिए कि मर्दकै का रौब उन पर छा गया था। <sup>4</sup> क्योंकि

मर्दकै शाही महल में खास 'ओहदे पर था, और सब सूबों में उसकी शोहरत फैल गई थी, इसलिए कि यह आदमी या'नी मर्दकै बढ़ता ही चला गया। <sup>5</sup> और यहूदियों ने अपने सब दुश्मनों को तलवार की धार से काट डाला और क़त्ल और हलाक़ किया, और अपने नफ़रत करने वालों से जो चाहा किया। <sup>6</sup> और सोसन के महल में यहूदियों ने पाँच सौ आदमियों को क़त्ल और हलाक़ किया, <sup>7</sup> और परशन्दाता और दलफ़ून और असपाता, <sup>8</sup> और पोरता और अदलियाह और अरीदता, <sup>9</sup> और परमशता और अरीसै और अरीदै और वैज़ाता, <sup>10</sup> या'नी यहूदियों के दुश्मन हामान — बिन — हम्मदाता के दसों बेटों को उन्होंने क़त्ल किया, पर लूट पर उन्होंने हाथ न बढ़ाया। <sup>11</sup> उसी दिन उन लोगों का शुमार जो सोसन के महल में क़त्ल हुए बादशाह के सामने पहुँचाया गया। <sup>12</sup> और बादशाह ने आस्तर मलिका से कहा, “यहूदियों ने सोसन के महल ही में पाँच सौ आदमियों और हामान के दसों बेटों को क़त्ल और हलाक़ किया है, तो बादशाह के बाक़ी सूबों में उन्होंने क्या कुछ न किया होगा! अब तेरा क्या सवाल है? वह मंज़ूर होगा, और तेरी और क्या दरख़्वास्त है? वह पूरी की जाएगी।” <sup>13</sup> आस्तर ने कहा, “अगर बादशाह को मंज़ूर हो तो उन यहूदियों को जो सोसन में हैं इजाज़त मिले कि आज के फ़रमान के मुताबिक़ कल भी करें, और हामान के दसों बेटे सूली पर चढ़ाए जाएँ।” <sup>14</sup> इसलिए बादशाह ने हुक्म दिया, “ऐसा ही किया जाए।” और सोसन में उस फ़रमान का ऐलान किया गया; और हामान के दसों बेटों को उन्होंने टाँग दिया। <sup>15</sup> और वह यहूदी जो सोसन में रहते थे, अदार महीने की चौदहवीं तारीख़ को इकट्ठे हुए और उन्होंने सोसन में तीन सौ आदमियों को क़त्ल किया, लेकिन लूट के माल को हाथ न लगाया। <sup>16</sup> बाक़ी यहूदी जो बादशाह के सूबों में रहते थे, इकट्ठे होकर अपनी अपनी जान बचाने के लिए मुक़ाबिले को अड़ गए, और अपने दुश्मनों से आराम पाया और अपने नफ़रत करनेवालों में से पच्छत्तर हज़ार को क़त्ल किया, लेकिन लूट पर उन्होंने हाथ न बढ़ाया। <sup>17</sup> यह अदार महीने की तेरहवीं तारीख़ थी, और उसी की चौदहवीं तारीख़ को उन्होंने आराम किया, और उसे मेहमान नवाज़ी और खुशी का दिन ठहराया। <sup>18</sup> लेकिन वह यहूदी जो सोसन में थे, उसकी तेरहवीं और चौदहवीं तारीख़ को इकट्ठे हुए, और उसकी पन्द्रहवीं तारीख़ को आराम किया और उसे मेहमान नवाज़ी और खुशी का दिन ठहराया। <sup>19</sup> इसलिए देहाती यहूदी जो बिना दीवार बस्तियों में रहते हैं, अदार महीने की चौदहवीं तारीख़ की शादमानी

और मेहमान नवाज़ी का और खुशी का और एक दूसरे को तोहफ़े भेजने का दिन मानते हैं। <sup>20</sup> मर्दकै ने यह सब अहवाल लिखकर, उन यहूदियों को जो अख्सूयरस बादशाह के सब सूबों में क्या नज़दीक क्या दूर रहते थे ख़त भेजे, <sup>21</sup> ताकि उनको ताकीद करे कि वह अदर महीने की चौदहवीं तारीख़ को, और उसी की पन्द्रहवीं को हर साल, <sup>22</sup> ऐसे दिनों की तरह मानें जिनमें यहूदियों को अपने दुश्मनों से चैन मिला; और वह महीने उनके लिए ग़म से शादमानी में और मातम से खुशी के दिन में बदल गए; इसलिए वह उनको मेहमान नवाज़ी और खुशी और आपस में तोहफ़े भेजने और गरीबों को ख़ैरात देने के दिन ठहराएँ। <sup>23</sup> यहूदियों ने जैसा शुरू किया था और जैसा मर्दकै ने उनको लिखा था, वैसा ही करने का ज़िम्मा लिया। <sup>24</sup> क्योंकि अजाजी हम्मदाता के बेटे हामान, सब यहूदियों के दुश्मन, ने यहूदियों के खिलाफ़ उनको हलाक करने की तदबीर की थी, और उसने पूर या'नी पर्ची डाला था कि उनको मिटाये और हलाक करे। <sup>25</sup> तब जब वह मु'आमिला बादशाह के सामने पेश हुआ, तो उसने ख़तों के ज़रिए से हुक्म किया कि वह बुरी तजवीज़, जो उसने यहूदियों के बरख़िलाफ़ की थी उल्टी उस ही के सिर पर पड़े, और वह और उसके बेटे सूली पर चढ़ाए जाएँ। <sup>26</sup> इसलिए उन्होंने उन दिनों को पूर के नाम की वजह से पूरीम कहा। इसलिए इस ख़त की सब बातों की वजह से, और जो कुछ उन्होंने इस मु'आमिले में खुद देखा था और जो उनपर गुज़रा था उसकी वजह से भी <sup>27</sup> यहूदियों ने ठहरा दिया, और अपने ऊपर और अपनी नस्ल के लिए और उन सभी के लिए जो उनके साथ मिल गए थे, यह ज़िम्मा लिया ताकि बात अटल हो जाए कि वह उस ख़त की तहरीर के मुताबिक़ हर साल उन दोनों दिनों को मुक़र्ररा वक़्त पर मानेंगे। <sup>28</sup> और यह दिन नसल — दर — नसल हर ख़ानदान और सूबे और शहर में याद रखें और माने जाएँगे, और पूरीम के दिन यहूदियों में कभी मौक़फ़ न होंगे, न उनकी यादगार उनकी नसल से जाती रहेगी। <sup>29</sup> और अबीख़ैल की बेटी आस्तेर मलिका, और यहूदी मर्दकै ने पूरीम के बाब के ख़त पर ज़ोर देने के लिए पूरे इस्तियार से लिखा। <sup>30</sup> और उसने सलामती और सच्चाई की बातें लिख कर अख्सूयरस की बादशाहत के एक सौ सताईस सूबों में सब यहूदियों के पास ख़त भेजे <sup>31</sup> ताकि पूरीम के इन दिनों को उनके मुक़र्ररा वक़्त के लिए बरक़रार करे जैसा यहूदी मर्दकै और आस्तेर मलिका ने उनको हुक्म किया था; और जैसा उन्होंने

अपने और अपनी नसल के लिए रोज़ा रखने और मातम करने के बारे में ठहराया था। <sup>32</sup> और आस्तेर के हुक्म से पूरीम की इन रस्मों की तसदीक़ हुई और यह किताब में लिख लिया गया।

## 10

?????????? ?? ??????? ?? '??????

<sup>1</sup> और अख्सूयरस बादशाह ने ज़मीन पर और समुन्दर के जज़ीरों पर मेहसूल मुक़र्रर किया। <sup>2</sup> और उसकी ताक़त और हुक्मत के सब काम, और मर्दकै की 'अज़मत का तफ़सीली हाल जहाँ तक बादशाह ने उसे तरक्की दी थी, क्या वह मादै और फ़ारस के बादशाहों की तवारीख़ की किताब में लिखे नहीं? <sup>3</sup> क्योंकि यहूदी मर्दकै अख्सूयरस बादशाह से दूसरे दर्जे पर था, और सब यहूदियों में ख़ास 'ओहदे और अपने भाइयों की सारी जमा'अत में मक़बूल था, और अपनी क़ौम का ख़ैर ख़्वाह रहा, और अपनी सारी औलाद से सलामती की बातें करता था।



## अय्यूब

?????????? ?? ?????

हकीकत में कोई नहीं जानता कि अय्यूब की किताब का मुसन्फ़ कौन है किसी मुसन्निफ़ की पहचान नहीं हुई है गालिलन इस के दो मुसन्निफ़ हो सकते हैं हो सकता है कि ययूब की किताब बाइबिल की सब से पुरानी किताब हो अय्यूब एकदीनदार शख्स था जिस ने अपने जिस्म में शादी और न क्राबिल — ए — बर्दाश्त अलमिया का तजुर्बा किया और उसके दोस्त लोग ये जानने की कोशिश करते थे कि अय्यूब ने इस तरह की मुसीबतों और आफतों का सामना क्यों किया? इस किताब की खास शख्सियतें हैं: अय्यूब, एलिफ़ज़ तीमानी, बिल्दद सूक्री, नामाती जूफ़र और एलीहू बुज़ीत थे।

????? ?????? ?? ??????? ?? ???

ना — मालूम किताब के ज्यादा तर हिस्से इशारा करते हैं कि जिलावतनी के कई असें बाद या जिलावतनी के फ़ौरन बाद ये किताब लिखी गई है और एलीहू के हिस्से और बाद में लिखे गए हैं।

?????? ?????????????? ?????? ?????? 1

क़दीम यहूदी और मुस्तक़बिल के तमाम क़ारिज़न यह भी एत्काद किया जाता है कि अय्यूब की किताब के असली नाज़रीन व सामईन गुलामशुदा बनी इस्राईल थे — यह भी एत्काद किया जाता है कि मूसा ने इरादा किया था कि उन्हें कुछ तसल्ली की बातें पेश करे क्योंकि उन्होंने मिस्रियों के मातहत रहकर दुःख उठाया था।

????? ????????

जेल की बातें अय्यूब की किताब को समझने में मदद करेंगी: शैतान माली और जिस्मानी बाबादी, नहीं ला सकता, शैतान जो कर सकता है और जो नहीं कर सकता उस पर खुदा कुदरत रखता है दुनिया में जितनी भी दुःख मुसीबतें बनी इंसान पर आती हैं उन के लिए क्यों? के सवाल को समझना इंसानी क्राबिलियत से बाहर है — शारीर किसी दिन अपने किए का बदला जरूर पाएगा दुःख मुसीबत हमारी जिंदगियों में कभी कभी इसलिए लाया जाता है कि हम को पाक करे, हमारा इम्तिहान ले, हमें सिखाए या हमारी जान को कुव्वत बख़शे।

???????

मुसीबतों के ज़रिए बरकतें।

**बैरूनी खाका**

1. त आरुफ़ और शैतान का हमला — 1:1-2:13

2. अय्यूब की मुसीबतों का बयान उस के तीन दोस्तों के साथ — 3:1-31:40
3. एलीहू खुदा की भलाई का एलान करता है — 32:1-37:24
4. खुदा अय्यूब को अपनी बरतरी का इन्किशाफ़ करता है — 38:1-41:34
5. खुदा अय्यूब को बहाल करता है — 42:1-17

?????????? ???????

1 ऊज़ की सर ज़मीन में अय्यूब नाम का एक शख्स था। वह शख्स कामिल और रास्तबाज़ था और खुदा से डरता और गुनाह से दूर रहता था।<sup>2</sup> उसके यहाँ सात बेटे और तीन बेटियाँ पैदा हुईं।<sup>3</sup> उसके पास सात हज़ार भेंड़े और तीन हज़ार ऊँट और पाँच सौ जोड़ी बैल और पाँच सौ गधियाँ और बहुत से नौकर चाकर थे, ऐसा कि अहल — ए — मशरिक़ में वह सबसे बड़ा आदमी था।<sup>4</sup> उसके बेटे एक दूसरे के घर जाया करते थे और हर एक अपने दिन पर मेहमान नवाज़ी करते थे, और अपने साथ खाने — पीने को अपनी तीनों बहनों को बुलवा भेजते थे।<sup>5</sup> और जब उनकी मेहमान नवाज़ी के दिन पूरे हो जाते, तो अय्यूब उन्हें बुलवाकर पाक करता और सुबह को सवेरे उठकर उन सभी की ता'दाद के मुताबिक़ सोख़्तनी कुर्बानियाँ अदा करता था, क्योंकि अय्यूब कहता था, कि “शायद मेरे बेटों ने कुछ ख़ता की हो और अपने दिल में खुदा की बुराई की हो।” अय्यूब हमेशा ऐसा ही किया करता था।<sup>6</sup> और एक दिन खुदा के बेटे आए कि खुदावन्द के सामने हाज़िर हों, और उनके बीच शैतान भी आया।<sup>7</sup> और खुदावन्द ने शैतान से पूछा, कि “तू कहाँ से आता है?” शैतान ने खुदावन्द को जवाब दिया, कि “ज़मीन पर इधर — उधर घूमता फिरता और उसमें सैर करता हुआ आया हूँ।”<sup>8</sup> खुदावन्द ने शैतान से कहा, “क्या तू ने मेरे बन्दे अय्यूब के हाल पर भी कुछ ग़ौर किया? क्योंकि ज़मीन पर उसकी तरह कामिल और रास्तबाज़ आदमी, जो खुदा से डरता, और गुनाह से दूर रहता हो, कोई नहीं।”<sup>9</sup> शैतान ने खुदावन्द को जवाब दिया, “क्या अय्यूब यूँ ही खुदा से डरता है?”<sup>10</sup> क्या तू ने उसके और उसके घर के चारों तरफ़, और जो कुछ उसका है उस सबके चारों तरफ़ बाड़ नहीं बनाई है? तू ने उसके हाथ के काम में बरकत बख़शी है, और उसके गल्ले मुल्क में बढ़ गए हैं।<sup>11</sup> लेकिन तू ज़रा अपना हाथ बढ़ा कर जो कुछ उसका है उसे छू ही दे; तो क्या वह तेरे मुँह पर तेरी बुराई न करेगा?”<sup>12</sup> खुदावन्द ने शैतान से कहा, “देख, उसका सब कुछ तेरे इस्तिथार में है, सिर्फ़ उसको

हाथ न लगाना।” तब शैतान खुदावन्द के सामने से चला गया। <sup>13</sup> और एक दिन जब उसके बेटे और बेटियाँ अपने बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मयनोशी कर रहे थे। <sup>14</sup> तो एक क्रासिद ने अय्यूब के पास आकर कहा, कि “बैल हल में जुते थे और गधे उनके पास चर रहे थे, <sup>15</sup> कि सब के लोग उन पर टूट पड़े और उन्हें ले गए, और नौकरों को हलाक किया और सिर्फ मैं ही अकेला बच निकला कि तुझे खबर दूँ।” <sup>16</sup> वह अभी यह कह ही रहा था कि एक और भी आकर कहने लगा, कि “खुदा की आग आसमान से नाज़िल हुई और भेड़ों और नौकरों को जलाकर भस्म कर दिया, और सिर्फ मैं ही अकेला बच निकला कि तुझे खबर दूँ।” <sup>17</sup> वह अभी यह कह ही रहा था कि एक और भी आकर कहने लगा, ‘कसदी तीन गोल होकर ऊँटों पर आ गिरे और उन्हें ले गए, और नौकरों को हलाक किया और सिर्फ मैं ही अकेला बच निकला कि तुझे खबर दूँ।’ <sup>18</sup> वह अभी यह कह ही रहा था कि एक और भी आकर कहने लगा, कि “तेरे बेटे बेटियाँ अपने बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मयनोशी कर रहे थे, <sup>19</sup> और देख, वीरान से एक बड़ी आँधी चली और उस घर के चारों कोनों पर ऐसे ज़ोर से टकराई कि वह उन जवानों पर गिर पड़ा, और वह मर गए और सिर्फ मैं ही अकेला बच निकला कि तुझे खबर दूँ।” <sup>20</sup> तब अय्यूब ने उठकर अपना लिबास चाक किया और सिर मुंडाया और ज़मीन पर गिरकर सिज्दा किया <sup>21</sup> और कहा, “नंगा मैं अपनी माँ के पेट से निकला, और नंगा ही वापस जाऊँगा। खुदावन्द ने दिया और खुदावन्द ने ले लिया। खुदावन्द का नाम मुबारक हो।” <sup>22</sup> इन सब बातों में अय्यूब ने न तो गुनाह किया और न खुदा पर ग़लत काम का 'ऐब' लगाया।

## 2

222222 22 222222 222

<sup>1</sup> फिर एक दिन खुदा के बेटे आए कि खुदावन्द के सामने हाज़िर हों, और शैतान भी उनके बीच आया कि खुदावन्द के आगे हाज़िर हो। <sup>2</sup> और खुदावन्द ने शैतान से पूछा, कि “तू कहाँ से आता है?” शैतान ने खुदावन्द को जवाब दिया, कि “ज़मीन पर इधर — उधर घूमता फिरता और उसमें सैर करता हुआ आया हूँ।” <sup>3</sup> खुदावन्द ने शैतान से कहा, “क्या तू ने मेरे बन्दे अय्यूब के हाल पर भी कुछ गौर किया; क्योंकि ज़मीन पर उसकी तरह कामिल और रास्तबाज़ आदमी जो खुदा से डरता और गुनाह से दूर रहता हो, कोई नहीं और गो तू ने मुझको उभारा कि बे वजह उसे हलाक करूँ, तोभी वह अपनी रास्तबाज़ी पर काईम है?” <sup>4</sup> शैतान

ने खुदावन्द को जवाब दिया, “कि 'खाल के बदले खाल, बल्कि इंसान अपना सारा माल अपनी जान के लिए दे डालेगा।’ <sup>5</sup> अब सिर्फ अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डी और उसके गोश्त को छू दे, तो वह तेरे मुँह पर तेरी बुराई करेगा।” <sup>6</sup> खुदावन्द ने शैतान से कहा, कि “देख, वह तेरे इस्त्रियार में है, सिर्फ उसकी जान महफूज़ रहे।” <sup>7</sup> तब शैतान खुदावन्द के सामने से चला गया और अय्यूब को तलवे से चाँद तक दर्दनाक फोड़ों से दुख दिया। <sup>8</sup> और वह अपने को खुजलाने के लिए एक ठीकरा लेकर राख पर बैठ गया। <sup>9</sup> तब उसकी बीवी उससे कहने लगी, कि “क्या तू अब भी अपनी रास्ती पर काईम रहेगा? खुदा की बुराई कर और मर जा।” <sup>10</sup> लेकिन उसने उससे कहा, कि “तू नादान 'औरतों की जैसी बातें करती है; क्या हम खुदा के हाथ से सुख पाएँ और दुख न पाएँ?” इन सब बातों में अय्यूब ने अपने लबों से ख़ता न की। <sup>11</sup> जब अय्यूब के तीन दोस्तों, तेमानी इलिफ़ज़ और सूखी बिलदद और नामाती ज़फ़र, ने उस सारी आफ़त का हाल जो उस पर आई थीं सुना, तो वह अपनी — अपनी जगह से चले और उन्होंने आपस में 'अहद किया कि जाकर उसके साथ रोएँ और उसे तसल्ली दें।’ <sup>12</sup> और जब उन्होंने दूर से निगाह की और उसे न पहचाना, तो वह चिल्ला — चिल्ला कर रोने लगे और हर एक ने अपना लिबास चाक किया और अपने सिर के ऊपर आसमान की तरफ़ धूल उड़ाई। <sup>13</sup> और वह सात दिन और सात रात उसके साथ ज़मीन पर बेटे रहे और किसी ने उससे एक बात न कही क्योंकि उन्होंने देखा कि उसका ग़म बहुत बड़ा।

## 3

222222 22 22222 22222

<sup>1</sup> इसके बाद अय्यूब ने अपना मुँह खोल कर अपने पैदाइश के दिन पर ला'नत की।

<sup>2</sup> और अय्यूब कहने लगा:

<sup>3</sup> “मिट जाए वह दिन जिसमें मैं पैदा हुआ, और वह रात भी जिसमें कहा गया, 'कि देखो, बेटा हुआ।’”

<sup>4</sup> वह दिन अँधेरा हो जाए।

खुदा ऊपर से उसका लिहाज़ न करे, और न उस पर रोशनी पड़े।

<sup>5</sup> अँधेरा और मौत का साया उस पर क़ाबिज़ हो। बदली उस पर छाई रहे

और दिन को तारीक कर देनेवाली चीज़ें उसे दहशत ज़दा करें।

<sup>6</sup> गहरी तारीकी उस रात को दबोच ले।

वह साल के दिनों के बीच खुशी न करने पाए, और न महीनों की ता'दाद में आए।

7 वह रात बाँझ हो जाए;  
 उसमें खुशी की कोई आवाज़ न आए।  
 8 दिन पर ला'नत करने वाले उस पर ला'नत करें  
 और वह भी जो अज़दह "को छेड़ने को तैयार हैं।  
 9 उसकी शाम के तारे तारीक हो जाएँ,  
 वह रोशनी की राह देखे, जबकि वह है नहीं,  
 और न वह सुबह की पलकों को देखे।  
 10 क्योंकि उसने मेरी माँ के रहम के दरवाज़ों को बंद न  
 किया  
 और दुख को मेरी आँखों से छिपा न रखवा।  
 11 मैं रहम ही में क्यों न मर गया?  
 मैंने पेट से निकलते ही जान क्यों न दे दी?  
 12 मुझे कुबूल करने को घुटने क्यों थे,  
 और छातियाँ कि मैं उनसे पियूँ?  
 13 नहीं तो इस वक़्त मैं पड़ा होता, और बेखबर रहता,  
 मैं सो जाता। तब मुझे आराम मिलता।  
 14 ज़मीन के बादशाहों और सलाहकारों के साथ,  
 जिन्होंने अपने लिए मक़बरे बनाए।  
 15 या उन शाहज़ादों के साथ होता, जिनके पास सोना  
 था।  
 जिन्होंने अपने घर चाँदी से भर लिए थे;  
 16 या पोशीदा गिरते हमल की तरह,  
 मैं वजूद में न आता या उन बच्चों की तरह जिन्होंने  
 रोशनी ही न देखी।  
 17 वहाँ शरीर फ़साद से बाज़ आते हैं,  
 और थके माँदे राहत पाते हैं।  
 18 वहाँ कैदी मिलकर आराम करते हैं,  
 और दरोगा की आवाज़ सुनने में नहीं आती।  
 19 छोटे और बड़े दोनों वहीं हैं,  
 और नौकर अपने मालिक से आज्ञाद है।"  
 20 "दुखियारे को रोशनी,  
 और तल्लख़जान को ज़िन्दगी क्यों मिलती है?  
 21 जो मौत की राह देखते हैं लेकिन वह आती नहीं,  
 और छिपे खज़ाने से ज्यादा उसकी तलाश करते हैं।  
 22 जो निहायत शादमान और खुश होते हैं, जब क़ब्र को  
 पा लेते हैं।  
 23 ऐसे आदमी को रोशनी क्यों मिलती है,  
 जिसकी राह छिपी है,  
 और जिसे खुदा ने हर तरफ़ से बंद कर दिया है?  
 24 क्योंकि मेरे खाने की जगह मेरी आँहें हैं,  
 और मेरा कराहना पानी की तरह जारी है।  
 25 क्योंकि जिस बात से मैं डरता हूँ, वही मुझ पर आती  
 है,  
 और जिस बात का मुझे खौफ़ होता है, वही मुझ पर  
 गुज़रती है।

26 क्योंकि मुझे न चैन है, न आराम है, न मुझे कल पड़ती  
 है;  
 बल्कि मुसीबत ही आती है।"

#### 4

???????? ?? ??????? ?? ???????

1 तब तेमानी इलिफ़ज़ कहने लगा,  
 2 अगर कोई तुझ से बात चीत करने की कोशिश करे तो  
 क्या तू अफ़सोस करेगा?,  
 लेकिन बोले बग़ैर कौन रह सकता है?  
 3 देख, तू ने बहुतों को सिखाया,  
 और कमज़ोर हाथों को मज़बूत किया।  
 4 तेरी बातों ने गिरते हुए को संभाला,  
 और तू ने लड़खड़ाते घुटनों को मज़बूत किया।  
 5 लेकिन अब तो तुझी पर आ पड़ी और तू कमज़ोर हुआ  
 जाता है।  
 उसने तुझे छुआ और तू घबरा उठा।  
 6 क्या तेरे खुदा का डर ही तेरा भरोसा नहीं?  
 क्या तेरी राहों की रास्ती तेरी उम्मीद नहीं?  
 7 क्या तुझे याद है कि कभी कोई मा'सूम भी हलाक हुआ  
 है?  
 या कहीं रास्तबाज़ भी काट डाले गए?  
 8 मेरे देखने में तो जो गुनाह को जोतते  
 और दुख बोते हैं, वही उसको काटते हैं।  
 9 वह खुदा के दम से हलाक होते,  
 और उसके गुस्से के झोंके से भस्म होते हैं।  
 10 बबर की गरज़ और खूँख्वार बबर की दहाड़,  
 और बबर के बच्चों के दाँत, यह सब तोड़े जाते हैं।  
 11 शिकार न पाने से बूढ़ा बबर हलाक होता,  
 और शेरनी के बच्चे तितर — बितर हो जाते हैं।  
 12 एक बात चुपके से मेरे पास पहुँचाई गई,  
 उसकी भनक मेरे कान में पड़ी।  
 13 रात के ख़्वाबों के ख़्यालों के बीच,  
 जब लोगों को गहरी नींद आती है।  
 14 मुझे खौफ़ और कपकपी ने ऐसा पकड़ा,  
 कि मेरी सब हड्डियों को हिला डाला।  
 15 तब एक रूह मेरे सामने से गुज़री,  
 और मेरे रोंगटे खड़े हो गए।  
 16 वह चुपचाप खड़ी हो गई लेकिन मैं उसकी शक्ति  
 पहचान न सका;  
 एक सूरत मेरी आँखों के सामने थी और सन्नाटा था।  
 फिर मैंने एक आवाज़ सुनी:  
 17 कि क्या फ़ानी इंसान खुदा से ज्यादा होगा?  
 क्या आदमी अपने खालिक से ज्यादा पाक ठहरेगा?

18 देख, उसे अपने खादिमों का 'ऐतबार नहीं,  
और वह अपने फ़रिश्तों पर हिमाकृत को 'आइद करता है।

19 फिर भला उनकी क्या हकीकत है, जो मिट्टी के मकानों में रहते हैं।

जिनकी बुन्नियाद खाक में है,

और जो पतंगे से भी जल्दी पिस जाते हैं।

20 वह सुबह से शाम तक हलाक होते हैं,

वह हमेशा के लिए फ़ना हो जाते हैं,

और कोई उनका खयाल भी नहीं करता।

21 क्या उनके खेमे की डोरी उनके अन्दर ही अन्दर तोड़ी नहीं जाती?

वह मरते हैं और यह भी बग़ैर दानाई के।

## 5

???????? ?? ????? ?? ????? ???? ?

1 ज़रा पुकार क्या कोई है जो तुझे जवाब देगा?

और मुक़द्दसों में से तू किसकी तरफ़ फ़िरेगा?

2 क्योंकि कुढ़ना बेवकूफ़ को मार डालता है,

और जलन बेवकूफ़ की जान ले लेती है।

3 मैंने बेवकूफ़ को जड़ पकड़ते देखा है,

लेकिन बराबर उसके घर पर ला'नत की।

4 उसके बाल — बच्चे सलामती से दूर हैं;

वह फाटक ही पर कुचले जाते हैं,

और कोई नहीं जो उन्हें छुड़ाए।

5 भूका उसकी फ़सल को खाता है,

बल्कि उसे काँटों में से भी निकाल लेता है।

और प्यासा उसके माल को निगल जाता है।

6 क्योंकि मुसीबत मिट्टी में से नहीं उगती।

न दुख ज़मीन में से निकलता है।

7 बस जैसे चिंगारियाँ ऊपर ही को उड़ती हैं,

वैसे ही इंसान दुख के लिए पैदा हुआ है।

8 लेकिन मैं तो खुदा ही का तालिब रहूँगा,

और अपना मु'आमिला खुदा ही पर छोड़ूँगा।

9 जो ऐसे बड़े बड़े काम जो बयान नहीं हो सकते,

और बेशुमार 'अजीब काम करता है।

10 वही ज़मीन पर पानी बरसाता,

और खेतों में पानी भेजता है।

11 इसी तरह वह हलीमों को ऊँची जगह पर बिठाता है,

और मातम करनेवाले सलामती की सरफ़राज़ी पाते हैं।

12 वह 'अय्यारों की तदबीरों को बातिल कर देता है।

यहाँ तक कि उनके हाथ उनके मक़सद को पूरा नहीं कर सकते।

13 वह होशियारों की उन ही की चालाकियों में फसाता है,

और टेढ़े लोगों की मशवरेत जल्द जाती रहती है।

14 उन्हें दिन दहाड़े अँधेरे से पाला पड़ता है,

और वह दोपहर के वक़्त ऐसे टटोलते फिरते हैं जैसे रात को।

15 लेकिन मुफ़लिस को उनके मुँह की तलवार,

और ज़बरदस्त के हाथ से वह बचालेता है।

16 जो ग़रीब को उम्मीद रहती है,

और बदकारी अपना मुँह बंद कर लेती है।

17 देख, वह आदमी जिसे खुदा तम्बीह देता है खुश किस्मत है।

इसलिए कादिर — ए — मुतलक की तादीब को बेकार न जान।

18 क्योंकि वही मजरूह करता और पट्टी बाँधता है।

वही ज़ख्मी करता है और उसी के हाथ शिफ़ा देते हैं।

19 वह तुझे छः मुसीबतों से छुड़ाएगा,

बल्कि सात में भी कोई आफ़त तुझे छूने न पाएगी।

20 काल में वह तुझ को मौत से बचाएगा,

और लड़ाई में तलवार की धार से।

21 तू ज़बान के कोड़े से महफूज़ "रखा जाएगा,

और जब हलाकत आएगी तो तुझे डर नहीं लगेगा।

22 तू हलाकत और खुशक साली पर हँसेगा,

और ज़मीन के दरिन्दों से तुझे कुछ ख़ौफ़ न होगा।

23 मैदान के पत्थरों के साथ तेरा एका होगा,

और जंगली जानवर तुझ से मेल रखेंगे।

24 और तू जानेगा कि तेरा खेमा महफूज़ है,

और तू अपने घर में जाएगा और कोई चीज़ ग़ाएब न पाएगा।

25 तुझे यह भी मा'लूम होगा कि तेरी नसल बड़ी,

और तेरी औलाद ज़मीन की घास की तरह बढ़ेगी।

26 तू पूरी उम्र में अपनी क़बर में जाएगा,

जैसे अनाज के पूले अपने वक़्त पर जमा' किए जाते हैं।

27 देख, हम ने इसकी तहकीक की और यह बात यूँ ही है।

इसे सुन ले और अपने फ़ायदे के लिए इसे याद रख।"

## 6

???????? ?? ?????? ?????: ????????? ?

?????

1 तब अय्यूब ने जवाब दिया

2 काश कि मेरा कुढ़ना तोला जाता,

और मेरी सारी मुसीबत तराजू में रखी जाती!

3 तो वह समन्दर की रेत से भी भारी होती;

इसी लिए मेरी बातें घबराहट की हैं।



4 क्यूँकि क्रादिर — ए — मुतलक के तीर मेरे अन्दर लगे हुए हैं;

मेरी रूह उन ही के ज़हर को पी रही हैं  
खुदा की डरावनी बातें मेरे खिलाफ़ सफ़ बाँधे हुए हैं।

5 क्या जंगली गधा उस वक़्त भी चिल्लाता है जब उसे घास मिल जाती है?

या क्या बैल चारा पाकर डकारता है?

6 क्या फीकी चीज़ बे नमक खायी जा सकता है?

या क्या अंडे की सफ़ेदी में कोई मज़ा है?

7 मेरी रूह को उनके छूने से भी इंकार है,  
वह मेरे लिए मकरूह गिज़ा हैं।

8 काश कि मेरी दरख्वास्त मंज़ूर होती,  
और खुदा मुझे वह चीज़ बख़्शता जिसकी मुझे आरज़ू है।

9 या 'नी खुदा को यही मंज़ूर होता कि मुझे कुचल डाले,  
और अपना हाथ चलाकर मुझे काट डाले।

10 तो मुझे तसल्ली होती,  
बल्कि मैं उस अटल दर्द में भी शादमान रहता;  
क्यूँकि मैंने उस पाक बातों का इन्कार नहीं किया।

11 मेरी ताक़त ही क्या है जो मैं ठहरा रहूँ?  
और मेरा अन्जाम ही क्या है जो मैं सबर करूँ?

12 क्या मेरी ताक़त पत्थरों की ताक़त है?  
या मेरा जिस्म पीतल का है?

13 क्या बात यही नहीं कि मैं लाचार हूँ,  
और काम करने की ताक़त मुझ से जाती रही है?

14 उस पर जो कमज़ोर होने को है उसके दोस्त की तरफ़  
से मेहरबानी होनी चाहिए,  
बल्कि उस पर भी जो क्रादिर — ए — मुतलक का ख़ौफ़  
छोड़ देता है।

15 मेरे भाइयों ने नाले की तरह दगा की,  
उन वादियों के नालों की तरह जो सूख जाते हैं।

16 जो जड़ की वजह से काले हैं,  
और जिनमें बर्फ़ छिपी है।

17 जिस वक़्त वह गर्म होते हैं तो गायब हो जाते हैं,  
और जब गर्मी पड़ती है तो अपनी  
जगह से उड़ जाते हैं।

18 क्राफ़िले अपने रास्ते से मुड़ जाते हैं,  
और वीराने में जाकर हलाक हो जाते हैं।

19 तेमा के क्राफ़िले देखते रहे,  
सबा के कारवाँ उनके इन्तिज़ार में रहे।

20 वह शर्मिन्दा हुए क्यूँकि उन्होंने उम्मीद की थी,  
वह वहाँ आए और पशेमान हुए।

21 इसलिए तुम्हारी भी कोई हकीक़त नहीं;

तुम डरावनी चीज़ देख कर डर जाते हो।

22 क्या मैंने कहा, 'कुछ मुझे दो?

'या 'अपने माल में से मेरे लिए रिश्वत दो?'

23 या 'मुख़ालिफ़ के हाथ से मुझे बचाओ?

'या' ज़ालिमों के हाथ से मुझे छुड़ाओ?'

24 मुझे समझाओ और मैं ख़ामोश रहूँगा,  
और मुझे समझाओ कि मैं किस बात में चूका।

25 रास्ती की बातों में कितना असर होता है,  
बल्कि तुम्हारी बहस से क्या फ़ायदा होता है।

26 क्या तुम इस ख़्याल में हो कि लफ़्ज़ों की तक्रार'  
करो?

इसलिए कि मायूस की बातें हवा की तरह होती हैं।

27 हाँ, तुम तो यतीमों पर कुर'आ डालने वाले,  
और अपने दोस्त को तिज़ारत का माल बनाने वाले हो।

28 इसलिए ज़रा मेरी तरफ़ निगाह करो,  
क्यूँकि तुम्हारे मुँह पर मैं हरगिज़ झूट न बोलूँगा।

29 मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ बाज़ आओ वे इन्साफ़ी  
न करो।

मैं हक़ पर हूँ।

30 क्या मेरी ज़बान पर बे इन्साफ़ी है?

क्या फ़ितना अंग्रेज़ी की बातों के पहचानने का मुझे  
सलीक़ा नहीं?

## 7

1 “क्या इंसान के लिए ज़मीन पर जंग — ओ — जदल  
नहीं?

और क्या उसके दिन मज़दूर के जैसे नहीं होते?

2 जैसे नौकर साये की बड़ी आरज़ू करता है,  
और मज़दूर अपनी उज़रत का मुंतज़िर रहता है;

3 वैसे ही मैं बुतलान के महीनों का मालिक बनाया गया  
हूँ,

और मुसीबत की रातें मेरे लिए ठहराई गई हैं।

4 जब मैं लेटता हूँ तो कहता हूँ,

'कब उठूँगा?' लेकिन रात लम्बी होती है;

और दिन निकलने तक इधर — उधर करवटें बदलता  
रहता हूँ।

5 मेरा जिस्म कीड़ों और मिट्टी के ढेलों से ढका है।  
मेरी खाल सिमटती और फिर नासूर हो जाती है।

?????? ?? ?????? ?? ?????? ?????

6 मेरे दिन जुलाहे की ढरकी से भी तेज़  
और बग़ैर उम्मीद के गुज़र जाते हैं।

7 'आह, याद कर कि मेरी ज़िन्दगी हवा है,  
और मेरी आँख खुशी को फिर न देखेगी।

8 जो मुझे अब देखता है उसकी आँख मुझे फिर न देखेगी।  
तेरी आँखें तो मुझ पर होंगी लेकिन मैं न हूँगा।  
9 जैसे बादल फटकर गायब हो जाता है,  
वैसे ही वह जो क़ब्र में उतरता है फिर कभी ऊपर नहीं आता;  
10 वह अपने घर को फिर न लौटेगा, न उसकी जगह उसे फिर पहचानेगी।  
11 इसलिए मैं अपना मुँह बंद नहीं रखूँगा;  
मैं अपनी रूह की तल्लू में बोलता जाऊँगा।  
मैं अपनी जान के 'ऐज़ाब' में शिकवा करूँगा।  
12 क्या मैं समन्दर हूँ या मगरमच्छ',  
जो तू मुझ पर पहरा बिठाता है?  
13 जब मैं कहता हूँ। मेरा बिस्तर मुझे आराम पहुँचाएगा,  
मेरा बिछौना मेरे दुख को हल्का करेगा।  
14 तो तू ख्वाबों से मुझे डराता,  
और दीदार से मुझे तसल्ली देता है;  
15 यहाँ तक कि मेरी जान फाँसी,  
और मौत को मेरी इन हड्डियों पर तरजीह देती है।  
16 मुझे अपनी जान से नफ़रत है;  
मैं हमेशा तक ज़िन्दा रहना नहीं चाहता।  
मुझे छोड़ दे क्योंकि मेरे दिन खराब हैं।  
17 इंसान की औकात ही क्या है जो तू उसे सरफ़राज़ करे,  
और अपना दिल उस पर लगाए;  
18 और हर सुबह उसकी खबर ले,  
और हर लम्हा उसे आजमाए?  
19 तू कब तक अपनी निगाह मेरी तरफ़ से नहीं हटाएगा,  
और मुझे इतनी भी मोहलत नहीं देगा कि अपना थूक निगल लें?  
20 ऐ बनी आदम के नाज़िर, अगर मैंने गुनाह किया है तो तेरा क्या बिगाड़ता हूँ?  
तूने क्यूँ मुझे अपना निशाना बना लिया है,  
यहाँ तक कि मैं अपने आप पर बोझ हूँ?  
21 तू मेरा गुनाह क्यूँ नहीं मु'आफ़ करता,  
और मेरी बदकारी क्यूँ नहीं दूर कर देता?  
अब तो मैं मिट्टी में सो जाऊँगा,  
और तू मुझे खूब ढूँडेगा लेकिन मैं न हूँगा।”

## 8

?????? ?? ??????? ?? ???????

1 तब बिलदद सूखी कहने लगा,  
2 तू कब तक ऐसे ही बकता रहेगा,  
और तेरे मुँह की बातें कब तक आँधी की तरह होंगी?  
3 क्या खुदा बेइन्साफ़ी करता है?

क्या क़ादिर — ए — मुतलक इन्साफ़ का खून करता है?  
4 अगर तेरे फ़र्जन्दों ने उसका गुनाह किया है,  
और उसने उन्हें उन ही की खता के हवाले कर दिया।  
5 तोभी अगर तू खुदा को खूब ढूँडता,  
और क़ादिर — ए — मुतलक के सामने मिन्नत करता,  
6 तो अगर तू पाक दिल और रास्तबाज़ होता,  
तो वह ज़रूर अब तेरे लिए बेदार हो जाता,  
और तेरी रास्तबाज़ी के घर को बढ़ाता।  
7 और अगरचे तेरा आगाज़ छोटा सा था,  
तोभी तेरा अंजाम बहुत बड़ा होता  
8 ज़रा पिछले ज़माने के लोगों से पूछ  
और जो कुछ उनके बाप दादा ने तहक़ीक़ की है उस पर ध्यान कर।  
9 क्यूँकि हम तो कल ही के हैं,  
और कुछ नहीं जानते और हमारे दिन ज़मीन पर साये की तरह हैं।  
10 क्या वह तुझे न सिखाएँगे और न बताएँगे  
और अपने दिल की बातें नहीं करेंगे?  
11 क्या नागरमोंथा बग़ैर कीचड़ के उग सकता है  
क्या सरकंडों को बिना पानी के बढ़ा किया जा सकता है?  
12 जब वह हरा ही है और काटा भी नहीं गया तोभी  
और पौदों से पहले सूख जाता है।  
13 ऐसी ही उन सब की राहें हैं,  
जो खुदा को भूल जाते हैं बे खुदा आदमी की उम्मीद टूट जाएगी  
14 उसका ऐतमा'द जाता रहेगा  
और उसका भरोसा मकड़ी का जाला है।  
15 वह अपने घर पर टेक लगाएगा लेकिन वह खड़ा न रहेगा,  
वह उसे मज़बूती से थामेगा लेकिन वह क़ाईम न रहेगा।  
16 वह धूप पाकर हरा भरा हो जाता है  
और उसकी डालियाँ उसी के बाग़ में फैलती हैं  
17 उसकी जड़ें ढेर में लिपटी हुई रहती हैं,  
वह पत्थर की जगह को देख लेता है।  
18 अगर वह अपनी जगह से हलाक किया जाए तो वह  
उसका इन्कार करके कहने लगेंगी,  
कि मैंने तुझे देखा ही नहीं।  
19 देख उसके रस्ते की खुशी इतनी ही है,  
और मिट्टी में से दूसरे उग आएँगे।  
20 देख खुदा कामिल आदमी को छोड़ न देगा,  
न वह बदकिरदारों को सम्भालेगा।  
21 वह अब भी तेरे मुँह को हँसी से भर देगा  
और तेरे लबों की ललकार की आवाज़ से।  
22 तेरे नफ़रत करने वाले शर्म का जामा' पहनेंगे

और शरीरों का खेमा काईम न रहेगा

## 9

222222 22 222222 2222: 222222 22 222222

1 फिर अय्यूब ने जवाब दिया

2 दर हकीकत में मैं जानता हूँ कि बात यूँ ही है,  
लेकिन इंसान खुदा के सामने कैसे रास्तबाज़ ठहरे।

3 अगर वह उससे बहस करने को राज़ी भी हो,  
यह तो हजार बातों में से उसे एक का भी जवाब न दे  
सकेगा।

4 वह दिल का 'अक्रलमन्द और ताक़त में ज़ोरआवर है,  
किसी ने हिम्मत करके उसका सामना किया है और बढ़ा  
हो।

5 वह पहाड़ों को हटा देता है  
और उन्हें पता भी नहीं लगता वह अपने क्रहर में उलट  
देता है।

6 वह ज़मीन को उसकी जगह से हिला देता है,  
और उसके सुतून काँपने लगते हैं।

7 वह सूरज को हुक्म करता है और वह तुलू' नहीं होता  
है,

और सितारों पर मुहर लगा देता है

8 वह आसमानों को अकेला तान देता है,  
और समन्दर की लहरों पर चलता है

9 उसने बनात — उन — नाश और जब्बार और  
सुरैया और जुनूब के बुजों' को बनाया।

10 वह बड़े बड़े काम जो बयान नहीं हो सकते,  
और बेशुमार अजीब काम करता है।

11 देखो, वह मेरे पास से गुज़रता है लेकिन मुझे दिखाई  
नहीं देता;

वह आगे भी बढ़ जाता है लेकिन मैं उसे नहीं देखता।

12 देखो, वह शिकार पकड़ता है; कौन उसे रोक सकता  
है?

कौन उससे कहेगा कि तू क्या करता है?

13 "खुदा अपने गुस्से को नहीं हटाएगा।

रहब' के मददगार उसके नीचे झुकजाते हैं।

14 फिर मेरी क्या हकीकत है कि मैं उसे जवाब दूँ  
और उससे बहस करने को अपने लफ़्ज़ छाँट छाँट कर  
निकालूँ?

15 उसे तो मैं अगर सादिक भी होता तो जवाब न देता।  
मैं अपने मुखालिफ़ की मिन्नत करता।

16 अगर वह मेरे पुकारने पर मुझे जवाब भी देता,  
तोभी मैं यक़ीन न करता कि उसने मेरी आवाज़ सुनी।

17 वह तूफ़ान से मुझे तोड़ता है,  
और बे वजह मेरे ज़ख्मों को ज्यादा करता है।

18 वह मुझे दम नहीं लेने देता,

बल्कि मुझे तलखी से भरपूर करता है।

19 अगर ज़ोरआवर की ताक़त का ज़िक्र हो, तो देखो  
वह है।

और अगर इन्साफ़ का, तो मेरे लिए वक़्त कौन  
ठहराएगा?

20 अगर मैं सच्चा भी हूँ, तोभी मेरा ही मुँह मुझे मुल्जिम  
ठहराएगा।

और अगर मैं कामिल भी हूँ तोभी यह मुझे आलसी  
साबित करेगा।

21 मैं कामिल तो हूँ, लेकिन अपने को कुछ नहीं समझता;  
मैं अपनी ज़िन्दगी को बेकार जानता हूँ।

22 यह सब एक ही बात है, इसलिए मैं कहता हूँ  
कि वह कामिल और शरीर दोनों को हलाक कर देता है।

23 अगर वबा अचानक हलाक करने लगे,  
तो वह बेगुनाह की आजमाइश का मज़ाक़ उड़ाता है।

24 ज़मीन शरीरों को हवाले कर दी गई है।

वह उसके हाकिमों के मुँह ढाँक देता है।

अगर वही नहीं तो और कौन है?

25 मेरे दिन हरकारों से भी तेज़रू हैं।

वह उड़े चले जाते हैं और खुशी नहीं देखने पाते।

26 वह तेज़ जहाज़ों की तरह निकल गए,  
और उस उक्काब की तरह जो शिकार पर झपटता हो।

27 अगर मैं कहूँ, कि मैं अपना ग़म भुला दूँगा,

और उदासी छोड़कर दिलशाद हूँगा,

28 तो मैं अपने दुखों से डरता हूँ,

मैं जानता हूँ कि तू मुझे बेगुनाह न ठहराएगा।

29 मैं तो मुल्जिम ठहरूँगा;

फिर मैं 'तो मैं ज़हमत क्यूँ उठाऊँ?

30 अगर मैं अपने को बर्फ़ के पानी से धोऊँ,

और अपने हाथ कितने ही साफ़ करूँ।

31 तोभी तू मुझे खाई में गोता देगा,

और मेरे ही कपड़े मुझ से घिन खाएँगे।

32 क्यूँकि वह मेरी तरह आदमी नहीं कि मैं उसे जवाब दूँ,

और हम 'अदालत में एक साथ हाज़िर हों।

33 हमारे बीच कोई बिचवानी नहीं,

जो हम दोनों पर अपना हाथ रखे।

34 वह अपनी लाठी मुझ से हटा ले,

और उसकी डरावनी बात मुझे परेशान न करे।

35 तब मैं कुछ कहूँगा और उससे डरने का नहीं,

क्यूँकि अपने आप में तो मैं ऐसा नहीं हूँ।

## 10

222222 22 222222 22 2222222222 22222

1 “मेरी रूह मेरी ज़िन्दगी से परेशान है;  
मैं अपना शिकवा खूब दिल खोल कर करूँगा।  
मैं अपने दिल की तल्लखी में बोलूँगा।  
2 मैं खुदा से कहूँगा, मुझे मुलज्जिम न ठहरा;  
मुझे बता कि तू मुझ से क्यों झगड़ता है।  
3 क्या तुझे अच्छा लगता है, कि अँधेर करे,  
और अपने हाथों की बनाई हुई चीज़ को बेकार जाने,  
और शरीरों की बातों की रोशनी करे?  
4 क्या तेरी आँखें गोश्त की हैं?  
या तू ऐसे देखता है जैसे आदमी देखता है?  
5 क्या तेरे दिन आदमी के दिन की तरह,  
और तेरे साल इंसान के दिनों की तरह हैं,  
6 कि तू मेरी बदकारी को पूछता,  
और मेरा गुनाह ढूँडता है?  
7 क्या तुझे मा'लूम है कि मैं शरीर नहीं हूँ,  
और कोई नहीं जो तेरे हाथ से छुड़ा सके?  
8 तेरे ही हाथों ने मुझे बनाया और सरासर जोड़ कर  
कामिल किया।  
फिर भी तू मुझे हलाक करता है।  
9 याद कर कि तूने गुंधी हुई मिट्टी की तरह मुझे बनाया,  
और क्या तू मुझे फिर खाक में मिलाएगा?  
10 क्या तूने मुझे दूध की तरह नहीं उंडेला,  
और पनीर की तरह नहीं जमाया?  
11 फिर तूने मुझ पर चमड़ा और गोश्त चढ़ाया,  
और हड्डियों और नसों से मुझे जोड़ दिया।  
12 तूने मुझे जान बख्शी और मुझ पर करम किया,  
और तेरी निगहबानी ने मेरी रूह सलामत रखी।  
13 तोभी तूने यह बातें तूने अपने दिल में छिपा रखी  
थीं।  
मैं जानता हूँ कि तेरा यही इरादा है कि  
14 अगर मैं गुनाह करूँ, तो तू मुझ पर निगरान होगा;  
और तू मुझे मेरी बदकारी से बरी नहीं करेगा।  
15 अगर मैं गुनाह करूँ तो मुझ पर अफ़सोस!  
अगर मैं सच्चा बनूँ तोभी अपना सिर नहीं उठाने का,  
क्योंकि मैं ज़िल्लत से भरा हूँ,  
और अपनी मुसीबत को देखता रहता हूँ।  
16 और अगर सिर उठाऊँ, तो तू शेर की तरह मुझे शिकार  
करता है  
और फिर 'अजीब सूरत में मुझ पर ज़ाहिर होता है।  
17 तू मेरे खिलाफ़ नए नए गवाह लाता है,  
और अपना क्रहर मुझ पर बढ़ाता है;  
नई नई फ़ौजें मुझ पर चढ़ आती हैं।  
18 इसलिए तूने मुझे रहम से निकाला ही क्यों?

मैं जान दे देता और कोई आँख मुझे देखने न पाती।  
19 मैं ऐसा होता कि गोया मैं था ही नहीं मैं रहम ही से  
क्रब्र में पहुँचा दिया जाता।  
20 क्या मेरे दिन थोड़े से नहीं? बाज़ आ,  
और मुझे छोड़ दे ताकि मैं कुछ राहत पाऊँ।  
21 इससे पहले कि मैं वहाँ जाऊँ,  
जहाँ से फिर न लौटूँगा या'नी तारीकी और मौत और  
साये की सर ज़मीन को:  
22 गहरी तारीकी की सर ज़मीन जो खुद तारीकी ही है;  
मौत के साये की सर ज़मीन जो बे तरतीब है,  
और जहाँ रोशनी भी ऐसी है जैसी तारीकी।”

## 11

????? ?? ???? ???? ?

1 तब जूफ़र नामाती ने जवाब दिया,  
2 क्या इन बहुत सी बातों का जवाब न दिया जाए?  
और क्या बकवासी आदमी रास्त ठहराया जाए?  
3 क्या तेरे बड़े बोल लोगों को खामोश करदे?  
और जब तू ठट्ठा करे तो क्या कोई तुझे शर्मिन्दा न करे?  
4 क्योंकि तू कहता है, 'मेरी ता'लीम पाक है,  
और मैं तेरी निगाह में बेगुनाह हूँ।  
5 काश खुदा खुद बोले,  
और तेरे खिलाफ़ अपने लबों को खोले।  
6 और हिकमत के आसार तुझे दिखाए कि वह तासीर में  
बहुत बड़ा है।  
इसलिए जान ले कि तेरी बदकारी जिस लायक है उससे  
कम ही खुदा तुझ से मुतालबा करता है।  
7 क्या तू तलाश से खुदा को पा सकता है?  
क्या तू कादिर — ए — मुतलक़ का राज़ पूरे तौर से  
बयान कर सकता है?  
8 वह आसमान की तरह ऊँचा है, तू क्या कर सकता है?  
वह पाताल सा गहरा है, तू क्या जान सकता है?  
9 उसकी नाप ज़मीन से लम्बी  
और समन्दर से चौड़ी है  
10 अगर वह बीच से गुज़र कर बंद कर दे,  
और 'अदालत में बुलाए तो कौन उसे रोक सकता है?  
11 क्योंकि वह बेहूदा आदमियों को पहचानता है,  
और बदकारी को भी देखता है, चाहे उसका ख्याल न  
करे?  
12 लेकिन बेहूदा आदमी समझ से खाली होता है,  
बल्कि इंसान गधे के बच्चे की तरह पैदा होता है।  
13 अगर तू अपने दिल को ठीक करे,  
और अपने हाथ उसकी तरफ़ फैलाए,  
14 अगर तेरे हाथ में बदकारी हो तो उसे दूर करे,



और नारास्ती को अपने खेमों में रहने न दे,  
 15 तब यक्रीनन तू अपना मुँह बे दाग उठाएगा,  
 बल्कि तू साबित कदम हो जाएगा और डरने का नहीं।  
 16 क्योंकि तू अपनी खस्ताहाली को भूल जाएगा,  
 तू उसे उस पानी की तरह याद करेगा जो बह गया हो।  
 17 और तेरी ज़िन्दगी दोपहर से ज्यादा रोशन होगी,  
 और अगर तारीकी हुई तो वह सुबह की तरह होगी।  
 18 और तू मुतम'इन रहेगा,  
 क्योंकि उम्मीद होगी और अपने चारों तरफ़ देख देख कर  
 सलामती से आराम करेगा।  
 19 और तू लेट जाएगा,  
 और कोई तुझे डराएगा नहीं बल्कि बहुत से लोग तुझ  
 से फ़रियाद करेंगे।  
 20 लेकिन शरीरों की आँखें रह जाएँगी,  
 उनके लिए भागने को भी रास्ता न होगा,  
 और जान दे देना ही उनकी उम्मीद होगी।”

## 12

?????? ?? ???? ???? : ???? ?? ???? ?

1 तब अय्यूब ने जवाब दिया,  
 2 बेशक आदमी तो तुम ही हो “  
 और हिकमत तुम्हारे ही साथ मरेगी।  
 3 लेकिन मुझ में भी समझ है,  
 जैसे तुम में है, मैं तुम से कम नहीं।  
 भला ऐसी बातें जैसी यह हैं, कौन नहीं जानता?  
 4 मैं उस आदमी की तरह हूँ जो अपने पड़ोसी के लिए  
 हँसी का निशाना बना है।  
 मैं वह आदमी था जो खुदा से दुआ करता और वह उसकी  
 सुन लेता था।  
 रास्तबाज़ और कामिल आदमी हँसी का निशाना होता  
 ही है।  
 5 जो चैन से है उसके ख्याल में दुख के लिए हिकारत  
 होती है;  
 यह उनके लिए तैयार रहती है जिनका पाँव फिसलता  
 है।  
 6 डाकुओं के खेमे सलामत रहते हैं,  
 और जो खुदा को गुस्सा दिलाते हैं, वह महफूज़ रहते हैं;  
 उन ही के हाथ को खुदा खूब भरता है।  
 7 हैवानों से पूछ और वह तुझे सिखाएँगे,  
 और हवा के परिन्दों से दरियाफ़्त कर और वह तुझे  
 बताएँगे।  
 8 या ज़मीन से बात कर, वह तुझे सिखाएगी;  
 और समन्दर की मछलियाँ तुझ से बयान करेंगी।  
 9 कौन नहीं जानता

कि इन सब बातों में खुदावन्द ही का हाथ है जिसने यह  
 सब बनाया?

10 उसी के हाथ में हर जानदार की जान,  
 और कुल बनी आदम की जान ताक़त है।  
 11 क्या कान बातों को नहीं परख लेता,  
 जैसे ज़बान खाने को चख लेती है?  
 12 बुढ़ों में समझ होती है  
 , और उम्र की दराज़ी में समझदारी।  
 13 खुदा में समझ और कुव्वत है,  
 उसके पास मसलहत और समझ है।  
 14 देखो, वह ढा देता है तो फिर बनता नहीं।  
 वह आदमी को बंद कर देता है, तो फिर खुलता नहीं।  
 15 देखो, वह मेंह को रोक लेता है, तो पानी सूख जाता  
 है।  
 फिर जब वह उसे भेजता है, तो वह ज़मीन को उलट देता  
 है।  
 16 उसमें ताक़त और ता'सीर की कुव्वत है।  
 धोका खाने वाला और धोका देने वाला दोनों उसी के हैं।  
 17 वह सलाहकारों को लुटवा कर गुलामी में ले जाता है,  
 और 'अदालत करने वालों को बेवकूफ़ बना देता है।  
 18 वह शाही बन्धनों को खोल डालता है,  
 और बादशाहों की कमर पर पटका बाँधता है।  
 19 वह काहिनों को लुटवाकर गुलामी में ले जाता,  
 और ज़बरदस्तों को पछाड़ देता है।  
 20 वह 'ऐतमाद वाले की कुव्वत — ए — गोयाई दूर  
 करता  
 और बुज़ुर्गों की समझदारी को' छीन लेता है।  
 21 वह हाकिमों पर हिकारत बरसाता,  
 और ताक़तवरों की कमरबंद को खोल डालता है।  
 22 वह अँधेरे में से गहरी बातों को ज़ाहिर करता,  
 और मौत के साये को भी रोशनी में ले आता है।  
 23 वह क़ौमों को बढ़ाकर उन्हें हलाक कर डालता है;  
 वह क़ौमों को फैलाता और फिर उन्हें समेट लेता है।  
 24 वह ज़मीन की क़ौमों के सरदारों की 'अक़ल उड़ा देता  
 और उन्हें ऐसे वीरान में भटका देता है जहाँ रास्ता नहीं।  
 25 वह रोशनी के बग़ैर तारीकी में टटोलते फिरते हैं,  
 और वह उन्हें ऐसा बना देता है कि मतवाले  
 की तरह लड़खड़ाते हुए चलते हैं।

## 13

?????? ?? ???? ???? : ???? ???? ?

1 “मेरी आँख ने तो यह सब कुछ देखा है,  
 मेरे कान ने यह सुना और समझ भी लिया है।  
 2 जो कुछ तुम जानते हो उसे मैं भी जानता हूँ,

मैं तुम से कम नहीं।

3 मैं तो क्रादिर — ए — मुतलक से गुफ्तगू करना चाहता हूँ,

मेरी आरज़ू है कि खुदा के साथ बहस करूँ

4 लेकिन तुम लोग तो झूटी बातों के गढ़ने वाले हो;

तुम सब के सब निकम्मे हकीम हो।

5 काश तुम बिल्कुल खामोश हो जाते,

यही तुम्हारी 'अक्लमन्दी' होती।

6 अब मेरी दलील सुनो,

और मेरे मुँह के दा'वे पर कान लगाओ।

7 क्या तुम खुदा के हक़ में नारास्ती से बातें करोगे,

और उसके हक़ में धोके से बोलोगे?

8 क्या तुम उसकी तरफ़दारी करोगे?

क्या तुम खुदा की तरफ़ से झगड़ोगे?

9 क्या यह अच्छा होगा कि वह तुम्हारा जाएज़ा करें?

क्या तुम उसे धोका दोगे जैसे आदमी को?

10 वह ज़रूर तुम्हें मलामत करेगा

जो तुम खुफ़िया तरफ़दारी करो,

11 क्या उसका जलाल तुम्हें डरा न देगा,

और उसका रौ'ब तुम पर छा न जाएगा?

12 तुम्हारी छुपी बातें राख की कहावतें हैं,

तुम्हारी दीवारें मिटटी की दीवारें हैं।

13 तुम चुप रहो, मुझे छोड़ो ताकि मैं बोल सकूँ,

और फिर मुझ पर जो बीते सो बीते।

14 मैं अपना ही गोश्त अपने दाँतों से क्यूँ चबाऊँ;

और अपनी जान अपनी हथेली पर क्यूँ रखूँ?

15 देखो, वह मुझे क़त्ल करेगा, मैं इन्तिज़ार नहीं करूँगा।

बहर हाल मैं अपनी राहों की ता'ईद उसके सामने करूँगा।

16 यह भी मेरी नज़ात के ज़रिए' होगा,

क्यूँकि कोई बेखुदा उसके बराबर आ नहीं सकता।

17 मेरी तक़रीर को ग़ौर से सुनो,

और मेरा बयान तुम्हारे कानों में पड़े।

18 देखो, मैंने अपना दा'वा दुरुस्त कर लिया है;

मैं जानता हूँ कि मैं सच्चा हूँ।

19 कौन है जो मेरे साथ झगड़ेगा?

क्यूँकि फिर तो मैं चुप हो कर अपनी जान दे दूँगा।

20 सिर्फ़ दो ही काम मुझ से न कर,

तब मैं तुझ से नहीं छिपूँगा:

21 अपना हाथ मुझ से दूर हटा ले,

और तेरी हैबत मुझे ख़ौफ़ ज़दा न करे।

22 तब तेरे बुलाने पर मैं जवाब दूँगा;

या मैं बोलूँ और तू मुझे जवाब दे।

23 मेरी बदकारियाँ और गुनाह कितने हैं?

ऐसा कर कि मैं अपनी ख़ता और गुनाह को जान लूँ।

24 तू अपना मुँह क्यूँ छिपाता है,

और मुझे अपना दुश्मन क्यूँ जानता है?

25 क्या तू उड़ते पत्ते को परेशान करेगा?

क्या तू सूखे डंठल के पीछे पड़ेगा?

26 क्यूँकि तू मेरे खिलाफ़ तल्ख़ बातें लिखता है,

और मेरी जवानी की बदकारियाँ मुझ पर वापस लाता है।”

27 तू मेरे पाँव काट में ठोंकता,

और मेरी सब राहों की निगरानी करता है;

और मेरे पाँव के चारों तरफ़ बाँध खींचता है।

28 अगरचे मैं सड़ी हुई चीज़ की तरह हूँ, जो फ़ना हो जाती है।

या उस कपड़े की तरह हूँ जिसे कीड़े ने खा लिया हो।

## 14

1 इंसान जो 'औरत से पैदा होता है थोड़े दिनों का है, और दुख से भरा है।

2 वह फूल की तरह निकलता, और काट डाला जाता है। वह साए की तरह उड़ जाता है और ठहरता नहीं।

3 इसलिए क्या तू ऐसे पर अपनी आँखें खोलता है;

और मुझे अपने साथ 'अदालत में घसीटता है?

4 नापाक चीज़ में से पाक चीज़ कौन निकाल सकता है? कोई नहीं।

5 उसके दिन तो ठहरे हुए हैं,

और उसके महीनों की ता'दाद तेरे पास है;

और तू ने उसकी हदों को मुक़र्रर कर दिया है, जिन्हें वह पार नहीं कर सकता।

6 इसलिए उसकी तरफ़ से नज़र हटा ले ताकि वह आराम करे,

जब तक वह मज़दूर की तरह अपना दिन पूरा न कर ले।

7 “क्यूँकि दरख़्त की तो उम्मीद रहती है कि अगर वह काटा जाए तो फिर फूट निकलेगा,

और उसकी नर्म नर्म डालियाँ ख़त्म न होंगी।

8 अगरचे उसकी जड़ ज़मीन में पुरानी हो जाए,

और उसका तना मिट्टी में गल जाए,

9 तो भी पानी की बूपाते ही वह नए अखुवे लाएगा,

और पौदे की तरह शाखें निकालेगा।

10 लेकिन इंसान मर कर पड़ा रहता है,

बल्कि इंसान जान छोड़ देता है, और फिर वह कहाँ रहा?

11 जैसे झील का पानी ख़त्म हो जाता,

और दरिया उतरता और सूख जाता है,

12 वैसे आदमी लेट जाता है और उठता नहीं;  
जब तक आसमान टल न जाए, वह बेदार न होंगे;  
और न अपनी नींद से जगाए जाएंगे।  
13 काश कि तू मुझे पाताल में छिपा दे,  
और जब तक तेरा क्रहर टल न जाए, मुझे पोशीदा रखवे;  
और कोई मुर्कररा वक्त मेरे लिए ठहराए और मुझे याद  
करे।  
14 अगर आदमी मर जाए तो क्या वह फिर जिएगा?  
मैं अपनी जंग के सारे दिनों में मुन्तज़िर रहता जब तक  
मेरा छुटकारा न होता।  
15 तू मुझे पुकारता और मैं तुझे जवाब देता;  
तुझे अपने हाथों की सन'अत की तरफ़ ख्वाहिश होती।  
16 लेकिन अब तो तू मेरे क्रदम गिनता है;  
क्या तू मेरे गुनाह की ताक में लगा नहीं रहता?  
17 मेरी खता थैली में सरब — मुहर है,  
तू ने मेरे गुनाह को सी रख्खा है।  
18 यक्रीनन पहाड़ गिरते गिरते खत्म हो जाता है,  
और चट्टान अपनी जगह से हटा दी जाती है।  
19 पानी पत्थरों को घिसा डालता है,  
उसकी बाढ़ ज़मीन की खाक को बहाले जाती है;  
इसी तरह तू इंसान की उम्मीद को मिटा देता है।  
20 तू हमेशा उस पर ग़ालिब होता है, इसलिए वह गुज़र  
जाता है।  
तू उसका चेहरा बदल डालता और उसे खारिज कर देता  
है।  
21 उसके बेटों की 'इज़्जत होती है, लेकिन उसे खबर  
नहीं।  
वह ज़लील होते हैं लेकिन वह उनका हाल नहीं जानता।  
22 बल्कि उसका गोशत जो उसके ऊपर है, दुखी रहता;  
और उसकी जान उसके अन्दर ही अन्दर ग़म खाती रहती  
है।”

## 15

???????? ?? ??????? ?? ???????

1 तब इलिफ़ज़ तेमानी ने जवाब दिया,  
2 क्या 'अक़लमन्द को चाहिए कि फुज़ूल बातें जोड़ कर  
जवाब दे,  
और पूरबी हवा से अपना पेट भरे?  
3 क्या वह बेफ़ाइदा बक्रवास से बहस करे  
या ऐसी तक़रीरों से जो बे फ़ाइदा हैं?  
4 बल्कि तू ख़ौफ़ को नज़र अन्दाज़ करके,  
खुदा के सामने इबादत को ज़ायल करता है।  
5 क्यूँकि तेरा गुनाह तेरे मुँह को सिखाता है,  
और तू रियाकारों की ज़बान इस्तिyar करता है।

6 तेरा ही मुँह तुझे मुल्जिम ठहराता है न कि मैं,  
बल्कि तेरे ही होंट तेरे ख़िलाफ़ गवाही देते हैं।  
7 क्या पहला इंसान तू ही पैदा हुआ?  
या पहाड़ों से पहले तेरी पैदाइश हुई?  
8 क्या तू ने खुदा की पोशीदा मसलहत सुन ली है,  
और अपने लिए 'अक़लमन्दी का ठेका ले रख्खा है?  
9 तू ऐसा क्या जानता है, जो हम नहीं जानते?  
तुझ में ऐसी क्या समझ है जो हम में नहीं?  
10 हम लोगों में सिर सफ़ेद बाल वाले और बड़े बूढ़े भी  
हैं,  
जो तेरे बाप से भी बहुत ज़्यादा उम्र के हैं।  
11 क्या खुदा की तसल्ली तेरे नज़दीक कुछ कम है,  
और वह कलाम जो तुझ से नरमी के साथ किया जाता  
है?  
12 तेरा दिल तुझे क्यूँ खींच ले जाता है,  
और तेरी आँखें क्यूँ इशारा करती हैं?  
13 क्या तू अपनी रूह को खुदा की मुख़ालिफ़त पर  
आमादा करता है,  
और अपने मुँह से ऐसी बातें निकलने देता है?  
14 इंसान है क्या कि वह पाक हो?  
और वह जो 'औरत से पैदा हुआ क्या है, कि सच्चा हो।  
15 देख, वह अपने फ़रिश्तों का 'एतबार नहीं करता  
बल्कि आसमान भी उसकी नज़र में पाक नहीं।  
16 फिर भला उसका क्या ज़िक्र जो घिनौना  
और ख़राब है या'नी वह आदमी जो बुराई को पानी की  
तरह पीता है।  
17 “मैं तुझे बताता हूँ, तू मेरी सुन;  
और जो मैंने देखा है उसका बयान करूँगा।  
18 जिसे 'अक़लमन्दों ने अपने बाप — दादा से सुनकर  
बताया है,  
और उसे छिपाया नहीं;  
19 सिर्फ़ उन ही को मुल्क दिया गया था,  
और कोई परदेसी उनके बीच नहीं आया  
20 शरीर आदमी अपनी सारी उम्र दर्द से कराहता है,  
या'नी सब बरस जो ज़ालिम के लिए रख्खे गए हैं।  
21 डरावनी आवाज़ें उसके कान में गूँजती रहती हैं,  
इक़बालमन्दी के वक्त ग़ारतगर उस पर आ पड़ेगा।  
22 उसे यक्रीन नहीं कि वह अँधेरे से बाहर निकलेगा,  
और तलवार उसकी मुन्तज़िर है।  
23 वह रोटी के लिए मारा मारा फिरता है कि कहाँ  
मिलेगी।  
वह जानता है, कि अँधेरे के दिन मेरे पास ही है।  
24 मुसीबत और सख़्त तकलीफ़ उसे डराती है;

ऐसे बादशाह की तरह जो लड़ाई के लिए तैयार हो, वह उस पर गालिब होते हैं।

25 इसलिए कि उसने खुदा के खिलाफ अपना हाथ बढ़ाया और कादिर — ए — मुतलक के खिलाफ फखर करता है;

26 वह अपनी ढालों की मोटी — मोटी गुलमैखों के साथ बागी होकर उसपर हमला करता है:

27 इसलिए कि उसके मुँह पर मोटापा छा गया है, और उसके पहलुओं पर चर्बी की तहें जम गई हैं।

28 और वह वीरान शहरों में बस गया है, ऐसे मकानों में जिनमें कोई आदमी न बसा और जो वीरान होने को थे।

29 वह दौलतमन्द न होगा, उसका माल बना न रहेगा और ऐसों की पैदावार ज़मीन की तरफ न झुकेगी।

30 वह अँधेरे से कभी न निकलेगा, और शोले उसकी शाखों को खुश्क कर देंगे, और वह खुदा के मुँह से ताक़त से जाता रहेगा।

31 वह अपने आप को धोका देकर बतालत का भरोसा न करे,

क्योंकि बतालत ही उसका मज़दूरी ठहरेगी।

32 यह उसके वक़्त से पहले पूरा हो जाएगा, और उसकी शाख हरी न रहेगी।

33 ताक की तरह उसके अंगूर कच्चे ही और ज़ैतून की तरह उसके फूल गिर जाएँगे।

34 क्योंकि वे खुदा लोगों की जमा'अत बेफल रहेगी, और रिशवत के खेमों को आग भस्म कर देगी।

35 वह शरारत से ताक़तवर होते हैं और गुनाह पैदा होता है,

और उनका पेट धोखा को तैयार करता है।”

## 16

222222 22 222222 2222: 222222 22 2222

1 तब अय्यूब ने जवाब दिया,

2 “ऐसी बहुत सी बातें मैं सुन चुका हूँ, तुम सब के सब निकम्मे तसल्ली देने वाले हो।

3 क्या बेकार बातें कभी खत्म होंगी?

तू कौन सी बात से झिड़क कर जवाब देता है?

4 मैं भी तुम्हारी तरह बात बना सकता हूँ:

अगर तुम्हारी जान मेरी जान की जगह होती तो मैं तुम्हारे खिलाफ़ बातें बना सकता,

और तुम पर अपना सिर हिला सकता।

5 बल्कि मैं अपनी ज़बान से तुम्हें ताक़त देता, और मेरे लबों की तकलीफ़ तुम को तसल्ली देती।

6 “अगर्चे मैं बोलता हूँ लेकिन मुझ को तसल्ली नहीं होती, और मैं चुप भी हो जाता हूँ, लेकिन मुझे क्या राहत होती है।

7 लेकिन उसने तो मुझे दुखी कर डाला है, तूने मेरे सारे गिरोह को तबाह कर दिया है।

8 तूने मुझे मज़बूती से पकड़ लिया है, यही मुझ पर गवाह है।

मेरी लाचारी मेरे खिलाफ़ खड़ी होकर मेरे मुँह पर गवाही देती है।

9 उसने अपने गुस्से से मुझे फाड़ा और मेरा पीछा किया है;

उसने मुझ पर दाँत पीसे, मेरा मुखालिफ़ मुझे आँखें दिखाता है।

10 उन्होंने मुझ पर मुँह पसारा है, उन्होंने तनज़न मुझे गाल पर मारा है; वह मेरे खिलाफ़ इकट्ठे होते हैं।

11 खुदा मुझे बेदीनों के हवाले करता है, और शरीरों के हाथों में मुझे हवाले करता है।

12 मैं आराम से था, और उसने मुझे चूर चूरकर डाला; उसने मेरी गर्दन पकड़ ली और मुझे पटक कर टुकड़े टुकड़े कर दिया:

और उसने मुझे अपना निशाना बनाकर खड़ा किया है।

13 उसके तीर अंदाज़ मुझे चारों तरफ़ से घेर लेते हैं, वह मेरे गुदों को चीरता है, और रहम नहीं करता, और मेरे पित्त को ज़मीन पर बहा देता है।

14 वह मुझे ज़ख्म पर ज़ख्म लगा कर खस्ता करता है वह पहलवान की तरह मुझ पर हमला करता है:

15 मैंने अपनी खाल पर टाट को सी लिया है, और अपना सींग खाक में रख दिया है।

16 मेरा मुँह रोते रोते सूज गया है, और मेरी पलकों पर मौत का साया है।

17 अगर्चे मेरे हाथों ज़ुल्म नहीं, और मेरी दुआ बुराई से پاک है।

18 ऐ ज़मीन, मेरे खून को न ढाँकना, और मेरी फ़रियाद को आराम की जगह न मिले।

19 अब भी देख, मेरा गवाह आसमान पर है, और मेरा ज़ामिन 'आलम — ए — बाला पर है।

20 मेरे दोस्त मेरी हिकारत करते हैं, लेकिन मेरी आँख खुदा के सामने आँसू बहाती है;

21 जिस तरह एक आदमी अपने दौसत कि वकालत करता है

उसी तरह वह खुदा से आदमी कि वकालत करता है



22 क्योंकि जब चंद साल निकल जाएँगे,  
तो मैं उस रास्ते से चला जाऊँगा जिससे फिर लौटने का  
नहीं।

## 17

मेरी जान तबाह हो गई मेरे दिन हो चुके कब्र मेरे लिए  
तैय्यार है।

1 मेरी जान तबाह हो गई मेरे दिन हो चुके कब्र मेरे लिए  
तैय्यार है।

2 यक्रीनन हँसी उड़ाने वाले मेरे साथ साथ हैं,  
और मेरी आँख उनकी छेड़छाड़ पर लगी रहती है।

3 ज़मानत दे, अपने और मेरे बीच में तू ही ज़ामिन हो।

कौन है जो मेरे हाथ पर हाथ मारे?

4 क्योंकि तूने इनके दिल को समझ से रोका है,  
इसलिए तू इनको सरफ़राज़ न करेगा।

5 जो लूट की खातिर अपने दोस्तों को मुल्जिम ठहराता  
है,  
उसके बच्चों की आँखें भी जाती रहेंगी।

6 उसने मुझे लोगों के लिए ज़रबुल मिसाल बना दिया  
हैं:

और मैं ऐसा हो गया कि लोग मेरे मुँह पर थूकें।

7 मेरी आँखें ग़म के मारे धुंदला गई,  
और मेरे सब 'आज़ा परछाई की तरह है।

8 रास्तबाज़ आदमी इस बात से हैरान होंगे  
और मा'सूम आदमी बे खुदा लोगों के खिलाफ़ जोश में  
आएगा

9 तोभी सच्चा अपनी राह में साबित क़दम रहेगा और  
जिसके हाथ साफ़ हैं,  
वह ताक़तवर ही होता जाएगा

10 लेकिन तुम सब के सब आते हो तो आओ,  
मुझे तुम्हारे बीच एक भी आदमी 'अक्लमन्द न मिलेगा।

11 मेरे दिन तो बीत चुके, और मेरे मक़सद मिट गए  
और जो मेरे दिल में था, वह बर्बाद हुआ है।

12 वह रात को दिन से बदलते हैं,  
वह कहते हैं रोशनी तारीकी के नज़दीक है।

13 अगर मैं उम्मीद करूँ कि पाताल मेरा घर है,  
अगर मैंने अँधेरे में अपना बिछौना बिछा लिया है।

14 अगर मैंने सड़ाहट से कहा है कि तू मेरा बाप है,  
और कीड़े से कि तू मेरी माँ और बहन है

15 तोमेरी उम्मीद कहाँ रही,  
और जो मेरी उम्मीद है, उसे कौन देखेगा

16 वह पाताल के फाटकों तक नीचे उतर जाएगी  
जब हम मिलकर खाक में आराम पाएँगे।”

## 18

तब बिलदद शूखी ने जवाब दिया,

1 तब बिलदद शूखी ने जवाब दिया,

2 तुम कब तक लफ़्ज़ों की जुस्तुजू में रहोगे  
ग़ौर कर लो फिर हम बोलेंगे

3 हम क्यों जानवरों की तरह समझे जाते हैं,  
और तुम्हारी नज़र में नापाक ठहरे हैं।

4 तू जो अपने क्रूर में अपने को फाड़ता है  
तो क्या ज़मीन तेरी वजह से उजड़ जाएगी  
या चट्टान अपनी जगह से हटा दी जाएगी

5 बल्कि शरीर का चराग़ गुल कर दिया जाएगा  
और उसकी आग का शो'ला बे नूर हो जाएगा

6 रोशनी उसके खेमे में तरीकी हो जाएगी  
और जो चराग़ उसके उपर है, बुझा दिया जाएगा

7 उसकी कुव्वत के क़दम छोटे किए जाएँगे  
और उसी की मसलहत उसे नेचे गिराएगी।

8 क्योंकि वह अपने ही पाँव से जाल में फँसता है  
और फँदों पर चलता है

9 दाम उसकी एड़ी को पकड़ेगा,  
और जाल उसको फँसा लेगा।

10 कमन्द उसके लिए ज़मीन में छिपा दी गई है,  
और फंदा उसके लिए रास्ते में रखवा गया है।

11 दहशत नाक चीज़ें हर तरफ़ से उसे डराएँगी,  
और उसके दर पे होकर उसे भगाएँगी।

12 उसका ज़ोर भूक का मारा होगा  
और आफ़त उसके शामिल — ए — हाल रहेगी।

13 वह उसके जिस्म के आ'ज़ा को खा जाएगी  
बल्कि मौत का पहलौटा उसके आ'ज़ा को चट कर  
जाएगी।

14 वह अपने खेमे से जिस पर उसको भरोसा है उखाड़  
दिया जाएगा,  
और दहशत के बादशाह के पास पहुंचाया जाएगा।

15 और वह जो उसका नहीं, उसके खेमे में बसेगा;  
उसके मकान पर गंधक छितराई जाएगी।

16 नीचे उसकी जड़ें सुखाई जाएँगी,  
और ऊपर उसकी डाली काटी जाएगी।

17 उसकी यादगार ज़मीन पर से मिट जाएगी,  
और कूचों में उसका नाम न होगा।

18 वह रोशनी से अँधेरे में हँका दिया जाएगा,  
और दुनिया से खदेड़ दिया जाएगा।

19 उसके लोगों में उसका न कोई बेटा होगा न पोता,  
और जहाँ वह टिका हुआ था, वहाँ कोई उसका बाक़ी न  
रहेगा।

20 वह जो पीछे आनेवाले हैं, उसके दिन पर हैरान होंगे,

जैसे वह जो पहले हुए डर गए थे।

21 नारास्तों के घर यकीनन ऐसे ही हैं,  
और जो खुदा को नहीं पहचानता उसकी जगह ऐसी ही है।

## 19

अय्यूब ने जवाब दिया:

1 तब अय्यूब ने जवाब दिया  
2 तुम कब तक मेरी जान खाते रहोगे,  
और बातों से मुझे चूर — चूर करोगे?  
3 अब दस बार तुम ने मुझे मलामत ही की;  
तुम्हें शर्म नहीं आती की तुम मेरे साथ सख्ती से पेश आते हो।

4 और माना कि मुझ से खता हुई;  
मेरी खता मेरी ही है।

5 अगर तुम मेरे सामने में अपनी बड़ाई करते हो,  
और मेरे नंग को मेरे खिलाफ पेश करते हो;

6 तो जान लो कि खुदा ने मुझे पस्त किया,  
और अपने जाल से मुझे घेर लिया है।

7 देखो, मैं जुल्म जुल्म पुकारता हूँ, लेकिन मेरी सुनी नहीं जाती।

मैं मदद के लिए दुहाई देता हूँ, लेकिन कोई इन्साफ नहीं होता।

8 उसने मेरा रास्ता ऐसा शस्त कर दिया है, कि मैं गुज़र नहीं सकता।

उसने मेरी राहों पर तारीकी को बिठा दिया है।

9 उसने मेरी हशमत मुझ से छीन ली,  
और मेरे सिर पर से ताज उतार लिया।

10 उसने मुझे हर तरफ से तोड़कर नीचे गिरा दिया, बस मैं तो हो लिया,

और मेरी उम्मीद को उसने पेड़ की तरह उखाड़ डाला है।

11 उसने अपने ग़ज़ब को भी मेरे खिलाफ़ भड़काया है,  
और वह मुझे अपने मुखालिफ़ों में शुमार करता है।

12 उसकी फ़ौजें इकट्ठी होकर आती और मेरे खिलाफ़ अपनी राह तैयार करती

और मेरे खेमे के चारों तरफ़ खेमा ज़न होती हैं।

13 उसने मेरे भाइयों को मुझ से दूर कर दिया है,  
और मेरे जान पहचान मुझ से बेगाना हो गए हैं।

14 मेरे रिश्तेदार काम न आए,  
और मेरे दिली दोस्त मुझे भूल गए हैं।

15 मैं अपने घर के रहनेवालों और अपनी लौंडियों की नज़र में अजनबी हूँ।

मैं उनकी निगाह में परदेसी हो गया हूँ।

16 मैं अपने नौकर को बुलाता हूँ और वह मुझे जवाब नहीं देता,

अगरचे मैं अपने मुँह से उसकी मिन्नत करता हूँ।

17 मेरी साँस मेरी बीवी के लिए मकरूह है,  
और मेरी मित्रत मेरी माँ की औलाद के लिए।

18 छोटे बच्चे भी मुझे हकीर जानते हैं;

जब मैं खड़ा होता हूँ तो वह मुझ पर आवाज़ कसते हैं।

19 मेरे सब हमराज़ दोस्त मुझ से नफ़रत करते हैं  
और जिनसे मैं मुहब्बत करता था वह मेरे खिलाफ़ हो गए हैं।

20 मेरी खाल और मेरा गोश्त मेरी हड्डियों से चिमट गए हैं,

और मैं बाल बाल बच निकला हूँ।

21 ऐ मेरे दोस्तो! मुझ पर तरस खाओ, तरस खाओ,  
क्यूँकि खुदा का हाथ मुझ पर भारी है!

22 तुम क्यूँ खुदा की तरह मुझे सताते हो?  
और मेरे गोश्त पर कना'अत नहीं करते?

23 काश कि मेरी बातें अब लिख ली जातीं,  
काश कि वह किसी किताब में लिखी होतीं;

24 काश कि वह लोहे के कलम और सीसे से,  
हमेशा के लिए चट्टान पर खोद दी जातीं।

25 लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ने वाला ज़िन्दा है।  
और आखिर कार ज़मीन पर खड़ा होगा।

26 और अपनी खाल के इस तरह बर्बाद हो जाने के बाद भी,

मैं अपने इस जिस्म में से खुदा को देखूँगा।

27 जिसे मैं खुद देखूँगा, और मेरी ही आँखें देखेंगी न कि ग़ैर की;

मेरे गुदे मेरे अंदर ही फ़ना हो गए हैं।

28 अगर तुम कहो हम उसे कैसा — कैसा सताएँगे;  
हालाँकि असली बात मुझ में पाई गई है।

29 तो तुम तलवार से डरो,  
क्यूँकि क्रहर तलवार की सज़ाओं को लाता है  
ताकि तुम जान लो कि इन्साफ़ होगा।”

## 20

अय्यूब ने जवाब दिया:

1 तब ज़ूफ़र नामाती ने जवाब दिया।

2 इसीलिए मेरे ख्याल मुझे जवाब सिखाते हैं,  
उस जल्दबाज़ी की वजह से जो मुझ में है।

3 मैंने वह झिड़की सुन ली जो मुझे शर्मिन्दा करती है,  
और मेरी 'अक्ल की रूह मुझे जवाब देती है।

4 क्या तू पुराने ज़माने की यह बात नहीं जानता,  
जब से इंसान ज़मीन पर बसाया गया,

5 कि शरीरों की फ़तह चंद रोज़ा है,  
और बेदीनों की खुशी दम भर की है?  
6 चाहे उसका जाह — ओ — जलाल आसमान तक  
बुलन्द हो जाए,  
और उसका सिर बादलों तक पहुँचे।  
7 तोभी वह अपने ही फुज़ले की तरह हमेशा के लिए  
बर्बाद हो जाएगा;  
जिन्होंने उसे देखा है कहेंगे, वह कहाँ है?  
8 वह ख़्वाब की तरह उड़ जाएगा और फिर न मिलेगा,  
जो वह रात को रोये की तरह दूर कर दिया जाएगा।  
9 जिस आँख ने उसे देखा, वह उसे फिर न देखेगी;  
न उसका मकान उसे फिर कभी देखेगा।  
10 उसकी औलाद ग़रीबों की खुशामद करेगी,  
और उसी के हाथ उसकी दौलत को वापस देंगे।  
11 उसकी हड्डियाँ उसकी जवानी से पुर हैं,  
लेकिन वह उसके साथ खाक में मिल जाएँगी।  
12 “चाहे शरारत उसको मीठी लगे,  
चाहे वह उसे अपनी ज़बान के नीचे छिपाए।  
13 चाहे वह उसे बचा रखे और न छोड़े,  
बल्कि उसे अपने मुँह के अंदर दबा रखे,  
14 तोभी उसका खाना उसकी अंतड़ियों में बदल गया है;  
वह उसके अंदर अज़दहा का ज़हर है।  
15 वह दौलत को निगल गया है, लेकिन वह उसे फिर  
उगलेगा;  
खुदा उसे उसके पेट से बाहर निकाल देगा।  
16 वह अज़दहा का ज़हर चूसेगा;  
अज़दहा की ज़बान उसे मार डालेगी।  
17 वह दरियाओं को देखने न पाएगा,  
या 'नी शहद और मख़्खन की बहती नदियों को।  
18 जिस चीज़ के लिए उसने मशक्कत खींची, उसे वह  
वापस करेगा और निगलेगा नहीं;  
जो माल उसने जमा किया उसके मुताबिक वह खुशी न  
करेगा।  
19 क्योंकि उसने ग़रीबों पर ज़ुल्म किया और उन्हें छोड़  
दिया,  
उसने ज़बरदस्ती घर छीना लेकिन वह उसे बताने न  
पाएगा।  
20 इस वजह से कि वह अपने बातिन में आसूदगी से  
वाकिफ़ न हुआ,  
वह अपनी दिलपसंद चीज़ों में से कुछ नहीं बचाएगा।  
21 कोई चीज़ ऐसी बाक़ी न रही जिसको उसने निगला न  
हो।  
इसलिए उसकी इक़बालमन्दी काईम न रहेगी।  
22 अपनी अमीरी में भी वह तंगी में होगा;  
हर दुखियारे का हाथ उस पर पड़ेगा।

23 जब वह अपना पेट भरने पर होगा तो खुदा अपना  
क्रहर — ए — शदीद उस पर नाज़िल करेगा,  
और जब वह खाता होगा तब यह उसपर बरसेगा।  
24 वह लोहे के हथियार से भागेगा,  
लेकिन पीतल की कमान उसे छेद डालेगी।  
25 वह तीर निकालेगा और वह उसके जिस्म से बाहर  
आएगा,  
उसकी चमकती नोक उसके पित्ते से निकलेगी;  
दहशत उस पर छाई हुई है।  
26 सारी तारीकी उसके खज़ानों के लिए रखी हुई है।  
वह आग जो किसी इंसान की सुलगाई हुई नहीं,  
उसे खा जाएगी। वह उसे जो उसके खेमे में बचा हुआ  
होगा, भस्म कर देगी।  
27 आसमान उसके गुनाह को ज़ाहिर कर देगा,  
और ज़मीन उसके खिलाफ़ खड़ी हो जाएगी।  
28 उसके घर की बढ़ती जाती रहेगी,  
खुदा के ग़ज़ब के दिन उसका माल जाता रहेगा।  
29 खुदा की तरफ़ से शरीर आदमी का हिस्सा,  
और उसके लिए खुदा की मुकर्रर की हुई मीरास यही है।”

## 21

१११११११ ११ ११११११ १११११: ११११११ ११  
१११११

1 तब अय्यूब ने जवाब दिया,  
2 ग़ौर से मेरी बात सुनो,  
और यही तुम्हारा तसल्ली देना हो।  
3 मुझे इजाज़त दो तो मैं भी कुछ कहूँगा,  
और जब मैं कह चुकूँ तो ठट्ठा मारलेना।  
4 लेकिन मैं, क्या मेरी फ़रियाद इंसान से है?  
फिर मैं बेसबरी क्यों न करूँ?  
5 मुझ पर ग़ौर करो और मुत'अजीब हो,  
और अपना हाथ अपने मुँह पर रखो।  
6 जब मैं याद करता हूँ तो घबरा जाता हूँ,  
और मेरा जिस्म थर्रा उठता है।  
7 शरीर क्यों जीते रहते, उम्र रसीदा होते,  
बल्कि कुव्वत में ज़बरदस्त होते हैं?  
8 उनकी औलाद उनके साथ उनके देखते देखते,  
और उनकी नसल उनकी आँखों के सामने काईम हो  
जाती है।  
9 उनके घर डर से महफूज़ हैं,  
और खुदा की छड़ी उन पर नहीं है।  
10 उनका साँड बरदार कर देता है और चूकता नहीं,  
उनकी गाय ब्याती है और अपना बच्चा नहीं गिराती।

11 वह अपने छोटे छोटे बच्चों को रेवड़ की तरह बाहर भेजते हैं,  
और उनकी औलाद नाचती है।  
12 वह खजरी और सितार के ताल पर गाते,  
और बाँसली की आवाज़ से खुश होते हैं।  
13 वह खुशहाली में अपने दिन काटते,  
और दम के दम में पाताल में उतर जाते हैं।  
14 हालाँकि उन्होंने खुदा से कहा था, कि 'हमारे पास से चला जा';  
क्योंकि हम तेरी राहों के 'इल्म के ख्वाहिशमन्द नहीं।  
15 क़ादिर — ए — मुतलक है क्या कि हम उसकी इबादत करें?  
और अगर हम उससे दुआ करें तो हमें क्या फ़ायदा होगा?  
16 देखो, उनकी इक़बालमन्दी उनके हाथ में नहीं है।  
शरीरों की मशवरत मुझ से दूर है।  
17 कितनी बार शरीरों का चराग़ बुझ जाता है?  
और उनकी आफ़त उन पर आ पड़ती है?  
और खुदा अपने ग़ज़ब में उन्हें ग़म पर ग़म देता है?  
18 और वह ऐसे हैं जैसे हवा के आगे डंठल,  
और जैसे भूसा जिसे आँधी उड़ा ले जाती है?  
19 'खुदा उसका गुनाह उसके बच्चों के लिए रख छोड़ता है,  
वह उसका बदला उसी को दे ताकि वह जान ले।  
20 उसकी हलाकत को उसी की आँखें देखें,  
और वह क़ादिर — ए — मुतलक के ग़ज़ब में से पिए।  
21 क्योंकि अपने बाद उसको अपने घराने से क्या खुशी है,  
जब उसके महीनों का सिलसिला ही काट डाला गया?  
22 क्या कोई खुदा को 'इल्म सिखाएगा?  
जिस हाल की वह सरफ़राज़ों की 'अदालत करता है।  
23 कोई तो अपनी पूरी ताक़त में,  
चैन और सुख से रहता हुआ मर जाता है।  
24 उसकी दोहिनियाँ दूध से भरी हैं,  
और उसकी हड्डियों का गूदा तर है;  
25 और कोई अपने जी में कुढ़ कुढ़ कर मरता है,  
और कभी सुख नहीं पाता।  
26 वह दोनों मिट्टी में एकसाँ पड़ जाते हैं,  
और कीड़े उन्हें ढाँक लेते हैं।  
27 देखो, मैं तुम्हारे ख़यालों को जानता हूँ,  
और उन मंसूबों को भी जो तुम बे इन्साफ़ी से मेरे खिलाफ़ बाँधते हो।  
28 क्योंकि तुम कहते हो, 'अमीर का घर कहाँ रहा?  
और वह खेमा कहाँ है जिसमें शरीर बसते थे?  
29 क्या तुम ने रास्ता चलने वालों से कभी नहीं पूछा?  
और उनके निशान — आत नहीं पहचानते

30 कि शरीर आफ़त के दिन के लिए रखवा जाता है,  
और ग़ज़ब के दिन तक पहुँचाया जाता है?  
31 कौन उसकी राह को उसके मुँह पर बयान करेगा?  
और उसके किए का बदला कौन उसे देगा?  
32 तोभी वह क़ब्र में पहुँचाया जाएगा,  
और उसकी क़ब्र पर पहरा दिया जाएगा।  
33 वादी के ढेले उसे पसंद हैं;  
और सब लोग उसके पीछे चले जाएँगे,  
जैसे उससे पहले बेशुमार लोग गए।  
34 इसलिए तुम क्यूँ मुझे झूठी तसल्ली देते हो,  
जिस हाल कि तुम्हारी बातों में झूठ ही झूठ है।

## 22

22:1-28

1 तब इलिफ़ज़ तेमानी ने जवाब दिया,  
2 क्या कोई इंसान खुदा के काम आ सकता है?  
यक़ीनन 'अक्लमन्द अपने ही काम का है।  
3 क्या तेरे सादिक होने से क़ादिर — ए — मुतलक को कोई खुशी है?  
या इस बात से कि तू अपनी राहों को कामिल करता है  
उसे कुछ फ़ायदा है?  
4 क्या इसलिए कि तुझे उसका ख़ौफ़ है,  
वह तुझे झिड़कता और तुझे 'अदालत में लाता है?  
5 क्या तेरी शरारत बड़ी नहीं?  
क्या तेरी बदकारियों की कोई हद है?  
6 क्योंकि तू ने अपने भाई की चीज़ें बे वजह गिरवी रखी,  
नंगों का लिबास उतार लिया।  
7 तूने थके माँदों को पानी न पिलाया,  
और भूखों से रोटी को रोक रखा।  
8 लेकिन ज़बरदस्त आदमी ज़मीन का मालिक बना,  
और 'इज़्जतदार आदमी उसमें बसा।  
9 तू ने बेवाओं को ख़ाली चलता किया,  
और यतीमों के बाजू तोड़े गए।  
10 इसलिए फंदे तेरी चारों तरफ़ हैं,  
और नागहानी ख़ौफ़ तुझे सताता है।  
11 या ऐसी तारीकी कि तू देख नहीं सकता,  
और पानी की बाढ़ तुझे छिपाए लेती है।  
12 क्या आसमान की बुलन्दी में खुदा नहीं?  
और तारों की बुलन्दी को देख वह कैसे ऊँचे हैं।  
13 फिर तू कहता है, कि 'खुदा क्या जानता है?  
क्या वह गहरी तारीकी में से 'अदालत करेगा?  
14 पानी से भरे हुए बादल उसके लिए पर्दा हैं कि वह देख  
नहीं सकता;  
वह आसमान के दाइरे में सैर करता फिरता है।



15 क्या तू उसी पुरानी राह पर चलता रहेगा,  
जिस पर शरीर लोग चले हैं?  
16 जो अपने वक्त से पहले उठा लिए गए,  
और सैलाब उनकी बुनियाद को बहा ले गया।  
17 जो खुदा से कहते थे, 'हमारे पास से चला जा,  
'और यह कि, 'क्रादिर — ए — मुतलक हमारे लिए कर  
क्या सकता है?'  
18 तोभी उसने उनके घरों को अच्छी अच्छी चीज़ों से  
भर दिया —  
लेकिन शरीरों की मशवरेत मुझ से दूर है।  
19 सादिक यह देख कर खुश होते हैं,  
और बे गुनाह उनकी हँसी उड़ाते हैं।  
20 और कहते हैं, कि यकीनन वह जो हमारे खिलाफ उठे  
थे कट गए,  
और जो उनमें से बाक़ी रह गए थे, उनको आग ने भस्म  
कर दिया है।  
21 "उससे मिला रह, तो सलामत रहेगा;  
और इससे तेरा भला होगा।  
22 मैं तेरी मिन्नत करता हूँ,  
कि शरी'अत को उसी की ज़बानी कुबूल कर और उसकी  
बातों को अपने दिल में रख ले।  
23 अगर तू क्रादिर — ए — मुतलक की तरफ़ फिरे तो  
बहाल किया जाएगा।  
बशर्ते कि तू नारास्ती को अपने खेमों से दूर कर दे।  
24 तू अपने खज़ाने' को मिट्टी में,  
और ओफ़ीर के सोने को नदियों के पत्थरों में डाल दे,  
25 तब क्रादिर — ए — मुतलक तेरा खज़ाना,  
और तेरे लिए बेश क़ीमत चाँदी होगा।  
26 क्योंकि तब ही तू क्रादिर — ए — मुतलक में मसरूर  
रहेगा,  
और खुदा की तरफ़ अपना मुँह उठाएगा।  
27 तू उससे दुआ करेगा, वह तेरी सुनेगा;  
और तू अपनी मिन्नतें पूरी करेगा।  
28 जिस बात को तू कहेगा,  
वह तेरे लिए हो जाएगी और नूर तेरी राहों को रोशन  
करेगा।  
29 जब वह पस्त करेंगे, तू कहेगा, 'बुलन्दी होगी।  
और वह हलीम आदमी को बचाएगा।  
30 वह उसको भी छुड़ा लेगा, जो बेगुनाह नहीं है;  
हाँ वह तेरे हाथों की पाकीज़गी की वजह से छुड़ाया  
जाएगा।"

## 23

222222 22 222222 2222: 222222 22  
2222

1 तब अय्यूब ने जवाब दिया,  
2 मेरी शिकायत आज भी तलख़ है;  
मेरी मार मेरे कराहने से भी भारी है।  
3 काश कि मुझे मा'लूम होता कि वह मुझे कहाँ मिल  
सकता है  
ताकि मैं ऐन उसकी मसनद तक पहुँच जाता।  
4 मैं अपना मु'आमिला उसके सामने पेश करता,  
और अपना मुँह दलीलों से भर लेता।  
5 मैं उन लफ़्ज़ों को जान लेता जिनमें वह मुझे जवाब  
देता  
और जो कुछ वह मुझ से कहता मैं समझ लेता।  
6 क्या वह अपनी कुदरत की 'अज़मत में मुझ से लड़ता?  
नहीं, बल्कि वह मेरी तरफ़ तबज्जुह करता।  
7 रास्तबाज़ वहाँ उसके साथ बहस कर सकते,  
यूँ मैं अपने मुन्सिफ़ के हाथ से हमेशा के लिए रिहाई  
पाता।  
8 देखो, मैं आगे जाता हूँ लेकिन वह वहाँ नहीं,  
और पीछे हटता हूँ लेकिन मैं उसे देख नहीं सकता।  
9 बाएँ हाथ फिरता हूँ जब वह काम करता है, लेकिन वह  
मुझे दिखाई नहीं देता;  
वह दहने हाथ की तरफ़ छिप जाता है, ऐसा कि मैं उसे  
देख नहीं सकता।  
10 लेकिन वह उस रास्ते को जिस पर मैं चलता हूँ जानता  
है;  
जब वह मुझे पालेगा तो मैं सोने के तरह निकल  
आऊँगा।  
11 मेरा पाँव उसके क़दमों से लगा रहा है।  
मैं उसके रास्ते पर चलता रहा हूँ और नाफ़रमान नहीं  
हुआ।  
12 मैं उसके लबों के हुक्म से हटा नहीं;  
मैंने उसके मुँह की बातों को अपनी ज़रूरी खुराक से भी  
ज्यादा ज़ख़ीरा किया।  
13 लेकिन वह एक खयाल में रहता है,  
और कौन उसको फिरा सकता है?  
और जो कुछ उसका जी चाहता है करता है।  
14 क्योंकि जो कुछ मेरे लिए मुक़र्रर है,  
वह पूरा करता है;  
और बहुत सी ऐसी बातें उसके हाथ में हैं।  
15 इसलिए मैं उसके सामने घबरा जाता हूँ,  
मैं जब सोचता हूँ तो उससे डर जाता हूँ।  
16 क्योंकि खुदा ने मेरे दिल को बूदा कर डाला है,  
और क्रादिर — ए — मुतलक ने मुझ को घबरा दिया है।  
17 इसलिए कि मैं इस ज़ुल्मत से पहले काट डाला न  
गया

और उसने बड़ी तारीकी को मेरे सामने से न छिपाया।

## 24

1 "क्रादिर — ए — मुतलक ने वक्त क्यूँ नहीं ठहराए,  
और जो उसे जानते हैं वह उसके दिनों को क्यूँ नहीं

देखते?  
2 ऐसे लोग भी हैं जो ज़मीन की हदों को सरका देते हैं,  
वह रेवड़ों को ज़बरदस्ती ले जाते और उन्हें चराते हैं।  
3 वह यतीम के गधे को हाँक ले जाते हैं;  
वह बेवा के बैल को गिरा लेते हैं।  
4 वह मोहताज को रास्ते से हटा देते हैं,  
ज़मीन के गरीब इकट्ठे छिपते हैं।  
5 देखो, वह वीरान के गधों की तरह अपने काम को जाते  
और मशक़क़त उठाकर खुराक ढूँढते हैं।  
वीरान उनके बच्चों के लिए खुराक बहम पहुँचाता है।  
6 वह खेत में अपना चारा काटते हैं,  
और शरीरों के अंगूर की खूशा चीनी करते हैं।  
7 वह सारी रात बे कपड़े नंगे पड़े रहते हैं,  
और जाड़ों में उनके पास कोई ओढ़ना नहीं होता।  
8 वह पहाड़ों की बारिश से भीगे रहते हैं,  
और किसी आड़ के न होने से चट्टान से लिपट जाते हैं।  
9 ऐसे लोग भी हैं जो यतीम को छाती पर से हटा लेते हैं  
और गरीबों से गिरवी लेते हैं।  
10 इसलिए वह बेकपड़े नंगे फिरते,  
और भूक के मारे पौले ढोते हैं।  
11 वह इन लोगों के अहातों में तेल निकालते हैं।  
वह उनके कुण्डों में अंगूर रौदते और प्यासे रहते हैं।  
12 आबाद शहर में से निकल कर लोग कराहते हैं,  
और ज़ख्मियों की जान फ़रियाद करती है।  
तोभी खुदा इस हिमाक़त का ख्याल नहीं करता।  
13 "यह उनमें से हैं जो नूर से बगावत करते हैं;  
वह उसकी राहों को नहीं जानते,  
न उसके रास्तों पर क़ाईम रहते हैं।  
14 खूनी रोशनी होते ही उठता है।  
वह गरीबों और मोहताजों को मारडालता है,  
और रात को वह चोर की तरह है।  
15 ज़ानी की आँख भी शाम की मुन्तज़िर रहती है।  
वह कहता है किसी की नज़र मुझ पर न पड़ेगी,  
और वह अपना मुँह ढाँक लेता है।  
16 अंधेरे में वह घरों में सेंध मारते हैं,  
वह दिन के वक्त छिपे रहते हैं;  
वह नूर को नहीं जानते।  
17 क्यूँकि सुबह उन लोगों के लिए ऐसी है

जैसे मौत का साया इसलिए कि उन्हें मौत के साये की  
दहशत मा'लूम है।

18 वह पानी की सतह पर तेज़ रफ़्तार हैं,  
ज़मीन पर उनके ज़मीन पर उनका हिस्सा मलऊन हैं वह  
ताकिस्तानों की राह पर नहीं चलते।

19 खुशकी और गर्मी बरफ़ानी पानी के नालों को सुखा  
देती हैं,

ऐसा ही क़बर गुनहगारों के साथ करती है।

20 रहम उसे भूल जाएगा,  
कीड़ा उसे मज़े सिखाएगा,  
उसकी याद फिर न होगी;  
नारास्ती दरख़्त की तरह तोड़ दी जाएगी।

21 वह बाँझ को जो जनती नहीं, निगल जाता है,  
और बेवा के साथ भलाई नहीं करता।

22 खुदा अपनी कुव्वत से बहादुरको भी खींच लेता है;  
वह उठता है, और किसी को ज़िन्दगी का यक़ीन नहीं  
रहता।

23 खुदा उन्हें अम्न बख़्शता है और वह उसी में क़ाईम  
रहते हैं,

और उसकी आँखें उनकी राहों पर लगी रहती हैं।

24 वह सरफ़राज़ तो होते हैं, लेकिन थोड़ी ही देर में जाते  
रहते हैं;

बल्कि वह पस्त किए जाते हैं और सब दूसरों की तरह  
रास्ते से उठा लिए जाते,

और अनाज की बालों की तरह काट डाले जाते हैं।

25 और अगर यह यूँ ही नहीं है,

तो कौन मुझे झूटा साबित करेगा और मेरी तकरीर को  
नाचीज़ ठहराएगा?"

## 25

1 तब बिलदद सूखी ने जवाब दिया

2 "हुकूमत और दबदबा उसके साथ है

वह अपने बुलन्द मक़ामों में अमन रखता है।  
3 क्या उसकी फ़ौजों की कोई ता'दाद है?

और कौन है जिस पर उसकी रोशनी नहीं पड़ती?

4 फिर इंसान क्यूँकर खुदा के सामने रास्त ठहर सकता  
है?

या वह जो 'औरत से पैदा हुआ है क्यूँकर पाक हो सकता  
है?

5 देख, चाँद में भी रोशनी नहीं,  
और तारे उसकी नज़र में पाक नहीं।

6 फिर भला इंसान का जो महज़ कीड़ा है,  
और आदमज़ाद जो सिर्फ़ किरम है क्या ज़िक्र।"

## 26

११११११ ११ १११११ ११११: १११११ ११ १११११

- 1 तब अय्यूब ने जवाब दिया,
- 2 “जो बे ताक़त उसकी तूने कैसी मदद की;  
जिस बाज़ू में कुव्वत न थी, उसको तू ने कैसा संभाला।
- 3 नादान को तूने कैसी सलाह दी,  
और हक़ीकी पहचान खूब ही बताई।
- 4 तू ने जो बातें कहीं?  
इसलिए किस से और किसकी रूह तुझ में से हो कर  
निकली?”
- 5 “मुर्दों की रूहें पानी और उसके रहने वालों के नीचे  
काँपती हैं।
- 6 पाताल उसके सामने खुला है,  
और जहन्नुम बेपर्दा है।
- 7 वह शिमाल को फ़ज़ा में फैलाता है,  
और ज़मीन को ख़ला में लटकाता है।
- 8 वह अपने पानी से भरे हुए बादलों पानी को बाँध देता  
और बादल उसके बोझ से फटता नहीं।
- 9 वह अपने तख़्त को ढांक लेता है  
और उसके ऊपर अपने बादल को तान देता है।
- 10 उसने रोशनी और अंधेरे के मिलने की जगह तक,  
पानी की सतह पर हद बाँध दी है।
- 11 आसमान के सुतून काँपते,  
और और झिड़की से हैरान होते हैं।
- 12 वह अपनी कुदरत से समन्दर को तूफ़ानी करता,  
और अपने फ़हम से रहब को छेद देता है।
- 13 उसके दम से आसमान आरास्ता होता है,  
उसके हाथ ने तेज़रू साँप को छेदा है।
- 14 देखो, यह तो उसकी राहों के सिर्फ़ किनारे हैं,  
और उसकी कैसी धीमी आवाज़ हम सुनते हैं।  
लेकिन कौन उसकी कुदरत की गरज़ को समझ सकता  
है?”

## 27

११११११ ११ १११११ ११११

- 1 और अय्यूब ने फिर अपनी मिसाल शुरू की और  
कहने लगा,
- 2 “ज़िन्दा खुदा की कसम, जिसने मेरा हक़ छीन लिया;  
और कादिर — ए — मुतलक़ की कसम, जिसने मेरी जान  
को दुख दिया है।
- 3 क्योंकि मेरी जान मुझ में अब तक सालिम है  
और खुदा का रूह मेरे नथनों में है।
- 4 यक़ीनन मेरे लब नारास्ती की बातें न कहेंगे,  
न मेरी ज़बान से फ़रेब की बात निकलेगी।

- 5 खुदा न करे कि मैं तुम्हें रास्त ठहराऊँ,  
मैं मरते दम तक अपनी रास्ती को छोड़ूँगा।
- 6 मैं अपनी सदाक़त पर क़ाईम हूँ और उसे न छोड़ूँगा,  
जब तक मेरी ज़िन्दगी है, मेरा दिल मुझे मुजरिम न  
ठहराएगा।
- 7 “मेरा दुश्मन शरीरों की तरह हो,  
और मेरे खिलाफ़ उठने वाला नारास्तों की तरह।
- 8 क्योंकि गो बे दीन दौलत हासिल कर ले तोभी उसकी  
क्या उम्मीद है?  
जब खुदा उसकी जान ले ले,
- 9 क्या खुदा उसकी फ़रियाद सुनेगा,  
जब मुसीबत उस पर आए?
- 10 क्या वह कादिर — ए — मुतलक़ में खुश रहेगा,  
और हर वक़्त खुदा से दुआ करेगा?
- 11 मैं तुम्हें खुदा के बर्ताव “की तालीम दूँगा,  
और कादिर — ए — मुतलक़ की बात न छिपाऊँगा।
- 12 देखो, तुम सभों ने खुद यह देख चुके हो,  
फिर तुम खुद बीन कैसे हो गए।”
- 13 “खुदा की तरफ़ से शरीर आदमी का हिस्सा,  
और ज़ालिमों की मीरास जो वह कादिर — ए —  
मुतलक़ की तरफ़ से पाते हैं, यही है।
- 14 अगर उसके बच्चे बहुत हो जाएँ तो वह तलवार के  
लिए हैं,  
और उसकी औलाद रोटी से सेर न होगी।
- 15 उसके बाक़ी लोग मर कर दफ़न होंगे,  
और उसकी बेवाएँ नौहा न करेंगी।
- 16 चाहे वह खाक की तरह चाँदी जमा कर ले,  
और कसरत से लिबास तैयार कर रखें
- 17 वह तैयार कर ले, लेकिन जो रास्त हैं वह उनको  
पहनेंगे  
और जो बेगुनाह हैं वह उस चाँदी को बाँट लेंगे।
- 18 उसने मकड़ी की तरह अपना घर बनाया,  
और उस झोंपड़ी की तरह जिसे रखवाला बनाता है।
- 19 वह लेटता है दौलतमन्द, लेकिन वह दफ़न न किया  
जाएगा।  
वह अपनी आँख खोलता है और वह है ही नहीं।
- 20 दहशत उसे पानी की तरह आ लेती है;  
रात को तूफ़ान उसे उड़ा ले जाता है।
- 21 पूरबी हवा उसे उड़ा ले जाती है, और वह जाता रहता  
है।  
वह उसे उसकी जगह से उखाड़ फेंकती है।
- 22 क्योंकि खुदा उस पर बरसाएगा  
और छोड़ने का नहीं वह उसके हाथ से निकल भागना  
चाहेगा।





और उनकी ज़बान तालू से चिपक जाती थी।

11 क्योंकि कान जब मेरी सुन लेता तो मुझे मुबारक कहता था,

और आँख जब मुझे देख लेती तो मेरी गावाही देती थी;

12 क्योंकि मैं ग़रीब को जब वह फ़रियाद करता छुड़ाता था

और यतीमों को भी जिसका कोई मददगार न था।

13 हलाक होनेवाला मुझे दुआ देता था,

और मैं बेवा के दिल को ऐसा खुश करता था कि वह गाने लगती थी।

14 मैंने सदाक़त को पहना और उससे मुलब्स हुआ:

मेरा इन्साफ़ गोया जुब्बा और 'अमामा था।

15 मैं अंधों के लिए आँखें था,

और लंगड़ों के लिए पाँव।

16 मैं मोहताज का बाप था,

और मैं अजनबी के मु'आमिले की भी तहक़ीक़ करता था।

17 मैं नारास्त के जबड़ों को तोड़ डालता,

और उसके दाँतों से शिकार छुड़ालेता था।

18 तब मैं कहता था, कि मैं अपने आशियाने में हूँगा

और मैं अपने दिनों को रेत की तरह बे शुमार करूँगा,

19 मेरी जड़ें पानी तक फैल गई हैं,

और रात भर ओस मेरी शाखों पर रहती है;

20 मेरी शौक़त मुझ में ताज़ा है,

और मेरी कमान मेरे हाथ में नई की जाती है।

21 'लोग मेरी तरफ़ कान लगाते और मुन्तज़िर रहते,

और मेरी मशवरे के लिए खामोश हो जाते थे।

22 मेरी बातों के बा'द, वह फिर न बोलते थे;

और मेरी तक्ररीर उन पर टपकती थी

23 वह मेरा ऐसा इन्तिज़ार करते थे जैसा बारिश का;

और अपना मुँह ऐसा फैलाते थे जैसे पिछले मेंह के लिए।

24 जब वह मायूस होते थे तो मैं उन पर मुस्कराता था,

और मेरे चेहरे की रोशनी की उन्होंने कभी न बिगाड़ा।

25 मैं उनकी राह को चुनता, और सरदार की तरह बैठता,

और ऐसे रहता था जैसे फ़ौज में बादशाह,

और जैसे वह जो ग़मज़दों को तसल्ली देता है।

### 30

1 "लेकिन अब तो वह जो मुझ से कम उम्र हैं मेरा मज़ाक़ करते हैं,

जिनके बाप — दादा को अपने गल्ले के कुत्तों के साथ रखना भी मुझे नागवार था।

2 बल्कि उनके हाथों की ताक़त मुझे किस बात का फ़ायदा पहुँचाएगी?

वह ऐसे आदमी हैं जिनकी जवानी का ज़ोर ज़ाइल हो गया।

3 वह गुरबत और क़हत के मारे दुबले हो गए हैं, वह वीरानी और सुनसानी की तारीकी में खाक चाटते हैं।

4 वह झाड़ियों के पास लोनिये का साग तोड़ते हैं, और झाऊ की जड़ें उनकी ख़ुराक है।

5 वह लोगों के बीच दौड़ाये गए हैं, लोग उनके पीछे ऐसे चिल्लाते हैं जैसे चोर के पीछे।

6 उनको वादियों के दरख़्तों में, और ग़ारों और ज़मीन के भट्टों में रहना पड़ता है।

7 वह झाड़ियों के बीच रेंकते, और झंकाड़ों के नीचे इकट्ठे पड़े रहते हैं।

8 वह बेवकूफ़ों बल्कि कमीनों की औलाद हैं, वह मुल्क से मार — मार कर निकाले गए थे।

9 और अब मैं उनका गीत बना हूँ, बल्कि उनके लिए एक मिसाल की तरह हूँ।

10 वह मुझ से नफ़रत करते;

वह मुझ से दूर खड़े होते,

और मेरे मुँह पर थूकने से बाज़ नहीं रहते हैं।

11 क्योंकि खुदा ने मेरा चिल्ला ढीला कर दिया और मुझ पर आफ़त भेजी,

इसलिए वह मेरे सामने बेलगाम हो गए हैं।

12 मेरे दहने हाथ पर लोगों का मजमा' उठता है;

वह मेरे पाँव को एक तरफ़ सरका देते हैं,

और मेरे खिलाफ़ अपनी मुहलिक राहें निकालते हैं।

13 ऐसे लोग भी जिनका कोई मददगार नहीं,

मेरे रास्ते को बिगाड़ते,

और मेरी मुसीबत को बढ़ाते हैं'।

14 वह गोया बड़े सुराख़ में से होकर आते हैं,

और तबाही में मुझ पर टूट पड़ते हैं।

15 दहशत मुझ पर तारी हो गई'।

वह हवा की तरह मेरी आबरू को उड़ाती है।

मेरी 'आफ़्रियत बादल की तरह जाती रही।

16 "अब तो मेरी जान मेरे अंदर गुदाज़ हो गई,

दुख के दिनों ने मुझे जकड़ लिया है।

17 रात के वक़्त मेरी हड्डियाँ मेरे अंदर छिद जाती हैं

और वह दर्द जो मुझे खाए जाते हैं, दम नहीं लेते।

18 मेरे मरज़ की शिद्दत से मेरी पोशाक बदनुमा हो गयी;

वह मेरे पैराहन के गिरेबान की तरह मुझ से लिपटी हुई है।

19 उसने मुझे कीचड़ में धकेल दिया है,

मैं खाक और राख की तरह हो गया हूँ।

20 मैं तुझ से फ़रियाद करता हूँ, और तू मुझे जवाब नहीं देता;  
मैं खड़ा होता हूँ, और तू मुझे घूरने लगता है।  
21 तू बदल कर मुझ पर बे रहम हो गया है;  
अपने बाज़ू की ताक़त से तू मुझे सताता है।  
22 तू मुझे ऊपर उठाकर हवा पर सवार करता है,  
और मुझे आँधी में घुला देता है।  
23 क्योंकि मैं जानता हूँ कि तू मुझे मौत  
और उस घर तक जो सब ज़िन्दों के लिए मुक़र्रर है।  
24 'तोभी क्या तबाही के वक़्त कोई अपना हाथ न  
बढ़ाएगा,  
और मुसीबत में फ़रियाद न करेगा?  
25 क्या मैं दर्दमन्द के लिए रोता न था?  
क्या मेरी जान मोहताज के लिए ग़मगीन न होती थी?  
26 जब मैं भलाई का मुन्तज़िर था,  
तो बुराई पेश आई जब मैं रोशनी के लिए ठहरा था, तो  
तारीकी आई।  
27 मेरी अंतड़ियाँ उबल रही हैं और आराम नहीं पातीं;  
मुझ पर मुसीबत के दिन आ पड़े हैं।  
28 मैं बग़ैर धूप के काला हो गया हूँ।  
मैं मजमे' में खड़ा होकर मदद के लिए फ़रियाद करता हूँ।  
29 मैं गीदड़ों का भाई,  
और शुतर मुर्गों का साथी हूँ।  
30 मेरी खाल काली होकर मुझ पर से गिरती जाती है  
और मेरी हड्डियाँ हारत से जल गई।  
31 इसी लिए मेरे सितार से मातम,  
और मेरी बाँसली से रोने की आवाज़ निकलती है।

### 31

222222 22 2222 222222 2222 22 2222  
222 22222 222 2222

1 "मैंने अपनी आँखों से 'अहद किया है।  
फिर मैं किसी कुंवारी पर क्यूँकर नज़र करूँ।  
2 क्यूँकि ऊपर से खुदा की तरफ़ से क्या हिस्सा है  
और 'आलम — ए — बाला से कादिर — ए — मुतलक  
की तरफ़ से क्या मीरास है?  
3 क्या वह नारास्तों के लिए आफ़त  
और बदकिरदारों के लिए तबाही नहीं है।  
4 क्या वह मेरी राहों को नहीं देखता,  
और मेरे सब क़दमों को नहीं गिनता?  
5 अगर मैं बतालत से चला हूँ,  
और मेरे पाँव ने दगा के लिए जल्दी की है।  
6 तो मैं ठीक तराजू में तोला जाऊँ,  
ताकि खुदा मेरी रास्ती को जान ले।

7 अगर मेरा क़दम रास्ते से फिरा हुआ है,  
और मेरे दिल ने मेरी आँखों की पैरवी की है,  
और अगर मेरे हाथों पर दाग़ लगा है;  
8 तो मैं बोऊँ और दूसरा खाए,  
और मेरे खेत की पैदावार उखाड़ दी जाए।  
9 "अगर मेरा दिल किसी 'औरत पर फ़रेक़ता हुआ,  
और मैं अपने पड़ोसी के दरवाज़े पर घात में बैठा;  
10 तो मेरी बीवी दूसरे के लिए पीसे,  
और ग़ैर मर्द उस पर झुकें।  
11 क्यूँकि यह बहुत बड़ा जुर्म होता,  
बल्कि ऐसी बुराई होती जिसकी सज़ा क़ाज़ी देते हैं।  
12 क्यूँकि वह ऐसी आग़ है जो जलाकर भस्म कर देती  
है,  
और मेरे सारे हासिल को जड़ से बर्बाद कर डालती है।  
13 "अगर मैंने अपने खादिम या अपनी खादिमा का हक़  
मारा हो,  
जब उन्होंने मुझ से झगड़ा किया;  
14 तो जब खुदा उठेगा, तब मैं क्या करूँगा?  
और जब वह आएगा, तो मैं उसे क्या जवाब दूँगा?  
15 क्या वही उसका बनाने वाला नहीं, जिसने मुझे पेट में  
बनाया?  
और क्या एक ही ने हमारी सूरत रहम में नहीं बनाई?  
16 अगर मैंने मोहताज से उसकी मुराद रोक रखी,  
या ऐसा किया कि बेवा की आँखें रह गई  
17 या अपना निवाला अकेले ही खाया हो,  
और यतीम उसमें से खाने न पाया  
18 नहीं, बल्कि मेरे लड़कपन से वह मेरे साथ ऐसे पला  
जैसे बाप के साथ,  
और मैं अपनी माँ के बतन ही से बेवा का रहनुमा रहा  
हूँ।  
19 अगर मैंने देखा कि कोई बेकपड़े मरता है,  
या किसी मोहताज के पास ओढ़ने को नहीं;  
20 अगर उसकी कमर ने मुझ को दुआ न दी हो,  
और अगर वह मेरी भेड़ों की ऊन से गर्म न हुआ हो।  
21 अगर मैंने किसी यतीम पर हाथ उठाया हो,  
क्यूँकि फाटक पर मुझे अपनी मदद दिखाई दी;  
22 तो मेरा कंधा मेरे शाने से उतर जाए,  
और मेरे बाज़ू की हड्डी टूट जाए।  
23 क्यूँकि मुझे खुदा की तरफ़ से आफ़त का खौफ़ था,  
और उसकी बुज़ुर्गी की वजह से मैं कुछ न कर सका।  
24 "अगर मैंने सोने पर भरोसा किया हो,  
और खालिस सोने से कहा, मेरा ऐ'तिमाद तुझ पर है।  
25 अगर मैं इसलिए कि मेरी दौलत फ़िरावान थी,

और मेरे हाथ ने बहुत कुछ हासिल कर लिया था, नाज़ाँ हुआ।

26 अगर मैंने सूरज पर जब वह चमकता है, नज़र की हो या चाँद पर जब वह आब — ओ — ताब में चलता है,

27 और मेरा दिल चुपके से 'आशिक़ हो गया हो, और मेरे मुँह ने मेरे हाथ को चूम लिया हो;

28 तो यह भी ऐसा गुनाह है जिसकी सज़ा क़ाज़ी देते हैं क्योंकि यूँ मैंने खुदा का जो 'आलम — ए — बाला पर है, इंकार किया होता।

29 'अगर मैं अपने नफ़रत करने वाले की हलाकत से खुश हुआ,

या जब उस पर आफ़त आई तो खुश हुआ;

30 हाँ, मैंने तो अपने मुँह को इतना भी गुनाह न करने दिया के ला'नत दे कर उसकी मौत के लिए दुआ करता;

31 अगर मेरे ख़ेमे के लोगों ने यह न कहा हो, 'ऐसा कौन है जो उसके यहाँ गोश्त से सेर न हुआ?'

32 परदेसी को गली कूचों में टिकना न पड़ा, बल्कि मैं मुसाफ़िर के लिए अपने दरवाज़े खोल देता था।

33 अगर आदम की तरह अपने गुनाह अपने सीने में छिपाकर,

मैंने अपनी ग़लतियों पर पर्दा डाला हो;

34 इस वजह से कि मुझे 'अवाम के लोगों का ख़ौफ़ था, और मैं ख़ान्दानों की हिकारत से डर गया, यहाँ तक कि मैं ख़ामोश हो गया और दरवाज़े से बाहर न निकला

35 काश कि कोई मेरी सुनने वाला होता!

यह लो मेरा दस्तख़त। क़ादिर — ए — मुतलक़ मुझे जवाब दे।

काश कि मेरे मुख़ालिफ़ के दा'वे का सुबूत होता।

36 यक़ीनन मैं उसे अपने कंधे पर लिए फिरता; और उसे अपने लिए 'अमामे की तरह बाँध लेता।

37 मैं उसे अपने क़दमों की ता'दाद बताता; अमीर की तरह मैं उसके पास जाता।

38 "अगर मेरी ज़मीन मेरे ख़िलाफ़ फ़रियाद करती हों, और उसकी रेघारियाँ मिलकर रोती हों,

39 अगर मैंने बेदाम उसके फल खाए हों, या ऐसा किया कि उसके मालिकों की जान गई;

40 तो गेहूँ के बदले ऊँट कटारे, और जौ के बदले कड़वे दाने उगें।" अय्यूब की बातें तमाम हुई।

## 32

222222 22 2222222 22 22222222 22 22222

1 तब उन तीनों आदमी ने अय्यूब को जवाब देना छोड़ दिया, इसलिए कि वह अपनी नज़र में सच्चा था। 2 तब इलीहू बिन — बराकील बूज़ी का, जुराम के ख़ान्दान से था, क़हर से भड़का। उसका क़हर अय्यूब पर भड़का, इसलिए कि उसने खुदा को नहीं बल्कि अपने आप को रास्त ठहराया। 3 और उसके तीनों दोस्तों पर भी उसका क़हर भड़का, इसलिए कि उन्हें जवाब तो सूझा नहीं, तोभी उन्होंने अय्यूब को मुजरिम ठहराया। 4 और इलीहू अय्यूब से बात करने से इसलिए रुका रहा कि वह उससे बड़े थे। 5 जब इलीहू ने देखा कि उन तीनों के मुँह में जवाब न रहा, तो उसका क़हर भड़क उठा।

6 और बराकील बूज़ी का बेटा इलीहू कहने लगा, मैं जवान हूँ और तुम बहुत बुज़ुर्ग हो, इसलिए मैं रुका रहा और अपनी राय देने की हिम्मत न की।

7 मैं कहा साल ख़ूदह लोग बोलें और उम्र रसीदा हिकमत से खायें

8 लेकिन इंसान में रूह है, और क़ादिर — ए — मुतलक़ का दम अक़ल बख़्शता है।

9 बड़े आदमी ही 'अक़लमन्द नहीं होते, और बुज़ुर्ग ही इन्साफ़ को नहीं समझते।

10 इसलिए मैं कहता हूँ, 'मेरी सुनो, मैं भी अपनी राय दूँगा।

11 "देखो, मैं तुम्हारी बातों के लिए रुका रहा, जब तुम अल्फ़ाज़ की तलाश में थे; मैं तुम्हारी दलीलों का मुन्तज़िर रहा।

12 बल्कि मैं तुम्हारी तरफ़ तवज्जुह करता रहा, और देखो, तुम में कोई न था जो अय्यूब को कायल करता, या उसकी बातों का जवाब देता।

13 ख़बरदार, यह न कहना कि हम ने हिकमत को पा लिया है,

खुदा ही उसे लाजवाब कर सकता है न कि इंसान।

14 क्योंकि न उसने मुझे अपनी बातों का निशाना बनाया, न मैं तुम्हारी तरह तक्रारों से उसे जवाब दूँगा।

15 वह हैरान हैं, वह अब जवाब नहीं देते; उनके पास कहने को कोई बात न रही।

16 और क्या मैं रुका रहूँ, इसलिए कि वह बोलते नहीं? इसलिए कि वह चुपचाप खड़े हैं और अब जवाब नहीं देते?

17 मैं भी अपनी बात कहूँगा,

मैं भी अपनी राय दूँगा।

18 क्योंकि मैं बातों से भरा हूँ,

और जो रूह मेरे अंदर है वह मुझे मजबूर करती है।

19 देखो, मेरा पेट बेनिकास शराब की तरह है,

वह नई मशकों की तरह फटने ही को है।

20 मैं बोलूँगा ताकि तुझे तसल्ली हो:

मैं अपने लबों को खोलूँगा और जवाब दूँगा।

21 न मैं किसी आदमी की तरफ़दारी करूँगा,

न मैं किसी शख्स को खुशामद के खिताब दूँगा।

22 क्योंकि मुझे खुश करने का खिताब देना नहीं आता,

वर्ना मेरा बनाने वाला मुझे जल्द उठा लेता।

### 33

?????? ?? ??????? ?? ????????? ?????

1 “तोभी ऐ अय्यूब ज़रा मेरी तक़रीर सुन ले,

और मेरी सब बातों पर कान लगा।

2 देख, मैंने अपना मुँह खोला है;

मेरी ज़बान ने मेरे मुँह में सुखन आराई की है।

3 मेरी बातें मेरे दिल की रास्तबाज़ी को ज़ाहिर करेंगी।

और मेरे लब जो कुछ जानते हैं, उसी को सच्चाई से कहेंगे।

4 खुदा की रूह ने मुझे बनाया है,

और क़ादिर — ए — मुतलक़ का दम मुझे ज़िन्दगी बख़्शता है।

5 अगर तू मुझे जवाब दे सकता है तो दे,

और अपनी बातों को मेरे सामने तरतीब देकर खड़ा हो जा।

6 देख, खुदा के सामने मैं तेरे बराबर हूँ।

मैं भी मिट्टी से बना हूँ।

7 देख, मेरा रौ'ब तुझे परेशान न करेगा,

मेरा दबाव तुझ पर भारी न होगा।

8 “यक़ीनन तू मेरे सुनते ही कहा है,

और मैंने तेरी बातें सुनी हैं,

9 कि 'मैं साफ़ और मैं बे तकसीर हूँ,

मैं बे गुनाह हूँ, और मुझ में गुनाह नहीं।

10 वह मेरे खिलाफ़ मौक़ा' ढूँडता है,

वह मुझे अपना दुश्मन समझता है;

11 वह मेरे दोनों पाँव को काठ में ठोक देता है,

वह मेरी सब राहों की निगरानी करता है।

12 “देख, मैं तुझे जवाब देता हूँ, इस बात में तू हक़ पर नहीं।

क्योंकि खुदा इंसान से बड़ा है।

13 तू क्यों उससे झगड़ता है?

क्योंकि वह अपनी बातों में से किसी का हिसाब नहीं देता।

14 क्योंकि खुदा एक बार बोलता है, बल्कि दो बार,  
चाहे इंसान इसका खयाल न करे।

15 ख़्वाब में, रात के ख़्वाब में,  
जब लोगों को गहरी नींद आती है,

और बिस्तर पर सोते वक़्त;

16 तब वह लोगों के कान खोलता है,

और उनकी ता'लीम पर मुहर लगाता है,

17 ताकि इंसान को उसके मक़सद से रोके,

और गुरुर को इंसान में से दूर करे।

18 वह उसकी जान को गढ़े से बचाता है,

और उसकी ज़िन्दगी तलवार की मार से।

19 “वह अपने बिस्तर पर दर्द से तम्बीह पाता है,

और उसकी हड्डियों में दाइमी जंग है।

20 यहाँ तक कि उसका जी रोटी से,

और उसकी जान लज़ीज़ खाने से नफ़रत करने लगती है।

21 उसका गोश्त ऐसा सूख जाता है कि दिखाई नहीं देता;  
और उसकी हड्डियाँ जो दिखाई नहीं देती थीं, निकल आती हैं।

22 बल्कि उसकी जान गढ़े के क़रीब पहुँचती है,

और उसकी ज़िन्दगी हलाक़ करने वालों के नज़दीक।

23 वहाँ अगर उसके साथ कोई फ़रिश्ता हो,

या हज़ार में एक ता'बीर करने वाला,

जो इंसान को बताए कि उसके लिए क्या ठीक है;

24 तो वह उस पर रहम करता और कहता है,

कि 'उसे गढ़े में जाने से बचा ले; मुझे फ़िदिया मिल गया है।

25 तब उसका जिस्म बच्चे के जिस्म से भी ताज़ा होगा;  
और उसकी जवानी के दिन लौट आते हैं।

26 वह खुदा से दुआ करता है।

और वह उस पर महेरबान होता है, ऐसा कि वह खुशी से  
उसका मुँह देखता है;

और वह इंसान की सच्चाई को बहाल कर देता है।

27 वह लोगों के सामने गाने और कहने लगता है,

कि 'मैंने गुनाह किया और हक़ को उलट दिया,

और इससे मुझे फ़ायदा न हुआ।

28 उसने मेरी जान को गढ़े में जाने से बचाया,

और मेरी ज़िन्दगी रोशनी को देखेगी।

29 “देखो, खुदा आदमी के साथ यह सब काम,

दो बार बल्कि तीन बार करता है;

30 ताकि उसकी जान को गढ़े से लौटा लाए,

और वह ज़िन्दों के नूर से मुनव्वर हो।

31 ऐ अय्यूब! ग़ौर से मेरी सुन;

ख़ामोश रह और मैं बोलूँगा।

32 अगर तुझे कुछ कहना है तो मुझे जवाब दे;



बोल, क्योंकि मैं तुझे रास्त ठहराना चाहता हूँ।  
 33 अगर नहीं, तो मेरी सुन;  
 खामोश रह और मैं तुझे समझ सिखाऊँगा।”

### 34

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

1 इसके 'अलावा इलीहू ने यह भी कहा,  
 2 “ऐ तुम 'अक्लमन्द लोगों, मेरी बातें सुनो,  
 और ऐ तुम जो अहल — ए — 'इल्म हो, मेरी तरफ़ कान  
 लगाओ;  
 3 क्योंकि कान बातों को परखता है,  
 जैसे ज़बान' खाने को चखती है।  
 4 जो कुछ ठीक है, हम अपने लिए चुन लें,  
 जो भला है, हम आपस में जान लें।  
 5 क्योंकि अय्यूब ने कहा, 'मैं सादिक हूँ,  
 और खुदा ने मेरी हक़ तल्फ़ी की है।  
 6 अगरचे मैं हक़ पर हूँ,  
 तोभी झूटा ठहरता हूँ जबकि मैं बेकुसूर हूँ,  
 मेरा ज़ख्म ला 'इलाज है।  
 7 अय्यूब जैसा बहादुर कौन है,  
 जो मज़ाक़ को पानी की तरह पी जाता है?  
 8 जो बदकिरदारों की रफ़ाफ़त में चलता है,  
 और शरीर लोगों के साथ फिरता है।  
 9 क्योंकि उसने कहा है,  
 कि 'आदमी को कुछ फ़ायदा नहीं कि वह खुदा में खुश  
 है।”  
 10 “इसलिए ऐ अहल — ए — अक्ल मेरी सुनो,  
 यह हरगिज़ हो नहीं सकता कि खुदा शरारत का काम  
 करे,  
 और क़ादिर — ए — मुतलक़ गुनाह करे।  
 11 वह इंसान को उसके आ'माल के मुताबिक़ बदला देगा,  
 वह ऐसा करेगा कि हर किसी को अपनी ही राहों के  
 मुताबिक़ बदला मिलेगा।  
 12 यक़ीनन खुदा बुराई नहीं करेगा;  
 क़ादिर — ए — मुतलक़ से बेइन्साफ़ी न होगी।  
 13 किसने उसको ज़मीन पर इस्ति'यार दिया?  
 या किसने सारी दुनिया का इन्तिज़ाम किया है?  
 14 अगर वह इंसान से अपना दिल लगाए,  
 अगर वह अपनी रूह और अपने दम को वापस ले ले;  
 15 तो तमाम बशर इकट्ठे फ़ना हो जाएँगे,  
 और इंसान फिर मिट्टी में मिल जाएगा।  
 16 “इसलिए अगर तुझ में समझ है तो इसे सुन ले,  
 और मेरी बातों पर तवज्जुह कर।

17 क्या वह जो हक़ से 'अदावत रखता है, हुक्मत  
 करेगा?  
 और क्या तू उसे जो 'आदिल और क़ादिर है, मुल्जिम  
 ठहराएगा?  
 18 वह तो बादशाह से कहता है, 'तू रज़ील है';  
 और शरीफ़ों से, कि 'तुम शरीर हो'।  
 19 वह उमर की तरफ़दारी नहीं करता,  
 और अमीर को ग़रीब से ज़्यादा नहीं मानता,  
 क्योंकि वह सब उसी के हाथ की कारीगरी हैं।  
 20 वह दम भर में आधी रात को मर जाते हैं,  
 लोग हिलाए जाते हैं और गुज़र जाते हैं  
 और बहादुर लोग बग़ैर हाथ लगाए उठा लिए जाते हैं।  
 21 “क्योंकि उसकी आँखें आदमी की राहों पर लगी हैं,  
 और वह उसकी आदतों को देखता है;  
 22 न कोई ऐसी तारीकी न मौत का साया है,  
 जहाँ बद किरदार छिप सकें।  
 23 क्योंकि उसे ज़रूरी नहीं कि आदमी का ज़्यादा खयाल  
 करे ताकि वह खुदा के सामने 'अदालत में जाए।  
 24 वह बिला तफ़तीश ज़बरदस्तों को टुकड़े — टुकड़े  
 करता,  
 और उनकी जगह औरों को खड़ा करता है।  
 25 इसलिए वह उनके कामों का खयाल रखता है,  
 और वह उन्हें रात को उलट देता है ऐसा कि वह हलाक  
 हो जाते हैं।  
 26 वह औरों को देखते हुए, उनको ऐसा मारता है जैसा  
 शरीरों को;  
 27 इसलिए कि वह उसकी पैरवी से फिर गए,  
 और उसकी किसी राह का खयाल न किया।  
 28 यहाँ तक कि उनकी वजह से ग़रीबों की फ़रियाद उसके  
 सामने पहुँची  
 और उसने मुसीबत ज़दों की फ़रियाद सुनी।  
 29 जब वह राहत बरख़्शे तो कौन मुल्जिम ठहरा सकता  
 है?  
 जब वह मुँह छिपा ले तो कौन उसे देख सकता है?  
 चाहे कोई क्रौम हो या आदमी, दोनों के साथ यकसाँ  
 सुलूक है।  
 30 ताकि बेदीन आदमी सल्लनत न करे,  
 और लोगों को फंदे में फंसाने के लिए कोई न हो।  
 31 “क्योंकि क्या किसी ने खुदा से कहा है,  
 मैंने सज़ा उठा ली है, मैं अब बुराई न करूँगा;  
 32 जो मुझे दिखाई नहीं देता, वह तू मुझे सिखा;  
 अगर मैंने गुनाह किया है तो अब ऐसा नहीं करूँगा”?  
 33 क्या उसका बदला तेरी मर्जी पर हो कि तू उसे ना  
 मंज़ूर करता है?

क्योंकि तुझे फ़ैसला करना है न कि मुझे;  
 इसलिए जो कुछ तू जानता है, कह दे।  
 34 अहल — ए — अक्ल मुझ से कहेंगे,  
 बल्कि हर 'अक्लमन्द जो मेरी सुनता है कहेगा,  
 35 'अय्यूब नादानी से बोलता है,  
 और उसकी बातें हिकमत से खाली हैं।  
 36 काश कि अय्यूब आखिर तक आजमाया जाता,  
 क्योंकि वह शरीरों की तरह जवाब देता है।  
 37 इसलिए कि वह अपने गुनाहों पर बग़ावत को बढ़ाता  
 है;  
 वह हमारे बीच तालियाँ बजाता है,  
 और खुदा के खिलाफ़ बहुत बातें बनाता है।”

### 35

????? ?? ?????? ?? ?????? ??  
 ?????? ?? ?????? ??? ??? ??????

1 इसके 'अलावा इलीहू ने यह भी कहा,  
 2 “क्या तू इसे अपना हक़ समझता है,  
 या यह दावा करता है कि तेरी सदाक़त खुदा की सदाक़त  
 से ज्यादा है?  
 3 जो तू कहता है कि मुझे इससे क्या फ़ायदा मिलेगा?  
 और मुझे इसमें गुनहगार न होने की निस्वत कौन सा  
 ज्यादा फ़ायदा होगा?  
 4 मैं तुझे और तेरे साथ तेरे दोस्तों को जवाब दूँगा।  
 5 आसमान की तरफ़ नज़र कर और देख;  
 और आसमानों पर जो तुझ से बलन्द हैं, निगाह कर।  
 6 अगर तू गुनाह करता है तो उसका क्या बिगाड़ता है?  
 और अगर तेरी ख़ताएँ बढ़ जाएँ तो तू उसका क्या करता  
 है?  
 7 अगर तू सादिक़ है तो उसको क्या दे देता है?  
 या उसे तेरे हाथ से क्या मिल जाता है?  
 8 तेरी शरारत तुझ जैसे आदमी के लिए है,  
 और तेरी सदाक़त आदमज़ाद के लिए।  
 9 “जुल्म की कसरत की वजह से वह चिल्लाते हैं;  
 ज़बरदस्त के बाज़ू की वजह से वह मदद के लिए दुहाई  
 देते हैं।  
 10 लेकिन कोई नहीं कहता, कि 'खुदा मेरा ख़ालिक़ कहाँ  
 है,  
 जो रात के वक़्त नग़में 'इनायत करता है?  
 11 जो हम को ज़मीन के जानवरों से ज्यादा ता'लीम देता  
 है,  
 और हमें हवा के परिन्दों से ज्यादा 'अक्लमन्द बनाता  
 है?’  
 12 वह दुहाई देते हैं लेकिन कोई जवाब नहीं देता,

यह बुरे आदमियों के गुरूर की वजह से है।  
 13 यक़ीनन खुदा बतालत को नहीं सुनेगा,  
 और क़ादिर — ए — मुतलक़ उसका लिहाज़ न करेगा।  
 14 ख़ासकर जब तू कहता है, कि तू उसे देखता नहीं।  
 मुक़द्दमा उसके सामने है और तू उसके लिए ठहरा हुआ  
 है।  
 15 लेकिन अब चूँकि उसने अपने ग़ज़ब में सज़ा न दी,  
 और वह गुरूर का ज्यादा ख़याल नहीं करता;  
 16 इसलिए अय्यूब खुदबीनी की वजह से अपना मुँह  
 खोलता है और नादानी से बातें बनाता है।”

### 36

1 फिर इलीहू ने यह भी कहा,  
 2 मुझे ज़रा इजाज़त दे और मैं तुझे बताऊँगा,  
 क्योंकि खुदा की तरफ़ से मुझे कुछ और भी कहना है  
 3 मैं अपने 'इल्म को दूर से लाऊँगा  
 और रास्ती अपने ख़ालिक़ से मनसूब करूँगा  
 4 क्योंकि हकीक़त में मेरी बातें झूटी नहीं हैं,  
 और जो तेरे साथ है 'इल्म में कामिल हैं।  
 5 देख खुदा क़ादिर है, और किसी को बेकार नहीं जानता  
 वह समझ की कुव्वत में ग़ालिब है।  
 6 वह शरीरों की ज़िंदगी को बरकरार नहीं रखता  
 , बल्कि मुसीबत ज़दों को उनका हक़ अदा करता है।  
 7 वह सादिक़ों से अपनी आँखें नहीं फेरता,  
 बल्कि उन्हें बादशाहों के साथ हमेशा के लिए तख़्त पर  
 बिठाता है।  
 8 और वह सरफ़राज़ होते हैं और अगर वह बेड़ियों से  
 जकड़े जाएँ  
 और मुसीबत की रस्सियों से बंधें,  
 9 तो वह उन्हें उनका 'अमल और उनकी तक्सीरें दिखाता  
 है,  
 कि उन्होंने घमण्ड किया है।  
 10 वह उनके कान को ता'लीम के लिए खोलता है,  
 और हुक्म देता है कि वह गुनाह से बाज़ आयें।  
 11 अगर वह सुन लें और उसकी इबादत करें तो अपने  
 दिन इक़बालमंदी में  
 और अपने बरस खुशहाली में बसर करेंगे  
 12 लेकिन अगर न सुनें तो वह तलवार से हलाक़ होंगे,  
 और जिहालत में मरेंगे।  
 13 लेकिन वह जो दिल में बे दीन हैं,  
 ग़ज़ब को रख छोड़ते जब वह उन्हें बांधता है तो वह  
 मदद के लिए दुहाई नहीं देते,  
 14 वह जवानी में मरते हैं  
 और उनकी ज़िन्दगी छोटों के बीच में बर्बाद होता है।



- 19 हम को सिखा कि हम उस से क्या कहें,  
क्योंकि अंधेरे की वजह से हम अपनी तक़रीर को दुरुस्त  
नहीं कर सकते?
- 20 क्या उसको बताया जाए कि मैं बोलना चाहता हूँ?  
या क्या कोई आदमी यह ख्वाहिश करे कि वह निगल  
लिया जाए?
- 21 “अभी तो आदमी उस नूर को नहीं देखते जो असमानों  
पर रोशन है,  
लेकिन हवा चलती है और उन्हें साफ़ कर देती है।
- 22 दख्खिनी से सुनहरी रोशनी आती है,  
खुदा मुहीब शौकत से मुलब्स है।
- 23 हम क़ादिर — ए — मुतलक़ को पा नहीं सकते,  
वह कुदरत और 'अदल में शानदार है,  
और इन्साफ़ की फ़िरावानी में ज़ुल्म न करेगा।
- 24 इसीलिए लोग उससे डरते हैं;  
वह अक़्लमन्द दिलों की परवाह नहीं करता।”

### 38

?????????? ?? ??????? ?? ?????????

- 1 तब खुदावन्द ने अय्यूब को बगोले में से यूँ जवाब  
दिया,
- 2 “यह कौन है जो नादानी की बातों से,  
मसलहत पर पर्दा डालता है?”
- 3 मर्द की तरह अब अपनी कमर कस ले,  
क्योंकि मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तू मुझे बता।
- 4 “तू कहाँ था, जब मैंने ज़मीन की बुनियाद डाली?  
तू 'अक़्लमन्द है तो बता।
- 5 क्या तुझे मा'लूम है किसने उसकी नाप ठहराई?  
या किसने उस पर सूत खींचा?
- 6 किस चीज़ पर उसकी बुनियाद डाली गई,  
या किसने उसके कोने का पत्थर बिठाया,
- 7 जब सुबह के सितारे मिलकर गाते थे,  
और खुदा के सब बेटे खुशी से ललकारते थे?
- 8 “या किसने समन्दर को दरवाज़ों से बंद किया,  
जब वह ऐसा फूट निकला जैसे रहम से,
- 9 जब मैंने बादल को उसका लिबास बनाया,  
और गहरी तारीकी को उसका लपेटने का कपड़ा,
- 10 और उसके लिए हृद ठहराई,  
और बेन्डू और किवाड़ लगाए,
- 11 और कहा, 'यहाँ तक तू आना, लेकिन आगे नहीं,  
और यहाँ तक तेरी बिछड़ती हुई मौजें रुक जाएँगी’?
- 12 “क्या तू ने अपनी उम्र में कभी सुबह पर हुकमरानी  
की,  
दिया और क्या तूने फ़ज़र को उसकी जगह बताई,

- 13 ताकि वह ज़मीन के किनारों पर क़ब्ज़ा करे,  
और शरीर लोग उसमें से झाड़ दिए जाएँ?
- 14 वह ऐसे बदलती है जैसे मुहर के नीचे चिकनी मिटटी
- 15 और तमाम चीज़ें कपड़े की तरह नुमाया हो जाती हैं,  
और और शरीरों से उसकी बन्दगी रुक जाती है और  
बुलन्द बाज़ू तोड़ा जाता है।
- 16 “क्या तू समन्दर के सोतों में दाखिल हुआ है?  
या गहराव की थाह में चला है?
- 17 क्या मौत के फाटक तुझ पर ज़ाहिर कर दिए गए हैं?  
या तू ने मौत के साये के फाटकों को देख लिया है?
- 18 क्या तू ने ज़मीन की चौड़ाई को समझ लिया है?  
अगर तू यह सब जानता है तो बता।
- 19 “नूर के घर का रास्ता कहाँ है?  
रही तारीकी, इसलिए उसका मकान कहाँ है?
- 20 ताकि तू उसे उसकी हृद तक पहुँचा दे,  
और उसके मकान की राहों को पहचाने?
- 21 बेशक तू जानता होगा; क्योंकि तू उस वक़्त पैदा हुआ  
था,  
और तेरे दिनों का शुमार बड़ा है।
- 22 क्या तू बर्फ़ के मख़ज़नों में दाखिल हुआ है,  
या ओलों के मख़ज़नों को तूने देखा है,
- 23 जिनको मैंने तकलीफ़ के वक़्त के लिए,  
और लड़ाई और जंग के दिन की खातिर रख छोड़ा है?
- 24 रोशनी किस तरीक़े से तक़सीम होती है,  
या पूरबी हवा ज़मीन पर फैलाई जाती है?
- 25 सैलाब के लिए किसने नाली काटी,  
या कड़क की बिजली के लिए रास्ता,
- 26 ताकि उसे ग़ैर आबाद ज़मीन पर बरसाए और वीरान  
पर जिसमें इंसान नहीं बसता,
- 27 ताकि उजड़ी और सूनी ज़मीन को सेराब करे, और नर्म  
— नर्म घास उगाए?
- 28 क्या बारिश का कोई बाप है,  
या शबनम के क़तरे किससे तवल्लुद हुए?
- 29 यख़ किस के बतन निकला से निकला है,  
और आसमान के सफ़ेद पाले को किसने पैदा किया?
- 30 पानी पत्थर सा हो जाता है,  
और गहराव की सतह जम जाती है।
- 31 “क्या तू 'अक़द — ए — सुरैया को बाँध सकता,  
या जब्बार के बंधन को खोल सकता है,
- 32 क्या तू मिन्तक़तू — उल — बुरुज को उनके वक़्तों  
पर निकाल सकता है?  
या बिनात — उन — ना'श की उनकी सहेलियों के साथ  
रहबरी कर सकता है?
- 33 क्या तू आसमान के क़वानीन को जानता है,



और ज़मीन पर उनका इस्तिथार काईम कर सकता है?  
 34 क्या तू बादलों तक अपनी आवाज़ बुलन्द कर सकता है,  
 ताकि पानी की फ़िरावानी तुझे छिपा ले?  
 35 क्या तू बिजली को खाना कर सकता है कि वह जाए,  
 और तुझ से कहे मैं हाज़िर हूँ?  
 36 बातिन में हिकमत किसने रखी,  
 और दिल को अक्ल किसने बरख़ी?  
 37 बादलों को हिकमत से कौन गिन सकता है?  
 या कौन आसमान की मशकों को उँडेल सकता है,  
 38 जब गर्द मिलकर तूदा बन जाती है,  
 और ढेले एक साथ मिल जाते हैं?”  
 39 “क्या तू शेरनी के लिए शिकार मार देगा,  
 या बबर के बच्चों को सेर करेगा,  
 40 जब वह अपनी माँदों में बैठे हों,  
 और घात लगाए आड़ में दुबक कर बैठे हों?  
 41 पहाड़ी कौवे के लिए कौन ख़ूराक मुहैया करता है,  
 जब उसके बच्चे खुदा से फ़रियाद करते,  
 और ख़ूराक न मिलने से उड़ते फिरते हैं?”

### 39

?????????? ?? ?????????? ?????? ???????

1 क्या तू जनता है कि पहाड़ पर की जंगली बकरियाँ कब  
 बच्चे देती हैं?  
 या जब हिरनीयाँ बियाती हैं, तो क्या तू देख सकता है?  
 2 क्या तू उन महीनों को जिन्हें वह पूरा करती हैं, गिन  
 सकता है?  
 या तुझे वह वक्रत मा'लूम है जब वह बच्चे देती हैं?  
 3 वह झुक जाती हैं;  
 वह अपने बच्चे देती हैं, और अपने दर्द से रिहाई पाती  
 हैं।  
 4 उनके बच्चे मोटे ताज़े होते हैं; वह खुले मैदान में बढ़ते  
 हैं।  
 वह निकल जाते हैं और फिर नहीं लौटते।  
 5 गधे को किसने आज्ञाद किया?  
 जंगली गधे के बंद किसने खोले?  
 6 वीरान को मैंने उसका मकान बनाया,  
 और ज़मीन — ए — शोर को उसका घर।  
 7 वह शहर के शोर — ओ — गुल को हेच समझता है,  
 और हाँकने वाले की डॉट को नहीं सुनता।  
 8 पहाड़ों का सिलसिला उसकी चरागाह है,  
 और वह हरियाली की तलाश में रहता है।  
 9 “क्या जंगली साँड तेरी खिदमत पर राज़ी होगा?  
 क्या वह तेरी चरनी के पास रहेगा?

10 क्या तू जंगली साँड को रस्से से बाँधकर रेघारी में  
 चला सकता है?  
 या वह तेरे पीछे — पीछे वादियों में हेंगा फेरेगा?  
 11 क्या तू उसकी बड़ी ताक़त की वजह से उस पर भरोसा  
 करेगा?  
 या क्या तू अपना काम उस पर छोड़ देगा?  
 12 क्या तू उस पर भरोसा करेगा कि वह तेरा ग़ल्ला घर  
 ले आए,  
 और तेरे खलीहान का अनाज इकट्ठा करे?  
 13 “शुतरमुर्ग के बाज़ू आसूदा हैं,  
 लेकिन क्या उसके पर — ओ — बाल से शफ़क़त ज़ाहिर  
 होती है?  
 14 क्यूँकि वह तो अपने अंडे ज़मीन पर छोड़ देती है,  
 और रेत से उनको गर्मी पहुँचाती है;  
 15 और भूल जाती है कि वह पाँव से कुचले जाएँगे,  
 या कोई जंगली जानवर उनको रौंद डालेगा।  
 16 वह अपने बच्चों से ऐसी सख़्तदिली करती है कि जैसे  
 वह उसके नहीं।  
 चाहे उसकी मेहनत रायगाँ जाए उसे कुछ ख़ौफ़ नहीं।  
 17 क्यूँकि खुदा ने उसे 'अक्ल से महरूम रखा,  
 और उसे समझ नहीं दी।  
 18 जब वह तनकर सीधी खड़ी हो जाती है,  
 तो घोड़े और उसके सवार दोनों को नाचीज़ समझती हैं।  
 19 “क्या घोड़े को उसका ताक़त तू ने दी है?  
 क्या उसकी गर्दन की लहराती अयाल से तूने मुलब्वस  
 किया?  
 20 क्या उसे टिड्डी की तरह तूने कुदाया है?  
 उसके फ़राने की शान मुहीब है।  
 21 वह वादी में टाप मारता है और अपने ज़ोर में खुश है।  
 वह हथियारबंद आदमियों का सामना करने को निकलता  
 है।  
 22 वह ख़ौफ़ को नाचीज़ जानता है और घबराता नहीं,  
 और वह तलवार से मुँह नहीं मोड़ता।  
 23 तर्कश उस पर खड़खड़ाता है,  
 चमकता हुआ भाला और साँग भी;  
 24 वह तुन्दी और क़हर में ज़मीन पैमाई करता है,  
 और उसे यक़ीन नहीं होता कि यह तुर ही की आवाज़ है।  
 25 जब जब तुरही बजती है, वह हिन हिन करता है,  
 और लड़ाई को दूर से सूँघ लेता है; सरदारों की गरज़ और  
 ललकार को भी।  
 26 “क्या बा'ज़ तेरी हिकमत से उड़ता है,  
 और दख़्खन की तरफ़ अपने बाज़ू फैलाता है?  
 27 क्या 'उक्राब तेरे हुक्म से ऊपर चढ़ता है,  
 और बुलन्दी पर अपना घोंसला बनाता है?

28 वह चट्टान पर रहता और वहीं बसेरा करता है;  
या'नी चट्टान की चोटी पर और पनाह की जगह में।  
29 वहीं से वह शिकार ताड़ लेता है  
, उसकी आँखें उसे दूर से देख लेती हैं।  
30 उसके बच्चे भी खून चूसते हैं,  
और जहाँ मक्तूल हैं वहाँ वह भी है।”

## 40

1 खुदावन्द ने अय्यूब से यह भी कहा,  
2 “क्या जो फुजूल हुज्जत करता है वह क़ादिर — ए —  
मुतलक़ से झगड़ा करे?  
जो खुदा से बहस करता है, वह इसका जवाब दे।”

?????? ?? ?????????? ?? ??? ?????

3 अय्यूब का जवाब तब अय्यूब ने खुदावन्द को जवाब  
दिया,  
4 “देख, मैं नाचीज़ हूँ! मैं तुझे क्या जवाब दूँ?  
मैं अपना हाथ अपने मुँह पर रखता हूँ।  
5 अब जवाब न दूँगा; एक बार मैं बोल चुका,  
बल्कि दो बार लेकिन अब आगे न बढ़ूँगा।”

???????????? ?? ????????? ?? ??? ??  
????????

6 तब खुदावन्द ने अय्यूब को बगोले में से जवाब दिया,  
7 मर्द की तरह अब अपनी कमर कस ले,  
मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तू मुझे बता।  
8 क्या तू मेरे इन्साफ़ को भी बातिल ठहराएगा?  
9 क्या तू मुझे मुजरिम ठहराएगा ताकि खुद रास्त ठहरे?  
या क्या तेरा बाज़ू खुदा के जैसा है?  
और क्या तू उसकी तरह आवाज़ से गरज़ सकता है?  
10 ‘अब अपने को शान — ओ — शौकत से आरास्ता  
कर,  
और ‘इज्जत — ओ — जलाल से मुलब्स हो जा।  
11 अपने क्रूर के सैलाबों को बहा दे,  
और हर मगरूर को देख और ज़लील कर।  
12 हर मगरूर को देख और उसे नीचा कर,  
और शरीरों को जहाँ खड़े हों पामाल कर दे।  
13 उनको इकट्ठा मिट्टी में छिपा दे,  
और उस पोशीदा मक़ाम में उनके मुँह बाँध दे।  
14 तब मैं भी तेरे बारे में मान लूँगा,  
कि तेरा ही दहना हाथ तुझे बचा सकता है।  
15 ‘अब हिप्पो पोटीमस’ को देख, जिसे मैंने तेरे साथ  
बनाया;  
वह बैल की तरह घास खाता है।  
16 देख, उसकी ताक़त उसकी कमर में है,  
और उसका ज़ोर उसके पेट के पट्टों में।  
17 वह अपनी दुम को देवदार की तरह हिलाता है,

उसकी रानों की नसे एक साथ पैवस्ता हैं।  
18 उसकी हड्डियाँ पीतल के नलों की तरह हैं,  
उसके आ'ज़ा लोहे के बेन्डों की तरह हैं।  
19 वह खुदा की खास सन'अत' है;  
उसके खालिक़ ही ने उसे तलवार बख़शी है।  
20 यक़ीनन टीले उसके लिए ख़ूराक़ एक साथ पहुँचाते हैं  
जहाँ मैदान के सब जानवर खेलते कूदते हैं।  
21 वह कंवल के दरख़्त के नीचे लेटता है,  
सरकड़ों की आड़ और दलदल में।  
22 कंवल के दरख़्त उसे अपने साये के नीचे छिपा लेते  
हैं।  
नाले के बीदे उसे घेर लेती हैं।  
23 देख, अगर दरिया में बाढ़ हो तो वह नहीं काँपता चाहे  
यरदन उसके मुँह तक चढ़ आये वह बे खौफ़ है।  
24 जब वह होशियार हो, तो क्या कोई उसे पकड़ लेगा;  
या फंदा लगाकर उसकी नाक को छेदेगा?

## 41

???????????? ?? ????????? ????? ?????

1 क्या तू मगर कोशिस्त से बाहर निकाल सकता है  
या रस्सी से उसकी ज़बान को दबा सकता है?  
2 क्या तू उसकी नाक में रस्सी डाल सकता है?  
या उसका जबड़ा मेख से छेद सकता है?  
3 क्या वह तेरी बहुत मिन्नत समाजत करेगा?  
या तुझ से मीठी मीठी बातें कहेगा?  
4 क्या वह तेरे साथ 'अहद बांधेगा,  
कि तू उसे हमेशा के लिए नौकर बना ले?  
5 क्या तू उससे ऐसे खेलेगा जैसे परिन्दे से?  
या क्या तू उसे अपनी लड़कियों के लिए बाँध देगा?  
6 क्या लोग उसकी तिजारत करेंगे?  
क्या वह उसे सौदागरों में तक्रसीम करेंगे?  
7 क्या तू उसकी खाल को भालों से,  
या उसके सिर को माहीगीर के तरसूलों से भर सकता है?  
8 तू अपना हाथ उस पर धरे,  
तो लड़ाई को याद रखेगा और फिर ऐसा न करेगा।  
9 देख, उसके बारे में उम्मीद बेफ़ायदा है।  
क्या कोई उसे देखते ही गिर न पड़ेगा?  
10 कोई ऐसा तुन्दखू नहीं जो उसे छेड़ने की हिम्मत न  
करे।  
फिर वह कौन है जो मेरे सामने खड़ा होसके?  
11 किस ने मुझे पहले कुछ दिया है कि मैं उसे अदा करूँ?  
जो कुछ सारे आसमान के नीचे है वह मेरा है।  
12 न मैं उसके 'आज़ा के बारे में खामोश रहूँगा न उसकी  
ताक़त  
और खूबसूरत डील डोल के बारे में।

13 उसके ऊपर का लिबास कौन उतार सकता है?  
 उसके जबड़ों के बीच कौन आएगा?  
 14 उसके मुँह के किवाड़ों को कौन खोल सकता है?  
 उसके दाँतों का दायरा दहशत नाक है।  
 15 उसकी ढालें उसका फ़ख़र हैं;  
 जो जैसा सख़्त मुहर से पैवस्ता की गई हैं।  
 16 वह एक दूसरी से ऐसी जुड़ी हुई हैं,  
 कि उनके बीच हवा भी नहीं आ सकती।  
 17 वह एक दूसरी से एक साथ पैवस्ता हैं;  
 वह आपस में ऐसी जुड़ी हैं कि जुदा नहीं हो सकतीं।  
 18 उसकी छींके नूर अफ़शानी करती हैं  
 उसकी आँखें सुबह के पपोटों की तरह हैं।  
 19 उसके मुँह से जलती मश'अलें निकलती हैं,  
 और आग की चिंगारियाँ उड़ती हैं।  
 20 उसके नथनों से धुवाँ निकलता है,  
 जैसे खौलती देग और सुलगते सरकंडे से।  
 21 उसका साँस से कोयलों को दहका देता है,  
 और उसके मुँह से शो'ले निकलते हैं।  
 22 ताक़त उसकी गर्दन में बसती है,  
 और दहशत उसके आगे आगे चलती है।  
 23 उसके गोश्त की तहें आपस में जुड़ी हुई हैं;  
 वह उस पर खूब जुड़ी हैं और हट नहीं सकतीं।  
 24 उसका दिल पत्थर की तरह मज़बूत है,  
 बल्कि चक्की के निचले पाट की तरह।  
 25 जब खुदा उठ खड़ा होता है, तो ज़बरदस्त लोग डर  
 जाते हैं,  
 और घबराकर खौफ़ज़दा हो जाते हैं।  
 26 अगर कोई उस पर तलवार चलाए,  
 तो उससे कुछ नहीं बनता: न भाले, न तीर, न बरछी से।  
 27 वह लोहे को भूसा समझता है,  
 और पीतल को गली हुई लकड़ी।  
 28 तीर उसे भगा नहीं सकता,  
 फ़लाखन के पत्थर उस पर तिनके से हैं।  
 29 लाठियाँ जैसे तिनके हैं,  
 वह बछ्छी के चलने पर हँसता है।  
 30 उसके नीचे के हिस्से तेज़ ठीकरों की तरह हैं;  
 वह कीचड़ पर जैसे हेंगा फेरता है।  
 31 वह गहराव को देग की तरह खौलाता,  
 और समुन्दर को मरहम की तरह बना देता है।  
 32 वह अपने पीछे चमकीला निशान छोड़ जाता है;  
 गहराव गोया सफ़ेद नज़र आने लगता है।  
 33 ज़मीन पर उसका नज़ीर नहीं,  
 जो ऐसा बेखौफ़ पैदा हुआ हो।  
 34 वह हर ऊँची चीज़ को देखता है,

और सब मगरूरों का बादशाह है।”

## 42

1 तब अय्यूब ने खुदावन्द यूँ जवाब दिया

2 “मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है,  
 और तेरा कोई इरादा रुक नहीं सकता।  
 3 यह कौन है जो नादानी से मसलहत पर पर्दा डालता  
 है?”  
 लेकिन मैंने जो न समझा वही कहा,  
 या'नी ऐसी बातें जो मेरे लिए बहुत 'अजीब थीं' जिनको  
 मैं जानता न था।  
 4 मैं तेरी मिन्नत करता हूँ सुन,  
 मैं कुछ कहूँगा। मैं तुझ से सवाल करूँगा, तू मुझे बता।  
 5 मैंने तेरी ख़बर कान से सुनी थी,  
 लेकिन अब मेरी आँख तुझे देखती है;  
 6 इसलिए मुझे अपने आप से नफ़रत है,  
 और मैं खाक और राख में तौबा करता हूँ।”  
 7 और ऐसा हुआ कि जब खुदावन्द यह बातें अय्यूब  
 से कह चुका, तो उसने इलिफ़ज़ तेमानी से कहा कि “मेरा  
 ग़ज़ब तुझ पर और तेरे दोनों दोस्तों पर भड़का है, क्योंकि  
 तुम ने मेरे बारे में वह बात न कही जो हक़ है, जैसे मेरे  
 बन्दे अय्यूब ने कही। 8 इसलिए अब अपने लिए सात  
 बैल और सात मेंढे लेकर, मेरे बन्दे अय्यूब के पास जाओ  
 और अपने लिए सोख़्तनी कुर्बानी पेश करो, और मेरा  
 बन्दा अय्यूब तुम्हारे लिए दुआ करेगा; क्योंकि उसे तो  
 मैं कुबूल करूँगा ताकि तुम्हारी जिहालत के मुताबिक़  
 तुम्हारे साथ सुलूक न करूँ, क्योंकि तुम ने मेरे बारे में  
 वह बात न कही जो हक़ है, जैसे मेरे बन्दे अय्यूब ने  
 कही।” 9 इसलिए इलिफ़ज़ तेमानी, और बिलदद सूखी  
 और जूफ़र ना'माती ने जाकर जैसा खुदावन्द ने उनको  
 फ़रमाया था किया, और खुदावन्द ने अय्यूब को कुबूल  
 किया। 10 और खुदावन्द ने अय्यूब की गुलामी को जब  
 उसने अपने दोस्तों के लिए दुआ की बदल दिया और  
 खुदावन्द ने अय्यूब को जितने उसके पास पहले था  
 उसका दो गुना दे दिया। 11 तब उसके सब भाई और सब  
 बहनें और उसके सब अगले जान — पहचान उसके पास  
 आए, और उसके घर में उसके साथ खाना खाया; और  
 उस पर नौहा किया और उन सब बलाओं के बारे में, जो  
 खुदावन्द ने उस पर नाज़िल की थीं, उसे तसल्ली दी।  
 हर शख्स ने उसे एक सिक्का भी दिया और हर एक ने  
 सोने की एक बाली। 12 यूँ खुदावन्द ने अय्यूब के आख़िरी  
 दिनों में शुरू'आत की निस्वत ज़्यादा बरकत बख़शी; और

उसके पास चौदह हज़ार भेड़ बकरियाँ, और छः हज़ार ऊँट, और हज़ार जोड़ी बैल, और हज़ार गधियाँ, हो गईं।  
<sup>13</sup>उसके सात बेटे और तीन बेटियाँ भी हुईं।<sup>14</sup>और उसने पहली का नाम यमीमा और दूसरी का नाम कस्याह और तीसरी का नाम करन — हप्पूक रखवा।<sup>15</sup>और उस सारी सर ज़मीन में ऐसी 'औरतें कहीं न थीं, जो अय्यूब की बेटियों की तरह खूबसूरत हों, और उनके बाप ने उनको उनके भाइयों के बीच मीरास दी।<sup>16</sup> और इसके बाद अय्यूब एक सौ चालीस बरस ज़िन्दा रहा, और अपने बेटे और पोते चौथी पुश्त तक देखे।<sup>17</sup> और अय्यूब ने बुढ़ा और बुज़ुर्ग होकर वफ़ात पाई।



## जबूर

?????????? ?? ?????

जबूर की किताब शायराना अंदाज़ के गानों का एक मजमूआ है — ये पुराने अहदनामे की एक ऐसी किताब है जिस में मुख्तलिफ़ मुसन्निफ़ों की मुरक्कब तसनीफ़ पाई जाती है — इस को मुख्तलिफ़ मुसन्निफ़ों ने लिखा है जिन के नाम हैं: दाऊद जिसने 73 जबूरें लिखीं, आसफ ने 12, बनी क्रोरह ने 9, सुलैमान ने 3, इथान और मूसा ने एक एक जबूर लिखे — जबूर 90 और 51 एक जैसे जबूर हैं — सुलेमान और मूसा के जबूरों को छोड़ दीगर मुसन्निफ़ों की जबूरों के लिए काहिनों और लावियों की ज़िम्मेदारी थी कि दाऊद के दौर — ए — हुकूमत में मकदिस में इबादत के दौरान खुदा की हम्द — ओ — सिताइश के लिए नागमसराई का इंतज़ाम करे।

????? ?????? ?? ?????????? ?? ?????

इस किताब की तसनीफ़ की तारीख 1440-430 क़ब्ल मसीह के बीच है।

मूसा के ज़माने की तारीख में शख्सी जबूर लिखे गए थे — दाऊद आसफ और सुलेमान के ज़माने से लेकर एज़रा कातिब के पीछे चलने वालों तक जो गालिबन बाबुल की बंधवाई के बाद रहते थे, मतलब ये कि जबूर की किताब की तसनीफ़ का अरसा एक हजार साल का है।

????????? ?????????????? ?????? ??????

बनी इस्राईल कौम जिन की याददाश्त के लिए कि खुदा ने उन के लिए क्या कुछ किया था और पूरी तारिख के ईमानदारों के लिए।

????? ??????????

जबूर की किताब कई एक मौजूआत को समझने में मदद करती है: जैसे खुदा और उसकी तखलीक, जंग, इबादत, हिकमत, बुराई, खुदा की अदालत, इंसाफ़ और मसीह की दुबारा आमद वगैरा — इस के कईएक सफ़हात इस के कारीईन को खुदा की हम्द — ओ — सिताइश के लिए हौसला अफज़ाई करते हैं क्योंकि वह मौजूद है और उसने क्या कुछ किया है — जबूर की किताब हमारे खुदा की अजमत को चमकाता और मुसीबतों और तकलीफ़ों के औकात में अपनी वफ़ादारी की तौसीक करता, और अपने कलाम की म्कामिल मरकज़ीयत को याद दिलाता है।

???????

हम्द — ओ — सिताइश।

## बैरूनी खाका

1. मसीहा की किताब — 1:1-41:13
2. खाहिश की किताब — 42:1-72:20
3. बनी इस्राईल की किताब — 73:1-89:52
4. खुदा के क़ानून की किताब — 90:1-106:48
5. हम्द — ओ — सिताइश की किताब — 107:1-150:6

## पहली किताब

### 1

(?????? 1-41)

- 1 मुबारक है वह आदमी जो शरीरों की सलाह पर नहीं चलता,  
और ख़ताकारों की राह में खड़ा नहीं होता;  
और ठट्ठा बाज़ों की महफ़िल में नहीं बैठता।
- 2 बल्कि खुदावन्द की शरी'अत में ही उसकी खुशी है;  
और उसी की शरी'अत पर दिन रात उसका ध्यान रहता है।
- 3 वह उस दरख़्त की तरह होगा, जो पानी की नदियों के पास लगाया गया है।  
जो अपने वक़्त पर फलता है, और जिसका पत्ता भी नहीं मुरझाता।
- इसलिए जो कुछ वह करे फलदार होगा।
- 4 शरीर ऐसे नहीं, बल्कि वह भूसे की तरह हैं,  
जिसे हवा उड़ा ले जाती है।
- 5 इसलिए शरीर 'अदालत में क़ाईम न रहेंगे,  
न ख़ताकार सादिकों की जमा'अत में।
- 6 क्यूँकि खुदावन्द सादिकों की राह जानता है  
लेकिन शरीरों की राह बर्बाद हो जाएगी।

### 2

- 1 कौमें किस लिए गुस्से में है  
और लोग क्यूँ बेकार ख़याल बाँधते हैं
- 2 खुदावन्द और उसके मसीह के खिलाफ़ ज़मीन के बादशाह एक हो कर,  
और हाकिम आपस में मशवरा करके कहते हैं,  
3 “आओ, हम उनके बन्धन तोड़ डालें,  
और उनकी रस्सियाँ अपने ऊपर से उतार फेंके।”
- 4 वह जो आसमान पर तख़्त नशीन है हँसेगा,  
खुदावन्द उनका मज़ाक़ उड़ाएगा।
- 5 तब वह अपने ग़ज़ब में उनसे कलाम करेगा,  
और अपने ग़ज़बनाक गुस्से में उनको परेशान कर देगा,
- 6 “मैं तो अपने बादशाह को,  
अपने पाक पहाड़ सिय्यून पर बिठा चुका हूँ।”
- 7 मैं उस फ़रमान को बयान करूँगा: खुदावन्द ने मुझ से कहा,  
“तू मेरा बेटा है। आज तू मुझ से पैदा हुआ।

8 मुझ से माँग, और मैं क्रौमों को तेरी मीरास के लिए,  
और ज़मीन के आखिरी हिस्से तेरी मिल्कियत के लिए  
तुझे बख्शूँगा।

9 तू उनको लोहे के 'असा से तोड़ेगा,  
कुम्हार के बर्तन की तरह तू उनको चकनाचूर कर  
डालेगा।”

10 इसलिए अब ऐ बादशाहो,  
अक्लमंद बनो; ऐ ज़मीन की 'अदालत करने वालो,  
तरबियत पाओ।

11 डरते हुए खुदावन्द की इबादत करो,  
काँपते हुए खुशी मनाओ।

12 बेटे को चूमो, ऐसा न हो कि वह क्रहर में आए,  
और तुम रास्ते में हलाक हो जाओ,  
क्योंकि उसका ग़ज़ब जल्द भड़कने को है।  
मुबारक हैं वह सब जिनका भरोसा उस पर है।

### 3

?????? ?? ????? ?????

दाऊद का जबूर जब वह अपने बेटे अबीसलोम के सामने  
से भागा गया था।

1 ऐ खुदावन्द मेरे सताने वाले कितने बढ़ गए,  
वह जो मेरे खिलाफ़ उठते हैं बहुत हैं।

2 बहुत से मेरी जान के बारे में कहते हैं,  
कि खुदा की तरफ़ से उसकी मदद न होगी। सिलाह

3 लेकिन तू ऐ खुदावन्द, हर तरफ़ मेरी सिपर है।  
मेरा फ़ख़र और सरफ़राज़ करने वाला।

4 मैं बुलन्द आवाज़ से खुदावन्द के सामने फ़रियाद  
करता हूँ

और वह अपने पाक पहाड़ पर से मुझे जवाब देता है।  
सिलाह

5 मैं लेट कर सो गया;  
मैं जाग उठा, क्योंकि खुदावन्द मुझे संभालता है।

6 मैं उन दस हजार आदमियों से नहीं डरने का,  
जो चारों तरफ़ मेरे खिलाफ़ इकट्ठा हैं।

7 उठ ऐ खुदावन्द, ऐ मेरे खुदा, मुझे बचा ले!  
क्योंकि तूने मेरे सब दुश्मनों को जबड़े पर मारा है। तूने  
शरीरों के दाँत तोड़ डाले हैं।

8 नज़ात खुदावन्द की तरफ़ से है।  
तेरे लोगों पर तेरी बरकत हो!

### 4

1 जब मैं पुकारूँ तो मुझे जबाब दे ऐ मेरी सदाक़त के  
खुदा!  
तंगी में तूने मुझे कुशादगी बख़्शी, मुझ पर रहम कर और  
मेरी दुआ सुन ले।

2 ऐ बनी आदम! कब तक मेरी 'इज़ज़त के बदले रुस्वाई  
होगी?

तुम कब तक बकवास से मुहब्बत रखोगे और झूट के दर  
पे रहोगे?

3 जान लो कि खुदावन्द ने दीनदार को अपने लिए अलग  
कर रखा है;

जब मैं खुदावन्द को पुकारूँगा तो वह सुन लेगा।

4 थरथराओ और गुनाह न करो;  
अपने अपने बिस्तर पर दिल में सोचो और ख़ामोश रहो।

5 सदाक़त की कुर्बानियाँ पेश करो,  
और खुदावन्द पर भरोसा करो।

6 बहुत से कहते हैं कौन हम को कुछ भलाई दिखाएगा?  
ऐ खुदावन्द तू अपने चेहरे का नूर हम पर जलवह गर  
फ़रमा।

7 तूने मेरे दिल को उससे ज्यादा खुशी बख़्शी है,  
जो उनको ग़ल्ले और मय की बहुतायत से होती थी।

8 मैं सलामती से लेट जाऊँगा और सो रहूँगा: क्योंकि ऐ  
खुदावन्द!

सिर्फ़ तू ही मुझे मुल्मईन रखता है!

### 5

1 ऐ खुदावन्द मेरी बातों पर कान लगा!  
मेरी आहों पर तवज्जुह कर!

2 ऐ मेरे बादशाह! ऐ मेरे खुदा! मेरी फ़रियाद की आवाज़  
की तरफ़ मुतवज्जिह हो,  
क्योंकि मैं तुझ ही से दुआ करता हूँ।

3 ऐ खुदावन्द तू सुबह को मेरी आवाज़ सुनेगा।  
मैं सवेरे ही तुझ से दुआ करके इन्तिज़ार करूँगा।

4 क्योंकि तू ऐसा खुदा नहीं जो शरारत से खुश हो।  
गुनाह तेरे साथ नहीं रह सकता।

5 घमंडी तेरे सामने खड़े न होंगे।  
तुझे सब बदकिरदारों से नफ़रत है।

6 तू उनको जो झूट बोलते हैं हलाक करेगा।  
खुदावन्द को खूँख़्वार और दगाबाज़ आदमी से नफ़रत  
है।

7 लेकिन मैं तेरी शफ़क़त की कसरत से तेरे घर में  
आऊँगा।  
मैं तेरा रौ'ब मानकर तेरी पाक हैकल की तरफ़ रुख़ करके  
सिज्दा करूँगा।

8 ऐ खुदावन्द! मेरे दुश्मनों की वजह से मुझे अपनी  
सदाक़त में चला;

मेरे आगे आगे अपनी राह को साफ़ कर दे।

9 क्योंकि उनके मुँह में ज़रा सच्चाई नहीं, उनका बातिन  
सिर्फ़ बुराई है।

उनका गला खुली कब्र है, वह अपनी जबान से खुशामद करते हैं।

10 ऐ खुदा तू उनको मुजरिम ठहरा;

वह अपने ही मश्वरों से तबाह हों।

उनको उनके गुनाहों की ज्यादाती की वजह से खारिज कर दे;

क्योंकि उन्होंने तुझ से बगावत की है।

11 लेकिन वह सब जो तुझ पर भरोसा रखते हैं, शादमान हों,

वह सदा खुशी से ललकारें, क्योंकि तू उनकी हिमायत करता है।

और जो तेरे नाम से मुहब्बत रखते हैं, तुझ में खुश रहें।

12 क्योंकि तू सादिक को बरकत बरखेगा।

ऐ खुदावन्द! तू उसे करम से ढाल की तरह ढाँक लेगा।

## 6

1 ऐ खुदा तू मुझे अपने क्रहर में न झिड़क, और अपने गज़बनाक गुस्से में मुझे तम्बीह न दे।

2 ऐ खुदावन्द, मुझ पर रहम कर, क्योंकि मैं अधमरा हो गया हूँ।

ऐ खुदावन्द, मुझे शिफा दे, क्योंकि मेरी हड्डियों में बेकरारी है।

3 मेरी जान भी बहुत ही बेकरार है;

और तू ऐ खुदावन्द, कब तक?

4 लौट ऐ खुदावन्द, मेरी जान को छुड़ा।

अपनी शफ़क़त की खातिर मुझे बचा ले।

5 क्योंकि मौत के बाद तेरी याद नहीं होती,

कब्र में कौन तेरी शुक़रगुज़ारी करेगा?

6 मैं कराहते कराहते थक गया,

मैं अपना पलंग आँसुओं से भिगोता हूँ हर रात मेरा बिस्तर तैरता है।

7 मेरी आँख ग़म के मारे बैठी जाती हैं,

और मेरे सब मुख़ालिफ़ों की वजह से धुंधलाने लगीं।

8 ऐ सब बदकिरदारो, मेरे पास से दूर हो;

क्योंकि खुदावन्द ने मेरे रोने की आवाज़ सुन ली है।

9 ख़ुदावन्द ने मेरी मिन्नत सुन ली;

ख़ुदावन्द मेरी दुआ कुबूल करेगा।

10 मेरे सब दुश्मन शर्मिन्दा और बहुत ही बेकरार होंगे;

वह लौट जाएँगे, वह अचानक शर्मिन्दा होंगे।

## 7

1 ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, मेरा भरोसा तुझ पर है;

सब पीछा करने वालों से मुझे बचा और छुड़ा,

2 ऐसा न हो कि वह शेर — ए — बबर की तरह मेरी जान को फाड़े;

वह उसे टुकड़े टुकड़े कर दे और कोई छुड़ाने वाला न हो।

3 ऐ खुदावन्द मेरे खुदा,

अगर मैंने यह किया हो, अगर मेरे हाथों से बुराई हुई हो;

4 अगर मैंने अपने मेल रखने वाले से भलाई के बदले बुराई की हो,

बल्कि मैंने तो उसे जो नाहक मेरा मुख़ालिफ़ था, बचाया है;

5 तो दुश्मन मेरी जान का पीछा करके उसे आ पकड़े,

बल्कि वह मेरी ज़िन्दगी को बर्बाद करके मिट्टी में,

और मेरी 'इज्जत को खाक में मिला दे। सिलाह

6 ऐ खुदावन्द, अपने क्रहर में उठ;

मेरे मुख़ालिफ़ों के ग़ज़ब के मुकाबिले में तू खड़ा हो जा;

और मेरे लिए जाग! तूने इन्साफ़ का हुक्म तो दे दिया है।

7 तेरे चारों तरफ़ क़ौमों का इजितमा'अ हो;

और तू उनके ऊपर 'आलम — ए — बाला को लौट जा

8 खुदावन्द, क़ौमों का इन्साफ़ करता है;

ऐ खुदावन्द, उस सदाक़त — ओ — रास्ती के मुताबिक़ जो मुझ में है मेरी'अदालत कर।

9 काश कि शरीरों की बदी का खात्मा हो जाए,

लेकिन सादिक को तू क़याम बरख़;

क्योंकि खुदा — ए — सादिक दिलों और गुदों को जाँचता है।

10 मेरी ढाल खुदा के हाथ में है,

जो रास्त दिलों को बचाता है।

11 खुदा सादिक मुन्सिफ़ है,

बल्कि ऐसा खुदा जो हर रोज़ क्रहर करता है।

12 अगर आदमी बाज़ न आए तो वह अपनी तलवार तेज़ करेगा;

उसने अपनी कमान पर चिल्ला चढ़ाकर उसे तैयार कर लिया है।

13 उसने उसके लिए मौत के हथियार भी तैयार किए हैं;

वह अपने तीरों को आतिशी बनाता है।

14 देखो, उसे बुराई की पैदाइश का दर्द लगा है!

बल्कि वह शरारत से फलदार हुआ और उससे झूट पैदा हुआ।

15 उसने गढ़ा खोद कर उसे गहरा किया,

और उस खन्दक में जो उसने बनाई थी खुद गिरा।

16 उसकी शरारत उल्टी उसी के सिर पर आएगी;

उसका ज़ुल्म उसी की खोपड़ी पर नाज़िल होगा।

17 खुदावन्द की सदाक़त के मुताबिक़ मैं उसका शुक्र करूँगा,  
और खुदावन्द ताला के नाम की तारीफ़ गाऊँगा।

## 8

1 ऐ खुदावन्द हमारे रब तेरा नाम तमाम ज़मीन पर कैसा बुज़ुर्ग़ है!

तूने अपना जलाल आसमान पर क़ाईम किया है।

2 तूने अपने मुखालिफ़ों की वजह से बच्चों और शीरख़्वारों के मुँह से कुदरत को क़ाईम किया, ताकि तू दुश्मन और इन्तक़ाम लेने वाले को ख़ामोश कर दे।

3 जब मैं तेरे आसमान पर जो तेरी दस्तकारी है, और चाँद और सितारों पर जिनको तूने मुक़रर किया, ग़ौर करता हूँ।

4 तो फिर इंसान क्या है कि तू उसे याद रखे, और बनी आदम क्या है कि तू उसकी ख़बर ले?

5 क्यूँकि तूने उसे खुदा से कुछ ही कमतर बनाया है, और जलाल और शौक़त से उसे ताजदार करता है।

6 तूने उसे अपनी दस्तकारी पर इख़्तियार बख़्शा है; तूने सब कुछ उसके क़दमों के नीचे कर दिया है।

7 सब भेड़ — बकरियाँ,  
गाय — बैल बल्कि सब जंगली जानवर

8 हवा के परिन्दे और समन्दर की  
और जो कुछ समन्दरों के रास्ते में चलता फिरता है।

9 ऐ खुदावन्द, हमारे रब्ब!  
तेरा नाम पूरी ज़मीन पर कैसा बुज़ुर्ग़ है!

## 9

1 मैं अपने पूरे दिल से खुदावन्द की शुक्रगुज़ारी करूँगा;  
मैं तेरे सब 'अजीब कामों का बयान करूँगा।

2 मैं तुझ में खुशी मनाऊँगा और मसरूर हूँगा;  
ऐ हक़ता'ला, मैं तेरी सिताइश करूँगा।

3 जब मेरे दुश्मन पीछे हटते हैं,  
तो तेरी हुज़ूरी की वजह से लगज़िश खाते और हलाक हो जाते हैं।

4 क्यूँकि तूने मेरे हक़ की और मेरे मु'आमिले की ताईद की है।

तूने तख़्त पर बैठकर सदाक़त से इन्साफ़ किया।

5 तूने क़ौमों को झिड़का, तूने शरीरों को हलाक किया है;  
तूने उनका नाम हमेशा से हमेशा के लिए मिटा डाला है।

6 दुश्मन ख़त्म हुए, वह हमेशा के लिए बर्बाद हो गए;  
और जिन शहरों को तूने ढा दिया, उनकी यादगार तक मिट गई।

7 लेकिन खुदावन्द हमेशा तक तख़्त नशीन है,  
उसने इन्साफ़ के लिए अपना तख़्त तैयार किया है;

8 और वही सदाक़त से ज़हान की 'अदालत करेगा,  
और रास्ती से क़ौमों का इन्साफ़ करेगा।

9 खुदावन्द मज़लूमों के लिए ऊँचा बुर्ज़ होगा,  
मुसीबत के दिनों में ऊँचा बुर्ज़।

10 और वह जो तेरा नाम जानते हैं तुझ पर भरोसा करेंगे,  
क्यूँकि ऐ खुदावन्द, तूने अपने चाहने वालों को नहीं छोड़ा।

11 खुदावन्द की सिताइश करो, जो सिय्यूनमें रहता है!  
लोगों के बीच उसके कामों का बयान करो

12 क्यूँकि खून का पूछताछ करने वाला उनको याद रखता है;

वह ग़रीबों की फ़रियाद को नहीं भूलता।

13 ऐ खुदावन्द, मुझ पर रहम कर।

तू जो मौत के फाटकों से मुझे उठाता है,  
मेरे उस दुख को देख जो मेरे नफ़रत करने वालों की तरफ़ से है।

14 ताकि मैं तेरी कामिल सिताइश का इज़हार करूँ।  
सिय्यून की बेटी के फाटकों पर, मैं तेरी नजात से खुश हूँगा

15 क़ौमों खुद उस गढ़ में गिरी हैं जिसे उन्होंने खोदा था;  
जो जाल उन्होंने लगाया था उसमें उन ही का पाँव फंसा।

16 खुदावन्द की शोहरत फैल गई, उसने इन्साफ़ किया है;

शरीर अपने ही हाथ के कामों में फंस गया है। हरगायून,  
सिलाह

17 शरीर पाताल में जाएँगे,

या'नी वह सब क़ौमों जो खुदा को भूल जाती हैं

18 क्यूँकि ग़रीब सदा भूले बिसरे न रहेंगे,  
न ग़रीबों की उम्मीद हमेशा के लिए टूटेगी।

19 उठ, ऐ खुदावन्द! इंसान ग़ालिब न होने पाए।  
क़ौमों की 'अदालत तेरे सामने हो।

20 ऐ खुदावन्द! उनको ख़ौफ़ दिला।

क़ौमों अपने आपको इंसान ही जानें।

## 10

1 ऐ खुदावन्द तू क्यूँ दूर खड़ा रहता है?

मुसीबत के वक़्त तू क्यूँ छिप जाता है?

2 शरीर के गुरुर की वजह से ग़रीब का तेज़ी से पीछा किया जाता है;

जो मन्सूबे उन्होंने बाँधे हैं, वह उन ही में गिरफ़्तार हो जाएँ।



3 क्योंकि शरीर अपनी जिस्मानी ख्वाहिश पर फ़ख़र करता है,  
और लालची खुदावन्द को छोड़ देता बल्कि उसकी नाकदरी करता है।

4 शरीर अपने तकव्वुर में कहता है कि वह पूछताछ नहीं करेगा;

उसका खयाल सरासर यही है कि कोई खुदा नहीं।

5 उसकी राहें हमेशा बराबर हैं,  
तेरे अहकाम उसकी नज़र से दूर — ओ — बुलन्द हैं;  
वह अपने सब मुखालिफ़ों पर फ़ुंकारता है।

6 वह अपने दिल में कहता है, “मैं जुम्बिश नहीं खाने का;  
नसल दर नसल मुझ पर कभी मुसीबत न आएगी।”

7 उसका मुँह ला'नत — ओ — दगा और जुल्म से भरा है;

शरारत और बदी उसकी ज़बान पर हैं।

8 वह देहात की घातों में बैठता है,  
वह पोशीदा मक़ामों में बेगुनाह को क़त्ल करता है;  
उसकी आँखें बेकस की घात में लगी रहती हैं।

9 वह पोशीदा मक़ाम में शेर — ए — बबर की तरह दुबक कर बैठता है;

वह ग़रीब को पकड़ने की घात लगाए रहता है;  
वह ग़रीब को अपने जाल में फंसा कर पकड़ लेता है।

10 वह दुबकता है, वह झुक जाता है;

और बेकस उसके पहलवानों के हाथ से मारे जाते हैं।

11 वह अपने दिल में कहता है, “खुदा भूल गया है, वह अपना मुँह छिपाता है;

वह हरगिज़ नहीं देखेगा।”

12 उठ ऐ खुदावन्द! ऐ खुदा अपना हाथ बुलंद कर!  
ग़रीबों को न भूल।

13 शरीर किस लिए खुदा की नाकदरी करता है  
और अपने दिल में कहता है कि तू पूछताछ ना करेगा?

14 तूने देख लिया है क्योंकि तू शरारत और बुग़ज़ देखता है  
ताकि अपने हाथ से बदला दे।

बेकस अपने आप को तेरे सिपुर्द करता है तू ही यतीम का मददगार रहा है।

15 शरीर का बाज़ू तोड़ दे।

और बदकार की शरारत को जब तक बर्बाद न हो ढूँढ़ — ढूँढ़ कर निकाल।

16 खुदावन्द हमेशा से हमेशा बादशाह है।

क्रौमें उसके मुल्क में से हलाक हो गयीं।

17 ऐ खुदावन्द तूने हलीमों का मुद्दा सुन लिया है

तू उनके दिल को तैयार करेगा — तू कान लगा कर सुनेगा

18 कि यतीम और मज़लूम का इन्साफ़ करे  
ताकि इंसान जो खाक से है फिर ना डराए।

## 11

1 मेरा भरोसा खुदावन्द पर है तुम क्यूँकर मेरी जान से कहते हो कि चिड़िया की तरह अपने पहाड़ पर उड़ जा?

2 क्यूँकि देखो! शरीर कमान खींचते हैं वह तीर को चिल्ले पर रखते हैं ताकि अँधेरे में रास्त दिलों पर चलायें।

3 अगर बुनयाद ही उखाड़ दी जाये तो सादिक क्या कर सकता है।

4 खुदावन्द अपनी पाक हैकल में है खुदावन्द का तख़्त आसमान पर है। उसकी आँखें बनी आदम को देखती और उसकी पलकें उनको जाँचती हैं।

5 खुदावन्द सादिक को परखता है लेकिन शरीर और जुल्म को पसन्द करने वाले से उसकी रूह को नफ़रत है

6 वह शरीरों पर फंदे बरसायेगा आग और गंधक और लू उनके प्याले का हिस्सा होगा।

7 क्यूँकि खुदावन्द सादिक है वह सच्चाई को पसंद करता है रास्त बाज़ उसका दीदार हासिल करेंगे।

## 12

1 ऐ खुदावन्द! बचा ले क्यूँकि कोई दीनदार नहीं रहा और अमानत दार लोग बनी आदम में से मिट गये।

2 वह अपने अपने पड़ोसी से झूठ बोलते हैं

वह खुशामदी लबों से दो रंगी बातें करते हैं

3 खुदावन्द सब खुशामदी लबों को

और बड़े बोल बोलने वाली ज़बान को काट डालेगा।

4 वह कहते हैं, “हम अपनी ज़बान से जीतेंगे, हमारे होंट हमारे ही हैं; हमारा मालिक कौन है?”

5 ग़रीबों की तबाही और ग़रीबों की आह की वजह से, खुदावन्द फ़रमाता है, कि अब मैं उठूँगा

और जिस पर वह फुंकारते हैं उसे अमन — ओ — अमान में रखूँगा।

6 खुदावन्द का कलाम पाक है,

उस चाँदी की तरह जो भट्टी में मिट्टी पर ताई गई, और सात बार साफ़ की गई हो।

7 तू ही ऐ खुदावन्द उनकी हिफ़ाज़त करेगा,

तू ही उनको इस नसल से हमेशा तक बचाए रखेगा।

8 जब बनी आदम में पाजीपन की क्रूर होती है, तो शरीर हर तरफ़ चलते फिरते हैं।

## 13

1 ऐ खुदावन्द, कब तक? क्या तू हमेशा मुझे भूला रहेगा?

तू कब तक अपना चेहरा मुझ से छिपाए रखेगा?

2 कब तक मैं जी ही जी में मन्सूबा बाँधता रहूँ, और सारे दिन अपने दिल में ग़म किया करूँ? कब तक मेरा दुश्मन मुझ पर सर बुलन्द रहेगा?

3 ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, मेरी तरफ़ तवज्जुह कर और मुझे जवाब दे।

मेरी आँखें रोशन कर, ऐसा न हो कि मुझे मौत की नींद आ जाए

4 ऐसा न हो कि मेरा दुश्मन कहे, कि मैं इस पर ग़ालिब आ गया। ऐसा न हो कि जब मैं जुम्बिश खाऊँ तो मेरे मुखालिफ़ खुश हों।

5 लेकिन मैंने तो तेरी रहमत पर भरोसा किया है; मेरा दिल तेरी नजात से खुश होगा।

6 मैं खुदावन्द का हम्द गाऊँगा क्योंकि उसने मुझ पर एहसान किया है।

## 14

1 बेवकूफ़ ने अपने दिल में कहा है, कि कोई खुदा नहीं। वह बिगड़ गए,

उन्होंने नफ़रत अंगेज़ काम किए हैं; कोई नेकोकार नहीं।

2 खुदावन्द ने आसमान पर से बनी आदम पर निगाह की ताकि देखे कि कोई अक्लमन्द, कोई खुदा का तालिब है या नहीं।

3 वह सब के सब गुमराह हुए, वह एक साथ नापाक हो गए, कोई नेकोकार नहीं, एक भी नहीं।

4 क्या उन सब बदकिरदारों को कुछ इल्म नहीं, जो मेरे लोगों को ऐसे खा जाते हैं जैसे रोटी, और खुदावन्द का नाम नहीं लेते?

5 वहाँ उन पर बड़ा खौफ़ छा गया, क्योंकि खुदा सादिक़ नसल के साथ है।

6 तुम ग़रीब की मश्वरत की हँसी उड़ाते हो; इसलिए के खुदावन्द उसकी पनाह है।

7 काश कि इस्राईल की नजात सिय्यून में से होती! जब खुदावन्द अपने लोगों को गुलामी से लौटा लाएगा, तो या'कूब खुश और इस्राईल शादमान होगा।

## 15

1 ऐ खुदावन्द तेरे खेमे में कौन रहेगा? तेरे पाक पहाड़ पर कौन सुकूनत करेगा?

2 वह जो रास्ती से चलता और सदाक़त का काम करता,

और दिल से सच बोलता है।

3 वह जो अपनी ज़बान से बुहतान नहीं बाँधता, और अपने दोस्त से बदी नहीं करता, और अपने पड़ोसी की बदनामी नहीं सुनता।

4 वह जिसकी नज़र में रज़ील आदमी हक़ीर है, लेकिन जो खुदावन्द से डरते हैं उनकी 'इज़ज़त करता है; वह जो क़सम खाकर बदलता नहीं चाहे नुक़सान ही उठाए।

5 वह जो अपना रुपया सूद पर नहीं देता, और बेगुनाह के खिलाफ़ रिश्वत नहीं लेता। ऐसे काम करने वाला कभी जुम्बिश न खाएगा।

## 16

1 ऐ खुदा मेरी हिफ़ाज़त कर, क्योंकि मैं तुझ ही में पनाह लेता हूँ।

2 मैंने खुदावन्द से कहा "तू ही रब है तेरे अलावा मेरी भलाई नहीं।"

3 ज़मीन के पाक लोग वह बरगुज़ीदा हैं, जिनमें मेरी पूरी खुशनूदी है।

4 ग़ैर मा'बूदों के पीछे दौड़ने वालों का ग़म बढ़ जाएगा; मैं उनके से खून वाले तपावन नहीं तपाऊँगा और अपने होटों से उनके नाम नहीं लूँगा।

5 खुदावन्द ही मेरी मीरास और मेरे प्याले का हिस्सा है; तू मेरे बख़रे का मुहाफ़िज़ है।

6 ज़रीब मेरे लिए दिलपसंद जगहों में पड़ी, बल्कि मेरी मीरास खूब है।

7 मैं खुदावन्द की हम्द करूँगा, जिसने, मुझे नसीहत दी है;

बल्कि मेरा दिल रात को मेरी तरबियत करता है

8 मैंने खुदावन्द को हमेशा अपने सामने रखवा है;

चूँकि वह मेरे दहने हाथ है, इसलिए मुझे जुम्बिश न होगी।

9 इसी वजह से मेरा दिल खुश और मेरी रूह शादमान है;

मेरा जिस्म भी अम्न — ओ — अमान में रहेगा।

10 क्योंकि तू न मेरी जान को पाताल में रहने देगा, न अपने मुक़द्दस को सड़ने देगा।

11 तू मुझे ज़िन्दगी की राह दिखाएगा;

तेरे हुज़ूरमें कामिल शादमानी है।

तेरे दहने हाथ में हमेशा की खुशी है।

## 17

1 ऐ खुदावन्द, हक़ को सुन, मेरी फ़रियाद पर तवज्जुह कर।

मेरी दुआ पर, जो दिखावे के होंटों से निकलती है कान लगा।

2 मेरा फ़ैसला तेरे सामने से जाहिर हो!

तेरी आँखें रास्ती को देखें!

3 तूने मेरे दिल को आजमा लिया है, तूने रात को मेरी निगरानी की;

तूने मुझे परखा और कुछ खोट न पाया,

मैंने ठान लिया है कि मेरा मुँह खता न करे।

4 इंसानी कामों में तेरे लबों के कलाम की मदद से मैं जालिमों की राहों से बाज़ रहा हूँ।

5 मेरे कदम तेरे रास्तों पर काईम रहे हैं, मेरे पाँव फिसले नहीं।

6 ऐ खुदा, मैंने तुझ से दुआ की है क्योंकि तू मुझे जवाब देगा।

मेरी तरफ़ कान झुका और मेरी 'अर्ज़ सुन ले।

7 तू जो अपने दहने हाथ से अपने भरोसा करने वालों को उनके मुखालिफ़ों से बचाता है,

अपनी 'अजीब शफ़क़त दिखा।

8 मुझे आँख की पुतली की तरह महफूज़ रख;

मुझे अपने परों के साये में छिपा ले,

9 उन शरीरों से जो मुझ पर जुल्म करते हैं, मेरे जानी दुश्मनों से जो मुझे घेरे हुए हैं।

10 उन्होंने अपने दिलों को सख़्त किया है;

वह अपने मुँह से बड़ा बोल बोलते हैं।

11 उन्होंने कदम कदम पर हम को घेरा है;

वह ताक लगाए हैं कि हम को ज़मीन पर पटक दें।

12 वह उस बबर की तरह है जो फाड़ने पर लालची हो,

वह जैसे जवान बबर है जो पोशीदा जगहों में दुबका हुआ है।

13 उठ, ऐ खुदावन्द! उसका सामना कर,

उसे पटक दे! अपनी तलवार से मेरी जान को शरीर से बचा ले।

14 अपने हाथ से ऐ खुदावन्द! मुझे लोगों से बचा।

या'नी दुनिया के लोगों से,

जिनका बख़रा इसी जिन्दगी में है, और जिनका पेट तू अपने ज़ख़ीरे से भरता है।

उनकी औलाद भी हस्ब — ए — मुराद है;

वह अपना बाक़ी माल अपने बच्चों के लिए छोड़ जाते हैं

15 लेकिन मैं तो सदाक़त में तेरा दीदार हासिल करूँगा;

मैं जब जागूँगा तो तेरी शबाहत से सेर हूँगा।

## 18

1 ऐ खुदावन्द, ऐ मेरी ताक़त!

मैं तुझसे मुहब्बत रखता हूँ।

2 खुदावन्द मेरी चट्टान, और मेरा किला और मेरा छुड़ाने वाला है;

मेरा खुदा, मेरी चट्टान जिस पर मैं भरोसा रखूँगा,

मेरी ढाल और मेरी नजात का सींग, मेरा ऊँचा बुर्ज।

3 मैं खुदावन्द को, जो सिताइश के लायक है पुकारूँगा।

यूँ मैं अपने दुश्मनों से बचाया जाऊँगा।

4 मौत की रस्सियों ने मुझे घेर लिया,

और बेदीनी के सैलाबों ने मुझे डराया;

5 पाताल की रस्सियाँ मेरे चारों तरफ़ थीं,

मौत के फंदे मुझ पर आ पड़े थे।

6 अपनी मुसीबत में मैंने खुदावन्द को पुकारा: और अपने खुदा से फ़रियाद की;

उसने अपनी हैकल में से मेरी आवाज़ सुनी,

और मेरी फ़रियाद जो उसके सामने थी,

उसके कान में पहुँची।

7 तब ज़मीन हिल गई और कॉप उठी,

पहाड़ों की बुनियादों ने जुम्बिश खाई और हिल गई,

इसलिए कि वह ग़ज़बनाक हुआ।

8 उसके नथनों से धुवाँ उठा,

और उसके मुँह से आग निकलकर भसम करने लगी;

कोयले उससे दहक उठे।

9 उसने आसमानों को भी झुका दिया और नीचे उतर आया;

और उसके पाँव तले गहरी तारीकी थी।

10 वह करूबी पर सवार होकर उड़ा,

बल्कि वह तेज़ी से हवा के बाज़ूओं पर उड़ा।

11 उसने जुल्मत या'नी बादल की तारीकी

और आसमान के दलदार बादलों को अपने चारों तरफ़ अपने छिपने की जगह

और अपना शामियाना बनाया।

12 उसकी हुज़ूरी की झलक से उसके दलदार बादल फट गए,

ओले और अंगारे।

13 और खुदावन्द आसमान में गरजा,

हक़ ता'ला ने अपनी आवाज़ सुनाई,

ओले और अंगारे।

14 उसने अपने तीर चलाकर उनको तितर बितर किया,

बल्कि ताबड़ तोड़ बिजली से उनको शिकस्त दी।

15 तब तेरी डाँट से ऐ खुदावन्द!

तेरे नथनों के दम के झोंके से,

पानी की थाह दिखाई देने लगी और जहान की बुनियादें नमूदार हुईं।

16 उसने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया,

और मुझे बहुत पानी में से खींचकर बाहर निकाला।

17 उसने मेरे ताक़तवर दुश्मन और मेरे 'अदावत रखने वालों' से मुझे छुड़ा लिया,  
 क्योंकि वह मेरे लिए बहुत ही ज़बरदस्त थे।  
 18 वह मेरी मुसीबत के दिन मुझ पर आ पड़े;  
 लेकिन खुदावन्द मेरा सहारा था।  
 19 वह मुझे कुशादा जगह में निकाल भी लाया।  
 उसने मुझे छुड़ाया, इसलिए कि वह मुझ से खुश था।  
 20 खुदावन्द ने मेरी रास्ती के मुवाफ़िक़ मुझे बदला दिया;  
 और मेरे हाथों की पाकीज़गी के मुताबिक़ मुझे बदला दिया।  
 21 क्योंकि मैं खुदावन्द की राहों पर चलता रहा,  
 और शरारत से अपने खुदा से अलग न हुआ।  
 22 क्योंकि उसके सब फ़ैसले मेरे सामने रहे,  
 और मैं उसके आर्ज़न से नाफ़रमान न हुआ।  
 23 मैं उसके सामने कामिल भी रहा,  
 और अपने को अपनी बदकारी से रोके रखवा।  
 24 खुदावन्द ने मुझे मेरी रास्ती के मुवाफ़िक़  
 और मेरे हाथों की पाकीज़गी के मुताबिक़ जो उसके सामने थी बदला दिया।  
 25 रहम दिल के साथ तू रहीम होगा,  
 और कामिल आदमी के साथ कामिल।  
 26 नेकोकार के साथ नेक होगा,  
 और कजरी के साथ टेढ़ा।  
 27 क्योंकि तू मुसीबत ज़दा लोगों को बचाएगा;  
 लेकिन मज़रूओं की आँखों को नीचा करेगा।  
 28 इसलिए के तू मेरे चराग़ को रौशन करेगा:  
 खुदावन्द मेरा खुदा मेरे अंधेरे को उजाला कर देगा।  
 29 क्योंकि तेरी बदौलत मैं फ़ौज़ पर धावा करता हूँ।  
 और अपने खुदा की बदौलत दीवार फाँद जाता हूँ।  
 30 लेकिन खुदा की राह कामिल है;  
 खुदावन्द का कलाम ताया हुआ है;  
 वह उन सबकी ढाल है जो उस पर भरोसा रखते हैं।  
 31 क्योंकि खुदावन्द के अलावा और कौन खुदा है?  
 और हमारे खुदा को छोड़कर और कौन चट्टान है?  
 32 खुदा ही मुझे ताक़त से कमर बस्ता करता है,  
 और मेरी राह को कामिल करता है।  
 33 वही मेरे पाँव हिरनीयों के से बना देता है,  
 और मुझे मेरी ऊँची जगहों में क़ाईम करता है।  
 34 वह मेरे हाथों को जंग करना सिखाता है,  
 यहाँ तक कि मेरे बाज़ू पीतल की कमान को झुका देते हैं।  
 35 तूने मुझ को अपनी नज़ात की ढाल बरूशी,  
 और तेरे दहने हाथ ने मुझे संभाला, और तेरी नमी ने मुझे बुजुर्ग बनाया है।

36 तूने मेरे नीचे, मेरे क़दम कुशादा कर दिए;  
 और मेरे पाँव नहीं फिसले।  
 37 मैं अपने दुश्मनों का पीछा करके उनको जा लूँगा;  
 और जब तक वह फ़ना न हो जाएँ, वापस नहीं आऊँगा।  
 38 मैं उनको ऐसा छेदूँगा कि वह उठ न सकेंगे;  
 वह मेरे पाँव के नीचे गिर पड़ेंगे।  
 39 क्योंकि तूने लड़ाई के लिए मुझे ताक़त से कमरबस्ता किया;  
 और मेरे मुखालिफ़ों को मेरे सामने नीचा दिखाया।  
 40 तूने मेरे दुश्मनों की नसल मेरी तरफ़ फेर दी,  
 ताकि मैं अपने 'अदावत रखने वालों' को काट डालूँ।  
 41 उन्होंने दुहाई दी लेकिन कोई न था जो बचाए,  
 खुदावन्द को भी पुकारा लेकिन उसने उनको जवाब न दिया।  
 42 तब मैंने उनको कूट कूट कर हवा में उड़ती हुई गर्द की तरह कर दिया;  
 मैंने उनको गली कूचों की कीचड़ की तरह निकाल फेंका।  
 43 तूने मुझे क्रौम के झगड़ों से भी छुड़ाया;  
 तूने मुझे क्रौमों का सरदार बनाया है;  
 जिस क्रौम से मैं वाक़िफ़ भी नहीं वह मेरी फ़र्माबरदार होगी।  
 44 मेरा नाम सुनते ही वह मेरी फ़रमाबरदारी करेंगे;  
 परदेसी मेरे ताबे' हो जाएँगे।  
 45 परदेसी मुरझा जाएँगे,  
 और अपने क़िले' से थरथराते हुए निकलेंगे।  
 46 खुदावन्द ज़िन्दा है! मेरी चट्टान मुबारक हो,  
 और मेरा नज़ात देने वाला खुदा मुस्ताज़ हो।  
 47 वही खुदा जो मेरा इन्तक़ाम लेता है;  
 और उम्मतों को मेरे सामने नीचा करता है।  
 48 वह मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ाता है;  
 बल्कि तू मुझे मेरे मुखालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता है।  
 तू मुझे टेढ़े आदमी से रिहाई देता है।  
 49 इसलिए ऐ खुदावन्द! मैं क्रौमों के बीच तेरी शुक्रगुज़ारी,  
 और तेरे नाम की मदहसराई करूँगा।  
 50 वह अपने बादशाह को बड़ी नज़ात 'इनायत' करता है,  
 और अपने मम्सूह दाऊद  
 और उसकी नसल पर हमेशा शफ़क़त करता है।

## 19

1 आसमान खुदा का जलाल ज़ाहिर करता है;  
 और फ़ज़ा उसकी दस्तकारी दिखाती है।  
 2 दिन से दिन बात करता है,



और रात को रात हिकमत सिखाती है।

3 न बोलना है न कलाम,

न उनकी आवाज़ सुनाई देती है।

4 उनका सुर सारी ज़मीन पर,

और उनका कलाम दुनिया की इन्तिहा तक पहुँचा है।

उसने आफ़ताब के लिए उनमें खेमा लगाया है।

5 जो दुल्हे की तरह अपने खिलवतखाने से निकलता है।

और पहलवान की तरह अपनी दौड़ में दौड़ने को खुश है।

6 वह आसमान की इन्तिहा से निकलता है,

और उसकी गश्त उसके किनारों तक होती है;

और उसकी हरारत से कोई चीज़ बे बहरा नहीं।

7 खुदावन्द की शरी'अत कामिल है,

वह जान को बहाल करती है;

खुदावन्द कि शहादत बरहक़ है नादान को दानिश बरख़्शती है।

8 खुदावन्द के क़वानीन रास्त हैं,

वह दिल को फ़रहत पहुँचाते हैं;

खुदावन्द का हुक्म बे'ऐब है, वह आँखों की रौशन करता है।

9 खुदावन्द का ख़ौफ़ पाक है, वह अबद तक क़ाईम रहता है;

खुदावन्द के अहक़ाम बरहक़ और बिल्कुल रास्त हैं।

10 वह सोने से बल्कि बहुत कुन्दन से ज्यादा पसंदीदा हैं;

वह शहद से बल्कि छत्ते के टपकों से भी शीरीन हैं।

11 नीज़ उन से तेरे बन्दे को आगाही मिलती है;

उनको मानने का अज़र बड़ा है।

12 कौन अपनी भूलचूक को जान सकता है?

तू मुझे पोशीदा 'ऐबों से पाक कर।

13 तू अपने बंदे को बे — बाकी के गुनाहों से भी बाज़ रख;

वह मुझ पर ग़ालिब न आएँ तो मैं कामिल हूँगा, और बड़े गुनाह से बचा रहूँगा।

14 मेरे मुँह का कलाम और मेरे दिल का खयाल तेरे सामने मक्बूल ठहरे;

ऐ खुदावन्द! ऐ मेरी चट्टान और मेरे फ़िदिया देने वाले!

## 20

1 मुसीबत के दिन खुदावन्द तेरी सुने।

या'कूब के खुदा का नाम तुझे बुलन्दी पर क़ाईम करे!

2 वह मक़दिस से तेरे लिए मदद भेजे,

और सिय्यून से तुझे कुव्वत बरख़्शे!

3 वह तेरे सब हृदियों को याद रखे,

और तेरी सोख्तनी कुर्बानी को कुबूल करे! सिलाह

4 वह तेरे दिल की आरज़ू पूरी करे,

और तेरी सब मश्वरत पूरी करे!

5 हम तेरी नजात पर खुशी मनाएंगे,

और अपने खुदा के नाम पर झंडे खड़े करेंगे।

खुदावन्द तेरी तमाम दरख्वास्तें पूरी करे!

6 अब मैं जान गया कि खुदावन्द अपने मम्सूह को बचा लेता है;

वह अपने दहने हाथ की नजात बरख़्श ताक़त से अपने पाक आसमान पर से उसे जवाब देगा।

7 किसी को रथों का और किसी को घोड़ों का भरोसा है,

लेकिन हम तो खुदावन्द अपने खुदा ही का नाम लेंगे।

8 वह तो झुके और गिर पड़े;

लेकिन हम उठे और सीधे खड़े हैं।

9 ऐ खुदावन्द! बचा ले;

जिस दिन हम पुकारें, तो बादशाह हमें जवाब दे।

## 21

1 ऐ खुदावन्द! तेरी ताक़त से बादशाह खुश होगा;

और तेरी नजात से उसे बहुत खुशी होगी।

2 तूने उसके दिल की आरज़ू पूरी की है,

और उसके मुँह की दरख्वास्त को नामंजूर नहीं किया। सिलाह;

3 क्योंकि तू उसे 'उम्दा बरकतें बरख़्शने में पेश कदमी करता,

और ख़ालिस सोने का ताज़ उसके सिर पर रखता है।

4 उसने तुझ से ज़िन्दगी चाही और तूने बरख़्शी;

बल्कि उम्र की दराज़ी हमेशा के लिए।

5 तेरी नजात की वजह से उसकी शौकत 'अज़ीम है;

तू उसे हश्मत — ओ — जलाल से आरास्ता करता है।

6 क्योंकि तू हमेशा के लिए उसे बरकतों से मालामाल करता है;

और अपने सामने उसे खुश — ओ — खुर्रम रखता है।

7 क्योंकि बादशाह का भरोसा खुदावन्द पर है;

और हक़ता'ला की शफ़क़त की बदौलत उसे हरगिज़ जुम्बिश न होगी।

8 तेरा हाथ तेरे सब दुश्मनों को ढूँड निकालेगा,

तेरा दहना हाथ तुझ से कीना रखने वालों का पता लगा लेगा।

9 तू अपने क़हर के वक़्त उनको जलते तनूर की तरह कर देगा।

खुदावन्द अपने ग़ज़ब में उनको निगल जाएगा,

और आग उनको खा जाएगी।

10 तू उनके फल को ज़मीन पर से बर्बाद कर देगा,

और उनकी नसल को बनी आदम में से।

11 क्योंकि उन्होंने तुझ से बदी करना चाहा,

उन्होंने ऐसा मन्सूबा बाँधा जिसे वह पूरा नहीं कर सकते।

12 क्योंकि तू उनका मुँह फेर देगा,

तू उनके मुक्काबले में अपने चिल्ले चढ़ाएगा।

13 ऐ खुदावन्द, तू अपनी ही ताकत में सरबुलन्द हो!

और हम गाकर तेरी कुदरत की सिताइश करेंगे।

## 22

1 ऐ मेरे खुदा! ऐ मेरे खुदा! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?

तू मेरी मदद और मेरे नाला — ओ — फ़रियाद से क्यों दूर रहता है?

2 ऐ मेरे खुदा! मैं दिन को पुकारता हूँ लेकिन तू जवाब नहीं देता

और रात को भी और खामोश नहीं होता।

3 लेकिन तू पाक है

तू जो इस्राईल के हम्दो — ओ — सना पर तख़्तनशीन है।

4 हमारे बाप दादा ने तुझ पर भरोसा किया;

उन्होंने भरोसा किया और तूने उसको छुड़ाया।

5 उन्होंने तुझ से फ़रियाद की और रिहाई पाई;

उन्होंने तुझ पर भरोसा किया और शर्मिंदा न हुए।

6 लेकिन मैं तो कीड़ा हूँ, इंसान नहीं;

आदमियों में अन्गुशतनुमा हूँ और लोगों में हकीर।

7 वह सब जो मुझे देखते हैं, मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं;

वह मुँह चिड़ाते, वह सर हिलाकर कहते हैं,

8 “अपने को खुदावन्द के सुपुर्द कर दे वही उसे छुड़ाए,

जब कि वह उससे खुश है तो वही उसे छुड़ाए।”

9 लेकिन तू ही मुझे पेट से बहार लाया;

जब मैं छोटा बच्चा ही था, तूने मुझे भरोसा करना सिखाया।

10 मैं पैदाइश ही से तुझ पर छोड़ा गया, मेरी माँ के पेट ही से तू मेरा खुदा है।

11 मुझ से दूर न रह क्योंकि मुसीबत करीब है, इसलिए कि कोई मददगार नहीं।

12 बहुत से साँडों ने मुझे घेर लिया है, बसन के ताक़तवर साँड मुझे घेरे हुए हैं।

13 वह फाड़ने और गरजने वाले बबर की तरह मुझ पर अपना मूँह पसारते हुए हैं।

14 मैं पानी की तरह बह गया मेरी सब हड्डियाँ उखड़ गईं।

मेरा दिल मोम की तरह हो गया,

वह मेरे सीने में पिघल गया।

15 मेरी ताक़त ठीकरे की तरह खुश्क हो गई,

और मेरी ज़बान मेरे तालू से चिपक गई;

और तूने मुझे मौत की खाक में मिला दिया।

16 क्योंकि कुत्तो ने मुझे घेर लिया है;

बदकारो की गिरोह मुझे घेरे हुए है;

वह हाथ और मेरे पाँव छेदते हैं।

17 मैं अपनी सब हड्डियाँ गिन सकता हूँ;

वह मुझे ताकते और घूरते हैं।

18 वह मेरे कपड़े आपस में बाँटते हैं,

और मेरी पोशाक पर पर्ची डालते हैं।

19 लेकिन तू ऐ खुदावन्द, दूर न रह!

ऐ मेरे चारासाज़, मेरी मदद के लिए जल्दी कर!

20 मेरी जान को तलवार से बचा,

मेरी जान को कुत्ते के क़ाबू से।

21 मुझे बबर के मुँह से बचा,

बल्कि तूने साँडों के सींगों में से मुझे छुड़ाया है।

22 मैं अपने भाइयों से तेरे नाम का इज़हार करूँगा;

जमा'अत में तेरी सिताइश करूँगा।

23 ऐ खुदावन्द से डरने वालों, उसकी सिताइश करो!

ऐ या'क़ूब की औलाद, सब उसकी तम्जीद करो!

और ऐ इस्राईल की नसल, सब उसका डर मानो!

24 क्योंकि उसने न तो मुसीबत ज़दा की मुसीबत को हकीर

जाना न उससे नफ़रत की,

न उससे अपना मुँह छिपाया;

बल्कि जब उसने खुदा से फ़रियाद की तो उसने सुन ली।

25 बड़े मजमे' में मेरी सना ख़वानी का जरिया' तू ही है;

मैं उस से डरने वालों के सामने अपनी नज़रे अदा

करूँगा।

26 हलीम खाएँगे और सेर होंगे;

खुदावन्द के तालिब उसकी सिताइश करेंगे।

तुम्हारा दिल हमेशा तक ज़िन्दा रहे।

27 सारी दुनिया खुदावन्द को याद करेगी

और उसकी तरफ़ रूजू' लाएगी;

और क़ौमों के सब घराने तेरे सामने सिज्दा करेंगे।

28 क्योंकि सल्लनत खुदावन्द की है,

वही क़ौमों पर हाकिम है।

29 दुनिया के सब आसूदा हाल लोग खाएँगे और सिज्दा

करेंगे;

वह सब जो खाक में मिल जाते हैं उसके सामने झुकेंगे,

बल्कि वह भी जो अपनी जान को ज़िन्दा नहीं रख सकता।

30 एक नसल उसकी बन्दगी करेगी;

दूसरी नसल को खुदावन्द की ख़बर दी जाएगी।

31 वह आएँगे और उसकी सदाक़त को एक क़ौम पर जो पैदा होगी

यह कहकर ज़ाहिर करेंगे कि उसने यह काम किया है।

## 23

- 1 खुदावन्द मेरा चौपान है,  
मुझे कमी न होगी।
- 2 वह मुझे हरी हरी चरागाहों में बिठाता है;  
वह मुझे राहत के चश्मों के पास ले जाता है;
- 3 वह मेरी जान को बहाल करता है।  
वह मुझे अपने नाम की खातिर सदाकत की राहों पर ले  
चलता है।
- 4 बल्कि चाहे मौत के साये की वादी में से मेरा गुज़र हो,  
मैं किसी बला से नहीं डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ है;  
तेरे 'असा और तेरी लाठी से मुझे तसल्ली है।
- 5 तू मेरे दुश्मनों के सामने मेरे आगे दस्तरख्वान बिछाता  
है;  
तूने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा प्याला लबरेज़ होता  
है।
- 6 यकीनन भलाई और रहमत उम्र भर मेरे साथ साथ  
रहेगी:  
और मैं हमेशा खुदावन्द के घर में सकूनत करूंगा।

## 24

- 1 ज़मीन और उसकी मा'मुरी खुदावन्द ही की है,  
जहान और उसके बाशिन्दे भी।
- 2 क्योंकि उसने समन्दरों पर उसकी बुनियाद रखी  
और सैलाबों पर उसे काईम किया।
- 3 खुदावन्द के पहाड़ पर कौन चढ़ेगा?  
और उसके पाक मक़ाम पर कौन खड़ा होगा?
- 4 वही जिसके हाथ साफ़ हैं और जिसका दिल पाक है,  
जिसने बकवास पर दिल नहीं लगाया,  
और मक़्र से क़सम नहीं खाई।
- 5 वह खुदावन्द की तरफ़ से बरकत पाएगा,  
हाँ अपने नजात देने वाले खुदा की तरफ़ से सदाक़त।
- 6 यही उसके तालिबों की नसल है,  
यही तेरे दीदार के तलबगार हैं या'नी या'कूब। सिलाह
- 7 ऐ फाटको, अपने सिर बुलन्द करो।  
ऐ अबदी दरवाज़ो, ऊँचे हो जाओ!  
और जलाल का बादशाह दाख़िल होगा।
- 8 यह जलाल का बादशाह कौन है?  
खुदावन्द जो क़वी और क़ादिर है,  
खुदावन्द जो जंग में ताक़तवर है!
- 9 ऐ फाटको, अपने सिर बुलन्द करो!  
ऐ अबदी दरवाज़ो, उनको बुलन्द करो!  
और जलाल का बादशाह दाख़िल होगा।
- 10 यह जलाल का बादशाह कौन है?

लश्क़रों का खुदावन्द, वही जलाल का बादशाह है।  
सिलाह।

## 25

- 1 ऐ खुदावन्द!  
मैं अपनी जान तेरी तरफ़ उठाता हूँ।
- 2 ऐ मेरे खुदा, मैंने तुझ पर भरोसा किया है,  
मुझे शर्मिन्दा न होने दे: मेरे दुश्मन मुझ पर खुशी न  
मनाएँ।
- 3 बल्कि जो तेरे मुन्तज़िर हैं उनमें से कोई शर्मिन्दा न  
होगा;  
लेकिन जो नाहक़ बेवफ़ाई करते हैं वही शर्मिन्दा होंगे।
- 4 ऐ खुदावन्द, अपनी राहें मुझे दिखा;  
अपने रास्ते मुझे बता दे।
- 5 मुझे अपनी सच्चाई पर चला और ता'लीम दे,  
क्योंकि तू मेरा नजात देने वाला खुदा है;  
मैं दिन भर तेरा ही मुन्तज़िर रहता हूँ।
- 6 ऐ खुदावन्द, अपनी रहमतों और शफ़क़तों को याद  
फ़रमा;  
क्योंकि वह शुरू से हैं।
- 7 मेरी जवानी की ख़ताओं और मेरे गुनाहों को याद न  
कर;  
ऐ खुदावन्द, अपनी नेकी की खातिर अपनी शफ़क़त के  
मुताबिक़ मुझे याद फ़रमा।
- 8 खुदावन्द नेक और रास्त है;  
इसलिए वह गुनहगारों को राह — ए — हक़ की  
ता'लीम देगा।
- 9 वह हलीमों को इन्साफ़ की हिदायत करेगा,  
हाँ, वह हलीमों को अपनी राह बताएगा।
- 10 जो खुदावन्द के 'अहद और उसकी शहादतों को मानते  
हैं,  
उनके लिए उसकी सब राहें शफ़क़त और सच्चाई हैं।
- 11 ऐ खुदावन्द, अपने नाम की खातिर  
मेरी बदकारी मु'आफ़ कर दे क्योंकि वह बड़ी है।
- 12 वह कौन है जो खुदावन्द से डरता है?  
खुदावन्द उसको उसी राह की ता'लीम देगा जो उसे  
पसंद है।
- 13 उसकी जान राहत में रहेगी,  
और उसकी नसल ज़मीन की वारिस होगी।
- 14 खुदावन्द के राज़ को वही जानते हैं जो उससे डरते हैं,  
और वह अपना 'अहद उनको बताएगा।
- 15 मेरी आँखें हमेशा खुदावन्द की तरफ़ लगी रहती हैं,  
क्योंकि वही मेरा पाँव दाम से छुड़ाएगा।
- 16 मेरी तरफ़ मुतवज्जिह हो और मुझ पर रहम कर,  
क्योंकि मैं बेकस और मुसीबत ज़दा हूँ।

- 17 मेरे दिल के दुख बढ़ गए,  
तू मुझे मेरी तकलीफों से रिहाई दे।  
18 तू मेरी मुसीबत और जॉफ़िशानी को देख,  
और मेरे सब गुनाह मु'आफ़ फ़रमा।  
19 मेरे दुश्मनों को देख क्योंकि वह बहुत हैं  
और उनको मुझ से सख्त 'अदावत है।  
20 मेरी जान की हिफ़ाज़त कर, और मुझे छुड़ा;  
मुझे शर्मिन्दा न होने दे,  
क्योंकि मेरा भरोसा तुझ ही पर है।  
21 दियानतदारी और रास्तबाज़ी मुझे सलामत रखें,  
क्योंकि मुझे तेरी ही आस है।  
22 ऐ खुदा, इस्राईल को उसके सब दुखों से छुड़ा ले।

## 26

- 1 ऐ खुदावन्द, मेरा इन्साफ़ कर,  
क्योंकि मैं रास्ती से चलता रहा हूँ,  
और मैंने खुदावन्द पर बे लगज़िश भरोसा किया है।  
2 ऐ खुदावन्द, मुझे जाँच और आजमा;  
मेरे दिल — ओ — दिमाग़ को परख।  
3 क्योंकि तेरी शफ़क़त मेरी आँखों के सामने है,  
और मैं तेरी सच्चाई की राह पर चलता रहा हूँ।  
4 मैं बेहूदा लोगों के साथ नहीं बैठा,  
मैं रियाकारों के साथ कहीं नहीं जाऊँगा।  
5 बदकिरदारों की जमा'अत से मुझे नफ़रत है,  
मैं शरीरों के साथ नहीं बैठूँगा।  
6 मैं बेगुनाही में अपने हाथ धोऊँगा,  
और ऐ खुदावन्द, मैं तेरे मज़बूह का तवाफ़ करूँगा;  
7 ताकि शुक्रगुज़ारी की आवाज़ बुलन्द करूँ,  
और तेरे सब 'अजीब कामों को बयान करूँ।  
8 ऐ खुदावन्द, मैं तेरी सकूनतगाह,  
और तेरे जलाल के खेमे को 'अज़ीज़ रखता हूँ।  
9 मेरी जान को गुनहगारों के साथ,  
और मेरी ज़िन्दगी को खूनी आदमियों के साथ न मिला।  
10 जिनके हाथों में शरारत है,  
और जिनका दहना हाथ रिश्वतों से भरा है।  
11 लेकिन मैं तो रास्ती से चलता रहूँगा।  
मुझे छुड़ा ले और मुझ पर रहम कर।  
12 मेरा पाँव हमवार जगह पर काईम है।  
मैं जमा'अतों में खुदावन्द को मुबारक कहूँगा।

## 27

- 1 खुदावन्द मेरी रोशनी और मेरी नज़ात मुझे किसकी  
दहशत?  
खुदावन्द मेरी ज़िन्दगी की ताक़त है, मुझे किसका डर?

- 2 जब शरीर या'नी मेरे मुखालिफ़ और मेरे दुश्मन,  
मेरा गोश्त खाने को मुझ पर चढ़ आए तो वह ठोकर  
खाकर गिर पड़े।  
3 चाहे मेरे खिलाफ़ लश्कर खेमाज़न हो,  
मेरा दिल नहीं डरेगा।  
चाहे मेरे मुक़ाबले में जंग खड़ी हो, तोभी मैं मुतम'इन  
रहूँगा।  
4 मैंने खुदावन्द से एक दरख्वास्त की है,  
मैं इसी का तालिब रहूँगा;  
कि मैं उम्र भर खुदावन्द के घर में रहूँ,  
ताकि खुदावन्द के जमाल को देखूँ  
और उसकी हैकल में इस्तिफ़सार किया करूँ।  
5 क्योंकि मुसीबत के दिन वह मुझे अपने शामियाने में  
पोशीदा रखेगा;  
वह मुझे अपने खेमे के पर्दे में छिपा लेगा,  
वह मुझे चट्टान पर चढ़ा देगा।  
6 अब मैं अपने चारों तरफ़ के दुश्मनों पर सरफ़राज़ किया  
जाऊँगा;  
मैं उसके खेमे में खुशी की कुर्बानियाँ पेश करूँगा;  
मैं गाऊँगा, मैं खुदावन्द की मदहसराई करूँगा।  
7 ऐ खुदावन्द, मेरी आवाज़ सुन! मैं पुकारता हूँ।  
मुझ पर रहम कर और मुझे जवाब दे।  
8 जब तूने फ़रमाया, कि मेरे दीदार के तालिब हो;  
तो मेरे दिल ने तुझ से कहा,  
ऐ खुदावन्द, मैं तेरे दीदार का तालिब रहूँगा।  
9 मुझ से चेहरा न छिपा।  
अपने बन्दे को क्रहर से न निकाल।  
तू मेरा मददगार रहा है;  
न मुझे तर्क कर, न मुझे छोड़, ऐ मेरे नज़ात देने वाले  
खुदा!।  
10 जब मेरा बाप और मेरी माँ मुझे छोड़ दें,  
तो खुदावन्द मुझे संभाल लेगा।  
11 ऐ खुदावन्द, मुझे अपनी राह बता,  
और मेरे दुश्मनों की वजह से मुझे हमवार रास्ते पर  
चला।  
12 मुझे मेरे मुखालिफ़ों की मर्ज़ी पर न छोड़,  
क्योंकि झूटे गवाह और बेरहमी से पुकारने वाले मेरे  
खिलाफ़ उठे हैं।  
13 अगर मुझे यक़ीन न होता कि ज़िन्दों की  
ज़मीन में खुदावन्द के एहसान को देखूँगा,  
तो मुझे ग़श आ जाता।  
14 खुदावन्द की उम्मीद रख;  
मज़बूत हो और तेरा दिल क़वी हो;  
हाँ, खुदावन्द ही की उम्मीद रख।



## 28

- 1 ऐ खुदावन्द, मैं तुझ ही को पुकारूँगा;  
ऐ मेरी चट्टान, तू मेरी तरफ़ से कान बन्द न कर;  
ऐसा न हो कि अगर तू मेरी तरफ़ से खामोश रहे तो मैं  
उनकी तरह बन जाऊँ,  
जो पाताल में जाते हैं।
- 2 जब मैं तुझ से फ़रियाद करूँ,  
और अपने हाथ तेरी मुक़द्दस हैकल की तरफ़ उठाऊँ,  
तो मेरी मिन्नत की आवाज़ को सुन ले।
- 3 मुझे उन शरीरों और बदकिरदारों के साथ घसीट न ले  
जा;  
जो अपने पड़ोसियों से सुलह की बातें करते हैं,  
मगर उनके दिलों में बदी है।
- 4 उनके अफ़'आल — ओ — आ'माल की बुराई के  
मुवाफ़िक़ उनको बदला दे,  
उनके हाथों के कामों के मुताबिक़ उनसे सुलूक कर;  
उनके किए का बदला उनको दे।
- 5 वह खुदावन्द के कामों  
और उसकी दस्तकारी पर ध्यान नहीं करते,  
इसलिए वह उनको गिरा देगा और फिर नहीं उठाएगा।
- 6 खुदावन्द मुबारक हो,  
इसलिए के उसने मेरी मिन्नत की आवाज़ सुन ली।
- 7 खुदावन्द मेरी ताक़त और मेरी ढाल है;  
मेरे दिल ने उस पर भरोसा किया है, और मुझे मदद मिली  
है।  
इसलिए मेरा दिल बहुत खुश है;  
और मैं गीत गाकर उसकी सिताइश करूँगा।
- 8 खुदावन्द उनकी ताक़त है,  
वह अपने मम्सूह के लिए नजात का क़िला है।
- 9 अपनी उम्मत को बचा, और अपनी मीरास को बरकत  
दे;  
उनकी पासबानी कर, और उनको हमेशा तक संभाले रह।

## 29

- 1 ऐ फ़रिश्तों की जमा'त खुदावन्द की,  
खुदावन्द ही की तम्जीद — ओ — ता'जीम करो।
- 2 खुदावन्द की ऐसी तम्जीद करो, जो उसके नाम के  
शायॉ है।  
पाक आराइश के साथ खुदावन्द को सिज्दा करो।
- 3 खुदावन्द की आवाज़ बादलों पर है;  
खुदा — ए — जुलजलाल गरजता है,  
खुदावन्द पानी से भरे बादलों पर है।
- 4 खुदावन्द की आवाज़ में कुदरत है;  
खुदावन्द की आवाज़ में जलाल है।
- 5 खुदावन्द की आवाज़ देवदारों को तोड़ डालती है;

- बल्कि खुदावन्द लुबनान के देवदारों को टुकड़े टुकड़े कर  
देता है।
- 6 वह उनको बछड़े की तरह,  
लुबनान और सिरयून को जंगली बछड़े की तरह कुदाता  
है।
- 7 खुदावन्द की आवाज़ आग के शो'लों को चीरती है।
- 8 खुदावन्द की आवाज़ वीरान को हिला देती है;  
खुदावन्द क़ादिस के वीरान को हिला डालता है।
- 9 खुदावन्द की आवाज़ से हिरनीयों के हमल गिर जाते  
हैं;  
और वह जंगलों को बेबर्ग कर देती है;  
उसकी हैकल में हर एक जलाल ही जलाल पुकारता है।
- 10 खुदावन्द तूफ़ान के वक़्त तख़्तनशीन था;  
बल्कि खुदावन्द हमेशा तक तख़्तनशीन है।
- 11 खुदावन्द अपनी उम्मत को ज़ोर बख़्शेगा;  
खुदावन्द अपनी उम्मत को सलामती की बरकत देगा।

## 30

- 1 ऐ खुदावन्द, मैं तेरी तम्जीद करूँगा;  
क्यूँकि तूने मुझे सरफ़राज़ किया है;  
और मेरे दुश्मनों को मुझ पर खुश होने न दिया।
- 2 ऐ खुदावन्द मेरे खुदा!,  
मैंने तुझ से फ़रियाद की और तूने मुझे शिफ़ा बख़्शी।
- 3 ऐ खुदावन्द, तू मेरी जान को पाताल से निकाल लाया  
है;  
तूने मुझे ज़िन्दा रखवा है कि क़ब्र में न जाऊँ।
- 4 खुदावन्द की सिताइश करो,  
ऐ उसके पाक लोगों!  
और उसके पाकीज़गी को याद करके शुक्रगुज़ारी करो।
- 5 क्यूँकि उसका क़हर दम भर का है,  
उसका करम उम्र भर का।  
रात को शायद रोना पड़े पर सुबह को खुशी की नौबत  
आती है।
- 6 मैंने अपनी इक़बालमंदी के वक़्त यह कहा था,  
कि मुझे कभी जुम्बिश न होगी।
- 7 ऐ खुदावन्द, तूने अपने करम से मेरे पहाड़ को क़ाईम  
रख़वा था;  
जब तूने अपना चेहरा छिपाया तो मैं घबरा उठा।
- 8 ऐ खुदावन्द, मैंने तुझ से फ़रियाद की;  
मैंने खुदावन्द से मिन्नत की,
- 9 जब मैं क़ब्र में जाऊँ तो मेरी मौत से क्या फ़ायदा?  
क्या खाक तेरी सिताइश करेगी?  
क्या वह तेरी सच्चाई को बयान करेगी?
- 10 सुन ले ऐ खुदावन्द, और मुझ पर रहम कर;  
ऐ खुदावन्द, तू मेरा मददगार हो।

11 तूने मेरे मातम को नाच से बदल दिया;  
तूने मेरा टाट उतार डाला और मुझे खुशी से कमरबस्ता  
किया,  
12 ताकि मेरी रूह तेरी मदहसराई करे और चुप न रहे।  
ऐ खुदावन्द मेरे खुदा,  
मैं हमेशा तेरा शुक्र करता रहूँगा।

### 31

1 ऐ खुदावन्द! मेरा भरोसा तुझ पर,  
मुझे कभी शर्मिन्दा न होने दे;  
अपनी सदाक़त की खातिर मुझे रिहाई दे।  
2 अपना कान मेरी तरफ़ झुका, जल्द मुझे छुड़ा!  
तू मेरे लिए मज़बूत चट्टान, मेरे बचाने को पनाहगाह  
हो!  
3 क्योंकि तू ही मेरी चट्टान और मेरा किला है;  
इसलिए अपने नाम की खातिर मेरी राहबरी और  
रहनुमाई कर।  
4 मुझे उस जाल से निकाल ले जो उन्होंने छिपकर मेरे  
लिए बिछाया है,  
क्योंकि तू ही मेरा मज़बूत किला है।  
5 मैं अपनी रूह तेरे हाथ में सौंपता हूँ: ऐ खुदावन्द!  
सच्चाई के खुदा; तूने मेरा फ़िदिया दिया है।  
6 मुझे उनसे नफ़रत है जो झूठे मा'बूदों को मानते हैं:  
मेरा भरोसा तो खुदावन्द ही पर है।  
7 मैं तेरी रहमत से खुश — ओ — खुरम रहूँगा,  
क्योंकि तूने मेरा दुख: देख लिया है;  
तू मेरी जान की मुसीबतों से वाकिफ़ है।  
8 तूने मुझे दुश्मन के हाथ में कैद नहीं छोड़ा;  
तूने मेरे पाँव कुशादा जगह में रखे हैं।  
9 ऐ खुदावन्द, मुझ पर रहम कर क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ।  
मेरी आँख बल्कि मेरी जान और मेरा जिस्म सब रंज के  
मारे घुले जाते हैं।  
10 क्योंकि मेरी जान ग़म में और मेरी उम्र कराहने में  
फ़ना हुई;  
मेरा ज़ोर मेरी बदकारी के वजह से जाता रहा,  
और मेरी हड्डियाँ घुल गई।  
11 मैं अपने सब मुखालिफ़ों की वजह से अपने पड़ोसियों  
के लिए,  
अज़ बस अन्गुशतनुमा और अपने जान पहचानों के लिए  
ख़ौफ़ का ज़रिया हूँ जिन्होंने मुझको बाहर देखा, मुझ  
से दूर भागे।  
12 मैं मुर्दे की तरह भुला दिया गया हूँ;  
मैं टूटे बर्तन की तरह हूँ।

13 क्योंकि मैंने बहुतों से अपनी बदनामी सुनी है,  
हर तरफ़ ख़ौफ़ ही ख़ौफ़ है।  
जब उन्होंने मिलकर मेरे खिलाफ़ मश्वरा किया,  
तो मेरी जान लेने का मन्सूबा बाँधा।  
14 लेकिन ऐ खुदावन्द, मेरा भरोसा तुझ पर है।  
मैंने कहा, “तू मेरा खुदा है।”  
15 मेरे दिन तेरे हाथ में हैं;  
मुझे मेरे दुश्मनों और सताने वालों के हाथ से छुड़ा।  
16 अपने चेहरे को अपने बन्दे पर जलवागर फ़रमा;  
अपनी शफ़क़त से मुझे बचा ले।  
17 ऐ खुदावन्द, मुझे शर्मिन्दा न होने दे क्योंकि मैंने तुझ  
से दुआ की है;  
शरीर शर्मिन्दा हो जाएँ और पाताल में ख़ामोश हों।  
18 झूठे होंट बन्द हो जाएँ, जो सादिकों के खिलाफ़ गुरूर  
और हिक़ारत से तकब्वुर की बातें बोलते हैं।  
19 आह! तूने अपने डरने वालों के लिए  
कैसी बड़ी ने'मत रख छोड़ी है:  
जिसे तूने बनी आदम के सामने अपने,  
भरोसा करने वालों के लिए तैयार किया।  
20 तू उनको इंसान की बन्दिशों से अपनी हुजूरी के पर्दे  
में छिपाएगा;  
तू उनको ज़बान के झगड़ों से शामियाने में पोशीदा  
रखेगा।  
21 खुदावन्द मुबारक हो!  
क्योंकि उसने मुझ को मज़बूत शहर में अपनी 'अजीब  
शफ़क़त दिखाई।  
22 मैंने तो जल्दबाज़ी से कहा था,  
कि मैं तेरे सामने से काट डाला गया।  
तोभी जब मैंने तुझ से फ़रियाद की तो तूने मेरी मिन्नत  
की आवाज़ सुन ली।  
23 खुदावन्द से मुहब्बत रखो,  
ऐ उसके सब पाक लोगों!  
खुदावन्द ईमानदारों को सलामत रखता है;  
और मगरूरों को खूब ही बदला देता है  
24 ऐ खुदावन्द पर उम्मीद रखने वालो!  
सब मज़बूत हो और तुम्हारा दिल क़वी रहे।

### 32

1 मुबारक है वह जिसकी ख़ता बख़्शी गई,  
और जिसका गुनाह ढाँका गया।  
2 मुबारक है वह आदमी जिसकी बदकारी को खुदावन्द  
हिसाब में नहीं लाता,  
और जिसके दिल में दिखावा नहीं।  
3 जब मैं ख़ामोश रहा

तो दिन भर के कराहने से मेरी हड्डियाँ घुल गई।  
 4 क्यूँकि तेरा हाथ रात दिन मुझ पर भारी था;  
 मेरी तरावट गर्मियों की खुशकी से बदल गई। सिलाह  
 5 मैंने तेरे सामने अपने गुनाह को मान लिया और अपनी  
 बदकारी को न छिपाया,  
 मैंने कहा, मैं खुदावन्द के सामने अपनी खताओं का  
 इकरार करूँगा  
 और तूने मेरे गुनाह की बुराई को मु'आफ़ किया। सिलाह  
 6 इसीलिए हर दीनदार तुझ से ऐसे वक्त में दुआ करे जब  
 तू मिल सकता है।  
 यक्रीनन जब सैलाब आए तो उस तक नहीं पहुँचेगा।  
 7 तू मेरे छिपने की जगह है; तू मुझे दुख से बचाये  
 रखेगा;  
 तू मुझे रिहाई के नाशों से घेर लेगा। सिलाह  
 8 मैं तुझे ता'लीम दूँगा, और जिस राह पर तुझे चलना  
 होगा तुझे बताऊँगा;  
 मैं तुझे सलाह दूँगा, मेरी नज़र तुझ पर होगी।  
 9 तुम घोड़े या खच्चर की तरह न बनो जिनमें समझ नहीं,  
 जिनको काबू में रखने का साज़ दहाना और लगाम है,  
 वरना वह तेरे पास आने के भी नहीं।  
 10 शरीर पर बहुत सी मुसीबतें आएँगी;  
 पर जिसका भरोसा खुदावन्द पर है,  
 रहमत उसे घेरे रहेगी।  
 11 ऐ सादिको, खुदावन्द में खुश — ओ — बुर्रम रहो;  
 और ऐ रास्तदिलो, खुशी से ललकारो!

### 33

1 ऐ सादिको, खुदावन्द में खुश रहो।  
 हम्द करना रास्तबाज़ों की ज़ेबा है।  
 2 सितार के साथ खुदावन्द का शुक्र करो,  
 दस तार की बरबत के साथ उसकी सिताइश करो।  
 3 उसके लिए नया गीत गाओ,  
 बुलन्द आवाज़ के साथ अच्छी तरह बजाओ।  
 4 क्यूँकि खुदावन्द का कलाम रास्त है;  
 और उसके सब काम बावफ़ा हैं।  
 5 वह सदाक़त और इन्साफ़ को पसंद करता है;  
 ज़मीन खुदावन्द की शफ़क़त से मा'मूर है।  
 6 आसमान खुदावन्द के कलाम से,  
 और उसका सारा लश्कर उसके मुँह के दम से बना।  
 7 वह समन्दर का पानी तूदे की तरह जमा' करता है;  
 वह गहरे समन्दरों को मख़ज़नों में रखता है।  
 8 सारी ज़मीन खुदावन्द से डरे,  
 जहान के सब बाशिन्दे उसका ख़ौफ़ रखें।  
 9 क्यूँकि उसने फ़रमाया और हो गया;

उसने हुक्म दिया और वाके' हुआ।

10 खुदावन्द क़ौमों की मश्वरत को बेकार कर देता है;  
 वह उम्मतों के मन्सूबों को नाचीज़ बना देता है।  
 11 खुदावन्द की मसलहत हमेशा तक क़ाईम रहेगी,  
 और उसके दिल के खयाल नसल दर नसल।  
 12 मुबारक है वह क़ौम जिसका खुदा खुदावन्द है,  
 और वह उम्मत जिसको उसने अपनी ही मीरास के लिए  
 बरगुज़ीदा किया।  
 13 खुदावन्द आसमान पर से देखता है,  
 सब बनी आदम पर उसकी निगाह है।  
 14 अपनी सुकूनत गाह से  
 वह ज़मीन के सब बाशिन्दों को देखता है।  
 15 वही है जो उन सबके दिलों को बनाता,  
 और उनके सब कामों का खयाल रखता है।  
 16 किसी बादशाह को फ़ौज की कसरत न बचाएगी;  
 और किसी ज़बरदस्त आदमी को उसकी बड़ी ताक़त  
 रिहाई न देगी।  
 17 बच निकलने के लिए घोड़ा बेकार है,  
 वह अपनी शहज़ोरी से किसी को न बचाएगा।  
 18 देखो खुदावन्द की निगाह उन पर है जो उससे डरते  
 हैं;  
 जो उसकी शफ़क़त के उम्मीदवार हैं,  
 19 ताकि उनकी जान मौत से बचाए,  
 और सूखे में उनको ज़िन्दा रखे।  
 20 हमारी जान को खुदावन्द की उम्मीद है;  
 वही हमारी मदद और हमारी ढाल है।  
 21 हमारा दिल उसमें खुश रहेगा,  
 क्यूँकि हम ने उसके पाक नाम पर भरोसा किया है।  
 22 ऐ खुदावन्द, जैसी तुझ पर हमारी उम्मीद है,  
 वैसी ही तेरी रहमत हम पर हो।

### 34

1 मैं हर वक्त खुदावन्द को मुबारक कहूँगा,  
 उसकी सिताइश हमेशा मेरी ज़बान पर रहेगी।  
 2 मेरी रूह खुदावन्द पर फ़ख़र करेगी;  
 हलीम यह सुनकर खुश होंगे।  
 3 मेरे साथ खुदावन्द की बड़ाई करो,  
 हम मिलकर उसके नाम की तम्ज़ीद करें।  
 4 मैं खुदावन्द का तालिब हुआ, उसने मुझे जवाब दिया,  
 और मेरी सारी दहशत से मुझे रिहाई बख़्शी।  
 5 उन्होंने उसकी तरफ़ नज़र की और मुनव्वर हो गए;  
 और उनके मुँह पर कभी शर्मिन्दगी न आएगी।  
 6 इस ग़रीब ने दुहाई दी, खुदावन्द ने इसकी सुनी,  
 और इसे इसके सब दुखों से बचा लिया।

7 खुदावन्द से डरने वालों के चारों तरफ़ उसका फ़रिश्ता  
खेमाज़न होता है  
और उनको बचाता है।  
8 आजमाकर देखो, कि खुदावन्द कैसा मेहरबान है!  
वह आदमी जो उस पर भरोसा करता है।  
9 खुदावन्द से डरो, ऐ उसके पाक लोगों!  
क्योंकि जो उससे डरते हैं उनको कुछ कमी नहीं।  
10 बबर के बच्चे तो हाज़तमंद और भूके होते हैं,  
लेकिन खुदावन्द के तालिब किसी नेमत के मोहताज न  
होंगे।  
11 ऐ बच्चो, आओ मेरी सुनो,  
मैं तुम्हें खुदा से डरना सिखाऊंगा।  
12 वह कौन आदमी है जो ज़िन्दगी का मुश्ताक़ है,  
और बड़ी उम्र चाहता है ताकि भलाई देखें?  
13 अपनी ज़बान को बदी से बाज़ रख,  
और अपने होंटों को दगा की बात से।  
14 बुराई को छोड़ और नेकी कर;  
सुलह का तालिब हो और उसी की पैरवी कर।  
15 खुदावन्द की निगाह सादिकों पर है,  
और उसके कान उनकी फ़रियाद पर लगे रहते हैं।  
16 खुदावन्द का चेहरा बदकारों के खिलाफ़ है,  
ताकि उनकी याद ज़मीन पर से मिटा दे।  
17 सादिक चिल्लाए, और खुदावन्द ने सुना;  
और उनको उनके सब दुखों से छुड़ाया।  
18 खुदावन्द शिकस्ता दिलों के नज़दीक है,  
और खस्ता ज़ानों को बचाता है।  
19 सादिक की मुसीबतें बहुत हैं,  
लेकिन खुदावन्द उसको उन सबसे रिहाई बख़्शता है।  
20 वह उसकी सब हड्डियों को महफूज़ रखता है;  
उनमें से एक भी तोड़ी नहीं जाती।  
21 बुराई शरीर को हलाक कर देगी;  
और सादिक से 'अदावत रखने वाले मुजरिम ठहरेंगे।  
22 खुदावन्द अपने बन्दों की जान का फ़िदिया देता है;  
और जो उस पर भरोसा करते हैं उनमें से कोई मुजरिम न  
ठहरेगा।

### 35

1 ऐ खुदावन्द, जो मुझ से झगड़ते हैं तू उनसे झगड़;  
जो मुझ से लड़ते हैं तू उनसे लड़।  
2 ढाल और सिपर लेकर मेरी मदद के लिए खड़ा हो।  
3 भाला भी निकाल और मेरा पीछा करने वालों का  
रास्ता बंद कर दे;  
मेरी जान से कह, मैं तेरी नज़ात हूँ।  
4 जो मेरी जान के तलबगार हैं,

वह शर्मिन्दा और रुस्वा हों।  
जो मेरे नुक़सान का मन्सूबा बाँधते हैं,  
वह पसपा और परेशान हों।  
5 वह ऐसे हो जाएँ जैसे हवा के आगे भूसा,  
और खुदावन्द का फ़रिश्ता उनको हाँकता रहे।  
6 उनकी राह अँधेरी और फिसलनी हो जाए,  
और खुदावन्द का फ़रिश्ता उनको दौड़ाता जाए।  
7 क्योंकि उन्होंने बे वजह मेरे लिए गढ़े में जाल बिछाया,  
और नाहक मेरी जान के लिए गढ़ा खोदा है।  
8 उस पर अचानक तबाही आ पड़े!  
और जिस जाल को उसने बिछाया है उसमें आप ही फसे;  
और उसी हलाकत में गिरफ़्तार हो।  
9 लेकिन मेरी जान खुदावन्द में खुश रहेगी,  
और उसकी नज़ात से शादमान होगी।  
10 मेरी सब हड्डियाँ कहेंगी, “ऐ खुदावन्द तुझ सा कौन  
है,  
जो ग़रीब को उसके हाथ से जो उससे ताक़तवर है,  
और ग़रीब — ओ — मोहताज को ग़ारतगर से छुड़ाता  
है?”  
11 झूठे गवाह उठते हैं;  
और जो बातें मैं नहीं जानता, वह मुझ से पूछते हैं।  
12 वह मुझ से नेकी के बदले बदी करते हैं,  
यहाँ तक कि मेरी जान बेकस हो जाती है।  
13 लेकिन मैंने तो उनकी बीमारी में जब वह बीमार थे,  
टाट ओढ़ा और रोज़े रख कर अपनी जान को दुख दिया;  
और मेरी दुआ मेरे ही सीने में वापस आई।  
14 मैंने तो ऐसा किया जैसे वह मेरा दोस्त या मेरा भाई  
था;  
मैंने सिर झुका कर ग़म किया जैसे कोई अपनी माँ के  
लिए मातम करता हो।  
15 लेकिन जब मैं लंगड़ाने लगा तो वह खुश होकर  
इकट्ठे हो गए,  
कमीने मेरे खिलाफ़ इकट्ठा हुए और मुझे मा'लूम न था;  
उन्होंने मुझे फाड़ा और बाज़ न आए।  
16 ज़ियाफ़तों के बदतमीज़ मसख़रों की तरह,  
उन्होंने मुझ पर दाँत पीसे।  
17 ऐ खुदावन्द, तू कब तक देखता रहेगा?  
मेरी जान को उनकी ग़ारतगरी से,  
मेरी जान को शेरों से छुड़ा।  
18 मैं बड़े मजमे' में तेरी शुक्रगुज़ारी करूँगा  
मैं बहुत से लोगों में तेरी सिताइश करूँगा।  
19 जो नाहक मेरे दुश्मन हैं, मुझ पर खुशी न मनाएँ;  
और जो मुझ से बे वजह 'अदावत रखते हैं,  
चश्मक ज़नी न करें।



20 क्योंकि वह सलामती की बातें नहीं करते,  
बल्कि मुल्क के अमन पसंद लोगों के खिलाफ,  
मकर के मन्सूबे बाँधते हैं।

21 यहाँ तक कि उन्होंने खूब मुँह फाड़ा और कहा,  
“अहा! अहा! हम ने अपनी आँख से देख लिया है!”

22 ऐ खुदावन्द, तूने खुद यह देखा है;  
खामोश न रह! ऐ खुदावन्द, मुझ से दूर न रह!

23 उठ, मेरे इन्साफ़ के लिए जाग,  
और मेरे मु'आमिले के लिए,  
ऐ मेरे खुदा! ऐ मेरे खुदावन्द!

24 अपनी सदाक़त के मुताबिक़ मेरी'अदालत कर,  
ऐ खुदावन्द, मेरे खुदा! और उनको मुझ पर खुशी न  
मनाने दे।

25 वह अपने दिल में यह न कहने पाएँ,  
“अहा! हम तो यही चाहते थे!”  
वह यह न कहें, कि हम उसे निगल गए।

26 जो मेरे नुक़सान से खुश होते हैं,  
वह आपस में शर्मिन्दा और परेशान हों!  
जो मेरे मुक़ाबले में तक़बुर करते हैं वह शर्मिन्दगी और  
रुस्वाई से मुलब्वस हों।

27 जो मेरे सच्चे मु'आमिले की ताईद करते हैं,  
वह खुशी से ललकारें और खुशहों;  
वह हमेशा यह कहें, खुदावन्द की तम्ज़ीद हो,  
जिसकी खुशनूदी अपने बन्दे की इक़बालमन्दी में है!

28 तब मेरी ज़बान से तेरी सदाक़त का ज़िक़्र होगा,  
और दिन भर तेरी ता'रीफ़ होगी।

### 36

1 शरीर की बदी से मेरे दिल में खयाल आता है,  
कि खुदा का ख़ौफ़ उसके सामने नहीं।

2 क्योंकि वह अपने आपको अपनी नज़र में इस खयाल  
से तसल्ली देता है,  
कि उसकी बदी न तो फ़ाश होगी, न मकरूह समझी  
जाएगी।

3 उसके मुँह में बदी और फ़रेब की बातें हैं;  
वह 'अक़ल और नेकी से दस्तबरदार हो गया है।

4 वह अपने विस्तर पर बदी के मन्सूबे बाँधता है;  
वह ऐसी राह इस्लियार करता है जो अच्छी नहीं;  
वह बुराई से नफ़रत नहीं करता।

5 ऐ खुदावन्द, आसमान में तेरी शफ़क़त है,  
तेरी वफ़ादारी फ़लाक तक बुलन्द है।

6 तेरी सदाक़त खुदा के पहाड़ों की तरह है,  
तेरे अहक़ाम बहुत गहरे हैं; ऐ खुदावन्द,  
तू इंसान और हैवान दोनों को महफूज़ रखता है।

7 ऐ खुदा, तेरी शफ़क़त क्या ही बेशकीमत है!  
बनी आदम तेरे बाज़ुओं के साये में पनाह लेते हैं।

8 वह तेरे घर की ने'मतों से खूब आसूदा होंगे,  
तू उनको अपनी खुशनूदी के दरिया में से पिलाएगा।

9 क्योंकि ज़िन्दगी का चश्मा तेरे पास है;  
तेरे नूर की बदौलत हम रोशनी देखेंगे।

10 तेरे पहचानने वालों पर तेरी शफ़क़त हमेशा की हो,  
और रास्त दिलों पर तेरी सदाक़त!

11 मगरूर आदमी मुझ पर लात न उठाने पाए,  
और शरीर का हाथ मुझे हाँक न दे।

12 बदकिरदार वहाँ गिरे पड़े हैं;  
वह गिरा दिए गए हैं और फिर उठ न सकेंगे।

### 37

1 तू बदकिरदारों की वजह से बेज़ार न हो,  
और बदी करने वालों पर रशक न कर!

2 क्योंकि वह घास की तरह जल्द काट डाले जाएँगे,  
और हरियाली की तरह मुरझा जाएँगे।

3 खुदावन्द पर भरोसा कर, और नेकी कर;  
मुल्क में आबाद रह, और उसकी वफ़ादारी से परवरिश  
पा।

4 खुदावन्द में मसरूर रह,  
और वह तेरे दिल की मुरादे पूरी करेगा।

5 अपनी राह खुदावन्द पर छोड़ दे:  
और उस पर भरोसा कर,  
वही सब कुछ करेगा।

6 वह तेरी रास्तबाज़ी को नूर की तरह,  
और तेरे हक़ को दोपहर की तरह रोशन करेगा।

7 खुदावन्द में मुतम'इन रह, और सबर से उसकी आस  
रख;

उस आदमी की वजह से जो अपनी राह में कामयाब होता  
और बुरे मन्सूबों को अंजाम देता है, बेज़ार न हो।

8 क़हर से बाज़ आ और ग़ज़ब को छोड़ दे!  
बेज़ार न हो, इससे बुराई ही निकलती है।

9 क्योंकि बदकार काट डाले जाएँगे;  
लेकिन जिनको खुदावन्द की आस है,  
मुल्क के वारिस होंगे।

10 क्योंकि थोड़ी देर में शरीर नाबूद हो जाएगा;  
तू उसकी जगह को ग़ौर से देखेगा पर वह न होगा।

11 लेकिन हलीम मुल्क के वारिस होंगे,  
और सलामती की फ़िरावानी से खुश रहेंगे।

12 शरीर रास्तबाज़ के खिलाफ़ बन्दिशें बाँधता है,  
और उस पर दाँत पीसता है;

13 खुदावन्द उस पर हंसेगा,  
क्योंकि वह देखता है कि उसका दिन आता है।

14 शरीरों ने तलवार निकाली और कमान खींची है,  
ताकि गरीब और मुहताज को गिरा दें,  
और रास्तरों को कत्ल करें।  
15 उनकी तलवार उन ही के दिल को छेदेगी,  
और उनकी कमानें तोड़ी जाएँगी।  
16 सादिक का थोड़ा सा माल,  
बहुत से शरीरों की दौलत से बेहतर है।  
17 क्योंकि शरीरों के बाजू तोड़े जाएँगे,  
लेकिन खुदावन्द सादिकों को संभालता है।  
18 कामिल लोगों के दिनों को खुदावन्द जानता है,  
उनकी मीरास हमेशा के लिए होगी।  
19 वह आफ़त के वक़्त शर्मिन्दा न होंगे,  
और काल के दिनों में आसूदा रहेंगे।  
20 लेकिन शरीर हलाक होंगे,  
खुदावन्द के दुश्मन चरागाहों की सरसब्ज़ी की तरह  
होंगे;  
वह फ़ना हो जाएँगे,  
वह धुएँ की तरह जाते रहेंगे।  
21 शरीर क़र्ज़ लेता है और अदा नहीं करता,  
लेकिन सादिक़ रहम करता है और देता है।  
22 क्योंकि जिनको वह बरकत देता है,  
वह ज़मीन के वारिस होंगे;  
और जिन पर वह ला'नत करता है,  
वह काट डाले जाएँगे।  
23 इंसान की चाल चलन खुदावन्द की तरफ़ से क़ाईम  
हैं,  
और वह उसकी राह से खुश है;  
24 अगर वह गिर भी जाए तो पड़ा न रहेगा,  
क्योंकि खुदावन्द उसे अपने हाथ से संभालता है।  
25 मैं जवान था और अब बूढ़ा हूँ तोभी मैंने सादिक़ को  
बेकस,  
और उसकी औलाद को टुकड़े माँगते नहीं देखा।  
26 वह दिन भर रहम करता है और क़र्ज़ देता है,  
और उसकी औलाद को बरकत मिलती है।  
27 बदी को छोड़ दे और नेकी कर;  
और हमेशा तक आबाद रह।  
28 क्योंकि खुदावन्द इन्साफ़ को पसंद करता है:  
और अपने पाक लोगों को नहीं छोड़ता।  
वह हमेशा के लिए महफूज़ हैं,  
लेकिन शरीरों की नसल काट डाली जाएगी।  
29 सादिक़ ज़मीन के वारिस होंगे,  
और उसमें हमेशा बसे रहेंगे।  
30 सादिक़ के मुँह से दानाई निकलती है,  
और उसकी ज़बान से इन्साफ़ की बातें।

31 उसके खुदा की शरी'अत उसके दिल में है,  
वह अपनी चाल चलन में फिसलेगा नहीं।  
32 शरीर सादिक़ की ताक में रहता है;  
और उसे कत्ल करना चाहता है।  
33 खुदावन्द उसे उसके हाथ में नहीं छोड़ेगा,  
और जब उसकी 'अदालत हो तो उसे मुजरिम न  
ठहराएगा।  
34 खुदावन्द की उम्मीद रख,  
और उसी की राह पर चलता रह,  
और वह तुझे सरफ़राज़ करके ज़मीन का वारिस  
बनाएगा;  
जब शरीर काट डाले जाएँगे, तो तू देखेगा।  
35 मैंने शरीर को बड़े इक्तिदार में और ऐसा फैलता देखा,  
जैसे कोई हरा दरख़्त अपनी असली ज़मीन में फैलता है।  
36 लेकिन जब कोई उधर से गुज़रा और देखा तो वह था  
ही नहीं;  
बल्कि मैंने उसे ढूँढा लेकिन वह न मिला।  
37 कामिल आदमी पर निगाह कर और रास्तबाज़ को  
देख,  
क्योंकि सुलह दोस्त आदमी के लिए अज़र है।  
38 लेकिन ख़ताकार इकट्ठे मर मिटेंगे;  
शरीरों का अंजाम हलाकत है।  
39 लेकिन सादिक़ों की नजात खुदावन्द की तरफ़ से है;  
मुसीबत के वक़्त वह उनका मज़बूत क़िला है।  
40 और खुदावन्द उनकी मदद करता और उनको बचाता  
है;  
वह उनको शरीरों से छुड़ाता और बचा लेता है,  
इसलिए कि उन्होंने उसमें पनाह ली है।

## 38

1 ऐ खुदावन्द, अपने क्रहर में मुझे झिड़क न दे,  
और अपने ग़ज़ब में मुझे तम्बीह न कर।  
2 क्योंकि तेरे दुख मुझ में लगे हैं,  
और तेरा हाथ मुझ पर भारी है।  
3 तेरे क्रहर की वजह से मेरे जिस्म में सहित नहीं;  
और मेरे गुनाह की वजह से मेरी हड्डियों को आराम  
नहीं।  
4 क्योंकि मेरी बदी मेरे सिर से गुज़र गई,  
और वह बड़े बोझ की तरह मेरे लिए बहुत भारी है।  
5 मेरी बेवकूफ़ी की वजह से,  
मेरे ज़ख्मों से बदबू आती है, वह सड़ गए हैं।  
6 मैं पुरदर्द और बहुत झुका हुआ हूँ;  
मैं दिन भर मातम करता फिरता हूँ।  
7 क्योंकि मेरी कमर में दर्द ही दर्द है,

और मेरे जिस्म में कुछ सहित नहीं।  
 8 मैं कमजोर और बहुत कुचला हुआ हूँ  
 और दिल की बेचैनी की वजह से कराहता रहा।  
 9 ऐ खुदावन्द, मेरी सारी तमन्ना तेरे सामने है,  
 और मेरा कराहना तुझ से छिपा नहीं।  
 10 मेरा दिल धड़कता है, मेरी ताकत घटी जाती है;  
 मेरी आँखों की रोशनी भी मुझ से जाती रही।  
 11 मेरे 'अजीज और दोस्त मेरी बला में अलग हो गए,  
 और मेरे रिश्तेदार दूर जा खड़े हुए।  
 12 मेरी जान के तलबगार मेरे लिए जाल बिछाते हैं,  
 और मेरे नुकसान के तालिब शरारत की बातें बोलते,  
 और दिन भर मकर — ओ — फरेब के मन्सूबे बाँधते हैं।  
 13 लेकिन मैं बहरे की तरह सुनता ही नहीं,  
 मैं गूँगे की तरह मुँह नहीं खोलता।  
 14 बल्कि मैं उस आदमी की तरह हूँ जिसे सुनाई नहीं  
 देता,  
 और जिसके मुँह में मलामत की बातें नहीं।  
 15 क्योंकि ऐ खुदावन्द,  
 मुझे तुझ से उम्मीद है,  
 ऐ खुदावन्द, मेरे खुदा!  
 तू जवाब देगा।  
 16 क्योंकि मैंने कहा,  
 कि कहीं वह मुझ पर खुशी न मनाएँ,  
 जब मेरा पाँव फिसलता है,  
 तो वह मेरे खिलाफ़ तकबुर करते हैं।  
 17 क्योंकि मैं गिरने ही को हूँ,  
 और मेरा गम बराबर मेरे सामने है।  
 18 इसलिए कि मैं अपनी बदी को जाहिर करूँगा,  
 और अपने गुनाह की वजह से गमगीन रहूँगा।  
 19 लेकिन मेरे दुश्मन चुस्त और जबरदस्त हैं,  
 और मुझ से नाहक 'अदावत रखने वाले बहुत हो गए हैं।  
 20 जो नेकी के बदले बदी करते हैं,  
 वह भी मेरे मुखालिफ़ हैं;  
 क्योंकि मैं नेकी की पैरवी करता हूँ।  
 21 ऐ खुदावन्द, मुझे छोड़ न दे!  
 ऐ मेरे खुदा, मुझ से दूर न हो!  
 22 ऐ खुदावन्द! ऐ मेरी नजात!  
 मेरी मदद के लिए जल्दी कर!

### 39

1 मैंने कहा "मैं अपनी राह की निगरानी करूँगा,  
 ताकि मेरी ज़बान से ख़ता न हो;  
 जब तक शरीर मेरे सामने है,

मैं अपने मुँह को लगाम दिए रहूँगा।"  
 2 मैं गुँगा बनकर ख़ामोश रहा,  
 और नेकी की तरफ़ से भी ख़ामोशी इस्तिyar की;  
 और मेरा ग़म बढ़ गया।  
 3 मेरा दिल अन्दर ही अन्दर जल रहा था।  
 सोचते सोचते आग भड़क उठी,  
 तब मैं अपनी ज़बान से कहने लगा,  
 4 "ऐ खुदावन्द! ऐसा कर कि मैं अपने अंजाम से वाकिफ़  
 हो जाऊँ,  
 और इससे भी कि मेरी उम्र की मी'आद क्या है;  
 मैं जान लूँ कि कैसा फ़ानी हूँ!  
 5 देख, तूने मेरी उम्र बालिशत भर की रखी है,  
 और मेरी ज़िन्दगी तेरे सामने बे हकीकत है।  
 यकीनन हर इंसान बेहतरीन हालत में भी बिल्कुल  
 बेसबात है सिलाह  
 6 दर हकीकत इंसान साये की तरह चलता फिरता है;  
 यकीनन वह फ़जूल घबराते हैं;  
 वह ज़ख़ीरा करता है और यह नहीं जानता के उसे कौन  
 लेगा!  
 7 "ऐ खुदावन्द! अब मैं किस बात के लिए ठहरा हूँ?  
 मेरी उम्मीद तुझ ही से है।  
 8 मुझ को मेरी सब ख़ताओं से रिहाई दे।  
 बेवकूफ़ों को मुझ पर अंगुली न उठाने दे।  
 9 मैं गुँगा बना,  
 मैंने मुँह न खोला क्योंकि तू ही ने यह किया है।  
 10 मुझ से अपनी बला दूर कर दे;  
 मैं तो तेरे हाथ की मार से फ़ना हुआ जाता हूँ।  
 11 जब तू इंसान को बदी पर मलामत करके तम्बीह  
 करता है;  
 तो उसके हुस्न को पतंगे की तरह फ़ना कर देता है;  
 यकीनन हर इंसान बेसबात है। सिलाह  
 12 "ऐ खुदावन्द! मेरी दुआ सुन और मेरी फ़रियाद पर  
 कान लगा;  
 मेरे आँसुओं को देखकर ख़ामोश न रह!  
 क्योंकि मैं तेरे सामने परदेसी और मुसाफ़िर हूँ,  
 जैसे मेरे सब बाप — दादा थे।  
 13 आह! मुझ से नज़र हटा ले ताकि ताज़ा दम हो जाऊँ,  
 इससे पहले के मर जाऊँ और हलाक हो जाऊँ।"

### 40

1 मैंने सबर से खुदावन्द पर उम्मीद रखी  
 उसने मेरी तरफ़ माइल होकर मेरी फ़रियाद सुनी।  
 2 उसने मुझे हौलनाक गढ़े  
 और दलदल की कीचड़ में से निकाला,  
 और उसने मेरे पाँव चट्टान पर रखे

और मेरी चाल चलन काईम की  
 3 उसने हमारे खुदा की सिताइश का नया हम्द मेरे मुँह में डाला।  
 बहुत से देखेंगे और डरेंगे,  
 और खुदावन्द पर भरोसा करेंगे।  
 4 मुबारक है वह आदमी,  
 जो खुदावन्द पर भरोसा करता है,  
 और मगरूर और झूठे दोस्तों की तरफ़ माइल नहीं होता।  
 5 ऐ खुदावन्द मेरे खुदा! जो 'अजीब काम तूने किए,  
 और तेरे खयाल जो हमारी तरफ़ हैं, वह बहुत से हैं।  
 मैं उनको तेरे सामने तरतीब नहीं दे सकता;  
 अगर मैं उनका ज़िक्र और बयान करना चाहूँ तो वह  
 शुमार से बाहर हैं।  
 6 कुर्बानी और नज़र को तू पसंद नहीं करता,  
 तूने मेरे कान खोल दिए हैं।  
 सोख्तनी कुर्बानी तूने तलब नहीं की।  
 7 तब मैंने कहा, "देख! मैं आया हूँ।  
 किताब के तूमार में मेरे बारे लिखा है।  
 8 ऐ मेरे खुदा, मेरी खुशी तेरी मर्ज़ी पूरी करने में है;  
 बल्कि तेरी शरी'अत मेरे दिल में है।"  
 9 मैंने बड़े मजमे' में सदाक़त की बशारत दी है;  
 देख! मैं अपना मुँह बंद नहीं करूँगा, ऐ खुदावन्द!  
 तू जानता है।  
 10 मैंने तेरी सदाक़त अपने दिल में छिपा नहीं रखी;  
 मैंने तेरी वफ़ादारी और नजात का इज़हार किया है;  
 मैंने तेरी शफ़क़त और सच्चाई बड़े मजमा' से नहीं  
 छिपाई।  
 11 ऐ खुदावन्द! तू मुझ पर रहम करने में दरेग़ न कर;  
 तेरी शफ़क़त और सच्चाई बराबर मेरी हिफ़ाज़त करें!  
 12 क्योंकि बेशुमार बुराइयों ने मुझे घेर लिया है;  
 मेरी बदी ने मुझे आ पकड़ा है, ऐसा कि मैं आँख नहीं  
 उठा सकता;  
 वह मेरे सिर के बालों से भी ज्यादा हैं: इसलिए मेरा जी  
 छूट गया।  
 13 ऐ खुदावन्द! मेहरबानी करके मुझे छोड़।  
 ऐ खुदावन्द! मेरी मदद के लिए जल्दी कर।  
 14 जो मेरी जान को हलाक करने के दर पै हैं,  
 वह सब शर्मिन्दा और खजिल हों;  
 जो मेरे नुक़सान से खुश हैं, वह पस्पा और रुस्वा हो।  
 15 जो मुझ पर अहा हा हा करते हैं,  
 वह अपनी रुस्वाई की वजह से तबाह हो जाएँ।  
 16 तेरे सब तालिब तुझ में खुश — ओ — खुरम हों;  
 तेरी नजात के आशिक हमेशा कहा करें "खुदावन्द की  
 तम्जीद हो!"

17 लेकिन मैं ग़रीब और मोहताज हूँ,  
 खुदावन्द मेरी फ़िक्र करता है।  
 मेरा मददगार और छुड़ाने वाला तू ही है;  
 ऐ मेरे खुदा! देर न कर।

## 41

1 मुबारक, है वह जो ग़रीब का खयाल रखता है  
 खुदावन्द मुसीबत के दिन उसे छोड़ागा।  
 2 खुदावन्द उसे महफूज़ और ज़िन्दा रखेगा,  
 और वह ज़मीन पर मुबारक होगा।  
 तू उसे उसके दुश्मनों की मर्ज़ी पर न छोड़।  
 3 खुदावन्द उसे बीमारी के बिस्तर पर संभालेगा;  
 तू उसकी बीमारी में उसके पूरे बिस्तर को ठीक करता है।  
 4 मैंने कहा, "ऐ खुदावन्द, मुझ पर रहम कर!  
 मेरी जान को शिफ़ा दे,  
 क्योंकि मैं तेरा गुनहगार हूँ।"  
 5 मेरे दुश्मन यह कहकर मेरी बुराई करते हैं,  
 कि वह कब मरेगा और उसका नाम कब मिटेगा?  
 6 जब वह मुझ से मिलने को आता है,  
 तो झूटी बातें बकता है;  
 उसका दिल अपने अन्दर बदी समेटता है;  
 वह बाहर जाकर उसी का ज़िक्र करता है।  
 7 मुझ से 'अदावत रखने वाले सब मिलकर मेरी ग़ीबत  
 करते हैं;  
 वह मेरे खिलाफ़ मेरे नुक़सान के मन्सूबे बाँधते हैं।  
 8 वह कहते हैं, "इसे तो बुरा रोग लग गया है;  
 अब जो वह पड़ा है तो फिर उठने का नहीं।"  
 9 बल्कि मेरे दिली दोस्त ने जिस पर मुझे भरोसा था,  
 और जो मेरी रोटी खाता था, मुझ पर लात उठाई है।  
 10 लेकिन तू ऐ खुदावन्द!  
 मुझ पर रहम करके मुझे उठा खड़ा कर,  
 ताकि मैं उनको बदला दूँ।  
 11 इससे मैं जान गया कि तू मुझ से खुश है,  
 कि मेरा दुश्मन मुझ पर फ़तह नहीं पाता।  
 12 मुझे तो तू ही मेरी रास्ती में क़याम बख़्शता है  
 और मुझे हमेशा अपने सामने काईम रखता है।  
 13 खुदावन्द इस्राईल का खुदा,  
 इब्तिदा से हमेशा तक मुबारक हो!  
 आमीन, सुम्म आमीन।

## दुसरी किताब

## 42

([?][?][?][?] 42-72)

1 जैसे हिरनी पानी के नालों को तरसती है,



वैसे ही ऐ खुदा! मेरी रूह तेरे लिए तरसती है।  
 2 मेरी रूह, खुदा की, जिन्दा खुदा की प्यासी है।  
 मैं कब जाकर खुदा के सामने हाज़िर हूँगा?  
 3 मेरे आँसू दिन रात मेरी ख़ूराक हैं;  
 जिस हाल कि वह मुझ से बराबर कहते हैं, तेरा खुदा कहाँ है?  
 4 इन बातों को याद करके मेरा दिल भर आता है,  
 कि मैं किस तरह भीड़ या 'नी ईद मनाने वाली जमा'अत के साथ,  
 खुशी और हम्द करता हुआ उनको खुदा के घर में ले जाता था।  
 5 ऐ मेरी जान, तू क्यूँ गिरी जाती है?  
 तू अन्दर ही अन्दर क्यूँ बेचैन है?  
 खुदा से उम्मीद रख, क्यूँकि उसके नजात बख़्श दीदार की खातिर  
 मैं फिर उसकी सिताइश करूँगा।  
 6 ऐ मेरे खुदा! मेरी जान मेरे अंदर गिरी जाती है,  
 इसलिए मैं तुझे यरदन की सरज़मीन से और हरमून और कोह — ए — मिस्फ़ार पर से याद करता हूँ।  
 7 तेरे आबशारों की आवाज़ से गहराव को पुकारता है।  
 तेरी सब मौजें और लहरें मुझ पर से गुज़र गई।  
 8 तो भी दिन को खुदावन्द अपनी शफ़क़त दिखाएगा;  
 और रात को मैं उसका हम्द गाऊँगा,  
 बल्कि अपनी जिन्दगी के खुदा से दुआ करूँगा।  
 9 मैं खुदा से जो मेरी चट्टान है कहूँगा, “तू मुझे क्यूँ भूल गया?  
 मैं दुश्मन के ज़ुल्म की वजह से,  
 क्यूँ मातम करता फिरता हूँ?”  
 10 मेरे मुखालिफ़ों की मलामत,  
 जैसे मेरी हड्डियों में तलवार है,  
 क्यूँकि वह मुझ से बराबर कहते हैं, “तेरा खुदा कहाँ है?”  
 11 ऐ मेरी जान! तू क्यूँ गिरी जाती है?  
 तू अंदर ही अंदर क्यूँ बेचैन है?  
 खुदा से उम्मीद रख, क्यूँकि वह मेरे चेहरे की रौनक और मेरा खुदा है;  
 मैं फिर उसकी सिताइश करूँगा।

## 43

1 ऐ खुदा, मेरा इन्साफ़ कर  
 और बेदीन क़ौम के मुक़ाबले में मेरी वक़ालत कर,  
 और दगाबाज़ और बेइन्साफ़ आदमी से मुझे छोड़ा।  
 2 क्यूँकि तू ही मेरी ताक़त का खुदा है,  
 तूने क्यूँ मुझे छोड़ दिया?

मैं दुश्मन के ज़ुल्म की वजह से क्यूँ मातम करता फिरता हूँ?  
 3 अपने नूर, अपनी सच्चाई को भेज,  
 वही मेरी रहबरी करें,  
 वही मुझ को तेरे पाक पहाड़ और तेरे घर तक पहुँचाए।  
 4 तब मैं खुदा के मज़बह के पास जाऊँगा,  
 खुदा के सामने जो मेरी कमाल खुशी है;  
 ऐ खुदा! मेरे खुदा! मैं सितार बजा कर तेरी सिताइश करूँगा।  
 5 ऐ मेरी जान! तू क्यूँ गिरी जाती है?  
 तू अन्दर ही अन्दर क्यूँ बेचैन है?  
 खुदा से उम्मीद रख, क्यूँकि वह मेरे चेहरे की रौनक और मेरा खुदा है;  
 मैं फिर उसकी सिताइश करूँगा।

## 44

1 ऐ खुदा, हम ने अपने कानों से सुना;  
 हमारे बाप — दादा ने हम से बयान किया,  
 कि तूने उनके दिनों में पिछले ज़माने में क्या क्या काम किए।  
 2 तूने क़ौमों को अपने हाथ से निकाल दिया,  
 और उनको बसाया: तूने उम्मतों को तबाह किया,  
 और इनको चारों तरफ़ फैलाया;  
 3 क्यूँकि न तो यह अपनी तलवार से इस मुल्क पर क़ाबिज़ हुए,  
 और न इनकी ताक़त ने इनको बचाया;  
 बल्कि तेरे दहने हाथ और तेरी ताक़त और तेरे चेहरे के नूर ने इनको फ़तह बख़्शी क्यूँकि तू इनसे खुश था।  
 4 ऐ खुदा! तू मेरा बादशाह है;  
 या'क़ूब के हक़ में नजात का हुक्म सादिर फ़रमा।  
 5 तेरी बदौलत हम अपने मुखालिफ़ों को गिरा देंगे;  
 तेरे नाम से हम अपने खिलाफ़ उठने वालों को पस्त करेंगे।  
 6 क्यूँकि न तो मैं अपनी कमान पर भरोसा करूँगा,  
 और न मेरी तलवार मुझे बचाएगी।  
 7 लेकिन तूने हम को हमारे मुखालिफ़ों से बचाया है,  
 और हम से 'अदावत रखने वालों को शर्मिन्दा किया।  
 8 हम दिन भर खुदा पर फ़ख़र करते रहे हैं,  
 और हमेशा हम तेरे ही नाम का शुक्रिया अदा करते रहेंगे।  
 9 लेकिन तूने तो अब हम को छोड़ दिया  
 और हम को रुस्वा किया,  
 और हमारे लश्क़रों के साथ नहीं जाता।

10 तू हम को मुखालिफ़ के आगे पस्पा करता है,  
और हम से 'अदावत रखने वाले लूट मार करते हैं'  
11 तूने हम को जबह होने वाली भेड़ों की तरह कर दिया,  
और क्रौमों के बीच हम को तितर बितर किया।  
12 तू अपने लोगों को मुफ़्त बेच डालता है,  
और उनकी कीमत से तेरी दौलत नहीं बढ़ती।  
13 तू हम को हमारे पड़ोसियों की मलामत का निशाना,  
और हमारे आसपास के लोगों के तमसख़ुर  
और मज़ाक़ का जरिया' बनाता है।  
14 तू हम को क्रौमों के बीच एक मिसाल,  
और उम्मतों में सिर हिलाने की वजह ठहराता है।  
15 मेरी रुस्वाई दिन भर मेरे सामने रहती है,  
और मेरे मुँह पर शर्मिन्दी छा गई।  
16 मलामत करने वाले और कुफ़र बकने वाले की बातों  
की वजह से,  
और मुखालिफ़ और इन्तक़ाम लेने वाले की वजह।  
17 यह सब कुछ हम पर बीता तोभी हम तुझ को नहीं  
भूले,  
न तेरे 'अहद से बेवफ़ाई की;  
18 न हमारे दिल नाफ़रमान हुए,  
न हमारे क़दम तेरी राह से मुड़े;  
19 जो तूने हम को गीदड़ों की जगह में ख़ूब कुचला,  
और मौत के साये में हम को छिपाया।  
20 अगर हम अपने खुदा के नाम को भूले,  
या हम ने किसी अजनबी मा'बूद के आगे अपने हाथ  
फैलाए हों:  
21 तो क्या खुदा इसे दरियाफ़्त न कर लेगा?  
क्योंकि वह दिलों के राज़ जानता है।  
22 बल्कि हम तो दिन भर तेरी ही खातिर जान से मारे  
जाते हैं,  
और जैसे जबह होने वाली भेड़ें समझे जाते हैं।  
23 ऐ खुदावन्द, जाग! तू क्यों सोता है?  
उठ! हमेशा के लिए हम को न छोड़।  
24 तू अपना मुँह क्यों छिपाता है,  
और हमारी मुसीबत और मज़लूमी को भूलता है?  
25 क्योंकि हमारी जान खाक में मिल गई,  
हमारा जिस्म मिट्टी हो गया।  
26 हमारी मदद के लिए उठ  
और अपनी शफ़क़त की खातिर, हमारा फ़िदिया दे।

## 45

1 मेरे दिल में एक नफ़ीस मज़मून जोश मार रहा है,  
मैं वही मज़ामीन सुनाऊँगा जो मैंने बादशाह के हक़ में  
लिखे हैं,

मेरी ज़बान माहिर लिखने वाले का क़लम है।  
2 तू बनी आदम में सबसे हसीन है;  
तेरे होंटों में लताफ़त भरी है;  
इसलिए खुदा ने तुझे हमेशा के लिए मुबारक किया।  
3 ऐ ज़बरदस्त! तू अपनी तलवार को जो तेरी हशमत —  
ओ — शौकत है,  
अपनी कमर से लटका ले।  
4 और सच्चाई और हिल्म और सदाक़त की खातिर,  
अपनी शान — ओ — शौकत में इक़बालमंदी से सवार  
हो;  
और तेरा दहना हाथ तुझे अजीब काम दिखाएगा।  
5 तेरे तीर तेज़ हैं,  
वह बादशाह के दुश्मनों के दिल में लगे हैं,  
उम्मतें तेरे सामने पस्त होती हैं।  
6 ऐ खुदा, तेरा तख़्त हमेशा से हमेशा तक है;  
तेरी सल्तनत का 'असा रास्ती का 'असा है।  
7 तूने सदाक़त से मुहब्बत रखी और बदकारी से नफ़रत,  
इसीलिए खुदा, तेरे खुदा ने खुशी के तेल से,  
तुझ को तेरे हमसरो से ज़्यादा मसह किया है।  
8 तेरे हर लिबास से मुर और 'ऊद और तंज की खुशबू  
आती है,  
हाथी दाँत के महलों में से तारदार साज़ों ने तुझे खुश  
किया है।  
9 तेरी खास ख्वातीन में शाहज़ादियाँ हैं;  
मलिका तेरे दहने हाथ,  
ओफ़ीर के सोने से सजी खड़ी है।  
10 ऐ बेटी, सुन! ग़ौर कर और कान लगा;  
अपनी क्रौम और अपने बाप के घर को भूल जा;  
11 और बादशाह तेरे हुस्न का मुश्ताक़ होगा।  
क्योंकि वह तेरा खुदावन्द है, तू उसे सिज्दा कर!  
12 और सूर की बेटी हृदिया लेकर हाज़िर होगी,  
क्रौम के दौलतमंद तेरी खुशी की तलाश करेंगे।  
13 बादशाह की बेटी महल में सरापा हुस्न अफ़रोज़ है,  
उसका लिबास ज़रबफ़्त का है;  
14 वह बेल बूटे दार लिबास में बादशाह के सामने  
पहुँचाई जाएगी।  
उसकी कुंवारी सहेलियाँ जो उसके पीछे — पीछे चलती  
हैं,  
तेरे सामने हाज़िर की जाएँगी।  
15 वह उनको खुशी और ख़ुरमी से ले आएँगे,  
वह बादशाह के महल में दाख़िल होंगी।  
16 तेरे बेटे तेरे बाप दादा के जाँ नशीन होंगे;  
जिनको तू पूरी ज़मीन पर सरदार मुक़र्रर करेगा।  
17 मैं तेरे नाम की याद को नसल दर नसल क़ाईम रखूँगा

इसलिए उम्मतें हमेशा से हमेशा तक तेरी;  
शुक्रगुजारी करेंगी।

## 46

- 1 खुदावन्द हमारी पनाह और ताकत है;  
मुसीबत में मुस्त'इद मददगार।
- 2 इसलिए हम को कुछ खौफ नहीं चाहे ज़मीन उलट  
जाए,  
और पहाड़ समुन्दर की तह में डाल दिए जाए
- 3 चाहे उसका पानी शोर मचाए और तूफानी हो,  
और पहाड़ उसकी लहरों से हिल जाएँ। सिलाह
- 4 एक ऐसा दरिया है जिसकी शाखों से खुदा के  
शहर को या'नी हक़ ता'ला के पाक घर को फ़रहत होती  
है।
- 5 खुदा उसमें है, उसे कभी जुम्बिश न होगी;  
खुदा सुबह सवेरे उसकी मदद करेगा।
- 6 क्रौमे झुंझलाई, सलतनतों ने जुम्बिश खाई;  
वह बोल उठा, ज़मीन पिघल गई।
- 7 लश्क़रों का खुदावन्द हमारे साथ है;  
या'कूब का खुदा हमारी पनाह है सिलाह।
- 8 आओ, खुदावन्द के कामों को देखो,  
कि उसने ज़मीन पर क्या क्या वीरानियाँ की हैं।
- 9 वह ज़मीन की इन्तिहा तक जंग बंद कराता है;  
वह कमान को तोड़ता, और नेज़े के टुकड़े कर डालता  
है।
- वह रथों को आग से जला देता है।
- 10 “खामोश हो जाओ, और जान लो कि मैं खुदा हूँ।  
मैं क्रौमों के बीच सरबुलंद हूँगा।  
मैं सारी ज़मीन पर सरबुलंद हूँगा।”
- 11 लश्क़रों का खुदावन्द हमारे साथ है;  
या'कूब का खुदा हमारी पनाह है। सिलाह

## 47

- 1 ऐ सब उम्मतों, तालियाँ बजाओ!  
खुदा के लिए खुशी की आवाज़ से ललकारो!
- 2 क्योंकि खुदावन्द ता'ला बड़ा है,  
वह पूरी ज़मीन का शहंशाह है।
- 3 वह उम्मतों को हमारे सामने पस्त करेगा,  
और क्रौमों हमारे क़दमों तले हो जायेंगी।
- 4 वह हमारे लिए हमारी मीरास को चुनेगा,  
जो उसके महबूब या'कूब की हश्मत है। सिलाह
- 5 खुदा ने बुलन्द आवाज़ के साथ,  
खुदावन्द ने नरसिंगे की आवाज़ के साथ सु'ऊद  
फ़रमाया।
- 6 मदहसराई करो, खुदा की मदहसराई करो!

मदहसराई करो, हमारे बादशाह की मदहसराई करो!

- 7 क्योंकि खुदा सारी ज़मीन का बादशाह है;  
'अक़ल से मदहसराई करो।
- 8 खुदा क्रौमों पर सलतनत करता है;  
खुदा अपने पाक तख़्त पर बैठा है।
- 9 उम्मतों के सरदार इकट्ठे हुए हैं,  
ताकि अब्रहाम के खुदा की उम्मत बन जाएँ;  
क्योंकि ज़मीन की ढालें खुदा की हैं,  
वह बहुत बुलन्द है।

## 48

- 1 हमारे खुदा के शहर में,  
अपने पाक पहाड़ पर खुदावन्द बुज़ुर्ग  
और बेहद सिताइश के लायक़ है!
- 2 उत्तर की जानिब कोह — ए — सिय्यून,  
जो बड़े बादशाह का शहर है,  
वह बुलन्दी में खुशनुमा और तमाम ज़मीन का फ़ख़र है।
- 3 उसके महलों में खुदा पनाह माना जाता है।
- 4 क्योंकि देखो, बादशाह इकट्ठे हुए,  
वह मिलकर गुज़रे।
- 5 वह देखकर दंग हो गए,  
वह घबराकर भागे।
- 6 वहाँ कपकपी ने उनको आ दबाया,  
और ऐसे दर्द ने जैसा पैदाइश का दर्द।
- 7 तू पूरबी हवा से तरसीस के  
जहाज़ों को तोड़ डालता है।
- 8 लश्क़रों के खुदावन्द के शहर में,  
या'नी अपने खुदा के शहर में,  
जैसा हम ने सुना था वैसा ही हम ने देखा:  
खुदा उसे हमेशा बरक्रार रखेगा।
- 9 ऐ खुदा, तेरी हैकल के अन्दर हम ने  
तेरी शफ़क़त पर ग़ौर किया है
- 10 ऐ खुदा, जैसा तेरा नाम है  
वैसी ही तेरी सिताइश ज़मीन की इन्तिहा तक है।  
तेरा दहना हाथ सदाक़त से मा'मूर है।
- 11 तेरे अहक़ाम की वजह से: कोह — ए — सिय्यून  
शादमान हो  
यहूदाह की बेटियाँ खुशी मनाए,  
12 सिय्यून के गिर्द फिरो  
और उसका तवाफ़ करो उसके बुर्जों को गिनो,  
13 उसकी शहर पनाह को खूब देख लो,  
उसके महलों पर ग़ौर करो;  
ताकि तुम आने वाली नसल को उसकी ख़बर दे सको।

14 क्योंकि यही खुदा हमेशा से हमेशा तक हमारा खुदा है;  
यही मौत तक हमारा रहनुमा रहेगा।

## 49

1 ऐ सब उम्मतो, यह सुनो।  
ऐ जहान के सब बाशिन्दो, कान लगाओ!  
2 क्या अदना क्या आ'ला,  
क्या अमीर क्या फकीर।  
3 मेरे मुँह से हिक्मत की बातें निकलेंगी,  
और मेरे दिल का खयाल पुर खिरद होगा।  
4 मैं तम्सील की तरफ कान लगाऊँगा,  
मैं अपना राज सितार पर बयान करूँगा।  
5 मैं मुसीबत के दिनों में क्यूँ डरूँ,  
जब मेरा पीछा करने वाली बदी मुझे घेरे हो?  
6 जो अपनी दौलत पर भरोसा रखते,  
और अपने माल की कसरत पर फ़ख़र करते हैं;  
7 उनमें से कोई किसी तरह अपने भाई का फ़िदिया नहीं  
दे सकता,  
न खुदा को उसका मु'आवज़ा दे सकता है।  
8 क्यूँकि उनकी जान का फ़िदिया बेश कीमत है;  
वह हमेशा तक अदा न होगा।  
9 ताकि वह हमेशा तक ज़िन्दा रहे और क़ब्र को न देखे।  
10 क्यूँकि वह देखता है, कि दानिशमंद मर जाते हैं,  
बेवकूफ़ व हैवान ख़सलत एक साथ हलाक होते हैं,  
और अपनी दौलत औरों के लिए छोड़ जाते हैं।  
11 उनका दिली खयाल यह है कि उनके घर हमेशा तक,  
और उनके घर नसल दर नसल बने रहेंगे;  
वह अपनी ज़मीन अपने ही नाम नामज़द करते हैं।  
12 पर इंसान इज़्ज़त की हालत में क़ाईम नहीं रहता वह  
जानवरों की तरह है,  
जो फ़ना हो, जाते हैं।  
13 उनकी यह चाल उनकी बेवकूफी है,  
तोभी उनके बाद लोग उनकी बातों को पसंद करते हैं।  
सिलाह  
14 वह जैसे पाताल का रेवड़ ठहराए गए हैं;  
मौत उनकी पासबान होगी;  
दियानतदार सुबह को उन पर मुसल्लत होगा,  
और उनका हुस्न पाताल का लुक्मा होकर बैठकाना  
होगा।  
15 लेकिन खुदा मेरी जान को पाताल के इस्तिथार से  
छुड़ा लेगा,  
क्यूँकि वही मुझे कुबूल करेगा। सिलाह  
16 जब कोई मालदार हो जाए जब उसके घर की हश्मत  
बढ़े,

तो तू खौफ़ न कर।

17 क्यूँकि वह मरकर कुछ साथ न ले जाएगा;  
उसकी हश्मत उसके साथ न जाएगी।

18 चाहे जीते जी वह अपनी जान को मुबारक कहता रहा  
हो

और जब तू अपना भला करता है तो लोग तेरी तारीफ़  
करते हैं

19 तोभी वह अपने बाप दादा की गिरोह से जा मिलेगा,  
वह रोशनी को हरगिज़ न देखेंगे।

20 आदमी जो 'इज़्ज़त की हालत में रहता है,  
लेकिन 'अक्ल नहीं रखता जानवरों की तरह है,  
जो फ़ना हो जाते हैं।

## 50

1 रब खुदावन्द खुदा ने कलाम किया,  
और पूरब से पश्चिम तक दुनिया को बुलाया।

2 सिय्यून से जो हुस्न का कमाल है,  
खुदा जलवागर हुआ है।

3 हमारा खुदा आएगा और ख़ामोश नहीं रहेगा;  
आग उसके आगे आगे भसम करती जाएगी,

4 अपनी उम्मत की 'अदालत करने के लिए  
वह आसमान — ओ — ज़मीन को तलब करेगा,

5 कि मेरे पाक लोगों को मेरे सामने जमा' करो,  
जिन्होंने कुर्बानी के ज़रिये' से मेरे साथ 'अहद बाँधा है।

6 और आसमान उसकी सदाक़त बयान करेंगे,  
क्यूँकि खुदा आप ही इन्साफ़ करने वाला है।

7 "ऐ मेरी उम्मत, सुन, मैं कलाम करूँगा,  
और ऐ इस्राईल, मैं तुझ पर गवाही दूँगा।  
खुदा, तेरा खुदा मैं ही हूँ।

8 मैं तुझे तेरी कुर्बानियों की वजह से मलामत नहीं  
करूँगा,

और तेरी सोख्तनी कुर्बानियाँ बराबर मेरे सामने रहती हैं;

9 न मैं तेरे घर से बैल लूँगा न तेरे बाड़े से बकरे।

10 क्यूँकि जंगल का एक एक जानवर,  
और हज़ारों पहाड़ों के चौपाये मेरे ही हैं।

11 मैं पहाड़ों के सब परिन्दों को जानता हूँ,  
और मैदान के दरिन्दे मेरे ही हैं।

12 "अगर मैं भूका होता तो तुझ से न कहता,  
क्यूँकि दुनिया और उसकी मा'भूरी मेरी ही है।

13 क्या मैं साँडों का गोश्त खाऊँगा,  
या बकरों का खून पियूँगा?

14 खुदा के लिए शुक्रगुजारी की कुर्बानी पेश करें,  
और हक़ता'ला के लिए अपनी मन्नतें पूरी कर;

15 और मुसीबत के दिन मुझ से फ़रियाद कर



मैं तुझे छुड़ाऊँगा और तू मेरी तम्जीद करेगा।”

- 16 लेकिन खुदा शरीर से कहता है,  
तुझे मेरे क़ानून बयान करने से क्या वास्ता?  
और तू मेरे 'अहद को अपनी ज़बान पर क्यों लाता है?  
17 जबकि तुझे तर्बियत से 'अदावत है,  
और मेरी बातों को पीठ पीछे फेंक देता है।  
18 तू चोर को देखकर उससे मिल गया,  
और ज़ानियों का शरीक रहा है।  
19 “तेरे मुँह से बदी निकलती है,  
और तेरी ज़बान फ़रेब गढ़ती है।  
20 तू बैठा बैठा अपने भाई की ग़ीबत करता है;  
और अपनी ही माँ के बेटे पर तोहमत लगाता है।  
21 तूने यह काम किए और मैं ख़ामोश रहा;  
तूने गुमान किया, कि मैं बिल्कुल तुझ ही सा हूँ।  
लेकिन मैं तुझे मलामत करके इनको तेरी आँखों के  
सामने तरतीब दूँगा।  
22 “अब ऐ खुदा को भूलने वालो, इसे सोच लो,  
ऐसा न हो कि मैं तुम को फाड़ डालूँ,  
और कोई छुड़ाने वाला न हो।  
23 जो शुक्रगुज़ारी की कुर्बानी पेश करता है वह मेरी  
तम्जीद करता है;  
और जो अपना चालचलन दुरुस्त रखता है,  
उसको मैं खुदा की नज़ात दिखाऊँगा।”

## 51

- 1 ऐ खुदा! अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ पर रहम  
कर;  
अपनी रहमत की कसरत के मुताबिक़ मेरी ख़ताएँ मिटा  
दे।  
2 मेरी बदी को मुझ से धो डाल,  
और मेरे गुनाह से मुझे पाक कर!  
3 क्योंकि मैं अपनी ख़ताओं को मानता हूँ,  
और मेरा गुनाह हमेशा मेरे सामने है।  
4 मैंने सिर्फ़ तेरा ही गुनाह किया है,  
और वह काम किया है जो तेरी नज़र में बुरा है;  
ताकि तू अपनी बातों में रास्त ठहरे,  
और अपनी 'अदालत में बे'ऐब रहे।  
5 देख, मैंने बदी में सूरत पकड़ी,  
और मैं गुनाह की हालत में माँ के पेट में पड़ा।  
6 देख, तू बातिन की सच्चाई पसंद करता है,  
और बातिन ही में मुझे दानाई सिखाएगा।  
7 ज़ूफ़े से मुझे साफ़ कर, तो मैं पाक हूँगा;  
मुझे धो, और मैं बर्फ़ से ज्यादा सफ़ेद हूँगा।  
8 मुझे खुशी और ख़ुरमी की ख़बर सुना,

ताकि वह हड़्डियाँ जो तूने तोड़ डाली, हैं, खुश हों।

- 9 मेरे गुनाहों की तरफ़ से अपना मुँह फेर ले,  
और मेरी सब बदकारी मिटा डाल।  
10 ऐ खुदा! मेरे अन्दर पाक दिल पैदा कर,  
और मेरे बातिन में शुरू से सच्ची रूह डाल।  
11 मुझे अपने सामने से ख़ारिज न कर,  
और अपनी पाक रूह को मुझ से जुदा न कर।  
12 अपनी नज़ात की शादमानी मुझे फिर 'इनायत कर,  
और मुस्त'इद रूह से मुझे संभाल।  
13 तब मैं ख़ताकारों को तेरी राहें सिखाऊँगा,  
और गुनहगार तेरी तरफ़ रुजू करेगा।  
14 ऐ खुदा! ऐ मेरे नज़ात बख़्श खुदा,  
मुझे खून के जुर्म से छुड़ा,  
तो मेरी ज़बान तेरी सदाक़त का हम्द गाएगी।  
15 ऐ खुदावन्द! मेरे होंटों को खोल दे,  
तो मेरे मुँह से तेरी सिताइश निकलेगी।  
16 क्योंकि कुर्बानी में तेरी खुशी नहीं,  
वरना मैं देता;  
सोख़्तनी कुर्बानी से तुझे कुछ खुशी नहीं।  
17 शिकस्ता रूह खुदा की कुर्बानी है;  
ऐ खुदा! तू शिकस्ता और ख़स्तादिल को हक़ीर न  
जानेगा।  
18 अपने करम से सिय्यून के साथ भलाई कर,  
येरूशलेम की फ़सील को तामीर कर,  
19 तब तू सदाक़त की कुर्बानियों  
और सोख़्तनी कुर्बानी और पूरी सोख़्तनी कुर्बानी से खुश  
होगा;  
और वह तेरे मज़बह पर बछड़े चढ़ाएँगे।

## 52

- 1 ऐ ज़बरदस्त, तू शरारत पर क्यों फ़ख़र करता है?  
खुदा की शफ़क़त हमेशा की है।  
2 तेरी ज़बान महज़ शरारत ईजाद करती है;  
ऐ दगाबाज़, वह तेज़ उस्तरे की तरह है।  
3 तू बदी को नेकी से ज्यादा पसंद करता है,  
और झूट को सदाक़त की बात से।  
4 ऐ दगाबाज़ ज़बान!  
तू मुहलिक़ बातों को पसंद करती है।  
5 खुदा भी तुझे हमेशा के लिए हलाक़ कर डालेगा;  
वह तुझे पकड़ कर तेरे ख़ेमे से निकाल फेंकेगा,  
और ज़िन्दों की ज़मीन से तुझे उखाड़ डालेगा। सिलाह  
6 सादिक़ भी इस बात को देख कर डर जाएँगे,  
और उस पर हँसेंगे,  
7 कि देखो, यह वही आदमी है जिसने खुदा को अपनी  
पनाहगाह न बनाया,

बल्कि अपने माल की जयादती पर भरोसा किया,  
और शरारत में पक्का हो गया।

8 लेकिन मैं तो खुदा के घर में जैतून के हरे दरख्त की तरह  
हूँ।

मेरा भरोसा हमेशा से हमेशा तक खुदा की शफ़क़त पर  
है।

9 मैं हमेशा तेरी शुक्रगुजारी करता रहूँगा,  
क्योंकि तू ही ने यह किया है;  
और मुझे तेरे ही नाम की आस होगी,  
क्योंकि वह तेरे पाक लोगों के नज़दीक ख़ूब है।

### 53

1 बेवकूफ़ ने अपने दिल में कहा है,  
कि कोई खुदा नहीं। वह बिगड़ गये उन्होंने नफ़रत  
अंगेज़ बदी की है।

कोई नेकोकार नहीं।

2 खुदा ने आसमान पर से बनी आदम पर निगाह की  
ताकि देखे कि कोई दानिशमंद,  
कोई खुदा का तालिब है या नहीं।

3 वह सब के सब फिर गए हैं,  
वह एक साथ नापाक हो गए;  
कोई नेकोकार नहीं, एक भी नहीं।

4 क्या उन सब बदकिरदारों को कुछ 'इल्म नहीं,  
जो मेरे लोगों को ऐसे खाते हैं जैसे रोटी,  
और खुदा का नाम नहीं लेते?

5 वहाँ उन पर बड़ा ख़ौफ़ छा गया जबकि ख़ौफ़ की कोई  
बात न थी।  
क्योंकि खुदा ने उनकी हड्डियाँ जो तेरे खिलाफ़ ख़ैमाज़न  
थे,

बिखेर दीं। तूने उनको शर्मिन्दा कर दिया,  
इसलिए कि खुदा ने उनको रद्द कर दिया है।

6 काश कि इस्राईल की नजात सिय्यून में से होती!  
जब खुदा अपने लोगों को गुलामी से लौटा लाएगा;  
तो या'कूब खुश और इस्राईल शादमान होगा।

### 54

1 ऐ खुदा! अपने नाम के वसीले से मुझे बचा,  
और अपनी कुदरत से मेरा इन्साफ़ कर।

2 ऐ खुदा मेरी दुआ सुन ले;  
मेरे मुँह की बातों पर कान लगा।

3 क्योंकि बेगाने मेरे खिलाफ़ उठे हैं,  
और टेढ़े लोग मेरी जान के तलबगार हुए हैं;  
उन्होंने खुदा को अपने सामने नहीं रख्खा।

4 देखो, खुदा मेरा मददगार है!  
खुदावन्द मेरी जान को संभालने वालों में है।

5 वह बुराई को मेरे दुश्मनों ही पर लौटा देगा;  
तू अपनी सच्चाई की रूह से उनको फ़ना कर!

6 मैं तेरे सामने रज़ा की कुर्बानी चढ़ाऊँगा;  
ऐ खुदावन्द! मैं तेरे नाम की शुक्रगुजारी करूँगा  
क्योंकि वह ख़ूब है।

7 क्योंकि उसने मुझे सब मुसीबतों से छुड़ाया है,  
और मेरी आँख ने मेरे दुश्मनों को देख लिया है।

### 55

1 ऐ खुदा! मेरी दुआ पर कान लगा;  
और मेरी मिन्नत से मुँह न फेर।

2 मेरी तरफ़ मुतवज्जिह हो और मुझे जवाब दे;  
मैं ग़म से बेकरार होकर कराहता हूँ।

3 दुश्मन की आवाज़ से,  
और शरीर के जुल्म की वजह;  
क्योंकि वह मुझ पर बदी लादते,  
और क़हर में मुझे सताते हैं।

4 मेरा दिल मुझ में बेताब है;  
और मौत का हौल मुझ पर छा गया है।

5 ख़ौफ़ और कपकपी मुझ पर तारी है,  
डर ने मुझे दबा लिया है;

6 और मैंने कहा, "काश कि कबूतर की तरह मेरे पर होते  
तो मैं उड़ जाता और आराम पाता!

7 फिर तो मैं दूर निकल जाता,  
और वीरान में बसेरा करता। सिलाह

8 मैं आँधी के झोंके और तूफ़ान से,  
किसी पनाह की जगह में भाग जाता।"

9 ऐ खुदावन्द! उनको हलाक कर,  
और उनकी ज़बान में तफ़रिका डाल;  
क्योंकि मैंने शहर में जुल्म और झगड़ा देखा है।

10 दिन रात वह उसकी फ़सील पर ग़श्त लगाते हैं;  
बदी और फ़साद उसके अंदर हैं।

11 शरारत उसके बीच में बसी हुई है;  
सितम और फ़रेब उसके कूचों से दूर नहीं होते।

12 जिसने मुझे मलामत की वह दुश्मन न था,  
वरना मैं उसको बर्दाश्त कर लेता;  
और जिसने मेरे खिलाफ़ तकबुर किया वह मुझ से  
'अदावत रखने वाला न था,  
नहीं तो मैं उससे छिप जाता।

13 बल्कि वह तो तू ही था जो मेरा हमसर,  
मेरा रफ़ीक़ और दिली दोस्त था।

14 हमारी आपसी गुफ़्तगू शीरीन थी;  
और हुजूम के साथ खुदा के घर में फिरते थे।

15 उनकी मौत अचानक आ दबाए;

वह जीते जी पाताल में उतर जाएँ:  
क्योंकि शरारत उनके घरों में और उनके अन्दर है।

16 लेकिन मैं तो खुदा को पुकारूँगा;

और खुदावन्द मुझे बचा लेगा।

17 सुबह — ओ — शाम और दोपहर को  
मैं फ़रियाद करूँगा और कराहता रहूँगा,  
और वह मेरी आवाज़ सुन लेगा।

18 उसने उस लड़ाई से जो मेरे खिलाफ़ थी,  
मेरी जान को सलामत छुड़ा लिया।

क्योंकि मुझसे झगड़ा करने वाले बहुत थे।

19 खुदा जो क्रदीम से है,

सुन लेगा और उनको जवाब देगा।

यह वह हैं जिनके लिए इन्क़लाब नहीं,  
और जो खुदा से नहीं डरते।

20 उस शख्स ने ऐसों पर हाथ बढ़ाया है,  
जो उससे सुल्ह रखते थे।

उसने अपने 'अहद को तोड़ दिया है।

21 उसका मुँह मख्वन की तरह चिकना था,  
लेकिन उसके दिल में जंग थी।

उसकी बातें तेल से ज्यादा मुलायम,

लेकिन नंगी तलवारें थीं।

22 अपना बोझ खुदावन्द पर डाल दे,  
वह तुझे संभालेगा।

वह सादिक को कभी जुम्बिश न खाने देगा।

23 लेकिन ऐ खुदा! तू उनको हलाकत के गढ़े में उतारेगा।  
खूनी और दगाबाज़ अपनी आधी उम्र तक भी ज़िन्दा  
न रहेंगे।

लेकिन मैं तुझ पर भरोसा करूँगा।

## 56

1 ऐ खुदा! मुझ पर रहम फ़रमा,  
क्योंकि इंसान मुझे निगलना चाहता है;  
वह दिन भर लड़कर मुझे सताता है।

2 मेरे दुश्मन दिन भर मुझे निगलना चाहते हैं,  
क्योंकि जो गुरुर करके मुझ से लड़ते हैं, वह बहुत हैं।

3 जिस वक़्त मुझे डर लगेगा,  
मैं तुझ पर भरोसा करूँगा।

4 मेरा फ़ख़र खुदा पर और उसके कलाम पर है।

मेरा भरोसा खुदा पर है,

मैं डरने का नहीं: बशर मेरा क्या कर सकता है?

5 वह दिन भर मेरी बातों को मरोड़ते रहते हैं;  
उनके खयाल सरासर यही हैं, कि मुझ से बदी करें।

6 वह इकट्ठे होकर छिप जाते हैं;

वह मेरे नक़्श — ए — क्रदम को देखते भालते हैं,

क्योंकि वह मेरी जान की घात में हैं।

7 क्या वह बदकारी करके बच जाएँगे?

ऐ खुदा, क्रहर में उम्मतों को गिरा दे!

8 तू मेरी आवारगी का हिसाब रखता है;

मेरे आँसुओं को अपने मशकीज़े में रख ले।

क्या वह तेरी किताब में लिखे नहीं हैं?

9 तब तो जिस दिन मैं फ़रियाद करूँगा,  
मेरे दुश्मन पस्पा होंगे।

मुझे यह मा'लूम है कि खुदा मेरी तरफ़ है।

10 मेरा फ़ख़र खुदा पर और उसके कलाम पर है;

मेरा फ़ख़र खुदावन्द पर और उसके कलाम पर है।

11 मेरा भरोसा खुदा पर है, मैं डरने का नहीं।

इंसान मेरा क्या कर सकता है?

12 ऐ खुदा! तेरी मन्नतें मुझ पर हैं;

मैं तेरे हुज़ूर शुक्रगुज़ारी की कुर्बानियाँ पेश करूँगा।

13 क्योंकि तूने मेरी जान को मौत से छुड़ाया;

क्या तूने मेरे पाँव को फिसलने से नहीं बचाया,

ताकि मैं खुदा के सामने ज़िन्दों के नूर में चलूँ?

## 57

1 मुझ पर रहम कर, ऐ खुदा! मुझ पर रहम कर,  
क्योंकि मेरी जान तेरी पनाह लेती है।

मैं तेरे परों के साये में पनाह लूँगा,

जब तक यह आफ़तें गुज़र न जाएँ।

2 मैं खुदा ता'ला से फ़रियाद करूँगा;

खुदा से, जो मेरे लिए सब कुछ करता है।

3 वह मेरी नज़ात के लिए आसमान से भेजेगा;

जब वह जो मुझे निगलना चाहता है,

मलामत करता हो। सिलाह खुदा अपनी शफ़क़त

और सच्चाई को भेजेगा।

4 मेरी जान बबरों के बीच है,

मैं आतिश मिज़ाज़ लोगों में पड़ा हूँ

या'नी ऐसे लोगों में जिनके दाँत बर्छियाँ और तीर हैं,  
जिनकी ज़बान तेज़ तलवार है।

5 ऐ खुदा! तू आसमान पर सरफ़राज़ हो,

तेरा जलाल सारी ज़मीन पर हो!

6 उन्होंने मेरे पाँव के लिए जाल लगाया है;

मेरी जान 'आजिज़ आ गई।

उन्होंने मेरे आगे गढ़ा खोदा,

वह खुद उसमें गिर पड़े। सिलाह

7 मेरा दिल क़ाईम है, ऐ खुदा! मेरा दिल क़ाईम है;

मैं गाऊँगा बल्कि मैं मदह सराई करूँगा।

8 ऐ मेरी शौकत, बेदार हो! ऐ बर्बत और सितार जागो!

मैं खुद सुबह सवेरे जाग उठूँगा।

9 ऐ खुदावन्द! मैं लोगों में तेरा शुक्र करूँगा।

मैं उम्मतों में तेरी मददसराई करूँगा।

10 क्योंकि तेरी शफ़क़त आसमान के,  
और तेरी सच्चाई फ़लाक के बराबर बुलन्द है।

11 ऐ खुदा! तू आसमान पर सरफ़राज़ हो!  
तेरा जलाल सारी ज़मीन पर हो!

## 58

1 ऐ बुज़ुर्गों! क्या तुम दर हकीक़त रास्तगोई करते हो?

ऐ बनी आदम! क्या तुम ठीक 'अदालत करते हो?

2 बल्कि तुम तो दिल ही दिल में शरारत करते हो;  
और ज़मीन पर अपने हाथों से जुल्म पैमाई करते हैं।

3 शरीर पैदाइश ही से कजरवी इस्लियार करते हैं;  
वह पैदा होते ही झूट बोलकर गुमराह हो जाते हैं।

4 उनका ज़हर साँप का सा ज़हर है;  
वह बहरे अज़दहे की तरह हैं जो कान बंद कर लेता है;

5 जो मन्तर पढ़ने वालों की आवाज़ ही नहीं सुनता,  
जो चाहे वह कितनी ही होशियारी से मन्तर पढ़ें।

6 ऐ खुदा! तू उनके दाँत उनके मुँह में तोड़ दे,  
ऐ खुदावन्द! बबर के बच्चों की दाढ़ें तोड़ डाल।

7 वह घुलकर बहते पानी की तरह हो जाएँ जब वह अपने  
तीर चलाए,  
तो वह जैसे कुन्द पैकान हों।

8 वह ऐसे हो जाएँ जैसे घोंघा, जो गल कर फ़ना हो जाता  
है;

और जैसे 'औरत का इस्कात जिसने सूरज को देखा ही  
नहीं।

9 इससे पहले कि तुम्हारी हड्डियों को काँटों की आंच  
लगे

वह हरे और जलते दोनों को एकसाँ बगोले से उड़ा ले  
जाएगा।

10 सादिक़ इन्तक़ाम को देखकर खुश होगा;

वह शरीर के खून से अपने पाँव तर करेगा।

11 तब लोग कहेंगे, यक़ीनन सादिक़ के लिए अज़र है;  
बेशक़ खुदा है, जो ज़मीन पर 'अदालत करता है।

## 59

1 ऐ मेरे खुदा मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ा  
मेरे खिलाफ़ उठने वालों पर सरफ़राज़ कर।

2 मुझे बदकिरदारों से छुड़ा,  
और खूँख़्वार आदमियों से मुझे बचा।

3 क्योंकि देख, वह मेरी जान की घात में हैं।

ऐ खुदावन्द! मेरी ख़ता या मेरे गुनाह के बग़ैर ज़बरदस्त  
लोग मेरे खिलाफ़ इकट्ठे होते हैं।

4 वह मुझे बेक़सूर पर दौड़ दौड़कर तैयार होते हैं;

मेरी मदद के लिए जाग और देख!

5 ऐ खुदावन्द, लश्क़रों के खुदा! इस्राईल के खुदा!

सब कौमों के मुहासिबे के लिए उठ;

किसी दगाबाज़ ख़ताकार पर रहम न कर। सिलाह

6 वह शाम को लौटते और कुत्ते की तरह भौंकते हैं  
और शहर के गिर्द फिरते हैं।

7 देख! वह अपने मुँह से डकारते हैं,

उनके लबों के अन्दर तलवारें हैं;

क्योंकि वह कहते हैं, "कौन सुनता है?"

8 लेकिन ऐ खुदावन्द! तू उन पर हँसेगा;

तू तमाम कौमों को ठट्ठों में उड़ाएगा।

9 ऐ मेरी कुव्वत, मुझे तेरी ही आस होगी,

क्योंकि खुदा मेरा ऊँचा बुर्ज है।

10 मेरा खुदा अपनी शफ़क़त से मेरा अगुवा होगा,

खुदा मुझे मेरे दुश्मनों की पस्ती दिखाएगा।

11 उनको क़त्ल न कर, ऐसा न हो मेरे लोग भूल जाएँ

ऐ खुदावन्द, ऐ हमारी ढाल!

अपनी कुदरत से उनको तितर बितर करके पस्त कर दे।

12 वह अपने मुँह के गुनाह,

और अपने होंटों की बातों और अपनी लान तान और  
झूट बोलने के वजह से,

अपने गुरूर में पकड़े जाएँ।

13 क्रहर में उनको फ़ना कर दे,

फ़ना कर दे ताकि वह बर्बाद हो जाएँ,

और वह ज़मीन की इन्तिहा तक जान लें,

कि खुदा या'कूब पर हुक्मरान है।

14 फिर शाम को वह लौटें और कुत्ते की तरह भौंके  
और शहर के गिर्द फिरें।

15 वह खाने की तलाश में मारे मारे फिरें,

और अगर आसूदा न हों तो सारी रात ठहरे रहे।

16 लेकिन मैं तेरी कुदरत का हम्द गाऊँगा,

बल्कि सुबह को बुलन्द आवाज़ से तेरी शफ़क़त का हम्द  
गाऊँगा।

क्योंकि तू मेरा ऊँचा बुर्ज है,

और मेरी मुसीबत के दिन मेरी पनाहगाह।

17 ऐ मेरी ताक़त, मैं तेरी मददसराई करूँगा;

क्योंकि खुदा मेरा शफ़ीक़ खुदा मेरा ऊँचाबुर्ज है।

## 60

1 ऐ खुदा, तूने हमें रद्द किया;

तूने हमें शिकस्ता हाल कर दिया।

तू नाराज़ रहा है। हमें फिर बहाल कर।

2 तूने ज़मीन को लरज़ा दिया;

तूने उसे फाड़ डाला है।



उसके रखने बन्द कर दे क्योंकि वह लरजाँ है।  
 3 तूने अपने लोगों को सख्तियाँ दिखाई,  
 तूने हमको लड़खड़ा देने वाली मय पिलाई।  
 4 जो तुझ से डरते हैं, तूने उनको एक झंडा दिया है;  
 ताकि वह हक्र की खातिर बुलन्द किया जाए। सिलाह  
 5 अपने दहने हाथ से बचा और हमें जवाब दे,  
 ताकि तेरे महबूब बचाए जाएँ।  
 6 खुदा ने अपनी पाकीज़गी में फ़रमाया है, "मैं खुशी  
 करूँगा;  
 मैं सिकम को तकसीम करूँगा, और सुकात की वादी को  
 बाटूँगा।  
 7 जिल'आद मेरा है, मनस्सी भी मेरा है;  
 इफ़राईम मेरे सिर का खूद है,  
 यहूदाह मेरा 'असा है।  
 8 मोआब मेरी चिलमची है,  
 अदोम पर मैं जूता फेफूँगा;  
 ऐ फ़िलिस्तीन, मेरी वजह से ललकार।"  
 9 मुझे उस मुहकम शहर में कौन पहुँचाएगा?  
 कौन मुझे अदोम तक ले गया है?  
 10 ऐ खुदा, क्या तूने हमें रद्द नहीं कर दिया?  
 ऐ खुदा, तू हमारे लश्करीयों के साथ नहीं जाता।  
 11 मुखालिफ़ के मुकाबले में हमारी मदद कर,  
 क्योंकि इंसानी मदद बेकार है।  
 12 खुदा की मदद से हम बहादुरी करेंगे,  
 क्योंकि वही हमारे मुखालिफ़ों को पस्त करेगा।

## 61

1 ऐ खुदा, मेरी फ़रियाद सुन!  
 मेरी दुआ पर तवज्जुह कर।  
 2 मैं अपनी अफ़सुर्दा दिली में ज़मीन की इन्तिहा से तुझे  
 पुकारूँगा;  
 तू मुझे उस चट्टान पर ले चल जो मुझसे ऊँची है;  
 3 क्योंकि तू मेरी पनाह रहा है,  
 और दुश्मन से बचने के लिए ऊँचा बुर्ज।  
 4 मैं हमेशा तेरे ख़ेम में रहूँगा।  
 मैं तेरे परों के साये में पनाह लूँगा।  
 5 क्योंकि ऐ खुदा तूने मेरी मिन्नतें कुबूल की हैं  
 तूने मुझे उन लोगों की सी मीरास बख़्शी है जो तेरे नाम  
 से डरते हैं।  
 6 तू बादशाह की उम्र दराज़ करेगा;  
 उसकी उम्र बहुत सी नसलों के बराबर होगी।  
 7 वह खुदा के सामने हमेशा क़ाईम रहेगा;

तू शफ़क़त और सच्चाई को उसकी हिफ़ाज़त के लिए  
 मुहय्या कर।

8 यूँ मैं हमेशा तेरी मददसराई करूँगा,  
 ताकि रोज़ाना अपनी मिन्नतें पूरी करूँ।

## 62

1 मेरी जान को खुदा ही की उम्मीद है,  
 मेरी नजात उसी से है।  
 2 वही अकेला मेरी चट्टान और मेरी नजात है,  
 वही मेरा ऊँचा बुर्ज है, मुझे ज़्यादा जुम्बिश न होगी।  
 3 तुम कब तक ऐसे शख्स पर हमला करते रहोगे,  
 जो झुकी हुई दीवार और हिलती बाड़ की तरह है;  
 ताकि सब मिलकर उसे क़त्ल करो?  
 4 वह उसको उसके मर्तबे से गिरा देने ही का मशवरा करते  
 रहते हैं;  
 वह झूट से खुश होते हैं।  
 वह अपने मुँह से तो बरकत देते हैं लेकिन दिल में ला'नत  
 करते हैं।  
 5 ऐ मेरी जान, खुदा ही की आस रख,  
 क्योंकि उसी से मुझे उम्मीद है।  
 6 वही अकेला मेरी चट्टान और मेरी नजात है;  
 वही मेरा ऊँचा बुर्ज है, मुझे जुम्बिश न होगी।  
 7 मेरी नजात और मेरी शौकत खुदा की तरफ़ से है;  
 खुदा ही मेरी ताक़त की चट्टान और मेरी पनाह है।  
 8 ऐ लोगो! हर वक़्त उस पर भरोसा करो;  
 अपने दिल का हाल उसके सामने खोल दो।  
 खुदा हमारी पनाहगाह है। सिलाह  
 9 यक़ीनन अदना लोग बेसबात हैं  
 और आला आदमी झूटे; वह तराजू में हल्के निकलेंगे;  
 वह सब के सब बेसबाती से भी कमज़ोर हैं  
 10 जुल्म पर तकिया न करो,  
 लूटमार करने पर न फूलो;  
 अगर माल बढ़ जाए तो उस पर दिल न लगाओ।  
 11 खुदा ने एक बार फ़रमाया;  
 मैंने यह दो बार सुना,  
 कि कुदरत खुदा ही की है।  
 12 शफ़क़त भी ऐ खुदावन्द तेरी ही है;  
 क्योंकि तू हर शख्स को उसके 'अमल के मुताबिक़ बदला  
 देता है।

## 63

1 ऐ खुदा, तू मेरा खुदा है,  
 मैं दिल से तेरा तालिब हूँगा;  
 खुशक और प्यासी ज़मीन में जहाँ पानी नहीं,  
 मेरी जान तेरी प्यासी और मेरा जिस्म तेरा मुशताक़ है

2 इस तरह मैंने मक़दिस में तुझ पर निगाह की ताकि तेरी कुदरत और हश्मत को देखूँ।

3 क्योंकि तेरी शफ़क़त ज़िन्दगी से बेहतर है मेरे होंट तेरी ता'रीफ़ करेंगे।

4 इसी तरह मैं उम्र भर तुझे मुबारक कहूँगा; और तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाया करूँगा; मेरी जान जैसे गूदे और चर्बी से सेर होगी, और मेरा मुँह मसरूर लबों से तेरी ता'रीफ़ करेगा।

6 जब मैं बिस्तर पर तुझे याद करूँगा, और रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूँगा; 7 इसलिए कि तू मेरा मददगार रहा है, और मैं तेरे परो के साये में खुशी मनाऊँगा।

8 मेरी जान को तेरी ही धुन है; तेरा दहना हाथ मुझे संभालता है।

9 लेकिन जो मेरी जान की हलाकत के दर पै हैं, वह ज़मीन के तह में चले जाएँगे।

10 वह तलवार के हवाले होंगे, वह गीदड़ों का लुक्मा बनेंगे।

11 लेकिन बादशाह खुदा में खुश होगा; जो उसकी क़सम खाता है वह फ़ख़र करेगा; क्योंकि झूट बोलने वालों का मुँह बन्द कर दिया जाएगा

## 64

1 ऐ खुदा मेरी फ़रियाद की आवाज़ सुन ले मेरी जान को दुश्मन के ख़ौफ़ से बचाए रख।

2 शरीरों के खुफ़िया मश्वरे से, और बदकिरदारों के हँगामे से मुझे छिपा ले

3 जिन्होंने अपनी ज़बान तलवार की तरह तेज़ की, और तल्ख़ बातों के तीरों का निशाना लिया है;

4 ताकि उनको खुफ़िया मक़ामों में कामिल आदमी पर चलाएँ;

वह उनको अचानक उस पर चलाते हैं और डरते नहीं।

5 वह बुरे काम का मज़बूत इरादा करते हैं;

वह फंदे लगाने की सलाह करते हैं, वह कहते हैं, “हम को कौन देखेगा?”

6 वह शरारतों को खोज खोज कर निकालते हैं;

वह कहते हैं, “हमने ख़ूब खोज लगाया।”

उनमें से हर एक का बातिल और दिल 'अमीक' है।

7 लेकिन खुदा उन पर तीर चलाएगा;

वह अचानक तीर से ज़ख्मी हो जाएँगे।

8 और उन ही की ज़बान उनको तबाह करेगी; जितने उनको देखेंगे सब सिर हिलाएँगे।

9 और सब लोग डर जाएँगे,

और खुदा के काम का बयान करेंगे;

और उसके तरीक़ — ए — 'अमल को बख़ूबी समझ लेंगे।

10 सादिक़ खुदावन्द में खुश होगा,

और उस पर भरोसा करेगा,

और जितने रास्तदिल हैं सब फ़ख़र करेंगे।

## 65

1 ऐ खुदा, सिय्यून में ता'रीफ़ तेरी मुन्तज़िर है; और तेरे लिए मिन्नत पूरी की जाएगी।

2 ऐ दुआ के सुनने वाले! सब बशर तेरे पास आएँगे।

3 बद आ'माल मुझ पर ग़ालिब आ जाते हैं; लेकिन हमारी ख़ताओं का कफ़ारा तू ही देगा।

4 मुबारक है वह आदमी जिसे तू बरगुज़ीदा करता और अपने पास आने देता है, ताकि वह तेरी बारगाहों में रहे। हम तेरे घर की ख़ूबी से, या'नी तेरी पाक हैकल से आसूदा होंगे।

5 ऐ हमारे नजात देने वाले खुदा!

तू जो ज़मीन के सब किनारों का और समन्दर पर दूर दूर रहने वालों का तकिया है; ख़ौफ़नाक बातों के ज़रिए' से तू हमें सदाक़त से जवाब देगा।

6 तू कुदरत से कमरबस्ता होकर, अपनी ताक़त से पहाड़ों को मज़बूती बख़्शता है।

7 तू समन्दर के और उसकी मौजों के शोर को, और उम्मतों के हँगामे को ख़त्म कर देता है।

8 ज़मीन की इन्तिहा के रहने वाले, तेरे मु'मुअज़िज़ों से डरते हैं;

तू मतला' — ए — सुबह को और शाम को खुशी बख़्शता है।

9 तू ज़मीन पर तवज्जुह करके उसे सेराब करता है,

तू उसे ख़ूब मालामाल कर देता है;

खुदा का दरिया पानी से भरा है;

जब तू ज़मीन को यूँ तैयार कर लेता है तो उनके लिए अनाज मुहय्या करता है।

10 उसकी रेघारियों को ख़ूब सेराब उसकी मेण्डों को बिठा देता उसे बारिश से नर्म करता है,

उसकी पैदावार में बरक़त देता

11 तू साल को अपने लुत्फ़ का ताज पहनाता है;

और तेरी राहों से रौशन टपकता है।

12 वह बियाबान की चरागाहों पर टपकता है,

और पहाड़ियाँ खुशी से कमरबस्ता हैं।

13 चरागाहों में झुंड के झुंड फैले हुए हैं,

वादियाँ अनाज से ढकी हुई हैं,

वह खुशी के मारे ललकारती और गाती हैं।

## 66

- 1 ऐ सारी ज़मीन खुदा के सामने खुशी का ना'रा मार।
- 2 उसके नाम के जलाल का हम्द गाओ;  
सिताइश करते हुए उसकी तम्ज़ीद करो।
- 3 खुदा से कहो, “तेरे काम क्या ही बड़े हैं!  
तेरी बड़ी कुदरत के ज़रिए तेरे दुश्मन आजिज़ी करेंगे।
- 4 सारी ज़मीन तुझे सिज्दा करेगी,  
और तेरे सामने गाएंगी; वह तेरे नाम के हम्द गाएँगे।”
- 5 आओ और खुदा के कामों को देखो;  
बनी आदम के साथ वह अपने सुलूक में बड़ा है।
- 6 उसने समन्दर को खुश्क ज़मीन बना दिया:  
वह दरिया में से पैदल गुज़र गए।  
वहाँ हम ने उसमें खुशी मनाई।
- 7 वह अपनी कुदरत से हमेशा तक सल्तनत करेगा,  
उसकी आँखें क्रौमों को देखती रहती हैं।  
सरकश लोग तकबुर न करें।
- 8 ऐ लोगो, हमारे खुदा को मुबारक कहो,  
और उसकी तारीफ़ में आवाज़ बुलंद करो।
- 9 वही हमारी जान को ज़िन्दा रखता है;  
और हमारे पाँव को फिसलने नहीं देता
- 10 क्योंकि ऐ खुदा, तूने हमें आजमा लिया है;  
तूने हमें ऐसा ताया जैसे चाँदी ताई जाती है।
- 11 तूने हमें जाल में फँसाया,  
और हमारी कमर पर भारी बोझ रखवा।
- 12 तूने सवारों को हमारे सिरों पर से गुज़ारा हम आग में  
से  
और पानी में से होकर गुज़रे;  
लेकिन तू हम को अफ़रात की जगह में निकाल लाया।
- 13 मैं सोख्तनी कुर्बानियाँ लेकर तेरे घर में दाखिल हूँगा;  
और अपनी मिन्नतें तेरे सामने अदा करूँगा।
- 14 जो मुसीबत के वक़्त मेरे लबों से निकलीं,  
और मैंने अपने मुँह से मानें।
- 15 मैं मोटे मोटे जानवरों की सोख्तनी कुर्बानियाँ  
मेंढों की खुशबू के साथ अदा करूँगा।  
मैं बैल और बकरे पेश करूँगा।
- 16 ऐ खुदा से डरने वालो, सब आओ, सुनो;  
और मैं बताऊँगा कि उसने मेरी जान के लिए क्या क्या  
किया है।
- 17 मैंने अपने मुँह से उसको पुकारा,  
उसकी तम्ज़ीद मेरी ज़बान से हुई।
- 18 अगर मैं बदी को अपने दिल में रखता,  
तो खुदावन्द मेरी न सुनता।

- 19 लेकिन खुदा ने यक़ीनन सुन लिया है;  
उसने मेरी दुआ की आवाज़ पर कान लगाया है।
- 20 खुदा मुबारक हो,  
जिसने न तो मेरी दुआ को रद्द किया,  
और न अपनी शफ़क़त को मुझ से बाज़ रखवा!

## 67

- 1 खुदा हम पर रहम करे और हम को बरक़त बरख़्शे;  
और अपने चेहरे को हम पर जलवागर फ़रमाए, सिलाह
- 2 ताकि तेरी राह ज़मीन पर ज़ाहिर हो जाए,  
और तेरी नज़ात सब क्रौमों पर।
- 3 ऐ खुदा! लोग तेरी ता'रीफ़ करें;  
सब लोग तेरी ता'रीफ़ करें।
- 4 उम्मतें खुश हों और खुशी से ललकारें,  
क्योंकि तू रास्ती से लोगों की 'अदालत करेगा,  
और ज़मीन की उम्मतों पर हुकूमत करेगा सिलाह
- 5 ऐ खुदा! लोग तेरी ता'रीफ़ करें;  
सब लोग तेरी ता'रीफ़ करें।
- 6 ज़मीन ने अपनी पैदावार दे दी,  
खुदा या'नी हमारा खुदा हम को बरक़त देगा।
- 7 खुदा हम को बरक़त देगा;  
और ज़मीन की इन्तिहा तक सब लोग उसका डर मानेंगे।

## 68

- 1 खुदा उठे, उसके दुश्मन तितर बितर हों,  
उससे 'अदावत रखने वाले उसके सामने से भाग जाएँ।
- 2 जैसे धुवाँ उड़ जाता है, वैसे ही तू उनको उड़ा दे;  
जैसे मोम आग के सामने पिघला जाता, वैसे ही शरीर  
खुदा के सामने फ़ना हो जाएँ।
- 3 लेकिन सादिक़ खुशी मनाएँ, वह खुदा के सामने खुश  
हों,  
बल्कि वह खुशी से फूले न समाएँ।
- 4 खुदा के लिए गाओ, उसके नाम की मदहसराई करो;  
सहरा के सवार के लिए शाहराह तैयार करो;  
उसका नाम याह है, और तुम उसके सामने खुश हो।
- 5 खुदा अपने मुक़द्दस मक़ान में,  
यतीमों का बाप और बेवाओं का दादरस है।
- 6 खुदा तन्हा को ख़ान्दान बरख़्शता है;  
वह कैदियों को आज़ाद करके इक़बालमंद करता है;  
लेकिन सरकश खुश्क ज़मीन में रहते हैं।
- 7 ऐ खुदा, जब तू अपने लोगों के आगे — आगे चला,  
जब तू वीरान में से गुज़रा, सिलाह
- 8 तो ज़मीन काँप उठी;  
खुदा के सामने आसमान गिर पड़े, बल्कि पाक पहाड़ भी  
खुदा के सामने,

इस्राईल के खुदा के सामने काँप उठा।

9 ऐ खुदा, तूने खूब मेंह बरसाया:

तूने अपनी खुशक मीरास को ताजगी बरखी।

10 तेरे लोग उसमें बसने लगे;

ऐ खुदा, तूने अपने फ़ैज़ से ग़रीबों के लिए उसे तैयार किया।

11 खुदावन्द हुक्म देता है;

खुशख़बरी देने वालियाँ फ़ौज की फ़ौज हैं।

12 लश्करो के बादशाह भागते हैं, वह भाग जाते हैं;

और 'औरत घर में बैठी बैठी लूट का माल बाँटती है।

13 जब तुम भेड़ सालों में पड़े रहते हो,

तो उस कबूतर की तरह होगे जिसके बाज़ू जैसे चाँदी से, और पर खालिस सोने से मंढ़े हुए हों।

14 जब क़ादिर — ए — मुतलक ने बादशाहों को उसमें परागंदा किया,

तो ऐसा हाल हो गया, जैसे सलमोन पर बर्फ़ पड़ रही थी।

15 बसन का पहाड़ खुदा का पहाड़ है;

बसन का पहाड़ ऊँचा पहाड़ है।

16 ऐ ऊँचे पहाड़ो, तुम उस पहाड़ को क्यों ताकते हो, जिसे खुदा ने अपनी सुकूनत के लिए पसन्द किया है, बल्कि खुदावन्द उसमें हमेशा तक रहेगा?

17 खुदा के रथ बीस हज़ार, बल्कि हज़ारहा हज़ार हैं;

खुदावन्द जैसा पाक पहाड़ में वैसा ही उनके बीच हैकल में है।

18 तूने 'आलम — ए — बाला को सु'ऊद फ़रमाया,

तू कैदियों को साथ ले गया;

तुझे लोगों से बल्कि सरकशों से भी हदिए मिले, ताकि खुदावन्द खुदा उनके साथ रहे।

19 खुदावन्द मुबारक हो, जो हर रोज़ हमारा बोझ उठाता है;

वही हमारा नजात देने वाला खुदा है।

20 खुदा हमारे लिए छुड़ाने वाला खुदा है

और मौत से बचने की राहें भी खुदावन्द खुदा की हैं।

21 लेकिन खुदावन्द अपने दुश्मनों के सिर को,

और लगातार गुनाह करने वाले की बालदार खोपड़ी को चीर डालेगा।

22 खुदावन्द ने फ़रमाया, "मैं उनको बसन से निकाल लाऊँगा;

मैं उनको समन्दर की तह से निकाल लाऊँगा।

23 ताकि तू अपना पाँव खून से तर करे,

और तेरे दुश्मन तेरे कुत्तों के मुँह का निवाला बनें।"

24 ऐ खुदा! लोगों ने तेरी आमद देखी,

मक़दिस में मेरे खुदा, मेरे बादशाह की 'आमद

25 गाने वाले आगे आगे और बजाने वाले पीछे पीछे चले,

दफ़ बजाने वाली जवान लड़कियाँ बीच में।

26 तुम जो इस्राईल के चश्मे से हो,

खुदावन्द को मुबारक कहो, हाँ, मजमे' में खुदा को मुबारक कहो।

27 वहाँ छोटा बिनयमीन उनका हाकिम है,

यहूदाह के उमरा और उनके मुशीर,

ज़बूलून के उमरा और नफ़ताली के उमरा हैं।

28 तेरे खुदा ने तेरी पायदारी का हुक्म दिया है,

ऐ खुदा, जो कुछ तूने हमारे लिए किया है, उसे पायदारी बरख़्श।

29 तेरी हैकल की वजह से जो येरूशलेम में है,

बादशाह तेरे पास हदिये लाएँगे।

30 तू नेसतान के जंगली जानवरों को धमका दे,

साँडों के ग़ोल को, और क्रौमों के बछड़ों को।

जो चाँदी के सिक्कों को पामाल करते हैं:

उसने जंगजू क्रौमों को परागंदा कर दिया है।

31 उमरा मिस्र से आएँगे;

कूश खुदा की तरफ़ अपने हाथ बढ़ाने में जल्दी करेगा।

32 ऐ ज़मीन की ममलुकतो, खुदा के लिए गाओ;

खुदावन्द की मददसराई करो।

33 सिलाह उसी की जो क़दीम आसमान नहीं बल्कि आसमानों पर सवार है;

देखो वह अपनी आवाज़ बुलंद करता है, उसकी आवाज़ में कुदरत है।

34 खुदा ही की ताज़ीम करो,

उसकी हश्मत इस्राईल में है,

और उसकी कुदरत आसमानों पर।

35 ऐ खुदा, तू अपने मक़दिसों में मुहीब है,

इस्राईल का खुदा ही अपने लोगों को ज़ोर और तवानाई बरख़्शता है।

खुदा मुबारक हो।

## 69

1 ऐ खुदा मुझ को बचा ले, क्योंकि पानी मेरी जान तक आ पहुँचा है।

2 मैं गहरी दलदल में धंसा जाता हूँ, जहाँ खड़ा नहीं रहा जाता;

मैं गहरे पानी में आ पड़ा हूँ, जहाँ सैलाब मेरे सिर पर से गुज़रता है।

3 मैं चिल्लाते चिल्लाते थक गया, मेरा गला सूख गया; मेरी आँखें अपने खुदा के इन्तिज़ार में पथरा गई।

4 मुझ से बे वजह 'अदावत रखने वाले, मेरे सिर के बालों से ज्यादा हैं;



मेरी हलाकत के चाहने वाले और नाहक दुश्मन  
जबरदस्त हैं,  
तब जो मैंने छीना नहीं मुझे देना पड़ा।  
5 ऐ खुदा, तू मेरी बेवकूफी से वाकिफ़ है,  
और मेरे गुनाह तुझ से पोशीदा नहीं हैं।  
6 ऐ खुदावन्द, लश्करों के खुदा, तेरी उम्मीद रखने वाले  
मेरी वजह से शर्मिन्दा न हों,  
ऐ इस्राईल के खुदा, तेरे तालिब मेरी वजह से रुस्वा न  
हों।  
7 क्योंकि तेरे नाम की खातिर मैंने मलामत उठाई है,  
शर्मिन्दगी मेरे मुँह पर छा गई है।  
8 मैं अपने भाइयों के नज़दीक बेगाना बना हूँ,  
और अपनी माँ के फ़रज़न्दों के नज़दीक अजनबी।  
9 क्योंकि तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा गई,  
और तुझ को मलामत करने वालों की मलामतें मुझ पर  
आ पड़ी हैं।  
10 मेरे रोज़ा रखने से मेरी जान ने ज़ारी की,  
और यह भी मेरी मलामत का ज़रिए' हुआ।  
11 जब मैं ने टाट ओढ़ा,  
तो उनके लिए ज़र्ब — उल — मसल ठहरा।  
12 फाटक पर बैठने वालों में मेरा ही ज़िक्र रहता है,  
और मैं नशे बाज़ों का हम्द हूँ।  
13 लेकिन ऐ खुदावन्द, तेरी खुशनूदी के वक़्त मेरी दुआ  
तुझ ही से है;  
ऐ खुदा, अपनी शफ़क़त की फ़िरावानी से,  
अपनी नज़ात की सच्चाई में जवाब दे।  
14 मुझे दलदल में से निकाल ले और धसने न दे: मुझ से  
'अदावत रखने वालों,  
और गहरे पानी से मुझे बचा ले।  
15 मैं सैलाब में डूब न जाऊँ,  
और गहराव मुझे निगल न जाए,  
और पाताल मुझ पर अपना मुँह बन्द न कर ले  
16 ऐ खुदावन्द, मुझे जवाब दे, क्योंकि मेरी शफ़क़त खूब  
है  
अपनी रहमतों की कसरत के मुताबिक़ मेरी तरफ़  
मुतवज्जिह हो।  
17 अपने बन्दे से रूपोशी न कर;  
क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ, जल्द मुझे जवाब दे।  
18 मेरी जान के पास आकर उसे छुड़ा ले  
मेरे दुश्मनों के सामने मेरा फ़िदिया दे।  
19 तू मेरी मलामत और शर्मिन्दगी और रुस्वाई से  
वाकिफ़ है;  
मेरे दुश्मन सब के सब तेरे सामने हैं।  
20 मलामत ने मेरा दिल तोड़ दिया, मैं बहुत उदास हूँ

और मैं इसी इन्तिज़ार में रहा कि कोई तरस खाए लेकिन  
कोई न था;  
और तसल्ली देने वालों का मुन्तज़िर रहा लेकिन कोई  
न मिला।  
21 उन्होंने मुझे खाने को इन्द्रायन भी दिया,  
और मेरी प्यास बुझाने को उन्होंने मुझे सिरका पिलाया।  
22 उनका दस्तरख़्वान उनके लिए फंदा हो जाए।  
और जब वह अमन से हों तो जाल बन जाए।  
23 उनकी आँखें तारीक़ हो जाएँ, ताकि वह देख न सके,  
और उनकी कमरें हमेशा काँपती रहें।  
24 अपना ग़ज़ब उन पर उँडेल दे,  
और तेरा शदीद क्रहर उन पर आ पड़े।  
25 उनका घर उजड़ जाए,  
उनके खेमों में कोई न बसे।  
26 क्योंकि वह उसको जिसे तूने मारा है और जिनको तूने  
जख्मी किया है,  
उनके दुख का ज़िक्र करते हैं।  
27 उनके गुनाह पर गुनाह बढ़ा;  
और वह तेरी सदाक़त में दाख़िल न हों।  
28 उनके नाम किताब — ए — हयात से मिटा  
और सादिकों के साथ मुन्दर्ज न हों।  
29 लेकिन मैं तो ग़रीब और ग़मगीन हूँ।  
ऐ खुदा तेरी नज़ात मुझे सर बुलन्द करे।  
30 मैं हम्द गाकर खुदा के नाम की ता'रीफ़ करूँगा,  
और शुक्रगुज़ारी के साथ उसकी तम्ज़ीद करूँगा।  
31 यह खुदावन्द को बैल से ज़्यादा पसन्द होगा,  
बल्कि सींग और खुर वाले बछड़े से ज़्यादा।  
32 हलीम इसे देख कर खुश हुए हैं;  
ऐ खुदा के तालिबो, तुम्हारे दिल ज़िन्दा रहें।  
33 क्योंकि खुदावन्द मोहताजों की सुनता है,  
और अपने क़ैदियों को हक़ीर नहीं जानता।  
34 आसमान और ज़मीन उसकी ता'रीफ़ करें,  
और समन्दर और जो कुछ उनमें चलता फिरता है।  
35 क्योंकि खुदा सिय्यून को बचाएगा,  
और यहूदाह के शहरों को बनाएगा;  
और वह वहाँ बसेंगे और उसके वारिस होंगे।  
36 उसके बन्दों की नसल भी उसकी मालिक होगी,  
और उसके नाम से मुहब्बत रखने वाले उसमें बसेंगे।

## 70

1 ऐ खुदा! मुझे छुड़ाने के लिए, ऐ खुदावन्द, मेरी मदद  
के लिए कर जल्दी कर!  
2 जो मेरी जान को हलाक करने के दर पै हैं,  
वह सब शर्मिन्दा और रुस्वा हों।  
जो मेरे नुक्सान से खुश हैं,

वह पस्पा और रुस्वा हों।

3 अहा! हा! हा!

करने वाले अपनी रुस्वाई के वजह से पस्पा हों।

4 तेरे सब तालिब तुझ में खुश — ओ — खुर्रम हों;  
तेरी नजात के 'आशिक्र हमेशा कहा करें, "खुदा की  
तम्जीद हो!"

5 लेकिन मैं गरीब और मोहताज हूँ; ऐ खुदा,

मेरे पास जल्द आ!

मेरा मददगार और छुड़ाने वाला तू ही है;

ऐ खुदावन्द, देर न कर!

## 71

1 ऐ खुदावन्द तू ही मेरी पनाह है;

मुझे कभी शर्मिन्दा न होने दे!

2 अपनी सदाक़त में मुझे रिहाई दे और छुड़ा;

मेरी तरफ़ कान लगा, और मुझे बचा ले।

3 तू मेरे लिए ठहरने की चट्टान हो, जहाँ मैं बराबर जा  
सकूँ;

तूने मेरे बचाने का हुक्म दे दिया है,

क्योंकि मेरी चट्टान और मेरा क़िला तू ही है।

4 ऐ मेरे खुदा, मुझे शरीर के हाथ से,  
नारास्त और बेदर्द आदमी के हाथ से छुड़ा।

5 क्योंकि ऐ खुदावन्द खुदा, तू ही मेरी उम्मीद है;  
लड़कपन से मेरा भरोसा तुझ ही पर है।

6 तू पैदाइश ही से मुझे संभालता आया है  
तू मेरी माँ के बतन ही से मेरा शफ़ीक़ रहा है;  
इसलिए मैं हमेशा तेरी सिताइश करता रहूँगा।

7 मैं बहुतों के लिए हैरत की वजह हूँ।

लेकिन तू मेरी मज़बूत पनाहगाह है।

8 मेरा मुँह तेरी सिताइश से,  
और तेरी ता'ज़ीम से दिन भर पुर रहेगा।

9 बुढ़ापे के वक़्त मुझे न छोड़;  
मेरी ज़ईफ़ी में मुझे छोड़ न दे।

10 क्योंकि मेरे दुश्मन मेरे बारे में बातें करते हैं,  
और जो मेरी जान की घात में हैं

वह आपस में मशवरा करते हैं,

11 और कहते हैं, कि खुदा ने उसे छोड़ दिया है;  
उसका पीछा करो और पकड़ लो, क्योंकि छुड़ाने वाला  
कोई नहीं।

12 ऐ खुदा, मुझ से दूर न रह! ऐ मेरे खुदा,  
मेरी मदद के लिए जल्दी कर!

13 मेरी जान के मुखालिफ़ शर्मिन्दा और फ़ना हो जाएँ;  
मेरा नुक्सान चाहने वाले मलामत  
और रुस्वाई से मुलब्वस हो।

14 लेकिन मैं हमेशा उम्मीद रखूँगा,

और तेरी ता'रीफ़ और भी ज्यादा किया करूँगा।

15 मेरा मुँह तेरी सदाक़त का,

और तेरी नजात का बयान दिन भर करेगा;

क्योंकि मुझे उनका शुमार मा'लूम नहीं।

16 मैं खुदावन्द खुदा की कुदरत के कामों का इज़हार  
करूँगा;

मैं सिर्फ़ तेरी ही सदाक़त का ज़िक्र करूँगा।

17 ऐ खुदा, तू मुझे बचपन से सिखाता आया है,

और मैं अब तक तेरे 'अजायब का बयान करता रहा हूँ।

18 ऐ खुदा, जब मैं बुढ़ा और सिर सफ़ेद हो जाऊँ  
तो मुझे न छोड़ना; जब तक कि मैं तेरी कुदरत आइंदा  
नसल पर,

और तेरा ज़ोर हर आने वाले पर ज़ाहिर न कर दूँ।

19 ऐ खुदा, तेरी सदाक़त भी बहुत बलन्द है।

ऐ खुदा, तेरी तरह कौन है जिसने बड़े बड़े काम किए हैं?

20 तू जिसने हम को बहुत और सख़्त तकलीफ़ें दिखाई हैं  
फिर हम को ज़िन्दा करेगा;

और ज़मीन की तह से हमें फिर ऊपर ले आएगा।

21 तू मेरी 'अज़मत को बढ़ा,

और फिर कर मुझे तसल्ली दे।

22 ऐ मेरे खुदा, मैं बरबत पर तेरी, हाँ तेरी सच्चाई की  
हम्द करूँगा;

ऐ इस्राईल के पाक! मैं सितार के साथ तेरी मदहसराई  
करूँगा।

23 जब मैं तेरी मदहसराई करूँगा, तो मेरे होंट बहुत खुश  
होंगे;

और मेरी जान भी जिसका तूने फ़िदिया दिया है।

24 और मेरी ज़बान दिन भर तेरी सदाक़त का ज़िक्र  
करेगी;

क्योंकि मेरा नुक्सान चाहने वाले शर्मिन्दा और पशेमान  
हुए हैं।

## 72

1 ऐ खुदा! बादशाह को अपने अहकाम

और शहज़ादे को अपनी सदाक़त 'अता फ़रमा।

2 वह सदाक़त से तेरे लोगों की,

और इन्साफ़ से तेरे ग़रीबों की 'अदालत करेगा।

3 इन लोगों के लिए पहाड़ों से सलामती के,

और पहाड़ियों से सदाक़त के फल पैदा होंगे।

4 वह इन लोगों के ग़रीबों की 'अदालत करेगा;

वह मोहताजों की औलाद को बचाएगा,

और ज़ालिम को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा।

5 जब तक सूरज और चाँद काईम हैं,

लोग नसल — दर — नसल तुझ से डरते रहेंगे।

6 वह कटी हुई घास पर मेंह की तरह,  
और ज़मीन को सेराब करने वाली बारिश की तरह  
नाज़िल होगा।  
7 उसके दिनों में सादिक बढ़ेंगे,  
और जब तक चाँद काईम है खूब अमन रहेगा।  
8 उसकी सल्लतनत समन्दर से समन्दर तक  
और दरिया — ए — फ़रात से ज़मीन की इन्तिहा तक  
होगी।  
9 वीरान के रहने वाले उसके आगे झुकेंगे,  
और उसके दुश्मन खाक चाटेंगे।  
10 तरसीस के और जज़ीरों के बादशाह नज़रें पेश करेंगे,  
सबा और सेबा के बादशाह हृदिये लाएँगे।  
11 बल्कि सब बादशाह उसके सामने सर्नगूँ होंगे कुल  
क्रौमें उसकी फरमाबरदार होंगी।  
12 क्योंकि वह मोहताज को जब वह फ़रियाद करे,  
और ग़रीब की जिसका कोई मददगार नहीं छुड़ाएगा।  
13 वह ग़रीब और मुहताज पर तरस खाएगा,  
और मोहताजों की जान को बचाएगा।  
14 वह फ़िदिया देकर उनकी जान को जुल्म और जबूर से  
छुड़ाएगा  
और उनका खून उसकी नज़र में बेशक्रीमत होगा।  
15 वह ज़िन्दा रहेंगे और सबा का सोना उसको दिया  
जाएगा।  
लोग बराबर उसके हक़ में दुआ करेंगे:  
वह दिनभर उसे दुआ देंगे।  
16 ज़मीन में पहाड़ों की चोटियों पर अनाज को अफ़रात  
होगी;  
उनका फल लुबनान के दरख़्तों की तरह झूमेगा;  
और शहर वाले ज़मीन की घास की तरह हरे भरे होंगे।  
17 उसका नाम हमेशा काईम रहेगा,  
जब तक सूरज है उसका नाम रहेगा;  
और लोग उसके वसीले से बरकत पाएँगे,  
सब क्रौमें उसे खुशनसीब कहेंगी।  
18 खुदावन्द खुदा इस्राईल का खुदा,  
मुबारक हो! वही 'अजीब — ओ — ग़रीब काम करता  
है।  
19 उसका जलील नाम हमेशा के लिए सारी ज़मीन उसके  
जलाल से मा'भूर हो।  
आमीन सुम्मा आमीन!  
20 दाऊद बिन यस्सी की दु'आएँ तमाम हुई।

## तिसरी किताब

73

(73-89)

1 बेशक खुदा इस्राईल पर, या'नी पाक दिलों पर  
मेहरबान है।  
2 लेकिन मेरे पाँव तो फिसलने को थे,  
मेरे क़दम करीबन लगज़िश खा चुके थे।  
3 क्योंकि जब मैं शरीरों की इक़बालमंदी देखता,  
तो मगरूरों पर हसद करता था।  
4 इसलिए के उनकी मौत में दर्द नहीं,  
बल्कि उनकी ताक़त बनी रहती है।  
5 वह और आदमियों की तरह मुसीबत में नहीं पड़ते;  
न और लोगों की तरह उन पर आफ़त आती है।  
6 इसलिए गुरूर उनके गले का हार है,  
जैसे वह जुल्म से मुलब्स हैं।  
7 उनकी आँखें चर्बी से उभरी हुई हैं,  
उनके दिल के खयालात हृद से बढ़ गए हैं।  
8 वह ठट्ठा मारते, और शरारत से जुल्म की बातें करते  
हैं;  
वह बड़ा बोल बोलते हैं।  
9 उनके मुँह आसमान पर हैं,  
और उनकी ज़बाने ज़मीन की सैर करती हैं।  
10 इसलिए उसके लोग इस तरफ़ रुजू होते हैं,  
और जी भर कर पीते हैं।  
11 वह कहते हैं, "खुदा को कैसे मा'लूम है?  
क्या हक़ ता'ला को कुछ 'इल्म है?"  
12 इन शरीरों को देखो,  
यह हमेशा चैन से रहते हुए दौलत बढ़ाते हैं।  
13 यक़ीनन मैंने बेकार अपने दिल को साफ़,  
और अपने हाथों को पाक किया;  
14 क्योंकि मुझ पर दिन भर आफ़त रहती है,  
और मैं हर सुबह तम्बीह पाता हूँ।  
15 अगर मैं कहता, कि यूँ कहूँगा;  
तो तेरे फ़र्ज़न्दों की नसल से बेवफ़ाई करता।  
16 जब मैं सोचने लगा कि इसे कैसे समझूँ,  
तो यह मेरी नज़र में दुश्वार था,  
17 जब तक कि मैंने खुदा के मक़दिस में जाकर,  
उनके अंजाम को न सोचा।  
18 यक़ीनन तू उनको फिसलनी जगहों में रखता है,  
और हलाकत की तरफ़ ढकेल देता है।  
19 वह दम भर में कैसे उजड़ गए!  
वह हादिसों से बिल्कुल फ़ना हो गए।  
20 जैसे जाग उठने वाला ख़्वाब को,  
वैसे ही तू ऐ खुदावन्द, जाग कर उनकी सूरत को नाचीज़  
जानेगा।  
21 क्योंकि मेरा दिल रंजीदा हुआ,  
और मेरा जिगर छिद गया था;

22 मैं बे'अक्ल और जाहिल था,  
मैं तेरे सामने जानवर की तरह था।  
23 तोभी मैं बराबर तेरे साथ हूँ।  
तूने मेरा दाहिना हाथ पकड़ रखा है।  
24 तू अपनी मसलहत से मेरी रहनुमाई करेगा,  
और आखिरकार मुझे जलाल में कुबूल फ़रमाएगा।  
25 आसमान पर तेरे अलावा मेरा कौन है?  
और ज़मीन पर मैं तेरे अलावा किसी का मुश्ताक़ नहीं।  
26 जैसे मेरा जिस्म और मेरा दिल ज़ाइल हो जाएँ,  
तोभी खुदा हमेशा मेरे दिल की ताक़त और मेरा हिस्सा है।  
27 क्यूँकि देख, वह जो तुझ से दूर हैं फ़ना हो जाएँगे;  
तूने उन सबको जिन्होंने तुझ से बेवफ़ाई की,  
हलाक़ कर दिया है।  
28 लेकिन मेरे लिए यही भला है कि खुदा की नज़दीकी  
हासिल करूँ;  
मैंने खुदावन्द खुदा को अपनी पनाहगाह बना लिया है  
ताकि तेरे सब कामों का बयान करूँ।

## 74

1 ऐ खुदा! तूने हम को हमेशा के लिए क्यूँ छोड़ दिया?  
तेरी चरागाह की भेड़ों पर तेरा क्रहर क्यूँ भड़क रहा है?  
2 अपनी जमा'अत को जिसे तूने पहले से ख़रीदा है,  
जिसका तूने फ़िदिया दिया ताकि तेरी मीरास का क़बीला हो,  
और कोह — ए — सिय्यून को जिस पर तूने सुकूनत की है,  
याद कर।  
3 अपने क़दम दाइमी खण्डरों की तरफ़ बढ़ा;  
या'नी उन सब ख़राबियों की तरफ़ जो दुश्मन ने मक़दिस में की हैं।  
4 तेरे मजमे' में तेरे मुख़ालिफ़ गरजते रहे हैं;  
निशान के लिए उन्होंने अपने ही झंडे खड़े किए हैं।  
5 वह उन आदमियों की तरह थे,  
जो गुनज़ान दरख़्तों पर कुल्हाड़े चलाते हैं;  
6 और अब वह उसकी सारी नक्रशकारी को,  
कुल्हाड़ी और हथौड़ों से बिल्कुल तोड़े डालते हैं।  
7 उन्होंने तेरे हैकल में आग लगा दी है,  
और तेरे नाम के घर को ज़मीन तक मिस्मार करके नापाक किया है।  
8 उन्होंने अपने दिल में कहा है, “हम उनको बिल्कुल  
वीरान कर डालें;”  
उन्होंने इस मुल्क में खुदा के सब 'इबादतख़ानों को जला दिया है।  
9 हमारे निशान नज़र नहीं आते;  
और कोई नबी नहीं रहा,

और हम में कोई नहीं जानता कि यह हाल कब तक रहेगा।  
10 ऐ खुदा, मुख़ालिफ़ कब तक ता'नाज़नी करता रहेगा?  
क्या दुश्मन हमेशा तेरे नाम पर कुफ़र बकता रहेगा?  
11 तू अपना हाथ क्यूँ रोकता है?  
अपना दहना हाथ बाल से निकाल और फ़ना कर।  
12 खुदा क़दीम से मेरा बादशाह है,  
जो ज़मीन पर नजात बख़्शता है।  
13 तूने अपनी कुदरत से समन्दर के दो हिस्से कर दिए  
तू पानी में अज़दहाओं के सिर कुचलता है।  
14 तूने लिवियातान के सिर के टुकड़े किए,  
और उसे वीरान के रहने वालों की ख़ूराक बनाया।  
15 तूने चश्मे और सैलाब जारी किए;  
तूने बड़े बड़े दरियाओं को शुष्क कर डाला।  
16 दिन तेरा है, रात भी तेरी ही है;  
नूर और आफ़ताब को तू ही ने तैयार किया।  
17 ज़मीन की तमाम हदें तू ही ने ठहराई हैं;  
ग़र्मी और सर्दी के मौसम तू ही ने बनाए।  
18 ऐ खुदावन्द, इसे याद रख के दुश्मन ने ता'नाज़नी की है,  
और बेवकूफ़ क्रौम ने तेरे नाम की तक्फ़ीर की है।  
19 अपनी फ़ाख़्ता की जान की जंगली जानवर के हवाले न कर;  
अपने ग़रीबों की जान को हमेशा के लिए भूल न जा।  
20 अपने 'अहद का ख़याल फ़रमा,  
क्यूँकि ज़मीन के तारीक़ मक़ाम जुल्म के घरों से भरे हैं।  
21 मज़लूम शर्मिन्दा होकर न लौटे;  
ग़रीब और मोहताज़ तेरे नाम की ता'रीफ़ करें।  
22 उठ ऐ खुदा, आप ही अपनी वक़ालत कर;  
याद कर कि अहमक़ दिन भर तुझ पर कैसी ता'नाज़नी करता है।  
23 अपने दुश्मनों की आवाज़ को भूल न  
मुख़ालिफ़ों का हंगामा खड़ा होता रहता।

## 75

1 ऐ खुदा, हम तेरा शुक्र करते हैं, हम तेरा शुक्र करते हैं;  
क्यूँकि तेरा नाम नज़दीक़ है, लोग तेरे 'अजीब कामों का ज़िक़र करते हैं।  
2 जब मेरा मु'अय्यन वक़्त आएगा,  
तो मैं रास्ती से 'अदालत करूँगा।  
3 ज़मीन और उसके सब बाशिन्दे गुदाज़ हो गए हैं,  
मैंने उसके सुतूनों को काईम कर दिया।  
4 मैंने मगरूरों से कहा, गुरूर न करो,



और शरीरों से, कि सींग ऊँचा न करो।

5 अपना सींग ऊँचा न करो,

बगावत से बात न करो।

6 क्योंकि सरफ़राज़ी न तो पूरब से न पश्चिम से,

और न दख्खन से आती है;

7 बल्कि खुदा ही 'अदालत करने वाला है;

वह किसी को पस्त करता है और किसी को सरफ़राज़ी बख़्शता है।

8 क्योंकि खुदावन्द के हाथ में प्याला है, और मय झाग वाली है;

वह मिली हुई शराब से भरा है, और खुदावन्द उसी में से उड़ेलता है;

बेशक उसकी तलछट ज़मीन के सब शरीर निचोड़ निचोड़ कर पाएँगे।

9 लेकिन मैं तो हमेशा ज़िक्र करता रहूँगा,

मैं या'कूब के खुदा की मदहसराई करूँगा।

10 और मैं शरीरों के सब सींग काट डालूँगा लेकिन सादिकों के सींग ऊँचे किए जाएँगे।

## 76

1 खुदा यहूदाह में मशहूर है,

उसका नाम इस्राईल में बुज़ुर्ग है।

2 सालिम में उसका खेमा है,

और सिय्यून में उसका घर।

3 वहाँ उसने बर्क — ए — कमान की और ढाल और तलवार,

और सामान — ए — जंग को तोड़ डाला।

4 तू जलाली है, और शिकार के पहाड़ों से शानदार है।

5 मज़बूत दिल लुट गए, वह गहरी नींद में पड़े हैं,

और ज़बरदस्त लोगों में से किसी का हाथ काम न आया।

6 ऐ या'कूब के खुदा, तेरी झिड़की से,

रथ और घोड़े दोनों पर मौत की नींद तारी है।

7 सिर्फ़ तुझ ही से डरना चाहिए;

और तेरे क्रहर के वक्रत कौन तेरे सामने खड़ा रह सकता है?

8 तूने आसमान पर से फ़ैसला सुनाया;

ज़मीन डर कर चुप हो गई।

9 जब खुदा 'अदालत करने को उठा,

ताकि ज़मीन के सब हलीमों को बचा ले। सिलाह

10 बेशक इंसान का ग़ज़ब तेरी सिताइश का ज़रिए' होगा,

और तू ग़ज़ब के बक्रिये से कमरबस्ता होगा।

11 खुदावन्द अपने खुदा के लिए मन्नत मानो, और पूरी करो,

और सब जो उसके गिर्द हैं वह उसी के लिए जिससे डरना वाज़िब है, हदिए लाएँ।

12 वह हाकिम की रूह को क़ब्ज़ करेगा;

वह ज़मीन के बादशाहों के लिए बड़ा है।

## 77

1 मैं बुलन्द आवाज़ से खुदा के सामने फ़रियाद करूँगा खुदा ही के सामने बुलन्द आवाज़ से,

और वह मेरी तरफ़ कान लगाएगा।

2 अपनी मुसीबत के दिन मैंने खुदावन्द को ढूँढा,

मेरे हाथ रात को फैले रहे और ढीले न हुए;

मेरी जान को तस्कीन न हुई।

3 मैं खुदा को याद करता हूँ

और बेचैन हूँ मैं वावैला करता हूँ और मेरी जान निढाल है।

4 तू मेरी आँखें खुली रखता है;

मैं ऐसा बेताब हूँ कि बोल नहीं सकता।

5 मैं गुज़रे दिनों पर,

या'नी क़दीम ज़माने के बरसों पर सोचता रहा।

6 मुझे रात को अपना हम्द याद आता है;

मैं अपने दिल ही में सोचता हूँ।

मेरी रूह बड़ी तफ़्तीश में लगी है:

7 “क्या खुदावन्द हमेशा के लिए छोड़ देगा?

क्या वह फिर कभी मेंहरबान न होगा?

8 क्या उसकी शफ़क़त हमेशा के लिए जाती रही?

क्या उसका वा'दा हमेशा तक बातिल हो गया?

9 क्या खुदा करम करना भूल गया?

क्या उसने क्रहर से अपनी रहमत रोक ली?” सिलाह

10 फिर मैंने कहा, “यह मेरी ही कमज़ोरी है;

मैं तो हक़ ता'ला की कुदरत के ज़माने को याद करूँगा।”

11 मैं खुदावन्द के कामों का ज़िक्र करूँगा;

क्योंकि मुझे तेरे क़दीम 'अजाईब याद आएँगे।

12 मैं तेरी सारी सन'अत पर ध्यान करूँगा,

और तेरे कामों को सोचूँगा।

13 ऐ खुदा, तेरी राह मक़दिस में है।

कौन सा देवता खुदा की तरह बड़ा है।

14 तू वह खुदा है जो 'अजीब काम करता है,

तूने क्रौमों के बीच अपनी कुदरत ज़ाहिर की।

15 तूने अपने ही बाज़ू से अपनी क्रौम,

बनी या'कूब और बनी यूसुफ़ को फ़िदिया देकर छुड़ाया है।

16 ऐ खुदा, समन्दरों ने तुझे देखा,

समन्दर तुझे देख कर डर गए,

गहराओ भी काँप उठे।

17 बदलियों ने पानी बरसाया,  
आसमानों से आवाज़ आई,  
तेरे तीर भी चारों तरफ़ चले।

18 बगोले में तेरे गरज की आवाज़ थी,  
बर्क़ ने जहान को रोशन कर दिया,  
जमीन लरज़ी और काँपी।

19 तेरी राह समन्दर में है,  
तेरे रास्ते बड़े समुन्दरों में हैं;  
और तेरे नक्रश — ए — क्रदम ना मा'लूम हैं।

20 तूने मूसा और हारून के वसीले से,  
क्रि'ला की तरह अपने लोगों की रहनुमाई की।

## 78

1 ऐ मेरे लोगों मेरी शरी'अत को सुनो  
मेरे मुँह की बातों पर कान लगाओ।

2 मैं तम्सील में कलाम कहूँगा,  
और पुराने पोशीदा राज़ कहूँगा,

3 जिनको हम ने सुना और जान लिया,  
और हमारे बाप — दादा ने हम को बताया।

4 और जिनको हम उनकी औलाद से पोशीदा नहीं  
रखेंगे;

बल्कि आईदा नसल को भी खुदावन्द की ता'रीफ़,  
और उसकी कुदरत और 'अजाईब जो उसने किए  
बताएँगे।

5 क्योंकि उसने या'कूब में एक शहादत काईम की,  
और इस्राईल में शरी'अत मुक्रर की,  
जिनके बारे में उसने हमारे बाप दादा को हुक्म दिया,  
कि वह अपनी औलाद को उनकी ता'लीम दें,

6 ताकि आईदा नसल, या'नी वह फ़र्ज़न्द जो पैदा होंगे,  
उनको जान लें: और वह बड़े होकर अपनी औलाद को  
सिखाएँ,

7 कि वह खुदा पर उम्मीद रखें, और उसके कामों को भूल  
न जाएँ,

बल्कि उसके हुक्मों पर 'अमल करें;

8 और अपने बाप — दादा की तरह,  
सरकश और बागी नसल न बनें: ऐसी नसल जिसने अपना  
दिल दुरुस्त न किया

और जिसकी रूह खुदा के सामने वफ़ादार न रही।

9 बनी इफ़राईम हथियार बन्द होकर  
और कमाने रखते हुए लड़ाई के दिन फिर गए।

10 उन्होंने खुदा के 'अहद को काईम न रखवा,  
और उसकी शरी'अत पर चलने से इन्कार किया।

11 और उसके कामों को और उसके 'अजायब को,  
जो उसने उनको दिखाए थे भूल गए।

12 उसने मुल्क — ए — मिस्र में जुअन के इलाके में,  
उनके बाप — दादा के सामने 'अजीब — ओ — ग़रीब  
काम किए।

13 उसने समुन्दर के दो हिस्से करके उनको पार उतारा,  
और पानी को तूदे की तरह खड़ा कर दिया।

14 उसने दिन को बादल से उनकी रहबरी की,  
और रात भर आग की रोशनी से।

15 उसने वीरान में चट्टानों को चीरा,  
और उनको जैसे बहर से खूब पिलाया।

16 उसने चट्टान में से नदियाँ जारी कीं,  
और दरियाओं की तरह पानी बहाया।

17 तोभी वह उसके खिलाफ़ गुनाह करते ही गए,  
और वीरान में हक़ता'ला से सरकशी करते रहे।

18 और उन्होंने अपनी ख्वाहिश के मुताबिक़ खाना मांग  
कर अपने दिल में खुदा को आजमाया।

19 बल्कि वह खुदा के खिलाफ़ बकने लगे, और कहा,  
“क्या खुदा वीरान में दस्तरख़्वान बिछा सकता है?

20 देखो, उसने चट्टान को मारा तो पानी फूट निकला,  
और नदियाँ बहने लगीं क्या वह रोटी भी दे सकता है?  
क्या वह अपने लोगों के लिए गोश्त मुहय्या कर देगा?”

21 तब खुदावन्द सुन कर ग़ज़बनाक हुआ,  
और या'कूब के खिलाफ़ आग भड़क उठी,  
और इस्राईल पर क्रहर टूट पड़ा;

22 इसलिए कि वह खुदा पर ईमान न लाए,  
और उसकी नज़ात पर भरोसा न किया।

23 तोभी उसने आसमानों को हुक्म दिया,  
और आसमान के दरवाज़े खोले:

24 और खाने के लिए उन पर मन्न बरसाया,  
और उनको आसमानी ख़राक बरख़्शी।

25 इंसान ने फ़रिश्तों की गिज़ा खाई:  
उसने खाना भेजकर उनको आसूदा किया।

26 उसने आसमान में पुर्वा चलाई,  
और अपनी कुदरत से दखना बहाई।

27 उसने उन पर गोश्त को खाक की तरह बरसाया,  
और परिन्दों को समन्दर की रेत की तरह;

28 जिनको उसने उनकी खेमागाह में,  
उनके घरों के आसपास गिराया।

29 तब वह खाकर खूब सेर हुए,  
और उसने उनकी ख्वाहिश पूरी की।

30 वह अपनी ख्वाहिश से बाज़ न आए,  
और उनका खाना उनके मुँह ही में था।

31 कि खुदा का ग़ज़ब उन पर टूट पड़ा,  
और उनके सबसे मोटे ताज़े आदमी क़त्ल किए,  
और इस्राईली जवानों को मार गिराया।

32 बावजूद इन सब बातों कि वह गुनाह करते ही रहे;

और उसके 'अजीब — ओ — गरीब कामों पर ईमान न लाए।

33 इसलिए उसने उनके दिनों को बतात से,

और उनके बरसों को दहशत से तमाम कर दिया।

34 जब वह उनको कत्ल करने लगा, तो वह उसके तालिब हुए;

और रूजू होकर दिल — ओ — जान से खुदा को ढूँडने लगे।

35 और उनको याद आया कि खुदा उनकी चट्टान, और खुदा ता'ला उनका फ़िदिया देने वाला है।

36 लेकिन उन्होंने अपने मुँह से उसकी खुशामद की, और अपनी ज़बान से उससे झूट बोला।

37 क्योंकि उनका दिल उसके सामने दुरुस्त और वह उसके 'अहद में वफ़ादार न निकले।

38 लेकिन वह रहीम होकर बदकारी मु'आफ़ करता है, और हलाक नहीं करता;

बल्कि बारहा अपने क्रहर को रोक लेता है, और अपने पूरे ग़ज़ब को भड़कने नहीं देता।

39 और उसे याद रहता है कि यह महज़ बशर है।

या'नी हवा जो चली जाती है और फिर नहीं आती।

40 कितनी बार उन्होंने वीरान में उससे सरकशी की और सेहरा में उसे दुख किया।

41 और वह फिर खुदा को आज़माने लगे और उन्होंने इस्राईल के खुदा को नाराज़ किया।

42 उन्होंने उसके हाथ को याद न रखा, न उस दिन की जब उसने फ़िदिया देकर उनको मुखालिफ़ से रिहाई बख़्शी।

43 उसने मिस्र में अपने निशान दिखाए, और जुअन के 'इलाके में अपने अजायब।

44 और उनके दरियाओं को खून बना दिया और वह अपनी नदियों से पी न सके।

45 उसने उन पर मच्छरों के गोल भेजे जो उनको खा गए और मेंढ़क जिन्होंने उनको तबाह कर दिया।

46 उसने उनकी पैदावार कीड़ों को और उनकी मेहनत का फल टिड्डियों को दे दिया।

47 उसने उनकी ताकों को ओलों से और उनके गूलर के दरख्तों को पाले से मारा।

48 उसने उनके चौपायों को ओलों के हवाले किया, और उनकी भेड़ बकरियों को बिजली के।

49 उसने 'ऐज़ाब के फ़रिश्तों की फ़ौज भेज कर अपनी क्रहर की शिद्दत ग़ैज़ — ओ — ग़ज़ब और बला को उन पर नाज़िल किया।

50 उसने अपने क्रहर के लिए रास्ता बनाया, और उनकी जान मौत से न बचाई, बल्कि उनकी ज़िन्दगी वबा के हवाले की।

51 उसने मिस्र के सब पहलौठों को, या'नी हाम के घरों में उनकी ताक़त के पहले फल को मारा;

52 लेकिन वह अपने लोगों को भेड़ों की तरह ले चला, और वीरान में गल्ले की तरह उनकी रहनुमाई की।

53 और वह उनको सलामत ले गया और वह न डरे, लेकिन उनके दुश्मनों को समन्दर ने छिपा लिया।

54 और वह उनको अपने मक़दिस की सरहद तक लाया, या'नी उस पहाड़ तक जिसे उसके दहने हाथ ने हासिल किया था।

55 उसने और क्रौमों को उनके सामने से निकाल दिया; जिनकी मीरास जरीब डाल कर उनको बाँट दी; और जिनके खेमों में इस्राईल के कबीलों को बसाया।

56 तोभी उन्होंने खुदाता'ला को आज़माया और उससे सरकशी की,

और उसकी शहादतों को न माना;

57 बल्कि नाफ़रमान होकर अपने बाप दादा की तरह बेवफ़ाई की

और धोका देने वाली कमान की तरह एक तरफ़ को झुक गए।

58 क्योंकि उन्होंने अपने ऊँचे मक़ामों के वजह से उसका क्रहर भड़काया,

और अपनी खोदी हुई मूरतों से उसे ग़ैरत दिलाई।

59 खुदा यह सुनकर ग़ज़बनाक हुआ,

और इस्राईल से सख़्त नफ़रत की।

60 फिर उसने शीलोह के घर को छोड़ दिया, या'नी उस खेमे को जो बनी आदम के बीच खड़ा किया था।

61 और उसने अपनी ताक़त को गुलामी में, और अपनी हशमत को मुखालिफ़ के हाथ में दे दिया।

62 उसने अपने लोगों को तलवार के हवाले कर दिया, और वह अपनी मीरास से ग़ज़बनाक हो गया।

63 आग उनके जवानों को खा गई, और उनकी कुंवारियों के सुहाग न गाए गए।

64 उनके काहिन तलवार से मारे गए, और उनकी बेवाओं ने नौहा न किया।

65 तब खुदावन्द जैसे नींद से जाग उठा, उस ज़बरदस्त आदमी की तरह जो मय की वजह से ललकारता हो।

66 और उसने अपने मुखालिफ़ों को मार कर पस्पा कर दिया;

उसने उनको हमेशा के लिए रुस्वा किया।

67 और उसने यूसुफ़ के खेमे को छोड़ दिया;

और इफ़राईम के कबीले को न चुना;

68 बल्कि यहूदाह के कबीले को चुना!

उसी कोह — ए — सिय्यून को जिससे उसको मुहब्बत थी।

69 और अपने मक़दिस को पहाड़ों की तरह तामीर किया, और ज़मीन की तरह जिसे उसने हमेशा के लिए काईम किया है।

70 उसने अपने बन्दे दाऊद को भी चुना, और भेड़सालों में से उसे ले लिया;

71 वह उसे बच्चे वाली भेड़ों की चौपानी से हटा लाया, ताकि उसकी क्रौम या'कूब और उसकी मीरास इस्राईल की गल्लेबानी करे।

72 फिर उसने खुलूस — ए — दिल से उनकी पासबानी की और अपने माहिर हाथों से उनकी रहनुमाई करता रहा।

## 79

1 ऐ खुदा, क्रौमें तेरी मीरास में घुस आई हैं; उन्होंने तेरी पाक हैकल को नापाक किया है; उन्होंने येरूशलेम को खण्डर बना दिया

2 उन्होंने तेरे बन्दों की लाशों को आसमान के परिन्दों की, और तेरे पाक लोगों के गोश्त को ज़मीन के दरिदों की खूराक बना दिया है।

3 उन्होंने उनका खून येरूशलेम के गिर्द पानी की तरह बहाया, और कोई उनको दफ़न करने वाला न था।

4 हम अपने पड़ोसियों की मलामत का निशाना हैं; और अपने आसपास के लोगों के तमसखुर और मज़ाक की वजह।

5 ऐ खुदावन्द, कब तक? क्या तू हमेशा के लिए नाराज़ रहेगा?

क्या तेरी ग़ैरत आग की तरह भड़कती रहेगी?

6 अपना क्रहर उन क्रौमों पर जो तुझे नहीं पहचानतीं, और उन ममलुकतों पर जो तेरा नाम नहीं लेतीं, उँडेल दे।

7 क्योंकि उन्होंने या'कूब को खा लिया, और उसके घर को उजाड़ दिया है।

8 हमारे बाप — दादा के गुनाहों को हमारे खिलाफ़ याद न कर; तेरी रहमत जल्द हम तक पहुँचे, क्योंकि हम बहुत पस्त हो गए हैं।

9 ऐ हमारे नजात देने वाले खुदा, अपने नाम के जलाल की खातिर हमारी मदद कर; अपने नाम की खातिर हम को छुड़ा और हमारे गुनाहों का कफ़ारा दे।

10 क्रौमें क्यूँ कहें कि उनका खुदा कहाँ है? तेरे बन्दों के बहाए हुए खून का बदला,

हमारी आँखों के सामने क्रौमों पर ज़ाहिर हो जाए।

11 क्रैदी की आह तेरे सामने तक पहुँचे: अपनी बड़ी कुदरत से मरने वालों को बचा ले।

12 ऐ खुदावन्द, हमारे पड़ोसियों की ता'नाज़नी, जो वह तुझ पर करते रहे हैं, उल्टी सात गुना उन्ही के दामन में डाल दे।

13 तब हम जो तेरे लोग और तेरी चरागाह की भेड़ें हैं, हमेशा तेरी शुक्रगुज़ारी करेंगे; हम नसल दर नसल तेरी सिताइश करेंगे।

## 80

1 ऐ इस्राईल के चौपान! तू जो गल्ले की तरह यूसुफ़ को ले चलता है,

कान लगा! तू जो करुबियों पर बैठा है, जलवागर हो!

2 इफ़राईम — ओ — बिनयमीन और मनस्सी के सामने अपनी कुव्वत को बेदार कर,

और हमें बचाने को आ!

3 ऐ खुदा, हम को बहाल कर; और अपना चेहरा चमका, तो हम बच जाएँगे।

4 ऐ खुदावन्द लश्करी के खुदा, तू कब तक अपने लोगों की दुआ से नाराज़ रहेगा?

5 तूने उनको आँसुओं की रोटी खिलाई, और पीने को कसरत से आँसू ही दिए।

6 तू हम को हमारे पड़ोसियों के लिए झगड़े का ज़रिए बनाता है, और हमारे दुश्मन आपस में हँसते हैं।

7 ऐ लश्करी के खुदा, हम को बहाल कर; और अपना चेहरा चमका, तो हम बच जाएँगे।

8 तू मिस्र से एक ताक लाया; तूने क्रौमों को खारिज करके उसे लगाया।

9 तूने उसके लिए जगह तैयार की; उसने गहरी जड़ पकड़ी और ज़मीन को भर दिया।

10 पहाड़ उसके साये में छिप गए, और उसकी डालियाँ खुदा के देवदारों की तरह थीं।

11 उसने अपनी शाख समन्दर तक फैलाई, और अपनी टहनियाँ दरिया — ए — फरात तक।

12 फिर तूने उसकी बाड़ों को क्यूँ तोड़ डाला, कि सब आने जाने वाले उसका फल तोड़ते हैं?

13 जंगली सूअर उसे बरबाद करता है, और जंगली जानवर उसे खा जाते हैं।

14 ऐ लश्करी के खुदा, हम तेरी मिन्नत करते हैं, फिर मुतक्ज्जह हो!

आसमान पर से निगाह कर और देख, और इस ताक की निगहबानी फ़रमा।



15 और उस पौदे की भी जिसे तेरे दहने हाथ ने लगाया है,  
और उस शाख की जिसे तूने अपने लिए मजबूत किया है।

16 यह आग से जली हुई है, यह कटी पड़ी है;  
वह तेरे मुँह की झिड़की से हलाक हो जाते हैं।

17 तेरा हाथ तेरी दहनी तरफ़ के इंसान पर हो,  
उस इब्न — ए — आदम पर जिसे तूने अपने लिए मजबूत किया है।

18 फिर हम तुझ से नाफ़रमान न होंगे:

तू हम को फिर ज़िन्दा कर और हम तेरा नाम लिया करेंगे।

19 ऐ खुदा वन्द लश्क़ों के खुदा! हम को बहाल कर;  
अपना चेहरा चमका तो हम बच जाएँगे!

## 81

1 खुदा के सामने जो हमारी ताक़त है, बुलन्द आवाज़ से गाओ;

या'कूब के खुदा के सामने खुशी का नारा मारो!

2 नग़मा छेड़ो, और दफ़ लाओ और दिलनवाज़ सितार और बरबत।

3 नए चाँद और पूरे चाँद के वक़्त,  
हमारी 'ईद के दिन नरसिंगा फूँको।

4 क्यूँकि यह इस्राईल के लिए क़ानून,  
और या'कूब के खुदा का हुक्म है।

5 इसको उसने यूसुफ़ में शहादत ठहराया,  
जब वह मुल्क — ए — मिस्र के खिलाफ़ निकला। मैंने उसका कलाम सुना,

जिसको मैं जानता न था

6 मैंने उसके कंधे पर से बोझ उतार दिया;  
उसके हाथ टोकरी ढोने से छूट गए।

7 तूने मुसीबत में पुकारा और मैंने तुझे छुड़ाया;  
मैंने राद के पर्दे में से तुझे जवाब दिया;

मैंने तुझे मरीबा के चश्मे पर आजमाया। सिलाह

8 ऐ मेरे लोगो, सुनो, मैं तुम को होशियार करता हूँ!  
ऐ इस्राईल, काश के तू मेरी सुनता!

9 तेरे बीच कोई ग़ैर खुदावन्द का मा'बूद न हो;

और तू किसी ग़ैरखुदावन्द के मा'बूद को सिज्दा न करना

10 खुदावन्द तेरा खुदा मैं हूँ,

जो तुझे मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया।

तू अपना मुँह खूब खोल और मैं उसे भर दूँगा।

11 “लेकिन मेरे लोगों ने मेरी बात न सुनी,

और इस्राईल मुझ से रज़ामंद न हुआ।

12 तब मैंने उनको उनके दिल की हट पर छोड़ दिया,

ताकि वह अपने ही मशवरों पर चलें।

13 काश कि मेरे लोग मेरी सुनते,  
और इस्राईल मेरी राहों पर चलता!

14 मैं जल्द उनके दुश्मनों को मग़लूब कर देता,  
और उनके मुखालिफ़ों पर अपना हाथ चलाता।

15 खुदावन्द से 'अदावत रखने वाले उसके ताबे हो जाते,  
और इनका ज़माना हमेशा तक बना रहता।

16 वह इनको अच्छे से अच्छा गेहूँ खिलाता  
और मैं तुझे चट्टान में के शहद से शेर करता।”

## 82

1 खुदा की जमा'अत में खुदा मौजूद है।

वह इलाहों के बीच 'अदालत करता है:

2 “तुम कब तक बेइन्साफ़ी से 'अदालत करोगे,  
और शरीरों की तरफ़दारी करोगे? सिलाह

3 ग़रीब और यतीम का इन्साफ़ करो,  
ग़मज़दा और मुफ़लिस के साथ इन्साफ़ से पेश आओ।

4 ग़रीब और मोहताज को बचाओ;  
शरीरों के हाथ से उनको छुड़ाओ।”

5 वह न तो कुछ जानते हैं न समझते हैं,  
वह अंधेरे में इधर उधर चलते हैं;  
ज़मीन की सब बुनियादे हिल गई हैं।

6 मैंने कहा था, “तुम इलाह हो,  
और तुम सब हक़ता'ला के फ़र्ज़न्द हो;

7 तोभी तुम आदमियों की तरह मरोगे,  
और 'उमरा में से किसी की तरह गिर जाओगे।”

8 ऐ खुदा! उठ ज़मीन की 'अदालत कर  
क्यूँकि तू ही सब क़ौमों का मालिक होगा।

## 83

1 ऐ खुदा! ख़ामोश न रह; ऐ खुदा!

चुपचाप न हो और ख़ामोशी इस्तिyar न कर।

2 क्यूँकि देख तेरे दुश्मन ऊधम मचाते हैं

और तुझ से 'अदावत रखने वालों ने सिर उठाया है।

3 क्यूँकि वह तेरे लोगों के खिलाफ़ मक्कारी से मन्सूबा बाँधते हैं,

और उनके खिलाफ़ जो तेरी पनाह में हैं मशवरा करते हैं।

4 उन्होंने कहा, “आओ, हम इनको काट डालें कि उनकी क़ौम ही न रहे;

और इस्राईल के नाम का फिर ज़िक्र न हो।”

5 क्यूँकि उन्होंने एक हो कर के आपस में मशवरा किया है,

वह तेरे खिलाफ़ 'अहद बाँधते हैं।

6 या'नी अदोम के अहल — ए — ख़ैमा

और इस्माईली मोआब और हाजरी,

7 जबल और 'अम्मून और 'अमालीक,  
 फ़िलिस्तीन और सूर के वाशिन्दे,  
 8 असूर भी इनसे मिला हुआ है;  
 उन्होंने बनी लूत की मदद की है।  
 9 तू उनसे ऐसा कर जैसा मिदियान से,  
 और जैसा वादी — ए — कैसून में सीसरा और याबीन  
 से किया था।  
 10 जो 'ऐन दोर में हलाक हुए,  
 वह जैसे ज़मीन की खाद हो गए  
 11 उनके सरदारों को 'ओरेब और ज़ईब की तरह,  
 बल्कि उनके शाहज़ादों को ज़िबह और ज़िलमना' की  
 तरह बना दे;  
 12 जिन्होंने कहा है,  
 “आओ, हम खुदा की बस्तियों पर कब्ज़ा कर लें।”  
 13 ऐ मेरे खुदा, उनको बगोले की गर्द की तरह बना दे,  
 और जैसे हवा के आगे डंठल।  
 14 उस आग की तरह जो जंगल को जला देती है,  
 उस शो'ले की तरह जो पहाड़ों में आग लगा देता है;  
 15 तू इसी तरह अपनी आँधी से उनका पीछा कर,  
 और अपने तूफ़ान से उनको परेशान कर दे।  
 16 ऐ खुदावन्द! उनके चेहरों पर रुस्वाई तारी कर,  
 ताकि वह तेरे नाम के तालिब हों।  
 17 वह हमेशा शर्मिन्दा और परेशान रहें,  
 बल्कि वह रुस्वा होकर हलाक हो जाएँ  
 18 ताकि वह जान लें कि तू ही जिसका यहोवा है,  
 ज़मीन पर बुलन्द — ओ — वाला है।

## 84

1 ऐ लश्करो के खुदावन्द! तेरे घर क्या ही दिलकश हैं!  
 2 मेरी जान खुदावन्द की बारगाहों की मुश्ताक़ है,  
 बल्कि गुदाज़ हो चली, मेरा दिल और मेरा जिस्म ज़िन्दा  
 खुदा के लिए खुशी से ललकारते हैं।  
 3 ऐ लश्करो के खुदावन्द! ऐ मेरे बादशाह और मेरे खुदा!  
 तेरे मज़बहों के पास गौरया ने अपना आशियाना,  
 और अबाबील ने अपने लिए घोंसला बना लिया,  
 जहाँ वह अपने बच्चों को रखे।  
 4 मुबारक हैं वह जो तेरे घर में रहते हैं,  
 वह हमेशा तेरी तारीफ़ करेंगे। मिलाह  
 5 मुबारक है वह आदमी, जिसकी ताक़त तुझ से है,  
 जिसके दिल में सिय्यून की शाह राहें हैं।  
 6 वह वादी — ए — बुका से गुज़र कर उसे चश्मों की  
 जगह बना लेते हैं,  
 बल्कि पहली बारिश उसे बरकतों से मा'मूर कर देती है।  
 7 वह ताक़त पर ताक़त पाते हैं;

उनमें से हर एक सिय्यून में खुदा के सामने हाज़िर होता  
 है।  
 8 ऐ खुदावन्द, लश्करो के खुदा,  
 मेरी दुआ सुन ऐ या'कूब के खुदा! कान लगा! सिलाह  
 9 ऐ खुदा! ऐ हमारी सिपर! देख;  
 और अपने मम्सूह के चेहरे पर नज़र कर।  
 10 क्योंकि तेरी बारगाहों में एक दिन हज़ार से बेहतर है।  
 मैं अपने खुदा के घर का दरबान होना,  
 शरारत के खेमों में बसने से ज्यादा पसंद करूँगा।  
 11 क्योंकि खुदावन्द खुदा, आफ़ताब और ढाल है;  
 खुदावन्द फ़ज़ल और जलाल बख़्शेगा वह रास्तरू से  
 कोई ने'मत बाज़ न रखेगा।  
 12 ऐ लश्करो के खुदावन्द!  
 मुबारक है वह आदमी जिसका भरोसा तुझ पर है।

## 85

1 ऐ खुदावन्द तू अपने मुल्क पर मेहरबान रहा है।  
 तू या'कूब को गुलामी से वापस लाया है।  
 2 तूने अपने लोगों की बदकारी मु'आफ़ कर दी है;  
 तूने उनके सब गुनाह ढाँक दिए हैं।  
 3 तूने अपना ग़ज़ब बिल्कुल उठा लिया;  
 तू अपने क्रहर — ए — शदीद से बाज़ आया है।  
 4 ऐ हमारे नजात देने वाले खुदा!  
 हम को बहाल कर, अपना ग़ज़ब हम से दूर कर!  
 5 क्या तू हमेशा हम से नाराज़ रहेगा?  
 क्या तू अपने क्रहर को नसल दर नसल जारी रखेगा?  
 6 क्या तू हम को फिर ज़िन्दा न करेगा,  
 ताकि तेरे लोग तुझ में खुश हों?  
 7 ऐ खुदावन्द! तू अपनी शफ़क़त हमको दिखा,  
 और अपनी नजात हम को बख़्श।  
 8 मैं सुनूँगा कि खुदावन्द खुदा क्या फ़रमाता है।  
 क्योंकि वह अपने लोगों और अपने पाक लोगों से  
 सलामती की बातें करेगा;  
 लेकिन वह फिर हिमाक़त की तरफ़ रुजू न करें।  
 9 यक़ीनन उसकी नजात उससे डरने वालों के करीब है,  
 ताकि जलाल हमारे मुल्क में बसे।  
 10 शफ़क़त और रास्ती एक साथ मिल गई हैं,  
 सदाक़त और सलामती ने एक दूसरे का बोसा लिया है।  
 11 रास्ती ज़मीन से निकलती है,  
 और सदाक़त आसमान पर से झाँकती हैं।  
 12 जो कुछ अच्छा है वही खुदावन्द अता फ़रमाएगा  
 और हमारी ज़मीन अपनी पैदावार देगी।  
 13 सदाक़त उसके आगे — आगे चलेगी,  
 उसके नक़श — ए — क़दम को हमारी राह बनाएगी।

## 86

- 1 ऐ खुदावन्द! अपना कान झुका और मुझे जवाब दे,  
क्योंकि मैं गरीब और मोहताज हूँ।
- 2 मेरी जान की हिफाजत कर, क्योंकि मैं दीनदार हूँ,  
ऐ मेरे खुदा! अपने बन्दे को,  
जिसका भरोसा तुझ पर है, बचा ले।
- 3 या रब्ब, मुझ पर रहम कर,  
क्योंकि मैं दिन भर तुझ से फ़रियाद करता हूँ।
- 4 या रब्ब, अपने बन्दे की जान को खुश कर दे,  
क्योंकि मैं अपनी जान तेरी तरफ़ उठाता हूँ।
- 5 इसलिए कि तू या रब्ब, नेक और मु'आफ़ करने को  
तैयार है,  
और अपने सब दुआ करने वालों पर शफ़क़त में गनी है।
- 6 ऐ खुदावन्द, मेरी दुआ पर कान लगा,  
और मेरी मिन्नत की आवाज़ पर तवज्जुह फ़रमा।
- 7 मैं अपनी मुसीबत के दिन तुझ से दुआ करूँगा,  
क्योंकि तू मुझे जवाब देगा।
- 8 या रब्ब, मा'मूदों में तुझ सा कोई नहीं,  
और तेरी कारीगरी बेमिसाल हैं।
- 9 या रब्ब, सब क़ौमों जिनको तूने बनाया,  
आकर तेरे सामने सिज्दा करेंगी और तेरे नाम की तम्जीद  
करेंगी।
- 10 क्योंकि तू बुजुर्ग है और 'अजीब — ओ — गरीब काम  
करता है,  
तू ही अकेला खुदा है।
- 11 ऐ खुदावन्द, मुझ को अपनी राह की ता'लीम दे, मैं  
तेरी रास्ती में चलूँगा;  
मेरे दिल को यकसूई बरख़्श, ताकि तेरे नाम का ख़ौफ़  
मानूँ।
- 12 या रब्ब! मेरे खुदा, मैं पूरे दिल से तेरी ता'रीफ़ करूँगा;  
मैं हमेशा तक तेरे नाम की तम्जीद करूँगा।
- 13 क्योंकि मुझ पर तेरी बड़ी शफ़क़त है;  
और तूने मेरी जान को पाताल की तह से निकाला है।
- 14 ऐ खुदा, मगरूर मेरे खिलाफ़ उठे हैं,  
और टेढ़े लोगों जमा'अत मेरी जान के पीछे पड़ी है,  
और उन्होंने तुझे अपने सामने नहीं रख्खा।
- 15 लेकिन तू या रब्ब, रहीम — ओ — करीम खुदा है,  
क्रहर करने में धीमा और शफ़क़त — ओ — रास्ती में  
गनी।
- 16 मेरी तरफ़ मुतवज्जिह हो और मुझ पर रहम कर;  
अपने बन्दे को अपनी ताक़त बरख़्श,  
और अपनी लौंडी के बेटे को बचा ले।
- 17 मुझे भलाई का कोई निशान दिखा,

ताकि मुझ से 'अदावत रखने वाले इसे देख कर शर्मिन्दा  
हों क्योंकि तूने ऐ खुदावन्द,  
मेरी मदद की, और मुझे तसल्ली दी है।

## 87

- 1 उसकी बुनियाद पाक पहाड़ों में है।
- 2 खुदावन्द सिय्यून के फाटकों को या'कूब के सब घरों से  
ज्यादा 'अज़ीज़ रखता है।
- 3 ऐ खुदा के शहर!  
तेरी बड़ी बड़ी ख़ूबियाँ बयान की जाती हैं। सिलाह
- 4 मैं रहब और बाबुल का यूँ ज़िक्र करूँगा,  
कि वह मेरे जानने वालों में हैं;  
फ़िलिस्तीन और सूर और कूश को देखो, यह वहाँ पैदा  
हुआ था।
- 5 बल्कि सिय्यून के बारे में कहा जाएगा,  
कि फ़लों फ़लों आदमी उसमें पैदा हुए।  
और हक़ता'ला खुद उसको क्रयाम बरख़्शेगा।
- 6 खुदावन्द क़ौमों के शुमार के वक़्त दर्ज करेगा,  
कि यह शख्स वहाँ पैदा हुआ था।
- 7 गाने वाले और नाचने वाले यही कहेंगे कि  
मेरे सब चश्मे तुझ ही में हैं।

## 88

- 1 ऐ खुदावन्द, मेरी नजात देने वाले खुदा,  
मैंने रात दिन तेरे सामने फ़रियाद की है।
- 2 मेरी दुआ तेरे सामने पहुँचे,  
मेरी फ़रियाद पर कान लगा!
- 3 क्योंकि मेरा दिल दुखों से भरा है,  
और मेरी जान पाताल के नज़दीक पहुँच गई है।
- 4 मैं क्रब्र में उतरने वालों के साथ गिना जाता हूँ।  
मैं उस शख्स की तरह हूँ, जो बिल्कुल बेकस हो।
- 5 जैसे मक्रतूलो की तरह जो क्रब्र में पड़े हैं,  
मुदों के बीच डाल दिया गया हूँ,  
जिनको तू फिर कभी याद नहीं करता  
और वह तेरे हाथ से काट डाले गए।
- 6 तूने मुझे गहराओ में, अँधेरी जगह में,  
पाताल की तह में रख्खा है।
- 7 मुझ पर तेरा क्रहर भारी है,  
तूने अपनी सब मौजों से मुझे दुख दिया है। सिलाह
- 8 तूने मेरे जान पहचानों को मुझ से दूर कर दिया;  
तूने मुझे उनके नज़दीक घिनौना बना दिया।  
मैं बन्द हूँ और निकल नहीं सकता।
- 9 मेरी आँख दुख से धुंधला चली।  
ऐ खुदावन्द, मैंने हर रोज़ तुझ से दुआ की है;

मैंने अपने हाथ तेरी तरफ फैलाए हैं।

10 क्या तू मुर्दों को 'अजायब दिखाएगा?

क्या वह जो मर गए हैं उठ कर तेरी ता'रीफ करेंगे?  
सिलाह

11 क्या तेरी शफ़क़त का ज़िक्र क़ब्र में होगा,  
या तेरी वफ़ादारी का जहन्नूम में?

12 क्या तेरे 'अजायब को अंधेरे में पहचानेंगे,  
और तेरी सदाक़त को फ़रामोशी की सरज़मीन में?

13 लेकिन ऐ खुदावन्द, मैंने तो तेरी दुहाई दी है;  
और सुबह को मेरी दुआ तेरे सामने पहुँचेगी।

14 ऐ खुदावन्द, तू क्यूँ मेरी जान को छोड़ देता है?  
तू अपना चेहरा मुझ से क्यूँ छिपाता है?

15 मैं लड़कपन ही से मुसीबतज़दा  
और मौत के करीब हूँ मैं तेरे डर के मारे बद हवास हो  
गया।

16 तेरा क्रहर — ए — शदीद मुझ पर आ पड़ा:  
तेरी दहशत ने मेरा काम तमाम कर दिया।

17 उसने दिनभर सैलाब की तरह मेरा घेराव किया;  
उसने मुझे बिल्कुल घेर लिया।

18 तूने दोस्त व अहबाब को मुझ से दूर किया  
और मेरे जान पहचानों को अंधेरे में डाल दिया है।

## 89

1 मैं हमेशा खुदावन्द की शफ़क़त के हम्द गाऊँगा।  
मैं नसल दर नसल अपने मुँह से तेरी वफ़ादारी का 'ऐलान  
करूँगा।

2 क्यूँकि मैंने कहा कि शफ़क़त हमेशा तक बनी रहेगी,  
तू अपनी वफ़ादारी को आसमान में काईम रखेगा।

3 "मैंने अपने बरगुज़ीदा के साथ  
'अहद बाँधा है मैंने अपने बन्दे दाऊद से क़सम खाई है;

4 मैं तेरी नसल को हमेशा के लिए काईम करूँगा,  
और तेरे तख़्त को नसल दर नसल बनाए रखूँगा।"  
सिलाह

5 ऐ खुदावन्द, आसमान तेरे 'अजायब की ता'रीफ़  
करेगा;

पाक लोगों के मजमे' में तेरी वफ़ादारी की ता'रीफ़ होगी।

6 क्यूँकि आसमान पर खुदावन्द का नज़ीर कौन है?  
फ़रिश्तों की जमा'त में कौन खुदावन्द की तरह है?

7 ऐसा मा'बूद जो पाक लोगो की महफ़िल में बहुत  
ता'ज़ीम के लायक़ खुदा है,

और अपने सब चारों तरफ़ वालों से ज़्यादा बड़ा है।

8 ऐ खुदावन्द लश्क़रों के खुदा, ऐ याह!

तुझ सा ज़बरदस्त कौन है?

तेरी वफ़ादारी तेरे चारों तरफ़ है।

9 समन्दर के जोश — ओ — ख़रोश पर तू हुक्मरानी  
करता है;

तू उसकी उठती लहरों को थमा देता है।

10 तूने रहब को मक्तूल की तरह टुकड़े टुकड़े किया;  
तूने अपने क़वी बाज़ू से अपने दुश्मनों को तितर बितर  
कर दिया।

11 आसमान तेरा है, ज़मीन भी तेरी है;  
जहान और उसकी मा'मूरी को तू ही ने काईम किया है।

12 उत्तर और दाख़िन का पैदा करने वाला तू ही है;  
तबूर और हरमून तेरे नाम से खुशी मनाते हैं।

13 तेरा बाज़ू कुदरत वाला है;  
तेरा हाथ क़वी और तेरा दहना हाथ बुलन्द है।

14 सदाक़त और 'अदल तेरे तख़्त की बुनियाद हैं;  
शफ़क़त और वफ़ादारी तेरे आगे आगे चलती हैं।

15 मुबारक है वह क़ौम, जो खुशी की ललकार को  
पहचानती है,

वह ऐ खुदावन्द, जो तेरे चेहरे के नूर में चलते हैं;

16 वह दिनभर तेरे नाम से खुशी मनाते हैं,  
और तेरी सदाक़त से सरफ़राज़ होते हैं।

17 क्यूँकि उनकी ताक़त की शान तू ही है  
और तेरे करम से हमारा सींग बुलन्द होगा।

18 क्यूँकि हमारी ढाल खुदावन्द की तरफ़ से है,  
और हमारा बादशाह इस्राईल के कुदूस की तरफ़ से।

19 उस वक़्त तूने ख़्वाब में अपने पाक लोगों से कलाम  
किया,

और फ़रमाया, मैंने एक ज़बरदस्त को मददगार बनाया  
है,

और क़ौम में से एक को चुन कर सरफ़राज़ किया है।

20 मेरा बन्दा दाऊद मुझे मिल गया,  
अपने पाक तेल से मैंने उसे मसह किया है।

21 मेरा हाथ उसके साथ रहेगा,  
मेरा बाज़ू उसे तक्रवियत देगा।

22 दुश्मन उस पर जबूर न करने पाएगा,  
और शरारत का फ़र्ज़न्द उसे न सताएगा।

23 मैं उसके मुख़ालिफ़ों को उसके सामने मग़लूब करूँगा  
और उससे 'अदावत रखने वालों को मारूँगा।

24 लेकिन मेरी वफ़ादारी और शफ़क़त उसके साथ रहेंगी,  
और मेरे नाम से उसका सींग बुलन्द होगा।

25 मैं उसका हाथ समन्दर तक बढ़ाऊँगा,  
और उसके दहने हाथ को दरियाओं तक।

26 वह मुझे पुकार कर कहेगा,  
'तू मेराबाप, मेरा खुदा, और मेरी नजात की चट्टान है।

27 और मैं उसको अपना पहलौठा बनाऊँगा  
और दुनिया का शहंशाह।



28 मैं अपनी शफ़क़त को उसके लिए हमेशा तक काईम रखूँगा

और मेरा 'अहद उसके साथ लातब्दील रहेगा।

29 मैं उसकी नसल को हमेशा तक काईम रखूँगा, और उसके तख़्त को जब तक आसमान है।

30 अगर उसके फ़र्ज़न्द मेरी शरी'अत को छोड़ दें, और मेरे अहकाम पर न चलें,

31 अगर वह मेरे क़ानून को तोड़ें,

और मेरे फ़रमान को न मानें,

32 तो मैं उनको छड़ी से ख़ता की, और कोड़ों से बदकारी की सज़ा दूँगा।

33 लेकिन मैं अपनी शफ़क़त उस पर से हटा न लूँगा, और अपनी वफ़ादारी को बेकार न होने न दूँगा।

34 मैं अपने 'अहद को न तोड़ूँगा, और अपने मुँह की बात को न बदलूँगा।

35 मैं एक बार अपनी पाकी की क़सम खा चुका हूँ मैं दाऊद से झूट न बोलूँगा।

36 उसकी नसल हमेशा काईम रहेगी, और उसका तख़्त आफ़ताब की तरह मेरे सामने काईम रहेगा।

37 वह हमेशा चाँद की तरह, और आसमान के सच्चे गवाह की तरह काईम रहेगा। मिलाह

38 लेकिन तूने तो तर्क कर दिया और छोड़ दिया, तू अपने मम्सूह से नाराज़ हुआ है।

39 तूने अपने खादिम के 'अहद को रद्द कर दिया, तूने उसके ताज को खाक में मिला दिया।

40 तूने उसकी सब बाड़ों को तोड़ डाला, तूने उसके क़िलों' को खण्डर बना दिया।

41 सब आने जाने वाले उसे लूटते हैं, वह अपने पड़ोसियों की मलामत का निशाना बन गया।

42 तूने उसके मुखालिफ़ों के दहने हाथ को बुलन्द किया; तूने उसके सब दुश्मनों को खुश किया।

43 बल्कि तू उसकी तलवार की धार को मोड़ देता है, और लड़ाई में उसके पाँव को जमने नहीं दिया।

44 तूने उसकी रौनक उड़ा दी, और उसका तख़्त खाक में मिला दिया।

45 तूने उसकी जवानी के दिन घटा दिए, तूने उसे शर्मिन्दा कर दिया है। सिलाह

46 ऐ खुदावन्द, कब तक? क्या तू हमेशा तक पोशीदा रहेगा?

तेरे क़हर की आग कब तक भड़कती रहेगी?

47 याद रख मेरा क़याम ही क्या है,

तूने कैसी बतालत के लिए कुल बनी आदम को पैदा किया।

48 वह कौन सा आदमी है जो ज़िन्दा ही रहेगा और मौत को न देखेगा,

और अपनी जान को पाताल के हाथ से बचा लेगा? सिलाह

49 या रब्ब, तेरी वह पहली शफ़क़त क्या हुई, जिसके बारे में तूने दाऊद से अपनी वफ़ादारी की क़सम खाई थी?

50 या रब्ब, अपने बन्दों की रुस्वाई को याद कर; मैं तो सब ज़बरदस्त क़ौमों की ता'नाज़नी, अपने सीने में लिए फिरता हूँ।

51 ऐ खुदावन्द, तेरे दुश्मनों ने कैसे ता'ने मारे, तेरे मम्सूह के क़दम क़दम पर कैसी ता'नाज़नी की है।

52 खुदावन्द हमेशा से हमेशा तक मुबारक हो! आमीन सुम्मा आमीन।

## चौथी किताब

### 90

(90-106)

1 या रब्ब, नसल दर नसल, तू ही हमारी पनाहगाह रहा है।

2 इससे पहले के पहाड़ पैदा हुए, या ज़मीन और दुनिया को तूने बनाया, इब्तिदा से हमेशा तक तू ही खुदा है।

3 तू इंसान को फिर खाक में मिला देता है, और फ़रमाता है, "ऐ बनी आदम, लौट आओ!"

4 क्योंकि तेरी नज़र में हज़ार बरस ऐसे हैं, जैसे कल का दिन जो गुज़र गया, और जैसे रात का एक पहर।

5 तू उनको जैसे सैलाब से बहा ले जाता है; वह नींद की एक झपकी की तरह हैं, वह सुबह को उगने वाली घास की तरह हैं।

6 वह सुबह को लहलहाती और बढ़ती है, वह शाम को कटती और सूख जाती है।

7 क्योंकि हम तेरे क़हर से फ़ना हो गए; और तेरे ग़ज़ब से परेशान हुए।

8 तूने हमारी बदकिरदारी को अपने सामने रखवा, और हमारे छुपे हुए गुनाहों को अपने चेहरे की रोशनी में।

9 क्योंकि हमारे तमाम दिन तेरे क़हर में गुज़रे, हमारी उम्र ख़याल की तरह जाती रहती है।

10 हमारी उम्र की मी'आद सत्तर बरस है, या कुव्वत हो तो अस्सी बरस;

तो भी उनकी रौनक महज मशक़त और ग़म है,  
क्यूँकि वह जल्द जाती रहती है और हम उड़ जाते हैं।

11 तेरे क़हर की शिद्दत को कौन जानता है,  
और तेरे खौफ़ के मुताबिक़ तेरे ग़ज़ब को?

12 हम को अपने दिन गिनना सिखा,  
ऐसा कि हम अक़ल दिल हासिल करें।

13 ऐ खुदावन्द, बाज़ आ! कब तक?

और अपने बन्दों पर रहम फ़रमा!

14 सुबह को अपनी शफ़क़त से हम को आसूदा कर,  
ताकि हम उम्र भर खुश — ओ — ख़ुरम रहें।

15 जितने दिन तूने हम को दुख दिया,  
और जितने बरस हम मुसीबत में रहे,  
उतनी ही खुशी हम को 'इनायत कर।

16 तेरा काम तेरे बन्दों पर,  
और तेरा जलाल उनकी औलाद पर ज़ाहिर हो।

17 और रब्व हमारे खुदा का करम हम पर साया करे।  
हमारे हाथों के काम को हमारे लिए क़याम बरख़्श हाँ  
हमारे हाथों के काम को क़याम बरख़्श दे।

## 91

1 जो हक़ता'ला के पर्दे में रहता है,  
वह कादिर — ए — मुतलक़ के साथे में सुकूनत करेगा।

2 मैं खुदावन्द के बारे में कहूँगा, “वही मेरी पनाह और  
मेरा गढ़ है;

वह मेरा खुदा है, जिस पर मेरा भरोसा है।”

3 क्यूँकि वह तुझे सय्याद के फंदे से,  
और मुहलिक वबा से छुड़ाएगा।

4 वह तुझे अपने परों से छिपा लेगा,  
और तुझे उसके बाजूओं के नीचे पनाह मिलेगी,  
उसकी सच्चाई ढाल और सिपर है।

5 तू न रात के खौफ़ से डरेगा,  
न दिन को उड़ने वाले तीर से।

6 न उस वबा से जो अंधेरे में चलती है,  
न उस हलाकत से जो दोपहर को वीरान करती है।

7 तेरे आसपास एक हज़ार गिर जाएँगे,  
और तेरे दहने हाथ की तरफ़ दस हज़ार;  
लेकिन वह तेरे नज़दीक न आएगी।

8 लेकिन तू अपनी आँखों से निगाह करेगा,  
और शरीरों के अंजाम को देखेगा।

9 लेकिन तू ऐ खुदावन्द, मेरी पनाह है।

तूने हक़ता'ला को अपना घर बना लिया है।

10 तुझ पर कोई आफ़त नहीं आएगी,  
और कोई वबा तेरे खेमे के नज़दीक न पहुँचेगी।

11 क्यूँकि वह तेरे बारे में अपने फ़रिश्तों को हुक्म देगा,

कि तेरी सब राहों में तेरी हिफ़ाज़त करें।

12 वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे,  
ताकि ऐसा न हो कि तेरे पाँव को पत्थर से ठेस लगे।

13 तू शेर — ए — बबर और अज़दहा को रौंदेगा,  
तू जवान शेर और अज़दह को पामाल करेगा।

14 चूँकि उसने मुझ से दिल लगाया है, इसलिए मैं उसे  
छुड़ाऊँगा;

मैं उसे सरफ़राज़ करूँगा, क्यूँकि उसने मेरा नाम पहचाना  
है।

15 वह मुझे पुकारेगा और मैं उसे जवाब दूँगा,  
मैं मुसीबत में उसके साथ रहूँगा,

मैं उसे छुड़ाऊँगा और 'इज़ज़त बरख़्शूँगा।

16 मैं उसे उम्र की दराज़ी से आसूदा कर दूँगा  
और अपनी नज़ात उसे दिखाऊँगा।

## 92

1 क्या ही भला है, खुदावन्द का शुक्र करना,  
और तेरे नाम की मदहसराई करना; ऐ हक़ ता'ला!

2 सुबह को तेरी शफ़क़त का इज़हार करना,  
और रात को तेरी वफ़ादारी का,

3 दस तार वाले साज़ और बर्बत पर,  
और सितार पर गूँजती आवाज़ के साथ।

4 क्यूँकि, ऐ खुदावन्द, तूने मुझे अपने काम से खुश  
किया;

मैं तेरी कारीगरी की वजह से खुशी मनाऊँगा।

5 ऐ खुदावन्द, तेरी कारीगरी कैसी बड़ी है।

तेरे खयाल बहुत 'अमीक़ हैं।

6 हैवान खसलत नहीं जानता  
और बेवकूफ़ इसको नहीं समझता,

7 जब शरीर घास की तरह उगते हैं,  
और सब बदकिरदार फूलते फलते हैं,  
तो यह इसी लिए है कि वह हमेशा के लिए फ़ना हों।

8 लेकिन तू ऐ खुदावन्द, हमेशा से हमेशा तक बुलन्द है।

9 क्यूँकि देख, ऐ खुदावन्द, तेरे दुश्मन;

देख, तेरे दुश्मन हलाक हो जाएँगे;

सब बदकिरदार तितर बितर कर दिए जाएँगे।

10 लेकिन तूने मेरे सींग को जंगली साँड के सींग की तरह  
बलन्द किया है;

मुझ पर ताज़ा तेल मला गया है।

11 मेरी आँख ने मेरे दुश्मनों को देख लिया,

मेरे कानों ने मेरे मुख़ालिफ़ बदकारों का हाल सुन लिया  
है।

12 सादिक़ खज़ूर के दरख़्त की तरह सरसब्ज़ होगा।

वह लुबनान के देवदार की तरह बढ़ेगा।

13 जो खुदावन्द के घर में लगाए गए हैं,  
वह हमारे खुदा की बारगाहों में सरसब्ज होंगे।  
14 वह बुढ़ापे में भी कामयाब होंगे,  
वह तर — ओ — ताजा और सरसब्ज रहेंगे;  
15 ताकि वाज़ह करें कि खुदावन्द रास्त है  
वही मेरी चट्टान है और उसमें न रास्ती नहीं।

## 93

1 खुदावन्द सलतनत करता है वह शौकत से मुलब्स है  
खुदावन्द कुदरत से मुलब्स है, वह उससे कमर बस्ता है  
इस लिए जहान काईम है और उसे जुम्बिश नहीं।  
2 तेरा तख्त पहले से काईम है, तू इब्तिदा से है।  
3 सैलाबों ने, ऐ खुदावन्द!  
सैलाबों ने शोर मचा रखवा है, सैलाब मौजज़न हैं।  
4 बहरों की आवाज़ से,  
समन्दर की ज़बरदस्त मौजों से भी,  
खुदावन्द बलन्द — ओ — कादिर है।  
5 तेरी शहादतें बिल्कुल सच्ची हैं;  
ऐ खुदावन्द हमेशा से हमेशा तक के लिए  
पाकीज़गी तेरे घर को ज़ेबा है।

## 94

1 ऐ खुदावन्द! ऐ इन्तक़ाम लेने वाले  
खुदा ऐ इन्तक़ाम लेने वाले खुदा! जलवागर हो!  
2 ऐ जहान का इन्साफ़ करने वाले! उठ;  
मगरूरों को बदला दे!  
3 ऐ खुदावन्द, शरीर कब तक;  
शरीर कब तक खुशी मनाया करेंगे?  
4 वह बकवास करते और बड़ा बोल बोलत हैं,  
सब बदकिरदार लाफ़ज़नी करते हैं।  
5 ऐ खुदावन्द! वह तेरे लोगों को पीसे डालते हैं,  
और तेरी मीरास को दुख देते हैं।  
6 वह बेवा और परदेसी को क़त्ल करते,  
और यतीम को मार डालते हैं;  
7 और कहते हैं “खुदावन्द नहीं देखेगा  
और या'कूब का खुदा खयाल नहीं करेगा।”  
8 ऐ क्रौम के हैवानो! ज़रा खयाल करो;  
ऐ बेवकूफ़ों! तुम्हें कब 'अक्ल आएगी?  
9 जिसने कान दिया, क्या वह खुद नहीं सुनता?  
जिसने आँख बनाई, क्या वह देख नहीं सकता?  
10 क्या वह जो क्रौमों को तम्बीह करता है,  
और इंसान को समझ सिखाता है, सज़ा न देगा?  
11 खुदावन्द इंसान के खयालों को जानता है, कि वह  
बेकार हैं।

12 ऐ खुदावन्द, मुबारक है वह आदमी जिसे तू तम्बीह  
करता,  
और अपनी शरी'अत की ता'लीम देता है।  
13 ताकि उसको मुसीबत के दिनों में आराम बख़्शे,  
जब तक शरीर के लिए गढ़ा न खोदा जाए।  
14 क्योंकि खुदावन्द अपने लोगों को नहीं छोड़ेगा,  
और वह अपनी मीरास को नहीं छोड़ेगा;  
15 क्योंकि 'अद्ल सदाक़त की तरफ़ रुजू' करेगा,  
और सब रास्त दिल उसकी पैरवी करेंगे।  
16 शरीरों के मुकाबले में कौन मेरे लिए उठेगा?  
बदकिरदारों के खिलाफ़ कौन मेरे लिए खड़ा होगा?  
17 अगर खुदावन्द मेरा मददगार न होता,  
तो मेरी जान कब की 'आलम — ए — ख़ामोशी में जा  
बसी होती।  
18 जब मैंने कहा, मेरा पाँव फिसल चला,  
तो ऐ खुदावन्द! तेरी शफ़क़त ने मुझे संभाल लिया।  
19 जब मेरे दिल में फ़िक्रों की कसरत होती है,  
तो तेरी तसल्ली मेरी जान को खुश करती है।  
20 क्या शरारत के तख्त से तुझे कुछ वास्ता होगा,  
जो क़ानून की आड़ में बदी गढ़ता है?  
21 वह सादिक़ की जान लेने को इकट्ठे होते हैं,  
और बेगुनाह पर क़त्ल का फ़तवा देते हैं।  
22 लेकिन खुदावन्द मेरा ऊँचा बुर्ज,  
और मेरा खुदा मेरी पनाह की चट्टान रहा है।  
23 वह उनकी बदकारी उन ही पर लाएगा,  
और उन ही की शरारत में उनको काट डालेगा।  
खुदावन्द हमारा उनको काट डालेगा।

## 95

1 आओ हम खुदावन्द के सामने नग़मासराई करे!  
अपनी नजात की चट्टान के सामने खुशी से ललकारें।  
2 शुक्रगुज़ारी करते हुए उसके सामने में हाज़िर हों,  
मज़मूर गाते हुए उसके आगे खुशी से ललकारें।  
3 क्योंकि खुदावन्द खुदा — ए — 'अज़ीम है,  
और सब इलाहों पर शाह — ए — 'अज़ीम है।  
4 ज़मीन के गहराव उसके क़ब्जे में हैं;  
पहाड़ों की चोटियाँ भी उसी की हैं।  
5 समन्दर उसका है, उसी ने उसको बनाया,  
और उसी के हाथों ने खुशकी को भी तैयार किया।  
6 आओ हम झुकें और सिज्दा करें,  
और अपने खालिक़ खुदावन्द के सामने घुटने टेकें!  
7 क्योंकि वह हमारा खुदा है,  
और हम उसकी चरागाह के लोग,  
और उसके हाथ की भेड़ें हैं।

काश कि आज के दिन तुम उसकी आवाज़ सुनते!  
 8 तुम अपने दिल को सख्त न करो जैसा मरीबा में,  
 जैसा मस्साह के दिन वीरान में किया था,  
 9 उस वक़्त तुम्हारे बाप — दादा ने मुझे आजमाया,  
 और मेरा इम्तिहान किया और मेरे काम को भी देखा।  
 10 चालीस बरस तक मैं उस नसल से बेज़ार रहा,  
 और मैंने कहा, कि “ये वह लोग हैं जिनके दिल आवारा  
 हैं,  
 और उन्होंने मेरी राहों को नहीं पहचाना।”  
 11 चुनाँचे मैंने अपने ग़ज़ब में क़सम खाई कि  
 यह लोग मेरे आराम में दाख़िल न होंगे।

## 96

1 खुदावन्द के सामने नया हम्द गाओ!  
 ऐ सब अहल — ए — ज़मीन! खुदावन्द के सामने  
 गाओ।  
 2 खुदावन्द के सामने गाओ, उसके नाम को मुबारक कहो;  
 रोज़ ब रोज़ उसकी नजात की बशारत दो।  
 3 क़ौमों में उसके जलाल का,  
 सब लोगों में उसके 'अज़ायब का बयान करो।  
 4 क्योंकि खुदावन्द बुज़ुर्ग और बहुत। सिताइश के लायक़  
 है;  
 वह सब मा'बूदों से ज्यादा ता'ज़ीम के लायक़ है।  
 5 इसलिए कि और क़ौमों के सब मा'बूद सिर्फ़ बुत हैं;  
 लेकिन खुदावन्द ने आसमानों को बनाया।  
 6 अज़मत और जलाल उसके सामने में हैं,  
 कुदरत और जमाल उसके मक़दिस में।  
 7 ऐ क़ौमों के क़बीलो! खुदावन्द की,  
 खुदावन्द ही की तम्ज़ीद — ओ — ता'ज़ीम करो!  
 8 खुदावन्द की ऐसी तम्ज़ीद करो जो उसके नाम की  
 शायान है;  
 हदिया लाओ और उसकी बारगाहों में आओ!  
 9 पाक आराइश के साथ खुदावन्द को सिज्दा करो;  
 ऐ सब अहल — ए — ज़मीन! उसके सामने काँपते रहो!  
 10 क़ौमों में 'ऐलान करो, “खुदावन्द सल्तनत करता है!  
 जहान काईम है, और उसे जुम्बिश नहीं;  
 वह रास्ती से क़ौमों की 'अदालत करेगा।”  
 11 आसमान खुशी मनाए, और ज़मीन खुश हो;  
 समन्दर और उसकी मा'मूरी शोर मचाएँ;  
 12 मैदान और जो कुछ उसमें है, बाग़ — बाग़ हों;  
 तब जंगल के सब दरख़्त खुशी से गाने लगेंगे।  
 13 खुदावन्द के सामने, क्योंकि वह आ रहा है;  
 वह ज़मीन की 'अदालत करने को रहा है।  
 वह सदाक़त से जहान की, और अपनी सच्चाई से क़ौमों  
 की 'अदालत करेगा।

## 97

1 खुदावन्द सल्तनत करता है, ज़मीन खुश हो;  
 बेशुमार जज़ीरे खुशी मनाएँ।  
 2 बादल और तारीकी उसके चारों तरफ़ हैं;  
 सदाक़त और अदल उसके तख़्त की बुनियाद हैं।  
 3 आग उसके आगे आगे चलती है,  
 और चारों तरफ़ उसके मुखालिफ़ों को भसम कर देती है।  
 4 उसकी बिजलियों ने जहान को रोशन कर दिया  
 ज़मीन ने देखा और काँप गई।  
 5 खुदावन्द के सामने पहाड़ मोम की तरह पिघल गए,  
 या'नी सारी ज़मीन के खुदावन्द के सामने।  
 6 आसमान उसकी सदाक़त ज़ाहिर करता सब क़ौमों ने  
 उसका जलाल देखा है।  
 7 खुदी हुई मूरतों के सब पूजने वाले,  
 जो बुतों पर फ़ख़र करते हैं, शर्मिन्दा हों,  
 ऐ मा'बूद! सब उसको सिज्दा करो।  
 8 ऐ खुदावन्द! सिय्यून ने सुना और खुश हुई  
 और यहूदाह की बेटियाँ तेरे अहक़ाम से खुश हुई।  
 9 क्योंकि ऐ खुदावन्द! तू तमाम ज़मीन पर बुलंद — ओ  
 — बाला है;  
 तू सब मा'बूदों से बहुत आला है।  
 10 ऐ खुदावन्द से मुहब्बत रखने वालों, बदी से नफ़रत  
 करो,  
 वह अपने पाक लोगों की जानों को महफूज़ रखता है,  
 वह उनको शरीरों के हाथ से छुड़ाता है।  
 11 सादिक़ों के लिए नूर बोया गया है,  
 और रास्त दिलों के लिए खुशी।  
 12 ऐ सादिक़ों! खुदावन्द में खुश रहो;  
 उसके पाक नाम का शुक्र करो।

## 98

1 खुदावन्द के सामने नया हम्द गाओ  
 क्योंकि उसने 'अजीब काम किए हैं।  
 उसके दहने हाथ और उसके पाक बाज़ू ने उसके लिए  
 फ़तह हासिल की है।  
 2 खुदावन्द ने अपनी नजात ज़ाहिर की है,  
 उसने अपनी सदाक़त क़ौमों के सामने ज़ाहिर की है।  
 3 उसने इस्राईल के घराने के हक़ में अपनी शफ़क़त —  
 ओ — वफ़ादारी याद की है,  
 इन्तिहाई ज़मीन के लोगों ने हमारे खुदा की नजात देखी  
 है।  
 4 ऐ तमाम अहल — ए — ज़मीन! खुदावन्द के सामने  
 खुशी का नारा मारो;  
 ललकारो और खुशी से गाओ और मदहसराई करो।



5 खुदावन्द की सिताइश सितार पर करो,  
सितार और सुरीली आवाज़ से।  
6 नरसिंगे और करना की आवाज़ से,  
बादशाह या 'नी खुदावन्द के सामने खुशी का नारा मारो।  
7 समन्दर और उसकी मा'मूरी शोर मचाएँ  
और जहान और उसके बाशिंदे।  
8 सैलाब तालियाँ बजाएँ;  
पहाड़ियाँ मिलकर खुशी से गाएँ।  
9 खुदावन्द के सामने, क्योंकि वह ज़मीन की 'अदालत  
करने आ रहा है।  
वह सदाक़त से जहान की,  
रास्ती से क़ौमों की 'अदालत करेगा।

## 99

1 खुदावन्द सलतनत करता है,  
क़ौमों काँपी। वह करूबियों पर बैठता है, ज़मीन लरज़े।  
2 खुदावन्द सिय्यून में बुज़ुर्ग है;  
और वह सब क़ौमों पर बुलंद — ओ — बाला है।  
3 वह तेरे बुज़ुर्ग और बड़े नाम की ता'रीफ़ करें वह पाक  
हैं।  
4 बादशाह की ताक़त इन्साफ़ पसन्द है  
तू रास्ती को क़ाईम करता है तू ही ने 'अदल  
और सदाक़त को या'कूब, में रायज किया।  
5 तुम खुदावन्द हमारे खुदा की तम्ज़ीद करो,  
और उसके पाँव की चौकी पर सिज्दा वह पाक है।  
6 उसके काहिनों में से मूसा और हारून ने,  
और उसका नाम लेनेवालों में से समुएल ने खुदावन्द से  
दुआ की और उसने उनको जवाब दिया।  
7 उसने बादल के सुतून में से उनसे कलाम किया;  
उन्होंने उसकी शहादतों को और उस क़ानून को जो  
उनको दिया था, माना।  
8 ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, तू उनको जवाब देता था;  
तू वह खुदा है जो उनको मु'आफ़ करता रहा,  
अगरचे तूने उनके आ'माल का बदला भी दिया।  
9 तुम खुदावन्द हमारे खुदा की तम्ज़ीद करो,  
और उसके पाक पहाड़ पर सिज्दा करो;  
क्योंकि खुदावन्द हमारा खुदा कुददूस है।

## 100

1 ऐ अहले ज़मीन, सब खुदावन्द के सामने खुशी का  
ना'रा मारो!  
2 खुशी से खुदावन्द की इबादत करो!  
गाते हुए उसके सामने हाज़िर हो!  
3 जान रखों खुदावन्द ही खुदा है!  
उसी ने हम को बनाया और हम उसी के है;

हम उसके लोग और उसकी चरागाह की भेड़े हैं।  
4 शुक्रगुज़ारी करते हुए उसके फाटकों में  
और हम्द करते हुए उसकी बारगाहों में दाखिल हो;  
उसका शुक्र करो और उसके नाम को मुबारक कहो!  
5 क्योंकि खुदावन्द भला है, उसकी शफ़क़त हमेशा की है,  
और उसकी वफ़ादारी नसल दर नसल रहती है।

## 101

1 मैं शफ़क़त और 'अदल का हम्द गाऊँगा;  
ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मदद सराई करूँगा।  
2 मैं 'अक्लमंदी से कामिल राह पर चलूँगा,  
तू मेरे पास कब आएगा?  
घर में मेरा चाल चलन सच्चे दिल से होगा।  
3 मैं किसी ख़बासत को मद — ए — नज़र नहीं रखूँगा;  
मुझे कज रफ़तारों के काम से नफ़रत है;  
उसको मुझ से कुछ मतलब न होगा।  
4 कजदिली मुझ से दूर हो जाएगी;  
मैं किसी बुराई से आशना न हूँगा।  
5 जो दर पर्दा अपने पड़ोसी की बुराई करे,  
मैं उसे हलाक कर डालूँगा;  
मैं बुलन्द नज़र और मगरूर दिल की बर्दाश्त न करूँगा।  
6 मुल्क के ईमानदारों पर मेरी निगाह होगी ताकि वह  
मेरे साथ रहें;  
जो कामिल राह पर चलता है वही मेरी ख़िदमत करेगा।  
7 दगाबाज़ मेरे घर में रहने न पाएगा;  
दरोगा गो को मेरे सामने क़याम न होगा।  
8 मैं हर सुबह मुल्क के सब शरीरों को हलाक किया  
करूँगा,  
ताकि खुदावन्द के शहर से बदकारों को काट डालूँ।

## 102

1 ऐ खुदावन्द! मेरी दुआ सुन  
और मेरी फ़रियाद तेरे सामने पहुँचे।  
2 मेरी मुसीबत के दिन मुझ से चेहरा न छिपा,  
अपना कान मेरी तरफ़ झुका,  
जिस दिन मैं फ़रियाद करूँ मुझे जल्द जवाब दे।  
3 क्योंकि मेरे दिन धुएँ की तरह उड़े जाते हैं,  
और मेरी हड्डियाँ ईधन की तरह जल गई।  
4 मेरा दिल घास की तरह झुलस कर सूख गया;  
क्योंकि मैं अपनी रोटी खाना भूल जाता हूँ।  
5 कराहते कराहते मेरी हड्डियाँ मेरे गोश्त से जा लगीं।  
6 मैं जंगली हवासिल की तरह हूँ,  
मैं वीराने का उल्लू बन गया।  
7 मैं बेख़्वाब और उस ग़ैरे की तरह हो गया हूँ,

जो छत पर अकेला हो।

8 मेरे दुश्मन मुझे दिन भर मलामत करते हैं;  
मेरे मुखालिफ़ दीवाना होकर मुझ पर ला'नत करते हैं।

9 क्योंकि मैंने रोटी की तरह राख खाई,  
और आँसू मिलाकर पानी पिया।

10 यह तेरे ग़ज़ब और क्रूर की वजह से है,  
क्योंकि तूने मुझे उठाया और फिर पटक दिया।

11 मेरे दिन ढलने वाले साये की तरह हैं,  
और मैं घास की तरह मुरझा गया।

12 लेकिन तू ऐ खुदावन्द, हमेशा तक रहेगा;  
और तेरी यादगार नसल — दर — नसल रहेगी।

13 तू उठेगा और सिय्यून पर रहम करेगा:  
क्योंकि उस पर तरस खाने का वक़्त है, हाँ उसका  
मु'अय्यन वक़्त आ गया है।

14 इसलिए कि तेरे बन्दे उसके पत्थरों को चाहते,  
और उसकी खाक पर तरस खाते हैं।

15 और क्रौमों को खुदावन्द के नाम का,  
और ज़मीन के सब बादशाहों को तेरे जलाल का खौफ़  
होगा।

16 क्योंकि खुदावन्द ने सिय्यून को बनाया है;  
वह अपने जलाल में ज़ाहिर हुआ है।

17 उसने बेकसों की दुआ पर तवज्जुह की,  
और उनकी दुआ को हक़ीर न जाना।

18 यह आने वाली नसल के लिए लिखा जाएगा,  
और एक क्रौम पैदा होगी जो खुदावन्द की सिताइश  
करेगी।

19 क्योंकि उसने अपने हैकल की बुलन्दी पर से निगाह  
की,

खुदावन्द ने आसमान पर से ज़मीन पर नज़र की;

20 ताकि गुलाम का कराहना सुने,  
और मरने वालों को छुड़ा ले;

21 ताकि लोग सिय्यून में खुदावन्द के नाम का इज़हार,  
और येरूशलेम में उसकी तारीफ़ करें,

22 जब खुदावन्द की इबादत के लिए, हों।

23 उसने राह में मेरा ज़ोर घटा दिया,  
उसने मेरी उम्र कोताह कर दी।

24 मैंने कहा, ऐ मेरे खुदा, मुझे आधी उम्र में न उठा,  
तेरे बरस नसल दर नसल हैं।

25 तूने इब्तिदा से ज़मीन की बुनियाद डाली;  
आसमान तेरे हाथ की कारीगरी है।

26 वह हलाक हो जाएँगे, लेकिन तू बाक़ी रहेगा;  
बल्कि वह सब पोशाक की तरह पुराने हो जाएँगे।

तू उनको लिबास की तरह बदलेगा, और वह बदल  
जाएँगे;

27 लेकिन तू बदलने वाला नहीं है,  
और तेरे बरस बेइन्तिहा होंगे।

28 तेरे बन्दों के फ़र्जन्द बरकरार रहेंगे;  
और उनकी नसल तेरे सामने क़ाईम रहेगी।

## 103

1 ऐ मेरी जान! खुदावन्द को मुबारक कह;

और जो कुछ मुझमें है उसके पाक नाम को मुबारक कहें

2 ऐ मेरी जान! खुदावन्द को मुबारक कह

और उसकी किसी ने'मत को फ़रामोश न कर।

3 वह तेरी सारी बदकारी को बरख़्शता है

वह तुझे तमाम बीमारियों से शिफ़ा देता है

4 वह तेरी जान हलाकत से बचाता है,

वह तेरे सर पर शफ़क़त व रहमत का ताज रखता है।

5 वह तुझे उम्र भर अच्छी अच्छी चीज़ों से आसूदा  
करता है,

तू 'उक्काब की तरह नए सिरे नौजवान होता है।

6 खुदावन्द सब मज़लूमों के लिए सदाक़त

और अदल के काम करता है।

7 उसने अपनी राहें मूसा पर

और अपने काम बनी इस्राईल पर ज़ाहीर किए।

8 खुदावन्द रहीम व करीम है,

क्रूर करने में धीमा और शफ़क़त में गनी।

9 वह सदा झिड़कता न रहेगा

वह हमेशा ग़ज़बनाक न रहेगा।

10 उस ने हमारे गुनाहों के मुवाफ़िक़ हम से सुलूक नहीं  
किया

और हमारी बदकारियों के मुताबिक़ हमको बदला नहीं  
दिया।

11 क्योंकि जिस क्रूर आसमान ज़मीन से बुलन्द,

उसी क्रूर उसकी शफ़क़त उन पर है, जो उससे डरते हैं।

12 जैसे पूरब पच्छिम से दूर है,

वैसे ही उसने हमारी ख़ताएँ हम से दूर कर दीं।

13 जैसे बाप अपने बेटों पर तरस खाता है,

वैसे ही खुदावन्द उन पर जो उससे डरते हैं, तरस खाता  
है।

14 क्योंकि वह हमारी सरिशत से वाकिफ़ है,

उसे याद है कि हम खाक हैं।

15 इंसान की उम्र तो घास की तरह है,

वह जंगली फूल की तरह खिलता है,

16 कि हवा उस पर चली और वह नहीं,

और उसकी जगह उसे फिर न देखेगी

17 लेकिन खुदावन्द की शफ़क़त उससे डरने वालों पर  
अज़ल से हमेशा तक,

और उसकी सदाक़त नसल — दर — नसल है

18 या'नी उन पर जो उसके 'अहद पर काईम रहते हैं,  
और उसके क़वानीन पर 'अमल करनायाद रखते हैं।  
19 खुदावन्द ने अपना तख़्त आसमान पर काईम किया  
है,  
और उसकी सल्तनत सब पर मुसल्लत है।  
20 ऐ खुदावन्द के फ़िरिश्तो, उसको मुबारक कहो,  
तुम जो ज़ोर में बढ़ कर हो और उसके कलाम की आवाज़  
सुन कर उस पर 'अमल करते हो।  
21 ऐ खुदावन्द के लश्करो, सब उसको मुबारक कहो!  
तुम जो उसके खादिम हो और उसकी मर्ज़ी बजा लाते  
हो।  
22 ऐ खुदावन्द की मख़लूक़ात, सब उसको मुबारक कहो!  
तुम जो उसके तसल्लुत के सब मकामों में ही। ऐ मेरी  
जान,  
तू खुदावन्द को मुबारक कह!

## 104

1 ऐ मेरी जान, तू खुदावन्द को मुबारक कह,  
ऐ खुदावन्द मेरे खुदा तू बहुत बुजुर्ग है,  
तू हश्मत और जलाल से मुलब्स है!  
2 तू नूर को पोशाक की तरह पहनता है,  
और आसमान को सायबान की तरह तानता है।  
3 तू अपने बालाखानों के शहतीर पानी पर टिकाता है;  
तू बादलों को अपना रथ बनाता है;  
तू हवा के बाज़ुओं पर सैर करता है;  
4 तू अपने फ़रिश्तों को हवाएँ  
और अपने खादिमों की आग के शो'ले बनाता है।  
5 तूने ज़मीन को उसकी बुनियाद पर काईम किया,  
ताकि वह कभी जुम्बिश न खाए।  
6 तूने उसको समन्दर से छिपाया जैसे लिबास से;  
पानी पहाड़ों से भी बुलन्द था।  
7 वह तेरी झिड़की से भागा वह  
तेरी गरज की आवाज़ से जल्दी — जल्दी चला।  
8 उस जगह पहुँच गया जो तूने उसके लिए तैयार की  
थी;  
पहाड़ उभर आए, वादियाँ बैठ गई।  
9 तूने हद बाँध दी ताकि वह आगे न बढ़ सके,  
और फिर लौटकर ज़मीन को न छिपाए।  
10 वह वादियों में चश्मे जारी करता है,  
जो पहाड़ों में बहते हैं।  
11 सब जंगली जानवर उनसे पीते हैं;  
गोरखर अपनी प्यास बुझाते हैं।  
12 उनके आसपास हवा के परिन्दे बसेरा करते,  
और डालियों में चहचहाते हैं।  
13 वह अपने बालाखानों से पहाड़ों को सेराब करता है।

तेरी कारीगरी के फल से ज़मीन आसूदा है।  
14 वह चौपायों के लिए घास उगाता है,  
और इंसान के काम के लिए सब्ज़ा  
, ताकि ज़मीन से खुराक पैदा करे।  
15 और मय जो इंसान के दिल को और रोगन जो उसके  
चेहरे को चमकाता है,  
और रोटी जो आदमी के दिल को तवानाई बख़्शती है।  
16 खुदावन्द के दरख़्त शादाब रहते हैं,  
या'नी लुबनान के देवदार जो उसने लगाए।  
17 जहाँ परिन्दे अपने घोंसले बनाते हैं;  
सनोबर के दरख़्तों में लकलक का बसेरा है।  
18 ऊँचे पहाड़ जंगली बक़रों के लिए हैं;  
चट्टानें साफ़ानों की पनाह की जगह हैं।  
19 उसने चाँद को ज़मानों के फ़र्क़ के लिए मुक़रर किया;  
आफ़ताब अपने गुरुब की जगह जानता है।  
20 तू अँधेरा कर देता है तो रात हो जाती है,  
जिसमें सब जंगली जानवर निकल आते हैं।  
21 जवान शेर अपने शिकार की तलाश में गरजते हैं,  
और खुदा से अपनी ख़ुराक माँगते हैं।  
22 आफ़ताब निकलते ही वह चल देते हैं,  
और जाकर अपनी माँदों में पड़े रहते हैं।  
23 इंसान अपने काम के लिए,  
और शाम तक अपनी मेहनत करने के लिए निकलता है।  
24 ऐ खुदावन्द, तेरी कारीगरी कैसी बेशुमार है।  
तूने यह सब कुछ हिकमत से बनाया;  
ज़मीन तेरी मख़लूक़ात से मा'मूर है।  
25 देखो, यह बड़ा और चौड़ा समन्दर,  
जिसमें बेशुमार रँगने वाले जानदार हैं;  
या'नी छोटे और बड़े जानवर।  
26 जहाज़ इसी में चलते हैं; इसी में लिवियातान है,  
जिसे तूने इसमें खेलने को पैदा किया।  
27 इन सबको तेरी ही उम्मीद है,  
ताकि तू उनको वक़्त पर ख़ुराक दे।  
28 जो कुछ तू देता है, यह ले लेते हैं;  
तू अपनी मुट्ठी खोलता है और यह अच्छी चीज़ों से  
सेर होते हैं।  
29 तू अपना चेहरा छिपा लेता है, और यह परेशान हो  
जाते हैं;  
तू इनका दम रोक लेता है, और यह मर जाते हैं,  
और फिर मिट्टी में मिल जाते हैं।  
30 तू अपनी रूह भेजता है, और यह पैदा होते हैं;  
और तू इस ज़मीन को नया बना देता है।  
31 खुदावन्द का जलाल हमेशा तक रहे,  
खुदावन्द अपनी कारीगरी से खुश हो।

32 वह ज़मीन पर निगाह करता है, और वह काँप जाती है  
; वह पहाड़ों को छूता है, और उनसे से धुआँ निकलने लगता है।  
33 मैं उम्र भर खुदावन्द की तारीफ़ गाऊँगा;  
जब तक मेरा वुजूद है मैं अपने खुदा की मदहसराई करूँगा।  
34 मेरा ध्यान उसे पसन्द आए,  
मैं खुदावन्द में खुश रहूँगा।  
35 गुनहगार ज़मीन पर से फ़ना हो जाएँ,  
और शरीर बाक़ी न रहें!  
ऐ मेरी जान, खुदावन्द को मुबारक कह!  
खुदावन्द की हम्द करो!

## 105

1 खुदावन्द का शुक्र करो, उसके नाम से दुआ करो;  
क्रौमों में उसके कामों का बयान करो!  
2 उसकी तारीफ़ में गाओ, उसकी मदहसराई करो;  
उसके तमाम 'अजायब का चर्चा करो!  
3 उसके पाक नाम पर फ़ख़र करो,  
खुदावन्द के तालिबों के दिल खुश हों!  
4 खुदावन्द और उसकी ताक़त के तालिब हो,  
हमेशा उसके दीदार के तालिब रहो!  
5 उन 'अजीब कामों को जो उसने किए,  
उसके 'अजायब और मुँह के अहकाम को याद रखो!  
6 ऐ उसके बन्दे अब्रहाम की नसल!  
ऐ बनी या'क़ूब उसके बरगुज़ीदो!  
7 वही खुदावन्द हमारा खुदा है;  
उसके अहकाम तमाम ज़मीन पर हैं।  
8 उसने अपने 'अहद को हमेशा याद रखवा,  
या'नी उस कलाम को जो उसने हज़ार नसलों के लिए फ़रमाया;  
9 उसी 'अहद को जो उसने अब्रहाम से बाँधा,  
और उस क्रसम को जो उसने इस्हाक़ से खाई,  
10 और उसी को उसने या'क़ूब के लिए क़ानून,  
या'नी इस्राईल के लिए हमेशा का 'अहद ठहराया,  
11 और कहा, "मैं कनान का मुल्क तुझे दूँगा,  
कि तुम्हारा मौरूसी हिस्सा हो।"  
12 उस वक़्त वह शुमार में थोड़े थे,  
बल्कि बहुत थोड़े और उस मुल्क में मुसाफ़िर थे।  
13 और वह एक क्रौम से दूसरी क्रौम में,  
और एक सल्तनत से दूसरी सल्तनत में फिरते रहे।  
14 उसने किसी आदमी को उन पर ज़ुल्म न करने दिया,  
बल्कि उनकी खातिर उसने बादशाहों को धमकाया,  
15 और कहा, "मेरे मम्सूहों को हाथ न लगाओ,

और मेरे नबियों को कोई नुक़सान न पहुँचाओ!"  
16 फिर उसने फ़रमाया, कि उस मुल्क पर कहत नाज़िल हो  
और उसने रोटी का सहारा बिल्कुल तोड़ दिया।  
17 उसने उनसे पहले एक आदमी को भेजा,  
यूसुफ़ गुलामी में बेचा गया।  
18 उन्होंने उसके पाँव को बेड़ियों से दुख दिया;  
वह लोहे की ज़न्जीरों में जकड़ा रहा;  
19 जब तक के उसका बात पूरा न हुआ,  
खुदावन्द का कलाम उसे आजमाता रहा।  
20 बादशाह ने हुक्म भेज कर उसे छुड़ाया,  
हाँ क्रौमों के फ़रमान रवा ने उसे आज़ाद किया।  
21 उसने उसको अपने घर का मुख्तार  
और अपनी सारी मिलिकयत पर हाकिम बनाया,  
22 ताकि उसके हाकिमों को जब चाहे कैद करे,  
और उसके बुज़ुर्गों को अक़ल सिखाए।  
23 इस्राईल भी मिस्र में आया,  
और या'क़ूब हाम की सरज़मीन में मुसाफ़िर रहा।  
24 और खुदा ने अपने लोगों को ख़ूब बढ़ाया,  
और उनको उनके मुख़ालिफ़ों से ज़्यादा मज़बूत किया।  
25 उसने उनके दिल को नाफ़रमान किया,  
ताकि उसकी क्रौम से 'अदावत रखें,  
और उसके बन्दों से दगाबाज़ी करें।  
26 उसने अपने बन्दे मूसा को,  
और अपने बरगुज़ीदा हारून को भेजा।  
27 उसने उनके बीच निशान और मुअज़िज़ात,  
और हाम की सरज़मीन में 'अजायब दिखाए।  
28 उसने तारीकी भेजकर अँधेरा कर दिया;  
और उन्होंने उसकी बातों से सरकशी न की।  
29 उसने उनकी नदियों को लहू बना दिया,  
और उनकी मछलियाँ मार डालीं।  
30 उनके मुल्क और बादशाहों के बालाख़ानों में,  
मेंढक ही मेंढक भर गए।  
31 उसने हुक्म दिया, और मच्छरों के ग़ोल आए,  
और उनकी सब हदों में जूएँ आ गईं  
32 उसने उन पर मेंह की जगह ओले बरसाए,  
और उनके मुल्क पर दहकती आग़ नाज़िल की।  
33 उसने उनके अँगूर और अंजीर के दरख़तों को भी बर्बाद कर डाला,  
और उनकी हद के पेड़ तोड़ डाले।  
34 उसने हुक्म दिया तो बेशुमार टिड्डियाँ और कीड़े आ गए,  
35 और उनके मुल्क की तमाम चीज़ें चट कर गए,  
और उनकी ज़मीन की पैदावार खा गए।



36 उसने उनके मुल्क के सब पहलौठों को भी मार डाला,  
जो उनकी पूरी ताक़त के पहले फल थे।  
37 और इसराईल को चाँदी और सोने के साथ निकाल  
लाया,  
और उसके क़बीलों में एक भी कमज़ोर आदमी न था।  
38 उनके चले जाने से मिस्र खुश हो गया,  
क्योंकि उनका ख़ौफ़ मिस्रियों पर छा गया था।  
39 उसने बादल को सायबान होने के लिए फैला दिया,  
और रात को रोशनी के लिए आग दी।  
40 उनके माँगने पर उसने बटेरें भेजीं,  
और उनको आसमानी रोटी से सेर किया।  
41 उसने चट्टान को चीरा, और पानी फूट निकला:  
और खुश्क ज़मीन पर नदी की तरह बहने लगा।  
42 क्योंकि उसने अपने पाक क़ौल को,  
और अपने बन्दे अब्रहाम को याद किया।  
43 और वह अपनी क़ौम को खुशी के साथ,  
और अपने बरगुज़ीदों को हम्द गाते हुए निकाल लाया।  
44 और उसने उनको क़ौमों के मुल्क दिए,  
और उन्होंने उम्मतों की मेहनत के फल पर कब्ज़ा किया।  
45 ताकि वह उसके क़ानून पर चलें,  
और उसकी शरी'अत को मानें। खुदावन्द की हम्द करो!

## 106

1 खुदावन्द की हम्द करो, खुदावन्द का शुक्र करो,  
क्योंकि वह भला है;  
और उसकी शफ़क़त हमेशा की है!  
2 कौन खुदावन्द की कुदरत के कामों का बयान कर सकता  
है,  
या उसकी पूरी सिताइश सुना सकता है?  
3 मुबारक हैं वह जो 'अदल करते हैं,  
और वह जो हर वक़्त सदाक़त के काम करता है।  
4 ऐ खुदावन्द, उस करम से जो तू अपने लोगों पर करता  
है मुझे याद कर,  
अपनी नजात मुझे इनायत फ़रमा,  
5 ताकि मैं तेरे बरगुज़ीदों की इक़बालमंदी देखें  
और तेरी क़ौम की खुशी में खुश रहूँ।  
और तेरी मीरास के लोगों के साथ फ़ख़र करूँ।  
6 हम ने और हमारे बाप दादा ने गुनाह किया;  
हम ने बदकारी की, हम ने शरारत के काम किए!  
7 हमारे बाप — दादा मिस्र में तेरे 'अजायब न समझे;  
उन्होंने तेरी शफ़क़त की कसरत को याद न किया;  
बल्कि समन्दर पर या'नी बहर — ए — कुलजुम पर  
बागी हुए।  
8 तोभी उसने उनको अपने नाम की खातिर बचाया,

ताकि अपनी कुदरत ज़ाहिर करे  
9 उसने बहर — ए — कुलजुम को डाँटा और वह सूख  
गया।  
वह उनकी गहराव में से ऐसे निकाल ले गया जैसे वीरान  
में से,  
10 और उसने उनको 'अदावत रखने वाले के हाथ से  
बचाया,  
और दुश्मन के हाथ से छुड़ाया।  
11 समन्दर ने उनके मुखालिफ़ों को छिपा लिया:  
उनमें से एक भी न बचा।  
12 तब उन्होंने उसके क़ौल का यक़ीन किया;  
और उसकी मदहसराई करने लगे।  
13 फिर वह जल्द उसके कामों को भूल गए,  
और उसकी मश्वरत का इन्तिज़ार न किया।  
14 बल्कि वीरान में बड़ी हिंस की,  
और सेहरा में खुदा को आजमाया।  
15 फिर उसने उनकी मुराद तो पूरी कर दी,  
लेकिन उनकी जान को सुखा दिया।  
16 उन्होंने खेमागाह में मूसा पर,  
और खुदावन्द के पाक मर्द हारून पर हसद किया।  
17 फिर ज़मीन फटी और दातन को निगल गई,  
और अबीराम की जमा'अत को खा गई,  
18 और उनके जत्थे में आग भड़क उठी,  
और शो'लों ने शरीरों को भसम कर दिया।  
19 उन्होंने होरिब में एक बछड़ा बनाया,  
और ढाली हुई मूरत को सिज्दा किया।  
20 यूँ उन्होंने खुदा के जलाल को,  
घास खाने वाले बैल की शक़ल से बदल दिया।  
21 वह अपने मुनज्जी खुदा को भूल गए,  
जिसने मिस्र में बड़े बड़े काम किए,  
22 और हाम की सरज़मीन में 'अजायब,  
और बहर — ए — कुलजुम पर दहशत अंगेज़ काम  
किए।  
23 इसलिए उसने फ़रमाया, मैं उनको हलाक कर डालता,  
अगर मेरा बरगुज़ीदा मूसा मेरे सामने बीच में न आता  
कि मेरे क़हर को टाल दे,  
ऐसा न हो कि मैं उनको हलाक करूँ।  
24 और उन्होंने उस सुहाने मुल्क को हक़ीर जाना,  
और उसके क़ौल का यक़ीन न किया।  
25 बल्कि वह अपने डेरों में बड़बड़ाए,  
और खुदावन्द की बात न मानी।  
26 तब उसने उनके ख़िलाफ़ क़सम खाई कि  
मैं उनको वीरान में पस्त करूँगा,  
27 और उनकी नसल की क़ौमों के बीच  
और उनको मुल्क मुल्क में तितर बितर करूँगा।  
28 वह बा'ल फ़गूर को पूजने लगे,

और बुतों की कुर्बानियाँ खाने लगे।

29 यूँ उन्होंने अपने आ'माल से उसको ना खुश किया,  
और वबा उनमें फूट निकली।

30 तब फ्रीन्हास उठा और बीच में आया,  
और वबा रुक गई।

31 और यह काम उसके हक़ में नसल दर नसल,  
हमेशा के लिए रास्तबाज़ी गिना गया।

32 उन्होंने उसकी मरीबा के चश्मे पर भी नाखुश किया,  
और उनकी खातिर मूसा को नुक़सान पहुँचा;

33 इसलिए कि उन्होंने उसकी रूह से सरकशी की,  
और मूसा बे सोचे बोल उठा।

34 उन्होंने उन कौमों को हलाक न किया,  
जैसा खुदावन्द ने उनको हुक्म दिया था,

35 बल्कि उन कौमों के साथ मिल गए,  
और उनके से काम सीख गए;

36 और उनके बुतों की परस्तिश करने लगे,  
जो उनके लिए फ़ंदा बन गए।

37 बल्कि उन्होंने अपने बेटे बेटियों को,  
शयातीन के लिए कुर्बान किया:

38 और मासूमों का या'नी अपने बेटे बेटियों का खून  
बहाया,

जिनको उन्होंने कनान के बुतों के लिए कुर्बान कर दिया:  
और मुल्क खून से नापाक हो गया।

39 यूँ वह अपने ही कामों से आलूदा हो गए,  
और अपने फ़े'लों से बेवफ़ा बने।

40 इसलिए खुदावन्द का क्रहर अपने लोगों पर भड़का,  
और उसे अपनी मीरास से नफ़रत हो गई;

41 और उसने उनकी कौमों के क़ब्ज़े में कर दिया,  
और उनसे 'अदावत रखने वाले उन पर हुक्मरान हो गए।

42 उनके दुश्मनों ने उन पर जुल्म किया,  
और वह उनके महकूम हो गए।

43 उसने तो बारहा उनको छुड़ाया,  
लेकिन उनका मश्वरा बग़ावत वाला ही रहा  
और वह अपनी बदकारी के वजह से पस्त हो गए।

44 तोभी जब उसने उनकी फ़रियाद सुनी,  
तो उनके दुख पर नज़र की।

45 और उसने उनके हक़ में अपने 'अहद को याद किया,  
और अपनी शफ़क़त की कसरत के मुताबिक़ तरस खाया।

46 उसने उनकी गुलाम करने वालों के दिलमें उनके लिए  
रहम डाला।

47 ऐ खुदावन्द, हमारे खुदा! हम को बचा ले,  
और हम को कौमों में से इकट्ठा कर ले,  
ताकि हम तेरे पाक नाम का शुक्र करें,  
और ललकारते हुए तेरी सिताइश करें।

48 खुदावन्द इस्राईल का खुदा,  
इब्तिदा से हमेशा तक मुबारक हो!  
खुदावन्द की हम्द करो।

## पांचवी किताब

### 107

(107:1-150)

1 खुदा का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है;  
और उसकी शफ़क़त हमेशा की है!

2 खुदावन्द के छुड़ाए हुए यही कहें,  
जिनको फ़िदिया देकर मुखालिफ़ के हाथ से छुड़ा लिया,

3 और उनको मुल्क — मुल्क से जमा' किया;  
पूरब से और पच्छिम से, उत्तर से और दक्खिन से।

4 वह वीरान में सेहरा के रास्ते पर भटकते फिरे;  
उनको बसने के लिए कोई शहर न मिला।

5 वह भूके और प्यासे थे,

और उनका दिल बैठा जाता था।

6 तब अपनी मुसीबत में उन्होंने खुदावन्द से फ़रियाद  
की,

और उसने उनको उनके दुखों से रिहाई बख़्शी।

7 वह उनको सीधी राह से ले गया,  
ताकि बसने के लिए किसी शहर में जा पहुँचें।

8 काश के लोग खुदावन्द की शफ़क़त की खातिर,  
और बनी आदम के लिए उसके 'अजायब की खातिर  
उसकी सिताइश करते।

9 क्योंकि वह तरसती जान को सेर करता है,  
और भूकी जान को ने 'मतों से मालामाल करता है।

10 जो अंधेरे और मौत के साये में बैठे,  
मुसीबत और लोहे से जकड़े हुए थे;

11 चूँके उन्होंने खुदा के कलाम से सरकशी की  
और हक़ ता'ला की मश्वरत को हक़ीर जाना।

12 इसलिए उसने उनका दिल मशक्क़त से 'आजिज़ कर  
दिया;

वह गिर पड़े और कोई मददगार न था।

13 तब अपनी मुसीबत में उन्होंने खुदावन्द से फ़रियाद  
की,

और उसने उनको उनके दुखों से रिहाई बख़्शी।

14 वह उनको अंधेरे और मौत के साये से निकाल लाया,  
और उनके बंधन तोड़ डाले।

15 काश के लोग खुदावन्द की शफ़क़त की खातिर,  
और बनी आदम के लिए उसके 'अजायब की खातिर  
उसकी सिताइश करते!

16 क्योंकि उसने पीतल के फाटक तोड़ दिए,  
और लोहे के बेण्डों को काट डाला।

17 बेवकूफ़ अपनी ख़ताओं की वजह से,

और अपनी बदकारी के ज़रिए' मुसीबत में पड़ते हैं।  
 18 उनके जी को हर तरह के खाने से नफ़रत हो जाती है,  
 और वह मौत के फाटकों के नज़दीक पहुँच जाते हैं।  
 19 तब वह अपनी मुसीबत में खुदावन्द से फ़रियाद करते हैं  
 और वह उनको उनके दुखों से रिहाई बख़्शता है।  
 20 वह अपना कलाम नाज़िल फ़रमा कर उनको शिफ़ा देता है,  
 और उनको उनकी हलाकत से रिहाई बख़्शता है।  
 21 काश के लोग खुदावन्द की शफ़क़त की खातिर,  
 और बनी आदम के लिए उसके 'अजायब की खातिर  
 उसकी सिताइश करते!  
 22 वह शुक्रगुज़ारी की कुर्बानियाँ पेश करें,  
 और गाते हुए उसके कामों को बयान करें।  
 23 जो लोग जहाज़ों में बहर पर जाते हैं,  
 और समन्दर पर कारोबार में लगे रहते हैं;  
 24 वह समन्दर में खुदावन्द के कामों को,  
 और उसके 'अजायब को देखते हैं।  
 25 क्योंकि वह हुक्म देकर तुफ़ानी हवा चलाता जो उसमें  
 लहरें उठाती है।  
 26 वह आसमान तक चढ़ते और गहराओ में उतरते हैं;  
 परेशानी से उनका दिल पानी पानी हो जाता है;  
 27 वह झूमते और मतवाले की तरह लड़खड़ाते,  
 और बदहवास हो जाते हैं।  
 28 तब वह अपनी मुसीबत में खुदावन्द से फ़रियाद करते हैं  
 और वह उनको उनके दुखों से रिहाई बख़्शता है।  
 29 वह आँधी को थमा देता है, और लहरें ख़त्म हो जाती हैं।  
 30 तब वह उसके थम जाने से खुश होते हैं,  
 यूँ वह उनको बन्दरगाह — ए — मक़सूद तक पहुँचा देता है।  
 31 काश के लोग खुदावन्द की शफ़क़त की खातिर,  
 और बनी आदम के लिए उसके 'अजायब की खातिर  
 उसकी सिताइश करते!  
 32 वह लोगों के मजमे' में उसकी बड़ाई करें,  
 और बुज़ुर्गों की मजलिस में उसकी हम्द।  
 33 वह दरियाओं को वीरान बना देता है,  
 और पानी के चश्मों को ख़ुश्क़ ज़मीन।  
 34 वह ज़रखेज़ ज़मीन की सैहरा — ए — शोर कर देता है,  
 इसलिए कि उसके बाशिंदे शरीर हैं।  
 35 वह वीरान की झील बना देता है,  
 और ख़ुश्क़ ज़मीन को पानी के चश्मे।

36 वहाँ वह भूकों को बसाता है,  
 ताकि बसने के लिए शहर तैयार करें;  
 37 और खेत बोएँ, और ताकिस्तान लगाएँ,  
 और पैदावार हासिल करें।  
 38 वह उनको बरकत देता है, और वह बहुत बढ़ते हैं,  
 और वह उनके चौपायों को कम नहीं होने देता।  
 39 फिर जुल्म — ओ — तकलीफ़ और ग़म के मारे,  
 वह घट जाते और पस्त हो जाते हैं,  
 40 वह उमरा पर ज़िल्लत उंडेल देता है,  
 और उनको बेराह वीराने में भटकाता है।  
 41 तोभी वह मोहताज को मुसीबत से निकालकर  
 सरफ़राज़ करता है,  
 और उसके ख़ान्दान को रेवड़ की तरह बढ़ाता है।  
 42 रास्तबाज़ यह देखकर खुश होंगे;  
 और सब बदकारों का मुँह बन्द हो जाएगा।  
 43 'अक्लमंद इन बातों पर तवज्जुह करेगा,  
 और वह खुदावन्द की शफ़क़त पर ग़ौर करेंगे।

## 108

1 ऐ खुदा, मेरा दिल काईम है;  
 मैं गाऊँगा और दिल से मदहसराई करूँगा।  
 2 ऐ बरबत और सितार जागो!  
 मैं खुद भी सुबह सवेरे जाग उठूँगा।  
 3 ऐ खुदावन्द, मैं लोगों में तेरा शुक्र करूँगा,  
 मैं उम्मतों में तेरी मदहसराई करूँगा।  
 4 क्योंकि तेरी शफ़क़त आसमान से बुलन्द है,  
 और तेरी सच्चाई आसमानों के बराबर है।  
 5 ऐ खुदा, तू आसमानों पर सरफ़राज़ हो!  
 और तेरा जलाल सारी ज़मीन पर हो  
 6 अपने दहने हाथ से बचा और हमें जवाब दे,  
 ताकि तेरे महबूब बचाए जाएँ।  
 7 खुदा ने अपनी पाकिज़गी में यह फ़रमाया है "मैं खुशी  
 करूँगा,  
 मैं सिकम को तक्सीम करूँगा और सुकात की वादी को  
 बाटूँगा।  
 8 ज़िल'आद मेरा है, मनस्सी मेरा है;  
 इफ़राईम मेरे सिर का खूद है; यहूदाह मेरा 'असा है।  
 9 मोआब मेरी चिलपची है, अदोम पर मैं जूता फेंकूँगा,  
 मैं फ़िलिस्तीन पर ललकाऊँगा।"  
 10 मुझे उस फ़सीलदार शहर में कौन पहुँचाएगा?  
 कौन मुझे अदोम तक ले गया है?  
 11 ऐ खुदा, क्या तूने हमें रद्द नहीं कर दिया?  
 ऐ खुदा, तू हमारे लश्करो के साथ नहीं जाता।  
 12 मुख़ालिफ़ के मुक़ाबिले में हमारी मदद कर,

क्योंकि इंसानी मदद 'बेकार है।

13 खुदा की बदौलत हम दिलावरी करेगी;  
क्योंकि वही हमारे मुखालिफों को पामाल करेगा।

## 109

1 ऐ खुदा मेरे महमूद खामोश न रह!

2 क्योंकि शरीरों और दगाबाजों ने मेरे खिलाफ मुँह खोला है,

उन्होंने झूठी ज़बान से मुझ से बातें की हैं।

3 उन्होंने 'अदावत की बातों से मुझे घेर लिया,  
और बे वजह मुझ से लड़े हैं।

4 वह मेरी मुहब्बत की वजह से मेरे मुखालिफ हैं,  
लेकिन मैं तो बस दुआ करता हूँ।

5 उन्होंने नेकी के बदले मुझ से बदी की है,  
और मेरी मुहब्बत के बदले 'अदावत।

6 तू किसी शरीर आदमी को उस पर मुक़रर कर दे  
और कोई मुखालिफ़ उनके दहने हाथ खड़ा रहे

7 जब उसकी 'अदालत हो तो वह मुजरिम ठहरे,  
और उसकी दुआ भी गुनाह गिनी जाए!

8 उसकी उम्र कोताह हो जाए,  
और उसका मन्सब कोई दूसरा ले ले!

9 उसके बच्चे यतीम हो जाएँ,  
और उसकी बीवी बेवा हो जाए!

10 उसके बच्चे आवारा होकर भीक माँगे;  
उनको अपने वीरान मकामों से दूर जाकर टुकड़े माँगना पड़े!

11 क़र्ज़ के तलबगार उसका सब कुछ छीन ले,  
और परदेसी उसकी कमाई लूट लें।

12 कोई न हो जो उस पर शफ़क़त करे,  
न कोई उसके यतीम बच्चों पर तरस खाए!

13 उसकी नसल कट जाए,  
और दूसरी नसल में उनका नाम मिटा दिया जाए!

14 उसके बाप — दादा की बदी खुदावन्द के सामने याद रहे,

और उसकी माँ का गुनाह मिटाया न जाए!

15 वह बराबर खुदावन्द के सामने रहें,  
ताकि वह ज़मीन पर से उनका ज़िक्र मिटा दे!

16 इसलिए कि उसने रहम करना याद न रखवा,  
लेकिन ग़रीब और मुहताज और शिकस्तादिल को सताया,  
ताकि उनको मार डाले।

17 बल्कि ला'नत करना उसे पसंद था,  
इसलिए वही उस पर आ पड़ी;  
और दुआ देना उसे पसन्द न था,  
इसलिए वह उससे दूर रही

18 उसने ला'नत को अपनी पोशाक की तरह पहना,  
और वह पानी की तरह उसके बातिन में,  
और तेल की तरह उसकी हड्डियों में समा गई।

19 वह उसके लिए उस पोशाक की तरह हो जिसे वह पहनता है,  
और उस पटके की जगह, जिससे वह अपनी कमर कसे रहता है।

20 खुदावन्द की तरफ़ से मेरे मुखालिफ़ों का,  
और मेरी जान को बुरा कहने वालों का यही बदला है!

21 लेकिन ऐ मालिक खुदावन्द,  
अपने नाम की खातिर मुझ पर एहसान कर;  
मुझे छोड़ा क्योंकि तेरी शफ़क़त खूब है!

22 इसलिए कि मैं ग़रीब और मुहताज हूँ,  
और मेरा दिल मेरे पहलू में ज़ख्मी है।

23 मैं ढलते साये की तरह जाता रहा;  
मैटिड्डी की तरह उड़ा दिया गया।

24 फ़ाका करते करते मेरे घुटने कमज़ोर हो गए,  
और चिकनाई की कमी से मेरा जिस्म सूख गया।

25 मैं उनकी मलामत का निशाना बन गया हूँ  
जब वह मुझे देखते हैं तो सिर हिलाते हैं।

26 ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, मेरी मदद कर!  
अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझे बचा ले।

27 ताकि वह जान लें कि इसमें तेरा हाथ है,  
और तू ही ने ऐ खुदावन्द, यह किया है!

28 वह ला'नत करते रहें, लेकिन तू बरकत दे!  
वह जब उठेंगे तो शर्मिन्दा होंगे, लेकिन तेरा बन्दा खुश होगा!

29 मेरे मुखालिफ़ ज़िल्लत से मुलब्स हो जाएँ  
और अपनी ही शर्मिन्दगी की चादर की तरह ओढ़ लें।

30 मैं अपने मुँह से खुदावन्द का बड़ा शुक्र करूँगा,  
बल्कि बड़ी भीड़ में उसकी हम्द करूँगा।

31 क्योंकि वह मोहताज के दहने हाथ खड़ा होगा,  
ताकि उसकी जान पर फ़तवा देने वालों से उसे रिहाई दे।

## 110

1 यहोवा ने मेरे खुदावन्द से कहा,  
“जब तक कि मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँव की चौकी न कर दूँ।”

2 खुदावन्द तेरे ज़ोर का 'असा सिय्यून से भेजेगा।  
तू अपने दुश्मनों में हुक्मरानी कर।

3 लश्करकशी के दिन तेरे लोग खुशी से अपने आप को पेश करते हैं;  
तेरे जवान पाक आराइश में हैं,  
और सुबह के बत्न से शबनम की तरह।



4 खुदावन्द ने कसम खाई है और फिरेगा नहीं,  
“तू मलिक — ए — सिद्क के तौर पर हमेशा तक काहिन  
है।”

5 खुदावन्द तेरे दहने हाथ पर  
अपने कहर के दिन बादशाहों को छेद डालेगा।

6 वह कौमों में 'अदालत करेगा,  
वह लाशों के ढेर लगा देगा; और बहुत से मुल्कों में सिरों  
को कुचलेगा।

7 वह राह में नदी का पानी पिएगा;  
इसलिए वह सिर को बुलन्द करेगा।

## 111

1 खुदावन्द की हम्द करो! मैं रास्तबाजों की मजलिस में  
और जमा'अत में,  
अपने सारे दिल से खुदावन्द का शुक्र करूँगा।

2 खुदावन्द के काम 'अज़ीम हैं,  
जो उनमें मसरूर हैं उनकी तलाश। में रहते हैं।

3 उसके काम जलाली और पुर हश्मत हैं,  
और उसकी सदाकत हमेशा तक काईम है।

4 उसने अपने 'अजायब की यादगार काईम की है;  
खुदावन्द रहीम — ओ — करीम है।

5 वह उनको जो उससे डरते हैं खूराक देता है;  
वह अपने 'अहद को हमेशा याद रखेगा।

6 उसने कौमों की मीरास अपने लोगों को देकर,  
अपने कामों का ज़ोर उनकी दिखाया।

7 उसके हाथों के काम बरहक और इन्साफ भरे हैं;  
उसके तमाम क़वानीन रास्त है,

8 वह हमेशा से हमेशा तक काईम रहेंगे,  
वह सच्चाई और रास्ती से बनाए गए हैं।

9 उसने अपने लोगों के लिए फ़िदिया दिया;  
उसने अपना 'अहद हमेशा के लिए ठहराया है।  
उसका नाम पाक और बड़ा है।

10 खुदावन्द का ख़ौफ़ समझ का शुरू है;  
उसके मुताबिक 'अमल करने वाले अक़्लमंद हैं।  
उसकी सिताइश हमेशा तक काईम है।

## 112

1 खुदावन्द की हम्द करो!  
मुबारक है वह आदमी जो खुदावन्द से डरता है,  
और उसके हुक्मों में खूब मसरूर रहता है!

2 उसकी नसल ज़मीन पर ताक़तवर होगी;  
रास्तबाजों की औलाद मुबारक होगी।

3 माल — ओ — दौलत उसके घर में है;  
और उसकी सदाकत हमेशा तक काईम है।

4 रास्तबाजों के लिए तारीकी में नूर चमकता है;

वह रहीम — ओ — करीम और सादिक है।

5 रहम दिल और क़र्ज़ देने वाला आदमी फ़रमाँवरदार है;  
वह अपना कारोबार रास्ती से करेगा।

6 उसे कभी जुम्बिश न होगी;  
सादिक की यादगार हमेशा रहेगी।

7 वह बुरी ख़बर से न डरेगा;  
खुदावन्द पर भरोसा करने से उसका दिल काईम है।

8 उसका दिल बरकरार है, वह डरने का नहीं,  
यहाँ तक कि वह अपने मुखालिफ़ों को देख लेगा।

9 उसने बाँटा और मोहताजों को दिया,  
उसकी सदाकत हमेशा काईम रहेगी;  
उसका सींग इज़्ज़त के साथ बलन्द किया जाएगा।

10 शरीर यह देखेगा और कुदेगा;  
वह दाँत पीसेगा और घुलेगा;  
शरीरों की मुराद बर्बाद होगी।

## 113

1 खुदावन्द की हम्द करो! ऐ खुदावन्द के बन्दों,  
हम्द करो! खुदावन्द के नाम की हम्द करो!

2 अब से हमेशा तक,  
खुदावन्द का नाम मुबारक हो!

3 आफ़ताब के निकलने से डूबने तक,  
खुदावन्द के नाम की हम्द हो!

4 खुदावन्द सब कौमों पर बुलन्द — ओ — बाला है;  
उसका जलाल आसमान से बरतर है।

5 खुदावन्द हमारे खुदा की तरह कौन है?  
जो 'आलम — ए — बाला पर तख़्तनशीन है,

6 जो फ़रोतनी से,  
आसमान — ओ — ज़मीन पर नज़र करता है।

7 वह ग़रीब को खाक से,  
और मोहताज को मज़बले पर से उठा लेता है,

8 ताकि उसे उमरा के साथ,  
या'नी अपनी कौम के उमरा के साथ बिठाए।

9 वह बाँझ का घर बसाता है, और उसे बच्चों वाली  
बनाकर दिलखुश करता है।

खुदावन्द की हम्द करो!

## 114

1 जब इस्राईल मिस्र से निकलआया,  
या'नी या'कूब का घराना अजनबी ज़बान वाली कौम में  
से;

2 तो यहूदाह उसका हैकल,  
और इस्राईल उसकी ममलुकत ठहरा।

3 यह देखते ही समन्दर भागा;  
यरदन पीछे हट गया।

4 पहाड़ मेंढों की तरह उछले,  
पहाड़ियाँ भेड़ के बच्चों की तरह कूदे।  
5 ऐ समन्दर, तुझे क्या हुआ के तू भागता है?  
ऐ यरदन, तुझे क्या हुआ कि तू पीछे हटता है?  
6 ऐ पहाड़ो, तुम को क्या हुआ के तुम मेंढों की तरह  
उछलते हो?  
ऐ पहाड़ियो, तुम को क्या हुआ के तुम भेड़ के बच्चों की  
तरह कूदती हो?  
7 ऐ ज़मीन, तू रब के सामने,  
या'कूब के खुदा के सामने थरथरा;  
8 जो चट्टान को झील,  
और चक्रमाक की पानी का चश्मा बना देता है।

## 115

1 हमको नहीं, ऐ खुदावन्द बल्कि तू अपने ही नाम को  
अपनी शफ़क़त  
और सच्चाई की खातिर जलाल बरूष।  
2 क्रौमें क्यूँ कहें, “अब उनका खुदा कहाँ है?”  
3 हमारा खुदा तो आसमान पर है;  
उसने जो कुछ चाहा वही किया।  
4 उनके बुत चाँदी और सोना हैं,  
या'नी आदमी की दस्तकारी।  
5 उनके मुँह हैं लेकिन वह बोलते नहीं;  
आँखें हैं लेकिन वह देखते नहीं।  
6 उनके कान हैं लेकिन वह सुनते नहीं;  
नाक हैं लेकिन वह सूघते नहीं।  
7 पाँव हैं लेकिन वह चलते नहीं,  
और उनके गले से आवाज़ नहीं निकलती।  
8 उनके बनाने वाले उन ही की तरह हो जाएँगे;  
बल्कि वह सब जो उन पर भरोसा रखते हैं।  
9 ऐ इस्राईल, खुदावन्द पर भरोसा कर!  
वही उनकी मदद और उनकी ढाल है।  
10 ऐ हारून के घराने, खुदावन्द पर भरोसा करो।  
वही उनकी मदद और उनकी ढाल है।  
11 ऐ खुदावन्द से डरने वालो, खुदावन्द पर भरोसा करो!  
वही उनकी मदद और उनकी ढाल है।  
12 खुदावन्द ने हम को याद रखा,  
वह बरकत देगा: वह इस्राईल के घराने को बरकत देगा;  
वह हारून के घराने को बरकत देगा।  
13 जो खुदावन्द से डरते हैं, क्या छोटे क्या बड़े,  
वह उन सबको बरकत देगा।  
14 खुदावन्द तुम को बढ़ाए, तुम को और तुम्हारी औलाद  
को!  
15 तुम खुदावन्द की तरफ़ से मुबारक हो,  
जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया।

16 आसमान तो खुदावन्द का आसमान है,  
लेकिन ज़मीन उसने बनी आदम को दी है।  
17 मुर्दे खुदावन्द की सिताइश नहीं करते,  
न वह जो खामोशी के 'आलम में उतर जाते हैं:  
18 लेकिन हम अब से हमेशा तक,  
खुदावन्द को मुबारक कहेंगे।  
खुदावन्द की हम्द करो।

## 116

1 मैं खुदावन्द से मुहब्बत रखता हूँ क्यूँकि उसने मेरी  
फ़रियाद और मिन्नत सुनी है  
2 चूँकि उसने मेरी तरफ़ कान लगाया,  
इसलिए मैं उम्र भर उससे दू'आ करूँगा  
3 मौत की रस्सियों ने मुझे जकड़ लिया,  
और पाताल के दर्द मुझ पर आ पड़े;  
मैं दुख और ग़म में गिरफ़्तार हुआ।  
4 तब मैंने खुदावन्द से दुआ की,  
ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ मेरी जान की  
रिहाई बरूष!  
5 खुदावन्द सादिक और करीम है;  
हमारा खुदा रहीम है।  
6 खुदावन्द सादा लोगों की हिफ़ाज़त करता है;  
मैं पस्त हो गया था, उसी ने मुझे बचा लिया।  
7 ऐ मेरी जान, फिर मुत्मइन हो;  
क्यूँकि खुदावन्द ने तुझ पर एहसान किया है।  
8 इसलिए के तूने मेरी जान को मौत से,  
मेरी आँखों को आँसू बहाने से,  
और मेरे पाँव को फिसलने से बचाया है।  
9 मैं ज़िन्दों की ज़मीन में,  
खुदावन्द के सामने चलता रहूँगा।  
10 मैं ईमान रखता हूँ इसलिए यह कहूँगा,  
मैं बड़ी मुसीबत में था।  
11 मैंने जल्दबाज़ी से कह दिया,  
कि “सब आदमी झूटे हैं।”  
12 खुदावन्द की सब ने'मतें जो मुझे मिलीं,  
मैं उनके बदले में उसे क्या दूँ?  
13 मैं नजात का प्याला उठाकर,  
खुदावन्द से दुआ करूँगा।  
14 मैं खुदावन्द के सामने अपनी मन्नतें,  
उसकी सारी क्रौम के सामने पूरी करूँगा।  
15 खुदावन्द की निगाह में,  
उसके पाक लोगों की मौत गिरा क्रदर है।  
16 आह! ऐ खुदावन्द, मैं तेरा बन्दा हूँ।

मैं तेरा बन्दा, तेरी लौंडी का बेटा हूँ।

तूने मेरे बन्धन खोले हैं।

17 मैं तेरे सामने शुक्रगुजारी की कुर्बानी पेश करूँगा  
और खुदावन्द से दुआ करूँगा।

18 मैं खुदावन्द के सामने अपनी मन्नतें,  
उसकी सारी क़ौम के सामने पूरी करूँगा।

19 खुदावन्द के घर की बारगाहों में,  
तेरे अन्दर ऐ येरूशलेम!  
खुदावन्द की हम्द करो।

## 117

1 ऐ क़ौमो सब खुदावन्द की हम्द करो! करो!

ऐ उम्मतो! सब उसकी सिताइश करो!

2 क्योंकि हम पर उसकी बड़ी शफ़क़त है;  
और खुदावन्द की सच्चाई हमेशा है खुदावन्द की हम्द  
करो।

## 118

1 खुदावन्द का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है;  
और उसकी शफ़क़त हमेशा की है!

2 इस्राईल अब कहे,  
उसकी शफ़क़त हमेशा की है।

3 हारून का घराना अब कहे,  
उसकी शफ़क़त हमेशा की है।

4 खुदावन्द से डरने वाले अब कहें,  
उसकी शफ़क़त हमेशा की है।

5 मैंने मुसीबत में खुदावन्द से दुआ की,  
खुदावन्द ने मुझे जवाब दिया और कुशादगी बरूषी।

6 खुदावन्द मेरी तरफ़ है, मैं नहीं डरने का;  
इंसान मेरा क्या कर सकता है?

7 खुदावन्द मेरी तरफ़ मेरे मददगारों में है,  
इसलिए मैं अपने 'अदावत रखने वालों' को देख लूँगा।

8 खुदावन्द पर भरोसा करना,  
इंसान पर भरोसा रखने से बेहतर है।

9 खुदावन्द पर भरोसा करना,  
उमरा पर भरोसा रखने से बेहतर है।

10 सब क़ौमों ने मुझे घेर लिया;  
मैं खुदावन्द के नाम से उनको काट डालूँगा!

11 उन्होंने मुझे घेर लिया, बेशक घेर लिया;  
मैं खुदावन्द के नाम से उनको काट डालूँगा!

12 उन्होंने शहद की मक्खियों की तरह मुझे घेर लिया,  
वह काँटों की आग की तरह बुझ गए;  
मैं खुदावन्द के नाम से उनको काट डालूँगा।

13 तूने मुझे ज़ोर से धकेल दिया कि गिर पड़ लेकिन  
खुदावन्द ने मेरी मदद की।

14 खुदावन्द मेरी ताक़त और मेरी हम्द है;  
वही मेरी नजात हुआ।

15 सादिकों के खेमों में खुशी और नजात की रागनी है,  
खुदावन्द का दहना हाथ दिलावरी करता है।

16 खुदावन्द का दहना हाथ बुलन्द हुआ है,  
खुदावन्द का दहना हाथ दिलावरी करता है।

17 मैं मरूँगा नहीं बल्कि जिन्दा रहूँगा,  
और खुदावन्द के कामों का बयान करूँगा।

18 खुदावन्द ने मुझे सख़्त तम्बीह तो की,  
लेकिन मौत के हवाले नहीं किया।

19 सदाक़त के फाटकों को मेरे लिए खोल दो,  
मैं उनसे दाखिल होकर खुदावन्द का शुक्र करूँगा।

20 खुदावन्द का फाटक यही है,  
सादिक इससे दाखिल होंगे।

21 मैं तेरा शुक्र करूँगा क्योंकि तूने मुझे जवाब दिया,  
और खुद मेरी नजात बना है।

22 जिस पत्थर की मे'मारों ने रद्द किया,  
वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया।

23 यह खुदावन्द की तरफ़ से हुआ,  
और हमारी नज़र में 'अजीब' है।

24 यह वही दिन है जिसे खुदावन्द ने मुक़र्रर किया,  
हम इसमें खुश होंगे और खुशी मनाएँगे।

25 आह! ऐ खुदावन्द बचा ले!

आह! ऐ खुदावन्द खुशहाली बरूष!

26 मुबारक है वह जो खुदावन्द के नाम से आता है!  
हम ने तुम को खुदावन्द के घर से दुआ दी है।

27 यहोवा ही खुदा है, और उसी ने हम को नूर बरूषा है।  
कुर्बानी को मज़बह के सींगों से रस्सियों से बाँधो!

28 तू मेरा खुदा है, मैं तेरा शुक्र करूँगा;

तू मेरा खुदा है, मैं तेरी तम्ज़ीद करूँगा।

29 खुदावन्द का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है;  
और उसकी शफ़क़त हमेशा की है!

## 119

आलेफ

1 मुबारक हैं वह जो कामिल रफ़्तार है,  
जो खुदा की शरी'अत पर 'अमल करते हैं!

2 मुबारक हैं वह जो उसकी शहादतों को मानते हैं,  
और पूरे दिल से उसके तालिब हैं!

3 उन से नारास्ती नहीं होती,  
वह उसकी राहों पर चलते हैं।

4 तूने अपने क़वानीन दिए हैं,

ताकि हम दिल लगा कर उनकी मानें।

5 काश कि तेरे कानून मानने के लिए,  
मेरी चाल चलन दुरुस्त हो जाएँ!

6 जब मैं तेरे सब अहकाम का लिहाज रखूँगा,  
तो शर्मिन्दा न हूँगा।

7 जब मैं तेरी सदाक़त के अहकाम सीख लूँगा,  
तो सच्चे दिल से तेरा शुक्र अदा करूँगा।

8 मैं तेरे कानून मानूँगा;  
मुझे बिल्कुल छोड़ न दे!

बेथ

9 जवान अपने चाल चलन किस तरह पाक रखे?  
तेरे कलाम के मुताबिक उस पर निगाह रखने से।

10 मैं पूरे दिल से तेरा तालिब हुआ हूँ:  
मुझे अपने फ़रमान से भटकने न दे।

11 मैंने तेरे कलाम को अपने दिल में रख लिया है  
ताकि मैं तेरे खिलाफ़ गुनाह न करूँ।

12 ऐ खुदावन्द! तू मुबारक है;  
मुझे अपने कानून सिखा!

13 मैंने अपने लबों से,  
तेरे फ़रमूदा अहकाम को बयान किया।

14 मुझे तेरी शहादतों की राह से ऐसी खुशी हुई,  
जैसी हर तरह की दौलत से होती है।

15 मैं तेरे क़वानीन पर ग़ौर करूँगा,  
और तेरी राहों का लिहाज रखूँगा।

16 मैं तेरे कानून में मसरूर रहूँगा;  
मैं तेरे कलाम को न भूलूँगा।

गिमेल

17 अपने बन्दे पर एहसान कर ताकि मैं जिन्दा रहूँ  
और तेरे कलाम को मानता रहूँ।

18 मेरी आँखें खोल दे,  
ताकि मैं तेरी शरीअत के 'अजायब' देखूँ।

19 मैं ज़मीन पर मुसाफ़िर हूँ,  
अपने फ़रमान मुझ से छिपे न रख।

20 मेरा दिल तेरे अहकाम के इशतियाक में,  
हर वक़्त तड़पता रहता है।

21 तूने उन मला'ऊन मगरूरों को झिड़क दिया,  
जो तेरे फ़रमान से भटकते रहते हैं।

22 मलामत और हिक्मत को मुझ से दूर कर दे,  
क्योंकि मैंने तेरी शहादतें मानी हैं।

23 उमरा भी बैठकर मेरे खिलाफ़ बातें करते रहे,  
लेकिन तेरा बंदा तेरे कानून पर ध्यान लगाए रहा।

24 तेरी शहादतें मुझे पसन्द, और मेरी मुशीर हैं।

दाल्थ

25 मेरी जान खाक में मिल गई:

तू अपने कलाम के मुताबिक मुझे जिन्दा कर।

26 मैंने अपने चाल चलन का इज़हार किया और तूने मुझे  
जवाब दिया;

मुझे अपने कानून की ता'लीम दे।

27 अपने क़वानीन की राह मुझे समझा दे,  
और मैं तेरे 'अजायब' पर ध्यान करूँगा।

28 ग़म के मारे मेरी जान घुली जाती है;  
अपने कलाम के मुताबिक मुझे ताक़त दे।

29 झूट की राह से मुझे दूर रख,  
और मुझे अपनी शरी'अत इनायत फ़रमा।

30 मैंने वफ़ादारी की राह इस्तियार की है,  
मैंने तेरे अहकाम अपने सामने रखे हैं।

31 मैं तेरी शहादतों से लिपटा हुआ हूँ,  
ऐ खुदावन्द! मुझे शर्मिन्दा न होने दे!

32 जब तू मेरा हौसला बढ़ाएगा,  
तो मैं तेरे फ़रमान की राह में दौड़ूँगा।

हे

33 ऐ खुदावन्द, मुझे अपने कानून की राह बता,  
और मैं आखिर तक उस पर चलूँगा।

34 मुझे समझ 'अता कर और मैं तेरी शरी'अत पर  
चलूँगा,

बल्कि मैं पूरे दिल से उसको मानूँगा।

35 मुझे अपने फ़रमान की राह पर चला,  
क्योंकि इसी में मेरी खुशी है।

36 मेरे दिल की अपनी शहादतों की तरफ़ रुजू' दिला;  
न कि लालच की तरफ़।

37 मेरी आँखों को बेकारी पर नज़र करने से बाज़ रख,  
और मुझे अपनी राहों में जिन्दा कर।

38 अपने बन्दे के लिए अपना वह क़ौल पूरा कर,  
जिस से तेरा ख़ौफ़ पैदा होता है।

39 मेरी मलामत को जिस से मैं डरता हूँ दूर कर दे;  
क्योंकि तेरे अहकाम भले हैं।

40 देख, मैं तेरे क़वानीन का मुश्ताक़ रहा हूँ;  
मुझे अपनी सदाक़त से जिन्दा कर।

वाव

41 ऐ खुदावन्द, तेरे क़ौल के मुताबिक,  
तेरी शफ़क़त और तेरी नजात मुझे नसीब हों,

42 तब मैं अपने मलामत करने वाले को जवाब दे सकूँगा,  
क्योंकि मैं तेरे कलाम पर भरोसा रखता हूँ।

43 और हक़ बात को मेरे मुँह से हरगिज़ जुदा न होने दे,  
क्योंकि मेरा भरोसा तेरे अहकाम पर है।

44 फिर मैं हमेशा से हमेशा तक,  
तेरी शरी'अत को मानता रहूँगा



45 और मैं आज्ञादी से चलूँगा,  
क्योंकि मैं तेरे क़वानीन का तालिब रहा हूँ।  
46 मैं बादशाहों के सामने तेरी शहादतों का बयान  
करूँगा,  
और शर्मिन्दा न हूँगा।  
47 तेरे फ़रमान मुझे अज़ीज़ हैं,  
मैं उनमें मसरूर रहूँगा।  
48 मैं अपने हाथ तेरे फ़रमान की तरफ़ जो मुझे 'अज़ीज़  
है उठाऊँगा,  
और तेरे क़ानून पर ध्यान करूँगा।  
ज़ैन  
49 जो कलाम तूने अपने बन्दे से किया उसे याद कर,  
क्योंकि तूने मुझे उम्मीद दिलाई है।  
50 मेरी मुसीबत में यही मेरी तसल्ली है,  
कि तेरे कलाम ने मुझे ज़िन्दा किया  
51 मगरूरों ने मुझे बहुत ठट्ठों में उड़ाया,  
तोभी मैंने तेरी शरी'अत से किनारा नहीं किया  
52 ऐ खुदावन्द! मैं तेरे क़दीम अहकाम को याद करता,  
और इत्मीनान पाता रहा हूँ।  
53 उन शरीरों की वजह से जो तेरी शरी'अत को छोड़  
देते हैं,  
मैं सख्त गुस्से में आ गया हूँ।  
54 मेरे मुसाफ़िर खाने में,  
तेरे क़ानून मेरी हम्द रहे हैं।  
55 ऐ खुदावन्द, रात को मैंने तेरा नाम याद किया है,  
और तेरी शरी'अत पर 'अमल किया है।  
56 यह मेरे लिए इसलिए हुआ,  
कि मैंने तेरे क़वानीन को माना।  
हेथ  
57 खुदावन्द मेरा बख़रा है;  
मैंने कहा है मैं तेरी बातें मानूँगा।  
58 मैं पूरे दिल से तेरे करम का तलब गार हुआ;  
अपने कलाम के मुताबिक़ मुझ पर रहम कर!  
59 मैंने अपनी राहों पर ग़ौर किया,  
और तेरी शहादतों की तरफ़ अपने कदम मोड़े।  
60 मैंने तेरे फ़रमान मानने में,  
जल्दी की और देर न लगाई।  
61 शरीरों की रस्सियों ने मुझे जकड़ लिया,  
लेकिन मैं तेरी शरी'अत को न भूला।  
62 तेरी सदाकत के अहकाम के लिए,  
मैं आधी रात को तेरा शुक्र करने को उठूँगा।  
63 मैं उन सबका साथी हूँ जो तुझ से डरते हैं,  
और उनका जो तेरे क़वानीन को मानते हैं।

64 ऐ खुदावन्द, ज़मीन तेरी शफ़क़त से मा'भूर है;  
मुझे अपने क़ानून सिखा!  
टेथ  
65 ऐ खुदावन्द! तूने अपने कलाम के मुताबिक़,  
अपने बन्दे के साथ भलाई की है।  
66 मुझे सही फ़र्क़ और 'अक्ल सिखा,  
क्योंकि मैं तेरे फ़रमान पर इमान लाया हूँ।  
67 मैं मुसीबत उठाने से पहले गुमराह था;  
लेकिन अब तेरे कलाम को मानता हूँ।  
68 तू भला है और भलाई करता है;  
मुझे अपने क़ानून सिखा।  
69 मगरूरों ने मुझ पर बहुतान बाँधा है;  
मैं पूरे दिल से तेरे क़वानीन को मानूँगा।  
70 उनके दिल चिकनाई से फ़र्बा हो गए,  
लेकिन मैं तेरी शरी'अत में मसरूर हूँ।  
71 अच्छा हुआ कि मैंने मुसीबत उठाई,  
ताकि तेरे क़ानून सीख लूँ।  
72 तेरे मुँह की शरी'अत मेरे लिए,  
सोने चाँदी के हज़ारों सिक्कों से बेहतर है।  
योध  
73 तेरे हाथों ने मुझे बनाया और तरतीब दी;  
मुझे समझ 'अता कर ताकि तेरे फ़रमान सीख लें।  
74 तुझ से डरने वाले मुझे देख कर  
इसलिए कि मुझे तेरे कलाम पर भरोसा है।  
75 ऐ खुदावन्द, मैं तेरे अहकाम की सदाकत को जानता  
हूँ,  
और यह कि वफ़ादारी ही से तूने मुझे दुख में डाला।  
76 उस कलाम के मुताबिक़ जो तूने अपने बन्दे से किया,  
तेरी शफ़क़त मेरी तसल्ली का ज़रिया' हो।  
77 तेरी रहमत मुझे नसीब हो ताकि मैं ज़िन्दा रहूँ।  
क्योंकि तेरी शरी'अत मेरी खुशनूदी है।  
78 मगरूर शर्मिन्दा हों, क्योंकि उन्होंने नाहक़ मुझे  
गिराया,  
लेकिन मैं तेरे क़वानीन पर ध्यान करूँगा।  
79 तुझ से डरने वाले मेरी तरफ़ रुजू हों,  
तो वह तेरी शहादतों को जान लेंगे।  
80 मेरा दिल तेरे क़ानून मानने में कामिल रहे,  
ताकि मैं शर्मिन्दगी न उठाऊँ।  
क्राफ़  
81 मेरी जान तेरी नज़ात के लिए बेताब है,  
लेकिन मुझे तेरे कलाम पर भरोसा है।  
82 तेरे कलाम के इन्तिज़ार में मेरी आँखें रह गई,  
मैं यही कहता रहा कि तू मुझे कब तसल्ली देगा?  
83 मैं उस मश्कीज़े की तरह हो गया जो धुएँ में हो,

तोभी मैं तेरे क़ानून को नहीं भूलता।

84 तेरे बन्दे के दिन ही कितने हैं?

तू मेरे सताने वालों पर कब फ़तवा देगा?

85 मगरूरों ने जो तेरी शरी'अत के पैरों नहीं,  
मेरे लिए गढ़े खोदे हैं।

86 तेरे सब फ़रमान बरहक़ हैं: वह नाहक़ मुझे सताते हैं;  
तू मेरी मदद कर!

87 उन्होंने मुझे ज़मीन पर से फ़नाकर ही डाला था,  
लेकिन मैंने तेरे क़वानीन को न छोड़ा।

88 तू मुझे अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ ज़िन्दा कर,  
तो मैं तेरे मुँह की शहादत को मानूँगा।

लामेध

89 ऐ खुदावन्द! तेरा कलाम,  
आसमान पर हमेशा तक काईम है।

90 तेरी वफ़ादारी नसल दर नसल है;  
तूने ज़मीन को क़याम बख़्शा और वह काईम है।

91 वह आज तेरे अहक़ाम के मुताबिक़ काईम है  
क्यूँकि सब चीज़ें तेरी ख़िदमत गुज़ार हैं।

92 अगर तेरी शरी'अत मेरी खुशनुदी न होती,  
तो मैं अपनी मुसीबत में हलाक़ हो जाता।

93 मैं तेरे क़वानीन को कभी न भूलूँगा,  
क्यूँकि तूने उन्ही के वसीले से मुझे ज़िन्दा किया है।

94 मैं तेरा ही हूँ मुझे बचा ले,  
क्यूँकि मैं तेरे क़वानीन का तालिब रहा हूँ।

95 शरीर मुझे हलाक़ करने को घात में लगे रहे,  
लेकिन मैं तेरी शहादतों पर ग़ौर करूँगा।

96 मैंने देखा कि हर कमाल की इन्तिहा है,  
लेकिन तेरा हुक्म बहुत वसी'अ है।

मीम

97 आह! मैं तेरी शरी'अत से कैसी मुहब्बत रखता हूँ,  
मुझे दिन भर उसी का ध्यान रहता है।

98 तेरे फ़रमान मुझे मेरे दुश्मनों से ज्यादा 'अक्लमंद  
बनाते हैं,

क्यूँकि वह हमेशा मेरे साथ हैं।

99 मैं अपने सब उस्तादों से 'अक्लमंद हूँ,  
क्यूँकि तेरी शहादतों पर मेरा ध्यान रहता है।

100 मैं उम्र रसीदा लोगों से ज्यादा समझ रखता हूँ  
क्यूँकि मैंने तेरे क़वानीन को माना है।

101 मैंने हर बुरी राह से अपने क़दम रोक रखे हैं,  
ताकि तेरी शरी'अत पर 'अमल करूँ।

102 मैंने तेरे अहक़ाम से किनारा नहीं किया,  
क्यूँकि तूने मुझे ता'लीम दी है।

103 तेरी बातें मेरे लिए कैसी शीरीन हैं,

वह मेरे मुँह को शहद से भी मीठी मा'लूम होती हैं!

104 तेरे क़वानीन से मुझे समझ हासिल होता है,  
इसलिए मुझे हर झूटी राह से नफ़रत है।

नून

105 तेरा कलाम मेरे क़दमों के लिए चराग़,  
और मेरी राह के लिए रोशनी है।

106 मैंने क़सम खाई है और उस पर काईम हूँ,  
कि तेरी सदाक़त के अहक़ाम पर 'अमल करूँगा।

107 मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। ऐ खुदावन्द!

अपने कलाम के मुताबिक़ मुझे ज़िन्दा कर।

108 ऐ खुदावन्द, मेरे मुँह से रज़ा की कुर्बानियाँ कुबूल  
फ़रमा

और मुझे अपने अहक़ाम की ता'लीम दे।

109 मेरी जान हमेशा हथेली पर है,  
तोभी मैं तेरी शरी'अत को नहीं भूलता।

110 शरीरों ने मेरे लिए फंदा लगाया है,  
तोभी मैं तेरे क़वानीन से नहीं भटका।

111 मैंने तेरी शहादतों को अपनी हमेशा की मीरास  
बनाया है,

क्यूँकि उनसे मेरे दिल को खुशी होती है।

112 मैंने हमेशा के लिए आख़िर तक,  
तेरे क़ानून मानने पर दिल लगाया है।

सामेख

113 मुझे दो दिलों से नफ़रत है,  
लेकिन तेरी शरी'अत से मुहब्बत रखता हूँ।

114 तू मेरे छिपने की जगह और मेरी ढाल है;  
मुझे तेरे कलाम पर भरोसा है।

115 ऐ बदकिरदारो! मुझ से दूर हो जाओ,  
ताकि मैं अपने खुदा के फ़रमान पर 'अमल करूँ!

116 तू अपने कलाम के मुताबिक़ मुझे संभाल ताकि  
ज़िन्दा रहूँ,

और मुझे अपने भरोसा से शर्मिन्दगी न उठाने दे।

117 मुझे संभाल और मैं सलामत रहूँगा,  
और हमेशा तेरे क़ानून का लिहाज़ रखूँगा।

118 तूने उन सबको हक़ीर जाना है,  
जो तेरे क़ानून से भटक जाते हैं;

क्यूँकि उनकी दगाबाज़ी बेकार है।

119 तू ज़मीन के सब शरीरों को मैल की तरह छाँट देता  
है;

इसलिए मैं तेरी शहादतों को 'अज़ीज़ रखता हूँ।

120 मेरा जिस्म तेरे ख़ौफ़ से काँपता है,  
और मैं तेरे अहक़ाम से डरता हूँ।

ऐन

121 मैंने 'अदल और इन्साफ़ किया है;  
मुझे उनके हवाले न कर जो मुझ पर जुल्म करते हैं।  
122 भलाई के लिए अपने बन्दे का ज़ामिन हो,  
मगरूर मुझ पर जुल्म न करें।  
123 तेरी नज़ात और तेरी सदाक़त के कलाम के इन्तिज़ार  
में मेरी आँखें रह गई।  
124 अपने बन्दे से अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ सुलूक  
कर,  
और मुझे अपने क़ानून सिखा।  
125 मैं तेरा बन्दा हूँ! मुझ को समझ 'अता कर,  
ताकि तेरी शहादतों को समझ लूँ।  
126 अब वक़्त आ गया, कि खुदावन्द काम करे,  
क्योंकि उन्होंने तेरी शरी'अत को बेकार कर दिया है।  
127 इसलिए मैं तेरे फ़रमान को सोने से बल्कि कुन्दन से  
भी ज़्यादा अज़ीज़ रखता हूँ।  
128 इसलिए मैं तेरे सब क़वानीन को बरहक़ जानता हूँ,  
और हर झूठी राह से मुझे नफ़रत है।  
पे  
129 तेरी शहादतें 'अजीब हैं,  
इसलिए मेरा दिल उनको मानता है।  
130 तेरी बातों की तशरीह नूर बख़्शती है,  
वह सादा दिलों को 'अक़लमन्द बनाती है।  
131 मैं ख़ूब मुँह खोलकर हाँपता रहा,  
क्योंकि मैं तेरे फ़रमान का मुश्ताक़ था।  
132 मेरी तरफ़ तबज्जुह कर और मुझ पर रहम फ़रमा,  
जैसा तेरे नाम से मुहब्बत रखने वालों का हक़ है।  
133 अपने कलाम में मेरी रहनुमाई कर,  
कोई बदकारी मुझ पर तसल्लुत न पाए।  
134 इंसान के जुल्म से मुझे छुड़ा ले,  
तो तेरे क़वानीन पर 'अमल करूँगा।  
135 अपना चेहरा अपने बन्दे पर जलवागर फ़रमा,  
और मुझे अपने क़ानून सिखा।  
136 मेरी आँखों से पानी के चश्मे जारी हैं,  
इसलिए कि लोग तेरी शरी'अत को नहीं मानते।  
सांवे  
137 ऐ खुदावन्द तू सादिक़ है,  
और तेरे अहक़ाम बरहक़ हैं।  
138 तूने सदाक़त और क़माल वफ़ादारी से,  
अपनी शहादतों को ज़ाहिर फ़रमाया है।  
139 मेरी ग़ैरत मुझे खा गई,  
क्योंकि मेरे मुख़ालिफ़ तेरी बातें भूल गए।  
140 तेरा कलाम बिल्कुल ख़ालिस है,  
इसलिए तेरे बन्दे को उससे मुहब्बत है।  
141 मैं अदना और हक़ीर हूँ,

तौ भी मैं तेरे क़वानीन को नहीं भूलता।  
142 तेरी सदाक़त हमेशा की सदाक़त है,  
और तेरी शरी'अत बरहक़ है।  
143 मैं तकलीफ़ और ऐज़ाब में मुब्तिला,  
हूँ तोभी तेरे फ़रमान मेरी खुशनूदी हैं।  
144 तेरी शहादतें हमेशा रास्त हैं;  
मुझे समझ 'अता कर तो मैं ज़िन्दा रहूँगा।  
क्राफ़  
145 मैं पूरे दिल से दुआ करता हूँ,  
ऐ खुदावन्द, मुझे जवाब दे।  
मैं तेरे क़ानून पर 'अमल करूँगा।  
146 मैंने तुझ से दुआ की है, मुझे बचा ले,  
और मैं तेरी शहादतों को मानूँगा।  
147 मैंने पौ फटने से पहले फ़रियाद की;  
मुझे तेरे कलाम पर भरोसा है।  
148 मेरी आँखें रात के हर पहर से पहले खुल गई,  
ताकि तेरे कलाम पर ध्यान करूँ।  
149 अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी फ़रियाद सुन:  
ऐ खुदावन्द! अपने अहक़ाम के मुताबिक़ मुझे ज़िन्दा  
कर।  
150 जो शरारत के दर पै रहते हैं, वह नज़दीक़ आ गए;  
वह तेरी शरी'अत से दूर हैं।  
151 ऐ खुदावन्द, तू नज़दीक़ है,  
और तेरे सब फ़रमान बरहक़ हैं।  
152 तेरी शहादतों से मुझे क़दीम से मा'लूम हुआ,  
कि तूने उनको हमेशा के लिए क़ाईम किया है।  
रेश  
153 मेरी मुसीबत का ख़याल कर और मुझे छुड़ा,  
क्योंकि मैं तेरी शरी'अत को नहीं भूलता।  
154 मेरी वक़ालत कर और मेरा फ़िदिया दे:  
अपने कलाम के मुताबिक़ मुझे ज़िन्दा कर।  
155 नज़ात शरीरों से दूर है,  
क्योंकि वह तेरे क़ानून के तालिब नहीं हैं।  
156 ऐ खुदावन्द! तेरी रहमत बड़ी है;  
अपने अहक़ाम के मुताबिक़ मुझे ज़िन्दा कर।  
157 मेरे सताने वाले और मुख़ालिफ़ बहुत हैं,  
तोभी मैंने तेरी शहादतों से किनारा न किया।  
158 मैं दगाबाज़ों को देख कर मलूल हुआ,  
क्योंकि वह तेरे कलाम को नहीं मानते।  
159 ख़याल फ़रमा कि मुझे तेरे क़वानीन से कैसी मुहब्बत  
है!  
ऐ खुदावन्द! अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मुझे ज़िन्दा  
कर।  
160 तेरे कलाम का खुलासा सच्चाई है,

तेरी सदाक़त के कुल अहकाम हमेशा के हैं।

शीन

161 उमरा ने मुझे बे वजह सताया है,  
लेकिन मेरे दिल में तेरी बातों का ख़ौफ़ है।

162 मैं बड़ी लूट पाने वाले की तरह,  
तेरे कलाम से खुश हूँ।

163 मुझे झूट से नफ़रत और कराहियत है,  
लेकिन तेरी शरी'अत से मुहब्बत है।

164 मैं तेरी सदाक़त के अहकाम की वजह से,  
दिन में सात बार तेरी सिताइश करता हूँ।

165 तेरी शरी'अत से मुहब्बत रखने वाले मुत्मइन हैं;  
उनके लिए ठोकर खाने का कोई मौक़ा नहीं।

166 ऐ खुदावन्द! मैं तेरी नजात का उम्मीदवार रहा हूँ  
और तेरे फ़रमान बजा लाया हूँ।

167 मेरी जान ने तेरी शहादतें मानी हैं,  
और वह मुझे बहुत 'अजीज़ है।

168 मैंने तेरे क़वानीन और शहादतों को माना है,  
क्योंकि मेरे सब चाल चलन तेरे सामने हैं।

ताव  
169 ऐ खुदावन्द! मेरी फ़रियाद तेरे सामने पहुँचे;  
अपने कलाम के मुताबिक़ मुझे समझ 'अता कर।

170 मेरी इल्तिजा तेरे सामने पहुँचे,  
अपने कलाम के मुताबिक़ मुझे छुड़ा।

171 मेरे लबों से तेरी सिताइश हो।  
क्योंकि तू मुझे अपने क़ानून सिखाता है।

172 मेरी ज़बान तेरे कलाम का हम्द गाए,  
क्योंकि तेरे सब फ़रमान बरहक़ हैं।

173 तेरा हाथ मेरी मदद को तैयार है  
क्योंकि मैंने तेरे क़वानीन इस्तियार, किए हैं।

174 ऐ खुदावन्द! मैं तेरी नजात का मुश्ताक़ रहा हूँ,  
और तेरी शरी'अत मेरी खुशनूदी है।

175 मेरी जान ज़िन्दा रहे तो वह तेरी सिताइश करेगी,  
और तेरे अहकाम मेरी मदद करें।

176 मैं खोई हुई भेड़ की तरह भटक गया हूँ  
अपने बन्दे की तलाश कर,  
क्योंकि मैं तेरे फ़रमान को नहीं भूलता।

## 120

1 मैंने मुसीबत में खुदावन्द से फ़रियाद की,  
और उसने मुझे जवाब दिया।

2 झूटे होंटों और दगाबाज़ ज़बान से,  
ऐ खुदावन्द, मेरी जान को छुड़ा।

3 ऐ दगाबाज़ ज़बान, तुझे क्या दिया जाए?  
और तुझ से और क्या किया जाए?

4 ज़बरदस्त के तेज़ तीर,  
झाऊ के अंगारों के साथ।

5 मुझ पर अफ़सोस कि मैं मसक में बसता,  
और क़ीदार के ख़ैमों में रहता हूँ।

6 सुलह के दुश्मन के साथ रहते हुए,  
मुझे बड़ी मुदत हो गई।

7 मैं तो सुलह दोस्त हूँ।

लेकिन जब बोलता हूँ तो वह जंग पर आमादा हो जाते  
हैं।

## 121

1 मैं अपनी आँखें पहाड़ों की तरफ उठाऊंगा;  
मेरी मदद कहाँ से आएगी?

2 मेरी मदद खुदावन्द से है,  
जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया।

3 वह तेरे पाँव को फिसलने न देगा;  
तेरा मुहाफ़िज़ ऊँघने का नहीं।

4 देख! इस्राईल का मुहाफ़िज़,  
न ऊँघेगा, न सोएगा।

5 खुदावन्द तेरा मुहाफ़िज़ है;  
खुदावन्द तेरे दहने हाथ पर तेरा सायबान है।

6 न आफ़ताब दिन को तुझे नुक़सान पहुँचाएगा,  
न माहताब रात को।

7 खुदावन्द हर बला से तुझे महफूज़ रखेगा,  
वह तेरी जान को महफूज़ रखेगा।

8 खुदावन्द तेरी आमद — ओ — रफ़्त में,  
अब से हमेशा तक तेरी हिफ़ाज़त करेगा।

## 122

1 मैं खुश हुआ जब वह मुझ से कहने लगे  
“आओ खुदावन्द के घर चलें।”

2 ऐ येरूशलेम! हमारे क़दम,  
तेरे फाटकों के अन्दर हैं।

3 ऐ येरूशलेम तू ऐसे शहर के तरह है जो गुनजान बना  
हो।

4 जहाँ क़बीले या'नी खुदावन्द के क़बीले,  
इस्राईल की शहादत के लिए, खुदावन्द के नाम का  
शुक्र करने को जाते हैं।

5 क्योंकि वहाँ 'अदालत के तख़्त,  
या'नी दाऊद के ख़ान्दान के तख़्त काईम हैं।

6 येरूशलेम की सलामती की दुआ करो,  
वह जो तुझ से मुहब्बत रखते हैं इकबालमंद होंगे।

7 तेरी फ़सील के अन्दर सलामती,  
और तेरे महलों में इकबालमंदी हो।

8 मैं अपने भाइयों और दोस्तों की खातिर,



अब कहूँगा तुझ में सलामती रहे!

9 खुदावन्द अपने खुदा के घर की खातिर,  
मैं तेरी भलाई का तालिब रहूँगा।

## 123

1 तू जो आसमान पर तख्तनशीन है,  
मैं अपनी आँखें तेरी तरफ उठाता हूँ!

2 देख, जिस तरह गुलामों की आँखें अपने आका के हाथ  
की तरफ,  
और लौंडी की आँखें अपनी बीबी के हाथ की तरफ लगी  
रहती है  
उसी तरह हमारी आँखें खुदावन्द अपने खुदा की तरफ  
लगी है

जब तक वह हम पर रहम न करे।

3 हम पर रहम कर! ऐ खुदावन्द, हम पर रहम कर,  
क्योंकि हम ज़िल्लत उठाते उठाते तंग आ गए।

4 आसूदा हालों के तमसखुर,  
और मागरूरों की हिकारत से, हमारी जान सेर हो गई।

## 124

1 अब इस्राईल यूँ कहे,  
अगर खुदावन्द हमारी तरफ न होता,

2 अगर खुदावन्द उस वक़्त हमारी तरफ न होता,  
जब लोग हमारे खिलाफ उठे,

3 तो जब उनका क्रहर हम पर भड़का था,  
वह हम को ज़िन्दा ही निगल जाते।

4 उस वक़्त पानी हम को डुबो देता,  
और सैलाब हमारी जान पर से गुज़र जाता।

5 उस वक़्त मौजज़न,  
पानी हमारी जान पर से गुज़र जाता।

6 खुदावन्द मुबारक हो,  
जिसने हमें उनके दाँतों का शिकार न होने दिया।

7 हमारी जान चिड़िया की तरह चिड़ीमारों के जाल से  
बच निकली,

जाल तो टूट गया और हम बच निकले।

8 हमारी मदद खुदावन्द के नाम से है,  
जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया।

## 125

1 जो खुदावन्द पर भरोसा करते वह कोह — ए —  
सिय्यून की तरह हैं,

जो अटल बल्कि हमेशा क़ाईम है।

2 जैसे येरूशलेम पहाड़ों से घिरा है,

वैसे ही अब से हमेशा तक खुदावन्द अपने लोगों को घेरे  
रहेगा।

3 क्योंकि शरारत का 'असा सादिकों की मीरास पर क़ाईम  
न होगा,

ताकि सादिक बदकारी की तरफ अपने हाथ न बढ़ाएँ।

4 ऐ खुदावन्द! भलों के साथ भलाई कर,  
और उनके साथ भी जो रास्त दिल हैं।

5 लेकिन जो अपनी टेढ़ी राहों की तरफ मुड़ते हैं,  
उनको खुदावन्द बदकिरदारों के साथ निकाल ले  
जाएगा। इस्राईल की सलामती हो!

## 126

1 जब खुदावन्द सिय्यून के गुलामों को वापस लाया,  
तो हम ख़्वाब देखने वालों की तरह थे।

2 उस वक़्त हमारे मुँह में हँसी,  
और हमारी ज़बान पर रागनी थी;  
तब क़ौमों में यह चर्चा होने लगा,  
“खुदावन्द ने इनके लिए बड़े बड़े काम किए हैं।”

3 खुदावन्द ने हमारे लिए बड़े बड़े काम किए हैं,  
और हम खुश हैं!

4 ऐ खुदावन्द! दखिन की नदियों की तरह,  
हमारे गुलामों को वापस ला।

5 जो आँसुओं के साथ बोते हैं,  
वह खुशी के साथ काटेंगे।

6 जो रोता हुआ बीज बोने जाता है,  
वह अपने पूले लिए हुए खुश लौटेगा।

## 127

1 अगर खुदावन्द ही घर न बनाए,  
तो बनाने वालों की मेहनत बेकार है।

अगर खुदावन्द ही शहर की हिक़ाज़त न करे,  
तो निगहबान का जागना बेकार है।

2 तुम्हारे लिए सवेरे उठना और देर में आराम करना,  
और मशक्क़त की रोटी खाना बेकार है;  
क्योंकि वह अपने महबूब को तो नींद ही में दे देता है।

3 देखो, औलाद खुदावन्द की तरफ से मीरास है,  
और पेट का फल उसी की तरफ से अज़र है,

4 जवानी के फ़र्ज़न्द ऐसे हैं,  
जैसे ज़बरदस्त के हाथ में तीर।

5 खुश नसीब है वह आदमी जिसका तरक़श उनसे भरा  
है।

जब वह अपने दुश्मनों से फाटक पर बातें करेंगे तो  
शर्मिन्दा न होंगे।

## 128

1 मुबारक है हर एक जो खुदावन्द से डरता,  
और उसकी राहों पर चलता है।

2 तू अपने हाथों की कमाई खाएगा;  
तू मुबारक और फ़र्माबरदार होगा।  
3 तेरी बीवी तेरे घर के अन्दर मेवादार ताक की तरह  
होगी,  
और तेरी औलाद तेरे दस्तरख्वान पर ज़ैतून के पौदों की  
तरह।  
4 देखो! ऐसी बरकत उसी आदमी को मिलेगी,  
जो खुदावन्द से डरता है।  
5 खुदावन्द सिय्यून में से तुझ को बरकत दे,  
और तू उम्र भर येरूशलेम की भलाई देखे।  
6 बल्कि तू अपने बच्चों के बच्चे देखे।  
इस्राईल की सलामती हो!

## 129

1 इस्राईल अब यूँ कहे,  
“उन्होंने मेरी जवानी से अब तक मुझे बार बार सताया,  
2 हाँ, उन्होंने मेरी जवानी से अब तक मुझे बार बार  
सताया,  
तोभी वह मुझ पर ग़ालिब न आए।  
3 हलवाहों ने मेरी पीठ पर हल चलाया,  
और लम्बी लम्बी रेघारियाँ बनाई।”  
4 खुदावन्द सादिक है;  
उसने शरीरों की रसियाँ काट डालीं।  
5 सिय्यून से नफ़रत रखने वाले,  
सब शर्मिन्दा और पस्पा हों।  
6 वह छूत पर की घास की तरह हों,  
जो बढ़ने से पहले ही सूख जाती है;  
7 जिससे फ़सल काटने वाला अपनी मुट्ठी को,  
और पूले बाँधने वाला अपने दामन को नहीं भरता,  
8 न आने जाने वाले यह कहते हैं,  
“तुम पर खुदावन्द की बरकत हो!  
हम खुदावन्द के नाम से तुम को दुआ देते हैं!”

## 130

1 ऐ खुदावन्द! मैंने गहराओ में से तेरे सामने फ़रियाद  
की है!  
2 ऐ खुदावन्द! मेरी आवाज़ सुन ले!  
मेरी इल्तिजा की आवाज़ पर, तेरे कान लगे रहें।  
3 ऐ खुदावन्द! अगर तू बदकारी को हिसाब में लाए,  
तो ऐ खुदावन्द कौन क़ाईम रह सकेगा?  
4 लेकिन मग़फ़िरत तेरे हाथ में है,  
ताकि लोग तुझ से डरें।  
5 मैं खुदावन्द का इन्तिज़ार करता हूँ।  
मेरी जान मुन्तज़िर है, और मुझे उसके कलाम पर भरोसा  
है।  
6 सुबह का इन्तिज़ार करने वालों से ज्यादा,

हाँ, सुबह का इन्तिज़ार करने वालों से कहीं ज्यादा,  
मेरी जान खुदावन्द की मुन्तज़िर है।

7 ऐ इस्राईल! खुदावन्द पर भरोसा कर;  
क्योंकि खुदावन्द के हाथ में शफ़क़त है  
, उसी के हाथ में फ़िदिए की कसरत है।  
8 और वही इस्राईल का फ़िदिया देकर,  
उसको सारी बदकारी से छुड़ाएगा।

## 131

1 ऐ खुदावन्द! मेरा दिल मग़रूर नहीं  
और मैं बुलंद नज़र नहीं हूँ  
न मुझे बड़े बड़े मु'आमिलों से कोई सरोकार है,  
न उन बातों से जो मेरी समझ से बाहर हैं,  
2 यक़ीनन मैंने अपने दिल को तिस्कीन देकर मुत्मइन कर  
दिया है,  
मेरा दिल मुझ में दूध छुड़ाए हुए बच्चे की तरह है;  
हाँ, जैसे दूध छुड़ाया हुआ बच्चा माँ की गोद में।  
3 ऐ इस्राईल! अब से हमेशा तक, खुदावन्द पर भरोसा  
कर!

## 132

1 ऐ खुदावन्द! दाऊद कि खातिर उसकी सब मुसीबतों  
को याद कर;  
2 कि उसने किस तरह खुदावन्द से क़सम खाई,  
और या'क़ूब के क़ादिर के सामने मन्नत मानी,  
3 “यक़ीनन मैं न अपने घर में दाख़िल हूँगा,  
न अपने पलंग पर जाऊँगा;  
4 और न अपनी आँखों में नींद,  
न अपनी पलकों में झपकी आने दूँगा;  
5 जब तक खुदावन्द के लिए कोई जगह,  
और या'क़ूब के क़ादिर के लिए घर न हो।”  
6 देखो, हम ने उसकी ख़बर इफ़राता में सुनी;  
हमें यह जंगल के मैदान में मिली।  
7 हम उसके घरों में दाख़िल होंगे,  
हम उसके पाँव की चौकी के सामने सिजदा करेंगे!  
8 उठ, ऐ खुदावन्द! अपनी आरामगाह में दाख़िल हो!  
तू और तेरी कुदरत का सद्क़।  
9 तेरे काहिन सदाक़त से मुलब्स हों,  
और तेरे पाक खुशी के नारे मारें।  
10 अपने बन्दे दाऊद की खातिर,  
अपने मम्सूह की दुआ ना — मन्ज़ूर न कर।  
11 खुदावन्द ने सच्चाई के साथ दाऊद से क़सम खाई है;  
वह उससे फिरने का नहीं: कि “मैं तेरी औलाद में से किसी  
को तेरे तख़्त पर बिठाऊँगा।  
12 अगर तेरे फ़र्ज़न्द मेरे 'अहद और मेरी शहादत पर,

जो मैं उनको सिखाऊँगा 'अमल करें;  
तो उनके फ़र्ज़न्द भी हमेशा तेरे तख्त पर बैठेंगे।”

13 क्योंकि खुदावन्द ने सिय्यून को चुना है,  
उसने उसे अपने घर के लिए पसन्द किया है:

14 “यह हमेशा के लिए मेरी आरामगाह है;  
मैं यहीं रहूँगा क्योंकि मैंने इसे पसंद किया है।

15 मैं इसके रिज़क में खूब बरकत दूँगा;

मैं इसके ग़रीबों को रोटी से सेर करूँगा

16 इसके काहिनों को भी मैं नजात से मुलव्वस करूँगा  
और उसके पाक बुलन्द आवाज़ से खुशी के नारे मारेंगे।

17 वहीं मैं दाऊद के लिए एक सींग निकालूँगा मैंने  
अपने मम्सूह के लिए चराग़ तैयार किया है।

18 मैं उसके दुश्मनों को शर्मिन्दगी का लिबास  
पहनाऊँगा,  
लेकिन उस पर उसी का ताज रोमक अफ़रोज़ होगा।”

### 133

1 देखो! कैसी अच्छी और खुशी की बात है,  
कि भाई एक साथ मिलकर रहें!

2 यह उस बेशक्रीमत तेल की तरह है,  
जो सिर पर लगाया गया, और बहता हुआ दाढ़ी पर,  
या'नी हारून की दाढ़ी पर आ गया;  
बल्कि उसके लिबास के दामन तक जा पहुँचा।

3 या हरमून की ओस की तरह है,  
जो सिय्यून के पहाड़ों पर पड़ती है!  
क्योंकि वहीं खुदावन्द ने बरकत का,  
या'नी हमेशा की ज़िन्दगी का हुक्म फ़रमाया।

### 134

1 ऐ खुदावन्द के बन्दो! आओ सब खुदावन्द को मुबारक  
कहो!

तुम जो रात को खुदावन्द के घर में खड़े रहते हो!

2 हैकल की तरफ़ अपने हाथ उठाओ,  
और खुदावन्द को मुबारक कहो!

3 खुदावन्द, जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया,  
सिय्यून में से तुझे बरकत बरख़ो।

### 135

1 खुदावन्द की हम्द करो!

खुदावन्द के नाम की हम्द करो!

ऐ खुदावन्द के बन्दो! उसकी हम्द करो।

2 तुम जो खुदावन्द के घर में,  
हमारे खुदा के घर की बारगाहों में खड़े रहते हो!

3 खुदावन्द की हम्द करो, क्योंकि खुदावन्द भला है;  
उसके नाम की मदहसराई करो कि यह दिल पसंद है!

4 क्योंकि खुदावन्द ने या'कूब को अपने लिए,  
और इस्राईल को अपनी खास मिल्कियत के लिए चुन  
लिया है।

5 इसलिए कि मैं जानता हूँ कि खुदावन्द बुजुर्ग़ है  
और हमारा रब्ब सब मा'बूदों से बालातर है।

6 आसमान और ज़मीन में, समन्दर और गहराओ में;  
खुदावन्द ने जो कुछ चाहा वही किया।

7 वह ज़मीन की इन्तिहा से बुखारात उठाता है,  
वह बारिश के लिए बिजलियाँ बनाता है,  
और अपने मख़ज़नों से आँधी निकालता है।

8 उसी ने मिस्र के पहलौठों को मारा,  
क्या इंसान के क्या हैवान के।

9 ऐ मिस्र, उसी ने तुझ में फ़िर'औन और उसके सब  
खादिमो पर,  
निशान और 'अजायब ज़ाहिर किए।

10 उसने बहुत सी क्रौमों को मारा,  
और ज़बरदस्त बादशाहों को क़त्ल किया।

11 अमोरियों के बादशाह सीहोन को,  
और बसन के बादशाह 'ओज़ को,  
और कनान की सब मम्लुकतों को;

12 और उनकी ज़मीन मीरास कर दी,  
या'नी अपनी क्रौम इस्राईल की मीरास।

13 ऐ खुदावन्द! तेरा नाम हमेशा का है,  
और तेरी यादगार,  
ऐ खुदावन्द, नसल दर नसल क़ाईम है।

14 क्योंकि खुदावन्द अपनी क्रौम की 'अदालत करेगा,  
और अपने बन्दों पर तरस खाएगा।

15 क्रौमों के बुत चाँदी और सोना हैं,  
या'नी आदमी की दस्तकारी।

16 उनके मुँह हैं, लेकिन वह बोलते नहीं;  
आँखें हैं लेकिन वह देखते नहीं।

17 उनके कान हैं, लेकिन वह सुनते नहीं;  
और उनके मुँह में साँस नहीं।

18 उनके बनाने वाले उन ही की तरह हो जाएँगे;  
बल्कि वह सब जो उन पर भरोसा रखते हैं।

19 ऐ इस्राईल के घराने! खुदावन्द को मुबारक कहो!  
ऐ हारून के घराने! खुदावन्द को मुबारक कहो।

20 ऐ लावी के घराने! खुदावन्द को मुबारक कहो!

ऐ खुदावन्द से डरने वालो! खुदावन्द को मुबारक कहो!

21 सिय्यून में खुदावन्द मुबारक हो!

वह येरूशलेम में सुकूनत करता है खुदावन्द की हम्द  
करो।

### 136

1 खुदावन्द का शुक्र करो,

क्योंकि वह भला है,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 2 इलाहों के खुदा का शुक्र करो,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 3 मालिकों के मालिक का शुक्र करो,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 4 उसी का जो अकेला बड़े बड़े 'अजीब काम करता है,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 5 उसी का जिसने 'अक्लमन्दी से आसमान बनाया,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 6 उसी का जिसने ज़मीन को पानी पर फैलाया,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 7 उसी का जिसने बड़े — बड़े सितारे बनाए,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 8 दिन को हुकूमत करने के लिए आफ़ताब,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 9 रात को हुकूमत करने के लिए माहताब और सितारे,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 10 उसी का जिसने मिस्र के पहलौठों को मारा,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 11 और इस्राईल को उनमें से निकाल लाया,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 12 क़वी हाथ और बलन्द बाजू से,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 13 उसी का जिसने बहर — ए — कुलजुम को दो हिस्से  
 कर दिया,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 14 और इस्राईल को उसमें से पार किया,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 15 लेकिन फिर 'औन और उसके लश्कर को बहर — ए —  
 कुलजुम में डाल दिया,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 16 उसी का जो वीरान में अपने लोगों का राहनुमा हुआ,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 17 उसी का जिसने बड़े — बड़े बादशाहों को मारा,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है;  
 18 और नामवर बादशाहों को क़त्ल किया,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 19 अमोरियों के बादशाह सीहोन को,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 20 और बसन के बादशाह 'ओज की,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है;  
 21 और उनकी ज़मीन मीरास कर दी,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है;  
 22 या 'नी अपने बन्दे इस्राईल की मीरास,

कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 23 जिसने हमारी पस्ती में हम को याद किया,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है;  
 24 और हमारे मुखालिफ़ों से हम को छुड़ाया,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 25 जो सब बशर को रोज़ी देता है,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।  
 26 आसमान के खुदा का शुक्र करो,  
 कि उसकी शफ़क़त हमेशा की है।

## 137

1 हम बाबुल की नदियों पर बैठे,  
 और सिय्यून को याद करके रोए।  
 2 वहाँ बेद के दरख्तों पर उनके वस्त में,  
 हम ने अपने सितारों को टाँग दिया।  
 3 क्योंकि वहाँ हम को गुलाम करने वालों ने हम्द गाने का  
 हुक्म दिया,  
 और तबाह करने वालों ने खुशी करने का,  
 और कहा, “सिय्यून के हम्दों में से हमको कोई हम्द  
 सुनाओ!”  
 4 हम परदेस में,  
 खुदावन्द का हम्द कैसे गाएँ?  
 5 ऐ येरूशलेम! अगर मैं तुझे भूलूँ,  
 तो मेरा दहना हाथ अपना हुनर भूल जाए।  
 6 अगर मैं तुझे याद न रखूँ, अगर मैं येरूशलेम को,  
 अपनी बड़ी से बड़ी खुशी पर तरजीह न दूँ मेरी ज़बान  
 मेरे तालू से चिपक जाए!  
 7 ऐ खुदावन्द! येरूशलेम के दिन को,  
 बनी अदोम के खिलाफ़ याद कर,  
 जो कहते थे, “इसे ढा दो, इसे बुनियाद तक ढा दो!”  
 8 ऐ बाबुल की बेटी! जो हलाक होने वाली है,  
 वह मुबारक होगा, जो तुझे उस सुलूक का,  
 जो तूने हम से किया बदला दे।  
 9 वह मुबारक होगा, जो तेरे बच्चों को लेकर,  
 चट्टान पर पटक दे!

## 138

1 मैं पूरे दिल से तेरा शुक्र करूँगा;  
 मा'बूदों के सामने तेरी मदहसराई करूँगा।  
 2 मैं तेरी पाक हैकल की तरफ़ रुख़ कर के सिज्दा करूँगा,  
 और तेरी शफ़क़त औए सच्चाई की खातिर तेरे नाम का  
 शुक्र करूँगा।  
 क्योंकि तूने अपने कलाम को अपने हरनाम से ज्यादा  
 'अज़मत दी है।  
 3 जिस दिन मैंने तुझ से दुआ की, तूने मुझे जवाब दिया,



और मेरी जान की ताकत देकर मेरा हौसला बढ़ाया।  
 4 ऐ खुदावन्द! ज़मीन के सब बादशाह तेरा शुक्र करेंगे,  
 क्योंकि उन्होंने तेरे मुँह का कलाम सुना है;  
 5 बल्कि वह खुदावन्द की राहों का हम्द गाएंगे  
 क्योंकि खुदावन्द का जलाल बड़ा है।  
 6 क्योंकि खुदावन्द अगरचे बुलन्द — ओ — बाला है,  
 तो भी खाकसार का खयाल रखता है;  
 लेकिन मगरूर को दूर ही से पहचान लेता है।  
 7 चाहे मैं दुख में से गुज़रूँ तू मुझे ताज़ादम करेगा,  
 तू मेरे दुश्मनों के क्रहर के खिलाफ़ हाथ बढ़ाएगा,  
 और तेरा दहना हाथ मुझे बचा लेगा।  
 8 खुदावन्द मेरे लिए सब कुछ करेगा;  
 ऐ खुदावन्द! तेरी शफ़क़त हमेशा की है।  
 अपनी दस्तकारी को न छोड़।

### 139

1 ऐ खुदावन्द! तूने मुझे जाँच लिया और पहचान लिया।  
 2 तू मेरा उठना बैठना जानता है;  
 तू मेरे खयाल को दूर से समझ लेता है।  
 3 तू मेरे रास्ते की ओर मेरी ख़्वाबगाह की छान बीन  
 करता है,  
 और मेरे सब चाल चलन से वाकिफ़ है।  
 4 देख! मेरी ज़बान पर कोई ऐसी बात नहीं,  
 जिसे तू ऐ खुदावन्द पूरे तौर पर न जानता हो।  
 5 तूने मुझे आगे पीछे से घेर रखा है,  
 और तेरा हाथ मुझ पर है।  
 6 यह इरफ़ान मेरे लिए बहुत 'अजीब है;  
 यह बुलन्द है, मैं इस तक पहुँच नहीं सकता।  
 7 मैं तेरी रूह से बचकर कहाँ जाऊँ?  
 या तेरे सामने से किधर भागूँ?  
 8 अगर आसमान पर चढ़ जाऊँ, तो तू वहाँ है।  
 अगर मैं पाताल में बिस्तर बिछाऊँ, तो देख तू वहाँ भी  
 है!  
 9 अगर मैं सुबह के पर लगाकर,  
 समन्दर की इन्तिहा में जा बसूँ,  
 10 तो वहाँ भी तेरा हाथ मेरी राहनुमाई करेगा,  
 और तेरा दहना हाथ मुझे संभालेगा।  
 11 अगर मैं कहूँ कि यक़ीनन तारीकी मुझे छिपा लेगी,  
 और मेरी चारों तरफ़ का उजाला रात बन जाएगा।  
 12 तो अँधेरा भी तुझ से छिपा नहीं सकता,  
 बल्कि रात भी दिन की तरह रोशन है;  
 अँधेरा और उजाला दोनों एक जैसे हैं।  
 13 क्योंकि मेरे दिल को तू ही ने बनाया;

मेरी माँ के पेट में तू ही ने मुझे सूरत बरूख़ी।  
 14 मैं तेरा शुक्र करूँगा, क्योंकि मैं 'अजीब ओ — ग़रीब  
 तौर से बना हूँ।  
 तेरे काम हैरत अंगेज़ हैं मेरा दिल इसे ख़ूब जानता है।  
 15 जब मैं पोशीदगी में बन रहा था,  
 और ज़मीन के तह में 'अजीब तौर से मुरतब हो रहा था,  
 तो मेरा क़ालिब तुझ से छिपा न था।  
 16 तेरी आँखों ने मेरे बेतरतीब माद्रे को देखा,  
 और जो दिन मेरे लिए मुकर्रर थे, वह सब तेरी किताब  
 में लिखे थे;  
 जब कि एक भी वुजूद में न आया था।  
 17 ऐ खुदा! तेरे खयाल मेरे लिए कैसे बेशबहा हैं।  
 उनका मजमूआ कैसा बड़ा है!  
 18 अगर मैं उनको गिनी तो वह शुमार में रेत से भी ज्यादा  
 हैं।  
 जाग उठते ही तुझे अपने साथ पाता हूँ।  
 19 ऐ खुदा! काश के तू शरीर को क़त्ल करे।  
 इसलिए ऐ खूनख़्वारो! मेरे पास से दूर हो जाओ।  
 20 क्योंकि वह शरारत से तेरे खिलाफ़ बातें करते हैं:  
 और तेरे दुश्मन तेरा नाम बेफ़ायदा लेते हैं।  
 21 ऐ खुदावन्द! क्या मैं तुझ से 'अदावत रखने वालों से  
 'अदावत नहीं रखता,  
 और क्या मैं तेरे मुख़ालिफ़ों से बेज़ार नहीं हूँ?  
 22 मुझे उनसे पूरी 'अदावत है,  
 मैं उनको अपने दुश्मन समझता हूँ।  
 23 ऐ खुदा, तू मुझे जाँच और मेरे दिल को पहचान।  
 मुझे आज़मा और मेरे खयालों को जान ले!  
 24 और देख कि मुझ में कोई बुरा चाल चलन तो नहीं,  
 और मुझ को हमेशा की राह में ले चल!

### 140

1 ऐ खुदावन्द! मुझे बुरे आदमी से रिहाई बरूख़;  
 मुझे टेढ़े आदमी से महफूज़ रख।  
 2 जो दिल में शरारत के मन्सूबे बाँधते हैं;  
 वह हमेशा मिलकर जंग के लिए जमा' हो जाते हैं।  
 3 उन्होंने अपनी ज़बान साँप की तरह तेज़ कर रखी है।  
 उनके होटों के नीचे अज़दहा का ज़हर है।  
 4 ऐ खुदावन्द! मुझे शरीर के हाथ से बचा मुझे टेढ़े  
 आदमी से महफूज़ रख,  
 जिनका इरादा है कि मेरे पाँव उखाड़ दें।  
 5 मगरूरों ने मेरे लिए फंदे और रस्सियों को छिपाया है,  
 उन्होंने राह के किनारे जाल लगाया है;  
 उन्होंने मेरे लिए दाम बिछा रखे हैं। सिलाह

6 मैंने खुदावन्द से कहा,  
मेरा खुदा तू ही है। ऐ खुदावन्द,  
मेरी इल्तिजा की आवाज़ पर कान लगा।  
7 ऐ खुदावन्द मेरे मालिक, ऐ मेरी नजात की ताक़त,  
तूने जंग के दिन मेरे सिर पर साया किया है।  
8 ऐ खुदावन्द, शरीर की मुराद पूरी न कर,  
उसके बुरे मन्सूबे को अंजाम न दे ताकि वह डींग न मारे।  
सिलाह  
9 मुझे घेरने वालों की मुँह के शरारत,  
उन्हीं के सिर पर पड़े।  
10 उन पर अंगारे गिरें! वह आग में डाले जाएँ!  
और ऐसे गढ़ों में कि फिर न उठे।  
11 बदज़वान आदमी की ज़मीन पर क़याम न होगा।  
आफ़त टेढ़े आदमी को दौड़ा कर हलाक करेगी।  
12 मैं जानता हूँ कि खुदावन्द मुसीब तज़दा के मु'आमिले  
की,  
और मोहताज़ के हक़ की ताईद करेगा।  
13 यक़ीनन सादिक़ तेरे नाम का शुक्र करेंगे,  
और रास्तबाज़ तेरे सामने में रहेंगे।

## 141

1 ऐ खुदावन्द! मैंने तेरी दुहाई दी मेरी तरफ़ जल्द आ!  
जब मैं तुझ से दुआ करूँ, तो मेरी आवाज़ पर कान लगा!  
2 मेरी दुआ तेरे सामने खुशबू की तरह हो,  
और मेरा हाथ उठाना शाम की कुर्बानी की तरह!  
3 ऐ खुदावन्द! मेरे मुँह पर पहरा बिठा;  
मेरे लबों के दरवाज़े की निगहबानी कर।  
4 मेरे दिल को किसी बुरी बात की तरफ़ माइल न होने  
दे;  
कि बदकारों के साथ मिलकर, शरारत के कामों में  
मसरूफ़ हो जाए,  
और मुझे उनके नफ़ीस खाने से दूर रख।  
5 सादिक़ मुझे मारे तो मेहरबानी होगी,  
वह मुझे तम्बीह करे तो जैसे सिर पर रौगन होगा।  
मेरा सिर इससे इंकार न करे,  
क्योंकि उनकी शरारत में भी मैं दुआ करता रहूँगा।  
6 उनके हाकिम चट्टान के किनारों पर से गिरा दिए गए  
हैं,  
और वह मेरी बातें सुनेंगे, क्योंकि यह शरीन हैं।  
7 जैसे कोई हल चलाकर ज़मीन को तोड़ता है,  
वैसे ही हमारी हड्डियाँ पाताल के मुँह पर बिखरी पड़ी  
हैं।  
8 क्योंकि ऐ मालिक खुदावन्द! मेरी आँखें तेरी तरफ़ हैं;  
मेरा भरोसा तुझ पर है, मेरी जान को बेकस न छोड़!

9 मुझे उस फंदे से जो उन्होंने मेरे लिए लगाया है,  
और बदकिरदारों के दाम से बचा।  
10 शरीर आप अपने जाल में फँसे,  
और मैं सलामत बच निकलूँ।

## 142

1 मैं अपनी ही आवाज़ बुलंद करके खुदावन्द से फ़रियाद  
करता हूँ  
मैं अपनी ही आवाज़ से खुदावन्द से मिन्नत करता हूँ।  
2 मैं उसके सामने फ़रियाद करता हूँ,  
मैं अपना दुख उसके सामने बयान करता हूँ।  
3 जब मुझ में मेरी जान निढाल थी,  
तू मेरी राह से वाकिफ़ था!  
जिस राह पर मैं चलता हूँ उसमें उन्होंने मेरे लिए फंदा  
लगाया है।  
4 दहनी तरफ़ निगाह कर और देख,  
मुझे कोई नहीं पहचानता। मेरे लिए कहीं पनाह न रही,  
किसी को मेरी जान की फ़िक्र नहीं।  
5 ऐ खुदावन्द, मैंने तुझ से फ़रियाद की;  
मैंने कहा, तू मेरी पनाह है,  
और ज़िन्दों की ज़मीन में मेरा बख़रा।  
6 मेरी फ़रियाद पर तवज्जुह कर,  
क्योंकि मैं बहुत पस्त हो गया हूँ!  
मेरे सताने वालों से मुझे रिहाई बरख़्श,  
क्योंकि वह मुझ से ताक़तवर हैं।  
7 मेरी जान को क़ैद से निकाल,  
ताकि तेरे नाम का शुक्र करूँ सादिक़ मेरे गिर्द जमा होंगे  
क्योंकि तू मुझ पर एहसान करेगा।

## 143

1 ऐ खुदावन्द, मेरी दू'आ सुन,  
मेरी इल्तिजा पर कान लगा।  
अपनी वफ़ादारी और सदाक़त में मुझे जवाब दे,  
2 और अपने बन्दे को 'अदालत में न ला,  
क्योंकि तेरी नज़र में कोई आदमी रास्तबाज़ नहीं ठहर  
सकता।  
3 इसलिए कि दुश्मन ने मेरी जान को सताया है;  
उसने मेरी ज़िन्दगी को खाक में मिला दिया,  
और मुझे अंधेरी जगहों में उनकी तरह बसाया है जिनको  
मेरे मुद्दत हो गई हो।  
4 इसी वजह से मुझ में मेरी जान निढाल है;  
और मेरा दिल मुझ में बेकल है।  
5 मैं पिछले ज़मानों को याद करता हूँ,  
मैं तेरे सब कामों पर ग़ौर करता हूँ,  
और तेरी दस्तकारी पर ध्यान करता हूँ।

6 मैं अपने हाथ तेरी तरफ फैलाता हूँ  
मेरी जान खुशक ज़मीन की तरह तेरी प्यासी है।  
7 ऐ खुदावन्द, जल्द मुझे जवाब दे: मेरी रूह गुदाज़ हो  
चली!  
अपना चेहरा मुझ से न छिपा,  
ऐसा न हो कि मैं क़ब्र में उतरने वालों की तरह हो जाऊँ।  
8 सुबह को मुझे अपनी शफ़क़त की ख़बर दे,  
क्योंकि मेरा भरोसा तुझ पर है।  
मुझे वह राह बता जिस पर मैं चलूँ,  
क्योंकि मैं अपना दिल तेरी ही तरफ़ लगाता हूँ।  
9 ऐ खुदावन्द, मुझे मेरे दुश्मनों से रिहाई बख़्श;  
क्योंकि मैं पनाह के लिए तेरे पास भाग आया हूँ।  
10 मुझे सिखा के तेरी मर्ज़ी पर चलूँ, इसलिए कि तू मेरा  
खुदा है!  
तेरी नेक रूह मुझे रास्ती के मुल्क में ले चले!  
11 ऐ खुदावन्द, अपने नाम की खातिर मुझे ज़िन्दा कर!  
अपनी सदाक़त में मेरी जान को मुसीबत से निकाल!  
12 अपनी शफ़क़त से मेरे दुश्मनों को काट डाल,  
और मेरी जान के सब दुख देने वालों को हलाक कर दे,  
क्योंकि मैं तेरा बन्दा हूँ।

## 144

1 खुदावन्द मेरी चट्टान मुबारक हो,  
जो मेरे हाथों को जंग करना,  
और मेरी उँगलियों को लड़ना सिखाता है।  
2 वह मुझ पर शफ़क़त करने वाला, और मेरा क़िला' है;  
मेरा ऊँचा बुर्ज और मेरा छुड़ाने वाला,  
वह मेरी ढाल और मेरी पनाहगाह है;  
जो मेरे लोगों को मेरे ताबे' करता है।  
3 ऐ खुदावन्द, इंसान क्या है कि तू उसे याद रखे?  
और आदमज़ाद क्या है कि तू उसका खयाल करे?  
4 इंसान बुतलान की तरह है;  
उसके दिन ढलते साये की तरह हैं।  
5 ऐ खुदावन्द, आसमानों को झुका कर उतर आ!  
पहाड़ों को छू, तो उनसे धुआँ उठेगा!  
6 बिजली गिराकर उनको तितर बितर कर दे,  
अपने तीर चलाकर उनको शिकस्त दे!  
7 ऊपर से हाथ बढ़ा, मुझे रिहाई दे और बड़े सैलाब,  
या'नी परदेसियों के हाथ से छुड़ा।  
8 जिनके मुँह से बेकारी निकलती रहती है,  
और जिनका दहना हाथ झूट का दहना हाथ है।  
9 ऐ खुदा! मैं तेरे लिए नया हम्द गाऊँगा;  
दस तार वाली बरबत पर मैं तेरी मदहसराई करूँगा।  
10 वही बादशाहों को नज़ात बख़्शता है;

और अपने बन्दे दाऊद को हलाक़त की तलवार से  
बचाता है।  
11 मुझे बचा और परदेसियों के हाथ से छुड़ा,  
जिनके मुँह से बेकारी निकलती रहती है,  
और जिनका दहना हाथ झूट का दहना हाथ है।  
12 जब हमारे बेटे जवानी में क्रदआवर पौदों की तरह हों  
और हमारी बेटियाँ महल के कोने के लिए तराशे हुए  
पत्थरों की तरह हों,  
13 जब हमारे खत्ते भरे हों, जिनसे हर किस्म की जिन्स  
मिल सके,  
और हमारी भेड़ बकरियाँ हमारे कूचों में हज़ारों और  
लाखों बच्चे दें:  
14 जब हमारे बैल ख़ूब लदे हों,  
जब न रखना हो न खुर्रज,  
और न हमारे कूचों में वावैला हो।  
15 मुबारक है वह क़ौम जिसका यह हाल है।  
मुबारक है वह क़ौम जिसका खुदा खुदावन्द है।

## 145

1 ऐ मेरे खुदा, मेरे बादशाह! मैं तेरी तम्ज़ीद करूँगा।  
और हमेशा से हमेशा तक तेरे नाम को मुबारक कहूँगा।  
2 मैं हर दिन तुझे मुबारक कहूँगा,  
और हमेशा से हमेशा तक तेरे नाम की सिताइश करूँगा।  
3 खुदावन्द बुजुर्ग और बेहद सिताइश के लायक़ है;  
उसकी बुजुर्गी बयान से बाहर है।  
4 एक नसल दूसरी नसल से तेरे कामों की ता'रीफ़,  
और तेरी कुदरत के कामों का बयान करेगी।  
5 मैं तेरी 'अज़मत की जलाली शान पर,  
और तेरे 'अज़ायब पर ग़ौर करूँगा।  
6 और लोग तेरी कुदरत के हौलनाक कामों का ज़िक्र  
करेंगे,  
और मैं तेरी बुजुर्गी बयान करूँगा।  
7 वह तेरे बड़े एहसान की यादगार का बयान करेंगे,  
और तेरी सदाक़त का हम्द गाएँगे।  
8 खुदावन्द रहीम — ओ — करीम है;  
वह कहर करने में धीमा और शफ़क़त में ग़नी है।  
9 खुदावन्द सब पर मेहरबान है,  
और उसकी रहमत उसकी सारी मख़लूक पर है।  
10 ऐ खुदावन्द, तेरी सारी मख़लूक तेरा शुक्र करेगी,  
और तेरे पाक लोग तुझे मुबारक कहेंगे!  
11 वह तेरी सल्तनत के जलाल का बयान,  
और तेरी कुदरत का ज़िक्र करेंगे;  
12 ताकि बनी आदम पर उसके कुदरत के कामों को,  
और उसकी सल्तनत के जलाल की शान को ज़ाहिर करें।

13 तेरी सल्तनत हमेशा की सल्तनत है,  
और तेरी हुकूमत नसल — दर — नसल ।

14 खुदावन्द गिरते हुए को संभालता,  
और झुके हुए को उठा खड़ा करता है ।

15 सब की आँखें तुझ पर लगी हैं,  
तू उनको वक़्त पर उनकी खुराक देता है ।

16 तू अपनी मुट्ठी खोलता है,  
और हर जानदार की ख्वाहिश पूरी करता है ।

17 खुदावन्द अपनी सब राहों में सादिक,  
और अपने सब कामों में रहीम है ।

18 खुदावन्द उन सबके करीब है जो उससे दुआ करते हैं,  
या 'नी उन सबके जो सच्चाई से दुआ करते हैं ।

19 जो उससे डरते हैं वह उनकी मुराद पूरी करेगा,  
वह उनकी फ़रियाद सुनेगा और उनको बचा लेगा ।

20 खुदावन्द अपने सब मुहब्बत रखने वालों की  
हिफ़ाज़त करेगा;  
लेकिन सब शरीरों को हलाक कर डालेगा ।

21 मेरे मुँह से खुदावन्द की सिताइश होगी,  
और हर बशर उसके पाक नाम को हमेशा से हमेशा तक  
मुबारक कहे ।

## 146

1 खुदावन्द की हम्द करो ऐ मेरी जान,  
खुदावन्द की हम्द कर!

2 मैं उम्र भर खुदावन्द की हम्द करूँगा,  
जब तक मेरा वुजूद है मैं अपने खुदा की मदहसराई  
करूँगा ।

3 न उमरा पर भरोसा करो न आदमज़ाद पर,  
वह बचा नहीं सकता ।

4 उसका दम निकल जाता है तो वह मिट्टी में मिल  
जाता है;

उसी दिन उसके मन्सूबे फ़ना हो जाते हैं ।

5 खुश नसीब है वह, जिसका मददगार या 'कूब का खुदा  
है,

और जिसकी उम्मीद खुदावन्द उसके खुदा से है ।

6 जिसने आसमान और ज़मीन और समन्दर को,  
और जो कुछ उनमें है बनाया;

जो सच्चाई को हमेशा क़ाईम रखता है ।

7 जो मज़लूमों का इन्साफ़ करता है;

जो भूकों को खाना देता है ।

खुदावन्द कैदियों को आज़ाद करता है;

8 खुदावन्द अन्धों की आँखें खोलता है;

खुदावन्द झुके हुए को उठा खड़ा करता है;

खुदावन्द सादिकों से मुहब्बत रखता है ।

9 खुदावन्द परदेसियों की हिफ़ाज़त करता है;  
वह यतीम और बेवा को संभालता है;  
लेकिन शरीरों की राह टेढ़ी कर देता है ।

10 खुदावन्द, हमेशा तक सल्तनत करेगा,  
ऐ सिय्यून! तेरा खुदा नसल दर नसल ।  
खुदावन्द की हम्द करो!

## 147

1 खुदावन्द की हम्द करो!

क्योंकि खुदा की मदहसराई करना भला है;  
इसलिए कि यह दिलपसंद और सिताइश ज़ेबा है ।

2 खुदावन्द येरूशलेम को ता'मीर करता है;  
वह इस्राईल के जिला वतनों को जमा' करता है ।

3 वह शिकस्ता दिलों को शिफ़ा देता है,  
और उनके ज़ख्म बाँधता है ।

4 वह सितारों को शुमार करता है,  
और उन सबके नाम रखता है ।

5 हमारा खुदावन्द बुजुर्ग और कुदरत में 'अज़ीम है;  
उसके समझ की इन्तिहा नहीं ।

6 खुदावन्द हलीमों को संभालता है,  
वह शरीरों को खाक में मिला देता है ।

7 खुदावन्द के सामने शुक्रगुज़ारी का हम्द गाओ,  
सितार पर हमारे खुदा की मदहसराई करो ।

8 जो आसमान को बादलों से मुलब्सस करता है;  
जो ज़मीन के लिए मेंह तैयार करता है; जो पहाड़ों पर  
घास उगाता है ।

9 जो हैवानात को खुराक देता है,  
और कव्वे के बच्चे को जो काँएँ काँएँ करते हैं ।

10 घोड़े के ज़ोर में उसकी खुशनूदी नहीं न आदमी की  
टाँगों से उसे कोई खुशी है;

11 खुदावन्द उनसे खुश है जो उससे डरते हैं,  
और उनसे जो उसकी शफ़क़त के उम्मीदवार हैं ।

12 ऐ येरूशलेम! खुदावन्द की सिताइश कर!,  
ऐ सिय्यून! अपने खुदा की सिताइश कर ।

13 क्योंकि उसने तेरे फाटकों के बेंडों को मज़बूत किया है,  
उसने तेरे अन्दर तेरी औलाद को बरकत दी है ।

14 वह तेरी हृद में अम्न रखता है!  
वह तुझे अच्छे से अच्छे, गेहूँ से आसूदा करता है ।

15 वह अपना हुक्म ज़मीन पर भेजता है,  
उसका कलाम बहुत तेज़ रौ है ।

16 वह बर्फ़ को ऊन की तरह गिराता है,  
और पाले को राख की तरह बिखेरता है ।

17 वह यख़ को लुक़मों की तरह फेंकता  
उसकी ठंड कौन सह सकता है?



18 वह अपना कलाम नाज़िल करके उनको पिघला देता है

; वह हवा चलाता है और पानी बहने लगता है।

19 वह अपना कलाम या'कूब पर ज़ाहिर करता है, और अपने आईन — ओ — अहकाम इस्राईल पर।

20 उसने किसी और क्रौम से ऐसा सुलूक नहीं किया; और उनके अहकाम को उन्होंने नहीं जाना।  
खुदावन्द की हम्द करो!

## 148

1 खुदावन्द की हम्द करो!

आसमान पर से खुदावन्द की हम्द करो,  
बुलंदियों पर उसकी हम्द करो!

2 ऐ उसके फ़िरिश्तो! सब उसकी हम्द करो।

ऐ उसके लश्करो! सब उसकी हम्द करो!

3 ऐ सूरज! ऐ चाँद! उसकी हम्द करो।

ऐ नूरानी सितारों! सब उसकी हम्द करो

4 ऐ फ़लक — उल — फ़लाक! उसकी हम्द करो!

और तू भी ऐ फ़ज़ा पर के पानी!

5 यह सब खुदावन्द के नाम की हम्द करें,  
क्योंकि उसने हुक्म दिया और यह पैदा हो गए।

6 उसने इनको हमेशा से हमेशा तक के लिए क़ाईम किया है;

उसने अटल क़ानून मुक़र्रर कर दिया है।

7 ज़मीन पर से खुदावन्द की हम्द करो

ऐ अज़दहाओं और सब गहरे समन्दरो!

8 ऐ आग और ओलो! ऐ बर्फ़ और कुहर ऐ तूफ़ानी हवा!

जो उसके कलाम की ता'लीम करती है।

9 ऐ पहाड़ो और सब टीलो!

ऐ मेवादार दरख़्तो और सब देवदारो!

10 ऐ जानवरो और सब चौपायो!

ऐ रेंगने वालो और परिन्दो!

11 ऐ ज़मीन के बादशाहो और सब उम्मतों!

ऐ उमरा और ज़मीन के सब हाकिमों!

12 ऐ नौजवानो और कुवारियो!

ऐ बूढ़ों और बच्चो!

13 यह सब खुदावन्द के नाम की हम्द करें,

क्योंकि सिर्फ़ उसी का नाम मुम्ताज़ है।

उसका जलाल ज़मीन और आसमान से बुलन्द है।

14 और उसने अपने सब पाक लोगों या'नी अपनी मुक़र्रब क्रौम बनी इस्राईल के फ़ख़र के लिए,  
अपनी क्रौम का सींग बुलन्द किया।

खुदावन्द की हम्द करो!

## 149

1 खुदावन्द की हम्द करो।

खुदावन्द के सामने नया हम्द गाओ,  
और पाक लोगों के मजमे' में उसकी मदहसराई करो!

2 इस्राईल अपने ख़ालिक में खुश रहे,  
फ़र्ज़न्दान — ए — सिय्यून अपने बादशाह की वजह से  
खुश हों!

3 वह नाचते हुए उसके नाम की सिताइश करें,

वह दफ़ और सितार पर उसकी मदहसराई करें!

4 क्योंकि खुदावन्द अपने लोगों से ख़ूशनूद रहता है;

वह हलीमों को नज़ात से ज़ीनत बख़्शेगा।

5 पाक लोग जलाल पर फ़ख़र करें,

वह अपने बिस्तरों पर खुशी से नग़मा सराई करें।

6 उनके मुँह में खुदा की तम्ज़ीद,

और हाथ में दोधारी तलवार हो,

7 ताकि क्रौमों से इन्तक़ाम लें,

और उम्मतों को सज़ा दें:

8 उनके बादशाहों को ज़ंजीरों से जकड़ें,

और उनके सरदारों को लोहे की बेड़ियाँ पहनाएं।

9 ताकि उनको वह सज़ा दें जो लिखी है!

उसके सब पाक लोगों को यह मक़ाम हासिल है।

खुदावन्द की हम्द करो!

## 150

1 खुदावन्द की हम्द करो!

तुम खुदा के हैकल में उसकी हम्द करो;

उसकी कुदरत के फ़लक पर उसकी हम्द करो!

2 उसकी कुदरत के कामों की वजह से उसकी हम्द करो;

उसकी बड़ी 'अज़मत के मुताबिक़ उसकी हम्द करो!

3 नरसिंगे की आवाज़ के साथ उसकी हम्द करो;

बरबत और सितार पर उसकी हम्द करो!

4 दफ़ बजाते और नाचते हुए उसकी हम्द करो;

तारदार साज़ों और बांसली के साथ उसकी हम्द करो!

5 बुलन्द आवाज़ झाँझ के साथ उसकी हम्द करो!

ज़ोर से इञ्जनाती झाँझ के साथ उसकी हम्द करो!

6 हर शख्स खुदावन्द की हम्द करे!

खुदावन्द की हम्द करो!

## अम्साल

अम्साल का खास लिखने वाला बादशाह सुलेमान

है। सुलेमान का नाम 1:1, 10:1 और 25:1 में ज़ाहिर होता है। दीगर मज्मून निगार लोगों की एक जमाअत को शामिल करते हैं जैसे अक़लमन्द लोग; आक़िल, आगुर, और लमुएल बादशाह कलाम की दीगर किताबों की तरह ही अम्साल की किताब भी नजात के लिए खुदा के मन्सूबे की तरफ़ इशारा करती है, लेकिन शायद ज्यादा लताफ़त के साथ। इस किताब ने बनी इस्राईल को जीने का सही रास्ता दिखाया, जो खुदा का रास्ता है। यह हो सकता है कि खुदा ने सुलेमान को इस हिस्से के क़लम्बन्द करने के लिए इलहाम दिया हो जो समझ की बातों की बिना पर है जिन को उसने अपनी सारी ज़िन्दगी में ज़ाहिर करता रहा हो।

इस के तस्नीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 971 - 686 क़ब्ल मसीह के बीच में है।

कुछ हज़ार साल पहले बादशाह बतौर सुलेमान की हुकूमत के दौरान इस्राईल में अम्साल की किताब लिखी गई थी, इस की हिक्मत, किसी भी ज़माने में, किसी भी तहज़ीब में नाफ़िज़ कया जा सकता है।

अम्साल की किताब के नाज़रीन व सामईन कई एक हैं। यह वालिदेन को मुखातिब है कि वे अपनी औलाद को सिखाए यह किताब जवान मर्दों और औरतों के लिए भी नाफ़िज़ होती है जो हिक्मत की तलाश कर रहे हैं और आख़िर — ए — कार मौजूदा कलाम के क़ारिईन के लिए जो दीन्दारी और परहेज़गारी की ज़िन्दगी जीना चाहते हैं यह अमली जामा नसीहत, मुहय्या करती है।

अम्साल की किताब में सुलेमान के लिए खुदा की हिक्मत बुलन्द व आला मर्तबा रखता है जिस को वह मुशतरिक व मा'भूली और रोज़ाना की हालत बतौर पेश करता है। ऐसा नज़र आता है कि सुलेमान बादशाह के ध्यान और तवज्जोह से कोई मज्मून बचा ही नहीं। वह तमाम ज़रूरी मुआमलात जो शख़्सी चाल चलन से सरोकार रखता है। जैसे जिन्सी ता'लुकात, कारोबार, दौलत सखावत, पक्का इरादा, तरबियत, क़र्ज़ा, बच्चों की परवरिश, इंसानी सीख व ख़सलत शराब नोशी सियासत, इन्तक़ाम, दीनदारी, परहेज़गारी जैसे कई एक मज़ामीन शामिल किए गये हैं।

हिक्मत

बैरूनी खाका

1. हिक्मत की तासीरें — 1:1-9:18
2. सुलेमान के अम्साल — 10:1-22:16
3. आक़िल की कहावतें — 22:17-29:27
4. आगुर के कलाम — 30:1-33
5. लेमुएल के कलाम — 31:1-31

इस्राईल के बादशाह सुलेमान बिन दाऊद की अम्साल:

- 1 इस्राईल के बादशाह सुलेमान बिन दाऊद की अम्साल:
- 2 हिक्मत और तरबियत हासिल करने, और समझ की बातों का फ़र्क़ करने के लिए,
- 3 'अक़लमंदी और सदाक़त और 'अदल, और रास्ती में तरबियत हासिल करने के लिए;
- 4 सादा दिलों को होशियारी, जवान को 'इल्म और तमीज़ बरूख़ने के लिए,
- 5 ताकि 'अक़लमंद आदमी सुनकर 'इल्म में तरक्की करे और समझदार आदमी दुरुस्त मशवरत तक पहुँचे,
- 6 जिस से मसल और तम्सील को, 'अक़लमंदों की बातों और उनके पोशीदा राज़ों को समझ सके।
- 7 खुदावन्द का ख़ौफ़ 'इल्म की शुरूआत है; लेकिन बेवकूफ़ हिक्मत और तरबियत की हिक़ारत करते हैं।
- 8 ऐ मेरे बेटे, अपने बाप की तरबियत पर कान लगा, और अपनी माँ की ता'लीम को न छोड़;
- 9 क्यूँकि वह तेरे सिर के लिए ज़ीनत का सेहरा, और तेरे गले के लिए तौक़ होंगी।
- 10 ऐ मेरे बेटे, अगर गुनहगार तुझे फुसलाएँ, तू रज़ामंद न होना।
- 11 अगर वह कहें, हमारे साथ चल, हम खून करने के लिए ताक में बैठे, और छिपकर बेगुनाह के लिए नाहक़ घात लगाएँ,
- 12 हम उनको इस तरह ज़िन्दा और पूरा निगल जाएँ जिस तरह पाताल मुर्दों को निगल जाता है।
- 13 हम को हर क़िस्म का 'उम्दा माल मिलेगा, हम अपने घरों को लूट से भर लेंगे;
- 14 तू हमारे साथ मिल जा, हम सबकी एक ही थैली होगी,
- 15 तो ऐ मेरे बेटे, तू उनके साथ न जाना, उनकी राह से अपना पाँव रोकना।
- 16 क्यूँकि उनके पाँव बदी की तरफ़ दौड़ते हैं, और खून बहाने के लिए जल्दी करते हैं।

17 क्यूँकि परिदे की आँखों के सामने,  
जाल बिछाना बेकार है।  
18 और यह लोग तो अपना ही खून करने के लिए ताक  
में बैठते हैं,  
और छिपकर अपनी ही जान की घात लगाते हैं।  
19 नफ़े' के लालची की राहें ऐसी ही हैं,  
ऐसा नफ़ा' उसकी जान लेकर ही छोड़ता है।  
20 हिकमत कूचे में ज़ोर से पुकारती है,  
वह रास्तों में अपनी आवाज़ बलन्द करती है;  
21 वह बाज़ार की भीड़ में चिल्लाती है;  
वह फाटकों के दहलीज़ पर और शहर में यह कहती है:  
22 "ऐ नादानो, तुम कब तक नादानी को दोस्त रखोगे?  
और ठट्ठाबाज़ कब तक ठट्ठाबाज़ी से और बेवकूफ़ कब  
तक 'इल्म से 'अदावत रखेंगे?  
23 तुम मेरी मलामत को सुनकर बाज़ आओ,  
देखो, मैं अपनी रूह तुम पर उँडेलूँगी,  
मैं तुम को अपनी बातें बताऊँगी।  
24 चूँकि मैंने बुलाया और तुम ने इंकार किया मैंने हाथ  
फैलाया और किसी ने खयाल न किया,  
25 बल्कि तुम ने मेरी तमाम मश्वरत को नाचीज़ जाना,  
और मेरी मलामत की बेक्रद्री की;  
26 इसलिए मैं भी तुम्हारी मुसीबत के दिन हसूँगी;  
और जब तुम पर दहशत छा जाएगी तो ठट्ठा मारूँगी।  
27 या'नी जब दहशत तूफ़ान की तरह आ पड़ेगी,  
और आफ़त बगोले की तरह तुम को आ लेगी,  
जब मुसीबत और जाँकनी तुम पर टूट पड़ेगी।  
28 तब वह मुझे पुकारेंगे, लेकिन मैं जवाब न दूँगी;  
और दिल ओ जान से मुझे दूँडेंगे, लेकिन न पाएँगे।  
29 इसलिए कि उन्होंने 'इल्म से 'अदावत रखी,  
और खुदावन्द के खौफ़ को इस्तिथार न किया।  
30 उन्होंने मेरी तमाम मश्वरत की बेक्रद्री की,  
और मेरी मलामत को बेकार जाना।  
31 तब वह अपनी ही चाल चलन का फल खाएँगे,  
और अपने ही मन्सूबों से पेट भरेंगे।  
32 क्यूँकि नादानों की नाफ़रमानी, उनको क़त्ल करेगी,  
और बेवकूफ़ों की बेवकूफी उनकी हलाकत का ज़रिया'  
होगी।  
33 लेकिन जो मेरी सुनता है, वह महफूज़ होगा,  
और आफ़त से निडर होकर इत्मिनान से रहेगा।"

## 2

?????????? ?? ???????

1 ऐ मेरे बेटे, अगर तू मेरी बातों को कुबूल करे,  
और मेरे फ़रमान को निगाह में रखे,

2 ऐसा कि तू हिकमत की तरफ़ कान लगाए,  
और समझ से दिल लगाए,  
3 बल्कि अगर तू 'अक़ल को पुकारे,  
और समझ के लिए आवाज़ बलन्द करे  
4 और उसको ऐसा दूँडें जैसे चाँदी को,  
और उसकी ऐसी तलाश करे जैसी पोशीदा खज़ानों की;  
5 तो तू खुदावन्द के खौफ़ को समझेगा,  
और खुदा के ज़रिए' को हासिल करेगा।  
6 क्यूँकि खुदावन्द हिकमत बरख़्शता है;  
'इल्म — ओ — समझ उसी के मुँह से निकलते हैं।  
7 वह रास्तबाज़ों के लिए मदद तैयार रखता है,  
और रास्तरौ के लिए सिपर है।  
8 ताकि वह 'अदल की राहों की निगहबानी करे,  
और अपने मुक़द्दसों की राह को महफूज़ रखे।  
9 तब तू सदाक़त और 'अदल और रास्ती को,  
बल्कि हर एक अच्छी राह को समझेगा।  
10 क्यूँकि हिकमत तेरे दिल में दाख़िल होगी,  
और 'इल्म तेरी जान को पसंद होगा,  
11 तमीज़ तेरी निगहबान होगी,  
समझ तेरी हिफ़ाज़त करेगा;  
12 ताकि तुझे शरीर की राह से,  
और कजगो से बचाएँ।  
13 जो रास्तबाज़ी की राह को छोड़ते हैं,  
ताकि तारीकी की राहों में चलें,  
14 जो बदकारी से खुश होते हैं,  
और शरारत की कजरवी में खुश रहते हैं,  
15 जिनका चाल चलन ना हमवार,  
और जिनकी राहें टेढ़ी हैं।  
16 ताकि तुझे बेग़ाना 'औरत से बचाएँ,  
या'नी चिकनी चुपड़ी बातें करने वाली पराई 'औरत से,  
17 जो अपनी जवानी के साथी को छोड़ देती है,  
और अपने खुदा के 'अहद को भूल जाती है।  
18 क्यूँकि उसका घर मौत की उतराई पर है,  
और उसकी राहें पाताल को जाती हैं।  
19 जो कोई उसके पास जाता है, वापस नहीं आता;  
और ज़िन्दगी की राहों तक नहीं पहुँचता।  
20 ताकि तू नेकों की राह पर चले,  
और सादिकों की राहों पर क़ाईम रहे।  
21 क्यूँकि रास्तबाज़ मुल्क में बसेंगे,  
और कामिल उसमें आबाद रहेंगे।  
22 लेकिन शरीर ज़मीन पर से काट डाले जाएँगे,  
और दगाबाज़ उससे उखाड़ फेंके जाएँगे।

## 3

१११११११११ १११ १११११ ११११

- 1 ऐ मेरे बेटे, मेरी ता'लीम को फ़रामोश न कर, बल्कि तेरा दिल मेरे हुक्मों को माने,
- 2 क्योंकि तू इनसे उम्र की दराज़ी और बुढ़ापा, और सलामती हासिल करेगा।
- 3 शफ़क़त और सच्चाई तुझ से जुदा न हों, तू उनको अपने गले का तौक़ बनाना, और अपने दिल की तख्ती पर लिख लेना।
- 4 यूँ तू खुदा और इंसान की नज़र में, मक्बूलियत और 'अक्लमन्दी हासिल करेगा।
- 5 सारे दिल से खुदावन्द पर भरोसा कर, और अपनी समझ पर इत्मिनान न कर।
- 6 अपनी सब राहों में उसको पहचान, और वह तेरी रहनुमाई करेगा।
- 7 तू अपनी ही निगाह में 'अक्लमन्द न बन, खुदावन्द से डर और बदी से किनारा कर।
- 8 ये तेरी नाफ़ की सिहत, और तेरी हड़िडियों की ताज़गी होगी।
- 9 अपने माल से और अपनी सारी पैदावार के पहले फलों से, खुदावन्द की ता'ज़ीम कर।
- 10 यूँ तेरे खत्ते भरे रहेंगे, और तेरे हौज़ नई मय से लबरेज़ होंगे।
- 11 ऐ मेरे बेटे, खुदावन्द की तम्बीह को हक़ीर न जान, और उसकी मलामत से बेज़ार न हो;
- 12 क्योंकि खुदावन्द उसी को मलामत करता है जिससे उसे मुहब्बत है, जैसे बाप उस बेटे को जिससे वह खुश है।
- 13 मुबारक है वह आदमी जो हिक्मत को पाता है, और वह जो समझ हासिल करता है,
- 14 क्योंकि इसका हासिल चाँदी के हासिल से, और इसका नफ़ा कुन्दन से बेहतर है।
- 15 वह मरज़ान से ज्यादा बेशबहा है, और तेरी पसंदीदा चीज़ों में बेमिसाल।
- 16 उसके दहने हाथ में उम्र की दराज़ी है, और उसके बाएँ हाथ में दौलत ओ — 'इज़्ज़त।
- 17 उसकी राहें खुश गवार राहें हैं, और उसके सब रास्ते सलामती के हैं।
- 18 जो उसे पकड़े रहते हैं, वह उनके लिए ज़िन्दगी का दरख़्त है, और हर एक जो उसे लिए रहता है, मुबारक है।
- 19 खुदावन्द ने हिक्मत से ज़मीन की बुनियाद डाली; और समझ से आसमान को काईम किया।

- 20 उसी के 'इल्म से गहराओ के सोते फूट निकले, और अफ़लाक़ शबनम टपकाते हैं।
- 21 ऐ मेरे बेटे, 'अक्लमन्दी और तमीज़ की हिफ़ाज़त कर, उनको अपनी आँखों से ओझल न होने दे;
- 22 यूँ वह तेरी जान की हयात, और तेरे गले की ज़ीनत होंगी।
- 23 तब तू बेखटके अपने रास्ते पर चलेगा, और तेरे पाँव को टेस न लगेगी।
- 24 जब तू लेटेगा तो ख़ौफ़ न खाएगा, बल्कि तू लेट जाएगा और तेरी नींद मीठी होगी।
- 25 अचानक दहशत से ख़ौफ़ न खाना, और न शरीरों की हलाक़त से, जब वह आए;
- 26 क्योंकि खुदावन्द तेरा सहारा होगा, और तेरे पाँव को फ़ँस जाने से महफूज़ रखेगा।
- 27 भलाई के हक़दार से उसे किनारा न करना जब तेरे मुक़द्दर में हो।
- 28 जब तेरे पास देने को कुछ हो, तो अपने पड़ोसी से यह न कहना, अब जा, फिर आना मैं तुझे कल दूँगा।
- 29 अपने पड़ोसी के खिलाफ़ बुराई का मन्सूबा न बाँधना, जिस हाल कि वह तेरे पड़ोस में बेखटके रहता है।
- 30 अगर किसी ने तुझे नुक़सान न पहुँचाया हो, तू उससे बे वजह झगड़ा न करना।
- 31 तुन्दखू आदमी पर जलन न करना, और उसके किसी चाल चलन को इस्तिyar न करना;
- 32 क्योंकि कज़रौ से खुदावन्द को नफ़रत लेकिन रास्तबाज़ उसके महरम — ए — राज़ हैं।
- 33 शरीरों के घर पर खुदावन्द की ला'नत है, लेकिन सादिकों के मस्कन पर उसकी बरक़त है।
- 34 यक़ीनन वह ठठ्ठाबाज़ों पर ठठ्ठे मारता है, लेकिन फ़रोतनों पर फ़ज़ल करता है।
- 35 'अक्लमन्द जलाल के वारिस होंगे, लेकिन बेवकूफ़ों की तरक्की शर्मिन्दगी होगी।

## 4

११ ११११ ११ १११ ११११

- 1 ऐ मेरे बेटो, बाप की तरबियत पर कान लगाओ, और समझ हासिल करने के लिए तवज्जुह करो।
- 2 क्योंकि मैं तुम को अच्छी तल्कीन करता तुम मेरी ता'लीम को न छोड़ना।
- 3 क्योंकि मैं भी अपने बाप का बेटा था, और अपनी माँ की निगाह में नाज़ुक और अकेला लाडला।
- 4 बाप ने मुझे सिखाया और मुझ से कहा,



“मेरी बातें तेरे दिल में रहें, मेरे फ़रमान बजा ला और ज़िन्दा रह।

5 हिकमत हासिल कर, समझ हासिल कर, भूलना मत और मेरे मुँह की बातों से नाफ़रमान न होना।

6 हिकमत को न छोड़ना, वह तेरी हिफ़ाज़त करेगी; उससे मुहब्बत रखना, वह तेरी निगहबान होगी।

7 हिकमत अफ़ज़ल असल है, फिर हिकमत हासिल कर; बल्कि अपने तमाम हासिलात से समझ हासिल कर;

8 उसकी ता'ज़ीम कर, वह तुझे सरफ़राज़ करेगी; जब तू उसे गले लगाएगा, वह तुझे 'इज़ज़त बख़्शेगी।

9 वह तेरे सिर पर ज़ीनत का सेहरा बाँधेगी; और तुझ को खूबसूरती का ताज 'अता करेगी।”

10 ऐ मेरे बेटे, सुन और मेरी बातों को कुबूल कर, और तेरी ज़िन्दगी के दिन बहुत से होंगे।

11 मैंने तुझे हिकमत की राह बताई है; और राह — ए — रास्त पर तेरी राहनुमाई की है।

12 जब तू चलेगा तेरे क़दम कोताह न होंगे; और अगर तू दौड़े तो ठोकर न खाएगा।

13 तरबियत को मज़बूती से पकड़े रह, उसे जाने न दे; उसकी हिफ़ाज़त कर क्योंकि वह तेरी ज़िन्दगी है।

14 शरीरों के रास्ते में न जाना, और बुरे आदमियों की राह में न चलना।

15 उससे बचना, उसके पास से न गुज़रना, उससे मुड़कर आगे बढ़ जाना;

16 क्योंकि वह जब तक बुराई न कर लें सोते नहीं; और जब तक किसी को गिरा न दें उनकी नींद जाती रहती है।

17 क्योंकि वह शरारत की रोटी खाते, और जुल्म की मय पीते हैं।

18 लेकिन सादिकों की राह सुबह की रोशनी की तरह है, जिसकी रोशनी दो पहर तक बढ़ती ही जाती है।

19 शरीरों की राह तारीकी की तरह है; वह नहीं जानते कि किन चीज़ों से उनको ठोकर लगती है।

20 ऐ मेरे बेटे, मेरी बातों पर तवज्जुह कर, मेरे कलाम पर कान लगा।

21 उसको अपनी आँख से ओझल न होने दे, उसको अपने दिल में रख।

22 क्योंकि जो इसको पा लेते हैं, यह उनकी ज़िन्दगी, और उनके सारे जिस्म की सिहत है।

23 अपने दिल की खूब हिफ़ाज़त कर; क्योंकि ज़िन्दगी का सर चश्मा वही है।

24 कजगो मुँह तुझ से अलग रहे, दरोगगो लब तुझ से दूर हों।

25 तेरी आँखें सामने ही नज़र करें, और तेरी पलके सीधी रहें।

26 अपने पाँव के रास्ते को हमवार बना, और तेरी सब राहें क़ाईम रहें।

27 न दहने मुड़ न बाएँ; और पाँव को बदी से हटा ले।

## 5

????? ??? ?? ?????

1 ऐ मेरे बेटे! मेरी हिकमत पर तवज्जुह कर, मेरे समझ पर कान लगा;

2 ताकि तू तमीज़ को महफूज़ रखे, और तेरे लब 'इल्म के निगहबान हों;

3 क्योंकि बेगाना 'औरत के होटों से शहद टपकता है, और उसका मुँह तेल से ज्यादा चिकना है;

4 लेकिन उसका अन्जाम अज़दहे की तरह तलख़, और दो धारी तलवार की तरह तेज़ है।

5 उसके पाँव मौत की तरफ़ जाते हैं, उसके क़दम पाताल तक पहुँचते हैं।

6 इसलिए उसे ज़िन्दगी का हमवार रास्ता नहीं मिलता; उसकी राहें बेठिकाना हैं, पर वह बेख़बर है।

7 इसलिए ऐ मेरे बेटो, मेरी सुनो, और मेरे मुँह की बातों से नाफ़रमान न हो।

8 उस 'औरत से अपनी राह दूर रख, और उसके घर के दरवाज़े के पास भी न जा;

9 ऐसा न हो कि तू अपनी आबरू किसी ग़ैर के, और अपनी उम्र बेरहम के हवाले करे।

10 ऐसा न हो कि बेगाने तेरी कुव्वत से सेर हों, और तेरी कमाई किसी ग़ैर के घर जाए;

11 और जब तेरा गोश्त और तेरा जिस्म घुल जाये तो तू अपने अन्जाम पर नोहा करे;

12 और कहे, “मैंने तरबियत से कैसी 'अदावत रखी, और मेरे दिल ने मलामत को हक़ीर जाना।

13 न मैंने अपने उस्तादों का कहा माना, न अपने तरबियत करने वालों की सुनी।

14 मैं जमा'अत और मजलिस के बीच, क़रीबन सब बुराइयों में मुव्तिला हुआ।”

15 तू पानी अपने ही हौज़ से और बहता पानी अपने ही चश्मे से पीना

16 क्या तेरे चश्मे बाहर बह जाएँ, और पानी की नदियाँ कूचों में?

17 वह सिर्फ़ तेरे ही लिए हों, न तेरे साथ ग़ैरों के लिए भी।

18 तेरा सोता मुबारक हो और तू अपनी जवानी की बीबी के साथ खुश रह।

19 प्यारी हिरनी और दिल फ़रेब गजाला की तरह उसकी छातियाँ तुझे हर वक़्त आसूदह करें और उसकी मुहब्बत तुझे हमेशा फ़रेफ़ता रखे।  
 20 ऐ मेरे बेटे, तुझे बेगाना 'औरत क्यों फ़रेफ़ता करे और तू ग़ैर 'औरत से क्यों हम आगोश हो?  
 21 क्योंकि इंसान की राहें खुदावन्द की आँखों के सामने हैं और वही सब रास्तों को हमवार बनाता है।  
 22 शरीर को उसी की बदकारी पकड़ेगी, और वह अपने ही गुनाह की रस्सियों से जकड़ा जाएगा।  
 23 वह तरबियत न पाने की वजह से मर जायेगा और अपनी सख़्त बेवकूफ़ी की वजह से गुमराह हो जायेगा।

## 6

\*\*\*\*\*

1 ऐ मेरे बेटे, अगर तू अपने पड़ोसी का ज़ामिन हुआ है, अगर तू हाथ पर हाथ मारकर किसी बेगाने का ज़िम्मेदार हुआ है,  
 2 तो तू अपने ही मुँह की बातों में फंसा, तू अपने ही मुँह की बातों से पकड़ा गया।  
 3 इसलिए ऐ मेरे बेटे, क्योंकि तू अपने पड़ोसी के हाथ में फँस गया है, अब यह कर और अपने आपको बचा ले, जा, खाकसार बनकर अपने पड़ोसी से इसरार कर।  
 4 तू न अपनी आँखों में नींद आने दे, और न अपनी पलकों में झपकी।  
 5 अपने आपको हरनी की तरह और सय्याद के हाथ से, और चिड़िया की तरह चिड़ीमार के हाथ से छुड़ा।  
 6 ऐ काहिल, चींटी के पास जा, चाल चलन पर ग़ौर कर और 'अक्लमंद बन।  
 7 जो बावजूद यह कि उसका न कोई सरदार, न नाज़िर न हाकिम है,  
 8 गर्मी के मौसिम में अपनी ख़ुराक मुहय्या करती है, और फ़सल कटने के वक़्त अपनी ख़ुराक जमा' करती है।  
 9 ऐ काहिल, तू कब तक पड़ा रहेगा? तू नींद से कब उठेगा?  
 10 थोड़ी सी नींद, एक और झपकी, ज़रा पड़े रहने को हाथ पर हाथ:  
 11 इसी तरह तेरी ग़रीबी राहज़न की तरह, और तेरी तंगदस्ती हथियारबन्द आदमी की तरह आ पड़ेगी।  
 12 खबीस — ओ — बदकार आदमी, टेढ़ी तिरछी ज़बान लिए फिरता है।  
 13 वह आँख मारता है, वह पाँव से बातें, और ऊँगलियों से इशारा करता है।

14 उसके दिल में कज़ी है, वह बुराई के मन्सूबे बाँधता रहता है, वह फ़ितना अंगेज़ है।  
 15 इसलिए आफ़त उस पर अचानक आ पड़ेगी, वह एकदम तोड़ दिया जाएगा और कोई चारा न होगा।  
 16 छः चीज़ें हैं जिनसे खुदावन्द को नफ़रत है, बल्कि सात हैं जिनसे उसे नफ़रत है:  
 17 ऊँची आँखें, झूटी ज़बान, बेगुनाह का खून बहाने वाले हाथ,  
 18 बुरे मन्सूबे बाँधने वाला दिल, शरारत के लिए तेज़ रफ़्तार पाँव,  
 19 झूटा गवाह जो दरोहगोई करता है, और जो भाइयों में निफ़ाक़ डालता है।  
 20 ऐ मेरे बेटे, अपने बाप के फ़रमान को बजा ला, और अपनी माँ की ता'लीम को न छोड़।  
 21 इनको अपने दिल पर बाँधे रख, और अपने गले का तौक़ बना ले।  
 22 यह चलते वक़्त तेरी रहबरी, और सोते वक़्त तेरी निगहबानी, और जागते वक़्त तुझ से बातें करेगी।  
 23 क्योंकि फ़रमान चिराग़ है और ता'लीम नूर, और तरबियत की मलामत ज़िन्दगी की राह है,  
 24 ताकि तुझ को बुरी 'औरत से बचाए, या'नी बेगाना 'औरत की ज़बान की चापलूसी से।  
 25 तू अपने दिल में उसके हुस्न पर 'आशिक़ न हो, और वह तुझ को अपनी पलकों से शिकार न करे।  
 26 क्योंकि धोके की वजह से आदमी टुकड़े का मुहताज़ हो जाता है, और ज़ानिया क्रीमती जान का शिकार करती है।  
 27 क्या मुम्किन है कि आदमी अपने सीने में आग रखे, और उसके कपड़े न जलें?  
 28 या कोई अंगारों पर चले, और उसके पाँव न झुलसें?  
 29 वह भी ऐसा है जो अपने पड़ोसी की बीवी के पास जाता है; जो कोई उसे छुए बे सज़ा न रहेगा।  
 30 चोर अगर भूक के मारे अपना पेट भरने को चोरी करे, तो लोग उसे हक़ीर नहीं जानते;  
 31 लेकिन अगर वह पकड़ा जाए तो सात गुना भरेगा, उसे अपने घर का सारा माल देना पड़ेगा।  
 32 जो किसी 'औरत से ज़िना करता है वह बे'अक्ल है; वही ऐसा करता है जो अपनी जान को हलाक करना चाहता है।  
 33 वह ज़ख़्म और ज़िल्लत उठाएगा,

और उसकी रुस्वाई कभी न मिटेगी।

34 क्यूँकि गैरत से आदमी ग़ज़बनाक होता है,

और वह इन्तिक्राम के दिन नहीं छोड़ेगा।

35 वह कोई फ़िदिया मंज़ूर नहीं करेगा,

और चाहे तू बहुत से इन'आम भी दे तोभी वह राज़ी न होगा।

## 7

????? ?? ?? ????? ?? ????? ?????? ????  
????????? ?????

1 ऐ मेरे बेटे, मेरी बातों को मान,

और मेरे फ़रमान को निगाह में रख।

2 मेरे फ़रमान को बजा ला और ज़िन्दा रह,

और मेरी ता'लीम को अपनी आँख की पुतली जान:

3 उनको अपनी उँगलियों पर बाँध ले,

उनको अपने दिल की तख्ती पर लिख ले।

4 हिकमत से कह, तू मेरी बहन है,

और समझ को अपना रिश्तेदार करार दे;

5 ताकि वह तुझ को पराई 'औरत से बचाएँ,

या'नी बेगाना 'औरत से जो चापलूसी की बातें करती है।

6 क्यूँकि मैंने अपने घर की खिड़की से,

या'नी झरोके में से बाहर निगाह की,

7 और मैंने एक बे'अक़ल जवान को नादानों के बीच देखा,

या'नी नौजवानों के बीच वह मुझे नज़र आया,

8 कि उस 'औरत के घर के पास गली के मोड़ से जा रहा है,

और उसने उसके घर का रास्ता लिया;

9 दिन छिपे शाम के वक़्त,

रात के अंधेरे और तारीकी में।

10 और देखो, वहाँ उससे एक 'औरत आ मिली,

जो दिल की चालाक और कस्बी का लिबास पहने थी।

11 वह गौगाई और खुदसर है,

उसके पाँव अपने घर में नहीं टिकते;

12 अभी वह गली में है, अभी बाज़ारों में,

और हर मोड़ पर घात में बैठती है।

13 इसलिए उसने उसको पकड़ कर चूमा,

और बेहया मुँह से उससे कहने लगी,

14 “सलामती की कुर्बानी के ज़बीहे मुझ पर फ़र्ज़ थे,

आज मैंने अपनी नज़रे अदा की हैं।

15 इसीलिए मैं तेरी मुलाकात को निकली,

कि किसी तरह तेरा दीदार हासिल करूँ, इसलिए तू मुझे मिल गया।

16 मैंने अपने पलंग पर कामदार गालीचे,

और मिस्र के सूत के धारीदार कपड़े बिछाए हैं।

17 मैंने अपने बिस्तर को मुर और ऊद,

और दारचीनी से मु'अत्तर किया है।

18 आ हम सुबह तक दिल भर कर इश्क़ बाज़ी करें

और मुहब्बत की बातों से दिल बहलाएँ

19 क्यूँकि मेरा शौहर घर में नहीं,

उसने दूर का सफ़र किया है।

20 वह अपने साथ रुपये की थैली ले गया;

और पूरे चाँद के वक़्त घर आएगा।”

21 उसने मीठी मीठी बातों से उसको फुसला लिया,

और अपने लबों की चापलूसी से उसको बहका लिया।

22 वह फ़ौरन उसके पीछे हो लिया,

जैसे बैल ज़बह होने को जाता है;

या बेड़ियों में बेवकूफ़ सज़ा पाने को।

23 जैसे परिन्दा जाल की तरफ़ तेज़ जाता है,

और नहीं जानता कि वह उसकी जान के लिए है,

हत्ता कि तीर उसके जिगर के पार हो जाएगा।

24 इसलिए अब ऐ बेटो, मेरी सुनो,

और मेरे मुँह की बातों पर तवज्जुह करो।

25 तेरा दिल उसकी राहों की तरफ़ मायल न हो,

तू उसके रास्तों में गुमराह न होना;

26 क्यूँकि उसने बहुतों को ज़ख्मी करके गिरा दिया है,

बल्कि उसके मक्तूल बेशुमार हैं।

27 उसका घर पाताल का रास्ता है,

और मौत की कोठरियों को जाता है।

## 8

?????????? ?????? ?? ????? ?????????? ??

1 क्या हिकमत पुकार नहीं रही,

और समझ आवाज़ बलंद नहीं कर रहा?

2 वह राह के किनारे की ऊँची जगहों की चोटियों पर,

जहाँ सड़कें मिलती हैं, खड़ी होती है।

3 फाटकों के पास शहर के दहलीज़ पर,

या'नी दरवाज़ों के मदख़ल पर वह ज़ोर से पुकारती है,

4 “ऐ आदमियो, मैं तुम को पुकारती हूँ,

और बनी आदम को आवाज़ देती

5 ऐ सादा दिली होशियारी सीखो;

और ऐ बेवकुफ़ों 'अक़ल दिल बनो।

6 सुनो, क्यूँकि मैं लतीफ़ बातें कहूँगी,

और मेरे लबों से रास्ती की बातें निकलेगी;

7 इसलिए कि मेरा मुँह सच्चाई को बयान करेगा;

और मेरे होंटों को शरारत से नफ़रत है।

8 मेरे मुँह की सब बातें सदाक़त की हैं,

उनमें कुछ टेढ़ा तिरछा नहीं है।

9 समझने वाले के लिए वह सब साफ़ हैं,

और 'इल्म हासिल करने वालों के लिए रास्त हैं।

10 चाँदी को नहीं, बल्कि मेरी तरबियत को कुबूल करो,  
और कुंदन से बढ़कर 'इल्म को;  
11 क्योंकि हिकमत मरजान से अफ़ज़ल है,  
और सब पसन्दीदा चीज़ों में बेमिसाल।  
12 मुझ हिकमत ने होशियारी को अपना मस्कन बनाया  
है,  
और 'इल्म और तमीज़ को पा लेती हूँ।  
13 खुदावन्द का ख़ौफ़ बदी से 'अदावत है।  
गुरूर और घमण्ड और बुरी राह,  
और टेढ़ी बात से मुझे नफ़रत है।  
14 मशवरत और हिमायत मेरी है,  
समझ मैं ही हूँ मुझ में कुदरत है।  
15 मेरी बदौलत बादशाह सल्तनत करते,  
और उमरा इन्साफ़ का फ़तवा देते हैं।  
16 मेरी ही बदौलत हाकिम हुकूमत करते हैं,  
और सरदार या'नी दुनिया के सब काज़ी भी।  
17 जो मुझ से मुहब्बत रखते हैं मैं उनसे मुहब्बत रखती  
हूँ,  
और जो मुझे दिल से दूँडते हैं, वह मुझे पा लेंगे।  
18 दौलत — ओ — 'इज़्जत मेरे साथ हैं,  
बल्कि हमेशा दौलत और सदाक़त भी।  
19 मेरा फल सोने से बल्कि कुन्दन से भी बेहतर है,  
और मेरा हासिल ख़ालिस चाँदी से।  
20 मैं सदाक़त की राह पर,  
इन्साफ़ के रास्तों में चलती हूँ।  
21 ताकि मैं उनको जो मुझ से मुहब्बत रखते हैं,  
माल के वारिस बनाऊँ, और उनके खज़ानों को भर दूँ।  
22 “खुदावन्द ने इन्तिज़ाम — ए — 'आलम के शुरू में,  
अपनी क़दीमी सन'अतों से पहले मुझे पैदा किया।  
23 मैं अज़ल से या'नी इब्तिदा ही से मुक़रर हुई, इससे  
पहले के ज़मीन थी।  
24 मैं उस वक़्त पैदा हुई जब गहराओ न थे;  
जब पानी से भरे हुए चश्मे भी न थे।  
25 मैं पहाड़ों के क़ाईम किए जाने से पहले,  
और टीलों से पहले पैदा हुई।  
26 जब कि उसने अभी न ज़मीन को बनाया था न मैदानों  
को,  
और न ज़मीन की खाक की शुरु'आत थी।  
27 जब उसने आसमान को क़ाईम किया मैं वहीं थी;  
जब उसने समुन्दर की सतह पर दायरा खींचा;  
28 जब उसने ऊपर अफ़लाक को बराबर किया,  
और गहराओ के सोते मज़बूत हो गए;  
29 जब उसने समुन्दर की हद ठहराई,

ताकि पानी उसके हुक्म को न तोड़े;  
जब उसने ज़मीन की बुनियाद के निशान लगाए।  
30 उस वक़्त माहिर कारीगर की तरह मैं उसके पास थी,  
और मैं हर रोज़ उसकी खुशनूदी थी,  
और हमेशा उसके सामने शादमान रहती थी।  
31 आबादी के लायक़ ज़मीन से शादमान थी,  
और मेरी खुशनूदी बनी आदम की सुहबत में थी।  
32 “इसलिए ऐ बेटो, मेरी सुनो,  
क्योंकि मुबारक हैं वह जो मेरी राहों पर चलते हैं।  
33 तरबियत की बात सुनो, और 'अक़्लमंद बनो,  
और इसको रद्द न करो।  
34 मुबारक है वह आदमी जो मेरी सुनता है,  
और हर रोज़ मेरे फाटकों पर इन्तिज़ार करता है,  
और मेरे दरवाज़ों की चौखटों पर ठहरा रहता है।  
35 क्योंकि जो मुझ को पाता है, ज़िन्दगी पाता है,  
और वह खुदावन्द का मक़बूल होगा।  
36 लेकिन जो मुझ से भटक जाता है, अपनी ही जान को  
नुक़सान पहुँचाता है;  
मुझ से 'अदावत रखने वाले, सब मौत से मुहब्बत रखते  
हैं।”

## 9

1 हिकमत ने अपना घर बना लिया,  
उसने अपने सातों सुतून तराश लिए हैं।  
2 उसने अपने जानवरों को ज़बह कर लिया,  
और अपनी मय मिला कर तैयार कर ली;  
उसने अपना दस्तरख़्वान भी चुन लिया।  
3 उसने अपनी सहेलियों को ख़ाना किया है;  
वह खुद शहर की ऊँची जगहों पर पुकारती है,  
4 “जो सादा दिल है,  
इधर आ जाए!” और बे'अक़्ल से वह यह कहती है,  
5 “आओ, मेरी रोटी में से खाओ,  
और मेरी मिलाई हुई मय में से पियो।  
6 ऐ सादा दिलो, बाज़ आओ और ज़िन्दा रहो,  
और समझ की राह पर चलो।”  
7 ठूठा बाज़ को तम्बीह करने वाला ला'नतान  
उठाएगा,  
और शरीर को मलामत करने वाले पर धब्बा लगेगा।  
8 ठूठाबाज़ को मलामत न कर, ऐसा न हो कि वह तुझ  
से 'अदावत रखने लगे;  
'अक़्लमंद को मलामत कर, और वह तुझ से मुहब्बत  
रखेगा।  
9 'अक़्लमंद की तरबियत कर, और वह और भी  
'अक़्लमंद बन जाएगा;  
सादिक़ को सिखा और वह 'इल्म में तरक्की करेगा।



- 10 खुदावन्द का खौफ़ हिकमत का शुरू है,  
और उस कुदूस की पहचान समझ है।  
11 क्योंकि मेरी बदौलत तेरे दिन बढ़ जाएँगे,  
और तेरी ज़िन्दगी के साल ज्यादा होंगे।  
12 अगर तू 'अक्लमंद है तो अपने लिए,  
और अगर तू ठठठाबाज़ है तो खुद ही भुगतेंगा।

????? ???? ? ? ? ? ? ? ? ?

- 13 बेवकूफ़ 'औरत गौगाई है;  
वह नादान है और कुछ नहीं जानती।  
14 वह अपने घर के दरवाज़े पर,  
शहर की ऊँची जगहों में बैठ जाती है;  
15 ताकि आने जाने वालों को बुलाए,  
जो अपने अपने रास्ते पर सीधे जा रहे हैं,  
16 "सादा दिल इधर आ जाएँ,"  
और बे'अक्ल से वह यह कहती है,  
17 "चोरी का पानी मीठा है,  
और पोशीदगी की रोटी लज़ीज़।"  
18 लेकिन वह नहीं जानता कि वहाँ मुर्दे पड़े हैं,  
और उस 'औरत के मेहमान पाताल की तह में हैं।

## 10

????? ? ? ? ? ? ? ?

- 1 सुलेमान की अम्साल।  
अक्लमंद बेटा बाप को खुश रखता है,  
लेकिन बेवकूफ़ बेटा अपनी माँ का शम है।  
2 शरारत के खज़ाने बेकार हैं,  
लेकिन सदाक़त मौत से छुड़ाती है।  
3 खुदावन्द सादिक़ की जान को फ़ाका न करने देगा,  
लेकिन शरीरों की हवस को दूर — ओ — दफ़ा करेगा।  
4 जो ढीले हाथ से काम करता है, कंगाल हो जाता है;  
लेकिन मेहनती का हाथ दौलतमंद बना देता है।  
5 वह जो गर्मी में जमा' करता है, 'अक्लमंद बेटा है;  
लेकिन वह बेटा जो दिरौ के वक़्त सोता रहता है, शर्म  
का ज़रिया' है।  
6 सादिक़ के सिर पर बरकतें होती हैं,  
लेकिन शरीरों के मुँह को जुल्म ढाँकता है।  
7 रास्त आदमी की यादगार मुबारक है,  
लेकिन शरीरों का नाम सड़ जाएगा।  
8 'अक्लमंद दिल फ़रमान बजा जाएगा, लेकिन बकवासी  
बेवकूफ़ पछाड़ खाएगा।  
9 रास्त रौ बेखट के चलता है,  
लेकिन जो कजरवी करता है ज़ाहिर हो जाएगा।  
10 आँख मारने वाला रंज पहुँचाता है,  
और बकवासी बेवकूफ़ पछाड़ खाएगा।

- 11 सादिक़ का मुँह ज़िन्दगी का चश्मा है,  
लेकिन शरीरों के मुँह को जुल्म ढाँकता है।  
12 'अदावत झगड़े पैदा करती है,  
लेकिन मुहब्बत सब खताओं को ढाँक देती है।  
13 'अक्लमंद के लबों पर हिकमत है,  
लेकिन बे'अक्ल की पीठ के लिए लठ है।  
14 'अक्लमंद आदमी 'इल्म जमा' करते हैं,  
लेकिन बेवकूफ़ का मुँह करीबी हलाकत है।  
15 दौलतमंद की दौलत उसका मज़बूत शहर है,  
कंगाल की हलाकत उसी की तंगदस्ती है।  
16 सादिक़ की मेहनत ज़िन्दगानी का ज़रिया' है,  
शरीर की इक़बालमंदी गुनाह कराती है।  
17 तरबियत पज़ीर ज़िन्दगी की राह पर है,  
लेकिन मलामत को छोड़ने वाला गुमराह हो जाता है।  
18 'अदावत को छिपाने वाला दरोहगो है,  
और तोहमत लगाने वाला बेवकूफ़ है।  
19 कलाम की कसरत खता से खाली नहीं,  
लेकिन होंटों को क़ाबू में रखने वाला 'अक्लमंद है।  
20 सादिक़ की ज़बान खालिस चाँदी है;  
शरीरों के दिल बेक़दर हैं  
21 सादिक़ के होंट बहुतों को गिज़ा पहुँचाते हैं लेकिन  
बेवकूफ़ बे'अक्ली से मरते हैं।  
22 खुदावन्द ही की बरकत दौलत बरूशती है,  
और वह उसके साथ दुख नहीं मिलाता।  
23 बेवकूफ़ के लिए शरारत खेल है,  
लेकिन हिकमत 'अक्लमंद के लिए है।  
24 शरीर का खौफ़ उस पर आ पड़ेगा,  
और सादिक़ों की मुराद पूरी होगी।  
25 जब बगोला गुज़रता है तो शरीर हलाक हो जाता है,  
लेकिन सादिक़ हमेशा की बुनियाद है।  
26 जैसा दाँतों के लिए सिरका,  
और आँखों के लिए धुआँ वैसा ही काहिल अपने भेजने  
वालों के लिए है।  
27 खुदावन्द का खौफ़' उम्र की दराज़ी बरूशता है  
लेकिन शरीरों की ज़िन्दगी कोताह कर दी  
जायेगी।  
28 सादिक़ों की उम्मीद खुशी लाएगी लेकिन शरीरों की  
उम्मीद खाक में मिल जाएगी।  
29 खुदावन्द की राह रास्तबाज़ों के लिए पनाहगाह  
लेकिन बदकिरादारों के लिए हलाकत है,  
30 सादिक़ों को कभी जुम्बिश न होगी लेकिन शरीर  
ज़मीन पर काईम नहीं रहेंगे।  
31 सादिक़ के मुँह से हिकमत निकलती है लेकिन झूठी  
ज़बान काट डाली जायेगी।

32 सादिक के होंट पसन्दीदा बात से आशना है लेकिन शरीरों के मुंह झूट से।

## 11

1 दगा के तराजू से खुदावन्द को नफ़रत है, लेकिन पूरा तौल बाट उसकी खुशी है।  
 2 तकबुर के साथ बुराई आती है, लेकिन खाकसारों के साथ हिकमत है।  
 3 रास्तबाज़ों की रास्ती उनकी राहनुमा होगी, लेकिन दगाबाज़ों की टेढ़ी राह उनको बर्बाद करेगी।  
 4 क्रहर के दिन माल काम नहीं आता, लेकिन सदाक़त मौत से रिहाई देती है।  
 5 कामिल की सदाक़त उसकी राहनुमाई करेगी लेकिन शरीर अपनी ही शरारत से गिर पड़ेगा।  
 6 रास्तबाज़ों की सदाक़त उनको रिहाई देगी, लेकिन दगाबाज़ अपनी ही बद नियती में फँस जाएँगे।  
 7 मरने पर शरीर का उम्मीद खाक में मिल जाता है, और ज़ालिमों की उम्मीद बर्बाद हो जाती है।  
 8 सादिक़ मुसीबत से रिहाई पाता है, और शरीर उसमें पड़ जाता है।  
 9 बेदीन अपनी बातों से अपने पड़ोसी को हलाक करता है लेकिन सादिक़ 'इल्म के ज़रिए' से रिहाई पाएगा।  
 10 सादिक़ों की खुशहाली से शहर खुश होता है। और शरीरों की हलाकत पर खुशी की ललकार होती है।  
 11 रास्तबाज़ों की दुआ से शहर सरफ़राज़ी पाता है, लेकिन शरीरों की बातों से बर्बाद होता है।  
 12 अपने पड़ोसी की बे'इज़्जती करने वाला बे'अक़ल है, लेकिन समझदार खामोश रहता है।  
 13 जो कोई लुतरापन करता फिरता है राज़ खोलता है, लेकिन जिसमें वफ़ा की रूह है वह राज़दार है।  
 14 नेक सलाह के बग़ैर लोग तबाह होते हैं, लेकिन सलाहकारों की कसरत में सलामती है।  
 15 जो बेगाने का ज़ामिन होता है सख़्त नुक़सान उठाएगा, लेकिन जिसको ज़मानत से नफ़रत है वह बेख़तर है।  
 16 नेक सीरत 'औरत' इज़्जत पाती है, और तुन्दखू आदमी माल हासिल करते हैं।  
 17 रहम दिल अपनी जान के साथ नेकी करता है, लेकिन बे रहम अपने जिस्म को दुख देता है।  
 18 शरीर की कमाई बेकार है, लेकिन सदाक़त बोलने वाला हकीक़ी अज़ूर पता है।  
 19 सदाक़त पर काईम रहने वाला ज़िन्दगी हासिल करता है, और बदी का हिमायती अपनी मौत को पहुँचता है।

20 कज दिलों से खुदावन्द को नफ़रत है, लेकिन कामिल रफ़्तार उसकी खुशनुदी हैं।  
 21 यक़ीनन शरीर बे सज़ा न छूटेगा, लेकिन सादिक़ों की नसल रिहाई पाएगी।  
 22 बेतमीज़ 'औरत' में ख़ूबसूरती, जैसे सूअर की नाक में सोने की नथ है।  
 23 सादिक़ों की तमन्ना सिर्फ़ नेकी है; लेकिन शरीरों की उम्मीद ग़ज़ब है।  
 24 कोई तो बिथराता है, लेकिन तो भी तरक्की करता है; और कोई सही खर्च से परहेज़ करता है, लेकिन तोभी कंगाल है।  
 25 सखी दिल मोटा हो जाएगा, और सेराब करने वाला खुद भी सेराब होगा।  
 26 जो ग़ल्ला रोक रखता है, लोग उस पर ला'नत करेंगे; लेकिन जो उसे बेचता है उसके सिर पर बरक़त होगी।  
 27 जो दिल से नेकी की तलाश में है मक़बूलियत का तालिब है, लेकिन जो बदी की तलाश में है वह उसी के आगे आएगी।  
 28 जो अपने माल पर भरोसा करता है गिर पड़ेगा, लेकिन सादिक़ हरे पत्तों की तरह सरसब्ज़ होंगे।  
 29 जो अपने घराने को दुख देता है, हवा का वारिस होगा, और बेवकूफ़ अक़ल दिल का खादिम बनेगा।  
 30 सादिक़ का फल ज़िन्दगी का दरख़्त है, और जो 'अक़लमंद' है दिलों को मोह लेता है।  
 31 देख, सादिक़ को ज़मीन पर बदला दिया जाएगा, तो कितना ज़्यादा शरीर और गुनहगार को।

## 12

1 जो तरबियत को दोस्त रखता है, वह 'इल्म को दोस्त रखता है; लेकिन जो तम्बीह से नफ़रत रखता है, वह हैवान है।  
 2 नेक आदमी खुदावन्द का मक़बूल होगा, लेकिन बुरे मन्सूबे बाँधने वाले को वह मुजरिम ठहराएगा।  
 3 आदमी शरारत से पायेदार नहीं होगा लेकिन सादिक़ों की जड़ को कभी जुम्बिश न होगी।  
 4 नेक 'औरत' अपने शौहर के लिए ताज है लेकिन नदामत लाने वाली उसकी हड्डियों में बोसीदगी की तरह है।  
 5 सादिक़ों के खयालात दुरुस्त हैं, लेकिन शरीरों की मश्वरत धोखा है।  
 6 शरीरों की बातें यही हैं कि खून करने के लिए ताक में बैठे, लेकिन सादिक़ों की बातें उनको रिहाई देंगी।

7 शरीर पछाड़ खाते और हलाक होते हैं,  
लेकिन सादिकों का घर काईम रहेगा।  
8 आदमी की ता'रीफ उसकी 'अक्लमंदी के मुताबिक की  
जाती है,  
लेकिन बे'अक्ल ज़लील होगा।  
9 जो छोटा समझा जाता है लेकिन उसके पास एक  
नौकर है,  
उससे बेहतर है जो अपने आप को बड़ा जानता और रोटी  
का मोहताज है।  
10 सादिक अपने चौपाए की जान का खयाल रखता है,  
लेकिन शरीरों की रहमत भी 'ऐन जुल्म है।  
11 जो अपनी ज़मीन में काश्तकारी करता है, रोटी से सेर  
होगा;  
लेकिन बेकारी का हिमायती बे'अक्ल है।  
12 शरीर बदकिरदारों के दाम का मुश्ताक है,  
लेकिन सादिकों की जड़ फलती है।  
13 लबों की खताकारी में शरीर के लिए फंदा है,  
लेकिन सादिक मुसीबत से बच निकलेगा।  
14 आदमी के कलाम का फल उसको नेकी से आसूदा  
करेगा,  
और उसके हाथों के किए का बदला उसको मिलेगा।  
15 बेवकूफ का चाल चलन उसकी नज़र में दुरस्त है,  
लेकिन 'अक्लमंद नसीहत को सुनता है।  
16 बेवकूफ का ग़ज़ब फ़ौरन ज़ाहिर हो जाता है,  
लेकिन होशियार शर्मिन्दगी को छिपाता है।  
17 रास्तगो सदाक़त ज़ाहिर करता है,  
लेकिन झूटा गवाह दगाबाज़ी।  
18 बिना समझे बोलने वाले की बातें तलवार की तरह  
छेदती हैं,  
लेकिन 'अक्लमंद की ज़बान सेहत बरख़्श है।  
19 सच्चे होंट हमेशा तक काईम रहेंगे  
लेकिन झूटी ज़बान सिर्फ़ दम भर की है।  
20 बदी के मन्सूबे बाँधने वालों के दिल में दगा है,  
लेकिन सुलह की मश्वरत देने वालों के लिए खुशी है।  
21 सादिक पर कोई आफ़त नहीं आएगी,  
लेकिन शरीर बला में मुब्तिला होंगे।  
22 झूटे लबों से खुदावन्द को नफ़रत है,  
लेकिन रास्तकार उसकी खुशनूदी, हैं।  
23 होशियार आदमी 'इल्म को छिपाता है,  
लेकिन बेवकूफ़ का दिल बेवकूफी का 'ऐलान करता है।  
24 मेहनती आदमी का हाथ हुक्मराँ होगा,  
लेकिन सुस्त आदमी बाज़ गुज़ार बनेगा।  
25 आदमी का दिल फ़िक्रमंदी से दब जाता है,  
लेकिन अच्छी बात से खुश होता है।

26 सादिक अपने पड़ोसी की रहनुमाई करता है,  
लेकिन शरीरों का चाल चलन उनको गुमराह कर देता  
है।  
27 सुस्त आदमी शिकार पकड़ कर कबाब नहीं करता,  
लेकिन इंसान की गिरानबहा दौलत मेहनती पाता है।  
28 सदाक़त की राह में ज़िन्दगी है,  
और उसके रास्ते में हरगिज़ मौत नहीं।

### 13

1 'अक्लमंद बेटा अपने बाप की ता'लीम को सुनता है,  
लेकिन ठट्ठा बाज़ सरज़निश पर कान नहीं लगाता।  
2 आदमी अपने कलाम के फल से अच्छा खाएगा,  
लेकिन दगाबाज़ों की जान के लिए सितम है।  
3 अपने मुँह की निगहबानी करने वाला अपनी जान की  
हिफ़ाज़त करता है  
लेकिन जो अपने होंट पसारता है, हलाक होगा।  
4 सुस्त आदमी आरज़ू करता है लेकिन कुछ नहीं पाता,  
लेकिन मेहनती की जान सेर होगी।  
5 सादिक को झूट से नफ़रत है,  
लेकिन शरीर नफ़रत अंगेज़ — ओ — रुस्वा होता है।  
6 सदाक़त रास्तरौ की हिफ़ाज़त करती है,  
लेकिन शरारत शरीर को गिरा देती है।  
7 कोई अपने आप को दौलतमंद जताता है लेकिन ग़रीब  
है,  
और कोई अपने आप को कंगाल बताता है लेकिन बड़ा  
मालदार है।  
8 आदमी की जान का कफ़फ़ारा उसका माल है,  
लेकिन कंगाल धमकी को नहीं सुनता।  
9 सादिकों का चिराग़ रोशन रहेगा,  
लेकिन शरीरों का दिया बुझाया जाएगा।  
10 तकब्बुर से सिर्फ़ झगड़ा पैदा होता है,  
लेकिन मश्वरत पसंद के साथ हिकमत है।  
11 जो दौलत बेकारी से हासिल की जाए कम हो जाएगी,  
लेकिन मेहनत से जमा' करने वाले की दौलत बढ़ती  
रहेगी।  
12 उम्मीद के पूरा होने में ताख़ीर दिल को बीमार करती  
है,  
लेकिन आरज़ू का पूरा होना ज़िन्दगी का दरख़्त है।  
13 जो कलाम की तहकीर करता है,  
अपने आप पर हलाकत लाता है; लेकिन जो फ़रमान से  
डरता है, अज़र पाएगा।  
14 'अक्लमंद की ता'लीम ज़िन्दगी का चश्मा है,  
जो मौत के फंदों से छुटकारे का ज़रिया' हो।  
15 समझ की दुरुस्ती मक्बूलियत बरख़्शती है,  
लेकिन दगाबाज़ों की राह कठिन है।

- 16 हर एक होशियार आदमी 'अक्लमंदी से काम करता है,  
पर बेवकूफ अपनी बेवकूफी को फैला देता है।
- 17 शरीर कासिद बला में गिरफ्तार होता है,  
लेकिन ईमानदार एल्ची सहित बरूष है।
- 18 तरबियत को रद्द करने वाला कंगाल और रुस्वा होगा,  
लेकिन वह जो तम्बीह का लिहाज रखता है, 'इज्जत पाएगा।
- 19 जब मुराद पूरी होती है तब जी बहुत खुश होता है,  
लेकिन बदी को छोड़ने से बेवकूफ को नफ़रत है।
- 20 वह जो 'अक्लमंदों के साथ चलता है 'अक्लमंद होगा,  
पर बेवकूफों का साथी हलाक किया जाएगा।
- 21 बदी गुनहगारों का पीछा करती है,  
लेकिन सादिकों को नेक बदला मिलेगा।
- 22 नेक आदमी अपने पोतों के लिए मीरास छोड़ता है,  
लेकिन गुनहगार की दौलत सादिकों के लिए फ़राहम की जाती है।
- 23 कंगालों की खेती में बहुत खुराक होती है,  
लेकिन ऐसे लोग भी हैं जो बे इन्साफ़ी से बर्बाद हो जाते हैं।
- 24 वह जो अपनी छड़ी को बाज़ रखता है, अपने बेटे से नफ़रत रखता है,  
लेकिन वह जो उससे मुहब्बत रखता है, बरवक़्त उसको तम्बीह करता है।
- 25 सादिक खाकर सेर हो जाता है,  
लेकिन शरीर का पेट नहीं भरता।

## 14

- 1 'अक्लमंद औरत अपना घर बनाती है,  
लेकिन बेवकूफ उसे अपने ही हाथों से बर्बाद करती है।
- 2 रास्तरौ खुदावन्द से डरता है,  
लेकिन कजरौ उसकी हिक़ारत करता है।
- 3 बेवकूफ़ में से गुरूर फूट निकलता है,  
लेकिन 'अक्लमंदों के लब उनकी निगहबानी करते हैं।
- 4 जहाँ बैल नहीं, वहाँ चरनी साफ़ है,  
लेकिन गल्ला की अफ़ज़ा इस बैल के ज़ोर से है।
- 5 ईमानदार गवाह झूट नहीं बोलता,  
लेकिन झूठा गवाह झूटी बातें बयान करता है।
- 6 ठट्ठा बाज़ हिकमत की तलाश करता और नहीं पाता,  
लेकिन समझदार को 'इल्म आसानी से हासिल होता है।
- 7 बेवकूफ़ से किनारा कर,  
क्योंकि तू उस में 'इल्म की बातें नहीं पाएगा।
- 8 होशियार की हिकमत यह है कि अपनी राह पहचाने,  
लेकिन बेवकूफ़ की बेवकूफी धोखा है।

- 9 बेवकूफ़ गुनाह करके हँसते हैं,  
लेकिन रास्तकारों में रज़ामंदी है।
- 10 अपनी तल्लू को दिल ही ख़ूब जानता है,  
और बेगाना उसकी खुशी में दख़ल नहीं रखता।
- 11 शरीर का घर बर्बाद हो जाएगा,  
लेकिन रास्त आदमी का खेमा आबाद रहेगा।
- 12 ऐसी राह भी है जो इंसान को सीधी मा'लूम होती है,  
लेकिन उसकी इन्तिहा में मौत की राहें हैं।
- 13 हँसने में भी दिल ग़मगीन है,  
और शादमानी का अंजाम ग़म है।
- 14 नाफ़रमान दिल अपने चाल चलन का बदला पाता है,  
और नेक आदमी अपने काम का।
- 15 नादान हर बात का यक़ीन कर लेता है,  
लेकिन होशियार आदमी अपने चाल चलन को देखता भालता है।
- 16 'अक्लमंद डरता है और बदी से अलग रहता है,  
लेकिन बेवकूफ़ झुंझलाता है और बेखौफ़ रहता है।
- 17 जूद रंज बेवकूफी करता है,  
और बुरे मन्सुबे बाँधने वाला धिनौना है।
- 18 नादान हिमाक़त की मीरास पाते हैं,  
लेकिन होशियारों के सिर लेकिन 'इल्म का ताज है।
- 19 शरीर नेकों के सामने झुकते हैं,  
और खबीस सादिकों के दरवाज़ों पर।
- 20 कंगाल से उसका पड़ोसी भी बेज़ार है,  
लेकिन मालदार के दोस्त बहुत हैं।
- 21 अपने पड़ोसी को हक़ीर जानने वाला गुनाह करता है,  
लेकिन कंगाल पर रहम करने वाला मुबारक है।
- 22 क्या बदी के मूजिद गुमराह नहीं होते?  
लेकिन शफ़क़त और सच्चाई नेकी के मूजिद के लिए हैं।
- 23 हर तरह की मेहनत में नफ़ा है,  
लेकिन मुँह की बातों में महज़ मुहताजी है।
- 24 'अक्लमंदों का ताज उनकी दौलत है,  
लेकिन बेवकूफ़ की बेवकूफी ही बेवकूफी है।
- 25 सच्चा गवाह जान बचाने वाला है,  
लेकिन झूठा गवाह दगाबाज़ी करता है।
- 26 खुदावन्द के खौफ़ में क़वी उम्मीद है,  
और उसके फ़र्जन्दों को पनाह की जगह मिलती है।
- 27 खुदावन्द का खौफ़ ज़िन्दगी का चश्मा है,  
जो मौत के फंदों से छुटकारे का ज़रिया है।
- 28 रि'आया की कसरत में बादशाह की शान है,  
लेकिन लोगों की कमी में हाकिम की तबाही है।
- 29 जो क़हर करने में धीमा है,  
बड़ा 'अक्लमन्द है लेकिन वह जो बेवकूफ़ है हिमाक़त को बढ़ाता है।



30 मुत्तमइन दिल, जिस्म की जान है,  
लेकिन जलन हड्डियों की बूसीदिगी है।  
31 गरीब पर जुल्म करने वाला उसके खालिक की इहानत  
करता है,  
लेकिन उसकी ता'जीम करने वाला मुहताजों पर रहम  
करता है।  
32 शरीर अपनी शरारत में पस्त किया जाता है,  
लेकिन सादिक मरने पर भी उम्मीदवार है।  
33 हिकमत 'अक्लमंद के दिल में क्राईम रहती है,  
लेकिन बेवकूफों का दिली राज़ खुल जाता है।  
34 सदाकत कौम को सरफ़राज़ी बख़्शती है,  
लेकिन गुनाह से उम्मतों की रुस्वाई है।  
35 'अक्लमंद खादिम पर बादशाह की नज़र — ए —  
इनायत है,  
लेकिन उसका क्रहर उस पर है जो रुस्वाई का ज़रिया' है।

## 15

1 नर्म जवाब क्रहर को दूर कर देता है,  
लेकिन कड़वी बातें ग़ज़ब अंगेज़ हैं।  
2 'अक्लमंदों की ज़बान 'इल्म का दुरुस्त बयान करती है,  
लेकिन बेवकूफ़ का मुँह हिमाक़त उगलता है।  
3 खुदावन्द की आँखें हर जगह हैं  
और नेकों और बंदों की निगरान हैं।  
4 सहित बख़्श ज़बान ज़िन्दगी का दरख़्त है,  
लेकिन उसकी कजगोई रूह की शिकस्तगी का ज़रिया  
है।  
5 बेवकूफ़ अपने बाप की तरबियत को हक़ीर जानता है,  
लेकिन तम्बीह का लिहाज़ रखने वाला होशियार हो  
जाता है।  
6 सादिक के घर में बड़ा ख़ज़ाना है,  
लेकिन शरीर की आमदनी में परेशानी है।  
7 'अक्लमंदों के लब 'इल्म फैलाते हैं,  
लेकिन बेवकूफ़ों के दिल ऐसे नहीं।  
8 शरीरों के ज़बीहे से खुदावन्द को नफ़रत है,  
लेकिन रास्तकार की दुआ उसकी खुशनूदी है।  
9 शरीरों का चाल चलन से खुदावन्द को नफ़रत है,  
लेकिन वह सदाकत के पैरों से मुहब्बत रखता है।  
10 राह से भटकने वाले के लिए सख़्त तादीब है,  
और तम्बीह से नफ़रत करने वाला मरेगा।  
11 जब पाताल और जहन्नुम खुदावन्द के सामने खुले  
हैं,  
तो बनी आदम के दिल का क्या ज़िक्र?  
12 ठठ्ठाबाज़ तम्बीह को दोस्त नहीं रखता,  
और 'अक्लमंदों की मजलिस में हरगिज़ नहीं जाता।  
13 खुश दिली चेहरे की रौनक पैदा करती है,

लेकिन दिल की ग़मगीनी से इंसान शिकस्ता खातिर  
होता है।  
14 समझदार का दिल 'इल्म का तालिब है,  
लेकिन बेवकूफ़ों की खुराक बेवकूफी है।  
15 मुसीबत ज़दा के तमाम दिन बुरे हैं,  
लेकिन खुश दिल हमेशा ज़श्न करता है।  
16 थोड़ा जो खुदावन्द के ख़ौफ़ के साथ हो,  
उस बड़े ख़ज़ाने से जो परेशानी के साथ हो, बेहतर है।  
17 मुहब्बत वाले घर में ज़रा सा सागपात,  
'अदावत वाले घर में पले हुए बैल से बेहतर है।  
18 ग़ज़बनाक आदमी फ़ितना खड़ा करता है,  
लेकिन जो क्रहर में धीमा है झगड़ा मिटाता है।  
19 काहिल की राह काँटों की आड़ सी है,  
लेकिन रास्तकारों का चाल चलन शाहराह की तरह है।  
20 'अक्लमंद बेटा बाप को खुश रखता है,  
लेकिन बेवकूफ़ अपनी माँ की तहक़ीर करता है।  
21 बे'अक्ल के लिए बेवकूफी शादमानी का ज़रिया' है,  
लेकिन समझदार अपने चाल चलन को दुरुस्त करता है।  
22 सलाह के बग़ैर इरादे पूरे नहीं होते,  
लेकिन सलाहकारों की कसरत से क़याम पाते हैं।  
23 आदमी अपने मुँह के जवाब से खुश होता है,  
और बामौका' बात क्या खूब है।  
24 'अक्लमंद के लिए ज़िन्दगी की राह ऊपर को जाती  
है,  
ताकि वह पाताल में उतरने से बच जाए।  
25 खुदावन्द मगरूरों का घर ढा देता है,  
लेकिन वह बेवा के सिवाने को क्राईम करता है।  
26 बुरे मन्सूबों से खुदावन्द को नफ़रत है  
लेकिन पाक लोगों का कलाम पसंदीदा है।  
27 नफ़े' का लालची अपने घराने को परेशान करता है,  
लेकिन वह जिसकी रिश्तत से नफ़रत है ज़िन्दा रहेगा।  
28 सादिक का दिल सोचकर जवाब देता है,  
लेकिन शरीरों का मुँह बुरी बातें उगलता है।  
29 खुदावन्द शरीरों से दूर है,  
लेकिन वह सादिकों की दुआ सुनता है।  
30 आँखों का नूर दिल को खुश करता है,  
और खुश ख़बरी हड्डियों में फ़रबही पैदा करती है।  
31 जो ज़िन्दगी बख़्श तम्बीह पर कान लगाता है,  
'अक्लमंदों के बीच सुकूनत करेगा।  
32 तरबियत को रद्द करने वाला अपनी ही जान का  
दुश्मन है,  
लेकिन तम्बीह पर कान लगाने वाला समझ हासिल  
करता है।  
33 खुदावन्द का ख़ौफ़ हिकमत की तरबियत है,

और सरफ़राज़ी से पहले फ़रोतनी है।

## 16

- 1 दिल की तदबीरें इंसान से हैं,  
लेकिन ज़बान का जवाब खुदावन्द की तरफ़ से है।
- 2 इंसान की नज़र में उसके सब चाल चलन पाक हैं,  
लेकिन खुदावन्द रूहों को जाँचता है।
- 3 अपने सब काम खुदावन्द पर छोड़ दे,  
तो तेरे इरादे क़ाईम रहेंगे।
- 4 खुदावन्द ने हर एक चीज़ खास मक़सद के लिए बनाई,  
हाँ शरीरों को भी उसने बुरे दिन के लिए बनाया।
- 5 हर एक से जिसके दिल में गुरूर है,  
खुदावन्द को नफ़रत है; यक़ीनन वह बे सज़ा न छूटेगा।
- 6 शफ़क़त और सच्चाई से बदी का और लोग खुदावन्द  
के ख़ौफ़ की वजह से बदी से बाज़ आते हैं।
- 7 जब इंसान का चाल चलन खुदावन्द को पसंद आता है  
तो वह उसके दुश्मनों को भी उसके दोस्त बनाता है।
- 8 सदाक़त के साथ थोड़ा सा माल,  
बे इन्साफ़ी की बड़ी आमदनी से बेहतर है।
- 9 आदमी का दिल अपनी राह ठहराता है  
लेकिन खुदावन्द उसके क़दमों की रहनुमाई करता है।
- 10 कलाम — ए — रब्बानी बादशाह के लबों से  
निकलता है,  
और उसका मुँह 'अदालत करने में ख़ता नहीं करता।
- 11 ठीक तराजू और पलड़े खुदावन्द के हैं,  
थैली के सब तौल बाट उसका काम हैं।
- 12 शरारत करने से बादशाहों को नफ़रत है,  
क्योंकि तख़्त का क़याम सदाक़त से है।
- 13 सादिक़ लब बादशाहों की खुशनूदी हैं,  
और वह सच बोलने वालों को दोस्त रखते हैं।
- 14 बादशाह का क़हर मौत का क़ासिद है,  
लेकिन 'अक्लमंद आदमी उसे ठंडा करता है।
- 15 बादशाह के चेहरे के नूर में ज़िन्दगी है,  
और उसकी नज़र — ए — 'इनायत आख़री बरसात के  
बादल की तरह है।
- 16 हिकमत का हुसूल सोने से बहुत बेहतर है,  
और समझ का हुसूल चाँदी से बहुत पसन्दीदा है।
- 17 रास्तकार आदमी की शाहराह यह है कि बदी से भागे,  
और अपनी राह का निगहबान अपनी जान की हिफ़ाजत  
करता है।
- 18 हलाक़त से पहले तकबूर,  
और ज़वाल से पहले खुदबीनी है।
- 19 ग़रीबों के साथ फ़रोतन बनना,

मुतकब्बिरों के साथ लूट का माल तक़सीम करने से  
बेहतर है।

- 20 जो कलाम पर तवज्जुह करता है,  
भलाई देखेगा; और जिसका भरोसा खुदावन्द पर है,  
मुबारक है।
- 21 'अक्लमंद दिल होशियार कहलाएगा,  
और शीरीन ज़बानी से 'इल्म की फ़िरावानी होती है।
- 22 'अक्लमंद के लिए 'अक्ल हयात का चश्मा है,  
लेकिन बेवकूफ़ की तरबियत बेवकूफ़ ही है।
- 23 'अक्लमंद का दिल उसके मुँह की तरबियत करता है,  
और उसके लबों को 'इल्म बरूषता है।
- 24 दिलपसंद बातें शहद का छूत्ता हैं,  
वह जी को मीठी लगती हैं और हड्डियों के लिए शिफ़ा  
हैं।
- 25 ऐसी राह भी है, जो इंसान को सीधी मा'लूम होती है;  
लेकिन उसकी इन्तिहा में मौत की राहें हैं।
- 26 मेहनत करने वाले की ख्वाहिश उससे काम कराती है,  
क्योंकि उसका पेट उसको उभारता है।
- 27 खबीस आदमी शरारत को खुद कर निकालता है,  
और उसके लबों में जैसे जलाने वाली आग है।
- 28 टेढ़ा आदमी फ़ितना ओंगेज़ है,  
और ग़ीबत करने वाला दोस्तों में जुदाई डालता है।
- 29 तुन्दखू आदमी अपने पड़ोसियों को वरगलाता है,  
और उसको बुरी राह पर ले जाता है।
- 30 आँख मारने वाला कज़ी ईजाद करता है,  
और लब चबाने वाला फ़साद खड़ा करता है।
- 31 सफ़ेद सिर शौकत का ताज है;  
वह सदाक़त की राह पर पाया जाएगा।
- 32 जो क़हर करने में धीमा है पहलवान से बेहतर है,  
और वह जो अपनी रूह पर ज़ाबित है उस से जो शहर  
को ले लेता है।
- 33 पर्ची गोद में डाली जाती है,  
लेकिन उसका सारा इन्तिज़ाम खुदावन्द की तरफ़ से है।

## 17

- 1 सलामती के साथ खुशक निवाला इस से बेहतर है,  
कि घर ने 'मत से भरा हो और उसके साथ झगड़ा हो।
- 2 'अक्लमन्द नौकर उस बेटे पर जी रुस्वा करता है  
हुक्मरान होगा,  
और भाइयों में शामिल होकर मीरास का हिस्सा लेगा।
- 3 चाँदी के लिए कुठाली है और सोने के लिए भट्ठी,  
लेकिन दिलों को खुदावन्द जाँचता है।
- 4 बदकिरदार झूठे लबों की सुनता है,  
और झूठा मुफ़सिद ज़बान का शनवा होता है।

5 गरीब पर हँसने वाला, उसके खालिक की बेकदरी करता है;  
और जो औरों की मुसीबत से खुश होता है, बे सज़ा न छूटेगा।

6 बेटों के बेटे बूढ़ों के लिए ताज हैं;  
और बेटों के फ़ख़र का ज़रिया' उनके बाप — दादा हैं।

7 खुश गोई बेवकूफ़ को नहीं सजती,  
तो किस क्रदर कमदरोगोई शरीफ़ को सजेगी।

8 रिश्वत जिसके हाथ में है उसकी नज़रमें गिरान बहा जवाहर है,

और वह जिधर तवज्जुह करता है कामयाब होता है।

9 जो खता पोशी करता है मुहब्बत का तालिब है,  
लेकिन जो ऐसी बात को बार बार छेड़ता है, दोस्तों में जुदाई डालता है।

10 समझदार पर एक झिड़की,  
बेवकूफ़ों पर सौ कोड़ों से ज्यादा असर करती है।

11 शरीर महज़ सरकशी का तालिब है,  
उसके मुकाबले में संगदिल क़ासिद भेजा जाएगा।

12 जिस रीछनी के बच्चे पकड़े गए हों आदमी का उस से दो चार होना,  
इससे बेहतर है के बेवकूफ़ की बेवकूफी में उसके सामने आए।

13 जो नेकी के बदले में बदी करता है, उसके घर से बदी हरगिज़ जुदा न होगी।

14 झगड़े का शुरू' पानी के फूट निकलने की तरह है,  
इसलिए लड़ाई से पहले झगड़े को छोड़ दे।

15 जो शरीर को सादिक और जो सादिक को शरीर ठहराता है,  
खुदावन्द को उन दोनों से नफ़रत है।

16 हिकमत खरीदने को बेवकूफ़ के हाथ में क्रीमत से क्या फ़ाइदा है,

हालाँकि उसका दिल उसकी तरफ़ नहीं?

17 दोस्त हर वक़्त मुहब्बत दिखाता है,  
और भाई मुसीबत के दिन के लिए पैदा हुआ है।

18 बे'अक्ल आदमी हाथ पर हाथ मारता है,  
और अपने पड़ोसी के सामने ज़ामिन होता है।

19 फ़साद पसंद खता पसंद है,  
और अपने दरवाज़े को बलन्द करने वाला हलाकत का तालिब।

20 कजदिला भलाई को न देखेगा,  
और जिसकी ज़बान कजगो है मुसीबत में पड़ेगा।

21 बेवकूफ़ के वालिद के लिए ग़म है,  
क्यूँकि बेवकूफ़ के बाप को खुशी नहीं।

22 शादमान दिल शिफ़ा बरूषता है,

लेकिन अफ़सुर्दा दिली हड्डियों को खुशक कर देती है।

23 शरीर बगल में रिश्वत रख लेता है,  
ताकि 'अदालत की राहें बिगाड़े।

24 हिकमत समझदार के आमने सामने है,  
लेकिन बेवकूफ़ की आँख ज़मीन के किनारों पर लगी हैं।

25 बेवकूफ़ बेटा अपने बाप के लिए ग़म,  
और अपनी माँ के लिए तल्लबी है।

26 सादिक को सज़ा देना,  
और शरीफ़ों को उनकी रास्ती की वजह से मारना, खूब नहीं।

27 साहिब — ए — इल्म कमगो है,  
और समझदार मतीन है।

28 बेवकूफ़ भी जब तक ख़ामोश है, 'अक्लमन्द गिना जाता है;

जो अपने लब बलंद रखता है, होशियार है।

## 18

1 जो अपने आप को सब से अलग रखता है, अपनी स्वाहिश का तालिब है,

और हर मा'कूल बात से बरहम होता है।

2 बेवकूफ़ समझ से खुश नहीं होता,  
लेकिन सिर्फ़ इस से कि अपने दिल का हाल ज़ाहिर करे।

3 शरीर के साथ हिकारत आती है,  
और रुस्वाई के साथ ना क्रदरी।

4 इंसान के मुँह की बातें गहरे पानी की तरह हैं  
और हिकमत का चश्मा बहता नाला है।

5 शरीर की तरफ़दारी करना,  
या 'अदालत में सादिक से बेइन्साफ़ी करना, अच्छा नहीं।

6 बेवकूफ़ के होंट फ़ितना अंगेज़ी करते हैं,  
और उसका मुँह तमाँचों के लिए पुकारता है।

7 बेवकूफ़ का मुँह उसकी हलाकत है,  
और उसके होंट उसकी जान के लिए फ़न्दा हैं।

8 ग़ैबतगो की बातें लज़ीज़ निवाले हैं  
और वह खूब हज़म हो जाती हैं।

9 काम में सुस्ती करने वाला,  
फुज़ूल खर्च का भाई है।

10 खुदावन्द का नाम मज़बूत बुर्ज है,  
सादिक उस में भाग जाता है और अम्न में रहता है

11 दौलतमन्द आदमी का माल उसका मज़बूत शहर,  
और उसके तसव्वुर में ऊँची दीवार की तरह है।

12 आदमी के दिल में तकव्वुर हलाकत का पेशरौ है,  
और फ़रोतनी 'इज़ज़त की पेशवा।

13 जो बात सुनने से पहले उसका जवाब दे,  
यह उसकी बेवकूफी और शर्मिन्दगी है।

14 इंसान की रूह उसकी नातवानी में उसे संभालेगी,  
लेकिन अफ़सुर्दा दिली को कौन बर्दाश्त कर सकता है?  
15 होशियार का दिल 'इल्म हासिल करता है,  
और 'अक्लमन्द' के कान 'इल्म के तालिब हैं।  
16 आदमी का नज़राना उसके लिए जगह कर लेता है,  
और बड़े आदमियों के सामने उसकी रसाई कर देता है।  
17 जो पहले अपना दा'वा बयान करता है रास्त मा'लूम  
होता है,  
लेकिन दूसरा आकर उसकी हकीकत ज़ाहिर करता है।  
18 पर्ची झगड़ों को ख़त्म करती है,  
और ज़बरदस्तों के बीच फ़ैसला कर देती है।  
19 नाराज़ भाई को राज़ी करना मज़बूत शहर ले लेने से  
ज्यादा मुश्किल है,  
और झगड़े क़िले' के बेंडों की तरह हैं।  
20 आदमी की पेट उसके मुँह के फल से भरता है,  
और वह अपने लबों की पैदावार से सेर होता है।  
21 मौत और ज़िन्दगी ज़बान के क़ाबू में हैं,  
और जो उसे दोस्त रखते हैं उसका फल खाते हैं।  
22 जिसको बीवी मिली उसने तोहफ़ा पाया,  
और उस पर खुदावन्द का फ़ज़ल हुआ।  
23 मुहताज़ मिन्नत समाजत करता है,  
लेकिन दौलतमन्द सख़्त जवाब देता है।  
24 जो बहुतों से दोस्ती करता है अपनी बर्बादी के लिए  
करता है,  
लेकिन ऐसा दोस्त भी है जो भाई से ज्यादा मुहब्बत  
रखता है।

## 19

1 रास्तरौ ग़रीब, कजगो और बेवकूफ़ से बेहतर है।  
2 ये भी अच्छा नहीं कि रूह 'इल्म से खाली रहे?  
जो चलने में जल्द बाज़ी करता है, भटक जाता है।  
3 आदमी की बेवकूफी उसे गुमराह करती है,  
और उसका दिल खुदावन्द से बेज़ार होता है।  
4 दौलत बहुत से दोस्त पैदा करती है,  
लेकिन ग़रीब अपने ही दोस्त से बेगाना है।  
5 झूटा गवाह बे सज़ा न छूटेगा,  
और झूट बोलने वाला रिहाई न पाएगा।  
6 बहुत से लोग सखी की खुशामद करते हैं,  
और हर एक आदमी इना'म देने वाले का दोस्त है।  
7 जब मिस्कीन के सब भाई ही उससे नफ़रत करते हैं,  
तो उसके दोस्त कितने ज्यादा उससे दूर भागेंगे।  
वह बातों से उनका पीछा करता है, लेकिन उनको नहीं  
पाता।

8 जो हिकमत हासिल करता है अपनी जान को 'अज़ीज़  
रखता है;  
जो समझ की मुहाफ़िज़त करता है फ़ाइदा उठाएगा।  
9 झूटा गवाह बे सज़ा न छूटेगा,  
और जो झूठ बोलता है फ़ना होगा।  
10 जब बेवकूफ़ के लिए नाज़ — ओ — ने'मत ज़ेबा नहीं  
तो खादिम का शहज़ादों पर हुक्मरान होना और  
भी मुनासिब नहीं।  
11 आदमी की तमीज़ उसको क़हर करने में धीमा बनाती  
है,  
और ख़ता से दरगुज़र करने में उसकी शान है।  
12 बादशाह का ग़ज़ब शेर की गरज की तरह है,  
और उसकी नज़र — ए — 'इनायत घास पर शबनम की  
तरह।  
13 बेवकूफ़ बेटा अपने बाप के लिए बला है,  
और बीवी का झगड़ा रगड़ा सदा का टपका।  
14 घर और माल तो बाप दादा से मीरास में मिलते हैं,  
लेकिन अक्लमंद बीवी खुदावन्द से मिलती है।  
15 काहिली नींद में गर्क कर देती है,  
और काहिल आदमी भूका रहेगा।  
16 जो फ़रमान बजा लाता है अपनी जान की मुहाफ़िज़त  
पर जो अपनी राहों से ग़ाफ़िल है, मरेगा।  
17 जो ग़रीबों पर रहम करता है, खुदावन्द को क़र्ज़ देता  
है,  
और वह अपनी नेकी का बदला पाएगा।  
18 जब तक उम्मीद है अपने बेटे की तादीब किए जा  
और उसकी बर्बादी पर दिल न लगा।  
19 गुस्सावर आदमी सज़ा पाएगा;  
क्योंकि अगर तू उसे रिहाई दे तो तुझे बार बार ऐसा ही  
करना होगा।  
20 मश्वरत को सुन और तरबियत पज़ीर हो,  
ताकि तू आखिर कार 'अक्लमन्द हो जाए।  
21 आदमी के दिल में बहुत से मन्सूबे हैं,  
लेकिन सिर्फ़ खुदावन्द का इरादा ही क़ाईम रहेगा।  
22 आदमी की मक़बूलियत उसके एहसान से है,  
और कंगाल झूठे आदमी से बेहतर है।  
23 खुदावन्द का ख़ौफ़ ज़िन्दगी बख़्श है,  
और खुदा तरस सेर होगा, और बदी से महफूज़ रहेगा।  
24 सुस्त आदमी अपना हाथ थाली में डालता है,  
और इतना भी नहीं करता की फिर उसे अपने मुँह तक  
लाए।  
25 ठट्ठा करने वाले को मार, इससे सादा दिल होशियार  
हो जाएगा,  
और समझदार को तम्बीह कर, वह 'इल्म हासिल करेगा।



26 जो अपने बाप से बदसलूकी करता और माँ को निकाल देता है,  
 शर्मिन्दगी का ज़रिया और रुस्वाई लाने वाला बेटा है।  
 27 ऐ मेरे बेटे, अगर तू 'इल्म से बरगश्ता होता है,  
 तो ता'लीम सुनने से क्या फ़ायदा?  
 28 खबीस गवाह 'अदल पर हँसता है,  
 और शरीर का मुँह बदी निगलता रहता है।  
 29 ठठठा करने वालों के लिए सज़ाएँ ठहराई जाती हैं,  
 और बेवकूफ़ों की पीठ के लिए कोड़े हैं।

## 20

1 मय मसख़रा और शराब हंगामा करने वाली है,  
 और जो कोई इनसे फ़रेब खाता है, 'अक्लमन्द नहीं।  
 2 बादशाह का रो'ब शेर की गरज की तरह है: जो कोई  
 उसे गुस्सा दिलाता है,  
 अपनी जान से बदी करता है।  
 3 झगड़े से अलग रहने में आदमी की 'इज्जत है,  
 लेकिन हर एक बेवकूफ़ झगड़ता रहता है,  
 4 काहिल आदमी जाड़े की वजह हल नहीं चलाता;  
 इसलिए फ़सल काटने के वक़्त वह भीक माँगेगा, और  
 कुछ न पाएगा।  
 5 आदमी के दिल की बात गहरे पानी की तरह है,  
 लेकिन समझदार आदमी उसे खींच निकालेगा।  
 6 अक्सर लोग अपना अपना एहसान जताते हैं,  
 लेकिन वफ़ादार आदमी किसको मिलेगा?  
 7 रास्तरौ सादिक के बाद,  
 उसके बेटे मुबारक होते हैं।  
 8 बादशाह जो तख़्त — ए — 'अदालत पर बैठता है,  
 खुद देखकर हर तरह की बदी को फटकता है।  
 9 कौन कह सकता है कि मैंने अपने दिल को साफ़ कर  
 लिया है;

और मैं अपने गुनाह से पाक हो गया हूँ?

10 दो तरह के तौल बाट और दो तरह के पैमाने,  
 इन दोनों से खुदा को नफ़रत है।  
 11 बच्चा भी अपनी हरकतों से पहचाना जाता है,  
 कि उसके काम नेक — ओ — रास्त हैं कि नहीं।  
 12 सुनने वाले कान और देखने वाली आँख दोनों को  
 खुदावन्द ने बनाया है।  
 13 ख़्वाब दोस्त न हो, कहीं ऐसा तू कंगाल हो जाए;  
 अपनी आँखें खोल कि तू रोटी से सेर होगा।  
 14 खरीदार कहता है, रद्दी है, रद्दी,  
 लेकिन जब चल पड़ता है तो फ़ख़र करता है।  
 15 ज़र — ओ — मरजान की तो कसरत है,  
 लेकिन बेशबहा सरमाया 'इल्म वाले होंट हैं।  
 16 जो बेगाने का ज़ामिन हो, उसके कपड़े छीन ले,

और जो अजनबी का ज़ामिन हो, उससे कुछ गिरवी रख ले।

17 दगा की रोटी आदमी को मीठी लगती है,  
 लेकिन आखिर को उसका मुँह कंकरों से भरा जाता है।  
 18 हर एक काम मश्वरत से ठीक होता है,  
 और तू नेक सलाह लेकर जंग कर।  
 19 जो कोई लुतरापन करता फिरता है,  
 राज़ खोलता है; इसलिए तू मुँहफट से कुछ वास्ता न  
 रख।  
 20 जो अपने बाप या अपनी माँ पर ला'नत करता है,  
 उसका चिराग़ गहरी तारीकी में बुझाया जाएगा।  
 21 अगरचे 'इब्तिदा में मीरास यकलख़्त हासिल हो,  
 तो भी उसका अन्जाम मुबारक न होगा।  
 22 तू यह न कहना, कि मैं बदी का बदला लूँगा।  
 खुदावन्द की आस रख और वह तुझे बचाएगा।  
 23 दो तरह के तौल बाट से खुदावन्द को नफ़रत है,  
 और दगा के तराजू ठीक नहीं।  
 24 आदमी की रफ़्तार खुदावन्द की तरफ़ से है,  
 लेकिन इंसान अपनी राह को क्यूँकर जान सकता है?  
 25 जल्द बाज़ी से किसी चीज़ को मुक़द्दस ठहराना,  
 और मिन्नत मानने के बाद दरियाफ़्त करना, आदमी के  
 लिए फंदा है।  
 26 'अक्लमन्द बादशाह शरीरों को फटकता है,  
 और उन पर दावने का पहिया फिरवाता है।  
 27 आदमी का ज़मीर खुदावन्द का चिराग़ है: जो उसके  
 तमाम अन्दरूनी हाल को दरियाफ़्त करता है।  
 28 शफ़क़त और सच्चाई बादशाह की निगहबान हैं,  
 बल्कि शफ़क़त ही से उसका तख़्त काईम रहता है।  
 29 जवानों का ज़ोर उनकी शौकत है,  
 और बूढ़ों के सफ़ेद बाल उनकी ज़ीनत हैं।  
 30 कोड़ों के ज़ख़्म से बदी दूर होती है,  
 और मार खाने से दिल साफ़ होता।

## 21

1 बादशाह का दिल खुदावन्द के हाथ में है वह उसको  
 पानी के नालों की तरह जिधर चाहता है फेरता  
 है।  
 2 इंसान का हर एक चाल चलन उसकी नज़र में रास्त है,  
 लेकिन खुदावन्द दिलों को जाँचता है।  
 3 सदाक़त और 'अदल, खुदावन्द के नज़दीक कुर्बानी से  
 ज्यादा पसन्दीदा हैं।  
 4 बलन्द नज़री और दिल का तकब्बुर, है।  
 और शरीरों की इक़बालमंदी गुनाह है।  
 5 मेहनती की तदबीरें यक़ीनन फ़िरावानी की वजह हैं,  
 लेकिन हर एक जल्दबाज़ का अंजाम मोहताजी है।

6 दरोगागोई से खजाने हासिल करना,  
बेटिकाना बुखारात और उनके तालिब मौत के तालिब हैं।

7 शरीरों का जुल्म उनको उड़ा ले जाएगा,  
क्योंकि उन्होंने इन्साफ़ करने से इंकार किया है।

8 गुनाह आलूदा आदमी की राह बहुत टेढ़ी है,  
लेकिन जो पाक है उसका काम ठीक है।

9 घर की छत पर एक कोने में रहना,  
झगड़ालू बीवी के साथ बड़े घर में रहने से बेहतर है।

10 शरीर की जान बुराई की मुश्ताक़ है,  
उसका पड़ोसी उसकी निगाह में मक्बूल नहीं होता

11 जब ठठ्ठा करने वाले को सज़ा दी जाती है,  
तो सादा दिल हिकमत हासिल करता है,  
और जब 'अक्लमंद तरबियत पाता है, तो 'इल्म हासिल करता है।

12 सादिक़ शरीर के घर पर ग़ौर करता है;  
शरीर कैसे गिर कर बर्बाद हो गए हैं।

13 जो ग़रीब की आह सुन कर अपने कान बंद कर लेता है,  
वह आप भी आह करेगा और कोई न सुनेगा।

14 पोशीदगी में हदिया देना क़हर को ठंडा करता है,  
और इना'म बग़ल में दे देना ग़ज़ब — ए — शदीद को।

15 इन्साफ़ करने में सादिक़ की शादमानी है,  
लेकिन बदकिरदारों की हलाकत।

16 जो समझ की राह से भटकता है, मुर्दों के गोल में पड़ा रहेगा।

17 'अय्याश कंगाल रहेगा;  
जो मय और तेल का मुश्ताक़ है मालदार न होगा।

18 शरीर सादिक़ का फ़िदिया होगा,  
और दगाबाज़ रास्तबाज़ों के बदले में दिया जाएगा।

19 वीराने में रहना,  
झगड़ालू और चिड़चिड़ी बीवी के साथ रहने से बेहतर है।

20 क़ीमती खजाना और तेल 'अक्लमन्दों के घर में हैं,  
लेकिन बेवकूफ़ उनको उड़ा देता है।

21 जो सदाक़त और शफ़क़त की पैरवी करता है,  
ज़िन्दगी और सदाक़त — ओ — 'इज़्ज़त पाता है।

22 'अक्लमन्द आदमी ज़बरदस्तों के शहर पर चढ़ जाता है,  
और जिस कुव्वत पर उनका भरोसा है, उसे गिरा देता है।

23 जो अपने मुँह और अपनी ज़बान की निगहबानी करता है,  
अपनी जान को मुसीबतों से महफूज़ रखता है।

24 मुतकब्बिर — ओ — मगरूर शख्स जो बहुत तकब्बुर से काम करता है।

25 काहिल की तमन्ना उसे मार डालती है,  
क्योंकि उसके हाथ मेहनत से इंकार करते हैं।

26 वह दिन भर तमन्ना में रहता है,  
लेकिन सादिक़ देता है और दरेग़ नहीं करता।

27 शरीर की कुर्बानी काबिले नफ़रत है,  
खासकर जब वह बुरी नियत से लाता है।

28 झूटा गवाह हलाक़ होगा  
, लेकिन जिस शख्स ने बात सुनी है, वह खामोश न रहेगा।

29 शरीर अपने चहरे को सख़्त करता है,  
लेकिन सादिक़ अपनी राह पर ग़ौर करता है।

30 कोई हिकमत, कोई समझ और कोई मशवरत नहीं,  
जो खुदावन्द के सामने ठहर सके।

31 जंग के दिन के लिए घोड़ा तो तैयार किया जाता है,  
लेकिन फ़तहयाबी खुदावन्द की तरफ़ से है।

## 22

1 नेक नाम बेक़यास खजाने से और एहसान सोने चाँदी से बेहतर है।

2 अमीर — ओ — ग़रीब एक दूसरे से मिलते हैं;  
उन सबका खालिक़ खुदावन्द ही है।

3 होशियार बला को देख कर छिप जाता है;  
लेकिन नादान बढ़े चले जाते और नुक़सान उठाते हैं।

4 दौलत और 'इज़्ज़त — ओ — हयात,  
खुदावन्द के ख़ौफ़ और फ़रोतनी का अज़र हैं।

5 टेढ़े आदमी की राह में काँटे और फन्दे हैं;  
जो अपनी जान की निगहबानी करता है, उनसे दूर रहेगा।

6 लड़के की उस राह में तरबियत कर जिस पर उसे जाना है;  
वह बूढ़ा होकर भी उससे नहीं मुड़ेगा।

7 मालदार ग़रीब पर हुक्मरान होता है,  
और क़र्ज़ लेने वाला क़र्ज़ देने वाले का नौकर है।

8 जो बदी बोता है मुसीबत काटेगा,  
और उसके क़हर की लाठी टूट जाएगी।

9 जो नेक नज़र है बरकत पाएगा,  
क्योंकि वह अपनी रोटी में से ग़रीबों को देता है।

10 ठठ्ठा करने वाले को निकाल दे तो फ़साद जाता रहेगा;  
हाँ झगड़ा रगड़ा और रुस्वाई दूर हो जाएँगे।

11 जो पाक दिली को चाहता है उसके होंटों में लुत्फ़ है,  
और बादशाह उसका दोस्तदार होगा।

12 खुदावन्द की आँखें 'इल्म की हिफाजत करती हैं;  
वह दगाबाजों के कलाम को उलट देता है।  
13 सुस्त आदमी कहता है बाहर शेर खड़ा है!  
मैं गलियों में फाड़ा जाऊँगा।  
14 बेगाना 'औरत का मुँह गहरा गढ़ा है;  
उसमें वह गिरता है जिससे खुदावन्द को नफ़रत है।  
15 हिमाकृत लड़के के दिल से वाबस्ता है,  
लेकिन तरबियत की छड़ी उसको उससे दूर कर देगी।  
16 जो अपने फ़ायदे के लिए ग़रीब पर जुल्म करता है,  
और जो मालदार को देता है, यक़ीनन मोहताज हो जाएगा।

?????? ???? ?? ?????

17 अपना कान झुका और 'अक्लमंदों की बातें सुन,  
और मेरी ता'लीम पर दिल लगा;  
18 क्योंकि यह पसंदीदा है कि तू उनको अपने दिल में  
रख़वे,  
और वह तेरे लबों पर काईम रहें;  
19 ताकि तेरा भरोसा खुदावन्द पर हो,  
मैंने आज के दिन तुझ को हाँ तुझ ही को जता दिया है।  
20 क्या मैंने तेरे लिए मश्वरत और 'इल्म की लतीफ़ बातें  
इसलिए नहीं लिखी हैं, कि  
21 सच्चाई की बातों की हकीक़त तुझ पर जाहिर कर दूँ,  
ताकि तू सच्ची बातें हासिल करके अपने भेजने वालों के  
पास वापस जाए?  
22 ग़रीब को इसलिए न लूट की वह ग़रीब है,  
और मुसीबत ज़दा पर 'अदालत गाह में जुल्म न कर;  
23 क्योंकि खुदावन्द उनकी वक़ालत करेगा,  
और उनके ग़ारतग़रों की जान को ग़ारत करेगा।  
24 गुस्से वर आदमी से दोस्ती न कर,  
और ग़ज़बनाक शख्स के साथ न जा,  
25 ऐसा ना हो तू उसका चाल चलन सीखे,  
और अपनी जान को फंदे में फंसाए। —  
26 तू उनमें शामिल न हो जो हाथ पर हाथ मारते हैं,  
और न उनमें जो क़र्ज़ के ज़ामिन होते हैं।  
27 क्योंकि अगर तेरे पास अदा करने को कुछ न हो,  
तो वह तेरा बिस्तर तेरे नीचे से क्यूँ खींच ले जाए?  
28 उन पुरानी हदों को न सरका,  
जो तेरे बाप — दादा ने बाँधी हैं।  
29 तू किसी को उसके काम में मेहनती देखता है,  
वह बादशाहों के सामने खड़ा होगा;  
वह कम क़द्र लोगों की खिदमत न करेगा।

## 23

1 जब तू हाकिम के साथ खाने बैठे,  
तो ख़ूब ग़ौर कर, कि तेरे सामने कौन है?

2 अगर तू खाऊ है, तो अपने गले पर छुरी रख दे।  
3 उसके मज़ेदार खानों की तमन्ना न कर,  
क्यूँकि वह दगा बाज़ी का खाना है।  
4 मालदार होने के लिए परेशान न हो;  
अपनी इस 'अक्लमन्दी से बाज़ आ।  
5 क्या तू उस चीज़ पर आँख लगाएगा जो है ही नहीं?  
लेकिन लगा कर आसमान की तरफ़ उड़ जाती है?  
6 तू तंग चश्म की रोटी न खा,  
और उसके मज़ेदार खानों की तमन्ना न कर;  
7 क्यूँकि जैसे उसके दिल के खयाल हैं वह वैसा ही है।  
वह तुझ से कहता है खा और पी,  
लेकिन उसका दिल तेरी तरफ़ नहीं  
8 जो निवाला तूने खाया है तू उसे उगल देगा,  
और तेरी मीठी बातें बे मतलब होंगी  
9 अपनी बातें बेवकूफ़ को न सुना,  
क्यूँकि वह तेरे 'अक्लमन्दी के कलाम की ना क़द्री  
करेगा।  
10 पुरानी हदों को न सरका,  
और यतीमों के खेतों में दखल न कर,  
11 क्यूँकि उनका रिहाई बख़्शने वाला ज़बरदस्त है;  
वह खुद ही तेरे खिलाफ़ उनकी वक़ालत करेगा।  
12 तरबियत पर दिल लगा,  
और 'इल्म की बातें सुन।  
13 लड़के से तादीब को दरेगा न कर;  
अगर तू उसे छड़ी से मारेगा तो वह मर न जाएगा।  
14 तू उसे छड़ी से मारेगा,  
और उसकी जान को पाताल से बचाएगा।  
15 ऐ मेरे बेटे, अगर तू 'अक्लमंद दिल है,  
तो मेरा दिल, हाँ मेरा दिल खुश होगा।  
16 और जब तेरे लबों से सच्ची बातें निकलेंगी,  
तो मेरा दिल शादमान होगा।  
17 तेरा दिल गुनहगारों पर रश्क न करे,  
बल्कि तू दिन भर खुदावन्द से डरता रह।  
18 क्यूँकि बदला यक़ीनी है,  
और तेरी आस नहीं टूटेगी।  
19 ऐ मेरे बेटे, तू सुन और 'अक्लमंद बन,  
और अपने दिल की रहबरी कर।  
20 तू शराबियों में शामिल न हो,  
और न हरीस कबाबियों में,  
21 क्यूँकि शराबी और खाऊ कंगाल हो जाएँगे और नींद  
उनको चीथड़े पहनाएगी।  
22 अपने बाप का जिससे तू पैदा हुआ सुनने वाला हो,  
और अपनी माँ को उसके बुढ़ापे में हक़ीर न जान।  
23 सच्चाई की मोल ले और उसे बेच न डाल;

हिकमत और तरबियत और समझ को भी।

24 सादिक का बाप निहायत खुश होगा;  
और अक्लमंद का बाप उससे शादमानी करेगा।

25 अपने माँ बाप को खुश कर,  
अपनी वालिदा को शादमान रख।

26 ऐ मेरे बेटे, अपना दिल मुझ को दे,  
और मेरी राहों से तेरी आँखें खुश हों।

27 क्योंकि फ़ाहिशा गहरी खन्दक है,  
और बेगाना 'औरत तंग गढ़ा है।

28 वह राहजन की तरह घात में लगी है,  
और बनी आदम में बदकारों का शुमार बढ़ाती है।

29 कौन अफ़सोस करता है? कौन ग़मज़दा है? कौन  
झगड़ालू है?

कौन शाकी है? कौन बे वजह घायल है? और किसकी  
आँखों में सुखी है?

30 वही जो देर तक मयनोशी करते हैं;  
वही जो मिलाई हुई मय की तलाश में रहते हैं।

31 जब मय लाल लाल हो,  
जब उसका बर'अक्स ज़ाम पर पड़े,  
और जब वह ख़ानी के साथ नीचे उतरे, तो उस पर नज़र  
न कर।

32 क्योंकि अन्जाम कार वह साँप की तरह काटती,  
और अज़दहे की तरह डस जाती है।

33 तेरी आँखें 'अजीब चीज़ें देखेंगी,  
और तेरे मुँह से उलटी सीधी बातें निकलेगी।

34 बल्कि तू उसकी तरह होगा जो समन्दर के बीच में लेट  
जाए,

या उसकी तरह जो मस्तूल के सिरे पर सो रहे।

35 तू कहेगा उन्होंने तो मुझे मारा है,  
लेकिन मुझे को चोट नहीं लगी; उन्होंने मुझे पीटा है  
लेकिन मुझे मा'लूम भी नहीं हुआ।

मैं कब बेदार हूँगा? मैं फिर उसका तालिब हूँगा।

## 24

1 तू शरीरों पर रश्क न करना,

और उनकी सुहबत की ख़्वाहिश न रखना;

2 क्योंकि उनके दिल जुल्म की फ़िक्र करते हैं,  
और उनके लव शरारत का ज़िक्र।

3 हिकमत से घर ता'मीर किया जाता है,  
और समझ से उसको क़याम होता है।

4 और 'इल्म के वसीले से कोठरियाँ,  
नफ़ीस — ओ — लतीफ़ माल से मा'भूर की जाती हैं।

5 'अक्लमंद आदमी ताक़तवर है,  
बल्कि साहिब — ए — 'इल्म का ताक़त बढ़ती रहती  
है।

6 क्योंकि तू नेक सलाह लेकर जंग कर सकता है,  
और सलाहकारों की कसरत में सलामती है।

7 हिकमत बेवकूफ़ के लिए बहुत बलन्द है;  
वह फाटक पर मुँह नहीं खोल सकता।

8 जो बदी के मन्सूबे बाँधता है,  
फ़ितनाअंगेज़ कहलाएगा।

9 बेवकूफी का मन्सूबा भी गुनाह है,  
और ठठठा करने वाले से लोगों को नफ़रत है।

10 अगर तू मुसीबत के दिन बेदिल हो जाए,  
तो तेरी ताक़त बहुत कम है।

11 जो क़त्ल के लिए घसीटे जाते हैं, उनको छुड़ा;  
जो मारे जाने को हैं उनको हवाले न कर।

12 अगर तू कहे, देखो, हम को यह मा'लूम न था,  
तो क्या दिलों को जाँचने वाला यह नहीं समझता?  
और क्या तेरी जान का निगहबान यह नहीं जानता?  
और क्या वह हर शख्स को उसके काम के मुताबिक़  
बदला न देगा?

13 ऐ मेरे बेटे, तू शहद खा, क्योंकि वह अच्छा है,  
और शहद का छूत्ता भी क्योंकि वह तुझे मीठा लगता है।

14 हिकमत भी तेरी जान के लिए ऐसी ही होगी;  
अगर वह तुझे मिल जाए तो तेरे लिए बदला होगा,  
और तेरी उम्मीद नहीं टूटेगी।

15 ऐ शरीर, तू सादिक के घर की घात में न बैठना,  
उसकी आरामगाह को ग़ारत न करना;

16 क्योंकि सादिक सात बार गिरता है और फिर उठ खड़ा  
होता है;

लेकिन शरीर बला में गिर कर पड़ा ही रहता है।

17 जब तेरा दुश्मन गिर पड़े तो खुशी न करना,  
और जब वह पछाड़ खाए तो दिलशाद न होना।

18 ऐसा न हो खुदावन्द इसे देखकर नाराज़ हो,  
और अपना क्रहर उस पर से उठा ले।

19 तू बदकिरदारों की वजह से बेज़ार न हो,  
और शरीरों पे रश्क न कर;

20 क्योंकि बदकिरदार के लिए कुछ बदला नहीं।  
शरीरों का चिराग़ बुझा दिया जाएगा।

21 ऐ मेरे बेटे, खुदावन्द से और बादशाह से डर;  
और मुफ़सिदों के साथ सुहबत न रख;

22 क्योंकि उन पर अचानक आफ़त आएगी,  
और उन दोनों की तरफ़ से आने वाली हलाकत को कौन  
जानता है?

~~~~~

23 ये भी 'अक्लमंदों की बातें हैं: 'अदालत में तरफ़दारी
करना अच्छा नहीं।

24 जो शरीर से कहता है तू सादिक है,

लोग उस पर ला'नत करेंगे और उम्मतें उस से नफ़रत रखेंगी;

25 लेकिन जो उसको डाँटते हैं खुश होंगे,
और उनकी बड़ी बरकत मिलेगी।

26 जो हक़ बात कहता है,
लबों पर बोसा देता है।

27 अपना काम बाहर तैयार कर,
उसे अपने लिए खेत में दुरुस्त कर ले;

और उसके बाद अपना घर बना।

28 बेवजह अपने पड़ोसी के खिलाफ़ गावाही न देना,
और अपने लबों से धोखा न देना।

29 यूँ न कह, "मैं उससे वैसा ही करूँगा जैसा उसने मुझसे किया;

मैं उस आदमी से उसके काम के मुताबिक़ सुलूक करूँगा।"

30 मैं काहिल के खेत के और बे'अक़ल के ताकिस्तान के पास से गुज़रा,

31 और देखो, वह सब का सब काँटों से भरा था,
और बिच्छू बूटी से ढका था;

और उसकी संगीन दीवार गिराई गई थी।

32 तब मैंने देखा और उस पर खूब ग़ौर किया;

हाँ, मैंने उस पर निगह की और 'इब्रत पाई।

33 थोड़ी सी नींद, एक और झपकी,

ज़रा पड़े रहने को हाथ पर हाथ,

34 इसी तरह तेरी मुफ़लिसी राहज़न की तरह,

और तेरी तंगदस्ती हथियारबंद आदमी की तरह, आ पड़ेगी।

25

???????? ?? ?? ?? ???????

1 ये भी सुलेमान की अम्साल है;

जिनकी शाह — ए — यहूदाह हिज़क्रियाह के लोगों ने नक़ल की थी:

2 खुदा का जलाल राज़दारी में है,

लेकिन बादशाहों का जलाल मुआ'मिलात की तफ़्तीश में।

3 आसमान की ऊँचाई और ज़मीन की गहराई,
और बादशाहों के दिल की इन्तिहा नहीं मिलती।

4 चाँदी की मेल दूर करने से,
सुनार के लिए बर्तन बन जाता है।

5 शरीरों को बादशाह के सामने से दूर करने से,
उसका तख़्त सदाक़त पर काईम हो जाएगा।

6 बादशाह के सामने अपनी बड़ाई न करना,
और बड़े आदमियों की जगह खड़ा न होना;

7 क्यूँकिये बेहतर है कि हाकिम के आमने — सामने जिसको तेरी आँखों ने देखा है,

तुझ से कहा जाए, आगे बढ़ कर बैठ। न कि तू पीछे हटा दिया जाए।

8 झगड़ा करने में जल्दी न कर,
आखिरकार जब तेरा पड़ोसी तुझको ज़लील करे,
तब तू क्या करेगा?

9 तू पड़ोसी के साथ अपने दा'वे का ज़िक़र कर,
लेकिन किसी दूसरे का राज़ न खोल;

10 ऐसा न हो जो कोई उसे सुने तुझे रुस्वा करे,
और तेरी बदनामी होती रहे।

11 बामौक्रा' बातें,
रूपहली टोकरियों में सोने के सेब हैं।

12 'अक़लमंद मलामत करने वाले की बात,
सुनने वाले के कान में सोने की बाली और कुन्दन का ज़ेवर है।

13 वफ़ादार क़ासिद अपने भेजने वालों के लिए,
ऐसा है जैसे फ़सल काटने के दिनों में बर्फ़ की ठंडक,
क्यूँकि वह अपने मालिकों की जान को ताज़ा दम करता है।

14 जो किसी झूटी लियाक़त पर फ़ख़र करता है,
वह बेबारिश बादल और हवा की तरह है।

15 तहम्मूल करने से हाकिम राज़ी हो जाता है,
और नर्म ज़बान हड़डी को भी तोड़ डालती है।

16 क्या तूने शहद पाया? तू इतना खा जितना तेरे लिए काफ़ी है।

ऐसा न हो तू ज्यादा खा जाए और उगल डाल्ले

17 अपने पड़ोसी के घर बार बार जाने से अपने पाँवों को रोक,

ऐसा न हो कि वह दिक़ होकर तुझ से नफ़रत करे।

18 जो अपने पड़ोसी के खिलाफ़ झूटी गवाही देता है वह गुर्ज और तलवार और तेज़ तीर है।

19 मुसीबत के वक़्त बेवफ़ा आदमी पर 'ऐतमाद,
टूटा दाँत और उखड़ा पाँव है।

20 जो किसी ग़मगीन के सामने गीत गाता है,
वह गोया जाड़े में किसी के कपड़े उतारता और सज्जी पर सिरका डालता है।

21 अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे रोटी खिला,
और अगर वह प्यासा हो तो उसे पानी पिला;

22 क्यूँकि तू उसके सिर पर अंगारों का ढेर लगाएगा,
और खुदावन्द तुझ को बदला देगा।

23 उत्तरी हवा मेह को लाती है,
और ग़ैबत गो ज़बान तुर्शरूई को।

24 घर की छत पर एक कोने में रहना,
झगड़ालू बीवी के साथ कुशादा मकान में रहने से बेहतर है।

25 वह खुशखबरी जो दूर के मुल्क से आए,
ऐसी है जैसे थके माँदे की जान के लिए ठंडा पानी।
26 सादिक का शरीर के आगे गिरना,
गोया गन्दा नाला और नापाक सोता है।
27 बहुत शहद खाना अच्छा नहीं,
और अपनी बुजुर्गी का तालिब होना ज़ेबा नहीं है।
28 जो अपने नफ़्स पर ज़ाबित नहीं,
वह बेफ़सील और मिस्मारशुदा शहर की तरह है।

26

1 जिस तरह गर्मी के दिनों में बर्फ़ और दिरौ के वक्त बारिश,
उसी तरह बेवकूफ़ को 'इज़्जत ज़ेब नहीं देती।
2 जिस तरह गौरय्या आवारा फिरती और अबाबील उड़ती रहती है,
उसी तरह बे वजह ला'नत बेमतलब है।
3 घोड़े के लिए चाबुक और गधे के लिए लगाम,
लेकिन बेवकूफ़ की पीठ के लिए छड़ी है।
4 बेवकूफ़ को उसकी हिमाक़त के मुताबिक़ जवाब न दे,
मबादा तू भी उसकी तरह हो जाए।
5 बेवकूफ़ को उसकी हिमाक़त के मुताबिक़ जवाब दे,
ऐसा न हो कि वह अपनी नज़र में 'अक्लमंद ठहरे।
6 जो बेवकूफ़ के हाथ पैग़ाम भेजता है,
अपने पाँव पर कुल्हाड़ा मारता और नुक़सान का प्याला पीता है।
7 जिस तरह लंगड़े की टाँग लड़खड़ाती है,
उसी तरह बेवकूफ़ के मुँह में तमसील है।
8 बेवकूफ़ की ता'ज़ीम करने वाला,
गोया जवाहिर को पत्थरों के ढेर में रखता है।
9 बेवकूफ़ के मुँह में तमसील,
शराबी के हाथ में चुभने वाले काँटे की तरह है।
10 जो बेवकूफ़ों और राहगुज़रों को मज़दूरी पर लगाता है,
उस तीरंदाज़ की तरह है जो सबको ज़ख्मी करता है।
11 जिस तरह कुत्ता अपने उगले हुए को फिर खाता है,
उसी तरह बेवकूफ़ अपनी बेवकूफी को दोहराता है।
12 क्या तू उसको जो अपनी नज़र में 'अक्लमंद है देखता है?
उसके मुक्काबिले में बेवकूफ़ से ज्यादा उम्मीद है।
13 सुस्त आदमी कहता है,
राह में शेर है, शेर — ए — बबर गलियों में है!
14 जिस तरह दरवाज़ा अपनी चूलों पर फिरता है,
उसी तरह सुस्त आदमी अपने बिस्तर पर करवट बदलता रहता है।

15 सुस्त आदमी अपना हाथ थाली में डालता है,
और उसे फिर मुँह तक लाना उसको थका देता है।
16 काहिल अपनी नज़र में 'अक्लमंद है,
बल्कि दलील लाने वाले सात शख्सों से बढ़ कर।
17 जो रास्ता चलते हुए पराए झगड़े में दखल देता है,
उसकी तरह है जो कुत्ते को कान से पकड़ता है।
18 जैसा वह दीवाना जो जलती लकड़ियाँ और मौत के तीर फेंकता है,
19 वैसा ही वह शख्स है जो अपने पड़ोसी को दगा देता है,
और कहता है, मैं तो दिल्लगी कर रहा था।
20 लकड़ी न होने से आग बुझ जाती है,
इसलिए जहाँ चुगलखोर नहीं वहाँ झगड़ा मौकूफ़ हो जाता है।
21 जैसे अंगारों पर कोयले और आग पर ईंधन है,
वैसे ही झगड़ालू झगड़ा खड़ा करने के लिए है।
22 चुगलखोरकी बातें लज़ीज़ निवाले हैं,
और वह खूब हज़म हो जाती हैं।
23 उलफ़ती, लब बदख्वाह दिल के साथ,
उस ठीकरे की तरह है जिस पर खोटी चाँदी मेंदी हो।
24 कीनावर दिल में दगा रखता है,
लेकिन अपनी बातों से छिपाता है;
25 जब वह मीठी मीठी बातें करे तो उसका यकीन न कर,
क्यूँकि उसके दिल में कमाल नफ़रत है।
26 अगरचे उसकी बदख्वाही मकर में छिपी है,
तो भी उसकी बदी जमा'अत के आमने सामने खोल दी जाएगी।
27 जो गढ़ा खोदता है, आप ही उसमें गिरेगा;
और जो पत्थर ढलकाता है, वह पलटकर उसी पर पड़ेगा।
28 झूटी ज़बान उनका कीना रखती है जिनको उस ने घायल किया है,
और चापलूस मुँह तबाही करता है।

27

1 कल की बारे में घमण्ड न कर,
क्यूँकि तू नहीं जानता कि एक ही दिन में क्या होगा।
2 ग़ैर तेरी सिताइश करे न कि तेरा ही मुँह,
बेगाना करे न कि तेरे ही लब।
3 पत्थर भारी है और रेत वज़नदार है,
लेकिन बेवकूफ़ का झुंझलाना इन दोनों से गिरांतर है।
4 गुस्सा सख्त बेरहमी और क्रहर सैलाब है,
लेकिन जलन के सामने कौन खड़ा रह सकता है?
5 छिपी मुहब्बत से, खुली मलामत बेहतर है।
6 जो ज़ख्म दोस्त के हाथ से लगें वफ़ा से भरे हैं,

लेकिन दुश्मन के बोसे बाइफ़रात हैं।

7 आसूदा जान को शहद के छत्ते से भी नफ़रत है,
लेकिन भूके के लिए हर एक कड़वी चीज़ मीठी है।

8 अपने मकान से आवारा इंसान,
उस चिड़िया की तरह है जो अपने आशियाने से भटक
जाए।

9 जैसे तेल और इत्र से दिल को फ़रहत होती है,
वैसे ही दोस्त की दिली मश्वरत की शीरीनी से।

10 अपने दोस्त और अपने बाप के दोस्त को छोड़ न दे,
और अपनी मुसीबत के दिन अपने भाई के घर न जा;
क्योंकि पड़ोसी जो नज़दीक हो उस भाई से जो दूर हो
बेहतर है।

11 ऐ मेरे बेटे, 'अक्लमंद बन और मेरे दिल को शाद कर,
ताकि मैं अपने मलामत करने वाले को जवाब दे सकूँ।

12 होशियार बला को देखकर छिप जाता है;
लेकिन नादान बढ़े चले जाते और नुक़सान उठाते हैं।

13 जो बेगाने का ज़ामिन हो उसके कपड़े छीन ले,
और जो अजनबी का ज़ामिन हो उससे कुछ गिरवी रख
ले।

14 जो सुबह सवेरे उठकर अपने दोस्त के लिए बलन्द
आवाज़ से दुआ — ए — ख़ैर करता है,
उसके लिए यह ला'नत महसूब होगी।

15 झड़ी के दिन का लगातार टपका,
और झगड़ालू बीवी यकसाँ हैं;

16 जो उसको रोकता है, हवा को रोकता है;
और उसका दहना हाथ तेल को पकड़ता है।

17 जिस तरह लोहा लोहे को तेज़ करता है,
उसी तरह आदमी के दोस्त के चहरे की आब उसी से है।

18 जो अंजीर के दरख़्त की निगहबानी करता है उसका
मेवा खाएगा,

और जो अपने आक्रा की खिदमत करता है 'इज़्जत
पाएगा।

19 जिस तरह पानी में चेहरा चेहरे से मुशाबह है,
उसी तरह आदमी का दिल आदमी से।

20 जिस तरह पाताल और हलाकत को आसूदगी नहीं,
उसी तरह इंसान की आँखे सेर नहीं होतीं।

21 जैसे चाँदी के लिए कुठाली और सोने के लिए भट्ठी
है,

वैसे ही आदमी के लिए उसकी ता'रीफ़ है।

22 अगरचे तू बेवकूफ़ को अनाज के साथ उखली में डाल
कर मूसल से कूटे,

तोभी उसकी हिमाक़त उससे कभी जुदा न होगी।

23 अपने रेवड़ों का हाल दरियाफ़्त करने में दिल लगा,
और अपने ग़ल्लों को अच्छी तरह से देख;

24 क्योंकि दौलत हमेशा नहीं रहती;

और क्या ताजवरी नसल — दर — नसल काईम रहती
है?

25 सूखी घास जमा' की जाती है, फिर सब्ज़ा नुमायाँ
होता है;

और पहाड़ों पर से चारा काट कर जमा' किया जाता है।

26 बरें तेरी परवरिश के लिए हैं,

और बकरियाँ तेरे मैदानों की कीमत हैं,

27 और बकरियों का दूध तेरी और तेरे ख़ान्दान की ख़ूराक
और तेरी लौंडियों की गुज़ारा के लिए काफ़ी है।

28

1 अगरचे कोई शरीर का पीछा न करे तोभी वह भागता
है,

लेकिन सादिक़ शेर — ए — बबर की तरह दिलेर है।

2 मुल्क की ख़ताकारी की वजह से हाकिम बहुत से हैं,
लेकिन साहिब — ए — 'इल्म — ओ — समझ से
इन्तिज़ाम बहाल रहेगा।

3 ग़रीब पर ज़ुल्म करने वाला कंगाल,
मूसलाधार मेंह है जो एक 'अक्लमंद भी नहीं छोड़ता।

4 शरी'अत को छोड़ने वाले,
शरीरों की तारीफ़ करते हैं लेकिन शरी'अत पर 'अमल
करनेवाले, उनका मुकाबला करते हैं

5 शरीर 'अदल से आगाह नहीं,
लेकिन खुदावन्द के तालिब सब कुछ समझते हैं।

6 रास्तरौ ग़रीब,
टेढ़ा आदमी दौलतमंद से बेहतर है।

7 ता'लीम पर 'अमल करने वाला 'अक्लमंद बेटा है,
लेकिन फ़ुज़ूलख़र्चों का दोस्त अपने बाप को रुस्वा करता
है।

8 जो नाजाइज़ सूद और नफ़े' से अपनी दौलत बढ़ाता
है,

वह ग़रीबों पर रहम करने वाले के लिए जमा' करता है।

9 जो कान फेर लेता है कि शरी'अत को न सुने,
उसकी दुआ भी नफ़रतअंगेज़ है।

10 जो कोई सादिक़ को गुमराह करता है,
ताकि वह बुरी राह पर चले, वह अपने गढ़े में आप ही
गिरेगा;

लेकिन कामिल लोग अच्छी चीज़ों के वारिस होंगे।

11 मालदार अपनी नज़र में 'अक्लमंद है,
लेकिन 'अक्लमंद ग़रीब उसे परख लेता है।

12 जब सादिक़ फ़तहयाब होते हैं, तो बड़ी धूमधाम होती
है;

लेकिन जब शरीर खड़े होते हैं, तो आदमी ढूँडे नहीं
मिलते।

13 जो अपने गुनाहों को छिपाता है, कामयाब न होगा;

लेकिन जो उनका इकरार करके, उनको छोड़ देता है; उस पर रहमत होगी।

14 मुबारक है वह आदमी जो सदा डरता रहता है, लेकिन जो अपने दिल को सख्त करता है, मुसीबत में पड़ेगा।

15 गरीबों पर शरीर हाकिम, गरजते हुए शेर और शिकार के तालिब रीछ की तरह है।

16 बे'अक्ल हाकिम भी बड़ा ज़ालिम है, लेकिन जो लालच से नफ़रत रखता है, उसकी उम्र दराज़ होगी।

17 जिसके सिर पर किसी का खून है, वह गढ़े की तरफ़ भागेगा, उसे कोई न रोके।

18 जो रास्तरौ है रिहाई पाएगा, लेकिन टेढ़ा आदमी नागहान गिर पड़ेगा।

19 जो अपनी ज़मीन में काश्तकारी करता है, रोटी से सेर होगा, लेकिन बेमतलब के पीछे चलने वाला बहुत कंगाल हो जाएगा।

20 दियानतदार आदमी बरकतों से मा'मूर होगा, लेकिन जो दौलतमंद होने के लिए जल्दी करता है, बे सज़ा न छूटेगा।

21 तरफ़दारी करना अच्छा नहीं; और न यह कि आदमी रोटी के टुकड़े के लिए गुनाह करे।

22 तंग चश्म दौलत जमा' करने में जल्दी करता है, और यह नहीं जानता कि मुफ़लिसी उसे आ दबाएगा।

23 आदमी को सरज़निश करनेवाला आखिरकार, जबानी खुशामद करनेवाले से ज्यादा मक्बूल ठहरेगा।

24 जो कोई अपने वालिदैन को लूटता है और कहता है, कि यह गुनाह नहीं, वह गारतगर का साथी है।

25 जिसके दिल में लालच है वह झगड़ा खड़ा करता है, लेकिन जिसका भरोसा खुदावन्द पर है वह तारो — ताज़ा किया जाएगा।

26 जो अपने ही दिल पर भरोसा रखता है, बेवकूफ़ है; लेकिन जो 'अक्लमंदी से चलता है, रिहाई पाएगा।

27 जो गरीबों को देता है, मुहताज न होगा; लेकिन जो आँख चुराता है, बहुत मला'ऊन होगा।

28 जब शरीर खड़े होते हैं, तो आदमी ढूँडे नहीं मिलते, लेकिन जब वह फ़ना होते हैं, तो सादिक़ तरक्की करते हैं।

29

1 जो बार बार तम्बीह पाकर भी गर्दनकशी करता है, अचानक बर्बाद किया जाएगा, और उसका कोई चारा न होगा।

2 जब सादिक़ इकबालमंद होते हैं,

तो लोग खुश होते हैं लेकिन जब शरीर इस्लियार पाते हैं तो लोग आहें भरते हैं।

3 जो कोई हिकमत से उलफ़त रखता है, अपने बाप को खुश करता है,

लेकिन जो कस्बियों से सुहबत रखता है, अपना माल उड़ाता है।

4 बादशाह 'अदल से अपनी ममलुकत को क़याम बख़्शता है

लेकिन रिश्वत सितान उसको वीरान करता है।

5 जो अपने पड़ोसी की खुशामद करता है, उसके पाँव के लिए जाल बिछाता है।

6 बदकिरदार के गुनाह में फंदा है, लेकिन सादिक़ गाता और खुशी करता है।

7 सादिक़ गरीबों के मु'आमिले का खयाल रखता है, लेकिन शरीर में उसको जानने की लियाक़त नहीं।

8 ठठटेबाज़ शहर में आग लगाते हैं, लेकिन 'अक्लमंद क़हर को दूर कर देते हैं।

9 अगर 'अक्लमंद बेवकूफ़ से बहस करे, तो ख़्वाह वह क़हर करे ख़्वाह हँसे, कुछ इत्मिनान होगा।

10 ख़ूँज लोग कामिल आदमी से कीना रखते हैं, लेकिन रास्तकार उसकी जान बचाने का इरादा करते हैं।

11 बेवकूफ़ अपना क़हर उगल देता है, लेकिन 'अक्लमंद उसको रोकता और पी जाता है।

12 अगर कोई हाकिम झूट पर कान लगाता है, तो उसके सब खादिम शरीर हो जाते हैं।

13 गरीब और ज़बरदस्त एक दूसरे से मिलते हैं, और खुदावन्द दोनों की आँखें रोशन करता है।

14 जो बादशाह ईमानदारी से गरीबों की 'अदालत करता है, उसका तख़्त हमेशा काईम रहता है।

15 छड़ी और तम्बीह हिकमत बख़्शती हैं, लेकिन जो लड़का बेतरबियत छोड़ दिया जाता है, अपनी माँ को रुस्वा करेगा।

16 जब शरीर कामयाब होते हैं, तो बदी ज्यादा होती है; लेकिन सादिक़ उनकी तबाही देखेंगे।

17 अपने बेटे की तरबियत कर; और वह तुझे आराम देगा, और तेरी जान को शादमान करेगा।

18 जहाँ रोया नहीं वहाँ लोग बेक़ैद हो जाते हैं, लेकिन शरी'अत पर 'अमल करने वाला मुबारक है।

19 नौकर बातों ही से नहीं सुधरता, क्योंकि अगरचे वह समझता है तो भी परवा नहीं करता।

20 क्या तू बेताम्मुल बोलने वाले को देखता है? उसके मुकाबले में बेवकूफ़ से ज्यादा उम्मीद है।

- 21 जो अपने घर के लड़के को लड़कपन से नाज़ में पालता है,
वह आखिरकार उसका बेटा बन बैठेगा।
22 क्रूर आलूदा आदमी फ़ितना खड़ा करता है,
और ग़ज़बनाक गुनाह में ज़ियादती करता है।
23 आदमी का गुरूर उसको पस्त करेगा,
लेकिन जो दिल से फ़रोतन है 'इज़्जत हासिल करेगा।
24 जो कोई चोर का शरीक होता है, अपनी जान से दुश्मनी रखता है;
वह हल्फ़ उठाता है और हाल बयान नहीं करता।
25 इंसान का डर फ़ेदा है,
लेकिन जो कोई खुदावन्द पर भरोसा करता है महफूज़ रहेगा।
26 हाकिम की मेहरबानी के तालिब बहुत हैं,
लेकिन इंसान का फैसला खुदावन्द की तरफ़ से है।
27 सादिक को बेइन्साफ़ से नफ़रत है,
और शरीर को रास्तरो से।

30

????? ?? ???????

- 1 याक्का के बेटे अज़ूर के पैग़ाम की बातें: उस आदमी ने एतीएल,
हाँ इतीएल और उकाल से कहा:।
2 यक्रीनन मैं हर एक इंसान से ज्यादा
और इंसान का सा समझ मुझ में नहीं
3 मैंने हिकमत नहीं सीखी
और न मुझे उस कुदूस का 'इरफ़ान हासिल है।
4 कौन आसमान पर चढ़ा और फिर नीचे उतरा?
किसने हवा को अपनी मुट्ठी में जमा'कर लिया?
किसने पानी की चादर में बाँधा? किसने ज़मीन की हदें ठहराई?
अगर तू जानता है, तो बता उसका क्या नाम है,
और उसके बेटे का क्या नाम है?
5 खुदा का हर एक बात पाक है,
वह उनकी सिपर है जिनका भरोसा उस पर है।
6 तू उसके कलाम में कुछ न बढ़ाना,
ऐसा न हो वह तुझ को तम्बीह करे और तू झूटा ठहरे।
7 मैंने तुझ से दो बातों की दरखास्त की है,
मेरे मरने से पहले उनको मुझ से दरेग न कर।
8 बता लत और दरोशगोई को मुझ से दूर कर दे;
और मुझ को न कंगाल कर न दौलतमंद, मेरी ज़रूरत के मुताबिक़ मुझे रोज़ी दे।
9 ऐसा न हो कि मैं सेर होकर इन्कार करूँ और कहूँ,
खुदावन्द कौन है?

- या ऐसा न हो मुहताज होकर चोरी करूँ, और अपने खुदा के नाम की तकफ़ीर करूँ।
10 खादिम पर उसके आक्रा के सामने तोहमत न लगा,
ऐसा न हो कि वह तुझ पर ला'नत करे, और तू मुजरिम ठहरे।
11 एक नसल ऐसी है, जो अपने बाप पर ला'नत करती है
और अपनी माँ को मुबारक नहीं कहती।
12 एक नसल ऐसी है, जो अपनी निगाह में पाक है,
लेकिन उसकी गंदगी उससे धोई नहीं गई।
13 एक नसल ऐसी है, कि वाह क्या ही बलन्द नज़र है,
और उनकी पलकें ऊपर को उठी रहती हैं।
14 एक नसल ऐसी है, जिसके दाँत तलवारों हैं,
और डाढ़े छुरियाँ ताकि ज़मीन के ग़रीबों और बनी आदम के कंगालों को खा जाएँ।
15 जोंक की दो बेटियाँ हैं, जो "दे दे" चिल्लाती हैं;
तीन हैं जो कभी सेर नहीं होतीं, बल्कि चार हैं जो कभी "बस" नहीं कहतीं।
16 पाताल और बाँझ का रिहम,
और ज़मीन जो सेराब नहीं हुई,
और आग जो कभी "बस" नहीं कहती।
17 वह आँख जो अपने बाप की हँसी करती है,
और अपनी माँ की फ़रमाँबरदारी को हक़ीर जानती है,
वादी के कौवे उसको उचक ले जाएँगे,
और गिद्ध के बच्चे उसे खाएँगे।
18 तीन चीज़ें मेरे नज़दीक़ बहुत ही 'अजीब हैं,
बल्कि चार हैं, जिनको मैं नहीं जानता:
19 'उकाब की राह हवा में, और साँप की राह चटान पर,
और जहाज़ की राह समन्दर में, और मर्द का चाल चलन जवान 'औरत के साथ।
20 ज़ानिया की राह ऐसी ही है;
वह खाती है और अपना मुँह पोंछती है,
और कहती है, मैंने कुछ बुराई नहीं की।
21 तीन चीज़ों से ज़मीन लरज़ाँ है;
बल्कि चार हैं, जिनकी वह बर्दाश्त नहीं कर सकती:
22 गुलाम से जो बादशाही करने लगे,
और बेवकूफ़ से जब उसका पेट भरे,
23 और नामक़बूल 'औरत से जब वह ब्याही जाए,
और लौंडी से जो अपनी बीबी की वारिस हो।
24 चार हैं, जो ज़मीन पर ना चीज़ हैं,
लेकिन बहुत 'अक्लमंद हैं:
25 चीटियाँ कमज़ोर मख़लूक़ हैं,
तौ भी गर्मी में अपने लिए खुराक जमा' कर रखती हैं;
26 और साफ़ान अगरचे नातवान मख़लूक़ हैं,

तो भी चटानों के बीच अपने घर बनाते हैं;
 27 और टिड्डियाँ जिनका कोई बादशाह नहीं,
 तोभी वह परे बाँध कर निकलती हैं;
 28 और छिपकली जो अपने हाथों से पकड़ती है,
 और तोभी शाही महलों में है।
 29 तीन खुश रफ़्तार हैं,
 बल्कि चार जिनका चलना खुश नुमा है:
 30 एक तो शेर — ए — बबर जो सब हैवानात में बहादुर
 है,
 और किसी को पीठ नहीं दिखाता:
 31 जंगली घोड़ा और बकरा, और बादशाह,
 जिसका सामना कोई न करे।
 32 अगर तूने बेवकूफी से अपने आपको बड़ा ठहराया है,
 या तूने कोई बुरा मन्सूबा बाँधा है, तो हाथ अपने मुँह
 पर रख।
 33 क्योंकि यक़ीनन दूध बिलोने से मक्खन निकलता है,
 और नाक मरोड़ने से लहू, इसी तरह क्रहर भड़काने से
 फ़साद खड़ा होता है।

31

?????? ?? ???????

1 लमविएल बादशाह के पैगाम की बातें जो उसकी
 माँ ने उसको सिखाई:
 2 ऐ मेरे बेटे, ऐ मेरे रिहम के बेटे,
 तुझे, जिसे मैंने नज़रे माँग कर पाया क्या कहूँ?
 3 अपनी कुव्वत 'औरतों को न दे,
 और अपनी राहें बादशाहों को बिगाड़ने वालियों की
 तरफ़ न निकाल।
 4 बादशाहों को ऐ लमविएल, बादशाहों को मयख़्वारी
 ज़ेबा नहीं,
 और शराब की तलाश हाकिमों को शायान नहीं।
 5 ऐसा न हो वह पीकर क़वानीन को भूल जाए,
 और किसी मज़लूम की हक़ तलफ़ी करे।
 6 शराब उसको पिलाओ जो मरने पर है,
 और मय उसको जो तलख़ जान है
 7 ताकि वह पिए और अपनी तंगदस्ती फ़रामोश करे,
 और अपनी तबाह हाली को फिर याद न करे
 8 अपना मुँह गूँगे के लिए खोल उन सबकी वक़ालत को
 जो बेकस हैं।
 9 अपना मुँह खोल, रास्ती से फ़ैसलाकर,
 और ग़रीबों और मुहताजों का इन्साफ़ कर।
 10 नेकोकार बीवी किसको मिलती है?
 क्योंकि उसकी क़दर मरज़ान से भी बहुत ज़्यादा है।
 11 उसके शौहर के दिल को उस पर भरोसा है,
 और उसे मुनाफ़े की कमी न होगी।

12 वह अपनी उम्र के तमाम दिनों में,
 उससे नेकी ही करेगी, बदी न करेगी।
 13 वह ऊन और कतान ढूँडती है,
 और खुशी के साथ अपने हाथों से काम करती है।
 14 वह सौदागरों के जहाज़ों की तरह है,
 वह अपनी खुराक दूर से ले आती है।
 15 वह रात ही को उठ बैठती है,
 और अपने घराने को खिलाती है, और अपनी लौंडियों
 को काम देती है।
 16 वह किसी खेत की बारे में सोचती है और उसे ख़रीद
 लेती है;
 और अपने हाथों के नफ़े से ताकिस्तान लगाती है।
 17 वह मज़बूती से अपनी कमर बाँधती है,
 और अपने बाज़ुओं को मज़बूत करती है।
 18 वह अपनी सौदागरी को सूदमंद पाती है।
 रात को उसका चिराग़ नहीं बुझता।
 19 वह तकले पर अपने हाथ चलाती है,
 और उसके हाथ अटेरन पकड़ते हैं।
 20 वह ग़रीबों की तरफ़ अपना हाथ बढ़ाती है, हाँ,
 वह अपने हाथ मोहताजों की तरफ़ बढ़ाती है।
 21 वह अपने घराने के लिए बर्फ़ से नहीं डरती,
 क्योंकि उसके ख़ान्दान में हर एक सुख़ पोश है।
 22 वह अपने लिए निगारीन बाला पोश बनाती है;
 उसकी पोशाक महीन कतानी और अर्ग़वानी है।
 23 उसका शौहर फाटक में मशहूर है,
 जब वह मुल्क के बुज़ुर्गों के साथ बैठता है।
 24 वह महीन कतानी कपड़े बनाकर बेचती है;
 और पटके सौदागरों के हवाले करती है।
 25 'इज़ज़त और हुर्मत उसकी पोशाक हैं,
 और वह आइंदा दिनों पर हँसती है।
 26 उसके मुँह से हिकमत की बातें निकलती हैं,
 उसकी ज़बान पर शफ़क़त की ता'लीम है।
 27 वह अपने घराने पर बखूबी निगाह रखती है,
 और काहिली की रोटी नहीं खाती।
 28 उसके बेटे उठते हैं और उसे मुबारक कहते हैं;
 उसका शौहर भी उसकी ता'रीफ़ करता है:
 29 "कि बहुतेरी बेटियों ने फ़ज़ीलत दिखाई है,
 लेकिन तू सब से आगे बढ़ गई।"
 30 हुस्न, धोका और जमाल बेसबात है,
 लेकिन वह 'औरत जो खुदावन्द से डरती है, सतुदा
 होगी।
 31 उसकी मेहनत का बदला उसे दो,
 और उसके कामों से मजलिस में उसकी ता'रीफ़ हो।

वाइज

वाइज की किताब बराह — ए — रास्त उसके

मुसन्निफ़ की पहचान नहीं करती वाइज की किताब 1:1 में इब्रानी लफ़्ज़ कोहेलेथ को वाइज बतौर तर्जुमा किया गया है। वाइज खुद को (1), (2) यरूशलेम में दाऊद बादशाह का बेटा बतौर कहता है, (1), (2) और वह जिस ने कई एक अम्साल जमा किए (वाइज 1:1, 16; 12:9) यरूशलेम में सुलेमान ने दाऊद के तख्त — ओ — ताज का पीछा किया क्योंकि उस शहर में दाऊद का बेटा ही तमा इस्राईल में जानशीन था। (1:12) सिर्फ़ कुछ ही आयते हैं जो दलील पेश करते हैं कि सुलेमान ने इस किताब को लिखा। कुछ इशारे इस किताब के सयाक — ए — इबारत में पाए जाते हैं जो राये पेश करते हैं कि सुलेमान की मौत के कई सौ साल बाद किसी और ने इस किताब को लिखा।

तस्नीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 940 - 931 कब्ब मसीह के बीच है।

वाइज की किताब ग़ालिबन सुलेमान की हुकूमन के आख़िर में लिखी गई और ऐसा लगता है कि इस किताब को यरूशलम में लिखा गया था।

वाइज की किताब खदीम इस्राईलियों और बाद में तमाम कलाम केकारिडन को लिखा गया था।

यह किताब सरासर होशियारी बतौर हमारे लिए खड़ी है। बग़ैर एक नुक़ता — ए — मास्का और खौफ़ — एखुदा के ज़िन्दगी जीना बेकार, बेनतीजा और बे फुज़ूल है और हवा को पकड़न जैसा है। चाहे हम शादमानी, दौलतमन्दी, तखलीकी सरगर्मी, हिक्मत या सीधा सादा रूहानी मुसरत की तरफ़ राग़िब हों तो हम ज़िन्दगी के आख़री मर्हले पर आजाएंगे और पाएंगे कि हमारी ज़िन्दगी जो हम ने गुज़ारी वह बातिल थी। खुदा में होकर गुज़ारी गई ज़िन्दगी ही मायने — दार होती है।

खुदा, के अलावा सारी चीज़ें बातिल हैं।

बैरूनी खाका

1. तारुफ़ — 1:1-11

2. ज़िन्दगी के मुस्तलिफ़ पहलुओं का बातिल होना — 1:12-5:7

3. खुदा का खौफ़ — 5:8-12:8

4. आख़री हासिल — 12:9-14

1 शाह — ए — येरूशलेम दाऊद के बेटे वा'इज की बातें।

2 “बेकार ही बेकार,

वा'इज कहता है,

बेकार ही बेकार! सब कुछ बेकार है।”

3 इंसान को उस सारी मेहनत से जो वह दुनिया में करता है, क्या हासिल है?

4 एक नसल जाती है और दूसरी नसल आती है, लेकिन ज़मीन हमेशा कायम रहती है।

5 सूरज निकलता है और सूरज ढलता भी है,

और अपने तुलू की जगह को जल्द चला जाता है।

6 हवा दख्खन की तरफ़ चली जाती है

और चक्कर खाकर उत्तर की तरफ़ फिरती है;

ये हमेशा चक्कर मारती है,

और अपनी ग़श्त के मुताबिक़ दौरा करती है।

7 सब नदियाँ समन्दर में गिरती हैं,

लेकिन समन्दर भर नहीं जाता;

नदियाँ जहाँ से निकलती हैं उधर ही को फिर जाती हैं।

8 सब चीज़ें मान्दगी से भरी हैं,

आदमी इसका बयान नहीं कर सकता।

आँख देखने से आसूदा नहीं होती,

और कान सुनने से नहीं भरता।

9 जो हुआ वही फिर होगा,

और जो चीज़ बन चुकी है वही है जो बनाई जाएगी,

और दुनिया में कोई चीज़ नई नहीं।

10 क्या कोई चीज़ ऐसी है,

जिसके बारे में कहा जाता है कि देखो ये तो नई है?

वह तो साबिक़ में हम से पहले के ज़मानों में मौजूद थी।

11 अगलों की कोई यादगार नहीं,

और आनेवालों की अपने बाद के लोगों के बीच कोई याद न होगी।

12 मैं वा'इज येरूशलेम में बनी — इस्राईल का

बा'दशाह था। 13 और मैंने अपना दिल लगाया कि जो

कुछ आसमान के नीचे किया जाता है, उस सब की

तफ़्तीश — ओ — तहक़ीक़ करूँ। खुदा ने बनी आदम

को ये सख्त दुख दिया है कि वह दुख दर्द में मुब्तिला

रहें। 14 मैंने सब कामों पर जो दुनिया में किए जाते हैं

नज़र की; और देखो, ये सब कुछ बेकार और हवा की

चरान है।

15 वह जो टेढ़ा है सीधा नहीं हो सकता,

और नाक़िस का शुमार नहीं हो सकता।

16 मैंने ये बात अपने दिल में कही, “देख, मैंने

बड़ी तरक्की की बल्कि उन सभी से जो मुझ से पहले

येरूशलेम में थे, ज्यादा हिकमत हासिल की; हाँ, मेरा दिल हिकमत और दानिश में बड़ा कारदान हुआ।”

17 लेकिन जब मैंने हिकमत के जानने और हिमाकृत — ओ — जहालत के समझने पर दिल लगाया, तो मा'लूम किया कि ये भी हवा की चरान है। 18 क्योंकि बहुत हिकमत में बहुत ग़म है, और 'इल्म में तरक्की दुख की ज्यादाती है।

2

?????? ???? ??

1 मैंने अपने दिल से कहा, आ, मैं तुझ को खुशी में आजमाऊँगा, इसलिए 'इश्रत कर ले, तो ये भी बेकार है। 2 मैंने हँसी को “दीवाना” कहा और खुशी के बारे में कहा, “इससे क्या हासिल?”

3 मैंने दिल में सोचा कि जिस्म को मयनोशी से क्योंकर ताज़ा करूँ और अपने दिल को हिकमत की तरफ़ मायल रखूँ और क्योंकर हिमाकृत को पकड़े रहूँ, जब तक मा'लूम करूँ कि बनी आदम की बहबूदी किस बात में है कि वह आसमान के नीचे उम्र भर यही किया करे।

4 मैंने बड़े — बड़े काम किए मैंने अपने लिए 'इमारतें बनाई और मैंने अपने लिए ताकिस्तान लगाए। 5 मैंने अपने लिए बागीचे और बाग़ तैयार किए और उनमें हर क्रिस्म के मेवादर दरख्त लगाए। 6 मैंने अपने लिए तालाब बनाए कि उनमें से बाग़ के दरख्तों का ज़खीरा सींचूँ।

7 मैंने गुलामों और लौंडियों को खरीदा और नौकर — चाकर मेरे घर में पैदा हुए, और जितने मुझ से पहले येरूशलेम में थे मैं उनसे कहीं ज्यादा गाय — बैल और भेड़ — बकरियों का मालिक था। 8 मैंने सोना और चाँदी और बा'दशाहों और सूबों का खास खज़ाना अपने लिए जमा किया; मैंने गानेवालों और गाने वालियों को रखवा और बनी आदम के अस्बाब — ए — 'ऐश या'नी लौंडियों को अपने लिए कसरत से इकट्ठा किया।

9 इसलिए मैं बुज़ुर्ग हुआ और उन सभी से जो मुझ से पहले येरूशलेम में थे ज्यादा बढ़ गया। मेरी हिकमत भी मुझ में कायम रही।

10 और सब कुछ जो मेरी आँखें चाहती थीं मैंने उनसे बाज़ न रखवा। मैंने अपने दिल को किसी तरह की खुशी से न रोका, क्योंकि मेरा दिल मेरी सारी मेहनत से खुश हुआ और मेरी सारी मेहनत से मेरा हिस्सा यही था।

11 फिर मैंने उन सब कामों पर जो मेरे हाथों ने किए थे, और उस मशक्कत पर जो मैंने काम करने में खींची थी, नज़र की और देखा कि सब बेकार और हवा की चरान है,

और दुनिया में कुछ फ़ायदा नहीं।

12 और मैं हिकमत और दीवानगी और हिमाकृत के देखने पर मुतवज्जिह हुआ,

क्योंकि वह शख्स जो बा'दशाह के बाद आएगा क्या करेगा?

वही जो होता चला आया है।

13 और मैंने देखा कि जैसी रोशनी को तारीकी पर फ़ज़ीलत है,

वैसी ही हिकमत हिमाकृत से अफ़ज़ल है।

14 'अक्लमन्द अपनी आँखें अपने सिर में रखता है,

लेकिन बेवकूफ़ अंधेरे में चलता है;

तोभी मैं जान गया कि एक ही हादसा उन सब पर गुज़रता है।

15 तब मैंने दिल में कहा, “जैसा बेवकूफ़ पर हादसा होता है,

वैसा ही मुझ पर भी होगा;

फिर मैं क्यों ज्यादा 'अक्लमन्द हुआ?”

इसलिए मैंने दिल में कहा कि ये भी बेकार है।

16 क्योंकि न 'अक्लमन्द और न बेवकूफ़ की यादगार हमेशा तक रहेगी, इसलिए कि आने वाले दिनों में सब कुछ फ़रामोश हो चुकेगा और 'अक्लमन्द क्योंकर बेवकूफ़ की तरह मरता है!

17 फिर मैं ज़िन्दगी से बेज़ार हुआ, क्योंकि जो काम दुनिया में किया जाता है मुझे बहुत बुरा मा'लूम हुआ; क्योंकि सब बेकार और हवा की चरान है। 18 बल्कि मैं अपनी सारी मेहनत से जो दुनिया में की थी बेज़ार हुआ, क्योंकि ज़रूर है कि मैं उसे उस आदमी के लिए जो मेरे बाद आएगा छोड़ जाऊँ;

19 और कौन जानता है कि वह 'अक्लमन्द होगा या बेवकूफ़? बहरहाल वह मेरी सारी मेहनत के काम पर, जो मैंने किया और जिसमें मैंने दुनिया में अपनी हिकमत ज़ाहिर की, ज़ाबित होगा। ये भी बेकार है। 20 तब मैं फिर कि अपने दिल को उस सारे काम से जो मैंने दुनिया में किया था ना उम्मीद करूँ,

21 क्योंकि ऐसा शख्स भी है, जिसके काम हिकमत और दानाई और कामयाबी के साथ हैं, लेकिन वह उनको दूसरे आदमी के लिए जिसने उनमें कुछ मेहनत नहीं की उसकी मीरास के लिए छोड़ जाएगा। ये भी बेकार और बला — ए — 'अज़ीम है। 22 क्योंकि आदमी को उसकी सारी मशक्कत और जानफ़िशानी से, जो उसने दुनिया में की क्या हासिल है? 23 क्योंकि उसके लिए उम्र भर ग़म है, और उसकी मेहनत मातम हैं; बल्कि उसका दिल रात को भी आराम नहीं पाता। ये भी बेकार है।

24 फिर इंसान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं कि वह खाए और पिए और अपनी सारी मेहनत के बीच खुश होकर अपना जी बहलाए। मैंने देखा ये भी खुदा के हाथ से है; 25 इसलिए कि मुझ से ज्यादा कौन खा सकता और कौन मज्जा उड़ा सकता है?

26 क्योंकि वह उस आदमी को जो उसके सामने अच्छा है, हिकमत और दानाई और खुशी बख्शता है; लेकिन गुनहगार को ज़हमत देता है कि वह जमा' करे और अम्बार लगाए, ताकि उसे दे जो खुदा का पसंदीदा है। ये भी बेकार और हवा की चरान है।

3

?? ?? ?? ???? ??

1 हर चीज़ का एक मौका' और हर काम का जो आसमान के नीचे होता है एक वक़्त है।

2 पैदा होने का एक वक़्त है, और मर जाने का एक वक़्त है;

दरख़्त लगाने का एक वक़्त है, और लगाए हुए को उखाड़ने का एक वक़्त है;

3 मार डालने का एक वक़्त है, और शिफ़ा देने का एक वक़्त है;

ढाने का एक वक़्त है, और ता'मीर करने का एक वक़्त है;

4 रोने का एक वक़्त है, और हँसने का एक वक़्त है;

ग़म खाने का एक वक़्त है, और नाचने का एक वक़्त है;

5 पत्थर फेंकने का एक वक़्त है, और पत्थर बटोरने का एक वक़्त है;

एक साथ होने का एक वक़्त है, और एक साथ होने से बाज़ रहने का एक वक़्त है;

6 हासिल करने का एक वक़्त है, और खो देने का एक वक़्त है;

रख छोड़ने का एक वक़्त है, और फेंक देने का एक वक़्त है;

7 फाड़ने का एक वक़्त है, और सोने का एक वक़्त है;

चुप रहने का एक वक़्त है, और बोलने का एक वक़्त है;

8 मुहब्बत का एक वक़्त है, और 'अदावत का एक वक़्त है;

जंग का एक वक़्त है, और सुलह का एक वक़्त है।

9 काम करनेवाले को उससे जिसमें वह मेहनत करता है, क्या हासिल होता है?

10 मैंने उस सख़्त दुख को देखा,

जो खुदा ने बनी आदम को दिया है कि वह मशक्कत में मुब्तिला रहें।

11 उसने हर एक चीज़ को उसके वक़्त में ख़ूब बनाया और उसने अबदियत को भी उनके दिल में जागुज़ीन

किया है; इसलिए कि इंसान उस काम को जो खुदा शुरू से आखिर तक करता है दरियाफ़्त नहीं कर सकता।

12 मैं यक़ीनन जानता हूँ कि इंसान के लिए यही बेहतर है कि खुश वक़्त हो, और जब तक ज़िन्दा रहे नेकी करे;

13 और ये भी कि हर एक इंसान खाए और पिए और अपनी सारी मेहनत से फ़ायदा उठाए; ये भी खुदा की बख़्शिश है।

14 और मुझ को यक़ीन है कि सब कुछ जो खुदा करता है हमेशा के लिए है; उसमें कुछ कमी बेशी नहीं हो सकती और खुदा ने ये इसलिए किया है कि लोग उसके सामने डरते रहें।

15 जो कुछ है वह पहले हो चुका;

और जो कुछ होने को है, वह भी हो चुका;

और खुदा गुज़िशता को फिर तलब करता है।

16 फिर मैंने दुनिया में देखा कि 'अदालतग़ह में ज़ुल्म है, और सदाक़त के मकान में शरारत है। 17 तब मैंने दिल में कहा कि खुदा रास्तबाज़ों और शरीरों की 'अदालत करेगा क्योंकि हर एक अम्र और हर काम का एक वक़्त है।

18 मैंने दिल में कहा कि "ये बनी आदम के लिए है कि खुदा उनको जाँचे और वह समझ लें कि हम खुद हैवान हैं।" 19 क्योंकि जो कुछ बनी आदम पर गुज़रता है, वही हैवान पर गुज़रता है; एक ही हादसा दोनों पर गुज़रता है, जिस तरह ये मरता है उसी तरह वह मरता है। हाँ, सब में एक ही साँस है, और इंसान को हैवान पर कुछ मर्तबा नहीं; क्योंकि सब बेकार है। 20 सब के सब एक ही जगह जाते हैं; सब के सब खाक से हैं, और सब के सब फिर खाक से जा मिलते हैं।

21 कौन जानता है कि इंसान की रूह ऊपर चढ़ती और हैवान की रूह ज़मीन की तरफ़ नीचे को जाती है?

22 फिर मैंने देखा कि इंसान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं कि वह अपने कारोबार में खुश रहे, इसलिए कि उसका हिस्सा यही है; क्योंकि कौन उसे वापस लाएगा कि जो कुछ उसके बाद होगा देख ले?

4

1 तब मैंने फिर कर उस तमाम ज़ुल्म पर,

जो दुनिया में होता है नज़र की।

और मज़लूमों के आँसूओं को देखा,

और उनको तसल्ली देनेवाला कोई न था;

और उन पर ज़ुल्म करनेवाले ज़बरदस्त थे,

लेकिन उनको तसल्ली देनेवाला कोई न था।

2 तब मैंने मुर्दों को जो आगे मर चुके,

उन ज़िन्दों से जो अब जीते हैं ज्यादा मुबारक जाना;

3 बल्कि दोनों से नेक बख्त वह है जो अब तक हुआ ही नहीं,

जिसने वह बुराई जो दुनिया' में होती है नहीं देखी।

4 फिर मैंने सारी मेहनत के काम और हर एक अच्छी दस्तकारी को देखा कि इसकी वजह से आदमी अपने पड़ोसी से हसद करता है। ये भी बेकार और हवा की चरान है।

5 वे — दानिश अपने हाथ समेटता' है और आप ही अपना गोश्त खाता है।

6 एक मुट्ठी भर जो चैन के साथ हो,
उन दो मुट्ठियों से बेहतर है जिनके साथ मेहनत और हवा की चरान हो।

७७७७ ७७७७ ७७ ७७७७७७

7 और मैंने फिर कर दुनिया' के बेकारी को देखा:

8 कोई अकेला है और उसके साथ कोई दूसरा नहीं;
उसके न बेटा है न भाई, तोभी उसकी सारी मेहनत की इन्तिहा नहीं;

और उसकी आँख दौलत से सेर नहीं होती;
वह कहता है मैं किसके लिए मेहनत करता और अपनी जान को 'ऐश से महरूम रखता हूँ?

ये भी बेकार है; हाँ, ये सख्त दुख है।

9 एक से दो बेहतर हैं,

क्योंकि उनकी मेहनत से उनको बड़ा फ़ायदा होता है।

10 क्योंकि अगर वह गिरें तो एक अपने साथी को उठाएगा;

लेकिन उस पर अफ़सोस जो अकेला है जब वह गिरता है,

क्योंकि कोई दूसरा नहीं जो उसे उठा खड़ा करे।

11 फिर अगर दो इकट्ठे लेटें तो गर्म होते हैं,

लेकिन अकेला क्यूँकर गर्म हो सकता है?

12 और अगर कोई एक पर गालिब हो तो दो उसका सामना कर सकते हैं

और तिहरी डोरी जल्द नहीं टूटती।

13 ग़रीब और 'अक़लमन्द लड़का उस बूढ़े बेवकूफ़ बा'दशाह से, जिसने नसीहत सुनना छोड़ दिया बेहतर है; 14 क्यूँकि वह क़ैद ख़ाने से निकल कर बा'दशाही करने आया बावजूद ये कि वह जो सलतनत ही में पैदा हुआ ग़रीब हो चला।

15 मैंने सब ज़िन्दों को जो दुनिया' में चलते फिरते हैं देखा कि वह उस दूसरे जवान के साथ थे जो उसका जानशीन होने के लिए खड़ा हुआ। 16 उन सब लोगों का या'नी उन सब का जिन पर वह हुक्मरान था कुछ शुमार न था, तोभी वह जो उसके बाद उठेंगे उससे खुश न होंगे। यकीनन ये भी बेकार और हवा की चरान है।

5

७७७७७ ७ ७७७ ७७७७ ७७७७७७७ ७७ ७७७

1 जब तू खुदा के घर को जाता है तो संजीदगी से क़दम रख, क्यूँकि सुनने के लिए जाना बेवकूफ़ों के जैसे ज़बीहे पेश करने से बेहतर है, इसलिए कि वह नहीं समझते कि बुराई करते हैं।

2 बोलने में जल्दबाज़ी न कर और तेरा दिल जल्दबाज़ी से खुदा के सामने कुछ न कहे;

क्यूँकि खुदा आसमान पर है और तू ज़मीन पर, इसलिए तेरी बातें मुस्तसर हों।

3 क्यूँकि काम की कसरत की वजह से ख़्वाब देखा जाता है

और बेवकूफ़ की आवाज़ बातों की कसरत होती है।

4 जब तू खुदा के लिए मन्नत माने, तो उसके अदा करने में देर न कर; क्यूँकि वह बेवकूफ़ों से खुश नहीं है। तू अपनी मन्नत को पूरा कर। 5 तेरा मन्नत न मानना इससे बेहतर है कि तू मन्नत माने और अदा न करे।

6 तेरा मुँह तेरे जिस्म को गुनहगार न बनाए, और फ़िरिश्ते के सामने मत कह कि भूल — चूक थी; खुदा तेरी आवाज़ से क्यूँ बेज़ार हो और तेरे हाथों का काम बर्बाद करे? 7 क्यूँकि ख़्वाबों की ज़ियादती और बतालत और बातों की कसरत से ऐसा होता है; लेकिन तू खुदा से डर।

8 अगर तू मुल्क में ग़रीबों को मज़लूम और अदल — ओ — इन्साफ़ को मतरुक़ देखे, तो इससे हैरान न हो; क्यूँकि एक बड़ों से बड़ा है जो निगाह करता है, और कोई इन सब से भी बड़ा है। 9 ज़मीन का हासिल सब के लिए है, बल्कि काश्तकारी से बा'दशाह का भी काम निकलता है।

10 ज़रदोस्त रुपये से आसूदा न होगा,
और दौलत का चाहनेवाला उसके बढ़ने से सेर न होगा: ये भी बेकार है।

11 जब माल की ज़्यादती होती है,
तो उसके खानेवाले भी बहुत हो जाते हैं;
और उसके मालिक को अलावा इसके कि उसे अपनी आँखों से देखे और क्या फ़ायदा है?

12 मेहनती की नींद मीठी है, चाहे वह थोड़ा खाए चाहे बहुत;

लेकिन दौलत की फ़िरावानी दौलतमन्द को सोने नहीं देती।

13 एक बला — ए — 'अज़ीम है जिसे मैंने दुनिया में देखा,
या'नी दौलत जिसे उसका मालिक अपने नुक़सान के लिए रख छोड़ता है,

14 और वह माल किसी बुरे हादसे से बर्बाद होता है, और अगर उसके घर में बेटा पैदा होता है तो उस वक्त उसके हाथ में कुछ नहीं होता।

15 जिस तरह से वह अपनी माँ के पेट से निकला उसी तरह नंगा जैसा कि आया था फिर जाएगा, और अपनी मेहनत की मजदूरी में कुछ न पाएगा जिसे वह अपने हाथ में ले जाए।

16 और ये भी बला — ए — 'अजीम है कि ठीक जैसा वह आया था वैसा ही जाएगा,

और उसे इस फुज़ूल मेहनत से क्या हासिल है?

17 वह उम्र भर बेचैनी में खाता है,

और उसकी दिक्कदारी और बेजारी और खफ़गी की इन्तिहा नहीं।

18 लो! मैंने देखा कि ये ख़ूब है, बल्कि खुशनुमा है कि आदमी खाए और पिये और अपनी सारी मेहनत से जो वह दुनिया में करता है, अपनी तमाम उम्र जो खुदा ने उसे बख़्शी है राहत उठाए; क्योंकि उसका हिस्सा यही है। 19 नीज़ हर एक आदमी जिसे खुदा ने माल — ओ — अस्बाब बख़्शा, और उसे तौफ़ीक़ दी कि उसमें से खाए और अपना हिस्सा ले और अपनी मेहनत से खुश रहे; ये तो खुदा की बख़्शिश है। 20 फिर वह अपनी ज़िन्दगी के दिनों को बहुत याद न करेगा, इसलिए कि खुदा उसकी खुशदिली के मुताबिक़ उससे सुलूक करता है।

6

1 एक जुबूनी है जो मैंने दुनिया में देखी, और वह लोगों पर गिरा है: 2 कोई ऐसा है कि खुदा ने उसे धन दौलत और 'इज़्ज़त बख़्शी है, यहाँ तक कि उसकी किसी चीज़ की जिसे उसका जी चाहता है कमी नहीं; तोभी खुदा ने उसे तौफ़ीक़ नहीं दी कि उससे खाए, बल्कि कोई अजनबी उसे खाता है। ये बेकार और सख़्त बीमारी है।

3 अगर आदमी के सौ फ़र्ज़न्द हों, और वह बहुत बरसों तक जीता रहे यहाँ तक कि उसकी उम्र के दिन बेशुमार हों, लेकिन उसका जी खुशी से सेर न हो और उसका दफ़न न हो, तो मैं कहता हूँ कि वह हमल जो गिर जाए उससे बेहतर है। 4 क्योंकि वह बतालत के साथ आया और तारीकी में जाता है, और उसका नाम अंधेरे में छिपा रहता है।

5 उसने सूरज को भी न देखा, न किसी चीज़ को जाना, फिर वह उस दूसरे से ज्यादा आराम में है। 6 हाँ, अगरचे वह दो हज़ार बरस तक ज़िन्दा रहे और उसे कुछ राहत न हो। क्या सब के सब एक ही जगह नहीं जाते?

7 आदमी की सारी मेहनत उसके मुँह के लिए है, तोभी उसका जी नहीं भरता;

8 क्योंकि 'अक्लमन्द को बेवकूफ़ पर क्या फ़ज़ीलत है? और ग़रीब को जी ज़िन्दों के सामने चलना जानता है, क्या हासिल है?

9 आँखों से देख लेना आरज़ू की आवारगी से बेहतर है: ये भी बेकार और हवा की चरान है।

222 2222 22 — 2222222 22 22222

10 जो कुछ हुआ है उसका नाम ज़माना — ए — क़दीम में रखवा गया,

और ये भी मा'लूम है कि वह इंसान है,

और वह उसके साथ जो उससे ताक़तवर है झगड़ नहीं सकता।

11 चूँकि बहुत सी चीज़ें हैं जिनसे बेकार बहुतायत होती है,

फिर इंसान को क्या फ़ायदा है?

12 क्योंकि कौन जानता है कि इंसान के लिए उसकी ज़िन्दगी में,

या'नी उसकी बेकार ज़िन्दगी के तमाम दिनों में जिनको वह परछाई की तरह बसर करता है, कौन सी चीज़ फ़ाइदेमन्द है?

क्योंकि इंसान को कौन बता सकता है कि उसके बाद दुनिया में क्या वाक़े' होगा?

7

22222222 22 2222 22222222

1 नेक नामी बेशबहा 'इतर से बेहतर है,

और मरने का दिन पैदा होने के दिन से।

2 मातम के घर में जाना दावत के घर में दाख़िल होने से बेहतर है क्योंकि सब लोगों का अन्जाम यही है, और जो ज़िन्दा है अपने दिल में इस पर सोचेगा।

3 ग़मगीनी हँसी से बेहतर है,

क्योंकि चेहरे की उदासी से दिल सुधर जाता है।

4 दाना का दिल मातम के घर में है लेकिन बेवकूफ़ का जी 'इश्रतख़ाने से लगा है।

5 इंसान के लिए 'अक्लमन्द की सरज़निश सुनना बेवकूफ़ों का राग़ सुनने से बेहतर है।

6 जैसा हाँडी के नीचे काँटों का चटकना वैसा ही बेवकूफ़ का हँसना है;

ये भी बेकार है।

7 यक्कीनन ज़ुल्म 'अक्लमन्द आदमी को दीवाना बना देता है

और रिश्वत 'अक्ल को तबाह करती है।

8 किसी बात का अन्जाम उसके आगाज़ से बेहतर है और बुर्दबार मुतकब्बिर मिज़ाज़ से अच्छा है।

9 तू अपने जी में खफ़ा होने में जल्दी न कर, क्योंकि खफ़गी बेवकूफ़ों के सीनों में रहती है।

10 तू ये न कह कि, अगले दिन इनसे क्यूँकर बेहतर थे? क्यूँकि तू 'अक्लमन्दी से इस अम्र की तहकीक नहीँ करता।

11 हिकमत खूबी में मीरास के बराबर है, और उनके लिए जो सूरज को देखते हैं ज्यादा सूदमन्द है।

12 क्यूँकि हिकमत वैसी ही पनाहगाह है जैसे रुपया, लेकिन 'इल्म की खास खूबी ये है कि हिकमत साहिब — ए — हिकमत की जान की मुहाफ़िज़ है।

13 खुदा के काम पर ग़ौर कर, क्यूँकि कौन उस चीज़ को सीधा कर सकता है जिसको उसने टेढ़ा किया है?

14 इक़बालमन्दी के दिन खुशी में मशगूल हो, लेकिन मुसीबत के दिन में सोच; बल्कि खुदा ने इसको उसके मुक़ाबिल बना रखवा है, ताकि इंसान अपने बाद की किसी बात को दरियाफ़्त न कर सके।

15 मैंने अपनी बेकारी के दिनों में ये सब कुछ देखा; कोई रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी में मरता है, और कोई बदकिरदार अपनी बदकिरदारी में उम्र दराज़ी पाता है।

16 हद से ज्यादा नेकोकार न हो, और हिकमत में 'एतदाल से बाहर न जा; इसकी क्या ज़रूरत है कि तू अपने आप को बर्बाद करे?

17 हद से ज्यादा बदकिरदार न हो, और बेवकूफ़ न बन; तू अपने वक़्त से पहले काहे को मरेगा?

18 अच्छा है कि तू इसको भी पकड़े रहे, और उस पर से भी हाथ न उठाए; क्यूँकि जो खुदा तरस है इन सब से बच निकलेगा।

19 हिकमत साहिब — ए — हिकमत को शहर के दस हाकिमों से ज्यादा ताक़तवर बना देती है।

20 क्यूँकि ज़मीन पर ऐसा कोई रास्तबाज़ इंसान नहीं कि नेकी ही करे और ख़ता न करे।

21 नीज़ उन सब बातों के सुनने पर जो कही जाएँ कान न लगा,

ऐसा न हो कि तू सुन ले कि तेरा नौकर तुझ पर ला'नत करता है;

22 क्यूँकि तू तो अपने दिल से जानता है कि तूने आप इसी तरह से औरों पर ला'नत की है

23 मैंने हिकमत से ये सब कुछ आजमाया है। मैंने कहा, मैं 'अक्लमन्द बनूँगा, लेकिन वह मुझ से कहीं दूर थी।

24 जो कुछ है सो दूर और बहुत गहरा है, उसे कौन पा सकता

25 मैंने अपने दिल को मुतवज्जिह किया कि जानूँ और तफ़्तीश करूँ और हिकमत और ख़िरद को दरियाफ़्त करूँ और समझूँ कि बुराई हिमाक़त है और हिमाक़त दीवानगी।

26 तब मैंने मौत से तल्लख़तर उस 'औरत को पाया, जिसका दिल फंदा और जाल है और जिसके हाथ हथकड़ियाँ हैं।

जिससे खुदा खुश है वह उस से बच जाएगा, लेकिन गुनहगार उसका शिकार होगा।

27 देख, वा'इज़ कहता है, मैंने एक दूसरे से मुक़ाबला करके ये दरियाफ़्त किया है। 28 जिसकी मेरे दिल को अब तक तलाश है पर मिला नहीं। मैंने हज़ार में एक मर्द पाया, लेकिन उन सभों में 'औरत एक भी न मिली।

29 लो मैंने सिर्फ़ इतना पाया कि खुदा ने इंसान को रास्त बनाया, लेकिन उन्होंने बहुत सी बन्दिशें तज्वीज़ कीं।

8

1 'अक्लमन्द के बराबर कौन है?

और किसी बात की तफ़्तीश करना कौन जानता है? इंसान की हिकमत उसके चेहरे को रोशन करती है, और उसके चेहरे की सख़्ती उससे बदल जाती है।

?????? ?? ???? ?? ??????? ???? ?

2 मैं तुझे सलाह देता हूँ कि तू बा'दशाह के हुक्म को खुदा की क़सम की वजह से मानता रह। 3 तू जल्दबाज़ी करके उसके सामने से ग़ायब न हो और किसी बुरी बात पर इसरार न कर, क्यूँकि वह जो कुछ चाहता है करता है। 4 इसलिए कि बा'दशाह का हुक्म बाइस्त्रियार है, और उससे कौन कहेगा कि तू ये क्या करता है?

5 जो कोई हुक्म मानता है,

बुराई को न देखेगा और दानिशमंद का दिल मौक़े' और इन्साफ़ को समझता है।

6 इसलिए कि हर अम्र का मौक़ा' और क़ायदा है, लेकिन इंसान की मुसीबत उस पर भारी है।

7 क्यूँकि जो कुछ होगा उसको मा'लूम नहीं, और कौन उसे बता सकता है कि क्यूँकर होगा?

8 किसी आदमी को रूह पर इस्त्रियार नहीं कि उसे रोक सके,

और मरने का दिन भी उसके इस्त्रियार से बाहर है; और उस लड़ाई से छुट्टी नहीं मिलती और न शरारत उसको जो उसमें गर्क हैं छुड़ाएगी

9 ये सब मैंने देखा और अपना दिल सारे काम पर जो दुनिया' में किया जाता है लगाया।

ऐसा वक्त्र है जिसमें एक शख्स दूसरे पर हुक्मत करके अपने ऊपर बला लाता है।

10 इसके 'अलावा मैंने देखा कि शरीर गाड़े गए, और लोग भी आए और रास्तबाज़ पाक मक़ाम से निकले और अपने शहर में फ़रामोश हो गए; ये भी बेकार हैं। 11 क्योंकि बुरे काम पर सज़ा का हुक्म फ़ौरन नहीं दिया जाता, इसलिए बनी आदम का दिल उनमें बुराई पर बाशिदत मायल है।

12 अगरचे गुनहगार सौ बार बुराई करें और उसकी उम्र दराज़ हो, तोभी मैं यक़ीनन जानता हूँ कि उन ही का भला होगा जो खुदा तरस हैं और उसके सामने काँपते हैं; 13 लेकिन गुनहगार का भला कभी न होगा, और न वह अपने दिनों को साये की तरह बढ़ाएगा, इसलिए कि वह खुदा के सामने काँपता नहीं।

14 एक बेकार है जो ज़मीन पर वकू' में आती है, कि नेकोकार लोग हैं जिनको वह कुछ पेश आता है जो चाहिए था कि बदकिरदारों को पेश आता; और शरीर लोग हैं जिनको वह कुछ मिलता है, जो चाहिये था कि नेकोकारों को मिलता। मैंने कहा कि ये भी बेकार हैं। 15 तब मैंने खुरमी की ता'रीफ़ की, क्योंकि दुनिया' में इंसान के लिए कोई चीज़ इससे बेहतर नहीं कि खाए और पिए और खुश रहे, क्योंकि ये उसकी मेहनत के दौरान में उसकी ज़िन्दगी के तमाम दिनों में जो खुदा ने दुनिया में उसे बख़्शी उसके साथ रहेगी।

16 जब मैंने अपना दिल लगाया कि हिकमत सीखूँ और उस कामकाज को जो ज़मीन पर किया जाता है देखूँ क्योंकि कोई ऐसा भी है जिसकी आँखों में न रात को नींद आती है न दिन को। 17 तब मैंने खुदा के सारे काम पर निगाह की और जाना कि इंसान उस काम को, जो दुनिया में किया जाता है, दरियाफ़्त नहीं कर सकता। अगरचे इंसान कितनी ही मेहनत से उसकी तलाश करे, लेकिन कुछ दरियाफ़्त न करेगा; बल्कि हर तरह 'अक्लमन्द को गुमान हो कि उसको मा'लूम कर लेगा, लेकिन वह कभी उसको दरियाफ़्त नहीं कर सकेगा।

9

2222 2222 2222 22

1 इन सब बातों पर मैंने दिल से ग़ौर किया और सब हाल की तफ़्तीश की, और मा'लूम हुआ कि सादिक और 'अक्लमन्द और उनके काम खुदा के हाथ में हैं; सब कुछ इंसान के सामने है, लेकिन वह न मुहब्बत जानता है न 'अदावत।

2 सब कुछ सब पर एक जैसा गुज़रता है, सादिक और शरीर पर, नेकोकार,

और पाक और नापाक पर,

उस पर जो कुर्बानी पेश करता है और उस पर जो कुर्बानी नहीं पेश करता एक ही हादसा वाक़े' होता है।

जैसा नेकोकार है, वैसा ही गुनहगार है;

जैसा वह जो क़सम खाता है, वैसा ही वह जो क़सम से डरता है।

3 सब चीज़ों में जो दुनिया में होती हैं एक जुबूनी ये है कि एक ही हादसा सब पर गुज़रता है; हाँ, बनी आदम का दिल भी शरारत से भरा है, और जब तक वह जीते हैं हिमाक़त उनके दिल में रहती है, और इसके बाद मुर्दों में शामिल होते हैं।

4 चूँकि जो ज़िन्दों के साथ है उसके लिए उम्मीद है, इसलिए ज़िन्दा कुत्ता मुर्दा शेर से बेहतर है।

5 क्योंकि ज़िन्दा जानते हैं कि वह मरेंगे,

लेकिन मुर्दे कुछ भी नहीं जानते और उनके लिए और कुछ अज़र नहीं क्योंकि उनकी याद जाती रही है।

6 अब उनकी मुहब्बत और 'अदावत — ओ — हसद सब हलाक हो गए,

और ता हमेशा उन सब कामों में जो दुनिया में किए जाते हैं, उनका कोई हिस्सा नहीं।

7 अपनी राह चला जा, खुशी से अपनी रोटी खा और खुशदिली से अपनी मय पी; क्योंकि खुदा तेरे 'आमाल को कुबूल कर चुका है। 8 तेरा लिबास हमेशा सफ़ेद हो, और तेरा सिर चिकनाहट से खाली न रहे।

9 अपनी बेकार की ज़िन्दगी के सब दिन जो उसने दुनिया में तुझे बख़्शी है, हाँ, अपनी बेकारी के सब दिन, उस बीबी के साथ जो तेरी प्यारी है 'ऐश कर ले कि इस ज़िन्दगी में और तेरी उस मेहनत के दौरान में जो तू ने दुनिया में की तेरा यही हिस्सा है। 10 जो काम तेरा हाथ करने को पाए उसे मक़दूर भर कर क्योंकि पाताल में जहाँ तू जाता है न काम है न मन्सूबा, न 'इल्म न हिकमत।

11 फिर मैंने तवज्जुह की और देखा कि दुनिया' में न तो दौड़ में तेज़ रफ़्तार को सबक़त है न जंग में ज़ोरआवर को फ़तह,

और न रोटी 'अक्लमन्द को मिलती है न दौलत 'अक्लमन्दों को,

और न 'इज़ज़त 'अक्ल वालों को;

बल्कि उन सब के लिए वक्त्र और हादिसा है।

12 क्योंकि इंसान अपना वक्त्र भी नहीं पहचानता;

जिस तरह मछलियाँ जो मुसीबत के जाल में गिरफ़्तार होती हैं,

और जिस तरह चिड़ियाँ फंदे में फसाई जाती है उसी तरह बनी आदम भी बदबख़्ती में,

जब अचानक उन पर आ पड़ती है, फँस जाते हैं।

13 मैंने ये भी देखा कि दुनिया में हिकमत है और ये मुझे बड़ी चीज़ मा'लूम हुई। 14 एक छोटा शहर था और उसमें थोड़े से लोग थे, उस पर एक बड़ा बा'दशाह चढ़ आया और उसका घिराव किया और उसके मुक़ाबिल बड़े — बड़े दमदमे बाँधे। 15 मगर उस शहर में एक कंगाल 'अक्लमन्द मर्द पाया गया और उसने अपनी हिकमत से उस शहर को बचा लिया, तोभी किसी शख्स ने इस गरीब मर्द को याद न किया।

16 तब मैंने कहा कि हिकमत ज़ोर से बेहतर है; तोभी गरीब की हिकमत की तहकीर होती है, और उसकी बातें सुनी नहीं जाती।

17 'अक्लमन्दों की बातें जो आहिस्तगी से कही जाती हैं,

बेवकूफ़ों के सरदार के शोर से ज्यादा सुनी जाती है।

18 हिकमत लड़ाई के हथियारों से बेहतर है, लेकिन एक गुनहगार बहुत सी नेकी को बर्बाद कर देता है।

10

1 मुर्दा मक्खियाँ 'अत्तार के इत्र को बदबूदार कर देती हैं,

और थोड़ी सी हिमाक़त हिकमत — ओ — 'इज्जत को मात कर देती है।

2 'अक्लमन्द का दिल उसके दहने हाथ है, लेकिन बेवकूफ़ का दिल उसकी बाईं तरफ़।

3 हाँ, बेवकूफ़ जब राह चलता है तो उसकी अक्ल उड़ जाती है

और वह सब से कहता है कि मैं बेवकूफ़ हूँ।

4 अगर हाकिम तुझ पर क्रहर करे तो अपनी जगह न छोड़,

क्योंकि बर्दाश्त बड़े बड़े गुनाहों को दबा देती है।

?????????? ?? ?????

5 एक ज़ुबूनी है जो मैंने दुनिया में देखी, जैसे वह एक ख़ता है जो हाकिम से सरज़द होती है।

6 हिमाक़त बालानशीन होती है, लेकिन दौलतमंद नीचे बैठते हैं।

7 मैंने देखा कि नौकर घोड़ों पर सवार होकर फिरते हैं, और सरदार नौकरों की तरह ज़मीन पर पैदल चलते हैं।

8 गढ़ा खोदने वाला उसी में गिरेगा और दीवार में रखना करने वाले को साँप डसेगा।

9 जो कोई पत्थरों को काटता है उनसे चोट खाएगा और जो लकड़ी चीरता है उससे खतरे में है।

10 अगर कुल्हाड़ा कुन्द हैं और आदमी धार तेज़ न करे तो बहुत ज़ोर लगाना पड़ता है,

लेकिन हिकमत हिदायत के लिए मुफ़ीद है।

11 अगर साँप ने अफ़सून से पहले डसा है तो अफ़सूनगर को कुछ फ़ायदा न होगा।

12 'अक्लमन्द के मुँह की बातें लतीफ़ हैं लेकिन बेवकूफ़ के होंट उसी को निगल जाते हैं।

13 उसके मुँह की बातों की इब्तिदा हिमाक़त है और उसकी बातों की इन्तिहा फ़ितनाअंगेज़ अबलही।

14 बेवकूफ़ भी बहुत सी बातें बनाता है लेकिन आदमी नहीं बता सकता है कि क्या होगा

और जो कुछ उसके बाद होगा उसे कौन समझा सकता है?

15 बेवकूफ़ों की मेहनत उसे थकाती है, क्योंकि वह शहर को जाना भी नहीं जानता।

16 ऐ ममलुकत तुझ पर अफ़सोस, जब नाबालिग़ तेरा बा'दशाह हो और तेरे सरदार सुबह को खाएँ।

17 नेकबख्त है तू ऐ सरज़मीन जब तेरा बा'दशाह शरीफ़ज़ादा हो

और तेरे सरदार मुनासिब वक़्त पर तवानाई के लिए खाएँ और न इसलिए कि बदमस्त हों।

18 काहिली की वजह से कड़ियाँ झुक जाती हैं, और हाथों के ढीले होने से छत टपकती है।

19 हँसने के लिए लोग दावत करते हैं, और मय जान को खुश करती है, और रुपये से सब मक़सद पूरे होते हैं।

20 तू अपने दिल में भी बा'दशाह पर ला'नत न कर और अपनी ख्वाबगाह में भी मालदार पर ला'नत न कर क्योंकि हवाई चिड़िया बात को ले उड़ेगी और परदार उसको खोल देगा।

11

?????????? ?? ???-????? ?????

1 अपनी रोटी पानी में डाल दे क्योंकि तू बहुत दिनों के बाद उसे पाएगा।

2 सात को बल्कि आठ को हिस्सा दे क्योंकि तू नहीं जानता कि ज़मीन पर क्या बला आएगी।

3 जब बादल पानी से भरे होते हैं तो ज़मीन पर बरस कर खाली हो जाते हैं

और अगर दरख़्त दख़्खन की तरफ़ या उत्तर की तरफ़ गिरे तो जहाँ दरख़्त गिरता है वहीं पड़ा रहता है।

4 जो हवा का रुख़ देखता रहता है वह बोता नहीं और जो बा'दलों को देखता है वह काटता नहीं।

5 जैसा तू नहीं जानता है कि हवा की क्या राह है

और हामिला के रिहम में हड्डियाँ क्यूँकर बढ़ती हैं,
वैसा ही तू खुदा के कामों को जो सब कुछ करता है नहीं
जानेगा।

6 सुबह को अपना बीज बो और शाम को भी अपना हाथ
ढीला न होने दे,
क्यूँकि तू नहीं जानता कि उनमें से कौन सा कामयाब
होगा,
ये या वह या दोनों के दोनों बराबर कामयाब होंगे।

7 नूर शीरीन है और आफ़ताब को देखना आँखों को
अच्छा लगता है।

8 हाँ, अगर आदमी बरसों ज़िन्दा रहे, तो उनमें खुशी करे;
लेकिन तारीकी के दिनों को याद रखे, क्यूँकि वह बहुत
होंगे।

सब कुछ जो आता है बेकार है।

9 ऐ जवान, तू अपनी जवानी में खुश हो,
और उसके दिनों में अपना जी बहला।
और अपने दिल की राहों में, और अपनी आँखों की
मन्ज़ूरी में चल।

लेकिन याद रख कि इन सब बातों के लिए खुदा तुझ को
'अदालत में लाएगा।

10 फिर ग़म को अपने दिल से दूर कर,
और बुराई अपने जिस्म से निकाल डाल;
क्यूँकि लड़कपन और जवानी दोनों बेकार हैं।

12

1 और अपनी जवानी के दिनों में अपने खालिक को याद
कर,
जब कि बुरे दिन हुनूज़ नहीं आए और वह बरस नज़दीक
नहीं हुए,

जिनमें तू कहेगा कि इनसे मुझे कुछ खुशी नहीं।

2 जब कि हुनूज़ सूरज और रोशनी चाँद सितारे तारीक
नहीं हुए,

और बा'दल बारिश के बाद फिर जमा' नहीं हुए;

3 जिस रोज़ घर के निगाहबान थरथराने लगे
और ताक़तवर लोग कुबड़े हो जाएँ

और पीसने वालियाँ रुक जाएँ इसलिए कि वह थोड़ी सी
हैं,

और वह जो खिड़कियों से झाँकती हैं धुंदला जाए,

4 और गली के किवाड़े बन्द हो जाएँ,

जब चक्की की आवाज़ धीमी हो जाए और इंसान
चिड़िया की आवाज़ से चौंक उठे,
और नगमे की सब बेटियाँ ज़ईफ़ हो जाएँ।

5 हाँ, जब वह चढ़ाई से भी डर जाए और दहशत राह में
हो,

और बा'दाम के फूल निकलें और टिड्डी एक बोझ
मा'लूम हो,

और ख्वाहिश मिट जाए क्यूँकि इंसान अपने हमेशा के
मकान में चला जायेगा

और मातम करने वाले गली गली फ़िरेंगे।

6 पहले इससे कि चाँदी की डोरी खोली जाए,

और सोने की कटोरी तोड़ी जाए और घड़ा चश्मे पर
फोड़ा जाए,

और हौज़ का चर्ख़ टूट जाए,

7 और खाक — खाक से जा मिले जिस तरह आगे मिली
हुई थी,

और रूह खुदा के पास जिसने उसे दिया था वापस जाए।

222222 22 2222 222 222222 222222

8 बेकार ही बेकार वा'इज़ कहता है, सब कुछ बेकार है।

9 गरज़ अज़ बस की वा'इज़ 'अक्लमन्द था, उसने
लोगों को तालीम दी; हाँ, उसने बखूबी ग़ौर किया और
खूब तजवीज़ की और बहुत सी मसलें करीने से बयान
कीं।

10 वा'इज़ दिल आवेज़ बातों की तलाश में रहा, उन
सच्ची बातों की जो रास्ती से लिखी गईं। 11 'अक्लमन्द
की बातें पैनों की तरह हैं, और उन खूंटियों की तरह जो
साहिबान — ए — मजलिस ने लगाई हों, और जो एक
ही चरवाहे की तरफ़ से मिली हों।

12 इसलिए अब ऐ मेरे बेटे, इनसे नसीहत पज़ीर हो,
बहुत किताबे बनाने की इन्तिहा नहीं है और बहुत पढ़ना
जिस्म को थकाता है।

13 अब सब कुछ सुनाया गया;

हासिल — ए — कलाम ये है: खुदा से डर

और उसके हुक्मों को मान कि इंसान का फ़र्ज़ — ए —
कुल्ली यही है।

14 क्यूँकि खुदा हर एक फ़ैल को हर एक पोशीदा चीज़
के साथ,
चाहे भली हो चाहे बुरी, 'अदालत में लाएगा।

गज़लुल गज़लियात

?????????? ?? ?????

गज़लुल गज़लियात का जो मज़मून है वह इस किताब की पहली आयत से लिया गया है जो यह बयान करता है कि यह गज़ल कहां से लाया गया है। 1:1 गज़लुल गज़लियात जो सुलेमान की तरफ़ से है। किताब का मज़मून आखिर — ए — कार सुलेमान के नाम से लिया गया क्योंकि उसके नाम का ज़िक्र पूरी किताब में किया गया है (1:5; 3:7, 9, 11; 8:11-12)।

????? ?????? ?? ?????????? ?? ???

इस किताब की तस्नीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 971 - 965 क़ब्ल मसीह के बीच है।

इस किताब को सुलेमान ने इस्राईल का बादशाह बतौर उसकी हुकूमत के दौरान लिखी, उलमा' जो उस के मुसन्निफ़ होने से राज़ी हैं उन का मानना है कि यह गज़ल उस के दौर — ए — हुकूमत के आगाज़ में लिखे गये न सिर्फ़ उस के जवानी के गज़लों के सबब नहीं बल्कि इस लिए भी कि मुसन्निफ़ ने अपने मुल्क के शुमाल और जुनूब के इलाक़ों का भी अपने गज़लों में ज़िक्र किया है साथ में लेबनान और मिस्त्र का भी।

??????? ?????????????? ?????? ??????

शादी शुदः जोड़े और मुजरिद मर्द, बिनबियाही औरत जो शादी का तसव्वुर कर रहे होते हैं।

????? ??????????

गज़लुल गज़लियात एक ग़नाई गज़ल है जो मुहब्बत की नेकी के तारीफ़ के पुल बांधता है और यह साफ़ तौर से शादी को पेश करती है जिस तरह खुदा ने मख्सूस किया है। एक शादी शुदा मर्द और औरत को शादी की हालत में एक साथ रहने की ज़रूरत है और एक दूसरे से रूहानी तौर से, जज़बाती तौर से और जिसमानी तौर से मुहब्बत करने की ज़रूरत है।

???????

मुहब्बत और शादी।

बैरूनी खाका

1. दुल्हन सुलेमान की बाबत सोचती है। — 1:1-3:5
2. मंगनी के लिए दुल्हन की कुबूलियत और शादी का इन्तज़ार — 3:6-5:1
3. दुल्हन दुल्हे के छूट जाने का ख़्वाब देखती है — 5:2-6:3
4. दुल्हन और दुलहा एक दूसरे की तारीफ़ करते हैं। — 6:4-8:14

1 सुलेमान की गज़ल — उल — गज़लात।

2 वह अपने मुँह के लबों से मुझे चूमे,
क्योंकि तेरा इश्क़ मय से बेहतर है।

3 तेरे 'इत्र की खुशबू खुशगवार है तेरा नाम 'इत्र रेख़्ता है;

इसीलिए कुंवारीयाँ तुझ पर आशिक़ हैं।

4 मुझे खींच ले, हम तेरे पीछे दौड़ेंगी।

बादशाह मुझे अपने महल में ले आया।

हम तुझ में शादमान और मसरूर होंगी, हम तेरे 'इश्क़ का बयान मय से ज़्यादा करेंगी।

वह सच्चे दिल से तुझ पर 'आशिक़ हैं।

5 ऐ येरूशलेम की बेटियो,

मैं सियाहफ़ाम लेकिन खूबसूरत हूँ क़ीदार के खेमों और सुलेमान के पर्दों की तरह।

6 मुझे मत देखो कि मैं सियाहफ़ाम हूँ,

क्योंकि मैं धूप की जली हूँ। मेरी माँ के बेटे मुझ से नाखुश थे,

उन्होंने मुझ से खज़ूर के बाग़ों की निगाहबानी कराई; लेकिन मैंने अपने खज़ूर के बाग़ की निगाहबानी नहीं की।

7 ऐ मेरी जान के प्यारे! मुझे बता,

तू अपने ग़ल्ले को कहाँ चराता है,

और दोपहर के वक़्त कहाँ बिठाता है?

क्योंकि मैं तेरे दोस्तों के ग़ल्लों के पास क्यूँ मारी — मारी फिरूँ?

8 ऐ 'औरतों में सब से खूबसूरत,

अगर तू नहीं जानती तो ग़ल्ले के नक़्श — ए — क़दम पर चली जा,

और अपने बुज़ग़ालों को चरवाहों के खेमों के पास पास चरा।

9 ऐ मेरी प्यारी, मैंने तुझे फिर 'औन के रथ की घोड़ियों में से एक के साथ मिसाल दी है।

10 तेरे गाल लगातार जुल्फ़ों में खुशनुमाँ हैं,

और तेरी गर्दन मोतियों के हारों में।

11 हम तेरे लिए सोने के तौक़ बनाएँगे, और उनमें चाँदी के फूल जड़ेंगे।

12 जब तक बादशाह तनावुल फ़रमाता रहा,

मेरे सुम्बुल की महक उड़ती रही।

13 मेरा महबूब मेरे लिए दस्ता — ए — मुर है,

जो रात भर मेरी सीने के बीच पड़ा रहता है।

14 मेरा महबूब मेरे लिए ऐनजदी के अंगूरिस्तान से मेहन्दी के फूलों का गुच्छा है।

15 देख, तू खूबसूरत है ऐ मेरी प्यारी,

7 देखो, यह सुलेमान की पालकी है!
जिसके साथ इस्राईली बहादुरों में से साठ पहलवान हैं।
8 वह सब के सब शमशीरज़न और जंग में माहिर हैं।
रात के खतरे की वजह से हर एक की तलवार उसकी रान पर लटक रही है।
9 सुलेमान बादशाह ने लुबनान की लकड़ियों से अपने लिए एक पालकी बनवाई।
10 उसके डंडे चाँदी के बनवाए,
उसके बैठने की जगह सोने की और गद्दी अर्गवानी बनवाई;
और उसके अंदर का फ़र्श, येरूशलेम की बेटियों ने इश्क से आरास्ता किया।
11 ऐ सिय्यून की बेटियो,
बाहर निकलो और सुलेमान बादशाह को देखो;
उस ताज के साथ जो उसकी माँ ने उसके शादी के दिन और उसके दिल की शादमानी के दिन उसके सिर पर रखवा।

4

???? ???? ?

1 देख, तू खूबसूरत है ऐ मेरी प्यारी!
देख, तू खूबसूरत है; तेरी आँखें तेरे नक्काब के नीचे दो कबूतर हैं,
तेरे बाल बकरियों के गल्ले की तरह हैं,
जो कोह — ए — जिल्'आद पर बैठी हों।
2 तेरे दाँत भेड़ों के गल्ले की तरह हैं,
जिनके बाल कतरे गए हों और जिनको गुस्त दिया गया हो,
जिनमें से हर एक ने दो बच्चे दिए हों, और उनमें एक भी बाँझ न हो।
3 तेरे होंठ किर्मिज़ी डोरे हैं,
तेरा मुँह दिल फ़रेब है,
तेरी कनपटियाँ तेरे नक्काब के नीचे अनार के टुकड़ों की तरह हैं।
4 तेरी गर्दन दाऊद का बुर्ज है जो सिलाहखाने के लिए बना जिस पर हज़ार ढाल लटकाई गई हैं,
वह सब की सब पहलवानों की ढालें हैं।
5 तेरी दोनों छातियाँ दो तोअम आहू बच्चे हैं,
जो सोसनों में चरते हैं।

6 जब तक दिन ढले और साया बढे,
मैं मुर के पहाड़ और लुबान के टीले पर जा रहूँगा।

7 ऐ मेरी प्यारी, तू सरापा जमाल है;
तुझ में कोई 'ऐब नहीं।

8 लुबनान से मेरे साथ, ऐ दुल्हन!

तू लुबनान से मेरे साथ चली आ।
अमाना की चोटी पर से,
सनीर और हरमून की चोटी पर से,
शेरों की माँदों से, और चीतों के पहाड़ों पर से नज़र दौड़ा।
9 ऐ मेरी प्यारी, मेरी ज़ौजा, तू ने मेरा दिल लूट लिया।
अपनी एक नज़र से,
अपनी गर्दन के एक तौक़ से तू ने मेरा दिल ग़ारत कर लिया।
10 ऐ मेरी प्यारी, मेरी ज़ौजा, तेरा 'इश्क क्या खूब है।
तेरी मुहब्बत मय से ज्यादा लज़ीज़ है,
और तेरे इत्तों की महक हर तरह की खुशबू से बढ़कर है।
11 ऐ मेरी ज़ौजा, तेरे होठों से शहद टपकता है;
शहद — ओ — शीर तेरे ज़बान तले है तेरी पोशाक की खुशबू लुबनान की जैसी है।
12 मेरी प्यारी, मेरी ज़ौजा एक महफूज़ बागीचा है;
वह महफूज़ सोता और सर बमुहर चश्मा है।
13 तेरे बाग़ के पौधे लज़ीज़ मेवादार अनार हैं,
मेहन्दी और सुम्बुल भी हैं।
14 जटामासी और ज़ा'फ़रान,
बेदमुश्क और दारचीनी और लोबान के तमाम दरख्त,
मुर और ऊद और हर तरह की खास खुशबू।
15 तू बाग़ों में एक मम्बा', आब — ए — हयात का चश्मा,
और लुबनान का झरना है।
16 ऐ शिमाली हवा बेदार हो, ऐ दरख्खनी हवा चली आ!
मेरे बाग़ पर से गुज़र, ताकि उसकी खुशबू फैले।
मेरा महबूब अपने बाग़ में आए,
और अपने लज़ीज़ मेवे खाए।

5

???? ???? ?

1 मैं अपने बाग़ में आया हूँ ऐ मेरी प्यारी ऐ मेरी ज़ौजा;
मैंने अपना मुर अपने बलसान समेत जमा' कर लिया;
मैंने अपना शहद छत्ते समेत खा लिया,
मैंने अपनी मय दूध समेत पी ली है। ऐ दोस्तो, खाओ,
पियो। पियो!
हाँ, ऐ 'अज़ीज़ो, खूब जी भर के पियो!

2 मैं सोती हूँ, लेकिन मेरा दिल जागता है।
मेरे महबूब की आवाज़ है जो खटखटाता है,
और कहता है, "मेरे लिए दरवाज़ा खोल, मेरी महबूबा,
मेरी प्यारी! मेरी कबूतरी, मेरी पाकीज़ा, क्योंकि मेरा सिर शबनम से तर है,

और मेरी जुल्फें रात की बूंदों से भरी हैं।”

3 मैं तो कपड़े उतार चुकी, अब फिर कैसे पहनूँ?

मैं तो अपने पाँव धो चुकी, अब उनको क्यों मैला करूँ?

4 मेरे महबूब ने अपना हाथ सूराख से अन्दर किया,
और मेरे दिल — ओ — जिगर में उसके लिए हरकत
हुई।

5 मैं अपने महबूब के लिए दरवाज़ा खोलने को उठी,
और मेरे हाथों से मुर टपका, और मेरी उँगलियों से
रक्रीक मुर टपका,
और कुफल के दस्तों पर पड़ा।

6 मैंने अपने महबूब के लिए दरवाज़ा खोला,
लेकिन मेरा महबूब मुड़ कर चला गया था। जब वह
बोला,

तो मैं बदनवास हो गई। मैंने उसे ढूँडा पर न पाया;
मैंने उसे पुकारा पर उसने मुझे कुछ जवाब न दिया।

7 पहरेवाले जो शहर में फिरते हैं, मुझे मिले;
उन्होंने मुझे मारा और घायल किया;
शहरपनाह के मुहाफ़िज़ों ने मेरी चादर मुझ से छीन ली।

8 ऐ येरूशलेम की बेटियो!

मैं तुम को कसम देती हूँ कि अगर मेरा महबूब तुम को
मिल जाए,
तो उससे कह देना कि मैं इश्क की बीमार हूँ।

9 तेरे महबूब को किसी दूसरे महबूब पर क्या फ़ज़ीलत
है, ऐ 'औरतों में सब से जमीला'?
तेरे महबूब को किसी दूसरे महबूब पर क्या फ़ौकियत है?
जो तू हम को इस तरह कसम देती है।

10 मेरा महबूब सुख — ओ — सफ़ेद है,
वह दस हज़ार में मुस्ताज़ है।

11 उसका सिर खालिस सोना है,
उसकी जुल्फें पेच — दर — पेच और कौवे सी काली हैं।

12 उसकी आँखें उन कबूतरों की तरह हैं,
जो दूध में नहाकर लब — ए — दरिया तमकनत से बैठे
हों।

13 उसके गाल फूलों के चमन और बलसान की उभरी हुई
क्यारियाँ हैं।

उसके होंट सोसन हैं, जिनसे रक्रीक मुर टपकता है।

14 उसके हाथ ज़बरजद से आरास्ता सोने के हल्के हैं।
उसका पेट हाथी दाँत का काम है, जिस पर नीलम के
फूल बने हो।

15 उसकी टांगे कुन्दन के पायों पर संग — ए — मरमर
के खम्बे हैं।

वह देखने में लुबनान और खूबी में रश्क — ए — सरो
है।

16 उसका मुँह अज़ बस शीरीन है; हाँ, वह सरापा 'इश्क
अंगेज़ है।

ऐ येरूशलेम की बेटियो, यह है मेरा महबूब, यह है मेरा
प्यारा।

6

???????? ?? ?????

1 तेरा महबूब कहाँ गया ऐ 'औरतों में सब से जमीला'?
तेरा महबूब किस तरफ़ को निकला कि हम तेरे साथ
उसकी तलाश में जाएँ?

2 मेरा महबूब अपने बोस्तान में बलसान की क्यारियों की
तरफ़ गया है,

ताकि बागों में चराये और सोसन जमा' करे।

3 मैं अपने महबूब की हूँ और मेरा महबूब मेरा है।
वह सोसनों में चराता है।

4 ऐ मेरी प्यारी, तू तिर्जा की तरह खूबसूरत है।
येरूशलेम की तरह खुशमंज़र और 'अलमदार लश्कर की
तरह दिल पसन्द है।

5 अपनी आँखें मेरी तरफ़ से फेर ले,
क्योंकि वह मुझे घबरा देती हैं;
तेरे बाल बकरियों के गल्ले की तरह हैं,
जो कोह — ए — जिल'आद पर बैठी हों।

6 तेरे दाँत भेड़ों के गल्ले की तरह हैं,
जिनको गुस्ल दिया गया हो;
जिनमें से हर एक ने दो बच्चे दिए हों,
और उनमें एक भी बाँझ न हो।

7 तेरी कनपटियाँ तेरे नक्राब के नीचे,
अनार के टुकड़ों की तरह हैं।

8 साठ रानियाँ और अस्सी हरमें,
और बेशुमार कुंवारियाँ भी हैं;

9 लेकिन मेरी कबूतरी, मेरी पाकीज़ा बेमिसाल है;
वह अपनी माँ की इकलौती, वह अपनी वालिदा की
लाडली है।

बेटियों ने उसे देखा और उसे मुबारक कहा।
रानियों और हरमों ने देखकर उसकी बड़ाई की।

10 यह कौन है जिसका ज़हूर सुबह की तरह है,
जो हुस्न में माहताब, और नूर में आफ़ताब,
'अलमदार लश्कर की तरह दिल पसन्द है?

11 मैं चिलगोज़ों के बाग में गया,
कि वादी की नबातात पर नज़र करूँ,
और देखें कि ताक में गुंचे,

हम अपनी बहन के लिए क्या करें?

9 अगर वह दीवार हो,
तो हम उस पर चाँदी का बुर्ज बनाएँगे और अगर वह
दरवाज़ा हो;
हम उस पर देवदार के तख्ते लगाएँगे।

10 मैं दीवार हूँ और मेरी छातियाँ बुर्ज हैं
और मैं उसकी नज़र में सलामती याफ़ता, की तरह थी।

11 बाल हामून में सुलेमान का खजूर का बाग़ था
उसने उस खजूर के बाग़ को बाग़बानों के सुपुर्द किया
कि उनमें से हर एक उसके फल के बदले हज़ार
मिस्क़ाल चाँदी अदा करे।

12 मेरा खजूर का बाग़ जो मेरा ही है मेरे सामने है ऐ
सुलेमान तू तो हज़ार ले,
और उसके फल के निगहबान दो सौ पाएँ।

13 ऐ बूस्तान में रहनेवाली,
दोस्त तेरी आवाज़ सुनते हैं;
मुझ को भी सुना।

14 ऐ मेरे महबूब जल्दी कर
और उस ग़ज़ाल या आहू बच्चे की तरह हो जा,
जो बलसानी पहाड़ियों पर है।

यसायाह

यसायाह की किताब अपने नाम को उसके मुसन्निफ़ से लेती है। उस ने एक नबिय्या से शादी की थी जिस से दो बेटे पैदा हुए। यसायाह (7:3; 8:3) उसने चार यहूदिया के बादशाहों के दौर — ए — हुकूमत में नबुव्वत की वह बादशाह हैं उज्जियाह, आखज़, यूताम और हिज़कियाह।

यसायाह की किताब अपने नाम को उसके मुसन्निफ़ से लेती है। उस ने एक नबिय्या से शादी की थी जिस से दो बेटे पैदा हुए। यसायाह (7:3; 8:3) उसने चार यहूदिया के बादशाहों के दौर — ए — हुकूमत में नबुव्वत की वह बादशाह हैं उज्जियाह, आखज़, यूताम और हिज़कियाह।

इस किताब की तस्नीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 740 - 680 क़ब्ल मसीह के बीच है।

यह किताब उज्जियाह बादशाह की हुकूमत के आख़िर में और दीगर तीन बादशाह यूताम, आखज़ और हिज़कियाह के दौर — ए — हुकूमत में लिखे गये।

सेबसे पहले खास नाज़रीन व सामईन जिन से यसायाह मुखातब था वह थे यहूदिया के लोग जो खुदा की शरीअत की ज़रूरत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने में नाकाम थे।

यसायाह का असल मक्सद था कि पूरे पुराने अहदनामे में हमें येसू मसीह की एक वसी नबुवती तस्वीर फ़राहम करे। यह उस की ज़िन्दगी की वुसअत को शामिल करता है: येसू के दुबारा आमद का इशतिहार यसायाह (40:3 — 5), उस का कुंवारी से पैदा होना (7:14), उस के खुशख़बरी की मनादी (61:1), उसकी ज़बीहाना मौत (52:13 — 53:12), और अपने खुद का दावा करने के लिए उसका लौटना (60:2 — 3) सबसे पहले यसायाह की बुलाहट यहूदा की सलतनत के लिये नबुव्वत करने के लिए थी। यहूदाह बेदारी और बग़ावत के हालात से होकर गुज़र रहा था। यहूदाह को अशशूरो और मिस्र ने बर्बाद करने की धमकी दी, मगर वह खुद के रहम के सबब से बख़्शा दिया गया। गुनाहों से तौबा करने के लिए यसायाह ने मनादी की और मुसतक़बिल में खुदा की नजात के लिये उम्मीद भरे तवक्क़ो का इज़हार किया।

नजात

यसायाह का असल मक्सद था कि पूरे पुराने अहदनामे में हमें येसू मसीह की एक वसी नबुवती तस्वीर फ़राहम करे। यह उस की ज़िन्दगी की वुसअत को शामिल करता है: येसू के दुबारा आमद का इशतिहार यसायाह (40:3 — 5), उस का कुंवारी से पैदा होना (7:14), उस के खुशख़बरी की मनादी (61:1), उसकी ज़बीहाना मौत (52:13 — 53:12), और अपने खुद का दावा करने के लिए उसका लौटना (60:2 — 3) सबसे पहले यसायाह की बुलाहट यहूदा की सलतनत के लिये नबुव्वत करने के लिए थी। यहूदाह बेदारी और बग़ावत के हालात से होकर गुज़र रहा था। यहूदाह को अशशूरो और मिस्र ने बर्बाद करने की धमकी दी, मगर वह खुद के रहम के सबब से बख़्शा दिया गया। गुनाहों से तौबा करने के लिए यसायाह ने मनादी की और मुसतक़बिल में खुदा की नजात के लिये उम्मीद भरे तवक्क़ो का इज़हार किया।

नजात

बैरूनी खाका

1. खुदा की तरफ़ से यहूदिया को अपनी रहमत से दूर करना — 1:1-12:6

2. दीगर क़ौमों के खिलाफ़ खुदा की तरफ़ से अपनी रहमत से दूर करना — 13:1-23:18
3. मुसतक़बिल की बड़ी मुसीबत — 24:1-27:13
4. खुदा की तरफ़ से इस्राईल और यहूदिया को अपनी रहमत से दूर करना — 28:1-35:10
5. हिज़किय्यह और यशायाह की त्वारीख़ — 36:1-38:22
6. बाबेल का पसमंज़र — 39:1-47:15
7. तसल्लती और इतमिनान के लिए खुदा का मन्सूबा — 48:1-66:24

1 यसा'याह बिन आमूस का ख़्वाब जो उसने यहूदाह और येरूशलेम के ज़रिए' यहूदाह के बादशाहों उज्जियाह और यूताम और आखज़ और हिज़कियाह के दिनों में देखा।

2 सुन ऐ आसमान, और कान लगा ऐ ज़मीन, कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: "कि मैंने लड़कों को पाला और पोसा, लेकिन उन्होंने मुझ से सरकशी की। 3 बैल अपने मालिक को पहचानता है और गधा अपने मालिक की चरनी को, लेकिन बनी — इस्राईल नहीं जानते; मेरे लोग कुछ नहीं सोचते।" 4 आह, ख़ताकार गिरोह, बदकिरदारी से लदी हुई क़ौम बदकिरदारों की नसल मक्कार औलाद; जिन्होंने खुदावन्द को छोड़ दिया, इस्राईल के कुददूस को हक़ीर जाना, और गुमराह — ओ — बरग़श्ता हो गए!" 5 तुम क्यूँ ज़्यादा बग़ावत करके और मार खाओगे? तमाम सिर बीमार है और दिल बिल्कुल सुस्त है। 6 तलवे से लेकर चाँदी तक उसमें कहीं सेहत नहीं सिर्फ़ ज़ख़्म और चोट और सड़े हुए घाव ही हैं; जो न दबाए गए, न बाँधे गए, न तेल से नर्म किए गए हैं। 7 तुम्हारा मुल्क उजाड़ है, तुम्हारी बस्तियाँ जल गईं; लेकिन परदेसी तुम्हारी ज़मीन को तुम्हारे सामने निगलते हैं, वह वीरान है, जैसे उसे अजनबी लोगों ने उजाड़ा है। 8 और सिय्यून की बेटी छोड़ दी गई है, जैसे झोपड़ी बाग़ में और छप्पर ककड़ी के खेत में या उस शहर की तरह जो महसूर हो गया हो। 9 अगर रब्ब — उल — अफ़वाज हमारा थोड़ा सा बक़िया बाक़ी न छोड़ता, तो हम सद्म की तरह और 'अमूरा की तरह हो जाते। 10 सद्म के हाकिमो, का कलाम सुनो! के लोगों, खुदा की शरी'अत पर कान लगाओ! 11 खुदावन्द फ़रमाता है, तुम्हारे ज़बीहों की कसरत से मुझे क्या काम? मैं मेंढों की सोख़्तनी कुर्बानियों से और फ़र्बा बछड़ों की चर्बी से बेज़ार हूँ; और बैलों और भेड़ों और बक़रों के खून में मेरी खुशनूदी नहीं। 12 "जब तुम मेरे सामने आकर मेरे दीदार के तालिब होते हो, तो कौन तुम से ये चाहता है कि

मेरी बारगाहों को रौंदो? ¹³ आइन्दा को बातिल हदिये न लाना, खुशबू से मुझे नफ़रत है, नये चाँद और सबत और 'ईदी जमा'अत से भी; क्योंकि मुझ में बदकिरदारी के साथ 'ईद की बर्दाश्त नहीं। ¹⁴ मेरे दिल को तुम्हारे नये चाँदों और तुम्हारी मुक़रर 'ईदों से नफ़रत है; वह मुझ पर बार है; मैं उनकी बर्दाश्त नहीं कर सकता। ¹⁵ जब तुम अपने हाथ फैलाओगे, तो मैं तुम से आँख फेर लूँगा; हाँ, जब तुम दुआ पर दुआ करोगे, तो मैं न सुनूँगा; तुम्हारे हाथ तो खून आलूदा हैं। ¹⁶ अपने आपको धो, अपने आपको पाक करो; अपने बुरे कामों को मेरी आँखों के सामने से दूर करो, बदफ़ेली से बाज़ आओ, ¹⁷ नेकोकारी सीखो; इन्साफ़ के तालिब हो मज़लूमों की मदद करो यतीमों की फ़रियादरसी करो, बेवाओं के हामी हो।" ¹⁸ अब खुदावन्द फ़रमाता है, "आओ, हम मिलकर हुज्जत करें; अगरचे तुम्हारे गुनाह किर्मिज़ी हों, वह बर्फ़ की तरह सफ़ेद हो जाएँगे; और हर चन्द वह अर्ग़वानी हों, तोभी ऊन की तरह उजले होंगे। ¹⁹ अगर तुम राज़ी और फ़रमाबरदार हो, तो ज़मीन के अच्छे अच्छे फल खाओगे; ²⁰ लेकिन अगर तुम इन्कार करो और बागी हो तो तलवार का लुक्रमा हो जाओगे क्योंकि खुदावन्द ने अपने मुँह से ये फ़रमाया है।" ²¹ वफ़ादार बस्ती कैसी बदकार हो गई! वह तो इन्साफ़ से मा'मूर थी और रास्तबाज़ी उसमें बसती थी, लेकिन अब खूनी रहते हैं। ²² तेरी चाँदी मैल हो गई, तेरी मय में पानी मिल गया। ²³ तेरे सरदार गर्दनकश और चोरों के साथी हैं। उनमें से हर एक रिश्वत दोस्त और इन'आम का तालिब है। वह यतीमों का इन्साफ़ नहीं करते और बेवाओं की फ़रियाद उन तक नहीं पहुँचती। ²⁴ इसलिए खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का क़ादिर, यूँ फ़रमाता है: कि "आह मैं ज़रूर अपने मुखालिफ़ों से आराम पाऊँगा, और अपने दुश्मनों से इन्तक़ाम लूँगा। ²⁵ और मैं तुझ पर अपना हाथ बढ़ाऊँगा, और तेरी गन्दगी बिल्कुल दूर कर दूँगा, और उस राँगे को जो तुझ में मिला है जुदा करूँगा; ²⁶ और मैं तेरे क़ाज़ियों को पहले की तरह और तेरे सलाहकारों को पहले के मुताबिक़ बहाल करूँगा। इसके बाद तू रास्तबाज़ बस्ती और वफ़ादार आबादी कहलाएगी।" ²⁷ सिय्यून 'अदालत की वजह से और वह जो उसमें गुनाह से बाज़ आए हैं, रास्तबाज़ी के ज़रिए' नज़ात पाएँगे; ²⁸ लेकिन गुनाहगार और बदकिरदार सब इकट्ठे हलाक होंगे, और जो खुदावन्द से बागी हुए फ़ना किए जाएँगे। ²⁹ क्योंकि वह उन बलूतों से, जिनको तुम ने चाहा शर्मिन्दा होंगे; और तुम उन बाग़ों से, जिनको तुम ने पसन्द किया है खज़िल होंगे। ³⁰ और तुम उस

बलूत की तरह हो जाओगे जिसके पत्ते झड़ जाएँ, और उस बाग़ की तरह जो बेआबी से सूख जाए। ³¹ वहाँ का पहलवान ऐसा हो जाएगा जैसा सन, और उसका काम चिंगारी हो जाएगा; वह दोनों एक साथ जल जाएँगे, और कोई उनकी आग न बुझाएगा।

2

2222 2222 22 2222 222222 22 22222222

¹ वह बात जो यसा'याह बिन आमूस ने यहूदाह और येरूशलेम के हक़ में ख़्वाब में देखा। ² आखिरी दिनों में यूँ होगा कि खुदावन्द के घर का पहाड़ पहाड़ों की चोटी पर क़ाईम किया जाएगा, और टीलों से बुलन्द होगा, और सब क़ौमों वहाँ पहुँचेंगी; ³ बल्कि बहुत सी उम्मतें आयेंगी और कहेंगी "आओ खुदावन्द के पहाड़ पर चढ़ें, या'नी या'कूब के खुदा के घर में दाख़िल हों और वह अपनी राहें हम को बताएगा, और हम उसके रास्तों पर चलेंगे।" क्योंकि शरी'अत सिय्यून से, और खुदावन्द का कलाम येरूशलेम से सादिर होगा। ⁴ और वह क़ौमों के बीच 'अदालत करेगा और बहुत सी उम्मतों को डाँटेगा और वह अपनी तलवारों को तोड़ कर फालें, और अपने भालों को हँसुए बना डालेंगे और क़ौम क़ौम पर तलवार न चलाएगी और वह फिर कभी जंग करना न सीखेंगे। ⁵ ऐ या'कूब के घराने, आओ हम खुदावन्द की रोशनी में चलें। ⁶ तूने तो अपने लोगों या'नी या'कूब के घराने को छोड़ दिया, इसलिए कि वह अहल — ए — मशरिक् की रसूम से पुर हैं और फ़िलिस्तिनियों की तरह शगुन लेते हैं और बेगानों की औलाद के साथ हाथ पर हाथ मारते हैं। ⁷ और उनका मुल्क सोने — चाँदी से मालामाल है, और उनके खज़ाने बे शुमार हैं और उनका मुल्क घोड़ों से भरा है, उनके रथों का कुछ शुमार नहीं। ⁸ उनकी सरज़मीन बुतों से भी पुर है वह अपने ही हाथों की सन'अत, या'नी अपनी ही उगलियों की कारीगरी को सिज्दा करते हैं। ⁹ इस वजह से छोटा आदमी पस्त किया जाता है, और बड़ा आदमी ज़लील होता है; और तू उनको हरगिज़ मुआफ़ न करेगा। ¹⁰ खुदावन्द के ख़ौफ़ से और उसके जलाल की शौकत से, चट्टान में घुस जा और खाक में छिप जा। ¹¹ इंसान की ऊँची निगाह नीची की जाएगी और बनी आदम का तकब्बुर पस्त हो जाएगा; और उस रोज़ खुदावन्द ही सबलन्द होगा। ¹² क्योंकि रब्ब — उल — अफ़वाज़ का दिन तमाम मगरूरों बुलन्द नज़रों और मुतकब्बिरों पर आएगा और वह पस्त किए जाएँगे; ¹³ और लुबनान के सब देवदारों पर जो बुलन्द और ऊँचे हैं और बसन के सब बलूतों पर। ¹⁴ और सब ऊँचे पहाड़ों

और सब बुलन्द टीलों पर, ¹⁵ और हर एक ऊँचे बुर्ज पर, और हर एक फ़सीली दीवार पर, ¹⁶ और तरसीस के सब जहाज़ों पर, गरज़ हर एक खुशनुमा मन्ज़र पर; ¹⁷ और आदमी का तकबुर ज़ेर किया जाएगा और लोगों की बुलंद बीनी पस्त की जायेगी और उस रोज़ खुदावन्द ही सरबलन्द होगा। ¹⁸ तमाम बुत बिल्कुल फ़ना हो जायेंगे ¹⁹ और जब खुदावन्द उठेगा कि ज़मीन को शिद्दत से हिलाए, तो लोग उसके डर से और उसके जलाल की शौकत से पहाड़ों के ग़ारों और ज़मीन के शिगाफ़ों में घुसेंगे। ²⁰ उस रोज़ लोग अपनी सोने — चाँदी की मूरतों को जो उन्होंने इबादत के लिए बनाई, छछुन्दारों और चमगादड़ों के आगे फेंक देंगे। ²¹ ताकि जब खुदावन्द ज़मीन को शिद्दत से हिलाने के लिए उठे, तो उसके ख़ौफ़ से और उसके जलाल की शौकत से चट्टानों के ग़ारों और नाहमवार पत्थरों के शिगाफ़ों में घुस जाएँ। ²² तब तुम इंसान से जिसका दम उसके नथनों में है बाज़ रहो, क्योंकि उसकी क्या क़द्र है?

3

????? ?? ??????? ??????

¹ क्योंकि देखो खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज येरूशलेम और यहूदाह से सहारा और भरोसा, रोटी का तमाम सहारा और पानी का तमाम भरोसा दूर कर देगा; ² या'नी बहादुर और साहिब — ए — जंग को क़ाज़ी और नबी को, फ़ालगीरों और बुज़ुर्ग को। ³ पचास पचास के सरदारों और 'इज़्जतदारों और सलाहकारों और होशियार कारीगरों और माहिर जादूगरों को। ⁴ और मैं लड़कों को उनके सरदार बनाऊँगा और नन्हे बच्चे उन पर हुक्मरानी करेंगे। ⁵ लोगों में से हर एक दूसरे पर और हर एक अपने पड़ोसी पर सितम करेगा। और बच्चे बूढ़ों की और रज़ील शरीफ़ों की गुस्ताखी करेंगे। ⁶ जब कोई आदमी अपने बाप के घर में अपने भाई का दामन पकड़कर कहे, कि तू पोशाकवाला है; आ तू हमारा हाकिम हो, और इस उजड़े देस पर क़ाबिज़ हो जा। ⁷ उस रोज़ वह बुलन्द आवाज़ से कहेगा, कि मुझसे इन्तिज़ाम नहीं होगा; क्योंकि मेरे घर में न रोटी है न कपड़ा, मुझे लोगों का हाकिम न बनाओ। ⁸ क्योंकि येरूशलेम की बर्बादी हो गई और यहूदाह गिर गया, इसलिए कि उनकी बोल — चाल और चाल — चलन खुदावन्द के खिलाफ़ हैं कि उसकी जलाली आँखों को ग़ज़बनाक करें। ⁹ उनके मुँह की सूरत उन पर गवाही देती है वह अपने गुनाहों को सद्म की तरह ज़ाहिर करते हैं और छिपाते नहीं उनकी जानों पर वावैला है! क्योंकि वह आप अपने ऊपर बला लाते हैं। ¹⁰ रास्तबाज़ों के ज़रिए' क़हो कि

भला होगा, क्योंकि वह अपने कामों का फल खाएँगे। ¹¹ शरीरों पर वावैला है कि उनको बदी पेश आयेगी क्योंकि वह अपने हाथों का किया पाएँगे। ¹² मेरे लोगों की ये हालत है कि लड़के उन पर ज़ुल्म करते हैं, और 'औरतें उन पर हुक्मरान हैं। ऐ मेरे लोगों तुम्हारे रहनुमा तुम को गुमराह करते हैं, और तुम्हारे चलने की राहों को बिगाड़ते हैं। ¹³ खुदावन्द खड़ा है कि मुक़द्दमा लड़े, और लोगों की 'अदालत करे। ¹⁴ खुदावन्द अपने लोगों के बुज़ुर्गों और उनके सरदारों की 'अदालत करने को आएगा, "तुम ही हो जो बाग़ चट कर गए हो और ग़रीबों की लूट तुम्हारे घरों में है।" ¹⁵ खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है कि इसके क्या क्या मा'ना हैं कि तुम मेरे लोगों को दबाते और ग़रीबों के सिर कुचलते हो। ¹⁶ और खुदावन्द फ़रमाता है, चूँकि सिय्यून की बेटियाँ मुतकब्बिर हैं और गर्दनकशी और शोख चश्मी से खिरामाँ होती हैं और अपने पाँव से नाज़रफ़्तारी करती और घुंघरू बजाती जाती हैं। ¹⁷ इसलिए खुदावन्द सिय्यून की बेटियों के सिर गंजे, और यहोवाह उनके बदन बेपर्दा कर देगा। ¹⁸ उस दिन खुदावन्द उनके खलखाल की ज़ेबाइश, जालियाँ और चाँद ले लेगा, ¹⁹ और आवेज़े और पहुँचियाँ, और नक्राब। ²⁰ और ताज और पाज़ेब और पटके और 'इत्रदान और ता'वीज़। ²¹ और अंगूठियाँ और नथ। ²² और नफ़ीस पोशाकें, और ओढ़नियाँ, और दोपट्टे और कीसे, ²³ और आर्सियाँ और बारीक़ कतानी लिबास और दस्तारे और बुर्के भी। ²⁴ और यूँ होगा कि खुशबू के बदले सड़ाहट होगी, और पटके के बदले रस्सी, और गुंधे हुए बालों की जगह चंदलापन और नफ़ीस लिबास के बदले टाट और हुस्न के बदले दाग़। ²⁵ तेरे बहादुर हलाक होंगे और तेरे पहलवान जंग में क़त्ल होंगे। ²⁶ उसके फाटक मातम और नौहा करेंगे, और वह उजाड़ होकर खाक पर बैठेगी।

4

¹ उस वक़्त सात 'औरतें एक मर्द को पकड़ कर कहेंगी, कि हम अपनी रोटी खाएँगी और अपने कपड़े पहनेंगी; तू हम सबसे सिर्फ़ इतना कर कि तेरे नाम से कहलायें ताकि हमारी शर्मिंदगी मिटे।

????? ?? ?????

² तब खुदावन्द की तरफ़ से रोएदगी खूबसूरत — ओ — शानदार होगी, और ज़मीन का फल उनके लिए जो बनी — इस्राईल में से बच निकले, लज़ीज़ और खुशनुमा होगा। ³ और यूँ होगा कि जो कोई सिय्यून में छूट जाएगा, और जो कोई येरूशलेम में बाक़ी रहेगा, बल्कि हर एक जिसका नाम येरूशलेम के ज़िन्दों

में लिखा होगा, मुकद्दस कहलाएगा। ⁴ जब खुदावन्द सिय्यून की बेटियों की गन्दगी को दूर करेगा और येरुशलेम का खून रूह — ए — 'अदल और रूह — ए — सोज्जान के ज़रिए' से धो डालेगा। ⁵ तब खुदावन्द फिर सिय्यून पहाड़ के हर एक मकान पर और उसकी मजलिसगाहों पर, दिन को बादल और धुवाँ और रात को रोशन शोला पैदा करेगा; तमाम जलाल पर एक सायबान होगा। ⁶ और एक खेमा होगा जो दिन को गर्मी में सायादार मकान, और आँधी और झड़ी के वक़्त आरामगाह और पनाह की जगह हो।

5

????? ?? ?????? ?? ?????? ?? ??????

¹ अब मैं अपने महबूब के लिए अपने महबूब का एक गीत, उसके बाग़ के ज़रिए' गाऊँगा: मेरे महबूब का बाग़ एक जरखेज़ पहाड़ पर था। ² और उसने उसे खोदा और उससे पत्थर निकाल फेंके और अच्छी से अच्छी ताकि उसमें लगाई, और उसमें बुर्ज बनाया और एक कोल्हू भी उसमें तराशा; और इन्तिज़ार किया कि उसमें अच्छे अंगूर लगें लेकिन उसमें जंगली अंगूर लगे। ³ अब ऐ येरुशलेम के वाशिन्दो और यहूदाह के लोगों, मेरे और मेरे बाग़ में तुम ही इन्साफ़ करो, ⁴ कि मैं अपने बाग़ के लिए और क्या कर सकता था जो मैंने न किया? और अब जो मैंने अच्छे अंगूरों की उम्मीद की, तो इसमें जंगली अंगूर क्यों लगे? ⁵ मैं तुम को बताता हूँ कि अब मैं अपने बाग़ से क्या करूँगा; मैं उसकी बाड़ गिरा दूँगा, और वह चरागाह होगा; उसका अहाता तोड़ डालूँगा, और वह पामाल किया जाएगा; ⁶ और मैं उसे बिल्कुल वीरान कर दूँगा वह न छाँटा जाएगा न निराया जाएगा, उसमें ऊँट कटारे और काँटे उगेंगे; और मैं बादलों को हुक्म करूँगा कि उस पर मेह न बरसाएँ। ⁷ इसलिए रब्ब — उल — अफ़वाज़ का बाग़ बनी — इस्राईल का घराना है, और बनी यहूदाह उसका खुशनुमा पौधा है उसने इन्साफ़ का इन्तिज़ार किया, लेकिन खूँरज़ी देखी; वह दाद का मुन्तज़िर रहा, लेकिन फ़रियाद सुनी। ⁸ उनपर अफ़सोस, जो घर से घर और खेत से खेत मिला देते हैं, यहाँ तक कि कुछ जगह बाक़ी न बचे, और मुल्क में वही अकेले बसें। ⁹ रब्ब — उल — अफ़वाज़ ने मेरे कान में कहा, यकीनन बहुत से घर उजड़ जाएँगे और बड़े बड़े आलीशान और खूबसूरत मकान भी बे चराग़ होंगे। ¹⁰ क्योंकि पन्द्रह बीघे बाग़ से सिर्फ़ एक बत मय हासिल होगी, और एक खोमर' बीज से एक ऐफ़ा ग़ल्ला। ¹¹ उनपर अफ़सोस, जो सुबह सवेरे उठते हैं ताकि नशेबाज़ी के दरपै हों और जो

रात को जागते हैं जब तक शराब उनको भड़का न दे! ¹² और उनके ज़श्न की महफ़िलों में बरबत और सितार और दफ़ और बीन और शराब हैं; लेकिन वह खुदावन्द के काम को नहीं सोचते और उसके हाथों की कारीगरी पर ग़ौर नहीं करते। ¹³ इसलिए मेरे लोग जहालत की वजह से गुलामी में जाते हैं; उनके बुज़ुर्ग भूके मरते, और 'अवाम प्यास से जलते हैं। ¹⁴ फिर पाताल अपनी हवस बढ़ाता है और अपना मुँह बे इन्तहा फाड़ता है और उनके शरीफ़ और 'आम लोग और ग़ौगाई और जो कोई उनमें घमण्ड करता है, उसमें उतर जाएँगे। ¹⁵ और छोटा आदमी झुकाया जाएगा, और बड़ा आदमी पस्त होगा और मगरूरों की आँखें नीची हो जाएँगी। ¹⁶ लेकिन रब्ब — उल — अफ़वाज़ 'अदालत में सरबलन्द होगा, और खुदा — ए — कुदूस की तक्दीस सदाक़त से की जाएगी। ¹⁷ तब बर्रे जैसे अपनी चरागाहों में चरेंगे और दौलतमन्दों के वीरान खेत परदेसियों के गल्ले खाएँगे। ¹⁸ उनपर अफ़सोस, जो बतालत की तनावों से बदकिरदारी को और जैसे गाड़ी के रस्सों से गुनाह को खींच लाते हैं, ¹⁹ और जो कहते हैं, कि जल्दी करें और फुर्ती से अपना काम करें कि हम देखें; और इस्राईल के कुदूस की मशवरत नज़दीक हो और आ पहुँचे ताकि हम उसे जानें। ²⁰ उन पर अफ़सोस, जो बदी को नेकी और नेकी को बदी कहते हैं, और नूर की जगह तारीकी को और तारीकी की जगह नूर को देते हैं; और शीरीनी के बदले तल्ल्खी और तल्ल्खी के बदले शीरीनी रखते हैं! ²¹ उनपर अफ़सोस, जो अपनी नज़र में अक्लमन्द और अपनी निगाह में साहिब — ए — इम्तियाज़ हैं। ²² उनपर अफ़सोस, जो मय पीने में ताक़तवर और शराब मिलाने में पहलवान हैं; ²³ जो रिश्वत लेकर शरीरों की सादिक़ और सादिक़ों को नारास्त ठहराते हैं! ²⁴ फिर जिस तरह आग़ भूसे को खा जाती है और जलता हुआ फूस बैठ जाता है, उसी तरह उनकी जड़ बोसीदा होगी और उनकी कली गर्द की तरह उड़ जाएगी; क्योंकि उन्होंने रब्ब — उल — अफ़वाज़ की शरी'अत को छोड़ दिया, और इस्राईल के कुदूस के कलाम को हक़ीर जाना। ²⁵ इसलिए खुदावन्द का क्रहर उसके लोगों पर भड़का, और उसने उनके खिलाफ़ अपना हाथ बढ़ाया और उनको मारा; चुनाँचे पहाड़ काँप गए और उनकी लाशें बाज़ारों में ग़लाज़त की तरह पड़ी हैं। बावजूद इसके उसका क्रहर टल नहीं गया बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है। ²⁶ और वह क्रौमों के लिए दूर से झण्डा खड़ा करेगा, और उनको ज़मीन की इन्तिहा से सुसकार कर बुलाएगा; और देख वह दौड़े चले आएँगे। ²⁷ न कोई उनमें थकेगा न फिसलेगा, न कोई ऊँघेगा न सोएगा, न उनका कमरबन्द

खुलेगा और न उनकी जूतियों का तस्मा टूटेगा।²⁸ उनके तीर तेज़ हैं और उनकी सब कमानें कशीदा होंगी, उनके घोड़ों के सुम चक्रमाक और उनकी गाड़ियाँ गिर्दबाद की तरह होंगी।²⁹ वह शेरनी की तरह गरजेंगे, हाँ वह जवान शेरों की तरह दहाड़ेंगे; वह गुरा कर शिकार पकड़ेंगे और उसे बे रोकटोक ले जाएँगे, कोई बचानेवाला न होगा।³⁰ और उस रोज़ वह उन पर ऐसा शोर मचाएँगे जैसा समन्दर का शोर होता है; और अगर कोई इस मुल्क पर नज़र करे, तो बस, अन्धेरा और तंगहाली है, और रोशनी उसके बादलों से तारीक हो जाती है।

6

यसायाह 6:1-11

¹ जिस साल में उज्जियाह बादशाह ने वफ़ात पाई मैंने खुदावन्द को एक बड़ी बुलन्दी पर ऊँचे तख़्त पर बैठे देखा, और उसके लिबास के दामन से हैकल मा'मूर हो गई।² उसके आस — पास सराफ़ीम खड़े थे, जिनमें से हर एक के छः बाज़ू थे; और हर एक दो से अपना मुँह ढाँपे था और दो से पाँव और दो से उड़ता था।³ और एक ने दूसरे को पुकारा और कहा, “कुद्स, कुद्स, कुद्स रब्ब — उल — अफ़वाज है; सारी ज़मीन उसके जलाल से मा'मूर है।”⁴ और पुकारने वाले की आवाज़ के ज़ोर से आस्तानों की बुनियादें हिल गईं, और मकान धुँवें से भर गया।⁵ तब मैं बोल उठा, कि मुझे पर अफ़सोस! मैं तो बर्बाद हुआ! क्योंकि मेरे होंट नापाक हैं और नजिस लब लोगों में बसता हूँ, क्योंकि मेरी आँखों ने बादशाह रब्ब — उल — अफ़वाज को देखा! ⁶ उस वक़्त सराफ़ीम में से एक सुलगा हुआ कोयला जो उसने दस्तपनाह से मज़बूह पर से उठा लिया, अपने हाथ में लेकर उड़ता हुआ मेरे पास आया, ⁷ और उससे मेरे मुँह को छुआ और कहा, “देख, इसने तेरे लबों को छुआ; इसलिए तेरी बदकिरदारी दूर हुई, और तेरे गुनाह का कफ़ारा हो गया।”⁸ उस वक़्त मैंने खुदावन्द की आवाज़ सुनी जिसने फ़रमाया “मैं किसको भेजूँ और हमारी तरफ़ से कौन जाएगा?” तब मैंने ‘अर्ज़ की, “मैं हाज़िर हूँ! मुझे भेज।”⁹ और उसने फ़रमाया, “जा, और इन लोगों से कह, कि 'तुम सुना करो लेकिन समझो नहीं, तुम देखा करो लेकिन बूझो नहीं।’¹⁰ तू इन लोगों के दिलों को चर्बा दे, और उनके कानों को भारी कर, और उनकी आँखें बन्द कर दे; ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें और अपने कानों से सुनें और अपने दिलों से समझ लें, और बाज़ आएं और शिफ़ा पाएं।”¹¹ तब मैंने कहा, “ऐ खुदावन्द ये कब तक?” उसने जवाब दिया, “जब तक बस्तियाँ वीरान न हों और कोई बसनेवाला न रहे, और

घर बे — चराग़ न हों, और ज़मीन सरासर उजाड़ न हो जाए; ¹² और खुदावन्द आदमियों को दूर कर दे, और इस सरज़मीन में मतरूक मक़ाम बकसरत हों। ¹³ और अगर उसमें दसवाँ हिस्सा बाक़ी भी बच जाए, तो वह फिर भसम किया जाएगा; लेकिन वह बुत्म और बलूत की तरह होगा कि बावजूद यह कि वह काटे जाएँ तोभी उनका टुन्ड बच रहता है, इसलिए उसका टुन्ड एक मुक़द्दस तुख़्म होगा।”

7

यसायाह 7:1-17

¹ और शाह — ए — यहूदाह आख़ज़ बिन यूताम बिन उज्जियाह के दिनों में यूँ हुआ कि रज़ीन, शाह — ए — इराम फ़िक़ह बिन रमलियाह, शाह — ए — इस्राईल ने येरूशलेम पर चढ़ाई की; लेकिन उस पर ग़ालिब न आ सके।² उस वक़्त दाऊद के घराने को यह ख़बर दी गई कि अराम इफ़राईम के साथ मुत्तहिद हैं इसलिए उसके दिल ने और उसके लोगों के दिलों ने यूँ जुम्बिश खाई, जैसे जंगल के दरख़्त आँधी से जुम्बिश खाते हैं।³ तब खुदावन्द ने यसा'याह को हुक्म किया, कि “तू अपने बेटे शियार याशूब को लेकर ऊपर के चश्मे की नहर के सिरे पर, जो धोबियों के मैदान के रास्ते में है, आख़ज़ से मुलाक़ात कर, ⁴ और उसे कह, 'ख़बरदार हो, और बेक्रार न हो; इन लुक्ठियों के दो धुवें वाले टुकड़ों से, या'नी अरामी रज़ीन और रमलियाह के बेटे की क़हरअंगेज़ी से न डर, और तेरा दिल न घबराए।’⁵ चूँकि अराम और इफ़राईम और रमलियाह का बेटा तेरे खिलाफ़ मश्वरत करके कहते हैं, ⁶ कि आओ, हम यहूदाह पर चढ़ाई करें और उसे तंग करें, और अपने लिए उसमें रखना पैदा करें और ताबील के बेटे को उसके बीच तख़्तनशीन करें। ⁷ इसलिए खुदावन्द खुदा फ़रमाता है कि इसको पायदारी नहीं, बल्कि ऐसा हो भी नहीं सकता। ⁸ क्योंकि अराम का दारुस — सल्टनत दमिश़क़ ही होगा, और दमिश़क़ का सरदार रज़ीन; और पैसठ बरस के अन्दर इफ़राईम ऐसा कट जाएगा कि क़ौम न रहेगी। ⁹ इफ़राईम का भी दारुस — सल्टनत सामरिया ही होगा, और सामरिया का सरदार रमलियाह का बेटा। अगर तुम ईमान न लाओगे तो यकीनन तुम भी काईम न रहोगे। ¹⁰ फिर खुदावन्द ने आख़ज़ से फ़रमाया, ¹¹ खुदावन्द अपने खुदा से कोई निशान तलब कर चाहे नीचे पाताल में चाहे ऊपर बुलन्दी पर।” ¹² लेकिन आख़ज़ ने कहा, कि मैं तलब नहीं करूँगा और खुदावन्द को नहीं, आजमाऊँगा। ¹³ तब उसने कहा, ऐ दाऊद के खान्दान, अब सुनो क्या तुम्हारा इंसान को बेज़ार करना

कोई हल्की बात है कि मेरे खुदा को भी बेज़ार करोगे? ¹⁴ लेकिन खुदावन्द आप तुम को एक निशान बरूखेगा। देखो, एक कुंवारी हामिला होगी, और बेटा पैदा होगा और वह उसका नाम 'इम्मानुएल' रखेगी। ¹⁵ वह दही और शहद खाएगा, जब तक कि वह नेकी और बदी के रह — ओ — कुबूल के काबिल न हो। ¹⁶ लेकिन इससे पहले कि ये लड़का नेकी और बदी के रह — ओ — कुबूल के काबिल हो, ये मुल्क जिसके दोनों बादशाहों से तुझ को नफ़रत है, वीरान हो जाएगा। ¹⁷ खुदावन्द तुझ पर और तेरे लोगों और तेरे बाप के घराने पर ऐसे दिन लाएगा जैसे उस दिन से जब इफ़राईम यहूदाह से जुदा हुआ, आज तक कभी न लाया या 'नी शाह — ए — असूर के दिन। ¹⁸ और उस वक़्त यूँ होगा कि खुदावन्द मिस्र की नहरों के उस सिरे पर से मक्खियों को, और असूर के मुल्क से ज़म्बूओं को सुसकार कर बुलाएगा। ¹⁹ इसलिए वह सब आएँगे और वीरान वादियों में, और चट्टानों की दराज़ों में, और सब खारिस्तानों में, और सब चरागाहों में छा जाएँगे। ²⁰ उसी रोज़ खुदावन्द उस उस्तरे से जो दरिया — ए — फ़रात के पार से किराये पर लिया या 'नी असूर के बादशाह से, सिर और पाँव के बाल मूण्डेगा और इससे दाढ़ी भी खुर्ची जाएगी। ²¹ और उस वक़्त यूँ होगा कि आदमी सिर्फ़ एक गाय और दो भेड़ें पालेगा, ²² और उनके दूध की फ़िरावानी से लोग मक्खन खाएँगे; क्योंकि हर एक जो इस मुल्क में बच रहेगा मक्खन और शहद ही खाया करेगा। ²³ और उस वक़्त यह हालत हो जाएगी कि हर जगह हज़ारों रुपये के बाग़ों की जगह खारदार झाड़ियाँ होंगी। ²⁴ लोग तीर और कमाने लेकर वहाँ आयेंगे क्योंकि तमाम मुल्क काँटों और झाड़ियों से पुर होगा। ²⁵ मगर उन सब पहाड़ियों पर जो कुदाली से खोदी जाती थीं, झाड़ियों और काँटों के खौफ़ से तू फिर न चढ़ेगा लेकिन वह गाय बैल और भेड़ बकरियों की चरागाह होंगी।

8

?????????? ?? ??? ????? ?????

¹ फिर खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, कि एक बड़ी तख्ती ले और उस पर साफ़ साफ़ लिख महीर शालाल हाशबज़ के लिए, ² और दो दियानतदार गवाहों को या 'नी ऊरिय्याह काहिन को और ज़करियाह बिन यबरकियाह को गवाह बना। ³ और मैं नबीय्या के पास गया; तब वह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। तब खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, कि उसका नाम "महीर — शालाल हाशबज़ रख, ⁴ क्योंकि इससे पहले कि ये लड़का अब्बा और अम्मा कहना सीखे दमिशक़ का माल और सामरिया

की लूट को उठवाकर शाह — ए — असूर के सामने ले जाएँगे।" ⁵ फिर खुदावन्द ने मुझ से फ़रमाया, ⁶ "चूँकि इन लोगों ने चश्मा — ए — शीलोख के आहिस्ता रो पानी को रह किया, और रज़ीन और रमलियाह के बेटे पर माइल हुए; ⁷ इसलिए अब देख, खुदावन्द दरिया — ए — फ़रात के सख्त शदीद सैलाब को या 'नी शाह — ए — असूर और उसकी सारी शौकत को, इन पर चढ़ा लाएगा; और वह अपने सब नालों पर और अपने सब किनारों से बह निकलेगा; ⁸ और वह यहूदाह में बढ़ता चला जाएगा, और उसकी तुगियानी बढ़ती जाएगी, वह गर्दन तक पहुँचेगा; और उसके परो के फैलाव से तेरे मुल्क की सारी वुस'अत ऐ इम्मानुएल, छिप जायेगी।" ⁹ ऐ लोगों, धूम मचाओ, लेकिन तुम टुकड़े — टुकड़े किए जाओगे; और ऐ दूर — दूर के मुल्कों के बाशिन्दो, सुनो: कमर बाँधो, लेकिन तुम्हारे टुकड़े — टुकड़े किए जाएँगे; कमर बाँधो, लेकिन तुम्हारे पुर्जे — पुर्जे होंगे। ¹⁰ तुम मन्सूबा बाँधो, लेकिन वह बातिल होगा; तुम कुछ कहो, और उसे क़याम न होगा; क्योंकि खुदा हमारे साथ है। ¹¹ क्योंकि खुदावन्द ने जब उसका हाथ मुझ पर ग़ालिब हुआ, और इन लोगों के रास्ते में चलने से मुझे मना' किया तो मुझ से यूँ फ़रमाया कि, ¹² "तुम उस सबको जिसे यह लोग साज़िश कहते हैं, साज़िश न कहो, और जिससे वह डरते हैं, तुम न डरो और न घबराओ। ¹³ तुम रब्ब — उल — अफ़वाज ही को पाक जानो, और उसी से डरो और उसी से खाइफ़ रहो। ¹⁴ और वह एक मक़दिस होगा, लेकिन इस्राईल के दोनों घरानों के लिए सदमा और ठोकर का पत्थर, और येरूशलेम के बाशिन्दों के लिए फ़न्दा और दाम होगा। ¹⁵ उनमें से बहुत से उससे ठोकर खायेंगे और गिरेंगे और पाश पाश होंगे, और दाम में फँसेंगे और पकड़े जाएँगे। ¹⁶ शहादत नामा बन्द कर दो, और मेरे शागिर्दों के लिए शरी'अत पर मुहर करो। ¹⁷ मैं भी खुदावन्द की राह देखूँगा, जो अब या 'कूब के घराने से अपना मुँह छिपाता है; मैं उसका इन्तिज़ार करूँगा। ¹⁸ देख, मैं उन लड़कों के साथ जो खुदावन्द ने मुझे बरूखे, रब्ब — उल — अफ़वाज की तरफ़ से जो सिय्यून पहाड़ में रहता है, बनी — इस्राईल के बीच निशान — आत और 'अजायब — ओ — ग़राइब के लिए हूँ। ¹⁹ और जब वह तुमसे कहें, तुम जिन्नात के यारों और अफ़सूँगरों की जो फुसफुसाते और बड़बड़ाते हैं तलाश करो, तो तुम कहो, क्या लोगों को मुनासिब नहीं कि अपने खुदा के तालिब हों? क्या ज़िन्दों के बारे में मुर्दों से सवाल करें?" ²⁰ शरी'अत और शहादत पर नज़र करो! अगर वह इस कलाम के मुताबिक़ न बोलें

तो उनके लिए सुबह न होगी। ²¹ तब वह मुल्क में भूके और खस्ताहाल फिरेंगे और यूँ होगा कि जब वह भूके हों तो जान से बेज़ार होंगे, और अपने बादशाह और अपने खुदा पर ला'नत करेंगे और अपने मुँह आसमान की तरफ उठाएँगे; ²² फिर ज़मीन की तरफ देखेंगे और नागहान तंगी और तारीकी, या'नी ज़ुल्मत — ए — अन्दोह और तीरगी में खदेड़े जाएँगे।

9

222222 222 22222222

¹ लेकिन अन्दोहगीन की तीरगी जाती रहेगी। उसने पिछले ज़माने में ज़बूलून और नफ़्ताली के 'इलाकों को ज़लील किया, लेकिन आखिरी ज़माने में क्रौमों के ग़लील में दरिया की तरफ़ यरदन के पार बुजुर्गी देगा। ² जो लोग तारीकी में चलते थे उन्होंने बड़ी रोशनी देखी, जो मौत के साये के मुल्क में रहते थे, उन पर नूर चमका। ³ तूने क्रौम को बढ़ाया, तूने उनकी शादमानी को ज्यादा किया; वह तेरे सामने ऐसे खुश हैं, जैसे फ़सल काटते वक़्त और ग़नीमत की तक़सीम के वक़्त लोग खुश होते हैं। ⁴ क्योंकि तूने उनके बोझ के जूए, उनके कन्धे के लठ, और उन पर ज़ुल्म करनेवाले की लाठी को ऐसा तोड़ा है जैसा मिदियान के दिन में किया था। ⁵ क्योंकि जंग में मुसल्लह मर्दों के तमाम सिलाह और खून आलूदा कपड़े जलाने के लिए आग का ईन्धन होंगे। ⁶ इसलिए हमारे लिए एक लड़का तवल्लुद हुआ और हम को एक बेटा बरूशा गया, और सल्लनत उसके कंधे पर होगी, उसका नाम 'अजीब सलाहकार खुदा — ए — कादिर अब्दियत का बाप, सलामती का शहज़ादा होगा। ⁷ उसकी सल्लनत के इक़बाल और सलामती की कुछ इन्तिहा न होगी, वह दाऊद के तख़्त और उसकी ममलुकत पर आज से हमेशा तक हुक्मरान रहेगा और 'अदालत और सदाक़त से उसे क़याम बरूशेगा रब्ब — उल — अफ़वाज की ग़य्यूरी ये करेगी। ⁸ खुदावन्द ने या'कूब के पास पैग़ाम भेजा, और वह इस्राईल पर नाज़िल हुआ; ⁹ और सब लोग मा'लूम करेंगे, या'नी बनी इफ़राईम और अहल — ए — सामरिया जो तकब्बुर और सख़्त दिली से कहते हैं, ¹⁰ कि ईंटें गिर गईं लेकिन हम तराशे हुए पत्थरों की 'इमारत बनायेंगे गूलर के दरख़्त काटे गए, लेकिन हम देवदार लगाएँगे। ¹¹ इसलिए खुदावन्द रज़ीन की मुखालिफ़ गिरोहों को उन पर चढ़ा लाएगा, और उनके दुश्मनों को खुद मुसल्लह करेगा। ¹² आगे अरामी होंगे और पीछे फ़िलिस्ती, और वह मुँह फैलाकर इस्राईल को निगल जाएँगे; बावजूद इसके उसका क्रहर टल नहीं गया, बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है। ¹³ तोभी

लोग अपने मारनेवाले की तरफ़ न फिरे और रब्ब — उल — अफ़वाज के तालिब न हुए। ¹⁴ इसलिए खुदावन्द इस्राईल के सिर और दुम और खास — ओ — 'आम को एक ही दिन में काट डालेगा। ¹⁵ बुजुर्ग और 'इज़्ज़तदार आदमी सिर है और जो नबी झूठी बातें सिखाता है वही दुम है; ¹⁶ क्योंकि जो इन लोगों के पेशवा हैं इनसे ख़ताकारी कराते हैं और उनके पैरों निगले जाएँगे। ¹⁷ खुदावन्द उनके जवानों से खुशनूद न होगा और वह उनके यतीमों और उनकी बेवाओं पर कभी रहम न करेगा क्योंकि उनमें हर एक बेदीन और बदकिरदार है और हर एक मुँह हिमाक़त उगलता है बावजूद इसके उसका क्रहर टल नहीं गया बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है। ¹⁸ क्योंकि शरारत आग की तरह जलाती है, वह ख़स — ओ — ख़ार को खा जाती है; बल्कि वह जंगल की गुन्जान झाड़ियों में शोलाज़न होती है, और वह धुवें के बादल में ऊपर को उड़ जाती है। ¹⁹ रब्ब — उल — अफ़वाज के क्रहर से ये मुल्क जलाया गया, और लोग ईन्धन की तरह हैं; कोई अपने भाई पर रहम नहीं करता। ²⁰ और कोई दहनी तरफ़ से छीनेगा लेकिन भूका रहेगा, और वह बाएँ तरफ़ से खाएगा लेकिन सेर न होगा; उनमें से हर एक आदमी अपने बाज़ू का गोश्त खाएगा; ²¹ मनस्सी इफ़राईम का और इफ़राईम मनस्सी का और वह मिलकर यहूदाह के मुखालिफ़ होंगे। बावजूद इसके उसका क्रहर टल नहीं गया बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है।

10

¹ उन पर अफ़सोस जो बे इन्साफी से फ़ैसले करते हैं और उन पर जो ज़ुल्म की रूबकारें लिखते हैं; ² ताकि ग़रीबों को 'अदालत से महरूम करें, और जो मेरे लोगों में मोहताज हैं उनका हक़ छीन लें, और बेवाओं को लूटें, और यतीम उनका शिकार हों! ³ इसलिए तुम मुताल्बे के दिन और उस ख़राबी के दिन, जो दूर से आएंगी क्या करोगे? तुम मदद के लिए किसके पास दौड़ोगे? और तुम अपनी शौकत कहाँ रख छोड़ोगे? ⁴ वह कैदियों में घुसेंगे और मक़तूलों के नीचे छिपेंगे। बावजूद इसके उसका क्रहर टल नहीं गया बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है।

22222 22 22222222 222222

⁵ असूर या'नी मेरे क्रहर की लाठी पर अफ़सोस! जो लठ उसके हाथ में है, वह मेरे क्रहर का हथियार है। ⁶ मैं उसे एक रियाकार क्रौम पर भेजूंगा, और उन लोगों की मुखालिफ़त में जिन पर मेरा क्रहर है; मैं उसे हुक्म

— ए — कतई दूंगा कि माल लूटे और गनीमत ले ले, और उनको बाजारों की कीचड़ की तरह लताड़े।⁷ लेकिन उसका ये खयाल नहीं है, और उसके दिल में ये ख्वाहिश नहीं कि ऐसा करे; बल्कि उसका दिल ये चाहता है कि कत्ल करे और बहुत सी कौमों को काट डाले।⁸ क्योंकि वह कहता है, “क्या मेरे हाकिम सब के सब बादशाह नहीं? ⁹ क्या कलनो करकिमीस की तरह नहीं और हमात अरफ़ाद की तरह नहीं और सामरिया दमिश्क की तरह नहीं है? ¹⁰ जिस तरह मेरे हाथ ने बुतों की ममलुकतें हासिल कीं, जिनकी खोदी हुई मूर्तें येरूशलेम और सामरिया की मूर्तों से कहीं बेहतर थीं; ¹¹ क्या जैसा मैंने सामरिया से और उसके बुतों से किया, वैसा ही येरूशलेम और उसके बुतों से न करूंगा?”¹² लेकिन यूँ होगा कि जब खुदावन्द सिय्यून पहाड़ पर और येरूशलेम में अपना सब काम कर चुकेगा, तब वह फ़रमाता है मैं शाह — ए — असूर को उसके गुस्ताख दिल के समरह की और उसकी बुलन्द नज़री और घमण्ड की सज़ा दूंगा।¹³ क्योंकि वह कहता है, मैंने अपने बाज़ू की ताक़त से और अपनी 'अक़ल से ये किया है, क्योंकि मैं 'अक़लमन्द हूँ, हाँ, मैंने कौमों की हदों को सरका दिया और उनके खज़ाने लूट लिए, और मैंने बहादुरों की तरह तख़्त नशीनों को उतार दिया।¹⁴ मेरे हाथ ने लोगों की दौलत को घोंसले की तरह पाया, और जैसे कोई उन अंडों को जो मतरूक पड़े हों समेट ले, वैसे ही मैं सारी ज़मीन पर क़ाबिज़ हुआ और किसी को ये हिम्मत न हुई कि पर हिलाए या चोंच खोले या चहचहाये।¹⁵ क्या कुल्हाड़ा उसके रू — ब — रू जो उससे काटता है लाफ़ज़नी करेगा अर्राक़श के सामने शेखी मारेगा जैसे 'असा अपने उठानेवाले को हरकत देता है और छड़ी आदमी को उठाती है।¹⁶ इस वजह से खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज उसके फ़र्बा जवानों पर लागरी भेजेगा और उसकी शौकत के नीचे एक सोज़िश आग की सोज़िश की तरह भड़काएगा।¹⁷ बल्कि इस्राईल का नूर ही आग बन जाएगा और उसका कुद्स एक शो'ला होगा, और वह उसके ख़स — ओ — ख़ार को एक दिन में जलाकर भसम कर देगा।¹⁸ और उसके बन और बाग़ की खुशनुमाई को बिल्कुल बर्बाद — ओ — हलाक कर देगा “और वह ऐसा हो जाएगा जैसा कोई मरीज़ जो ग़श खाए।¹⁹ और उसके बाग़ के दरख़्त ऐसे थोड़े बाक़ी बचेंगे कि एक लड़का भी उनको गिन कर लिख ले।²⁰ और उस वक़्त यूँ होगा कि वह जो बनी इस्राईल में से बाक़ी रह जाएँगे और या'क़ूब के घराने में से बच रहेंगे, उस पर जिसने उनको मारा फिर भरोसा

न करेंगे; बल्कि खुदावन्द इस्राईल के कुद्स पर सच्चे दिल से भरोसा करेंगे।²¹ एक बक्रिया या'नी या'क़ूब का बक्रिया खुदा — ए — क़ादिर की तरफ़ फ़िरेगा।²² क्योंकि ऐ' इस्राईल, तेरे लोग समन्दर की रेत की तरह हों, तोभी उनमें का सिर्फ़ एक बक्रिया वापस आएगा; बर्बादी पूरे 'अदल से मुक़रर हो चुकी है।²³ क्योंकि खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज मुक़रर बर्बादी तमाम इस ज़मीन पर ज़ाहिर करेगा।²⁴ लेकिन खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है ऐ मेरे लोगो, जो सिय्यून में बसते हो असूर से न डरो, अगरचे कि वह तुमको लठ से मारे और मिस्र की तरह तुम पर अपना 'असा उठाए।²⁵ लेकिन थोड़ी ही देर है कि जोश — ओ — ख़रोश ख़त्म होगा और उनकी हलाकत से मेरे क़हर की तस्कीन होगी।²⁶ क्योंकि रब्ब — उल — अफ़वाज मिदियान की ख़ूरज़ी के मुताबिक़ जो 'ओरेब की चट्टान पर हुई, उस पर एक कोड़ा उठाएगा; उसका 'असा समन्दर पर होगा, हाँ वह उसे मिस्र की तरह उठाएगा।²⁷ और उस वक़्त यूँ होगा कि उसका बोझ तेरे कंधे पर से और उसका बोझ तेरी गर्दन पर से उठा लिया जाएगा और वह बोझ मसह की वजह से तोड़ा जाएगा।”²⁸ वह अय्यात में आया है, मज़रून में से होकर गुज़र गया; उसने अपना अस्बाब मिकमास में रखवा²⁹ वह घाटी से पार गए उन्होंने जब'आ में रात काटी, रामा परेशान है; जब'आ — ए — साऊल भाग निकला है।³⁰ ऐ जल्लीम की बेटी, चीख मार! ऐ ग़रीब 'अन्तोत, अपनी आवाज़ लईस को सुना! ³¹ मदमीना चल निकला, जेबीम के रहने वाले निकल भागे।³² वह आज के दिन नोब में खेमाज़न होगा तब वह दुख़्तर — ए — सिय्यून के पहाड़ या'नी कोह — ए — येरूशलेम पर हाथ उठा कर धमकाएगा।³³ देखो, खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज हैबतनाक तौर से मार कर शाखों को छाँट डालेगा; क़द्दावर काट डाले जाएँगे और बलन्द पस्त किए जाएँगे।³⁴ और वह जंगल की गुन्ज़ान झाड़ियों को लोहे से काट डालेगा, और लुबनान एक ज़बरदस्त के हाथ से गिर जाएगा।

11

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

¹ और यस्सी के तने से एक कोंपल निकलेगी और उसकी जड़ों से एक बारआवर शाख पैदा होगी।² और खुदावन्द की रूह उस पर ठहरेगी हिकमत और ख़िरद की रूह, मसलहत और कुदरत की रूह, मारिफ़त और खुदावन्द के ख़ौफ़ की रूह।³ और उसकी शादमानी खुदावन्द के ख़ौफ़ में होगी। और वह न अपनी आँखों के देखने के मुताबिक़ इन्साफ़ करेगा, और न अपने कानों

के सुनने के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करेगा; ⁴ बल्कि वह रास्ती से ग़रीबों का इन्साफ़ करेगा, और 'अदल से ज़मीन के खाकसारों का फ़ैसला करेगा; और वह अपनी ज़बान के 'असा से ज़मीन को मारेगा, और अपने लबों के दम से शरीरों को फ़ना कर डालेगा। ⁵ उसकी कमर का पटका रास्तबाज़ी होगी और उसके पहलू पर वफ़ादारी का पटका होगा। ⁶ तब भेड़िया बरें के साथ रहेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठेगा, और बछड़ा और शेर बच्चा और पला हुआ बैल पेशरवी करेगा। ⁷ गाय और रीछनी मिलकर चरेंगी उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे और शेर — ए — बबर बैल की तरह भूसा खाएगा। ⁸ और दूध पीता बच्चा साँप के बिल के पास खेलेगा, और वह लड़का जिसका दूध छुड़ाया गया हो अफ़रई के बिल में हाथ डालेगा। ⁹ वह मेरे तमाम पाक पहाड़ पर न नुक़सान पहुँचाएँगे न हलाक करेंगे क्यूँकि जिस तरह समन्दर पानी से भरा है उसी तरह ज़मीन खुदावन्द के इरफ़ान से मा'भूर होगी। ¹⁰ और उस वक़्त यूँ होगा कि लोग यस्सी की उस जड़ के तालिब होंगे, जो लोगों के लिए एक निशान है; और उसकी आरामगाह जलाली होगी। ¹¹ उस वक़्त यूँ होगा कि खुदावन्द दूसरी मर्तबा अपना हाथ बढ़ाएगा कि अपने लोगों का बक्रिया या जो बच रहा हो, असूर और मिस्र और फ़तूरूस और कूश और इलाम और सिन'आर और हमात और समन्दर की अतराफ़ से वापस लाए। ¹² और वह क़ौमों के लिए एक झंडा खड़ा करेगा और उन इस्राईलियों को जो ख़ारिज किए गए हों जमा' करेगा; और सब बनी यहूदाह को जो तितर बितर होंगे, ज़मीन के चारों तरफ़ से इकट्ठा करेगा। ¹³ तब बनी इफ़राईम में हसद न रहेगा और बनी यहूदाह के दुश्मन काट डाले जाएँगे, बनी इफ़राईम बनी यहूदाह पर हसद न करेंगे और बनी यहूदाह बनी इफ़राईम से कीना न रखेंगे। ¹⁴ और वह पश्चिम की तरफ़ फ़िलिस्तिनियों के कंधों पर झपटेंगे, और वह मिलकर पूरब के बसनेवालों को लूटेंगे, और अदोम और मोआब पर हाथ डालेंगे; और बनी 'अम्मोन उनके फ़रमाबरदार होंगे। ¹⁵ तब खुदावन्द बहर — ए — मिस्र की ख़लीज को बिल्कुल हलाक कर देगा, और अपनी बाद — ए — समूम से दरिया — ए — फ़रात पर हाथ चलाएगा और उसको सात नाले कर देगा, ऐसा करेगा कि लोग जूते पहने हुए पार चले जाएँगे। ¹⁶ और उसके बाक़ी लोगों के लिए जो असूर में से बच रहेंगे, एक ऐसी शाहराह होगी जैसी बनी — इस्राईल के लिए थी, जब वह मुल्क — ए — मिस्र से निकले।

12

२२२२२ २२ २२२२२२२२२२२२ २२ २२२२ २२ २२२

¹ और उस वक़्त तू कहेगा, ऐ खुदावन्द मैं तेरी तम्ज़ीद करूँगा; कि अगरचे तू मुझ से नाखुश था, तोभी तेरा क्रहर टल गया और तूने मुझे तसल्ली दी। ² “देखो, खुदा मेरी नजात है; मैं उस पर भरोसा करूँगा और न डरूँगा, क्यूँकि याह — यहोवाह मेरा ज़ोर और मेरा सरोद है और वह मेरी नजात हुआ है।” ³ फिर तुम खुश होकर नजात के चश्मों से पानी भरोगे। ⁴ और उस वक़्त तुम कहोगे, खुदावन्द की तम्ज़ीद करो, उससे दू'आ करो लोगों के बीच उसके कामों का बयान करो, और कहो कि उसका नाम बुलन्द है। ⁵ “खुदावन्द की मदद सराई करो; क्यूँकि उसने जलाली काम किये जिनको तमाम दुनिया जानती है। ⁶ ऐ सिय्यून की बसनेवाली, तू चिल्ला और ललकार; क्यूँकि तुझमें इस्राईल का कुहूस बुज़ुर्ग है।”

13

२२२२२ २२ २२२२ २२ २२२२२

¹ बाबुल के बारे में नबुव्वत जो यसा'याह — बिन — आमूस ने ख़्वाब में पाया। ² तुम नंगे पहाड़ पर एक झण्डा खड़ा करो, उनको बुलन्द आवाज़ से पुकारो और हाथ से इशारा करो कि वह सरदारों के दरवाज़ों के अन्दर जाएँ। ³ मैंने अपने मख़सूस लोगों को हुक्म किया; मैंने अपने बहादुरों को जो मेरी खुदावन्दी से मसरूर हैं, बुलाया है कि वह मेरे क्रहर को अन्जाम दें। ⁴ पहाड़ों में एक हुजूम का शोर है, जैसे बड़े लश्कर का! ममलुकत की क़ौमों के इजितमा'अ का ग़ो़गा है। रब्ब — उल — अफ़वाज जंग के लिए लश्कर जमा' करता है। ⁵ वह दूर मुल्क से आसमान की इन्तिहा से आते हैं, हाँ खुदावन्द और उसके क्रहर के हथियार, ताकि तमाम मुल्क को बर्बाद करें। ⁶ अब तुम वावैला करो, क्यूँकि खुदावन्द का दिन नज़दीक है; वह क़ादिर — ए — मुतलक की तरफ़ से बड़ी हलाकत की तरह आएगा। ⁷ इसलिए सब हाथ ढीले होंगे, और हर एक का दिल पिघल जाएगा, ⁸ और वह परेशान होंगे जाँकनी और ग़मगीनी उनको आ लेगी वह ऐसे दर्द में मुब्तिला होंगे जैसे औरत जिह की हालत में। वह सरासीमा होकर एक दूसरे का मुँह देखेंगे, और उनके चहरे शो'लानुमा होंगे। ⁹ देखो खुदावन्द का वह दिन आता है जो ग़ज़ब में और क्रहर — ए — शदीद में सख़्त दुरुस्त हैं, ताकि मुल्क को वीरान करे और गुनाहगारों को उस पर से बर्बाद — ओ — हलाक कर दे। ¹⁰ क्यूँकि आसमान के सितारे और कवाक़िब बेनूर हो जायेंगे, और सूरज तुलू' होते होते तारीक हो जाएगा और चाँद अपनी

रोशनी न देगा। ¹¹ और मैं जहान को उसकी बुराई की वजह से, और शरीरों को उनकी बदकिरदारी की सज़ा दूँगा; और मैं मगरूरों का गुरुर हलाक और हैबतनाक लोगों का घमण्ड पस्त कर दूँगा। ¹² मैं आदमी को खालिस सोने से, बल्कि इंसान को ओफ़ीर के कुन्दन से भी कमयाब बनाऊँगा। ¹³ इसलिए मैं आसमानों को लरज़ाऊँगा, और रब्ब — उल — अफ़वाज के ग़ज़ब से और उसके क्रहर — ए — शदीद के रोज़ ज़मीन अपनी जगह से झटकी जाएगी। ¹⁴ और यूँ होगा कि वह खदेड़े हुए आहू, और लावारिस भेड़ों की तरह होंगे; उनमें से हर एक अपने लोगों की तरफ़ मुतवज्जिह होगा, और हर एक अपने वतन को भागेगा। ¹⁵ हर एक जो मिल जाए आर — पार छेदा जाएगा, और हर एक जो पकड़ा जाए तलवार से क़त्ल किया जाएगा। ¹⁶ और उनके बाल बच्चे उनकी आँखों के सामने पार — पारा होंगे; उनके घर लूटे जाएँगे, और उनकी 'औरतों की बेहुरमती होगी। ¹⁷ देखो मैं मादियों को उनके खिलाफ़ बरअंगेखता करूँगा, जो चाँदी को खातिर में नहीं लाते और सोने से खुश नहीं होते। ¹⁸ उनकी कमानें जवानों को टुकड़े — टुकड़े कर डालेंगी और वह शीरख़्वारों पर तरस न खाएँगे, और छोटे बच्चों पर रहम की नज़र न करेंगे। ¹⁹ और बाबुल जो ममलुकतों की हशमत और कस्दियों की बुज़ुर्गी की रोनाक है सद्म और 'अमूरा की तरह हो जाएगा जिनको खुदा ने उलट दिया। ²⁰ वह हमेशा तक आबाद न होगा और नसल — दर — नसल उसमें कोई न बसेगा; हरगिज़ 'अरब ख़ेमों न लगाएँगे, वहाँ गड़रिये गल्लों को न भटकायेंगे ²¹ लेकिन जंगल के जंगली दरिन्दे वहाँ बैठेंगे और उनके घरों में उल्लू भरे होंगे; वहाँ शुतरमुर्ग बसेंगे, और छगमानस वहाँ नाचेंगे। ²² और गीदड़ उनके 'आलीशान मकानों में और भेड़िये उनके रंगमहलों में चिल्लाएँगे; उसका वक्रत नज़दीक आ पहुँचा है, और उसके दिनों को अब तूल नहीं होगा।

14

????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

¹ क्योंकि खुदावन्द या'कूब पर रहम फ़रमाएगा, बल्कि वह इस्राईल को भी बरगुज़ीदा करेगा और उनको उनके मुल्क में फिर क़ाईम करेगा और परदेसी उनके साथ मेल करेंगे और या'कूब के घराने से मिल जाएँगे। ² और लोग उनको लाकर उनके मुल्क में पहुँचाएँगे और इस्राईल का घराना खुदावन्द की सरज़मीन में उनका मालिक होकर उनको गुलाम और लौंडियाँ बनाएगा क्योंकि वह अपने गुलाम करने वालों को गुलाम करेंगे, और अपने जुल्म करने वालों पर हुकूमत करेंगे। ³ और यूँ होगा कि

जब खुदावन्द तुझे तेरी मेहनत — ओ — मशक्कत से, और सख्त ख़िदमत से जो उन्होंने तुझ से कराई, राहत बख़्शेगा, ⁴ तब तू शाह — ए — बाबुल के खिलाफ़ यह मसल लाएगा और कहेगा, कि 'ज़ालिम कैसा हलाक हो गया, और ग़ासिब कैसा हलाक हुआ। ⁵ खुदावन्द ने शरीरों का लठ, या'नी बेइन्साफ़ हाकिमों का 'असा तोड़ डाला; ⁶ वही जो लोगों को क्रहर से मारता रहा और क्रौमों पर ग़ज़ब के साथ हुक्मरानी करता रहा, और कोई रोक न सका। ⁷ सारी ज़मीन पर आराम — ओ — आसाइश है, वह अचानक गीत गाने लगते हैं। ⁸ हाँ, सनोबर के दरख़्त और लुबनान के देवदार तुझ पर यह कहते हुए खुशी करते हैं, कि 'जब से तू गिराया गया, तब से कोई काटनेवाला हमारी तरफ़ नहीं आया। ⁹ पाताल नीचे से तेरी वजह से जुम्बिश खाता है कि तेरे आते वक्रत तेरा इस्तक्रबाल करे; वह तेरे लिए मुद्दों को या'नी ज़मीन के सब सरदारों को जगाता है; वह क्रौमों के सब बादशाहों को उनके तख़्तों पर से उठा खड़ा करता है। ¹⁰ वह सब तुझ से कहेंगे, क्या तू भी हमारी तरह 'आजिज़ हो गया; तू ऐसा हो गया जैसे हम हैं?' ¹¹ तेरी शान — ओ — शौकत और तेरे साज़ों की खुश आवाज़ी पाताल में उतारी गई; तेरे नीचे कीड़ों का फ़र्श हुआ, और कीड़े ही तेरा बालापोश बने। ¹² ऐ सुबह के सितारे, तू क्यूँकर आसमान से गिर पड़ा। ऐ क्रौमों को पस्त करनेवाले, तू क्यूँकर ज़मीन पर पटका गया! ¹³ तू तो अपने दिल में कहता था, मैं आसमान पर चढ़ जाऊँगा; मैं अपने तख़्त को खुदा के सितारों से भी ऊँचा करूँगा, और मैं उत्तरी अतराफ़ में जमा'अत के पहाड़ पर बैठूँगा; ¹⁴ मैं बादलों से भी ऊपर चढ़ जाऊँगा, मैं खुदा त'आला की तरह हूँगा। ¹⁵ लेकिन तू पाताल में गढ़े की तह में उतारा जाएगा। ¹⁶ और जिनकी नज़र तुझ पर पड़ेगी, तुझे ग़ौर से देखकर कहेंगे, 'क्या यह वही शख्स है जिसने ज़मीन को लरज़ाया और ममलुकतों को हिला दिया; ¹⁷ जिसने जहान को वीरान किया और उसकी बस्तियाँ उजाड़ दीं, जिसने अपने गुलामों को आज़ाद न किया कि घर की तरफ़ जाएँ? ¹⁸ क्रौमों के तमाम बादशाह सब के सब अपने अपने घर में शौकत के साथ आराम करते हैं, ¹⁹ लेकिन तू अपनी क़ब्र से बाहर, निकम्मी शाख़ की तरह निकाल फेंका गया; तू उन मक़तूलों के नीचे दबा है जो तलवार से छेदे गए और गढ़े के पत्थरों पर गिरे हैं, उस लाश की तरह जो पाँवों से लताड़ी गई हो। ²⁰ तू उनके साथ कभी क़ब्र में दफ़न न किया जाएगा, क्यूँकि तूने अपनी ममलुकत को वीरान किया और अपनी र'अय्यत को क़त्ल किया,

“बदकिरदारों की नस्ल का नाम बाक्री न रहेगा। ²¹ उसके फ़र्जन्दों के लिए उनके बाप दादा के गुनाहों की वजह से क़त्ल का सामान तैयार करो, ताकि वह फिर उठ कर मुल्क के मालिक न हो जाएँ और इस ज़मीन को शहरों से मा'मूर न करें।” ²² क्योंकि रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, मैं उनकी मुखालिफ़त को उठूँगा, और मैं बाबुल का नाम मिटाऊँगा और उनको जो बाक्री हैं, बेटों और पोतों के साथ काट डालूँगा; यह खुदावन्द का फ़रमान है। ²³ रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है “मैं उसे ख़ार पुशत की मीरास और तालाब बना दूँगा और उसे फ़ना के झाड़ू से साफ़ कर दूँगा।” ²⁴ रब्ब — उल — अफ़वाज क़सम खाकर फ़रमाता है, कि यक्रीनन जैसा मैंने चाहा वैसा ही हो जाएगा; और जैसा मैंने इरादा किया है, वही वजूद में आयेगा। ²⁵ मैं अपने ही मुल्क में असूरी को शिकस्त दूँगा, और अपने पहाड़ों पर उसे पाँव तले लताडूँगा; तब उसका जूआ उन पर से उतरेगा, और उसका बोझ उनके कंधों पर से टलेगा। ²⁶ सारी दुनिया के ज़रिए यही है, और सब क़ौमों पर यही हाथ बढ़ाया गया है। ²⁷ क्योंकि रब्ब — उल — अफ़वाज ने इरादा किया है, कौन उसे बातिल करेगा? और उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन रोकेगा? ²⁸ जिस साल आख़ज़ बादशाह ने वफ़ात पाई उसी साल यह बार — ए — नबुव्वत आया: ²⁹ “ऐ कुल फ़िलिस्तीन, तू इस पर खुश न हो कि तुझे मारने वाला लठ टूट गया; क्योंकि साँप की अस्ल से एक नाग निकलेगा, और उसका फल एक उड़नेवाला आग का साँप होगा। ³⁰ तब गरीबों के पहलौटे खाएँगे, और मोहताज आराम से सोएँगे; लेकिन मैं तेरी जड़ काल से बर्बाद कर दूँगा, और तेरे बाक्री लोग क़त्ल किए जाएँगे। ³¹ ऐ फाटक, तू वावैला कर; ऐ शहर, तू चिल्ला; ऐ फ़िलिस्तीन, तू बिल्कुल गुदाज़ हो गई! क्योंकि उत्तर से एक धुंवा उठेगा और उसके लश्क़रों में से कोई पीछे न रह जाएगा।” ³² उस वक़्त क़ौम के क़ासिदों को कोई क्या जवाब देगा? कि 'खुदावन्द ने सिय्यून को ता'मीर किया है, और उसमें उसके गरीब बन्दे पनाह लेंगे।

15

???? ? ? ???? ???? ?

¹ मुआब के बारे में नबुव्वत: एक ही रात में 'आर — ए — मोआब खराब और हलाक हो गया; एक ही रात में क़ीर — ए — मोआब खराब और हलाक हो गया। ² बैत और दीबोन ऊँचे मक़ामों पर रोने के लिए चढ़ गए हैं; नबू और मीदबा पर अहल — ए — मोआब वावैला करते हैं; उन सब के सिर मुण्डाए गए और हर एक की दाढ़ी काटी गई। ³ वह अपनी राहों में टाट का कमरबन्द

बाँधते हैं, और अपने घरों की छतों पर और बाज़ारों में नौहा करते हुए सब के सब ज़ार ज़ार रोते हैं। ⁴ हस्बोन और इली'आली वावैला करते हैं उनकी आवाज़ यहज़ तक सुनाई देती है; इस पर मोआब के मुसल्लह सिपाही चिल्ला चिल्ला कर रोते हैं उसकी जान उसमें थरथराती है। ⁵ मेरा दिल मोआब के लिए फ़रियाद करता उसके भागने वाले ज़ुगर तक 'अजलत शलेशियाह तक पहुँचे हाँ वह लूहीत की चढ़ाई पर रोते हुए चढ़ जाते, और होरोनायम की राह में हलाकत पर वावैला करते हैं। ⁶ क्योंकि निमरियम की नहरें खराब हो गईं क्योंकि घास कुम्ला गई और सबज़ा मुरझा गया और रोयदगी का नाम न रहा। ⁷ इसलिए वह फ़िरावान माल जो उन्होंने हासिल किया था, और ज़ख़ीरा जो उन्होंने रख छोड़ा था, बेद की नदी के पार ले जाएँगे। ⁸ क्योंकि फ़रियाद मोआब की सरहदों तक और उनका नौहा इजलाइम तक और उनका मातम बैर एलीम तक पहुँच गया है। ⁹ क्योंकि दीमोन की नदियाँ खून से भरी हैं मैं दीमोन पर ज्यादा मुसीबत लाऊँगा क्योंकि उस पर जो मोआब में से बचकर भागेगा और उस मुल्क के बाक्री लोगों पर एक शेर — ए — बबर भेजूँगा।

16

¹ सिला' से वीराने की राह दुस्तर — ए — सिय्यून के पहाड़ पर मुल्क के हाकिम के पास बरें भेजो। ² क्योंकि अरनून के घाटों पर मोआब की बेटियाँ, आवारा परिन्दों और उनके तितर बितर बच्चों की तरह होंगी। ³ सलाह दो, इन्साफ़ करो, अपना साया, दोपहर को रात की तरह बनाओ; जिलावतनों को पनाह दो; फ़रारियों को हवाले न करो। ⁴ मेरे जिलावतन तेरे साथ रहें, तू मोआब को ग़ारतग़रों से छिपा ले; क्योंकि सितमगर खत्म होंगे और ग़ारतग़री तमाम हो जाएगी और सब ज़ालिम मुल्क से फ़ना होंगे। ⁵ यूँ तख़्त रहमत से क़ाईम न होगा, और एक शख्स रास्ती से दाऊद के खेमे में उस पर जुलूस फ़रमा कर 'अदल की पैरवी करेगा, और रास्तबाज़ी पर मुस्त'इद रहेगा। ⁶ हम ने मोआब के घमण्ड के ज़रिए' सुना है कि वह बड़ा घमण्ड है; उसका तकबुर और घमण्ड और क़हर भी सुना है, उसकी शेखी हेच है। ⁷ इसलिए मोआब वावैला करेगा, मोआब के लिए हर एक वावैला करेगा; क़ीर हिरासत की किशमिश की टिककियों पर तुम सख्त तबाह हाली में मातम करोगे। ⁸ क्योंकि हस्बोन के खेत सूख गए, क़ौमों के सरदारों ने सिबमाह की ताक की बहतरीन शाख़ों को तोड़ डाला; वह या'ज़ेर तक बढ़ीं, वह जंगल में भी फैलीं; उसकी शाखें दूर तक फैल गईं, वह दरिया पार गुज़री। ⁹ फिर

मैं या'ज़ेर के आह — ओ — नाले से सिबमाह की ताक के लिए ज़ारी करूँगा ऐ हस्बून ऐ इली'आली मैं तुझे अपने आँसुओं से तर कर दूँगा, क्योंकि तेरे दिनों गर्मी के मेवों और गल्ले की फ़सल को गोशा — ए — जंग ने आ लिया; ¹⁰ और शादमानी छीन ली गई और हरे भरे खेतों की खुशी जाती रही; और ताकिस्तानों में गाना और ललकारना बन्द हो जाएगा; पामाल करनेवाले अंगूरों को फिर हौजों में पामाल न करेंगे; मैंने अंगूर की फ़सल के गल्ले को खत्म कर दिया। ¹¹ इसलिए मेरा अन्दरून मोआब पर और मेरा दिल कीर हारस पर बरबत की तरह फुगा खेज है। ¹² और यूँ होगा कि जब मोआब हाज़िर हो और ऊँचे मक़ाम पर अपने आपको थकाए बल्कि अपने मा'बद में जाकर दुआ करे, उसे कुछ फ़ायदा न होगा। ¹³ यह वह कलाम है जो खुदावन्द ने मोआब के हक़ में पिछले ज़माने में फ़रमाया था ¹⁴ लेकिन अब खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तीन बरस के अन्दर जो मजदूरों के बरसों की तरह हों, मोआब की शौकत उसके तमाम लश्क़रों के साथ हकीर हो जाएगी; और बहुत थोड़े बाक़ी बचेंगे, और वह किसी हिसाब में न होंगे।

17

???????? ?? ????????? ?? ????? ??

¹ दमिश़क़ के बारे में बार — ए — नबुव्वत, “देखो दमिश़क़ अब तो शहर न रहेगा, बल्कि खण्डर का ढेर होगा। ² 'अरो'ईर की बस्तियाँ वीरान हैं और गल्लों की चरागाहें होंगी; वह वहाँ बैठेगे, और कोई उनके डराने को भी वहाँ न होगा। ³ और इफ़राईम में कोई क़िला' न रहेगा, दमिश़क़ और अराम के बक्रिए से सल्लनत जाती रहेगी; रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, जो हाल बनी — इस्राईल की शौकत का हुआ वही उनका होगा। ⁴ और उस वक़्त यूँ होगा कि या'कूब की हश्मत घट जाएगी, और उसका चर्बीदार बदन दुबला हो जाएगा। ⁵ यह ऐसा होगा जैसा कोई खड़े खेत काटकर गल्ला जमा' करे और अपने हाथ से बालें तोड़े; बल्कि ऐसा होगा जैसा कोई रिफ़ाईम की वादी में खोशाचीनी करे। ⁶ खुदावन्द इस्राईल का खुदा फ़रमाता है कि तब उसका बक्रिया बहुत ही थोड़ा होगा, जैसे ज़ैतून के दरख़्त का जब वह हिलाया जाए, या'नी दो तीन दाने चोटी की शाख़ पर, चार पाँच फलवाले दरख़्त की बैरूनी शाख़ों पर। ⁷ उस रोज़ इंसान अपने खालिक़ की तरफ़ नज़र करेगा और उसकी आँखें इस्राईल के कुदूस की तरफ़ देखेंगी; ⁸ और वह मज़बहों या'नी अपने हाथ के काम पर नज़र न करेगा, और अपनी दस्तकारी या'नी

यसीरतों और बुतों की परवा न करेगा। ⁹ उस वक़्त उसके फ़सीलदार शहर उजड़े जंगल और पहाड़ की चोटी पर के मक़ामात की तरह होंगे; जो बनी — इस्राईल के सामने उजड़ गए, और वहाँ वीरानी होगी। ¹⁰ चूँकि तूने अपने नजात देनेवाले खुदा को फ़रामोश किया, और अपनी तवानाई की चट्टान को याद न किया; इसलिए तू खूबसूरत पौधे लगाता और 'अज़ीब कलमें उसमें जमाता है। ¹¹ लगाते वक़्त उसके चारों तरफ़ अहाता बनाता है, और सुबह को उसमें फूल खिलते हैं; लेकिन उसका हासिल दुख और सख़्त मुसीबत के वक़्त बेकार है। ¹² आह! बहुत से लोगों का हंगामा है! जो समन्दर के शोर की तरह शोर मचाते हैं, और उम्मतों का धावा बड़े सैलाब के रेले की तरह है। ¹³ उम्मतें सैलाब — ए — 'अज़ीम की तरह आ पड़ेंगी; लेकिन वह उनको डटिंगा, और वह दूर भाग जाएँगी, और उस भूसे की तरह जो टीलों के ऊपर आँधी से उड़ता फ़िरे और उस गर्द की तरह जो बगोले में चक्कर खाए रगेदी जाएँगी। ¹⁴ शाम के वक़्त तो हैबत है! सुबह होने से पहले वह हलाक़ हैं! ये हमारे ग़ारतगरों का हिस्सा और हम को लूटनेवालों का हिस्सा है।

18

?????????? ?? ????? ?? ???????

¹ आह! परों के फड़फड़ाने की सर ज़मीन जो कूश की नदियों के पार है। ² जो दरिया की राह से बुर्दी की क़श्तियों में सतह — ए — आब पर क़ासिद भेजती है! ऐ तेज़ रफ़्तार क़ासिदों, उस क्रौम के पास जाओ जो ताक़तवर और खूबसूरत है; उस क्रौम के पास जो शुरू' से अब तक मुहीब है, ऐसी क्रौम जो ज़बरदस्त और फ़तहयाब है जिसकी ज़मीन नदियों से मुन्क़सम है। ³ ऐ जहान के तमाम बाशिन्दो, और ऐ ज़मीन के रहनेवालो, जब पहाड़ों पर झण्डा खड़ा किया जाए तो देखो और जब नरसिंगा फूँका जाए तो सुनो। ⁴ क्योंकि खुदावन्द ने मुझ से यूँ फ़रमाया है: कि अपने घर में ताबिश — ए — आफ़ताब की तरह और मौसिम — ए — दिरौ की गर्मी में शबनम के बादल की तरह सुकून के साथ नज़र करूँगा।” ⁵ क्योंकि फ़सल से पहले जब कली खिल चुके और फूल की जगह अंगूर पकने पर हों, तो वह टहनियों को हसुवे से काट डालेगा और फैली हुई शाख़ों को छाँट देगा। ⁶ और वह पहाड़ के शिकारी परिन्दों और मैदान के दरिन्दों के लिए पड़ी रहेंगी; और शिकारी परिन्दे गर्मी के मौसम में उन पर बैठेगे, ज़मीन के सब दरिन्दे जाड़े के मौसम में उन पर लेटेंगे। ⁷ उस वक़्त रब्ब — उल — अफ़वाज के सामने उस क्रौम की तरफ़ से जो ताक़तवर

और खूबसूरत है, गिरोह की तरफ़ से जो शुरू से आज तक मुहीब है, उस क्रौम से जो ज़बरदस्त और ज़फ़रयाब है जिसकी ज़मीन नदियों से बँटी है एक हदिया रब्ब — उल — अफ़वाज के नाम के मकान पर जो सिय्यून पहाड़ में है पहुँचाया जाएगा।

19

?????? ?? ???? ?? ???? ??

1 मिस्र के बारे में नबुव्वत देखो खुदावन्द एक तेज़ रू बादल पर सवार होकर मिस्र में आता है, और मिस्र के बुत उसके सामने लरज़ाँ होंगे और मिस्र का दिल पिघल जाएगा। 2 और मैं मिस्रियों को आपस में मुखालिफ़ कर दूँगा; उनमें हर एक अपने भाई से और हर एक अपने पड़ोसी से लड़ेगा, शहर — शहर से और सूबे — सूबे से; 3 और मिस्र की रूह अफ़सुर्दा हो जाएगी, और मैं उसके मन्सूबे को फ़ना करूँगा; और वह बुतों और अफ़सूंगरों और जिन्नात के यारों और जादूगरों की तलाश करेंगे। 4 लेकिन मैं मिस्रियों को एक सितमगर हाकिम के क़ाबू में कर दूँगा, और ज़बरदस्त बादशाह उन पर सल्तनत करेगा; यह खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज का फ़रमान है। 5 और दरिया का पानी सूख जाएगा, और नदी शुष्क और खाली हो जाएगी। 6 और नाले बदबू हो जाएँगे, और मिस्र की नहरें खाली होंगी और सूख जाएँगी, और बेद और ने मुरझा जाएँगे। 7 दरिया-ए-नील के किनारे की चरागाहें और वह सब चीज़ें जो उसके आस — पास बोई जाती हैं मुरझा जायेंगी और बिल्कुल बर्बाद — ओ — हलाक हो जाएँगी। 8 तब माहीगीर मातम करेंगे, और वह सब जो दरिया-ए-नील में शस्त डालते हैं ग़मगीन होंगे; और पानी में जाल डालने वाले बहुत बेताब हो जाएँगे। 9 और सन झाड़ने और कतान बुननेवाले घबरा जाएँगे। 10 हाँ उसके अरकान शिकस्ता और तमाम मज़दूर रंजीदा खातिर होंगे 11 जुअन के शहज़ादे बिल्कुल बेवकूफ़ हैं फिर'औन के सबसे 'अक्लमन्द सलाहकारों की मश्वरत वहशियाना ठहरी। फिर तुम क्यूँकर फिर'औन से कहते हो, कि मैं 'अक्लमन्दों का फ़र्ज़न्द और शाहान — ए — क़दीम की नसल हूँ? 12 अब तेरे 'अक्लमन्द कहाँ हैं? वह तुझे खबर दें, अगर वह जानते होते कि रब्ब — उल — अफ़वाज ने मिस्र के हक़ में क्या इरादा किया है। 13 जुअन के शहज़ादे बेवकूफ़ बन गए हैं, नूफ़ के शहज़ादों ने धोखा खाया और जिन पर मिस्री क़बाइल का भरोसा था उन्हीं ने उनको गुमराह किया। 14 खुदावन्द ने कज़रवी की रूह उनमें डाल दी है और उन्होंने मिस्रियों को उनके सब

कामों में उस मतवाले की तरह भटकाया जो उलटी करते हुए डगमगाता है। 15 और मिस्रियों का कोई काम न होगा, जो सिर या दुम या खास — ओ — 'आम कर सके। 16 उस वक़्त रब्ब — उल — अफ़वाज के हाथ चलाने से जो वह मिस्र पर चलाएगा, मिस्री 'औरतों की तरह हो जायेंगे, और हैबतज़दह और परेशान होंगे। 17 तब यहूदाह का मुल्क मिस्र के लिए दहशत नाक होगा, हर एक जिससे उसका ज़िक्र हो खौफ़ खाएगा; उस इरादे की वजह से जो रब्ब — उल — अफ़वाज ने उनके खिलाफ़ कर रखवा है। 18 उस रोज़ मुल्क — ए — मिस्र में पाँच शहर होंगे जो कना'नी ज़बान बोलेंगे, और रब्ब — उल — अफ़वाज की क़सम खाएँगे; उनमें से एक का नाम शहर — ए — आफ़ताब होगा। 19 उस वक़्त मुल्क — ए — मिस्र के वस्त में खुदावन्द का एक मज़बह और उसकी सरहद पर खुदावन्द का एक सुतून होगा। 20 और वह मुल्क — ए — मिस्र में रब्ब — उल — अफ़वाज के लिए निशान और गवाह होगा; इसलिए कि वह सितमगरों के ज़ुल्म से खुदावन्द से फ़रियाद करेंगे, और वह उनके लिए रिहाई देने वाला और हामी भेजेगा, और वह उनको रिहाई देगा। 21 और खुदावन्द अपने आपको मिस्रियों पर ज़ाहिर करेगा और उस वक़्त मिस्री खुदावन्द को पहचानेंगे, और ज़बीहे और हदिये पेश करेंगे; हाँ, वह खुदावन्द के लिए मिन्नत मँगेंगे और अदा करेंगे। 22 और खुदावन्द मिस्रियों को मारेगा, मारेगा और शिफ़ा बख़्शेगा; और वह खुदावन्द की तरफ़ रूजू' लाएँगे और वह उनकी दुआ सुनेगा, और उनको सेहत बख़्शेगा। 23 उस वक़्त मिस्र से असूर तक एक शाह — ए — राह होगी और असूरी मिस्र में आएँगे और मिस्री असूर को जाएँगे, मिस्री असूरियों के साथ मिलकर इबादत करेंगे। 24 तब इस्राईल मिस्र और असूर के साथ तीसरा होगा, और इस ज़मीन पर बरकत का ज़रिए' आ ठहरेगा। 25 क्यूँकि रब्ब — उल — अफ़वाज उनको बरकत बख़्शेगा और फ़रमाएगा मुबारक हो मिस्री मेरी उम्मत असूर मेरे हाथ की सन'अत और इस्राईल मेरी मीरास।

20

?????? ?? ???? ???? ?? ???? ?? ???? ??

1 जिस साल सरज़ून शाह — ए — असूर ने तरतान को अशदूद की तरफ़ भेजा, और उसने आकर अशदूद से लड़ाई की और उसे फ़तह कर लिया; 2 उस वक़्त खुदावन्द ने यसा'याह बिन आमूस के ज़रिए' यूँ फ़रमाया, कि जा और टाट का लिबास अपनी कमर से खोल डाल और अपने पाँवों से जूते उतार, तब उसने

ऐसा ही किया, वह बरहना और नंगे पाँव फिरा करता था। ³ तब खुदावन्द ने फ़रमाया, जिस तरह मेरा बन्दा यसा'याह तीन बरस तक बरहना और नंगे पाँव फिरा किया, ताकि मिस्रियों और कूशियों के बारे में निशान और ता'अज्जुब हो। ⁴ उसी तरह शाह — ए — असूर मिस्री गुलामों और कूशी जिलावतनों को क्या बूढ़े क्या जवान बरहना और नंगे पाँव और बेपर्दा सुरनियों के साथ मिस्रियों की रुस्वाई के लिए ले जाएगा। ⁵ तब वह परेशान होंगे और कूश से जो उनकी उम्मीदगाह थी, और मिस्र से जो उनका घमण्ड था, शर्मिन्दा होंगे। ⁶ और उस वक़्त इस साहिल के बाशिन्दे कहेंगे देखो हमारी उम्मीदगाह का यह हाल हुआ जिसमें हम मदद के लिए भागे ताकि असूर के बादशाह से बच जाएँ फिर हम किस तरह रिहाई पायें।

21

?????? ?? ???? ?? ???? ??

¹ दशत — ए — दरिया के बारे में नबुवत:जिस तरह दक्खिनी हवा जोर से चली आती है, उसी तरह वह दशत से और मुहीब सरज़मीन से नज़दीक आ रहा है। ² एक हौलनाक ख़्वाब मुझे नज़र आया; दगाबाज़ दगाबाज़ी करता है; और ग़ारतगर ग़ारत करता है ऐ ऐलाम, चढ़ाई कर; ऐ मादै, मुहासिरा कर; मैं वह सब कराहना जो उसकी वजह से हुआ, ख़त्म करता हूँ। ³ इसलिए मेरी कमर में सख़्त दर्द है, मैं जैसे दर्द — ए — जिह में तड़पता हूँ, मैं ऐसा परेशान हूँ कि सुन नहीं सकता; मैं ऐसा परेशान हूँ कि देख नहीं सकता। ⁴ मेरा दिल धड़कता है, और ख़ौफ़ अचानक मुझ पर ग़ालिब आ गया; शफ़क़ — ए — शाम जिसका मैं आरज़ूमन्द था, मेरे लिए ख़ौफ़नाक हो गई। ⁵ दस्तरख़्ख़ान बिछाया गया, निगहबान खड़ा किया गया, वह खाते हैं और पीते हैं; उठो ऐ सरदारो सिपर पर तेल मलो! ⁶ क्योंकि खुदावन्द ने मुझे यूँ फ़रमाया, कि “जा निगहबान बिठा; वह जो कुछ देखे वही बताए। ⁷ उसने सवार देखे, जो दो — दो आते थे, और गधों और ऊँटों पर सवार और उसने बड़े ग़ौर से सुना।” ⁸ तब उसने शेर की तरह आवाज़ से पुकारा, ऐ खुदावन्द, मैं अपनी दीदगाह पर तमाम दिन खड़ा रहा, और मैंने हर रात पहर की जगह पर काटी। ⁹ और देख, सिपाहियों के ग़ोल और उनके सवार दो — दो करके आते हैं! “फिर उसने यूँ कहा, कि बाबुल गिर पड़ा, गिर पड़ा; और उसके मा'बूदों की सब तराशी हुई मूरतें बिल्कुल टूटी पड़ी हैं।” ¹⁰ ऐ मेरे गाहे हुए और मेरे खलीहान के गल्ले, जो कुछ मैंने रब्ब —

उल — अफ़वाज इस्राईल के खुदा से सुना, तुमसे कह दिया। ¹¹ दूमा के बारे में नबुवत किसी ने मुझ को श'ईर से पुकारा कि ऐ निगहबान, रात की क्या खबर है? ¹² निगहबान ने कहा, सुबह होती है और रात भी अगर तुम पूछना चाहते हो तो पूछो तुम फिर आना? ¹³ 'अरब के बारे में नबुवत ऐ ददानियों के क़ाफ़िलों, तुम 'अरब के जंगल में रात काटोगे। ¹⁴ वह प्यासे के पास पानी लाए, तेमा की सरज़मीन के बाशिन्दे, रोटी लेकर भागने वाले से मिलने को निकले। ¹⁵ क्योंकि वह तलवारों के सामने से नंगी तलवार से, और खेंची हुई कमान से, और जंग की शिद्दत से भागे हैं। ¹⁶ क्योंकि खुदावन्द ने मुझ से यूँ कहा कि मज़दूर के बरसों के मुताबिक़, एक बरस के अन्दर अन्दर क़ीदार की सारी हशमत जाती रहेगी। ¹⁷ और तीर अन्दाज़ों की ता'दाद का बक्रिया या'नी बनी क़ीदार के बहादुर थोड़े से होंगे; क्योंकि इस्राईल के खुदा ने यूँ फ़रमाया है।

22

?????????? ?? ???? ?? ???? ??

¹ ख़्वाब की वादी के बारे में नबुवत अब तुम को क्या हुआ कि तुम सब के सब कोठों पर चढ़ गए? ² ऐ पुर शोर और ग़ौगाई शहर ऐ शादमान बस्ती तेरे मक़तूल न तलवार से क़त्ल हुए और न लड़ाई में मारे गए। ³ तेरे सब सरदार इकट्ठे भाग निकले, उनको तीर अन्दाज़ों ने गुलाम कर लिया; जितने तुझ में पाए गए सब के सब, बल्कि वह भी जो दूर से भाग गए थे गुलाम किए गए हैं। ⁴ इसीलिए मैंने कहा, मेरी तरफ़ मत देखो, क्योंकि मैं ज़ार — ज़ार रोऊँगा मेरी तसल्ली की फ़िक़र मत करो, क्योंकि मेरी दुस्तर — ए — क़ौम बर्बाद हो गई। ⁵ क्योंकि खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज की तरफ़ से ख़्वाब की वादी में, यह दुख और पामाली ओ — बेकरारी और दीवारों को गिराने और पहाड़ों तक फ़रियाद पहुँचाने का दिन है। ⁶ क्योंकि ऐलाम ने जंगी रथों और सवारों के साथ तरक़श उठा लिया और क़ीर ने सिपर का ग़िलाफ़ उतार दिया। ⁷ और यूँ हुआ कि तेरी बेहतरीन वादियाँ जंगली रथों से मा'भूर हो गईं और सवारों ने फाटक पर सफ़आराई की; ⁸ और यहूदाह का नक्राब उतारा गया। और तू अब दशत — ए — महल के सिलाहख़ाने पर निगाह करता है, ⁹ और तुम ने दाऊद के शहर के रखने देखे कि बेशुमार हैं; और तुम ने नीचे के हौज़ में पानी जमा किया। ¹⁰ और तुम ने येरूशलेम के घरों को गिना और उनको गिराया ताकि शहर पनाह को मज़बूत करो, ¹¹ और तुम ने पुराने हौज़ के पानी के लिए दोनों दीवारों के बीच एक और हौज़ बनाया; लेकिन

तुम ने उसके पानी पर निगाह न की और उसकी तरफ जिसने पहले से उसकी तदबीर की मुतवज्जह न हुए।

12 और उस वक्त खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज ने रोने और मातम करने, और सिर मुन्डाने और टाट से कमर बाँधने का हुक्म दिया था; 13 लेकिन देखो, खुशी और शादमानी, गाय बैल को ज़बह करना और भेड़ — बकरी को हलाल करना और गोश्त ख़वारी — ओ — मयनोशी कि आओ खाएँ और पियें क्योंकि कल तो हम मरेंगे। 14 और रब्ब — उल — अफ़वाज ने मेरे कान में कहा, कि तुम्हारी इस बदकिरदारी का कफ़ारा तुम्हारे मरने तक भी न हो सकेगा यह खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज का फ़रमान है। 15 खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज यह फ़रमाता है कि उस खज़ान्ची शबनाह के पास जो महल पर मु'अय्यन है, जा और कह: 16 तू यहाँ क्या करता है? और तेरा यहाँ कौन है कि तू यहाँ अपने लिए क़बर तराशता है? बुलन्दी पर अपनी क़बर तराशता है और चट्टान में अपने लिए घर खुदावाता है। 17 देख, ऐ ज़बरदस्त, खुदावन्द तुझ को ज़ोर से दूर फेंक देगा; वह यकीनन तुझे पकड़ रखेगा। 18 वह बेशक तुझ को गेंद की तरह घुमा — घुमाकर बड़े मुल्क में उछालेगा; वहाँ तू मरेगा और तेरी हशमत के रथ वहीं रहेंगे, ऐ अपने आक्रा के घर की रुस्वाई। 19 और मैं तुझे तेरे मन्सब से बरतरफ़ करूँगा, हाँ वह तुझे तेरी जगह से खींच उतारेगा। 20 और उस रोज़ यूँ होगा कि मैं अपने बन्दे इलियाकीम — बिन — खिलक्रियाह को बुलाऊँगा, 21 और मैं तेरा खिल'अत उसे पहनाऊँगा और तेरा पटका उस पर कसूँगा, और तेरी हुकूमत उसके हाथ में हवाले कर दूँगा; और वह अहल — ए — येरूशलेम का और बनी यहूदाह का बाप होगा। 22 और मैं दाऊद के घर की कुंजी उसके कन्धे पर रखूँगा, तब वह खोलेगा और कोई बन्द न करेगा; और वह बन्द करेगा और कोई न खोलेगा। 23 और मैं उसको खूँटी की तरह मज़बूत जगह में मुहकम करूँगा, और वह अपने बाप के घराने के लिए जलाली तख़्त होगा। 24 और उसके बाप के खान्दान की सारी हशमत या'नी आल — ओ — औलाद और सब छोटे — बड़े बर्तन प्यालों से लेकर क़राबों तक सबको उसी से मन्सूब करेंगे। 25 रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, उस वक्त वह खूँटी जो मज़बूत जगह में लगाई गई थी हिलाई जाएगी, और वह काटी जाएगी और गिर जाएगी, और उस पर का बोझ गिर पड़ेगा; क्योंकि खुदावन्द ने यूँ फ़रमाया है।

23

2222 22 22222 22 222222

1 सूर के बारे में नबुव्वत ऐ तरसीस के जहाज़ो, वावैला करो क्योंकि वह उजड़ गया, वहाँ कोई घर और कोई दाखिल होने की जगह नहीं! किस्तीम की ज़मीन से उनको ये ख़बर पहुँची है। 2 ऐ साहिल के बाशिन्दों, जिनको सैदानी सौदागरों ने जो समन्दर के पार आते जाते हैं मालामाल कर दिया है, ख़ामोश रहो। 3 समन्दर के पार से सीहोर' का ग़ल्ला और दरिया-ए-नील की फ़सल उसकी आमदनी थी, तब वह क्रौमों की तिजारत — गाह बना। 4 ऐ सैदा, तू शरमा, क्योंकि समन्दर ने कहा है, "समन्दर की गद्दी ने कहा, मुझे दर्द — ए — ज़िह नहीं लगा, और मैंने बच्चे नहीं जने; मैं जवानों को नहीं पालती, और कुँवारियों की परवरिश नहीं करती हूँ।" 5 जब अहल — ए — मिस्र को यह ख़बर पहुँचेगी, तो वह सूर की ख़बर से बहुत ग़मगीन होंगे। 6 ऐ साहिल के बाशिन्दो, तुम ज़ार — ज़ार रोते हुए तरसीस को चले जाओ। 7 क्या यह तुम्हारी शादमान बस्ती है, जिसकी हस्ती पहले से है? उसी के पाँव उसे दूर — दूर ले जाते हैं कि परदेस में रहे। 8 किसी ने यह मंसूबा सूर के खिलाफ़ बाँधा जो ताज बरूष है जिसके सौदागर 'उमरा और जिसके ताजिर दुनिया भर के 'इज्जतदार हैं। 9 रब्ब — उल — अफ़वाज ने ये इरादा किया है कि सारी हशमत के घमण्ड को हलाक करे और दुनिया भर के इज्जतदारों को ज़लील करे। 10 ऐ दुस्तर — ए — तरसीस दरिया-ए-नील की तरह अपनी सरज़मीन पर फैल जा अब कोई बन्द बाकी नहीं रहा। 11 उसने समन्दर पर अपना हाथ बढ़ाया, उसने ममलुकतों को हिला दिया; खुदावन्द ने कनान के हक़ में हुक्म किया है कि उसके क़िले' मिस्मार किए जाएँ। 12 और उसने कहा, "ऐ मज़लूम कुँवारी, दुस्तर — ए — सैदा, तू फिर कभी घमण्ड न करेगी; उठ किस्तीम में चली जा, तुझे वहाँ भी चैन न मिलेगा।" 13 कसदियों के मुल्क को देख! यह क्रौम मौजूद न थी; असूर ने उसे वीरान के रहनेवालों का हिस्सा ठहराया। उन्होंने अपने बुर्ज बनाए उन्होंने उसके महल ग़ारत किये और उसे वीरान किया। 14 ऐ तरसीस के जहाज़ों वावैला करो क्योंकि तुम्हारा क़िला' उजाड़ा गया। 15 और उस वक्त यूँ होगा कि सूर किसी बादशाह के दिनों के मुताबिक़, सत्तर बरस तक फ़रामोश हो जाएगा; और सत्तर बरस के बाद सूर की हालत फ़ाहिशा के गीत के मुताबिक़ होगी। 16 ऐ फ़ाहिशा तू जो फ़रामोश हो गई है, बर्बत उठा ले और शहर में फिरा कर राग को छेड़ और बहुत — सी ग़ज़लें गा कि लोग तुझे याद करें। 17 और सत्तर बरस के बाद यूँ होगा कि खुदावन्द सूर की ख़बर लेगा, और वह उजरत पर जाएगी और इस ज़मीन पर की

तमाम ममलुकतों से बदकारी करेगी। ¹⁸ लेकिन उसकी तिजारत और उसकी उजरत खुदावन्द के लिए मुकद्दस होगी और उसका माल न जखीरा किया जाएगा और न जमा' रहेगा बल्कि उसकी तिजारत का हासिल उनके लिए होगा, जो खुदावन्द के सामने रहते हैं कि खाकर सेर हों और नफ़ीस पोशाक पहने।

24

24:1-17

¹ देखो खुदावन्द ज़मीन को खाली और सरनगूँ करके वीरान करता है और उसके बाशिन्दों को तितर — बितर कर देता है। ² और यूँ होगा कि जैसा र'इयत का हाल, वैसा ही काहिन का; जैसा नौकर का, वैसा ही उसके साहिब का; जैसा लौंडी का, वैसा ही उसकी बीबी का; जैसा खरीदार का, वैसा ही बेचनेवाले का; जैसा क़र्ज़ देनेवाले का, वैसा ही क़र्ज़ लेनेवाले का; जैसा सूद देनेवाले का, वैसा ही सूद लेनेवाले का। ³ ज़मीन बिल्कुल खाली की जाएगी, और बशिद्दत ग़ारत होगी; क्योंकि यह कलाम खुदावन्द का है। ⁴ ज़मीन ग़मगीन होती और मुरझाती है, जहाँ बेताब और पज़मुर्दा होता है, ज़मीन के 'आली क़दर लोग नातवान होते हैं'। ⁵ ज़मीन अपने बाशिन्दों से नापाक हुई, क्योंकि उन्होंने शरी'अत को 'उदूल किया, क़ानून से मुन्हरिफ़ हुए, हमेशा के 'अहद को तोड़ा। ⁶ इस वजह से ला'नत ने ज़मीन को निगल लिया और उसके बाशिन्दे मुजरिम ठहरे, और इसीलिए ज़मीन के लोग भसम हुए और थोड़े से आदमी बच गए। ⁷ मय ग़मज़दा, ताक पज़मुर्दा है; और सब जो दिलशाद थे आह भरते हैं। ⁸ ढोलकों की खुशी बन्द हो गई, खुशी मनानेवालों का गुल — ओ — शोर तमाम हुआ, बरबत की शादमानी जाती रही। ⁹ वह फिर गीत के साथ मय नहीं पीते, पीनेवालों को शराब तल्लू मा'लूम होगी। ¹⁰ सुनसान शहर वीरान हो गया, हर एक घर बन्द हो गया कि कोई अन्दर न जा सके। ¹¹ मय के लिए बाज़ारों में वावैला हो रहा है; सारी खुशी पर तारीकी छा गई, मुल्क की 'इश्रत जाती रही। ¹² शहर में वीरानी ही वीरानी है, और फाटक तोड़ फोड़ दिए गए। ¹³ क्योंकि ज़मीन में लोगों के बीच यूँ होगा जैसा ज़ैतून का दरख्त झाड़ा जाए, जैसे अंगूर तोड़ने के बाद खोशा — चीनी। ¹⁴ वह अपनी आवाज़ बलन्द करेंगे, वह गीत गाएँगे; खुदावन्द के जलाल की वजह से समन्दर से ललकारेंगे। ¹⁵ तुम पूरब में खुदावन्द की और समन्दर के जज़ीरों में खुदावन्द के नाम की, जो इस्राईल का खुदा है, तम्ज़ीद करो। ¹⁶ इन्तिहा — ए — ज़मीन से नग़मों की आवाज़ हम को सुनाई देती है, जलाल — ओ — 'अज़मत

सादिक के लिए। लेकिन मैंने कहा, मैं गुदाज़ हो गया, मैं हलाक हुआ; मुझ पर अफ़सोस! दगाबाज़ों ने दगा की; हाँ, दगाबाज़ों ने बड़ी दगा की। ¹⁷ ए ज़मीन के बाशिन्दे, ख़ौफ़ और ग़दा और दाम तुझ पर मुसल्लित हैं। ¹⁸ और यूँ होगा कि जो ख़ौफ़नाक आवाज़ सुन कर भागे, गढ़े में गिरेगा; और जो गढ़े से निकल आए, दाम में फँसेगा; क्योंकि आसमान की खिड़कियाँ खुल गई, और ज़मीन की बुनियादे हिल रही हैं। ¹⁹ ज़मीन बिल्कुल उजड़ गई, ज़मीन यकसर शिकस्ता हुई, और शिद्दत से हिलाई गई। ²⁰ वह मतवाले की तरह डगमगाएगी और झोपड़ी की तरह आगे पीछे सरकाई जाएगी; क्योंकि उसके गुनाह का बोझ उस पर भारी हुआ, वह गिरेगी और फिर न उठेगी। ²¹ और उस वक़्त यूँ होगा कि खुदावन्द आसमानी लश्कर को आसमान पर और ज़मीन के बादशाहों को ज़मीन पर सज़ा देगा। ²² और वह उन क़ैदियों की तरह जो गढ़े में डाले जाएँ, जमा' किए जाएँगे और वह क़ैदख़ाने में क़ैद किए जाएँगे, और बहुत दिनों के बाद उनकी ख़बर ली जाएगी। ²³ और जब रब्ब — उल — अफ़वाज़ सिय्यून पहाड़ पर और येरूशलेम में अपने बुजुर्ग बन्दों के सामने हश्मत के साथ सल्लनत करेगा, तो चांद मुज्तरिब' सूरज शर्मिन्दा होगा।

25

25:1-12

¹ ए खुदावन्द तू मेरा खुदा है; मैं तेरी तम्ज़ीद करूँगा; तेरे नाम की इबादत करूँगा क्योंकि तूने 'अजीब काम किए हैं, तेरी मसलहत क़दीम से वफ़ादारी और सच्चाई हैं। ² क्योंकि तूने शहर को खाक का ढेर किया; हाँ, फ़सीलदार शहर को खण्डर बना दिया और परदेसियों के महल को भी, यहाँ तक कि शहर न रहा; वह फिर ता'मीर न किया जाएगा। ³ इसलिए ज़बरदस्त लोग तेरी इबादत करेंगे और हैबतनाक क़ौमों का शहर तुझ से डरेगा। ⁴ क्योंकि तू ग़रीब के लिए क़िला' और मोहताज के लिए परेशानी के वक़्त मल्जा और आँधी से पनाहगाह और गर्मी से बचाने को साया हुआ, जिस वक़्त ज़ालिमों की साँस दिवारकन तूफ़ान की तरह हो। ⁵ तू परदेसियों के शोर को खुश्क मकान की गर्मी की तरह दूर करेगा और जिस तरह अब्र के साये से गरमी हलाक होती है उसी तरह ज़ालिमों का शादियाना बजाना ख़त्म होगा। ⁶ और रब्ब — उल — अफ़वाज़ इस पहाड़ पर सब क़ौमों के लिए फ़रबा चीज़ों से एक ज़ियाफ़त तैयार करेगा बल्कि एक ज़ियाफ़त तलछट पर से निथरी हुई मय से; हाँ फ़रबा चीज़ों से जो पुरमग़ज़ हों और मय से जो तलछट

पर से खूब निथरी हुई हो। ⁷ और वह इस पहाड़ पर उस पर्दे को, जो तमाम लोगों पर पड़ा है और उस नक्राब को, जो सब क्रौमों पर लटक रहा है, दूर कर देगा। ⁸ वह मौत को हमेशा के लिए हलाक करेगा और खुदावन्द खुदा सब के चहरों से आसू पोंछ डालेगा, और अपने लोगों की रुस्वाई तमाम सरज़मीन पर से मिटा देगा; क्योंकि खुदावन्द ने यह फ़रमाया है। ⁹ और उस वक़्त यूँ कहा जाएगा, लो, यह हमारा खुदा है; हम उसकी राह तकते थे और वही हम को बचाएगा। यह खुदावन्द है, हम उसके इन्तिज़ार में थे। हम उसकी नज़ात से खुश — ओ — खुर्रम होंगे। ¹⁰ क्योंकि इस पहाड़ पर खुदावन्द का हाथ बरकरार रहेगा और मोआब अपनी ही जगह में ऐसा कुचला जाएगा जैसे मज़बले के पानी में घास कुचली जाती है। ¹¹ और वह उसमें उसकी तरह जो तैरते हुए हाथ फैलाता है, अपने हाथ फैलाएगा; लेकिन वह उसके गुरुर को उसके हाथों के फ़न — धोखे के साथ पस्त करेगा। ¹² और वह तेरी फ़सील के ऊँचे बुर्जों को तोड़कर पस्त करेगा, और ज़मीन के बल्कि खाक के बराबर कर देगा।

26

26:1-11

¹ उस वक़्त यहूदाह के मुल्क में ये गीत गाया जाएगा: हमारा एक मुहकम शहर है, जिसकी फ़सील और नसलों की जगह वह नज़ात ही को मुक़र्रर करेगा। ² तुम दरवाज़े खोलो ताकि सादिक़ क्रौम जो वफ़ादार रही दाख़िल हो। ³ जिसका दिल क़ाईम है तू उसे सलामत रखेगा क्योंकि उसका भरोसा तुझ पर है। ⁴ हमेशा तक खुदावन्द पर ऐ'तमाद रखो क्योंकि खुदावन्द यहूदाह हमेशा की चट्टान है। ⁵ क्योंकि उसने बुलन्दी पर बसनेवालों को नीचे उतारा, बुलन्द शहर को ज़ेर किया, उसने उसे ज़ेर करके खाक में मिलाया। ⁶ वह पाँव तले रौदा जाएगा; हाँ, ग़रीबों के पाँव और मोहताजों के क़दमों से। ⁷ सादिक़ की राह रास्ती है; तू जो हक़ है, सादिक़ की रहबरी करता है। ⁸ हाँ तेरी 'अदालत की राह में, ऐ खुदावन्द, हम तेरे मुन्तज़िर रहे; हमारी जान का इश्तियाक़ तेरे नाम और तेरी याद की तरफ़ है। ⁹ रात को मेरी जान तेरी मुश्ताक़ है; हाँ, मेरी रूह तेरी जुस्तजू में कोशाँ रहेगी; क्योंकि जब तेरी 'अदालत ज़मीन पर जारी है, तो दुनिया के बाशिन्दे सदाक़त सीखते हैं। ¹⁰ हर चन्द शरीर पर मेहरबानी की जाए, लेकिन वह सदाक़त न सीखेगा; रास्ती के मुल्क में नारास्ती करेगा, और खुदावन्द की 'अज़मत को न देखेगा। ¹¹ ऐ खुदावन्द, तेरा हाथ बुलन्द है लेकिन वह नहीं देखते, लेकिन वह

लोगों के लिए तेरी ग़ैरत को देखेंगे और शर्मसार होंगे, बल्कि आग़ तेरे दुश्मनों को खा जाएगी। ¹² ऐ खुदावन्द, तू ही हम को सलामती बख़्सेगा; क्योंकि तू ही ने हमारे सब कामों को हमारे लिए अन्जाम दिया है। ¹³ ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, तेरे अलावा दूसरे हाकिमों ने हम पर हुकूमत की है; लेकिन तेरी मदद से हम सिर्फ़ तेरा ही नाम लिया करेंगे। ¹⁴ वह मर गए, फिर ज़िन्दा न होंगे; वह रहलत कर गए, फिर न उठेंगे; क्योंकि तूने उन पर नज़र की और उनको हलाक किया, और उनकी याद को भी मिटा दिया है। ¹⁵ ऐ खुदावन्द तूने इस क्रौम को कसरत बख़्शी है; तूने इस क्रौम को बढ़ाया है, तूही ज़ुल — जलाल है तूही ने मुल्क की हदों को बढ़ा दिया है। ¹⁶ ऐ खुदावन्द, वह मुसीबत में तेरे तालिब हुए जब तूने उनको तादीब की तो उन्होंने गिरया — ओ — ज़ारी की। ¹⁷ ऐ खुदावन्द तेरे सामने हम उस हामिला की तरह हैं, जिसकी विलादत का वक़्त नज़दीक़ हो, जो दुख में है और अपने दर्द से चिल्लाती है। ¹⁸ हम हामिला हुए, हम को दर्द — ए — ज़िह लगा, लेकिन पैदा क्या हुआ? हवा! हम ने ज़मीन पर आज़ादी को क़ाईम नहीं किया, और न दुनिया में बसनेवाले ही पैदा हुए। ¹⁹ तेरे मुर्दे जी उठेंगे, मेरी लाशें उठ खड़ी होंगी। तुम जो खाक में जा बसे हो, जागो और गाओ! क्योंकि तेरी ओस उस ओस की तरह है जो नबातात पर पड़ती है, और ज़मीन मुर्दों को उगल देगी। ²⁰ ऐ मेरे लोगो! अपने खिलवत खानों में दाख़िल हो, और अपने पीछे दरवाज़े बन्द कर लो और अपने आपको थोड़ी देर तक छिपा रखो जब तक कि ग़ज़ब टल न जाए। ²¹ क्योंकि देखो, खुदावन्द अपने मक़ाम से चला आता है, ताकि ज़मीन के बाशिन्दों को उनकी बदकिरदारी की सज़ा दे; और ज़मीन उस खून को ज़ाहिर करेगी जो उसमें है और अपने मक़तूलों को हरगिज़ न छिपाएगी।

27

¹ उस वक़्त खुदावन्द अपनी सख्त और बड़ी और मज़बूत तलवार से अज़दहा या'नी तेज़रू साँप को और अज़दह या'नी पेचीदा साँप को सज़ा देगा; और दरियाई अज़दहे को क़त्ल करेगा। ² उस वक़्त तुम खुशनुमा ताकिस्तान का गीत गाना। ³ मैं खुदावन्द उसकी हिफ़ाज़त करता हूँ, मैं उसे हर दम सींचता रहूँगा। मैं दिन रात उसकी निगहबानी करूँगा कि उसे नुक़सान न पहुँचे। ⁴ मुझ में क्रहर नहीं; तोभी काश के जंगगाह में झाड़ियाँ और काँटे मेरे खिलाफ़ होते, मैं उन पर खुरूज करता और उनको बिल्कुल जला देता। ⁵ लेकिन अगर

कोई मेरी ताकत का दामन पकड़े तो मुझ से सुलह करे; हाँ वह मुझ से सुलह करे।⁶ अब आइन्दा दिनों में या'कूब जड़ पकड़ेगा, और इस्राईल पनपेगा और फूलेगा और इस ज़मीन को मेवों से मालामाल करेगा।⁷ क्या उसने उसे मारा, जिस तरह उसने उसके मारनेवालों को मारा है? या क्या वह क़त्ल हुआ, जिस तरह उसके क़ातिल क़त्ल हुए? ⁸ तूने इन्साफ़ के साथ उसको निकालते वक़्त उससे हुज्जत की; उसने पूरबी हवा के दिन अपने सख़्त तूफ़ान से उसको निकाल दिया।⁹ इसलिए इससे या'कूब के गुनाह का कफ़ारा होगा और उसका गुनाह दूर करने का कुल नतीजा यही है; जिस वक़्त वह मज़बूह के सब पत्थरों को टूटे कंकरो की तरह टुकड़े — टुकड़े करे कि यसीरतें और सूरज के बुत फिर क़ाईम न हों।¹⁰ क्यूँकि फ़सीलदार शहर वीरान है, और वह बस्ती उजाड़ और वीरान की तरह खाली है; वहाँ बछड़ा चरेगा और वहीं लेट रहेगा और उसकी डालियाँ बिलकुल काट खायेगा।¹¹ जब उसकी शाखें मुरझा जायेंगी तो तोड़ी जायेंगी 'औरतें आयेंगी और उनको जलाएँगी; क्यूँकि लोग अक़ल से खाली हैं, इसलिए उनका खालिक उन पर रहम नहीं करेगा और उनका बनाने वाला उन पर तरस नहीं खाएगा।¹² और उस वक़्त यूँ होगा कि खुदावन्द दरया — ए — फ़रात की गुज़रगाह से रूद — ए — मिस्र तक झाड़ डालेगा; और तुम ऐ बनी इस्राईल एक एक करके जमा' किए जाओगे।¹³ और उस वक़्त यूँ होगा कि बड़ा नरसिंगा फूँका जाएगा, और वह जो असूर के मुल्क में क़रीब — उल — मौत थे, और वह जो मुल्क — ए — मिस्र में जिला वतन थे आएँगे और येरूशलेम के मुक़द्दस पहाड़ पर खुदावन्द की इबादत करेंगे।

28

???????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

¹ अफ़सोस इफ़राईम के मतवालों के घमण्ड के ताज पर और उसकी शानदार शौकत के मुरझाये हुए फूल पर जो उन लोगों की शादाब वादी के सिरे पर है जो मय के मग़लूब हैं।² देखो खुदावन्द के पास एक ज़बरदस्त और ताक़तवर शख्स है, जो उस आँधी की तरह जिसके साथ ओले हों और बाद समूम की तरह और सैलाब — ए — शदीद की तरह ज़मीन पर हाथ से पटक देगा।³ इफ़राईम के मतवालों के घमण्ड का ताज पामाल किया जाएगा; ⁴ और उस शानदार शौकत का मुरझाया हुआ फूल जो उस शादाब वादी के सिरे पर है, पहले पक्के अंजीर की तरह होगा जो गर्मी के दिनों से पहले लगे; जिस पर किसी की निगाह पड़े और वह उसे देखते ही और हाथ में लेते ही निगल जाए।⁵ उस वक़्त रब्ब —

उल — अफ़वाज अपने लोगों के बक़िये के लिए शौकत का अफ़सर और हुस्न का ताज होगा।⁶ और 'अदालत की कुर्सी पर बैठने वाले के लिए इन्साफ़ की रूह, और फाटकों से लड़ाई को दूर करने वालों के लिए ताक़त होगा।⁷ लेकिन यह भी मयख़्तारी से डगमगाते और नशे में लड़खड़ाते हैं; काहिन और नबी भी नशे में चूर और मय में गर्क हैं, वह नशे में झूमते हैं; वह रोया में ख़ता करते और 'अदालत में लगज़िश खाते हैं।⁸ क्यूँकि सब दस्तरख़्वान क़य और गन्दगी से भरे हैं कोई जगह बाक़ी नहीं।⁹ वह किसको अक़ल सिखाएगा? किसको तक़रीर करके समझाएगा? क्या उनको जिनका दूध छुड़ाया गया, जो छातियों से जुदा किए गए? ¹⁰ क्यूँकि हुक्म पर हुक्म, हुक्म पर हुक्म; क़ानून पर क़ानून, क़ानून पर क़ानून है; थोड़ा यहाँ थोड़ा वहाँ।¹¹ लेकिन वह बेगाना लबों और अजनबी ज़बान से इन लोगों से कलाम करेगा।¹² जिनको उसने फ़रमाया, "यह आराम है, तुम थके मान्दों को आराम दो, और यह ताज़गी है;" लेकिन वह सुनने वाले न हुए।¹³ तब खुदावन्द का कलाम उनके लिए हुक्म पर हुक्म, हुक्म पर हुक्म, क़ानून पर क़ानून, क़ानून पर क़ानून, थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ होगा; ताकि वह चले जाएँ और पीछे गिरें और सिक़्त खाएँ और दाम में फसैं और गिरफ़्तार हों।¹⁴ इसलिए ऐ ठट्ठा करने वालो, जो येरूशलेम के इन बाशिन्दों पर हुक्मरानी करते हो; खुदावन्द का कलाम सुनो: ¹⁵ चूँकि तुम कहा करते हो, कि "हम ने मौत से 'अहद बाँधा, और पाताल से पैमान कर लिया है; जब सज़ा का सैलाब आएगा तो हम तक नहीं पहुँचेगा, क्यूँकि हम ने झूठ को अपनी पनाहगाह बनाया है और दरोहगोई की आड़ में छिप गए हैं;" ¹⁶ इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है देखो मैं सिय्यून में बुनियाद के लिए एक पत्थर रखूँगा, आज़मूदा पत्थर मुहक़म बुनियाद के लिए कोने के सिरे का कीमती पत्थर: जो कोई ईमान लाता है क़ाईम रहेगा।¹⁷ और मैं 'अदालत को सूत, सदाक़त को साहूल बनाऊँगा; और ओले झूठ की पनाहगाह को साफ़ कर दूँगे, और पानी छिपने के मक़ान पर फैल जायेगा।¹⁸ और तुम्हारा 'अहद जो मौत से हुआ मन्सूख़ हो जाएगा और तुम्हारा पैमान जो पाताल से हुआ क़ाईम न रहेगा; जब सज़ा का सैलाब आएगा, तो तुम को पामाल करेगा।¹⁹ और गुज़रते वक़्त तुम को बहा ले जाएगा सुबह और शब — ओ — रोज़ आएगा बल्कि उसका ज़िक़र सुनना भी ख़ौफ़नाक होगा।²⁰ क्यूँकि पलंग ऐसा छोटा है कि आदमी उस पर दराज़ नहीं हो सकता; और लिहाफ़ ऐसा तंग है कि वह अपने आपको उसमें

लपेट नहीं सकता। ²¹ क्योंकि खुदावन्द उठेगा जैसा कोह — ए — पराज़ीम में, और वह ग़ज़बनाक होगा जैसा जिबा'ऊन की वादी में; ताकि अपना काम बल्कि अपना 'अजीब काम करे और अपना काम, हाँ अपना अनोखा, काम पूरा करे। ²² इसलिए अब तुम ठठ्ठा न करो, ऐसा न हो कि तुम्हारे बंद सख्त हो जाएँ क्योंकि मैंने खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज़ से सुना है कि उसने कामिल और मुसमम्म इरादा किया है कि सारी सर ज़मीन को तबाह करे। ²³ कान लगा कर मेरी आवाज़ सुनो, सुनने वाले होकर मेरी बात पर दिल लगाओ। ²⁴ क्या किसान बोने के लिए हर रोज़ हल चलाया करता है? क्या वह हर वक़्त अपनी ज़मीन को खोदता और उसके ढेले फोड़ा करता है? ²⁵ जब उसको हमवार कर चुका, तो क्या वह अजवाइन को नहीं छांटता, और ज़ीरे को डाल नहीं देता, और गेहूँ को कतारों में नहीं बोता, और जौ को उसके मु'अय्यन मकान में, और कठिया गेहूँ को उसकी खास क्यारी में नहीं बोता? ²⁶ क्योंकि उसका खुदा उसको तरबियत करके उसे सिखाता है। ²⁷ कि अजवाइन को दावने के हेंगे से नहीं दावते, और ज़ीरे के ऊपर गाड़ी के पहिये नहीं घुमाते; बल्कि अजवाइन को लाठी से झाड़ते हैं और ज़ीरे को छड़ी से। ²⁸ रोटी के ग़ल्ले पर दाँय चलाता है, लेकिन वह हमेशा उसे कूटता नहीं रहता; और अपनी गाड़ी के पहिये और घोड़ों को उस पर हमेशा फिराता नहीं उसे सरासर नहीं कुचलेगा। ²⁹ यह भी रब्ब — उल — अफ़वाज़ से मुकर्रर हुआ है, जिसकी मसलहत 'अजीब और दानाई' अज़ीम है।

29

???????? ?? ????? ?? ???????

¹ अरीएल पर अफ़सोस अरीएल उस शहर पर जहाँ दाऊद खेमाज़न हुआ साल पर साल ज्यादा करो, 'ईद पर 'ईद मनाई जाए। ² तोभी मैं अरीएल को दुख दूँगा, और वहाँ नौहा और मातम होगा लेकिन मेरे लिए वह अरीएल ही ठहरेगा। ³ मैं तेरे खिलाफ़ चारों तरफ़ खेमाज़न हूँगा और मोर्चा बंदी करके तेरा मुहासरा करूँगा और तेरे खिलाफ़ दमदमा बाधूँगा। ⁴ और तू पस्त होगा, और ज़मीन पर से बोलेगा, और खाक पर से तेरी आवाज़ धीमी आयेगी तेरी सदा भूत की सी होगी जो ज़मीन के अन्दर से निकलेगी, और तेरी बोली खाक पर से चुरुगने की आवाज़ मा'लूम होगी। ⁵ लेकिन तेरे दुश्मनों का ग़ोल बारीक गर्द की तरह होगा, और उन ज़ालिमों के गिरोह उड़नेवाले भूसे की तरह होगी; और यह अचानक एक दम में वाक़े' होगा ⁶ रब्ब — उल — अफ़वाज़ खुद गरजने और ज़लज़ले के साथ, और

बड़ी आवाज़ और बड़ी आँधी और तूफ़ान और आग के मुहलिक़ शो'ले के साथ तुझे सज़ा देने को आएगा। ⁷ और उन सब क्रौमों का गिरोह जो अरीएल से लड़ेगा, या'नी वह सब जो उससे और उसके क़िले' से जंग करेंगे और उसे दुख देंगे, ख़्वाब या रात के ख़्वाब की तरह हो जायेंगे। ⁸ जैसे भूका आदमी ख़्वाब में देखे कि खा रहा है, जाग उठे और उसका जी न भरा हो; प्यासा आदमी ख़्वाब में देखे कि पानी पी रहा है, जाग उठे और प्यास से बेताब हो' उसकी जान आसूदा न हो; ऐसा ही उन सब क्रौमों के गिरोह का हाल होगा जो सिय्यून पहाड़ से जंग करती हैं। ⁹ ठहर जाओ और त'अज्जुब करो, ऐश — ओ — 'इशरत करो और अन्धे हो जाओ, वह मस्त हैं लेकिन मय से नहीं, वह लड़खड़ाते हैं लेकिन नशे में नहीं। ¹⁰ क्योंकि खुदावन्द ने तुम पर गहरी नींद की रूह भेजी है, और तुम्हारी आँखों या'नी नबियों को नाबीना कर दिया; और तुम्हारे सिरों या'नी ग़ैबबीनों पर हिजाब डाल दिया: ¹¹ और सारी रोया तुम्हारे नज़दीक सबमुहर किताब के मज़मून की तरह होगी, जिसे लोग किसी पढ़े लिखे को दें और कहें कि इसको पढ़ और वह कहे, पढ़ नहीं सकता, क्योंकि यह सर — ब — मुहर है। ¹² और फिर वह किताब किसी नाख़्वान्दा को दें और कहें, इसको पढ़ और वह कहे, मैं तो पढ़ना नहीं जानता।" ¹³ फिर खुदावन्द फ़रमाता है, चूँकि यह लोग ज़बान से मेरी नज़दीकी चाहते हैं और होठों से मेरी ता'ज़ीम करते हैं लेकिन इनके दिल मुझसे दूर हैं मेरा खौफ़ जो इनको हुआ सिर्फ़ आदियों की ता'लीम सुनने से हुआ। ¹⁴ इसलिए मैं इन लोगों के साथ 'अजीब सुलूक करूँगा, जो हैरत अंगेज़ और ता'अज्जुब खेज़ होगा और इनके 'आक़िलों की 'अक्ल ज़ायल हो जाएगी और इनके समझदारों की समझ जाती रहेगी। ¹⁵ उन पर अफ़सोस जो अपनी मश्वरत खुदावन्द से छिपाते हैं', जिनका कारोबार अन्धेरे में होता है और कहते हैं, कौन हम को देखता है? कौन हम को पहचानता है? ¹⁶ आह तुम कैसे टेढ़े हो! क्या कुम्हार मिट्टी के बराबर गिना जाएगा या मसनू'अ अपने सानि'अ से कहेगा, कि मैं तेरी सन'अत नहीं क्या मख़लूक अपने खालिक़ से कहेगा, कि तू कुछ नहीं जानता? ¹⁷ क्या थोड़ा ही 'अरसा बाक़ी नहीं कि लुबनान शादाब मैदान हो जाएगा, शादाब मैदान जंगल गिना जाएगा? ¹⁸ और उस वक़्त बहरे किताब की बातें सुनेंगे और अंधों की आँखें तारीकी और अन्धेरे में से देखेंगी। ¹⁹ तब ग़रीब खुदावन्द में ज्यादा खुश होंगे और ग़रीब मोहताज़ इस्राईल के कुदूस में शादमान होंगे। ²⁰ क्योंकि ज़ालिम फ़ना हो जाएगा, और ठठ्ठा

करनेवाला हलाक होगा; और सब जो बदकिरदारी के लिए बेदार रहते हैं, काट डाले जाएँगे; ²¹ या'नी जो आदमी को उसके मुकद्दमे में मुजरिम ठहराते, और उसके लिए जिसने 'अदालत से फाटक पर मुकद्दमा फ़ैसल किया फंदा लगाते और रास्तबाज़ को बेवजह बरग़श्ता करते हैं। ²² इसलिए खुदावन्द जो अब्रहाम का नज़ात देनेवाला है, या'कूब के ख़ान्दान के हक़ में यूँ फ़रमाता है, “कि या'कूब अब शर्मिन्दा न होगा, वह हरगिज़ ज़र्द रू न होगा। ²³ बल्कि उसके फ़र्ज़न्द अपने बीच मेरी दस्तकारी देख कर मेरे नाम की तक्रदीस करेंगे; हाँ या'कूब के कुद्दूस की तक्रदीस करेंगे और इस्राईल के खुदा से डरेंगे। ²⁴ और वह भी जो रूह में गुमराह हैं, फ़हम हासिल करेंगे और बुड़बुड़ाने वाले ता'लीम पज़ीर होंगे।”

30

29292929 22 292929 22 2929 22 292929 292929

¹ खुदावन्द फ़रमाता है, “उन बागी लड़कों पर अफ़सोस जो ऐसी तदबीर करते हैं जो मेरी तरफ़ से नहीं, और 'अहद — ओ — पेमान करते हैं जो मेरी रूह की हिदायत से नहीं; ताकि गुनाह पर गुनाह करें। ² वह मुझ से पूछे बग़ैर मिस्र को जाते हैं ताकि फ़िर'औन के पास पनाह लें और मिस्र के साये में अम्न से रहें। ³ लेकिन फ़िर'औन की हिमायत तुम्हारे लिए ख़जालत होगी और मिस्र के साये में पनाह लेना तुम्हारे वास्ते रुस्वाई होगा। ⁴ क्योंकि उसके सरदार जुअन में हैं और उसके कासिद हनीस में जा पहुँचे। ⁵ वह उस क्रौम से जो उनको कुछ फ़ाइदा न पहुँचा सके, और मदद ओयारी नहीं बल्कि ख़जालत और मलामत का ज़रि'आ हो शर्मिन्दा होंगे।” ⁶ दक्खिन के जानवरों के बारे में दुख और मुसीबत की सरज़मीन में, जहाँ से नर — ओ — मादा शेर — ए — बबर और अफ़'ई और उड़नेवाले आग के साँप आते हैं वह अपनी दौलत गधों की पीठ पर, और अपने ख़जाने ऊँटों के कोहान पर लाद कर उस क्रौम के पास ले जाते हैं जिससे उनको कुछ फ़ायदा न पहुँचेगा। ⁷ क्योंकि मिस्रियों की मदद बातिल और बेफ़ायदा होगी, इसी वजह से मैंने उसे, राहब कहा जो सुस्त बैठी है। ⁸ अब जाकर उनके सामने इसे तख़्ती पर लिख और किताब में लिख ताकि आइन्दा हमेशा से हमेशा तक काईम रहे। ⁹ क्योंकि यह बागी लोग और झूठे फ़र्ज़न्द हैं, जो खुदावन्द की शरी'अत को सुनने से इन्कार करते हैं; ¹⁰ जो ग़ैबबीनों से कहते हैं, ग़ैबबीनी न करो, और नबियों से, कि “हम पर सच्ची नबुव्वतें ज़ाहिर न करो, हम को खुशगवार बातें सुनाओ, और हम से झूठी नबुव्वत

करो, ¹¹ रास्ते से बाहर जाओ, रास्ते से बरग़श्ता हो, और इस्राईल के कुद्दूस को हमारे बीच से ख़त्म करो।” ¹² फिर इस्राईल का कुद्दूस यूँ फ़रमाता है, “चूँकि तुम इस कलाम को हक़ीर जानते, और ज़ुल्म और कज़रवी पर भरोसा रखते, और उसी पर काईम हो; ¹³ इसलिए यह बदकिरदारी तुम्हारे लिए ऐसी होगी जैसे फटी हुई दीवार जो गिरना चाहती है ऊँची उभरी हुई दीवार जिसका गिरना अचानक एक दम में हो। ¹⁴ वह इसे कुम्हार के बर्तन की तरह तोड़ डालेगा, इसे बे दरंग चकनाचूर करेगा; चुनाँचे इसके टुकड़ों में एक ठीकरा भी न मिलेगा जिसमें चूल्हे पर से आग उठाई जाए, या होज़ से पानी लिया जाए।” ¹⁵ क्योंकि खुदावन्द यहोवाह, इस्राईल का कुद्दूस यूँ फ़रमाता है, कि वापस आने और ख़ामोश बैठने में तुम्हारी सलामती है; ख़ामोशी और भरोसे में तुम्हारी ताक़त है।” लेकिन तुम ने यह न चाहा। ¹⁶ तुम ने कहा, नहीं, हम तो घोड़ों पर चढ़ के भागेंगे; इसलिए तुम भागोगे; और कहा, हम तेज़ रफ़्तार जानवरों पर सवार होंगे; फिर तुम्हारा पीछा करनेवाले तेज़ रफ़्तार होंगे। ¹⁷ एक की झिड़की से एक हज़ार भागेंगे पाँच की झिड़की से तुम ऐसा भागोगे कि तुम उस 'अलामत की तरह जो पहाड़ की चोटी पर और उस निशान की तरह जो कोह पर नसब किया गया हो रह जाओगे। ¹⁸ तोभी खुदावन्द तुम पर मेहरबानी करने के लिए इन्तिज़ार करेगा, और तुम पर रहम करने के लिए बुलन्द होगा। क्योंकि खुदावन्द इन्साफ़ करने वाला खुदा है, मुबारक हैं वह सब जो उसका इन्तिज़ार करते हैं। ¹⁹ क्योंकि ऐ सिय्यूनी क्रौम, जो येरूशलेम में बसेगी, तो फिर न रोएगी; वह तेरी फ़रियाद की आवाज़ सुन कर यकीनन तुझ पर रहम फ़रमाएगा; वह सुनते ही तुझे जवाब देगा। ²⁰ और अगरचे खुदावन्द तुझ को तंगी की रोटी और मुसीबत का पानी देता है, तोभी तेरा मु'अल्लिम फिर तुझ से रूपोश न होगा; बल्कि तेरी आँखें उसको देखेंगी। ²¹ और जब तू दहनी या बाँई तरफ़ मुड़े, तो तेरे कान तेरे पीछे से यह आवाज़ सुनेंगे, कि “राह यही है, इस पर चल।” ²² उस वक़्त तू अपनी खोदी हुई मूरतों पर मढ़ी हुई चाँदी, और ढाले हुए बुतों पर चढ़े हुए सोने को नापाक करेगा। तू उसे हैज़ के लते की तरह फेंक देगा तू उसे कहेगा, निकल दूर हो। ²³ तब वह तेरे बीज के लिए जो तू ज़मीन में बोए, बारिश भेजेगा; और ज़मीन की अफ़जाइश की रोटी का ग़ल्ला, 'उम्दा और कसरत से होगा। उस वक़्त तेरे जानवर वसी' चरागाहों में चरेंगे। ²⁴ और बैल और जवान गधे जिनसे ज़मीन जोती जाती है, लज़ीज़ चारा खाएँगे जो बेल्वे और छाज़ से फटका

गया हो। ²⁵ और जब बुर्ज गिर जाएंगे और बड़ी खूँरज़ी होगी, तो हर एक ऊँचे पहाड़ और बुलन्द टीले पर चश्मे और पानी की नदियाँ होंगी। ²⁶ और जिस वक़्त खुदावन्द अपने लोगों की शिकस्तगी को दुरुस्त करेगा और उनके ज़ख्मों को अच्छा करेगा; तो चाँद की चाँदनी ऐसी होगी जैसी सूरज की रोशनी, और सूरज की रोशनी सात गुनी बल्कि सात दिन की रोशनी के बराबर होगी। ²⁷ देखो खुदावन्द दूर से चला आता है, उसका ग़ज़ब भड़का और धुँवें का बादल उठा उसके लब क़हर आलूदा और उसकी ज़बान भसम करने वाली आग की तरह है। ²⁸ उसका दम नदी के सैलाब की तरह है, जो गर्दन तक पहुँच जाए; वह क्रौमों को हलाकत के छाज़ में फटकेगा और लोगों के जबड़ों में लगाम डालेगा, ताकि उनको गुमराह करे। ²⁹ तब तुम गीत गाओगे, जैसे उस रात गाते हो जब मुक़द्दस 'ईद मनाते हो; और दिल की ऐसी खुशी होगी जैसी उस शख्स की जो बाँसुरी लिए हुए खिरामान हो कि खुदावन्द के पहाड़ में इस्राईल की चट्टान के पास जाए। ³⁰ क्योंकि खुदावन्द अपनी जलाली आवाज़ सुनाएगा, और अपने क़हर की शिद्दत और आतिश — ए — सोज़ान के शो'ले, और सैलाब और आँधी और ओलों के साथ अपना बाज़ू नीचे लाएगा। ³¹ हाँ खुदावन्द की आवाज़ ही से असूर तबाह हो जाएगा वह उसे लठ से मारेगा। ³² और उस क़ज़ा के लठ की हर एक ज़र्ब जो खुदावन्द उस पर लगाएगा, दफ़ और बरबत के साथ होगी और वह उससे सख़्त लड़ाई लड़ेगा। ³³ क्योंकि तूफ़ान मुद्दत से तैयार किया गया है; हाँ, वह बादशाह के लिए गहरा और वसी' बनाया गया है; उसका ढेर आग और बहुत सा ईधन है, और खुदावन्द की साँस गन्धक के सैलाब की तरह उसको सुलगाती है।

31

⚔⚔⚔⚔⚔⚔ ⚔⚔ ⚔⚔⚔⚔⚔⚔ ⚔⚔⚔⚔ ⚔⚔ ⚔⚔⚔⚔⚔⚔⚔⚔⚔⚔

¹ उसपर अफ़सोस, जो मदद के लिए मिस्र को जाते और घोड़ों पर एतमाद करते हैं और रथों पर भरोसा रखते हैं इसलिए कि वह बहुत हैं, और सवारों पर इसलिए कि वह बहुत ताक़तवर हैं; लेकिन इस्राईल के कुददूस पर निगाह नहीं करते और खुदावन्द के तालिब नहीं होते। ² लेकिन वह भी तो 'अक्लमन्द है और बला नाज़िल करेगा, और अपने कलाम को बातिल न होने देगा वह शरीरों के घराने पर और उन पर जो बदकिरदारों की हिमायत करते हैं चढ़ाई करेगा। ³ क्योंकि मिस्री तो इंसान हैं खुदा नहीं। और उनके घोड़े गोश्त हैं रूह नहीं सो जब खुदावन्द अपना हाथ बढ़ाएगा तो हिमायती गिर जाएंगे, और वह जिसकी हिमायत की गई पस्त हो

जाएगा, और वह सब के सब इकट्ठे हलाक हो जायेंगे। ⁴ क्योंकि खुदावन्द ने मुझ से यूँ फ़रमाया है कि जिस तरह शेर बबर हाँ जवान शेर बबर अपने शिकार पर से गुराँता है और अगर बहुत से गड़रिये उसके मुक़ाबिले को बुलाए जाएँ तो उनकी ललकार से नहीं डरता, और उनके हुज़ूम से दब नहीं जाता; उसी तरह रब्ब — उल — अफ़वाज़ सिय्यून पहाड़ और उसके टीले पर लड़ने को उतरेगा। ⁵ मंडलाते हुए परिन्दे की तरह रब्ब — उल — अफ़वाज़ येरूशलेम की हिमायत करेगा; वह हिमायत करेगा और रिहाई बख़्शेगा, रहम करेगा और बचा लेगा। ⁶ ऐ बनी इस्राईल तुम उसकी तरफ़ फ़िरो जिससे तुम ने सख़्त बगावत की है। ⁷ क्योंकि उस वक़्त उनमें से हर एक अपने चाँदी के बुत और अपनी सोने की मूरतें, जिनको तुम्हारे हाथों ने ख़ताकारी के लिए बनाया, निकाल फेंकेगा ⁸ तब असूर उसी तलवार से गिर जाएगा जो इंसान की नहीं, और वही तलवार जो आदमी की नहीं उसे हलाक करेगी; वह तलवार के सामने से भागेगा और उसके जवान मर्द ख़िराज गुज़ार बनेंगे। ⁹ और वह ख़ौफ़ की वजह से अपने हसीन मकान से गुज़र जाएगा, और उसके सरदार झण्डे से ख़ौफ़ज़दह हो जाएँगे, ये खुदावन्द फ़रमाता है, जिसकी आग सिय्यून में और भट्टी येरूशलेम में है।

32

⚔⚔⚔⚔⚔⚔⚔⚔ ⚔⚔ ⚔⚔⚔⚔ ⚔⚔⚔⚔ ⚔⚔⚔⚔

¹ देख एक बादशाह सदाक़त से सल्लनत करेगा और शहज़ादे 'अदालत से हुक्मरानी करेंगे। ² और एक शख्स आँधी से पनाहगाह की तरह होगा, और तूफ़ान से छिपने की जगह; और शुशक ज़मीन में पानी की नदियों की तरह और मान्दिगी की ज़मीन में बड़ी चट्टान के साये की तरह होगा ³ उस वक़्त देखनेवालों की आँखें धुन्धली न होंगी, और सुननेवालों के कान सुनने वाले होंगे। ⁴ जल्दबाज़ का दिल इरफ़ान हासिल करेगा, और लुकनती की ज़बान साफ़ बोलने में मुस्त'इद होगी। ⁵ तब बेवकूफ़ बा — मुरव्वत न कहलाएगा और बख़ील को कोई सखी न कहेगा। ⁶ क्योंकि बेवकूफ़ हिमाक़त की बातें करेगा और उसका दिल बदी का मंसूबा बाँधेगा कि बेदीनी करे और खुदावन्द के खिलाफ़ दरोज़ागोई करे और भूके के पेट को ख़ाली करे और प्यासे को पानी से महरूम रखे ⁷ और बख़ील के हथियार ज़बून हैं; वह बुरे मंसूबे बाँधा करता है ताकि झूठी बातों से ग़रीब को और मोहताज को, जब कि वह हक़ बयान करता हो, हलाक करे। ⁸ लेकिन साहब — ए — मुरव्वत सखावत की बातें सोचता है, और वह सखावत के कामों में साबित क़दम रहेगा। ⁹ ऐ 'औरतों तुम जो आराम में हो, उठो

मेरी आवाज़ सुनो; ऐ बे परवा बेटियो, मेरी बातों पर कान लगाओ। ¹⁰ ऐ बे परवाह 'औरतो, साल से कुछ ज्यादा 'अर्से में तुम बेआराम हो जाओगी; क्योंकि अंगूर की फ़सल जाती रहेगी फल जमा' करने की नौबत न आयेगी। ¹¹ ऐ 'औरतों तुम जो आराम में हो थरथराओ, ऐ बेपर्वाओ मुज्तरिब हो कपड़े उतार कर बरहना हो जाओ, कमर पर टाट बाँधो। ¹² वह दिल पज़ीर खेतों और मेवादार ताकों के लिए छाती पीटेंगी। ¹³ मेरे लोगों की सर ज़मीन में काँटे और झाड़ियाँ होंगी बल्कि खुशवक्त शहर के तमाम खुश घरों में भी। ¹⁴ क्योंकि क़स्र खाली हो जाएगा, और आबाद शहर तर्क किया जाएगा; 'ओफल और दीद बानी का बुर्ज हमेशा तक मांद बनकर गोखरों की आरामगाहें और गल्लों की चरागाहें होंगे। ¹⁵ ता वक्त ये कि आलम — ए — बाला से हम पर रूह नाज़िल न हो और वीरान शादाब मैदान न बने, और शादाब मैदान जंगल न गिना जाए। ¹⁶ तब वीरान में 'अदल बसेगा और सदाक़त शादाब मैदान में रहा करेगी। ¹⁷ और सदाक़त का अंजाम सुलह होगा, और सदाक़त का फल हमेशा आराम — ओ — इत्मीनान होगा। ¹⁸ और मेरे लोग सलामती के मकानों में और बेख़तर घरों में, और आसूदगी और आसाइश के काशानों में रहेंगे। ¹⁹ लेकिन जंगल की बर्बादी के वक्त ओले पड़ेंगे और शहर बिल्कुल पस्त हो जायेगा। ²⁰ तुम खुशनसीब हो, जो सब नहरों के आसपास बोते हो और बैलों और गधों को उधर ले जाते हो।

33

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

¹ तुझ पर अफ़सोस कि तू ग़ारत करता है, और ग़ारत न किया गया था! तू दगाबाज़ी करता है और किसी ने तुझ से दगाबाज़ी न की थी? जब तू ग़ारत कर चुकेगा तो तू ग़ारत किया जाएगा; और जब तू दगाबाज़ी कर चुकेगा, तो और लोग तुझ से दगाबाज़ी करेंगे। ² ऐ खुदावन्द हम पर रहम कर; क्योंकि हम तेरे मुन्तज़िर हैं। तू हर सुबह उनका बाज़ू हो और मुसीबत के वक्त हमारी नजात। ³ हंगामे की आवाज़ सुनते ही लोग भाग गए, तेरे उठते ही क्रौमें तितर — बितर हो गई। ⁴ और तुम्हारी लूट का माल इसी तरह बटोरा जायेगा जिस तरह कीड़े बटोर लेते हैं, लोग उस पर टिड्डी की तरह टूट पड़ेंगे। ⁵ खुदावन्द सरफ़राज़ है, क्योंकि वह बलन्दी पर रहता है; उसने 'अदालत और सदाक़त से सिय्यून को मा'मूर कर दिया है। ⁶ और तेरे ज़माने में अमन होगा नजात व हिकमत और 'अक़ल की फ़िरावानी होगी; खुदावन्द का खौफ़ उसका खज़ाना है। ⁷ देख उनके

बहादुर बाहर फ़रियाद करते हैं और सुलह के क़ासिद फूट — फूटकर रोते हैं। ⁸ शाहराहें सुनसान हैं, कोई चलनेवाला न रहा; उसने 'अहद शिकनी की शहरों को हक़ीर जाना, और इंसान को हिसाब में नहीं लाता। ⁹ ज़मीन कुदती और मुरझाती है। लुबनान रुस्वा हुआ और मुरझा गया, शादून वीराने की तरह है; बसन और कर्मिल बे — बर्ग हो गए। ¹⁰ खुदावन्द फ़रमाता है, अब मैं उठूँगा; अब मैं सरफ़राज़ हूँगा; अब मैं सर बलन्द हूँगा। ¹¹ तुम भूसे से बारदार होगे, फूस तुम से पैदा होगा; तुम्हारा दम आग की तरह तुम को भसम करेगा। ¹² और लोग जले चूने की तरह होंगे; वह उन काँटों की तरह होंगे, जो काटकर आग में जलाए जाएँ। ¹³ तुम जो दूर हो, सुनो कि मैंने क्या किया; और तुम जो नज़दीक हो, मेरी कुदरत का इक़रार करो। ¹⁴ वह गुनाहगार जो सिय्यून में हैं डर गए; कपकपी ने बेदीनों को आ दबाया है: 'कौन हम में से उस मुहलिक़ आग में रह सकता है? और कौन हम में से हमेशा के शो'लों के बीच बस सकता है? ¹⁵ जो रास्तरफ़्तार और दुरुस्तगुफ़्तार हैं जो ज़ुल्म के नफ़े' हक़ीर जानता है, जो रिश्वत से दस्तबरदार है, जो अपने कान बन्द करता है ताकि खूँरेज़ी के मज़मून न सुने, और आँखें मून्दता है ताकि बुराई न देखे। ¹⁶ वह बुलन्दी पर रहेगा, उसकी पनाहगाह पहाड़ का क़िला' होगी, उसको रोटी दी जाएगी, उसका पानी मुक़रर होगा। ¹⁷ तेरी आँखें बादशाह का जमाल देखेंगी: वह बहुत दूर तक वसी' मुल्क पर नज़र करेंगी। ¹⁸ तेरा दिल उस दहशत पर सोचेगा कहाँ है वह गिनने वाला कहाँ है वह तोलनेवाला? कहाँ है वह जो बुर्जों को गिनता था? ¹⁹ तू फिर उन तुन्दखूँ लोगों को न देखेगा जिनकी बोली तू समझ नहीं सकता उनकी ज़बान बेगाना है जो तेरी समझ में नहीं आती। ²⁰ हमारी ईदगाह सिय्यून पर नज़र कर; तेरी आँखें येरूशलेम को देखेंगी जो सलामती का मक़ाम है, बल्कि ऐसा खेमा जो हिलाया न जाएगा, जिसकी मेखों में से एक भी उखाड़ी न जाएगी, और उसकी डोरियों में से एक भी तोड़ी न जाएगी। ²¹ बल्कि वहाँ जुलजलाल खुदावन्द, बड़ी नदियों और नहरों के बदले हमारी गुन्जाइश के लिए आप मौजूद होगा कि वहाँ डॉंड की कोई नाव न जाएगी, और न शानदार जहाज़ों का गुज़र उसमें होगा। ²² क्योंकि खुदावन्द हमारा हाकिम है, खुदावन्द हमारा शरी'अत देने वाला है खुदावन्द हमारा बादशाह है वही हम को बचाएगा। ²³ तेरी रस्सियाँ ढीली हैं; लोग मस्तूल की चूल को मज़बूत न कर सके, वह बादबान न फैला सके; सो लूट का वाफ़िर माल तक़सीम किया गया, लंगड़े भी

गनीमत पर काबिज हो गए। ²⁴ वहाँ के बाशिन्दों में भी कोई न कहेगा, कि मैं बीमार हूँ; और उनके गुनाह बख्शे जाएँगे।

34

?????? ?? ????? ?? ???????

¹ ऐ क्रौमों नजदीक आकर सुनो, ऐ उम्मतों कान लगाओ! ज़मीन और उसकी मा'भूरी, दुनिया और सब चीजें जो उसमें हैं सुने, ² क्योंकि खुदावन्द का क्रहर तमाम क्रौमों पर और उसका ग़ज़ब उनकी सब फ़ौजों पर है; उसने उनको हलाक कर दिया, उसने उनको ज़बह होने के लिए हवाले किया। ³ और उनके मक़तूल फेंक दिए जायेंगे बल्कि उनकी लाशों से बदबू उठेगी और पहाड़ उनके खून से बह जाएँगे। ⁴ और तमाम अजराम — ए — फ़लक गुदाज़ हो जायेंगे और आसमान तूमार की तरह लपेटे जाएँगे; और उनकी तमाम अफ़वाज ताक और अंजीर के मुरझाये हुए पत्तों की तरह गिर जाएँगी। ⁵ क्योंकि मेरी तलवार आसमान में मस्त हो गई है; देखो, वह अदोम पर और उन लोगों पर जिनको मैंने मल'ऊन किया है सज़ा देने को नाज़िल होगी। ⁶ खुदावन्द की तलवार खून आलूदा है; वह चर्बी और बरों और बक़रों के खून से, और मेंढों के गुदों की चर्बी से चिकना गई। क्योंकि खुदावन्द के लिए बुराह में एक कुर्बानी और अदोम के मुल्क में बड़ी ख़ूँरजी है। ⁷ और उनके साथ जंगली साँड़ और बछड़े और बैल जबह होंगे और उनका मुल्क खून से सेराब हो जाएगा और उनकी गर्द चर्बी से चिकना जाएगी। ⁸ क्योंकि ये खुदावन्द का इन्तक़ाम लेने का दिन और बदला लेने का साल है, जिसमें वह सिय्यून का इन्साफ़ करेगा। ⁹ और उसकी नदियाँ राल होजाएँगी और उसकी खाक गंधक और उसकी ज़मीन जलती हुई राल होगी। ¹⁰ जो शब — ओ — रोज़ कभी न बुझेगी; उससे हमेशा तक धुँवा उठता रहेगा। नस्ल — दर — नस्ल वह उजाड़ रहेगी, हमेशा से हमेशा तक कोई उधर से न गुज़रेगा। ¹¹ लेकिन हवासिल और खारपुस्त उसके मालिक होंगे उल्लू और कौवे उसमें बसेंगे; और उस पर वीरानी का सूत' पड़ेगा, और सुनसानी का साहूल डाला जाएगा। ¹² उसके अशराफ़ में से कोई न होगा जिसे वह बुलाएँ कि हुक्मरानी करे और उसके सब सरदार नाचीज़ होंगे। ¹³ और उसके क्रस्रों में कौटे और उसके क़िलों' में बिच्छू बूटी और ऊँट कटारे उगेंगे और वह गीदड़ों की माँदें और शूतरमुर्ग के रहने का मक़ाम होगा। ¹⁴ और दशती दरिन्दे भेड़ियों से मुलाक़ात करेंगे और छगमास अपने साथी को पुकारेगा; हाँ इफ़रात — ए — शब

वहाँ आराम करेगा और अपने टिकने की जगह पायेगा। ¹⁵ वहाँ उड़नेवाले साँप का आशियाना होगा और अंडे देना और सैना और अपने साएँ में जमा' करना होगा वहाँ गिद्ध जमा' होंगे और हर एक के साथ उसकी मादा होगी। ¹⁶ तुम खुदावन्द की किताब में ढूँडो और पढ़ो: इनमें से एक भी कम न होगा, और कोई बेजुफ़्त न होगा; क्योंकि मेरे मुँह ने यही हुक्म किया है और उसकी रूह ने इनको जमा' किया है। ¹⁷ और उसने इनके लिए पर्ची डाली और उसके हाथ ने इनके लिए उसको ज़रीब से तक़सीम किया। इसलिए वह हमेशा तक उसके मालिक होंगे और नसल दर नसल उसमें बसेंगे।

35

?????? ?? ???????

¹ जंगल और वीराना शादमान होंगे दशत खुशी करेगा और नरगिस की तरह शगुफ़ता होगा। ² उसमें कसरत से कलियाँ निकलेंगी, वह शादमानी से गा कर खुशी करेगा। लुबनान की शौकत और कर्मिल और शारून की ज़ीनत उसे दी जाएगी; वह खुदावन्द का जलाल और हमारे खुदा की हशमत देखेंगे। ³ कमज़ोर हाथों को ताक़त और नातवान घुटनों को तवानाई दो। ⁴ उनको जो घबराने वाले हैं कहो, हिम्मत बांधो मत डरो देखो तुम्हारा खुदा सज़ा और जज़ा लिए आता है। हाँ, खुदा ही आएगा और तुम को बचाएगा। ⁵ उस वक़्त अन्धों की आँखें खोली जायेगी और बहरों के कान खोले जाएँगे। ⁶ तब लंगड़े हिरन की तरह चौकड़ियाँ भरेंगे और गूँगे की ज़बान गाएँगी क्योंकि वीरान में पानी और दशत में नदियाँ फूट निकलेंगी। ⁷ बल्कि सराब तालाब हो जाएगा और प्यासी ज़मीन चश्मा बन जाएगी; गीदड़ों की मान्दों में जहाँ वह पड़े थे ने और नल का ठिकाना होगा। ⁸ और वहाँ एक शाहराह और गुज़रगाह होगी जो पाक राह कहलाएगी; जिससे कोई नापाक गुज़र न करेगा लेकिन ये मुसाफ़िरों के लिए होगी, बेवकूफ़ भी उसमें गुमराह न होंगे। ⁹ वहाँ शेर बबर न होगा और न कोई दरिन्दा उस पर चढ़ेगा न वहाँ पाया जाएगा; लेकिन जिनका फ़िदया दिया गया वहाँ सैर करेंगे। ¹⁰ और जिनको खुदावन्द ने मख़लसी बख़्शी लौटेंगे और सिय्यून में गाते हुए आएँगे, और हमेशा सुरूर उनके सिरों पर होगा वह खुशी और शादमानी हासिल करेंगे, और ग़म व अंदोह काफ़ूर हो जाएँगे।

36

?????? ?? ??????? ?? ???????

1 और हिज्रक्रियाह बादशाह की सल्तनत के चौदहवें बरस यूँ हुआ कि शाह — ए — असूर सनहेरिब ने यहूदाह के सब फ़सीलदार शहरों पर चढ़ाई की और उनको ले लिया। 2 और शाह — ए — असूर ने रबशाक्री को एक बड़े लश्कर के साथ लकीस से हिज्रक्रियाह के पास येरूशलेम को भेजा, और उसने ऊपर के तालाब की नाली पर धोबियों के मैदान की राह में मक़ाम किया। 3 तब इलियाक्रीम बिन खिलक्रियाह जो घर का दीवान था, और शबनाह मुंशी और मुहर्रिर यूआख बिन आसिफ़ निकल कर उसके पास आए। 4 और रबशाक्री ने उनसे कहा, तुम हिज्रक्रियाह से कहो: कि मलिक — ए — मु'अज़म शाह — ए — असूर यूँ फ़रमाता है कि तू क्या एतमाद किए बैठा है? 5 क्या मशवरत और जंग की ताक़त मुँह की बातें ही हैं आखिर किस के भरोसे पर तूने मुझ से सरकशी की है? 6 देख, तुझे उस मसले हुए सरकंडे के 'असा या'नी मिस्र पर भरोसा है; उस पर अगर कोई टेक लगाए, तो वह उसके हाथ में गड़ जाएगा और उसे छेद देगा। शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन उन सब के लिए, जो उस पर भरोसा करते हैं ऐसा ही है। 7 फिर अगर तू मुझ से यूँ कहे कि हमारा तबक्कुल खुदावन्द हमारे खुदा पर है, तो क्या वह वही नहीं है जिसके ऊँचे मक़ामों और मज़बहों को ढाकर हिज्रक्रियाह ने यहूदाह और येरूशलेम से कहा है कि तुम इस मज़बह के आगे सिज्दा किया करो। 8 इसलिए अब ज़रा मेरे आक्रा शाह — ए — असूर के साथ शर्त बाँध और मैं तुझे दो हज़ार घोड़े दूँगा, बशर्ते कि तू अपनी तरफ़ से उन पर सवार चढ़ा सके। 9 भला तू क्यूँकर मेरे आक्रा के कमतरनीन मुलाज़िमों में से एक सरदार का भी मुँह फेर सकता है? और तू रथों और सवारों के लिए मिस्र पर भरोसा करता है? 10 और क्या अब मैंने खुदावन्द के बे कहे ही इस मक़ाम को ग़ारत करने के लिए इस पर चढ़ाई की है? खुदावन्द ही ने तो मुझ से कहा कि इस मुल्क पर चढ़ाई कर और इसे ग़ारत कर दे। 11 तब इलियाक्रीम और शबनाह और यूआख ने रबशाक्री से 'अर्ज़ की कि अपने खादिमों से अरामी ज़बान में बात कर, क्यूँकि हम उसे समझते हैं, और दीवार पर के लोगों के सुनते हुए यहूदियों की ज़बान में हम से बात न कर। 12 लेकिन रबशाक्री ने कहा, क्या मेरे आक्रा ने मुझे ये बातें कहने को तेरे आक्रा के पास या तेरे पास भेजा है? क्या उसने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा, जो तुम्हारे साथ अपनी ही नज़ासत खाने और अपना ही क़ारू पीने को दीवार पर बैठे हैं? 13 फिर रबशाक्री खड़ा हो गया और यहूदियों की ज़बान में बलन्द आवाज़ से यूँ कहने लगा, कि मुल्क — ए — मु'अज़म

शाह — ए — असूर का कलाम सुनो! 14 बादशाह यूँ फ़रमाता है: कि हिज्रक्रियाह तुम को धोखा न दे, क्यूँकि वह तुम को छुड़ा नहीं सकेगा। 15 और न वह ये कह कर तुम से खुदावन्द पर भरोसा कराए कि खुदावन्द ज़रूर हम को छुड़ाएगा, और ये शहर शाह — ए — असूर के हवाले न किया जाएगा। 16 हिज्रक्रियाह की न सुनो; क्यूँकि शाह — ए — असूर यूँ फ़रमाता है कि तुम मुझ से सुलह कर लो, और निकलकर मेरे पास आओ; तुम में से हर एक अपनी ताक और अपने अंजीर के दरख्त का मेवा खाता और अपने हौज़ का पानी पीता रहे। 17 जब तक कि मैं आकर तुम को ऐसे मुल्क में न ले जाऊँ, जो तुम्हारे मुल्क की तरह ग़ल्ला और मय का मुल्क, रोटी और ताकिस्तानों का मुल्क है। 18 खबरदार ऐसा न हो कि हिज्रक्रियाह तुम को ये कह कर तरगीब दे, कि खुदावन्द हम को छुड़ाएगा। क्या क्रौमों के मा'बूदों में से किसी ने भी अपने मुल्क को शाह — ए — असूर के हाथ से छुड़ाया है? 19 हमारा और अरफ़ाद के मा'बूद कहाँ हैं? सिफ़वाइम के मा'बूद कहाँ हैं? क्या उन्होंने सामरिया को मेरे हाथ से बचा लिया? 20 इन मुल्कों के तमाम मा'बूदों में से किस किस ने अपना मुल्क मेरे हाथ से छुड़ा लिया, जो खुदावन्द भी येरूशलेम को मेरे हाथ से छुड़ा लेगा? 21 लेकिन वह ख़ामोश रहे और उसके जवाब में उन्होंने एक बात भी न कही; क्यूँकि बादशाह का हुक्म ये था कि उसे जवाब न देना। 22 और इलियाक्रीम — बिन — खिलक्रियाह जो घर का दीवान था, और शबनाह मुंशी और यूआख — बिन — आसिफ़ मुहर्रिर अपने कपड़े चाक किए हुए हिज्रक्रियाह के पास आए और रबशाक्री की बातें उसे सुनाई।

37

?????????????? ?? ?????? ?? ??? ???????

1 जब हिज्रक्रियाह बादशाह ने ये सुना तो अपने कपड़े फाड़े और टाट ओढ़कर खुदावन्द के घर में गया। 2 और उसने घर के दीवान इलियाक्रीम और शबनाह मुंशी और काहिनों के बुज़ुर्गों को टाट उढ़ा कर आमूस के बेटे यसा'याह नबी के पास भेजा। 3 और उन्होंने उससे कहा कि हिज्रक्रियाह यूँ कहता है कि आज का दिन दुख और मलामत और तौहीन का दिन है क्यूँकि बच्चे पैदा होने पर हैं और विलादत की ताक़त नहीं। 4 शायद खुदावन्द तेरा खुदा रबशाक्री की बातें सुनेगा जिसे उसके आक्रा शाह — ए — असूर ने भेजा है कि ज़िन्दा खुदा की तौहीन करे; और जो बातें खुदावन्द तेरे खुदा ने सुनीं, उनपर वह मलामत करेगा। फिर तू उस बक़िये के लिए

जो मौजूद है दूआ कर।⁵ तब हिज़क्रियाह बादशाह के मुलाज़िम यसा'याह के पास आए।⁶ और यसा'याह ने उनसे कहा, तुम अपने आक्रा से यूँ कहना, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू उन बातों से जो तूने सुनी हैं, जिनसे शाह — ए — असूर के मुलाज़िमों ने मेरी तक़्फ़ीर की है, परेशान न हो।⁷ देख मैं उसमें एक रूह डाल दूँगा, और वह एक अफ़वाह सुनकर अपने मुल्क को लौट जाएगा, मैं उसे उसी के मुल्क में तलवार से मरवा डालूँगा।⁸ इसलिए ख़्वाशी लौट गया और उसने शाह — ए — असूर को लिबनाह से लड़ते पाया, क्योंकि उसने सुना था कि वह लकीस से चला गया है।⁹ और उसने कूश के बादशाह तिरहाका के ज़रिए सुना कि वह तुझ से लड़ने को निकला है; और जब उसने ये सुना, तो हिज़क्रियाह के पास कासिद भेजे और कहा,¹⁰ शाह — ए — यहूदाह हिज़क्रियाह से यूँ कहना, कि तेरा खुदा जिस पर तेरा यक़ीन है, तुझे ये कह कर धोखा न दे कि येरूशलेम शाह — ए — असूर के क़ब्ज़े में न किया जाएगा।¹¹ देख तूने सुना है कि असूर के बादशाहों ने तमाम मुल्कों को बिल्कुल ग़ारत करके उनका क्या हाल बनाया है; इसलिए क्या तू बचा रहेगा? ¹² क्या उन क्रौमों के मा'बूदों ने उनको, या'नी जूज़ान और हारान और रसफ़ और बनी अदन को जो तिलसार में थे, जिनको हमारे बाप — दादा ने हलाक किया, छुड़ाया।¹³ हमारा का बादशाह, और अरफ़ाद का बादशाह, और शहर सिफ़वाइम और हेना' और 'इवाह का बादशाह कहाँ है।¹⁴ हिज़क्रियाह ने कासिदों के हाथ से ख़त लिया और उसे पढ़ा और हिज़क्रियाह ने खुदावन्द के घर जाकर उसे खुदावन्द के सामने फैला दिया।¹⁵ और हिज़क्रियाह ने खुदावन्द से यूँ दुआ की,¹⁶ ऐ रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल के खुदा करूबियों के ऊपर बैठनेवाले; तू ही अकेला ज़मीन की सब सल्तनतों का खुदा है, तू ही ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया।¹⁷ ऐ खुदावन्द कान लगा और सुन; ऐ खुदावन्द अपनी आँखें खोल और देख; और सनहेरिब की इन सब बातों को जो उसने ज़िन्दा खुदा की तौहीन करने के लिए कहला भेजी हैं, सुनले।¹⁸ ऐ खुदावन्द, दर — हक़ीक़त असूर के बादशाहों ने सब क्रौमों को उनके मुल्कों के साथ तबाह किया,¹⁹ और उनके मा'बूदों को आग में डाला, क्योंकि वह खुदा न थे बल्कि आदमियों की दस्तकारी थे, लकड़ी और पत्थर; इसलिए उन्होंने उनको हलाक किया है।²⁰ इसलिए अब ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, हम को उसके हाथ से बचा ले, ताकि ज़मीन की सब सल्तनतें जान लें कि तू ही अकेला खुदावन्द है।²¹ तब यसा'याह बिन आमूस ने

हिज़क्रियाह को कहला भेजा, कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है चूँकि तूने शाह — ए — असूर सनहेरिब के खिलाफ़ मुझ से दुआ की है,²² इसलिए खुदावन्द ने उसके हक़ में यूँ फ़रमाया है, कि 'कुंवारी दुस्तर — ए — सिय्यून ने तेरी तहक़ीर की और तेरा मज़ाक़ उड़ाया है। येरूशलेम की बेटी ने तुझ पर सिर हिलाया है।²³ तूने किस की तौहीन — ओ — तक़्फ़ीर की है? तूने किसके खिलाफ़ अपनी आवाज़ बलन्द की और अपनी आँखें ऊपर उठाई? इस्राईल के कुददूस के खिलाफ़।²⁴ तूने अपने खादिमों के ज़रीए से खुदावन्द की तौहीन की और कहा कि मैं अपने बहुत से रथों को साथ लेकर पहाड़ों की चोटियों पर बल्कि लुबनान के बीच हिस्सों तक चढ़ आया हूँ, और मैं उसके ऊँचे ऊँचे देवदारों और अच्छे से अच्छे सनोबर के दरख़्तों को काट डालूँगा, और मैं उसके चोटी पर के ज़रखेज़ जंगल में जा घुसूँगा।²⁵ मैंने खोद खोद कर पानी पिया है और मैं अपने पाँव के तल्वे से मिस्र की सब नदियाँ सुखा डालूँगा।²⁶ क्या तूने नहीं सुना कि मुझे ये किए हुए मुद्दत हुई; और मैंने पिछले दिनों से ठहरा दिया था? अब मैंने उसी को पूरा किया है कि तू फ़सीलदार शहरों को उजाड़ कर खण्डर बना देने के लिए खड़ा हो।²⁷ इसी वजह से उनके बाशिन्दे कमज़ोर हुए और घबरा गए, और शर्मिन्दा हुए; और मैदान की घास और पौध, छतों पर की घास, खेत के अनाज की तरह हो गए जो अभी बढ़ा न हो।²⁸ मैं तेरी निशस्त और आमद — ओ — रफ़्त और तेरा मुझ पर झुंझलाना जानता हूँ।²⁹ तेरे मुझ पर झुंझलाने की वजह से और इसलिए कि तेरा घमण्ड मेरे कानों तक पहुँचा है, मैं अपनी नकेल तेरी नाक में और अपनी लगाम तेरे मुँह में डालूँगा, और तू जिस राह से आया है मैं तुझे उसी राह से वापस लौटा दूँगा।³⁰ और तेरे लिए ये निशान होगा कि तुम इस साल वह चीज़ें जो अज़ — खुद उगती हैं, और दूसरे साल वह चीज़ें जो उनसे पैदा हों खाओगे; और तीसरे साल तुम बोना और काटना और बाग़ लगा कर उनका फल खाना।³¹ और वह बक़िया जो यहूदाह के घराने से बच रहा है, फिर नीचे की तरफ़ जड़ पकड़ेगा और ऊपर की तरफ़ फल लाएगा;³² क्योंकि एक बक़िया येरूशलेम में से और वह जो बच रहे हैं। सिय्यून पहाड़ से निकलेंगे; रब्ब — उल — अफ़वाज की ग़य्यूरी ये कर दिखाएगी।³³ “इसलिए खुदावन्द शाह — ए — असूर के हक़ में यूँ फ़रमाता है कि वह इस शहर में आने या यहाँ तीर चलाने न पाएगा; वह न तो सिपर लेकर उसके सामने आने और न उसके सामने दमदमा बाँधने पाएगा।³⁴ बल्कि खुदावन्द फ़रमाता है कि जिस रास्ते

से वह आया उसी रास्ते से लौट जाएगा, और इस शहर में आने न पाएगा। ³⁵ क्योंकि मैं अपनी खातिर और अपने बन्दे दाऊद की खातिर, इस शहर की हिमायत करके इसे बचाऊँगा।” ³⁶ फिर खुदावन्द के फ़रिश्ते ने असूरियों की लश्करगाह में जाकर एक लाख पिच्चासी हजार आदमी जान से मार डाले; और सुबह को जब लोग सवेरे उठे, तो देखा कि वह सब पड़े हैं। ³⁷ तब शाह — ए — असूर सनहेरिब रवानगी करके वहाँ से चला गया और लौटकर नीनवाह में रहने लगा। ³⁸ और जब वह अपने मा'बूद निसरूक के मंदिर में इबादत कर रहा था तो अदरम्मलिक और शराज़र, उसके बेटों ने उसे तलवार से क़त्ल किया और अरारात की सर ज़मीन को भाग गए। और उसका असरहदून उसकी जगह बादशाह हुआ।

38

2222222222 22 2222222 22 222 222 22222

¹ उन ही दिनों में हिज़क्रियाह ऐसा बीमार पड़ा कि मरने के करीब हो गया और यसा'याह नबी आमूस के बेटे ने उसके पास आकर उससे कहा कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू अपने घर का इन्तिज़ाम करदे क्योंकि तू मर जाएगा और बचने का नहीं। ² तब हिज़क्रियाह ने अपना मुँह दीवार की तरफ़ किया और खुदावन्द से दुआ की। ³ और कहा ऐ खुदावन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ याद फ़रमा कि मैं तेरे सामने सच्चाई और पूरे दिल से चलता रहा हूँ, और जो तेरी नज़र में अच्छा है वही किया है और हिज़क्रियाह ज़ार — ज़ार रोया। ⁴ तब खुदावन्द का ये कलाम यसायाह पर नाज़िल हुआ ⁵ कि जा और हिज़क्रियाह से कह कि खुदावन्द तेरे बाप दाऊद का खुदा यूँ फ़रमाता है कि मैंने तेरी दू'आ सुनी, मैंने तेरे आँसू देखे इसलिए देख मैं तेरी उम्र पन्द्रह बरस और बढ़ा दूँगा। ⁶ और मैं तुझ को और इस शहर को शाह — ए — असूर के हाथ से बचा लूँगा; और मैं इस शहर की हिमायत करूँगा। ⁷ और खुदावन्द की तरफ़ से तेरे लिए ये निशान होगा कि खुदावन्द इस बात को जो उसने फ़रमाई पूरा करेगा। ⁸ देख मैं आफ़ताब के ढले हुए साए के दर्जों में से आख़ज़ की धूप घड़ी के मुताबिक़ दस दर्जे पीछे को लौटा दूँगा चुनाँचे आफ़ताब जिन दर्जों से ढल गया था उनमें के दस दर्जे फिर लौट गया। ⁹ शाह — ए — यहूदाह हिज़क्रियाह की तहरीर, जब वह बीमार था और अपनी बीमारी से शिफ़ायाब हुआ। ¹⁰ मैंने कहा मैं अपनी आधी उम्र में पाताल के फाटकों में दाख़िल हूँगा, मेरी ज़िन्दगी के बाक़ी बरस मुझसे छीन लिए गए।

¹¹ मैंने कहा मैं खुदावन्द को हाँ खुदावन्द को ज़िन्दों की ज़मीन में फिर न देखूँगा, इंसान और दुनिया के बाशिन्दे मुझे फिर दिखाई न देंगे। ¹² मेरा घर उजड़ गया है और गडरिए के खेमा की तरह मुझसे दूर किया गया मैंने जुलाहे की तरह अपनी ज़िन्दगानी को लपेट लिया है वह मुझको तांत से काट डालेगा सुबह से शाम तक तू मुझको तमाम कर डालता है। ¹³ मैंने सुबह तक तहम्मूल किया; तब वह शेर बबर की तरह मेरी सब हड्डियाँ चूर कर डालता है सुबह से शाम तक तू मुझे तमाम कर डालता है। ¹⁴ मैं अबाबील और सारस की तरह चीं — चीं करता रहा; मैं कबूतर की तरह कुढ़ता रहा; मेरी आँखें ऊपर देखते — देखते पथरा गई ऐ खुदावन्द, मैं बे — कस हूँ, तू मेरा कफ़ील हो। ¹⁵ मैं क्या कहूँ? उसने तो मुझ से वा'दा किया, और उसी ने उसे पूरा किया; मैं अपनी बाक़ी उम्र अपनी जान की तल्ख़ी की वजह से आहिस्ता आहिस्ता बसर करूँगा। ¹⁶ ऐ खुदावन्द, इन्हीं चीज़ों से इंसान की ज़िन्दगी है, और इन्हीं में मेरी रूह की हयात है; इसलिए तू ही शिफ़ा बरख़्श और मुझे ज़िन्दा रख। ¹⁷ देख, मेरा सख़्त रन्ज राहत से तब्दील हुआ; और मेरी जान पर मेहरबान होकर तूने उसे हलाकी के गढ़े से रिहाई दी; क्योंकि तूने मेरे सब गुनाहों को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया। ¹⁸ इसलिए कि पाताल तेरी इबादत नहीं कर सकता; और मौत से तेरी हम्द नहीं हो सकती। वह जो क़बर में उतरने वाले हैं तेरी सच्चाई के उम्मीदवार नहीं हो सकते। ¹⁹ ज़िन्दा, हाँ, ज़िन्दा ही तेरी तम्ज़ीद करेगा जैसा आज के दिन मैं करता हूँ, बाप अपनी औलाद को तेरी सच्चाई की ख़बर देगा। ²⁰ खुदावन्द मुझे बचाने को तैयार है; इसलिए हम अपने तारदार साज़ों के साथ उम्र भर खुदावन्द के घर में सरोदख़्वानी करते रहेंगे। ²¹ यसा'याह ने कहा था, कि'अंजीर की टिकिया लेकर फोड़े पर बाँधे, और वह शिफ़ा पाएगा। ²² और हिज़क्रियाह ने कहा था, इसका क्या निशान है कि मैं खुदावन्द के घर में जाऊँगा।

39

222222 22 222222

¹ उस वक़्त मरूदक बल्दान — बिन — बल्दान, शाह — ए — बाबुल ने हिज़क्रियाह के लिए नामे और तहाइफ़ भेजे; क्योंकि उसने सुना था कि वह बीमार था और शिफ़ायाब हुआ। ² और हिज़क्रियाह उनसे बहुत खुश हुआ और अपने खज़ाने, या'नी चाँदी और सोना और मसालेह और बेश क्रीमत 'इत्र और तमाम सिलाह ख़ाना, और जो कुछ उसके खज़ानों में मौजूद था उनको दिखाया। उसके घर में और उसकी सारी ममलुकत में

ऐसी कोई चीज़ न थी, जो हिज़क्रियाह ने उनको न दिखाई। ³ तब यसा'याह नबी ने हिज़क्रियाह बादशाह के पास आकर उससे कहा, कि “ये लोग क्या कहते थे, और ये कहाँ से तेरे पास आए?” हिज़क्रियाह ने जवाब दिया, कि “ये एक दूर के मुल्क, या'नी बाबुल से मेरे पास आए हैं।” ⁴ तब उसने पूछा, कि “उन्होंने तेरे घर में क्या — क्या देखा?” हिज़क्रियाह ने जवाब दिया, “सब कुछ जो मेरे घर में है, उन्होंने देखा: मेरे खज़ानों में ऐसी कोई चीज़ नहीं जो मैंने उनको दिखाई न हो।” ⁵ तब यसा'याह ने हिज़क्रियाह से कहा, 'रब्ब — उल — अफ़वाज़ का कलाम सुन ले: ⁶ देख, वह दिन आते हैं कि सब कुछ जो तेरे घर में है, और जो कुछ तेरे बाप दादा ने आज के दिन तक जमा' कर रखा है बाबुल को ले जायेंगे; खुदावन्द फ़रमाता है, कुछ भी बाक़ी न रहेगा। ⁷ और वह तेरे बेटों में से जो तुझ से पैदा होंगे और जिनका बाप तू ही होगा, कितनों को ले जाएँगे; और वह शाह — ए — बाबुल के महल में ख़्वाजासरा होंगे। ⁸ तब हिज़क्रियाह ने यसा'याह से कहा, 'खुदावन्द का कलाम जो तूने सुनाया भला है। और उसने ये भी कहा, मेरे दिनों में तो सलामती और अम्न होगा।

40

?????? ?? ??????? ?? ???????

¹ तसल्ली दो तुम मेरे लोगों को तसल्ली दो; तुम्हारा खुदा फ़रमाता है। ² येरूशलेम को दिलासा दो; और उसे पुकार कर कहो कि उसकी मुसीबत के दिन जो जंग — ओ — जदल के थे गुज़र गए, उसके गुनाह का कफ़ारा हुआ; और उसने खुदावन्द के हाथ से अपने सब गुनाहों का बदला दो चन्द पाया। ³ पुकारनेवाले की आवाज़: वीरान में खुदावन्द की राह दुरुस्त करो, सहारा में हमारे खुदा के लिए शाहराह हमवार करो। ⁴ हर एक नशेब ऊँचा किया जाए, और हर एक पहाड़ और टीला पस्त किया जाए; और हर एक टेढ़ी चीज़ सीधी और हर एक नाहमवार जगह हमवार की जाए। ⁵ और खुदावन्द का जलाल आशकारा होगा और तमाम बशर उसको देखेगा क्यूँकि खुदावन्द ने अपने मुँह से फ़रमाया है। ⁶ एक आवाज़ आई कि 'ऐलान कर, और मैंने कहा मैं क्या 'ऐलान करूँ, हर बशर घास की तरह है और उसकी सारी रौनक मैदान के फूल की तरह। ⁷ घास मुरझाती है, फूल कुमलाता है; क्यूँकि खुदावन्द की हवा उस पर चलती है; यक़ीनन लोग घास हैं। ⁸ हाँ, घास मुरझाती है, फूल कुमलाता है; लेकिन हमारे खुदा का कलाम हमेशा तक काईम है। ⁹ ऐ सिय्यून को खुशख़बरी सुनाने वाली, ऊँचे पहाड़ पर चढ़ जा; और ऐ येरूशलेम को

बशरत देनेवाली, ज़ोर से अपनी आवाज़ बलन्द कर, खूब पुकार, और मत डर; यहूदाह की बस्तियों से कह, 'देखो, अपना खुदा! ¹⁰ देखो, खुदावन्द खुदा बड़ी कुदरत के साथ आएगा, और उसका बाज़ू उसके लिए सल्तनत करेगा; देखो, उसका सिला उसके साथ है, और उसका अज़र उसके सामने। ¹¹ वह चौपान की तरह अपना गल्ला चराएगा, वह बरों को अपने बाज़ूओं में जमा' करेगा और अपनी बग़ल में लेकर चलेगा, और उनको जो दूध पिलाती हैं आहिस्ता आहिस्ता ले जाएगा। ¹² किसने समन्दर को चुल्लू से नापा और आसमान की पैमाइश बालिशत से की, और ज़मीन की गर्द को पैमाने में भरा, और पहाड़ों को पलड़ों में वज़न किया और टीलों को तराजू में तोला। ¹³ किसने खुदावन्द की रूह की हिदायत की, या उसका सलाहकार होकर उसे सिखाया? ¹⁴ उसने किससे मश्वरत ली है जो उसे ता'लीम दे, और उसे 'अदालत की राह सुझाए और उसे मा'रिफ़त की बात बताए, और उसे हिकमत की राह से आगाह करे? ¹⁵ देख, कौमें डोल की एक बूँद की तरह हैं, और तराजू की बारीक गर्द की तरह गिनी जाती हैं; देख, वह जज़ीरों को एक ज़र्रे की तरह उठा लेता है। ¹⁶ लुबनान ईंधन के लिए काफ़ी नहीं और उसके जानवर सोख़्तनी कुर्बानी के लिए बस नहीं। ¹⁷ इसलिए सब कौमें उसकी नज़र में हेच हैं, बल्कि वह उसके नज़दीक बतालत और नाचीज़ से भी कमतर गिनी जाती हैं। ¹⁸ तुम खुदा को किससे तशबीह दोगे और कौन सी चीज़ उससे मुशाबह ठहराओगे? ¹⁹ तराशी हुई मूरत! कारीगर ने उसे ढाला, और सुनार उस पर सोना मढ़ता है और उसके लिए चाँदी की जज़ीरें बनाता है। ²⁰ और जो ऐसा तहीदस्त है कि उसके पास नजर गुज़राने को कुछ नहीं, वह ऐसी लकड़ी चुन लेता है जो सड़ने वाली न हो; वह होशियार कारीगर की तलाश करता है, ताकि ऐसी मूरत बनाए जो काईम रह सके। ²¹ क्या तुम नहीं जानते? क्या तुम ने नहीं सुना? क्या ये बात इब्तिदा ही से तुम को बताई नहीं गई? क्या तुम बिना — ए — 'आलम से नहीं समझे? ²² वह मुहीत — ए — ज़मीन पर बैठा है, और उसके बाशिन्दे टिड्डों की तरह हैं; वह आसमान को पर्दे की तरह तानता है, और उसको सुकूनत के लिए ख़ेमे की तरह फैलाता है। ²³ जो शहज़ादों को नाचीज़ कर डालता, और दुनिया के हाकिमों को हेच ठहराता है। ²⁴ वह अभी लगाए न गए, वह अभी बोए न गए; उनका तना अभी ज़मीन में जड़ न पकड़ चुका कि वह सिर्फ़ उन पर फूँक मारता है और वह खुश्क हो जाते हैं और हवा का झोंका उनको भूसे की तरह उड़ा ले जाता है। ²⁵ वह कुदूस फ़रमाता

है तुम मुझे किससे तशबीह दोगे और मैं किस चीज़ से मशाबह हूँगा। ²⁶ अपनी आँखें ऊपर उठाओ और देखो कि इन सबका खालिक कौन है? वही जो इनके लश्कर को शुमार करके निकालता है, और उन सबको नाम — ब — नाम बुलाता है। उसकी कुदरत की 'अज़मत और उसके बाज़ू की तवानाई की वजह से एक भी ग़ैर हाज़िर नहीं रहता। ²⁷ तब ऐ या'कूब! तू क्यों यूँ कहता है; और ऐ इस्राईल! तू किस लिए ऐसी बात करता है, कि “मेरी राह खुदावन्द से पोशीदा है और मेरी 'अदालत मेरे खुदा से गुज़र गई?” ²⁸ क्या तू नहीं जानता, क्या तूने नहीं सुना? कि खुदावन्द हमेशा का खुदा व तमाम ज़मीन का खालिक थकता नहीं और मांदा नहीं होता उसकी हिकमत इदराक से बाहर है। ²⁹ वह थके हुए को ज़ोर बख़्शता है और नातवान की तवानाई को ज़्यादा करता है। ³⁰ नौजवान भी थक जाएँगे, और मान्दा होंगे और सूर्मा बिल्कुल गिर पड़ेंगे; ³¹ लेकिन खुदावन्द का इन्तिज़ार करने वाले, अज़ — सर — ए — नौ ज़ोर हासिल करेंगे; वह उकाबों की तरह बाल — ओ — पर से उड़ेंगे, वह दौड़ेंगे और न थकेंगे, वह चलेंगे और मान्दा न होंगे।

41

22222222 22 2222 222222 22 2222

¹ ऐ जज़ीरो, मेरे सामने खामोश रहो; और उम्मतें अज़ — सर — ए — नौ — ज़ोर हासिल करें; वह नज़दीक आकर 'अर्ज़ करें; आओ, हम मिलकर 'अदालत के लिए नज़दीक हों। ² किसने पूरब से उसको खड़ा किया, जिसको वह सदाक़त से अपने क़दमों में बुलाता है? वह क़ौमों को उसके हवाले करता और उसे बादशाहों पर मुसल्लित करता है; और उनको खाक की तरह उसकी तलवार की तरफ़ उड़ती हुई भूसी की तरह उसकी कमान के हवाले करता है, ³ वह उनका पीछा करता और उस राह से जिस पर पहले क़दम न रखवा था, सलामत गुज़रता है। ⁴ ये किसने किया और इब्तिदाई नस्लों को तलब करके अन्जाम दिया? मैं खुदावन्द ने, जो अव्वल — ओ — आखिर हूँ, वह मैं ही हूँ। ⁵ ज़मीन के किनारे थरा गए वह नज़दीक आते गए। ⁶ उनमें से हर एक ने अपने पड़ौसी की मदद की और अपने भाई से कहा, हौसला रख! ⁷ बढ़ई ने सुनार की और उसने जो हथौड़ी से साफ़ करता है उसकी जो निहाई पर पीटता है, हिम्मत बढ़ाई और कहा जोड़ तो अच्छा है, इसलिए उन्होंने उसको मैखों से मज़बूत किया ताकि काईम रहे। ⁸ लेकिन तू ऐ इस्राईल, मेरे बन्दे! ऐ या'कूब, जिसको मैंने पसन्द किया, जो मेरे दोस्त अब्रहाम की नस्ल से है। ⁹ तू

जिसको मैंने ज़मीन की इन्तिहा से बुलाया और उसके अतराफ़ से तलब किया और तुझको कहा कि तू मेरा बंदा है मैंने तुझको पसन्द किया और तुझको रद्द न किया। ¹⁰ तू मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ; परेशान न हो, क्योंकि मैं तेरा खुदा हूँ, मैं तुझे ज़ोर बख़्शूँगा, मैं यक़ीनन तेरी मदद करूँगा, और मैं अपनी सदाक़त के दहने हाथ से तुझे संभालूँगा। ¹¹ देख, वह सब जो तुझ पर ग़ज़बनाक हैं, पशेमान और रूस्वा होंगे; वह जो तुझ से झगड़ते हैं, नाचीज़ हो जाएँगे और हलाक होंगे। ¹² तू अपने मुखालिफ़ों को ढूँढ़ेगा और न पाएगा, तुझ से लड़नेवाले नाचीज़ — ओ — हलाक हो जाएँगे। ¹³ क्योंकि मैं खुदावन्द तेरा खुदा तेरा दहना हाथ पकड़ कर कहूँगा, मत डर, मैं तेरी मदद करूँगा। ¹⁴ परेशान न हो, ऐ कीड़े या'कूब! ऐ इस्राईल की क़लील जमा'अत मैं तेरी मदद करूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है; हाँ मैं जो इस्राईल का कुददूस तेरा फ़िदिया देनेवाला हूँ। ¹⁵ देख, मैं तुझे ग़हाई का नया और तेज़ दन्दानादार आला बनाऊँगा; तू पहाड़ों को कूटेगा और उनको रेज़ा — रेज़ा करेगा, और टीलों को भूसे की तरह बनाएगा। ¹⁶ तू उनको उसाएगा और हवा उनको उड़ा ले जाएगी, धूल उनको तितर — बितर करेगी; लेकिन तू खुदावन्द से खुश होगा और इस्राईल के कुददूस पर फ़ख़्र करेगा। ¹⁷ मुहताज़ और ग़रीब पानी ढूँढ़ते फिरते हैं लेकिन मिलता नहीं, उनकी ज़बान प्यास से खुश्क है; मैं खुदावन्द उनकी सुनूँगा, मैं इस्राईल का खुदा उनको तर्क न करूँगा। ¹⁸ मैं नंगे टीलों पर नहरें और वादियों में चश्मे खोलूँगा, सहारा को तालाब और खुश्क ज़मीन को पानी का चश्मा बना दूँगा। ¹⁹ वीराने में देवदार और बबूल और आस और ज़ैतून के दरख़्त लगाऊँगा “सेहरा में चीड़ और सरो व सनोबर इकट्ठा लगाऊँगा। ²⁰ ताकि वह सब देखें और जानें और ग़ौर करें, और समझे के खुदावन्द ही के हाथ ने ये बनाया और इस्राईल के कुददूस ने ये पैदा किया। ²¹ खुदावन्द फ़रमाता है, अपना दा'वा पेश करो, या'कूब का बादशाह फ़रमाता है, अपनी मज़बूत दलीलें लाओ।” ²² वह उनको हाज़िर करें ताकि वह हम को होने वाली चीज़ों की ख़बर दें: हम से अगली बातें बयान करो कि क्या थीं, ताकि हम उन पर सोचें और उनके अंजाम को समझें या आइंदा की होने वाली बातों से हम को आगाह करो। ²³ बताओ कि आगे को क्या होगा, ताकि हम जानें कि तुम इलाह हो; हाँ, भला या बुरा कुछ तो करो ताकि हम मुताज्जिब हों और एक साथ उसे देखें। ²⁴ देखो, तुम हेच और बेकार हो, तुम को पसन्द करनेवाला मकरूह है। ²⁵ मैंने उत्तर से एक को खड़ा किया है, वह आ पहुँचा; वह आफ़ताब के मतले से

होकर मेरा नाम लेगा, और शाहजादों को गारे की तरह लताड़ेगा जैसे कुम्हार मिट्टी गूँधता है। ²⁶ किसने ये इब्तिदा से बयान किया कि हम जानें? और किसने आगे से खबर दी कि हम कहें कि सच है? कोई उसका बयान करने वाला नहीं, कोई उसकी खबर देने वाला नहीं कोई नहीं जो तुम्हारी बातें सुने। ²⁷ मैं ही ने पहले सिय्यून से कहा, कि “देख, उनको देख!” और मैं ही येरूशलेम को एक बशारत देनेवाला बरूँगा। ²⁸ क्योंकि मैं देखता हूँ कि उनमें कोई सलाहकार नहीं जिससे पूछूँ, और वह मुझे जवाब दे। ²⁹ देखो, वह सब के सब बतालत हैं; उनके काम हेच हैं; उनकी ढाली हुई मूरतें बिल्कुल नाचीज़ हैं।

42

?????? ?? ????? ???? ?????

¹ देखो मेरा खादिम, जिसको मैं संभालता हूँ, मेरा बरगुज़ीदा, जिससे मेरा दिल खुश है; मैंने अपनी रूह उस पर डाली, वह क्रौमों में 'अदालत जारी करेगा। ² वह न चिल्लाएगा और न शोर करेगा और न बाज़ारों में उसकी आवाज़ सुनाई देगी। ³ वह मसले हुए सरकंडे को न तोड़ेगा और टमटमाती बत्ती को न बुझाएगा, वह रास्ती से 'अदालत करेगा। ⁴ वह थका न होगा और हिम्मत न हारेगा, जब तक कि 'अदालत को ज़मीन पर काईम न करे; जज़ीरे उसकी शरी'अत का इन्तिज़ार करेंगे। ⁵ जिसने आसमान को पैदा किया और तान दिया, जिसने ज़मीन को और उनको जो उसमें से निकलते हैं फैलाया, जो उसके बाशिन्दों को साँस और उस पर चलनेवालों को रूह 'इनायत करता है, या'नी खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है ⁶ “मैं खुदावन्द ने तुझे सदाक़त से बुलाया, मैं ही तेरा हाथ पकड़ूँगा और तेरी हिफ़ाज़त करूँगा, और लोगों के 'अहद और क्रौमों के नूर के लिए तुझे दूँगा; ⁷ कि तू अन्धों की आँखें खोले, और गुलामों को कैद से निकाले, और उनको जो अन्धेरे में बैठे हैं कैदखाने से छुड़ाए। ⁸ यहोवा मैं हूँ, यही मेरा नाम है; मैं अपना जलाल किसी दूसरे के लिए, और अपनी हम्द खोदी हुई मूरतों के लिए रवा न रखूँगा। ⁹ देखो, पुरानी बातें पूरी हो गईं और मैं नई बातें बताता हूँ, इससे पहले कि वाक़े' हों, मैं तुम से बयान करता हूँ।” ¹⁰ ऐ समन्दर पर गुज़रने वालो और उसमें बसनेवालों, ऐ जज़ीरो और उनके बाशिन्दों, खुदावन्द के लिए नया गीत गाओ, ज़मीन पर सिर — ता — सिर उसी की इबादत करो। ¹¹ वीराना और उसकी बस्तियाँ, क्रीदार के आबाद गाँव, अपनी आवाज़ बलन्द करें; सिला' के बसनेवाले गीत गाएँ, पहाड़ों की चोटियों पर से ललकारें। ¹² वह खुदावन्द का जलाल ज़ाहिर करें और जज़ीरों में उसकी सनाख्वानी करें। ¹³ खुदावन्द

बहादुर की तरह निकलेगा, वह जंगी मर्द की तरह अपनी ग़ैरत दिखाएगा; वह ना'रा मारेगा, हाँ, वह ललकारेगा; वह अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आएगा। ¹⁴ मैं बहुत मुदत से चुप रहा, मैं खामोश हो रहा और ज़ब्त करता रहा; लेकिन अब मैं दर्द — ए — ज़िह वाली की तरह चिल्लाऊँगा; मैं हों पूँगा और ज़ोर — ज़ोर से साँस लूँगा। ¹⁵ मैं पहाड़ों और टीलों को वीरान कर डालूँगा और उनके सबज़ाज़ारों को खुशक करूँगा; और उनकी नदियों को जज़ीरे बनाऊँगा और तालाबों को सुखा दूँगा। ¹⁶ और अन्धों को उस राह से जिसे वह नहीं जानते ले जाऊँगा, मैं उनको उन रास्तों पर जिनसे वह आगाह नहीं ले चलूँगा; मैं उनके आगे तारीकी को रोशनी और ऊँची नीची जगहों को हमवार कर दूँगा, मैं उनसे ये सुलूक करूँगा और उनको तर्क न करूँगा। ¹⁷ जो खोदी हुई मूरतों पर भरोसा करते और ढाले हुए बुतों से कहते हैं तुम हमारे मा'बूद हो वह पीछे हटेंगे और बहुत शर्मिन्दा होंगे। ¹⁸ ऐ बहरो सुनो ऐ अन्धो नज़र करो ताकि तुम देखो। ¹⁹ मेरे खादिम के सिवा अंधा कौन है और कौन ऐसा बहरा है जैसा मेरा रसूल जिसे मैं भेजता हूँ मेरे दोस्त की और खुदावन्द के खादिम की तरह नाबीना कौन है। ²⁰ तू बहुत सी चीज़ों पर नज़र करता है पर देखता नहीं कान तो खुले हैं पर सुनता नहीं। ²¹ खुदावन्द को पसन्द आया कि अपनी सदाक़त की खातिर शरी'अत को बुज़ुर्गी दे, और उसे क़ाबिल — ए — ता'ज़ीम बनाए। ²² लेकिन ये वह लोग हैं जो लुट गए और ग़ारत हुए, वह सब के सब ज़िन्दानों में गिरफ़्तार और कैदखानों में छिपे हैं; वह शिकार हुए और कोई नहीं छुड़ाता; वह लुट गए और कोई नहीं कहता, 'फेर दो! ²³ तुम में कौन है जो इस पर कान लगाए? जो आइन्दा के बारे में तबज्जुह से सुने? ²⁴ किसने या'कूब को हवाले किया के ग़ारत हो, और इस्राईल को कि लुटेरों के हाथ में पड़े? क्या खुदावन्द ने नहीं, जिसके खिलाफ़ हम ने गुनाह किया? क्योंकि उन्होंने न चाहा कि उसकी राहों पर चलें, और वह उसकी शरी'अत के ताबे' न हुए। ²⁵ इसलिए उसने अपने क्रहर की शिद्दत, और जंग की सख्ती को उस पर डाला; और उसे हर तरफ़ से आग लग गई पर वह उसे दरियाफ़्त नहीं करता, वह उससे जल जाता है पर खातिर में नहीं लाता।

43

?????????? ?? ????? ???? ?

¹ और अब, ऐ या'कूब, खुदावन्द जिसने तुझ को पैदा किया, और जिसने, ऐ इस्राईल, तुझ को बनाया यूँ फ़रमाता है कि खौफ़ न कर क्योंकि तेरा फ़िदया दिया है

मैंने तेरा नाम लेकर तुझे बुलाया है, तू मेरा है।² जब तू सैलाब में से गुज़रेगा, तो मैं तेरे साथ हूँगा; और जब तू नदियों को उबूर करेगा, तो वह तुझे न डुबाएँगी; जब तू आग पर चलेगा, तो तुझे आँच न लगेगी और शोला तुझे न जलाएगा।³ क्योंकि मैं खुदावन्द तेरा खुदा, इस्राईल का कुददूस, तेरा नजात देनेवाला हूँ। मैंने तेरे फ़िदिये में मिस्र को और तेरे बदले कूश और सबा को दिया।⁴ चूँकि तू मेरी निगाह में बेशक्रीमत और मुकर्रम ठहरा और मैंने तुझ से मुहब्बत रखी, इसलिए मैं तेरे बदले लोग और तेरी जान के बदले में उम्मतें दे दूँगा।⁵ तू खौफ़ न कर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ; मैं तेरी नस्ल को पूरब से ले आऊँगा, और मगरिब से तुझे फ़राहम करूँगा।⁶ मैं उत्तर से कहूँगा कि दे डाल, और जुनूब से कि रख न छोड़; मेरे बेटों को दूर से और मेरी बेटियों को ज़मीन की इन्तिहा से लाओ।⁷ हर एक को जो मेरे नाम से कहलाता है और जिसको मैंने अपने जलाल के लिए पैदा किया, जिसे मैंने पैदा किया; हाँ, जिसे मैंने ही बनाया।⁸ उन अन्धे लोगों को जो आँखें रखते हैं और उन बहरों को जिनके कान हैं बाहर लाओ।⁹ तमाम क्रौमें फ़राहम की जाएँ और सब उम्मतें जमा हों। उनके बीच कौन है जो उसे बयान करे या हम को पिछली बातें बताए? वह अपने गवाहों को लाएँ ताकि वह सच्चे साबित हों, और लोग सुनें और कहें कि ये सच है।¹⁰ खुदावन्द फ़रमाता है, तुम मेरे गवाह हो और मेरे खादिम भी, जिन्हें मैंने बरगुज़ीदा किया, ताकि तुम जानो और मुझ पर ईमान लाओ और समझो कि मैं वही हूँ। मुझ से पहले कोई खुदा न हुआ और मेरे बाद भी कोई न होगा।¹¹ मैं ही यहोवा हूँ और मेरे सिवा कोई बचानेवाला नहीं।¹² मैंने ऐलान किया और मैंने नजात बख्शी और मैं ही ने ज़ाहिर किया, जब तुम में कोई अजनबी मा'बूद न था; इसलिए तुम मेरे गवाह हो, खुदावन्द फ़रमाता है, कि “मैं ही खुदा हूँ।¹³ आज से मैं ही हूँ; और कोई नहीं जो मेरे हाथ से छुड़ा सके; मैं काम करूँगा, कौन है जो उसे रद्द कर सके?”¹⁴ खुदावन्द तुम्हारा नजात देनेवाला इस्राईल का कुददूस यूसुफ़ फ़रमाता है, कि तुम्हारी खातिर मैंने बाबुल पर खुर्रूज कराया, और मैं उन सबको फ़रारियों की हालत में और कसदियों को भी जो अपने जहाज़ों में ललकारते थे, ले आऊँगा।¹⁵ मैं खुदावन्द तुम्हारा कुददूस, इस्राईल का खालिक, तुम्हारा बादशाह हूँ।¹⁶ खुदावन्द जिसने समन्दर में राह और सैलाब में गुज़रगाह बनाई,¹⁷ जो जंगी रथों और घोड़ों और लश्कर और बहादुरों को निकाल लाता है, वह सब के सब लेट गए, वह फिर न उठेगे, वह बुझ गए,

हाँ, वह बत्ती की तरह बुझ गए।¹⁸ या'नी खुदावन्द यूसुफ़ फ़रमाता है, कि पिछली बातों को याद न करो और पुरानी बातों पर सोचते न रहो।¹⁹ देखो, मैं एक नया काम करूँगा; अब वह ज़हूर में आएगा, क्या तुम उससे ना — वाकिफ़ रहोगे? हाँ, मैं वीराने में एक राह और सहरा में नदियाँ जारी करूँगा।²⁰ जंगली जानवर, गीदड़ और शुतरमुर्ग, मेरी ताज़ीम करेंगे; क्योंकि मैं वीराने में पानी और सहरा में नदियाँ जारी करूँगा ताकि मेरे लोगों के लिए, या'नी मेरे बरगुज़ीदों के पीने के लिए हों;²¹ मैंने इन लोगों को अपने लिए बनाया ताकि वह मेरी हम्द करें।²² तोभी, ऐ या'कूब, तूने मुझे न पुकारा; बल्कि ऐ इस्राईल, तू मुझ से तंग आ गया।²³ तू बरों को अपनी सोख्तनी कुबानी के लिए मेरे सामने नहीं लाया, और तूने अपने ज़बीहों से मेरी ताज़ीम नहीं की। मैंने तुझे हदिया लाने पर मजबूर नहीं किया, और लुबान जलाने की तकलीफ़ नहीं दी।²⁴ तूने रुपये से मेरे लिए अगर को नहीं खरीदा, और तूने मुझे अपने ज़बीहों की चर्बी से सेर नहीं किया; लेकिन तूने अपने गुनाहों से मुझे ज़ेरबार किया और अपनी खताओं से मुझे बेज़ार कर दिया।²⁵ “मैं ही वह हूँ जो अपने नाम की खातिर तेरे गुनाहों को मिटाता हूँ, और मैं तेरी खताओं को याद नहीं रखूँगा।²⁶ मुझे याद दिला, हम आपस में बहस करें; अपना हाल बयान कर ताकि तू सादिक ठहरे।²⁷ तेरे बड़े बाप ने गुनाह किया, और तेरे तफ़सीर करनेवालों ने मेरी मुखालिफ़त की है।²⁸ इसलिए मैंने मक़दिस के अमीरों को नापाक ठहराया, और या'कूब को ला'नत और इस्राईल को तानाज़नी के हवाले किया।

44

¹ “लेकिन अब ऐ या'कूब, मेरे खादिम और इस्राईल, मेरे बरगुज़ीदा, सुन! ² खुदावन्द तेरा खालिक जिसने रहम ही से तुझे बनाया और तेरी मदद करेगा, यूसुफ़ फ़रमाता है: कि ऐ या'कूब, मेरे खादिम और यसूरून मेरे बरगुज़ीदा, खौफ़ न कर! ³ क्योंकि मैं प्यासी ज़मीन पर पानी उँडेलूँगा, और शुष्क ज़मीन में नदियाँ जारी करूँगा; मैं अपनी रूह तेरी नस्ल पर और अपनी बरकत तेरी औलाद पर नाज़िल करूँगा।⁴ और वह घास के बीच उगेंगे, जैसे बहते पानी के किनारे पर बेद हो।⁵ एक तो कहेगा, ‘मैं खुदावन्द का हूँ,’ और दूसरा अपने आपको या'कूब के नाम का ठहराएगा, और तीसरा अपने हाथ पर लिखेगा, ‘मैं खुदावन्द का हूँ,’ और अपने आपको इस्राईल के नाम से मुलक़क़ब करेगा।”

२२२२२ २२ २२२२२२२२

6 खुदावन्द, इस्राईल का बादशाह और उसका फिदया देने वाला रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है, कि “मैं ही अव्वल और मैं ही आखिर हूँ; और मेरे सिवा कोई खुदा नहीं।⁷ और जब से मैंने पुराने लोगों की बिना डाली, कौन मेरी तरह बुलाएगा और उसको बयान करके मेरे लिए तरतीब देगा? हाँ, जो कुछ हो रहा है और जो कुछ होने वाला है, उसका बयान करे।⁸ तुम न डरो, और परेशान न हो; क्या मैंने पहले ही से तुझे ये नहीं बताया और ज़ाहिर नहीं किया? तुम मेरे गवाह हो। क्या मेरे 'अलावाह कोई और खुदा है? नहीं, कोई चट्टान नहीं; मैं तो कोई नहीं जानता।”⁹ खोदी हुई मूरतों के बनानेवाले, सबके सब बेकार हैं और उनकी पसंदीदा चीज़ें बे नफ़ा; उन ही के गवाह देखते नहीं और समझते नहीं, ताकि पशेमाँ हों।¹⁰ किसने कोई बुत खुदा के नाम से बनाया या कोई मूरत ढाली जिससे कुछ फ़ाइदा हो? ¹¹ देख, उसके सब साथी शर्मिन्दा होंगे क्योंकि बनानेवाले तो इंसान हैं; वह सब के सब जमा' होकर खड़े हों, वह डर जाएँगे, वह सब के सब शर्मिन्दा होंगे। ¹² लुहार कुल्हाड़ा बनाता है और अपना काम अंगारों से करता है, और उसे हथौड़ों से दुरुस्त करता और अपने बाजू की कुव्वत से गढ़ता है; हाँ वह भूका हो जाता है और उसका ज़ोर घट जाता है वह पानी नहीं पीता और थक जाता है। ¹³ बढई सूत फैलाता है और नुकेले हथियार से उसकी सूरत खींचता है, वह उसको रंदे से साफ़ करता है और परकार से उस पर नक्श बनाता है; वह उसे इंसान की शक्ल बल्कि आदमी की खूबसूरत शबीह बनाता है, ताकि उसे घर में खड़ा करें। ¹⁴ वह देवदारों को अपने लिए काटता है और क्रिस्म — क्रिस्म के बलूत को लेता है, और जंगल के दरख्तों से जिसको पसन्द करता है; वह सनोबर का दरख्त लगाता है और मेंह उसे सींचता है। ¹⁵ तब वह आदमी के लिए ईधन होता है; वह उसमें से कुछ सुलगाकर तापता है, वह उसको जलाकर रोटी पकाता है, बल्कि उससे बुत बना कर उसको सिज्दा करता वह खोदी हुई मूरत खुदा के नाम से बनाता है और उसके आगे मुँह के बल गिरता है। ¹⁶ उसका एक टुकड़ा लेकर आग में जलाता है, और उसी के एक टुकड़े पर गोश्त कबाब करके खाता और सेर होता है; फिर वह तापता और कहता है, “अहा, मैं गर्म हो गया, मैंने आग देखी!” ¹⁷ फिर उसकी बाक़ी लकड़ी से देवता या 'नी खोदी हुई मूरत बनाता है, और उसके आगे मुँह के बल गिर जाता है और उसे सिज्दा करता है और उससे इल्तिजा करके कहता है “मुझे नजात दे, क्योंकि तू मेरा खुदा है!” ¹⁸ वह नहीं जानते और नहीं समझते; क्योंकि उनकी आँखें बन्द हैं तब वह देखते नहीं, और उनके

दिल सख्त हैं लेकिन वह समझते नहीं। ¹⁹ बल्कि कोई अपने दिल में नहीं सोचता और न किसी को मा'रिफ़त और तमीज़ है कि “मैंने तो इसका एक टुकड़ा आग में जलाया, और मैंने इसके अंगारों पर रोटी भी पकाई, और मैंने गोश्त भूना और खाया; अब क्या मैं इसके बक्रिये से एक मकरूह चीज़ बनाऊँ? क्या मैं दरख्त के कुन्दे को सिज्दा करूँ?” ²⁰ वह राख खाता है; फ़रेबखुदा ने उसको ऐसा गुमराह कर दिया है कि वह अपनी जान बचा नहीं सकता और नहीं कहता क्या मेरे दहने हाथ में बतालत नहीं? ²¹ ऐ या'कूब, ऐ इस्राईल, इन बातों को याद रख; क्योंकि तू मेरा बन्दा है, मैंने तुझे बनाया है, तू मेरा खादिम है; ऐ इस्राईल, मैं तुझ को फ़रामोश न करूँगा। ²² मैंने तेरी खताओं को घटा की तरह और तेरे गुनाहों को बादल की तरह मिटा डाला; मेरे पास वापस आ जा, क्योंकि मैंने तेरा फ़िदिया दिया है। ²³ ऐ आसमानो, गाओ कि खुदावन्द ने ये किया, ऐ असफ़ल — ए — ज़मीन, ललकार; ऐ पहाड़ो, ऐ जंगल और उसके सब दरख्तो, नगमापरदाज़ी करो! क्योंकि खुदावन्द ने या'कूब का फ़िदिया दिया, और इस्राईल में अपना जलाल ज़ाहिर करेगा। ²⁴ खुदावन्द तेरा फ़िदिया देनेवाला, जिसने रहम ही से तुझे बनाया यूँ फ़रमाता है, कि मैं खुदावन्द सबका खालिक हूँ, मैं ही अकेला आसमान को तानने और ज़मीन को बिछाने वाला हूँ, कौन मेरा शरीक है? ²⁵ मैं झूटों के निशान — आत को बातिल करता, और फ़ालगीरों को दीवाना बनाता हूँ और हिकमत वालों को रद्द करता और उनकी हिकमत को हिमाक़त ठहराता हूँ ²⁶ अपने खादिम के कलाम को साबित करता, और अपने रसूलों की मसलहत को पूरा करता हूँ जो येरूशलेम के ज़रिए' कहता हूँ, कि' वह आबाद हो जाएगा, और यहूदाह के शहरों के ज़रिए', कि' वह ता'मीर किए जाएँगे, और मैं उसके खण्डरों को ता'मीर करूँगा। ²⁷ जो समन्दर को कहता हूँ, 'सूख जा और मैं तेरी नदियाँ सुखा डालूँगा; ²⁸ जो खोरस के हक्र में कहता हूँ, कि वह मेरा चरवाहा है और मेरी मर्ज़ी बिल्कुल पूरी करेगा; और येरूशलेम के ज़रिए' कहता हूँ, 'वह ता'मीर किया जाएगा, और हैकल के ज़रिए' कि उसकी बुनियाद डाली जायेगी।

45

222222, 222222 22 22222 2222

1 खुदावन्द अपने मम्सूह खोरस के हक्र में यूँ फ़रमाता है कि मैंने उसका दहना हाथ पकड़ा कि उम्मतों को उसके सामने ज़ेर करूँ और बादशाहों की कमरें खुलवा डालूँ और दरवाज़ों को उसके लिए खोल दूँ और फाटक

बन्द न किए जाएँ, ² मैं तेरे आगे आगे चलूँगा और ना — हमवार जगहों को हमवार बना दूँगा, मैं पीतल के दरवाजों को टुकड़े — टुकड़े करूँगा और लोहे के बेन्डों को काट डालूँगा; ³ और मैं ज़ुल्मात के खज़ाने और छिपे मकानों के दफ़ीने तुझे दूँगा, ताकि तू जाने कि मैं खुदावन्द इस्राईल का खुदा हूँ जिसने तुझे नाम लेकर बुलाया है। ⁴ मैंने अपने खादिम या'कूब और अपने बरगुज़ीदा इस्राईल की खातिर तुझे नाम लेकर बुलाया; मैंने तुझे एक लक़ब बख़्शा अगरचे तू मुझ को नहीं जानता। ⁵ मैं ही खुदावन्द हूँ और कोई नहीं, मेरे अलावाह कोई खुदा नहीं मैंने तेरी कमर बाँधी अगरचे तूने मुझे न पहचाना; ⁶ ताकि पूरब से पश्चिम तक लोग जान ले कि मेरे अलावह कोई नहीं; मैं ही खुदावन्द हूँ, मेरे अलावाह कोई दूसरा नहीं। ⁷ मैं ही रोशनी का मूज़िद और तारीकी का खालिक हूँ, मैं सलामती का बानी और बला को पैदा करने वाला हूँ, मैं ही खुदावन्द ये सब कुछ करने वाला हूँ। ⁸ ऐ आसमान, ऊपर से टपक पड़; हाँ बादल रास्तबाज़ी बरसाएँ, ज़मीन खुल जाए, और नजात और सदाक़त का फल लाए; वह उनको इकट्ठे उगाए; मैं खुदावन्द उसका पैदा करने वाला हूँ। ⁹ “अफ़सोस उस पर जो अपने खालिक से झगड़ता है! ठीकरा तो ज़मीन के ठीक़रों में से है! क्या मिट्टी कुम्हार से कहे, 'तू क्या बनाता है?' क्या तेरी दस्तकारी कहे, 'उसके तो हाथ नहीं?’ ¹⁰ उस पर अफ़सोस जो बाप से कहे, 'तू किस चीज़ का वालिद है?' और माँ से कहे, 'तू किस चीज़ की वालिदा है?’ ¹¹ खुदावन्द इस्राईल का कुददूस और खालिक यूँ फ़रमाता है, कि “क्या तुम आनेवाली चीज़ों के ज़रिए' मुझ से पूछोगे? क्या तुम मेरे बेटों या मेरी दस्तकारी के ज़रिए' मुझे हुक्म दोगे? ¹² मैंने ज़मीन बनाई, और उस पर इंसान को पैदा किया; और मैं ही ने, हाँ, मेरे हाथों ने आसमान को ताना, और उसके सब लश्करों पर मैंने हुक्म किया।” ¹³ रब्ब — उल — अफ़वाज़ फ़रमाता है मैंने उसको सदाक़त में खड़ा किया है और मैं उसकी तमाम राहों को हमवार करूँगा; वह मेरा शहर बनाएगा, और मेरे गुलामों को बग़ैर क़ीमत और इवज़ लिए आज़ाद कर देगा। ¹⁴ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि “मिस्र की दौलत, और कूश की तिजारत, और सबा के कद्दावर लोग तेरे पास आएँगे और तेरे होंगे; वह तेरी पैरवी करेंगे, वह बेड़ियाँ पहने हुए अपना मुल्क छोड़कर आयेंगे और तेरे सामने सिज्दा करेंगे; वह तेरी मिन्नत करेंगे और कहेंगे, यक़ीनन खुदा तुझमें है और कोई दूसरा नहीं और उसके सिवा कोई खुदा नहीं।” ¹⁵ ऐ इस्राईल के खुदा,

ऐ नजात देनेवाले, यक़ीनन तू पोशीदा खुदा है। ¹⁶ बुत बनानेवाले सब के सब पशेमाँ और सरासीमा होंगे, वह सब के सब शर्मिन्दा होंगे। ¹⁷ लेकिन खुदावन्द इस्राईल को बचा कर हमेशा की नजात बख़्शेगा; तुम हमेशा से हमेशा तक कभी पशेमाँ और सरासीमा न होगे। ¹⁸ क्यूँकि खुदावन्द जिसने आसमान पैदा किए, वही खुदा है; उसी ने ज़मीन बनाई और तैयार की, उसी ने उसे क़ाईम किया; उसने उसे सुन्सान पैदा नहीं किया बल्कि उसको आबादी के लिए आरास्ता किया। वह यूँ फ़रमाता है, कि “मैं खुदावन्द हूँ, और मेरे 'अलावाह और कोई नहीं।” ¹⁹ मैंने ज़मीन की किसी तारीक जगह में, पोशीदगी में तो कलाम नहीं किया; मैंने या'कूब की नस्ल को नहीं फ़रमाया कि 'अबस मेरे तालिब हो। मैं खुदावन्द सच कहता हूँ, और रास्ती की बातें बयान फ़रमाता हूँ।” ²⁰ तुम जो क़ौमों में से बच निकले हो! जमा' होकर आओ मिलकर नज़दीक हो वह जो अपनी लकड़ी की खोदी हुई मूरत खुदा के नाम से लिए फिरते हैं, और ऐसे मा'बूद से जो बचा नहीं सकता दुआ करते हैं, अक्ल से खाली हैं। ²¹ तुम 'ऐलान करो और उनको नज़दीक लाओ; हाँ, वह एक साथ मशवरत करें, किसने पहले ही से ये ज़ाहिर किया? किसने पिछले दिनों में इसकी खबर पहले ही से दी है? क्या मैं खुदावन्द ही ने ये नहीं किया? इसलिए मेरे 'अलावाह कोई खुदा नहीं है; सादिक — उल — क़ौल और नजात देनेवाला खुदा मेरे 'अलावाह कोई नहीं। ²² ऐ इन्तिहा — ए — ज़मीन के सब रहनेवालो, तुम मेरी तरफ़ मुत्वज्जिह हो और नजात पाओ, क्यूँकि मैं खुदा हूँ और मेरे 'अलावाह कोई नहीं। ²³ मैंने अपनी ज़ात की क़सम खाई है, कलाम — ए — सिदक़ मेरे मुँह से निकला है और वह टलेगा नहीं, कि 'हर एक घुटना मेरे सामने झुकेगा और हर एक ज़बान मेरी क़सम खाएगी। ²⁴ मेरे हक़ में हर एक कहेगा कि यक़ीनन खुदावन्द ही में रास्तबाज़ी और तवानाई है, उसी के पास वह आएगा और सब जो उससे बेज़ार थे पशेमाँ होंगे। ²⁵ इस्राईल की कुल नस्ल खुदावन्द में सादिक ठहरेगी और उस पर फ़ख़र करेगी।

46

????? ? ? ? ? ? ?

¹ बेल झुकता है नबू ख़म होता उनके बुत जानवरों और चौपायों पर लदे हैं; जो चीज़ें तुम उठाए फिरते थे, थके हुए चौपायों पर लदी हैं। ² वह झुकते और एक साथ ख़म होते हैं; वह उस बोझ को बचा न सके, और वह आप ही गुलामी में चले गए हैं। ³ ऐ या'कूब के घराने,

और ऐ इस्राईल के घर के सब बाक्री थके लोगो, जिनको बत्न ही से मैंने उठाया और जिनको रहम ही से मैंने गोद में लिया, मेरी सुनो ⁴ मैं तुम्हारे बुढ़ापे तक वही हूँ और सिर सफ़ेद होने तक तुम को उठाए फिरेगा। मैंने तुम्हें बनाया और मैं ही उठाता रहूँगा, मैं ही लिए चलूँगा और रिहाई दूँगा। ⁵ तुम मुझे किससे तशबीह दोगे, और मुझे किसके बराबर ठहराओगे, और मुझे किसकी तरह कहोगे ताकि हम मुशाबह हों? ⁶ जो थैली से बाइफ़रात सोना निकालते और चाँदी को तराजू में तोलते हैं, वह सुनार को उजरत पर लगाते हैं और वह उससे एक बुत खुदा के नाम से बनाता है; फिर वह उसके सामने झुकते, बल्कि सिज्दा करते हैं। ⁷ वह उसे कंधे पर उठाते हैं, वह उसे ले जाकर उसकी जगह पर खड़ा करते हैं और वह खड़ा रहता है, वह अपनी जगह से सरकता नहीं; बल्कि अगर कोई उसे पुकारे, तो वह न जवाब दे सकता है और न उसे मुसीबत से छुड़ा सकता है। ⁸ ऐ गुनाहगारो, इसको याद रखो और मर्द बनो, इस पर फिर सोचो। ⁹ पहली बातों को जो क़दीम से हैं, याद करो कि मैं खुदा हूँ और कोई दूसरा नहीं मैं खुदा हूँ और मुझ सा कोई नहीं। ¹⁰ जो इब्तिदा ही से अंजाम की खबर देता हूँ, और पहले दिनों से वह बातें जो अब तक वजूद में नहीं आई, बताता हूँ; और कहता हूँ, कि 'मेरी मसलहत क़ाईम रहेगी और मैं अपनी मर्ज़ी बिल्कुल पूरी करूँगा।' ¹¹ जो पूरब से उक्राब को या'नी उस शख्स को जो मेरे इरादे को पूरा करेगा, दूर के मुल्क से बुलाता हूँ, मैंने ही कहा और मैं ही इसको वजूद में लाऊँगा; मैंने इसका इरादा किया और मैं ही इसे पूरा करूँगा। ¹² 'ऐ सख्त दिलो, जो सदाक़त से दूर हो मेरी सुनो, ¹³ मैं अपनी सदाक़त को नज़दीक लाता हूँ, वह दूर नहीं होगी और मेरी नजात ताख़ीर न करेगी; और मैं सिय्यून को नजात और इस्राईल को अपना जलाल बख़्शूँगा।'

47

????? ?? ????????? ?? ??????

¹ ऐ कुंवारी दुख्तर — ए — बाबुल उतर आ और खाक पर बैठ ऐ कसदियों की दुख्तर, तू बे — तख्त ज़मीन पर बैठ; क्योंकि अब तू नर्म अन्दाम और नाज़नीन न कहलाएगी। ² चक्की ले और आटा पीस, अपना निक्काब उतार और दामन समेट ले, टाँगे नंगी करके नदियों को पार कर। ³ तेरा बदन बे — पर्दा किया जाएगा, बल्कि तेरा सत्र भी देखा जाएगा। मैं बदला लूँगा और किसी पर शफ़क़त न करूँगा। ⁴ हमारा फ़िदिया देनेवाले का नाम रब्ब — उल — अफ़वाज या'नी इस्राईल

का कुददूस है। ⁵ ऐ कसदियों की बेटी, चुप होकर बैठ और अन्धेरे में दाख़िल हो; क्योंकि अब तू मम्लुकतों की खातून न कहलाएगी। ⁶ मैं अपने लोगों पर ग़ज़बनाक हुआ, मैंने अपनी मीरास को नापाक किया और उनको तेरे हाथ में सौंप दिया; तूने उन पर रहम न किया, तूने बूढ़ों पर भी अपना भारी जूआ रखवा। ⁷ और तूने कहा भी, कि मैं हमेशा तक खातून बनी रहूँगी, इसलिए तूने अपने दिल में इन बातों का ख़याल न किया और इनके अन्जाम को न सोचा। ⁸ इसलिए अब ये बात सुन, ऐ तू जो 'इशरत में गर्क है, जो बेपर्वा रहती है, जो अपने दिल में कहती है, कि मैं हूँ, और मेरे 'अलावाह कोई नहीं'; मैं बेवा की तरह न बैटूँगी, और न बेऔलाद होने की हालत से वाकिफ़ हूँगी; ⁹ इसलिए अचानक एक ही दिन में ये दो मुसीबतें तुझ पर आ पड़ेंगी, या'नी तू बेऔलाद और बेवा हो जाएगी। तेरे जादू की इफ़रात और तेरे सहर की कसरत के बावजूद ये मुसीबतें पूरे तौर से तुझ पर आ पड़ेंगी। ¹⁰ क्योंकि तूने अपनी शरारत पर भरोसा किया, तूने कहा, मुझे कोई नहीं देखता; 'तेरी हिकमत और तेरी अक्ल ने तुझे बहकाया, और तूने अपने दिल में कहा, मैं ही हूँ। मेरे 'अलावाह और कोई नहीं।' ¹¹ इसलिए तुझ पर मुसीबत आ पड़ेगी जिसका मंतर तू नहीं जानती, और ऐसी बला तुझ पर नाज़िल होगी जिसको तू दूर न कर सकेगी; यकायक तबाही तुझ पर आएगी जिसकी तुझ को कुछ खबर नहीं। ¹² अब अपना जादू और अपना सारा सेहर, जिसकी तूने बचपन ही से मशक कर रखी है इस्ते'माल कर; शायद तू उनसे नफ़ा पाए, शायद तू ग़ालिब आए। ¹³ तू अपनी मश्वरतों की कसरत से थक गई, अब अफ़लाक — पैमा और मुनज्जिम और वह जो माह — ब — माह आइन्दा हालात दरियाफ़त करते हैं, उठें और जो कुछ तुझ पर आनेवाला है उससे तुझ को बचाएँ। ¹⁴ देख, वह भूसे की तरह होंगे; आग उनको जलाएगी। वह अपने आपको शो'ले की शिद्दत से बचा न सकेंगे, ये आग न तापने के अंगारे होगी, न उसके पास बैठ सकेंगे। ¹⁵ जिनके लिए तूने मेहनत की, तेरे लिए ऐसे ही होंगे; जिनके साथ तूने अपनी जवानी ही से तिजारत की, उनमें से हर एक अपनी राह लेगा; तुझ को बचानेवाला कोई न रहेगा।

48

????? ?? ????????? ???

¹ ये बात सुनो ऐ या'कूब के घराने जो इस्राईल के नाम से कहलाते हो और यहूदाह के चश्मे से निकले हो, जो खुदावन्द का नाम लेकर क़सम खाते हो, और

इस्राईल के खुदा का इक्कार करते हो, बल्कि अमानत और सदाकत से नहीं।² क्योंकि वह शहर — ए — कुददूस के लोग कहलाते हैं और इस्राईल के खुदा पर तवक्कुल करते हैं जिसका नाम रब्ब — उल — अफ़वाज है।³ मैंने पहले से होने वाली बातों की खबर दी है हाँ वह मेरे मुँह से निकली मैंने उनको ज़ाहिर किया मैं नागहा उनको 'अमल में लाया और वह ज़हूर में आई।⁴ चूँकि मैं जानता था कि तू ज़िदी है और तेरी गर्दन का पट्टा लोहे का है और तेरी पेशानी पीतल की है।⁵ इसलिए मैंने पहले ही से ये बातें तुझे कह सुनाई, और उनके बयान “होने से पहले तुझ पर ज़ाहिर कर दिया; ता न हो कि तू कहे, 'मेरे बुत ने ये काम किया, और मेरे खोदे हुए सनम ने और मेरी ढाली हुई मूरत ने ये बातें फ़रमाई।”⁶ तूने ये सुना है, इसलिए इस सब पर तवज्जुह कर; क्या तुम इसका इक्कार न करोगे? अब मैं तुझे नई चीज़ें और छिपी बातें, जिनसे तू वाकिफ़ न था दिखाता हूँ।⁷ वह अभी खल्क की गई हैं, पहले से नहीं; बल्कि आज से पहले तूने उनको सुना भी न था; ता न हो कि तू कहे, 'देख, मैं जानता था।’⁸ हाँ, तूने न सुना न जाना; हाँ, पहले ही से तेरे कान खुले न थे। क्योंकि मैं जानता था कि तू भी बिल्कुल बेवफ़ा है, और रहम ही से ख़ताकार कहलाता है।⁹ मैं अपने नाम की खातिर अपने ग़ज़ब में ताख़ीर करूँगा, और अपने जलाल की खातिर तुझ से बाज़ रहूँगा, कि तुझे काट न डालूँ।¹⁰ देख, मैंने तुझे साफ़ किया, लेकिन चाँदी की तरह नहीं; मैंने मुसीबत की कुठाली से तुझे साफ़ किया।¹¹ मैंने अपनी खातिर, हाँ, अपनी ही खातिर ये किया है; क्योंकि मेरे नाम की तक़्कीर क्यूँ हो? मैं तो अपनी शौकत दूसरे को नहीं देने का।¹² ऐ या'क़ूब, आ मेरी सुन, और ऐ इस्राईल जो मेरा बुलाया हुआ है; मैं वही हूँ, मैं ही अब्बल और मैं ही आख़िर हूँ।¹³ यक़ीनन मेरे ही हाथ ने ज़मीन की बुनियाद डाली, और मेरे दहने हाथ ने आसमान को फैलाया; मैं उनको पुकारता हूँ और वह हाज़िर हो जाते हैं।¹⁴ “तुम सब जमा' होकर सुनो। उनमें किसने इन बातों की खबर दी है? वह जिसे खुदावन्द ने पसन्द किया है; उसकी खुशी को बाबुल के मुताल्लिक 'अमल में लाएगा, और उसी का हाथ कसदियों की मुखालिफ़त में होगा।¹⁵ मैंने, हाँ मैं ही ने कहा; मैंने ही उसे बुलाया, मैं उसे लाया हूँ; और वह अपनी चाल चलन में बरोमन्द होगा।¹⁶ मेरे नज़दीक आओ और ये सुनो, मैंने शुरू ही से पोशीदगी में कलाम नहीं किया, जिस वक़्त से कि वह था मैं वहीं था।” और अब खुदावन्द खुदा ने और उसकी रूह ने मुझ को भेजा

है।¹⁷ खुदावन्द तेरा फ़िदिया देनेवाला, इस्राईल का कुददूस, यूँ फ़रमाता है, कि “मैं ही खुदावन्द तेरा खुदा हूँ। जो तुझे मुफ़ीद ता'लीम देता हूँ और तुझे उस राह में जिसमें तुझे जाना है, ले चलता हूँ।¹⁸ काश कि तू मेरे हुक्मों का सुनने वाला होता, और तेरी सलामती नहर की तरह और तेरी सदाकत समन्दर की मौजों की तरह होती;¹⁹ तेरी नस्ल रेत की तरह होती और तेरे सुल्बी फ़र्जन्द उसके ज़रों की तरह बा — कसरत होते; और उसका नाम मेरे सामने से काटा और मिटाया न जाता।”²⁰ तुम बाबुल से निकलो, कसदियों के बीच से भागो; नग़मे की आवाज़ से बयान करो इसे मशहूर करो हाँ इसकी खबर ज़मीन के किनारों तक पहुँचाओ; कहते जाओ, कि “खुदावन्द ने अपने खादिम या'क़ूब का फ़िदिया दिया।”²¹ और जब वह उनको वीराने में से ले गया, तो वह प्यासे न हुए; उसने उनके लिए चटटान में से पानी निकाला, उसने चटटान को चीरा और पानी फूट निकला।²² खुदावन्द फ़रमाता है, कि “शरीरों के लिए सलामती नहीं।”

49

????? ?? ?????????? ?? ?????

¹ ऐ जज़ीरों मेरी सुनों ऐ उम्मतों जो दो हो कान लगाओ खुदावन्द ने मुझे रहम ही से बुलाया, बत्न — ए — मादर ही से उसने मेरे नाम का ज़िक्र किया।² और उसने मेरे मुँह को तेज़ तलवार की तरह बनाया, और मुझ को अपने हाथ के साये तले छिपाया; उसने मुझे तीर — ए — आबदार किया और अपने तरकश में मुझे छिपा रखवा; ³ और उसने मुझ से कहा, “तू मेरा खादिम है, तुझ में ऐ इस्राईल, मैं अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा।”⁴ तब मैंने कहा, मैंने बेफ़ाइदा मशक्कत उठाई मैंने अपनी कुव्वत बेफ़ाइदा बतालत में सर्फ़ की; तोभी यक़ीनन मेरा हक़ खुदावन्द के साथ और मेरा 'अज़र मेरे खुदा के पास है।⁵ चूँकि मैं खुदावन्द की नज़र में जलील — उल — क़दर हूँ और वह मेरी तवानाई है, इसलिए वह जिसने मुझे रहम ही से बनाया, ताकि उसका खादिम होकर या'क़ूब को उसके पास वापस लाऊँ और इस्राईल को उसके पास जमा' करूँ, यूँ फ़रमाता है।⁶ हाँ, खुदावन्द फ़रमाता है, कि “ये तो हल्की सी बात है कि तू या'क़ूब के क़बाइल को खड़ा करने और महफूज़ इस्राईलियों को वापस लाने के लिए मेरा खादिम हो, बल्कि मैं तुझ को क़ौमों के लिए नूर बनाऊँगा कि तुझ से मेरी नजात ज़मीन के किनारों तक पहुँचे।”⁷ खुदावन्द इस्राईल का फ़िदिया देने वाला और उसका कुददूस उसको जिसे

इंसान हकीर जानता है और जिससे कौम को नफ़रत है और जो हाकिमों का चाकर है, यूँ फ़रमाता है, कि 'बादशाह देखेंगे और उठ खड़े होंगे, और उमरा सिज्दा करेंगे; खुदावन्द के लिए जो सादिक — उल — कौल और इस्राईल का कुददूस है, जिसने तुझे बरगुज़ीदा किया है।⁸ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि "मैंने कुबूलियत के वक़्त तेरी सुनी, और नज़ात के दिन तेरी मदद की; और मैं तेरी हिफ़ाज़त करूँगा और लोगों के लिए तुझे एक 'अहद ठहराऊँगा, ताकि मुल्क को बहाल करे और वीरान मीरास वारिसों को दे; ⁹ ताकि तू कैदियों को कहे, कि 'निकल चलो,' और उनको जो अन्धेरे में हैं, कि 'अपने आपको दिखलाओ।'" वह रास्तों में चरेंगे और सब नंगे टीले उनकी चरागाहें होंगे। ¹⁰ वह न भूके होंगे न प्यासे, और न गर्मी और धूप से उनको ज़रर पहुँचेगा; क्योंकि वह जिसकी रहमत उन पर है उनका रहनुमा होगा, और पानी के सोतों की तरफ़ उनकी रहबरी करेगा। ¹¹ और मैं अपने सारे पहाड़ों को एक रास्ता बना दूँगा, और मेरी शाहराहें ऊँची की जाएँगी। ¹² "देख, ये दूर से और ये उत्तर और मगरिब से, और ये सिनीम के मुल्क से आएँगे।" ¹³ ऐ आसमानो, गाओ; ऐ ज़मीन, खुश हो; ऐ पहाड़ो, नग़मा परदाज़ी करो! क्योंकि खुदावन्द ने अपने लोगों को तसल्ली बख़्शी है और अपने रंजूरों पर रहम फ़रमाएगा। ¹⁴ लेकिन सिय्यून कहती है, यहोवाह ने मुझे छोड़ दिया है, और खुदावन्द मुझे भूल गया है। ¹⁵ 'क्या ये मुम्किन है कि कोई माँ अपने शीरख़्वार बच्चे को भूल जाए, और अपने रहम के फ़र्ज़न्द पर तरस न खाए? हाँ, वह शायद भूल जाए, पर मैं तुझे न भूलूँगा। ¹⁶ देख, मैंने तेरी सूरत अपनी हथेलियों पर खोद रखी है; और तेरी शहरपनाह हमेशा मेरे सामने है। ¹⁷ तेरे फ़र्ज़न्द जल्दी करते हैं, और वह जो तुझे बर्बाद करने और उजाड़ने वाले थे, तुझ से निकल जाएँगे। ¹⁸ अपनी आँखें उठा कर चारों तरफ़ नज़र कर, ये सब के सब मिलकर इकट्ठे होते हैं और तेरे पास आते हैं। खुदावन्द फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम कि तू यकीनन इन सबको ज़ेवर की तरह पहन लेगी, और इनसे दुल्हन की तरह आरास्ता होगी। ¹⁹ "क्योंकि तेरी वीरान और उजड़ी जगहों में, और तेरे बर्बाद मुल्क में अब यकीनन बसनेवाले गुंजाइश से ज्यादा होंगे, और तुझ को शारत करनेवाले दूर हो जाएँगे। ²⁰ बल्कि तेरे वह बेटे जो तुझ से ले लिए गए थे, तेरे कानों में फिर कहेंगे, कि बसने की जगह बहुत तंग है, हम को बसने की जगह दे। ²¹ तब तू अपने दिल में कहेगी, 'कौन मेरे लिए इनका बाप हुआ? कि मैं तो बेऔलाद हो गई और अकेली थी, मैं तो जिलावतनी और

आवारगी में रही, सो किसने इनको पाला? देख, मैं तो अकेली रह गई थी; फिर ये कहाँ थे?" ²² खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि "देख, मैं कौमों पर हाथ उठाऊँगा, और उम्मतों पर अपना झण्डा खड़ा करूँगा; और वह तेरे बेटों को अपनी गोद में लिए आएँगे, और तेरी बेटियों को अपने कंधों पर बिठाकर पहुँचाएँगे। ²³ और बादशाह तेरे मुरब्बी होंगे और उनकी बीवियाँ तेरी दाया होंगी। वह तेरे सामने मुँह के बल ज़मीन पर गिरेंगे, और तेरे पाँव की खाक चाटेंगे; और तू जानेगी कि मैं ही खुदावन्द हूँ, जिसके मुन्तज़िर शर्मिन्दा न होंगे।" ²⁴ क्या ज़बरदस्त से शिकार छीन लिया जाएगा? और क्या रास्तबाज़ के कैदी छुड़ा लिए जाएँगे? ²⁵ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि 'ताक़तवर के गुलाम भी ले लिए जाएँगे, और मुहीब का शिकार छुड़ा लिया जाएगा; क्योंकि मैं उससे जो तेरे साथ झगड़ता है, झगड़ा करूँगा और तेरे बच्चों को बचा लूँगा। ²⁶ और मैं तुम पर ज़ुल्म करनेवालों को उन ही का गोश्त खिलाऊँगा, और वह मीठी शराब की तरह अपना ही खून पीकर बदमस्त हो जाएँगे; और हर फ़र्द — ए — बशर जानेगा कि मैं खुदावन्द तेरा नज़ात देनेवाला, और या'कूब का कादिर तेरा फ़िदिया देनेवाला हूँ।

50

¹ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तेरी माँ का तलाक़ नामा जिसे लिख कर मैंने उसे छोड़ दिया कहाँ है? या अपने क़र्ज़ ख़्वाहों में से किसके हाथ मैंने तुम को बेचा? देखो, तुम अपनी शरारतों की वजह से बिक गए, और तुम्हारी ख़ताओं के ज़रिए तुम्हारी माँ को तलाक़ दी गई। ² फिर किस लिए, जब मैं आया तो कोई आदमी न था? और जब मैंने पुकारा, तो कोई ज़वाब देनेवाला न हुआ? क्या मेरा हाथ ऐसा कोताह हो गया है कि छुड़ा नहीं सकता? और क्या मुझ में नज़ात देने की कुदरत नहीं? देखो, मैं अपनी एक धमकी से समन्दर को सुखा देता हूँ, और नहरों को सहरा कर डालता हूँ, उनमें की मछलियाँ पानी के न होने से बदबू हो जाती हैं और प्यास से मर जाती हैं। ³ मैं आसमान को सियाह पोश करता हूँ और उसको टाट उड़ाता हूँ

?????? ?? ????? ?????? ????? ???????

⁴ खुदावन्द खुदा ने मुझ को शागिर्द की ज़बान बख़्शी, ताकि मैं जानूँ कि कलाम के वसीले से किस तरह थके माँदे की मदद करूँ। वह मुझे हर सुबह जगाता है, और मेरा कान लगाता है ताकि शागिर्दों की तरह सुनूँ। ⁵ खुदावन्द खुदा ने मेरे कान खोल दिए, और मैं बाज़ी — ओ — बरग़स्ता न हुआ। ⁶ मैंने अपनी पीठ पीटने वालों के और

अपनी दाढ़ी नोचने वालों के हवाले की, मैंने अपना मुँह रुस्वाई और थूक से नहीं छिपाया। ⁷ लेकिन खुदावन्द खुदा मेरी हिमायत करेगा, और इसलिए मैं शर्मिन्दा न हूँगा; और इसीलिए मैंने अपना मुँह संग — ए — खारा की तरह बनाया और मुझे यकीन है कि मैं शर्मसार न हूँगा। ⁸ मुझे रास्तबाज़ ठहरानेवाला नज़दीक है। कौन मुझ से झगड़ा करेगा? आओ, हम आमने — सामने खड़े हों, मेरा मुखालिफ़ कौन है? वह मेरे पास आए। ⁹ देखो, खुदावन्द खुदा मेरी हिमायत करेगा; कौन मुझे मुजरिम ठहराएगा? देख, वह सब कपड़े की तरह पुराने हो जाएँगे, उनको कीड़े खा जाएँगे। ¹⁰ तुम्हारे बीच कौन है जो खुदावन्द से डरता और उसके खादिम की बातें सुनता है? जो अन्धेरे में चलता और रोशनी नहीं पाता, वह खुदावन्द के नाम पर तवक्कुल करे और अपने खुदा पर भरोसा रखे। ¹¹ देखो, तुम सब जो आग सुलगाते हो और अपने आपको अंगारों से घेर लेते हो, अपनी ही आग के शोलों में और अपने सुलगाए हुए अंगारों में चलो। तुम मेरे हाथ से यही पाओगे, तुम 'ऐजाब में लेट रहोगे।

51

????? ?? ?????? ????? ?? ?????

¹ ऐ लोगो, जो सदाक़त की पैरवी करते हो और खुदावन्द के जोयान हो, मेरी सुनो। उस चट्टान पर जिसमें से तुम काटे गए हो और उस गढ़े के सूराख पर जहाँ से तुम खोदे गए हो, नज़र करो। ² अपने बाप अब्रहाम पर और सारा पर जिससे तुम पैदा हुए निगाह करो कि जब मैंने उसे बुलाया वह अकेला था, पर मैंने उसको बरकत दी और उसको कसरत बख़्शी। ³ यकीनन खुदावन्द सिय्यून को तसल्ली देगा, वह उसके तमाम वीरानों की दिलदारी करेगा, वह उसका वीराना अदन की तरह और उसका सहरा खुदावन्द के बाग़ की तरह बनाएगा; खुशी और शादमानी उसमें पाई जाएगी, शुक्रगुज़ारी और गाने की आवाज़ उसमें होगी। ⁴ मेरी तरफ़ मुत्वज्जिह हो, ऐ मेरे लोगो; मेरी तरफ़ कान लगा, ऐ मेरी उम्मत: क्यूँकि शरी'अत मुझ से सादिर होगी और मैं अपने 'अदल को लोगों की रोशनी के लिए क़ाईम करूँगा। ⁵ मेरी सदाक़त नज़दीक है, मेरी नज़ात ज़ाहिर है, और मेरे बाज़ू लोगों पर हुक्मरानी करेंगे, जज़ीरे मेरा इन्तिज़ार करेंगे और मेरे बाज़ू पर उनका तवक्कुल होगा। ⁶ अपनी आँखें आसमान की तरफ़ उठाओ और नीचे ज़मीन पर निगाह करो; क्यूँकि आसमान धुँवें की तरह ग़ायब हो जायेंगे और ज़मीन कपड़े की तरह पुरानी

हो जाएगी, और उसके बाशिन्दे मच्छरों की तरह मर जाएँगे; लेकिन मेरी नज़ात हमेशा तक रहेगी, और मेरी सदाक़त ख़त्म न होगी। ⁷ “ऐ सच्चाई के जाननेवालों, मेरी सुनो, ऐ लोगो, जिनके दिल में मेरी शरी'अत है; इंसान की मलामत से न डरो और उनकी ता'नाज़नी से परेशान न हो। ⁸ क्यूँकि कीड़ा उनको कपड़े की तरह खाएगा और किर्म उनको पशमीने की तरह खा जाएगा, लेकिन मेरी सदाक़त हमेशा तक रहेगी और मेरी नज़ात नस्ल — दर — नस्ल।” ⁹ जाग, जाग, ऐ खुदावन्द के बाज़ू तवानाई से मुलब्स हो; जाग जैसा पुराने ज़माने में और गुज़िशता नस्लों में क्या तू वही नहीं जिसने रहब' को टुकड़े — टुकड़े किया और अज़दहे को छेदा? ¹⁰ क्या तू वही नहीं जिसने समन्दर या'नी बहर — ए — 'अमीक़ के पानी को सुखा डाला; जिसने बहर की तह को रास्ता बना डाला, ताकि जिनका फ़िदिया दिया गया उसे उबूर करें? ¹¹ फिर वह जिनको खुदावन्द ने मख़लसी बख़्शी लौटेंगे और गाते हुए सिय्यून में आएँगे, और हमेशा सुरूर उनके सिरों पर होगा; वह खुशी और शादमानी हासिल करेंगे और ग़म — ओ — अन्दोह काफ़ूर हो जाएँगे। ¹² “तुम को तसल्ली देनेवाला मैं ही हूँ, तू कौन है जो फ़ानी इंसान से, और आदमज़ाद से जो घास की तरह हो जाएगा डरता है, ¹³ और खुदावन्द अपने खालिक़ को भूल गया है, जिसने आसमान को ताना और ज़मीन की बुनियाद डाली; और तू हर वक़्त ज़ालिम के जोश — ओ — ख़रोश से कि जैसे वह हलाक़ करने को तैयार है, डरता है? पर ज़ालिम का जोश — ओ — ख़रोश कहाँ है? ¹⁴ जिलावतन गुलाम जल्दी से आज़ाद किया जाएगा, वह ग़ार में न मरेगा और उसकी रोटी कम न होगी। ¹⁵ क्यूँकि मैं ही खुदावन्द तेरा खुदा हूँ, जो मौजज़न समन्दर को थमा देता हूँ; मेरा नाम रब्ब — उल — अफ़वाज है। ¹⁶ और मैंने अपना कलाम तेरे मुँह में डाला, और तुझे अपने हाथ के साये तले छिपा रखवा ताकि अफ़लाक़ को खड़ा करूँ” और ज़मीन की बुनियाद डालूँ, और अहल — ए — सिय्यून से कहूँ, 'तुम मेरे लोग हो। ¹⁷ जाग, जाग, उठ ऐ येरूशलेम; तूने खुदावन्द के हाथ से उसके ग़ज़ब का प्याला पिया, तूने डगमगाने का जाम तलछट के साथ पी लिया। ¹⁸ उन सब बेटों में जो उससे पैदा हुए, कोई नहीं जो उसका रहनुमा हो; और उन सब बेटों में जिनको उसने पाला, एक भी नहीं जो उसका हाथ पकड़े। ¹⁹ ये दो हादिसे तुझ पर आ पड़े, कौन तेरा ग़मख़वार होगा? वीरानी और हलाक़त, काल और तलवार; मैं क्यूँकर तुझे तसल्ली दूँ? ²⁰ तेरे बेटे हर कूचे के मदख़ल में ऐसे बेहोश पड़े हैं, जैसे हरन दाम

में, वह खुदावन्द के गजब और तेरे खुदा की धमकी से बेखुद हैं।²¹ इसलिए अब तू जो बदहाल और मस्त है पर मय से नहीं, ये बात सुन; ²² तेरा “खुदावन्द यहोवाह हाँ तेरा खुदा जो अपने लोगों की वकालत करता है यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं डगमगाने का प्याला और अपने क्रहर का जाम तेरे हाथ से ले लूँगा; तू उसे फिर कभी न पिएगी। ²³ और मैं उसे उनके हाथ में दूँगा जो तुझे दुख देते, और जो तुझ से कहते थे, 'झुक जा ताकि हम तेरे ऊपर से गुज़रें', और तूने अपनी पीठ को जैसे ज़मीन, बल्कि गुज़रने वालों के लिए सड़क बना दिया।”

52

???????? ??

¹ जाग जाग ऐ सिय्यून, अपनी शौकत से मुलब्वस हो; ऐ येरूशलेम पाक शहर, अपना खुशनुमा लिबास पहन ले; क्योंकि आगे को कोई नामख़तून या नापाक तुझ में कभी दाख़िल न होगा। ² अपने ऊपर से गर्द झाड़ दे, उठकर बैठ; ऐ येरूशलेम, ऐ गुलाम दुख़तर — ए — सिय्यून, अपनी गर्दन के बंधनों को खोल डाल। ³ क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, तुम मुफ़्त बेचे गए, और तुम बेज़र ही आज़ाद किए जाओगे। ⁴ खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि “मेरे लोग इब्तिदा में मिस्र को गए कि वहाँ मुसाफ़िर होकर रहें, असूरियों ने भी बे वजह उन पर ज़ुल्म किया।” ⁵ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि “अब मेरा यहाँ क्या काम, हालाँकि मेरे लोग मुफ़्त गुलामी में गए हैं? वह जो उन पर मुसल्लत हैं लल्कारते हैं खुदावन्द फ़रमाता है और हर रोज़ मुतवातिर मेरे नाम की तक़ीर की जाती है। ⁶ यकीनन मेरे लोग मेरा नाम जानेंगे, और उस रोज़ समझेंगे कि कहनेवाला मैं ही हूँ, देखो, मैं हाज़िर हूँ।” ⁷ उसके पाँव पहाड़ों पर क्या ही खुशनुमा हैं जो खुशख़बरी लाता है और सलामती का ऐलान करता है और खैरियत की ख़बर और नजात का इश्तिहार देता है जो सिय्यून से कहता है तेरा खुदा सल्लतनत करता है। ⁸ अपने निगहबानों की आवाज़ सुन, वह अपनी आवाज़ बलन्द करते हैं, वह आवाज़ मिलाकर गाते हैं; क्योंकि जब खुदावन्द सिय्यून को वापस आएगा तो वह उसे रू — ब — रू देखेंगे। ⁹ ऐ येरूशलेम के वीरानो, खुशी से ललकारो, मिलकर नग़मा सराई करो, क्योंकि खुदावन्द ने अपनी क्रौम को दिलासा दिया उसने येरूशलेम का फ़िदिया दिया। ¹⁰ खुदावन्द ने अपना पाक बाज़ू तमाम क्रौमों की आँखों के सामने नंगा किया है और ज़मीन सरासर हमारे खुदा की नजात को देखेगी। ¹¹ ऐ खुदावन्द के ज़ुरूफ़ उठाने वालो, ख़ाना हो, ख़ाना हो;

वहाँ से चले जाओ, नापाक चीज़ों को हाथ न लगाओ, उसके बीच से निकल जाओ और पाक हो। ¹² क्योंकि तुम न तो जल्द निकल जाओगे, और न भागनेवाले की तरह चलोगे; क्योंकि खुदावन्द तुम्हारा हरावल, और इस्राईल का खुदा तुम्हारा चन्डावल होगा। ¹³ देखो, मेरा खादिम इक्रबालमन्द होगा, वह आला — ओ — बरतर और निहायत बलन्द होगा। ¹⁴ जिस तरह बहुतेरे तुझ को देखकर दंग हो गए उसका चहरा हर एक बशर से ज़ाइद, और उसका जिस्म बनी आदम से ज्यादा बिगड़ गया था, ¹⁵ उसी तरह वह बहुत सी क्रौमों को पाक करेगा और बादशाह उसके सामने ख़ामोश होंगे; क्योंकि जो कुछ उनसे कहा न गया था, वह देखेंगे; और जो कुछ उन्होंने सुना न था, वह समझेंगे।

53

¹ हमारे पैग़ाम पर कौन ईमान लाया? और खुदावन्द का बाज़ू किस पर ज़ाहिर हुआ? ² लेकिन वह उसके आगे कोपल की तरह, और खुशक ज़मीन से जड़ की तरह फूट निकला है; न उसकी कोई शक़ल और सूरत है, न खूबसूरती; और जब हम उस पर निगाह करें, तो कुछ हुस्न — ओ — जमाल नहीं कि हम उसके मुश्ताक़ हों। ³ वह आदमियों में हकीर — ओ — मर्दूद; मर्द — ए — ग़मनाक, और रंज का आशना था; लोग उससे जैसे रूपोश थे। उसकी तहकीर की गई, और हम ने उसकी कुछ क़दर न जानी। ⁴ तोभी उसने हमारी मशक्क़तें उठा लीं, और हमारे ग़मों को बर्दाश्त किया; लेकिन हमने उसे खुदा का मारा — कूटा और सताया हुआ समझा। ⁵ हालाँकि वह हमारी ख़ताओं की वजह से घायल किया गया, और हमारी बदकिरदारी के ज़रिए' कुचला गया। हमारी ही सलामती के लिए उस पर सियासत हुई, ताकि उसके मार खाने से हम शिफ़ा पाएँ। ⁶ हम सब भेड़ों की तरह भटक गए, हम में से हर एक अपनी राह को फिरा; लेकिन खुदावन्द ने हम सबकी बदकिरदारी उस पर लादी। ⁷ वह सताया गया, तोभी उसने बर्दाश्त की और मुँह न खोला; जिस तरह बर्षा जिसे ज़बह करने को ले जाते हैं, और जिस तरह भेड़ अपने बाल कतरनेवालों के सामने बेज़बान है, उसी तरह वह ख़ामोश रहा। ⁸ वह ज़ुल्म करके और फ़तवा लगाकर उसे ले गए; फिर उसके ज़माने के लोगों में से किसने ख़याल किया कि वह ज़िन्दों की ज़मीन से काट डाला गया? मेरे लोगों की ख़ताओं की वजह से उस पर मार पड़ी। ⁹ उसकी क़ब्र भी शरीरों के बीच ठहराई गई, और वह अपनी मौत में दौलतमन्दों के साथ हुआ; हालाँकि उसने किसी तरह का ज़ुल्म न किया, और उसके मुँह में हरगिज़ छल न

तक वह नज़दीक है उसे पुकारो। ⁷ शरीर अपनी राह को तर्क करे और बदकिरदार अपने खयालों को, और वह खुदावन्द की तरफ़ फिरे और वह उस पर रहम करेगा; और हमारे खुदा की तरफ़ क्योंकि वह कसरत से मु'आफ़ करेगा। ⁸ खुदावन्द फ़रमाता है कि मेरे खयाल तुम्हारे खयाल नहीं, और न तुम्हारी राहें मेरी राहें हैं। ⁹ क्योंकि जिस क़दर आसमान ज़मीन से बलन्द है, उसी क़दर मेरी राहें तुम्हारी राहों से और मेरे खयाल तुम्हारे खयालों से बलन्द हैं। ¹⁰ “क्योंकि जिस तरह आसमान से बारिश होती और बर्फ़ पड़ती है, और फिर वह वहाँ वापस नहीं जाती बल्कि ज़मीन को सेराब करती है, और उसकी शादाबी और रोईदगी का ज़रि'आ होती है ताकि बोनेवाले को बीज और खाने वाले को रोटी दे; ¹¹ उसी तरह मेरा कलाम जो मेरे मुँह से निकलता है होगा, वह बेअन्जाम मेरे पास वापस न आएगा, बल्कि जो कुछ मेरी ख्वाहिश होगी वह उसे पूरा करेगा और उस काम में जिसके लिए मैंने उसे भेजा मो'अस्सिर होगा। ¹² क्योंकि तुम खुशी से निकलोगे और सलामती के साथ खाना किए जाओगे; पहाड़ और टीले तुम्हारे सामने नगमापर्दाज़ होंगे, और मैदान के सब दरख्त ताल देंगे ¹³ काँटों की जगह सनौबर निकलेगा, और झाड़ी के बदले उसका दरख्त होगा; और ये खुदावन्द के लिए नाम और हमेशा निशान होगा जो कभी' न मिटेगा।”

56

??? ???? ? ? ???? ???? ?

¹ खुदावन्द फ़रमाता है कि 'अद्ल को काईम रखो, और सदाक़त को 'अमल में लाओ, क्योंकि मेरी नज़ात नज़दीक है और मेरी सदाक़त ज़ाहिर होने वाली है। ² मुबारक है वह इंसान, जो इस पर 'अमल करता है और वह आदमज़ाद जो इस पर काईम रहता है, जो सबत को मानता और उसे नापाक नहीं करता, और अपना हाथ हर तरह की बुराई से बाज़ रखता है। ³ और बेगाने का फ़र्ज़न्द जो खुदावन्द से मिल गया हरगिज़ न कहे, खुदावन्द मुझे को अपने लोगों से जुदा कर देगा; और खोजा न कहे, कि “देखो, मैं तो सूखा दरख्त हूँ।” ⁴ क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि “वह खोजे जो मेरे सबतों को मानते हैं और उन कामों को जो मुझे पसन्द हैं इस्तिyार करते हैं ⁵ मैं उनको अपने घर में और अपनी चार दीवारी के अन्दर, ऐसा नाम — ओ — निशान बख़्शूंगा जो बेटों और बेटियों से भी बढ़ कर होगा; मैं हर एक को एक अबदी नाम दूँगा जो मिटाया न जाएगा। ⁶ 'और बेगाने की औलाद भी जिन्होंने अपने आपको खुदावन्द से पैवस्ता किया है कि उसकी खिदमत करें,

और खुदावन्द के नाम को 'अज़ीज़ रखें और उसके बन्दे हों, वह सब जो सबत को हिफ़ज़ करके उसे नापाक न करें और मेरे 'अहद पर काईम रहें; ⁷ मैं उनको भी अपने पाक पहाड़ पर लाऊँगा और अपनी 'इबादतगाह में उनको शादमान करूँगा और उनकी सोख्तनी कुर्बानियाँ और उनके ज़बीहे मेरे मज़बह पर मक़बूल होंगे; क्योंकि मेरा घर सब लोगों की 'इबादतगाह कहलाएगा।” ⁸ खुदावन्द खुदा, जो इस्राईल के तितर — बितर लोगों को जमा' करनेवाला है, यूँ फ़रमाता है, कि “मैं उनके सिवा जो उसी के होकर जमा' हुए हैं, औरों को भी उसके पास जमा' करूँगा।” ⁹ ऐ दशती हैवानो, तुम सब के सब खाने को आओ! हाँ, ऐ जंगल के सब दरिन्दो। ¹⁰ उसके निगहबान अन्धे हैं, वह सब जाहिल हैं, वह सब गूँगे कुत्ते हैं जो भौंक नहीं सकते, वह ख्वाब देखनेवाले हैं जो पड़े रहते हैं और ऊँघते रहना पसन्द करते हैं। ¹¹ और वह लालची कुत्ते हैं जो कभी सेर नहीं होते। वह नादान चरवाहे हैं, वह सब अपनी अपनी राह को फिर गए; हर एक हर तरफ़ से अपना ही नफ़ा' ढूँडता है। ¹² हर एक कहता है, तुम आओ, मैं शराब लाऊँगा, और हम खूब नशे में चूर होंगे; और कल भी आज ही की तरह होगा बल्कि इससे बहुत बेहतर।

57

¹ सादिक़ हलाक होता है, और कोई इस बात को खातिर में नहीं लाता; और नेक लोग उठा लिए जाते हैं और कोई नहीं सोचता कि सादिक़ उठा लिया गया ताकि आनेवाली आफ़त से बचे; ² वह सलामती में दाख़िल होता है। हर एक रास्त रू अपने बिस्तर पर आराम पाएगा।

??? ???? ???? ???? ? ? ???? ?

³ लेकिन तुम, ऐ जादूगरनी के बेटो, ऐ ज़ानी और फ़ाहिशा के बच्चों, इधर आगे आओ। ⁴ तुम किस पर ठट्ठा मारते हो? तुम किस पर मुँह फाड़ते और ज़बान निकालते हो? क्या तुम बागी औलाद और दगाबाज़ नस्ल नहीं हो, ⁵ जो बुतों के साथ हर एक हरे बलूत के नीचे अपने आपको बरअंगेस्ता करते और वादियों में चट्टानों के शिगाफ़ों के नीचे बच्चों को ज़बह करते हो? ⁶ वादी के चिकने पत्थर तेरा हिस्सा हैं, वही तेरा हिस्सा हैं; हाँ, तूने उनके लिए तपावन दिया और हदिया पेश किया है; क्या मुझे इन कामों से तिस्कीन होगी? ⁷ एक ऊँचे और बलन्द पहाड़ पर तूने अपना बिस्तर बिछाया है, और उसी पर ज़बीहा ज़बह करने को चढ़ गई। ⁸ और तूने दरवाज़ों और चौखटों के पीछे अपनी यादगार की 'अलामतें नस्ब कीं, और तू मेरे सिवा दूसरे के आगे बेपर्दा

हुई; हाँ, तू चढ़ गई और तूने अपना बिछौना भी बड़ा बनाया और उनके साथ 'अहद कर लिया है; तूने उनके बिस्तर को जहाँ देखा पसन्द किया। ⁹ तू खुशबू लगाकर बादशाह के सामने चली गई और अपने आपको खूब मु'अत्तर किया, और अपने क्रासिद दूर दूर भेजे बल्कि तूने अपने आपको पाताल तक पस्त किया। ¹⁰ तू अपने सफ़र की दराज़ी से थक गई, तोभी तूने न कहा, कि "इससे कुछ फ़ाइदा नहीं, तूने अपनी कुव्वत की ताज़गी पाई इसलिए तू अफ़सुर्दा न हुई। ¹¹ तब तू किससे डरी और किसके खौफ़ से तूने झूट बोला, और मुझे याद न किया और खातिर में न लाई? क्या मैं एक मुदत से खामोश नहीं रहा? तोभी तू मुझ से न डरी। ¹² मैं तेरी सदाक़त की तरफ़ तेरे कामों को फ़ाश करूँगा और उनसे तुझे कुछ नफ़ा' न होगा। ¹³ जब तू फ़रियाद करे, तो जिनको तूने जमा' किया है वह तुझे छुड़ाएँ; ये हवा उन सबको उड़ा ले जाएगी, एक झोंका उनको ले जाएगा; लेकिन मुझ पर तवक्कुल करनेवाला ज़मीन का मालिक होगा और मेरे पाक पहाड़ का वारिस होगा। ¹⁴ तब यूँ कहा जाएगा, राह ऊँची करो, ऊँची करो, हमवार करो, मेरे लोगों के रास्ते से ठोकर का ज़रि'आ दूर करो।" ¹⁵ क्योंकि वह जो 'आली और बलन्द है और हमेशा से हमेशा तक काईम है, जिसका नाम कुददूस है, यूँ फ़रमाता है, मैं बलन्द और मुक़द्दस मक़ाम में रहता हूँ, और उसके साथ भी जो शिकस्ता दिल और फ़रोतन है; ताकि फ़रोतनों की रूह को ज़िन्दा करूँ और शिकस्ता दिलों को हयात बख़्शूँ। ¹⁶ क्योंकि मैं हमेशा न झगड़ूँगा और हमेशा ग़ज़बनाक न रहूँगा, इसलिए कि मेरे सामने रूह और जानें जो मैंने पैदा की हैं बेताब हो जाती हैं। ¹⁷ कि मैं उसके लालच के गुनाह से ग़ज़बनाक हुआ, इसलिए मैंने उसे मारा, मैंने अपने आपको छिपाया और ग़ज़बनाक हुआ; इसलिए कि वह उस राह पर जो उसके दिल ने निकाली, भटक गया था। ¹⁸ मैंने उसकी राहें देखीं, और मैं ही उसे शिफ़ा बख़्शूँगा; मैं उसकी रहबरी करूँगा, और उसको और उसके ग़मख़वारों को फिर दिलासा दूँगा। ¹⁹ खुदावन्द फ़रमाता हैं, मैं लबों का फल पैदा करता हूँ, सलामती! सलामती उसको जो दूर है, और उसको जो नज़दीक है, और मैं ही उसे सिहत बख़्शूँगा। ²⁰ लेकिन शरीर तो समन्दर की तरह हैं जो हमेशा मौजज़न और बेक्रार है, जिसका पानी कीचड़ और गन्दगी उछालता है। ²¹ मेरा खुदा फ़रमाता है, कि "शरीरों के लिए सलामती नहीं।"

2222 22 22222 2222222

¹ गला फाड़ कर चिल्ला देगा न कर नरसिंगे की तरह अपनी आवाज़ बलन्द कर, और मेरे लोगों पर उनकी खता और या'कूब के घराने पर उनके गुनाहों को जाहिर कर। ² वह रोज़ — ब — रोज़ मेरे तालिब हैं और उस क्रौम की तरह जिसने सदाक़त के काम किए और अपने खुदा के अहकाम को तर्क न किया, मेरी राहों को दरियाफ़्त करना चाहते हैं; वह मुझ से सदाक़त के अहकाम तलब करते हैं, वह खुदा की नज़दीकी चाहते हैं। ³ वह कहते हैं, 'हम ने किस लिए रोज़े रखे, जब कि तू नज़र नहीं करता; और हम ने क्यों अपनी जान को दुख दिया, जब कि तू खयाल में नहीं लाता? देखो, तुम अपने रोज़े के दिन में अपनी खुशी के तालिब रहते हो, और सब तरह की सख्त मेहनत लोगों से कराते हो। ⁴ देखो, तुम इस मक़सद से रोज़ा रखते हो कि झगड़ा — रगड़ा करो, और शरारत के मुक्के मारो; फिर अब तुम इस तरह का रोज़ा नहीं रखते हो कि तुम्हारी आवाज़ 'आलम — ए — बाला पर सुनी जाए। ⁵ क्या ये वह रोज़ा है जो मुझ को पसन्द है? ऐसा दिन कि उसमें आदमी अपनी जान को दुख दे और अपने सिर को झाऊ की तरह झुकाए, और अपने नीचे टाट और राख बिछाए; क्या तू इसको रोज़ा और ऐसा दिन कहेगा जो खुदावन्द का मक़बूल हो? ⁶ "क्या वह रोज़ा जो मैं चाहता हूँ ये नहीं कि ज़ुल्म की ज़ंजीरें तोड़ें और जूए के बन्धन खोलें, और मज़लूमों को आज़ाद करें बल्कि हर एक जूए को तोड़ डालें? ⁷ क्या ये नहीं कि तू अपनी रोटी भूकों को खिलाए, और ग़रीबों को जो आवारा हैं अपने घर में लाए; और जब किसी को नंगा देखे तो उसे पहिनाए, और तू अपने हमजिन्स से रूपोशी न करे? ⁸ तब तेरी रोशनी सुबह की तरह फूट निकलेगी और तेरी सेहत की तरक्की जल्द जाहिर होगी; तेरी सदाक़त तेरी हरावल होगी और खुदावन्द का जलाल तेरा चन्डावल होगा। ⁹ तब तू पुकारेगा और खुदावन्द जवाब देगा, तू चिल्लाएगा और वह फ़रमाएगा, 'मैं यहाँ हूँ।" अगर तू उस जूए को और उंगलियों से इशारा करने की, और हरज़ागोई को अपने बीच से दूर करेगा, ¹⁰ और अगर तू अपने दिल को भूके की तरफ़ माइल करे और आजुर्दा दिल को आसूदा करे, तो तेरा नूर तारीकी में चमकेगा और तेरी तीरगी दोपहर की तरह हो जाएगी। ¹¹ और खुदावन्द हमेशा तेरी रहनुमाई करेगा, और खुशक साली में तुझे सेर करेगा और तेरी हड्डियों को कुव्वत बख़्शेगा; तब तू सेराब बाग़ की तरह होगा और उस चश्मे की तरह जिसका पानी कम न हो। ¹² और तेरे लोग पुराने वीरान

मकानों को ता'मीर करेंगे, और तू पुश्त — दर — पुश्त की बुनियादों को खड़ा करेगा, और तू रखने का बन्द करनेवाला और आबादी के लिए राह का दुरुस्त करने वाला कहलाएगा। ¹³ “अगर तू सबत के रोज़ अपना पाँव रोक रखे, और मेरे मुक़द्दस दिन में अपनी खुशी का तालिब न हो, और सबत को राहत और खुदावन्द का मुक़द्दस और मु'अज़्ज़म कहे और उसकी ता'ज़ीम करे, अपना कारोबार न करे, और अपनी खुशी और बेफ़ाईदा बातों से दस्तबरदार रहे; ¹⁴ तब तू खुदावन्द में मसरूर होगा और मैं तुझे दुनिया की बलन्दियों पर ले चलूँगा, और मैं तुझे तेरे बाप या'कूब की मीरास से खिलाऊँगा; क्योंकि खुदावन्द ही के मुँह से ये इरशाद हुआ है।”

59

????? ???? ? ? ???? ???? ???? ???? ?

¹ देखो खुदावन्द का हाथ छोटा नहीं हो गया कि बचा न सके, और उसका कान भारी नहीं कि सुन न सके; ² बल्कि तुम्हारी बदकिरदारी ने तुम्हारे और तुम्हारे खुदा के बीच जुदाई कर दी है, और तुम्हारे गुनाहों ने उसे तुम से छिपा लिया, ऐसा कि वह नहीं सुनता। ³ क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से और तुम्हारी उंगलियाँ बदकिरदारी से आलूदा हैं तुम्हारे लब झूट बोलते और तुम्हारी ज़बान शरारत की बातें बकती है। ⁴ कोई इन्साफ़ की बातें पेश नहीं करता और कोई सच्चाई से हुज्जत नहीं करता, वह झूट पर भरोसा करते हैं और झूट बोलते हैं वह ज़ियानकारी से बारदार होकर बदकिरदारी को जन्म देते हैं। ⁵ वह अज़दहे के अंडे सेते और मकड़ी का जाला तनते हैं; जो उनके अंडों में से कुछ खाए मर जाएगा, और जो उनमें से तोड़ा जाए उससे अज़दहा निकलेगा। ⁶ उनके जाले से पोशाक नहीं बनेगी, वह अपनी दस्तकारी से मुलब्स न होंगे। उनके आ'माल बदकिरदारी के हैं, और जुल्म का काम उनके हाथों में है। ⁷ उनके पाँव बुराई की तरफ़ दौड़ते हैं, और वह बेगुनाह का खून बहाने के लिए जल्दी करते हैं; उनके खयालात बदकिरदारी के हैं, तबाही और हलाकत उनकी राहों में है। ⁸ वह सलामती का रास्ता नहीं जानते, और उनके चाल चलन में इन्साफ़ नहीं; वह अपने लिए टेढ़ी राह बनाते हैं जो कोई उसमें जाएगा सलामती को न देखेगा। ⁹ इसलिए इन्साफ़ हम से दूर है, और सदाक़त हमारे नज़दीक नहीं आती; हम नूर का इन्तिज़ार करते हैं, लेकिन देखो तारीकी है; और रोशनी का, लेकिन अन्धेरे में चलते हैं। ¹⁰ हम दीवार को अन्धे की तरह टटोलते हैं, हाँ, यूँ टटोलते हैं कि जैसे हमारी आँखें नहीं; हम दोपहर को यूँ ठोकर खाते हैं जैसे

रात हो गई, हम तन्दरुस्तों के बीच जैसे मुर्दा हैं। ¹¹ हम सब के सब रीछों की तरह गुराते हैं और कबूतरों की तरह कुढ़ते हैं, हम इन्साफ़ की राह तकते हैं, लेकिन वह कहीं नहीं; और नजात के मुन्तज़िर हैं, लेकिन वह हम से दूर है। ¹² क्योंकि हमारी खताएँ तेरे सामने बहुत हैं और हमारे गुनाह हम पर गवाही देते हैं, क्योंकि हमारी खताएँ हमारे साथ हैं और हम अपनी बदकिरदारी को जानते हैं; ¹³ कि हम ने खता की, खुदावन्द का इन्कार किया, और अपने खुदा की पैरवी से बरग़स्ता हो गए; हम ने जुल्म और सरकशी की बातें कीं, और दिल में झूठ तसव्वुर करके दरोड़ोई की। ¹⁴ 'अदालत हटाई गई और इन्साफ़ दूर खड़ा हो रहा; सदाक़त बाज़ार में गिर पड़ी, और रास्ती दाख़िल नहीं हो सकती। ¹⁵ हाँ, रास्ती गुम हो गई, और वह जो बुराई से भागता है शिकार हो जाता है। खुदावन्द ने ये देखा और उसकी नज़र में बुरा मा'लूम हुआ कि 'अदालत जाती रही। ¹⁶ और उसने देखा कि कोई आदमी नहीं, और ता'अज़्ज़ुब किया कि कोई शफ़ा'अत करने वाला नहीं; इसलिए उसी के बाज़ू ने उसके लिए नजात हासिल की और उसी की रास्तबाज़ी ने उसे सम्भाला। ¹⁷ हाँ, उसने रास्तबाज़ी का बक्तर पहना और नजात का खूद अपने सिर पर रखवा, और उसने लिबास की जगह इन्तक़ाम की पोशाक पहनी और ग़ैरत के जुब्बे से मुलब्स हुआ। ¹⁸ वह उनको उनके 'आमाल के मुताबिक़ बदला देगा, अपने मुखालिफ़ों पर क्रहर करेगा और अपने दुश्मनों को सज़ा देगा, और जज़ीरों को बदला देगा। ¹⁹ तब पश्चिम के बाशिन्दे खुदावन्द के नाम से डरेंगे, और पूरब के बाशिन्दे उसके जलाल से; क्योंकि वह दरिया के सैलाब की तरह आएगा जो खुदावन्द के दम से रवाँ हो। ²⁰ और खुदावन्द फ़रमाता है, कि सिय्यून में और उनके पास जो या'कूब में खताकारी से बाज़ आते हैं, एक फ़िदिया देनेवाला आएगा। ²¹ क्योंकि उनके साथ मेरा 'अहद ये है, खुदावन्द फ़रमाता है, कि मेरी रूह जो तुझ पर है और मेरी बातें जो मैंने तेरे मुँह में डाली हैं, तेरे मुँह से और तेरी नस्ल के मुँह से, और तेरी नस्ल की नस्ल के मुँह से अब से लेकर हमेशा तक जाती न रहेंगी; खुदावन्द का यही इरशाद है।

60

???????? ? ? ???? ???? ???? ?

¹ उठ मुनव्वर हो क्योंकि तेरा नूर आगया और खुदावन्द का जलाल तुझ पर ज़ाहिर हुआ। ² क्योंकि देख, तारीकी ज़मीन पर छा जाएगी और तीरगी उम्मत्तों पर; लेकिन खुदावन्द तुझ पर ताले' होगा और उसका

जलाल तुझ पर नुमायाँ होगा।³ और क्रौमें तेरी रोशनी की तरफ आयेंगी और सलातीन तेरे तुलू की तजल्ली में चलेंगे।⁴ अपनी आँखें उठाकर चारों तरफ देख, वह सब के सब इकट्ठे होते हैं और तेरे पास आते हैं; तेरे बेटे दूर से आएँगे और तेरी बेटियों को गोद में उठाकर लाएँगे।⁵ तब तू देखेगी और मुनव्वर होगी; हाँ, तेरा दिल उछलेगा और कुशादा होगा क्योंकि समन्दर की फ़िरावानी तेरी तरफ़ फ़िरेगी और क्रौमों की दौलत तेरे पास फ़राहम होगी।⁶ ऊँटों की कतारें और मिदयान और 'ऐफ़ा की सांडनियाँ आकर तेरे गिर्द बेशुमार होंगी; वह सब सबा से आएँगे, और सोना और लुबान लायेंगे और खुदावन्द की हम्द का 'ऐलान करेंगे।⁷ क्रीदार की सब भेड़ें तेरे पास जमा' होंगी, नबायोत के मेंढे तेरी ख़िदमत में हाज़िर होंगे; वह मेरे मज़बह पर मक़बूल होंगे और मैं अपनी शौकत के घर को जलाल बख़्शूंगा।⁸ ये कौन हैं जो बादल की तरह उड़े चले आते हैं, और जैसे कबूतर अपनी काबुक की तरफ़? ⁹ यक्रीनन जज़ीरे मेरी राह देखेंगे, और तरसीस के जहाज़ पहले आएँगे कि तेरे बेटों को उनकी चाँदी और उनके सोने के साथ दूर से खुदावन्द तेरे खुदा और इस्राईल के कुददूस के नाम के लिए लाएँ; क्योंकि उसने तुझे बुज़ुर्गी बख़्शी है।¹⁰ और बेगानों के बेटे तेरी दीवारें बनाएँगे और उनके बादशाह तेरी ख़िदमत गुज़ारी करेंगे अगरचे मैंने अपने क्रहर से तुझे मारा पर अपनी महरबानी से मैं तुझ पर रहम करूँगा।¹¹ और तेरे फाटक हमेशा खुले रहेंगे, वह दिन रात कभी बन्द न होंगे; ताकि क्रौमों की दौलत और उनके बादशाहों को तेरे पास लाएँ।¹² क्योंकि वह क्रौम और वह ममलुकत जो तेरी ख़िदमत गुज़ारी न करेगी, बर्बाद हो जाएगी; हाँ, वह क्रौमें बिल्कुल हलाक की जाएँगी।¹³ लुबनान का जलाल तेरे पास आएगा, सरौ और सनौबर और देवदार सब आएँगे ताकि मेरे घर को आरास्ता करें; और मैं अपने पाँव की कुर्सी को रौनक बख़्शूंगा।¹⁴ और तेरे ग़ारत गरों के बेटे तेरे सामने झुकते हुए आयेंगे और तेरी तहक़ीर करने वाले सब तेरे कदमों पर गिरेंगे; और वह तेरा नाम खुदावन्द का शहर, इस्राईल के कुददूस का सिय्यून रखेंगे।¹⁵ इसलिए कि तू तर्क की गई और तुझसे नफ़रत हुई ऐसा कि किसी आदमी ने तेरी तरफ़ गुज़र भी न किया मैं तुझे हमेशा की फ़ज़ीलत और नसल दर नसल की खुशी का ज़रिया' बनाऊँगा।¹⁶ तू क्रौमों का दूध भी पी लेगी; हाँ बादशाहों की छाती चूसेगी और तू जानेगी कि मैं खुदावन्द तेरा नजात देनेवाला और या'कूब का क़ादिर तेरा फ़िदिया देने वाला हूँ।¹⁷ मैं पीतल के बदले सोना लाऊँगा, और लोहे के बदले चाँदी

और लकड़ी के बदले पीतल और पत्थरों के बदले लोहा; और मैं तेरे हाकिमों को सलामती, और तेरे 'आमिलों को सदाक़त बनाऊँगा।¹⁸ फिर कभी तेरे मुल्क में ज़ुल्म का ज़िक्र न होगा, और न तेरी हदों के अन्दर ख़राबी या बर्बादी का; बल्कि तू अपनी दीवारों का नाम नजात और अपने फाटकों का हम्द रखेगी।¹⁹ फिर तेरी रोशनी न दिन को सूरज से होगी न चाँद के चमकने से, बल्कि खुदावन्द तेरा हमेशा का नूर और तेरा खुदा तेरा जलाल होगा।²⁰ तेरा सूरज फिर कभी न ढलेगा और तेरे चाँद को ज़वाल न होगा, क्योंकि खुदावन्द तेरा हमेशा का नूर होगा और तेरे मातम के दिन ख़त्म हो जाएँगे।²¹ और तेरे लोग सब के सब रास्तबाज़ होंगे; वह हमेशा तक मुल्क के वारिस होंगे, या'नी मेरी लगाई हुई शाख़ और मेरी दस्तकारी ठहरेंगे ताकि मेरा जलाल ज़ाहिर हो।²² सबसे छोटा एक हज़ार हो जाएगा और सबसे हकीर एक ज़बरदस्त क्रौम। मैं खुदावन्द ठीक वक़्त पर ये सब कुछ जल्द करूँगा।

61

???? ???? ???? ? ? ???? ???? ???? ?

¹ खुदावन्द खुदा की रूह मुझ पर है क्योंकि उसने मुझे मसह किया ताकि हलीमों को खुशख़बरी सुनाऊँ; उसने मुझे भेजा है कि शिकस्ता दिलों को तसल्ली दूँ, कैदियों के लिए रिहाई और गुलामों के लिए आज़ादी का 'ऐलान करूँ,² ताकि खुदावन्द के साल — ए — मक़बूल का और अपने खुदा के इन्तक़ाम के दिन का इश्तिहार दूँ, और सब ग़मगीनों को दिलासा दूँ।³ सिय्यून के ग़मज़दों के लिए ये मुक़र्रर कर दूँ कि उनको राख़ के बदले सेहरा और मातम की जगह खुशी का रौग़न, और उदासी के बदले इबादत का ख़िल'अत बख़्शूँ, ताकि वह सदाक़त बलूतों के दरख़्त और खुदावन्द के लगाए हुए कहलाएँ कि उसका जलाल ज़ाहिर हो।⁴ तब वह पुराने उजाड़ मकानों को ता'मीर करेंगे और पुरानी वीरानियों को फिर बिना करेंगे, और उन उजड़े शहरों की मरम्मत करेंगे जो नसल — दर — नसल उजाड़ पड़े थे।⁵ परदेसी आ खड़े होंगे और तुम्हारे गल्लों को चराएँगे, और बेगानों के बेटे तुम्हारे हल चलानेवाले और ताकिस्तानों में काम करनेवाले होंगे।⁶ लेकिन तुम खुदावन्द के काहिन कहलाओगे, वह तुम को हमारे खुदा के खादिम कहेंगे; तुम क्रौमों का माल खाओगे और तुम उनकी शौकत पर फ़ख़र करोगे।⁷ तुम्हारी शर्मिन्दगी का बदले दो चन्द मिलेगा, वह अपनी रुस्वाई के बदले अपने हिस्से से खुश होंगे; तब वह अपने मुल्क में दो चन्द के मालिक होंगे और उनको हमेशा की खुशी होगी।⁸ क्योंकि मैं खुदावन्द इन्साफ़ को 'अज़ीज़ रखता हूँ और

गारतगरी और जुल्म से नफ़रत करता हूँ; सो मैं सच्चाई से उनके कामों का अज़र दूँगा और उनके साथ हमेशा का 'अहद बाँधूंगा।⁹ उनकी नस्ल क्रौमों के बीच नामवर होगी, और उनकी औलाद लोगों के बीच; वह सब जो उनको देखेंगे, इक्रार करेंगे कि ये वह नस्ल है जिसे खुदावन्द ने बरकत बरूषी है।¹⁰ मैं खुदावन्द से बहुत खुश हूँगा, मेरी जान मेरे खुदा में मसरूर होगी, क्योंकि उसने मुझे नजात के कपड़े पहनाए, उसने रास्तबाज़ी के खिल'अत से मुझे मुलब्स किया जैसे दुल्हा सेहरे से अपने आपको आरास्ता करता है और दुल्हन अपने जेवरों से अपना सिंगार करती है।¹¹ क्योंकि जिस तरह ज़मीन अपने नबातात को पैदा करती है, और जिस तरह बाग़ उन चीज़ों को जो उसमें बोई गई हैं उगाता है; उसी तरह खुदावन्द खुदा सदाक़त और इबादत को तमाम क्रौमों के सामने ज़हूर में लाएगा।

62

~~~~~

<sup>1</sup> सिय्यून की खातिर मैं चुप न रहूँगा और येरूशलेम की खातिर मैं दम न लूँगा, जब तक कि उसकी सदाक़त नूर की तरह न चमके और उसकी नजात रोशन चराग़ की तरह जलवागर न हो।<sup>2</sup> तब क्रौमों पर तेरी सदाक़त और सब बादशाहों पर तेरी शौकत ज़ाहिर होगी, और तू एक नये नाम से कहलाएगी जो खुदावन्द के मुँह से निकलेगा।<sup>3</sup> और तू खुदावन्द के हाथ में जलाली ताज और अपने खुदा की हथेली में शाहाना अफ़सर होगी।<sup>4</sup> तू आगे को मतरूका न कहलाएगी, और तेरे मुल्क का नाम फिर कभी ख़राब न होगा: बल्कि तू 'प्यारी' और तेरी सरज़मीन सुहागन कहलाएगी; क्योंकि खुदावन्द तुझ से खुश है, और तेरी ज़मीन खाविन्द वाली होगी।<sup>5</sup> क्योंकि जिस तरह जवान मर्द कुंवारी 'औरत को ब्याह लाता है, उसी तरह तेरे बेटे तुझे ब्याह लेंगे; और जिस तरह दुल्हा दुल्हन में राहत पाता है, उसी तरह तेरा खुदा तुझ में मसरूर होगा।<sup>6</sup> ऐ येरूशलेम, मैंने तेरी दीवारों पर निगहबान मुक़र्रर किए हैं; वह दिन रात कभी ख़ामोश न होंगे। ऐ खुदावन्द का ज़िक्र करनेवाला, ख़ामोश न हो।<sup>7</sup> और जब तक वह येरूशलेम को क़ाईम करके इस ज़मीन पर महमूद न बनाए, उसे आराम न लेने दो।<sup>8</sup> खुदावन्द ने अपने दहने हाथ और अपने क़वी बाज़ू की क़सम खाई है, कि "य़कीनन मैं आगे को तेरा ग़ल्ला तेरे दुश्मनों के खाने को न दूँगा; और बेगानों के बेटे तेरी मय, जिसके लिए तूने मेहनत की, नहीं पीएँगे; <sup>9</sup> बल्कि वही जिन्होंने फ़स्त जमा' की है, उसमें से खाएँगे और

खुदावन्द की हम्द करेंगे, और वह जो ज़ख़ीरे में लाए हैं उसे मेरे मक़दिस की बारगाहों में पीएँगे।<sup>10</sup> गुज़र जाओ, फाटकों में से गुज़र जाओ, लोगों के लिए राह दुरुस्त करो, और शाहराह ऊँची और बलन्द करो, पत्थर चुनकर साफ़ कर दो, लोगों के लिए झण्डा खड़ा करो।<sup>11</sup> देख, खुदावन्द ने इन्तिहा — ए — ज़मीन तक ऐलान कर दिया है, दुख़्तर — ए — सिय्यून से कहो, देख, तेरा नजात देनेवाला आता है; देख, उसका बदला उसके साथ और उसका काम उसके सामने है।"<sup>12</sup> और वह पाक लोग और खुदावन्द के ख़रीदे हुए कहलाएँगे, और तू मत्तूबा या'नी ग़ैर — मतरूक शहर कहलाएगी।

## 63

~~~~~

¹ ये कौन है जो अदोम से और सुख़ लबास पहने बसराह से आता है? ये जिसका लबास दरख़शां है और अपनी तवानाई की बुज़ुर्गी से ख़रामान है ये मैं हूँ, जो सादिक़ — उल — क्रौल और नजात देने पर क़ादिर हूँ।² तेरी लबास क्यूँ सुख़ है? तेरा लबास क्यूँ उस शख़्स की तरह है जो अंगूर हौज़ में रौंदता है? ³ "मैंने तन — ए — तन्हा अंगूर हौज़ में रौंदें और लोगों में से मेरे साथ कोई न था; हाँ, मैंने उनको अपने क़हर में लताड़ा, और अपने जोश में उनको रौंदा; और उनका खून मेरे लबास पर छिड़का गया, और मैंने अपने सब कपड़ों को आलूदा किया।⁴ क्यूँकि इन्तक़ाम का दिन मेरे दिल में है, और मेरे ख़रीदे हुए लोगों का साल आ पहुँचा है।⁵ मैंने निगाह की और कोई मददगार न था, और मैंने ता'अज़्जुब किया कि कोई संभालने वाला न था; पस मेरे ही बाज़ू से नजात आई, और मेरे ही क़हर ने मुझे संभाला।⁶ हाँ, मैंने अपने क़हर से लोगों को लताड़ा, और अपने ग़ज़ब से उनको मदहोश किया और उनका खून ज़मीन पर बहा दिया।"⁷ मैं खुदावन्द की शफ़क़त का ज़िक्र करूँगा, खुदावन्द ही की इबादत का, उस सबके मुताबिक़ जो खुदावन्द ने हम को इनायत किया है; और उस बड़ी मेहरबानी का जो उसने इस्राईल के घराने पर अपनी ख़ास रहमत और फ़िरावान शफ़क़त के मुताबिक़ ज़ाहिर की है।⁸ क्यूँकि उसने फ़रमाया, य़कीनन वह मेरे ही लोग हैं, ऐसी औलाद जो बेवफ़ाई न करेगी; चुनाँचे वह उनका बचानेवाला हुआ।⁹ उनकी तमाम मुसीबतों में वह मुसीबतज़दा हुआ और उसके सामने के फ़रिश्ते ने उनको बचाया, उसने अपनी उलफ़त और रहमत से उनका फ़िदिया दिया; उसने उनको उठाया और पहले से हमेशा उनको लिए फिरा।¹⁰ लेकिन वह

बागी हुए, और उन्होंने उसकी रूह — ए — कुदूस को गमगीन किया; इसलिए वह उनका दुश्मन हो गया और उनसे लड़ा। ¹¹ फिर उसने अगले दिनों को और मूसा को और अपने लोगों को याद किया, और फ़रमाया, वह कहाँ है, जो उनको अपने गल्ले के चौपानों के साथ समन्दर में से निकाल लाया? वह कहाँ है, जिसने अपनी रूह — ए — कुदूस उनके अन्दर डाली? ¹² जिसने मूसा के दहने हाथ पर अपने जलाली बाजू को साथ कर दिया, और उनके आगे पानी को चीरा ताकि अपने लिए हमेशा का नाम पैदा करे, ¹³ जो गहराओ में से उनको इस तरह ले गया जिस तरह वीराने में से घोड़ा, ऐसा कि उन्होंने ठोकर न खाई? ¹⁴ जिस तरह मवेशी वादी में चले जाते हैं, उसी तरह खुदावन्द की रूह उनको आरामगाह में लाई; और उसी तरह तूने अपनी क्रौम को हिदायत की, ताकि तू अपने लिए जलील नाम पैदा करे। ¹⁵ आसमान पर से निगाह कर, और अपने पाक और जलील घर से देख। तेरी ग़ैरत और तेरी कुदरत के काम कहाँ हैं? तेरी दिली रहमत और तेरी शफ़क़त जो मुझ पर थी ख़त्म हो गई। ¹⁶ यक़ीनन तू हमारा बाप है, अगरचे अब्रहाम हम से नावाक़िफ़ हो और इस्राईल हम को न पहचाने; तू, ऐ खुदावन्द, हमारा बाप और फ़िदया देने वाला है तेरा नाम अज़ल से यही है। ¹⁷ ऐ खुदावन्द, तूने हम को अपनी राहों से क्यूँ गुमराह किया, और हमारे दिलों को सख़्त किया कि तुझ से न डरें? अपने बन्दों की खातिर अपनी मीरास के क़बाइल की खातिर बाज़ आ। ¹⁸ तेरे पाक लोग थोड़ी देर तक क़ाबिज़ रहे; अब हमारे दुश्मनों ने तेरे मक़दिस को पामाल कर डाला है। ¹⁹ हम तो उनकी तरह हुए जिन पर तूने कभी हुकूमत न की, और जो तेरे नाम से नहीं कहलाते।

64

¹ काश कि तू आसमान को फाड़े और उतर आए कि तेरे सामने पहाड़ लरज़िश खाएँ। ² जिस तरह आग सूखी डालियों को जलाती है और पानी आग से जोश मारता है ताकि तेरा नाम तेरे मुखालिफ़ों में मशहूर हो और क्रौम तेरे सामने में लरज़ाँ हों। ³ जिस वक़्त तूने बड़े काम किए जिनके हम मुन्तज़िर न थे, तू उतर आया और पहाड़ तेरे सामने काँप गए। ⁴ क्यूँकि शुरू ही से न किसी ने सुना, न किसी के कान तक पहुँचा और न आँखों ने तेरे सिवा ऐसे खुदा को देखा, जो अपने इन्तिज़ार करनेवाले के लिए कुछ कर दिखाए। ⁵ तू उससे मिलता है जो खुशी से सदाक़त के काम करता है, और उनसे जो तेरी राहों में तुझे याद रखते हैं; देख, तू ग़ज़बनाक हुआ क्यूँकि हम ने गुनाह किया, और मुदत तक उसी में रहे; क्या

हम नजात पाएँगे? ⁶ और हम तो सब के सब ऐसे हैं जैसे नापाक चीज़ और हमारी तमाम रस्तबाज़ी नापाक लिबास की तरह है। और हम सब पत्ते की तरह कुमला जाते हैं, और हमारी बदकिरदारी आँधी की तरह हम को उड़ा ले जाती है। ⁷ और कोई नहीं जो तेरा नाम ले, जो अपने आपको आमादा करे कि तुझ से लिपटा रहे; क्यूँकि हमारी बदकिरदारी की वजह से तू हम से छिपा रहा और हम को पिघला डाला। ⁸ तोभी ऐ खुदावन्द, तू हमारा बाप है; हम मिट्टी है और तू हमारा कुम्हार है, और हम सब के सब तेरी दस्तकारी हैं। ⁹ ऐ खुदावन्द, ग़ज़बनाक न हो और बदकिरदारी को हमेशा तक याद न रख; देख, हम तेरी मिन्नत करते हैं, हम सब तेरे लोग हैं। ¹⁰ तेरे पाक शहर वीराने बन गए, सिय्यून सुनसान और येरूशलेम वीरान है। ¹¹ हमारा खुशनुमा मक़दिस जिसमें हमारे बाप दादा तेरी इबादत करते थे, आग से जलाया गया और हमारी उम्दा चीज़ें बर्बाद हो गईं। ¹² ऐ खुदावन्द, क्या तू इस पर भी अपने आप को रोकेगा? क्या तू खामोश रहेगा और हम को यूँ बदहाल करेगा?

65

???????? ?? ????? ?????

¹ जो मेरे तालिब न थे, मैं उनकी तरफ़ मुतवज्जिह हुआ; जिन्होंने मुझे ढूँढा न था, मुझे पा लिया; मैंने एक क्रौम से जो मेरे नाम से नहीं कहलाती थी, फ़रमाया, देख, मैं हाज़िर हूँ। ² मैंने नाफ़रमान लोगों की तरफ़ जो अपनी फ़िक़रों की पैरवी में बुरी राह पर चलते हैं, हमेशा हाथ फैलाए; ³ ऐसे लोग जो हमेशा मेरे सामने, बाग़ों में कुर्बानियाँ करने और ईंटों पर खुशबू जलाने से मुझे गुस्सा दिलाते हैं; ⁴ जो क़ब्रों में बैठते, और पोशीदा जगहों में रात काटते, और सूअर का गोश्त खाते हैं; और जिनके बर्तनों में नफ़रती चीज़ों का शोर्बा मौजूद है; ⁵ जो कहते तू अलग ही खड़ा रह मेरे नज़दीक न आ क्यूँकि मैं तुझ से ज्यादा पाक हूँ। ये मेरी नाक में धुवें की तरह और दिन भर जलने वाली आग की तरह हैं। ⁶ देखो, मेरे सामने ही लिखा हुआ है तब मैं खामोश न रहूँगा बल्कि बदला दूँगा खुदावन्द फ़रमाता है; हाँ, उनकी गोद में डाल दूँगा ⁷ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, तुम्हारी और तुम्हारे बाप दादा की बदकिरदारी का बदला इकट्ठा दूँगा, जो पहाड़ों पर खुशबू जलाते और टीलों पर मेरा इन्कार करते थे; इसलिए मैं पहले उनके कामों को उनकी गोद में नाप कर दूँगा। ⁸ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, जिस तरह शीरा खोशा — ए — अँगूर में मौजूद है, और कोई कहे, उसे ख़राब न कर क्यूँकि उसमें बरकत

है, उसी तरह मैं अपने बन्दों की खातिर करूँगा ताकि उन सबको हलाक न करूँ। ⁹ और मैं या'कूब में से एक नस्ल और यहूदाह में से अपने कोहिस्तान का वारिस खड़ा करूँगा और मेरे बर्गुजीदा लोग उसके वारिस होंगे और मेरे बन्दे वहाँ बसेंगे। ¹⁰ और शारून गल्लों का घर होगा, और 'अकूर की वादी बैलों के बैठने का मकाम, मेरे उन लोगों के लिए जो मेरे तालिब हुए। ¹¹ लेकिन तुम जो खुदावन्द को छोड़ देते और उसके पाक पहाड़ को फ़रामोश करते, और मुश्तरी के लिए दस्तरख्वान चुनते और जुहरा के लिए शराब — ए — मम्ज़ूज का जाम पुर करते हो; ¹² मैं तुम को गिन गिनकर तलवार के हवाले करूँगा, और तुम सब ज़बह होने के लिए झुकोगे; क्योंकि जब मैंने बुलाया तो तुम ने जवाब न दिया, जब मैंने कलाम किया तो तुम ने न सुना; बल्कि तुम ने वही किया जो मेरी नज़र में बुरा था, और वह चीज़ पसन्द की जिससे मैं खुश न था। ¹³ इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि देखो, मेरे बन्दे खाएँगे, लेकिन तुम भूके रहोगे; मेरे बन्दे पिँएँगे, लेकिन तुम प्यासे रहोगे; मेरे बन्दे खुश होंगे लेकिन तुम शर्मिन्दा होगे। ¹⁴ और मेरे बन्दे दिल की खुशी से गाएँगे, लेकिन तुम दिलगीरी की वजह से नाला होगे और जान का ही मातम करोगे। ¹⁵ और तुम अपना नाम मेरे बर्गुजीदों की ला'नत के लिए छोड़ जाओगे, खुदावन्द खुदा तुम को क़त्ल करेगा; और अपने बन्दों को एक दूसरे नाम से बुलाएगा ¹⁶ यहाँ तक कि जो कोई इस ज़मीन पर अपने लिए दु'आ — ए — खैर करे, खुदाए — बरहक के नाम से करेगा और जो कोई ज़मीन में क़सम खाए, खुदा — ए — बरहक के नाम से खाएगा; क्योंकि गुज़री हुई मुसीबतें फ़रामोश हो गई और वह मेरी आँखों से पोशीदा हैं। ¹⁷ क्योंकि देखो, मैं नये आसमान और नई ज़मीन को पैदा करता हूँ; और पहली चीज़ों का फिर ज़िक्र न होगा और वह खयाल में न आएँगी। ¹⁸ बल्कि तुम मेरी इस नई पैदाइश से हमेशा की खुशी और शादमानी करो, क्योंकि देखो, मैं येरूशलेम को खुशी और उसके लोगों को ख़ुरमी बनाऊँगा। ¹⁹ और मैं येरूशलेम से खुश और अपने लोगों से मसरूर हूँगा, और उसमें रोने की पुकार और नाला की आवाज़ फिर कभी सुनाई न देगी। ²⁰ फिर कभी वहाँ कोई ऐसा लड़का न होगा जो कम उम्र रहे, और न कोई ऐसा बूढ़ा जो अपनी उम्र पूरी न करे; क्योंकि लड़का सौ बरस का होकर मरेगा, और जो गुनाहगार सौ बरस का हो जाए, मला'ऊन होगा। ²¹ वह घर बनाएँगे और उनमें बसेंगे, वह ताकिस्तान लगाएँगे और उनके मेवे खाएँगे; ²² न कि वह बनाएँ और दूसरा बसे, वह लगाएँ और दूसरा

खाएँ; क्योंकि मेरे बन्दों के दिन दरख्त के दिनों की तरह होंगे, और मेरे बर्गुजीदा अपने हाथों के काम से मुद्तों तक फ़ायदा उठाएँगे ²³ उनकी मेहनत बेकार न होगी, और उनकी औलाद अचानक हलाक न होगी; क्योंकि वह अपनी औलाद के साथ खुदावन्द के मुबारक लोगों की नसल हैं। ²⁴ और यूँ होगा कि मैं उनके पुकारने से पहले जवाब दूँगा, और वह अभी कह न चुकेंगे कि मैं सुन लूँगा। ²⁵ भेड़िया और बर्ग इकट्ठे चरेंगे, और शेर — ए — बबर बैल की तरह भूसा खाएगा, और साँप की खुराक खाक होगी। वह मेरे तमाम पाक पहाड़ पर न ज़रर पहुँचाएँगे न हलाक करेंगे, खुदावन्द फ़रमाता है।

66

¹ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि आसमान मेरा तख्त है और ज़मीन मेरे पाँव की चौकी; तुम मेरे लिए कैसा घर बनाओगे, और कौन सी जगह मेरी आरामगाह होगी? ² क्योंकि ये सब चीज़ें तो मेरे हाथ ने बनाई और यूँ मौजूद हुई, खुदावन्द फ़रमाता है। लेकिन मैं उस शख्स पर निगाह करूँगा, उसी पर जो ग़रीब और शिकशता दिल है और मेरे कलाम से काँप जाता है। ³ “जो बैल ज़बह करता है, उसकी तरह है जो किसी आदमी को मार डालता है; और जो बरें की कुर्बानी करता है, उसके बराबर है जो कुत्ते की गर्दन काटता है; जो हदिया लाता है, जैसे सूअर का खून पेश करता है; जो लुबान जलाता है, उसकी तरह है जो बुत को मुबारक कहता है। हाँ, उन्होंने अपनी अपनी राहें चुन लीं और उनके दिल उनकी नफ़रती चीज़ों से मसरूर हैं। ⁴ मैं भी उनके लिए आफ़तों को चुन लूँगा और जिन बातों से वह डरते हैं उन पर लाऊँगा क्योंकि जब मैंने कलाम किया तो उन्होंने न सुना; बल्कि उन्होंने वही किया जो मेरी नज़र में बुरा था, और वह चीज़ पसन्द की जिससे मैं खुश न था।” ⁵ खुदावन्द की बात सुनो, ऐ तुम जो उसके कलाम से काँपते हो; तुम्हारे भाई जो तुम से कीना रखते हैं, और मेरे नाम की खातिर तुम को खारिज कर देते हैं, कहते हैं, 'खुदावन्द की तम्ज़ीद करो, ताकि हम तुम्हारी खुशी को देखें'; लेकिन वही शर्मिन्दा होंगे। ⁶ “शहर से भीड़ का शोर! हैकल की तरफ़ से एक आवाज़! खुदावन्द की आवाज़ है, जो अपने दुश्मनों को बदला देता है! ⁷ पहले इससे कि उसे दर्द लगे, उसने जन्म दिया; और इससे पहले कि उसको दर्द हो, उससे बेटा पैदा हुआ। ⁸ ऐसी बात किसने सुनी? ऐसी चीज़ें किसने देखीं? क्या एक दिन में कोई मुल्क पैदा हो सकता है? क्या एक ही साथ एक क़ौम पैदा हो जाएगी? क्योंकि सिय्यून को दर्द लगे ही थे कि उसकी औलाद पैदा हो

गई।”⁹ खुदावन्द फ़रमाता है, क्या मैं उसे विलादत के वक़्त तक लाऊँ और फिर उससे विलादत न कराऊँ? तेरा खुदा फ़रमाता है, क्या मैं जो विलादत तक लाता हूँ, विलादत से बा'ज़ रखूँ? ¹⁰ “तुम येरूशलेम के साथ खुशी मनाओ और उसकी वजह से खुश हो, उसके सब दोस्तो; जो उसके लिए मातम करते थे, उसके साथ बहुत खुश हो; ¹¹ ताकि तुम दूध पियो और उसकी तसल्ली के पिस्तानों से सेर हो; ताकि तुम निचोड़ो और उसकी शौकत की इफ़रात से फ़ायदा उठाओ।” ¹² क्यूँकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि देख, मैं सलामती नहर की तरह, और क्रौमों की दौलत सैलाब की तरह उसके पास रवाँ करूँगा; तब तुम दूध पियोगे, और बगल में उठाए जाओगे और घुटनों पर कुदाए जाओगे। ¹³ जिस तरह माँ अपने बेटे को दिलासा देती है, उसी तरह मैं तुम को दिलासा दूँगा; येरूशलेम ही मैं तुम तसल्ली पाओगे। ¹⁴ और तुम देखोगे और तुम्हारा दिल खुश होगा, और तुम्हारी हड्डियाँ सब्ज़ा की तरह नशोंनुमा पाएँगी, और खुदावन्द का हाथ अपने बन्दों पर ज़ाहिर होगा, लेकिन उसका क्रहर उसके दुश्मनों पर भड़केगा। ¹⁵ क्यूँकि देखो, खुदावन्द आग के साथ आएगा, और उसके रथ उड़ती धूल की तरह होंगे, ताकि अपने क्रहर को जोश के साथ और अपनी तम्बीह को आग के शो'ले में ज़ाहिर करे। ¹⁶ क्यूँकि आग से और अपनी तलवार से खुदावन्द तमाम बनी आदम का मुक्काबिला करेगा; और खुदावन्द के मक़तूल बहुत से होंगे। ¹⁷ वह जो बाग़ों की वस्त में किसी के पीछे खड़े होने के लिए अपने आपको पाक — ओ — साफ़ करते हैं, जो सूअर का गोश्त और मकरूह चीज़ें और चूहे खाते हैं; खुदावन्द फ़रमाता है, वह एक साथ फ़ना हो जाएँगे। ¹⁸ और मैं उनके काम और उनके मन्सूबे जानता हूँ। वह वक़्त आता है कि मैं तमाम क्रौमों और अहल — ए — लुग़त को जमा' करूँगा और वह आयेंगे और मेरा जलाल देखेंगे, ¹⁹ तब मैं उनके बीच एक निशान खड़ा करूँगा; और मैं उनको जो उनमें से बच निकलें, क्रौमों की तरफ़ भेजूँगा, या'नी तरसीस और पूल और लूद को जो तीरअन्दाज़ हैं, और तूबल और यावान को, और दूर के जज़ीरों को जिन्होंने मेरी शोहरत नहीं सुनी और मेरा जलाल नहीं देखा; और वह क्रौमों के बीच मेरा जलाल बयान करेंगे। ²⁰ और खुदावन्द फ़रमाता है कि वह तुम्हारे सब भाइयों को तमाम क्रौमों में से घोड़ों और रथों पर, और पालकियों में और खच्चरों पर, और साँडनियों पर बिठा कर खुदावन्द के हृदिये के लिए येरूशलेम में मेरे पाक पहाड़ को लाएँगे, जिस तरह से बनी — इस्राईल खुदावन्द के घर में पाक बर्तनों

में हृदिया लाते हैं। ²¹ और खुदावन्द फ़रमाता है कि मैं उनमें से भी काहिन और लावी होने के लिए लूँगा। ²² “खुदावन्द फ़रमाता है, जिस तरह नया आसमान और नई ज़मीन जो मैं बनाऊँगा, मेरे सामने काईम रहेंगे उसी तरह तुम्हारी नसल और तुम्हारा नाम बाक़ी रहेगा। ²³ और यूँ होगा, खुदावन्द फ़रमाता है कि एक नये चाँद से दूसरे तक, और एक सबत से दूसरे तक हर फ़र्द — ए — बशर इबादत के लिए मेरे सामने आएगा। ²⁴ 'और वह निकल निकल कर उन लोगों की लाशों पर जो मुझ से बागी हुए नज़र करेंगे; क्यूँकि उनका कीड़ा न मरेगा और उनकी आग न बुझेगी, और वह तमाम बनी आदम के लिए नफ़रती होंगे।”

यर्मयाह

यर्मयाह अपने कातिब बारूक के साथ। यर्मयाह

जिसने काहिन और नबी बतौर खिदमत की हिलकियाह नाम एक काहिन का बेटा था। 2 सलातीन 22:8 का सरदार काहिन नहीं वह एक छोटे से गांव अंतूत का रहने वाला था (यमेयाह 1:1) बारूक जो यर्मयाह का कातिब था वह उसका हमखिदमत था। उसको यर्मयाह ने सारी बातें लिखवाई और उसी ने नबी के पैगाम को लिखा, तालीफ़ — ओ — तर्तीब दी (यर्मयाह 36:4, 32; 45:1) यर्मयाह को राने वाला नबी भी कहा जाता है (यर्मयाह 9:1; 13:17; 14:17) एक कशमकश भरी ज़िन्दगी गुज़ारी क्योंकि उसने बाबुल के हमलावरों की बाबत पेशबीनी की थी।

इस के तस्नीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 626-570 क़ब्ल

मसीह के बीच है।

यह किताब ग़ालिबन बाबुल की जिलावतनी के दौरान पूरी हुई। हालांकि कुछ उलमा ने लिहाज़ किया कि किताब की मदविन की जाए ताकि बाद में इसे जारी रखा जाए।

यह किताब यहूदा आर यरूशलेम के लोगों के लिए

लिखी गई और बाद में क्रिईन — ए — बाइबल के लिए।

यर्मयाह की किताब उस नए अहद की सब से ज्यादा

साफ़ झलक पेश करती है जिसे खुदा ने अपने लोगों के साथ बांधने का इरादा किया था जब एक बार मसीह ज़मीन पर आया था। यह नया अहद खुदा के लोगों के लिए बहाली का वसीला होगा जब वह अपनी शरीयत पत्थर की तख़्तियों पर लिखने के बदले उनके दिलों में लिखने वाला था। यर्मयाह की किताब यहूदाह के लिए आखरी नबुवत की क़लम्बन्दी यह ख़तरे की अलामत पेश करते हुए कि अगर वह तौबा नहीं करेंगे तो उन की बर्बादी यक़ीनी है। यर्मयाह कौम के लोगों को बुलाता है कि वह खुदा की तरफ़ फ़िरें उसी वक़्त यर्मयाह यहूदा की बुतपरस्ती और बदकारी से तौबा न करने के सबब से उस की बर्बादी के नागुज़ीर हाने को जानता था।

अदालत (इन्साफ़)

बैरूनी खाका

1. खुदा के ज़रिये यर्ममाह की बुलाहट — 1:1-19
2. यहूदा को तंबीह — 2:1-35:19
3. यर्मयाह का दुख उठाना — 36:1-38:28
4. यरूशलेम का ज़वाल और उसके नतीजे — 39:1-45:5
5. क़ौमों की बाबत नबुवतें — 46:1-51:64
6. तारीख़ी ज़मीमा — 52:1-34

1 यर्मियाह — बिन — खिलकियाह की बातें जो — बिनयमीन की ममलुकत में अन्तोती काहिनों में से था; 2 जिस पर खुदावन्द का कलाम शाह — ए — यहूदाह यूसियाह — बिन — अमून के दिनों में उसकी सल्तनत के तेरहवें साल में नाज़िल हुआ। 3 शाह — ए — यहूदाह यहूयक्रीम बिन — यूसियाह के दिनों में भी, शाह — ए — यहूदाह सिदकियाह — बिन — यूसियाह के ग्यारहवें साल के पूरे होने तक अहल — ए — येरूशलेम के गुलामी में जाने तक जो पाँचवें महीने में था, नाज़िल होता रहा।

4 तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, और उसने फ़रमाया, 5 “इससे पहले कि मैंने तुझे बत्न में खल्क किया, मैं तुझे जानता था और तेरी पैदाइश से पहले मैंने तुझे खास किया, और क़ौमों के लिए तुझे नबी ठहराया।” 6 तब मैंने कहा, हाय, खुदावन्द खुदा! देख, मैं बोल नहीं सकता, क्योंकि मैं तो बच्चा हूँ। 7 लेकिन खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, यूँ न कह कि मैं बच्चा हूँ; क्योंकि जिस किसी के पास मैं तुझे भेजूंगा तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे फ़रमाऊंगा तू कहेगा। 8 तू उनके चेहरों को देखकर न डर क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है मैं तुझे छुड़ाने को तेरे साथ हूँ। 9 तब खुदावन्द ने अपना हाथ बढ़ाकर मेरे मुँह को छुआ; और खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया देख मैंने अपना कलाम तेरे मुँह में डाल दिया। 10 देख, आज के दिन मैंने तुझे क़ौमों पर, और सल्तनतों पर मुक़रर किया कि उखाड़े और ढाए, और हलाक करे और गिराए, और ता'मीर करे और लगाए। 11 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया, ऐ यर्मियाह, तू क्या देखता है? मैंने 'अर्ज़ की कि “बादाम के दरख़्त की एक शाख़ देखता हूँ।” 12 और खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, तू ने ख़ूब देखा, क्योंकि मैं अपने कलाम को पूरा करने के लिए बेदार रहता हूँ। 13 दूसरी बार खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया तू क्या देखता है मैंने

अर्ज की कि उबलती हुई देग देखता हूँ, जिसका मुँह उत्तर की तरफ से है। ¹⁴ तब खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, उत्तर की तरफ से इस मुल्क के तमाम बाशिन्दों पर आफ़त आएगी। ¹⁵ क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है, देख, मैं उत्तर की सल्तनतों के तमाम खान्दानों को बुलाऊँगा, और वह आएँगे और हर एक अपना तख़्त येरूशलेम के फाटकों के मदख़ल पर, और उसकी सब दीवारों के चारों तरफ़, और यहूदाह के तमाम शहरों के सामने काईम करेगा। ¹⁶ और मैं उनकी सारी शरारत की वजह से उन पर फ़तवा दूँगा; क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और ग़ैर — मा'बूदों के सामने लुबान जलाया और अपनी ही दस्तकारी को सिज्दा किया। ¹⁷ इसलिए तू अपनी कमर कसकर उठ खड़ा हो, और जो कुछ मैं तुझे फ़रमाऊँ उनसे कह। उनके चेहरों को देखकर न डर, ऐसा न हो कि मैं तुझे उनके सामने शर्मिंदा करूँ। ¹⁸ क्योंकि देख, मैं आज के दिन तुझ को इस तमाम मुल्क, और यहूदाह के बादशाहों और उसके अमीरों और उसके काहिनों और मुल्क के लोगों के सामने, एक फ़सीलदार शहर और लोहे का सुतून और पीतल की दीवार बनाता हूँ। ¹⁹ और वह तुझ से लड़ेंगे, लेकिन तुझ पर ग़ालिब न आएँगे; क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है, मैं तुझे छुड़ाने को तेरे साथ हूँ।

2

22222 22 2222 22222 22 222222
22222

¹ फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया कि ² “तू जा और येरूशलेम के कान में पुकार कर कह कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि 'मैं तेरी जवानी की उल्फ़त, और तेरी शादी की मुहब्बत को याद करता हूँ कि तू वीरान या'नी बंजर ज़मीन में मेरे पीछे पीछे चली। ³ इस्राईल खुदावन्द का पाक, और उसकी अफ़ज़ाइश का पहला फल था; खुदावन्द फ़रमाता है, उसे निगलने वाले सब मुजरिम ठहरेंगे, उन पर आफ़त आएगी।” ⁴ ऐ अहल — ए — या'कूब और अहल — ए — इस्राईल के सब खान्दानों खुदावन्द का कलाम सुनो: ⁵ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि “तुम्हारे बाप — दादा ने मुझ में कौन सी बे — इन्साफ़ी पाई, जिसकी वजह से वह मुझसे दूर हो गए और झूठ की पैरवी करके बेकार हुए? ⁶ और उन्होंने यह न कहा कि 'खुदावन्द कहाँ है जो हमको मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, और वीरान और बंजर और गढ़ों की ज़मीन में से, खुशकी और मौत के साये की सरज़मीन में से, जहाँ से न कोई गुज़रता और न कोई क़याम करता

था, हमको ले आया?” ⁷ और मैं तुम को बाग़ों वाली ज़मीन में लाया कि तुम उसके मेवे और उसके अच्छे फल खाओ; लेकिन जब तुम दाखिल हुए, तो तुम ने मेरी ज़मीन को नापाक कर दिया और मेरी मीरास को मकरूह बनाया। ⁸ काहिनों ने न कहा, कि 'खुदावन्द कहाँ है?' और अहल — ए — शरी'अत ने मुझे न जाना; और चरवाहों ने मुझसे सरकशी की, और नबियों ने बा'ल के नाम से नबुव्वत की और उन चीज़ों की पैरवी की जिनसे कुछ फ़ायदा नहीं। ⁹ इसलिए खुदावन्द फ़रमाता है, मैं फिर तुम से झगड़ूँगा और तुम्हारे बेटों के बेटों से झगड़ा करूँगा। ¹⁰ क्योंकि पार गुज़रकर किच्चीम के जज़ीरों में देखो, और क्रीदार में कासिद भेजकर दरियाफ़्त करो, और देखो कि ऐसी बात कहीं हुई है? ¹¹ क्या किसी क़ौम ने अपने मा'बूदों को, हालाँकि वह खुदा नहीं, बदल डाला? लेकिन मेरी क़ौम ने अपने जलाल को बेफ़ायदा चीज़ से बदला। ¹² खुदावन्द फ़रमाता है, ऐ आसमानो, इससे हैरान हो; शिद्दत से थरथराओ और बिल्कुल वीरान हो जाओ। ¹³ क्योंकि मेरे लोगों ने दो बुराइयाँ कीं: उन्होंने मुझ आब — ए — हयात के चश्मे को छोड़ दिया और अपने लिए हौज़ खोदे हैं शिकस्ता हौज़ जिनमें पानी नहीं ठहर सकता। ¹⁴ क्या इस्राईल गुलाम है? क्या वह खानाज़ाद है? वह किस लिए लूटा गया? ¹⁵ जवान शेर — ए — बबर उस पर गुर्राए और गरजे, और उन्होंने उसका मुल्क उजाड़ दिया। उसके शहर जल गए, वहाँ कोई बसने वाला न रहा। ¹⁶ बनी नूफ़ और बनी तहफ़नीस ने भी तेरी खोपड़ी फोड़ी। ¹⁷ क्या तू खुद ही यह अपने ऊपर नहीं लाई कि तूने खुदावन्द अपने खुदा को छोड़ दिया, जब कि वह तेरी रहबरी करता था? ¹⁸ और अब सीहोर “का पानी पीने को मिस्र की राह में तुझे क्या काम? और दरिया — ए — फ़रात का पानी पीने को असूर की राह में तेरा क्या मतलब? ¹⁹ तेरी ही शरारत तेरी तादीब करेगी, और तेरी नाफ़रमानी तुझ को सज़ा देगी। खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज़, फ़रमाता है, देख और जान ले कि यह बुरा और बहुत ही ज़्यादा बेजा काम है कि तूने खुदावन्द अपने खुदा को छोड़ दिया, और तुझ को मेरा ख़ौफ़ नहीं। ²⁰ क्योंकि मुद्दत हुई कि तूने अपने जुए को तोड़ डाला और अपने बन्धनों के टुकड़े कर डाले, और कहा, 'मैं ताबे' न रहूँगी।” हाँ, हर एक ऊँचे पहाड़ पर और हर एक हरे दरख़्त के नीचे तू बदकारी के लिए लेट गई। ²¹ मैंने तो तुझे कामिल ताक लगाया और उम्दा बीज बोया था, फिर तू क्यूँकर मेरे लिए बेहक़ीक़त जंगली अंगूर का दरख़्त हो गई? ²² हर तरह तू अपने को सज्जी से धोए और बहुत

सा साबुन इस्ते'माल करे, तो भी खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, तेरी शरारत का दाग़ मेरे सामने ज़ाहिर है। ²³ तू क्यूँकर कहती है, 'मैं नापाक नहीं हूँ, मैंने बा'लीम की पैरवी नहीं की'? वादी में अपने चाल — चलन देख, और जो कुछ तूने किया है मा'लूम कर। तू तेज़रौ ऊँटनी की तरह है जो इधर — उधर दौड़ती है; ²⁴ मादा गोरखर की तरह जो वीराने की 'आदी है, जो शहबत के जोश में हवा को सूँघती है; उसकी मस्ती की हालत में कौन उसे रोक सकता है? उसके तालिब मान्दा न होंगे, उसकी मस्ती के दिनों में "वह उसे पा लेंगे। ²⁵ तू अपने पाँव को नंगे पन से और अपने हलक़ को प्यास से बचा। लेकिन तूने कहा, 'कुछ उम्मीद नहीं, हरगिज़ नहीं; क्यूँकि मैं बेगानों पर आशिक़ हूँ और उन्हीं के पीछे जाऊँगी।" ²⁶ जिस तरह चोर पकड़ा जाने पर रुस्वा होता है, उसी तरह इस्राईल का घराना रुस्वा हुआ; वह और उसके बादशाह, और हाकिम और काहिन, और नबी; ²⁷ जो लकड़ी से कहते हैं, 'तू मेरा बाप है, और पत्थर से, 'तू ने मुझे पैदा किया। क्यूँकि उन्होंने मेरी तरफ़ मुँह न किया बल्कि पीठ की; लेकिन अपनी मुसीबत के वक़्त वह कहेंगे, 'उठकर हमको बचा! ²⁸ लेकिन तेरे बुत कहाँ हैं, जिनको तूने अपने लिए बनाया? अगर वह तेरी मुसीबत के वक़्त तुझे बचा सकते हैं तो उठें; क्यूँकि ऐ यहूदाह, जितने तेरे शहर हैं उतने ही तेरे मा'बूद हैं। ²⁹ "तुम मुझसे क्यूँ हुज्जत करोगे? तुम सब ने मुझसे बगावत की है," खुदावन्द फ़रमाता है। ³⁰ मैंने बेफ़ायदा तुम्हारे बेटों को पीटा, वह तरबियत पज़ीर न हुए; तुम्हारी ही तलवार फाड़ने वाले शेर — ए — बबर की तरह तुम्हारे नबियों को खा गई। ³¹ ऐ इस नसल के लोगों, खुदावन्द के कलाम का लिहाज़ करो। क्या मैं इस्राईल के लिए वीरान या तारीकी की ज़मीन हुआ? मेरे लोग क्यूँ कहते हैं, 'हम आज़ाद हो गए, फिर तेरे पास न आएँगे?' ³² क्या कुंवारी अपने ज़ेवर, या दुल्हन अपनी आराइश भूल सकती है? लेकिन मेरे लोग तो मुद्दत — ए — मदीद से मुझ को भूल गए। ³³ तू तलब — ए इश्क़ में अपनी राह को कैसी आरास्ता करती है। यक़ीनन तूने फ़ाहिशा 'औरतों को भी अपनी राहें सिखाई हैं। ³⁴ तेरे ही दामन पर बेगुनाह ग़रीबों का खून भी पाया गया; तूने उनको नक्रब लगाते नहीं पकड़ा; बल्कि इन्हीं सब बातों की वजह से, ³⁵ तो भी तू कहती है, 'मैं बेकुसूर हूँ, उसका ग़ज़ब यक़ीनन मुझ पर से टल जाएगा; देख, मैं तुझ पर फ़तवा दूँगा क्यूँकि तू कहती है, 'मैंने गुनाह नहीं किया। ³⁶ तू अपनी राह बदलने को ऐसी बेक्रार क्यूँ फिरती है? तू मिस्र से

भी शर्मिन्दा होगी, जैसे असूर से हुई। ³⁷ वहाँ से भी तू अपने सिर पर हाथ रख कर निकलेगी; क्यूँकि खुदावन्द ने उनको जिन पर तूने भरोसा किया हक़ीर जाना, और तू उनसे कामयाब न होगी।

3

¹ कहते हैं कि 'अगर कोई मर्द अपनी बीवी को तलाक़ दे दे, और वह उसके यहाँ से जाकर किसी दूसरे मर्द की हो जाए, तो क्या वह पहला फिर उसके पास जाएगा?' क्या वह ज़मीन बहुत नापाक न होगी? लेकिन तूने तो बहुत से यारों के साथ बदकारी की है; क्या अब भी तू मेरी तरफ़ फिरेगी? खुदावन्द फ़रमाता है। ² पहाड़ों की तरफ़ अपनी आँखें उठा और देख! कौन सी जगह है जहाँ तूने बदकारी नहीं की? तू राह में उनके लिए इस तरह बैठी, जिस तरह वीराने में 'अरब। तूने अपनी बदकारी और शरारत से ज़मीन को नापाक किया। ³ इसलिए बारिश नहीं होती और आखिरी बरसात नहीं हुई तेरी पेशानी फ़ाहिशा की है और तुझ को शर्म नहीं आती। ⁴ क्या तू अब से मुझे पुकार कर न कहेगी, ऐ मेरे बाप, तू मेरी जवानी का रहबर था? ⁵ क्या उसका क़हर हमेशा रहेगा? क्या वह उसे हमेशा तक रख छोड़ेगा? देख, तू ऐसी बातें तो कह चुकी, लेकिन जहाँ तक तुझ से हो सका तूने बुरे काम किए।

२२२२२२ २२ २२२२२२ २२ २२२२ २२ २२२ २२ २२२२

⁶ और यूसियाह बादशाह के दिनों में खुदावन्द ने मुझसे फ़रमाया, क्या तूने देखा, नाफ़रमान इस्राईल ने क्या किया है? वह हर एक ऊँचे पहाड़ पर और हर एक हरे दरख़्त के नीचे गई, और वहाँ बदकारी की। ⁷ और जब वह ये सब कुछ कर चुकी तो मैंने कहा, वह मेरी तरफ़ वापस आएगी; लेकिन वह न आई, और उसकी बेवफ़ा बहन यहूदाह ने ये हाल देखा। ⁸ फिर मैंने देखा कि जब फिरे हुए इस्राईल की ज़िनाकारी की वजह से मैंने उसको तलाक़ दे दिया, और उसे तलाक़नामा लिख दिया तो भी उसकी बेवफ़ा बहन यहूदाह न डरी; बल्कि उसने भी जाकर बदकारी की। ⁹ और ऐसा हुआ कि उसने अपनी बदकारी की बुराई से ज़मीन को नापाक किया, और पत्थर और लकड़ी के साथ ज़िनाकारी की। ¹⁰ और खुदावन्द फ़रमाता है कि बावजूद इस सब के उसकी बेवफ़ा बहन यहूदाह सच्चे दिल से मेरी तरफ़ न फिरी, बल्कि रियाकारी से। ¹¹ और खुदावन्द ने मुझसे फ़रमाया, नाफ़रमान इस्राईल ने बेवफ़ा यहूदाह से ज्यादा अपने आपको सच्चा साबित किया है। ¹² जा और

उत्तर की तरफ यह बात पुकारकर कह दे कि 'खुदावन्द फ़रमाता है, ऐ नाफ़रमान इस्राईल, वापस आ; मैं तुझ पर क्रहर की नज़र नहीं करूँगा क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है मैं रहीम हूँ मेरा क्रहर हमेशा का नहीं। 13 सिर्फ़ अपनी बदकारी का इक्कार कर कि तू खुदावन्द अपने खुदा से 'आसी हो गई, और हर एक हरे दरख्त के नीचे ग़ैरों के साथ इधर — उधर आवारा फिरी; खुदावन्द फ़रमाता है, तुम मेरी आवाज़ के सुनने वाले न हुए। 14 खुदावन्द फ़रमाता है, 'ऐ नाफ़रमान बच्चों, वापस आओ; क्योंकि मैं खुद तुम्हारा मालिक हूँ, और मैं तुम को हर एक शहर में से एक, और हर एक घराने में से दो लेकर सिय्यून में लाऊँगा। 15 “और मैं तुम को अपने खातिर ख्वाह चरवाहे दूँगा, और वह तुम को समझदारी और 'अक़लमन्दी से चराएँगे। 16 और यूँ होगा कि खुदावन्द फ़रमाता है कि जब उन दिनों में तुम मुल्क में बढ़ोगे और बहुत होगे, तब वह फिर न कहेंगे कि 'खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक'; उसका खयाल भी कभी उनके दिल में न आएगा, वह हरगिज़ उसे याद न करेंगे और उसकी ज़ियारत को न जाएँगे, और उसकी मरम्मत न होगी। 17 उस वक़्त येरूशलेम खुदावन्द का तख़्त कहलाएगा, और उसमें या'नी येरूशलेम में, सब क्रौमें खुदावन्द के नाम से जमा' होंगी; और वह फिर अपने बुरे दिल की सख़्ती की पैरवी न करेंगे। 18 उन दिनों में यहूदाह का घराना इस्राईल के घराने के साथ चलेगा, वह मिलकर उत्तर के मुल्क में से उस मुल्क में जिसे मैंने तुम्हारे बाप — दादा को मीरास में दिया, आएँगे। 19 'आह, मैंने तो कहा था, मैं तुझ को फ़र्ज़न्दों में शामिल करके खुशनुमा मुल्क या'नी क्रौमों की नफ़ीस मीरास तुझे दूँगा; और तू मुझे बाप कह कर पुकारेगी, और तू फिर मुझसे न फिरेगी। 20 लेकिन खुदावन्द फ़रमाता है, ऐ इस्राईल के घराने, जिस तरह बीवी बेवफ़ाई से अपने शौहर को छोड़ देती है, उसी तरह तूने मुझसे बेवफ़ाई की है। 21 पहाड़ों पर बनी — इस्राईल की गिरया — ओ — जारी और मिन्नत की आवाज़ सुनाई देती है क्योंकि उन्होंने अपनी राह टेढ़ी की और खुदावन्द अपने खुदा को भूल गए। 22 'ऐ नाफ़रमान फ़र्ज़न्द वापस आओ मैं तुम्हारी नाफ़रमानी का चारा करूँगा। देख, हम तेरे पास आते हैं; क्योंकि तू ही, ऐ खुदावन्द, हमारा खुदा है। 23 हकीक़त में टीलों और पहाड़ों पर के हुज़ूम से कुछ उम्मीद रखना बेफ़ायदा है। यक़ीनन खुदावन्द हमारे खुदा ही में इस्राईल की नज़ात है। 24 लेकिन इस रुस्वाई की वजह ने हमारी जवानी के वक़्त से हमारे बाप —

दादा के माल को, और उनकी भेड़ों और उनके बैलों और उनके बेटे और बेटियों को निगल लिया है। 25 हम अपनी शर्म में लेटें और रुस्वाई हमको छिपा ले, क्योंकि हम और हमारे बाप — दादा अपनी जवानी के वक़्त से आज तक खुदावन्द अपने खुदा के ख़ताकार हैं। और हम खुदावन्द अपने खुदा की आवाज़ के सुनने वाले नहीं हुए।”

4

1 “ऐ इस्राईल, अगर तू वापस आए, खुदावन्द फ़रमाता है अगर तू मेरी तरफ़ वापस आए; और अपनी मकरूहात को मेरी नज़र से दूर करे तो तू आवारा न होगा; 2 और अगर तू सच्चाई और 'अदालत और सदाक़त से ज़िन्दा खुदावन्द की क़सम खाए, तो क्रौमें उसकी वजह से अपने आपको मुबारक कहेंगी और उस पर फ़ख़र करेंगी।”

यहूदाह और येरूशलेम के लोगों

3 क्योंकि खुदावन्द यहूदाह और येरूशलेम के लोगों को यूँ फ़रमाता है: “अपनी उम्दा ज़मीन पर हल चलाओ, और काँटों में बीज न बोया करो। 4 'ऐ यहूदाह के लोगों, और येरूशलेम के बाशिन्दो, खुदावन्द के लिए अपना ख़तना कराओ; हाँ, अपने दिल का ख़तना करो; ऐसा न हो कि तुम्हारी बद'आमाली की वजह से मेरा क्रहर आग की तरह शो'लाज़न हो, और ऐसा भड़के के कोई बुझा न सके।” 5 यहूदाह में इश्तिहार दो, और येरूशलेम में इसका 'ऐलान करो और कहो, तुम मुल्क में नरसिंगा फूँको, बलन्द आवाज़ से पुकारो और कहो कि “जमा' हो, कि हसीन शहरों में चलें। 6 तुम सिय्यून ही में झण्डा खड़ा करो, पनाह लेने को भागो और देर न करो, क्योंकि मैं बला और हलाक़त — ए — शदीद को उत्तर की तरफ़ से लाता हूँ। 7 शेर — ए — बबर झाड़ियों से निकला है, और क्रौमों के हलाक़ करने वाले ने ख़ानगी की है; वह अपनी जगह से निकला है कि तेरी ज़मीन को वीरान करे, ताकि तेरे शहर वीरान हों और कोई बसने वाला न रहे। 8 इसलिए टाट ओढ़कर छाती पीटो और वावैला करो, क्योंकि खुदावन्द का क्रहर — ए — शदीद हम पर से टल नहीं गया।” 9 और खुदावन्द फ़रमाता है, उस वक़्त यूँ होगा कि बादशाह और सरदार बे — दिल हो जायेंगे और काहिन हैरतज़दा और नबी शर्मिदा होंगे। 10 तब मैंने कहा, अफ़सोस, ऐ खुदावन्द खुदा, यक़ीनन तूने इन लोगों और येरूशलेम को ये कह कर दगा दी कि तुम सलामत रहोगे; हालाँकि तलवार जान तक पहुँच गई है। 11 उस वक़्त इन लोगों और येरूशलेम से ये कहा जाएगा कि 'वीराने के पहाड़ों पर से एक खुशक हवा मेरी दुख़तर

— ए — क्रौम की तरफ चलेगी, उसाने और साफ़ करने के लिए नहीं, ¹² बल्कि वहाँ से एक बहुत तुन्द हवा मेरे लिए चलेगी; अब मैं भी उन पर फ़तवा दूँगा। ¹³ देखो, वह घटा की तरह चढ़ आएगा, उसके रथ गिर्दबाद की तरह और उसके घोड़े 'उकाबों' के जैसे तेज़तर हैं। हम पर अफ़सोस के हाथ, हम बर्बाद हो गए! ¹⁴ ऐ येरूशलेम, तू अपने दिल को शरारत से पाक कर ताकि तू रिहाई पाए। बुरे खयालात कब तक तेरे दिल में रहेंगे? ¹⁵ क्योंकि दान से एक आवाज़ आती है, और इफ़राईम के पहाड़ से मुसीबत की खबर देती है; ¹⁶ क्रौमों को खबर दो, देखो, येरूशलेम के बारे में 'ऐलान' करो कि "घिराव करने वाले दूर के मुल्क से आते हैं, और यहूदाह के शहरों के सामने ललकारेंगे ¹⁷ खेत के रखवालों की तरह वह उसे चारों तरफ़ से घेरेंगे, क्योंकि उसने मुझसे बगावत की, खुदावन्द फ़रमाता है। ¹⁸ तेरी चाल और तेरे कामों से यह मुसीबत तुझ पर आयी है। यह तेरी शरारत है, यह बहुत तल्ख़ है, क्योंकि यह तेरे दिल तक पहुँच गई है।" ¹⁹ हाय, मेरा दिल! मेरे पर्दा — ए — दिल में दर्द है! मेरा दिल बेताब है, मैं चुप नहीं रह सकता; क्योंकि ऐ मेरी जान, तूने नरसिंगे की आवाज़ और लड़ाई की ललकार सुन ली है। ²⁰ शिकस्त पर शिकस्त की खबर आती है, यकीनन तमाम मुल्क बर्बाद हो गया; मेरे खेमे अचानक और मेरे पर्दे एक दम में बर्बाद किए गए। ²¹ मैं कब तक ये झण्डा देखूँ और नरसिंगे की आवाज़ सुनूँ? ²² "हकीकत में मेरे लोग बेवकूफ़ हैं, उन्होंने मुझे नहीं पहचाना; वह बेश'ऊर बच्चे हैं और फ़र्क़ नहीं रखते बुरे काम करने में होशियार हैं, लेकिन नेक काम की समझ नहीं रखते।" ²³ मैंने ज़मीन पर नज़र की, और क्या देखता हूँ कि वीरान और सुनसान है; आसमानों को भी बेनूर पाया। ²⁴ मैंने पहाड़ों पर निगाह की, और क्या देखता हूँ कि वह काँप गए, और सब टीले लर्ज़िश खा गए। ²⁵ मैंने नज़र की, और क्या देखता हूँ कि कोई आदमी नहीं, और सब हवाई परिन्दे उड़ गए। ²⁶ फिर मैंने नज़र की और क्या देखता हूँ कि ज़रखेत ज़मीन वीरान हो गई, और उसके सब शहर खुदावन्द की हुज़ूरी और उसके क्रहर की शिद्दत से बर्बाद हो गए। ²⁷ क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है कि तमाम मुल्क वीरान होगा तोभी मैं उसे बिल्कुल बर्बाद न करूँगा। ²⁸ इसीलिए ज़मीन मातम करेगी और ऊपर से आसमान तारीक़ हो जाएगा; क्योंकि मैं कह चुका, मैंने इरादा किया है, मैं उससे पशेमान न हूँगा और उससे बाज़ न आऊँगा। ²⁹ सवारों और तीरअंदाज़ों के शोर से तमाम शहरी भाग जाएँगे; वह घने जंगलों में जा घुसेंगे, और चट्टानों

पर चढ़ जाएँगे, सब शहर छोड़ दिए जायेंगे और कोई आदमी उनमें न रहेगा। ³⁰ तब ऐ ग़ारतशुदा, तू क्या करेगी? अगरचे तू लाल जोड़ा पहने, अगरचे तू ज़रीन ज़ेवरों से आरास्ता हो, अगरचे तू अपनी आँखों में सुरमा लगाए, तू 'अबस' अपने आपको खूबसूरत बनाएगी; तेरे 'आशिक़' तुझ को हकीर जानेंगे, वह तेरी जान के तालिब होंगे। ³¹ क्योंकि मैंने उस 'औरत' की जैसी आवाज़ सुनी है जिसे दर्द लगे हों, और उसकी जैसी दर्दनाक आवाज़ जिसके पहला बच्चा पैदा हो, या 'नी दुख़तर — ए — सियून की आवाज़, जो हाँपती और अपने हाथ फैलाकर कहती है, 'हाय! क्रातिलों के सामने मेरी जान बेताब है।

5

2222222 22 222222

¹ अब येरूशलेम की गलियों में इधर — उधर ग़श्त करो; और देखो और दरियाफ़्त करो, और उसके चौकों में ढूँडो, अगर कोई आदमी वहाँ मिले जो इन्साफ़ करनेवाला और सच्चाई का तालिब हो, तो मैं उसे मु'आफ़ करूँगा। ² और अगरचे वह कहते हैं, ज़िन्दा खुदावन्द की क़सम, तो भी यकीनन वह झूटी क़सम खाते हैं। ³ ऐ खुदावन्द, क्या तेरी आँखें सच्चाई पर नहीं हैं? तूने उनको मारा है, लेकिन उन्होंने अफ़सोस नहीं किया; तूने उनको बर्बाद किया, लेकिन वह तरबियत — पज़ीर न हुए; उन्होंने अपने चेहरों को चट्टान से भी ज्यादा सख़्त बनाया, उन्होंने वापस आने से इन्कार किया है। ⁴ तब मैंने कहा कि "यकीनन ये बेचारे जाहिल हैं, क्योंकि ये खुदावन्द की राह और अपने खुदा के हुक्मों को नहीं जानते। ⁵ मैं बुज़ुर्गों के पास जाऊँगा, और उनसे कलाम करूँगा; क्योंकि वह खुदावन्द की राह और अपने खुदा के हुक्मों को जानते हैं।" लेकिन इन्होंने जूआ बिल्कुल तोड़ डाला, और बन्धनों के टुकड़े कर डाले। ⁶ इसलिए जंगल का शेर — ए — बबर उनको फाड़ेगा वीराने का भेड़िया हलाक करेगा, चीता उनके शहरों की घात में बैठा रहेगा; जो कोई उनमें से निकले फाड़ा जाएगा, क्योंकि उनकी सरकशी बहुत हुई और उनकी नाफ़रमानी बढ़ गई। ⁷ मैं तुझे क्यूँकर मु'आफ़ करूँ? तेरे फ़र्ज़न्दों ने' मुझ को छोड़ा, और उनकी क़सम खाई जो खुदा नहीं हैं। जब मैंने उनको सेर किया, तो उन्होंने बदकारी की और परे बाँधकर क्रहबाख़ानों में इकट्ठे हुए। ⁸ वह पेट भरे घोड़ों की तरह हो गए, हर एक सुबह के वक़्त अपने पड़ोसी की बीवी पर हिनहिनाने लगा। ⁹ खुदावन्द फ़रमाता है, क्या मैं इन बातों के लिए सज़ा न दूँगा, और क्या मेरी रूह ऐसी क्रौमों से इन्तक़ाम न लेगी? ¹⁰ 'उसकी दीवारों

पर चढ़ जाओ और तोड़ डालो, लेकिन बिल्कुल बर्बाद न करो, उसकी शाखें काट दो, क्योंकि वह खुदावन्द की नहीं हैं। ¹¹ इसलिए कि खुदावन्द फ़रमाता है, इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने ने मुझसे बहुत बेवफ़ाई की। ¹² “उन्होंने खुदावन्द का इन्कार किया और कहा कि 'वह नहीं है, हम पर हरगिज़ आफ़त न आएगी, और तलवार और काल को हम न देखेंगे; ¹³ और नबी महज़ हवा हो जाएँगे, और कलाम उनमें नहीं है; उनके साथ ऐसा ही होगा।” ¹⁴ फिर इसलिए कि तुम यूँ कहते हो, खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि, देख, मैं अपने कलाम को तेरे मुँह में आग और इन लोगों को लकड़ी बनाऊँगा और वह इनको भसम कर देगी। ¹⁵ ऐ इस्राईल के घराने, देख, मैं एक क्रौम को दूर से तुझ पर चढ़ा लाऊँगा खुदावन्द फ़रमाता है वह ज़बरदस्त क्रौम है, वह क़दीम क्रौम है, वह ऐसी क्रौम है जिसकी ज़बान तू नहीं जानता और उनकी बात को तू नहीं समझता। ¹⁶ उनके तरक़श खुली क़बरे हैं, वह सब बहादुर मर्द हैं। ¹⁷ और वह तेरी फ़सल का अनाज और तेरी रोटी, जो तेरे बेटों और बेटियों के खाने की थी, खा जाएँगे; तेरे गाय — बैल और तेरी भेड़ बकरियों को चट कर जाएँगे, तेरे अंगूर और अंजीर निगल जाएँगे, तेरे हसीन शहरों को जिन पर तेरा भरोसा है, तलवार से वीरान कर देंगे। ¹⁸ “लेकिन खुदावन्द फ़रमाता है, उन दिनों में भी मैं तुम को बिल्कुल बर्बाद न करूँगा। ¹⁹ और यूँ होगा कि जब वह कहेंगे, 'खुदावन्द हमारे खुदा ने यह सब कुछ हम से क्यों किया?' तो तू उनसे कहेगा, जिस तरह तुम ने मुझे छोड़ दिया और अपने मुल्क में ग़ैर मा'बूदों की इबादत की, उसी तरह तुम उस मुल्क में जो तुम्हारा नहीं है, अजनबियों की खिदमत करोगे।” ²⁰ या'क़ूब के घराने में इस बात का इश्तिहार दो, और यहूदाह में इसका ऐलान करो और कहो, ²¹ “अब ज़रा सुनो, ऐ नादान और बे'अक़ल लोगों, जो आँखें रखते हो लेकिन देखते नहीं, जो कान रखते हो लेकिन सुनते नहीं। ²² खुदावन्द फ़रमाता है, क्या तुम मुझसे नहीं डरते? क्या तुम मेरे सामने थरथराओगे नहीं, जिसने रेत को समन्दर की हद पर हमेशा के हुक्म से काईम किया कि वह उससे आगे नहीं बढ़ सकता और हरचन्द उसकी लहरें उछलती हैं, तोभी ग़ालिब नहीं आतीं; और हरचन्द शोर करती हैं, तो भी उससे आगे नहीं बढ़ सकतीं। ²³ लेकिन इन लोगों के दिल बागी और सरकश हैं; इन्होंने सरकशी की और दूर हो गए। ²⁴ इन्होंने अपने दिल में न कहा कि हम खुदावन्द अपने खुदा से डरें, जो पहली और पिछली बरसात वक़्त पर भेजता है,

और फ़सल के मुक़रर हफ़्तों को हमारे लिए मौजूद कर रखता है। ²⁵ तुम्हारी बदकिरदारी ने इन चीज़ों को तुम से दूर कर दिया, और तुम्हारे गुनाहों ने अच्छी चीज़ों को तुम से बाज़ रखा।” ²⁶ क्योंकि मेरे लोगों में शरीर पाए जाते हैं; वह फन्दा लगाने वालों की तरह घात में बैठते हैं, वह जाल फैलाते और आदमियों को पकड़ते हैं। ²⁷ जैसे पिंजरा चिड़ियों से भरा हो, वैसे ही उनके घर फ़रेब से भरे हैं, तब वह बड़े और मालदार हो गए। ²⁸ वह मोटे हो गए, वह चिकने हैं। वह बुरे कामों में सबक़त ले जाते हैं, वह फ़रियाद या'नी यतीमों की फ़रियाद, नहीं सुनते ताकि उनका भला हो और मोहताजों का इन्साफ़ नहीं करते। ²⁹ खुदावन्द फ़रमाता है, क्या मैं इन बातों के लिए सज़ा न दूँगा? और क्या मेरी रूह ऐसी क्रौम से इन्तक़ाम न लेगी?” ³⁰ मुल्क में एक हैरतअफ़ज़ा और हौलनाक बात हुई; ³¹ नबी झूठी नबुव्वत करते हैं, और काहिन उनके वसीले से हुक्मरानी करते हैं, और मेरे लोग ऐसी हालत को पसन्द करते हैं, अब तुम इसके आखिर में क्या करोगे?

6

22222222 22 222222 2222 2222222 22222

¹ ऐ बनी विनयमीन, येरूशलेम में से पनाह के लिए भाग निकलो, और तकू'अ में नरसिंगा फूँको और बैत हक्करम में आतिशीन 'अलम बलन्द करो; क्योंकि उत्तर की तरफ़ से बला और बड़ी तबाही आनेवाली है। ² मैं दुस्तर — ए — सिय्यून को जो शकील और नाज़नीन है, हलाक करूँगा। ³ चरवाहे अपने गल्लों को लेकर उसके पास आएँगे और चारों तरफ़ उसके सामने खेमे खड़े करेंगे हर एक अपनी जगह में चराएगा। ⁴ “उससे जंग के लिए अपने आपको खास करो; उठो, दोपहर ही को चढ़ चलें! हम पर अफ़सोस, क्योंकि दिन ढलता जाता है, और शाम का साया बढ़ता जाता है! ⁵ उठो, रात ही को चढ़ चलें और उसके क़स्रों को ढा दें!” ⁶ क्योंकि रब्ब — उल — अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि: 'दरख़्त काट डालो, और येरूशलेम के सामने दमदमा बाँधो; यह शहर सज़ा का सज़ावार है, इसमें ज़ुल्म ही ज़ुल्म है। ⁷ जिस तरह पानी चश्मे से फूट निकलता है, उसी तरह शरारत इससे जारी है; ज़ुल्म और सितम की हमेशा इसमें सुनी जाती है, हर दम मेरे सामने दुख दर्द और ज़ख़्म हैं। ⁸ ऐ येरूशलेम, तरबियत — पज़ीर हो; ऐसा न हो कि मेरा दिल तुझ से हट जाए, न हो कि मैं तुझे वीरान और ग़ैरआबाद ज़मीन बना दूँ। ⁹ रब्ब — उल — अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: “वह इस्राईल के बक़िये को अंगूर की तरह ढूँडकर तोड़ लेंगे। तू अंगूर तोड़ने वाले की तरह फिर अपना हाथ शाखों में

डाल।” 10 मैं किससे कहूँ और किसको जताऊँ, ताकि वह सुनें? देख, उनके कान नामख़त हैं और वह सुन नहीं सकते; देख, खुदावन्द का कलाम उनके लिए हिक़ारत का ज़रिया है, वह उससे खुश नहीं होते। 11 इसलिए मैं खुदावन्द के क्रहर से लबरेज़ हूँ, मैं उसे ज़ब्त करते करते तंग आ गया। बाज़ारों में बच्चों पर और जवानों की जमा'अत पर उसे उँडेल दे, क्योंकि शौहर अपनी बीवी के साथ और बूढ़ा कुहनसाल के साथ गिरफ़्तार होगा। 12 और उनके घर खेतों और बीवियों के साथ औरों के हो जायेंगे क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है, मैं अपना हाथ इस मुल्क के बाशिन्दों पर बढ़ाऊँगा। 13 इसलिए कि छोटों से बड़ों तक सब के सब लालची हैं, और नबी से काहिन तक हर एक दगाबाज़ है। 14 क्योंकि वह मेरे लोगों के ज़ख़्म को यूँही 'सलामती सलामती' कह कर अच्छा करते हैं, हालाँकि सलामती नहीं है। 15 क्या वह अपने मकरूह कामों की वजह से शर्मिन्दा हुए? वह हरगिज़ शर्मिन्दा न हुए, बल्कि वह लजाए तक नहीं; इस वास्ते वह गिरने वाले के साथ गिरेंगे खुदावन्द फ़रमाता है, जब मैं उनको सज़ा दूँगा, तो पस्त हो जाएँगे। 16 खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: 'रास्तों पर खड़े हो और देखो, और पुराने रास्तों के बारे में पूछो कि अच्छी राह कहाँ है, उसी पर चलो और तुम्हारी जान राहत पाएगी। लेकिन उन्होंने कहा, 'हम उस पर न चलेंगे। 17 और मैंने तुम पर निगहबान भी मुकर्रर किए और कहा, 'नरसिंगे की आवाज़ सुनो!' लेकिन उन्होंने कहा, 'हम न सुनेंगे। 18 इसलिए ऐ क्रौमों, सुनो, और ऐ अहल — ए — मजमा', मा'लूम करो कि उनकी क्या हालत है। 19 ऐ ज़मीन सुन; देख, मैं इन लोगों पर आफ़त लाऊँगा जो इनके अन्देशों का फल है, क्योंकि इन्होंने मेरे कलाम को नहीं माना और मेरी शरी'अत को रद्द कर दिया है। 20 इससे क्या फ़ायदा के सबा से लुबान और दूर के मुल्क से अगर मेरे सामने लाते हैं? तुम्हारी सोख़्तनी कुर्बानियाँ मुझे पसन्द नहीं, और तुम्हारी कुर्बानियों से मुझे खुशी नहीं। 21 इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि 'देख, मैं ठोकर खिलाने वाली चीज़ें इन लोगों की राह में रख दूँगा; और बाप और बेटे बाहम उनसे ठोकर खायेंगे पड़ोसी और उनके दोस्त हलाक होंगे। 22 खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, 'देख, उत्तरी मुल्क से एक गिरोह आती है, और इन्तिहाए — ज़मीन से एक बड़ी क्रौम बरअंगेख़्ता की जाएगी। 23 वह तीरअन्दाज़ और नेज़ाबाज़ हैं, वह संगदिल और बेरहम हैं, उनके ना'रों की हमेशा समन्दर की जैसी है और वह घोड़ों पर सवार हैं; ऐ दुख़्तर — ए — सिय्यून, वह जंगी मदों की तरह तेरे सामने सफ़आराई करते हैं।

24 हमने इसकी शोहरत सुनी है, हमारे हाथ ढीले हो गए, हम ज़चा की तरह मुसीबत और दर्द में गिरफ़्तार हैं। 25 मैदान में न निकलना और सड़क पर न जाना, क्योंकि हर तरफ़ दुश्मन की तलवार का खौफ़ है। 26 ऐ मेरी बिनत — ए — क्रौम, टाट औढ़ और राख में लेट, अपने इकलौतों पर मातम और दिलख़राश नोहा कर; क्योंकि ग़ारतगर हम पर अचानक आएगा। 27 “मैंने तुझे अपने लोगों में आजमाने वाला और बुर्ज मुकर्रर किया ताकि तू उनके चाल चलनो को मा'लूम करे और परखे। 28 वह सब के सब बहुत सरकश हैं, वह ग़ीबत करते हैं, वह तो ताँबा और लोहा हैं, वह सब के सब मु'आमिले के खोटे हैं। 29 धौकनी जल गई, सीसा आग से भसम हो गया; साफ़ करनेवाले ने बेफ़ायदा साफ़ किया, क्योंकि शरीर अलग नहीं हुए। 30 वह मरदूद चाँदी कहलाएँगे, क्योंकि खुदावन्द ने उनको रद्द कर दिया है।”

7

यर्मियाह 7:1-10

1 यह वह कलाम है जो खुदावन्द की तरफ़ से यर्मियाह पर नाज़िल हुआ, और उसने फ़रमाया, 2 तू खुदावन्द के घर के फाटक पर खड़ा हो, और वहाँ इस कलाम का इश्तिहार दे, और कह, ऐ यहूदाह के सब लोगों, जो खुदावन्द की इबादत के लिए इन फाटकों से दाख़िल होते हो, खुदावन्द का कलाम सुनो। 3 रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है: अपने चाल चलन और अपने आ'माल दुरुस्त करो, तो मैं तुम को इस मकान में बसाऊँगा। 4 झूटी बातों पर भरोसा न करो और यूँ न कहते जाओ, 'यह है खुदावन्द की हैकल, खुदावन्द की हैकल, खुदावन्द की हैकल। 5 क्योंकि अगर तुम अपने चाल चलन और अपने आ'माल सरासर दुरुस्त करो, अगर हर आदमी और उसके पड़ोसी में पूरा इन्साफ़ करो, 6 अगर परदेसी और यतीम और बेवा पर ज़ुल्म न करो, और इस मकान में बेगुनाह का खून न बहाओ, और ग़ैर — मा'बूदों की पैरवी जिसमें तुम्हारा नुक़सान है, न करो, 7 तो मैं तुम को इस मकान में और इस मुल्क में बसाऊँगा, जो मैंने तुम्हारे बाप — दादा को पहले से हमेशा के लिए दिया। 8 देखो, तुम झूटी बातों पर जो बेफ़ायदा हैं, भरोसा करते हो। 9 क्या तुम चोरी करोगे, खून करोगे, ज़िनाकारी करोगे, झूटी कसम खाओगे, और बा'ल के लिए खुशबू जलाओगे और ग़ैर मा'बूदों की जिनको तुम नहीं जानते थे, पैरवी करोगे। 10 और मेरे सामने इस घर में जो मेरे

नाम से कहलाता है, आकर खड़े होंगे और कहेंगे कि हम ने छुटकारा पाया, ताकि यह सब नफ़रती काम करो? 11 क्या यह घर जो मेरे नाम से कहलाता है, तुम्हारी नज़र में डाकुओं का ग़ार बन गया? देख, खुदावन्द फ़रमाता है, मैंने खुद यह देखा है। 12 इसलिए, अब मेरे उस मकान को जाओ जो शीलोह में था, जिस पर पहले मैंने अपने नाम को काईम किया था; और देखो कि मैंने अपने लोगों या'नी बनी — इस्राईल की शरारत की वजह से उससे क्या किया? 13 और खुदावन्द फ़रमाता है, अब चूँकि तुम ने यह सब काम किए, मैंने बर वक़्त तुम को कहा और ताकीद की, लेकिन तुम ने न सुना; और मैंने तुम को बुलाया लेकिन तुम ने जवाब न दिया, 14 इसलिए मैं इस घर से जो मेरे नाम से कहलाता है, जिस पर तुम्हारा भरोसा है, और इस मकान से जिसे मैंने तुम को और तुम्हारे बाप — दादा को दिया, वही करूँगा जो मैंने शीलोह से किया है। 15 और मैं तुम को अपने सामने से निकाल दूँगा, जिस तरह तुम्हारी सारी बिरादरी इफ़्राईम की कुल नसल को निकाल दिया है। 16 “इसलिए तू इन लोगों के लिए दुआ न कर, और इनके वास्ते आवाज़ बुलन्द न कर, और मुझसे मिन्नत और शफ़ा'अत न कर क्योंकि मैं तेरी न सुनूँगा। 17 क्या तू नहीं देखता कि वह यहूदाह के शहरों में और येरूशलेम के कूचों में क्या करते हैं? 18 बच्चे लकड़ी जमा' करते हैं और बाप आग सुलगाते हैं, और औरतें आटा गूँधती हैं ताकि आसमान की मलिका के लिए रोटी पकाएँ, और ग़ैर मा'बूदों के लिए तपावन तपाकर मुझे ग़ज़बनाक करें। 19 खुदावन्द फ़रमाता है, क्या वह मुझ ही को ग़ज़बनाक करते हैं? क्या वह अपनी ही रूसियाही के लिए नहीं करते? 20 इसी वास्ते खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: देख, मेरा क्रहर — ओ — ग़ज़ब इस मकान पर, और इंसान और हैवान और मैदान के दरख़्तों पर, और ज़मीन की पैदावार पर उँडेल दिया जाएगा; और वह भड़केगा और बुझेगा नहीं।” 21 रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: अपने ज़बीहों पर अपनी सोख़्तनी कुर्बानियाँ भी बढ़ाओ और गोश्त खाओ। 22 क्योंकि जिस वक़्त मैं तुम्हारे बाप दादा को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, उनको सोख़्तनी कुर्बानी और ज़बीहे के बारे में कुछ नहीं कहा और हुक्म नहीं दिया; 23 बल्कि मैंने उनको ये हुक्म दिया, और फ़रमाया कि मेरी आवाज़ के शिनवा हो, और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा और तुम मेरे लोग होगे; और जिस राह की मैं तुम को हिदायत करूँ, उस पर चलो ताकि तुम्हारा भला हो। 24 लेकिन उन्होंने न सुना, न कान

लगाया, बल्कि अपनी मसलहतों और अपने बुरे दिल की सख़्ती पर चले और फिर गए और आगे न बढ़े। 25 जब से तुम्हारे बाप — दादा मुल्क — ए — मिस्र से निकल आए, अब तक मैंने तुम्हारे पास अपने सब खादिमों या'नी नबियों को भेजा, मैंने उनको हमेशा सही वक़्त पर भेजा। 26 लेकिन उन्होंने मेरी न सुनी और कान न लगाया, बल्कि अपनी गर्दन सख़्त की; उन्होंने अपने बाप — दादा से बढ़कर बुराई की। 27 तू ये सब बातें उनसे कहेगा, लेकिन वह तेरी न सुनेंगे; तू उनको बुलाएगा, लेकिन वह तुझे जवाब न देंगे। 28 तब तू उनसे कह दे, 'यह वह क्रौम है जो खुदावन्द अपने खुदा की आवाज़ की शिनवा, और तरबियत पज़ीर न हुई; सच्चाई बर्बाद हो गई, और उनके मुँह से जाती रही। 29 “अपने बाल काटकर फेंक दे, और पहाड़ों पर जाकर नौहा कर; क्योंकि खुदावन्द ने उन लोगों को जिन पर उसका क्रहर है, रद्द और छोड़ दिया है।” 30 इसलिए कि बनी यहूदाह ने मेरी नज़र में बुराई की, खुदावन्द फ़रमाता है, उन्होंने उस घर में जो मेरे नाम से कहलाता है अपनी मकरूहात रखी, ताकि उसे नापाक करें। 31 और उन्होंने तूफ़त के ऊँचे मक़ाम बिन हिन्नोम की वादी में बनाए, ताकि अपने बेटे और बेटियों को आग में जलाएँ, जिसका मैंने हुक्म नहीं दिया और मेरे दिल में इसका खयाल भी न आया था। 32 इसलिए खुदावन्द फ़रमाता है, देख, वह दिन आते हैं कि यह न तूफ़त कहलाएगी न बिन हिन्नोम की वादी, बल्कि वादी — ए — क़त्ल; और जगह न होने की वजह से तूफ़त में दफ़न करेंगे। 33 और इस क्रौम की लाशें हवाई परिन्दों और ज़मीन के दरिन्दों की खुराक होंगी, और उनको कोई न हँकाएगा। 34 तब मैं यहूदाह के शहरों में और येरूशलेम के बाज़ारों में खुशी और खुशी की आवाज़, दुल्हे और दुल्हन की आवाज़ ख़त्म करूँगा; क्योंकि यह मुल्क वीरान हो जाएगा।

8

1 खुदावन्द फ़रमाता है कि उस वक़्त वह यहूदाह के बादशाहों और उसके सरदारों और काहिनों और नबियों और येरूशलेम के बाशिन्दों की हड्डियाँ, उनकी क़ब्रों से निकाल लाएँगे; 2 और उनको सूरज और चाँद और तमाम अजराम — ए — फ़लक के सामने, जिनको वह दोस्त रखते और जिनकी ख़िदमत — ओ — पैरवी करते थे जिनसे वह सलाह लेते थे और जिनको सिज्दा करते थे, बिछाएँगे; वह न जमा' की जाएँगी न दफ़न होंगी, बल्कि इस ज़मीन पर खाद बनेंगी। 3 और वह सब लोग जो इस बुरे घराने में से बाक़ी बच रहेंगे, उन सब मकानों में

जहाँ जहाँ मैं उनको हाँक दूँ, मौत को ज़िन्दगी से ज्यादा चाहेंगे, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है।

????? ??????? ?? ??????

4 और तू उनसे कह दे कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, क्या लोग गिरकर फिर नहीं उठते? क्या कोई फिर कर वापस नहीं आता? 5 फिर येरूशलेम के यह लोग क्यों हमेशा की नाफ़रमानी पर अड़े हैं? वह फ़रेब से लिपटे रहते हैं और वापस आने से इन्कार करते हैं। 6 मैंने कान लगाया और सुना, उनकी बातें ठीक नहीं; किसी ने अपनी बुराई से तौबा करके नहीं कहा कि 'मैंने क्या किया?' हर एक अपनी राह को फिरता है, जिस तरह घोड़ा लड़ाई में सरपट दौड़ता है। 7 हाँ हवाई लक़लक़ अपने मुक़र्ररा वक्त्रों को जानता है, और कुमरी और अबाबील और कुलंग अपने आने का वक्त्र पहचान लेते हैं; लेकिन मेरे लोग खुदावन्द के हुक्मों को नहीं पहचानते। 8 "तुम क्योंकर कहते हो कि हमतो 'अक्लमन्द' हैं और खुदावन्द की शरी'अत हमारे पास है? लेकिन देख, लिखने वालों के बेकार क़लम ने बतालत पैदा की है। 9 'अक्लमन्द शर्मिन्दा हुए, वह हैरान हुए और पकड़े गए; देख, उन्होंने खुदावन्द के कलाम को रद्द किया; उनमें कैसी समझदारी है? 10 तब मैं उनकी बीवियाँ औरों को, और उनके खेत उनको दूँगा जो उन पर क़ाबिज़ होंगे; क्योंकि वह सब छोटे से बड़े तक लालची हैं, और नबी से काहिन तक हर एक दगाबाज़ है। 11 और वह मेरी बिन्त — ए — क़ौम के ज़ख़्म को यूँ ही 'सलामती सलामती' कह कर अच्छा करते हैं, हालाँकि सलामती नहीं है। 12 क्या वह अपने मकरूह कामों की वजह से शर्मिन्दा हुए? वह हरगिज़ शर्मिन्दा न हुए, बल्कि वह लजाए तक नहीं। इस लिए वह गिरने वालों के साथ गिरेंगे, खुदावन्द फ़रमाता है, जब उनको सज़ा मिलेगी तो वह पस्त हो जाएँगे। 13 खुदावन्द फ़रमाता है, मैं उनको बिल्कुल फ़ना करूँगा। न ताक में अंगूर लगेंगे और न अंजीर के दरख़्त में अंजीर, बल्कि पत्ते भी सूख जाएँगे; और जो कुछ मैंने उनको दिया, जाता रहेगा।" 14 हम क्यों चुपचाप बैठे हैं? आओ, इकट्ठे होकर मज़बूत शहरों में भाग चलें और वहाँ चुप हो रहें क्योंकि खुदावन्द हमारे खुदा ने हमको चुप कराया और हमको इन्द्रायन का पानी पीने को दिया है; इसलिए कि हम खुदावन्द के गुनाहगार हैं। 15 सलामती का इन्तिज़ार था पर कुछ फ़ायदा न हुआ; और शिफ़ा के वक्त्र का, लेकिन देखो दहशत! 16 "उसके घोड़ों के फ़राने की आवाज़ दान से सुनाई देती है, उसके जंगी घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ से तमाम ज़मीन काँप गई; क्योंकि वह आ पहुँचे

हैं और ज़मीन को और सब कुछ जो उसमें है, और शहर को भी उसके बाशिन्दों के साथ खा जाएँगे।" 17 क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है, देखो, मैं तुम्हारे बीच साँप और अज़दहे भेजूँगा जिन पर मन्तर कारगर न होगा और वह तुम को काटेंगे। 18 काश कि मैं फ़रियाद से तसल्ली पाता; मेरा दिल मुझ में सुस्त हो गया। 19 देख, मेरी बिन्त — ए — क़ौम की ग़म की आवाज़ दूर के मुल्क से आती है, 'क्या खुदावन्द सिय्यून में नहीं? क्या उसका बादशाह उसमें नहीं? उन्होंने क्यों अपनी तराशी हुई मूरतों से, और बेगाने मा'बूदों से मुझ को ग़ज़बनाक किया? 20 "फ़सल काटने का वक्त्र गुज़रा, गर्मी के दिन ख़त्म हुए, और हम ने रिहाई नहीं पाई।" 21 अपनी बिन्त — क़ौम की शिकस्तगी की वजह से मैं शिकस्ताहाल हुआ; मैं कुढ़ता रहता हूँ, हैरत ने मुझे दबा लिया। 22 क्या ज़िल'आद में रौग़ान — ए — बलसान नहीं है? क्या वहाँ कोई हकीम नहीं? मेरी बिन्त — ए — क़ौम क्यों शिफ़ा नहीं पाती?

9

1 काश कि मेरा सिर पानी होता, और मेरी आँखें आँसुओं का चश्मा, ताकि मैं अपनी बिन्त — ए — क़ौम के मक्तूलों पर रात दिन मातम करता! 2 काश कि मेरे लिए वीराने में मुसाफ़िर खाना होता, ताकि मैं अपनी क़ौम को छोड़ देता और उनमें से निकल जाता! क्योंकि वह सब बदकार और दगाबाज़ जमा'अत हैं।

????? ??????? ?? ??????

3 वह अपनी ज़बान को नारास्ती की कमान बनाते हैं, वह मुल्क में ताक़तवर हो गए हैं लेकिन रास्ती के लिए नहीं; क्योंकि वह बुराई से बुराई तक बढ़ते जाते हैं और मुझ को नहीं जानते, खुदावन्द फ़रमाता है। 4 हर एक अपने पड़ोसी से होशियार रहे, और तुम किसी भाई पर भरोसा न करो, क्योंकि हर एक भाई दगाबाज़ी से दूसरे की जगह ले लेगा, और हर एक पड़ोसी ग़ीबत करता फ़िरेगा। 5 और हर एक अपने पड़ोसी को फ़रेब देगा और सच न बोलेगा, उन्होंने अपनी ज़बान को झूट बोलना सिखाया है; और बदकारी में जाँफ़िशानी करते हैं। 6 तेरा घर फ़रेब के बीच है; खुदावन्द फ़रमाता है, फ़रेब ही से वह मुझ को जानने से इन्कार करते हैं। 7 इसलिए रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं उनको पिघला डालूँगा और उनको आज़माऊँगा; क्योंकि अपनी बिन्त — ए — क़ौम से और क्या करूँ? 8 उनकी ज़बान हलाक करने वाला तीर है, उससे दगा की बातें निकलती हैं, अपने पड़ोसी को मुँह से तो सलाम कहते हैं पर

बातिन में उसकी घात में बैठते हैं।⁹ खुदावन्द फ़रमाता है, क्या मैं इन बातों के लिए उनको सज़ा न दूँगा? क्या मेरी रूह ऐसी क्रौम से इन्तक़ाम न लेगी? ¹⁰ “मैं पहाड़ों के लिए गिरया — ओ — ज़ारी, और वीराने की चरागाहों के लिए नौहा करूँगा, क्योंकि वह यहाँ तक जल गई कि कोई उनमें क़दम नहीं रखता चौपायों की आवाज़ सुनाई नहीं देती; हवा के परिन्दे और मवेशी भाग गए, वह चले गए। ¹¹ मैं येरूशलेम को खण्डर और गीदड़ों का घर बना दूँगा, और यहूदाह के शहरों को ऐसा वीरान करूँगा कि कोई बाशिन्दा न रहेगा।” ¹² साहिब — ए — हिकमत आदमी कौन है कि इसे समझे? और वह जिससे खुदावन्द के मुँह ने फ़रमाया कि इस बात का 'ऐलान करे। ये सरज़मीन किस लिए वीरान हुई, और वीराने की तरह जल गई कि कोई इसमें क़दम नहीं रखता? ¹³ और खुदावन्द फ़रमाता है, इसलिए कि उन्होंने मेरी शरी'अत को जो मैंने उनके आगे रखी थी, छोड़ दिया और मेरी आवाज़ को न सुना और उसके मुताबिक़ न चले, ¹⁴ बल्कि उन्होंने अपने हट्टी दिलों की और बा'लीम की पैरवी की, जिसकी उनके बाप — दादा ने उनको ता'लीम दी थी। ¹⁵ इसलिए रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं इनको, हाँ, इन लोगों को नागदौना खिलाऊँगा, और इन्द्रायन का पानी पिलाऊँगा। ¹⁶ और इनको उन क्रौमों में, जिनको न यह न इनके बाप — दादा जानते थे, तितर — बितर करूँगा और तलवार इनके पीछे भेजकर इनको हलाक कर डालूँगा। ¹⁷ रब्ब — उल — अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि: “सोचो और मातम करने वाली 'औरतों को बुलाओ कि आएँ, और माहिर 'औरतों को बुलवा भेजो कि वह भी आएँ; ¹⁸ और जल्दी करें और हमारे लिए नोहा उठाये ताकि हमारी आँखों से आँसू जारी हों और हमारी पलकों से आसुवों का सैलाब बह निकले। ¹⁹ यक्रीनन सिय्यून से नोहे की आवाज़ सुनाई देती है, 'हम कैसे बर्बाद हुए! हम सख्त रुस्वा हुए, क्योंकि हम वतन से आवारा हुए और हमारे घर गिरा दिए गए।” ²⁰ ए 'औरतो, खुदावन्द का कलाम सुनो और तुम्हारे कान उसके मुँह की बात कुबूल करें; और तुम अपनी बेटियों को नोहागरी और अपनी पड़ोसनो को मर्सिया — ख्वानी सिखाओ। ²¹ क्योंकि मौत हमारी खिड़कियों में चढ़ आई है और हमारे क़स्त्रों में घुस बैठी है, ताकि बाहर बच्चों को और बाज़ारों में जवानों को काट डाले। ²² कह दे, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: 'आदमियों की लाशें मैदान में खाद की तरह गिरेगी, और उस मुट्ठी भर की तरह होगी जो फ़सल काटनेवाले के पीछे रह जाये जिसे कोई जमा

नहीं करता। ²³ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: न साहिब — ए — हिकमत अपनी हिकमत पर, और न क़वी अपनी कुव्वत पर, और न मालदार अपने माल पर फ़ख़र करे; ²⁴ लेकिन जो फ़ख़र करता है, इस पर फ़ख़र करे कि वह समझता और मुझे जानता है कि मैं ही खुदावन्द हूँ, जो दुनिया में शफ़क़त — ओ — 'अदल और रास्तबाज़ी को 'अमल में लाता हूँ; क्योंकि मेरी खुशी इन्हीं बातों में है, खुदावन्द फ़रमाता है। ²⁵ “देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, जब मैं सब मख़्तूनो को नामख़्तूनो के तौर पर सज़ा दूँगा; ²⁶ मिस्र और यहूदाह और अदोम और बनी 'अम्मोन और मोआब को, और उन सब को जो गाओदुम दाढ़ी रखते हैं, जो वीरान के बाशिन्दे हैं; क्योंकि यह सब क्रौमों नामख़्तून हैं, और इस्राईल का सारा घराना दिल का नामख़्तून है।”

10

2222 2222222 22 22222222 22222

¹ ए इस्राईल के घराने, वह कलाम जो खुदावन्द तुम से करता है सुनो। ² खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: “तुम दीगर क्रौमों के चाल चलन न सीखो, और आसमानी 'अलामात और निशान और से हिरासान न हो; अगरचे दीगर क्रौमों उनसे हिरासान होती हैं। ³ क्योंकि उनके क़ानून बेकार हैं। चुनाँचे कोई जंगल में कुल्हाड़ी से दरख़्त काटता है, जो बढ़ई के हाथ का काम है। ⁴ वह उसे चाँदी और सोने से आरास्ता करते हैं, और उसमें हथोड़ों से मेखे लगाकर उसे मज़बूत करते हैं ताकि काईम रहे। ⁵ वह खज़ूर की तरह मख़रूती सुतून हैं पर बोलते नहीं, उनको उठा कर ले जाना पड़ता है क्योंकि वह चल नहीं सकते; उनसे न डरो क्योंकि वह नुक़सान नहीं पहुँचा सकते, और उनसे फ़ायदा भी नहीं पहुँच सकता।” ⁶ ए खुदावन्द, तेरा कोई नज़ीर नहीं, तू 'अज़ीम है और कुदरत की वज़ह से तेरा नाम बुज़ुर्ग है। ⁷ ए क्रौमों के बादशाह, कौन है जो तुझ से न डरे? यक्रीनन यह तुझ ही को ज़ेबा है; क्योंकि क्रौमों के सब हकीमों में, और उनकी तमाम ममलुकतों में तेरा जैसा कोई नहीं। ⁸ मगर वह सब हैवान खसलत और बेवकूफ़ हैं; बुतों की ता'लीम क्या, वह तो लकड़ी हैं। ⁹ तरसीस से चाँदी का पीटा हुआ पत्तर, और ऊफ़ाज़ से सोना आता है जो कारीगर की कारीगरी और सुनार की दस्तकारी है; उनका लिबास नीला और अर्ग़वानी है, और ये सब कुछ माहिर उस्तादों की दस्तकारी है। ¹⁰ लेकिन खुदावन्द सच्चा खुदा है, वह ज़िन्दा खुदा और हमेशा का बादशाह है; उसके क़हर से ज़मीन थरथराती है और क्रौमों में उसके क़हर की ताब नहीं। ¹¹ तुम उनसे यूँ कहना

कि “यह मा'बूद जिन्होंने आसमान और ज़मीन को नहीं बनाया, ज़मीन पर से और आसमान के नीचे से हलाक हो जाएँगे।” ¹² उसी ने अपनी कुदरत से ज़मीन को बनाया, उसी ने अपनी हिकमत से जहान को क़ाईम किया और अपनी 'अक़्ल से आसमान को तान दिया है। ¹³ उसकी आवाज़ से आसमान में पानी की बहुतायत होती है, और वह ज़मीन की इन्तिहा से बुख़ारात उठाता है। वह बारिश के लिए बिजली चमकाता है और अपने खज़ानों से हवा चलाता है। ¹⁴ हर आदमी हैवान ख़सलत और बे — 'इल्म हो गया है; हर एक सुनार अपनी खोदी हुई मूरत से रुस्वा है क्यूँकि उसकी ढाली हुई मूरत बेकार है, उनमें दम नहीं। ¹⁵ वह बेकार, फ़े'ल — ए — फ़रेब हैं, सज़ा के वक़्त बर्बाद हो जाएँगी। ¹⁶ या'कूब का हिस्सा उनकी तरह नहीं, क्यूँकि वह सब चीज़ों का ख़ालिक है और इस्राईल उसकी मीरास का 'असा है; रब्ब'उल — अफ़वाज़ उसका नाम है। ¹⁷ ऐ घिराव में रहने वाली, ज़मीन पर से अपनी गठरी उठा ले! ¹⁸ क्यूँकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: “देख, मैं इस मुल्क के बाशिन्दों को अब की बार जैसे फ़लाख़न में रख कर फेंक दूँगा, और उनको ऐसा तंग करूँगा कि जान लें।” ¹⁹ हाय मेरी ख़स्तगी! मेरा ज़ख़्म दर्दनाक है और मैंने समझ लिया, यकीनन मुझे यह दुख बरदाश्त करना है। ²⁰ मेरा ख़ेमा बर्बाद किया गया, और मेरी सब तनावें तोड़ दी गईं, मेरे बच्चे मेरे पास से चले गए, और वह हैं नहीं, अब कोई न रहा जो मेरा ख़ेमा खड़ा करे और मेरे पर्दे लगाए। ²¹ क्यूँकि चरवाहे हैवान बन गए और खुदावन्द के तालिब न हुए, इसलिए वह कामयाब न हुए और उनके सब गल्ले तितर — बितर हो गए। ²² देख, उत्तर के मुल्क से बड़े ग़ौगा और हंगामे की आवाज़ आती है ताकि यहूदाह के शहरों को उजाड़ कर गीदड़ों का घर बनाए। ²³ ऐ खुदावन्द, मैं जानता हूँ कि इंसान की राह उसके इस्ति'यार में नहीं; इंसान अपने चाल चलन में अपने क़दमों की रहनुमाई नहीं कर सकता। ²⁴ ऐ खुदावन्द, मुझे हिदायत कर लेकिन अन्दाज़े से; अपने क़हर से नहीं, न हो कि तू मुझे हलाक कर दे। ²⁵ ऐ खुदावन्द, उन क़ौमों पर जो तुझे नहीं जानतीं, और उन घरानों पर जो तेरा नाम नहीं लेते, अपना क़हर उँडेल दे; क्यूँकि वह या'कूब को खा गए, वह उसे निगल गए और चट कर गए, और उसके घर को उजाड़ दिया।

11

?????? ?? ???? ???? ???? ???? ???? ?

1 यह वह कलाम है जो खुदावन्द की तरफ़ से यरमियाह पर नाज़िल हुआ, और उसने फ़रमाया, ² कि

“तुम इस 'अहद की बातें सुनो, और बनी यहूदाह और येरूशलेम के बाशिन्दों से बयान करो; ³ और तू उनसे कह, खुदावन्द, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि ला'नत उस इंसान पर जो इस 'अहद की बातें नहीं सुनता। ⁴ जो मैंने तुम्हारे बाप — दादा से उस वक़्त फ़रमाई, जब मैं उनको मुल्क — ए — मिस्र से लोहे के तनूर से, यह कह कर निकाल लाया कि तुम मेरी आवाज़ की फ़रमाँबरदारी करो, और जो कुछ मैंने तुम को हुक्म दिया है उस पर 'अमल करो, तो तुम मेरे लोग होगे और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा; ⁵ ताकि मैं उस क़सम को जो मैंने तुम्हारे बाप — दादा से खाई कि मैं उनको ऐसा मुल्क दूँगा जिसमें दूध और शहद बहता हो, जैसा कि आज के दिन है, पूरा करूँ।” तब मैंने जवाब में कहा, ऐ खुदावन्द, आमीन। ⁶ फिर खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, यहूदाह के शहरों और येरूशलेम के कूचों में इन सब बातों का ऐलान कर और कह: इस 'अहद की बातें सुनो और उन पर 'अमल करो। ⁷ क्योंकि मैं तुम्हारे बाप — दादा को जिस दिन से मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, आज तक ताकीद करता और वक़्त पर जताता और कहता रहा कि मेरी सुनो। ⁸ लेकिन उन्होंने कान न लगाया और शिनवा न हुए, बल्कि हर एक ने अपने बुरे दिल की सख्ती की पैरवी की; इसलिए मैंने इस 'अहद की सब बातें, जिन पर 'अमल करने का उनको हुक्म दिया था और उन्होंने न किया, उन पर पूरी की। ⁹ तब खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, यहूदाह के लोगों और येरूशलेम के बाशिन्दों में साज़िश पाई जाती है। ¹⁰ वह अपने बाप — दादा की तरफ़ जिन्होंने मेरी बातें सुनने से इन्कार किया, फिर गए और ग़ैर मा'बूदों के पैरौ होकर उनकी इबादत की, इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने ने उस 'अहद को जो मैंने उनके बाप — दादा से किया था तोड़ दिया। ¹¹ इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं उन पर ऐसी बला लाऊँगा जिससे वह भाग न सकेंगे, और वह मुझे पुकारेंगे पर मैं उनकी न सुनूँगा। ¹² तब यहूदाह के शहर और येरूशलेम के बाशिन्दे जाएँगे और उन मा'बूदों को जिनके आगे वह खुशबू जलाते हैं पुकारेंगे, लेकिन वह मुसीबत के वक़्त उनको हरगिज़ न बचाएँगे। ¹³ क्योंकि ऐ यहूदाह, जितने तेरे शहर हैं उतने ही तेरे मा'बूद हैं, और जितने येरूशलेम के कूचे हैं उतने ही तुम ने उस रुस्वाई की वजह के लिए मज़बूह बनाए, या'नी बा'ल के लिए खुशबू जलाने की कुर्बानगाहें। ¹⁴ “इसलिए तू इन लोगों के लिए दुआ न कर और न इनके लिए अपनी आवाज़ बलन्द कर

और न मिन्नत कर, क्योंकि जब वह अपनी मुसीबत में मुझे पुकारेंगे मैं इनकी न सुनूँगा। ¹⁵ मेरे घर में मेरी महबूबा को क्या काम जब कि वह बहुत ज्यादा शरारत कर चुकी? क्या मन्नत और पाक गोश्त तेरी शरारत को दूर करेंगे? क्या तू इनके ज़रिए से रिहाई पाएगी? तू शरारत करके खुश होती है। ¹⁶ खुदावन्द ने खुशमेवा हरा ज़ैतून, तेरा नाम रखा; उसने बड़े हंगामे की आवाज़ होते होते ही उसे आग लगा दी और उसकी डालियाँ तोड़ दी गईं। ¹⁷ क्योंकि रब्ब — उल — अफ़वाज ने जिसने तुझे लगाया, तुझ पर बला का हुक्म किया, उस बदी की वजह से जो इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने ने अपने हक़ में की कि बा'ल के लिए खुशबू जला कर मुझे ग़ज़बनाक किया।” ¹⁸ खुदावन्द ने मुझ पर ज़ाहिर किया और मैं जान गया, तब तूने मुझे उनके काम दिखाए। ¹⁹ लेकिन मैं उस पालतू बर्रे की तरह था, जिसे ज़बह करने को ले जाते हैं; और मुझे मा'लूम न था कि उन्होंने मेरे खिलाफ़ मंसूबे बाँधे हैं कि आओ, दरख्त को उसके फल के साथ हलाक करें और उसे ज़िन्दों की ज़मीन से काट डालें, ताकि उसके नाम का ज़िक्र तक बाक़ी न रहे। ²⁰ ऐ रब्ब उल — अफ़वाज, जो सदाक़त से 'अदालत करता है, जो दिल — ओ — दिमाग़ को जाँचता है, उनसे इन्तक़ाम लेकर मुझे दिखा क्योंकि मैंने अपना दावा तुझ ही पर ज़ाहिर किया। ²¹ इसलिए खुदावन्द फ़रमाता है, अन्तोत के लोगों के बारे में, जो यह कहकर तेरी जान के तलबगार हैं कि खुदावन्द का नाम लेकर नबुव्वत न कर, ताकि तू हमारे हाथ से न मारा जाए। ²² रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि “देख, मैं उनको सज़ा दूँगा, जवान तलवार से मारे जाएँगे, उनके बेटे — बेटियाँ काल से मरेंगे; ²³ और उनमें से कोई बाक़ी न रहेगा। क्योंकि मैं 'अन्तोत के लोगों पर उनकी सज़ा के साल में आफ़त लाऊँगा।”

12

?????? ?? ???? ?? ???? ??
???? ???? ?

¹ ऐ खुदावन्द अगर मैं तेरे साथ बहस करूँ तो तू ही सच्चा ठहरेगा; तो भी मैं तुझ से इस अमर पर बहस करना चाहता हूँ कि शरीर अपने चाल चलन में क्यूँ कामयाब होते हैं? सब दगाबाज़ क्यूँ आराम से रहते हैं? ² तूने उनको लगाया और उन्होंने जड़ पकड़ ली, वह बढ़ गए बल्कि कामयाब हुए; तू उनके मुँह से नज़दीक पर उनके दिलों से दूर है। ³ लेकिन ऐ खुदावन्द, तू मुझे जानता है; तूने मुझे देखा और मेरे दिल को, जो तेरी तरफ़ है आजमाया है; तू उनको भेड़ों की तरह ज़बह

होने के लिए खींच कर निकाल और क़त्ल के दिन के लिए उनको मख्सूस कर। ⁴ अहल — ए — ज़मीन की शरारत से ज़मीन कब तक मातम करे, और तमाम मुल्क की रोएदगी पज़मुर्दा हो? चरिन्दे और परिन्दे हलाक हो गए, क्योंकि उन्होंने कहा, वह हमारा अंजाम न देखेगा। ⁵ 'अगर तू प्यादों के साथ दौड़ा और उन्होंने तुझे थका दिया, तो फिर तुझ में यह ताब कहाँ कि सवारों की बराबरी करे? तू सलामती की सरज़मीन में तो बे — खौफ़ है, लेकिन यरदन के जंगल में क्या करेगा? ⁶ क्योंकि तेरे भाइयों और तेरे बाप के घराने ने भी तेरे साथ बेवफ़ाई की है; हाँ, उन्होंने बड़ी आवाज़ से तेरे पीछे ललकारा, उन पर भरोसा न कर, अगरचे वह तुझ से मीठी मीठी बातें करें। ⁷ मैंने अपने लोगों को छोड़ दिया, मैंने अपनी मीरास को रद्द कर दिया, मैंने अपने दिल की महबूबा को उसके दुश्मनों के हवाले किया। ⁸ मेरी मीरास मेरे लिए जंगली शेर बन गई, उसने मेरे खिलाफ़ अपनी आवाज़ बलन्द की; इसलिए मुझे उससे नफ़रत है। ⁹ क्या मेरी मीरास मेरे लिए अबलक़ शिकारी परिन्दा है? क्या शिकारी परिन्दे उसको चारों तरफ़ घेरे हैं? आओ, सब जंगली जानवरों को जमा' करो; उनको लाओ कि वह खा जाएँ। ¹⁰ बहुत से चरवाहों ने मेरे ताकिस्तान को ख़राब किया, उन्होंने मेरे हिस्से को पामाल किया, मेरे दिल पसन्द हिस्से को उजाड़ कर वीरान बना दिया। ¹¹ उन्होंने उसे वीरान किया, वह वीरान होकर मुझसे फ़रयादी है। सारी ज़मीन वीरान हो गई तो भी कोई इसे खातिर में नहीं लाता, ¹² वीराने के सब पहाड़ों पर ग़ारतगर आ गए हैं; क्योंकि खुदावन्द की तलवार मुल्क के एक सिरे से दूसरे सिरे तक निगल जाती है और किसी बशर को सलामती नहीं। ¹³ उन्होंने गेहूँ बोया, लेकिन काँटे जमा' किये उन्होंने मशक्क़त खींची लेकिन फ़ायदा न उठाया; खुदावन्द के बहुत गुस्से की वजह से अपने अंजाम से शर्मिन्दा हो। ¹⁴ मेरे सब शरीर पड़ोसियों के खिलाफ़ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, देख, जिन्होंने उस मीरास को छुआ जिसका मैंने अपनी क्रौम इस्राईल को वारिस किया, मैं उनको उनकी सरज़मीन से उखाड़ डालूँगा और यहूदाह के घराने को उनके बीच से निकाल फेंकूँगा। ¹⁵ और इसके बाद कि मैं उनको उखाड़ डालूँगा, यूँ होगा कि मैं फिर उन पर रहम करूँगा और हर एक को उसकी मीरास में और हर एक को उसकी ज़मीन में फिर लाऊँगा; ¹⁶ और यूँ होगा कि अगर वह दिल लगा कर मेरे लोगों के तरीक़े सीखेंगे, कि मेरे नाम की क़सम खाएँ कि खुदावन्द ज़िन्दा है। जैसा कि उन्होंने मेरे लोगों को सिखाया कि बा'ल की क़सम खाएँ, तो वह मेरे लोगों में शामिल होकर

काईम हो जाएंगे'। ¹⁷ लेकिन अगर वह शर्मिदा न होंगे, तो मैं उस क्रौम को बिल्कुल उखाड़ डालूंगा और हलाक — ओ — बर्बाद कर दूंगा खुदावन्द फ़रमाता है।

13

???????? ? ? ? ? ? ? ? ?

¹ खुदावन्द ने मुझे यूँ फ़रमाया कि “तू जाकर अपने लिए एक कतानी कमरबन्द खरीद ले और अपनी कमर पर बाँध, लेकिन उसे पानी में मत भिगो।” ² तब मैंने खुदावन्द के कलाम के मुवाफ़िक़ एक कमरबन्द खरीद लिया और अपनी कमर पर बाँधा। ³ और खुदावन्द का कलाम दोबारा मुझ पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया, ⁴ कि “इस कमरबन्द को जो तूने खरीदा और जो तेरी कमर पर है, लेकर उठ और फ़रात को जा और वहाँ चट्टान के एक शिगाफ़ में उसे छिपा दे।” ⁵ चुनाँचे मैं गया और उसे फ़रात के किनारे छिपा दिया, जैसा खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया था। ⁶ और बहुत दिनों के बाद यूँ हुआ कि खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, कि उठ, फ़रात की तरफ़ जा और उस कमरबन्द को जिसे तूने मेरे हुक्म से वहाँ छिपा रख्खा है, निकाल ले। ⁷ तब मैं फ़रात को गया और खोदा और कमरबन्द को उस जगह से जहाँ मैंने उसे गाड़ दिया था, निकाला और देख, वह कमरबन्द ऐसा खराब हो गया था कि किसी काम का न रहा। ⁸ तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: ⁹ कि “खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि इसी तरह मैं यहूदाह के गुरुर और येरूशलेम के बड़े गुरुर को तोड़ दूंगा। ¹⁰ यह शरीर लोग जो मेरा कलाम सुनने से इन्कार करते हैं और अपने ही दिल की सख्ती के पैरौ होते, और ग़ैर मा'बूदों के तालिब होकर उनकी इबादत करते और उनको पूजते हैं, वह इस कमरबन्द की तरह होंगे जो किसी काम का नहीं। ¹¹ क्योंकि जैसा कमरबन्द इंसान की कमर से लिपटा रहता है वैसा ही, खुदावन्द फ़रमाता है, मैंने इस्राईल के तमाम घराने और यहूदाह के तमाम घराने को लिया कि मुझसे लिपटे रहें; ताकि वह मेरे लोग हों और उनकी वजह से मेरा नाम हो, और मेरी सिताइश की जाए और मेरा जलाल हो; लेकिन उन्होंने न सुना। ¹² तब तू उनसे ये बात भी कह दे कि खुदावन्द, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि 'हर एक मटके में मय भरी जाएगी। और वह तुझ से कहेंगे, 'क्या हम नहीं जानते कि हर एक मटके में मय भरी जाएगी?'” ¹³ तब तू उनसे कहना, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देखो, मैं इस मुल्क के सब बाशिन्दों को, हाँ, उन बादशाहों को जो दाऊद के तख्त पर बैठते हैं, और काहिनों और नबियों

और येरूशलेम के सब बाशिन्दों को मस्ती से भर दूंगा। ¹⁴ और मैं उनको एक दूसरे पर, यहाँ तक कि बाप को बेटों पर दे मारूंगा, खुदावन्द फ़रमाता है, मैं न शफ़कत करूंगा, न रि'आयत और न रहम करूंगा कि उनको हलाक न करूँ। ¹⁵ सुनो और कान लगाओ, गुरुर न करो, क्योंकि खुदावन्द ने फ़रमाया है। ¹⁶ खुदावन्द अपने खुदा की तम्जीद करो, इससे पहले के वह तारीकी लाए और तुम्हारे पाँव गहरे अन्धेरे में ठोकर खाएँ; और जब तुम रोशनी का इन्तिज़ार करो, तो वह उसे मौत के साये से बदल डाले और उसे सख्त तारीकी बना दे। ¹⁷ लेकिन अगर तुम न सुनोगे, तो मेरी जान तुम्हारे गुरुर की वजह से खिल्वतखानों में ग़म खाया करेगी; हाँ, मेरी आँखें फूट फूटकर रोएंगी और आँसू बहाएंगी, क्योंकि खुदावन्द का गल्ला गुलामी में चला गया। ¹⁸ बादशाह और उसकी वालिदा से कह, "आजिज़ी करो और नीचे बैठो, क्योंकि तुम्हारी बुज़ुर्गी का ताज तुम्हारे सिर पर से उतार लिया गया है। ¹⁹ दख्खन के शहर बन्द हो गए और कोई नहीं खोलता, सब बनी यहूदाह गुलाम हो गए; सबको गुलाम करके ले गए। ²⁰ 'अपनी आँखें उठा और उनको जो उत्तर से आते हैं, देख। वह गल्ला जो तुझे दिया गया था, तेरा खुशनुमा गल्ला कहाँ है? ²¹ जब वह तुझ पर उनको मुकर्रर करेगा जिनको तूने अपनी हिमायत की ता'लीम दी है, तो तू क्या कहेगी? क्या तू उस 'औरत की तरह जिसे पैदाइश का दर्द हो, दर्द में मुब्तिला न होगी? ²² और अगर तू अपने दिल में कहे कि यह हादसे मुझ पर क्यों गुजरे? तेरी बदकिरदारी की शिद्दत से तेरा दामन उठाया गया और तेरी एड़ियाँ जबरन बरहना की गईं। ²³ हब्शी अपने चमड़े को या चीता अपने दागों को बदल सके, तो तुम भी जो बदी के 'आदी हो नेकी कर सकोगे। ²⁴ इसलिए मैं उनको उस भूसे की तरह जो वीराने की हवा से उड़ता फिरता है, तितर — बितर करूंगा। ²⁵ खुदावन्द फ़रमाता है कि मेरी तरफ़ से यही तेरा हिस्सा, तेरा नपा हुआ हिस्सा है; क्योंकि तूने मुझे फ़रामोश करके बेकारी पर भरोसा किया है। ²⁶ फिर मैं भी तेरा दामन तेरे सामने से उठा दूंगा, ताकि तू बेपर्दा हो। ²⁷ मैंने तेरी बदकारी, तेरा हिनहिनाना, तेरी हरामकारी और तेरे नफ़रतअंगेज़ काम जो तूने पहाड़ों पर और मैदानों में किए, देखे हैं। ऐ येरूशलेम, तुझ पर अफ़सोस! तू अपने आपको कब तक पाक — ओ — साफ़ न करेगी?

14

???????? ? ? ? ? ? ? ? ?

¹ खुदावन्द का कलाम जो खुशकसाली के बारे में यर्मियाह पर नाज़िल हुआ ² “यहूदाह मातम करता

हैं और उसके फाटकों पर उदासी छाई है, वह मातमी लिबास में खाक पर बैठे हैं; और येरूशलेम का नाला बलन्द हुआ है। ³ उनके हाकिम अपने अदना लोगों को पानी के लिए भेजते हैं; वह चश्मों तक जाते हैं पर पानी नहीं पाते, और खाली घड़े लिए लौट आते हैं, वह शर्मिन्दा — ओ — पशेमान होकर अपने सिर ढाँपते हैं। ⁴ चूँकि मुल्क में बारिश न हुई, इसलिए ज़मीन फट गई और किसान सरासीमा हुए, वह अपने सिर छिपाते हैं। ⁵ चुनाँचे हिरनी मैदान में बच्चा देकर उसे छोड़ देती है क्योंकि घास नहीं मिलती। ⁶ और गोरखर ऊँची जगहों पर खड़े होकर गीदड़ों की तरह हाँफते हैं उनकी आँखें रह जाती हैं, क्योंकि घास नहीं है। ⁷ अगरचे हमारी बदकिरदारी हम पर गवाही देती है, तो भी ऐ खुदावन्द अपने नाम की खातिर कुछ कर; क्योंकि हमारी नाफ़रमानी बहुत है, हम तेरे खताकार हैं। ⁸ ऐ इस्राईल की उम्मीद, मुसीबत के वक़्त उसके बचानेवाले, तू क्यों मुल्क में परदेसी की तरह बना, और उस मुसाफ़िर की तरह जो रात काटने के लिए डेरा डाले? ⁹ तू क्यों इंसान की तरह हक्का — बक्का है, और उस बहादुर की तरह जो रिहाई नहीं दे सकता? बहर — हाल, ऐ खुदावन्द, तू तो हमारे बीच है और हम तेरे नाम से कहलाते हैं; तू हमको मत छोड़। ¹⁰ खुदावन्द इन लोगों से यूँ फ़रमाता है कि “इन्होंने गुमराही को यूँ दोस्त रख्खा है और अपने पाँव को नहीं रोका, इसलिए खुदावन्द इनको कुबूल नहीं करता; अब वह इनकी बदकिरदारी याद करेगा और इनके गुनाह की सज़ा देगा।” ¹¹ और खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, इन लोगों के लिए दु'आ — ए — ख़ैर न कर। ¹² क्योंकि जब यह रोज़ा रखें तो मैं इनकी फ़रियाद न सुनूँगा और जब सोख़्तनी कुर्बानी और हदिया पेश करें तो कुबूल न करूँगा, बल्कि मैं तलवार और काल और वबा से इनको हलाक करूँगा। ¹³ तब मैंने कहा, 'आह, ऐ खुदावन्द खुदा, देख, अम्बिया उनसे कहते हैं, तुम तलवार न देखोगे, और तुम में काल न पड़ेगा; बल्कि मैं इस मक़ाम में तुम को हकीक़ी सलामती बख़्शूँगा। ¹⁴ तब खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया कि अम्बिया मेरा नाम लेकर झूठी नबुव्वत करते हैं; मैंने न उनको भेजा और न हुक्म दिया और न उनसे कलाम किया, वह झूठा ख़्वाब और झूठा 'इल्म — ए — ग़ैब और बतालत और अपने दिलों की मक्कारी, नबुव्वत की सूरत में तुम पर ज़ाहिर करते हैं। ¹⁵ इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि वह नबी जिनको मैंने नहीं भेजा, जो मेरा नाम लेकर नबुव्वत करते और कहते हैं कि तलवार और काल इस मुल्क में

न आएँगे, वह तलवार और काल ही से हलाक होंगे। ¹⁶ और जिन लोगों से वह नबुव्वत करते हैं, तो काल और तलवार की वजह से येरूशलेम के गलियों में फेंक दिए जाएँगे; उनको और उनकी बीवियों और उनके बेटों और उनकी बेटियों को दफ़न करने वाला कोई न होगा। मैं उनकी बुराई उन पर उँडेल दूँगा। ¹⁷ “और तू उनसे यूँ कहना: 'मेरी आँखें रात दिन आँसू बहाएँ और हरगिज़ न थमें, क्योंकि मेरी कुंवारी दुख़्तर — ए — क़ौम ख़शतगी और ज़र्ब — ए — शदीद से शिकस्त है। ¹⁸ अगर मैं बाहर मैदान में जाऊँ, तो वहाँ तलवार के मक्तूल हैं; और अगर मैं शहर में दाख़िल होऊँ, तो वहाँ काल के मारे हैं! हाँ, नबी और काहिन दोनों एक ऐसे मुल्क को जाएँगे, जिसे वह नहीं जानते।” ¹⁹ क्या तूने यहूदाह को बिल्कुल रद्द कर दिया? क्या तेरी जान को सिय्यून से नफ़रत है? तूने हमको क्यों मारा और हमारे लिए शिफ़ा नहीं? सलामती का इन्तिज़ार था, लेकिन कुछ फ़ायदा न हुआ; और शिफ़ा के वक़्त का, लेकिन देखो, दहशत! ²⁰ ऐ खुदावन्द, हम अपनी शरारत और अपने बाप — दादा की बदकिरदारी का इक़रार करते हैं; क्योंकि हम ने तेरा गुनाह किया है। ²¹ अपने नाम की खातिर रद्द न कर, और अपने जलाल के तख़्त की तहक़ीर न कर; याद फ़रमा और हम से रिश्ता — ए — 'अहद को न तोड़। ²² क़ौमों के बुतों में कोई है जो मेंह बरसा सके? या आसमान बरिश पर क़ादिर है? ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, क्या वह तू ही नहीं है? इसलिए हम तुझ ही पर उम्मीद रखेंगे, क्योंकि तू ही ने यह सब काम किए हैं।

15

?????? ?? ?? ??? ???????

¹ तब खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया कि अगरचे मूसा और समुएल मेरे सामने खड़े होते तो मेरा दिल इन लोगों की तरफ़ मुतवज्जिह न होता। इनको मेरे सामने से निकाल दे कि चले जाएँ! ² और जब वह तुझसे कहें कि 'हम किधर जाएँ?' तू उनसे कहना कि 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि जो मौत के लिए हैं वह मौत की तरफ़ जाएँ, और जो तलवार के लिए हैं वह तलवार की तरफ़, और जो काल के लिए हैं वह काल को, और जो गुलामी के लिए हैं वह गुलामी में। ³ और मैं चार चीज़ों को उन पर मुसल्लत करूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है: तलवार को कि क़त्ल करे, और कुत्तों को कि फाड़ डालें, और आसमानी परिन्दों को, और ज़मीन के दरिन्दों को कि निगल जाएँ और हलाक करें। ⁴ और मैं उनको शाह — ए — यहूदाह मनस्सी — बिन — हिज़क्रियाह की वजह से, उस काम

के जरिये' जो उसने येरूशलेम में किया, छोड़ दूँगा कि ज़मीन की सब ममलुकतों में धक्के खाते फिरें। ⁵ “अब ऐ येरूशलेम, कौन तुझ पर रहम करेगा? कौन तेरा हमदर्द होगा? या कौन तेरी तरफ़ आएगा कि तेरी खैर — ओ — 'आफ़्रियत पूछे? ⁶ खुदावन्द फ़रमाता है, तूने मुझे छोड़ दिया और नाफ़रमान हो गई, इसलिए मैं तुझ पर अपना हाथ बढ़ाऊँगा और तुझे बर्बाद करूँगा, मैं तो तरस खाते खाते तंग आ गया। ⁷ और मैंने उनको मुल्क के फाटकों पर छाज से फटका, मैंने उनके बच्चे छीन लिए, मैंने अपने लोगों को हलाक किया, क्योंकि वह अपनी राहों से न फिरे। ⁸ उनकी बेवाएँ मेरे आगे समन्दर की रेत से ज्यादा हो गई; मैंने दोपहर के वक़्त जवानों की माँ पर ग़ारतगर को मुसल्लत किया; मैंने उस पर अचानक 'ऐज़ाब — ओ — दहशत को डाल दिया। ⁹ सात बच्चों की वालिदा निढाल हो गई, उसने जान दे दी; दिन ही को उसका सूरज डूब गया, वह पशेमान और शर्मिंदा हो गई है; खुदावन्द फ़रमाता है, मैं उनके बाकी लोगों को उनके दुश्मनों के आगे तलवार के हवाले करूँगा।” ¹⁰ ऐ मेरी माँ, मुझ पर अफ़सोस कि मैं तुझ से तमाम दुनिया कि लिए लड़ाका आदमी और झगड़ालू शख्स पैदा हुआ! मैंने तो न सूद पर क़र्ज दिया और न क़र्ज लिया, तो भी उनमें से हर एक मुझ पर ला'नत करता है। ¹¹ खुदावन्द ने फ़रमाया, यक़ीनन मैं तुझे ताक़त बख़्शूँगा कि तेरी खैर हो; यक़ीनन मैं मुसीबत और तंगी के वक़्त दुश्मनों से तेरे सामने इल्लिजा कराऊँगा। ¹² क्या कोई लोहे को या'नी उत्तरी फ़ौलाद और पीतल को तोड़ सकता है? ¹³ तेरे माल और तेरे खज़ानों को मुफ़्त लुटवा दूँगा, और यह तेरे सब गुनाहों की वजह से तेरी तमाम सरहदों में होगा। ¹⁴ और मैं तुझ को तेरे दुश्मनों के साथ ऐसे मुल्क में ले जाऊँगा जिसे तू नहीं जानता, क्योंकि मेरे ग़ज़ब की आग भड़केगी और तुम को जलाएगी। ¹⁵ ऐ खुदावन्द, तू जानता है; मुझे याद फ़रमा और मुझ पर शफ़क़त कर, और मेरे सतानेवालों से मेरा इन्तक़ाम ले। तू बर्दाश्त करते — करते मुझे न उठा ले, जान रख कि मैंने तेरी खातिर मलामत उठाई है। ¹⁶ तेरा कलाम मिला और मैंने उसे नोश किया, और तेरी बातें मेरे दिल की खुशी और खुरमी थीं; क्योंकि ऐ खुदावन्द, रब्ब — उल — अफ़वाज मैं तेरे नाम से कहलाता हूँ। ¹⁷ न मैं खुशी मनानेवालों की महफ़िल में बैठा और न खुश हुआ, तेरे हाथ की वजह से मैं तन्हा बैठा, क्योंकि तूने मुझे क्रहर — से — लबरेज़ कर दिया है। ¹⁸ मेरा दर्द क्यूँ हमेशा का और मेरा ज़ख़्म क्यूँ ला — 'इलाज है कि सिहत पज़ीर नहीं होता? क्या तू मेरे लिए सरासर धोके की नदी के जैसा हो गया है,

उस पानी की तरह जिसको क़याम नहीं? ¹⁹ इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि अगर तू बाज़ आये तों मैं तुझे फेर लाऊँगा और तू मेरे सामने खड़ा होगा। और अगर तू लतीफ़ को कसीफ़ से जुदा करे, तो तू मेरे मुँह की तरह होगा। वह तेरी तरफ़ फिरें, लेकिन तू उनकी तरफ़ न फिरना। ²⁰ और मैं तुझे इन लोगों के सामने पीतल की मज़बूत दीवार ठहराऊँगा; और यह तुझ से लड़ेंगे लेकिन तुझ पर ग़ालिब न आएँगे, क्यूँकि खुदावन्द फ़रमाता है मैं तेरे साथ हूँ कि तेरी हिफ़ाज़त करूँ और तुझे रिहाई दूँ। ²¹ हाँ, मैं तुझे शरीरों के हाथ से रिहाई दूँगा और ज़ालिमों के पंजे से तुझे छुड़ाऊँगा।

16

???????? ?? ?????? ??? ?? ??????

¹ खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, और उसने फ़रमाया, ² तू बीवी न करना, इस जगह तेरे यहाँ बेटे — बेटियाँ न हों। ³ क्यूँकि खुदावन्द उन बेटों और बेटियों के बारे में जो इस जगह पैदा हुए हैं, और उनकी माँओं के बारे में जिन्होंने उनको पैदा किया, और उनके बापों के बारे में जिनसे वह पैदा हुए, यूँ फ़रमाता है: ⁴ कि वह बुरी मौत मरेंगे, न उन पर कोई मातम करेगा और न वह दफ़न किए जाएँगे, वह सतह — ए — ज़मीन पर खाद की तरह होंगे; वह तलवार और काल से हलाक होंगे और उनकी लाशें हवा के परिन्दों और ज़मीन के दरिन्दों की खुराक होंगी। ⁵ 'इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू मातम वाले घर में दाखिल न हो, और न उन पर रोने के लिए जा, न उन पर मातम कर; क्यूँकि खुदावन्द फ़रमाता है कि मैंने अपनी सलामती और शफ़क़त — ओ — रहमत को इन लोगों पर से उठा लिया है। ⁶ और इस मुल्क के छोटे बड़े सब मर जाएँगे; न वह दफ़न किए जाएँगे, न लोग उन पर मातम करेंगे, और न कोई उनके लिए ज़ख्मी होगा, न सिर मुण्डाएगा; ⁷ न लोग मातम करनेवालों को खाना खिलाएँगे, ताकि उनको मुदों के बारे में तसल्ली दें; और न उनकी दिलदारी का प्याला देंगे कि वह अपने माँ — बाप के ग़म में पिएँ। ⁸ और तू ज़ियाफ़त वाले घर में दाखिल न होना कि उनके साथ बैठकर खाए पिए। ⁹ क्यूँकि रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं इस जगह से तुम्हारे देखते हुए और तुम्हारे ही दिनों में खुशी और शादमानी की आवाज़ दुल्हे और दुल्हन की आवाज़ ख़त्म कराऊँगा। ¹⁰ “और जब तू यह सब बातें इन लोगों पर ज़ाहिर करे और वह तुझ से पूछे कि 'खुदावन्द ने क्यूँ यह सब बुरी बातें हमारे खिलाफ़ कहीं? हमने खुदावन्द अपने

खुदा के खिलाफ कौन सी बुराई और कौन सा गुनाह किया है?" ¹¹ तब तू उनसे कहना, 'खुदावन्द फ़रमाता है: इसलिए कि तुम्हारे बाप — दादा ने मुझे छोड़ दिया, और ग़ैरमा'बूदों के तालिब हुए और उनकी इबादत और परस्तिश की, और मुझे छोड़ दिया और मेरी शरी'अत पर 'अमल नहीं किया; ¹² और तुमने अपने बाप — दादा से बढ़कर बुराई की; क्योंकि देखो, तुम में से हर एक अपने बुरे दिन की सख्ती की पैरवी करता है कि मेरी न सुने, ¹³ इसलिए मैं तुमको इस मुल्क से खारिज करके ऐसे मुल्क में आवारा करूँगा, जिसे न तुम और न तुम्हारे बाप — दादा जानते थे; और वहाँ तुम रात दिन ग़ैर मा'बूदों की इबादत करोगे, क्योंकि मैं तुम पर रहम न करूँगा। ¹⁴ लेकिन देख, खुदावन्द फ़रमाता है, वह दिन आते हैं कि लोग कभी न कहेंगे कि ज़िन्दा खुदावन्द की क़सम जो बनी — इस्राईल को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया; ¹⁵ बल्कि ज़िन्दा खुदावन्द की क़सम जो बनी — इस्राईल को उत्तर की सरज़मीन से और उन सब ममलुकतों से, जहाँ — जहाँ उसने उनको हाँक दिया था, निकाल लाया; और मैं उनको फिर उस मुल्क में लाऊँगा जो मैंने उनके बाप — दादा को दिया था। ¹⁶ आनेवाली सज़ा 'खुदावन्द फ़रमाता है: देख बहुत से माहीगीरों को बुलवाऊँगा और वह उनको शिकार करेंगे, और फिर मैं बहुत से शिकारियों को बुलवाऊँगा और वह हर पहाड़ से और हर टीले से और चट्टानों के शिगाफ़ों से उनको पकड़ निकालेंगे। ¹⁷ क्योंकि मेरी आँखें उनके सब चाल चलन पर लगी हैं, वह मुझसे छिपी नहीं हैं और उनकी बदकिरदारी मेरी आँखों से छिपी नहीं। ¹⁸ और मैं पहले उनकी बदकिरदारी और खताकारी की दूनी सज़ा दूँगा क्योंकि उन्होंने मेरी सरज़मीन को अपनी मकरूह चीज़ों की लाशों से नापाक किया और मेरी मीरास को अपनी मकरूहात से भर दिया है। ¹⁹ यर्मियाह की दुआ ऐ खुदावन्द, मेरी कुव्वत और मेरे गढ़ और मुसीबत के दिन में मेरी पनाहगाह, दुनिया कि किनारों से क्रौमें तेरे पास आकर कहेंगी कि "हक़ीक़त में हमारे बाप — दादा ने महज़ झूट की मीरास हासिल की, या'नी बेकार और बेसूद चीज़ें। ²⁰ क्या इंसान अपने लिए मा'बूद बनाए जो खुदा नहीं हैं!" ²¹ "इसलिए देख, मैं इस मर्तबा उनको आगाह करूँगा; मैं अपने हाथ और अपना ज़ोर उनको दिखाऊँगा, और वह जानेंगे कि मेरा नाम यही है।"

17

?????? ?? ????? ?? ?????

¹ "यहूदाह का गुनाह लोहे के कलम और हीरे की नोक से लिखा गया है; उनके दिल की तख्ती पर, और उनके

मज़बहों के सींगों पर खुदावाया गया है; ² क्योंकि उनके बेटे अपने मज़बहों और यसीरतों को याद करते हैं, जो हरे दरख्तों के पास ऊँचे पहाड़ों पर हैं। ³ ऐ मेरे पहाड़, जो मैदान में है; मैं तेरा माल और तेरे सब खज़ाने और तेरे ऊँचे मक़ाम जिनको तूने अपनी तमाम सरहदों पर गुनाह के लिए बनाया, लुटाऊँगा। ⁴ और तू अज़ख़ुद उस मीरास से जो मैंने तुझे दी, अपने कुसूर की वजह से हाथ उठाएगा; और मैं उस मुल्क में जिसे तू नहीं जानता, तुझ से तेरे दुश्मनों की ख़िदमत कराऊँगा; क्योंकि तुमने मेरे क़हर की आग भड़का दी है जो हमेशा तक जलती रहेगी।" ⁵ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: मला'ऊन है वह आदमी जो इंसान पर भरोसा करता है, और बशर को अपना बाज़ू जानता है, और जिसका दिल खुदावन्द से फिर जाता है। ⁶ क्योंकि वह रतमा की तरह, होगा जो वीराने में है और कभी भलाई न देखेगा; बल्कि वीराने की बे पानी जगहों में और ग़ैर — आबाद ज़मीन — ए — शोर में रहेगा। ⁷ "मुबारक है वह आदमी जो खुदावन्द पर भरोसा करता है, और जिसकी उम्मीदगाह खुदावन्द है। ⁸ क्योंकि वह उस दरख़्त की तरह होगा जो पानी के पास लगाया जाए, और अपनी जड़ दरिया की तरफ़ फैलाए, और जब गर्मी आए तो उसे कुछ ख़तरा न हो बल्कि उसके पत्ते हरे रहें, और खुशकसाली का उसे कुछ ख़ौफ़ न हो, और फल लाने से बाज़ न रहे।" ⁹ दिल सब चीज़ों से ज़्यादा हीलाबाज़ और ला'इलाज है, उसको कौन दरियाफ़्त कर सकता है? ¹⁰ "मैं खुदावन्द दिल — ओ — दिमाग़ को जाँचता और आज़माता हूँ, ताकि हर एक आदमी को उसकी चाल के मुवाफ़िक़ और उसके कामों के फल के मुताबिक़ बदला दूँ।" ¹¹ बेइन्साफ़ी से दौलत हासिल करनेवाला, उस तीतर की तरह है जो किसी दूसरे के अंडों पर बैठे; वह आधी उम्र में उसे खो बैठेगा और आख़िर को बेवकूफ़ ठहरेगा। ¹² हमारे हैकल का मकान इब्तिदा ही से मुक़रर किया हुआ जलाली तख़्त है। ¹³ ऐ खुदावन्द, इस्राईल की उम्मीदगाह, तुझको छोड़ने वाले सब शर्मिन्दा होंगे; मुझको छोड़ने वाले खाक में मिल जाएँगे, क्योंकि उन्होंने खुदावन्द को, जो आब — ए — हयात का चश्मा है छोड़ दिया। ¹⁴ ऐ खुदावन्द, तू मुझे शिफ़ा बरूख़े तो मैं शिफ़ा पाऊँगा; तू ही बचाए तो बचूँगा, क्योंकि तू मेरा फ़ख़र है।" ¹⁵ देख, वह मुझे कहते हैं, खुदावन्द का कलाम कहाँ है? अब नाज़िल हो। ¹⁶ मैंने तो तेरी पैरवी में गड़रिया बनने से इन्कार नहीं किया, और मुसीबत के दिन की आरज़ू नहीं की; तू खुद जानता है कि जो कुछ मेरे लबों से निकला, तेरे सामने था। ¹⁷ तू मेरे लिए दहशत की वजह न हो,

मुसीबत के दिन तू ही मेरी पनाह है। ¹⁸ मुझ पर सितम करने वाले शर्मिन्दा हों, लेकिन मुझे शर्मिन्दा न होने दे; वह हिरासान हों, लेकिन मुझे हिरासान न होने दे; मुसीबत का दिन उन पर ला और उनको शिकस्त पर शिकस्त दे! ¹⁹ खुदावन्द ने मुझसे यूँ फ़रमाया है कि: 'जा और उस फाटक पर जिससे 'आम लोग और शाहान — ए — यहूदाह आते जाते हैं, बल्कि येरूशलेम के सब फाटकों पर खड़ा हो ²⁰ और उनसे कह दे, 'ऐ शाहान — ए — यहूदाह, और ऐ सब बनी यहूदाह, और येरूशलेम के सब बाशिन्दों, जो इन फाटकों में से आते जाते हो, खुदावन्द का कलाम सुनो। ²¹ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तुम खबरदार रहो, और सबत के दिन बोझ न उठाओ और येरूशलेम के फाटकों की राह से अन्दर न लाओ; ²² और तुम सबत के दिन बोझ अपने घरों से उठा कर बाहर न ले जाओ, और किसी तरह का काम न करो; बल्कि सबत के दिन को पाक जानो, जैसा मैंने तुम्हारे बाप — दादा को हुक्म दिया था। ²³ लेकिन उन्होंने न सुना, न कान लगाया, बल्कि अपनी गर्दन को सख्त किया कि सुनने न हों और तरबियत न पाएँ। ²⁴ "और यूँ होगा कि अगर तुम दिल लगाकर मेरी सुनोगे, खुदावन्द फ़रमाता है, और सबत के दिन तुम इस शहर के फाटकों के अन्दर बोझ न लाओगे बल्कि सबत के दिन को पाक जानोगे, यहाँ तक कि उसमें कुछ काम न करो; ²⁵ तो इस शहर के फाटकों से दाऊद के जानशीन बादशाह और हाकिम दाखिल होंगे; वह और उनके हाकिम यहूदाह के लोग और येरूशलेम के बाशिन्दे, रथों और घोड़ों पर सवार होंगे और यह शहर हमेशा तक आबाद रहेगा। ²⁶ और यहूदाह के शहरों और येरूशलेम के 'इलाके और बिनयमीन की सरज़मीन, और मैदान और पहाड़ और दख्खन से सोख्तनी कुर्बानियाँ और ज़बीहे और हदिये और लुबान लेकर आएँगे, और खुदावन्द के घर में शुक्रगुज़ारी के हदिये लाएँगे। ²⁷ लेकिन अगर तुम मेरी न सुनोगे कि सबत के दिन को पाक जानो, और बोझ उठा कर सबत के दिन येरूशलेम के फाटकों में दाखिल होने से बाज़ न रहो; तो मैं उसके फाटकों में आग सुलगाऊँगा, जो उसके क़स्रों को भसम कर देगी और हरगिज़ न बुझेगी।"

18

???????? ?? ???????

¹ खुदावन्द का कलाम यर्मियाह पर नाज़िल हुआ: ² कि "उठ और कुम्हार के घर जा, और मैं वहाँ अपनी बातें तुझे सुनाऊँगा।" ³ तब मैं कुम्हार के घर गया और क्या देखता हूँ कि वह चाक पर कुछ बना रहा है। ⁴ उस

वक़्त वह मिट्टी का बर्तन जो वह बना रहा था, उसके हाथ में बिगड़ गया; तब उसने उससे जैसा मुनासिब समझा एक दूसरा बर्तन बना लिया। ⁵ तब खुदावन्द का यह कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: ⁶ ऐ इस्राईल के घराने, क्या मैं इस कुम्हार की तरह तुम से सुलूक नहीं कर सकता हूँ? खुदावन्द फ़रमाता है। देखो, जिस तरह मिट्टी कुम्हार के हाथ में है उसी तरह, ऐ इस्राईल के घराने, तुम मेरे हाथ में हो। ⁷ अगर किसी वक़्त मैं किसी क्रौम और किसी सल्तनत के हक़ में कहूँ कि उसे उखाड़ूँ और तोड़ डालूँ और वीरान करूँ, ⁸ और अगर वह क्रौम, जिसके हक़ में मैंने ये कहा, अपनी बुराई से बाज़ आए, तो मैं भी उस बुराई से जो मैंने उस पर लाने का इरादा किया था बाज़ आऊँगा। ⁹ और फिर, अगर मैं किसी क्रौम और किसी सल्तनत के बारे में कहूँ कि उसे बनाऊँ और लगाऊँ; ¹⁰ और वह मेरी नज़र में बुराई करे और मेरी आवाज़ को न सुने, तो मैं भी उस नेकी से बाज़ रहूँगा जो उसके साथ करने को कहा था। ¹¹ और अब तू जाकर यहूदाह के लोगों और येरूशलेम के बाशिन्दों से कह दे, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देखो, मैं तुम्हारे लिए मुसीबत तजवीज़ करता हूँ और तुम्हारी मुखालिफ़त में मनसूबा बाँधता हूँ। इसलिए अब तुम में से हर एक अपने बुरे चाल चलन से बाज़ आए, और अपनी राह और अपने 'आमाल को दुरुस्त करे। ¹² लेकिन वह कहेंगे, 'यह तो फुज़ूल है, क्योंकि हम अपने मनसूबों पर चलेंगे, और हर एक अपने बुरे दिल की सख्ती के मुताबिक़ 'अमल करेगा। ¹³ "इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: दरियाफ़्त करो कि क्रौमों में से किसी ने कभी ऐसी बातें सुनी हैं? इस्राईल की कुंवारी ने बहुत हौलनाक काम किया। ¹⁴ क्या लुबनान की बर्फ़ जो चट्टान से मैदान में बहती है, कभी बन्द होगी? क्या वह ठंडा बहता पानी जो दूर से आता है, सूख जाएगा? ¹⁵ लेकिन मेरे लोग मुझ को भूल गए, और उन्होंने बेकार के लिए खुशबू जलाया; और उसने उनकी राहों में या'नी क़दीम राहों में उनको गुमराह किया, ताकि वह पगडंडियों में जाएँ और ऐसी राह में जो बनाई न गई। ¹⁶ कि वह अपनी सरज़मीन की वीरानी और हमेशा की हैरानी और सुस्कार का ज़रिया बनाएँ; हर एक जो उधर से गुज़रे दंग होगा और सिर हिलाएगा। ¹⁷ मैं उनको दुश्मन के सामने जैसे पूरबी हवा से तितर — बितर कर दूँगा; उनकी मुसीबत के वक़्त उनको मुँह नहीं, बल्कि पीठ दिखाऊँगा।" ¹⁸ तब उन्होंने कहा, आओ, हम यर्मियाह की मुखालिफ़त में मंसूबे बाँधे, क्योंकि शरी'अत काहिन से जाती न रहेगी, और

न मश्वरत मुशीर से और न कलाम नबी से। आओ, हम उसे ज़बान से मारें, और उसकी किसी बात पर तवज्जुह न करें। ¹⁹ ऐ खुदावन्द, तू मुझ पर तवज्जुह कर और मुझसे झगड़ने वालों की आवाज़ सुन। ²⁰ क्या नेकी के बदले बदी की जाएगी? क्योंकि उन्होंने मेरी जान के लिए गढ़ा खोदा। याद कर कि मैं तेरे सामने खड़ा हुआ कि उनकी शफ़ा'अत करूँ और तेरा क्रहर उन पर से टला दूँ। ²¹ इसलिए उनके बच्चों को काल के हवाले कर, और उनको तलवार की धार के सुपुर्द कर, उनकी बीवियाँ बेऔलाद और बेवा हों, और उनके मर्द मारे जाएँ, उनके जवान मैदान — ए — जंग में तलवार से क्रत्ल हों। ²² जब तू अचानक उन पर फ़ौज चढ़ा लाएगा, उनके घरों से मातम की सदा निकले! क्योंकि उन्होंने मुझे फँसाने को गढ़ा खोदा और मेरे पाँव के लिए फन्दे लगाए। ²³ लेकिन ऐ खुदावन्द, तू उनकी सब साज़िशों को जो उन्होंने मेरे क्रत्ल पर की जानता है। उनकी बदकिरदारी को मु'आफ़ न कर, और उनके गुनाह को अपनी नज़र से दूर न कर; बल्कि वह तेरे सामने पस्त हों, अपने क्रहर के वक़्त तू उनसे यूँ ही कर।

19

???????? ?? ????? ???? ?????

¹ खुदावन्द ने यूँ फ़रमाया है कि: तू जाकर कुम्हार से मिट्टी की सुराही मोल ले, और क्रौम के बुज़ुर्गों और काहिनों के सरदारों को साथ ले, ² और बिन — हिनूम की वादी में कुम्हारों के फाटक के मदख़ल पर निकल जा, और जो बातें मैं तुझ से कहूँ वहाँ उनका 'ऐलान कर, ³ और कह, 'ऐ यहूदाह के बादशाहों और येरूशलेम के बाशिन्दों, खुदा का कलाम सुनो। रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: देखो, मैं इस जगह पर ऐसी बला नाज़िल करूँगा कि जो कोई उसके बारे में सुने उसके कान भन्ना जाएँगे। ⁴ क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया, और इस जगह को ग़ैरों के लिए ठहराया और इसमें ग़ैरमा'बूदों के लिए खुशबू जलायी जिनको न वह, न उनके बाप — दादा, न यहूदाह के बादशाह जानते थे; और इस जगह को बेगुनाहों के खून से भर दिया, ⁵ और बा'ल के लिए ऊँचे मक़ाम बनाए, ताकि अपने बेटों को बा'ल की सोख़्तनी कुर्बानियों के लिए आग में जलाएँ जो न मैंने फ़रमाया न उसका ज़िक्र किया, और न कभी यह मेरे ख़याल में आया। ⁶ इसलिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है कि यह जगह न तूफ़त कहलाएगी और न बिनहिनूम की वादी, बल्कि वादी — ए — क्रत्ल। ⁷ और इसी जगह मैं

यहूदाह और येरूशलेम का मन्सूबा बर्बाद करूँगा और मैं ऐसा करूँगा कि वह अपने दुश्मनों के आगे और उनके हाथों से जो उनकी जान के तलबगार हैं, तलवार से क्रत्ल होंगे; और मैं उनकी लाशें हवा के परिन्दों को और ज़मीन के दरिन्दों को खाने को दूँगा, ⁸ और मैं इस शहर को हैरानी और सुस्कार का ज़रिया' बनाऊँगा; हर एक जो इधर से गुज़रे दंग होगा, और उसकी सब आफ़तों की वजह से सुस्कारेगा। ⁹ और मैं उनको उनके बेटों और उनकी बेटियों का गोश्त खिलाऊँगा, बल्कि हर एक दूसरे का गोश्त खाएगा, घिराव के वक़्त उस तंगी में जिससे उनके दुश्मन और उनकी जान के तलबगार उनको तंग करेंगे। ¹⁰ "तब तू उस सुराही को उन लोगों के सामने जो तेरे साथ जाएँगे, तोड़ डालना। ¹¹ और उनसे कहना के 'रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि मैं इन लोगों और इस शहर को ऐसा तोड़ूँगा, जिस तरह कोई कुम्हार के बर्तन को तोड़ डाले जो फिर दुरुस्त नहीं हो सकता; और लोग तूफ़त में दफ़न करेंगे, यहाँ तक कि दफ़न करने की जगह न रहेगी। ¹² मैं इस जगह और इसके बाशिन्दों से ऐसा ही करूँगा खुदावन्द फ़रमाता है चुनाँचे मैं इस शहर को तूफ़त की तरह कर दूँगा; ¹³ और येरूशलेम के घर और यहूदाह के बादशाहों के घर तूफ़त के मक़ाम की तरह नापाक हो जाएँगे; हाँ, वह सब घर जिनकी छतों पर उन्होंने तमाम अज़राम — ए — फ़लक के लिए खुशबू जलायी और ग़ैरमा'बूदों के लिए तपावन तपाए।" ¹⁴ तब यरमियाह तूफ़त से, जहाँ खुदावन्द ने उसे नबुव्वत करने को भेजा था वापस आया; और खुदावन्द के घर के सहन में खड़ा होकर तमाम लोगों से कहने लगा, ¹⁵ "रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: देखो, मैं इस शहर पर और इसकी सब बस्तियों पर वह तमाम बला, जो मैं ने उस पर भेजने को कहा था लाऊँगा: इसलिए कि उन्होंने बहुत बगावत की ताकि मेरी बातों को न सुनें।"

20

???????? ?? ?????

¹ फ़शहूर — बिन — इम्मेर काहिन ने, जो खुदावन्द के घर में सरदार नाज़िम था, यरमियाह को यह बातें नबुव्वत से कहते सुना। ² तब फ़शहूर ने यरमियाह नबी को मारा और उसे उस काठ में डाला, जो बिनयमीन के बालाई फाटक में खुदावन्द के घर में था। ³ और दूसरे दिन यूँ हुआ कि फ़शहूर ने यरमियाह को काठ से निकाला। तब यरमियाह ने उसे कहा, खुदावन्द ने तेरा नाम फ़शहूर नहीं, बल्कि मज़ूरमिस्साबीब रखा है।

4 क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं तुझ को तेरे लिए और तेरे सब दोस्तों के लिए दहशत का ज़रिया बनाऊँगा; और वह अपने दुश्मनों की तलवार से क़त्ल होंगे और तेरी आँखें देखेंगी और मैं तमाम यहूदाह को शाह — ए — बाबुल के हवाले कर दूँगा, और वह उनको गुलाम करके बाबुल में ले जाएगा और उनको तलवार से क़त्ल करेगा। 5 और मैं इस शहर की सारी दौलत और इसके तमाम महासिल और इसकी सब नज़ीस चीज़ों को, और यहूदाह के बादशाहों के सब खज़ानों को दे डालूँगा; हाँ, मैं उनको उनके दुश्मनों के हवाले कर दूँगा, जो उनको लूटेंगे और बाबुल को ले जाएँगे। 6 और ऐ फ़शहूर, तू और तेरा सारा घराना गुलामी में जाओगे, और तू बाबुल में पहुँचेगा और वहाँ मरेगा और वहीं दफ़न किया जाएगा तू और तेरे सब दोस्त जिनसे तूने झूटी नबुव्वत की। 7 ऐ खुदावन्द, तूने मुझे तरगीब दी है और मैंने मान लिया; तू मुझसे तवाना था, और तू ग़ालिब आया। मैं दिन भर हँसी का ज़रिया बनता हूँ, हर एक मेरी हँसी उड़ाता है। 8 क्योंकि जब — जब मैं कलाम करता हूँ, जोर से पुकारता हूँ, मैंने ग़ज़ब और हलाकत का ऐलान किया, क्योंकि खुदावन्द का कलाम दिन भर मेरी मलामत और हँसी का ज़रिया होता है। 9 और अगर मैं कहूँ कि 'मैं उसका ज़िक्र न करूँगा, न फिर कभी उसके नाम से कलाम करूँगा, तो उसका कलाम मेरे दिल में जलती आग की तरह है जो मेरी हड्डियों में छिपा है, और मैं ज़ब्त करते करते थक गया और मुझसे रहा नहीं जाता। 10 क्योंकि मैंने बहुतों की तोहमत सुनी। चारों तरफ़ दहशत है! "उसकी शिकायत करो! वह कहते हैं, हम उसकी शिकायत करेंगे, मेरे सब दोस्त मेरे ठोकर खाने के मुन्तज़िर हैं और कहते हैं, शायद वह ठोकर खाए, तब हम उस पर ग़ालिब आएँगे और उससे बदला लेंगे।" 11 लेकिन खुदावन्द बड़े बहादुर की तरह मेरी तरफ़ है, इसलिए मुझे सताने वालों ने ठोकर खाई और ग़ालिब न आए, वह बहुत शर्मिन्दा हुए इसलिए कि उन्होंने अपना मक़सद न पाया; उनकी शर्मिन्दगी हमेशा तक रहेगी, कभी फ़रामोश न होगी। 12 इसलिए, ऐ रब्बउल — अफ़वाज़, तू जो सादिकों को आज़माता और दिल — ओ — दिमाग़ को देखता है, उनसे बदला लेकर मुझे दिखा; इसलिए कि मैंने अपना दा'वा तुझ पर जाहिर किया है। 13 खुदावन्द की मदहसराई करो; खुदावन्द की सिताइश करो! क्योंकि उसने ग़रीब की जान को बदकिरदारों के हाथ से छुड़ाया है। 14 ला'नत उस दिन पर जिसमें मैं पैदा हुआ! वह दिन जिस में मेरी माँ ने मुझ को पैदा

किया, हरगिज़ मुबारक न हो! 15 ला'नत उस आदमी पर जिसने मेरे बाप को ये कहकर ख़बर दी, तेरे यहाँ बेटा पैदा हुआ, और उसे बहुत खुश किया। 16 हाँ, वह आदमी उन शहरों की तरह हो, जिनको खुदावन्द ने शिकस्त दी और अफ़सोस न किया; और वह सुबह को ख़ौफ़नाक शोर सुने और दोपहर के वक़्त बड़ी ललकार, 17 इसलिए कि उसने मुझे रिहम ही में क़त्ल न किया, कि मेरी माँ मेरी क़ब्र होती, और उसका रिहम हमेशा तक भरा रहता। 18 मैं पैदा ही क्यूँ हुआ कि मशक़क़त और रंज देखूँ, और मेरे दिन रुस्वाई में कटें?

21

????? ?? ???? ???? ?? ???? ?

1 वह कलाम जो खुदावन्द की तरफ़ से यर्मियाह पर नाज़िल हुआ, जब सिदक्रियाह बादशाह ने फ़शहूर — बिन — मलकियाह और सफ़नियाह — बिन — मासियाह काहिन को उसके पास ये कहने को भेजा, 2 कि "हमारी खातिर खुदावन्द से दरियाफ़्त कर क्यूँकि शाहे — ए — बाबुल नबूकदनज़र हमारे साथ लड़ाई करता है; शायद खुदावन्द हम से अपने तमाम 'अजीब कामों के मुवाफ़िक़ ऐसा सुलूक करे कि वह हमारे पास से चला जाए।" 3 तब यर्मियाह ने उनसे कहा, तुम सिदक्रियाह से यूँ कहना, 4 कि 'खुदावन्द, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं लड़ाई के हथियारों को जो तुम्हारे हाथ में हैं, जिनसे तुम शाह — ए — बाबुल और कसदियों के खिलाफ़ जो फ़सील के बाहर तुम्हारा घिराव किए हुए हैं लड़ते हो फेर दूँगा और मैं उनको इस शहर के बीच में इकट्ठे करूँगा; 5 और मैं आप अपने बढ़ाए हुए हाथ से और कुव्वत — ए — बाज़ू से तुम्हारे खिलाफ़ लड़ूँगा, हाँ, क्रहर — ओ — ग़ज़ब से बल्कि ग़ज़बनाक गुस्से से। 6 और मैं इस शहर के बाशिन्दों को, इंसान और हैवान दोनों को मारूँगा, वह बड़ी वबा से फ़ना हो जाएँगे। 7 और खुदावन्द फ़रमाता है, फिर मैं शाह — ए — यहूदाह सिदक्रियाह को और उसके मुलाज़िमों और 'आम लोगों को, जो इस शहर में वबा और तलवार और काल से बच जाएँगे, शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र और उनके मुखालिफ़ों और जानी दुश्मनों के हवाले करूँगा। और वह उनको हलाक करेगा; न उनको छोड़ेगा, न उन पर तरस खाएगा और न रहम करेगा। 8 और तू इन लोगों से कहना खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देखो, मैं तुम को हयात की राह और मौत की राह दिखाता हूँ। 9 जो कोई इस शहर में रहेगा, वह तलवार और काल और वबा से मरेगा,

लेकिन जो निकलकर कसदियों में जो तुम को घेरे हुए हैं, चला जाएगा, वह जिएगा और उसकी जान उसके लिए गनीमत होगी। ¹⁰ क्योंकि मैंने इस शहर का रख किया है कि इससे बुराई करूँ, और भलाई न करूँ, खुदावन्द फ़रमाता है; वह शाह — ए — बाबुल के हवाले किया जाएगा और वह उसे आग से जलाएगा। ¹¹ 'और शाह — ए — यहूदाह के खान्दान के बारे में खुदावन्द का कलाम सुनो, ¹² 'ऐ दाऊद के घराने! खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: तुम सवेरे उठ कर इन्साफ़ करो और मज़लूम को ज़ालिम के हाथ से छुड़ाओ, ऐसा तुम्हारे कामों की बुराई की वजह से मेरा क्रूर आग की तरह भड़के, और ऐसा तेज़ हो कि कोई उसे ठंडा न कर सके। ¹³ 'ऐ वादी की बसनेवाली, ऐ मैदान की चट्टान पर रहने वाली, जो कहती है कि कौन हम पर हमला करेगा? या हमारे घरों में कौन आ घुसेगा?' खुदावन्द फ़रमाता है: मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ, ¹⁴ और तुम्हारे कामों के फल के मुवाफ़िक़ मैं तुम को सज़ा दूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, और मैं उसके बन में आग लगाऊँगा, जो उसके सारे इलाक़े को भसम करेगी।

22

22:1-22:22

¹ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि "शाह — ए — यहूदाह के घर को जा, और वहाँ ये कलाम सुना ² और कह, 'ऐ शाह — ए — यहूदाह जो दाऊद के तख़्त पर बैठा है, खुदावन्द का कलाम सुन, तू और तेरे मुलाज़िम और तेरे लोग जो इन दरवाज़ों से दाख़िल होते हैं। ³ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: 'अदालत और सदाक़त के काम करो, और मज़लूम को ज़ालिम के हाथ से छुड़ाओ; और किसी से बदसलूकी न करो, और मुसाफ़िर — ओ — यतीम और बेवा पर ज़ुल्म न करो, इस जगह बेगुनाह का खून न बहाओ। ⁴ क्योंकि अगर तुम इस पर 'अमल करोगे, तो दाऊद के जानशीन बादशाह रथों पर और घोड़ों पर सवार होकर इस घर के फाटकों से दाख़िल होंगे, बादशाह और उसके मुलाज़िम और उसके लोग। ⁵ लेकिन अगर तुम इन बातों को न सुनोगे, तो खुदावन्द फ़रमाता है, मुझे अपनी ज़ात की क्रसम यह घर वीरान हो जाएगा ⁶ क्योंकि शाह — ए — यहूदाह के घराने के बारे में खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: अगरचे तू मेरे लिए ज़िल'आद है और लुबनान की चोटी, तो भी मैं यक़ीनन तुझे उजाड़ दूँगा और ग़ैर — आबाद शहर बनाऊँगा। ⁷ और मैं तेरे ख़िलाफ़ ग़ारतगरों को मुक़र्रर करूँगा, हर एक को उसके हथियारों के साथ, और वह तेरे नफ़ीस

देवदारों को काटेंगे और उनको आग में डालेंगे। ⁸ और बहुत सी क़ौम इस शहर की तरफ़ से गुज़रेंगी और उनमें से एक दूसरे से कहेगा कि 'खुदावन्द ने इस बड़े शहर से ऐसा क्यूँ किया है?' ⁹ तब वह जवाब देंगे, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने खुदा के 'अहद को छोड़ दिया और ग़ैरमा'बूदों की इबादत और परस्तिश की। ¹⁰ मुर्दे पर न रो, न नौहा करो, मगर उस पर जो चला जाता है ज़ार — ज़ार नाला करो, क्यूँकि वह फिर न आएगा, न अपने वतन को देखेगा। ¹¹ क्यूँकि शाह — ए — यहूदाह सलूम — बिन — यूसियाह के बारे में जो अपने बाप यूसियाह का जानशीन हुआ और इस जगह से चला गया, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि "वह फिर इस तरफ़ न आएगा; ¹² बल्कि वह उसी जगह मरेगा, जहाँ उसे गुलाम करके ले गए हैं और इस मुल्क को फिर न देखेगा।" ¹³ "उस पर अफ़सोस, जो अपने घर को बे — इन्साफ़ी से और अपने बालाखानों को ज़ुल्म से बनाता है; जो अपने पड़ोसी से बेगार लेता है, और उसकी मज़दूरी उसे नहीं देता; ¹⁴ जो कहता है, 'मैं अपने लिए बड़ा मकान और हवादार बालाखाना बनाऊँगा, और वह अपने लिए झांझरियाँ बनाता है और देवदार की लकड़ी की छत लगाता है और उसे शंगर्फी करता है। ¹⁵ क्या तू इसीलिए सल्तनत करेगा कि तुझे देवदार के काम का शौक़ है? क्या तेरे बाप ने नहीं खाया — पिया और 'अदालत — ओ — सदाक़त नहीं की जिससे उसका भला हुआ? ¹⁶ उसने ग़रीब और मुहताज का इन्साफ़ किया, इसी से उसका भला हुआ। क्या यही मेरा इरफ़ान न था? खुदावन्द फ़रमाता है। ¹⁷ लेकिन तेरी आँखें और तेरा दिल, सिर्फ़ लालच और बेगुनाह का खून बहाने और ज़ुल्म — ओ — सितम पर लगे हैं।" ¹⁸ इसीलिए खुदावन्द यहूयक़ीम शाह — ए — यहूदाह — बिन — यूसियाह के बारे में यूँ फ़रमाता है कि "उस पर 'हाय मेरे भाई! या हाय बहन!' कह कर मातम नहीं करेंगे, उसके लिए 'हाय आक्रा! या हाय मालिक!' कह कर नौहा नहीं करेंगे। ¹⁹ उसका दफ़न ग़धे के जैसा होगा, उसको घसीटकर येरूशलेम के फाटकों के बाहर फेंक देंगे।" ²⁰ "तू लुबनान पर चढ़ जा और चिल्ला, और बसन में अपनी आवाज़ बुलन्द कर; और 'अबारीम पर से फ़रियाद कर, क्यूँकि तेरे सब चाहने वाले मारे गए। ²¹ मैंने तेरी इक़बालमन्दी के दिनों में तुझ से कलाम किया, लेकिन तूने कहा, 'मैं न सुनूँगी। तेरी जवानी से तेरी यही चाल है कि तू मेरी आवाज़ को नहीं सुनती। ²² एक आँधी तेरे चरवाहों को उड़ा ले जाएगी, और तेरे आशिक़ गुलामी में जाएँगे; तब तू अपनी

सारी शरारत के लिए शर्मसार और पशेमान होगी। ²³ ऐ लुबनान की बसनेवाली, जो अपना आशियाना देवदारों पर बनाती है, तू कैसी 'आजिज़ होगी, जब तू ज़च्चा की तरह पैदाइश के दर्द में मुब्जिला होगी।" ²⁴ 'खुदावन्द फ़रमाता है: मुझे अपनी हयात की क्रसम, अगरचे तू ऐ शाह — ए — यहूदाह कूनियाह — बिन — यहूयक्रीम मेरे दहने हाथ की अँगूठी होता, तो भी मैं तुझे निकाल फेंकता; ²⁵ और मैं तुझ को तेरे जानी दुश्मनों के जिनसे तू डरता है, या'नी शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र और कसदियों के हवाले करूँगा। ²⁶ हाँ, मैं तुझे और तेरी माँ को जिससे तू पैदा हुआ, ग़ैर मुल्क में जो तुम्हारी ज़ादबूम नहीं है, हाँक दूँगा और तुम वहीं मरोगे। ²⁷ जिस मुल्क में वह वापस आना चाहते हैं, हरगिज़ लौटकर न आएँगे। ²⁸ क्या यह शख्स कूनियाह, नाचीज़ टूटा बर्तन है या ऐसा बर्तन जिसे कोई नहीं पूछता? वह और उसकी औलाद क्यूँ निकाल दिए गए और ऐसे मुल्क में जिलावतन किए गए जिसे वह नहीं जानते? ²⁹ ऐ ज़मीन, ज़मीन, ज़मीन! खुदावन्द का कलाम सुन! ³⁰ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि "इस आदमी को बे — औलाद लिखो, जो अपने दिनों में इक़बालमन्दी का मुँह न देखेगा; क्यूँकि उसकी औलाद में से कभी कोई ऐसा इक़बालमन्द न होगा कि दाऊद के तख़्त पर बैठे और यहूदाह पर सल्तनत करे।"

23

????????

¹ खुदावन्द फ़रमाता है: "उन चरवाहों पर अफ़सोस, जो मेरी चरागाह की भेड़ों को हलाक और तितर — बितर करते हैं!" ² इसलिए खुदावन्द, इस्राईल का खुदा उन चरवाहों की मुखालिफ़त में जो मेरे लोगों की चरवाही करते हैं, यूँ फ़रमाता है कि तुमने मेरे गल्ले को तितर — बितर किया, और उनको हाँक कर निकाल दिया और निगहबानी नहीं की; देखो, मैं तुम्हारे कामों की बुराई तुम पर लाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है। ³ लेकिन मैं उनको जो मेरे गल्ले से बच रहे हैं, तमाम मुमालिक से जहाँ — जहाँ मैंने उनको हाँक दिया था जमा' कर लूँगा, और उनको फिर उनके गल्ला खानों में लाऊँगा, और वह फैलेंगे और बढ़ेंगे। ⁴ और मैं उन पर ऐसे चौपान मुक़र्रर करूँगा जो उनको चराएँगे; और वह फिर न डरेंगे, न घबराएँगे, न गुम होंगे, खुदावन्द फ़रमाता है। ⁵ "देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है कि: मैं दाऊद के लिए एक सादिक़ शाख़ पैदा करूँगा और उसकी बादशाही मुल्क में इक़बालमन्दी और 'अदालत और

सदाक़त के साथ होगी। ⁶ उसके दिनों में यहूदाह नजात पाएगा, और इस्राईल सलामती से सुकूनत करेगा; और उसका नाम यह रखवा जाएगा, 'खुदावन्द हमारी सदाक़त'। ⁷ 'इसी लिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है कि वह फिर न कहेंगे, ज़िन्दा खुदावन्द की क्रसम, जो बनी — इस्राईल को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, ⁸ बल्कि, ज़िन्दा खुदावन्द की क्रसम, जो इस्राईल के घराने की औलाद को उत्तर की सरज़मीन से, और उन सब ममलुकतों से जहाँ — जहाँ मैंने उनको हाँक दिया था निकाल लाया, और वह अपने मुल्क में बसेंगे।" ⁹ नबियों के बारे में: मेरा दिल मेरे अन्दर टूट गया, मेरी सब हड्डियाँ थरथराती हैं; खुदावन्द और उसके पाक कलाम की वजह से मैं मतवाला सा हूँ, और उस शख्स की तरह जो मय से मग़लूब हो। ¹⁰ यक्रीनन ज़मीन बदकारों से भरी है; ला'नत की वजह से ज़मीन मातम करती है मैदान की चारागाहें सूख गयीं क्यूँकि उनके चाल चलन बुरे और उनका ज़ोर नाहक़ है। ¹¹ कि "नबी और काहिन, दोनों नापाक हैं, हाँ, मैंने अपने घर के अन्दर उनकी शरारत देखी, खुदावन्द फ़रमाता है। ¹² इसलिए उनकी राह उनके हक़ में ऐसी होगी, जैसे तारीकी में फिसलनी जगह, वह उसमें दौड़ाये जायेंगे और वहाँ गिरेंगे खुदावन्द फ़रमाता है: मैं उन पर बला लाऊँगा, या'नी उनकी सज़ा का साल। ¹³ और मैंने सामरिया के नबियों में हिमाक़त देखी है: उन्होंने बा'ल के नाम से नबुव्वत की और मेरी क़ौम इस्राईल को गुमराह किया। ¹⁴ मैंने येरूशलेम के नबियों में भी एक हौलनाक बात देखी: वह ज़िनाकार, झूठ के पैरौ और बदकारों के हामी हैं, यहाँ तक कि कोई अपनी शरारत से बाज़ नहीं आता; वह सब मेरे नज़दीक़ सद्म की तरह और उसके बाशिन्दे 'अमूरा की तरह हैं।" ¹⁵ इसीलिए रब्ब — उल — अफ़वाज़, नबियों के बारे में यूँ फ़रमाता है कि: "देख, मैं उनको नागदौना खिलाऊँगा और इन्द्रायन का पानी पिलाऊँगा; क्यूँकि येरूशलेम के नबियों ही से तमाम मुल्क में बेदीनी फैली है।" ¹⁶ रब्ब — उल — अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि: उन नबियों की बातें न सुनो, जो तुम से नबुव्वत करते हैं, वह तुम को बेकार की ता'लीम देते हैं, वह अपने दिलों के इल्हाम बयान करते हैं, न कि खुदावन्द के मुँह की बातें। ¹⁷ वह मुझे हक़ीर जाननेवालों से कहते रहते हैं, 'खुदावन्द ने फ़रमाया है कि: तुम्हारी सलामती होगी; "और हर एक से जो अपने दिल की सख़्ती पर चलता है, कहते हैं कि 'तुझ पर कोई बला न आएगी।" ¹⁸ लेकिन उनमें से कौन खुदावन्द की मजलिस में शामिल हुआ कि उसका कलाम सुने और

समझे? किसने उसके कलाम की तरफ़ तवज्जुह की और उस पर कान लगाया? 19 देख, खुदावन्द के ग़ज़बनाक गुस्से का तूफ़ान जारी हुआ है, बल्कि तूफ़ान का बगोला शरीरों के सिर पर टूट पड़ेगा। 20 खुदावन्द का ग़ज़ब फिर ख़त्म न होगा, जब तक उसे अंजाम तक न पहुँचाए और उसके दिल के इरादे को पूरा न करे। तुम आने वाले दिनों में उसे बखूबी मा'लूम करोगे। 21 मैंने इन नबियों को नहीं भेजा, लेकिन ये दौड़ते फिरे; मैंने इनसे कलाम नहीं किया, लेकिन इन्होंने नबुव्वत की। 22 लेकिन अगर वह मेरी मजलिस में शामिल होते, तो मेरी बातें मेरे लोगों को सुनाते; और उनको उनकी बुरी राह से और उनके कामों की बुराई से बाज़ रखते। 23 “खुदावन्द फ़रमाता है: क्या मैं नज़दीक ही का खुदा हूँ और दूर का खुदा नहीं?” 24 क्या कोई आदमी पोशीदा जगहों में छिप सकता है कि मैं उसे न देखूँ? खुदावन्द फ़रमाता है। क्या ज़मीन — ओ — आसमान मुझसे मा'मूर नहीं हैं? खुदावन्द फ़रमाता है। 25 मैंने सुना जो नबियों ने कहा, जो मेरा नाम लेकर झूटी नबुव्वत करते और कहते हैं कि 'मैंने ख़्वाब देखा, मैंने ख़्वाब देखा!' 26 कब तक ये नबियों के दिल में रहेगा कि झूटी नबुव्वत करें? हाँ, वह अपने दिल की फ़रेबकारी के नबी हैं। 27 जो गुमान रखते हैं कि अपने ख़्वाबों से, जो उनमें से हर एक अपने पड़ोसी से बयान करता है, मेरे लोगों को मेरा नाम भुला दें, जिस तरह उनके बाप — दादा बा'ल की वजह से मेरा नाम भूल गए थे। 28 जिस नबी के पास ख़्वाब है, वह ख़्वाब बयान करे; और जिसके पास मेरा कलाम है, वह मेरे कलाम को दियानतदारी से सुनाए। गेहूँ को भूसे से क्या निस्बत? खुदावन्द फ़रमाता है। 29 क्या मेरा कलाम आग की तरह नहीं है? खुदावन्द फ़रमाता है, और हथौड़े की तरह जो चट्टान को चकनाचूर कर डालता है? 30 इसलिए देख, मैं उन नबियों का मुखालिफ़ हूँ, खुदावन्द फ़रमाता है, जो एक दूसरे से मेरी बातें चुराते हैं। 31 देख, मैं उन नबियों का मुखालिफ़ हूँ, खुदावन्द फ़रमाता है, जो अपनी ज़बान को इस्ते'माल करते हैं और कहते हैं कि खुदावन्द फ़रमाता है। 32 खुदावन्द फ़रमाता है, देख, मैं उनका मुखालिफ़ हूँ जो झूटे ख़्वाबों को नबुव्वत कहते और बयान करते हैं और अपनी झूटी बातों से और बकवास से मेरे लोगों को गुमराह करते हैं; लेकिन मैंने न उनको भेजा न हुक्म दिया; इसलिए इन लोगों को उनसे हरगिज़ फ़ायदा न होगा, खुदावन्द फ़रमाता है। 33 “और जब यह लोग या नबी या काहिन तुझ से पूछे कि 'खुदावन्द की तरफ़ से बार — ए —

नबुव्वत क्या है?' तब तू उनसे कहना, 'कौन सा बार — ए — नबुव्वत! खुदावन्द फ़रमाता है, मैं तुम को फेंक दूँगा।’ 34 और नबी और काहिन और लोगों में से जो कोई कहे, 'खुदावन्द की तरफ़ से बार — ए — नबुव्वत, मैं उस शख्स को और उसके घराने को सज़ा दूँगा। 35 चाहिए कि हर एक अपने पड़ोसी और अपने भाई से यूँ कहे कि 'खुदावन्द ने क्या जवाब दिया?' और 'खुदावन्द ने क्या फ़रमाया है? 36 लेकिन खुदावन्द की तरफ़ से बार — ए — नबुव्वत का ज़िक्र तुम कभी न करना; इसलिए कि हर एक आदमी की अपनी ही बातें उस पर बार होंगी, क्योंकि तुम ने ज़िन्दा खुदा रब्ब — उलअफ़वाज़, हमारे खुदा के कलाम को बिगाड़ डाला है। 37 तू नबी से यूँ कहना कि 'खुदावन्द ने तुझे क्या जवाब दिया?' और 'खुदावन्द ने क्या फ़रमाया?' 38 लेकिन चूँकि तुम कहते हो, 'खुदावन्द की तरफ़ से बार — ए — नबुव्वत; इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: चूँकि तुम कहते हो, खुदावन्द की तरफ़ से बार — ए — नबुव्वत, और मैंने तुम को कहला भेजा, 'खुदावन्द की तरफ़ से बार — ए — नबुव्वत न कहो; 39 इसलिए देखो, मैं तुम को बिल्कुल फ़रामोश कर दूँगा और तुमको और इस शहर को, जो मैंने तुम को और तुम्हारे बाप दादा को दिया, अपनी नज़र से दूर कर दूँगा। 40 और मैं तुमको हमेशा की मलामत का निशाना बनाऊँगा, और हमेशा की शर्मिंदगी तुम पर लाऊँगा जो कभी फ़रामोश न होगी।”

24

?????? ?? ???? ?????

1 जब शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र शाह — ए — यहूदाह यकूनियाह — बिन — यहूयक्रीम को और यहूदाह के हाकिम को, कारीगरों और लुहारों के साथ येरूशलेम से गुलाम करके बाबुल को ले गया, तो खुदावन्द ने मुझ पर नुमायाँ किया, और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द की हैकल के सामने अंजीर की दो टोकरियाँ धरी थीं। 2 एक टोकरी में अच्छे से अच्छे अंजीर थे, उनकी तरह जो पहले पकते हैं; और दूसरी टोकरी में बहुत ख़राब अंजीर थे, ऐसे ख़राब कि खाने के क़ाबिल न थे। 3 और खुदावन्द ने मुझसे फ़रमाया, ऐ यर्मियाह! तू क्या देखता है? और मैंने 'अर्ज़ की, अंजीर अच्छे अंजीर बहुत अच्छे और ख़राब अंजीर बहुत ख़राब, ऐसे ख़राब कि खाने के क़ाबिल नहीं। 4 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ कि: 5 खुदावन्द, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: इन अच्छे अंजीरों की तरह मैं

यहूदाह के उन गुलामों पर जिनको मैंने इस मक़ाम से कसदियों के मुल्क में भेजा है, करम की नज़र रखूँगा।⁶ क्योंकि उन पर मेरी नज़र — ए — 'इनायत होगी, और मैं उनको इस मुल्क में वापस लाऊँगा, और मैं उनको बर्बाद नहीं बल्कि आबाद करूँगा; मैं उनको लगाऊँगा और उखाड़ूँगा नहीं।⁷ और मैं उनको ऐसा दिल दूँगा कि मुझे पहचानें कि मैं खुदावन्द हूँ! और वह मेरे लोग होंगे और मैं उनका खुदा हूँगा, इसलिए कि वह पूरे दिल से मेरी तरफ़ फ़िरेंगे।⁸ “लेकिन उन ख़राब अंजीरों के बारे में, जो ऐसे ख़राब हैं कि खाने के क़ाबिल नहीं; खुदावन्द यकीनन यूँ फ़रमाता है कि इसी तरह मैं शाह — ए — यहूदाह सिदक़ियाह को, और उसके हाकिम को, और येरूशलेम के बाक़ी लोगों को, जो इस मुल्क में बच रहे हैं और जो मुल्क — ए — मिस्र में बसते हैं, छोड़ दूँगा।⁹ हाँ, मैं उनको छोड़ दूँगा कि दुनिया की सब ममलुकतों में धक्के खाते फ़िरें, ताकि वह हर एक जगह में जहाँ — जहाँ मैं उनको हाँक दूँगा, मलामत और मसल और तान और ला'नत का ज़रिया' हों।¹⁰ और मैं उनमें तलवार और काल और वबा भेजूँगा यहाँ तक कि वह उस मुल्क से जो मैंने उनको और उनके बाप — दादा को दिया, हलाक हो जाएँगे।”

25

2222222 22 222222 222

¹ वह कलाम जो शाह — ए — यहूदाह यहूयक्रीम — बिन — यूसियाह के चौथे बरस में, जो शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र का पहला बरस था, यहूदाह के सब लोगों के बारे में यर्मियाह पर नाज़िल हुआ; ² जो यर्मियाह नबी ने यहूदाह के सब लोगों और येरूशलेम के सब बाशिन्दों को सुनाया, और कहा, ³ कि शाह — ए — यहूदाह यूसियाह — बिन — अमून के तेरहवें बरस से आज तक यह तेईस बरस खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल होता रहा, और मैं तुम को सुनाता और सही वक़्त पर “जताता रहा पर तुम ने न सुना। ⁴ और खुदावन्द ने अपने सब ख़िदमतगुज़ार नबियों को तुम्हारे पास भेजा, उसने उनको सही वक़्त पर भेजा, लेकिन तुम ने न सुना और न कान लगाया; ⁵ उन्होंने कहा, 'तुम सब अपनी — अपनी बुरी राह से, और अपने बुरे कामों से बाज़ आओ, और उस मुल्क में जो खुदावन्द ने तुम को और तुम्हारे बाप — दादा को पहले से हमेशा के लिए दिया है, बसो; ⁶ और ग़ैर मा'बूदों की पैरवी न करो कि उनकी 'इबादत — ओ — परस्तिश करो, और अपने हाथों के कामों से मुझे ग़ज़बनाक न करो; और मैं

तुम को कुछ नुक़सान न पहुँचाऊँगा।⁷ लेकिन खुदावन्द फ़रमाता है, तुम ने मेरी न सुनी; ताकि अपने हाथों के कामों से अपने ज़ियान के लिए मुझे ग़ज़बनाक करो।⁸ 'इसलिए रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि: चूँकि तुम ने मेरी बात न सुनी,⁹ देखो, मैं तमाम उत्तरी क़बीलों को और अपने ख़िदमत गुज़ार शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र को बुला भेजूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, और मैं उनको इस मुल्क और इसके बाशिन्दों पर, और उन सब क़ौमों पर जो आस — पास हैं चढ़ा लाऊँगा; और इनको बिल्कुल हलाक — ओ — बर्बाद कर दूँगा और इनको हैरानी और सुस्कार का ज़रिया' बनाऊँगा और हमेशा के लिए वीरान करूँगा।¹⁰ बल्कि मैं इनमें से खुशी — ओ — शादमानी की आवाज़ दूँगे और दूल्हन की आवाज़, चक्की की आवाज़ और चरागा की रोशनी ख़त्म कर दूँगा।¹¹ और यह सारी सरज़मीन वीरान और हैरानी का ज़रिया' हो जाएगी, और यह क़ौम सत्तर बरस तक शाह — ए — बाबुल की गुलामी करेंगी।¹² खुदावन्द फ़रमाता है, जब सत्तर बरस पूरे होंगे, तो मैं शाह — ए — बाबुल को और उस क़ौम को और कसदियों के मुल्क को, उनकी बदकिरदारी की वजह से सज़ा दूँगा; और मैं उसे ऐसा उजाड़ूँगा कि हमेशा तक वीरान रहे।¹³ और मैं उस मुल्क पर अपनी सब बातें जो मैंने उसके बारे में कहीं, या'नी वह सब जो इस किताब में लिखी हैं, जो यर्मियाह ने नबुव्वत करके सब क़ौमों को कह सुनाई, पूरी करूँगा ¹⁴ कि उनसे, हाँ, उन्हीं से बहुत सी क़ौमों और बड़े — बड़े बादशाह गुलाम के जैसी ख़िदमत लेंगे; तब मैं उनके आ'माल के मुताबिक़ और उनके हाथों के कामों के मुताबिक़ उनको बदला दूँगा।”¹⁵ चूँकि खुदावन्द इस्राईल के खुदा ने मुझे फ़रमाया, ग़ज़ब की मय का यह प्याला मेरे हाथ से ले और उन सब क़ौमों को जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ, पिला, ¹⁶ कि वह पिएँ और लड़खड़ाएँ, और उस तलवार की वजह से जो मैं उनके बीच चलाऊँगा बेहवास हों।¹⁷ इसलिए मैंने खुदावन्द के हाथ से वह प्याला लिया, और उन सब क़ौमों को जिनके पास खुदावन्द ने मुझे भेजा था पिलाया; ¹⁸ या'नी येरूशलेम और यहूदाह के शहरों को और उसके बादशाहों और हाकिम को, ताकि वह बर्बाद हों और हैरानी और सुस्कार और ला'नत का ज़रिया' ठहरें, जैसे अब हैं; ¹⁹ शाह — ए — मिस्र फिर'औन को, और उसके मुलाज़िमों और उसके हाकिम और उसके सब लोगों को; ²⁰ और सब मिले — जुले लोगों, और 'ऊज़ की ज़मीन के सब बादशाहों और फ़िलिस्तियों की सरज़मीन के सब बादशाहों, और अश्कलोन और ग़ज़ा

लोगों से मुखातिब होकर कहा कि यह शख्स वाजिब — उल — क़त्ल है क्योंकि इसने इस शहर के खिलाफ़ नबुव्वत की है, जैसा कि तुम ने अपने कानों से सुना। ¹² तब यर्मियाह ने सब हाकिम और तमाम लोगों से मुखातिब होकर कहा कि “खुदावन्द ने मुझे भेजा कि इस घर और इस शहर के खिलाफ़ वह सब बातें जो तुम ने सुनी हैं, नबुव्वत से कहूँ। ¹³ इसलिए अब तुम अपने चाल चलन और अपने आ'माल को दुरुस्त करो, और खुदावन्द अपने खुदा की आवाज़ को सुनो, ताकि खुदावन्द उस 'ऐजाब से जिसका तुम्हारे खिलाफ़ 'ऐलान किया है बाज़ रहे। ¹⁴ और देखो, मैं तो तुम्हारे काबू में हूँ जो कुछ तुम्हारी नज़र में खूब — ओ — रास्त हो मुझसे करो। ¹⁵ लेकिन यकीन जानो कि अगर तुम मुझे क़त्ल करोगे, तो बेगुनाह का खून अपने आप पर और इस शहर पर और इसके बाशिन्दों पर लाओगे; क्योंकि हकीकत में खुदावन्द ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि तुम्हारे कानों में ये सब बातें कहूँ।” ¹⁶ तब हाकिम और सब लोगों ने काहिनों और नबियों से कहा, यह शख्स वाजिब — उल — क़त्ल नहीं क्योंकि उसने खुदावन्द हमारे खुदा के नाम से हम से कलाम किया। ¹⁷ तब मुल्क के चंद बुज़ुर्ग उठे और कुल जमा'अत से मुखातिब होकर कहने लगे, ¹⁸ कि “मीकाह मोरश्ती ने शाह — ए — यहूदाह हिज़क्रियाह के दिनों में नबुव्वत की, और यहूदाह के सब लोगों से मुखातिब होकर यूँ कहा, 'रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि: सिय्यून खेत की तरह जोता जाएगा और येरूशलेम खण्डर हो जाएगा, और इस घर का पहाड़ जंगल की ऊँची जगहों की तरह होगा। ¹⁹ क्या शाह — ए — यहूदाह हिज़क्रियाह और तमाम यहूदाह ने उसको क़त्ल किया? क्या वह खुदावन्द से न डरा, और खुदावन्द से मुनाजात न की? और खुदावन्द ने उस 'ऐजाब को जिसका उनके खिलाफ़ 'ऐलान किया था, बाज़ न रखवा? तब यूँ हम अपनी जानों पर बड़ी आफ़त लाएँगे।” ²⁰ फिर एक और शख्स ने खुदावन्द के नाम से नबुव्वत की, या'नी ऊरिय्याह — बिनसमा'याह ने जो करयत या'रीम का था; उसने इस शहर और मुल्क के खिलाफ़ यर्मियाह की सब बातों के मुताबिक़ नबुव्वत की; ²¹ और जब यहूयक्रीम बादशाह और उसके सब जंगी मर्दों और हाकिम ने उसकी बातें सुनीं, तो बादशाह ने उसे क़त्ल करना चाहा; लेकिन ऊरिय्याह यह सुनकर डरा और मिस्र को भाग गया। ²² और यहूयक्रीम बादशाह ने चंद आदमियों या'नी इलनातन — बिन — अकबूर और उसके साथ कुछ और आदमियों को मिस्र में भेजा: ²³ और वह ऊरिय्याह को मिस्र

से निकाल लाए, और उसे यहूयक्रीम बादशाह के पास पहुँचाया; और उसने उसको तलवार से क़त्ल किया और उसकी लाश को 'अवाम के क़ब्रिस्तान में फिकवा दिया। ²⁴ लेकिन अखीक़ाम — बिन — साफ़न यर्मियाह का दस्तगीर था, ताकि वह क़त्ल होने के लिए लोगों के हवाले न किया जाए।

27

यहूदाह सिदक्रियाह — बिन — यूसियाह की सल्तनत के शुरू में खुदावन्द की तरफ़ से यह कलाम यर्मियाह पर नाज़िल हुआ, ² कि खुदावन्द ने मुझे यूँ फ़रमाया कि: “बन्धन और जुए बनाकर अपनी गर्दन पर डाल, ³ और उनको शाह — ए — अदोम, शाह — ए — मोआब, शाह — ए — बनी 'अम्मोन, शाह — ए — सूर और शाह — ए — सैदा के पास उन क़ासिदों के हाथ भेज, जो येरूशलेम में शाह — ए — यहूदाह सिदक्रियाह के पास आए हैं; ⁴ और तू उनको उनके आक्राओं के वास्ते ताकीद कर, 'रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: तुम अपने आक्राओं से यूँ कहना ⁵ कि मैंने ज़मीन को और इंसान — ओ — हैवान को जो इस ज़मीन पर हैं, अपनी बड़ी कुदरत और बलन्द बाज़ू से पैदा किया; और उनको जिसे मैंने मुनासिब जाना बरखा ⁶ और अब मैंने यह सब ममलुकते अपने ख़िदमत गुज़ार शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के क़ब्ज़े में कर दी हैं, और मैदान के जानवर भी उसे दिए, कि उसके काम आएँ। ⁷ और सब क़ौमों उसकी और उसके बेटे और उसके पोते की ख़िदमत करेंगी, जब तक कि उसकी ममलुकत का वक़्त न आए; तब बहुत सी क़ौमों और बड़े — बड़े बादशाह उससे ख़िदमत करवाएँगे। ⁸ खुदावन्द फ़रमाता है: जो क़ौम और जो सल्तनत उसकी, या'नी शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र की ख़िदमत न करेंगी और अपनी गर्दन शाह — ए — बाबुल के जूए तले न झुकाएगी, उस क़ौम को मैं तलवार और काल और वबा से सज़ा दूँगा, यहाँ तक कि मैं उसके हाथ से उनको हलाक कर डालूँगा। ⁹ इसलिए तुम अपने नबियों और ग़ैबदानों और ख़्वाबबीनों और शगूनीयों और जादूगरों की न सुनो, जो तुम से कहते हैं कि तुम शाह — ए — बाबुल की ख़िदमत गुज़ारी न करोगे। ¹⁰ क्योंकि वह तुम से झूटी नबुव्वत करते हैं, ताकि तुम को तुम्हारे मुल्क से आवारा करें, और मैं तुम को निकाल दूँ और तुम हलाक हो जाओ। ¹¹ लेकिन जो

क्रौम अपनी गर्दन शाह — ए — बाबुल के जूए तले रख देगी और उसकी खिदमत करेगी, उसको मैं उसकी ममलुकत में रहने दूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, और वह उसमें खेती करेगी और उसमें बसेगी।”¹² इन सब बातों के मुताबिक मैंने शाह — ए — यहूदाह सिदक्रियाह से कलाम किया और कहा कि “अपनी गर्दन शाह — ए — बाबुल के जूए तले रख कर उसकी और उसकी क्रौम की खिदमत करो और ज़िन्दा रहो।¹³ तू और तेरे लोग तलवार और काल और वबा से क्यूँ मरोगे, जैसा कि खुदावन्द ने उस क्रौम के बारे में फ़रमाया है, जो शाह — ए — बाबुल की खिदमत न करेगी? ¹⁴ और उन नबियों की बातें न सुनो, जो तुम से कहते हैं कि तुम शाह — ए — बाबुल की खिदमत न करोगे; क्यूँकि वह तुम से झूटी नबुव्वत करते हैं। ¹⁵ क्यूँकि खुदावन्द फ़रमाता है मैंने उनको नहीं भेजा, लेकिन वह मेरा नाम लेकर झूटी नबुव्वत करते हैं; ताकि मैं तुम को निकाल दूँ और तुम उन नबियों के साथ जो तुम से नबुव्वत करते हैं हलाक हो जाओ।” ¹⁶ मैंने काहिनों से और उन सब लोगों से भी मुखातिब होकर कहा, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: अपने नबियों की बातें न सुनो, जो तुम से नबुव्वत करते और कहते हैं कि देखो, खुदावन्द के घर के बर्तन अब थोड़ी ही देर में बाबुल से वापस आ जाएँगे, क्यूँकि वह तुम से झूटी नबुव्वत करते हैं। ¹⁷ उनकी न सुनो, शाह — ए — बाबुल की खिदमतगुजारी करो और ज़िन्दा रहो; यह शहर क्यूँ वीरान हो? ¹⁸ लेकिन अगर वह नबी हैं, और खुदावन्द का कलाम उनकी अमानत में है, तो वह रब्ब — उल — अफ़वाज से शफ़ा'अत करें, ताकि वह बर्तन जो खुदावन्द के घर में और शाह — ए — यहूदाह के घर में और येरूशलेम में बाक़ी हैं, बाबुल को न जाएँ। ¹⁹ क्यूँकि सुतूनों के बारे में और बड़े होज़ और कुर्सियों और बर्तनों के बारे में जो इस शहर में बाक़ी हैं, रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है, ²⁰ या'नी जिनको शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र नहीं ले गया, जब वह यहूदाह के बादशाह यकूनियाह — बिन — यहूयक्रीम को येरूशलेम से, और यहूदाह और येरूशलेम के सब शुरफ़ा को गुलाम करके बाबुल को ले गया; ²¹ हाँ, रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, उन बर्तनों के बारे में जो खुदावन्द के घर में और शाह — ए — यहूदाह के महल में और येरूशलेम में बाक़ी हैं, यूँ फ़रमाता है ²² कि वह बाबुल में पहुँचाए जाएँगे; और उस दिन तक कि मैं उनको याद फ़रमाऊँ वहाँ रहेंगे, खुदावन्द फ़रमाता है उस वक़्त मैं उनको उठा लाऊँगा और फिर इस मकान

में रख दूँगा।

28

यहूदाह सिदक्रियाह की सल्लनत के शुरू में, चौथे बरस के पाँचवें महीने में, यूँ हुआ कि जिबा'ऊनी "अज़ज़ूर के बेटे हननियाह नबी ने खुदावन्द के घर में काहिनों और सब लोगों के सामने मुझसे मुखातिब होकर कहा, ² 'रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: मैंने शाह — ए — बाबुल का जुआ तोड़ डाला है, ³ दो ही बरस के अन्दर मैं खुदावन्द के घर के सब बर्तन, जो शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र इस मकान से बाबुल को ले गया, इसी मकान में वापस लाऊँगा। ⁴ शाह — ए — यहूदाह यकूनियाह — बिन — यहूयक्रीम को और यहूदाह के सब गुलामों को जो बाबुल को गए थे, फिर इसी जगह लाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है; क्यूँकि मैं शाह — ए — बाबुल के जूए को तोड़ डालूँगा। ⁵ तब यरमियाह नबी ने काहिनों और सब लोगों के सामने, जो खुदावन्द के घर में खड़े थे, हननियाह नबी से कहा, ⁶ “हाँ, यरमियाह नबी ने कहा, आमीन! खुदावन्द ऐसा ही करे, खुदावन्द तेरी बातों को जो तू ने नबुव्वत से कहीं, पूरा करे कि खुदावन्द के घर के बर्तनों को और सब गुलामों को बाबुल से इस मकान में वापस लाए। ⁷ तो भी अब यह बात जो मैं तेरे और सब लोगों के कानों में कहता हूँ सुन; ⁸ उन नबियों ने जो मुझसे और तुझ से पहले गुज़रे ज़माने में थे, बहुत से मुल्कों और बड़ी — बड़ी सल्लनतों के हक़ में, जंग और बला और वबा की नबुव्वत की है। ⁹ वह नबी जो सलामती की ख़बर देता है, जब उस नबी का कलाम पूरा हो जाए तो मा'लूम होगा कि हक़ीक़त में खुदावन्द ने उसे भेजा है।” ¹⁰ तब हननियाह नबी ने यरमियाह नबी की गर्दन पर से जुआ उतारा और उसे तोड़ डाला; ¹¹ और हननियाह ने सब लोगों के सामने इस तरह कलाम किया, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: मैं इसी तरह शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र का जुआ सब क्रौमों की गर्दन पर से, दो ही बरस के अन्दर तोड़ डालूँगा। तब यरमियाह नबी ने अपनी राह ली। ¹² जब हननियाह नबी यरमियाह नबी की गर्दन पर से जुआ तोड़ चुका था, तो खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ: ¹³ कि “जा, और हननियाह से कह कि 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: तूने लकड़ी के जुओं को तो तोड़ा, लेकिन उनके बदले में लोहे के जूए बना दिए। ¹⁴ क्यूँकि रब्ब — उल अफ़वाज,

इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि मैंने इन सब क्रौमों की गर्दन पर लोहे का जुआ डाल दिया है, ताकि वह शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र की ख़िदमत करें; तब वह उसकी ख़िदमतगुज़ारी करेंगी, और मैंने मैदान के जानवर भी उसे दे दिए हैं।” ¹⁵ तब यर्मियाह नबी ने हननियाह नबी से कहा, ऐ हननियाह, अब सुन; खुदावन्द ने तुझे नहीं भेजा, लेकिन तू इन लोगों को झूठी उम्मीद दिलाता है। ¹⁶ इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि “देख, मैं तुझे इस ज़मीन पर से निकाल दूँगा; तू इसी साल मर जाएगा क्योंकि तूने खुदावन्द के खिलाफ़ फ़ितनाअंगेज़ बातें कही हैं।” ¹⁷ चुनाँचे उसी साल के सातवें महीने हननियाह नबी मर गया।

29

???? ???? ? ? ?

¹ अब यह उस ख़त की बातें हैं जो यर्मियाह नबी ने येरूशलेम से, बाक़ी बुज़ुर्गों को जो गुलाम हो गए थे, और काहिनों और नबियों और उन सब लोगों को जिनको नबूकदनज़र येरूशलेम से गुलाम करके बाबुल ले गया था ² उसके बाद के यकूनियाह बादशाह और उसकी वालिदा और ख्वाजासरा और यहूदाह और येरूशलेम के हाकिम और कारीगर और लुहार येरूशलेम से चले गए थे ³ अल'आसा — बिन — साफ़न और जमरियाह — बिन — खिलक्रियाह के हाथ जिनको शाह — ए — यहूदाह सिदक्रियाह ने बाबुल में शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के पास भेजा इरसाल किया और उसने कहा, ⁴ 'रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, उन सब गुलामों से जिनको मैंने येरूशलेम से गुलाम करवा कर बाबुल भेजा है, यूँ फ़रमाता है: ⁵ तुम घर बनाओ और उन में बसो, और बाग़ लगाओ और उनके फल खाओ, ⁶ बीवियाँ करो ताकि तुम से बेटे — बेटियाँ पैदा हों, और अपने बेटों के लिए बीवियाँ लो और अपनी बेटियाँ शौहरों को दो ताकि उनसे बेटे — बेटियाँ पैदा हों, और तुम वहाँ फलो — फूलो और कम न हो। ⁷ और उस शहर की ख़ैर मनाओ, जिसमें मैंने तुम को गुलाम करवा कर भेजा है, और उसके लिए खुदावन्द से दुआ करो; क्योंकि उसकी सलामती में तुम्हारी सलामती होगी। ⁸ क्योंकि रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: वह नबी जो तुम्हारे बीच है और तुम्हारे ग़ैबदान तुम को गुमराह न करें, और अपने ख्वाबबीनों को, जो तुम्हारे ही कहने से ख्वाब देखते हैं न मानो; ⁹ क्योंकि वह मेरा नाम लेकर तुम से झूठी नबुव्वत करते हैं, मैंने उनको नहीं भेजा, खुदावन्द फ़रमाता है। ¹⁰ क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: जब बाबुल में

सत्तर बरस गुज़र चुकेंगे, तो मैं तुम को याद फ़रमाऊँगा और तुम को इस मकान में वापस लाने से अपने नेक क्रौल को पूरा करूँगा। ¹¹ क्योंकि मैं तुम्हारे हक़ में अपने ख़यालात को जानता हूँ, खुदावन्द फ़रमाता है, या'नी सलामती के ख़यालात, बुराई के नहीं; ताकि मैं तुम को नेक अन्जाम की उम्मीद बख़ूँ। ¹² तब तुम मेरा नाम लोगे, और मुझसे दुआ करोगे और मैं तुम्हारी सुनूँगा। ¹³ और तुम मुझे ढूँडोगे और पाओगे, जब पूरे दिल से मेरे तालिब होगे। ¹⁴ और मैं तुम को मिल जाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, और मैं तुम्हारी गुलामी को ख़त्म कराऊँगा और तुम को उन सब क्रौमों से और सब जगहों से, जिनमें मैंने तुम को हाँक दिया है, जमा' कराऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है; और मैं तुम को उस जगह में जहाँ से मैंने तुम को गुलाम करवाकर भेजा, वापस लाऊँगा। ¹⁵ “क्योंकि तुम ने कहा कि 'खुदावन्द ने बाबुल में हमारे लिए नबी खड़े किए। ¹⁶ इसलिए खुदावन्द उस बादशाह के बारे में जो दाऊद के तख़्त पर बैठा है, और उन सब लोगों के बारे में जो इस शहर में बसते हैं, या'नी तुम्हारे भाइयों के बारे में जो तुम्हारे साथ गुलाम होकर नहीं गए, यूँ फ़रमाता है: ¹⁷ 'रब्ब — उल — अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि देखो, मैं उन पर तलवार और काल और वबा भेजूँगा और उनको ख़राब अंजीरों की तरह बनाऊँगा जो ऐसे ख़राब हैं कि खाने के क़ाबिल नहीं। ¹⁸ और मैं तलवार और काल और वबा से उनका पीछा करूँगा, और मैं उनको ज़मीन की सब सल्लतनों के हवाले करूँगा कि धक्के खाते फ़िरें और सताए जाएँ, और सब क्रौमों के बीच जिनमें मैंने उनको हाँक दिया है, ला'नत और हैरत और सुस्कार और मलामत का ज़रिया' हों; ¹⁹ इसलिए कि उन्होंने मेरी बातें नहीं सुनी खुदावन्द फ़रमाता है जब मैंने अपने ख़िदमतगुज़ार नबियों को उनके पास भेजा, हाँ, मैंने उनको सही वक़्त पर भेजा, लेकिन तुम ने न सुना, खुदावन्द फ़रमाता है।” ²⁰ इसलिए तुम, ऐ गुलामी के सब लोगों, जिनको मैंने येरूशलेम से बाबुल को भेजा, खुदावन्द का कलाम सुनो: ²¹ 'रब्ब — उल — अफ़वाज़ इस्राईल का खुदा अख़ीअब बिन — कुलायाह के बारे में और सिदक्रियाह — बिन — मासियाह के बारे में, जो मेरा नाम लेकर तुम से झूठी नबुव्वत करते हैं, यूँ फ़रमाता है कि: देखो, मैं उनको शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के हवाले करूँगा, और वह उनको तुम्हारी आँखों के सामने क़त्ल करेगा; ²² और यहूदाह के सब गुलाम जो बाबुल में हैं, उनकी ला'नती मसल बनाकर कहा करेंगे, कि खुदावन्द तुझे सिदक्रियाह और अख़ीअब की तरह करे, जिनको शाह — ए — बाबुल ने आग पर

कबाब किया, ²³ क्योंकि उन्होंने इस्राईल में बेवकूफी की और अपने पड़ोसियों की बीवियों से ज़िनाकारी की, और मेरा नाम लेकर झूठी बातें कहीं जिनका मैंने उनको हुक्म नहीं दिया था, खुदावन्द फ़रमाता है, मैं जानता हूँ और गवाह हूँ। ²⁴ और नखलामी समा'याह से कहना, ²⁵ कि रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है: इसलिए कि तूने येरूशलेम के सब लोगों को, और सफ़नियाह — बिन — मासियाह काहिन और सब काहिनों को अपने नाम से यूँ खत लिख भेजे, ²⁶ कि 'खुदावन्द ने यहूयदा' काहिन की जगह तुझको काहिन मुक़रर किया कि तू खुदावन्द के घर के नाज़िमों में हो, और हर एक मजनून और नबुव्वत के मुद्द'ई को कैद करे और काठ में डाले। ²⁷ तब तूने 'अन्तोती यर्मियाह की जो कहता है कि मैं तुम्हारा नबी हूँ, गोशमाली क्यूँ नहीं की? ²⁸ क्यूँकि उसने बाबुल में यह कहला भेजा है कि ये मुद्दत दराज़ है; तुम घर बनाओ और बसो, और बाग़ लगाओ और उनका फल खाओ। ²⁹ और सफ़नियाह काहिन ने यह खत पढ़ कर यर्मियाह नबी को सुनाया। ³⁰ तब खुदावन्द का यह कलाम यर्मियाह पर नाज़िल हुआ कि: ³¹ गुलामी के सबलोगों को कहला भेज, 'खुदावन्द नखलामी समायाह के बारे में यूँ फ़रमाता है: इसलिए कि समा'याह ने तुम से नबुव्वत की, हालाँकि मैंने उसे नहीं भेजा, और उसने तुम को झूटी उम्मीद दिलाई; ³² इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देखो, मैं नखलामी समा'याह को और उसकी नसल को सज़ा दूँगा; उसका कोई आदमी न होगा जो इन लोगों के बीच बसे, और वह उस नेकी को जो मैं अपने लोगों से करूँगा हरगिज़ न देखेगा, खुदावन्द फ़रमाता है, क्यूँकि उसने खुदावन्द के खिलाफ़ फ़ितनाअंगेज़ बातें कही हैं।

30

???? ? ? ? ? ?

¹ वह कलाम जो खुदावन्द की तरफ़ से यर्मियाह पर नाज़िल हुआ ² "खुदावन्द इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि: यह सब बातें जो मैंने तुझ से कहीं किताब में लिख। ³ क्यूँकि देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, कि मैं अपनी क्रौम इस्राईल और यहूदाह की गुलामी को खत्म कराऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है; और मैं उनको उस मुल्क में वापस लाऊँगा, जो मैंने उनके बाप — दादा को दिया, और वह उसके मालिक होंगे।" ⁴ और वह बातें जो खुदावन्द ने इस्राईल और यहूदाह के बारे में फ़रमाई यह हैं: ⁵ कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: हम ने हड़बड़ी की आवाज़

सुनी, खौफ़ है और सलामती नहीं। ⁶ अब पूछो और देखो, क्या कभी किसी मर्द को पैदाइश का दर्द लगा? क्या वजह है कि मैं हर एक मर्द को ज़च्चा की तरह अपने हाथ कमर पर रखे देखता हूँ और सबके चेहरे ज़र्द हो गए हैं? ⁷ अफ़सोस! वह दिन बड़ा है, उसकी मिसाल नहीं; वह या'कूब की मुसीबत का वक़्त है, लेकिन वह उससे रिहाई पाएगा। ⁸ और उस रोज़ यूँ होगा, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, कि मैं उसका जूआ तेरी गर्दन पर से तोड़ूँगा और तेरे बन्धनों को खोल डालूँगा; और बेगाने तुझ से फिर खिदमत न कराएँगे। ⁹ लेकिन वह खुदावन्द अपने खुदा की और अपने बादशाह दाऊद की, जिसे मैं उनके लिए खड़ा करूँगा, खिदमत करेंगे। ¹⁰ इसलिए ऐ मेरे खादिम या'कूब, हिरासान न हो, खुदावन्द फ़रमाता है; और ऐ इस्राईल, घबरा न जा; क्यूँकि देख, मैं तुझे दूर से और तेरी औलाद को गुलामी की सरज़मीन से छुड़ाऊँगा; और या'कूब वापस आएगा और आराम — ओ — राहत से रहेगा और कोई उसे न डराएगा। ¹¹ क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ, खुदावन्द फ़रमाता है, ताकि तुझे बचाऊँ: अगरचे मैं सब क्रौमों को जिनमें मैंने तुझे तितर — बितर किया तमाम कर डालूँगा तोभी तुझे तमाम न करूँगा; बल्कि तुझे मुनासिब तम्बीह करूँगा और हरगिज़ बे सज़ा न छोड़ूँगा। ¹² क्यूँकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: तेरी खस्तगी ला — इलाज और तेरा ज़ख्म सख्त दर्दनाक है। ¹³ तेरा हिमायती कोई नहीं जो तेरी मरहम पट्टी करे तेरे पास कोई शिफ़ा बख़्श दवा नहीं। ¹⁴ तेरे सब चाहने वाले तुझे भूल गए, वह तेरे तालिब नहीं हैं, हकीकत में मैंने तुझे दुश्मन की तरह घायल किया और संग दिल की तरह तादीब की; इसलिए कि तेरी बदकिरदारी बढ़ गई और तेरे गुनाह ज्यादा हो गए। ¹⁵ तू अपनी खस्तगी की वजह से क्यूँ चिल्लाती है, तेरा दर्द ला — इलाज है; इसलिए कि तेरी बदकिरदारी बहुत बढ़ गई और तेरे गुनाह ज्यादा हो गए, मैंने तुझसे ऐसा किया। ¹⁶ तो भी वह सब जो तुझे निगलते हैं, निगले जाएँगे, और तेरे सब दुश्मन गुलामी में जाएँगे, और जो तुझे ग़ारत करते हैं, खुद ग़ारत होंगे; और मैं उन सबको जो तुझे लूटते हैं लुटा दूँगा। ¹⁷ क्यूँकि मैं फिर तुझे तंदुरुस्ती और तेरे ज़ख्मों से शिफ़ा बख़्शूँगा खुदावन्द फ़रमाता है क्यूँकि उन्होंने तेरा मरदूदा रखवा कि यह सिय्यून है, जिसे कोई नहीं पूछता ¹⁸ "खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं या'कूब के खेमों की गुलामी को खत्म कराऊँगा, और उसके घरों पर रहमत करूँगा; और शहर अपने ही पहाड़ पर बनाया जाएगा और क़स्र अपने ही मक़ाम पर आबाद हो जाएगा। ¹⁹ और उनमें से

शुक्रगुजारी और खुशी करने वालों की आवाज़ आएगी; और मैं उनको अफ़ज़ाईश बख़्शूँगा, और वह थोड़े न होंगे; मैं उनको शौकत बख़्शूँगा और वह हकीर न होंगे।²⁰ और उनकी औलाद ऐसी होगी जैसी पहले थी, और उनकी जमा'अत मेरे हुज़ूर में क़ाईम होगी, और मैं उन सबको जो उन पर ज़ुल्म करें सज़ा दूँगा।²¹ और उनका हाकिम उन्हीं में से होगा, और उनका फ़रमौरवाँ उन्हीं के बीच से पैदा होगा और मैं उसे कुर्बत बख़्शूँगा, और वह मेरे नज़दीक आएगा; क्योंकि कौन है जिसने ये ज़ुर'अत की हो कि मेरे पास आए? खुदावन्द फ़रमाता है।²² और तुम मेरे लोग होगे, और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा।”²³ देख, खुदावन्द के ग़ज़बनाक गुस्से की आँधी चलती है! यह तेज़ तूफ़ान शरीरों के सिर पर टूट पड़ेगा।²⁴ जब तक यह सब कुछ न हो ले, और खुदावन्द अपने दिल के मक़सद पूरे न कर ले, उसका ग़ज़बनाक गुस्सा ख़त्म न होगा; तुम आखिरी दिनों में इसे समझोगे।

31

22222 22 22222

¹ खुदावन्द फ़रमाता है, मैं उस वक़्त इस्राईल के सब घरानों का खुदा हूँगा और वह मेरे लोग होंगे।² खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: इस्राईल में से जो लोग तलवार से बचे, जब वह राहत की तलाश में गए तो वीराने में मक़बूल ठहरे।³ “खुदावन्द पहले से मुझ पर ज़ाहिर हुआ और कहा कि मैंने तुझ से हमेशा की मुहब्बत रखी; इसीलिए मैंने अपनी शफ़क़त तुझ पर बढ़ाई।⁴ ऐ इस्राईल की कुंवारी! मैं तुझे फिर आबाद करूँगा और तू आबाद हो जाएगी; तू फिर दफ़ उठाकर आरास्ता होगी, और खुशी करने वालों के नाच में शामिल होने को निकलेगी।⁵ तू फिर सामरिया के पहाड़ों पर ताकिस्तान लगाएगी, बाग़ लगाने वाले लगायेंगे और उसका फल खाएँगे।⁶ क्योंकि एक दिन आएगा कि इफ़राईम की पहाड़ियों पर निगहबान पुकारेंगे कि 'उठो, हम सिय्यून पर खुदावन्द अपने खुदा के सामने चलें।’⁷ क्योंकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: या'कूब के लिए खुशी से गाओ और क़ौमों के सरताज के लिए ललकारो; ऐलान करो, हम्द करो और कहो, 'ऐ खुदावन्द, अपने लोगों को, या'नी इस्राईल के बक्रिये को बचा।’⁸ देखो, मैं उत्तरी मुल्क से उनको लाऊँगा, और ज़मीन की सरहदों से उनको जमा' करूँगा, और उनमें अंधे, और लंगड़े, और हामिला और ज़च्चा सब होंगे; उनकी बड़ी जमा'अत यहाँ वापस आएगी।⁹ वह रोते और मुनाजात करते हुए आएँगे, मैं उनकी रहबरी

करूँगा; मैं उनको पानी की नदियों की तरफ़ राह — ए — रास्त पर चलाऊँगा, जिसमें वह ठोकर न खाएँगे; क्योंकि मैं इस्राईल का बाप हूँ और इफ़राईम मेरा पहलौठा है।¹⁰ “ऐ क़ौमों, खुदावन्द का कलाम सुनो, और दूर के जज़ीरों में ऐलान करो; और कहो, 'जिसने इस्राईल को तितर — बितर किया, वही उसे जमा' करेगा और उसकी ऐसी निगहबानी करेगा, जैसी गड़रिया अपने गल्ले की,¹¹ क्योंकि खुदावन्द ने या'कूब का फ़िदिया दिया है, और उसे उसके हाथ से जो उससे ताक़तवर था रिहाई बख़्शी है।¹² तब वह आएँगे और सिय्यून की चोटी पर गाएँगे, और खुदावन्द की ने'मतों या'नी अनाज और मय और तेल, और गाय — बैल के और भेड़ — बकरी के बच्चों की तरफ़ इकट्ठे खाँ होंगे; और उनकी जान सैराब बाग़ की तरह होगी, और वह फिर कभी ग़मज़दा न होंगे।¹³ उस वक़्त कुवारियाँ और पीर — ओ — जवान खुशी से रक्स करेंगे, क्योंकि मैं उनके ग़म को खुशी से बदल दूँगा और उनको तसल्ली देकर ग़म के बाद खुश करूँगा।¹⁴ मैं काहिनों की जान को चिकनाई से सेर करूँगा, और मेरे लोग मेरी ने'मतों से आसूदा होंगे, खुदावन्द फ़रमाता है।”¹⁵ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: “रामा में एक आवाज़ सुनाई दी, नौहा और ज़ार — ज़ार रोना; राख़िल अपने बच्चों को रो रही है, वह अपने बच्चों के बारे में तसल्ली पज़ीर नहीं होती, क्योंकि वह नहीं हैं।”¹⁶ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: अपनी रोने की आवाज़ को रोक, और अपनी आँखों को आँसुओं से बाज़ रख; क्योंकि तेरी मेहनत के लिए बदला है, खुदावन्द फ़रमाता है; और वह दुश्मन के मुल्क से वापस आएँगे।¹⁷ और खुदावन्द फ़रमाता है, तेरी 'आक़बत के बारे में उम्मीद है क्योंकि तेरे बच्चे फिर अपनी हदों में दाख़िल होंगे।¹⁸ हकीक़त में मैंने इफ़राईम को अपने आप पर यूँ मातम करते सुना, 'तू ने मुझे तम्बीह की, और मैंने उस बछड़े की तरह जो सधाया नहीं गया तम्बीह पाई। तू मुझे फेर तो मैं फिरूँगा, क्योंकि तू ही मेरा खुदावन्द खुदा है।¹⁹ क्योंकि फिरने के बाद मैंने तौबा की, और तरबियत पाने के बाद मैंने अपनी रान पर हाथ मारा; मैं शर्मिन्दा बल्कि परेशान खातिर हुआ, इसलिए कि मैंने अपनी जवानी की मलामत उठाई थी।²⁰ क्या इफ़राईम मेरा प्यारा बेटा है? क्या वह पसन्दीदा फ़र्ज़न्द है? क्योंकि जब — जब मैं उसके खिलाफ़ कुछ कहता हूँ, तो उसे जी जान से याद करता हूँ। इसलिए मेरा दिल उसके लिए बेताब है; मैं यक़ीनन उस पर रहमत करूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।²¹ “अपने लिए सुतून खड़े कर, अपने लिए खम्बे बना; उस शाहराह पर दिल लगा, हाँ, उसी राह

से जिससे तू गई थी वापस आ। ऐ इस्राईल की कुंवारी, अपने इन शहरों में वापस आ। ²² ऐ नाफ़रमान बेटी, तू कब तक आवारा फिरेगी? क्योंकि खुदावन्द ने ज़मीन पर एक नई चीज़ पैदा की है, कि 'औरत मर्द की हिमायत करेगी।' ²³ रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है: “जब मैं उनके गुलामों को वापस लाऊँगा, तो वह यहूदाह के मुल्क और उसके शहरों में फिर यूँ कहेंगे, ऐ सदाक़त के घर, ऐ कोह — ए — मुक़द़स, खुदावन्द तुझे बरक़त बरूँ।” ²⁴ और यहूदाह और उसके सब शहर उसमें इकट्ठे आराम करेंगे, किसान और वह जो गल्ले लिए फिरते हैं। ²⁵ क्योंकि मैंने थकी जान को आसूदा, और हर ग़मगीन रूह को सेर किया है। ²⁶ अब मैंने बेदार होकर निगाह की, और मेरी नींद मेरे लिए मीठी थी। ²⁷ देखो, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, जब मैं इस्राईल के घर में और यहूदाह के घर में इंसान का बीज और हैवान का बीज बोऊँगा। ²⁸ और खुदावन्द फ़रमाता है, जिस तरह मैंने उनकी घात में बैठ कर उनको उखाड़ा और ढाया और गिराया और बर्बाद किया और दुख दिया; उसी तरह मैं निगहबानी करके उनको बनाऊँगा और लगाऊँगा। ²⁹ उन दिनों में फिर यूँ न कहेंगे, 'बाप — दादा ने कच्चे अंगूर खाए और औलाद के दाँत खट्टे हो गए।’ ³⁰ क्योंकि हर एक अपनी ही बदकिरदारी की वजह से मरेगा; हर एक जो कच्चे अंगूर खाता है, उसी के दाँत खट्टे होंगे। ³¹ 'देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, जब मैं इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने के साथ नया 'अहद बाधूँगा; ³² उस 'अहद के मुताबिक़ नहीं, जो मैंने उनके बाप — दादा से किया जब मैंने उनकी दस्तगीरी की, ताकि उनको मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाऊँ; और उन्होंने मेरे उस 'अहद को तोड़ा अगरचे मैं उनका मालिक था, खुदावन्द फ़रमाता है। ³³ बल्कि यह वह 'अहद है जो मैं उन दिनों के बाद इस्राईल के घराने से बाधूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है: मैं अपनी शरी'अत उनके बातिन में रखूँगा, और उनके दिल पर उसे लिखूँगा; और मैं उनका खुदा हूँगा, और वह मेरे लोग होंगे; ³⁴ और वह फिर अपने — अपने पड़ोसी और अपने — अपने भाई को यह कह कर ता'लीम नहीं देंगे कि खुदावन्द को पहचानो, क्योंकि छोटे से बड़े तक वह सब मुझे जानेंगे, खुदावन्द फ़रमाता है; इसलिए कि मैं उनकी बदकिरदारी को बरूँ दूँगा और उनके गुनाह को याद न करूँगा।” ³⁵ खुदावन्द जिसने दिन की रोशनी के लिए सूरज को मुक़र्रर किया, और जिसने रात की रोशनी के लिए चाँद और सितारों का निज़ाम क़ाईम किया, जो समन्दर को

मौजज़न करता है जिससे उसकी लहरें शोर करती हैं यूँ फ़रमाता है; उसका नाम रब्ब — उल — अफ़वाज है। ³⁶ खुदावन्द फ़रमाता है: “अगर यह निज़ाम मेरे सामने से ख़त्म हो जाए, तो इस्राईल की नसल भी मेरे सामने से जाती रहेगी कि हमेशा तक फिर क़ौम न हो।” ³⁷ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: “अगर कोई ऊपर आसमान को नाप सके और नीचे ज़मीन की बुनियाद का पता लगा ले, तो मैं भी बनी — इस्राईल को उनके सब 'आमाल की वजह से रद्द कर दूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।” ³⁸ देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है कि “यह शहर हननेल के बुर्ज से कोने के फाटक तक खुदावन्द के लिए ता'मीर किया जाएगा। ³⁹ और फिर ज़रीब सीधी कोह — ए — जारेब पर से होती हुई जोआता को घेर लेगी। ⁴⁰ और लाशों और राख की तमाम वादी और सब खेत क़िद्रोन के नाले तक, और घोड़े फाटक के कोने तक पूरब की तरफ़ खुदावन्द के लिए पाक होंगे; फिर वह हमेशा तक न कभी उखाड़ा, न गिराया जाएगा।”

32

???????? ?? ?????? ???????

¹ वह कलाम जो शाह — ए — यहूदाह सिदक़ियाह के दसवें बरस में जो नबूकदनज़र का अट्ठारहवाँ बरस था, खुदावन्द की तरफ़ से यर्मियाह पर नाज़िल हुआ। ² उस वक़्त शाह — ए — बाबुल की फ़ौज येरूशलेम का घिराव किए पड़ी थी, और यर्मियाह नबी शाह — ए — यहूदाह के घर में क़ैदखाने के सहन में बन्द था। ³ क्योंकि शाह — ए — यहूदाह सिदक़ियाह ने उसे यह कह कर क़ैद किया, तू क्यूँ नबुव्वत करता और कहता है, कि 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं इस शहर को शाह — ए — बाबुल के हवाले कर दूँगा, और वह उसे ले लेगा; ⁴ और शाह — ए — यहूदाह सिदक़ियाह कसदियों के हाथ से न बचेगा, बल्कि ज़रूर शाह — ए — बाबुल के हवाले किया जाएगा, और उससे आमने — सामने बातें करेगा और दोनों की आँखें सामने होंगी। ⁵ और वह सिदक़ियाह को बाबुल में ले जाएगा, और जब तक मैं उसको याद न फ़रमाऊँ वह वहीं रहेगा, खुदावन्द फ़रमाता है। हरचन्द तुम कसदियों के साथ जंग करोगे, लेकिन कामयाब न होंगे? ⁶ तब यर्मियाह ने कहा कि “खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया ⁷ देख, तेरे चचा सलूम का बेटा हनमएल तेरे पास आकर कहेगा कि 'मेरा खेत जो 'अन्तोत में है, अपने लिए खरीद ले; क्यूँकि उसको छुड़ाना तेरा हक़

है।⁸ तब मेरे चचा का बेटा हनमएल क़ैदखाने के सहन में मेरे पास आया, और जैसा खुदावन्द ने फ़रमाया था, मुझसे कहा कि, मेरा खेत जो 'अन्तोत में बिनयमीन के 'इलाक़े में है, खरीद ले; क्योंकि यह तेरा मौरूसी हक़ है और उसको छुड़ाना तेरा काम है, उसे अपने लिए खरीद ले।" तब मैंने जाना कि ये खुदावन्द का कलाम है।⁹ और मैंने उस खेत को जो 'अन्तोत में था, अपने चचा के बेटे हनमएल से खरीद लिया और नक़द सत्तर मिस्काल चांदी तोल कर उसे दी।¹⁰ और मैंने एक कबाला लिखा और उस पर मुहर की और गवाह ठहराए, और चांदी तराजू में तोलकर उसे दी।¹¹ तब मैंने उस कबाले को लिया, या'नी वह जो क़ानून और दस्तूर के मुताबिक़ सर — ब — मुहर था, और वह जो खुला था; ¹² और मैंने उस कबाले को अपने चचा के बेटे हनमएल के सामने और उन गवाहों के सामने जिन्होंने अपने नाम कबाले पर लिखे थे, उन सब यहूदियों के सामने जो क़ैदखाने के सहन में बैठे थे, बारूक — बिन — नेयिरियाह — बिन — महसियाह को सौंपा। ¹³ और मैंने उनके सामने बारूक की ताकीद की ¹⁴ कि 'रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: यह कागज़ात ले, या'नी यह कबाला जो सर — ब — मुहर है, और यह जो खुला है, और उनको मिट्टी के बर्तन में रख ताकि बहुत दिनों तक महफूज़ रहें। ¹⁵ क्योंकि रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: इस मुल्क में फिर घरों और ताकिस्तानों की खरीद — ओ — फ़रोख़्त होगी। ¹⁶ बारूक — बिन — नेयिरियाह को कबाला देने के बाद, मैंने खुदावन्द से यूँ दुआ की: ¹⁷ 'आह, ऐ खुदावन्द खुदा! देख, तूने अपनी 'अज़ीम कुदरत और अपने बुलन्द बाज़ू से आसमान और ज़मीन को पैदा किया, और तेरे लिए कोई काम मुश्किल नहीं है; ¹⁸ तू हज़ारों पर शफ़क़त करता है, और बाप — दादा की बदकिरदारी का बदला उनके बाद उनकी औलाद के दामन में डाल देता है; जिसका नाम खुदा — ए — 'अज़ीम — ओ — क़ादिर रब्ब — उल — अफ़वाज है; ¹⁹ मश्वरत में बुज़ुर्ग, और काम में कुदरत वाला है; बनी — आदम की सब राहें तेरे ज़ेर — ए — नज़र हैं; ताकि हर एक को उसके चाल चलन के मुवाफ़िक़ और उसके 'आमाल के फल के मुताबिक़ बदला दे। ²⁰ जिसने मुल्क — ए — मिस्र में आज तक, और इस्राईल और दूसरे लोगों में निशान और 'अजायब दिखाए और अपने लिए नाम पैदा किया, जैसा कि इस ज़माने में है। ²¹ क्योंकि तू अपनी क्रौम इस्राईल को मुल्क — ए — मिस्र से निशान और 'अजायब और क़वी हाथ और बलन्द बाज़ू से, और बड़ी

हैबत के साथ निकाल लाया; ²² और यह मुल्क उनको दिया जिसे देने की तूने उनके बाप — दादा से क़सम खायी थी ऐसा मुल्क जिसमें दूध और शहद बहता है। ²³ और वह आकर उसके मालिक हो गए, लेकिन वह न तेरी आवाज़ को सुना और न तेरी शरी'अत पर चले, और जो कुछ तूने करने को कहा उन्होंने नहीं किया। इसलिए तू यह सब मुसीबत उन पर लाया। ²⁴ दमदमों को देख, वह शहर तक आ पहुँचे हैं कि उसे फ़तह कर लें, और शहर तलवार और काल और वबा की वजह से कसदियों के हवाले कर दिया गया है, जो उस पर चढ़ आए और जो कुछ तूने फ़रमाया पूरा हुआ, और तू आप देखता है। ²⁵ तो भी, ऐ खुदावन्द खुदा, तूने मुझसे फ़रमाया कि वह खेत रुपया देकर अपने लिए खरीद ले और गवाह ठहरा ले, हालाँकि यह शहर कसदियों के हवाले कर दिया गया। ²⁶ तब खुदावन्द का कलाम यर्मियाह पर नाज़िल हुआ: ²⁷ देख, मैं खुदावन्द, तमाम बशर का खुदा हूँ, क्या मेरे लिए कोई काम दुश्वार है? ²⁸ इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं इस शहर को कसदियों के और शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के हवाले कर दूँगा, और वह इसे ले लेगा; ²⁹ और कसदी जो इस शहर पर चढ़ाई करते हैं, आकर इसको आग लगाएँगे और इसे उन घरों के साथ जलाएँगे, जिनकी छतों पर लोगों ने बा'ल के लिए खुशबू जलायी और गैरमा'बूदों के लिए तपावन तपाए कि मुझे ग़ज़बनाक करें। ³⁰ क्योंकि बनी — इस्राईल और बनी यहूदाह अपनी जवानी से अब तक सिर्फ़ वही करते आए हैं जो मेरी नज़र में बुरा है; क्योंकि बनी — इस्राईल ने अपने 'आमाल से मुझे ग़ज़बनाक ही किया, खुदावन्द फ़रमाता है। ³¹ क्योंकि यह शहर जिस दिन से उन्होंने इसे ता'भीर किया, आज के दिन तक मेरे क्रहर और ग़ज़ब का ज़रिया' हो रहा है; ताकि मैं इसे अपने सामने से दूर करूँ। ³² बनी — इस्राईल और बनी यहूदाह की तमाम बुराई के ज़रिए' जो उन्होंने और उनके बादशाहों ने, और हाकिम और काहिनों और नबियों ने, और यहूदाह के लोगों और येरूशलेम के बशिन्दों ने की, ताकि मुझे ग़ज़बनाक करें। ³³ क्योंकि उन्होंने मेरी तरफ़ पीठ की और मुँह न किया, हर चन्द मैंने उनको सिखाया और वक़्त पर ता'लीम दी, तो भी उन्होंने कान न लगाया कि तरबियत पज़ीर हों, ³⁴ बल्कि उस घर में जो मेरे नाम से कहलाता है, अपनी मकरूहात रखवीं ताकि उसे नापाक करें। ³⁵ और उन्होंने बा'ल के ऊँचे मक़ाम जो बिन हिनुम की वादी में हैं बनाए, ताकि अपने बेटों और बेटियों को मोलक के लिए आग में से गुज़ारें, जिसका मैंने उनको हुक्म नहीं दिया और न मेरे ख़याल में आया

कि वह ऐसा मकरूह काम करके यहूदाह को गुनाहगार बनाएँ। ³⁶ और अब इस शहर के बारे में, जिसके हक में तुम कहते हो, 'तलवार और काल और वबा के वसीले से वह शाह — ए — बाबुल के हवाले किया जाएगा, खुदावन्द, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है: ³⁷ देख, मैं उनको उन सब मुल्कों से जहाँ मैंने उनको गैज़ — ओ — ग़ज़ब और बड़े गुस्से से हाँक दिया है, जमा' करूँगा और इस मक़ाम में वापस लाऊँगा और उनको अमन से आबाद करूँगा। ³⁸ और वह मेरे लोग होंगे और मैं उनका खुदा हूँगा। ³⁹ मैं उनको यकदिल और यकरविश बना दूँगा, और वह अपनी और अपने बाद अपनी औलाद की भलाई कि लिए हमेशा मुझसे डरते रहेंगे। ⁴⁰ मैं उनसे हमेशा का 'अहद करूँगा कि उनके साथ भलाई करने से बाज़ न आऊँगा, और मैं अपना ख़ौफ़ उनके दिल में डालूँगा ताकि वह मुझसे फिर न जाएँ। ⁴¹ हाँ, मैं उनसे खुश होकर उनसे नेकी करूँगा, और यकीनन दिल — ओ — जान से उनको इस मुल्क में लगाऊँगा। ⁴² “क्यूँकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: जिस तरह मैं इन लोगों पर यह तमाम बला — ए — 'अज़ीम लाया हूँ, उसी तरह वह तमाम नेकी जिसका मैंने उनसे वा'दा किया है, उनसे करूँगा। ⁴³ और इस मुल्क में जिसके बारे में तुम कहते हो कि 'वह वीरान है, वहाँ न इंसान है न हैवान, वह कसदियों के हवाले किया गया,' फिर खेत ख़रीदे जाएँगे। ⁴⁴ बिनयमीन के 'इलाक़े में और येरूशलेम के 'इलाक़े में और यहूदाह के शहरों में और पहाड़ी के, और वादी के, और दख्खन के शहरों में लोग रुपया देकर खेत ख़रीदेंगे; और क़बाले लिखाकर उन पर मुहर लगाएँगे और गवाह ठहराएँगे, क्यूँकि मैं उनकी गुलामी को ख़त्म कर दूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।”

33

2222 22 22222222 22 22222

¹ हुनुज़ यर्मियाह कैदखाने के सहन में बन्द था कि खुदावन्द का कलाम दोबारा उस पर नाज़िल हुआ कि: ² खुदावन्द जो पूरा करता और बनाता और काईम करता है, जिसका नाम यहोवाह है, यूँ फ़रमाता है: ³ कि मुझे पुकार और मैं तुझे जवाब दूँगा, और बड़ी — बड़ी और गहरी बातें जिनको तू नहीं जानता, तुझ पर जाहिर करूँगा। ⁴ क्यूँकि खुदावन्द इस्राईल का खुदा, इस शहर के घरों के बारे में, और शाहान — ए — यहूदाह के घरों के बारे में जो दमदमों और तलवार के ज़रिए गिरा दिए गए हैं, यूँ फ़रमाता है: ⁵ कि वह कसदियों से लड़ने आए हैं, और उनको आदमियों की लाशों से

भरेंगे, जिनको मैंने अपने क़हर — ओ — ग़ज़ब से क़त्ल किया है, और जिनकी तमाम शरारत की वजह से मैंने इस शहर से अपना मुँह छिपाया है। ⁶ देख, मैं उसे सिहत और तंदुरुस्ती बख़्शूँगा मैं उनको शिफ़ा दूँगा और अमन — ओ — सलामती की कसरत उन पर जाहिर करूँगा। ⁷ और मैं यहूदाह और इस्राईल को गुलामी से वापस लाऊँगा और उनको पहले की तरह बनाऊँगा। ⁸ और मैं उनको उनकी सारी बदकिरदारी से जो उन्होंने मेरे खिलाफ़ की है, पाक करूँगा और मैं उनकी सारी बदकिरदारी जिससे वह मेरे गुनाहगार हुए और जिससे उन्होंने मेरे खिलाफ़ बगावत की है, मु'आफ़ करूँगा। ⁹ और यह मेरे लिए इस ज़मीन की सब क़ौमों के सामने खुशी बख़्श नाम और शिताइश — ओ — जलाल का ज़रिया' होगा; वह उस सब भलाई का जो मैं उनसे करता हूँ, ज़िक्र सुनेंगी और उस भलाई और सलामती की वजह से जो मैं इनके लिए मुहय्या करता हूँ, डरेंगी और काँपेंगी। ¹⁰ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: इस मक़ाम में जिसके बारे में तुम कहते हो, 'वह वीरान है, वहाँ न इंसान है न हैवान, या'नी यहूदाह के शहरों में और येरूशलेम के बाज़ारों में जो वीरान हैं, जहाँ न इंसान हैं न बाशिन्दे न हैवान, ¹¹ खुशी और शादमानी की आवाज़, दुल्हे और दुल्हन की आवाज़, और उनकी आवाज़ सुनी जाएगी जो कहते हैं, 'रब्ब — उल — अफ़वाज़ की सिताइश करो क्यूँकि खुदावन्द भला है और उसकी शफ़क़त हमेशा की है! हाँ, उनकी आवाज़ जो खुदावन्द के घर में शुक्रगुजारी की कुर्बानी लायेंगे क्यूँकि खुदावन्द फ़रमाता है, मैं इस मुल्क के गुलामों को वापस लाकर बहाल करूँगा। ¹² 'रब्ब — उल — अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है कि: इस वीरान जगह और इसके सब शहरों में जहाँ न इंसान है न हैवान, फिर चरवाहों के रहने के मकान होंगे जो अपने गल्लों को बिठाएँगे। ¹³ कोहिस्तान के शहरों में और वादी के और दख्खन के शहरों में, और बिनयमीन के 'इलाक़ों में और येरूशलेम के 'इलाक़े में, और यहूदाह के शहरों में फिर गल्ले गिनने वाले के हाथ के नीचे से गुज़रेंगे, खुदावन्द फ़रमाता है। ¹⁴ देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है कि 'वह नेक बात जो मैंने इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने के हक़ में फ़रमाई है, पूरी करूँगा। ¹⁵ उन्हीं दिनों में और उसी वक़्त मैं दाऊद के लिए सदाक़त की शाख़ पैदा करूँगा, और वह मुल्क में 'अदालत — ओ — सदाक़त से 'अमल करेगा। ¹⁶ उन दिनों में यहूदाह नजात पाएगा और येरूशलेम सलामती से सुकूनत करेगा; और 'खुदावन्द हमारी सदाक़त' उसका नाम होगा। ¹⁷ “क्यूँकि

खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: इस्राईल के घराने के तख़्त पर बैठने के लिए दाऊद को कभी आदमी की कमी न होगी, ¹⁸ और न लावी काहिनों को आदमियों की कमी होगी, जो मेरे सामने सोख़्तनी कुर्बानियाँ पेश करे और हृदिये चढ़ाएँ और हमेशा कुर्बानी करें।” ¹⁹ फिर खुदावन्द का कलाम यर्मियाह पर नाज़िल हुआ: ²⁰ “खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: अगर तुम मेरा वह 'अहद, जो मैंने दिन से और रात से किया, तोड़ सको कि दिन और रात अपने अपने वक़्त पर न हों, ²¹ तो मेरा वह 'अहद भी जो मैंने अपने खादिम दाऊद से किया, टूट सकता है कि उसके तख़्त पर बादशाही करने को बेटा न हो और वह 'अहद भी जो अपने ख़िदमतगुज़ार लावी काहिनों से किया। ²² जैसे अजराम — ए — फ़लक बेशुमार हैं और समन्दर की रेत बे अन्दाज़ा है, वैसे ही मैं अपने बन्दे दाऊद की नसल की और लावियों को जो मेरी ख़िदमत करते हैं, फ़िरावानी बख़्शूंगा।” ²³ फिर खुदावन्द का कलाम यर्मियाह पर नाज़िल हुआ: ²⁴ कि “क्या तू नहीं देखता कि ये लोग क्या कहते हैं कि 'जिन दो घरानों को खुदावन्द ने चुना, उनको उसने रद्द कर दिया'? यूँ वह मेरे लोगों को हकीर जानते हैं कि जैसे उनके नज़दीक वह क्रौम ही नहीं रहे। ²⁵ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: अगर दिन और रात के साथ मेरा 'अहद न हो, और अगर मैंने आसमान और ज़मीन का निज़ाम मुक़र्रर न किया हो; ²⁶ तो मैं या'कूब की नसल को और अपने खादिम दाऊद की नसल को रद्द कर दूँगा, ताकि मैं अब्रहाम और इस्हाक़ और या'कूब की नसल पर हुकूमत करने के लिए उसके फ़र्ज़न्दों में से किसी को न लूँ बल्कि मैं तो उनको गुलामी से वापस लाऊँगा और उन पर रहम करूँगा।”

34

?????????? ?? ??????? ?????

¹ जब शाह — ए — बाबुल नबूकदनेज़र और उसकी तमाम फ़ौज और इस ज़मीन की तमाम सल्तनतें जो उसकी फ़रमाँरवाई में थीं, और सब क्रौम येरूशलेम और उसकी सब बस्तियों के खिलाफ़ जंग कर रही थीं, तब खुदावन्द का यह कलाम यर्मियाह नबी पर नाज़िल हुआ ² कि खुदावन्द इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: जा और शाह — ए — यहूदाह सिदक्रियाह से कह दे, 'खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं इस शहर को शाह — ए — बाबुल के हवाले कर दूँगा, और वह इसे आग से जलाएगा; ³ और तू उसके हाथ से न बचेगा, बल्कि ज़रूर पकड़ा जाएगा और उसके हवाले किया जाएगा; और तेरी आँखें शाह — ए — बाबुल की आँखों को देखेंगी और वह सामने तुझ से बातें

करेगा, और तू बाबुल को जाएगा। ⁴ तो भी, ऐ शाह — ए — यहूदाह सिदक्रियाह, खुदावन्द का कलाम सुन; तेरे बारे में खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: तू तलवार से क़त्ल न किया जाएगा। ⁵ तू अमन की हालत में मरेगा और जिस तरह तेरे बाप — दादा या'नी तुझ से पहले बादशाहों के लिए खुशबू जलाते थे, उसी तरह तेरे लिए भी जलाएँगे, और तुझ पर नौहा करेंगे और कहेंगे, हाय, आक्रा! “क्यूँकि मैंने यह बात कही है, खुदावन्द फ़रमाता है।” ⁶ तब यर्मियाह नबी ने यह सब बातें शाह — ए — यहूदाह सिदक्रियाह से येरूशलेम में कहीं, ⁷ जब कि शाह — ए — बाबुल की फ़ौज येरूशलेम और यहूदाह के शहरों से जो बच रहे थे, या'नी लकीस और 'अज़ीकाह से लड़ रही थी; क्यूँकि यहूदाह के शहरों में से यही हसीन शहर बाक़ी थे। ⁸ वह कलाम जो खुदावन्द की तरफ़ से यर्मियाह पर नाज़िल हुआ, जब सिदक्रियाह बादशाह ने येरूशलेम के सब लोगों से 'अहद — ओ — पैमान किया कि आज़ादी का 'ऐलान किया जाए। ⁹ कि हर एक अपने गुलाम को और अपनी लौंडी को, जो 'इब्रानी मर्द या 'औरत हो, आज़ाद कर दे कि कोई अपने यहूदी भाई से गुलामी न कराए। ¹⁰ और जब सब हाकिम और सब लोगों ने जो इस 'अहद में शामिल थे, सुना कि हर एक को लाज़िम है कि अपने गुलाम और अपनी लौंडी को आज़ाद करे और फिर उनसे गुलामी न कराए, तो उन्होंने इता'अत की और उनको आज़ाद कर दिया। ¹¹ लेकिन उसके बाद वह फिर गए और उन गुलामों और लौंडियों को जिनको उन्होंने आज़ाद कर दिया था, फिर वापस ले आए और उनको ताबे' करके गुलाम और लौंडियाँ बना लिया। ¹² इसलिए खुदावन्द की तरफ़ से यह कलाम यर्मियाह पर नाज़िल हुआ: ¹³ कि खुदावन्द, इस्राईल का खुदा यूँ फ़रमाता है कि: मैंने तुम्हारे बाप — दादा से, जिस दिन मैं उनको मुल्क — ए — मिस्र से और गुलामी के घर से निकाल लाया, यह 'अहद बाँधा, ¹⁴ कि 'तुम में से हर एक अपने 'इब्रानी भाई को जो उसके हाथ बेचा गया हो, सात बरस के आख़िर में या'नी जब वह छः बरस तक ख़िदमत कर चुके, तो आज़ाद कर दे; लेकिन तुम्हारे बाप — दादा ने मेरी न सुनी और कान न लगाया। ¹⁵ और आज ही के दिन तुम रूजू' लाए, और वही किया जो मेरी नज़र में भला है कि हर एक ने अपने पड़ोसी को आज़ादी का मुज़दा दिया; और तुम ने उस घर में जो मेरे नाम से कहलाता है, मेरे सामने 'अहद बाँधा; ¹⁶ लेकिन तुम ने नाफ़रमान हो कर मेरे नाम को नापाक किया, और हर एक ने अपने गुलाम को और अपनी लौंडी को, जिनको तुमने आज़ाद करके

उनकी मर्जी पर छोड़ दिया था, फिर पकड़कर ताबे' किया कि तुम्हारे लिए गुलाम और लौंडियाँ हों। ¹⁷ “इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: तुम ने मेरी न सुनी कि हर एक अपने भाई और अपने पड़ोसी को आज्ञादी का मुज़दा सुनाए, देखो, खुदावन्द फ़रमाता है, मैं तुम को तलवार और वबा और काल के लिए आज्ञादी का मुज़दा देता हूँ और मैं ऐसा करूँगा कि तुम इस ज़मीन की सब ममलुकतों में धक्के खाते फ़िरोगे। ¹⁸ और मैं उन आदमियों को जिन्होंने मुझसे 'अहदशिकनी की और उस 'अहद की बातें, जो उन्होंने मेरे सामने बाँधा है पूरी नहीं कीं, जब बछड़े को दो टुकड़े किया और उन दो टुकड़ों के बीच से होकर गुज़रे; ¹⁹ या'नी यहूदाह के और येरूशलेम के हाकिम और ख्वाजासरा और काहिन और मुल्क के सब लोग जो बछड़े के टुकड़ों के बीच से होकर गुज़रे; ²⁰ हाँ, मैं उनको उनके मुखालिफ़ों और जानी दुश्मनों के हवाले करूँगा, और उनकी लाशें हवाई परिन्दों और ज़मीन के दरिन्दों की खुराक होंगी। ²¹ और मैं शाह — ए — यहूदाह सिदक्रियाह को और उसके हाकिम को, उनके मुखालिफ़ों और जानी दुश्मनों और शाह — ए — बाबुल की फ़ौज के, जो तुम को छोड़कर चली गई, हवाले कर दूँगा। ²² देखो, मैं हुक्म करूँगा खुदावन्द फ़रमाता है और उनको फिर इस शहर की तरफ़ वापस लाऊँगा, और वह इससे लड़ेंगे और फ़तह करके आग से जलाएँगे; और मैं यहूदाह के शहरों को वीरान कर दूँगा कि ग़ैरआबाद हों।”

35

???????? ???? ?

¹ वह कलाम जो शाह — ए — यहूदाह यहूयकीम — बिन — यूसियाह के दिनों में खुदावन्द की तरफ़ से यरमियाह पर नाज़िल हुआ: ² कि “तू रैकाबियों के घर जा और उनसे कलाम कर, और उनको खुदावन्द के घर की एक कोठरी में लाकर मय पिला।” ³ तब मैंने याज़नियाह — बिन — यर्मियाह — बिन हबसिनयाह और उसके भाइयों और उसके सब बेटों और रैकाबियों के तमाम घराने को साथ लिया। ⁴ और मैं उनको खुदावन्द के घर में बनी हनान — बिन — यजदलियाह मर्द — ए — खुदा की कोठरी में लाया, जो हाकिम की कोठरी के नज़दीक मासियाह — बिन — सलूम दरबान की कोठरी के ऊपर थी। ⁵ और मैंने मय से लबरेज़ प्याले और जाम रैकाबियों के घराने के बेटों के आगे रखे और उनसे कहा, 'मय पियो। ⁶ लेकिन उन्होंने कहा, हम मय न पियेंगे, क्योंकि हमारे बाप यूनादाब — बिन — रैकाब ने हमको यूँ हुक्म दिया, 'तुम हरगिज़ मय न पीना; न तुम न तुम्हारे

बेटे; ⁷ और न घर बनाना, न बीज बोना, न ताकिस्तान लगाना, न उनके मालिक होना; बल्कि उम्र भर खेमों में रहना ताकि जिस सरज़मीन में तुम मुसाफ़िर हो, तुम्हारी उम्र दराज़ हो। ⁸ चुनाँचे हम ने अपने बाप यूनादाब — बिन — रैकाब की बात मानी; उसके हुक्म के मुताबिक़ हम और हमारी बीवियाँ और हमारे बेटे बेटियाँ कभी मय नहीं पीते। ⁹ और हम न रहने के लिए घर बनाते और न ताकिस्तान और खेत और बीज रखते हैं। ¹⁰ लेकिन हम खेमों में बसे हैं, और हमने फ़रमाँबरदारी की और जो कुछ हमारे बाप यूनादाब ने हमको हुक्म दिया हम ने उस पर 'अमल किया है। ¹¹ लेकिन यूँ हुआ कि जब शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र इस मुल्क पर चढ़ आया, तो हम ने कहा कि 'आओ, हम कसदियों और अरामियों की फ़ौज के डर से येरूशलेम को चले जाएँ, यूँ हम येरूशलेम में बसते हैं। ¹² तब खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ: ¹³ कि 'रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: जा, और यहूदाह के आदमियों और येरूशलेम के बाशिन्दों से यूँ कह कि क्या तुम तरबियत पज़ीर न होगे कि मेरी बातें सुनो, खुदावन्द फ़रमाता है? ¹⁴ जो बातें यूनादाब — बिन — रैकाब ने अपने बेटों को फ़रमाई कि मय न पियो, वह बजा लाए और आज तक मय नहीं पीते, बल्कि उन्होंने अपने बाप के हुक्म को माना; लेकिन मैंने तुम से कलाम किया और वक़्त पर तुम को फ़रमाया, और तुम ने मेरी न सुनी। ¹⁵ मैंने अपने तमाम ख़िदमतगुज़ार नबियों को तुम्हारे पास भेजा, और उनको वक़्त पर ये कहते हुए भेजा कि तुम हर एक अपनी बुरी राह से बाज़ आओ, और अपने 'आमाल को दुरुस्त करो और ग़ैर मा'बूदों की पैरवी और इबादत न करो, और जो मुल्क मैंने तुमको और तुम्हारे बाप — दादा को दिया है, तुम उसमें बसोगे; लेकिन तुम ने न कान लगाया न मेरी सुनी। ¹⁶ इस वजह से कि यूनादाब बिन रैकाब के बेटे अपने बाप के हुक्म को जो उसने उनको दिया था बजा लाये लेकिन इन लोगों ने मेरी न सुनी। ¹⁷ इसलिए खुदावन्द, रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं यहूदाह पर और येरूशलेम के तमाम बाशिन्दों पर वह सब मुसीबत, जिसका मैंने उनके खिलाफ़ 'ऐलान किया है, लाऊँगा; क्योंकि मैंने उनसे कलाम किया लेकिन उन्होंने न सुना, और मैंने उनको बुलाया पर उन्होंने जवाब न दिया। ¹⁸ और यरमियाह ने रैकाबियों के घराने से कहा, 'रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: चूँकि तुमने अपने बाप यूनादाब के हुक्म को माना, और उसकी सब वसीयतों पर 'अमल

किया है, और जो कुछ उसने तुम को फ़रमाया तुम बजा लाए; ¹⁹ इसलिए रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: यूनादाब — बिन — रैकाब के लिए मेरे सामने में खड़े होने को कभी आदमी की कमी न होगी।

36

यूँसाह ११ यूँसाह ११ यूँसाह ११ यूँसाह ११ यूँसाह ११

¹ शाह — ए — यहूदाह यहूयक्रीम — बिन — यूसियाह के चौथे बरस में यह कलाम खुदावन्द की तरफ़ से यरमियाह पर नाज़िल हुआ: ² कि “किताब का एक तूमार ले और वह सब कलाम जो मैंने इस्राईल और यहूदाह और तमाम क्रौमों के खिलाफ़ तुझ से किया, उस दिन से लेकर जब से मैं तुझ से कलाम करने लगा, या'नी यूसियाह के दिन से आज के दिन तक उसमें लिख। ³ शायद यहूदाह का घराना उस तमाम मुसीबत का हाल जो मैं उन पर लाने का इरादा रखता हूँ सुने, ताकि वह सब अपनी बुरे चाल चलन से बाज़ आएँ; और मैं उनकी बदकिरदारी और गुनाह को मु'आफ़ करूँ।” ⁴ तब यरमियाह ने बारूक — बिन — नेयिरियाह को बुलाया, और बारूक ने खुदावन्द का वह सब कलाम जो उसने यरमियाह से किया था, उसकी ज़बानी किताब के उस तूमार में लिखा। ⁵ और यरमियाह ने बारूक को हुक्म दिया और कहा, मैं तो मजबूर हूँ, मैं खुदावन्द के घर में नहीं जा सकता; ⁶ लेकिन तू जा और खुदावन्द का वह कलाम जो तूने मेरे मुँह से इस तूमार में लिखा है, खुदावन्द के घर में रोज़े के दिन लोगों को पढ़ कर सुना; और तमाम यहूदाह के लोगों को भी जो अपने शहरों से आए हों, तू वही कलाम पढ़ कर सुना। ⁷ शायद वह खुदा के सामने मिन्नत करें और सब के सब अपनी बुरे चाल चलन से बाज़ आएँ, क्योंकि खुदावन्द का क्रहर — ओ — ग़ज़ब जिसका उसने इन लोगों के खिलाफ़ ऐलान किया है, शदीद है। ⁸ और बारूक — बिन — नेयिरियाह ने सब कुछ जैसा यरमियाह नबी ने उसको फ़रमाया था वैसा ही किया, और खुदावन्द के घर में खुदावन्द का कलाम उस किताब से पढ़ कर सुनाया। ⁹ और शाह — ए — यहूदाह यहूयक्रीम — बिन — यूसियाह के पाँचवें बरस के नौवें महीने में यूँ हुआ कि येरूशलेम के सब लोगों ने और उन सब ने जो यहूदाह के शहरों से येरूशलेम में आए थे, खुदावन्द के सामने रोज़े का ऐलान किया। ¹⁰ तब बारूक ने किताब से यरमियाह की बातें, खुदावन्द के घर में जमरियाह — बिन — साफ़न मुन्शी की कोठरी में ऊपर के सहन के

बीच, खुदावन्द के घर के नये फाटक के मदख़ल पर सब लोगों के सामने पढ़ सुनाई। ¹¹ जब मीकायाह — बिन — जमरियाह — बिनसाफ़न ने खुदावन्द का वह सब कलाम जो उस किताब में था सुना, ¹² तो वह उतर कर बादशाह के घर मुन्शी की कोठरी में गया, और सब हाकिम या'नी इलीसमा' मुन्शी, और दिलायाह बिन समयाह और इलनातन बिन अकबूर और जमरियाह बिन साफ़न और सिदक्रियाह — बिन — हननियाह, और सब हाकिम वहाँ बैठे थे। ¹³ तब मीकायाह ने वह सब बातें जो उसने सुनी थीं, जब बारूक किताब से पढ़ कर लोगों को सुनाता था, उनसे बयान कीं। ¹⁴ और सब हाकिम ने यहूदी — बिन — नतनियाह — बिन — सलमियाह — बिन — कूशी को बारूक के पास यह कहकर भेजा, कि “वह तूमार जो तूने लोगों को पढ़कर सुनाया है, अपने हाथ में ले और चला आ।” तब बारूक — बिन — नेयिरियाह वह तूमार लेकर उनके पास आया। ¹⁵ और उन्होंने उसे कहा, कि “अब बैठ जा और हमको यह पढ़ कर सुना।” और बारूक ने उनको पढ़कर सुनाया। ¹⁶ जब उन्होंने वह सब बातें सुनीं, तो डरकर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे और बारूक से कहा कि “हम यक्रीनन यह सब बातें बादशाह से बयान करेंगे।” ¹⁷ और उन्होंने यह कह कर बारूक से पूछा, हम से कह कि तूने यह सब बातें उसकी ज़बानी क्यूँकर लिखी? ¹⁸ तब बारूक ने उनसे कहा, “वह यह सब बातें मुझे अपने मुँह से कहता गया और मैं स्याही से किताब में लिखता गया।” ¹⁹ तब हाकिम ने बारूक से कहा, “जा, अपने आपको और यरमियाह को छिपा, और कोई न जाने कि तुम कहाँ हो।” ²⁰ और वह बादशाह के पास सहन में गए, लेकिन उस तूमार को इलीसमा' मुन्शी की कोठरी में रख गए, और वह बातें बादशाह को कह सुनाई। ²¹ तब बादशाह ने यहूदी को भेजा कि तूमार लाए, और वह उसे इलीसमा' मुन्शी की कोठरी में से ले आया। और यहूदी ने बादशाह और सब हाकिम को जो बादशाह के सामने खड़े थे, उसे पढ़कर सुनाया। ²² और बादशाह ज़मिस्तानी महल में बैठा था, क्यूँकि नवाँ महीना था और उसके सामने अंगेठी जल रही थी। ²³ जब यहूदी ने तीन चार वर्क पढ़े, तो उसने उसे मुन्शी के क़लम तराश से काटा और अंगेठी की आग में डाल दिया, यहाँ तक कि तमाम तूमार अंगेठी की आग में भसम हो गया। ²⁴ लेकिन वह न डरे, न उन्होंने अपने कपड़े फाड़े, न बादशाह ने न उसके मुलाज़िमों में से किसी ने जिन्होंने यह सब बातें सुनी थीं। ²⁵ लेकिन इलनातन, और दिलायाह, और जमरियाह ने बादशाह से 'अर्ज़ की कि तूमार को न जलाए, लेकिन उसने उनकी

एक न सुनी। ²⁶ और बादशाह ने शाहजादे यरहमिएल को और शिरयाह — बिन अजरिएल और सलमियाह बिन अबदिएल को हुक्म दिया कि बारूक मुन्शी और यरमियाह नबी को गिरफ्तार करें, लेकिन खुदावन्द ने उनको छिपाया। ²⁷ और जब बादशाह तूमार और उन बातों को जो बारूक ने यरमियाह की जबानी लिखी थीं, जला चुका तो खुदावन्द का यह कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ: ²⁸ कि “तू दूसरा तूमार ले, और उसमें वह सब बातें लिख जो पहले तूमार में थीं, जिसे शाह — ए — यहूदाह यहूयकीम ने जला दिया। ²⁹ और शाह — ए — यहूदाह यहूयकीम से कह कि ‘खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: तूने तूमार को जला दिया और कहा है, तू ने उसमें यूँ क्यूँ लिखा कि शाह — ए — बाबुल यकीनन आएगा और इस मुल्क को हलाक करेगा, और न इसमें इंसान बाक़ी छोड़ेगा न हैवान?’” ³⁰ इसलिए शाह — ए — यहूदाह यहूयकीम के बारे में खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: उसकी नसल में से कोई न रहेगा जो दाऊद के तख्त पर बैठे, और उसकी लाश फेंकी जाएगी, ताकि दिन की गर्मी में और रात को पाले में पड़ी रहे; ³¹ और मैं उसको और उसकी नसल को और उसके मुलाज़िमों को उनकी बदकिरदारी की सज़ा दूँगा। मैं उन पर और येरूशलेम के बाशिन्दों पर और यहूदाह के लोगों पर वह सब मुसीबत लाऊँगा, जिसका मैंने उनके खिलाफ़ ऐलान किया लेकिन उन्होंने न सुना। ³² तब यरमियाह ने दूसरा तूमार लिया और बारूक — बिन — नेयिरियाह मुन्शी को दिया, और उसने उस किताब की सब बातें जिसे शाह — ए — यहूदाह यहूयकीम ने आग में जलाया था, यरमियाह की जबानी उसमें लिखी और उनके अलावा वैसी ही और बहुत सी बातें उनमें बढ़ा दी गई।

37

?????????? ?? ??????????? ?? ???????????

¹ और सिदक्रियाह बिन यूसियाह जिसको शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने मुल्क — ए — यहूदाह पर बादशाह मुकर्रर किया था, कूनियाह बिन यहूयकीम की जगह बादशाही करने लगा। ² लेकिन न उसने, न उसके मुलाज़िमों ने, न मुल्क के लोगों ने खुदावन्द की वह बातें सुनीं, जो उसने यरमियाह नबी के ज़रिए फ़रमाई थीं। ³ और सिदक्रियाह बादशाह ने यहूकल — बिन सलमियाह और सफ़नियाह — बिन — मासियाह काहिन के ज़रिए यरमियाह नबी को कहला भेजा कि अब हमारे लिए खुदावन्द हमारे खुदा से दुआ कर। ⁴ हुनूज़ यरमियाह लोगों के बीच आया जाया करता

था, क्यूँकि उन्होंने अभी उसे कैदखाने में नहीं डाला था। ⁵ इस वक़्त फ़िर'औन की फ़ौज ने मिस्र से चढ़ाई की; और जब कसदियों ने जो येरूशलेम का घिराव किए थे इसकी शोहरत सुनी, तो वहाँ से चले गए। ⁶ तब खुदावन्द का यह कलाम यरमियाह नबी पर नाज़िल हुआ: ⁷ कि खुदावन्द, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: तुम शाह — ए — यहूदाह से जिसने तुम को मेरी तरफ़ भेजा कि मुझसे दरियाफ़्त करो, यूँ कहना कि देख, फ़िर'औन की फ़ौज जो तुम्हारी मदद को निकली है, अपने मुल्क — ए — मिस्र को लौट जाएगी। ⁸ और कसदी वापस आकर इस शहर से लड़ेंगे, और इसे फ़तह करके आग से जलाएँगे। ⁹ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: तुम यह कह कर अपने आपको फ़रेब न दो, कसदी ज़रूर हमारे पास से चले जाएँगे, क्यूँकि वह न जाएँगे। ¹⁰ और अगरचे तुम कसदियों की तमाम फ़ौज को जो तुम से लड़ती है, ऐसी शिकस्त देते कि उनमें से सिर्फ़ ज़ख्मी बाक़ी रहते, तो भी वह सब अपने — अपने ख़ेमे से उठते और इस शहर को जला देते। ¹¹ और जब कसदियों की फ़ौज फ़िर'औन की फ़ौज के डर से येरूशलेम के सामने से रवाना हो गई, ¹² तो यरमियाह येरूशलेम से निकला कि बिनयमीन के इलाक़े में जाकर वहाँ लोगों के बीच अपना हिस्सा ले। ¹³ और जब वह बिनयमीन के फाटक पर पहुँचा, तो वहाँ पहेरेवालों का दारोगा था, जिसका नाम इरियाह — बिन — सलमियाह — बिन — हननियाह था, और उसने यरमियाह नबी को पकड़ा और कहा तू कसदियों की तरफ़ भागा जाता है। ¹⁴ तब यरमियाह ने कहा, यह झूट है; मैं कसदियों की तरफ़ भागा नहीं जाता हूँ, लेकिन उसने उसकी एक न सुनी; तब इरियाह यरमियाह को पकड़ कर हाकिम के पास लाया। ¹⁵ और हाकिम यरमियाह पर ग़ज़बनाक हुए और उसे मारा, और यूनतन मुन्शी के घर में उसे कैद किया; क्यूँकि उन्होंने उस घर को कैदखाना बना रखवा था। ¹⁶ जब यरमियाह कैदखाने में और उसके तहखानों में दाखिल होकर बहुत दिनों तक वहाँ रह चुका; ¹⁷ तो सिदक्रियाह बादशाह ने आदमी भेजकर उसे निकलवाया, और अपने महल में उससे खुफ़िया तौर से दरियाफ़्त किया कि “क्या खुदावन्द की तरफ़ से कोई कलाम है?” और यरमियाह ने कहा है कि “क्यूँकि उसने फ़रमाया है कि तू शाह — ए — बाबुल के हवाले किया जाएगा।” ¹⁸ और यरमियाह ने सिदक्रियाह बादशाह से कहा, मैंने तेरा, और तेरे मुलाज़िमों का, और इन लोगों का क्या गुनाह किया है कि तुमने मुझे कैदखाने में डाला है? ¹⁹ अब तुम्हारे नबी कहाँ हैं, जो तुम से नबुव्वत करते

तुझे फ़रेब दिया और तुझ पर ग़ालिब आए; जब तेरे पाँव कीच में धँस गए, तो वह उल्टे फिर गए। ²³ और वह तेरी सब बीवियों को, और तेरे बेटों को कसदियों के पास निकाल ले जाएँगे; और तू भी उनके हाथ से रिहाई न पाएगा, बल्कि शाह — ए — बाबुल के हाथ में गिरफ़्तार होगा और तू इस शहर के आग से जलाए जाने का ज़रिया होगा। ²⁴ तब सिदक़ियाह ने यर्मियाह से कहा कि इन बातों को कोई न जाने, तो तू मारा न जाएगा। ²⁵ लेकिन अगर हाकिम सुन लें कि मैंने तुझ से बातचीत की, और वह तेरे पास आकर कहें, कि जो कुछ तूने बादशाह से कहा, और जो कुछ बादशाह ने तुझ से कहा अब हम पर ज़ाहिर कर, यह हम से न छिपा और हम तुझे क़त्ल न करेंगे; ²⁶ तब तू उनसे कहना कि 'मैंने बादशाह से 'अर्ज़ की थी कि मुझे फिर यूँनतन के घर में वापस न भेज कि वहाँ मरूँ।' ²⁷ तब सब हाकिम यर्मियाह के पास आए और उससे पूछा, और उसने इन सब बातों के मुताबिक़, जो बादशाह ने फ़रमाई थीं, उनको जवाब दिया। और वह उसके पास से चुप होकर चले गए; क्योंकि असल मुआ'मिला उनको मा'लूम न हुआ। ²⁸ और जिस दिन तक येरूशलेम फ़तह न हुआ, यर्मियाह कैदख़ाने के सहन में रहा, और जब येरूशलेम फ़तह हुआ तो वह वहीं था।

39

???????? ?? ???????

¹ शाह — ए — यहूदाह सिदक़ियाह के नवें बरस के दसवें महीने में, शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र अपनी तमाम फ़ौज लेकर येरूशलेम पर चढ़ आया और उसका घिराव किया। ² सिदक़ियाह के ग्यारहवें बरस के चौथे महीने की नवीं तारीख को शहर — की — फ़सील में रखना हो गया; ³ और शाह — ए — बाबुल के सब सरदार या'नी नेयिरीगल सराज़र, समगर नबू, सरसकीम, ख्वाजासराओ का सरदार नेयिरीगल सराज़र मजूसियों का सरदार और शाह — ए — बाबुल के बाक़ी सरदार दाख़िल हुए और बीच के फाटक पर बैठे। ⁴ और शाह — ए — यहूदाह सिदक़ियाह और सब जंगी मर्द उनको देख कर भागे, और दोनों दीवारों के बीच जो फाटक शाही बाग के बराबर था, उससे वह रात ही रात भाग निकले और वीराने की राह ली। ⁵ लेकिन कसदियों की फ़ौज ने उनका पीछा किया और यरीहू के मैदान में सिदक़ियाह को जा लिया, और उसको पकड़ कर रिब्ला में शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के पास हमात के 'इलाक़े में ले गए; और उसने उस पर फ़तवा दिया। ⁶ और शाह — ए — बाबुल ने सिदक़ियाह के

बेटों को रिब्ला में उसकी आँखों के सामने ज़बह किया, और यहूदाह के सब शूरफ़ा को भी क़त्ल किया। ⁷ और उसने सिदक़ियाह की आँखें निकाल डालीं और बाबुल को ले जाने के लिए उसे जंजीरों से जकड़ा। ⁸ और कसदियों ने शाही महल को और लोगों के घरों को आग से जला दिया, और येरूशलेम की फ़सील को गिरा दिया। ⁹ इसके बाद जिलौदारों का सरदार नबूज़रादान बाक़ी लोगों को, जो शहर में रह गए थे और उनको जो उसकी तरफ़ होकर उसके पास भाग आए थे, या'नी क्रौम के सब बाक़ी लोगों को गुलाम करके बाबुल को ले गया। ¹⁰ लेकिन क्रौम के ग़रीबों को जिनके पास कुछ न था, जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान ने यहूदाह के मुल्क में रहने दिया और उसी वक़्त उनको ताकिस्तान और खेत बख़्शे। ¹¹ और शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने यर्मियाह के बारे में जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान को ताकीद करके यूँ कहा, ¹² कि "उसे लेकर उस पर खूब निगाह रख, और उसे कुछ दुख न दे, बल्कि तू उससे वही कर जो वह तुझे कहे।" ¹³ तब जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान, नाबूशज़बान ख्वाजासराओं के सरदार, और नेयिरीगल सराज़र, मजूसियों के सरदार, और बाबुल के सब सरदारों ने आदमी भेजकर ¹⁴ यर्मियाह को कैदख़ाने के सहन से निकलवा लिया, और जिदलियाह — बिन — अख़ीक्राम — बिन — साफ़न के सुपुर्द किया कि उसे घर ले जाए। इसलिए वह लोगों के साथ रहने लगा। ¹⁵ और जब यर्मियाह कैदख़ाने के सहन में बन्द था, खुदावन्द का यह कलाम उस पर नाज़िल हुआ: ¹⁶ कि "जा, 'अब्द मलिक कूशी से कह, 'रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं अपनी बातें इस शहर की भलाई के लिए नहीं, बल्कि ख़राबी के लिए पूरी करूँगा; और वह उस रोज़ तेरे सामने पूरी होगी।' ¹⁷ लेकिन उस दिन मैं तुझे रिहाई दूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, और तू उन लोगों के हवाले न किया जाएगा जिनसे तू डरता है। ¹⁸ क्योंकि मैं तुझे ज़रूर बचाऊँगा और तू तलवार से मारा न जाएगा, बल्कि तेरी जान तेरे लिए ग़नीमत होगी; इसलिए कि तूने मुझ पर भरोसा किया, खुदावन्द फ़रमाता है।"

40

¹ वह कलाम जो खुदावन्द की तरफ़ से यर्मियाह पर नाज़िल हुआ, इसके बाद के जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान ने उसको रामा से ख़ाना कर दिया, जब उसने उसे हथकड़ियों से जकड़ा हुआ उन सब गुलामों के बीच पाया जो येरूशलेम और यहूदाह के थे, जिनको

गुलाम करके बाबुल को ले जा रहे थे² और जिलौदारों के सरदार ने यर्मियाह को लेकर उससे कहा, कि "खुदावन्द तेरे खुदा ने इस बला की, जो इस जगह पर आई खबर दी थी।³ इसलिए खुदावन्द ने उसे नाज़िल किया, और उसने अपने कौल के मुताबिक़ किया; क्योंकि तुम लोगों ने खुदावन्द का गुनाह किया और उसकी नहीं सुनी, इसलिए तुम्हारा ये हाल हुआ।⁴ और देख, आज मैं तुझे इन हथकड़ियों से जो तेरे हाथों में हैं रिहाई देता हूँ। अगर मेरे साथ बाबुल चलना तेरी नज़र में बेहतर हो, तो चल, और मैं तुझ पर खूब निगाह रखूँगा; और अगर मेरे साथ बाबुल चलना तेरी नज़र में बुरा लगे, तो यहीं रह; तमाम मुल्क तेरे सामने है जहाँ तेरा जी चाहे और तू मुनासिब जाने वहीं चला जा।"⁵ वह वहीं था कि उसने फिर कहा, तू जिदलियाह बिन अखीक़ाम बिन साफ़न के पास जिसे शाह — ए — बाबुल ने यहूदाह के शहरों का हाकिम किया है, चला जा और लोगों के बीच उसके साथ रह; वरना जहाँ तेरी नज़र में बेहतर हो वहीं चला जा। और जिलौदारों के सरदार ने उसे खुराक और इन'आम देकर रुख़्सत किया।⁶ तब यर्मियाह जिदलियाह — बिन — अखीक़ाम के पास मिस्फ़ाह में गया, और उसके साथ उन लोगों के बीच, जो उस मुल्क में बाक़ी रह गए थे रहने लगा।

०००००००० ०० ०००००० ००० ००००० ००००

⁷ जब लश्क़रों के सब सरदारों ने और उनके आदमियों ने जो मैदान में रह गए थे, सुना के शाह — ए — बाबुल ने जिदलियाह — बिन — अखीक़ाम को मुल्क का हाकिम मुक़र्रर किया है; और मर्दों और 'औरतों और बच्चों को, और ममलुकत के ग़रीबों को जो गुलाम होकर बाबुल को न गए थे, उसके सुपुर्द किया है;⁸ तो इस्माईल — बिन — नतनियाह और यूहनान और यूनतन बनी क़रिह और सिरायाह — बिन — तनहुमत और बनी 'ईफ़ी नतुफ़ाती और यज़नियाह — बिन — मा'काती अपने आदमियों के साथ जिदलियाह के पास मिस्फ़ाह में आए।⁹ और जिदलियाह — बिन — अखीक़ाम — बिन — साफ़न ने उन से और उन के आदमियों से क़सम खाकर कहा, तुम कसदियों की ख़िदमत गुज़ारी से न डरो। अपने मुल्क में बसो, और शाह — ए — बाबुल की ख़िदमत करो तो तुम्हारा भला होगा।¹⁰ देखो, मैं तो इसलिए मिस्फ़ाह में रहता हूँ कि जो कसदी हमारे पास आएँ, उनकी ख़िदमत में हाज़िर रहूँ पर तुम मय और ताबिस्तानी मेवे, और तेल जमा' करके अपने बर्तनों में रखो, और अपने शहरों में जिन पर तुम ने क़ब्ज़ा किया है बसो।¹¹ और इसी तरह जब उन सब यहूदियों

ने जो मोआब और बनी 'अम्मोन और अदोम' और तमाम मुमालिक में थे, सुना कि शाह — ए — बाबुल ने यहूदाह के चन्द लोगों को रहने दिया है, और जिदलियाह — बिन — अखीक़ाम — बिन — साफ़न को उन पर हाकिम मुक़र्रर किया है;¹² तो सब यहूदी हर जगह से, जहाँ वह तितर — बितर किए गए थे, लौटे और यहूदाह के मुल्क में मिस्फ़ाह में जिदलियाह के पास आए, और मय और ताबिस्तानी मेवे कसरत से जमा' किए।¹³ और यूहनान — बिन — क़रीह और लश्क़रों के सब सरदार जो मैदानों में थे, मिस्फ़ाह में जिदलियाह के पास आए।¹⁴ और उससे कहने लगे, क्या तू जानता है कि बनी 'अम्मोन के बादशाह बा'लीस ने इस्माईल — बिन — नतनियाह को इसलिए भेजा है कि तुझे क़त्ल करे? लेकिन जिदलियाह — बिन — अखीक़ाम ने उनका यक़ीन न किया।¹⁵ और यूहनान — बिन — क़रीह ने मिस्फ़ाह में जिदलियाह से तन्हाई में कहा, इजाज़त हो तो मैं इस्माईल — बिन — नतनियाह को क़त्ल करूँ, और इसको कोई न जानेगा; वह क्यों तुझे क़त्ल करे, और सब यहूदी जो तेरे पास जमा' हुए हैं, तितर — बितर किए जाएँ, और यहूदाह के बाक़ी मान्दा लोग हलाक़ हों? ¹⁶ लेकिन जिदलियाह — बिन — अखीक़ाम ने यूहनान — बिन — क़रीह से कहा, तू ऐसा काम हरगिज़ न करना, क्योंकि तू इस्माईल के बारे में झूट कहता है।

41

०००००००० ०० ००००००

¹ और सातवें महीने में यूँ हुआ कि इस्माईल बिन — नतनियाह — बिन — इलीसमा' जो शाही नसल से और बादशाह के सरदारों में से था, दस आदमी साथ लेकर जिदलियाह — बिन — अखीक़ाम के पास मिस्फ़ाह में आया; और उन्होंने वहाँ मिस्फ़ाह में मिल कर खाना खाया।² तब इस्माईल — बिन — नतनियाह उन दस आदमियों के साथ जो उसके साथ थे उठा और जिदलियाह — बिन — अखीक़ाम बिन साफ़न को जिसे शाह — ए — बाबुल ने मुल्क का हाकिम मुक़र्रर किया था, तलवार से मारा और उसे क़त्ल किया।³ और इस्माईल ने उन सब यहूदियों को जो जिदलियाह के साथ मिस्फ़ाह में थे, और कसदी सिपाहियों को जो वहाँ हाज़िर थे क़त्ल किया।⁴ जब वह जिदलियाह को मार चुका, और किसी को ख़बर न हुई, तो उसके दूसरे दिन यूँ हुआ।⁵ कि सिकम और शीलोह और सामरिया से कुछ लोग जो सब के सब अस्सी आदमी थे, दाढ़ी मुंडाए और कपड़े फाड़े और अपने आपको घायल किए और हृदिये और लुबान हाथों में लिए हुए वहाँ आए, ताकि खुदावन्द

के घर में पेश करें।⁶ और इस्माईल — बिन — नतनियाह मिस्फाह से उनके इस्तक्रबाल को निकला, और रोता हुआ चला; और यूँ हुआ कि जब वह उनसे मिला तो उनसे कहने लगा कि जिदलियाह बिन अखीकाम के पास चलो।⁷ और फिर जब वह शहर के वस्त में पहुँचे, तो इस्माईल — बिन — नतनियाह और उसके साथियों ने उनको क्रतल करके हौज़ में फेंक दिया।⁸ लेकिन उनमें से दस आदमी थे जिन्होंने इस्माईल से कहा, हम को क्रतल न कर, क्योंकि हमारे गेहूँ और जौ और तेल और शहद के ज़खीरे खेतों में पोशीदा हैं। इसलिए वह बाज़ रहा और उनको उनके भाइयों के साथ क्रतल न किया।⁹ वह हौज़ जिसमें इस्माईल ने उन लोगों की लाशों को फेंका था, जिनको उसने जिदलियाह के साथ क्रतल किया वही है जिसे आसा बदशाह ने शाह — ए — इस्राईल बाशा के डर से बनाया था और इस्मा'ईल — बिन — नतनियाह ने उसको मक्तूलों की लाशों से भर दिया।¹⁰ तब इस्माईल बाक़ी सब लोगों को, या'नी शहजादियों और उन सब लोगों को जो मिस्फाह में रहते थे जिनको जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान ने जिदलियाह — बिन — अखीकाम के सुपुर्द किया था, गुलाम करके ले गया; इस्मा'ईल — बिन — नतनियाह उनको गुलाम करके रवाना हुआ कि पार होकर बनी 'अम्मोन में जा पहुँचे।¹¹ लेकिन जब यूहनान — बिन — करीह ने और लश्कर कि सब सरदारों ने जो उसके साथ थे, इस्माईल — बिन — नतनियाह की तमाम शरारत के बारे में जो उसने की थी सुना,¹² तो वह सब लोगों को लेकर उससे लड़ने को गए और जिबा'ऊन के बड़े तालाब पर उसे जा लिया।¹³ और यूँ हुआ कि जब उन सब लोगों ने जो इस्माईल के साथ थे यूहनान — बिन — करीह को और उसके साथ सब फ़ौजी सरदारों को देखा, तो वह खुश हुए।¹⁴ तब वह सब लोग जिनको इस्माईल मिस्फाह से पकड़ ले गया था, पलटे और यूहनान — बिन करीह के पास वापस आए।¹⁵ लेकिन इस्माईल — बिन — नतनियाह आठ आदमियों के साथ यूहनान के सामने से भाग निकला और बनी 'अमोन की तरफ़ चला गया।¹⁶ तब यूहनान — बिन करीह और वह फ़ौजी सरदार जो उसके हमराह थे, सब बाक़ी मान्दा लोगों को वापस लाए, जिनको इस्माईल बिन नतनियाह जिदलियाह बिन — अखीकाम को क्रतल करने के बाद मिस्फाह से ले गया था या'नी जंगी मर्दों और 'औरतों और लड़कों और ख्वाजासराओं को, जिनको वह जिबा'ऊन से वापस लाया था।¹⁷ और वह रवाना हुए और सराय — ए — किमहाम में जो बैतलहम के नज़दीक है, आ रहे ताकि मिस्र को जाएँ।¹⁸ क्योंकि वह कसदियों से डरे; इसलिए कि इस्माईल —

बिन — नतनियाह ने जिदलियाह — बिन — अखीकाम को, जिसे शाह — बाबुल ने उस मुल्क पर हाकिम मुकर्रर किया था, क्रतल कर डाला।

42

यर्मयाह 42:1-14

¹ तब सब फ़ौजी सरदार और यूहनान बिन करीह और यजिनियाह बिन हूसाइयाह और अदना — ओ — 'आला, सब लोग आए ² और यर्मियाह नबी से कहा, तू देखता है कि हम बहुतों में से चन्द ही रह गए हैं; हमारी दरख्वास्त कुबूल कर और अपने खुदावन्द खुदा से हमारे लिए, हाँ, इस तमाम बक़िये के लिए दुआ कर, ³ ताकि खुदावन्द तेरा खुदा, हमको, वह राह जिसमें हम चलें और वह काम जो हम करें बतला दे। ⁴ तब यर्मियाह नबी ने उनसे कहा, मैंने सुन लिया, देखो, अब मैं खुदावन्द तुम्हारे खुदा से तुम्हारे कहने के मुताबिक़ दुआ करूँगा; और जो जवाब खुदावन्द तुम को देगा, मैं तुम को सुनाऊँगा। मैं तुम से कुछ न छिपाऊँगा। ⁵ और उन्होंने यर्मियाह से कहा कि "जो कुछ खुदावन्द तेरा खुदा, तेरे ज़रिए हम से फ़रमाए, अगर हम उस पर 'अमल न करें तो खुदावन्द हमारे खिलाफ़ सच्चा और वफ़ादार गवाह हो। ⁶ चाहे भला मा'लूम हो चाहे बुरा, हम खुदावन्द अपने खुदा का हुक्म, जिसके सामने हम तुझे भेजते हैं मानेंगे; ताकि जब हम खुदावन्द अपने खुदा की फ़रमाँबरदारी करें तो हमारा भला हो।" ⁷ अब दस दिन के बाद यूँ हुआ कि खुदावन्द का कलाम यर्मियाह पर नाज़िल हुआ। ⁸ और उसने यूहनान — बिन — करीह और सब फ़ौजी सरदारों को जो उसके साथ थे, और अदना — ओ — आ'ला सबको बुलाया, ⁹ और उनसे कहा, खुदावन्द इस्राईल का खुदा, जिसके पास तुम ने मुझे भेजा कि मैं उसके सामने तुम्हारी दरख्वास्त पेश करूँ, यूँ फ़रमाता है: ¹⁰ अगर तुम इस मुल्क में ठहरे रहोगे, तो मैं तुम को बर्बाद नहीं बल्कि आबाद करूँगा और उखाड़ूँ नहीं लगाऊँगा, क्योंकि मैं उस बुराई से जो मैंने तुम से की है बाज़ आया। ¹¹ शाह — ए — बाबुल से, जिससे तुम डरते हो, न डरो खुदावन्द फ़रमाता है; उससे न डरो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ कि तुम को बचाऊँ और उसके हाथ से छुड़ाऊँ। ¹² मैं तुम पर रहम करूँगा, ताकि वह तुम पर रहम करे और तुम को तुम्हारे मुल्क में वापस जाने की इजाज़त दे। ¹³ लेकिन अगर तुम कहो कि 'हम फिर इस मुल्क में न रहेंगे,' और खुदावन्द अपने खुदा की बात न मानेंगे; ¹⁴ और कहो कि

'नहीं, हम तो मुल्क — ए — मिस्र में जाएँगे, जहाँ न लड़ाई देखेंगे न तुरही की आवाज़ सुनेंगे, न भूक से रोटी को तरसेंगे और हम तो वहीं बसेंगे, ¹⁵ तो ऐ यहूदाह के बाक़ी लोगों, खुदावन्द का कलाम सुनो। रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: अगर तुम वाक़'ई मिस्र में जाकर बसने पर आमादा हो, ¹⁶ तो यूँ होगा कि वह तलवार जिससे तुम डरते हो, मुल्क — ए — मिस्र में तुम को जा लेगी, और वह काल जिससे तुम हिरासान हो, मिस्र तक तुम्हारा पीछा करेगा और तुम वहीं मरोगे। ¹⁷ बल्कि यूँ होगा कि वह सब लोग जो मिस्र का रुख करते हैं कि वहाँ जाकर रहें, तलवार और काल और वबा से मरेंगे: उनमें से कोई बाक़ी न रहेगा और न कोई उस बला से जो मैं उन पर नाज़िल करूँगा बचेगा। ¹⁸ “क्यूँकि रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: जिस तरह मेरा क्रहर — ओ — ग़ज़ब येरूशलेम के बाशिन्दों पर नाज़िल हुआ, उसी तरह मेरा क्रहर तुम पर भी, जब तुम मिस्र में दाखिल होगे, नाज़िल होगा और तुम ला'नत — ओ — हैरत और तान — ओ — तशनी' का ज़रिया' होगे; और इस मुल्क को तुम फिर न देखोगे। ¹⁹ ऐ यहूदाह के बाक़ी मान्दा लोगों, खुदावन्द ने तुम्हारे बारे में फ़रमाया है, कि 'मिस्र में न जाओ, यक़ीन जानो कि मैंने आज तुम को जता दिया है। ²⁰ हक़ीक़त में तुमने अपनी जानों को फ़रेब दिया है, क्यूँकि तुम ने मुझ को खुदावन्द अपने खुदा के सामने यूँ कहकर भेजा, कि 'तू खुदावन्द हमारे खुदा से हमारे लिए दुआ कर और जो कुछ खुदावन्द हमारा खुदा कहे, हम पर जाहिर कर और हम उस पर 'अमल करेंगे। ²¹ और मैंने आज तुम पर यह जाहिर कर दिया है; तो भी तुमने खुदावन्द अपने खुदा की आवाज़ को, या किसी बात को जिसके लिए उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, नहीं माना। ²² अब तुम यक़ीन जानो कि तुम उस मुल्क में जहाँ जाना और रहना चाहते हो, तलवार और काल और वबा से मरोगे।”

43

???????? ?? ?????? ??? ?? ?????

¹ और यूँ हुआ कि जब यरमियाह सब लोगों से वह सब बातें, जो खुदावन्द उनके खुदा ने उसके ज़रिए' फ़रमाई थीं, या'नी यह सब बातें कह चुका, ² तो अज़रियाह बिन होसियाह और यूहनान बिन क़रीह और सब मगरूर लोगों ने यरमियाह से यूँ कहा कि, तू झूट बोलता है; खुदावन्द हमारे खुदा ने तुझे यह कहने को नहीं भेजा, 'मिस्र में बसने को न जाओ,' ³ बल्कि बारूक — बिन — नेयिरियाह तुझे उभारता है कि तू हमारे मुखालिफ़

हो, ताकि हम कसदियों के हाथ में गिरफ़्तार हों और वह हमको क़त्ल करें और गुलाम करके बाबुल को ले जाएँ। ⁴ तब यूहनान — बिन — क़रीह और सब फ़ौजी सरदारों और सब लोगों ने खुदावन्द का यह हुक्म कि वह यहूदाह के मुल्क में रहें, न माना। ⁵ लेकिन यूहनान — बिन — क़रीह और सब फ़ौजी सरदारों ने यहूदाह के सब बाक़ी लोगों को, जो तमाम क़ौमों में से जहाँ — जहाँ वह तितर — बितर किए गए थे और यहूदाह के मुल्क में बसने को वापस आए थे, साथ लिया; ⁶ या'नी मर्दों और 'औरतों और बच्चों और शाहज़ादियों और जिस किसी को जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान ने ज़िदलियाह — बिन — अख़ीक़ाम — बिन — साफ़न के साथ छोड़ा था, और यरमियाह नबी और बारूक — बिन — नेयिरियाह को साथ लिया; ⁷ और वह मुल्क — ए — मिस्र में आए, क्यूँकि उन्होंने खुदावन्द का हुक्म न माना, इसलिए वह तहफ़नहीस में पहुँचे। ⁸ तब खुदावन्द का कलाम तहफ़नहीस में यरमियाह पर नाज़िल हुआ: ⁹ कि बड़े पत्थर अपने हाथ में ले, और उनको फ़िर'औन के महल के मदख़ल पर जो तहफ़नहीस में है, बनी यहूदाह की आँखों के सामने चूने से फ़र्श में लगा; ¹⁰ और उनसे कह कि 'रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है: देखो, मैं अपने ख़िदमत गुज़ार शाह — ए — बाबुल नबूक़दनज़र को बुलाऊँगा, और इन पत्थरों पर जिनको मैंने लगाया है, उसका तख़्त रखूँगा, और वह इन पर अपना क़ालीन बिछाएगा। ¹¹ और वह आकर मुल्क — ए — मिस्र को शिकस्त देगा; और जो मौत के लिए हैं मौत के, और जो गुलामी के लिए हैं गुलामी के, और जो तलवार के लिए हैं तलवार के हवाले करेगा। ¹² और मैं मिस्र के बुतखानों में आग भड़काऊँगा, और वह उनको जलाएगा और गुलाम करके ले जाएगा; और जैसे चरवाहा अपना कपड़ा लपेटता है, वैसे ही वह ज़मीन — ए — मिस्र को लपेटेगा; और वहाँ से सलामत चला जाएगा। ¹³ और वह बैतशम्स के सुतूनों को, जो मुल्क — ए — मिस्र में हैं तोड़ेगा और मिस्रियों के बुतखानों को आग से जला देगा।

44

???? ?????? ?? ?????? ?????? ??????

¹ वह कलाम जो उन सब यहूदियों के बारे में जो मुल्क — ए — मिस्र में मिज़दाल के 'इलाक़े और तहफ़नीस और नूफ़ और फ़तरूस में बसते थे, यरमियाह पर नाज़िल हुआ: ² कि 'रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: तुम ने वह तमाम मुसीबत

जो मैं येरूशलेम पर और यहूदाह के सब शहरों पर लाया हूँ, देखी; और देखो, अब वह वीरान और ग़ैर आबाद है।³ उस शरारत की वजह से जो उन्होंने मुझे ग़ज़बनाक करने की, क्योंकि वह ग़ैर — मा'बूदों के आगे खुशबू जलाने को गए, और उनकी इबादत की जिनको न वह जानते थे, न तुम न तुम्हारे बाप — दादा।⁴ और मैंने अपने तमाम खिदमत — गुज़ार नबियों को तुम्हारे पास भेजा, उनको वक़्त पर यूँ कह कर भेजा कि तुम यह नफ़रती काम, जिससे मैं नफ़रत रखता हूँ, न करो।⁵ लेकिन उन्होंने न सुना, न कान लगाया कि अपनी बुराई से बाज़ आएँ, और ग़ैर — मा'बूदों के आगे खुशबू न जलाएँ।⁶ इसलिए मेरा क्रूर — ओ — ग़ज़ब नाज़िल हुआ, और यहूदाह के शहरों और येरूशलेम के बाज़ारों पर भड़का; और वह ख़राब और वीरान हुए जैसे अब हैं।⁷ और अब खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: तुम क्यों अपनी जानों से ऐसी बड़ी बुराई करते हो, कि यहूदाह में से मर्द — ओ — जन और तिफ़ल — ओ — शीर ख़्वाब काट डालें जाएँ और तुम्हारा कोई बाक़ी न रहे; ⁸ कि तुम मुल्क — ए — मिस्र में, जहाँ तुम बसने को गए हो, अपने 'आमाल से और ग़ैर — मा'बूदों के आगे खुशबू जलाकर मुझको ग़ज़बनाक करते हो, कि हलाक किए जाओ और इस ज़मीन की सब क़ौमों के बीच ला'नत — ओ — मलामत का ज़रिया' बनो।⁹ क्या तुम अपने बाप — दादा की शरारत और यहूदाह के बादशाहों और उनकी बीवियों की और खुद अपनी और अपनी बीवियों की शरारत, जो तुम ने यहूदाह के मुल्क में और येरूशलेम के बाज़ारों में की, भूल गए हो? ¹⁰ वह आज के दिन तक न फ़रोतन हुए, न डरे और मेरी शरी'अत — ओ — आईन पर, जिनको मैंने तुम्हारे और तुम्हारे बाप — दादा के सामने रखवा, न चले।¹¹ “इसलिए रब्ब — उल — अफ़वाज़, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है: देखो, मैं तुम्हारे खिलाफ़ ज़ियानकारी पर आमादा हूँ ताकि तमाम यहूदाह को हलाक करूँ।¹² और मैं यहूदाह के बाक़ी लोगों को, जिन्होंने मुल्क — ए — मिस्र का रुख़ किया है कि वहाँ जाकर बसें, पकड़ूंगा; और वह मुल्क — ए — मिस्र ही में हलाक होंगे, वह तलवार और काल से हलाक होंगे; उनके अदना — ओ — 'आला हलाक होंगे और वह तलवार और काल से फ़ना हो जाएँगे; और ला'नत — ओ — हैरत और ता'न — ओ — तशनी' का ज़रिया' होंगे।¹³ और मैं उनको जो मुल्क — ए — मिस्र में बसने को जाते हैं, उसी तरह सज़ा दूँगा जिस

तरह मैंने येरूशलेम को तलवार और काल और वबा से सज़ा दी है; ¹⁴ तब यहूदाह के बाक़ी लोगों में से, जो मुल्क — ए — मिस्र में बसने को जाते हैं, न कोई बचेगा, न बाक़ी रहेगा कि वह यहूदाह की सरज़मीन में वापस आएँ, जिसमें आकर बसने के वह मुश्ताक़ हैं; क्योंकि भाग कर बच निकलने वालों के अलावा कोई वापस न आएगा।”¹⁵ तब सब मर्दों ने, जो जानते थे कि उनकी बीवियों ने ग़ैर — मा'बूदों के लिए खुशबू जलायी है, और सब 'औरतों ने जो पास खड़ी थीं, एक बड़ी जमा'अत या'नी सब लोगों ने जो मुल्क — ए — मिस्र में फ़तरूस में जा बसे थे, यर्मियाह को यूँ जवाब दिया: ¹⁶ कि “यह बात जो तूने खुदावन्द का नाम लेकर हम से कही, हम कभी न मानेंगे।¹⁷ बल्कि हम तो उसी बात पर 'अमल करेंगे, जो हम खुद कहते हैं कि हम आसमान की मलिका के लिए खुशबू जलाएँगे और तपावन तपाएँगे, जिस तरह हम और हमारे बाप — दादा, हमारे बादशाह और हमारे सरदार, यहूदाह के शहरों और येरूशलेम के बाज़ारों में किया करते थे; क्योंकि उस वक़्त हम ख़ूब खाते — पीते और खुशहाल और मुसीबतों से महफूज़ थे।¹⁸ लेकिन जबसे हम ने आसमान की मलिका के लिए खुशबू जलाना और तपावन तपाना छोड़ दिया, तब से हम हर चीज़ के मोहताज हैं, और तलवार और काल से फ़ना हो रहे हैं।¹⁹ और जब हम आसमान की मलिका के लिए खुशबू जलाती और तपावन तपाती थीं, तो क्या हम ने अपने शौहरो के बग़ैर, उसकी इबादत के लिए कुल्चे पकाए और तपावन तपाए थे?”²⁰ तब यर्मियाह ने उन सब मर्दों और 'औरतों या'नी उन सब लोगों से, जिन्होंने उसे जवाब दिया था, कहा, ²¹ “क्या वह खुशबू, जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा और तुम्हारे बादशाहों और हाकिम ने र'इयत के साथ यहूदाह के शहरों और येरूशलेम के बाज़ारों में जलाया, खुदावन्द को याद नहीं? क्या वह उसके ख़याल में नहीं आया?²² इसलिए तुम्हारे बद'आमाल और नफ़रती कामों की वजह से खुदावन्द बर्दाश्त न कर सका; इसलिए तुम्हारा मुल्क वीरान हुआ और हैरत — ओ — ला'नत का ज़रिया' बना, जिसमें कोई बसने वाला न रहा, जैसा कि आज के दिन है।²³ चूँकि तुम ने खुशबू जलाया और खुदावन्द के गुनाहगार ठहरे, और उसकी आवाज़ को न सुना और न उसकी शरी'अत, न उसके क़ानून, न उसकी शहादतों पर चले; इसलिए यह मुसीबत जैसी कि अब है, तुम पर आ पड़ी।”²⁴ और यर्मियाह ने सब लोगों और सब 'औरतों से यूँ कहा कि “ऐ तमाम बनी यहूदाह, जो मुल्क — ए — मिस्र में हो, खुदावन्द का कलाम

सुनो। ²⁵ रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: तुम ने और तुम्हारी बीवियों ने अपनी ज़बान से कहा कि 'आसमान की मलिका के लिए खुशबू जलाने और तपावन तपाने की जो नज़रें हम ने मानी हैं, ज़रूर अदा करेंगे, और तुमने अपने हाथों से ऐसा ही किया; इसलिए अब तुम अपनी नज़रों को काईम रखो और अदा करो ²⁶ इसलिए ऐ तमाम बनी यहूदाह, जो मुल्क — ए — मिस्र में बसते हो, खुदावन्द का कलाम सुनो; देखो, खुदावन्द फ़रमाता है: मैंने अपने बुजुर्ग नाम की क़सम खाई है कि अब मेरा नाम यहूदाह के लोगों में तमाम मुल्क — ए — मिस्र में किसी के मुँह से न निकलेगा, कि वह कहें ज़िन्दा खुदावन्द खुदा की क़सम। ²⁷ देखो, मैं नेकी के लिए नहीं, बल्कि बुराई के लिए उन पर निगरान हूँगा; और यहूदाह के सब लोग, जो मुल्क — ए — मिस्र में हैं, तलवार और काल से हलाक होंगे यहाँ तक कि बिल्कुल नेस्त हो जाएँगे। ²⁸ और वह जो तलवार से बचकर मुल्क — ए — मिस्र से यहूदाह के मुल्क में वापस आएँगे, थोड़े से होंगे और यहूदाह के तमाम बाक़ी लोग, जो मुल्क — ए — मिस्र में बसने को गए, जानेंगे कि किसकी बात काईम रही, मेरी या उनकी। ²⁹ और तुम्हारे लिए यह निशान है, खुदावन्द फ़रमाता है, कि मैं इसी जगह तुम को सज़ा दूँगा, ताकि तुम जानो कि तुम्हारे खिलाफ़ मेरी बातें मुसीबत के बारे में यक़ीनन काईम रहेंगी: ³⁰ खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि देखो, मैं शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन हुफ़रा' को उसके मुखालिफ़ों और जानी दुश्मनों के हवाले कर दूँगा; जिस तरह मैंने शाह — ए — यहूदाह सिदक़ियाह को शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के हवाले कर दिया, जो उसका मुखालिफ़ और जानी दुश्मन था।”

45

?????? ??

¹ शाह — ए — यहूदाह यहूयक़ीम बिन यूसियाह के चौथे बरस में, जब बारूक — बिन — नेयिरियाह यरमियाह की ज़बानी कलाम की किताब में लिख रहा था, जो यरमियाह ने उससे कहा: ² “ऐ बारूक, खुदावन्द, इस्राईल का खुदा, तेरे बारे में यूँ फ़रमाता है: ³ कि तूने कहा, 'मुझे पर अफ़सोस! कि खुदावन्द ने मेरे दुख — दर्द पर ग़म भी बढ़ा दिया; मैं कराहते — कराहते थक गया और मुझे आराम न मिला। ⁴ तू उससे यूँ कहना, कि खुदावन्द फ़रमाता है: देख, इस तमाम मुल्क में, जो कुछ मैंने बनाया गिरा दूँगा, और जो कुछ मैंने लगाया उखाड़ फेकूँगा। ⁵ और क्या तू अपने लिए उमूर — ए

— 'अज़ीम की तलाश में है? उनकी तलाश छोड़ दे; क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है: देख, मैं तमाम बशर पर बला नाज़िल करूँगा; लेकिन जहाँ कहीं तू जाए तेरी जान तेरे लिए ग़नीमत ठहराऊँगा।”

46

?????? ??

¹ खुदावन्द का कलाम जो यरमियाह नबी पर क़ौमों के बारे में नाज़िल हुआ।

?????? ??

² मिस्र के बारे में शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन निकोह की फ़ौज के बारे में जो दरिया — ए — फ़रात के किनारे पर करकिमीस में थी, जिसको शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने शाह — ए — यहूदाह यहूयक़ीम — बिन — यूसियाह के चौथे बरस में शिकस्त दी: ³ सिपर और ढाल को तैयार करो, और लड़ाई पर चले आओ। ⁴ घोड़ों पर साज़ लगाओ; ऐ सवारों, तुम सवार हो और ख़ोद पहनकर निकलो, नेज़ों को सैक़ल करो, बक्तर पहिनाओ! ⁵ मैं उनको घबराए हुए क्यों देखता हूँ? वह पलट गए; उनके बहादुरों ने शिकस्त खाई, वह भाग निकले और पीछे फिरकर नहीं देखते क्योंकि चारों तरफ़ ख़ौफ़ है खुदावन्द फ़रमाता है। ⁶ न सुबुकपा भागने पाएगा, न बहादुर बच निकलेगा; उत्तर में दरिया — ए — फ़रात के किनारे उन्होंने ठोकर खाई और गिर पड़े। ⁷ 'यह कौन है जो दरिया-ए-नील की तरह बढ़ा चला आता है, जिसका पानी सैलाब की तरह मौजज़न है? ⁸ मिस्र दरिया-ए-नील की तरह उठता है, और उसका पानी सैलाब की तरह मौजज़न है; और वह कहता है, 'मैं चढ़ूँगा और ज़मीन को छिपा लूँगा मैं शहरों को और उनके बशिन्दों को हलाक कर दूँगा। ⁹ घोड़े बरअन्गोख़ता हों, रथ हवा हो जाएँ, और कूश — ओ — फूत के बहादुर जो सिपरबरदार हैं, और लूदी जो कमानक़शी और तीरअन्दाज़ी में माहिर हैं, निकलें। ¹⁰ क्योंकि यह खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज का दिन, या'नी इन्तक़ाम का रोज़ है, ताकि वह अपने दुश्मनों से इन्तक़ाम ले। इसलिए तलवार खा जाएगी और सेर होगी, और उनके खून से मस्त होगी; क्योंकि खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज के लिए उत्तरी सरज़मीन में दरिया — ए — फ़रात के किनारे एक ज़बीहा है। ¹¹ ऐ कुंवारी दुस्तर — ए — मिस्र, ज़िल'आद को चढ़ जा और बलसान ले, तू बे — फ़ायदा तरह तरह की दवाएँ इस्ते'माल करती है तू शिफ़ा न पाएगी। ¹² क़ौमों ने तेरी रुस्वाई का हाल सुना, और ज़मीन तेरी फ़रियाद

से मा'भूर हो गई, क्योंकि बहादुर एक दूसरे से टकराकर एक साथ गिर गए। ¹³ वह कलाम जो खुदावन्द ने यर्मियाह नबी को शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के आने और मुल्क — ए — मिस्र को शिकस्त देने के बारे में फ़रमाया: ¹⁴ मिस्र में आशकारा करो, मिजदाल में इश्तिहार दो; हाँ, नूफ़ और तहफ़नहीस में 'ऐलान करो; कहो कि 'अपने आपको तैयार कर; क्योंकि तलवार तेरी चारों तरफ़ खाये जाती है। ¹⁵ तेरे बहादुर क्यूँ भाग गए? वह खड़े न रह सके, क्योंकि खुदावन्द ने उनको गिरा दिया। ¹⁶ उसने बहुतों को गुमराह किया, हाँ, वह एक दूसरे पर गिर पड़े; और उन्होंने कहा, 'उठो, हम मुहलिक तलवार के ज़ुल्म से अपने लोगों में और अपने वतन को फिर जाएँ। ¹⁷ वह वहाँ चिल्लाए कि 'शाह — ए — मिस्र फिर'औन बर्बाद हुआ; उसने मुकर्ररा वक्रत को गुज़र जाने दिया। ¹⁸ 'वह बादशाह, जिसका नाम रब्ब — उल — अफ़वाज है, यूँ फ़रमाता है कि मुझे अपनी हयात की क्रसम, जैसा तबूर पहाड़ों में और जैसा कर्मिल समन्दर के किनारे है, वैसा ही वह आएगा। ¹⁹ ऐ बेटी, जो मिस्र में रहती है गुलामी में जाने का सामान कर; क्योंकि नूफ़ वीरान और भसम होगा, उसमें कोई बसने वाला न रहेगा। ²⁰ "मिस्र बहुत खूबसूरत बछिया है; लेकिन उत्तर से तबाही आती है, बल्कि आ पहुँची। ²¹ उसके मज़दूर सिपाही भी उसके बीच मोटे बछड़ों की तरह हैं; लेकिन वह भी शुमार हुए, वह इकट्ठे भागे, वह खड़े न रह सके; क्योंकि उनकी हलाकत का दिन उन पर आ गया, उनकी सज़ा का वक्रत आ पहुँचा। ²² 'वह साँप की तरह चिलचिलाएगी; क्योंकि वह फ़ौज लेकर चढ़ाई करेंगे, और कुल्हाड़े लेकर लकड़हारों की तरह उस पर चढ़ आएँगे। ²³ वह उसका जंगल काट डालेंगे, अगरचे वह ऐसा घना है कि कोई उसमें से गुज़र नहीं सकता खुदावन्द फ़रमाता है क्योंकि वह टिङ्डियों से ज्यादा बल्कि बेशुमार हैं। ²⁴ दुस्तर — ए — मिस्र रुस्वा होगी, वह उत्तरी लोगों के हवाले की जाएगी।" ²⁵ रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, फ़रमाता है: देख, मैं आमून — ए — नो को, और फिर'औन और मिस्र और उसके मा'बूदों, और उसके बादशाहों को; या'नी फिर'औन और उनको जो उस पर भरोसा रखते हैं, सज़ा दूँगा; ²⁶ और मैं उनको उनके जानी दुश्मनों, और शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र और उसके मुलाज़िमों के हवाले कर दूँगा; लेकिन इसके बाद वह फिर ऐसी आबाद होगी, जैसी अगले दिनों में थी, खुदावन्द फ़रमाता है। ²⁷ लेकिन मेरे खादिम या'कूब, हिरासाँ न हो; और ऐ

इस्राईल, घबरा न जा; क्योंकि देख, मैं तुझे दूर से, और तेरी औलाद को उनकी गुलामी की ज़मीन से रिहाई दूँगा; और या'कूब वापस आएगा और आराम — ओ — राहत से रहेगा, और कोई उसे न डराएगा। ²⁸ ऐ मेरे खादिम या'कूब, हिरासाँ न हो, खुदावन्द फ़रमाता है; क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। अगरचे मैं उन सब क्रौमों को जिनमें मैंने तुझे हाँक दिया, हलाक — ओ — बर्बाद करूँ तो भी मैं तुझे हलाक — ओ — बर्बाद न करूँगा; बल्कि मुनासिब तम्बीह करूँगा और हरगिज़ बे — सज़ा न छोड़ूँगा।

47

?????????? ?? ????? ?????

¹ खुदावन्द का कलाम जो यर्मियाह नबी पर फ़िलिस्तियों के बारे में नाज़िल हुआ, इससे पहले कि फिर'औन ने गज़ज़ा को फ़तह किया। ² खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देख, उत्तर से पानी चढ़ेंगे और सैलाब की तरह होंगे, और मुल्क पर और सब पर जो उसमें है, शहर पर और उसके बाशिन्दों पर, वह निकलेंगे। उस वक्रत लोग चिल्लाएँगे, और मुल्क के सब बाशिन्दे फ़रियाद करेंगे। ³ उसके ताकतवर घोड़ों के खुरों की टाप की आवाज़ से, उसके रथों के रेलें और उसके पहियों की गड़गड़ाहट से बाप कमज़ोरी की वजह से अपने बच्चों की तरफ़ लौट कर न देखेंगे। ⁴ यह उस दिन की वजह से होगा, जो आता है कि सब फ़िलिस्तियों को ग़ारत करे, और सूर और सैदा से हर मददगार को जो बाक़ी रह गया है हलाक करे; क्योंकि खुदावन्द फ़िलिस्तियों को या'नी कफ़तूर के जज़ीरे के बाक़ी लोगों को ग़ारत करेगा। ⁵ गज़ज़ा पर चन्दलापन आया है, अस्कलोन अपनी वादी के बक्रिये के साथ हलाक किया गया, तू कब तक अपने आप को काटता जाएगा ⁶ "ऐ खुदावन्द की तलवार, तू कब तक न ठहरेगी? तू चल, अपने ग़िलाफ़ में आराम ले, और साकिन हो! ⁷ वह कैसे ठहर सकती है, जब कि खुदावन्द ने अस्कलोन और समन्दर के साहिल के खिलाफ़ उसे हुक्म दिया है? उसने उसे वहाँ मुकर्रर किया है।"

48

????? ?? ????? ?????

¹ मोआब के बारे में। रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: नबू पर अफ़सोस, कि वह वीरान हो गया! करयताइम रुस्वा हुआ, और ले लिया गया; मिसज़ाब खज़िल और पस्त हो गया। ² अब मोआब की ता'रीफ़ न होगी। हस्बोन में उन्होंने यह कह कर उसके खिलाफ़ मंसूबे बाँधे हैं कि: 'आओ,

हम उसे बर्बाद करें कि वह क्रौम न कहलाए, ऐ मदमेन तू भी काट डाला जाएगा; तलवार तेरा पीछा करेगी।³ 'होरोनायिम में चीख पुकार, 'वीरानी और बड़ी तबाही होगी।⁴ मोआब बर्बाद हुआ; उसके बच्चों के नौहे की आवाज़ सुनाई देती है।⁵ क्योंकि लूहीत की चढ़ाई पर आह — ओ — नाला करते हुए चढ़ेंगे यकीनन होरोनायिम की उतराई पर मुखालिफ़ हलाकत के जैसी आवाज़ सुनते हैं।⁶ भागो! अपनी जान बचाओ! वीराने में रतमा के दरख्त की तरह हो जाओ! ⁷ और चूँकि तूने अपने कामों और खज़ानों पर भरोसा किया इसलिए तू भी गिरफ़्तार होगा; और कमोस अपने काहिनों और हाकिम के साथ गुलाम होकर जाएगा।⁸ और ग़ारतगर हर एक शहर पर आएगा, और कोई शहर न बचेगा; वादी भी वीरान होगी, और मैदान उजाड़ हो जाएगा; जैसा खुदावन्द ने फ़रमाया है।⁹ मोआब को पर लगा दो, ताकि उड़ जाए क्योंकि उसके शहर उजाड़ होंगे और उनमें कोई बसनेवाला न होगा।¹⁰ जो खुदावन्द का काम बेपरवाई से करता है, और जो अपनी तलवार को ख़ूँरज़ी से बाज़ रखता है, मला'ऊन हो।¹¹ मोआब बचपन ही से आराम से रहा है, और उसकी तलछट तहनशीन रही, न वह एक बर्तन से दूसरे में उँडला गया और न गुलामी में गया; इसलिए उसका मज़ा उसमें क़ाईम है और उसकी बू नहीं बदली।¹² इसलिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, कि मैं उण्डेलने वालों को उसके पास भेजूँगा कि वह उसे उलटाएँ; और उसके बर्तनों को ख़ाली और मटकों को चकनाचूर करें।¹³ तब मोआब कमोस से शर्मिन्दा होगा, जिस तरह इस्राईल का घराना बैतएल से जो उसका भरोसा था, खज़िल हुआ।¹⁴ तुम क्यूँकर कहते हो, कि 'हम पहलवान हैं और जंग के लिए ज़बरदस्त सूर्मा हैं'? ¹⁵ मोआब ग़ारत हुआ; उसके शहरों का धुवाँ उठ रहा है, और उसके चीदा जवान क़त्ल होने को उतर गए; वह बादशाह फ़रमाता है जिसका नाम रब्ब — उल — अफ़वाज़ है।¹⁶ नज़दीक है कि मोआब पर आफ़त आए, और उनका ववाल दौड़ा आता है।¹⁷ ऐ उसके आस — पास वालों, सब उस पर अफ़सोस करो; और तुम सब जो उसके नाम से वाक़िफ़ हो कहो कि यह मोटा 'असा और खूबसूरत डंडा क्यूँकर टूट गया।¹⁸ ऐ बेटी, जो दीबोन में बसती है! अपनी शौकत से नीचे उतर और प्यासी बैठ; क्यूँकि मोआब का ग़ारतगर तुझ पर चढ़ आया है और उसने तेरे क़िलों को तोड़ डाला।¹⁹ ऐ अरो'ईर की रहने वाली तू राह पर खड़ी हो, और निगाह कर! भागने वाले से और उससे जो बच निकली हो; पूछ कि 'क्या माजरा है?' ²⁰ मोआब रुस्वा हुआ,

क्यूँकि वह पस्त कर दिया गया, तुम वावैला मचाओ और चिल्लाओ! अरनोन में इश्तिहार दो, कि मोआब ग़ारत हो गया।²¹ और कि सहरा की अतराफ़ पर, होलून पर, और यहसाह पर, और मिफ़'अत पर,²² और दीबोन पर, और नबू पर, और बैत — दिब्बलताइम पर,²³ और करयताइम पर, और बैत — जमूल पर, और बैत — म'ऊन पर,²⁴ और करयोत पर, और बूसराह, और मुल्क — ए — मोआब के दूर — ओ — नज़दीक के सब शहरों पर ऐजाब नाज़िल हुआ है।²⁵ मोआब का सींग काटा गया, और उसका बाज़ू तोड़ा गया, खुदावन्द फ़रमाता है।²⁶ तुम उसको मदहोश करो, क्यूँकि उसने अपने आपको खुदावन्द के सामने बुलन्द किया; मोआब अपनी क्रय में लोटेगा और मस्ख़रा बनेगा।²⁷ क्या इस्राईल तेरे आगे मस्ख़रा न था? क्या वह चोरों के बीच पाया गया कि जब कभी तू उसका नाम लेता था, तू सिर हिलाता था? ²⁸ 'ऐ मोआब के बाशिन्दों, शहरों को छोड़ दो और चट्टान पर जा बसो; और कबूतर की तरह बनो जो गहरे ग़ार के मुँह के किनारे पर आशियाना बनाता है।²⁹ हम ने मोआब का तकबूर सुना है, वह बहुत मगरूर है, उसकी गुस्ताखी भी, और उसकी शेखी और उसका गुरूर और उसके दिल का तकबूर ³⁰ मैं उसका क्रहर जानता हूँ, खुदावन्द फ़रमाता है; वह कुछ नहीं और उसकी शेखी से कुछ बन न पड़ा।³¹ इसलिए मैं मोआब के लिए वावैला करूँगा; हाँ, सारे मोआब के लिए मैं ज़ार — ज़ार रोऊँगा; कोर हरस के लोगों के लिए मातम किया जाएगा।³² ऐ सिबमाह की ताक, मैं या'ज़ेर के रोने से ज़्यादा तेरे लिए रोऊँगा; तेरी शाखें समन्दर तक फैल गईं, वह या'ज़ेर के समन्दर तक पहुँच गईं, ग़ारतगर तेरे ताबिस्तानी मेवों पर और तेरे अंगूरों पर आ पड़ा है ³³ खुशी और शадमानी हरे भरे खेतों से और मोआब के मुल्क से उठा ली गई; और मैंने अंगूर के हौज़ में मय बाक़ी नहीं छोड़ी, अब कोई ललकार कर न लताड़ेगा; उनका ललकारना, ललकारना न होगा।³⁴ 'हस्बोन के रोने से वह अपनी आवाज़ को इली'आली और यहज़ तक और ज़ुगर से होरोनायिम तक 'इज़लत शलीशियाह तक बुलन्द करते हैं; क्यूँकि नमरियम के चश्मे भी खराब हो गए हैं।³⁵ और खुदावन्द फ़रमाता है, कि जो कोई ऊँचे मक़ाम पर कुर्बानी चढ़ाता है, और जो कोई अपने मा'बूदों के आगे खुशबू जलाता है, मोआब में से हलाक कर दूँगा।³⁶ इसलिए मेरा दिल मोआब के लिए बाँसरी की तरह आहें भरता, और कीर हरस के लोगों के लिए शहनाओं की तरह फुगान करता है, क्यूँकि उसका फ़िरावान ज़ख़ीरा तलफ़ हो गया।³⁷ हकीकत

में हर एक सिर मुंडा है, और हर एक दाढ़ी कतरी गई; हर एक के हाथ पर ज़ख्म है और हर एक की कमर पर टाट। ³⁸ मोआब के सब घरों की छतों पर और उसके सब बाज़ारों में बड़ा मातम होगा, क्योंकि मैंने मोआब को उस बर्तन की तरह जो पसन्द न आए तोड़ा है, खुदावन्द फ़रमाता है। ³⁹ वह वावैला करेंगे और कहेंगे, कि उसने कैसी शिकस्त खाई है! मोआब ने शर्म के मारे क्यूँकर अपनी पीठ फेरी! तब मोआब सब आस — पास वालों के लिए हँसी और खौफ़ का ज़रिया होगा।” ⁴⁰ क्यूँकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देख, वह 'उक्काब की तरह उड़ेगा और मोआब के खिलाफ़ बाज़ू फैलाएगा। ⁴¹ वहाँ के शहर और क़िले' ले लिए जायेंगे और उस दिन मोआब के बहादुरों के दिल ज़च्चा के दिल की तरह होंगे। ⁴² और मोआब हलाक किया जाएगा और क्रौम न कहलाएगा, इसलिए कि उसने खुदावन्द के सामने अपने आपको बुलन्द किया। ⁴³ खौफ़ और गढ़ा और दाम तुझ पर मुसल्लत होंगे, ऐ साकिन — ए — मोआब, खुदावन्द फ़रमाता है। ⁴⁴ जो कोई दहशत से भागे, गढ़े में गिरेगा, और जो गढ़े से निकले, दाम में फँसेगा; क्यूँकि मैं उन पर, हाँ, मोआब पर उनकी सियासत का बरस लाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है। ⁴⁵ “जो भागे, इसलिए हस्बोन के साये तले बेताब खड़े हैं; लेकिन हस्बोन से आग और सीहोन के वस्त से एक शो'ला निकलेगा और मोआब की दाढ़ी के कोने को और हर एक फ़सादी की चाँद को खा जाएगा। ⁴⁶ हाय, तुझ पर ऐ मोआब! कमोस के लोग हलाक हुए, क्यूँकि तेरे बेटों को गुलाम करके ले गए और तेरी बेटियाँ भी गुलाम हुईं। ⁴⁷ बावजूद इसके मैं आखरी दिनों में मोआब के गुलामों को वापस लाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।” मोआब की 'अदालत यहाँ तक हुई।

49

?????? ?? ???? ?????

¹ बनी 'अम्मोन के बारे में खुदावन्द का इन्साफ़ फ़रमाता है कि: क्या इस्राईल के बेटे नहीं हैं? क्या उसका कोई वारिस नहीं? फिर मिलकूम ने क्यूँ जद्द पर क़ब्ज़ा कर लिया, और उसके लोग उसके शहरों में क्यूँ बसते हैं? ² इसलिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, कि मैं बनी 'अम्मोन के रब्बह में लड़ाई का हुल्लड़ बर्पा करूँगा; और वह खंडर हो जाएगा और उसकी बेटियाँ आग से जलाई जाएँगी; तब इस्राईल उनका जो उसके वारिस बन बैठे थे, वारिस होगा, खुदावन्द फ़रमाता है। ³ “ऐ हस्बोन, वावैला कर, कि 'ऐ बर्बाद की गई। ऐ रब्बाह की बेटियो, चिल्लाओ, और टाट ओढ़कर मातम करो और इहातों में इधर उधर

दौड़ो, क्यूँकि मिलकूम गुलामी में जाएगा और उसके काहिन और हाकिम भी साथ जाएँगे। ⁴ तू क्यूँ वादियों पर फ़ख़र करती है? तेरी वादी सेराब है, ऐ बरग़शता बेटी, तू अपने खज़ानों पर भरोसा करती है, कि 'कौन मुझ तक आ सकता है?’ ⁵ देख, खुदावन्द, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है: मैं तेरे सब इर्दगिर्द वालों का खौफ़ तुझ पर ग़ालिब करूँगा; और तुम में से हर एक आगे हाँका जाएगा, और कोई न होगा जो आवारा फिरने वालों को जमा' करे। ⁶ मगर उसके बाद मैं बनी 'अम्मोन को गुलामी से वापस लाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।” ⁷ अदोम के बारे में। रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि: “क्या तेमान में ख़िरद मुतलक़ न रही? क्या तदबीरों की मसलहत जाती रही? क्या उनकी 'अक़ल उड़ गई? ⁸ ऐ ददान के बाशिन्दों, भागो, लौटो, और नशेबों में जा बसो! क्यूँकि मैं इन्तक़ाम के वक़्त उस पर ऐसौ की जैसी मुसीबत लाऊँगा। ⁹ अगर अँगूर तोड़ने वाले तेरे पास आएँ, तो क्या कुछ दाने बाक़ी न छोड़ेंगे? या अगर रात को चोर आएँ, तो क्या वह हस्ब — ए — ख्वाहिश ही न तोड़ेंगे? ¹⁰ लेकिन मैं ऐसौ को बिल्कुल नंगा करूँगा, उसके पोशीदा मकानों को बे — पर्दा कर दूँगा कि वह छिप न सके; उसकी नसल और उसके भाई और उसके पड़ोसी सब बर्बाद किए जाएँगे, और वह न रहेगा। ¹¹ तू अपने यतीम फ़र्ज़न्दों को छोड़, मैं उनको ज़िन्दा रखूँगा; और तेरी बेवाएँ मुझ पर भरोसा करें।” ¹² क्यूँकि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: कि “देख, जो सज़ावार न थे कि प्याला पीएँ, उन्होंने खूब पिया; क्या तू बे — सज़ा छूट जाएगा? तू बेसज़ा न छूटेगा, बल्कि यक़ीनन उसमें से पिएगा। ¹³ क्यूँकि मैंने अपनी ज़ात की क़सम खाई है, खुदावन्द फ़रमाता है, कि बुराह जा — ए — हैरत और मलामत और वीरानी और ला'नत होगा; और उसके सब शहर अबद — उल — आबाद वीरान रहेंगे।” ¹⁴ मैंने खुदावन्द से एक ख़बर सुनी है, बल्कि एक क़ासिद यह कहने को क्रौमों के बीच भेजा गया है: जमा' हो और उस पर जा पड़ो, और लड़ाई कि लिए उठो। ¹⁵ क्यूँकि देख, मैंने तुझे क्रौमों के बीच हक़ीर, और आदमियों के बीच ज़लील किया। ¹⁶ तेरी हैबत और तेरे दिल के गुरुर ने तुझे फ़रेब दिया है। ऐ तू जो चट्टानों के शिगाफ़ों में रहती है, और पहाड़ों की चोटियों पर क़ाबिज़ है; अगरचे तू 'उक्काब की तरह अपना आशियाना बुलन्दी पर बनाए, तो भी मैं वहाँ से तुझे नीचे उतारूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है। ¹⁷ “अदोम भी जा — ए — हैरत होगा, हर एक जो उधर से गुज़रेगा हैरान होगा, और उसकी सब आफ़तों की वजह

से सुस्कारेगा। ¹⁸ जिस तरह सदूम और 'अमूरा और उनके आस पास के शहर ग़ारत हो गए, उसी तरह उसमें भी न कोई आदमी बसेगा, न आदमज़ाद वहाँ सुकूनत करेगा, खुदावन्द फ़रमाता है। ¹⁹ देख, वह शेर — ए — बबर की तरह यरदन के जंगल से निकलकर मज़बूत बस्ती पर चढ़ आएगा; लेकिन मैं अचानक उसको वहाँ से भगा दूँगा, और अपने बरगुज़ीदा को उस पर मुक़र्रर करूँगा; क्योंकि मुझ सा कौन है? कौन है जो मेरे लिए वक़्त मुक़र्रर करे? और वह चरवाहा कौन है जो मेरे सामने खड़ा हो सके? ²⁰ तब खुदावन्द की मसलहत को, जो उसने अदोम के खिलाफ़ ठहराई है और उसके इरादे को जो उसने तेमान के बाशिन्दों के खिलाफ़ किया है, सुनो, उनके गल्ले के सबसे छोटों को भी घसीट ले जाएँगे, यकीनन उनका घर भी उनके साथ बर्बाद होगा। ²¹ उनके गिरने की आवाज़ से ज़मीन काँप जाएगी, उनके चिल्लाने का शोर बहर — ए — कुलजुम तक सुनाई देगा। ²² देख, वह चढ़ आएगा और 'उक्राब की तरह उड़ेगा, और बसराह के खिलाफ़ बाज़ू फैलाएगा; और उस दिन अदोम के बहादुरों का दिल ज़च्चा के दिल की तरह होगा।" ²³ दमिशक़ के बारे में: "हमात और अरफ़ाद शर्मिन्दा हैं क्योंकि उन्होंने बुरी ख़बर सुनी, वह पिघल गए समन्दर ने जुम्बिश खाई, वह ठहर नहीं सकता। ²⁴ दमिशक़ का ज़ोर टूट गया, उसने भागने के लिए मुँह फेरा, और थरथराहट ने उसे आ लिया; ज़च्चा के से रंज — ओ — दर्द ने उसे आ पकड़ा। ²⁵ यह क्यूँकर हुआ कि वह नामवर शहर, मेरा शादमान शहर, नहीं बचा? ²⁶ इसलिए उसके जवान उसके बाज़ारों में गिर जाएँगे, और सब जंगी मर्द उस दिन काट डाले जाएँगे, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। ²⁷ और मैं दमिशक़ की शहरपनाह में आग भड़काऊँगा, जो बिन — हदद के महलों को भसम कर देगी।" ²⁸ क़ीदार के बारे में और हसूर की सल्लतनतों के बारे में जिनको शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने शिकस्त दी। खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: "उठो, क़ीदार पर चढ़ाई करो, और अहल — ए — मशरिक़् को हलाक़ करो। ²⁹ वह उनके खेमों और गल्लों को ले लेंगे; उनके पदों और बर्तनों और ऊँटों को छीन ले जाएँगे; और वह चिल्ला कर उनसे कहेंगे कि चारों तरफ़ ख़ौफ़ है!" ³⁰ भागो, दूर निकल जाओ, नशेब में बसो, ऐ हसूर के बाशिन्दो, खुदावन्द फ़रमाता है; क्योंकि शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने तुम्हारी मुखालिफ़त में मश्वरत की और तुम्हारे खिलाफ़ इरादा किया है। ³¹ खुदावन्द फ़रमाता है, उठो, उस आसूदा क्रौम पर, जो बे — फ़िक़र रहती है, जिसके न किवाड़े हैं न अड़बंगे और अकेली है चढ़ाई करो ³² उनके ऊँट ग़नीमत के

लिए होंगे, और उनके चौपायों की कसरत लूट के लिए; और मैं उन लोगों को जो गाओदुम दाढ़ी रखते हैं, हर तरफ़ हवा में तितर — बितर करूँगा; और मैं उन पर हर तरफ़ से आफ़त लाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है। ³³ हसूर गीदड़ों का मक़ाम, हमेशा का वीराना होगा; न कोई आदमी वहाँ बसेगा, और न कोई आदमज़ाद उसमें सुकूनत करेगा। ³⁴ खुदावन्द का कलाम जो शाह — ए — यहूदाह सिदक्रियाह की सल्लतनत के शुरू में 'ऐलाम के बारे में यर्मियाह नबी पर नाज़िल हुआ। ³⁵ कि रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि: देख मैं ऐलाम की कमान उनकी बड़ी तवानाई को तोड़ डालूँगा। ³⁶ और चारों हवाओं को आसमान के चारों कोनों से ऐलाम पर लाऊँगा, और उन चारों हवाओं की तरफ़ उनको तितर — बितर करूँगा; और कोई ऐसी क्रौम न होगी, जिस तक ऐलाम के जिलावतन न पहुँचेंगे। ³⁷ क्योंकि मैं ऐलाम को उनके मुखालिफ़ों और जानी दुश्मनों के आगे हिरासाँ करूँगा; और उन पर एक बला या'नी क़हर — ए — शदीद को नाज़िल करूँगा। खुदावन्द फ़रमाता है, और तलवार को उनके पीछे लगा दूँगा, यहाँ तक कि उनको नाबूद कर डालूँगा; ³⁸ और मैं अपना तख़्त 'ऐलाम में रखूँगा, और वहाँ से बादशाह और हाकिम को नाबूद करूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है। ³⁹ "लेकिन आखिरी दिनों में यूँ होगा, कि मैं ऐलाम को गुलामी से वापस लाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है।"

50

22222222 2222 222222

¹ वह कलाम जो खुदावन्द ने बाबुल और कसदियों के मुल्क के बारे में यर्मियाह नबी की ज़रिए' फ़रमाया: ² क्रौमों में 'ऐलान करो, और इश्तिहार दो, और झण्डा खड़ा करो, 'ऐलान करो, पोशीदा न रखो; कह दो कि बाबुल ले लिया गया, बेल रुस्वा हुआ, मरोदक सरासीमा हो गया; उसके बुत खज़िल हुए, उसकी मूरतें तोड़ी गई। ³ क्योंकि उत्तर से एक क्रौम उस पर चढ़ी चली आती है, जो उसकी सरज़मीन को उजाड़ देगी, यहाँ तक कि उसमें कोई न रहेगा, वह भाग निकले, वह चल दिए, क्या इंसान क्या हैवान। ⁴ 'खुदावन्द फ़रमाता है, उन दिनों में बल्कि उसी वक़्त बनी — इस्राईल आएँगे; वह और बनी यहूदाह इकट्ठे रोते हुए चलेंगे और खुदावन्द अपने खुदा के तालिब होंगे। ⁵ वह सिय्यून की तरफ़ मुतवज्जिह होकर उसकी राह पूछेंगे, 'आओ, हम खुदावन्द से मिल कर उससे अबदी 'अहद करें, जो कभी फ़रामोश न हो। ⁶ मेरे लोग भटकी

हुई भेड़ों की तरह हैं; उनके चरवाहों ने उनको गुमराह कर दिया, उन्होंने उनको पहाड़ों पर ले जाकर छोड़ दिया; वह पहाड़ों से टीलों पर गए और अपने आराम का मकान भूल गए हैं। ⁷ सब जिन्होंने उनको पाया उनको निगल गए, और उनके दुश्मनों ने कहा, हम कुसूरवार नहीं हैं क्योंकि उन्होंने खुदावन्द का गुनाह किया है; वह खुदावन्द जो सदाक़त का मस्कन और उनके बाप — दादा की उम्मीदगाह है। ⁸ बाबुल में से भागो, और कसदियों की सरज़मीन से निकलो, और उन बक़रों की तरह हो जो गल्लों के आगे आगे चलते हैं। ⁹ क्योंकि देख, मैं उत्तर की सरज़मीन से बड़ी क्रौमों के अम्बोह को बर्पा करूँगा और बाबुल पर चढ़ा लाऊँगा, और वह उसके सामने सफ़ — आरा होंगे; वहाँ से उस पर क़ब्ज़ा कर लेगे उनके तीरकार आज़मूदा बहादुर के से होंगे जो ख़ाली हाथ नहीं लौटता। ¹⁰ कसदिस्तान लूटा जाएगा, उसे लूटने वाले सब आसूदा होंगे, खुदावन्द फ़रमाता है। ¹¹ ऐ मेरी मीरास को लूटनेवालों, चूँकि तुम शादमान और खुश हो और दावने वाली बछिया की तरह कूदते फ़ाँदते और ताक़तवर घोड़ों की तरह हिनहिनाते हो; ¹² इसलिए तुम्हारी माँ बहुत शर्मिन्दा होगी, तुम्हारी वालिदा ख़जालत उठाएगी। देखो, वह क्रौमों में सबसे आखिरी ठहरेगी और वीरान — ओ — खुशक ज़मीन और रेगिस्तान होगी। ¹³ खुदावन्द के क्रहर की वजह से वह आबाद न होगी, बल्कि बिल्कुल वीरान हो जाएगी; जो कोई बाबुल से गुज़रेगा हैरान होगा, और उसकी सब आफ़तों के बाइस सुस्कारेगा। ¹⁴ ऐ सब तीरअन्दाज़ो, बाबुल को घेर कर उसके खिलाफ़ सफ़आराई करो, उस पर तीर चलाओ, तीरों को दरेग़ा न करो, क्योंकि उसने खुदावन्द का गुनाह किया है। ¹⁵ उसे घेर कर तुम उस पर ललकारो, उसने इता'अत मन्ज़ूर कर ली; उसकी बुनियादेँ धंस गई, उसकी दीवारें गिर गई। क्योंकि यह खुदावन्द का इन्तक़ाम है, उससे इन्तक़ाम लो; जैसा उसने किया, वैसा ही तुम उससे करो। ¹⁶ बाबुल में हर एक बोलनेवाले को और उसे जो दरौ के वक़््त दरौती पकड़े, काट डालो; ज़ालिम की तलवार की हैबत से हर एक अपने लोगों में जा मिलेगा, और हर एक अपने वतन को भाग जाएगा। ¹⁷ इस्राईल तितर — बितर भेड़ों की तरह है, शेरों ने उसे रगेदा है। पहले शाह — ए — असूर ने उसे खा लिया और फिर यह शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र उसकी हड्डियाँ तक चबा गया। ¹⁸ इसलिए रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं शाह — ए — बाबुल और उसके मुल्क को सज़ा दूँगा, जिस तरह मैंने शाह — ए — असूर

को सज़ा दी है। ¹⁹ लेकिन मैं इस्राईल को फिर उसके घर में लाऊँगा, और वह कर्मिल और बसन में चरेगा, और उसकी जान कोह — ए — इफ़राईम और ज़िल'आद पर आसूदा होगी। ²⁰ खुदावन्द फ़रमाता है, उन दिनों में और उसी वक़््त इस्राईल की बदकिरदारी ढूँडे न मिलेगी; और यहूदाह के गुनाहों का पता न मिलेगा जिनको मैं बाक़ी रखूँगा उनको मु'आफ़ करूँगा। ²¹ मरातायम की सरज़मीन पर और फ़िक़ोद के बाशिनदों पर चढ़ाई कर। उसे वीरान कर और उनको बिल्कुल नाबूद कर, खुदावन्द फ़रमाता है; और जो कुछ मैंने तुझे फ़रमाया है, उस सब के मुताबिक़ 'अमल कर। ²² मुल्क में लड़ाई और बड़ी हलाक़त की आवाज़ है। ²³ तमाम दुनिया का हथौड़ा, क्यूँकर काटा और तोड़ा गया! बाबुल क्रौमों के बीच कैसा जा — ए — हैरत हुआ! ²⁴ मैंने तेरे लिए फन्दा लगाया, और ऐ बाबुल, तू पकड़ा गया, और तुझे ख़बर न थी। तेरा पता मिला और तू गिरफ़्तार हो गया, क्यूँकि तूने खुदावन्द से लड़ाई की है। ²⁵ खुदावन्द ने अपना सिलाहख़ाना खोला और अपने क्रहर के हथियारों को निकाला है; क्यूँकि कसदियों की सरज़मीन में खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज को कुछ करना है। ²⁶ सिर से शुरू' करके उस पर चढ़ो, और उसके अम्बारख़ानों को खोलो, उसको खण्डर कर डालो और उसको बर्बाद करो, उसकी कोई चीज़ बाक़ी न छोड़ो। ²⁷ उसके सब बैलों को जबह करो, उनको मसलख में जाने दो; उन पर अफ़सोस! कि उनका दिन आ गया, उनकी सज़ा का वक़््त आ पहुँचा। ²⁸ सरज़मीन — ए — बाबुल से फ़रारियों की आवाज़! वह भागते और सिय्यून में खुदावन्द हमारे खुदा के इन्तक़ाम, या'नी उसकी हैकल के इन्तक़ाम का ऐलान करते हैं। ²⁹ तीरअन्दाज़ो को बुलाकर इकट्ठा करो कि बाबुल पर जाएँ, सब कमानदारों को हर तरफ़ से उसके सामने खेमाज़न करो। वहाँ से कोई बच न निकले, उसके काम के मुवाफ़िक़ उसको बदला दो। सब कुछ जो उसने किया उसे करो क्यूँकि उसने खुदावन्द इस्राईल के कुदूस के सामने बहुत तकब्बुर किया। ³⁰ इसलिए उसके जवान बाज़ारों में गिर जाएँगे, और सब जंगी मर्द उस दिन काट डाले जाएँगे, खुदावन्द फ़रमाता है। ³¹ ऐ मगरूर, देख, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है क्यूँकि तेरा वक़््त आ पहुँचा, हाँ, वह वक़््त जब मैं तुझे सज़ा दूँ। ³² और वह मगरूर ठोकर खाएगा, वह गिरेगा और कोई उसे न उठाएगा; और मैं उसके शहरों में आग भड़काऊँगा, और वह उसके तमाम 'इलाक़े को भसम कर देगी। ³³ रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि बनी — इस्राईल और बनी

यहूदाह दोनों मज़लूम हैं; और उनको गुलाम करने वाले उनको कैद में रखते हैं, और छोड़ने से इन्कार करते हैं।
 34 उनका छुड़ानेवाला जोरआवर है; रब्ब — उल — अफ़वाज उसका नाम है; वह उनकी पूरी हिमायत करेगा ताकि ज़मीन को राहत बख़्शे, और बाबुल के बाशिन्दों को परेशान करे। 35 खुदावन्द फ़रमाता है, कि तलवार कसदियों पर और बाबुल के बाशिन्दों पर, और उसके हाकिम और हुक्मा पर है। 36 लाफ़ज़नों पर तलवार है, वह बेवकूफ़ हो जाएँगे; उसके बहादुरों पर तलवार है, वह डर जाएँगे। 37 उसके घोड़ों और रथों और सब मिले — जुले लोगों पर जो उसमें हैं, तलवार है, वह 'औरतों की तरह होंगे; उसके खज़ानों पर तलवार है, वह लूटे जाएँगे। 38 उसकी नहरों पर खुश्कसाली है, वह सूख जाएँगी; क्योंकि वह तराशी हुई मूरतों की ममलुकत है और वह बुतों पर शेषता है। 39 इसलिए दशती दरिन्दे गीदड़ों के साथ वहाँ बसेंगे और शुतुरमुर्ग उसमें बसेरा करेंगे, और वह फिर अबद तक आबाद न होगी, नसल — दर — नसल कोई उसमें सुकूनत न करेगा। 40 जिस तरह खुदा ने सदूम और 'अमूरा और उनके आसपास के शहरों को उलट दिया खुदावन्द फ़रमाता है उसी तरह कोई आदमी वहाँ न बसेगा, न आदमज़ाद उसमें रहेगा। 41 देख, उत्तरी मुल्क से एक गिरोह आती है; और इन्तिहा — ए — ज़मीन से एक बड़ी क्रौम और बहुत से बादशाह बरअन्गोख़ता किए जाएँगे। 42 वह तीरअन्दाज़ — ओ — नेज़ा बाज़ हैं, वह संगदिल — ओ — बेरहम हैं, उनके ना'रों की आवाज़ हमेशा समन्दर की जैसी है, वह घोड़ों पर सवार हैं; ऐ दुस्तर — ए — बाबुल, वह जंगी मर्दों की तरह तेरे सामने सफ़ — आराई करते हैं। 43 शाह — ए — बाबुल ने उनकी शोहरत सुनी है, उसके हाथ ढीले हो गए, वह ज़च्चा की तरह मुसीबत और दर्द में गिरफ़्तार है। 44 'देख, वह शेर — ए — बबर की तरह यरदन के जंगल से निकलकर मज़बूत बस्ती पर चढ़ आएगा; लेकिन मैं अचानक उसको वहाँ से भगा दूँगा, और अपने बरगुज़ीदा को उस पर मुक़र्रर करूँगा; क्योंकि मुझ सा कौन है? कौन है जो मेरे लिए वक़्त मुक़र्रर करे? और वह चरवाहा कौन है जो मेरे सामने खड़ा हो सके? 45 इसलिए खुदावन्द की मसलहत को जो उसने बाबुल के खिलाफ़ ठहराई है, और उसके इरादे को जो उसने कसदियों की सरज़मीन के खिलाफ़ किया है, सुनो, यक़ीनन उनके गल्ले के सब से छोटों को भी घसीट ले जाएँगे; यक़ीनन उनका घर भी उनके साथ बर्बाद होगा। 46 बाबुल की शिकस्त के शोर से ज़मीन काँपती है, और फ़रियाद को क्रौमों ने सुना है।”

51

1 खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं बाबुल पर और उस मुखालिफ़ दार — उस — सल्तनत के रहनेवालों पर एक मुहलिक हवा चलाऊँगा। 2 और मैं उसाने वालों को बाबुल में भेजूँगा कि उसे उसाएँ, और उसकी सरज़मीन को खाली करें; यक़ीनन उसकी मुसीबत के दिन वह उसके दुश्मन बनकर उसे चारों तरफ़ से घेर लेंगे। 3 उसके कमानदारों और ज़िरहपोशों पर तीरअन्दाज़ी करो; तुम उसके जवानों पर रहम न करो, उसके तमाम लश्कर को बिल्कुल हलाक करो। 4 मक़तूल कसदियों की सरज़मीन में गिरेंगे, और छिड़े हुए उसके बाज़ारों में पड़े रहेंगे। 5 क्योंकि इस्राईल और यहूदाह को उनके खुदा रब्ब — उल — अफ़वाज ने तर्क नहीं किया; अगरचे इनका मुल्क इस्राईल के कुदूस की नाफ़रमानी से पुर है। 6 बाबुल से निकल भागो, और हर एक अपनी जान बचाए, उसकी बदकिरदारी की सज़ा में शरीक होकर हलाक न हो, क्योंकि यह खुदावन्द के इन्तक़ाम का वक़्त है; वह उसे बदला देता है। 7 बाबुल खुदावन्द के हाथ में सोने का प्याला था, जिसने सारी दुनिया को मतवाला किया; क्रौमों ने उसकी मय पी, इसलिए वह दीवाने हैं। 8 बाबुल अचानक गिर गया और ग़ारत हुआ, उस पर वावैला करो; उसके ज़ख़्म के लिए बलसान लो, शायद वह शिफ़ा पाए। 9 हम तो बाबुल की शिफ़ायाबी चाहते थे लेकिन वह शिफ़ायाब न हुआ, तुम उसको छोड़ो, आओ, हम सब अपने अपने वतन को चले जाएँ, क्योंकि उसकी आवाज़ आसमान तक पहुँची और अफ़लाक तक बुलन्द हुई। 10 खुदावन्द ने हमारी रास्तबाज़ी को आशकारा किया; आओ, हम सिय्यून में खुदावन्द अपने खुदा के काम का बयान करें। 11 तीरों को सैक़ल करो, सिपरों को तैयार रखो; खुदावन्द ने मादियों के बादशाहों की रूह को उभारा है, क्योंकि उसका इरादा बाबुल को बर्बाद करने का है; क्योंकि यह खुदावन्द का, या'नी उसकी हैकल का इन्तक़ाम है। 12 बाबुल की दीवारों के सामने झंडा खड़ा करो पहर की चौकियाँ मज़बूत करो, पहरदारों को बिठाओ, कमीनगाहें तैयार करो; क्योंकि खुदावन्द ने अहल — ए — बाबुल के हक़ में जो कुछ ठहराया और फ़रमाया था, इसलिए पूरा किया। 13 ऐ नहरों पर सुकूनत करने वाली, जिसके खज़ाने फ़िरावान हैं; तेरी तमामी का वक़्त आ पहुँचा और तेरी ग़ारतगरी का पैमाना पुर हो गया। 14 रब्ब — उल — अफ़वाज ने अपनी ज़ात की क़सम खाई है, कि यक़ीनन मैं तुझ में लोगों को टिड्डियों की तरह भर दूँगा, और वह तुझ पर जंग का नारा मारेगा।

222222 22 222222 22222 22 22222 2222

15 उसी ने अपनी कुदरत से ज़मीन को बनाया, उसी ने अपनी हिकमत से जहाँ को काईम किया, और अपनी 'अक्ल से आसमान को तान दिया है; 16 उसकी आवाज़ से आसमान में पानी की फ़िरावानी होती है, और वह ज़मीन की इन्तिहा से बुखारात उठाता है; वह बारिश के लिए बिजली चमकाता है और अपने खज़ानों से हवा चलाता है। 17 हर आदमी हैवान खसलत और बे — 'इल्म हो गया है, सुनार अपनी खोदी हुई मूरत से रुस्वा है; क्योंकि उसकी ढाली हुई मूरत बातिल है, उनमें दम नहीं। 18 वह बातिल — फ़े'ल — ए — फ़रेब हैं, सज़ा के वक़्त बर्बाद हो जाएँगी। 19 या'कूब का हिस्सा उनकी तरह नहीं, क्योंकि वह सब चीज़ों का खालिक है और इस्राईल उसकी मीरास का 'असा है; रब्ब उल — अफ़वाज उसका नाम है। 20 तू मेरा गुर्ज और जंगी हथियार है, और तुझी से मैं क्रौमों को तोड़ता और तुझी से सल्तनतों को बर्बाद करता हूँ। 21 तुझी से मैं घोड़े और सवार को कुचलता, और तुझी से रथ और उसके सवार को चूर करता हूँ; 22 तुझी से मर्द — ओ — जन और पीर — ओ — जवान को कुचलता, और तुझ ही से नौखंज लड़कों और लड़कियों को पीस डालता हूँ; 23 और तुझी से चरवाहे और उसके गल्ले को कुचलता, और तुझी से किसान और उसके जोड़ी बैल को, और तुझी से सरदारों और हाकिमों को चूर — चूर कर देता हूँ। 24 और मैं बाबुल को और कसदिस्तान के सब बाशिन्दों को उस तमाम नुक्सान का, जो उन्होंने सिय्यून को तुम्हारी आँखों के सामने पहुँचाया है इवज़ देता हूँ खुदावन्द फ़रमाता है। 25 देख खुदावन्द फ़रमाता है, ऐ हलाक करने वाले पहाड़, जो तमाम इस ज़मीन को हलाक करता है, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ और मैं अपना हाथ तुझ पर बढ़ाऊँगा, और चट्टानों पर से तुझे लुढ़काऊँगा, और तुझे जला हुआ पहाड़ बना दूँगा। 26 न तुझ से कोने का पत्थर, और न बुनियाद के लिए पत्थर लेंगे; बल्कि तू हमेशा तक वीरान रहेगा, खुदावन्द फ़रमाता है। 27 'मुल्क में झण्डा खड़ा करो, क्रौमों में नरसिंगा फूँको उनको उसके खिलाफ़ मखसूस करो अरारात और मिन्नी और अश्कनाज़ की ममलुकतों को उस पर चढ़ा लाओ; उसके खिलाफ़ सिपहसालार मुकर्रर करो और सवारों को मुहलिक टिड्डियों की तरह चढ़ा लाओ। 28 क्रौमों को मादियों के बादशाहों को और सरदारों और हाकिमों और उनकी सल्तनत के तमाम मुमालिक को मखसूस करो कि उस पर चढ़ाई करें। 29 और ज़मीन काँपती और दर्द में मुब्तिला है, क्योंकि खुदावन्द के इरादे

बाबुल की मुखालिफ़त में काईम रहेंगे, कि बाबुल की सरज़मीन को वीरान और ग़ैरआबाद कर दे। 30 बाबुल के बहादुर लड़ाई से दस्तबरदार और क़िलों' में बैठे हैं, उनका जोर घट गया, वह 'औरतों की तरह हो गए; उसके घर जलाए गए, उसके अड़बंगे तोड़े गए। 31 हरकारा हरकारे से मिलने को और कासिद से मिलने को दौड़ेगा कि बाबुल के बादशाह को इत्तला दे, कि उसका शहर हर तरफ़ से ले लिया गया; 32 और गुज़रगाहें ले ली गई, और नेस्तान आग से जलाए गए और फ़ौज हड़बड़ा गई। 33 क्यूँकि रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: दुस्तर — ए — बाबुल खलीहान की तरह है, जब उसे रौंदने का वक़्त आए, थोड़ी देर है कि उसकी कटाई का वक़्त आ पहुँचेगा। 34 "शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने मुझे खा लिया, उसने मुझे शिकस्त दी है, उसने मुझे खाली बर्तन की तरह कर दिया अज़दहा की तरह वह मुझे निगल गया, उसने अपने पेट को मेरी ने'मतों से भर लिया; उसने मुझे निकाल दिया; 35 सिय्यून के रहनेवाले कहेंगे, जो सितम हम पर और हमारे लोगों पर हुआ, बाबुल पर हो।" और येरूशलेम कहेगा, मेरा खून अहल — ए — कसदिस्तान पर हो। 36 इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं तेरी हिमायत करूँगा और तेरा इन्तक़ाम लूँगा, और उसके बहर को सुखाऊँगा और उसके सोते को खुश्क कर दूँगा; 37 और बाबुल खण्डर हो जाएगा, और गीदड़ों का मक़ाम और हैरत और सुस्कार का ज़रिया' होगी और उसमें कोई न बसेगा। 38 वह जवान बबरों की तरह इकट्ठे गरजेंगे, वह शेर बच्चों की तरह गुराँगे। 39 उनकी हालत — ए — तैश में मैं उनकी ज़ियाफ़त करके उनको मस्त करूँगा, कि वह जद् में आएँ और दाइमी ख़्वाब में पड़े रहें और बेदार न हों, खुदावन्द फ़रमाता है। 40 मैं उनको बरों और मेंढों की तरह बकरों के साथ मसलख पर उतार लाऊँगा। 41 शेशक क्यूँकर ले लिया गया! हाँ, तमाम रु — ए — ज़मीन का खम्बा यकबारगी ले लिया गया। बाबुल क्रौमों के बीच कैसा वीरान हुआ! 42 समन्दर बाबुल पर चढ़ गया है, वह उसकी लहरों की कसरत से छिप गया। 43 उसकी बस्तियाँ उजड़ गई, वह खुश्क ज़मीन और सहरा हो गया ऐसी सरज़मीन जिसमें न कोई बसता हो और न वहाँ आदमज़ाद का गुज़र हो। 44 क्यूँकि मैं बाबुल में बेल को सज़ा दूँगा, और जो कुछ वह निगल गया है उसके मुँह से निकालूँगा, और फिर क्रौमों उसकी तरफ़ रवाँ न होंगी; हाँ, बाबुल की फ़सील गिर जाएगी। 45 ऐ मेरे लोगों, उसमें से निकल आओ, और तुम में से हर एक खुदावन्द के क़हर — ए — शदीद से अपनी जान बचाए।

46 न हो कि तुम्हारा दिल सुस्त हो, और तुम उस अफ़वाह से डरो जो ज़मीन में सुनी जाएगी; एक अफ़वाह एक साल आएगी और फिर दूसरी अफ़वाह दूसरे साल में, और मुल्क में ज़ुल्म होगा और हाकिम हाकिम से लड़ेगा। 47 इसलिए देख, वह दिन आते हैं कि मैं बाबुल की तराशी हुई मूरतों से इन्तक़ाम लूँगा और उसकी तमाम सरज़मीं रुस्वा होगी और उसके सब मक्तूल उसी में पड़े रहेंगे। 48 तब आसमान और ज़मीन और सब कुछ जो उनमें है, बाबुल पर शादियाना बजाएँगे; क्योंकि ग़ारतगर उत्तर से उस पर चढ़ आएँगे, खुदावन्द फ़रमाता है। 49 जिस तरह बाबुल में बनी — इस्राईल क़त्ल हुए, उसी तरह बाबुल में तमाम मुल्क के लोग क़त्ल होंगे। 50 तुम जो तलवार से बच गए हो, खड़े न हो, चले जाओ! दूर ही से खुदावन्द को याद करो, और येरूशलेम का ख़याल तुम्हारे दिल में आए। 51 'हम परेशान हैं, क्योंकि हम ने मलामत सुनी; हम शर्मालूदा हुए, क्योंकि खुदावन्द के घर के हैकलों में अजनबी घुस आए। 52 इसलिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, कि मैं उसकी तराशी हुई मूरतों को सज़ा दूँगा; और उसकी तमाम सल्तनत में घायल कराहेंगे। 53 हरचन्द बाबुल आसमान पर चढ़ जाए और अपने ज़ोर की इन्तिहा तक मुस्तहक़म हो बैठे तो भी ग़ारतगर मेरी तरफ़ से उस पर चढ़ आएँगे, खुदावन्द फ़रमाता है। 54 बाबुल से रोने की और कसदियों की सरज़मीन से बड़ी हलाकत की आवाज़ आती है। 55 क्योंकि खुदावन्द बाबुल को ग़ारत करता है, और उसके बड़े शोर — ओ — गुल को बर्बाद करेगा; उनकी लहरें समन्दर की तरह शोर मचाती हैं उनके शोर की आवाज़ बुलंद है; 56 इसलिए कि ग़ारतगर उस पर, हाँ, बाबुल पर चढ़ आया है, और उसके ताक़तवर लोग पकड़े जायेंगे उनकी कमाने तोड़ी जायेंगी क्योंकि खुदावन्द इन्तक़ाम लेनेवाला खुदा है, वह ज़रूर बदला लेगा। 57 मैं हाकिम — ओ — हुक्मा को और उसके सरदारों और हाकिमों को मस्त करूँगा, और वह दाइमी ख़्वाब में पड़े रहेंगे और बेदार न होंगे, वह बादशाह फ़रमाता है, जिसका नाम रब्ब — उल — अफ़वाज है। 58 “रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि: बाबुल की चौड़ी फ़सील बिल्कुल गिरा दी जाएगी, और उसके बुलन्द फाटक आग से जला दिए जाएँगे। यूँ लोगों की मेहनत बे फ़ायदा ठहरेगी, और क़ौमों का काम आग के लिए होगा और वह मान्दा होंगे।” 59 यह वह बात है, जो यर्मियाह नबी ने सिरायाह — बिन — नेयिरियाह — बिन — महसियाह से कही, जब वह शाह — ए — यहूदाह सिदक्रियाह के साथ उसकी सल्तनत के चौथे

बरस बाबुल में गया, और यह सिरायाह ख़्वाजासराओं का सरदार था। 60 और यर्मियाह ने उन सब आफ़तों को जो बाबुल पर आने वाली थीं, एक किताब में क़लमबन्द किया; या'नी इन सब बातों को जो बाबुल के बारे में लिखी गई हैं। 61 और यर्मियाह ने सिरायाह से कहा, कि “जब तू बाबुल में पहुँचे, तो” इन सब बातों को पढ़ना, 62 और कहना, ‘ऐ खुदावन्द, तूने इस जगह की बर्बादी के बारे में फ़रमाया है कि मैं इसको बर्बाद करूँगा, ऐसा कि कोई इसमें न बसे, न इंसान न हैवान, लेकिन हमेशा वीरान रहे। 63 और जब तू इस किताब को पढ़ चुके, तो एक पत्थर इससे बाँधना और फ़रात में फेंक देना; 64 और कहना, ‘बाबुल इसी तरह डूब जाएगा, और उस मुसीबत की वजह से जो मैं उस पर डाल दूँगा, फिर न उठेगा और वह मान्दा होंगे।’” यर्मियाह की बातें यहाँ तक हैं।

52

22222222 22 22222222

1 जब सिदक्रियाह सल्तनत करने लगा, तो इक्कीस बरस का था; और उसने ग़्यारह बरस येरूशलेम में सल्तनत की, और उसकी माँ का नाम हमूतल था जो लिबनाही यर्मियाह की बेटी थी। 2 और जो कुछ यहूयक्रीम ने किया था, उसी के मुताबिक़ उसने भी खुदावन्द की नज़र में बदी की। 3 क्योंकि खुदावन्द के ग़ज़ब की वजह से येरूशलेम और यहूदाह की यह नौबत आई कि आख़िर उसने उनको अपने सामने से दूर ही कर दिया। और सिदक्रियाह शाह — ए — बाबुल से मुन्हरिफ़ हो गया। 4 और उसकी सल्तनत के नवें बरस के दसवें महीने के दसवें दिन यूँ हुआ कि शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने अपनी सारी फ़ौज के साथ येरूशलेम पर चढ़ाई की, और उसके सामने खैमाज़न हुआ और उन्होंने उसके सामने हिसार बनाए। 5 और सिदक्रियाह बादशाह की सल्तनत के ग़्यारहवें बरस तक शहर का घिराव रहा। 6 चौथे महीने के नवें दिन से शहर में काल ऐसा सख़्त हो गया कि मुल्क के लोगों के लिए खुराक न रही। 7 तब शहरपनाह में रखना हो गया, और दोनों दीवारों के बीच जो फाटक शाही बाग़ के बराबर था, उससे सब जंगी मर्द रात ही रात भाग गए इस वक़्त कसदी शहर को घेरे हुए थे और वीराने की राह ली। 8 लेकिन कसदियों की फ़ौज ने बादशाह का पीछा किया, और उसे यरीहू के मैदान में जा लिया, और उसका सारा लश्कर उसके पास से तितर — बितर हो गया था। 9 तब वह बादशाह को पकड़ कर रिब्बा में शाह — ए — बाबुल के पास हम़ात के इलाक़े में ले गए, और उसने सिदक्रियाह पर क़तवा दिया। 10 और शाह — ए — बाबुल ने सिदक्रियाह के बेटों

को उसकी आँखों के सामने ज़बह किया, और यहूदाह के सब हाकिम को भी रिब्ला में क़त्ल किया। ¹¹ और उसने सिदक्रियाह की आँखें निकाल डालीं, और शाह — ए — बाबुल उसको जंजीरों से जकड़ कर बाबुल को ले गया, और उसके मरने के दिन तक उसे कैदखाने में रखवा। ¹² और शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के 'अहद के उन्नीसवें बरस के पाँचवें महीने के दसवें दिन जिलौदारों का सरदार नबूज़रादान, जो शाह — ए — बाबुल के सामने में खड़ा रहता था, येरूशलेम में आया। ¹³ उसने खुदावन्द का घर और बादशाह का महल और येरूशलेम के सब घर, या'नी हर एक बड़ा घर आग से जला दिया। ¹⁴ और कसदियों के सारे लश्कर ने जो जिलौदारों के सरदार के हमराह था, येरूशलेम की फ़सील को चारों तरफ़ से गिरा दिया। ¹⁵ और बाक़ी लोगों और मोहताजों को जो शहर में रह गए थे, और उनको जिन्होंने अपनों को छोड़कर शाह — ए — बाबुल की पनाह ली थी, और 'अवाम में से जितने बाक़ी रह गए थे, उन सबको नबूज़रादान जिलौदारों का सरदार गुलाम करके ले गया। ¹⁶ लेकिन जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान ने मुल्क के कंगालों को रहने दिया, ताकि खेती और ताकिस्तानों की बागबानी करें। ¹⁷ और पीतल के उन सुतूनों को जो खुदावन्द के घर में थे, और कुर्सियों को और पीतल के बड़े हौज़ को, जो खुदावन्द के घर में था, कसदियों ने तोड़कर टुकड़े टुकड़े किया और उनका सब पीतल बाबुल को ले गए। ¹⁸ और देगें और बेल्वे और गुलगीर और लगन और चमचे और पीतल के तमाम बर्तन, जो वहाँ काम आते थे, ले गए। ¹⁹ और बासन और अंगेठियाँ और लगन और देगें और शमा'दान और चमचे और प्याले गर्ज जो सोने के थे उनके सोने को, और जो चाँदी के थे उनकी चाँदी को जिलौदारों का सरदार ले गया। ²⁰ वह दो सुतून और वह बड़ा हौज़ और वह पीतल के बारह बैल जो कुर्सियों के नीचे थे, जिनको सुलेमान बादशाह ने खुदावन्द के घर के लिए बनाया था; इन सब चीज़ों के पीतल का वज़न बेहिसाब था। ²¹ हर सुतून अट्ठारह हाथ ऊँचा था, और बारह हाथ का सूत उसके चारों तरफ़ आता था, और वह चार ऊंगल मोटा था; यह खोखला था। ²² और उसके ऊपर पीतल का एक ताज था, और वह ताज पाँच हाथ बुलन्द था, उस ताज पर चारों तरफ़ जालियाँ और अनार की कलियाँ, सब पीतल की बनी हुई थीं, और दूसरे सुतून के लवाज़िम भी जाली के साथ इन्हीं की तरह थे। ²³ और चारों हवाओं के रुख अनार की कलियाँ छियानवे थीं, और चारों तरफ़ जालियों पर एक सौ थीं। ²⁴ और जिलौदारों के सरदार ने सिरायाह सरदार काहिन को, और काहिन — ए — सानी सफ़नियाह को, और तीनों

दरबानों को पकड़ लिया; ²⁵ और उसने शहर में से एक सरदार को पकड़ लिया जो जंगी मर्दों पर मुक़रर था, और जो लोग बादशाह के सामने हाज़िर रहते थे, उनमें से सात आदमियों को जो शहर में मिले; और लश्कर के सरदार के मुहरिर को जो अहल — ए — मुल्क की मौजूदात लेता था; और मुल्क के आदमियों में से साठ आदमियों को जो शहर में मिले। ²⁶ इनको जिलौदारों का सरदार नबूज़रादान पकड़कर शाह — ए — बाबुल के सामने रिब्ला में ले गया। ²⁷ और शाह — ए — बाबुल ने हमात के 'इलाक़े के रिब्ला में इनको क़त्ल किया। इसलिए यहूदाह अपने मुल्क से गुलाम होकर चला गया। ²⁸ यह वह लोग हैं जिनको नबूकदनज़र गुलाम करके ले गया: सातवें बरस में तीन हजार तेईस यहूदी, ²⁹ नबूकदनज़र के अट्ठारहवें बरस में वह येरूशलेम के बाशिन्दों में से आठ सौ बत्तीस आदमी गुलाम करके ले गया, ³⁰ नबूकदनज़र के तेईसवें बरस में जिलौदारों का सरदार नबूज़रादान सात सौ पैतालीस आदमी यहूदियों में से पकड़कर ले गया; यह सब आदमी चार हजार छः सौ थे। ³¹ और यहूयाकीन शाह — ए — यहूदाह की गुलामी के सैतीसवें बरस के बारहवें महीने के पच्चीसवें दिन यूँ हुआ, कि शाह — ए — बाबुल ईवील मरूदक ने अपनी सल्तनत के पहले साल यहूयाकीन शाह — ए — यहूदाह को कैदखाने से निकालकर सरफ़राज़ किया; ³² और उसके साथ मेहरबानी से बातें कीं, और उसकी कुर्सी उन सब बादशाहों की कुर्सियों से जो उसके साथ बाबुल में थे, बुलन्द की। ³³ वह अपने कैदखाने के कपड़े बदलकर उम्र भर बराबर उसके सामने खाना खाता रहा। ³⁴ और उसकी उम्र भर, या'नी मरने तक शाह — ए — बाबुल की तरफ़ से वज़ीफ़े के तौर पर हर रोज़ रसद मिलती रही।

नोहा

नोहा की किताब के मुसन्निफ़ का नाम किताब के

अन्दर दर्ज नहीं है (यह बेनाम है) यहूदी और मसीही रिवायात यर्मयाह को किताब का मुसन्निफ़ बतौर मंसूब करते हैं। किताब के मुसन्निफ़ ने यरूशलेम की बर्बादी के अंजाम की गवाही दी। ऐसा लगता है कि नबी ने खुद यरूशलेम पर हमला होते हुए देखा था (नोहा 1:13-15) दोनों हमलों के वाक़ियात पर यर्मयाह मौजूद था। यहूदा ने खुदा के खिलाफ़ बगावत की और उसके साथ के अहद को तोड़ा खुदा ने बाबुल के लोगों को ज़मानत बतौर, इस्तेमाल करते हुए अपने लोगों की तरबियत की। इस किताब में कड़ी मुसीबत सहने की बाबत ज़िक्र है इसके बावजूद भी तीन बाब एक उम्मीद के वायदे के साथ खलल अन्दाज़ होता है। यर्मयाह खुदा की भलाई को याद करता है। वह खुदा की वफ़ादारी की सच्चाई के वसीले से तसल्ली और दिलासा देता है, अपने कारिइन को यह कहते हुए कि खुदावन्द रहमत करने वाला और अपनी मुहब्बत में कभी न बदलने वाला है।

इसके तस्नीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 586 - 584 क़बल मसीह के बीच है।

यरूशलेम में बाबुल के हमलावरों के ज़रीये मुहासरा करने और शहर को बर्बाद किए जाने की आँखों देखी गवाही का यर्मयाह नबी इस किताब में पेश करता है।

जिलावतनी के दौरान जो इब्री लोग ज़िन्दा थे और

यरूशलेम वापस आये और तमाम कारिइन — ए — बाइबल।

क़ौम के लोगों का और शख़्सी गुनाह खुदा के ग़ज़ब के लिए नतीजा ज़ाहिर करता है। खुदा अपने लोगों को अपने पास वापस फिरने के लिए हालात और लोगों का औज़ार बतौर इस्तेमाल किया। उम्मीद सिर्फ़ खुदा पर ही मुन्हसर करती है। जिलावतनी में बचे कुचे यहूदियों को जिस तरह उसने दरगुज़र किया। गुनाह अब्दी मौत ले आता है। इसके बावजूद भी उस की नजात के मन्सूबे के ज़रीये हमेशा की ज़िन्दगी एक गुनहगार को हासिल होती है। नोहा की किताब यह बात साफ़ करती है कि गुनाह और बगावत खुदा का ग़ज़ब नाज़िल होने के लिए सबब बनता है। (1:8 — 9; 4:13; 5:16)।

नोहा करना।

बैरूनी खाका

1. यर्मयाह यरूशलेम के लिए रंजीदा होता है। — 1:1-22
2. गुनाह खुदा का ग़ज़ब ले आता है — 2:1-22
3. खुदा कभी भी अपने लोगों को नहीं छोड़ता — 3:1-66
4. यरूशलेम की शान — ओ — शौकत का खो देना — 4:1-22
5. यर्मयाह लोगों के लिए शिफ़ाअत व सिफ़ारिश करता है — 5:1-22

वह बस्ती जो लोगों से भरी थी, कैसी खाली पड़ी है!

वह क़ौमों की 'खातून बेवा की तरह हो गई!

वह कुछ गुज़ारे के लिए मुल्क की मलिका बन गई!

2 वह रात को ज़ार — ज़ार रोती है, उसके आँसू चेहरे पर बहते हैं;

उसके चाहने वालों में कोई नहीं जो उसे तसल्ली दे; उसके सब दोस्तों ने उसे धोका दिया, वह उसके दुश्मन हो गए।

3 यहूदाह ज़ुल्म और सख़्त मेहनत की वजह से जिलावतन हुआ,

वह क़ौमों के बीच रहते और बे — आराम है, उसके सब सताने वालों ने उसे घाटियों में जा लिए।

4 सिय्यून के रास्ते मातम करते हैं,

क्यूँकि खुशी के लिए कोई नहीं आता;

उसके सब दरवाज़े सुनसान हैं,

उसके काहिन आहें भरते हैं;

उसकी कुँवारियाँ मुसीबत ज़दा हैं और वह खुद ग़मगीन है।

5 उसके मुखालिफ़ ग़ालिब आए और दुश्मन खुशहाल हुए;

क्यूँकि खुदावन्द ने उसके गुनाहों की ज़्यादती के ज़रिए उसे ग़म में डाला;

उसकी औलाद को दुश्मन गुलामी में पकड़ ले गए।

6 सिय्यून की बेटियों की सब शान — ओ — शौकत जाती रही;

उसके हाकिम उन हिरनों की तरह हो गए हैं, जिनको चरागाह नहीं मिलती,

और शिकारियों के सामने बे बस हो जाते हैं।

7 येरूशलेम को अपने ग़म — ओ — मुसीबत के दिनों में,

जब उसके रहने वाले दुश्मन का शिकार हुए, और किसी ने मदद न की,

अपने गुजरे जमाने की सब नेमतें याद आई,
दुश्मनों ने उसे देखकर उसकी बर्बादी पर हँसी उड़ाई।

8 येरूशलेम सख्त गुनाह करके नापाक हो गया;
जो उसकी 'इज्जत' करते थे, सब उसे हकीर जानते हैं,
हाँ, वह खुद आहें भरता, और मुँह फेर लेता है।

9 उसकी नापाकी उसके दामन में है,
उसने अपने अंजाम का ख्याल न किया;
इसलिए वह बहुत बेहाल हुआ;
और उसे तसल्ली देने वाला कोई न रहा;
ऐ खुदावन्द, मेरी मुसीबत पर नज़र कर;
क्योंकि दुश्मन ने गुरुर किया है।

10 दुश्मन ने उसकी तमाम 'उम्दा चीज़ों' पर हाथ बढ़ाया
है;

उसने अपने मक्दिस में क़ौमों को दाखिल होते देखा है।
जिनके बारे में तू ने फ़रमाया था, कि वह तेरी जमा'अत
में दाखिल न हों।

11 उसके सब रहने वाले कराहते और रोटी ढूँडते हैं,
उन्होंने अपनी 'उम्दा चीज़ें' दे डालीं, ताकि रोटी से
ताज़ा दम हों;

ऐ खुदावन्द, मुझ पर नज़र कर;
क्योंकि मैं ज़लील हो गया

12 ऐ सब आने जाने वालों, क्या तुम्हारे नज़दीक ये कुछ
नहीं?

नज़र करो और देखो; क्या कोई ग़म मेरे ग़म की तरह
है, जो मुझ पर आया है जिसे खुदावन्द ने अपने
बड़े ग़ज़ब के वक़्त नाज़िल किया।

13 उसने 'आलम — ए — बाला से मेरी हड्डियों में आग
भेजी,

और वह उन पर ग़ालिब आई;
उसने मेरे पैरों के लिए जाल बिछाया,
उस ने मुझे पीछे लौटाया: उसने मुझे दिन भर वीरान —
ओ — बेताब किया।

14 मेरी ख़ताओं का बोझ उसी के हाथ से बाँधा गया है;
वह बाहम पेचीदा मेरी गर्दन पर है उसने मुझे कमज़ोर
कर दिया है;

खुदावन्द ने मुझे उनके हवाले किया है, जिनके मुक़ाबिले
की मुझ में हिम्मत नहीं।

15 खुदावन्द ने मेरे अन्दर ही मेरे बहादुरों को नाचीज़
ठहराया;

उसने मेरे खिलाफ़ एक ख़ास जमा'अत को बुलाया, कि
मेरे बहादुरों को कुचले;

खुदावन्द ने यहूदाह की कुंवारी बेटी को गोया कोल्हू में
कुचल डाला।

16 इसीलिए मैं रोती हूँ, मेरी आँखें आँसू से भरी हैं,
जो मेरी रूह को ताज़ा करे, मुझ से दूर है;

मेरे बाल — बच्चे बे सहारा हैं, क्योंकि दुश्मन ग़ालिब
आ गया।

17 सिय्यून ने हाथ फैलाए; उसे तसल्ली देने वाला कोई
नहीं;

या'कूब के बारे में खुदावन्द ने हुक्म दिया है,
कि उसके इर्दगिर्द वाले उसके दुश्मन हों,
येरूशलेम उनके बीच नज़ासत की तरह है।

18 खुदावन्द सच्चा है, क्योंकि मैंने उसके हुक्म से
नाफ़रमानी की है;

ऐ सब लोगों, मैं मिन्नत करता हूँ, सुनो, और मेरे दुख
पर नज़र करो, मेरी कुंवारीया और जवान गुलाम
होकर चले गए।

19 मैंने अपने दोस्तों को पुकारा, उन्होंने मुझे धोका
दिया;

मेरे काहिन और बुज़ुर्ग अपनी रूह को ताज़ा करने के
लिए,

शहर में खाना ढूँडते — ढूँडते हलाक हो गए।

20 ऐ खुदावन्द देख: मैं तबाह हाल हूँ, मेरे अन्दर पेच
— ओ — ताब है;

मेरा दिल मेरे अन्दर मुज़तरिब है;

क्योंकि मैंने सख्त बग़ावत की है;

बाहर तलवार बे — औलाद करती है और घर में मौत का
सामना है।

21 उन्होंने मेरी आहें सुनी हैं;

मुझे तसल्ली देनेवाला कोई नहीं;

मेरे सब दुश्मनों ने मेरी मुसीबत सुनी;

वह खुश हैं कि तू ने ऐसा किया;

तू वह दिन लाएगा, जिसका तू ने ऐलान किया है, और
वह मेरी तरह हो जाएंगे।

22 उनकी तमाम शरारत तेरे सामने आयें;

उनसे वही कर जो तू ने मेरी तमाम ख़ताओं के ज़रिए'
मुझसे किया है;

क्योंकि मेरी आहें बेशुमार हैं और मेरा दिल बेबस है।

2

?????? ?? ????? ??????? ?? ???????

1 खुदावन्द ने अपने क्रहर में सिय्यून की बेटी को कैसे
बादल से छिपा दिया!

उसने इस्राईल की खूबसूरती को आसमान से ज़मीन पर
गिरा दिया,

और अपने ग़ज़ब के दिन भी अपने पैरों की चौकी को
याद न किया।

2 खुदावन्द ने या'कूब के तमाम घर हलाक किए, और
रहम न किया;

उसने अपने क्रहर में यहूदाह की बेटी के तमाम किले' गिराकर खाक में मिला दिए उसने मुल्कों और उसके हाकिमों को नापाक ठहराया।

3 उसने बड़े गजब में इस्राईल का सींग बिल्कुल काट डाला;

उसने दुश्मन के सामने से दहना हाथ खींच लिया; और उसने जलाने वाली आग की तरह, जो चारों तरफ़ खाक करती है, या 'कूब को जला दिया।

4 उसने दुश्मन की तरह कमान खींची, मुखालिफ़ की तरह दहना हाथ बढ़ाया, और सिय्यून की बेटी के खेमों में सब हसीनों को क़त्ल किया!

उसने अपने क्रहर की आग को उँडेल दिया।

5 खुदावन्द दुश्मन की तरह हो गया, वह इस्राईल को निगल गया,

वह उसके तमाम महलों को निगल गया, उसने उसके किले' मिस्मार कर दिए,

और उसने दुस्तर — ए — यहूदाह में मातम — ओ नौहा बहुतायत से कर दिया।

6 और उसने अपने घर को एक बार में ही बर्बाद कर दिया, गोया खैमा — ए — बाग़ था; और अपने मजमे' के मकान को बर्बाद कर दिया;

खुदावन्द ने मुक़द्दस 'ईदों और सबतों को सिय्यून से फ़रामोश करा दिया,

और अपने क्रहर के जोश में बादशाह और काहिन को ज़लील किया।

7 खुदावन्द ने अपने मज़बूह को रद्द किया,

उसने अपने मक़दिस से नफ़रत की, उसके महलों की दीवारों को दुश्मन के हवाले कर दिया; उन्होंने खुदावन्द के घर में ऐसा शोर मचाया, जैसा 'ईद के दिन।

8 खुदावन्द ने दुस्तर — ए — सिय्यून की दीवार गिराने का इरादा किया है;

उसने डोरी डाली है, और बर्बाद करने से दस्तबरदार नहीं हुआ;

उसने फ़सील और दीवार को मग़मूम किया; वह एक साथ मातम करती हैं।

9 उसके दरवाज़े ज़मीन में गर्क हो गए;

उसने उसके बेन्डों को तोड़कर बर्बाद कर दिया; उसके बादशाह और उमरा बे — शरी'अत क़ौमों में हैं; उसके नबी भी खुदावन्द की तरफ़ से कोई ख़्वाब नहीं देखते।

10 दुस्तर — ए — सिय्यून के बुज़ुर्ग़ खाक नशीन और ख़ामोश हैं;

वह अपने सिरों पर खाक डालते और टाट ओढ़ते हैं; येरूशलेम की कुँवारियाँ ज़मीन पर सिर झुकाए हैं।

11 मेरी आँखें रोते — रोते धुंदला गईं,

मेरे अन्दर पेच — ओ — ताब है,

मेरी दुस्तर — ए — क़ौम की बर्बादी के ज़रिए' मेरा कलेजा निकल आया;

क्यूँकि छोटे बच्चे और दूध पीने वाले शहर की गलियों में बेहोश हैं।

12 जब वह शहर की गलियों में के ज़ख्मियों की तरह ग़श खाते,

और जब अपनी माँओं की गोद में जाँ बलब होते हैं;

तो उनसे कहते हैं, कि ग़ल्ला और मय कहाँ है?

13 ऐ दुस्तर — ए — येरूशलेम, मैं तुझे क्या नसीहत करूँ, और किससे मिसाल दूँ?

ऐ कुँवारी दुस्तर — ए — सिय्यून, तुझे किस की तरह जान कर तसल्ली दूँ?

क्यूँकि तेरा ज़ख्म समुन्दर सा बड़ा है; तुझे कौन शिफ़ा देगा?

14 तेरे नबियों ने तेरे लिए, बातिल और बेहूदा ख़्वाब देखे; और तेरी बदकिरदारी ज़ाहिर न की,

ताकि तुझे गुलामी से वापस लाते: बल्कि तेरे लिए झूटे पैग़ाम और ज़िलावतनी के सामान देखे।

15 सब आने जानेवाले तुझ पर तालियाँ बजाते हैं;

वह दुस्तर — ए — येरूशलेम पर सुसकारते और सिर हिलाते हैं,

के क्या, ये वही शहर है,

जिसे लोग कमाल — ए — हुस्न और फ़रहत — ए — जहाँ कहते थे?

16 तेरे सब दुश्मनों ने तुझ पर मुँह पसारा है;

वह सुसकारते और दाँत पीसते हैं; वो कहते हैं, हम उसे निगल गए;

बेशक हम इसी दिन के मुन्तज़िर थे;

इसलिए आ पहुँचा, और हम ने देख लिया

17 खुदावन्द ने जो तय किया वही किया;

उसने अपने कलाम को, जो पुराने दिनों में फ़रमाया था, पूरा किया;

उसने गिरा दिया, और रहम न किया; और उसने दुश्मन को तुझ पर शादमान किया,

उसने तेरे मुखालिफ़ों का सींग बलन्द किया।

18 उनके दिलों ने खुदावन्द से फ़रियाद की,

ऐ दुस्तर — ए — सिय्यून की फ़सील,

शब — ओ — रोज़ आँसू नहर की तरह जारी रहें;

तू बिल्कुल आराम न ले; तेरी आँख की पुतली आराम न करे।

19 उठ रात को पहरों के शुरू में फ़रियाद कर;

खुदावन्द के हुज़ूर अपना दिल पानी की तरह उँडेल दे;

अपने बच्चों की ज़िन्दगी के लिए, जो सब गलियों में
भूक से बेहोश पड़े हैं,

उसके सामने में दस्त — ए — दु'आ बलन्द कर।

20 ए खुदावन्द, नज़र कर, और देख, कि तू ने किससे ये
किया!

क्या 'औरतें अपने फल या'नी अपने लाडले बच्चों को
खाएँ?

क्या काहिन और नबी खुदावन्द के मक़िदस में क़त्ल किए
जाएँ?

21 बुज़ुर्ग — ओ — जवान गलियों में खाक पर पड़े हैं;
मेरी कुंवारियाँ और मेरे जवान तलवार से क़त्ल हुए;

तू ने अपने क्रहर के दिन उनको क़त्ल किया;

तूने उनको काट डाला, और रहम न किया।

22 तूने मेरी दहशत को हर तरफ से गोया 'ईद के दिन
बुला लिया,

और खुदावन्द के क्रहर के दिन न कोई बचा, न बाक़ी रहा;
जिनको मैंने गोद में खिलाया और पला पोसा, मेरे
दुश्मनों ने फ़ना कर दिया।

3

????? ?? ?????????? ??? ???????

1 मैं ही वह शख्स हूँ जिसने उसके ग़ज़ब की लाठी से दुख
पाया।

2 वह मेरा रहबर हुआ, और मुझे रौशनी में नहीं, बल्कि
तारीकी में चलाया;

3 यक़ीनन उसका हाथ दिन भर मेरी मुख़ालिफ़त करता
रहा।

4 उसने मेरा गोश्त और चमड़ा खुश्क कर दिया,
और मेरी हड्डियाँ तोड़ डालीं,

5 उसने मेरे चारों तरफ़ दीवार खेंची

और मुझे कड़वाहट और — मशक्क़त से घेर लिया;

6 उसने मुझे लम्बे वक़्त से मुर्दों की तरह तारीक़ मक़ानों
में रखवा।

7 उसने मेरे गिर्द अहाता बना दिया, कि मैं बाहर नहीं
निकल सकता;

उसने मेरी ज़ंजीर भारी कर दी।

8 बल्कि जब मैं पुकारता और दुहाई देता हूँ,

तो वह मेरी फ़रियाद नहीं सुनता।

9 उसने तराशे हुए पत्थरों से मेरे रास्तेबन्द कर दिए,

उसने मेरी राहें टेढ़ी कर दीं।

10 वह मेरे लिए घात में बैठा हुआ रीछ और कमीनगाह
का शेर — ए — बब्बर है।

11 उसने मेरी राहें तंग कर दीं और मुझे रेज़ा — रेज़ा
करके बर्बाद कर दिया।

12 उसने अपनी कमान खींची और मुझे अपने तीरों का
निशाना बनाया।

13 उसने अपने तर्कश के तीरों से मेरे गुर्दों को छेद डाला।

14 मैं अपने सब लोगों के लिए मज़ाक़, और दिन भर
उनका चर्चा हूँ।

15 उसने मुझे तलख़ी से भर दिया और नाग़दोने से
मदहोश किया।

16 उसने संगरेज़ों से मेरे दाँत तोड़े और मुझे ज़मीन की
तह में लिटाया।

17 तू ने मेरी जान को सलामती से दूरकर दिया,
मैं खुशहाली को भूल गया;

18 और मैंने कहा, “मैं नातवाँ हुआ,

और खुदावन्द से मेरी उम्मीद जाती रही।”

19 मेरे दुख का ख़्याल कर; मेरी मुसीबत,

या'नी तलख़ी और नाग़दोने को याद कर।

20 इन बातों की याद से मेरी जान मुझ में बेताब है।

21 मैं इस पर सोचता रहता हूँ, इसीलिए मैं उम्मीदवार
हूँ।

22 ये खुदावन्द की शफ़क़त है, कि हम फ़ना नहीं हुए,
क्यूँकि उसकी रहमत ला ज़वाल है।

23 वह हर सुबह ताज़ा है; तेरी वफ़ादारी 'अज़ीम है

24 मेरी जान ने कहा, “मेरा हिस्सा खुदावन्द है, इसलिए
मेरी उम्मीद उसी से है।”

25 खुदावन्द उन पर महरबान है, जो उसके मुन्तज़िर हैं;
उस जान पर जो उसकी तालिब है।

26 ये ख़ूब है कि आदमी उम्मीदवार रहे और ख़ामोशी से
खुदावन्द की नजात का इन्तिज़ार करे।

27 आदमी के लिए बेहतर है कि अपनी जवानी के दिनों
में फ़रमाँबरदारी करे।

28 वह तन्हा बैठे और ख़ामोश रहे, क्यूँकि ये खुदा ही ने
उस पर रखवा है।

29 वह अपना मुँह खाक पर रखवे, कि शायद कुछ उम्मीद
की सूरत निकले।

30 वह अपना गाल उसकी तरफ़ फेर दे, जो उसे तमाँचा
मारता है और मलामत से ख़ूब सेर हो

31 क्यूँकि खुदावन्द हमेशा के लिए रद्द न करेगा,

32 क्यूँकि अगरचे वह दुख दे, तोभी अपनी शफ़क़त की
दरयादिली से रहम करेगा।

33 क्यूँकि वह बनी आदम पर खुशी से दुख मुसीबत नहीं
भेजता।

34 रू — ए — ज़मीन के सब क़ैदियों को पामाल करना

35 हक़ ताला के सामने किसी इंसान की हक़ तलफ़ी
करना,

36 और किसी आदमी का मुक़द्दमा बिगाड़ना,

खुदावन्द देख नहीं सकता।

37 वह कौन है जिसके कहने के मुताबिक़ होता है,

हालाँकि खुदावन्द नहीं फ़रमाता?

38 क्या भलाई और बुराई हक़ ताला ही के हुक्म से नहीं हैं?

39 इसलिए आदमी जीते जी क्यूँ शिकायत करे, जब कि उसे गुनाहों की सज़ा मिलती हो?

40 हम अपनी राहों को ढूँढ़ें और जाँचें, और खुदावन्द की तरफ़ फ़िरें।

41 हम अपने हाथों के साथ दिलों को भी खुदा के सामने आसमान की तरफ़ उठाएँ:

42 हम ने ख़ता और सरकशी की, तूने मु'आफ़ नहीं किया।

43 तू ने हम को क़हर से ढाँपा और रगेदा; तूने क़त्ल किया, और रहम न किया।

44 तू बादलों में मस्तूर हुआ, ताकि हमारी दुआ तुझ तक न पहुँचे।

45 तूने हम को क्रौमों के बीच कूड़े करकट और नजासत सा बना दिया।

46 हमारे सब दुश्मन हम पर मुँह पसारते हैं;

47 ख़ौफ़ — और — दहशत और वीरानी — और — हलाकत ने हम को आ दबाया।

48 मेरी दुस्तर — ए — क्रौम की तबाही के ज़रिए मेरी आँखों से आँसुओं की नहरें जारी हैं।

49 मेरी आँखें अशक़बार हैं और थमती नहीं, उनको आराम नहीं,

50 जब तक खुदावन्द आसमान पर से नज़र करके न देखे;

51 मेरी आँखें मेरे शहर की सब बेटियों के लिए मेरी जान को आज़ुर्दा करती हैं।

52 मेरे दुश्मनों ने बे वजह मुझे परिन्दे की तरह दौड़ाया;

53 उन्होंने चाह — ए — ज़िन्दान में मेरी जान लेने को मुझ पर पत्थर रखवा;

54 पानी मेरे सिर से गुज़र गया, मैंने कहा, 'मैं मर मिटा।

55 ऐ खुदावन्द, मैंने तह दिल से तेरे नाम की दुहाई दी;

56 तू ने मेरी आवाज़ सुनी है, मेरी आह — ओ — फ़रियाद से अपना कान बन्द न कर।

57 जिस रोज़ मैंने तुझे पुकारा, तू नज़दीक आया; और तू ने फ़रमाया, "परेशान न हो!"

58 ऐ खुदावन्द, तूने मेरी जान की हिमायत की और उसे छुड़ाया।

59 ऐ खुदावन्द, तू ने मेरी मज़लूमी देखी; मेरा इन्साफ़ कर।

60 तूने मेरे खिलाफ़ उनके तमाम इन्तक़ाम और सब मन्सूबों को देखा है।

61 ऐ खुदावन्द, तूने मेरे खिलाफ़ उनकी मलामत और उनके सब मन्सूबों को सुना है;

62 जो मेरी मुख़ालिफ़त को उठे उनकी बातें और दिन भर मेरी मुख़ालिफ़त में उनके मन्सूबे।

63 उनकी महफ़िल — ओ — बरखास्त को देख कि मेरा ही ज़िक़र है।

64 ऐ खुदावन्द, उनके 'आमाल के मुताबिक़ उनको बदला दे।

65 उनको कोर दिल बना कि तेरी ला'नत उन पर हो।

66 हे यहोवा, क़हर से उनको भगा और रू — ए — ज़मीन से नेस्त — ओ — नाबूद कर दे।

4

????? ?? ??????? ????? ?????

1 सोना कैसा बेआब हो गया! कुन्दन कैसा बदल गया! मक्ब्रिदस के पत्थर तमाम गली कूचों में पड़े हैं!

2 सिय्यून के 'अज़ीज़ फ़र्ज़न्द, जो ख़ालिस सोने की तरह थे,

कैसे कुम्हार के बनाए हुए बर्तनों के बराबर ठहरे!

3 गीदड़ भी अपनी छ़ातियों से अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं;

लेकिन मेरी दुस्तर — ए — क्रौम वीरानी शुतरमुर्ग़ की तरह बे — रहम है।

4 दूध पीते बच्चों की ज़बान प्यास के मारे तालू से जालगी;

बच्चे रोटी मांगते हैं लेकिन उनको कोई नहीं देता।

5 जो नाज़ पर्वरदा थे, गलियों में तबाह हाल हैं; जो बचपन से अर्ग़वानपोश थे, मज़बलों पर पड़े हैं।

6 क्यूँकि मेरी दुस्तर — ए — क्रौम की बदकिरदारी सद्रूम के गुनाह से बढ़कर है, जो एक लम्हे में बर्बाद हुआ, और किसी के हाथ उस पर दराज़ न हुए।

7 उसके शुर्फ़ा बर्फ़ से ज़्यादा साफ़ और दूध से सफ़ेद थे, उनके बदन मूंगे से ज़्यादा सुख़ थे, उन की झलक नीलम की सी थी;

8 अब उनके चेहरे सियाही से भी काले हैं; वह बाज़ार में पहचाने नहीं जाते;

उनका चमड़ा हड्डियों से सटा है; वह सूख कर लकड़ी सा हो गया।

9 तलवार से क़त्ल होने वाले, भूकों मरने वालों से बहतर हैं;

क्यूँकि ये खेत का हासिल न मिलने से कुढ़कर हलाक होते हैं।

10 रहमदिल 'औरतों के हाथों ने अपने बच्चों को पकाया; मेरी दुस्तर — ए — क्रौम की तबाही में वही उनकी ख़ूराक हुए।

11 खुदावन्द ने अपने ग़ज़ब को अन्जाम दिया;

उसने अपने कहर — ए — शदीद को नाज़िल किया।
और उसने सिय्यून में आग भड़काई जो उसकी बुनियाद
को चट कर गई।

12 रू — ए — ज़मीन के बादशाह और दुनिया के बाशिन्दे
बावर नहीं करते थे,
कि मुखालिफ़ और दुश्मन येरूशलेम के फाटकों से घुस
आएँगे।

13 ये उसके नबियों के गुनाहों और काहिनों की
बदकिरदारी की वजह से हुआ,
जिन्होंने उसमें सच्चों का खून बहाया।

14 वह अन्धों की तरह गलियों में भटकते,
और खून से आलूदा होते हैं, ऐसा कि कोई उनके लिबास
को भी छू नहीं सकता।

15 वह उनको पुकार कर कहते थे, दूर रहो! नापाक, दूर
रहो! दूर रहो, छूना मत!

“जब वह भाग जाते और आवारा फिरते, तो लोग कहते
थे, 'अब ये यहाँ न रहेंगे।'”

16 खुदावन्द के कहर ने उनको पस्त किया, अब वह उन
पर नज़र नहीं करेगा;

उन्होंने काहिनों की 'इज़ज़त न की, और बुज़ुर्गों का
लिहाज़ न किया।

17 हमारी आँखें बातिल मदद के इन्तिज़ार में थक गईं,
हम उस क़ौम का इन्तिज़ार करते रहे जो बचा नहीं
सकती थी।

18 उन्होंने हमारे पाँव ऐसे बाँध रखे हैं, कि हम बाहर
नहीं निकल सकते;

हमारा अन्जाम नज़दीक है, हमारे दिन पूरे हो गए;
हमारा वक़्त आ पहुँचा।

19 हम को दौड़ाने वाले आसमान के उक्राबों से भी तेज़
हैं;

उन्होंने पहाड़ों पर हमारा पीछा किया; वह वीराने में
हमारी घात में बैठे।

20 हमारी ज़िन्दगी का दम खुदावन्द का मम्सूह,
उनके गढ़ों में गिरफ़्तार हो गया;

जिसकी वजह हम कहते थे, कि उसके साये तले हम
क़ौमों के बीच ज़िन्दगी बसर करेंगे।

21 ऐ दुस्तर — ए — अदोम, जो 'ऊज़ की सरज़मीन में
बसती है,

खुश — और — खुरम हो; ये प्याला तुझ तक भी
पहुँचेगा;

तू मस्त और बरहना हो जाएगी।

22 ऐ दुस्तर — ए — सिय्यून, तेरी बदकिरदारी की सज़ा
तमाम हुई;

वह मुझे फिर गुलाम करके नहीं ले जाएगा;

ऐ दुस्तर — ए — अदोम, वह तेरी बदकिरदारी की सज़ा
देगा; वह तेरे गुनाह वाश करेगा।

5

???? ? ? ? ? ? ?

1 ऐ खुदावन्द, जो कुछ हम पर गुज़रा उसे याद कर;
नज़र कर और हमारी रुस्वाई को देख।

2 हमारी मीरास अजनबियों के हवाले की गई, हमारे घर
बेगानों ने ले लिए।

3 हम यतीम हैं, हमारे बाप नहीं,
हमारी माँए बेवाओं की तरह हैं।

4 हम ने अपना पानी मोल लेकर पिया;
अपनी लकड़ी भी हम ने दाम देकर ली।

5 हम को रगेदने वाले हमारे सिर पर हैं;
हम थके हारे और बेआराम हैं।

6 हम ने मिसिरियों और असूरियों की इता'अत कुबूल की
ताकि रोटी से सेर और आसूदा हों।

7 हमारे बाप दादा गुनाह करके चल बसे,
और हम उनकी बदकिरदारी की सज़ा पा रहे हैं।

8 गुलाम हम पर हुक्मरानी करते हैं;
उनके हाथ से छुड़ाने वाला कोई नहीं।

9 सहारा नशीनों की तलवार के ज़रिए', हम जान पर
खेलकर रोटी हासिल करते हैं।

10 कहत की झुलसाने वाली आग के ज़रिए',
हमारा चमड़ा तनूर की तरह सियाह हो गया है।

11 उन्होंने सिय्यून में 'औरतों को बेहुरमत किया और
यहूदाह के शहरों में कुंवारी लड़कियों को।

12 हाकिम को उनके हाथों से लटका दिया;
बुज़ुर्गों की रू — दारी न की गई।

13 जवानों ने चक्की पीसी,
और बच्चों ने गिरते पड़ते लकड़ियाँ ढोई।

14 बुज़ुर्ग फाटकों पर दिखाई नहीं देते, जवानों की नगमा
परदाज़ी सुनाई नहीं देती।

15 हमारे दिलों से खुशी जाती रही;
हमारा रक्स मातम से बदल गया।

16 ताज हमारे सिर पर से गिर पड़ा;
हम पर अफ़सोस! कि हम ने गुनाह किया।

17 इसीलिए हमारे दिल बेताब हैं;
इन्हीं बातों के ज़रिए' हमारी आँखें धुंदला गई,

18 कोह — ए — सिय्यून की वीरानी के ज़रिए',
उस पर गीदड़ फिरते हैं।

19 लेकिन तू, ऐ खुदावन्द, हमेशा तक कायम है;
और तेरा तख़्त नसल — दर — नसल।

20 फिर तू क्यूँ हम को हमेशा के लिए भूल जाता है,

और हम को लम्बे वक़्त तक तर्क करता है?

²¹ ऐ खुदावन्द, हम को अपनी तरफ़ फ़िरा, तो हम
फ़िरेंगे;

हमारे दिन बदल दे, जैसे पहले से थे।

²² क्या तू ने हमको बिल्कुल रद्द कर दिया है?

क्या तू हमसे शख़्त नाराज़ है?

हिज्रि क़िएल

?????????? ?? ???? ???? ???? ?

हिज़िक्रिएल को यह किताब बुज़ी का बेटा, काहिन और नबी बतौर मंसूब करता है। वह यरूशलेम में एक काहिन के खान्दान में पैदा हुआ और परवरिश पाई। और जिलावतनी के दौरान यहूदियों के साथ बाबुल में रहता था। हिज़िक्रिएल, काहिन की नसल का यह शख्स अपनी नबुव्वत की खिदमत के ज़रिये मशहूर हो जाता है। वह अक्सर खुद को ज़ेल की बातें पर गौर करने और ध्यान लगाने में मसरूफ़ रखता था जैसे कि मक़दिस, प्रोहिताई (कानिगिरी) खुदावन्द का जलाल और कुर्बानी का निज़ाम।

???? ???? ?? ????????? ? ? ?

इस के तस्नीफ की तारीख तक्रीबत 593-570 क्रब्ब मसीह के बीच है।

हिज़्रिक्रिएल ने इसे बाबुल में रहते हुए लिखा, मगर उस की नबुव्वतें इस्राईल, मिस्र और कई एक पड़ोसी मल्कों की बाबत थीं।

????? ?????????? ?????? ??????

क़बूल कुनिन्दा पाने वाले बाबुल में जिलावतन और अपने मुल्क के तमाम बनी इस्राईल और बाद में तमाम कारिईन — ए — कलाम।

???

हिज्रिकिएल ने अपनी पीढ़ी के लोगों के दर्मियान खिदमत अन्जाम दी जो दोनों तरह से निहायत ही गुनहगार और पूरी तरह से ना उम्मीद थे उसकी नबुव्वत की खिदमत की राह से उसने कोशिश की कि फ़ौरन तौबा की तरफ़ मायल करे और उन्हें बर्डद मुस्तक्रबिल में यक़ीन दिलाए। उसने सोचा कि खुदा इंसानी पैगम्बरों के वसीले से काम करता है। यहां तक कि शिकस्त और मायूसी की हालत में खुदा के लोगों को खुदा की हुकूमत के एलान की ज़रूरत होती है, खुदा का कलाम कभी भी नाकाम नहीं होता। खुदा हर जगह मौजूद है और कभी भी, कहीं भी उसकी इबादत की जा सकती है। हिज्रिकिएल की किताब हमें याद दिलाती है कि उन तारीक औक्रात में जब हम गुम हो जाने का एहसास करें तब खुदावन्द की खोज कर उसे ढूँढे और तलाश करें ताकि हम अपनी जिन्दगियों की जांच कर सके और सच्चे खुदा की राह पर चल सके।

□□□□'□

खुदावन्द का जलाल ।

बैरुनी खाका

1. हिज़िकिएल की बुलाहट — 1:1-3:27
2. यरूशलेम यहूदा और मंदिर के खिलाफ़ नबुव्वतें — 4:1-24:27
3. कौमों के खिलाफ़ नबुव्वतें — 25:1-32:32
4. बनी इस्राईल से मुतार्ल्लिक़ नबुव्वते — 33:1-39:29
5. बहाली का रोया — 40:1-48:35

???????? ?? ?????

1 तेइसवीं बरस के चौथे महीने की पाँचवीं तारीख को यूँ हुआ कि जब मैं नहर — ए — किबार के किनारे पर गुलामों के बीच था तो आसमान खुल गया और मैंने खुदा की रोयतें देखीं। 2 उस महीने की पाँचवीं को यहूयाकीम बादशाह की गुलामी के पाँचवीं बरस। 3 खुदावन्द का कलाम बूजी के बेटे हिज़क्रिएल काहिन पर जो कसदियों के मुल्क में नहर — ए — किबार के किनारे पर था नाज़िल हुआ, और वहाँ खुदावन्द का हाथ उस पर था। 4 और मैंने नज़र की तो क्या देखता हूँ कि उत्तर से आँधी उठी एक बड़ी घटा और लिपटती हुई आग और उसके चारों तरफ़ रोशनी चमकती थी और उसके बीच से या'नी उस आग में से सैक़ल किये हुए पीतल की तरह सूरत जलवागर हुई। 5 और उसमें से चार जानदारों की एक शबीह नज़र आई और उनकी शक़ल यूँ थी कि वह इंसान से मुशाबह थे। 6 और हर एक चार चेहरे और चार पर थे। 7 और उनकी टाँगें सीधी थीं और उनके पाँव के तलवे बछड़े की पाँव के तलवे की तरह थे और वह मंजे हुए पीतल की तरह झलकते थे। 8 और उनके चारों तरफ़ परों के नीचे इंसान के हाथ थे और चारों के चेहरे और पर यूँ थे। 9 कि उनके पर एक दूसरे के साथ जुड़े थे और वह चलते हुए मुड़ते न थे बल्कि सब सीधे आगे बढ़े चले जाते थे। 10 उनके चेहरों की मुशाबिहत यूँ थी कि उन चारों का एक एक चेहरा इंसान का एक शेर बबर का उनकी दहिनी तरफ़ और उन चारों का एक एक चेहरा सांड का बाईं तरफ़ और उन चारों का एक एक चेहरा 'उक्राब का था। 11 उनके चेहरे यूँ थे और उनके पर ऊपर से अलग — अलग थे हर एक के ऊपर दूसरे के दो परों से मिले हुए थे और दो दो से उनका बदन छिपा हुआ था। 12 उनमें से हर एक सीधा आगे को चला जाता था जिधर को जाने की ख्वाहिश होती थी वह जाते थे, वह चलते हुए मुड़ते न थे। 13 रही उन जानदारों की सूरत तो उनकी शक़ल आग के सुलगे हुए कोयलों और मशा'लों की तरह थी, वह उन जानदारों के बीच इधर उधर आती जाती थी और वह आग नरानी थी और उसमें से बिजली निकलती थी।

14 और वह जानदार ऐसे हटते बढ़ते थे जैसे बिजली कौंध जाती है। 15 जब मैंने उन जानदारों की तरफ नज़र की तो क्या देखता हूँ कि उन चार चार चेहरों वाले जानदारों के हर चेहरे के पास ज़मीन पर एक पहिया है। 16 उन पहियों की सूरत और और बनावट ज़बरजद के जैसी थी और वह चारों एक ही वज़ा' के थे और उनकी शकल और उनकी बनावट ऐसी थी जैसे पहिया पहटे के बीच में है। 17 वह चलते वक़्त अपने चारों पहलुओं पर चलते थे और पीछे नहीं मुड़ते थे। 18 और उनके हलके बहुत ऊँचे और डरावने थे और उन चारों के हलकों के चारों तरफ़ आँखें ही आँखें थीं। 19 जब वह जानदार चलते थे तो पहिये भी उनके साथ चलते थे और जब वह जानदार ज़मीन पर से उठाये जाते थे तो पहिये भी उठाये जाते थे। 20 जहाँ कहीं जाने की ख्वाहिश होती थी जाते थे, उनकी ख्वाहिश उनको उधर ही ले जाती थी और पहिये उनके साथ उठाये जाते थे, क्योंकि जानदार की रूह पहियों में थी। 21 जब वह चलते थे, यह चलते थे; और जब वह ठहरते थे, यह ठहरते थे; और जब वह ज़मीन पर से उठाये जाते थे तो पहिये भी उनके साथ उठाये जाते थे, क्योंकि पहियों में जानदार की रूह थी। 22 जानदारों के सरो के ऊपर की फ़ज़ा बिल्लोर की तरह चमक थी और उनके सरो के ऊपर फ़ैली थी। 23 और उस फ़ज़ा के नीचे उनके पर एक दूसरे की सीध में थे हर एक दो परों से उनके बदनों का एक पहलू और दो परों से दूसरा हिस्सा छिपा था 24 और जब वह चले तो मैंने उनके परों की आवाज़ सुनी जैसे बड़े सैलाब की आवाज़ या'नी क़ादिर — ए — मुतलक़ की आवाज़ और ऐसी शोर की आवाज़ हुई जैसी लश्कर की आवाज़ होती है जब वह ठहरते थे तो अपने परों को लटका देते थे। 25 और उस फ़ज़ा के ऊपर से जो उनके सरो के ऊपर थी, एक आवाज़ आती थी और वह जब ठहरते थे तो अपने बाज़ुओं को लटका देते थे। 26 और उस फ़ज़ा से ऊपर जो उनके सरो के ऊपर थी तख़्त की सूरत थी और उसकी सूरत नीलम के पत्थर की तरह थी और उस तख़्त नुमा सूरत पर किसी इंसान की तरह शबीह उसके ऊपर नज़र आयी। 27 और मैंने उसकी कमर से लेकर ऊपर तक सैक़ल किये हुए पीतल के जैसा रंग और शो'ला सा जलवा उसके बीच और चारों तरफ़ देखा और उसकी कमर से लेकर नीचे तक मैंने शो'ला की तरह तजल्ली देखी, और उसकी चारों तरफ़ जगमगाहट थी। 28 जैसी उस कमान की सूरत है जो बारिश के दिन बादलों में दिखाई देती है वैसी ही आस — पास की उस जगमगाहट ज़ाहिर थी यह खुदावन्द के जलाल का इज़हार था, और देखते ही मैं सिज्दे में गिरा और मैंने एक आवाज़ सुनी जैसे कोई बातें करता है।

2

???????? ?? ??????? ????? ?? ?????

1 और उसने मुझे कहा, “ऐ आदमज़ाद अपने पाँव पर खड़ा हो कि मैं तुझसे बातें करूँ।” 2 जब उसने मुझे यूँ कहा, तो रूह मुझ में दाखिल हुई और मुझे पाँव पर खड़ा किया; तब मैंने उसकी सुनी जो मुझ से बातें करता था। 3 चुनाँचे उसने मुझ से कहा, कि 'ऐ आदमज़ाद, मैं तुझे बनी — इस्राईल के पास, या'नी उस सरकश क्रौम के पास जिसने मुझ से सरकशी की है भेजता हूँ वह और उनके बाप दादा आज के दिन तक मेरे गुनाहगार होते आए हैं। 4 क्योंकि जिनके पास मैं तुझ को भेजता हूँ, वह सख्त दिल और बेहया फ़र्ज़न्द हैं; तू उनसे कहना, 'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है। 5 तो चाहे वह सुनें या न सुनें क्योंकि वह तो सरकश खान्दान हैं तोभी इतना तो होगा कि वह जानेंगे कि उनमें से एक नबी खड़ा हुआ। 6 तू ऐ आदमज़ाद उनसे परेशान न हो और उनकी बातों से न डर, हर वक़्त तू ऊँट कटारों और काँटों से घिरा है और बिच्छुओं के बीच रहता है। उनकी बातों से तरसान न हो और उनके चेहरों से न घबरा, अगरचे वह बागी खान्दान हैं। 7 तब तू मेरी बातें उनसे कहना, चाहे वह सुनें चाहे न सुनें, क्योंकि वह बहुत बागी हैं। 8 “लेकिन ऐ आदमज़ाद, तू मेरा कलाम सुन। तू उस सरकश खान्दान की तरह सरकशी न कर, अपना मुँह खोल और जो कुछ मैं तुझे देता हूँ खा ले।” 9 और मैंने निगाह की, तो क्या देखता हूँ कि एक हाथ मेरी तरफ़ बढ़ाया हुआ है, और उसमें किताब का तूमार है। 10 और उसने उसे खोल कर मेरे सामने रख दिया। उसमें अन्दर बाहर लिखा हुआ था, और उसमें नोहा और मातम और आह और नाला मरकूम था।

3

1 फिर उसने मुझे कहा, कि 'ऐ आदमज़ाद, जो कुछ तूने पाया सो खा। इस तूमार को निगल जा, और जा कर इस्राईल के खान्दान से कलाम कर। 2 तब मैंने मुँह खोला और उसने वह तूमार मुझे खिलाया। 3 फिर उसने मुझे कहा, कि 'ऐ आदमज़ाद, इस तूमार को जो मैं तुझे देता हूँ खा जा, और उससे अपना पेट भर ले। तब मैंने खाया और वह मेरे मुँह में शहद की तरह मीठा था। 4 फिर उसने मुझे फ़रमाया, कि 'ऐ आदमज़ाद, तू बनी — इस्राईल के पास जा और मेरी यह बातें उनसे कह। 5 क्योंकि तू ऐसे लोगों की तरफ़ नहीं भेजा जाता जिनकी ज़बान बेगाना और जिनकी बोली सख्त है; बल्कि इस्राईल के खान्दान की तरफ़; 6 न बहुत सी

उम्मतों की तरफ़ जिनकी ज़बान बेगाना और जिनकी बोली सख़्त है; जिनकी बात तू समझ नहीं सकता। यक़ीनन अगर मैं तुझे उनके पास भेजता, तो वह तेरी सुनती। ⁷ लेकिन बनी इस्राईल तेरी बात न सुनेंगे, क्योंकि वह मेरी सुनना नहीं चाहते, क्योंकि सब बनी — इस्राईल सख़्त पेशानी और पत्थर दिल हैं। ⁸ देख, मैंने उनके चेहरों के सामने तेरा चेहरा दुरुश्त किया है, और तेरी पेशानी उनकी पेशानियों के सामने सख़्त कर दी है। ⁹ मैंने तेरी पेशानी को हीरे की तरह चकमाक से भी ज्यादा सख़्त कर दिया है; उनसे न डर और उनके चेहरों से परेशान न हो, अगरचे वह सरकश ख़ान्दान हैं। ¹⁰ फिर उसने मुझ से कहा, कि 'ऐ आदमज़ाद, मेरी सब बातों को जो मैं तुझ से कहूँगा, अपने दिल से कुबूल कर और अपने कानों से सुन। ¹¹ अब उठ, गुलामों या'नी अपनी क़ौम के लोगों के पास जा, और उनसे कह, 'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है,' चाहे वह सुनें चाहे न सुनें। ¹² और रूह ने मुझे उठा लिया, और मैंने अपने पीछे एक बड़ी कड़क की आवाज़ सुनी जो कहती थी: कि 'खुदावन्द का जलाल उसके घर से मुबारक हो। ¹³ और जानदारों के परो के एक दूसरे से लगने की आवाज़ और उनके सामने पहियों की आवाज़ और एक बड़े धड़के की आवाज़ सुनाई दी। ¹⁴ और रूह मुझे उठा कर ले गई, इसलिए मैं तल्लख़ दिल और ग़ज़बनाक होकर ख़ाना हुआ, और खुदावन्द का हाथ मुझ पर ग़ालिब था; ¹⁵ और मैं तल अबीब में गुलामों के पास, जो नहर — ए — किबार के किनारे बसते थे पहुँचा; और जहाँ वह रहते थे, मैं सात दिन तक उनके बीच परेशान बैठा रहा।

???????? ?? ???????

¹⁶ और सात दिन के बाद खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: ¹⁷ कि 'ऐ आदमज़ाद, मैंने तुझे बनी — इस्राईल का निगहबान मुक़र्रर किया। इसलिए तू मेरे मुँह का कलाम सुन, और मेरी तरफ़ से उनको आगाह कर दे। ¹⁸ जब मैं शरीर से कहूँ, कि 'तू यक़ीनन मरेगा, और तू उसे आगाह न करे और शरीर से न कहे कि वह अपनी बुरी चाल चलन से ख़बरदार हो, ताकि वह उससे बाज़ आकर अपनी जान बचाए, तो वह शरीर अपनी शरारत में मरेगा, लेकिन मैं उसके ख़ून का सवाल — ओ — जवाब तुझ से करूँगा। ¹⁹ लेकिन अगर तूने शरीर को आगाह कर दिया और वह अपनी शरारत और अपनी बुरी चाल चलन से बाज़ न आया तो वह अपनी बदकिरदारी में मरेगा पर तूने अपनी जान को बचा लिया। ²⁰ और अगर रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी छोड़ दे और गुनाह करे, और मैं उसके आगे ठोकर खिलाने

वाला पत्थर रखूँ तो वह मर जाएगा; इसलिए कि तूने उसे आगाह नहीं किया, तो वह अपने गुनाह में मरेगा और उसकी सदाक़त के कामों का लिहाज़ न किया जाएगा, लेकिन मैं उसके ख़ून का सवाल — ओ — जवाब तुझ से करूँगा। ²¹ लेकिन अगर तू उस रास्तबाज़ को आगाह कर दे, ताकि गुनाह न करे और वह गुनाह से बाज़ रहे तो वह यक़ीनन जिएगा; इसलिए के नसीहत पज़ीर हुआ और तूने अपनी जान बचा ली। ²² और वहाँ खुदावन्द का हाथ मुझ पर था, और उसने मुझे फ़रमाया, "उठ, मैदान में निकल जा और वहाँ मैं तुझ से बातें करूँगा।" ²³ तब मैं उठ कर मैदान में गया, और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द का जलाल उस शौकत की तरह, जो मैंने नहर — ए — किबार के किनारे देखी थी खड़ा है; और मैं मुँह के बल गिरा। ²⁴ तब रूह मुझ में दाख़िल हुई और उसने मुझे मेरे पाँव पर खड़ा किया, और मुझ से हमकलाम होकर फ़रमाया, कि अपने घर जा, और दरवाज़ा बन्द करके अन्दर बैठ रह। ²⁵ और ऐ आदमज़ाद देख, वह तुझ पर बंधन डालेंगे और उनसे तुझे बाँधेंगे और तू उनके बीच बाहर न जाएगा। ²⁶ और मैं तेरी ज़बान तेरे तालू से चिपका दूँगा कि तू गूँगा हो जाए; और उनके लिए नसीहत गो न हो, क्योंकि वह बागी ख़ान्दान हैं। ²⁷ लेकिन जब मैं तुझ से हमकलाम हूँगा, तो तेरा मुँह खोलूँगा, तब तू उनसे कहेगा, कि 'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, जो सुनता है सुने और जो नहीं सुनता न सुने, क्योंकि वह बागी ख़ान्दान हैं।

4

???? ????? ?????????

¹ और ऐ आदमज़ाद, तू एक खपरा ले और अपने सामने रख कर उस पर एक शहर, हाँ, येरूशलेम ही की तस्वीर खींच। ² और उसका घेराव कर, और उसके सामने बुर्ज बना, और उसके सामने दमदमा बाँध और उसके चारों तरफ़ खेमें खड़े कर और उसके चारों तरफ़ मन्जनीक लगा। ³ फिर तू लोहे का एक तवा ले, और अपने और शहर के बीच उसे नस्ब कर कि वह लोहे की दीवार ठहरे और तू अपना मुँह उसके सामने कर और वह घेराव की हालत में हो, और तू उसको घेरने वाला होगा; यह बनी इस्राईल के लिए निशान है। ⁴ फिर तू अपनी ई करवट पर लेट रह और बनी — इस्राईल की बदकिरदारी इस पर रख दे; जितने दिनों तक तू लेटा रहेगा, तू उनकी बदकिरदारी बर्दाश्त करेगा। ⁵ और मैंने उनकी बदकिरदारी के बरसों को उन दिनों के शुमार के मुताबिक़ जो तीन — सौ — नब्बे दिन हैं तुझ पर रखवा

है, इसलिए तू बनी — इस्राईल की बदकिरदारी बर्दाश्त करेगा।⁶ और जब तू इनको पूरा कर चुके तो फिर अपनी दहनी करवट पर लेट रह, और चालीस दिन तक बनी यहूदाह की बदकिरदारी को बर्दाश्त कर; मैंने तेरे लिए एक एक साल के बदले एक एक दिन मुक़रर किया है।⁷ फिर तू येरूशलेम के घेराव की तरफ़ मुँह कर और अपना बाजू नंगा कर और उसके खिलाफ़ नबुव्वत कर।⁸ और देख, मैं तुझ पर बन्धन डालूँगा कि तू करवट न ले सके, जब तक अपने घेराव के दिनों को पूरा न कर ले।⁹ और तू अपने लिए गेहूँ और जौ और बाक़ला और मसूर और चना और बाजरा ले, और उनको एक ही बर्तन में रख, और उनकी इतनी रोटियाँ पका जितने दिनों तक तू पहली करवट पर लेटा रहेगा; तू तीन सौ नब्बे दिन तक उनको खाना।¹⁰ और तेरा खाना वज़न करके बीस मिस्काल “रोज़ाना होगा जो तू खाएगा, तू थोड़ा — थोड़ा खाना।¹¹ तू पानी भी नाप कर एक हीन का छटा हिस्सा पिएगा, तू थोड़ा — थोड़ा पीना।¹² और तू जौ के फुल्के खाना, और तू उनकी आँखों के सामने इंसान की नजासत से उनको पकाना।”¹³ और खुदावन्द ने फ़रमाया, कि “इसी तरह से बनी — इस्राईल अपनी नापाक रोटियों को उन क्रौमों के बीच जिनमें मैं उनको आवारा करूँगा, खाया करेंगे।”¹⁴ तब मैंने कहा, कि “हाय, खुदावन्द खुदा! देख, मेरी जान कभी नापाक नहीं हुई; और अपनी जवानी से अब तक कोई मुरदार चीज़ जो आप ही मर जाए या किसी जानवर से फाड़ी जाए, मैंने हरगिज़ नहीं खाई, और हराम गोश्त मेरे मुँह में कभी नहीं गया।”¹⁵ तब उसने मुझे फ़रमाया, देख, मैं इंसान की नजासत के बदले तुझे गोबर देता हूँ, इसलिए तू अपनी रोटी उससे पकाना।¹⁶ उसने मुझे फ़रमाया, कि ऐ आदमज़ाद, देख, मैं येरूशलेम में रोटी का 'असा तोड़ डालूँगा; और वह रोटी तौल कर फ़िक्रमन्दी से खाएँगे, और पानी नाप कर हैरत से पिएँगे।¹⁷ ताकि वह रोटी पानी के मोहताज हों, और एक साथ शर्मिन्दा हों और अपनी बदकिरदारी में हलाक हों।

5

???? ???? ???? ?? ?????

¹ ऐ आदमज़ाद, तू एक तेज़ तलवार ले और हज्जाम के उस्तरे की तरह उस से अपना सिर और अपनी दाढ़ी मुड़ा और तराजू ले और बालों को तौल कर उनके हिस्से बना।² फिर जब घेराव के दिन पूरे हो जाएँ, तो शहर के बीच में उनका एक हिस्सा लेकर आग में जला। और दूसरा हिस्सा लेकर तलवार से इधर उधर बिखेर दे। और तीसरा हिस्सा हवा में उड़ा दे, और मैं तलवार खींच कर

उनका पीछा करूँगा।³ और उनमें से थोड़े से बाल गिन कर ले और उनको अपने दामन में बाँध।⁴ फिर उनमें से कुछ निकाल कर आग में डाल और जला दे; इसमें से एक आग निकलेगी जो इस्राईल के तमाम घराने में फैल जाएगी।⁵ खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि येरूशलेम यही है। मैंने उसे क्रौमों और मम्लुकतों के बीच, जो उसके आस — पास हैं रखवा है।⁶ लेकिन उसने दीगर क्रौमों से ज्यादा शरारत कर के मेरे हुक्मों की मुखालिफ़त की और मेरे क़ानून को आसपास की मम्लुकतों से ज्यादा रद्द किया, क्योंकि उन्होंने मेरे हुक्मों को रद्द किया और मेरे क़ानून की पैरवी न की।⁷ इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि तुम अपने आस — पास की क्रौम से बढ़ कर फ़ितना अंगेज़ हो और मेरे क़ानून की पैरवी नहीं की और मेरे हुक्मों पर 'अमल नहीं किया, और अपने आस — पास की क्रौम के क़ानून और हुक्मों पर भी 'अमल नहीं किया; ⁸ इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं, हाँ मैं ही तेरा मुखालिफ़ हूँ और तेरे बीच सब क्रौमों की आँखों के सामने तुझे सज़ा दूँगा।⁹ और मैं तेरे सब नफ़रती कामों की वजह से तुझमें वही करूँगा, जो मैंने अब तक नहीं किया और कभी न करूँगा।¹⁰ अगर तुझमें बाप बेटे को और बेटा बाप को खा जाएगा, और मैं तुझे सज़ा दूँगा और तेरे बकिये को हर तरफ़ तितर — बितर करूँगा।¹¹ इसलिए खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: कि मुझे अपनी हयात की क़सम, चूँकि तूने अपनी तमाम मकरूहात से और अपने नफ़रती कामों से मेरे मक्बिदस को नापाक किया है, इसलिए मैं भी तुझे घटाऊँगा, मेरी आँखें रि'आयत न करेंगी, मैं हरगिज़ रहम न करूँगा।¹² तेरा एक हिस्सा वबा से मर जाएगा और काल से तेरे अन्दर हलाक हो जाएगा और दूसरा हिस्सा तेरी चारों तरफ़ तलवार से मारा जाएगा, और तीसरे हिस्से को मैं हर तरफ़ तितर बितर करूँगा और तलवार खींच कर उनका पीछा करूँगा।¹³ “मेरा क्रहर यूँ पूरा होगा, तब मेरा ग़ज़ब उन पर धीमा हो जाएगा और मेरी तस्कीन होगी; और जब मैं उन पर अपना क्रहर पूरा करूँगा, तब वह जानेंगे कि मुझ खुदावन्द ने अपनी ग़ैरत से यह सब कुछ फ़रमाया था।¹⁴ इसके 'अलावा मैं तुझको उन क्रौमों के बीच जो तेरे आस — पास हैं, और उन सब की निगाहों में जो उधर से गुज़र करेंगे वीरान और मलामत की वजह बनाऊँगा।¹⁵ इसलिए जब मैं क्रहर — ओ — ग़ज़ब और सख्त मलामत से तेरे बीच 'अदालत करूँगा, तो तू अपने आसपास की क्रौम के लिए जा — ए — मलामत — ओ — इहानत और मक़ाम — ए — 'इबरत — ओ — हैरत होगी; मैं

खुदावन्द ने यह फ़रमाया है। ¹⁶ या'नी जब मैं सख्त सूखे के तीर जो उनकी हलाकत के लिए हैं, उनकी तरफ़ खाना करूँगा जिनको मैं तुम्हारे हलाक करने के लिए चलाऊँगा, और मैं तुम में सूखे को ज्यादा करूँगा और तुम्हारी रोटी की लाठी को तोड़ डालूँगा। ¹⁷ और मैं तुम में सूखा और बुरे दरिन्दे भेजूँगा, और वह तुझे बेऔलाद करेंगे; और मेरी और खूरजी तेरे बीच आएगी मैं तलवार तुझ पर लाऊँगा; मैं खुदावन्द ही ने फ़रमाया है।”

6

???????? ?? ??????? ?? ????????? ?????

¹ और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ। ² कि ऐ आदमज़ाद, इस्राईल के पहाड़ों की तरफ़ मुँह करके उनके खिलाफ़ नबुव्वत कर ³ और यूँ कह, कि ऐ इस्राईल के पहाड़ों, खुदावन्द खुदा का कलाम सुनो! खुदावन्द खुदा पहाड़ों और टीलों को और नहरों और वादियों को यूँ फ़रमाता है: कि देखो, मैं, हाँ मैं ही तुम पर तलवार चलाऊँगा, और तुम्हारे ऊँचे मक़ामों को ग़ारत करूँगा। ⁴ और तुम्हारी कुर्बानगाहें उजड़ जाएँगी और तुम्हारी सूरज की मूरतें तोड़ डाली जाएँगी और मैं तुम्हारे मक़तूलों को तुम्हारे बुतों के आगे डाल दूँगा। ⁵ और बनी — इस्राईल की लाशें उनके बुतों के आगे फेंक दूँगा, और मैं तुम्हारी हड्डियों को तुम्हारी कुर्बानगाहों के चारों तरफ़ तितर — बितर करूँगा। ⁶ तुम्हारे क़याम के तमाम इलाक़ों के शहर वीरान होंगे और ऊँचे मक़ाम उजाड़े जायेंगे ताकि तुम्हारी कुर्बानगाहें ख़राब और वीरान हों और तुम्हारे बुत तोड़े जाएँ और बाक़ी न रहें और तुम्हारी सूरज की मूरतें काट डाली जाएँ और तुम्हारी दस्तकारियाँ हलाक हों। ⁷ और मक़तूल तुम्हारे बीच गिरेंगे, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ। ⁸ “लेकिन मैं एक बक्रिया छोड़ दूँगा, या'नी वह चन्द लोग जो क़ौमों के बीच तलवार से बच निकलेंगे जब तुम ग़ैर मुल्कों में तितर बितर हो जाओगे। ⁹ और जो तुम में से बच रहेंगे उन क़ौमों के बीच जहाँ जहाँ वह गुलाम होकर जाएँगे मुझको याद करेंगे, जब मैं उनके बेवफ़ा दिलों को जो मुझ से दूर हुए और उनकी आँखों को जो बुतों की पैरवी में नाफ़रमान हुई, शिकस्त करूँगा और वह खुद अपनी तमाम बद'आमाली की वजह से जो उन्होंने अपने तमाम घिनौने कामों में की, अपनी ही नज़र में नफ़रती ठहरेंगे। ¹⁰ तब वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ, और मैंने यूँ ही नहीं फ़रमाया था कि मैं उन पर यह बला लाऊँगा।” ¹¹ खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि “हाथ पर हाथ मार और पाँव ज़मीन पर पटक

कर कह, कि बनी — इस्राईल के तमाम घिनौने कामों पर अफ़सोस! क्योंकि वह तलवार और काल और वबा से हलाक होंगे। ¹² जो दूर हैं वह वबा से मरेगा और जो नज़दीक है तलवार से क़त्ल किया जाएगा, और जो बाक़ी रहे और महसूर हो वह काल से मरेगा, और मैं उन पर अपने क्रहर को यूँ पूरा करूँगा। ¹³ और जब उनके मक़तूल हर ऊँचे टीले पर और पहाड़ों की सब चोटियों पर, और हर एक हरे दरख़्त और घने बलूत के नीचे, हर जगह जहाँ वह अपने सब बुतों के लिए खुशबू जलाते थे; उनके बुतों के पास उनकी कुर्बानगाहों के चारों तरफ़ पड़े हुए होंगे, तब वह पहचानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ। ¹⁴ और मैं उन पर हाथ चलाऊँगा, और वीराने से दिबला तक उनके मुल्क की सब बस्तियाँ वीरान और सुनसान करूँगा। तब वह पहचानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।”

7

?????????? ?? ?????????

¹ और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ ² कि ऐ आदमज़ाद, खुदावन्द खुदा इस्राईल के मुल्क से यूँ फ़रमाता है: कि तमाम हुआ! मुल्क के चारों कोनों पर खातिमा आन पहुँचा है। ³ अब तेरी मौत आई और मैं अपना ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल करूँगा, और तेरी चाल चलन के मुताबिक़ तेरी 'अदालत करूँगा और तेरे सब घिनौने कामों की सज़ा तुझ पर लाऊँगा। ⁴ मेरी आँख तेरी रि'आयत न करेगी और मैं तुझ पर रहम न करूँगा, बल्कि मैं तेरी चाल चलन के मुताबिक़ तुझे सज़ा दूँगा और तेरे घिनौने कामों के अन्जाम तेरे बीच होंगे, ताकि तुम जानो कि मैं खुदावन्द हूँ। ⁵ खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि एक बला या'नी बला — ए — 'अज़ीम! देख, वह आती है। ⁶ खातमा आया, खातमा आ गया! वह तुझ पर आ पहुँचा, देख वह आ पहुँचा। ⁷ ऐ ज़मीन पर बसने वाले, तेरी शामत आ गई, वक़्त आ पहुँचा, हँगामे का दिन करीब हुआ; यह पहाड़ों पर खुशी की ललकार का दिन नहीं। ⁸ अब मैं अपना क्रहर तुझ पर उँडेलने को हूँ और अपना ग़ज़ब तुझ पर पूरा करूँगा और तेरे चाल चलन के मुताबिक़ तेरी 'अदालत करूँगा और तेरे सब घिनौने कामों की सज़ा तुझ पर लाऊँगा। ⁹ मेरी आँख रि'आयत न करेगी और मैं हरगिज़ रहम न करूँगा, मैं तुझे तेरी चाल चलन के मुताबिक़ सज़ा दूँगा और तेरे घिनौने कामों के अन्जाम तेरे बीच होंगे, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द सज़ा देने वाला हूँ। ¹⁰ “देख, वह दिन, देख वह आ पहुँचा है तेरी शामत आ गई, 'असा में कलियाँ निकलीं, गुरूर में गुन्चे निकले। ¹¹ सितमगरी

निकली कि शरारत के लिए छड़ी हो, कोई उनमें से न बचेगा, न उनके गिरोह में से कोई और न उनके माल में से कुछ, और उन पर मातम न होगा। ¹² वक्रत आ गया, दिन करीब है, न खरीदने वाला खुश हो न बेचने वाला उदास, क्योंकि उनके तमाम गिरोह पर ग़ज़ब नाज़िल होने को है। ¹³ क्योंकि बेचने वाला बिकी हुई चीज़ तक फिर न पहुँचेगा, अगरचे अभी वह ज़िन्दों के बीच हों, क्योंकि यह ख़्वाब उनके तमाम गिरोह के लिए है, एक भी न लौटेगा और न कोई बदकिरदारी से अपनी जान को कायम रखेगा। ¹⁴ नरसिंगा फूँका गया और सब कुछ तैयार है, लेकिन कोई जंग को नहीं निकलता, क्योंकि मेरा ग़ज़ब उनके तमाम गिरोह पर है। ¹⁵ बाहर तलवार है और अन्दर वबा और क़हत हैं, जो खेत में है तलवार से क़त्ल होगा, और जो शहर में है सूखा और वबा उसे निगल जाएँगे। ¹⁶ लेकिन जो उनमें से भाग जाएँगे वह बच निकलेंगे, और वादियों के कबूतरों की तरह पहाड़ों पर रहेंगे और सब के सब फ़रियाद करेंगे, हर एक अपनी बदकिरदारी की वजह से। ¹⁷ सब हाथ ढीले होंगे और सब घुटने पानी की तरह कमज़ोर हो जाएँगे। ¹⁸ वह टाट से कमर कसेंगे और खौफ़ उन पर छा जाएगा, और सब के मुँह पर शर्म होगी और उन सब के सिरो पर चन्दलापन होगा। ¹⁹ और वह अपनी चाँदी सड़कों पर फेंक देंगे और उनका सोना नापाक चीज़ की तरह होगा खुदावन्द के ग़ज़ब के दिन में उनका सोना चाँदी उनको न बचा सकेगा। उनकी जाने आसूदा न होंगी और उनके पेट न भरेँगे, क्योंकि उन्होंने उसी से ठोकर खाकर बदकिरदारी की थी। ²⁰ और उनके खूबसूरत ज़ेवर शौकत के लिए थे लेकिन उन्होंने उनसे अपनी नफ़रती मूरतें और मकरूह चीज़ें बनाई, इसलिए मैंने उनके लिए उनको नापाक चीज़ की तरह कर दिया। ²¹ और मैं उनको ग़नीमत के लिए परदेसियों के हाथ में और लूट के लिए ज़मीन के शरीरों के हाथ में सौंप दूँगा, और वह उनको नापाक करेंगे। ²² और मैं उनसे मुँह फेर लूँगा और वह मेरे ख़िल्वतखाने को नापाक करेंगे। उसमें ग़ारतगर आएँगे और उसे नापाक करेंगे। ²³ 'ज़न्जीर बना' क्योंकि मुल्क ख़ूरज़ी के गुनाहों से पुर है और शहर ज़ुल्म से भरा है। ²⁴ इसलिए मैं ग़ैर क़ौमों में से बुराई को लाऊँगा और वह उनके घरों के मालिक होंगे, और मैं ज़बरदस्तों का घमण्ड मिटाऊँगा और उनके पाक मक़ाम नापाक किए जाएँगे। ²⁵ हलाकत आती है, और वह सलामती को ढूँढ़ेंगे लेकिन न पाएँगे। ²⁶ बला पर बला आएगी और अफ़वाह पर अफ़वाह होगी, तब वह नबी से ख़्वाब की तलाश करेंगे, लेकिन शरी'अत काहिन से और मसलहत

बुजुर्गों से जाती रहेगी। ²⁷ बादशाह मातम करेगा और हाकिम पर हैरत छा जाएगी, और र'अय्यत के हाथ काँपेंगे। मैं उनके चाल चलन के मुताबिक़ उनसे सुलूक करूँगा और उनके 'आमाल के मुताबिक़ उन पर फ़तवा दूँगा, ताकि वह जानें कि खुदावन्द मैं हूँ।”

8

?????? ?? ?? ???? ???? ???? ???? ?

¹ और छठे बरस के छठे महीने की पाँचवी तारीख़ को यूँहुआ कि मैं अपने घर में बैठा था, और यहूदाह के बुजुर्ग मेरे सामने बैठे थे कि वहाँ खुदावन्द खुदा का हाथ मुझ पर ठहरा। ² तब मैंने निगाह की और क्या देखता हूँ कि एक शबीह आग की तरह नज़र आती है; उसकी कमर से नीचे तक आग और उसकी कमर से ऊपर तक जल्वा — ए — नूर ज़ाहिर हुआ जिसका रंग शैकल किए हुए पीतल की तरह था। ³ और उसने एक हाथ को शबीह की तरह बढ़ा कर मेरे सिर के बालों से मुझे पकड़ा, और रूह ने मुझे आसमान और ज़मीन के बीच बुलन्द किया और मुझे इलाही ख़्वाब में येरूशलेम में उत्तर की तरफ़ अन्दरूनी फाटक पर, जहाँ ग़ैरत की मूरत का घर था जो ग़ैरत भड़काती है ले आई। ⁴ और क्या देखता हूँ कि वहाँ इस्राईल के खुदा का जलाल, उस ख़्वाब के मुताबिक़ जो मैंने उस वादी में देखा था मौजूद है। ⁵ तब उसने मुझे फ़रमाया, कि ऐ आदमज़ाद अपनी आँखें उत्तर की तरफ़ उठा और मैंने उस तरफ़ आँखें उठाई और क्या देखता हूँ कि उत्तर की तरफ़ मज़बह के दरवाज़े पर ग़ैरत की वही मूरत दहलीज़ में है। ⁶ और उसने मुझे फिर फ़रमाया, कि “ऐ आदमज़ाद, तू उनके काम देखता है? या'नी वह मकरूहात — ए — 'अज़ीम जो बनी — इस्राईल यहाँ करते हैं, ताकि मैं अपने हैकल को छोड़ कर उससे दूर हो जाऊँ; लेकिन तू अभी इनसे भी बड़ी मकरूहात देखेगा।” ⁷ तब वह मुझे सहन के फाटक पर लाया, और मैंने नज़र की और क्या देखता हूँ कि दीवार में एक छेद है। ⁸ तब उसने मुझे फ़रमाया, कि “ऐ आदमज़ाद, दीवार खोद।” और जब मैंने दीवार को खोदा, तो एक दरवाज़ा देखा। ⁹ फिर उसने मुझे फ़रमाया, अन्दर जा, और जो नफ़रती काम वह यहाँ करते हैं देख। ¹⁰ तब मैंने अन्दर जा कर देखा। और क्या देखता हूँ कि हरनू' के सब रहने वाले कीड़ों और मकरूह जानवरों की सब सूरतें और बनी — इस्राईल के बुत चारों तरफ़ दीवार पर मुनक्क़श हैं। ¹¹ और बनी — इस्राईल के बुजुर्गों में से सत्तर शख्स उनके आगे खड़े हैं और याज़नियाह — बिन — साफ़न उनके बीच में खड़ा है, और हर एक के हाथ में एक

खुशबू दान है और खुशबू का बादल उठ रहा है। ¹² तब उसने मुझे फ़रमाया, कि 'ऐ आदमज़ाद, क्या तूने देखा कि बनी — इस्राईल के सब बुज़ुर्ग तारीकी में या'नी अपने मुनक्क़श काशानों में क्या करते हैं? क्योंकि वह कहते हैं कि खुदावन्द हम को नहीं देखता; खुदावन्द ने मुल्क को छोड़ दिया है। ¹³ और उसने मुझे यह भी फ़रमाया, कि "तू अभी इनसे भी बड़ी मकरूहात, जो वह करते हैं देखेगा।" ¹⁴ तब वह मुझे खुदावन्द के घर के उत्तरी फाटक पर लाया, और क्या देखता हूँ कि वहाँ 'औरतें बैठी तम्मूज़ पर नोहा कर रही हैं। ¹⁵ तब उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, क्या तूने यह देखा है? तू अभी इनसे भी बड़ी मकरूहात देखेगा।" ¹⁶ फिर वह मुझे खुदावन्द के घर के अन्दरूनी सहन में ले गया, और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द की हैकल के दरवाज़े पर आस्ताने और मज़बह के बीच, क़रीबन पच्चीस लोग हैं जिनकी पीठ खुदावन्द की हैकल की तरफ़ है और उनके मुँह पूरब की तरफ़ हैं; और पूरब का रुख़ करके आफ़ताब को सिज्दा कर रहे हैं। ¹⁷ तब उसने मुझे फ़रमाया, कि 'ऐ आदमज़ाद, क्या तूने यह देखा है? क्या बनी यहूदाह के नज़दीक यह छोटी सी बात है कि वह यह मकरूह काम करें जो यहाँ करते हैं क्योंकि उन्होंने तो मुल्क को जुल्म से भर दिया और फिर मुझे ग़ज़बनाक किया, और देख, वह अपनी नाक से डाली लगाते हैं। ¹⁸ फिर मैं भी क्रहर से पेश आऊँगा। मेरी आँख रि'आयत न करेगी और मैं हरगिज़ रहम न करूँगा, और अगरचे वह चिल्ला चिल्ला कर मेरे कानों में आह — व — नाला करें तो भी मैं उनकी न सुनूँगा।

9

????? ???? ???? ???? ???? ??

¹ फिर उसने बुलन्द आवाज़ से पुकार कर मेरे कानों में कहा कि, उनको जो शहर के मुन्तज़िम हैं मैं नज़दीक बुला हर एक शख्स अपना मुहलिक हथियार हाथ में लिए हो। ² और देखो छः मर्द ऊपर के फाटक के रास्ते से जो उत्तर की तरफ़ है चले आए और हर एक मर्द के हाथ में उसका ख़ुरैज़ हथियार था और उनके बीच एक आदमी कतानी लिबास पहने था और उसकी कमर पर लिखने की दवात थी तब वह अन्दर गए और पीतल के मज़बह के पास खड़े हुए। ³ और इस्राईल के खुदावन्द का जलाल करूबी पर से जिस पर वह था उठ कर घर के आस्ताना पर गया और उसने उस मर्द को जो कतानी लिबास पहने था और जिसके पास लिखने की दवात थी पुकारा। ⁴ और खुदावन्द ने उसे फ़रमाया, कि "शहर के बीच से, हाँ, येरूशलेम के बीच से गुज़र और उन लोगों की पेशानी

पर जो उन सब नफ़रती कामों की वजह से जो उसके बीच किए जाते हैं, आहें मारते और रोते हैं, निशान कर दे।" ⁵ और उसने मेरे सुनते हुए दूसरों से फ़रमाया, उसके पीछे पीछे शहर में से गुज़र करो और मारो। तुम्हारी आँखें रि'आयत न करें, और तुम रहम न करो। ⁶ तुम बूढ़ों और जवानों और लड़कियों और नन्हें बच्चों और 'औरतों को बिल्कुल मार डालो, लेकिन जिनपर निशान है उनमें से किसी के पास न जाओ; और मेरे हैकल से शुरू करो। तब उन्होंने उन बुज़ुर्गों से जो हैकल के सामने थे शुरू किया। ⁷ और उसने उनको फ़रमाया, हैकल को नापाक करो, और मक्तूलों से सहनों को भर दो। चलो, बाहर निकलो। इसलिए वह निकल गए और शहर में क़त्ल करने लगे। ⁸ और जब वह उनको क़त्ल कर रहे थे और मैं बच रहा था, तो यूँ हुआ कि मैं मुँह के बल गिरा और चिल्ला कर कहा, आह! ऐ खुदावन्द खुदा, क्या तू अपना क्रहर — ए — शदीद येरूशलेम पर नाज़िल कर के इस्राईल के सब बाक़ी लोगों को हलाक करेगा? ⁹ तब उसने मुझे फ़रमाया, कि "इस्राईल और यहूदाह के खान्दान की बदकिरदारी बहुत 'अज़ीम है, मुल्क ख़ुरैज़ी से पुर है और शहर बे इन्साफ़ी से भरा है; क्योंकि वह कहते हैं, कि 'खुदावन्द ने मुल्क को छोड़ दिया है और वह नहीं देखता। ¹⁰ फिर मेरी आँख रि'आयत न करेगी, और मैं हरगिज़ रहम न करूँगा; मैं उनकी चाल चलन का बदला उनके सिर पर लाऊँगा।" ¹¹ और देखो, उस आदमी ने जो कतानी लिबास पहने था और जिसके पास लिखने की दवात थी, यूँ क़ैफ़ियत बयान की, जैसा तूने मुझे हुक्म दिया, मैंने किया।

10

????? ? ???? ? ???? ? ???? ? ???? ? ?

¹ तब मैंने निगाह की और क्या देखता हूँ, कि उस फ़ज़ा पर जो करूबियों के सिर के ऊपर थी, एक चीज़ नीलम की तरह दिखाई दी और उसकी सूरत तख़्त की जैसी थी। ² और उसने उस आदमी को जो कतानी लिबास पहने था फ़रमाया, उन पहियों के अन्दर जा जो करूबी के नीचे हैं, और आग के अंगारे जो करूबियों के बीच हैं मुट्ठी भर कर उठा और शहर के ऊपर बिखेर दे। और वह गया और मैं देखता था। ³ जब वह शख्स अन्दर गया, तब करूबी हैकल की दहनी तरफ़ खड़े थे, और अन्दरूनी सहन बादल से भर गया। ⁴ तब खुदावन्द का जलाल करूबी पर से बुलन्द होकर हैकल के आस्ताने पर आया, और हैकल बादल से भर गई; और सहन खुदावन्द के जलाल के नूर से मा'भूर हो गया। ⁵ और करूबियों के परों की आवाज़ बाहर के सहन तक सुनाई देती थी,

जैसे क्रादिर — ए — मुतलक़ खुदा की आवाज़ जब वह कलाम करता है। ⁶ और यूँ हुआ कि जब उसने उस शख्स को, जो कतानी लिबास पहने था, हुक्म किया कि वह पहिए के अन्दर से और करुबियों के बीच से आग ले; तब वह अन्दर गया और पहिए के पास खड़ा हुआ। ⁷ और करुबियों में से एक करुबी ने अपना हाथ उस आग की तरफ़, जो करुबियों के बीच थी, बढ़ाया और आग लेकर उस शख्स के हाथों पर, जो कतानी लिबास पहने था रखी; वह लेकर बाहर चला गया। ⁸ और करुबियों के बीच उनके परो के नीचे इंसान के हाथ की तरह सूरत नज़र आई ⁹ और मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि चार पहिए करुबियों के आस पास हैं, एक करुबी के पास एक पहिया और दूसरे करुबी के पास दूसरा पहिया था; और उन पहियों का जलवा देखने में ज़बरजद की तरह था। ¹⁰ और उनकी शकल एक ही तरह की थी, जैसे पहिया पहिये के अन्दर हो। ¹¹ जब वह चलते थे तो अपनी चारों तरफ़ पर चलते थे; वह चलते हुए मुड़ते न थे, जिस तरफ़ को सिर का रुख होता था उसी तरफ़ उसके पीछे पीछे जाते थे; वह चलते हुए मुड़ते न थे। ¹² और उनके तमाम बदन और पीठ और हाथों और परो और उन पहियों में चारों तरफ़ आँखें ही आँखें थीं, या'नी उन चारों के पहियों में। ¹³ इन पहियों को मेरे सुनते हुए चर्ख कहा गया। ¹⁴ और हर एक के चार चेहरे थे: पहला चेहरा करुबी का, दूसरा इंसान का, तीसरा शेर — ए — बबर का, और चौथा उकाब का। ¹⁵ और करुबी बुलन्द हुए। यह वह जानदार था, जो मैंने नहर — ए — किबार के पास देखा था। ¹⁶ और जब करुबी चलते थे, तो पहिए भी उनके साथ — साथ चलते थे; और जब करुबियों ने अपने बाज़ू फैलाए ताकि ज़मीन से ऊपर बुलन्द हों, तो वह पहिए उनके पास से जुदा न हुए। ¹⁷ जब वह ठहरते थे, तो यह भी ठहरते थे; और जब वह बुलन्द होते थे, तो यह भी उनके साथ बुलन्द हो जाते थे; क्योंकि जानदार की रूह उनमें थी। ¹⁸ और खुदावन्द का जलाल घर के आस्ताने पर से खाना हो कर करुबियों के ऊपर ठहर गया। ¹⁹ तब करुबियों ने अपने बाज़ू फैलाए, और मेरी आँखों के सामने ज़मीन से बुलन्द हुए और चले गए; और पहिए उनके साथ साथ थे, और वह खुदावन्द के घर के पूरबी फाटक के आस्ताने पर ठहरे और इस्राईल के खुदा का जलाल उनके ऊपर जलवागर था। ²⁰ यह वह जानदार है जो मैंने इस्राईल के खुदा के नीचे नहर — ए — किबार के किनारे पर देखा था और मुझे मा'लूम था कि करुबी हैं। ²¹ हर एक के चार चेहरे थे और चार बाज़ू और उनके बाज़ुओं के नीचे इंसान के जैसा हाथ

था। ²² रही उनके चेहरों की सूरत, यह वही चेहरे थे जो मैंने नहर — ए — किबार के किनारे पर देखे थे, या'नी उनकी सूरत और वह खुद, वह सब के सब सीधे आगे ही को चले जाते थे।

11

~~~~~

<sup>1</sup> और रूह मुझ को उठा कर खुदावन्द के घर के पूरबी फाटक पर जिसका रुख पूरब की तरफ़ है ले गई, और क्या देखता हूँ कि उस फाटक के आस्ताने पर पच्चीस शख्स हैं। और मैंने उनके बीच याज़नियाह बिन अज़ूर और फ़िल्लियाह बिन बिनायाह, लोगों के हाकिमों को देखा। <sup>2</sup> और उसने मुझे फ़रमाया, कि “ऐ आदमज़ाद, यह वह लोग हैं जो इस शहर में बदकिरदारी की तदबीर और बुरी मश्वरत करते हैं। <sup>3</sup> जो कहते हैं, कि 'घर बनाना नज़दीक नहीं है, यह शहर तो देग है और हम गोश्त हैं। <sup>4</sup> इसलिए तू उनके खिलाफ़ नबुव्वत कर; ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत कर।” <sup>5</sup> और खुदावन्द की रूह मुझ पर नाज़िल हुई और उसने मुझे कहा कि खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: कि ऐ बनी — इस्राईल तुम ने यूँ कहा है, मैं तुम्हारे दिल के ख्यालात को जानता हूँ। <sup>6</sup> तुम ने इस शहर में बहुतों को क़त्ल किया, बल्कि उसकी सड़कों को मक़तूलों से भर दिया है। <sup>7</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि तुम्हारे मक़तूल जिनकी लाशें तुम ने शहर में रख छोड़ी हैं, यह वही गोश्त है और यह शहर वही देग है; लेकिन तुम इस से बाहर निकाले जाओगे। <sup>8</sup> तुम तलवार से डरे हो, और खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, कि मैं तलवार तुम पर लाऊँगा। <sup>9</sup> और मैं तुम को उस से बाहर निकालूँगा और तुम को परदेसियों के हवाले कर दूँगा, और तुम को सज़ा दूँगा। <sup>10</sup> तुम तलवार से क़त्ल होगे, इस्राईल की हदों के अन्दर मैं तुम्हारी 'अदालत करूँगा, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ। <sup>11</sup> यह शहर तुम्हारे लिए देग न होगा, न तुम इसमें का गोश्त होगे; बल्कि मैं बनी — इस्राईल की हदों के अन्दर तुम्हारा फ़ैसला करूँगा। <sup>12</sup> और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ, जिसके क़ानून पर तुम नहीं चले और जिसके हुक्मों पर तुम ने 'अमल नहीं किया; बल्कि तुम उन क़ौमों के हुक्मों पर जो तुम्हारे आस पास हैं 'अमल किया। <sup>13</sup> और जब मैं नबुव्वत कर रहा था, तो यूँ हुआ कि फ़लतियाह — बिन — बिनायाह मर गया। तब मैं मुँह के बल गिरा और बुलन्द आवाज़ से चिल्ला कर कहा, कि “ऐ खुदावन्द खुदा! क्या तू बनी — इस्राईल के बक़िये को बिल्कुल मिटा डालेगा?” <sup>14</sup> तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर

नाज़िल हुआ: <sup>15</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, तेरे भाइयों, हाँ, तेरे भाइयों या'नी तेरे कराबतियों बल्कि सब बनी — इस्राईल से, हाँ, उन सब से येरूशलेम के बाशिन्दों ने कहा है, 'खुदावन्द से दूर रहो। यह मुल्क हम को मीरास में दिया गया है। <sup>16</sup> इसलिए तू कह, 'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि हर चन्द मैंने उनको क़ौमों के बीच हाँक दिया है और ग़ैर — मुल्कों में तितर बितर किया लेकिन मैं उनके लिए थोड़ी देर तक उन मुल्कों में जहाँ जहाँ वह गए एक हैकल हूँगा। <sup>17</sup> इसलिए तू कह, 'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: मैं तुम को उम्मतों में से जमा' कर लूँगा, और उन मुल्कों में से जिनमें तुम तितर बितर हुए तुम को जमा' करूँगा और इस्राईल का मुल्क तुम को दूँगा। <sup>18</sup> और वह वहाँ आयेंगे और उसकी तमाम नफ़रती और मकरूह चीज़ें उस से दूर कर देंगे। <sup>19</sup> और मैं उनको नया दिल दूँगा और नई रूह तुम्हारे बातिन में डालूँगा, और संगीन दिल उनके जिस्म से निकाल कर दूँगा और उनको गोश्त का दिल 'इनायत करूँगा; <sup>20</sup> ताकि वह मेरे तौर तरीक़े पर चलें और मेरे हुक्मों पर 'अमल करें और उन पर 'अमल करें, और वह मेरे लोग होंगे और मैं उनका खुदा हूँगा। <sup>21</sup> लेकिन जिनका दिल अपनी नफ़रती और मकरूह चीज़ों का तालिब होकर उनकी पैरवी में है, उनके बारे में खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: कि मैं उनके चाल चलन को उन ही के सिर पर लाऊँगा। <sup>22</sup> तब करूबियों ने अपने अपने बाज़ू बलन्द किए, और पहिए उनके साथ साथ चले, और इस्राईल के खुदा का जलाल उनके ऊपर जलवागर था। <sup>23</sup> और खुदावन्द का जलाल शहर में से उठा, और शहर की पूरबी तरफ़ के पहाड़ पर जा ठहरा। <sup>24</sup> तब रूह ने मुझे उठाया और खुदा के रूह ने ख़्वाब में मुझे फिर कसदियों के मुल्क में गुलामों के पास पहुँचा दिया। और वह ख़्वाब जो मैंने देखा था मुझ से ग़ायब हो गया। <sup>25</sup> और मैंने गुलामों से खुदावन्द की वह सब बातें बयान कीं, जो उसने मुझ पर ज़ाहिर की थीं।

## 12

???? ???? ???? ???? ?? ???????

<sup>1</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ। <sup>2</sup> कि ऐ आदमज़ाद, तू एक बागी घराने के बीच रहता है, जिनकी आँखें हैं कि देखें पर वह नहीं देखते, और उनके कान हैं कि सुनें पर वह नहीं सुनते; क्योंकि वह बागी ख़ान्दान हैं। <sup>3</sup> इसलिए ऐ आदमज़ाद, सफ़र का सामान तैयार कर और दिन को उनके देखते हुए अपने मकान से ख़ाना हो, तू उनके सामने अपने मकान से दूसरे मकान को जा; मुम्किन है कि वह सोचें, अगरचे

वह बागी ख़ान्दान हैं। <sup>4</sup> और तू दिन को उनकी आँखों के सामने अपना सामान बाहर निकाल, जिस तरह नक़ल — ए — मकान के लिए सामान निकालते हैं और शाम को उनके सामने उनकी तरह जो गुलाम होकर निकल जाते हैं निकल जा। <sup>5</sup> उनकी आँखों के सामने दीवार में सूराख कर और उस रास्ते से सामान निकाल। <sup>6</sup> उनकी आँखों के सामने तू उसे अपने कान्धे पर उठा, और अन्धेरे में उसे निकाल ले जा, तू अपना चेहरा छिपा ताकि ज़मीन को न देख सके; क्योंकि मैंने तुझे बनी — इस्राईल के लिए एक निशान मुक़रर किया है। <sup>7</sup> चुनाँचे जैसा मुझे हुक्म हुआ था वैसा ही मैंने किया। मैंने दिन को अपना सामान निकाला, जैसे नक़ल — ए — मकान के लिए निकालते हैं; और शाम को मैंने अपने हाथ से दीवार में सूराख किया, मैंने अन्धेरे में उसे निकाला और उनके देखते हुए काँधे पर उठा लिया। <sup>8</sup> और सुबह को खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>9</sup> कि ऐ आदमज़ाद, क्या बनी इस्राईल ने जो बागी ख़ान्दान हैं, तुझ से नहीं पूछा, 'तू क्या करता है? <sup>10</sup> उनको जवाब दे, कि 'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि येरूशलेम के हाकिम और तमाम बनी — इस्राईल के लिए जो उसमें हैं, यह बार — ए — नबुव्वत है। <sup>11</sup> उनसे कह दे, कि 'मैं तुम्हारे लिए निशान हूँ: जैसा मैंने किया, वैसा ही उनसे सुलूक किया जाएगा। वह जिलावतन होंगे और गुलामी में जाएँगे। <sup>12</sup> और जो उनमें हाकिम हैं, वह शाम को अन्धेरे में उठ कर अपने काँधे पर सामान उठाए हुए निकल जाएगा। वह दीवार में सूराख करेंगे कि उस रास्ते से निकाल ले जाएँ। वह अपना चेहरा छिपाएगा, क्योंकि अपनी आँखों से ज़मीन को न देखेगा। <sup>13</sup> और मैं अपना जाल उस पर बिछाऊँगा और वह मेरे फन्दे में फंस जाएगा। और मैं उसे कसदियों के मुल्क में बाबुल में पहुँचाऊँगा, लेकिन वह उसे न देखेगा, अगरचे वहीं मरेगा। <sup>14</sup> और मैं उसके आस पास के सब हिमायत करने वालों और उसके सब गोलों की तमाम अतराफ़ में तितर बितर करूँगा, और मैं तलवार खींच कर उनका पीछा करूँगा। <sup>15</sup> और जब मैं उनकी क़ौम में तितर बितर और मुल्कों में तितर — बितर करूँगा, तब वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। <sup>16</sup> लेकिन मैं उनमें से कुछ को तलवार और काल से और वबा से बचा रखूँगा, ताकि वह क़ौमों के बीच जहाँ कहीं जाएँ अपने तमाम नफ़रती कामों को बयान करें, और वह मा'लूम करेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। <sup>17</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>18</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद! तू थरथराते हुए रोटी खा, और काँपते हुए फ़िक्रमन्दी से पानी पी। <sup>19</sup> और इस मुल्क

के लोगों से कह कि खुदावन्द खुदा येरूशलेम और मुल्क — ए — इस्राईल के बाशिन्दों के हक में यूँ फ़रमाता है: कि वह फ़िक्रमन्दी से रोटी खाएँगे और परेशानी से पानी पीएँगे, ताकि उसके बाशिन्दों की सितमगरी की वजह से मुल्क अपनी मा'मूरी से खाली हो जाए।<sup>20</sup> और वह बस्तियाँ जो आबाद हैं उजाड़ हो जायेंगी और मुल्क वीरान होगा और तुम जानोगे कि खुदावन्द मैं हूँ।<sup>21</sup> फिर खुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:<sup>22</sup> कि ऐ आदमज़ाद! मुल्क — ए — इस्राईल में यह क्या मिसाल जारी है, कि 'वक्त गुज़रता जाता है, और किसी ख़्वाब का कुछ अन्जाम नहीं होता'?<sup>23</sup> इसलिए उनसे कह दे, कि 'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैं इस मिसाल को ख़त्म करूँगा और फिर इसे इस्राईल में इस्ते'माल न करेंगे। बल्कि तू उनसे कह, वक्त आ गया है और हर ख़्वाब का अन्जाम करीब है।<sup>24</sup> क्योंकि आगे को बनी इस्राईल के बीच बेमतलब के ख़्वाब और खुशामद की ग़ैबदानी न होगी।<sup>25</sup> क्योंकि मैं खुदावन्द हूँ मैं कलाम करूँगा और मेरा कलाम ज़रूर पूरा होगा उसके पूरा होने में देर न होगी बल्कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि ऐ बागी ख़ान्दान मैं तुम्हारे दिनों में कलाम करके उसे पूरा करूँगा।<sup>26</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।<sup>27</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद देख बनी इस्राईल कहते हैं कि जो ख़्वाब उसने देखा है बहुत ज़मानों में ज़ाहिर होगा और वह उन दिनों की ख़बर देता है जो बहुत दूर हैं।<sup>28</sup> इसलिए उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि आगे की मेरी किसी बात को पूरा होने में देर न होगी, बल्कि खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, कि जो बात मैं कहूँगा पूरी हो जाएगी।

### 13

???? ???? ? ? ?

<sup>1</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।<sup>2</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, इस्राईल के नबी जो नबुव्वत करते हैं, उनके खिलाफ़ नबुव्वत कर और जो अपने दिल से बात बनाकर नबुव्वत करते हैं उनसे कह, 'खुदावन्द का कलाम सुनो!'<sup>3</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि बेवकूफ़ नबियों पर अफ़सोस जो अपनी ही रूह की पैरवी करते हैं और उन्होंने कुछ नहीं देखा।<sup>4</sup> ऐ इस्राईल, तेरे नबी उन लोमड़ियों की तरह हैं, जो वीरानों में रहती हैं।<sup>5</sup> तुम रुख़नों पर नहीं गए और न बनी — इस्राईल के लिए फ़सील बनाई, ताकि वह खुदावन्द के दिन जंगगाह में खड़े हों।<sup>6</sup> उन्होंने बातिल और झूठा शगुन देखा है, जो कहते हैं, कि 'खुदावन्द फ़रमाता है, अगरचे खुदावन्द ने

उनको नहीं भेजा, और लोगों को उम्मीद दिलाते हैं कि उनकी बात पूरी हो जाएगी।<sup>7</sup> क्या तुम ने बातिल ख़्वाब नहीं देखा? क्या तुम ने झूठी ग़ैबदानी नहीं की? क्योंकि तुम कहते हो कि खुदावन्द ने फ़रमाया है, अगरचे मैंने नहीं फ़रमाया।<sup>8</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: “चूँकि तुम ने झूट कहा है और बुतलान देखा, इसलिए खुदावन्द खुदा फ़रमाता है कि मैं तुम्हारा मुख़ालिफ़ हूँ।<sup>9</sup> और मेरा हाथ उन नबियों पर, जो बुतलान देखते हैं और झूठी ग़ैबदानी करते हैं, चलेगा; न वह मेरे लोगों के मजमे' में शामिल होंगे और न इस्राईल के ख़ान्दान के दफ़्तर में लिखे जाएँगे और न वह इस्राईल के मुल्क में दाख़िल होंगे, और तुम जान लोगे कि मैं खुदावन्द खुदा हूँ।<sup>10</sup> इस वजह से कि उन्होंने मेरे लोगों को यह कह कर वरग़लाया है कि सलामती है हालाँकि सलामती नहीं; जब कोई दीवार बनाता है, तो वह उस पर कच्चा गारा लगाते हैं।<sup>11</sup> तू उनसे जो उस पर गारा लगाते हैं कह, वह गिर जाएगी क्योंकि मूसलाधार बारिश होगी और बड़े बड़े ओले पड़ेंगे और आँधी उसे गिरा देगी।<sup>12</sup> और जब वह दीवार गिरेगी तो क्या लोग तुम से न पूछेंगे, कि 'वह गारा कहाँ है, जो तुम ने उस पर की थी?'”<sup>13</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैं अपने ग़ज़ब के तूफ़ान से उसे तोड़ दूँगा, और मेरे क्रहर से झमाझम में वह बरसेगा और मेरे क्रहर के ओले पड़ेंगे ताकि उसे हलाक करें।<sup>14</sup> इसलिए मैं उस दीवार को जिस पर तुम ने कच्चा गारा किया है तोड़ डालूँगा और ज़मीन पर गिराऊँगा, यहाँ तक कि उसकी बुनियाद ज़ाहिर हो जाएगी। हाँ, वह गिरेगी और तुम उसी में हलाक होगे, और जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ।<sup>15</sup> मैं अपना क्रहर उस दीवार पर और उन पर जिन्होंने उस पर कच्चा गारा किया है पूरा करूँगा, और तब मैं तुम से कहूँगा, कि न दीवार रही और न वह रहे जिन्होंने उस पर गारा किया,<sup>16</sup> या'नी इस्राईल के नबी जो येरूशलेम के बारे में नबुव्वत करते हैं, और उसकी सलामती के ख़्वाब देखते हैं हालाँकि सलामती नहीं है खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।<sup>17</sup> “और ऐ आदमज़ाद, तू अपनी क़ौम की बेटियों की तरफ़, जो अपने दिल बात बना कर नबुव्वत करती हैं मुतवज्जह हो कर उनके खिलाफ़ नबुव्वत कर,<sup>18</sup> और कह खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि अफ़सोस तुम पर जो सब कोहनियों के नीचे की गद्दी सीते हो, और हर एक क्रद के मुवाफ़िक़ सिर के लिए बुर्का' बनाती हो कि जानों को शिकार करो! क्या तुम मेरे लोगों की जानों का शिकार करोगी और अपनी जान बचाओगी?<sup>19</sup> और तुम ने मुट्ठी भर जौ के लिए और रोटी के टुकड़ों



के लिए मुझे मेरे लोगों में नापाक ठहराया, ताकि तुम उन जानों को मार डालो जो मरने के लायक नहीं, और उनको ज़िन्दा रखो जो ज़िन्दा रहने के लायक नहीं हैं; क्योंकि तुम मेरे लोगों से जो झूट सुनते हैं झूट बोलती हो। <sup>20</sup> 'फिर खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देखो, मैं तुम्हारी गद्दियों का दुश्मन हूँ जिनसे तुम जानों को परिन्दों की तरह शिकार करती हो, और मैं उनको तुम्हारी कोहनियों के नीचे से फाड़ डालूँगा, और उन जानों को जिनको तुम परिन्दों की तरह शिकार करती हो आज़ाद कर दूँगा। <sup>21</sup> मैं तुम्हारे बुरकों को भी फाड़ूँगा और अपने लोगों को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊँगा, और फिर कभी तुम्हारा बस न चलेगा कि उनको शिकार करो, और तुम जानोगी कि मैं खुदावन्द हूँ। <sup>22</sup> इसलिए कि तुम ने झूट बोलकर सादिक के दिल को उदास किया, जिसको मैंने गमगीन नहीं किया; और शरीर की मदद की है, ताकि वह अपनी जान बचाने के लिए अपनी बुरी चाल चलन से बाज़ न आए। <sup>23</sup> इसलिए तुम आगे को न बतालत देखोगी और न ग़ैबगोई करोगी, क्योंकि मैं अपने लोगों को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊँगा, तब तुम जानोगी कि खुदावन्द मैं हूँ।”

## 14

22222222 22 22222222 22 222 22222222  
2222

<sup>1</sup> फिर इस्राईल के बुज़ुर्गों में से चन्द आदमी मेरे पास आए और मेरे सामने बैठ गए। <sup>2</sup> तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ <sup>3</sup> कि ऐ आदमज़ाद, इन मर्दों ने अपने बुतों को अपने दिल में नसब किया है, और अपनी ठोकर खिलाने वाली बदकिरदारी को अपने सामने रखवा है; क्या ऐसे लोग मुझ से कुछ दरियाफ़्त कर सकते हैं? <sup>4</sup> इसलिए तू उनसे बातें कर और उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: बनी इस्राईल में से हर एक जो अपने बुतों को अपने दिल में नसब करता है, और अपनी ठोकर खिलाने वाली बदकिरदारी को अपने सामने रखता है और नबी के पास आता है, मैं खुदावन्द उसके बुतों की कसरत के मुताबिक़ उसको जवाब दूँगा; <sup>5</sup> ताकि मैं बनी — इस्राईल को उन्हीं के ख्यालात में पकड़ें, क्योंकि वह सब के सब अपने बुतों की वजह से मुझ से दूर हो गए हैं। <sup>6</sup> इसलिए तू बनी — इस्राईल से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: तोबा करो और अपने बुतों से बाज़ आओ, और अपनी तमाम मकरूहात से मुँह मोड़ो। <sup>7</sup> क्योंकि हर एक जो बनी — इस्राईल में से या उन बेगानों में से जो इस्राईल में रहते हैं, मुझ से जुदा हो जाता है और अपने दिल में अपने बुत को नसब करता है, और अपनी

ठोकर खिलाने वाली बदकिरदारी को अपने सामने रखता है, और नबी के पास आता है कि उसके ज़रिए' मुझ से दरियाफ़्त करे, उसको मैं खुदावन्द खुद ही जवाब दूँगा। <sup>8</sup> और मेरा चेहरा उसके खिलाफ़ होगा और मैं निशान ठहराऊँगा और उसको हैरत की वजह और अन्गुशतनुमा और जरब — उल — मिसाल बनाऊँगा और अपने लोगों में से काट डालूँगा; और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ। <sup>9</sup> और अगर नबी धोका खाकर कुछ कहे, तो मैं खुदावन्द ने उस नबी को धोका दिया, और मैं अपना हाथ उस पर चलाऊँगा और उसे अपने इस्राईली लोगों में से हलाक कर दूँगा। <sup>10</sup> और वह अपनी बदकिरदारी की सज़ा को बर्दाश्त करेंगे, नबी की बदकिरदारी की सज़ा वैसी ही होगी, जैसी सवाल करने वाले की बदकिरदारी की — <sup>11</sup> ताकि बनी — इस्राईल फिर मुझ से भटक न जाएँ, और अपनी सब ख़ताओं से फिर अपने आप को नापाक न करें; बल्कि: खुदा वन्द खुदा फ़रमाता है, कि वह मेरे लोग हों और मैं उनका खुदा हूँ। <sup>12</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>13</sup> कि ऐ आदमज़ाद, जब कोई मुल्क सख़्त ख़ता करके मेरा गुनाहगार हो, और मैं अपना हाथ उस पर चलाऊँ और उसकी रोटी का 'असा तोड़ डालें, और उसमें सूखा भेजें और उसके इंसान और हैवान को हलाक करूँ। <sup>14</sup> तो अगरचे यह तीन शख्स, नूह और दानीएल और अय्यूब, उसमें मौजूद हों तोभी खुदावन्द फ़रमाता है, वह अपनी सदाक़त से सिर्फ़ अपनी ही जान बचाएँगे। <sup>15</sup> अगर मैं किसी मुल्क में मुहलिक दरिन्दे भेजे कि उसमें ग़श्त करके उसे तबाह करे, और वह यहाँ तक वीरान हो जाए कि दरिन्दों की वजह से कोई उसमें से गुज़र न सके, <sup>16</sup> तो खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम, अगरचे यह तीन शख्स उसमें हों तोभी वह न बेटों को बचा सकेंगे न बेटियों को; सिर्फ़ वह खुद ही बचेंगे और मुल्क वीरान हो जाएगा। <sup>17</sup> “या अगर मैं उस मुल्क पर तलवार भेजूँ और कहूँ कि ऐ तलवार मुल्क में गुज़र कर और मैं उसके इंसान और हैवान को काट डालें, <sup>18</sup> तो खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम अगरचे यह तीन शख्स उसमें हों, तोभी न बेटों को बचा सकेंगे न बेटियों को, बल्कि सिर्फ़ वह खुद ही बच जाएँगे। <sup>19</sup> या अगर मैं उस मुल्क में वबा भेजूँ और खूरज़ी करा कर अपना क्रहर उस पर नाज़िल' करूँ कि वहाँ के इंसान और हैवान को काट डालें, <sup>20</sup> अगरचे नूह और दानीएल और अय्यूब उसमें हों तो भी खुदावन्द खुदा फ़रमाता है मुझे अपनी हयात की क़सम वह न बेटे को बचा सकेंगे न बेटी को, बल्कि अपनी सदाक़त से सिर्फ़ अपनी ही जान बचाएँगे। <sup>21</sup> फिर खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: जब मैं अपनी

चार बड़ी बलाएँ, या'नी तलवार और सूखा और मुहलिक दरिन्दे और वबा येरुशलेम पर भेजूँ कि उसके इंसान और हैवान को काट डालें, तो क्या हाल होगा? 22 तोभी वहाँ थोड़े से बेटे — बेटियाँ बच रहेंगे जो निकालकर तुम्हारे पास पहुँचाए जाएँगे, और तुम उनके चाल चलन और उनके कामों को देखकर उस आफ़त के बारे में, जो मैंने येरुशलेम पर भेजी और उन सब आफ़तों के बारे में जो मैं उस पर लाया हूँ तसल्ली पाओगे। 23 और वह भी जब तुम उनके चाल चलन को और उनके कामों को देखोगे, तुम्हारी तसल्ली का ज़रिया' होंगे और तुम जानोगे कि जो कुछ मैंने उसमें किया है बे वजह नहीं किया, खुदावन्द फ़रमाता है।”

## 15

??????-?? ???????

1 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: 2 कि 'ऐ आदमज़ाद, क्या ताक की लकड़ी और दरख़्तों की लकड़ी से, या'नी शाख — ए — अंगूर जंगल के दरख़्तों से कुछ बेहतर है? 3 क्या उसकी लकड़ी कोई लेता है कि उससे कुछ बनाए, या लोग उसकी खूंटियाँ बना लेते हैं कि उन पर बर्तन लटकाएँ? 4 देख, वह आग में ईन्धन के लिए डाली जाती है, जब आग उसके दोनों सिरों को खा गई और बीच के हिस्से को भसम कर चुकी, तो क्या वह किसी काम की है? 5 देख, जब वह सही थी तो किसी काम की न थी, और जब आग से जल गई तो किस काम की है? 6 फिर खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: जिस तरह मैंने जंगल के दरख़्तों में से अंगूर के दरख़्त को आग का ईन्धन बनाया, उसी तरह येरुशलेम के बाशिन्दों को बनाऊँगा। 7 और मेरा चेहरा उनके खिलाफ़ होगा, वह आग से निकल भागेंगे पर आग उनको भसम करेगी; और जब मेरा चेहरा उनके खिलाफ़ होगा, तो तुम जानोगे कि खुदावन्द मैं हूँ। 8 और मैं मुल्क को उजाड़ डालूँगा, इसलिए कि उन्होंने बड़ी बेवफ़ाई की है, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

## 16

??????-?? ???????

1 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: 2 कि ऐ आदमज़ाद! येरुशलेम को उसके नफ़रती कामों से आगाह कर, 3 और कह, खुदावन्द खुदा येरुशलेम से यूँ फ़रमाता है: तेरी विलादत और तेरी पैदाइश कनान की सरज़मीन की है; तेरा बाप अमूरी था और तेरी माँ हित्ती थी। 4 और तेरी पैदाइश का हाल यूँ है कि जिस दिन तू पैदा हुई तेरी नाफ़ काटी न गई, और न सफ़ाई

के लिए तुझे पानी से गुस्ल मिला, और न तुझ पर नमक मला गया, और तू कपड़ों में लपेटी न गई। 5 किसी की आँख ने तुझ पर रहम न किया कि तेरे लिए यह काम करे और तुझ पर मेहरबानी दिखाए बल्कि तू अपनी विलादत के दिन बाहर मैदान में फेंकी गई, क्योंकि तुझ से नफ़रत रखते थे। 6 तब मैंने तुझ पर गुज़र किया और तुझे तेरे ही खून में लोटती देखा, और मैंने तुझे जब तू अपने खून में आगिश्ता थी कहा, 'जीती रह! हाँ, मैंने तुझ खून आलूदा से कहा, 'जीती रह! 7 मैंने तुझे चमन के शगूफ़ों की तरह हज़ार चन्द बढ़ाया, इसलिए तू बढ़ी, और कमाल और जमाल को पहुँची तेरी छातियाँ उठीं और तेरी ज़ुल्फें बढ़ीं लेकिन तू नंगी और बरहना थी। 8 फिर मैंने तेरी तरफ़ गुज़र किया और तुझ पर नज़र की, और क्या देखता हूँ कि तू 'इश्क़ अंगेज़ उम्र को पहुँच गई है; फिर मैंने अपना दामन तुझ पर फैलाया और तेरी बरहनगी को छिपाया, और क्रसम खाकर तुझ से 'अहद बाँधा खुदावन्द खुदा फ़रमाता है और तू मेरी हो गई। 9 फिर मैंने तुझे पानी से गुस्ल दिया, और तेरा खून बिल्कुल धो डाला और तुझ पर 'इत्र मला। 10 और मैंने तुझे ज़र — दोज़ लिबास से मुलब्स किया, और तुख़स की खाल की जूती पहनाई, नफ़ीस कतान से तेरा कमरबन्द बनाया और तुझे सरासर रेशम से मुलब्स किया। 11 मैंने तुझे ज़ेवर से आरास्ता किया, तेरे हाथों में कंगन पहनाए और तेरे गले में तौक़ डाला। 12 और मैंने तेरी नाक में नथ और तेरे कानों में बालियाँ पहनाई, और एक खूबसूरत ताज़ तेरे सिर पर रखवा। 13 और तू सोने — चाँदी से आरास्ता हुई, और तेरी पोशाक कतानी और रेशमी और चिकन — दोज़ी की थी; और तू मैदा और शहद और चिकनाई खाती थी, और तू बहुत खूबसूरत और इक़बालमन्द मलिका हो गई। 14 और क़ौम — ए — 'आलम में तेरी खूबसूरती की शोहरत फैल गई, क्योंकि, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, कि तू मेरे उस जलाल से जो मैंने तुझे बख़्शा कामिल हो गई थी। 15 लेकिन तूने अपनी खूबसूरती पर भरोसा किया और अपनी शोहरत के वसीले से बदकारी करने लगी, और हर एक के साथ जिसका तेरी तरफ़ गुज़र हुआ खूब फ़ाहिशा बनी और उसी की हो गई। 16 तूने अपनी पोशाक से अपने ऊँचे मक़ाम मुनक्क़श और आरास्ता किए, और उन पर ऐसी बदकारी की, कि न कभी हुई और न होगी। 17 और तूने अपने सोने — चाँदी के नफ़ीस ज़ेवरों से जो मैंने तुझे दिए थे, अपने लिए मदों की मूरतें बनाई और उनसे बदकारी की। 18 और अपनी ज़र — दोज़ पोशाकों से

उनको मुलब्वस किया, और मेरा 'इतर और खुशबू उनके सामने रखवा। 19 और मेरा खाना जो मैंने तुझे दिया, या'नी मैदा और चिकनाई और शहद जो मैं तुझे खिलाता था, तूने उनके सामने खुशबू के लिए रखवा: खुदावन्द खुदा फ़रमाता है कि यूँ ही हुआ। 20 और तूने अपने बेटों और अपनी बेटियों को, जिनको तूने मेरे लिए पैदा किया लेकर उनके आगे कुर्बान किया, ताकि वह उनको खा जाएँ, क्या तेरी बदकारी कोई छोटी बात थी, 21 कि तूने मेरे बच्चों को भी ज़बह किया और उनको बुतों के लिए आग के हवाले किया? 22 और तूने अपनी तमाम मकरूहात और बदकारी में अपने बचपन के दिनों को, जब कि तू नंगी और बरहना अपने खून में लोटती थी, कभी याद न किया। 23 और खुदावन्द खुदा फ़रमाता है कि अपनी इस सारी बदकारी के 'अलावा अफ़सोस! तुझ पर अफ़सोस! 24 तूने अपने लिए गुम्बद बनाया और हर एक बाज़ार में ऊँचा मक़ाम तैयार किया। 25 तूने रास्ते के हर कोने पर अपना ऊँचा मक़ाम ता'मीर किया, और अपनी खूबसूरती को नफ़रत अंगेज़ किया, और हर एक राह गुज़र के लिए अपने पाँव पसारें और बदकारी में तरक्की की। 26 तूने अहल — ए — मिस्र और अपने पड़ोसियों से जो बड़े क़दआवर हैं बदकारी की और अपनी बदकारी की ज़्यादती से मुझे ग़ज़बनाक किया। 27 फिर देख, मैंने अपना हाथ तुझ पर चलाया और तेरे वज़ीफ़े को कम कर दिया, और तुझे तेरी बदख़्वाह फ़िलिस्तिनियों की बेटियों के क़ाबू में कर दिया जो तेरी ख़राब चाल चलन से शर्मिन्दा होती थीं। 28 फिर तूने अहल — ए — असूर से बदकारी की, क्योंकि तू सेर न हो सकती थी; हाँ, तूने उन से भी बदकारी की लेकिन तोभी तू आसूदा न हुई। 29 और तूने मुल्क — ए — कन'आन से कसदियों के मुल्क तक अपनी बदकारी को फैलाया, लेकिन इस से भी सेर न हुई। 30 खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, तेरा दिल कैसा बे — इस्लियार है कि तू यह सब कुछ करती है, जो बेलगाम फ़ाहिशा 'औरत का काम है, 31 इसलिए कि तू हर एक सड़क के सिरे पर अपना गुम्बद बनाती है, और हर एक बाज़ार में अपना ऊँचा मक़ाम तैयार करती है, और तू कस्बी की तरह नहीं क्योंकि तू उजरत लेना बेकार जानती है। 32 बल्कि बदकार बीवी की तरह है, जो अपने शौहर के बदले ग़ैरों को कुबूल करती है। 33 लोग सब कस्बियों को हदिए देते हैं; लेकिन तू अपने यारों को हदिए और तोहफ़े देती है, ताकि वह चारों तरफ़ से तेरे पास आएँ और तेरे साथ बदकारी करें। 34 और तू बदकारी में और 'औरतों की तरह नहीं, क्योंकि बदकारी के लिए तेरे पीछे कोई नहीं आता। तू उजरत नहीं लेती बल्कि खुद

उजरत देती है, इसलिए तू अनोखी है। 35 इसलिए ऐ बदकार, तू खुदावन्द का कलाम सुन, 36 खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि तेरी नापाकी बह निकली और तेरी बरहनगी तेरी बदकारी के ज़रिए' जो तूने अपने यारों से की, और तेरे सब नफ़रती बुतों की वजह से और तेरे बच्चों के खून की वजह से जो तूने उनके आगे पेश किया, ज़ाहिर हो गई। 37 इसलिए देख, मैं तेरे सब यारों को तू लज़ीज़ थी, और उन सब को जिनको तू चाहती थी और उन सबको जिनसे तू कीना रखती है जमा' करूँगा; मैं उनको चारों तरफ़ से तेरी मुखालिफ़त पर जमा' करूँगा और उनके आगे तेरी बरहनगी खोल दूँगा ताकि वह तेरी तमाम बरहनगी देखें। 38 और मैं तेरी ऐसी 'अदालत करूँगा जैसी बेवफ़ा और खूनी बीवी की और मैं ग़ज़ब और ग़ैरत की मौत तुझ पर लाऊँगा। 39 और मैं तुझे उनके हवाले कर दूँगा, और वह तेरे गुम्बद और ऊँचे मक़ामों को मिस्मार करेंगे और तेरे कपड़े उतारेंगे और तेरे खुशनुमा ज़ेवर छीन लेंगे, और तुझे नंगी और बरहना छोड़ जाएँगे। 40 वह तुझ पर एक हुज़ूम चढ़ा लाएँगे, और तुझे संगसार करेंगे और अपनी तलवारों से तुझे छेद डालेंगे। 41 और वह तेरे घर आग से जलाएँगे और बहुत सी 'औरतों के सामने तुझे सज़ा देंगे, और मैं तुझे बदकारी से रोक दूँगा और तू फिर उजरत न देगी। 42 तब मेरा क़हर तुझ पर धीमा हो जाएगा, और मेरी ग़ैरत तुझ से जाती रहेगी; और मैं तस्कीन पाऊँगा और फिर ग़ज़बनाक न हूँगा। 43 चूँकि तूने अपने बचपन के दिनों को याद न किया, और इन सब बातों से मुझ को फ़रोख़्त किया, इसलिए खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, देख, मैं तेरी बदराही का नतीजा तेरे सिर पर लाऊँगा और तू आगे को अपने सब घिनौने कामों के 'अलावा ऐसी बदज़ाती नहीं कर सकेगी। 44 देख, सब मिसाल कहने वाले तेरे बारे में यह मिसाल कहेंगे, कि 'जैसी माँ, वैसी बेटी। 45 तू अपनी उस माँ की बेटी है जो अपने शौहर और अपने बच्चों से घिन खाती थी, और तू अपनी उन बहनों की बहन है जो अपने शौहरों और अपने बच्चों से नफ़रत रखती थीं; तेरी माँ हिक्ती और तेरा बाप अमूरी था। 46 और तेरी बड़ी बहन सामरिया है जो तेरी बाईं तरफ़ रहती है, वह और उसकी बेटियाँ, और तेरी छोटी बहन जो तेरी दहनी तरफ़ रहती हैं, सद्म और उसकी बेटियाँ हैं। 47 लेकिन तू सिर्फ़ उनकी राह पर नहीं चली और सिर्फ़ उन ही के जैसे घिनौने काम नहीं किए, क्योंकि यह तो अगरचे छोटी बात थी, बल्कि तू अपनी तमाम चाल चलन में उनसे बदतर हो गई। 48 खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम कि तेरी बहन सद्म

ने ऐसा नहीं किया, न उसने न उसकी बेटियों ने जैसा तूने और तेरी बेटियों ने किया है। <sup>49</sup> देख, तेरी बहन सदूम की तक्रसीर यह थी, गुरूर और रोटी की सेरी और राहत की कसरत उसमें और उसकी बेटियों में थी; उसने गरीब और मोहताज की दस्तगीरी न की। <sup>50</sup> वह मगरूर थी और उन्होंने मेरे सामने घिनौने काम किए, इसलिए जब मैंने देखा तो उनको उखाड़ फेंका। <sup>51</sup> और सामरिया ने तेरे गुनाहों के आधे भी नहीं किए, तूने उनके बदले अपनी मकरूहात को फ़िरावान किया है, और तूने अपनी इन मकरूहात से अपनी बहनों को बेकुसूर ठहराया है। <sup>52</sup> फिर तू खुद जो अपनी बहनों को मुजरिम ठहराती है, इन गुनाहों की वजह से जो तूने किए जो उनके गुनाहों से ज्यादा नफ़रतअंगेज़ हैं, मलामत उठा; वह तुझ से ज्यादा बेकुसूर हैं। इसलिए तू भी रूस्वा हो और शर्म खा, क्योंकि तूने अपनी बहनों को बेकुसूर ठहराया है। <sup>53</sup> 'और मैं उनकी गुलामी को बदल दूँगा, या'नी सदूम और उसकी बेटियों की गुलामी को और सामरिया और उसकी बेटियों की गुलामी की, और उनके बीच तेरे गुलामों की गुलामी को, <sup>54</sup> ताकि तू अपनी रूस्वाई उठाए और अपने सब कामों से शर्मिदा हो, क्योंकि तू उनके लिए तसल्ली के ज़रिए' है। <sup>55</sup> तेरी बहनें सदूम और सामरिया, अपनी अपनी बेटियों के साथ अपनी पहली हालत पर बहाल हो जाएँगी, और तू और तेरी बेटियाँ अपनी पहली हालत पर बहाल हो जाओगी। <sup>56</sup> तू अपने गुरूर के दिनों में, अपनी बहन सदूम का नाम तक ज़बान पर न लाती थी। <sup>57</sup> उससे पहले कि तेरी शरारत फ़ाश हुई, जब अराम की बेटियों ने और उन सब ने जो उनके आस — पास थीं तुझे मलामत की, और फ़िलिस्तियों की बेटियों ने चारों तरफ़ से तेरी हिकारत की। <sup>58</sup> खुदावन्द फ़रमाता है, तूने अपनी बदज़ाती और घिनौने कामों की सज़ा पाई। <sup>59</sup> "क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैं तुझ से जैसा तूने किया वैसा ही सुलूक करूँगा, इसलिए कि तूने क़सम को बेकार जाना और 'अहद शिकनी की। <sup>60</sup> लेकिन मैं अपने उस 'अहद को जो मैंने तेरी जवानी के दिनों में तेरे साथ बाँधा, याद रखूँगा और हमेशा का 'अहद तेरे साथ क़ायम करूँगा। <sup>61</sup> और जब तू अपनी बड़ी और छोटी बहनों को कुबूल करेगी, तब तू अपनी राहों को याद करके शर्मिदा होगी और मैं उनको तुझे दूँगा कि तेरी बेटियाँ हों, लेकिन यह तेरे 'अहद के मुताबिक़ नहीं। <sup>62</sup> और मैं अपना 'अहद तेरे साथ क़ायम करूँगा, और तू जानेगी कि खुदावन्द मैं हूँ। <sup>63</sup> ताकि तू याद करे और शर्मिदा हो और शर्म के मारे फिर कभी मुँह न खोले, जब कि मैं सब कुछ जो तूने किया मु'आफ़ कर दूँ, खुदावन्द

खुदा फ़रमाता है।"

## 17

?? ???? ? ? ? ? ? ?

<sup>1</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ। <sup>2</sup> "कि ऐ आदमज़ाद, एक पहली निकाल और अहल — ए — इस्राईल से एक मिसाल बयान कर, <sup>3</sup> और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: एक बड़ा उकाब जो बड़े बाज़ू और लम्बे पर रखता था, अपने रंगा — रंग के बाल — ओ — पर में छिपा हुआ लुबनान में आया, और उसने देवदार की चोटी तोड़ ली। <sup>4</sup> वह सब से ऊँची डाली तोड़ कर सौदागरी के मुल्क में ले गया, और सौदागरों के शहर में उसे लगाया। <sup>5</sup> और वह उस सर — ज़मीन में से बीज ले गया और उसे ज़रखेज़ ज़मीन में बोया; उसने उसे आब — ए — फ़िरावाँ के किनारे, बेद के दरख्त की तरह लगाया। <sup>6</sup> और वह उगा और अंगूर का एक पस्त — क़द शाख़दार दरख्त हो गया और उसकी शाखें उसकी तरफ़ झुकी थीं, और उसकी जड़ें उसके नीचे थीं, चुनाँचे वह अंगूर का एक दरख्त हुआ; उसकी शाखें निकलीं और उसकी कोपलें बढ़ीं <sup>7</sup> 'और एक और बड़ा 'उकाब था, जिसके बाज़ू बड़े बड़े और पर — ओ — बाल बहुत थे, और इस ताक ने अपनी जड़ें उसकी तरफ़ झुकाई और अपनी क्यारियों से अपनी शाखें उसकी तरफ़ बढ़ाई ताकि वह उसे सींचे। <sup>8</sup> यह आब — ए — फ़िरावाँ के किनारे ज़रखेज़ ज़मीन में लगाई गई थी, ताकि उसकी शाखें निकलें और इसमें फल लगें और यह नफ़ीस ताक हो। <sup>9</sup> तू कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि क्या यह कामयाब होगी? क्या वह इसको उखाड़ न डालेगा और इसका फल न तोड़ डालेगा कि यह खुशक हो जाए, और इसके सब ताज़ा पत्ते मुरझा जाएँ? इसे जड़ से उखाड़ने के लिए बहुत ताक़त और बहुत से आदमियों की ज़रूरत न होगी। <sup>10</sup> देख, यह लगाई तो गई, पर क्या यह कामयाब होगी? क्या यह पूरबी हवा लगते ही बिल्कुल सूख न जाएगी? यह अपनी क्यारियों ही में पज़मुर्दा हो जाएगी।" <sup>11</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ <sup>12</sup> इस बागी खानदान से कह, क्या तुम इन बातों का मतलब नहीं जानते? इनसे कह, देखो, शाह — ए — बाबुल ने येरूशलेम पर चढ़ाई की और उसके बादशाह को और उसके 'हाकिमों को गुलाम करके अपने साथ बाबुल को ले गया। <sup>13</sup> और उसने शाही नसल में से एक को लिया और उसके साथ 'अहद बाँधा और उससे क़सम ली और मुल्क के उहदे दारों को भी ले गया, <sup>14</sup> ताकि वह मम्लकत पस्त हो जाए और फिर सिर न उठा सके, बल्कि उसके 'अहद को क़ायम रखने से क़ायम रहे। <sup>15</sup> लेकिन



उसने बहुत से आदमी और घोड़े लेने के लिए मिस्र में कासिद भेज कर उससे शरकशी की क्या वह कामयाब होगा क्या ऐसे काम करने वाला बच सकता है क्या वह 'अहद शिकनी करके बच जाएगा। <sup>16</sup> खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम, वह उसी जगह जहाँ उस बादशाह का घर है जिसने उसे बादशाह बनाया और जिसकी क़सम को उसने बेकार जाना और जिसका 'अहद उसने तोड़ा, या'नी बाबुल में उसी के पास मरेगा। <sup>17</sup> और फिर 'औन अपने बड़े लश्कर और बहुत से लोगों को लेकर लड़ाई में उसके साथ शरीक न होगा, जब दमदमा बाँधते हों और बुर्ज बनाते हों कि बहुत से लोगों को क़त्ल करें। <sup>18</sup> चूँकि उसने क़सम को बेकार जाना और उस 'अहद को तोड़ा, और हाथ पर हाथ मार कर भी यह सब कुछ किया, इसलिए वह बच न सकेगा। <sup>19</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा यँ फ़रमाता है: कि मुझे अपनी हयात की क़सम वह मेरी ही क़सम है, जिसको उसने बेकार जाना और वह मेरा ही 'अहद है जो उसने तोड़ा; मैं जरूर यह उसके सिर पर लाऊँगा। <sup>20</sup> और मैं अपना जाल उस पर फैलाऊँगा और वह मेरे फन्दे में पकड़ा जाएगा, और मैं उसे बाबुल को ले आऊँगा, और जो मेरा गुनाह उसने किया है उसके बारे में वहाँ उससे हुज्जत करूँगा। <sup>21</sup> और उसके लश्कर के सब फ़रारी तलवार से क़त्ल होंगे, और जो बच रहेंगे वह चारों तरफ़ तितर बितर हो जाएँगे; और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द ने यह फ़रमाया है। <sup>22</sup> खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: "मैं भी देवदार की बुलन्द चोटी लूँगा और उसे लगाऊँगा, फिर उसकी नर्म शाखों में से एक कोपल काट लूँगा और उसे एक ऊँचे और बुलन्द पहाड़ पर लगाऊँगा। <sup>23</sup> मैं उसे इस्राईल के ऊँचे पहाड़ पर लगाऊँगा, और वह शाखें निकालेगा और फल लाएगा और 'आलीशान देवदार होगा। और हर किस्म के परिन्दे उसके नीचे बसेंगे, वह उसकी डालियों के साये में बसेरा करेंगे। <sup>24</sup> और मैदान के सब दरख्त जानेंगे कि मैं खुदावन्द ने बड़े दरख्त को पस्त किया और छोटे दरख्त को बुलन्द किया; हरे दरख्त को सुखा दिया और सूखे दरख्त को हरा किया; मैं खुदावन्द ने फ़रमाया और कर दिखाया।"

## 18

22 222 22222 22 22222222

<sup>1</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>2</sup> कि तुम इस्राईल के मुल्क के हक़ में क्यूँ यह मिसाल कहते हो, कि 'बाप — दादा ने कच्चे अँगूर खाए और औलाद के दाँत खट्टे हुए'? <sup>3</sup> खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम कि तुम फिर इस्राईल

में यह मिसाल न कहोगे। <sup>4</sup> देख, सब जाने मेरी हैं, जैसी बाप की जान वैसी ही बेटे की जान भी मेरी है; जो जान गुनाह करती है वही मरेगी। <sup>5</sup> 'लेकिन जो इंसान सादिक है, और उसके काम 'अदालत और इन्साफ़ के मुताबिक़ हैं। <sup>6</sup> जिसने बुतों की कुर्बानी से नहीं खाया, और बनी — इस्राईल के बुतों की तरफ़ अपनी आँखें नहीं उठाई; और अपने पड़ोसी की बीवी को नापाक नहीं किया, और 'औरत की नापाकी के वक़्त उसके पास नहीं गया, <sup>7</sup> और किसी पर सितम नहीं किया, और क़र्ज़दार का गिरवी वापस कर दिया और जुल्म से कुछ छीन नहीं लिया; भूकों को अपनी रोटी खिलाई और नंगों को कपड़ा पहनाया; <sup>8</sup> सूद पर लेन — देन नहीं किया, बदकिरदारी से दस्तबरदार हुआ और लोगों में सच्चा इन्साफ़ किया; <sup>9</sup> मेरे क़ानून पर चला और मेरे हुक्मों पर 'अमल किया, ताकि रास्ती से मु'आमिला करे; वह सादिक़ है, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा। <sup>10</sup> 'लेकिन अगर उसके यहाँ बेटा पैदा हो, जो राहज़नी या ख़ूरजी करे और इन गुनाहों में से कोई गुनाह करे, <sup>11</sup> और इन फ़राइज़ को बजा न लाए, बल्कि बुतों की कुर्बानी से खाए और अपने पड़ोसी की बीवी को नापाक करे; <sup>12</sup> ग़रीब और मोहताज पर सितम करे, जुल्म करके छीन ले, गिरवी वापस न दे, और बुतों की तरफ़ अपनी आँखें उठाये और घिनौने काम करे; <sup>13</sup> सूद पर लेन देन करे, तो क्या वह ज़िन्दा रहेगा? वह ज़िन्दा न रहेगा, उसने यह सब नफ़रती काम किए हैं; वह यक़ीनन मरेगा, उसका खून उसी पर होगा। <sup>14</sup> लेकिन अगर उसके यहाँ ऐसा बेटा पैदा हो, जो उन तमाम गुनाहों को जो उसका बाप करता है देखे और ख़ौफ़ खाकर उसके से काम न करे <sup>15</sup> और बुतों की कुर्बानी से न खाए, और बनी — इस्राईल के बुतों की तरफ़ अपनी आँखें न उठाए और अपने पड़ोसी की बीवी को नापाक न करे; <sup>16</sup> और किसी पर सितम न करे, गिरवी न ले, और जुल्म करके कुछ छीन न ले, भूके को अपनी रोटी खिलाए और नंगे को कपड़े पहनाए; <sup>17</sup> ग़रीब से दस्तबरदार हो, और सूद पर लेन — देन न करे, लेकिन मेरे हुक्मों पर 'अमल करे और मेरे क़ानून पर चले, वह अपने बाप के गुनाहों के लिए न मरेगा; वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा। <sup>18</sup> लेकिन उसका बाप, क्यूँकि उसने बेरहमी से सितम किया और अपने भाई को जुल्म से लूटा, और अपने लोगों के बीच बुरे काम किए; इसलिए वह अपनी बदकिरदारी के ज़रिए' मरेगा। <sup>19</sup> "तोभी तुम कहते हो, 'बेटा बाप के गुनाह का बोझ क्यूँ नहीं उठाता?' जब बेटे ने वही जो जाएज़ और रवा है किया, और मेरे सब क़ानून को याद करके

उन पर 'अमल किया; तो वह यकीनन ज़िन्दा रहेगा।<sup>20</sup> जो जान गुनाह करती है वही मरेगी, बेटा बाप के गुनाह का बोझ न उठाएगा और न बाप बेटे के गुनाह का बोझ; सादिक की सदाकत उसी के लिए होगी, और शरीर की शरारत शरीर के लिए।<sup>21</sup> लेकिन अगर शरीर अपने तमाम गुनाहों से जो उसने किए हैं, बाज़ आए और मेरे सब तौर तरीके पर चलकर, जो जाएज़ और रवा है करे तो वह यकीनन ज़िन्दा रहेगा, वह न मरेगा।<sup>22</sup> वह सब गुनाह जो उसने किए हैं, उसके खिलाफ़ महसूब न होंगे। वह अपनी रास्तबाज़ी में जो उसने की ज़िन्दा रहेगा।<sup>23</sup> खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, क्या शरीर की मौत में मेरी खुशी है, और इसमें नहीं कि वह अपनी चाल चलन से बाज़ आए और ज़िन्दा रहे? <sup>24</sup> लेकिन अगर सादिक अपनी सदाकत से बाज़ आए, और गुनाह करे और उन सब घिनौने कामों के मुताबिक़ जो शरीर करता है करे, तो क्या वह ज़िन्दा रहेगा? उसकी तमाम सदाकत जो उसने की फ़रामोश होगी; वह अपने गुनाहों में जो उसने किए हैं और अपनी ख़ताओं में जो उसने की हैं मरेगा।<sup>25</sup> “तोभी तुम कहते हो, 'खुदावन्द की रविश रास्त नहीं। ऐ बनी — इस्राईल सुनो तो, क्या मेरा चाल चलन रास्त नहीं? क्या तुम्हारा चाल चलन नारास्त नहीं? <sup>26</sup> जब सादिक अपनी सदाकत से बाज़ आए और बदकिरदारी करे और उसमें मरे, तो वह अपनी बदकिरदारी की वजह से जो उसने की है मरेगा।<sup>27</sup> और अगर शरीर अपनी शरारत से, जो वह करता है बा'ज़ आए, और वह काम करे जो जाएज़ और रवा है; तो वह अपनी जान ज़िन्दा रखेगा।<sup>28</sup> इसलिए कि उसने सोचा और अपने सब गुनाहों से जो करता था बा'ज़ आया; वह यकीनन ज़िन्दा रहेगा, वह न मरेगा।<sup>29</sup> तोभी बनी — इस्राईल कहते हैं, 'खुदावन्द की रविश रास्त नहीं?’ ऐ बनी इस्राईल, क्या मेरा चाल चलन रास्त नहीं? क्या तुम्हारा चाल चलन नारास्त नहीं? <sup>30</sup> इसलिए खुदावन्द फ़रमाता है, ऐ बनी इस्राईल मैं हर एक के चाल चलन के मुताबिक़ तुम्हारी 'अदालत करूँगा; तोबा करो और अपने तमाम गुनाहों से बाज़ आओ, ताकि बदकिरदारी तुम्हारी हलाकत का ज़रिया' न हो।<sup>31</sup> उन तमाम गुनाहों को, जिनसे तुम गुनहगार हुए दूर करो और अपने लिए नया दिल और नई रूह पैदा करो! ऐ बनी — इस्राईल, तुम क्यों हलाक होगे? <sup>32</sup> क्योंकि खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, “मुझे मरने वाले की मौत से खुशी नहीं, इसलिए बाज़ आओ और ज़िन्दा रहो।”

## 19

?????????? ?? ??????????? ?? ????? ?????

??????

<sup>1</sup> अब तू इस्राईल के "हाकिमों पर नौहा कर, <sup>2</sup> और कह, तेरी माँ कौन थी? एक शेरनी जो शेरों के बीच लेटी थी और जवान शेरों के बीच उसने अपने बच्चों को पाला। <sup>3</sup> और उसने अपने बच्चों में से एक को पाला, तो वह जवान शेर हुआ और शिकार करना सीख गया और आदमियों को निगलने लगा। <sup>4</sup> और क्रौमों के बीच उसका ज़िक्र हुआ तो वह उनके गढ़े में पकड़ा गया, और वह उसे ज़न्जीरों से जकड़ कर ज़मीन — ए — मिस्र में लाए। <sup>5</sup> और जब शेरनी ने देखा कि उसने बेफ़ाईदा इन्तिज़ार किया और उसकी उम्मीद जाती रही, तो उसने अपने बच्चों में से दूसरे को लिया और उसे पाल कर जवान शेर किया। <sup>6</sup> और वह शेरों के बीच सैर करता फिरा और जवान शेर हुआ, और शिकार करना सीख गया और आदमियों को निगलने लगा। <sup>7</sup> और उसने उनके महलों को बर्बाद किया, और उनके शहरों को वीरान किया; उसकी गरज़ से मुल्क उजड़ गया और उसकी आबादी न रही। <sup>8</sup> तब बहुत सी क्रौमें तमाम मुल्कों से उसकी घात में बैठीं, और उन्होंने उस पर अपना जाल फैलाया; वह उनके गढ़े में पकड़ा गया। <sup>9</sup> और उन्होंने उसे ज़न्जीरों से जकड़ कर पिंजरे में डाला और शाह — ए — बाबुल के पास ले आए। उन्होंने उसे क़िले' में बन्द किया, ताकि उसकी आवाज़ इस्राईल के पहाड़ों पर फिर सुनी न जाए। <sup>10</sup> तेरी माँ उस ताक से' मुशाबह थी, जो तेरी तरह पानी के किनारे लगाई गई; वह पानी की बहुतायत के ज़रिए' फलदार और शाखदार हुई। <sup>11</sup> और उसकी शाखें ऐसी मज़बूत हो गईं के बादशाहों के 'असा उन से बनाए गए, और घनी शाखों में उसका तना बुलन्द हुआ और वह अपनी घनी शाखों के साथ ऊँची दिखाई देती थी। <sup>12</sup> लेकिन वह ग़ज़ब से उखाड़ कर ज़मीन पर गिराई गई, और पूरबी हवा ने उसका फल खुशक कर डाला, और उसकी मज़बूत डालियाँ तोड़ी गई और सूख गई और आग से भसम हुई। <sup>13</sup> और अब वह वीरान में सूखी और प्यासी ज़मीन में लगाई गई। <sup>14</sup> और एक छड़ी से जो उसकी डालियों से बनी थी, आग निकलकर उसका फल खा गई और उसकी कोई ऐसी मज़बूत डाली न रही कि सल्तनत का 'असा हो। यह नोहा है और नोहे के लिए रहेगा।

## 20

?????????? ?? ???????????

<sup>1</sup> और सातवें बरस के पाँचवें महीने की दसवीं तारीख को यूँ हुआ कि इस्राईल के चन्द बुज़ुर्ग खुदावन्द से कुछ दरियाफ़्त करने को आए और मेरे सामने बैठ गए।

2 तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ 3 कि 'ऐ आदमज़ाद! इस्राईल के बुज़ुर्गों से कलाम कर और उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि क्या तुम मुझ से दरियाफ़्त करने आए हो? खुदावन्द खुदा फ़रमाता है कि मुझे अपनी हयात की क़सम, तुम मुझ से कुछ दरियाफ़्त न कर सकोगे। 4 क्या तू उन पर हुज़्जत काईम करेगा? ऐ आदमज़ाद, क्या तू उन पर हुज़्जत कायम करेगा? उनके बाप दादा के नफ़रती कामों से उनको आगाह कर। 5 उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि जिस दिन मैंने इस्राईल को बरगुज़ीदा किया, और बनी या'कूब से क़सम खाई और मुल्क — ए — मिस्र में अपने आपको उन पर ज़ाहिर किया; मैंने उनसे क़सम खा कर कहा, मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 6 जिस दिन मैंने उनसे क़सम खाई, ताकि उनको मुल्क — ए — मिस्र से उस मुल्क में लाऊँ जो मैंने उनके लिए देख कर ठहराया था, जिसमें दूध और शहद बहता है और जो तमाम मुल्कों की शौकत है। 7 और मैंने उनसे कहा, तुम में से हर एक शख्स उन नफ़रती चीज़ों को जो उसकी मन्ज़ूर — ए — नज़र हैं, दूर करे और तुम अपने आपको मिस्र के बुतों से नापाक न करो; मैं खुदावन्द, तुम्हारा खुदा हूँ। 8 लेकिन वह मुझ से बागी हुए और न चाहा कि मेरी सुनें। उनमें से किसी ने उन नफ़रती चीज़ों को, जो उसकी मंज़ूर — ए — नज़र थीं, छोड़ न दिया और मिस्र के बुतों को न छोड़ा। तब मैंने कहा, कि मैं अपना क्रहर उन पर उण्डेल दूँगा, ताकि अपने ग़ज़ब को मुल्क — ए — मिस्र में उन पर पूरा करूँ। 9 लेकिन मैंने अपने नाम की खातिर ऐसा किया ताकि मेरा नाम उन क्रौमों की नज़र में, जिनके बीच वह रहते थे और जिनकी निगाहों में मैं उन पर ज़ाहिर हुआ जब उनको मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, नापाक न किया जाए। 10 इसलिए मैं उनको मुल्क — ए — मिस्र से निकालकर वीरान में लाया। 11 और मैंने अपने क़ानून उनको दिए और अपने हुक्मों को उनको सिखाए कि इंसान उन पर 'अमल करने से ज़िन्दा रहे। 12 और मैंने अपने सबत भी उनको दिए, ताकि वह मेरे और उनके बीच निशान हों; ताकि वह जानें कि मैं खुदावन्द उनका पाक करने वाला हूँ। 13 लेकिन बनी — इस्राईल वीरान में मुझ से बागी हुए, वह मेरे क़ानून पर न चले और मेरे हुक्मों को रद्द किया, जिन पर अगर इंसान 'अमल करे तो उनकी वजह से ज़िन्दा रहे, और उन्होंने मेरे सबतों को बहुत ही नापाक किया। तब मैंने कहा, कि मैं वीरान में अपना क्रहर उन पर नाज़िल कर के उनको फ़ना करूँगा। 14 लेकिन मैंने अपने नाम

की खातिर ऐसा किया, ताकि वह उन क्रौमों की नज़र में जिनकी आँखों के सामने मैं उनको निकाल लाया नापाक न किया जाए। 15 और मैंने वीरान में भी उनसे क़सम खाई कि मैं उनको उस मुल्क में न लाऊँगा जो मैंने उनको दिया, जिसमें दूध और शहद बहता है और जो तमाम मुल्कों की शौकत है। 16 क्योंकि उन्होंने मेरे हुक्मों को रद्द किया और मेरे क़ानून पर न चले और मेरे सबतों को नापाक किया, इसलिए कि उनके दिल उनके बुतों के मुशताक थे। 17 तोभी मेरी आँखों ने उनकी रि'आयत की और मैंने उनको हलाक न किया, और मैंने वीरान में उनको बिल्कुल बर्बाद — ओ — हलाक न किया। 18 और मैंने वीरान में उनके फ़र्जन्दों से कहा, तुम अपने बाप — दादा के क़ानून — ओ — हुक्मों पर न चलो और उनके बुतों से अपने आपको नापाक न करो। 19 मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, मेरे क़ानून पर चलो और मेरे हुक्मों को मानो और उन पर 'अमल करो। 20 और मेरे सबतों को पाक जानो कि वह मेरे और तुम्हारे बीच निशान हों, ताकि तुम जानो कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 21 लेकिन फ़र्जन्दों ने भी मुझ से बगावत की; वह मेरे क़ानून पर न चले, न मेरे हुक्मों को मानकर उन पर 'अमल किया जिन पर अगर इंसान 'अमल करे तो उनकी वजह से ज़िन्दा रहे; उन्होंने मेरे सबतों को नापाक किया। तब मैंने कहा कि मैं अपना क्रहर उन पर नाज़िल करूँगा और वीरान में अपने ग़ज़ब को उन पर पूरा करूँगा। 22 तोभी मैंने अपना हाथ खींचा और अपने नाम की खातिर ऐसा किया, ताकि वह उन क्रौमों की नज़र में जिनके देखते हुए मैं उनको निकाल लाया, नापाक न किया जाए। 23 फिर मैंने वीरान में उनसे क़सम खाई कि मैं उनको क्रौमों में आवारा और मुल्कों में तितर बितर करूँगा। 24 इसलिए कि वह मेरे हुक्मों पर 'अमल न करते थे, बल्कि मेरे क़ानून को रद्द करते थे और मेरे सबतों को नापाक करते थे, और उनकी आँखें उनके बाप — दादा के बुतों पर थीं। 25 इसलिए मैंने उनको बुरे क़ानून और ऐसे अहकाम दिए जिनसे वह ज़िन्दा न रहे; 26 और मैंने उनको उन्हीं के हृदियों से या'नी सब पहलौटों को आग पर से गुज़ार कर, नापाक किया ताकि मैं उनको वीरान करूँ और वह जानें कि खुदावन्द मैं हूँ। 27 इसलिए, ऐ आदमज़ाद, तू बनी इस्राईल से कलाम कर और उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि इसके 'अलावा तुम्हारे बाप — दादा ने ऐसे काम करके मेरी बुराई की और मेरा गुनाह करके खताकार हुए; 28 कि जब मैं उनको उस मुल्क में लाया जिसे उनको देने की मैंने क़सम खाई थी, तो उन्होंने जिस ऊँचे पहाड़ और जिस घने दरख़्त को देखा वहीं अपने ज़बीहों को

जबह किया, और वहीं अपनी गजब अंगेज नज़र को गुज़राना, और वहीं अपनी खुशबू जलाई और अपने तपावन तपाए। <sup>29</sup> तब मैंने उनसे कहा, यह कैसा ऊँचा मक़ाम है जहाँ तुम जाते हो? और उन्होंने उसका नाम बामाह रखवा जो आज के दिन तक है। <sup>30</sup> इसलिए, तू बनी — इस्राईल से कह, कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: क्या तुम भी अपने बाप — दादा की तरह नापाक होते हो? और उनके नफ़रत अंगेज कामों की तरह तुम भी बदकारी करते हो? <sup>31</sup> और जब अपने हदिए चढ़ाते और अपने बेटों को आग पर से गुज़ार कर अपने सब बुतों से अपने आपको आज के दिन तक नापाक करते हो, तो ऐ बनी — इस्राईल क्या तुम मुझ से कुछ दरियाफ़्त कर सकते हो? खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: मुझे अपनी हयात की क़सम, मुझ से कुछ दरियाफ़्त न कर सकोगे। <sup>32</sup> और वह जो तुम्हारे जी में आता है हरगिज़ वजूद में न आएगा, क्योंकि तुम सोचते हो, 'तुम भी दीगर क़ौम — ओ — क़बाइल — ए — 'आलम की तरह लकड़ी और पत्थर की इबादत करोगे। खुदावन्द सज़ा देता और मु'आफ़ भी करता है <sup>33</sup> खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: मुझे अपनी हयात की क़सम, मैं ताक़तवर हाथ से और बुलन्द बाज़ू से क़हर नाज़िल' कर के तुम पर सल्तनत करूँगा। <sup>34</sup> और मैं ताक़तवर हाथ और बुलन्द बाज़ू से क़हर नाज़िल' करके तुम को क़ौमों में से निकाल लाऊँगा, और उन मुल्कों में से जिनमें तुम तितर बितर हुए हो जमा' करूँगा। <sup>35</sup> और मैं तुम को क़ौमों के वीराने में लाऊँगा और वहाँ आमने सामने तुम से हुज्जत करूँगा। <sup>36</sup> जिस तरह मैंने तुम्हारे बाप — दादा के साथ मिस्र के वीरान में हुज्जत की, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, उसी तरह मैं तुम से भी हुज्जत करूँगा। <sup>37</sup> और मैं तुम को छड़ी के नीचे से गुज़ारूँगा और 'अहद के बन्द में लाऊँगा। <sup>38</sup> और मैं तुम में से उन लोगों को जो सरकश और मुझ से बागी हैं, जुदाकरूँगा; मैं उनको उस मुल्क से जिसमें उन्होंने क़याम किया, निकाल लाऊँगा पर वह इस्राईल के मुल्क में दाख़िल न होंगे और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ। <sup>39</sup> और "तुम से ऐ बनी — इस्राईल, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि जाओ और अपने अपने बुत की इबादत करो, और आगे को भी, अगर तुम मेरी न सुनोगे; लेकिन अपनी कुर्बानियों और अपने बुतों से मेरे पाक नाम की बुराई न करोगे। <sup>40</sup> क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि मेरे पाक पहाड़ या'नी इस्राईल के ऊँचे पहाड़ पर तमाम बनी — इस्राईल, सब के सब मुल्क में मेरी इबादत करेंगे; वहाँ मैं उनको कुबूल करूँगा, और तुम्हारी कुर्बानियाँ और तुम्हारी नज़रों के पहले फल

और तुम्हारी सब मुक़द्दस चीज़ें तलब करूँगा। <sup>41</sup> जब मैं तुम को क़ौमों में से निकाल लाऊँगा और उन मुल्कों में से जिनमें मैंने तुम को तितर बितर किया जमा' करूँगा, तब मैं तुम को खुशबू के साथ कुबूल करूँगा और क़ौमों के सामने तुम मेरी तक्दीस करोगे। <sup>42</sup> और जब मैं तुम को इस्राईल के मुल्क में या'नी उस सरज़मीन में जिसके लिए मैंने क़सम खाई कि तुम्हारे बाप — दादा को दूँ, ले आऊँगा तब तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ। <sup>43</sup> और वहाँ तुम अपने चाल चलन और अपने सब कामों को, जिनसे तुम नापाक हुए हो, याद करोगे और तुम अपनी तमाम बुराई की वजह से जो तुम ने की है, अपनी ही नज़र में घिनौने होगे। <sup>44</sup> खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, ऐ बनी — इस्राईल जब मैं तुम्हारे बुरे चाल चलन और बद — आ'माली के मुताबिक़ नहीं बल्कि अपने नाम के खातिर तुम से सुलूक करूँगा, तो तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ।" <sup>45</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>46</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, दक्खिन का रुख़ कर और दक्खिन ही से मुखातिब हो कर उसके मैदान के जंगल के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर; <sup>47</sup> और दक्खिन के जंगल से कह, खुदावन्द का कलाम सुन, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: देख, मैं तुझ में आग़ भड़काऊँगा और वह हर एक हरा दरख़्त और हर एक सूखा दरख़्त जो तुझ में है, खा जाएगी; भड़कता हुआ शो'ला न बुझेगा और दक्खिन से उत्तर तक सबके मुँह उससे झुलस जाएँगे। <sup>48</sup> और हर इंसान देखेगा कि मैं खुदावन्द ने उसे भड़काया है, वह न बुझेगी। <sup>49</sup> तब मैंने कहा, 'हाय़ खुदावन्द खुदा! वह तो मेरे बारे में कहते हैं, क्या वह मिसालें नहीं कहता?

## 21

?????? ? ???? ? ? ?

<sup>1</sup> फिर खुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>2</sup> कि ऐ आदमज़ाद, येरूशलेम का रुख़ कर और पाक मकानों से मुखातिब होकर मुल्क — ए — इस्राईल के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर <sup>3</sup> और उस से कह, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: कि देख मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ और अपनी तलवार मियान से निकाल लूँगा, और तेरे सादिकों और तेरे शरीरों को तेरे बीच से काट डालूँगा। <sup>4</sup> इसलिए चूँकि मैं तेरे बीच से सादिकों और शरीरों को काट डालूँगा, इसलिए मेरी तलवार अपने मियान से निकल कर दक्खिन से उत्तर तक तमाम बशर पर चलेगी। <sup>5</sup> और सब जानेंगे कि मैं खुदावन्द ने अपनी तलवार मियान से खींची है वह फिर उसमें न जायेगी। <sup>6</sup> इसलिए ऐ आदमज़ाद कमर की शिगास्तगी से आँहें मार और तल्लू कामी से



उनकी आँखों के सामने ठण्डी साँस भर। <sup>7</sup> और जब वह पूछें कि तू क्यों हाए हाए करता है तो यूँ जवाब देना कि उसकी आमद की अफ़वाह की वजह से और हर एक दिल पिघल जायेगा और सब हाथ ढीले हो जायेंगे और हर एक जी डूब जाएगा और सब घुटने पानी की तरह कमज़ोर हो जायेंगे खुदावन्द खुदा फ़रमाता है उसकी आमद है यह वजूद में आएगा। <sup>8</sup> फिर खुदावन्द का कलाम मुझपर नाज़िल हुआ। <sup>9</sup> ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत कर और कह खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू कह तलवार बल्कि तेज़ और सैकल की हुई तलवार है। <sup>10</sup> वह तेज़ की गई है ताकि उससे बड़ी ख़ुरेजी की जाये वह सैकल की गई है ताकि चमके फिर क्या हम खुश हो सकते हैं मेरे बेटे का 'असा हर लकड़ी को बेकार जानता है। <sup>11</sup> और उसने उसे सैकल करने को दिया है ताकि हाथ में ली जाये वह तेज़ और सैकल की गई ताकि क़त्ल करने वाले के हाथ में दी जाए। <sup>12</sup> ऐ आदमज़ाद, तू रो और नाला कर क्योंकि वह मेरे लोगों पर चलेगी वह इस्राईल के सब हाकिमों पर होगी वह मेरे लोगों के सात तलवार के हवाले किए गए हैं इसलिए तू अपनी रान पर हाथ मार। <sup>13</sup> यकीनन वह आजमाई गई और अगर लाठी उसे बेकार जाने तो क्या वह हलाक होगा खुदावन्द फ़रमाता है। <sup>14</sup> और 'ऐ आदमज़ाद, तू नबुव्वत कर और ताली बजा और तलवार दो गुना बल्कि तीन गुना हो जाए वह तलवार जो मक़तूलों पर कारगर हुई बड़ी ख़ुरेजी की तलवार है जो उनको घेरती है। <sup>15</sup> मैंने यह तलवार उनके सब फाटकों के खिलाफ़ कायम की है ताकि उनके दिल पिघल जायें और उनके गिरने के सामान ज्यादा हों हाए बर्क़ तेग यह क़त्ल करने को खींची गई। <sup>16</sup> तैयार हो; दाहनी तरफ़ जा, आमादा हो, बाई तरफ़ जा, जिधर तेरा रुख़, <sup>17</sup> और मैं भी ताली बजाऊँगा और अपने क़हर को ठण्डा करूँगा मैं खुदावन्द ने यह फ़रमाया है। <sup>18</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझपर नाज़िल हुआ। <sup>19</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, तू दो रास्ते खींच जिनसे शाह — ए — बाबुल की तलवार आये एक ही मुल्क से वह दोनों रास्ते निकाल और एक हाथ निशान के लिए शहर की रास्ते के सिरे पर लगा। <sup>20</sup> एक रास्ता निकाल जिससे तलवार बनी'अम्मून की रब्बा पर और फिर एक और जिससे यहूदाह के मासूर शहर येरूशलेम पर आये। <sup>21</sup> क्योंकि शाह — ए — बाबुल दोनों रास्तों के नुक्कत — ए — इतसाल पर फ़ालगिरी के लिए खड़ा हुआ और तीरों को हिला कर बुत से सवाल करेगा और जिगर पर नज़र करेगा। <sup>22</sup> उसके दहने हाथ में येरूशलेम का पर्ची पड़ेगी कि मंजनीक लगाये और कुशत — ओ — खून के लिए मुँह खोले ललकार की

आवाज़ बुलन्द करे और फाटकों पर मंजनीक लगाए और दमदमा बांधे और बुर्ज़ बनाए। <sup>23</sup> लेकिन उनकी नज़र में यह ऐसा होगा जैसा झूटा शगुन या'नी उनके लिए जिन्होंने क़सम खाई थी, पर वह बदकिरदारी को याद करेगा ताकि वह गिरफ़्तार हों। <sup>24</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि तुम ने अपनी बदकिरदारी याद दिलाई और तुम्हारी खताकारी ज़ाहिर हुई यहाँ तक कि तुम्हारे सब कामों में तुम्हारे गुनाह अयाँ हैं; और चूँकि तुम खयाल में आ गए इसलिए गिरफ़्तार हो जाओगे। <sup>25</sup> और तू ऐ मजरूह शरीर शाह — ए — इस्राईल, जिसका ज़माना बदकिरदारी के अन्जाम को पहुँचने पर आया है। <sup>26</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि कुलाह दूर कर और ताज़ उतार, यह ऐसा न रहेगा, पस्त को बलन्द कर और उसे जो बुलन्द है पस्त कर। <sup>27</sup> मैं ही उसे उलट उलट दूँगा, पर यूँ भी न रहेगा और वह आएगा जिसका हक़ है, और मैं उसे दूँगा। <sup>28</sup> "और तू ऐ आदमज़ाद नबुव्वत कर और कह खुदावन्द खुदा बनी अम्मून और उनकी ताना ज़नी के बारे में यूँ फ़रमाता है: कि तू कह तलवार बल्कि खींची हुई तलवार ख़ुरेजी के लिए सैकल की गई है, ताकि बिजली की तरह भसम करे। <sup>29</sup> जबकि वह तेरे लिए धोका देखते हैं और झूटे फ़ाल निकालते हैं कि तुझ को उन शरीरों की गर्दनों पर डाल दें जो मारे गए, जिनका ज़माना उनकी बदकिरदारी के अंजाम को पहुँचने पर आया है। <sup>30</sup> उसको मियान में कर। मैं तेरी पैदाइश के मकान में और तेरी ज़ाद बूम में तेरी 'अदालत करूँगा। <sup>31</sup> और मैं अपना क़हर तुझ पर नाज़िल करूँगा और अपने ग़ज़ब की आग तुझ पर भड़काऊँगा, और तुझ को हैवान खसलत आदमियों के हवाले करूँगा जो बर्बाद करने में माहिर हैं। <sup>32</sup> तू आग के लिए ईधन होगा और तेरा खून मुल्क में बहेगा, और फिर तेरा ज़िक्र भी न किया जाएगा, क्योंकि मैं खुदावन्द ने फ़रमाया है।"

## 22

???????? ?? ?????

<sup>1</sup> फिर खुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>2</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, क्या तू इल्ज़ाम न लगाएगा? क्या तू इस खूनी शहर को मुल्जिम न ठहराएगा? तू इसके सब नफ़रती काम इसको दिखा, <sup>3</sup> और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि ऐ शहर, तू अपने अन्दर ख़ुरेजी करता है ताकि तेरा वक़््त आजाए और तू अपने वास्ते बुतों को अपने नापाक करने के लिए बनाता है। <sup>4</sup> तू उस खून की वजह से जो तूने बहाया मुजरिम ठहरा,

और तू बुतों के ज़रिए' जिनको तूने बनाया है नापाक हुआ; तू अपने वक्त को नज़दीक लाता है और अपने दिनों के खातिम तक पहुँचा है इसलिए मैंने तुझे क्रौमों की मलामत का निशाना और मुल्कों का ठठठा बनाया है। <sup>5</sup> तुझ से दूर — ओ — नज़दीक के सब लोग तेरी हँसी उड़ायेंगे क्योंकि तू झगड़ालू और बदनाम मशहूर है। <sup>6</sup> देख, इस्राईल के हाकिम सब के सब जो तुझ में हैं, मक़दूर भर ख़ूँरज़ी पर मुसत'इद थे। <sup>7</sup> तेरे अन्दर उन्होंने माँ बाप को बेकार जाना है, तेरे अन्दर उन्होंने परदेसियों पर ज़ुल्म किया तेरे अन्दर उन्होंने यतीमों और बेवाओं पर सितम किया है। <sup>8</sup> तूने मेरी पाक चीज़ों को नाचीज़ जाना, और मेरे सबतों को नापाक किया। <sup>9</sup> तेरे अन्दर वह लोग हैं जो चुगलखोरी करके खून करवाते हैं, और तेरे अन्दर वह हैं जो बुतों की कुर्बानी से खाते हैं; तेरे अन्दर वह हैं जो बुराई करते हैं। <sup>10</sup> तेरे अन्दर वह भी हैं जिन्होंने अपने बाप की लौंडी शिकनी की, तुझ में उन्होंने उस 'औरत से जो नापाकी की हालत में थी मुबाशरत की। <sup>11</sup> किसी ने दूसरे की बीवी से बदकारी की, और किसी ने अपनी बहू से बदज़ाती की, और किसी ने अपनी बहन अपने बाप की बेटी को तेरे अन्दर रुस्वा किया। <sup>12</sup> तेरे अन्दर उन्होंने ख़ूँरज़ी के लिए रिश्वत ख़वारी की तूने ब्याज और सूद लिया और ज़ुल्म करके अपने पड़ोसी को लूटा और मुझे फ़रामोश किया खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>13</sup> "देख, तेरे नारवा नफ़े' की वजह से जो तूने लिया, और तेरी ख़ूँरज़ी के ज़रिए' जो तेरे अन्दर हुई, मैंने ताली बजाई। <sup>14</sup> क्या तेरा दिल बर्दाश्त करेगा और तेरे हाथों में ज़ोर होगा, जब मैं तेरा मु'आमिले का फ़ैसला करूँगा? मैं खुदावन्द ने फ़रमाया, और मैं ही कर दिखाऊँगा। <sup>15</sup> हाँ, मैं तुझ को क्रौमों में तितर बितर और मुल्कों में तितर — बितर करूँगा, और तेरी गन्दगी तुझ में से हलाक कर दूँगा। <sup>16</sup> और तू क्रौमों के सामने अपने आप में नापाक ठहरेगा, और मा'लूम करेगा कि मैं खुदावन्द हूँ।" <sup>17</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>18</sup> कि ऐ आदमज़ाद, बनी इस्राईल मेरे लिए मैल हो गए हैं; वह सब के सब पीतल और राँगा और लोहा और सीसा हैं जो भट्ठी में हैं, वह चाँदी की मैल हैं। <sup>19</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि तुम सब मैल हो गए हो, इसलिए देखो, मैं तुम को येरूशलेम में जमा' करूँगा। <sup>20</sup> जिस तरह लोग चाँदी और पीतल और लोहा और शीशा और राँगा भट्ठी में जमा' करते हैं और उनपर धौंकते हैं ताकि उनको पिघला डालें, उसी तरह मैं अपने क्रहर और अपने ग़ज़ब में तुम को जमा' करूँगा, और तुम को वहाँ रखकर

पिघलाऊँगा। <sup>21</sup> हाँ, मैं तुम को इकट्ठा करूँगा और अपने ग़ज़ब की आग तुम पर धौँकूँगा, और तुम को उसमें पिघला डालूँगा। <sup>22</sup> जिस तरह चाँदी भट्ठी में पिघलाई जाती है, उसी तरह तुम उसमें पिघलाए जाओगे, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द ने अपना क्रहर तुम पर नाज़िल किया है। <sup>23</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>24</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, उससे कह, तू वह सरज़मीन है जो पाक नहीं की गई और जिस पर ग़ज़ब के दिन में बारिश नहीं हुई। <sup>25</sup> जिसमें उसके नबियों ने साज़िश की है, शिकार को फाड़ते हुए गरजने वाले शेर — ए — बबर की तरह वह जानों को खा गए हैं; वह माल और क्रीमती चीज़ों को छीन लेते हैं; उन्होंने उसमें बहुत सी 'औरतों को बेवा बना दिया है। <sup>26</sup> उसके काहिनों ने मेरी शरी'अत को तोड़ा और मेरी पाक चीज़ों को नापाक किया है। उन्होंने पाक और 'आम में कुछ फ़र्क नहीं रखवा और मैं उनमें बे'इज़्ज़त हुआ। <sup>27</sup> उसके हाकिम उसमें शिकार को फाड़ने वाले भेड़ियों की तरह हैं, जो नाजाएज़ नफ़ा' की खातिर ख़ूँरज़ी करते हैं और जानों को हलाक करते हैं। <sup>28</sup> और उसके नबी उनके लिए कच्च गारा करते हैं; बातिल ख़्वाब देखते और झूटी फ़ालगीर करते हैं और कहते हैं कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, हालाँकि खुदावन्द ने नहीं फ़रमाया। <sup>29</sup> इस मुल्क के लोगों ने सितमगरी और लूट मार की है, और ग़रीब और मोहताज को सताया है और परदेसियों पर नाहक सख्ती की है। <sup>30</sup> मैंने उनके बीच तलाश की, कि कोई ऐसा आदमी मिले जो फ़सील बनाए, और उस सरज़मीन के लिए उसके रखने में मेरे सामने खड़ा हो ताकि मैं उसे वीरान न करूँ, लेकिन कोई न मिला। <sup>31</sup> इसलिए मैंने अपना क्रहर उन पर नाज़िल किया, और अपने ग़ज़ब की आग से उनको फ़ना कर दिया; और मैं उनके चाल चलन को उनके सिरों पर लाया, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

## 23

?? ???? ?? ???? ??

<sup>1</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>2</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, दो 'औरतें एक ही माँ की बेटियाँ थीं। <sup>3</sup> उन्होंने मिस्र में बदकारी की, वह अपनी जवानी में बदकार बनी वहाँ उनकी छातियाँ मली गई और वहीं उनकी दोशीज़गी के पिस्तान मसले गए। <sup>4</sup> उनमें से बड़ी का नाम ओहोला और उसकी बहन का नाम ओहोलीबा था वह दोनों मेरी हो गई और उनसे बेटे बेटियाँ पैदा हुए और उनके यह नाम ओहोला और ओहोलीबा सामरिया व येरूशलेम हैं। <sup>5</sup> और ओहोला जब कि वह मेरी थी,

बदकारी करने लगी और अपने यारों पर या'नी असूरियों पर जो पड़ोसी थे, 'आशिक्र हुई। <sup>6</sup> वह सरदार और हाकिम और सबके सब दिल पसन्द जवाँ मर्द और सवार थे, जो घोड़ों पर सवार होते और अर्गवानी पोशाक पहनते थे। <sup>7</sup> और उसने उन सबके साथ जो असूर के बरगुज़ीदा मर्द थे बदकारी की, और उन सबके साथ जिनसे वह 'इश्कबाज़ी करती थी, और उनके सब बुतों के साथ नापाक हुई। <sup>8</sup> उसने जो बदकारी मिस्र में की थी उसे न छोड़ा, क्योंकि उसकी जवानी में वह उससे हम — अगोश हुए और उन्होंने उसकी दोशीज़्गी के पिस्तानों को मसला और अपनी बदकारी उस पर उण्डेल दी। <sup>9</sup> इसलिए मैंने उसे उसके यारों या'नी असूरियों के हवाले कर दिया जिन पर वह मरती थी। <sup>10</sup> उन्होंने उसको बरहना किया और उसके बेटों — बेटियों को छीन लिया और उसे तलवार से क़त्ल किया; इसलिए वह 'औरतों में अंगुशत नुमा हुई क्योंकि उन्होंने उसे 'अदालत से सज़ा दी। <sup>11</sup> और उसकी बहन ओहोलीबा ने यह सब कुछ देखा, लेकिन वह शहवत परस्ती में उससे बदतर हुई और उसने अपनी बहन से बढ़ कर बदकारी की। <sup>12</sup> वह असूरियों पर 'आशिक्र हुई जो सरदार और हाकिम और उसके पड़ोसी थे, जो भड़कीली पोशाक पहनते और घोड़ों पर सवार होते और सबके सब दिल पसन्द जवान मर्द थे। <sup>13</sup> और मैंने देखा, कि वह भी नापाक हो गई; उन दोनों की एक ही चाल चलन थी। <sup>14</sup> और उसने बदकारी में तरक्की की क्योंकि जब उसने दीवार पर मर्दों की सूरतें देखीं, या'नी कसदियों की तस्वीरें जो शन्गर्फ़ से खिंची हुई थीं, <sup>15</sup> जो पटकों से कमरबस्ता और सिरों पर रंगीन पगड़ियाँ पहने थे, और सब के सब देखने में हाकिम अहल — ए — बाबुल की तरह थे जिनका वतन कसदिस्तान है। <sup>16</sup> तो देखते ही वह उन पर मरने लगी, और उनके पास कसदिस्तान में क़ासिद भेजे। <sup>17</sup> तब अहल — ए — बाबुल उसके पास आकर 'इश्क के बिस्तर पर चढ़े, और उन्होंने उससे बदकारी करके उसे आलूदा किया और वह उनसे नापाक हुई, तो उसकी जान उनसे बेज़ार हो गई। <sup>18</sup> तब उसकी बदकारी 'ऐलानिया हुई और उसकी बरहनगी बेसत्र हो गई; तब मेरी जान उससे बेज़ार हुई जैसी उसकी बहन से बेज़ार हो चुकी थी। <sup>19</sup> तोभी उसने अपनी जवानी के दिनों की याद करके जब वह मिस्र की सरज़मीन में बदकारी करती थी, बदकारी पर बदकारी की। <sup>20</sup> इसलिए वह फिर अपने उन यारों पर मरने लगी, जिनका बदन गधों के जैसा बदन और जिनका इन्ज़ाल घोड़ों के जैसा इन्ज़ाल था। <sup>21</sup> इस तरह तूने अपनी जवानी की शहवत परस्ती को, जबकि मिस्री तेरी जवानी की छातियों की वजह से

तेरे पिस्तान मलते थे, फिर याद किया। <sup>22</sup> इसलिए ऐ ओहोलीबा खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि "देख, मैं उन यारों को जिनसे तेरी जान बेज़ार हो गई है उभारूंगा कि तुझे से मुखालिफ़त करें, और उनको बुला लाऊंगा कि तुझे चारों तरफ़ से घेर लें। <sup>23</sup> अहल — ए — बाबुल और सब कसदियों को फ़िक्रद और शो'अ और को'अ और उनके साथ तमाम असूरियों को, सब के सब दिल पसन्द जवाँ मर्दों को, सरदारों और हाकिमों को, और बड़े बड़े अमीरों और नामी लोगों को जो सबके सब घोड़ों पर सवार होते हैं तुझ पर चढ़ा लाऊंगा। <sup>24</sup> और वह असलह — ए — जंग और रथों और छकड़ों और उम्मत्तों के गिरोह के साथ तुझ पर हमला करेंगे, और ढाल और फरी पकड़ कर और खूद पहनकर चारों तरफ़ से तुझे घेर लेंगे; मैं 'अदालत उनको सुपुर्द करूंगा, और वह अपने क़ानून के मुताबिक़ तेरा फ़ैसला करेंगे। <sup>25</sup> और मैं अपनी ग़ैरत को तेरी मुखालिफ़ बनाऊंगा और वह ग़ज़बनाक होकर तुझ से पेश आयेंगे और तेरी नाक और तेरे कान काट डालेंगे और तेरे बाक़ी लोग तलवार से मारे जाएंगे। वह तेरे बेटे और बेटियों को पकड़ लेंगे और तेरा बक़िया आग से भसम होगा। <sup>26</sup> वह तेरे कपड़े भी उतार लेंगे और तेरे नफ़ीस ज़ेवर लूट ले जायेंगे। <sup>27</sup> और मैं तेरी शहवत परस्ती और तेरी बदकारी जो तूने मुल्क — ए — मिस्र में सीखी मौकूफ़ करूंगा, यहाँ तक कि तू उनकी तरफ़ फिर आँख न उठाएगी और फिर मिस्र को याद न करेगी। <sup>28</sup> 'क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं तुझे उनके हाथ में जिनसे तुझे नफ़रत है, हाँ, उन्हीं के हाथ में जिनसे तेरी जान बेज़ार है दे दूँगा। <sup>29</sup> और वह तुझ से नफ़रत के साथ पेश आएंगे, और तेरा सब माल जो तूने मेहनत से पैदा किया है छीन लेंगे और तुझे 'ऊरियान और बरहना छोड़ जायेंगे यहाँ तक कि तेरी शहवत परस्ती — ओ — ख़बासत और तेरी बदकारी फ़ाश हो जाएगी। <sup>30</sup> यह सब कुछ तुझ से इसलिए होगा कि तूने बदकारी के लिए दीगर क़ौम का पीछा किया और उनके बुतों से नापाक हुई। <sup>31</sup> तू अपनी बहन के रस्ते पर चली, इसलिए मैं उसका प्याला तेरे हाथ में दूँगा। <sup>32</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि तू अपनी बहन के प्याले से जो गहरा और बड़ा है पियेगी तेरी हँसी होगी और तू ठट्ठों में उड़ाई जाएगी, क्योंकि उसमें बहुत सी समाई है। <sup>33</sup> तू मस्ती और सोग से भर जाएगी; वीरानी और हैरत का प्याला, तेरी बहन सामरिया का प्याला है। <sup>34</sup> तू उसे पियेगी और निचोड़ेगी और उसकी ठेकरियाँ भी चबाई जाएगी, और अपनी छातियाँ नोचेगी क्योंकि मैं ही ने यह फ़रमाया है, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

35 फिर खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि चूँकि तू मुझे भूल गई और मुझे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया इसलिए अपनी बदज़ाती और बदकारी की सज़ा उठा।” 36 फिर खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया: कि 'ऐ आदमज़ाद, क्या तू ओहोला और ओहोलीबा पर इल्ज़ाम न लगाएगा? तू उनके घिनौने काम उन पर ज़ाहिर कर। 37 क्योंकि उन्होंने बदकारी की और उनके हाथ खून आलूदा हैं हाँ उन्होंने अपने बुतों से बदकारी की और अपने बेटों को जो मुझ से पैदा हुए आग से गुज़ारा कि बुतों की नज़र होकर हलाक हों। 38 इसके 'अलावा उन्होंने मुझ से यह किया कि उसी दिन उन्होंने मेरे हैकल को नापाक किया, और मेरे सबतों की बेहुर्मती की। 39 क्योंकि जब वह अपनी औलाद को बुतों के लिए ज़बह कर चुकीं, तो उसी दिन मेरे हैकल में दाखिल हुई, ताकि उसे नापाक करें और देख, उन्होंने मेरे घर के अन्दर ऐसा काम किया। 40 बल्कि तुम ने दूर से मर्द बुलाए जिनके पास क़ासिद भेजा, और देख, वह आए जिनके लिए तूने गुस्ल किया और आँखों में काजल लगाया और बनाओ सिंगार किया; 41 और तू नफ़ीस पलंग पर बैठी और उसके पास दस्तरख़्वान तैयार किया, और उस पर तूने मेरी खुशबू और मेरा 'इतर रखवा। 42 और एक 'अय्याशी जमा'अत की आवाज़ उसके साथ थी और आम लोगों के 'अलावा वीरान से शराबियों को लाए और उन्होंने उनके हाथों में कंगन और सिरों पर खुशनुमा ताज पहनाए। 43 “तब मैंने उसके ज़रिए जो बदकारी करते करते बुढ़िया हो गई थीं, कहा, अब यह लोग उससे बदकारी करेंगे और वह उनसे करेगी। 44 और वह उसके पास गए जिस तरह किसी कस्बी के पास जाते हैं, उसी तरह वह उन बदज़ात 'औरतों, ओहोला और ओहोलीबा के पास गए। 45 लेकिन सादिक़ आदमी उन पर वह फ़तवा देंगे जो बदकार और खूनी 'औरतों पर दिया जाता है, क्योंकि वह बदकार 'औरतें हैं और उनके हाथ खून आलूदा हैं।” 46 क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि “मैं उन पर एक गिरोह चढ़ा लाऊँगा, और उनको छोड़ दूँगा कि इधर — उधर धक्के खाती फ़िरें और ग़ारत हों। 47 और वह गिरोह से उनको पथराव करेगी और अपनी तलवारों से क़त्ल करेगी, उनके बेटों — बेटियों को हलाक करेगी और उनके घरों को आग से जला देगी। 48 यूँ मैं बदकारी को मुल्क से ख़त्म करूँगा ताकि सब 'औरतें 'इबरत पज़ीर हों और तुम्हारी तरह बदकारी न करें। 49 और वह तुम्हारे बुराई का बदला तुम को देंगे, और तुम अपने बुतों के गुनाहों की सज़ा का बोझ उठाओगे, ताकि तुम जानों कि खुदावन्द खुदा मैं ही हूँ।”

## 24

?? ??????? ?? ???????

1 फिर नवें बरस के दसवें महीने की दसवीं तारीख को खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ 2 कि 'ऐ आदमज़ाद, आज के दिन, हाँ, इसी दिन का नाम लिख रख; शाह — ए — बाबुल ने ऐन इसी दिन येरूशलेम पर खरूज किया। 3 और इस बागी खान्दान के लिए एक मिसाल बयान कर और इनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि एक देग चढ़ा दे, हाँ, उसे चढ़ा और उसमें पानी भर दे। 4 टुकड़े उसमें इकट्ठे कर, हर एक अच्छा टुकड़ा या 'नी रान और शाना और अच्छी अच्छी हड्डियाँ उसमें भर दे। 5 और गल्ले में से चुन — चुन कर ले, और उसके नीचे लकड़ियों का ढेर लगा दे, और खूब जोश दे ताकि उसकी हड्डियाँ उसमें खूब उबल जाएँ। 6 “इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि उस खूनी शहर पर अफ़सोस और उस देग पर जिसमें ज़न्ग लगा है, और उसका ज़न्ग उस पर से उतारा नहीं गया! एक एक टुकड़ा करके उसमें से निकाल, और उस पर पर्ची पड़े। 7 क्योंकि उसका खून उसके बीच है, उसने उसे साफ़ चट्टान पर रखवा, ज़मीन पर नहीं गिराया ताकि खाक में छिप जाए। 8 इसलिए कि ग़ज़ब नाज़िल हो और इन्तक़ाम लिया जाए, मैंने उसका खून साफ़ चट्टान पर रखवा ताकि वह छिप न जाए। 9 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि खूनी शहर पर अफ़सोस! मैं भी बड़ा ढेर लगाऊँगा। 10 लकड़ियाँ खूब झोंक, आग सुलगा, गोशत को खूब उबाल और शोरबा गाढ़ा कर और हड्डियाँ भी जला दे। 11 तब उसे खाली करके अँगारों पर रख, ताकि उसका पीतल गर्म हो और जल जाए और उसमें की नापाकी गल जाए और उसका ज़न्ग दूर हो। 12 वह सख्त मेहनत से हार गई, लेकिन उसका बड़ा ज़न्ग उससे दूर नहीं हुआ; आग से भी उसका ज़न्ग दूर नहीं होता। 13 तेरी नापाकी में ख़बासत है, क्योंकि मैं तुझे पाक करना चाहता हूँ लेकिन तू पाक होना नहीं चाहती, तू अपनी नापाकी से फिर पाक न होगी, जब तक मैं अपना क्रहर तुझ पर पूरा न कर चुकूँ। 14 मैं खुदावन्द ने यह फ़रमाया है, यूँ ही होगा और मैं कर दिखाऊँगा, न दस्तबरदार हूँगा न रहम करूँगा न बाज़ आऊँगा; तेरे चाल चलन और तेरे कामों के मुताबिक़ वह तेरी 'अदालत करेंगे खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। 15 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: 16 कि 'ऐ आदमज़ाद, देख, मैं तेरी मन्ज़ूर — ए — नज़र को एक ही मार में तुझ से जुदा करूँगा, लेकिन तू न मातम करना, न रोना और न आँसू बहाना। 17 चुपके चुपके अहिं भरना,



मुर्दे पर नोहा न करना, सिर पर अपनी पगड़ी बाँधना और पाँव में जूती पहनना और अपने होटों को न छिपाना और लोगों की रोटी न खाना।”<sup>18</sup> इसलिए मैंने सुबह को लोगों से कलाम किया और शाम को मेरी बीवी मर गई, और सुबह को मैंने वही किया जिसका मुझे हुक्म मिला था।<sup>19</sup> तब लोगों ने मुझ से पूछा, “क्या तू हमें न बताएगा कि जो तू करता है उसको हम से क्या रिश्ता है?”<sup>20</sup> तब मैंने उनसे कहा, कि खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>21</sup> कि 'इस्राईल के घराने से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि देखो, मैं अपने हैकल को जो तुम्हारे ज़ोर का फ़ख़र और तुम्हारा मंज़ूर — ए — नज़र है जिसके लिए तुम्हारे दिल तरसते हैं नापाक करूँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ, जिनको तुम पीछे छोड़ आए हो, तलवार से मारे जाएँगे।<sup>22</sup> और तुम ऐसा ही करोगे जैसा मैंने किया; तुम अपने होटों को न छिपाओगे, और लोगों की रोटियाँ न खाओगे।<sup>23</sup> और तुम्हारी पगड़ियाँ तुम्हारे सिरों पर और तुम्हारी जूतियाँ तुम्हारे पाँव में होंगी, और तुम नोहा और ज़ारी न करोगे लेकिन अपनी शरारत की वजह से घुलोगे, और एक दूसरे को देख देख कर ठन्डी साँस भरोगे।<sup>24</sup> चुनाँचे हिज्रिकिएल तुम्हारे लिए निशान है; सब कुछ जो उसने किया तुम भी करोगे, और जब यह वज़ूद में आएगा तो तुम जानोगे कि खुदावन्द खुदा मैं हूँ।<sup>25</sup> “और तू ऐ आदमज़ाद, देख, कि जिस दिन मैं उनसे उनका ज़ोर और उनकी शान — ओ — शौकत और उनके मन्ज़ूर — ए — नज़र को, और उनके मरगूब — ए — खातिर उनके बेटे और उनकी बेटियाँ ले लूँगा,<sup>26</sup> उस दिन वह जो भाग निकले, तेरे पास आएगा कि तेरे कान में कहे।<sup>27</sup> उस दिन तेरा मुँह उसके सामने, जो बच निकला है खुल जाएगा और तू बोलेगा, और फिर गूँगा न रहेगा; इसलिए तू उनके लिए एक निशान होगा और वह जानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ।”

## 25

?????? ??

<sup>1</sup> और खुदावन्द खुदा का कलाम मुझपर नाज़िल हुआ। <sup>2</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद बनी 'अम्मून की तरफ़ मुतवज्जिह हो और उनके खिलाफ़ नबुव्वत कर। <sup>3</sup> और बनी 'अम्मून से कह, खुदावन्द खुदा का कलाम सुनो, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: चूँकि तूने मेरे हैकल पर जब वह नापाक किया गया, और इस्राईल के मुल्क पर जब वह उजाड़ा गया, और बनी यहूदाह पर जब वह गुलाम हो कर गए, अहा हा! कहा। <sup>4</sup> इसलिए

मैं तुझे अहल — ए — पूरब के हवाले कर दूँगा कि तू उनकी मिल्कियत हो, और वह तुझ में अपने खेमे लगाएँगे और तेरे अन्दर अपने मकान बनाएँगे, और तेरे मेवे खाएँगे और तेरा दूध पीएँगे। <sup>5</sup> और मैं रब्बा को ऊँटों का अस्तबल और बनी 'अम्मून की सर — ज़मीन को भेड़साला बना दूँगा, और तू जानेगा कि मैं खुदावन्द हूँ। <sup>6</sup> क्यूँकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि चूँकि तूने तालियाँ बजाई और पाँव पटके, और इस्राईल की मम्मलकत की बर्बादी पर अपनी कमाल 'अदावत से बड़ी खुशी की; <sup>7</sup> इसलिए देख, मैं अपना हाथ तुझ पर चलाऊँगा और तुझे दीगर क्रौम के हवाले करूँगा, ताकि वह तुझ को लूट लें और मैं तुझे उम्मतों में से काट डालूँगा, और मुल्कों में से तुझे बर्बाद — ओ — हलाक करूँगा; मैं तुझे हलाक करूँगा और तू जानेगा कि खुदावन्द मैं हूँ। <sup>8</sup> “खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि मोआब और श'ईर कहते हैं कि बनी यहूदाह तमाम क्रौमों की तरह हैं, <sup>9</sup> इसलिए देख, मैं मोआब के पहलू को उसके शहरों से, उसकी सरहद के शहरों से जो ज़मीन की शौकत हैं, बैत — यसीमोत और बालम'ऊन और करयताइम से खोल दूँगा। <sup>10</sup> और मैं अहल — ए — पूरब को उसके और बनी 'अम्मून के खिलाफ़ चढ़ा लाऊँगा कि उन पर क़ाबिज़ हों, ताकि क्रौमों के बीच बनी 'अम्मून का ज़िक्र बाक़ी न रहे। <sup>11</sup> और मैं मोआब को सज़ा दूँगा, और वह जानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ। <sup>12</sup> 'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि अदोम ने बनी यहूदाह से कीना कशी की, और उनसे इन्तक़ाम लेकर बड़ा गुनाह किया। <sup>13</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि मैं अदोम पर हाथ चलाऊँगा; उसके इंसान और हैवान को हलाक करूँगा, और तीमान से लेकर उसे वीरान करूँगा और वह ददान तक तलवार से क़त्ल होंगे। <sup>14</sup> और मैं अपनी क्रौम बनी — इस्राईल के हाथ से अदोम से इन्तक़ाम लूँगा, और वह मेरे ग़ज़ब — ओ — क़हर के मुताबिक़ अदोम से सुलूक करेंगे, और वह मेरे इन्तक़ाम को मा'लूम करेंगे, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>15</sup> 'खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि फ़िलिस्तियों ने कीनाकशी की, और दिल की कीना वरी से इन्तक़ाम लिया, ताकि दाइमी 'अदावत से उसे हलाक करें। <sup>16</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि देख, मैं फ़िलिस्तियों पर हाथ चलाऊँगा और करेतियों को काट डालूँगा, और समन्दर के साहिल के बाक़ी लोगों को हलाक करूँगा। <sup>17</sup> और मैं सख़्त सज़ा देकर उनसे बड़ा इन्तक़ाम लूँगा, और जब मैं उनसे इन्तक़ाम लूँगा तो वह जानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ।”

## 26

26:1-26:26

1 और ग्यारह बरस में महीने के पहले दिन खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: 2 कि 'ऐ आदमज़ाद, चूँकि सूर ने येरूशलेम पर कहा है, 'अहा हा! वह कौमों का फाटक तोड़ दिया गया है, अब वह मेरी तरफ़ मुतवज्जिह होगी, अब उसकी बर्बादी से मेरी मा'मूरी होगी। 3 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि देख, ऐ सूर मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ और बहुत सी कौमों को तुझ पर चढ़ा लाऊँगा, जिस तरह समन्दर अपनी मौजों को चढ़ाता है। 4 और वह सूर की शहर पनाह को तोड़ डालेंगे, और उसके बुरजों को ढा देंगे और मैं उसकी मिट्टी तक खुरच फेंकूँगा और उसे साफ़ चट्टान बना दूँगा। 5 वह समन्दर में जाल फैलाने की जगह होगा क्योंकि मैं ही ने फ़रमाया, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, और वह कौमों के लिए गनीमत होगा। 6 और उसकी बेटियाँ जो मैदान में हैं, तलवार से क़त्ल होंगी और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 7 क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र को जो शहनशाह है, घोड़ों और रथों और सवारों और फ़ौजों और बहुत से लोगों के गिरोह के साथ उत्तर से सूर पर चढ़ा लाऊँगा; 8 वह तेरी बेटियों को मैदान में तलवार से क़त्ल करेगा और तेरे चारों तरफ़ मोर्चाबन्दी करेगा, और तेरे सामने दमदमा बाँधेगा और तेरी मुखालिफ़त में ढाल उठाएगा। 9 वह अपने मन्जनीक को तेरी शहर पनाह पर चलाएगा, और अपने तबरों से तेरे बुर्जों को ढा देगा। 10 उसके घोड़ों की कसरत की वजह से इतनी गर्द उड़ेगी कि तुझे छिपा लेगी जब वह तेरे फाटकों में घुस आएगा, जिस तरह रखना करके शहर में घुस जाते हैं, तो सवारों और गाड़ियों और रथों की गड़गड़ाहट की आवाज़ से तेरी शहरपनाह हिल जाएगी। 11 वह अपने घोड़ों के सुमों से तेरी सब सड़कों को रौन्द डालेगा, और तेरे लोगों की तलवार से क़त्ल करेगा और तेरी ताक़त के सुतून ज़मीन पर गिर जाएँगे। 12 और वह तेरी दौलत लूट लेंगे, और तेरे माल — ए — तिजारत को ग़ारत करेंगे और तेरे शहर पनाह तोड़ डालेंगे तेरे रंगमहलों को ढा देंगे, और तेरे पत्थर और लकड़ी और तेरी मिट्टी समन्दर में डाल देंगे। 13 और तेरे गाने की आवाज़ बंद कर दूँगा और तेरी सितारों की आवाज़ फिर सुनी न जायेगी। 14 और मैं तुझे साफ़ चट्टान बना दूँगा तू जाल फैलाने की जगह होगा और फिर ता'मीर न किया जाएगा क्योंकि मैं खुदावन्द ने यह फ़रमाया है, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। 15 खुदावन्द खुदा सूर से यूँ

फ़रमाता है: कि जब तुझ में क़त्ल का काम जारी होगा और ज़ख्मी कराहते होंगे, तो क्या बहरी मुल्क तेरे गिरने के शोर से न थरथराएँगे? 16 तब समन्दर के हाकिम अपने तख़्तों पर से उतरेंगे और अपने जुब्बे उतार डालेंगे और अपने ज़रदोज़ पैराहन उतार फेंकेंगे, वह थरथराहट से मुलब्स होकर खाक पर बैठेंगे, वह हरदम काँपेंगे और तेरी वजह से हैरत ज़दा होंगे। 17 और वह तुझ पर नोहा करेंगे और कहेंगे, 'हाय, तू कैसा हलाक हुआ जो बहरी मुल्कों से आबाद और मशहूर शहर था, जो समन्दर में ताक़तवर था; जिसके बाशिन्दों से सब उसमें आमद — ओ — रफ़्त करने वाले ख़ौफ़ खाते थे! 18 अब बहरी मुल्क तेरे गिरने के दिन थरथरायेंगे हाँ, समन्दर के सब बहरी मुल्क तेरे अन्जाम से परेशान होंगे। 19 "क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि जब मैं तुझे उन शहरों की तरह जो बे चराग़ हैं, वीरान कर दूँगा; जब मैं तुझ पर समन्दर बहा दूँगा और जब समन्दर तुझे छिपा लेगा, 20 तब मैं तुझे उनके साथ जो पाताल में उतर जाते हैं, पुराने वक़्त के लोगों के बीच नीचे उतारूँगा, और ज़मीन के तह में और उन उजाड़ मकानों में जो पहले से हैं, उनके साथ जो पाताल में उतर जाते हैं; तुझे बसाऊँगा ताकि तू फिर आबाद न हो, लेकिन मैं ज़िन्दों के मुल्क को जलाल बख़्शूँगा। 21 मैं तुझे जा — ए — 'इबरत करूँगा और तू हलाक होगा, हर चन्द तेरी तलाश की जाए तो तू कहीं हमेशा तक न मिलेगा, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।"

## 27

27:1-27:26

1 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ। 2 कि 'ऐ आदमज़ाद, तू सूर पर नोहा शुरू कर। 3 और सूर से कह तुझे, जिसने समन्दर के मदख़ल में जगह पाई और बहुत से बहरी मुल्क के लोगों के लिए तिजारत गाह है, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि 'ऐ सूर, तू कहता है, मेरा हुस्न कामिल है। किया। 4 तेरी सरहदें समन्दर के बीच हैं, तेरे मिस्तिरियों ने तेरी खुशनुमाई को कामिल किया है। 5 उन्होंने सनीर के सरोओं से लाकर तेरे जहाज़ों के तख़्ते बनाए, और लुबनान से देवदार काटकर तेरे लिए मस्तूल बनाए। 6 बसन के बलूत से टाट बनाए तेरे तख़्ते जज़ाइर — ए — किच्चीम के सनूबर से हाथी दांत जड़कर तैयार किये गए। 7 तेरा बादबान मिस्री मुनक्क़श कतान का था ताकि तेरे लिए झन्डे का काम दे, तेरा शामियाना जज़ाईरे इलिसा के कबूदी व अर्गवानी रंग का था। 8 सैदा और अर्वद के रहने वाले तेरे मल्लाह थे और ऐ सूर तेरे 'अक्लमन्द तुझ में तेरे

नाखुदा थे। <sup>9</sup> जबल के बुजुर्ग और 'अक्लमन्द तुझ में थे कि रखना बन्दी करें, समन्दर के सब जहाज़ और उनके मल्लाह तुझमें हाज़िर थे कि तेरे लिए तिजारत का काम करें। <sup>10</sup> फ़ारस और लूद और फूत के लोग तेरे लिए लश्कर के जंगी बहादुर थे। वह तुझ में सिपर और खूद को लटकाते और तुझे रौनक बरखाते थे। <sup>11</sup> अर्वद के मर्द तेरी ही फ़ौज के साथ चारों तरफ़ तेरी शहरपनाह पर मौजूद थे और बहादुर तेरे बुर्जों पर हाज़िर थे, उन्होंने अपनी सिप्पेरें चारों तरफ़ तेरी दीवारों पर लटकाई और तेरे जमाल को कामिल किया। <sup>12</sup> 'तरसीस ने हर तरह के माल की कसरत की वजह से तेरे साथ तिजारत की, वह चाँदी और लोहा और राँगा और सीसा लाकर तेरे बाज़ारों में सौदागरी करते थे। <sup>13</sup> यावान तूबल और मसक तेरे ताजिर थे, वह तेरे बाज़ारों में और लुबनान तेरे बाज़ारों में गुलामों और पीतल के बर्तनों की सौदागरी करते थे। <sup>14</sup> अहल — ए — तुजरमा ने तेरे बाज़ारों में घोड़ों, जंगी घोड़ों और खच्चरों की तिजारत की। <sup>15</sup> अहल ए — ददान तेरे ताजिर थे बहुत से बहरी मुल्क तिजारत के लिए तेरे इस्त्रियार में वह हाथी दान्त और आबनूस मुबादला के लिए तेरे पास लाते थे <sup>16</sup> अरामी तेरी दस्तकारी की कसरत की वजह से तेरे साथ तिजारत करते थे वह गौहर — ए — शब — चराग और अर्गवानी रंग और चिकनदोज़ी और कतान और मूंगा और मल्लाह थे लाल लाकर तुझ से खरीद — ओ — फ़रोख्त करते थे। <sup>17</sup> यहूदाह और इस्राईल का मुल्क तेरे ताजिर थे, वह मिनीत और पन्नग का गेहूँ और शहद और रोगन और बिलसान लाकर तेरे साथ तिजारत करते थे। <sup>18</sup> अहल — ए — दमिश्क तेरी दस्तकारी की कसरत की वजह से, और किस्म किस्म के माल की ज्यादाती के ज़रिए' हलबून की मय और सफ़ेद ऊन की तिजारत तेरे यहाँ करते थे। <sup>19</sup> दान और यावान ऊज़ाल से तज और आबदार फ़ौलाद और अगर तेरे बाज़ारों में लाते थे। <sup>20</sup> ददान तेरा ताजिर था, जो सवारी के चार — जामे तेरे हाथ बेचता था। <sup>21</sup> 'अरब और कीदार के सब अमीर तिजारत की राह से तेरे हाथ में थे, वह बरें और मेंढे और बकरियाँ लाकर तेरे साथ तिजारत करते थे। <sup>22</sup> सबा और रा'माह के सौदागर तेरे साथ सौदागरी करते थे; वह हर किस्म के नफ़ीस मसालहे और हर तरह के कीमती पत्थर और सोना, तेरे बाज़ारों में लाकर खरीद — ओ — फ़रोख्त करते थे। <sup>23</sup> हरान और कन्ना और अदन और सबा के सौदागर, और असूर और किलमद के बाशिन्दे तेरे साथ सौदागरी करते थे। <sup>24</sup> यही तेरे सौदागर थे, जो लाजूर्दी कपड़े और कम ख़ाब और नफ़ीस लिबासों से भरे देवदार के सन्दूक, डोरी से कसे हुए तेरी तिजारतगाह में बेचने को लाते

थे। <sup>25</sup> तरसीस के जहाज़ तेरी तिजारत के कारवान थे, तू मा'मूर और वस्त — ए — बहर में बहुत शान — ओ — शौकत रखता था। <sup>26</sup> 'तेरे मल्लाह तुझे गहरे पानी में लाए, पूरबी हवा ने तुझ को वस्त — ए — बहर में तोड़ा है। <sup>27</sup> तेरा माल — ओ — अस्बाब और तेरी अजनास — ए — तिजारत और तेरे अहल — ए — जहाज़ व ना खुदा तेरे रखना बन्दी करनेवाले और तेरे कारोबार के गुमाश्ते और सब जंगी मर्द जो तुझ में हैं, उस तमाम जमा'अत के साथ जो तुझ में है, तेरी तबाही के दिन समन्दर के बीच में गिरेंगे। <sup>28</sup> तेरे नाखुदाओं के चिल्लाने के शोर से तमाम 'इलाके थर्रा जायेंगे। <sup>29</sup> और तमाम मल्लाह और अहल — ए — जहाज़ और समन्दर के सब नाखुदा, अपने जहाज़ों पर से उतर आएँगे; वह खुशकी पर खड़े होंगे। <sup>30</sup> और अपनी आवाज़ बुलन्द करके तेरी वजह से चिल्लाएँगे, और अपने सिरों पर खाक डालेंगे और राख में लोटेंगे। <sup>31</sup> वह तेरी वजह से सिर मुंडाएँगे और टाट ओढ़ेंगे वह तेरे लिए दिल शिकस्ता होकर रोएँगे और जाँगुदाज़ नोहा करेंगे। <sup>32</sup> और नोहा करते हुए तुझ पर मरसिया ख़वानी करेंगे और तुझ पर यूँ रोएँगे; 'कौन सूर की तरह है, जो समन्दर के बीच में तबाह हुआ? <sup>33</sup> जब तेरा माल — ए — तिजारत समन्दर पर से जाता था, तब तुझ से बहुत सी क्रौमें मालामाल होती थीं; तू अपनी दौलत और अजनास — ए — तिजारत की कसरत से इस ज़मीन के बादशाहों को दौलतमन्द बनाता था। <sup>34</sup> लेकिन अब तू समन्दर की गहराई में पानी के जोर से टूट गया है, तेरी अजनास — ए — तिजारत और तेरे अन्दर की तमाम जमा'अत गिर गई। <sup>35</sup> बहरी मुल्क के सब रहने वाले तेरे ज़रिए' हैरत ज़दह होंगे और उनके बादशाह बहुत तरसान होंगे और उनका चेहरा ज़र्द हो जाएगा। <sup>36</sup> क्रौमों के सौदागर तेरा ज़िक्र सुनकर सुसकारेंगे, तू जा — ए — 'इबरत होगा और बाक़ी न रहेगा।"

## 28

28:1-28:4

<sup>1</sup> फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ। <sup>2</sup> कि 'ऐ'आदमज़ाद, वाली — ए — सूर से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, इसलिए कि तेरे दिल में गुरूर समाया और तूने कहा, 'मैं खुदा हूँ, और समन्दर के किनारे में इलाही तख्त पर बैठा हूँ, और तूने अपना दिल इलाह के जैसा बनाया है, अगरचे तू इलाह नहीं बल्कि इंसान है। <sup>3</sup> देख, तू दानीएल से ज्यादा 'अक्लमन्द है, ऐसा कोई राज़ नहीं जो तुझ से छिपा हो। <sup>4</sup> तूने अपनी

हिकमत और खिरद से माल हासिल किया, और सोने चाँदी से अपने खज़ाने भर लिए। <sup>5</sup> तूने अपनी बड़ी हिकमत से और अपनी सौदागरी से अपनी दौलत बहुत बढ़ाई, और तेरा दिल तेरी दौलत के ज़रिए फूल गया है। <sup>6</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: चूँकि तूने अपना दिल इलाह के जैसा बनाया। <sup>7</sup> इसलिए देख, मैं तुझ पर परदेसियों को जो क्रौमों में हैबतनाक हैं, चढ़ा लाऊँगा; वह तेरी समझदारी की खूबी के खिलाफ़ तलवार खींचेंगे और तेरे जमाल को खराब करेंगे। <sup>8</sup> वह तुझे पाताल में उतारेंगे और तू उनकी मौत मरेगा जो समन्दर के बीच में क़त्ल होते हैं। <sup>9</sup> क्या तू अपने क़ातिल के सामने यूँ कहेगा, कि 'मैं खुदावन्द हूँ'? हालाँकि तू अपने क़ातिल के हाथ में खुदा नहीं, बल्कि इंसान है। <sup>10</sup> तू अजनबी के हाथ से नामख़तून की मौत मरेगा, क्योंकि मैंने फ़रमाया है खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>11</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ <sup>12</sup> कि 'ऐआदमज़ाद, सूर के बादशाह पर यह नोहा कर और उससे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि तू खातिम — उल — कमाल 'अक़ल से मा'मूर और हुस्न में कामिल है। <sup>13</sup> तू अदन में बाग़ — ए — खुदा में रहा करता था, हर एक क्रीमती पत्थर तेरी पोशिश के लिए था; मसलन याक़ूत — ए — सुख और पुखराज और इल्मास और फ़िरोज़ा और संग — ए — सुलेमानी और ज़बरजद और नीलम और जुमरद और गौहर — ए — शबचराग़ और सोने से, तुझ में खातिमसाज़ी और नगीनाबन्दी की सन'अत तेरी पैदाइश ही के रोज़ से जारी रही। <sup>14</sup> तू मम्सूह करूबी था जो साया। अफ़गन था, और मैंने तुझे खुदा के कोह — ए — मुक़द्दस पर कायम किया; तू वहाँ आतिशी पत्थरों के बीच चलता फिरता था। <sup>15</sup> तू अपनी पैदाइश ही के रोज़ से अपनी राह — ओ — रस्म में कामिल था, जब तक कि तुझ में नारास्ती न पाई गई। <sup>16</sup> तेरी सौदागरी की फ़िरावानी की वजह से उन्होंने तुझ में जुल्म भी भर दिया और तूने गुनाह किया; इसलिए मैंने तुझ को खुदा के पहाड़ पर से गन्दगी की तरह फेंक दिया, और तुझ साया — अफ़गन करूबी को आतिशी पत्थरों के बीच से फ़ना कर दिया। <sup>17</sup> तेरा दिल तेरे हुस्न पर गुरूर करता था, तूने अपने जमाल की वजह से अपनी हिकमत खो दी; मैंने तुझे ज़मीन पर पटख दिया और बादशाहों के सामने रख दिया है, ताकि वह तुझे देख लें। <sup>18</sup> तूने अपनी बदकिरदारी की कसरत, और अपनी सौदागरी की नारास्ती से अपने हैकलों को नापाक किया है। इसलिए मैं तेरे अन्दर से आग निकालूँगा जो तुझे भसम करेगी, और मैं तेरे सब देखने वालों की आँखों

के सामने तुझे ज़मीन पर राख कर दूँगा। <sup>19</sup> क्रौमों के बीच वह सब जो तुझ को जानते हैं, तुझे देख कर हैरान होंगे; तू जा — ए — 'इबरत होगा और बाक़ी न रहेगा। <sup>20</sup> फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>21</sup> कि 'ऐआदमज़ाद, सैदा का रुख़ करके उसके खिलाफ़ नबुव्वत कर। <sup>22</sup> और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं तेरा मुख़ालिफ़ हूँ, ऐ सैदा; और तेरे अन्दर मेरी तम्ज़ीद होगी, और जब मैं उसको सज़ा दूँगा तो लोग मा'लूम कर लेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ, और उसमें मेरी तक्रदीस होगी। <sup>23</sup> मैं उसमें वबा भेजूँगा, और उसकी गलियों में ख़ूँजी करूँगा, और मक़तूल उसके बीच उस तलवार से जो चारों तरफ़ से उस पर चलेगी गिरेंगे, और वह मा'लूम करेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। <sup>24</sup> तब बनी — इस्राईल के लिए उनके चारों तरफ़ के सब लोगों में से, जो उनको बेकार जानते थे, कोई चुभने वाला काँटा या दुखाने वाला खार न रहेगा, और वह जानेंगे कि खुदावन्द खुदा मैं हूँ। <sup>25</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: जब मैं बनी — इस्राईल को क्रौमों में से, जिनमें वह तितर बितर हो गए जमा' करूँगा, तब मैं क्रौमों की आँखों के सामने उनसे अपनी तक्रदीस कराऊँगा; और वह अपनी सरज़मीन में जो मैंने अपने बन्दे या'क़ूब को दी थी बसेंगे। <sup>26</sup> और वह उसमें अम्न से सकूनत करेंगे, बल्कि मकान बनाएँगे और अंगूरिस्तान लगाएँगे और अम्न से सकूनत करेंगे; जब मैं उन सब को जो चारों तरफ़ से उनकी हिक़ारत करते थे, सज़ा दूँगा तो वह जानेंगे के मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँ।

## 29

?????? ?? ??????

<sup>1</sup> दसवें बरस के दसवें महीने की बारहवीं तारीख़ को खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>2</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, तू शाह — ए — मिस्र फिर'औन के खिलाफ़ हो, और उसके और तमाम मुल्क — ए — मिस्र के खिलाफ़ नबुव्वत कर <sup>3</sup> कलाम कर और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि "देख, ऐ शाह — ए — मिस्र फिर'औन, मैं तेरा मुख़ालिफ़ हूँ; उस बड़े घड़ियाल का जो अपने दरियाओं में लेट रहता है और कहता है कि 'मेरा दरिया-ए-नील मेरा ही है, और मैंने उसे अपने लिए बनाया है। <sup>4</sup> लेकिन मैं तेरे जबड़ों में काँट अटकाऊँगा, और तेरी दरियाओं की मछलियाँ तेरी खाल पर चिमटाऊँगा, और तुझे तेरी तेरे दरियाओं से बाहर से बाहर खींच निकालूँगा और तेरे दरियाओं की सब मछलियाँ तेरी खाल पर चिमटी होंगी। <sup>5</sup> और मैं तुझ



को और तेरे दरियाओं की मछलियों को वीराने में फेंक दूँगा, तू खुले मैदान में पड़ा रहेगा, तू न बटोरा जाएगा न जमा' किया जाएगा; मैंने तुझे मैदान के दरिन्दों और आसमान के परिन्दों की खुराक कर दिया है।<sup>6</sup> और मिस्र के तमाम बाशिन्दे जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। इसलिए कि वह बनी — इस्राईल के लिए सिर्फ सरकंडे का 'असा थे'।<sup>7</sup> जब उन्होंने तुझे हाथ में लिया, तो तू टूट गया और उन सबके कन्धे जख्मी कर डाले; फिर जब उन्होंने तुझ पर भरोसा किया, तो तू टुकड़े — टुकड़े हो गया और उन सब की कमरें हिल गई।<sup>8</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं एक तलवार तुझ पर लाऊँगा और तुझ में इंसान और हैवान को काट डालूँगा।<sup>9</sup> और मुल्क — ए — मिस्र उजाड़ और वीरान हो जाएगा, और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।<sup>10</sup> क्योंकि उसने कहा है, कि दरिया-ए-नील मेरा ही है, और मैंने ही उसे बनाया है।<sup>11</sup> इसलिए देख, मैं तेरा और तेरे दरियाओं का मुखालिफ़ हूँ, और मुल्क — ए — मिस्र को मिजदाल से असवान बल्कि कूश की सरहद तक महज़ वीरान और उजाड़ कर दूँगा।<sup>12</sup> किसी इंसान का पाँव उधर न पड़ेगा और न उसमें किसी हैवान के पाँव का गुज़र होगा क्योंकि वह चालीस बरस तक आबाद न होगा।<sup>13</sup> और मैं वीरान मुल्कों के साथ मुल्क — ए — मिस्र को वीरान करूँगा, और उजड़े शहरों के साथ उसके शहर चालीस बरस तक उजाड़ रहेंगे। और मैं मिस्रियों को क्रौमों में तितर बितर और मुखतलिफ़ मुल्कों में तितर — बितर करूँगा।<sup>14</sup> "क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चालीस बरस के आखिर में मैं मिस्रियों की उन क्रौमों के बीच से, जहाँ वह तितर बितर हुए जमा' करूँगा; और मैं मिस्र के गुलामों को वापस लाऊँगा, और उनकी फ़तरूस की ज़मीन उनके वतन में वापस पहुँचाऊँगा, और वह वहाँ बेकार मम्लुकत होंगे।<sup>15</sup> यह ममलुकत तमाम मम्लुकतों से ज्यादा बेकार होगी, और फिर क्रौमों पर अपने आप बुलन्द न करेगी; क्योंकि मैं उनको पस्त करूँगा ताकि फिर क्रौमों पर हुक्मरानी न करें।<sup>16</sup> और वह आइंदा को बनी — इस्राईल की भरोसे की जगह न होगी, जब वह उनकी तरफ़ देखने लगे तो उनकी बदकिरदारी याद दिलाएँगे और जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।"<sup>17</sup> सत्ताइसवें बरस के पहले महीने की पहली तारीख को, खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>18</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने अपनी फ़ौज से सूर की मुखालिफ़त में बड़ी खिदमत करवाई है; हर एक सिर बेबाल हो गया और हर एक का

कन्धा छिल गया, लेकिन न उसने न उसके लश्कर ने सूर से उस खिदमत के वास्ते, जो उसने उसकी मुखालिफ़त में की थी कुछ मजदूरी पाई।<sup>19</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं मुल्क — ए — मिस्र शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के हाथ में कर दूँगा, वह उसके लोगों को पकड़ ले जाएगा, और उसको लूट लेगा और उसकी ग़नीमत को ले लेगा, और यह उसके लश्कर की मजदूरी होगी।<sup>20</sup> मैंने मुल्क — ए — मिस्र उस मेहनत के सिले में जो उसने की उसे दिया क्योंकि उन्होंने मेरे लिए मशक्कत खींची थी; खुदावन्द खुदा फ़रमाता है <sup>21</sup> "मैं उस वक़्त इस्राईल के खान्दान का सींग उगाऊँगा और उनके बीच तेरा मुँह खोलूँगा; और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।"

### 30

222222 22 22222 22 22222 22 2222

<sup>1</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।  
<sup>2</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत कर और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि चिल्ला कर कहो: अफ़सोस उस दिन पर!' <sup>3</sup> इसलिए कि वह दिन करीब है, हाँ, खुदावन्द का दिन या 'नी बादलों का दिन करीब है। वह क्रौमों की सज़ा का वक़्त होगा। <sup>4</sup> क्योंकि तलवार मिस्र पर आएगी, और जब लोग मिस्र में क़त्ल होंगे और गुलामी में जाएँगे और उसकी बुनियादे बर्बाद की जायेंगी तो अहल — ए — कूश सख़्त दर्द में मुब्तिला होंगे। <sup>5</sup> कूश और फूत और लूद और तमाम मिले जुले लोग, और कूब और उस सरज़मीन के रहने वाले जिन्होंने मु'आहिदा किया है, उनके साथ तलवार से क़त्ल होंगे। <sup>6</sup> खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: कि मिस्र के मददगार गिर जाएँगे और उसके ताक़त का गुरूर जाता रहेगा, मिजदाल से असवान तक वह उसमें तलवार से क़त्ल होंगे, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>7</sup> और वह वीरान मुल्कों के साथ वीरान होंगे, और उसके शहर उजड़े शहरों के साथ उजाड़ रहेंगे। <sup>8</sup> और जब मैं मिस्र में आग भड़काऊँगा, और उसके सब मददगार हलाक किए जाएँगे तो वह मा'लूम करेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ। <sup>9</sup> उस रोज़ बहुत से कासिद जहाज़ों पर सवार होकर, मेरी तरफ़ से खाना होंगे कि गाफ़िल कूशियों को डराएँ, और वह सख़्त दर्द में मुब्तिला होंगे जैसे मिस्र की सज़ा के वक़्त, क्योंकि देख वह दिन आता है। <sup>10</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैं मिस्र के गिरोह को शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के हाथ से बर्बाद — ओ — हलाक कर दूँगा। <sup>11</sup> वह और उसके साथ उसके लोग जो क्रौमों में हैबतनाक हैं, मुल्क उजाड़ने

को भेजे जाएँगे और वह मिस्र पर तलवार खींचेंगे और मुल्क को मक्तूलों से भर देंगे। <sup>12</sup> और मैं नदियों को सुखा दूँगा और मुल्क को शरीरों के हाथ बेचूँगा और मैं उस सर ज़मीन को और उसकी तमाम मा'मूरी को अजनबियों के हाथ से वीरान करूँगा, मैं खुदावन्द ने फ़रमाया है। <sup>13</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि "मैं बुतों को भी बर्बाद — ओ — हलाक करूँगा और नूफ़ में से मूरतों को मिटा डालूँगा और आइंदा को मुल्क — ए — मिस्र से कोई बादशाह खड़ा न होगा, और मैं मुल्क — ए — मिस्र में दहशत डाल दूँगा। <sup>14</sup> और फ़तरूस को वीरान करूँगा और जुअन में आग भड़काऊँगा और नो पर फ़तवा दूँगा। <sup>15</sup> और मैं सीन पर जो मिस्र का किला है, अपना क्रूर नाज़िल करूँगा और नो के गिरोह को काट डालूँगा। <sup>16</sup> और मैं मिस्र में आग लगा दूँगा, सीन को सख्त दर्द होगा, और नो में रखने हो जाएँगे और नूफ़ पर हर दिन मुसीबत होगी। <sup>17</sup> ओन और फ़ीबसत के जवान तलवार से क़त्ल होंगे और यह दोनों बस्तियाँ गुलामी में जाएँगी। <sup>18</sup> और तहफ़नहीस में भी दिन अँधेरा होगा, जिस वक़्त मैं वहाँ मिस्र के जूओं को तोड़ूँगा और उसकी कुव्वत की शौकत मिट जाएगी और उस पर घटा छा जाएगी और उसकी बेटियाँ गुलाम होकर जाएँगी। <sup>19</sup> इसी तरह से मिस्र को सज़ा दूँगा और वह जानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ।" <sup>20</sup> ग्यारहवें बरस के पहले महीने की सातवीं तारीख को, खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>21</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, मैंने शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन का बाज़ू तोड़ा, और देख, वह बाँधा न गया, दवा लगा कर उस पर पट्टियाँ न कसी गई कि तलवार पकड़ने के लिए मज़बूत हो। <sup>22</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन का मुखालिफ़ हूँ, और उसके बाज़ूओं को या'नी मज़बूत और टूटे को तोड़ूँगा, और तलवार उसके हाथ से गिरा दूँगा। <sup>23</sup> और मिस्रियों को क्रौमों में तितर बितर और मुमालिक में तितर बितर करूँगा। <sup>24</sup> और मैं शाह — ए — बाबुल के बाज़ूओं को कुव्वत बख़्शूँगा और अपनी तलवार उसके हाथ में दूँगा, लेकिन फ़िर'औन के बाज़ूओं को तोड़ूँगा और वह उसके आगे, उस घायल की तरह जो मरने पर ही आहें मारेगा। <sup>25</sup> हाँ शाह — ए — बाबुल के बाज़ूओं को सहारा दूँगा और फ़िर'औन के बाज़ू गिर जायेंगे और जब मैं अपनी तलवार शाह — ए — बाबुल के हाथ में दूँगा और वह उसको मुल्क — ए — मिस्र पर चलाएगा, तो वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। <sup>26</sup> और मैं मिस्रियों को क्रौमों में तितर बितर और ममलिक में तितर — बितर कर दूँगा, और वह

जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

## 31

?????? ?? ?????? ??????? ????? ?? ?????

<sup>1</sup> फिर ग्यारहवें बरस के तीसरे महीने की पहली तारीख को, खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>2</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन और उसके लोगों से कह, तुम अपनी बुजुर्गी में किसकी तरह हो? <sup>3</sup> देख असूर लुबनान का बुलन्द देवदार था, जिसकी डालियाँ खूबसूरत थीं, और पत्तियों की कसरत से वह खूब सायादार था और उसका क्रद बुलन्द था, और उसकी चोटी घनी शाखों के बीच थी। <sup>4</sup> पानी ने उसकी परवरिश की, गहराव ने उसे बढ़ाया, उसकी नहरें चारों तरफ़ जारी थीं, और उसने अपनी नालियों को मैदान के सब दरख़्तों तक पहुँचाया। <sup>5</sup> इसलिए पानी की कसरत से उसका क्रद मैदान के सब दरख़्तों से बुलन्द हुआ, और जब वह लहलहाने लगा, तो उसकी शाखें फ़िरावान और उसकी डालियाँ दराज़ हुई। <sup>6</sup> हवा के सब परिन्दे उसकी शाखों पर अपने घोंसले बनाते थे, और उसकी डालियों के नीचे सब दशती हैवान बच्चे देते थे, और सब बड़ी बड़ी क्रौमों उसके साये में बसती थीं। <sup>7</sup> यूँ वह अपनी बुजुर्गी में अपनी डालियों की दराज़ी की वजह से खुशनुमा था, क्योंकि उसकी जड़ों के पास पानी की कसरत थी। <sup>8</sup> खुदा के बाग़ के देवदार उसे छिपा न सके, सरो उसकी शाखों और चिनार उसकी डालियों के बराबर न थे और खुदा के बाग़ का कोई दरख़्त खूबसूरती में उसकी तरह न था। <sup>9</sup> मैंने उसकी डालियों की फ़िरावानी से उसे हुस्न बख़्शा, यहाँ तक कि अदन के सब दरख़्तों को जो खुदा के बाग़ में थे उस पर रश्क आता था। <sup>10</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि उसने आपको बुलन्द और अपनी चोटी को घनी शाखों के बीच ऊँचा किया, और उसके दिल में उसकी बूलन्दी पर गुरूर समाया। <sup>11</sup> इसलिए मैं उसको क्रौमों में से एक उहदे दार के हवाले कर दूँगा, यक़ीनन वह उसका फ़ैसला करेगा, मैंने उसे उसकी शरारत की वजह से निकाल दिया। <sup>12</sup> और अजनबी लोग जो क्रौमों में से हैबतनाक हैं, उसे काट डालेंगे और फेंक देंगे पहाड़ों और सब वादियों पर उसकी शाखें गिर पड़ेगी, और ज़मीन की सब नहरों के आस — पास उसकी डालियाँ तोड़ी जाएँगी, और इस ज़मीन के सब लोग उसके साये से निकल जाएँगे और उसे छोड़ देंगे। <sup>13</sup> हवा के सब परिन्दे उसके टूटे तने में बसेंगे, और तमाम दशती जानवर उसकी शाखों पर होंगे। <sup>14</sup> ताकि लब — ए — आब के सब बलूतों के दरख़्तों में से कोई अपनी बुलन्दी पर मग़रूर न हो, और अपनी चोटी घनी

शाखों के बीच ऊँची न करे, और उनमें से बड़े बड़े और पानी जज्ब करने वाले सीधे खड़े न हों, क्योंकि वह सबके सब मौत के हवाले किए जाएँगे, या'नी ज़मीन के तह में बनी आदम के बीच जो पाताल में उतरते हैं। <sup>15</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि जिस रोज़ वह पाताल में उतरे मैं मातम कराऊँगा, मैं उसकी वजह से गहराव को छिपा दूँगा और उसकी नहरों को रोक दूँगा और बड़े सैलाब थम जाएँगे; हाँ, मैं लुबनान को उसके लिए सियाह पोश कराऊँगा, और उसके लिए मैदान के सब दरख्त ग़शी में आएँगे। <sup>16</sup> जिस वक़्त मैं उसे उन सब के साथ जो गढ़े में गिरते हैं, पाताल में डालूँगा, तो उसके गिरने के शोर से तमाम क़ौम लरज़ाँ होंगी; और अदन के सब दरख्त, लुबनान के चीदा और नफ़ीस, वह सब जो पानी जज्ब करते हैं ज़मीन के तह में तसल्ली पाएँगे। <sup>17</sup> वह भी उसके साथ उन तक, जो तलवार से मारे गए, पाताल में उतर जाएँगे और वह भी जो उसके बाज़ू थे, और क़ौमों के बीच उसके साये में बसते थे वहीं होंगे। <sup>18</sup> “तू शान — ओ — शौकत में अदन के दरख़्तों में से किसकी तरह है? लेकिन तू अदन के दरख़्तों के साथ ज़मीन के तह में डाला जाएगा, तू उनके साथ जो तलवार से क़त्ल हुए, नामख़तूनों के बीच पड़ा रहेगा; यही फिर'औन और उसके सब लोग हैं, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।”

## 32

?????? ?? ??????? ???? ?

<sup>1</sup> बारहवें बरस के बारहवें महीने की पहली तारीख़ को, खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>2</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, शाह — ए — मिस्र फिर'औन पर नोहा उठा और उसे कह: “तू क़ौमों के बीच जवान शेर — ए — बबर की तरह था, और तू दरियाओं के घड़ियाल जैसा है; तू अपनी नहरों में से नागाह निकल आता है, तूने अपने पाँव से पानी को तह — बाला किया और उनकी नहरों को गदला कर दिया। <sup>3</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैं उम्मतों के गिरोह के साथ तुझ पर अपना जाल डालूँगा और वह तुझे मेरे ही जाल में बाहर निकालेंगे। <sup>4</sup> तब मैं तुझे खुशकी में छोड़ दूँगा और खुले मैदान पर तुझे फेकूँगा, और हवा के सब परिन्दों को तुझ पर बिठाऊँगा और तमाम इस ज़मीन के दरिन्दों को तुझ से सेर करूँगा। <sup>5</sup> और तेरा गोश्त पहाड़ों पर डालूँगा, और वादियों को तेरी बुलन्दी से भर दूँगा। <sup>6</sup> और मैं उस सरज़मीन को जिसे पानी में तू तैरता था, पहाड़ों तक तेरे खून से तर करूँगा और नहरें तुझ से लबरेज़ होंगी। <sup>7</sup> और जब मैं तुझे हलाक करूँगा, तो आसमान को तारीक

और उसके सितारों को बे — नूर करूँगा सूरज को बादल से छिपाऊँगा और चाँद अपनी रोशनी न देगा। <sup>8</sup> और मैं तमाम नूरानी अजराम — ए — फ़लक को तुझपर तारीक करूँगा और मेरी तरफ़ से तेरी ज़मीन पर तारीकी छा जायेगी खुदावन्द खुदा फ़रमाता। <sup>9</sup> और जब मैं तेरी शिकस्ता हाली की ख़बर को क़ौमों के बीच उन मुल्कों में जिनसे तू ना वाकिफ़ है पहुँचाऊँगा तो उम्मतों का दिल आज़ुर्दा करूँगा <sup>10</sup> बल्कि बहुत सी उम्मतों को तेरे हाल से हैरान करूँगा, और उनके बादशाह तेरी वजह से सख़्त परेशान होंगे; जब मैं उनके सामने अपनी तलवार चमकाऊँगा, तो उनमें से हर एक अपनी जान की खातिर तेरे गिरने के दिन हर दम थरथराएगा <sup>11</sup> क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि शाह — ए — बाबुल की तलवार तुझ पर चलेगी। <sup>12</sup> मैं तेरी जमियत को ज़बरदस्तों की तलवार से, जो सब के सब क़ौमों में हैबतनाक हैं हलाक करूँगा, वह मिस्र की शौकत को ख़त्म और उसकी तमाम जमियत को मिटा दूँगे। <sup>13</sup> और मैं उसके सब जानवरों को आब — ए — कसीर के पास से हलाक करूँगा, और आगे को न इंसान के पाँव उसे गदला करेंगे न हैवान के खुर। <sup>14</sup> तब मैं उनका पानी साफ़ कर दूँगा, और उनकी नदियाँ रौग़ान की तरह जारी होंगी, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>15</sup> जब मैं मुल्क — ए — मिस्र को वीरान और सूनसान करूँगा और वह अपनी मा'मूरी से ख़ाली हो जाएगा, जब मैं उसके तमाम बाशिन्दों को हलाक करूँगा तब वह जानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ। <sup>16</sup> ये वह नोहा है जिससे उस पर मातम करेंगे क़ौमों की बेटियाँ इससे मातम करेंगी वह मिस्र और उसकी तमाम जमियत पर इसी से मातम करेंगी, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।” <sup>17</sup> फिर बारहवें बरस में महीने के पन्द्रहवें दिन, खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>18</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, मिस्र की जमियत पर वावैला कर, और उसको और नामदार क़ौमों की बेटियों को पाताल में उतरने वालों के साथ ज़मीन की तह में गिरा दे <sup>19</sup> तू हुस्न में किस से बढ़कर था? उतर और नामख़तूनों के साथ पड़ा रह। <sup>20</sup> वह उनके बीच गिरेंगे जो तलवार से क़त्ल हुए, वह तलवार के हवाले किया गया है, उसे और उसकी तमाम जमियत को घसीट ले जा। <sup>21</sup> वह जो उहदे दारों में सब से तवाना हैं, पाताल में उस से और उसके मददगारों से मुखातिब होंगे: 'वह पाताल में उतर गए, वह बे हिस पड़े हैं, या'नी वह नामख़तून जो तलवार से क़त्ल हुए। <sup>22</sup> असूर और उसकी तमाम जमियत वहाँ हैं उसकी चारों तरफ़ उनकी क़ब्रें हैं सब के सब तलवार से क़त्ल हुए हैं, <sup>23</sup> जिनकी क़ब्रें पाताल की तह में हैं

और उसकी तमाम जमियत उसकी क़ब्र के चारो तरफ़ है; सब के सब तलवार से क़त्ल हुए, जो ज़िन्दों की ज़मीन में हैबत का ज़रि'अ थे। <sup>24</sup> ऐलाम और उसकी तमाम गिरोह, जो उसकी क़ब्र के चारो तरफ़ हैं वहाँ हैं; सब के सब तलवार से क़त्ल हुए हैं, वह ज़मीन की तह में नामख़ून उतर गए जो ज़िन्दों की ज़मीन में हैबत के ज़रिए' थे, और उन्होंने पाताल में उतरने वालों के साथ ख़जालत उठाई है। <sup>25</sup> उन्होंने उसके लिए और उसकी तमाम गिरोह के लिए मक़तूलों के बीच बिस्तर लगाया है, उसकी क़बरें उसके चारों तरफ़ हैं, सब के सब नामख़ून तलवार से क़त्ल हुए हैं; वह ज़िन्दों की ज़मीन में हैबत की वजह थे, और उन्होंने पाताल में उतरने वालों के साथ रुस्वाई उठाई, वह मक़तूलों में रखे गए। <sup>26</sup> मस्क और तूबल और उसकी तमाम ज'मियत वहाँ हैं, उसकी क़बरें उसके चारों तरफ़ हैं, सब के सब नामख़ून और तलवार के मक़तूल हैं; अगरचे ज़िन्दों की ज़मीन में हैबत के ज़रिए' थे। <sup>27</sup> क्या वह उन बहादुरों के साथ जो नामख़ूनों में से क़त्ल हुए, जो अपने जंग के हथियारों के साथ पाताल में उतर गए पड़े न रहेंगे? उनकी तलवारें उनके सिरों के नीचे रखी हैं, और उनकी बदकिरदारी उनकी हड्डियों पर है; क्योंकि वह ज़िन्दों की ज़मीन में बहादुरों के लिए हैबत का ज़रि'अ थे। <sup>28</sup> और तू नामख़ूनों के बीच तोड़ा जाएगा, और तलवार के मक़तूलों के साथ पड़ा रहेगा। <sup>29</sup> वहाँ अदोम भी है, उसके बादशाह और उसके सब 'उमरा जो बावजूद अपनी कुव्वत के तलवार के मक़तूलों में रखे गए हैं; वह नामख़ूनों और पाताल में उतरने वालों के साथ पड़े रहेंगे। <sup>30</sup> उत्तर के तमाम 'उमरा और तमाम सैदानी, जो मक़तूलों के साथ पाताल में उतर गए, बावजूद अपने रौब के अपनी ताक़तवरों से शर्मिन्दा हुए; वह तलवार के मक़तूलों के साथ नामख़ून पड़े रहेंगे और पाताल में उतरने वालों के साथ रुस्वाई उठायेंगे <sup>31</sup> फिर'औन उनको देख कर अपनी तमाम जमियत के ज़रिए' तसल्ली पज़ीर होगा हाँ फिर'औन और तमाम लश्कर जो तलवार से क़त्ल हुए, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>32</sup> क्योंकि मैंने ज़िन्दों की ज़मीन में उसकी हैबत क़ाईम की और वह तलवार के मक़तूलों के साथ नामख़ूनों में रखा जाएगा; हाँ, फिर'औन और उसकी जमियत, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

1 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: 2 कि 'ऐआदमज़ाद, तू अपनी क्रौम के फ़र्ज़न्दों से मुखातिब हो और उनसे कह, जिस वक़्त मैं किसी सरज़मीन पर तलवार चलाऊँ, और उसके लोग अपने बहादुरों में से एक को लें और उसे अपना निगहबान ठहराएँ। 3 और वह तलवार को अपनी सरज़मीन पर आते देख कर नरसिंगा फूँके और लोगों को होशियार करे। 4 तब जो कोई नरसिंगे की आवाज़ सुने और होशियार न हो, और तलवार आए और उसे क़त्ल करे, तो उसका खून उसी की गर्दन पर होगा। 5 उसने नरसिंगे की आवाज़ सुनी और होशियार न हुआ, उसका खून उसी पर होगा, हालाँकि अगर वह होशियार होता तो अपनी जान बचाता। 6 लेकिन अगर निगहबान तलवार को आते देखे और नरसिंगा न फूँके, और लोग होशियार न किए जाएँ, और तलवार आए और उनके बीच से किसी को ले जाए, तो वह तो अपनी बदकिरदारी में हलाक हुआ लेकिन मैं निगहबान से उसके खून का सवाल — ओ — जवाब करूँगा। 7 फिर तू ऐ आदमज़ाद, इसलिए कि मैंने तुझे बनी — इस्राईल का निगहबान मुकर्रर किया, मेरे मुंह का कलाम सुन रख और मेरी तरफ़ से उनको होशियार कर। 8 जब मैं शरीर से कहूँ, ऐ शरीर, तू यक्रीनन मरेगा, उस वक़्त अगर तू शरीर से न कहे और उसे उसके चाल चलन से आगाह न करे, तो वह शरीर तो अपनी बदकिरदारी में मरेगा लेकिन मैं तुझ से उसके खून की सवाल — ओ — जवाब करूँगा। 9 लेकिन अगर तू उस शरीर को जताए कि वह अपनी चाल चलन से बाज़ आए और वह अपनी चाल चलन से बाज़ न आए, तो वह तो अपनी बदकिरदारी में मरेगा लेकिन तूने अपनी जान बचा ली। 10 इसलिए ऐ आदमज़ाद, तू बनी इस्राईल से कह तुम यूँ कहते हो कि हक़ीक़त में हमारी ख़ताएँ और हमारे गुनाह हम पर हैं और हम उनमें घुलते रहते हैं पस हम क्यूँकर ज़िन्दा रहेंगे। 11 तू उनसे कह खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम शरीर के मरने में मुझे कुछ खुशी नहीं बल्कि इसमें है कि शरीर अपनी राह से बाज़ आए और ज़िन्दा रहे ऐ बनी इस्राईल बाज़ आओ तुम अपनी बुरी चाल चलन से बाज़ आओ तुम क्यूँ मरोगे। 12 "इसलिए ऐ आदमज़ाद, अपनी क्रौम के फ़र्ज़न्दों से यूँ कह, कि सादिक़ की सदाक़त उसकी ख़ताकारी के दिन उसे न बचाएगी, और शरीर की शरारत जब वह उससे बाज़ आए तो उसके गिरने की वजह न होगी; और सादिक़ जब गुनाह करे तो अपनी सदाक़त की वजह से ज़िन्दा न रह सकेगा। 13 जब मैं सादिक़ से कहूँ कि तू यक्रीनन ज़िन्दा रहेगा, अगर वह अपनी

## 33



सदाक़त पर भरोसा करके बदकिरदारी करे तो उसकी सदाक़त के काम फ़रामोश हो जाएंगे, और वह उस बदकिरदारी की वजह से जो उसने की है मरेगा। <sup>14</sup> और जब शरीर से कहूँ, तू यक़ीनन मरेगा, अगर वह अपने गुनाह से बाज़ आए और वही करे जायज़ — ओ — रवा है। <sup>15</sup> अगर वह शरीर गिरवी वापस कर दे और जो उसने लूट लिया है वापस दे दे, और ज़िन्दगी के क़ानून पर चले और नारास्ती न करे, तो वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा वह नहीं मरेगा। <sup>16</sup> जो गुनाह उसने किए हैं उसके खिलाफ़ महसूब न होंगे, उसने वही किया जो जायज़ — ओ — रवा है, वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा। <sup>17</sup> 'लेकिन तेरी क़ौम के फ़र्ज़न्द कहते हैं, कि खुदावन्द के चाल चलन रास्त नहीं, हालाँकि खुद उन ही के चाल चलन नारास्त है। <sup>18</sup> अगर सादिक़ अपनी सदाक़त छोड़कर बदकिरदारी करे, तो वह यक़ीनन उसी की वजह से मरेगा। <sup>19</sup> और अगर शरीर अपनी शरारत से बाज़ आए और वही करे जो जायज़ — ओ — रवा है, तो उसकी वजह से ज़िन्दा रहेगा। <sup>20</sup> फिर भी तुम कहते हो कि खुदावन्द के चाल चलन रास्त नहीं है। ऐ बनी — इस्राईल मैं तुम में से हर एक की चाल चलन के मुताबिक़ तुम्हारी 'अदालत करूँगा।' <sup>21</sup> हमारी गुलामी के बारहवें बरस के दसवें महीने की पाँचवीं तारीख़ को, यूँ हुआ कि एक शख्स जो येरूशलेम से भाग निकला था, मेरे पास आया और कहने लगा, कि "शहर मुसख़र हो गया।" <sup>22</sup> और शाम के वक़्त उस भगोड़े के पहुँचने से पहले खुदावन्द का हाथ मुझ पर था; और उसने मेरा मुँह खोल दिया। उसने सुबह को उसके मेरे पास आने से पहले मेरा मुँह खोल दिया और मैं फिर गूंगा न रहा। <sup>23</sup> तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>24</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, मुल्क — ए — इस्राईल के वीरानों के बाशिन्दे यूँ कहते हैं, कि अब्रहाम एक ही था और वह इस मुल्क का वारिस हुआ, लेकिन हम तो बहुत से हैं; मुल्क हम को मीरास में दिया गया है। <sup>25</sup> इसलिए तू उनसे कह दे, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि तुम खून के साथ खाते और अपने बुतों की तरफ़ आँख उठाते हो और खूँजी करते हो क्या तुम मुल्क के वारिस होगे? <sup>26</sup> तुम अपनी तलवार पर भरोसा करते हो, तुम मकरूह काम करते हो और तुम में से हर एक अपने पड़ोसी की बीवी को नापाक करता है; क्या तुम मुल्क के वारिस होगे? <sup>27</sup> तू उनसे यूँ कहना, कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मुझे अपनी हयात की क़सम वह जो वीरानों में हैं, तलवार से क़त्ल होंगे; और उसे जो खुले मैदान में हैं, दरिन्दों को दूँगा कि निगल जाएँ; और वह जो किलों' और ग़ारों में हैं, वबा से मरेंगे।

<sup>28</sup> क्यूँकि मैं इस मुल्क को उजाड़ा और हैरत का ज़रि'अ बनाऊँगा, और इसकी ताक़त का गुरूर जाता रहेगा, और इस्राईल के पहाड़ वीरान होंगे यहाँ तक कि कोई उन पर से गुज़र नहीं करेगा। <sup>29</sup> और जब मैं उनके तमाम मकरूह कामों की वजह से जो उन्होंने किए हैं, मुल्क को वीरान और हैरत का ज़रि'अ बनाऊँगा, तो वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। <sup>30</sup> 'लेकिन ऐ आदमज़ाद, फ़िलहाल तेरी क़ौम के फ़र्ज़न्द दीवारों के पास और घरों के आस्तानों पर तेरे ज़रिए' गुफ़्तगू करते हैं, और एक दूसरे से कहते हैं, हाँ, हर एक अपने भाई से यूँ कहता है, 'चलो, वह कलाम सुनें जो खुदावन्द की तरफ़ से नाज़िल हुआ है। <sup>31</sup> वह उम्मत की तरह तेरे पास आते और मेरे लोगों की तरह तेरे आगे बैठते और तेरी बातें सुनते हैं, लेकिन उन लेकिन 'अमल नहीं करते; क्यूँकि वह अपने मुँह से तो बहुत मुहब्बत ज़ाहिर करते हैं, पर उनका दिल लालच पर दौड़ता है। <sup>32</sup> और देख, तू उनके लिए बहुत मरगूब सरोदी की तरह है, जो खुश इल्हान और माहिर साज़ बजाने वाला हो, क्यूँकि वह तेरी बातें सुनते हैं लेकिन उन पर 'अमल नहीं करते। <sup>33</sup> और जब यह बातें वज़ूद में आएंगी देख, वह जल्द वज़ूद में आने वाली हैं, तब वह जानेंगे कि उनके बीच एक नबी था।

## 34

???????? ?? ???????

<sup>1</sup> और खुदावन्द का कलाम उसपर नाज़िल हुआ। <sup>2</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, इस्राईल के चरवाहों के खिलाफ़ नबुव्वत कर, हाँ नबुव्वत कर और उनसे कह खुदावन्द खुदा, चरवाहों को यूँ फ़रमाता है: कि इस्राईल के चरवाहों पर अफ़सोस, जो अपना ही पेट भरते हैं! क्या चरवाहों को मुनासिब नहीं कि भेड़ों को चराएँ? <sup>3</sup> तुम चिकनाई खाते और ऊन पहनते हो और जो मोटे हैं उनको ज़बह करते हो, लेकिन गल्ला नहीं चराते। <sup>4</sup> तुम ने कमज़ोरों को तवानाई और बीमारों की शिफ़ा नहीं दी और टूटे हुए को नहीं बाँधा, और वह जो निकाल दिए गए उनको वापस नहीं लाए और गुमशुदा की तलाश नहीं की, बल्कि ज़बरदस्ती और सख़्ती से उन पर हुकूमत की। <sup>5</sup> और वह तितर — बितर हो गए क्यूँकि कोई पासवान न था, और वह तितर बितर होकर मैदान के सब दरिन्दों की खुराक हुए। <sup>6</sup> मेरी भेड़े तमाम पहाड़ों पर और हर एक ऊँचे टीले पर भटकती फिरती थीं; हाँ, मेरी भेड़े तमाम इस ज़मीन पर तितर — बितर हो गई और किसी ने न उनको ढूँढ़ा न उनकी तलाश की। <sup>7</sup> इसलिए ऐ पासवानो, खुदावन्द का कलाम सुनो: <sup>8</sup> खुदावन्द खुदा फ़रमाता है,

मुझे अपनी हयात की क्रसम चूँकि मेरी भेंडे शिकार हो गई; हाँ, मेरी भेंडे हर एक जंगली दरिन्दे की खुराक हुई, क्योंकि कोई पासबान न था और मेरे पासबानों ने मेरी भेंडों की तलाश न की, बल्कि उन्होंने अपना पेट भरा और मेरी भेंडों को न चराया। <sup>9</sup> इसलिए ऐ पासबानो, खुदावन्द का कलाम सुनो <sup>10</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं चरवाहों का मुखालिफ़ हूँ और अपना गल्ला उनके हाथ से तलब करूँगा और उनको गल्लेबानी से माजूल करूँगा, और चरवाहे आइंदा को अपना पेट न भर सकेंगे क्योंकि मैं अपना गल्ला उनके मुँह से छुड़ा लूँगा, ताकि वह उनकी खुराक न हो। <sup>11</sup> क्योंकि खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: देख, मैं खुद अपनी भेंडों की तलाश करूँगा और उनको ढूँढ निकालूँगा। <sup>12</sup> जिस तरह चरवाहा अपने गल्ले की तलाश करता है, जबकि वह अपनी भेंडों के बीच हो जो तितर बितर हो गई हैं; उसी तरह मैं अपनी भेंडों को ढूँढूँगा, और उनको हर जगह से जहाँ वह बादल तारीकी के दिन तितर बितर हो गई हैं छुड़ा लाऊँगा। <sup>13</sup> और मैं उनको सब उम्मतों के बीच से वापस लाऊँगा, और सब मुल्कों में से जमा' करूँगा और उन ही के मुल्क में पहुँचाऊँगा, और इस्राईल के पहाड़ों पर नहरों के किनारे और ज़मीन के तमाम आबाद मकानों में चराऊँगा। <sup>14</sup> और उनको अच्छी चरागाह में चराऊँगा और उनकी आरामगाह इस्राईल के ऊँचे पहाड़ों पर होगी, वहाँ वह 'उम्दा आरामगाह में लेटेंगी और हरी चराहगाह में इस्राईल के पहाड़ों पर चरेंगी। <sup>15</sup> मैं ही अपने गल्ले को चराऊँगा और उनको लिटाऊँगा खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>16</sup> मैं गुमशुदा की तलाश करूँगा और खारिज शुदा को वापस लाऊँगा और शिकस्ता को बाधूँगा और बीमारों को तक्रवियत दूँगा, लेकिन मोटों और ज़बरदस्तों को हलाक करूँगा, मैं उनकी सियासत का खाना खिलाऊँगा। <sup>17</sup> और तुम्हारे हक़ में खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: ऐ मेरी भेंडो, देखो, मैं भेंड बकरियों और मेंढों और बकरों के बीच इम्तियाज़ करके इन्साफ़ करूँगा। <sup>18</sup> क्या तुम को यह हल्की सी बात मा'लूम हुई कि तुम अच्छा सबज़ाज़ार खाजाओ और बाक़ी मान्दा को पाँवों से लताड़ो, और साफ़ पानी में से पिओ और बाक़ी मान्दा को पाँवों से गंदला करो? <sup>19</sup> और जो तुम ने पाँव से लताड़ा है वह मेरी भेंडें खाती हैं, और जो तुम ने पाँव से गंदला किया पीती हैं। <sup>20</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा उनको यूँ फ़रमाता है: देखो, मैं हाँ मैं, मोटी और दुबली भेंडों के बीच इन्साफ़ करूँगा। <sup>21</sup> क्योंकि तुम ने पहलू और कन्धे से धकेला है और तमाम बीमारों को अपने सींगों से रेला है, यहाँ तक

कि वह तितर — बितर हुए। <sup>22</sup> इसलिए मैं अपने गल्ले को बचाऊँगा, वह फिर कभी शिकार न होंगे और मैं भेंड बकरियों के बीच इन्साफ़ करूँगा। <sup>23</sup> और मैं उनके लिए एक चौपान मुकर्रर करूँगा और वह उनको चराएगा, या'नी मेरा बन्दा दाऊद, वह उनको चराएगा और वही उनका चौपान होगा। <sup>24</sup> और मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँगा और मेरा बन्दा दाऊद उनके बीच फ़रमारवा होगा, मैं खुदावन्द ने यूँ फ़रमाया है। <sup>25</sup> मैं उनके साथ सुलह का 'अहद बाधूँगा और सब बुरे दरिन्दों को मुल्क से हलाक करूँगा, और वह वीरान में सलामती से रहा करेंगे और जंगलों में सोएँगे। <sup>26</sup> और मैं उनको और उन जगहों को जो मेरे पहाड़ के आसपास हैं, बरकत का ज़रि'अ बनाऊँगा; और मैं वक़्त पर मेंह बरसाऊँगा, बरकत की बारिश होगी। <sup>27</sup> और मैदान के दरख़्त अपना मेवा देंगे और ज़मीन अपनी पैदावार देगी, और वह सलामती के साथ अपने मुल्क में बसेंगे और जब मैं उनके जुए का बन्धन तोड़ूँगा और उनके हाथ से जो उनसे खिदमत करवाते हैं छुड़ाऊँगा, तो वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। <sup>28</sup> और वह आगे को क्रौमों का शिकार न होंगे और ज़मीन के दरिन्दे उनको निगल न सकेंगे, बल्कि वह अम्न से बसेंगे और उनको कोई न डराएगा। <sup>29</sup> और मैं उनके लिए एक नामवर पौदा खड़ा करूँगा, और वह फिर कभी अपने मुल्क में सूखे से हलाक न होंगे और आगे को क्रौमों का ताना न उठाएँगे। <sup>30</sup> और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द उनका खुदा उनके साथ हूँ, और वह या'नी बनी — इस्राईल मेरे लोग हैं, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>31</sup> और तुम ऐ मेरे भेंडो मेरी चरागाह की भेंडो इंसान हो और मैं तुम्हारा खुदा हूँ फ़रमाता है खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

## 35

???? ? ? ? ? ? ?

<sup>1</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ <sup>2</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, कोह — ए — श'ईर की तरफ़ मुतवज्जिह हो और उसके खिलाफ़ नबुव्वत कर, <sup>3</sup> और उससे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, ऐ कोह — ए — श'ईर, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ और तुझ पर अपना हाथ चलाऊँगा, और तुझे वीरान और बेचराग़ करूँगा। <sup>4</sup> मैं तेरे शहरों को उजाड़ूँगा, और तू वीरान होगा और जानेगा कि खुदावन्द मैं हूँ। <sup>5</sup> चूँकि तू पहले से 'अदावत रखता है, और तूने बनी — इस्राईल को उनकी मुसीबत के दिन उनकी बदकिरदारी के आखिर में तलवार की धार के हवाले किया है। <sup>6</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा

फ़रमाता है: कि मुझे अपनी हयात की क़सम, मैं तुझे खून के लिए हवाले करूँगा और खून तुझे दौड़ाएगा; चूँकि तूने खूरज़ी से नफ़रत न रखी, इसलिए खून तेरा पीछा करेगा। <sup>7</sup>यूँ मैं कोह — ए — श'ईर को वीरान और बेचरागा करूँगा, और उसमें से गुज़रने वाले और वापस आने वाले को हलाक करूँगा। <sup>8</sup>और उसके पहाड़ों को उसके मक़तूलों से भर दूँगा, तलवार के मक़तूल तेरे टीलों और तेरी वादियों और तेरी तुमाम नदियों में गिरेंगे। <sup>9</sup>मैं तुझे हमेशा तक वीरान रखूँगा और तेरी बस्तियाँ फिर आबाद न होंगी, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ। <sup>10</sup>चूँकि तूने कहा, कि 'यह दो क़ौमों और यह दो मुल्क मेरे होंगे, और हम उनके मालिक होंगे, बावजूद यह कि खुदावन्द वहाँ था।' <sup>11</sup>इसलिए खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम, मैं तेरे क़हर और हसद के मुताबिक़, जो तूने अपनी कीनावरी से उनके खिलाफ़ ज़ाहिर किया, तुझ से सुलूक करूँगा और जब मैं तुझ पर फ़तवा दूँगा तो उनके बीच मशहूर हूँगा। <sup>12</sup>और तू जानेगा कि मैं खुदावन्द ने तेरी तमाम हिक़ारत की बातें, जो तूने इस्राईल के पहाड़ों की मुखालिफ़त में कहीं, कि 'वह वीरान हुए, और हमारे क़ब्ज़े में कर दिए गए कि हम उनको निगल जाएँ,' सुनी हैं। <sup>13</sup>इसी तरह तुम ने मेरे खिलाफ़ अपनी ज़बान से लाफ़ज़नी की और मेरे सामने बकवास की है, जो मैं सुन चुका हूँ। <sup>14</sup>खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि जब तमाम दुनिया खुशी करेगी, मैं तुझे वीरान करूँगा। <sup>15</sup>जिस तरह तूने बनी इस्राईल की मीरास पर, इसलिए कि वह वीरान थी, खुशी की उसी तरह मैं भी तुझ से करूँगा, ऐ कोह — ए — श'ईर, तू और तमाम अदोम बिल्कुल वीरान होंगे, और लोग जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

## 36

?????? ??

<sup>1</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद! इस्राईल के पहाड़ों से नबुव्वत कर और कह, ऐ इस्राईल के पहाड़ो, खुदावन्द का कलाम सुनो। <sup>2</sup>खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि दुश्मन ने तुम पर, 'अहा हा!' कहा और यह कि, 'वह ऊँचे ऊँचे पुराने मक़ाम हमारे ही हो गए।' <sup>3</sup>इसलिए नबुव्वत कर और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि इस वजह से, हाँ, इसी वजह से कि उन्होंने तुम को वीरान किया और हर तरफ़ से तुम को निगल गए, ताकि जो क़ौमों में से बाक़ी हैं तुम्हारे मालिक हों और तुम्हारे हक़ में बकवासियों ने ज़बान खोली है, और तुम लोगों में बदनाम हुए हो। <sup>4</sup>इसलिए ऐ इस्राईल

के पहाड़ो, खुदावन्द खुदा का कलाम सुनो, खुदावन्द खुदा पहाड़ों और टीलों नालों और वादियों और उजाड़ वीरानों से और मतरूक शहरों से जो आसपास की क़ौमों के बाक़ी लोगों के लिए लूट और मज़ाक़ की जगह हुए हैं, यूँ फ़रमाता है। <sup>5</sup>हाँ, इसी लिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि यक़ीनन मैंने क़ौम के बाक़ी लोगों का और तमाम अदोम का मुखालिफ़ होकर जिन्होंने अपने पूरे दिल की खुशी से और क़ल्बी 'अदावत से अपने आपको मेरी सर — ज़मीन के मालिक ठहराया ताकि उनके लिए ग़नीमत हो, अपनी ग़ैरत के जोश में फ़रमाया है। <sup>6</sup>इसलिए तू इस्राईल के मुल्क के बारे में नबुव्वत कर और पहाड़ों और टीलों और नालों और वादियों से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देखो, मैंने अपनी ग़ैरत और अपने क़हर में कलाम किया, कि इसलिए कि तुम ने क़ौमों की मलामत उठाई है। <sup>7</sup>तब खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैंने क़सम खाई है कि यक़ीनन तुम्हारे आसपास की क़ौम खुद ही मलामत उठाएँगी। <sup>8</sup>'लेकिन तुम ऐ इस्राईल के पहाड़ों, अपनी शाखें निकालोगे और मेरी उम्मत इस्राईल के लिए फल लाओगे, क्योंकि वह जल्द आने वाले हैं। <sup>9</sup>इसलिए देखो, मैं तुम्हारी तरफ़ हूँ और तुम पर तवज्जुह करूँगा, और तुम जोते और बोए जाओगे; <sup>10</sup>और मैं आदमियों को, हाँ, इस्राईल के तमाम घराने को, तुम पर बहुत बढ़ाऊँगा और शहर आबाद होंगे और खंडर फिर ता'मीर किए जाएँगे। <sup>11</sup>और मैं तुम पर इंसान — ओ — हैवान की फ़िरावानी करूँगा और वह बहुत होंगे, और फैलेंगे और मैं तुम को ऐसे आबाद करूँगा जैसे तुम पहले थे, और तुम पर तुम्हारी शुरु' के दिनों से ज्यादा एहसान करूँगा, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ। <sup>12</sup>हाँ, मैं ऐसा करूँगा कि आदमी या'नी मेरे इस्राईली लोग तुम पर चलें फिरेंगे, और तुम्हारे मालिक होंगे और तुम उनकी मीरास होंगे और फिर उनको बेऔलाद न करोगे। <sup>13</sup>खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि वह तुझ से कहते हैं, 'ऐ ज़मीन, तू इंसान को निगलती है और तूने अपनी क़ौमों को बेऔलाद किया।' <sup>14</sup>इसलिए आइन्दा न तू इंसान को निगलेगी न अपनी क़ौमों को बेऔलाद करेगी, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>15</sup>और मैं ऐसा करूँगा कि लोग तुझ पर कभी दीगर क़ौम का ता'ना न सुनेंगे, और तू क़ौमों की मलामत न उठाएगी और फिर अपने लोगों की ग़लती का ज़रि'अ न होगी, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।' <sup>16</sup>और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>17</sup>कि 'ऐ आदमज़ाद, जब बनी इस्राईल





की, और जब मैं नबुव्वत कर रहा था तो एक शोर हुआ, और देख, जलजला आया और हड्डियाँ आपस में मिल गई, हर एक हड्डी अपनी हड्डी से।<sup>8</sup> और मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि नसें और गोश्त उन पर चढ़ आए, और उन पर चमड़े की पोशिश हो गई, लेकिन उनमें दम न था।<sup>9</sup> तब उसने मुझे फ़रमाया, नबुव्वत कर, तू हवा से नबुव्वत कर ऐ आदमज़ाद, और हवा से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि ऐ दम, तू चारों तरफ़ से आ और इन मक्कतूलों पर फूँक कि जिन्दा हो जाएँ।<sup>10</sup> इसलिए मैंने हुक्म के मुताबिक़ नबुव्वत की और उनमें दम आया, और वह जिन्दा होकर अपने पाँव पर खड़ी हुई; एक बहुत बड़ा लश्कर! <sup>11</sup> तब उसने मुझे फ़रमाया, कि 'ऐ आदमज़ाद, यह हड्डियाँ तमाम बनी — इस्राईल हैं; देख, यह कहते हैं, 'हमारी हड्डियाँ सूख गई और हमारी उम्मीद जाती रही, हम तो बिल्कुल फ़ना हो गए।' <sup>12</sup> इसलिए तू नबुव्वत कर और इनसे कह खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि ऐ मेरे लोगो, देखो मैं तुम्हारी क़ब्रों को खोलूँगा और तुम को उनसे बाहर निकालूँगा और इस्राईल के मुल्क में लाऊँगा। <sup>13</sup> और ऐ मेरे लोगो जब मैं तुम्हारी क़ब्रों को खोलूँगा और तुम को उनसे बाहर निकालूँगा, तब तुम जानोगे कि खुदावन्द मैं हूँ। <sup>14</sup> और मैं अपनी रूह तुम में डालूँगा और तुम जिन्दा हो जाओगे, और मैं तुम को तुम्हारे मुल्क में बसाऊँगा, तब तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द ने फ़रमाया और पूरा किया, खुदावन्द फ़रमाता है। <sup>15</sup> फिर खुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>16</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, एक छड़ी ले और उस पर लिख, 'यहूदाह और उसके रफ़ीक़ बनी — इस्राईल के लिए; फिर दूसरी छड़ी ले और उस पर यह लिख, 'इफ़राईम की छड़ी यूसुफ़ और उसके रफ़ीक़ तमाम बनी इस्राईल के लिए।' <sup>17</sup> और उन दोनों को जोड़ दे कि एक ही छड़ी तेरे लिए हों, और वह तेरे हाथ में एक होंगी। <sup>18</sup> और जब तेरी क़ौम के लोग तुझ से पूछें और कहें, कि "इन कामों से तेरा क्या मतलब है? क्या तू हमें नहीं बताएगा?" <sup>19</sup> तो तू उनसे कहना, कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं यूसुफ़ की छड़ी को जो इफ़राईम के हाथ में है, और उसके रफ़ीकों को जो इस्राईल के क़बीले हैं, लूँगा और यहूदाह की छड़ी के साथ जोड़ दूँगा और उनको एक ही छड़ी बना दूँगा और वह मेरे हाथ में एक होंगी। <sup>20</sup> और वह छड़ियाँ जिन पर तू लिखता है, उनकी आँखों के सामने तेरे हाथ में होंगी। <sup>21</sup> और तू उनसे कहना, कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैं बनी इस्राईल को क़ौमों के

बीच से जहाँ जहाँ वह गए हैं निकाल लाऊँगा और हर तरफ़ से उनको इकट्ठा करूँगा और उनको उनके मुल्क में लाऊँगा। <sup>22</sup> और मैं उनको उस मुल्क में इस्राईल के पहाड़ों पर एक ही क़ौम बनाऊँगा, और उन सब पर एक ही बादशाह होगा, और वह आगे को न दो क़ौमों होंगे और न दो मम्लकतों में तक़सीम किए जाएँगे। <sup>23</sup> और वह फिर अपने बुतों से और अपनी नफ़रत अन्ग्रेज़ चीज़ों से और अपनी ख़ताकारी से, अपने आपको नापाक न करेंगे बल्कि मैं उनको उनके तमाम घरों से, जहाँ उन्होंने गुनाह किया है, छुड़ाऊँगा और उनको पाक करूँगा और वह मेरे लोग होंगे और मैं उनका खुदा हूँगा। <sup>24</sup> 'और मेरा बन्दा दाऊद उनका बादशाह होगा और उन सबका एक ही चरवाहा होगा, और वह मेरे हुक्मों पर चलेंगे और मेरे क़ानून को मानकर उन पर 'अमल करेंगे। <sup>25</sup> और वह उस मुल्क में जो मैंने अपने बन्दा या'क़ूब को दिया जिसमें तुम्हारे बाप दादा बसते थे, बसेंगे और वह और उनकी औलाद और उनकी औलाद की औलाद हमेशा तक उसमें सुकूनत करेंगे और मेरा बन्दा दाऊद हमेशा के लिए उनका फ़रमारवा होगा। <sup>26</sup> और मैं उनके साथ सलामती का 'अहद बाधूँगा जो उनके साथ हमेशा का 'अहद होगा, और मैं उनको बसाऊँगा और फ़िरावानी बरख़्शूँगा और उनके बीच अपने हैकल को हमेशा के लिए क़ाईम करूँगा। <sup>27</sup> मेरा ख़ेमा भी उनके साथ होगा, मैं उनका खुदा हूँगा और वह मेरे लोग होंगे। <sup>28</sup> और जब मेरा हैकल हमेशा के लिए उनके बीच रहेगा तो क़ौमों जानेंगी कि मैं खुदावन्द इस्राईल को पाक करता हूँ।

## 38

2222 22 22222 222222

<sup>1</sup> और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>2</sup> कि 'ऐ आदमज़ाद, जूज की तरफ़ जो माज़ूज की सरज़मीन का है, और रोश और मसक और तूबल का फ़रमारवा है, मुतवज्जिह हो और उसके खिलाफ़ नबुव्वत कर, <sup>3</sup> और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, ऐ जूज, रोश और मसक और तूबल के फ़रमारवा, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ। <sup>4</sup> और मैं तुझे फिरा दूँगा, और तेरे जबड़ों में आँकड़े डालकर तुझे और तेरे तमाम लश्कर और घोड़ों और सवारों को, जो सब के सब मुसल्लह लश्कर हैं, जो फरियाँ और सिपरे लिए हैं और सब के सब तेज़ाज़न हैं खींच निकालूँगा। <sup>5</sup> और उनके साथ फ़ारस और कूश और फूत, जो सब के सब सिपर बरदार और खूदपोश हैं, <sup>6</sup> जुमर और उसका तमाम लश्कर, और उत्तर की दूर अतराफ़ के अहल — ए — तुजरमा और उनका

तमाम लश्कर, या'नी बहुत से लोग जो तेरे साथ हैं। 7 तू तैयार हो और अपने लिए तैयारी कर, तू और तेरी तमाम जमा'अत जो तेरे पास जमा' हुई है, और तू उनका रहनुमा हो। 8 और बहुत दिनों के बाद तू याद किया जाएगा, और आखिरी बरसों में उस सरज़मीन पर जो तलवार के गाल्वे से छुड़ाई गई है और जिसके लोग बहुत सी क्रौमों के बीच से जमा' किए गए हैं, इस्राईल के पहाड़ों पर जो पहले से वीरान थे, चढ़ जाएगा; लेकिन वह तमाम क्रौम से आज़ाद है, और वह सब के सब अमन — ओ — अमान से सुकूनत करेंगे। 9 और तू चढ़ाई करेगा और आँधी की तरह जाएगा, तू बादल की तरह ज़मीन को छिपाएगा, तू और तेरा तमाम लश्कर और बहुत से लोग तेरे साथ। 10 खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि उस वक़्त यूँ होगा कि बहुत से खयाल तेरे दिल में आएँगे और तू एक बुरा मंसूबा बाँधेगा; 11 और तू कहेगा, कि 'मैं देहात की सरज़मीन पर हमला करूँगा, मैं उन पर हमला करूँगा जो राहत — ओ — आराम से बसते हैं; जिनकी न फ़सील है और न अड़बंगे और न फाटक हैं। 12 ताकि तू लूटे और माल को छीन ले, और उन वीरानों पर जो अब आबाद हैं, और उन लोगों पर जो तमाम क्रौमों में से जमा' हुए हैं, जो मवेशी और माल के मालिक हैं और ज़मीन की नाफ़ पर बसते हैं, अपना हाथ चलाए। 13 सबा और ददान और तरसीस के सौदागर और उनके तमाम जवान शेर — ए — बबर तुझ से पूछेंगे, 'क्या तू ग़ारत करने आया है? क्या तूने अपना ग़ोल इसलिए जमा' किया है कि माल छीन ले, और चाँदी सोना लूटे और मवेशी और माल ले जाए और बड़ी ग़नीमत हासिल करे। 14 इसलिए, ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत कर और जूज से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि जब मेरी उम्मत इस्राईल, अमन से बसेगी क्या तुझे ख़बर न होगी। 15 और तू अपनी जगह से उत्तर की दूर अतराफ़ से आएगा, तू और बहुत से लोग तेरे साथ, जो सब के सब घोड़ों पर सवार होंगे एक बड़ी फ़ौज और भारी लश्कर। 16 तू मेरी उम्मत इस्राईल के सामने को निकलेगा और ज़मीन को बादल की तरह छिपा लेगा; यह आखिरी दिनों में होगा और मैं तुझे अपनी सरज़मीन पर चढ़ा लाऊँगा, ताकि क्रौमों मुझे जाने जिस वक़्त मैं ऐ जूज उनकी आँखों के सामने तुझसे अपनी तक्रदीस कराऊँ 17 खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि क्या में वही नहीं जिसके बारे में मैंने पहले ज़माने में अपने खिदमत गुज़ार इस्राईली नबियों के ज़रिए', जिन्होंने उन दिनों में सालों साल तक नबुव्वत की फ़रमाया था कि मैं तुझे उन पर चढ़ा लाऊँगा? 18 और यूँ होगा कि

जब जूज इस्राईल की मम्लुकत पर चढ़ाई करेगा तो मेरा क्रहर मेरे चेहरे से नुमाया होगा, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। 19 क्योंकि मैंने अपनी ग़ौरत और आतिशी क्रहर में फ़रमाया कि यकीनन उस रोज़ इस्राईल की सरज़मीन में सख़्त ज़लज़ला आएगा। 20 यहाँ तक कि समन्दर की मछलियाँ और आसमान के परिन्दे और मैदान के चरिन्दे, और सब कीड़े मकौड़े जो ज़मीन पर रेंगते फिरते हैं और तमाम इंसान जो इस ज़मीन पर हैं, मेरे सामने थरथराएँगे और पहाड़ गिर पड़ेंगे और किनारे बैठ जायेंगे और हर एक दीवार ज़मीन पर गिर पड़ेगी। 21 और मैं अपने सब पहाड़ों से उस पर तलवार तलब करूँगा, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, और हर एक इंसान की तलवार उसके भाई पर चलेगी। 22 और मैं वबा भेजकर और ख़ूँजी करके उसे सज़ा दूँगा, और उस पर और उसके लश्करोँ पर और उन बहुत से लोगों पर जो उसके साथ हैं शिदत का मेंह और बड़े — बड़े — ओले और आग और गन्धक बरसाऊँगा। 23 और अपनी बुज़ुर्गी और अपनी तक्रदीस कराऊँगा, और बहुत सी क्रौमों की नज़रों में मशहूर होंगे और वह जानेगे कि खुदावन्द मैं हूँ।

## 39

2222 22 2222222

1 इसलिए ऐ आदमज़ाद, तू जूज के खिलाफ़ नबुव्वत कर और कह, कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: देख, ऐ जूज, रोश और मसक और तूबल के फ़रमारवा, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ। 2 और मैं तुझे फिरा दूँगा और तुझे लिए फिरूँगा और उत्तर की दूर 'अतराफ़ से चढ़ा लाऊँगा और तुझे इस्राईल के पहाड़ों पर पहुँचाऊँगा। 3 और तेरी कमान तेरे बाएँ हाथ से छुड़ा दूँगा और तेरे तीर तेरे दहने हाथ से गिरा दूँगा। 4 तू इस्राईल के पहाड़ों पर अपने सब लश्कर और हिमायतियों के साथ गिर जाएगा, और मैं तुझे हर क्रिस्म के शिकारी परिन्दों और मैदान के दरिन्दों को दूँगा कि खा जाएँ। 5 तू खुले मैदान में गिरेगा, क्योंकि मैंने ही कहा, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। 6 और मैं माजूज पर और उन पर जो समन्दरी मुल्कों में अमन से सुकूनत करते हैं, आग भेजूँगा और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 7 और मैं अपने मुक्रद्स नाम को अपनी उम्मत इस्राईल में जाहिर करूँगा, और फिर अपने मुक्रद्स नाम की बेहुरमती न होने दूँगा; और क्रौमे जानेंगी कि मैं खुदावन्द इस्राईल का कुदद्स हूँ। 8 देख, वह पहुँचा और वजूद में आया, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है; यह वही दिन है जिसके ज़रिए' मैंने

फ़रमाया था।<sup>9</sup> तब इस्राईल के शहरों के बसने वाले निकलेंगे और आग लगाकर हथियारों को जलाएँगे, या'नी सिपरों और फरियों को, कमानों और तीरों को, और भालों और बछ्छियों को, और वह सात बरस तक उनको जलाते रहेंगे।<sup>10</sup> यहाँ तक कि न वह मैदानों से लकड़ी लाएँगे और न जंगलों से काटेंगे क्योंकि वह हथियार ही जलाएँगे, और वह अपने लूटने वालों को लूटेंगे और अपने ग़ारत करने वालों को ग़ारत करेंगे, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।<sup>11</sup> और उसी दिन यूँ होगा कि मैं वहाँ इस्राईल में जूज को एक क़बिरस्तान दूँगा, या'नी रहगुज़रों की वादी जो समन्दर के पूरब में वहाँ जूज को और उसकी तमाम ज़मियत को दफ़न करेंगे, और ज़मियत — ए — जूज की वादी उसका नाम रखेंगे।<sup>12</sup> और सात महीनों तक बनी इस्राईल उनको दफ़न करते रहेंगे ताकि मुल्क को साफ़ करें।<sup>13</sup> हाँ, उस मुल्क के सब लोग उनको दफ़न करेंगे; और यह उनके लिए उनका भी नाम होगा जिस रोज़ मेरी बड़ाई होगी, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।<sup>14</sup> और वह चन्द आदमियों को चुन लेंगे जो इस काम में हमेशा मशगूल रहेंगे, और वह ज़मीन पर से गुज़रते हुए रहगुज़रों की मदद से, उनको जो सतह — ए — ज़मीन पर पड़े रह गए हों, दफ़न करेंगे ताकि उसे साफ़ करें, पूरे सात महीनों के बाद तलाश करेंगे।<sup>15</sup> और जब वह मुल्क में से गुज़रें और उनमें से कोई किसी आदमी की हड्डी देखे, तो उसके पास एक निशान खड़ा करेगा, जब तक दफ़न करने वाले ज़मियत — ए — जूज की वादी में उसे दफ़न न करें।<sup>16</sup> और शहर भी ज़मियत कहलाएगा। यूँ वह ज़मीन को पाक करेंगे।<sup>17</sup> और ऐ आदमज़ाद, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है: कि हर किसिम के परिन्दे और मैदान के हर एक जानवर से कह, जमा' होकर आओ, मेरे उस ज़बीहे पर जिसे मैं तुम्हारे लिए ज़बह करता हूँ; हाँ, इस्राईल के पहाड़ों पर एक बड़े ज़बीहे पर हर तरफ़ से जमा' हो, ताकि तुम गोश्त खाओ और खून पियो।<sup>18</sup> तुम बहादुरों का गोश्त खाओगे और ज़मीन के 'उमरा का खून पिओगे, हाँ, मेंढों, बरों, बक़रों और बैलों का वह सब के सब बसन के फ़र्बा हैं।<sup>19</sup> और तुम मेरे ज़बीहे की जिसे मैंने तुम्हारे लिए ज़बह किया यहाँ तक खाओगे कि सेर हो जाओगे, और इतना खून पिओगे कि मस्त हो जाओगे।<sup>20</sup> और तुम मेरे दस्तरख़्वान पर घोंड़ों और सवारों से, और बहादुरों और तमाम जंगीमर्दों से सेर होगे, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।<sup>21</sup> 'और मैं क़ौमों के बीच अपनी बुज़ुर्गी ज़ाहिर करूँगा और तमाम क़ौमों मेरी सज़ा को जो मैंने दी और मेरे हाथ को जो मैंने उन पर रखवा देखेंगी।<sup>22</sup> और बनी — इस्राईल जानेंगे कि उस दिन से लेकर आगे

को मैं ही खुदावन्द उनका खुदा हूँ।<sup>23</sup> और क़ौमों जानेंगी कि बनी — इस्राईल अपनी बदकिरदारी की वजह से गुलामी में गए, चूँकि वह मुझ से बागी हुए, इसलिए मैंने उनसे मुँह छिपाया; और उनको उनके दुश्मनों के हाथ में कर दिया, और वह सब के सब तलवार से क़त्ल हुए।<sup>24</sup> उनकी नापाकी और ख़ताकारी के मुताबिक़, मैंने उनसे सुलूक किया और उनसे अपना मुँह छिपाया।<sup>25</sup> लेकिन खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि अब मैं या'क़ूब की गुलामी को ख़त्म करूँगा, और तमाम बनी इस्राईल पर रहम करूँगा और अपने पाक नाम के लिए ग़य्यूर हूँगा।<sup>26</sup> और वह अपनी रुस्वाई और तमाम ख़ताकारी, जिससे वह मेरे गुनहगार हुए बर्दाश्त करेंगे; जब वह अपनी सरज़मीन में अमन से क़याम करेंगे, तो कोई उनको न डराएगा।<sup>27</sup> जब मैं उनकी उम्मतों में से वापस लाऊँगा, और उनके दुश्मनों के मुल्कों से जमा' करूँगा, और बहुत सी क़ौमों की नज़रों में उनके बीच मेरी तक्रदीस होगी।<sup>28</sup> तब वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँ, इसलिए कि मैंने उनको क़ौम के बीच गुलामी में भेजा और मैं ही ने उनको उनके मुल्क में जमा' किया और उनमें से एक को भी वहाँ न छोड़ा।<sup>29</sup> और मैं फिर कभी उनसे मुँह न छिपाऊँगा, क्योंकि मैंने अपनी रूह बनी — इस्राईल पर नाज़िल की है खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

## 40

2222 22 222 222

<sup>1</sup> हमारी गुलामी के पच्चीसवें बरस के शुरू में और महीने की दसवीं तारीख़ को, जो शहर की तस्ख़ीर का चौदहवाँ साल था, उसी दिन खुदावन्द का हाथ मुझ पर था, और वह मुझे वहाँ ले गया।<sup>2</sup> वह मुझे खुदा की रोयतों में इस्राईल के मुल्क में ले गया और उसने मुझे एक बहुत बुलन्द पहाड़ पर उतारा, और उसी पर दक्खिन की तरफ़ जैसे एक शहर का सा नक्शा था।<sup>3</sup> जब वह मुझे वहाँ ले गया तो क्या देखता हूँ कि एक शख्स है जिसकी झलक पीतल के जैसी है, और वह सन की डोरी और पैमाइश का सरकण्डा हाथ में लिए फाटक पर खड़ा है।<sup>4</sup> और उस शख्स ने मुझे कहा, कि 'ऐ आदमज़ाद, अपनी आँखों से देख और कानों से सुन, और जो कुछ मैं तुझे दिखाऊँ उस सब पर खूब ग़ौर कर, क्योंकि तू इसी लिए यहाँ पहुँचाया गया है कि मैं यह सब कुछ तुझे दिखाऊँ; इसलिए जो कुछ तू देखता है, बनी इस्राईल से बयान कर।<sup>5</sup> और क्या देखता हूँ कि घर के चारों तरफ़ दीवार है, और उस शख्स के हाथ में पैमाइश का सरकण्डा है, छः हाथ लम्बा और हर एक हाथ पूरे हाथ से चार उँगल

बड़ा था; इसलिए उसने उस दीवार की चौड़ाई नापी, वह एक सरकण्डा हुई और ऊँचाई एक सरकण्डा।<sup>6</sup> तब वह पूरब रूया फाटक पर आया, और उसकी सीढ़ी पर चढ़ा और उस फाटक के आस्ताने को नापा, जो एक सरकण्डा चौड़ा था और दूसरे आस्ताने का 'अर्ज' भी एक सरकण्डा था।<sup>7</sup> और हर एक कोठरी एक सरकण्डा लम्बी और एक सरकण्डा चौड़ी थी, और कोठरियों के बीच पाँच पाँच हाथ का फ़ासिला था, और फाटक की डयोढ़ी के पास अन्दर की तरफ़ फाटक का आस्ताना एक सरकण्डा था।<sup>8</sup> और उसने फाटक के आँगन अन्दर से एक सरकण्डा नापी।<sup>9</sup> तब उसने फाटक के आँगन आठ हाथ नापी, और उसके सुतून दो हाथ और फाटक के आँगन अन्दर की तरफ़ थी।<sup>10</sup> और पूरब रूया फाटक की कोठरियाँ तीन इधर और तीन उधर थीं, यह तीनों पैमाइश में बराबर थीं, और इधर — उधर के सुतूनों का एक ही नाप था।<sup>11</sup> और उसने फाटक के दरवाज़े की चौड़ाई दस हाथ और लम्बाई तेरह हाथ नापी।<sup>12</sup> और कोठरियों के आगे का हाशिया हाथ भर इधर और हाथ भर उधर था, और कोठरियाँ छः हाथ इधर और छः हाथ उधर थीं।<sup>13</sup> तब उसने फाटक की एक कोठरी की छत से दूसरी की छत तक पच्चीस हाथ चौड़ा नापा दरवाज़े के सामने का दरवाज़ा।<sup>14</sup> और उसने सुतून साठ हाथ नापे और सहन के सुतून दरवाज़े के चारों तरफ़ थे।<sup>15</sup> और मदख़ल के फाटक के सामने से लेकर, अन्दरूनी फाटक के आँगन तक पचास हाथ का फ़ासिला था।<sup>16</sup> और कोठरियों में और उनके सुतूनों में फाटक के अन्दर चारों तरफ़ झरोके थे, वैसे ही आँगन के अन्दर भी चारों तरफ़ झरोके थे, और सुतूनों पर खजूर की सूरतें थीं।<sup>17</sup> फिर वह मुझे बाहर के सहन में ले गया, और क्या देखता हूँ कि कमरे हैं और चारों तरफ़ सहन में फ़र्श लगा था, और उस फ़र्श पर तीस कमरे थे।<sup>18</sup> और वह फ़र्श या'नी नीचे का फ़र्श फाटकों के साथ साथ बराबर लगा था।<sup>19</sup> तब उसने उसकी चौड़ाई नीचे के फाटक के सामने से अन्दर के सहन के आगे, पूरब और उत्तर की तरफ़ बाहर बाहर सौ हाथ नापी।<sup>20</sup> फिर उसने बाहर के सहन के उत्तर रूया फाटक की लम्बाई और चौड़ाई नापी।<sup>21</sup> और उसकी कोठरियाँ तीन इस तरफ़ और तीन उस तरफ़ और उसके सुतून और मेहराब पहले फाटक के नाप के मुताबिक़ थे; उसकी लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई पच्चीस हाथ थी।<sup>22</sup> और उसके दरीचे और आँगन और खजूर के दरख़्त पूरब रूया फाटक के नाप के मुताबिक़ थे, और ऊपर जाने के लिए सात ज़ीने थे; उसके आँगन उनके आगे थी।<sup>23</sup> और अन्दर के सहन का फाटक उत्तर रूया और पूरब रूया फाटकों के सामने था, और उसने फाटक से फाटक तक सौ हाथ

नापा।<sup>24</sup> और वह मुझे दक्खिन की राह से ले गया, और क्या देखता हूँ कि दक्खिन की तरफ़ एक फाटक है, और उसने उसके सुतूनों को और उसके आँगन को इन्हीं नापों के मुताबिक़ नापा।<sup>25</sup> और उसमें और उसके आँगन में चारों तरफ़ उन दरीचों की तरह दरीचे थे; लम्बाई पचास हाथ, चौड़ाई पच्चीस हाथ।<sup>26</sup> और उसके ऊपर जाने के लिए सात ज़ीने थे, और उसके आँगन उनके आगे थी और सुतूनों पर खजूर की सूरतें थीं, एक इस तरफ़ और एक उस तरफ़।<sup>27</sup> और दक्खिन की तरफ़ अन्दरूनी सहन का फाटक था, और उसने दक्खिन की तरफ़ फाटक से फाटक तक सौ हाथ नापा।<sup>28</sup> और वह दक्खिनी फाटक की रास्ते से मुझे अन्दरूनी सहन में लाया, और इन्हीं नापों के मुताबिक़ उसने दक्खिनी फाटक को नापा।<sup>29</sup> और उसकी कोठरियों और उसके सुतूनों और उसके आँगन को इन्हीं नापों के मुताबिक़ पाया और उसमें और उसके आँगन में चारों तरफ़ दरीचे थे; लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई पच्चीस हाथ थी।<sup>30</sup> और आँगन चारों तरफ़ पच्चीस हाथ लम्बी और पाँच हाथ चौड़ी थी।<sup>31</sup> उसकी आँगन बैरूनी सहन की तरफ़ थी और उसके सुतूनों पर खजूर की सूरतें थीं और ऊपर जाने के लिए आठ ज़ीने थे।<sup>32</sup> और वह मुझे पूरब की तरफ़ अन्दरूनी सहन में लाया और इन्हीं नापों के मुताबिक़ फाटक को पाया।<sup>33</sup> और उसकी कोठरियों और सुतूनों और आँगन को इन्हीं नापों के मुताबिक़ पाया, और उसमें और उसके आँगन में चारों तरफ़ दरीचे थे; लम्बाई पचास हाथ चौड़ाई पच्चीस हाथ थी।<sup>34</sup> और उसका आँगन बैरूनी सहन की तरफ़ था और उसके सुतूनों पर इधर — उधर खजूर की सूरतें थीं, और ऊपर जाने के लिए आठ ज़ीने थे।<sup>35</sup> और वह मुझे उत्तरी फाटक की तरफ़ ले गया और इन्हीं नापों के मुताबिक़ उसे पाया।<sup>36</sup> उसकी कोठरियों और उसके सुतूनों और उसके आँगन को जिनमें चारों तरफ़ दरीचे थे, लम्बाई पचास हाथ चौड़ाई पच्चीस हाथ थी।<sup>37</sup> और उसके सुतून बैरूनी सहन की तरफ़ थे, और उसके सुतूनों पर इधर उधर खजूर की सूरतें थीं और ऊपर जाने के लिए आठ ज़ीने थे।<sup>38</sup> और फाटकों के सुतूनों के पास दरवाज़ेदार हुजरा था, जहाँ सोख़्तनी कुर्बानियाँ धोते थे।<sup>39</sup> और फाटक के आँगन में दो मेज़े इस तरफ़ और दो उस तरफ़ थीं, कि उन पर सोख़्तनी कुर्बानी और ख़ता की कुर्बानी और जुर्म की कुर्बानी ज़बह करें।<sup>40</sup> और बाहर की तरफ़ उत्तरी फाटक के मदख़ल के पास दो मेज़ें थीं, और फाटक की डयोढ़ी की दूसरी तरफ़ दो मेज़ें।<sup>41</sup> फाटक के पास चार मेज़ें इस तरफ़ और चार उस तरफ़ थीं, या'नी आठ मेज़ें जिन पर ज़बह करें।<sup>42</sup> सोख़्तनी कुर्बानी के लिए तराशे हुए पत्थरों की चार मेज़ें थीं, जो डेढ़ हाथ लम्बी और



डेढ़ हाथ चौड़ी और एक हाथ ऊँची थीं, जिन पर वह सोख्तनी कुर्बानी और ज़बीहे को ज़बह करने के हथियार रखते थे। <sup>43</sup> और उसके अन्दर चारों तरफ़ चार उंगल लम्बी अंकड़ियाँ लगी थीं और कुर्बानी का गोश्त मेज़ों पर था। <sup>44</sup> और अन्दरूनी फाटक से बाहर अन्दरूनी सहन में जो उत्तरी फाटक की जानिब था, गाने वालों के कमरे थे और उनका रुख दक्खिन की तरफ़ था, और एक पूरबी फाटक की जानिब था जिसका रुख उत्तर की तरफ़ था। <sup>45</sup> और उसने मुझ से कहा, कि “यह कमरा जिसका रुख दक्खिन की तरफ़ है, उन काहिनों के लिए है जो घर की निगहबानी करते हैं; <sup>46</sup> और वह कमरा जिसका रुख उत्तर की तरफ़ है, उन काहिनों के लिए है जो मज़बह की मुहाफ़िज़त में हाज़िर हैं; यह बनी सदूक़ हैं जो बनी लावी में से खुदावन्द के सामने आते हैं कि उसकी ख़िदमत करें।” <sup>47</sup> और उसने सहन को सौ हाथ लम्बा और सौ हाथ चौड़ा मुरब्बा नापा और मज़बह घर के सामने था। <sup>48</sup> फिर वह मुझे घर के आँगन में लाया और आँगन को नापा; पाँच हाथ इधर पाँच हाथ उधर और फाटक की चौड़ाई तीन हाथ इस तरफ़ थी और तीन हाथ उस तरफ़। <sup>49</sup> आँगन की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई ग्यारह हाथ की और सीढ़ी के ज़ीने जिनसे उस पर चढ़ते थे और सुतूनों के पास पील पाए थे, एक इस तरफ़ और एक उस तरफ़।

## 41

<sup>1</sup> और वह मुझे हैकल में लाया और सुतूनों को नापा, छः हाथ की चौड़ाई एक तरफ़ और छः हाथ की दूसरी तरफ़, यही खेमे की चौड़ाई थी। <sup>2</sup> और दरवाज़े की चौड़ाई दस हाथ, और उसका एक पहलू पाँच हाथ का और दूसरा भी पाँच हाथ का था; और उसने उसकी लम्बाई चालीस हाथ और चौड़ाई बीस हाथ नापी। <sup>3</sup> तब वह अन्दर गया और दरवाज़े के हर सुतून को दो हाथ नापा, और दरवाज़े को छः हाथ और दरवाज़े की चौड़ाई सात हाथ थी। <sup>4</sup> और उसने हैकल के सामने की लम्बाई को बीस हाथ और चौड़ाई को बीस हाथ नापा, और मुझ से कहा, कि “यही पाक — तरीन मक़ाम है।” <sup>5</sup> और उसने घर की दीवार छः हाथ नापी, और पहलू के हर एक कमरे की चौड़ाई घर के चारों तरफ़ चार हाथ थी। <sup>6</sup> और पहलू के कमरे तीन मंज़िला थे; कमरे के ऊपर कमरा क्रतार में तीस, और वह उस दीवार में जो घर के चारों तरफ़ के कमरों के लिए थी, दाख़िल किए गए थे ताकि मज़बूत हों; लेकिन वह घर की दीवार से मिले हुए न थे। <sup>7</sup> और वह पहलू पर के कमरे ऊपर तक चारों तरफ़ ज्यादा चौड़े होते जाते थे, क्योंकि घर चारों तरफ़ से ऊँचा होता चला जाता था। घर की चौड़ाई ऊपर तक बराबर थी, और

ऊपर के कमरों का रास्ता बीच के कमरों के बीच से था। <sup>8</sup> और मैंने घर के चारों तरफ़ ऊँचा चबूतरा देखा, पहलू के कमरों की बुनियाद छः बड़े हाथ के पूरे सरकण्डे की थी। <sup>9</sup> और पहलू के कमरों की बैरूनी दीवार की चौड़ाई पाँच हाथ थी, और जो जगह बाकी बची वह घर के पहलू के कमरों के बीच थी। <sup>10</sup> और कमरों के बीच घर के चारों तरफ़ बीस हाथ का फ़ासला था। <sup>11</sup> और पहलू के कमरों के दरवाज़े उस ख़ाली जगह की तरफ़ थे, एक दरवाज़ा उत्तर की तरफ़ और एक दक्खिन की तरफ़ और ख़ाली जगह की चौड़ाई चारों तरफ़ पाँच हाथ थी। <sup>12</sup> और वह 'इमारत जो अलग जगह के सामने पश्चिम की तरफ़ थी उसकी चौड़ाई सत्तर हाथ थी और उस 'इमारत की दीवार चारों तरफ़ पाँच हाथ मोटी और नब्बे हाथ लम्बी थी। <sup>13</sup> इसलिए उसने घर को सौ हाथ लम्बा नापा और अलग जगह और 'इमारत उसकी दीवारों के साथ सौ हाथ लम्बी थी। <sup>14</sup> नेज़, घर के सामने की तरफ़ उस पूरबी जानिब की अलग जगह की चौड़ाई सौ हाथ थी। <sup>15</sup> और अलग जगह के सामने की 'इमारत की लम्बाई को, जो उसके पीछे थी, और उसकी जानिब के बरामदे इस तरफ़ से और उस तरफ़ से, और अन्दर की तरफ़ हैकल को और सहन के आँगनों को उसने सौ हाथ नापा। <sup>16</sup> आस्तानों और झरोकों और चारों तरफ़ के बरामदों को जो सहमंज़िला और आस्तानों के सामने थे, और चारों तरफ़ लकड़ी से मढ़े हुए थे, और ज़मीन से खिड़कियों तक और खिड़कियाँ भी मढ़ी हुई थीं। <sup>17</sup> दरवाज़े के ऊपर तक और अन्दरूनी घर तक और उसके बाहर भी, चारों तरफ़ की तमाम दीवार तक घर के अन्दर बाहर सब ठीक अन्दाज़े से थे। <sup>18</sup> और करूबी और खज़ूर बने थे, और एक खज़ूर दो करूबियों के बीच में था और हर एक करूबी के दो चेहरे थे। <sup>19</sup> चुनाँचे एक तरफ़ इंसान का चेहरा खज़ूर की तरफ़ था, और दूसरी तरफ़ जवान शेर — ए — बबर का चेहरा भी खज़ूर की तरफ़ था; घर की चारों तरफ़ इसी तरह का काम था। <sup>20</sup> ज़मीन से दरवाज़े के ऊपर तक, और हैकल की दीवार पर करूबी और खज़ूर बने थे। <sup>21</sup> और हैकल के दरवाज़े के सुतून चहार गोशा थे, और हैकल के सामने की सूरत भी इसी तरह की थी। <sup>22</sup> मज़बह लकड़ी का था, उसकी ऊँचाई तीन हाथ और लम्बाई दो हाथ थी, और उसके कोने और उसकी कुर्सी और उसकी दीवारें लकड़ी की थीं, और उसने मुझ से कहा, यह खुदावन्द के सामने की मेज़ है।” <sup>23</sup> और हैकल और हैकल के दो दरवाज़े थे। <sup>24</sup> और दरवाज़ों के दो दो पल्ले थे जो मुड़ सकते थे; दो पल्ले एक दरवाज़े के लिए और दो दूसरे के लिए। <sup>25</sup> और उन पर या'नी हैकल के दरवाज़ों पर करूबी और खज़ूर बने थे, जैसे कि दीवारों पर बने थे

और बाहर के आँगन के रुख पर तख्ता बन्दी थी। <sup>26</sup> और आँगन की अन्दरूनी और बैरूनी जानिब पहलू में झरोके और खजूर के दरख्त बने थे, और हैकल के पहलू के कमरों और तख्ता बन्दी की यही सूरत थी।

## 42

22222222 22 22222

<sup>1</sup> फिर वह मुझे उत्तरी रास्ते से बैरूनी सहन में ले गया, और उस कोठरी में जो अलग जगह और 'इमारत के सामने उत्तर की तरफ थी ले आया। <sup>2</sup> सौ हाथ की लम्बाई की जगह के सामने उत्तरी दरवाज़ा था, और उसकी चौड़ाई पचास हाथ थी। <sup>3</sup> बीस हाथ के सामने जो अन्दरूनी सहन के लिए थे, और बैरूनी सहन के फ़र्श के सामने कोठरियाँ तीन तबकों में एक दूसरे के सामने थीं। <sup>4</sup> और कोठरियों के सामने अन्दर की तरफ दस हाथ चौड़ा रास्ता था, और एक रास्ता एक हाथ का और उनके दरवाज़े उत्तर की तरफ थे। <sup>5</sup> ऊपर की कोठरियाँ छोटी थीं, क्योंकि उनके बरामदों ने 'इमारत की निचली और बीच की मंज़िल के सामने इनसे ज्यादा जगह रोक ली थी। <sup>6</sup> क्योंकि वह तीन दर्जों की थीं, लेकिन उनके सुतून सहन के सुतूनों की तरह न थे; इसलिए वह निचली और बीच मंज़िल से तंग थीं। <sup>7</sup> और कोठरियों के पास की बैरूनी सहन की तरफ, कोठरियों के सामने की बैरूनी दीवार पचास हाथ लम्बी थी। <sup>8</sup> क्योंकि बैरूनी सहन की कोठरियों की लम्बाई पचास हाथ थी, और हैकल के सामने सौ हाथ की लम्बाई थी। <sup>9</sup> और उन कोठरियों के नीचे पूरब की तरफ वह मदख़ल था, जहाँ से बैरूनी सहन से दाख़िल होते थे। <sup>10</sup> पूरबी सहन की चौड़ी दीवार में और अलग जगह और उस 'इमारत के सामने कोठरियाँ थीं। <sup>11</sup> और उनके सामने एक ऐसा रास्ता था, जैसा उत्तर की तरफ की कोठरियों के सामने था; उनकी लम्बाई और चौड़ाई बराबर थी, और उनके तमाम मख़रज उनकी तरतीब और उनके दरवाज़ों के मुताबिक़ थे। <sup>12</sup> और दक्खिन की तरफ की कोठरियों के दरवाज़ों के मुताबिक़ एक दरवाज़ा रास्ते के सिरे पर था, या'नी सीधी दीवार के रास्ते पर पूरब की तरफ जहाँ से उनमें दाख़िल होते थे। <sup>13</sup> और उसने मुझ से कहा, कि "उत्तरी और दक्खिनी कोठरियाँ जो अलग जगह के मुक़ाबिल हैं पाक कोठरियाँ हैं जहाँ काहिन जो खुदावन्द के सामने जाते हैं अक्रदस चीज़ें खायेंगे और अक्रदस चीज़ें और नज़र की कुर्बानी और ख़ता की कुर्बानी और जुर्म की कुर्बानी वहाँ रखेंगे, क्योंकि वह मकान पाक है। <sup>14</sup> जब काहिन दाख़िल हों तो वह हैकल से बैरूनी सहन में न जाएँ, बल्कि अपनी ख़िदमत के लिबास वहीं उतार दें क्योंकि वह पाक हैं,

और वह दूसरे कपड़े पहन कर 'आम मकान में जाएँ।" <sup>15</sup> फिर जब वह अन्दरूनी घर को नाप चुका, तो मुझे उस फाटक के रास्ते से लाया जिसका रुख पूरब की तरफ है और घर को चारों तरफ से नापा। <sup>16</sup> उसने पैमाइश के सरकण्डे से पूरब की तरफ चारो तरफ पाँच सौ सरकण्डे नापे। <sup>17</sup> उसने पैमाइश के सरकण्डे से उत्तर की तरफ चारो तरफ पाँच सौ सरकण्डे नापे। <sup>18</sup> उसने पैमाइश के सरकण्डे से दक्खिन की तरफ भी पाँच सौ सरकण्डे नापे। <sup>19</sup> उसने पच्छिम की तरफ मुड़ कर पैमाइश के सरकण्डे से पाँच सौ सरकण्डे नापे। <sup>20</sup> उसने उसको चारों तरफ से नापा, उसकी चारों तरफ एक दीवार पाँच सौ सरकण्डे लम्बी और पाँच सौ चौड़ी थी, ताकि पाक को 'आम से जुदा करे।

## 43

222222 22 22222 22 222222

<sup>1</sup> फिर वह मुझे फाटक पर ले आया, या'नी उस फाटक पर जिसका रुख पूरब की तरफ है; <sup>2</sup> और क्या देखता हूँ कि इस्राईल के खुदा का जलाल पूरब की तरफ से आया, और उसकी आवाज़ सैलाब के शोर के जैसी थी, और ज़मीन उसके जलाल से मुनव्वर हो गई। <sup>3</sup> और यह उस ख़्वाब की नुमाइश के मुताबिक़ था जो मैंने देखा था, हाँ, उस ख़्वाब के मुताबिक़ जो मैंने उस वक़्त देखा था जब मैं शहर को बर्बाद करने आया था, और यह रोयतें उस ख़्वाब की तरह थीं जो मैंने नहर — ए — किबार के किनारे पर देखा था; तब मैं मुँह के बल गिरा। <sup>4</sup> और खुदावन्द का जलाल उस फाटक की राह से, जिसका रुख पूरब की तरफ है हैकल में दाख़िल हुआ। <sup>5</sup> और रूह ने मुझे उठा कर अन्दरूनी सहन में पहुँचा दिया, और क्या देखता हूँ कि हैकल खुदावन्द के जलाल से मा'मूर है। <sup>6</sup> और मैंने किसी की आवाज़ सुनी, जो हैकल में से मेरे साथ बातें करता था, और एक शख्स मेरे पास खड़ा था। <sup>7</sup> और उसने मुझे फ़रमाया, कि 'ऐ आदमज़ाद, यह मेरी तख़्तगाह और मेरे पाँव की कुर्सी है जहाँ मैं बनी — इस्राईल के बीच हमेशा तक रहूँगा और बनी इस्राईल और उनके बादशाह फिर कभी मेरे पाक नाम को अपनी बदकारी और अपने बादशाहों की लाशों से उनके मरने पर नापाक न करेंगे। <sup>8</sup> क्योंकि वह अपने आस्ताने मेरे आस्तानों के पास, और अपनी चौखटें मेरी चौखटों के पास लगाते थे, और मेरे और उनके बीच सिर्फ़ एक दीवार थी; उन्होंने अपने उन घिनौने कामों से जो उन्होंने किए मेरे पाक नाम को नापाक किया, इसलिए मैंने अपने क्रहर में उनको हलाक किया। <sup>9</sup> अगरचे अब वह अपनी बदकारी और अपने बादशाहों की लाशें मुझ से दूर कर

दें, तो मैं हमेशा तक उनके बीच रहूँगा। <sup>10</sup> 'ऐ आदमजाद, तू बनी — इस्राईल को यह घर दिखा, ताकि वह अपनी बदकिरदारी से शर्मिन्दा हो जाएँ और इस नमूने को नापें। <sup>11</sup> और अगर वह अपने सब कामों से शर्मिन्दा हों, तो उस घर का नक्शा और उसकी तरतीब और उसके मखारिज और मदखल और उसकी तमाम शक्त और उसके कुल हुक्मों और उसकी पूरी वज्रह और तमाम क़वानीन उनको दिखा, और उनकी आँखों के सामने उसको लिख, ताकि वह उसका कुल नक्शा और उसके तमाम हुक्मों को मानकर उन पर 'अमल करें। <sup>12</sup> इस घर का क़ानून यह है कि इसकी तमाम सरहदें पहाड़ की चोटी पर और इसके चारों तरफ़ बहुत पाक होंगी; देख, यही इस घर का क़ानून है। <sup>13</sup> और हाथ के नाप से मज़बह के यह नाप हैं, और इस हाथ की लम्बाई एक हाथ चार उँगल है। पाया एक हाथ का होगा, और चौड़ाई एक हाथ और उसके चारो तरफ़ बालिशत भर चौड़ा हाशिया, और मज़बह का पाया यही है। <sup>14</sup> और ज़मीन पर के इस पाये से लेकर नीचे की कुर्सी तक दो हाथ, और उसकी चौड़ाई एक हाथ और छोटी कुर्सी से बड़ी कुर्सी तक चार हाथ और चौड़ाई एक हाथ। <sup>15</sup> और ऊपर का मज़बह चार हाथ का होगा, और मज़बह के ऊपर चार सींग होंगे। <sup>16</sup> और मज़बह बारह हाथ लम्बा होगा और बारह हाथ चौड़ा मुरब्बा। <sup>17</sup> और कुर्सी चौदह हाथ लम्बी और चौदह हाथ चौड़ी मुरब्बा' और चारों तरफ़ उसका किनारा आधा हाथ, उसका पाया चारो तरफ़ एक हाथ और उसका ज़ीना पूरब रू होगा। <sup>18</sup> और उसने मुझे से कहा, ऐ आदमजाद, खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि मज़बह के यह हुक्म उस दिन जारी होंगे जब वह उसे बनाएँगे, ताकि उस पर सोख्तनी कुर्बानी पेश करें और उस पर खून छिड़कें। <sup>19</sup> और तू लावी काहिनों को जो सद्क की नसल से हैं, जो मेरी खिदमत के लिए मेरे सामने आते हैं, खता की कुर्बानी के लिए बछड़ा देना, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>20</sup> और तू उसके खून में से लेना और मज़बह के चारों सींगों पर, उसकी कुर्सी के चारों कोनों पर और उसके चारो तरफ़ के हाशिए पर लगाना; इसी तरह कफ़ारा देकर उसे पाक — ओ — साफ़ करना। <sup>21</sup> और खता की कुर्बानी के लिए बछड़ा लेना, और वह घर की मुक़रर जगह में हैकल के बाहर जलाया जाएगा। <sup>22</sup> और तू दूसरे दिन एक बे'ऐब बकरा खता की कुर्बानी के लिए पेश करना, और वह मज़बह को कफ़ारा देकर उसी तरह पाक करेंगे, जिस तरह बछड़े से पाक किया था। <sup>23</sup> और जब तू उसे पाक कर चुके तो एक बे'ऐब बछड़ा और गल्ले का एक बे'ऐब मेंढा पेश करना। <sup>24</sup> और तू उनको खुदावन्द के सामने लाना

और काहिन उनपर नमक छिड़कें और उनको सोख्तनी कुर्बानी के लिए खुदावन्द के सामने पेश करें। <sup>25</sup> और तू सात दिन तक हर रोज़ एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए तैयार कर रखना, वह एक बछड़ा और गल्ले का एक मेंढा भी जो बे'ऐब हों तैयार कर रखें। <sup>26</sup> सात दिन तक वह मज़बह को कफ़ारा देकर पाक — ओ — साफ़ करेंगे और उसको मख्सूस करेंगे। <sup>27</sup> और जब यह दिन पूरे होंगे, तो यूँ होगा कि आठवें दिन और आइन्दा काहिन तुम्हारी सोख्तनी कुर्बानियों को और तुम्हारी सलामती की कुर्बानियों को मज़बह पर पेश करूँगे, और मैं तुम को कुबूल करूँगा; खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

## 44

?????, ???? ? ? ??????

<sup>1</sup> तब वह मुझे को हैकल के बैरूनी फाटक के रास्ते से, जिसका रुख पूरब की तरफ़ है वापस लाया, और वह बन्द था। <sup>2</sup> और खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, कि "यह फाटक बन्द रहेगा और खोला न जाएगा, और कोई इंसान इससे दाखिल न होगा; चूँकि खुदावन्द इस्राईल का खुदा इससे दाखिल हुआ है, इसलिए यह बन्द रहेगा। <sup>3</sup> मगर फ़रमारवाँ इसलिए कि फ़रमारवाँ है, खुदावन्द के सामने रोटी खाने को इसमें बैठेगा; वह इस फाटक के आस्ताने के रास्ते से अन्दर आएगा, और इसी रास्ते से बाहर जाएगा।" <sup>4</sup> फिर वह मुझे उत्तरी फाटक के रास्ते से हैकल के सामने लाया, और मैंने निगाह की और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द के जलाल ने खुदावन्द के घर को मा'मूर कर दिया; और मैं मुँह के बल गिरा। <sup>5</sup> और खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, ऐ आदमजाद, खूब ग़ौर कर और अपनी आँखों से देख, और जो कुछ खुदावन्द के घर के हुक्मों और क़वानीन के ज़रिए' तुझ से कहता हूँ अपने कानों से सुन, और घर के मदखल को और हैकल के सब मखरजों को खयाल में रख। <sup>6</sup> और तू बनी इस्राईल के बागी लोगों से कहना कि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता कि ऐ बनी इस्राईल तुम अपनी मकरूहात को अपने लिए काफ़ी समझो। <sup>7</sup> चुनाँचे जब तुम मेरी रोटी और चर्बी और खून अदा करते थे, तो दिल के नामख़तून और जिस्म के नामख़तून अजनबीज़ादों को मेरे हैकल में लाए, ताकि वह मेरी हैकल में आकर मेरे घर को नापाक करें, और उन्होंने तुम्हारे तमाम नफ़रतअंगेज़ कामों की वजह से मेरे 'अहद को तोड़ा। <sup>8</sup> और तुम ने मेरी पाक चीज़ों की हिफ़ाज़त न की, बल्कि तुम ने ग़ैरों को अपनी तरफ़ से मेरी हैकल में निगहबान मुक़रर किया। <sup>9</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि उन अजनबीज़ादों में से जो बनी

इस्राईल के बीच हैं, कोई दिल का नामखून या जिस्म का नामखून अजनबी ज़ादा मेरी हैकल में दाखिल न होगा। <sup>10</sup> और बनी लावी जो मुझ से दूर हो गए जब इस्राईल गुमराह हुआ, क्योंकि वह अपने बुतों की पैरवी करके मुझ से गुमराह हुए वह भी अपनी बदकिरदारी की सज़ा पाएँगे। <sup>11</sup> तोभी वह मेरे हैकल में खादिम होंगे और मेरे घर के फाटकों पर निगहबानी करेंगे और मेरे घर में खिदमत गुज़ारी करेंगे; वह लोगों के लिए सोख्तनी कुर्बानी और ज़बीहा ज़बह करेंगे और उनके सामने उनकी खिदमत के लिए खड़े रहेंगे। <sup>12</sup> चूँकि उन्होंने उनके लिए बुतों की खिदमत की और बनी इस्राईल के लिए बदकिरदारी में ठोकर का जरि'अ हुए, इसलिए मैंने उन पर हाथ चलाया और वह अपनी बदकिरदारी की सज़ा पाएँगे; खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: <sup>13</sup> और वह मेरे नज़दीक न आ सकेंगे कि मेरे सामने कहानत करें, न वह मेरी पाक चीज़ों के पास आएँगे या'नी पाक तरीन चीज़ों के पास; बल्कि वह अपनी रुसवाई उठायेंगे और अपने घिनौने कामों की, जो उन्होंने किए हैं सज़ा पाएँगे। <sup>14</sup> तोभी मैं उनको हैकल की हिफ़ाज़त के लिए और उसकी तमाम खिदमत के लिए, और उस सब के लिए जो उसमें किया जाएगा, निगहबान मुक़रर करूँगा। <sup>15</sup> लेकिन लावी काहिन या'नी बनी सदूक़ जो मेरी हैकल की हिफ़ाज़त करते थे, जब बनी इस्राईल मुझ से गुमराह हो गए, मेरी खिदमत के लिए मेरे नज़दीक आएँगे और मेरे सामने खड़े रहेंगे ताकि मेरे सामने चर्बी और खून पेश करेंगे, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>16</sup> वही मेरे हैकल में दाखिल होंगे और वही खिदमत के लिए मेरी मेज़ के पास आएँगे और मेरे अमानत दार होंगे। <sup>17</sup> और यूँ होगा कि जिस वक़्त वह अन्दरूनी सहन के फाटकों से दाखिल होंगे, तो कतानी लिबास से मुलब्स होंगे, और जब तक अन्दरूनी सहन के फाटकों के बीच और घर में खिदमत करेंगे कोई ऊनी चीज़ न पहनेंगे। <sup>18</sup> वह अपने सिरों पर कतानी 'अमामे और कमरों पर कतानी पायजामे पहनेंगे, और जो कुछ पसीने के ज़रिए' हो उसे अपनी कमर पर न बाँधे। <sup>19</sup> और जब बैरूनी सहन में या'नी 'अवाम के बैरूनी सहन में निकल आएँ, तो अपनी खिदमत की पोशाक उतार कर पाक कमरों में रखेंगे; और दूसरी पोशाक पहनेंगे, ताकि अपने लिबास से 'अवाम की तकदीस न करें। <sup>20</sup> और वह न सिर मुंडाएँगे और न बाल बढ़ाएँगे, वह सिर्फ़ अपने सिरों के बाल कतराएँगे। <sup>21</sup> और जब अन्दरूनी सहन में दाखिल हों, तो कोई काहिन शराब न पिए। <sup>22</sup> और वह बेवा या मुतल्लका से ब्याह न करेंगे, बल्कि बनी — इस्राईल की नसल की कुंवारियों से या उस बेवा से जो किसी

काहिन की बेवा हो। <sup>23</sup> और वह मेरे लोगों को पाक और 'आम में फ़र्क बताएँगे, और उनको नजिस और ताहिर में इम्तियाज़ करना सिखाएँगे। <sup>24</sup> और वह झगड़ों के फ़ैसले के लिए खड़े होंगे, और मेरे हुक्मों के मुताबिक़ 'अदालत करेंगे, और वह मेरी तमाम मुक़ररा 'ईदों में मेरी शरी'अत और मेरे क़ानून पर 'अमल करेंगे, और मेरे सबतों को पाक जानेंगे। <sup>25</sup> और वह किसी मुर्दे के पास जाने से अपने आपको नापाक न करेंगे; मगर सिर्फ़ बाप या माँ या बेटे या बेटा या भाई या कुंवारी बहन के लिए वह अपने आपको नापाक कर सकते हैं। <sup>26</sup> और वह उसके पाक होने के बाद उसके लिए और सात दिन शुमार करेंगे, <sup>27</sup> और जिस रोज़ वह हैकल के अन्दर अन्दरूनी सहन में खिदमत करने को जाए, तो अपने लिए ख़ता की कुर्बानी पेश करेगा; खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>28</sup> और उनके लिए एक मीरास होगी मैं ही उनकी मीरास हूँ, और तुम इस्राईल में उनकी कोई मिल्लियत न देना — मैं ही उनकी मिल्लियत हूँ। <sup>29</sup> और वह नज़र की कुर्बानी और ख़ता की कुर्बानी और जुर्म की कुर्बानी खाएँगे, और हर एक चीज़ जो इस्राईल में मख़सूस की जाए उन ही की होगी। <sup>30</sup> और सब पहले फलों का पहला और तुम्हारी तमाम चीज़ों की हर एक कुर्बानी काहिन के लिए हों, और तुम अपने पहले गुन्धे आटे से काहिन को देना, ताकि तेरे घर पर बरकत हो। <sup>31</sup> अगर वह जो अपने आप ही मर गया हो या दरिन्दों का फाड़ा हुआ, क्या परिन्द क्या चरिन्द, काहिन उसे न खाएँ।

## 45

22222 22 22222222

<sup>1</sup> और जब तुम ज़मीन को पर्ची डाल कर मीरास के लिए तकसीम करो तो उसका एक पाक हिस्सा खुदावन्द के सामने हदिया देना उसकी लम्बाई पच्चीस हज़ार और चौड़ाई दस हज़ार होगी वह अपने चारों तरफ़ की तमाम हदों में पाक होगा। <sup>2</sup> उसमें से एक कित'आ जिसकी लम्बाई पाँच सौ और चौड़ाई पाँच सौ, जो चारों तरफ़ बराबर है हैकल के लिए होगा, और उसके अहाते के लिए चारों तरफ़ पचास पचास हाथ की चौड़ाई होगी। <sup>3</sup> और तू इस पैमाइश की पच्चीस हज़ार की लम्बाई और दस हज़ार की चौड़ाई नापेगा और उसमें हैकल होगा जो बहुत पाक है। <sup>4</sup> ज़मीन का यह पाक हिस्सा उन काहिनों के लिए होगा जो हैकल के खादिम हैं, और जो खुदावन्द के सामने खिदमत करने को आते हैं; और यह मक़ाम उनके घरों के लिए होगा, और हैकल के लिए पाक जगह होगी। <sup>5</sup> और पच्चीस हज़ार लम्बा और दस हज़ार चौड़ा, बनी लावी हैकल के खादिमों के लिए होगा, ताकि बीस



बस्तियों की जगह उनकी मिल्यक्रित हो। <sup>6</sup> और तुम शहर का हिस्सा पाँच हजार चौड़ा और पच्चीस हजार लम्बा हैकल के हदिये वाले हिस्से के पास मुकर्रर करना, यह तमाम बनी इस्राईल के लिए होगा। <sup>7</sup> और पाक हदिये वाले हिस्से की तरफ़ शहर के हिस्से की दोनों तरफ़, पाक हदिये वाले हिस्से के सामने और शहर के हिस्से के सामने दक्खिनी गोशे मगरिब की तरफ़ और पूरबी गोशे पूरब की तरफ़ फ़रमारवाँ के लिए होगा; और लम्बाई में पच्छिमी सरहद से पूरबी सरहद तक उन हिस्सों में से एक के सामने होगा। <sup>8</sup> इस्राईल के बीच ज़मीन में से उसका यही हिस्सा होगा, और मेरे हाकिम फिर मेरे लोगों पर सितम न करेंगे; और ज़मीन को बनी — इस्राईल में उनके क़बीले के मुताबिक़ तकसीम करेंगे। <sup>9</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि ऐ इस्राईल के हाकिमों, तुम्हारे लिए यही काफ़ी है; जुल्म और लूट मार को दूर करो, 'अदालत — ओ — सदाक़त को 'अमल में लाओ, और मेरे लोगों पर से अपनी ज़ियादती को ख़त्म करो; खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>10</sup> और तुम पूरी तराज़ू और पूरा एफ़ा और पूरा बत रखवा करो। <sup>11</sup> एफ़ा और बत एक ही वज़न का हो, ताकि बत में खोमर का दसवाँ हिस्सा हो; और एफ़ा भी खोमर का दसवाँ हिस्सा हो, उसका अन्दाज़ा खोमर के मुताबिक़ हो। <sup>12</sup> और मिस्क़ाल बीस जीरा हो; और बीस मिस्क़ाल, पच्चीस मिस्क़ाल, पन्दरह मिस्क़ाल का तुम्हारा माना होगा। <sup>13</sup> 'और हदिया जो तुम पेश करोगे फिर यह है: गेहूँ के खोमर से एफ़ा का छटा हिस्सा, और जौ के खोमर से एफ़ा का छटा हिस्सा देना। <sup>14</sup> और तेल या'नी तेल के बत के बारे में यह हुक्म है कि तुम कुर में से, जो दस बत का खोमर है, एक बत का दसवाँ हिस्सा देना क्योंकि खोमर में दस बत हैं। <sup>15</sup> और गल्ला में से हर दोसो पीछे इस्राईल की सेराब चरागाह का एक बर्रा नज़र की कुर्बानी के लिए और सलामती की कुर्बानी के लिए ताकि उनके लिए कफ़फ़ारा हो खुदावन्द फ़रमाता है। <sup>16</sup> मुल्क के सब लोग उस फ़रमारवाँ के लिए जो इस्राईल में है यही हदिया देंगे। <sup>17</sup> और फ़रमारवाँ सोख़्तनी कुर्बानियाँ और नज़र की कुर्बानियाँ और तपावन 'अहदों और नए चाँद के वक़्तों और सबतों और बनी इस्राईल की तमाम मुकर्रर 'ईदों में देगा वह ख़ता की कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी और सोख़्तनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानियाँ बनी इस्राईल के कफ़फ़ाराके लिए तैयार होगा। <sup>18</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि पहले महीने की पहली तारीख़ को तू एक बे 'ऐब बछड़ा लेना और हैकल को पाक करना <sup>19</sup> और काहिन ख़ता की कुर्बानी के बछड़े का खून लेगा और उसमें से कुछ घर के

सुतूनों पर और मज़बह की कुर्सी के चारों कोनों पर और अंदरूनी सहन के दरवाज़े की चौखटों पर लगाएगा। <sup>20</sup> और तू महीने की सातवीं तारीख़ को हर एक के लिए जो ख़ता करे और उसके लिए भी जो नादान है ऐसा ही करेगा इसी तरह तुम घर का कफ़फ़ारा दिया करोगे। <sup>21</sup> तुम पहले महीने की चौदवीं तारीख़ को 'ईद फ़सह मनाना जो सात दिन की 'ईद है और उसमें बेख़मीरी रोटी खाई जाएगी। <sup>22</sup> और उसी दिन फ़रमारवाँ अपने लिए और तमाम अहल — ए — मम्लुकत के लिए ख़ता की कुर्बानी के वास्ते एक बछड़ा तैयार कर रखेगा। <sup>23</sup> और 'ईद के सातों दिन में वह हर रोज़ या'नी सात दिन तक सात बे'ऐब बछड़े और सात मेंढे मुहय्या करेगा ताकि खुदावन्द के सामने सोख़्तनी कुर्बानी हों और हर रोज़ ख़ता की कुर्बानी के लिए एक बकरा। <sup>24</sup> और हर एक बछड़े के लिए एक एफ़ा भर नज़र की कुर्बानी और हर मेंढे के लिए एक एफ़ा और फ़ी एफ़ा एक हीन तेल तैयार करेगा। <sup>25</sup> सातवें महीने की पन्दवीं तारीख़ को भी वह 'ईद के लिए जिस तरह से उसने इन सात दिनों में किया था तैयारी करेगा ख़ता की कुर्बानी और सोख़्तनी कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी और तेल के मुताबिक़।

## 46

<sup>1</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है, कि अन्दरूनी सहन का फाटक जिसका रुख़ पूरब की तरफ़ है, काम काज के छः बन्द रहेगा; लेकिन सबत के दिन खोला जाएगा, और नए चाँद के दिन भी खोला जाएगा। <sup>2</sup> और फ़रमारवा बैरूनी फाटक के आस्ताने के रास्ते से दाख़िल होगा, फाटक की चौखट के पास खड़ा रहेगा; और काहिन उसकी सोख़्तनी कुर्बानी और उसकी सलामती की कुर्बानियाँ पेश करेंगे, वह फाटक के आसताने पर सिज्दा करके बाहर निकलेगा लेकिन फाटक शाम तक बन्द न होगा। <sup>3</sup> और मुल्क के लोग उसी फाटक के दरवाज़े पर, सबतों और नए चाँद के वक़्तों में खुदावन्द के सामने सिज्दा किया करेंगे <sup>4</sup> और सोख़्तनी कुर्बानी जो फ़रमारवा सबत के दिन खुदावन्द के सामने पेश करेगा, छः बे'ऐब बर्रें और एक बे'ऐब मेंढा, <sup>5</sup> और नज़र की कुर्बानी मेंढे के लिए एक एफ़ा और बर्रों के लिए नज़र की कुर्बानी उसकी तौफ़ीक़ के एक एफ़ा के लिए एक हीन तेल। <sup>6</sup> और नए चाँद के रोज़ एक बे'ऐब बछड़ा और छः बर्रें और एक मेंढा, सब के सब बे'ऐब <sup>7</sup> और वह नज़र की कुर्बानी तैयार करेगा या'नी बछड़े के लिए एक एफ़ा और मेंढे के लिए एक एफ़ा और बर्रों के लिए उसकी तौफ़ीक़ के मुताबिक़, हर एक एफ़ा के लिए एक हीन तेल। <sup>8</sup> जब फ़रमारवा अन्दर आए, फाटक के आस्ताने के रास्ते से

दाखिल होगा और उसी रास्ते से निकलेगा। <sup>9</sup> लेकिन जब मुल्क के लोग मुकर्ररा ईदों के वक़्त खुदावन्द के सामने हाज़िर होंगे, जो उत्तरी फाटक के रास्ते से सिज्दा करने को दाखिल होगा वह दक्खिन फाटक के रास्ते से बाहर जाएगा, जो दक्खिनी फाटक के रास्ते से अन्दर आता है वह उत्तरी फाटक के रास्ते से बाहर जाएगा; जिस फाटक के रास्ते से वह अन्दर आया उससे वापस न जाएगा, बल्कि सीधा अपने सामने के फाटक के रास्ते से निकल जाएगा। <sup>10</sup> और जब वह अन्दर जाएँगे तो फ़रमारवा भी उनके बीच होकर जाएगा, और जब वह बाहर निकलेंगे तो सब इकट्ठे जाएँगे। <sup>11</sup> और ईदों और मज़हबी तहवारों के वक़्त में नज़र की कुर्बानी बैल के लिए एक एफ़ा, मेंढे के लिए एक एफ़ा होगी, और बरों के लिए उसकी तौफ़ीक़ के मुताबिक़ और हर एक एफ़ा के लिए एक हीन तेल। <sup>12</sup> और जब फ़रमारवा रज़ा की कुर्बानी तैयार करे या'नी सोख़्तनी कुबानी या सलामती की कुर्बानी खुदावन्द के सामने रज़ा की कुर्बानी के तौर पर लाए तो वह फाटक जिसका रुख़ पूरब की तरफ़ उसके लिए खोला जाएगा और सबत के दिन की तरह वह अपनी सोख़्तनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानी पेश करेगा, तब वह बाहर निकल आएगा और उसके निकलने के बाद फाटक बन्द किया जाएगा। <sup>13</sup> तो हर रोज़ खुदावन्द के सामने पहले साल का एक बे'ऐब बर्रा सोख़्तनी कुर्बानी के लिए पेश करेगा, तू हर सुबह पेश करेगा। <sup>14</sup> और तू उसके साथ हर सुबह नज़र की कुर्बानी पेश करेगा या'नी एफ़ा का छटा हिस्सा, और मैदे के साथ मिलाने को तेल के हीन की एक तिहाई, दाइमी हुक्म के मुताबिक़ हमेशा के लिए खुदावन्द के सामने यह नज़र की कुर्बानी होगी। <sup>15</sup> इसी तरह वह बरें और नज़र की कुर्बानी और तेल हर सुबह हमेशा की सोख़्तनी कुर्बानी के लिए अदा करेंगे। <sup>16</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि अगर फ़रमारवा अपने बेटों में से किसी को कोई हदिया दे, वह उसकी मीरास उसके बेटों की होगी; वह उनका मौरूसी माल है। <sup>17</sup> लेकिन अगर वह अपने गुलामों में से किसी को अपनी मीरास में से हदिया दे, तो वह आज़ादी के साल तक उसका होगा; उसके बाद फिर फ़रमारवा का हो जाएगा। मगर उसकी मीरास उसके बेटों के लिए होगी। <sup>18</sup> और फ़रमारवा लोगों की मीरास में से जुल्म करके न लेगा, ताकि उनको उनकी मिलिक्यत से बेदख़ल करे; लेकिन वह अपनी ही मिलिक्यत में से अपने बेटों को मीरास देगा, ताकि मेरे लोग अपनी अपनी मिलिक्यत से जुदा न हो जाएँ।

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>19</sup> फिर वह मुझे उस मदख़ल के रास्ते से जो फाटक के पहलू में था, काहिनों के पाक कमरों में जिनका रुख़ उत्तर की तरफ़ था, लाया और क्या देखता हूँ कि पच्छिम की तरफ़ पीछे कुछ खाली जगह है। <sup>20</sup> तब उसने मुझे फ़रमाया, देख, यह वह जगह है जिसमें काहिन जुर्म की कुर्बानी और ख़ता की कुर्बानी को जोश देंगे और नज़र की कुर्बानी पकायेंगे ताकि उनको बैरूनी सहन में ले जाकर लोगों की तक्रदीस करें। <sup>21</sup> फिर वह मुझे बैरूनी सहन में लाया और सहन के चारों कोनों की तरफ़ मुझे ले गया, और देखो, सहन के हर कोने में एक और सहन था; <sup>22</sup> सहन के चारों कोनों में चालीस चालीस हाथ लम्बे और तीस तीस हाथ चौड़े सहन मुत्तसिल थे, यह चारों कोने वाले एक ही नाप के थे। <sup>23</sup> और उनके चारों तरफ़ या'नी उन चारों के चारों तरफ़ दीवार थी, और चारों तरफ़ दीवार के नीचे चूल्हे बने थे। <sup>24</sup> तब उसने मुझे फ़रमाया, कि “यह चूल्हे हैं, जहाँ हैकल के खादिम लोगों के ज़बीहे उबालेंगे।”

## 47

????? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>1</sup> फिर वह मुझे हैकल के दरवाज़े पर वापस लाया, और क्या देखता हूँ कि हैकल के आस्ताने के नीचे से पानी पूरब की तरफ़ निकल रहा है क्योंकि हैकल का सामना पूरब की तरफ़ था और पानी हैकल के दाहनी तरफ़ के नीचे से मज़बह के दक्खिनी जानिब से बहता था। <sup>2</sup> तब वह मुझे उत्तरी फाटक की राह से बाहर लाया, और मुझे उस राह से जिसका रुख़ पूरब की तरफ़ है, बैरूनी फाटक पर वापस लाया या'नी पूरब रूया फाटक पर; और क्या देखता हूँ कि दाहनी तरफ़ से पानी जारी है। <sup>3</sup> और उस मर्द ने जिसके हाथ में पैमाइश की डोरी थी, पूरब की तरफ़ बढ़ कर हज़ार हाथ नापा, और मुझे पानी में से चलाया और पानी टखनों तक था। <sup>4</sup> फिर उसने हज़ार हाथ और नापा और मुझे उसमें से चलाया, और पानी घुटनों तक था; फिर उसने एक हज़ार हाथ और नापा और मुझे उसमें से चलाया, और पानी कमर तक था। <sup>5</sup> फिर उसने एक हज़ार और नापा, और वह ऐसा दरिया था कि मैं उसे पार नहीं कर सकता था, क्योंकि पानी चढ़ कर तैरने के दर्जे को पहुँच गया और ऐसा दरिया बन गया जिसको पार करना मुम्किन न था। <sup>6</sup> और उसने मुझ से कहा, ऐ आदमज़ाद! क्या तूने यह देखा? तब वह मुझे लाया और दरिया के किनारे पर वापस पहुँचाया। <sup>7</sup> और जब मैं वापस आया तो क्या देखता हूँ कि दरिया के किनारे दोनों तरफ़ बहुत से दरख़्त हैं। <sup>8</sup> तब उसने मुझे

फ़रमाया कि यह पानी पूरबी 'इलाक़े की तरफ़ बहता है, और मैदान में से होकर समन्दर में जा मिलता है, और समन्दर में मिलते ही उसके पानी को शीरीं कर देगा।<sup>9</sup> और यूँ होगा कि जहाँ कहीं यह दरिया पहुँचेगा, हर एक चलने फिरने वाला जानदार ज़िन्दा रहेगा और मछलियों की बड़ी कसरत होगी क्योंकि यह पानी वहाँ पहुँचा और वह शीरीं हो गया इसलिए जहाँ कहीं यह दरिया पहुँचेगा ज़िन्दगी बख़्शेगा।<sup>10</sup> और यूँ होगा कि शिकारी उसके किनारे खड़े रहेंगे, 'ऐन जदी से ऐन' अज़लईम तक जाल बिछाने की जगह होगी, उसकी मछलियाँ अपनी अपनी जिन्स के मुताबिक़ बड़े समन्दर की मछलियों की तरह कसरत से होंगी।<sup>11</sup> लेकिन उसकी कीच की जगहें और दलदले शीरीं न की जायेंगी वह नमक ज़ार ही रहेंगी।<sup>12</sup> और दरया के करीब उसके दोनों किनारों पर हर किस्म के मेवादार दरख़्त उगेंगे जिनके पत्ते कभी न मुरझायेंगे और जिनके मेवे कभी ख़त्म न होंगे वह हर महीने नए मेवे लायेंगे क्योंकि उनका पानी हैकल में से जारी है और उनके मेवे खाने के लिए और उनके पत्ते दवा के लिए होंगे।<sup>13</sup> खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है: कि यह वह सरहद है जिसके मुताबिक़ तुम ज़मीन को तक्रसीम करोगे, ताकि इस्राईल के बारह क़बीलों की मीरास हो; यूसुफ़ के लिए दो हिस्से होंगे।<sup>14</sup> और तुम सब एकसाँ उसे मीरास में पाओगे, जिसके ज़रिए मैंने क़सम खाई कि तुम्हारे बाप — दादा को दूँ और यह ज़मीन तुम्हारी मीरास होगी।<sup>15</sup> और ज़मीन की हदें यह होंगी: उत्तर की तरफ़ बड़े समन्दर से लेकर हतलून से होती हुई सिदाद के मदख़ल तक,<sup>16</sup> हमात बैरूत — सिबैरैम जो दमिश्क़ की सरहद और हमात की सरहद के बीच है, और हसर हतीकून जो हौरान के किनारे पर है।<sup>17</sup> और समन्दर से सरहद यह होगी: या'नी हसर 'ऐनान दमिश्क़ की सरहद, और उत्तर की उत्तरी अतराफ़, हमात की सरहद उत्तरी जानिब यही है।<sup>18</sup> और पूरबी सरहद हौरान और दमिश्क़, और जिल'आद के बीच से और इस्राईल की सरज़मीन के बीच से यरदन पर होगी; उत्तरी सरहद से पूरबी समन्दर तक नापना पूरबी जानिब यही है।<sup>19</sup> और दक्खिन की तरफ़ दक्खिनी सरहद यह है: या'नी तमर से मरीबूत के क़ादिस के पानी से और नहर — ए — मिस्र से होकर बड़े समन्दर तक, पच्छिमी जानिब यही है।<sup>20</sup> और उसी सरहद से हमात के मदख़ल के सामने बड़ा समन्दर दक्खिनी सरहद होगा दक्खिनी जानिब यही है।<sup>21</sup> इसी तरह तुम क़बाइल — ए — इस्राईल के मुताबिक़ ज़मीन को आपस में तक्रसीम करोगे।<sup>22</sup> और यूँ होगा कि तुम अपने और उन बेगानों के बीच, जो तुम्हारे साथ बसते हैं और जिनकी औलाद तुम्हारे बीच पैदा हुई

जो तुम्हारे लिए देसी बनी — इस्राईल की तरह होंगे; मीरास तक्रसीम करने के लिए पर्ची डालोगे, वह तुम्हारे साथ क़बाइल — ए — इस्राईल के बीच मीरास पाएँगे।<sup>23</sup> और यूँ होगा कि जिस जिस क़बीले में कोई बेगाना बसता होगा, उसी में तुम उसे मीरास दोगे। खुदावन्द खुदा फ़रमाता है।

## 48

????? ?? ?????????

<sup>1</sup> और क़बीलों के नाम यह हैं: इन्तिहा — ए — उत्तर पर हतलून के रास्ते के साथ साथ हमात के मदख़ल से होते हुए हसर 'ऐनान तक, जो दमिश्क़ की उत्तरी सरहद पर हमात के पास है, पूरब से पच्छिम तक दान के लिए एक हिस्सा।<sup>2</sup> और दान की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, आशर के लिए एक हिस्सा।<sup>3</sup> और आशर की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, नफ़ताली के लिए एक हिस्सा।<sup>4</sup> और नफ़ताली की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, मनस्सी के लिए एक हिस्सा।<sup>5</sup> और मनस्सी की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, इफ़राईम के लिए एक हिस्सा।<sup>6</sup> और इफ़राईम की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, रूबिन के लिए एक हिस्सा।<sup>7</sup> और रूबिन की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, यहूदाह के लिए एक हिस्सा।<sup>8</sup> और यहूदाह की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, हदिये का हिस्सा होगा जो तुम वक़फ़ करोगे; उसकी चौड़ाई पच्चीस हज़ार और लम्बाई बाकी हिस्सों में से एक के बराबर पूरबी सरहद से दक्खिनी सरहद तक और हैकल उसके बीच में होगा।<sup>9</sup> हदिये का हिस्सा जो तुम खुदावन्द के लिए वक़फ़ करोगे, पच्चीस हज़ार लम्बा और दस हज़ार चौड़ा होगा।<sup>10</sup> और यह पाक हदिये का हिस्सा उनके लिए, हाँ, काहिनों के लिए होगा; उत्तर की तरफ़ पच्चीस हज़ार उसकी लम्बाई होगी और दस हज़ार उसकी चौड़ाई पच्छिम की तरफ़ और दस हज़ार उसकी चौड़ाई पूरब की तरफ़ और पच्चीस हज़ार उसकी लम्बाई दक्खिन की तरफ़ और खुदावन्द का हैकल उसके बीच में होगा।<sup>11</sup> यह उन काहिनों के लिए होगा जो सदक़ के बेटों में से पाक किए गए हैं; जिन्होंने मेरी अमानतदारी की तरफ़ गुमराह न हुए, जब बनी — इस्राईल गुमराह हो गए जैसे बनी लावी गुमराह हुए।<sup>12</sup> और ज़मीन के हदिये में से बनी लावी के हिस्से से मुत्तसिल, यह उनके लिए

हदिया होगा जो बहुत पाक ठहरेगा। <sup>13</sup> और काहिनों की सरहद के सामने बनी लावी के लिए एक हिस्सा होगा, पच्चीस हजार लम्बा और दस हजार चौड़ा; उसकी कुल लम्बाई पच्चीस हजार और चौड़ाई दस हजार होगी। <sup>14</sup> और वह उसमें से न बेचे और न बदलें और न ज़मीन का पहला फल अपने कब्जे से निकलने दें, क्योंकि वह खुदावन्द के लिए पाक है। <sup>15</sup> और वह पाँच हजार की चौड़ाई का बाक़ी हिस्सा, उस पच्चीस हजार के सामने बस्ती और उसकी 'इलाक़े के लिए 'आम जगह होगी; और शहर उसके बीच में होगा। <sup>16</sup> और उसकी पैमाइश यह होगी, उत्तर की तरफ़ चार हजार पाँच सौ, और दक्खिन की तरफ़ चार हजार पाँच सौ, और पूरब की तरफ़ चार हजार पाँच सौ, और पच्छिम की तरफ़ चार हजार पाँच सौ, <sup>17</sup> और शहर के 'इलाक़े उत्तर की तरफ़ दो सौ पचास, और दक्खिन की तरफ़ दो सौ पचास, और पूरब की तरफ़ दो सौ पचास, और पच्छिम की तरफ़ दो सौ पचास। <sup>18</sup> और वह पाक हदिये के सामने बाक़ी लम्बाई पूरब की तरफ़ दस हजार और पच्छिम की तरफ़ दस हजार होगी, और वह पाक हदिये के सामने होगी और उसका हासिल उनकी खुराक के लिए होगा जो शहर में काम करते हैं। <sup>19</sup> और शहर में काम करने वाले इस्राईल के सब क़बीलों में से उसमें काश्तकारी करेंगे। <sup>20</sup> हदिये के तमाम हिस्से की लम्बाई पच्चीस हजार और चौड़ाई पच्चीस हजार होगी; तुम पाक हदिये के हिस्से को मुरब्बा' शक़्ल में शहर की मिलिक़यत के साथ वक्फ़ करोगे। <sup>21</sup> और बाक़ी जो पाक हदिये का हिस्सा और शहर की मिलिक़यत की दोनों तरफ़ जो हदिये के हिस्से के पच्चीस हजार के सामने पच्छिम की तरफ़ फ़रमरवा के हिस्सों के सामने है; वह फ़रमारवा के लिए होगा और वह पाक हदिये का हिस्सा होगा, और पाक घर उसके बीच में होगा। <sup>22</sup> और बनी लावी की मिलिक़यत से और शहर की मिलिक़यत से जो फ़रमरवा की मिलिक़यत के बीच में है, यहूदाह की सरहद और बिनयमीन की सरहद के बीच फ़रमरवा के लिए होगी। <sup>23</sup> और बाक़ी क़बाइल के लिए यूँ होगा: कि पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, बिनयमीन के लिए एक हिस्सा। <sup>24</sup> और बिनयमीन की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, शमौन के लिए एक हिस्सा। <sup>25</sup> और शमौन की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, इश्कार के लिए एक हिस्सा। <sup>26</sup> और इश्कार की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, ज़बूलून के लिए एक हिस्सा। <sup>27</sup> और ज़बूलून की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, ज़द के लिए एक हिस्सा। <sup>28</sup> और ज़द की सरहद से मुत्तसिल

दक्खिन की तरफ़ दक्खिनी किनारे की सरहद तमर से लेकर मरीबूत क़ादिस के पानी से नहर — ए — मिस्र से होकर बड़े समन्दर तक होगी। <sup>29</sup> यह वह सरजमीन है जिसको तुम मीरास के लिए पर्ची डालकर क़बाइल — ए — इस्राईल में तक्सीम करोगे और यह उनके हिस्से हैं, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>30</sup> और शहर के मख़ारिज यह हैं: उत्तर की तरफ़ की पैमाइश चार हजार पाँच सौ। <sup>31</sup> और शहर के फाटक क़बाइल — ए — इस्राईल से नामज़द होंगे: तीन फाटक उत्तर की तरफ़ — एक फाटक रूबिन का, एक यहूदाह का, एक लावी का; <sup>32</sup> और पूरब की तरफ़ की पैमाइश चार हजार पाँच सौ, और तीन फाटक एक यूसुफ़ का एक बिनयमीन का और एक दान का। <sup>33</sup> और दक्खिन की तरफ़ की पैमाइश चार हजार पाँच सौ, और तीन फाटक — एक शमौन का, एक इश्कार का, और एक ज़बूलून का। <sup>34</sup> और पच्छिम की तरफ़ की पैमाइश चार हजार पाँच सौ और तीन फाटक — एक ज़द का, एक आशर का और एक नफ़्ताली का। <sup>35</sup> उसका मुहीत अठारह हजार और शहर का नाम उसी दिन से यह होगा कि “खुदावन्द वहाँ है।”



## दानिएल

?????????? ?? ?????

इस किताब के लिखने वाले के पीछे यह नाम दिया गया था। दानिएल की किताब बाबुल में एक इस्राईल से एक यहूदी जिलावतन बतौर उसके अपने वक्ता की मा — हसल या पैदावार थी। दानिएल नाम का मतलब है खुदा मेरा मुनसिफ़ है किताब खुद दलालत करती है कि दानिएल इस का मुसन्निफ़ था एक दो इबारते हैं 9:2; 10:2 दानिएल ने अपने तजुर्बात और नबुव्वतें यहूदी जिलावतनों के लिए बाबुल के दारुल खिलाफ़े (राजधानी) में रहने के दौरान क़लमबंद किये जहां बादशाह के लिए उसकी खिदमत ने मुआशिरा के ऊँचे तबक़े के लोगों या ओहदेदारों तक पहुंचने का मौक़ा अता किया। खुदावन्द के लिए उसकी वफ़ादारी खिदमत न सिर्फ़ अपने मुल्क और अपनी तहज़ीब में बेमिसल नहीं करती बल्कि नविशतों के तमाम लोगों के दर्मियान भी उसको बेमिसल करार देती है।

????? ???? ?? ??????? ?? ???

इस के तस्नीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 605 - 530 क़ब्ल मसीह के बीच है।

?????? ??????????? ?????? ?????

बाबुल के तमाम यहूदी जिलावतन और बाद में तमाम कलाम के कारिर्न।

??????????

दानिएल की किताब दानिएल नबी के तमाम कारवाईयों, नबूवतों और रोयाओं को क़लम्बन्द करती हैं। दानिएल की किताब सिखाती हैं कि खुदा उन सब के लिए वफ़ादार है जो उसके पीछे चलते हैं। इम्तिहान और मुखालिफ़ों की अकसरियत के बावजूद भी ईमानदारों को खुदा के लिए वफ़ादारी से खड़े होने की ज़रूरत है जब वह अपनी ज़मीनी नौकरी पर जाते हैं।

???????

खुदा की हुकूमत (फ़र्मा रवाई)।

**बैरूनी खाका**

1. बड़ी मूरत की बाबत दानिएल का ख़ाब की ताबीर को बताना — 1:1-2:49
2. सदरक, मीसक, और अब्दनजू का आग की भट्टी से निकाला जाना — 3:1-30
3. बादशाह नबुकदनेज़र का ख़ाब — 4:1-37
4. दीवार पर उंगलियों का लिखा जाना और बर्बादी की बाबत दानिएल की नबुव्वत — 5:1-31
5. दानिएल शेरों की मान्द में — 6:1-28

6. चार खूनखार जानवरों का रोया — 7:1-28
7. 1 मेंढा, बकरा और छोटे सींग का रोया — 8:1-27
8. दानिएल की दुआ जो 70 साल में क़बूल हुई — 9:1-27
9. 1 आखरी जंग — ए — अज़ीम का रोया — 10:1-12:13

???????????? ?? ?????? ??? ?????????????

<sup>1</sup> शाह — ए — यहूदाह यहूयक़ीम की सल्तनत के तीसरे साल में शाह — ए — बाबुल नबूकदनेज़र ने येरूशलेम पर चढ़ाई करके उसका घिराव किया। <sup>2</sup> और खुदावन्द ने शाह यहूदाह यहूयक़ीम को और खुदा के घर के बा'ज बर्तनों को उसके हवाले कर दिया और उनको सिन'आर की सरज़मीन में अपने बुतखाने में ले गया, चुनाँचे उसने बर्तनों को अपने बुत के खज़ाने में दाख़िल किया। <sup>3</sup> और बादशाह ने अपने ख़्वाजासराओं के सरदार असपनज़ को हुक्म किया कि बनी इस्राईल में से और बादशाह की नस्ल में से और शरीफ़ों में से लोगों को हाज़िर करे। <sup>4</sup> वह बे'ऐब जवान बल्कि खूबसूरत और हिकमत में माहिर और हर तरह से 'अक्लमन्द और 'आलिम हों, जिनमें ये लियाक़त हो कि शाही महल में खड़े रहें, और वह उनको क़सदियों के 'इल्म और उनकी ज़बान की ता'लीम दें। <sup>5</sup> और बादशाह ने उनके लिए शाही खुराक में से और अपने पीने की मय में से रोज़ाना वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया कि तीन साल तक उनकी परवरिश हो, ताकि इसके बाद वह बादशाह के सामने खड़े हो सकें। <sup>6</sup> और उनमें बनी यहूदाह में से दानीएल और हननियाह और मीसाएल और 'अज़रियाह थे। <sup>7</sup> और ख़्वाजासराओं के सरदार ने उनके नाम रखे; उसने दानीएल को बेल्तशज़र, हननियाह को सदरक, और मीसाएल को मीसक, और 'अज़रियाह को 'अबदनजू कहा। <sup>8</sup> लेकिन दानीएल ने अपने दिल में इरादा किया कि अपने आप को शाही खुराक से और उसकी शराब से, जो वह पीता था, नापाक न करे; तब उसने ख़्वाजासराओं के सरदार से दरख़्वास्त की कि वह अपने आप को नापाक करने से मा'ज़ूर रखा जाए। <sup>9</sup> और खुदा ने दानीएल को ख़्वाजासराओं के सरदार की नज़र में मक़बूल — ओ — महबूब ठहराया। <sup>10</sup> चुनाँचे ख़्वाजासराओं के सरदार ने दानीएल से कहा, मैं अपने खुदावन्द बादशाह से, जिसने तुम्हारा खाना पीना मुक़र्रर किया है डरता हूँ; तुम्हारे चेहरे उसकी नज़र में तुम्हारे हम उम्रों के चेहरों से क्यूँ ज़बून हों, और यूँ तुम मेरे सिर को बादशाह के सामने खतरे में डालो। <sup>11</sup> तब दानीएल ने दारोगा से जिसको ख़्वाजासराओं के सरदार ने दानीएल और हननियाह और मीसाएल और 'अज़रियाह पर मुक़र्रर

किया था कहा, <sup>12</sup> “मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू दस दिन तक अपने खादिमों को आजमा कर देख, और खाने को साग — पात और पीने को पानी हम को दिलवा। <sup>13</sup> तब हमारे चेहरे और उन जवानों के चेहरे जो शाही खाना खाते हैं, तेरे सामने देखें जाएँ फिर अपने खादिमों से जो तू मुनासिब समझे वह कर।” <sup>14</sup> चुनाँचे उसने उनकी ये बात कुबूल की और दस दिनों तक उनको आजमाया। <sup>15</sup> और दस दिन के बाद उनके चेहरों पर उन सब जवानों के चेहरों की निस्वत जो शाही खाना खाते थे, ज्यादा रौनक और ताजगी नज़र आई। <sup>16</sup> तब दारोगा ने उनकी खुराक और शराब को जो उनके लिए मुकर्रर थी रोक दिया, और उनको साग — पात खाने को दिया। <sup>17</sup> तब खुदा ने उन चारों जवानों को मा'रिफ़त और हर तरह की हिकमत और 'इल्म में महारत बख़्शी, और दानीएल हर तरह की रोया और ख़्वाब में साहब — ए — 'इल्म था। <sup>18</sup> और जब वह दिन गुज़र गए जिनके बाद बादशाह के फ़रमान के मुताबिक़ उनको हाज़िर होना था, तो ख़्वाजासराओं का सरदार उनको नबूकदनज़र के सामने ले गया। <sup>19</sup> और बादशाह ने उनसे बातें कीं और उनमें से दानीएल और हननियाह और मीसाएल और 'अज़रियाह की तरह कोई न था, इसलिए वह बादशाह के सामने खड़े रहने लगे। <sup>20</sup> और हर तरह की ख़ैरमन्दी और अक़्लमन्दी के बारे में जो कुछ बादशाह ने उनसे पूछा, उनको तमाम फ़ालगीरों और नज़ूमियों से जो उसके तमाम मुल्क में थे, दस दर्जा बेहतर पाया। <sup>21</sup> और दानीएल ख़ोरस बादशाह के पहले साल तक ज़िन्दा था।

## 2

?????????? ?? ???????

<sup>1</sup> और नबूकदनज़र ने अपनी सल्तनत के दूसरे साल में ऐसे ख़्वाब देखे जिनसे उसका दिल घबरा गया और उसकी नींद जाती रही। <sup>2</sup> तब बादशाह ने हुक्म दिया कि फ़ालगीरों और नज़ूमियों और जादूगरों और कसदियों को बुलाएँ कि बादशाह के ख़्वाब उसे बताएँ। चुनाँचे वह आए और बादशाह के सामने खड़े हुए। <sup>3</sup> और बादशाह ने उनसे कहा, कि “मैंने एक ख़्वाब देखा है, और उस ख़्वाब को दरियाफ़्त करने के लिए मेरी जान बेताब है।” <sup>4</sup> तब कसदियों ने बादशाह के सामने अरामी ज़बान में 'अर्ज़ किया, कि ऐ बादशाह, हमेशा तक जीता रह! अपने खादिमों से ख़्वाब बयान कर, और हम उसकी ता'बीर करेंगे। <sup>5</sup> बादशाह ने कसदियों को जवाब दिया, मैं तो ये हुक्म दे चुका हूँ कि अगर तुम ख़्वाब न बताओ और उसकी ता'बीर न करो, तो टुकड़े टुकड़े किए जाओगे और तुम्हारे घर मज़बले हो जाएँगे। <sup>6</sup> लेकिन अगर

ख़्वाब और उसकी ता'बीर बताओ, तो मुझ से इन'आम और बदला और बड़ी 'इज़्ज़त हासिल करोगे; इसलिए ख़्वाब और उसकी ता'बीर मुझ से बयान करो। <sup>7</sup> उन्होंने फिर 'अर्ज़ किया, कि “बादशाह अपने खादिमों से ख़्वाब बयान करे, तो हम उसकी ता'बीर करेंगे।” <sup>8</sup> बादशाह ने जवाब दिया, कि “मैं ख़ूब जानता हूँ कि तुम टालना चाहते हो, क्योंकि तुम जानते हो कि मैं हुक्म दे चुका हूँ। <sup>9</sup> लेकिन अगर तुम मुझ को ख़्वाब न बताओगे, तो तुम्हारे लिए एक ही हुक्म है, क्योंकि तुम ने झूट और बहाने की बातें बनाई ताकि मेरे सामने बयान करो कि वक़्त टल जाए; इसलिए ख़्वाब बताओ तो मैं जानूँ कि तुम उसकी ता'बीर भी बयान कर सकते हो।” <sup>10</sup> कसदियों ने बादशाह से 'अर्ज़ किया, कि “इस ज़मीन पर ऐसा तो कोई भी नहीं जो बादशाह की बात बता सके, और न कोई बादशाह या अमीर या हाकिम ऐसा हुआ है जिसने कभी ऐसा सवाल किसी फ़ालगीर या नज़ूमी या कसदी से किया हो। <sup>11</sup> और जो बात बादशाह तलब करता है, निहायत मुश्किल है, और मा'बूदों के सिवा जिनकी सुकूनत इंसान के साथ नहीं, बादशाह के सामने कोई उसको बयान नहीं कर सकता।” <sup>12</sup> इसलिए बादशाह ग़ज़बनाक और सख़्त गुस्सा हुआ और उसने हुक्म किया कि बाबुल के तमाम हकीमों को हलाक करें। <sup>13</sup> तब यह हुक्म जगह जगह पहुँचा कि हकीम क़त्ल किए जाएँ, तब दानीएल और उसके साथियों को भी ढूँडने लगे कि उनको क़त्ल करें। <sup>14</sup> तब दानीएल ने बादशाह के जिलौदारों के सरदार अरयूक को, जो बाबुल के हकीमों को क़त्ल करने को निकला था, ख़ैरमन्दी और 'अक़्ल से जवाब दिया। <sup>15</sup> उसने बादशाह के जिलौदारों के सरदार अरयूक से पूछा, “बादशाह ने ऐसा सख़्त हुक्म क्यों जारी किया?” तब अरयूक ने दानीएल से इसकी हकीकत बताई। <sup>16</sup> और दानीएल ने अन्दर जाकर बादशाह से 'अर्ज़ किया कि मुझे मुहलत मिले, तो मैं बादशाह के सामने ता'बीर बयान करूँगा। <sup>17</sup> तब दानीएल ने अपने घर जाकर हननियाह और मीसाएल और 'अज़रियाह अपने साथियों को ख़बर दी, <sup>18</sup> ताकि वह इस राज़ के बारे में आसमान के खुदा से रहमत तलब करें कि दानीएल और उसके साथी बाबुल के बाक़ी हकीमों के साथ हलाक न हों। <sup>19</sup> फिर रात को ख़्वाब में दानीएल पर वह राज़ खुल गया, और उसने आसमान के खुदा को मुबारक कहा। <sup>20</sup> दानीएल ने कहा: “खुदा का नाम हमेशा तक मुबारक हो, क्योंकि हिकमत और कुदरत उसी की है। <sup>21</sup> वही वक़्तों और ज़मानों को तब्दील करता है, वही बादशाहों को मा'ज़ूल और क़ायम करता है, वही

हकीमों को हिकमत और अक्लमन्दों को 'इल्म इनायत करता है। <sup>22</sup> वही गहरी और छुपी चीजों को जाहिर करता है, और जो कुछ अँधेरे में है उसे जानता है और नूर उसी के साथ है। <sup>23</sup> मैं तेरा शुक्र करता हूँ और तेरी 'इबा'दत करता हूँ ऐ मेरे बाप — दादा के खुदा, जिसने मुझे हिकमत और कुदरत बख्शी और जो कुछ हम ने तुझ से माँगा तू ने मुझ पर जाहिर किया, क्योंकि तू ने बादशाह का मुआ'मिला हम पर जाहिर किया है।" <sup>24</sup> तब दानीएल अरयूक के पास गया, जो बादशाह की तरफ़ से बाबुल के हकीमों के क़त्ल पर मुकर्रर हुआ था, और उस से यूँ कहा, कि "बाबुल के हकीमों को हलाक न कर, मुझे बादशाह के सामने ले चल, मैं बादशाह को ता'बीर बता दूँगा।" <sup>25</sup> तब अरयूक दानीएल को जल्दी से बादशाह के सामने ले गया और 'अर्ज़ किया, कि "मुझे यहूदाह के गुलामों में एक शख्स मिल गया है, जो बादशाह को ता'बीर बता देगा।" <sup>26</sup> बादशाह ने दानीएल से जिसका लक़ब बेल्तशज़र था पूछा, क्या तू उस ख़्वाब को जो मैंने देखा, और उसकी ता'बीर को मुझ से बयान कर सकता है? <sup>27</sup> दानीएल ने बादशाह के सामने 'अर्ज़ किया, कि वह राज़ जो बादशाह ने पूछा, हुक्मा और नज़ूमी और जादूगर और फ़ालगीर बादशाह को बता नहीं सकते। <sup>28</sup> लेकिन आसमान पर एक खुदा है जो राज़ की बातें जाहिर करता है, और उसने नबूकदनज़र बादशाह पर जाहिर किया है कि आखिरी दिनों में क्या होने को आएगा; तेरा ख़्वाब और तेरे दिमागी ख़्याल जो तू ने अपने पलंग पर देखे यह हैं: <sup>29</sup> ऐ बादशाह, तू अपने पलंग पर लेटा हुआ ख़्याल करने लगा कि आइन्दा को क्या होगा, तब वह जो राज़ों का खोलने वाला है, तुझ पर जाहिर करता है कि क्या कुछ होगा। <sup>30</sup> लेकिन इस राज़ के मुझ पर जाहिर होने की वजह यह नहीं कि मुझ में किसी और ज़ी हयात से ज़्यादा हिकमत है, बल्कि यह कि इसकी ता'बीर बादशाह से बयान की जाए और तू अपने दिल के ख़्यालात को पहचाने। <sup>31</sup> ऐ बादशाह, तू ने एक बड़ी मूरत देखी; वह बड़ी मूरत जिसकी रौनक बेनिहायत थी, तेरे सामने खड़ी हुई और उसकी सूरत हैबतनाक थी। <sup>32</sup> उस मूरत का सिर खालिस सोने का था, उसका सीना और उसके बाजू चाँदी के, उसका शिकम और उसकी राने ताम्बे की थी; <sup>33</sup> उसकी टाँगे लोहे की, और उसके पाँव कुछ लोहे के और कुछ मिट्टी के थे। <sup>34</sup> तू उसे देखता रहा, यहाँ तक कि एक पत्थर हाथ लगाए बग़ैर ही काटा गया, और उस मूरत के पाँव पर जो लोहे और मिट्टी के थे लगा और उनको टुकड़े — टुकड़े

कर दिया। <sup>35</sup> तब लोहा और मिट्टी और ताम्बा और चाँदी और सोना, टुकड़े टुकड़े किए गए और ताबिस्तानी खलीहान के भूसे की तरह हुए, और हवा उनको उड़ा ले गई, यहाँ तक कि उनका पता न मिला; और वह पत्थर जिसने उस मूरत को तोड़ा, एक बड़ा पहाड़ बन गया और सारी ज़मीन में फैल गया। <sup>36</sup> "वह ख़्वाब यह है; और उसकी ता'बीर बादशाह के सामने बयान करता हूँ। <sup>37</sup> ऐ बादशाह, तू शहनशाह है, जिसको आसमान के खुदा ने बादशाही और — तवानाई और कुदरत — ओ — शौकत बख्शी है। <sup>38</sup> और जहाँ कहीं बनी आदम रहा करते हैं, उसने मैदान के जानवर और हवा के परिन्दे तेरे हवाले करके तुझ को उन सब का हाकिम बनाया है; वह सोने का सिर तू ही है। <sup>39</sup> और तेरे बाद एक और सल्तनत खड़ी होगी, जो तुझ से छोटी होगी और उसके बाद एक और सल्तनत ताम्बे की जो पूरी ज़मीन पर हुकूमत करेगी। <sup>40</sup> और चौथी सल्तनत लोहे की तरह मज़बूत होगी, और जिस तरह लोहा तोड़ डालता है और सब चीज़ों पर ग़ालिब आता है; हाँ, जिस तरह लोहा सब चीज़ों को टुकड़े — टुकड़े करता और कुचलता है उसी तरह वह टुकड़े — टुकड़े करेगी और कुचल डालेगी। <sup>41</sup> और जो तू ने देखा कि उसके पाँव और उँगलियाँ, कुछ तो कुम्हार की मिट्टी की और कुछ लोहे की थी; इसलिए उस सल्तनत में फूट होगी, मगर जैसा तू ने देखा कि उसमें लोहा मिट्टी से मिला हुआ था, उसमें लोहे की मज़बूती होगी। <sup>42</sup> और चूँकि पाँव की उँगलियाँ कुछ लोहे की और कुछ मिट्टी की थीं, इसलिए सल्तनत कुछ मज़बूत और कुछ कमज़ोर होगी। <sup>43</sup> और जैसा तूने देखा कि लोहा मिट्टी से मिला हुआ था, वह बनी आदम से मिले हुए होंगे, लेकिन जैसे लोहा मिट्टी से मेल नहीं खाता वैसे ही वह भी आपस में मेल न खाएँगे। <sup>44</sup> और उन बादशाहों के दिनों में आसमान का खुदा एक सल्तनत खड़ा करेगा, जो हमेशा बर्बाद न होगी और उसकी हुकूमत किसी दूसरी क्रौम के हवाले न की जाएगी, बल्कि वह इन तमाम हुकूमतों को टुकड़े — टुकड़े और बर्बाद करेगी, और वही हमेशा तक कायम रहेगी। <sup>45</sup> जैसा तू ने देखा कि वह पत्थर हाथ लगाए बग़ैर ही पहाड़ से काटा गया, और उसने लोहे और ताम्बे और मिट्टी और चाँदी और सोने को टुकड़े — टुकड़े किया; खुदा त'आला ने बादशाह को वह कुछ दिखाया जो आगे को होने वाला हैं, और यह ख़्वाब यक़ीनी है और उसकी ता'बीर यक़ीनी।" <sup>46</sup> तब नबूकदनज़र बादशाह ने मुँह के बल गिर कर दानीएल को सिज्दा किया, और हुक्म दिया कि उसे हदिया दें और उसके सामने शुशबू जलाएँ। <sup>47</sup> बादशाह ने दानीएल से

कहा, “हकीकत में तेरा खुदा मा'बूदों का मा'बूद और बादशाहों का खुदावन्द और राज्ञों का खोलने वाला है, क्योंकि तू इस राज्ञ को खोल सका।” 48 तब बादशाह ने दानीएल को सरफराज किया, और उसे बहुत से बड़े — बड़े तोहफे 'अता किए; और उसको बाबुल के तमाम सूबों पर इस्तिथार दिया, और बाबुल के तमाम हकीमों पर हुक्मरानी 'इनायत की। 49 तब दानीएल ने बादशाह से दरखास्त की और उसने सदरक मीसक और 'अबदनजू को बाबुल के सूबे की ज़िम्मेदारी पर मुकर्रर किया, लेकिन दानीएल बादशाह के दरबार में रहा।

### 3

2222222222 22 22222 22 2222

1 नबूकदनज़र बादशाह ने एक सोने की मूरत बनवाई जिसकी लम्बाई साठ हाथ और चौड़ाई छः हाथ थी, और उसे दूरा के मैदान सूबा — ए — बाबुल में खड़ा किया। 2 तब नबूकदनज़र बादशाह ने लोगों को भेजा कि नाज़िमों और हाकिमों और सरदारों और क्राज़ियों और खज़ाँचियों और सलाहकारों और मुफ़्तियों और तमाम सूबों के 'उहदेदारों को जमा' करें, ताकि वह उस मूरत की 'इज़्जत को हाज़िर हों जिसको नबूकदनज़र बादशाह ने खड़ा किया था। 3 तब नाज़िम, और हाकिम, और सरदार, और क्राज़ी, और खज़ाँची, और सलाहकार, और मुफ़्ती और सूबों के तमाम 'उहदेदार, उस मूरत की 'इज़्जत के लिए जिसे नबूकदनज़र बादशाह ने खड़ा किया था जमा' हुए; और वह उस मूरत के सामने जिसको नबूकदनज़र ने खड़ा किया था, खड़े हुए। 4 तब एक 'ऐलान करने वाले ने बलन्द आवाज़ से पुकार कर कहा, ऐ लोगों, ऐ उम्मतों, और ऐ मुख्तलिफ़ ज़बानें बोलने वालों! तुम्हारे लिए यह हुक्म है कि 5 जिस वक़्त करना, और ने, और सितार, और रबाब, और बरबत, और चगाना, और हर तरह के साज़ की आवाज़ सुनो, तो उस सोने की मूरत के सामने जिसको नबूकदनज़र बादशाह ने खड़ा किया है गिर कर सिज्दा करो। 6 और जो कोई गिर कर सिज्दा न करे, उसी वक़्त आग की जलती भट्टी में डाला जाएगा। 7 इसलिए जिस वक़्त सब लोगों ने करना, और ने, और सितार, और रबाब, और बरबत, और हर तरह के साज़ की आवाज़ सुनी, तो सब लोगों और उम्मतों और मुख्तलिफ़ ज़बानें बोलने वालों ने उस मूरत के सामने, जिसको नबूकदनज़र बादशाह ने खड़ा किया था, गिर कर सिज्दा किया। 8 तब उस वक़्त चन्द कसदियों ने आकर यहूदियों पर इल्ज़ाम लगाया। 9 उन्होंने नबूकदनज़र बादशाह से कहा, ऐ बादशाह, हमेशा तक जीता रह! 10 ऐ बादशाह, तूने यह फ़रमान

जारी किया है कि जो कोई करना, और ने, और सितार, और रबाब, और बरबत, और चगाना, और हर तरह के साज़ की आवाज़ सुने, गिर कर सोने की मूरत को सिज्दा करे। 11 और जो कोई गिर कर सिज्दा न करे, आग की जलती भट्टी में डाला जाएगा। 12 अब चन्द यहूदी हैं, जिनको तू ने बाबुल के सूबे की ज़िम्मेदारी पर मुकर्रर किया है, या'नी सदरक और मीसक और 'अबदनजू, इन आदमियों ने, ऐ बादशाह, तेरी ता'ज़ीम नहीं की। वह तेरे मा'बूदों की इबादत नहीं करते, और उस सोने की मूरत को जिसे तू ने खड़ा किया सिज्दा नहीं करते। 13 तब नबूकदनज़र ने क्रहर — ओ — ग़ज़ब से हुक्म किया कि सदरक और मीसक और 'अबदनजू को हाज़िर करें। और उन्होंने उन आदमियों को बादशाह के सामने हाज़िर किया। 14 नबूकदनज़र ने उनसे कहा, ऐ सदरक और मीसक और 'अबदनजू क्या यह सच है कि तुम मेरे मा'बूदों की इबादत नहीं करते हो, और उस सोने की मूरत को जिसे मैंने खड़ा किया सिज्दा नहीं करते? 15 अब अगर तुम तैयार रहो कि जिस वक़्त करना, और ने, और सितार, और रबाब, और बरबत, और चगाना, और हर तरह के साज़ की आवाज़ सुनो, तो उस मूरत के सामने जो मैंने बनवाई है गिर कर सिज्दा करो तो बेहतर, लेकिन अगर सिज्दा न करोगे, तो उसी वक़्त आग की जलती भट्टी में डाले जाओगे और कौन सा मा'बूद तुम को मेरे हाथ से छुड़ाएगा? 16 सदरक और मीसक और 'अबदनजू ने बादशाह से 'अर्ज़ किया कि “ऐ नबूकदनज़र, इस हुक्म में हम तुझे जवाब देना ज़रूरी नहीं समझते। 17 देख, हमारा खुदा जिसकी हम इबादत करते हैं, हम को आग की जलती भट्टी से छुड़ाने की कुदरत रखता है, और ऐ बादशाह वही हम को तेरे हाथ से छुड़ाएगा। 18 और नहीं, तो ऐ बादशाह तुझे मा'लूम हो कि हम तेरे मा'बूदों की इबादत नहीं करेंगे, और उस सोने की मूरत को जो तूने खड़ी की है सिज्दा नहीं करेंगे। 19 तब नबूकदनज़र गुस्से से भर गया, और उसके चेहरे का रंग सदरक और मीसक और 'अबदनजू पर बदल गया, और उसने हुक्म दिया कि भट्टी की आँच मा'मूल से सात गुना ज्यादा करें। 20 और उसने अपने लश्कर के चन्द ताक़तवर पहलवानों को हुक्म दिया कि सदरक और मीसक और 'अबदनजू को बाँध कर आग की जलती भट्टी में डाल दें। 21 तब यह मर्द अपने पैजामों — कमीसों और 'अमामों के साथ बाँधे गए, और आग की जलती भट्टी में फेंक दिए गए। 22 इसलिए चूँकि बादशाह का हुक्म ताकीदी था और भट्टी की आँच निहायत तेज़ थी, इसलिए सदरक और मीसक और



अबदनजू को उठाने वाले आग के शो'लों से हलाक हो गए; <sup>23</sup> और यह तीन आदमी या'नी सदरक और मीसक और अबदनजू, बँधे हुए आग की जलती भट्टी में जा पड़े। <sup>24</sup> तब नबूकदनज़र बादशाह सरासीमा होकर जल्द उठा, और अरकान — ए — दौलत से मुखातिब होकर कहने लगा, क्या हम ने तीन शख्सों को बँधवा कर आग में नहीं डलवाया?" उन्होंने जवाब दिया, बादशाह ने सच फ़रमाया है। <sup>25</sup> उसने कहा, देखो, मैं चार शख्स आग में खुले फिरते देखता हूँ, और उनको कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा; और चौथे की सूरत इलाहज़ादे की तरह है। <sup>26</sup> तब नबूकदनज़र ने आग की जलती भट्टी के दरवाज़े पर आकर कहा, ऐ सदरक और मीसक और अबदनजू, खुदा — त'आला के बन्दो! बाहर निकलो और इधर आओ! इसलिए सदरक और मीसक और अबदनजू आग से निकल आए। <sup>27</sup> तब नाज़िमों और हाकिमों और सरदारों और बादशाह के सलाहकारों ने जमा' होकर उन शख्सों पर नज़र की, और देखा कि आग ने उनके बदनो पर कुछ असर न किया और उनके सिर का एक बाल भी न जलाया, और उनकी पोशाक में कुछ फ़र्क़ न आया और उनसे आग से जलने की बू भी न आती थी। <sup>28</sup> तब नबूकदनज़र ने पुकार कर कहा, कि "सदरक और मीसक और 'अबदनजू का खुदा मुबारक हो, जिसने अपना फ़रिश्ता भेज कर अपने बन्दों को रिहाई बख़्शी, जिन्होंने उस पर भरोसा करके बादशाह के हुक्म को टाल दिया, और अपने बदनो को निसार किया कि अपने खुदा के अलावा किसी दूसरे मा'बूद की इबादत और बन्दगी न करें। <sup>29</sup> इसलिए मैं यह फ़रमान जारी करता हूँ कि जो क्रौम या उम्मत या अहल — ए — जुबान, सदरक और मीसक और 'अबदनजू के खुदा के हक़ में कोई ना मुनासिब बात कहें उनके टुकड़े — टुकड़े किए जाएँगे और उनके घर मज़बला हो जाएँगे, क्योंकि कोई दूसरा मा'बूद नहीं जो इस तरह रिहाई दे सके।" <sup>30</sup> फिर बादशाह ने सदरक और मीसक और 'अबदनजू को सूबा — ए — बाबुल में सरफ़राज़ किया।

#### 4

2222222222 22 22 22222 22 22222 2222 22222222

<sup>1</sup> नबूकदनज़र बादशाह की तरफ़ से तमाम लोगों, उम्मतों और अहल — ए — जुबान के लिए जो तमाम इस ज़मीन पर रहते हैं: तुम्हारी सलामती होती रहे। <sup>2</sup> मैंने मुनासिब जाना कि उन निशानों और 'अजायब को ज़ाहिर करूँ जो खुदा — त'आला ने मुझ पर ज़ाहिर किए हैं। <sup>3</sup> उसके निशान कैसे 'अज़ीम, और उसके 'अजायब

कैसे पसंदीदा हैं! उसकी ममलुकत हमेशा की ममलुकत है, और उसकी सलतनत नसल — दर — नसल। <sup>4</sup> मैं, नबूकदनज़र, अपने घर में मुतम'इन और अपने महल में कामयाब था। <sup>5</sup> मैंने एक ख़्वाब देखा, जिससे मैं परेशान हो गया और उन ख़्यालात से जो मैंने पलंग पर किए और उन ख़्यालों से जो मेरे दिमाग़ में आए, मुझे परेशानी हुई। <sup>6</sup> इसलिए मैंने फ़रमान जारी किया कि बाबुल के तमाम हकीम मेरे सामने हाज़िर किए जाएँ, ताकि मुझसे उस ख़्वाब की ता'बीर बयान करें। <sup>7</sup> चुनाँचे जादूगर और नजूमी और कसदी और फ़ालगीर हाज़िर हुए, और मैंने उनसे अपने ख़्वाब का बयान किया, पर उन्होंने उसकी ता'बीर मुझ से बयान न की। <sup>8</sup> आख़िरकार दानीएल मेरे सामने आया, जिसका नाम बेल्तशज़र है, जो मेरे मा'बूद का भी नाम है, उसमें मुक़द्दस इलाहों की रूह है; इसलिए मैंने उसके आम्ने — सामने ख़्वाब का बयान किया और कहा: <sup>9</sup> ऐ बेल्तशज़र, जादूगरों के सरदार, चूँकि मैं जानता हूँ कि मुक़द्दस इलाहों की रूह तुझमें है, और कि कोई राज़ की बात तेरे लिए मुश्किल नहीं; इसलिए जो ख़्वाब मैंने देखा उसकी कैफ़ियत और ता'बीर बयान कर। <sup>10</sup> पलंग पर मेरे दिमाग़ की रोया ये थी: मैंने निगाह की और क्या देखता हूँ कि ज़मीन के तह में एक निहायत ऊँचा दरख़्त है। <sup>11</sup> वह दरख़्त बढ़ा और मज़बूत हुआ और उसकी चोटी आसमान तक पहुँची, और वह ज़मीन की इन्तिहा तक दिखाई देने लगा। <sup>12</sup> उसके पत्ते खुशनुमा थे और मेवा फ़िरावान था, और उसमें सबके लिए खुराक थी; मैदान के जानवर उसके साये में और हवा के परिन्दे उसकी शाखों पर बसेरा करते थे, और तमाम बशर ने उस से परवरिश पाई। <sup>13</sup> मैंने अपने पलंग पर अपनी दिमागी रोया पर निगाह की, और क्या देखता हूँ कि एक निगहवान, हाँ एक फ़रिश्ता आसमान से उतरा। <sup>14</sup> उसने बलन्द आवाज़ से पुकार कर यूँ कहा कि 'दरख़्त को काटो, उसकी शाखें तराशो, और उसके पत्ते झाड़ो, और उसका फल बिखेर दो; जानवर उसके नीचे से चले जाएँ और परिन्दे उसकी शाखों पर से उड़ जाएँ। <sup>15</sup> लेकिन उसकी जड़ों का हिस्सा ज़मीन में बाक़ी रहने दो, हाँ, लोहे और ताँम्बे के बन्धन से बन्धा हुआ मैदान की हरी घास में रहने दो, और वह आसमान की शबनम से तर हो, और उसका हिस्सा ज़मीन की घास में हैवानों के साथ हो। <sup>16</sup> उसका दिल इंसान का दिल न रहे, बल्कि उसको हैवान का दिल दिया जाए; और उस पर सात दौर गुज़र जाएँ। <sup>17</sup> यह हुक्म निगहवानों के फ़ैसले से है, और यह हुक्म फ़रिश्तों के कहने के मुताबिक़ है, ताकि सब जानदार पहचान लें कि हक़ त'आला आदमियों की ममलुकत में हुक्मरानी करता है और जिसको चाहता है

उसे देता है, बल्कि आदमियों में से अदना आदमी को उस पर क्रायम करता है। <sup>18</sup> मैं नबूकदनज़र बादशाह ने यह ख्वाब देखा है। ऐ बेल्तशज़र, तू इसकी ता'बीर बयान कर, क्योंकि मेरी ममलुकत के तमाम हकीम मुझसे उसकी ता'बीर बयान नहीं कर सकते, लेकिन तू कर सकता है; क्योंकि मुक़द्दस इलाहों की रूह तुझमें मौजूद है।” <sup>19</sup> तब दानीएल जिसका नाम बेल्तशज़र है, एक वक्रत तक खामोश रहा, और अपने ख्यालात में परेशान हुआ। बादशाह ने उससे कहा, ऐ बेल्तशज़र, ख्वाब और उसकी ता'बीर से तू परेशान न हो। बेल्तशज़र ने जवाब दिया, ऐ मेरे खुदावन्द, ये ख्वाब तुझसे कीना रखने वालों के लिए और उसकी ता'बीर तेरे दुश्मनों के लिए हो! <sup>20</sup> वह दरख्त जो तूने देखा कि बढ़ा और मज़बूत हुआ, जिसकी चोटी आसमान तक पहुँची और ज़मीन की इन्तिहा तक दिखाई देता था; <sup>21</sup> जिसके पत्ते खुशनुमा थे और मेवा फ़रावान था, जिसमें सबके लिए खुराक थी। जिसके साये में मैदान के जानवर और शाखों पर हवा के परिन्दे बसेरा करते थे। <sup>22</sup> ऐ बादशाह, वह तू ही है जो बढ़ा और मज़बूत हुआ, क्योंकि तेरी बुज़ुर्गी बढ़ी और आसमान तक पहुँची और तेरी सल्तनत ज़मीन की इन्तिहा तक। <sup>23</sup> और जो बादशाह ने देखा कि एक निगहबान, यहाँ, एक फ़रिश्ता आसमान से उतरा और कहने लगा, 'दरख्त को काट डालो और उसे बर्बाद करो, लेकिन उसकी जड़ों का हिस्सा ज़मीन में बाक़ी रहने दो; बल्कि उसे लोहे और ताँबे के बन्धन से बन्धा हुआ, मैदान की हरी घास में रहने दो कि वह आसमान की शबनम से तर हो, और जब तक उस पर सात दौर न गुज़र जाएँ उसका हिस्सा ज़मीन के हैवानों के साथ हो। <sup>24</sup> ऐ बादशाह, इसकी ता'बीर और हक़ — त'आला का वह हुक्म, जो बादशाह मेरे खुदावन्द के हक़ में हुआ है यही है, <sup>25</sup> कि तुझे आदमियों में से हाँक कर निकाल देंगे, और तू मैदान के हैवानों के साथ रहेगा, और तू बैल की तरह घास खाएगा और आसमान की शबनम से तर होगा, और तुझ पर सात दौर गुज़र जाएँगे, तब तुझको मा'लूम होगा कि हक़ त'आला इंसान की ममलुकत में हुक्मरानी करता है और उसे जिसको चाहता है देता है। <sup>26</sup> और यह जो उन्होंने हुक्म किया कि दरख्त की जड़ों के हिस्से को बाक़ी रहने दो, उसका मतलब ये है कि जब तू मा'लूम कर चुकेगा कि बादशाही का इस्ति्यार आसमान की तरफ़ से है, तो तू अपनी सल्तनत पर फिर क्रायम हो जाएगा। <sup>27</sup> इसलिए ऐ बादशाह, तेरे सामने मेरी सलाह कुबूल हो और तू अपनी ख़ताओं को सदाक़त से और अपनी बदकिरदारी को मिस्कीनों पर रहम करने से दूर कर, मुम्किन है इससे

तेरा इत्मिनान ज्यादा हो। <sup>28</sup> यह सब कुछ नबूकदनज़र बादशाह पर गुज़रा। <sup>29</sup> एक साल बाद वह बाबुल के शाही महल में टहल रहा था। <sup>30</sup> बादशाह ने फ़रमाया, “क्या यह बाबुल — ए — आज़म नहीं, जिसको मैंने अपनी तवानाई की कुदरत से ता'मीर किया है कि दार — उस — सल्तनत और मेरे जाह — ओ — जलाल का नमूना हो?” <sup>31</sup> बादशाह यह बात कह ही रहा था कि आसमान से आवाज़ आई, ऐ नबूकदनज़र बादशाह, तेरे हक़ में यह फ़तवा है कि सल्तनत तुझ से जाती रही। <sup>32</sup> और तुझे आदमियों में से हाँक कर निकाल देंगे, और तू मैदान के हैवानों के साथ रहेगा और बैल की तरह घास खाएगा, और सात दौर तुझ पर गुज़रेँगे, तब तुझको मा'लूम होगा कि हक़ त'आला आदमियों की ममलुकत में हुक्मरानी करता है, और उसे जिसको चाहता है, देता है। <sup>33</sup> उसी वक्रत नबूकदनज़र बादशाह पर यह बात पूरी हुई, और वह आदमियों में से निकाला गया और बैलों की तरह घास खाता रहा और उसका बदन आसमान की शबनम से तर हुआ, यहाँ तक कि उसके बाल उक्काब के परो की तरह और उसके नाखून परिन्दों के चँगुल की तरह बढ़ गए। <sup>34</sup> और इन दिनों के गुज़रने के बाद, मैं नबूकदनज़र ने आसमान की तरफ़ आँखें उठाई और मेरी 'अक्ल मुझमे फिर आई और मैंने हक़ — त'आला का शुक्र किया, और उस हय्युल — कय्यूम की बड़ाई — ओ — सना की, जिसकी सल्तनत हमेशा और जिसकी ममलुकत नसल — दर — नसल है। <sup>35</sup> और ज़मीन के तमाम बाशिन्दे नाचीज़ गिने जाते हैं और वह आसमानी लश्कर और ज़मीन के रहने वालों के साथ जो कुछ चाहता है करता है; और कोई नहीं जो उसका हाथ रोक सके। या उससे कहे कि “तू क्या करता है?” <sup>36</sup> उसी वक्रत मेरी 'अक्ल मुझ में फिर आई, और मेरी सल्तनत की शौकत के लिए मेरा रौ'ब और दबदबा फिर मुझमे बहाल हो गया, और मेरे सलाहकारों और अमीरों ने मुझे फिर ढूँडा और मैं अपनी ममलुकत में काईम हुआ और मेरी 'अज़मत में अफ़ज़ूनी हुई। <sup>37</sup> अब मैं नबूकदनज़र, आसमान के बादशाह की बड़ाई और 'इज़ज़त — ओ — ता'ज़ीम करता हूँ, क्योंकि वह अपने सब कामों में रास्त और अपनी सब राहों में 'इन्साफ़ करता है; और जो मगरूरी में चलते हैं उनको ज़लील कर सकता है।

## 5

????? ? ? ? ? ? ?

<sup>1</sup> बेल्शज़र बादशाह ने अपने एक हज़ार हाकिमों की बड़ी धूमधाम से मेहमान नवाज़ी की, और उनके सामने

शराबनोशी की। <sup>2</sup> बेलशज़र ने शराब से मसरूर होकर हुक्म किया कि सोने चाँदी के बर्तन जो नबूकदनज़र उसका बाप येरूशलेम की हैकल से निकाल लाया था, लाएँ ताकि बादशाह और उसके हाकिमों और उसकी बीवियाँ और बाँदियाँ उनमें मयख्वारी करें। <sup>3</sup> तब सोने के बर्तन को जो हैकल से, या'नी खुदा के घर से जो येरूशलेम में हैं ले गए थे, लाए और बादशाह और उसके हाकिमों और उसकी बीवियों और बाँदियों ने उनमें शराब पी। <sup>4</sup> उन्होंने शराब पी और सोने और चाँदी और पीतल और लोहे और लकड़ी और पत्थर के बुतों की बड़ाई की। <sup>5</sup> उसी वक़्त आदमी के हाथ की उंगलियाँ ज़ाहिर हुईं और उन्होंने शमा'दान के मुक़ाबिल बादशाही महल की दीवार के गच पर लिखा, और बादशाह ने हाथ का वह हिस्सा जो लिखता था देखा। <sup>6</sup> तब बादशाह के चेहरे का रंग उड़ गया और उसके ख्यालात उसको परेशान करने लगे, यहाँ तक कि उसकी कमर के जोड़ ढीले हो गए और उसके घुटने एक दूसरे से टकराने लगे। <sup>7</sup> बादशाह ने चिल्ला कर कहा कि नज़ूमियों और कसदियों और फ़ालगीरों को हाज़िर करें। बादशाह ने बाबुल के हकीमों से कहा, जो कोई इस लिखे हुए को पढ़े और इसका मतलब मुझ से बयान करे, अर्ग़वानी ख़िल'अत पाएगा और उसकी गर्दन में ज़रीन तौक़ पहनाया जाएगा, और वह ममलुकत में तीसरे दर्जे का हाकिम होगा। <sup>8</sup> तब बादशाह के तमाम हकीम हाज़िर हुए, लेकिन न उस लिखे हुए को पढ़ सके और न बादशाह से उसका मतलब बयान कर सके। <sup>9</sup> तब बेलशज़र बादशाह बहुत घबराया और उसके चेहरे का रंग उड़ गया, और उसके हाकिम परेशान हो गए। <sup>10</sup> अब बादशाह और उसके हाकिमों की बातें सुनकर बादशाह की वालिदा ज़शनगाह में आई और कहने लगी, ऐ बादशाह, हमेशा तक जीता रह! तेरे ख्यालात तुझको परेशान न करें और तेरा चेहरा उदास न हो। <sup>11</sup> तेरी ममलुकत में एक शख्स है जिसमें पाक इलाहों की रूह है, और तेरे बाप के दिनों में नूर और 'अक्ल और हिकमत, इलाहों की हिकमत की तरह उसमें पाई जाती थी; और उसको नबूकदनज़र बादशाह, तेरे बाप ने जादूगरों और नज़ूमियों और कसदियों और फ़ालगीरों का सरदार बनाया था। <sup>12</sup> क्योंकि उसमें एक फ़ाज़िल रूह और दानिश और 'अक्ल और ख़ाबों की ता'बीर और 'उक़दा कुशाई और मुश्किलात के हल की ताक़त थी — उसी दानीएल में जिसका नाम बादशाह ने बेल्लशज़र रखवा था — इसलिए दानीएल को बुलवा, वह मतलब बताएगा। <sup>13</sup> तब दानीएल बादशाह के सामने हाज़िर किया गया। बादशाह ने दानीएल से पूछा, क्या तू वही दानीएल है जो यहूदाह के गुलामों

में से है, जिनको बादशाह मेरा बाप यहूदाह से लाया? <sup>14</sup> मैंने तेरे बारे में सुना है कि इलाहों की रूह तुझमें है, और नूर और 'अक्ल और कामिल हिकमत तुझ में है। <sup>15</sup> हकीम और नज़ूमी मेरे सामने हाज़िर किए गए, ताकि इस लिखे हुए को पढ़ें और इसका मतलब मुझ से बयान करें, लेकिन वह इसका मतलब बयान नहीं कर सके। <sup>16</sup> और मैंने तेरे बारे में सुना है कि तू ता'बीर और मुश्किलात के हल पर क़ादिर है। इसलिए अगर तू इस लिखे हुए को पढ़े और इसका मतलब मुझ से बयान करे, तो अर्ग़वानी ख़िल'अत पाएगा और तेरी गर्दन में ज़रीन तौक़ पहनाया जाएगा और तू ममलुकत में तीसरे दर्जे का हाकिम होगा। <sup>17</sup> तब दानीएल ने बादशाह को जवाब दिया, तेरा इन'आम तेरे ही पास रहे और अपना सिला किसी दूसरे को दे, तोभी मैं बादशाह के लिए इस लिखे हुए को पढ़ूँगा और इसका मतलब उससे बयान करूँगा। <sup>18</sup> ऐ बादशाह, खुदा त'आला ने नबूकदनज़र, तेरे बाप को सल्लनत और हशमत और शौकत और 'इज़्जत बख़्शी। <sup>19</sup> और उस हशमत की वजह से जो उसने उसे बख़्शी तमाम लोग और उम्मतें और अहल — ए — जुबान उसके सामने काँपने और डरने लगे। उसने जिसको चाहा हलाक किया और जिसको चाहा ज़िन्दा रखवा, जिसको चाहा सरफ़राज़ किया और जिसको चाहा ज़लील किया। <sup>20</sup> लेकिन जब उसकी तबी'अत में गुरूर समाया और उसका दिल गुरूर से सख़्त हो गया, तो वह तख़्त — ए — सल्लनत से उतार दिया गया और उसकी हशमत जाती रही। <sup>21</sup> और वह बनी आदम के बीच से हाँक कर निकाल दिया गया, और उसका दिल हैवानों का सा बना और गोरख़रों के साथ रहने लगा और उसे बैलों की तरह घास खिलाते थे और उसका बदन आसमान की शबनम से तर हुआ; जब तक उसने मा'लूम न किया कि खुदा — त'आला इंसान की ममलुकत में हुक्मरानी करता है, और जिसको चाहता है उस पर क़ाईम करता है। <sup>22</sup> लेकिन तू, ऐ बेलशज़र, जो उसका बेटा है; बावजूद यह कि तू इस सब को जानता था तोभी तूने अपने दिल से 'आज़िज़ी न की। <sup>23</sup> बल्कि आसमान के खुदावन्द के सामने अपने आप को बलन्द किया, और उसकी हैकल के बर्तन तेरे पास लाए और तूने अपने हाकिमों और अपनी बीवियों और बाँदियों के साथ उनमें मय — ख्वारी की, और तूने सोने और चाँदी और पीतल और लोहे और लकड़ी और पत्थर के बुतों की बड़ाई की, जो न देखते न सुनते और न जानते हैं; और उस खुदा की तम्ज़ीद न की जिसके हाथ में तेरा दम है, और जिसके क़ाबू में तेरी सब राहें हैं। <sup>24</sup> “इसलिए उसकी तरफ से हाथ का





उन्होंने मुझे नुकसान नहीं पहुँचाया क्योंकि मैं उसके सामने बे — गुनाह साबित हुआ, और तेरे सामने भी ऐ बादशाह, मैंने खता नहीं की। <sup>23</sup> इसलिए बादशाह निहायत खुश हुआ और हुक्म दिया कि दानीएल को उस माँद से निकालें। तब दानीएल उस माँद से निकाला गया, और मा'लूम हुआ कि उसे कुछ नुकसान नहीं पहुँचा, क्योंकि उसने अपने खुदा पर भरोसा किया था। <sup>24</sup> और बादशाह ने हुक्म दिया और वह उन शरूखों को जिन्होंने दानीएल की शिकायत की थी लाए, और उनके बच्चों और बीवियों के साथ उनको शेरों की मान्द में डाल दिया; और शेर उन पर गालिब आए और इससे पहले कि मान्द की तह तक पहुँचें, शेरों ने उनकी सब हड्डियाँ तोड़ डालीं। <sup>25</sup> तब दारा बादशाह ने सब लोगों और कौमों और अहल — ए — जुबान को जो इस ज़मीन पर बसते थे, खत लिखा: “तुम्हारी सलामती बढ़ती जाये! <sup>26</sup> मैं यह फ़रमान जारी करता हूँ कि मेरी ममलुकत के हर एक सूबे के लोग, दानीएल के खुदा के सामने डरते और काँपते हों क्योंकि वही ज़िन्दा खुदा है और हमेशा कायम है; और उसकी सल्तनत लाज़वाल है और उसकी ममलुकत हमेशा तक रहेगी। <sup>27</sup> वही छुड़ाता और बचाता है, और आसमान और ज़मीन में वही निशान और 'अजायब दिखाता है, उसीने दानीएल को शेरों के पंजों से छुड़ाया है।” <sup>28</sup> इसलिए यह दानीएल दारा की सल्तनत और खोरस फ़ारसी की सल्तनत में कामयाब रहा।

## 7

१११ ११११११११ ११ ११११ १११ ११११११११११  
११ १११११११

<sup>1</sup> शाह — ए — बाबुल बेलशज़र के पहले साल में दानीएल ने अपने बिस्तर पर ख़्वाब में अपने सिर के दिमागी ख़्यालात की रोया देखी। तब उसने उस ख़्वाब को लिखा, और उन ख़्यालात का मुकम्मल बयान किया। <sup>2</sup> दानीएल ने यूँ कहा, कि मैंने रात को एक ख़्वाब देखा, और क्या देखता हूँ कि आसमान की चारों हवाएँ समन्दर पर ज़ोर से चलीं। <sup>3</sup> और समन्दर से चार बड़े हैवान, जो एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ थे निकले। <sup>4</sup> पहला शेर — ए — बबर की तरह था, और उक्राब के से बाज़ू रखता था; और मैं देखता रहा, जब तक उसके पर उखाड़े गए और वह ज़मीन से उठाया गया, और आदमी की तरह पाँव पर खड़ा किया गया और इंसान का दिल उसे दिया गया। <sup>5</sup> और क्या देखता हूँ कि एक दूसरा हैवान रीछ की तरह है, और वह एक तरफ़ सीधा खड़ा हुआ; और उसके मुँह में उसके दाँतों के बीच तीन पसलियाँ थीं, और उन्होंने उससे कहा, 'कि उठ, और कसरत से गोश्त खा। <sup>6</sup> फिर

मैंने निगाह की, और क्या देखता हूँ कि एक और हैवान तेंदवे की तरह उठा, जिसकी पीठ पर परिन्दे के से चार बाज़ू थे और उस हैवान के चार सिर थे; और सल्तनत उसे दी गई। <sup>7</sup> फिर मैंने रात को ख़्वाब में देखा, और क्या देखता हूँ कि चौथा हैवान हौलनाक और हैबतनाक और निहायत ज़बरदस्त है, और उसके दाँत लोहे के बड़े — बड़े थे; वह निगल जाता और टुकड़े टुकड़े करता था, और जो कुछ बाक़ी बचता उसको पाँव से लताड़ता था, और यह उन सब पहले हैवानों से मुख़्तलिफ़ था और उसके दस सींग थे। <sup>8</sup> मैं ने उन सींगों पर गौर से नज़र की, और क्या देखता हूँ कि उनके बीच से एक और छोटा सा सींग निकला, जिसके आगे पहलों में से तीन सींग जड़ से उखाड़े गए, और क्या देखता हूँ कि उस सींग में इंसान के सी आँखें हैं और एक मुँह है जिस से गुरुर की बातें निकलती हैं। <sup>9</sup> मेरे देखते हुए तख़्त लगाए गए, और पुराने दिनों में बैठ गया; उसका लिबास बर्फ़ की तरह सफ़ेद था, और उसके सिर के बाल ख़ालिस ऊन की तरह थे; उसका तख़्त आग के शोले की तरह था, और उसके पहिये जलती आग की तरह थे। <sup>10</sup> उसके सामने से एक आग का दरिया जारी था, हज़ारों हज़ार उसकी ख़िदमत में हाज़िर थे और लाखों लाख उसके सामने खड़े थे, 'अदालत हो रही थी, और किताबें खुली थी। <sup>11</sup> मैं देख ही रहा था कि उस सींग की गुरुर की बातों की आवाज़ की वजह से, मेरे देखते हुए वह हैवान मारा गया और उसका बदन हलाक करके शोलाज़न आग में डाला गया। <sup>12</sup> और बाक़ी हैवानों की सल्तनत भी उन से ले ली गई, लेकिन वह एक ज़माना और एक दौर ज़िन्दा रहे। <sup>13</sup> मैंने रात को ख़्वाब में देखा, और क्या देखता हूँ एक शरूख आदमज़ाद की तरह आसमान के बा'दलों के साथ आया और गुज़रे दिनों तक पहुँचा, वह उसे उसके सामने लाए। <sup>14</sup> और सल्तनत और हशमत और ममलुकत उसे दी गई, ताकि सब लोग और उम्मतें और अहल — ए — जुबान उसकी ख़िदमत गुज़ारी करें उसकी सल्तनत हमेशा की सल्तनत है जो जाती न रहेगी और उसकी ममलुकत लाज़वाल होगी। <sup>15</sup> मुझ दानीएल की रूह मेरे बदन में मलूल हुई, और मेरे दिमाग के ख़्यालात ने मुझे परेशान कर दिया। <sup>16</sup> जो मेरे नज़दीक खड़े थे, मैं उनमें से एक के पास गया और उससे इन सब बातों की हकीकत दरियाफ़्त की, इसलिए उसने मुझे बताया और इन बातों का मतलब समझा दिया, <sup>17</sup> 'यह चार बड़े हैवान चार बादशाह हैं, जो ज़मीन पर बर्पा होंगे। <sup>18</sup> लेकिन हक़ — त'आला के पाक लोग सल्तनत ले लेंगे और हमेशा तक हाँ हमेशा से हमेशा तक उस सल्तनत

के मालिक रहेंगे। <sup>19</sup> तब मैंने चाहा कि चौथे हैवान की हकीकत समझूँ, जो उन सब से मुख्तलिफ़ और निहायत हौलनाक था, जिसके दाँत लोहे के और नाखून पीतल के थे, जो निगलता और टुकड़े — टुकड़े करता और जो कुछ बचता उसको पाँव से लताड़ता था। <sup>20</sup> और दस सींगों की हकीकत जो उसके सिर पर थे, और उस सींग की जो निकला और जिसके आगे तीन गिर गए, या'नी जिस सींग की आँखें थीं और एक मुँह था जो बड़े गुरुर की बातें करता था, और जिसकी सूरत उसके साथियों से ज्यादा रो'ब दार थी। <sup>21</sup> मैं ने देखा कि वही सींग मुक़द्दसों से जंग करता और उन पर गालिब आता रहा। <sup>22</sup> जब तक कि पुराने दिन न आये, और हक़ त'आला के पाक लोगों का इन्साफ़ न किया गया, और वक़्त आ न पहुँचा कि पाक लोग सल्तनत के मालिक हों। <sup>23</sup> उसने कहा, कि चौथा हैवान दुनिया की चौथी सल्तनत जो तमाम सल्तनतों से मुख्तलिफ़ है, और ज़मीन को निगल जायेगी और उसे लताड़ कर टुकड़े — टुकड़े करेगी। <sup>24</sup> और वह दस सींग दस बादशाह हैं, जो उस सल्तनत में खड़े होंगे; और उनके बाद एक और खड़ा होगा, और वह पहलों से मुख्तलिफ़ होगा और तीन बादशाहों को पस्त करेगा। <sup>25</sup> और वह हक़ — त'आला के खिलाफ़ बातें करेगा, और हक़ त'आला के मुक़द्दसों को तंग करेगा और मुक़र्ररा वक़्त व शरी'अत को बदलने की कोशिश करेगा, और वह एक दौर और दौरों और नीम दौर तक उसके हवाले किए जाएँगे। <sup>26</sup> तब 'अदालत कायम होगी, और उसकी सल्तनत उससे ले लेंगे कि उसे हमेशा के लिए नेस्त — ओ — नाबूद करें। <sup>27</sup> और तमाम आसमान के नीचे सब मुल्कों की सल्तनत और ममलुकत और सल्तनत की हशमत हक़ त'आला के मुक़द्दस लोगों को बख़्शी जाएगी, उसकी सल्तनत हमेशा की सल्तनत है और तमाम ममलुकत उसकी, खिदमत गुज़ार और फ़रमाबरदार होंगी। <sup>28</sup> “यहाँ पर यह हुक़म पूरा हुआ, मैं दानीएल अपने शकों से निहायत घबराया और मेरा चेहरा मायूस हुआ, लेकिन मैंने यह बात दिल ही में रखी।”

## 8

?????????? ?? ?? ?????? ?? ?????? ??  
?????? ?????

<sup>1</sup> बेलशज़र बादशाह की सल्तनत के तीसरे साल में मुझ को, हाँ, मुझ दानीएल को एक ख़्वाब नज़र आया, या'नी मेरे पहले ख़्वाब के बा'द। <sup>2</sup> और मैंने 'आलम — ए — रोया में देखा, और जिस वक़्त मैंने देखा, ऐसा मा'लूम हुआ कि मैं महल — ए — सोसन में था, जो

सूबा — ए — ऐलाम में है। फिर मैंने 'आलम — ए — रोया ही में देखा कि मैं दरिया — ए — ऊलाई के किनारे पर हूँ। <sup>3</sup> तब मैंने आँख उठा कर नज़र की, और क्या देखता हूँ कि दरिया के पास एक मेंढा खड़ा है जिसके दो सींग हैं, दोनों सींग ऊँचे थे, लेकिन एक दूसरे से बड़ा था और बड़ा दूसरे के बाद निकला था। <sup>4</sup> मैंने उस मेंढे को देखा कि पश्चिम — और — उत्तर — और — दक्खिन की तरफ़ सींग मारता है, यहाँ तक कि न कोई जानवर उसके सामने खड़ा हो सका और न कोई उससे छुड़ा सका, पर वह जो कुछ चाहता था करता था, यहाँ तक कि वह बहुत बड़ा हो गया। <sup>5</sup> और मैं सोच ही रहा था कि एक बकरा पश्चिम की तरफ़ से आकर तमाम ज़मीन पर ऐसा फिरा कि ज़मीन को भी न छुआ, और उस बकरे की दोनों आँखों के बीच एक 'अजीब सींग था। <sup>6</sup> और वह उस दो सींग वाले मेंढे, के पास, जिसे मैंने दरिया के किनारे खड़ा देखा था आया और अपने ज़ोर के क़हर से उस पर हमलावर हुआ। <sup>7</sup> और मैंने देखा कि वह मेंढे के करीब पहुँचा और उसका ग़ज़ब उस पर भड़का और उसने मेंढे को मारा और उसके दोनों सींग तोड़ डाले और मेंढे में उसके मुक़ाबले की हिम्मत न थी, तब उसने उसे ज़मीन पर पटख़ दिया और उसे लताड़ा और कोई न था कि मेंढे को उससे छुड़ा सके। <sup>8</sup> और वह बकरा निहायत बुज़ुर्ग़ हुआ, और जब वह निहायत ताक़तवर हुआ तो उसका बड़ा सींग टूट गया और उसकी जगह चार अजीब सींग आसमान की चारों हवाओं की तरफ़ निकले। <sup>9</sup> और उनमें से एक से एक छोटा सींग निकला, जो दक्खिन और पूरब और जलाली मुल्क की तरफ़ बे निहायत बढ़ गया। <sup>10</sup> और वह बढ़ कर अजराम — ए — फ़लक तक पहुँचा, और उसने कुछ अजराम — ए — फ़लक और सितारों को ज़मीन पर गिरा दिया और उनको लताड़ा। <sup>11</sup> बल्कि उसने अजराम के फ़रमाँरवाँ तक अपने आप को बलन्द किया, और उससे दाइमी कुर्बानी को छीन लिया और उसका मक़दिस गिरा दिया। <sup>12</sup> और अजराम ख़ताकारी की वजह से कायम रहने वाली कुर्बानी के साथ उसके हवाले किए गए, और उसने सच्चाई को ज़मीन पर पटख़ दिया और वह कामयाबी के साथ यूँ ही करता रहा। <sup>13</sup> तब मैंने एक फ़रिश्ते को कलाम करते सुना, और दूसरे फ़रिश्ते ने उसी फ़रिश्ते से जो कलाम करता था पूछा कि दाइमी कुर्बानी और वीरान करने वाली ख़ताकारी की रोया जिसमें मक़दिस और अजराम पायमाल होते हैं, कब तक रहेगी? <sup>14</sup> और उसने मुझ से कहा, कि “दो हज़ार तीन सौ सुबह — और — शाम तक, उसके बाद मक़दिस पाक किया जाएगा।” <sup>15</sup> फिर यूँ हुआ कि जब मैं दानीएल ने यह रोया देखी, और इसकी ता'बीर की

फ़िक्र में था, तो क्या देखता हूँ कि मेरे सामने कोई इंसान सूरत खड़ा है। <sup>16</sup> और मैंने ऊलाई में से आदमी की आवाज़ सुनी, जिसने बलन्द आवाज़ से कहा, कि “ऐ जबराईल, इस शख्स को इस रोया के मा'ने समझा दे।” <sup>17</sup> चुनाँचे वह जहाँ मैं खड़ा था नज़दीक आया, और उसके आने से मैं डर गया और मुँह के बल गिरा, पर उसने मुझसे कहा, “ऐ आदमज़ाद! समझ ले कि यह रोया आखिरी ज़माने के ज़रिए है।” <sup>18</sup> और जब वह मुझसे बातें कर रहा था, मैं गहरी नींद में मुँह के बल ज़मीन पर पड़ा था, लेकिन उसने मुझे पकड़ कर सीधा खड़ा किया, <sup>19</sup> और कहा कि “देख, मैं तुझे समझाऊँगा कि क्रहर के आखिर में क्या होगा, क्योंकि यह हुक्म आखिरी मुक़र्रर वक़्त के बारे है। <sup>20</sup> जो मेंदा तू ने देखा, उसके दोनों सींग मादी और फ़ारस के बादशाह हैं। <sup>21</sup> और वह जसीम बकरा यूनान का बादशाह है, और उसकी आँखों के बीच का बड़ा सींग पहला बादशाह है। <sup>22</sup> और उसके टूट जाने के बाद, उसकी जगह जो चार और निकले वह चार सल्तनतें हैं जो उसकी क्रौम में कायम होंगी, लेकिन उनका इस्तिyार उसकी तरह न होगा। <sup>23</sup> और उनकी सल्तनत के आखिरी दिनों में जब ख़ताकार लोग हद तक पहुँच जाएँगे, तो एक सख्त और बेरहम बादशाह खड़ा होगा। <sup>24</sup> यह बड़ा ज़बरदस्त होगा लेकिन अपनी ताक़त से नहीं, और 'अजीब तरह से बर्बाद करेगा और कामयाब होगा और काम करेगा और ताक़तवरों और मुक़दस लोगों को हलाक करेगा। <sup>25</sup> और अपनी चतुराई से ऐसे काम करेगा कि उसकी फ़ितरत के मन्सूबे उसके हाथ में खूब अन्जाम पाएँगे, और दिल में बड़ा गुरूर करेगा और सुलह के वक़्त में बहुतों को हलाक करेगा; वह बादशाहों के बादशाह से भी मुक़ाबिला करने के लिए उठ खड़ा होगा, लेकिन बे हाथ हिलाए ही शिकस्त खाएगा। <sup>26</sup> और यह सुबह शाम की रोया जो बयान हुई यक़ीनी है, लेकिन तू इस रोया को बन्द कर रख, क्योंकि इसका 'इलाक़ा बहुत दूर के दिनों से है।” <sup>27</sup> और मुझ दानीएल को ग़श आया, और मैं कुछ रोज़ तक बीमार पड़ा रहा; फिर मैं उठा और बादशाह का कारोबार करने लगा, और मैं ख़्वाब से परेशान था लेकिन इसको कोई न समझा।

## 9

?????????? ?? ????? ?????? ?? ?????  
 ??? ?????

<sup>1</sup> दारा — बिन — 'अख्सूयरस जो मादियों की नसल से था, और कसदियों की ममलुकत पर बादशाह मुक़र्रर हुआ, उसके पहले साल में, <sup>2</sup> या'नी उसकी सल्तनत के

पहले साल में, मैं दानीएल, ने किताबों में उन बरसों का हिसाब समझा, जिनके ज़रिए' खुदावन्द का कलाम यरमियाह नबी पर नाज़िल हुआ कि येरूशलेम की बर्बादी पर सत्तर बरस पूरे गुज़रेंगे। <sup>3</sup> और मैंने खुदावन्द खुदा की तरफ़ रुख किया, और मैं मिन्नत और मुनाजात करके और रोज़ा रखकर और टाट ओढ़कर और राख पर बैठकर उसका तालिब हुआ। <sup>4</sup> और मैंने खुदावन्द अपने खुदा से दुआ की और इक्रार किया और कहा, कि “ऐ खुदावन्द अजीम और मुहीब खुदा तू अपने फ़रमावरदार मुहब्बत रखनेवालों के लिए अपने 'अहद — ओ — रहम को कायम रखता है; <sup>5</sup> हम ने गुनाह किया, हम बरग़श्ता हुए, हम ने शरारत की, हम ने बगावत की बल्कि हम ने तेरे हुक्मों और तौर तरीक़े को तर्क किया है; <sup>6</sup> और हम तेरे ख़िदमतगुज़ार नबियों के फ़रमावरदार नहीं हुए, जिन्होंने तेरा नाम लेकर हमारे बादशाहों और हाकिमों से और हमारे बाप — दादा और मुल्क के सब लोगों से कलाम किया। <sup>7</sup> ऐ खुदावन्द, सदाक़त तेरे लिए है और रुस्वाई हमारे लिए, जैसे अब यहूदाह के लोगों और येरूशलेम के बाशिन्दों और दूर — ओ — नज़दीक के तमाम बनी — इस्राईल के लिए है, जिनको तूने तमाम मुमालिक में हाँक दिया क्योंकि उन्होंने तेरे खिलाफ़ गुनाह किया। <sup>8</sup> ऐ खुदावन्द, मायूसी हमारे लिए है; हमारे बादशाहों, हमारे उमरा और हमारे बाप — दादा के लिए, क्योंकि हम तेरे गुनहगार हुए। <sup>9</sup> खुदावन्द हमारा खुदा रहीम — ओ — ग़फ़ूर है, अगरचे हमने उससे बगावत की। <sup>10</sup> हम खुदावन्द अपने खुदा की आवाज़ के सुनने वाले नहीं हुए कि उसकी शरी'अत पर, जो उसने अपने ख़िदमतगुज़ार नबियों की मा'रिफ़त हमारे लिए मुक़र्रर की, 'अमल करें। <sup>11</sup> हाँ, तमाम बनी — इस्राईल ने तेरी शरी'अत को तोड़ा और ना फ़रमानी इस्तिyार की ताकि तेरी आवाज़ के फ़रमावरदार न हों, इसलिए वह ला'नत और क़सम, जो खुदा के ख़ादिम मूसा की तौरेत में लिखी हैं हम पर पूरी हुई, क्योंकि हम उसके गुनहगार हुए। <sup>12</sup> और उसने जो कुछ हमारे और हमारे क़ाज़ियों के खिलाफ़ जो हमारी 'अदालत करते थे फ़रमाया था, हम पर बलाए — 'अजीम लाकर साबित कर दिखाया, क्योंकि जो कुछ येरूशलेम से किया गया वह तमाम ज़हान में' और कहीं नहीं हुआ। <sup>13</sup> जैसा मूसा की तौरेत में लिखा है, यह तमाम मुसीबत हम पर आई, तोभी हम ने अपने खुदावन्द अपने खुदा से इल्तिजा न की कि हम अपनी बदकिरदारी से बा'ज़ आते और तेरी सच्चाई को पहचानते। <sup>14</sup> इसलिए खुदावन्द ने बला को निगाह में रखा और उसको हम पर अपने सब कामों में

जो वह करता है सच्चा है, लेकिन हम उसकी आवाज़ के फरमावरदार न हुए। <sup>15</sup> और अब, ऐ खुदावन्द हमारे खुदा जो ताक़तवर बाज़ू से अपने लोगों को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, और अपने लिए नाम पैदा किया जैसा आज के दिन है, हमने गुनाह किया, हमने शरारत की। <sup>16</sup> ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू अपनी तमाम सदाक़त के मुताबिक़ अपने क्रहर — ओ — ग़ज़ब को अपने शहर येरूशलेम, या'नी अपने कोह — ए — मुक़द्दस से ख़त्म कर, क्योंकि हमारे गुनाहों और हमारे बाप — दादा की बदकिरदारी की वजह से येरूशलेम और तेरे लोग अपने सब आसपास वालों के नज़दीक़ जा — ए — मलामत हुए। <sup>17</sup> इसलिए अब ऐ हमारे खुदा, अपने खादिम की दुआ और इल्तिमास सुन, और अपने चेहरे को अपनी ही खातिर अपने मक़दिस पर जो वीरान है जलवागर फ़रमा। <sup>18</sup> ऐ मेरे खुदा, वीरानों को, और उस शहर को जो तेरे नाम से कहलाता है देख कि हम तेरे सामने अपनी रास्तबाज़ी पर नहीं बल्कि तेरी बेनिहायत रहमत पर भरोसा करके मुनाजात करते हैं। <sup>19</sup> ऐ खुदावन्द, सुन, ऐ खुदावन्द, मु'आफ़ फ़रमाए खुदावन्द, सुन ले और कुछ कर; ऐ मेरे खुदा, अपने नाम की खातिर देर न कर, क्योंकि तेरा शहर और तेरे लोग तेरे ही नाम से कहलाते हैं।” <sup>20</sup> और जब मैं यह कहता और दुआ करता, और अपने और अपनी क़ौम इस्राईल के गुनाहों का इक़रार करता था, और खुदावन्द अपने खुदा के सामने अपने खुदा के कोह — ए — मुक़द्दस के लिए मुनाजात कर रहा था; <sup>21</sup> हाँ, मैं दुआ में यह कह ही रहा था कि वही शख्स जिबराईल जिसे मैंने शुरू में रोया में देखा था, हुक्म के मुताबिक़ तेज़ परवाज़ी करता हुआ आया, और शाम की कुर्बानी पेश करने के वक़्त के करीब मुझे छुआ। <sup>22</sup> और उसने मुझे समझाया, और मुझ से बातें कीं और कहा, ऐ दानीएल, मैं अब इसलिए आया हूँ कि तुझे अक़ल — ओ — समझ बख़्शूँ। <sup>23</sup> तेरी मुनाजात के शुरू ही में हुक्म जारी हुआ, और मैं आया हूँ कि तुझे बताऊँ, क्योंकि तू बहुत 'अज़ीज़ है; इसलिए तू ग़ौर कर और ख़्वाब को समझ ले। <sup>24</sup> “तेरे लोगों और तेरे मुक़द्दस शहर के लिए सत्तर हफ़्ते मुक़र्रर किए गए कि ख़ताकारी और गुनाह का खातिमा हो जाए, बदकिरदारी का कफ़फ़ारा दिया जाए, हमेशा रास्तबाज़ी कायम हो, रोया — ओ — नबुव्वत पर मुहर हो और पाक तरीन मक़ाम मम्सूह किया जाए। <sup>25</sup> इसलिए तू मा'लूम कर और समझ ले कि येरूशलेम की बहाली और ता'मीर का हुक्म जारी होने से मम्सूह फ़रमाएँवाँ तक सात हफ़्ते और बासठ हफ़्ते होंगे; तब फिर बाज़ार ता'मीर किए जाएंगे

और फ़सील बनाई जाएगी, मगर मुसीबत के दिनों में। <sup>26</sup> और बासठ हफ़्तों के बाद वह मम्सूह क़त्ल किया जाएगा, और उसका कुछ न रहेगा, और एक बादशाह आएगा जिसके लोग शहर और मक़दिस को बर्बाद करेंगे, और उसका अन्जाम गोया तूफ़ान के साथ होगा, और आखिर तक लड़ाई रहेगी; बर्बादी मुक़र्रर हो चुकी है। <sup>27</sup> और वह एक हफ़्ते के लिए बहुतों से 'अहद कायम करेगा, और निस्फ़ हफ़्ते में ज़बीहे और हदिये मौकूफ़ करेगा, और फ़सीलों पर उजाड़ने वाली मकरूहात रखी जाएंगी; यहाँ तक कि बर्बादी कमाल को पहुँच जाएगी, और वह बला जो मुक़र्रर की गई है उस उजाड़ने वाले पर वाक़े होगी।”

## 10

?????????? ?? ?? ??????????? ?? ???????  
??????

<sup>1</sup> शाह — ए — फ़ारस ख़ोरस के तीसरे साल में दानीएल पर, जिसका नाम बेल्तशज़र रखा गया, एक बात ज़ाहिर की गई और वह बात सच और बड़ी लश्करकशी की थी; और उसने उस बात पर ग़ौर किया, और उस ख़्वाब का राज़ समझा। <sup>2</sup> मैं दानीएल उन दिनों में तीन हफ़्तों तक मातम करता रहा। <sup>3</sup> न मैंने लज़ीज़ खाना खाया, न गोश्त और मय ने मेरे मुँह में दख़ल पाया और न मैंने तेल मला, जब तक कि पूरे तीन हफ़्ते गुज़र न गए। <sup>4</sup> और पहले महीने की चौबीसवीं तारीख़ को जब मैं बड़े दरिया, या'नी दरिया — ए — दज़ला के किनारे पर था, <sup>5</sup> मैंने आँख उठा कर नज़र की और क्या देखता हूँ कि एक शख्स कतानी लिबास पहने और ऊफ़ाज़ के ख़ालिस सोने का पटका कमर पर बाँधे खड़ा है। <sup>6</sup> उसका बदन ज़बरजद की तरह, और उसका चेहरा बिजली सा था, और उसकी आँखें आग के चराग़ों की तरह थीं; उसके बाज़ू और पाँव रंगत में चमकते हुए पीतल से थे, और उसकी आवाज़ अम्बोह के शोर की तरह थी। <sup>7</sup> मैं दानीएल ही ने यह ख़्वाब देखा, क्योंकि मेरे साथियों ने ख़्वाब न देखा, लेकिन उन पर बड़ी कपकपी तारी हुई और वह अपने आप को छिपाने को भाग गए। <sup>8</sup> इसलिए मैं अकेला रह गया और यह बड़ा ख़्वाब देखा, और मुझ में हिम्मत न रही क्योंकि मेरी ताज़गी मायूसी से बदल गई और मेरी ताक़त जाती रही। <sup>9</sup> लेकिन मैंने उसकी आवाज़ और बातें सुनीं, और मैं उसकी आवाज़ और बातें सुनते वक़्त मुँह के बल भारी नींद में पड़ गया और मेरा मुँह ज़मीन की तरफ़ था। <sup>10</sup> और देख एक हाथ ने मुझे छुआ, और मुझे घुटनों और हथेलियों पर बिठाया। <sup>11</sup> और उसने मुझ से कहा, “ऐ दानीएल, 'अज़ीज़ मर्द, जो बातें मैं तुझ से कहता हूँ



समझ ले; और सीधा खड़ा हो जा, क्योंकि अब मैं तेरे पास भेजा गया हूँ।” और जब उसने मुझ से यह बात कही, तो मैं काँपता हुआ खड़ा हो गया। <sup>12</sup> तब उसने मुझ से कहा, ऐ दानीएल, खौफ न कर, क्योंकि जिस दिन से तू ने दिल लगाया कि समझे, और अपने खुदा के सामने 'आजिजी करे; तेरी बातें सुनी गई और तेरी बातों की वजह से मैं आया हूँ। <sup>13</sup> पर फ़ारस की ममलुकत के मुवक्किल ने इक्कीस दिन तक मेरा मुकाबला किया। फिर मीकाएल, जो मुक़र्रब फ़रिश्तों में से है, मेरी मदद को पहुँचा और मैं शाहान — ए — फ़ारस के पास रुका रहा। <sup>14</sup> लेकिन अब मैं इसलिए आया हूँ कि जो कुछ तेरे लोगों पर आखिरी दिनों में आने को है, तुझे उसकी खबर दूँ क्योंकि अभी ये रोया ज़माना — ए — दराज़ के लिए है। <sup>15</sup> और जब उसने यह बातें मुझ से कहीं, मैं सिर झुका कर खामोश हो रहा। <sup>16</sup> तब किसी ने जो आदमज़ाद की तरह था मेरे होटों को छुआ, और मैंने मुँह खोला, और जो मेरे सामने खड़ा था उस से कहा, ऐ खुदावन्द, इस ख़्वाब की वजह से मुझ पर ग़म का हुजूम है, और मैं नातवाँ हूँ। <sup>17</sup> इसलिए यह खादिम, अपने खुदावन्द से क्यूँकर हम कलाम हो सकता है? इसलिए मैं बिल्कुल बेताब — ओ — बेदम हो गया। <sup>18</sup> तब एक और ने जिसकी सूरत आदमी की सी थी, आकर मुझे छुआ और मुझको ताक़त दी; <sup>19</sup> और उसने कहा, “ऐ 'अज़ीज़ मर्द, खौफ़ न कर, तेरी सलामती हो, मज़बूत — और — तवाना हो।” और जब उसने मुझसे यह कहा, तो मैंने तवानाई पाई और कहा, ऐ मेरे खुदावन्द, फ़रमा, क्यूँकि तू ही ने मुझे ताक़त बख़्शी है।” <sup>20</sup> तब उसने कहा, क्या तू जानता है कि मैं तेरे पास किस लिए आया हूँ? और अब मैं फ़ारस के मुवक्किल से लड़ने को वापस जाता हूँ; और मेरे जाते ही यूनान का मुवक्किल आएगा। <sup>21</sup> लेकिन जो कुछ सच्चाई की किताब में लिखा है, तुझे बताता हूँ; और तुम्हारे मुवक्किल मीकाएल के सिवा इसमें मेरा कोई मददगार नहीं है।

## 11

<sup>1</sup> और दारा मादी की सल्तनत के पहले साल में, मैं ही उसको कायम करने और ताक़त देने को खड़ा हुआ।

????? ?? ??????? ?? ???????

<sup>2</sup> और अब मैं तुझको हकीकत बताता हूँ। फ़ारस में अभी तीन बादशाह और खड़े होंगे, और चौथा उन सबसे ज्यादा दौलतमन्द होगा, और जब वो अपनी दौलत से ताक़त पाएगा, तो सब को यूनान की सल्तनत के

खिलाफ़ उभारेगा। <sup>3</sup> लेकिन एक ज़बरदस्त बादशाह खड़ा होगा, जो बड़े तसल्लुत से हुक्मरान होगा और जो कुछ चाहेगा करेगा। <sup>4</sup> और उसके खड़े होते ही उसकी सल्तनत को ज़वाल आएगा, और आसमान की चारों हवाओं की अतराफ़ पर तक़सीम हो जाएगी लेकिन न उसकी नसल को मिलेगी न उसका एक बाल भी बाक़ी रहेगा बल्कि वह सल्तनत जड़ से उखड़ जाएगी और ग़ैरों के लिए होगी। <sup>5</sup> और शाह — ए — जुनूब ज़ोर पकड़ेगा, और उसके हाकिम में से एक उससे ज्यादा ताक़त — ओ — इस्तिथार हासिल करेगा और उसकी सल्तनत बहुत बड़ी होगी। <sup>6</sup> और चन्द साल के बाद वह आपस में मेल करेंगे, क्यूँकि शाह — ए — जुनूब की बेटी शाह — ए — शिमाल के पास आएगी, ताकि इत्तिहाद कायम हो; लेकिन उसमें कुव्वत — ए — बाज़ू न रहेगी और न वह बादशाह कायम रहेगा न उसकी ताक़त, बल्कि उन दिनों में वह अपने बाप और अपने लाने वालों और ताक़त देने वाले के साथ छोड़ दी जाएगी। <sup>7</sup> लेकिन उसकी जड़ों की एक शाख़ से एक शख्स उसकी जगह खड़ा होगा, वह सिपहसालार होकर शाह — ए — शिमाल के क़िले में दाख़िल होगा, और उन पर हमला करेगा और ग़ालिब आएगा। <sup>8</sup> और उनके बुतों और ढाली हुई मूरतों को, सोने चाँदी के क्रीमती बर्तन के साथ गुलाम करके मिस्र को ले जाएगा; और चन्द साल तक शाह — ए — शिमाल से अलग रहेगा। <sup>9</sup> फिर वह शाह — ए — जुनूब की ममलुकत में दाख़िल होगा, पर अपने मुल्क को वापस जाएगा। <sup>10</sup> लेकिन उसके बेटे बरअंगेख़्ता होंगे, जो बड़ा लश्कर जमा करेंगे और वह चढ़ाई करके फैलेगा, और गुज़र जाएगा और वह लौट कर उसके क़िले तक लड़ेंगे। <sup>11</sup> और शाह — ए — जुनूब ग़ज़बनाक होकर निकलेगा और शाह — ए — शिमाल से जंग करेगा, और वह बड़ा लश्कर लेकर आएगा और वह बड़ा लश्कर उसके हवाले कर दिया जाएगा। <sup>12</sup> और जब वह लश्कर तितर बितर कर दिया जाएगा, तो उसके दिल में गुरूर समाएगा; वह लाखों को गिराएगा लेकिन ग़ालिब न आएगा। <sup>13</sup> और शाह — ए — शिमाल फिर हमला करेगा और पहले से ज्यादा लश्कर जमा करेगा, और कुछ साल के बाद बहुत से लश्कर — और — माल के साथ फिर हमलावर होगा। <sup>14</sup> और उन दिनों में बहुत से शाह — ए — जुनूब पर चढ़ाई करेंगे, और तेरी क्रोम के क़ज़ज़ाक़ भी उठेंगे कि उस ख़्वाब को पूरा करें; लेकिन वह गिर जाएँगे। <sup>15</sup> चुनाँचे शाह — ए — शिमाल आएगा और दमदमा बाँधेगा और हसीन शहर ले लेगा, और जुनूब की ताक़त

क्रायम न रहेगी और उसके चुने हुए मर्दों में मुक्राबले की हिम्मत न होगी। <sup>16</sup> और हमलावर जो कुछ चाहेगा करेगा, और कोई उसका मुक्राबला न कर सकेगा; वह उस जलाली मुल्क में कयाम करेगा, और उसके हाथ में तबाही होगी। <sup>17</sup> और वह यह इरादा करेगा कि अपनी ममलुकत की तमाम शौकत के साथ उसमें दाखिल हो, और सच्चे उसके साथ होंगे; वह कामयाब होगा और वह उसे जवान कुंवारी देगा कि उसकी बर्बादी का जरिया हो, लेकिन यह तदबीर क्रायम न रहेगी और उसको इससे कुछ फ़ाइदा न होगा। <sup>18</sup> फिर वह समंदरी — मुमालिक का रुख करेगा और बहुत से ले लेगा, लेकिन एक सरदार उसकी मलामत को मौकूफ़ करेगा, बल्कि उसे उसी के सिर पर डालेगा। <sup>19</sup> तब वह अपने मुल्क के किलों की तरफ़ मुड़ेगा, लेकिन ठोकर खाकर गिर पड़ेगा और मादूम हो जाएगा। <sup>20</sup> और उसकी जगह एक और खड़ा होगा, जो उस खूबसूरत ममलुकत में महसूल लेने वाले को भेजेगा; लेकिन वह चन्द रोज़ में बे क्रहर — ओ — जंग ही हलाक हो जाएगा। <sup>21</sup> फिर उसकी जगह एक पाजी खड़ा होगा जो सल्तनत की 'इज़्ज़त का हक़दार न होगा, लेकिन वह अचानक आएगा और चापलूसी करके ममलुकत पर क़ाबिज़ हो जाएगा। <sup>22</sup> और वह सैलाब — ए — अफ़वाज़ को अपने सामने दौड़ाएगा और शिकस्त देगा, और अमीर — ए — 'अहद को भी न छोड़ेगा। <sup>23</sup> और जब उसके साथ 'अहद — ओ — पैमान हो जाएगा तो दगाबाज़ी करेगा, क्योंकि वह बढ़ेगा और एक छोटी जमा'अत की मदद से ताक़त हासिल करेगा। <sup>24</sup> और हुक्म के दिनों में मुल्क के वीरान मक़ामात में दाख़िल होगा, और जो कुछ उसके बाप — दादा और उनके आबा — ओ — अजदाद से न हुआ था कर दिखाएगा; वह ग़नीमत और लूट और माल उनमें तक़सीम करेगा और कुछ 'अरसे तक मज़बूत क़िलों' के खिलाफ़ मन्सूबे बाँधेगा। <sup>25</sup> वह अपनी ताक़त और दिल को ऊभारेगा कि बड़ी फ़ौज़ के साथ शाह — ए — जुनूब पर हमला करे, और शाह — ए — जुनूब निहायत बड़ा और ज़बरदस्त लश्कर लेकर उसके मुक्राबिले को निकलेगा लेकिन वह न ठहरेगा, क्योंकि वह उसके खिलाफ़ मन्सूबे बाँधेगा। <sup>26</sup> बल्कि जो उसका दिया खाते हैं, वही उसे शिकस्त देंगे और उसकी फ़ौज़ तितर बितर होगी और बहुत से क़त्ल होंगे। <sup>27</sup> और इन दोनों बादशाहों के दिल शरारत की तरफ़ माइल होंगे, वह एक ही दस्तरख़्वान पर बैठ कर झूट बोलेंगे लेकिन कामयाबी न होगी, क्योंकि खातिमा मुक्रररा वक़्त पर होगा। <sup>28</sup> तब वह बहुत सी ग़नीमत लेकर अपने मुल्क

को वापस जाएगा; और उसका दिल 'अहद — ए — मुक्रदस के खिलाफ़ होगा, और वह अपनी मर्जी पूरी करके अपने मुल्क को वापस जाएगा। <sup>29</sup> मुक्रररा वक़्त पर वह फिर जुनूब की तरफ़ ख़ुरूज करेगा, लेकिन ये हमला पहले की तरह न होगा। <sup>30</sup> क्योंकि अहल — ए — कितीम के जहाज़ उसके मुक्राबिले को निकलेंगे, और वह रंजीदा होकर मुड़ेगा और 'अहद — ए — मुक्रदस पर उसका ग़ज़ब भड़केगा, और वह उसके मुताबिक़ 'अमल करेगा; बल्कि वह मुड़ कर उन लोगों से जो 'अहद — ए — मुक्रदस को छोड़ देंगे, इत्तफ़ाक़ करेगा। <sup>31</sup> और अफ़वाज़ उसकी मदद करेंगी, और वह मज़बूत मक्रदिस को नापाक और दाइमी कुर्बानी को रोकेगा और उजाड़ने वाली मकरूह चीज़ को उसमें नस्ब करेंगे। <sup>32</sup> और वह 'अहद — ए — मुक्रदस के खिलाफ़ शरारत करने वालों को खुशामद करके बरग़स्ता करेगा, लेकिन अपने खुदा को पहचानने वाले ताक़त पाकर कुछ कर दिखाएँगे। <sup>33</sup> और वह जो लोगों में 'अक़लमन्द हैं बहुतों को ता'लीम देंगे, लेकिन वह कुछ मुद्दत तक तलवार और आग और गुलामी और लूट मार से तबाह हाल रहेंगे। <sup>34</sup> और जब तबाही में पड़ेंगे तो उनको थोड़ी सी मदद से ताक़त पहुँचेगी, लेकिन बहुतेरे खुशामद गोई से उनमें आ मिलेंगे। <sup>35</sup> और बा'ज़ अहल — ए — फ़हम तबाह हाल होंगे ताकि पाक और साफ़ और बुराक़ हो जाएँ जब तक आख़िरी वक़्त न आ जाए, क्योंकि ये मुक्रररा वक़्त तक मना' है। <sup>36</sup> और बादशाह अपनी मर्जी के मुताबिक़ चलेगा, और तक़व्वुर करेगा और सब मा'बूदों से बड़ा बनेगा, और मा'बूदों के खुदा के खिलाफ़ बहुत सी हैरत — अंगेज़ बातें कहेगा, और इक़बाल मन्द होगा यहाँ तक कि क्रहर की तस्कीन हो जाएगी; क्योंकि जो कुछ मुक्ररर हो चुका है वाक़े' होगा। <sup>37</sup> वह अपने बाप — दादा के मा'बूदों की परवाह न करेगा, और न 'औरतों की पसन्द को और न किसी और मा'बूद को मानेगा; बल्कि अपने आप ही को सबसे बेहतर जानेगा। <sup>38</sup> और अपने मक़ान पर मा'बूद — ए — हिसार की ताज़ीम करेगा, और जिस मा'बूद को उसके बाप — दादा न जानते थे, सोना और चाँदी और क़ीमती पत्थर और नफ़ीस तोहफ़े दे कर उसकी तक़रीम करेगा। <sup>39</sup> वह बेग़ाना मा'बूद की मदद से मुहक़म क़िलों' पर हमला करेगा; जो उसको कुबूल करेंगे उनको बड़ी 'इज़्ज़त बख़्शेगा और बहुतों पर हाकिम बनाएगा और रिश्वत में मुल्क को तक़सीम करेगा। <sup>40</sup> और खातिमे के वक़्त में शाह — ए — जुनूब उस पर हमला करेगा, और शाह — ए — शिमाल रथ और सवार और बहुत से जहाज़ लेकर हवा के झोंके की

तरह उस पर चढ़ आएगा, और ममालिक में दाखिल होकर सैलाब की तरह गुजरेगा। <sup>41</sup> और जलाली मुल्क में भी दाखिल होगा और बहुत से मगलूब हो जाएंगे, लेकिन अदोम और मोआब और बनी — 'अम्मून के खास लोग उसके हाथ से छुड़ा लिए जाएंगे। <sup>42</sup> वह दीगर मुमालिक पर भी हाथ चलाएगा और मुल्क — ए — मिस्र भी बच न सकेगा। <sup>43</sup> बल्कि वह सोने चाँदी के खजानों और मिस्र की तमाम नफीस चीजों पर क़ाबिज़ होगा, और लूबी और कूशी भी उसके हम — रकाब होंगे। <sup>44</sup> लेकिन पश्चिमी और उत्तरी अतराफ़ से अफ़वाहें उसे परेशान करेंगी, और वह बड़े ग़ज़ब से निकलेगा कि बहुतों को नेस्त — ओ — नाबूद करे। <sup>45</sup> और वह शानदार मुक़द्दस पहाड़ और समुन्दर के बीच शाही खेमे लगाएगा, लेकिन उसका खातिमा हो जाएगा और कोई उसका मददगार न होगा।

## 12

???? ? ? ? ? ?

<sup>1</sup> और उस वक़्त मीकाईल मुक़र्रब फ़रिश्ता जो तेरी क्रौम के फ़रज़न्दों की हिमायत के लिए खड़ा है उठेगा और वह ऐसी तकलीफ़ का वक़्त होगा कि इब्तिदाई क्रौम से उस वक़्त तक कभी न हुआ होगा, और उस वक़्त तेरे लोगों में से हर एक, जिसका नाम किताब में लिखा होगा रिहाई पाएगा। <sup>2</sup> और जो खाक में सो रहे हैं उनमें से बहुत से जाग उठेंगे, कुछ हमेशा की ज़िन्दगी के लिए और कुछ रुस्वाई और हमेशा की ज़िल्लत के लिए। <sup>3</sup> और 'अक़्लमन्द नूर — ए — फ़लक की तरह चमकेंगे, और जिनकी कोशिश से बहुत से रास्तबाज़ हो गए, सितारों की तरह हमेशा से हमेशा तक रोशन होंगे। <sup>4</sup> लेकिन तू ऐ दानिएल, इन बातों को बन्द कर रख, और किताब पर आखिरी ज़माने तक मुहर लगा दे। बहुत से इसकी तफ़्तीश — ओ — तहक़ीक़ करेंगे और 'अक़्ल बढ़ती रहेगी। <sup>5</sup> फिर मैं दानिएल ने नज़र की, और क्या देखता हूँ कि दो शख्स और खड़े थे; एक दरिया के इस किनारे पर और दूसरा दरिया के उस किनारे पर। <sup>6</sup> और एक ने उस शख्स से जो कतानी लिबास पहने था और दरिया के पानी पर खड़ा था पूछा, कि “इन 'अजायब के अन्जाम तक कितनी मुद्दत है?” <sup>7</sup> और मैंने सुना कि उस शख्स ने जो कतानी लिबास पहने था, जो दरिया के पानी के ऊपर खड़ा था, दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठा कर हय्युल क़य्यूम की क़सम खाई और कहा कि एक दौर और दौर और नीम दौर। और जब वह मुक़द्दस लोगों की ताक़त को नेस्त कर चुके तो यह सब कुछ पूरा हो जाएगा।

<sup>8</sup> और मैंने सुना लेकिन समझ न सका तब मैंने कहा ऐ मेरे खुदावन्द इनका अंजाम क्या होगा। <sup>9</sup> उसने कहा ऐ दानिएल तू अपनी राह ले क्योंकि यह बातें आखिरी वक़्त तक बन्द — ओ — सरबमुहर रहेंगी। <sup>10</sup> और बहुत लोग पाक किए जायेंगे और साफ़ — ओ — बर्ज़ाक़ होंगे लेकिन शरीर शरारत करते रहेंगे और शरीरों में से कोई न समझेगा लेकिन 'अक़्लमन्द समझेंगे। <sup>11</sup> और जिस वक़्त से दाइमी कुर्बानी ख़त्म की जायेगी और वह उजाड़ने वाली मकरूह चीज़ खड़ी की जायेगी एक हज़ार दो सौ नव्वे दिन होंगे। <sup>12</sup> मुबारक है वह जो एक हज़ार तीन सौ पैतीस रोज़ तक इन्तिज़ार करता है। <sup>13</sup> लेकिन तू अपनी राह ले जब तक कि मुद्दत पूरी न हो क्योंकि तू आराम करेगा और दिनों के खातिमे पर अपनी मीरास में उठ खड़ा होगा।

## होसीअ

होसीअ की किताब के अक्सर पैगामात होसीअ के

जरीए बोले गए थे। हम नहीं जानते कि उन्हें उस ने खुद लिखे पर इतना जानते हैं कि उसके कलाम को गालिबन उस के शागिरदों ने जमा किया जो इस बात के कायल थे कि होसीअ खुदा की तरफ से बोलता था। होसीअ के नाम का मतलब है 'नजात' इस के अलावा किसी और नबी से ज्यादा होसीअ नजदीकी से अपनी शख्सी ज़िन्दगी के साथ अपने पैगामात से जुड़ा हुआ था। एक औरत से शादी करने के ज़रिए वह जानता था कि वह आखिर — ए — कार अपना भरोसा खो देगा, और अपने बच्चों को नाम रखने के ज़रीये अदालत के पैगामात को इस्राईल पर लाएगा। होसीअ का नबुव्वती कलाम उस के खान्दान की ज़िन्दगी से बह निकला।

इसके तस्नीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 750 - 710 ई. पू. के बीच है।

होसीअ नबी के पैगामात जमा किए गए तालीफ़ व तर्तीब दिए गये और फिर नक़ल किए गये। यह साफ़ नहीं है कि यह तरीक़ — ए — अमल कब तकमील तक पहुंचा था। मगर गालिबन यह समझा जाता है कि यरूशलेम की बर्बादी से पहले यह काम पूरा हुआ था।

होसीअ के जुबानी पैगामात के नाज़रीन व सामईन

शुमाली इस्राईल के लोग रहे होंगे। जब उन्होंने उन पैगामात को सुन लिया तो एक नबुव्वती अदालत की तंबीह या बाइस — ए — इबरेत बतौर, एक तौबा की बुलाहट के लिए और बहाली के लिए एक वायदा बतौर था।

होसीअ ने इस किताब को बनी इस्राईल और मौजूदा

ईमानदारों को यह याद दिलाने के लिए लिखा कि खुदा को हमारी वफ़ादारी की ज़रूरत है। कि यहवे ही एक सच्चा खुदा है और वह बेतक़सीम वफ़ादारी की मांग करता है। गुनाह अदालत ले आता है होसीअ ने दर्दनाक अंजाम से दख़ल अंदाज़ी और गुलामी की बाबत ख़बरदार कराया खुदा इंसानों जैसा नहीं कि एक वफ़ादारी का वायदा करे और फिर उसे तोड़ दे। बनी इस्राईल की बेवफ़ाई और फ़रेब के बावजूद भी खुदा की मुहब्बत उनके लिए जारी रही और उन की बहाली के लिए एक रास्ता मुहय्या किया। होसीअ और गोमेर की

शादी की अलामत बतौर पेशकश के ज़रिए बुतपरस्त क्रौम बनी इस्राईल के लिए खुदा की मुहब्बत का किरदार गुनाह, अदालत और बख़शिश के प्यार के मुआमले में एक शान्दार मजाज़ पेश करता है।

बे — वफ़ाई

बैरूनी खाका

1. होसी की बे — ईमान (बे — एत्काद) बीबी — 1:1-11
2. खुदा की सज़ा और इस्राईल का इन्साफ़ — 2:1-23
3. खुदा अपने लोगों को छुटकारा देता है — 3:1-5
4. इस्राईल की बे — वफ़ाई और सज़ा — 4:1-10:15
5. खुदा की मुहब्बत और इस्राईल की बहाली — 11:1-14:9

1 शाहान — ए — यहूदाह उज़्जियाह और यूताम और आखज़ और हिज़कियाह और शाह ए — इस्राईल युरब'आम — बिन — यूआस के दिनों में खुदावन्द का कलाम होसे'अ — बिन — बैरी पर नाज़िल हुआ।

2 जब खुदावन्द ने शुरू में होसे'अ के ज़रिए कलाम

किया, तो उसको फ़रमाया, “जा, एक बदकार बीबी और बदकारी की औलाद अपने लिए ले, क्योंकि मुल्क ने खुदावन्द को छोड़कर बड़ी बदकारी की है।” 3 तब उसने जाकर जुमर बिनत दिबलाईम को लिया; वह हामिला हुई, और बेटा पैदा हुआ। 4 और खुदावन्द ने उसे कहा, उसका नाम यज़र'एल रख, क्योंकि मैं 'अनक़रीब ही याहू के घराने से यज़र'एल के खून का बदला लूँगा, और इस्राईल के घराने की सल्लनत को ख़त्म करूँगा। 5 और उसी वक़्त यज़र'एल की वादी में इस्राईल की कमान तोड़ूँगा। 6 वह फिर हामिला हुई, और बेटी पैदा हुई। और खुदावन्द ने उसे फ़रमाया, कि “उसका नाम लूरहामा रख, क्योंकि मैं इस्राईल के घराने पर फिर रहम न करूँगा कि उनको मु'आफ़ करूँ। 7 लेकिन यहूदाह के घराने पर रहम करूँगा, और मैं खुदावन्द उनका खुदा उनको रिहाई दूँगा और उनको कमान और तलवार और लड़ाई और घोड़ों और सवारों के वसीले से नहीं छुड़ाऊँगा।” 8 और लूरहामा का दूध छुड़ाने के बाद, वह फिर हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। 9 और उसने फ़रमाया, कि उसका नाम लो'अम्मी रख; क्योंकि तुम मेरे लोग नहीं हो, और मैं तुम्हारा नहीं हूँगा। 10 तोभी बनी — इस्राईल दरिया की रेत की तरह बेशुमार — ओ — बेक्रियास होंगे, और



जहाँ उनसे ये कहा जाता था, तुम मेरे लोग नहीं हो, जिन्दा खुदा के फ़र्जन्द कहलाएँगे। <sup>11</sup> और बनी यहूदाह और बनी — इस्राईल आपस में एक होंगे, और अपने लिए एक ही सरदार मुक़र्रर करेंगे। और इस मुल्क से खुरुज करेंगे, क्यूँकि यज़र'एल का दिन 'अज़ीम होगा।

## 2

<sup>1</sup> अपने भाइयों से 'अम्मी कहो, और अपनी बहनों से रुहामा।

?????? ???? ? ? ?

<sup>2</sup> तुम अपनी माँ से हुज्जत करो — क्यूँकि न वह मेरी बीवी है, और न मैं उसका शौहर हूँ — वह अपनी बदकारी अपने सामने से, अपनी जिनाकारी अपने पिस्तानों से दूर करे; <sup>3</sup> ऐसा न हो कि मैं उसे बेपर्दा करूँ, और उस तरह डाल दूँ जिस तरह वह अपनी पैदाइश के दिन थी, और उसको बियावान और खुशक ज़मीन की तरह बना कर प्यास से मार डालूँ। <sup>4</sup> मैं उसके बच्चों पर रहम न करूँगा, क्यूँकि वह हलालज़ादे नहीं हैं। <sup>5</sup> उनकी माँ ने धोखा किया; उनकी वालिदा ने रूस्याही की। क्यूँकि उसने कहा, 'मैं अपने यारों के पीछे जाऊँगी, जो मुझ को रोटी — पानी और ऊनी, और कतानी कपड़े और रौगन — ओ — शरबत देते हैं।' <sup>6</sup> इसलिए देखो, मैं उसकी राह काँटों से बन्द करूँगा, और उसके सामने दीवार बना दूँगा, ताकि उसे रास्ता न मिले। <sup>7</sup> और वह अपने यारों के पीछे जाएगी, पर उनसे जा न मिलेगी; और उनको ढूँडेगी पर न पाएगी। तब वह कहेगी, 'मैं अपने पहले शौहर के पास वापस जाऊँगी, क्यूँकि मेरी वह हालत अब से बेहतर थी।' <sup>8</sup> क्यूँकि उसने न जाना कि मैं ने ही उसे ग़ल्ला — ओ — मय और रौगन दिया, और सोने चाँदी की फ़िरवानी बख़्शी जिसको उन्होंने बा'ल पर खर्च किया <sup>9</sup> इसलिए मैं अपना ग़ल्ला फ़सल के वक़्त, और अपनी मय को उसके मौसम में वापस ले लूँगा, और अपने ऊनी और कतानी कपड़े जो उसकी सत्रपोशी करते हैं, छीन लूँगा। <sup>10</sup> अब मैं उसकी फ़ाहिशागरी उसके यारों के सामने फ़ाश करूँगा, और कोई उसको मेरे हाथ से नहीं छुड़ाएगा। <sup>11</sup> अलावा इसके मैं उसकी तमाम खुशियों, और ज़शनों और नए चाँद और सबत के दिनों और तमाम मु'अय्यन 'ईदों को ख़त्म करूँगा। <sup>12</sup> और मैं उसके अंगूर और अंजीर के दरख़्तों को, जिनके बारे में उसने कहा है, 'ये मेरी उजरत है, जो मेरे यारों ने मुझे दी है,' बर्बाद करूँगा और उनको जंगल बनाऊँगा, और जंगली जानवर उनको खाएँगे। <sup>13</sup> और खुदावन्द फ़रमाता है, मैं उसे बा'लीम के दिनों के लिए सज़ा दूँगा जिनमें उसने उनके लिए खुशबू जलाई, जब वह बालियों

और जेवरों से आरास्ता होकर अपने यारों के पीछे गई, और मुझे भूल गई। <sup>14</sup> तोभी मैं उसे फ़रेफ़ता कर लूँगा, और बियावान में लाकर, उससे तसल्ली की बातें कहूँगा। <sup>15</sup> और वहाँ से उसके ताकिस्तान उसे दूँगा, और 'अकूर की वादी भी, ताकि वह उम्मीद का दरवाज़ा हो, और वह वहाँ गाया करेगी जैसे अपनी जवानी के दिनों में, और मुल्क — ए — मिस्र से निकल आने के दिनों में गाया करती थी <sup>16</sup> और खुदावन्द फ़रमाता है, तब वह मुझे ईशी कहेगी और फिर बाली न कहेगी। <sup>17</sup> क्यूँकि मैं बा'लीम के नाम उसके मुँह से दूर करूँगा, और फिर कभी उनका नाम न लिया जाएगा। <sup>18</sup> तब मैं उनके लिए जंगली जानवरों, और हवा के परिन्दों, और ज़मीन पर रेंगने वालों से 'अहद करूँगा; और कमान और तलवार और लड़ाई को मुल्क से नेस्त करूँगा, और लोगों को अम्न — ओ — अमान से लेटने का मौक़ा दूँगा। <sup>19</sup> और तुझे अपनी अबदी नामज़द करूँगा। हाँ, तुझे सदाक़त और 'अदालत और शफ़क़त — ओ — रहमत से अपनी नामज़द करूँगा। <sup>20</sup> मैं तुझे वफ़ादारी से अपनी नामज़द बनाऊँगा और तू खुदावन्द को पहचानेगी। <sup>21</sup> "और उस वक़्त मैं सुनूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, मैं आसमान की सुनूँगा और आसमान ज़मीन की सुनेगा; <sup>22</sup> और ज़मीन अनाज और मय और तेल की सुनेगी, और वह यज़र'एल की सुनेंगे; <sup>23</sup> और मैं उसको उस सरज़मीन में अपने लिए बोऊँगा। और लूरहामा पर रहम करूँगा, और लो'अम्मी से कहूँगा, 'तुम मेरे लोग हो; और वह कहेंगे, 'ऐ हमारे खुदा।"

## 3

????? ? ? ?

<sup>1</sup> खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, जा, उस 'औरत से जो अपने यार की प्यारी और बदकार है, मुहब्बत रख; जिस तरह कि खुदावन्द बनी — इस्राईल से जो ग़ैर — मा'बूदों पर निगाह करते हैं और किशमिश के कुल्चे चाहते हैं, मुहब्बत रखता है। <sup>2</sup> इसलिए, मैंने उसे पन्द्रह रुपये और डेढ़ खोमर जौ देकर अपने लिए मोल लिया। <sup>3</sup> और उसे कहा, तू मुदत — ए — दराज़ तक मुझ पर क़ना'अत करेगी, और हरामकारी से बाज़ रहेगी और किसी दूसरे की बीवी न बनेगी, और मैं भी तेरे लिए यूँ ही रहूँगा। <sup>4</sup> क्यूँकि बनी — इस्राईल बहुत दिनों तक बादशाह और हाकिम और कुर्बानी और सुतून और अफ़ूद और तिराफ़ीम के बग़ैर रहेंगे। <sup>5</sup> इसके बाद बनी — इस्राईल रुजू' लाएँगे, और खुदावन्द अपने खुदा को और अपने बादशाह दाऊद को ढूँडेगा और आखिरी दिनों

में डरते हुए खुदावन्द और उसकी मेहरबानी के तालिब होंगे।

## 4

॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥

<sup>1</sup> ऐ बनी इस्राईल खुदावन्द का कलाम सुनों क्योंकि इस मुल्क में रहने वालों से खुदावन्द का झगड़ा है; क्योंकि ये मुल्क रास्ती — ओ — शफ़क़त, और खुदाशनासी से खाली है। <sup>2</sup> बदज़बानी वा'दा खिलाफ़ी और ख़ुरेज़ी और चोरी और हरामकारी के अलावा और कुछ नहीं होता; वह जुल्म करते हैं, और खून पर खून होता है। <sup>3</sup> इसलिए मुल्क मातम करेगा, और उसके तमाम रहने वाले जंगली जानवरों, और हवा के परिन्दों के साथ नातवाँ हो जाएँगे; बल्कि समन्दर की मछलियाँ भी गायब हो जाएँगी। <sup>4</sup> तोभी कोई दूसरे के साथ बहस न करे, और न कोई उसे इल्ज़ाम दे; क्योंकि तेरे लोग उनकी तरह हैं, जो काहिन से बहस करते हैं। <sup>5</sup> इसलिए तू दिन को गिर पड़ेगा, और तेरे साथ नबी भी रात को गिरेगा; और मैं तेरी माँ को तबाह करूँगा। <sup>6</sup> मेरे लोग 'अदम — ए — मा'रिफ़त से हलाक हुए; चूँकि तू ने ज़रिए' को रद्द किया, इसलिए मैं भी तुझे रद्द करूँगा ताकि तू मेरे सामने काहिन न हो; और चूँकि तू अपने खुदा की शरी'अत को भूल गया है, इसलिए मैं भी तेरी औलाद को भूल जाऊँगा। <sup>7</sup> जैसे जैसे वह बड़ते गए, मेरे खिलाफ़ ज्यादा गुनाह करने लगे; फिर मैं उनकी हशमत को रुस्वाई से बदल डालूँगा। <sup>8</sup> वह मेरे लोगों के गुनाह पर गुज़रान करते हैं; और उनकी बदकिरदारी के आरज़ूमंद हैं। <sup>9</sup> फिर जैसा लोगों का हाल, वैसा ही काहिनों का हाल होगा; मैं उनके चालचलन की सज़ा और उनके 'आमाल का बदला उनको दूँगा। <sup>10</sup> चूँकि उनको खुदावन्द का खयाल नहीं, इसलिए वह खाएँगे, पर आसूदा न होंगे; वह बदकारी करेंगे, लेकिन ज्यादा न होंगे। <sup>11</sup> बदकारी और मय और नई मय से बसीरत जाती रहती है। <sup>12</sup> मेरे लोग अपने काठ के पुतले से सवाल करते हैं उनकी लाठी उनको जवाब देती है। क्योंकि बदकारी की रूह ने उनको गुमराह किया है, और अपने खुदा की पनाह को छोड़ कर बदकारी करते हैं। <sup>13</sup> पहाड़ों की चोटियों पर वह कुर्बानियाँ और टीलों पर और बलूत — ओ — चिनार — ओ — बतम के नीचे खुशबू जलाते हैं, क्योंकि उनका साया अच्छा है। पस बहु बेटियाँ बदकारी करती हैं। <sup>14</sup> जब तुम्हारी बहू बेटियाँ बदकारी करेंगी, तो मैं उनको सज़ा नहीं दूँगा; क्योंकि वह आप ही बदकारों के साथ खिखित्वत में जाते हैं, और

कस्बियों के साथ कुर्बानियाँ गुज़रानते हैं। तब जो लोग 'अक़ल से खाली हैं, बर्बाद किए जाएँगे। <sup>15</sup> ऐ इस्राईल, अगरचे तू बदकारी करे, तोभी ऐसा न हो कि यहूदाह भी गुनहगार हो। तुम जिल्लाल में न आओ और बैतआवन पर न जाओ, और खुदावन्द की हयात की क़सम न खाओ। <sup>16</sup> क्योंकि इस्राईल ने सरकश बछिया की तरह सरकशी की है; क्या अब खुदावन्द उनको कुशादा जगह में बरें की तरह चराएगा? <sup>17</sup> इफ़्राईम बुतों से मिल गया है; उसे छोड़ दो। <sup>18</sup> वह मयख़्वारी से सेर होकर बदकारी में मशगूल होते हैं; उसके हाकिम रुस्वाई दोस्त हैं। <sup>19</sup> हवा ने उसे अपने दामन में उठा लिया, वह अपनी कुर्बानियों से शर्मिन्दा होंगे।

## 5

॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥

<sup>1</sup> ऐ काहिनो, ये बात सुनो! ऐ बनी — इस्राईल, कान लगाओ! ऐ बादशाह के घराने, सुनो! इसलिए कि फ़तवा तुम पर है; क्योंकि तुम मिस्फ़ाह में फंदा और तबूर पर दाम बने हो। <sup>2</sup> बागी ख़ुरेज़ी में गर्क हैं, लेकिन मैं उन सब की तादीब करूँगा। <sup>3</sup> मैं इफ़्राईम को जानता हूँ, और इस्राईल भी मुझ से छिपा नहीं; क्योंकि ऐ इफ़्राईम, तू ने बदकारी की है; इस्राईल नापाक हुआ। <sup>4</sup> उनके 'आमाल उनको खुदा की तरफ़ रुजू' नहीं होने देते क्योंकि बदकारी की रूह उनमें मौजूद है और खुदावन्द को नहीं जानते। <sup>5</sup> और फ़ख़ — ए — इस्राईल उनके मुँह पर गवाही देता है, और इस्राईल और इफ़्राईम अपनी बदकिरदारी में गिरेंगे, और यहूदाह भी उनके साथ गिरेगा। <sup>6</sup> वह अपने रेवड़ों और गल्लों के वसीले से खुदावन्द के तालिब होंगे, लेकिन उसको न पाएँगे; वह उनसे दूर हो गया है। <sup>7</sup> उन्होंने खुदावन्द के साथ बेवफ़ाई की, क्योंकि उनसे अजनबी बच्चे पैदा हुए। अब एक महीने का 'अर्सा उनकी जायदाद के साथ उनको खा जाएगा। <sup>8</sup> ज़िब'आ में कर्ना फूँको और रामा में तुरही। बैतआवन में ललकारो, कि ऐ बिनयमीन, ख़बरदार पीछे देख! <sup>9</sup> तादीब के दिन इफ़्राईम वीरान होगा। जो कुछ यक़ीनन होने वाला है मैंने इस्राईली क़बीलों को जता दिया है। <sup>10</sup> यहूदाह के 'उमरा सरहदों को सरकाने वालों की तरह हैं। मैं उन पर अपना क़हर पानी की तरह उँडेलूँगा। <sup>11</sup> इफ़्राईम मज़लूम और फ़तवे से दबा है क्योंकि उसने पैरवी पर सबर किया। <sup>12</sup> तब मैं इफ़्राईम के लिए कीड़ा हूँगा और यहूदाह के घराने के लिए घुन। <sup>13</sup> जब इफ़्राईम ने अपनी बीमारी और यहूदाह ने अपने

ज़ख्म को देखा तो इफ़राईम असूर को गया और उस मुखालिफ़ बादशाह को दा'वत दी लेकिन वह न तो तुम को शिफ़ा दे सकता है और न तुम्हारे ज़ख्म का 'इलाज कर सकता है। <sup>14</sup>क्योंकि मैं इफ़राईम के लिए शेर — ए — बबर और बनी यहूदाह के लिए जवान शेर की तरह हूँगा। मैं हाँ मैं ही फाड़ूँगा और चला जाऊँगा। मैं उठा ले जाऊँगा और कोई छुड़ाने वाला न होगा। <sup>15</sup>मैं खाना हूँगा और अपने घर को चला जाऊँगा जब तक कि वह अपने गुनाहों का इकरार करके मेरे चहरे के तालिब न हों। वह अपनी मुसीबत में बड़ी सर गमी से मेरे तालिब होंगे।

## 6

???? ???? ? ? ?

<sup>1</sup> आओ खुदावन्द की तरफ़ रुजू' करें क्योंकि उसी ने फाड़ा है और वही हम को शिफ़ा बख्शेगा। उसी ने मारा है और वही हमारी मरहम पट्टी करेगा। <sup>2</sup>वह दो दिन के बाद हम को हयात — ए — ताज़ा बख्शेगा और तीसरे दिन उठा खड़ा करेगा और हम उसके सामने ज़िन्दगी बसर करेंगे। <sup>3</sup>आओ हम दरियाफ़्त करें और खुदावन्द के 'इरफ़ान में तरक्की करें। उसका ज़हूर सुबह की तरह यक़ीनी है और वह हमारे पास बरसात की तरह या'नी आखिरी बरसात की तरह जो ज़मीन को सेराब करती है, आएगा। <sup>4</sup>ऐ इफ़राईम मैं तुझ से क्या करूँ? ऐ यहूदाह मैं तुझ से क्या करूँ? क्योंकि तुम्हारी नेकी सुबह के बादल और शबनम की तरह जल्द जाती रहती है। <sup>5</sup>इसलिए मैंने उनके नबियों के वसीले से काट डाला और अपने कलाम से क़त्ल किया है और मेरा 'अदल नूर की तरह चमकता है। <sup>6</sup>क्योंकि मैं कुर्बानी नहीं बल्कि रहम पसन्द करता हूँ और खुदा शनासी को सोख़्तनी कुर्बानियों से ज़्यादा चाहता हूँ। <sup>7</sup>लेकिन लोगों वह अहद शिकन आदम के सामने तोड़ दिया: उन्होंने वहाँ मुझ से बेवफ़ाई की है। <sup>8</sup>जिलआ'द बदकिरदारी की बस्ती है। वह खूनआलूदा है। <sup>9</sup>जिस तरह के रहज़नों के गोल किसी आदमी की धोखे में बैठते हैं उसी तरह काहिनों की गिरोह सिकम की राह में क़त्ल करती है, हाँ उन्होंने बदकारी की है। <sup>10</sup>मैंने इस्राईल के घराने में एक ख़तरनाक चीज़ देखी। इफ़राईम में बदकारी पाई जाती है और इस्राईल नापाक हो गया। <sup>11</sup>ऐ यहूदाह तेरे लिए भी कटाई का वक़्त मुक़र्रर है जब मैं अपने लोगों को गुलामी से वापस लाऊँगा

## 7

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>1</sup> जब मैं इस्राईल को शिफ़ा बख्शने को था तो इफ़राईम की बदकिरदारी और सामरिया की शरारत ज़ाहिर हुई क्योंकि वह दगा करते हैं। अन्दर चोर घुस आए हैं और बाहर डाकुओं का गोल लूट रहा है। <sup>2</sup>वह ये नहीं सोचते के मुझे उनकी सारी शरारत मा'लूम है। अब उनके 'आमाल ने जो मुझ पर ज़ाहिर हैं उनको घेर लिया है। <sup>3</sup>वह बादशाह को अपनी शरारत और उमरा को दरोज़ा गोई से खुश करते हैं। <sup>4</sup>वह सब के सब बदकार हैं। वह उस तनूर की तरह हैं जिसको नानबाई गर्म करता है और आटा गूंधने के वक़्त से ख़मीर उठने तक आग भड़काने से बाज़ रहता है। <sup>5</sup>हमारे बादशाह के ज़श्न के दिन उमरा तो गर्मी — ए — मय से बीमार हुए और वह ठठठाबाज़ों के साथ बेतकल्लुफ़ हुआ। <sup>6</sup>धोखे में बैठे उनके दिल तनूर की तरह हैं। उनका क्रहर रात भर सुलगता रहता है। वह सुबह के वक़्त आग की तरह भड़कता है। <sup>7</sup>वह सब के सब तनूर की तरह दहकते हैं और अपने क़ाज़ियों को खा जाते हैं। उनके सब बादशाह मारे गए। उनमें कोई न रहा जो मुझ से दुआ करे। <sup>8</sup>इफ़राईम दूसरे लोगों से मिल जुल गया। इफ़राईम एक चपाती है जो उलटाई न गई। <sup>9</sup>अजनबी उसकी तवानाई को निगल गए और उसकी ख़बर नहीं और बाल सफ़ेद होने लगे पर वह बेख़बर है। <sup>10</sup>और फ़ख़र — ए — इस्राईल उसके मुँह पर गवाही देता है तोभी वह खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ रुजू' नहीं लाए और बावजूद इस सब के उसके तालिब नहीं हुए। <sup>11</sup>इफ़राईम बेवकूफ़ — ओ — नासमझ फ़ाख़्ता है वह मिस्र की दुहाई देते और असूर को जाते हैं। <sup>12</sup>जब वह जाएँगे तो मैं उन पर अपना जाल फैला दूँगा। उनकी हवा के परिन्दों की तरह नीचे उतारूँगा और जैसा उनकी जमा'अत सुन चुकी है उनकी तादीब करूँगा। <sup>13</sup>उन पर अफ़सोस क्योंकि वह मुझ से आवारा हो गए, वह बर्बाद हों क्योंकि वह मुझ से बागी हुए। अगरचे मैं उनका फ़िदिया देना चाहता हूँ वह मेरे खिलाफ़ दरोज़ा गोई करते हैं। <sup>14</sup>और वह हुज़ूर — ए — क़ल्ब के साथ मुझ से फ़रियाद नहीं करते बल्कि अपने बिस्तरों पर पड़े चिल्लाते हैं। वह अनाज और मय के लिये तो जमा' हो जाते हैं पर मुझ से बागी रहते हैं। <sup>15</sup>अगरचे मैंने उनकी तरबियत की और उनको ताक़तवर बाज़ू किया तोभी वह मेरे हक़ में बुरे खयाल करते हैं। <sup>16</sup>वह रुजू' होते हैं पर हक़ ताला की तरफ़ नहीं। वह दगा देने वाली कमान की तरह हैं। उनके उमरा अपनी ज़बान की गुस्ताखी की वजह से

बर्बाद होंगे। इससे मुल्क — ए — मिस्र में उनकी हँसी होगी।

## 8

०००००००० ०० ००००० ०० ००००००

<sup>1</sup> तुरही अपने मुँह से लगा! वह 'उक्काब की तरह खुदावन्द के घर पर टूट पड़ा है, क्योंकि उन्होंने मेरे अहद से तजावुज किया और मेरी शरी'अत के खिलाफ चले। <sup>2</sup> वह मुझे यूँ पुकारते हैं कि ऐ हमारे खुदा, हम बनी — इस्राईल तुझे पहचानते हैं। <sup>3</sup> इस्राईल ने भलाई को छोड़ दिया, दुश्मन उसका पीछा करेंगे। <sup>4</sup> उन्होंने बादशाह मुकर्रर किए लेकिन मेरी तरफ से नहीं। उन्होंने उमरा को ठहराया है और मैंने उनको न जाना। उन्होंने अपने सोने चाँदी से बुत बनाए ताकि बर्बाद हों। <sup>5</sup> ऐ सामरिया, तेरा बछड़ा मरदूद है। मेरा क्रहर उन पर भड़का है। वह कब तक गुनाह से पाक न होंगे। <sup>6</sup> क्योंकि ये भी इस्राईल ही की करतूत है। कारीगर ने उसको बनाया है। वह खुदा नहीं। सामरिया का बछड़ा यकीनन टुकड़े — टुकड़े किया जाएगा। <sup>7</sup> बेशक उन्होंने हवा बोई। वह गर्दबाद काटेंगे, न उसमें डंठल निकलेगा न उसकी बालों से गल्ला पैदा होगा और अगर पैदा हो भी तो अजनबी उसे चट कर जाएँगे। <sup>8</sup> इस्राईल निगला गया। अब वह कौमों के बीच ना पसंदीदा बर्तन की तरह होंगे। <sup>9</sup> क्योंकि वह तन्हा गोरखर की तरह असूर को चले गए हैं। इफ्राईम ने उजरत पर यार बुलाए। <sup>10</sup> अगरचे उन्होंने कौमों को उजरत दी है तो भी अब मैं उनको जमा' करूँगा और वह बादशाह — ओ — उमरा के बोझ से गमगीन होंगे। <sup>11</sup> चूँकि इफ्राईम ने गुनहगारी के लिए बहुत सी कुर्बानियाँ बनायीं इसलिए वह कुर्बानगाहें उसकी गुनहगारी का जरिया' हुई। <sup>12</sup> अगरचे मैंने अपनी शरी'अत के अहकाम को उनके लिए हजारों बार लिखा, लेकिन वह उनको अजनबी ख्याल करते हैं। <sup>13</sup> वह मेरे तोहफ़ों की कुर्बानियों के लिए गोश्त पेश करते और खाते हैं, लेकिन खुदावन्द उनको कुबूल नहीं करता। अब वह उनकी बदकिरदारी की याद करेगा और उनको उनके गुनाहों की सज़ा देगा। वह मिस्र को वापस जाएँगे। <sup>14</sup> इस्राईल ने अपने खालिक को फ़रामोश करके बुतखाने बनाए हैं और यहूदाह ने बहुत से हसीन शहर ता'मीर किए हैं, लेकिन मैं उसके शहरों पर आग भेजूँगा और वह उनके कसूरों को भसम कर देगी।

## 9

०००००० ०० ०००००००० ०० ००००० ०००००००

<sup>1</sup> ऐ इस्राईल, दूसरी कौमों की तरह खुशी — ओ — शादमानी न कर, क्योंकि तू ने अपने खुदा से बेवफ़ाई की है। तूने हर एक खलीहान में इश्क से उजरत तलाश की है। <sup>2</sup> खलीहान और मय के हौज़ उनकी परवरिश के लिए काफ़ी न होंगे और नई मय किफ़ायत न करेगी। <sup>3</sup> वह खुदावन्द के मुल्क में न बसेंगे, बल्कि इफ्राईम मिस्र को वापस जाएगा और वह असूर में नापाक चीज़ें खाएँगे। <sup>4</sup> वह मय को खुदावन्द के लिए न तपाएँगे और वह उसके मक़बूल न होंगे, उनकी कुर्बानियाँ उनके लिए नौहागरों की रोटी की तरह होंगी। उनको खाने वाले नापाक होंगे, क्योंकि उनकी रोटियाँ उन ही की भूक के लिए होंगी और खुदावन्द के घर में दाखिल न होंगी। <sup>5</sup> मजमा' — ए — मुक़द्दस के दिन और खुदावन्द की 'ईद के दिन क्या करोगे? <sup>6</sup> क्योंकि वो तबाही के खौफ़ से चले गए, लेकिन मिस्र उनको समेटेगा। मोफ़ उनको दफ़न करेगा। उनकी चाँदी के अच्छे खज़ानों पर बिच्छू बूटी काबिज़ होगी। उनके खेमों में काँट उगेंगे। <sup>7</sup> सज़ा के दिन आ गए, बदले का वक़्त आ पहुँचा। इस्राईल को मा'लूम हो जाएगा कि उसकी बदकिरदारी की कसरत और 'अदावत की ज़्यादती के ज़रिए' नबी बेवक़ूफ़ है। रुहानी आदमी दीवाना है। <sup>8</sup> इफ्राईम मेरे खुदा की तरफ़ से निगहबान है। नबी अपनी तमाम राहों में चिड़ीमार का जाल है। वह अपने खुदा के घर में 'अदावत है। <sup>9</sup> उन्होंने अपने आप को निहायत खराब किया जैसा जब'आ के दिनों में हुआ था। वह उनकी बदकिरदारी को याद करेगा और उनके गुनाहों की सज़ा देगा। <sup>10</sup> मैंने इस्राईल को बियाबानी अंगूरों की तरह पाया। तुम्हारे बाप — दादा को अंजीर के पहले पक्के फल की तरह देखा जो दरख़्त के पहले मौसम में लगा हो, लेकिन वह बा'ल फ़गूर के पास गए और अपने आप को उस ज़रिए' रुस्वाई के लिए मख़सूस किया और अपने उस महबूब की तरह मकरूह हुए। <sup>11</sup> अहल — ए — इफ्राईम की शौकत परिन्दे की तरह उड़ जाएगी, विलादत — ओ — हामिला का बुजूद उनमें न होगा और करार — ए — हमल खत्म हो जाएगा। <sup>12</sup> अगरचे वह अपने बच्चों को पालें, तोभी मैं उनको छीन लूँगा, ताकि कोई आदमी बाकी न रहे। क्योंकि जब मैं भी उनसे दूर हो जाऊँ, तो उनकी हालत क़ाबिल — ए — अफ़सोस होगी। <sup>13</sup> इफ्राईम को मैं देखता हूँ कि वो सूर की तरह उम्दा जगह में लगाया गया, लेकिन इफ्राईम अपने बच्चों को क़ातिल के सामने ले जाएगा। <sup>14</sup> ऐ खुदावन्द, उनको दे; तू उनको क्या देगा? उनको इस्कात — ए — हमल और खुश्क पिस्तान दे। <sup>15</sup> उनकी सारी शरारत जिल्जाल में है। हाँ, वहाँ



मैंने उनसे नफ़रत की। उनकी बदआ'माली की वजह से मैं उनको अपने घर से निकाल दूँगा और फिर उनसे मुहब्बत न रखूँगा। उनके सब उमरा बागी हैं। <sup>16</sup> बनी इफ़राईम तबाह हो गए। उनकी जड़ सूख गई। उनके यहाँ औलाद न होगी और अगर औलाद हो भी तो मैं उनके प्यारे बच्चों को हलाक करूँगा। <sup>17</sup> मेरा खुदा उनको छोड़ देगा, क्योंकि वो उसके सुनने वाले नहीं हुए और वह अक्रवाम — ए — 'आलम में आवारा फिरेंगे।

## 10

११११११११ ११ ११११११११ ११११११ ११  
११११११११

<sup>1</sup> इस्राईल लहलहाती ताक है जिसमें फल लगा, जिसने अपने फल की कसरत के मुताबिक बहुत सी कुर्बानगाहें ता'मीर की और अपनी ज़मीन की खूबी के मुताबिक अच्छे अच्छे सुतून बनाए। <sup>2</sup> उनका दिल दगाबाज़ है। अब वह मुजरिम ठहरेंगे। वह उनके मज़बहों को ढाएगा और उनके सुतूनों को तोड़ेगा। <sup>3</sup> यकीनन अब वह कहेंगे, हमारा कोई बादशाह नहीं क्योंकि जब हम खुदावन्द से नहीं डरते तो बादशाह हमारे लिए क्या कर सकता है? <sup>4</sup> उनकी बातें बेकार हैं। वह 'अहद — ओ — पैमान में झूटी क्रसम खाते हैं। इसलिए बला ऐसी फूट निकलेगी जैसे खेत की रेघारियों में इन्द्रायन। <sup>5</sup> बैतआवन की बछियों की वजह से सामरिया के रहने वाले खौफ़ज़दा होंगे, क्योंकि वहाँ के लोग उस पर मातम करेंगे, और वहाँ के काहिन भी जो उसकी पहले की शौकत की वजह से शादमान थे। <sup>6</sup> इसको भी असूर में ले जाकर, उस मुखालिफ़ बादशाह की नज़र करेंगे। इफ़राईम शर्मिन्दगी उठाएगा और इस्राईल अपनी मश्वरत से शर्मिन्दा होगा। <sup>7</sup> सामरिया का बादशाह कट गया है, वह पानी पर तैरती शाख की तरह है। <sup>8</sup> और आवन के ऊँचे मक़ाम, जो इस्राईल का गुनाह हैं, बर्बाद किए जाएँगे; और उनके मज़बहों पर काँटे और ऊँट कटारे उगेंगे और वह पहाड़ों से कहेंगे, हम को छिपा लो, और टीलों से कहेंगे, हम पर आ गिरो। <sup>9</sup> ऐ इस्राईल, तू जिब'आ के दिनों से गुनाह करता आया है। वो वहीं ठहरे रहे, ताकि लड़ाई जिब'आ में बदकिरदारों की नस्ल तक न पहुँचे। <sup>10</sup> मैं जब चाहूँ उनको सज़ा दूँगा और जब मैं उनके दो गुनाहों की सज़ा दूँगा तो लोग उन पर हुज़ूम करेंगे। <sup>11</sup> इफ़राईम सधाई हुई बछिया है, जो दाओना पसन्द करती है, और मैंने उसकी खुशनुमा गर्दन की दरेग किया लेकिन मैं इफ़राईम पर सवार बिठाऊँगा। यहूदाह हल चलाएगा और या'कूब ढेले तोड़ेगा। <sup>12</sup> अपने लिए सच्चाई से

बीज बोया करो। शफ़क़त से फ़सल काटो और अपनी उफ़तादा ज़मीन में हल चलाओ, क्योंकि अब मौक़ा' है कि तुम खुदावन्द के तालिब हो, ताकि वह आए और रास्ती को तुम पर बरसाए। <sup>13</sup> तुम ने शरारत का हल चलाया। बदकिरदारी की फ़सल काटी और झूट का फल खाया, क्योंकि तू ने अपने चाल चलन में अपने बहादुरों के अम्बोह पर तकिया किया। <sup>14</sup> इसलिए तेरे लोगों के खिलाफ़ हंगामा खड़ा होगा, और तेरे सब किले' ढा दिए जाएँगे, जिस तरह शल्मन ने लड़ाई के दिन बैत अर्बेल को ढा दिया था; जब कि माँ अपने बच्चों के साथ टुकड़े — टुकड़े हो गई। <sup>15</sup> तुम्हारी बेनिहायत शरारत की वजह से बैतएल में तुम्हारा यही हाल होगा। शाह — ए — इस्राईल अलस् सबाह बिल्कुल फ़ना हो जाएगा।

## 11

११११११ ११ ११११११११ ११ १११११ ११११११११

<sup>1</sup> जब इस्राईल अभी बच्चा ही था, मैंने उससे मुहब्बत रखी, और अपने बेटे को मिस्र से बुलाया। <sup>2</sup> उन्होंने जिस क्रदर उनको बुलाया, उसी क्रदर वह दूर होते गए; उन्होंने बा'लीम के लिए कुर्बानियाँ पेश कीं और तराशी हुई मूरतों के लिए खुशबू जलाया। <sup>3</sup> मैंने बनी इफ़राईम को चलना सिखाया; मैंने उनको गोद में उठाया, लेकिन उन्होंने न जाना कि मैं ही ने उनको सेहत बरख़्शी। <sup>4</sup> मैंने उनको इंसानी रिश्तों और मुहब्बत की डोरियों से खींचा; मैं उनके हक़ में उनकी गर्दन पर से जूआ उतारने वालों की तरह हुआ, और मैंने उनके आगे खाना रखवा। <sup>5</sup> वह फिर मुल्क — ए — मिस्र में न जाएँगे, बल्कि असूर उनका बादशाह होगा; क्योंकि वह वापस आने से इन्कार करते हैं। <sup>6</sup> तलवार उनके शहरों पर आ पड़ेगी, और उनके अड़बंगों को खा जाएगी और ये उन ही की मश्वरत का नतीजा होगा। <sup>7</sup> क्योंकि मेरे लोग मुझ से नाफ़रमानी पर आमादा हैं, बावजूद ये कि उन्होंने उनको बुलाया कि हक़ ता'ला की तरफ़ रुजू' लाए; लेकिन किसी ने न चाहा कि उसकी इबादत करें। <sup>8</sup> ऐ इफ़राईम, मैं तुझ से क्यूँकर दस्तबरदार हो जाऊँ? ऐ इस्राईल, मैं तुझे क्यूँकर तर्क करूँ? मैं क्यूँकर तुझे अदमा की तरह बनाऊँ? और ज़िबू'ईम तरह बनाऊँ मेरा दिल मुझ में पेच खाता है; मेरी शफ़क़त मौजज़न है। <sup>9</sup> मैं अपने क्रहर की शिद्दत के मुताबिक़ 'अमल नहीं करूँगा, मैं हरगिज़ इफ़राईम को हलाक न करूँगा; क्योंकि मैं इंसान नहीं, खुदा हूँ। तेरे बीच सुकूनत करने वाला कुदूस, और मैं क्रहर के साथ नहीं आऊँगा। <sup>10</sup> वह खुदावन्द की पैरवी करेंगे, जो शेर — ए — बबर की तरह गरजेगा, क्यूँकि वह

गरजेगा, और उसके फ़र्ज़न्द मगरिब की तरफ़ से काँपते हुए आएँगे। <sup>11</sup> वह मिस्र से परिन्दे की तरह, और असूर के मुल्क से कबूतर की तरह काँपते हुए आएँगे; और मैं उनको उनके घरों में बसाऊँगा, खुदावन्द फ़रमाता है। <sup>12</sup> इफ़राईम ने दरोगगोई से और इस्राईल के घराने ने मक्कारी से मुझ को घेरा है, लेकिन यहूदाह अब तक खुदा के साथ हाँ उस कुदूस वफ़ादार के साथ हुक्मरान हैं।

## 12

<sup>1</sup> इफ़राईम हवा चरता है; वह पूरबी हवा के पीछे दौड़ता है। वह मुत्वातिर झूट पर झूट बोलता, और जुल्म करता है। वह असूरियों से 'अहद — ओ — पैमान करते, और मिस्र को तेल भेजते हैं। <sup>2</sup> खुदावन्द का यहूदाह के साथ भी झगड़ा है, और या'कूब को चाल चलन के मुताबिक़ उसकी सज़ा देगा; और उसके आ'माल के मुवाफ़िक़ उसका बदला देगा। <sup>3</sup> उसने रिहम में अपने भाई की एड़ी पकड़ी, और वह अपनी जवानी के दिनों में खुदा से कुशती लड़ा। <sup>4</sup> हाँ, वह फ़रिश्ते से कुशती लड़ा और ग़ालिब आया। उसने रोककर दुआ की। उसने उसे बैतएल में पाया और वहाँ वह हम से हम कलाम हुआ <sup>5</sup> या'नी खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज, यहीवा उसकी यादगार है: <sup>6</sup> “अब तू अपने खुदा की तरफ़ रुजू'ला; नेकी और रास्ती पर क़ाईम, और हमेशा अपने खुदा का उम्मीदवार रह।” <sup>7</sup> वह सौदागर है, और दगा की तराजू उसके हाथ में है; वह जुल्म दोस्त है। <sup>8</sup> इफ़राईम तो कहता है, 'मैं दौलतमंद और मैंने बहुत सा माल हासिल किया है। मेरी सारी कमाई में बदकिरदारी का गुनाह न पाएँगे। <sup>9</sup> लेकिन मैं मुल्क — ए — मिस्र से खुदावन्द तेरा खुदा हूँ; मैं फिर तुझ को 'ईद — ए — मुक़द्दस के दिनों के दस्तूर पर खेमों में बसाऊँगा। <sup>10</sup> मैंने तो नबियों से कलाम किया; और रोया पर रोया दिखाई, और नबियों के वसील से तशबिहात इस्तेमाल कीं। <sup>11</sup> यक्रीनन जिलआ'द में बदकिरदारी है, वो बिल्कुल बतालत हैं; वो जिल्जाल में बैल कुर्बान करते हैं, उनकी कुर्बानगाहे खेत की रेखारियों पर के तूदों की तरह हैं। <sup>12</sup> और याकूब अराम की ज़मीन को भाग गया; इस्राईल बीबी के खातिर नौकर बना, उसने बीबी की खातिर चरवाही की। <sup>13</sup> एक नबी के वसीले से खुदावन्द इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया और नबी ही के वसीले से वह महफूज़ रहा। <sup>14</sup> इफ़राईम ने बड़े सख्त ग़ज़बअंगेज़ काम किए; इसलिए उसका खून उसी

की गर्दन पर होगा और उसका खुदावन्द उसकी मलामत उसी के सिर पर लाएगा।

## 13

?????? ?? ?????????? ?? ?????????? ??????????

<sup>1</sup> इफ़राईम के कलाम में खौफ़ था, वह इस्राईल के बीच सरफ़राज़ किया गया; लेकिन बा'ल की वजह से गुनहगार होकर फ़ना हो गया। <sup>2</sup> और अब वह गुनाह पर गुनाह करते हैं, उन्होंने अपने लिए चाँदी की ढाली हुई मुरते बनाई और अपनी समझ के मुताबिक़ बुत तैयार किए जो सब के सब कारीगरों का काम हैं। वो उनके बारे कहते हैं, “जो लोग कुर्बानी पेश करते हैं, बछड़ों को चूमें!” <sup>3</sup> इसलिए वह सुबह के बादल और शबनम की तरह जल्द जाते रहेंगे, और भूसी की तरह, जिसको बगोला खलीहान पर से उड़ा ले जाता है, और उस धुंवें की तरह जो दूदकश से निकलता है। <sup>4</sup> लेकिन मैं मुल्क — ए — मिस्र ही से, खुदावन्द तेरा खुदा हूँ और मेरे अलावा तू किसी मा'बूद को नहीं जानता था, क्योंकि मेरे अलावा कोई और नजात देने वाला नहीं है। <sup>5</sup> मैंने बियाबान में, या'नी खुश्क ज़मीन में तेरी खबर गीरी की। <sup>6</sup> वह अपनी चरागाहों में सेर हुए, और सेर होकर उनके दिल में घमंड समाया और मुझे भूल गए। <sup>7</sup> इसलिए मैं उनके लिए शेर — ए — बबर की तरह हुआ; चीते की तरह राह में उनकी घात में बैठूँगा। <sup>8</sup> मैं उस रीछनी की तरह जिसके बच्चे छिन गए हों, उनसे दो चार हूँगा, और उनके दिल का पर्दा चाक करके शेर — ए — बबर की तरह, उनको वहीं निगल जाऊँगा; जंगली जानवर उनको फाड़ डालेंगे। <sup>9</sup> ऐ इस्राईल, यही तेरी हलाकत है कि तू मेरा यानी अपने मदद गार का मुखालिफ़ बना। <sup>10</sup> अब तेरा बादशाह कहाँ है कि तुझे तेरे सब शहरों में बचाए और तेरे क़ाज़ी कहाँ हैं जिनके बारे तू कहता था कि मुझे बादशाह और उमरा इनायत कर? <sup>11</sup> मैंने अपने क़हर में तुझे बादशाह दिया, और ग़ज़ब से उसे उठा लिया। <sup>12</sup> इफ़राईम की बदकिरदारी बाँध रखी गई, और उसके गुनाह ज़खीरे में जमा' किए गए। <sup>13</sup> वह जैसे दर्द — ए — ज़िह में मुब्तिला होगा, वो बे अक्ल फ़र्ज़न्द है; अब मुनासिब है कि पैदाइश की जगह में देर न करे। <sup>14</sup> मैं उनको पाताल के क़ाबू से नजात दूँगा; मैं उनकी मौत से छुड़ाऊँगा। ऐ मौत तेरी वबा कहाँ है? ऐ पाताल तेरी हलाकत कहाँ है? मैं हरगिज़ रहम न करूँगा। <sup>15</sup> अगरचे वह अपने भाइयों में कामियाब हो, तोभी पूरबी हवा आएगी; खुदावन्द का दम बियाबान से आएगा, और उसका सोता सूख जाएगा, और उसका

चश्मा खुश्क हो जाएगा। वह सब पसंदीदा बर्तनों का खजाना लूट लेगा। <sup>16</sup> सामरिया अपने जुर्म की सज़ा पाएगा, क्योंकि उसने अपने खुदा से बगावत की है; वह तलवार से गिर जाएँगे। उनके बच्चे पारा — पारा होंगे और हामला 'औरतों के पेट चाक किए जाएँगे।

## 14

???? ???? ???? ?? ???? ?????

<sup>1</sup> 'ऐ इस्राईल, खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ रुजू' ला, क्योंकि तू अपनी बदकिरदारी की वजह से गिर गया है। <sup>2</sup> कलाम लेकर खुदावन्द की तरफ़ रुजू लाओ, और कहो, हमारी तमाम बदकिरदारी को दूर कर, और फ़ज़ल से हम को कुबूल फ़रमा; तब हम अपने लबों से कुर्बानियाँ पेश करेंगे। <sup>3</sup> असूर हम को नहीं बचाएगा; हम घोड़ों पर सवार नहीं होंगे; और अपनी दस्तकारी को खुदा न कहेंगे क्योंकि यतीमों पर रहम करने वाला तू ही है। <sup>4</sup> मैं उनकी नाफ़रमानी का चारा करूँगा; मैं कुशादा दिली से उनसे मुहब्बत रखूँगा, क्योंकि मेरा क्रहर उन पर से टल गया है। <sup>5</sup> मैं इस्राईल के लिए ओस की तरह हूँगा; वह सोसन की तरह फूलेगा, और लुबनान की तरह अपनी जड़ें फैलाएगा; <sup>6</sup> उसकी डालियाँ फैलेंगी, और उसमें ज़ैतून के दरख़्त की खूबसूरती और लुबनान की सी खुशबू होगी। <sup>7</sup> उसके मातहत में रहने वाले कामियाब हो जाएँगे; वह गेहूँ की तरह तर — ओ — ताज़ा और ताक की तरह शिगुफ़्ता होंगे। उनकी शहरत लुबनान की मय की सी होगी। <sup>8</sup> इफ़राईम कहेगा, अब मुझे बुतों से क्या काम?' मैं खुदावन्द ने उसकी सुनी है, और उस पर निगाह करूँगा। मैं सर सबज़ सरो की तरह हूँ, तू मुझ ही से कामयाब हुआ। <sup>9</sup> 'अक्लमन्द कौन है कि वह ये बातें समझे और समझदार कौन है जो इनको जाने? क्योंकि खुदावन्द की राहें रास्त हैं और सादिक़ उनमें चलेगे; लेकिन ख़ताकर उनमें गिर पड़ेंगे।

## यूएल

यूएल की किताब बयान करती है कि उसका मुसन्निफ़

यूएल नबी है (यूएल 1:1) हम यूएल नबी की बाबत उसके कुछ शख़सी तफ़्सील के अलावा ज्यादा नहीं जानते जो इस किताब में खुद पाई जाती है। उसने खुद को फ़तुएल का बेटा बतौर पहचान कराया, यहूदा के लोगों में मनादी की और यरूशलेम के लिए दिलचस्पी के एक बड़े बर्ताव का इज़हार किया यूएल ने भी काहिनो और मक़दिस की बाबत कई एक ख़ामियाँ पेश की यह इशारा करते हुए कि यहूदा में इबादत के दौरान किस तरह बे तकल्लुफ़ी का बर्ताव होता है; (यूएल 1:13-14; 2:14,17)।

इस की तस्नीफ़ की तारीख़ तक्ररीबन 835 - 600

क्रिस्ती मसीह के बीच है।

यूएल ग़ालिबन पुराने अहदनामे की तारीख़ के फ़ारस के दौर में रहता था। उन दिनों में फ़ारस के लोगों ने कुछ यहूदियों को इजाज़त दी कि वह यरूशलेम वापस आयें। यूएल मक़दिस से ख़ूब वाक्फ़ि था इसलिए उस की बहाली के बाद इस का हवाला दिया जाना चाहिए।

बनी इस्राईल और बाद में कलाम के कारिडिन।

खुदा रहम करने वाला है और उन के लिए बख़्शिश

अता करता है जो सच्चे दिल से तौबा करते हैं। इस किताब को दो बड़े वाक्फ़िआत से रोशनास किया गया है एक है टिड्डियों की मदाक़िलत और दूसरा है रूह के जज़बात का पुर जोश इज़हार। इसकी इब्तिदाई तकमाल को आभाल के दूसरे बाब में पतरस पेन्तीकुस्त के दिन रूह के नाज़िल होने बतौर पेश करता है।

खुदावन्द का दिन।

बैरूनी खाका

1. इस्राईल का टिड्डियों के ज़रीए हमलवार होना — 1:1-20
2. खुदा की सज़ा — 2:1-17
3. इस्राईल की बहाली — 2:18-32
4. क्रौमों पर खुदा का इन्साफ़ फिर उसका अपने लोगों के दर्मियान सुकूनत करना — 3:1-21

1 खुदावन्द का कलाम जो यूएल — बिन फ़तूएल पर नाज़िल हुआ:

2 ऐ बूढ़ो, सुनो, ऐ ज़मीन के सब रहने वालों, कान

लगाओ! क्या तुम्हारे या तुम्हारे बाप — दादा के दिनों में कभी ऐसा हुआ? 3 तुम अपनी औलाद से इसका तज़क़िरा करो, और तुम्हारी औलाद अपनी औलाद से, और उनकी औलाद अपनी नसल से बयान करे। 4 जो कुछ टिड्डियों के एक ग़ोल से बचा, उसे दूसरा ग़ोल निगल गया; और जो कुछ दूसरे से बचा, उसे तीसरा ग़ोल चट कर गया; और जो कुछ तीसरे से बचा, उसे चौथा ग़ोल खा गया। 5 ऐ मतवालो, जागो और मातम करो; ऐ मयनौशी करने वालों, नई मय के लिए चिल्लाओ, क्योंकि वह तुम्हारे मुँह से छिन गई है। 6 क्योंकि मेरे मुल्क पर एक क्रौम चढ़ आई है, उनके दाँत शेर — ए — बबर के जैसे हैं, और उनकी दाढ़ें शेरनी की जैसी हैं। 7 उन्होंने मेरे ताकिस्तान को उजाड़ डाला, और मेरे अंजीर के दरख़्तों को तोड़ डाला; उन्होंने उनको बिल्कुल छील छालकर फेंक दिया, उनकी डालियाँ सफ़ेद निकल आईं। 8 तुम मातम करो, जिस तरह दुल्हन अपनी जवानी के शौहर के लिए टाट ओढ़ कर मातम करती है। 9 नज़र की कुर्बानी और तपावन खुदावन्द के घर से मौकूफ़ हो गए। खुदावन्द के ख़िदमत गुज़ार, काहिन मातम करते हैं। 10 खेत उजड़ गए, ज़मीन मातम करती है, क्योंकि ग़ल्ला खराब हो गया है; नई मय ख़त्म हो गई, और तेल बर्बाद हो गया। 11 ऐ किसानो, शर्मिन्दगी उठाओ, ऐ ताकिस्तान के बाग़बानों, मातम करो, क्योंकि गेहूँ और जौ और मैदान के तैयार खेत बर्बाद हो गए। 12 ताक़ खुश्क हो गई; अंजीर का दरख़्त मुरझा गया। अनार और खज़ूर और सेब के दरख़्त, हाँ मैदान के तमाम दरख़्त मुरझा गए; और बनी आदम से खुशी जाती रही। 13 ऐ काहिनो, कमरें कस कर मातम करो, ऐ मज़बह पर ख़िदमत करने वालो, वावैला करो। ऐ मेरे खुदा के खादिमों, आओ रात भर टाट ओढ़ो! क्योंकि नज़र की कुर्बानी और तपावन तुम्हारे खुदा के घर से मौकूफ़ हो गए। 14 रोज़े के लिए एक दिन मुक़द्दस करो; पाक महफ़िल बुलाओ। बुज़ुर्गों और मुल्क के तमाम बाशिंदों को खुदावन्द अपने खुदा के घर में जमा करके उससे फ़रियाद करो 15 उस दिन पर अफ़सोस! क्योंकि खुदावन्द का दिन नज़दीक़ है, वह क़ादिर — ए — मुतलक़ की तरफ़ से बड़ी हलाक़त की तरह आएगा। 16 क्या हमारी आँखों के सामने रोज़ी मौकूफ़ नहीं हुई, और हमारे खुदा के घर से खुशीओ — शादमानी जाती



नहीं रही? 17 बीज ढेलों के नीचे सड़ गया; गल्लाखाने खाली पड़े हैं, खत्ते तोड़ डाले गए; क्योंकि खेती सूख गई। 18 जानवर कैसे कराहते हैं! गाय — बैल के गल्ले परेशान हैं क्योंकि उनके लिए चरागाह नहीं है; हाँ, भेड़ों के गल्ले भी बर्बाद हो गए हैं। 19 ऐ खुदावन्द, मैं तेरे सामने फ़रियाद करता हूँ। क्योंकि आग ने वीराने की चरागाहों को जला दिया, और शो'ले ने मैदान के सब दरख्तों को राख कर दिया है। 20 जंगली जानवर भी तेरी तरफ़ निगाह रखते हैं, क्योंकि पानी की नदियाँ सूख गई, और आग वीराने की चरागाहों को खा गई।

## 2

2222222222 22 22222 22222 22 2222 22222 22222

1 सिय्यून में नरसिंगा फूँको; मेरे पाक पहाड़ी पर साँस बाँध कर ज़ोर से फूँको! मुल्क के तमाम रहने वाले थरथराएँ, क्योंकि खुदावन्द का दिन चला आता है; बल्कि आ पहुँचा है। 2 अंधेरे और तारीकी का दिन, काले बादल और जुल्मात का दिन है! एक बड़ी और ज़बरदस्त उम्मत जिसकी तरह न कभी हुई और न सालों तक उसके बाद होगी; पहाड़ों पर सुब्ह — ए — सादिक की तरह फैल जाएगी। 3 जैसे उनके आगे आगे आग भसम करती जाती है, और उनके पीछे पीछे शो'ला जलाता जाता है। उनके आगे ज़मीन बाग़ — ए — 'अदन की तरह है और उनके पीछे वीरान बियाबान है; हाँ, उनसे कुछ नहीं बचता। 4 उनके पैरों का निशान घोड़ों के जैसे है, और सवारों की तरह दौड़ते हैं। 5 पहाड़ों की चोटियों पर रथों के खड़खड़ाने और भूसे को खाक करने वाले जलाने वाली आग के शोर की तरह बलन्द होते हैं। वह जंग के लिए तरतीब में ज़बरदस्त क्रौम की तरह हैं। 6 उनके आमने सामने लोग थरथराते हैं; सब चेहरों का रंग उड़ जाता है। 7 वह पहलवानों की तरह दौड़ते, और जंगी मर्दों की तरह दीवारों पर चढ़ जाते हैं। सब अपनी अपनी राह पर चलते हैं, और लाइन नहीं तोड़ते। 8 वह एक दूसरे को नहीं ढकेलते, हर एक अपनी राह पर चला जाता है; वो जंगी हथियारों से गुज़र जाते हैं, और बेतरतीब नहीं होते। 9 वो शहर में कूद पड़ते, और दीवारों और घरों पर चढ़कर चोरों की तरह खिड़कियों से घुस जाते हैं। 10 उनके सामने ज़मीन — ओ — आसमान काँपते और थरथराते हैं। सूरज और चाँद तारीक, और सितारे बेनूर हो जाते हैं। 11 और खुदावन्द अपने लश्कर के सामने ललकारता है, क्योंकि उसका लश्कर बेशुमार है और उसके हुक्म को अंजाम देने वाला ज़बरदस्त है; क्योंकि खुदावन्द का रोज़ — ए — 'अज़ीम बहुत खौफ़नाक है।

कौन उसकी बर्दाश्त कर सकता है? 12 लेकिन खुदावन्द फ़रमाता है, अब भी पूरे दिल से और रोज़ा रख कर और गिर्या — ओ — ज़ारी — ओ — मातम करते हुए मेरी तरफ़ फ़िरो। 13 और अपने कपड़ों को नहीं, बल्कि दिलों को चाक करके, खुदावन्द अपने खुदा की तरफ़ मुतवज्जिह हो; क्योंकि वह रहीम — ओ — मेहरबान, क्रहर करने में धीमा, और शफ़क़त में ग़नी है; और ऐजाब नाज़िल करने से बाज़ रहता है। 14 कौन जानता है कि वह बाज़ रहे, और बरकत बाक़ी छोड़े जो खुदावन्द तुम्हारे खुदा के लिए नज़र की कुर्बानी और तपावन हो। 15 सिय्यून में नरसिंगा फूँको, और रोज़े के लिए एक दिन पाक करो; पाक महफ़िल इकट्ठा करो। 16 तुम लोगों को जमा' करो। जमा'अत को पाक करो, बुज़ुर्गों को इकट्ठा करो; बच्चों और शीरख़्वारों को भी बुलाओ। दुल्हा अपनी कोठरी से और दुल्हन अपने तन्हाई के घर से निकल आए। 17 काहिन या'नी खुदावन्द के खादिम, डयोढ़ी और कुर्बानगाह के बीच गिर्या — ओ — ज़ारी करें कहें, ऐ खुदावन्द, अपने लोगों पर रहम कर, और अपनी मीरास की तौहीन न होने दे। ऐसा न हो कि दूसरी क्रौमें उन पर हुकूमत करें। वह उम्मतों के बीच क्यूँ कहें, उनका खुदा कहाँ है? 18 तब खुदावन्द को अपने मुल्क के लिए ग़ैरत आई और उसने अपने लोगो पर रहम किया। 19 फिर खुदावन्द ने अपने लोगों से फ़रमाया, मैं तुम को अनाज और नई मय और तेल 'अता फ़रमाऊँगा और तुम उनसे सेर होगे और मैं फिर तुम को क्रौमों में रुस्वा न करूँगा। 20 और शिमाली लश्कर को तुम से दूर करूँगा और उसे खुशक वीराने में हाँक दूँगा; उसके अगले मशरिकी समुंदर में होंगे, और पिछले मशरिकी समुंदर में होंगे; उससे बदबू उठेगी और 'उफ़ूनत फैलेगी, क्योंकि उसने बड़ी गुस्ताखी की है। 21 'ऐ ज़मीन, न घबरा; खुशी और शादमानी कर, क्योंकि खुदावन्द ने बड़े बड़े काम किए हैं! 22 ऐ दशती जानवरो, न घबरा; क्योंकि वीरान की चारागाह सब्ज़ होती है, और दरख़्त अपना फल लाते हैं। अंजीर और ताक अपनी पूरी पैदावार देते हैं। 23 तब ऐ बनी सिय्यून, खुश हो, और खुदावन्द अपने खुदा में शादमानी करो; क्योंकि वह तुम को पहली बरसात कसरत से बरख़्शेगा; वही तुम्हारे लिए बारिश, या'नी पहली और पिछली बरसात वक्रत पर भेजेगा। 24 यहाँ तक कि खलीहान गेहूँ से भर जाएँगे, और हौज़ नई मय और तेल से लबरेज़ होंगे। 25 और उन बरसों का हासिल जो मेरी तुम्हारे खिलाफ़ भेजी हुई फ़ौज़ — ए — मलख़ निगल गई, और खाकर चट कर गई; तुम को वापस दूँगा। 26 और तुम खूब खाओगे और सेर होगे, और खुदावन्द

अपने खुदा के नाम की, जिसने तुम से 'अजीब सुलूक किया, इबादत करोगे और मेरे लोग हरगिज़ शर्मिन्दा न होंगे। 27 तब तुम जानोगे कि मैं इस्राईल के बीच हूँ, और मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, और कोई दूसरा नहीं; और मेरे लोग कभी शर्मिन्दा न होंगे। 28 'और इसके बाद मैं हर फ़र्द — ए — बशर पर अपना रूह नाज़िल करूँगा, और तुम्हारे बेटे बेटियाँ नबुव्वत करेंगे; तुम्हारे बूढ़े ख़्वाब और जवान रोया देखेंगे। 29 बल्कि मैं उन दिनों में गुलामों और लौंडियों पर अपना रूह नाज़िल करूँगा। 30 और मैं ज़मीन — ओ — आसमान में 'अजायब ज़ाहिर करूँगा, या'नी खून और आग और धुँवें के खम्बे। 31 इस से पहले कि खुदावन्द का खौफ़नाक रोज़ — ए — अज़ीम आए, सूरज तारीक और चाँद खून हो जाएगा। 32 और जो कोई खुदावन्द का नाम लेगा नज़ात पाएगा, क्योंकि कोह — ए — सिथ्यून और येरूशलेम में, जैसा खुदावन्द ने फ़रमाया है बच निकलने वाले होंगे, और बाक़ी लोगों में वह जिनको खुदावन्द बुलाता है।

### 3

२२२२२२ २२२२२२२ २२ २२२२२२२ २२२२

1 उन दिनों में और उसी वक़्त, जब मैं यहूदाह और येरूशलेम के क़ैदियों को वापस लाऊँगा; 2 तो सब क्रौमों को जमा' करूँगा और उन्हें यहूसफ़त की वादी में उतार लाऊँगा, और वहाँ उन पर अपनी क्रौम और मीरास, इस्राईल के लिए, जिनको उन्होंने क्रौमों के बीच हलाक किया और मेरे मुल्क को बाँट लिया, दलील साबित करूँगा। 3 हाँ, उन्होंने मेरे लोगों पर पर्ची डाली, और एक कस्बी के बदले एक लड़का दिया, और मय के लिए एक लड़की बेची ताकि मयख़्तारी करें। 4 “फिर ऐ सूर — ओ — सैदा और फ़िलिस्तीन के तमाम 'इलाक़ो, मेरे लिए तुम्हारी क्या हक़ीक़त है? क्या तुम मुझ को बदला दोगे? और अगर दोगे, तो मैं वहीं फ़ौरन तुम्हारा बदला तुम्हारे सिर पर फेंक दूँगा। 5 क्योंकि तुम ने मेरा सोना चाँदी ले लिया है, और मेरी लतीफ़ — ओ — नफ़ीस चीज़ें अपने हैकलों में ले गए हो। 6 और तुम ने यहूदाह और येरूशलेम की औलाद को यूनानियों के हाथ बेचा है, ताकि उनको उनकी हूदों से दूर करो। 7 इसलिए मैं उनको उस जगह से जहाँ तुम ने बेचा है, बरअंगेख़्ता करूँगा और तुम्हारा बदला तुम्हारे सिर पर लाऊँगा। 8 और तुम्हारे बेटे बेटियों को बनी यहूदाह के हाथ बेचूँगा, और वह उनको अहल — ए — सबा के हाथ, जो दूर के मुल्क में रहते हैं, बेचेंगे, क्योंकि यह

खुदावन्द का फ़रमान है।” 9 क्रौमों के बीच इस बात का 'ऐलान करो: लड़ाई की तैयारी करो “बहादुरों को बरअंगेख़्ता करो, जंगी जवान हाज़िर हों, वह चढ़ाई करें। 10 अपने हल की फालों को पीटकर तलवारें बनाओ और हँसुओं को पीट कर भाले, कमज़ोर कहे, मैं ताक़तवर हूँ।” 11 ऐ आस पास की सब क्रौमों, जल्द आकर जमा' हो जाओ। ऐ खुदावन्द, अपने बहादुरों को वहाँ भेज दे। 12 क्रौमों बरअंगेख़्ता हों, और यहूसफ़त की वादी में आएँ; क्योंकि मैं वहाँ बैठकर आस पास की सब क्रौमों की 'अदालत करूँगा। 13 हँसुआ लगाओ, क्योंकि खेत पक गया है। आओ रौंदो, क्योंकि हौज़ लबालब। और कोल्हू लबरेज़ है क्योंकि उनकी शरारत 'अज़ीम है। 14 गिरोह पर गिरोह इनफ़िसाल की वादी में है, क्योंकि खुदावन्द का दिन इनफ़िसाल की वादी में आ पहुँचा। 15 सूरज और चाँद तारीक हो जाएँगे, और सितारों का चमकना बंद हो जाएगा। अपने लोगों को खुदावन्द बरकत देगा 16 क्योंकि खुदावन्द सिथ्यून से ना'रा मारेगा, और येरूशलेम से आवाज़ बुलंद करेगा और आसमान और ज़मीन काँपेंगे। लेकिन खुदावन्द अपने लोगों की पनाहगाह और बनी — इस्राईल का क़िला' है। 17 “तब तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, जो सिथ्यून में अपने पाक पहाड़ पर रहता हूँ। तब येरूशलेम भी पाक होगा और फिर उसमें किसी अजनबी का गुज़र न होगा। 18 और उस दिन पहाड़ों पर से नई मय टपकेगी, और टीलों पर से दूध बहेगा, और यहूदाह की सब नदियों में पानी जारी होगा; और खुदावन्द के घर से एक चश्मा फूट निकलेगा और वादी — ए — शित्तीम को सेराब करेगा। 19 मिस्र वीराना होगा और अदोम सुनसान बियाबान, क्योंकि उन्होंने बनी यहूदाह पर जुल्म किया, और उनके मुल्क में बेगुनाहों का खून बहाया। 20 लेकिन यहूदाह हमेशा आबाद और येरूशलेम नसल — दर — नसल काईम रहेगा। 21 क्योंकि मैं उनका खून पाक करार दूँगा, जो मैंने अब तक पाक करार नहीं दिया था; क्योंकि खुदावन्द सिथ्यून में सुकूनत करता है।”

## आमूस

?????????? ?? ?????

आमूस 1:1 आमूस को किताब का मुसन्निफ़ बतौर पहचानती है और साथ ही नबी बतौर भी। आमूस नबी तकूअ नाम गांव में चरवाहों की जमाअत के बीच रहा करता था। आमोस नबी ने अपनी तहरीर में यह बात साफ़ करी कि वह नबियों के खान्दान से नहीं आया था। खुदा ने अपने अदालत की धम्की टिड्डियों और आग से दी मगर आमोस की दुआओं ने इस्राईल को दरगुज़र कर दिया।

????? ?????? ?? ?????????? ?? ???? ?

इसके तस्नीफ़ की तारीख़ तक्ररीबन 760 - 750 क़ब्ल मसही के बीच है।

आमोस नबी ने इस्राईल सल्तनत के शुमाली इलाक़े से यानी बैतेल और सामरिया से मनादी की।

?????? ?????????????? ?????? ??????

आमूस के असली नाज़रीन व सामईन इस्राईल के शुमाली सल्तनत के लोग और मुस्तक़बिल के कलाम के करिईन हैं।

????? ??????????

खुदा घमण्ड से नफ़रत करता है। लोगों ने अपनी खुद आसूदगी पर एत्काद किया और खुदा की तमाम बर्कतों को भूल गए। खुदा भी तमाम अपने लोगों की कीमत रखता है। वह ग़रीबों की बद सुलूकी के खिलाफ़ उन्हें खबरदार और होशियार करता है। आख़िर में खुदा उन से पुरखुलूस इबादत तलब करता है ऐसे बर्ताव के साथ जिस से उसको इज़्ज़त मिले। आमूस का कलाम बराह — ए — रास्त बनी इस्राईल के उन हक़ याफ़्ता लोगों के खिलाफ़ पहुंचा जिन के दिलों में अपने पड़ोसियों के लिए प्यार नहीं था। इसके मुक़ाबले में वह दूसरों का फ़ाइदा उठाने वाले लोग थे। और सिर्फ़ अपने भले के लिए ही सोचते थे।

???????

अदालत

बैरूनी खाका

1. क़ौमों पर बर्बादी — 1:1-2:16
2. नबुव्वत की बुलाहट — 3:1-8
3. इस्राईल की अदालत — 3:9-9:10
4. बहाली — 9:11-15

<sup>1</sup>तकूअ के चरवाहों में से 'आमूस का कलाम, जो उस पर शाह — ए — यहूदाह उज़्ज़ियाह और शाह — ए — इस्राईल युरब'आम — बिन — यूआस के दिनों में

इस्राईल के बारे में भौंचाल से दो साल पहले ख़्वाब में नाज़िल हुआ। <sup>2</sup> उसने कहा: “खुदावन्द सिय्यून से नारा मारेगा और येरूशलेम से आवाज़ बलन्द करेगा; और चरवाहों की चरागाहें मातम करेंगी, और कर्मिल की चोटी सूख जायेगी।”

?????????? ?? ?????????? ?????????? ?? ??????? ?

<sup>3</sup>खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि “दमिशक़ के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न छोड़ूँगा, क्यूँकि उन्होंने ज़िलआद को ख़लीहान में दाउने के आहनी औज़ार से रौंद डाला है। <sup>4</sup> और मैं हज़ाएल के घराने में आग भेजूँगा, जो बिन — हदद के क़स्रों को खा जाएगी। <sup>5</sup> और मैं दमिशक़ का अड़बंगा तोड़ूँगा और वादी — ए — आवन के बाशिंदों और बैत — 'अदन के फ़रमाँरवाँ को काट डालूँगा और अराम के लोग गुलाम होकर क़ीर को जाएँगे, खुदावन्द फ़रमाता है। <sup>6</sup> खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि ग़ज़्ज़ा के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न छोड़ूँगा, क्यूँकि वह सब लोगों को गुलाम करके ले गए ताकि उनको अदोम के हवाले करें। <sup>7</sup> इसलिए मैं ग़ज़्ज़ा की शहरपनाह पर आग भेजूँगा, जो उसके क़स्रों को खा जाएगी। <sup>8</sup> और अशदूद के बाशिन्दों और अस्क़लोन के फ़रमाँरवाँ को काट डलूँगा और अक़रून पर हाथ चलाऊँगा और फ़िलिस्तियों के बाक़ी लोग बर्बाद हो जायेंगे। खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। <sup>9</sup> खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि सूर के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न छोड़ूँगा, क्यूँकि उन्होंने सब लोगों को अदोम के हवाले किया और बिरादराना 'अहद को याद न किया। <sup>10</sup> इसलिए मैं सूर की शहरपनाह पर आग भेजूँगा, जो उसके क़स्रों को खा जाएगी।” <sup>11</sup> खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि अदोम के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न छोड़ूँगा, क्यूँकि उसने तलवार लेकर अपने भाई को दौड़ाया और रहमदिली को छोड़ दिया और उसका क़हर हमेशा फाड़ता रहा और उसका ग़ज़ब ख़त्म न हुआ। <sup>12</sup> इसलिए मैं तेमान पर आग भेजूँगा, और वह बसराह के क़स्रों को खा जाएगी। <sup>13</sup> खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि बनी 'अम्मोन के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न छोड़ूँगा, क्यूँकि उन्होंने अपनी हुदूद को बढ़ाने के लिए ज़िलआद की बारदार 'औरतों के पेट चाक किए। <sup>14</sup> इसलिए मैं रब्बा की शहरपनाह पर आग भड़काऊँगा, जो उसके क़स्रों को लड़ाई के दिन ललकार और आँधी के दिन गिर्दबाद के साथ खा जाएगी; <sup>15</sup> और उनका बादशाह बल्कि वह

अपने हाकिमों के साथ गुलाम होकर जाएगा, खुदावन्द फ़रमाता है।

## 2

<sup>1</sup> खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: “मोआब के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न छोड़ूँगा, क्योंकि उसने शाह — ए — अदोम की हड्डियों को जलाकर चूना बना दिया है। <sup>2</sup> इसलिए मैं मोआब पर आग भेजूँगा, और वह करयूत के क़स्त्रों को खा जाएगी; और मोआब ललकार और नरसिंगे की आवाज़, और शोर — ओ — ग़ौगा के बीच मरेगा। <sup>3</sup> और मैं क़ाज़ी को उसके बीच से काट डालूँगा और उसके तमाम हाकिमों को उसके साथ क़त्ल करूँगा,” खुदावन्द फ़रमाता है।

?????? ?? ????????? ?? ??????? ?? ?????

<sup>4</sup> खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि “यहूदाह के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न छोड़ूँगा, क्योंकि उन्होंने खुदावन्द की शरी'अत को रद्द किया, और उसके अहकाम की पैरवी न की और उनके झूटे मा'बूदों ने जिनकी पैरवी उनके बाप — दादा ने की, उनको गुमराह किया है। <sup>5</sup> इसलिए मैं यहूदाह पर आग भेजूँगा, जो येरूशलेम के क़स्त्रों को खा जाएगी।” <sup>6</sup> खुदावन्द यूँ फ़रमाता है: इस्राईल के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसज़ा न छोड़ूँगा, क्योंकि उन्होंने सादिक को रुपये की खातिर, और ग़रीब को जूतियों के जोड़े की खातिर बेच डाला। <sup>7</sup> वह ग़रीबों के सिर पर की गर्द का भी लालच रखते हैं, और हलीमों को उनकी राह से गुमराह करते हैं और बाप बेटा एक ही 'औरत के पास जाने से मेरे पाक नाम की तकफ़ीर करते हैं। <sup>8</sup> और वह हर मज़बूह के पास गिरवी लिए हुए कपड़ों पर लेटते हैं, और अपने खुदा के घर में जुर्माने से खरीदी हुई मय पीते हैं। <sup>9</sup> हालाँकि मैं ही ने उनके सामने से अमोरियों को हलाक किया, जो देवदारों की तरह बलंद और बलूतों की तरह मज़बूत थे; हाँ, मैं ही ने ऊपर से उनका फल बर्बाद किया, और नीचे से उनकी जड़ें काटीं। <sup>10</sup> और मैं ही तुमको मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, और चालीस बरस तक वीराने में तुम्हारी रहबरी की, ताकि तुम अमोरियों के मुल्क पर क़ाबिज़ हो जाओ। <sup>11</sup> और मैंने तुम्हारे बेटों में से नबी, और तुम्हारे जवानों में से नज़ीर खड़े किए, खुदावन्द फ़रमाता है, ऐ बनी इस्राईल, क्या ये सच नहीं? <sup>12</sup> लेकिन तुम ने नज़ीरों को मय पिलाई, और नबियों को हुक्म दिया के नबुव्वत न करें। <sup>13</sup> देखो, मैं तुम को ऐसा दबाऊँगा, जैसे पूलों से लदी हुई गाड़ी दबाती है। <sup>14</sup> तब तेज़ रफ़्तार से भागने

की ताक़त जाती रहेगी, और ताक़तवर का ज़ोर बेकार होगा, और बहादुर अपनी जान न बचा सकेगा। <sup>15</sup> और कमान खींचने वाला खड़ा न रहेगा, और तेज़ क़दम और सवार अपनी जान न बचा सकेंगे; <sup>16</sup> और पहलवानों में से जो कोई दिलावर है, नंगा निकल भागेगा, खुदावन्द फ़रमाता है।

## 3

<sup>1</sup> ऐ बनी इस्राईल, ऐ सब लोगों जिनको मैं मिलक — ए — मिस्र से निकाल लाया, ये बात सुनो जो खुदावन्द तुम्हारे बारे में फ़रमाता है: <sup>2</sup> “दुनिया के सब घरानों में से मैंने सिर्फ़ तुम को चुना है, इसलिए मैं तुम को तुम्हारी सारी बदकिरदारी की सज़ा दूँगा।”

???? ????????? ?? ????????? ???? ?

<sup>3</sup> अगर दो शख्स आपस में मुत्तफ़िक़ न हों, तो क्या इकट्ठे चल सकेंगे? <sup>4</sup> क्या शेर — ए — बबर जंगल में गरजेगा, जबकि उसे शिकार न मिला हो? और अगर जवान शेर ने कुछ न पकड़ा हो, तो क्या वह ग़ार में से अपनी आवाज़ को बलंद करेगा? <sup>5</sup> क्या कोई चिड़िया ज़मीन पर दाम में फँस सकती है, जबकि उसके लिए दाम ही न बिछाया गया हो? क्या फ़ंदा जब तक कि कुछ न कुछ उसमें फँसा न हो, ज़मीन पर से उछलेगा? <sup>6</sup> क्या ये मुम्किन है कि शहर में नरसिंगा फूँका जाए, और लोग न काँपें? या कोई बला शहर पर आए, और खुदावन्द ने उसे न भेजा हो? <sup>7</sup> यक़ीनन खुदावन्द खुदा कुछ नहीं करता, जब तक अपना राज़ अपने ख़िदमत गुज़ार नबियों पर पहले आशकारा न करे। <sup>8</sup> शेर — ए — बबर गरजा है, कौन न डरेगा? खुदावन्द खुदा ने फ़रमाया है, कौन नबुव्वत न करेगा? <sup>9</sup> अशदूद के क़स्त्रों में और मुल्क — ए — मिस्र के क़स्त्रों में 'ऐलान करो, और कहो, सामरिया के पहाड़ों पर जमा' हो जाओ, और देखो उसमें कैसा हंगामा और ज़ुल्म है। <sup>10</sup> क्योंकि वह नेकी करना नहीं जानते, खुदावन्द फ़रमाता है जो अपने क़स्त्रों में ज़ुल्म और लूट को जमा' करते हैं। <sup>11</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि “दुश्मन मुल्क का घिराव करेगा, और तेरी कुव्वत को तुझ से दूर करेगा, और तेरे क़स्त्र लूटे जाएँगे।” <sup>12</sup> खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि जिस तरह से चरवाहा दो टाँगें, या कान का एक टुकड़ा, शेर — ए — बबर के मुँह से छुड़ा लेता है उसी तरह बनी इस्राईल जो सामरिया में पलंग के गोशे में और रेशमीन फ़र्श पर बैठे रहते हैं, छुड़ा लिए जाएँगे। <sup>13</sup> खुदावन्द खुदा, रब्ब — उल — अफ़वाज़ फ़रमाता है, सुनो और बनी या'कूब के खिलाफ़ गवाही दो। <sup>14</sup> क्योंकि जब मैं इस्राईल के गुनाहों की सज़ा दूँगा, तो बैतएल के मज़बूहों को भी



देख लूँगा, और मज़बूह के सींग कट कर ज़मीन पर गिर जाएँगे। <sup>15</sup> और खुदावन्द फ़रमाता है: मैं ज़मिस्तानी और ताबिस्तानी घरों को बर्बाद करूँगा, और हाथी दाँत के घर मिस्मार किए जायेंगे और बहुत से मकान वीरान होंगे।

## 4

□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□

1 ऐ बसन की गायों, जो कोह — ए — सामरिया पर रहती हो, और गरीबों को सताती और गरीबों को कुचलती और अपने मालिकों से कहती हो, 'लाओ, हम पियें,' तुम ये बात सुनो। 2 खुदावन्द खुदा ने अपनी पाकीज़गी की क़सम खाई है कि तुम पर वह दिन आएँगे, जब तुम को आंकड़ियों से और तुम्हारी औलाद को शस्तों से खींच ले जाएँगे। 3 और खुदावन्द फ़रमाता है, तुम में से हर एक उस रखने से जो उसके सामने होगा निकल भागेगी, और तुम कैद में डाली जाओगी। 4 बैतएल में आओ और गुनाह करो, और जिल्लाल में कसरत से गुनाह करो, और हर सुबह अपनी कुर्बानियाँ और तीसरे रोज़ दहेकी लाओ, 5 और शुक्रगुज़ारी का हृदिया ख़मीर के साथ आग पर पेश करो, और रज़ा की कुर्बानी का 'ऐलान करो, और उसको मशहूर करो, क्योंकि ऐ बनी इस्राईल, ये सब काम तुम को पसंद हैं, खुदावन्द खुदा फ़रमाता है। 6 खुदावन्द फ़रमाता है, अगरचे मैंने तुम को तुम्हारे हर शहर में दाँतों की सफ़ाई, और तुम्हारे हर मकान में रोटी की कमी दी है; तोभी तुम मेरी तरफ़ रुजू' न लाए। 7 और अगरचे मैंने मेंह को, जबकि फ़सल पकने में तीन महीने बाक़ी थे तुम से रोक लिया; और एक शहर पर बरसाया और दूसरे से रोक रखवा, एक क़िता' ज़मीन पर बरसा और दूसरा क़िता' बारिश न होने की वजह से सूख गया; 8 और दो तीन बस्तियाँ आवारा हो कर एक बस्ती में आई, ताकि लोग पानी पिएँ पर वह आसूदा न हुए, तो भी तुम मेरी तरफ़ रुजू' न लाए, खुदावन्द फ़रमाता है। 9 फिर मैंने तुम पर बाद — ए — समूम और गेरोई की आफ़त भेजी, और तुम्हारे बेशुमार बाग़ और ताकिस्तान और अंजीर और ज़ैतून के दरख़्त, टिड्डियों ने खा लिए; तोभी तुम मेरी तरफ़ रुजू' न लाए, खुदावन्द फ़रमाता है। 10 मैंने मिस्र के जैसी वबा तुम पर भेजी और तुम्हारे जवानों को तलवार से क़त्ल किया; तुम्हारे घोड़े छीन लिए और तुम्हारी लश्करगाह की बदबू तुम्हारे नथनों में पहुँची, तोभी तुम मेरी तरफ़ रुजू' न लाए, खुदावन्द फ़रमाता है। 11 'मैंने तुम में से कुछ को उलट दिया, जैसे खुदा ने सद्म और 'अमूरा

को उलट दिया था; और तुम उस लुक्टी की तरह हुए जो आग से निकाली जाए, तोभी तुम मेरी तरफ़ रुजू' न लाए," खुदावन्द फ़रमाता है। <sup>12</sup> "इसलिए ऐ इस्राईल, मैं तुझ से यूँ ही करूँगा, और चूँकि मैं तुझ से यूँ करूँगा, इसलिए ऐ इसराईल, तू अपने खुदा से मुलाकात की तैयारी कर!" <sup>13</sup> क्योंकि देख, उसी ने पहाड़ों को बनाया और हवा को पैदा किया, वह इंसान पर उसके खयालात को ज़ाहिर करता है और सुबह को तारीक बना देता है और ज़मीन के ऊँचे मक़ामात पर चलता है; उसका नाम खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज है।

## 5

□□□□ □□□□ □□ □□□□

1 एे इस्राईल के खान्दान, इस कलाम को जिससे मैं तुम पर नौहा करता हूँ, सुनो: 2 “इस्राईल की कुंवारी गिर पड़ी, वह फिर न उठेगी; वह अपनी ज़मीन पर पड़ी है, उसको उठाने वाला कोई नहीं।” 3 क्योंकि खुदावन्द खुदा यूँ फ़रमाता है कि “इस्राईल के घराने के लिए, जिस शहर से एक हज़ार निकलते थे, उसमें एक सौ रह जाएँगे; और जिससे एक सौ निकलते थे, उसमें दस रह जाएँगे।” 4 क्योंकि खुदावन्द इस्राईल के घराने से यूँ फ़रमाता है कि “तुम मेरे तालिब हो और ज़िन्दा रहो; 5 लेकिन बैतएल के तालिब न हो, और जिल्लाजल में दाखिल न हो, और बैरसबा' को न जाओ, क्योंकि जिल्लाजल गुलामी में जाएगा और बैतएल नाचीज़ होगा।” 6 तुम खुदावन्द के तालिब हो और ज़िन्दा रहो, ऐसा न हो कि वह यूसुफ़ के घराने में आग की तरह भड़के और उसे खा जाए और बैतएल में उसे बुझाने वाला कोई न हो। 7 एे 'अदालत को नागदौना बनाने वालों, और सदाक़त को खाक में मिलाने वालों! 8 वही सुरैया और जब्बार सितारों का खालिक है जो मौत के साये को मतला' — ए — नूर, और रोज़ — ए — रोशन को शब — ए — दैज़ूर बना देता है, और समन्दर के पानी को बुलाता और इस ज़मीन पर फैलाता है, जिसका नाम खुदावन्द है; 9 वह जो ज़बरदस्तों पर नागहानी हलाकत लाता है, जिससे किलों' पर तबाही आती है। 10 वह फाटक में मलामत करने वालों से कीना रखते हैं, और रास्तगो से नफ़रत करते हैं। 11 इसलिए चूँकि तुम ग़रीबों को पायमाल करते हो और ज़ुल्म करके उनसे गेहूँ छीन लेते हो, इसलिए जो तराशे हुए पत्थरों के मकान तुम ने बनाए उनमें न बसोगे, और जो नफ़ीस ताकिस्तान तुम ने लगाए उनकी मय न पियोगे। 12 क्योंकि मैं तुम्हारी बेशुमार ख़ताओं और तुम्हारे बड़े — बड़े गुनाहों से आगाह हूँ तुम सादिकों

को सताते और रिश्वत लेते हो, और फाटक में गरीबों की हक़तलफ़ी करते हो। <sup>13</sup> इसलिए इन दिनों में पेशबीन खामोश हो रहेंगे क्योंकि ये बुरा वक़्त है। <sup>14</sup> बुराई के नहीं बल्कि नेकी के तालिब हो, ताकि ज़िन्दा रहो और खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज तुम्हारे साथ रहेगा, जैसा कि तुम कहते हो। <sup>15</sup> बुराई से 'अदावत और नेकी से मुहब्बत रखो, और फाटक में 'अदालत को कायम करो; शायद खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज बनी यूसुफ़ के बक़िये पर रहम करे। <sup>16</sup> इसलिए खुदावन्द खुदा रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि: सब बाज़ारों में नौहा होगा, और सब गलियों में अफ़सोस अफ़सोस कहेंगे; और किसानों को मातम के लिए, और उनको जो नौहागरी में महारत रखते हैं नौहे के लिए बुलाएँगे; <sup>17</sup> और सब ताकिस्तानों में मातम होगा, क्योंकि मैं तुझमें से होकर गुज़रूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है। <sup>18</sup> तुम पर अफ़सोस जो खुदावन्द के दिन की आरज़ू करते हो! तुम खुदावन्द के दिन की आरज़ू क्यों करते हो? वह तो तारीकी का दिन है, रोशनी का नहीं; <sup>19</sup> जैसे कोई शेर — ए — बबर से भागे और रीछ उसे मिले, या घर में जाकर अपना हाथ दीवार पर रखे और उसे साँप काट ले। <sup>20</sup> क्या खुदावन्द का दिन तारीकी न होगा? उसमें रोशनी न होगी, बल्कि सख़्त ज़ुल्मत होगी और नूर मुतलक़ न होगा। <sup>21</sup> मैं तुम्हारी 'ईदों को मकरूह जानता, और उनसे नफ़रत रखता हूँ; और मैं तुम्हारी पाक महफ़िलों से भी खुश न हूँगा। <sup>22</sup> और अगरचे तुम मेरे सामने सोख़्तनी और नज़र की कुर्बानियाँ पेश करोगे तोभी मैं उनको कुबूल न करूँगा; और तुम्हारे फ़र्बा जानवरों की शुक़राने की कुर्बानियों को खातिर में न लाऊँगा। <sup>23</sup> तू अपने सरोद का शोर मेरे सामने से दूर कर, क्योंकि मैं तेरे रबाब की आवाज़ न सुनूँगा। <sup>24</sup> लेकिन 'अदालत को पानी की तरह और सदाक़त को बड़ी नहर की तरह जारी रख। <sup>25</sup> ऐ बनी — इस्राईल, क्या तुम चालीस बरस तक वीराने में, मेरे सामने ज़बीहे और नज़र की कुर्बानियाँ पेश करते रहे? <sup>26</sup> तुम तो मिल्कूम का खेमा और कीवान के बुत, जो तुम ने अपने लिए बनाए, उठाए फिरते थे, <sup>27</sup> इसलिए खुदावन्द जिसका नाम रब्ब — उल — अफ़वाज है फ़रमाता है, मैं तुम को दमिशक़ से भी आगे गुलामी में भेजूँगा।

## 6

<sup>1</sup> उन पर अफ़सोस जो सिय्यून में बा राहत और कोहिस्तान — ए — सामरिया में बेफ़िक़र हैं, या'नी क्रौमों के रईस के शुफ़ा जिनके पास बनी — इस्राईल आते हैं! <sup>2</sup> तुम कलना तक जाकर देखो, और वहाँ

से हम्रात — ए — 'आज़म तक सैर करो, और फिर फ़िलिस्तियों के जात को जाओ। क्या वह इन ममलुकतों से बेहतर हैं? क्या उनकी हुदूद तुम्हारी हुदूद से ज्यादा वसी' हैं? <sup>3</sup> तुम जो बुरे दिन का खयाल मुल्तवी करके, ज़ुल्म की कुर्सी नज़दीक करते हो। <sup>4</sup> जो हाथी दाँत के पलंग पर लेटते और चारपाइयों पर दराज़ होते, और गल्ले में से बरों को और तवेले में से बछड़ों को लेकर खाते हो। <sup>5</sup> और रबाब की आवाज़ के साथ गाते, और अपने लिये दाऊद की तरह मूसीकी के साज़ ईजाद करते हो; <sup>6</sup> जो प्यालों में से मय पीते और अपने बदन पर बेहतरीन 'इत्र मलते हो; लेकिन यूसुफ़ की शिकस्ताहाली से गमगीन नहीं होते! <sup>7</sup> इसलिए वह पहले गुलामों के साथ गुलाम होकर जाएँगे, और उनकी 'ऐश — ओ — निशात का खातिमा हो जाएगा। <sup>8</sup> खुदावन्द खुदा ने अपनी ज़ात की कसम खाई है, खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: "कि मैं या'कूब की हश्मत से नफ़रत रखता हूँ और उसके कस्रों से मुझे 'अदावत है। इसलिए मैं शहर को उसकी सारी मा'मूरी के साथ हवाले कर दूँगा।" <sup>9</sup> बल्कि यूँ होगा कि अगर किसी घर में दस आदमी बाक़ी होंगे, तो वह भी मर जाएँगे। <sup>10</sup> और जब किसी का रिश्तेदार जो उसको जलाता है, उसे उठाएगा ताकि उसकी हड्डियों को घर से निकाले, और उससे जो घर के अन्दर पृछेगा, क्या कोई और तेरे साथ है? तो वह जवाब देगा, कोई नहीं, तब वह कहेगा, चुप रह, ऐसा न हो कि हम खुदावन्द के नाम का जिक़र करें। <sup>11</sup> क्योंकि देख, खुदावन्द ने हुक्म दे दिया है, और बड़े — बड़े घर रखनों से, और छोटे शिगाफ़ों से बर्बाद होंगे। <sup>12</sup> क्या चटानों पर घोड़े दौड़ेंगे, या कोई बैलों से वहाँ हल चलाएगा? तोभी तुम ने 'अदालत को इंदरायन और समरा — ए — सदाक़त को नागदौना बना रखवा है; <sup>13</sup> तुम बेहक़ीक़त चीज़ों पर फ़ख़र करते, और कहते हो, क्या हम ने अपने लिए, अपनी ताक़त से सींग नहीं निकाले? <sup>14</sup> लेकिन खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, ऐ बनी — इस्राईल, देखो, मैं तुम पर एक क्रौम को चढ़ा लाऊँगा, और वह तुम को हम्रात के मदख़ल से, वादी — ए — अरबा तक परेशान करेगी।

## 7

?????????? ??

<sup>1</sup> खुदावन्द खुदा ने मुझे ख़्वाब दिखाया और क्या देखता हूँ कि उसने ज़रा'अत की आखिरी रोईदगी की शुरू' में टिड्डियाँ पैदा कीं; और देखो, ये शाही कटाई के बाद आखिरी रोईदगी थी। <sup>2</sup> और जब वह ज़मीन की घास को बिल्कुल खा चुकीं, तो मैंने 'अर्ज की, "ऐ खुदावन्द

खुदा, मेहरबानी से मु'आफ़ फ़रमा! या'कूब की क्या हकीकत है कि वह कायम रह सके? क्योंकि वह छोटा है!”<sup>3</sup> खुदावन्द इससे बाज़ आया, और उसने फ़रमाया: “थूँ न होगा।”

22 22 222222

<sup>4</sup> फिर खुदावन्द खुदा ने मुझे ख़ाब दिखाया, और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द खुदा ने आग को बुलाया कि मुकाबला करे, और वह बहर — ए — 'अमीक को निगल गई, और नज़दीक था कि ज़मीन को खा जाए।<sup>5</sup> तब मैंने 'अर्ज़ की, “ऐ खुदावन्द खुदा, मेहरबानी से बाज़ आ, या'कूब की क्या हकीकत है कि वह कायम रह सके? क्योंकि वह छोटा है!”<sup>6</sup> खुदावन्द इससे बाज़ आया, और खुदावन्द खुदा ने फ़रमाया: “थूँ भी न होगा।”<sup>7</sup> फिर उसने मुझे ख़ाब दिखाया, और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द एक दीवार पर, जो साहूल से बनाई गई थी खड़ा है, और साहूल उसके हाथ में है।<sup>8</sup> और खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया कि “ऐ 'आमूस, तू क्या देखता है?” मैंने 'अर्ज़ की, कि साहूल। तब खुदावन्द ने फ़रमाया, देख, मैं अपनी क्रौम इस्राईल में साहूल लटकाऊँगा, और मैं फिर उनसे दरगुज़र न करूँगा;<sup>9</sup> और इस्हाक़ के ऊँचे मक़ाम बर्बाद होंगे, और इस्राईल के मक़दिस वीरान हो जाएँगे; और मैं युरब'आम के घराने के खिलाफ़ तलवार लेकर उढ़ूँगा।<sup>10</sup> तब बैतएल के काहिन इम्सियाह ने शाह — ए — इस्राईल युरब'आम को कहला भेजा कि 'आमूस ने तेरे खिलाफ़ बनी — इस्राईल में फ़ितना खड़ा किया है, और मुल्क में उसकी बातों की बर्दाश्त नहीं।<sup>11</sup> क्योंकि 'आमूस यूँ कहता है, 'कि युरब'आम तलवार से मारा जाएगा, और इस्राईल यक्कीनन अपने वतन से गुलाम होकर जाएगा।<sup>12</sup> और इम्सियाह ने 'आमूस से कहा, ऐ ग़ैबगो, तू यहूदाह के मुल्क को भाग जा; वहीं खा पी और नबुव्वत कर, <sup>13</sup>लेकिन बैतएल में फिर कभी नबुव्वत न करना, क्योंकि ये बादशाह का मक़दिस और शाही महल है।<sup>14</sup> तब 'आमूस ने इम्सियाह को जवाब दिया, कि मैं न नबी हूँ, न नबी का बेटा; बल्कि चरवाहा और गूलर का फल बटोरने वाला हूँ।<sup>15</sup> और जब मैं गल्ले के पीछे — पीछे जाता था, तो खुदावन्द ने मुझे लिया और फ़रमाया, कि 'जा, मेरी क्रौम इस्राईल से नबुव्वत कर।<sup>16</sup> इसलिए अब तू खुदावन्द का कलाम सुन। तू कहता है, 'कि इस्राईल के खिलाफ़ नबुव्वत और इस्हाक़ के घराने के खिलाफ़ कलाम न कर।<sup>17</sup> इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि तेरी बीवी शहर में कस्बी बनेगी, और तेरे बेटे और तेरी बेटियाँ तलवार से मारे जाएँगे; और

तेरी ज़मीन जरीब से बाँटी जाएगी, और तू एक नापाक मुल्क में मरेगा; और इस्राईल यक्कीनन अपने वतन से गुलाम होकर जाएगा।

## 8

2222 2222 222222 22 222222

<sup>1</sup> खुदावन्द खुदा ने मुझे ख़ाब दिखाया, और क्या देखता हूँ कि ताबिस्तानी मेवों की टोकरी है।<sup>2</sup> और उसने फ़रमाया, ऐ 'आमूस, तू क्या देखता है? मैंने 'अर्ज़ की, ताबिस्तानी मेवों की टोकरी। तब खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया कि मेरी क्रौम इस्राईल का वक़्त आ पहुँचा है; अब मैं उससे दरगुज़र न करूँगा।<sup>3</sup> और उस वक़्त हैकल के नग़मे नौहे हो जायेंगे, खुदावन्द खुदा फ़रमाता, बहुत सी लाशें पड़ी होंगी वह चुपके — चुपके उनको हर जगह निकाल फेंकेंगे।<sup>4</sup> तुम जो चाहते हो कि मुहताजों को निगल जाओ, और ग़रीबों को मुल्क से हलाक करो,<sup>5</sup> और ऐफ़ा को छोटा और मिस्काल को बड़ा बनाते, और फ़रेब की तराजू से दगाबाज़ी करते, और कहते हो, कि नये चाँद का दिन कब गुज़रेगा, ताकि हम गल्ला बेचें, और सबत का दिन कब ख़त्म होगा के गेहूँ के खत्ते खोलें,<sup>6</sup> ताकि ग़रीब को रुपये से और मुहताज को एक जोड़ी जूतियों से खरीदें, और गेहूँ की फटकन बेचें, ये बात सुनो,<sup>7</sup> खुदावन्द ने या'कूब की हश्मत की कसम खाकर फ़रमाया है: “मैं उनके कामों में से एक को भी हरगिज़ न भूलूँगा।<sup>8</sup> क्या इस वजह से ज़मीन न थरथराएगी, और उसका हर एक बाशिंदा मातम न करेगा? हाँ, वह बिल्कुल दरिया-ए-नील की तरह उठेगी और रोद — ए — मिस्र की तरह फैल कर फिर सुकड़ जाएगी।”<sup>9</sup> और खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, उस रोज़ आफ़ताब दोपहर ही को गुरुब हो जाएगा और मैं रोज़ — ए — रोशन ही में ज़मीन को तारीक कर दूँगा।<sup>10</sup> तुम्हारी 'ईदों को मातम से और तुम्हारे नामों को नौहों से बदल दूँगा, और हर एक की कमर पर टाट बँधवाऊँगा और हर एक के सिर पर चँदलापन भेजूँगा और ऐसा मातम खड़ा करूँगा जैसा इकलौते बेटे पर होता है और उसका अंजाम रोज़ — ए — तल्ल सा होगा।<sup>11</sup> खुदावन्द खुदा फ़रमाता है, देखो, वह दिन आते हैं कि मैं इस मुल्क में कहत डालूँगा न पानी की प्यास और न रोटी का कहत, बल्कि खुदावन्द का कलाम सुनने का।<sup>12</sup> तब लोग समन्दर से समन्दर तक और उत्तर से पूरब तक भटकते फिरेंगे, और खुदावन्द के कलाम की तलाश में इधर उधर दौड़ेंगे लेकिन कहीं न पाएँगे।<sup>13</sup> और उस रोज़ हसीन कुँवारियाँ और जवान मर्द प्यास से बेताब हो जाएँगे।<sup>14</sup> जो सामरिया के बुत

की कसम खाते हैं, और कहते हैं, 'ऐ दान, तेरे मा'बूद की कसम' और 'बैर सब' के तरीके की कसम,' वह गिर जाएँगे और फिर हरगिज़ न उठेंगे।

## 9

XXXXXXXXXX XX XXX XXXXXX XX XXXXXX

1 मैंने खुदावन्द को मज़बूह के पास खड़े देखा, और उसने फ़रमाया: "सुतूनों के सिर पर मार, ताकि आस्ताने हिल जाएँ; और उन सबके सिरों पर उनको पारा — पारा कर दे, और उनके बक्रिये को मैं तलवार से क़त्ल करूँगा; उनमें से एक भी भाग न सकेगा, उनमें से एक भी बच न निकलेगा। 2 अगर वह पाताल में घुस जाएँ, तो मेरा हाथ वहाँ से उनको खींच निकालेगा; और अगर आसमान पर चढ़ जाएँ, तो मैं वहाँ से उनको उतार लाऊँगा। 3 अगर वह कोह — ए — कर्मिल की चोटी पर जा छिपें, तो मैं उनको वहाँ से ढूँड निकालूँगा; और अगर समन्दर की तह में मेरी नज़र से ग़ायब हो जाए तो मैं वहाँ साँप को हुक्म करूँगा और वह उनको काटेगा। 4 और अगर दुश्मन उनको गुलाम करके ले जाएँ, तो वहाँ तलवार को हुक्म करूँगा, और वह उनको क़त्ल करेगी; और मैं उनकी भलाई के लिए नहीं, बल्कि बुराई के लिए उन पर निगाह रखूँगा।" 5 क्योंकि खुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज़ वह है कि अगर ज़मीन को छू दे तो वह गुदाज़ हो जाए, और उसकी सब मा'भूरी मातम करे; वह बिल्कुल दरिया-ए-नील की तरह उठे और रोद — ए — मिस्र की तरह फिर सुकड़ जाए। 6 वही आसमान पर अपने बालाखाने ता'मीर करता है, उसी ने ज़मीन पर अपने गुम्बद की बुनियाद रखी है; वह समन्दर के पानी को बुलाकर इस ज़मीन पर फैला देता है; उसी का नाम खुदावन्द है। 7 खुदावन्द फ़रमाता है, ऐ बनी — इस्राईल, क्या तुम मेरे लिए अहल — ए — कूश की औलाद की तरह नहीं हो? क्या मैं इस्राईल को मुल्क — ए — मिस्र से, और फ़िलिस्तिनों को कफ़तूर से, और अरामियों को कीर से नहीं निकाल लाया हूँ? 8 देखो, खुदावन्द खुदा की आँखें इस गुनाहगार मम्लुकत पर लगी हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, मैं उसे इस ज़मीन से हलाक — ओ — बर्बाद कर दूँगा, मगर या'कूब के घराने को बिल्कुल हलाक न करूँगा। 9 क्योंकि देखो, मैं हुक्म करूँगा और बनी — इस्राईल को सब क़ौमों में जैसे छलनी से छानते हैं, छानूँगा और एक दाना भी ज़मीन पर गिरने न पाएगा। 10 मेरी उम्मत के सब गुनहगार लोग जो कहते हैं कि 'हम पर न पीछे से आफ़त आएगी न आगे से,' तलवार से मारे जाएँगे। 11 मैं उस रोज़ दाऊद के गिरे हुए घर को खड़ा

करके, उसके रखनों को बंद करूँगा; और उसके खंडर की मरम्मत करके, उसे पहले की तरह ता'मीर करूँगा; 12 ताकि वह अदोम के बक्रिये और उन सब क़ौमों पर जो मेरे नाम से कहलाती हैं क़ाबिज़ हो उसको बुकू' में लाने वाला खुदावन्द फ़रमाता है। 13 देखो, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फ़रमाता है, जोतने वाला काटने वाले को, और अंगूर कुचलने वाला बोने वाले को जा लेगा; और पहाड़ों से नई मय टपकेगी, और सब टीले गुदाज़ होंगे। 14 और मैं बनी — इस्राईल, अपने लोगों को गुलामी से वापस लाऊँगा; वह उजड़े शहरों को ता'मीर करके उनमें क़याम करेंगे और बाग़ लगाकर उनकी मय पिएँगे। वह बाग़ लगाएँगे और उनके फल खाएँगे। 15 क्योंकि मैं उनको उनके मुल्क में क़ायम करूँगा और वह फिर कभी अपने वतन से जो मैंने उनको बख़्शा है, निकाले न जाएँगे, खुदावन्द तेरा खुदा फ़रमाता है।



## अब्दयाह

2222222222 22 222222

1 यह किताब अब्दयाह नाम एक नबी के लिए वस्फ़की गई है। मगर हमारे पास उसकी बाबत सवानेह उमरी की इतला (मालूमात) नहीं है। अदालत की इस सारी नबुवत में अब्दयाह यरूशलेम पर ज़ोर देता है खास तौर से इदोम की क्रौम की बाबत जो बाहर की क्रौम है। यह किताब हमें कम अज़ कम यह क़्यास करने देता है कि अब्दयाह यरूशलेम के नज़्दीक यहूदियाह के जुनुबी सलतनत के किसी मक़ाम से आया था।

22222 22222 22 22222222 22 2222

इस की तस्नीफ़ की तारीख़ तक्ररीबन 605 - 586 क्रब्ल मसीह के दर्मियान है।

ऐसा लगता है कि अब्दयाह ने इस को यरूशलेम के ज़वाल के बाद लिखा (अब्दयाह 11 — 14) शायद बाबुल की जिलावतनी के दौरान।

222222 2222222222 22222 22222

मस्त्बा नाज़रीन व सामईन इदोम की दख़ल अन्दाज़ी के बाद बचे कुचे लोग।

2222 22222222

अब्दयाह खुदा का एक नबी है जो एक उम्दा मौक़े का इस्तेमाल करता है ताकि एदोम को खुदा और इस्राईल के ख़िलाफ़ किए गये गुनाह के लिए मलामत करे। एदोम के बोग एसाव की नसल हैं जबकि इस्राईली उस के जुड़वे भाई याकूब की नसल से हैं। इन दो भाइयों के झगड़े ने इन दोनों की नस्लों पर असर डाला है। इस तक्सीम ने एदोमियों को मज्बूर किया कि वह इस्राईलियों को उन के मिस्र से ख़ुरूज के दौरान अपने मुल्क से पार करने से रोका एदोमियों के घमण्ड का गुनाह खुदावन्द की तरफ़ से अदालत के सख़्त अलफ़ाज़ की ज़रूरत ले आता है। एक वायदे की तकमील और आख़री दिनों में छुटकारे के अलफ़ाज़ के साथ यह किताब ख़तम होती है जब यह मुल्क खुदा के लोगों के लिए उन पर हुकूमत करते हुए बहाल किया जाएगा।

2222222

रास्तबाज़ फ़ैसला।

**बैरूनी ख़ाका**

1. अदोम की बर्बादी — 1:1-14

2. इस्राईल की आख़री फ़तह — 1:15-21

1 'अबदियाह का ख़्वाब; हम ने खुदावन्द से यह ख़बर सुनी, और क्रौमों के बीच क़ासिद यह पैग़ाम ले गया: कि

चलो उस पर हमला करें। खुदावन्द खुदा अदोम के बारे में यूँ फ़रमाता है।

22222 22 22222 22 22222 22222

2 कि देख मैंने तुझे क्रौमों के बीच हक़ीर कर दिया है, तू बहुत ज़लील है। 3 ऐ चट्टानों के शिगाफ़ों में रहने वाले, तेरे दिल के घमंड ने तुझे धोका दिया है; तेरा मकान ऊँचा है और तू दिल में कहता है, कौन मुझे नीचे उतारेगा? 4 खुदावन्द फ़रमाता है, अगरचे तू 'उक्काब की तरह ऊँची परवाज़ हो और सितारों में अपना आशियाना बनाए, तोभी मैं तुझे वहाँ से नीचे उतारूँगा। 5 अगर तेरे घर में चोर आएँ, या रात को डाकू आ घुसँ, तेरी कैसी बर्बादी है तो क्या वह हस्व — ए — ख़्वाहिश ही न लेंगे? अगर अंगूर तोड़ने वाले तेरे पास आएँ, तो क्या कुछ दाने बाक़ी न छोड़ेंगे? 6 'ऐसौ का माल कैसा ढूँड निकाला गया, और उसके छुपे हुए खज़ानों की कैसी तलाश हुई! 7 तेरे सब हिमायतियों ने तुझे सरहद तक हाँक दिया है, और उन लोगों ने जो तुझ से मेल रखते थे तुझे धोका दिया और मग़लूब किया, और उन्होंने जो तेरी रोटी खाते थे, तेरे नीचे जाल बिछाया; उसमें थोड़े भी होशियार नहीं। 8 खुदावन्द फ़रमाता है, क्या मैं उस दिन अदोम से होशियारों को और 'अक्लमन्दी को पहाड़ी — ए — 'ऐसौ से हलाक न करूँगा? 9 ऐ तीमान, तेरे बहादुर घबरा जाएँगे, यहाँ तक के पहाड़ी — ए — 'ऐसौ के रहने वालों में से हर एक काट डाला जाएगा। 10 उस क़त्ल की वजह और उस जुल्म की वजह से जो तू ने अपने भाई या 'कूब पर किया है, तू शर्मिन्दगी से भरपूर और हमेशा के लिए बर्बाद होगा। 11 जिस दिन तू उसके मुख़ालिफ़ों के साथ खड़ा था, जिस दिन अजनबी उसके लश्कर को गुलाम करके ले गए और बेगानों ने उसके फाटकों से दाख़िल होकर येरूशलेम पर पर्ची डाली, तू भी उनके साथ था 12 तुझे ज़रूरी न था कि तू उस दिन अपने भाई की जिलावतनी को खड़ा देखता रहता, और बनी यहूदाह की हलाकत के दिन खुश होता और मुसीबत के रोज़ बड़ी ज़ुबान बकता। 13 तुझे मुनासिब न था कि तू मेरे लोगों की मुसीबत के दिन उनके फाटकों में घुसता, और उनकी मुसीबत के रोज़ उनकी बदहाली को खड़ा देखता रहता, और उनके लश्कर पर हाथ बढ़ाता। 14 तुझे ज़रूरी न था कि घाटी में खड़ा होकर, उसके फ़रारियों को क़त्ल करता, और उस दुख के दिन में उसके बाक़ी थके लोगों को हवाले करता।

22222 22 2222222 22222 22 222222222 22 222222

15 क्योंकि सब कौमों पर खुदावन्द का दिन आ पहुँचा है। जैसा तू ने किया है, वैसा ही तुझ से किया जाएगा। तेरा किया तेरे सिर पर आएगा। 16 क्योंकि जिस तरह तुम ने मेरे कोह — ए — मुकद्दस पर पिया, उसी तरह सब कौमें पिया करेंगी, हाँ पीती और निगलती रहेगी; और वह ऐसी होगी जैसे कभी थी ही नहीं। 17 लेकिन जो बच निकलेंगे सिय्यून पहाड़ी पर रहेंगे, और वह पाक होगा और या'कूब का घराना अपनी मीरास पर काबिज होगा। 18 तब या'कूब का घराना आग होगा, और यूसुफ़ का घराना शो'ला, और 'ऐसौ का घराना फूस; और वह उसमें भड़केंगे और उसको खा जाएँगे, और 'ऐसौ के घराने में से कोई न बचेगा; क्योंकि ये खुदावन्द का फ़रमान है। 19 और दख्खन के रहने वाले पहाड़ी — ए — 'ऐसौ, और मैदान के रहने वाले फ़िलिस्तीन के मालिक होंगे; और वह इफ़राईम और सामरिया के खेतों पर काबिज होंगे, और बिनयमीन जिलआद का वारिस होगा। 20 और बनी — इस्राईल के लशकर के सब गुलाम, जो कना'नियों में सारपत तक हैं, और येरूशलेम के गुलाम जो सिफ़ाराद में हैं, दखिन के शहरों पर काबिज हो जाएँगे। 21 और रिहाई देने वाले सिय्यून की पहाड़ी पर चढ़ेंगे ताकि पहाड़ी — ए — 'ऐसौ की 'अदालत करें, और बादशाही खुदावन्द की होगी।

## यूनाह

यूनाह 1:1-14

1 यूनाह 1:1 मस्सूस तौर पर नबी यूनाह को यूनाह की किताब का मुसन्निफ़ बतौर पहचानती है। यूनाह नासरत के इलाक़े के नज्दीक जात — हिफ़र नाम एक क़स्बे का था जो बाद में गलील के नाम से जाना जाने लगा। (2 सलातीन 14:25) यह बात यूनाह को उन थोड़े नबियों में शुमार करता है जो इस्राएल के शुमाली हुकूमत से इसतिक्बाल किया गया था। यूनाह की किताब खुदा के सबर और शफ़क़त भरी मेहरबानी को रोशनास करती है। और उसकी रज़ामन्दाना को ज़ाहिर करती है कि जो उस के नाफ़र्मान थे उन्हें एक दूसरा मौक़ा दें।

यूनाह 1:15-16

इसके तस्नीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 793 - 450 क़ब्ज़मसीह के बीच है।

कहानी इस्राईल में शुरू होकर बहीरा — ए — रोम के जाफ़ा बन्दरगाह तक चलती जाती है और निनवा में जाकर ख़तम हो जाती है जो आज सीरियाह सलतनत का पाये तख़्त शहर है।

यूनाह 1:17-24

यूनाह की किताब के नाज़रीन व सामईन बनी इस्राईल थे और मुस्तक़बिल में क़ारिईन — ए — बाईबल।

यूनाह 1:25-26

नाफ़र्मानि और बेदारी इस किताब के ख़ास मौज़ूआत हैं। व्हेल मछली के पेट में यूनाह का तज़ुर्बा उसको एक बेमिसाल मौक़ा देता है कि एक बे — मिसल छुटकारे की तलाश करे जब वह तौबा करता है। उसकी शुरूआती नाफ़र्मानि न सिर्फ़ उसको शख़्सी बेदारी की तरफ़ ले जाती है बल्कि नीन्वे के लोगों और बादशाह को भी। खुदा का पैग़ाम तमाम दुनिया के लिए है न सिर्फ़ उन लोगों के लिए जिन्हें हम चाहते हैं या उन्हें जो हमारे जैसे हैं। खुदा को हकीकी तौबा की ज़रूरत है। खुदा हमारे दिलों और सच्चे एहसासात से सरोकार रखता है न कि हमारे नेक कामों से जो दूसरों को मुतास्सिर करने की नियत से किए जाते हैं।

यूनाह 1:27

खुदा का फ़ज़ल तमाम लोगों के लिए।

बैरूनी खाका

1. यूनाह की ना फ़र्मानि — 1:1-14

2. यूनाह का एक बड़ी मछली के ज़रिए निगल लिया जाना — 1:15, 16

3. यूनाह का तौबा किया जाना — 1:17-2:10

4. यूनाह का नीन्वे में मनादी किया जाना — 3:1-10

5. खुदा के रहम पर यूनाह का गुस्सा — 4:1-11

यूनाह 2:1-10

1 खुदावन्द का कलाम यूनाह बिन अमितै पर नाज़िल हुआ। 2 कि उठ, उस बड़े शहर निनवे को जा और उसके खिलाफ़ ऐलान कर; क्योंकि उनकी बुराई मेरे सामने पहुँची है। 3 लेकिन यूनाह खुदावन्द के सामने से तरसीस को भागा, और याफ़ा में पहुँचा और वहाँ उसे तरसीस को जाने वाला जहाज़ मिला; और वह किराया देकर उसमें सवार हुआ ताकि खुदावन्द के सामने से तरसीस को जहाज़ वालों के साथ जाए। 4 लेकिन खुदावन्द ने समन्दर पर बड़ी आँधी भेजी, और समन्दर में सख़्त तूफ़ान बर्पा हुआ, और अँदेशा था कि जहाज़ तबाह हो जाए। 5 तब मल्लाह हैरान हुए और हर एक ने अपने मा'बूद को पुकारा; और वह सामान जो जहाज़ में था समन्दर में डाल दिया ताकि उसे हल्का करें, लेकिन यूनाह जहाज़ के अन्दर पड़ा सो रहा था। 6 तब ना खुदा उसके पास जाकर कहने लगा, “तू क्यों पड़ा सो रहा है? उठ अपने मा'बूद को पुकार! शायद हम को याद करे और हम हलाक न हों।” 7 और उन्होंने आपस में कहा, “आओ, हम पर्ची डालकर देखें कि यह आफ़त हम पर किस की वजह से आई।” चुनाँचे उन्होंने पर्ची डाला, और यूनाह का नाम निकला। 8 तब उन्होंने उस से कहा, तू हम को बता कि यह आफ़त हम पर किस की वजह से आई है? तेरा क्या पेशा है, और तू कहाँ से आया है?, तेरा वतन कहाँ है, और तू किस क्रौम का है?, 9 उसने उनसे कहा, “मैं इब्रानी हूँ और खुदावन्द आसमान के खुदा बहर — ओ — बर के ख़ालिक से डरता हूँ।” 10 तब वह खौफ़ज़दा होकर उस से कहने लगे, तू ने यह क्या किया? क्योंकि उनको मा'लूम था कि वह खुदावन्द के सामने से भागा है, इसलिए कि उस ने खुद उन से कहा था। 11 तब उन्होंने उस से पूछा, “हम तुझ से क्या करें कि समन्दर हमारे लिए ठहर जाए?” क्योंकि समन्दर ज्यादा तूफ़ानी होता जाता था 12 तब उस ने उन से कहा, “मुझे उठा कर समन्दर में फेंक दो, तो तुम्हारे लिए समन्दर ठहर जाएगा; क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह बड़ा तूफ़ान तुम पर मेरी ही वजह से आया है।” 13 तो भी मल्लाहों ने डंडा चलाने में बड़ी मेहनत की कि किनारे पर पहुँचें, लेकिन न पहुँच सके, क्योंकि समन्दर उनके खिलाफ़ और भी ज्यादा

तूफानी होता जाता था। <sup>14</sup> तब उन्होंने खुदावन्द के सामने गिड़गिड़ा कर कहा, 'ऐ खुदावन्द हम तेरी मिन्नत करते हैं कि हम इस आदमी की जान की वजह से हलाक न हों, और तू खून — ए — नाहक को हमारी गर्दन पर न डाले; क्योंकि ऐ खुदावन्द, तूने जो चाहा वही किया। <sup>15</sup> और उन्होंने यूनाह को उठा कर समन्दर में फेंक दिया और समन्दर के मौजों का जोर रुक गया। <sup>16</sup> तब वह खुदावन्द से बहुत डर गए, और उन्होंने उसके सामने कुर्बानी पेश की और नज़रें मानीं <sup>17</sup> लेकिन खुदावन्द ने एक बड़ी मछली मुकर्रर कर रखी थी कि यूनाह को निगल जाए; और यूनाह तीन दिन रात मछली के पेट में रहा।

## 2

????? ? ? ? ?

<sup>1</sup> तब यूनाह ने मछली के पेट में खुदावन्द अपने खुदा से यह दुआ की। <sup>2</sup> 'मैंने अपनी मुसीबत में खुदावन्द से दुआ की, और उसने मेरी सुनी; मैंने पताल की गहराई से दुहाई दी, तूने मेरी फ़रियाद सुनी। <sup>3</sup> तूने मुझे गहरे समन्दर की गहराई में फेंक दिया, और सैलाब ने मुझे घेर लिया। तेरी सब मौजें और लहरें मुझ पर से गुज़र गईं <sup>4</sup> और मैं समझा कि तेरे सामने से दूर हो गया हूँ लेकिन मैं फिर तेरी मुक़द्दस हैकल को देखूंगा। <sup>5</sup> सैलाब ने मुझे घेर लिया; समन्दर मेरी चारों तरफ़ था; समन्दरी नबात मेरी सर पर लिपट गई। <sup>6</sup> मैं पहाड़ों की गहराई तक ग़र्क़ हो गया ज़मीन के रास्ते हमेशा के लिए मुझ पर बंद हो गए; तो भी ऐ खुदावन्द मेरे खुदा तूने मेरी जान पाताल से बचाई। <sup>7</sup> जब मेरा दिल बेताब हुआ, तो मैं ने खुदावन्द को याद किया; और मेरी दुआ तेरी मुक़द्दस हैकल में तेरे सामने पहुँची <sup>8</sup> जो लोग झूटे मा'बूदों को मानते हैं, वह शफ़क़त से महरूम हो जाते हैं। <sup>9</sup> मैं हम्द करता हुआ तेरे सामने कुर्बानी पेश करूंगा; मैं अपनी नज़रें अदा करूंगा नजात खुदावन्द की तरफ़ से है।' <sup>10</sup> और खुदावन्द ने मछली को हुक्म दिया, और उस ने यूनाह को खुशकी पर उगल दिया।

## 3

????? ? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>1</sup> और खुदावन्द का कलाम दूसरी बार यूनाह पर नाज़िल हुआ। <sup>2</sup> कि उठ उस बड़े शहर निनवा को जा और वहाँ उस बात का 'ऐलान कर जिसका मैं तुझे हुक्म देता हूँ। <sup>3</sup> तब यूनाह खुदावन्द के कलाम के मुताबिक़ उठ कर निनवा को गया, और निनवा बहुत बड़ा शहर था। उसकी

दूरी तीन दिन की राह थी <sup>4</sup> और यूनाह शहर में दाख़िल हुआ और एक दिन की राह चला। उस ने 'ऐलान किया और कहा, "चालीस रोज़ के बाद निनवा बर्बाद किया जायेगा।" <sup>5</sup> तब निनवा के बाशिंदों ने खुदा पर ईमान लाकर रोज़ा का 'ऐलान किया और छोटे और बड़े सब ने टाट ओढ़ा। <sup>6</sup> और यह ख़बर निनवा के बादशाह को पहुँची; और वह अपने तख़्त पर से उठा और बादशाही लिबास को उतार डाला और टाट ओढ़ कर राख़ पर बैठ गया। <sup>7</sup> और बादशाह और उसके अर्कान — ए — दौलत के फ़रमान से निनवा में यह 'ऐलान किया गया और इस बात का 'ऐलान हुआ कि कोई इंसान या हैवान ग़ल्ला या शराब कुछ न चखें और न खाए पिए। <sup>8</sup> लेकिन इंसान और हैवान टाट से मुलब्स हों और खुदा के सामने रोना पीटना करें बल्कि हर शख्स अपनी बुरे चाल चलन और अपने हाथ के ज़ुल्म से बाज़ आए। <sup>9</sup> शायद खुदा रहम करे और अपना इरादा बदले, और अपने क्रहर शदीद से बाज़ आए और हम हलाक न हों। <sup>10</sup> जब खुदा ने उनकी ये हालत देखी कि वह अपने अपने बुरे चाल चलन से बाज़ आए, तो वह उस 'अज़ाब से जो उसने उन पर नाज़िल करने को कहा था, बाज़ आया और उसे नाज़िल न किया।

## 4

????? ? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>1</sup> लेकिन यूनाह इस से बहुत नाखुश और नाराज़ हुआ। <sup>2</sup> और उस ने खुदावन्द से यूँ दुआ की कि ऐ खुदावन्द, जब मैं अपने वतन ही में था और तरसीस को भागने वाला था, तो क्या मैंने यही न कहा था? मैं जानता था कि तू रहीम — ओ — करीम खुदा है जो क्रहर करने में धीमा और शफ़क़त में ग़नी है और अज़ाब नाज़िल करने से बाज़ रहता है। <sup>3</sup> अब ऐ खुदावन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मेरी जान ले ले, क्योंकि मेरे इस जीने से मर जाना बेहतर है। <sup>4</sup> तब खुदावन्द ने फ़रमाया, क्या तू ऐसा नाराज़ है? <sup>5</sup> और यूनाह शहर से बाहर मशरिक् की तरफ़ जा बैठा; और वहाँ अपने लिए एक छप्पर बना कर उसके साये में बैठ रहा, कि देखें शहर का क्या हाल होता है। <sup>6</sup> तब खुदावन्द खुदा ने कटू की बेल उगाई, और उसे यूनाह के ऊपर फैलाया कि उसके सर पर साया हो और वह तकलीफ़ से बचे और यूनाह उस बेल की वजह से निहायत खुश हुआ। <sup>7</sup> लेकिन दूसरे दिन सुबह के वक़्त खुदा ने एक कीड़ा भेजा, जिस ने उस बेल को काट डाला और वह सूख गई। <sup>8</sup> और जब आफ़ताब बलन्द हुआ, तो खुदा ने पूरब से लू चलाई और आफ़ताब



कि गर्मी ने यूनाह के सर में असर किया और वह बेताब हो गया और मौत का आरज़ूमन्द होकर कहने लगा कि मेरे इस जीने से मर जाना बेहतर है।<sup>9</sup> और खुदा ने यूनाह से फ़रमाया, “क्या तू इस बेल की वजह से ऐसा नाराज़ है?” उस ने कहा, “मैं यहाँ तक नाराज़ हूँ कि मरना चाहता हूँ।”<sup>10</sup> तब खुदावन्द ने फ़रमाया कि तुझे इस बेल का इतना खयाल है, जिसके लिए तूने न कुछ मेहनत की और न उसे उगाया। जो एक ही रात में उगी और एक ही रात में सूख गई।<sup>11</sup> और क्या मुझे ज़रूरी न था कि मैं इतने बड़े शहर निनवा का खयाल करूँ, जिस में एक लाख बीस हजार से ज्यादा ऐसे हैं जो अपने दहने और बाई हाथ में फ़र्क नहीं कर सकते, और बे शुमार मवेशी है।

## मीकाह

मीकाह की किताब का मुसन्निफ़ मीकाह नबी था

(मीकाह 1:1) मीका एक दीहाती नबी था जिसे एक शहरी इलाक़े में भेजा गया कि क़रीबुल वुकूअ होने वाले अदालत की बाबत खुदा का पैग़ाम लोगों तक पहुंचाए। यह मुआशिरती और रूहानी बे इंसाफ़ी और बुतपरस्ती के नतीजे की बिना पर था। दूर तक फैले हुए मुल्क के ज़िराअती इलाक़े में रहने वाला मीका बाहर सरकारी मर्कज़ में रहने लगा था, उसके अपने क्रौम में उसका रूत्बा था, मुआशिर के नीचे के तबक़े के लोगों के लिए उसका मज्बूत सरोकार था, जिन में अपाहज, ज़ात से ख़ारिज किए हुए लोगों और मुसीबत में पड़े हुए लोग शामिल थे। (4:6) मीकाह की किताब येसू मसीह की पैदाइश की बाबत पुराने अदह नामे की एक बहुत ही अहम नबुव्वत पेश करती है। जो ख़ासकर 700 साल पहले उसके पैदा होने की जगह बेतेलहम से और उसकी अबदी फ़ितरत से ता'ल्लुक रखती है (मीकाह 5:2)।

इस के तस्नीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 730 - 650 कब्बल मसीह के बीच है।

इस्राईल के शुमाली सलतनत के ज़वाल से पहले शायद मीकाह नबी के पैग़ामात के कलाम आने शुरू हुए। मीकाह की किताब के दूसरे हिस्से बाबुल की ज़िलवत्नी के दौरान लिखे गए फिर बाद में कुछ ज़िलावतन जो घर वापस आये थे।

मीकाह ने इस्राईल के शुमाली सलतनत और यहूदाह के जुनूबी सलतनत के लोगों के लिए लिखा।

मीकाह की किताब दो अहम पेश बीनियों की तरफ़ ग़ौर कराती है: पहला है इस्राईल और यहूदा पर अदालत (1:1-3:12) और दूसरा है एक हज़ार सालों की बादशाही के दौरान खुदा के लोगों की बहाली खुदा अपने लोगों के हक़ में अपनी भलाइयों को याद दिलाता है कि किस तरह उसने उनकी पर्वाह की उस हालत में जबकि उन्होंने सिर्फ़ अपनी परवाह की थी।

इलाही अदालत

बैरूनी खाका

1. अदालत के लिए खुदा आ रहा है — 1:1-2:13

2. बर्बादी का पैग़ाम — 3:1-5:15

3. सज़ा का हुक्म सुनाने का पैग़ाम — 6:1-7:10

4. मज्मून का आख़री हिस्सा — 7:11-20

1 सामरिया और येरूशलेम के बारे में खुदावन्द का कलाम जो शाहान — ए — यहूदाह यूताम, आखज़ — ओ — हिज़क्रियाह के दिनों में मीकाह मोरशती पर ख़्वाब में नाज़िल हुआ।

2 ऐ सब लोगों, सुनो! ऐ ज़मीन और उसकी मा'मूरी कान लगाओ! हाँ खुदावन्द अपने मुक़द्दस घर से तुम पर गवाही दे। 3 क्यूँकि देख, खुदावन्द अपने घर से बाहर आता है, और नाज़िल होकर ज़मीन के ऊँचे मक़ामों को पायमाल करेगा। 4 और पहाड़ उनके नीचे पिघल जाएँगे, और वादियाँ फट जाएँगी, जैसे मोम आग से पिघल जाता और पानी कराड़े पर से बह जाता है। 5 ये सब या'कूब की ख़ता और इस्राईल के घराने के गुनाह का नतीजा है। या'कूब की ख़ता क्या है? क्या सामरिया नहीं? और यहूदाह के ऊँचे मक़ाम क्या हैं? क्या येरूशलेम नहीं? 6 इसलिए मैं सामरिया को खेत के तूदे की तरह, और ताकिस्तान लगाने की जगह की तरह बनाऊँगा, और मैं उसके पत्थरों को वादी में ढलकाऊँगा और उसकी बुनियाद उखाड़ दूँगा। 7 और उसकी सब खोदी हुई मूरतें चूर — चूर की जाएँगी, और जो कुछ उसने मज़दूरी में पाया आग से जलाया जाएगा; और मैं उसके सब बुतों को तोड़ डालूँगा क्यूँकि उसने ये सब कुछ कस्बी की मज़दूरी से पैदा किया है; और वह फिर कस्बी की मज़दूरी हो जाएगा। 8 इसलिए मैं मातम — ओ — नौहा करूँगा; मैं नंगा और बरहना होकर फिरूँगा; मैं गीदड़ों की तरह चिल्लाऊँगा और शूतरमुर्गों की तरह ग़म करूँगा। 9 क्यूँकि उसका ज़ख़्म लाइलाज़ है, वह यहूदाह तक भी आया; वह मेरे लोगों के फाटक तक बल्कि येरूशलेम तक पहुँचा। 10 जात में उसकी ख़बर न दो, और हरगिज़ नौहा न करो; बैत 'अफ़रा में खाक पर लोटो। 11 ऐ सफ़ीर की रहने वाली, तू बरहना — ओ — रुस्वा होकर चली जा; ज़ानान की रहने वाली निकल नहीं सकती। बैतएज़ल के मातम के ज़रिए' उसकी पनाहगाह तुम से ले ली जाएगी। 12 मारोत की रहने वाली भलाई के इन्तिज़ार में तड़पती है, क्यूँकि खुदावन्द की तरफ़ से बला नाज़िल हुई, जो येरूशलेम के फाटक तक पहुँची। 13 ऐ लकीस की रहने वाली बादपा घोड़ों को रथ में जोत; तू बिन्त — ए — सिय्यून के गुनाह का आगाज़ हुई क्यूँकि इस्राईल की ख़ताएँ भी तुझ में पाई गई।

14 इसलिए तू मोरसत जात को तलाक़ देगी; अकज़ीब के घराने इस्राईल के बादशाहों से दगाबाज़ी करेंगे। 15 ऐ मरेसा की रहने वाली, तुझ पर क़ब्ज़ा करने वाले को तेरे पास लाऊँगा; इस्राईल की शौकत 'अदूल्लाम में आएगी। 16 अपने प्यारे बच्चों के लिए सिर मुँडाकर चंदली हो जा; गिद्ध की तरह अपने चंदलेपन को ज्यादा कर क्योंकि वह तेरे पास से गुलाम होकर चले गए।

# 2

$\frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2}$ 
 $\frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2}$ 
 $\frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2}$ 
 $\frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2}$

1 उन पर अफ़सोस, जो बदकिरदारी के मंसूबे बाँधते और बिस्तर पर पड़े — पड़े शरारत की तदबीरों ईजाद करते हैं, और सुबह होते ही उनको 'अमल में लाते हैं; क्योंकि उनको इसका इस्ति्यार है। 2 वह लालच से खेतों को ज़ब्त करते, और घरों को छीन लेते हैं; और यूँ आदमी और उसके घर पर, हाँ, मर्द और उसकी मीरास पर जुल्म करते हैं। 3 इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं इस घराने पर आफ़त लाने की तदबीर करता हूँ जिससे तुम अपनी गर्दन न बचा सकोगे, और गर्दनकशी से न चलोगे; क्योंकि ये बुरा वक्रत होगा। 4 उस वक्रत कोई तुम पर ये मसल लाएगा और पुरदर्द नौहे से मातम करेगा, और कहेगा, “हम बिल्कुल शरारत हुए; उसने मेरे लोगों का हिस्सा बदल डाला; उसने कैसे उसको मुझ से जुदा कर दिया! उसने हमारे खेत बाग़ियों को बाँट दिए।” 5 इसलिए तुम में से कोई न बचेगा, जो खुदावन्द की जमा'अत में पैमाइश की रस्सी डाले। 6 बकवासी कहते हैं, “बकवास न करो! इन बातों के बारे में बकवास न करो। ऐसे लोगों से रुस्वाई जुदा न होगी।” 7 ऐ बनी या'कूब, क्या ये कहा जाएगा कि खुदावन्द की रूह क़ासिर हो गई? क्या उसके यही काम हैं? क्या मेरी बातें रास्तरौ के लिए फ़ायदेमन्द नहीं। 8 अभी कल की बात है कि मेरे लोग दुश्मन की तरह उठे; तुम सुलह पसंद — ओ — बेफ़िक़्र राहगीरों की चादर उतार लेते हो। 9 तुम मेरे लोगों की 'औरतों को उनके मरगूब घरों से निकाल देते हो, और तुमने मेरे जलाल को उनके बच्चों पर से हमेशा के लिए दूर कर दिया। 10 उठो, और चले जाओ, क्योंकि ला'इलाज — ओ — मोहलिक नापाकी की वजह से ये तुम्हारी आरामगाह नहीं है। 11 अगर कोई झूट और बतालत का पैरो कहे कि मैं शराब — ओ — नशा की बातें करूँगा, तो वही इन लोगों का नबी होगा। 12 ऐ या'कूब, मैं यक़ीनन तेरे सब लोगों को इकट्ठा करूँगा, मैं यक़ीनन इस्राईल के बक्रिये को जमा' करूँगा मैं उनको बसराह की भेड़ों और चरागाह

के गल्ले की तरह इकट्ठा करूँगा और आदमियों का बड़ा शोर होगा। <sup>13</sup> तोड़ने वाला उनके आगे — आगे गया है; वह तोड़ते हुए फाटक तक चले गए, और उसमें से गुज़र गए; और उनका बादशाह उनके आगे — आगे गया, या'नी खुदावन्द उनका पेशवा।

# 3

???????? ?? ???? ??????????? ?? ???? ???? ?

1 और मैंने कहा: 'ऐ या'कूब के सरदारों और बनी — इसराईल के हाकिमों, सुनो। क्या मुनासिब नहीं कि तुम 'अदालत से वाकिफ़ हो?' 2 तुम नेकी से दुश्मनी और बुराई से मुहब्बत रखते हो; और लोगों की खाल उतारते, और उनकी हड्डियों पर से गोश्त नोचते हो। 3 और मेरे लोगों का गोश्त खाते हो, और उनकी खाल उतारते, और उनकी हड्डियों को तोड़ते और उनको टुकड़े — टुकड़े करते हो; जैसे वह हाँडी और देग के लिए गोश्त हैं। 4 तब वह खुदावन्द को पुकारेंगे, लेकिन वह उनकी न सुनेगा; हाँ, वह उस वक़्त उनसे मुँह फेर लेगा क्योंकि उनके 'आमाल बुरे हैं। 5 उन नबियों के हक़ में जो मेरे लोगों को गुमराह करते हैं, जो लुक़्मा पाकर 'सलामती सलामती पुकारते हैं, लेकिन अगर कोई खाने को न दे तो उससे लड़ने को तैयार होते हैं, खुदावन्द यूँ फ़रमाता है। 6 "कि अब तुम पर रात हो जाएगी, जिसमें ख़्वाब न देखोगे और तुम पर तारीकी छा जाएगी; और ग़ैबबीनी न कर सकोगे, और नबियों पर आफ़ताब गुरुब होगा, और उनके लिए दिन अँधेरा हो जाएगा। 7 तब ग़ैबबीन पशेमान और फ़ालगीर शर्मिन्दा होंगे, बल्कि सब लोग मुँह पर हाथ रखेंगे, क्योंकि खुदा की तरफ़ से कुछ जवाब न होगा। 8 लेकिन मैं खुदावन्द की रूह के ज़रिए' कुव्वत — ओ — 'अदालत — ओ — दिलेरी से मा'मूर हूँ, ताकि या'कूब को उसका गुनाह और इसराईल को उसकी ख़ता जताऊँ। 9 ऐ बनी या'कूब के सरदारों, और ऐ बनी — इसराईल के हाकिमों, जो 'अदालत से 'अदावत रखते हो, और सारी रास्ती को मरोड़ते हो, इस बात को सुनो। 10 तुम जो सिय्यून को ख़ूँरज़ी से और येरूशलेम को बेइन्साफ़ी से ता'मीर करते हो। 11 उसके सरदार रिश्वत लेकर 'अदालत करते हैं, और उसके काहिन मज़दूरी लेकर ता'लीम देते हैं, और उसके नबी रुपया लेकर फ़ालगीरी करते हैं; तोभी वह खुदावन्द पर भरोसा करते हैं और कहते हैं, क्या खुदावन्द हमारे बीच नहीं? इसलिए हम पर कोई बला न आएगी।" 12 इसलिए सिय्यून तुम्हारी ही वजह से खेत की तरह जोता जाएगा; येरूशलेम खण्डरों का ढेर हो जाएगा,

और इस खुदा के घर का पहाड़ जंगल की ऊँची जगहों की तरह होगा।

## 4

222222 22 2222 2222 22 2222 22222222

1 लेकिन आखिरी दिनों में यूँ होगा कि खुदावन्द के घर का पहाड़ पहाड़ों की चोटियों पर काईम किया जाएगा, और सब टीलों से बलंद होगा और उम्मतें वहाँ पहुँचेंगी।

2 और बहुत सी क्रौमें आएँगी, और कहेंगी, 'आओ, खुदावन्द के पहाड़ पर चढ़ें, और या'कूब के खुदा के घर में दाखिल हों, और वह अपनी राहें हम को बताएगा और हम उसके रास्तों पर चलेंगे। क्योंकि शरी'अत सिय्यून से, और खुदावन्द का कलाम येरूशलेम से सादिर होगा।

3 और वह बहुत सी उम्मतों के बीच 'अदालत करेगा, और दूर की ताकतवर क्रौमों को डाँटेगा; और वह अपनी तलवारों को तोड़ कर फालें, और अपने भालों को हँसुवे बना डालेंगे; और क्रौम — क्रौम पर तलवार न चलाएगी, और वह फिर कभी जंग करना न सीखेंगे। 4 तब हर एक आदमी अपनी ताक और अपने अंजीर के दरख्त के नीचे बैठेगा, और उनको कोई न डराएगा, क्योंकि रब्ब — उल — अफ़वाज ने अपने मुँह से ये फ़रमाया है।

5 क्योंकि सब उम्मतें अपने — अपने मा'बूद के नाम से चलेंगी, लेकिन हम हमेशा से हमेशा तक खुदावन्द अपने खुदा के नाम से चलेंगे। 6 खुदावन्द फ़रमाता है, कि मैं उस रोज़ लंगड़ों को जमा' करूँगा और जो हाँक दिए गए और जिनको मैंने दुख दिया, इकट्ठा करूँगा;

7 और लंगड़ों को बक्रिया, और जिलावतनों को ताकतवर क्रौम बनाऊँगा; और खुदावन्द कोह — ए — सिय्यून पर अब से हमेशा हमेशा तक उन पर सल्लनत करेगा।

8 ऐ गल्ले की दीदगाह, ऐ बिन्त — ए — सिय्यून की पहाड़ी, ये तेरे ही लिए हैं; क़दीम सल्लनत, या'नी दुख्तर — ए — येरूशलेम की बादशाही तुझे मिलेगी।

9 अब तू क्यूँ चिल्लाती है, जैसे दर्द — ए — जिह में मुब्तिला है? क्या तुझ में कोई बादशाह नहीं? क्या तेरा सलाहकार हलाक हो गया? 10 ऐ बिन्त — ए — सिय्यून, ज़च्चा की तरह तकलीफ़ उठा और पैदाइश के दर्द में मुब्तिला हो; क्यूँकि अब तू शहर से निकल कर मैदान में रहेगी और बाबुल तक जाएगी वहाँ तू रिहाई पायेगी। और वहीं खुदावन्द तुझ को तेरे दुश्मनों के हाथ से छुड़ाएगा। 11 अब बहुत सी क्रौमें तेरे खिलाफ़ जमा' हुई हैं और कहती हैं "सिय्यून नापाक हो और हमारी आँखें उसकी रुस्वाई देखें।" 12 लेकिन वह खुदावन्द की तदबीर से आगाह नहीं, और उसकी मसलहत को नहीं

समझतीं; क्यूँकि वह उनको खलीहान के पुलों की तरह जमा' करेगा। 13 ऐ बिन्त — ए — सिय्यून, उठ और पायमाल कर, क्यूँकि मैं तेरे सींग को लोहा और तेरे खुरों को पीतल बनाऊँगा, और तू बहुत सी उम्मतों को टुकड़े — टुकड़े करेगी; उनके ज़ख़ीरे खुदावन्द को नज़र करेगी और उनका माल रब्ब — उल — 'आलमीन के सामने लाएगी।

## 5

1 ऐ बिन्त — ए — अफ़वाज, अब फ़ौजों में जमा' हो; हमारा घिराव किया जाता है। वह इस्राईल के हाकिम के गाल पर छड़ी से मारते हैं।

22222222 22 22 222222

2 लेकिन ऐ बैतलहम इफ़राताह, अगरचे तू यहूदाह के हज़ारों में शामिल होने के लिए छोटा है, तोभी तुझ में से एक शख्स निकलेगा; और मेरे सामने इस्राईल का हाकिम होगा, और उसका मसदर ज़माना — ए — साबिक़, हाँ क़दीम — उल — अय्याम से है। 3 इसलिए वह उनको छोड़ देगा, जब तक कि ज़च्चा दर्द — ए — जिह से फ़ारिग़ न हो; तब उसके बाक़ी भाई बनी — इस्राईल में आ मिलेंगे। 4 और वह खड़ा होगा और खुदावन्द की कुदरत से, और खुदावन्द अपने खुदा के नाम की बुज़ुर्गी से गल्ले बानी करेगा। और वह काईम रहेंगे, क्यूँकि वह उस वक़्त इन्तिहा — ए — ज़मीन तक बुज़ुर्ग़ होगा। 5 और वही हमारी सलामती होगा। जब असूर हमारे मुल्क में आएगा और हमारे क़सूरों में क़दम रखेगा, तो हम उसके खिलाफ़ सात चरवाहे और आठ सरगिरोह खड़े करेंगे; 6 और वह असूर के मुल्क को, और नमरूद की सरज़मीन के मदखलों को तलवार से वीरान करेंगे; और जब असूर हमारे मुल्क में आकर हमारी हदों को पायमाल करेगा, तो वह हम को रिहाई बख़्शेगा। 7 और या'कूब का बक्रिया बहुत सी उम्मतों के लिए ऐसा होगा, जैसे खुदावन्द की तरफ़ से ओस और घास पर बारिश, जो न इंसान का इन्तिज़ार करती है, और न बनी आदम के लिए ठहरती है। 8 और या'कूब का बक्रिया या बहुत सी क्रौमों और उम्मतों में, ऐसा होगा जैसे शेर — ए — बबर जंगल के जानवरों में, और जवान शेर भेड़ों के गल्ले में, जब वह उनके बीच से गुज़रता है, तो पायमाल करता और फाड़ता है, और कोई छुड़ा नहीं सकता। 9 तेरा हाथ तेरे दुश्मनों पर उठे, और तेरे सब मुखालिफ़ हलाक हो जाएँ। 10 और खुदावन्द फ़रमाता है, उस रोज़ मैं तेरे घोड़ों को जो तेरे बीच हैं काट डालूँगा, और तेरे रथों को बर्बाद करूँगा; 11 और तेरे मुल्क के शहरों को बर्बाद, और तेरे सब क़िलों को



मिस्मार करूँगा। <sup>12</sup> और मैं तुझ से जादूगरी दूर करूँगा, और तुझ में फ़ालगीर न रहेंगे; <sup>13</sup> और तेरी खोदी हुई मूरतें और तेरे सुतून तेरे बीच से बर्बाद कर दूँगा और फिर तू अपनी दस्तकारी की इबादत न करेगा; <sup>14</sup> और मैं तेरी यसीरतों को तेरे बीच से उखाड़ डालूँगा और तेरे शहरों को तबाह करूँगा। <sup>15</sup> और उन क्रौमों पर जिसने सुना नहीं, अपना क्रहर — ओ — ग़ज़ब नाज़िल करूँगा।

## 6

????? ?? ????????? ?? ????????? ??????

<sup>1</sup> अब खुदावन्द का फ़रमान सुन: उठ, पहाड़ों के सामने मुबाहसा कर, और सब टीले तेरी आवाज़ सुनें। <sup>2</sup> ऐ पहाड़ों, और ऐ ज़मीन की मज़बूत बुनियादों, खुदावन्द का दा'वा सुनो, क्योंकि खुदावन्द अपने लोगों पर दा'वा करता है, और वह इस्राईल पर हुज्जत साबित करेगा। <sup>3</sup> ऐ मेरे लोगों मैंने तुम से क्या किया है और तुमको किस बात में आजुर्दा किया है मुझ पर साबित करो। <sup>4</sup> क्योंकि मैं तुम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, और गुलामी के घर से फ़िदिया देकर छुड़ा लाया; और तुम्हारे आगे मूसा और हारून और मरियम को भेजा। <sup>5</sup> ऐ मेरे लोगों, याद करो कि शाह — ए — मोआब बलक़ ने क्या मश्वरत की, और बल'आम — बिन — ब'ऊर ने उसे क्या जवाब दिया; और शित्तीम से जिलजाल तक क्या — क्या हुआ, ताकि खुदावन्द की सदाक़त से वाकिफ़ हो जाओ। <sup>6</sup> मैं क्या लेकर खुदावन्द के सामने आऊँ, और खुदा ताला को क्यूँकर सिज्दा करूँ? क्या सोख्तनी कुर्बानियों और यकसाला बछड़ों को लेकर उसके सामने आऊँ? <sup>7</sup> क्या खुदावन्द हज़ारों मेंढों से या तेल की दस हज़ार नहरों से खुश होगा? क्या मैं अपने पहलौटे को अपने गुनाह के बदले में, और अपनी औलाद को अपनी जान की ख़ता के बदले में दे दूँ? <sup>8</sup> ऐ इंसान, उसने तुझ पर नेकी ज़ाहिर कर दी है; खुदावन्द तुझ से इसके सिवा क्या चाहता है कि तू इन्साफ़ करे और रहमदिली को 'अज़ीज़ रखे, और अपने खुदा के सामने फ़रोतनी से चले? <sup>9</sup> खुदावन्द की आवाज़ शहर को पुकारती है और 'अक्लमंद उसके नाम का लिहाज़ रखता है: 'असा और उसके मुक़रर करने वाले की सुनो। <sup>10</sup> क्या शरीर के घर में अब तक नाज़ायज़ नफ़े' के ख़ज़ाने और नाक्रिस — ओ — नफ़रती पैमाने नहीं हैं। <sup>11</sup> क्या वह दगा की तराजू और झूटे तौल बाट का थैला रखता हुआ, बेगुनाह ठहरेगा। <sup>12</sup> क्योंकि वहाँ के दौलतमंद ज़ुल्म से भरे हैं; और उसके बाशिन्दे झूट बोलते हैं, बल्कि उनके मुँह में दगाबाज़ ज़बान है। <sup>13</sup> इसलिए मैं तुझे मुहलिक

ज़ल्म लगाऊँगा, और तेरे गुनाहों की वजह से तुझ को वीरान कर डालूँगा। <sup>14</sup> तू खाएगा लेकिन आसूदा न होगा, क्यूँकि तेरा पेट ख़ाली रहेगा; तू छिपाएगा लेकिन बचा न सकेगा, और जो कुछ कि तू बचाएगा मैं उसे तलवार के हवाले करूँगा। <sup>15</sup> तू बोएगा, लेकिन फ़सल न काटेगा; ज़ैतून को रौदेंगा, लेकिन तेल मलने न पाएगा; तू अंगूर को कुचलेगा, लेकिन मय न पिएगा। <sup>16</sup> क्यूँकि उमरी के क़वानीन और अख़ीअब के ख़ान्दान के आ'माल की पैरवी होती है, और तुम उनकी मश्वरत पर चलते हो, ताकि मैं तुम को वीरान करूँ, और उसके रहने वालों को सुस्कार का ज़रिया' बनाऊँ; इसलिए तुम मेरे लोगों की रुस्वाई उठाओगे।

## 7

????? ?? ????????? ??? ??????

<sup>1</sup> मुझ पर अफ़सोस! मैं ताबिस्तानी मेवा जमा' होने और अंगूर तोड़ने के बाद की ख़ोशाचीनी की तरह हूँ, न खाने को कोई ख़ोशा, और न पहला पक्का दिलपसंद अंजीर है। <sup>2</sup> दीनदार आदमी दुनिया से जाते रहे, लोगों में कोई रास्तबाज़ नहीं; वह सब के सब घात में बैठे हैं कि खून करें हर शख्स जाल बिछा कर अपने भाई का शिकार करता है। <sup>3</sup> उनके हाथ बुराई में फुर्तीले हैं; हाकिम रिश्वत माँगता है और क़ाज़ी भी यही चाहता है, और बड़े आदमी अपने दिल की हिंस की बातें करते हैं; और यूँ साज़िश करते हैं। <sup>4</sup> उनमें सबसे अच्छा तो ऊँट कटारे की तरह है, और सबसे रास्तबाज़ ख़ारदार झाड़ी से बदतर है। उनके निगहबानों का दिन, हाँ उनकी सज़ा का दिन आ गया है; अब उनको परेशानी होगी। <sup>5</sup> किसी दोस्त पर भरोसा न करो; हमराज़ पर भरोसा न रखो; हाँ, अपने मुँह का दरवाज़ा अपनी बीबी के सामने बंद रखो <sup>6</sup> क्योंकि बेटा अपने बाप को हक़ीर जानता है, और बेटी अपनी माँ के और बहू अपनी सास के खिलाफ़ होती है; और आदमी के दुश्मन उसके घर ही के लोग हैं। <sup>7</sup> लेकिन मैं खुदावन्द की राह देखूँगा, और अपने नजात देने वाले खुदा का इन्तिज़ार करूँगा, मेरा खुदा मेरी सुनेगा। <sup>8</sup> ऐ मेरे दुश्मन, मुझ पर खुश न हो, क्यूँकि जब मैं गिरूँगा, तो उठ खड़ा हूँगा; जब अंधेरे में बैठूँगा, तो खुदावन्द मेरा नूर होगा। <sup>9</sup> मैं खुदावन्द के क्रहर को बर्दाश्त करूँगा, क्यूँकि मैंने उसका गुनाह किया है जब तक वह मेरा दा'वा साबित करके मेरा इन्साफ़ न करे। वह मुझे रोशनी में लाएगा, और मैं उसकी सदाक़त को देखूँगा। <sup>10</sup> तब मेरा दुश्मन जो मुझ से कहता था, खुदावन्द तेरा खुदा कहाँ है ये देखकर रुस्वा होगा। मेरी आँखें उसे देखेंगी वह गलियों की कीच

की तरह पायमाल किया जाएगा। <sup>11</sup> तेरी फ़सील की ता'मीर के रोज़, तेरी हदें बढ़ाई जाएँगी। <sup>12</sup> उसी रोज़ असूर से और मिस्र के शहरों से, और मिस्र से दरिया — ए — फ़रात तक, और समन्दर से समन्दर तक और कोहिस्तान से कोहिस्तान तक, लोग तेरे पास आएँगे। <sup>13</sup> और ज़मीन अपने बाशिन्दों के 'आमाल की वजह से वीरान होगी। <sup>14</sup> अपने 'असा से अपने लोगों, या'नी अपनी मीरास की गल्लेबानी कर, जो कर्मिल के जंगल में तन्हा रहते हैं, उनको बसन और ज़िलआद में पहले की तरह चरने दे। <sup>15</sup> जैसे तेरे मुल्क — ए — मिस्र से निकलते वक़््त दिखाए, वैसे ही अब मैं उसे 'अजायब दिखाऊँगा। <sup>16</sup> क़ौमें देखकर अपनी तमाम तवानाई से शर्मिन्दा होंगी; वह मुँह पर हाथ रखेंगी, और उनके कान बहरे हो जाएँगे। <sup>17</sup> वह साँप की तरह खाक चाटेंगी, और अपने छिपने की जगहों से ज़मीन के कीड़ों की तरह थरथराती हुई आएँगी; वह खुदावन्द हमारे खुदा के सामने डरती हुई आयेंगी हाँ वह तुझ से परेशान होंगी। <sup>18</sup> तुझ सा खुदा कौन है, जो बदकिरदारी मु'आफ़ करे और अपनी मीरास के बक़िये की ख़ताओं से दरगुज़रे? वह अपना क्रहर हमेशा तक नहीं रख छोड़ता, क्यूँकि वह शफ़क़त करना पसंद करता है। <sup>19</sup> वह फिर हम पर रहम फ़रमाएगा; वही हमारी बदकिरदारी को पायमाल करेगा और उनके सब गुनाह समन्दर की तह में डाल देगा। <sup>20</sup> तू या'कूब से वफ़ादारी करेगा और अब्रहाम को वह शफ़क़त दिखाएगा, जिसके बारे में तू ने पुराने ज़माने में हमारे बाप — दादा से क़सम खाई थी।

## नाहूम

नाहूम की किताब का मुसन्निफ़ खुद ही अपनी

1 नाहूम की किताब का मुसन्निफ़ खुद ही अपनी पहचान नाहूम के नाम से करता है (इब्रानी में इस नाम का मतलब है तसल्ली देने वाला या “शमख्वा”) एलकोशैट (1:1) नबी होने के नाते नाहूम को असीरिया के लोगों के बीच तौबा के लिए कायल करने वास्ते भेजा गया था। मगर सीरिया के लोगों ने यूनाह के पैग़ाम को जब उसने नीन्वे को सुनाया था 150 साल बाद तौबा किया सो ज़ाहिरा तौर से पिछली बुतपरस्ती की हालत की तरफ़ रूजूअ हो चुके थे।

इस के तस्नीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 620 - 612 क़ब्ल

मसीह के बीच है।

दरअसल नाहूम के ज़माने का सही तरीके से आसानी से हवाला दिया जा सकता है। जबकि इस के बयानात दो जाने पहचाने तारीकी वाक्किआत के बीच वाक़े हुए।

नाहूम की नबुव्वत को दोनों सलतनतों के बीच

सुनाया गया यानी असीरिया को जिन्होंने दस क़बीलों को अपने कब्जे में कर रखा था और यहूदा के जुनूबी सलतनत को भी जिन को डर था कि पहले की तरह हालत उन पर वाक़े न हो जाएं।

खुदा का इन्साफ़ हमेशा सही और हमेशा यकीनी

होता है। क्या उसको एक वक़्त के लिए रहमत अता होने का चुनाव करनी चाहिए? वह अच्छा इनाम खुदावन्द के आखरी इन्साफ़ के लिए समझोता नहीं करेगा आखिर में सब के लिए। खुदा ने पहले से ही उन के लिए यूना नबी को 150 साल पहले अपने वायदे के साथ भेज रखा था कि अगर वह अपनी बुराइयों को यही जारी रखेंगे तो क्या होगा। उस ज़माने के लोगों ने तो तौबा कर लिया था मगर अब नाहूम के दिनों में पहले से ज्यादा बदतर हो गये थे। असीरिया के लोग सच मुच में वहशियाना और ज़ालिम हो गये थे। अपने फ़तह और ग़लबे का घमण्ड भी उन्हें था। अब नाहूम यहूदा के लोगों से कह रहा था कि मायूस होने और उम्मेद छोड़ने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि खुदा ने अदालत का फैसला कर लिया है और असीरिया के लोग बहुत जल्द उस चीज़ को हासिल करेंगे जिन की वह तवक्को रखते थे।

दिलासा

बैरूनी खाका

1. खुदा का जाह — ओ — जलाल — 1:1-14

2. खुदा की अदालत और नैनवाह — 1:15-3:19

1 नीनवा के बारे में बार — ए — नबुव्वत। इलकूशी नाहूम की रोया की किताब।

खुदावन्द गय्यूर और इन्तक़ाम लेनेवाला खुदा

है; हाँ खुदावन्द इन्तक़ाम लेने वाला और क़हहार है; खुदावन्द अपने मुखालिफ़ों से इन्तक़ाम लेता है और अपने दुश्मनों के लिए क़हर को कायम रखता है। 3 खुदावन्द क़हर करने में धीमा और कुदरत में बढ़कर है, और मुजरिम को हरगिज़ बरी न करेगा। खुदावन्द की राह गिर्दबाद और आँधी में है, और बादल उसके पाँव की गर्द हैं। 4 वही समन्दर को डाँटता और सुखा देता है, और सब नदियों को खुश्क कर डालता है; बसन और कर्मिल कुमला जाते हैं, और लुबनान की कोंपलें मुरझा जाती हैं। 5 उसके खौफ़ से पहाड़ काँपते और टीले पिघल जाते हैं; उसके सामने ज़मीन हाँ, दुनिया और उसकी सब मा'भूरी थरथराती है। 6 किसको उसके क़हर की ताब है? उसके ग़ज़बनाक गुस्से की कौन बर्दाश्त कर सकता है? उसका क़हर आग की तरह नाज़िल होता है वह चट्टानों को तोड़ डालता है। 7 खुदावन्द भला है और मुसीबत के दिन पनाहगाह है वह अपने भरोसा करने वालों को जानता है। 8 लेकिन अब वह उसके मकान को बड़े सैलाब से हलाक — ओ — बर्बाद करेगा और तारीकी उसके दुश्मनों को दौड़ायेगी। 9 तुम खुदावन्द के खिलाफ़ क्या मंसूबा बाँधते हो वह बिल्कुल हलाक कर डालेगा अज़ाब दोबारा न आएगा। 10 अगरचे वह उलझे हुए काँटों की तरह पेचीदा, और अपनी मय से तर हो तो भी वह सूखे भूसे की तरह बिल्कुल जला दिए जायेंगे। 11 तुझसे एक ऐसा शख्स निकला है जो खुदावन्द के खिलाफ़ बुरे मंसूबे बाँधता और शरारत की सलाह देता है। 12 खुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि अगरचे वह ज़बरदस्त और बहुत से हों तो भी वह काटे जायेंगे और वह बर्बाद हो जाएगा अगरचे मैंने तुझे दुख दिया तोभी फिर कभी तुझे दुख न दूँगा। 13 और अब मैं उसका जुआ तुझ पर से तोड़ डालूँगा और तेरे बंधनों को टुकड़े — टुकड़े कर दूँगा। 14 लेकिन खुदावन्द ने तेरे बारे में ये हुक्म सादिर फ़रमाया है कि तेरी नसल बाक़ी न रहे मैं तेरे बुतखाने से खोदी हुई और ढाली हुई मूरतों को बर्बाद करूँगा, मैं तेरे लिए क़ब्र तैयार करूँगा क्यूँकि तू निकम्मा है 15 देख

जो खुशखबरी लाता और सलामती का 'ऐलान करता है उसके पाँव पहाड़ों पर हैं, ऐ यहूदाह अपनी 'ईदें मना और अपनी नज़रे अदा कर क्योंकि फिर खबीस तेरे बीच से नहीं गुजरेगा वह साफ़ काट डाला गया है।

## 2

?????? ?? ????????

1 बिखेरने वाला तुझ पर चढ़ आया है, 'क्रिले' को महफूज़ रख: राह की निगहबानी कर: कमर बस्ता हो और खूब मज़बूत रह। 2 क्योंकि खुदावन्द या'कूब की रौनक को इस्राईल की रौनक की तरह, फिर बहाल करेगा: अगरचे ग़ारतग़रों ने उनको ग़ारत किया है, और उनकी ताक की शाखें तोड़ डाली हैं। 3 उसके बहादुरों की ढालें सुर्ख हैं; जंगी मर्द क्रिमिज़ी वर्दी पहने हैं। उसकी तैयारी के वक्रत रथ फ़ौलाद से झलकते हैं, और देवदार के नेज़े बशिदत हिलते हैं। 4 रथ सड़कों पर तुन्दी से दौड़ते, और मैदान में बेतहाशा जाते हैं; वह मशा'लों की तरह चमकते, और बिजली की तरह कोंदते हैं। 5 वह अपने सरदारों को बुलाता है, वह टक्करें खाते आते हैं; वह जल्दी — जल्दी फ़सील पर चढ़ते हैं, और अड़तला तैयार किया जाता है। 6 नहरों के फाटक खुल जाते हैं, और क़स्र गुदाज़ हो जाता है; 7 हुस्सब बेपर्दा हुई और गुलामी में चली गई; उसकी लौंडियाँ कुमारियों की तरह कराहती हुई मातम करती और छाती पीटती हैं। 8 नीनवा तो पहले ही से हौज़ की तरह है, तोभी वह भागे चले जाते हैं। वह पुकारते हैं, "ठहरो, ठहरो!", लेकिन कोई मुड़कर नहीं देखता। 9 चाँदी लूटो! सोना लूटो! क्योंकि माल की कुछ इन्तिहा नहीं सब नफ़ीस चीज़ें कसरत से हैं। 10 वह खाली, सुनसान और वीरान है! उनके दिल पिघल गए और घुटने टकराने लगे हर एक की कमर में शिदत से दर्द है और इन सबके चेहरे जर्द हो गए। 11 शेरों की माँद, और जवान बबरों की खाने की जगह कहाँ है जिसमें शेर — ए — बबर और शेरनी और उनके बच्चे बेखौफ़ फिरते थे? 12 शेर — ए — बबर अपने बच्चों की खुराक के लिए फाड़ता था, और अपनी शेरनियों के लिए गला घोटता था; और अपनी माँदों को शिकार से, और ग़ारों को फाड़े हुआँ से भरता था। 13 रब्ब — उल — अफ़वाज़ फ़रमाता है, देख, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ और उसके रथों को जलाकर धुवाँ बना दूँगा और तलवार तेरे जवान बबरों को खा जाएगी। और मैं तेरा शिकार ज़मीन पर से मिटा डालूँगा, और तेरे क़ासिदों की आवाज़ फिर कभी सुनाई न देगी।

## 3

?????? ?? ??????? ?? ??????? ?????

1 ख़ूरज़ शहर पर अफ़सोस, वह झूट और लूट से बिल्कुल भरा है; वह लूटमार से बाज़ नहीं आता। 2 सुनो, चाबुक की आवाज़, और पहियों की खड़खड़ाहट और घोड़ों का कूदना और रथों के हिचकोले! 3 देखो, सवारों का हमला और तलवारों की चमक और भालों की झलक और मक्तूलों के ढेर, और लाशों के तूदे; लाशों की इन्तिहा नहीं, लाशों से ठोकरें खाते हैं। 4 ये उस खूबसूरत जादूगरनी फ़ाहिशा की बदकारी की कसरत का नतीजा है, क्योंकि वह क़ौमों को अपनी बदकारी से, और घरानों को अपनी जादूगरी से बेचती है। 5 रब्ब — उल — अफ़वाज़ फ़रमाता है, देख, मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ और तेरे सामने से तेरा दामन उठा दूँगा, और क़ौमों को तेरी बरहनगी और ममलुकतों को तेरा सत्तर दिखलाऊँगा। 6 और नजासत तुझ पर डालूँगा, और तुझे रुस्वा करूँगा, हाँ तुझे अन्गुशतनुमा कर दूँगा। 7 और जो कोई तुझ पर निगाह करेगा, तुझ से भागेगा और कहेगा, नीनवा वीरान हुआ; इस पर कौन तरस खाएगा? मैं तेरे लिए तसल्ली देने वाले कहाँ से लाऊँ। 8 क्या तू नोआमून से बेहतर है, जो नहरों के बीच बसा था और पानी उसकी चारों तरफ़ था; जिसकी शहरपनाह दरिया-ए-नील था, और जिसकी फ़सील पानी था? 9 कूश और मिस्र उसकी बेइन्तिहा तवानाई थे; फूट और लूबीम उसके हिमायती थे। 10 तोभी वह जिलावतन और गुलाम हुआ; उसके बच्चे सब कूचों में पटक दिए गए, और उनके शुफ़ा पर पर्चा डाला गया, और उसके सब बुजुर्ग ज़ंजीरों से जकड़े गए। 11 तू भी मस्त होकर अपने आप को छिपाएगा, और दुश्मन के सामने से पनाह ढूँडेगा। 12 तेरे सब क्रिले' अंजीर के दरख्त की तरह हैं, जिस पर पहले पक्के फल लगे हों, जिसको अगर कोई हिलाए तो वह खाने वाले के मुँह में गिर पड़ें। 13 देख, तेरे अन्दर तेरे मर्द 'औरतें बन गए, तेरी ममलुकत के फाटक तेरे दुश्मनों के सामने खुले हैं; आग तेरे अड़बंगों को खा गई। 14 तू अपने घिराव के वक्रत के लिए पानी भर ले, और अपने क्रिलों' को मज़बूत कर; गढ़े में उतरकर मिट्टी तैयार कर, और ईंट का साँचा हाथ में ले। 15 वहाँ आग तुझे खा जाएगी, तलवार तुझे काट डालेगी। वह टिड्डी की तरह तुझे चट कर जाएगी। अगरचे तू अपने आप को चट कर जाने वाली टिड्डियों की तरह फ़िरावान करे, और फ़ौज़ — ए — मलख की तरह बेशुमार हो जाए। 16 तू ने अपने सौदागरों को आसमान के सितारों से ज्यादा फ़िरावान किया। चट कर जाने वाली टिड्डी, खराब करके उड़



जाती है। <sup>17</sup> तेरे हाकिम मलख और तेरे सरदार टिङ्गियों का हुजूम हैं, जो सर्दी के वक्त झाड़ियों में रहती हैं; और जब आफ़ताब निकलता है तो उड़ जाती हैं, और उनका मकान कोई नहीं जानता। <sup>18</sup> ऐ शाह — ए — असूर, तेरे चरवाहे सो गए; तेरे सरदार लेट गए। तेरी रि'आया पहाड़ों पर बिखर गई, और उसको इकट्ठा करने वाला कोई नहीं। <sup>19</sup> तेरी शिकस्तगी ला'इलाज है, तेरा ज़ख़्म कारी है; तेरा हाल सुनकर सब ताली बजाएँगे। क्योंकि कौन है जिस पर हमेशा तेरी शरारत का बार न था?

## हबक्कूक

हबक्कूक 1:1 हबक्कूक की किताब

1 हबक्कूक 1:1 हबक्कूक की किताब कइ हबक्कूक नबी की तरफ से एक इल्हाम — ए — रब्बानी का वसीला मानते हैं। उस के नाम के अलावा बुनियादी तौर से हम हबक्कूक की बाबत कुछ नहीं जानते। हकीकत यह है कि “हबक्कूक नबी” कहलाया जाता है यह अलफ़ाज़ ही राये ज़नी पेश करता है कि वह इस से मुतालिक एक जाना पहचाना था इसे से ज्यादा और पहचान की ज़रूरत नहीं है।

हबक्कूक की किताब की तस्नीफ़ की तारीख 612 - 605 क़बल मसीह के बीच है।

हबक्कूक ने इस किताब को हो सकता है यहूदा के जुनूबी सलतनत के ज़वाल के कुछ ही अर्से पहले लिखा हो।

यहूदा के लोग (जुनूबी सलतनत) और एक आम खत

बतौर और खुदा के लोगों के लिए जो हर जगह पाए जाते हैं।

हबक्कूक इस बात से ताज्जुब कर रहा था कि खुदा

अपने लोगों को मौजूदा मुसीबतों और तकलीफ़ों से गुज़रने देता है। खुदा जवाब देता है और हबक्कूक का ईमान बहाल होता है। किताब के लिखे जाने का मक्सद है कि उसे यह मनादी करना है कि यहवे अपने लोगों का मुहाफ़िज़ है। और वह उन्हें सहारा देगा और संभाले रहेगा बशरतेके वह उस पर कामिल भरोसा करें। खुदा जो यहूदा का एक आला जंगजू सिपाही होने के नाते वह एक दिन नारास्त बाबुल के लोगों का इन्साफ़ करेगा। हबक्कूक की किताब एक घमण्डी लोगों के हलीम किए जाने की एक तस्वीर पेश करती है और वह यह भी कहता है कि रास्तबाज़ ईमान से ज़िन्दा रहेगा (हबक्कूक 2:4)।

क्रादिर — ए — मुतलक खुदा पर भरोसा करना।

बैरूनी खाका

1. हबक्कूक की शिकायतें — 1:1-2:20

2. हबक्कूक की दुआ — 3:1-19

1 हबक्कूक नबी के ख़ाब की नबुव्वत के बारे में:

हबक्कूक की किताब की तस्नीफ़ की तारीख 612 - 605 क़बल मसीह के बीच है।

2 ए खुदावन्द, मैं कब तक फ़रियाद करूँगा, और तू न सुनेगा? मैं तेरे सामने कब तक चिल्लाऊँगा “ज़ुल्म”, “ज़ुल्म” और तू न बचाएगा? 3 तू क्यूँ मुझे बद किरदारी और टेढ़ी रविश दिखाता है? क्यूँकि ज़ुल्म और सितम मेरे सामने हैं फ़ितना — ओ — फ़साद खड़े होते रहते हैं। 4 इसलिए शरी'अत कमज़ोर हो गई, और इन्साफ़ मुतलक जारी नहीं होता। क्यूँकि शरीर सादिको को घेर लेते हैं; इसलिए इन्साफ़ का खून हो रहा है।

कौमों पर नज़र करो, और देखो; और हैरान हो;

क्यूँकि मैं तुम्हारे दिनों में एक ऐसा काम करने को हूँ कि अगर कोई तुम से उसका बयान करे तो तुम हरगिज़ उम्मीद न करोगे। 6 क्यूँकि देखो, मैं कसदियों को चढ़ालाऊँगा: वह गुस्सावर और कम'अक़ल कौम हैं, जो चौड़ी ज़मीन से होकर गुज़रते हैं, ताकि उन बस्तियों पर जो उनकी नहीं हैं, कब्ज़ा कर लें। 7 वह डरावने और खौफ़नाक हैं: वह खुद ही अपनी 'अदालत और शान का मसदर हैं। 8 उनके घोड़े चीतों से भी तेज़ रफ़्तार, और शाम को निकलने वाले भेड़ियों से ज्यादा खूँख़ार हैं; और उनके सवार कूदते फाँदते आते हैं। हाँ, वह दूर से चले आते हैं, वह उक्राब की तरह हैं, जो अपने शिकार पर झपटता है। 9 वह सब ग़ारतगरी को आते हैं, वह सीधे बढ़े चले आते हैं; और उनके गुलाम रेत के ज़रों की तरह बेशुमार होते हैं। 10 वह बादशाहों को ठठों में उड़ाते, और 'उमरा को मसख़रा बनाते हैं। वह किलों को हकीर जानते हैं, क्यूँकि वह मिट्टी से दमदम बाँधकर उनको फ़तह कर लेते हैं। 11 तब वह हवा के झोंके की तरह गुज़रते और ख़ता करके गुनहगार होते हैं, क्यूँकि उनका ज़ोर ही उनका खुदा है। 12 ए खुदावन्द मेरे खुदा, ए मेरे कुदूस, क्या तू अज़ल से नहीं है? हम नहीं मरेंगे। ए खुदावन्द, तूने उनको 'अदालत के लिए ठहराया है, और ए चट्टान, तूने उनको तादीब के लिए मुक़रर किया है। 13 तेरी आँखें ऐसी पाक हैं कि तू गुनाह को देख नहीं सकता, और टेढ़ी रविश पर निगाह नहीं कर सकता। फिर तू दगाबाज़ों पर क्यूँ नज़र करता है, और जब शरीर अपने से ज्यादा सादिक को निगल जाता है, तब तू क्यूँ खामोश रहता है? 14 और बनी आदम को समन्दर की मछलियों, और कीड़े — मकौड़ों की तरह बनाता है जिन पर कोई हुकूमत करने वाला नहीं? 15 वह उन सब को शस्त से उठा लेते हैं, और अपने जाल में फँसाते हैं; और महाजाल में जमा' करते हैं, इसलिए वह शादमान और खुश वक्रत हैं। 16 इसीलिए वह अपने जाल के आगे कुर्बानी अदा करते हैं और अपने बड़े जाल के आगे खुशबू

जलाते हैं, क्योंकि इनके वसीले से उनका हिस्सा लज़ीज़, और उनकी ग़िज़ा चिकनी है। <sup>17</sup> इसलिए क्या वह अपने जाल को ख़ाली करने और क़ौमों को बराबर क़त्ल करने से बाज़ न आएंगे?

# 2

**1** और मैं अपनी दीदगाह पर खड़ा रहूँगा और बुर्ज पर चढ़कर इन्तिज़ार करूँगा कि वह मुझ से क्या कहता है, और मैं अपनी फ़रियाद के बारे में क्या जवाब दूँ।

□□□□□ □□ □□□□□ □□□□

2 तब खुदावन्द ने मुझे जवाब दिया और फ़रमाया कि “ख्वाब को तस्वियों पर ऐसी सफ़ाई से लिख कि लोग दौड़ते हुए भी पढ़ सकें।” 3 क्योंकि ये ख्वाब एक मुक़र्रर वक़्त के लिए है; ये जल्द ज़हूर में आएगा और ख़ता न करेगा। अगरचे इसमें देर हो, तोभी इसके इन्तिज़ार में रह, क्योंकि ये यकीनन नाज़िल होगा, देर न करेगा। 4 देख, घमण्डी आदमी का दिल रास्त नहीं है, लेकिन सच्चा अपने ईमान से ज़िन्दा रहेगा। 5 बेशक, घमण्डी आदमी शराब की तरह दगाबाज़ है, वह अपने घर में नहीं रहता। वह पाताल की तरह अपनी ख्वाहिश बढ़ाता है; वह मौत की तरह है, कभी आसूदा नहीं होता; बल्कि सब क़ौमों को अपने पास जमा करता है, और सब उम्मतों को अपने नज़दीक इकट्ठा करता है।” 6 क्या ये सब उस पर मिसाल न लाएँगे, और तनज़न न कहेंगे कि “उस पर अफ़सोस, जो औरों के माल से मालदार होता है, लेकिन ये कब तक? और उस पर जो कसरत से गिरवी लेता है।” 7 क्या वह मुझे खा जाने को अचानक न उठेंगे, और तुझे परेशान करने को बेदार न होंगे, और उनके लिए लूट न होगा? 8 क्योंकि तूने बहुत सी क़ौमों को लूट लिया, और मुल्क — ओ — शहर — ओ — बाशिंदों में ख़ूँरज़ी और सितमगरी की है, इसलिए बाक़ी माँदा लोग तुझे ग़ारत करेंगे। 9 “उस पर अफ़सोस जो अपने घराने के लिए नाजायज़ नफ़ा उठाता है, ताकि अपना आशियाना बुलन्दी पर बनाये, और मुसीबत से महफूज़ रहे। 10 तूने बहुत सी उम्मतों को बर्बाद करके अपने घराने के लिए रुसवाई हासिल की, और अपनी जान का गुनहगार हुआ। 11 क्योंकि दीवार से पत्थर चिल्लायेंगे, और छत से शहतीर जवाब देंगे। 12 उस पर अफ़सोस, जो क़स्बे को ख़ूँरज़ी से और शहर को बादकिरदारी से ता’मीर करता है! 13 क्या यह रब्ब — उल — अफ़वाज़ की तरफ़ से नहीं कि लोगों की मेहनत आग के लिए हो, और क़ौमों की मशक्कत बतालत के लिए हो? 14 क्योंकि जिस तरह समन्दर पानी से भरा है, उसी तरह ज़मीन खुदावन्द के जलाल के ‘इल्म से मा’मूर है। 15 उस पर

अफ़सोस जो अपने पड़ोसी को अपने क्रूर का जाम  
पिलाकर मतवाला करता है, ताकि उसको बे पर्दा करे!

16 तू 'इज्जत के 'इवज्ज रुसवाई से भर गया है। तू भी पीकर अपनी नामखूनी जाहिर कर! खुदावन्द के दहने हाथ का प्याला अपने दौर में तुझ तक पहुँचेगा, और रुसवाई तेरी शौकत को ढाँप लेगी। 17 चूँकि तूने मुल्क — ओ — शहर — ओ — बाशिन्दों में खूँरजी और सितमगरी की है, इसलिए वह ज़ियादती जो लुबनान पर हुई और वह हलाकत जिसमें जानवर डर गए, तुझ पर आएगी। 18 खोदी हुई मूरत से क्या हासिल कि उसके बनाने वाले ने उसे खोदकर बनाया? ढली हुई मूरत और झूट सिखाने वाले से क्या फ़ायदा कि उसका बनाने वाला उस पर भरोसा रखता और गूँगे बुतों को बनाता है? 19 उस पर अफ़सोस जो लकड़ी से कहता है, जाग, और बे ज़बान पत्थर से कि उठ, क्या वह ता'लीम दे सकता है? देख वह तो सोने और चाँदी से मढ़ा है लेकिन उसमें कुछ भी ताक़त नहीं। 20 मगर खुदावन्द अपनी मुकद्दस हैकल में है; सारी ज़मीन उसके सामने खामोश रहे।”

# 3

???????????????? ? ? ?

1 शिगायूनीत के सुर पर हबक्कूक नबी की दु'आ:  
2 ऐ खुदावन्द, मैंने तेरी शोहरत सुनी, और डर गया;  
ऐ खुदावन्द, इसी ज़माने में अपने काम को पूरा कर।  
इसी ज़माने में उसको ज़ाहिर कर; ग़ज़ब के वक़्त रहम  
को याद फ़रमा। 3 खुदा तेमान से आया, और कुदूस  
फ़ारान के पहाड़ से। उसका ज़लाल आसमान पर छा  
गया, और ज़मीन उसकी ता'रीफ़ से मा'मूर हो गई।  
4 उसकी जगमगाहट नूर की तरह थी, उसके हाथ से  
किरनें निकलती थीं, और इसमें उसकी कुदरत छिपी  
हुई थी, 5 बीमारी उसके आगे — आगे चलती थी, और  
आग के तीर उसके क़दमों से निकलते थे। 6 वह खड़ा  
हुआ और ज़मीन थर्रा गई, उसने निगाह की और क्रौमें  
तितर — बितर हो गई। अज़ली पहाड़ टुकड़े — टुकड़े  
हो गए; पुराने टीले झुक गए, उसके रास्ते अज़ली हैं।  
7 मैंने कूशन के ख़ेमों को मुसीबत में देखा: मुल्क — ए  
— मिदियान के पर्दे हिल गए। 8 ऐ खुदावन्द, क्या तू  
नदियों से बेज़ार था? क्या तेरा ग़ज़ब दरियाओं पर था?  
क्या तेरा ग़ज़ब समन्दर पर था कि तू अपने घोड़ों और  
फ़तहयाब रथों पर सवार हुआ? 9 तेरी कमान ग़िलाफ़ से  
निकाली गई, तेरा 'अहद क़बाइल के साथ उस्तवार था।  
सिलाह, तूने ज़मीन को नदियों से चीर डाला। 10 पहाड़  
तुझे देखकर काँप गए: सैलाब गुज़र गए; समन्दर से शोर

उठा, और मौजें बुलन्द हुई। <sup>11</sup> तेरे उड़ने वाले तीरों की रोशनी से, तेरे चमकीले भाले की झलक से, चाँद — ओ — सूरज अपने बुजों में ठहर गए। <sup>12</sup> तू ग़ज़बनाक होकर मुल्क में से गुज़रा; तूने ग़ज़ब से क़ौमों को पस्त किया। <sup>13</sup> तू अपने लोगों की नजात की खातिर निकला, हाँ, अपने मम्सूह की नजात की खातिर तूने शरीर के घर की छत गिरा दी, और उसकी बुनियाद बिल्कुल खोद डाली। <sup>14</sup> तूने उसी की लाठी से उसके बहादुरों के सिर फोड़े; वह मुझे बिखेरने को हवा के झोके की तरह आए, वह ग़रीबों को तन्हाई में निगल जाने पर खुश थे। <sup>15</sup> तू अपने घोड़ों पर सवार होकर समन्दर से, हाँ, बड़े सैलाब से पार हो गया। <sup>16</sup> मैंने सुना और मेरा दिल दहल गया, उस शोर की वजह से मेरे लब हिलने लगे; मेरी हड्डियाँ बोसीदा हो गई, और मैं खड़े — खड़े काँपने लगा। लेकिन मैं सुकून से उनके बुरे दिन का मुन्तज़िर हूँ, जो इकट्ठा होकर हम पर हमला करते हैं। <sup>17</sup> अगरचे अंजीर का दरख्त न फूले, और डाल में फल न लगे, और ज़ैतून का फल ज़ाय' हो जाए, और खेतों में कुछ पैदावार न हो, और भेड़खाने से भेड़ें जाती रहें, और तवेलों में जानवर न हों, <sup>18</sup> तोभी मैं खुदावन्द से खुश रहूँगा, और अपनी नजात बरख़्श खुदा से खुश वक़्त हूँगा। <sup>19</sup> खुदावन्द खुदा, मेरी ताक़त है; वह मेरे पैर हिरनी के से बना देता है, और मुझे मेरी ऊँची जगहों में चलाता है।



## सफ़नयाह

सफ़नयाह 1:1

1 सफ़नयाह 1:1 में मुसन्निफ़ खुदा ही कूशी का बेटा सफ़नयाह बतौर अपनी पहचान कराता है। सफ़नयाह बिना कूशी बिना जदलयाह बिन अमरयाह बिन हिज़िकियाह कूशी गदेलिया का और वह हिज़िकियाह का बेटा था अमरयाह का और वह सफ़नयाह के नाम का मतलब है खुदा के ज़रिए बचाव किया गया यर्मयाह; (21:1; 29:25, 29; 37:3; 52:24) के मुताबिक़ काहिन मगर सफ़नयाह नाम से जो कन्दा कराया गया है यह अक्सर दावा किया गया है कि सफ़नयाह का एक शाही गोशा — ए — गुम्नामी थी जो उस के घराने की बुनियाद से ता'ल्लुक है। सफ़नयाह सब से पहला लिखने वाला नहीं था कि वह यहूदा के खिलाफ़ यसायाह और मीकाह के ज़माने से नबुव्वत करे।

सफ़नयाह 1:1

इसके तस्नीफ़ की तारीख़ तक्ररीबन 640 - 607 क़ब्ल मसीह के बीच है।

यह किताब हम से कहती है कि सफ़नयाह ने यूसियाह जो यहूदा का बादशाह था उसके दिनों में नबुव्वत की थी (सफ़नयाह 1:1)।

सफ़नयाह 1:1

यहूदा के लोग (जुनूबी सलतनत) और एक आम ख़त बतौर खुदा के लोगों के लिए जो हर जगह पाए जाते हैं।

सफ़नयाह 1:1

सफ़नयाह का पैग़ाम जो अदालत और हौसला अफ़ज़ाई का है इस में तीन बड़े इलाही उसूल पाए जाते हैं कि खुदा तमाम क़ौमों पर क़ादिर है, शरीर को सज़ा दी जाएगी और रास्तबाज़ बे दाग़ साबित किया जाएगा। जो लोग तौबा करते और उस पर भरोसा करते हैं उन को खुदा बर्क़त देता है।

सफ़नयाह 1:1

खुदावन्द का अज़ीम दिन।

बैरूनी खाका

1. खुदावन्द के दिन की आने वाली बर्बादी — 1:1-18
2. उम्मीद का दर्मियानी ज़माना — 2:1-3
3. क़ौमों की बर्बादी — 2:4-15
4. यरूशेलम में बर्बादी — 3:1-7
5. उम्मीद की वापसी — 3:8-20

1 खुदावन्द का कलाम जो यहूदाह बादशाह यूसियाह बिन अमून के दिनों में सफ़नयाह बिन कूशी बिन जदलियाह बिन अमरयाह बिन हिज़िकियाह पर नाज़िल हुआ।

सफ़नयाह 1:1

2 खुदावन्द फ़रमाता है, “मैं इस ज़मीन से सब कुछ बिल्कुल हलाक करूँगा।” 3 “इंसान और हैवान को हलाक करूँगा; हवा के परिन्दों और समन्दर की मछलियों को और शरीरों और उनके बुतों को हलाक करूँगा, और इंसान को इस ज़मीन से फ़ना करूँगा।” खुदावन्द फ़रमाता है। 4 “मैं यहूदाह पर और येरूशलेम के सब रहने वालों पर हाथ चलाऊँगा, और इस मकान में से बा'ल के बक्रिया को और कमारीम के नाम को पुजारियों के साथ हलाक करूँगा; 5 और उनको भी जी कोठों पर चढ़ कर अज़राम — ए — फ़लक की इबादत करते हैं, और उनको जो खुदावन्द की इबादत का 'अहद करते हैं, लेकिन मिल्कूम की क़सम खाते हैं। 6 और उनको भी जो खुदावन्द से नाफ़रमान होकर न उसके तालिब हुए और न उन्होंने उससे मश्वरत ली।” 7 तुम खुदावन्द खुदा के सामने ख़ामोश रहो, क्यूँकि खुदावन्द का दिन नज़दीक है; और उसने ज़बीहा तैयार किया है, और अपने मेहमानों को मख़्सूस किया है। 8 और खुदावन्द के ज़बीहे के दिन यूँ होगा, कि “मैं उमरा और शहज़ादों को, और उन सब को जो अजनबियों की पोशाक पहनते हैं, सज़ा दूँगा। 9 मैं उसी रोज़ उन सब को, जो लोगों के घरों में घुस कर अपने मालिक के घर को लूट और धोखे से भरते हैं सज़ा दूँगा।” 10 और खुदावन्द फ़रमाता है, “उसी रोज़ मछली फाटक से रोने की आवाज़, और मिशना से मातम की, और टीलों पर से बड़े शोर की आवाज़ उठेगी। 11 ऐ मकतीस के रहने वालो, मातम करो! क्यूँकि सब सौदागर मारे गए। जो चाँदी से लदे थे, सब हलाक हुए। 12 फिर मैं चराग़ लेकर येरूशलेम में तलाश करूँगा, और जितने अपनी तलछट पर जम गए हैं, और दिल में कहते हैं, 'कि खुदावन्द सज़ा — और — जज़ा न देगा,' उनको सज़ा दूँगा। 13 तब उनका माल लुट जाएगा, और उनके घर उजड़ जाएँगे। वह घर तो बनाएँगे, लेकिन उनमें बूद — ओ — बाश न करेंगे; और बाग़ तो लगाएँगे, लेकिन उनकी मय न पिँएँगे।” 14 खुदावन्द का बड़ा दिन करीब है, हाँ, वह नज़दीक आ गया, वह आ पहुँचा; सुनो, खुदावन्द के दिन का शोर; ज़बरदस्त आदमी फूट — फूट कर रोएगा। 15 वह दिन क़हर का दिन है, दुख और ग़म का दिन, वीरानी और ख़राबी का दिन, तारीकी और उदासी का दिन, बादल और तीरगी का दिन; 16 हसीन

शहरों और ऊँचे बुर्जों के खिलाफ़, नरसिंगे और जंगी ललकार का दिन। <sup>17</sup> और मैं बनी आदम पर मुसीबत लाऊँगा, यहाँ तक कि वह अंधों की तरह चलेंगे, क्योंकि वह खुदावन्द के गुनहगार हुए; उनका खून धूल की तरह गिराया जाएगा, और उनका गोश्त नजासत की तरह। <sup>18</sup> खुदावन्द के क्रहर के दिन, उनका सोना चाँदी उनको बचा न सकेगा; बल्कि तमाम मुल्क को उसकी ग़ैरत की आग खा जाएगी, क्योंकि वह एक पल में मुल्क के सब बाशिन्दों को तमाम कर डालेगा।

## 2

????? ???? ? ? ?

<sup>1</sup> ऐ बेहया क्रौम, जमा' हो, जमा' हो; <sup>2</sup> इससे पहले के फ़रमान — ए — इलाही ज़ाहिर हो, और वह दिन भुस की तरह जाता रहे, और खुदावन्द का बड़ा क्रहर तुम पर नाज़िल हो, और उसके ग़ज़ब का दिन तुम पर आ पहुँचे। <sup>3</sup> ऐ मुल्क के सब हलीम लोगों, जो खुदावन्द के हुक्मों पर चलते हो, उसके तालिब हो, रास्तबाज़ी को ढूँढ़ो, फ़रोतनी की तलाश करो; शायद खुदावन्द के ग़ज़ब के दिन तुम को पनाह मिले। <sup>4</sup> क्योंकि ग़ज़ा मतरूक होगा, और अस्क़लोन वीरान किया जाएगा, और अशदूद दोपहर को ख़ारिज कर दिया जाएगा, और अकरून की बेखकनी की जाएगी। <sup>5</sup> समन्दर के साहिल के रहने वालो, या'नी करेतियों की क्रौम पर अफ़सोस! ऐ कना'न, फ़िलिस्तियों की सरज़मीन, खुदावन्द का कलाम तेरे खिलाफ़ है; मैं तुझे हलाक — ओ — बर्बाद करूँगा यहाँ तक कि कोई बसने वाला न रहे। <sup>6</sup> और समन्दर के साहिल, चरागाहें होंगे, जिनमें चरवाहों की झोपड़ियाँ और भेड़खाने होंगे। <sup>7</sup> और वही साहिल, यहूदाह के घराने के बक्रिया के लिए होंगे; वह उनमें चराया करेंगे, वह शाम के वक़्त अस्क़लून के मकानों में लेटा करेंगे, क्योंकि खुदावन्द उनका खुदा, उन पर फिर नज़र करेगा, और उनकी गुलामी को ख़त्म करेगा। <sup>8</sup> मैंने मोआब की मलामत और बनी 'अम्मोन की लान'तान सुनी है उन्होंने मेरी क्रौम को मलामत की और उनकी हुदूद को दबा लिया है। <sup>9</sup> इसलिए रब्ब — उल — अफ़वाज़ इस्राईल का खुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क्रसम यक़ीनन मोआब सदूम की तरह होगा, और बनी 'अम्मोन 'अमूरा की तरह; वह पुरखार और नमकज़ार और हमेशा से हमेशा तक बर्बाद रहेंगे। मेरे लोगों के बाक़ी उनको ग़ारत करेंगे, और मेरी क्रौम के बाक़ी लोग उनके वारिस होंगे। <sup>10</sup> ये सब कुछ उनके तकब्बुर की वजह से उन पर आएगा, क्योंकि उन्होंने रब्ब — उल — अफ़वाज़ के लोगों को मलामत की और उन पर

ज़ियादती की। <sup>11</sup> खुदावन्द उनके लिए हैबतनाक होगा, और ज़मीन के तमाम मा'बूदों को लाशर कर देगा, और बहरी ममालिक के सब बाशिन्दे अपनी अपनी जगह में उसकी इबादत करेंगे। <sup>12</sup> ऐ कूश के बाशिन्दो, तुम भी मेरी तलवार से मारे जाओगे। <sup>13</sup> और वह शिमाल की तरफ़ अपना हाथ बढ़ायेगा और असूर को हलाक करेगा, और नीनवा को वीरान और सेहरा की तरह खुशक कर देगा। <sup>14</sup> और जंगली जानवर उसमें लेटेंगे, और हर क्रिस्म के हैवान, हवासिल और ख़ारपुशत उसके सुतूनों के सिरों पर मक़ाम करेंगे; उनकी आवाज़ उसके झरोकों में होगी, उसकी दहलीज़ों में वीरानी होगी, क्योंकि देवदार का काम खुला छोड़ा गया है। <sup>15</sup> ये वह शादमान शहर है जो बेफ़िक़र था, जिसने दिल में कहा, मैं हूँ, और मेरे अलावा कोई दूसरा नहीं। वह कैसा वीरान हुआ, हैवानों के बैठने की जगह! हर एक जो उधर से गुज़रेगा सुसकारेगा और हाथ हिलाएगा।

## 3

????????? ? ? ?

<sup>1</sup> उस सरकश और नापाक व ज़ालिम शहर पर अफ़सोस! <sup>2</sup> उसने कलाम को न सुना, वह तरबियत पज़ीर न हुआ। उसने खुदावन्द पर भरोसा न किया, और अपने खुदा की कुरबत की आरज़ू न की। <sup>3</sup> उसके उमरा उसमें गरजने वाले बबर हैं; उसके क़ाज़ी भेड़िये हैं जो शाम को निकलते हैं, और सुबह तक कुछ नहीं छोड़ते। <sup>4</sup> उसके नबी लाफ़ज़न और दगाबाज़ हैं, उनके काहिनों ने पाक को नापाक ठहराया, और उन्होंने शरी'अत को मरोड़ा है। <sup>5</sup> खुदावन्द जो सच्चा है, उसके अंदर है; वह बेइन्साफ़ी न करेगा; वह हर सुबह बिला नागा अपनी 'अदालत ज़ाहिर करता है, मगर बेइन्साफ़ आदमी शर्म को नहीं जानता। <sup>6</sup> मैंने क्रौमों को काट डाला, उनके बुर्ज बर्बाद किए गए; मैंने उनके कूचों को वीरान किया, यहाँ तक कि उनमें कोई नहीं चलता; उनके शहर उजाड़ हुए और उनमें कोई इंसान नहीं कोई बाशिन्दा नहीं। <sup>7</sup> मैंने कहा, 'कि सिर्फ़ मुझ से डर, और तरबियत पज़ीर हो; ताकि उसकी बस्ती काटी न जाए। उस सब के मुताबिक़ जो मैंने उसके हक़ में ठहराया था। लेकिन उन्होंने 'अमदन अपनी चाल को बिगाड़ा। <sup>8</sup> 'इसलिए, खुदावन्द फ़रमाता है, मेरे मुन्तज़िर रहो, जब तक कि मैं लूट के लिए न उठूँ, क्योंकि मैंने ठान लिया है कि क्रौमों को जमा' करूँ और ममलुकतों को इकट्ठा करूँ, ताकि अपने ग़ज़ब या'नी तमाम क्रहर को उन पर नाज़िल करूँ, क्योंकि मेरी ग़ैरत की आग सारी ज़मीन को खा जाएगी। <sup>9</sup> और मैं उस वक़्त लोगों के होंट पाक कर

दूँगा, ताकि वह सब खुदावन्द से दुआ करें, और एक दिल होकर उसकी इबादत करें। <sup>10</sup> कूश की नहरों के पार से मेरे 'आबिद, या'नी मेरी बिखरी कौम मेरे लिए हदिया लाएगी <sup>11</sup> उसी रोज़ तू अपने सब आ'माल की वजह से जिनसे तू मेरी गुनहगार हुई, शर्मिन्दा न होगी: क्योंकि मैं उस वक़्त तेरे बीच से तेरे मज़रूर लोगों को निकाल दूँगा, और फिर तू मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर तकब्बुर न करेगी। <sup>12</sup> और मैं तुझ में एक मज़लूम और मिस्कीन बक्रिया छोड़ दूँगा और वह खुदावन्द के नाम पर भरोसा करेंगे, <sup>13</sup> इस्राईल के बाक़ी लोग न गुनाह करेंगे, न झूट बोलेंगे और न उनके मुँह में दगा की बातें पाई जाएँगी बल्कि वह खाएँगे और लेट रहेंगे, और कोई उनको न डराएगा।” <sup>14</sup> ऐ बिन्त — ऐ — सिय्यून, नग़मा सराई कर; ऐ इस्राईल, ललकार! ऐ दुख़्तर — ऐ — येरूशलेम, पूरे दिल से खुशी मना और शादमान हो। <sup>15</sup> खुदावन्द ने तेरी सज़ा को दूर कर दिया, उसने तेरे दुश्मनों को निकाल दिया खुदावन्द इस्राईल का बादशाह तेरे अन्दर है तू फिर मुसीबत को न देखेगी। <sup>16</sup> उस रोज़ येरूशलेम से कहा जाएगा, परेशान न हो, ऐ सिय्यून; तेरे हाथ ढीले न हों। <sup>17</sup> खुदावन्द तेरा खुदा, जो तुझ में है, कादिर है, वही बचा लेगा; वह तेरी वजह से शादमान होकर खुशी करेगा; वह अपनी मुहब्बत में मसरूर रहेगा; वह गाते हुए तेरे लिए शादमानी करेगा। <sup>18</sup> “मैं तेरे उन लोगों को जो 'ईदों से महरूम होने की वजह से ग़मगीन और मलामत से ज़ेरबार हैं, जमा' करूँगा। <sup>19</sup> देख, मैं उस वक़्त तेरे सब सतानेवालों को सज़ा दूँगा, और लंगड़ों को रिहाई दूँगा; और जो हाँक दिए गए उनको इकट्ठा करूँगा और जो तमाम ज़हान में रुस्वा हुए, उनको सितूदा और नामवर करूँगा। <sup>20</sup> उस वक़्त मैं तुम को जमा' करके मुल्क में लाऊँगा; क्योंकि जब तुम्हारी हीन हयात ही में तुम्हारी गुलामी को ख़त्म करूँगा, तो तुम को ज़मीन की सब क़ौमों के बीच नामवर और सितूदा करूँगा।” खुदावन्द फ़रमाता है।

## हज्जी

हज्जी 1:1

1 हज्जी 1:1 हज्जी किताब का मुसन्निफ़ और नबी बतौर पहचाना गया है। हज्जी नबी ने यरूशलेम के यहूदी लोगों के लिए चार पैगमात कलमबन्द किए। हज्जी 2:3 से इशारतन लगता है कि नबी ने यरूशलेम के मंदिर की तबाही और बनी इस्राईल की जिलावतनी से पहले यरूशलेम शहर को देखा था इसका मतलब यह कि अपनी क्रौम की शान — ओ — शौकत की पीछे मुड़कर देखता है। एक नबी गर्म मिजाजी से शराबूर होता है देखने की स्वाहिश से कि जिलावतनी की राख से उभरे और अपने हक़ के मुक़ाम का दुबारा से दावा करें कि वह क्रौमों का लिए खुदा के नूर बतौर है।

हज्जी 1:1

इस की तस्नीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 520 क़बल मसीह के आसपास है।

यह बनी इस्राईल के जिलावतन से पहले की किताब है मतलब यह कि इस को गिरफ़्तारी के बाद बाबुल में लिखा गया था।

हज्जी 1:1

यरूशलेम में रहने वाले लोग और वह लोग जो जिलावतनी से लौट कर आए थे।

हज्जी 1:1

जिलावतनी से बचे हुए लोग जो वापस लौटे थे उनकी हौसला अफ़जाई के लिए एक छोड़ी हुई तसल्ली से आगे बढ़ने के लिए उनके मुल्क की तरफ़ वापसी के साथ ईमान का इज्हार था। एक कोशिश करते हुए क्रौम का खास निशान बतौर इबादत करते हुए उन्हें पहुंचना था उनकी हौसला अफ़जाई के लिए कि वे उन्हें तब बर्क़त देगा जब वे मुल्क की तरफ़ मंदिर की ता'मीर के लिए जाते हैं साथ ही उन्हें यह कह कर हिम्मत बंधाने के लिए कि उनके माजी की बगावत के बावजूद भी यहवे उन के लिए मुस्तक़बिल के मक़ाम की अहमियत रखता है।

हज्जी 1:1

मंदिर की दुबारा ता'मीर।

**बैरूनी खाका**

1. मंदिर की ता'मीर के लिए बुलाहट — 1:1-15
2. खुदावन्द में हौसला अफ़जाई — 2:1-9
3. ज़िन्दगी की पाकीज़गी के लिए बुलाहट — 2:10-19
4. मुस्तक़बिल में यक़ीन के लिए बुलाहट — 2:20-23

हज्जी 1:1

1 दारा बादशाह की सल्तनत के दूसरे साल के छठे महीने की पहली तारीख़ को, यहूदाह के नाज़िम ज़रुब्बाबुल — बिन — सियालतिएल और सरदार काहिन यशू'अ — बिन — यहूसदक़ को, हज्जी नबी के ज़रिए' खुदावन्द का कलाम पहुँचा, 2 कि “रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि यह लोग कहते हैं, अभी खुदावन्द के घर की ता'मीर का वक़्त नहीं आया।” 3 तब खुदावन्द का कलाम हज्जी नबी के ज़रिए' पहुँचा, 4 “क्या तुम्हारे लिए महफूज़ घरों में रहने का वक़्त है, जब कि यह घर वीरान पड़ा है? 5 और अब रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: तुम अपने चाल चलन पर ग़ौर करो। 6 तुम ने बहुत सा बोया, पर थोड़ा काटा। तुम खाते हो, पर आसूदा नहीं होते; तुम पीते हो, लेकिन प्यास नहीं बुझती। तुम कपड़े पहनते हो, पर गर्म नहीं होते; और मजदूर अपनी मजदूरी सूरखदार थैली में जमा' करता है। 7 “रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि अपने चाल चलन पर ग़ौर करो। 8 पहाड़ों से लकड़ी लाकर यह घर ता'मीर करो, और मैं उसको देखकर खुश हूँगा और मेरी तम्ज़ीद होगी रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है। 9 तुम ने बहुत की उम्मीद रखी, और देखो, थोड़ा मिला; और जब तुम उसे अपने घर में लाए, तो मैंने उसे उड़ा दिया। रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है; क्यूँ? इसलिए कि मेरा घर वीरान है, और तुम में से हर एक अपने घर को दौड़ा चला जाता है। 10 इसलिए न आसमान से शबनम गिरती है, और न ज़मीन अपनी पैदावार देती है। 11 और मैंने खुशक साली को तलब किया कि मुल्क और पहाड़ों पर, और अनाज और नई मय और तेल और ज़मीन की सब पैदावार पर, और इंसान — ओ — हैवान पर, और हाथ की सारी मेहनत पर आए।” 12 तब ज़रुब्बाबुल — बिन — सियालतिएल और सरदार काहिन यशू'अ — बिन — यहूसदक़ और लोगों के बक़िया खुदावन्द खुदा अपने कलाम और उसके भेजे हुए हज्जी नबी की बातों को सुनने लगे: और लोग खुदावन्द के सामने खौफ़ ज़दा हुए। 13 तब खुदावन्द के पैग़म्बर हज्जी ने खुदावन्द का पैग़ाम उन लोगों को सुनाया, खुदावन्द फ़रमाता है: मैं तुम्हारे साथ हूँ 14 फिर खुदावन्द ने यहूदाह के नाज़िम ज़रुब्बाबुल — बिन — सियालतिएल के, सरदार काहिन यशू'अ — बिन — यहूसदक़ की और लोगों के बक़िया की रूह की हिदायत दी। इसलिए वह आकर रब्ब — उल — अफ़वाज, अपने खुदा के घर की ता'मीर में मशगूल



हुए; <sup>15</sup> और यह वाक्रे'आ दारा बादशाह की सल्तनत के दूसरे साल के छठे महीने की चौबीसवीं तारीख का है।

## 2

[?????](#)
[??](#)
[???](#)
[??](#)
[??](#)
[????](#)
[????](#)
[????](#)

1 सातवें महीने की इक्कीसवीं तारीख को खुदावन्द का कलाम हज्जी नबी के ज़रिए पहुँचा, 2 कि “यहूदाह के नाज़िम ज़रुब्बाबुल — बिन — सियालतिएल और सरदार काहिन यशूअ’ बिन यहूसदक और लोगों के बक्रिया से यूँ कह, 3 कि ‘तुम में से किसने इस हैकल की पहली रौनक को देखा? और अब कैसी दिखाई देती है? क्या यह तुम्हारी नज़र में सही नहीं है? 4 लेकिन ऐ ज़रुब्बाबुल, हिम्मत रख, खुदावन्द फ़रमाता है; और ऐ सरदार काहिन, यशूअ — बिन यहूसदक हिम्मत रख, और ऐ मुल्क के सब लोगों हिम्मत रखो, खुदावन्द फ़रमाता है; और काम करो क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। 5 मिस्र से निकलते वक़्त मैंने तुम से जो ‘अहद किया था, उसके मुताबिक़ मेरी वह रूह तुम्हारे साथ रहती है; हिम्मत न हारो। 6 क्योंकि रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि मैं थोड़ी देर में फिर एक बार ज़मीन — ओ — आसमान — ओर — खुशकी — ओर — तरी को हिला दूँगा। 7 मैं सब क़ौमों को हिला दूँगा, और उनकी पसंदीदा चीज़ें आएँगी; और मैं इस घर को जलाल से मा’मूर करूँगा, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। 8 चाँदी मेरी है और सोना मेरा है, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। 9 इस पिछले घर की रौनक, पहले घर की रौनक से ज्यादा होगी; रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, और मैं इस मकान में सलामती बरख़ूँगा, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है।” 10 दारा बादशाह की सल्तनत के दूसरे साल के नवें महीने की चौबीसवीं तारीख को, खुदावन्द का कलाम हज्जी नबी के ज़रिए पहुँचा, 11 “रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि शरीअत के बारे में काहिनों से मा’लूम कर: 12 ‘अगर कोई पाक गोश्त को अपनी लिबास के दामन में लिए जाता हो, और उसका दामन रोटी या दाल या शराब या तेल या किसी तरह के खाने की चीज़ को छू जाए; तो क्या वह चीज़ पाक हो जाएगी?” काहिनों ने जवाब दिया, “हरगिज़ नहीं।” 13 फिर हज्जी ने पूछा, कि “अगर कोई किसी मुर्दे को छूने से नापाक हो गया हो, और इनमें से किसी चीज़ को छूए; तो क्या वह चीज़ नापाक हो जाएगी?” काहिनों ने जवाब दिया, “ज़रूर नापाक हो जाएगी।” 14 फिर हज्जी ने कहा, कि खुदावन्द फ़रमाता

है: मेरी नज़र में इन लोगों, और इस क्रौम और इनके आ'माल का यही हाल है, <sup>15</sup> और “जो कुछ इस जगह अदा करते हैं नापाक हैं इसलिए आइन्दा को उस वक़्त का खयाल रखो, जब कि अभी खुदावन्द की हैकल का पत्थर पर पत्थर न रखवा गया था; <sup>16</sup> उस पूरे ज़माने में जब कोई बीस पैमानों की उम्मीद रखता, तो दस ही मिलते थे; और जब कोई शराब के हौज़ से पचास पैमाने निकालने जाता, तो बीस ही निकलते थे। <sup>17</sup> मैंने तुम को तुम्हारे सब कामों में ठण्डी हवा और गेरूई और ओलों से मारा, लेकिन तुम मेरी तरफ़ ध्यान न लाए, खुदावन्द फ़रमाता है। <sup>18</sup> अब और आइन्दा इसका खयाल रखो, आज खुदावन्द की हैकल की बुनियाद के डाले जाने या'नी नवें महीने की चौबीसवीं तारीख़ से इसका खयाल रखो: <sup>19</sup> क्या इस वक़्त बीज खत्ते में है? अभी तो अंगूर की बेल और अंजीर और अनार और ज़ैतून में फल नहीं लगे। आज ही से मैं तुम को बरकत दूँगा।” <sup>20</sup> फिर इसी महीने की चौबीसवीं तारीख़ को खुदावन्द का कलाम हज्जी नबी पर नाज़िल हुआ, <sup>21</sup> कि यहूदाह के नाज़िम ज़रुब्बाबुल से कह दे, कि मैं आसमान और ज़मीन को हिलाऊँगा; <sup>22</sup> और सल्तनतों के तख़्त उलट दूँगा; और क्रौमों की सल्तनतों की ताक़तों को ख़त्म कर दूँगा, और रथों को सवारों के साथ उलट दूँगा और घोड़े और उनके सवार गिर जायेंगे और हर शख्स अपने भाई की तलवार से क़त्ल होगा। <sup>23</sup> रब्ब — उल — अफ़वाज़ फ़रमाता है, ऐ मेरे खादिम ज़रुब्बाबुल — बिन — सियालतिएल, उसी दिन मैं तुझे लूँगा, खुदावन्द फ़रमाता है, और मैं तुझे एक मिसाल ठहराऊँगा: क्यूँकि मैंने तुझे मुक़र्रर किया है, रब्ब — उल — अफ़वाज़ फ़रमाता है।

## जकरयाह

जकरयाह 1:1 जकरयाह की किताब का मुसन्निफ़

और जकरयाह नबी बतौर पहचाना जाता है जो बरेछियाह का बेटा और बराछयाह इदद का बेटा था। इदद काहिनों के खान्दान का सर्दार था। वह उन में से था जो जिलावतनी से लौट रहे थे (नहमियाह 12:4, 16) जिलावतनी से लौटते वक़्त हो सकता है जकरयाह एक लड़का रहा हो, जब उसका खान्दान यरूशलेम लौटा था। उसके खानदानी नसल के सबब से जकरयाह एक काहिन होने के साथ साथ एक नबी भी था। इसलिए उस के पास यहूदी दस्तूर के मुताबिक़ इबादत के तरीकों की गहरी वाकफ़ियत का इल्म रहा होगा। जबकि उसने कभी भी मंदिर की पूरी तरह से खिदमत न की हो।

इसके तस्नीफ़ की तारीख़ तक्ररीबन 520 - 480 क़ब्ल मसीह के बीच है।

इस को बाबुल की गिरफ़्तारी (जिलावत्नी) से लौटने के बाद लिखा गया था। जकरयाह ने 1 — 8 बाब को मंदिर के दुबारा तामीर के पहले लिखना ख़तम किया और 9 — 14 बाबों को मंदिर के दुबारा तामीर के ख़तम होने के बाद।

यरूशलेम में जो लोग रह रहे थे वह लोग और वह जो जिलावत्नी से लौटे थे।

जकरिया की किताब को लिखने का मक़सद था कि जिला वत्नी से बचे कुचे लोगों को उम्मीद और, समझ दे कि आने वाले मसीहा की तरफ़ ताकते रहे जो कि येसू मसीह है। जकरयाह ने जोर दिया कि खुदा ने अपने नबियों को इसलिए इस्तेमाल किया कि अपने लोगों को सिखाए, खबरदार और होशियार करे और उन्हें सुधारे। बदनसीबी के सबब से उन्होंने सुन्ने से इन्कार किया। उनका गुनाह खुदा की सज़ा को ले आया किताब इसबात को भी साबित करती है कि नबुव्वत भी ख़राब हो सकती है।

खुदा का छुटकारा।

बैरूनी खाका

खुदा का छुटकारा।

बैरूनी खाका

1. तौबा के लिए बुलाहट — 1:1-6
2. जकरयाह का रोया — 1:7-6:15
3. रोज़ा से वाबस्ता सवालात — 7:1-8:23
4. मुस्तक़बिल से मुताल्लिक़ बोझ — 9:1-14:21

जकरयाह 1:15

1 दारा के दूसरे बरस के आठवें महीने में खुदावन्द का कलाम जकरियाह नबी बिन बरकियाह — बिन — 'इदद पर नाज़िल हुआ: 2 कि "खुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा से सख़्त नाराज़ रहा। 3 इसलिए तू उनसे कह, रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि तुम मेरी तरफ़ रुजू' हो, रब्ब — उल — अफ़वाज का फ़रमान है, तो मैं तुम्हारी तरफ़ से रुजू' हूँगा रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। 4 तुम अपने बाप — दादा की तरह न बनो, जिनसे अगले नबियों ने बा आवाज़ — ए — बुलन्द कहा, रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है, कि तुम अपनी बुरे चाल चलन और बद'आमाली से बाज़ आओ; लेकिन उन्होंने न सुना और मुझे न माना, खुदावन्द फ़रमाता है। 5 तुम्हारे बाप दादा कहाँ हैं? क्या अम्बिया हमेशा ज़िन्दा रहते हैं? 6 लेकिन मेरा कलाम और मेरे क़ानून, जो मैंने अपने खिदमत गुज़ार नबियों को फ़रमाए थे, क्या वह तुम्हारे बाप — दादा पर पूरे नहीं हुए? चुनाँचे उन्होंने रुजू' लाकर कहा, कि रब्ब — उल — अफ़वाज ने अपने इरादे के मुताबिक़ हमारी 'आदात और हमारे 'आमाल का बदला दिया है।" 7 दारा के दूसरे बरस और ग्यारहवें महीने या'नी माह — ए — सवात की चौबीसवीं तारीख़ को खुदावन्द का कलाम जकरियाह नबी बिन — बरकियाह — बिन — 'इदद पर नाज़िल हुआ 8 कि मैंने रात को रोया में देखा कि एक शख्स सुरंग घोड़े पर सवार, मेंहदी के दरख़्तों के बीच नशेब में खड़ा था, और उसके पीछे सुरंग और कुमैत और नुकरह घोड़े थे। 9 तब मैंने कहा, ऐ मेरे आका, यह क्या हैं?" इस पर फ़रिश्ते ने, जो मुझ से गुफ़्तगू करता था कहा, 'मैं तुझे दिखाऊँगा कि यह क्या हैं। 10 और जो शख्स मेंहदी के दरख़्तों के बीच खड़ा था, कहने लगा, 'ये वह हैं जिनको खुदावन्द ने भेजा है कि सारी दुनिया में सैर करें। 11 और उन्होंने खुदावन्द के फ़रिश्ते से, जो मेंहदी के दरख़्तों के बीच खड़ा था कहा, हम ने सारी दुनिया की सैर की है, और देखा कि सारी ज़मीन में अमन — ओ — अमान है। 12 फिर खुदावन्द के फ़रिश्ते ने कहा, ऐ रब्ब — उल — अफ़वाज तू येरूशलेम और यहूदाह के शहरों पर, जिनसे तू सत्तर बरस से नाराज़ है, कब तक रहम न करेगा? 13 और खुदावन्द ने उस फ़रिश्ते को जो मुझ से गुफ़्तगू करता था, मुलायम और तसल्ली बख़्श जवाब दिया। 14 तब उस फ़रिश्ते ने जो मुझ से गुफ़्तगू करता था, मुझ से कहा, बुलन्द आवाज़ से कह, रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि मुझे येरूशलेम और सिय्यून के लिए बड़ी ग़ैरत है। 15 और मैं

उन क्रौमों से जो आराम में हैं, निहायत नाराज़ हूँ; क्योंकि जब मैं थोड़ा नाराज़ था, तो उन्होंने उस आफ़त को बहुत ज्यादा कर दिया। <sup>16</sup> इसलिए खुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि मैं रहमत के साथ येरूशलेम को वापस आया हूँ, उसमें मेरा घर तामीर किया जाएगा, रब्ब — उल — अफ़वाज़ फ़रमाता है, और येरूशलेम पर फिर सूत खींचा जाएगा। <sup>17</sup> फिर बुलन्द आवाज़ से कह, रब्ब — उल — अफ़वाज़ यूँ फ़रमाता है: मेरे शहर दोबारा खुशहाली से मा'मूर होंगे, क्योंकि खुदावन्द फिर सिय्यून को तसल्ली बख़्शेगा, और येरूशलेम को कुबूल फ़रमाएगा। <sup>18</sup> फिर मैंने आँख उठाकर निगाह की, और क्या देखता हूँ कि चार सींग हैं। <sup>19</sup> और मैंने उस फ़रिश्ते से जो मुझे से गुफ़्तगू करता था पूछा, कि “यह क्या हैं?” उसने मुझे जवाब दिया, “यह वह सींग हैं, जिन्होंने यहूदाह और इस्राईल और येरूशलेम को तितर — बितर किया है।” <sup>20</sup> फिर खुदावन्द ने मुझे चार कारीगर दिखाए। <sup>21</sup> तब मैंने कहा, “यह क्यों आए हैं?” उसने जवाब दिया, “यह वह सींग हैं, जिन्होंने यहूदाह को ऐसा तितर — बितर किया कि कोई सिर न उठा सका; लेकिन यह इसलिए आए हैं कि उनको डराएँ, और उन क्रौमों के सींगों को पस्त करें जिन्होंने यहूदाह के मुल्क को तितर — बितर करने के लिए सींग उठाया है।”

# 2

???? ???? ?? ??? ?????????? ?? ???????????

1 फिर मैंने आँख उठाकर निगाह की ओर क्या देखता हूँ कि एक शख्स जरीब हाथ में लिए खड़ा है। 2 और मैंने पूछा, “तू कहाँ जाता है?” उसने मुझे जवाब दिया, “येरूशलेम की पैमाइश को, ताकि देखें कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई कितनी है।” 3 और देखो, वह फ़रिश्ता जो मुझ से गुफ्तगू करता था। खाना हुआ, और दूसरा फ़रिश्ता उसके पास आया, 4 और उससे कहा, दौड़ और इस जवान से कह, कि येरूशलेम इंसान और हैवान की कसरत के ज़रिए बेफ़सील बस्तियों की तरह आबाद होगा। 5 क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है मैं उसके लिए चारों तरफ़ आतिशी दीवार हूँगा और उसके अन्दर उसकी शोकत। 6 सुनो “खुदावन्द फ़रमाता है, शिमाल की सर ज़मीन से, जहाँ तुम आसमान की चारों हवाओं की तरह तितर — बितर किए गए, निकल भागो, खुदावन्द फ़रमाता है। 7 ऐ सिय्यून, तू जो दुख्तर — ए — बाबुल के साथ बसती है, निकल भाग! 8 क्योंकि रब्बुल — अफ़वाज़ जिसने मुझे अपने जलाल की खातिर उन कौमों के पास भेजा है, जिन्होंने तुम को शारत किया,

यूँ फ़रमाता है, जो कोई तुम को छूता है, मेरी आँख की पुतली को छूता है।<sup>9</sup> क्योंकि देख, मैं उन पर अपना हाथ हिलाऊँगा और वह अपने गुलामों के लिए लूट होंगे। तब तुम जानोगे कि रब्बुल — अफ़वाज ने मुझे भेजा है।<sup>10</sup> ऐ दुस्तर — ए — सिय्यून, तू गा और खुशी कर, क्योंकि देख, मैं आकर तेरे अंदर सुकूनत करूँगा खुदावन्द फ़रमाता है।<sup>11</sup> और उस वक़्त बहुत सी कौमों खुदावन्द से मेल करेंगी और मेरी उम्मत होंगी, और मैं तेरे अंदर सुकूनत करूँगा, तब तू जानेगी कि रब्ब — उल — अफ़वाज ने मुझे तेरे पास भेजा है।<sup>12</sup> और खुदावन्द यहूदाह को मुल्क — ए — मुक़द्दस में अपनी मीरास का हिस्सा ठहराएगा, और येरूशलेम को कुबूल फ़रमाएगा।”<sup>13</sup> “ऐ बनी आदम, खुदावन्द के सामने खामोश रहो, क्योंकि वह अपने मुक़द्दस घर से उठा है।”

# 3

□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□

1 और उसने मुझे यह दिखाया कि सरदार काहिन यशू' खुदावन्द के फ़रिश्ते के सामने खड़ा है और शैतान उसके दाहिने हाथ इस्तादा है ताकि उसका सामना करे। 2 और खुदावन्द ने शैतान से कहा, "ऐ शैतान, खुदावन्द तुझे मलामत करे! हाँ, वह खुदावन्द जिसने येरूशलेम को कुबूल किया है, तुझे मलामत करे! क्या यह वह लुकटी नहीं जो आग से निकाली गई है?" 3 और यशू'अ मैले कपड़े पहने फ़रिश्ते के सामने खड़ा था। 4 फिर उसने उनसे जो उसके सामने खड़े थे कहा, "इसके मैले कपड़े उतार दो।" और उससे कहा, "देख, मैंने तेरी बदकिरदारी तुझ से दूर की, और मैं तुझे नफ़ीस लिबास पहनाऊँगा।" 5 और उसने कहा, कि "उसके सिर पर साफ़ 'अमामा रखवो।" तब उन्होंने उसके सिर पर साफ़ 'अमामा रखवा और पोशाक पहनाई, और खुदावन्द का फ़रिश्ता उसके पास खड़ा रहा। 6 और खुदावन्द के फ़रिश्ते ने यशू'अ से ता'कीद करके कहा, 7 "रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: अगर तू मेरी राहों पर चले और मेरे अहकाम पर 'अमल करे, तो मेरे घर पर हुकूमत करेगा और मेरी बारगाहों का निगहबान होगा; और मैं तुझे इनमें खड़े हूँ आने जाने की इजाज़त दूँगा। 8 अब ऐ यशू'अ सरदार काहिन, सुन, तू और तेरे रफ़ीक़ जो तेरे सामने बैठे हैं, वह इस बात का ईमा हैं कि मैं अपने बन्दे या'नी शाख़ को लाने वाला हूँ। 9 क्योंकि उस पत्थर को जो मैंने यशू'अ के सामने रखवा है, देख, उस पर सात आँखें हैं। देख, मैं इसे तितर — बितर करूँगा, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, और मैं इस मुल्क की बदकिरदारी को एक ही

दिन में दूर करूँगा।<sup>10</sup> रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, उसी दिन तुम में से हर एक अपने हम साथे को ताक और अंजीर के नीचे बुलाएगा।”

## 4

?????? ?? ?? ?????? ?? ?????

<sup>1</sup> और वह फ़रिश्ता जो मुझ से बातें करता था, फिर आया और उसने जैसे मुझे नींद से जगा दिया, <sup>2</sup> और पूछा, “तू क्या देखता है?” और मैंने कहा, कि “मैं एक सोने का शमा'दान देखता हूँ जिसके सिर पर एक कटोरा है और उसके ऊपर सात चिराग़ हैं, और उन सातों चिराग़ों पर उनकी सात सात नलियाँ।” <sup>3</sup> और उसके पास ज़ैतून के दो दरख़्त हैं, एक तो कटोरे की दहनी तरफ़ और दूसरा बाई तरफ़।” <sup>4</sup> और मैंने उस फ़रिश्ते से जो मुझ से कलाम करता था, पूछा, “ऐ मेरे आका, यह क्या है?” <sup>5</sup> तब उस फ़रिश्ते ने जो मुझ से कलाम करता था कहा, “क्या तू नहीं जानता यह क्या है?” मैंने कहा, “नहीं, ऐ मेरे आका।” <sup>6</sup> तब उसने मुझे जवाब दिया, कि “यह ज़रुब्बाबुल के लिए खुदावन्द का कलाम है: कि न तो ताक़त से, और न तवानाई से, बल्कि मेरी रूह से, रब्बु — ल — अफ़वाज फ़रमाता है।” <sup>7</sup> ऐ बड़े पहाड़, तू क्या है? तू ज़रुब्बाबुल के सामने मैदान हो जाएगा, और जब वह चोटी का पत्थर निकाल लाएगा, तो लोग पुकारेंगे, कि उस पर फ़ज़ल हो फ़ज़ल हो।” <sup>8</sup> फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, <sup>9</sup> कि “ज़रुब्बाबुल के हाथों ने इस घर की नींव डाली, और उसी के हाथ इसे तमाम भी करेंगे। तब तू जानेगा कि रब्ब — उल — अफ़वाज ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।” <sup>10</sup> क्योंकि कौन है जिसने छोटी चीज़ों के दिन की तहकीर की है?” क्योंकि खुदावन्द की वह सात आँखें, जो सारी ज़मीन की सैर करती हैं, खुशी से उस साहूल को देखती हैं जो ज़रुब्बाबुल के हाथ में है।” <sup>11</sup> तब मैंने उससे पूछा, कि “यह दोनों ज़ैतून के दरख़्त जो शमा'दान के दहने बाएँ हैं, क्या हैं?” <sup>12</sup> और मैंने दोबारा उससे पूछा, कि “ज़ैतून की यह दो शाख़ क्या हैं, जो सोने की दो नलियों के मुत्तसिल हैं, जिनकी राह से सुन्हेला तेल निकला चला जाता है?” <sup>13</sup> उसने मुझे जवाब दिया, “क्या तू नहीं जानता, यह क्या है?” मैंने कहा, “नहीं, ऐ मेरे आका।” <sup>14</sup> उसने कहा, “यह वह दो मम्सूह हैं, जो रब्ब — उल — 'आलमीन के सामने खड़े रहते हैं।”

## 5

?? ?????? ?? ?

<sup>1</sup> फिर मैंने आँख उठाकर नज़र की, और क्या देखता हूँ कि एक उड़ता हुआ तूमार है। <sup>2</sup> उसने मुझ से पूछा, “तू क्या देखता है?”, मैंने जवाब दिया “एक उड़ता हुआ तूमार देखता हूँ, जिसकी लम्बाई बीस और चौड़ाई दस हाथ है।” <sup>3</sup> फिर उसने मुझ से कहा, “यह वह ला'नत है जो तमाम मुल्क पर नाज़िल होने को है, और इसके मुताबिक़ हर एक चोर और झूठी कसम खाने वाला यहाँ से काट डाला जाएगा।” <sup>4</sup> रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, मैं उसे भेजता हूँ, और वह चोर के घर में और उसके घर में, जो मेरे नाम की झूठी कसम खाता है, घुसेगा और उसके घर में रहेगा; और उसे उसकी लकड़ी और पत्थर के साथ बर्बाद करेगा।” <sup>5</sup> वह फिर फ़रिश्ता जो मुझ से कलाम करता था निकला, और उसने मुझ से कहा, कि “अब तू आँख उठाकर देख, क्या निकल रहा है?” <sup>6</sup> मैंने पूछा, “यह क्या है?” उसने जवाब दिया, “यह एक ऐफ़ा निकल रहा है।” और उसने कहा, कि “तमाम मुल्क में यही उनकी शबीह है।” <sup>7</sup> और सीसे का एक गोल सरपोश उठाया गया, और एक 'औरत ऐफ़ा में बैठी नज़र आई! <sup>8</sup> और उसने कहा, कि “यह शरारत है।” और उसने उस तौल बाट को ऐफ़ा में नीचे दबाकर, सीसे के उस सरपोश को ऐफ़ा के मुँह पर रख दिया। <sup>9</sup> फिर मैंने आँख उठाकर निगाह की, और क्या देखता हूँ कि दो 'औरतें निकल आई और हवा उनके बाजूओं में भरी थी, क्योंकि उनके लक़लक़ के से बा'ज़ु थे, और वह ऐफ़ा की आसमान और ज़मीन के बीच उठा ले गई। <sup>10</sup> तब मैंने उस फ़रिश्ते से जो मुझ से कलाम करता था, पूछा, कि “यह ऐफ़ा को कहाँ लिए जाती हैं?” <sup>11</sup> उसने मुझे जवाब दिया कि “सिन'आर के मुल्क को, ताकि इसके लिए घर बनाएँ, और जब वह तैयार हो तो यह अपनी जगह में रखी जाए।”

## 6

???? ??

<sup>1</sup> तब फिर मैंने आँख उठाकर निगाह की तो क्या देखता हूँ कि दो पहाड़ों के बीच से चार रथ निकले, और वह पहाड़ पीतल के थे। <sup>2</sup> पहले रथ के घोड़े सुरंग, दूसरे के मुशकी, <sup>3</sup> तीसरे के नुकरा और चौथे के अबलक़ थे। <sup>4</sup> तब मैंने उस फ़रिश्ते से जो मुझ से कलाम करता था पूछा, “ऐ मेरे आका, यह क्या है?” <sup>5</sup> और फ़रिश्ते ने मुझे जवाब दिया, कि “यह आसमान की चार हवाएँ हैं जो रब्बुल — 'आलमीन के सामने से निकली हैं।” <sup>6</sup> और मुशकी घोड़ों वाला रथ उत्तरी मुल्क को निकला चला जाता है, और नुकरा घोड़ों वाला उसके पीछे और



अबलक़ घोड़ों वाला दक्खिनी मुल्क को। <sup>7</sup> और सुरंग घोड़ों वाला भी निकला, और उन्होंने चाहा कि दुनिया की सैर करें;” और उसने उनसे कहा, “जाओ, दुनिया की सैर करो।” और उन्होंने दुनिया की सैर की। <sup>8</sup> तब उसने बुलन्द आवाज़ से मुझ से कहा, “देख, जो उत्तरी मुल्क को गए हैं, उन्होंने वहाँ मेरा जी ठंडा किया है।” <sup>9</sup> फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>10</sup> कि तू आज ही खल्दी और तूबियाह और यद'अयाह के पास जा, जो बाबुल के गुलामों की तरफ़ से आकर यूसियाह — बिन — सफ़निया के घर में उतरे हैं। <sup>11</sup> और उनसे सोना — चाँदी लेकर ताज बना, और यशू'अ बिन — यहूसदक़ सरदार काहिन को पहना; <sup>12</sup> और उससे कह, 'कि रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है, कि देख, वह शख्स जिसका नाम शाख़ है, उसके ज़ेर — ए — साया खुशहाली होगी और वह खुदावन्द की हैकल को ता'मीर करेगा। <sup>13</sup> हाँ, वही खुदावन्द की हैकल को बनाएगा और वह साहिब — ए — शौकत होगा, और तख़्त नशीन होकर हुकूमत करेगा और उसके साथ काहिन भी तख़्त नशीन होगा; और दोनों में सुलह — ओ — सलामती की मशवर्त होगी। <sup>14</sup> और यह ताज हीलम और तूबियाह और यद'अयाह और हेन — बिन — सफ़नियाह के लिए खुदावन्द की हैकल में यादगार होगा। <sup>15</sup> “और वह जो दूर हैं आकर खुदावन्द की हैकल को ता'मीर करेंगे, तब तुम जानोगे कि रब्बु — उल — अफ़वाज ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है; और अगर तुम दिल से खुदावन्द अपने खुदा की फ़रमाबरदारी करोगे तो यह बातें पूरी होगी।”

## 7

???????? ?? ???? ?? ???? ?

<sup>1</sup> दारा बादशाह की सल्लनत के चौथे बरस के नवें महीने, या'नी किसलेव महीने की चौथी तारीख़ को खुदावन्द का कलाम ज़करियाह पर नाज़िल हुआ। <sup>2</sup> और बैतएल के बाशिन्दों ने शराज़र और रजममलिक और उसके लोगों को भेजा कि खुदावन्द से दरख्वास्त करें, <sup>3</sup> और रब्ब — उल — अफ़वाज के घर के काहिनों और नबियों से पूछे, कि “क्या मैं पाँचवें महीने में गोशानशीन होकर मातम करूँ, जैसा कि मैंने सालहाँ साल से किया है?” <sup>4</sup> तब रब्ब — उल — अफ़वाज का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>5</sup> कि मम्लुकत के सब लोगों और काहिनों से कह कि जब तुम ने पाँचवें और सातवें महीने में, इन सत्तर बरस तक रोज़ा रखवा और मातम किया, तो क्या था कभी मेरे लिए खास मेरे ही लिए रोज़ा रखवा था? <sup>6</sup> और जब तुम खाते — पीते थे तो अपने ही लिए न खाते — पीते थे? <sup>7</sup> “क्या यह वही कलाम नहीं जो खुदावन्द ने

गुज़िशता नबियों की मा'रिफ़त फ़रमाया, जब येरूशलेम आबाद और आसूदा हाल था, और उसके 'इलाक़े के शहर और दक्खिन की सर ज़मीन और सैदान आबाद थे?” <sup>8</sup> फिर खुदावन्द का कलाम ज़करियाह पर नाज़िल हुआ: <sup>9</sup> कि “रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाया था, कि रास्ती से 'अदालत करो, और हर शख्स अपने भाई पर करम और रहम किया करे, <sup>10</sup> और बेवा और यतीम और मुसाफ़िर और मिस्कीन पर ज़ुल्म न करो, और तुम में से कोई अपने भाई के खिलाफ़ दिल में बुरा मन्सूबा न बाँधे।” <sup>11</sup> लेकिन वह सुनने वाले न हुए, बल्कि उन्होंने गर्दनकशी की तरफ़ अपने कानों को बंद किया ताकि न सुनें। <sup>12</sup> और उन्होंने अपने दिलों को अल्मास की तरह सख़्त किया, ताकि शरी'अत और उस कलाम को न सुनें जो रब्बुल — अफ़वाज ने गुज़िशता नबियों पर अपने रूह की मा'रिफ़त नाज़िल फ़रमाया था। इसलिए रब्ब — उल — अफ़वाज की तरफ़ से क्रहर — ए — शदीद नाज़िल हुआ। <sup>13</sup> और रब्ब — उल — अफ़वाज ने फ़रमाया था: “जिस तरह मैंने पुकार कर कहा और वह सुनने वाले न हुए, उसी तरह वह पुकारेंगे और मैं नहीं सुनूँगा। <sup>14</sup> बल्कि उनको सब क़ौमों में जिनसे वह नावाक़िफ़ हैं तितर — बितर करूँगा। यूँ उनके बाद मुल्क वीरान हुआ, यहाँ तक कि किसी ने उसमें आमद — ओ — रफ़्त न की, क्योंकि उन्होंने उस दिलकुशा मुल्क को वीरान कर दिया।”

## 8

???????? ?? ???? ???? ?? ???? ?

<sup>1</sup> फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>2</sup> कि “रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि मुझे सिय्यून के लिए बड़ी ग़ैरत है बल्कि मैं ग़ैरत से सख़्त ग़ाज़बनाक हुआ <sup>3</sup> खुदावन्द यु फ़रमात है कि मैं सिय्यून में वापस आया हुआ और येरूशलेम में सकूनत करूँगा और येरूशलेम शहर — ए — सिदक़ होगा और रब्ब — उल — अफ़वाज का पहाड़ कोहे मुक़द़स कहलाएगा <sup>4</sup> रब्बु — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि येरूशलेम के गलियों में उम्र रसीदा मर्द — ओ — जन बुढ़ापे की वजह से हाथ में 'असा लिए हुए फिर बैठे होंगे। <sup>5</sup> और शहर की गलियों में खेलने वाले लड़के — लड़कियों से मा'मूर होंगे। <sup>6</sup> और रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है कि अगरचे उन दिनों में यह 'अम्र इन लोगों के बक्रिये की नज़र में हैरत अफ़ज़ा हो, तोभी क्या मेरी नज़र में हैरत अफ़ज़ा होगा? रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। <sup>7</sup> रब्ब उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: देख, मैं अपने लोगों को पूरबी और पश्चिमी ममालिक से

छुड़ा लूंगा।<sup>8</sup> और मैं उनको वापस लाऊँगा और वह येरूशलेम में सुकूनत करेंगे, और वह मेरे लोग होंगे और मैं रास्ती — और — सदाक़त से उनका खुदा हूँगा।”  
<sup>9</sup> रब्बु — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: “कि ऐ लोगो, अपने हाथों को मज़बूत करो; तुम जो इस वक़्त यह कलाम सुनते हो, जो रब्ब उल — अफ़वाज के घर या'नी हैकल की ता'मीर के लिए बुन्नियाद डालते वक़्त नबियों के ज़रिए' नाज़िल हुआ।<sup>10</sup> क्योंकि उन दिनों से पहले, न इंसान के लिए मज़दूरी थी और न हैवान का किराया था, और दुश्मन की वजह से आने — जाने वाले महफूज़ न थे, क्योंकि मैंने सब लोगों में निफ़ाक डाल दिया।<sup>11</sup> लेकिन अब मैं इन लोगों के बक़िये के साथ पहले की तरह पेश न आऊँगा, रब्बुल — उल — अफ़वाज फ़रमाता है।<sup>12</sup> बल्कि ज़िरा'अत सलामती से होगी, अपना फल देगी और ज़मीन अपना हासिल और आसमान से ओस पड़ेगी, मैं इन लोगों के बक़िये को इन सब बरकतों का वारिस बनाऊँगा।<sup>13</sup> ऐ बनी यहूदाह और ऐ बनी — इस्राईल, तरह तुम दूसरी क्रौमों में ला'नत तरह मैं तुम को छुड़ाऊँगा और तुम बरकत होगे। परेशान न हो, तुम्हारे हाथ मज़बूत हों।”<sup>14</sup> क्योंकि रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि “जिस तरह मैंने क्रुसद किया था कि तुम पर आफ़त लाऊँ, तुम्हारे बाप — दादा ने मुझे ग़ज़बनाक किया और मैं अपने इरादे से बाज़ न रहा, फ़रमाता है; <sup>15</sup> उसी तरह मैंने अब इरादा किया है कि येरूशलेम और यहूदाह के घराने से नेकी करूँ; लेकिन तुम परेशान न हो।<sup>16</sup> फिर लाज़िम है कि तुम इन बातों पर 'अमल करो। तुम सब अपने पड़ोसियों से सच बोलो, अपने फाटकों में रास्ती से करो ताकि सलामती हो, <sup>17</sup> और तुम में से कोई अपने भाई के खिलाफ़ दिल में बुरा मंसूबा न बाँधे, झूटी कसम को 'अज़ीज़ न रखे; मैं इन सब बातों से नफ़रत रखता हूँ खुदावन्द फ़रमाता है।”<sup>18</sup> फिर रब्ब — उल — अफ़वाज का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ: <sup>19</sup> कि रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि चौथे और पाँचवें और सातवें और दसवें महीने का रोज़ा, यहूदाह के लिए खुशी और ख़ुरमी का दिन और शादमानी की 'ईद होगा; तुम सच्चाई और सलामती को 'अज़ीज़ रखो।<sup>20</sup> रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि फिर क्रौम में और बड़े बड़े शहरों के बाशिन्दे आएँगे।<sup>21</sup> एक शहर के बाशिन्दे दूसरे शहर में जाकर कहेंगे, जल्द खुदावन्द से दरख्वास्त करें और रब्ब — उल — अफ़वाज के तालिब हों, भी चलता हूँ।<sup>22</sup> बहुत सी उम्मातें और ज़बरदस्त क्रौमें रब्ब — उल — अफ़वाज की तालिब होंगी, खुदावन्द से दरख्वास्त

करने को येरूशलेम में आएँगी।<sup>23</sup> रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है: कि उन दिनों में मुख़्तलिफ़ अहल — ए — लुगत में से दस आदमी हाथ बढ़ाकर एक यहूदी का दामन पकड़ेंगे और कहेंगे कि हम तुम्हारे साथ जायेंगे क्योंकि हम ने सुना है कि खुदा तुम्हारे साथ है।

## 9

22222222 22 22222222 22 22222222 2222

<sup>1</sup> बनी आदम और खुसूसन कुल क़बाइल — ए — इस्राईल की आँखें खुदावन्द पर लगी हैं। खुदावन्द की तरफ़ से सर ज़मीन — ए — और दमिशक़ के खिलाफ़ बार — ए — नबूव्वत; <sup>2</sup> हम्रात के खिलाफ़ जो उनसे सूर और सैदा के खिलाफ़ जो अपनी नज़र में बहुत 'अक़्लमन्द हैं। <sup>3</sup> सूर ने अपने लिए मज़बूत क़िला' मिट्टी की तरह चाँदी के तूदे लगाए और गलियों की कीच की तरह सोने के ढेर। <sup>4</sup> देखो खुदावन्द उसे ख़ारिज कर देगा, उसके गुरुर को समुन्दर में डाल देगा; और आग उसको खा जाएगी। <sup>5</sup> अस्क़लोन देखकर डर जाएगा ग़ज़ज़ा भी सख़्त दर्द में मुब्तिला होगा, अक़रून भी क्योंकि उसकी उम्मीद टूट गई और ग़ज़ज़ा से बादशाही जाती रहेगी, अस्क़लोन बे चिराग़ हो जाएगा। <sup>6</sup> और एक अजनबी ज़ादा अशदूद में तख़्त नशीन होगा और मैं फ़िलिस्तियों का गुरुर मिटाऊँगा। <sup>7</sup> और मैं उसके खून को उसके मुँह से और उसकी मकरूहात उसके दाँतों से निकाल डालूँगा, और वह भी हमारे खुदा के लिए बक़िया होगा और वह यहूदाह में सरदार होगा और अक़रून यबूसियों की तरह होंगे। <sup>8</sup> और मैं मुख़ालिफ़ फ़ौज़ के मुक़ाबिल अपने घर की चारों तरफ़ ख़ैमाज़न हूँगा ताकि कोई उसमें से आमद — ओ — रफ़्त न कर सके; फिर कोई ज़ालिम उनके बीच से न गुज़रेगा क्योंकि अब मैंने अपनी आँखों से देख लिया है। <sup>9</sup> ऐ बिन्त — ए — सिय्यून तू निहायत शादमान हो! ऐ दुख़्तर — ए — येरूशलेम, खूब ललकार क्योंकि देख तेरा बादशाह तेरे पास आता है; वह सादिक है, नजात उसके हाथ में है वह हलीम है और ग़धे पर बल्कि जवान ग़धे पर सवार है। <sup>10</sup> और मैं इफ़राईम से रथ, येरूशलेम से घोड़े काट डालूँगा और जंगी कमान तोड़ डाली जाएगी और वह क्रौमों को सुलह का मुज़दा देगा और उसकी सल्तनत समुन्दर से समन्दर तक और दरिया — ए — फ़ुरात से इन्तिहाए — ज़मीन तक होगी। <sup>11</sup> और तेरे बारे में यूँ है कि तेरे 'अहद के खून की वजह से, तेरे गुलामों को

अंधे कुएं से निकाल लाया। <sup>12</sup> मैं आज बताता हूँ कि तुझे को दो बदला दूँगा, “ऐ उम्मीदवार, गुलामों किले’ वापस आओ।” <sup>13</sup> क्योंकि मैंने यहूदाह को कमान की तरह झुकाया और इफ्राईम को तीर की तरह लगाया, और ऐ सिय्यून, मैं तेरे फ़र्जन्दों को यूनान के फ़र्जन्दों के खिलाफ़ बरअन्नोखता करूँगा, तुझे पहलवान की तलवार की तरह बनाऊँगा। <sup>14</sup> और खुदावन्द उनके ऊपर दिखाई देगा उसके तीर बिजली की तरह निकलेंगे; हाँ खुदावन्द खुदा नरसिंगा फूँकेगा और दक्खिनी बगोलों के साथ खुर्रुज करेगा। <sup>15</sup> और रब्ब — उल — अफ़वाज उनकी हिमायत करेगा और वह दुश्मनों को निगलेंगे, और फ़लाखन के पत्थरों को पायमाल करेंगे और पीकर मतवालों की तरह शोर मचायेंगे और कटोरों और मज़बह के कोनों की तरह मा’भूर होंगे। <sup>16</sup> और खुदावन्द उनका खुदा उस दिन उनको अपनी भेड़ों की तरह बचा लेगा, क्योंकि वह ताज के जवाहर की तरह होंगे, जो उसके मुल्क में सरफ़राज़ <sup>17</sup> क्योंकि उनकी खुशहाली ‘अज़ीम और उनका जमाल खूब है, नौजवान ग़ल्ले से बढ़ेंगे और लड़कियाँ नई शराब से नश्व — ओ — नुमा पाएँगी।

## 10

?????????? ???? ???? ? ? ????  
??????

<sup>1</sup> पिछली बरसात की बारिश के लिए खुदावन्द से दू’आ करो खुदावन्द से जो बिजली चमकाता है वह बारिश भेजेगा और मैदान में सबके लिए घास उगाएगा। <sup>2</sup> क्योंकि तराफीम ने बतालत की बातें कहीं हैं और गैबबीनों ने बतालत देखी और झूठे ख़्वाब बयान किये हैं उनकी तसल्ली बे हकीकत है इसलिए वह भेड़ों की तरह भटक गए। उन्होंने दुख पाया क्योंकि उनका कोई चरवाहा न था। <sup>3</sup> मेरा ग़ज़ब चरवाहों पर भड़का है, मैं पेशवाओं को सज़ा दूँगा; तोभी रब्ब — उल — अफ़वाज ने अपने गल्ले या’नी बनी यहूदाह पर नज़र की है, उनको गोया अपना खूबसूरत जंगी घोड़ा बनाएगा। <sup>4</sup> उन्ही में से कोने का पत्थर और खूँटी जंगी कमान और सब हाकिम निकलेंगे। <sup>5</sup> और वह पहलवानों की तरह लड़ाई में दुश्मनों को गलियों की कीच की तरह लताड़ेंगे और वह लड़ेंगे, क्योंकि खुदावन्द उनके साथ हैं और सवार सरासीमा हो जाएँगे। <sup>6</sup> और मैं यहूदाह के घराने की तकवियत करूँगा और युसुफ़ के घराने को रिहाई बख़्शूँगा और उनको वापस लाऊँगा, क्योंकि मैं उन पर रहम करता हूँ, वह ऐसे होंगे गोया मैंने कभी उनको तर्क नहीं किया था, मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँ और

उनकी सुनूँगा। <sup>7</sup> और बनी इफ़्राईम पहलवानों की तरह होंगे और उनके दिल गोया मय से मसरूर होंगे, बल्कि उनकी औलाद भी देखेगी और शादमानी करेगी; उनके दिल खुदावन्द से खुश होंगे। <sup>8</sup> “मैं सीटी बजाकर उनको इकट्ठा करूँगा, क्योंकि मैंने उनका फ़िदिया दिया है; वह बहुत हो जाएँगे जैसे पहले <sup>9</sup> अगरचे मैंने उन्हें क्रौमों में तितर — बितर किया तोभी वह उन दूर के मुल्कों में मुझे याद करेंगे और अपने बाल बच्चों साथ ज़िन्दा रहेंगे और वापस आएँगे। <sup>10</sup> मैं उनको मुल्क — ए — मिस्र से वापस लाऊँगा असूर से जमा’ करूँगा और जिल’आद और लुबनान की सरज़मीन में पहुँचाऊँगा, यहाँ तक कि उनके लिए गुंजाइश न होगी। <sup>11</sup> और वह मुसीबत के समुन्दर से गुज़र जाएगा और उसकी लहरों को मारेगा, और दरिया-ए-नील तक सूख जाएगा, असूर का तकब्बुर टूट जाएगा और मिस्र का ‘असा जाता रहेगा। <sup>12</sup> और मैं उनको खुदावन्द में तकवियत बख़्शूँगा और वह उसका नाम लेकर इधर उधर चलेंगे।”

## 11

<sup>1</sup> ऐ लुबनान, तू अपने दरवाज़ों को खोलदे ताकि आग तेरे देवदारों को खा जाए। <sup>2</sup> ऐ सरो के दरख्त, नौहा कर क्योंकि देवदार गिर गया, शानदार गारत हो गए। ऐ बसनी बलूत के दरख्तो, फुगां करो क्योंकि दुशवार गुज़ार जंगल साफ़ हो <sup>3</sup> चरवाहों के नौहे की आवाज़ आती है, क्योंकि उनकी हशमत गारत हुई! जवान बबरों की गरज़ सुनाई देती है क्योंकि यरदन का जंगल बर्बाद हो गया!

?????? ?? ???? ?????

<sup>4</sup> खुदावन्द मेरा खुदा यूँ फ़रमाता है: “कि जो भेड़ें ज़बह हो रही हैं उनको चरा। <sup>5</sup> जिनके मालिक उनको ज़बह करते और अपने आप को बेकुसूर समझते हैं, और जिनके बेचने वाले कहते हैं, खुदावन्द का शुक्र हो कि हम मालदार हुए, और उनके चरवाहे उन पर रहम नहीं करते। <sup>6</sup> क्योंकि खुदावन्द फ़रमाता है, मुल्क के बाशिन्दों पर फिर रहम नहीं करूँगा, बल्कि हर शख्स को उसके हमसाये और उसके बादशाह के हवाले कर दूँगा; वह मुल्क को तबाह करेंगे और मैं उनको उनके हाथ से नहीं छुड़ाऊँगा।” <sup>7</sup> तब मैंने उन भेड़ों को जो ज़बह हो रही थीं, या’नी गल्ले के मिस्कीनों को चराया और मैंने दो लाठियाँ लीं; एक का नाम फ़ज़ल रखवा और दूसरी का इत्तिहाद, और गल्ले को चराया। <sup>8</sup> और मैंने एक महीने में तीन चरवाहों को हलाक किया, क्योंकि मेरी जान उनसे बेज़ार थी; उनके दिल में मुझ से कराहियत थी। <sup>9</sup> तब मैंने कहा, कि अब मैं तुम को न चराऊँगा। मरने वाला मरजाए और हलाक होने वाला हलाक हो, बाक़ी एक

दूसरे का गोश्त खाएँ। <sup>10</sup> तब मैंने फ़ज़ल नामी लाठी को लिया और उसे काट डाला कि अपने 'अहद को जो मैंने सब लोगों से बाँधा था, मन्सूख करूँ। <sup>11</sup> और वह उसी दिन मन्सूख हो गया; तब गल्ले के मिस्कीनों ने जो मेरी सुनते थे, मा'लूम किया कि यह खुदावन्द का कलाम है; <sup>12</sup> और मैंने उनसे कहा, कि “अगर तुम्हारी नज़र में ठीक हो, तो मेरी मज़दूरी मुझे दो नहीं तो मत दो।” और उन्होंने मेरी मज़दूरी के लिए तीस रुपये तोल कर दिए। <sup>13</sup> और खुदावन्द ने मुझे हुक्म दिया, कि “उसे कुम्हार के सामने फेंक दे,” या'नी इस बड़ी कीमत को जो उन्होंने मेरे लिए ठहराई, और मैंने यह तीस रुपये लेकर खुदावन्द के घर में कुम्हार के सामने फेंक दिए। <sup>14</sup> तब मैंने दूसरी लाठी या'नी इत्तिहाद नामी को काट डाला, ताकि उस बिरादरी को जो यहूदाह और इस्राईल में है खत्म करूँ। <sup>15</sup> और खुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, कि “तू फिर नादान चरवाहे का सामान ले। <sup>16</sup> क्योंकि देख, मैं मुल्क में ऐसा चौपान बर्पा करूँगा, जो हलाक होने वाले की खबर गीरी, और भटके हुए की तलाश और ज़ख्मी का 'इलाज न करेगा, और तन्दुरुस्त को न चराएगा लेकिन मोटों का गोश्त खाएगा, और उनके खुरों को तोड़ डालेगा। <sup>17</sup> उस नाबकार चरवाहे पर अफ़सोस, जो गल्ले को छोड़ जाता है, तलवार उसके बाजू और उसकी दहनी आँख पर आ पड़ेगी। उसका बाजू बिल्कुल सूख जाएगा और उसकी दहनी आँख फूट जाएगी।”

## 12

2222 22222 22 222 22222222 22 22222 22222

<sup>1</sup> इस्राईल के बारे में खुदावन्द की तरफ़ से बार — ए — नबुव्वत: खुदावन्द जो आसमान को तानता और ज़मीन की नियु डालता और इंसान के अन्दर उसकी रूह पैदा करता है, यूँ फ़रमाता है: <sup>2</sup> देखो, मैं येरूशलेम को चारों तरफ़ के सब लोगों के लिए लड़खड़ाहट का प्याला बनाऊँगा, और येरूशलेम के मुहासिरे के वक्त्त यहूदाह का भी यही हाल होगा। <sup>3</sup> और मैं उस दिन येरूशलेम को सब क्रौमों के लिए एक भारी पत्थर बना दूँगा, और जो उसे उठाएँगे सब घायल होंगे, और दुनिया की सब क्रौमों उसके सामने जमा' होंगी। <sup>4</sup> खुदावन्द फ़रमाता है, मैं उस दिन हर घोड़े को हैरतज़दा और उसके सवार को दीवाना कर दूँगा, लेकिन यहूदाह के घराने पर निगाह रखूँगा, और क्रौमों के सब घोड़ों को अंधा कर दूँगा। <sup>5</sup> तब यहूदाह के फ़रमारवाँ दिल में कहेंगे, कि 'येरूशलेम के बाशिन्दे अपने खुदा रब्ब — उल — अफ़वाज की

वजह से हमारी ताक़त हैं। <sup>6</sup> मैं उस दिन यहूदाह के फ़रमारवाओं को लकड़ियों में जलती अंगेठी और पूलों में मश'अल की तरह बनाऊँगा, और वह दहने बाएँ चारों तरफ़ की सब क्रौमों को खा जाएँगे, और अहल — ए — येरूशलेम फिर अपने मक़ाम पर येरूशलेम में ही आबाद होंगे। <sup>7</sup> और खुदावन्द यहूदाह के खैमों को पहले रिहाई बरख़्शेगा, ताकि दाऊद का घराना और येरूशलेम के बाशिन्दे यहूदाह के खिलाफ़ गुरुर न करें। <sup>8</sup> उस दिन खुदावन्द येरूशलेम के बाशिन्दों की हिमायत करेगा, और उनमें का सबसे कमज़ोर उस दिन दाऊद की तरह होगा; और दाऊद का घराना खुदा की तरह, या'नी खुदावन्द के फ़रिश्ते की तरह जो उनके आगे आगे चलता हो। <sup>9</sup> और मैं उस दिन येरूशलेम की सब मुखालिफ़ क्रौमों की हलाकत का क़सद करूँगा। <sup>10</sup> और मैं दाऊद के घराने और येरूशलेम के बाशिन्दों पर फ़ज़ल और मुनाजात की रूह नाज़िल करूँगा, और वह उस पर जिसको उन्होंने छेदा है नज़र करेंगे और उसके लिए मातम करेंगे जैसा कोई अपने एकलौते के लिए करता है और उसके लिए तल्ख़ काम होंगे जैसे कोई अपने पहलौटे के लिए होता है। <sup>11</sup> और उस दिन येरूशलेम में बड़ा मातम होगा, हदद रिम्मोन के मातम की तरह जो मजिहोन की वादी में हुआ। <sup>12</sup> और तमाम मुल्क मातम करेगा, हर एक घराना अलग; दाऊद का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग; नातन का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग; <sup>13</sup> लावी का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग; सिम'ई का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग; <sup>14</sup> बाक़ी सब घराने अलग — अलग, और उनकी बीवियाँ अलग अलग!”

## 13

22222 22222 22 22 2222222

<sup>1</sup> उस रोज़ गुनाह और नापाकी धोने को दाऊद के घराने और येरूशलेम के बाशिन्दों के लिए एक सोता फूट निकले गा <sup>2</sup> और रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, मैं उसी दिन मुल्क से बुतों का नाम मिटा दूँगा, और उनको फिर कोई याद न करेगा; और मैं नबियों को और नापाक रूह को मुल्क से ख़ारिज कर दूँगा। <sup>3</sup> और जब कोई नबुव्वत करेगा, तो उसके माँ — बाप जिनसे वह पैदा हुआ उससे कहेंगे तू ज़िन्दा न रहेगा क्योंकि तू खुदावन्द का नाम लेकर झूठ बोलता है और जब एह नबुव्वत करेगा तो उसके माँ बाप जिनसे वह पैदा हुआ छेद डालेंगे। <sup>4</sup> और उस दिन नबियों में से हर एक नबुव्वत करते वक्त्त अपनी ख़ाब से शर्मिन्दा होगा, और कभी धोखा देने के लिए कम्बल के कपड़े न पहनेगे, <sup>5</sup> बल्कि



हर एक कहेगा, कि मैं नबी नहीं किसान हूँ, क्योंकि मैं लड़कपन ही से गुलाम रहा हूँ। <sup>6</sup> और जब कोई उससे पूछेगा, कि तेरी छाती “पर यह ज़ख्म कैसे हैं?” तो वह जवाब देगा यह वह ज़ख्म हैं जो मेरे दोस्तों के घर में लगे। <sup>7</sup> रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ तलवार, तू मेरे चरवाहे, या'नी उस इंसान पर जो मेरा रफ़ीक़ है बेदार हो। चरवाहे को मार कि ग़ल्ला तितर — बितर हो। जाए, और मैं छोटों पर हाथ चलाऊँगा।” <sup>8</sup> और खुदावन्द फ़रमाता है, सारे मुल्क में दो तिहाई क़त्ल किए जाएँगे और मरेंगे, लेकिन एक तिहाई बच रहेंगे। <sup>9</sup> और मैं इस तिहाई को आग में डालकर चाँदी की तरह साफ़ करूँगा और सोने की ताऊँगा। वह मुझ से दुआ करेंगे, और मैं उनकी सुनूँगा। मैं कहूँगा, ‘यह मेरे लोग हैं, और वह कहेंगे, ‘खुदावन्द ही हमारा खुदा है।’

## 14

?????????? ???? ? ???? ???? ?

<sup>1</sup> देख, खुदावन्द का दिन आता है, जब तेरा माल लूटकर तेरे अन्दर बाँटा जाएगा। <sup>2</sup> क्योंकि मैं सब क़ौमों को जमा' करूँगा कि येरूशलेम से जंग करें, और शहर ले लिया जाएगा और घर लूटे जाएँगे और 'औरतें बे हुरमत की जायेंगी और आधा शहर गुलामी में जाएगा, लेकिन बाक़ी लोग शहर ही में रहेंगे। <sup>3</sup> तब खुदावन्द खुरुज करेगा और उन क़ौमों से लड़ेगा, जैसे जंग के दिन लड़ा करता था। <sup>4</sup> और उस दिन वह को — हए — ज़ैतून पर जो येरूशलेम के पूरब में वाक़े' है खड़ा होगा और कोह — ए — ज़ैतून बीच से फट जाएगा; और उसके पूरब से पश्चिम तक एक बड़ी वादी हो जाएगी, क्योंकि आधा पहाड़ उत्तर को सरक जाएगा और आधा दक्खिन को। <sup>5</sup> और तुम मेरे पहाड़ों की वादी से होकर भागोगे, क्योंकि पहाड़ों की वादी अज़ल तक होगी; जिस तरह तुम शाह — ए — यहूदाह उज़्जियाह के दिनों में ज़लज़ले से भागे थे, उसी तरह भागोगे; क्योंकि खुदावन्द मेरा खुदा आएगा और सब कुदसी उसके साथ <sup>6</sup> और उस दिन रोशनी न होगी, और अज़राम — ए — फ़लक छिप जाएँगे। <sup>7</sup> लेकिन एक दिन ऐसा आएगा जो खुदावन्द ही को मा'लूम है। वह न दिन होगा न रात, लेकिन शाम के वक़्त रोशनी होगी। <sup>8</sup> और उस दिन येरूशलेम से आब — ए — हयात जारी होगा, जिसका आधा बहर — ए — पूरब की तरफ़ बहेगा और आधा बहर — ए — पच्छिम की तरफ़, गमीं सदी में जारी रहेगा। <sup>9</sup> और खुदावन्द सारी दुनिया का बादशाह होगा। उस दिन एक ही खुदावन्द होगा, और उसका

नाम वाहिद होगा। <sup>10</sup> और येरूशलेम के दक्खिन में तमाम मुल्क जिबा' से रिम्मोन तक मैदान की तरह हो जाएगा। लेकिन येरूशलेम बुलन्द होगा, और बिनयमीन के फाटक से पहले फाटक के मक़ाम या'नी कोने के फाटक तक, और हननएल के बुर्ज से बादशाह के अंगूरी हौज़ों तक, अपने मक़ाम पर आबाद होगा। <sup>11</sup> और लोग इसमें सुकूनत करेंगे और फिर ला'नत मुतलक न होगी, बल्कि येरूशलेम अमन — ओ — अमान से आबाद रहेगा। <sup>12</sup> और खुदावन्द येरूशलेम से जंग करने वाली सब क़ौमों पर यह 'ऐज़ाब नाज़िल करेगा, कि खड़े खड़े उनका गोश्त सूख जाएगा, और उनकी आँखे चश्म खानों में गल जायेंगी और उनकी ज़बान उनके मुँह में सड़ जाएगी। <sup>13</sup> और उस दिन खुदावन्द की तरफ़ से उनके बीच बड़ी हलचल होगी और एक दूसरे का हाथ पकड़ेंगे और एक दूसरे के खिलाफ़ हाथ उठाएगा। <sup>14</sup> और यहूदाह भी येरूशलेम के पास लड़ेगा, और चारों तरफ़ की सब क़ौमों का माल या'नी सोना — चाँदी और पोशाक बड़ी कसरत से इकट्ठा किया जाएगा। <sup>15</sup> और घोड़ों, खच्चरों, ऊँटों, गधों और सब हैवानों पर भी जो उन लश्करगाहों में होंगे, वही 'ऐज़ाब नाज़िल होगा <sup>16</sup> और येरूशलेम से लड़ने वाली क़ौमों में से जो बच रहेंगे, साल — ब — साल बादशाह रब्ब — उल — अफ़वाज को सिज्दा करने और 'ईद — ए — ख़ियाम मनाने को आएँगे। <sup>17</sup> और दुनिया के उन तमाम क़बाइल पर जो बादशाह रब्ब — उल — अफ़वाज के सामने सिज्दा करने को येरूशलेम में न आएँगे, मेंह न बरसेगा। <sup>18</sup> और अगर क़बाइल — ए — मिस्र जिन पर बारिश नहीं होती न आएँ, तो उन पर वही 'ऐज़ाब नाज़िल होगा जिसको खुदावन्द उन ग़ैर — क़ौमों पर नाज़िल करेगा, जो 'ईद — ए — ख़ियाम मनाने को न आएँगी। <sup>19</sup> अहल — ए — मिस्र और उन सब क़ौमों की, जो ईद — ए — ख़ियाम मनाने की न जाएँ यही सज़ा होगी। <sup>20</sup> उस दिन घोड़ों की घंटियों पर लिखा होगा, “खुदावन्द के लिये पाक।” और खुदावन्द के घर को देंगे, मज़बह के प्यालों की तरह पाक होंगे। <sup>21</sup> बल्कि येरूशलेम और यहूदाह में की सब देंगे, रब्ब — उल — अफ़वाज के लिए पाक होंगी, और सब ज़बीहे पेश करने वाले आयेंगे और उनको लेकर उनमें पकायेंगे और उस रोज़ फिर कोई कन'आनी रब्ब — उल — अफ़वाज के घर में न होगा।

## मलाकी

मलाकी 1:1

मलाकी 1:1 किताब के मुसन्निफ़ को मलाकी नबी बतौर पहचानती है। इब्रानी में यह नाम एक लफ़्ज़ी मा'नी पैग़म्बर से आता है जो मलाकी की अदाकारी को खुदावन्द का एक नबी होने बतौर इशारा करता है जो खुदा के लोगों को खुदा का पैग़म्बर सुनाता है। दुगनी समझ के मुताबिक़ मलाकी एक पैग़म्बर है जो हमारे लिए इस किताब को ले आया, और उसका पैग़ाम यह है कि मुस्तक़बिल में खुदा बड़े नबी एलियाह की तरह एक दूसरे पैग़म्बर को भेजेगा, खुदावन्द का दिन लौटने से पहले।

मलाकी 1:1

इस किताब की तस्नीफ़ की तारीख़ तक़रीबन 430 - 400 क़ब्लमसीह के बीच है।

यह जिलावत्नी से पहले की किताब है मतलब यह कि इस को बाबुल की गिरफ़्तारी से लौटने के बाद लिखा गया।

मलाकी 1:1

यरूशलेम में रहने वाले यहूदियों के लिए एक ख़त है और एक आम ख़त बतौर खुदा के लोगों के लिए जो हर जगह पाए जाते हैं।

मलाकी 1:1

लोगों को याद दिलाने के लिए कि खुदा वह सब कुछ करेगा। जो वह अपने लोगों की मदद बतौर कर सकता है। और उन्हें याद दिलाने के लिए कि खुदा उनको उनकी बुराइयों की बाबत ज़ामिन ठहराने के लिए पकड़े रहेगा जब वह मुन्सिफ़ की तरह आता है। लोगों को इस बात की तरफ़ तवज्जोह दिलाने के लिए कि वह अपने गुनाहों से तौबा करें ताकि मुआहिदे की बर्कतें पूरी की जाएं। यह मलाकी के ज़रिए खुदा की तंबीह थी ताकि लोगों से कहा गया कि खुदा की तरफ़ फ़िरो। मलाकी की किताब पुराने अहदनामे की आखरी किताब है उसी बतौर खुदा के इंसफ़ का एलान और उसकी बहाली का वायदा मसीहा के आने के ज़रिए से किया गया है जो बनी इस्राईल के कानों में बूज रहा है।

मलाकी 1:1

रिवाज व दस्तूर की पाबन्दी की तंबीह की गई है।

बैरूनी खाका

1. काहिनों को नसीहत कि वह खुदा की इज्जत करें — 1:1-2:9

2. यहूदा को नसीहत कि वह वफ़ादार रहें — 2:10-3:6

3. यहूदा को नसीहत कि वह खुदा की तरफ़ फ़िरो — 3:7-4:6

1 खुदावन्द की तरफ़ से मलाकी के ज़रिए' इस्राईल के लिए बार — ए — नबुव्वत:

मलाकी 1:1

2 खुदावन्द फ़रमाता है, “मैंने तुम से मुहब्बत रखी, तोभी तुम कहते हो, 'तूने किस बात में हम से मुहब्बत ज़ाहिर की?'” खुदावन्द फ़रमाता है, “क्या 'एसौ या'कूब का भाई न था? लेकिन मैंने या'कूब से मुहब्बत रखी, 3 और 'एसौ से 'अदावत रखी, और उसके पहाड़ों को वीरान किया और उसकी मीरास वीराने के गीदड़ों को दी।” 4 अगर अदोम कहे, “हम बर्बाद तो हुए, लेकिन वीरान जगहों को फिर आकर ता'मीर करेंगे, तो रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, अगरचे वह ता'मीर करें, लेकिन मैं ढाऊंगा, और लोग उनका ये नाम रखेंगे, 'शरारत का मुल्क', 'वह लोग जिन पर हमेशा खुदावन्द का क्रहर है।” 5 और तुम्हारी आँखें देखेंगी और तुम कहोगे कि “खुदावन्द की तम्ज़ीद, इस्राईल की हदों से आगे तक हो।”

मलाकी 1:1

6 रब्बुल — उल — अफ़वाज तुम को फ़रमाता है: “ऐ मेरे नाम की तहक़ीर करने वाले काहिनों, बेटा अपने बाप की, और नौकर अपने आका की ता'ज़ीम करता है। इसलिए अगर मैं बाप हूँ, तो मेरी 'इज्जत कहाँ है? और अगर आका हूँ, तो मेरा ख़ौफ़ कहाँ है? लेकिन तुम कहते हो, 'हमने किस बात में तेरे नाम की तहक़ीर की?'” 7 तुम मेरे मज़बह पर नापाक रोटी पेश करते हो और कहते हो कि 'हमने किस बात में तेरी तौहीन की?' इसी में जो कहते हो, खुदावन्द की मेज़ हक़ीर है। 8 जब तुम अंधे की कुर्बानी करते हो, तो कुछ बुराई नहीं? और जब लंगड़े और बीमार को पेश करते हो, तो कुछ नुक़सान नहीं? अब यही अपने हाकिम की नज़र कर, क्या वह तुझ से खुश होगा और तू उसका मंज़ूर — ए — नज़र होगा? रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। 9 अब ज़रा खुदा को मनाओ, ताकि वह हम पर रहम फ़रमाए। तुम्हारे ही हाथों ने ये पेश किया है; क्या तुम उसके मंज़ूर — ए — नज़र होगे? रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। 10 काश कि तुम में कोई ऐसा होता जो दरवाज़े बंद करता, और तुम मेरे मज़बह पर 'अबस आग न जलाते, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, मैं तुम से खुश नहीं हूँ और तुम्हारे हाथ का हदिया हरगिज़ कुबूल न

करूँगा। <sup>11</sup>क्योंकि आफ़ताब के तुलू' से गुरुब तक क्रौमों में मेरे नाम की तम्जीद होगी, और हर जगह मेरे नाम पर खुशबू जलाएँगे और पाक हृदिये पेश करेंगे; क्योंकि क्रौमों में मेरे नाम की तम्जीद होगी, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। <sup>12</sup>लेकिन तुम इस बात में उसकी तौहीन करते हो, कि तुम कहते हो, 'खुदावन्द की मेज़ पर क्या है, उस पर के हृदिये बेहक्रीकत हैं।' <sup>13</sup>और तुम ने कहा, 'ये कैसी ज़हमत है,' और उस पर नाक चढ़ाई रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। फिर तुम लूट का माल और लंगड़े और बीमार ज़बीहे लाए, और इसी तरह के हृदिये पेश करे! क्या मैं इनको तुम्हारे हाथ से कुबूल करूँ? खुदावन्द फ़रमाता है। <sup>14</sup>ला'नत उस दगाबाज़ पर जिसके गल्ले में नर है, लेकिन खुदावन्द के लिए 'ऐबदार जानवर की नज़र मानकर पेश करता है; क्योंकि मैं शाह — ए — 'अज़ीम हूँ और क्रौमों में मेरा नाम मुहीब है, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है।

## 2

???????? ?? ???????

<sup>1</sup> “और अब ऐ काहिनो, तुम्हारे लिए ये हुक्म है। <sup>2</sup>रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, अगर तुम नहीं सुनोगे, और मेरे नाम की तम्जीद को मद्द — ए — नज़र न रखोगे, तो मैं तुम को और तुम्हारी ने'मतों को मला'ऊन करूँगा; बल्कि इसलिए कि तुमने उसे मद्द — ए — नज़र न रखवा, मैं मला'ऊन कर चुका हूँ। <sup>3</sup>देखो, मैं तुम्हारे बाज़ू बेकार कर दूँगा, और तुम्हारे मुँह पर नापाकी या'नी तुम्हारी कुर्बानियों की नापाकी फेकूँगा, और तुम उसी के साथ फेंक दिए जाओगे। <sup>4</sup>और तुम जान लोगे कि मैंने तुम को ये हुक्म इसलिए दिया है के मेरा 'अहद लावी के साथ कायम रहे; रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। <sup>5</sup>उसके साथ मेरा 'अहद ज़िन्दगी और सलामती का था, और मैंने ज़िन्दगी और सलामती इसलिए बरूँगी कि वह डरता रहे; चुनाँचे वह मुझ से डरा और मेरे नाम से तरसान रहा। <sup>6</sup>सच्चाई की शरी'अत उसके मुँह में थी, और उसके लबों पर नारास्ती न पाई गई। वह मेरे सामने सलामती और रास्ती से चलता रहा, और वह बहुतों को बदी की राह से वापस लाया। <sup>7</sup>क्योंकि लाज़िम है कि काहिन के लब मा'रिफ़त को महफूज़ रखें, और लोग उसके मुँह से शर'ई मसाइल पूछें, क्योंकि वह रब्ब — उल — अफ़वाज का रसूल है। <sup>8</sup>लेकिन तुम राह से फिर गए। तुम शरी'अत में बहुतों के लिए ठोकर का ज़रिया' हुए। तुम ने लावी के 'अहद को ख़राब किया, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है,

<sup>9</sup> इसलिए मैंने तुम को सब लोगों की नज़र में ज़लील और हकीर किया, क्योंकि तुम मेरी राहों पर कायम न रहे, बल्कि तुम ने शर'ई मुआ'मिलात में रूदारी की।” <sup>10</sup>क्या हम सबका एक ही बाप नहीं? क्या एक ही खुदा ने हम सब को पैदा नहीं किया? फिर क्यों हम अपने भाइयों से बेवफ़ाई करके अपने बाप — दादा के 'अहद की बेहुरमती करते हैं? <sup>11</sup>यहूदाह ने बेवफ़ाई की, इस्राईल और येरूशलेम में मकरूह काम हुआ है। यहूदाह ने खुदावन्द की पाकीज़गी को, जो उसको अज़ीज़ थी बेहुरमत किया, और एक ग़ैर मा'बूद की बेटी ब्याह लाया। <sup>12</sup>खुदावन्द ऐसा करने वाले को, ज़िन्दा और जवाब दहिन्दा और रब्ब — उल — अफ़वाज के सामने कुर्बानी पेश करने वाले, या'कूब के खेमों से मुनक़ता' कर देगा। <sup>13</sup>फिर तुम्हारे 'आमाल की वजह से, खुदावन्द के मज़बह पर आह — ओ — नाला और आँसुओं की ऐसी कसरत है कि वह न तुम्हारे हृदिये को देखेगा और न तुम्हारे हाथ की नज़र को खुशी से कुबूल करेगा। <sup>14</sup>तोभी तुम कहते हो, “वजह क्या है?” वजह ये है कि खुदावन्द तेरे और तेरी जवानी की बीवी के बीच गवाह है, तूने उससे बेवफ़ाई की है, अगरचे वह तेरी दोस्त और मनकूहा बीवी है। <sup>15</sup>और क्या उसने एक ही को पैदा नहीं किया, बावजूद कि उसके पास और भी अरवाह मौजूद थीं? फिर क्यों एक ही को पैदा किया? इसलिए कि खुदातरस नस्त पैदा हो। इसलिए तुम अपने नफ़स से ख़बरदार रहो, और कोई अपनी जवानी की बीवी से बेवफ़ाई न करे। <sup>16</sup>क्योंकि खुदावन्द इस्राईल का खुदा फ़रमाता है, “मैं तलाक़ से बेज़ार हूँ, और उससे भी जो अपनी बीवी पर ज़ुल्म करता है, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, इसलिए तुम अपने नफ़स से ख़बरदार रहो ताकि बेवफ़ाई न करो।” <sup>17</sup>तुमने अपनी बातों से खुदावन्द को बेज़ार कर दिया; तोभी तुम कहते हो, “किस बात में हम ने उसे बेज़ार किया?” इसी में जो कहते हो कि “हर शख्स जो बुराई करता है, खुदावन्द की नज़र में नेक है, और वह उससे खुश है, और ये के 'अदल का खुदा कहाँ है?”

## 3

???????? ?? ???

<sup>1</sup> देखो मैं अपने रसूल को भेजूँगा और वह मेरे आगे राह दुरुस्त करेगा, और खुदावन्द, जिसके तुम तालिब हो, वह अचानक अपनी हैकल में आ मौजूद होगा। हाँ, 'अहद का रसूल, जिसके तुम आरज़ूमन्द हो आएगा, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। <sup>2</sup>लेकिन उसके आने के दिन की किसमें ताब है? और जब उसका ज़हूर

होगा, तो कौन खड़ा रह सकेगा? क्योंकि वह सुनार की आग और धोबी के साबुन की तरह है। <sup>3</sup> और वह चाँदी को ताने और पाक — साफ करने वाले की तरह बैठेगा, और बनी लावी को सोने और चाँदी की तरह पाक — साफ करेगा ताकि रास्तबाज़ी से खुदावन्द के सामने हृदिये पेश करें। <sup>4</sup> तब यहूदाह और येरूशलेम का हृदिया खुदावन्द को पसन्द आएगा, जैसा गुज़रे दिनों और गुज़रे ज़माने में। <sup>5</sup> और मैं 'अदालत के लिए तुम्हारे नज़दीक आऊँगा और जादूगरों और बदकारों और झूठी कसम खाने वालों के खिलाफ़, और उनके खिलाफ़ भी जो मज़दूरों को मज़दूरी नहीं देते, और बेवाओं और यतीमों पर सितम करते और मुसाफ़िरों की हक़ तल्फ़ी करते हैं और मुझ से नहीं डरते हैं, मुस्त'इद गवाह हूँगा, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। <sup>6</sup> “क्योंकि मैं खुदावन्द ला — तब्दील हूँ, इसीलिए ऐ बनी या'कूब, तुम हलाक नहीं हुए। <sup>7</sup> तुम अपने बाप — दादा के दिनों से मेरे तौर तरीक़े से फ़िरे रहे और उनको नहीं माना। तुम मेरी तरफ़ रुजू' हो, तो मैं तुम्हारी तरफ़ रुजू' हूँगा रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है लेकिन तुम कहते हो कि 'हम किस बात में रुजू' हों?' <sup>8</sup> क्या कोई आदमी खुदा को ठगेगा? लेकिन तुम मुझको ठगते हो और कहते हो, 'हम ने किस बात में तुझे ठगा?' दहेकी और हृदिये में। <sup>9</sup> इसलिए तुम सख़्त मला'ऊन हुए, क्योंकि तुमने बल्कि तमाम क़ौम ने मुझे ठगा। <sup>10</sup> पूरी दहेकी ज़ख़ीरेखाने में लाओ, ताकि मेरे घर में खुराक हो। और इसी से मेरा इम्तिहान करो रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, कि मैं तुम पर आसमान के दरिचों को खोल कर बरकत बरसाता हूँ कि नहीं, यहाँ तक कि तुम्हारे पास उसके लिए जगह न रहे। <sup>11</sup> और मैं तुम्हारी खातिर टिड्डी को डाटूँगा और वह तुम्हारी ज़मीन की फ़सल को बर्बाद न करेगी, और तुम्हारे ताकिस्तानों का फल कच्चा न झड़ जाएगा, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। <sup>12</sup> और सब क़ौमों तुम को मुबारक कहेंगी, क्योंकि तुम दिलकुशा मम्लुकत होगे, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। <sup>13</sup> “खुदावन्द फ़रमाता है, तुम्हारी बातें मेरे खिलाफ़ बहुत सख़्त हैं। तोभी तुम कहते हो, 'हम ने तेरी मुख़ालिफ़त में क्या कहा? <sup>14</sup> तुमने तो कहा, 'खुदा की इबादत करना 'अबस है। रब्ब — उल — अफ़वाज के हुक्मों पर 'अमल करना, और उसके सामने मातम करना बे — फ़ायदा है। <sup>15</sup> और अब हम मगरूरों को नेकबख़्त कहते हैं। शरीर कामयाब होते हैं और खुदा को आजमाने पर भी रिहाई पाते हैं।” <sup>16</sup> तब खुदातरसों ने आपस में गुफ़्तगू की, और खुदावन्द

ने मुतवज्जिह होकर सुना और उनके लिए जो खुदावन्द से डरते और उसके नाम को याद करते थे, उसके सामने यादगार का दफ़्तर लिखा गया। <sup>17</sup> रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है उस रोज़ वह मेरे लोग, बल्कि मेरी खास मिल्लिकयत होंगे; और मैं उन पर ऐसा रहीम हूँगा जैसा बाप अपने ख़िदमतगुज़ार बेटे पर होता है। <sup>18</sup> तब तुम रुजू' लाओगे, और सादिक़ और शरीर में और खुदा की इबादत करने वाले और न करने वाले में फ़र्क़ करोगे।

#### 4

???? ???? ???? ???? ??

<sup>1</sup> क्योंकि देखो वह दिन आता है जो भट्टी की तरह सोज़ान होगा। तब सब मगरूर और बदकिरदार भूसे की तरह होंगे और वह दिन उनको ऐसा जलाएगा कि शाख — ओ — बुन कुछ न छोड़ेगा, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। <sup>2</sup> लेकिन तुम पर जो मेरे नाम की ता'ज़ीम करते हो, आफ़ताब — ए — सदाक़त ताली'अ होगा, और उसकी किरनों में शिफ़ा होगी; और तुम गावखाने के बछड़ों की तरह कूदो — फाँदोगे। <sup>3</sup> और तुम शरीरों को पायमाल करोगे, क्योंकि उस रोज़ वह तुम्हारे पाँव तले की राख होंगे, रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है। <sup>4</sup> “तुम मेरे बन्दे मूसा की शरी'अत या'नी' उन फ़राइज़ — ओ — अहक़ाम को, जो मैंने होरिब पर तमाम बनी — इस्राईल के लिए फ़रमाए, याद रखो। <sup>5</sup> देखो, खुदावन्द के बुज़ुर्ग और ग़ज़बनाक दिन के आने से पहले, मैं एलियाह नबी को तुम्हारे पास भेजूँगा। <sup>6</sup> और वह बाप का दिल बेटे की तरफ़, और बेटे का बाप की तरफ़ माइल करेगा; मुबादा मैं आऊँ और ज़मीन को मला'ऊन करूँ।”



## मुकद्दस मत्ती की मा'रिफ़त इन्जील

?????????? ?? ???????

मत्ती जो इस किताब का मुसन्निफ़ है एक महसूल लेने वाला था जिस ने येसू के पीछे चलने के लिए अपना पेशा छोड़ दिया था (मत्ती 9:9, 13) मरकुम और लूका अपनी किताबों में उसको लावी करके हवाला पेश करते हैं। उसके नाम के मायने हैं खुदावन्द का इनाम! इब्तिदाई कलीसिया के बुजुर्ग एक साथ मिलकर मत्ती को इस किताब का मुसन्निफ़ होने और बारह रसूलों में से एक होने को मंजूरी देते हैं। मत्ती येसू के वाक्क्रिआत का आँखों देखी गवाह था, यानी कि उसकी खिदमत गुजारी का। मत्ती की इन्जील का मवाज़िना दीगर अनाजील के साथ करके मुताला करने पर वाक्क्रिआत साबित करते हैं कि मसीह की पैग़म्बराना गवाही को तक़सीम नहीं किया गया था।

????? ?????? ?? ?????????? ?? ?????

इस की तस्नीफ़ की तारीख़ तक़रीबन 50 - 70 ईस्वी के आस पास है।

मत्ती की इनजील जो यहूदियों के तर्ज पर है ग़ौर करने पर मालूम पड़ता है कि यह फ़लसतीन या सीरिया में लिखी गई है, हालांकि बहुत से उलमा इस को अन्ताकिया में लिखे जाने पर इत्फ़ाक़ रखते हैं।

?????? ?????????????? ?????? ??????

चूँकि मत्ती की इन्जील इब्रानी जुबान में लिखी गई थी तो मत्ती ने ऐसे कारिर्डन को इस की तरफ़ मायल किया जो इब्रानी बोलने वाले यहूदी क्रौम के लोग थे। इन्जील के कई एक इब्तिदाई उसूल यहूदी मतन में आलिम होने की तरफ़ इशारा करते हैं। मत्ती ने पुराने अहदनामे की बातें मसीह में पूरा होने की तरफ़ ध्यान दिया। उसका येसू के नसबनामे में अब्राहम को शामिल करना; (1:1, 17) उसका यहूदी इसतिलाहियात का इस्तेमाल करना (मिसाल बतौर, आस्मान की बादशाही, जहाँ यहूदी लोग खुदा के नाम को बे फ़ाइदा लेने से गुरेज़ करते हैं और येसू को खुदा का बेटा कहने के बदले इब्न — ए — दाऊद का इस्तेमाल करना; 1:1; 9:27; 12:23; 15:22; 20:30, 31; 21, 21:9, 15; 22:41, 45) यह सब इस बात की तरफ़ इशारा करते हैं कि मत्ती ने ज्यादातर यहूदी क्रौम की तरफ़ ध्यान दिया।

????? ??????????

इस इन्जील को मत्ती जब लिख रहा था तो उस का मुद्दा यहूदी कारिर्डन को बा ज़ाबिता एलान करना था कि

येसू ही मसीहा है। यहां पूरा ध्यान इस तरफ़ दिया गया है कि खुदा की बादशाही को बनी इंसान के लिए लाए जाने का दावा करे। अपनी इन्जील में मत्ती येसू को बादशाह बतौर होने पर ज़ोर देता है जो पुराने अहदनामे की नबुवतों और तवक्क़ों को पूरा करता है (मत्ती 1:1; 16:16; 20:28)।

???????

येसू — यहूदियों का बादशाह।

**बैरूनी खाका**

1. येसू की पैदाइश — 1:1-2:23
2. येसू की गलील की खिदमतगुजारी — 3:1-18:35
3. येसू की यहूदिया की खिदमतगुजारी — 19:1-20:34
4. यहूदिया में आखरी अय्याम — 21:1-27:66
5. आखरी वाक्क्रिआत — 28:1-20

????? ?????? ?? ???????????

1 ईसा मसीह इबने दाऊद इबने इब्राहीम का नसबनामा। 2 इब्राहीम से इज्हाक़ पैदा हुआ, और इज्हाक़ से याक़ूब पैदा हुआ, और या'क़ूब से यहूदा और उस के भाई पैदा हुए; 3 और यहूदा से फ़ारस और ज़ारह तमर से पैदा हुए, और फ़ारस से हसरोंन पैदा हुआ, और हसरोंन से राम पैदा हुआ; 4 और राम से अम्मीनदाब पैदा हुआ, और अम्मीनदाब से नहूसोन पैदा हुआ, और नहूसोन से सलमोन पैदा हुआ; 5 और सलमोन से बो'अज़ राहब से पैदा हुआ, और बो'अज़ से ओबेद रूत से पैदा हुआ, और ओबेद से यस्सी पैदा हुआ; 6 और यस्सी से दाऊद बादशाह पैदा हुआ। और दाऊद से सुलैमान उस 'औरत से पैदा हुआ जो पहले ऊरिय्याह की बीवी थी; 7 और सुलैमान से रहुब'आम पैदा हुआ, और रहुब'आम से अबिय्याह पैदा हुआ, और अबिय्याह से आसा पैदा हुआ; 8 और आसा से यहूसफ़त पैदा हुआ, और यहूसफ़त से यूराम पैदा हुआ, और यूराम से उज्जियाह पैदा हुआ; 9 उज्जियाह से यूताम पैदा हुआ, और यूताम से आखज़ पैदा हुआ, और आखज़ से हिज़क्रियाह पैदा हुआ; 10 और हिज़क्रियाह से मनस्सी पैदा हुआ, और मनस्सी से अमून पैदा हुआ, और अमून से यूसियाह पैदा हुआ; 11 और गिरफ़्तार होकर बाबुल जाने के ज़माने में यूसियाह से यकुनियाह और उस के भाई पैदा हुए; 12 और गिरफ़्तार होकर बाबुल जाने के बाद यकुनियाह से सियालतीएल पैदा हुआ, और सियालतीएल से ज़रुब्बाबुल पैदा हुआ। 13 और ज़रुब्बाबुल से अबीहूद पैदा हुआ, और अबीहूद

से इलियाकीम पैदा हुआ, और इलियाकीम से आजोर पैदा हुआ; 14 और आजोर से सदोक पैदा हुआ, और सदोक से अखीम पैदा हुआ, और अखीम से इलीहूद पैदा हुआ; 15 और इलीहूद से इलीअज़र पैदा हुआ, और अलीअज़र से मत्तान पैदा हुआ, और मत्तान से याकूब पैदा हुआ; 16 और याकूब से यूसुफ़ पैदा हुआ, ये उस मरियम का शौहर था जिस से ईसा पैदा हुआ, जो मसीह कहलाता है। 17 पस सब पुश्तें इब्राहीम से दाऊद तक चौदह पुश्तें हुई, और दाऊद से लेकर गिरफ़्तार होकर बाबुल जाने तक चौदह पुश्तें, और गिरफ़्तार होकर बाबुल जाने से लेकर मसीह तक चौदह पुश्तें हुई।

????? ? ? ? ? ? ? ?

18 अब ईसा मसीह की पैदाइश इस तरह हुई कि जब उस की माँ मरियम की मंगनी यूसुफ़ के साथ हो गई: तो उन के एक साथ होने से पहले वो रूह — उल कुद्स की कुदरत से हामिला पाई गई। 19 पस उस के शौहर यूसुफ़ ने जो रास्तबाज़ था, और उसे बदनाम नहीं करना चाहता था। उसे चुपके से छोड़ देने का इरादा किया। 20 वो ये बातें सोच ही रहा था, कि खुदावन्द के फ़रिश्ते ने उसे ख़्वाब में दिखाई देकर कहा, ऐ यूसुफ़ “इबने दाऊद अपनी बीवी मरियम को अपने यहाँ ले आने से न डर; क्योंकि जो उस के पेट में है, वो रूह — उल — कुद्स की कुदरत से है। 21 उस के बेटा होगा और तू उस का नाम ईसा रखना, क्योंकि वह अपने लोगों को उन के गुनाहों से नजात देगा।” 22 यह सब कुछ इस लिए हुआ कि जो खुदावन्द ने नबी के ज़रिए कहा था, वो पूरा हो कि। 23 “देखो एक कुंवारी हामिला होगी। और बेटा जनेंगी और उस का नाम इम्मानुएल रखेंगे,” जिसका मतलब है — खुदा हमारे साथ। 24 पस यूसुफ़ ने नींद से जाग कर वैसा ही किया जैसा खुदावन्द के फ़रिश्ते ने उसे हुक्म दिया था, और अपनी बीवी को अपने यहाँ ले गया। 25 और उस को न जाना जब तक उस के बेटा न हुआ और उस का नाम ईसा रखवा।

## 2

????? ? ? ? ? ? ? ?

1 जब ईसा हेरोदेस बादशाह के ज़माने में यहूदिया के बैत — लहम में पैदा हुआ। तो देखो कई मजूसी पूरब से येरूशलेम में ये कहते हुए आए। 2 “यहूदियों का बादशाह जो पैदा हुआ है, वो कहाँ है? क्योंकि पूरब में उस का सितारा देखकर हम उसे सज्दा करने आए हैं।” 3 यह सुन कर हेरोदेस बादशाह और उस के साथ

येरूशलेम के सब लोग घबरा गए। 4 और उस ने क्रौम के सब सरदार काहिनों और आलिमों को जमा करके उन से पूछा, “मसीह की पैदाइश कहाँ होनी चाहिए?” 5 उन्होंने ने उस से कहा, यहूदिया के बैत-लहम में, क्योंकि नबी के ज़रिए यूँ लिखा गया है कि,

6 “ऐ बैत-लहम, यहूदिया के 'इलाके तू यहूदाह के हाकिमों में हरगिज़ सब से छोटा नहीं। क्योंकि तुझ में से एक सरदार निकलेगा जो मेरी क्रौम इस्राईल की निगहबानी करेगा।” 7 इस पर हेरोदेस ने मजूसियों को चुपके से बुला कर उन से मालूम किया कि वह सितारा किस वक़्त दिखाई दिया था। 8 और उन्हें ये कह कर “बैतलहम भेजा कि जा कर उस बच्चे के बारे में ठीक — ठीक मालूम करो और जब वो मिले तो मुझे ख़बर दो ताकि मैं भी आ कर उसे सिज्दा करूँ।” 9 वो बादशाह की बात सुनकर ख़ाना हुए और देखो, जो सितारा उन्होंने पूरब में देखा था; वो उनके आगे — आगे चला; यहाँ तक कि उस जगह के ऊपर जाकर ठहर गया जहाँ वो बच्चा था। 10 वो सितारे को देख कर निहायत खुश हुए। 11 और उस घर में पहुँचकर बच्चे को उस की माँ मरियम के पास देखा; और उसके आगे गिर कर सिज्दा किया। और अपने डिब्बे खोल कर सोना, और लुबान और मुर उसको नज़र किया। 12 और हेरोदेस के पास फिर न जाने की हिदायत ख़्वाब में पाकर दूसरी राह से अपने मुल्क को ख़ाना हुए।

????? ? ? ? ? ? ? ?

13 जब वो ख़ाना हो गए तो देखो खुदावन्द के फ़रिश्ते ने यूसुफ़ को ख़्वाब में दिखाई देकर कहा, “उठ बच्चे और उस की माँ को साथ लेकर मिस्र को भाग जा: और जब तक कि मैं तुझ से न कहूँ वहीं रहना; क्योंकि हेरोदेस इस बच्चे को तलाश करने को है, ताकि इसे हलाक करे।” 14 पस वो उठा और रात के वक़्त बच्चे और उस की माँ को साथ ले कर मिस्र के लिए ख़ाना हो गया। 15 और हेरोदेस के मरने तक वहीं रहा ताकि जो खुदावन्द ने नबी के ज़रिए कहा था, वो पूरा हो “कि मिस्र से मैंने अपने बेटे को बुलाया।”

16 जब हेरोदेस ने देखा कि मजूसियों ने मेरे साथ हँसी की तो निहायत गुस्सा हुआ और आदमी भेजकर बैतलहम और उसकी सब सरहदों के अन्दर के उन सब लड़कों को क़त्ल करवा दिया जो दो — दो बरस के या इस से छोटे थे, उस वक़्त के हिसाब से जो उसने मजूसियों से तहकीक़ की थी। 17 उस वक़्त वो बात पूरी हुई जो यर्मियाह नबी के ज़रिए कही गई थी। 18 “रामा में आवाज़ सुनाई दी, रोना और बड़ा मातम। राख़िल

अपने बच्चे को रो रही है और तसल्ली कबूल नहीं करती, इसलिए कि वो नहीं हैं।”

222222 22 222222

19 जब हेरोदेस मर गया, तो देखो खुदावन्द के फ़रिश्ते ने मिस्र में यूसुफ़ को ख़्वाब में दिखाई देकर कहा कि। 20 उठ इस बच्चे और इसकी माँ को लेकर इस्राईल के मुल्क में चला जा, क्योंकि जो बच्चे की जान लेने वाले थे वो मर गए 21 पस वो उठा और बच्चे और उस की माँ को ले कर मुल्क — ए — इस्राईल में लौट आया। 22 मगर जब सुना कि अख़िलाउस अपने बाप हेरोदेस की जगह यहूदिया में बादशाही करता है तो वहाँ जाने से डरा, और ख़्वाब में हिदायत पाकर गलील के इलाक़े को खाना हो गया। 23 और नासरत नाम एक शहर में जा बसा, ताकि जो नबियों की मारिफ़त कहा गया था वो पूरा हो, “वह नासरी कहलाएगा।”

### 3

22222222 2222222222 22222 22222

1 उन दिनों में यहून्ना बपतिस्मा देने वाला आया और यहूदिया के वीराने में ये ऐलान करने लगा कि, 2 “तौबा करो, क्योंकि आस्मान की बादशाही नज़दीक आ गई है।” 3 ये वही है जिस का ज़िक्र यसायाह नबी के ज़रिए यूँ हुआ कि वीराने में पुकारने वाले की आवाज़ आती है, कि खुदावन्द की राह तैयार करो! उसके रास्ते सीधे बनाओ।

4 ये यहून्ना ऊँटों के बालों की पोशाक पहने और चमड़े का पटका अपनी कमर से बाँधे रहता था। और इसकी खुराक टिड्डियाँ और जंगली शहद था। 5 उस वक़्त येरूशलेम, और सारे यहूदिया और यरदन और उसके आस पास के सब लोग निकल कर उस के पास गए। 6 और अपने गुनाहों का इक्रार करके। यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया? 7 मगर जब उसने बहुत से फ़रीसियों और सद्क़ियों को बपतिस्मे के लिए अपने पास आते देखा तो उनसे कहा कि, ऐ साँप के बच्चो तुम को किस ने बता दिया कि आने वाले ग़ज़ब से भागो? 8 पस तौबा के मुताबिक़ फल लाओ। 9 और अपने दिलों में ये कहने का खयाल न करो कि अब्रहाम हमारा बाप है क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि खुदा “इन पत्थरों से अब्रहाम के लिए औलाद पैदा कर सकता है। 10 अब दरख़्तों की जड़ पर कुल्हाड़ा रखवा हुआ है पस, जो दरख़्त अच्छा फल नहीं लाता वो काटा और आग में डाला जाता है।

11 “मैं तो तुम को तौबा के लिए पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन जो मेरे बाद आता है मुझ से बड़ा है; मैं

उसकी जूतियाँ उठाने के लायक़ नहीं। वो तुम को रूह — उल कुददूस और आग से बपतिस्मा देगा। 12 उस का छाज उसके हाथ में है और वो अपने खलियान को खूब साफ़ करेगा, और अपने गेहूँ को तो खित्ते में जमा करेगा, मगर भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने वाली नहीं।”

22222222 22 222222 2222 22 2222222222

13 उस वक़्त ईसा गलील से यरदन के किनारे यहून्ना के पास उस से बपतिस्मा लेने आया। 14 मगर यहून्ना ये कह कर उसे मनह करने लगा, “मैं आप तुझ से बपतिस्मा लेने का मोहताज हूँ, और तू मेरे पास आया है?” 15 ईसा ने जवाब में उस से कहा, “अब तू होने ही दे, क्योंकि हमें इसी तरह सारी रास्तबाज़ी पूरी करना मुनासिब है। इस पर उस ने होने दिया।” 16 और ईसा बपतिस्मा लेकर फ़ौरन पानी के ऊपर आया। और देखो, उस के लिए आस्मान खुल गया और उस ने खुदा की रूह को कबूतर की शक़ल में उतरते और अपने ऊपर आते देखा। 17 और देखो आसमान से ये आवाज़ आई: “ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं खुश हूँ।”

### 4

2222 22 2222222222

1 उस वक़्त रूह ईसा को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से आज़माया जाए। 2 और चालीस दिन और चालीस रात फ़ाका कर के आखिर को उसे भूख लगी। 3 और आज़माने वाले ने पास आकर उस से कहा “अगर तू खुदा का बेटा है तो फ़रमा कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ।” 4 उस ने जवाब में कहा, “लिखा है आदमी सिर्फ़ रोटी ही से ज़िन्दा न रहेगा; बल्कि हर एक बात से जो खुदा के मुँह से निकलती है।”

5 तब इब्लीस उसे मुक़द्दस शहर में ले गया और हैकल के कंगूरे पर खड़ा करके उस से कहा। 6 “अगर तू खुदा का बेटा है तो अपने आपको नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है कि वह तेरे बारे में अपने फ़रिश्तों को हुक्म देगा, और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि ऐसा न हो कि तेरे पैर को पत्थर से ठेस लगे।” 7 ईसा ने उस से कहा, “ये भी लिखा है; तू खुदावन्द अपने खुदा की आज़माइश न कर।” 8 फिर इब्लीस उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और दुनिया की सब सल्तनतें और उन की शान — ओ शौकत उसे दिखाई। 9 और उससे कहा कि अगर तू झुक कर मुझे सज्दा करे तो ये सब कुछ तुझे दे दूँगा 10 ईसा ने उस से कहा, “ऐ शैतान दूर हो क्योंकि लिखा है, तू खुदावन्द अपने खुदा को सज्दा कर और सिर्फ़ उसी की

**इबादत कर।”** 11 तब इब्नीस उस के पास से चला गया; और देखो फ़रिश्ते आ कर उस की खिदमत करने लगे।

2222 22 222222 22 2222222

12 जब उस ने सुना कि यूहन्ना पकड़वा दिया गया तो गलील को खाना हुआ; 13 और नासरत को छोड़ कर कफ़रनहूम में जा बसा जो झील के किनारे ज़बलून और नफ़ताली की सरहद पर है। 14 ताकि जो यसा'याह नबी की मारिफ़त कहा गया था, वो पूरा हो। 15 “ज़बलून का इलाक़ा, और नफ़ताली का इलाक़ा, दरिया की राह यर्दन के पार, ग़ैर क़ौमों की गलील: 16 या'नी जो लोग अन्धेरे में बैठे थे, उन्होंने बड़ी रौशनी देखी; और जो मौत के मुल्क और साए में बैठे थे, उन पर रौशनी चमकी।”

17 उस वक़्त से ईसा ने एलान करना और ये कहना शुरू किया “तौबा करो, क्यूँकि आस्मान की बादशाही नज़दीक आ गई है।”

2222 2222222222 22 2222222 22222

18 उस ने गलील की झील के किनारे फिरते हुए दो भाइयों या'नी शमौन को जो पतरस कहलाता है; और उस के भाई अन्दरयास को। झील में जाल डालते देखा, क्यूँकि वह मछली पकड़ने वाले थे। 19 और उन से कहा, “मेरे पीछे चले आओ, मैं तुम को आदमी पकड़ने वाला बनाऊँगा।” 20 वो फ़ौरन जाल छोड़ कर उस के पीछे हो लिए। 21 वहाँ से आगे बढ़ कर उस ने और दो भाइयों या'नी, ज़ब्दी के बेटे याक़ूब और उस के भाई यूहन्ना को देखा। कि अपने बाप ज़ब्दी के साथ नाव पर अपने जालों की मरम्मत कर रहे हैं। और उन को बुलाया। 22 वह फ़ौरन नाव और अपने बाप को छोड़ कर उस के पीछे हो लिए।

2222 22222222 22 2222222 22222 2222

23 ईसा पुरे गलील में फिरता रहा, और उनके इबादतख़ानों में तालीम देता, और बादशाही की खुशख़बरी का एलान करता और लोगों की हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी को दूर करता रहा। 24 और उस की शोहरत पूरे सूब — ए — सूरिया में फैल गई, और लोग सब बिमारों को जो तरह — तरह की बीमारियों और तकलीफ़ों में गिरफ़्तार थे; और उन को जिन में बदरूहें थी, और मिर्गी वालों और मफ़्लूजों को उस के पास लाए और उसने उन को अच्छा किया। 25 और गलील, और दिकपुलिस, और येरूशलेम, और यहूदिया और यर्दन के पार से बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।

## 5

2222 22 22222222 22'222

1 वो इस भीड़ को देख कर ऊँची जगह पर चढ़ गया। और जब बैठ गया तो उस के शागिर्द उस के पास आए।

2 और वो अपनी ज़बान खोल कर उन को यूँ ता'लीम देने लगा।

22222222222222222222

3 मुबारिक हैं वो जो दिल के ग़रीब हैं क्यूँकि आस्मान की बादशाही उन्हीं की है।

4 मुबारिक हैं वो जो ग़मगीन हैं, क्यूँकि वो तसल्ली पाएँगे।

5 मुबारिक हैं वो जो हलीम हैं, क्यूँकि वो ज़मीन के वारिस होंगे।

6 मुबारिक हैं वो जो रास्तबाज़ी के भूखे और प्यासे हैं, क्यूँकि वो सेर होंगे।

7 मुबारिक हैं वो जो रहमदिल हैं, क्यूँकि उन पर रहम किया जाएगा।

8 मुबारिक हैं वो जो पाक दिल हैं, क्यूँकि वह खुदा को देखेंगे।

9 मुबारिक हैं वो जो सुलह कराते हैं, क्यूँकि वह खुदा के बेटे कहलाएँगे।

10 मुबारिक हैं वो जो रास्तबाज़ी की वजह से सताए गए हैं, क्यूँकि आस्मान की बादशाही उन्हीं की है।

11 जब लोग मेरी वजह से तुम को लान — तान करेंगे, और सताएँगे; और हर तरह की बुरी बातें तुम्हारी निस्वत नाहक कहेंगे; तो तुम मुबारिक होगे। 12 खुशी करना और निहायत शादमान होना क्यूँकि आस्मान पर तुम्हारा अज़र बड़ा है। इसलिए कि लोगों ने उन नबियों को जो तुम से पहले थे, इसी तरह सताया था।

2222 22 2222

13 तुम ज़मीन के नमक हो। लेकिन अगर नमक का मज़ा जाता रहे तो वो किस चीज़ से नमकीन किया जाएगा? फिर वो किसी काम का नहीं सिवा इस के कि बाहर फेंका जाए और आदमियों के पैरों के नीचे रौंदा जाए। 14 तुम दुनिया के नूर हो। जो शहर पहाड़ पर बसा है वो छिप नहीं सकता। 15 और चिराग़ जलाकर पैमाने के नीचे नहीं बल्कि चिराग़दान पर रखते हैं; तो उस से घर के सब लोगों को रौशनी पहुँचती है। 16 इसी तरह तुम्हारी रौशनी आदमियों के सामने चमके, ताकि वो तुम्हारे नेक कामों को देखकर तुम्हारे बाप की जो आसमान पर है बड़ाई करें।

2222'22 22 22222'22222222 22'2222

17 “ये न समझो कि मैं तौरेत या नबियों की किताबों को मन्सूख करने आया हूँ, मन्सूख करने नहीं बल्कि पूरा करने आया हूँ। 18 क्यूँकि मैं तुम से सच कहता हूँ, जब



तक आस्मान और ज़मीन टल न जाएँ, एक नुक्ता या एक शोशा तौरेत से हरगिज़ न टलेगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए। 19 पस जो कोई इन छोटे से छोटे हुक्मों में से किसी भी हुक्म को तोड़ेगा, और यही आदमियों को सिखाएगा। वो आसमान की बादशाही में सब से छोटा कहलाएगा; लेकिन जो उन पर अमल करेगा, और उन की ता'लीम देगा; वो आसमान की बादशाही में बड़ा कहलाएगा। 20 क्यूँकि मैं तुम से कहता हूँ, कि अगर तुम्हारी रास्तबाज़ी आलिमों और फ़रीसियों की रास्तबाज़ी से ज्यादा न होगी, तो तुम आसमान की बादशाही में हरगिज़ दाखिल न होगे।”

21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

21 तुम सुन चुके हो कि अगलों से कहा गया था कि खून ना करना जो कोई खून करेगा वो 'अदालत की सज़ा के लायक होगा। 22 लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि, 'जो कोई अपने भाई पर गुस्सा होगा, वो 'अदालत की सज़ा के लायक होगा; कोई अपने भाई को पागल कहेगा, वो सदरे — ऐ अदालत की सज़ा के लायक होगा; और जो उसको बेवकूफ़ कहेगा, वो जहन्नुम की आग का सज़ावार होगा। 23 पस अगर तू कुर्बानगाह पर अपनी कुर्बानी करता है और वहाँ तुझे याद आए कि मेरे भाई को मुझ से कुछ शिकायत है। 24 तो वहीं कुर्बानगाह के आगे अपनी नज़र छोड़ दे और जाकर पहले अपने भाई से मिलाप कर तब आकर अपनी कुर्बानी कर। 25 जब तक तू अपने मुद्द'ई के साथ रास्ते में है, उससे जल्द सुलह कर ले, कहीं ऐसा न हो कि मुद्द'ई तुझे मुन्सिफ़ के हवाले कर दे और मुन्सिफ़ तुझे सिपाही के हवाले कर दे; और तू कैद खाने में डाला जाए। 26 मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि जब तक तू कौड़ी — कौड़ी अदा न करेगा वहाँ से हरगिज़ न छूटेगा।

27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

27 “तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'ज़िना न करना।' 28 लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि जिस किसी ने बुरी ख्वाहिश से किसी 'औरत पर निगाह की वो अपने दिल में उस के साथ ज़िना कर चुका। 29 पस अगर तेरी दहनी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल कर अपने पास से फेंक दे; क्यूँकि तेरे लिए यही बेहतर है; कि तेरे आ'ज़ा में से एक जाता रहे और तेरा सारा बदन जहन्नुम में न डाला जाए। 30 और अगर तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उस को काट कर अपने पास से फेंक दे। क्यूँकि तेरे लिए यही बेहतर है; कि तेरे आ'ज़ा में से एक जाता रहे और तेरा सारा बदन जहन्नुम में न जाए।”

31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

31 ये भी कहा गया था,, जो कोई अपनी बीवी को छोड़े उसे तलाक़नामा लिख दे। 32 लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ, कि जो कोई अपनी बीवी को हरामकारी के सिवा किसी और वजह से छोड़ दे वो उस से ज़िना करता है; और जो कोई उस छोड़ी हुई से शादी करे वो भी ज़िना करता है।

33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

33 “फिर तुम सुन चुके हो कि अगलों से कहा गया था 'झूठी क़सम न खाना; बल्कि अपनी क़समें खुदावन्द के लिए पूरी करना।' 34 लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि बिल्कुल क़सम न खाना न तो आस्मान की क्यूँकि वो खुदा का तख़्त है, 35 न ज़मीन की, क्यूँकि वो उस के पैरों की चौकी है। न येरूशलेम की क्यूँकि वो बुज़ुर्ग बादशाह का शहर है। 36 न अपने सर की क़सम खाना क्यूँकि तू एक बाल को भी सफ़ेद या काला नहीं कर सकता। 37 बल्कि तुम्हारा कलाम 'हाँ — हाँ' या 'नहीं — नहीं' में हो क्यूँकि जो इस से ज्यादा है वो बदी से है।”

38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

38 “तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत। 39 लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि शरीर का मुक्काबिला न करना बल्कि जो कोई तेरे दहने गाल पर तमाचा मारे दूसरा भी उसकी तरफ़ फेर दे। 40 और अगर कोई तुझ पर नालिश कर के तेरा कुरता लेना चाहे; तो चोड़ा भी उसे ले लेने दे। 41 और जो कोई तुझे एक कोस बेगार में ले जाए; उस के साथ दो कोस चला जा। 42 जो कोई तुझ से माँगे उसे दे; और जो तुझ से क़र्ज़ चाहे उस से मुँह न मोड़।”

43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

43 “तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, अपने पड़ोसी से मुँह रख और अपने दुश्मन से दुश्मनी। 44 लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और अपने सताने वालों के लिए दुआ करो। 45 ताकि तुम अपने बाप के जो आसमान पर है, बेटे ठहरो; क्यूँकि वो अपने सूरज को बंदों और नेकों दोनों पर चमकाता है; और रास्तबाज़ों और नारास्तों दोनों पर मेंह बरसाता है। 46 क्यूँकि अगर तुम अपने मुहब्बत रखने वालों ही से मुहब्बत रखो तो तुम्हारे लिए क्या अज़र है? क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा नहीं करते।”

47 अगर तुम सिर्फ़ अपने भाइयों को सलाम करो; तो क्या ज्यादा करते हो? क्या ग़ैर क्रौमों के लोग भी ऐसा नहीं करते? 48 पस चाहिए कि तुम कामिल हो जैसा तुम्हारा आस्मानी बाप कामिल है।

## 6

2222222222 22 22222 22 22222 2222  
222222

1 “खबरदार! अपने रास्तबाज़ी के काम आदमियों के सामने दिखावे के लिए न करो, नहीं तो तुम्हारे बाप के पास जो आसमान पर है; तुम्हारे लिए कुछ अज़र नहीं है।”

2 पस जब तुम खैरात करो तो अपने आगे नरसिंगा न बजाओ, जैसा रियाकार 'इबादतखानों और कूचों में करते हैं; ताकि लोग उनकी बड़ाई करें मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो अपना अज़र पा चुके। 3 बल्कि जब तू खैरात करे तो जो तेरा दहना हाथ करता है; उसे तेरा बाँया हाथ न जाने। 4 ताकि तेरी खैरात पोशीदा रहे, इस सूरत में तेरा आसमानी बाप जो पोशीदगी में देखता है तुझे बदला देगा।

5 जब तुम दुआ करो तो रियाकारों की तरह न बनो; क्योंकि वो 'इबादतखानों में और बाज़ारों के मोड़ों पर खड़े होकर दुआ करना पसन्द करते हैं; ताकि लोग उन को देखें; मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो अपना बदला पा चुके। 6 बल्कि जब तू दुआ करे तो अपनी कोठरी में जा और दरवाज़ा बंद करके अपने आसमानी बाप से जो पोशीदगी में है; दुआ कर इस सूरत में तेरा आसमानी बाप जो पोशीदगी में देखता है तुझे बदला देगा। 7 और दुआ करते वक़्त ग़ैर क्रौमों के लोगों की तरह बक — बक न करो क्योंकि वो समझते हैं; कि हमारे बहुत बोलने की वजह से हमारी सुनी जाएगी। 8 पस उन की तरह न बनो; क्योंकि तुम्हारा आसमानी बाप तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है कि तुम किन — किन चीज़ों के मोहताज हो।

9 पस तुम इस तरह दुआ किया करो,  
“ऐं हमारे बाप, तू जो आसमान पर है तेरा नाम पाक माना जाए।

10 तेरी बादशाही आए। तेरी मज़ी जैसी आस्मान पर पूरी होती है ज़मीन पर भी हो।

11 हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे।

12 और जिस तरह हम ने अपने कुसूरवारों को मु'आफ़ किया है; तू भी हमारे कुसूरों को मु'आफ़ कर।

13 और हमें आजमाइश में न ला, बल्कि बुराई से बचा; क्योंकि बादशाही और कुदरत और जलाल हमेशा तेरे ही हैं; आमीन।”

14 इसलिए कि अगर तुम आदमियों के कुसूर मु'आफ़ करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुम को मु'आफ़ करेगा। 15 और अगर तुम आदमियों के कुसूर मु'आफ़ न करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुम को मु'आफ़ न करेगा।

16 जब तुम रोज़ा रखो तो रियाकारों की तरह अपनी सूरत उदास न बनाओ; क्योंकि वो अपना मुँह बिगाड़ते हैं; ताकि लोग उन को रोज़ादार जाने। मैं तुम से सच कहता हूँ कि वो अपना अज़र पा चुके। 17 बल्कि जब तू रोज़ा रखे तो अपने सिर पर तेल डाल और मुँह धो। 18 ताकि आदमी नहीं बल्कि तेरा बाप जो पोशीदगी में है तुझे रोज़ादार जाने। इस सूरत में तेरा बाप जो पोशीदगी में देखता है तुझे बदला देगा।

19 अपने वास्ते ज़मीन पर माल जमा न करो, जहाँ पर कीड़ा और ज़ँग खराब करता है; और जहाँ चोर नक्रब लगाते और चुराते हैं। 20 बल्कि अपने लिए आसमान पर माल जमा करो; जहाँ पर न कीड़ा खराब करता है; न ज़ँग और न वहाँ चोर नक्रब लगाते और चुराते हैं। 21 क्योंकि जहाँ तेरा माल है वहीं तेरा दिल भी लगा रहेगा।

22 बदन का चराग़ आँख है। पस अगर तेरी आँख दुरुस्त हो तो तेरा पूरा बदन रोशन होगा। 23 अगर तेरी आँख खराब हो तो तेरा सारा बदन तारीक होगा। पस अगर वो रोशनी जो तुझ में है तारीक हो तो तारीकी कैसी बड़ी होगी।

24 कोई आदमी दो मालिकों की खिदमत नहीं कर सकता; क्योंकि या तो एक से दुश्मनी रखे और दूसरे से मुहब्बत या एक से मिला रहेगा और दूसरे को नाचीज़ जानेगा; तुम खुदा और दौलत दोनों की खिदमत नहीं कर सकते। 25 इसलिए मैं तुम से कहता हूँ; कि अपनी जान की फ़िक्र न करना कि हम क्या खाएँगे या क्या पीएँगे, और न अपने बदन की कि क्या पहनेंगे; क्या जान ख़राक से और बदन पोशाक से बढ़ कर नहीं। 26 हवा के परिन्दों को देखो कि न बोते हैं न काटते न कोठियाँ में जमा करते हैं; तोभी तुम्हारा आसमानी बाप उनको खिलाता है क्या तुम उस से ज़्यादा क़द्र नहीं रखते? 27 तुम में से ऐसा कौन है जो फ़िक्र करके अपनी उम्र एक घड़ी भी बढ़ा सके?

28 और पोशाक के लिए क्यूँ फ़िक्र करते हो; जंगली सोसन के दरख्तों को ग़ौर से देखो कि वो किस तरह बढ़ते हैं; वो न मेहनत करते हैं न काटते हैं। 29 तोभी मैं तुम से कहता हूँ; कि सुलैमान भी बावजूद अपनी सारी शानो शौकत के उन में से किसी की तरह कपड़े पहने न था। 30 पस जब खुदा मैदान की घास को जो आज है और कल तंदूर में झोंकी जाएगी; ऐसी पोशाक पहनाता है, तो ऐं कम ईमान वालो “तुम को क्यूँ न पहनाएगा?

31 “इस लिए फ़िक्रमन्द होकर ये न कहो, हम क्या खाएँगे? या क्या पीएँगे? या क्या पहनेंगे?” 32 क्यूँकि इन सब चीज़ों की तलाश में ग़ैर क्रौमों रहती हैं; और

तुम्हारा आसमानी बाप जानता है, कि तुम इन सब चीजों के मोहताज हो। <sup>33</sup> बल्कि तुम पहले उसकी बादशाही और उसकी रास्बाजी की तलाश करो तो ये सब चीजें भी तुम को मिल जाएँगी। <sup>34</sup> पस कल के लिए फ़िक्र न करो क्योंकि कल का दिन अपने लिए आप फ़िक्र कर लेगा; आज के लिए आज ही का दुःख काफ़ी है।

7

□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□

1 बुराई न करो, कि तुम्हारी भी बुराई न की जाए।  
2 क्योंकि जिस तरह तुम बुराई करते हो उसी तरह तुम्हारी भी बुराई की जाएगी और जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा।

3 तू क्यों अपने भाई की आँख के तिनके को देखता है और अपनी आँख के शहतीर पर गौर नहीं करता? 4 और जब तेरी ही आँख में शहतीर है तो तू अपने भाई से क्यों कर कह सकता है, 'ला, तेरी आँख में से तिनका निकाल दूँ?' 5 ऐ रियाकार, पहले अपनी आँख में से तो शहतीर निकाल, फिर अपने भाई की आँख में से तिनके को अच्छी तरह देख कर निकाल सकता है।

6 पाक चीज़ कुत्तों को ना दो, और अपने मोती सुअरों के आगे न डालो, ऐसा न हो कि वो उनको पाँव के तले रौंदें और पलट कर तुम को फाड़ें।

7 माँगो तो तुम को दिया जाएगा। ढूँडो तो पाओगे; दरवाज़ा खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।  
8 क्योंकि जो कोई माँगता है उसे मिलता है; और जो ढूँडता है वो पाता है और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा।

9 तुम में ऐसा कौन सा आदमी है, कि अगर उसका बेटा उससे रोटी माँगे तो वो उसे पत्थर दे? 10 या अगर मछली माँगे तो उसे साँप दे! 11 पस जबकि तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें देना जानते हो, तो तुम्हारा बाप जो आसमान पर है; अपने माँगने वालों को अच्छी चीज़ें क्यों न देगा। 12 पस जो कुछ तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें वही तुम भी उनके साथ करो; क्योंकि तौरेत और नबियों की ता'लीम यही है।

13 तंग दरवाज़े से दाखिल हो, क्योंकि वो दरवाज़ा चौड़ा है, और वो रास्ता चौड़ा है जो हलाकत को पहुँचाता है; और उससे दाखिल होने वाले बहुत हैं।  
14 क्योंकि वो दरवाज़ा तंग है और वो रास्ता सुकड़ा है जो ज़िन्दगी को पहुँचाता है और उस के पाने वाले थोड़े हैं।

15 झूठे नबियों से खबरदार रहो! जो तुम्हारे पास भेड़ों के भेस में आते हैं; मगर अन्दर से फाड़ने वाले भेड़िये की

तरह हैं। <sup>16</sup> उनके फलों से तुम उनको पहचान लोगे; क्या झाड़ियों से अंगूर या ऊँट कटारों से अंजीर तोड़ते हैं? <sup>17</sup> इसी तरह हर एक अच्छा दरख्त अच्छा फल लाता है और बुरा दरख्त बुरा फल लाता है। <sup>18</sup> अच्छा दरख्त बुरा फल नहीं ला सकता, न बुरा दरख्त अच्छा फल ला सकता है। <sup>19</sup> जो दरख्त अच्छा फल नहीं लाता वो काट कर आग में डाला जाता है। <sup>20</sup> पस उनके फलों से तुम उनको पहचान लोगे।

21 “जो मुझ से ऐ खुदावन्द! ‘ऐ खुदावन्द!’ कहते हैं उन में से हर एक आस्मान की बादशाही में दाखिल न होगा। मगर वही जो मेरे आस्मानी बाप की मर्जी पर चलता है। 22 उस दिन बहुत से मुझसे कहेंगे, ‘ऐ खुदावन्द! खुदावन्द! क्या हम ने तेरे नाम से नबुव्वत नहीं की, और तेरे नाम से बदरूहों को नहीं निकाला और तेरे नाम से बहुत से मोजिजे नहीं दिखाए?’ 23 उस दिन मैं उन से साफ़ कह दूँगा, मेरी तुम से कभी वाक़फ़ियत न थी, ऐ बदकारो! मेरे सामने से चले जाओ।”

24 “पस जो कोई मेरी यह बातें सुनता और उन पर अमल करता है वह उस अक्लमन्द आदमी की तरह ठहरेगा जिस ने चट्टान पर अपना घर बनाया। 25 और मेंह बरसा और पानी चढ़ा और आन्धियाँ चलीं और उस घर पर टक्करें लगीं; लेकिन वो न गिरा क्योंकि उस की बुनियाद चट्टान पर डाली गई थी। 26 और जो कोई मेरी यह बातें सुनता है और उन पर अमल नहीं करता वह उस बेवकूफ़ आदमी की तरह ठहरेगा जिस ने अपना घर रेत पर बनाया। 27 और मेंह बरसा और पानी चढ़ा और आन्धियाँ चलीं, और उस घर को सदमा पहुँचा और वो गिर गया, और बिल्कल बरबाद हो गया।”

28 जब ईसा ने यह बातें खत्म कीं तो ऐसा हुआ कि भीड़ उस की तालीम से हैरान हुई। 29 क्योंकि वह उन के आलिमों की तरह नहीं बल्कि साहिब — ए — इस्त्रियार की तरह उनको तालीम देता था।

## 8

???? ?? ?? ??????? ?? ???? ???? ?????

1 जब वो उस पहाड़ से उतरा तो बहुत सी भीड़ उस के पीछे हो ली। 2 और देखो: एक कौढ़ी ने पास आकर उसे सज्दा किया और कहा, “ऐ खुदाबन्द! अगर तू चाहे तो मुझे पाक साफ़ कर सकता है।” 3 उसने हाथ बढ़ा कर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ, तू पाक — साफ़ हो जा।” वह फ़ौरन कौढ़ से पाक — साफ़ हो गया। 4 ईसा ने उस से कहा, “ख़बरदार! किसी से न कहना बल्कि जाकर अपने आप को काहिन को दिखा; और जो नज़र मसा

ने मुकर्रर की है उसे गुज़रान; ताकि उन के लिए गवाही हो।”

5 जब वो कफ़रनहूम में दाखिल हुआ तो एक सूबेदार उसके पास आया; और उसकी मिन्नत करके कहा। 6 “ऐ खुदावन्द, मेरा खादिम फ़ालिज का मारा घर में पड़ा है; और बहुत ही तकलीफ़ में है।” 7 उस ने उस से कहा, “**मैं आ कर उसे शिफ़ा दूँगा।**” 8 सूबेदार ने जवाब में कहा “ऐ खुदावन्द, मैं इस लायक नहीं कि तू मेरी छत के नीचे आए; बल्कि सिर्फ़ ज़बान से कह दे तो मेरा खादिम शिफ़ा पाएगा। 9 क्योंकि मैं भी दूसरे के इस्तिथार में हूँ; और सिपाही मेरे मातहत हैं; जब एक से कहता हूँ, जा! तो वह जाता है और दूसरे से ‘आ!’ तो वह आता है। और अपने नौकर से ‘ये कर’ तो वह करता है।”

10 ईसा ने ये सुनकर त'अज्जुब किया और पीछे आने वालों से कहा, “**मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मैं ने इस्राईल में भी ऐसा ईमान नहीं पाया।** 11 और मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत सारे पूरब और पश्चिम से आ कर अब्रहाम, इज़्हाक़ और याक़ूब के साथ आसमान की बादशाही की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे। 12 मगर बादशाही के बेटे बाहर अंधेरे में डाले जाँएंगे; जहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।” 13 और ईसा ने सूबेदार से कहा, “**जा! जैसा तू ने यक़ीन किया तेरे लिए वैसा ही हो।**” और उसी घड़ी खादिम ने शिफ़ा पाई।

14 और ईसा ने पतरस के घर में आकर उसकी सास को बुखार में पड़ी देखा। 15 उस ने उसका हाथ छुआ और बुखार उस पर से उतर गया; और वो उठ खड़ी हुई और उसकी खिदमत करने लगी। 16 जब शाम हुई तो उसके पास बहुत से लोगों को लाए; जिन में बदरूहें थी उसने बदरूहों को ज़बान ही से कह कर निकाल दिया; और सब बीमारों को अच्छा कर दिया। 17 ताकि जो यसायाह नबी के ज़रिए कहा गया था, वो पूरा हो: “उसने आप हमारी कमज़ोरियाँ ले लीं और बीमारियाँ उठा लीं।”

18 जब ईसा ने अपने चारों तरफ़ बहुत सी भीड़ देखी तो पार चलने का हुक्म दिया। 19 और एक आलिम ने पास आकर उस से कहा “ऐ उस्ताद, जहाँ कहीं भी तू जाएगा मैं तेरे पीछे चलूँगा।” 20 ईसा ने उस से कहा, “लोमड़ियों के भट होते हैं और हवा के परिन्दों के घोंसले, मगर इबने आदम के लिए सर रखने की भी जगह नहीं।” 21 एक और शागिर्द ने उस से कहा, “ऐ खुदावन्द, मुझे इजाज़त दे कि पहले जाकर अपने बाप को दफ़न करूँ।” 22 ईसा ने उससे कहा, “तू मेरे पीछे चल और मुर्दाँ को अपने मुर्दे दफ़न करने दे।”

23 जब वो नाव पर चढ़ा तो उस के शागिर्द उसके साथ हो लिए। 24 और देखो झील में ऐसा बड़ा तूफ़ान आया कि नाव लहरों से छिप गई, मगर वो सोता रहा। 25 उन्होंने पास आकर उसे जगाया और कहा “ऐ खुदावन्द, हमें बचा, हम हलाक़ हुए जाते हैं।” 26 उसने उनसे कहा, “**ऐ कम ईमान वालो! डरते क्यों हो?**” तब उसने उठकर हवा और पानी को डाँटा और बड़ा अम्न हो गया। 27 और लोग ता'अज्जुब करके कहने लगे “ये किस तरह का आदमी है कि हवा और पानी सब इसका हुक्म मानते हैं।”

28 जब वो उस पार गदरीनियों के मुल्क में पहुँचा तो दो आदमी जिन में बदरूहें थी; क़ब्रों से निकल कर उससे मिले: वो ऐसे तंग मिज़ाज थे कि कोई उस रास्ते से गुज़र नहीं सकता था। 29 और देखो उन्होंने चिल्लाकर कहा “ऐ खुदा के बेटे हमें तुझ से क्या काम? क्या तू इसलिए यहाँ आया है कि वक़्त से पहले हमें ऐज़ाब में डाले?” 30 उनसे कुछ दूर बहुत से सूअरों का गोल चर रहा था। 31 पस बदरूहों ने उसकी मिन्नत करके कहा “अगर तू हम को निकालता है तो हमें सूअरों के गोल में भेज दे।” 32 उसने उनसे कहा “**जाओ।**” वो निकल कर सूअरों के अन्दर चली गई; और देखो; सारा गोल किनारे पर से झपट कर झील में जा पड़ा और पानी में डूब मरा। 33 और चराने वाले भागे और शहर में जाकर सब माजरा और उनके हालात जिन में बदरूहें थी बयान किया। 34 और देखो सारा शहर ईसा से मिलने को निकला और उसे देख कर मिन्नत की, कि हमारी सरहदों से बाहर चला जा।

## 9

???? ?? ?? ??????? ?? ??????? ?? ???  
????

1 फिर वो नाव पर चढ़ कर पार गया; और अपने शहर में आया। 2 और देखो, लोग एक फ़ालिज के मारे हुए को जो चारपाई पर पड़ा हुआ था उसके पास लाए; ईसा ने उसका ईमान देखकर मफ़्लूज से कहा “**बेटा, इत्मीनान रख। तेरे गुनाह मु'आफ़ हुए।**” 3 और देखो कुछ आलिमों ने अपने दिल में कहा, “ये कुफ़र बकता है” 4 ईसा ने उनके खयाल मा'लूम करके कहा, “**तुम क्यों अपने दिल में बुरे खयाल लाते हो?** 5 आसान क्या है? ये कहना तेरे गुनाह मु'आफ़ हुए; या ये कहना; उठ और चल फिर। 6 लेकिन इसलिए कि तुम जान लो कि इबने आदम को ज़मीन पर गुनाह मु'आफ़ करने का इस्तिथार है;” उसने फ़ालिज का मारे हुए से कहा, “उठ, अपनी चारपाई उठा और अपने घर चला जा।” 7 वो उठ कर अपने घर चला



गया। <sup>8</sup> लोग ये देख कर डर गए; और खुदा की बड़ाई करने लगे; जिसने आदमियों को ऐसा इस्त्रियार बरूखा।

<sup>9</sup> ईसा ने वहाँ से आगे बढ़कर मत्ती नाम एक शख्स को महसूल की चौकी पर बैठे देखा; और उस से कहा, **“मेरे पीछे हो ले।”** वो उठ कर उसके पीछे हो लिया। <sup>10</sup> जब वो घर में खाना खाने बैठा; तो ऐसा हुआ कि बहुत से महसूल लेने वाले और गुनहगार आकर ईसा और उसके शागिर्दों के साथ खाना खाने बैठे। <sup>11</sup> फ़रीसियों ने ये देख कर उसके शागिर्दों से कहा, **“तुम्हारा उस्ताद महसूल लेने वालों और गुनहगारों के साथ क्यों खाता है?”** <sup>12</sup> उसने ये सुनकर कहा, **“तन्दरुस्तों को हकीम की ज़रूरत नहीं बल्कि बीमारों को।”** <sup>13</sup> मगर तुम जाकर उसके मा'ने मा'लूम करो: मैं कुर्बानी नहीं बल्कि रहम पसन्द करता हूँ। क्योंकि मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।”

<sup>14</sup> उस वक़्त यूहन्ना के शागिर्दों ने उसके पास आकर कहा, **“क्या वजह है कि हम और फ़रीसी तो अक्सर रोज़ा रखते हैं, और तेरे शागिर्द रोज़ा नहीं रखते?”** <sup>15</sup> ईसा ने उस से कहा, **“क्या बाराती जब तक दुल्हा उनके साथ है, मातम कर सकते हैं? मगर वो दिन आएँगे; कि दुल्हा उनसे जुदा किया जाएगा; उस वक़्त वो रोज़ा रखेंगे।”** <sup>16</sup> कोरे कपड़े का पैवन्द पुरानी पोशाक में कोई नहीं लगाता क्योंकि वो पैवन्द पोशाक में से कुछ खींच लेता है और वो ज्यादा फट जाती है। <sup>17</sup> और नई मय पुरानी मशकों में नहीं भरते वर्ना मशकें फट जाती हैं; और मय बह जाती है, और मशकें बरबाद हो जाती हैं; बल्कि नई मय नई मशकों में भरते हैं; और वो दोनों बची रहती हैं।”

<sup>18</sup> वो उन से ये बातें कह ही रहा था, कि देखो एक सरदार ने आकर उसे सज्दा किया और कहा, **“मेरी बेटी अभी मरी है लेकिन तू चलकर अपना हाथ उस पर रख तो वो ज़िन्दा हो जाएगी।”** <sup>19</sup> ईसा उठ कर अपने शागिर्दों समेत उस के पीछे हो लिया। <sup>20</sup> और देखो; एक औरत ने जिसके बारह बरस से खून जारी था; उसके पीछे आकर उस की पोशाक का किनारा छुआ। <sup>21</sup> क्योंकि वो अपने जी में कहती थी; अगर सिर्फ़ उसकी पोशाक ही छू लूँगी **“तो अच्छी हो जाऊँगी।”** <sup>22</sup> ईसा ने फिर उससे देखा और कहा, **“बेटी, इत्मीनान रख! तेरे ईमान ने तुझे अच्छा कर दिया।”** पस वो 'औरत उसी घड़ी अच्छी हो गई। <sup>23</sup> जब ईसा सरदार के घर में आया और बाँसुरी बजाने वालों को और भीड़ को शोर मचाते देखा। <sup>24</sup> तो कहा, **“हट जाओ! क्योंकि लड़की मरी नहीं बल्कि सोती है।”** वो उस पर हँसने लगे। <sup>25</sup> मगर जब भीड़ निकाल दी गई तो उस ने अन्दर जाकर उसका हाथ पकड़ा और

लड़की उठी। <sup>26</sup> और इस बात की शोहरत उस तमाम इलाक़े में फैल गई।

<sup>27</sup> जब ईसा वहाँ से आगे बढ़ा तो दो अन्धे उसके पीछे ये पुकारते हुए चले **“ऐ इब्न — ए — दाऊद, हम पर रहम कर।”** <sup>28</sup> जब वो घर में पहुँचा तो वो अन्धे उसके पास आए और 'ईसा ने उनसे कहा **“क्या तुम को यकीन है कि मैं ये कर सकता हूँ?”** उन्होंने उस से कहा **“हाँ खुदावन्द।”** <sup>29</sup> फिर उस ने उन की आँखें छू कर कहा, **“तुम्हारे यकीन के मुताबिक़ तुम्हारे लिए हो।”** <sup>30</sup> और उन की आँखें खुल गई और ईसा ने उनको ताकीद करके कहा, **“खबरदार, कोई इस बात को न जाने!”** <sup>31</sup> मगर उन्होंने निकल कर उस तमाम इलाक़े में उसकी शोहरत फैला दी।

<sup>32</sup> जब वो बाहर जा रहे थे, तो देखो लोग एक गूँगे को जिस में बदरूह थी उसके पास लाए। <sup>33</sup> और जब वो बदरूह निकाल दी गई तो गूँगा बोलने लगा; और लोगों ने ता'अज्जुब करके कहा, **“इस्राईल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।”** <sup>34</sup> मगर फ़रीसियों ने कहा, **“ये तो बदरूहों के सरदार की मदद से बदरूहों को निकालता है।”**

<sup>35</sup> ईसा सब शहरों और गाँव में फिरता रहा, और उनके इबादतखानों में ता'लीम देता और बादशाही की खुशखबरी का एलान करता और — और हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी दूर करता रहा। <sup>36</sup> और जब उसने भीड़ को देखा तो उस को लोगों पर तरस आया; क्योंकि वो उन भेड़ों की तरह थे जिनका चरवाहा न हो बुरी हालत में पड़े थे। <sup>37</sup> उस ने अपने शागिर्दों से कहा, **“फ़सल बहुत है, लेकिन मज़दूर थोड़े हैं।”** <sup>38</sup> पस फ़सल के मालिक से मिन्नत करो कि वो अपनी फ़सल काटने के लिए मज़दूर भेज दे।”

## 10

22222 22 22222 2222222222 22 222222

<sup>1</sup> फिर उस ने अपने बारह शागिर्दों को पास बुला कर उनको बदरूहों पर इस्त्रियार बरूखा कि उनको निकालें और हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी को दूर करें। <sup>2</sup> और बारह रसूलों के नाम ये हैं; पहला शमौन, जो पतरस कहलाता है और उस का भाई अन्दरयास ज़ब्दी का बेटा या'कूब और उसका भाई यूहन्ना। <sup>3</sup> फ़िलिप्पुस, बरतुल्माई, तोमा, और मत्ती महसूल लेने वाला। <sup>4</sup> हलफ़ी का बेटा या'कूब और तद्दी शमौन कनानी और यहूदाह इस्करियोती जिस ने उसे पकड़वा भी दिया।

<sup>5</sup> इन बारह को ईसा ने भेजा और उनको हुक्म देकर कहा, **“शैर क़ौमों की तरफ़ न जाना और सामरियों के**

किसी शहर में भी दाखिल न होना।<sup>6</sup> बल्कि इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाना।<sup>7</sup> और चलते — चलते ये एलान करना आस्मान की बादशाही नज़दीक आ गई है।<sup>8</sup> बीमारों को अच्छा करना; मुर्दों को जिलाना कौढ़ियों को पाक साफ़ करना बदरूहों को निकालना; तुम ने मुफ़्त पाया मुफ़्त ही देना।<sup>9</sup> न सोना अपने कमरबन्द में रखना — न चाँदी और न पैसे।<sup>10</sup> रास्ते के लिए न झोली लेना न दो — दो कुरते न जूतियाँ न लाठी; क्योंकि मज़दूर अपनी ख़ूराक का हक़दार है।”

11 “जिस शहर या गाँव में दाखिल हो मालूम करना कि उस में कौन लायक़ है और जब तक वहाँ से रवाना न हो उसी के यहाँ रहना।<sup>12</sup> और घर में दाखिल होते वक़्त उसे दु'आ — ए — ख़ैर देना।<sup>13</sup> अगर वो घर लायक़ हो तो तुम्हारा सलाम उसे पहुँचे; और अगर लायक़ न हो तो तुम्हारा सलाम तुम पर फिर आए।<sup>14</sup> और अगर कोई तुम को कुबूल न करे, और तुम्हारी बातें न सुने तो उस घर या शहर से बाहर निकलते वक़्त अपने पैरों की धूल झाड़ देना।<sup>15</sup> मैं तुम से सच कहता हूँ, कि 'अदालत के दिन उस शहर की निस्वत सद्म और अमूरा\* के इलाक़े का हाल ज्यादा बर्दाश्त के लायक़ होगा।”

16 “देखो, मैं तुम को भेजता हूँ; गोया भेड़ों को भेड़ियों के बीच पस साँपों की तरह होशियार और कबूतरों की तरह सीधे बनो।<sup>17</sup> मगर आदमियों से खबरदार रहो, क्योंकि वह तुम को अदालतों के हवाले करेंगे; और अपने इबादतखानों में तुम को कोड़े मारेंगे।<sup>18</sup> और तुम मेरी वजह से हाकिमों और बादशाहों के सामने हाज़िर किए जाओगे; ताकि उनके और ग़ैर क़ौमों के लिए गवाही हो।<sup>19</sup> लेकिन जब वो तुम को पकड़वाएँगे; तो फ़िक़र न करना कि हम किस तरह कहें या क्या कहें; क्योंकि जो कुछ कहना होगा उसी वक़्त तुम को बताया जाएगा।<sup>20</sup> क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं बल्कि तुम्हारे आसमानी बाप का रूह है; जो तुम में बोलता है।”

21 “भाई को भाई क़त्ल के लिए हवाले करेगा और बेटे को बाप और बेटा अपने माँ बाप के बरखिलाफ़ खड़े होकर उनको मरवा डालेंगे।<sup>22</sup> और मेरे नाम के ज़रिए से सब लोग तुम से अदावत रखेंगे; मगर जो आख़िर तक बर्दाश्त करेगा वही नजात पाएगा।<sup>23</sup> लेकिन जब तुम को एक शहर सताए तो दूसरे को भाग जाओ; क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम इस्राईल के सब शहरों में न फिर चुके होगे कि 'इब्न — ए — आदम आजाएगा।”

24 “शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता, न नौकर

अपने मालिक से।<sup>25</sup> शागिर्द के लिए ये काफ़ी है कि अपने उस्ताद की तरह हो; और नौकर के लिए ये कि अपने मालिक की तरह जब उन्होंने घर के मालिक को बा'लज़बूल कहा; तो उसके घराने के लोगों को क्यों न कहेंगे।”

26 “पस उनसे न डरो; क्योंकि कोई चीज़ ढकी नहीं जो खोली न जाएगी और न कोई चीज़ छिपी है जो जानी न जाएगी।<sup>27</sup> जो कुछ मैं तुम से अन्धेरे में कहता हूँ; उजाले में कहो और जो कुछ तुम कान में सुनते हो छतों पर उसका एलान करो।<sup>28</sup> जो बदन को क़त्ल करते हैं और रूह को क़त्ल नहीं कर सकते उन से न डरो बल्कि उसी से डरो जो रूह और बदन दोनों को जहन्नुम में हलाक कर सकता है।<sup>29</sup> क्या पैसे की दो चिड़ियाँ नहीं बिकती? और उन में से एक भी तुम्हारे बाप की मज़ी के बग़ैर ज़मीन पर नहीं गिर सकती।<sup>30</sup> बल्कि तुम्हारे सर के बाल भी सब गिने हुए हैं।<sup>31</sup> पस डरो नहीं; तुम्हारी क़द्र तो बहुत सी चिड़ियों से ज्यादा है।”

32 “पस जो कोई आदमियों के सामने मेरा इक्कार करेगा; मैं भी अपने बाप के सामने जो आसमान पर है उसका इक्कार करूँगा।<sup>33</sup> मगर जो कोई आदमियों के सामने मेरा इन्कार करेगा मैं भी अपने बाप के जो आस्मान पर है उसका इन्कार करूँगा।”

34 “ये न समझो कि मैं ज़मीन पर सुलह करवाने आया हूँ; सुलह करवाने नहीं बल्कि तलवार चलवाने आया हूँ।<sup>35</sup> क्योंकि मैं इसलिए आया हूँ, कि आदमी को उसके बाप से और बेटा को उस की माँ से और बहु को उसकी सास से जुदा कर दूँ।<sup>36</sup> और आदमी के दुश्मन उसके घर के ही लोग होंगे।”

37 “जो कोई बाप या माँ को मुझ से ज्यादा अज़ीज़ रखता है वो मेरे लायक़ नहीं; और जो कोई बेटे या बेटा को मुझ से ज्यादा अज़ीज़ रखता है वो मेरे लायक़ नहीं।<sup>38</sup> जो कोई अपनी सलीब न उठाए और मेरे पीछे न चले वो मेरे लायक़ नहीं।<sup>39</sup> जो कोई अपनी जान बचाता है उसे खोएगा; और जो कोई मेरी खातिर अपनी जान खोता है उसे बचाएगा।”

40 “जो तुम को कुबूल करता है वो मुझे कुबूल करता है और जो मुझे कुबूल करता है वो मेरे भेजने वाले को कुबूल करता है।<sup>41</sup> जो नबी के नाम से नबी को कुबूल करता है; वो नबी का अज़र पाएगा; और जो रास्तबाज़ के नाम से रास्तबाज़ को कुबूल करता है वो रास्तबाज़ का अज़र पाएगा।<sup>42</sup> और जो कोई शागिर्द के नाम से

\* 10:15 10:15 सद्म और अमूरा ये दोनों ऐसे शहर हैं जो इब्राहीम के ज़माने में खुदा ने आसमान से आग और गन्धक बरसा कर हलाक किया क्योंकि ये दोनों शहर के लोग खुदा की निगाह में गुनहगार थे — पैदाइश — बाब 19

इन छोटों में से किसी को सिर्फ़ एक प्याला ठन्डा पानी ही पिलाएगा; मैं तुम से सच कहता हूँ वो अपना अज़र हरगिज़ न खोएगा।”

## 11

~~~~~

1 जब ईसा अपने बारह शागिर्दों को हुक्म दे चुका, तो ऐसा हुआ कि वहाँ से चला गया ताकि उनके शहरों में ता'लीम दे और एलान करे। 2 यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कैदखाने में मसीह के कामों का हाल सुनकर अपने शागिर्दों के ज़रिए उससे पुछवा भेजा। 3 “आने वाला तू ही है या हम दूसरे की राह देखें?” 4 ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो जाकर यूहन्ना से बयान कर दो। 5 कि अन्धे देखते और लंगड़े चलते फिरते हैं; कौड़ी पाक साफ़ किए जाते हैं और बहरे सुनते हैं और मुर्दे ज़िन्दा किए जाते हैं और ग़रीबों को खुशख़बरी सुनाई जाती है। 6 और मुबारक वो है जो मेरी वजह से ठोकर न खाए।”

7 जब वो रवाना हो लिए तो ईसा ने यूहन्ना के बारे में लोगों से कहना शुरू किया कि “तुम वीराने में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकंडे को? 8 तो फिर क्या देखने गए थे क्या महीन कपड़े पहने हुए शख्स को? देखो जो महीन कपड़े पहनते हैं वो बादशाहों के घरों में होते हैं। 9 तो फिर क्यों गए थे? क्या एक नबी को देखने? हाँ मैं तुम से कहता हूँ बल्कि नबी से बड़े को। 10 ये वही है जिसके बारे में लिखा है कि देख मैं अपना पैग़म्बर तेरे आगे भेजता हूँ जो तेरा रास्ता तेरे आगे तैयार करेगा”

11 “मैं तुम से सच कहता हूँ; जो औरतों से पैदा हुए हैं, उन में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बड़ा कोई नहीं हुआ, लेकिन जो आसमान की बादशाही में छोटा है वो उस से बड़ा है। 12 और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से अब तक आसमान की बादशाही पर ज़ोर होता रहा है; और ताक़तवर उसे छीन लेते हैं। 13 क्योंकि सब नबियों और तौरत ने यूहन्ना तक नबुव्वत की। 14 और चाहो तो मानो; एलियाह जो आनेवाला था; यही है। 15 जिसके सुनने के कान हों वो सुन ले!”

16 “पस इस ज़माने के लोगों को मैं किस की मिसाल दूँ? वो उन लड़कों की तरह हैं, जो बाज़ारों में बैठे हुए अपने साथियों को पुकार कर कहते हैं। 17 हम ने तुम्हारे लिए बाँसुरी बजाई* और तुम न नाचे। हम ने मातम किया और तुम ने छाती न पीटी। 18 क्योंकि यूहन्ना न

* 11:17 11:17 बाँसुरी बजाई ये खुशी के वक़्त बजाई जाती है (सनीचर)

खाता आया न पीता और वो कहते हैं उस में बदरूह है। 19 इब्न — ए — आदम खाता पीता आया। और वो कहते हैं, देखो खाऊ और शराबी आदमी महसूल लेने वालों और गुनाहगारों का यार। मगर हिक्मत अपने कामों से रास्त साबित हुई है।”

20 वो उस वक़्त उन शहरों को मलामत करने लगा जिनमें उसके अकसर मोजिज़े ज़ाहिर हुए थे; क्योंकि उन्होंने तौबा न की थी। 21 “ऐ खुराज़ीन, तुझ पर अप्रसोस! ऐ बैत — सैदा, तुझ पर अप्रसोस! क्योंकि जो मोजिज़े तुम में हुए अगर सूर और सैदा में होते तो वो टाट ओढ़ कर और खाक में बैठ कर कब के तौबा कर लेते। 22 मैं तुम से सच कहता हूँ; कि 'अदालत के दिन सूर और सैदा का हाल तुम्हारे हाल से ज्यादा बर्दाश्त के लायक होगा। 23 और ऐ कफ़रनहूम, क्या तू आस्मान तक बुलन्द किया जाएगा? तू तो आलम — ए अर्वाह में उतरेगा क्योंकि जो मोजिज़े तुम में ज़ाहिर हुए अगर सदूम में होते तो आज तक काईम रहता। 24 मगर मैं तुम से कहता हूँ कि 'अदालत के दिन सदूम के इलाक़े का हाल तेरे हाल से ज्यादा बर्दाश्त के लायक होगा।”

25 उस वक़्त ईसा ने कहा, “ऐ बाप, आस्मान — ओ — ज़मीन के खुदावन्द मैं तेरी हम्द करता हूँ कि तू ने यह बातें समझदारों और अक़लमन्दों से छिपाई और बच्चों पर ज़ाहिर कीं। 26 हाँ ऐ बाप!, क्योंकि ऐसा ही तुझे पसन्द आया।”

27 “मेरे बाप की तरफ़ से सब कुछ मुझे सौंपा गया और कोई बेटे को नहीं जानता सिवा बाप के और कोई बाप को नहीं जानता सिवा बेटे के और उसके जिस पर बेटा उसे ज़ाहिर करना चाहे।”

28 “ऐ मेहनत उठाने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, सब मेरे पास आओ! मैं तुम को आराम दूँगा। 29 मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं हलीम हूँ और दिल का फ़िरोतन तो तुम्हारी जानें आराम पाएँगी, 30 क्योंकि मेरा जूआ मुलायम है और मेरा बोझ हल्का।”

12

~~~~~

1 उस वक़्त ईसा सबत के दिन\* खेतों में हो कर गया, और उसके शागिर्दों को भूख लगी और वो बालियां तोड़ — तोड़ कर खाने लगे। 2 फ़रीसियों ने देख कर उससे कहा “देख तेरे शागिर्द वो काम करते हैं जो सबत के दिन करना जायज़ नहीं।” 3 उसने उनसे कहा “क्या तुम

\* 12:1 12:1 सबत के दिन ये दिन खुदा ने इबादत का दिन मुक़र्रर किया

ने ये नहीं पढ़ा कि जब दाऊद और उस के साथी भूखा थे; तो उसने क्या किया? <sup>4</sup> वो क्यूँकर खुदा के घर में गया और नज़र की रोटियाँ खाईं जिनको खाना उसको जायज़ न था; न उसके साथियों को मगर सिर्फ़ काहिनों को? <sup>5</sup> क्या तुम ने तौरेत में नहीं पढ़ा कि काहिन सबत के दिन हैकल में सबत की बेहुरमती करते हैं; और बेकुसूर रहते हैं? <sup>6</sup> लेकिन मैं तुम से कहता हूँ कि यहाँ वो है जो हैकल से भी बड़ा है। <sup>7</sup> लेकिन अगर तुम इसका मतलब जानते कि, मैं कुर्बानी नहीं बल्कि, रहम पसन्द करता हूँ। तो बेकुसूरों को कुसूरवार न ठहराते। <sup>8</sup> क्यूँकि इब्न — ए — आदम सबत का मालिक है।”

<sup>9</sup> वो वहाँ से चलकर उन के इबादतखाने में गया। <sup>10</sup> और देखो; वहाँ एक आदमी था जिस का हाथ सूखा हुआ था उन्होंने उस पर इल्ज़ाम लगाने के इरादे से ये पुछा, “क्या सबत के दिन शिफ़ा देना जायज़ है।” <sup>11</sup> उसने उनसे कहा, “तुम में ऐसा कौन है जिसकी एक भेड़ हो और वो सबत के दिन गड्ढे में गिर जाए तो वो उसे पकड़कर न निकाले? <sup>12</sup> पस आदमी की क्रदर तो भेड़ से बहुत ही ज्यादा है; इसलिए सबत के दिन नेकी करना जायज़ है।” <sup>13</sup> तब उसने उस आदमी से कहा “अपना हाथ बढ़ा।” उस ने बढ़ाया और वो दूसरे हाथ की तरह दुरुस्त हो गया। <sup>14</sup> इस पर फ़रीसियों ने बाहर जाकर उसके बरखिलाफ़ मशवरा किया कि उसे किस तरह हलाक करें।

<sup>15</sup> ईसा ये मा'लूम करके वहाँ से खाना हुआ; और बहुत से लोग उसके पीछे हो लिए और उसने सब को अच्छा कर दिया, <sup>16</sup> और उनको ताकीद की, कि मुझे ज़ाहिर न करना। <sup>17</sup> ताकि जो यसायाह नबी की मा'रिफ़त कहा गया था वो पूरा हो। <sup>18</sup> देखो, ये मेरा खादिम है जिसे मैं ने चुना मेरा प्यारा जिससे मेरा दिल खुश है। मैं अपना रूह इस पर डालूँगा, और ये ग़ैर क्रौमों को इन्साफ़ की ख़बर देगा। <sup>19</sup> ये न झगड़ा करेगा न शोर, और न बाज़ारों में कोई इसकी आवाज़ सुनेगा। <sup>20</sup> ये कुचले हुए सरकंडे को न तोड़ेगा और धुवाँ उठते हुए सन को न बुझाएगा; जब तक कि इन्साफ़ की फ़तह न कराए। <sup>21</sup> और इसके नाम से ग़ैर क्रौमों में उम्मीद रखेंगी।

<sup>22</sup> उस वक़्त लोग उसके पास एक अंधे गूँगे को लाए; उसने उसे अच्छा कर दिया चुनाँचे वो गूँगा बोलने और देखने लगा। <sup>23</sup> “सारी भीड़ हैरान होकर कहने लगी; क्या ये इब्न — ए — आदम है?” <sup>24</sup> फ़रीसियों ने सुन कर कहा, “ये बदरूहों के सरदार बा'लज़बूल की मदद के बग़ैर बदरूहों को नहीं निकालता।” <sup>25</sup> उसने उनके खयालों को जानकर उनसे कहा, “जिस बादशाही

में फूट पड़ती है वो वीरान हो जाती है और जिस शहर या घर में फूट पड़ेगी वो क़ाईम न रहेगा। <sup>26</sup> और अगर शैतान ही शैतान को निकाले तो वो आप ही अपना मुखालिफ़ हो गया; फिर उसकी बादशाही क्यूँकर क़ाईम रहेगी? <sup>27</sup> अगर मैं बा'लज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे किस की मदद से निकालते हैं? पस वही तुम्हारे मुन्सिफ़ होंगे। <sup>28</sup> लेकिन अगर मैं खुदा के रूह की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ तो खुदा की बादशाही तुम्हारे पास आ पहुँची। <sup>29</sup> या क्यूँकर कोई आदमी किसी ताक़तवर के घर में घुस कर उसका माल लूट सकता है; जब तक कि पहले उस ताक़तवर को न बाँध ले? फिर वो उसका घर लूट लेगा। <sup>30</sup> जो मेरे साथ नहीं वो मेरे खिलाफ़ है और जो मेरे साथ जमा नहीं करता वो बिखेरता है। <sup>31</sup> इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि आदमियों का हर गुनाह और कुफ़र तो मु'आफ़ किया जाएगा; मगर जो कुफ़र रूह के हक़ में हो वो मु'आफ़ न किया जाएगा।”

<sup>32</sup> “और जो कोई इब्न — ए — आदम के खिलाफ़ कोई बात कहेगा वो तो उसे मु'आफ़ की जाएगी; मगर जो कोई रूह — उल — कुदूस के खिलाफ़ कोई बात कहेगा; वो उसे मु'आफ़ न की जाएगी न इस आलम में न आने वाले में।”

<sup>33</sup> “या तो दरख्त को भी अच्छा कहो; और उसके फल को भी अच्छा, या दरख्त को भी बुरा कहो और उसके फल को भी बुरा; क्यूँकि दरख्त फल से पहचाना जाता है। <sup>34</sup> ऐ साँप के बच्चो! तुम बुरे होकर क्यूँकर अच्छी बातें कह सकते हो? क्यूँकि जो दिल में भरा है वही मुँह पर आता है। <sup>35</sup> अच्छा आदमी अच्छे खज़ाने से अच्छी चीज़ें निकालता है; बुरा आदमी बुरे खज़ाने से बुरी चीज़ें निकालता है। <sup>36</sup> मैं तुम से कहता हूँ; कि जो निकम्मी बात लोग कहेंगे; 'अदालत के दिन उसका हिसाब देंगे। <sup>37</sup> क्यूँकि तु अपनी बातों की वजह से रास्तबाज़ ठहराया जाएगा; और अपनी बातों की वजह से कुसूरवार ठहराया जाएगा।”

<sup>38</sup> इस पर कुछ आलिमों और फ़रीसियों ने जवाब में उससे कहा, “ऐ उस्ताद हम तुझ से एक निशान देखना चाहते हैं।” <sup>39</sup> उस ने जवाब देकर उनसे कहा, इस ज़माने के बुरे और बे'इमान लोग निशान तलब करते हैं; मगर यहून्ना नबी के निशान के सिवा कोई और निशान उनको न दिया जाएगा। <sup>40</sup> क्यूँकि जैसे यहून्ना तीन रात तीन दिन मछली के पेट में रहा; वैसे ही इब्ने आदम तीन रात तीन दिन ज़मीन के अन्दर रहेगा। <sup>41</sup> निनवे शहर के लोग 'अदालत के दिन इस ज़माने के लोगों के साथ



खड़े होकर इनको मुजरिम ठहराएंगे; क्योंकि उन्होंने यहून्ना के एलान पर तौबा कर ली; और देखो, यह वो है जो यहून्ना से भी बड़ा है। <sup>42</sup> दक्खिन की मलिका 'अदालत के दिन इस ज़माने के लोगों के साथ उठकर इनको मुजरिम ठहराएगी; क्योंकि वो दुनिया के किनारे से सुलैमान की हिक्मत सुनने को आई; और देखो यहाँ वो है जो सुलैमान से भी बड़ा है।

<sup>43</sup> “जब बदरूह आदमी में से निकलती है तो सूखे मक़ामों में आराम ढूँडती फिरती है, और नहीं पाती। <sup>44</sup> तब कहती है, मैं अपने उस घर में फिर जाऊँगी जिससे निकली थी। और आकर उसे खाली और झड़ा हुआ और आरास्ता पाती है। <sup>45</sup> फिर जा कर और सात रूहें अपने से बुरी अपने साथ ले आती है और वो दाखिल होकर वहाँ बसती हैं; और उस आदमी का पिछला हाल पहले से बदतर हो जाता है, इस ज़माने के बुरे लोगों का हाल भी ऐसा ही होगा।”

<sup>46</sup> जब वो भीड़ से ये कह रहा था, उसकी माँ और भाई बाहर खड़े थे, और उससे बात करना चाहते थे। <sup>47</sup> किसी ने उससे कहा, “देख तेरी माँ और भाई बाहर खड़े हैं और तुझ से बात करना चाहते हैं।” <sup>48</sup> उसने खबर देने वाले को जवाब में कहा “कौन है मेरी माँ और कौन है मेरे भाई?” <sup>49</sup> फिर अपने शागिर्दों की तरफ हाथ बढ़ा कर कहा, “देखो, मेरी माँ और मेरे भाई ये हैं। <sup>50</sup> क्योंकि जो कोई मेरे आस्मानी बाप की मर्जी पर चले वही मेरा भाई, मेरी बहन और माँ है।”

## 13

???? ???? ???? ???? ??

<sup>1</sup> उसी रोज़ ईसा घर से निकलकर झील के किनारे जा बैठा। <sup>2</sup> उस के पास एसी बड़ी भीड़ जमा हो गई, कि वो नाव पर चढ़ बैठा, और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही। <sup>3</sup> और उसने उनसे बहुत सी बातें मिसालों में कहीं “देखो एक बोने वाला बीज बोने निकला। <sup>4</sup> और बोते वक़्त कुछ दाने राह के किनारे गिरे और परिन्दों ने आकर उन्हें चुग लिया। <sup>5</sup> और कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ उनको बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने की वजह से जल्द उग आए। <sup>6</sup> और जब सूरज निकला तो जल गए और जड़ न होने की वजह से सूख गए। <sup>7</sup> और कुछ झाड़ियों में गिरे और झाड़ियों ने बढ़ कर उनको दबा लिया। <sup>8</sup> और कुछ अच्छी ज़मीन पर गिरे और फल लाए; कुछ सौ गुना कुछ साठ गुना कुछ तीस गुना। <sup>9</sup> जो सुनना चाहता है वो सुन ले!”

<sup>10</sup> शागिर्दों ने पास आ कर उससे पूछा “तू उनसे मिसालों में क्या बातें करता है?” <sup>11</sup> उस ने जवाब में

उनसे कहा “इसलिए कि तुम को आस्मान की बादशाही के राज़ की समझ दी गई है, मगर उनको नहीं दी गई।

<sup>12</sup> क्योंकि जिस के पास है उसे दिया जाएगा और उसके पास ज्यादा हो जाएगा; और जिसके पास नहीं है उस से वो भी ले लिया जाएगा; जो उसके पास है। <sup>13</sup> मैं उनसे मिसालों में इसलिए बातें कहता हूँ; कि वो देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सुनते और नहीं समझते।

<sup>14</sup> उनके हक़ में यसायाह की ये नबुव्वत पूरी होती है कि तुम कानों से सुनोगे पर हरगिज़ न समझोगे, और आँखों से देखोगे और हरगिज़ मा'लूम न करोगे।”

<sup>15</sup> “क्योंकि इस उम्मत के दिल पर चर्बी छा गई है, और वो कानों से ऊँचा सुनते हैं; और उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर ली हैं;

ताकि ऐसा न हो कि आँखों से मा'लूम करें

और कानों से सुनें और दिल से समझें

और रुजू लाएँ और मैं उनको शिफ़ा बख़्शूँ।”

<sup>16</sup> “लेकिन मुबारक हैं तुम्हारी आँखें क्योंकि वो देखती हैं और तुम्हारे कान इसलिए कि वो सुनते हैं। <sup>17</sup> क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ कि बहुत से नबियों और रास्तबाज़ों की आरजू थी कि जो कुछ तुम देखते हो देखें मगर न देखा और जो बातें तुम सुनते हो सुनें मगर न सुनीं।”

<sup>18</sup> “पस बोनेवाले की मिसाल सुनो। <sup>19</sup> जब कोई बादशाही का कलाम सुनता है और समझता नहीं तो जो उसके दिल में बोया गया था उसे वो शैतान छीन ले जाता है ये वो है जो राह के किनारे बोया गया था। <sup>20</sup> और वो पथरीली ज़मीन में बोया गया; ये वो है जो कलाम को सुनता है, और उसे फ़ौरन खुशी से कुबूल कर लेता है। <sup>21</sup> लेकिन अपने अन्दर जड़ नहीं रखता बल्कि चन्द रोज़ा है, और जब कलाम के वजह से मुसीबत या ज़ुल्म बर्पा होता है तो फ़ौरन टोकर खाता है। <sup>22</sup> और जो झाड़ियों में बोया गया, ये वो है जो कलाम को सुनता है और दुनिया की फ़िक्र और दौलत का फ़रेब उस कलाम को दबा देता है; और वो बे फल रह जाता है। <sup>23</sup> और जो अच्छी ज़मीन में बोया गया, ये वो है जो कलाम को सुनता और समझता है और फल भी लाता है; कोई सौ गुना फलता है, कोई साठ गुना, और कोई तीस गुना।”

<sup>24</sup> उसने एक और मिसाल उनके सामने पेश करके कहा, “आसमान की बादशाही उस आदमी की तरह है; जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। <sup>25</sup> मगर लोगों के सोते में उसका दुश्मन आया और गेहूँ में कड़वे दाने भी बो गया। <sup>26</sup> पस जब पत्तियाँ निकलीं और बालें आईं तो वो कड़वे दाने भी दिखाई दिए। <sup>27</sup> नौकरो ने आकर घर के मालिक से कहा, ‘ऐ खुदावन्द क्या तू ने अपने खेत

में अच्छा बीज न बोया था? उस में कड़वे दाने कहाँ से आ गए?” 28 उस ने उनसे कहा, ये किसी दुश्मन का काम है, नौकरों ने उससे कहा, ‘तो क्या तू चाहता है कि हम जाकर उनको जमा करें।’ 29 उस ने कहा, नहीं, ऐसा न हो कि कड़वे दाने जमा करने में तुम उनके साथ गेहूँ भी उखाड़ लो। 30 कटाई तक दोनों को इकट्ठा बढ़ने दो, और कटाई के वक्त में काटने वालों से कह दूँगा कि पहले कड़वे दाने जमा कर लो और जलाने के लिए उनके गट्ठे बाँध लो और गेहूँ मेरे खित्ते में जमा कर दो।”

31 उसने एक और मिसाल उनके सामने पेश करके कहा, “आसमान की बादशाही उस राई के दाने\* की तरह है जिसे किसी आदमी ने लेकर अपने खेत में बो दिया। 32 वो सब बीजों से छोटा तो है मगर जब बढ़ता है तो सब तरकारियों से बड़ा और ऐसा दरख्त हो जाता है, कि हवा के परिन्दे आकर उसकी डालियों पर बसेरा करते हैं।”

33 उस ने एक और मिसाल उनको सुनाई। “आस्मान की बादशाही उस खमीर की तरह है जिसे किसी औरत ने ले कर तीन पैमाने आटे में मिला दिया और वो होते होते सब खमीर हो गया।”

34 ये सब बातें ईसा ने भीड़ से मिसालों में कहीं और बगैर मिसालों के वो उनसे कुछ न कहता था। 35 ताकि जो नबी के ज़रिए कहा गया था वो पूरा हो “मैं मिसालों में अपना मुँह खोलूँगा; मैं उन बातों को ज़ाहिर करूँगा जो बिना — ए — आलम से छिपी रही हैं।”

36 उस वक्त वो भीड़ को छोड़ कर घर में गया और उस के शागिर्दों ने उस के पास आकर कहा, “खेत के कड़वे दाने की मिसाल हमें समझा दे।” 37 उस ने जवाब में उन से कहा, “अच्छे बीज का बोने वाला इबने आदम है। 38 और खेत दुनिया है और अच्छा बीज बादशाही के फ़र्ज़न्द और कड़वे दाने उस शैतान के फ़र्ज़न्द हैं। 39 जिस दुश्मन ने उन को बोया वो इब्नीस है। और कटाई दुनिया का आखिर है और काटने वाले फ़रिश्ते हैं। 40 पस जैसे कड़वे दाने जमा किए जाते और आग में जलाए जाते हैं। 41 इब्न — ए — आदम अपने फ़रिश्तों को भेजेगा; और वो सब ठोकर खिलाने वाली चीज़ें और बदकारों को उस की बादशाही में से जमा करेंगे। 42 और उनकी आग की भट्ठी में डाल देंगे वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा। 43 उस वक्त रास्तबाज़ अपने बाप की बादशाही में सूरज की तरह चमकेंगे; जिसके कान हों वो सुन ले!”

44 “आसमान की बादशाही खेत में छिपे खज़ाने की तरह है जिसे किसी आदमी ने पाकर छिपा दिया और

खुशी के मारे जाकर जो कुछ उसका था; बेच डाला और उस खेत को खरीद लिया।”

45 “फिर आसमान की बादशाही उस सौदागर की तरह है, जो उम्दा मोतियों की तलाश में था। 46 जब उसे एक बेशक्रीमती मोती मिला तो उस ने जाकर जो कुछ उस का था बेच डाला और उसे खरीद लिया।”

47 “फिर आसमान की बादशाही उस बड़े जाल की तरह है; जो दरिया में डाला गया और उस ने हर किस्म की मछलियाँ समेट लीं। 48 और जब भर गया तो उसे किनारे पर खींच लाए; और बैठ कर अच्छी — अच्छी तो बरतनों में जमा कर लीं और जो खराब थी फेंक दीं। 49 दुनिया के आखिर में ऐसा ही होगा; फ़रिश्ते निकलेंगे और शरीरों को रास्तबाज़ों से जुदा करेंगे; और उनको आग की भट्ठी में डाल देंगे। 50 वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।”

51 “क्या तुम ये सब बातें समझ गए?” उन्होंने उससे कहा, हाँ। 52 उसने उससे कहा, “इसलिए हर आलिम जो आसमान की बादशाही का शागिर्द बना है उस घर के मालिक की तरह है जो अपने खज़ाने में से नई और पुरानी चीज़ें निकालता है।”

53 जब ईसा ये मिसाल खत्म कर चुका तो ऐसा हुआ कि वहाँ से रवाना हो गया। 54 और अपने वतन में आकर उनके इबादतखाने में उनको ऐसी ता'लीम देने लगा; कि वो हैरान होकर कहने लगे, इस में ये हिक्मत और मोजिज़े कहाँ से आए? 55 क्या ये बढ़ई का बेटा नहीं? और इस की माँ का नाम मरियम और इस के भाई या'कूब और यूसुफ़ और शमौन और यहूदा नहीं? 56 और क्या इस की सब बहनें हमारे यहाँ नहीं? फिर ये सब कुछ इस में कहाँ से आया?

57 और उन्होंने उसकी वजह से ठोकर खाई मगर ईसा ने उन से कहा “नबी अपने वतन और अपने घर के सिवा कहीं बेइज़्ज़त नहीं होता।” 58 और उसने उनकी बेऐ'तिकादी की वजह से वहाँ बहुत से मोजिज़े न दिखाए।

## 14

~~~~~

1 उस वक्त चौथाई मुल्क के हाकिम हेरोदेस ने ईसा की शोहरत सुनी। 2 और अपने खादिमों से कहा “ये यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है वो मुर्दों में से जी उठा है; इसलिए उससे ये मोजिज़े ज़ाहिर होते हैं।”

3 क्यूँकि हेरोदेस ने अपने भाई फ़िलिप्पुस की बीवी हेरोदियास की वजह से यूहन्ना को पकड़ कर बाँधा और

* 13:31 13:31 राई के दाने फ़िलिस्तीन में राई एक पेड़ की तरह होता है जिसमें परिन्दे घोंसला लगा सकते हैं और बैठ सकते हैं

क़ैद खाने में डाल दिया था। ⁴ क्योंकि यूहन्ना ने उससे कहा था कि इसका रखना तुझे जायज़ नहीं। ⁵ और वो हर चन्द उसे क़त्ल करना चाहता था, मगर आम लोगों से डरता था क्योंकि वो उसे नबी मानते थे। ⁶ लेकिन जब हेरोदेस की साल गिरह हुई तो हेरोदियास की बेटी ने महफ़िल में नाच कर हेरोदेस को खुश किया। ⁷ इस पर उसने क़सम खाकर उससे वा'दा किया “जो कुछ तू माँगेगी तुझे दूँगा।” ⁸ उसने अपनी माँ के सिखाने से कहा, “मुझे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर थाल में यहीं मँगवा दे।” ⁹ बादशाह ग़मगीन हुआ; मगर अपनी क़समों और मेहमानों की वजह से उसने हुक्म दिया कि दे दिया जाए। ¹⁰ और आदमी भेज कर क़ैद खाने में यूहन्ना का सिर कटवा दिया। ¹¹ और उस का सिर थाल में लाया गया और लड़की को दिया गया; और वो उसे अपनी माँ के पास ले गई। ¹² और उसके शागिर्दों ने आकर लाश उठाई और उसे दफ़न कर दिया, और जा कर ईसा को ख़बर दी।

¹³ जब ईसा ने ये सुना तो वहाँ से नाव पर अलग किसी वीरान जगह को खाना हुआ और लोग ये सुनकर शहर — शहर से पैदल उसके पीछे गए। ¹⁴ उसने उतर कर बड़ी भीड़ देखी और उसे उन पर तरस आया; और उसने उनके बीमारों को अच्छा कर दिया। ¹⁵ जब शाम हुई तो शागिर्द उसके पास आकर कहने लगे “जगह वीरान है और वक़्त गुज़र गया है लोगों को रुख़्सत कर दे ताकि गाँव में जाकर अपने लिए खाना ख़रीद लें।” ¹⁶ ईसा ने उनसे कहा, “**इन्हें जाने की ज़रूरत नहीं, तुम ही इनको खाने को दो।**” ¹⁷ उन्होंने उससे कहा “यहाँ हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो मछलियों के सिवा और कुछ नहीं।” ¹⁸ उसने कहा “**वो यहाँ मेरे पास ले आओ,**” ¹⁹ और उसने लोगों को घास पर बैठने का हुक्म दिया। फिर उस ने वो पाँच रोटियों और दो मछलियाँ लीं और आसमान की तरफ़ देख कर बर्क़त दी और रोटियाँ तोड़ कर शागिर्दों को दीं और शागिर्दों ने लोगों को। ²⁰ और सब खाकर सेर हो गए; और उन्होंने बिना इस्तेमाल बचे हुए खाने से भरी हुई बारह टोक़रियाँ उठाईं। ²¹ और खानेवाले औरतों और बच्चों के सिवा पाँच हज़ार मर्द के क़रीब थे।

²² और उसने फ़ौरन शागिर्दों को मजबूर किया कि नाव में सवार होकर उससे पहले पार चले जाएँ जब तक वो लोगों को रुख़्सत करे। ²³ और लोगों को रुख़्सत करके तन्हा हुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया; और जब शाम हुई तो वहाँ अकेला था। ²⁴ मगर नाव उस वक़्त झील के बीच में थी और लहरों से डगमगा रही थी; क्योंकि हवा मुखालिफ़ थी। ²⁵ और वो रात के चौथे पहर झील पर चलता हुआ उनके पास आया। ²⁶ शागिर्द उसे

झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए और कहने लगे “भूत है,” और डर कर चिल्ला उठे। ²⁷ ईसा ने फ़ौरन उन से कहा “**इत्मीनान रखो! मैं हूँ। डरो मत।**” ²⁸ पतरस ने उससे जवाब में कहा “ऐ खुदावन्द, अगर तू है तो मुझे हुक्म दे कि पानी पर चलकर तेरे पास आऊँ।” ²⁹ उस ने कहा, “**आ।**” पतरस नाव से उतर कर ईसा के पास जाने के लिए पानी पर चलने लगा। ³⁰ मगर जब हवा देखी तो डर गया और जब डूबने लगा तो चिल्ला कर कहा “ऐ खुदावन्द, मुझे बचा!” ³¹ ईसा ने फ़ौरन हाथ बढ़ा कर उसे पकड़ लिया। और उससे कहा, “**ऐ कम ईमान तूने क्यूँ शक किया?**” ³² जब वो नाव पर चढ़ आए तो हवा थम गई; ³³ जो नाव पर थे, उन्होंने सज्दा करके कहा “यक़ीनन तू खुदा का बेटा है!”

³⁴ वो नदी पार जाकर गनेसरत के इलाक़े में पहुँचे। ³⁵ और वहाँ के लोगों ने उसे पहचान कर उस सारे इलाक़े में ख़बर भेजी; और सब बीमारों को उस के पास लाए। ³⁶ और वो उसकी मिन्नत करने लगे कि उसकी पोशाक का किनारा ही छू लें और जितनों ने उसे छुआ वो अच्छे हो गए।

15

????
 ?

¹ उस वक़्त फ़रीसियों और आलिमों ने येरूशलेम से ईसा के पास आकर कहा। ² “तेरे शागिर्द हमारे बुज़ुर्गों की रिवायत को क्यूँ टाल देते हैं; कि खाना खाते वक़्त हाथ नहीं धोते?” ³ उस ने जवाब में उनसे कहा “**तुम अपनी रिवायत से खुदा का हुक्म क्यूँ टाल देते हो?** ⁴ **क्यूँकि खुदा ने फ़रमाया है, तू अपने बाप की और अपनी माँ की इज्ज़त करना, और जो बाप या माँ को बुरा कहे वो ज़रूर जान से मारा जाए।**” ⁵ मगर तुम कहते हो कि जो कोई बाप या माँ से कहे, ‘जिस चीज़ का तुझे मुझ से फ़ाइदा पहुँच सकता था, वो खुदा की नज़र हो चुकी,’ ⁶ तो वो अपने बाप की इज्ज़त न करे; पस तुम ने अपनी रिवायत से खुदा का कलाम बातिल कर दिया। ⁷ **ऐ रियाकारो! यसायाह ने तुम्हारे हक़ में क्या खूब नबुव्वत की है,** ⁸ **ये उम्मत ज़बान से तो मेरी इज्ज़त करती है मगर इन का दिल मुझ से दूर है।** ⁹ **और ये बेफ़ाइदा मेरी इबादत करते हैं क्यूँकि इंसानी अहक़ाम की ता'लीम देते हैं।**”

¹⁰ फिर उस ने लोगों को पास बुला कर उनसे कहा, “सुनो और समझो। ¹¹ जो चीज़ मुँह में जाती है, वो आदमी को नापाक नहीं करती मगर जो मुँह से निकलती है वही आदमी को नापाक करती है।” ¹² इस पर शागिर्दों

ने उसके पास आकर कहा, “क्या तू जानता है कि फ़रीसियों ने ये बात सुन कर ठोकर खाई?” ¹³ उसने जवाब में कहा, जो पौदा मेरे आसमानी बाप ने नहीं लगाया, जड़ से उखाड़ा जाएगा। ¹⁴ “उन्हें छोड़ दो, वो अन्धे राह बताने वाले हैं; और अगर अन्धे को अन्धा राह बताएगा तो दोनों गड्ढे में गिरेंगे।”

¹⁵ पतरस ने जवाब में उससे कहा “ये मिसाल हमें समझा दे।” ¹⁶ उस ने कहा, “क्या तुम भी अब तक नासमझ हो? ¹⁷ क्या नहीं समझते कि जो कुछ मुँह में जाता है; वो पेट में पड़ता है और गंदगी में फेंका जाता है? ¹⁸ मगर जो बातें मुँह से निकलती हैं वो दिल से निकलती हैं और वही आदमी को नापाक करती हैं। ¹⁹ क्योंकि बुरे खयाल, खून रेज़ियाँ, ज़िनाकारियाँ, हरामकारियाँ, चोरियाँ, झूठी, गवाहियाँ, बदगोइयाँ, दिल ही से निकलती हैं।” ²⁰ “यही बातें हैं जो आदमी को नापाक करती हैं, मगर बग़ैर हाथ धोए खाना खाना आदमी को नापाक नहीं करता।”

²¹ फिर ईसा वहाँ से निकल कर सूर और सैदा के इलाक़े को रवाना हुआ। ²² और देखो, एक कनानी 'औरत उन सरहदों से निकली और पुकार कर कहने लगी, “ऐ खुदावन्द! इबने दाऊद मुझ पर रहम कर! एक बदरूह मेरी बेटी को बहुत सताती है।” ²³ मगर उसने उसे कुछ जवाब न दिया “उसके शागिर्दों ने पास आकर उससे ये अर्ज़ किया कि; उसे रुख़सत कर दे, क्योंकि वो हमारे पीछे चिल्लाती है।” ²⁴ उसने जवाब में कहा, “मैं इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के सिवा और किसी के पास नहीं भेजा गया।” ²⁵ मगर उसने आकर उसे सज्दा किया और कहा “ऐ खुदावन्द, मेरी मदद कर!” ²⁶ उस ने जवाब में कहा “लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों को डाल देना अच्छा नहीं।” ²⁷ उसने कहा “हाँ खुदावन्द, क्योंकि कुत्ते भी उन टुकड़ों में से खाते हैं जो उनके मालिकों की मेज़ से गिरते हैं।” ²⁸ इस पर ईसा ने जवाब में कहा, “ऐ 'औरत, तेरा ईमान बहुत बड़ा है। जैसा तू चाहती है तेरे लिए वैसा ही हो; और उस की बेटी ने उसी वक़्त शिफ़ा पाई।”

²⁹ फिर ईसा वहाँ से चल कर गलील की झील के नज़दीक आया और पहाड़ पर चढ़ कर वहीं बैठ गया। ³⁰ और एक बड़ी भीड़ लंगड़ों, अन्धों, गूँगों, ढुंडों और बहुत से और बीमारों को अपने साथ लेकर उसके पास आई और उनको उसके पाँव में डाल दिया; उसने उन्हें अच्छा कर दिया। ³¹ चुनाँचे जब लोगों ने देखा कि गूँगे बोलते, ढुंडा तन्दरुस्त होते, लंगड़े चलते फिरते और अन्धे देखते हैं तो ता'ज्जुब किया; और इस्राईल के खुदा की बड़ाई की।

³² और ईसा ने अपने शागिर्दों को पास बुला कर कहा, “मुझे इस भीड़ पर तरस आता है। क्योंकि ये लोग तीन दिन से बराबर मेरे साथ हैं और इनके पास खाने को कुछ नहीं और मैं इनको भूखा रुख़सत करना नहीं चाहता; कहीं ऐसा न हो कि रास्ते में थककर रह जाएँ।” ³³ शागिर्दों ने उससे कहा, “वीराने में हम इतनी रोटियाँ कहाँ से लाएँ; कि ऐसी बड़ी भीड़ को सेर करें?” ³⁴ ईसा ने उनसे कहा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने कहा, “सात और थोड़ी सी छोटी मछलियाँ हैं।” ³⁵ उसने लोगों को हुक्म दिया कि ज़मीन पर बैठ जाएँ। ³⁶ और उन सात रोटियों और मछलियों को लेकर शुक्र किया और उन्हें तोड़ कर शागिर्दों को देता गया और शागिर्द लोगों को। ³⁷ और सब खाकर सेर हो गए; और बिना इस्तेमाल बचे हुए खाने से भरे हुए सात टोकरे उठाए। ³⁸ और खाने वाले सिवा औरतों और बच्चों के चार हज़ार मर्द थे। ³⁹ फिर वो भीड़ को रुख़सत करके नाव पर सवार हुआ और मगदन की सरहदों में आ गया।

16

????? ?? ??????? ?? ????? ?????

¹ फिर फ़रीसियों और सद्कियों ने 'ईसा के पास आकर आजमाने के लिए उससे दरख्वास्त की; कि हमें कोई आसमानी निशान दिखा। ² उसने जवाब में उनसे कहा “शाम को तुम कहते हो, खुला रहेगा, क्योंकि आसमान लाल है ³ और सुबह को ये कि आज आन्धी चलेगी क्योंकि आसमान लाल धुन्धला है तुम आसमान की सूरत में तो पहचान करना जानते हो मगर ज़मानो की अलामतों में पहचान नहीं कर सकते। ⁴ इस ज़माने के बुरे और बे'ईमान लोग निशान तलब करते हैं; मगर यहून्ना के निशान के सिवा कोई और निशान उनको न दिया जाएगा।” और वो उनको छोड़ कर चला गया।

⁵ शागिर्द पार जाते वक़्त रोटी साथ लेना भूल गए थे। ⁶ ईसा ने उन से कहा, “खबरदार, फ़रीसियों और सद्कियों के खमीर से होशियार रहना।” ⁷ वो आपस में चर्चा करने लगे, “हम रोटी नहीं लाए।” ⁸ ईसा ने ये मालूम करके कहा, “ऐ कम — ऐ'तिक़ादों तुम आपस में क्यूँ चर्चा करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं? ⁹ क्या अब तक नहीं समझते और उन पाँच हज़ार आदमियों की पाँच रोटियाँ तुम को याद नहीं? और न ये कि कितनी टोकरियाँ उठाईं? ¹⁰ और न उन चार हज़ार आदमियों की सात रोटियाँ? और न ये कि कितने टोकरे उठाए। ¹¹ क्या वजह है कि तुम ये नहीं समझते कि मैंने तुम से रोटी के बारे में नहीं कहा फ़रीसियों और सद्कियों के खमीर से होशियार रहो।” ¹² जब उनकी समझ में न

आया कि उसने रोटी के खमीर से नहीं; बल्कि फ़रीसियों और सद्क़ियों की ता'लीम से ख़बरदार रहने को कहा था।

13 जब ईसा कैसरिया फ़िलप्पी के इलाक़े में आया तो उसने अपने शागिर्दों से ये पूछा, “लोग इब्न — ए — आदम को क्या कहते हैं?” 14 उन्होंने कहा, कुछ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं। “कुछ एलियाह और कुछ यरमियाह या नबियों में से कोई।” 15 उसने उनसे कहा, “मगर तुम मुझे क्या कहते हो?” 16 शमौन पतरस ने जवाब में कहा, “तू ज़िन्दा खुदा का बेटा मसीह है।” 17 ईसा ने जवाब में उससे कहा, “मुबारक है तू शमौन बर — यूहन्ना, क्योंकि ये बात गोश्त और खून ने नहीं, बल्कि मेरे बाप ने जो आसमान पर है; तुझ पर जाहिर की है। 18 और मैं भी तुम से कहता हूँ; कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा। और आलम — ए — अरवाह के दरवाज़े उस पर ग़ालिब न आएँगे। 19 मैं आसमान की बादशाही की कुन्जियाँ तुझे दूँगा; और जो कुछ तू ज़मीन पर बाँधेगा वो आसमान पर बाँधेगा और जो कुछ तू ज़मीन पर खोलेगा वो आसमान पर खुलेगा।” 20 उस वक़्त उसने शागिर्दों को हुक्म दिया कि किसी को न बताना कि मैं मसीह हूँ।

21 उस वक़्त से ईसा अपने शागिर्दों पर जाहिर करने लगा “कि उसे ज़रूर है कि येरूशलेम को जाए और बुज़ुर्गों और सरदार काहिनों और आलिमों की तरफ़ से बहुत दुःख उठाए; और क़त्ल किया जाए और तीसरे दिन जी उठे।” 22 इस पर पतरस उसको अलग ले जाकर मलामत करने लगा “ऐ खुदावन्द, खुदा न करे ये तुझ पर हरगिज़ नहीं आने का।” 23 उसने फिर कर पतरस से कहा, “ऐ शैतान, मेरे सामने से दूर हो! तू मेरे लिए ठोकर का बा'इस है; क्योंकि तू खुदा की बातों का नहीं बल्कि आदमियों की बातों का खयाल रखता है।”

24 उस वक़्त ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “अगर कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आपका इन्कार करे; अपनी सलीब उठाए और मेरे पीछे हो ले। 25 क्योंकि जो कोई अपनी जान बचाना चाहे उसे खोएगा; और जो कोई मेरी खातिर अपनी जान खोएगा उसे पाएगा। 26 अगर आदमी सारी दुनिया हासिल करे और अपनी जान का नुक़सान उठाए तो उसे क्या फ़ाइदा होगा? 27 क्योंकि इब्न — ए — आदम अपने बाप के जलाल में अपने फ़रिश्तों के साथ आएगा; उस वक़्त हर एक को उसके कामों के मुताबिक़ बदला देगा। 28 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो यहाँ खड़े हैं उन में से कुछ ऐसे हैं कि जब तक इब्न — ए — आदम को उसकी बादशाही में आते हुए न देख लेंगे; मौत का मज़ा हरगिज़ न चखेंगे।”

17

2222222-2-222222

1 छः दिन के बाद ईसा ने पतरस, को और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया और उन्हें एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया। 2 और उनके सामने उसकी सूरत बदल गई; और उसका चेहरा सूरज की तरह चमका और उसकी पोशाक नूर की तरह सफ़ेद हो गई। 3 और देखो; मूसा और एलियाह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए। 4 पतरस ने ईसा से कहा “ऐ खुदावन्द, हमारा यहाँ रहना अच्छा है; मज़ी हो तो मैं यहाँ तीन डेरे बनाऊँ। एक तेरे लिए; एक मूसा के लिए; और एक एलियाह के लिए।” 5 वो ये कह ही रहा था कि देखो; “एक नूरानी बादल ने उन पर साया कर लिया और उस बादल में से आवाज़ आई; ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं खुश हूँ; उसकी सुनो।” 6 शागिर्द ये सुनकर मुँह के बल गिरे और बहुत डर गए। 7 ईसा ने पास आ कर उन्हें छुआ और कहा, “उठो, डरो मत।” 8 जब उन्होंने अपनी आँखें उठाई तो ईसा के सिवा और किसी को न देखा। 9 जब वो पहाड़ से उतर रहे थे तो ईसा ने उन्हें ये हुक्म दिया “जब तक इब्न — ए — आदम मुर्दों में से जी न उठे; जो कुछ तुम ने देखा है किसी से इसका ज़िक़र न करना।” 10 शागिर्दों ने उस से पूछा, “फिर आलिम क्यों कहते हैं कि एलियाह का पहले आना ज़रूर है?” 11 उस ने जवाब में कहा, “एलियाह अलबत्ता आएगा और सब कुछ बहाल करेगा। 12 लेकिन मैं तुम से कहता हूँ; कि एलियाह तो आ चुका और उन्होंने उसे नहीं पहचाना बल्कि जो चाहा उसके साथ किया; इसी तरह इबने आदम भी उनके हाथ से दुःख उठाएगा।” 13 और शागिर्द समझ गए; कि उसने उनसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में कहा है।

14 और जब वो भीड़ के पास पहुँचे तो एक आदमी उसके पास आया; और उसके आगे घुटने टेक कर कहने लगा। 15 “ऐ खुदावन्द, मेरे बेटे पर रहम कर, क्योंकि उसको मिर्गी आती है और वो बहुत दुःख उठाता है; इसलिए कि अक्सर आग और पानी में गिर पड़ता है। 16 और मैं उसको तेरे शागिर्दों के पास लाया था; मगर वो उसे अच्छा न कर सके।” 17 ईसा ने जवाब में कहा, “ऐ बे ऐ'तिकाद और टेढ़ी नस्ल मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? कब तक तुम्हारी बर्दाश्त करूँगा? उसे यहाँ मेरे पास लाओ।” 18 ईसा ने उसे झिड़का और बदरूह उससे निकल गई; वो लड़का उसी वक़्त अच्छा हो गया।

19 तब शागिर्दों ने ईसा के पास आकर तन्हाई में कहा “हम इस को क्यों न निकाल सके?” 20 उस ने उनसे कहा,

22 ईसा ने उससे कहा, “मैं तुझ से ये नहीं कहता कि सात बार, बल्कि सात दफ़ा के सत्तर बार तक।”

23 “पस आसमान की बादशाही उस बादशाह की तरह है जिसने अपने नौकरों से हिसाब लेना चाहा। 24 और जब हिसाब लेने लगा तो उसके सामने एक कर्ज़दार हाज़िर किया गया; जिस पर उसके दस हजार चाँदी के सिक्के आते थे। 25 मगर चूँकि उसके पास अदा करने को कुछ न था; इसलिए उसके मालिक ने हुक्म दिया कि, ये और इसकी बीवी और बच्चे और जो कुछ इसका है सब बेचा जाए और कर्ज़ वसूल कर लिया जाए। 26 पस नौकर ने गिरकर उसे सज्दा किया और कहा, ‘ऐ खुदावन्द मुझे मोहलत दे, मैं तेरा सारा कर्ज़ा अदा करूँगा।’ 27 उस नौकर के मालिक ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका कर्ज़ बर्ख़ा दिया।”

28 “जब वो नौकर बाहर निकला तो उसके हम खिदमतों में से एक उसको मिला जिस पर उसके सौ चाँदी के सिक्के आते थे। उसने उसको पकड़ कर उसका गला घोंटा और कहा, ‘जो मेरा आता है अदा कर दे!’ 29 पस उसके हमखिदमत ने उसके सामने गिरकर मिन्नत की और कहा, मुझे मोहलत दे; मैं तुझे अदा कर दूँगा। 30 उसने न माना; बल्कि जाकर उसे कैदखाने में डाल दिया; कि जब तक कर्ज़ अदा न कर दे कैद रहे। 31 पस उसके हमखिदमत ये हाल देखकर बहुत ग़मगीन हुए; और आकर अपने मालिक को सब कुछ जो हुआ था; सुना दिया। 32 इस पर उसके मालिक ने उसको पास बुला कर उससे कहा, ‘ऐ शरीर नौकर; मैं ने वो सारा कर्ज़ तुझे इसलिए मु'आफ़ कर दिया; कि तूने मेरी मिन्नत की थी। 33 क्या तुझे ज़रूरी न था, कि जैसे मैं ने तुझ पर रहम किया; तू भी अपने हमखिदमत पर रहम करता?’ 34 उसके मालिक ने खफ़ा होकर उसको जल्लादों के हवाले किया; कि जब तक तमाम कर्ज़ अदा न कर दे कैद रहे।”

35 “मेरा आसमानी बाप भी तुम्हारे साथ इसी तरह करेगा; अगर तुम में से हर एक अपने भाई को दिल से मु'आफ़ न करे।”

19

???? ? ? ???? ? ? ???? ? ? ???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 जब ईसा ये बातें खत्म कर चुका तो ऐसा हुआ कि गलील को रवाना होकर यरदन के पार यहूदिया की सरहदों में आया। 2 और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली; और उस ने उन्हें वहीं अच्छा किया। 3 और फ़रीसी उसे आजमाने को उसके पास आए और कहने लगे “क्या हर एक वजह से अपनी बीवी को छोड़ देना जायज़ है?”

4 उस ने जवाब में कहा, “क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि जिसने उन्हें बनाया उसने शुरू ही से उन्हें मर्द और 'औरत बना कर कहा? 5 कि इस वजह से मर्द बाप से और माँ से जुदा होकर अपनी बीवी के साथ रहेगा; और वो दोनों एक जिस्म होंगे।’ 6 पस वो दो नहीं, बल्कि एक जिस्म हैं; इसलिए जिसे खुदा ने जोड़ा है उसे आदमी जुदा न करे।” 7 उन्होंने उससे कहा, “फिर मूसा ने क्यों हुक्म दिया है; कि तलाक़ नामा देकर छोड़ दी जाए?” 8 उस ने उनसे कहा, मूसा ने तुम्हारी सख्त दिली की वजह से तुम को अपनी बीवियों को छोड़ देने की इजाज़त दी; मगर शुरू से ऐसा न था। 9 “और मैं तुम से कहता हूँ; कि जो कोई अपनी बीवी को हरामकारी के सिवा किसी और वजह से छोड़ दे; और दूसरी शादी करे, वो ज़िना करता है; और जो कोई छोड़ी हुई से शादी कर ले, वो भी ज़िना करता है।”

10 शागिर्दों ने उससे कहा, “अगर मर्द का बीवी के साथ ऐसा ही हाल है, तो शादी करना ही अच्छा नहीं।”

11 उसने उनसे कहा, सब इस बात को कुबूल नहीं कर सकते मगर वही जिनको ये कुदरत दी गई है।

12 क्यूँकि कुछ खोजे ऐसे हैं 'जो माँ के पेट ही से ऐसे पैदा हुए, और कुछ खोजे ऐसे हैं जिनको आदमियों ने खोजा बनाया; और कुछ खोजे ऐसे हैं, जिन्होंने आसमान की बादशाही के लिए अपने आप को खोजा बनाया, जो कुबूल कर सकता है करे।

13 उस वक़्त लोग बच्चों को उसके पास लाए, ताकि वो उन पर हाथ रखे और दुआ दे मगर शागिर्दों ने उन्हें झिड़का। 14 लेकिन ईसा ने उनसे कहा, बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें मनह न करो, क्यूँकि आसमान की बादशाही ऐसों ही की है। 15 और वो उन पर हाथ रखकर वहीं से चला गया।

16 और देखो; एक शख्स ने पास आकर उससे कहा “मैं कौन सी नेकी करूँ, ताकि हमेशा की ज़िन्दगी पाऊँ?”

17 उसने उससे कहा, “तू मुझ से नेकी की वजह क्यूँ पूछता है? नेक तो एक ही है लेकिन अगर तू ज़िन्दगी में दाखिल होना चाहता है तो हुक्मों पर अमल कर।”

18 उसने उससे कहा, “कौन से हुक्म पर?” ईसा ने कहा, “ये कि खून न कर ज़िना न कर चोरी न कर, झूठी गवाही न दे। 19 अपने बाप की और माँ की इज्जत कर और अपने पड़ोसी से अपनी तरह मुहब्बत रख।” 20 उस जवान ने उससे कहा कि “मैंने उन सब पर अमल किया है अब मुझ में किस बात की कमी है?” 21 ईसा ने उससे कहा, “अगर तू कामिल होना चाहे तो जा अपना माल — ओ — अस्बाब बेच कर गरीबों को दे, तुझे आसमान पर

खजाना मिलेगा; और आकर मेरे पीछे होले।” 22 मगर वो जवान ये बात सुनकर उदास होकर चला गया, क्योंकि बड़ा मालदार था।

23 ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा “मैं तुम से सच कहता हूँ कि दौलतमन्द का आस्मान की बादशाही में दाखिल होना मुश्किल है। 24 और फिर तुम से कहता हूँ, 'कि ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना इससे आसान है कि दौलतमन्द खुदा की बादशाही में दाखिल हो।’” 25 शागिर्द ये सुनकर बहुत ही हैरान हुए और कहने लगे “फिर कौन नजात पा सकता है?” 26 ईसा ने उनकी तरफ देखकर कहा “ये आदमियों से तो नहीं हो सकता; लेकिन खुदा से सब कुछ हो सकता है।” 27 इस पर पतरस ने जवाब में उससे कहा “देख हम तो सब कुछ छोड़ कर तेरे पीछे हो लिए हैं; पस हम को क्या मिलेगा?” 28 ईसा ने उस से कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब इबने आदम नई पैदाइश में अपने जलाल के तख्त पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए हो बारह तख्तों पर बैठ कर इस्राईल के बारह कबीलों का इन्साफ़ करोगे। 29 और जिस किसी ने घरों, या भाइयों, या बहनों, या बाप, या माँ, या बच्चों, या खेतों को मेरे नाम की खातिर छोड़ दिया है, उसको सौ गुना मिलेगा और हमेशा की ज़िन्दगी का वारिस होगा। 30 लेकिन बहुत से पहले आखिर हो जाएँगे और आखिर पहले।”

20

20:1-13 20:14-28 20:29-34 20:35-41 20:42-48 20:49-54 20:55-64 20:65-71 20:72-78 20:79-84 20:85-91 20:92-98 20:99-105 20:106-112 20:113-119 20:120-126 20:127-133 20:134-140 20:141-147 20:148-154 20:155-161 20:162-168 20:169-175 20:176-182 20:183-189 20:190-196 20:197-203 20:204-210 20:211-217 20:218-224 20:225-231 20:232-238 20:239-245 20:246-252 20:253-259 20:260-266 20:267-273 20:274-280 20:281-287 20:288-294 20:295-301 20:302-308 20:309-315 20:316-322 20:323-329 20:330-336 20:337-343 20:344-350 20:351-357 20:358-364 20:365-371 20:372-378 20:379-385 20:386-392 20:393-399 20:400-406 20:407-413 20:414-420 20:421-427 20:428-434 20:435-441 20:442-448 20:449-455 20:456-462 20:463-469 20:470-476 20:477-483 20:484-490 20:491-497 20:498-504 20:505-511 20:512-518 20:519-525 20:526-532 20:533-539 20:540-546 20:547-553 20:554-560 20:561-567 20:568-574 20:575-581 20:582-588 20:589-595 20:596-602 20:603-609 20:610-616 20:617-623 20:624-630 20:631-637 20:638-644 20:645-651 20:652-658 20:659-665 20:666-672 20:673-679 20:680-686 20:687-693 20:694-700 20:701-707 20:708-714 20:715-721 20:722-728 20:729-735 20:736-742 20:743-749 20:750-756 20:757-763 20:764-770 20:771-777 20:778-784 20:785-791 20:792-798 20:799-805 20:806-812 20:813-819 20:820-826 20:827-833 20:834-840 20:841-847 20:848-854 20:855-861 20:862-868 20:869-875 20:876-882 20:883-889 20:890-896 20:897-903 20:904-910 20:911-917 20:918-924 20:925-931 20:932-938 20:939-945 20:946-952 20:953-959 20:960-966 20:967-973 20:974-980 20:981-987 20:988-994 20:995-1001 20:1002-1008 20:1009-1015 20:1016-1022 20:1023-1029 20:1030-1036 20:1037-1043 20:1044-1050 20:1051-1057 20:1058-1064 20:1065-1071 20:1072-1078 20:1079-1085 20:1086-1092 20:1093-1099 20:1100-1106 20:1107-1113 20:1114-1120 20:1121-1127 20:1128-1134 20:1135-1141 20:1142-1148 20:1149-1155 20:1156-1162 20:1163-1169 20:1170-1176 20:1177-1183 20:1184-1190 20:1191-1197 20:1198-1204 20:1205-1211 20:1212-1218 20:1219-1225 20:1226-1232 20:1233-1239 20:1240-1246 20:1247-1253 20:1254-1260 20:1261-1267 20:1268-1274 20:1275-1281 20:1282-1288 20:1289-1295 20:1296-1302 20:1303-1309 20:1310-1316 20:1317-1323 20:1324-1330 20:1331-1337 20:1338-1344 20:1345-1351 20:1352-1358 20:1359-1365 20:1366-1372 20:1373-1379 20:1380-1386 20:1387-1393 20:1394-1400 20:1401-1407 20:1408-1414 20:1415-1421 20:1422-1428 20:1429-1435 20:1436-1442 20:1443-1449 20:1450-1456 20:1457-1463 20:1464-1470 20:1471-1477 20:1478-1484 20:1485-1491 20:1492-1498 20:1499-1505 20:1506-1512 20:1513-1519 20:1520-1526 20:1527-1533 20:1534-1540 20:1541-1547 20:1548-1554 20:1555-1561 20:1562-1568 20:1569-1575 20:1576-1582 20:1583-1589 20:1590-1596 20:1597-1603 20:1604-1610 20:1611-1617 20:1618-1624 20:1625-1631 20:1632-1638 20:1639-1645 20:1646-1652 20:1653-1659 20:1660-1666 20:1667-1673 20:1674-1680 20:1681-1687 20:1688-1694 20:1695-1701 20:1702-1708 20:1709-1715 20:1716-1722 20:1723-1729 20:1730-1736 20:1737-1743 20:1744-1750 20:1751-1757 20:1758-1764 20:1765-1771 20:1772-1778 20:1779-1785 20:1786-1792 20:1793-1799 20:1800-1806 20:1807-1813 20:1814-1820 20:1821-1827 20:1828-1834 20:1835-1841 20:1842-1848 20:1849-1855 20:1856-1862 20:1863-1869 20:1870-1876 20:1877-1883 20:1884-1890 20:1891-1897 20:1898-1904 20:1905-1911 20:1912-1918 20:1919-1925 20:1926-1932 20:1933-1939 20:1940-1946 20:1947-1953 20:1954-1960 20:1961-1967 20:1968-1974 20:1975-1981 20:1982-1988 20:1989-1995 20:1996-2002 20:2003-2009 20:2010-2016 20:2017-2023 20:2024-2030 20:2031-2037 20:2038-2044 20:2045-2051 20:2052-2058 20:2059-2065 20:2066-2072 20:2073-2079 20:2080-2086 20:2087-2093 20:2094-2100 20:2101-2107 20:2108-2114 20:2115-2121 20:2122-2128 20:2129-2135 20:2136-2142 20:2143-2149 20:2150-2156 20:2157-2163 20:2164-2170 20:2171-2177 20:2178-2184 20:2185-2191 20:2192-2198 20:2199-2205 20:2206-2212 20:2213-2219 20:2220-2226 20:2227-2233 20:2234-2240 20:2241-2247 20:2248-2254 20:2255-2261 20:2262-2268 20:2269-2275 20:2276-2282 20:2283-2289 20:2290-2296 20:2297-2303 20:2304-2310 20:2311-2317 20:2318-2324 20:2325-2331 20:2332-2338 20:2339-2345 20:2346-2352 20:2353-2359 20:2360-2366 20:2367-2373 20:2374-2380 20:2381-2387 20:2388-2394 20:2395-2401 20:2402-2408 20:2409-2415 20:2416-2422 20:2423-2429 20:2430-2436 20:2437-2443 20:2444-2450 20:2451-2457 20:2458-2464 20:2465-2471 20:2472-2478 20:2479-2485 20:2486-2492 20:2493-2499 20:2500-2506 20:2507-2513 20:2514-2520 20:2521-2527 20:2528-2534 20:2535-2541 20:2542-2548 20:2549-2555 20:2556-2562 20:2563-2569 20:2570-2576 20:2577-2583 20:2584-2590 20:2591-2597 20:2598-2604 20:2605-2611 20:2612-2618 20:2619-2625 20:2626-2632 20:2633-2639 20:2640-2646 20:2647-2653 20:2654-2660 20:2661-2667 20:2668-2674 20:2675-2681 20:2682-2688 20:2689-2695 20:2696-2702 20:2703-2709 20:2710-2716 20:2717-2723 20:2724-2730 20:2731-2737 20:2738-2744 20:2745-2751 20:2752-2758 20:2759-2765 20:2766-2772 20:2773-2779 20:2780-2786 20:2787-2793 20:2794-2800 20:2801-2807 20:2808-2814 20:2815-2821 20:2822-2828 20:2829-2835 20:2836-2842 20:2843-2849 20:2850-2856 20:2857-2863 20:2864-2870 20:2871-2877 20:2878-2884 20:2885-2891 20:2892-2898 20:2899-2905 20:2906-2912 20:2913-2919 20:2920-2926 20:2927-2933 20:2934-2940 20:2941-2947 20:2948-2954 20:2955-2961 20:2962-2968 20:2969-2975 20:2976-2982 20:2983-2989 20:2990-2996 20:2997-3003 20:3004-3010 20:3011-3017 20:3018-3024 20:3025-3031 20:3032-3038 20:3039-3045 20:3046-3052 20:3053-3059 20:3060-3066 20:3067-3073 20:3074-3080 20:3081-3087 20:3088-3094 20:3095-3101 20:3102-3108 20:3109-3115 20:3116-3122 20:3123-3129 20:3130-3136 20:3137-3143 20:3144-3150 20:3151-3157 20:3158-3164 20:3165-3171 20:3172-3178 20:3179-3185 20:3186-3192 20:3193-3199 20:3200-3206 20:3207-3213 20:3214-3220 20:3221-3227 20:3228-3234 20:3235-3241 20:3242-3248 20:3249-3255 20:3256-3262 20:3263-3269 20:3270-3276 20:3277-3283 20:3284-3290 20:3291-3297 20:3298-3304 20:3305-3311 20:3312-3318 20:3319-3325 20:3326-3332 20:3333-3339 20:3340-3346 20:3347-3353 20:3354-3360 20:3361-3367 20:3368-3374 20:3375-3381 20:3382-3388 20:3389-3395 20:3396-3402 20:3403-3409 20:3410-3416 20:3417-3423 20:3424-3430 20:3431-3437 20:3438-3444 20:3445-3451 20:3452-3458 20:3459-3465 20:3466-3472 20:3473-3479 20:3480-3486 20:3487-3493 20:3494-3500 20:3501-3507 20:3508-3514 20:3515-3521 20:3522-3528 20:3529-3535 20:3536-3542 20:3543-3549 20:3550-3556 20:3557-3563 20:3564-3570 20:3571-3577 20:3578-3584 20:3585-3591 20:3592-3598 20:3599-3605 20:3606-3612 20:3613-3619 20:3620-3626 20:3627-3633 20:3634-3640 20:3641-3647 20:3648-3654 20:3655-3661 20:3662-3668 20:3669-3675 20:3676-3682 20:3683-3689 20:3690-3696 20:3697-3703 20:3704-3710 20:3711-3717 20:3718-3724 20:3725-3731 20:3732-3738 20:3739-3745 20:3746-3752 20:3753-3759 20:3760-3766 20:3767-3773 20:3774-3780 20:3781-3787 20:3788-3794 20:3795-3801 20:3802-3808 20:3809-3815 20:3816-3822 20:3823-3829 20:3830-3836 20:3837-3843 20:3844-3850 20:3851-3857 20:3858-3864 20:3865-3871 20:3872-3878 20:3879-3885 20:3886-3892 20:3893-3899 20:3900-3906 20:3907-3913 20:3914-3920 20:3921-3927 20:3928-3934 20:3935-3941 20:3942-3948 20:3949-3955 20:3956-3962 20:3963-3969 20:3970-3976 20:3977-3983 20:3984-3990 20:3991-3997 20:3998-4004 20:4005-4011 20:4012-4018 20:4019-4025 20:4026-4032 20:4033-4039 20:4040-4046 20:4047-4053 20:4054-4060 20:4061-4067 20:4068-4074 20:4075-4081 20:4082-4088 20:4089-4095 20:4096-4102 20:4103-4109 20:4110-4116 20:4117-4123 20:4124-4130 20:4131-4137 20:4138-4144 20:4145-4151 20:4152-4158 20:4159-4165 20:4166-4172 20:4173-4179 20:4180-4186 20:4187-4193 20:4194-4200 20:4201-4207 20:4208-4214 20:4215-4221 20:4222-4228 20:4229-4235 20:4236-4242 20:4243-4249 20:4250-4256 20:4257-4263 20:4264-4270 20:4271-4277 20:4278-4284 20:4285-4291 20:4292-4298 20:4299-4305 20:4306-4312 20:4313-4319 20:4320-4326 20:4327-4333 20:4334-4340 20:4341-4347 20:4348-4354 20:4355-4361 20:4362-4368 20:4369-4375 20:4376-4382 20:4383-4389 20:4390-4396 20:4397-4403 20:4404-4410 20:4411-4417 20:4418-4424 20:4425-4431 20:4432-4438 20:4439-4445 20:4446-4452 20:4453-4459 20:4460-4466 20:4467-4473 20:4474-4480 20:4481-4487 20:4488-4494 20:4495-4501 20:4502-4508 20:4509-4515 20:4516-4522 20:4523-4529 20:4530-4536 20:4537-4543 20:4544-4550 20:4551-4557 20:4558-4564 20:4565-4571 20:4572-4578 20:4579-4585 20:4586-4592 20:4593-4599 20:4600-4606 20:4607-4613 20:4614-4620 20:4621-4627 20:4628-4634 20:4635-4641 20:4642-4648 20:4649-4655 20:4656-4662 20:4663-4669 20:4670-4676 20:4677-4683 20:4684-4690 20:4691-4697 20:4698-4704 20:4705-4711 20:4712-4718 20:4719-4725 20:4726-4732 20:4733-4739 20:4740-4746 20:4747-4753 20:4754-4760 20:4761-4767 20:4768-4774 20:4775-4781 20:4782-4788 20:4789-4795 20:4796-4802 20:4803-4809 20:4810-4816 20:4817-4823 20:4824-4830 20:4831-4837 20:4838-4844 20:4845-4851 20:4852-4858 20:4859-4865 20:4866-4872 20:4873-4879 20:4880-4886 20:4887-4893 20:4894-4900 20:4901-4907 20:4908-4914 20:4915-4921 20:4922-4928 20:4929-4935 20:4936-4942 20:4943-4949 20:4950-4956 20:4957-4963 20:4964-4970 20:4971-4977 20:4978-4984 20:4985-4991 20:4992-4998 20:4999-5005 20:5006-5012 20:5013-5019 20:5020-5026 20:5027-5033 20:5034-5040 20:5041-5047 20:5048-5054 20:5055-5061 20:5062-5068 20:5069-5075 20:5076-5082 20:5083-5089 20:5090-5096 20:5097-5103 20:5104-5110 20:5111-5117 20:5118-5124 20:5125-5131 20:5132-5138 20:5139-5145 20:5146-5152 20:5153-5159 20:5160-5166 20:5167-5173 20:5174-5180 20:5181-5187 20:5188-5194 20:5195-5201 20:5202-5208 20:5209-5215 20:5216-5222 20:5223-5229 20:5230-5236 20:5237-5243 20:5244-5250 20:5251-5257 20:5258-5264 20:5265-5271 20:5272-5278 20:5279-5285 20:5286-5292 20:5293-5299 20:5300-5306 20:5307-5313 20:5314-5320 20:5321-5327 20:5328-5334 20:5335-5341 20:5342-5348 20:5349-5355 20:5356-5362 20:5363-5369 20:5370-5376 20:5377-5383 20:5384-5390 20:5391-5397 20:5398-5404 20:5405-5411 20:5412-5418 20:5419-5425 20:5426-5432 20:5433-5439 20:5440-5446 20:5447-5453 20:5454-5460 20:5461-5467 20:5468-5474 20:5475-5481 20:5482-5488 20:5489-5495 20:5496-5502 20:5503-5509 20:5510-5516 20:5517-5523 20:5524-5530 20:5531-5537 20:5538-5544 20:5545-5551 20:5552-5558 20:5559-5565 20:5566-5572 20:5573-5579 20:5580-5586 20:5587-5593 20:5594-5600 20:5601-5607 20:5608-5614 20:5615-5621 20:5622-5628 20:5629-5635 20:5636-5642 20:5643-5649 20:5650-5656 20:5657-5663 20:5664-5670 20:5671-5677 20:5678-5684 20:5685-5691 20:5692-5698 20:5699-5705 20:5706-5712 20:5713-5719 20:5720-5726 20:5727-5733 20:5734-5740 20:5741-5747 20:5748-5754 20:5755-5761 20:5762-5768 20:5769-5775 20:5776-5782 20:5783-5789 20:5790-5796 20:5797-5803 20:5804-5810 20:5811-5817 20:5818-5824 20:5825-5831 20:5832-5838 20:5839-5845 20:5846-5852 20:5853-5859 20:5860-5866 20:5867-5873 20:5874-5880 20:5881-5887 20:5888-5894 20:5895-5901 20:5902-5908 20:5909-5915 20:5916-5922 20:5923-5929 20:5930-5936 20:5937-5943 20:5944-5950 20:5951-5957 20:5958-5964 20:5965-5971 20:5972-5978 20:5979-5985 20:5986-5992 20:5993-5999 20:6000-6006 20:6007-6013 20:6014-6020 20:6021-6027 20:6028-6034 20:6035-6041 20:6042-6048 20:6049-6055 20:6056-6062 20:6063-6069 20:6070-6076 20:6077-6083 20:6084-6090 20:6091-6097 20:6098-6104 20:6105-6111 20:6112-6118 20:6119-6125 20:6126-6132 20:6133-6139 20:6140-6146 20:6147-6153 20:6154-6160 20:6161-6167 20:6168-6174 20:6175-6181 20:6182-6188 20:6189-6195 20:6196-6202 20:6203-6209 20:6210-6216 20:6217-6223 20:6224-6230 20:6231-6237 20:6238-6244 20:6245-6251 20:6252-6258 20:6259-6265 20:6266-6272 20:6273-6279 20:6280-6286 20:6287-6293 20:6294-6300 20:6301-6307 20:6308-6314 20:6315-6321 20:6322-6328 20:6329-6335 20:6336-6342 20:6343-6349 20:6350-6356 20:6357-6363 20:6364-6370 20:6371-6377 20:6378-6384 20:6385-6391 20:6392-6398 20:6399-6405 20:6406-6412 20:6413-6419 20:6420-6426 20:6427-6433 20:6434-6440 20:6441-6447 20:6448-6454 20:6455-6

किनारे बैठे थे ये सुनकर कि 'ईसा जा रहा है चिल्ला कर कहा, "ऐ खुदावन्द इब्न — ए — दाऊद हम पर रहम कर।" ³¹ लोगों ने उन्हें डाँटा कि चुप रहें; लेकिन वो और भी चिल्ला कर कहने लगे, "ऐ खुदावन्द इब्ने दाऊद हम पर रहम कर।" ³² ईसा ने खड़े होकर उन्हें बुलाया और कहा, "तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?" ³³ उन्होंने उससे कहा "ऐ खुदावन्द हमारी आँखें खुल जाएँ।" ³⁴ ईसा को तरस आया। और उसने उन की आँखों को छुआ और वो फ़ौरन देखने लगे और उसके पीछे हो लिए।

21

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

¹ जब वो येरूशलेम के नज़दीक पहुँचे और ज़ैतून के पहाड़ पर बैतफ़िगे के पास आए; तो ईसा ने दो शागिर्दों को ये कह कर भेजा, ² "अपने सामने के गाँव में जाओ। वहाँ पहुँचते ही एक गधी बँधी हुई और उसके साथ बच्चा पाओगे। उन्हें खोल कर मेरे पास ले आओ। ³ और अगर कोई तुम से कुछ कहे तो कहना कि खुदावन्द को इन की ज़रूरत है। वो फ़ौरन इन्हें भेज देगा।" ⁴ ये इसलिए हुआ जो नबी की मारिफ़त कहा गया था वो पूरा हो:

⁵ "सिय्यून की बेटी से कहो, देख, तेरा बादशाह तेरे पास आता है; वो हलीम है और गधे पर सवार है, बल्कि लादू के बच्चे पर।"

⁶ पस शागिर्दों ने जाकर जैसा ईसा ने उनको हुक्म दिया था; वैसा ही किया। ⁷ गधी और बच्चे को लाकर अपने कपड़े उन पर डाले और वो उस पर बैठ गया। ⁸ और भीड़ में से अक्सर लोगों ने अपने कपड़े रास्ते में बिछाए; औरों ने दरख्तों से डालियाँ काट कर राह में फैलाईं। ⁹ और भीड़ जो उसके आगे — आगे जाती और पीछे — पीछे चली आती थी पुकार — पुकार कर कहती थी "इब्ने दाऊद को हो शा'ना! मुबारक है वो जो खुदावन्द के नाम से आता है। आलम — ऐ बाला पर होशना।" ¹⁰ और वो जब येरूशलेम में दाखिल हुआ तो सारे शहर में हलचल मच गई और लोग कहने लगे "ये कौन है?" ¹¹ भीड़ के लोगों ने कहा "ये गलील के नासरत का नबी ईसा है।"

¹² और ईसा ने खुदा की हैकल में दाखिल होकर उन सब को निकाल दिया; जो हैकल में खरीद — ओ फ़रोख्त कर रहे थे; और सराफ़ों के तख्त और कबूतर फ़रोशों की चौकियाँ उलट दीं। ¹³ और उन से कहा, "लिखा है मेरा घर हुआ का घर कहलाएगा। मगर तुम उसे डाकूओं की खो बनाते हो।"

¹⁴ और अंधे और लंगड़े हैकल में उसके पास आए, और उसने उन्हें अच्छा किया। ¹⁵ लेकिन जब सरदार काहिनों और फ़कीहों ने उन अजीब कामों को जो उसने किए; और लड़कों को हैकल में इब्ने दाऊद को हो शा'ना पुकारते देखा तो खफ़ा होकर उससे कहने लगे, ¹⁶ "तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं?" ईसा ने उन से कहा, "हाँ; क्या तुम ने ये कभी नहीं पढ़ा: 'बच्चों और शीरख्वारों के मुँह से तुम ने हम्द को कामिल कराया?' " ¹⁷ और वो उन्हें छोड़ कर शहर से बाहर बैत अन्नियाह में गया; और रात को वहीं रहा।

¹⁸ और जब सुबह को फिर शहर को जा रहा था; तो उसे भूख लगी। ¹⁹ और रास्ते के किनारे अंजीर का एक दरख्त देख कर उसके पास गया; और पत्तों के सिवा उस में कुछ न पाकर उससे कहा; "आइन्दा कभी तुझ में फल न लगे!" और अंजीर का दरख्त उसी दम सूख गया। ²⁰ शागिर्दों ने ये देख कर ताअ'ज्जुब किया और कहा "ये अंजीर का दरख्त क्यूँकर एक दम में सूख गया?" ²¹ ईसा ने जवाब में उनसे कहा, तुम से सच कहता हूँ "कि अगर ईमान रखो और शक न करो तो न सिर्फ़ वही करोगे जो अंजीर के दरख्त के साथ हुआ; बल्कि अगर इस पहाड़ से कहो उखड़ जा और समुन्दर में जा पड़ तो यूँ ही हो जाएगा। ²² और जो कुछ हुआ मैं ईमान के साथ माँगोगे वो सब तुम को मिलेगा"

²³ जब वो हैकल में आकर ता'लीम दे रहा था; तो सरदार काहिनों और क्रौम के बुज़ुर्गों ने उसके पास आकर कहा, "तू इन कामों को किस इस्तियार से करता है? और ये इस्तियार तुझे किसने दिया है।" ²⁴ ईसा ने जवाब में उनसे कहा, "मैं भी तुम से एक बात पूछता हूँ; अगर वो मुझे बताओगे तो मैं भी तुम को बताऊँगा कि इन कामों को किस इस्तियार से करता हूँ। ²⁵ यूहन्ना का बपतिस्मा कहाँ से था? आसमान की तरफ़ से या इंसान की तरफ़ से?" वो आपस में कहने लगे, "अगर हम कहें, आसमान की तरफ़ से, तो वो हम को कहेगा, 'फिर तुम ने क्यूँ उसका यक़ीन न किया?' ²⁶ और अगर कहें इंसान की तरफ़ से तो हम अवाम से डरते हैं? क्यूँकि सब यूहन्ना को नबी जानते थे?" ²⁷ पस उन्होंने जवाब में ईसा से कहा, "हम नहीं जानते।" उसने भी उनसे कहा, "मैं भी तुम को नहीं बताता कि मैं इन कामों को किस इस्तियार से करता हूँ।"

²⁸ "तुम क्या समझते हो? एक आदमी के दो बेटे थे उसने पहले के पास जाकर कहा, 'बेटा जा!', और बाग़ में जाकर काम कर।' ²⁹ उसने जवाब में कहा, 'मैं नहीं जाऊँगा,' मगर पीछे पछता कर गया। ³⁰ फिर दूसरे के

पास जाकर उसने उसी तरह कहा, उसने जवाब दिया, 'अच्छा जनाब, मगर गया नहीं।' ³¹ इन दोनों में से कौन अपने बाप की मर्जी बजा लाया?" उन्होंने कहा, "पहला।" ईसा ने उन से कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ कि महसूल लेने वाले और कस्बियाँ तुम से पहले खुदा की बादशाही में दाखिल होती हैं।" ³² क्योंकि यूहन्ना रास्तबाजी के तरीके पर तुम्हारे पास आया; और तुम ने उसका यक्रीन न किया; मगर महसूल लेने वाले और कस्बियों ने उसका यक्रीन किया; और तुम ये देख कर भी न पछुताए; कि उसका यक्रीन कर लेते।"

³³ "एक और मिसाल सुनो: एक घर का मालिक था; जिसने बाग लगाया और उसकी चारों तरफ़ अहाता और उस में हौज खोदा और बुर्ज बनाया और उसे बाग़बानों को ठेके पर देकर परदेस चला गया। ³⁴ जब फल का मौसम करीब आया तो उसने अपने नौकरों को बाग़बानों के पास अपना फल लेने को भेजा। ³⁵ बाग़बानों ने उसके नौकरों को पकड़ कर किसी को पीटा किसी को कत्ल किया और किसी को पथराव किया। ³⁶ फिर उसने और नौकरों को भेजा, जो पहलों से ज्यादा थे; उन्होंने उनके साथ भी वही सुलूक किया। ³⁷ आखिर उसने अपने बेटे को उनके पास ये कह कर भेजा कि 'वो मेरे बेटे का तो लिहाज करेंगे।' ³⁸ जब बाग़बानों ने बेटे को देखा, तो आपस में कहा, 'ये ही वारिस है! आओ इसे कत्ल करके इसी की जायदाद पर कब्ज़ा कर लें।' ³⁹ और उसे पकड़ कर बाग़ से बाहर निकाला और कत्ल कर दिया।"

⁴⁰ "पस जब बाग़ का मालिक आएगा, तो उन बाग़बानों के साथ क्या करेगा?" ⁴¹ उन्होंने उससे कहा, "उन बदकारों को बुरी तरह हलाक करेगा; और बाग़ का ठेका दूसरे बाग़बानों को देगा, जो मौसम पर उसको फल दें।" ⁴² ईसा ने उन से कहा, "क्या तुम ने किताबे मुकद्दस में कभी नहीं पढ़ा: 'जिस पत्थर को मैं मारों ने रद्द किया, वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया; ये खुदावन्द की तरफ़ से हुआ और हमारी नज़र में अजीब है?'"

⁴³ "इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि खुदा की बादशाही तुम से ले ली जाएगी और उस क्रौम को जो उसके फल लाए, दे दी जाएगी। ⁴⁴ और जो इस पत्थर पर गिरेगा; टुकड़े — टुकड़े हो जाएगा; लेकिन जिस पर वो गिरेगा उसे पीस डालेगा।" ⁴⁵ जब सरदार काहिनों और फ़रीसियों ने उसकी मिसाल सुनी, तो समझ गए, कि हमारे हक़ में कहता है। ⁴⁶ और वो उसे पकड़ने की कोशिश में थे, लेकिन लोगों से डरते थे; क्योंकि वो उसे नबी जानते थे।

22

२२ २२२२ २२२२ २२ २२२२

¹ और ईसा फिर उनसे मिसालों में कहने लगा, ² "आस्मान की बादशाही उस बादशाह की तरह है जिस ने अपने बेटे की शादी की। ³ और अपने नौकरों को भेजा कि बुलाए हुआँ को शादी में बुला लाएँ, मगर उन्होंने आना न चाहा। ⁴ फिर उस ने और नौकरों को ये कह कर भेजा, 'बुलाए हुआँ से कहो: देखो, मैंने ज़ियाफ़त तैयार कर ली है, मेरे बैल और मोटे मोटे जानवर ज़बह हो चुके हैं और सब कुछ तैयार है; शादी में आओ।' ⁵ मगर वो बे परवाई करके चल दिए; कोई अपने खेत को, कोई अपनी सौदागरी को। ⁶ और बाक़ियों ने उसके नौकरों को पकड़ कर बे'इज़्ज़त किया और मार डाला। ⁷ बादशाह ग़ज़बनाक हुआ और उसने अपना लश्कर भेजकर उन खूनियों को हलाक कर दिया, और उन का शहर जला दिया। ⁸ तब उस ने अपने नौकरों से कहा, शादी का खाना तो तैयार है मगर बुलाए हुए लायक़ न थे। ⁹ पस रास्तों के नाकों पर जाओ, और जितने तुम्हें मिलें शादी में बुला लाओ।' ¹⁰ और वो नौकर बाहर रास्तों पर जा कर, जो उन्हें मिले क्या बूरे क्या भले सब को जमा कर लाए और शादी की महफ़िल मेहमानों से भर गई।"

¹¹ "जब बादशाह मेहमानों को देखने को अन्दर आया, तो उसने वहाँ एक आदमी को देखा, जो शादी के लिबास में न था। ¹² उसने उससे कहा 'मियाँ तू शादी की पोशाक पहने बग़ैर यहाँ क्यों कर आ गया?' लेकिन उस का मुँह बन्द हो गया। ¹³ इस पर बादशाह ने खादिमों से कहा 'उस के हाथ पाँव बाँध कर बाहर अंधेरे में डाल दो, वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।' ¹⁴ क्योंकि बुलाए हुए बहुत हैं, मगर चुने हुए थोड़े।"

¹⁵ उस वक़्त फ़रीसियों ने जा कर मशवरा किया कि उसे क्यों कर बातों में फँसाएँ। ¹⁶ पस उन्होंने अपने शागिर्दों को हेरोदियों के साथ उस के पास भेजा, और उन्होंने कहा "ऐ उस्ताद हम जानते हैं कि तू सच्चा है और सच्चाई से खुदा की राह की तालीम देता है। और किसी की परवाह नहीं करता क्योंकि तू किसी आदमी का तरफ़दार नहीं। ¹⁷ पस हमें बता तू क्या समझता है? कैसर को जिज़िया देना जायज़ है या नहीं?" ¹⁸ ईसा ने उन की शरारत जान कर कहा, "ऐ रियाकारो, मुझे क्यों आजमाते हो? ¹⁹ जिज़िए का सिक्का मुझे दिखाओ वो एक दीनार उस के पास लाए।" ²⁰ उसने उनसे कहा "ये सूरत और नाम किसका है?" ²¹ उन्होंने उससे कहा, "कैसर का।" उस ने उनसे कहा, "पस जो कैसर का है कैसर को और जो खुदा का है खुदा को अदा करो।" ²² उन्होंने ये सुनकर ता'अज्जुब किया, और उसे छोड़ कर चले गए।

²³ उसी दिन सद्की जो कहते हैं कि क़यामत नहीं

होगी उसके पास आए, और उससे ये सवाल किया।
 24 “ऐ उस्ताद, मूसा ने कहा था, कि अगर कोई बे औलाद मर जाए, तो उसका भाई उसकी बीवी से शादी कर ले, और अपने भाई के लिए नस्ल पैदा करे। 25 अब हमारे दर्मियान सात भाई थे, और पहला शादी करके मर गया; और इस वजह से कि उसके औलाद न थी, अपनी बीवी अपने भाई के लिए छोड़ गया। 26 इसी तरह दूसरा और तीसरा भी सातवें तक। 27 सब के बाद वो 'औरत भी मर गई। 28 पस वो क्रयामत में उन सातों में से किसकी बीवी होगी? क्योंकि सब ने उससे शादी की थी।” 29 ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “तुम गुमराह हो; इसलिए कि न किताबे मुक़द्दस को जानते हो न खुदा की कुदरत को। 30 क्योंकि क्रयामत में शादी बारात न होगी; बल्कि लोग आसमान पर फ़रिश्तों की तरह होंगे। 31 मगर मुर्दों के जी उठने के बारे में खुदा ने तुम्हें फ़रमाया था, क्या तुम ने वो नहीं पढ़ा? 32 मैं इब्राहीम का खुदा, और इज़्हाक का खुदा और याकूब का खुदा हूँ? वो तो मुर्दों का खुदा नहीं बल्कि ज़िन्दों का खुदा है।” 33 लोग ये सुन कर उसकी ता'लीम से हैरान हुए।

34 जब फ़रीसियों ने सुना कि उसने सद्क़ियों का मुँह बन्द कर दिया, तो वो जमा हो गए। 35 और उन में से एक आलिम — ऐ शरा ने आजमाने के लिए उससे पूछा; 36 “ऐ उस्ताद, तौरेत में कौन सा हुक्म बड़ा है?” 37 उसने उस से कहा “खुदावन्द अपने खुदा से अपने सारे दिल, और अपनी सारी जान और अपनी सारी अक़ल से मुहब्बत रख। 38 बड़ा और पहला हुक्म यही है। 39 और दूसरा इसकी तरह ये है कि ‘अपने पड़ोसी से अपने बराबर मुहब्बत रख।’ 40 इन्ही दो हुक्मों पर तमाम तौरेत और अम्बिया के सहीफ़ों का मदार है।”

41 जब फ़रीसी जमा हुए तो ईसा ने उनसे ये पूछा; 42 “तुम मसीह के हक़ में क्या समझते हो? वो किसका बेटा है” उन्होंने उससे कहा “दाऊद का।” 43 उसने उनसे कहा, “पस दाऊद रूह की हिदायत से क्यूँकर उसे खुदावन्द कहता है, 44 खुदावन्द ने मेरे खुदावन्द से कहा, मेरी दहनी तरफ़ बैठ, जब तक में तेरे दुश्मनों को तेरे पाँव के नीचे न कर दूँ। 45 पस जब दाऊद उसको खुदावन्द कहता है तो वो उसका बेटा क्यूँकर ठहरा?” 46 कोई उसके जवाब में एक हफ़ न कह सका, और न उस दिन से फिर किसी ने उससे सवाल करने की जुरअत की।

23

???? ? ? ???? ???? ???? ???? ? ? ?

* 23:2 23:2 फ़कीह और फ़रीसी फ़रीसी एक मज़हबी अगुवे थे और फ़कीह एक सियासी जमाअत थी

1 उस वक़्त ईसा ने भीड़ से और अपने शागिर्दों से ये बातें कहीं, 2 “फ़कीह और फ़रीसी* मूसा के शरी'अत की ग़धी पर बैठे हैं। 3 पस जो कुछ वो तुम्हें बताएँ वो सब करो और मानो, लेकिन उनकी तरह काम न करो; क्यूँकि वो कहते हैं, और करते नहीं। 4 वो ऐसे भारी बोझ जिनको उठाना मुश्किल है, बाँध कर लोगों के कंधों पर रखते हैं, मगर खुद उनको अपनी उंगली से भी हिलाना नहीं चाहते। 5 वो अपने सब काम लोगों को दिखाने को करते हैं; क्यूँकि वो अपने ता'वीज़ बड़े बनाते और अपनी पोशाक के किनारे चौड़े रखते हैं। 6 ज़ियाफ़तों में सदर नशीनी और इबादतखानों में आ'ला दर्जे की कुर्सियाँ। 7 और बाज़ारों में सलाम और आदमियों से रब्बी कहलाना पसन्द करते हैं। 8 मगर तुम रब्बी न कहलाओ, क्यूँकि तुम्हारा उस्ताद एक ही है और तुम सब भाई हो 9 और ज़मीन पर किसी को अपना बाप न कहो, क्यूँकि तुम्हारा 'बाप' एक ही है जो आसमानी है। 10 और न तुम हादी कहलाओ, क्यूँकि तुम्हारा हादी एक ही है, या'नी मसीह। 11 लेकिन जो तुम में बड़ा है, वो तुम्हारा खादिम बने। 12 जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वो छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वो बड़ा किया जाएगा।”

13 “ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियों तुम पर अफ़सोस कि आसमान की बादशाही लोगों पर बन्द करते हो, क्यूँकि न तो आप दाख़िल होते हो, और न दाख़िल होने वालों को दाख़िल होने देते हो। 14 ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियों तुम पर अफ़सोस, कि तुम बेवाओं के घरों को दबा बैठते हो, और दिखावे के लिए इबादत को तुल देते हो; तुम्हें ज़्यादा सज़ा होगी।”

15 “ऐ रियाकार; फ़कीहो और फ़रीसियों तुम पर अफ़सोस, कि एक मुरीद करने के लिए तरी और खुशकी का दौरा करते हो, और जब वो मुरीद हो चुकता है तो उसे अपने से दूगना जहन्नुम का फ़र्जन्द बना देते हो।”

16 “ऐ अंधे राह बताने वालो, तुम पर अफ़सोस! जो कहते हो, अगर कोई मक़दिस की क़सम खाए तो कुछ बात नहीं; लेकिन अगर मक़दिस के सोने की क़सम खाए तो उसका पाबन्द होगा। 17 ऐ अहमक़ों! और अँधों सोना बड़ा है, या मक़दिस जिसने सोने को मुक़द्दस किया। 18 फिर कहते हो ‘अगर कोई कुर्बानगाह की क़सम खाए तो कुछ बात नहीं; लेकिन जो नज़र उस पर चढ़ी हो अगर उसकी क़सम खाए तो उसका पाबन्द होगा।’ 19 ऐ अंधो! नज़र बड़ी है या कुर्बानगाह जो नज़र को मुक़द्दस करती है? 20 पस, जो कुर्बानगाह की क़सम खाता है, वो

उसकी और उन सब चीजों की जो उस पर हैं कसम खाता है।²¹ और जो मक़दिस की कसम खाता है वो उसकी और उसके रहनेवाले की कसम खाता है।²² और जो आस्मान की कसम खाता है वह खुदा के तख़्त की और उस पर बैठने वाले की कसम भी खाता है।”

23 “ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियों तुम पर अफ़सोस कि पुदीना सौंफ़ और ज़ीरे पर तो दसवाँ हिस्सा देते हो, पर तुम ने शरी'अत की ज़्यादा भारी बातों या'नी इन्साफ़, और रहम, और ईमान को छोड़ दिया है; लाज़िम था ये भी करते और वो भी न छोड़ते।”

24 “ऐ अंधे राह बताने वाले; जो मच्छर को तो छानते हो, और ऊँट को निगल जाते हो।²⁵ ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियों तुम पर अफ़सोस कि प्याले और रक़ाबी को ऊपर से साफ़ करते हो, मगर वो अन्दर लूट और ना'परहेज़गारी से भरे हैं।²⁶ ऐ अंधे फ़रीसी; पहले प्याले और रक़ाबी को अन्दर से साफ़ कर ताकि ऊपर से भी साफ़ हो जाए।”

27 “ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियों तुम पर अफ़सोस कि तुम सफ़ेदी फ़िरी हुई क़बरों की तरह हो, जो ऊपर से तो खूबसूरत दिखाई देती हैं, मगर अन्दर मुर्दों की हड्डियों और हर तरह की नापाकी से भरी हैं।²⁸ इसी तरह तुम भी ज़ाहिर में तो लोगों को रास्तबाज़ दिखाई देते हो, मगर बातिन में रियाकारी और बेदीनी से भरे हो।”

29 “ऐ रियाकार; आलिमों और फ़रीसियों तुम पर अफ़सोस, कि नबियों की क़बरें बनाते और रास्तबाज़ों के मक़बरे आरास्ता करते हो।³⁰ और कहते हो, ‘अगर हम अपने बाप दादा के ज़माने में होते तो नबियों के खून में उनके शरीक न होते।’³¹ इस तरह तुम अपनी निस्वत गवाही देते हो, कि तुम नबियों के क़ातिलों के फ़र्ज़न्द हो।³² गरज़ अपने बाप दादा का पैमाना भर दो।³³ ऐ साँपों, ऐ अफ़'ई के बच्चों; तुम जहन्नुम की सज़ा से क्यूँकर बचोगे? ³⁴इसलिए देखो मैं नबियों, और दानाओं और आलिमों को तुम्हारे पास भेजता हूँ, उन में से तुम कुछ को क़त्ल और मस्लूब करोगे, और कुछ को अपने इबादतख़ानों में कोड़े मारोगे, और शहर ब शहर सताते फ़िरोगे।³⁵ ताकि सब रास्तबाज़ों का खून जो ज़मीन पर बहाया गया तुम पर आए, रास्तबाज़ हाबिल के खून से लेकर बरकियाह के बेटे ज़करियाह के खून तक जिसे तुम ने मक़दिस और कुर्बानगाह के दर्मियान क़त्ल किया।³⁶ मैं तुम से सच कहता हूँ कि ये सब कुछ इसी ज़माने के लोगों पर आएगा।”

37 “ऐ यरूशलीम ऐ यरूशलीम तू जो नबियों को क़त्ल करता और जो तेरे पास भेजे गए, उनको संगसार

करता है, कितनी बार मैंने चाहा कि जिस तरह मुर्गी अपने बच्चों को परों तले जमा कर लेती है, इसी तरह मैं भी तेरे लड़कों को जमा कर लूँ; मगर तुम ने न चाहा।³⁸ देखो; तुम्हारा घर तुम्हारे लिए वीरान छोड़ा जाता है।³⁹ क्यूँकि मैं तुम से कहता हूँ, कि अब से मुझे फिर हरगिज़ न देखोगे; जब तक न कहोगे कि मुबारक़ है वो जो दावन्द के नाम से आता है।”

24

24:1-14

¹ और ईसा हैकल से निकल कर जा रहा था, कि उसके शागिर्द उसके पास आए, ताकि उसे हैकल की इमारतें दिखाएँ।² उसने जवाब में उनसे कहा, “क्या तुम इन सब चीज़ों को नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूँ, कि यहाँ किसी पत्थर पर पत्थर बाक़ी न रहेगा; जो गिराया न जाएगा।”

³ जब वो ज़ैतून के पहाड़ पर बैठा था, उसके शागिर्दों ने अलग उसके पास आकर कहा, “हम को बता ये बातें कब होंगी? और तेरे आने और दुनिया के आखिर होने का निशान क्या होगा?” ⁴ ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “खबरदार! कोई तुम को गुमराह न कर दे, ⁵ क्यूँकि बहुत से मेरे नाम से आएँगे और कहेंगे, ‘मैं मसीह हूँ।’ और बहुत से लोगों को गुमराह करेंगे। ⁶ और तुम लड़ाइयाँ और लड़ाइयों की अफ़वाह सुनोगे, खबरदार, घबरा न जाना, क्यूँकि इन बातों का वाक़े होना ज़रूर है। ⁷ क्यूँकि क्रौम पर क्रौम और सल्लनत पर सल्लनत चढ़ाई करेगी, और जगह — जगह काल पड़ेगे, और भुन्चाल आएँगे। ⁸ लेकिन ये सब बातें मुसीबतों का शुरू ही होंगी। ⁹ उस वक़्त लोग तुम को तकलीफ़ देने के लिए पकड़वाएँगे, और तुम को क़त्ल करेंगे; और मेरे नाम की खातिर सब क्रौम में तुम से दुश्मनी रखेंगे। ¹⁰ और उस वक़्त बहुत से ठोकर खाएँगे, और एक दूसरे को पकड़वाएँगे; और एक दूसरे से दुश्मनी रखेंगे। ¹¹ और बहुत से झूठे नबी उठ खड़े होंगे, और बहुतों को गुमराह करेंगे। ¹² और बेदीनी के बढ़ जाने से बहुतेरों की मुहब्बत ठन्डी पड़ जाएगी। ¹³ लेकिन जो आखिर तक बर्दाश्त करेगा वो नजात पाएगा। ¹⁴ और बादशाही की इस खुशख़बरी का एलान तमाम दुनिया में होगा, ताकि सब क्रौमों के लिए गवाही हो, तब खातिमा होगा।”

¹⁵ “पस जब तुम उस उजाड़ने वाली मकरूह चीज़ जिसका ज़िक्र दानीएल नबी की ज़रिए हुआ, मुक़दस मुक़ामों में खड़ा हुआ देखो (पढ़ने वाले समझ लें) ¹⁶ तो जो यहूदिया में हों वो पहाड़ों पर भाग जाएँ। ¹⁷ जो छत

पर हो वो अपने घर का माल लेने को नीचे न उतरे।
18 और जो खेत में हो वो अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे।”

19 “मगर अफ़सोस उन पर जो उन दिनों में हामिला हों और जो दूध पिलाती हों। 20 पस, दुआ करो कि तुम को जाड़ों में या सबत के दिन भागना न पड़े। 21 क्योंकि उस वक़्त ऐसी बड़ी मुसीबत होगी कि दुनिया के शुरू से न अब तक हुई न कभी होगी। 22 अगर वो दिन घटाए न जाते तो कोई बशर न बचता मगर चुने हुवों की खातिर वो दिन घटाए जाएँगे। 23 उस वक़्त अगर कोई तुम को कहे, देखो, मसीह ‘यहाँ है’ या ‘वह वहाँ है’ तो यक़ीन न करना।”

24 “क्योंकि झूठे मसीह और झूठे नबी उठ खड़े होंगे और ऐसे बड़े निशान और अजीब काम दिखाएँगे कि अगर मुम्किन हो तो बरगुज़ीदों को भी गुमराह कर लें। 25 देखो, मैं ने पहले ही तुम को कह दिया है। 26 पस अगर वो तुम से कहें, देखो, वो वीरानों में है तो बाहर न जाना। या देखो, कोठरियों में है तो यक़ीन न करना।”

27 “क्योंकि जैसे बिजली पूरब से कौंध कर पच्छिम तक दिखाई देती है वैसे ही इबने आदम का आना होगा। 28 जहाँ मुर्दार है, वहाँ गिद्ध जमा हो जाएँगे।”

29 “फ़ौरन इन दिनों की मुसीबत के बाद सूरज तारीक हो जाएगा। और चाँद अपनी रौशनी न देगा, और सितारे आसमान से गिरेंगे और आस्मान की कुव्वतें हिलाई जाएँगी। 30 और उस वक़्त इब्न — ए — आदम का निशान आस्मान पर दिखाई देगा। और उस वक़्त ज़मीन की सब क़ौमें छाती पीटेंगी; और इबने आदम को बड़ी कुदरत और जलाल के साथ आसमान के बादलों पर आते देखेंगी। 31 और वो नरसिंगे की बड़ी आवाज़ के साथ अपने फ़रिश्तों को भेजेगा और वो उसके चुने हुवों को चारों तरफ़ से आसमान के इस किनारे से उस किनारे तक जमा करेंगे।”

32 “अब अंज़ीर के दरख़्त से एक मिसाल सीखो, जैसे ही उसकी डाली नर्म होती और पत्ते निकलते हैं तुम जान लेते हो कि गर्मी नज़दीक है। 33 इसी तरह जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो कि वो नज़दीक बल्कि दरवाज़े पर है। 34 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हो लें ये नस्ल हरगिज़ तमाम न होगी। 35 आसमान और ज़मीन टल जाएँगी लेकिन मेरी बातें हरगिज़ न टलेंगी।”

36 “लेकिन उस दिन और उस वक़्त के बारे में कोई नहीं जानता, न आसमान के फ़रिश्ते न बेटा मगर, सिर्फ़ बाप। 37 जैसा नूह के दिनों में हुआ वैसा ही इबने आदम के आने के वक़्त होगा। 38 क्योंकि जिस तरह तूफ़ान से पहले के दिनों में लोग खाते पीते और ब्याह शादी करते थे, उस

दिन तक कि नूह नाव में दाख़िल हुआ। 39 और जब तक तूफ़ान आकर उन सब को बहा न ले गया, उन को ख़बर न हुई, उसी तरह इबने आदम का आना होगा। 40 उस वक़्त दो आदमी खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा, 41 दो औरतें चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी। 42 पस जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा खुदाबन्द किस दिन आएगा 43 लेकिन ये जान रखो, कि अगर घर के मालिक को मा'लूम होता कि चोर रात के कौन से पहर आएगा, तो जागता रहता और अपने घर में नक़ब न लगाने देता। 44 इसलिए तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी तुम को गुमान भी न होगा इबने आदम आ जाएगा।”

45 “पस वो ईमानदार और अक्लमन्द नौकर कौन सा है, जिसे मालिक ने अपने नौकर चाकरों पर मुक़रर किया ताकि वक़्त पर उनको खाना दे। 46 मुबारिक है वो नौकर जिसे उस का मालिक आकर ऐसा ही करते पाए। 47 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो उसे अपने सारे माल का मुख़्तार कर देगा। 48 लेकिन अगर वो ख़राब नौकर अपने दिल में ये कह कर कि मेरे मालिक के आने में देर है। 49 अपने हमख़िदमतों को मारना शुरू करे, और शराबियों के साथ खाए पिए। 50 तो उस नौकर का मालिक ऐसे दिन कि वो उसकी राह न देखता हो और ऐसी घड़ी कि वो न जानता हो आ मौजूद होगा। 51 और ख़ूब कोड़े लगा कर उसको रियाकारों में शामिल करेगा वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।”

25

?? ??????????? ?? ???????

1 “उस वक़्त आसमान की बादशाही उन दस कुँवारियों की तरह होगी जो अपनी मशा'लें लेकर दुल्हा के इस्तक्रबाल को निकलीं। 2 उन में पाँच बेवकूफ़ और पाँच अक्लमन्द थीं। 3 जो बेवकूफ़ थीं उन्होंने अपनी मशा'लें तो ले लीं मगर तेल अपने साथ न लिया। 4 मगर अक्लमन्दों ने अपनी मशा'लों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी ले लिया। 5 और जब दुल्हा ने दर लगाई तो सब ऊँघने लगीं और सो गईं।”

6 “आधी रात को धूम मची, देखो! दुल्हा आ गया, उसके इस्तक्रबाल को निकलो! 7 उस वक़्त वो सब कुँवारियाँ उठकर अपनी — अपनी मशा'लों को दुरुस्त करने लगीं। 8 और बेवकूफ़ों ने अक्लमन्दों से कहा, ‘अपने तेल में से कुछ हम को भी दे दो, क्योंकि हमारी मशा'लें बुझी जाती हैं।’ 9 ‘अक्लमन्दों ने जवाब दिया, शायद हमारे तुम्हारे दोनों के लिए काफ़ी न हो बेहतर;

ये है कि बेचने वालों के पास जाकर, अपने लिए मोल ले लो। ¹⁰ जब वो मोल लेने जा रही थी, तो दुल्हा आ पहुँचा और जो तैयार थीं, वो उस के साथ शादी के जश्न में अन्दर चली गईं, और दरवाज़ा बन्द हो गया। ¹¹ फिर वो बाक़ी कुँवारियाँ भी आईं और कहने लगीं 'ऐ खुदावन्द ऐ खुदावन्द। हमारे लिए दरवाज़ा खोल दे।' ¹² उसने जवाब में कहा 'मैं तुम से सच कहता हूँ कि मैं तुम को नहीं जानता।' ¹³ पस जागते रहो, क्यूँकि तुम न उस दिन को जानते हो न उस वक़्त को।"

¹⁴ "क्यूँकि ये उस आदमी जैसा हाल है, जिसने परदेस जाते वक़्त अपने घर के नौकरों को बुला कर अपना माल उनके सुपुर्द किया। ¹⁵ एक को पाँच चाँदी के सिक्के दिए, दूसरे को दो, और तीसरे को एक या'नी हर एक को उसकी काबलियत के मुताबिक़ दिया और परदेस चला गया। ¹⁶ जिसको पाँच सिक्के मिले थे, उसने फ़ौरन जाकर उनसे लेन देन किया, और पाँच तोड़े और पैदा कर लिए। ¹⁷ इसी तरह जिसे दो मिले थे, उसने भी दो और कमाए। ¹⁸ मगर जिसको एक मिला था, उसने जाकर ज़मीन खोदी और अपने मालिक का रुपए छिपा दिया।"

¹⁹ "बड़ी मुद्दत के बाद उन नौकरों का मालिक आया और उनसे हिसाब लेने लगा। ²⁰ जिसको पाँच तोड़े मिले थे, वो पाँच सिक्के और लेकर आया, और कहा, 'ऐ खुदावन्द! तूने पाँच सिक्के मुझे सुपुर्द किए थे; देख, मैंने पाँच सिक्के और कमाए।' ²¹ उसके मालिक ने उससे कहा, 'ऐ अच्छे और ईमानदार नौकर शाबाश; तू थोड़े में ईमानदार रहा मैं तुझे बहुत चीज़ों का मुख्तार बनाऊँगा; अपने मालिक की खुशी में शरीक हो।' "

²² "और जिस को दो सिक्के मिले थे, उस ने भी पास आकर कहा, 'तूने दो सिक्के मुझे सुपुर्द किए थे, देख मैंने दो सिक्के और कमाए।' ²³ उसके मालिक ने उससे कहा, 'ऐ अच्छे और दियानतदार नौकर शाबाश; तू थोड़े में ईमानदार रहा मैं तुझे बहुत चीज़ों का मुख्तार बनाऊँगा; अपने मालिक की खुशी में शरीक हो।' "

²⁴ "और जिसको एक तोड़ा मिला था, वो भी पास आकर कहने लगा, 'ऐ खुदावन्द! मैं तुझे जानता था, कि तू सख्त आदमी है, और जहाँ नहीं बोया वहाँ से काटता है, और जहाँ नहीं बिखेरा वहाँ से जमा करता है।' ²⁵ पस मैं डरा और जाकर तेरा तोड़ा ज़मीन में छिपा दिया देख, 'जो तेरा है वो मौजूद है।' ²⁶ उसके मालिक ने जवाब में उससे कहा, 'ऐ शरीर और सुस्त नौकर तू जानता था कि जहाँ मैंने नहीं बोया वहाँ से काटता हूँ, और जहाँ मैंने नहीं बिखेरा वहाँ से जमा करता हूँ; ²⁷ पस तुझे लाज़िम था, कि मेरा रुपए साहूकारों को देता, तो मैं आकर अपना

माल सूद समेत ले लेता। ²⁸ पस इससे वो सिक्का ले लो और जिस के पास दस सिक्के हैं उसे दे दो। ²⁹ क्यूँकि जिस के पास है उसे दिया जाएगा और उस के पास ज्यादा हो जाएगा, मगर जिस के पास नहीं है उससे वो भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। ³⁰ और इस निकम्मे नौकर को बाहर अंधेरे में डाल दो, और वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।"

³¹ "जब इबने आदम अपने जलाल में आएगा, और सब फ़रिश्ते उसके साथ आएँगे; तब वो अपने जलाल के तख्त पर बैठेगा। ³² और सब क्रौमें उस के सामने जमा की जाएँगी। और वो एक को दूसरे से जुदा करेगा। ³³ और भेड़ों को अपने दाहिने और बकरियों को बाएँ जमा करेगा। ³⁴ उस वक़्त बादशाह अपनी तरफ़ वालों से कहेगा 'आओ, मेरे बाप के मुबारिक़ लोगो, जो बादशाही दुनिया बनाने से पहले से तुम्हारे लिए तैयार की गई है उसे मीरास में ले लो। ³⁵ क्यूँकि मैं भूखा था, तुमने मुझे खाना खिलाया; मैं प्यासा था, तुमने मुझे पानी पिलाया; मैं परदेसी था तूने मुझे अपने घर में उतारा। ³⁶ नंगा था तुमने मुझे कपड़ा पहनाया, बीमार था तुमने मेरी ख़बर ली, मैं कैद में था, तुम मेरे पास आए।' "

³⁷ "तब रास्तबाज़ जवाब में उससे कहेंगे, 'ऐ खुदावन्द, हम ने कब तुझे भूखा देख कर खाना खिलाया, या प्यासा देख कर पानी पिलाया? ³⁸ हम ने कब तुझे मुसाफ़िर देख कर अपने घर में उतारा? या नंगा देख कर कपड़ा पहनाया। ³⁹ हम कब तुझे बीमार या कैद में देख कर तेरे पास आए। ⁴⁰ बादशाह जवाब में उन से कहेगा, 'मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम ने मेरे सब से छोटे भाइयों में से किसी के साथ ये सुलूक किया, तो मेरे ही साथ किया।' ⁴¹ फिर वो बाएँ तरफ़ वालों से कहेगा, 'मला'ऊनो मेरे सामने से उस हमेशा की आग में चले जाओ, जो इब्नीस और उसके फ़रिश्तों के लिए तैयार की गई है। ⁴² क्यूँकि, मैं भूखा था, तुमने मुझे खाना न खिलाया, प्यासा था, तुमने मुझे पानी न पिलाया। ⁴³ मुसाफ़िर था, तुम ने मुझे घर में न उतारा नंगा था, तुम ने मुझे कपड़ा न पहनाया, बीमार और कैद में था, तुम ने मेरी ख़बर न ली।' "

⁴⁴ "तब वो भी जवाब में कहेंगे, 'ऐ खुदावन्द हम ने कब तुझे भूखा, या प्यासा, या मुसाफ़िर, या नंगा, या बीमार या कैद में देखकर तेरी ख़िदमत न की? ⁴⁵ उस वक़्त वो उनसे जवाब में कहेगा, 'मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तुम ने इन सब से छोटों में से किसी के साथ ये सुलूक न किया, तो मेरे साथ न किया।' ⁴⁶ और ये हमेशा की सज़ा पाएँगे, मगर रास्तबाज़ हमेशा की ज़िन्दगी।"

26

२२२२ २२ २२२२ २२ २२२

1 जब ईसा ये सब बातें खत्म कर चुका, तो ऐसा हुआ कि उसने अपने शागिर्दों से कहा। 2 “तुम जानते हो कि दो दिन के बाद ईद — ए — फ़सह* होगी। और इब्न — ए — आदम मस्तूब होने को पकड़वाया जाएगा।”

3 उस वक़्त सरदार काहिन और क्रौम के बुजुर्ग काइफ़ा नाम सरदार काहिन के दिवान खाने में जमा हुए। 4 और मशवरा किया कि ईसा को धोखे से पकड़ कर क़त्ल करें। 5 मगर कहते थे, “ईद में नहीं, ऐसा न हो कि लोगों में बलवा हो जाए।”

6 और जब ईसा बैत अन्नियाह में शमौन जो पहले कौढ़ी था के घर में था। 7 तो एक 'औरत संग — मरमर के इत्रदान में क्रीमती इत्र लेकर उसके पास आई, और जब वो खाना खाने बैठा तो उस के सिर पर डाला। 8 शागिर्द ये देख कर खफ़ा हुए और कहने लगे, “ये किस लिए बरबाद किया गया? 9 ये तो बड़ी क्रीमती में बिक कर ग़रीबों को दिया जा सकता था।” 10 ईसा ने ये जान कर उन से कहा, “इस 'औरत को क्यों दुखी करते हो? इस ने तो मेरे साथ भलाई की है। 11 क्योंकि ग़रीब ग़ुरबे तो हमेशा तुम्हारे पास हैं लेकिन मैं तुम्हारे पास हमेशा न रहूँगा। 12 और इस ने तो मेरे दफ़न की तैयारी के लिए इत्र मेरे बदन पर डाला। 13 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तमाम दुनिया में जहाँ कहीं इस खुशख़बरी का एलान किया जाएगा, ये भी जो इस ने किया; इस की यादगारी में कहा जाएगा।”

14 उस वक़्त उन बारह में से एक ने जिसका नाम यहूदाह इस्करियोती था; सरदार काहिनों के पास जा कर कहा, 15 “अगर मैं उसे तुम्हारे हवाले कर दूँ तो मुझे क्या दोगे? उन्होंने उसे तीस रुपए तौल कर दे दिया।” 16 और वो उस वक़्त से उसके पकड़वाने का मौक़ा ढूँढ़ने लगा।

17 ईद — 'ए — फ़ितर के पहले दिन शागिर्दों ने ईसा के पास आकर कहा, “तू कहाँ चाहता है कि हम तेरे लिए फ़सह के खाने की तैयारी करें।” 18 उस ने कहा, “शहर में फ़लाँ शख्स के पास जा कर उससे कहना 'उस्ताद फ़रमाता है' कि मेरा वक़्त नज़दीक है मैं अपने शागिर्दों के साथ तेरे यहाँ ईद'ए फ़सह करूँगा।” 19 और जैसा ईसा ने शागिर्दों को हुक्म दिया था, उन्होंने वैसा ही किया और फ़सह तैयार किया।

20 जब शाम हुई तो वो बारह शागिर्दों के साथ खाना खाने बैठा था। 21 जब वो खा रहा था, तो उसने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे

पकड़वाएगा।” 22 वो बहुत ही ग़मगीन हुए और हर एक उससे कहने लगे “खुदावन्द, क्या मैं हूँ?” 23 उस ने जवाब में कहा, “जिस ने मेरे साथ रक़ाबी में हाथ डाला है वही मुझे पकड़वाएगा। 24 इबने आदम तो जैसा उसके हक़ में लिखा है जाता ही है लेकिन उस आदमी पर अफ़सोस जिसके वसीले से इबने आदम पकड़वाया जाता है अगर वो आदमी पैदा न होता तो उसके लिए अच्छा होता।” 25 उसके पकड़वाने वाले यहूदाह ने जवाब में कहा “ऐ रब्बी क्या मैं हूँ?” उसने उससे कहा “तूने खुद कह दिया।”

26 जब वो खा रहे थे तो ईसा ने रोटी ली और — और बर्क़त देकर तोड़ी और शागिर्दों को देकर कहा, “लो, खाओ, ये मेरा बदन है।” 27 फिर प्याला लेकर शुक्र किया और उनको देकर कहा “तुम सब इस में से पियो। 28 क्योंकि ये मेरा वो अहद का खून है जो बहुतों के गुनाहों की मु'आफ़ी के लिए बहाया जाता है। 29 मैं तुम से कहता हूँ, कि अंगूर का ये शीरा फिर कभी न पियूँगा, उस दिन तक कि तुम्हारे साथ अपने बाप की बादशाही में नया न पियूँ।” 30 फिर वो हम्द करके बाहर ज़ैतून के पहाड़ पर गए।

31 उस वक़्त ईसा ने उनसे कहा “तुम सब इसी रात मेरी वजह से ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है; मैं चरवाहे को मारूँगा और गल्ले की भेंड़े बिखर जाएँगी। 32 लेकिन मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊँगा।” 33 पतरस ने जवाब में उससे कहा, “चाहे सब तेरी वजह से ठोकर खाएँ, लेकिन मैं कभी ठोकर न खाऊँगा।” 34 ईसा ने उससे कहा, “मैं तुझसे सच कहता हूँ, इसी रात मुर्ग के बाँग़ देने से पहले, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।” 35 पतरस ने उससे कहा, “अगर तेरे साथ मुझे मरना भी पड़े। तोभी तेरा इन्कार हरगिज़ न करूँगा।” और सब शागिर्दों ने भी इसी तरह कहा।

36 उस वक़्त ईसा उनके साथ गतसिमनी नाम एक जगह में आया और अपने शागिर्दों से कहा। “यहीं बैठे रहना जब तक कि मैं वहाँ जाकर दुआ करूँ।” 37 और पतरस और ज़ब्दी के दोनों बेटों को साथ लेकर ग़मगीन और बेकरार होने लगा। 38 उस वक़्त उसने उनसे कहा, “मेरी जान निहायत ग़मगीन है यहाँ तक कि मरने की नौबत पहुँच गई है, तुम यहाँ ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।” 39 फिर ज़रा आगे बढ़ा और मुँह के बल गिर कर यूँ दुआ की, “ऐ मेरे बाप, अगर हो सके तो ये दुःख का प्याला मुझ से टल जाए, तोभी न जैसा मैं चाहता हूँ; बल्कि जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।”

* 26:2 26:2 ईद — ए — फ़सह खुदा ने इस्राईल ओ जिस दिन मिस्र की गुलामी से निकाला उसी दिन को खुदा ने फ़सह का ईद ठहराया (छुटकारे आ दिन)

40 फिर शागिर्दों के पास आकर उनको सोते पाया और पतरस से कहा, “क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके? 41 जागते और दुआ करते रहो ताकि आजमाइश में न पड़ो, रूह तो मुस्त'इद है मगर जिस्म कमजोर है।” 42 फिर दोबारा उसने जाकर यूँ दुआ की “ऐ मेरे बाप अगर ये मेरे लिए बगैर नहीं टल सकता तो तेरी मर्जी पूरी हो।” 43 और आकर उन्हें फिर सोते पाया, क्योंकि उनकी आँखें नींद से भरी थीं। 44 और उनको छोड़ कर फिर चला गया, और फिर वही बात कह कर तीसरी बार दुआ की। 45 तब शागिर्दों के पास आकर उसने कहा “अब सोते रहो, और आराम करो, देखो वक्त आ पहुँचा है, और इबने आदम गुनाहगारों के हवाले किया जाता है। 46 उठो चलें, देखो, मेरा पकड़वाने वाला नज़दीक आ पहुँचा है।”

47 वो ये कह ही रहा था, कि यहूदाह जो उन बारह में से एक था, आया, और उसके साथ एक बड़ी भीड़ तलवारों और लाठियाँ लिए सरदार काहिनों और क्रौम के बुजुर्गों की तरफ़ से आ पहुँची। 48 और उसके पकड़वाने वाले ने उनको ये निशान दिया था, जिसका मैं बोसा लूँ वही है उसे पकड़ लेना। 49 और फ़ौरन उसने ईसा के पास आ कर कहा, “ऐ रब्बी सलाम!” और उसके बोसे लिए। 50 ईसा' ने उससे कहा, “मियाँ! जिस काम को आया है वो कर ले”। इस पर उन्होंने पास आकर ईसा' पर हाथ डाला और उसे पकड़ लिया। 51 और देखो, ईसा के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ा कर अपनी तलवार खींची और सरदार काहिन के नौकर पर चला कर उसका कान उड़ा दिया। 52 ईसा' ने उससे कहा, “अपनी तलवार को मियान में कर क्योंकि जो तलवार खींचते हैं वो सब तलवार से हलाक किए जाएँगे। 53 क्या तू नहीं समझता कि मैं अपने बाप से मिन्नत कर सकता हूँ, और वो फ़रिश्तों के बारह पलटन से ज्यादा मेरे पास अभी मौजूद कर देगा? 54 मगर वो लिखे हुए का यूँ ही होना ज़रूर है क्यों कर पूरे होंगे?” 55 उसी वक्त ईसा' ने भीड़ से कहा, “क्या तुम तलवारों और लाठियाँ लेकर मुझे डाकू की तरह पकड़ने निकले हो? मैं हर रोज़ हैकल में बैठकर ता'लीम देता था, और तुमने मुझे नहीं पकड़ा। 56 मगर ये सब कुछ इसलिए हुआ कि नबियों की नबुव्वत पूरी हों।” इस पर सब शागिर्द उसे छोड़ कर भाग गए।

57 और ईसा के पकड़ने वाले उसको काइफ़ा नाम सरदार काहिन के पास ले गए, जहाँ आलिम और बुजुर्ग जमा हुए थे। 58 और पतरस दूर — दूर उसके पीछे — पीछे सरदार काहिन के दिवानखाने तक गया, और अन्दर जाकर प्यादों के साथ नतीजा देखने को बैठ गया। 59 सरदार काहिन और सब सदरे — ए 'अदालत वाले ईसा को मार डालने के लिए उसके खिलाफ़ झूठी गवाही

दूँडने लगे। 60 मगर न पाई, गरचे बहुत से झूठे गवाह आए, लेकिन आखिरकार दो गवाहों ने आकर कहा, 61 “इस ने कहा है, कि मैं खुदा के मक़दिस को ढा सकता और तीन दिन में उसे बना सकता हूँ।”

62 और सरदार काहिन ने खड़े होकर उससे कहा, “तू जवाब नहीं देता? ये तेरे खिलाफ़ क्या गवाही देते हैं?” 63 मगर ईसा खामोश ही रहा, सरदार काहिन ने उससे कहा, “मैं तुझे ज़िन्दा खुदा की क़सम देता हूँ, कि अगर तू खुदा का बेटा मसीह है तो हम से कह दे?” 64 ईसा' ने उससे कहा, “तू ने खुद कह दिया बल्कि मैं तुम से कहता हूँ, कि इसके बाद इबने आदम को कादिर — ए मुतल्लिक की दहनी तरफ़ बैठे और आसमान के बादलों पर आते देखोगे।” 65 इस पर सरदार काहिन ने ये कह कर अपने कपड़े फाड़े “उसने कुफ़र बका है अब हम को गवाहों की क्या ज़रूरत रही? देखो, तुम ने अभी ये कुफ़र सुना है। 66 तुम्हारी क्या राय है? उन्होंने जवाब में कहा, वो क़त्ल के लायक़ है।” 67 इस पर उन्होंने उसके मुँह पर थूका और उसके मुक्के मारे और कुछ ने तमाचे मार कर कहा। 68 “ऐ मसीह, हमें नबुव्वत से बता कि तुझे किस ने मारा।”

69 पतरस बाहर सहन में बैठा था, कि एक लौंडी ने उसके पास आकर कहा, “तू भी ईसा गलीली के साथ था।” 70 उसने सबके सामने ये कह कर इन्कार किया “मैं नहीं जानता तू क्या कहती है।” 71 और जब वो डेवढ़ी में चला गया तो दूसरी ने उसे देखा, और जो वहाँ थे, उनसे कहा, “ये भी ईसा नासरी के साथ था।” 72 उसने क़सम खा कर फिर इन्कार किया “मैं इस आदमी को नहीं जानता।” 73 थोड़ी देर के बाद जो वहाँ खड़े थे, उन्होंने पतरस के पास आकर कहा, “बेशक तू भी उन में से है, क्योंकि तेरी बोली से भी ज़ाहिर होता है।” 74 इस पर वो ला'नत करने और क़सम खाने लगा “मैं इस आदमी को नहीं जानता!” और फ़ौरन मुर्ग ने बाँग दी। 75 पतरस को ईसा' की वो बात याद आई जो उसने कही थी: “मुर्ग के बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।” और वो बाहर जाकर ज़ार ज़ार रोया।

27

????? ?? ?????? ??????

1 जब सुबह हुई तो सब सरदार काहिनों और क्रौम के बुजुर्गों ने ईसा के खिलाफ़ मशवरा किया कि उसे मार डालें। 2 और उसे बाँध कर ले गए, और पीलातुस हाकिम के हवाले किया।

3 जब उसके पकड़वाने वाले यहूदाह ने ये देखा, कि वो मुजरिम ठहराया गया, तो अप्सोस किया और वो तीस

रुपए सरदार काहिन और बुजुर्गों के पास वापस लाकर कहा।⁴ “मैंने गुनाह किया, कि बेकुसूर को क़त्ल के लिए पकड़वाया।” उन्होंने ने कहा “हमें क्या! तू जान।”⁵ वो रुपएऊँ को मक़दिस में फेंक कर चला गया। और जाकर अपने आपको फाँसी दी।

⁶ सरदार काहिन ने रुपए लेकर कहा “इनको हैकल के खज़ाने में डालना जायज़ नहीं; क्योंकि ये खून की कीमत है।”⁷ पस उन्होंने मशवरा करके उन रुपएऊँ से कुम्हार का खेत परदेसियों के दफ़न करने के लिए खरीदा।⁸ इस वजह से वो खेत आज तक खून का खेत कहलाता है।⁹ उस वक़्त वो पूरा हुआ जो यरमियाह नबी के ज़रिए कहा गया था कि जिसकी कीमत ठहराई गई थी, “उन्होंने उसकी कीमत के वो तीस रुपए ले लिए, (उसकी कीमत कुछ बनी इस्राईल ने ठहराई थी)¹⁰ और उसको कुम्हार के खेत के लिए दिया, जैसा खुदावन्द ने मुझे हुक्म दिया।”

¹¹ ईसा हाकिम के सामने खड़ा था, और हाकिम ने उससे पूछा, क्या तू यहूदियों का बादशाह है? ईसा ने उस से कहा, **“तू खुद कहता है।”**¹² जब सरदार काहिन और बुजुर्ग उस पर इल्ज़ाम लगा रहे थे, उसने कुछ जवाब न दिया।¹³ इस पर पीलातुस ने उस से कहा “क्या तू नहीं सुनता, ये तेरे खिलाफ़ कितनी गवाहियाँ देते हैं?”¹⁴ उसने एक बात का भी उसको जवाब न दिया, यहाँ तक कि हाकिम ने बहुत ता'ज्जुब किया।

¹⁵ और हाकिम का दस्तूर था, कि ईद पर लोगों की खातिर एक कैदी जिसे वो चाहते थे छोड़ देता था।¹⁶ उस वक़्त बरअब्बा नाम उन का एक मशहूर कैदी था।¹⁷ पस जब वो इकट्ठे हुए तो पीलातुस ने उस से कहा, “तुम किसे चाहते हो कि तुम्हारी खातिर छोड़ दूँ? बरअब्बा को या ईसा को जो मसीह कहलाता है?”¹⁸ क्योंकि उसे मा'लूम था, कि उन्होंने उसको जलन से पकड़वाया है।¹⁹ और जब वो तख़्त — ए आदालत पर बैठा था तो उस की बीवी ने उसे कहला भेजा “तू इस रास्तबाज़ से कुछ काम न रख क्योंकि मैंने आज ख़्वाब में इस की वजह से बहुत दुःख उठाया है।”

²⁰ लेकिन सरदार काहिनों और बुजुर्गों ने लोगों को उभारा कि बरअब्बा को माँग लें, और ईसा को हलाक कराएँ।²¹ हाकिम ने उनसे कहा इन दोनों में से किसको चाहते हो कि तुम्हारी खातिर छोड़ दूँ? उन्होंने कहा “बरअब्बा को।”²² पीलातुस ने उनसे कहा “फिर ईसा को जो मसीह कहलाता है क्या करूँ?” सब ने कहा “वो मस्लूब हो।”²³ उसने कहा “क्यूँ? उस ने क्या बुराई की है?” मगर वो और भी चिल्ला — चिल्ला कर कहने लगे

“वो मस्लूब हो!”²⁴ जब पीलातुस ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता बल्कि उल्टा बलवा होता जाता है तो पानी लेकर लोगों के रूबरू अपने हाथ धोए “और कहा, मैं इस रास्तबाज़ के खून से बरी हूँ; तुम जानो।”²⁵ सब लोगों ने जवाब में कहा “इसका खून हमारी और हमारी औलाद की गर्दन पर।”

²⁶ इस पर उस ने बरअब्बा को उनकी खातिर छोड़ दिया, और ईसा को कोड़े लगवा कर हवाले किया कि मस्लूब हो।

²⁷ इस पर हाकिम के सिपाहियों ने ईसा को क़िले में ले जाकर सारी पलटन उसके आस पास जमा की।²⁸ और उसके कपड़े उतार कर उसे क्रिमिज़ी चोगा पहनाया।²⁹ और काँटों का ताज बना कर उसके सिर पर रखवा, और एक सरकंडा उस के दहने हाथ में दिया और उसके आगे घुटने टेक कर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगे; “ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!”³⁰ और उस पर थूका, और वही सरकंडा लेकर उसके सिर पर मारने लगे।³¹ और जब उसका ठट्ठा कर चुके तो चोगे को उस पर से उतार कर फिर उसी के कपड़े उसे पहनाए; और मस्लूब करने को ले गए।

³² जब बाहर आए तो उन्होंने शमौन नाम एक कुरेनी आदमी को पाकर उसे बेगार में पकड़ा, कि उसकी सलीब उठाए।³³ और उस जगह जो गुल्गुता या'नी खोपड़ी की जगह कहलाती है पहुँचकर।³⁴ पित मिली हुई मय उसे पीने को दी, मगर उसने चख कर पीना न चाहा।³⁵ और उन्होंने उसे मस्लूब किया; और उसके कपड़े पर्ची डाल कर बाँट लिए।³⁶ और वहाँ बैठ कर उसकी निगहबानी करने लगे।³⁷ और उस का इल्ज़ाम लिख कर उसके सिर से ऊपर लगा दिया “कि ये यहूदियों का बादशाह ईसा है।”³⁸ उस वक़्त उसके साथ दो डाकू मस्लूब हुए, एक दहने और एक बाएँ।³⁹ और राह चलने वाले सिर हिला — हिला कर उसको ला'न ता'न करते और कहते थे।⁴⁰ “ऐ मक़दिस के ढानेवाले और तीन दिन में बनाने वाले अपने आप को बचा; अगर तू खुदा का बेटा है तो सलीब पर से उतर आ।”⁴¹ इसी तरह सरदार काहिन भी फ़क्रीहों और बुजुर्गों के साथ मिलकर ठट्ठे से कहते थे,⁴² “इसने औरों को बचाया, अपने आप को नहीं बचा सकता, ये तो इस्राईल का बादशाह है; अब सलीब पर से उतर आए, तो हम इस पर ईमान लाएँ।”⁴³ इस ने खुदा पर भरोसा किया है, अगरचे इसे चाहता है तो अब इस को छुड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा था, मैं खुदा का बेटा हूँ।”⁴⁴ इसी तरह डाकू भी जो उसके साथ मस्लूब हुए थे, उस पर ला'न ता'न करते थे।

⁴⁵ और दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक तमाम मुल्क

28

में अन्धेरा छाया रहा। ⁴⁶ और तीसरे पहर के करीब ईसा ने बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर कहा “एली, एली, लमा शबकतनी ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?” ⁴⁷ जो वहाँ खड़े थे उन में से कुछ ने सुन कर कहा “ये एलियाह को पुकारता है।” ⁴⁸ और फ़ौरन उनमें से एक शख्स दौड़ा और सोखते को लेकर सिरके में डुबोया और सरकंडे पर रख कर उसे चुसाया। ⁴⁹ मगर बाकियों ने कहा, “ठहर जाओ, देखें तो एलियाह उसे बचाने आता है या नहीं।” ⁵⁰ ईसा ने फिर बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर जान दे दी। ⁵¹ और मक़दिस का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया, और ज़मीन लरज़ी और चट्टानें तड़क गईं। ⁵² और क़बरें खुल गईं। और बहुत से जिस्म उन मुक़द्दसों के जो सो गए थे, जी उठे। ⁵³ और उसके जी उठने के बाद क़बरों से निकल कर मुक़द्दस शहर में गए, और बहुतों को दिखाई दिए। ⁵⁴ पस सुबेदार और जो उस के साथ ईसा की निगहबानी करते थे, भुन्चाल और तमाम माजरा देख कर बहुत ही डर कर कहने लगे “बै — शक ये खुदा का बेटा था।” ⁵⁵ और वहाँ बहुत सी औरतें जो गलील से ईसा की खिदमत करती हुई उसके पीछे — पीछे आई थी, दूर से देख रही थीं। ⁵⁶ उन में मरियम मग़दलिनी थी, और या'क़ूब और योसेस की माँ मरियम और ज़ब्दी के बेटों की माँ।

⁵⁷ जब शाम हुई तो यूसुफ़ नाम अरिमतियाह का एक दौलतमन्द आदमी आया जो खुद भी ईसा का शागिर्द था। ⁵⁸ उस ने पीलातुस के पास जा कर ईसा की लाश माँगी, इस पर पीलातुस ने दे देने का हुक्म दे दिया। ⁵⁹ यूसुफ़ ने लाश को लेकर साफ़ महीन चादर में लपेटा। ⁶⁰ और अपनी नई क़बर में जो उस ने चट्टान में खुदवाई थी रखवा, फिर वो एक बड़ा पत्थर क़बर के मुँह पर लुढ़का कर चला गया। ⁶¹ और मरियम मग़दलिनी और दूसरी मरियम वहाँ क़बर के सामने बैठी थीं।

⁶² दूसरे दिन जो तैयारी के बाद का दिन था, सरदार काहिन और फ़रीसियों ने पीलातुस के पास जमा होकर कहा। ⁶³ खुदावन्द हमें याद है “कि उस धोखेबाज़ ने जीते जी कहा था, मैं तीन दिन के बाद जी उठूँगा।” ⁶⁴ पस हुक्म दे कि तीसरे दिन तक क़बर की निगहबानी की जाए, कहीं ऐसा न हो कि उसके शागिर्द आकर उसे चुरा ले जाएँ, और लोगों से कह दें, वो मुर्दों में से जी उठा, और ये पिछला धोखा पहले से भी बुरा हो।” ⁶⁵ पीलातुस ने उनसे कहा “तुम्हारे पास पहरें वाले हैं जाओ, जहाँ तक तुम से हो सके उसकी निगहबानी करो।” ⁶⁶ पस वो पहरेंदारों को साथ लेकर गए, और पत्थर पर मुहर करके क़बर की निगहबानी की।

28:28-31 28:32-34 28:35-38

¹ सबत के बाद हफ़्ते के पहले दिन धूप निकलते वक़्त मरियम मग़दलिनी और दूसरी मरियम क़बर को देखने आईं। ² और देखो, एक बड़ा भुन्चाल आया क्योंकि खुदा का फ़रिश्ता आसमान से उतरा और पास आकर पत्थर को लुढ़का दिया; और उस पर बैठ गया। ³ उसकी सूरत बिजली की तरह थी, और उसकी पोशाक बर्फ़ की तरह सफ़ेद थी। ⁴ और उसके डर से निगहबान काँप उठे, और मुर्दा से हो गए। ⁵ फ़रिश्ते ने औरतों से कहा, “तुम न डरो। क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम ईसा को ढूँड रही हो जो मस्लूब हुआ था। ⁶ वो यहाँ नहीं है, क्योंकि अपने कहने के मुताबिक़ जी उठा है; आओ ये जगह देखो जहाँ खुदावन्द पड़ा था। ⁷ और जल्दी जा कर उस के शागिर्दों से कहो वो मुर्दों में से जी उठा है, और देखो; वो तुम से पहले गलील को जाता है वहाँ तुम उसे देखोगे, देखो मैंने तुम से कह दिया है।” ⁸ और वो खौफ़ और बड़ी खुशी के साथ क़बर से जल्द खाना होकर उसके शागिर्दों को ख़बर देने दौड़ीं।

⁹ और देखो ईसा उन से मिला, और उस ने कहा, “सलाम।” उन्होंने पास आकर उसके क़दम पकड़े और उसे सज्दा किया। ¹⁰ इस पर ईसा ने उन से कहा, “डरो नहीं। जाओ, मेरे भाइयों से कहो कि गलील को चले जाएँ, वहाँ मुझे देखेंगे।”

¹¹ जब वो जा रही थीं, तो देखो; पहरेंदारों में से कुछ ने शहर में आकर तमाम माजरा सरदार काहिनों से बयान किया। ¹² और उन्होंने बुज़ुर्गों के साथ जमा होकर मशवरा किया और सिपाहियों को बहुत सा रुपए दे कर कहा, ¹³ “ये कह देना, कि रात को जब हम सो रहे थे उसके शागिर्द आकर उसे चुरा ले गए।” ¹⁴ अगर ये बात हाकिम के कान तक पहुँची तो हम उसे समझाकर तुम को ख़तरे से बचा लेंगे” ¹⁵ पस उन्होंने रुपए लेकर जैसा सिखाया गया था, वैसा ही किया; और ये बात यहूदियों में मशहूर है।

¹⁶ और ग्यारह शागिर्द गलील के उस पहाड़ पर गए, जो ईसा ने उनके लिए मुक़र्रर किया था। ¹⁷ उन्होंने उसे देख कर सज्दा किया, मगर कुछ ने शक़ किया। ¹⁸ ईसा ने पास आ कर उन से बातें की और कहा “आस्मान और ज़मीन का कुल इस्तिथार मुझे दे दिया गया है। ¹⁹ पस तुम जा कर सब क़ौमों को शागिर्द बनाओ और उन को बाप और बेटे और रूह — उल — कुद्स के नाम से बपतिस्मा दो। ²⁰ और उन को ये ता'लीम दो, कि उन सब बातों पर अमल करें जिनका मैंने तुम को हुक्म दिया;

और देखो, मैं दुनिया के आखिर तक हमेशा तुम्हारे साथ
हूँ।”

मुक्रद्स मरकुस की मा'रिफ़त इन्जील

?????????? ?? ?????

इब्तिदाई कलीसिया के बुज़ुर्ग इस बात से राज़ी हैं कि इस नविशते को यूहन्ना मरकुस के ज़रिए लिखा गया था। नये अहदनामे में दस मर्तबा यूहन्ना मरकुस का नाम लिखा गया है; आमाल 12:12, 25; 13:5, 13; 15 37, 39 कुलुस्सियों 4:10, 2 तिमूथियुस 4:11; फिलेमोन 24; 1 पतरस 5:13 यह हवालाजात इशारा करते हैं कि यूहन्ना मरकुस बरनबास का रिश्ते का भाई था — (कुलुस्सियों 4:10) मरकुस की माँ का नाम मर्यम था जो यरूशलेम की अमीर औरतों और ओहदेदारों में से एक थी और उसका घर इब्तिदाई कलीसिया के लोगों के जमा होने की एक जगह थी (आमाल 12:12) यूहन्ना मरकुस मौलुस के मिशनेरी सफ़र में पौलुस और बरनबास के साथ रहा था (आमाल 12:25; 13:5) कलाम के सबूत और इब्तिदाई कलीसिया के बुज़ुर्ग मरकुस और पतरस के बीच नज्दीकी तालुकात की दलील पेश करते हैं (1 पतरस 5:13) यह इम्कान भी पेश किया जाता है कि पतरस ने जहाँ कहीं भी तक्ररिरे कीं उन सब के लिए मरकुस ने तर्जुमा किया और वह उन के लिए आँखों देखी गवाह था, यह मरकुस की इन्जील के लिए पहला ज़रीआ साबित हुआ।

????? ?????? ?? ?????????? ?? ?????

इस की तस्नीफ़ की तारीख़ तक्ररीबन 1 ईस्वी 50 - 60 के आस पास है।

कलीसिया के बुज़ुर्ग (इरेनियस, सिकन्दरिया के क्लेमेन्ट और दीगर बुज़ुर्ग) तलक़ीन करते हैं कि मरकुस की इन्जील रोम में लिखी गई थी। इब्तिदाई कलीसिया के ज़राय बयान करते हैं कि इन इन्जील को (ईस्वी 67 — 68) में पतरस की मौत के बाद लिखा गया था।

??????? ?????????????? ?????? ??????

नविशते सबूत पेश करते हुए सलाह देते हैं कि मरकुस ने इस इन्जील को आम तौर से ग़ैर क्रौम के कारिर्दन के लिए और खास तौर से रोम के नाज़रीन व कारिर्दन के लिए लिखा। यही वजह हो सकती है कि येसू का नसबनाम: इसमें शामिल नहीं किया गया क्योंकि यह ग़ैर क्रौमों की दुनिया के लिए छोटी बात साबित हो सकती थी।

????? ??????????

मरकुस के कारिर्दन जो ज़्यादातर रोमी मसीही थे उन्होंने ईस्वी 67 - 68 में नीरो बादशाह की सलतनत में खुद को शिद्दत के सताव के बीच पाया था। उस दौरान कई एक मसीही ताज़ीब और मौत के शिकार हुए थे। इस तरह के मनाज़िरात के होते मसीहियों की हौसला अफ़जाई के लिए मरकुस ने इस इन्जील को लिखा जो इन मुश्किल औकात से गुज़र रहे थे। मरकुस उन्हें येसू को एक दुख उठाने वाला खादिम बतौर पेश करता है (यसायाह 53)।

???????

येसू — दुःख उठाने वाला खादिम।

बैरूनी खाका

1. बयाबान की खिदमतगुज़ारी के लिए येसू की तय्यारी — 1:1-13
2. गलील और उस के आस पास येसू की खिदमतगुज़ारी — 1:14-8:30
3. येसू की रिसालत दुःख उठाना और मौत — 8:31-10:52
4. यरूशलेम में येसू की खिदमतगुज़ारी — 11:1-13:37
5. मसलूबियत का बयान — 14:1-15:47
6. येसू की क़्यामत और उस का लोगों पर ज़ाहिर होना — 16:1-20

?????????? ?????????????? ?????? ?????? ??
????????? ?????????? ??????

¹ ईसा मसीह इब्न — ए खुदा की खुशख़बरी की शुरुआत। ² जैसा यसायाह नबी की किताब में लिखा है: “देखो, मैं अपना पैग़म्बर पहले भेजता हूँ, जो तुम्हारे लिए रास्ता तैयार करेगा। ³ वीराने में पूकारने वाले की आवाज़ आती है कि खुदावन्द के लिए राह तैयार करो, और उसके रास्ते सीधे बनाओ।” ⁴ यूहन्ना आया और वीरानों में बपतिस्मा देता और गुनाहों की मुआफ़ी। के लिए तौबा के बपतिस्मे का ऐलान करता था ⁵ और यहूदिया के मुल्क के सब लोग, और येरूशलेम के सब रहनेवाले निकल कर उस के पास गए, और उन्होंने अपने गुनाहों को कुबूल करके दरिया — ए — यर्दन में उससे बपतिस्मा लिया। ⁶ ये यूहन्ना ऊँटों के बालों से बनी पोशाक पहनता और चमड़े का पट्टा अपनी कमर से बाँधे रहता था। और वो टिड्डियाँ और जंगली शहद खाता था। ⁷ और ये ऐलान करता था, “कि मेरे बाद वो शख्स आनेवाला है जो मुझ से ताक़तवर है मैं इस लायक़ नहीं कि झुक कर उसकी जूतियों का फ़ीता खोलूँ। ⁸ मैंने तो तुम को पानी से बपतिस्मा दिया मगर वो तुम को रूह — उल — कुद्स से बपतिस्मा देगा।”

9 उन दिनों में ऐसा हुआ कि ईसा ने गलील के नासरत नाम कि जगह से आकर यरदन नदी में यहून्ना से बपतिस्मा लिया। 10 और जब वो पानी से निकल कर ऊपर आया तो फ़ौरन उसने आसमान को खुलते और रूह को कबूतर की तरह अपने ऊपर आते देखा। 11 और आसमान से ये आवाज़ आई, “तू मेरा प्यारा बेटा है, तुझ से मैं खुश हूँ।”

12 और उसके बाद रूह ने उसे वीराने में भेज दिया। 13 और वो उस सूनसान जगह में चालीस दिन तक शैतान के ज़रिए आजमाया गया, और वह जंगली जानवरों के साथ रहा किया और फ़रिश्ते उसकी खिदमत करते रहे।

14 फिर यहून्ना के पकड़वाए जाने के बाद ईसा गलील में आया और खुदा की खुशखबरी का ऐलान करने लगा। 15 और उसने कहा कि **“वक्त पूरा हो गया है और खुदा की बादशाही नज़दीक आ गई है, तौबा करो और खुशखबरी पर ईमान लाओ।”**

16 गलील की झील के किनारे — किनारे जाते हुए, शमौन और शमौन के भाई अन्दरयास को झील में जाल डालते हुए देखा; क्योंकि वो मछली पकड़ने वाले थे। 17 और ईसा ने उन से कहा, **“मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को आदमी पकड़ने वाला बनाऊँगा।”** 18 वो फ़ौरन जाल छोड़ कर उस के पीछे हो लिए। 19 और थोड़ी दूर जाकर उसने ज़ब्दी के बेटे याकूब और उसके भाई यहून्ना को नाव पर जालों की मरम्मत करते देखा। 20 उसने फ़ौरन उनको अपने पास बुलाया, और वो अपने बाप ज़ब्दी को नाव पर मज़दूरों के साथ छोड़ कर उसके पीछे हो लिए।

21 फिर वो कफ़रनहूम में दाखिल हुए, और वो फ़ौरन सबत के दिन इबादतखाने में जाकर ता'लीम देने लगा। 22 और लोग उसकी ता'लीम से हैरान हुए, क्योंकि वो उनको आलिमों की तरह नहीं बल्कि इस्त्रियार के साथ ता'लीम देता था। 23 और फ़ौरन उनके इबादतखाने में एक आदमी ऐसा मिला जिस के अंदर बदरूह थी वो यूँ कह कर पुकार उठा। 24 **“ऐ ईसा नासरी हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें तबाह करने आया है मैं तुझको जानता हूँ कि तू कौन है? खुदा का कुदूस है।”** 25 ईसा ने उसे झिड़क कर कहा, **“चुप रह, और इस में से निकल जा!”** 26 तब वो बदरूह उसे मरोड़ कर बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर उस में से निकल गई। 27 और सब लोग हैरान हुए और आपस में ये कह कर बहस करने लगे **“ये कौन है। ये तो नई ता'लीम है? वो बदरूहों को भी इस्त्रियार के साथ हुक्म देता है, और वो उसका हुक्म मानती हैं।”** 28 और

फ़ौरन उसकी शोहरत गलील के आस पास में हर जगह फैल गई।

29 और वो फ़ौरन इबादतखाने से निकल कर शमौन और अन्दरयास के घर आए। 30 शमौन की सास बुखार में पड़ी थी, और उन्होंने फ़ौरन उसकी ख़बर उसे दी। 31 उसने पास जाकर और उसका हाथ पकड़ कर उसे उठाया, और बुखार उस पर से उतर गया, और वो उठकर उसकी खिदमत करने लगी। 32 शाम को सूरज डूबने के बाद लोग बहुत से बीमारों को उसके पास लाए। 33 और सारे शहर के लोग दरवाज़े पर जमा हो गए। 34 और उसने बहुतों को जो तरह — तरह की बीमारियों में गिरफ़्तार थे, अच्छा किया और बहुत सी बदरूहों को निकाला और बदरूहों को बोलने न दिया, क्योंकि वो उसे पहचानती थीं।

35 और सुबह होने से बहुत पहले वो उठा, और एक वीरान जगह में गया, और वहाँ दुआ की। 36 और शमौन और उसके साथी उसके पीछे गए। 37 और जब वो मिला तो उन्होंने उससे कहा, **“सब लोग तुझे ढूँड रहे हैं!”** 38 उसने उनसे कहा **“आओ हम और कहीं आस पास के शहरों में चलें ताकि मैं वहाँ भी ऐलान करूँ, क्योंकि मैं इसी लिए निकला हूँ।”** 39 और वो पूरे गलील में उनके इबादतखाने में जा जाकर ऐलान करता और बदरूहों को निकालता रहा।

40 और एक कौढ़ी ने उस के पास आकर उसकी मिन्नत की और उसके सामने घुटने टेक कर उस से कहा **“अगर तू चाहे तो मुझे पाक साफ़ कर सकता है।”** 41 उसने उसपर तरस खाकर हाथ बढ़ाया और उसे छूकर उस से कहा **“मैं चाहता हूँ, तू पाक साफ़ हो जा।”** 42 और फ़ौरन उसका कौढ़ जाता रहा और वो पाक साफ़ हो गया। 43 और उसने उसे हिदायत कर के फ़ौरन रुख्सत किया। 44 और उससे कहा **“ख़बरदार! किसी से कुछ न कहना जाकर अपने आप को इमामों को दिखा, और अपने पाक साफ़ हो जाने के बारे में उन चीज़ों को जो मूसा ने मुकर्रर की हैं नज़र गुज़ार ताकि उनके लिए गवाही हो।”** 45 लेकिन वो बाहर जाकर बहुत चर्चा करने लगा, और इस बात को इस क्रदर मशहूर किया कि ईसा शहर में फिर खुलेआम दाखिल न हो सका; बल्कि बाहर वीरान मुक़ामों में रहा, और लोग चारों तरफ़ से उसके पास आते थे।

2

???? ?? ??????? ?? ??????? ?? ???

1 कई दिन बाद जब ईसा कफ़रनहूम में फिर दाखिल हुआ तो सुना गया कि वो घर में है। 2 फिर इतने आदमी जमा हो गए, कि दरवाज़े के पास भी जगह न रही और

वो उनको कलाम सुना रहा था।³ और लोग एक फ़ालिज के मारे हुए को चार आदमियों से उठवा कर उस के पास लाए।⁴ मगर जब वो भीड़ की वजह से उसके नज़दीक न आ सके तो उन्होंने उस छत को जहाँ वो था, खोल दिया और उसे उधेड़ कर उस चारपाई को जिस पर फ़ालिज का मारा हुआ लेटा था, लटका दिया।⁵ ईसा' ने उन लोगों का ईमान देख कर फ़ालिज के मारे हुए से कहा, “बेटा, तेरे गुनाह मु'आफ़ हुए।”⁶ मगर वहाँ कुछ आलिम जो बैठे थे, वो अपने दिलों में सोचने लगे।⁷ “ये क्यूँ ऐसा कहता है? कुफ़र बकता है, खुदा के सिवा गुनाह कौन मु'आफ़ कर सकता है।”⁸ और फ़ौरन ईसा' ने अपनी रूह में मा'लूम करके कि वो अपने दिलों में यूँ सोचते हैं उनसे कहा, “तुम क्यूँ अपने दिलों में ये बातें सोचते हो?”⁹ आसान क्या है? फ़ालिज के मारे हुए से ये कहना कि तेरे गुनाह मु'आफ़ हुए, या ये कहना कि उठ और अपनी चारपाई उठा कर चल फिर।¹⁰ लेकिन इस लिए कि तुम जानों कि इब्न — ए आदम को ज़मीन पर गुनाह मु'आफ़ करने का इस्ति'यार है” (उसने उस फ़ालिज के मारे हुए से कहा)।¹¹ “मैं तुम से कहता हूँ उठ अपनी चारपाई उठाकर अपने घर चला जा।”¹² और वो उठा; फ़ौरन अपनी चारपाई उठाकर उन सब के सामने बाहर चला गया, चुनाँचे वो सब हैरान हो गए, और खुदा की तम्ज़ीद करके कहने लगे “हम ने ऐसा कभी नहीं देखा था!”

¹³ वो फिर बाहर झील के किनारे गया, और सारी भीड़ उसके पास आई और वो उनको ता'लीम देने लगा।¹⁴ जब वो जा रहा था, तो उसने हलफ़ी के बेटे लावी को महसूल की चौकी पर बैठे देखा,, और उस से कहा “मेरे पीछे हो ले।” पस वो उठ कर उस के पीछे हो लिया।

¹⁵ और यूँ हुआ कि वो उस के घर में खाना खाने बैठा। बहुत से महसूल लेने वाले और गुनाहगार लोग ईसा और उसके शागिर्दों के साथ खाने बैठे, क्यूँकि वो बहुत थे, और उसके पीछे हो लिए थे।¹⁶ फ़रीसियों ने फ़क़ीहों ने उसे गुनाहगारों और महसूल लेने वालों के साथ खाते देखकर उसके शागिर्दों से कहा, “ये तो महसूल लेने वालों और गुनाहगारों के साथ खाता पीता है।”¹⁷ ईसा' ने ये सुनकर उनसे कहा, “तन्दरुस्तों को हकीम की ज़रूरत नहीं बल्कि बीमारों को; मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।”

¹⁸ और यूहन्ना के शागिर्द और फ़रीसी रोज़े से थे, उन्होंने आकर उस से कहा, “यूहन्ना के शागिर्द और फ़रीसियों के शागिर्द तो रोज़ा रखते हैं? लेकिन तेरे शागिर्द क्यूँ रोज़ा नहीं रखते।”¹⁹ ईसा' ने उनसे कहा

“क्या बाराती जब तक दुल्हा उनके साथ है रोज़ा रख सकते हैं? जिस वक़्त तक दुल्हा उनके साथ है वो रोज़ा नहीं रख सकते।²⁰ मगर वो दिन आएँगे कि दुल्हा उनसे जुदा किया जाएगा, उस वक़्त वो रोज़ा रखेंगे।²¹ कोरे कपड़े का पैवन्द पुरानी पोशाक पर कोई नहीं लगाता नहीं तो वो पैवन्द उस पोशाक में से कुछ खींच लेगा, या'नी नया पुरानी से और वो ज़ियादा फट जाएगी।²² और नई मय को पुरानी मशकों में कोई नहीं भरता नहीं तो मशकें मय से फट जाएँगी और मय और मशकें दोनों बरबाद हो जाएँगी बल्कि नई मय को नई मशकों में भरते हैं।”

²³ और यूँ हुआ कि वो सबत के दिन खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके शागिर्द राह में चलते होए बालें तोड़ने लगे।²⁴ और फ़रीसियों ने उस से कहा “देख ये सबत के दिन वो काम क्यूँ करते हैं जो जाएज़ नहीं।”²⁵ उसने उनसे कहा, “क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उस को और उस के साथियों को ज़रूरत हुई और वो भूखे हुए? ²⁶ वो क्यूँकर अबियातर सरदार काहिन के दिनों में खुदा के घर में गया, और उस ने नज़र की रोटियाँ खाईं जिनको खाना काहिनों के सिवा और किसी को जाएज़ नहीं था और अपने साथियों को भी दीं?”²⁷ और उसने उनसे कहा “सबत आदमी के लिए बना है न आदमी सबत के लिए।²⁸ इस लिए इब्न — ए — आदम सबत का भी मालिक है।”

3

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

¹ और वो इबादतखाने में फिर दाखिल हुआ और वहाँ एक आदमी था, जिसका हाथ सूखा हुआ था।² और वो उसके इंतज़ार में रहे, कि अगर वो उसे सबत के दिन अच्छा करे तो उस पर इल्ज़ाम लगाएँ।³ उसने उस आदमी से जिसका हाथ सूखा हुआ था कहा “बीच में खड़ा हो।”⁴ और उसने कहा “सबत के दिन नेकी करना जाएज़ है या बदी करना? जान बचाना या क़त्ल करना?” वो चुप रह गए।⁵ उसने उनकी सख्त दिली की वजह से गमगीन होकर और चारों तरफ़ उन पर गुस्से से नज़र करके उस आदमी से कहा, “अपना हाथ बढ़ा।” उस ने बढ़ा दिया, और उसका हाथ दुरुस्त हो गया।⁶ फिर फ़रीसी फ़ौरन बाहर जाकर हेरोदियों के साथ उसके खिलाफ़ मशवरा करने लगे। कि उसे किस तरह हलाक करें।

⁷ और ईसा अपने शागिर्दों के साथ झील की तरफ़ चला गया, और गलील से एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।⁸ और यहूदिया और येरूशलेम इद्मया से और

यरदन के पार सूर और सैदा के शहरों के आस पास से एक बड़ी भीड़ ये सुन कर कि वो कैसे बड़े काम करता है उसके पास आई।⁹ पस उसने अपने शागिर्दों से कहा भीड़ की वजह से एक छोटी नाव मेरे लिए तैयार रहे “ताकि वो मुझे दबा न दें।”¹⁰ क्योंकि उस ने बहुत लोगों को अच्छा किया था, चुनाँचे जितने लोग जो सख्त बीमारियों में गिरफ्तार थे, उस पर गिरे पड़ते थे, कि उसे छू लें।¹¹ और बदरूहें जब उसे देखती थीं उसके आगे गिर पड़ती और पुकार कर कहती थीं, “तू खुदा का बेटा है।”¹² और वो उनको बड़ी ताकीद करता था, मुझे जाहिर न करना।

¹³ फिर वो पहाड़ पर चढ़ गया, और जिनको वो आप चाहता था उनको पास बुलाया, और वो उसके पास चले गए।¹⁴ और उसने बारह को मुक़र्रर किया, ताकि उसके साथ रहें और वो उनको भेजे कि मनादी करें।¹⁵ और बदरूहों को निकालने का इस्तिथार रखे।¹⁶ वो ये हैं शमौन जिसका नाम पतरस रखा।¹⁷ और जब्दी का बेटा याकूब और याकूब का भाई यूहन्ना जिस का नाम बु'आनर्गिस या'नी गरज के बेटे रखा।¹⁸ और अन्दरयास, फ़िलिप्पुस, बरतुल्माई, और मत्ती, और तोमा, और हलफ़ी का बेटा और तद्दी और शमौन कना'नी।¹⁹ और यहूदाह इस्करियोती जिस ने उसे पकड़वा भी दिया।

²⁰ वो घर में आया और इतने लोग फिर जमा हो गए, कि वो खाना भी न खा सके।²¹ जब उसके अज़ीजों ने ये सुना तो उसे पकड़ने को निकले, क्योंकि वो कहते थे “वो बेखुद है।”²² और आलिम जो येरूशलेम से आए थे, ये कहते थे “उसके साथ बा'लज़बूल है” और ये भी कि “वो बदरूहों के सरदार की मदद से बदरूहों को निकालता है।”²³ वो उनको पास बुलाकर उनसे मिसालों में कहने लगा “कि शैतान को शैतान किस तरह निकाल सकता है? ²⁴ और अगर किसी सल्लनत में फूट पड़ जाए तो वो सल्लनत क्राईम नहीं रह सकती।²⁵ और अगर किसी घर में फूट पड़ जाए तो वो घर क्राईम न रह सकेगा।²⁶ और अगर शैतान अपना ही मुखालिफ़ होकर अपने में फूट डाले तो वो क्राईम नहीं रह सकता, बल्कि उसका खातिमा हो जाएगा।”

²⁷ “लेकिन कोई आदमी किसी ताक़तवर के घर में घुसकर उसके माल को लूट नहीं सकता जब तक वो पहले उस ताक़तवर को न बाँध ले तब उसका घर लूट लेगा।”

²⁸ “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि बनी आदम के सब गुनाह और जितना कुफ़र वो बकते हैं मु'आफ़ किया जाएगा।²⁹ लेकिन जो कोई रूह — उल — कुददूस के हक़ में कुफ़र बके वो हसेशा तक मु'आफ़ी न पाएगा;

बल्कि वो हमेशा गुनाह का कुसूरवार है।”³⁰ क्योंकि वो कहते थे, कि उस में बदरूह है।

³¹ फिर उसकी माँ और भाई आए और बाहर खड़े होकर उसे बुलवा भेजा।³² और भीड़ उसके आसपास बैठी थी, उन्होंने उस से कहा “देख तेरी माँ और तेरे भाई बाहर तुझे पूछते हैं”³³ उसने उनको जवाब दिया “मेरी माँ और मेरे भाई कौन हैं?”³⁴ और उन पर जो उसके पास बैठे थे नज़र करके कहा “देखो, मेरी माँ और मेरे भाई ये हैं।”³⁵ क्योंकि जो कोई खुदा की मर्ज़ी पर चले वही मेरा भाई और मेरी बहन और माँ है।”

4

???? ???? ???? ???? ??

¹ वो फिर झील के किनारे ता'लीम देने लगा; और उसके पास ऐसी बड़ी भीड़ जमा हो गई, वो झील में एक नाव में जा बैठा और सारी भीड़ खुशकी पर झील के किनारे रही।² और वो उनको मिसालों में बहुत सी बातें सिखाने लगा, और अपनी ता'लीम में उनसे कहा।³ “सुनो! देखो; एक बोने वाला बीज बोने निकला।⁴ और बोते वक़्त यूँ हुआ कि कुछ राह के किनारे गिरा और परिन्दों ने आकर उसे चुग लिया।⁵ और कुछ पत्थरीली ज़मीन पर गिरा, जहाँ उसे बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने की वजह से जल्द उग आया।⁶ और जब सूरज निकला तो जल गया और जड़ न होने की वजह से सूख गया।⁷ और कुछ झाड़ियों में गिरा और झाड़ियों ने बढ़कर दबा लिया, और वो फल न लाया।⁸ और कुछ अच्छी ज़मीन पर गिरा और वो उगा और बढ़कर फला; और कोई तीस गुना कोई साठ गुना कोई सौ गुना फल लाया।”⁹ “फिर उसने कहा! जिसके सुनने के कान हों वो सुन ले।”

¹⁰ जब वो अकेला रह गया तो उसके साथियों ने उन बारह समेत उसे इन मिसालों के बारे में पूछा? ¹¹ उसने उनसे कहा “तुम को खुदा की बादशाही का भी राज़ दिया गया है; मगर उनके लिए जो बाहर हैं सब बातें मिसालों में होती हैं ¹² ताकि वो देखते हुए देखें और मा'लूम न करें और सुनते हुए सुनें और न समझें ऐसा न हो कि वो फिर जाएँ और मु'आफ़ी पाएँ।”

¹³ फिर उसने उनसे कहा “क्या तुम ये मिसाल नहीं समझे? फिर सब मिसालों को क्यूँकर समझोगे? ¹⁴ बोनेवाला कलाम बोता है।¹⁵ जो राह के किनारे हैं जहाँ कलाम बोया जाता है ये वो हैं कि जब उन्होंने सुना तो शैतान फ़ौरन आकर उस कलाम को जो उस में बोया गया था, उठा ले जाता है।¹⁶ और इसी तरह जो पत्थरीली ज़मीन में बोए गए, ये वो हैं जो कलाम

को सुन कर फ़ौरन खुशी से क़बूल कर लेते हैं। 17 और अपने अन्दर जड़ नहीं रखते, बल्कि चन्द रोज़ा हैं, फिर जब कलाम की वजह से मुसीबत या ज़ुल्म बर्पा होता है तो फ़ौरन ठोकर खाते हैं। 18 और जो झाड़ियों में बोए गए, वो और हैं ये वो हैं जिन्होंने कलाम सुना। 19 और दुनिया की फ़िक्र और दौलत का धोखा और और चीज़ों का लालच दाखिल होकर कलाम को दबा देते हैं, और वो बेफल रह जाता है। 20 और जो अच्छी ज़मीन में बोए गए, ये वो हैं जो कलाम को सुनते और कुबूल करते और फल लाते हैं; कोई तीस गुना कोई साठ गुना और कोई सौ गुना।”

21 और उसने उनसे कहा “क्या चराग़ इसलिए जलाते हैं कि पैमाना या पलंग के नीचे रखवा जाए? क्या इसलिए नहीं कि चिराग़दान पर रखवा जाए।” 22 क्योंकि कोई चीज़ छिपी नहीं मगर इसलिए कि ज़ाहिर हो जाए, और पोशीदा नहीं हुई, मगर इसलिए कि सामने में आए। 23 अगर किसी के सुनने के कान हों तो सुन लें।”

24 फिर उसने उनसे कहा “ख़बरदार रहो; कि क्या सुनते हो जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा, और तुम को ज्यादा दिया जाएगा। 25 क्योंकि जिस के पास है उसे दिया जाएगा और जिसके पास नहीं है उस से वो भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा।”

26 और उसने कहा “खुदा की बादशाही ऐसी है जैसे कोई आदमी ज़मीन में बीज डाले। 27 और रात को सोए और दिन को जागे और वो बीज इस तरह उगे और बढ़े कि वो न जाने। 28 ज़मीन आप से आप फल लाती है, पहले पत्ती फिर बालों में तैयार दाने। 29 फिर जब अनाज पक चुका तो वो फ़ौरन दरान्ती लगाता है क्योंकि काटने का वक़्त आ पहुँचा।”

30 फिर उसने कहा “हम खुदा की बादशाही को किससे मिसाल दें और किस मिसाल में उसे बयान करें? 31 वो राई के दाने की तरह है कि जब ज़मीन में बोया जाता है तो ज़मीन के सब बीजों से छोटा होता है। 32 मगर जब वो दिया गया तो उग कर सब तरकारियों से बड़ा हो जाता है और ऐसी बड़ी डालियाँ निकालता है कि हवा के परिन्दे उसके साए में बसेरा कर सकते हैं।” 33 और वो उनको इस किस्म की बहुत सी मिसालें दे दे कर उनकी समझ के मुताबिक़ कलाम सुनाता था। 34 और बे मिसाल उनसे कुछ न कहता था, लेकिन तन्हाई में अपने खास शागिर्दों से सब बातों के मा'ने बयान करता था।

35 उसी दिन जब शाम हुई तो उसने उनसे कहा “आओ पार चलें।” 36 और वो भीड़ को छोड़ कर उसे जिस हाल में वो था, नाव पर साथ ले चले, और उसके साथ और

नावें भी थीं। 37 तब बड़ी आँधी चली और लहरें नाव पर यहाँ तक आई कि नाव पानी से भरी जाती थी। 38 और वो खुद पीछे की तरफ़ गद्दी पर सो रहा था “पस उन्होंने उसे जगा कर कहा? ऐ उस्ताद क्या तुझे फ़िक्र नहीं कि हम हलाक हुए जाते हैं।” 39 उसने उठकर हवा को डाँटा और पानी से कहा “साकित हो या'नी थम जा!” पस हवा बन्द हो गई, और बड़ा अमन हो गया। 40 फिर उसने कहा “तुम क्यूँ डरते हो? अब तक ईमान नहीं रखते।” 41 और वो निहायत डर गए और आपस में कहने लगे “ये कौन है कि हवा और पानी भी इसका हुक्म मानते हैं।”

5

2222 22 22 222222 22 222 2222 22 2222

1 और वो झील के पार गिरासीनियों के इलाक़े में पहुँचे। 2 जब वो नाव से उतरा तो फ़ौरन एक आदमी जिस में बदरूह थी, क़ब्रों से निकल कर उससे मिला। 3 वो क़ब्रों में रहा करता था और अब कोई उसे जंजीरों से भी न बाँध सकता था। 4 क्यूँकि वो बार बार बेड़ियों और जंजीरों से बाँधा गया था, लेकिन उसने जंजीरों को तोड़ा और बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े किया था, और कोई उसे क़ाबू में न ला सकता था। 5 वो हमेशा रात दिन क़ब्रों और पहाड़ों में चिल्लाता और अपने आपको पत्थरों से ज़ख्मी करता था। 6 वो ईसा को दूर से देखकर दौड़ा और उसे सज्दा किया। 7 और बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर कहा “ऐ ईसा खुदा ता'ला के फ़र्जन्द मुझे तुझ से क्या काम? तुझे खुदा की क़सम देता हूँ, मुझे ऐज़ाब में न डाल।” 8 क्यूँकि उस ने उससे कहा था, “ऐ बदरूह! इस आदमी में से निकल आ।” 9 फिर उसने उससे पूछा “तेरा नाम क्या है?” उस ने उससे कहा “मेरा नाम लश्कर, है क्यूँकि हम बहुत हैं।” 10 फिर उसने उसकी बहुत मिन्नत की, कि हमें इस इलाक़े से बाहर न भेज। 11 और वहाँ पहाड़ पर खिन्जीरों यनी [सूवरों] का एक बड़ा गोल चर रहा था। 12 पस उन्होंने उसकी मिन्नत करके कहा, “हम को उन खिन्जीरों यनी [सूवरों] में भेज दे, ताकि हम इन में दाखिल हों।” 13 पस उसने उनको इजाज़त दी और बदरूहें निकल कर खिन्जीरों यनी [सूवरों] में दाखिल हो गई, और वो गोल जो कोई दो हज़ार का था किनारे पर से झपट कर झील में जा पड़ा और झील में डूब मरा। 14 और उनके चराने वालों ने भागकर शहर और देहात में ख़बर पहुँचाई। 15 पस लोग ये माजरा देखने को निकलकर ईसा के पास आए, और जिस में बदरूहें या'नी बदरूहों का लश्कर था, उसको बैठे और कपड़े पहने और होश में देख कर डर गए। 16 देखने

वालों ने उसका हाल जिस में बदरूहें थीं और खिन्जीरों यनी [सूवरों] का माजरा उनसे बयान किया। 17 वो उसकी मिन्नत करने लगे कि हमारी सरहद से चला जा। 18 जब वो नाव में दाखिल होने लगा तो जिस में बदरूहें थीं उसने उसकी मिन्नत की “मै तेरे साथ रहूँ।” 19 लेकिन उसने उसे इजाजत न दी बल्कि उस से कहा “अपने लोगों के पास अपने घर जा और उनको खबर दे कि खुदावन्द ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए, और तुझ पर रहम किया।” 20 वो गया और दिकपुलिस में इस बात की चर्चा करने लगा, कि ईसा ने उसके लिए कैसे बड़े काम किए, और सब लोग ताअ'ज्जुब करते थे।

21 जब ईसा फिर नाव में पार आया तो बड़ी भीड़ उसके पास जमा हुई और वो झील के किनारे था। 22 और इबादतखाने के सरदारों में से एक शख्स याईर नाम का आया और उसे देख कर उसके कदमों में गिरा। 23 और ये कह कर मिन्नत की, “मेरी छोटी बेटी मरने को है तू आकर अपना हाथ उस पर रख ताकि वो अच्छी हो जाए और ज़िन्दा रहे।” 24 पस वो उसके साथ चला और बहुत से लोग उसके पीछे हो लिए और उस पर गिरे पड़ते थे। 25 फिर एक औरत जिसके बारह बरस से खून जारी था। 26 और कई हकीमो से बड़ी तकलीफ़ उठा चुकी थी, और अपना सब माल खर्च करके भी उसे कुछ फ़ाइदा न हुआ था, बल्कि ज्यादा बीमार हो गई थी। 27 ईसा का हाल सुन कर भीड़ में उसके पीछे से आई और उसकी पोशाक को छुआ। 28 क्योंकि वो कहती थी, “अगर में सिर्फ़ उसकी पोशाक ही छू लूंगी तो अच्छी होजाऊंगी” 29 और फ़ौरन उसका खून बहना बन्द हो गया और उसने अपने बदन में मा'लूम किया कि मैंने इस बीमारी से शिफ़ा पाई। 30 ईसा' को फ़ौरन अपने में मा'लूम हुआ कि मुझ में से कुव्वत निकली, उस भीड़ में पीछे मुड़ कर कहा, “किसने मेरी पोशाक छुई?” 31 उसके शागिर्दों ने उससे कहा, तू देखता है कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है फिर तू कहता है, “मुझे किसने छुआ?” 32 उसने चारों तरफ़ निगाह की ताकि जिसने ये काम किया; उसे देखे। 33 वो औरत जो कुछ उससे हुआ था, महसूल करके डरती और काँपती हुई आई और उसके आगे गिर पड़ी और सारा हाल सच उससे कह दिया। 34 उसने उससे कहा, “बेटी तेरे ईमान से तुझे शिफ़ा मिली; सलामती से जा और अपनी इस बीमारी से बची रह।” 35 वो ये कह ही रहा था कि इबादतखाने के सरदार के यहाँ से लोगों ने आकर कहा, “तेरी बेटी मर गई अब उस्ताद को क्यूँ तकलीफ़ देता है?” 36 जो बात वो कह रहे थे, उस पर ईसा' ने गौर न करके 'इबादतखाने के सरदार से

कहा, “खौफ़ न कर, सिर्फ़ ऐ'तिक्राद रख।” 37 फिर उसने पतरस और या'कूब और या'कूब के भाई यूहन्ना के सिवा और किसी को अपने साथ चलने की इजाजत न दी। 38 और वो इबादतखाने के सरदार के घर में आए, और उसने देखा कि शोर हो रहा है और लोग बहुत रो पीट रहे हैं 39 और अन्दर जाकर उसने कहा, “तुम क्यूँ शोर मचाते और रोते हो, लड़की मरी नहीं बल्कि सोती है।” 40 वो उस पर हँसने लगे, लेकिन वो सब को निकाल कर लड़की के माँ बाप को और अपने साथियों को लेकर जहाँ लड़की पड़ी थी अन्दर गया। 41 और लड़की का हाथ पकड़ कर उससे कहा, “तलीता कुमी” जिसका तर्जुमा, “ऐ लड़की! मैं तुझ से कहता हूँ उठ।” 42 वो लड़की फ़ौरन उठ कर चलने फिरने लगी, क्यूँकि वो बारह बरस की थी इस पर लोग बहुत ही हैरान हुए। 43 फिर उसने उनको ताकीद करके हुक्म दिया कि ये कोई न जाने और फ़रमाया; लड़की को कुछ खाने को दिया जाए।

6

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 फिर वहाँ से निकल कर 'ईसा अपने शहर में आया और उसके शागिर्द उसके पीछे हो लिए। 2 जब सबत का दिन आया “तो वो इबादतखाने में ता'लीम देने लगा और बहुत लोग सुन कर हैरान हुए और कहने लगे, ये बातें इस में कहाँ से आ गई? और ये क्या हिक्मत है जो इसे बख़्शी गई और कैसे मोजिज़े इसके हाथ से जाहिर होते हैं? 3 क्या ये वही बढ़ई नहीं जो मरियम का बेटा और या'कूब और योसेस और यहूदाह और शमौन का भाई है और क्या इसकी बहनें यहाँ हमारे हाँ नहीं?” पस उन्होंने उसकी वजह से ठोकर खाई। 4 ईसा ने उन से कहा, “नबी अपने वतन और अपने रिश्तेदारों और अपने घर के सिवा और कहीं बेइज्जत नहीं होता।” 5 और वो कोई मोजिज़ा वहाँ न दिखा सका, सिर्फ़ थोड़े से बीमारों पर हाथ रख कर उन्हें अच्छा कर दिया। 6 और उस ने उनकी बे'ऐ'तिक्रादी पर ता'अज्जुब किया और वो चारों तरफ़ के गाँव में ता'लीम देता फिरा।

7 उसने बारह को अपने पास बुलाकर दो दो करके भेजना शुरू किया और उनको बदरूहों पर इस्तियार बख़्शा। 8 और हुक्म दिया “रास्ते के लिए लाठी के सिवा कुछ न लो, न रोटी, न झोली, न अपने कमरबन्द में पैसे। 9 मगर जूतियाँ पहनों और दो दो कुरते न पहनों।” 10 और उसने उनसे कहा, “जहाँ तुम किसी घर में दाखिल हो तो उसी में रहो, जब तक वहाँ से खाना न हो। 11 जिस जगह के लोग तुम्हें क़बूल न करें और तुम्हारी न सुनें, वहाँ से चलते वक़्त अपने तलुओं की मिट्टी झाड़ दो ताकि

उन पर गवाही हो।”¹² और बारह शागिर्दों ने खाना होकर ऐलान किया, कि “तौबा करो।”¹³ और बहुत सी बदरूहों को निकाला और बहुत से बीमारों को तेल मल कर अच्छा कर दिया।

¹⁴ और हेरोदेस बादशाह ने उसका जिक्र सुना “क्यूँकि उसका नाम मशहूर होगया था और उसने कहा, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला मुद्दों में से जी उठा है, क्यूँकि उससे मोजिजे ज़ाहिर होते हैं।”¹⁵ मगर बा'ज़ कहते थे, एलियाह है और बा'ज़ ये नबियों में से किसी की मानिन्द एक नबी है।¹⁶ मगर हेरोदेस ने सुनकर कहा, “यूहन्ना जिस का सिर मैंने कटवाया वही जी उठा है”¹⁷ क्यूँकि हेरोदेस ने अपने आदमी भेजकर यूहन्ना को पकड़वाया और अपने भाई फ़िलिपुस की बीवी हेरोदियास की वजह से उसे कैदखाने में बाँध रखा था, क्यूँकि हेरोदेस ने उससे शादी कर ली थी।¹⁸ और यूहन्ना ने उससे कहा था, “अपने भाई की बीवी को रखना तुझे जाएज़ नहीं।”¹⁹ पस हेरोदियास उस से दुश्मनी रखती और चाहती थी कि उसे क़त्ल कराए, मगर न हो सका।²⁰ क्यूँकि हेरोदेस यूहन्ना को रास्तबाज़ और मुक़द्दस आदमी जान कर उससे डरता और उसे बचाए रखता था और उसकी बातें सुन कर बहुत हैरान हो जाता था, मगर सुनता खुशी से था।²¹ और मौक़े के दिन जब हेरोदेस ने अपनी सालगिराह में अमीरों और फ़ौजी सरदारों और गलील के रईसों की दावत की।²² और उसी हेरोदियास की बेटी अन्दर आई और नाच कर हेरोदेस और उसके मेहमानों को खुश किया तो बादशाह ने उस लड़की से कहा, “जो चाहे मुझ से माँग मैं तुझे दूँगा।”²³ और उससे क़सम खाई “जो कुछ तू मुझ से माँगोगी अपनी आधी सल्तन्त तक तुझे दूँगा।”²⁴ और उसने बाहर आकर अपनी माँ से कहा, “मैं क्या माँगू?” उसने कहा, “यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर।”²⁵ वो फ़ौरन बादशाह के पास जल्दी से अन्दर आई और उस से अर्ज़ किया, “मैं चाहती हूँ कि तू यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर एक थाल में अभी मुझे मँगवा दे।”²⁶ बादशाह बहुत ग़मगीन हुआ मगर अपनी क़समों और मेहमानों की वजह से उसे इन्कार करना न चाहा।²⁷ पस बादशाह ने फ़ौरन एक सिपाही को हुक्म देकर भेजा कि उसका सिर लाए, उसने जाकर कैद खाने में उस का सिर काटा।²⁸ और एक थाल में लाकर लड़की को दिया और लड़की ने माँ को दिया।²⁹ फिर उसके शागिर्द सुन कर आए, उस की लाश उठा कर क़बर में रखी।

³⁰ और रसूल ईसा के पास जमा हुए और जो कुछ उन्होंने किया और सिखाया था, सब उससे बयान किया।

³¹ उसने उनसे कहा, “तुम आप अलग वीरान जगह में चले आओ और ज़रा आराम करो इसलिए कि बहुत लोग आते जाते थे और उनको खाना खाने को भी फुरसत न मिलती थी।”³² पस वो नाव में बैठ कर अलग एक वीरान जगह में चले आए।³³ लोगों ने उनको जाते देखा और बहुतेरों ने पहचान लिया और सब शहरों से इकट्ठे हो कर पैदल उधर दौड़े और उन से पहले जा पहुँचे।³⁴ और उसने उतर कर बड़ी भीड़ देखी और उसे उनपर तरस आया क्यूँकि वो उन भेड़ों की मानिन्द थे, जिनका चरवाहा न हो; और वो उनको बहुत सी बातों की ता'लीम देने लगा।³⁵ जब दिन बहुत ढल गया तो उसके शागिर्द उसके पास आकर कहने लगे, “ये जगह वीरान है, और दिन बहुत ढल गया है।³⁶ इनको रुख़सत कर ताकि चारों तरफ़ की बस्तियों और गाँव में जाकर, अपने लिए कुछ खाना मोल लें।”³⁷ उसने उनसे जवाब में कहा, “तुम ही इन्हें खाने को दो।” उन्होंने उससे कहा “क्या हम जाकर दो सौ दिन की मज़दूरी से रोटियाँ मोल लाएँ और इनको खिलाएँ?”³⁸ उसने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने दरियाफ़्त करके कहा, “पाँच और दो मछलियाँ।”³⁹ उसने उन्हें हुक्म दिया कि, “सब हरी घास पर कतार में होकर बैठ जाएँ।”⁴⁰ पस वो सौ सौ और पचास पचास की कतारें बाँध कर बैठ गए।⁴¹ फिर उसने वो पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं और आसमान की तरफ़ देखकर बर्क़त दी; और रोटियाँ तोड़ कर शागिर्दों को देता गया कि उनके आगे रखें, और वो दो मछलियाँ भी उन सब में बाँट दीं।⁴² पस वो सब खाकर सेर हो गए।⁴³ और उन्होंने बे इस्तेमाल खाने और मछलियों से बारह टोक़रियाँ भरकर उठाईं।⁴⁴ और खानेवाले पाँच हज़ार मर्द थे।

⁴⁵ और फ़ौरन उसने अपने शागिर्दों को मजबूर किया कि नाव पर बैठ कर उस से पहले उस पार बैत सैदा को चले जाएँ जब तक वो लोगों को रुख़सत करे।⁴⁶ उनको रुख़सत करके पहाड़ पर दुआ करने चला गया।⁴⁷ जब शाम हुई तो नाव झील के बीच में थी और वो अकेला खुशकी पर था।⁴⁸ जब उसने देखा कि वो खेने से बहुत तंग हैं क्यूँकि हवा उनके मुखालिफ़ थी तो रात के पिछले पहर के करीब वो झील पर चलता हुआ उनके पास आया और उनसे आगे निकल जाना चाहता था।⁴⁹ लेकिन उन्होंने उसे झील पर चलते देखकर खयाल किया कि “भूत है” और चिल्ला उठे।⁵⁰ क्यूँकि सब उसे देख कर घबरा गए थे, मगर उसने फ़ौरन उनसे बातें कीं और कहा, “मुतमईन रहो! मैं हूँ डरो मत।”⁵¹ फिर वो नाव पर उनके पास आया और हवा थम गई। और वो अपने दिल

कहा “इफ़क्तह!” या'नी “खुल जा!” ³⁵ और उसके कान खुल गए, और उसकी ज़बान की गिरह खुल गई और वो साफ़ बोलने लगा। ³⁶ उसने उसको हुक्म दिया कि किसी से न कहना, लेकिन जितना वो उनको हुक्म देता रहा उतना ही ज्यादा वो चर्चा करते रहे। ³⁷ और उन्होंने ने निहायत ही हैरान होकर कहा “जो कुछ उसने किया सब अच्छा किया वो बहरों को सुनने की और गूंगों को बोलने की ताक़त देता है।”

8

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

¹ उन दिनों में जब फिर बड़ी भीड़ जमा हुई, और उनके पास कुछ खाने को न था, तो उसने अपने शागिर्दों को पास बुलाकर उनसे कहा। ² “मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्योंकि ये तीन दिन से बराबर मेरे साथ रही है और इनके पास कुछ खाने को नहीं। ³ अगर मैं इनको भूखा घर को रखसत करूँ तो रास्ते में थक कर रह जाएँगे और कुछ इन में से दूर के हैं।” ⁴ उस के शागिर्दों ने उसे जवाब दिया, “इस वीराने में कहाँ से कोई इतनी रोटियाँ लाए कि इनको खिला सके?” ⁵ उसने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने कहा, “सात।”

⁶ फिर उसने लोगों को हुक्म दिया कि ज़मीन पर बैठ जाएँ। उसने वो सात रोटियाँ लीं और शुक़र करके तोड़ीं, और अपने शागिर्दों को देता गया कि उनके आगे रखें, और उन्होंने लोगों के आगे रख दीं। ⁷ उनके पास थोड़ी सी छोटी मछलियाँ भी थीं उसने उन पर बर्क़त देकर कहा कि ये भी उनके आगे रख दो। ⁸ पस वो खा कर सेर हुए और बचे हुए बे इस्तेमाल खाने के सात टोकरे उठाए। ⁹ और वो लोग चार हज़ार के करीब थे, फिर उसने उनको रखसत किया। ¹⁰ वो फ़ौरन अपने शागिर्दों के साथ नाव में बैठ कर दलमनूता के सूबा में गया।

¹¹ फिर फ़रीसी निकल कर उस से बहस करने लगे, और उसे आजमाने के लिए उससे कोई आसमानी निशान तलब किया। ¹² उसने अपनी रूह में आह खींच कर कहा, “इस ज़माने के लोग क्यूँ निशान तलब करते हैं? मैं तुम से सच कहता हूँ, कि इस ज़माने के लोगों को कोई निशान न दिया जाएगा।” ¹³ और वो उनको छोड़ कर फिर नाव में बैठा और पार चला गया।

¹⁴ वो रोटी लेना भूल गए थे, और नाव में उनके पास एक से ज्यादा रोटी न थी। ¹⁵ और उसने उनको ये हुक्म दिया; “ख़बरदार, फ़रीसियों के तालीम और हेरोदेस की तालीम से होशियार रहना।” ¹⁶ वो आपस में चर्चा करने और कहने लगे, “हमारे पास रोटियाँ नहीं।” ¹⁷ मगर ईसा ने ये मा'लूम करके कहा, “तुम क्यूँ ये चर्चा करते हो

कि हमारे पास रोटी नहीं? क्या अब तक नहीं जानते, और नहीं समझते हो? क्या तुम्हारा दिल सख़्त हो गया है? ¹⁸ आँखें हैं और तुम देखते नहीं कान हैं और सुनते नहीं और क्या तुम को याद नहीं। ¹⁹ जिस वक़्त मैंने वो पाँच रोटियाँ पाँच हज़ार के लिए तोड़ीं तो तुम ने कितनी टोकरियाँ बे इस्तेमाल खाने से भरी हुई उठाई?” उन्होंने ने उस से कहा “बारह।” ²⁰ “और जिस वक़्त सात रोटियाँ चार हज़ार के लिए तोड़ीं तो तुम ने कितने टोकरे बे इस्तेमाल खाने से भरे हुए उठाए?” उन्होंने ने उस से कहा “सात।” ²¹ उस ने उनसे कहा “क्या तुम अब तक नहीं समझते?”

²² फिर वो बैत सैदा में आये और लोग एक अंधे को उसके पास लाए और उसकी मिन्नत की, कि उसे छूए। ²³ वो उस अंधे का हाथ पकड़ कर उसे गाँव से बाहर ले गया, और उसकी आँखें में थूक कर अपने हाथ उस पर रखे और उस से पूछा, “क्या तू कुछ देखता है?” ²⁴ उसने नज़र उठा कर कहा “मैं आदमियों को देखता हूँ क्योंकि वो मुझे चलते हुए ऐसे दिखाई देते हैं जैसे दरख़्त।” ²⁵ उसने फिर दोबारा उसकी आँखों पर अपने हाथ रखे और उसने ग़ौर से नज़र की और अच्छा हो गया और सब चीज़ें साफ़ साफ़ देखने लगा। ²⁶ फिर उसने उसको उसके घर की तरफ़ खाना किया और कहा, “इस गाँव के अन्दर क़दम न रखना।”

²⁷ फिर ईसा और उसके शागिर्द कैसरिया फ़िलिप्पी के गाँव में चले आए और रास्ते में उसने अपने शागिर्दों से पूछा, “लोग मुझे क्या कहते हैं?” ²⁸ उन्होंने ने जवाब दिया, “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला; कुछ एलियाह और कुछ नबियों में से कोई।” ²⁹ उसने उनसे पूछा, “लेकिन तुम मुझे क्या कहते हो?” पतरस ने जवाब में उस से कहा, “तू मसीह है।” ³⁰ फिर उसने उनको ताकीद की कि मेरे बारे में किसी से ये न कहना।

³¹ फिर वो उनको ता'लीम देने लगा, कि ज़रूर है कि इबने आदम बहुत दुःख उठाए और बुज़ुर्ग और सरदार काहिन और आलिम उसे रद्द करें, और वो क़त्ल किया जाए, और तीन दिन के बाद जी उठे। ³² उसने ये बात साफ़ साफ़ कही पतरस उसे अलग ले जाकर उसे मलामत करने लगा। ³³ मगर उसने मुड़ कर अपने शागिर्दों पर निगाह करके पतरस को मलामत की और कहा, “ऐ शैतान मेरे सामने से दूर हो; क्यूँकि तू खुदा की बातों का नहीं बल्कि आदमियों की बातों का ख़याल रखता है।”

³⁴ फिर उसने भीड़ को अपने शागिर्दों समेत पास बुला कर उनसे कहा, “अगर कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आप से इन्कार करे और अपनी सलीब उठाए, और

मेरे पीछे हो ले। ³⁵ क्योंकि जो कोई अपनी जान बचाना चाहे वो उसे खोएगा, और जो कोई मेरी और इन्जील की खातिर अपनी जान खोएगा, वो उसे बचाएगा। ³⁶ आदमी अगर सारी दुनिया को हासिल करे और अपनी जान का नुकसान उठाए, तो उसे क्या फ़ाइदा होगा? ³⁷ और आदमी अपनी जान के बदले क्या दे? ³⁸ क्योंकि जो कोई इस बे ईमान और बुरी क्रौम में मुझ से और मेरी बातों से शरमाए गा, इबने आदम भी अपने बाप के जलाल में पाक फ़रिश्तों के साथ आएगा तो उस से शरमाएगा।”

9

222222-2-222222

¹ और उसने उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, जो यहाँ खड़े हैं उन में से कुछ ऐसे हैं जब तक खुदा की बादशाही को कुदरत के साथ आया हुआ देख न लें मौत का मज़ा हरगिज़ न चखेंगे।” ² छः दिन के बाद ईसा ने पतरस और याकूब यूहन्ना को अपने साथ लिया और उनको अलग एक ऊँचे पहाड़ पर तन्हाई में ले गया और उनके सामने उसकी सूरत बदल गई। ³ उसकी पोशाक ऐसी नूरानी और निहायत सफ़ेद हो गई, कि दुनिया में कोई धोबी वैसी सफ़ेद नहीं कर सकता। ⁴ और एलियाह मूसा के साथ उनको दिखाई दिया, और वो ईसा से बातें करते थे। ⁵ पतरस ने ईसा से कहा “रब्बी हमारा यहाँ रहना अच्छा है पस हम तीन तम्बू बनाएँ एक तेरे लिए एक मूसा के लिए, और एक एलियाह के लिए।” ⁶ क्योंकि वो जानता न था कि क्या कहे इसलिए कि वो बहुत डर गए थे। ⁷ फिर एक बादल ने उन पर साया कर लिया और उस बादल में से आवाज़ आई “ये मेरा प्यारा बेटा है; इसकी सुनो।” ⁸ और उन्होंने ये कायक जो चारों तरफ़ नज़र की तो ईसा के सिवा और किसी को अपने साथ न देखा। ⁹ जब वो पहाड़ से उतर रहे थे तो उसने उनको हुक्म दिया कि “जब तक इबने आदम मुर्दों में से जी न उठे जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना।” ¹⁰ उन्होंने इस कलाम को याद रखा और वो आपस में बहस करते थे, कि मुर्दों में से जी उठने के क्या मतलब हैं। ¹¹ फिर उन्होंने ने उस से ये पूछा, “आलिम क्यों कहते हैं कि एलियाह का पहले आना ज़रूर है?” ¹² उसने उनसे कहा, “एलियाह अलबत्ता पहले आकर सब कुछ बहाल करेगा मगर क्या वजह है कि इबने आदम के हक़ में लिखा है कि वो बहुत से दुःख उठाएगा और ज़लील किया जाएगा? ¹³ लेकिन मैं तुम से कहता हूँ, कि एलियाह तो आ चुका और जैसा उसके हक़ में लिखा है उन्होंने जो कुछ चाहा उसके साथ किया।”

¹⁴ जब वो शागिर्दों के पास आए तो देखा कि उनके चारों तरफ़ बड़ी भीड़ है, और आलिम लोग उनसे बहस कर रहे हैं। ¹⁵ और फ़ौरन सारी भीड़ उसे देख कर निहायत हैरान हुई और उसकी तरफ़ दौड़ कर उसे सलाम करने लगे। ¹⁶ उसने उनसे पूछा, “तुम उन से क्या बहस करते हो?” ¹⁷ और भीड़ में से एक ने उसे जवाब दिया, ऐ उस्ताद! मैं अपने बेटे को जिसमें गूँगी रूह है तेरे पास लाया था। ¹⁸ वो जहाँ उसे पकड़ती है, पटक देती है; और वो क़फ़ भर लाता और दाँत पीसता और सूखता जाता है। मैंने तेरे शागिर्दों से कहा था, “वो उसे निकाल दें मगर वो न निकाल सके।” ¹⁹ उसने जवाब में उनसे कहा, “ऐ बेऐतिकाद क्रौम! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? कब तक तुम्हारी बर्दाश्त करूँगा उसे मेरे पास लाओ।” ²⁰ पस वो उसे उसके पास लाए, और जब उसने उसे देखा तो फ़ौरन रूह ने उसे मरोड़ा और वो ज़मीन पर गिरा और क़फ़ भर लाकर लोटने लगा। ²¹ उसने उसके बाप से पूछा “ये इस को कितनी मुद्दत से है?” उसने कहा “बचपन ही से।” ²² और उसने उसे अक्सर आग और पानी में डाला ताकि उसे हलाक करे लेकिन अगर तू कुछ कर सकता है तो हम पर तरस खाकर हमारी मदद कर।” ²³ ईसा ने उस से कहा “क्या जो तू कर सकता है जो ऐतिकाद रखता है? उस के लिए सब कुछ हो सकता है।” ²⁴ उस लड़के के बाप ने फ़ौरन चिल्लाकर कहा. “मैं ऐतिकाद रखता हूँ, मेरी बे ऐतिकादी का इलाज कर।” ²⁵ जब ईसा ने देखा कि लोग दौड़ दौड़ कर जमा हो रहे हैं, तो उस बद रूह को झिड़क कर कहा, “मैं तुझ से कहता हूँ, इस में से बाहर आ और इस में फिर दाखिल न होना।” ²⁶ वो चिल्लाकर और उसे बहुत मरोड़ कर निकल आई और वो मुर्दा सा हो गया “ऐसा कि अक्सरों ने कहा कि वो मर गया।” ²⁷ मगर ईसा ने उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया और वो उठ खड़ा हुआ। ²⁸ जब वो घर में आया तो उसके शागिर्दों ने तन्हाई में उस से पूछा “हम उसे क्यों न निकाल सके?” ²⁹ उसने उनसे कहा, “ये सिर्फ़ दुआ के सिवा और किसी तरह नहीं निकल सकती।”

³⁰ फिर वहाँ से रवाना हुए और गलील से हो कर गुज़रे और वो न चाहता था कि कोई जाने। ³¹ इसलिए कि वो अपने शागिर्दों को ता'लीम देता और उनसे कहता था, “इब्न — ए आदम आदमियों के हवाले किया जाएगा और वो उसे क़त्ल करेंगे और वो क़त्ल होने के तीन दिन बाद जी उठेगा।” ³² लेकिन वो इस बात को समझते न थे, और उस से पूछते हुए डरते थे।

³³ फिर वो क़फ़रनहूम में आए और जब वो घर में था तो उसने उनसे पूछा, “तुम रास्ते में क्या बहस करते थे?”

34 वो चुप रहे क्योंकि उन्होंने रास्ते में एक दूसरे से ये बहस की थी कि बड़ा कौन है? 35 फिर उसने बैठ कर उन बारह को बुलाया और उनसे कहा “अगर कोई अव्वल होना चाहे तो वो सब से पिछला और सब का खादिम बने।” 36 और एक बच्चे को लेकर उन के बीच में खड़ा किया फिर उसे गोद में लेकर उनसे कहा। 37 “जो कोई मेरे नाम पर ऐसे बच्चों में से एक को क़बूल करता है वो मुझे क़बूल करता है और जो कोई मुझे क़बूल करता है वो मुझे नहीं बल्कि उसे जिस ने मुझे भेजा है क़बूल करता है।” 38 यूहन्ना ने उस से कहा “ऐ उस्ताद हम ने एक शख्स को तेरे नाम से बदरूहों को निकालते देखा और हम उसे मनह करने लगे क्योंकि वो हमारी पैरवी नहीं करता था।” 39 लेकिन ईसा ने कहा “उसे मनह न करना क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से मोजिजे दिखाए और मुझे जल्द बुरा कह सके। 40 क्योंकि जो हमारे खिलाफ़ नहीं वो हमारी तरफ़ है। 41 जो कोई एक प्याला पानी तुम को इसलिए पिलाए कि तुम मसीह के हो मैं तुम से सच कहता हूँ कि वो अपना अज़र हरगिज़ न खोएगा।”

42 “और जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर ईमान लाए हैं किसी को ठोकर खिलाए, उसके लिए ये बेहतर है कि एक बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाए और वो समुन्दर में फेंक दिया जाए। 43 अगर तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल टुंडा हो कर ज़िन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है कि दो हाथ होते जहन्नुम के बीच उस आग में जाए जो कभी बुझने की नहीं। 44 जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। 45 और अगर तेरा पाँव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल लंगड़ा हो कर ज़िन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है कि दो पाँव होते जहन्नुम में डाला जाए। 46 जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। 47 और अगर तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल काना हो कर ज़िन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है कि दो आँखें होते जहन्नुम में डाला जाए। 48 जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। 49 क्योंकि हर शख्स आग से नमकीन किया जाएगा [और हर एक कुर्बानी नमक से नमकीन की जाएगी]। 50 नमक अच्छा है लेकिन अगर नमक की नमकीनी जाती रहे तो उसको किस चीज़ से मज़ेदार करोगे? अपने में नमक रखो और एक दूसरे के साथ मेल मिलाप से रहो।”

10

2222 22 222222 22 22222 222 2222222222

1 फिर वो वहाँ से उठ कर यहूदिया की सरहदों में और यरदन के पार आया और भीड़ उसके पास फिर जमा हो गई और वो अपने दस्तूर के मुवाफ़िक़ फिर उनको ता'लीम देने लगा। 2 और फ़रीसियों ने पास आकर उसे आजमाने के लिए उससे पूछा, “क्या ये जायज़ है कि मर्द अपनी बीवी को छोड़ दे?” 3 उसने जवाब में कहा, “मूसा ने तुम को क्या हुक्म दिया है?” 4 उन्होंने कहा, “मूसा ने तो इजाज़त दी है कि तलाक़ नामा लिख कर छोड़ दें?” 5 मगर ईसा ने उनसे कहा, “उस ने तुम्हारी सख़्तदिली की वजह से तुम्हारे लिए ये हुक्म लिखा था। 6 लेकिन पैदाइश के शुरू से उसने उन्हें मर्द और औरत बनाया। 7 इस लिए मर्द अपने — बाप से और माँ से जुदा हो कर अपनी बीवी के साथ रहेगा। 8 और वो और उसकी बीवी दोनों एक जिस्म होंगे पस वो दो नहीं बल्कि एक जिस्म हैं। 9 इसलिए जिसे खुदा ने जोड़ा है उसे आदमी जुदा न करे।” 10 और घर में शागिर्दों ने उससे इसके बारे में फिर पूछा। 11 उसने उनसे कहा “जो कोई अपनी बीवी को छोड़ दे और दूसरी से शादी करे वो उस पहली के बरखिलाफ़ ज़िना करता है। 12 और अगर औरत अपने शौहर को छोड़ दे और दूसरे से शादी करे तो ज़िना करती है।”

13 फिर लोग बच्चों को उसके पास लाने लगे ताकि वो उनको छुए मगर शगिर्दों ने उनको झिड़का। 14 ईसा ये देख कर खफ़ा हुआ और उन से कहा “बच्चों को मेरे पास आने दो उन को मनह न करो क्योंकि खुदा की बादशाही ऐसों ही की है 15 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई खुदा की बादशाही को बच्चे की तरह कुबूल न करे वो उस में हरगिज़ दाखिल नहीं होगा।” 16 फिर उसने उन्हें अपनी गोद में लिया और उन पर हाथ रखकर उनको बर्क़त दी।

17 जब वो बाहर निकल कर रास्ते में जा रहा था तो एक शख्स दौड़ता हुआ उसके पास आया और उसके आगे घुटने टेक कर उससे पूछने लगा “ऐ नेक उस्ताद; मैं क्या करूँ कि हमेशा की ज़िन्दगी का वारिस बनूँ?” 18 ईसा ने उससे कहा “तू मुझे क्यों नेक कहता है? कोई नेक नहीं मगर एक या'नी खुदा। 19 तू हुक्मों को तो जानता है खून न कर, चोरी न कर, झूठी गवाही न दे, धोखा देकर नुक्सान न कर, अपने बाप की और माँ की इज़्ज़त कर।” 20 उसने उससे कहा “ऐ उस्ताद मैंने बचपन से इन सब पर अमल किया है।” 21 ईसा ने उसको देखा और उसे उस पर प्यार आया, और उससे कहा, “एक बात की तुझ में कमी है; जा, जो कुछ तेरा है बेच कर ग़रीबों को दे, तुझे आसमान पर खज़ाना मिलेगा और आकर मेरे पीछे हो ले।” 22 इस बात से उसके चहरे पर उदासी छा

गई, और वो गमगीन हो कर चला गया; क्योंकि बड़ा मालदार था।

23 फिर ईसा ने चारों तरफ़ नज़र करके अपने शागिर्दों से कहा, “दौलतमन्द का खुदा की बादशाही में दाखिल होना कैसा मुश्किल है।” 24 शागिर्द उस की बातों से हैरान हुए ईसा ने फिर जवाब में उनसे कहा, “बच्चो जो लोग दौलत पर भरोसा रखते हैं उन के लिए खुदा की बादशाही में दाखिल होना क्या ही मुश्किल है। 25 ऊँट का सूई के नाके में से गुज़र जाना इस से आसान है कि दौलतमन्द खुदा की बादशाही में दाखिल हो।” 26 वो निहायत ही हैरान हो कर उस से कहने लगे, “फिर कौन नज़ात पा सकता है?” 27 ईसा ने उनकी तरफ़ नज़र करके कहा, “ये आदमियों से तो नहीं हो सकता लेकिन खुदा से हो सकता है क्योंकि खुदा से सब कुछ हो सकता है।” 28 पतरस उस से कहने लगा “देख हम ने तो सब कुछ छोड़ दिया और तेरे पीछे हो लिए हैं।” 29 ईसा ने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि ऐसा कोई नहीं जिसने घर या भाइयों या बहनों या माँ बाप या बच्चों या खेतों को मेरी खातिर और इन्जील की खातिर छोड़ दिया हो। 30 और अब इस ज़माने में सौ गुना न पाए घर और भाई और बहनें और माँए और बच्चे और खेत मगर ज़ुल्म के साथ और आने वाले आलम में हमेशा की ज़िन्दगी। 31 लेकिन बहुत से अव्वल आखिर हो जाएंगे और आखिर अव्वल।”

32 और वो येरूशलेम को जाते हुए रास्ते में थे और ईसा उनके आगे जा रहा था वो हैरान होने लगे और जो पीछे पीछे चलते थे डरने लगे पस वो फिर उन बारह को साथ लेकर उनको वो बातें बताने लगा जो उस पर आने वाली थीं, 33 “देखो हम येरूशलेम को जाते हैं और इब्न — ए आदम सरदार काहिनों फ़क़ीहों के हवाले किया जाएगा, और वो उसके क़त्ल का हुक्म देंगे और उसे ग़ैर क़ौमों के हवाले करेंगे। 34 और वो उसे ठठठों में उड़ाएंगे और उस पर थूकेंगे और उसे कोड़े मारेंगे और क़त्ल करेंगे और वो तीन दिन के बाद जी उठेगा।”

35 तब ज़ब्दी के बेटों या'क़ूब और यूहन्ना ने उसके पास आकर उससे कहा “ऐ उस्ताद हम चाहते हैं कि जिस बात की हम तुझ से दरख्वास्त करें तू हमारे लिए करे।” 36 उसने उनसे कहा “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?” 37 उन्होंने उससे कहा “हमारे लिए ये कर कि तेरे जलाल में हम में से एक तेरी दाहिनी और एक बाई तरफ़ बैठे।” 38 ईसा ने उनसे कहा “तुम नहीं जानते कि क्या माँगते हो? जो प्याला में पीने को हूँ क्या तुम पी सकते हो? और जो बपतिस्मा में लेने को हूँ तुम ले सकते हो?” 39 उन्होंने उससे कहा, “हम से हो सकता है।” ईसा ने उनसे कहा, “जो प्याला मैं पीने को हूँ तुम पियोगे?

और जो बपतिस्मा मैं लेने को हूँ तुम लोगे। 40 लेकिन अपनी दाहिनी या बाई तरफ़ किसी को बिठा देना मेरा काम नहीं मगर जिन के लिए तैयार किया गया उन्होंने के लिए है।” 41 जब उन दसों ने ये सुना तो या'क़ूब और यूहन्ना से खफ़ा होने लगे। 42 ईसा ने उन्हें पास बुलाकर उनसे कहा, “तुम जानते हो कि जो ग़ैर क़ौमों के सरदार समझे जाते हैं वो उन पर हुक्मत चलाते हैं और उनके अमीर उन पर इस्तिथार जताते हैं। 43 मगर तुम में ऐसा कौन है बल्कि जो तुम में बड़ा होना चाहता है वो तुम्हारा खादिम बने। 44 और जो तुम में अव्वल होना चाहता है वो सब का गुलाम बने। 45 क्योंकि इब्न — ए आदम भी इसलिए नहीं आया कि खिदमत ले बल्कि इसलिए कि खिदमत करे और अपनी जान बहुतेरों के बदले फ़िदया में दे।”

46 और वो यरीहू में आए और जब वो और उसके शागिर्द और एक बड़ी भीड़ यरीहू से निकलती थी तो तिमाई का बेटा बरतिमाई अंधा फ़क़ीर रास्ते के किनारे बैठा हुआ था। 47 और ये सुनकर कि ईसा नासरी है चिल्ला चिल्लाकर कहने लगा, ऐ इब्न — ए दाऊद ऐ ईसा मुझ पर रहम कर!” 48 और बहुतों ने उसे डाँटा कि चुप रह, मगर वो और ज्यादा चिल्लाया, “ऐ इब्न — ए दाऊद मुझ पर रहम कर!” 49 ईसा ने खड़े होकर कहा, “उसे बुलाओ।” पस उन्होंने ने उस अंधे को ये कह कर बुलाया, कि “इत्मीनान रख। उठ, वो तुझे बुलाता है।” 50 वो अपना चोगा फेंक कर उछल पड़ा और ईसा के पास आया। 51 ईसा ने उस से कहा, “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?” अंधे ने उससे कहा, “ऐ रब्बूनी, ये कि मैं देखने लगूँ।” 52 ईसा ने उस से कहा “जा तेरे इमान ने तुझे अच्छा कर दिया” और वो फ़ौरन देखने लगा और रास्ते में उसके पीछे हो लिया।

11

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 जब वो येरूशलेम के नज़दीक ज़ैतून के पहाड़ पर बैतफ़िगे और बैत अन्नियाह के पास आए तो उसने अपने शागिर्दों में से दो को भेजा। 2 और उनसे कहा, “अपने सामने के गाँव में जाओ और उस में दाखिल होते ही एक गधी का जवान बच्चा बँधा हुआ तुम्हें मिलेगा, जिस पर कोई आदमी अब तक सवार नहीं हुआ; उसे खोल लाओ। 3 और अगर कोई तुम से कहे, तुम ये क्यों करते हो?” तो कहना, खुदावन्द को इस की ज़रूरत है। वो फ़ौरन उसे यहाँ भेजेगा।” 4 पस वो गए, और बच्चे को दरवाज़े के नज़दीक बाहर चौक में बाँधा हुआ पाया और

उसे खोलने लगे।⁵ मगर जो लोग वहाँ खड़े थे उन में से कुछ ने उन से कहा “ये क्या करते हो? कि गधी का बच्चा खोलते हो?”⁶ उन्होंने ने जैसा ईसा ने कहा था, वैसा ही उनसे कह दिया और उन्होंने उनको जाने दिया।⁷ पस वो गधी के बच्चे को ईसा के पास लाए और अपने कपड़े उस पर डाल दिए और वो उस पर सवार हो गया।⁸ और बहुत लोगों ने अपने कपड़े रास्ते में बिछा दिए, औरों ने खेतों में से डालियाँ काट कर फैला दीं।⁹ जो उसके आगे आगे जाते और पीछे पीछे चले आते थे ये पुकार पुकार कर कहते जाते थे “होशना मुबारिक है वो जो खुदावन्द के नाम से आता है।¹⁰ मुबारिक है हमारे बाप दाऊद की बादशाही जो आ रही है आलम — ए बाला पर होशना।”¹¹ और वो येरूशलेम में दाखिल होकर हैकल में आया और चारों तरफ सब चीजों का मुआइना करके उन बारह के साथ बैत'अन्नियाह को गया क्योंकि शाम हो गई थी।

¹² दूसरे दिन जब वो बैत'अन्नियाह से निकले तो उसे भूख लगी।¹³ और वो दूर से अंजीर का एक दरख्त जिस में पत्ते थे देख कर गया कि शायद उस में कुछ पाए मगर जब उसके पास पहुँचा तो पत्तों के सिवा कुछ न पाया क्योंकि अंजीर का मोसम न था।¹⁴ उसने उस से कहा “आइन्दा कोई तुझ से कभी फल न खाए!” और उसके शागिर्दों ने सुना।

¹⁵ फिर वो येरूशलेम में आए, और ईसा हैकल में दाखिल होकर उन को जो हैकल में खरीदो फरोख्त कर रहे थे बाहर निकालने लगा और सराफों के तख्त और कबूतर फरोशों की चौकियों को उलट दिया।

¹⁶ और उसने किसी को हैकल में से होकर कोई बरतन ले जाने न दिया।¹⁷ और अपनी ता'लीम में उनसे कहा, “क्या ये नहीं लिखा कि मेरा घर सब क्रौमों के लिए दुआ का घर कहलाएगा? मगर तुम ने उसे डाकूओं की खोह बना दिया है।”¹⁸ और सरदार काहिन और फ़कीह ये सुन कर उसके हलाक करने का मौक़ा ढूँडने लगे क्योंकि उस से डरते थे इसलिए कि सब लोग उस की ता'लीम से हैरान थे।¹⁹ और हर रोज़ शाम को वो शहर से बाहर जाया करता था,

²⁰ फिर सुबह को जब वो उधर से गुज़रे तो उस अंजीर के दरख्त को जड़ तक सूखा हुआ देखा।²¹ पतरस को वो बात याद आई और उससे कहने लगा “ऐ रब्बी देख ये अंजीर का दरख्त जिस पर तूने ला'नत की थी सूख गया है।”²² ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “खुदा पर ईमान रखो।²³ मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे उखड़ जा और समुन्दर में जा पड़ और अपने दिल में शक न करे बल्कि यक़ीन करे कि जो कहता है वो हो जाएगा तो उसके लिए वही होगा।²⁴ इसलिए मैं तुम से

कहता हूँ कि जो कुछ तुम दुआ में माँगते हो यक़ीन करो कि तुम को मिल गया और वो तुम को मिल जाएगा।²⁵ और जब कभी तुम खड़े हुए दुआ करते हो, अगर तुम्हें किसी से कुछ शिकायत हो तो उसे मु'आफ़ करो ताकि तुम्हारा बाप भी जो आसमान पर है तुम्हारे गुनाह मु'आफ़ करे।²⁶ [अगर तुम मु'आफ़ न करोगे तो तुम्हारा बाप जो आसमान पर है तुम्हारे गुनाह भी मु'आफ़ न करेगा]।”

²⁷ वो फिर येरूशलेम में आए और जब वो हैकल में टहेल रहा था तो सरदार काहिन और फ़कीह और बुजुर्ग उसके पास आए।²⁸ और उससे कहने लगे, “तू इन कामों को किस इख्तियार से करता है? या किसने तुझे इख्तियार दिया है कि इन कामों को करे?”²⁹ ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुम से एक बात पूछता हूँ तुम जवाब दो तो मैं तुमको बताऊँगा कि इन कामों को किस इख्तियार से करता हूँ।³⁰ यूहन्ना का बपतिस्मा आसमान की तरफ़ से था या इंसान की तरफ़ से? मुझे जवाब दो।”³¹ वो आपस में कहने लगे, अगर हम कहें आस्मान की तरफ़ से तो वो कहेगा ‘फिर तुम ने क्यूँ उसका यक़ीन न किया?’³² और अगर कहें इंसान की तरफ़ से? तो लोगों का डर था इसलिए कि सब लोग वाक़ई यूहन्ना को नबी जानते थे³³ पस उन्होंने जवाब में ईसा से कहा, हम नहीं जानते। ईसा ने उनसे कहा “मैं भी तुम को नहीं बताता, कि इन कामों को किस इख्तियार से करता हूँ।”

12

22222 22222222 22 222222

¹ फिर वो उनसे मिसालों में बातें करने लगा “एक शख्स ने बाग़ लगाया और उसके चारों तरफ़ अहाता घेरा और हौज़ खोदा और बुर्ज बनाया और उसे बाग़बानों को ठेके पर देकर परदेस चला गया।² फिर फल के मोसम में उसने एक नौकर को बाग़बानों के पास भेजा ताकि बाग़बानों से बाग़ के फलों का हिसाब ले ले।³ लेकिन उन्होंने उसे पकड़ कर पीटा और खाली हाथ लौटा दिया।⁴ उसने फिर एक और नौकर को उनके पास भेजा मगर उन्होंने उसका सिर फोड़ दिया और बे'इज़्जत किया।⁵ फिर उसने एक और को भेजा उन्होंने उसे क़त्ल किया फिर और बहुतेरों को भेजा उन्होंने उन में से कुछ को पीटा और कुछ को क़त्ल किया।⁶ अब एक बाक़ी था जो उसका प्यारा बेटा था उसने आखिर उसे उनके पास ये कह कर भेजा कि वो मेरे बेटे का तो लिहाज़ करेंगे।⁷ लेकिन उन बाग़बानों ने आपस में कहा यही वारिस है ‘आओ इसे क़त्ल कर डालें मीरास हमारी हो जाएगी।’

8 पस उन्होंने उसे पकड़ कर कत्ल किया और बाग के बाहर फेंक दिया।”

9 “अब बाग का मालिक क्या करेगा? वो आएगा और उन बागवानों को हलाक करके बाग औरों को देगा।

10 क्या तुम ने ये लिखे हुए को नहीं पढ़ा

जिस पत्थर को में'मारों ने रद्द किया

वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया।

11 ये खुदावन्द की तरफ से हुआ

और हमारी नज़र में अजीब है।”

12 इस पर वो उसे पकड़ने की कोशिश करने लगे मगर लोगों से डरे, क्योंकि वो समझ गए थे कि उसने ये मिसाल उन्हीं पर कही पस वो उसे छोड़ कर चले गए।

13 फिर उन्होंने कुछ फ़रीसियों और सद्कियों ने हेरोदेस को उसके पास भेजा ताकि बातों में उसको फँसाएँ। 14 और उन्होंने आकर उससे कहा, “ऐ उस्ताद हम जानते हैं कि तू सच्चा है और किसी की परवाह नहीं करता क्योंकि तू किसी आदमी का तरफ़दार नहीं बल्कि सच्चाई से खुदा के रास्ते की ता'लीम देता है? 15 पस कैसर को जिज़िया देना जायज़ है या नहीं? हम दें या न दें?” उसने उनकी मक्कारी मा'लूम करके उनसे कहा, “तुम मुझे क्यों आजमाते हो? मेरे पास एक दीनार लाओ कि मैं देखूँ।” 16 वो ले आए उसने उनसे कहा “ये सूरत और नाम किसका है?” उन्होंने उससे कहा “कैसर का।” 17 ईसा ने उनसे कहा “जो कैसर का है कैसर को और जो खुदा का है खुदा को अदा करो” वो उस पर बड़ा ता'अज्जुब करने लगे।

18 फिर सद्कियों ने जो कहते थे कि क़यामत नहीं होगी, उसके पास आकर उससे ये सवाल किया। 19 ऐ उस्ताद “हमारे लिए मूसा ने लिखा है कि अगर किसी का भाई बे — औलाद मर जाए और उसकी बीवी रह जाए तो उस का भाई उसकी बीवी को लेले ताकि अपने भाई के लिए नस्ल पैदा करे। 20 सात भाई थे पहले ने बीवी की और बे — औलाद मर गया। 21 दूसरे ने उसे लिया और बे — औलाद मर गया इसी तरह तीसरे ने। 22 यहाँ तक कि सातों बे — औलाद मर गए, सब के बाद वह औरत भी मर गई। 23 क़यामत में ये उन में से किसकी बीवी होगी? क्योंकि वो सातों की बीवी बनी थी।”

24 ईसा ने उनसे कहा, “क्या तुम इस वजह से गुमराह नहीं हो कि न किताब — ए — मुक़द्दस को जानते हो और न खुदा की कुदरत को। 25 क्योंकि जब लोगों में से मुर्दे जी उठेंगे तो उन में ब्याह शादी न होगी बल्कि आसमान पर फ़रिश्तों की तरह होंगे। 26 मगर इस बारे में कि मुर्दे जी उठते हैं ‘क्या तुम ने मूसा की किताब में झाड़ी के ज़िक्र में नहीं पढ़ा’ कि खुदा ने उससे कहा मैं अब्रहाम

का खुदा और इज़्हाक़ का खुदा और याकूब का खुदा हूँ।

27 वो तो मुर्दों का खुदा नहीं बल्कि ज़िन्दों का खुदा है, पस तुम बहुत ही गुमराह हो।”

28 और आलिमों में से एक ने उनको बहस करते सुनकर जान लिया कि उसने उनको अच्छा जवाब दिया है “वो पास आया और उस से पूछा? सब हुक्मों में पहला कौन सा है।” 29 ईसा ने जवाब दिया “पहला ये है ‘ऐ इस्राईल सुन! खुदावन्द हमारा खुदा एक ही खुदावन्द है। 30 और तू खुदावन्द अपने खुदा से अपने सारे दिल, और अपनी सारी जान सारी अक्ल और अपनी सारी ताक़त से मुहब्बत रख।’ 31 दूसरा हुक्म ये है: ‘अपने पड़ोसी से अपने बराबर मुहब्बत रख’ इस से बड़ा कोई हुक्म नहीं।” 32 आलिम ने उससे कहा ऐ उस्ताद “बहुत खूब; तू ने सच कहा कि वो एक ही है और उसके सिवा कोई नहीं 33 और उसे सारे दिल और सारी अक्ल और सारी ताक़त से मुहब्बत रखना और अपने पड़ोसी से अपने बराबर मुहब्बत रखना सब सोख़्तनी कुर्बानियों और ज़बीहों से बढ़ कर है।” 34 जब ईसा ने देखा कि उसने अक्लमन्दी से जवाब दिया तो उससे कहा, “तू खुदा की बादशाही से दूर नहीं।” और फिर किसी ने उससे सवाल करने की जुर'अत न की।

35 फिर ईसा ने हैकल में तालीम देते वक़्त ये कहा, “फ़कीह क्योंकर कहते हैं कि मसीह दाऊद का बेटा है? 36 दाऊद ने खुद रूह — उल — कुदूस की हिदायत से कहा है

खुदावन्द ने मेरे खुदावन्द से कहा, “मेरी दाहिनी तरफ़ बैठ जब तक में तेरे दुश्मनों को तेरे पाँव के नीचे की चौकी न कर दूँ।”

37 दाऊद तो आप से खुदावन्द कहता है, फिर वो उसका बेटा कहाँ से ठहरा?” आम लोग खुशी से उसकी सुनते थे।

38 फिर उसने अपनी ता'लीम में कहा “आलिमों से खबरदार रहो, जो लम्बे लम्बे जामे पहन कर फिरना और बाज़ारों में सलाम। 39 और इबादतख़ानों में आ'ला दर्जे की कुर्सियाँ और ज़ियाफ़तों में सदर नशीनी चाहते हैं। 40 और वो बेवाओं के घरों को दबा बैठते हैं और दिखावे के लिए लम्बी लम्बी दुआएँ करते हैं।”

41 फिर वो हैकल के खज़ाने के सामने बैठा देख रहा था कि लोग हैकल के खज़ाने में कैसे किस तरह डालते हैं और बहुतेरे दौलतमन्द बहुत कुछ डाल रहे थे। 42 इतने में एक कंगाल बेवा ने आ कर दो दमड़ियाँ या'नी एक धेला डाला। 43 उसने अपने शागिर्दों को पास बुलाकर उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो हैकल के खज़ाने

में डाल रहे हैं इस कंगाल बेवा ने उन सब से ज्यादा डाला। ⁴⁴क्योंकि सभी ने अपने माल की ज़ियादती से डाला; मगर इस ने अपनी ग़रीबी की हालत में जो कुछ इस का था या'नी अपनी सारी रोज़ी डाल दी।”

13

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

¹ जब वो हैकल से बाहर जा रहा था तो उसके शागिर्दों में से एक ने उससे कहा “ऐ उस्ताद देख ये कैसे कैसे पत्थर और कैसी कैसी इमारतें हैं!” ² ईसा ने उनसे कहा, “तू इन बड़ी बड़ी इमारतों को देखता है? यहाँ किसी पत्थर पर पत्थर बाक़ी न रहेगा जो गिराया न जाए।”

³ जब वो ज़ैतून के पहाड़ पर हैकल के सामने बैठा था तो पतरस और या'कूब और यूहन्ना और अन्दरयास ने तन्हाई में उससे पूछा। ⁴ “हमें बता कि ये बातें कब होंगी? और जब ये सब बातें पूरी होने को हों उस वक़्त का क्या निशान है।” ⁵ ईसा ने उनसे कहना शुरू किया “ख़बरदार कोई तुम को गुमराह न कर दे। ⁶ बहुतेरे मेरे नाम से आएँगे और कहेंगे ‘वो मैं ही हूँ। और बहुत से लोगों को गुमराह करेंगे। ⁷ जब तुम लड़ाइयाँ और लड़ाइयों की अफ़वाहें सुनो तो घबरा न जाना इनका वाक़े होना ज़रूर है लेकिन उस वक़्त खातिमा न होगा। ⁸ क्योंकि क्रौम पर क्रौम और सल्लतनत पर सल्लतनत चढ़ाई करेगी जगह जगह भुन्चाल आएँगे और काल पड़ेंगे ये बातें मुसीबतों की शुरुआत ही होंगी।”

⁹ “लेकिन तुम ख़बरदार रहो क्योंकि लोग तुम को अदालतों के हवाले करेंगे और तुम इबादतखानों में पीटे जाओगे; और हाकिमों और बादशाहों के सामने मेरी खातिर हाज़िर किए जाओगे ताकि उनके लिए गवाही हो। ¹⁰ और ज़रूर है कि पहले सब क्रौमों में इन्जील की मनादी की जाए। ¹¹ लेकिन जब तुम्हें ले जा कर हवाले करें तो पहले से फ़िक्र न करना कि हम क्या कहें बल्कि जो कुछ उस घड़ी तुम्हें बताया जाए वही करना क्योंकि कहने वाले तुम नहीं हो बल्कि रूह — उल कुदूस है। ¹² भाई को भाई और बेटे को बाप क़त्ल के लिए हवाले करेगा और बेटे माँ बाप के बरख़िलाफ़ खड़े हो कर उन्हें मरवा डालेंगे। ¹³ और मेरे नाम की वजह से सब लोग तुम से अदावत रखेंगे मगर जो आख़िर तक बर्दाश्त करेगा वो नज़ात पाएगा।”

¹⁴ “पस जब तुम उस उजाड़ने वाली नापसन्द चीज़ को उस जगह खड़ी हुई देखो जहाँ उसका खड़ा होना जायज़ नहीं पढ़ने वाला समझ ले उस वक़्त जो यहूदिया में हों वो पहाड़ों पर भाग जाएँ। ¹⁵ जो छत पर हो वो

अपने घर से कुछ लेने को न नीचे उतरे न अन्दर जाए। ¹⁶ और जो खेत में हो वो अपना कपड़ा लेने को पीछे न लोटे। ¹⁷ मगर उन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों और जो दूध पिलाती हों। ¹⁸ और दुआ करो कि ये जाड़ों में न हो। ¹⁹ क्योंकि वो दिन एसी मुसीबत के होंगे कि पैदाइश के शुरू से जिसे खुदा ने पैदा किया न अब तक हुई है न कभी होगी। ²⁰ अगर खुदावन्द उन दिनों को न घटाता तो कोई इंसान न बचता मगर उन चुने हुवों की खातिर जिनको उसने चुना है उन दिनों को घटाया। ²¹ और उस वक़्त अगर कोई तुम से कहे ‘देखो, मसीह यहाँ है’, या ‘देखो वहाँ है’ तो यक़ीन न करना। ²² क्योंकि झूठे मसीह और झूठे नबी उठ खड़े होंगे और निशान और अजीब काम दिखाएँगे ताकि अगर मुम्किन हो तो चुने हुवों को भी गुमराह कर दें। ²³ लेकिन तुम ख़बरदार रहो; देखो मैंने तुम से सब कुछ पहले ही कह दिया है।”

²⁴ “मगर उन दिनों में उस मुसीबत के बाद सूरज अँधेरा हो जाएगा और चाँद अपनी रोशनी न देगा। ²⁵ और आसमान के सितारे गिरने लगेंगे और जो ताक़तें आसमान में हैं वो हिलाई जाएँगी। ²⁶ और उस वक़्त लोग इब्न — ए आदम को बड़ी कुदरत और जलाल के साथ बादलों में आते देखेंगे। ²⁷ उस वक़्त वो फ़रिश्तों को भेज कर अपने चुने हुए को ज़मीन की इन्तिहा से आसमान की इन्तिहा तक चारों तरफ़ से जमा करेगा।”

²⁸ “अब अंज़ीर के दरख़्त से एक तम्सील सीखो; जूँ ही उसकी डाली नर्म होती और पत्ते निकलते हैं तुम जान लेते हो कि गर्मी नज़दीक है। ²⁹ इसी तरह जब तुम इन बातों को होते देखो तो जान लो कि वो नज़दीक बल्कि दरवाज़े पर है। ³⁰ मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हों लें ये नस्त हरगिज़ ख़त्म न होगी। ³¹ आसमान और ज़मीन टल जाएँगे लेकिन मेरी बातें न टलेंगी।”

³² “लेकिन उस दिन या उस वक़्त के बारे कोई नहीं जानता न आसमान के फ़रिश्ते न बेटा मगर बाप। ³³ ख़बरदार; जागते और दुआ करते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि वो वक़्त कब आएगा। ³⁴ ये उस आदमी का सा हाल है जो परदेस गया और उस ने घर से रुख़्सत होते वक़्त अपने नौकरों को इस्तिथार दिया या'नी हर एक को उस का काम बता दिया और दरबान को हुक्म दिया कि जागता रहे। ³⁵ पस जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का मालिक कब आएगा शाम को या आधी रात को या मुर्ग के बाँग देते वक़्त या सुबह को। ³⁶ ऐसा न हो कि अचानक आकर वो तुम को सोते पाए। ³⁷ और जो कुछ मैं तुम से कहता हूँ, वही सब से कहता हूँ जागते रहो!”

14

११११ ११ १११११ १११ १११ ११११

1 दो दिन के बाद फ़सह और ईद — ए — फ़ितर होने वाली थी और सरदार काहिन और फ़कीह मौक़ा ढूँड रहे थे कि उसे क्यूँकर धोखे से पकड़ कर क़त्ल करें। 2 क्यूँकि कहते थे ईद में नहीं “ऐसा न हो कि लोगों में बलवा हो जाए”

3 जब वो बैत अन्नियाह में शमौन जो पहले कौढ़ी था उसके घर में खाना खाने बैठा तो एक औरत जटामासी का बेशक़ीमती इत्र संगे मरमर के इत्र दान में लाई और इत्र दान तोड़ कर इत्र को उसके सिर पर डाला। 4 मगर कुछ अपने दिल में खफ़ा हो कर कहने लगे “ये इत्र किस लिए ज़ाया किया गया। 5 क्यूँकि ये इत्र तक़रीबन तीन सौ दिन की मज़दूरी से ज़्यादा की कीमत में बिक कर ग़रीबों को दिया जा सकता था” और वो उसे मलामत करने लगे। 6 ईसा ने कहा “उसे छोड़ दो उसे क्यूँ दिक्क़ करते हो उसने मेरे साथ भलाई की है। 7 क्यूँकि ग़रीब और ग़ुरबा तो हमेशा तुम्हारे पास हैं जब चाहो उनके साथ नेकी कर सकते हो; लेकिन मैं तुम्हारे पास हमेशा न रहूँगा। 8 जो कुछ वो कर सकी उसने किया उसने दफ़्न के लिए मेरे बदन पर पहले ही से इत्र मला। 9 मैं तुम से सच कहता हूँ कि, तमाम दुनिया में जहाँ कहीं इन्ज़ील की मनादी की जाएगी, ये भी जो इस ने किया उस की यादगारी में बयान किया जाएगा।”

10 फिर यहूदाह इस्करियोती जो उन बारह में से था, सरदार काहिन के पास चला गया ताकि उसे उनके हवाले कर दे। 11 वो ये सुन कर खुश हुए और उसको रुपए देने का इक्क़रार किया और वो मौक़ा ढूँडने लगा कि किस तरह काबू पाकर उसे पकड़वा दे।

12 ईद 'ए' फ़ितर के पहले दिन या'नी जिस रोज़ फ़सह को ज़बह किया करते थे “उसके शागिर्दों ने उससे कहा? तू कहाँ चाहता है कि हम जाकर तेरे लिए फ़सह खाने की तैयारी करें।” 13 उसने अपने शागिर्दों में से दो को भेजा और उनसे कहा “शहर में जाओ एक शख्स पानी का घड़ा लिए हुए तुम्हें मिलेगा, उसके पीछे हो लेना। 14 और जहाँ वो दाख़िल हो उस घर के मालिक से कहना ‘उस्ताद कहता है? मेरा मेहमानख़ाना जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह खाऊँ कहाँ है।’ 15 वो आप तुम को एक बड़ा मेहमानख़ाना आरास्ता और तैयार दिखाएगा वहीं हमारे लिए तैयारी करना।” 16 पस शागिर्द चले गए और शहर में आकर जैसा ईसा ने उन से कहा था वैसा ही पाया और फ़सह को तैयार किया। 17 जब शाम हुई तो वो उन बारह के साथ आया। 18 और जब वो बैठे खा रहे थे तो

ईसा ने कहा “मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम में से एक जो मेरे साथ खाता है मुझे पकड़वाएगा।” 19 वो दुखी होकर और एक एक करके उससे कहने लगे, “क्या मैं हूँ?” 20 उसने उनसे कहा, “वो बारह में से एक है जो मेरे साथ थाल में हाथ डालता है। 21 क्यूँकि इब्न — ए आदम तो जैसा उसके हक़ में लिखा है जाता ही है लेकिन उस आदमी पर अफ़सोस जिसके वसीले से इब्न — ए आदम पकड़वाया जाता है, अगर वो आदमी पैदा ही न होता तो उसके लिए अच्छा था।”

22 और वो खा ही रहे थे कि उसने रोटी ली और बर्क़त देकर तोड़ी और उनको दी और कहा “लो ये मेरा बदन है।” 23 फिर उसने प्याला लेकर शुक्र किया और उनको दिया और उन सभी ने उस में से पिया। 24 उसने उनसे कहा “ये मेरा वो अहद का खून है जो बहुतेरों के लिए बहाया जाता है। 25 मैं तुम से सच कहता हूँ कि अंगूर का शीरा फिर कभी न पिऊँगा; उस दिन तक कि खुदा की बादशाही में नया न पिऊँ।” 26 फिर हम्द गा कर बाहर ज़ैतून के पहाड़ पर गए।

27 और ईसा ने उनसे कहा “तुम सब ठोकर खाओगे क्यूँकि लिखा है, ‘मैं चरवाहे को मारूँगा और भेड़ें इधर उधर हो जाएँगी।’ 28 मगर मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले ग़लील को जाऊँगा।” 29 पतरस ने उससे कहा, “चाहे सब ठोकर खाएँ लेकिन मैं न खाऊँगा।” 30 ईसा ने उससे कहा, “मैं तुझ से सच कहता हूँ। कि तू आज इसी रात मुर्ग़ के दो बार बाँग़ देने से पहले तीन बार मेरा इन्कार करेगा।” 31 लेकिन उसने बहुत ज़ोर देकर कहा, “अगर तेरे साथ मुझे मरना भी पड़े तोभी तेरा इन्कार हरगिज़ न करूँगा।” इसी तरह और सब ने भी कहा।

32 फिर वो एक जगह आए जिसका नाम गतसिमनी था और उसने अपने शागिर्दों से कहा, “यहाँ बैठे रहो जब तक मैं दुआ करूँ।” 33 और पतरस और या'कूब और यूहन्ना को अपने साथ लेकर निहायत हैरान और बेक्क़रार होने लगा। 34 और उसने कहा “मेरी जान निहायत ग़मगीन है यहाँ तक कि मरने की नौबत पहुँच गई है तुम यहाँ ठहरो और जागते रहो।” 35 और वो थोड़ा आगे बढ़ा और ज़मीन पर गिर कर दुआ करने लगा, कि अगर हो सके तो ये वक़्त मुझ पर से टल जाए। 36 और कहा “ऐ अब्बा ऐ बाप तुझ से सब कुछ हो सकता है इस प्याले को मेरे पास से हटा ले तोभी जो मैं चाहता हूँ वो नहीं बल्कि जो तू चाहता है वही हो।” 37 फिर वो आया और उन्हें सोते पाकर पतरस से कहा “ऐ शमौन तू सोता है? क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका। 38 जागो और दुआ करो, ताकि आजमाइश में न पड़ो रूह तो मुसतैद

है मगर जिस्म कमजोर है।” 39 वो फिर चला गया और वही बात कह कर दुआ की। 40 और फिर आकर उन्हें सोते पाया क्योंकि उनकी आँखें नींद से भरी थीं और वो न जानते थे कि उसे क्या जवाब दें। 41 फिर तीसरी बार आकर उनसे कहा “अब सोते रहो और आराम करो बस वक्त आ पहुँचा है देखो; इब्न — ए आदम गुनाहगारों के हाथ में हवाले किया जाता है। 42 उठो चलो देखो मेरा पकड़वाने वाला नज़दीक आ पहुँचा है।”

43 वो ये कह ही रहा था कि फ़ौरन यहूदाह जो उन बारह में से था और उसके साथ एक बड़ी भीड़ तलवारों और लाठियाँ लिए हुए सरदार काहिनों और फ़कीहों की तरफ़ से आ पहुँची। 44 और उसके पकड़वाने वाले ने उन्हें ये निशान दिया था जिसका मैं बोसा लूँ वही है उसे पकड़ कर हिफ़ाज़त से ले जाना। 45 वो आकर फ़ौरन उसके पास गया और कहा, “ऐ रब्बी!” और उसके बोसे लिए। 46 उन्होंने उस पर हाथ डाल कर उसे पकड़ लिया। 47 उन में से जो पास खड़े थे एक ने तलवार खींचकर सरदार काहिन के नौकर पर चलाई और उसका कान उड़ा दिया। 48 ईसा ने उनसे कहा “क्या तुम तलवारों और लाठियाँ लेकर मुझे डाकू की तरह पकड़ने निकले हो? 49 मैं हर रोज़ तुम्हारे पास हैकल में ता'लीम देता था, और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा लेकिन ये इसलिए हुआ कि लिखा हुआ पूरा हों।” 50 इस पर सब शगिर्द उसे छोड़कर भाग गए। 51 मगर एक जवान अपने नंगे बदन पर महीन चादर ओढ़े हुए उसके पीछे हो लिया, उसे लोगों ने पकड़ा। 52 मगर वो चादर छोड़ कर नंगा भाग गया।

53 फिर वो ईसा को सरदार काहिन के पास ले गए; और अब सरदार काहिन और बुजुर्ग और फ़कीह उसके यहाँ जमा हुए। 54 पतरस फ़ासले पर उसके पीछे पीछे सरदार काहिन के दिवानखाने के अन्दर तक गया और सिपाहियों के साथ बैठ कर आग तापने लगा। 55 और सरदार काहिन सब सदरे — अदालत वाले ईसा को मार डालने के लिए उसके खिलाफ़ गवाही ढूँढ़ने लगे मगर न पाई। 56 क्योंकि बहुतेरों ने उस पर झूठी गवाहियाँ तो दीं लेकिन उनकी गवाहियाँ सहीह न थीं। 57 फिर कुछ ने उठकर उस पर ये झूठी गवाही दी। 58 “हम ने उसे ये कहते सुना है मैं इस मक़दिस को जो हाथ से बना है ढाऊँगा और तीन दिन में दूसरा बनाऊँगा जो हाथ से न बना हो।” 59 लेकिन इस पर भी उसकी गवाही सही न निकली। 60 “फिर सरदार काहिन ने बीच में खड़े हो कर ईसा से पूछा तू कुछ जवाब नहीं देता? ये तेरे खिलाफ़ क्या गवाही देते हैं।” 61 “मगर वो खामोश ही रहा और कुछ जवाब न दिया? सरदार काहिन ने उससे

फिर सवाल किया और कहा क्या तू उस यूसुफ़ का बेटा मसीह है।” 62 ईसा ने कहा, “हाँ मैं हूँ। और तुम इब्न — ए आदम को क़ादिर ए मुतल्लिक की दहनी तरफ़ बैठे और आसमान के बादलों के साथ आते देखोगे।” 63 सरदार काहिन ने अपने कपड़े फाड़ कर कहा “अब हमें गवाहों की क्या ज़रूरत रही। 64 तुम ने ये कुफ़र सुना तुम्हारी क्या राय है? उन सब ने फ़तवा दिया कि वो क़त्ल के लायक़ है।” 65 तब कुछ उस पर थूकने और उसका मुँह ढाँपने और उसके मुक्के मारने और उससे कहने लगे “नबुव्वत की बातें सुना! और सिपाहियों ने उसे तमाचे मार मार कर अपने क़ब्ज़े में लिया।”

66 जब पतरस नीचे सहन में था तो सरदार काहिन की लौंडियों में से एक वहाँ आई। 67 और पतरस को आग तापते देख कर उस पर नज़र की और कहने लगी “तू भी उस नासरी ईसा के साथ था।” 68 उसने इन्कार किया और कहा “मैं तो न जानता और न समझता हूँ।” कि तू क्या कहती है फिर वो बाहर सहन में गया [और मुर्ग ने बाँग दी]। 69 वो लौंडी उसे देख कर उन से जो पास खड़े थे, फिर कहने लगी “ये उन में से है।” 70 “मगर उसने फिर इन्कार किया और थोड़ी देर बाद उन्होंने जो पास खड़े थे पतरस से फिर कहा बेशक तू उन में से है क्योंकि तू गलीली भी है।” 71 “मगर वो ला'नत करने और क़सम खाने लगा मैं इस आदमी को जिसका तुम ज़िक़र करते हो नहीं जानता।” 72 और फ़ौरन मुर्ग ने दूसरी बार बाँग दी पतरस को वो बात जो ईसा ने उससे कही थी याद आई “मुर्ग के दो बार बाँग देने से पहले तू तीन बार इन्कार करेगा” और उस पर ग़ौर करके रो पड़ा।

15

22222 22 22222222 22 222222 2222 22222

1 और फ़ौरन सुबह होते ही सरदार काहिनो ने और बुजुर्गों और फ़कीहों और सब सदर 'ए अदालत वालों समेत सलाह करके ईसा को बन्धवाया और ले जा कर पीलातुस के हवाले किया। 2 और पीलातुस ने उससे पूछा, “क्या तू यहूदियों का बादशाह है?” उसने जवाब में उस से कहा, “तू खुद कहता है।” 3 और सरदार काहिन उस पर बहुत सी बातों का इल्ज़ाम लगाते रहे। 4 पीलातुस ने उस से दोबारा सवाल करके ये कहा “तू कुछ जवाब नहीं देता देख ये तुझ पर कितनी बातों का इल्ज़ाम लगाते है।” 5 ईसा ने फिर भी कुछ जवाब न दिया यहाँ तक कि पीलातुस ने ता'अ'ज्जुब किया।

6 और वो 'ईद पर एक कैदी को जिसके लिए लोग अज़्र करते थे छोड़ दिया करता था। 7 और बर'अब्बा नाम एक आदमी उन बागियों के साथ कैद में पड़ा था जिन्होंने

बगावत में खून किया था।⁸ और भीड़ उस पर चढ़कर उस से अर्ज करने लगी कि जो तेरा दस्तूर है वो हमारे लिए कर।⁹ पीलातुस ने उन्हें ये जवाब दिया, “क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी खातिर यहूदियों के बादशाह को छोड़ दूँ?”¹⁰ क्योंकि उसे मा'लूम था कि सरदार काहिन ने इसको हसद से मेरे हवाले किया है।¹¹ मगर सरदार काहिनों ने भीड़ को उभारा ताकि पीलातुस उनकी खातिर बर'अब्बा ही को छोड़ दे।¹² “पीलातुस ने दोबारा उनसे कहा फिर जिसे तुम यहूदियों का बादशाह कहते हो? उसे मैं क्या करूँ।”¹³ वो फिर चिल्लाए “वो मस्तूब हो।”¹⁴ पीलातुस ने उनसे कहा “क्यूँ? उस ने क्या बुराई की है?” वो और भी चिल्लाए “वो मस्तूब हो!”¹⁵ पीलातुस ने लोगों को खुश करने के इरादे से उनके लिए बर'अब्बा को छोड़ दिया और ईसा को कोड़े लगवाकर हवाले किया कि मस्तूब हो।

¹⁶ और सिपाही उसको उस सहन में ले गए, जो प्रैतोरियुन कहलाता है और सारी पलटन को बुला लाए।¹⁷ और उन्होंने ने उसे इर्गवानी चोगा पहनाया और काँटों का ताज बना कर उसके सिर पर रखवा।¹⁸ और उसे सलाम करने लगे “ऐ यहूदियों के बादशाह! आदाब।”¹⁹ और वो उसके सिर पर सरकंडा मारते और उस पर थूकते और घुटने टेक टेक कर उसे सज्दा करते रहे।²⁰ और जब उसे ठट्ठों में उड़ा चुके तो उस पर से इर्गवानी चोगा उतार कर उसी के कपड़े उसे पहनाए फिर उसे मस्तूब करने को बाहर ले गए।

²¹ और शमौन नाम एक कुरेनी आदमी सिकन्दर और रुफ़स का बाप देहात से आते हुए उधर से गुज़रा उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसकी सलीब उठाए।²² और वो उसे मुक़ाम'ए गुल्गुता पर लाए जिसका तरजुमा (खोपड़ी की जगह) है।²³ और मुर मिली हुई मय उसे देने लगे मगर उसने न ली।²⁴ और उन्होंने उसे मस्तूब किया और उसके कपड़ों पर पर्ची डाली कि किसको क्या मिले उन्हें बाँट लिया।²⁵ और पहर दिन चढ़ा था जब उन्होंने उसको मस्तूब किया।²⁶ और उसका इल्ज़ाम लिख कर उसके ऊपर लगा दिया गया: “यहूदियों का बादशाह।”²⁷ और उन्होंने उसके साथ दो डाकू, एक उसकी दाहिनी और एक उसकी बाईं तरफ़ मस्तूब किया।²⁸ [तब इस मज़्मून का वो लिखा हुआ कि वो बदकारों में गिना गया पूरा हुआ]²⁹ “और राह चलनेवाले सिर हिला हिला कर उस पर ला'नत करते और कहते थे वाह मक़दिस के ढाने वाले और तीन दिन में बनाने वाले।³⁰ सलीब पर से उतर कर अपने आप को बचा!”³¹ “इसी तरह सरदार काहिन भी फ़कीहों के साथ मिलकर आपस में ठट्ठे से कहते थे

इसने औरों को बचाया अपने आप को नहीं बचा सकता।³² इस्राईल का बादशाह मसीह; अब सलीब पर से उतर आए ताकि हम देख कर ईमान लाएँ और जो उसके साथ मस्तूब हुए थे वो उस पर लानतान करते थे।”

³³ जब दो पहर हुई तो पूरे मुल्क में अँधेरा छा गया और तीसरे पहर तक रहा।³⁴ तीसरे पहर ईसा बड़ी आवाज़ से चिल्लाया, “इलोही, इलोही लमा शबक़तनी?” जिसका तरजुमा है, “ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, तूने मुझे क्यूँ छोड़ दिया?”³⁵ जो पास खड़े थे उन में से कुछ ने ये सुनकर कहा “देखो ये एलियाह को बुलाता है।”³⁶ और एक ने दौड़ कर सोखते को सिरके में डबोया और सरकंडे पर रख कर उसे चुसाया और कहा, “ठहर जाओ देखें तो एलियाह उसको उतारने आता है या नहीं।”³⁷ फिर ईसा ने बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर जान दे दिया।³⁸ और हैकल का पर्दा उपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया।³⁹ और जो सिपाही उसके सामने खड़ा था उसने उसे यूँ जान देते हुए देखकर कहा “बेशक ये आदमी खुदा का बेटा था।”

⁴⁰ कई औरतें दूर से देख रही थीं उन में मरियम मगदलिनी और छोटे या'कूब और योसेस की माँ मरियम और सलोमी थीं⁴¹ जब वो गलील में था ये उसके पीछे हो लीं और उसकी खिदमत करती थीं और और भी बहुत सी औरतें थीं जो उसके साथ येरूशलेम से आई थीं।

⁴² जब शाम हो गई तो इसलिए कि तैयारी का दिन था जो सबत से एक दिन पहले होता है।⁴³ अरिमतियाह का रहने वाला यूसुफ़ आया जो इज़ज़तदार मुशीर और खुद भी खुदा की बादशाही का मुन्तज़िर था और उसने हिम्मत से पीलातुस के पास जाकर ईसा की लाश माँगी⁴⁴ और पीलातुस ने ता'अज्जुब किया कि वो ऐसे जल्द मर गया? और सिपाही को बुला कर उस से पूछा उसको मरे देर हो गई? ⁴⁵ जब सिपाही से हाल मा'लूम कर लिया तो लाश यूसुफ़ को दिला दी।⁴⁶ उसने एक महीन चादर मोल ली और लाश को उतार कर उस चादर में कफ़नाया और एक क़ब्र के अन्दर जो चट्टान में खोदी गई थी रखवा और क़ब्र के मुँह पर एक पत्थर लुढ़का दिया।⁴⁷ और मरियम मगदलिनी और योसेस की माँ मरियम देख रही थी कि वो कहाँ रखवा गया है।

16

~~~~~

<sup>1</sup> जब सबत का दिन गुज़र गया तो मरियम मगदलिनी और या'कूब की माँ मरियम और सलोमी ने खुशबूदार चीज़ें मोल लीं ताकि आकर उस पर मलें।<sup>2</sup> वो हफ़्ते के पहले दिन बहुत सवेरे जब सूरज निकला ही था क़ब्र

पर आई।<sup>3</sup> और आपस में कहती थी “हमारे लिए पत्थर को क़बर के मुँह पर से कौन लुढ़काएगा?”<sup>4</sup> जब उन्होंने ने निगाह की तो देखा कि पत्थर लुढ़का हुआ है क्योंकि वो बहुत ही बड़ा था।<sup>5</sup> क़बर के अन्दर जाकर उन्होंने ने एक जवान को सफ़ेद जामा पहने हुए दहनी तरफ़ बैठे देखा और निहायत हैरान हुई।<sup>6</sup> उसने उनसे कहा ऐसी हैरान न हो तुम ईसा नासरी को “जो मस्लूब हुआ था तलाश रही हो; जी उठा है वो यहाँ नहीं है देखो ये वो जगह है जहाँ उन्होंने उसे रखवा था।<sup>7</sup> लेकिन तुम जाकर उसके शागिर्दों और पतरस से कहो कि वो तुम से पहले गलील को जाएगा तुम वहीं उसको देखोगे जैसा उसने तुम से कहा।”<sup>8</sup> और वो निकल कर क़बर से भागीं क्योंकि कपकपी और हैबत उन पर ग़ालिब आ गई थी और उन्होंने किसी से कुछ न कहा क्योंकि वो डरती थीं।

<sup>9</sup> हफ़्ते के पहले दिन जब वो सवेरे जी उठा तो पहले मरियम मग़दलिनी को जिस में से उसने सात बदरूहें निकाली थीं दिखाई दिया।<sup>10</sup> उसने जाकर उसके शागिर्दों को जो मातम करते और रोते थे ख़बर दी।<sup>11</sup> उन्होंने ये सुनकर कि वो जी उठा है और उसने उसे देखा है यक़ीन न किया।

<sup>12</sup> इसके बाद वो दूसरी सूरत में उन में से दो को जब वो देहात की तरफ़ जा रहे थे दिखाई दिया।<sup>13</sup> उन्होंने भी जाकर बाक़ी लोगों को ख़बर दी; मगर उन्होंने उन का भी यक़ीन न किया।

<sup>14</sup> फिर वो उन ग़यारह शागिर्दों को भी जब खाना खाने बैठे थे दिखाई दिया और उसने उनकी बे'ऐ'तिकादी और सख़्त दिली पर उनको मलामत की क्योंकि जिन्हों ने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था उन्होंने उसका यक़ीन न किया था।<sup>15</sup> और उसने उनसे कहा, “तुम सारी दुनियाँ में जाकर सारी मख़लूक के सामने इन्ज़ील की मनादी करो।<sup>16</sup> जो ईमान लाए और बपतिस्मा ले वो नजात पाएगा और जो ईमान न लाए वो मुज़रिम ठहराया जाएगा।<sup>17</sup> और ईमान लाने वालों के दर्मियान ये मोज़िज़े होंगे वो मेरे नाम से बदरूहों को निकालेंगे; नई नई ज़बाने बोलेंगे।<sup>18</sup> साँपों को उठा लेंगे और अगर कोई हलाक करने वाली चीज़ पीएँगे तो उन्हें कुछ तकलीफ़ न पहुँचेगी वो बीमारों पर हाथ रखेंगे तो अच्छे हो जाएँगे।”

<sup>19</sup> गरज़ खुदावन्द उनसे कलाम करने के बाद आसमान पर उठाया गया और खुदा की दहनी तरफ़ बैठ गया।<sup>20</sup> फिर उन्होंने निकल कर हर जगह मनादी की और खुदावन्द उनके साथ काम करता रहा और कलाम को उन मोज़िज़ों के वसीले से जो साथ साथ होते थे साबित करता रहा; आमीन।

## मुकद्दस लूका की मा'रिफ़त इन्जील

?????????? ??

1 क़दीम मुसन्निफ़ों का आम एत्काद यह है कि लूका जो डाक्टर था वह लूका की किताब का मुसन्निफ़ था और उस की तहरीर से ज़ाहिर होता है कि वह दूसरी पीढ़ी का मसीही है। रिवायात के मुताबिक़ वह एक ग़ैर क्रौम का सा नज़र आता है। वह शुरू शुरू में एक प्रचारक था, अपनी इन्जील और आमाल की किताब लिखते हुए मनादी के काम में पौलूस का साथ दिया (कुलुस्सियों 4:14; 2 तीमुथियुस 4:11)।

????? ?????? ??

इस के तस्नीफ़ की तारीख़ तक्ररीबन 60 - 80 ईस्वी के आसपास है।

लूका ने अपनी तहरीर कैसरिया से शुरू करके रोम में ख़त्म किया। तहरीर किए जाने की ख़ास जगहें बैतलहम, गलील, यहूदिया और यरूशलेम हो सकते थे।

?????? ?????????????? ??????

लूका की किताब भाई थियोफ़ुलुस को मख़सूस किया गया है, जिस के मायने हैं, “खुदा का प्यारा” यह साफ़ नहीं है कि वह पहले से ही एक मसीही था या मसीही बनना चाहता था। हकीक़त यह है कि लूका उस को बहुत ही तज़ुर्बेकार समझता था (लूका 1:3) ऐसा सोचा जाता है कि लूका रोम के ओहदेदारों में से एक था मगर कई एक सबूतों की बिना पर वह एक ग़ैर क्रौम नाज़रीन व सामईन में से एक था। येसू की बाबत उस का नज़रिया इब्न — ए — आदम बतौर था और खुदा की बादशाही पर उसने ज़्यादा ज़ोर दिया (लूका 5:24, 19:10, 17:20 — 21, 13:18)।

????? ???????????

येसू की ज़िन्दगी का बयान करते हुए लूका ने येसू को इब्न — ए — आदम बतौर पेश किया, और उस ने इस किताब को थियोफ़ुलुस के नाम मख़सूस किया ताकि जिस तरह उसने सीखा और समझा था वह सब कामिल तौर से ज़ाहिरे में आ सके (लूका 1:4) सताव के दौरान मसीहियत के बचाव की ख़ातिर लूका इस नविश्टे को लिख रहा था यह जताने के लिए कि येसू के शागिर्दों की बाबत कोई मख़रब या न पाक इरादा नहीं है।

???????

येसू — कामिल शख्स।  
बैरूनी खाका

1. पैदाइश और येसू की आगाज़ी ज़िन्दगी — 1:5-2:52
2. येसू की ख़िदमतगुज़ारी की शुरूआत — 3:1-4:13
3. येसू नजात का बानी — 4:14-9:50
4. येसू का सलीब की तरफ़ बढ़ना — 9:51-19:27
5. येसू का यरूशलेम में फ़तह के साथ दाख़िल होना, मसलूबियत और क़्यामत: — 19:28-24:53

????????

1 चूँकि बहुतों ने इस पर क़मर बाँधी है कि जो बातें हमारे दरमियान वाक़े' हुई उनको सिलसिलावार बयान करें। 2 जैसा कि उन्होंने जो शुरू' से खुद देखने वाले और कलाम के ख़ादिम थे उनको हम तक पहुँचाया। 3 इसलिए ऐ मु'अज़्ज़िज़ थियुफ़िलुस! मैंने भी मुनासिब जाना कि सब बातों का सिलसिला शुरू' से ठीक — ठीक मालूम करके उनको तेरे लिए तरतीब से लिखूँ। 4 ताकि जिन बातों की तूने तालीम पाई है उनकी पुख़्तगी तुझे मालूम हो जाए।

5 यहूदिया के बादशाह हेरोदेस के ज़माने में अबिय्याह के फ़रीके में से ज़करियाह नाम एक काहिन था और उसकी बीवी हारून की औलाद में से थी और उसका नाम इलीशिबा' था। 6 और वो दोनों खुदा के सामने रास्तबाज़ और खुदावन्द के सब अहक़ाम — ओ — क़वानीन पर बे — 'ऐब चलने वाले थे। 7 और उनके औलाद न थी क्यूँकि इलीशिबा' बाँझ थी और दोनों उम्र रसीदा थे।

8 जब वो खुदा के हुज़ूर अपने फ़रीके की बारी पर इमामत का काम अन्जाम देता था तो ऐसा हुआ, 9 कि इमामत के दस्तूर के मुवाफ़िक़ उसके नाम की पर्ची निकली कि खुदावन्द के हुज़ूरी में जाकर खुशबू जलाए। 10 और लोगों की सारी जमा 'अत खुशबू जलाते वक़्त बाहर दुआ कर रही थी। 11 अचानक खुदा का एक फ़रिश्ता ज़ाहिर हुआ जो खुशबू जलाने की कुर्बानगाह के दहनी तरफ़ खड़ा हुआ उसको दिखाई दिया। 12 उसे देख कर ज़करियाह घबराया और बहुत डर गया। 13 लेकिन फ़रिश्ते ने उस से कहा, ज़करियाह, मत डर! खुदा ने तेरी दुआ सुन ली है। तेरी बीवी इलीशिबा के बेटा होगा। उस का नाम युहन्ना रखना। 14 वह न सिर्फ़ तेरे लिए खुशी और मुसरत का बाइस होगा, बल्कि बहुत से लोग उस की पैदाइश पर खुशी मनाएँगे। 15 क्यूँकि वह खुदा के नज़दीक अज़ीम होगा। ज़रूरी है कि वह मय और शराब से परहेज़ करे। वह पैदा होने से पहले ही रूह — उल — कुद्स से भरपूर होगा। 16 और इस्राईली क्रौम में

से बहुतों को खुदा उन के खुदा के पास वापस लाएगा।  
 17 वह एलियाह की रूह और कुव्वत से खुदावन्द के आगे आगे चलेगा। उस की खिदमत से वालिदों के दिल अपने बच्चों की तरफ माइल हो जाएंगे और नाफरमान लोग रास्तबाजों की अक्लमन्दी की तरफ फिरेगे। यूँ वह इस क्रौम को खुदा के लिए तय्यार करेगा।” 18 ज़करियाह ने फ़रिश्ते से पूछा, “मैं किस तरह जानूँ कि यह बात सच है? मैं खुद बूढ़ा हूँ और मेरी बीवी भी उम्र रसीदा है।” 19 फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “मैं जिब्राईल हूँ जो खुदावन्द के सामने खड़ा रहता हूँ। मुझे इसी मक्सद के लिए भेजा गया है कि तुझे यह खुशखबरी सुनाऊँ। 20 लेकिन तूने मेरी बात का यक़ीन नहीं किया इस लिए तू खामोश रहेगा और उस वक़्त तक बोल नहीं सकेगा जब तक तेरे बेटा पैदा न हो। मेरी यह बातें अपने वक़्त पर ही पूरी होंगी।” 21 इस दौरान बाहर के लोग ज़करियाह के इन्तिज़ार में थे। वह हैरान होते जा रहे थे कि उसे वापस आने में क्यूँ इतनी देर हो रही है। 22 आखिरकार वह बाहर आया, लेकिन वह उन से बात न कर सका। तब उन्होंने ने जान लिया कि उस ने खुदा के घर में ख़ाब देखा है। उस ने हाथों से इशारे तो किए, लेकिन खामोश रहा। 23 ज़करियाह अपने वक़्त तक खुदा के घर में अपनी खिदमत अन्जाम देता रहा, फिर अपने घर वापस चला गया। 24 थोड़े दिनों के बाद उस की बीवी इलीशिबा हामिला हो गई और वह पाँच माह तक घर में छुपी रही। 25 उस ने कहा, “खुदावन्द ने मेरे लिए कितना बड़ा काम किया है, क्यूँकि अब उस ने मेरी फ़िक्र की और लोगों के सामने से मेरी रुस्वाई दूर कर दी।”

26 इलीशिबा छः माह से हामिला थी जब खुदा ने जिब्राईल फ़रिश्ते को एक कुंवारी के पास भेजा जो नासरत में रहती थी। नासरत गलील का एक शहर है और कुंवारी का नाम मरियम था। 27 उस की मंगनी एक मर्द के साथ हो चुकी थी जो दाऊद बादशाह की नस्ल से था और जिस का नाम यूसुफ़ था। 28 फ़रिश्ते ने उस के पास आ कर कहा, “ऐ ख़ातून जिस पर खुदा का ख़ास फ़ज़ल हुआ है, सलाम! खुदा तेरे साथ है।” 29 मरियम यह सुन कर घबरा गई और सोचा, यह किस तरह का सलाम है? 30 लेकिन फ़रिश्ते ने अपनी बात जारी रखी और कहा, “ऐ मरियम, मत डर, क्यूँकि तुझ पर खुदा का फ़ज़ल हुआ है। 31 तू हमिला हो कर एक बेटे को पैदा करेगी। तू उस का नाम ईसा (नजात देने वाला) रखना। 32 वह बड़ा होगा और खुदावन्द का बेटा कहलाएगा। खुदा हमारा खुदा उसे उस के बाप दाऊद के तख़्त पर बिठाएगा 33 और वह हमेशा तक इस्राईल

पर हुकूमत करेगा। उस की सल्तनत कभी ख़त्म न होगी।” 34 मरियम ने फ़रिश्ते से कहा, “यह क्यूँकर हो सकता है? अभी तो मैं कुंवारी हूँ।” 35 फ़रिश्ते ने जवाब दिया, “रूह — उल — कुदूस तुझ पर नाज़िल होगा, खुदावन्द की कुदरत का साया तुझ पर छा जाएगा। इस लिए यह बच्चा कुदूस होगा और खुदा का बेटा कहलाएगा। 36 और देख, तेरी रिश्तेदार इलीशिबा के भी बेटा होगा हालाँकि वह उम्ररसीद है। गरचे उसे बाँझ करार दिया गया था, लेकिन वह छः माह से हामिला है। 37 क्यूँकि खुदा के नज़दीक कोई काम नामुमकिन नहीं है।” 38 मरियम ने जवाब दिया, “मैं खुदा की खिदमत के लिए हाज़िर हूँ। मेरे साथ वैसा ही हो जैसा आप ने कहा है।” इस पर फ़रिश्ता चला गया।

39 उन दिनों में मरियम यहूदिया के पहाड़ी इलाक़े के एक शहर के लिए रवाना हुई। उस ने जल्दी जल्दी सफ़र किया। 40 वहाँ पहुँच कर वह ज़करियाह के घर में दाख़िल हुई और इलीशिबा को सलाम किया। 41 मरियम का यह सलाम सुन कर इलीशिबा का बच्चा उस के पेट में उछल पड़ा और इलीशिबा खुद रूह — उल — कुदूस से भर गई। 42 उस ने बुलन्द आवाज़ से कहा, “तू तमाम औरतों में मुबारिक है और मुबारिक है तेरा बच्चा! 43 मैं कौन हूँ कि मेरे खुदावन्द की माँ मेरे पास आई! 44 जैसे ही मैं ने तेरा सलाम सुना बच्चा मेरे पेट में खुशी से उछल पड़ा। 45 तू कितनी मुबारिक है, क्यूँकि तू ईमान लाई कि जो कुछ खुदा ने फ़रमाया है वह पूरा होगा।”

46 इस पर मरियम ने कहा, “मेरी जान खुदा की बड़ाई करती है 47 और मेरी रूह मेरे मुन्जी खुदावन्द से बहुत खुश है। 48 क्यूँकि उस ने अपनी खादिमा की पस्ती पर नज़र की है। हाँ, अब से तमाम नसलें मुझे मुबारिक कहेंगी, 49 क्यूँकि उस क़ादिर ने मेरे लिए बड़े — बड़े काम किए हैं, और उसका नाम पाक है। 50 और ख़ौफ़ रहम उन पर जो उससे डरते हैं, पुशत — दर — पुशत रहता है। 51 उसने अपने बाज़ू से ज़ोर दिखाया, और जो अपने आपको बड़ा समझते थे उनको तितर बितर किया। 52 उसने इस्त्रियार वालों को तख़्त से गिरा दिया, और पस्तहालों को बुलन्द किया।



53 उसने भूखों को अच्छी चीजों से  
सेर कर दिया,

और दौलतमन्दों को खाली हाथ लौटा दिया।

54 उसने अपने खादिम इस्राईल को संभाल लिया,  
ताकि अपनी उस रहमत को याद फ़रमाए।

55 जो अब्रहाम और उसकी नस्ल पर हमेशा तक रहेगी,  
जैसा उसने हमारे बाप — दादा से कहा था।”

56 और मरियम तीन महीने के करीब उसके साथ रहकर  
अपने घर को लौट गई।

57 और इलीशिबा' के वज़'ए हम्मल का वक्रत आ पहुँचा  
और उसके बेटा हुआ। 58 उसके पड़ोसियों और रिश्तेदारों  
ने ये सुनकर कि खुदावन्द ने उस पर बड़ी रहमत की,  
उसके साथ खुशी मनाई। 59 और आठवें दिन ऐसा हुआ  
कि वो लड़के का खतना करने आए और उसका नाम  
उसके बाप के नाम पर ज़करियाह रखने लगे। 60 मगर  
उसकी माँ ने कहा, “नहीं बल्कि उसका नाम युहन्ना रखा  
जाए।” 61 उन्होंने कहा, “तेरे खानदान में किसी का ये  
नाम नहीं।” 62 और उन्होंने उसके बाप को इशारा किया  
कि तू उसका नाम क्या रखना चाहता है? 63 उसने तस्ली  
माँग कर ये लिखा, उसका नाम युहन्ना है, और सब  
ने ता'ज्जुब किया। 64 उसी दम उसका मुँह और जबान  
खुल गई और वो बोलने और खुदा की हम्द करने लगा।  
65 और उनके आसपास के सब रहने वालों पर दहशत  
छा गई और यहूदिया के तमाम पहाड़ी मुल्क में इन सब  
बातों की चर्चा फैल गई। 66 और उनके सब सुनने वालों  
ने उनको सोच कर दिलों में कहा, “तो ये लड़का कैसा  
होने वाला है?” क्योंकि खुदावन्द का हाथ उस पर था।

67 और उस का बाप ज़करियाह रूह — उल — कुदूस  
से भर गया और नबुव्वत की राह से कहने लगा कि:

68 “खुदावन्द इस्राईल के खुदा की हम्द हो क्योंकि  
उसने अपनी उम्मत पर तवज्जुह करके  
उसे छूटकारा दिया।

69 और अपने खादिम दाऊद के घराने में  
हमारे लिए नजात का सींग  
निकाला,

70 (जैसा उसने अपने पाक नबियों की ज़बानी कहा था  
जो  
कि दुनिया के शुरू' से होते आए हैं)

71 या'नी हम को हमारे दुश्मनों से और सब  
बुग़ज़ रखने वालों के हाथ से नजात बख़्शी।

72 ताकि हमारे बाप — दादा पर रहम करे और अपने  
पाक 'अहद को याद फ़रमाए।

73 या'नी उस कसम को जो उसने हमारे बाप  
अब्रहाम से खाई थी,

74 कि वो हमें ये बख़्शिश देगा कि अपने  
दुश्मनों के हाथ से छूटकर,

75 उसके सामने पाकीज़गी और रास्तबाज़ी  
से उम्र भर बेख़ौफ़ उसकी इबादत करें

76 और ऐ लड़के तू खुदा ता'ला का  
नबी कहलाएगा

क्योंकि तू खुदावन्द की राहें तैयार करने को  
उसके आगे आगे चलेगा,

77 ताकि उसकी उम्मत को नजात का 'इल्म बख़्शे  
जो उनको गुनाहों की मु'आफ़ी से हासिल हो।

78 ये हमारे खुदा की रहमत से होगा;

जिसकी वजह से 'आलम — ए — बाला का सूरज हम  
पर निकलेगा,

79 ताकि उनको जो अन्धेरे और मौत के साए में बैठे हैं  
रोशनी बख़्शे,

और हमारे क़दमों को सलामती की राह पर डाले।”

80 और वो लड़का बढ़ता और रूह में कुव्वत पाता  
गया, और इस्राईल पर ज़ाहिर होने के दिन तक  
जंगलों में रहा।

## 2

2222 22 2222222

1 उन दिनों में ऐसा हुआ कि कैसर औगुस्तस की तरफ़  
से ये हुक्म जारी हुआ कि सारी दुनियाँ के लोगों के  
नाम लिखे जाएँ। 2 ये पहली इस्म नवीसी सूरिया के  
हाकिम कोरिन्युस के 'अहद में हुई। 3 और सब लोग  
नाम लिखवाने के लिए अपने — अपने शहर को गए।  
4 पस यूसुफ़ भी गलील के शहर नासरत से दाऊद के  
शहर बैतलहम को गया जो यहूदिया में है, इसलिए कि  
वो दाऊद के घराने और औलाद से था। 5 ताकि अपनी  
होने वाली बीवी मरियम के साथ जो हामिला थी, नाम  
लिखवाए। 6 जब वो वहाँ थे तो ऐसा हुआ कि उसके  
वज़ा — ए — हम्मल का वक्रत आ पहुँचा, 7 और उसका  
पहलौटा बेटा पैदा हुआ और उसने उसको कपड़े में लपेट  
कर चरनी में रखवा क्योंकि उनके लिए सराय में जगह न  
थी।

8 उसी 'इलाक़े में चरवाहे थे, जो रात को मैदान में  
रहकर अपने गल्ले की निगहबानी कर रहे थे। 9 और  
खुदावन्द का फ़रिश्ता उनके पास आ खड़ा हुआ, और  
खुदावन्द का जलाल उनके चारोंतरफ़ चमका, और वो  
बहुत डर गए। 10 मगर फ़रिश्ते ने उनसे कहा, डरो मत!  
क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़ी खुशी की बशारत देता हूँ  
जो सारी उम्मत के वास्ते होगी, 11 कि आज दाऊद के  
शहर में तुम्हारे लिए एक मुन्जी पैदा हुआ है, या'नी

मसीह खुदावन्द।<sup>12</sup> इसका तुम्हारे लिए ये निशान है कि तुम एक बच्चे को कपड़े में लिपटा और चरनी में पड़ा हुआ पाओगे।<sup>13</sup> और यकायक उस फ़रिश्ते के साथ आसमानी लश्कर की एक गिरोह खुदा की हम्द करती और ये कहती ज़ाहिर हुई कि:<sup>14</sup> “आलम — ए — बाला पर खुदा की तम्जीद हो और ज़मीन पर आदमियों में जिनसे वो राज़ी है सुलह।”

<sup>15</sup> जब फ़रिश्ते उनके पास से आसमान पर चले गए तो ऐसा हुआ कि चरवाहों ने आपस में कहा, “आओ, बैतलहम तक चलें और ये बात जो हुई है और जिसकी खुदावन्द ने हम को खबर दी है देखें।”<sup>16</sup> पस उन्होंने जल्दी से जाकर मरियम और यूसुफ़ को देखा और इस बच्चे को चरनी में पड़ा पाया।<sup>17</sup> उन्हें देखकर वो बात जो उस लड़के के हक़ में उनसे कही गई थी मशहूर की,<sup>18</sup> और सब सुनने वालों ने इन बातों पर जो चरवाहों ने उनसे कही ता'ज्जुब किया।<sup>19</sup> मगर मरियम इन सब बातों को अपने दिल में रखकर ग़ौर करती रही।<sup>20</sup> और चरवाहे, जैसा उनसे कहा गया था वैसा ही सब कुछ सुन कर और देखकर खुदा की तम्जीद और हम्द करते हुए लौट गए।

<sup>21</sup> जब आठ दिन पुरे हुए और उसके खतने का वक़्त आया, तो उसका नाम ईसा रखवा गया। जो फ़रिश्ते ने उसके रहम में पड़ने से पहले रखवा था।<sup>22</sup> फिर जब मूसा की शरी'अत के मुवाफ़िक़ उनके पाक होने के दिन पुरे हो गए, तो वो उसको येरूशलेम में लाए ताकि खुदावन्द के आगे हाज़िर करें<sup>23</sup> (जैसा कि खुदावन्द की शरी'अत में लिखा है कि हर एक पहलौटा खुदावन्द के लिए मुक़द्दस ठहरेगा)<sup>24</sup> और खुदावन्द की शरी'अत के इस क़ौल के मुवाफ़िक़ कुर्बानी करें, कि फ़ाख़्ता का एक जोड़ा या कबूतर के दो बच्चे लाओ।

<sup>25</sup> और देखो, येरूशलेम में शमौन नाम एक आदमी था, और वो आदमी रास्तबाज़ और खुदातरस और इस्राईल की तसल्ली का मुन्तज़िर था और रूह — उल — कुद्दूस उस पर था।<sup>26</sup> और उसको रूह — उल — कुद्दूस से अगवाही हुई थी कि जब तक तू खुदावन्द के मसीह को देख न ले, मौत को न देखेगा।<sup>27</sup> वो रूह की हिदायत से हैकल में आया और जिस वक़्त माँ — बाप उस लड़के ईसा को अन्दर लाए ताकि उसके शरी'अत के दस्तूर पर 'अमल करें।<sup>28</sup> तो उसने उसे अपनी गोद में लिया और खुदा की हम्द करके कहा:<sup>29</sup> “ऐ मालिक अब तू अपने खादिम को अपने क़ौल के मुवाफ़िक़ सलामती से रुख़्सत करता है,<sup>30</sup> क्यूँकि मेरी आँखों ने तेरी नज़ात देख ली है,<sup>31</sup> जो तूने सब उम्मतों के रु — ब — रूतैयार

की है,<sup>32</sup> ताकि ग़ैर क़ौमों को रौशनी देने वाला नूर और तेरी उम्मत इस्राईल का जलाल बने।”

<sup>33</sup> और उसका बाप और उसकी माँ इन बातों पर जो उसके हक़ में कही जाती थीं, ता'ज्जुब करते थे।<sup>34</sup> और शमौन ने उनके लिए दु'आ — ए — ख़ैर की और उसकी माँ मरियम से कहा, “देख, ये इस्राईल में बहुतों के गिरने और उठने के लिए मुक़र्रर हुआ है, जिसकी मुख़ालिफ़त की जाएगी।<sup>35</sup> बल्कि तेरी जान भी तलवार से छि़द जाएगी, ताकि बहुत लोगों के दिली ख़याल खुल जाएँ।”

<sup>36</sup> और आशर के क़बीले में से हन्ना नाम फ़नूएल की बेटी एक नबीया थी — वो बहुत बूढ़ी थी — और उसने अपने कूँवारेपन के बाद सात बरस एक शौहर के साथ गुज़ारे थे।<sup>37</sup> वो चौरासी बरस से बेवा थी, और हैकल से जुदा न होती थी बल्कि रात दिन रोज़ों और दु'आओं के साथ इबादत किया करती थी।<sup>38</sup> और वो उसी घड़ी वहाँ आकर खुदा का शुक्र करने लगी और उन सब से जो येरूशलेम के छुटकारे के मुन्तज़िर थे उसके बारे में बातें करने लगी।

<sup>39</sup> और जब वो खुदावन्द की शरी'अत के मुवाफ़िक़ सब कुछ कर चुके तो गलील में अपने शहर नासरत को लौट गए।<sup>40</sup> और वो लड़का बढ़ता और ताक़त पाता गया और हिक्मत से मा'मूर होता गया और खुदा का फ़ज़ल उस पर था।

<sup>41</sup> उसके माँ — बाप हर बरस 'ईद — ए — फ़सह पर येरूशलेम को जाया करते थे।<sup>42</sup> और जब वो बारह बरस का हुआ तो वो 'ईद के दस्तूर के मुवाफ़िक़ येरूशलेम को गए।<sup>43</sup> जब वो उन दिनों को पूरा करके लौटे तो वो लड़का ईसा येरूशलेम में रह गया — और उसके माँ — बाप को खबर न हुई।<sup>44</sup> मगर ये समझ कर कि वो क़ाफ़िले में है, एक मंज़िल निकल गए — और उसके रिश्तेदारों और उसके जान पहचानों में ढूँडने लगे।<sup>45</sup> जब न मिला तो उसे ढूँडते हुए येरूशलेम तक वापस गए।<sup>46</sup> और तीन रोज़ के बाद ऐसा हुआ कि उन्होंने उसे हैकल में उस्तादों के बीच में बैठा उनकी सुनते और उनसे सवाल करते हुए पाया।<sup>47</sup> जितने उसकी सुन रहे थे उसकी समझ और उसके जवाबों से दंग थे।<sup>48</sup> और वो उसे देखकर हैरान हुए। उसकी माँ ने उससे कहा, “बेटा, तू ने क्यूँ हम से ऐसा किया? देख तेरा बाप और मैं घबराते हुए तुझे ढूँडते थे?”<sup>49</sup> उसने उनसे कहा, “तुम मुझे क्यूँ ढूँडते थे? क्या तुम को मा'लूम न था कि मुझे अपने बाप के यहाँ होना ज़रूर है?”<sup>50</sup> मगर जो बात उसने उनसे कही उसे वो न समझे।<sup>51</sup> और वो उनके साथ ख़ाना होकर नासरत में आया और उनके साथ रहा और उसकी

माँ ने ये सब बातें अपने दिल में रखीं। <sup>52</sup> और ईसा हिक्मत और क्रद — ओ — क्रियामत में और खुदा की और इंसान की मकबूलियत में तरक्की करता गया।

### 3

तिबिरयुस कैसर की हुक्मत के पंद्रहवें बरस पुनित्युस पिलातुस यहूदिया का हाकिम था, हेरोदेस गलील का और उसका भाई फिलिप्पुस इतुरिय्या और त्रखोनीतिस का और लिसानियास अबलेने का हाकिम था। <sup>2</sup> और हन्ना और काइफ़ा सरदार काहिन थे, उस वक्त खुदा का कलाम वीराने में ज़करियाह के बेटे युहन्ना पर नाज़िल हुआ। <sup>3</sup> और वो यरदन के आस पास में जाकर गुनाहों की मु'अफ़ी के लिए तौबा के बपतिस्मे का एलान करने लगा। <sup>4</sup> जैसा यसा'याह नबी के कलाम की किताब में लिखा है:

“वीराने में पुकारने वाले की आवाज़ आती है,  
'खुदावन्द की राह तैयार करो, उसके रास्ते सीधे बनाओ।  
<sup>5</sup> हर एक घाटी भर दी जाएगी, और हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा;  
और जो टेढ़ा है सीधा, और जो ऊँचा — नीचा है बराबर रास्ता बनेगा।  
<sup>6</sup> और हर बंशर खुदा की नजात देखेगा।”

<sup>7</sup> पस जो लोग उससे बपतिस्मा लेने को निकलकर आते थे वो उनसे कहता था, “ऐ साँप के बच्चो! तुम्हें किसने जताया कि आने वाले ग़ज़ब से भागो?” <sup>8</sup> पस तौबा के मुवाफ़िक़ फल लाओ — और अपने दिलों में ये कहना शुरू न करो कि अब्रहाम हमारा बाप है क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि खुदा इन पत्थरों से अब्रहाम के लिए औलाद पैदा कर सकता है। <sup>9</sup> और अब तो दरख्तों की जड़ पर कुल्हाड़ा रखवा है पस जो दरख्त अच्छा फल नहीं लाता वो काटा और आग में डाला जाता है।” <sup>10</sup> लोगों ने उस से पूछा, “हम क्या करें?” <sup>11</sup> उसने जवाब में उनसे कहा, “जिसके पास दो कुरते हों वो उसको जिसके पास न हो बाँट दे, और जिसके पास खाना हो वो भी ऐसा ही करे।” <sup>12</sup> और महसूल लेने वाले भी बपतिस्मा लेने को आए और उससे पुछा, “ऐ उस्ताद, हम क्या करें?” <sup>13</sup> उसने उनसे कहा, “जो तुम्हारे लिए मुकर्रर है उससे ज्यादा न लेना।” <sup>14</sup> और सिपाहियों ने भी उससे पूछा, “हम क्या करें?” उसने उनसे कहा, “न किसी पर तुम जुल्म करो और न किसी से नाहक कुछ लो, और अपनी तनख्वाह पर क़फ़ायत

करो।” <sup>15</sup> जब लोग इन्तिज़ार में थे और सब अपने अपने दिल में युहन्ना के बारे में सोच रहे थे कि आया वो मसीह है या नहीं। <sup>16</sup> तो युहन्ना ने उन से जवाब में कहा, “मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, मगर जो मुझ से ताक़तवर है वो आनेवाला है, मैं उसकी जूती का फ़ीता खोलने के लायक नहीं; वो तुम्हें रूह — उल — कुद्स और आग से बपतिस्मा देगा। <sup>17</sup> उसका सूप उसके हाथ में है; ताकि वो अपने खलियान को खूब साफ़ करे और गेहूँ को अपने खित्ते में जमा करे, मगर भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।” <sup>18</sup> पस वो और बहुत सी नसीहत करके लोगों को खुशख़बरी सूनाता रहा।

<sup>19</sup> लेकिन चौथाई मुल्क के हाकिम हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस की बीवी हेरोदियास की वजह से और उन सब बुराइयों के बा'इस जो हेरोदेस ने की थी, युहन्ना से मलामत उठाकर, <sup>20</sup> इन सब से बढ़कर ये भी किया कि उसको कैद में डाला।

<sup>21</sup> जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और ईसा भी बपतिस्मा पाकर दुआ कर रहा था तो ऐसा हुआ कि आसमान खुल गया, <sup>22</sup> और रूह — उल — कुद्स जिस्मानी सूरत में कबूतर की तरह उस पर नाज़िल हुआ और आसमान से ये आवाज़ आई: “तू मेरा प्यारा बेटा है, तुझ से मैं खुश हूँ।”

<sup>23</sup> जब ईसा खुद ता'लीम देने लगा, करीबन तीस बरस का था और (जैसा कि समझा जाता था) यूसुफ़ का बेटा था; और वो 'एली का, <sup>24</sup> और वो मत्तात का, और वो लावी का, और वो मल्की का, और वो यन्ना का, और वो यूसुफ़ का, <sup>25</sup> और वो मत्तितियाह का, और वो 'आमूस का और नाहूम का, और वो असलियाह का, और वो नोगा का, <sup>26</sup> और वो माअत का, और मत्तितियाह का, और वो शिम'ई का, और वो योसेख का, और वो यहूदाह का, <sup>27</sup> और वो युहन्ना का, और वो रोसा का, और वो ज़रुब्बाबुल का, और वो सियालतीएल का और वो नेरी का, <sup>28</sup> और वो मल्की का, और वो अद्दी का, और वो क्रोसाम का, और वो इल्मोदाम का, और वो 'एर का, <sup>29</sup> और वो यशु'अ का, और वो इली'अज़र का, और वो योरीम का, और वो मत्तात का, और वो लावी का, <sup>30</sup> और वो शमौन का, और वो यहूदाह का, और वो यूसुफ़ का, और वो योनाम का और वो इलियाक्रीम का, <sup>31</sup> और वो मलेआह का, और वो मिन्नाह का, और वो मत्तितियाह का, और वो नातन का, और वो दाऊद का, <sup>32</sup> और वो यस्सी का, और वो ओबेद का, और वो बो'अज़ का, और वो सल्मोन का, और वो नहसोन का, <sup>33</sup> और वो 'अम्मीनदाब का, और वो अदमीन का, और वो अरनी का,

और वो हसरोन का, और वो फ़ारस का, और वो यहूदाह का, <sup>34</sup> और वो याकूब का, और वो इज़हाक का, और वो इब्राहीम का, और वो तारह का, और वो नहूर का, <sup>35</sup> और वो सरूज का, और वो र'ऊ का, और वो फ़लज का, और वो इबर का, और वो सिलह का, <sup>36</sup> और वो क्रीनान का और वो अफ़क्सद का, और वो सिम का, और वो नूह का, और वो लमक का, <sup>37</sup> और वो मतूसिलह का और वो हनूक का, और वो यारिद का, और वो महल्ल — एल का, और वो क्रीनान का, <sup>38</sup> और वो अनूस का, और वो सेत का, और आदम खुदा से था।

#### 4

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>1</sup> फिर ईसा रूह — उल — कुदूस से भरा हुआ यरदन से लौटा, और चालीस दिन तक रूह की हिदायत से वीराने में फिरता रहा; <sup>2</sup> और शैतान उसे आजमाता रहा। उन दिनों में उसने कुछ न खाया, जब वो दिन पुरे हो गए तो उसे भूख लगी। <sup>3</sup> और शैतान ने उससे कहा, “अगर तू खुदा का बेटा है तो इस पत्थर से कह कि रोटी बन जाए।” <sup>4</sup> ईसा ने उसको जवाब दिया, “कलाम में लिखा है कि, आदमी सिर्फ़ रोटी ही से जीता न रहेगा।” <sup>5</sup> और शैतान ने उसे ऊँचे पर ले जाकर दुनिया की सब सल्तनतें पल भर में दिखाईं। <sup>6</sup> और उससे कहा, “ये सारा इस्त्रियार और उनकी शान — ओ — शौकत मैं तुझे दे दूँगा, क्योंकि ये मेरे सुपुर्द है और जिसको चाहता हूँ देता हूँ।” <sup>7</sup> पस अगर तू मेरे आगे सज्दा करे, तो ये सब तेरा होगा।” <sup>8</sup> ईसा ने जवाब में उससे कहा, “लिखा है कि, तू खुदावन्द अपने खुदा को सिज्दा कर और सिर्फ़ उसकी इबादत कर।” <sup>9</sup> और वो उसे येरूशलेम में ले गया और हैकल के कंगूरे पर खड़ा करके उससे कहा, अगर तू खुदा का बेटा है तो अपने आपको यहाँ से नीचे गिरा दे। <sup>10</sup> क्योंकि लिखा है कि, वो तेरे बारे में अपने फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि तेरी हिफ़ाज़त करें। <sup>11</sup> और ये भी कि वो तुझे हाथों पर उठा लेंगे, काश की तेरे पाँव को पत्थर से ठेस लगे। <sup>12</sup> ईसा ने जवाब में उससे कहा, “फ़रमाया गया है कि, तू खुदावन्द अपने खुदा की आजमाइश न कर।” <sup>13</sup> जब इब्लीस तमाम आजमाइशें कर चूका तो कुछ अर्से के लिए उससे जुदा हुआ।

<sup>14</sup> फिर ईसा पाक रूह की कुव्वत से भरा हुआ गलील को लौटा और आसपास में उसकी शोहरत फैल गई। <sup>15</sup> और वो उनके 'इबादतखानों' में ता'लीम देता रहा और सब उसकी बड़ाई करते रहे।

<sup>16</sup> और वो नासरत में आया जहाँ उसने परवरिश पाई थी और अपने दस्तूर के मुवाफ़िक़ सबत के दिन

'इबादतखाने' में गया और पढ़ने को खड़ा हुआ। <sup>17</sup> और यसायाह नबी की किताब उसको दी गई, और किताब खोलकर उसने वो वर्क़ा खोला जहाँ ये लिखा था:

<sup>18</sup> “खुदावन्द का रूह मुझ पर है, इसलिए कि उसने मुझे ग़रीबों को खुशख़बरी देने के लिए मसह किया; उसने मुझे भेजा है कैदियों को रिहाई और अन्धों को बीनाई पाने की ख़बर सूनाऊँ, कुचले हुआँ को आज़ाद करूँ।

<sup>19</sup> और खुदावन्द के साल — ए — मक्रबूल का ऐलान करूँ।”

<sup>20</sup> फिर वो किताब बन्द करके और खादिम को वापस देकर बैठ गया; जितने 'इबादतखाने' में थे सबकी आँखें उस पर लगी थीं। <sup>21</sup> वो उनसे कहने लगा, “आज ये लिखा हुआ तुम्हारे सामने पूरा हुआ।” <sup>22</sup> और सबने उस पर गवाही दी और उन पुर फ़ज़ल बातों पर जो उसके मुँह से निकली थी, ता'ज्जुब करके कहने लगे, “क्या ये यूसुफ़ का बेटा नहीं?” <sup>23</sup> उसने उनसे कहा “तुम अलबत्ता ये मिसाल मुझ पर कहोगे कि, 'ऐ हकीम, अपने आप को तो अच्छा कर! जो कुछ हम ने सुना है कि कफ़रनहूम में किया गया, यहाँ अपने वतन में भी कर'।” <sup>24</sup> और उसने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि कोई नबी अपने वतन में मक्रबूल नहीं होता। <sup>25</sup> और मैं तुम से कहता हूँ, कि एलियाह के दिनों में जब साढ़े तीन बरस आसमान बन्द रहा, यहाँ तक कि सारे मुल्क में सख्त काल पड़ा, बहुत सी बेवाएँ इस्राईल में थीं। <sup>26</sup> लेकिन एलियाह उनमें से किसी के पास न भेजा गया, मगर मुल्क — ए — सैदा के शहर सारपत में एक बेवा के पास <sup>27</sup> और इलिशा नबी के वक़्त में इस्राईल के बीच बहुत से कौढ़ी थे, लेकिन उनमें से कोई पाक साफ़ न किया गया मगर ना'मान सूरयानी।” <sup>28</sup> जितने 'इबादतखाने' में थे, इन बातों को सुनते ही गुस्से से भर गए, <sup>29</sup> और उठकर उस को बाहर निकाले और उस पहाड़ की चोटी पर ले गए जिस पर उनका शहर आबाद था, ताकि उसको सिर के बल गिरा दें। <sup>30</sup> मगर वो उनके बीच में से निकलकर चला गया।

<sup>31</sup> फिर वो गलील के शहर कफ़रनहूम को गया और सबत के दिन उन्हें ता'लीम दे रहा था। <sup>32</sup> और लोग उसकी ता'लीम से हैरान थे क्योंकि उसका कलाम इस्त्रियार के साथ था। <sup>33</sup> इबादतखाने में एक आदमी था, जिसमें बदर्ह थी। वो बड़ी आवाज़ से चिल्ला उठा कि, <sup>34</sup> “ऐ ईसा नासरी हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें हलाक करने आया है? मैं तुझे जानता हूँ कि तू कौन है — खुदा का कुदूस है।” <sup>35</sup> ईसा ने उसे झिड़क कर कहा, “चुप



रह और उसमें से निकल जा।” इस पर बदरूह उसे बीच में पटक कर बगैर नुक्रसान पहुँचाए उसमें से निकल गई।  
 36 और सब हैरान होकर आपस में कहने लगे, “ये कैसा कलाम है? क्योंकि वो इस्त्रियार और कुदरत से नापाक रूहों को हुक्म देता है और वो निकल जाती हैं।” 37 और आस पास में हर जगह उसकी धूम मच गई।

38 फिर वो 'इबादतखाने से उठकर शमौन के घर में दाखिल हुआ और शमौन की सास जो बुखार में पड़ी हुई थी और उन्होंने उस के लिए उससे 'अर्ज की। 39 वो खड़ा होकर उसकी तरफ झुका और बुखार को झिड़का तो वो उतर गया, वो उसी दम उठकर उनकी खिदमत करने लगी। 40 और सूरज के डूबते वक़्त वो सब लोग जिनके यहाँ तरह — तरह की बीमारियों के मरीज़ थे, उन्हें उसके पास लाए और उसने उनमें से हर एक पर हाथ रख कर उन्हें अच्छा किया। 41 और बदरूह भी चिल्लाकर और ये कहकर कि, “तू खुदा का बेटा है” बहुतों में से निकल गई, और वो उन्हें झिड़कता और बोलने न देता था, क्योंकि वो जानती थीं के ये मसीह है।

42 जब दिन हुआ तो वो निकल कर एक वीरान जगह में गया, और भीड़ की भीड़ उसको ढूँडती हुई उसके पास आई, और उसको रोकने लगी कि हमारे पास से न जा। 43 उसने उनसे कहा, “मुझे और शहरों में भी खुदा की बादशाही की खुशखबरी सुनाना जरूर है, क्योंकि मैं इसी लिए भेजा गया हूँ।” 44 और वो गलील के 'इबादतखानों में एलान करता रहा।

## 5

??????????

1 जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती थी और खुदा का कलाम सुनती थी, और वो गनेसरत की झील के किनारे खड़ा था तो ऐसा हुआ कि 2 उसने झील के किनारे दो नाव लगी देखीं, लेकिन मछली पकड़ने वाले उन पर से उतर कर जाल धो रहे थे 3 और उसने उस नावों में से एक पर चढ़कर जो शमौन की थी, उससे दरखास्त की कि किनारे से ज़रा हटा ले चल और वो बैठकर लोगों को नाव पर से ता'लीम देने लगा। 4 जब कलाम कर चुका तो शमौन से कहा, “गहरे में ले चल, और तुम शिकार के लिए अपने जाल डालो।” 5 शमौन ने जवाब में कहा, “ऐ खुदावन्द! हम ने रात भर मेहनत की और कुछ हाथ न आया, मगर तेरे कहने से जाल डालता हूँ।” 6 ये किया और वो मछलियों का बड़ा घेर लाए, और उनके जाल फ़टने लगे। 7 और उन्होंने अपने साथियों को जो दूसरी नाव पर थे इशारा किया कि आओ हमारी मदद करो। पस उन्होंने आकर दोनों नावें यहाँ तक भर दीं कि डूबने

लगीं। 8 शमौन पतरस ये देखकर ईसा के पाँव में गिरा और कहा, ऐ खुदावन्द! मेरे पास से चला जा, क्योंकि मैं गुनहगार आदमी हूँ।” 9 क्योंकि मछलियों के इस शिकार से जो उन्होंने किया, वो और उसके सब साथी बहुत हैरान हुए। 10 और वैसे ही ज़ब्दी के बेटे या'कूब और यूहन्ना भी जो शमौन के साथी थे, हैरान हुए। ईसा ने शमौन से कहा, “खौफ़ न कर, अब से तू आदमियों का शिकार करेगा।” 11 वो नावों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

12 जब वो एक शहर में था, तो देखो, कौढ़ से भरा हुआ एक आदमी ईसा को देखकर मुँह के बल गिरा और उसकी मिन्नत करके कहने लगा, “ऐ खुदावन्द, अगर तू चाहे तो मुझे पाक साफ़ कर सकता है।” 13 उसने हाथ बढ़ा कर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ, तू पाक साफ़ हो जा।” और फ़ौरन उसका कौढ़ जाता रहा। 14 और उसने उसे ताकीद की, “किसी से न कहना बल्कि जाकर अपने आपको काहिन को दिखा। और जैसा मूसा ने मुकर्रर किया है अपने पाक साफ़ हो जाने के बारे में गुज़रान ताकि उनके लिए गवाही हो।” 15 लेकिन उसकी चर्चा ज्यादा फैली और बहुत से लोग जमा हुए कि उसकी सुनें और अपनी बीमारियों से शिफ़ा पाएँ 16 मगर वो जंगलों में अलग जाकर दुआ किया करता था।

17 और एक दिन ऐसा हुआ कि वो ता'लीम दे रहा था और फ़रीसी और शरा' के मु'अल्लिम वहाँ बैठे हुए थे जो गलील के हर गाँव और यहूदिया और येरूशलेम से आए थे। और खुदावन्द की कुदरत शिफ़ा बरख़्शने को उसके साथ थी। 18 और देखो, कोई मर्द एक आदमी को जो फ़ालिज का मारा था चारपाई पर लाए और कोशिश की कि उसे अन्दर लाकर उसके आगे रखें। 19 और जब भीड़ की वजह से उसको अन्दर ले जाने की राह न पाई तो छत पर चढ़ कर खपैरैल में से उसको खटोले समेत बीच में ईसा के सामने उतार दिया। 20 उसने उनका ईमान देखकर कहा, “ऐ आदमी! तेरे गुनाह मु'आफ़ हुए!”

21 इस पर फ़कीह और फ़रीसी सोचने लगे, “ये कौन है जो कुफ़र बकता है? खुदा के सिवा और कौन गुनाह मु'आफ़ कर सकता है?” 22 ईसा ने उनके खयालों को मा'लूम करके जवाब में उनसे कहा, “तुम अपने दिलों में क्या सोचते हो? 23 आसान क्या है? ये कहना कि 'तेरे गुनाह मु'आफ़ हुए' या ये कहना कि 'उठ और चल फिर'? 24 लेकिन इसलिए कि तुम जानो कि इब्न — ए — आदम को ज़मीन पर गुनाह मु'आफ़ करने का इस्त्रियार है;” (उसने मफ़्लूज से कहा) मैं तुझ से कहता हूँ, उठ और अपनी चारपाई उठाकर अपने घर जा।” 25 वो उसी

दम उनके सामने उठा और जिस पर पड़ा था उसे उठाकर खुदा की तम्जीद करता हुआ अपने घर चला गया। <sup>26</sup> वो सब के सब बहुत हैरान हुए और खुदा की तम्जीद करने लगे, और बहुत डर गए और कहने लगे, “आज हम ने अजीब बातें देखीं!”

27 इन बातों के बाद वो बाहर गया और लावी नाम के एक महसूल लेनेवाले को महसूल की चौकी पर बैठे देखा और उससे कहा, **“मेरे पीछे हो ले।”** 28 वो सब कुछ छोड़कर उठा, और उसके पीछे हो लिया।

29 फिर लावी ने अपने घर में उसकी बड़ी ज़ियाफत की; और महसूल लेनेवालों और औरों की जो उनके साथ खाना खाने बैठे थे, बड़ी भीड़ थी। 30 और फ़रीसी और उनके आलिम उसके शागिर्दों से ये कहकर बुदबुदाने लगे, “तुम क्यों महसूल लेनेवालों\* और गुनाहगारों के साथ खाते — पीते हो?”

31 ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “तन्दरुस्तों को हकीम की ज़रूरत नहीं है बल्कि बीमारों को। 32 मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को तौबा के लिए बुलाने आया हूँ।” 33 और उन्होंने उससे कहा, “युहन्ना के शागिर्द अक्सर रोज़ा रखते और दु'आएँ किया करते हैं, और इसी तरह फ़रीसियों के भी; मगर तेरे शागिर्द खाते पीते हैं।” 34 ईसा ने उनसे कहा, “क्या तुम बरातियों से, जब तक दुल्हा उनके साथ है, रोज़ा रखवा सकते हो? 35 मगर वो दिन आएँगे; और जब दुल्हा उनसे जुदा किया जाएगा तब उन दिनों में वो रोज़ा रखेंगे।” 36 और उसने उनसे एक मिसाल भी कही: “कोई आदमी नई पोशाक में से फाड़कर पुरानी में पैवन्द नहीं लगाता, वर्ना नई भी फटेगी और उसका पैवन्द पुरानी में मेल भी न खाएगा। 37 और कोई शख्स नई मय पुरानी मशकों में नहीं भरता, नहीं तो नई मय मशकों को फाड़ कर खुद भी बह जाएगी और मशकें भी बरबाद हो जाएँगी। 38 बल्कि नई मय नई मशकों में भरना चाहिए। 39 और कोई आदमी पुरानी मय पीकर नई की ख्वाहिश नहीं करता, क्योंकि कहता है कि पुरानी ही अच्छी है।”

# 6

?? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 फिर सबत के दिन यूँ हुआ कि वो खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके शागिर्द बालें तोड़ — तोड़ कर और हाथों से मल — मलकर खाते जाते थे। 2 और फ़रीसियों में से कुछ लोग कहने लगे, “तुम वो काम क्यूँ करते हो जो सबत के दिन करना ठीक नहीं।” 3 ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “क्या तम ने ये भी नहीं पढ़ा

कि जब दाऊद और उसके साथी भूखे थे तो उसने क्या किया? <sup>4</sup> वो क्यूँकर खुदा के घर में गया, और नज़र की रोटियाँ लेकर खाईं जिनको खाना काहिनों के सिवा और किसी को ठीक नहीं, और अपने साथियों को भी दीं।” <sup>5</sup> फिर उसने उनसे कहा, “इब्न — ए — आदम सबत का मालिक है।”

6 और यूँ हुआ कि किसी और सबत को वो 'इबादतखाने में दाखिल होकर ता'लीम देने लगा। वहाँ एक आदमी था जिसका दाहिना हाथ सूख गया था। 7 और आलिम और फ़रीसी उसकी ताक में थे, कि आया सबत के दिन अच्छा करता है या नहीं, ताकि उस पर इल्ज़ाम लगाने का मौक़ा पाएँ। 8 मगर उसको उनके खयाल मा'लूम थे; पस उसने उस आदमी से जिसका हाथ सूखा था कहा, “उठ, और बीच में खड़ा हो!” 9 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुम से ये पूछता हूँ कि आया सबत के दिन नेकी करना ठीक है या बदी करना? जान बचाना या हलाक करना?” 10 और उन सब पर नज़र करके उससे कहा, “अपना हाथ बढ़ा!” उसने बढ़ाया और उसका हाथ दुरुस्त हो गया। 11 वो आपे से बाहर होकर एक दूसरे से कहने लगे कि हम ईसा के साथ क्या करें।

12 और उन दिनों में ऐसा हुआ कि वो पहाड़ पर दुआ करने को निकला और खुदा से दुआ करने में सारी रात गुज़ारी। 13 जब दिन हुआ तो उसने अपने शागिर्दों को पास बुलाकर उनमें से बारह चुन लिए और उनको रसूल का लक़ब दिया: 14 या'नी शमौन जिसका नाम उसने पतरस भी रखवा, और अन्द्रयास, और या'कूब, और यूहन्ना, और फ़िलिप्पुस, और बरतुल्माई, 15 और मत्ती, और तोमा, और हलफ़ी का बेटा या'कूब, और शमौन जो ज़ेलोतेस कहलाता था, 16 और या'कूब का बेटा यहूदाह, और यहूदाह इस्करियोती जो उसका पकड़वाने वाला हुआ।

17 और वो उनके साथ उतर कर हमवार जगह पर खड़ा हुआ, और उसके शागिर्दों की बड़ी जमा'अत और लोगों की बड़ी भीड़ वहाँ थी, जो सारे यहूदिया और येरूशलेम और सूर और सैदा के बहरी किनारे से उसकी सुनने और अपनी बीमारियों से शिफा पाने के लिए उसके पास आई थी। 18 और जो बदरूहों से दुःख पाते थे वो अच्छे किए गए। 19 और सब लोग उसे छूने की कोशिश करते थे, क्योंकि कूव्वत उससे निकलती और सब को शिफा बरख्णती थी।

20 फिर उसने अपने शागिर्दों की तरफ़ नज़र करके कहा,

\* **5:30** 5:30 महसूल लेनेवालों रोम के दौरे हुकूमत में यहूदियों से महसूल लेने वाले को गुनहगार समझते थे इसलिए की वो जबरन वसूल करता था

“मुबारिक हो तुम जो गरीब हो,  
क्योंकि खुदा की बादशाही तुम्हारी है।”

21 “मुबारिक हो तुम जो अब भूखे हो,  
क्योंकि आसूदा होगे

“मुबारिक हो तुम जो अब रोते हो,  
क्योंकि हँसोगे

22 “जब इब्न — ए — आदम की  
वजह से लोग तुम से 'दुश्मनी रखेंगे,  
और तुम्हें निकाल देंगे, और ला'न — ता'न करेंगे।”

23 “उस दिन खुश होना और खुशी के मारे उछलना,  
इसलिए कि देखो आसमान पर तुम्हारा अज़र बड़ा है;  
क्योंकि उनके बाप — दादा नबियों के साथ भी ऐसा ही  
किया करते थे।

24 “मगर अफ़सोस तुम पर जो दौलतमन्द हो,  
क्योंकि तुम अपनी तसल्ली पा चुके।

25 “अफ़सोस तुम पर जो अब सेर हो,  
क्योंकि भूखे होगे।

“अफ़सोस तुम पर जो अब हँसते हो,  
क्योंकि मातम करोगे और रोओगे।

26 “अफ़सोस तुम पर जब सब लोग तुम्हें अच्छा कहें,  
क्योंकि उनके बाप — दादा झूठे नबियों के साथ भी ऐसा  
ही किया करते थे।”

27 “लेकिन मैं सुनने वालों से कहता हूँ कि अपने  
दुश्मनों से मुहब्बत रखो, जो तुम से 'दुश्मनी रखें  
उसके साथ नेकी करो। 28 जो तुम पर ला'नत करें उनके  
लिए बर्क़त चाहो, जो तुमसे नफ़रत करें उनके लिए दुआ  
करो। 29 जो तेरे एक गाल पर तमाचा मारे दूसरा भी  
उसकी तरफ़ फेर दे, और जो तेरा चोगा ले उसको कुरता  
लेने से भी मनह' न कर। 30 जो कोई तुझ से माँगे उसे  
दे, और जो तेरा माल ले ले उससे तलब न कर। 31 और  
जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी  
उनके साथ वैसा ही करो।”

32 “अगर तुम अपने मुहब्बत रखनेवालों ही से  
मुहब्बत रखो, तो तुम्हारा क्या अहसान है? क्योंकि  
गुनाहगार भी अपने मुहब्बत रखनेवालों से मुहब्बत  
रखते हैं। 33 और अगर तुम उन ही का भला करो जो  
तुम्हारा भला करें, तो तुम्हारा क्या अहसान है? क्योंकि  
गुनहगार भी ऐसा ही करते हैं। 34 और अगर तुम उन्हीं  
को क़र्ज़ दो जिनसे वसूल होने की उम्मीद रखते हो, तो  
तुम्हारा क्या अहसान है? गुनहगार भी गुनहगारों को  
क़र्ज़ देते हैं ताकि पूरा वसूल कर लें 35 मगर तुम अपने  
दुश्मनों से मुहब्बत रखो, और नेकी करो, और बग़ैर न  
उम्मीद हुए क़र्ज़ दो तो तुम्हारा अज़र बड़ा होगा और

तुम खुदा के बेटे ठहरोगे, क्योंकि वो न — शुक्रों और  
बदों पर भी महरबान है। 36 जैसा तुम्हारा आसमानी बाप  
रहीम है तुम भी रहम दिल हो।”

37 “ऐबजोई ना करो, तुम्हारी भी 'ऐबजोई न की  
जाएगी। मुजरिम न ठहराओ, तुम भी मुजरिम ना  
ठहराए जाओगे। इज्जत दो, तुम भी इज्जत पाओगे।

38 दिया करो, तुम्हें भी दिया जाएगा। अच्छा पैमाना  
दाब — दाब कर और हिला — हिला कर और लबरेज़  
करके तुम्हारे पल्ले में डालेंगे, क्योंकि जिस पैमाने से तुम  
नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा।”

39 “और उसने उनसे एक मिसाल भी दी “क्या अंधे  
को अंधा राह दिखा सकता है? क्या दोनों गड्ढे में न  
गिरेंगे?” 40 शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं, बल्कि  
हर एक जब कामिल हुआ तो अपने उस्ताद जैसा होगा।

41 तू क्यों अपने भाई की आँख के तिनके को देखता  
है, और अपनी आँख के शहतीर पर ग़ौर नहीं करता?

42 और जब तू अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखता  
तो अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, कि भाई ला उस  
तिनके को जो तेरी आँख में है निकाल दूँ? ऐ रियाकार।  
पहले अपनी आँख में से तो शहतीर निकाल, फिर उस  
तिनके को जो तेरे भाई की आँख में है अच्छी तरह  
देखकर निकाल सकेगा।

43 “क्योंकि कोई अच्छा दरख्त नहीं जो बुरा फल  
लाए, और न कोई बुरा दरख्त है जो अच्छा फल लाए।”

44 हर दरख्त अपने फल से पहचाना जाता है, क्योंकि  
झाड़ियों से अंजीर नहीं तोड़ते और न झड़बेरी से अंगूर।

45 “अच्छा आदमी अपने दिल के अच्छे खज़ाने से  
अच्छी चीज़ें निकालता है, और बुरा आदमी बुरे खज़ाने  
से बुरी चीज़ें निकालता है; क्योंकि जो दिल में भरा है वही  
उसके मुँह पर आता है।”

46 “जब तुम मेरे कहने पर 'अमल नहीं करते तो क्यों  
मुझे 'खुदावन्द, खुदावन्द' कहते हो। 47 जो कोई मेरे  
पास आता और मेरी बातें सुनकर उन पर 'अमल करता  
है, मैं तुम्हें बताता हूँ कि वो किसकी तरह है। 48 वो उस  
आदमी की तरह है जिसने घर बनाते वक़्त ज़मीन गहरी  
खोदकर चट्टान पर बुनियाद डाली, जब तूफ़ान आया  
और सैलाब उस घर से टकराया, तो उसे हिला न सका  
क्योंकि वो मज़बूत बना हुआ था। 49 लेकिन जो सुनकर  
'अमल में नहीं लाता वो उस आदमी की तरह है जिसने  
ज़मीन पर घर को बे — बुनियाद बनाया, जब सैलाब  
उस पर ज़ोर से आया तो वो फ़ौरन गिर पड़ा और वो घर  
बिल्कुल बरबाद हुआ।”

## 7

२२ २२२२ २२२२२ २२ २२२२

1 जब वो लोगों को अपनी सब बातें सुना चुका तो कफ़रनहूम में आया। 2 और किसी सूबेदार का नौकर जो उसको 'प्यारा था, बीमारी से मरने को था। 3 उसने ईसा की खबर सुनकर यहूदियों के कई बुजुर्गों को उसके पास भेजा और उससे दरखास्त की कि आकर मेरे नौकर को अच्छा कर। 4 वो ईसा के पास आए और उसकी बड़ी खुशामद कर के कहने लगे, "वो इस लायक है कि तू उसकी खातिर ये करे। 5 क्योंकि वो हमारी क्रौम से मुहब्बत रखता है और हमारे 'इबादतखाने को उसी ने बनवाया।" 6 ईसा उनके साथ चला मगर जब वो घर के करीब पहुँचा तो सूबेदार ने कुछ दोस्तों के ज़रिए उसे ये कहला भेजा, "ऐ खुदावन्द तकलीफ़ न कर, क्योंकि मैं इस लायक नहीं कि तू मेरी छत के नीचे आए। 7 इसी वजह से मैंने अपने आप को भी तेरे पास आने के लायक न समझा, बल्कि ज़बान से कह दे तो मेरा खादिम शिफ़ा पाएगा। 8 क्योंकि मैं भी दूसरे के ताबे में हूँ, और सिपाही मेरे मातहत हैं; जब एक से कहता हूँ कि 'जा' वो जाता है, और दूसरे से कहता हूँ 'आ' तो वो आता है; और अपने नौकर से कि 'ये कर' तो वो करता है।" 9 ईसा ने ये सुनकर उस पर ता'ज्जुब किया, और मुड़ कर उस भीड़ से जो उसके पीछे आती थी कहा, "मैं तुम से कहता हूँ कि मैंने ऐसा ईमान इस्राईल में भी नहीं पाया।" 10 और भेजे हुए लोगों ने घर में वापस आकर उस नौकर को तन्दरुस्त पाया।

11 थोड़े 'अरसे के बाद ऐसा हुआ कि वो नाईन नाम एक शहर को गया। उसके शागिर्द और बहुत से लोग उसके हमराह थे। 12 जब वो शहर के फाटक के नज़दीक पहुँचा तो देखो, एक मुर्दे को बाहर लिए जाते थे। वो अपनी माँ का इकलौता बेटा था और वो बेवा थी, और शहर के बहुतेरे लोग उसके साथ थे। 13 उसे देखकर खुदावन्द को तरस आया और उससे कहा, "मत रो!" 14 फिर उसने पास आकर जनाज़े को छुआ और उठाने वाले खड़े हो गए। और उसने कहा, "ऐ जवान, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ!" 15 वो मुर्दा उठ बैठा और बोलने लगा। और उसने उसे उसकी माँ को सुपुर्द किया। 16 और सब पर खौफ़ छा गया और वो खुदा की तम्ज़ीद करके कहने लगे, एक बड़ा नबी हम में आया हुआ है, खुदा ने अपनी उम्मत पर तवज्जुह की है। 17 और उसकी निस्वत ये खबर सारे यहूदिया और तमाम आस पास में फैल गई।

18 और युहन्ना को उसके शागिर्दों ने इन सब बातों की खबर दी। 19 इस पर युहन्ना ने अपने शागिर्दों में से

दो को बुला कर खुदावन्द के पास ये पूछने को भेजा, कि "आने वाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की राह देखें।" 20 उन्होंने उसके पास आकर कहा, युहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे पास ये पूछने को भेजा है कि आने वाला तू ही है या हम दूसरे की राह देखें। 21 उसी घड़ी उसने बहुतों को बीमारियों और आफ़तों और बदरूहों से नजात बख़्शी और बहुत से अन्धों को बीनाई 'अता की। 22 उसने जवाब में उनसे कहा, "जो कुछ तुम ने देखा और सुना है जाकर युहन्ना से बयान कर दो कि अन्धे देखते, लंगड़े चलते फिरते हैं, कौढ़ी पाक साफ़ किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं मुर्दे ज़िन्दा किए जाते हैं, गरीबों को खुशख़बरी सुनाई जाती है। 23 मुबारिक है वो जो मेरी वजह से ठोकर न खाए।"

24 जब युहन्ना के क़ासिद चले गए तो ईसा युहन्ना' के हक़ में कहने लगा, "तुम वीराने में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकंडे को?" 25 तो फिर क्या देखने गए थे? क्या महीन कपड़े पहने हुए शख्स को? देखो, जो चमकदार पोशाक पहनते और 'ऐश — ओ — अशरत में रहते हैं, वो बादशाही महलों में होते हैं। 26 तो फिर तुम क्या देखने गए थे? क्या एक नबी? हाँ, मैं तुम से कहता हूँ, बल्कि नबी से बड़े को। 27 ये वही है जिसके बारे में लिखा है:

"देख, मैं अपना पैग़म्बर तेरे आगे भेजता हूँ, जो तेरी राह तेरे आगे तैयार करेगा।"

28 "मैं तुम से कहता हूँ कि जो 'औरतों से पैदा हुए हैं, उनमें युहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं लेकिन जो खुदा की बादशाही में छोटा है वो उससे बड़ा है।" 29 और सब 'आम लोगों ने जब सुना, तो उन्होंने और महसूल लेने वालों ने भी युहन्ना का बपतिस्मा लेकर खुदा को रास्तबाज़ मान लिया। 30 मगर फ़रीसियों और शरा' के 'आलिमों ने उससे बपतिस्मा न लेकर खुदा के इरादे को अपनी निस्वत बातिल कर दिया।

31 "पस इस ज़माने के आदमियों को मैं किससे मिसाल दूँ, वो किसकी तरह हैं? 32 उन लड़कों की तरह हैं जो बाज़ार में बैठे हुए एक दूसरे को पुकार कर कहते हैं कि हम ने तुम्हारे लिए बाँसुरी बजाई और तुम न नाचे, हम ने मातम किया और तुम न रोए। 33 क्योंकि युहन्ना बपतिस्मा देनेवाला न तो रोटी खाता हुआ आया न मय पीता हुआ और तुम कहते हो कि उसमें बदरूह है। 34 इब्न — ए — आदम खाता पीता आया और तुम कहते हो कि देखो, खाऊ और शराबी आदमी, महसूल लेने वालों और गुनाहगारों का यार। 35 लेकिन हिक्मत अपने सब लड़कों की तरफ़ से रास्त साबित हुई।"



36 फिर किसी फ़रीसी ने उससे दरखास्त की कि मेरे साथ खाना खा, पस वो उस फ़रीसी के घर जाकर खाना खाने बैठा। 37 तो देखो, एक बदचलन 'औरत' जो उस शहर की थी, ये जानकर कि वो उस फ़रीसी के घर में खाना खाने बैठा है, संग — ए — मरमर के 'इत्रदान' में 'इत्र लाई'; 38 और उसके पाँव के पास रोती हुई पीछे खड़े होकर, उसके पाँव आँसुओं से भिगोने लगी और अपने सिर के बालों से उनको पोंछा, और उसके पाँव बहुत चूमे और उन पर इत्र डाला। 39 उसकी दा'वत करने वाला फ़रीसी ये देख कर अपने जी में कहने लगा, अगर ये शख्स नबी "होता तो जानता कि जो उसे छूती है वो कौन और कैसी 'औरत' है, क्योंकि बदचलन है।" 40 ईसा, ने जवाब में उससे कहा, "ऐ शमौन! मुझे तुझ से कुछ कहना है।" उसने कहा, "ऐ उस्ताद कह।" 41 "किसी साहूकार के दो कर्जदार थे, एक पाँच सौ दीनार का दूसरा पचास का। 42 जब उनके पास अदा करने को कुछ न रहा तो उसने दोनों को बख्श दिया। पस उनमें से कौन उससे ज्यादा मुहब्बत रखेगा?" 43 शमौन ने जवाब में कहा, "मेरी समझ में वो जिसे उसने ज्यादा बख्शा।" उसने उससे कहा, "तू ने ठीक फ़ैसला किया है।" 44 और उस 'औरत' की तरफ़ फिर कर उसने शमौन से कहा, "क्या तू इस 'औरत' को देखता है? मैं तेरे घर में आया, तू ने मेरे पाँव धोने को पानी न दिया; मगर इसने मेरे पाँव आँसुओं से भिगो दिए, और अपने बालों से पोंछे। 45 तू ने मुझ को बोसा न दिया, मगर इसने जब से मैं आया हूँ मेरे पाँव चूमना न छोड़ा। 46 तू ने मेरे सिर में तेल न डाला, मगर इसने मेरे पाँव पर 'इत्र' डाला है। 47 इसी लिए मैं तुझ से कहता हूँ कि इसके गुनाह जो बहुत थे मु'आफ़ हुए क्योंकि इसने बहुत मुहब्बत की, मगर जिसके थोड़े गुनाह मु'आफ़ हुए वो थोड़ी मुहब्बत करता है।" 48 और उस 'औरत' से कहा, "तेरे गुनाह मु'आफ़ हुए!" 49 इसी पर वो जो उसके साथ खाना खाने बैठे थे अपने जी में कहने लगे, "ये कौन है जो गुनाह भी मु'आफ़ करता है?" 50 मगर उसने 'औरत' से कहा, "तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया, सलामत चली जा।"

## 8

2222 22 22222 22 22222 22222 22

1 थोड़े 'अरसे' के बाद यूँ हुआ कि वो ऐलान करता और खुदा की बादशाही की खुशखबरी सुनाता हुआ शहर — शहर और गाँव — गाँव फिरने लगा, और वो बारह उसके साथ थे। 2 और कुछ 'औरतें' जिन्होंने बुरी रूहों और बिमारियों से शिफ़ा पाई थी, या 'नी मरियम' जो मगदलनी कहलाती थी, जिसमें से सात बदरूहें निकली

थीं, 3 और युहन्ना हेरोदेस के दिवान खूज़ा की बीवी, और सूसन्ना, और बहुत सी और 'औरतें' भी थीं; जो अपने माल से उनकी खिदमत करती थी।

4 फिर जब बड़ी भीड़ उसके पास जमा हुई और शहर के लोग उसके पास चले आते थे, उसने मिसाल में कहा, 5 "एक बोने वाला अपने बीज बोने निकला, और बोते वक़्त कुछ राह के किनारे गिरा और रौंदा गया और हवा के परिन्दों ने उसे चुग लिया। 6 और कुछ चट्टान पर गिरा और उग कर सूख गया, इसलिए कि उसको नमी न पहुँची। 7 और कुछ झाड़ियों में गिरा और झाड़ियों ने साथ — साथ बढ़कर उसे दबा लिया। 8 और कुछ अच्छी ज़मीन में गिरा और उग कर सौ गुना फल लाया।" ये कह कर उसने पुकारा, "जिसके सुनने के कान हों वो सुन ले।"

9 उसके शागिर्दों ने उससे पूछा कि ये मिसाल क्या है। 10 उसने कहा, "तुम को खुदा की बादशाही के राजों की समझ दी गई है, मगर औरों को मिसाल में सुनाया जाता है, ताकि 'देखते हुए न देखें, और सुनते हुए न समझें'।

11 वो मिसाल ये है, कि "बीज खुदा का कलाम है। 12 राह के किनारे के वो हैं, जिन्होंने सुना फिर शैतान आकर कलाम को उनके दिल से छीन ले जाता है ऐसा न हो कि वो ईमान लाकर नजात पाएँ। 13 और चट्टान पर वो हैं जो सुनकर कलाम को खुशी से कुबूल कर लेते हैं, लेकिन जड़ नहीं पकड़ते मगर कुछ 'अरसे' तक ईमान रख कर आजमाइश के वक़्त मुड़ जाते हैं। 14 और जो झाड़ियों में पड़ा उससे वो लोग मुराद हैं, जिन्होंने सुना लेकिन होते होते इस ज़िन्दगी की फ़िकरों और दौलत और 'ऐश' — ओ — अशरत में फ़ँस जाते हैं और उनका फल पकता नहीं। 15 मगर अच्छी ज़मीन के वो हैं, जो कलाम को सुनकर 'उम्दा और नेक दिल' में संभाले रहते हैं और सबर से फल लाते हैं।"

16 "कोई शख्स चरागा जला कर बरतन से नहीं छिपाता न पलंग के नीचे रखता है, बल्कि चिरागदान पर रखता है ताकि अन्दर आने वालों को रौशनी दिखाई दे। 17 क्योंकि कोई चीज़ छिपी नहीं जो ज़ाहिर न हो जाएगी, और न कोई ऐसी छिपी बात है जो माँ'लूम न होगी और सामने न आए। 18 पस खबरदार रहो कि तुम किस तरह सुनते हो? क्योंकि जिसके पास नहीं है वो भी ले लिया जाएगा जो अपना समझता है।"

19 फिर उसकी माँ और उसके भाई उसके पास आए, मगर भीड़ की वजह से उस तक न पहुँच सके। 20 और उसे खबर दी गई, "तेरी माँ और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और

तुझ से मिलना चाहते हैं।” <sup>21</sup> उसने जवाब में उनसे कहा, **“मेरी माँ और मेरे भाई तो ये हैं, जो खुदा का कलाम सुनते और उस पर 'अमल करते हैं।’”**

<sup>22</sup> फिर एक दिन ऐसा हुआ कि वो और उसके शागिर्द नाव में सवार हुए। उसने उनसे कहा, **“आओ, झील के पार चलें”** वो सब रवाना हुए। <sup>23</sup> मगर जब नाव चली जाती थी तो वो सो गया। और झील पर बड़ी आँधी आई और नाव पानी से भरी जाती थी और वो खतरे में थे। <sup>24</sup> उन्होंने पास आकर उसे जगाया और कहा, **“साहेब! साहेब! हम हलाक हुए जाते हैं!”** उसने उठकर हवा को और पानी के ज़ोर — शोर को झिड़का और दोनों थम गए और अमन हो गया। <sup>25</sup> उसने उनसे कहा, **“तुम्हारा ईमान कहाँ गया?”** वो डर गए और ता'अज्जुब करके आपस में कहने लगे, **“ये कौन है? ये तो हवा और पानी को हुक्म देता है और वो उसकी मानते हैं!”**

<sup>26</sup> फिर वो गिरासीनियों के 'इलाके में जा पहुँचे जो उस पार गलील के सामने है। <sup>27</sup> जब वो किनारे पर उतरा तो शहर का एक मर्द उसे मिला जिसमें बदरूहें थीं, और उसने बड़ी मुद्दत से कपड़े न पहने थे और वो घर में नहीं बल्कि क़ब्रों में रहा करता था। <sup>28</sup> वो ईसा को देख कर चिल्लाया और उसके आगे गिर कर बुलन्द आवाज़ से कहने लगा, **“ऐ ईसा! खुदा के बेटे, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे 'ऐज़ाब में न डाल।’”** <sup>29</sup> क्योंकि वो उस बदरूह को हुक्म देता था कि इस आदमी में से निकल जा, इसलिए कि उसने उसको अक्सर पकड़ा था; और हर चन्द लोग उसे ज़ंजीरों और बेड़ियों से जकड़ कर क़ाबू में रखते थे, तो भी वो ज़ंजीरों को तोड़ डालता था और बदरूह उसको वीरानों में भगाए फिरती थी। <sup>30</sup> ईसा ने उससे पूछा, **“तेरा क्या नाम है?”** उसने कहा, **“लश्कर!”** क्योंकि उसमें बहुत सी बदरूहें थीं। <sup>31</sup> और वो उसकी मिन्नत करने लगीं कि **“हमें गहरे गड्ढे में जाने का हुक्म न दे।”** <sup>32</sup> वहाँ पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा ग़ोल चर रहा था। उन्होंने उसकी मिन्नत की कि हमें उनके अन्दर जाने दे; उसने उन्हें जाने दिया। <sup>33</sup> और बदरूहें उस आदमी में से निकल कर सूअरों के अन्दर गईं और ग़ोल किनारे पर से झपट कर झील में जा पड़ा और डूब मरा।

<sup>34</sup> ये माजरा देख कर चराने वाले भागे और जाकर शहर और गाँव में खबर दी। <sup>35</sup> लोग उस माजरे को देखने को निकले, और ईसा के पास आकर उस आदमी को जिसमें से बदरूहें निकली थीं, कपड़े पहने और होश में ईसा के पाँव के पास बैठे पाया और डर गए। <sup>36</sup> और देखने वालों ने उनको खबर दी कि जिसमें बदरूहें थीं वो किस तरह अच्छा हुआ। <sup>37</sup> गिरासीनियों के आस पास के

सब लोगों ने उससे दरखास्त की कि हमारे पास से चला जा; क्योंकि उन पर बड़ी दहशत छा गई थी। पस वो नाव में बैठकर वापस गया। <sup>38</sup> लेकिन जिस शख्स में से बदरूहें निकल गई थीं, वो उसकी मिन्नत करके कहने लगा कि मुझे अपने साथ रहने दे, मगर ईसा ने उसे रुख्सत करके कहा, <sup>39</sup> **“अपने घर को लौट कर लोगों से बयान कर, कि खुदा ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए हैं।”** वो रवाना होकर तमाम शहर में चर्चा करने लगा कि ईसा ने मेरे लिए कैसे बड़े काम किए।

<sup>40</sup> जब ईसा वापस आ रहा था तो लोग उससे खुशी के साथ मिले, क्योंकि सब उसकी राह देखते थे। <sup>41</sup> और देखो, याईर नाम एक शख्स जो 'इबादतखाने का सरदार था, आया और ईसा के क्रदमों पे गिरकर उससे मिन्नत की कि मेरे घर चल, <sup>42</sup> क्योंकि उसकी इकलौती बेटी जो तक़रीबन बारह बरस की थी, मरने को थी। और जब वो जा रहा था तो लोग उस पर गिरे पड़ते थे। <sup>43</sup> और एक 'औरत ने जिसके बारह बरस से खून जारी था, और अपना सारा माल हकीमों पर खर्च कर चुकी थी, और किसी के हाथ से अच्छी न हो सकी थी; <sup>44</sup> उसके पीछे आकर उसकी पोशाक का किनारा हुआ, और उसी दम उसका खून बहना बन्द हो गया। <sup>45</sup> इस पर ईसा ने कहा, **“वो कौन है जिसने मुझे छुआ?”** जब सब इन्कार करने लगे तो पतरस और उसके साथियों ने कहा, **“ऐ साहेब! लोग तुझे दबाते और तुझ पर गिरे पड़ते हैं।”** <sup>46</sup> मगर ईसा ने कहा, **“किसी ने मुझे छुआ तो है, क्योंकि मैंने मा'लूम किया कि कुव्वत मुझ से निकली है।”** <sup>47</sup> जब उस 'औरत ने देखा कि मैं छिप नहीं सकती, तो वो काँपती हुई आई और उसके आगे गिरकर सब लोगों के सामने बयान किया कि मैंने किस वजह से तुझे छुआ, और किस तरह उसी दम शिफ़ा पा गई। <sup>48</sup> उसने उससे कहा, **“बेटी! तेरे ईमान ने तुझे अच्छा किया है, सलामत चली जा।”** <sup>49</sup> वो ये कह ही रहा था कि 'इबादतखाने के सरदार के यहाँ से किसी ने आकर कहा, तेरी बेटी मर गई: उस्ताद को तकलीफ़ न दे।” <sup>50</sup> ईसा ने सुनकर जवाब दिया, **“खौफ़ न कर; फ़क़त 'ऐतिक़ाद रख, वो बच जाएगी।”** <sup>51</sup> और घर में पहुँचकर पतरस, यूहन्ना और या'क़ूब और लड़की के माँ बाप के सिवा किसी को अपने साथ अन्दर न जाने दिया। <sup>52</sup> और सब उसके लिए रो पीट रहे थे, मगर उसने कहा, **“मातम न करो! वो मर नहीं गई बल्कि सोती है।”** <sup>53</sup> वो उस पर हँसने लगे क्योंकि जानते थे कि वो मर गई है। <sup>54</sup> मगर उसने उसका हाथ पकड़ा और पुकार कर कहा, **“ऐ लड़की, उठ!”** <sup>55</sup> उसकी रूह वापस आई और वो उसी दम उठी। फिर ईसा ने हुक्म दिया, लड़की को कुछ खाने को दिया जाए।” <sup>56</sup> माँ बाप हैरान हुए।

उसने उन्हें ताकीद की कि ये माजरा किसी से न कहना।

## 9

2222 22 2222 2222 222222222 22  
22222

1 फिर उसने उन बारह को बुलाकर उन्हें सब बदरूहों पर इस्त्रियार बख्शा और बीमारियों को दूर करने की कुदरत दी। 2 और उन्हें खुदा की बादशाही का ऐलान करने और बीमारों को अच्छा करने के लिए भेजा, 3 और उनसे कहा, “राह के लिए कुछ न लेना, न लाठी, न झोली, न रोटी, न रुपए, न दो दो कुरते रखना। 4 और जिस घर में दाखिल हो वहीं रहना और वहीं से खाना होना; 5 और जिस शहर के लोग तुम्हें कुबूल ना करें, उस शहर से निकलते वक़्त अपने पाँव की धूल झाड़ देना ताकि उन पर गवाही हो।” 6 पस वो खाना होकर गाँव गाँव खुशखबरी सुनाते और हर जगह शिफ़ा देते फिरे।

7 चौथाई मुल्क का हाकिम हेरोदेस सब अहवाल सुन कर घबरा गया, इसलिए कि कुछ ये कहते थे कि यहून्ना मुर्दा में से जी उठा है, 8 और कुछ ये कि एलियाह जाहिर हुआ, और कुछ ये कि क़दीम नबियों में से कोई जी उठा है। 9 मगर हेरोदेस ने कहा, “यहून्ना का तो मैं ने सिर कटवा दिया, अब ये कौन जिसके बारे में ऐसी बातें सुनता हूँ?” पस उसे देखने की कोशिश में रहा।

10 फिर रसूलों ने जो कुछ किया था लौटकर उससे बयान किया; और वो उनको अलग लेकर बैतसैदा नाम एक शहर को चला गया। 11 ये जानकर भीड़ उसके पीछे गई और वो खुशी के साथ उनसे मिला और उनसे खुदा की बादशाही की बातें करने लगा, और जो शिफ़ा पाने के मुहताज थे उन्हें शिफ़ा बख्शी। 12 जब दिन ढलने लगा तो उन बारह ने आकर उससे कहा, “भीड़ को रुख़्सत कर के चारों तरफ़ के गाँव और बस्तियों में जा टिकें और खाने का इन्तिज़ाम करें।” क्योंकि हम यहाँ वीरान जगह में हैं। 13 उसने उनसे कहा, “तुम ही उन्हें खाने को दो,” उन्होंने कहा, “हमारे पास सिर्फ़ पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं, मगर हाँ हम जा जाकर इन सब लोगों के लिए खाना मोल ले आएँ।” 14 क्योंकि वो पाँच हजार मर्द के करीब थे। उसने अपने शागिर्दों से कहा, “उनको त़क़रीबन पचास — पचास की क़तारों में बिठाओ।” 15 उन्होंने उसी तरह किया और सब को बिठाया। 16 फिर उसने वो पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं और आसमान की तरफ़ देख कर उन पर बर्क़त बख्शी, और तोड़कर अपने शागिर्दों को देता गया कि लोगों के आगे रखें। 17 उन्होंने खाया और सब सेर हो गए, और उनके बचे हुए बे इस्तेमाल खाने की बारह टोक़रियाँ उठाई गईं।

18 जब वो तन्हाई में दुआ कर रहा था और शागिर्द उसके पास थे, तो ऐसा हुआ कि उसने उनसे पूछा, “लोग मुझे क्या कहते हैं?” 19 उन्होंने जवाब में कहा, “यहून्ना बपतिस्मा देनेवाला और कुछ एलियाह कहते हैं, और कुछ ये कि पुराने नबियों में से कोई जी उठा है।” 20 उसने उनसे कहा, “लेकिन तुम मुझे क्या कहते हो?” पतरस ने जवाब में कहा, “खुदावन्द का मसीह।” 21 उसने उनको हिदायत करके हुक्म दिया कि ये किसी से न कहना,

22 और कहा, “ज़रूर है इब्न — ए — आदम बहुत दुःख उठाए और बुज़ुर्ग और सरदार काहिन और आलिम उसे रद्द करें और वो क़त्ल किया जाए और तीसरे दिन जी उठे।”

23 और उसने सब से कहा, “अगर कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आप से इनकार करे और हर रोज़ अपनी सलीब उठाए और मेरे पीछे हो ले। 24 क्योंकि जो कोई अपनी जान बचाना चाहे, वो उसे खोएगा और जो कोई मेरी खातिर अपनी जान खोए वही उसे बचाएगा। 25 और आदमी अगर सारी दुनिया को हासिल करे और अपनी जान को खो दे या नुक़सान उठाए तो उसे क्या फ़ाइदा होगा? 26 क्योंकि जो कोई मुझ से और मेरी बातों से शरमाएगा, इब्न — ए — आदम भी जब अपने और अपने बाप के और पाक फ़रिश्तों के जलाल में आएगा तो उस से शरमाएगा। 27 लेकिन मैं तुम से सच कहता हूँ कि उनमें से जो यहाँ खड़े हैं कुछ ऐसे हैं कि जब तक खुदा की बादशाही को देख न लें मौत का मज़ा हरगिज़ न चखेंगे।”

28 फिर इन बातों के कोई आठ रोज़ बाद ऐसा हुआ, कि वो पतरस और यहून्ना और या'कूब को साथ लेकर पहाड़ पर दुआ करने गया। 29 जब वो दुआ कर रहा था, तो ऐसा हुआ कि उसके चेहरे की सूरत बदल गई, और उसकी पोशाक सफ़ेद बरक़त हो गई। 30 और देखो, दो शख्स या'नी मूसा और एलियाह उससे बातें कर रहे थे। 31 ये जलाल में दिखाई दिए और उसके इन्तक़ाल का जिक़र करते थे, जो येरूशलेम में वाक़े होने को था। 32 मगर पतरस और उसके साथी नींद में पड़े थे और जब अच्छी तरह जागे, तो उसके जलाल को और उन दो शख्सों को देखा जो उसके साथ खड़े थे। 33 जब वो उससे जुदा होने लगे तो ऐसा हुआ कि पतरस ने ईसा से कहा, “ऐ उस्ताद! हमारा यहाँ रहना अच्छा है: पस हम तीन डेरे बनाएँ, एक तेरे लिए एक मूसा के लिए और एक एलियाह के लिए।” लेकिन वो जानता न था कि क्या कहता है। 34 वो ये कहता ही था कि बादल ने आकर उन पर साया कर लिया, और जब वो बादल में घिरने लगे तो डर गए। 35 और बादल में से एक आवाज़ आई, “ये मेरा

चुना हुआ बेटा है, इसकी सुनो।” <sup>36</sup> ये आवाज़ आते ही ईसा अकेला दिखाई दिया; और वो चुप रहे, और जो बातें देखी थीं उन दिनों में किसी को उनकी कुछ खबर न दी।

<sup>37</sup> दूसरे दिन जब वो पहाड़ से उतरे थे, तो ऐसा हुआ कि एक बड़ी भीड़ उससे आ मिली। <sup>38</sup> और देखो एक आदमी ने भीड़ में से चिल्लाकर कहा, “ऐ उस्ताद! मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मेरे बेटे पर नज़र कर; क्योंकि वो मेरा इकलौता है।” <sup>39</sup> और देखो, एक रूह उसे पकड़ लेती है, और वो यकायक चीख उठता है; और उसको ऐसा मरोड़ती है कि क़फ़ भर लाता है, और उसको कुचल कर मुश्किल से छोड़ती है। <sup>40</sup> मैंने तेरे शागिर्दों की मिन्नत की कि उसे निकाल दें, लेकिन वो न निकाल सके।” <sup>41</sup> ईसा ने जवाब में कहा, “ऐ कम ईमान वालों मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा और तुम्हारी बर्दाश्त करूँगा? अपने बेटे को ले आ।” <sup>42</sup> वो आता ही था कि बदरूह ने उसे पटक कर मरोड़ा और ईसा ने उस नापाक रूह को झिड़का और लड़के को अच्छा करके उसके बाप को दे दिया। <sup>43</sup> और सब लोग खुदा की शान देखकर हैरान हुए। लेकिन जिस वक़्त सब लोग उन सब कामों पर जो वो करता था ता'ज्जुब कर रहे थे, उसने अपने शागिर्दों से कहा, <sup>44</sup> “तुम्हारे कानों में ये बातें पड़ी रहें, क्योंकि इब्न — ए — आदम आदमियों के हवाले किए जाने को है।” <sup>45</sup> लेकिन वो इस बात को समझते न थे, बल्कि ये उनसे छिपाई गई ताकि उसे मा'लूम न करें; और इस बात के बारे में उससे पूछते हुए डरते थे।

<sup>46</sup> फिर उनमें ये बहस शुरू हुई, कि हम में से बड़ा कौन है? <sup>47</sup> लेकिन ईसा ने उनके दिलों का खयाल मा'लूम करके एक बच्चे को लिया, और अपने पास खड़ा करके उनसे कहा, <sup>48</sup> “जो कोई इस बच्चे को मेरे नाम से कुबूल करता है, वो मुझे कुबूल करता है; और जो मुझे कुबूल करता है, वो मेरे भेजेवाले को कुबूल करता है; क्योंकि जो तुम में सब से छोटा है वही बड़ा है।”

<sup>49</sup> यूहन्ना ने जवाब में कहा, “ऐ उस्ताद! हम ने एक शख्स को तेरे नाम से बदरूह निकालते देखा, और उसको मनह' करने लगे, क्योंकि वो हमारे साथ तेरी पैरवी नहीं करता।” <sup>50</sup> लेकिन ईसा ने उससे कहा, “उसे मनह' न करना, क्योंकि जो तुम्हारे खिलाफ़ नहीं वो तुम्हारी तरफ़ है।”

<sup>51</sup> जब वो दिन नज़दीक आए कि वो ऊपर उठाया जाए, तो ऐसा हुआ कि उसने येरूशलेम जाने को कमर बाँधी। <sup>52</sup> और आगे क़ासिद भेजे, वो जाकर सामरियों के एक गाँव में दाख़िल हुए ताकि उसके लिए तैयारी करें <sup>53</sup> लेकिन उन्होंने उसको टिकने न दिया, क्योंकि उसका

रुख येरूशलेम की तरफ़ था। <sup>54</sup> ये देखकर उसके शागिर्द या'कूब और यूहन्ना ने कहा, “ऐ खुदावन्द, क्या तू चाहता है कि हम हुक्म दें कि आसमान से आग नाज़िल होकर उन्हें भस्म कर दें [जैसा एलियाह ने किया]?” <sup>55</sup> मगर उसने फिरकर उन्हें झिड़का [और कहा, तुम नहीं जानते कि तुम कैसी रूह के हो। क्योंकि इब्न — ए — आदम लोगों की जान बरबाद करने नहीं बल्कि बचाने आया है] <sup>56</sup> फिर वो किसी और गाँव में चले गए।

<sup>57</sup> जब वो राह में चले जाते थे तो किसी ने उससे कहा, “जहाँ कहीं तू जाए, मैं तेरे पीछे चलूँगा।” <sup>58</sup> ईसा ने उससे कहा, “लोमड़ियों के भठ होते हैं और हवा के परिन्दों के घोंसले, मगर इब्न — ए — आदम के लिए सिर रखने की भी जगह नहीं।” <sup>59</sup> फिर उसने दूसरे से कहा, “मेरे पीछे हो ले।” उसने जवाब में कहा, “ऐ खुदावन्द! मुझे इजाज़त दे कि पहले जाकर अपने बाप को दफ़न करूँ।” <sup>60</sup> उसने उससे कहा, “मुर्दों को अपने मुर्दे दफ़न करने दे, लेकिन तू जाकर खुदा की बादशाही की खबर फैला।” <sup>61</sup> एक और ने भी कहा, “ऐ खुदावन्द! मैं तेरे पीछे चलूँगा, लेकिन पहले मुझे इजाज़त दे कि अपने घर वालों से रुख़सत हो आऊँ।” <sup>62</sup> ईसा ने उससे कहा, “जो कोई अपना हाथ हल पर रख कर पीछे देखता है वो खुदा की बादशाही के लायक़ नहीं।”

## 10

22222 22 22222 2222222222 22 222222

<sup>1</sup> इन बातों के बाद खुदावन्द ने सत्तर आदमी और मुक़रर किए, और जिस जिस शहर और जगह को खुद जाने वाला था वहाँ उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा। <sup>2</sup> और वो उनसे कहने लगा, “फ़सल तो बहुत है, लेकिन मज़दूर थोड़े हैं; इसलिए फ़सल के मालिक की मिन्नत करो कि अपनी फ़सल काटने के लिए मज़दूर भेजे।” <sup>3</sup> जाओ; देखो, मैं तुम को गोया बरों को भेड़ियों के बीच मैं भेजता हूँ। <sup>4</sup> न बटुवा ले जाओ न झोली, न जूतियाँ और न राह में किसी को सलाम करो। <sup>5</sup> और जिस घर में दाख़िल हो पहले कहो, 'इस घर की सलामती हो।' <sup>6</sup> अगर वहाँ कोई सलामती का फ़र्ज़न्द होगा तो तुम्हारा सलाम उस पर ठहरेगा, नहीं तो तुम पर लौट आएगा। <sup>7</sup> उसी घर में रहो और जो कुछ उनसे मिले खाओ — पीओ, क्योंकि मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है, घर घर न फ़िरो। <sup>8</sup> जिस शहर में दाख़िल हो वहाँ के लोग तुम्हें कुबूल करें, तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए खाओ; <sup>9</sup> और वहाँ के बीमारों को अच्छा करो और उनसे कहो, 'खुदा की बादशाही तुम्हारे नज़दीक आ पहुँची है।' <sup>10</sup> लेकिन जिस शहर में तुम दाख़िल हो और वहाँ के लोग



तुम्हें कुबूल न करें, तो उनके बाजारों में जाकर कहो कि, <sup>11</sup> 'हम इस गर्द को भी जो तुम्हारे शहर से हमारे पैरों में लगी है तुम्हारे सामने झाड़ देते हैं, मगर ये जान लो कि खुदा की बादशाही नज़दीक आ पहुँची है। <sup>12</sup> मैं तुम से कहता हूँ कि उस दिन सद्धम का हाल उस शहर के हाल से ज्यादा बर्दाश्त के लायक होगा।

<sup>13</sup> "ऐ खुराज़ीन शहर, तुझ पर अफ़सोस! ऐ बैतसैदा शहर, तुझ पर अफ़सोस! क्योंकि जो मोज़िज़े तुम में ज़ाहिर हुए अगर सूर और सैदा शहर में ज़ाहिर होते, तो वो टाट ओढ़कर और खाक में बैठकर कब के तौबा कर लेते।" <sup>14</sup> मगर 'अदालत में सूर और सैदा शहर का हाल तुम्हारे हाल से ज्यादा बर्दाश्त के लायक होगा। <sup>15</sup> और तू ऐ कफ़रनहूम, क्या तू आसमान तक बुलन्द किया जाएगा? नहीं, बल्कि तू 'आलम — ए — अर्वाह में उतारा जाएगा। <sup>16</sup> "जो तुम्हारी सुनता है वो मेरी सुनता है, और जो तुम्हें नहीं मानता वो मुझे नहीं मानता, और जो मुझे नहीं मानता वो मेरे भेजनेवाले को नहीं मानता।"

<sup>17</sup> वो सत्तर खुश होकर फिर आए और कहने लगे, "ऐ खुदावन्द, तेरे नाम से बदरूहें भी हमारे ताबे' हैं।" <sup>18</sup> उसने उनसे कहा, "मैं शैतान को बिजली की तरह आसमान से गिरा हुआ देख रहा था। <sup>19</sup> देखो, मैंने तुम को इस्त्रियार दिया कि साँपों और बिच्छुओं को कुचलो और दुश्मन की सारी कुदरत पर ग़ालिब आओ, और तुम को हरगिज़ किसी चीज़ से नुक्रसान न पहुँचेगा। <sup>20</sup> तोभी इससे खुश न हो कि रूहें तुम्हारे ताबे' हैं बल्कि इससे खुश हो कि तुम्हारे नाम आसमान पर लिखे हुए है।"

<sup>21</sup> उसी घड़ी वो रु — उल — कुदूस से खुशी में भर गया और कहने लगा, "ऐ बाप! आसमान और ज़मीन के खुदावन्द, मैं तेरी हम्द करता हूँ कि तूने ये बातें होशियारों और 'अक्लमन्दों से छिपाई और बच्चों पर ज़ाहिर कीं हैं, ऐ, बाप क्योंकि ऐसा ही तुझे पसन्द आया। <sup>22</sup> मेरे बाप की तरफ़ से सब कुछ मुझे सौंपा गया; और कोई नहीं जानता कि बेटा कौन है सिवा बाप के, और कोई नहीं जानता कि बाप कौन है सिवा बेटे के और उस शख्स के जिस पर बेटा उसे ज़ाहिर करना चाहे।"

<sup>23</sup> और शागिर्दों की तरफ़ मूखातिब होकर खास उन्हीं से कहा, "मुबारिक है वो आँखें जो ये बातें देखती हैं जिन्हें तुम देखते हो। <sup>24</sup> क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से नबियों और बादशाहों ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो देखें मगर न देखी, और जो बातें तुम सुनते हो सुनें मगर न सुनीं।"

<sup>25</sup> और देखो, एक शरा का आलिम उठा, और ये कहकर उसकी आजमाइश करने लगा, "ऐ उस्ताद, मैं क्या करूँ कि हमेशा की ज़िन्दगी का बारिस बनूँ?" <sup>26</sup> उसने उससे कहा, "तौरेत में क्या लिखा है? तू किस तरह पढ़ता है?" <sup>27</sup> उसने जवाब में कहा, "खुदावन्द अपने खुदा से अपने सारे दिल और अपनी सारी जान और अपनी सारी ताक़त और अपनी सारी 'अक्ल से मुहब्बत रख और अपने पड़ोसी से अपने बराबर मुहब्बत रख।" <sup>28</sup> उसने उससे कहा, "तूने ठीक जवाब दिया, यही कर तो तू जिएगा।" <sup>29</sup> मगर उसने अपने आप को रास्तबाज़ ठहराने की गरज़ से ईसा से पूछा, "फिर मेरा पड़ोसी कौन है?" <sup>30</sup> ईसा ने जवाब में कहा, "एक आदमी येरूशलेम से यरीहू की तरफ़ जा रहा था कि डाकूओं में घिर गया। उन्होंने उसके कपड़े उतार लिए और मारा भी और अधमरा छोड़कर चले गए। <sup>31</sup> इत्तफ़ाक़न एक काहिन उसी राह से जा रहा था, और उसे देखकर कतरा कर चला गया। <sup>32</sup> इसी तरह एक लावी उस जगह आया, वो भी उसे देखकर कतरा कर चला गया। <sup>33</sup> लेकिन एक सामरी सफ़र करते करते वहाँ आ निकला, और उसे देखकर उसने तरस खाया। <sup>34</sup> और उसके पास आकर उसके ज़ख्मों को तेल और मय लगा कर बाँधा, और अपने जानवर पर सवार करके सराय में ले गया और उसकी देखरेख की। <sup>35</sup> दूसरे दिन दो दीनार निकालकर भटियारे को दिए और कहा, 'इसकी देख भाल करना और जो कुछ इससे ज्यादा खर्च होगा मैं फिर आकर तुझे अदा कर दूँगा। <sup>36</sup> इन तीनों में से उस शख्स का जो डाकूओं में घिर गया था तेरी नज़र में कौन पड़ोसी ठहरा?" <sup>37</sup> उसने कहा, वो जिसने उस पर रहम किया ईसा ने उससे कहा, "जा तू भी ऐसा ही कर।"

<sup>38</sup> फिर जब जा रहे थे तो वो एक गाँव में दाखिल हुआ और मर्था नाम 'औरत ने उसे अपने घर में उतारा। <sup>39</sup> और मरियम नाम उसकी एक बहन थी, वो ईसा के पाँव के पास बैठकर उसका कलाम सुन रही थी। <sup>40</sup> लेकिन मर्था खिदमत करते करते घबरा गई, पस उसके पास आकर कहने लगी, "ऐ खुदावन्द, क्या तुझे खयाल नहीं कि मेरी बहन ने खिदमत करने को मुझे अकेला छोड़ दिया है, पस उसे कह कि मेरी मदद करे।" <sup>41</sup> खुदावन्द ने जवाब में उससे कहा, "मर्था, मर्था, तू बहुत सी चीज़ों की फ़िक्र — ओ — तरह में है। <sup>42</sup> लेकिन एक चीज़ ज़रूर है और मरियम ने वो अच्छा हिस्सा चुन लिया है जो उससे छीना न जाएगा।"

## 11

222 22222 22 22222 222 22'2222

1 फिर ऐसा हुआ कि वो किसी जगह दुआ कर रहा था; जब कर चुका तो उसके शागिर्दों में से एक ने उससे कहा, “ऐ खुदावन्द! जैसा यहून्ना ने अपने शागिर्दों को दुआ करना सिखाया, तू भी हमें सिखा।”

2 उसने उनसे कहा, “जब तुम दुआ करो तो कहो, ऐ बाप!

तेरा नाम पाक माना जाए,

तेरी बादशाही आए।

3 'हमारी रोज़ की रोटी हर रोज़ हमें दिया कर।

4 और हमारे गुनाह मु'आफ़ कर,

क्योंकि हम भी अपने हर कर्ज़दार को मु'आफ़ करते हैं, और हमें आजमाइश में न ला।”

5 फिर उसने उनसे कहा, “तुम में से कौन है जिसका एक दोस्त हो, और वो आधी रात को उसके पास जाकर उससे कहे, ‘ऐ दोस्त, मुझे तीन रोटियाँ दे।’ 6 क्योंकि मेरा एक दोस्त सफ़र करके मेरे पास आया है, और मेरे पास कुछ नहीं कि उसके आगे रखूँ। 7 और वो अन्दर से जवाब में कहे, ‘मुझे तकलीफ़ न दे, अब दरवाज़ा बंद है और मेरे लड़के मेरे पास बिछोने पर हैं, मैं उठकर तुझे दे नहीं सकता।’ 8 मैं तुम से कहता हूँ, कि अगरचे वो इस वजह से कि उसका दोस्त है उठकर उसे न दे, तोभी उसकी बेशर्मी की वजह से उठकर जितनी दरकार है उसे देगा। 9 पस मैं तुम से कहता हूँ, माँगो तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूँडो तो पाओगे, दरवाज़ा खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। 10 क्योंकि जो कोई माँगता है उसे मिलता है, और जो ढूँडता है वो पाता है, और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा। 11 तुम में से ऐसा कौन सा बाप है, कि जब उसका बेटा रोटी माँगे तो उसे पत्थर दे; या मछली माँगे तो मछली के बदले उसे साँप दे? 12 या अंडा माँगे तो उसे बिच्छू दे? 13 पस जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें देना जानते हो, तो आसमानी बाप अपने माँगने वालों को रूह — उल — कुहूस क्यों न देगा।”

14 फिर वो एक गूँगी बदरूह को निकाल रहा था, और जब वो बदरूह निकल गई तो ऐसा हुआ कि गूँगा बोला और लोगों ने ता'ज्जुब किया। 15 लेकिन उनमें से कुछ ने कहा, “ये तो बदरूहों के सरदार बा'लज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता है।” 16 कुछ और लोग आजमाइश के लिए उससे एक आसमानी निशान तलब करने लगे। 17 मगर उसने उनके खयालात को जानकर उनसे कहा, “जिस सल्तनत में फूट पड़े, वो वीरान हो जाती है; और जिस घर में फूट पड़े, वो बरबाद हो जाता है। 18 और अगर शैतान भी अपना मुखालिफ़ हो जाए,

तो उसकी सल्तनत किस तरह काईम रहेगी? क्यूँकि तुम मेरे बारे में कहते हो, कि ये बदरूहों को बा'लज़बूल की मदद से निकालता है। 19 और अगर मैं बदरूहों को बा'लज़बूल की मदद से निकालता हूँ, तो तुम्हारे बेटे किसकी मदद से निकालते हैं? पस वही तुम्हारा फ़ैसला करेंगे। 20 लेकिन अगर मैं बदरूहों को खुदा की कुदरत से निकालता हूँ, तो खुदा की बादशाही तुम्हारे पास आ पहुँची। 21 जब ताक़तवर आदमी हथियार बाँधे हुए अपनी हवेली की रखवाली करता है, तो उसका माल महफूज़ रहता है। 22 लेकिन जब उससे कोई ताक़तवर हमला करके उस पर ग़ालिब आता है, तो उसके सब हथियार जिन पर उसका भरोसा था छीन लेता और उसका माल लूट कर बाँट देता है। 23 जो मेरी तरफ़ नहीं वो मेरे खिलाफ़ है, और जो मेरे साथ जमा नहीं करता वो बिखेरता है।”

24 “जब नापाक रूह आदमी में से निकलती है तो सूखे मुक़ामों में आराम ढूँडती फिरती है, और जब नहीं पाती तो कहती है, ‘मैं अपने उसी घर में लौट जाऊँगी जिससे निकली हूँ।’ 25 और आकर उसे झड़ा हुआ और आरास्ता पाती है। 26 फिर जाकर और सात रूहें अपने से बुरी अपने साथ ले आती है और वो उसमें दाखिल होकर वहाँ बसती हैं, और उस आदमी का पिछला हाल पहले से भी खराब हो जाता है।” 27 जब वो ये बातें कह रहा था तो ऐसा हुआ कि भीड़ में से एक 'औरत ने पुकार कर उससे कहा, मुबारिक है वो पेट जिसमें तू रहा और वो आंचल जो तू ने पिए।” 28 उसने कहा, “हाँ; मगर ज्यादा मुबारिक वो है जो खुदा का कलाम सुनते और उस पर 'अमल करते हैं।”

29 जब बड़ी भीड़ जमा होती जाती थी तो वो कहने लगा, “इस ज़माने के लोग बुरे हैं, वो निशान तलब करते हैं; मगर यहून्ना के निशान के सिवा कोई और निशान उनको न दिया जाएगा।” 30 क्यूँकि जिस तरह यहून्ना निनवे के लोगों के लिए निशान ठहरा, उसी तरह इब्न — ए — आदम भी इस ज़माने के लोगों के लिए ठहरेगा। 31 दक्खिन की मलिका इस ज़माने के आदमियों के साथ 'अदालत के दिन उठकर उनको मुजरिम ठहराएगी, क्यूँकि वो दुनिया के किनारे से सुलैमान की हिक्मत सुनने को आई, और देखो, यहाँ वो है जो सुलैमान से भी बड़ा है। 32 निनवे के लोग इस ज़माने के लोगों के साथ, 'अदालत के दिन खड़े होकर उनको मुजरिम ठहराएंगे; क्यूँकि उन्होंने यहून्ना के एलान पर तौबा कर ली, और देखो, यहाँ वो है जो यहून्ना से भी बड़ा है।

33 “कोई शख्स चराग़ जला कर तहखाने में या पैमाने

के नीचे नहीं रखता, बल्कि चरागदान पर रखता है ताकि अन्दर जाने वालों को रोशनी दिखाई दे। <sup>34</sup> तेरे बदन का चराग तेरी आँख है, जब तेरी आँख दुरुस्त है तो तेरा सारा बदन भी रोशन है, और जब खराब है तो तेरा बदन भी तारीक है। <sup>35</sup> पस देख, जो रोशनी तुझ में है तारीकी तो नहीं! <sup>36</sup> पस अगर तेरा सारा बदन रोशन हो और कोई हिस्सा तारीक न रहे, तो वो तमाम ऐसा रोशन होगा जैसा उस वक़्त होता है जब चराग अपने चमक से रोशन करता है।”

<sup>37</sup> जो वो बात कर रहा था तो किसी फ़रीसी ने उसकी दा'वत की। पस वो अन्दर जाकर खाना खाने बैठा। <sup>38</sup> फ़रीसी ने ये देखकर ता'अज्जुब किया कि उसने खाने से पहले गुस्ल नहीं किया। <sup>39</sup> खुदावन्द ने उससे कहा, “ऐ फ़रीसियों! तुम प्याले और तश्तरी को ऊपर से तो साफ़ करते हो, लेकिन तुम्हारे अन्दर लूट और बदी भरी है।” <sup>40</sup> ऐ नादानों! जिसने बाहर को बनाया क्या उसने अन्दर को नहीं बनाया? <sup>41</sup> हाँ! अन्दर की चीज़ें ख़ैरात कर दो, तो देखो, सब कुछ तुम्हारे लिए पाक होगा।

<sup>42</sup> “लेकिन ऐ फ़रीसियों! तुम पर अफ़सोस, कि पुदीने और सुदाब और हर एक तरकारी पर दसवाँ हिस्सा देते हो, और इन्साफ़ और खुदा की मुहब्बत से गाफ़िल रहते हो; लाज़िम था कि ये भी करते और वो भी न छोड़ते। <sup>43</sup> ऐ फ़रीसियों! तुम पर अफ़सोस, कि तुम 'इबादतखानों में आ'ला दर्जे की कुर्सियाँ और और बाज़ारों में सलाम चाहते हो। <sup>44</sup> तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुम उन छिपी हुई क़ब्रों की तरह हो जिन पर आदमी चलते है, और उनको इस बात की ख़बर नहीं।”

<sup>45</sup> फिर शरा' के 'आलिमों में से एक ने जवाब में उससे कहा, “ऐ उस्ताद! इन बातों के कहने से तू हमें भी बे'इज्जत करता है।” <sup>46</sup> उसने कहा, “ऐ शरा' के 'आलिमों! तुम पर भी अफ़सोस, कि तुम ऐसे बोझ जिनको उठाना मुश्किल है, आदमियों पर लादते हो और तुम एक उंगली भी उन बोझों को नहीं लगाते। <sup>47</sup> तुम पर अफ़सोस, कि तुम तो नबियों की क़ब्रों को बनाते हो और तुम्हारे बाप — दादा ने उनको क़त्ल किया था। <sup>48</sup> पस तुम गवाह हो और अपने बाप — दादा के कामों को पसन्द करते हो, क्योंकि उन्होंने तो उनको क़त्ल किया था और तुम उनकी क़ब्रें बनाते हो। <sup>49</sup> इसी लिए खुदा की हिक्मत ने कहा है, मैं नबियों और रसूलों को उनके पास भेजूँगी, वो उनमें से कुछ को क़त्ल करेंगे और कुछ को सताएँगे। <sup>50</sup> ताकि सब नबियों के खून का जो बिना — ए — 'आलम से बहाया गया, इस ज़माने के लोगों से हिसाब किताब लिया जाए। <sup>51</sup> हाबिल के खून से लेकर उस ज़क़रियाह के खून तक, जो कुर्बानगाह और मक्दिस

के बीच में हलाक हुआ। मैं तुम से सच कहता हूँ कि इसी ज़माने के लोगों से सब का हिसाब किताब लिया जाएगा। <sup>52</sup> ऐ शरा' के 'आलिमों! तुम पर अफ़सोस, कि तुम ने मा'रिफ़त की कुंजी छीन ली, तुम खुद भी दाखिल न हुए और दाखिल होने वालों को भी रोका।”

<sup>53</sup> जब वो वहाँ से निकला, तो आलिम और फ़रीसी उसे बे — तरह चिपटने और छेड़ने लगे ताकि वो बहुत से बातों का ज़िक्र करे, <sup>54</sup> और उसकी घात में रहे ताकि उसके मुँह की कोई बात पकड़े।

## 12

???? ? ? ????????? ???? ???? ???? ?

<sup>1</sup> इतने में जब हज़ारों आदमियों की भीड़ लग गई, यहाँ तक कि एक दूसरे पर गिरा पड़ता था, तो उसने सबसे पहले अपने शागिर्दों से ये कहना शुरू किया, “उस ख़मीर से होशियार रहना जो फ़रीसियों की रियाकारी है। <sup>2</sup> क्योंकि कोई चीज़ ढकी नहीं जो खोली न जाएगी, और न कोई चीज़ छिपी है जो जानी न जाएगी। <sup>3</sup> इसलिए जो कुछ तुम ने अंधेरे में कहा है वो उजाले में सुना जाएगा; और जो कुछ तुम ने कोठरियों के अन्दर कान में कहा है, छतों पर उसका एलान किया जाएगा।”

<sup>4</sup> “मगर तुम दोस्तों से मैं कहता हूँ कि उनसे न डरो जो बदन को क़त्ल करते हैं, और उसके बाद और कुछ नहीं कर सकते।” <sup>5</sup> लेकिन मैं तुम्हें जताता हूँ कि किससे डरना चाहिए, उससे डरो जिसे इस्तियार है कि क़त्ल करने के बाद जहन्नुम में डाले; हाँ, मैं तुम से कहता हूँ कि उसी से डरो। <sup>6</sup> क्या दो पैसे की पाँच चिड़िया नहीं बिकती? तो भी खुदा के सामने उनमें से एक भी फ़रामोश नहीं होती। <sup>7</sup> बल्कि तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए है; डरो, मत तुम्हारी क़द्र तो बहुत सी चिड़ियों से ज्यादा है।

<sup>8</sup> “और मैं तुम से कहता हूँ कि जो कोई आदमियों के सामने मेरा इकरार करे, इब्न — ए — आदम भी खुदा के फ़रिश्तों के सामने उसका इकरार करेगा।” <sup>9</sup> “मगर जो आदमियों के सामने मेरा इन्कार करे, खुदा के फ़रिश्तों के सामने उसका इन्कार किया जाएगा।

<sup>10</sup> और जो कोई इब्न — ए — आदम के खिलाफ़ कोई बात कहे, उसको मु'आफ़ किया जाएगा; लेकिन जो रूह — उल — कुदूस के हक़ में कुफ़र बके, उसको मु'आफ़ न किया जाएगा।”

<sup>11</sup> “और जब वो तुम को 'इबादतखानों में और हाकिमों और इस्तियार वालों के पास ले जाएँ, तो फ़िक्र न करना कि हम किस तरह या क्या जवाब दें या क्या कहें।

12 **क्यूँकि** **रूह** — **उल** — **कुद्स** उसी वक्त तुम्हें सिखा देगा कि क्या कहना चाहिए।<sup>13</sup>

13 “फिर भीड़ में से एक ने उससे कहा, **ऐ उस्ताद!** मेरे भाई से कह कि मेरे बाप की जायदाद का मेरा हिस्सा मुझे दे।”<sup>14</sup> उसने उससे कहा, “**मियाँ!** किसने मुझे तुम्हारा मुन्सिफ़ या बाँटने वाला मुकर्रर किया है?”<sup>15</sup> और उसने उनसे कहा, “**खबरदार!** अपने आप को हर तरह के लालच से बचाए रखो, **क्यूँकि** किसी की ज़िन्दगी उसके माल की ज्यादाती पर मौकूफ़ नहीं।”

16 और उसने उनसे एक मिसाल कही, “**किसी** दौलतमन्द की ज़मीन में बड़ी फ़सल हुई।”<sup>17</sup> पस वो अपने दिल में सोचकर कहने लगा, ‘मैं क्या करूँ? **क्यूँकि** मेरे यहाँ जगह नहीं जहाँ अपनी पैदावार भर रखूँ?’<sup>18</sup> उसने कहा, ‘मैं यूँ करूँगा कि अपनी कोठियाँ ढा कर उनसे बड़ी बनाऊँगा;’<sup>19</sup> और उनमें अपना सारा अनाज और माल भर दूँगा और अपनी जान से कहूँगा, कि **ऐ** जान! तेरे पास बहुत बरसों के लिए बहुत सा माल जमा है; चैन कर, खा पी खुश रह।’<sup>20</sup> मगर खुदा ने उससे कहा, ‘**ऐ नादान!** इसी रात तेरी जान तुझ से तलब कर ली जाएगी, पस जो कुछ तू ने तैयार किया है वो किसका होगा?’<sup>21</sup> ऐसा ही वो शख्स है जो अपने लिए खज़ाना जमा करता है, और खुदा के नज़दीक दौलतमन्द नहीं”

22 फिर उसने अपने शागिर्दों से कहा, “**इसलिए** मैं तुम से कहता हूँ कि अपनी जान की फ़िक्र न करो कि हम क्या खाएँगे, और न अपने बदन की कि क्या पहनेंगे।”<sup>23</sup> **क्यूँकि** जान खुराक से बढ़ कर है और बदन पोशाक से।<sup>24</sup> परिन्दों पर ग़ौर करो कि न बोते हैं और न काटते, न उनके खित्ता होता है न कोठी; तोभी खुदा उन्हें खिलाता है। तुम्हारी क्रदर तो परिन्दों से कहीं ज्यादा है।<sup>25</sup> तुम में ऐसा कोन है जो फ़िक्र करके अपनी उम्र में एक घड़ी बढ़ा सके? <sup>26</sup> पस जब सबसे छोटी बात भी नहीं कर सकते, तो बाक़ी चीज़ों की फ़िक्र क्यूँ करते हो?<sup>27</sup> सोसन के दरख़्तों पर ग़ौर करो कि किस तरह बढ़ते हैं; वो न मेहनत करते हैं न काटते हैं, तोभी मैं तुम से कहता हूँ कि सुलैमान भी बावजूद अपनी सारी शान — ओ — शौकत के उनमें से किसी की तरह मुलब्स न था।<sup>28</sup> पस जब खुदा मैदान की घास को जो आज है कल तंदूर में झोंकी जाएगी, ऐसी पोशाक पहनाता है; तो ऐ कम ईमान वालो! तुम को क्यूँ न पहनाएगा? <sup>29</sup> और तुम इसकी तलाश में न रहो कि क्या खाएँगे या क्या पीएँगे, और न शक्की बनो।<sup>30</sup> **क्यूँकि** इन सब चीज़ों

की तलाश में दुनिया की क़ौमें रहती हैं, लेकिन तुम्हारा आसमानी बाप जानता है कि तुम इन चीज़ों के मुहताज हो।<sup>31</sup> हाँ, उसकी बादशाही की तलाश में रहो तो ये चीज़ें भी तुम्हें मिल जाएँगी।”

32 “**ऐ छोटे गल्ले, न डर;** **क्यूँकि** तुम्हारे आसमानी बाप को पसन्द आया कि तुम्हें बादशाही दे।<sup>33</sup> अपना माल अस्बाब बेचकर ख़ैरात कर दो, और अपने लिए ऐसे बटवे बनाओ जो पुराने नहीं होते; या ‘नि आसमान पर ऐसा खज़ाना जो ख़ाली नहीं होता, जहाँ चोर नज़दीक नहीं जाता, और कीड़ा खराब नहीं करता।<sup>34</sup> **क्यूँकि** जहाँ तुम्हारा खज़ाना है, वहीं तुम्हारा दिल भी रहेगा।”

35 “**तुम्हारी कमरें बँधी रहें और तुम्हारे चराग जलते रहें।**<sup>36</sup> और तुम उन आदमियों की तरह बनो जो अपने मालिक की राह देखते हों कि वो शादी में से कब लौटेगा, ताकि जब वो आकर दरवाज़ा खटखटाए तो फ़ौरन उसके लिए खोल दें।<sup>37</sup> मुबारिक़ है वो नौकर जिनका मालिक आकर उन्हें जागता पाए; मैं तुम से सच कहता हूँ कि वो कमर बाँध कर उन्हें खाना खाने को बिठाएगा, और पास आकर उनकी खिदमत करेगा।<sup>38</sup> अगर वो रात के दूसरे पहर\* में या तीसरे पहर† में आकर उनको ऐसे हाल में पाए, तो वो नौकर मुबारिक़ हैं।<sup>39</sup> लेकिन ये जान रखो कि अगर घर के मालिक को मा'लूम होता कि चोर किस घड़ी आएगा तो जागता रहता और अपने घर में नक़ब लगने न देता।<sup>40</sup> तुम भी तैयार रहो; **क्यूँकि** जिस घड़ी तुम को गुमान भी न होगा, इब्न — ए — आदम आ जाएगा।”

41 पतरस ने कहा, “**ऐ खुदावन्द, तू ये मिसाल हम ही से कहता है या सबसे।**”<sup>42</sup> खुदावन्द ने कहा, “**कौन है वो ईमानदार और 'अक़लमन्द,** जिसका मालिक उसे अपने नौकर चाकरों पर मुकर्रर करे हर एक की खुराक वक्त पर बाँट दिया करे।<sup>43</sup> मुबारिक़ है वो नौकर जिसका मालिक आकर उसको ऐसा ही करते पाए।<sup>44</sup> मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो उसे अपने सारे माल पर मुख़्तार कर देगा।<sup>45</sup> लेकिन अगर वो नौकर अपने दिल में ये कहकर मेरे मालिक के आने में देर है, गुलामों और लौंडियों को मारना और खा पी कर मतवाला होना शुरू करे।<sup>46</sup> तो उस नौकर का मालिक ऐसे दिन, कि वो उसकी राह न देखता हो, आ मौजूद होगा और खूब कोड़े लगाकर उसे बेईमानों में शामिल करेगा।<sup>47</sup> और वो नौकर जिसने अपने मालिक की मर्ज़ी जान ली, और तैयारी न की और न उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ 'अमल किया, बहुत मार खाएगा।<sup>48</sup> मगर जिसने न जानकर मार खाने के काम

\* 12:38 12:38 दूसरे पहर ये 9 से 12 सुबह का वक्त † 12:38 12:38 तीसरे पहर ये शाम 12 से 3 बजे का वक्त



किए वो थोड़ी मार खाएगा; और जिसे बहुत दिया गया उससे बहुत तलब किया जाएगा, और जिसे बहुत सौंपा गया उससे ज्यादा तलब करेंगे।”

49 “मैं ज़मीन पर आग भड़काने आया हूँ, और अगर लग चुकी होती तो मैं क्या ही खुश होता। 50 लेकिन मुझे एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक वो हो न ले मैं बहुत ही तंग रहूँगा। 51 क्या तुम गुमान करते हो कि मैं ज़मीन पर सुलह कराने आया हूँ? मैं तुम से कहता हूँ कि नहीं, बल्कि जुदाई कराने। 52 क्योंकि अब से एक घर के पाँच आदमी आपस में दुश्मनी रखेंगे, दो से तीन और तीन से दो। 53 बाप बेटे से दुश्मनी रखेगा और बेटा बाप से, सास बहु से और बहु सास से।”

54 फिर उसने लोगों से भी कहा, “जब बादल को पच्छिम से उठते देखते हो तो फ़ौरन कहते हो कि पानी बरसेगा, और ऐसा ही होता है; 55 और जब तुम मा'लूम करते हो कि दक्खिना चल रही है तो कहते हो कि लू चलेगी, और ऐसा ही होता है। 56 ऐ रियाकारो! ज़मीन और आसमान की सूरत में फ़र्क करना तुम्हें आता है, लेकिन इस ज़माने के बारे में फ़र्क करना क्यों नहीं आता?”

57 “और तुम अपने आप ही क्यों फ़ैसला नहीं कर लेते कि ठीक क्या है? 58 जब तू अपने दुश्मन के साथ हाकिम के पास जा रहा है तो रास्ते में कोशीश करके उससे छूट जाए, ऐसा न हो कि वो तुझको फ़ैसला करने वाले के पास खींच ले जाए, और फ़ैसला करने वाला तुझे सिपाही के हवाले करे और सिपाही तुझे कैद में डाले। 59 मैं तुझ से कहता हूँ कि जब तक तू दमड़ी — दमड़ी अदा न कर देगा वहाँ से हरगिज़ न छूटेगा।”

## 13

2222 2222 22 2222 2222

1 उस वक़्त कुछ लोग हाज़िर थे, जिन्होंने उसे उन ग़लतियों की ख़बर दी जिनका खून पिलातुस ने उनके ज़बीहों के साथ मिलाया था। 2 उसने जवाब में उनसे कहा, “इन ग़लतियों ने ऐसा दुःख पाया, क्या वो इसलिए तुम्हारी समझ में और सब ग़लतियों से ज्यादा गुनहगार थे? 3 मैं तुम से कहता हूँ कि नहीं; बल्कि अगर तुम तौबा न करोगे, तो सब इसी तरह हलाक होंगे। 4 या, क्या वो अठारह आदमी जिन पर शिलोख का गुम्बद गिरा और दब कर मर गए, तुम्हारी समझ में येरूशलेम के और सब रहनेवालों से ज्यादा कुसूरवार थे? 5 मैं तुम से कहता हूँ कि नहीं; बल्कि अगर तुम तौबा न करोगे, तो सब इसी तरह हलाक होंगे।”

6 फिर उसने ये मिसाल कही, “किसी ने अपने बाग़ में एक अंजीर का दरख़्त लगाया था। वो उसमें फल ढूँडने आया और न पाया। 7 इस पर उसने बाग़बान से कहा, ‘देख तीन बरस से मैं इस अंजीर के दरख़्त में फल ढूँडने आता हूँ और नहीं पाता। इसे काट डाल, ये ज़मीन को भी क्यों रोके रहे?’ 8 उसने जवाब में उससे कहा, ‘ऐ खुदावन्द, इस साल तू और भी उसे रहने दे, ताकि मैं उसके चारों तरफ़ थाला खोदूँ और खाद डालूँ।’ 9 अगर आगे फला तो ख़ैर, नहीं तो उसके बाद काट डालना।”

10 फिर वो सबत के दिन किसी 'इबादतख़ाने में ता'लीम देता था। 11 और देखो, एक 'औरत थी जिसको अठारह बरस से किसी बदरूह की वजह से कमज़ोरी थी; वो झुक गई थी और किसी तरह सीधी न हो सकती थी। 12 ईसा ने उसे देखकर पास बुलाया और उससे कहा, ‘ऐ 'औरत, तू अपनी कमज़ोरी से छूट गई।’ 13 और उसने उस पर हाथ रखे, उसी दम वो सीधी हो गई और खुदा की बड़ाई करने लगी। 14 'इबादतख़ाने का सरदार, इसलिए कि ईसा ने सबत के दिन शिफ़ा बख़्शी, ख़फ़ा होकर लोगों से कहने लगा, ‘छः दिन हैं जिनमें काम करना चाहिए, पस उन्हीं में आकर शिफ़ा पाओ न कि सबत के दिन।’ 15 खुदावन्द ने उसके जवाब में कहा, ‘ऐ रियाकारो! क्या हर एक तुम में से सबत के दिन अपने बैल या गधे को खूँटे से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता? 16 पस क्या वाजिब न था कि ये जो अब्रहाम की बेटी है जिसको शैतान ने अठारह बरस से बाँध कर रखवा था, सबत के दिन इस कैद से छुड़ाई जाती?’ 17 जब उसने ये बातें कहीं तो उसके सब मुख़ालिफ़ शर्मिन्दा हुए, और सारी भीड़ उन 'आलीशान कामों से जो उससे होते थे, खुश हुई।

18 पस वो कहने लगा, ‘खुदा की बादशाही किसकी तरह है? मैं उसको किससे मिसाल दूँ?’ 19 वो राई के दाने की तरह है, जिसको एक आदमी ने लेकर अपने बाग़ में डाल दिया: वो उगकर बड़ा दरख़्त हो गया, और हवा के परिन्दों ने उसकी डालियों पर बसेरा किया।’ 20 उसने फिर कहा, ‘मैं खुदा की बादशाही को किससे मिसाल दूँ?’ 21 वो ख़मीर की तरह है, जिसे एक 'औरत ने तीन पैमाने आटे में मिलाया, और होते होते सब ख़मीर हो गया।’

22 वो शहर — शहर और गाँव — गाँव ता'लीम देता हुआ येरूशलेम का सफ़र कर रहा था। 23 किसी शख्स ने उससे पुछा, ‘ऐ खुदावन्द! क्या नजात पाने वाले थोड़े हैं?’ 24 उसने उनसे कहा, ‘मेहनत करो कि तंग दरवाज़े से दाखिल हो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से दाखिल होने की कोशिश करेंगे और न हो सकेंगे।’ 25 जब घर का मालिक उठ कर दरवाज़ा बन्द कर चुका हो, और

तुम बाहर खड़े दरवाज़ा खटखटाकर ये कहना शुरू करो, 'ऐ खुदावन्द! हमारे लिए खोल दे, और वो जवाब दे, 'मैं तुम को नहीं जानता कि कहाँ के हो।' 26 उस वक़्त तुम कहना शुरू करोगे, 'हम ने तो तेरे रु — ब — रु खाया — पिया और तू ने हमारे बाज़ारों में ता'लीम दी।' 27 मगर वो कहेगा, 'मैं तुम से कहता हूँ, कि मैं नहीं जानता तुम कहाँ के हो। ऐ बदकारो, तुम सब मुझ से दूर हो। 28 वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा; तुम अब्रहाम और इज्हाक और याकूब और सब नबियों को खुदा की बादशाही में शामिल, और अपने आपको बाहर निकाला हुआ देखोगे; 29 और पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन से लोग आकर खुदा की बादशाही की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे। 30 और देखो, कुछ आखिर ऐसे हैं जो अव्वल होंगे और कुछ अव्वल हैं जो आखिर होंगे।"

31 उसी वक़्त कुछ फ़रीसियों ने आकर उससे कहा, "निकल कर यहाँ से चल दे, क्योंकि हेरोदेस तुझे क़त्ल करना चाहता है।" 32 उसने उनसे कहा, "जाकर उस लोमड़ी से कह दो कि देख, मैं आज और कल बदरूहों को निकालता और शिफ़ा का काम अन्जाम देता रहूँगा, और तीसरे दिन पूरा करूँगा। 33 मगर मुझे आज और कल और परसों अपनी राह पर चलना ज़रूर है, क्योंकि मुम्किन नहीं कि नबी येरूशलेम से बाहर हलाक हो।"

34 "ऐ येरूशलेम! ऐ येरूशलेम! तू जो नबियों को क़त्ल करती है, और जो तेरे पास भेजे गए उन पर पथराव करती है। कितनी ही बार मैंने चाहा कि जिस तरह मुर्गी अपने बच्चों को परों तले जमा कर लेती है, उसी तरह मैं भी तेरे बच्चों को जमा कर लूँ, मगर तुम ने न चाहा। 35 देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे ही लिए छोड़ा जाता है, और मैं तुम से कहता हूँ, कि मुझ को उस वक़्त तक हरगिज़ न देखोगे जब तक न कहोगे, 'मुबारिक है वो, जो खुदावन्द के नाम से आता है।'"

## 14

22222 22 2222 22 2222 22 2222 22222

1 फिर ऐसा हुआ कि वो सबत के दिन फ़रीसियों के सरदारों में से किसी के घर खाना खाने को गया; और वो उसकी ताक में रहे। 2 और देखो, एक शख्स उसके सामने था जिसे जलन्दर था। 3 ईसा ने शरा' के 'आलिमों और फ़रीसियों से कहा, "सबत के दिन शिफ़ा बख़्शना जायज़ है या नहीं?" 4 वो चुप रह गए। उसने उसे हाथ लगा कर शिफ़ा बख़्शी और रुख़्सत किया, 5 और उनसे कहा, "तुम में ऐसा कौन है, जिसका गधा या बैल कूँ में गिर पड़े और वो सबत के दिन उसको फ़ौरन न निकाल ले?" 6 वो इन बातों का जवाब न दे सके।

7 जब उसने देखा कि मेहमान सदर जगह किस तरह पसन्द करते हैं तो उनसे एक मिसाल कही, 8 "जब कोई तुझे शादी में बुलाए तो सदर जगह पर न बैठ, कि शायद उसने तुझ से भी किसी ज़्यादा 'इज्जतदार को बुलाया हो; 9 और जिसने तुझे और उसे दोनों को बुलाया है, आकर तुझ से कहे, 'इसको जगह दे, 'फिर तुझे शर्मिन्दा होकर सबसे नीचे बैठना पड़े। 10 बल्कि जब तू बुलाया जाए तो सबसे नीची जगह जा बैठ, ताकि जब तेरा बुलाने वाला आए तो तुझ देखे, 'ऐ दोस्त, आगे बढ़कर बैठ, 'तब उन सब की नज़र में जो तेरे साथ खाने बैठे हैं तेरी इज्जत होगी। 11 क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वो छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वो बड़ा किया जाएगा।"

12 फिर उसने अपने बुलानेवाले से कहा, "जब तू दिन का या रात का खाना तैयार करे, तो अपने दोस्तों या भाइयों या रिश्तेदारों या दौलतमन्द पड़ोसियों को न बुला; ताकि ऐसा न हो कि वो भी तुझे बुलाएँ और तेरा बदला हो जाए। 13 बल्कि जब तू दावत करे तो गरीबों, लुन्जों, लंगड़ों, अन्धों को बुला। 14 और तुझ पर बर्क़त होगी, क्योंकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं, और तुझे रास्तेबाज़ों की क़यामत में बदला मिलेगा।"

15 जो उसके साथ खाना खाने बैठे थे उनमें से एक ने ये बातें सुनकर उससे कहा, "मुबारिक है वो जो खुदा की बादशाही में खाना खाए।" 16 उसने उसे कहा, "एक शख्स ने बड़ी दावत की और बहुत से लोगों को बुलाया। 17 और खाने के वक़्त अपने नौकर को भेजा कि बुलाए हुआँ से कहे, 'आओ, अब खाना तैयार है। 18 इस पर सब ने मिलकर मु'आफ़ी मांगना शुरू किया। पहले ने उससे कहा, 'मैंने खेत खरीदा है, मुझे ज़रूर है कि जाकर उसे देखूँ; मैं तेरी खुशामद करता हूँ, मुझे मु'आफ़ कर। 19 दूसरे ने कहा, 'मैंने पाँच जोड़ी बैल खरीदे हैं, और उन्हें आजमाने जाता हूँ; मैं तुझसे खुशामद करता हूँ, मुझे मु'आफ़ कर। 20 एक और ने कहा, 'मैंने शादी की है, इस वजह से नहीं आ सकता। 21 पस उस नौकर ने आकर अपने मालिक को इन बातों की ख़बर दी। इस पर घर के मालिक ने गुस्सा होकर अपने नौकर से कहा, 'जल्द शहर के बाज़ारों और कूचों में जाकर गरीबों, लुन्जों, और लंगड़ों को यहाँ ले आओ। 22 नौकर ने कहा, 'ऐ खुदावन्द, जैसा तूने फ़रमाया था वैसा ही हुआ; और अब भी जगह है। 23 मालिक ने उस नौकर से कहा, 'सड़कों और खेत की बाड़ी की तरफ़ जा और लोगों को मजबूर करके ला ताकि मेरा घर भर जाए। 24 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि जो बुलाए गए थे उनमें से कोई शख्स मेरा

खाना चखने न पाएगा।”

25 जब बहुत से लोग उसके साथ जा रहे थे, तो उसने पीछे मुड़कर उनसे कहा, 26 “अगर कोई मेरे पास आए, और बच्चों और भाइयों और बहनों बल्कि अपनी जान से भी दुश्मनी न करे तो मेरा शागिर्द नहीं हो सकता। 27 जो कोई अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे न आए, वो मेरा शागिर्द नहीं हो सकता।”

28 “क्योंकि तुम में ऐसा कौन है कि जब वो एक गुम्बद बनाना चाहे, तो पहले बैठकर लागत का हिसाब न कर ले कि आया मेरे पास उसके तैयार करने का सामान है या नहीं? 29 ऐसा न हो कि जब नीव डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखने वाले ये कहकर उस पर हँसना शुरू करें कि, 30 इस शख्स ने 'इमारत शुरू तो की मगर मुकम्मल न कर सका। 31 या कौन सा बादशाह है जो दूसरे बादशाह से लड़ने जाता हो और पहले बैठकर मशवरा न कर ले कि आया मैं दस हजार से उसका मुक़ाबिला कर सकता हूँ या नहीं जो बीस हजार लेकर मुझ पर चढ़ आता है? 32 नहीं तो उसके दूर रहते ही एल्ची भेजकर सुलह की गुज़ारिश करेगा। 33 पस इसी तरह तुम में से जो कोई अपना सब कुछ छोड़ न दे, वो मेरा शागिर्द नहीं हो सकता।”

34 “नमक अच्छा तो है, लेकिन अगर नमक का मज़ा जाता रहे तो वो किस चीज़ से मज़ेदार किया जाएगा। 35 न वो ज़मीन के काम का रहा न खाद के, लोग उसे बाहर फेंक देते हैं। जिसके कान सुनने के हों वो सुन ले।”

## 15

2222 2222 2222 22 222222 22222

1 सब महसूल लेनेवाले और गुनहगार उसके पास आते थे ताकि उसकी बातें सुनें। 2 और उलमा और फ़रीसी बुदबुदाकर कहने लगे, “ये आदमी गुनाहगारों से मिलता और उनके साथ खाना खाता है।” 3 उसने उनसे ये मिसाल कही, 4 “तुम में से कौन है जिसकी सौ भेड़ें हों, और उनमें से एक गुम हो जाए तो निनानवें को जंगल में छोड़कर उस खोई हुई को जब तक मिल न जाए ढूँडता न रहेगा? 5 फिर मिल जाती है तो वो खुश होकर उसे कन्धे पर उठा लेता है, 6 और घर पहुँचकर दोस्तों और पड़ोसियों को बुलाता और कहता है, 'मेरे साथ खुशी करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई। 7 मैं तुम से कहता हूँ कि इसी तरह निनानवें, रास्तबाज़ों की निस्वत जो तौबा की हाज़त नहीं रखते, एक तौबा करने वाले गुनहगार के बा'इस आसमान पर ज्यादा खुशी होगी।”

8 “या कौन ऐसी “औरत है जिसके पास दस दिरहम हों और एक खो जाए तो वो चराग जलाकर घर में झाड़ू न

दे, और जब तक मिल न जाए कोशिश से ढूँडती न रहे। 9 और जब मिल जाए तो अपनी दोस्तों और पड़ोसियों को बुलाकर न कहे, 'मेरे साथ खुशी करो, क्योंकि 'मेरा खोया हुआ दिरहम मिल गया। 10 मैं तुम से कहता हूँ कि इसी तरह एक तौबा करनेवाला गुनाहगार के बारे में खुदा के फ़रिश्तों के सामने खुशी होती है।”

11 फिर उसने कहा, “किसी शख्स के दो बेटे थे। 12 उनमें से छोटे ने बाप से कहा, 'ऐ बाप! माल का जो हिस्सा मुझ को पहुँचता है मुझे दे दे। उसने अपना माल — ओ — अस्बाब उन्हें बाँट दिया। 13 और बहुत दिन न गुज़रे कि छोटा बेटा अपना सब कुछ जमा करके दूर दराज़ मुल्क को खाना हुआ, और वहाँ अपना माल बदचलनी में उड़ा दिया। 14 जब सब खर्च कर चुका तो उस मुल्क में सख्त काल पड़ा, और वो मुहताज होने लगा। 15 फिर उस मुल्क के एक बाशिन्दे के वहाँ जा पड़ा। उसने उसको अपने खेत में खिंजीर यनी [सूअर] चराने भेजा। 16 और उसे आरजू थी कि जो फलियाँ खिंजीर यनी [सूअर] खाते थे उन्हीं से अपना पेट भरे, मगर कोई उसे न देता था। 17 फिर उसने होश में आकर कहा, 'मेरे बाप के बहुत से मज़दूरों को इफ़रात से रोटी मिलती है, और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ। 18 मैं उठकर अपने बाप के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा, 'ऐ बाप! मैं आसमान का और तेरी नज़र में गुनहगार हुआ। 19 अब इस लायक नहीं रहा कि फिर तेरा बेटा कहलाऊँ। मुझे अपने मज़दूरों जैसा कर ले।”

20 “पस वो उठकर अपने बाप के पास चला। वो अभी दूर ही था कि उसे देखकर उसके बाप को तरस आया, और दौड़कर उसको गले लगा लिया और चूमा। 21 बेटे ने उससे कहा, 'ऐ बाप! मैं आसमान का और तेरी नज़र में गुनहगार हुआ। अब इस लायक नहीं रहा कि फिर तेरा बेटा कहलाऊँ। 22 बाप ने अपने नौकरों से कहा, 'अच्छे से अच्छा लिबास जल्द निकाल कर उसे पहनाओ और उसके हाथ में अँगूठी और पैरों में जूती पहनाओ; 23 और तैयार किए हुए जानवर को लाकर ज़बह करो, ताकि हम खाकर खुशी मनाएँ। 24 क्योंकि मेरा ये बेटा मुर्दा था, अब ज़िन्दा हुआ; खो गया था, अब मिला है। पस वो खुशी मनाने लगे।”

25 “लेकिन उसका बड़ा बेटा खेत में था। जब वो आकर घर के नज़दीक पहुँचा, तो गाने बजाने और नाचने की आवाज़ सुनी। 26 और एक नौकर को बुलाकर मालूम करने लगा, 'ये क्या हो रहा है?’ 27 उसने उससे कहा, 'तेरा भाई आ गया है, और तेरे बाप ने तैयार किया हुआ जानवर ज़बह कराया है, क्योंकि उसे भला चंगा

पाया। 28 वो गुस्सा हुआ और अन्दर जाना न चाहा, मगर उसका बाप बाहर जाकर उसे मनाने लगा। 29 उसने अपने बाप से जवाब में कहा, 'देख, इतने बरसों से मैं तेरी खिदमत करता हूँ और कभी तेरी नाफरमानी नहीं की, मगर मुझे तूने कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया कि अपने दोस्तों के साथ खुशी मनाता। 30 लेकिन जब तेरा ये बेटा आया जिसने तेरा माल — ओ — अस्बाब कस्बियों में उड़ा दिया, तो उसके लिए तूने तैयार किया हुआ जानवर ज़बह कराया है।' 31 उसने उससे कहा, 'बेटा, तू तो हमेशा मेरे पास है और जो कुछ मेरा है वो तेरा ही है। 32 लेकिन खुशी मनाना और शादमान होना मुनासिब था, क्योंकि तेरा ये भाई मुर्दा था अब ज़िन्दा हुआ, खोया था अब मिला है।'।"

## 16

222222 22 222222

1 फिर उसने शागिर्दों से भी कहा, "किसी दौलतमन्द का एक मुख्तार था; उसकी लोगों ने उससे शिकायत की कि ये तेरा माल उड़ाता है। 2 पस उसने उसको बुलाकर कहा, 'ये क्या है जो मैं तेरे हक़ में सुनता हूँ? अपनी मुख्तारी का हिसाब दे क्योंकि आगे को तू मुख्तार नहीं रह सकता।' 3 उस मुख्तार ने अपने जी में कहा, 'क्या करूँ? क्योंकि मेरा मालिक मुझ से ज़िम्मेदारी छीन लेता है। मिट्टी तो मुझ से खोदी नहीं जाती और भीख माँगने से शर्म आती है।' 4 मैं समझ गया कि क्या करूँ, ताकि जब ज़िम्मेदारी से निकाला जाऊँ तो लोग मुझे अपने घरों में जगह दें।' 5 पस उसने अपने मालिक के एक एक कर्ज़दार को बुलाकर पहले से पूछा, 'तुझ पर मेरे मालिक का क्या आता है?' 6 उसने कहा, 'सौ मन तेल।' उसने उससे कहा, 'अपनी दस्तावेज़ ले और जल्द बैठकर पचास लिख दे।' 7 फिर दूसरे से कहा, 'तुझ पर क्या आता है?' उसने कहा, 'सौ मन गेहूँ।' उसने उससे कहा, 'अपनी दस्तावेज़ लेकर अस्सी लिख दे।'।"

8 "और मालिक ने बेईमान मुख्तार की तारीफ़ की, इसलिए कि उसने होशियारी की थी। क्योंकि इस जहान के फ़र्ज़न्द अपने हमवक्त्रों के साथ मु'आमिलात में नूर के फ़र्ज़न्द से ज्यादा होशियार हैं। 9 और मैं तुम से कहता हूँ कि नारास्ती की दौलत से अपने लिए दोस्त पैदा करो, ताकि जब वो जाती रहे तो ये तुम को हमेशा के मुक़ामों में जगह दें। 10 जो थोड़े में ईमानदार है, वो बहुत में भी ईमानदार है; और जो थोड़े में बेईमान है, वो बहुत में भी बेईमान है। 11 पस जब तुम नारास्त दौलत में ईमानदार न ठहरे तो हक़ीक़ी दौलत कौन तुम्हारे ज़िम्मे करेगा।

12 और अगर तुम बेगाना माल में ईमानदार न ठहरे तो जो तुम्हारा अपना है उसे कौन तुम्हें देगा?"

13 "कोई नौकर दो मालिकों की खिदमत नहीं कर सकता: क्योंकि या तो एक से 'दुश्मनी रखेगा और दूसरे से मुहब्बत, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को नाचीज़ जानेगा। तुम खुदा और दौलत दोनों की खिदमत नहीं कर सकते।"

14 फ़रीसी जो दौलत दोस्त थे, इन सब बातों को सुनकर उसे ठट्ठे में उड़ाने लगे। 15 उसने उनसे कहा, "तुम वो हो कि आदमियों के सामने अपने आपको रास्तबाज़ ठहराते हो, लेकिन खुदा तुम्हारे दिलों को जानता है; क्योंकि जो चीज़ आदमियों की नज़र में 'आला क़दर है, वो खुदा के नज़दीक मकरूह है।"

16 "शरी'अत और अम्बिया युहन्ना तक रहे; उस वक़्त से खुदा की बादशाही की खुशख़बरी दी जाती है, और हर एक ज़ोर मारकर उसमें दाख़िल होता है।

17 लेकिन आसमान और ज़मीन का टल जाना, शरी'अत के एक नुक्ते के मिट जाने से आसान है।"

18 "जो कोई अपनी बीवी को छोड़कर दूसरी से शादी करे, वो ज़िना करता है; और जो शरूस् शौहर की छोड़ी हुई 'औरत से शादी करे, वो भी ज़िना करता है।"

19 "एक दौलतमन्द था, जो इर्गवानी और महीन कपड़े पहनता और हर रोज़ खुशी मनाता और शान — ओ — शौकत से रहता था। 20 और ला'ज़र नाम एक ग़रीब नासूरों से भरा हुआ उसके दरवाज़े पर डाला गया था। 21 उसे आरज़ू थी कि दौलतमन्द की मेज़ से गिरे हुए टुकड़ों से अपना पेट भरे; बल्कि कुत्ते भी आकर उसके नासूर को चाटते थे। 22 और ऐसा हुआ कि वो ग़रीब मर गया, और फ़रिश्तों ने उसे ले जाकर अब्रहाम की गोद में पहुँचा दिया। और दौलतमन्द भी मरा और दफ़न हुआ; 23 उसने 'आलम — ए — अर्वाह के दरमियान 'ऐज़ाब में मुब्तिला होकर अपनी आँखें उठाई, और अब्रहाम को दूर से देखा और उसकी गोद में ला'ज़र को। 24 और उसने पुकार कर कहा, 'ऐ बाप अब्रहाम! मुझ पर रहम करके ला'ज़र को भेज, कि अपनी ऊँगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी ज़बान तर करे; क्योंकि मैं इस आग में तड़पता हूँ।' 25 अब्रहाम ने कहा, 'बेटा! याद कर ले तू अपनी ज़िन्दगी में अपनी अच्छी चीज़ें ले चुका, और उसी तरह ला'ज़र बुरी चीज़ें ले चुका; लेकिन अब वो यहाँ तसल्ली पाता है, और तू तड़पता है। 26 और इन सब बातों के सिवा हमारे तुम्हारे दरमियान एक बड़ा गड़बा बनाया गया है, कि जो यहाँ से तुम्हारी तरफ़ पार जाना चाहें न जा सकें और न कोई उधर से हमारी तरफ़



आ सके।' <sup>27</sup> उसने कहा, 'पस ऐ बाप! मैं तेरी गुज़ारिश करता हूँ कि तू उसे मेरे बाप के घर भेज, <sup>28</sup> क्यूँकि मेरे पाँच भाई हैं; ताकि वो उनके सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वो भी इस 'ऐज़ाब की जगह में आएँ।' <sup>29</sup> अब्रहाम ने उससे कहा, 'उनके पास मूसा और अम्बिया तो हैं उनकी सुनें।' <sup>30</sup> उसने कहा, 'नहीं, ऐ बाप अब्रहाम! अगर कोई मुर्दों में से उनके पास जाए तो वो तौबा करेंगे।' <sup>31</sup> उसने उससे कहा, जब वो मूसा और नबियों ही की नहीं सुनते, तो अगर मुर्दों में से कोई जी उठे तो उसकी भी न सुनेंगे।"

## 17

□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□'□□□

1 फिर उसने अपने आगिदाँ से कहा, “ये नहीं हो सकता कि ठोकरें न लगें, लेकिन उस पर अफ़सोस है कि जिसकी वजह से लगें। 2 इन छोटों में से एक को ठोकर खिलाने की बनिस्बत, उस शख्स के लिए ये बेहतर होता है कि चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता और वो समुन्दर में फेंका जाता। 3 खबरदार रहो! अगर तेरा भाई गुनाह करे तो उसे डांट दे, अगर वो तौबा करे तो उसे मु'आफ़ कर। 4 और वो एक दिन में सात दफ़ा” तेरा गुनाह करे और सातों दफ़ा” तेरे पास फिर आकर कहे कि तौबा करता हूँ, तो उसे मु'आफ़ कर।”

5 इस पर रसूलों ने खुदावन्द से कहा, “हमारे ईमान को बढ़ा।” 6 खुदावन्द ने कहा, “अगर तुम में राई के दाने के बराबर भी ईमान होता और तुम इस तूट के दरख्त से कहते, कि जड़ से उखड़ कर समुन्दर में जा लग, तो तुम्हारी मानता।”

7 “भगर तुम में ऐसा कौन है, जिसका नौकर हल जोतता या भेड़ें चराता हो, और जब वो खेत से आए तो उससे कहे, जल्द आकर खाना खाने बैठ!” 8 और ये न कहे, ‘मेरा खाना तैयार कर, और जब तक मैं खाऊँ — पियूँ कमर बाँध कर मेरी खिदमत कर; उसके बाद तू भी खा पी लेना’? 9 क्या वो इसलिए उस नौकर का एहसान मानेगा कि उसने उन बातों को जिनका हुक्म हुआ ता’मील की? 10 इसी तरह तुम भी जब उन सब बातों की, जिनका तुम को हुक्म हुआ ता’मील कर चुको, तो कहो, ‘हम निकम्मे नौकर हैं जो हम पर करना फ़र्ज़ था वही किया है’।”

11 और अगर ऐसा कि येरुशलेम को जाते हुए वो सामरिया और गलील के बीच से होकर जा रहा था 12 और एक गाँव में दाखिल होते वक़्त दस कौड़ी उसको मिले। 13 उन्होंने दूर खड़े होकर बुलन्द आवाज़ से कहा, ऐ ईसा! ऐ खुदावन्द! हम पर रहम कर। 14 उसने

उन्हें देखकर कहा, “जाओ! अपने आपको काहिनों को दिखाओ!” और ऐसा हुआ कि वो जाते — जाते पाक साफ़ हो गए। <sup>15</sup> फिर उनमें से एक ये देखकर कि मैं शिफ़ा पा गया हूँ, बुलन्द आवाज़ से खुदा की बड़ाई करता हुआ लौटा; <sup>16</sup> और मुँह के बल ईसा के पाँव पर गिरकर उसका शुक्र करने लगा; और वो सामरी था। <sup>17</sup> ईसा ने जवाब में कहा, “क्या दसों पाक साफ़ न हुए; फिर वो नौ कहाँ है? <sup>18</sup> क्या इस परदेसी के सिवा और न निकले जो लौटकर खुदा की बड़ाई करते?” <sup>19</sup> फिर उससे कहा, “उठ कर चला जा! तेरे ईमान ने तुझे अच्छा किया है।”

20 जब फ़रीसियों ने उससे पूछा कि खुदा की बादशाही कब आएगी, तो उसने जवाब में उनसे कहा, “खुदा की बादशाही ज़ाहिरी तौर पर न आएगी। 21 और लोग ये न कहेंगे, 'देखो, यहाँ है या वहाँ है!' क्योंकि देखो, खुदा की बादशाही तुम्हारे बीच है।” 22 उसने शागिर्दों से कहा, “वो दिन आएँगे, कि तुम इब्न — ए — आदम के दिनों में से एक दिन को देखने की आरजू होगी, और न देखोगे। 23 और लोग तुम से कहेंगे, 'देखो, वहाँ है!' या देखो, यहाँ है!” मगर तुम चले न जाना न उनके पीछे हो लेना। 24 क्योंकि जैसे बिजली आसमान में एक तरफ़ से कौंध कर आसमान कि दूसरी तरफ़ चमकती है, वैसे ही इब्न — ए — आदम अपने दिन में ज़ाहिर होगा। 25 लेकिन पहले ज़रूर है कि वो बहुत दुःख उठाए, और इस ज़माने के लोग उसे रद्द करें। 26 और जैसा नूह के दिनों में हुआ था, उसी तरह इब्न — ए — आदम के दिनों में होगा; 27 कि लोग खाते पीते थे और उनमें ब्याह शादी होती थीं, उस दिन तक जब नूह नाव में दाखिल हुआ; और तूफ़ान ने आकर सबको हलाक किया।” 28 और जैसा लूत के दिनों में हुआ था, कि लोग खाते — पीते और खरीद — ओ — फ़रोख्त करते, और दरख्त लगाते और घर बनाते थे। 29 लेकिन जिस दिन लूत सद्धम से निकला, आग और गन्धक ने आसमान से बरस कर सबको हलाक किया। 30 इब्न — ए — आदम के ज़ाहिर होने के दिन भी ऐसा ही होगा।”

31 “इस दिन जो छत पर हो और उसका अस्वाब घर में हो, वो उसे लेने को न उतरे; और इसी तरह जो खेत में हो वो पीछे को न लौटे। 32 लूत की बीवी को याद रखो। 33 जो कोई अपनी जान बचाने की कोशिश करे वो उसको खोएगा, और जो कोई उसे खोए वो उसको ज़िंदा रखेगा। 34 मैं तुम से कहता हूँ कि उस रात दो आदमी एक चारपाई पर सोते होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। 35 दो 'औरतें एक साथ चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी और

दूसरी छोड़ दी जाएगी। <sup>36</sup> दो आदमी जो खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा;” <sup>37</sup> उन्होंने जवाब में उससे कहा, “ऐ खुदावन्द! ये कहाँ होगा?” उसने उनसे कहा, “जहाँ मुरदार हैं, वहाँ गिद्ध भी जमा होंगे।”

## 18

२२ २२२२ २२२२ २२ २२२२२

<sup>1</sup> फिर उसने इस गरज से कि हर वक्त दुआ करते रहना और हिम्मत हारना न चाहिए, उसने ये मिसाल कही: <sup>2</sup> “किसी शहर में एक क्राज़ी था, न वो खुदा से डरता, न आदमी की कुछ परवा करता था। <sup>3</sup> और उसी शहर में एक बेवा थी, जो उसके पास आकर ये कहा करती थी, 'मेरा इन्साफ़ करके मुझे मुद्द'ई से बचा। <sup>4</sup> उसने कुछ 'अरसे तक तो न चाहा, लेकिन आखिर उसने अपने जी में कहा, 'गरचे मैं न खुदा से डरता और न आदमियों की कुछ परवा करता हूँ। <sup>5</sup> तोभी इसलिए कि ये बेवा मुझे सताती है, मैं इसका इन्साफ़ करूँगा; ऐसा न हो कि ये बार — बार आकर आखिर को मेरी नाक में दम करे।”

<sup>6</sup> खुदावन्द ने कहा, “सुनो ये बेइन्साफ़ क्राज़ी क्या कहता है? <sup>7</sup> पस क्या खुदा अपने चुने हुए का इन्साफ़ न करेगा, जो रात दिन उससे फ़रियाद करते हैं? <sup>8</sup> मैं तुम से कहता हूँ कि वो जल्द उनका इन्साफ़ करेगा। तोभी जब इब्न — ए — आदम आएगा, तो क्या ज़मीन पर ईमान पाएगा?”

<sup>9</sup> फिर उसने कुछ लोगों से जो अपने पर भरोसा रखते थे, कि हम रास्तबाज़ हैं और बाक़ी आदमियों को नाचीज़ जानते थे, ये मिसाल कही, <sup>10</sup> “दो शख्स हैकल में दूआ करने गए: एक फ़रीसी, दूसरा महसूल लेनेवाला। <sup>11</sup> फ़रीसी खड़ा होकर अपने जी में यूँ दुआ करने लगा, 'ऐ खुदा मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि बाक़ी आदमियों की तरह ज़ालिम, बेइन्साफ़, ज़िनाकार या इस महसूल लेनेवाले की तरह नहीं हूँ। <sup>12</sup> मैं हफ़्ते में दो बार रोज़ा रखता, और अपनी सारी आमदनी पर दसवाँ हिस्सा देता हूँ।”

<sup>13</sup> “लेकिन महसूल लेने वाले ने दूर खड़े होकर इतना भी न चाहा कि आसमान की तरफ़ आँख उठाए, बल्कि छाती पीट पीट कर कहा ऐ खुदा। मुझ गुनहगार पर रहम कर।” <sup>14</sup> “मैं तुम से कहता हूँ कि ये शख्स दूसरे की निस्वत रास्तबाज़ ठहरकर अपने घर गया, क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा वो छोटा किया जाएगा और जो अपने आपको छोटा बनाएगा वो बड़ा किया जाएगा।”

<sup>15</sup> फिर लोग अपने छोटे बच्चों को भी उसके पास लाने लगे ताकि वो उनको छूए; और शागिर्दों ने देखकर

उनको झिड़का। <sup>16</sup> मगर ईसा ने बच्चों को अपने पास बुलाया और कहा, “बच्चों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मनह' न करो; क्योंकि खुदा की बादशाही ऐसों ही की है। <sup>17</sup> मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई खुदा की बादशाही को बच्चे की तरह कुबूल न करे, वो उसमें हरगिज़ दाख़िल न होगा।”

<sup>18</sup> फिर किसी सरदार ने उससे ये सवाल किया, ऐ उस्ताद! मैं क्या करूँ ताकि हमेशा की ज़िन्दगी का वारिस बनूँ। <sup>19</sup> ईसा ने उससे कहा, “तू मुझे क्यों नेक कहता है? कोई नेक नहीं, मगर एक या'नी खुदा। <sup>20</sup> तू हुक्मों को जानता है: ज़िना न कर, खून न कर, चोरी न कर, झूठी गवाही न दे; अपने बाप और माँ की इज़्जत कर।” <sup>21</sup> उसने कहा, मैंने लड़कपन से इन सब पर 'अमल किया है।” <sup>22</sup> ईसा ने ये सुनकर उससे कहा, “अभी तक तुझ में एक बात की कमी है, अपना सब कुछ बेचकर ग़रीबों को बाँट दे; तुझे आसमान पर खज़ाना मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।” <sup>23</sup> ये सुन कर वो बहुत गमगीन हुआ, क्योंकि बड़ा दौलतमन्द था।

<sup>24</sup> ईसा ने उसको देखकर कहा, “दौलतमन्द का खुदा की बादशाही में दाख़िल होना कैसा मुश्किल है! <sup>25</sup> क्योंकि ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना इससे आसान है, कि दौलतमन्द खुदा की बादशाही में दाख़िल हो।” <sup>26</sup> सुनने वालो ने कहा, तो फिर कौन नजात पा सकता है? <sup>27</sup> उसने कहा, “जो इंसान से नहीं हो सकता, वो खुदा से हो सकता है।” <sup>28</sup> पतरस ने कहा, देख! हम तो अपना घर — बार छोड़कर तेरे पीछे हो लिए हैं।” <sup>29</sup> उसने उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि ऐसा कोई नहीं जिसने घर या बीवी या भाइयों या माँ बाप या बच्चों को खुदा की बादशाही की खातिर छोड़ दिया हो; <sup>30</sup> और इस ज़माने में कई गुना ज़्यादा न पाए, और आने वाले 'आलम में हमेशा की ज़िन्दगी।”

<sup>31</sup> फिर उसने उन बारह को साथ लेकर उनसे कहा, “देखो, हम येरूशलेम को जाते हैं, और जितनी बातें नबियों के ज़रिए लिखी गई हैं, इब्न — ए — आदम के हक़ में पूरी होंगी। <sup>32</sup> क्योंकि वो ग़ैर क़ौम वालों के हवाले किया जाएगा; और लोग उसको ठठ्ठों में उड़ाएंगे और बे'इज़्जत करेंगे, और उस पर थूकेंगे, <sup>33</sup> और उसको कोड़े मारेंगे और क़त्ल करेंगे और वो तीसरे दिन जी उठेगा।” <sup>34</sup> लेकिन उन्होंने इनमें से कोई बात न समझी, और ये कलाम उन पर छिपा रहा और इन बातों का मतलब उनकी समझ में न आया।

<sup>35</sup> जो वो चलते — चलते यरीहू के नज़दीक पहुँचा, तो ऐसा हुआ कि एक अन्धा रास्ते के किनारे बैठा हुआ

भीख माँग रहा था। <sup>36</sup> वो भीड़ के जाने की आवाज़ सुनकर पूछने लगा, 'ये क्या हो रहा है?' <sup>37</sup> उन्होंने उसे खबर दी, 'ईसा नासरी जा रहा है।' <sup>38</sup> उसने चिल्लाकर कहा, 'ऐ ईसा इब्न — ए — दाऊद, मुझ पर रहम कर!' <sup>39</sup> जो आगे जाते थे, वो उसको डाँटने लगे कि चुप रह; मगर वो और भी चिल्लाया, 'ऐ इब्न — ए — दा, ऊद, मुझ पर रहम कर!' <sup>40</sup> ईसा ने खड़े होकर हुक्म दिया कि उसको मेरे पास ले आओ, जब वो नज़दीक आया तो उसने उससे ये पूछा। <sup>41</sup> 'तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?' उसने कहा, 'ऐ खुदावन्द! मैं देखने लगूँ।' <sup>42</sup> ईसा ने उससे कहा, 'बीना हो जा, तेरे ईमान ने तुझे अच्छा किया,' <sup>43</sup> वो उसी वक्त देखने लगा, और खुदा की बड़ाई करता हुआ उसके पीछे हो लिया; और सब लोगों ने देखकर खुदा की तारीफ़ की।

## 19

???? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>1</sup> फिर ईसा यरीहू में दाखिल हुआ और उस में से होकर गुज़रने लगा। <sup>2</sup> उस शहर में एक अमीर आदमी ज़क्काई नाम का रहता था जो महसूल लेने वालों का अफ़सर था। <sup>3</sup> वह जानना चाहता था कि यह ईसा कौन है, लेकिन पूरी कोशिश करने के बावजूद उसे देख न सका, क्योंकि ईसा के आस पास बड़ा हुजूम था और ज़क्काई का क्रुद छोटा था। <sup>4</sup> इस लिए वह दौड़ कर आगे निकला और उसे देखने के लिए गूलर के दरख़्त पर चढ़ गया जो रास्ते में था। <sup>5</sup> जब ईसा वहाँ पहुँचा तो उस ने नज़र उठा कर कहा, 'ज़क्काई, जल्दी से उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में ठहरना है।' <sup>6</sup> ज़क्काई फ़ौरन उतर आया और खुशी से उस की मेहमान — नवाज़ी की। <sup>7</sup> जब लोगों ने ये देखा तो सब बुदबुदाने लगे, कि 'वह एक गुनाहगार के यहाँ मेहमान बन गया है।' <sup>8</sup> लेकिन ज़क्काई ने खुदावन्द के सामने खड़े हो कर कहा, 'खुदावन्द, मैं अपने माल का आधा हिस्सा ग़रीबों को दे देता हूँ। और जिससे मैं ने नाजायज़ तौर से कुछ लिया है उसे चार गुना वापस करता हूँ।' <sup>9</sup> ईसा ने उस से कहा, 'आज इस घराने को नजात मिल गई है, इस लिए कि यह भी इब्राहीम का बेटा है।' <sup>10</sup> क्योंकि इब्न — ए — आदम खोए हुए को ढूँढ़ने और नजात देने के लिए आया है।'

<sup>11</sup> अब ईसा येरूशलेम के करीब आ चुका था, इस लिए लोग अन्दाज़ा लगाने लगे कि खुदा की बादशाही जाहिर होने वाली है। इस के पेश — ए — नज़र ईसा ने अपनी यह बातें सुनने वालों को एक मिसाल सुनाई। <sup>12</sup> उस ने कहा, 'एक जागीरदार किसी दूरदराज़ मुल्क

को चला गया ताकि उसे बादशाह मुक़र्रर किया जाए। फिर उसे वापस आना था।' <sup>13</sup> खाना होने से पहले उस ने अपने नौकरों में से दस को बुला कर उन्हें सोने का एक एक सिक्का दिया। साथ साथ उस ने कहा, 'यह पैसे ले कर उस वक्त तक कारोबार में लगाओ जब तक मैं वापस न आऊँ।' <sup>14</sup> लेकिन उस की रियाया उस से नफ़रत रखती थी, इस लिए उस ने उस के पीछे एलची भेज कर इत्तिला दी, 'हम नहीं चाहते कि यह आदमी हमारा बादशाह बने।''

<sup>15</sup> 'तो भी उसे बादशाह मुक़र्रर किया गया। इस के बाद जब वापस आया तो उस ने उन नौकरों को बुलाया जिन्हें उस ने पैसे दिए थे ताकि मालूम करे कि उन्होंने ये यह पैसे कारोबार में लगा कर कितना मुनाफ़ा किया है।' <sup>16</sup> पहला नौकर आया। उस ने कहा, 'जनाब, आप के एक सिक्के से दस हो गए हैं।' <sup>17</sup> मालिक ने कहा, 'शाबाश, अच्छे नौकर। तू थोड़े में वफ़ादार रहा, इस लिए अब तुझे दस शहरों पर इस्तिyार दिया।' <sup>18</sup> फिर दूसरा नौकर आया। उस ने कहा, 'जनाब, आप के एक सिक्के से पाँच हो गए हैं।' <sup>19</sup> मालिक ने उस से कहा, 'तुझे पाँच शहरों पर इस्तिyार दिया।' <sup>20</sup> फिर एक और नौकर आ कर कहने लगा, 'जनाब, यह आप का सिक्का है। मैं ने इसे कपड़े में लपेट कर महफूज़ रखा, <sup>21</sup> क्योंकि मैं आप से डरता था, इस लिए कि आप सख़्त आदमी हैं। जो पैसे आप ने नहीं लगाए उन्हें ले लेते हैं और जो बीज आप ने नहीं बोया उस की फ़सल काटते हैं।' <sup>22</sup> मालिक ने कहा, 'शरीर नौकर! मैं तेरे अपने अल्फ़ाज़ के मुताबिक़ तेरा फ़ैसला करूँगा। जब तू जानता था कि मैं सख़्त आदमी हूँ, कि वह पैसे ले लेता हूँ जो खुद नहीं लगाए और वह फ़सल काटता हूँ जिस का बीज नहीं बोया, <sup>23</sup> तो फिर तूने मेरे पैसे साहूकार के यहाँ क्यों न जमा कराए? अगर तू ऐसा करता तो वापसी पर मुझे कम अज़ कम वह पैसे सूद समेत मिल जाते।' <sup>24</sup> और उसने उनसे कहा, 'यह सिक्का इससे ले कर उस नौकर को दे दो जिस के पास दस सिक्के हैं।' <sup>25</sup> उन्होंने उससे कहा, 'ऐ खुदावन्द, उस के पास तो पहले ही दस सिक्के हैं।' <sup>26</sup> उस ने जवाब दिया, 'मैं तुम्हें बताता हूँ कि हर शख्स जिस के पास कुछ है उसे और दिया जाएगा, लेकिन जिस के पास कुछ नहीं है उस से वह भी छीन लिया जाएगा जो उस के पास है।' <sup>27</sup> अब उन दुश्मनों को ले आओ जो नहीं चाहते थे कि मैं उन का बादशाह बनूँ। उन्हें मेरे सामने फाँसी दे दो।''

<sup>28</sup> इन बातों के बाद ईसा दूसरों के आगे आगे येरूशलेम की तरफ़ बढ़ने लगा। <sup>29</sup> जब वह बैत — फ़गे और बैत — अनियाह गाँव के करीब पहुँचा जो ज़ैतून

के पहाड़ पर आबाद थे तो उस ने दो शागिर्दों को अपने आगे भेज कर कहा?, <sup>30</sup> “सामने वाले गाँव में जाओ। वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह बाँधा हुआ होगा और अब तक कोई भी उस पर सवार नहीं हुआ है। उसे खोल कर ले आओ। <sup>31</sup> अगर कोई पूछे कि गधे को क्यों खोल रहे हो तो उसे बता देना कि खुदावन्द को इस की ज़रूरत है।”

<sup>32</sup> दोनों शागिर्द गए तो देखा कि सब कुछ वैसा ही है जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। <sup>33</sup> जब वह जवान गधे को खोलने लगे तो उस के मालिकों ने पूछा, “तुम गधे को क्यों खोल रहे हो?” <sup>34</sup> उन्होंने ने जवाब दिया, “खुदावन्द को इस की ज़रूरत है।” <sup>35</sup> वह उसे ईसा के पास ले आए, और अपने कपड़े गधे पर रख कर उसको उस पर सवार किया। <sup>36</sup> जब वह चल पड़ा तो लोगों ने उस के आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए। <sup>37</sup> चलते चलते वह उस जगह के करीब पहुँचा जहाँ रास्ता ज़ैतून के पहाड़ पर से उतरने लगता है। इस पर शागिर्दों का पूरा हुजूम खुशी के मारे ऊँची आवाज़ से उन मोजिज़ों के लिए खुदा की बड़ाई करने लगा जो उन्होंने देखे थे,

<sup>38</sup> “मुबारक है वह बादशाह जो खुदावन्द के नाम से आता है।

आस्मान पर सलामती हो और बुलन्दियों पर इज्जत — ओ — जलाल।”

<sup>39</sup> कुछ फ़रीसी भीड़ में थे उन्होंने ईसा से कहा, “उस्ताद, अपने शागिर्दों को समझा दें।” <sup>40</sup> उस ने जवाब दिया, “मैं तुम्हें बताता हूँ, अगर यह चुप हो जाएँ तो पत्थर पुकार उठेंगे।”

<sup>41</sup> जब वह येरूशलेम के करीब पहुँचा तो शहर को देख कर रो पड़ा <sup>42</sup> और कहा, “काश तू भी उस दिन पहचान लेती कि तेरी सलामती किस में है। लेकिन अब यह बात तेरी आँखों से छुपी हुई है। <sup>43</sup> क्योंकि तुझ पर ऐसा वक्त आएगा कि तेरे दुश्मन तेरे चारों तरफ़ बन्द बाँध कर तेरा घेरा करेंगे और यूँ तुझे तंग करेंगे। <sup>44</sup> वह तुझे तेरे बच्चों समेत ज़मीन पर पटकेंगे और तेरे अन्दर एक भी पत्थर दूसरे पर नहीं छोड़ेंगे। और वजह यही होगी कि तू ने वह वक्त नहीं पहचाना जब खुदावन्द ने तेरी नज़ात के लिए तुझ पर नज़र की।”

<sup>45</sup> फिर ईसा बैत — उल — मुक्रद्स में जा कर बेचने वालों को निकालने लगा, <sup>46</sup> और उसने कहा, “लिखा है, ‘मेरा घर दुआ का घर होगा’ मगर तुम ने उसे डाकूओं के अंडे में बदल दिया है।” <sup>47</sup> और वह रोज़ाना बैत — उल — मुक्रद्स में तालीम देता रहा। लेकिन बैत — उल — मुक्रद्स के रहनुमा इमाम, शरी'अत के आलिम

और अवामी रहनुमा उसे क़त्ल करने की कोशिश में थे। <sup>48</sup> अलबत्ता उन्हें कोई मौक़ा न मिला, क्योंकि तमाम लोग ईसा की हर बात सुन सुन कर उस से लिपटे रहते थे।

## 20

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>1</sup> एक दिन जब वह बैत — उल — मुक्रद्स में लोगों को तालीम दे रहा और खुदावन्द की खुशख़बरी सुना रहा था तो रहनुमा इमाम, शरी'अत के उलमा और बुज़ुर्ग उस के पास आए। <sup>2</sup> उन्होंने ने कहा, “हमें बताएँ, आप यह किस इस्तियार से कर रहे हैं? किस ने आप को यह इस्तियार दिया है?” <sup>3</sup> ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुम से एक सवाल है। तुम मुझे बताओ?, <sup>4</sup> कि क्या युहन्ना का बपतिस्मा आस्मानी था या इंसानी?” <sup>5</sup> वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम कहें ‘आस्मानी’ तो वह पूछेगा, तो फिर तुम उस पर इमान क्यों न लाए?” <sup>6</sup> लेकिन अगर हम कहें ‘इंसानी’ तो तमाम लोग हम पर पत्थर मारेंगे, क्योंकि वह तो यकीन रखते हैं कि युहन्ना नबी था।” <sup>7</sup> इस लिए उन्होंने ने जवाब दिया, “हम नहीं जानते कि वह कहाँ से था।” <sup>8</sup> ईसा ने कहा, “तो फिर मैं भी तुम को नहीं बताता कि मैं यह सब कुछ किस इस्तियार से कर रहा हूँ।”

<sup>9</sup> फिर ईसा लोगों को यह मिसाल सुनाने लगा, “किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग़ लगाया। फिर वह उसे बाग़बानों को ठेके पर देकर बहुत दिनों के लिए बाहरी मुल्क चला गया। <sup>10</sup> जब अंगूर पक गए तो उस ने अपने नौकर को उन के पास भेज दिया ताकि वह मालिक का हिस्सा वसूल करे। लेकिन बाग़बानों ने उस की पिटाई करके उसे खाली हाथ लौटा दिया। <sup>11</sup> इस पर मालिक ने एक और नौकर को उन के पास भेजा। लेकिन बाग़बानों ने उसे भी मार मार कर उस की बे'इज्जती की और खाली हाथ निकाल दिया। <sup>12</sup> फिर मालिक ने तीसरे नौकर को भेज दिया। उसे भी उन्होंने मार कर ज़ख्मी कर दिया और निकाल दिया। <sup>13</sup> बाग़ के मालिक ने कहा, अब मैं क्या करूँ? मैं अपने प्यारे बेटे को भेजूँगा, शायद वह उस का लिहाज़ करें।” <sup>14</sup> लेकिन मालिक के बेटे को देख कर बाग़बानों ने आपस में मशवरा किया और कहा, यह ज़मीन का वारिस है। आओ, हम इसे मार डालें। फिर इस की मीरास हमारी ही होगी। <sup>15</sup> उन्होंने उसे बाग़ से बाहर फेंक कर क़त्ल किया। ईसा ने पूछा, अब बताओ, बाग़ का मालिक क्या करेगा? <sup>16</sup> वह वहाँ जा कर बाग़बानों को हलाक करेगा और बाग़ को दूसरों के हवाले कर देगा। यह सुन कर लोगों ने कहा, खुदा ऐसा कभी न करे।”



17 ईसा ने उन पर नज़र डाल कर पूछा, “तो फिर कलाम — ए — मुक़द्दस के इस हवाले का क्या मतलब है कि जिस पत्थर को राजगीरों ने रद्द किया, वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया?”

18 जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो जाएगा, जबकि जिस पर वह खुद गिरेगा उसे पीस डालेगा।”

19 शरी'अत के उलमा और राहनुमा इमामों ने उसी वक्त उसे पकड़ने की कोशिश की, क्योंकि वह समझ गए थे कि मिसाल में बयान होने वाले हम ही हैं। लेकिन वह अवाम से डरते थे। 20 चुनाँचे वह उसे पकड़ने का मौक़ा ढूँढते रहे। इस मक़सद के तहत उन्होंने उस के पास जासूस भेज दिए। यह लोग अपने आप को ईमानदार ज़ाहिर करके ईसा के पास आए ताकि उस की कोई बात पकड़ कर उसे रोमी हाकिम के हवाले कर सकें। 21 इन जासूसों ने उस से पूछा, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप वही कुछ बयान करते और सिखाते हैं जो सहीह है। आप तरफ़दारी नहीं करते बल्कि दियानतदारी से खुदा की राह की तालीम देते हैं। 22 अब हमें बताएँ कि क्या रोमी हाकिम को महसूल देना जायज़ है या नाजायज़?” 23 लेकिन ईसा ने उन की चालाकी भाँप ली और कहा, 24 “मुझे चाँदी का एक रोमी सिक्का दिखाओ। किस की सूरत और नाम इस पर बना है?” उन्होंने जवाब दिया, “कैसर का।” 25 उस ने कहा, “तो जो कैसर का है कैसर को दो और जो खुदा का है खुदा को।” 26 यूँ वह अवाम के सामने उस की कोई बात पकड़ने में नाकाम रहे। उस का जवाब सुन कर वह हक्का — बक्का रह गए और मज़ीद कोई बात न कर सके।

27 फिर कुछ सद्की उस के पास आए। सद्की नहीं मानते थे कि रोज़ — ए — क़यामत में मुर्दे जी उठेंगे। उन्होंने ने ईसा से एक सवाल किया, 28 “उस्ताद, मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उस का भाई हो तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 29 अब फ़र्ज़ करें कि सात भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद मर गया। 30 इस पर दूसरे ने उस से शादी की, लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया। 31 फिर तीसरे ने उस से शादी की। यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। इसके बाद हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया। 32 आखिर में बेवा की भी मौत हो गई। 33 अब बताएँ कि क़यामत के दिन वह किस की बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उस से शादी की थी।” 34 ईसा ने जवाब दिया, “इस ज़माने में लोग ब्याह — शादी करते और कराते हैं। 35 लेकिन जिन्हें खुदा आने वाले ज़माने में शरीक होने और मुर्दों में से

जी उठने के लायक समझता है वह उस वक्त शादी नहीं करेंगे, न उन की शादी किसी से कराई जाएगी। 36 वह मर भी नहीं सकेंगे, क्योंकि वह फ़रिश्तों की तरह होंगे और क़यामत के फ़र्ज़न्द होने के बाइस खुदा के फ़र्ज़न्द होंगे। 37 और यह बात कि मुर्दे जी उठेंगे मूसा से भी ज़ाहिर की गई है। क्योंकि जब वह काँटिदार झाड़ी के पास आया तो उस ने खुदा को यह नाम दिया, अब्रहाम का खुदा, इज़हाक का खुदा और याक़ूब का खुदा, हालाँकि उस वक्त तीनों बहुत पहले मर चुके थे। इस का मतलब है कि यह हकीकत में ज़िन्दा हैं। 38 क्योंकि खुदा मुर्दों का नहीं बल्कि ज़िन्दों का खुदा है। उस के नज़दीक यह सब ज़िन्दा हैं।” 39 यह सुन कर शरी'अत के कुछ उलमा ने कहा, “शाबाश उस्ताद, आप ने अच्छा कहा है।” 40 इस के बाद उन्होंने ने उस से कोई भी सवाल करने की हिम्मत न की।

41 फिर ईसा ने उन से पूछा, “मसीह के बारे में क्यूँ कहा जाता है कि वह दाऊद का बेटा है? 42 क्यूँकि दाऊद खुद ज़बूर की किताब में फ़रमाता है, खुदा ने मेरे खुदा से कहा, मेरे दाहिने हाथ बैठ,

43 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पैरों की चौकी न बना दूँ।”

44 दाऊद तो खुद मसीह को खुदा कहता है। तो फिर वह किस तरह दाऊद का बेटा हो सकता है?”

45 जब लोग सुन रहे थे तो उस ने अपने शागिर्दों से कहा, 46 “शरी'अत के उलमा से खबरदार रहो! क्यूँकि वह शानदार चोगे पहन कर इधर उधर फिरना पसन्द करते हैं। जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उन की इज़्जत करते हैं तो फिर वह खुश हो जाते हैं। उन की बस एक ही ख्वाहिश होती है कि इबादतखानों और दावतों में इज़्जत की कुर्सियों पर बैठ जाएँ। 47 यह लोग बेवाओं के घर हड़प कर जाते और साथ साथ दिखावे के लिए लम्बी लम्बी दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत सख्त सज़ा मिलेगी।”

## 21

?? ???? ?? ???? ??

1 ईसा ने नज़र उठा कर देखा, कि अमीर लोग अपने हदिए बैठ — उल — मुक़द्दस के चन्दे के बक्से में डाल रहे हैं। 2 एक ग़रीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिस ने उस में ताँबे के दो मामूली से सिक्के डाल दिए। 3 ईसा ने कहा, “मैं तुम को सच बताता हूँ कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम लोगों की निस्वत ज़्यादा डाला है। 4 क्यूँकि इन सब ने तो अपनी दौलत की कसरत से कुछ डाला जबकि इस

ने ज़रूरत मन्द होने के बावजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।”

2222 22 222 2222 22 22 2222 222 22222

5 उस वक़्त कुछ लोग हैकल की तारीफ़ में कहने लगे कि वह कितने खूबसूरत पत्थरों और मिन्नत के तोहफ़ों से सज़ा हुआ है। यह सुन कर ईसा ने कहा, 6 “जो कुछ तुम को यहाँ नज़र आता है उस का पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा। आने वाले दिनों में सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

7 उन्होंने ने पूछा, “उस्ताद, यह कब होगा? क्या क्या नज़र आएगा जिस से मालूम हो कि यह अब होने को है?” 8 ईसा ने जवाब दिया, “ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न कर दे। क्योंकि बहुत से लोग मेरा नाम ले कर आएँगे और कहेंगे, मैं ही मसीह हूँ और कि ‘वक़्त करीब आ चुका है।’ लेकिन उन के पीछे न लगना। 9 और जब जंगों और फ़ितनों की ख़बरें तुम तक पहुँचेगी तो मत घबराना। क्योंकि ज़रूरी है कि यह सब कुछ पहले पेश आए। तो भी अभी आख़िरत न होगी।”

10 उस ने अपनी बात जारी रखी, “एक क्रौम दूसरी के खिलाफ़ उठ खड़ी होगी, और एक बादशाही दूसरी के खिलाफ़। 11 बहुत जलजले आएँगे, जगह जगह काल पड़ेंगे और वबाई बीमारियाँ फैल जाएँगी। हैबतनाक वाक़िआत और आस्मान पर बड़े निशान देखने में आएँगे। 12 लेकिन इन तमाम वाक़िआत से पहले लोग तुम को पकड़ कर सताएँगे। वह तुम को यहूदी इबादतख़ानों के हवाले करेंगे, कैदख़ानों में डलवाएँगे और बादशाहों और हुक्मरानों के सामने पेश करेंगे। और यह इस लिए होगा कि तुम मेरे पैरोकार हो। 13 नतीजे में तुम्हें मेरी गवाही देने का मौक़ा मिलेगा। 14 लेकिन ठान लो, कि तुम पहले से अपनी फ़िक्र करने की तैयारी न करो, 15 क्योंकि मैं तुम को ऐसे अल्फ़ाज़ और हिक्मत अता करूँगा, कि तुम्हारे तमाम मुख़ालिफ़ न उस का मुक़ाबिला और न उस का जवाब दे सकेंगे। 16 तुम्हारे वालिदैन्, भाई, रिश्तेदार और दोस्त भी तुम को दुश्मन के हवाले कर देंगे, बल्कि तुम में से कुछ को क़त्ल किया जाएगा। 17 सब तुम से नफ़रत करेंगे, इस लिए कि तुम मेरे मानने वाले हो। 18 तो भी तुम्हारा एक बाल भी बांका नहीं होगा। 19 साबितक़दम रहने से ही तुम अपनी जान बचा लोगे।”

20 “जब तुम येरूशलेम को फ़ौजों से घिरा हुआ देखो तो जान लो, कि उस की तबाही करीब आ चुकी है। 21 उस वक़्त यहूदिया के रहनेवाले भाग कर पहाड़ी इलाक़े में पनाह लें। शहर के रहने वाले उस से निकल

जाएँ और दिहात में आबाद लोग शहर में दाख़िल न हों। 22 क्योंकि यह इलाही ग़ज़ब के दिन होंगे जिन में वह सब कुछ पूरा हो जाएगा जो कलाम — ए — मुक़द्दस में लिखा है। 23 उन औरतों पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों, क्योंकि मुल्क में बहुत मुसीबत होगी और इस क्रौम पर खुदा का ग़ज़ब नाज़िल होगा। 24 लोग उन्हें तलवार से क़त्ल करेंगे और कैद करके तमाम ग़ैरयहूदी ममालिक में ले जाएँगे। ग़ैरयहूदी येरूशलेम को पाँच तले कुचल डालेंगे। यह सिलसिला उस वक़्त तक जारी रहेगा जब तक ग़ैरयहूदियों का दौर पूरा न हो जाए।”

25 “सूरज, चाँद और तारों में अजीब — ओ — ग़रीब निशान जाहिर होंगे। क्रौम समुन्दर के शोर और ठाठें मारने से हैरान — ओ — परेशान होंगी। 26 लोग इस अन्देश से कि क्या क्या मुसीबत दुनिया पर आएगी इस क़दर खौफ़ खाएँगे कि उन की जान में जान न रहेगी, क्योंकि आस्मान की ताक़तें हिलाई जाएँगी। 27 और फिर वह इब्न् — ए — आदम को बड़ी कुदरत और जलाल के साथ बादल में आते हुए देखेंगे। 28 चुनौचे जब यह कुछ पेश आने लगे तो सीधे खड़े हो कर अपनी नज़र उठाओ, क्योंकि तुम्हारी नज़ात नज़दीक होगी।”

29 इस सिलसिले में ईसा ने उन्हें एक मिसाल सुनाई। “अंजीर के दरख़्त और बाक़ी दरख़्तों पर ग़ौर करो। 30 जैसे ही कोंपलें निकलने लगती हैं तुम जान लेते हो कि गर्मियों का मौसम नज़दीक है। 31 इसी तरह जब तुम यह वाक़िआत देखोगे तो जान लोगे कि खुदा की बादशाही करीब ही है। 32 मैं तुम को सच बताता हूँ कि इस नस्ल के ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा। 33 आस्मान — ओ — ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक क़ाईम रहेंगी।”

34 “ख़बरदार रहो ताकि तुम्हारे दिल अय्याशी, नशाबाज़ी और रोज़ाना की फ़िक्रों तले दब न जाएँ। वर्ना यह दिन अचानक तुम पर आन पड़ेगा, 35 और फन्दे की तरह तुम्हें जकड़ लेगा। क्योंकि वह दुनिया के तमाम रहनेवालों पर आएगा। 36 हर वक़्त चौकस रहो और दुआ करते रहो कि तुम को आने वाली इन सब बातों से बच निकलने की तौफ़ीक़ मिल जाए और तुम इब्न् — ए — आदम के सामने खड़े हो सको।”

37 हर रोज़ ईसा बैत — उल — मुक़द्दस में तालीम देता रहा और हर शाम वह निकल कर उस पहाड़ पर रात गुज़ारता था जिस का नाम ज़ैतून का पहाड़ है। 38 और सुबह सवेरे सब लोग उस की बातें सुनने को हैकल में उस के पास आया करते थे।

## 22

११११११ ११ १११११ ११ १११११ १११११ ११ १११११  
११११११ १११११

१ बेखमीरी रोटी की ईद यानी फ़सह की ईद करीब आ गई थी। २ रेहनुमा इमाम और शरी'अत के उलमा ईसा को क़त्ल करने का कोई मौजूँ मौक़ा ढूँड रहे थे, क्योंकि वह अवाम के रद्द — ए — अमल से डरते थे।

३ उस वक़्त इब्नीस यहूदाह इस्करियोती में बस गया जो बारह रसूलों में से था। ४ अब वह रेहनुमा इमामों और बैत — उल — मुक़द्दस के पहरदारों के अप्सरों से मिला और उन से बात करने लगा कि वह ईसा को किस तरह उन के हवाले कर सकेगा। ५ वह खुश हुए और उसे पैसे देने पर मुत्तफ़िक़ हुए। ६ यहूदाह रज़ामन्द हुआ। अब से वह इस तलाश में रहा कि ईसा को ऐसे मौक़े पर उन के हवाले करे जब मजमा उस के पास न हो।

७ बेखमीरी रोटी की ईद आई जब फ़सह के मेंमने को कुर्बान करना था। ८ ईसा ने पतरस और यूहन्ना को आगे भेज कर हिदायत की, “जाओ, हमारे लिए फ़सह का खाना तैयार करो ताकि हम जा कर उसे खा सकें।” ९ उन्होंने ने पूछा, “हम उसे कहाँ तैयार करें?” १० उस ने जवाब दिया, “जब तुम शहर में दाख़िल होगे तो तुम्हारी मुलाक़ात एक आदमी से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उस के पीछे चल कर उस घर में दाख़िल हो जाओ जिस में वह जाएगा। ११ वहाँ के मालिक से कहना, उस्ताद आप से पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?” १२ वह तुम को दूसरी मन्ज़िल पर एक बड़ा और सज़ा हुआ कमरा दिखाएगा। फ़सह का खाना वहीं तैयार करना।” १३ दोनों चले गए तो सब कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने ने फ़सह का खाना तैयार किया।

१४ मुक़र्रर वक़्त पर ईसा अपने शागिर्दों के साथ खाने के लिए बैठ गया। १५ उस ने उन से कहा, “मेरी बहुत आरज़ु थी कि दुःख उठाने से पहले तुम्हारे साथ मिल कर फ़सह का यह खाना खाऊँ।” १६ “क्योंकि मैं तुम को बताता हूँ कि उस वक़्त तक इस खाने में शरीक नहीं हूँगा जब तक इस का मक़सद खुदा की बादशाही में पूरा न हो गया हो।” १७ फिर उस ने मय का प्याला ले कर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और कहा, “इस को ले कर आपस में बाँट लो। १८ मैं तुम को बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का रस नहीं पियूँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे खुदा की बादशाही के आने पर पियूँगा।” १९ फिर उस ने रोटी ले कर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े

करके उन्हें दे दिया। उस ने कहा, “यह मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।” २० इसी तरह उस ने खाने के बाद प्याला ले कर कहा, “मय का यह प्याला वह नया अहद है जो मेरे खून के ज़रिए काइम किया जाता है, वह खून जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है। २१ लेकिन जिस शख्स का हाथ मेरे साथ खाना खाने में शरीक है वह मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा। २२ इब्न — ए — आदम तो खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ कूच कर जाएगा, लेकिन उस शख्स पर अप्सोस जिस के वसीले से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा।” २३ यह सुन कर शागिर्द एक दूसरे से बहस करने लगे कि हम में से यह कौन हो सकता है जो इस किस्म की हरकत करेगा।

२४ फिर एक और बात भी छिड़ गई। वह एक दूसरे से बहस करने लगे कि हम में से कौन सब से बड़ा समझा जाए। २५ लेकिन ईसा ने उन से कहा, “ग़ौरयहूदी क़ौमों में बादशाह वही हैं जो दूसरों पर हुकूमत करते हैं, और इस्तिyार वाले वही हैं जिन्हें ‘मोहदसिन’ का लक़ब दिया जाता है। २६ लेकिन तुम को ऐसा नहीं होना चाहिए। इस के बजाए जो सब से बड़ा है वह सब से छोटे लड़के की तरह हो और जो रेहनुमाई करता है वह नौकर जैसा हो। २७ क्योंकि आम तौर पर कौन ज्यादा बड़ा होता है, वह जो खाने के लिए बैठा है या वह जो लोगों की खिदमत के लिए हाज़िर होता है? क्या वह नहीं जो खाने के लिए बैठा है? बेशक। लेकिन मैं खिदमत करने वाले की हैसियत से ही तुम्हारे बीच हूँ।”

२८ “देखो, तुम वही हो जो मेरी तमाम आज्माइशों के दौरान मेरे साथ रहे हो। २९ चुनाँचे मैं तुम को बादशाही अता करता हूँ जिस तरह बाप ने मुझे बादशाही अता की है। ३० तुम मेरी बादशाही में मेरी मेज़ पर बैठ कर मेरे साथ खाओ और पियोगे, और तरख़्तों पर बैठ कर इस्राईल के बारह क़बीलों का इन्साफ़ करोगे।”

३१ “शमौन, शमौन! इब्नीस ने तुम लोगों को गन्दुम की तरह फटकने का मुतालबा किया है। ३२ लेकिन मैंने तेरे लिए दुआ की है ताकि तेरा ईमान जाता न रहे। और जब तू मुड़ कर वापस आए तो उस वक़्त अपने भाइयों को मजबूत करना।” ३३ पतरस ने जवाब दिया, खुदावन्द, मैं तो आप के साथ जेल में भी जाने बल्कि मरने को तय्यार हूँ।” ३४ ईसा ने कहा, “पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि कल सुबह मुर्ग के बाँग़ देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इन्कार कर चुका होगा।”

३५ फिर उसने उनसे कहा “जब मैंने तुम्हें बटवे और झोली और जूती के बिना भेजा था तो क्या तुम किसी

चीज़ में मोहताज़ रहे थे, उन्होंने कहा किसी चीज़ के नहीं।” 36 उस ने कहा, “लेकिन अब जिस के पास बटुवा या थैला हो वह उसे साथ ले जाए, बल्कि जिस के पास तलवार न हो वह अपनी चादर बेच कर तलवार खरीद ले। 37 कलाम — ए — मुक़द्दस में लिखा है, उसे मुल्लिज़मों में शुमार किया गया” और मैं तुम को बताता हूँ, ज़रूरी है कि यह बात मुझ में पूरी हो जाए। क्योंकि जो कुछ मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा ही होना है।”

38 उन्होंने ने कहा, “खुदावन्द, यहाँ दो तलवारें हैं।” उस ने कहा, “बस! काफ़ी है!”

39 फिर वह शहर से निकल कर रोज़ के मुताबिक़ ज़ैतून के पहाड़ की तरफ़ चल दिया। उस के शागिर्द उस के पीछे हो लिए। 40 वहाँ पहुँच कर उस ने उन से कहा, “दुआ करो ताकि आज्माइश में न पड़ो।” 41 फिर वह उन्हें छोड़ कर कुछ आगे निकला, तक्ररीबन इतने फ़ासिले पर जितनी दूर तक पत्थर फैंका जा सकता है। वहाँ वह झुक कर दुआ करने लगा, 42 “ऐ बाप, अगर तू चाहे तो यह प्याला मुझ से हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मज़ी पूरी हो।” 43 उस वक़्त एक फ़रिश्ते ने आस्मान पर से उस पर ज़ाहिर हो कर उस को ताक़त दी। 44 वह सख़्त परेशान हो कर ज़्यादा दिलसोज़ी से दुआ करने लगा। साथ साथ उस का पसीना खून की बूंदों की तरह ज़मीन पर टपकने लगा। 45 जब वह दुआ से फ़ारिग़ हो कर खड़ा हुआ और शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह ग़म के मारे सो गए हैं। 46 उस ने उन से कहा, “तुम क्यूँ सो रहे हो? उठ कर दुआ करते रहो ताकि आज्माइश में न पड़ो।”

47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि एक हुज़ूम आ पहुँचा जिस के आगे आगे यहूदाह चल रहा था। वह ईसा को बोसा देने के लिए उस के पास आया। 48 लेकिन उस ने कहा, “यहूदाह, क्या तू इब्न — ए — आदम को बोसा दे कर दुश्मन के हवाले कर रहा है?” 49 जब उस के साथियों ने भाँप लिया कि अब क्या होने वाला है तो उन्होंने ने कहा, “खुदावन्द, क्या हम तलवार चलाएँ?” 50 और उनमें से एक ने अपनी तलवार से इमाम — ए — आज़म के गुलाम का दहना कान उड़ा दिया। 51 लेकिन ईसा ने कहा, “बस कर!” उस ने गुलाम का कान छू कर उसे शिफ़ा दी। 52 फिर वह उन रेहनुमा इमामों, बैत — उल — मुक़द्दस के पहरेदारों के अफ़्सरों और बुज़ुर्गों से मुखातिब हुआ जो उस के पास आए थे, “क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारें और लाठियाँ लिए मेरे खिलाफ़ निकले हो? 53 मैं तो रोज़ाना बैत — उल — मुक़द्दस में तुम्हारे पास था, मगर तुम ने वहाँ मुझे हाथ नहीं लगाया।

लेकिन अब यह तुम्हारा वक़्त है, वह वक़्त जब तारीकी हुकूमत करती है।”

54 फिर वह उसे गिरफ़्तार करके इमाम — ए — आज़म के घर ले गए। पतरस कुछ फ़ासिले पर उन के पीछे पीछे वहाँ पहुँच गया। 55 लोग सहन में आग जला कर उस के इर्दगिर्द बैठ गए। पतरस भी उन के बीच बैठ गया। 56 किसी नौकरानी ने उसे वहाँ आग के पास बैठे हुए देखा। उस ने उसे घूर कर कहा, “यह भी उस के साथ था।” 57 लेकिन उस ने इन्कार किया, “खातून, मैं उसे नहीं जानता।” 58 थोड़ी देर के बाद किसी आदमी ने उसे देखा और कहा, “तुम भी उन में से हो।” लेकिन पतरस ने जवाब दिया, “नहीं भाई! मैं नहीं हूँ।” 59 तक्ररीबन एक घंटा गुज़र गया तो किसी और ने इस्रार करके कहा, “यह आदमी यक्रीनन उस के साथ था, क्यूँकि यह भी गलील का रहने वाला है।” 60 लेकिन पतरस ने जवाब दिया, “यार, मैं नहीं जानता कि तुम क्या कह रहे हो!” वह अभी बात कर ही रहा था कि अचानक मुर्ग की बाँग सुनाई दी। 61 खुदावन्द ने मुड़ कर पतरस पर नज़र डाली। फिर पतरस को खुदावन्द की वह बात याद आई जो उस ने उस से कही थी कि “कल सुबह मुर्ग के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इन्कार कर चुका होगा।” 62 पतरस वहाँ से निकल कर टूटे दिल से खूब रोया।

63 पहरेदार ईसा का मज़ाक़ उड़ाने और उस की पिटाई करने लगे। 64 उन्होंने उस की आँखों पर पट्टी बाँध कर पूछा, “नबुव्वत कर कि किस ने तुझे मारा?” 65 इस तरह की और बहुत सी बातों से वह उस की बेइज़्जती करते रहे।

66 जब दिन चढ़ा तो रेहनुमा इमामों और शरी'अत के आलिमों पर मुश्तमिल क्रौम के मजमा ने जमा हो कर उसे यहूदी अदालत — ए — आलिया में पेश किया। 67 उन्होंने ने कहा, “अगर तू मसीह है तो हमें बता!” ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं तुम को बताऊँ तो तुम मेरी बात नहीं मानोगे, 68 और अगर तुम से पूछूँ तो तुम जवाब नहीं दोगे। 69 लेकिन अब से इब्न — ए — आदम खुदा तआला के दहने हाथ बैठा होगा।” 70 सब ने पूछा, “तो फिर क्या तू खुदा का फ़र्ज़न्द है?” उस ने जवाब दिया, “जी, तुम खुद कहते हो।” 71 इस पर उन्होंने ने कहा, “अब हमें किसी और गवाही की क्या ज़रूरत रही? क्यूँकि हम ने यह बात उस के अपने मुँह से सुन ली है।”

## 23

23:1-23:23



[2][2][2][2]

1 फिर पूरी मज्लिस उठी और ईसा को पीलातुस के पास ले आई। 2 और उन्होंने उस पर इल्जाम लगा कर कहने लगे, “हम ने मालूम किया है कि यह आदमी हमारी क्रौम को गुमराह कर रहा है। यह कैसर को खिराज देने से मनह करता और दावा करता है कि मैं मसीह और बादशाह हूँ।” 3 पीलातुस ने उस से पूछा, “अच्छा, तुम यहूदियों के बादशाह हो?” ईसा ने जवाब दिया, जी, **“आप खुद कहते हैं।”** 4 फिर पीलातुस ने रहनुमा इमामों और हुजूम से कहा, “मुझे इस आदमी पर इल्जाम लगाने की कोई वजह नज़र नहीं आती।” 5 मगर वो और भी ज़ोर देकर कहने लगे कि ये तमाम यहूदिया में बल्कि गलील से लेकर यहाँ तक लोगों को सिखा सिखा कर उभारता है 6 यह सुन कर पीलातुस ने पूछा, “क्या यह शख्स गलील का है?” 7 जब उसे मालूम हुआ कि ईसा गलील यानी उस इलाक़े से है, जिस पर हेरोदेस अनतिपास की हुकूमत है तो उस ने उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि वह भी उस वक़्त येरूशलेम में था।

8 हेरोदेस ईसा को देख कर बहुत खुश हुआ, क्योंकि उस ने उस के बारे में बहुत कुछ सुना था, और इस लिए काफ़ी दिनों से उस से मिलना चाहता था। अब उस की बड़ी ख्वाहिश थी, कि ईसा को कोई मोजिज़ा करते हुए देख सके। 9 उस ने उस से बहुत सारे सवाल किए, लेकिन ईसा ने एक का भी जवाब न दिया। 10 रहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा साथ खड़े बड़े जोश से उस पर इल्जाम लगाते रहे। 11 फिर हेरोदेस और उस के फ़ौजियों ने उसको ज़लील करते हुए उस का मज़ाक़ उड़ाया और उसे चमकदार लिबास पहना कर पीलातुस के पास वापस भेज दिया। 12 उसी दिन हेरोदेस और पीलातुस दोस्त बन गए, क्योंकि इस से पहले उन की दुश्मनी चल रही थी।

13 फिर पीलातुस ने रहनुमा इमामों, सरदारों और अवाम को जमा करके; 14 उन से कहा, “तुम ने इस शख्स को मेरे पास ला कर इस पर इल्जाम लगाया है कि यह क्रौम को उकसा रहा है। मैं ने तुम्हारी मौजूदगी में इस का जायज़ा ले कर ऐसा कुछ नहीं पाया जो तुम्हारे इल्जामात की तस्दीक़ करे। 15 हेरोदेस भी कुछ नहीं मालूम कर सका, इस लिए उस ने इसे हमारे पास वापस भेज दिया है। इस आदमी से कोई भी ऐसा गुनाह नहीं हुआ कि यह सज़ा — ए — मौत के लायक़ है। 16 इस लिए मैं इसे कोड़ों की सज़ा दे कर रिहा कर देता हूँ।” 17 [अस्त में यह उस का फ़र्ज़ था कि वह ईद के मौक़े पर उन की खातिर एक कैदी को रिहा कर दे]।

18 लेकिन सब मिल कर शोर मचा कर कहने लगे, “इसे ले जाएँ! इसे नहीं बल्कि बर — अब्बा को रिहा करके हमें दें।” 19 (बर — अब्बा को इस लिए जेल में डाला गया था कि वह क्रांतिल था और उस ने शहर में हुकूमत के खिलाफ़ बगावत की थी)। 20 पीलातुस ईसा को रिहा करना चाहता था, इस लिए वह दुबारा उन से मुखातिब हुआ। 21 लेकिन वह चिल्लाते रहे, “इसे मस्तूब करें, इसे मस्तूब करें।” 22 फिर पीलातुस ने तीसरी दफ़ा उन से कहा, “क्यूँ? उस ने क्या जुर्म किया है? मुझे इसे सज़ा — ए — मौत देने की कोई वजह नज़र नहीं आती। इस लिए मैं इसे कोड़े लगवा कर रिहा कर देता हूँ।” 23 लेकिन वह बड़ा शोर मचा कर उसे मस्तूब करने का तक्राज़ा करते रहे, और आखिरकार उन की आवाज़ें ग़ालिब आ गईं। 24 फिर पीलातुस ने फ़ैसला किया कि उन का मुतालबा पूरा किया जाए। 25 उस ने उस आदमी को रिहा कर दिया जो अपनी हुकूमत के खिलाफ़ हरकतों और क़त्ल की वजह से जेल में डाल दिया गया था जबकि ईसा को उस ने उन की मर्ज़ी के मुताबिक़ उन के हवाले कर दिया।

26 जब फ़ौजी ईसा को ले जा रहे थे तो उन्होंने ने एक आदमी को पकड़ लिया जो लिबिया के शहर कुरेन का रहने वाला था। उस का नाम शमौन था। उस वक़्त वह देहात से शहर में दाखिल हो रहा था। उन्होंने ने सलीब को उस के कंधों पर रख कर उसे ईसा के पीछे चलने का हुक्म दिया। 27 एक बड़ा हुजूम उस के पीछे हो लिया जिस में कुछ ऐसी औरतें भी शामिल थीं जो सीना पीट पीट कर उस का मातम कर रही थीं। 28 ईसा ने मुड़ कर उन से कहा, **“येरूशलेम की बेटियो! मेरे वास्ते न रोओ बल्कि अपने और अपने बच्चों के वास्ते रोओ। 29 क्योंकि ऐसे दिन आएंगे जब लोग कहेंगे, मुबारक़ हैं वह जो बाँझ हैं, जिन्होंने ने न तो बच्चों को जन्म दिया, न दूध पिलाया।”**

30 फिर लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे,

हम पर गिर पड़ो,

और पहाड़ियों से कि ‘हमें छुपा लो।’”

31 **“क्यूँकि अगर हरे दरख़्त से ऐसा सुलूक किया जाता है तो फिर सूखे के साथ क्या कुछ न किया जाएगा?”**

32 दो और मर्दों को भी मस्तूब करने के लिए बाहर ले जाया जा रहा था। दोनों मुजरिम थे। 33 चलते चलते वह उस जगह पहुँचे जिस का नाम खोपड़ी था। वहाँ उन्होंने ने ईसा को दोनों मुजरिमों समेत मस्तूब किया। एक मुजरिम को उस के दाएँ हाथ और दूसरे को उस के बाएँ हाथ लटका दिया गया। 34 ईसा ने कहा, **“ऐ बाप, इन्हें मुआफ़ कर, क्यूँकि यह जानते नहीं कि क्या कर रहे**

हैं।” उन्होंने ने पर्ची डाल कर उस के कपड़े आपस में बाँट लिए।

35 हुजूम वहाँ खड़ा तमाशा देखता रहा जबकि क्रौम के सरदारों ने उस का मज़ाक भी उड़ाया। उन्होंने ने कहा, “उस ने औरों को बचाया है। अगर यह खुदा का चुना हुआ और मसीह है तो अपने आप को बचाए।”

36 फ़ौजियों ने भी उसे लान — तान की। उस के पास आ कर उन्होंने ने उसे मय का सिरका पेश किया 37 और कहा, “अगर तू यहूदियों का बादशाह है तो अपने आप को बचा ले।” 38 उस के सर के ऊपर एक तख्ती लगाई गई थी जिस पर लिखा था, “यह यहूदियों का बादशाह है।”

39 जो मुजरिम उस के साथ मस्लूब हुए थे उन में से एक ने कुफ़र बकते हुए कहा, “क्या तू मसीह नहीं है? तो फिर अपने आप को और हमें भी बचा ले। 40 लेकिन दूसरे ने यह सुन कर उसे डाँटा, क्या तू खुदा से भी नहीं डरता? जो सज़ा उसे दी गई है वह तुझे भी मिली है। 41 हमारी सज़ा तो वाजिबी है, क्योंकि हमें अपने कामों का बदला मिल रहा है, लेकिन इस ने कोई बुरा काम नहीं किया।” 42 फिर उस ने ईसा से कहा, “जब आप अपनी बादशाही में आएँ तो मुझे याद करें।” 43 ईसा ने उस से कहा, “**मैं तुझे सच बताता हूँ कि तू आज ही मेरे साथ फ़िरदोस में होगा।**”

44 बारह बजे से दोपहर तीन बजे तक पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। 45 सूरज तारीक हो गया और बैत — उल — मुक्रदस के पाकतरीन कमरे के सामने लटका हुआ पर्दा दो हिस्सों में फट गया। 46 ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “**ऐ बाप, मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ।**” यह कह कर उस ने दम तोड़ दिया। 47 यह देख कर वहाँ खड़े फ़ौजी अप्सर ने खुदा की बड़ाई करके कहा, “यह आदमी वाकई रास्तबाज़ था।” 48 और हुजूम के तमाम लोग जो यह तमाशा देखने के लिए जमा हुए थे यह सब कुछ देख कर छाती पीटने लगे और शहर में वापस चले गए। 49 लेकिन ईसा के जानने वाले कुछ फ़ासिले पर खड़े देखते रहे। उन में वह औरतें भी शामिल थीं जो गलील में उस के पीछे चल कर यहाँ तक उस के साथ आई थीं।

50 वहाँ एक नेक और रास्तबाज़ आदमी बनाम यूसुफ़ था। वह यहूदी अदालत — ए — अलिया का रकन था 51 लेकिन दूसरों के फ़ैसले और हरकतों पर रज़ामन्द नहीं हुआ था। यह आदमी यहूदिया के शहर अरिमतियाह का रहने वाला था और इस इन्तिज़ार में था कि खुदा की

बादशाही आए। 52 अब उस ने पिलातस के पास जा कर उस से ईसा की लाश ले जाने की इजाज़त माँगी। 53 फिर लाश को उतार कर उस ने उसे कतान के कफ़न में लपेट कर चट्टान में तराशी हुई एक क़ब्र में रख दिया जिस में अब तक किसी को दफ़नाया नहीं गया था। 54 यह तैयारी का दिन यानी जुमआ था, लेकिन सबत का दिन शुरू होने को था। 55 जो औरतें ईसा के साथ गलील से आई थीं वह यूसुफ़ के पीछे हो लीं। उन्होंने ने क़ब्र को देखा और यह भी कि ईसा की लाश किस तरह उस में रखी गई है। 56 फिर वह शहर में वापस चली गई और उस की लाश के लिए खुशबूदार मसाले तैयार करने लगीं।

## 24

???? ?? ???? ?? ????????? ?? ?????

1 हफ़्ते का पहला\* दिन शुरू हुआ, इस लिए उन्होंने ने शरी'अत के मुताबिक़ आराम किया। इतवार के दिन यह औरतें अपने तैयारशुदा मसाले ले कर सुबह — सवेरे क़ब्र पर गईं। 2 वहाँ पहुँच कर उन्होंने ने देखा कि क़ब्र पर का पत्थर एक तरफ़ लुढ़का हुआ है। 3 लेकिन जब वह क़ब्र में गई तो वहाँ खुदावन्द ईसा की लाश न पाई। 4 वह अभी उलझन में वहाँ खड़ी थीं कि अचानक दो मर्द उन के पास आ खड़े हुए जिन के लिबास बिजली की तरह चमक रहे थे। 5 औरतें खौफ़ खा कर मुँह के बल झुक गईं, लेकिन उन मर्दों ने कहा, तुम क्यों ज़िन्दा को मुर्दों में ढूँड रही हो? 6 वह यहाँ नहीं है, वह तो जी उठा है। वह बात याद करो जो उस ने तुम से उस वक़्त कही जब वह गलील में था। 7 “**ज़रूरी है कि इब्न — ए — आदम को गुनाहगारों के हवाले कर के, मस्लूब किया जाए और कि वह तीसरे दिन जी उठे।**” 8 फिर उन्हें यह बात याद आई। 9 और क़ब्र से वापस आ कर उन्होंने ने यह सब कुछ ग्यारह रसूलों और बाक़ी शागिर्दों को सुना दिया। 10 मरियम मग़दलिनी, यूना, याकूब की माँ मरियम और चन्द एक और औरतें उन में शामिल थीं जिन्होंने ने यह बातें रसूलों को बताईं। 11 लेकिन उन को यह बातें बेतुकी सी लग रही थीं, इस लिए उन्हें यकीन न आया। 12 तो भी पतरस उठा और भाग कर क़ब्र के पास आया। जब पहुँचा तो झुक कर अन्दर झाँका, लेकिन सिर्फ़ कफ़न ही नज़र आया। यह हालात देख कर वह हैरान हुआ और चला गया।

13 उसी दिन ईसा के दो पैरोकार एक गाँव बनाम इम्माउस की तरफ़ चल रहे थे। यह गाँव येरूशलेम से तक्ररीबन दस क़िलोमीटर दूर था। 14 चलते चलते वह आपस में उन वाक़िआत का ज़िक़र कर रहे थे जो हुए

\* 24:1 24:1 हफ़्ते का पहला ये इतवार का दिन है

थे। <sup>15</sup> और ऐसा हुआ कि जब वह बातें और एक दूसरे के साथ बहस — ओ — मुबाहसा कर रहे थे तो ईसा खुद करीब आ कर उन के साथ चलने लगा। <sup>16</sup> लेकिन उन की आँखों पर पर्दा डाला गया था, इस लिए वह उसे पहचान न सके। <sup>17</sup> ईसा ने कहा, “यह कैसी बातें हैं जिन के बारे में तुम चलते चलते तबादला — ए — खयाल कर रहे हो?” यह सुन कर वह गमगीन से खड़े हो गए। <sup>18</sup> उन में से एक बनाम क्लियुपास ने उस से पूछा, “क्या आप येरूशलेम में वाहिद शख्स हैं जिसे मालूम नहीं कि इन दिनों में क्या कुछ हुआ है?” <sup>19</sup> उस ने कहा, “क्या हुआ है?” उन्होंने ने जवाब दिया, वह जो ईसा नासरी के साथ हुआ है। वह नबी था जिसे कलाम और काम में खुदा और तमाम क्रौम के सामने जबरदस्त ताकत हासिल थी। <sup>20</sup> लेकिन हमारे रहनुमा इमामों और सरदारों ने उसे हुक्मरानों के हवाले कर दिया ताकि उसे सज़ा — ए — मौत दी जाए, और उन्होंने ने उसे मस्तूब किया। <sup>21</sup> लेकिन हमें तो उम्मीद थी कि वही इस्राईल को नजात देगा। इन वाकिआत को तीन दिन हो गए हैं। <sup>22</sup> लेकिन हम में से कुछ औरतों ने भी हमें हैरान कर दिया है। वह आज सुबह — सवेरे क़बर पर गई थीं। <sup>23</sup> तो देखा कि लाश वहाँ नहीं है। उन्होंने ने लौट कर हमें बताया कि हम पर फ़रिश्ते ज़ाहिर हुए जिन्होंने ने कहा कि ईसा “ज़िन्दा है। <sup>24</sup> हम में से कुछ क़बर पर गए और उसे वैसा ही पाया जिस तरह उन औरतों ने कहा था। लेकिन उसे खुद उन्होंने ने नहीं देखा।” <sup>25</sup> फिर ईसा ने उन से कहा, “अरे नादानों! तुम कितने नादान हो कि तुम्हें उन तमाम बातों पर यक़ीन नहीं आया जो नबियों ने फ़रमाई हैं। <sup>26</sup> क्या ज़रूरी नहीं था कि मसीह यह सब कुछ झेल कर अपने जलाल में दाख़िल हो जाए?” <sup>27</sup> फिर मूसा और तमाम नबियों से शुरू करके ईसा ने कलाम — ए — मुक़द्दस की हर बात की तशरीह की जहाँ जहाँ उस का ज़िक्र है।

<sup>28</sup> चलते चलते वह उस गाँव के करीब पहुँचे जहाँ उन्हें जाना था। ईसा ने ऐसा किया गोया कि वह आगे बढ़ना चाहता है, <sup>29</sup> लेकिन उन्होंने ने उसे मजबूर करके कहा, “हमारे पास ठहरें, क्योंकि शाम होने को है और दिन ढल गया है।” चुनाँचे वह उन के साथ ठहरने के लिए अन्दर गया। <sup>30</sup> और ऐसा हुआ कि जब वह खाने के लिए बैठ गए तो उस ने रोटी ले कर उस के लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उस ने उसे टुकड़े करके उन्हें दिया। <sup>31</sup> अचानक उन की आँखें खुल गईं और उन्होंने ने उसे पहचान लिया। लेकिन उसी लम्हे वह ओझल हो गया। <sup>32</sup> फिर वह एक दूसरे से कहने लगे, “क्या हमारे दिल जोश से न भर गए थे जब वह रास्ते में हम से बातें करते

करते हमें सहीफ़ों का मतलब समझा रहा था?” <sup>33</sup> और वह उसी वक़्त उठ कर येरूशलेम वापस चले गए। जब वह वहाँ पहुँचे तो ग्यारह रसूल अपने साथियों समेत पहले से जमा थे <sup>34</sup> और यह कह रहे थे, “खुदावन्द वाक़'ई जी उठा है! वह शमौन पर ज़ाहिर हुआ है।” <sup>35</sup> फिर इम्माउस के दो शागिर्दों ने उन्हें बताया कि गाँव की तरफ़ जाते हुए क्या हुआ था और कि ईसा के रोटी तोड़ते वक़्त उन्होंने ने उसे कैसे पहचाना।

<sup>36</sup> वह अभी यह बातें सुना रहे थे कि ईसा खुद उन के दर्मियान आ खड़ा हुआ और कहा, “तुम्हारी सलामती हो।” <sup>37</sup> वह घबरा कर बहुत डर गए, क्योंकि उन का खयाल था कि कोई भूत — प्रेत देख रहे हैं। <sup>38</sup> उस ने उन से कहा, “तुम क्यों परेशान हो गए हो? क्या वजह है कि तुम्हारे दिलों में शक उभर आया है? <sup>39</sup> मेरे हाथों और पैरों को देखो कि मैं ही हूँ। मुझे टटोल कर देखो, क्योंकि भूत के गोश्त और हड्डियाँ नहीं होतीं जबकि तुम देख रहे हो कि मेरा जिस्म है।”

<sup>40</sup> यह कह कर उस ने उन्हें अपने हाथ और पैर दिखाए। <sup>41</sup> जब उन्हें खुशी के मारे यक़ीन नहीं आ रहा था और ता'अज्जुब कर रहे थे तो ईसा ने पूछा, “क्या यहाँ तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है?” <sup>42</sup> उन्होंने ने उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया <sup>43</sup> उस ने उसे ले कर उन के सामने ही खा लिया। <sup>44</sup> फिर उस ने उन से कहा, “यही है जो मैं ने तुम को उस वक़्त बताया था जब तुम्हारे साथ था कि जो कुछ भी मूसा की शरी'अत, नबियों के सहीफ़ों और ज़बूर की किताब में मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा होना है।” <sup>45</sup> फिर उस ने उन के ज़हन को खोल दिया ताकि वह खुदा का कलाम समझ सकें। <sup>46</sup> उस ने उन से कहा, “कलाम — ए — मुक़द्दस में यूँ लिखा है, मसीह दुःख उठा कर तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठेगा। <sup>47</sup> फिर येरूशलेम से शुरू करके उस के नाम में यह पैग़ाम तमाम क्रौमों को सुनाया जाएगा कि वह तौबा करके गुनाहों की मुआफ़ी पाएँ। <sup>48</sup> तुम इन बातों के गवाह हो। <sup>49</sup> और मैं तुम्हारे पास उसे भेज दूँगा जिस का वादा मेरे बाप ने किया है। फिर तुम को आस्मान की ताक़त से भर दिया जाएगा। उस वक़्त तक शहर से बाहर न निकलना।”

<sup>50</sup> फिर वह शहर से निकल कर उन्हें बैत — अनियाह तक ले गया। वहाँ उस ने अपने हाथ उठा कर उन्हें बर्क़त दी। <sup>51</sup> और ऐसा हुआ कि बर्क़त देते हुए वह उन से जुदा हो कर आस्मान पर उठा लिया गया। <sup>52</sup> उन्होंने ने उसे सिज्दा किया और फिर बड़ी खुशी से येरूशलेम वापस चले गए। <sup>53</sup> वहाँ वह अपना पूरा वक़्त बैत — उल —

मुकद्दस में गुज़ार कर खुदा की बड़ाई करते रहे।



## मुक़द्दस यूहन्ना की मा'रिफ़त इन्जील

?????????? ?? ???? ???? ???? ?

1, ज़ब्दी का बेटा यूहन्ना इस इन्जील का मुसन्निफ़ है और यूहन्ना 21:20, 24 सबूत पेश करता है कि यह इन्जील उस शागिर्द की कलम से है “जिस से येसू मोहब्बत रखता था और यूहन्ना खुद को इस बतौर हवाला देता है वह शागिर्द जिसे येसू मोहबबत रखता था।” वह और उस का भाई याकूब “गरज के बेटे” कहलाते थे (मरकुस 3:17) उन्हें बिला शिर्कत — ए — ग़ैरे मौक़ा नसीब था कि येसू की ज़िन्दगी के वाकिआत की बाबत गवाही दें और तस्दीक पेश करें।

???? ???? ?? ????????? ?? ???

इस के तस्नीफ़ की तारीख़ तक्करीबन 50 - 90 ईस्वी के आसपास है।

यूहन्ना की इंजील को हो सकता है इफ़सुस से लिखी गई हो। तहरीर किए जाने के खास मकामात यहूदिया का देहाती इलाका, सामरिया, गलील, बैतानिया, यरूशलेम हो सकते हैं।

????? ?????????? ???? ?????

यूहन्ना की इन्जील यहूदियों के लिए लिखी गई थी। उसकी इन्जील खास तौर से यहूदियों को यह साबित करने के लिए लिखी गई थी कि येसू ही मसीहा था। जो इतला उस में मुहय्या की वह इसलिए थी कि यहूदी लोग एत्काद करें कि येसू ही मसीह है ताकि वह उस पर एत्काद करके उस के नाम से ज़िन्दगी पाएं।

???

यूहन्ना की इन्जील को लिखने का मक़सद यह है कि तौसीक़ करे और मसीहियों को ईमान में महफूज़ करे जिस तरह से यूहन्ना 20:31 में तअय्युन किया गया है कि लेकिन यह इस लिए लिखे कि तुम ईमान लाओ कि येसू ही खुदा का बेटा मसीह है और ईमान लाकर उस के नाम से ज़िन्दगी पाओ। यूहन्ना ने वाज़ेह तौर से येसू के खुदा होने का एलान यिका (यूहन्ना 1:1) जिस ने तख़लीक़ की सारी चीज़ों को वजूद में ले आया (यूहन्ना 1:3) वह नूर है (यूहन्ना 1:4, 8:12) और ज़िन्दगी है (यूहन्ना 1:4, 5:26, 14:6) यूहन्ना की इन्जील यह साबित करने के लिए लिखा गया था कि येसू मसीह खुदा का बेटा है।

*[[[?]]?]*

## येसू खूदा का बेटा

## बैरुनी खाका

1. येशू ज़िन्दगी का बानी बतौर — 1:1-18
2. पहले शागिर्द की बुलाहट — 1:19-51
3. येशू की अवाम में खिदमतगुजारी — 2:1-16:33
5. येशू मसीह की मस्लूबियत और क़्यामत — 18:1-20:10
6. येशू की क़्यामत से पहले की खिदमतगुजारी — 20:11-21:25

$\frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2}$ 
 $\frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2}$ 
 $\frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2}$ 
 $\frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2} \frac{1}{2}$

1 इब्तिदा में कलाम था, और कलाम खुदा के साथ था, और कलाम ही खुदा था। 2 यही शुरू में खुदा के साथ था। 3 सब चीज़ें उसके वसीले से पैदा हुई, और जो कुछ पैदा हुआ है उसमें से कोई चीज़ भी उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई। 4 उसमें ज़िन्दगी थी और वो ज़िन्दगी आदमियों का नूर थी। 5 और नूर तारीकी में चमकता है, और तारीकी ने उसे कुबूल न किया। 6 एक आदमी युहन्ना नाम आ मौजूद हुआ, जो खुदा की तरफ़ से भेजा गया था; 7 ये गवाही के लिए आया कि नूर की गवाही दे, ताकि सब उसके वसीले से ईमान लाएँ। 8 वो खुद तो नूर न था, मगर नूर की गवाही देने आया था। 9 हक़ीकी नूर जो हर एक आदमी को रौशन करता है, दुनियाँ में आने को था। 10 वो दुनियाँ में था, और दुनियाँ उसके वसीले से पैदा हुई, और दुनियाँ ने उसे न पहचाना। 11 वो अपने घर आया और और उसके अपनों ने उसे कुबूल न किया। 12 लेकिन जितनों ने उसे कुबूल किया, उसने उन्हें खुदा के फ़र्ज़न्द बनने का हक़ बख़्शा, या'नी उन्हें जो उसके नाम पर ईमान लाते हैं। 13 वो न खून से, न जिस्म की ख़्वाहिश से, न इंसान के इरादे से, बल्कि खुदा से पैदा हुए। 14 और कलाम मुजस्सिम हुआ फ़ज़ल और सच्चाई से भरकर हमारे दरमियान रहा, और हम ने उसका ऐसा जलाल देखा जैसा बाप के इकलौते का जलाल। 15 युहन्ना ने उसके बारे में गवाही दी, और पुकार कर कहा है, "ये वही है, जिसका मैंने ज़िक्र किया कि जो मेरे बाद आता है, वो मुझ से मुक़द्दम ठहरा क्योंकि वो मुझ से पहले था।" 16 क्योंकि उसकी भरपूरी में से हम सब ने पाया, या'नी फ़ज़ल पर फ़ज़ल। 17 इसलिए कि शरी'अत तो मूसा के ज़रिए दी गई, मगर फ़ज़ल और सच्चाई ईसा मसीह के ज़रिए पहुँची। 18 खुदा को किसी ने कभी नहीं देखा, इकलौता बेटा जो बाप की गोद में है उसी ने ज़ाहिर किया।

19 और युहन्ना की गवाही ये है, कि जब यहूदी अगुवो ने येरूशलेम से काहिन और लावी ये पूछने को उसके पास भेजे, “तू कौन है?” 20 तो उसने इक्क़रार किया, और इन्कार न किया बल्कि, इक्क़रार किया, “मैं तो मसीह नहीं हूँ।” 21 उन्होंने उससे पूछा, “फिर तू कौन है? क्या तू एलियाह है?” उसने कहा, “मैं नहीं हूँ।” “क्या तू वो नबी है?” उसने जवाब दिया, कि “नहीं।” 22 पस उन्होंने उससे कहा, “फिर तू है कौन? ताकि हम अपने भेजेने वालों को जवाब दे कि, तू अपने हक्क में क्या कहता है?” 23 मैं “जैसा यसायाह नबी ने कहा, वीराने में एक पुकारने वाले की आवाज़ हूँ, 'तुम खुदा वन्द की राह को सीधा करो।'” 24 ये फ़रीसियों की तरफ़ से भेजे गए थे। 25 उन्होंने उससे ये सवाल किया, “अगर तू न मसीह है, न एलियाह, न वो नबी, तो फिर बपतिस्मा क्यूँ देता है?” 26 युहन्ना ने जवाब में उनसे कहा, “मैं पानी से बपतिस्मा देता हूँ, तुम्हारे बीच एक शख्स खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते। 27 या'नी मेरे बाद का आनेवाला, जिसकी जूती का फ़ीता मैं खोलने के लायक़ नहीं।” 28 ये बातें यरदन के पार बैत'अन्नियाह में वाक़े' हुईं, जहाँ युहन्ना बपतिस्मा देता था।

29 दूसरे दिन उसने ईसा 'को अपनी तरफ़ आते देखकर कहा, “देखो, ये खुदा का बर्रा है जो दुनियाँ का गुनाह उठा ले जाता है।” 30 ये वही है जिसके बारे मैंने कहा था, ‘एक शख्स मेरे बाद आता है, जो मुझ से मुकद्दम ठहरा है, क्योंकि वो मुझ से पहले था।’ 31 और मैं तो उसे पहचानता न था, मगर इसलिए पानी से बपतिस्मा देता हुआ आया कि वो इस्राईल पर ज़ाहिर हो जाए।” 32 और युहन्ना ने ये गवाही दी: “मैंने रूह को कबूतर की तरह आसमान से उतरते देखा है, और वो उस पर ठहर गया।” 33 मैं तो उसे पहचानता न था, मगर जिसने मुझे पानी से बपतिस्मा देने को भेजा उसी ने मुझ से कहा, ‘जिस पर तू रूह को उतरते और ठहरते देखे, वही रूह — उल — कुद्स से बपतिस्मा देनेवाला है।’ 34 चुनाँचे मैंने देखा, और गवाही दी है कि ये खुदा का बेटा है।”

35 दूसरे दिन फिर युहन्ना और उसके शागिर्दों में से दो शख्स खड़े थे, 36 उसने ईसा पर जो जा रहा था निगाह करके कहा, “देखो, ये खुदा का बरा है!” 37 वो दोनों शागिर्द उसको ये कहते सुनकर ईसा के पीछे हो लिए। 38 ईसा ने फिरकर और उन्हें पीछे आते देखकर उनसे कहा, “तुम क्या ढूँडते हो?” उन्होंने उससे कहा, “ऐ रब्बी (या'नी ऐ उस्ताद), तू कहाँ रहता है?” 39 उसने उनसे

कहा, “चलो, देख लोगे।” पस उन्होंने आकर उसके रहने की जगह देखी और उस रोज़ उसके साथ रहे, और ये चार बजे के करीब था। <sup>40</sup> उन दोनों में से जो यूहन्ना की बात सुनकर ईसा के पीछे हो लिए थे, एक शमौन पतरस का भाई अन्दरयास था। <sup>41</sup> उसने पहले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उससे कहा, “हम को खिरस्तुस, या'नी मसीह मिल गया।” <sup>42</sup> वो उसे ईसा के पास लाया ईसा ने उस पर निगाह करके कहा, “तू यूहन्ना का बेटा शमौन है; तू कैफ़ा या'नी पतरस कहलाएगा।”

43 दूसरे दिन ईसा ने गलील में जाना चाहा, और फ़िलिप्पुस से मिलकर कहा, “मेरे पीछे हो ले।” 44 फ़िलिप्पुस, अन्दरयास और पतरस के शहर, बैतसैदा का रहने वाला था। 45 फ़िलिप्पुस से नतनएल से मिलकर उससे कहा, जिसका ज़िक्र मूसा ने तौरैत में और नबियों ने किया है, वो हम को मिल गया; वो यूसुफ़ का बेटा ईसा नासरी है।” 46 नतनएल ने उससे कहा, “क्या नासरत से कोई अच्छी चीज़ निकल सकती है?” फ़िलिप्पुस ने कहा, “चलकर देख ले।” 47 ईसा ने नतनएल को अपनी तरफ़ आते देखकर उसके हक़ में कहा, “देखो, ये फ़िलि हक़ीक़त इस्राईली है! इस में मक़र नहीं।” 48 नतनएल ने उससे कहा, “तू मुझे कहाँ से जानता है?” ईसा ने उसके जवाब में कहा, “इससे पहले के फ़िलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के दरख़्त के नीचे था, मैंने तुझे देखा।” 49 नतनएल ने उसको जवाब दिया, “ऐ रब्बी, तू खुदा का बेटा है! तू बादशाह का बादशाह है!” 50 ईसा ने जवाब में उससे कहा, “मैंने जो तुझ से कहा, 'तुझ को अंजीर के दरख़्त के नीचे देखा, 'क्या। तू इसीलिए ईमान लाया है? तू इनसे भी बड़े — बड़े मोज़िज़े देखेगा।” 51 फिर उससे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि आसमान को खुला और खुदा के फ़रिश्तों को ऊपर जाते और इब्न — ए — आदम पर उतरते देखोगे।”

# 2

□□□□ □□□ □□□□□

1 फिर तीसरे दिन काना — ए — गलील में एक शादी हुई और ईसा की माँ वहाँ थी। 2 ईसा और उसके शागिर्दों की भी उस शादी में दा'वत थी। 3 और जब मय खत्म हो चुकी, तो ईसा की माँ ने उससे कहा, “उनके पास मय नहीं रही।” 4 ईसा ने उससे कहा, “ऐ माँ मुझे तुझ से क्या काम है? अभी मेरा वक़्त नहीं आया है।” 5 उसकी माँ ने खादिमों से कहा, “जो कुछ ये तुम से कहे वो करो।” 6 वहाँ यहूदियों की पाकी के दस्तूर के

\* **2:6** 2:6 छे:मटके मसीह के ज़माने में मटके हुआ करते थे जिसमें 120 से 150 लीटर पानी की गुंजाइश थी

मुवाफिक पत्थर के छे:मटके\* रखे थे, और उनमें दो — दो, तीन — तीन मन की गुंजाइश थी। <sup>7</sup> ईसा ने उनसे कहा, “मटकों में पानी भर दो।” पस उन्होंने उनको पूरा भर दिया। <sup>8</sup> फिर उसने उन से कहा, “अब निकाल कर मीरे मजलिस के पास ले जाओ।” पस वो ले गए। <sup>9</sup> जब मजलिस के सरदार ने वो पानी चखा, जो मय बन गया था और जानता न था कि ये कहाँ से आई है (मगर खादिम जिन्होंने पानी भरा था जानते थे), तो मजलिस के सरदार ने दुल्हा को बुलाकर उससे कहा, <sup>10</sup> “हर शख्स पहले अच्छी मय पेश करता है और नाकिस उस वक़्त जब पीकर छूक गए, मगर तूने अच्छी मय अब तक रख छोड़ी है।” <sup>11</sup> ये पहला मोजिज़ा ईसा ने काना — ए — गलील में दिखाकर, अपना जलाल जाहिर किया और उसके शागिर्द उस पर ईमान लाए। <sup>12</sup> इसके बाद वो और उसकी माँ और भाई और उसके शागिर्द कफ़रनहूम को गए और वहाँ चन्द रोज़ रहे।

<sup>13</sup> यहूदियों की 'ईद — ए — फ़सह नज़दीक थी, और ईसा येरूशलेम को गया। <sup>14</sup> उसने हैकल में बैल और भेड़ और कबूतर बेचने वालों को, और साराफ़ों को बैठे पाया; <sup>15</sup> फिर ईसा ने रस्सियों का कोड़ा बना कर सब को बैत — उल — मुक़द्दस से निकाल दिया, उसने भेड़ों और गाय — बैलों को बाहर निकाल कर हाँक दिया, पैसे बदलने वालों के सिक्के बिखेर दिए और उनकी मेंजें उलट दीं। <sup>16</sup> और कबूतर फ़रोशों से कहा, “इनको यहाँ से ले जाओ! मेरे आसमानी बाप के घर को तिजारत का घर न बनाओ।” <sup>17</sup> उसके शागिर्दों को याद आया कि लिखा है, तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा जाएगी।” <sup>18</sup> पस कुछ यहूदी अगुवों ने जवाब में उनसे कहा, “तू जो इन कामों को करता है, हमें कौन सा निशान दिखाता है?” <sup>19</sup> ईसा ने जवाब में उससे कहा, “इस हैकल को ढा दो, तो मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा।” <sup>20</sup> यहूदी अगुवों ने कहा, छियालीस बरस में ये बना है, और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा?” <sup>21</sup> मगर उसने अपने बदन के मक्बिदस के बारे में कहा था। <sup>22</sup> “पस जब वो मुर्दों में से जी उठा तो उसके शागिर्दों को याद आया कि उसने ये कहा था; और उन्होंने किताब — ए — मुक़द्दस और उस क़ौल का जो ईसा ने कहा था, यक़ीन किया।”

<sup>23</sup> जब वो येरूशलेम में फ़सह के वक़्त 'ईद में था, तो बहुत से लोग उन मोजिज़ों को देखकर जो वो दिखाता था उसके नाम पर ईमान लाए। <sup>24</sup> लेकिन ईसा अपनी निस्वत उस पर ऐतबार न करता था, इसलिए कि वो सबको जानता था। <sup>25</sup> और इसकी ज़रूरत न रखता

था कि कोई इंसान के हक़ में गवाही दे, क्यूँकि वो आप जानता था कि इंसान के दिल में क्या क्या है।

### 3

<sup>1</sup> फ़रीसियों में से एक शख्स निकुदेमुस नाम यहूदियों का एक सरदार था। <sup>2</sup> उसने रात को ईसा के पास आकर उससे कहा, “ऐ रब्बी! हम जानते हैं कि तू खुदा की तरफ़ से उस्ताद होकर आया है, क्यूँकि जो मोजिज़े तू दिखाता है कोई शख्स नहीं दिखा सकता, जब तक खुदा उसके साथ न हो।” <sup>3</sup> ईसा ने जवाब में उससे कहा, “मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि जब तक कोई नए सिरे से पैदा न हो, वो खुदा की बादशाही को देख नहीं सकता।” <sup>4</sup> नीकुदेमुस ने उससे कहा, “आदमी जब बूढ़ा हो गया, तो क्यूँकर पैदा हो सकता है? क्या वो दोबारा अपनी माँ के पेट में दाखिल होकर पैदा हो सकता है?” <sup>5</sup> ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझ से सच कहता हूँ, जब तक कोई आदमी पानी और रूह से पैदा न हो, वो खुदा की बादशाही में दाखिल नहीं हो सकता। <sup>6</sup> जो जिस्म से पैदा हुआ है जिस्म है, और जो रूह से पैदा हुआ है रूह है। <sup>7</sup> ता'अज्जुब न कर कि मैंने तुझ से कहा, 'तुम्हें नए सिरे से पैदा होना ज़रूर है।' <sup>8</sup> हवा जिधर चाहती है चलती है और तू उसकी आवाज़ सुनता है, मगर नहीं कि वो कहाँ से आती और कहाँ को जाती है। जो कोई रूह से पैदा हुआ ऐसा ही है।” <sup>9</sup> नीकुदेमुस ने जवाब में उससे कहा, “ये बातें क्यूँकर हो सकती हैं?” <sup>10</sup> ईसा ने जवाब में उससे कहा, “बनी — इस्राईल का उस्ताद होकर क्या तू इन बातों को नहीं जानता? <sup>11</sup> मैं तुझ से सच कहता हूँ कि जो हम जानते हैं वो कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है उसकी गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही कुबूल नहीं करते। <sup>12</sup> जब मैंने तुम से ज़मीन की बातें कहीं और तुम ने यक़ीन नहीं किया, तो अगर मैं तुम से आसमान की बातें कहूँ तो क्यूँकर यक़ीन करोगे? <sup>13</sup> आसमान पर कोई नहीं चढ़ा, सिवा उसके जो आसमान से उतरा या'नी इब्न — ए — आदम जो आसमान में है। <sup>14</sup> और जिस तरह मूसा ने पीतल के साँप\* को वीराने में ऊँचे पर चढ़ाया, उसी तरह ज़रूर है कि इब्न — ए — आदम भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए; <sup>15</sup> ताकि जो कोई ईमान लाए उसमें हमेशा की ज़िन्दगी पाए।” <sup>16</sup> “क्यूँकि खुदा ने दुनियाँ से ऐसी मुहब्बत रखी कि उसने अपना इकलौता बेटा बख़्श दिया, ताकि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक न हो, बल्कि हमेशा की ज़िन्दगी पाए। <sup>17</sup> क्यूँकि खुदा ने

\* 3:14 3:14 पीतल के साँप मूसा ने लाठी पर पीतल के साँप को लटकाया ताकि जो भी उसे देखे उसे ज़िन्दगी मिल जाए — गिनती 21 बाब की 9 आयत

बेटे को दुनियाँ में इसलिए नहीं भेजा कि दुनियाँ पर सज़ा का हुक्म करे, बल्कि इसलिए कि दुनियाँ उसके वसीले से नजात पाए। <sup>18</sup> जो उस पर ईमान लाता है उस पर सज़ा का हुक्म नहीं होता, जो उस पर ईमान नहीं लाता उस पर सज़ा का हुक्म हो चुका; इसलिए कि वो खुदा के इकलौते बेटे के नाम पर ईमान नहीं लाया। <sup>19</sup> और सज़ा के हुक्म की वजह ये है कि नूर दुनियाँ में आया है, और आदमियों ने तारीकी को नूर से ज्यादा पसन्द किया इसलिए कि उनके काम बुरे थे। <sup>20</sup> क्योंकि जो कोई बदी करता है वो नूर से दुश्मनी रखता है और नूर के पास नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर मलामत की जाए। <sup>21</sup> मगर जो सचाई पर 'अमल करता है वो नूर के पास आता है, ताकि उसके काम ज़ाहिर हों कि वो खुदा में किए गए हैं।”

यूहन्ना 3:18-21

<sup>22</sup> इन बातों के बाद ईसा और शागिर्द यहूदिया के मुल्क में आए, और वो वहाँ उनके साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा। <sup>23</sup> और युहन्ना भी 'एनोन में बपतिस्मा देता था जो यरदन नदी के पास था, क्योंकि वहाँ पानी बहुत था और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे। <sup>24</sup> (क्योंकि यहून्ना उस वक़्त तक कैदखाने में डाला न गया था) <sup>25</sup> पस युहन्ना के शागिर्दों की किसी यहूदी के साथ पाकीज़गी के बारे में बहस हुई। <sup>26</sup> उन्होंने युहन्ना के पास आकर कहा, “ऐ रब्बी! जो शरूयस यरदन के पार तेरे साथ था, जिसकी तूने गवाही दी है; देख, वो बपतिस्मा देता है और सब उसके पास आते हैं।” <sup>27</sup> युहन्ना ने जवाब में कहा, “इंसान कुछ नहीं पा सकता, जब तक उसको आसमान से न दिया जाए। <sup>28</sup> तुम खुद मेरे गवाह हो कि मैंने कहा, ‘मैं मसीह नहीं, मगर उसके आगे भेजा गया हूँ।’ <sup>29</sup> जिसकी दुल्हन है वो दुल्हा है, मगर दुल्हा का दोस्त जो खड़ा हुआ उसकी सुनता है, दुल्हा की आवाज़ से बहुत खुश होता है; पस मेरी ये खुशी पूरी हो गई। <sup>30</sup> ज़रूर है कि वो बढ़े और मैं घटूँ।

<sup>31</sup> “जो ऊपर से आता है वो सबसे ऊपर है। जो ज़मीन से है वो ज़मीन ही से है और ज़मीन ही की कहता है ‘जो आसमान से आता है वो सबसे ऊपर है।’ <sup>32</sup> जो कुछ उस ने खुद देखा और सुना है उसी की गवाही देता है। तो भी कोई उस की गवाही कुबूल नहीं करता। <sup>33</sup> जिसने उसकी गवाही कुबूल की उसने इस बात पर मुहर कर दी, कि खुदा सच्चा है। <sup>34</sup> क्योंकि जिसे खुदा ने भेजा वो खुदा की बातें कहता है, इसलिए कि वो रुह नाप नाप कर

नहीं देता। <sup>35</sup> बाप बेटे से मुहब्बत रखता है और उसने सब चीज़ें उसके हाथ में दे दी है। <sup>36</sup> जो बेटे पर ईमान लाता है हमेशा की ज़िन्दगी उसकी है; लेकिन जो बेटे की नहीं मानता 'ज़िन्दगी' को न देखगा बल्कि उसपर खुदा का ग़ज़ब रहता है।”

## 4

यूहन्ना 4:1-18

<sup>1</sup> फिर जब खुदावन्द को मा'लूम हुआ, कि फ़रीसियों ने सुना है कि ईसा युहन्ना से ज्यादा शागिर्द बनाता है और बपतिस्मा देता है, <sup>2</sup> (अगरचे ईसा आप नहीं बल्कि उसके शागिर्द बपतिस्मा देते थे), <sup>3</sup> तो वो यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया। <sup>4</sup> और उसको सामरिया से होकर जाना ज़रूर था। <sup>5</sup> पस वो सामरिया के एक शहर तक आया जो सूखार कहलाता है, वो उस किते के नज़दीक है जो याकूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दिया था; <sup>6</sup> और याकूब का कुआँ वहीं था। चुनाँचे ईसा सफ़र से थका — माँदा होकर उस कुँए पर यूँही बैठ गया। ये छठे घंटे के करीब था। <sup>7</sup> सामरिया की एक 'औरत पानी भरने आई। ईसा ने उससे कहा, “**मुझे पानी पिला**” <sup>8</sup> क्योंकि उसके शागिर्द शहर में खाना खरीदने को गए थे। <sup>9</sup> उस सामरी 'औरत ने उससे कहा, “तू यहूदी होकर मुझ सामरी 'औरत से पानी क्यों माँगता है?” (क्योंकि यहूदी सामरियों से किसी तरह का बर्ताव नहीं रखते।) <sup>10</sup> ईसा ने जवाब में उससे कहा, “**अगर तू खुदा की बख़्शिश को जानती, और ये भी जानती कि वो कौन है जो तुझ से कहता है, 'मुझे पानी पिला, 'तो तू उससे माँगती और वो तुझे ज़िन्दगी का पानी देता।**” <sup>11</sup> 'औरत ने उससे कहा, “ऐ खुदावन्द! तेरे पास पानी भरने को तो कुछ है नहीं और कुआँ गहरा है, फिर वो ज़िन्दगी का पानी तेरे पास कहाँ से आया? <sup>12</sup> क्या तू हमारे बाप याकूब से बड़ा है जिसने हम को ये कुआँ दिया, और खुद उसने और उसके बेटों ने और उसके जानवरों ने उसमें से पिया?” <sup>13</sup> ईसा ने जवाब में उससे कहा, “**जो कोई इस पानी में से पीता है वो फिर प्यासा होगा, <sup>14</sup> मगर जो कोई उस पानी में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा, वो अबद तक प्यासा न होगा! बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा, वो उसमें एक चश्मा बन जाएगा जो हमेशा की ज़िन्दगी के लिए जारी रहेगा।**” <sup>15</sup> औरत ने उस से कहा, “ऐ खुदावन्द! वो पानी मुझ को दे ताकि मैं न प्यासी हूँ, न पानी भरने को यहाँ तक आऊँ।” <sup>16</sup> ईसा ने उससे कहा, “**जा, अपने शौहर को यहाँ बुला ला।**” <sup>17</sup> औरत ने जवाब में उससे कहा, “मैं बे शौहर हूँ।” ईसा ने उससे कहा, “**तुने खूब कहा, 'मैं बे शौहर हूँ, <sup>18</sup> क्योंकि तू पाँच शौहर कर चुकी**



है, और जिसके पास तू अब है वो तेरा शौहर नहीं; ये तूने सच कहा।” 19 औरत ने उससे कहा, “ऐ खुदावन्द! मुझे मालूम होता है कि तू नबी है। 20 हमारे बाप — दादा ने इस पहाड़ पर इबादत की, और तुम कहते हो कि वो जगह जहाँ पर इबादत करना चाहिए येरूशलेम में है।” 21 ईसा ने उससे कहा, “ऐ बहन, मेरी बात का यक्रीन कर, कि वो वक्त आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे और न येरूशलेम में। 22 तुम जिसे नहीं जानते उसकी इबादत करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसकी इबादत करते हैं; क्योंकि नजात यहूदियों में से है। 23 मगर वो वक्त आता है बल्कि अब ही है, कि सच्चे इबादतघर खुदा बाप की इबादत रूह और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि खुदा बाप अपने लिए ऐसे ही इबादतघर ढूँडता है। 24 खुदा रूह है, और जरूर है कि उसके इबादतघर रूह और सच्चाई से इबादत करें।” 25 औरत ने उससे कहा, “मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रिस्तुस कहलाता है आने वाला है, जब वो आएगा तो हमें सब बातें बता देगा।” 26 ईसा ने उससे कहा, “मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।”

27 इतने में उसके शागिर्द आ गए और ताअ'ज्जुब करने लगे कि वो औरत से बातें कर रहा है, तोभी किसी ने न कहा, “तू क्या चाहता है?” या, “उससे किस लिए बातें करता है।” 28 पस औरत अपना घड़ा छोड़कर शहर में चली गई और लोगों से कहने लगी, 29 “आओ, एक आदमी को देखो, जिसने मेरे सब काम मुझे बता दिए। क्या मुम्किन है कि मसीह यही है?” 30 वो शहर से निकल कर उसके पास आने लगे। 31 इतने में उसके शागिर्द उससे ये दरखास्त करने लगे, “ऐ रब्बी! कुछ खा ले।” 32 लेकिन उसने कहा, “मेरे पास खाने के लिए ऐसा खाना है जिसे तुम नहीं जानते।” 33 पस शागिर्दों ने आपस में कहा, “क्या कोई उसके लिए कुछ खाने को लाया है?” 34 ईसा ने उनसे कहा, “मेरा खाना, ये है, कि अपने भेजनेवाले की मर्जी के मुताबिक 'अमल करूँ और उसका काम पूरा करूँ।’ 35 क्या तुम कहते नहीं, 'फसल के आने में अभी चार महीने बाक़ी हैं’? देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर नज़र करो कि फसल पक गई है। 36 और काटनेवाला मज़दूरी पाता और हमेशा की ज़िन्दगी के लिए फल जमा करता है, ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर खुशी करें। 37 क्योंकि इस पर ये मिसाल ठीक आती है, 'बोनेवाला और काटनेवाला और।’ 38 मैंने तुम्हें वो खेत काटने के लिए भेजा जिस पर तुम ने मेहनत नहीं की, औरों ने मेहनत की और तुम उनकी मेहनत के फल में शरीक हुए।”

39 और उस शहर के बहुत से सामरी उस औरत के कहने से, जिसने गवाही दी, उसने मेरे सब काम मुझे बता दिए, उस पर ईमान लाए। 40 पस जब वो सामरी उसके पास आए, तो उससे दरखास्त करने लगे कि हमारे पास रह। चुनाँचे वो दो रोज़ वहाँ रहा। 41 और उसके कलाम के ज़रिए से और भी बहुत सारे ईमान लाए 42 और उस औरत से कहा “अब हम तेरे कहने ही से ईमान नहीं लाते क्योंकि हम ने खुद सुन लिया और जानते हैं कि ये हक़ीक़त में दुनियाँ का मुन्जी है।” 43 फिर उन दो दिनों के बाद वो वहाँ से होकर गलील को गया। 44 क्योंकि ईसा ने खुद गवाही दी कि नबी अपने वतन में इज़्ज़त नहीं पाता। 45 पस जब वो गलील में आया तो ग़लतियों ने उसे कुबूल किया, इसलिए कि जितने काम उसने येरूशलेम में 'ईद के वक्त किए थे, उन्होंने उनको देखा था क्योंकि वो भी 'ईद में गए थे।

46 पस फिर वो क़ाना — ए — गलील में आया, जहाँ उसने पानी को मय बनाया था, और बादशाह का एक मुलाज़िम था जिसका बेटा क़फ़रनहूम में बीमार था। 47 वो ये सुनकर कि ईसा यहूदिया से गलील में आ गया है, उसके पास गया और उससे दरखास्त करने लगा, कि चल कर मेरे बेटे को शिफ़ा बरख़्श क्योंकि वो मरने को था। 48 ईसा ने उससे कहा, “जब तक तुम निशान और 'अजीब काम न देखो, हरगिज़ ईमान न लाओगे।” 49 बादशाह के मुलाज़िम ने उससे कहा, “ऐ खुदावन्द! मेरे बच्चे के मरने से पहले चल।” 50 ईसा ने उससे कहा, “जा; तेरा बेटा ज़िन्दा है।” उस शख्स ने उस बात का यक्रीन किया जो ईसा ने उससे कही और चला गया। 51 वो रास्ते ही में था कि उसके नौकर उसे मिले और कहने लगे, “तेरा बेटा ज़िन्दा है।” 52 उसने उनसे पूछा, “उसे किस वक्त से आराम होने लगा था?” उन्होंने कहा, “कल एक बजे उसका बुखार उतर गया।” 53 पस बाप जान गया कि वही वक्त था जब ईसा ने उससे कहा, “तेरा बेटा ज़िन्दा है।” और वो खुद और उसका सारा घराना ईमान लाया। 54 ये दूसरा करिश्मा है जो ईसा ने यहूदिया से गलील में आकर दिखाया।

## 5

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 इन बातों के बाद यहूदियों की एक 'ईद हुई और ईसा येरूशलेम को गया। 2 येरूशलेम में भेड़ दरवाज़े के पास एक हौज़ है जो 'इब्रानी में बैत हस्दा कहलाता है, और उसके पाँच बरामदेह हैं। 3 इनमें बहुत से बीमार और अन्धे और लंगड़े और कमज़ोर लोग जो पानी के हिलने के इंतज़ार में पड़े थे। 4 [क्योंकि वक्त पर खुदावन्द

का फ़रिश्ता हौज़ पर उतर कर पानी हिलाया करता था। पानी हिलते ही जो कोई पहले उतरता सो शिफ़ा पाता, उसकी जो कुछ बीमारी क्यूँ न हो।] <sup>5</sup> वहाँ एक शर्र्स था जो अठतीस बरस से बीमारी में मुब्तिला था। <sup>6</sup> उसको 'ईसा ने पड़ा देखा और ये जानकर कि वो बड़ी मुद्दत से इस हालत में है, उससे कहा, “क्या तू तन्दरुस्त होना चाहता है?” <sup>7</sup> उस बीमार ने उसे जवाब दिया, “ऐ खुदावन्द! मेरे पास कोई आदमी नहीं कि जब पानी हिलाया जाए तो मुझे हौज़ में उतार दे, बल्कि मेरे पहुँचते पहुँचते दूसरा मुझ से पहले उतर पड़ता है।” <sup>8</sup> 'ईसा ने उससे कहा, “उठ, और अपनी चारपाई उठाकर चल फिर।” <sup>9</sup> वो शर्र्स फ़ौरन तन्दरुस्त हो गया, और अपनी चारपाई उठाकर चलने फिरने लगा। <sup>10</sup> वो दिन सबत का था। पस यहूदी अगुवे उससे जिसने शिफ़ा पाई थी कहने लगे, “आज सबत का दिन है, तुझे चारपाई उठाना जायज़ नहीं।” <sup>11</sup> उसने उन्हें जवाब दिया, जिसने मुझे तन्दरुस्त किया, उसी ने मुझे फ़रमाया, “अपनी चारपाई उठाकर चल फिर।” <sup>12</sup> उन्होंने उससे पूछा, “वो कौन शर्र्स है जिसने तुझ से कहा, 'चारपाई उठाकर चल फिर'?” <sup>13</sup> लेकिन जो शिफ़ा पा गया था वो न जानता था कि वो कौन है, क्यूँकि भीड़ की वजह से 'ईसा वहाँ से टल गया था। <sup>14</sup> इन बातों के बाद वो ईसा को हैकल में मिला; उसने उससे कहा, “देख, तू तन्दरुस्त हो गया है! फिर गुनाह न करना, ऐसा न हो कि तुझपर इससे भी ज्यादा आफ़त आए।” <sup>15</sup> उस आदमी ने जाकर यहूदियों को ख़बर दी कि जिसने मुझे तन्दरुस्त किया वो ईसा है। <sup>16</sup> इसलिए यहूदी ईसा को सताने लगे, क्यूँकि वो ऐसे काम सबत के दिन करता था। <sup>17</sup> लेकिन ईसा ने उनसे कहा, “मेरा आसमानी बाप अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूँ।” <sup>18</sup> इस वजह से यहूदी और भी ज्यादा उसे क़त्ल करने की कोशिश करने लगे, कि वो न फ़क़त सबत का हुक्म तोड़ता, बल्कि खुदा को ख़ास अपना बाप कह कर अपने आपको खुदा के बराबर बनाता था

<sup>19</sup> पस ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि बेटा आप से कुछ नहीं कर सकता, सिवा उसके जो बाप को करते देखता है; क्यूँकि जिन कामों को वो करता है, उन्हें बेटा भी उसी तरह करता है। <sup>20</sup> इसलिए कि बाप बेटे को 'अज़ीज़ रखता है, और जितने काम खुद करता है उसे दिखाता है; बल्कि इनसे भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम ता'ज्जुब करो। <sup>21</sup> क्यूँकि जिस तरह बाप मुर्दों को उठाता और ज़िन्दा करता है, उसी तरह बेटा भी जिन्हें चाहता है ज़िन्दा करता है। <sup>22</sup> क्यूँकि बाप किसी की 'अदालत भी नहीं करता, बल्कि उसने 'अदालत का

सारा काम बेटे के सुपुर्द किया है; <sup>23</sup> ताकि सब लोग बेटे की 'इज़्जत करें जिस तरह बाप की 'इज़्जत करते हैं। जो बेटे की 'इज़्जत नहीं करता, वो बाप की जिसने उसे भेजा 'इज़्जत नहीं करता। <sup>24</sup> मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो मेरा कलाम सुनता और मेरे भेजने वाले का यक़ीन करता है, हमेशा की ज़िन्दगी उसकी है और उस पर सज़ा का हुक्म नहीं होता बल्कि वो मौत से निकलकर ज़िन्दगी में दाख़िल हो गया है।”

<sup>25</sup> “मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि वो वक़्त आता है बल्कि अभी है, कि मुर्दे खुदा के बेटे की आवाज़ सुनेंगे और जो सुनेंगे वो जिएँगे। <sup>26</sup> क्यूँकि जिस तरह बाप अपने आप में ज़िन्दगी रखता है, उसी तरह उसने बेटे को भी ये बख़्शा कि अपने आप में ज़िन्दगी रखे। <sup>27</sup> बल्कि उसे 'अदालत करने का भी इस्ति़यार बख़्शा, इसलिए कि वो आदमज़ाद है। <sup>28</sup> इससे ता'अज्जुब न करो; क्यूँकि वो वक़्त आता है कि जितने क़ब्रों में हैं उसकी आवाज़ सुनकर निकलेंगे, <sup>29</sup> जिन्होंने नेकी की है ज़िन्दगी की क़यामत, के वास्ते, और जिन्होंने बदी की है सज़ा की क़यामत के वास्ते।”

<sup>30</sup> “मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ 'अदालत करता हूँ और मेरी 'अदालत रास्त है, क्यूँकि मैं अपनी मर्ज़ी नहीं बल्कि अपने भेजने वाले की मर्ज़ी चाहता हूँ। <sup>31</sup> अगर मैं खुद अपनी गवाही दूँ, तो मेरी गवाही सच्ची नहीं। <sup>32</sup> एक और है जो मेरी गवाही देता है, और मैं जानता हूँ कि मेरी गवाही जो वो देता है सच्ची है। <sup>33</sup> तुम ने युहन्ना के पास पयाम भेजा, और उसने सच्चाई की गवाही दी है। <sup>34</sup> लेकिन मैं अपनी निस्वत इंसान की गवाही मंज़ूर नहीं करता, तोभी मैं ये बातें इसलिए कहता हूँ कि तुम नज़ात पाओ। <sup>35</sup> वो जलता और चमकता हुआ चराग़ था, और तुम को कुछ 'असँ तक उसकी रौशनी में खुश रहना मंज़ूर हुआ। <sup>36</sup> लेकिन मेरे पास जो गवाही है वो युहन्ना की गवाही से बड़ी है, क्यूँकि जो काम बाप ने मुझे पूरे करने को दिए, या 'नी यही काम जो मैं करता हूँ, वो मेरे गवाह हैं कि बाप ने मुझे भेजा है। <sup>37</sup> और बाप जिसने मुझे भेजा है, उसी ने मेरी गवाही दी है। तुम ने न कभी उसकी आवाज़ सुनी है और न उसकी सूरत देखी; <sup>38</sup> और उस के कलाम को अपने दिलों में क़ाईम नहीं रखते, क्यूँकि जिसे उसने भेजा है उसका यक़ीन नहीं करते। <sup>39</sup> तुम किताब — ए — मुक़द्दस में ढूँढते हो, क्यूँकि समझते हो कि उसमें हमेशा की ज़िन्दगी तुम्हें मिलती है, और ये वो है जो मेरी गवाही देती है; <sup>40</sup> फिर भी तुम ज़िन्दगी पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते। <sup>41</sup> मैं आदमियों से

'इज्जत नहीं चाहता।<sup>42</sup> लेकिन मैं तुमको जानता हूँ कि तुम में खुदा की मुहब्बत नहीं।<sup>43</sup> मैं अपने आसमानी बाप के नाम से आया हूँ और तुम मुझे कुबूल नहीं करते, अगर कोई और अपने ही नाम से आए तो उसे कुबूल कर लोगे।<sup>44</sup> तुम जो एक दूसरे से 'इज्जत चाहते हो और वो 'इज्जत जो खुदा — ए — वाहिद की तरफ़ से होती है नहीं चाहते, क्यूँकर ईमान ला सकते हो? <sup>45</sup> ये न समझो कि मैं बाप से तुम्हारी शिकायत करूँगा; तुम्हारी शिकायत करनेवाला तो है, या'नी मूसा जिस पर तुम ने उम्मीद लगा रखी है।<sup>46</sup> क्यूँकि अगर तुम मूसा का यकीन करते तो मेरा भी यकीन करते, इसलिए कि उसने मेरे हक़ में लिखा है।<sup>47</sup> लेकिन जब तुम उसके लिखे हुए का यकीन नहीं करते, तो मेरी बात का क्यूँकर यकीन करोगे?"

## 6

????? ?? ?????? ?????? ?????? ?? ???????

<sup>1</sup> इन बातों के बाद 'ईसा गलील की झील या'नी तिबरियास की झील के पार गया।<sup>2</sup> और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्यूँकि जो मोजिजे वो बीमारों पर करता था उनको वो देखते थे।<sup>3</sup> ईसा पहाड़ पर चढ़ गया और अपने शागिर्दों के साथ वहाँ बैठा।<sup>4</sup> और यहूदियों की 'ईद — ए — फ़सह नज़दीक थी।<sup>5</sup> पस जब 'ईसा ने अपनी आँखें उठाकर देखा कि मेरे पास बड़ी भीड़ आ रही है, तो फ़िलिप्पुस से कहा, "हम इनके खाने के लिए कहाँ से रोटियाँ खरीद लें?" <sup>6</sup> मगर उसने उसे आजमाने के लिए ये कहा, क्यूँकि वो आप जानता था कि मैं क्या करूँगा।<sup>7</sup> फ़िलिप्पुस ने उसे जवाब दिया, "दो सौ दिन मज़दूरी की रोटियाँ इनके लिए काफ़ी न होंगी, कि हर एक को थोड़ी सी मिल जाए।"<sup>8</sup> उसके शागिर्दों में से एक ने, या'नी शमौन पतरस के भाई अन्दरयास ने, उससे कहा,<sup>9</sup> "यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं, मगर ये इतने लोगों में क्या हैं?" <sup>10</sup> ईसा ने कहा, "लोगों को बिठाओ।" और उस जगह बहुत घास थी। पस वो मर्द जो तक़रीबन पाँच हज़ार थे बैठ गए।<sup>11</sup> ईसा ने वो रोटियाँ ली और शुक्र करके उन्हें जो बैठे थे बाँट दीं, और इसी तरह मछलियों में से जिस क़दर चाहते थे बाँट दिया।<sup>12</sup> जब वो सेर हो चुके तो उसने अपने शागिर्दों से कहा, "बचे हुए बे इस्तेमाल खाने को जमा करो, ताकि कुछ ज़ाया न हो।"<sup>13</sup> चुनाँचे उन्होंने जमा किया, और जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से जो खानेवालों से बच रहे थे बारह टोक़रियाँ भरीं।<sup>14</sup> पस जो मोजिज़ा उसने दिखाया, "वो लोग उसे देखकर कहने लगे, जो नबी दुनियाँ में आने वाला था

हक़ीक़त में यही है।"<sup>15</sup> पस ईसा ये मा'लूम करके कि वो आकर मुझे बादशाह बनाने के लिए पकड़ना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेला चला गया।

<sup>16</sup> फिर जब शाम हुई तो उसके शागिर्द झील के किनारे गए,<sup>17</sup> और नाव में बैठकर झील के पार कफ़रनहूम को चले जाते थे। उस वक़्त अन्धेरा हो गया था, और 'ईसा अभी तक उनके पास न आया था।<sup>18</sup> और आँधी की वजह से झील में मौजें उठने लगीं।<sup>19</sup> पस जब वो खेतें — खेतें तीन — चार मील के क़रीब निकल गए, तो उन्होंने 'ईसा को झील पर चलते और नाव के नज़दीक आते देखा और डर गए।<sup>20</sup> मगर उसने उनसे कहा, "मैं हूँ, डरो मत।"<sup>21</sup> पस वो उसे नाव में चढ़ा लेने को राज़ी हुए, और फ़ौरन वो नाव उस जगह जा पहुँची जहाँ वो जाते थे।

<sup>22</sup> दूसरे दिन उस भीड़ ने जो झील के पार खड़ी थी, ये देखा कि यहाँ एक के सिवा और कोई छोटी नाव न थी; और 'ईसा अपने शागिर्दों के साथ नाव पर सवार न हुआ था, बल्कि सिर्फ़ उसके शागिर्द चले गए थे।<sup>23</sup> (लेकिन कुछ छोटी नावें तिबरियास से उस जगह के नज़दीक आईं, जहाँ उन्होंने खुदावन्द के शुक्र करने के बाद रोटी खाई थी।)<sup>24</sup> पस जब भीड़ ने देखा कि यहाँ न 'ईसा है न उसके शागिर्द, तो वो खुद छोटी नावों में बैठकर 'ईसा की तलाश में कफ़रनहूम को आए।

<sup>25</sup> और झील के पार उससे मिलकर कहा, "ऐ रब्बी! तू यहाँ कब आया?" <sup>26</sup> ईसा ने उनके जवाब में कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढते कि मोजिजे देखे, बल्कि इसलिए कि तुम रोटियाँ खाकर सेर हुए।<sup>27</sup> फ़ानी खुराक के लिए मेहनत न करो, बल्कि उस खुराक के लिए जो हमेशा की ज़िन्दगी तक बाक़ी रहती है जिसे इब्न — ए — आदम तुम्हें देगा; क्यूँकि बाप या'नी खुदा ने उसी पर मुहर की है।"<sup>28</sup> पस उन्होंने उससे कहा, "हम क्या करें ताकि खुदा के काम अन्जाम दें?" <sup>29</sup> ईसा ने जवाब में उनसे कहा, "खुदा का काम ये है कि जिसे उसने भेजा है उस पर ईमान लाओ।"<sup>30</sup> पस उन्होंने उससे कहा, "फिर तू कौन सा निशान दिखाता है, ताकि हम देखकर तेरा यकीन करें? तू कौन सा काम करता है?" <sup>31</sup> हमारे बाप — दादा ने वीराने में मन्ना खाया, चुनाँचे लिखा है, 'उसने उन्हें खाने के लिए आसमान से रोटी दी।"<sup>32</sup> ईसा ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि मूसा ने तो वो रोटी आसमान से तुम्हें न दी, लेकिन मेरा बाप तुम्हें आसमान से हक़ीक़ी रोटी देता है।<sup>33</sup> क्यूँकि खुदा की रोटी वो है जो आसमान से उतरकर दुनियाँ को ज़िन्दगी बख़्शती है।"

34 उन्होंने उससे कहा, ऐ खुदावन्द! ये रोटी हम को हमेशा दिया कर।” 35 ईसा ने उनसे कहा, “जिन्दगी की रोटी मैं हूँ; जो मेरे पास आए वो हरगिज़ भूखा न होगा, और जो मुझ पर ईमान लाए वो कभी प्यासा ना होगा। 36 लेकिन मैंने तुम से कहा कि तुम ने मुझे देख लिया है फिर भी ईमान नहीं लाते। 37 जो कुछ बाप मुझे देता है मेरे पास आ जाएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं हरगिज़ निकाल न दूँगा। 38 क्योंकि मैं आसमान से इसलिए नहीं उतरा हूँ कि अपनी मर्जी के मुवाफ़िक़ 'अमल करूँ, बल्कि इसलिए कि अपने भेजनेवाले की मर्जी के मुवाफ़िक़ 'अमल करूँ। 39 और मेरे भेजनेवाले की मर्जी ये है, कि जो कुछ उसने मुझे दिया है मैं उसमें से कुछ खो न दूँ, बल्कि उसे आखिरी दिन फिर जिन्दा करूँ। 40 क्योंकि मेरे बाप की मर्जी ये है, कि जो कोई बेटे को देखे और उस पर ईमान लाए, और हमेशा की जिन्दगी पाए और मैं उसे आखिरी दिन फिर जिन्दा करूँ।” 41 पस यहूदी उस पर बुदबुदाने लगे, इसलिए कि उसने कहा, था, “जो रोटी आसमान से उतरी वो मैं हूँ।” 42 और उन्होंने कहा, क्या ये यूसूफ़ का बेटा 'ईसा' नहीं, जिसके बाप और माँ को हम जानते हैं? अब ये क्यूँकर कहता है कि “मैं आसमान से उतरा हूँ?” 43 ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “आपस में न बुदबदाओ। 44 कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि बाप जिसने मुझे भेजा है उसे खींच न ले, और मैं उसे आखिरी दिन फिर जिन्दा करूँगा। 45 नबियों के सहीफ़ों में ये लिखा है: 'वो सब खुदा से ता'लीम पाए हुए लोग होंगे।' जिस किसी ने बाप से सुना और सीखा है वो मेरे पास आता है — 46 ये नहीं कि किसी ने बाप को देखा है, मगर जो खुदा की तरफ़ से है उसी ने बाप को देखा है। 47 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो ईमान लाता है हमेशा की जिन्दगी उसकी है। 48 जिन्दगी की रोटी मैं हूँ। 49 तुम्हारे बाप — दादा ने वीराने मैं मन्ना खाया और मर गए। 50 ये वो रोटी है कि जो आसमान से उतरती है, ताकि आदमी उसमें से खाए और न मरे। 51 मैं हूँ वो जिन्दगी की रोटी जो आसमान से उतरी। अगर कोई इस रोटी में से खाए तो हमेशा तक जिन्दा रहेगा, बल्कि जो रोटी मैं दुनियाँ की जिन्दगी के लिए दूँगा वो मेरा गोश्त है।” 52 पस यहूदी ये कहकर आपस में झगड़ने लगे, “ये शख्स अपना गोश्त हमें क्यूँकर खाने को दे सकता है?” 53 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक तुम इब्न — ए — आदम का गोश्त न खाओ और उसका का खून न पियो, तुम में जिन्दगी नहीं। 54 जो मेरा गोश्त खाता और मेरा

खून पीता है, हमेशा की जिन्दगी उसकी है; और मैं उसे आखिरी दिन फिर जिन्दा करूँगा। 55 क्यूँकि मेरा गोश्त हकीकत में खाने की चीज़ और मेरा खून हकीकत में पीने की चीज़ है। 56 जो मेरा गोश्त खाता और मेरा खून पीता है, वो मुझ में काईम रहता है और मैं उसमें। 57 जिस तरह जिन्दा बाप ने मुझे भेजा, और मैं बाप के ज़रिए से जिन्दा हूँ, इसी तरह वो भी जो मुझे खाएगा मेरे ज़रिए से जिन्दा रहेगा। 58 जो रोटी आसमान से उतरी यही है, बाप — दादा की तरह नहीं कि खाया और मर गए; जो ये रोटी खाएगा वो हमेशा तक जिन्दा रहेगा।” 59 ये बातें उसने कफ़रनहूम के एक 'इबादतखाने में ता'लीम देते वक़्त कहीं।

60 इसलिए उसके शागिर्दों में से बहुतों ने सुनकर कहा, “ये कलाम नागवार है, इसे कौन सुन सकता है?” 61 ईसा ने अपने जी में जानकर कि मेरे शागिर्द आपस में इस बात पर बुदबुदाते हैं, उनसे कहा, “क्या तुम इस बात से ठोकर खाते हो? 62 अगर तुम इब्न — ए — आदम को ऊपर जाते देखोगे, जहाँ वो पहले था तो क्या होगा? 63 जिन्दा करने वाली तो रूह है, जिस्म से कुछ फ़ाइदा नहीं; जो बातें मैंने तुम से कहीं हैं, वो रूह हैं और जिन्दगी भी हैं। 64 मगर तुम में से कुछ ऐसे हैं जो ईमान नहीं लाए।” क्यूँकि ईसा शुरू से जानता था कि जो ईमान नहीं लाते वो कौन हैं, और कौन मुझे पकड़वाएगा। 65 फिर उसने कहा, “इसी लिए मैंने तुम से कहा था कि मेरे पास कोई नहीं आ सकता जब तक बाप की तरफ़ से उसे ये तौफ़ीक़ न दी जाए।”

66 इस पर उसके शागिर्दों में से बहुत से लोग उल्टे फिर गए और इसके बाद उसके साथ न रहे। 67 पस ईसा ने उन बारह से कहा, “क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?” 68 शमौन पतरस ने उसे जवाब दिया, “ऐ खुदावन्द! हम किसके पास जाएँ? हमेशा की जिन्दगी की बातें तो तेरे ही पास हैं? 69 और हम ईमान लाए और जान गए हैं कि, खुदा का कुदूस तू ही है।” 70 ईसा ने उन्हें जवाब दिया, “क्या मैंने तुम बारह को नहीं चुन लिया? और तुम में से एक शख्स शैतान है।” 71 उसने ये शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदाह की निस्वत कहा, क्यूँकि यही जो उन बारह में से था उसे पकड़वाने को था।

## 7

22222 22 22222 2222

1 इन बातों के बाद 'ईसा गलील में फिरता रहा क्यूँकि यहूदिया में फिरना न चाहता था, इसलिए कि यहूदी अगुवे उसके क़त्ल की कोशिश में थे 2 और यहूदियों की



'ईद — ए — खियाम नज़दीक थी।<sup>3</sup> पस उसके भाइयों ने उससे कहा, “यहाँ से रवाना होकर यहूदिया को चला जा, ताकि जो काम तू करता है उन्हें तेरे शागिर्द भी देखें।<sup>4</sup> क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मशहूर होना चाहे और छिपकर काम करे। अगर तू ये काम करता है, तो अपने आपको दुनियाँ पर ज़ाहिर कर।”<sup>5</sup> क्योंकि उसके भाई भी उस पर ईमान न लाए थे।<sup>6</sup> पस ईसा ने उनसे कहा, “मेरा तो अभी वक्त नहीं आया, मगर तुम्हारे लिए सब वक्त है।<sup>7</sup> दुनियाँ तुम से 'दुश्मनी नहीं रख सकती लेकिन मुझ से रखती है, क्योंकि मैं उस पर गवाही देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं।<sup>8</sup> तुम 'ईद में जाओ; मैं अभी इस 'ईद में नहीं जाता, क्योंकि अभी तक मेरा वक्त पूरा नहीं हुआ।”<sup>9</sup> ये बातें उनसे कहकर वो गलील ही में रहा।

<sup>10</sup> लेकिन जब उसके भाई 'ईद में चले गए उस वक्त वो भी गया, खुले तौर पर नहीं बल्कि पोशीदा।<sup>11</sup> पस यहूदी उसे 'ईद में ये कहकर ढूँढ़ने लगे, “वो कहाँ है?”<sup>12</sup> और लोगों में उसके बारे में चुपके — चुपके बहुत सी गुफ्तगू हुई; कुछ कहते थे, वो नेक है। “और कुछ कहते थे, नहीं बल्कि वो लोगों को गुमराह करता है।”<sup>13</sup> तो भी यहूदियों के डर से कोई शख्स उसके बारे में साफ़ साफ़ न कहता था।

<sup>14</sup> जब 'ईद के आधे दिन गुज़र गए, तो 'ईसा हैकल में जाकर ता'लीम देने लगा।<sup>15</sup> पस यहूदियों ने ता'ज्जुब करके कहा, “इसको बग़ैर पढ़े क्यूँकर 'इल्म आ गया?”<sup>16</sup> ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “मेरी ता'लीम मेरी नहीं, बल्कि मेरे भेजने वाले की है।<sup>17</sup> अगर कोई उसकी मज़ी पर चलना चाहे, तो इस ता'लीम की वजह से जान जाएगा कि खुदा की तरफ़ से है या मैं अपनी तरफ़ से कहता हूँ।<sup>18</sup> जो अपनी तरफ़ से कुछ कहता है, वो अपनी 'इज्जत चाहता है; लेकिन जो अपने भेजनेवाले की 'इज्जत चाहता है, वो सच्चा है और उसमें नारास्ती नहीं।<sup>19</sup> क्या मूसा ने तुम्हें शरी'अत नहीं दी? तो भी तुम में शरी'अत पर कोई 'अमल नहीं करता। तुम क्यूँ मेरे क़त्ल की कोशिश में हो?”<sup>20</sup> लोगों ने जवाब दिया, “तुझ में तो बदरूह है! कौन तेरे क़त्ल की कोशिश में है?”<sup>21</sup> ईसा ने जवाब में उससे कहा, “मैंने एक काम किया, और तुम सब ता'ज्जुब करते हो।<sup>22</sup> इस बारे में मूसा ने तुम्हें खतने का हुक्म दिया है (हालाँकि वो मूसा की तरफ़ से नहीं, बल्कि बाप — दादा से चला आया है), और तुम सबत के दिन आदमी का खतना करते हो।<sup>23</sup> जब सबत को आदमी का खतना किया जाता है ताकि मूसा की शरी'अत का हुक्म न टूटे; तो क्या मुझ से इसलिए नाराज़ हो कि मैंने सबत के दिन एक आदमी को बिल्कुल

तन्दरुस्त कर दिया? <sup>24</sup> ज़ाहिर के मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करो, बल्कि इन्साफ़ से फ़ैसला करो।”

<sup>25</sup> तब कुछ येरूशलेमी कहने लगे, “क्या ये वही नहीं जिसके क़त्ल की कोशिश हो रही है? <sup>26</sup> लेकिन देखो, ये साफ़ — साफ़ कहता है और वो इससे कुछ नहीं कहते। क्या हो सकता है कि सरदारों से सच जान लिया कि मसीह यही है? <sup>27</sup> इसको तो हम जानते हैं कि कहाँ का है, मगर मसीह जब आएगा तो कोई न जानेगा कि वो कहाँ का है।”<sup>28</sup> पस ईसा ने हैकल में ता'लीम देते वक्त पुकार कर कहा, “तुम मुझे भी जानते हो, और ये भी जानते हो कि मैं कहाँ का हूँ; और मैं आप से नहीं आया, मगर जिसने मुझे भेजा है वो सच्चा है, उसको तुम नहीं जानते।<sup>29</sup> मैं उसे जानता हूँ, इसलिए कि मैं उसकी तरफ़ से हूँ और उसी ने मुझे भेजा है।”<sup>30</sup> पस वो उसे पकड़ने की कोशिश करने लगे, लेकिन इसलिए कि उसका वक्त अभी न आया था, किसी ने उस पर हाथ न डाला।<sup>31</sup> मगर भीड़ में से बहुत सारे उस पर ईमान लाए, और कहने लगे, “मसीह जब आएगा, तो क्या इनसे ज़्यादा मोज़िज़े दिखाएगा?” जो इसने दिखाए।

<sup>32</sup> फ़रीसियों ने लोगों को सुना कि उसके बारे में चुपके — चुपके ये बातें करते हैं, पस सरदार काहिनों और फ़रीसियों ने उसे पकड़ने को प्यादे भेजे।<sup>33</sup> ईसा ने कहा, “मैं और थोड़े दिनों तक तुम्हारे पास हूँ, फिर अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊँगा।<sup>34</sup> तुम मुझे ढूँढ़ोगे मगर न पाओगे, और जहाँ मैं हूँ तुम नहीं आ सकते।”<sup>35</sup> हमारे यहूदियों ने आपस में कहा, ये कहाँ जाएगा कि हम इसे न पाएँगे? क्या उनके पास जाएगा कि हम इसे न पाएँगे? क्या उनके पास जाएगा जो यूनानियों में अक्सर रहते हैं, और यूनानियों को ता'लीम देगा? <sup>36</sup> ये क्या बात है जो उसने कही, “तुम मुझे तलाश करोगे मगर न पाओगे, 'और, 'जहाँ मैं हूँ तुम नहीं आ सकते?”

<sup>37</sup> फिर ईद के आखिरी दिन जो खास दिन है, ईसा खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, “अगर कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पिए।<sup>38</sup> जो मुझ पर ईमान लाएगा उसके अन्दर से, जैसा कि किताब — ए — मुक़द्दस में आया है, ज़िन्दगी के पानी की नदियाँ जारी होंगी।”<sup>39</sup> उसने ये बात उस रूह के बारे में कही, जिसे वो पाने को थे जो उस पर ईमान लाए; क्यूँकि रूह अब तक नाज़िल न हुई थी, इसलिए कि ईसा अभी अपने जलाल को न पहुँचा था।<sup>40</sup> पस भीड़ में से कुछ ने ये बातें सुनकर कहा, “बेशक यही वो नबी है।”<sup>41</sup> औरों ने कहा, ये मसीह है। “और कुछ ने कहा, क्यूँ? क्या मसीह गलील से आएगा? <sup>42</sup> क्या किताब — ए — मुक़द्दस में से नहीं आया, कि

मसीह दाऊद की नस्ल और बैतलहम के गाँव से आएगा, जहाँ का दाऊद था?” 43 पस लोगों में उसके बारे में इस्तिलाफ़ हुआ। 44 और उनमें से कुछ उसको पकड़ना चाहते थे, मगर किसी ने उस पर हाथ न डाला। 45 पस प्यादे सरदार काहिनों और फ़रीसियों के पास आए; और उन्होंने उनसे कहा, “तुम उसे क्यों न लाए?”

46 प्यादों ने जवाब दिया कि, “इंसान ने कभी ऐसा कलाम नहीं किया।” 47 फ़रीसियों ने उन्हें जवाब दिया, “क्या तुम भी गुमराह हो गए? 48 भला इस्तियार वालों या फ़रीसियों में से भी कोई उस पर ईमान लाया? 49 मगर ये 'आम लोग जो शरी'अत से वाकिफ़ नहीं ला'नती हैं।” 50 नीकुदेमुस ने, जो पहले उसके पास आया था, उनसे कहा, 51 “क्या हमारी शरी'अत किसी शख्स को मुजरिम ठहराती है, जब तक पहले उसकी सुनकर जान न ले कि वो क्या करता है?” 52 उन्होंने उसके जवाब में कहा, “क्या तू भी गलील का है? तलाश कर और देख, कि गलील में से कोई नबी नाज़िल नहीं होने का।” 53 [फिर उनमें से हर एक अपने घर चला गया।

## 8

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

1 तब ईसा ज़ैतून के पहाड़ पर गया। 2 दूसरे दिन सुबह सवेरे ही वो फिर हैकल में आया, और सब लोग उसके पास आए और वो बैठकर उन्हें ता'लीम देने लगा। 3 और फ़क्रीह और फ़रीसी एक 'औरत को लाए जो ज़िना में पकड़ी गई थी, और उसे बीच में खड़ा करके ईसा से कहा, 4 “ऐ उस्ताद! ये 'औरत ज़िना के 'ऐन वक़्त पकड़ी गई है। 5 तौरत में मूसा ने हम को हुक्म दिया है, कि ऐसी 'औरतों पर पथराव करें। पस तू इस 'औरत के बारे में क्या कहता है?” 6 उन्होंने उसे आजमाने के लिए ये कहा, ताकि उस पर इल्जाम लगाने की कोई वजह निकालें। मगर ईसा झुक कर उंगली से ज़मीन पर लिखने लगा। 7 जब वो उससे सवाल करते ही रहे, तो उसने सीधे होकर उनसे कहा, “जो तुम में बेगुनाह हो, वही पहले उसको पत्थर मारे।” 8 और फिर झुक कर ज़मीन पर उंगली से लिखने लगा। 9 वो ये सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक एक — एक करके निकल गए, और ईसा अकेला रह गया और 'औरत वहीं बीच में रह गई। 10 ईसा ने सीधे होकर उससे कहा, “ऐ 'औरत, ये लोग कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर सज़ा का हुक्म नहीं लगाया?” 11 उसने कहा, “ऐ खुदावन्द! किसी ने नहीं।” ईसा ने कहा, “मैं भी तुझ पर सज़ा का हुक्म नहीं लगाता; जा, फिर गुनाह न करना।”

12 ईसा ने फिर उनसे मुखातिब होकर कहा, “दुनियाँ का नूर मैं हूँ; जो मेरी पैरवी करेगा वो अन्धेरे में न चलेगा, बल्कि ज़िन्दगी का नूर पाएगा।” 13 फ़रीसियों ने उससे कहा, “तू अपनी गवाही आप देता है, तेरी गवाही सच्ची नहीं।” 14 ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “अगरचे मैं अपनी गवाही आप देता हूँ, तो भी मेरी गवाही सच्ची है; क्योंकि मुझे मा'लूम है कि मैं कहाँ से आता हूँ या कहाँ को जाता हूँ। 15 तुम जिस्म के मुताबिक़ फ़ैसला करते हो, मैं किसी का फ़ैसला नहीं करता। 16 और अगर मैं फ़ैसला करूँ भी तो मेरा फ़ैसला सच है; क्योंकि मैं अकेला नहीं, बल्कि मैं हूँ और मेरा बाप है जिसने मुझे भेजा है। 17 और तुम्हारी तौरत में भी लिखा है, कि दो आदमियों की गवाही मिलकर सच्ची होती है। 18 एक मैं खुद अपनी गवाही देता हूँ, और एक बाप जिसने मुझे भेजा मेरी गवाही देता है।” 19 उन्होंने उससे कहा, “तेरा बाप कहाँ है?” ईसा ने जवाब दिया, “न तुम मुझे जानते हो न मेरे बाप को, अगर मुझे जानते तो मेरे बाप को भी जानते।” 20 उसने हैकल में ता'लीम देते वक़्त ये बातें बैत — उल — माल में कहीं; और किसी ने इसको न पकड़ा, क्योंकि अभी तक उसका वक़्त न आया था।

21 उसने फिर उनसे कहा, “मैं जाता हूँ, और तुम मुझे ढूँडोगे और अपने गुनाह में मरोगे।” 22 पस यहूदियों ने कहा, क्या वो अपने आपको मार डालेगा, जो कहता है, “जहाँ मैं जाता हूँ, तुम नहीं आ सकते?” 23 उसने उनसे कहा, “तुम नीचे के हो मैं ऊपर का हूँ, तुम दुनियाँ के हो मैं दुनियाँ का नहीं हूँ। 24 इसलिए मैंने तुम से ये कहा, कि अपने गुनाहों में मरोगे; क्योंकि अगर तुम ईमान न लाओगे कि मैं वही हूँ, तो अपने गुनाहों में मरोगे।” 25 उन्होंने उस से कहा, तू कौन है? ईसा ने उनसे कहा, “वही हूँ जो शुरू से तुम से कहता आया हूँ। 26 मुझे तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कहना है और फ़ैसला करना है; लेकिन जिसने मुझे भेजा वो सच्चा है, और जो मैंने उससे सुना वही दुनियाँ से कहता हूँ।” 27 वो न समझे कि हम से बाप के बारे में कहता है। 28 पस ईसा ने कहा, “जब तुम इब्न — ए — आदम को ऊँचे पर चढ़ाओगे तो जानोगे कि मैं वही हूँ, और अपनी तरफ़ से कुछ नहीं करता, बल्कि जिस तरह बाप ने मुझे सिखाया उसी तरह ये बातें कहता हूँ। 29 और जिसने मुझे भेजा वो मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं हमेशा वही काम करता हूँ जो उसे पसन्द आते हैं।” 30 जब ईसा ये बातें कह रहा था तो बहुत से लोग उस पर ईमान लाए।

31 पस ईसा ने उन यहूदियों से कहा, जिन्होंने उसका यक्रीन किया था, “अगर तुम कलाम पर काईम रहोगे, तो हक्रीकत में मेरे शागिर्द ठहरोगे। 32 और सच्चाई को जानोगे और सच्चाई तुम्हें आज़ाद करेगी।” 33 उन्होंने उसे जवाब दिया, “हम तो अब्रहाम की नस्ल से हैं, और कभी किसी की गुलामी में नहीं रहे। तू क्यूँकर कहता है कि तुम आज़ाद किए जाओगे?” 34 ईसा ने उन्हें जवाब दिया, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई गुनाह करता है गुनाह का गुलाम है। 35 और गुलाम हमेशा तक घर में नहीं रहता, बेटा हमेशा रहता है। 36 पस अगर बेटा तुम्हें आज़ाद करेगा, तो तुम वाकई आज़ाद होगे। 37 मैं जानता हूँ तुम अब्रहाम की नस्ल से हो, तभी मेरे क़त्ल की कोशिश में हो क्यूँकि मेरा कलाम तुम्हारे दिल में जगह नहीं पाता। 38 मैंने जो अपने बाप के यहाँ देखा है वो कहता हूँ, और तुम ने जो अपने बाप से सुना वो करते हो।” 39 उन्होंने जवाब में उससे कहा, हमारा बाप तो अब्रहाम है। ईसा ने उनसे कहा, “अगर तुम अब्रहाम के फ़र्ज़न्द होते तो अब्रहाम के से काम करते। 40 लेकिन अब तुम मुझ जैसे शख्स को क़त्ल की कोशिश में हो, जिसने तुम्हें वही हक़ बात बताई जो खुदा से सुनी; अब्रहाम ने तो ये नहीं किया था। 41 तुम अपने बाप के से काम करते हो।” उन्होंने उससे कहा, “हम हराम से पैदा नहीं हुए। हमारा एक बाप है या'नी खुदा।” 42 ईसा ने उनसे कहा, “अगर खुदा तुम्हारा होता, तो तुम मुझ से मुहब्बत रखते; इसलिए कि मैं खुदा में से निकला और आया हूँ, क्यूँकि मैं आप से नहीं आया बल्कि उसी ने मुझे भेजा। 43 तुम मेरी बातें क्यूँ नहीं समझते? इसलिए कि मेरा कलाम सुन नहीं सकते। 44 तुम अपने बाप इब्लीस से हो और अपने बाप की ख्वाहिशों को पूरा करना चाहते हो। वो शुरू ही से खूनी है और सच्चाई पर क़ाइम नहीं रहा, क्यूँकि उस में सच्चाई नहीं है। जब वो झूठ बोलता है तो अपनी ही सी कहता है, क्यूँकि वो झूठा है बल्कि झूठ का बाप है। 45 लेकिन मैं जो सच बोलता हूँ, इसी लिए तुम मेरा यक्रीन नहीं करते। 46 तुम में से कौन मुझ पर गुनाह साबित करता है? अगर मैं सच बोलता हूँ, तो मेरा यक्रीन क्यूँ नहीं करते? 47 जो खुदा से होता है वो खुदा की बातें सुनता है; तुम इसलिए नहीं सुनते कि खुदा से नहीं हो।”

48 यहूदियों ने जवाब में उससे कहा, “क्या हम सच नहीं कहते, कि तू सामरी है और तुझ में बदरूह है।” 49 ईसा ने जवाब दिया, “मुझ में बदरूह नहीं; मगर मैं अपने बाप की इज़्जत करता हूँ, और तुम मेरी बे'इज़्जती

करते हो। 50 लेकिन मैं अपनी तारीफ़ नहीं चाहता; हाँ, एक है जो उसे चाहता और फ़ैसला करता है। 51 मैं तुम से सच कहता हूँ कि अगर कोई इंसान मेरे कलाम पर 'अमल करेगा, तो हमेशा तक कभी मौत को न देखेगा।” 52 यहूदियों ने उससे कहा, “अब हम ने जान लिया कि तुझ में बदरूह है! अब्रहाम मर गया और नबी मर गए, मगर तू कहता है, 'अगर कोई मेरे कलाम पर 'अमल करेगा, तो हमेशा तक कभी मौत का मज़ा न चखेगा। 53 हमारे बुज़ुर्ग अब्रहाम जो मर गए, क्या तू उससे बड़ा है? और नबी भी मर गए। तू अपने आपको क्या ठहराता है?” 54 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं आप अपनी बड़ाई करूँ, तो मेरी बड़ाई कुछ नहीं; लेकिन मेरी बड़ाई मेरा बाप करता है, जिसे तुम कहते हो कि हमारा खुदा है। 55 तुम ने उसे नहीं जाना, लेकिन मैं उसे जानता हूँ; और अगर कहूँ कि उसे नहीं जानता, तो तुम्हारी तरह झूठा बनूँगा। मगर मैं उसे जानता और उसके कलाम पर 'अमल करता हूँ। 56 तुम्हारा बाप अब्रहाम मेरा दिन देखने की उम्मीद पर बहुत खुश था, चुनाँचे उसने देखा और खुश हुआ।” 57 यहूदियों ने उससे कहा, “तेरी उम्र तो अभी पचास बरस की नहीं, फिर क्या तूने अब्रहाम को देखा है?” 58 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि पहले उससे कि अब्रहाम पैदा हुआ मैं हूँ।” 59 पस उन्होंने उसे मारने को पत्थर उठाए, मगर ईसा छिपकर हैकल से निकल गया।

## 9

22222 22 22 22222 22 222222 22 2222 22222

1 चलते चलते ईसा ने एक आदमी को देखा जो पैदाइशी अंधा था। 2 उस के शागिर्दों ने उस से पूछा, “उस्ताद, यह आदमी अंधा क्यूँ पैदा हुआ? क्या इस का कोई गुनाह है या इस के वालिदैन का?” 3 ईसा ने जवाब दिया, “न इस का कोई गुनाह है और न इस के वालिदैन का। यह इस लिए हुआ कि इस की ज़िन्दगी में खुदा का काम ज़ाहिर हो जाए। 4 अभी दिन है। ज़रूरी है कि हम जितनी देर तक दिन है उस का काम करते रहें जिस ने मुझे भेजा है। क्यूँकि रात आने वाली है, उस वक़्त कोई काम नहीं कर सकेगा। 5 लेकिन जितनी देर तक मैं दुनियाँ में हूँ उतनी देर तक मैं दुनियाँ का नूर हूँ।” 6 यह कह कर उस ने ज़मीन पर थूक कर मिट्टी सानी और उस की आँखों पर लगा दी। 7 उस ने उस से कहा, “जा, शिलोख के हौज़ में नहा ले।” (शिलोख का मतलब 'भेजा हुआ' है)। अंधे ने जा कर नहा लिया। जब वापस आया तो वह देख सकता था। 8 उस के साथी और वह

जिन्होंने ने पहले उसे भीख माँगते देखा था पूछने लगे, “क्या यह वही नहीं जो बैठा भीख माँगा करता था?”<sup>9</sup> बाज़ ने कहा, “हाँ, वही है।” औरों ने इन्कार किया, “नहीं, यह सिर्फ़ उस का हमशक्ल है।” लेकिन आदमी ने खुद इस्रार किया, “मैं वही हूँ।”<sup>10</sup> उन्होंने ने उस से सवाल किया, “तेरी आँखें किस तरह सही हुईं?”<sup>11</sup> उस ने जवाब दिया, “वह आदमी जो ईसा कहलाता है उस ने मिट्टी सान कर मेरी आँखों पर लगा दी। फिर उस ने मुझे कहा, ‘शिलोख के हौज़ पर जा और नहा ले।’ मैं वहाँ गया और नहाते ही मेरी आँखें सही हो गई।”<sup>12</sup> उन्होंने ने पूछा, वह कहाँ है? उसने कहा, मैं नहीं जानता”

<sup>13</sup> तब वह सही हुए अंधे को फ़रीसियों के पास ले गए।<sup>14</sup> जिस दिन ईसा ने मिट्टी सान कर उस की आँखों को सही किया था वह सबत का दिन था।<sup>15</sup> इस लिए फ़रीसियों ने भी उस से पूछ — ताछ की कि उसे किस तरह आँख की रौशनी मिल गई। आदमी ने जवाब दिया, “उस ने मेरी आँखों पर मिट्टी लगा दी, फिर मैं ने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।”<sup>16</sup> फ़रीसियों में से कुछ ने कहा, “यह शख्स खुदा की तरफ़ से नहीं है, क्योंकि सबत के दिन काम करता है।”<sup>17</sup> फिर वह दुबारा उस आदमी से मुखातिब हुए जो पहले अंधा था, “तू खुद उस के बारे में क्या कहता है? उस ने तो तेरी ही आँखों को सही किया है।”<sup>18</sup> यहूदी अगुवों को यक़ीन नहीं आ रहा था कि वह सच में अंधा था और फिर सही हो गया है। इस लिए उन्होंने ने उस के वालिदैन् को बुलाया।<sup>19</sup> उन्होंने ने उन से पूछा, “क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही जिस के बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा पैदा हुआ था? अब यह किस तरह देख सकता है?”<sup>20</sup> उस के वालिदैन् ने जवाब दिया, “हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते वक़्त अंधा था।”<sup>21</sup> लेकिन हमें मालूम नहीं कि अब यह किस तरह देख सकता है या कि किस ने इस की आँखों को सही किया है। इस से खुद पता करें, यह बालिग़ है। यह खुद अपने बारे में बता सकता है।”<sup>22</sup> उस के वालिदैन् ने यह इस लिए कहा कि वह यहूदियों से डरते थे। क्योंकि वह फ़ैसला कर चुके थे कि जो भी ईसा को मसीह करार दे उसे यहूदी जमाअत से निकाल दिया जाए।<sup>23</sup> यही वजह थी कि उस के वालिदैन् ने कहा था, “यह बालिग़ है, इस से खुद पूछ लें।”<sup>24</sup> एक बार फिर उन्होंने ने सही हुए अंधे को बुलाया, “खुदा को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि यह आदमी गुनाहगार है।”<sup>25</sup> आदमी ने जवाब दिया, “मुझे क्या पता है कि वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता हूँ, पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख

सकता हूँ!”<sup>26</sup> फिर उन्होंने ने उस से सवाल किया, उस ने तेरे साथ क्या किया? “उस ने किस तरह तेरी आँखों को सही कर दिया?”<sup>27</sup> उस ने जवाब दिया, “मैं पहले भी आप को बता चुका हूँ और आप ने सुना नहीं। क्या आप भी उस के शागिर्द बनना चाहते हैं?”<sup>28</sup> इस पर उन्होंने ने उसे बुरा — भला कहा, “तू ही उस का शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं।”<sup>29</sup> हम तो जानते हैं कि खुदा ने मूसा से बात की है, लेकिन इस के बारे में हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है।”<sup>30</sup> आदमी ने जवाब दिया, “अजीब बात है, उस ने मेरी आँखों को शिफ़ा दी है और फिर भी आप नहीं जानते कि वह कहाँ से है।”<sup>31</sup> हम जानते हैं कि खुदा गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उस की सुनता है जो उस का ख़ौफ़ मानता और उस की मज़ी के मुताबिक़ चलता है।”<sup>32</sup> शुरू ही से यह बात सुनने में नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी अंधे की आँखों को सही कर दिया हो।<sup>33</sup> अगर यह आदमी खुदा की तरफ़ से न होता तो कुछ न कर सकता।”<sup>34</sup> जवाब में उन्होंने ने उसे बताया, “तू जो गुनाह की हालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा उस्ताद बनना चाहता है?” यह कह कर उन्होंने ने उसे जमाअत में से निकाल दिया।

<sup>35</sup> जब ईसा को पता चला कि उसे निकाल दिया गया है तो वह उस को मिला और पूछा, “क्या तू इब्न् — ए — आदम पर ईमान रखता है?”<sup>36</sup> उस ने कहा, “खुदावन्द, वह कौन है? मुझे बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।”<sup>37</sup> ईसा ने जवाब दिया, “तू ने उसे देख लिया है बल्कि वह तुझ से बात कर रहा है।”<sup>38</sup> उस ने कहा, “खुदावन्द, मैं ईमान रखता हूँ” और उसे सज्दा किया।<sup>39</sup> ईसा ने कहा, “मैं अदालत करने के लिए इस दुनियाँ में आया हूँ, इस लिए कि अंधे देखें और देखने वाले अंधे हो जाएँ।”<sup>40</sup> कुछ फ़रीसी जो साथ खड़े थे यह कुछ सुन कर पूछने लगे, “अच्छा, हम भी अंधे हैं?”<sup>41</sup> ईसा ने उन से कहा, “अगर तुम अंधे होते तो तुम गुनाहगार न ठहरते। लेकिन अब चूँकि तुम दावा करते हो कि हम देख सकते हैं इस लिए तुम्हारा गुनाह काइम रहता है।”

## 10

?????? ???? ??

<sup>1</sup> “मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो दरवाज़े से भेड़ों के बाड़े में दाख़िल नहीं होता बल्कि किसी ओर से कूद कर अन्दर घुस आता है वह चोर और डाकू है।<sup>2</sup> लेकिन जो दरवाज़े से दाख़िल होता है वह भेड़ों का चरवाहा है।<sup>3</sup> चौकीदार उस के लिए दरवाज़ा खोल देता है और



भेड़ें उस की आवाज़ सुनती हैं। वह अपनी हर एक भेड़ का नाम ले कर उन्हें बुलाता और बाहर ले जाता है।<sup>4</sup> अपने पूरे गल्ले को बाहर निकालने के बाद वह उन के आगे आगे चलने लगता है और भेड़ें उस के पीछे पीछे चल पड़ती हैं, क्योंकि वह उस की आवाज़ पहचानती हैं।<sup>5</sup> लेकिन वह किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेंगी बल्कि उस से भाग जाएंगी, क्योंकि वह उस की आवाज़ नहीं पहचानती।”<sup>6</sup> ईसा ने उन्हें यह मिसाल पेश की, लेकिन वह न समझे कि वह उन्हें क्या बताना चाहता है।

<sup>7</sup> इस लिए ईसा दुबारा इस पर बात करने लगा, “मैं तुम को सच बताता हूँ कि भेड़ों के लिए दरवाज़ा मैं हूँ।<sup>8</sup> जितने भी मुझ से पहले आए वह चोर और डाकू हैं। लेकिन भेड़ों ने उन की न सुनी।<sup>9</sup> मैं ही दरवाज़ा हूँ। जो भी मेरे ज़रिए अन्दर आए उसे नज़ात मिलेगी। वह आता जाता और हरी चरागाहें पाता रहेगा।<sup>10</sup> चोर तो सिर्फ़ चोरी करने, ज़बह करने और तबाह करने आता है। लेकिन मैं इस लिए आया हूँ कि वह ज़िन्दगी पाएँ, बल्कि कसूरत की ज़िन्दगी पाएँ।<sup>11</sup> अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है।<sup>12</sup> मज़दूर चरवाहे का किरदार अदा नहीं करता, क्योंकि भेड़ें उस की अपनी नहीं होतीं। इस लिए जूँ ही कोई भेड़िया आता है तो मज़दूर उसे देखते ही भेड़ों को छोड़ कर भाग जाता है। नतीजे में भेड़िया कुछ भेड़ें पकड़ लेता और बाकियों को इधर उधर कर देता है।<sup>13</sup> वजह यह है कि वह मज़दूर ही है और भेड़ों की फ़िक्र नहीं करता।<sup>14</sup> अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और वह मुझे जानती हैं,<sup>15</sup> बिल्कुल उसी तरह जिस तरह बाप मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ। और मैं भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ।<sup>16</sup> मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। ज़रूरी है कि उन्हें भी ले आऊँ। वह भी मेरी आवाज़ सुनेंगी। फिर एक ही गल्ला और एक ही गल्लाबान होगा।<sup>17</sup> मेरा बाप मुझे इस लिए मुहब्बत करता है कि मैं अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ।<sup>18</sup> कोई मेरी जान मुझ से छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे अपनी मर्ज़ी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने का इस्तिहार है और उसे वापस लेने का भी। यह हुक्म मुझे अपने बाप की तरफ़ से मिला है।”<sup>19</sup> इन बातों पर यहूदियों में दुबारा फूट पड़ गई।<sup>20</sup> बहुतों ने कहा, “यह बदरूह के कब्जे में है, यह दीवाना है। इस की क्यों सुनें!”<sup>21</sup> लेकिन औरों ने कहा, “यह ऐसी बातें नहीं हैं जो इंसान बदरूह के कब्जे में हो। क्या बदरूह अँधों की आँखें सही कर सकती हैं?”

<sup>22</sup> सर्दियों का मौसम था और ईसा बैत — उल — मुक़द्दस की खास 'ईद तज्दीद के दौरान येरूशलेम में था।<sup>23</sup> वह बैत — उल — मुक़द्दस के उस बरामदेह में टहेल रहा था जिस का नाम सुलैमान का बरामदह था।<sup>24</sup> यहूदी उसे घेर कर कहने लगे, आप हमें कब तक उलझन में रखेंगे? “अगर आप मसीह हैं तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।”<sup>25</sup> ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुम को बता चुका हूँ, लेकिन तुम को यकीन नहीं आया। जो काम मैं अपने बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह हैं।<sup>26</sup> लेकिन तुम ईमान नहीं रखते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो।<sup>27</sup> मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वह मेरे पीछे चलती हैं।<sup>28</sup> मैं उन्हें हमेशा की ज़िन्दगी देता हूँ, इस लिए वह कभी हलाक नहीं होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा,<sup>29</sup> क्योंकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे सपुर्द किया है और वही सब से बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता।<sup>30</sup> मैं और बाप एक हैं।”<sup>31</sup> यह सुन कर यहूदी दुबारा पत्थर उठाने लगे ताकि ईसा पर पथराव करें।<sup>32</sup> उस ने उन से कहा, “मैं ने तुम्हें बाप की तरफ़ से कई खुदाई करिश्मे दिखाए हैं। तुम मुझे इन में से किस करिश्मे की वजह से पथराव कर रहे हो?”<sup>33</sup> यहूदियों ने जवाब दिया, “हम तुम पर किसी अच्छे काम की वजह से पथराव नहीं कर रहे बल्कि कुफ़ूर बकने की वजह से। तुम जो सिर्फ़ इंसान हो खुदा होने का दावा करते हो।”<sup>34</sup> ईसा ने कहा, “क्या यह तुम्हारी शरी'अत में नहीं लिखा है कि 'खुदा ने फ़रमाया, तुम खुदा हो’? <sup>35</sup> उन्हें 'खुदा' कहा गया जिन तक यह पैग़ाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलाम — ए — मुक़द्दस को रद्द नहीं किया जा सकता।<sup>36</sup> तो फिर तुम कुफ़ूर बकने की बात क्यों करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं खुदा का फ़र्ज़न्द हूँ? आखिर बाप ने खुद मुझे खास करके दुनियाँ में भेजा है।<sup>37</sup> अगर मैं अपने बाप के काम न करूँ तो मेरी बात न मानो।<sup>38</sup> लेकिन अगर उस के काम करूँ तो बेशक मेरी बात न मानो, लेकिन कम से कम उन कामों की गवाही तो मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ जाओगे कि बाप मुझ में है और मैं बाप में हूँ।”<sup>39</sup> एक बार फिर उन्होंने ने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह उन के हाथ से निकल गया।<sup>40</sup> फिर ईसा दुबारा दरिया — ए — यर्दन के पार उस जगह चला गया जहाँ युहन्ना शुरू में बपतिस्मा दिया करता था। वहाँ वह कुछ देर ठहरा।<sup>41</sup> बहुत से लोग उस के पास आते रहे। उन्होंने ने कहा, “युहन्ना ने कभी कोई खुदाई करिश्मा न दिखाया, लेकिन जो कुछ उस ने इस के बारे में बयान किया, वह बिल्कुल सही निकला।”<sup>42</sup> और वहाँ

बहुत से लोग ईसा पर ईमान लाए।

## 11

११:१-११:४२

१ उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़ गया जिस का नाम लाज़र था। वह अपनी बहनों मरियम और मर्था के साथ बैत — अनियाह में रहता था। २ यह वही मरियम थी जिस ने बाद में खुदावन्द पर खुशबू डाल कर उस के पैर अपने बालों से खुशक किए थे। उसी का भाई लाज़र बीमार था। ३ चुनाँचे बहनों ने ईसा को खबर दी, “खुदावन्द, जिसे आप मुहब्बत करते हैं वह बीमार है।” ४ जब ईसा को यह खबर मिली तो उस ने कहा, “इस बीमारी का अन्जाम मौत नहीं है, बल्कि यह खुदा के जलाल के वास्ते हुआ है, ताकि इस से खुदा के फ़र्ज़न्द को जलाल मिले।” ५ ईसा मर्था, मरियम और लाज़र से मुहब्बत रखता था। ६ तो भी वह लाज़र के बारे में खबर मिलने के बाद दो दिन और वहीं ठहरा। ७ फिर उस ने अपने शागिर्दों से बात की, “आओ, हम दुबारा यहूदिया चले जाएँ।” ८ शागिर्दों ने एतराज़ किया, “उस्ताद, अभी अभी वहाँ के यहूदी आप पर पथराव करने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना चाहते हैं?” ९ ईसा ने जवाब दिया, “क्या दिन में रोशनी के बारह घंटे नहीं होते? जो शरूस दिन के वक़्त चलता फिरता है वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्योंकि वह इस दुनियाँ की रोशनी के ज़रिए देख सकता है। १० लेकिन जो रात के वक़्त चलता है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्योंकि उस के पास रोशनी नहीं है।” ११ फिर उस ने कहा, “हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जा कर उसे जगा दूँगा।” १२ शागिर्दों ने कहा, “खुदावन्द, अगर वह सो रहा है तो वह बच जाएगा।” १३ उन का खयाल था कि ईसा लाज़र की दुनियावी नींद का ज़िक्र कर रहा है जबकि हकीकत में वह उस की मौत की तरफ़ इशारा कर रहा था। १४ इस लिए उस ने उन्हें साफ़ बता दिया, “लाज़र की मौत हो गई है १५ और तुम्हारी खातिर मैं खुश हूँ कि मैं उस के मरते वक़्त वहाँ नहीं था, क्योंकि अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उस के पास जाएँ।” १६ तोमा ने जिस का लकड़ जुड़वाँ था अपने साथी शागिर्दों से कहा, “चलो, हम भी वहाँ जा कर उस के साथ मर जाएँ।”

१७ वहाँ पहुँच कर ईसा को मालूम हुआ कि लाज़र को क़ब्र में रखे चार दिन हो गए हैं। १८ बैत — अनियाह का येरूशलेम से फ़ासिला तीन क़िलोमीटर से कम था, १९ और बहुत से यहूदी मर्था और मरियम को उन के भाई के बारे में तसल्ली देने के लिए आए हुए थे। २० यह सुन कर कि ईसा आ रहा है मर्था उसे मिलने गई। लेकिन

मरियम घर में बैठी रही। २१ मर्था ने कहा, “खुदावन्द, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता। २२ लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी खुदा आप को जो भी माँगोगे देगा।” २३ ईसा ने उसे बताया, “तेरा भाई जी उठेगा।” २४ मर्था ने जवाब दिया, जी, “मुझे मालूम है कि वह क़यामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी उठेंगे।” २५ ईसा ने उसे बताया, “क़यामत और ज़िन्दगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िन्दा रहेगा, चाहे वह मर भी जाए। २६ और जो ज़िन्दा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। मर्था, क्या तुझे इस बात का यक़ीन है?” २७ मर्था ने जवाब दिया, “जी खुदावन्द, मैं ईमान रखती हूँ कि आप खुदा के फ़र्ज़न्द मसीह हैं, जिसे दुनियाँ में आना था।”

२८ यह कह कर मर्था वापस चली गई और चुपके से मरियम को बुलाया, “उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे बुला रहे हैं।” २९ यह सुनते ही मरियम उठ कर ईसा के पास गई। ३० वह अभी गाँव के बाहर उसी जगह ठहरा था जहाँ उस की मुलाक़ात मर्था से हुई थी। ३१ जो यहूदी घर में मरियम के साथ बैठे उसे तसल्ली दे रहे थे, जब उन्होंने ने देखा कि वह जल्दी से उठ कर निकल गई है तो वह उस के पीछे हो लिए। क्योंकि वह समझ रहे थे कि वह मातम करने के लिए अपने भाई की क़ब्र पर जा रही है। ३२ मरियम ईसा के पास पहुँच गई। उसे देखते ही वह उस के पैरों में गिर गई और कहने लगी, “खुदावन्द, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।” ३३ जब ईसा ने मरियम और उस के लोगों को रोते देखा तो उसे दुःख हुआ। और उसने ताअ'ज्जुब होकर ३४ उस ने पूछा, “तुम ने उसे कहाँ रखा है?” उन्होंने ने जवाब दिया, “आएँ खुदावन्द, और देख लें।” ३५ ईसा “रो पड़ा। ३६ यहूदियों ने कहा, देखो, वह उसे कितना प्यारा था।” ३७ लेकिन उन में से कुछ ने कहा, इस आदमी ने अंधे को सही किया। “क्या यह लाज़र को मरने से नहीं बचा सकता था?” ३८ फिर ईसा दुबारा बहुत ही मायूस हो कर क़ब्र पर आया। क़ब्र एक ग़ार थी जिस के मुँह पर पत्थर रखा गया था। ३९ ईसा ने कहा, “पत्थर को हटा दो।” लेकिन मर्हूम की बहन मर्था ने एतराज़ किया, “खुदावन्द, बदबू आएगी, क्योंकि उसे यहाँ पड़े चार दिन हो गए हैं।” ४० ईसा ने उस से कहा, “क्या मैंने तुझे नहीं बताया कि अगर तू ईमान रखे तो खुदा का जलाल देखेगी?” ४१ चुनाँचे उन्होंने ने पत्थर को हटा दिया। फिर ईसा ने अपनी नज़र उठा कर कहा, “ऐ बाप, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है। ४२ मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन मैं ने यह बात पास खड़े

लोगों की खातिर की, ताकि वह ईमान लाएँ कि तू ने मुझे भेजा है।”<sup>43</sup> फिर ईसा ज़ोर से पुकार उठा, “लाज़र, निकल आ!”<sup>44</sup> और मुर्दा निकल आया। अभी तक उस के हाथ और पाँओ पट्टियों से बँधे हुए थे जबकि उस का चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था। ईसा ने उन से कहा, “इस के कफ़न को खोल कर इसे जाने दो।”

<sup>45</sup> उन यहूदियों में से जो मरियम के पास आए थे बहुत से ईसा पर ईमान लाए जब उन्होंने ने वह देखा जो उस ने किया।<sup>46</sup> लेकिन कुछ फ़रीसियों के पास गए और उन्हें बताया कि ईसा ने क्या किया है।<sup>47</sup> तब राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदियों ने सदरे अदालत का जलसा बुलाया। उन्होंने ने एक दूसरे से पूछा, “हम क्या कर रहे हैं? यह आदमी बहुत से खुदाई करिश्मे दिखा रहा है।<sup>48</sup> अगर हम उसे यूँही छोड़ें तो आखिरकार सब उस पर ईमान ले आएँगे। फिर रोमी हाकिम आ कर हमारे बैत — उल — मुक़द्दस और हमारे मुल्क को तबाह कर देंगे।”<sup>49</sup> उन में से एक काइफ़ा था जो उस साल इमाम — ए — आज़म था। उस ने कहा, “आप कुछ नहीं समझते<sup>50</sup> और इस का खयाल भी नहीं करते कि इस से पहले कि पूरी क्रौम हलाक हो जाए बेहतर यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर जाए।”<sup>51</sup> उस ने यह बात अपनी तरफ़ से नहीं की थी। उस साल के इमाम — ए — आज़म की हैसियत से ही उस ने यह पेज़ीनगोई की कि ईसा यहूदी क्रौम के लिए मरेगा।<sup>52</sup> और न सिर्फ़ इस के लिए बल्कि खुदा के बिखरे हुए फ़र्ज़न्दों को जमा करके एक करने के लिए भी।<sup>53</sup> उस दिन से उन्होंने ने ईसा को क़त्ल करने का इरादा कर लिया।<sup>54</sup> इस लिए उस ने अब से एलानिया यहूदियों के दरमियान वक़्त न गुज़ारा, बल्कि उस जगह को छोड़ कर रेगिस्तान के करीब एक इलाक़े में गया। वहाँ वह अपने शागिर्दों समेत एक गाँव बनाम इफ़राईम में रहने लगा।<sup>55</sup> फिर यहूदियों की ईद — ए — फ़सह करीब आ गई। देहात से बहुत से लोग अपने आप को पाक करवाने के लिए ईद से पहले पहले येरूशलेम पहुँचे।<sup>56</sup> वहाँ वह ईसा का पता करते और हैकल में खड़े आपस में बात करते रहे, “क्या खयाल है? क्या वह ईद पर नहीं आएगा?”<sup>57</sup> लेकिन राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने हुक्म दिया था, अगर किसी को मालूम हो जाए कि ईसा कहाँ है तो वह खबर दे ताकि हम उसे गिरफ़्तार कर लें।

## 12

२२२२ २२ २२२२२ २२२ २२२ २२२२

<sup>1</sup> फ़सह की ईद में अभी छः दिन बाक़ी थे कि ईसा बैत — अनियाह पहुँचा। यह वह जगह थी जहाँ उस लाज़र का घर था जिसे ईसा ने मुर्दों में से ज़िन्दा किया था।<sup>2</sup> वहाँ उस के लिए एक खास खाना बनाया गया। मर्था खाने वालों की खिदमत कर रही थी जबकि लाज़र ईसा और बाक़ी मेहमानों के साथ खाने में शरीक था।<sup>3</sup> फिर मरियम ने आधा लीटर खालिस जटामासी का बेशक़ीमती इत्र ले कर ईसा के पैरों पर डाल दिया और उन्हें अपने बालों से पोंछ कर खुशक किया। खुशबू पूरे घर में फैल गई।<sup>4</sup> लेकिन ईसा के शागिर्द यहूदाह इस्करियोती ने एतराज़ किया (बाद में उसी ने ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया) उस ने कहा,<sup>5</sup> “इस इत्र की कीमत लगभग एक साल की मज़दूरी के बराबर थी। इसे क्यूँ नहीं बेचा गया ताकि इस के पैसे ग़रीबों को दिए जाते?”<sup>6</sup> उस ने यह बात इस लिए नहीं की कि उसे ग़रीबों की फ़िक्र थी। असल में वह चोर था। वह शागिर्दों का खज़ांची था और जमाशुदा पैसों में से ले लिया करता था।<sup>7</sup> लेकिन ईसा ने कहा, “उसे छोड़ दे! उस ने मेरी दफ़नाने की तय्यारी के लिए यह किया है।<sup>8</sup> ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहूँगा।”

<sup>9</sup> इतने में यहूदियों की बड़ी तहदाद को मालूम हुआ कि ईसा वहाँ है। वह न सिर्फ़ ईसा से मिलने के लिए आए बल्कि लाज़र से भी जिसे उस ने मुर्दों में से ज़िन्दा किया था।<sup>10</sup> इस लिए राहनुमा इमामों ने लाज़र को भी क़त्ल करने का इरादा बनाया।<sup>11</sup> क्यूँकि उस की वजह से बहुत से यहूदी उन में से चले गए और ईसा पर ईमान ले आए थे।

<sup>12</sup> अगले दिन ईद के लिए आए हुए लोगों को पता चला कि ईसा येरूशलेम आ रहा है। एक बड़ा मजमा<sup>13</sup> खज़ूर की डालियाँ पकड़े शहर से निकल कर उस से मिलने आया। चलते चलते वह चिल्ला कर नहरे लगा रहे थे, “होशाना! मुबारक है वह जो रब्ब के नाम से आता है! इस्राईल का बादशाह मुबारक है!”<sup>14</sup> ईसा को कहीं से एक जवान गधा मिल गया और वह उस पर बैठ गया, जिस तरह कलाम — ए — मुक़द्दस में लिखा है,

<sup>15</sup> “ऐ सिय्यून की बेटी, मत डर!

देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा है।”

<sup>16</sup> उस वक़्त उस के शागिर्दों को इस बात की समझ न आई। लेकिन बाद में जब ईसा अपने जलाल को पहुँचा तो उन्हें याद आया कि लोगों ने उस के साथ यह कुछ किया था और वह समझ गए कि कलाम — ए —

मुकद्दस में इस का जिक्र भी है। <sup>17</sup> जो मजमा उस वक़्त ईसा के साथ था जब उस ने लाज़र को मुर्दा में से ज़िन्दा किया था, वह दूसरों को इस के बारे में बताता रहा था। <sup>18</sup> इसी वजह से इतने लोग ईसा से मिलने के लिए आए थे, उन्होंने ने उस के इस खुदाई करिश्मे के बारे में सुना था। <sup>19</sup> यह देख कर फ़रीसी आपस में कहने लगे, “आप देख रहे हैं कि बात नहीं बन रही। देखो, तमाम दुनियाँ उस के पीछे हो ली है।”

<sup>20</sup> कुछ यूनानी भी उन में थे जो फ़सह की ईद के मौक़े पर इबादत करने के लिए आए हुए थे। <sup>21</sup> अब वह फ़िलिप्पुस से मिलने आए जो गलील के बैत — सैदा से था। उन्होंने ने कहा, “जनाब, हम ईसा से मिलना चाहते हैं।” <sup>22</sup> फ़िलिप्पुस ने अन्दरयास को यह बात बताई और फिर वह मिल कर ईसा के पास गए और उसे यह ख़बर पहुँचाई। <sup>23</sup> लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “अब वक़्त आ गया है कि इब्न — ए — आदम को जलाल मिले। <sup>24</sup> मैं तुम को सच बताता हूँ कि जब तक गन्दुम का दाना ज़मीन में गिर कर मर न जाए वह अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है तो बहुत सा फल लाता है। <sup>25</sup> जो अपनी जान को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनियाँ में अपनी जान से दुश्मनी रखता है वह उसे हमेशा तक बचाए रखेगा। <sup>26</sup> अगर कोई मेरी ख़िदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा खादिम भी होगा। और जो मेरी ख़िदमत करे मेरा बाप उस की इज्जत करेगा।

<sup>27</sup> “अब मेरा दिल घबराता है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं कहूँ, ‘ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए रख’? नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ। <sup>28</sup> ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे।” पस आसमान से आवाज़ आई कि मैंने उस को जलाल दिया है और भी दूँगा <sup>29</sup> मजमा के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने ने यह सुन कर कहा, बादल गरज रहे हैं। औरों ने खयाल पेश किया, “कोई फ़रिश्ते ने उस से बातें की” <sup>30</sup> ईसा ने उन्हें बताया, “यह आवाज़ मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी। <sup>31</sup> अब दुनियाँ की अदालत करने का वक़्त आ गया है, अब दुनियाँ पे हुकूमत करने वालों को निकाल दिया जाएगा। <sup>32</sup> और मैं खुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सब को अपने पास बुला लूँगा।” <sup>33</sup> इन बातों से उस ने इस तरफ़ इशारा किया कि वह किस तरह की मौत मरेगा। <sup>34</sup> मजमा बोल उठा, कलाम — ए — मुकद्दस से हम ने सुना है कि मसीह हमेशा तक काईम रहेगा। तो फिर आप की यह कैसी बात है कि “इब्न — ए — आदम को ऊँचे पर चढ़ाया जाना है?” आखिर इब्न — ए —

आदम है कौन? <sup>35</sup> ईसा ने जवाब दिया, “रोशनी थोड़ी देर और तुम्हारे पास रहेगी। जितनी देर वह मौजूद है इस रोशनी में चलते रहो ताकि अंधेरा तुम पर छा न जाए। जो अंधेरे में चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है। <sup>36</sup> रोशनी तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि तुम खुदा के फ़र्ज़न्द बन जाओ।”

<sup>37</sup> अगरचे ईसा ने यह तमाम खुदाई करिश्मे उन के सामने ही दिखाए तो भी वह उस पर ईमान न लाए। <sup>38</sup> यूँ यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई, “ऐ रब्ब, कौन हमारे पैगाम पर ईमान लाया? और रब्ब की कुदरत किस पर जाहिर हुई?” <sup>39</sup> चुनाँचे वह ईमान न ला सके, जिस तरह यसायाह नबी ने कहीं और फ़रमाया है,

<sup>40</sup> “खुदा ने उन की आँखों को अंधा किया और उन के दिल को बेहिस्स कर दिया है, नहीं तो वो अपनी आँखों से देखेंगे और अपने दिल से समझेंगे,

और मेरी तरफ़ रज़ु करें,

और मैं उन्हें शिफ़ा दूँ।”

<sup>41</sup> यसायाह ने यह इस लिए फ़रमाया क्योंकि उस ने ईसा का जलाल देख कर उस के बारे में बात की। <sup>42</sup> तो भी बहुत से लोग ईसा पर ईमान रखते थे। उन में कुछ राहनुमा भी शामिल थे। लेकिन वह इस का खुला इक्कार नहीं करते थे, क्योंकि वह डरते थे कि फ़रीसी हमें यहूदी जमाअत से निकाल देंगे। <sup>43</sup> असल में वह खुदा की इज्जत के बजाए इंसान की इज्जत को ज्यादा अज़ीज़ रखते थे। <sup>44</sup> फिर ईसा पुकार उठा, “जो मुझ पर ईमान रखता है वह न सिर्फ़ मुझ पर बल्कि उस पर ईमान रखता है जिस ने मुझे भेजा है। <sup>45</sup> और जो मुझे देखता है वह उसे देखता है जिस ने मुझे भेजा है। <sup>46</sup> मैं रोशनी की तरह से इस दुनियाँ में आया हूँ ताकि जो भी मुझ पर ईमान लाए वह अंधेरे में न रहे। <sup>47</sup> जो मेरी बातें सुन कर उन पर अमल नहीं करता मैं उसका इन्साफ़ नहीं कहूँगा, क्योंकि मैं दुनियाँ का इन्साफ़ करने के लिए नहीं आया बल्कि उसे नजात देने के लिए। <sup>48</sup> तो भी एक है जो उस का इन्साफ़ करता है। जो मुझे रद्द करके मेरी बातें कुबूल नहीं करता मेरा पेश किया गया कलाम ही क़यामत के दिन उस का इन्साफ़ करेगा। <sup>49</sup> क्योंकि जो कुछ मैं ने बयान किया है वह मेरी तरफ़ से नहीं है। मेरे भेजने वाले बाप ही ने मुझे हुक्म दिया कि क्या कहना और क्या सुनाना है। <sup>50</sup> और मैं जानता हूँ कि उस का हुक्म हमेशा की ज़िन्दगी तक पहुँचाता है। चुनाँचे जो कुछ मैं सुनाता हूँ वही है जो बाप ने मुझे बताया है।”



## 13

१११११ ११ १११११ ११११११११११ ११ ११११ १११११

1 फ़सह की ईद अब शुरू होने वाली थी। ईसा जानता था कि वह वक़्त आ गया है कि मुझे इस दुनियाँ को छोड़ कर बाप के पास जाना है। अगरचे उस ने हमेशा दुनियाँ में अपने लोगों से मुहब्बत रखी थी, लेकिन अब उस ने आखिरी हद तक उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार किया। 2 फिर शाम का खाना तय्यार हुआ। उस वक़्त इब्लीस शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदाह के दिल में ईसा को दुश्मन के हवाले करने का इरादा डाल चुका था। 3 ईसा जानता था कि बाप ने सब कुछ मेरे हवाले कर दिया है और कि मैं खुदा से निकल आया और अब उस के पास वापस जा रहा हूँ। 4 चुनाँचे उस ने दस्तरख़्वान से उठ कर अपना चोगा उतार दिया और कमर पर तौलिया बाँध लिया।

5 फिर वह बासन में पानी डाल कर शागिर्दों के पैर धोने और बँधे हुए तौलिया से पोंछ कर खुश्क करने लगा। 6 जब पतरस की बारी आई तो उस ने कहा, “खुदावन्द, आप मेरे पैर धोना चाहते हैं?” 7 ईसा ने जवाब दिया, “इस वक़्त तू नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन बाद में यह तेरी समझ में आ जाएगा।” 8 पतरस ने एतराज़ किया, “मैं कभी भी आप को मेरे पैर धोने नहीं दूँगा!” ईसा ने जवाब दिया “अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरी कोई शराक़त नहीं।” 9 यह सुन कर पतरस ने कहा, “तो फिर खुदावन्द, न सिर्फ़ मेरे पैर बल्कि मेरे हाथों और सर को भी धोएँ!” 10 ईसा ने जवाब दिया, “जिस शख्स ने नहा लिया है उसे सिर्फ़ अपने पैरो को धोने की ज़रूरत होती है, क्योंकि वह पूरे तौर पर पाक — साफ़ है। तुम पाक — साफ़ हो, लेकिन सब के सब नहीं।” 11 (ईसा को मालूम था कि कौन उसे दुश्मन के हवाले करेगा। इस लिए उस ने कहा कि सब के सब पाक — साफ़ नहीं हैं)।

12 उन सब के पैरो को धोने के बाद ईसा दुबारा अपना लिबास पहन कर बैठ गया। उस ने सवाल किया, “क्या तुम समझते हो कि मैं ने तुम्हारे लिए क्या किया है? 13 तुम मुझे ‘उस्ताद’ और ‘खुदावन्द’ कह कर मुखातिब करते हो और यह सही है, क्योंकि मैं यही कुछ हूँ। 14 मैं, तुम्हारे खुदावन्द और उस्ताद ने तुम्हारे पैर धोए। इस लिए अब तुम्हारा फ़र्ज भी है कि एक दूसरे के पैर धोया करो। 15 मैंने तुम को एक नमूना दिया है ताकि तुम भी वही करो जो मैं ने तुम्हारे साथ किया है। 16 मैं तुम को सच बताता हूँ कि गुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता, न पैग़म्बर अपने भेजने वाले से। 17 अगर तुम यह

जानते हो तो इस पर अमल भी करो, तभी तुम मुबारक होगे। 18 मैं तुम सब की बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैंने चुन लिया है उन्हें मैं जानता हूँ। लेकिन कलाम — ए — मुक़द्दस की उस बात का पूरा होना ज़रूर है, जो मेरी रोटी खाता है उस ने मुझ पर लात उठाई है। 19 मैं तुम को इस से पहले कि वह पेश आए यह अभी बता रहा हूँ, ताकि जब वह पेश आए तो तुम ईमान लाओ कि मैं वही हूँ। 20 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो शख्स उसे कुबूल करता है जिसे मैंने भेजा है वह मुझे कुबूल करता है। और जो मुझे कुबूल करता है वह उसे कुबूल करता है जिस ने मुझे भेजा है।”

21 इन अल्फ़ाज़ के बाद ईसा बेहद दुखी हुआ और कहा, “मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम में से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।” 22 शागिर्द उलझन में एक दूसरे को देख कर सोचने लगे कि ईसा किस की बात कर रहा है। 23 एक शागिर्द जिसे ईसा मुहब्बत करता था उस के बिल्कुल करीब बैठा था। 24 पतरस ने उसे इशारा किया कि वह उस से पूछे कि वह किस की बात कर रहा है। 25 उस शागिर्द ने ईसा की तरफ़ सर झुका कर पूछा, “खुदावन्द, वह कौन है?” 26 ईसा ने जवाब दिया, “जिसे मैं रोटी का निवाला शोर्बे में डुबो कर दूँ, वही है।” फिर निवाले को डुबो कर उस ने शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदाह को दे दिया। 27 जैसे ही यहूदाह ने यह निवाला ले लिया इब्लीस उस में बस गया। ईसा ने उसे बताया, “जो कुछ करना है वह जल्दी से कर ले।” 28 लेकिन मेज़ पर बैठे लोगों में से किसी को मालूम न हुआ कि ईसा ने यह क्यों कहा। 29 कुछ का खयाल था कि चूँकि यहूदाह खज़ांची था इस लिए वह उसे बता रहा है कि ईद के लिए ज़रूरी चीज़ें खरीद ले या ग़रीबों में कुछ बाँट दे। 30 चुनाँचे ईसा से यह निवाला लेते ही यहूदाह बाहर निकल गया। रात का वक़्त था।

31 यहूदाह के चले जाने के बाद ईसा ने कहा, “अब इब्न — ए — आदम ने जलाल पाया और खुदा ने उस में जलाल पाया है। 32 हाँ, चूँकि खुदा को उस में जलाल मिल गया है इस लिए खुदा अपने में फ़र्ज़न्द को जलाल देगा। और वह यह जलाल फ़ौरन देगा। 33 मेरे बच्चो, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे पास ठहरूँगा। तुम मुझे तलाश करोगे, और जो कुछ मैं यहूदियों को बता चुका हूँ वह अब तुम को भी बताता हूँ, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते। 34 मैं तुम को एक नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। जिस तरह मैं ने तुम से मुहब्बत रखी उसी तरह तुम भी एक दूसरे से मुहब्बत

करो। <sup>35</sup> अगर तुम एक दूसरे से मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे शागिर्द हो।”

<sup>36</sup> पतरस ने पूछा, “खुदावन्द, “आप कहाँ जा रहे हैं?” ईसा ने जवाब दिया “जहाँ मैं जाता हूँ अब तो तू मेरे पीछे आ नहीं सकता लेकिन बाद में तू मेरे पीछे आ जाएगा।”

<sup>37</sup> पतरस ने सवाल किया, “खुदावन्द, मैं आप के पीछे अभी क्यों नहीं जा सकता? मैं आप के लिए अपनी जान तक देने को तय्यार हूँ।” <sup>38</sup> लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “तू मेरे लिए अपनी जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता हूँ कि मुर्ग के बाँग देने से पहले पहले तू तीन मर्तबा मुझे जानने से इन्कार कर चुका होगा।”

## 14

????, ??? ? ???? ? ? ???? ? ?

<sup>1</sup> “तुम्हारा दिल न घबराए। तुम खुदा पर ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान रखो। <sup>2</sup> मेरे आसमानी बाप के घर में बेशुमार मकान हैं। अगर ऐसा न होता तो क्या मैं तुम को बताता कि मैं तुम्हारे लिए जगह तय्यार करने के लिए वहाँ जा रहा हूँ? <sup>3</sup> और अगर मैं जा कर तुम्हारे लिए जगह तय्यार करूँ तो वापस आ कर तुम को अपने साथ ले जाऊँगा ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी हो।”

<sup>4</sup> “और जहाँ मैं जा रहा हूँ उस की राह तुम जानते हो।” <sup>5</sup> तोमा बोल उठा, “खुदावन्द, हमें मालूम नहीं कि आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम उस की राह किस तरह जानें?” <sup>6</sup> ईसा ने जवाब दिया, “राह हक़ और ज़िन्दगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता। <sup>7</sup> अगर तुम ने मुझे जान लिया है तो इस का मतलब है कि तुम मेरे बाप को भी जान लोगे। और अब तुम उसे जानते हो और तुम ने उस को देख लिया है।”

<sup>8</sup> फ़िलिप्पुस ने कहा, “ऐ खुदावन्द, बाप को हमें दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफ़ी है।” <sup>9</sup> ईसा ने जवाब दिया, “फ़िलिप्पुस, मैं इतनी देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इस के बावजूद तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा उस ने बाप को देखा है। तो फिर तू क्योंकर कहता है, बाप को हमें दिखाएँ? <sup>10</sup> क्या तू ईमान नहीं रखता कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझ में है? जो बातें मैं तुम को बताता हूँ वह मेरी नहीं बल्कि मुझ में रहने वाले बाप की तरफ़ से हैं। वही अपना काम कर रहा है। <sup>11</sup> मेरी बात का यक़ीन करो कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझ में है। या कम से कम उन कामों की बिना पर यक़ीन करो जो मैंने किए हैं।”

<sup>12</sup> “मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो मुझ पर ईमान रखे वह वही करेगा जो मैं करता हूँ। न सिर्फ़ यह बल्कि

वह इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं बाप के पास जा रहा हूँ। <sup>13</sup> और जो कुछ तुम मेरे नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि बाप को बेटे में जलाल मिल जाए। <sup>14</sup> जो कुछ तुम मेरे नाम में मुझ से चाहो वह मैं करूँगा।”

<sup>15</sup> “अगर तुम मुझे मुहब्बत करते हो तो मेरे हुक्मों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारोगे। <sup>16</sup> और मैं बाप से गुज़ारिश करूँगा तो वह तुम को एक और मददगार देगा जो हमेशा तक तुम्हारे साथ रहेगा <sup>17</sup> यानी सच्चाई की रूह, जिसे दुनियाँ पा नहीं सकती, क्योंकि वह न तो उसे देखती न जानती है। लेकिन तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहती है और आइन्दा तुम्हारे अन्दर रहेगी।”

<sup>18</sup> “मैं तुम को यतीम छोड़ कर नहीं जाऊँगा बल्कि तुम्हारे पास वापस आऊँगा। <sup>19</sup> थोड़ी देर के बाद दुनियाँ मुझे नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखते रहोगे। चूँकि मैं ज़िन्दा हूँ इस लिए तुम भी ज़िन्दा रहोगे। <sup>20</sup> जब वह दिन आएगा तो तुम जान लोगे कि मैं अपने बाप में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुम में। <sup>21</sup> जिस के पास मेरे हुक्म हैं और जो उन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता है, वही मुझे प्यार करता है। और जो मुझे प्यार करता है उसे मेरा बाप प्यार करेगा। मैं भी उसे प्यार करूँगा और अपने आप को उस पर ज़ाहिर करूँगा।” <sup>22</sup> यहूदाह (यहूदाह इस्करियोती नहीं) ने पूछा, “खुदावन्द, क्या वजह है कि आप अपने आप को सिर्फ़ हम पर ज़ाहिर करेंगे और दुनियाँ पर नहीं?” <sup>23</sup> ईसा ने जवाब दिया, “अगर कोई मुझे मुहब्बत करे तो वह मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा। मेरा बाप ऐसे शख्स को मुहब्बत करेगा और हम उस के पास आ कर उस के साथ रहा करेंगे। <sup>24</sup> जो मुझ से मुहब्बत नहीं करता, वह मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुज़ारता। और जो कलाम तुम मुझ से सुनते हो, वह मेरा अपना कलाम नहीं है बल्कि बाप का है जिस ने मुझे भेजा है।”

<sup>25</sup> “यह सब कुछ मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम को बताया है। <sup>26</sup> लेकिन बाद में रूह — ए पाक, जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा, तुम को सब कुछ सिखाएगा। यह मददगार तुम को हर बात की याद दिलाएगा जो मैं ने तुम को बताई है।”

<sup>27</sup> “मैं तुम्हारे पास सलामती छोड़े जाता हूँ, अपनी ही सलामती तुम को दे देता हूँ। और मैं इसे यूँ नहीं देता जिस तरह दुनियाँ देती है। तुम्हारा दिल न घबराए और न डरे। <sup>28</sup> तुम ने मुझ से सुन लिया है कि मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास वापस आऊँगा। अगर तुम मुझ से मुहब्बत

रखते तो तुम इस बात पर खुश होते कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ, क्योंकि बाप मुझ से बड़ा है।<sup>29</sup> मैं ने तुम को पहले से बता दिया है, कि यह हो, ताकि जब पेश आए तो तुम ईमान लाओ।<sup>30</sup> अब से मैं तुम से ज्यादा बातें नहीं करूँगा, क्योंकि इस दुनियाँ का बादशाह आ रहा है। उसे मुझ पर कोई क्राबू नहीं है,<sup>31</sup> लेकिन दुनियाँ यह जान ले कि मैं बाप को प्यार करता हूँ और वही कुछ करता हूँ जिस का हुक्म वह मुझे देता है।”

## 15

22222, 222222 22 22222222 22222222

1 “अंगूर का हकीकी दरख्त मैं हूँ और मेरा बाप बागवान है।<sup>2</sup> वह मेरी हर डाल को जो फल नहीं लाती काट कर फैंक देता है। लेकिन जो डाली फल लाती है उस की वह काँट — छाँट करता है ताकि ज्यादा फल लाए।<sup>3</sup> उस कलाम के वजह से जो मैं ने तुम को सुनाया है तुम तो पाक — साफ़ हो चुके हो।<sup>4</sup> मुझ में क्राईम रहो तो मैं भी तुम में क्राईम रहूँगा। जो डाल दरख्त से कट गई है वह फल नहीं ला सकती। बिल्कुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझ में क्राईम नहीं रहो तो फल नहीं ला सकते।<sup>5</sup> मैं ही अंगूर का दरख्त हूँ, और तुम उस की डालियाँ हो। जो मुझ में क्राईम रहता है और मैं उस में वह बहुत सा फल लाता है, क्योंकि मुझ से अलग हो कर तुम कुछ नहीं कर सकते।<sup>6</sup> जो मुझ में क्राईम नहीं रहता और न मैं उस में उसे सूखी डाल की तरह बाहर फैंक दिया जाता है। और लोग उन का ढेर लगा कर उन्हें आग में झोंक देते हैं जहाँ वह जल जाती हैं।<sup>7</sup> अगर तुम मुझ में क्राईम रहो और मैं तुम में तो जो जी चाहे माँगो, वह तुम को दिया जाएगा।<sup>8</sup> जब तुम बहुत सा फल लाते और यूँ मेरे शागिर्द साबित होते हो तो इस से मेरे बाप को जलाल मिलता है।<sup>9</sup> जिस तरह बाप ने मुझ से मुहब्बत रखी है उसी तरह मैं ने तुम से भी मुहब्बत रखी है। अब मेरी मुहब्बत में क्राईम रहो।<sup>10</sup> जब तुम मेरे हुक्म के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारते हो तो तुम मुझ में क्राईम रहते हो। मैं भी इसी तरह अपने बाप के अहकाम के मुताबिक चलता हूँ और यूँ उस की मुहब्बत में क्राईम रहता हूँ।<sup>11</sup> मैं ने तुम को यह इस लिए बताया है ताकि मेरी खुशी तुम में हो बल्कि तुम्हारा दिल खुशी से भर कर छलक उठे।”

12 “मेरा हुक्म यह है कि एक दूसरे को वैसे प्यार करो जैसे मैं ने तुम को प्यार किया है।<sup>13</sup> इस से बड़ी मुहब्बत है नहीं कि कोई अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे।

14 तुम मेरे दोस्त हो अगर तुम वह कुछ करो जो मैं तुम को बताता हूँ।<sup>15</sup> अब से मैं नहीं कहता कि तुम गुलाम हो, क्योंकि गुलाम नहीं जानता कि उस का मालिक क्या करता है। इस के बजाए मैं ने कहा है कि तुम दोस्त हो, क्योंकि मैं ने तुम को सब कुछ बताया है जो मैं ने अपने बाप से सुना है।<sup>16</sup> तुम ने मुझे नहीं चुना बल्कि मैं ने तुम को चुन लिया है। मैं ने तुम को मुकर्रर किया कि जा कर फल लाओ, ऐसा फल जो क्राईम रहे। फिर बाप तुम को वह कुछ देगा जो तुम मेरे नाम से माँगोगे।<sup>17</sup> मेरा हुक्म यही है कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो।”

18 अगर दुनियाँ तुम से दुश्मनी रखे तो यह बात ज़हन में रखो कि उस ने तुम से पहले मुझ से दुश्मनी रखी है।<sup>19</sup> अगर तुम दुनियाँ के होते तो दुनियाँ तुम को अपना समझ कर प्यार करती। लेकिन तुम दुनियाँ के नहीं हो। मैं ने तुम को दुनियाँ से अलग करके चुन लिया है। इस लिए दुनियाँ तुम से दुश्मनी रखती है।<sup>20</sup> वह बात याद करो जो मैं ने तुम को बताई कि गुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता। अगर उन्होंने ने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सताएँगे। और अगर उन्होंने ने मेरे कलाम के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारी तो वह तुम्हारी बातों पर भी अमल करेंगे।<sup>21</sup> लेकिन तुम्हारे साथ जो कुछ भी करेंगे, मेरे नाम की वजह से करेंगे, क्योंकि वह उसे नहीं जानते जिस ने मुझे भेजा है।<sup>22</sup> अगर मैं आया न होता और उन से बात न की होती तो वह कुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उन के गुनाह का कोई भी उज़्र बाकी नहीं रहा।<sup>23</sup> जो मुझ से दुश्मनी रखता है वह मेरे बाप से भी दुश्मनी रखता है।<sup>24</sup> अगर मैं ने उन के दरमियान ऐसा काम न किया होता जो किसी और ने नहीं किया तो वह कुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उन्होंने ने सब कुछ देखा है और फिर भी मुझ से और मेरे बाप से दुश्मनी रखी है।<sup>25</sup> और ऐसा होना भी था ताकि कलाम — ए — मुक़दस की यह नबुव्वत पूरी हो जाए कि ‘उन्होंने कहा है’<sup>26</sup> जब वह मददगार आएगा जिसे मैं बाप की तरफ़ से तुम्हारे पास भेजूँगा तो वह मेरे बारे में गवाही देगा। वह सच्चाई का रूह है जो बाप में से निकलता है।<sup>27</sup> तुम को भी मेरे बारे में गवाही देना है, क्योंकि तुम शुरू से ही मेरे साथ रहे हो।”

## 16

1 “मैं ने तुम को यह इस लिए बताया है ताकि तुम गुमराह न हो जाओ।<sup>2</sup> वह तुम को यहूदी जमाअतों से निकाल देंगे, बल्कि वह वक़्त भी आने वाला है कि जो भी तुम को मार डालेगा वह समझेगा, मैं ने खुदा की खिदमत

की है।<sup>3</sup> वह इस किस्म की हरकतें इस लिए करेंगे कि उन्होंने ने न बाप को जाना है, न मुझे।<sup>4</sup> (जिस ने यह देखा है उस ने गवाही दी है और उस की गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह हकीकत बयान कर रहा है और उस की गवाही का मकसद यह है कि आप भी ईमान लाएँ)।”

2222 2222 22 2222

<sup>5</sup> “लेकिन अब मैं उस के पास जा रहा हूँ जिस ने मुझे भेजा है। तो भी तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, ‘आप कहाँ जा रहे हैं?’”<sup>6</sup> इस के बजाए तुम्हारे दिल उदास हैं कि मैं ने तुम को ऐसी बातें बताई हैं।<sup>7</sup> लेकिन मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम्हारे लिए फ़ाइदामन्द है कि मैं जा रहा हूँ। अगर मैं न जाऊँ तो मददगार तुम्हारे पास नहीं आएगा। लेकिन अगर मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।<sup>8</sup> और जब वह आएगा तो गुनाह, रास्तबाज़ी और अदालत के बारे में दुनियाँ की ग़लती को बेनकाब करके यह जाहिर करेगा: <sup>9</sup> गुनाह के बारे में यह कि लोग मुझ पर ईमान नहीं रखते, <sup>10</sup> रास्तबाज़ी के बारे में यह कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे अब से नहीं देखोगे, <sup>11</sup> और अदालत के बारे में यह कि इस दुनियाँ के हाकिम की अदालत हो चुकी है।”

<sup>12</sup> “मुझे तुम को बहुत कुछ बताना है, लेकिन इस वक़्त तुम उसे बर्दाश्त नहीं कर सकते। <sup>13</sup> जब सच्चाई का रूह आएगा तो वह पूरी सच्चाई की तरफ़ तुम्हारी राहनुमाई करेगा। वह अपनी मर्जी से बात नहीं करेगा बल्कि सिर्फ़ वही कुछ कहेगा जो वह खुद सुनेगा। वही तुम को भी। मुस्तक़बिल के बारे में बताएँगा <sup>14</sup> और वह इस में मुझे जलाल देगा कि वह तुम को वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझ से मिला होगा। <sup>15</sup> जो कुछ भी बाप का है वह मेरा है। इस लिए मैं ने कहा, रूह तुम को वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझ से मिला होगा।”

<sup>16</sup> “थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे। फिर थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे।” <sup>17</sup> उस के कुछ शागिर्द आपस में बात करने लगे, ईसा के यह कहने से क्या मुराद है कि “थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे? और इस का क्या मतलब है, मैं बाप के पास जा रहा हूँ?” <sup>18</sup> और वह सोचते रहे, “यह किस किस्म की ‘थोड़ी देर’ है जिस का जिक्र वह कर रहे हैं? हम उन की बात नहीं समझते।” <sup>19</sup> ईसा ने जान लिया कि वह मुझ से इस के बारे में सवाल करना चाहते हैं। इस लिए उस ने कहा, “क्या तुम एक दूसरे से पूछ रहे हो कि मेरी इस बात का क्या मतलब है कि ‘थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख

लोगे?’” <sup>20</sup> मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम रो रो कर मातम करोगे जबकि दुनियाँ खुश होगी। तुम ग़म करोगे, लेकिन तुम्हारा ग़म खुशी में बदल जाएगा। <sup>21</sup> जब किसी औरत के बच्चा पैदा होने वाला होता है तो उसे ग़म और तकलीफ़ होती है क्योंकि उस का वक़्त आ गया है। लेकिन जूँ ही बच्चा पैदा हो जाता है तो माँ खुशी के मारे कि एक इंसान दुनियाँ में आ गया है अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है। <sup>22</sup> यही तुम्हारी हालत है। क्योंकि अब तुम उदास हो, लेकिन मैं तुम से दुबारा मिलूँगा। उस वक़्त तुम को खुशी होगी, ऐसी खुशी जो तुम से कोई छीन न लेगा। <sup>23</sup> उस दिन तुम मुझ से कुछ नहीं पूछोगे। मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम में बाप से माँगोगे वह तुम को देगा। <sup>24</sup> अब तक तुम ने मेरे नाम में कुछ नहीं माँगा। माँगो तो तुम को मिलेगा। फिर तुम्हारी खुशी पूरी हो जाएगी।”

<sup>25</sup> “मैं ने तुम को यह मिसालों में बताया है। लेकिन एक दिन आएगा जब मैं ऐसा नहीं करूँगा। उस वक़्त मैं मिसालों में बात नहीं करूँगा बल्कि तुम को बाप के बारे में साफ़ साफ़ बता दूँगा। <sup>26</sup> उस दिन तुम मेरा नाम ले कर माँगोगे। मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि मैं ही तुम्हारी खातिर बाप से दरख्वास्त करूँगा। <sup>27</sup> क्योंकि बाप खुद तुम को प्यार करता है, इस लिए कि तुम ने मुझे प्यार किया है और ईमान लाए हो कि मैं खुदा में से निकल आया हूँ। <sup>28</sup> मैं बाप में से निकल कर दुनियाँ में आया हूँ, और अब मैं दुनियाँ को छोड़ कर बाप के पास वापस जाता हूँ।” <sup>29</sup> इस पर उस के शागिर्दों ने कहा, “अब आप मिसालों में नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात कर रहे हैं। <sup>30</sup> अब हमें समझ आई है कि आप सब कुछ जानते हैं और कि इस की ज़रूरत नहीं कि कोई आप की पूछ — ताछ करे। इस लिए हम ईमान रखते हैं कि आप खुदा में से निकल कर आए हैं।” <sup>31</sup> ईसा ने जवाब दिया, “अब तुम ईमान रखते हो? <sup>32</sup> देखो, वह वक़्त आ रहा है बल्कि आ चुका है जब तुम तितर — बितर हो जाओगे। मुझे अकेला छोड़ कर हर एक अपने घर चला जाएगा। तो भी मैं अकेला नहीं हूँगा क्योंकि बाप मेरे साथ है। <sup>33</sup> मैं ने तुम को इस लिए यह बात बताई ताकि तुम मुझ में सलामती पाओ। दुनियाँ में तुम मुसीबत में फँसे रहते हो। लेकिन हौसला रखो, मैं दुनियाँ पर ग़ालिब आया हूँ।”

17

2222 22 22'2



1 यह कह कर ईसा ने अपनी नज़र आसमान की तरफ़ उठाई और दुआ की, “ऐ बाप, वक़्त आ गया है। अपने बेटे को जलाल दे ताकि बेटा तुझे जलाल दे। 2 क्योंकि तू ने उसे तमाम इंसानों पर इस्लियार दिया है ताकि वह उन सब को हमेशा की ज़िन्दगी दे जो तू ने उसे दिया है। 3 और हमेशा की ज़िन्दगी यह है कि वह तुझे जान लें जो वाहिद और सच्चा खुदा है और ईसा मसीह को भी जान लें जिसे तू ने भेजा है। 4 मैं ने तुझे ज़मीन पर जलाल दिया और उस काम को पूरा किया जिस की ज़िम्मेदारी तू ने मुझे दी थी। 5 और अब मुझे अपने हुज़ूर जलाल दे, ऐ बाप, वही जलाल जो मैं दुनियाँ की पैदाइश से पहले तेरे साथ रखता था।”

6 “मैं ने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया जिन्हें तू ने दुनियाँ से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे ही थे। तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने ने तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी है। 7 अब उन्होंने जान लिया है कि जो कुछ भी तू ने मुझे दिया है वह तेरी तरफ़ से है। 8 क्योंकि जो बातें तू ने मुझे दीं मैं ने उन्हें दी हैं। नतीजे में उन्होंने ने यह बातें क़बूल करके हक़ीक़ी तौर पर जान लिया कि मैं तुझ में से निकल कर आया हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तू ने मुझे भेजा है। 9 मैं उन के लिए दुआ करता हूँ, दुनियाँ के लिए नहीं बल्कि उन के लिए जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्योंकि वह तेरे ही हैं। 10 जो भी मेरा है वह तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है। चुनाँचे मुझे उन में जलाल मिला है। 11 अब से मैं दुनियाँ में नहीं हूँगा। लेकिन यह दुनियाँ में रह गए हैं जबकि मैं तेरे पास आ रहा हूँ। कुद्स बाप, अपने नाम में उन्हें महफूज़ रख, उस नाम में जो तू ने मुझे दिया है, ताकि वह एक हों जैसे हम एक हैं। 12 जितनी देर मैं उन के साथ रहा मैं ने उन्हें तेरे नाम में महफूज़ रखा, उसी नाम में जो तू ने मुझे दिया था। मैं ने यूँ उन की निगहबानी की कि उन में से एक भी हलाक नहीं हुआ सिवाए हलाकत के फ़र्ज़न्द के। यूँ कलाम की पेशीनगोई पूरी हुई। 13 अब तो मैं तेरे पास आ रहा हूँ। लेकिन मैं दुनियाँ में होते हुए यह बयान कर रहा हूँ ताकि उन के दिल मेरी खुशी से भर कर छलक उठें। 14 मैं ने उन्हें तेरा कलाम दिया है और दुनियाँ ने उन से दुश्मनी रखी, क्योंकि यह दुनियाँ के नहीं हैं, जिस तरह मैं भी दुनियाँ का नहीं हूँ। 15 मेरी दुआ यह नहीं है कि तू उन्हें दुनियाँ से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इब्लीस से महफूज़ रखे। 16 वह दुनियाँ के नहीं हैं जिस तरह मैं भी दुनियाँ का नहीं हूँ। 17 उन्हें सच्चाई के वसीले से मख्सूस — ओ — मुकद्दस कर। तेरा कलाम

ही सच्चाई है। 18 जिस तरह तू ने मुझे दुनियाँ में भेजा है उसी तरह मैं ने भी उन्हें दुनियाँ में भेजा है। 19 उन की खातिर मैं अपने आप को मख्सूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी सच्चाई के वसीले से मख्सूस — ओ — मुकद्दस किया जाए।”

20 “मेरी दुआ न सिर्फ़ इन ही के लिए है, बल्कि उन सब के लिए भी जो इन का पैग़ाम सुन कर मुझ पर ईमान लाएँगे 21 ताकि सब एक हों। जिस तरह तू ऐ बाप, मुझ में है और मैं तुझ में हूँ उसी तरह वह भी हम में हों ताकि दुनियाँ यक़ीन करे कि तू ने मुझे भेजा है। 22 मैं ने उन्हें वह जलाल दिया है जो तू ने मुझे दिया है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक हैं, 23 मैं उन में और तू मुझ में। वह कामिल तौर पर एक हों ताकि दुनियाँ जान ले कि तू ने मुझे भेजा और कि तू ने उन से मुहब्बत रखी है जिस तरह मुझ से रखी है। 24 ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तू ने मुझे दिए हैं वह भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल को देखें, वह जलाल जो तू ने इस लिए मुझे दिया है कि तू ने मुझे दुनियाँ को बनाने से पहले प्यार किया है। 25 ऐ रास्तबाज़, दुनियाँ तुझे नहीं जानती, लेकिन मैं तुझे जानता हूँ। और यह शागिर्द जानते हैं कि तू ने मुझे भेजा है। 26 मैं ने तेरा नाम उन पर ज़ाहिर किया और इसे ज़ाहिर करता रहूँगा ताकि तेरी मुझ से मुहब्बत उन में हो और मैं उन में हूँ।”

## 18

2222 22 2222 2222 2222 22 2222222222  
2222 2222

1 यह कह कर ईसा अपने शागिर्दों के साथ निकला और वादी — ए — क्रिद्रोन को पार करके एक बाग़ में दाखिल हुआ। 2 यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करने वाला था वह भी इस जगह से वाकिफ़ था, क्योंकि ईसा वहाँ अपने शागिर्दों के साथ जाया करता था। 3 राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदाह को रोमी फ़ौजियों का दस्ता और बैत — उल — मुकद्दस के कुछ पहरदार दिए थे। अब यह मशा'लें, लालटैन और हथियार लिए बाग़ में पहुँचे। 4 ईसा को मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। चुनाँचे उस ने निकल कर उन से पूछा, “तुम किस को ढूँड रहे हो?” 5 उन्होंने ने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।” ईसा ने उन्हें बताया, “मैं ही हूँ।” यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करना चाहता था, वह भी उन के साथ खड़ा था। 6 जब ईसा ने एलान किया, “मैं ही हूँ,” तो सब पीछे हट कर ज़मीन पर गिर पड़े। 7 एक और बार ईसा ने उन से सवाल किया, “तुम किस को ढूँड रहे हो?” 8 उस ने

कहा, “मैं तुम को बता चुका हूँ कि मैं ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँढ रहे हो तो इन को जाने दो।” <sup>9</sup> यूँ उस की यह बात पूरी हुई, “मैं ने उन में से जो तू ने मुझे दिए हैं एक को भी नहीं खोया।” <sup>10</sup> शमौन पतरस के पास तलवार थी। अब उस ने उसे मियान से निकाल कर इमाम — ए — आजम के गुलाम का दहना कान उड़ा दिया (गुलाम का नाम मलखुस था) <sup>11</sup> लेकिन ईसा ने पतरस से कहा, “तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह प्याला न पिऊँ जो बाप ने मुझे दिया है?”

<sup>12</sup> फिर फौजी दस्ते, उन के अफसर और बैत — उल — मुक्रद्स के यहूदी पहरेदारों ने ईसा को गिरफ्तार करके बाँध लिया। <sup>13</sup> पहले वह उसे हन्ना के पास ले गए। हन्ना उस साल के इमाम — ए — आजम काइफ़ा का ससुर था। <sup>14</sup> काइफ़ा ही ने यहूदियों को यह मशवरा दिया था कि बेहतर यह है कि एक ही आदमी उम्मत के लिए मर जाए।

<sup>15</sup> शमौन पतरस किसी और शागिर्द के साथ ईसा के पीछे हो लिया था। यह दूसरा शागिर्द इमाम — ए — आजम का जानने वाला था, इस लिए वह ईसा के साथ इमाम — ए — आजम के सहन में दाखिल हुआ। <sup>16</sup> पतरस बाहर दरवाजे पर खड़ा रहा। फिर इमाम — ए — आजम का जानने वाला शागिर्द दुबारा निकल आया। उस ने दरवाजे की निगरानी करने वाली औरत से बात की तो उसे पतरस को अपने साथ अन्दर ले जाने की इजाज़त मिली। <sup>17</sup> उस औरत ने पतरस से पूछा, “तुम भी इस आदमी के शागिर्द हो कि नहीं?” उस ने जवाब दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।” <sup>18</sup> ठन्डा थी, इस लिए गुलामों और पहरेदारों ने लकड़ी के कोयलों से आग जलाई। अब वह उस के पास खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उन के साथ खड़ा ताप रहा था।

<sup>19</sup> इतने में इमाम — ए — आजम ईसा की पूछ — ताछ करके उस के शागिर्दों और तालीमों के बारे में पूछ — ताछ करने लगा। <sup>20</sup> ईसा ने जवाब में कहा, “मैं ने दुनियाँ में खुल कर बात की है। मैं हमेशा यहूदी इबादतखानों और हैकल में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ तमाम यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैं ने कुछ नहीं कहा। <sup>21</sup> आप मुझ से क्यों पूछ रहे हैं? उन से दरयाफ़्त करें जिन्होंने मेरी बातें सुनी हैं। उन को मालूम है कि मैं ने क्या कुछ कहा है।” <sup>22</sup> “इस पर साथ खड़े हैकल के पहरेदारों में से एक ने ईसा के मुँह पर थप्पड़ मार कर कहा, क्या यह इमाम — ए — आजम से बात करने का तरीका है जब वह तुम से कुछ पूछे?” <sup>23</sup> ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं ने बुरी बात की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तू ने मुझे क्यों मारा?”

<sup>24</sup> फिर हन्ना ने ईसा को बँधी हुई हालत में इमाम — ए — आजम काइफ़ा के पास भेज दिया।

<sup>25</sup> शमौन पतरस अब तक आग के पास खड़ा ताप रहा था। इतने में दूसरे उस से पूछने लगे, “तुम भी उस के शागिर्द हो कि नहीं?” <sup>26</sup> फिर इमाम — ए — आजम का एक गुलाम बोल उठा जो उस आदमी का रिश्तेदार था जिस का कान पतरस ने उड़ा दिया था, “क्या मैं ने तुम को बाग़ में उस के साथ नहीं देखा था?” <sup>27</sup> पतरस ने एक बार फिर इन्कार किया, और इन्कार करते ही मुर्ग की बाँग सुनाई दी।

<sup>28</sup> फिर यहूदी ईसा को काइफ़ा से ले कर रोमी गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियम के पास पहुँच गए। अब सुबह हो चुकी थी और चूँकि यहूदी फ़सह की ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे, इस लिए वह महल में दाखिल न हुए, वरना वह नापाक हो जाते। <sup>29</sup> चुनाँचे पिलातुस निकल कर उन के पास आया और पूछा, “तुम इस आदमी पर क्या इल्ज़ाम लगा रहे हो?” <sup>30</sup> उन्होंने ने जवाब दिया, “अगर यह मुजरिम न होता तो हम इसे आप के हवाले न करते।” <sup>31</sup> पिलातुस ने अगुवों से कहा, “फिर इसे ले जाओ और अपनी शरई अदालतों में पेश करो।” लेकिन यहूदियों ने एतराज़ किया, “हमें किसी को सज़ा-ए-मौत देने की इजाज़त नहीं।” <sup>32</sup> ईसा ने इस तरफ़ इशारा किया था कि वह किस तरह की मौत मरेगा और अब उस की यह बात पूरी हुई। <sup>33</sup> तब पिलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ से उस ने ईसा को बुलाया और उस से पूछा, “क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?” <sup>34</sup> ईसा ने पूछा, “क्या आप अपनी तरफ़ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आप को मेरे बारे में बताया है?” <sup>35</sup> पिलातुस ने जवाब दिया, “क्या मैं यहूदी हूँ?” तुम्हारी अपनी क्रौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले किया है। तुम से क्या कुछ हुआ है? <sup>36</sup> ईसा ने कहा, “मेरी बादशाही इस दुनियाँ की नहीं है। अगर वह इस दुनियाँ की होती तो मेरे खादिम सख्त जद्द — ओ — जद्द करते ताकि मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं है।” <sup>37</sup> पिलातुस ने कहा, “तो फिर तुम वाकई बादशाह हो?” ईसा ने जवाब दिया, “आप सहीह कहते हैं, मैं बादशाह हूँ। मैं इसी मक्सद के लिए पैदा हो कर दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है।” <sup>38</sup> पिलातुस ने पूछा, “सच्चाई क्या है?” फिर वह दुबारा निकल कर यहूदियों के पास गया। उस ने एलान किया, “मुझे उसे मुजिरम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।

39 “लेकिन तुम्हारी एक रस्म है जिस के मुताबिक मुझे ईद — ए — फ़सह के मौके पर तुम्हारे लिए एक कैदी को रिहा करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं ‘यहूदियों के बादशाह’ को रिहा कर दूँ?” 40 लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने लगे, “नहीं, इस को नहीं बल्कि बर — अब्बा को।” (बर — अब्बा डाकू था)

## 19

2222 22 222 22 2222 2222

1 फिर पिलातुस ने ईसा को कोड़े लगवाए। 2 फ़ौजियों ने काँटेदार टहनियों का एक ताज बना कर उस के सर पर रख दिया। उन्होंने ने उसे इर्गवानी रंग का चोगा भी पहनाया। 3 फिर उस के सामने आ कर वह कहते, “ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” और उसे थप्पड़ मारते थे। 4 एक बार फिर पिलातुस निकल आया और यहूदियों से बात करने लगा, “देखो, मैं इसे तुम्हारे पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।”

5 फिर ईसा काँटेदार ताज और इर्गवानी रंग का लिबास पहने बाहर आया। पिलातुस ने उन से कहा, “लो यह है वह आदमी।” 6 उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उन के मुलाज़िम चीखने लगे, “इसे मस्तूब करें, इसे मस्तूब करें!” 7 यहूदियों ने इसरार किया, “हमारे पास शरी'अत है और इस शरी'अत के मुताबिक लाज़िम है कि वह मारा जाए। क्योंकि इस ने अपने आप को खुदा का फ़र्ज़न्द करार दिया है।” 8 यह सुन कर पिलातुस बहुत डर गया। 9 दुबारा महल में जा कर ईसा से पूछा, “तुम कहाँ से आए हो?” 10 पिलातुस ने उस से कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मस्तूब करने का इस्तिथार है?” 11 ईसा ने जवाब दिया, “आप को मुझ पर इस्तिथार न होता अगर वह आप को ऊपर से न दिया गया होता। इस वजह से उस शख्स से ज्यादा संगीन गुनाह हुआ है जिस ने मुझे दुश्मन के हवाले कर दिया है।”

12 इस के बाद पिलातुस ने उसे छोड़ने की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख चीख कर कहने लगे, “अगर आप इसे रिहा करें तो आप रोमी शहन्शाह कैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे। जो भी बादशाह होने का दावा करे वह कैसर की मुखालिफ़त करता है।” 13 इस तरह की बातें सुन कर पिलातुस ईसा को बाहर ले आया। फिर वह इंसाफ़ की कुर्सी पर बैठ गया। उस जगह का नाम “पच्चीकारी” था। (अरामी ज़बान में वह गब्वता कहलाती थी)। 14 अब दोपहर के तकरीबन बारह बज

गए थे। उस दिन ईद के लिए तैयारियाँ की जाती थीं, क्योंकि अगले दिन ईद का आगाज़ था। पिलातुस बोल “उठा, लो, तुम्हारा बादशाह!” 15 लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे, ले जाएँ! इसे मस्तूब करें!” पीलातुस ने सवाल किया, “क्या मैं तुम्हारे बादशाह को सलीब पर चढ़ाऊँ?” राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, “सिवा-ए-शहनशाह के हमारा कोई बादशाह नहीं है।” 16 फिर पिलातुस ने ईसा को उन के हवाले कर दिया ताकि उसे मस्तूब किया जाए।

17 वह अपनी सलीब उठाए शहर से निकला और उस जगह पहुँचा जिस का नाम खोपड़ी (अरामी ज़बान में गुल्गुता) था। 18 वहाँ उन्होंने ने उसे सलीब पर चढ़ा दिया। साथ साथ उन्होंने ने ईसा के बाएँ और दाएँ हाथ दो डाकू को मस्तूब किया। 19 पिलातुस ने एक तख्ती बनवा कर उसे ईसा की सलीब पर लगवा दिया। तख्ती पर लिखा था, ‘ईसा नासरी, यहूदियों का बादशाह।’ 20 बहुत से यहूदियों ने यह पढ़ लिया, क्योंकि ईसा को सलीब पर चढ़ाए जाने की जगह शहर के करीब थी और यह जुमला अरामी, लातिनी और यूनानी ज़बानों में लिखा था। 21 यह देख कर यहूदियों के राहनुमा इमामों ने ऐतराज़ किया, “यहूदियों का बादशाह न लिखें बल्कि यह कि इस आदमी ने यहूदियों का बादशाह होने का दावा किया।” 22 पिलातुस ने जवाब दिया, “जो कुछ मैं ने लिख दिया सो लिख दिया।” 23 ईसा को सलीब पर चढ़ाने के बाद फ़ौजियों ने उसके कपड़े ले कर चार हिस्सों में बाँट लिए, हर फ़ौजी के लिए एक हिस्सा। लेकिन चोगा बेजोड़ था। वह ऊपर से ले कर नीचे तक बुना हुआ एक ही टुकड़े का था। 24 इस लिए फ़ौजियों ने कहा, “आओ, इसे फाड़ कर तक्सीम न करें बल्कि इस पर पर्ची डालें।” यूँ कलाम — ए — मुक़द्दस की यह पेशीनगोई पूरी हुई, “उन्होंने ने आपस में मेरे कपड़े बाँट लिए और मेरे लिबास पर पर्ची डाला।” फ़ौजियों ने यही कुछ किया।

25 ईसा की सलीब के करीब: उस की माँ, उस की खाला, क्लियुपास की बीवी मरियम और मरियम मग़दलिनी खड़ी थीं। 26 जब ईसा ने अपनी माँ को उस शागिर्द के साथ खड़े देखा जो उसे प्यारा था तो उस ने कहा, “ऐ ख़ातून, देखें आप का बेटा यह है।” 27 और उस शागिर्द से उस ने कहा, “देख, तेरी माँ यह है।” उस वक़्त से उस शागिर्द ने ईसा की माँ को अपने घर रखा।

28 इस के बाद जब ईसा ने जान लिया कि मेरा काम मुकम्मल हो चुका है तो उस ने कहा, “मुझे प्यास लगी है।” (इस से भी कलाम — ए — मुक़द्दस की एक पेशीनगोई पूरी हुई)। 29 वहाँ सिरके से भरा हुआ एक

बरतन रखा था, उन्होंने सिरके में स्पंज डुबोकर जूफे की डाली पर रख कर उसके मुँह से लगाया। <sup>30</sup> यह सिरका पीने के बाद ईसा बोल उठा, **“काम मुकम्मल हो गया है।”** और सर झुका कर उस ने अपनी जान खुदा के सपुर्द कर दी।

<sup>31</sup> फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का आगाज़ और एक खास सबत था। इस लिए यहूदी नहीं चाहते थे कि मस्तूब हुई लाशें अगले दिन तक सलीबों पर लटकी रहें। चुनाँचे उन्होंने पिलातुस से गुज़ारिश की कि वह उन की टाँगें तोड़वा कर उन्हें सलीबों से उतारने दे। <sup>32</sup> तब फ़ौजियों ने आ कर ईसा के साथ मस्तूब किए जाने वाले आदमियों की टाँगें तोड़ दीं, पहले एक की फिर दूसरे की। <sup>33</sup> जब वह ईसा के पास आए तो उन्होंने देखा कि उसकी मौत हो चुकी है, इस लिए उन्होंने उस की टाँगें न तोड़ीं। <sup>34</sup> इस के बजाए एक ने भाले से ईसा का पहलू छेद दिया। ज़ख्म से फ़ौरन खून और पानी बह निकला। <sup>35</sup> (जिस ने यह देखा है उस ने गवाही दी है और उस की गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह हकीकत बयान कर रहा है और उस की गवाही का मक्सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ)। <sup>36</sup> यह यूँ हुआ ताकि कलाम — ए — मुक़द्दस की यह नबुव्वत पूरी हो जाए, “उस की एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।” <sup>37</sup> कलाम — ए — मुक़द्दस में यह भी लिखा है, “वह उस पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है।”

<sup>38</sup> बाद में अरिमतियाह के रहने वाले यूसुफ़ ने पिलातुस से ईसा की लाश उतारने की इजाज़त माँगी। (यूसुफ़ ईसा का खुफ़िया शागिर्द था, क्योंकि वह यहूदियों से डरता था)। इस की इजाज़त मिलने पर वह आया और लाश को उतार लिया। <sup>39</sup> नीकुदेमुस भी साथ था, वह आदमी जो गुज़रे दिनों में रात के वक़्त ईसा से मिलने आया था। नीकुदेमुस अपने साथ मुर और ऊद की तक़रीबन 34 किलो खुशबू ले कर आया था। <sup>40</sup> उन्होंने ईसा की लाश को ले लिया और यहूदी जनाज़े की रसूमात के मुताबिक़ उस पर खुशबू लगा कर उसे पट्टियों से लपेट दिया। <sup>41</sup> सलीबों के करीब एक बाग़ था और बाग़ में एक नई क़बर थी जो अब तक इस्तेमाल नहीं की गई थी। <sup>42</sup> उस के करीब होने के वजह से उन्होंने ईसा को उस में रख दिया, क्योंकि फ़सह की तय्यारी का दिन था और अगले दिन ईद की शुरुआत होने वाली थी।

## 20

०००० ०० ००० ०० ००००००० ०० ००००

<sup>1</sup> हफ़्ते का दिन गुज़र गया तो इतवार को मरियम मग़दलिनी सुबह — सवेरे क़बर के पास आई। अभी अँधेरा था। वहाँ पहुँच कर उस ने देखा कि क़बर के मुँह पर का पत्थर एक तरफ़ हटाया गया है। <sup>2</sup> मरियम दौड़ कर शमौन पतरस और ईसा के प्यारे शागिर्द के पास आई। उस ने ख़बर दी, “वह खुदावन्द को क़बर से ले गए हैं, और हमें मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।” <sup>3</sup> तब पतरस दूसरे शागिर्द समेत क़बर की तरफ़ चल पड़ा। <sup>4</sup> दोनों दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शागिर्द ज्यादा तेज़ रफ़्तार था। वह पहले क़बर पर पहुँच गया। <sup>5</sup> उस ने झुक कर अन्दर झाँका तो कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी नज़र आईं। लेकिन वह अन्दर न गया। <sup>6</sup> फिर शमौन पतरस उस के पीछे पहुँच कर क़बर में दाख़िल हुआ। उस ने भी देखा कि कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी हैं <sup>7</sup> और साथ वह कपड़ा भी जिस में ईसा का सर लिपटा हुआ था। यह कपड़ा तह किया गया था और पट्टियों से अलग पड़ा था। <sup>8</sup> फिर दूसरा शागिर्द जो पहले पहुँच गया था, वह भी दाख़िल हुआ। जब उस ने यह देखा तो वह ईमान लाया। <sup>9</sup> (लेकिन अब भी वह कलाम — ए — मुक़द्दस की नबुव्वत नहीं समझते थे कि उसे मुर्दों में से जी उठना है)। <sup>10</sup> फिर दोनों शागिर्द घर वापस चले गए।

<sup>11</sup> लेकिन मरियम रो रो कर क़बर के सामने खड़ी रही। और रोते हुए उस ने झुक कर क़बर में झाँका <sup>12</sup> तो क्या देखती है कि दो फ़रिश्ते सफ़ेद लिबास पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले ईसा की लाश पड़ी थी, एक उस के सिरहाने और दूसरा उस के पैताने थे। <sup>13</sup> उन्होंने मरियम से पूछा, “ऐ ख़ातून, तू क्यूँ रो रही है?” उस ने कहा, “वह मेरे खुदावन्द को ले गए हैं, और मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।” <sup>14</sup> फिर उस ने पीछे मुड़ कर ईसा को वहाँ खड़े देखा, लेकिन उस ने उसे न पहचाना। <sup>15</sup> ईसा ने पूछा, **“ऐ ख़ातून, तू क्यूँ रो रही है, किस को ढूँड रही है?”** उसने बाग़बान समझ कर उस से कहा, मियाँ अगर तूने उसको यहाँ से उठाया हो तू मुझे बता दे कि उसे कहा रखा है ताकि मैं उसे ले जाऊँ <sup>16</sup> ईसा ने उस से कहा, **“मरियम!”** उसने मुड़कर उससे इबरानी ज़बान में कहा “रब्बोनी ए उस्ताद” <sup>17</sup> ईसा ने कहा, **“मुझे मत छू, क्यूँकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया। लेकिन भाइयों के पास जा और उन्हें बता, मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने खुदा और तुम्हारे खुदा के पास।”** <sup>18</sup> चुनाँचे मरियम मग़दलिनी शागिर्दों के पास गई और उन्हें इत्तिला दी, “मैं ने खुदावन्द को देखा है और उस ने मुझ से यह बातें कहीं।”



19 उस इतवार की शाम को शागिर्द जमा थे। उन्होंने ने दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे क्योंकि वह यहूदियों से डरते थे। अचानक ईसा उन के दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, **“तुम्हारी सलामती हो,”** 20 और उन्हें अपने हाथों और पहलू को दिखाया। खुदावन्द को देख कर वह निहायत खुश हुए। 21 ईसा ने दुबारा कहा, **“तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे भेजा उसी तरह मैं तुम को भेज रहा हूँ।”** 22 फिर उन पर फूँक कर उस ने फ़रमाया, **“रूह — उल — कुदूस को पा लो।** 23 अगर तुम किसी के गुनाहों को मुआफ़ करो तो वह मुआफ़ किए जाएँगे। और अगर तुम उन्हें मुआफ़ न करो तो वह मुआफ़ नहीं किए जाएँगे।”

24 बारह शागिर्दों में से तोमा जिस का लकड़ जुड़वाँ था ईसा के आने पर मौजूद न था। 25 चुनाँचे दूसरे शागिर्दों ने उसे बताया, **“हम ने खुदावन्द को देखा है!”** लेकिन तोमा ने कहा, मुझे यक़ीन नहीं आता। “पहले मुझे उस के हाथों में कीलों के निशान नज़र आएँ और मैं उन में अपनी उंगली डालूँ, पहले मैं अपने हाथ को उस के पहलू के ज़ख़्म में डालूँ। फिर ही मुझे यक़ीन आएगा।”

26 एक हफ़्ता गुज़र गया। शागिर्द दुबारा मकान में जमा थे। इस मर्तबा तोमा भी साथ था। अगरचे दरवाज़ों पर ताले लगे थे फिर भी ईसा उन के दरमियान आ कर खड़ा हुआ। उस ने कहा, **“तुम्हारी सलामती हो!”** 27 फिर वह तोमा से मुखातिब हुआ, **“अपनी उंगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे पहलू के ज़ख़्म में डाल और बेएतिकाद न हो बल्कि ईमान रख।”** 28 तोमा ने जवाब में उस से कहा, **“ऐ मेरे खुदावन्द! ऐ मेरे खुदा!”** 29 फिर ईसा ने उसे बताया, **“क्या तू इस लिए ईमान लाया है कि तू ने मुझे देखा है? मुबारक हैं वह जो मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाते हैं।”**

30 ईसा ने अपने शागिर्दों की मौजूदगी में मज़ीद बहुत से ऐसे खुदाई करिश्मे दिखाए जो इस किताब में दर्ज नहीं हैं। 31 लेकिन जितने दर्ज हैं उन का मक्सद यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही मसीह यानी खुदा का फ़र्ज़न्द है और आप को इस ईमान के वसीले से उस के नाम से ज़िन्दगी हासिल हो।

## 21

यूहन्ना 21:1-17

1 इस के बाद ईसा एक बार फिर अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ जब वह तिबरियास यानी गलील की झील पर थे। यह यँ हुआ। 2 कुछ शागिर्द शमौन पतरस के

साथ जमा थे, तोमा जो जुड़वाँ कहलाता था, नतन — एल जो गलील के क्राना से था, जब्दी के दो बेटे और मज़ीद दो शागिर्द। 3 शमौन पतरस ने कहा, **“मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।”** दूसरों ने कहा, **“हम भी साथ जाएँगे।”** चुनाँचे वह निकल कर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस पूरी रात एक भी मछली हाथ न आई। 4 सुबह — सवेरे ईसा झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन शागिर्दों को मालूम नहीं था कि वह ईसा ही है। 5 उस ने उन से पूछा, **“बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल गया?”** 6 उस ने कहा, **“अपना जाल नाव के दाएँ हाथ डालो, फिर तुम को कुछ मिलेगा।”** उन्होंने ने ऐसा किया तो मछलियों की इतनी बड़ी तहदाद थी कि वह जाल नाव तक न ला सके। 7 इस पर ईसा के प्यारे शागिर्द ने पतरस से कहा, **“यह तो खुदावन्द है।”** यह सुनते ही कि खुदावन्द है शमौन पतरस अपनी चादर ओढ़ कर पानी में कूद पड़ा (उस ने चादर को काम करने के लिए उतार लिया था)। 8 दूसरे शागिर्द नाव पर सवार उस के पीछे आए। वह किनारे से ज्यादा दूर नहीं थे, तकरीबन सौ मीटर के फ़ासिले पर थे। इस लिए वह मछलियों से भरे जाल को पानी खींच खींच कर खुशकी तक लाए। 9 जब वह नाव से उतरे तो देखा कि लकड़ी के कोयलों की आग पर मछलियाँ भुनी जा रही हैं और साथ रोटी भी है। 10 ईसा ने उन से कहा, **“उन मछलियों में से कुछ ले आओ जो तुम ने अभी पकड़ी हैं।”** 11 शमौन पतरस नाव पर गया और जाल को खुशकी पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा। 12 ईसा ने उन से कहा, **“आओ, खा लो।”** किसी भी शागिर्द ने सवाल करने की ज़ुरअत न की कि **“आप कौन हैं?”** क्योंकि वह तो जानते थे कि यह खुदावन्द ही है। 13 फिर ईसा आया और रोटी ले कर उन्हें दी और इसी तरह मछली भी उन्हें खिलाई। 14 ईसा के जी उठने के बाद यह तीसरी बार था कि वह अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ।

15 खाने के बाद ईसा शमौन पतरस से मुखातिब हुआ, **“यूहन्ना के बेटे शमौन, क्या तू इन की निस्वत मुझ से ज्यादा मुहब्बत करता है?”** उस ने जवाब दिया, **“जी खुदावन्द, आप तो जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।”** ईसा बोला, **“फिर मेरे भेड़ों को चरा।”** 16 तब ईसा ने एक और मर्तबा पूछा, **“शमौन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझ से मुहब्बत करता है?”** उस ने जवाब दिया, **“जी खुदावन्द, आप तो जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।”** ईसा बोला, **“फिर मेरी भेड़ों को चरा।”** 17 तीसरी दफ़ा ईसा ने उस से पूछा, **“शमौन यूहन्ना के बेटे, क्या**

तू मुझे प्यार करता है?” तीसरी दफ़ा यह सवाल सुनने से पतरस को बड़ा दुख हुआ। उस ने कहा, “खुदावन्द, आप को सब कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।” ईसा ने उस से कहा, “मेरी भेड़ों को चरा।<sup>18</sup> मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो तू खुद अपनी कमर बाँध कर जहाँ जी चाहता घूमता फिरता था। लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर बाँध कर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं करेगा।”<sup>19</sup> (ईसा की यह बात इस तरफ़ इशारा था कि पतरस किस किस्म की मौत से खुदा को जलाल देगा)। फिर उस ने उसे बताया, “मेरे पीछे चल।”

<sup>20</sup> पतरस ने मुड़ कर देखा कि जो शागिर्द ईसा को प्यारा था वह उन के पीछे चल रहा है। यह वही शागिर्द था जिस ने शाम के खाने के दौरान ईसा की तरफ़ सर झुका कर पूछा था, “खुदावन्द, कौन आप को दुश्मन के हवाले करेगा?”

<sup>21</sup> अब उसे देख कर पतरस ने ईसा से सवाल किया, “खुदावन्द, इस के साथ क्या होगा?” <sup>22</sup> ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िन्दा रहे तो तुझे क्या? बस तू मेरे पीछे चलता रह।”

<sup>23</sup> नतीजे में भाइयों में यह खयाल फैल गया कि यह शागिर्द नहीं मरेगा। लेकिन ईसा ने यह बात नहीं की थी। उस ने सिर्फ़ यह कहा था, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िन्दा रहे तो तुझे क्या?” <sup>24</sup> यह वह शागिर्द है जिस ने इन बातों की गवाही दे कर इन्हें क़लमबन्द कर दिया है। और हम जानते हैं कि उस की गवाही सच्ची है। <sup>25</sup> ईसा ने इस के अलावा भी बहुत कुछ किया। अगर उस का हर काम क़लमबन्द किया जाता तो मेरे खयाल में पूरी दुनियाँ में यह किताबें रखने की गुन्जाइश न होती।

## रसूलों के आ'माल

?????????? ?? ?????

1 लूका जो डाक्टर है वह इस किताब का मुसन्निफ़ है आमाल की किताब के कई एक वाक्यात के लिए लूका आँखों देखी गवाह था जिन्हें वह इन हावालाजात में पेश करता है। (16:10 — 17; 20:5 — 21:18; 27:1 — 28:16) रिवायतन उस ने खुद को एक ग़ैर यहूदी बतौर साबित किया, मगर शुरू में वह एक मन्नाद था।

????? ?????? ?? ????????? ?? ???

इस के लिखे जाने की तारीख़ तक्रीबन ईस्वी 60 - 63 के बीच है।

इसे लिखे जाने की खास जगहें यरूशलेम, सामरिया लिदा, याफ़ा, अन्ताकिया, इकूनियम, लुस्तरा दरिबे, फ़िलिप्पी, थिसलुनीका, बीरिया, एथन्ज़ कुरिन्थुस, इफ़िसुस, कैसरिया, मालटा और रोम है।

?????? ?????????????? ?????? ?????

लूका ने थियोफ़ुलुस को लिखा (आमाल 1:1) बद किस्मती से थियोफ़ुलुस की बाबत हम ज्यादा नहीं जानते। कुछ हद तक मुमकिन है कि वह लूका का सरपरस्त या हामी रहा होगा। या फिर थियोफ़िलुस नाम के मायने जो “खुदा का प्यारा” है यह आलमगीर लक़ब बतोर तमाम मसीहियों के लिए इस्तेमाल किया गया है।

????? ?????????

आमाल की किताब लिखने का मक्सद था कि इब्तिदाई कलीसिया की पैदाइश और उसकी तरक्की की कहानी बताए। इस के अलावा यूहन्ना इस्तबागी येसू और उसके बारह शागिर्दों ने जो पैग़ाम लोगों को सुनाया था उसे जारी रखा जाए। पेन्तीकुस्त के दिन रूह — उल — कुदूस के नाज़िल होने के ज़रिए मसीहियत का जो फैलाव हुआ, उसे यह किताब क़लम्बन्द करती है।

???????

इन्जील का फैलाव।

बैरूनी खाका

1. रूह'उल'कुदुस का वादा — 1:1-26

2. पेन्तीकुस्त के दिन रूह — उल — कुदुस का मज़ाहिरा — 2:1-4

3. पतरस के कलाम की खिदमतगुजारी के वसीले से कलीसिया की पैदाइश — 2:5-8:3

4. पौलूस के वसीले से यहूदिया और सामरिया में कलीसिया के रसूलों का इज़ाफ़ा — 8:4-12:25

5. मसीहियत का दुनिया के आख़री हिस्से तक फैल जाना — 13:1-28:31

????? ?????? ????????? ?? ?????

1 ऐ थियुफ़िलुस मैंने पहली किताब\* उन सब बातों के बयान में लिखी जो ईसा शुरू; में करता और सिखाता रहा। 2 उस दिन तक जिसमें वो उन रसूलों को जिन्हें उसने चुना था रूह — उल — कुदूस के वसीले से हुक्म देकर ऊपर उठाया गया। 3 ईसा ने तकलीफ़ सहने के बाद बहुत से सबूतों से अपने आपको उन पर ज़िन्दा जाहिर भी किया, चुनाँचे वो चालीस दिन तक उनको नज़र आता और खुदा की बादशाही की बातें कहता रहा।

4 और उनसे मिलकर उन्हें हुक्म दिया, “येरूशलेम से बाहर न जाओ, बल्कि बाप के उस वा'दे के पूरा होने का इन्तिज़ार करो, जिसके बारे में तुम मुझ से सुन चुके हो, 5 क्योंकि युहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया मगर तुम थोड़े दिनों के बाद रूह — उल — कुदूस से बपतिस्मा पाओगे।”

6 पस उन्होंने इकट्ठा होकर पूछा, “ऐ खुदावन्द! क्या तू इसी वक़्त इस्राईल को बादशाही फिर अता करेगा?” 7 उसने उनसे कहा, “उन वक़्तों और मी'आदों का जानना, जिन्हें बाप ने अपने ही इस्ति'यार में रख्खा है, तुम्हारा काम नहीं। 8 लेकिन जब रूह — उल — कुदूस तुम पर नाज़िल होगा तो तुम ताक़त पाओगे; और येरूशलेम और तमाम यहूदिया और सामरिया में, बल्कि ज़मीन के आख़ीर तक मेरे गवाह होंगे।”

9 ये कहकर वो उनको देखते देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादलों ने उसे उनकी नज़रों से छिपा लिया। 10 उसके जाते वक़्त वो आसमान की तरफ़ ग़ौर से देख रहे थे, तो देखो, दो मर्द सफ़ेद पोशाक पहने उनके पास आ खड़े हुए, 11 और कहने लगे, “ऐ गलीली मर्दों! तुम क्यों खड़े आसमान की तरफ़ देखते हो? यही ईसा जो तुम्हारे पास से आसमान पर उठाया गया है, इसी तरह फिर आएगा जिस तरह तुम ने उसे आसमान पर जाते देखा है।”

12 तब वो उस पहाड़ से जो ज़ैतून का कहलाता है और येरूशलेम के नज़दीक सबत की मन्ज़िल के फ़ासले† पर है येरूशलेम को फिरे। 13 और जब उसमें दाख़िल हुए तो उस बालाख़ाने पर चढ़े जिस में वो या'नी पतरस और यूहन्ना, और या'क़ूब और अन्द्रयास और फ़िलिप्पुस, तोमा, बरतुल्माई, मत्ती, हलफ़ी का बेटा या'क़ूब, शमौन

\* 1:1 1:1 पहली किताब लूका की इन्जील है † 1:12 1:12 मन्ज़िल के फ़ासले ज़ैतून का पहाड़ येरूशलेम से 3:219 किलो मीटर की दूर है

जेलोतेस और या'कूब का बेटा यहूदाह रहते थे। <sup>14</sup> ये सब के सब चन्द 'औरतों और ईसा की माँ मरियम और उसके भाइयों के साथ एक दिल होकर दुआ में मशगूल रहे।

<sup>15</sup> उन्हीं दिनों पतरस भाइयों में जो तक्ररीबन एक सौ बीस शरखों की जमा'अत थी खड़ा होकर कहने लगा, <sup>16</sup> “ऐ भाइयों उस नबुव्वत का पूरा होना जरूरी था जो रूह — उल — कुदूस ने दाऊद के जबानी उस यहूदा के हक में पहले कहा था, जो ईसा के पकड़ने वालों का रहनुमा हुआ।

<sup>17</sup> क्योंकि वो हम में शुमार किया गया और उस ने इस खिदमत का हिस्सा पाया।” <sup>18</sup> उस ने बदकारी की कमाई से एक खेत खरीदा, और सिर के बल गिरा और उसका पेट फट गया और उसकी सब आँतड़ीयां निकल पड़ीं। <sup>19</sup> और ये येरूशलेम के सब रहने वालों को मा'लूम हुआ, यहाँ तक कि उस खेत का नाम उनकी जबान में हैकलेदमा पड़ गया या'नी [खून का खेत]।

<sup>20</sup> क्योंकि जबूर में लिखा है, 'उसका घर उजड़ जाए, और उसमें कोई बसने वाला न रहे और उसका मर्तबा दुसरा ले ले।

<sup>21</sup> पस जितने 'अर्से तक खुदावन्द ईसा हमारे साथ आता जाता रहा, यानी यूहन्ना के बपतिस्मे से लेकर खुदावन्द के हमारे पास से उठाए जाने तक — जो बराबर हमारे साथ रहे, <sup>22</sup> चाहिए कि उन में से एक आदमी हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह बने। <sup>23</sup> फिर उन्होंने दो को पेश किया। एक यूसुफ़ को जो बरसब्बा कहलाता है और जिसका लक़ब यूसतुस है। दूसरा मत्तय्याह को।

<sup>24</sup> और ये कह कर दुआ की, “ऐ खुदावन्द! तू जो सब के दिलों को जानता है, ये जाहिर कर कि इन दोनों में से तूने किस को चुना है <sup>25</sup> ताकि वह इस खिदमत और रसूलों की जगह ले, जिसे यहूदाह छोड़ कर अपनी जगह गया।” <sup>26</sup> फिर उन्होंने उनके बारे में पर्ची डाली, और पर्ची मत्तय्याह के नाम की निकली। पस वो उन ग्यारह रसूलों के साथ शुमार किया गया।

## 2

???? ???? ?? ???? ?

<sup>1</sup> जब ईद — ए — पन्तिकुस्त\* का दिन आया। तो वो सब एक जगह जमा थे। <sup>2</sup> एकाएक आस्मान से ऐसी आवाज़ आई जैसे ज़ोर की आँधी का सन्नाटा होता है। और उस से सारा घर जहाँ वो बैठे थे गूँज गया। <sup>3</sup> और उन्हें आग के शो'ले की सी फ़टती हुई जबाने दिखाई दीं

\* 2:1 2:1 ईद — ए — पन्तिकुस्त ईद फ़सह के पचास इन बाद पन्तिकुस्त का दिन है

और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। <sup>4</sup> और वो सब रूह — उल — कुदूस से भर गए और ग़ौर जबान बोलने लगे, जिस तरह रूह ने उन्हें बोलने की ताक़त बख़्शी।

<sup>5</sup> और हर क्रौम में से जो आसमान के नीचे खुदा तरस यहूदी येरूशलेम में रहते थे। <sup>6</sup> जब यह आवाज़ आई तो भीड़ लग गई और लोग दंग हो गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था कि ये मेरी ही बोली बोल रहे हैं। <sup>7</sup> और सब हैरान और ता'ज्जुब हो कर कहने लगे, देखो ये बोलने वाले क्या सब गलीली नहीं?

<sup>8</sup> फिर क्यूँकर हम में से हर एक कैसे अपने ही वतन की बोली सुनता है। <sup>9</sup> हालाँकि हम हैं: पार्थि, मादि, ऐलामी, मसोपोतामिया, यहूदिया, और कप्पडुकिया, और पुन्तुस, और आसिया, <sup>10</sup> और फ़रुगिया, और पम्फ़ीलिया, और मिस्र और लिबुवा, के इलाक़े के रहने वाले हैं, जो कुरेने की तरफ़ है और रोमी मुसाफ़िर <sup>11</sup> चाहे यहूदी चाहे उनके मुरीद, करेती और 'अरब हैं। मगर अपनी अपनी जबान में उन से खुदा के बड़े बड़े कामों का बयान सुनते हैं।

<sup>12</sup> और सब हैरान हुए और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे, “ये क्या हुआ चाहता है?” <sup>13</sup> और कुछ ने ठट्ठा मार कर कहा, “ये तो ताज़ा मय के नशे में हैं।”

<sup>14</sup> लेकिन पतरस उन ग्यारह रसूलों के साथ खड़ा हुआ और अपनी आवाज़ बुलन्द करके लोगों से कहा कि ऐ यहूदियो और ऐ येरूशलेम के सब रहने वालो ये जान लो, और कान लगा कर मेरी बातें सुनो! <sup>15</sup> कि जैसा तुम समझते हो ये नशे में नहीं। क्यूँकि अभी तो सुबह के नौ ही बजे है। <sup>16</sup> बल्कि ये वो बात है जो योएल नबी के ज़रिए कही गई है कि,

<sup>17</sup> खुदा फ़रमाता है, कि आखिरी दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपनी रूह में से हर आदमियों पर डालूँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ नबुव्वत करेंगी और तुम्हारे जवान रोया और तुम्हारे बुढ़े ख़ाब देखेंगे।

<sup>18</sup> बल्कि मैं अपने बन्दों पर और अपनी बन्दियों पर भी उन दिनों में अपने रूह में से डालूँगा और वह नबुव्वत करेंगी।

<sup>19</sup> और मैं ऊपर आस्मान पर 'अजीब काम और नीचे ज़मीन पर निशानियाँ या'नी खून और आग और धुएँ का बादल दिखाऊँगा।

<sup>20</sup> सूरज तारीक और, चाँद खून हो जाएगा पहले इससे कि खुदावन्द का अज़ीम और जलील दिन आए।



21 और यूँ होगा कि जो कोई खुदावन्द का नाम लेगा, नजात पाएगा।

22 ऐ इस्राईलियों! ये बातें सुनो ईसा नासरी एक शख्स था जिसका खुदा की तरफ़ से होना तुम पर उन मोजिज़ों और 'अजीब कामों और निशानों से साबित हुआ; जो खुदा ने उसके ज़रिए तुम में दिखाए। चुनचि तुम आप ही जानते हो। 23 जब वो खुदा के मुकर्ररा इन्तिज़ाम और इल्में साबिक़ के मुवाफ़िक़ पकड़वाया गया तो तुम ने बेशरा लोगों के हाथ से उसे मस्तूब करवा कर मार डाला। 24 लेकिन खुदा ने मौत के बंद खोल कर उसे जिलाया क्योंकि मुम्किन ना था कि वो उसके क़ब्ज़े में रहता।

25 क्योंकि दाऊद उसके हक़ में कहता है। कि मैं खुदावन्द को हमेशा अपने सामने देखता रहा; क्योंकि वो मेरी दहनी तरफ़ है ताकि मुझे जुम्बिश ना हो। 26 इसी वजह से मेरा दिल खुश हुआ; और मेरी ज़बान शाद, बल्कि मेरा जिस्म भी उम्मीद में बसा रहेगा।

27 इसलिए कि तू मेरी जान को 'आलम — ए — अर्वाह में ना छोड़ेगा, और ना अपने पाक के सड़ने की नौबत पहुँचने देगा।

28 तू ने मुझे ज़िन्दगी की राहें बताईं तू मुझे अपने दीदार के ज़रिए खुशी से भर देगा।

29 ऐ भाइयों! मैं क़ौम के बुज़ुर्ग, दाऊद के हक़ में तुम से दिलेरी के साथ कह सकता हूँ कि वो मरा और दफ़न भी हुआ; और उसकी क़ब्र आज तक हम में मौजूद है। 30 पस नबी होकर और ये जान कर कि खुदा ने मुझ से क़सम खाई है कि तेरी नस्त से एक शख्स को तेरे तख़्त पर बिठाऊँगा। 31 उसने नबुव्वत के तौर पर मसीह के जी उठने का ज़िक़र किया कि ना वो 'आलम' ए' अर्वाह में छोड़ेगा, ना उसके जिस्म के सड़ने की नौबत पहुँचेगी।

32 इसी ईसा को खुदा ने जिलाया; जिसके हम सब गवाह हैं। 33 पस खुदा के दहने हाथ से सर बलन्द होकर, और बाप से वो रूह — उल — कुद्दुस हासिल करके जिसका वा'दा किया गया था, उसने ये नाज़िल किया जो तुम देखते और सुनते हो।

34 क्योंकि दाऊद बादशाह तो आस्मान पर नहीं चढ़ा, लेकिन वो खुद कहता है, कि खुदावन्द ने मेरे खुदा से कहा, मेरी दहनी तरफ़ बैठ। 35 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँओ तले की चौकी न कर दूँ।

36 “पस इस्राईल का सारा घराना यक़ीन जान ले कि खुदा ने उसी ईसा को जिसे तुम ने मस्तूब किया खुदावन्द भी किया और मसीह भी।”

37 जब उन्होंने ने ये सुना तो उनके दिलों पर चोट लगी, और पतरस और बाक़ी रसूलों से कहा, “ऐ भाइयों हम क्या करें?” 38 पतरस ने उन से कहा, तौबा करो और तुम में से हर एक अपने गुनाहों की मु'आफ़ी के लिए ईसा मसीह के नाम पर बपतिस्मा ले तो तुम रूह — उल — कुद्दुस इनाम में पाओ गे। 39 इसलिए कि ये वा'दा तुम और तुम्हारी औलाद और उन सब दूर के लोगों से भी है; जिनको खुदावन्द हमारा खुदा अपने पास बुलाएगा।

40 उसने और बहुत सी बातें जता जता कर उन्हें ये नसीहत की, कि अपने आपको इस टेढ़ी क़ौम से बचाओ। 41 पस जिन लोगों ने उसका कलाम कुबूल किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया और उसी रोज़ तीन हज़ार आदमियों के क़रीब उन में मिल गए।

42 और ये रसूलों से तालीम पाने और रिफ़ाक़त रखने में, और रोटी तोड़ने और दुआ करने में मशगूल रहे।

43 और हर शख्स पर ख़ौफ़ छा गया और बहुत से 'अजीब काम और निशान रसूलों के ज़रिए से जाहिर होते थे। 44 और जो ईमान लाए थे वो सब एक जगह रहते थे और सब चीज़ों में शरीक थे। 45 और अपना माल — और अस्बाब बेच बेच कर हर एक की ज़रूरत के मुवाफ़िक़ सब को बाँट दिया करते थे।

46 और हर रोज़ एक दिल होकर हैकल में जमा हुआ करते थे, और घरों में रोटी तोड़कर खुशी और सादा दिली से खाना खाया करते थे। 47 और खुदा की हम्द करते और सब लोगों को अज़ीज़ थे; और जो नजात पाते थे उनको खुदावन्द हर रोज़ जमाअत में मिला देता था।

### 3

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 पतरस और यूहन्ना दुआ के वक़्त या'नी दो पहर तीन बजे हैकल को जा रहे थे। 2 और लोग एक पैदाइशी लंगड़े को ला रहे थे, जिसको हर रोज़ हैकल के उस दरवाज़े पर बिठा देते थे, जो खूबसूरत कलहाता है ताकि हैकल में जाने वालों से भीख माँगे। 3 जब उस ने पतरस और यूहन्ना को हैकल जाते देखा तो उन से भीख माँगी।

4 पतरस और यूहन्ना ने उस पर ग़ौर से नज़र की और पतरस ने कहा, “हमारी तरफ़ देख।” 5 वो उन से कुछ मिलने की उम्मीद पर उनकी तरफ़ मुतवज्जह हुआ।

6 पतरस ने कहा, “चांदी सोना तो मेरे पास है नहीं! मगर जो मेरे पास है वो तुझे दे देता हूँ ईसा मसीह नासरी के नाम से चल फिर।”

7 और उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसको उठाया, और उसी दम उसके पाँव और टखने मज़बूत हो गए।

8 और वो कूद कर खड़ा हो गया और चलने फिरने लगा;

और चलता और कूदता और खुदा की हम्द करता हुआ उनके साथ हैकल में गया।

9 और सब लोगों ने उसे चलते फिरते और खुदा की हम्द करते देख कर। 10 उसको पहचाना, कि ये वही है जो हैकल के खूबसूरत दरवाज़े पर बैठ कर भीख माँगा करता था; और उस माजरे से जो उस पर वाक़े' हुआ था, बहुत दंग और हैरान हुए।

11 जब वो पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था, तो सब लोग बहुत हैरान हो कर उस बरामदह की तरफ़ जो सुलैमान का कहलाता है; उनके पास दौड़े आए। 12 पतरस ने ये देख कर लोगों से कहा; “ऐ इस्राईलियों इस पर तुम क्यों ताअ'ज्जुब करते हो और हमें क्यों इस तरह देख रहे हो; कि गोया हम ने अपनी कुदरत या दीनदारी से इस शख्स को चलता फिरता कर दिया?”

13 अब्रहाम, इज़्हाक़ और याकूब के खुदा या'नी हमारे बाप दादा के खुदा ने अपने खादिम ईसा को जलाल दिया, जिसे तुम ने पकड़वा दिया और जब पीलातुस ने उसे छोड़ देने का इरादा किया तो तुम ने उसके सामने उसका इन्कार किया। 14 तुम ने उस कुदूस और रास्तबाज़ का इन्कार किया; और पीलातुस से दरखास्त की कि एक खताकार तुम्हारी खातिर छोड़ दिया जाए।

15 मगर ज़िन्दगी के मालिक को क़त्ल किया जाए; जिसे खुदा ने मुर्दों में से जिलाया; इसके हम गवाह हैं।

16 उसी के नाम से उस ईमान के वसीले से जो उसके नाम पर है, इस शख्स को मज़बूत किया जिसे तुम देखते और जानते हो। बेशक उसी ईमान ने जो उसके वसीला से है ये पूरी तरह से तन्दरुस्ती तुम सब के सामने उसे दी। 17 ऐ भाइयों! मैं जानता हूँ कि तुम ने ये काम नादानी से किया; और ऐसा ही तुम्हारे सरदारों ने भी। 18 मगर जिन बातों की खुदा ने सब नबियों की ज़बानी पहले खबर दी थी, कि उसका मसीह दुःख उठाएगा; वो उसने इसी तरह पूरी की।

19 पस तौबा करो और फिर जाओ ताकि तुम्हारे गुनाह मिटाए जाएँ, और इस तरह खुदावन्द के हुज़ूर से ताज़गी के दिन आएँ। 20 और वो उस मसीह को जो तुम्हारे वास्ते मुक़र्रर हुआ है, या'नी ईसा को भेजे।

21 ज़रूरी है कि वो असमान में उस वक़्त तक रहे; जब तक कि वो सब चीज़ें बहाल न की जाएँ, जिनका ज़िक्र खुदा ने अपने पाक नबियों की ज़बानी किया है; जो दुनिया के शुरू से होते आए हैं। 22 चुनाँचे मूसा ने कहा, कि खुदावन्द खुदा तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे

लिए मुझसा एक नबी पैदा करेगा जो कुछ वो तुम से कहे उसकी सुनना।

23 और यँ होगा कि जो शख्स उस नबी की न सुनेगा वो उम्मत में से नेस्त — ओ — नाबूद कर दिया जाएगा।

24 बल्कि समुएल से लेकर पिछ्लों तक जितने नबियों ने कलाम किया, उन सब ने इन दिनों की खबर दी है।

25 तुम नबियों की औलाद और उस अहद के शरीक हो, जो खुदा ने तुम्हारे बाप दादा से बाँधा, जब इब्राहीम से कहा, कि तेरी औलाद से दुनिया के सब घराने बर्क़त पाएँगे।

26 खुदा ने अपने खादिम को उठा कर पहले तुम्हारे पास भेजा; ताकि तुम में से हर एक को उसकी बुराइयों से हटाकर उसे बर्क़त दे।”

## 4

???? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 जब वो लोगों से ये कह रहे थे तो काहिन और हैकल का मालिक और सदूकी उन पर चढ़ आए। 2 वो गमगीन हुए क्योंकि यह लोगों को ता'लीम देते और ईसा की मिसाल देकर मुर्दों के जी उठने का ऐलान करते थे। 3 और उन्होंने उन को पकड़ कर दूसरे दिन तक हवालात में रखवा; क्योंकि शाम हो गई थी। 4 मगर कलाम के सुनने वालों में से बहुत से ईमान लाए; यहाँ तक कि मर्दों की ता'दाद पाँच हज़ार के करीब हो गई।

5 दूसरे दिन यँ हुआ कि उनके सरदार और बुज़ुर्ग और आलिम। 6 और सरदार काहिन हन्ना और काइफ़ा, यूहन्ना, और इस्कन्दर और जितने सरदार काहिन के घराने के थे, येरूशलेम में जमा हुए। 7 और उनको बीच में खड़ा करके पूछने लगे कि तुम ने ये काम किस कुदरत और किस नाम से किया?

8 उस वक़्त पतरस ने रूह — उल — कुदूस से भरपूर होकर उन से कहा। 9 ऐ उम्मत के सरदारों और बुज़ुर्गों; अगर आज हम से उस एहसान के बारे में पूछ — ताछ की जाती है, जो एक कमज़ोर आदमी पर हुआ; कि वो क्योंकर अच्छा हो गया? 10 तो तुम सब और इस्राईल की सारी उम्मत को मा'लूम हो कि ईसा मसीह नासरी जिसको तुम ने मस्तूब किया, उसे खुदा ने मुर्दों में से जिलाया, उसी के नाम से ये शख्स तुम्हारे सामने तन्दरुस्त खड़ा है।

11 ये वही पत्थर है जिसे तुमने हक़ीर जाना और वो कोने के सिरे का पत्थर हो गया। 12 और किसी दूसरे के वसीले से नजात नहीं, क्योंकि आसमान के तले आदमियों को कोई दूसरा नाम नहीं बरूखा गया, जिसके वसीले से हम नजात पा सकें।

13 जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना की हिम्मत देखी, और मा'लूम किया कि ये अनपढ़ और नावाक़िफ़ आदमी हैं, तो ता'अज्जुब किया; फिर उन्हें पहचाना कि ये ईसा के साथ रहे हैं।

14 और उस आदमी को जो अच्छा हुआ था, उनके साथ खड़ा देखकर कुछ ख़िलाफ़ न कह सके।

15 मगर उन्हें सदरे — ए — अदालत से बाहर जाने का हुक्म देकर आपस में मशवरा करने लगे। 16 “कि हम इन आदमियों के साथ क्या करें? क्योंकि येरूशलेम के सब रहने वालों पर यह रोशन है। कि उन से एक खुला मोज़िज़ा ज़ाहिर हुआ और हम इस का इन्कार नहीं कर सकते। 17 लेकिन इसलिए कि ये लोगों में ज्यादा मशहूर न हो, हम उन्हें धमकाएं कि फिर ये नाम लेकर किसी से बात न करें।” 18 पस उन्हें बुला कर ताकीद की कि ईसा का नाम लेकर हरगिज़ बात न करना और न तालीम देना।

19 मगर पतरस और यूहन्ना ने जवाब में उनसे कहा, कि तुम ही इन्साफ़ करो, आया खुदा के नज़दीक ये वाजिब है कि हम खुदा की बात से तुम्हारी बात ज्यादा सुनें? 20 क्योंकि मुम्किन नहीं कि जो हम ने देखा और सुना है वो न कहें।

21 उन्होंने उनको और धमकाकर छोड़ दिया; क्योंकि लोगों कि वजह से उनको सज़ा देने का कोई मौक़ा; न मिला इसलिए कि सब लोग उस माजरे कि वजह से खुदा की बड़ाई करते थे। 22 क्योंकि वो शख्स जिस पर ये शिफ़ा देने का मोज़िज़ा हुआ था, चालीस बरस से ज्यादा का था।

23 वो छूटकर अपने लोगों के पास गए, और जो कुछ सरदार काहिनों और बुजुर्गों ने उन से कहा था बयान किया। 24 जब उन्होंने ये सुना तो एक दिल होकर बुलन्द आवाज़ से खुदा से गुज़ारिश की, 'ऐ' मालिक तू वो है जिसने आसमान और ज़मीन और समुन्दर और जो कुछ उन में है पैदा किया। 25 तूने रूह — उल — कुदूस के वसीले से हमारे बाप अपने खादिम दाऊद की ज़बानी फ़रमाया कि, क्रौमों ने क्यूँ धूम मचाई? और उम्मतों ने क्यूँ बातिल खयाल किए? 26 खुदावन्द और उसके मसीह की मुख़ालिफ़त को ज़मीन के बादशाह उठ खड़े हुए, और सरदार जमा हो गए।'

27 क्योंकि वाक़'ई तेरे पाक खादिम ईसा के बरख़िलाफ़ जिसे तूने मसह किया। हेरोदेस, और, पुनित्युस पीलातुस, ग़ैर क्रौमों और इस्राईलियों के साथ इस शहर में जमा हुए। 28 ताकि जो कुछ पहले से तेरी कुदरत

और तेरी मसलेहत से ठहर गया था, वही 'अमल में लाएँ।

29 अब, ऐ खुदावन्द “उनकी धमकियों को देख, और अपने बन्दों को ये तौफ़ीक़ दे, कि वो तेरा कलाम कमाल दिलेरी से सुनाएँ। 30 और तू अपना हाथ शिफ़ा देने को बढ़ा और तेरे पाक खादिम ईसा के नाम से मोज़िज़े और अजीब काम ज़हूर में आएँ।” 31 जब वो हुआ कर चुके, तो जिस मकान में जमा थे, वो हिल गया और वो सब रूह — उल — कुदूस से भर गए, और खुदा का कलाम दिलेरी से सुनाते रहे।

32 और ईमानदारों की जमा'अत एक दिल और एक जान थी; और किसी ने भी अपने माल को अपना न कहा, बल्कि उनकी सब चीज़ें मुश्तरका थीं। 33 और रसूल बड़ी कुदरत से खुदावन्द ईसा के जी उठने की गवाही देते रहे, और उन सब पर बड़ा फ़ज़ल था।

34 क्योंकि उन में कोई भी मुहताज न था, इसलिए कि जो लोग ज़मीनों और घरों के मालिक थे, उनको बेच बेच कर बिकी हुई चीज़ों की क़ीमत लाते। 35 और रसूलों के पाँव में रख देते थे, फिर हर एक को उसकी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ बाँट दिया जाता था।

36 और यूसुफ़ नाम एक लावी था, जिसका लक़ब रसूलों ने बरनबास: या'नी नसीहत का बेटा रख्खा था, और जिसकी पैदाइश कुपूरुस टापू की थी। 37 उसका एक खेत था, जिसको उसने बेचा और क़ीमत लाकर रसूलों के पाँव में रख दी।

## 5

???????? ?? ???????

1 और एक शख्स हननियाह नाम और उसकी बीवी सफ़ीरा ने जायदाद बेची। 2 और उसने अपनी बीवी के जानते हुए क़ीमत में से कुछ रख छोड़ा और एक हिस्सा लाकर रसूलों के पाँव में रख दिया।

3 मगर पतरस ने कहा, ऐ हननियाह! क्यूँ शैतान ने तेरे दिल में ये बात डाल दी, कि तू रूह — उल — कुदूस से झूठ बोले और ज़मीन की क़ीमत में से कुछ रख छोड़े।

4 क्या जब तक वो तेरे पास थी वो तेरी न थी? और जब बेची गई तो तेरे इस्तियार में न रही, तूने क्यूँ अपने दिल में इस बात का खयाल बाँधा? तू आदमियों से नहीं बल्कि खुदा से झूठ बोला। 5 ये बातें सुनते ही हननियाह गिर पड़ा, और उसका दम निकल गया, और सब सुनने वालों पर बड़ा खौफ़ छा गया। 6 कुछ जवानों ने उठ कर उसे कफ़नाया और बाहर ले जाकर दफ़न किया।

7 तकरीबन तीन घंटे गुज़र जाने के बाद उसकी बीवी इस हालात से बेख़बर अन्दर आई। 8 पतरस ने उस से

कहा, मुझे बता; क्या तुम ने इतने ही की ज़मीन बेची थी? उसने कहा हाँ इतने ही की।

9 पतरस ने उससे कहा, “तुम ने क्यों खुदावन्द की रूह को आजमाने के लिए ये क्या किया? देख तेरे शौहर को दफ़न करने वाले दरवाज़े पर खड़े हैं, और तुझे भी बाहर ले जाएंगे।” 10 वो उसी वक़्त उसके क़दमों पर गिर पड़ी और उसका दम निकल गया, और जवानों ने अन्दर आकर उसे मुर्दा पाया और बाहर ले जाकर उसके शौहर के पास दफ़न कर दिया। 11 और सारी कलीसिया बल्कि इन बातों के सब सुननेवालों पर बड़ा खौफ़ छा गया।

12 और रसूलों के हाथों से बहुत से निशान और अजीब काम लोगों में जाहिर होते थे, और वो सब एक दिल होकर सुलैमान के बरामदेह में जमा हुआ करते थे। 13 लेकिन वे ईमानों में से किसी को हिम्मत न हुई, कि उन में जा मिले, मगर लोग उनकी बड़ाई करते थे।

14 और ईमान लाने वाले मर्द — ओ — औरत खुदावन्द की कलीसिया में और भी कसरत से आ मिले। 15 यहाँ तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर चार पाइयों और खटोलो पर लिटा देते थे, ताकि जब पतरस आए तो उसका साया ही उन में से किसी पर पड़ जाए। 16 और येरूशलेम के चारों तरफ़ के कस्बों से भी लोग बीमारों और नापाक रूहों के सताए हुएों को लाकर कसरत से जमा होते थे, और वो सब अच्छे कर दिए जाते थे।

17 फिर सरदार काहिन और उसके सब साथी जो सद्क़ियों के फ़िरक़े के थे, हसद के मारे उठे। 18 और रसूलों को पकड़ कर हवालात में रख दिया।

19 मगर खुदावन्द के एक फ़रिश्ते ने रात को कैदख़ाने के दरवाज़े खोले और उन्हें बाहर लाकर कहा कि। 20 “जाओ, हैकल में खड़े होकर इस ज़िन्दगी की सब बातें लोगों को सुनाओ।” 21 वो ये सुनकर सुबह होते ही हैकल में गए, और ता'लीम देने लगे; मगर सरदार काहिन और उसके साथियों ने आकर सदेरे — ऐ — अदालत वालों और बनी इस्राईल के सब बुज़ुर्गों को जमा किया, और कैद खाने में कहला भेजा उन्हें लाएँ।

22 लेकिन सिपाहियों ने पहुँच कर उन्हें कैद खाने में न पाया, और लौट कर खबर दी 23 “हम ने कैद खाने को तो बड़ी हिफ़ाज़त से बन्द किया हुआ, और पहरदारों को दरवाज़ों पर खड़े पाया; मगर जब खोला तो अन्दर कोई न मिला!”

24 जब हैकल के सरदार और सरदार काहिनों ने ये बातें सुनी तो उनके बारे में हैरान हुए, कि इसका क्या अंजाम होगा? 25 इतने में किसी ने आकर उन्हें खबर दी

कि देखो, वो आदमी जिन्हें तुम ने कैद किया था; हैकल में खड़े लोगों को ता'लीम दे रहे हैं।

26 तब सरदार सिपाहियों के साथ जाकर उन्हें ले आया; लेकिन ज़बरदस्ती नहीं, क्योंकि लोगों से डरते थे, कि हम पर पथराव न करें। 27 फिर उन्हें लाकर 'अदालत में खड़ा कर दिया, और सरदार काहिन ने उन से ये कहा। 28 “हम ने तो तुम्हें सख्त ताकीद की थी, कि ये नाम लेकर ता'लीम न देना; मगर देखो तुम ने तमाम येरूशलेम में अपनी ता'लीम फैला दी, और उस शख्स का खून हमारी गर्दन पर रखना चाहते हो।”

29 पतरस और रसूलों ने जवाब में कहा, कि; “हमें आदमियों के हुक्म की निस्वत खुदा का हुक्म मानना ज़्यादा फ़र्ज़ है। 30 हमारे बाप दादा के खुदा ने ईसा को जिलाया, जिसे तुमने सलीब पर लटका कर मार डाला था। 31 उसी को खुदा ने मालिक और मुन्जी ठहराकर अपने दहने हाथ से सर बलन्द किया, ताकि इस्राईल को तौबा की तौफ़ीक़ और गुनाहों की मु'आफ़ी बख़्शे। 32 और हम इन बातों के गवाह हैं; रूह — उल — कुददुस भी जिसे खुदा ने उन्हें बख़्शा है जो उसका हुक्म मानते हैं।”

33 वो ये सुनकर जल गए, और उन्हें क़त्ल करना चाहा। 34 मगर गमलीएल नाम एक फ़रीसी ने जो शरा' का मु'अल्लिम और सब लोगों में इज़्ज़तदार था; अदालत में खड़े होकर हुक्म दिया कि इन आदमियों को थोड़ी देर के लिए बाहर कर दो।

35 फिर उस ने कहा, ऐ इस्राईलियों; इन आदमियों के साथ जो कुछ करना चाहते हो होशियारी से करना। 36 क्योंकि इन दिनों से पहले थियूदास ने उठ कर दा'वा किया था, कि मैं भी कुछ हूँ; और तक़रीबन चार सौ आदमी उसके साथ हो गए थे, मगर वो मारा गया और जितने उसके मानने वाले थे, सब इधर उधर हुए; और मिट गए। 37 इस शख्स के बाद यहूदाह गलीली नाम लिखवाने के दिनों में उठा; और उस ने कुछ लोग अपनी तरफ़ कर लिए; वो भी हलाक हुआ और जितने उसके मानने वाले थे सब इधर उधर हो गए।

38 पस अब मैं तुम से कहता हूँ कि इन आदमियों से किनारा करो और उन से कुछ काम न रखो, कहीं ऐसा न हो कि खुदा से भी लड़ने वाले ठहरो क्योंकि ये तदबीर या काम अगर आदमियों की तरफ़ से है तो आप बरबाद हो जाएंगा। 39 लेकिन अगर खुदा की तरफ़ से है तो तुम इन लोगों को मग़लूब न कर सकोगे।

40 उन्होंने उसकी बात मानी और रसूलों को पास बुला उनको पिटाया और ये हुक्म देकर छोड़ दिया कि ईसा



का नाम लेकर बात न करना <sup>41</sup> पस वो अदालत से इस बात पर खुश होकर चले गए; कि हम उस नाम की खातिर बेइज्जत होने के लायक तो ठहरे। <sup>42</sup> और वो हैकल में और घरों में हर रोज़ ता'लीम देने और इस बात की खुशखबरी सुनाने से कि ईसा ही मसीह है बाज़ न आए।

## 6

१११ ११११११११ ११ ११११११ ११११ ११ ११११  
१११११ १११११

<sup>1</sup> उन दिनों में जब शागिर्द बहुत होते जाते थे, तो यूनानी माइल यहूदी इब्रानियों की शिकायत करने लगे; इसलिए कि रोज़ाना खबरगिरी में उनकी बेवाओं के बारे में लापरवाही होती थी।

<sup>2</sup> और उन बारह ने शागिर्दों की जमा'अत को अपने पास बुलाकर कहा, मुनासिब नहीं कि हम खुदा के कलाम को छोड़कर खाने पीने का इन्तिज़ाम करें। <sup>3</sup> पस, ऐ भाइयों! अपने में से सात नेक नाम शख्सों को चुन लो जो रूह और दानाई से भरे हुए हों; कि हम उनको इस काम पर मुक़र्रर करें। <sup>4</sup> लेकिन हम तो दुआ में और कलाम की खिदमत में मशगूल रहेंगे।

<sup>5</sup> ये बात सारी जमा'अत को पसन्द आई, पस उन्होंने स्तिफ़नुस नाम एक शख्स को जो ईमान और रूह — उल — कुदूस से भरा हुआ था और फ़िलिप्पुस, व पुरुखुरस, और नीकानोर, और तीमोन, और पर्मिनास और नीकुलास। को जो नौ मुरिद यहूदी अन्ताकी था, चुन लिया। <sup>6</sup> और उन्हें रसूलों के आगे खड़ा किया; उन्होंने दुआ करके उन पर हाथ रखे।

<sup>7</sup> और खुदा का कलाम फैलता रहा, और येरूशलेम में शागिर्दों का शुमार बहुत ही बढ़ता गया, और काहिनों की बड़ी गिरोह इस दीन के तहत में हो गई।

<sup>8</sup> स्तिफ़नुस फ़ज़ल और कुव्वत से भरा हुआ लोगों में बड़े बड़े अजीब काम और निशान ज़ाहिर किया करता था; <sup>9</sup> कि उस इबादतखाने से जो लिबिरतीनों का कहलाता है; और कुरेनियों शहर और इस्कन्दरियों क़स्बा और उन में से जो किलकिया और आसिया सूबे के थे, ये कुछ लोग उठ कर स्तिफ़नुस से बहस करने लगे।

<sup>10</sup> मगर वो उस दानाई और रूह का जिससे वो कलाम करता था, मुक़ाबिला न कर सके। <sup>11</sup> इस पर उन्होंने कुछ आदमियों को सिखाकर कहलवा दिया “हम ने इसको मूसा और खुदा के बर — खिलाफ़ कुफ़र की बातें करते सुना।”

<sup>12</sup> फिर वो 'अवाम और बुज़ुर्गों और आलिमों को उभार कर उस पर चढ़ गए; और पकड़ कर सदरे — ए — 'अदालत में ले गए। <sup>13</sup> और झूठे गवाह खड़े किए

जिन्होंने कहा, ये शख्स इस पाक मुक़ाम और शरी'अत के बरखिलाफ़ बोलने से बाज़ नहीं आता। <sup>14</sup> क्यूँकि हम ने उसे ये कहते सुना है; कि वही ईसा नासरी इस मुक़ाम को बरबाद कर देगा, और उन रस्मों को बदल डालेगा, जो मूसा ने हमें सौंपी हैं। <sup>15</sup> और उन सब ने जो अदालत में बैठे थे, उस पर ग़ौर से नज़र की तो देखा कि उसका चेहरा फ़रिश्ते के जैसा है।

## 7

११११११११११ ११ ११११११ ११ ११११ १११११

<sup>1</sup> फिर सरदार काहिन ने कहा, “क्या ये बातें इसी तरह पर हैं?” <sup>2</sup> उस ने कहा,

“ऐ भाइयों! और बुज़ुर्गों, सुनें। खुदा ऐ' जुल — जलाल हमारे बुज़ुर्ग अब्रहाम पर उस वक़्त ज़ाहिर हुआ जब वो हारान शहर में बसने से पहले मसोपोतामिया मुल्क में था।” <sup>3</sup> और उस से कहा कि 'अपने मुल्क और अपने कुन्बे से निकल कर उस मुल्क में चला जा'जिसे मैं तुझे दिखाऊँगा।

<sup>4</sup> इस पर वो कसदियों के मुल्क से निकल कर हारान में जा बसा; और वहाँ से उसके बाप के मरने के बाद खुदा ने उसको इस मुल्क में लाकर बसा दिया, जिस में तुम अब बसते हो। <sup>5</sup> और उसको कुछ मीरास बल्कि क़दम रखने की भी उस में जगह न दी मगर वा'दा किया कि में ये ज़मीन तेरे और तेरे बाद तेरी नस्ल के क़ब्ज़े में कर दूँगा, हालाँकि उसके औलाद न थी।

<sup>6</sup> और खुदा ने ये फ़रमाया, तेरी नस्ल ग़ैर मुल्क में परदेसी होगी, वो उसको गुलामी में रखेंगे और चार सौ बरस तक उन से बदसलूकी करेंगे। <sup>7</sup> फिर खुदा ने कहा, जिस क़ौम की वो गुलामी में रहेंगे उसको मैं सज़ा दूँगा; और उसके बाद वो निकलकर इसी जगह मेरी इबादत करेंगे। <sup>8</sup> और उसने उससे ख़तने का 'अहद बाँधा; और इसी हालत में अब्रहाम से इज्हाक़ पैदा हुआ, और आठवें दिन उसका ख़तना किया गया; और इज्हाक़ से या'क़ूब और याक़ूब से बारह क़बीलों के बुज़ुर्ग पैदा हुए।

<sup>9</sup> और बुज़ुर्गों ने हसद में आकर युसूफ़ को बेचा कि मिस्र में पहुँच जाए; मगर खुदा उसके साथ था।

<sup>10</sup> और उसकी सब मुसीबतों से उसने उसको छुड़ाया; और मिस्र के बादशाह फिर'औन के नज़दीक उसको मक़बूलियत और हिक्मत बख़्शी, और उसने उसे मिस्र और अपने सारे घर का सरदार कर दिया।

<sup>11</sup> फिर मिस्र के सारे मुल्क और कनान में काल पड़ा, और बड़ी मुसीबत आई; और हमारे बाप दादा को खाना न मिलता था। <sup>12</sup> लेकिन याक़ूब ने ये सुनकर कि, मिस्र में अनाज है; हमारे बाप दादा को पहली बार भेजा।

13 और दूसरी बार यूसुफ़ अपने भाइयों पर ज़ाहिर हो गया और यूसुफ़ की क्रौमियत फिर 'औन को मा'लूम हो गई।

14 फिर यूसुफ़ ने अपने बाप याकूब और सारे कुन्बे को जो पछहतर जाने थीं; बुला भेजा। 15 और याकूब मिस्र में गया वहाँ वो और हमारे बाप दादा मर गए। 16 और वो शहर ऐ सिकम में पहुँचाए गए और उस मक्बरे में दफ़न किए गए जिसको अब्रहाम ने सिकम में रुपए देकर बनी हमूर से मोल लिया था।

17 लेकिन जब उस वादे की मी'आद पुरी होने को थी, जो खुदा ने अब्रहाम से फ़रमाया था तो मिस्र में वो उम्मत बढ़ गई; और उनका शुमार ज्यादा होता गया। 18 उस वक़्त तक कि दूसरा बादशाह मिस्र पर हुक्मरान हुआ; जो यूसुफ़ को न जानता था। 19 उसने हमारी क्रौम से चालाकी करके हमारे बाप दादा के साथ यहाँ तक बदसलूकी की कि उन्हें अपने बच्चे फेंकने पड़े ताकि ज़िन्दा न रहें। 20 इस मौके पर मूसा पैदा हुआ; जो निहायत खूबसूरत था, वो तीन महीने तक अपने बाप के घर में पाला गया। 21 मगर जब फेंक दिया गया, तो फिर 'औन की बेटा ने उसे उठा लिया और अपना बेटा करके पाला। 22 और मूसा ने मिस्रियों के, तमाम इल्मों की ता'लीम पाई, और वो कलाम और काम में ताक़त वाला था।

23 और जब वो तक्ररीबन चालीस बरस का हुआ, तो उसके जी में आया कि मैं अपने भाइयों बनी इस्राईल का हाल देखूँ। 24 चुनाँचे उन में से एक को ज़ुल्म उठाते देखकर उसकी हिमायत की, और मिस्री को मार कर मज़्लूम का बदला लिया। 25 उसने तो खयाल किया कि मेरे भाई समझ लेंगे, कि खुदा मेरे हाथों उन्हें छुटकारा देगा, मगर वो न समझे।

26 फिर दूसरे दिन वो उन में से दो लड़ते हुआँ के पास आ निकला और ये कहकर उन्हें सुलह करने की तरफ़ीब दी कि 'ऐ जवानों तुम तो भाई भाई हो, क्यों एक दूसरे पर ज़ुल्म करते हो?' 27 लेकिन जो अपने पड़ोसी पर ज़ुल्म कर रहा था, उसने ये कह कर उसे हटा दिया तुझे किसने हम पर हाकिम और क़ाज़ी मुक़र्रर किया? 28 क्या तू मुझे भी क़त्ल करना चाहता है? जिस तरह कल उस मिस्री को क़त्ल किया था।

29 मूसा ये बात सुन कर भाग गया, और मिदियान के मुल्क में परदेसी रहा, और वहाँ उसके दो बेटे पैदा हुए।

30 और जब पूरे चालीस बरस हो गए, तो कोह-ए-सीना के वीराने में जलती हुई झाड़ी के शो'ले में उसको एक फ़रिश्ता दिखाई दिया। 31 जब मूसा ने उस पर नज़र की तो उस नज़ारे से ताज्जुब किया, और जब देखने को

नज़दीक गया तो खुदावन्द की आवाज़ आई कि 32 मैं तेरे बाप दादा का खुदा या'नी अब्रहाम इज़्हाक और याकूब का खुदा हूँ तब मूसा काँप गया और उसको देखने की हिम्मत न रही। 33 खुदावन्द ने उससे कहा कि अपने पाँव से जूती उतार ले, क्योंकि जिस जगह तू खड़ा है, वो पाक ज़मीन है। 34 मैंने वाक़'ई अपनी उस उम्मत की मुसीबत देखी जो मिस्र में है। और उनका आह — व नाला सुना पस उन्हें छुड़ाने उतरा हूँ, अब आ मैं तुझे मिस्र में भेजूँगा।

35 जिस मूसा का उन्होंने ये कह कर इन्कार किया था, तुझे किसने हाकिम और क़ाज़ी मुक़र्रर किया 'उसी को खुदा ने हाकिम और छुड़ाने वाला ठहरा कर, उस फ़रिश्ते के ज़रिए से भेजा जो उस झाड़ी में नज़र आया था। 36 यही शख्स उन्हें निकाल लाया और मिस्र और बहर — ए — कुलज़ूम और वीराने में चालीस बरस तक अजीब काम और निशान दिखाए। 37 ये वही मूसा है, जिसने बनी इस्राईल से कहा, खुदा तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मुझ सा एक नबी पैदा करेगा।

38 ये वही है, जो वीराने की कलीसिया में उस फ़रिश्ते के साथ जो कोह-ए-सीना पर उससे हम कलाम हुआ, और हमारे बाप दादा के साथ था उसी को ज़िन्दा कलाम मिला कि हम तक पहुँचा दे। 39 मगर हमारे बाप दादा ने उसके फ़रमाँबरदार होना न चाहा, बल्कि उसको हटा दिया और उनके दिल मिस्र की तरफ़ माइल हुए। 40 और उन्होंने हारून से कहा, हमारे लिए ऐसे मा'बूद बना जो हमारे आगे आगे चलें, क्योंकि ये मूसा जो हमें मुल्क — ए मिस्र से निकाल लाया, हम नहीं जानते कि वो क्या हुआ।

41 और उन दिनों में उन्होंने एक बछड़ा बनाया, और उस बुत को कुर्बानी चढ़ाई, और अपने हाथों के कामों की खुशी मनाई। 42 पस खुदा ने मुँह मोड़कर उन्हें छोड़ दिया कि आसमानी फ़ौज को पूजें चुनाँचे नबियों की किताबों में लिखा है ऐ इस्राईल के घराने क्या तुम ने वीराने में चालीस बरस मुझको ज़बीहे और कुर्बानियाँ गुज़रानी? 43 बल्कि तुम मोलक के खेमे और रिफ़ान देवता के तारे को लिए फिरते थे, या'नी उन मूरतों को जिन्हें तुम ने सज्दा करने के लिए बनाया था। पस मैं तुम्हें बाबुल के परे ले जाकर बसाऊँगा।

44 शहादत का खेमा वीराने में हमारे बाप दादा के पास था, जैसा कि मूसा से कलाम करने वाले ने हुक्म दिया था, जो नमूना तूने देखा है, उसी के मुवाफ़िक़ इसे बना। 45 उसी खेमे को हमारे बाप दादा अगले बुज़ुर्गों से हासिल करके ईसा के साथ लाए जिस वक़्त उन क्रौमों

की मिल्कियत पर कब्जा किया जिनको खुदा ने हमारे बाप दादा के सामने निकाल दिया, और वो दाऊद के जमाने तक रहा। <sup>46</sup> उस पर खुदा की तरफ से फ़ज़ल हुआ, और उस ने दरख्वास्त की, कि मैं याकूब के खुदा के वास्ते घर तैयार करूँ।

<sup>47</sup> मगर सुलैमान ने उस के लिए घर बनाया।

<sup>48</sup> लेकिन खुदा हाथ के बनाए हुए घरों में नहीं रहता चुनाँचे नबी कहता है कि

<sup>49</sup> खुदावन्द फ़रमाता है, आसमान मेरा तख्त

और ज़मीन मेरे पाँव तले की चौकी है,

तुम मेरे लिए कैसा घर बनाओगे,

या मेरी आरामगाह कौन सी है?

<sup>50</sup> क्या ये सब चीज़ें मेरे हाथ से नहीं बनी

<sup>51</sup> ऐ गर्दन कशो, दिल और कान के नामख़ूनों, तुम हर वक़्त रूह — उल — कुद्स की मुख़ालिफ़त करते हो; जैसे तुम्हारे बाप दादा करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो। <sup>52</sup> नबियों में से किसको तुम्हारे बाप दादा ने नहीं सताया? उन्होंने ने तो उस रास्तबाज़ के आने की पेश — ख़बरी देनेवालों को क़त्ल किया, और अब तुम उसके पकड़वाने वाले और क़ातिल हुए। <sup>53</sup> तुम ने फ़रिश्तों के ज़रिए से शरी'अत तो पाई, पर अमल नहीं किया।

<sup>54</sup> जब उन्होंने ये बातें सुनीं तो जी में जल गए, और उस पर दाँत पीसने लगे। <sup>55</sup> मगर उस ने रूह — उल — कुद्स से भरपूर होकर आसमान की तरफ़ ग़ौर से नज़र की, और खुदा का जलाल और ईसा को खुदा की दहनी तरफ़ खड़ा देख कर कहा। <sup>56</sup> “देखो मैं आसमान को खुला, और इबने — आदम को खुदा की दहनी तरफ़ खड़ा देखता हूँ”

<sup>57</sup> मगर उन्होंने बड़े ज़ोर से चिल्लाकर अपने कान बन्द कर लिए, और एक दिल होकर उस पर झपटे। <sup>58</sup> और शहर से बाहर निकाल कर उस पर पथराव करने लगे, और गवाहों ने अपने कपड़े साऊल नाम एक जवान के पाँव के पास रख दिए।

<sup>59</sup> पस स्तिफ़नुस पर पथराव करते रहे, और वो ये कह कर दुआ करता रहा “ऐ खुदावन्द ईसा मेरी रूह को कुबूल कर।” <sup>60</sup> फिर उस ने घुटने टेक कर बड़ी आवाज़ से पुकारा, “ऐ खुदावन्द ये गुनाह इन के ज़िम्मे न लगा।” और ये कह कर सो गया।

## 8

<sup>1</sup> और साऊल उस के क़त्ल में शामिल था। उसी दिन उस कलीसिया पर जो येरूशलेम में थी, बड़ा जुल्म बर्पा हुआ,

२२२२२२२२ २२ २२२२२२२२ २२ २२ २२२२ २२२२

और रसूलों के सिवा सब लोग यहूदिया और सामरिया के चारों तरफ़ फैल गए। <sup>2</sup> और दीनदार लोग स्तिफ़नुस को दफ़न करने कि लिए ले गए, और उस पर बड़ा मातम किया। <sup>3</sup> और साऊल कलीसिया को इस तरह तबाह करता रहा, कि घर घर घुसकर और ईमानदार मर्दों और औरतों को घसीट कर कैद करता था,

<sup>4</sup> जो इधर उधर हो गए थे, वो कलाम की खुशख़बरी देते फिरे। <sup>5</sup> और फ़िलिप्पुस सूब — ए सामरिया में जाकर लोगों में मसीह का ऐलान करने लगा।

<sup>6</sup> और जो मोज़िज़े फ़िलिप्पुस दिखाता था, लोगों ने उन्हें सुनकर और देख कर बिल — इत्फ़ाक़ उसकी बातों पर जी लगाया। <sup>7</sup> क्यूँकि बहुत सारे लोगों में से बदरूहें बड़ी आवाज़ से चिल्ला चिल्लाकर निकल गईं, और बहुत से मफ़लूज और लंगड़े अच्छे किए गए। <sup>8</sup> और उस शहर में बड़ी खुशी हुई।

<sup>9</sup> उस से पहले शामा'ऊन नाम का एक शख्स उस शहर में जादूगरी करता था, और सामरिया के लोगों को हैरान रखता और ये कहता था, कि मैं भी कोई बड़ा शख्स हूँ।

<sup>10</sup> और छोटे से बड़े तक सब उसकी तरफ़ मुतवज्जह होते और कहते थे, ये शख्स खुदा की वो कुदरत है, जिसे बड़ी कहते हैं। <sup>11</sup> वह इस लिए उस की तरफ़ मुतवज्जह होते थे, कि उस ने बड़ी मुद्दत से अपने जादू की वजह से उनको हैरान कर रखा था,

<sup>12</sup> लेकिन जब उन्होंने फ़िलिप्पुस का यक़ीन किया जो खुदा की बादशाही और ईसा मसीह के नाम की खुशख़बरी देता था, तो सब लोग चाहे मर्द हो चाहे औरत बपतिस्मा लेने लगे। <sup>13</sup> और शामा'ऊन ने खुद भी यक़ीन किया और बपतिस्मा लेकर फ़िलिप्पुस के साथ रहा, और निशान और मोज़िज़े देखकर हैरान हुआ।

<sup>14</sup> जब रसूलों ने जो येरूशलेम में थे सुना, कि सामरियों ने खुदा का कलाम कुबूल कर लिया है, तो पतरस और यूहन्ना को उन के पास भेजा। <sup>15</sup> उन्होंने ने जाकर उनके लिए दुआ की कि रूह — उल — कुद्स पाएँ। <sup>16</sup> क्यूँकि वो उस वक़्त तक उन में से किसी पर नाज़िल ना हुआ था, उन्होंने सिर्फ़ खुदावन्द ईसा के नाम पर बपतिस्मा लिया था। <sup>17</sup> फिर उन्होंने उन पर हाथ रखे, और उन्होंने रूह — उल — कुद्स पाया।

<sup>18</sup> जब शामा'ऊन ने देखा कि रसूलों के हाथ रखने से रूह — उल — कुद्स दिया जाता है, तो उनके पास रुपए लाकर कहा, <sup>19</sup> “मुझे भी यह इस्तिथार दो, कि जिस पर मैं हाथ रखूँ, वो रूह — उल — कुद्स पाए।”

20 पतरस ने उस से कहा, तेरे रुपए तेरे साथ खत्म हो, इस लिए कि तू ने खुदा की बख्शिश को रुपएऊँ से हासिल करने का खयाल किया। 21 तेरा इस काम में न हिस्सा है न बखरा क्योंकि तेरा दिल खुदा के नज़दीक खालिस नहीं। 22 पस अपनी इस बुराई से तौबा कर और खुदा से दुआ कर शायद तेरे दिल के इस खयाल की मु'आफ़ी हो।

23 क्योंकि मैं देखता हूँ कि तू पित की सी कड़वाहट और नारास्ती के बन्द में गिरफ़्तार है। 24 शमौन ने जवाब में कहा, तुम मेरे लिए खुदावन्द से दुआ करो कि जो बातें तुम ने कही उन में से कोई मुझे पेश ना आए।

25 फिर वो गवाही देकर और खुदावन्द का कलाम सुना कर येरूशलेम को वापस हुए, और सामरियों के बहुत से गाँव में खुशखबरी देते गए।

26 फिर खुदावन्द के फ़रिश्ते ने फ़िलिप्पुस से कहा, उठ कर दक्खिन की तरफ़ उस राह तक जा जो येरूशलेम से गज़ज़ा शहर को जाती है, और जंगल में है, 27 वो उठ कर खाना हुआ, तो देखो एक हब्शी खोजा आ रहा था, वो हब्शियों की मलिका कन्दाके का एक वज़ीर और उसके सारे खज़ाने का मुख्तार था, और येरूशलेम में इबादत के लिए आया था।

28 वो अपने रथ पर बैठा हुआ और यसा'याह नबी के सहीफ़े को पढ़ता हुआ वापस जा रहा था। 29 पाक रूह ने फ़िलिप्पुस से कहा, नज़दीक जाकर उस रथ के साथ होले। 30 पस फ़िलिप्पुस ने उस तरफ़ दौड़ कर उसे यसा'याह नबी का सहीफ़ा पढ़ते सुना और कहा, “जो तू पढ़ता है उसे समझता भी है?” 31 ये मुझ से क्यों कर हो सकता है जब तक कोई मुझे हिदायत ना करे? और उसने फ़िलिप्पुस से दरखास्त की कि मेरे साथ आ बैठ।

32 किताब — ए — मुक़द्दस की जो इबारत वो पढ़ रहा था, ये थी:  
“लोग उसे भेड़ की तरह जबह करने को ले गए,  
और जिस तरह बर्षा अपने बाल कतरने वाले के सामने बे — ज़बान होता है।”

उसी तरह वो अपना मुँह नहीं खोलता।

33 उसकी पस्तहाली में उसका इन्साफ़ न हुआ,  
और कौन उसकी नस्ल का हाल बयान करेगा?  
क्योंकि ज़मीन पर से उसकी ज़िन्दगी मिटाई जाती है।

34 खोजे ने फ़िलिप्पुस से कहा, “मैं तेरी मिन्नत करके पुछता हूँ, कि नबी ये किस के हक़ में कहता है, अपने या किसी दूसरे के हक़ में?” 35 फ़िलिप्पुस ने अपनी ज़बान खोलकर उसी लिखे हुए से शुरू किया और उसे ईसा की खुशखबरी दी।

36 और राह में चलते चलते किसी पानी की जगह पर पहुँचे; खोजे ने कहा, “देख पानी मौजूद है अब मुझे बपतिस्मा लेने से कौन सी चीज़ रोकती है?”

37 फ़िलिप्पुस ने कहा, अगर तू दिल ओ — जान से ईमान लाए तो बपतिस्मा ले सकता है। उसने जवाब में कहा, मैं ईमान लाता हूँ कि ईसा मसीह खुदा का बेटा है। 38 पस उसने रथ को खड़ा करने का हुक्म दिया और फ़िलिप्पुस और खोजा दोनों पानी में उतर पड़े और उसने उसको बपतिस्मा दिया।

39 जब वो पानी में से निकल कर उपर आए तो खुदावन्द का रूह फ़िलिप्पुस को उठा ले गया और खोजा ने उसे फिर न देखा, क्योंकि वो खुशी करता हुआ अपनी राह चला गया। 40 और फ़िलिप्पुस अश्दूद कस्बा में आ निकला और कैसरिया शहर में पहुँचने तक सब शहरों में खुशखबरी सुनाता गया।

## 9

???? ? ? ? ? ? ?

1 और साऊल जो अभी तक खुदावन्द के शागिर्दों को धमकाने और क़त्ल करने की धुन में था। सरदार काहिन के पास गया। 2 और उस से दमिश्क के इबादतखानों के लिए इस मज़्मून के खत माँगे कि जिनको वो इस तरीक़े पर पाए, मर्द चाहे औरत, उनको बाँधकर येरूशलेम में लाए।

3 जब वो सफ़र करते करते दमिश्क के नज़दीक पहुँचा तो ऐसा हुआ कि यकायक आसमान से एक नूर उसके पास आ, चमका। 4 और वो ज़मीन पर गिर पड़ा और ये आवाज़ सुनी “**ऐ साऊल, ऐ साऊल, तू मुझे क्यों सताता है?**”

5 उस ने पूछा, “ऐ खुदावन्द, तू कौन हैं?” उस ने कहा,, “**मैं ईसा हूँ जिसे तू सताता है।** 6 मगर उठ शहर में जा, और जो तुझे करना चाहिए वो तुझसे कहा जाएगा।” 7 जो आदमी उसके हमराह थे, वो खामोश खड़े रह गए, क्योंकि आवाज़ तो सुनते थे, मगर किसी को देखते न थे।

8 और साऊल ज़मीन पर से उठा, लेकिन जब आँखें खोलीं तो उसको कुछ दिखाई न दिया, और लोग उसका हाथ पकड़ कर दमिश्क शहर में ले गए। 9 और वो तीन दिन तक न देख सका, और न उसने खाया न पिया।

10 दमिश्क में हननियाह नाम एक शागिर्द था, उस से खुदावन्द ने रोया में कहा, “**ऐ हननियाह**” उस ने कहा, “ऐ खुदावन्द, मैं हाज़िर हूँ।” 11 खुदावन्द ने उस से कहा, “**उठ, उस गली में जा जो सीधा कहलाता है। और यहूदाह के घर में साऊल नाम तर्सुसी शहरी को पूछ ले**



क्योंकि देख वो दुआ कर रहा है। <sup>12</sup> और उस ने हननियाह नाम एक आदमी को अन्दर आते और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है, ताकि फिर बीना हो।”

<sup>13</sup> हननियाह ने जावाब दिया कि ऐ खुदावन्द, मैं ने बहुत से लोगों से इस शख्स का जिक्र सुना है, कि इस ने येरूशलेम में तेरे मुकद्दसों के साथ कैसी कैसी बुराइयां की हैं। <sup>14</sup> और यहाँ उसको सरदार काहिनों की तरफ से इस्तिथार मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सब को बाँध ले। <sup>15</sup> मगर खुदावन्द ने उस से कहा कि “तू जा, क्योंकि ये कौमों, बादशाहों और बनी इस्राईल पर मेरा नाम ज़ाहिर करने का मेरा चुना हुआ वसीला है। <sup>16</sup> और मैं उसे जता दूँगा कि उसे मेरे नाम के खातिर किस कदर दुःख उठाना पड़ेगा”

<sup>17</sup> पस हननियाह जाकर उस घर में दाखिल हुआ और अपने हाथ उस पर रखकर कहा, “ऐ भाई शाऊल उस खुदावन्द या'नी ईसा जो तुझे पर उस राह में जिस से तू आया ज़ाहिर हुआ था, उसने मुझे भेजा है, कि तू बीनाई पाए, और रूहे पाक से भर जाए।” <sup>18</sup> और फ़ौरन उसकी आँखों से छिल्के से गिरे और वो बीना हो गया, और उठ कर बपतिस्मा लिया। <sup>19</sup> फिर कुछ खाकर ताक़त पाई,

और वो कई दिन उन शागिर्दों के साथ रहा, जो दमिश्क में थे।

<sup>20</sup> और फ़ौरन इबादतख़ानों में ईसा का ऐलान करने लगा, कि वो खुदा का बेटा है। <sup>21</sup> और सब सुनने वाले हैरान होकर कहने लगे कि “क्या ये वो शख्स नहीं है, जो येरूशलेम में इस नाम के लेने वालों को तबाह करता था, और यहाँ भी इस लिए आया था, कि उनको बाँध कर सरदार काहिनों के पास ले जाए?” <sup>22</sup> लेकिन साऊल को और भी ताक़त हासिल होती गई, और वो इस बात को साबित करके कि मसीह यही है दमिश्क के रहने वाले यहूदियों को हैरत दिलाता रहा।

<sup>23</sup> और जब बहुत दिन गुज़र गए, तो यहूदियों ने उसे मार डालने का मशवरा किया। <sup>24</sup> मगर उनकी साज़िश साऊल को मालूम हो गई, वो तो उसे मार डालने के लिए रात दिन दरवाज़ों पर लगे रहे। <sup>25</sup> लेकिन रात को उसके शागिर्दों ने उसे लेकर टोकरे में बिठाया और दीवार पर से लटका कर उतार दिया।

<sup>26</sup> उस ने येरूशलेम में पहुँच कर शागिर्दों में मिल जाने की कोशिश की और सब उस से डरते थे, क्योंकि उनको यक़ीन न आता था, कि ये शागिर्द है। <sup>27</sup> मगर बरनबास ने उसे अपने साथ रसूलों के पास ले जाकर उन से बयान किया कि इस ने इस तरह राह में खुदावन्द को देखा और उसने इस से बातें की और उस ने दमिश्क में कैसी दिलेरी के साथ ईसा के नाम से ऐलान किया।

<sup>28</sup> पस वो येरूशलेम में उनके साथ जाता रहा। <sup>29</sup> और दिलेरी के साथ खुदावन्द के नाम का ऐलान करता था, और यूनानी माइल यहूदियों के साथ गुफ़्तगू और बहस भी करता था, मगर वो उसे मार डालने के दर पै थे। <sup>30</sup> और भाइयों को जब ये मालूम हुआ, तो उसे कैसरिया में ले गए, और तरसुस को खाना कर दिया।

<sup>31</sup> पस तमाम यहूदिया और गलील और सामरिया में कलीसिया को चैन हो गया और उसकी तरक्की होती गई और वो दावन्द के खौफ़ और रूह — उल — कुदूस की तसल्ली पर चलती और बढ़ती जाती थी।

<sup>32</sup> और ऐसा हुआ कि पतरस हर जगह फिरता हुआ उन मुकद्दसों के पास भी पहुँचा जो लुद्दा में रहते थे।

<sup>33</sup> वहाँ ऐनियास नाम एक मफ़्लूज को पाया जो आठ बरस से चारपाई पर पड़ा था। <sup>34</sup> पतरस ने उस से कहा, ऐ ऐनियास, ईसा मसीह तुझे शिफ़ा देता है। उठ आप अपना बिस्तर बिछा। वो फ़ौरन उठ खड़ा हुआ। <sup>35</sup> तब लुद्दा और शारून के सब रहने वाले उसे देखकर खुदावन्द की तरफ़ रुजू लाए।

<sup>36</sup> और याफ़ा शहर में एक शागिर्द थी, तबीता नाम जिसका तर्जुमा हरनी है, वो बहुत ही नेक काम और खैरात किया करती थी। <sup>37</sup> उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि वो बीमार होकर मर गई, और उसे नहलाकर बालाख़ाने में रख दिया।

<sup>38</sup> और चूँकि लुद्दा याफ़ा के नज़दीक था, शागिर्दों ने ये सुन कर कि पतरस वहाँ है दो आदमी भेजे और उस से दरख्वास्त की कि हमारे पास आने में देर न कर। <sup>39</sup> पतरस उठकर उनके साथ हो लिया, जब पहुँचा तो उसे बालाख़ाने में ले गए, और सब बेवाएँ रोती हुई उसके पास आ खड़ी हुई और जो कुरते और कपड़े हरनी ने उनके साथ में रह कर बनाए थे, दिखाने लगीं।

<sup>40</sup> पतरस ने सब को बाहर कर दिया और घुटने टेक कर दुआ की, फिर लाश की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा, ऐ तबीता उठ पस उसने आँखें खोल दीं और पतरस को देखकर उठ बैठी। <sup>41</sup> उस ने हाथ पकड़ कर उसे उठाया और मुकद्दसों और बेवाओं को बुला कर उसे ज़िन्दा उनके सुपुर्द किया। <sup>42</sup> ये बात सारे याफ़ा में मशहूर हो गई, और बहुत सारे खुदावन्द पर ईमान ले आए। <sup>43</sup> और ऐसा हुआ कि वो बहुत दिन याफ़ा में शमौन नाम दब्बाग़ के यहाँ रहा।

## 10

?????????? ?? ???? ?? ???????

1 कैसरिया शहर में कुर्नेलियुस नाम एक शख्स था। वह सौ फ़ौजियों का सूबेदार था, जो अतालियानी कहलाती है। 2 वो दीनदार था, और अपने सारे घराने समेत खुदा से डरता था, और यहूदियों को बहुत खैरात देता और हर वक़्त खुदा से दुआ करता था।

3 उस ने तीसरे पहर के करीब रोया में साफ़ साफ़ देखा कि खुदा का फ़रिश्ता मेरे पास आकर कहता है, “कुर्नेलियुस!” 4 उसने उस को ग़ौर से देखा और डर कर कहा खुदावन्द क्या है? उस ने उस से कहा, तेरी दुआएँ और तेरी खैरात यादगारी के लिए खुदा के हुज़ूर पहुँची। 5 अब याफ़ा में आदमी भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। 6 वो शमौन दब्बाग़ के यहाँ मेहमान है, जिसका घर समुन्दर के किनारे है।

7 और जब वो फ़रिश्ता चला गया जिस ने उस से बातें की थी, तो उस ने दो नौकरों को और उन में से जो उसके पास हाज़िर रहा करते थे, एक दीनदार सिपाही को बुलाया। 8 और सब बातें उन से बयान कर के उन्हें याफ़ा में भेजा।

9 दूसरे दिन जब वो राह में थे, और शहर के नज़दीक पहुँचे तो पतरस दोपहर के करीब छत पर दुआ करने को चढ़ा। 10 और उसे भूख लगी, और कुछ खाना चाहता था, लेकिन जब लोग तैयारी कर रहे थे, तो उस पर बेखुदी छा गई। 11 और उस ने देखा कि आस्मान खुल गया और एक चीज़ बड़ी चादर की तरह चारों कोनों से लटकती हुई ज़मीन की तरफ़ उतर रही है। 12 जिसमें ज़मीन के सब किस्म के चौपाए, कीड़े मकोड़े और हवा के परिन्दे हैं।

13 और उसे एक आवाज़ आई कि ऐ पतरस, **“उठ जब ह कर और खा,”** 14 मगर पतरस ने कहा, “ऐ खुदावन्द हरगिज़ नहीं क्योंकि मैं ने कभी कोई हुराम या नापाक चीज़ नहीं खाई।” 15 फिर दूसरी बार उसे आवाज़ आई, कि **“जिनको खुदा ने पाक ठहराया है तू उन्हें हुराम न कह”** 16 तीन बार ऐसा ही हुआ, और फ़ौरन वो चीज़ आसमान पर उठा ली गई।

17 जब पतरस अपने दिल में हैरान हो रहा था, कि ये रोया जो मैं ने देखी क्या है, तो देखो वो आदमी जिन्हें कुर्नेलियुस ने भेजा था, शमौन के घर पहुँच कर के दरवाज़े पर आ खड़े हुए। 18 और पुकार कर पहुँचने लगे कि शमौन जो पतरस कहलाता है? “यही मेहमान है।”

19 जब पतरस उस ख़्वाब को सोच रहा था, तो रूह ने उस से कहा देख तीन आदमी तुझे पहुँच रहे हैं। 20 पस, उठ कर नीचे जा और वे — खटके उनके साथ हो ले; क्योंकि मैं ने ही उनको भेजा है। 21 पतरस ने उतर कर

उन आदमियों से कहा, “देखो जिसको तुम पहुँचते हो वो मैं ही हूँ तुम किस वजह से आये हो।”

22 उन्होंने कहा, “कुर्नेलियुस सूबेदार जो रास्तबाज़ और खुदा तरस आदमी और यहूदियों की सारी क्रौम में नेक नाम है उस ने पाक फ़रिश्ते से हिदायत पाई कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से कलाम सुने।” 23 पस उस ने उन्हें अन्दर बुला कर उनकी मेहमानी की, और दूसरे दिन वो उठ कर उनके साथ खाना हुआ,

और याफ़ा में से कुछ भाई उसके साथ हो लिए।

24 वो दूसरे रोज़ कैसरिया में दाखिल हुए, और कुर्नेलियुस अपने रिश्तेदारों और दिली दोस्तों को जमा कर के उनकी राह देख रहा था।

25 जब पतरस अन्दर आने लगा तो ऐसा हुआ कि कुर्नेलियुस ने उसका इस्तक़बाल किया और उसके क़दमों में गिर कर सिज्दा किया। 26 लेकिन पतरस ने उसे उठा कर कहा, “खड़ा हो, मैं भी तो इंसान हूँ।”

27 और उससे बातें करता हुआ अन्दर गया और बहुत से लोगों को इकट्ठा पा कर। 28 उनसे कहा तुम तो जानते हो कि यहूदी को ग़ैर क्रौम वाले से सोहबत रखना या उसके यहाँ जाना ना जायज़ है मगर खुदा ने मुझ पर ज़ाहिर किया कि मैं किसी आदमी को नजिस या नापाक न कहूँ। 29 इसी लिए जब मैं बुलाया गया तो बे'उज़र चला आया, पस अब मैं पहुँचता हूँ कि मुझे किस बात के लिए बुलाया है?

30 कुर्नेलियुस ने कहा “इस वक़्त पूरे चार रोज़ हुए कि मैं अपने घर तीसरे पहर दुआ कर रहा था। और क्या देखता हूँ। कि एक शख्स चमकदार पोशाक पहने हुए मेरे सामने खड़ा हुआ।” 31 और कहा कि ऐ कुर्नेलियुस तेरी दुआ सुन ली गई और तेरी खैरात की खुदा के हुज़ूर याद हुई। 32 पस किसी को याफ़ा में भेज कर शमौन को जो पतरस कहलाता है अपने पास बुला, वो समुन्दर के किनारे शमौन दब्बाग़ के घर में मेहमान है। 33 पस उसी दम में ने तेरे पास आदमी भेजे और तूने ख़ूब किया जो आ गया, अब हम सब खुदा के हुज़ूर हाज़िर हैं ताकि जो कुछ खुदावन्द ने फ़रमाया है उसे सुनें।

34 पतरस ने ज़बान खोल कर कहा,

अब मुझे पूरा यक़ीन हो गया कि खुदा किसी का तरफ़दार नहीं। 35 बल्कि हर क्रौम में जो उस से डरता और रास्तबाज़ी करता है, वो उसको पसन्द आता है।

36 जो कलाम उस ने बनी इस्राईल के पास भेजा, जब कि ईसा मसीह के ज़रिए जो सब का खुदा है, सुलह की खुशख़बरी दी। 37 इस बात को तुम जानते हो जो यूहन्ना

के बपतिस्मे की मनादी के बाद गलील से शुरू होकर तमाम यहूदिया सूबा में मशहूर हो गई। <sup>38</sup> कि खुदा ने ईसा नासरी को रूह — उल — कुद्दूस और कुदरत से किस तरह मसह किया, वो भलाई करता और उन सब को जो इब्नीस के हाथ से ज़ुल्म उठाते थे शिफ़ा देता फिरा, क्योंकि खुदा उसके साथ था।

<sup>39</sup> और हम उन सब कामों के गवाह हैं, जो उस ने यहूदियों के मुल्क और येरूशलेम में किए, और उन्होंने ने उस को सलीब पर लटका कर मार डाला। <sup>40</sup> उस को खुदा ने तीसरे दिन जिलाया और ज़ाहिर भी कर दिया। <sup>41</sup> न कि सारी उम्मत पर बल्कि उन गवाहों पर जो आगे से खुदा के चुने हुए थे, या'नी हम पर जिन्होंने ने उसके मुद्दों में से जी उठने कि बाद उसके साथ खाया पिया।

<sup>42</sup> और उस ने हमें हुक्म दिया कि उम्मत में ऐलान करो और गवाही दो कि ये वही है जो खुदा की तरफ़ से ज़िन्दों और मुद्दों का मुन्सिफ़ मुक़रर किया गया। <sup>43</sup> इस शख्स की सब नबी गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर ईमान लाएगा, उस के नाम से गुनाहों की मु'आफ़ी हासिल करेगा।

<sup>44</sup> पतरस ये बातें कह ही रहा था, कि रूह — उल — कुद्दूस उन सब पर नाज़िल हुआ, जो कलाम सुन रहे थे। <sup>45</sup> और पतरस के साथ जितने मख्तून ईमानदार आए थे, वो सब हैरान हुए कि ग़ैर क्रौमों पर भी रूह — उल — कुद्दूस की बख़्शिश जारी हुई।

<sup>46</sup> क्योंकि उन्हें तरह तरह की ज़बाने बोलते और खुदा की तारीफ़ करते सुना; पतरस ने जवाब दिया। <sup>47</sup> “क्या कोई पानी से रोक सकता है, कि बपतिस्मा न पाएँ, जिन्होंने ने हमारी तरह रूह — उल — कुद्दूस पाया?” <sup>48</sup> और उस ने हुक्म दिया कि उन्हें ईसा मसीह के नाम से बपतिस्मा दिया जाए इस पर उन्होंने ने उस से दरखास्त की कि चन्द रोज़ हमारे पास रह।

## 11

~~~~~

¹ रसूलों और भाइयों ने जो यहूदिया में थे, सुना कि ग़ैर क्रौमों ने भी खुदा का कलाम कुबूल किया है। ² जब पतरस येरूशलेम में आया तो मख्तून ईमानदार उस से ये बहस करने लगे ³ “तू, ना मख्तून ईमानदारों के पास गया और उन के साथ खाना खाया।”

⁴ पतरस ने शुरू से वो काम तरतीबवार उन से बयान किया कि। ⁵ मैं याफ़ा शहर में दुआ कर रहा था, और बेखुदी की हालत में एक ख़ाब देखा। कि कोई चीज़ बड़ी चादर की तरह चारों कोनों से लटकती हुई आसमान से उतर कर मुझ तक आई। ⁶ उस पर जब मैंने ग़ौर से नज़र

की तो ज़मीन के चौपाए और जंगली जानवर और कीड़े मकोड़े और हवा के परिन्दे देखे।

⁷ और ये आवाज़ भी सुनी कि **“ऐ पतरस उठ ज़बह कर और खा!”** ⁸ लेकिन मैं ने कहा **“ऐ खुदावन्द हरगिज़ नहीं 'क्यूँकि कभी कोई हराम या नापाक चीज़ खाया ही नहीं।’”** ⁹ इसके जावाब में दूसरी बार आसमान से आवाज़ आई; **“जिनको खुदा ने पाक ठहराया है; तू उन्हें हराम न कह।”** ¹⁰ तीन बार ऐसा ही हुआ, फिर वो सब चीज़ें आसमान की तरफ़ खींच ली गई।

¹¹ और देखो' उसी वक़्त तीन आदमी जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गए थे, उस घर के पास आ खड़े हुए जिस में हम थे। ¹² रूह ने मुझ से कहा कि तू बिला इम्तियाज़ उनके साथ चला जा और ये छे:भाई भी मेरे साथ हो लिए और हम उस शख्स के घर में दाख़िल हुए। ¹³ उस ने हम से बयान किया कि मैंने फ़रिश्ते को अपने घर में खड़े हुए देखा'जिसने मुझ से कहा, याफ़ा में आदमी भेजकर शमौन को बुलवा ले जो पतरस कहलाता है। ¹⁴ वो तुझ से ऐसी बातें कहेगा जिससे तू और तेरा सारा घराना नज़ात पाएगा।

¹⁵ जब मैं कलाम करने लगा तो रूह — उल — कुद्दूस उन पर इस तरह नाज़िल हुआ जिस तरह शुरू में हम पर नाज़िल हुआ था। ¹⁶ और मुझे खुदावन्द की वो बात याद आई, जो उसने कही थी **“यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया मगर तुम रूह — उल — कुद्दूस से बपतिस्मा पाओगे।”**

¹⁷ पस जब खुदा ने उस को भी वही ने'मत दी जो हम को खुदावन्द ईसा मसीह पर ईमान लाकर मिली थी? तो मैं कौन था कि खुदा को रोक सकता। ¹⁸ वो ये सुनकर चुप रहे और खुदा की बड़ाई करके कहने लगे, “फिर तो बेशक खुदा ने ग़ैर क्रौमों को भी ज़िन्दगी के लिए तौबा की तौफ़ीक़ दी है।”

¹⁹ पस, जो लोग उस मुसीबत से इधर उधर हो गए थे जो स्तिफ़नुस कि ज़रिए पड़ी थी वो फिरते फिरते फ़ीनिके सूबा और कुप्रुस टापू और आन्ताकिया शहर में पहुँचे; मगर यहूदियों के सिवा और किसी को कलाम न सुनाते थे। ²⁰ लेकिन उन में से चन्द कुप्रुसी और कुरेनी थे, जो आन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी खुदावन्द ईसा मसीह की खुशख़बरी की बातें सुनाने लगे। ²¹ और खुदावन्द का हाथ उन पर था और बहुत से लोग ईमान लाकर खुदावन्द की तरफ़ रुजू हुए।

²² उन लोगों की ख़बर येरूशलेम की कलीसिया के कानों तक पहुँची और उन्होंने ने बरनबास को आन्ताकिया तक भेजा। ²³ वो पहुँचकर और खुदा का फ़ज़ल देख कर

खुश हुआ, और उन सब को नसीहत की कि दिली इरादे से खुदावन्द से लिपटे रहो। ²⁴ क्योंकि वो नेक मर्द और रूह — उल — कुद्स और ईमान से मा'मूर था, और बहत से लोग खुदावन्द की कलीसिया में आ मिले।

25 फिर वो साऊल की तलाश में तरसुस को चला गया। 26 और जब वो मिला तो उसे आन्ताकिया में लाया और ऐसा हुआ कि वो साल भर तक कलीसिया की जमा'अत में शामिल होते और बहुत से लोगों को ता'लीम देते रहे और शागिर्द पहले आन्ताकिया में ही मसीही कहलाए।

²⁷ उन ही दिनों में चन्द नबी येरुशलेम से आन्ताकिया में आए। ²⁸ उन में से एक जिसका नाम अग्बुस था खड़े होकर रूह की हिदायत से जाहिर किया कि तमाम दुनियाँ में बड़ा काल पड़ेगा और क्लोदियुस के अहद में वाके हआ। *

29 पस, शागिर्दाँ ने तजवीज़ की अपने अपने हैसियत कि मुवाफ़िक़ यहूदिया में रहने वाले भाइयों की खिदमत के लिए कुछ भेजे। 30 चुनाँचे उन्होंने ऐसा ही किया और बरनबास और साऊल के हाथ बज़ूगों के पास भेजा।

12

1 तक्ररीबन उसी वक़्त हेरोदेस बादशाह ने सताने के लिए कलीसिया में से कुछ पर हाथ डाला*। 2 और यहन्ना के भाई या'क़ब को तलवार से क़त्ल किया।

3 जब देखा कि ये बात यहूदी अगुवों को पसन्द आई, तो पतरस को भी गिरफ्तार कर लिया। ये ईद 'ए फ़तीर के दिन थे। 4 और उसको पकड़ कर कैद किया और निगहबानी के लिए चार चार सिपाहियों के चार पहरो में रखा इस इरादे से कि फ़सह के बाद उसको लोगों के सामने पेश करे।

⁵ पस, कैद खाने में तो पतरस की निगहबानी हो रही थी, मगर कलीसिया उसके लिए दिलो' जान से खुदा से दुआ कर रही थी। ⁶ और जब हेरोदेस उसे पेश करने को था, तो उसी रात पतरस दो जंजीरों से बँधा हुआ दो सिपाहियों के बीच सोता था, और पहरें वाले दरवाज़े पर कैदखाने की निगहबानी कर रहे थे।

7 कि देखो, खुदावन्द का एक फ़रिश्ता खड़ा हुआ और उस कोठरी में नूर चमक गया और उस ने पतरस की पसली पर हाथ मार कर उसे जगाया और कहा कि जल्द उठ! और ज़ंजीरों उसके हाथ से खुल पड़ीं। 8 फिर फ़रिश्ते ने उस से कहा, “कमर बाँध और अपनी जूती पहन ले।”

उस ने ऐसा ही किया, फिर उस ने उस से कहा, “अपना चोगा पहन कर मेरे पीछे हो ले।”

9 वो निकल कर उसके पीछे हो लिया, और ये न जाना कि जो कुछ फ़रिश्ते की तरफ़ से हो रहा है वो वाक़'ई है बल्कि ये समझा कि ख़्वाब देख रहा हूँ। 10 पस, वो पहले और दूसरे हल्के में से निकलकर उस लोहे के फाटक पर पहुँचे, जो शहर की तरफ़ है। वो आप ही उन के लिए खुल गया, पस वो निकलकर गली के उस किनारे तक गए; और फ़ौरन फ़रिश्ता उस के पास से चला गया।

11 और पतरस ने होश में आकर कहा कि अब मैंने सच जान लिया कि खुदावन्द ने अपना फ़रिश्ता भेज कर मुझे हेरोदेस के हाथों से छुड़ा लिया, और यहूदी क़ौम की सारी उम्मीद तोड़ दी। 12 और इस पर ग़ौर कर के उस यूहन्ना की माँ मरियम के घर आया, जो मरकुस कहलाता है, वहाँ बहुत से आदमी जमा हो कर दुआ कर रहे थे।

13 जब उस ने फाटक की खिड़की खटखटाई, तो रुदी नाम एक लौंडी आवाज़ सुनने आई। 14 और पतरस की आवाज़ पहचान कर खुशी के मारे फाटक न खोला, बल्कि दौड़कर अन्दर खबर की कि पतरस फाटक पर खड़ा है! 15 उन्होंने ने उस से कहा, “तू दिवानी है लेकिन वो यक़ीन से कहती रही कि यूँ ही है! उन्होंने कहा कि उसका फ़रिश्ता होगा।”

16 मगर पतरस खटखटाता रहा पस, उन्होंने ने खिड़की खोली और उस को देख कर हैरान हो गए। 17 उस ने उन्हें हाथ से इशारा किया कि चुप रहें। और उन से बयान किया कि खुदावन्द ने मुझे इस तरह कैदखाने से निकाला फिर कहा कि या'कूब और भाइयों को इस बात की खबर देना, और खाना होकर दूसरी जगह चला गया।

18 जब सुबह हुई तो सिपाही बहुत घबराए, कि पतरस क्या हुआ। 19 जब हेरोदेस ने उस की तलाश की और न पाया तो पहरें वालों की तहकीकात करके उनके क़त्ल का हुक्म दिया; और यहूदिया सूबे को छोड़ कर कैसरिया शहर में जा बसा।

20 और वो सूर और सैदा के लोगों से निहायत नाखुश था, पस वो एक दिल हो कर उसके पास आए, और बादशाह के दरबान बलस्तुस को अपनी तरफ करके सुलह चाही, इसलिए कि उन के मुल्क को बादशाह के मुल्क से इम्दाद पहुँचती थी। 21 पस, हेरोदेस एक दिन मुक़र्रर करके और शाहाना पोशाक पहन कर तख्त — ए, अदालत पर बैठा, और उन से कलाम करने लगा।

* **11:28** 11:28 ये वाक्या मसीह की सलीबी मौत के 41 से 54 में हुआ पहला पोता था

* **12:1** 12:1 बादशाह हेरोद बादशाह अगिरपा जो बड़ा हेरोद का

22 लोग पुकार उठे कि ये तो खुदा की आवाज़ है न इंसान की, “यह खुदावन्द की आवाज़ है, इन्सान की नहीं।” 23 उसी वक़्त खुदा के फ़रिश्ते ने उसे मारा; इसलिए कि उस ने खुदा की बड़ाई नहीं की और वो कीड़े पड़ कर मर गया।

24 मगर खुदा का कलाम तरक्की करता और फैलता गया।

25 और बरनबास और साऊल अपनी खिदमत पूरी करके और यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है साथ लेकर, येरूशलेम से वापस आए।

13

22222222 22 22222 22 22222 22222

1 अन्ताकिया में उस कलीसिया के मुता'ल्लिक जो वहाँ थी, कई नबी और मु'अल्लिम थे या'नी बरनबास और शमौन जो काला कहलाता है, और लुकियुस कुरेनी और मनाहेम जो चौथाई मुल्क के हाकिम हेरोदेस के साथ पला था, और साऊल। 2 जब वो खुदावन्द की इबादत कर रहे और रोज़े रख रहे थे, तो रूह — उल — कुदूस ने कहा, “मेरे लिए बरनबास और साऊल को उस काम के वास्ते मख्सूस कर दो जिसके वास्ते मैं ने उनको बुलाया है।” 3 तब उन्होंने ने रोज़ा रख कर और दुआ करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें रुख्सत किया।

4 पस, वो रूह — उल — कुदूस के भेजे हुए सिलोकिया को गए, और वहाँ से जहाज़ पर कुपूस को चले। 5 और सलमीस शहर में पहुँचकर यहूदियों के इबादतख़ानों में खुदा का कलाम सुनाने लगे और यूहन्ना उनका खादिम था।

6 और उस तमाम टापू में होते हुए पाफ़ुस शहर तक पहुँचे वहाँ उन्हें एक यहूदी जादूगर और झूठा नबी बरयिसू नाम का मिला। 7 वो सिरगियुस पौलुस सूबेदार के साथ था जो सहिब — ए — तमीज़ आदमी था, इस ने बरनबास और साऊल को बुलाकर खुदा का कलाम सुनना चाहा। 8 मगर इलीमास जादूगर ने (यही उसके नाम का तर्जुमा है), उनकी मुखालिफ़त की और सूबेदार को ईमान लाने से रोकना चाहा।

9 और साऊल* ने जिसका नाम पौलुस भी है रूह — उल — कुदूस से भर कर उस पर ग़ौर से देखा। 10 और कहा ऐ इब्नीस की औलाद तू तमाम मक्कारी और शरारत से भरा हुआ और हर तरह की नेकी का दुश्मन है। क्या दावन्द के सीधे रास्तों को बिगाड़ने से बाज़ न आएगा

* 13:9 13:9 साऊल इब्रानी नाम है और पौलुस यूनानी नाम है घटना और बढ़ना सिखाया — रेगिस्तान

11 अब देख तुझ पर खुदावन्द का ग़ज़ब है और तू अन्धा होकर कुछ मुद्दत तक सूरज को न देखे गा। उसी वक़्त अँधेरा उस पर छा गया, और वो ढूँडता फिरा कि कोई उसका हाथ पकड़कर ले चले। 12 तब सूबेदार ये माजरा देखकर और खुदावन्द की तालीम से हैरान हो कर ईमान ले आया।

13 फिर पौलुस और उसके साथी पाफ़ुस शहर से जहाज़ पर रवाना होकर पम्फ़ीलिया मुल्क के पिरगा शहर में आए; और यूहन्ना उनसे जुदा होकर येरूशलेम को वापस चला गया। 14 और वो पिरगा शहर से चलकर पिसदिया मुल्क के अन्ताकिया शहर में पहुँचे, और सबत के दिन इबादतख़ाने में जा बैठे। 15 फिर तौरेत और नबियों की किताब पढ़ने के बाद इबादतख़ाने के सरदारों ने उन्हें कहला भेजा “ऐ भाइयों अगर लोगों की नसीहत के वास्ते तुम्हारे दिल में कोई बात हो तो बयान करो।”

16 पस, पौलुस ने खड़े होकर और हाथ से इशारा करके कहा, ऐ इस्राईलियो और ऐ खुदा से डरनेवाले सुनो! 17 इस उम्मत इस्राईल के खुदा ने हमारे बाप दादा को चुन लिया और जब ये उम्मत मुल्के मिस्र में परदेसियों की तरह रहती थी, उसको सरबलन्द किया और ज़बरदस्त हाथ से उन्हें वहाँ से निकाल लाया। 18 और कोई चालीस बरस तक वीरानों में† उनकी आदतों की बर्दाश्त करता रहा,

19 और कनान के मुल्क में सात क़ौमों को लूट करके तक्रीबन साढ़े चार सौ बरस में उनका मुल्क इन की मीरास कर दिया। 20 और इन बातों के बाद शमुएल नबी के ज़माने तक उन में क़ाज़ी मुक़र्रर किए।

21 इस के बाद उन्होंने ने बादशाह के लिए दरखास्त की और खुदा ने बिनयामीन के क़बीले में से एक शख्स साऊल क्रीस के बेटे को चालीस बरस के लिए उन पर मुक़र्रर किया।

22 फिर उसे हटा करके दाऊद को उन का बादशाह बनाया। जिसके बारे में उस ने ये गवाही दी कि मुझे एक शख्स यस्सी का बेटा दाऊद मेरे दिल के मु'वाफ़ि़क़ मिल गया। वही मेरी तमाम मर्ज़ी को पूरा करेगा।

23 इसी की नस्ल में से खुदा ने अपने वा'दे के मुताबिक़ इस्राईल के पास एक मुन्जी या'नी ईसा को भेज दिया।

24 जिस के आने से पहले यूहन्ना ने इस्राईल की तमाम उम्मत के सामने तौबा के बपतिस्मे का ऐलान किया।

25 और जब यूहन्ना अपना दौर पूरा करने को था, तो उस ने कहा कि तुम मुझे क्या समझते हो? मैं वो नहीं

† 13:18 13:18 चालीस बरस तक वीरानों में पौलुस को खुदा ने वीरान में

बल्कि देखो मेरे बाद वो शरूख आने वाला है, जिसके पाँव की जूतियों का फ्रीता मैं खोलने के लायक नहीं।

26 ऐ भाइयों! अब्रहाम के बेटों और ऐ खुदा से डरने वालों इस नजात का कलाम हमारे पास भेजा गया। 27 क्योंकि येरूशलेम के रहने वालों और उन के सरदारों ने न उसे पहचाना और न नबियों की बातें समझीं, जो हर सबत को सुनाई जाती हैं। इस लिए उस पर फ़तवा देकर उनको पूरा किया।

28 और अगरचे उस के क़त्ल की कोई वजह न मिली तोभी उन्होंने पीलातुस से उसके क़त्ल की दरख्वास्त की। 29 और जो कुछ उसके हक़ में लिखा था, जब उसको तमाम कर चुके तो उसे सलीब पर से उतार कर क़बर में रखवा।

30 लेकिन खुदा ने उसे मुर्दों में से जिलाया। 31 और वो बहुत दिनों तक उनको दिखाई दिया, जो उसके साथ गलील से येरूशलेम आए थे, उम्मत के सामने अब वही उसके गवाह हैं।

32 और हम तुमको उस वा'दे के बारे में जो बाप दादा से किया गया था, ये खुशख़बरी देते हैं। 33 कि खुदा ने ईसा को जिला कर हमारी औलाद के लिए उसी वा'दे को पूरा किया। चुनाँचे दूसरे मज़मूर में लिखा है, कि तू मेरा बेटा है, आज तू मुझ से पैदा हुआ। 34 और उसके इस तरह मुर्दों में से जिलाने के बारे में फिर कभी न मरे और उस ने यूँ कहा, कि मैं दाऊद की पाक और सच्ची ने'अमतें तुम्हें दूँगा।'

35 चुनाँचे वो एक और मज़मूर में भी कहता है, कि तू अपने मुक़द्दस के सड़ने की नौबत पहुँचने न देगा।'

36 क्योंकि दाऊद तो अपने वक़्त में खुदा की मर्ज़ी के ताबे' दार रह कर सो गया, और अपने बाप दादा से जा मिला, और उसके सड़ने की नौबत पहुँची। 37 मगर जिसको खुदा ने जिलाया उसके सड़ने की नौबत न पहुँची।

38 पस, ऐ भाइयों! तुम्हें मा' लूम हो कि उसी के वसीले से तुम को गुनाहों की मु'आफ़ी की ख़बर दी जाती है। 39 और मूसा की शरी' अत के ज़रिए जिन बातों से तुम बरी नहीं हो सकते थे, उन सब से हर एक ईमान लाने वाला उसके ज़रिए बरी होता है।

40 पस, ख़बरदार! ऐसा न हो कि जो नबियों की किताब में आया है वो तुम पर सच आए।

41 ऐ तहकीर करने वालों, देखो, तअ'ज्जुब करो और मिट जाओ:

क्योंकि मैं तुम्हारे ज़माने में एक काम करता हूँ ऐसा काम कि अगर कोई तुम से बयान करे तो कभी उसका यक़ीन न करोगे।

42 उनके बाहर जाते वक़्त लोग मिन्नत करने लगे कि अगले सबत को भी ये बातें सुनाई जाएँ। 43 जब मजलिस ख़त्म हुई तो बहुत से यहूदी और खुदा परस्त नए मुरीद यहूदी पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए, उन्होंने ने उन से कलाम किया और तरगीब दी कि खुदा के फ़ज़ल पर काईम रहो।

44 दूसरे सबत को तक़रीबन सारा शहर खुदा का कलाम सुनने को इकट्ठा हुआ। 45 मगर यहूदी इतनी भीड़ देखकर हसद से भर गए, और पौलुस की बातों की मुख़ालिफ़त करने और कुफ़र बकने लगे।

46 पौलुस और बरनबास दिलेर होकर कहने लगे, ज़रूर था, कि खुदा का कलाम पहले तुम्हें सुनाया जाए; लेकिन चूँकि तुम उसको रद्द करते हो। और अपने आप को हमेशा की ज़िन्दगी के नाक़ाबिल ठहराते हो, तो देखो हम ग़ैर क़ौमों की तरफ़ मुतवज्जह होते हैं। 47 क्योंकि खुदा ने हमें ये हुक्म दिया है कि

“मैंने तुझ को ग़ैर क़ौमों के लिए नूर मुक़र्रर किया ताकि तू ज़मीन की इन्तिहा तक नजात का ज़रिया हो।”

48 ग़ैर क़ौम वाले ये सुनकर खुश हुए और खुदा के कलाम की बड़ाई करने लगे, और जितने हमेशा की ज़िन्दगी के लिए मुक़र्रर किए गए थे, ईमान ले आए।

49 और उस तमाम इलाक़े में खुदा का कलाम फैल गया।

50 मगर यहूदियों ने खुदा परस्त और इज्जत दार औरतों और शहर के रईसों को उभारा और पौलुस और बरनबास को सताने पर आमादा करके उन्हें अपनी सरहदों से निकाल दिया। 51 ये अपने पाँव की खाक उनके सामने झाड़ कर इकुनियुम शहर को गए। 52 मगर शागिर्द खुशी और रूह — उल — कुदूस से भरते रहे।

14

????? ?? ??????? ?????????? ???

1 और इकुनियुम में ऐसा हुआ कि वो साथ साथ यहूदियों के इबादत खाने में गए। और ऐसी तक़रीर की कि यहूदियों और यूनानियों दोनों की एक बड़ी जमा'अत ईमान ले आई। 2 मगर नाफ़रमान यहूदियों ने ग़ैर क़ौमों के दिलों में जोश पैदा करके उनको भाइयों की तरफ़ बदगुमान कर दिया।

3 पस, वो बहुत ज़माने तक वहाँ रहे, और खुदावन्द के भरोसे पर हिम्मत से कलाम करते थे, और वो उनके हाथों से निशान और अजीब काम कराकर, अपने फ़ज़ल के कलाम की गवाही देता था। 4 लेकिन शहर के लोगों में फूट पड़ गई। कुछ यहूदियों की तरफ़ हो गए। कुछ रसूलों की तरफ़।

5 मगर जब ग़ैर क्रौम वाले और यहूदी उन्हें बे'इज्जत और पथराव करने को अपने सरदारों समेत उन पर चढ़ आए। 6 तो वो इस से वाकिफ़ होकर लुकाउनिया मुल्क के शहरों लुस्तरा और दिरबे और उनके आस — पास में भाग गए। 7 और वहाँ खुशख़बरी सुनाते रहे।

8 और लुस्तरा में एक शख्स बैठा था, जो पाँव से लाचार था। वो पैदाइशी लंगड़ा था, और कभी न चला था। 9 वो पौलुस को बातें करते सुन रहा था। और जब इस ने उसकी तरफ़ ग़ौर करके देखा कि उस में शिफ़ा पाने के लायक़ ईमान है। 10 तो बड़ी आवाज़ से कहा कि, “अपने पाँव के बल सीधा खड़ा हो पस, वो उछल कर चलने फिरने लगा।”

11 लोगों ने पौलुस का ये काम देखकर लुकाउनिया की बोली में बुलन्द आवाज़ से कहा “कि आदमियों की सूरत में देवता उतर कर हमारे पास आए हैं।” 12 और उन्होंने बरनबास को ज़ियूस* कहा, और पौलुस को हरमेस इसलिए कि ये कलाम करने में सबक़त रखता था। 13 और ज़ियूस कि उस मन्दिर का पुजारी जो उनके शहर के सामने था, बैल और फूलों के हार फाटक पर लाकर लोगों के साथ कुर्बानी करना चाहता था।”

14 जब बरनबास और पौलुस रसूलों ने ये सुना तो अपने कपड़े फाड़ कर लोगों में जा कूदे, और पुकार पुकार कर। 15 कहने लगे, लोगो तुम ये क्या करते हो? हम भी तुम्हारी हम तबी'अत इंसान हैं और तुम्हें खुशख़बरी सुनाते हैं ताकि इन बातिल चीज़ों से किनारा करके ज़िन्दा खुदा की तरफ़ फ़िरो, जिस ने आसमान और ज़मीन और समुन्दर और जो कुछ उन में है, पैदा किया। 16 उस ने अगले ज़माने में सब क्रौमों को अपनी अपनी राह पर चलने दिया।

17 तोभी उस ने अपने आप को बेगवाह न छोड़ा। चुनाँचे, उस ने महरबानियाँ कीं और आसमान से तुम्हारे लिए पानी बरसाया और बड़ी बड़ी पैदावार के मौसम अता' किए और तुम्हारे दिलों को खुराक और खुशी से भर दिया। 18 ये बातें कहकर भी लोगों को मुश्किल से रोका कि उन के लिए कुर्बानी न करें।

19 फिर कुछ यहूदी अन्ताकिया और इकुनियुम से आए और लोगों को अपनी तरफ़ करके पौलुस पर पथराव किया और उसको मुर्दा समझकर शहर के बाहर घसीट ले गए। 20 मगर जब शागिर्द उसके आस पास आ खड़े हुए, तो वो उठ कर शहर में आया, और दूसरे दिन बरनबास के साथ दिरबे शहर को चला गया।

21 और वो उस शहर में खुशख़बरी सुना कर और बहुत से शागिर्द करके लुस्तरा और इकुनियुम और अन्ताकिया को वापस आए। 22 और शागिर्दों के दिलों को मज़बूत करते, और ये नसीहत देते थे, कि ईमान पर क़ाईम रहो और कहते थे “ज़रूर है कि हम बहुत मुसीबतें सहकर खुदा की बादशाही में दाखिल हों।”

23 और उन्होंने हर एक कलीसिया में उनके लिए बुज़ुर्गों को मुक़रर किया और रोज़ा रखकर और दुआ करके उन्हें दावन्द के सुपुर्द किया, जिस पर वो ईमान लाए थे। 24 और पिसदिया मुल्क में से होते हुए पम्फ़ीलिया मुल्क में पहुँचे। 25 और पिरगे में कलाम सुनाकर अत्तलिया को गए।

26 और वहाँ से जहाज़ पर उस अन्ताकिया में आए, जहाँ उस काम के लिए जो उन्होंने अब पूरा किया खुदा के फ़ज़ल के सुपुर्द किए गए थे। 27 वहाँ पहुँचकर उन्होंने कलीसिया को जमा किया और उन के सामने बयान किया कि खुदा ने हमारे ज़रिए क्या कुछ किया और ये कि उस ने ग़ैर क्रौमों के लिए ईमान का दरवाज़ा खोल दिया। 28 और वो ईमानदारों के पास मुद्दत तक रहे।

15

???????? ?? ???? ??

1 फिर कुछ लोग यहूदिया से आ कर भाइयों को यह तालीम देने लगे, “ज़रूरी है कि आप का मूसा की शरी'अत के मुताबिक़ ख़तना किया जाए, वनाँ आप नजात नहीं पा सकेंगे।” 2 पस, जब पौलुस और बरनबास की उन से बहुत तक़ार और बहस हुई तो कलीसिया ने ये ठहराया कि पौलुस और बरनबास और उन में से चन्द शख्स इस मस्ले के लिए रसूलों और बुज़ुर्गों के पास येरूशलेम जाएँ।

3 पस, कलीसिया ने उनको खाना किया और वो ग़ैर क्रौमों को रुजू लाने का बयान करते हुए फ़ीनिके और सामरिया सूबे से गुज़रे और सब भाइयों को बहुत खुश करते गए। 4 जब येरूशलेम में पहुँचे तो कलीसिया और रसूल और बुज़ुर्ग उन से खुशी के साथ मिले। और उन्होंने ने सब कुछ बयान किया जो खुदा ने उनके ज़रिए किया था।

5 मगर फ़रीसियों के फ़िर्के में से जो ईमान लाए थे, उन में से कुछ ने उठ कर कहा “कि उनका ख़तना कराना और उनको मूसा की शरी'अत पर अमल करने का हुक्म देना ज़रूरी है।” 6 पस, रसूल और बुज़ुर्ग इस बात पर ग़ौर करने के लिए जमा हुए।

* 14:12 14:12 ज़ियूस ये बड़ा खुदा है और हरमेस छोटा खुदा या उसका पैग़म्बर यहूदी और यूनानी लोग ज़ियूस को बड़ा खुदा कहते थे

7 और बहुत बहस के बाद पतरस ने खड़े होकर उन से कहा कि

ऐ भाइयों तुम जानते हो कि बहुत अर्सा हुआ जब खुदा ने तुम लोगों में से मुझे चुना कि ग़ैर क़ौमों में मेरी ज़बान से खुशख़बरी का कलाम सुनकर ईमान लाएँ।
8 और खुदा ने जो दिलों को जानता है उनको भी हमारी तरह रूह — उल — कुदूस दे कर उन की गवाही दी।
9 और ईमान के वसीले से उन के दिल पाक करके हम में और उन में कुछ फ़र्क न रखवा।

10 पस, अब तुम शागिर्दों की गर्दन पर ऐसा जुआ रख कर जिसको न हमारे बाप दादा उठा सकते थे, न हम खुदा को क्यूँ आजमाते हो? 11 हालाँकि हम को यकीन है कि जिस तरह वो खुदावन्द ईसा के फ़ज़ल ही से नजात पाएँगे, उसी तरह हम भी पाएँगे।

12 फिर सारी जमा'अत चुप रही और पौलुस और बरनबास का बयान सुनने लगी, कि खुदा ने उनके ज़रिए ग़ैर क़ौमों में कैसे कैसे निशान और अजीब काम ज़हिर किए।

13 जब वो ख़ामोश हुए तो या'कूब कहने लगा कि,
“ऐ भाइयों मेरी सुनो!” 14 शमौन ने बयान किया कि खुदा ने पहले ग़ैर क़ौमों पर किस तरह तवज्जह की ताकि उन में से अपने नाम की एक उम्मत बना ले।

15 और नबियों की बातें भी इस के मुताबिक़ हैं। चुनाँचे लिखा है कि।

16 इन बातों के बाद मैं फिर आकर दाऊद के गिरे हुए खेमों को उठाऊँगा,
और उस के फ़टे टूटे की मरम्मत करके उसे खड़ा करूँगा।

17 ताकि बाक़ी आदमी या'नी सब क़ौमों जो मेरे नाम की कहलाती हैं खुदावन्द को तलाश करें।

18 ये वही खुदावन्द फ़रमाता है जो दुनिया के शुरू से इन बातों की ख़बर देता आया है।

19 पस, मेरा फ़ैसला ये है, कि जो ग़ैर क़ौमों में से खुदा की तरफ़ रुजू होते हैं हम उन्हें तकलीफ़ न दें। 20 मगर उन को लिख भेजें कि बुतों की मकरूहात और हरामकारी और गला घोट्टे हुए जानवरों और लहू से परहेज़ करें।
21 क्यूँकि पुराने ज़माने से हर शहर में मूसा की तौरेत का ऐलान करने वाले होते चले आए हैं: और वो हर सबत को इबादतख़ानों में सुनाई जाती हैं।

22 इस पर रसूलों और बुज़ुर्गों ने सारी कलीसिया समेत मुनासिब जाना कि अपने में से चन्द शख्स चुन कर पौलुस और बरनबास के साथ अन्ताकिया को भेजें, या'नी यहूदाह को जो बरसब्बा कहलाता है। और

सीलास को ये शख्स भाइयों में मुक़द्दम थे। 23 और उनके हाथ ये लिख भेजा कि “अन्ताकिया और सूरिया और किलकिया के रहने वाले भाइयों को जो ग़ैर क़ौमों में से हैं। रसूलों और बुज़ुर्ग भाइयों का सलाम पहुँचे।”

24 चूँकि हम ने सुना है, कि कुछ ने हम में से जिनको हम ने हुक्म न दिया था, वहाँ जाकर तुम्हें अपनी बातों से घबरा दिया। और तुम्हारे दिलों को उलट दिया।
25 इसलिए हम ने एक दिल होकर मुनासिब जाना कि कुछ चुने हुए आदमियों को अपने अज़ीज़ों बरनबास और पौलुस के साथ तुम्हारे पास भेजें। 26 ये दोनों ऐसे आदमी हैं, जिन्होंने अपनी जानें हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के नाम पर निसार कर रखी हैं।

27 चुनाँचे हम ने यहूदाह और सीलास को भेजा है, वो यही बातें ज़बानी भी बयान करेंगे। 28 क्यूँकि रूह — उल — कुदूस ने और हम ने मुनासिब जाना कि इन ज़रूरी बातों के सिवा तुम पर और बोझ न डालें 29 कि तुम बुतों की कुर्बानियों के गोश्त से और लहू और गला घोट्टे हुए जानवरों और हरामकारी से परहेज़ करो। अगर तुम इन चीज़ों से अपने आप को बचाए रखवोगे, तो सलामत रहोगे, वस्सलामत।

30 पस, वो रुख़्सत होकर अन्ताकिया में पहुँचे और जमा'अत को इकट्ठा करके ख़त दे दिया। 31 वो पढ़ कर उसके तसल्ली बख़्श मज़मून से खुश हुए। 32 और यहूदाह और सीलास ने जो खुद भी नबी थे, भाइयों को बहुत सी नसीहत करके मज़बूत कर दिया।

33 वो चन्द रोज़ रह कर और भाइयों से सलामती की दुआ लेकर अपने भेजने वालों के पास रुख़्सत कर दिए गए। 34 [लेकिन सीलास को वहाँ ठहरना अच्छा लगा]। 35 मगर पौलुस और बरनबास अन्ताकिया ही में रहे: और बहुत से और लोगों के साथ खुदावन्द का कलाम सिखाते और उस का ऐलान करते रहे।

36 चन्द रोज़ बाद पौलुस ने बरनबास से कहा “कि जिन जिन शहरों में हम ने खुदा का कलाम सुनाया था, आओ फिर उन में चलकर भाइयों को देखें कि कैसे हैं।” 37 और बरनबास की सलाह थी कि यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है। अपने साथ ले चलें। 38 मगर पौलुस ने ये मुनासिब न जाना, कि जो शख्स पम्फ़ीलिया में किनारा करके उस काम के लिए उनके साथ न गया था; उस को हमराह ले चलें।

39 पस, उन में ऐसी सख़्त तकरार हुई; कि एक दूसरे से जुदा हो गए। और बरनबास मरकुस को ले कर जहाज़ पर कुप्रुस को खाना हुआ।

40 मगर पौलुस ने सीलास को पसन्द किया, और भाइयों की तरफ से खुदावन्द के फ़ज़ल के सुपुर्द हो कर खाना किया। 41 और कलीसिया को मज़बूत करता हुआ सूरिया और किलकिया से गुज़रा।

16

22222 22 22222 222222 2222

1 फिर वो दिरबे और लुस्तरा में भी पहुँचा। तो देखो वहाँ तीमुथियुस नाम का एक शागिर्द था। उसकी माँ तो यहूदी थी जो ईमान ले आई थी, मगर उसका बाप यूनानी था। 2 वो लुस्तरा और इकुनियुम के भाइयों में नेक नाम था। 3 पौलुस ने चाहा कि ये मेरे साथ चले। पस, उसको लेकर उन यहूदियों की वजह से जो उस इलाक़े में थे, उसका खतना कर दिया क्योंकि वो सब जानते थे, कि इसका बाप यूनानी है।

4 और वो जिन जिन शहरों में से गुज़रते थे, वहाँ के लोगों को वो अहकाम अमल करने के लिए पहुँचाते जाते थे, जो येरूशलेम के रसूलों और बुज़ुर्गों ने जारी किए थे। 5 पस, कलीसियाएँ ईमान में मज़बूत और शुमार में रोज़ — ब — रोज़ ज्यादा होती गईं।

6 और वो फ़रोगिया और गलतिया सूबे के इलाक़े में से गुज़रे, क्योंकि रूह — उल — कुदूस ने उन्हें आसिया* में कलाम सुनाने से मनह किया। 7 और उन्होंने मूसिया के करीब पहुँचकर बितूनिया सूबे में जाने की कोशिश की मगर ईसा की रूह ने उन्हें जाने न दिया। 8 पस, वो मूसिया से गुज़र कर त़ोआस शहर में आए।

9 और पौलुस ने रात को ख़्वाब में देखा कि एक मकिदुनी आदमी खड़ा हुआ, उस की मिन्नत करके कहता है कि पार उतर कर मकिदुनिया में आ, और हमारी मदद कर! 10 उस का ख़्वाब देखते ही हम ने फ़ौरन मकिदुनिया में जाने का ईरादा किया, क्योंकि हम इस से ये समझे कि खुदा ने उन्हें खुशख़बरी देने के लिए हम को बुलाया है।

11 पस, त़ोआस शहर से जहाज़ पर खाना होकर हम सीधे सुमत्राकि टापू में और दूसरे दिन नियापुलिस शहर में आए। 12 और वहाँ से फ़िलिप्पी शहर में पहुँचे, जो मकिदुनिया का सूबा में है और उस क्रिस्मत का सदर और रोमियों की बस्ती है और हम चन्द रोज़ उस शहर में रहे। 13 और सबत के दिन शहर के दरवाज़े के बाहर नदी के किनारे गए, जहाँ समझे कि दुआ करने की जगह होगी और बैठ कर उन औरतों से जो इकट्ठी हुई थीं, कलाम करने लगे।

14 और थुवातीरा शहर की एक खुदा परस्त औरत लुदिया नाम की, क्रिमिज़ी बेचने वाली भी सुनती थी, उसका दिल खुदावन्द ने खोला ताकि पौलुस की बातों पर तवज्जुह करे। 15 और जब उस ने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया तो मिन्नत कर के कहा कि “अगर तुम मुझे खुदावन्द की ईमानदार बन्दी समझते हो तो चल कर मेरे घर में रहो” पस, उसने हमें मजबूर किया।

16 जब हम दुआ करने की जगह जा रहे थे, तो ऐसा हुआ कि हमें एक लौंडी मिली जिस में पोशीदा रूहें थी, वो ग़ैब गोई से अपने मालिकों के लिए बहुत कुछ कमाती थी। 17 वो पौलुस के, और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी “कि ये आदमी खुदा के बन्दे हैं जो तुम्हें नजात की राह बताते हैं।” 18 वो बहुत दिनों तक ऐसा ही करती रही। आखिर पौलुस सख्त रंजीदा हुआ और फिर कर उस रूह से कहा कि “मैं तुझे ईसा मसीह के नाम से हुक्म देता हूँ कि इस में से निकल जा!” वो उसी वक़्त निकल गई।

19 जब उस के मालिकों ने देखा कि हमारी कमाई की उम्मीद जाती रही तो पौलुस और सीलास को पकड़कर हाकिमों के पास चौक में खींच ले गए। 20 और उन्हें फ़ौजदारी के हाकिमों के आगे ले जा कर कहा कि ये आदमी जो यहूदी हैं हमारे शहर में बड़ी खलबली डालते हैं। 21 और “ऐसी रस्में बताते हैं, जिनको कुबूल करना और अमल में लाना हम रोमियों को पसन्द नहीं।”

22 और आम लोग भी मुत्तफ़िक़ होकर उनकी मुखालिफ़त पर आमादा हुए, और फ़ौजदारी के हाकिमों ने उन के कपड़े फाड़कर उतार डाले और बेंत लगाने का हुक्म दिया 23 और बहुत से बेंत लगवाकर उन्हें कैद खाने में डाल दिया, और दरोगा को ताकीद की कि बड़ी होशियारी से उनकी निगहबानी करे। 24 उस ने ऐसा हुक्म पाकर उन्हें अन्दर के कैद खाने में डाल दिया, और उनके पाँव काठ में ठोक दिए।

25 आधी रात के करीब पौलुस और सीलास दुआ कर रहे और खुदा की हम्द के गीत गा रहे थे, और कैदी सुन रहे थे। 26 कि यकायक बड़ा भुन्चाल आया, यहाँ तक कि कैद खाने की नींव हिल गई और उसी वक़्त सब दरवाज़े खुल गए और सब की बेड़ियाँ खुल पड़ीं।

27 और दरोगा जाग उठा, और कैद खाने के दरवाज़े खुले देखकर समझा कि कैदी भाग गए, पस, तलवार खींचकर अपने आप को मार डालना चाहा। 28 लेकिन पौलुस ने बड़ी आवाज़ से पुकार कर कहा “अपने को नुक़सान न पहुँचा! क्योंकि हम सब मौजूद हैं।”

* 16:6 16:6 आसिया आज के ज़माने में तुर्की इ नाम से जानते हैं

29 वो चराग मँगवा कर अन्दर जा कूदा। और काँपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा।

30 और उन्हें बाहर ला कर कहा “ऐ साहिबो में क्या करूँ कि नजात पाऊँ?” 31 उन्होंने कहा, खुदावन्द ईसा पर ईमान ला “तो तू और तेरा घराना नजात पाएगा।”

32 और उन्होंने ने उस को और उस के सब घरवालों को खुदावन्द का कलाम सुनाया। 33 और उस ने रात को उसी वक़्त उन्हें ले जा कर उनके ज़ख़्म धोए और उसी वक़्त अपने सब लोगों के साथ बपतिस्मा लिया। 34 और उन्हें ऊपर घर में ले जा कर दस्तरख़्वांन बिछाया, और अपने सारे घराने समेत खुदा पर ईमान ला कर बड़ी खुशी की।

35 जब दिन हुआ, तो फ़ौजदारी के हाकिमों ने हवालदारों के ज़रिए कहला भेजा कि उन आदमियों को छोड़ दे। 36 और दरोगा ने पौलुस को इस बात की ख़बर दी कि फ़ौजदारी के हाकिमों ने तुम्हारे छोड़ देने का हुक्म भेज दिया है “पस अब निकल कर सलामत चले जाओ।”

37 मगर पौलुस ने उससे कहा, उन्होंने हम को जो रोमी† हैं कुसूर साबित किए बग़ैर “ऐलानिया पिटवाकर कैद में डाला। और अब हम को चुपके से निकालते हैं? ये नहीं हो सकता; बल्कि वो आप आकर हमें बाहर ले जाएँ।” 38 हवालदारों ने फ़ौजदारी के हाकिमों को इन बातों की ख़बर दी। जब उन्होंने ने सुना कि ये रोमी हैं तो डर गए। 39 और आकर उन की मिन्नत की और बाहर ले जाकर दरख़्वास्त की कि शहर से चले जाएँ।

40 पस वो कैद खाने से निकल कर लुदिया के यहाँ गए और भाइयों से मिलकर उन्हें तसल्ली दी। और ख़ाना हुए।

17

1 फिर वो अम्फ़िपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीकियों शहर में आए, जहाँ यहूदियों का इबादतख़ाना था। 2 और पौलुस अपने दस्तूर के मुवाफ़िक़ उनके पास गया, और तीन सबतों को किताब — ए — मुक़द्दस से उनके साथ बहस की।

3 और उनके मतलब खोल खोलकर दलीलें पेश करता था, कि मसीह को दुःख उठाना और मुर्दों में से जी उठना ज़रूर था और ईसा जिसकी मैं तुम्हें ख़बर देता हूँ मसीह है। 4 उनमें से कुछ ने मान लिया और पौलुस और सीलास के शरीक हुए और खुदा परस्त यूनानियों

की एक बड़ी जमा'अत और बहुत सी शरीफ़ औरतें* भी उन की शरीक हुईं।

5 मगर यहूदियों ने हसद में आकर बाज़ारी आदमियों में से कई बदमाशों को अपने साथ लिया और भीड़ लगा कर शहर में फ़साद करने लगे। और यासोन का घर घेरकर उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा। 6 और जब उन्हें न पाया तो यासोन और कई और भाइयों को शहर के हाकिमों के पास चिल्लाते हुए खींच ले गए कि वो शख्स जिन्होंने ने ज़हान को बा'णी कर दिया, यहाँ भी आए हैं।

7 और यासोन ने उन्हें अपने यहाँ उतारा है और ये सब के सब कैसर के अहकाम की मुखालिफ़त करके कहते हैं, कि बादशाह तो और ही है या'नी ईसा, 8 ये सुन कर आम लोग और शहर के हाकिम घबरा गए। 9 और उन्होंने ने यासोन और बाकियों की ज़मानत लेकर उन्हें छोड़ दिया।

10 लेकिन भाइयों ने फ़ौरन रातों रात पौलुस और सीलास को बिरिया क़स्बा में भेज दिया, वो वहाँ पहुँचकर यहूदियों के इबादतख़ाने में गए। 11 ये लोग थिस्सलुनीकियों के यहूदियों से नेक ज़ात थे, क्यूँकि उन्होंने ने बड़े शौक से कलाम को कुबूल किया और रोज़ — ब — रोज़ किताब ऐ मुक़द्दस में तहकीक़ करते थे, कि आया ये बातें इस तरह हैं? 12 पस, उन में से बहुत सारे ईमान लाए और यूनानियों में से भी बहुत सी 'इज़्जतदार 'औरतें और मर्द ईमान लाए।

13 जब थिस्सलुनीकियों के यहूदियों को मा'लूम हुआ कि पौलुस बिरिया में भी खुदा का कलाम सुनाता है, तो वहाँ भी जाकर लोगों को उभारा और उन में खलबली डाली। 14 उस वक़्त भाइयों ने फ़ौरन पौलुस को ख़ाना किया कि समुन्दर के किनारे तक चला जाए, लेकिन सीलास और तीमुथियुस वहीं रहे। 15 और पौलुस के रहबर उसे अथेने तक ले गए। और सीलास और तीमुथियुस के लिए ये हुक्म लेकर ख़ाना हुए। कि जहाँ तक हो सके जल्द मेरे पास आओ।

16 जब पौलुस अथेने में उन की राह देख रहा था, तो शहर को बुतों से भरा हुआ देख कर उस का जी जल गया। 17 इस लिए वो इबादतख़ाने में यहूदियों और खुदा परस्तों से और चौक में जो मिलते थे, उन से रोज़ बहस किया करता था।

18 और चन्द इपकूरी और स्तोइकी फैलसूफ़ उसका मुक़ाबिला करने लगे कुछ ने कहा, ये बकवासी क्या कहना चाहता है? औरों ने कहा ये ग़ैर मा'बूदों की ख़बर

† 16:37 16:37 रोमी रोमी दौरे हुकूमत में वो लोग ओ रोमी नहीं थे मगर वहाँ रहते थे उन्हें भी शाहियात का शरफ़ हासिल था * 17:4 17:4 शरीफ़ औरतें ये हाकिमों की बीवियाँ थी

देने वाला मा'लूम होता है इस लिए कि वो ईसा और कयामत की खुशखबरी देता है।

19 पस, वो उसे अपने साथ अरियुपगुस जगह पर ले गए और कहा, आया हमको मा'लूम हो सकता है। कि ये नई ता'लीम जो तू देता है, क्या है? 20 क्योंकि तू हमें अनोखी बातें सुनाता है पस, हम जानना चाहते हैं। कि इन से गरज़ क्या है, 21 (इस लिए कि सब अथेनवी और परदेसी जो वहाँ मुक़ीम थे, अपनी फुरसत का वक़्त नई नई बातें करने सुनने के सिवा और किसी काम में सफ़्र न करते थे)

22 पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़े हो कर कहा।

ऐ अथेने वालो, मैं देखता हूँ कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो। 23 चुनाँचे मैंने सैर करते और तुम्हारे मा'बूदों पर ग़ौर करते वक़्त एक ऐसी कुर्बानगाह भी पाई, जिस पर लिखा था, ना मा'लूम खुदा के लिए पस, जिसको तुम बग़ैर मा'लूम किए पूजते हो, मैं तुम को उसी की ख़बर देता हूँ।

24 जिस खुदा ने दुनिया और उस की सब चीज़ों को पैदा किया वो आसमान और ज़मीन का मालिक होकर हाथ के बनाए हुए मक़दिस में नहीं रहता। 25 न किसी चीज़ का मुहताज होकर आदमियों के हाथों से ख़िदमत लेता है। क्योंकि वो तो खुद सबको ज़िन्दगी और साँस और सब कुछ देता है।

26 और उस ने एक ही नस्ल से आदमियों की हर एक क़ौम तमाम रूप ज़मीन पर रहने के लिए पैदा की और उन की 'तहदाद और रहने की हदें मुक़र्रर कीं। 27 ताकि खुदा को ढूँढ़ें, शायद कि टटोलकर उसे पाएँ, हर वक़्त वो हम में से किसी से दूर नहीं।

28 क्योंकि उसी में हम जीते और चलते फिरते और मौजूद हैं, जैसा कि तुम्हारे शा'यरो में से भी कुछ ने कहा है।

हम तो उस की नस्ल भी हैं। 29 पस, खुदा की नस्ल होकर हम को ये ख़याल करना मुनासिब नहीं कि ज़ात — ए — इलाही उस सोने या रुपए या पत्थर की तरह है जो आदमियों के हुनर और ईजाद से गढ़े गए हों।

30 पस, खुदा जिहालत के वक़्तों से चश्म पोशी करके अब सब आदमियों को हर जगह हुक्म देता है। कि तौबा करें। 31 क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है, जिस में वो रास्ती से दुनिया की अदालत उस आदमी† के ज़रिए करेगा, जिसे उस ने मुक़र्रर किया है और उसे मुर्दों में से जिला कर ये बात सब पर साबित कर दी है।

32 जब उन्होंने ने मुर्दों की कयामत का ज़िक्र सुना तो कुछ ठट्ठा मारने लगे, और कुछ ने कहा कि ये बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे। 33 इसी हालत में पौलुस उनके बीच में से निकल गया 34 मगर कुछ आदमी उसके साथ मिल गए और ईमान ले आए, उन में दियुनुसियुस, अरियुपगुस, का एक हाकिम और दमरिस नाम की एक औरत थी, और कुछ और भी उन के साथ थे।

18

222222 22 22222222 2222 2222222222222222
22 222222222222 22 222222

1 इन बातों के बाद पौलुस अथेने से खाना हो कर कुरिन्थुस शहर में आया। 2 और वहाँ उसको अक्विला नाम का एक यहूदी मिला जो पुन्तुस शहर की पैदाइश था, और अपनी बीवी पिरस्किल्ला समेत इतालिया से नया नया आया था; क्योंकि क्लोदियुस ने हुक्म दिया था, कि सब यहूदी रोमा से निकल जाएँ। पस, वो उसके पास गया। * 3 और चूँकि उनका हम पेशा था, उन के साथ रहा और वो काम करने लगे; और उन का पेशा खेमा दोज़ी था।

4 और वो हर सबत को इबादतख़ाने में बहस करता और यहूदियों और यूनानियों को तैयार करता था। 5 और जब सीलास और तीमुथियुस मक़िदुनिया से आए, तो पौलुस कलाम सुनाने के जोश से मजबूर हो कर यहूदियों के आगे गवाही दे रहा था कि ईसा ही मसीह है। 6 जब लोग मुखालिफ़त करने और कुफ़र बकने लगे, तो उस ने अपने कपड़े झाड़ कर उन से कहा, तुम्हारा खून तुम्हारी गर्दन पर मैं पाक हूँ, अब से ग़ौर क़ौमों के पास जाऊँगा।

7 पस, वहाँ से चला गया, और तितुस युस्तुस नाम के एक खुदा परस्त के घर चला गया, जो इबादतख़ाने से मिला हुआ था।

8 और इबादतख़ाने का सरदार क़िरसपुस अपने तमाम घराने समेत खुदावन्द पर ईमान लाया; और बहुत से कुरिन्थी सुनकर ईमान लाए, और बपतिस्मा लिया।

9 और खुदावन्द ने रात को रोया में पौलुस से कहा, “ख़ौफ़ न कर, बल्कि कहे जा और चुप न रह। 10 इसलिए कि मैं तेरे साथ हूँ, और कोई शख्स तुझ पर हमला कर के तकलीफ़ न पहुँचा सकेगा; क्योंकि इस शहर में मेरे बहुत से लोग हैं।” 11 पस, वो डेढ़ बरस उन में रहकर खुदा का कलाम सिखाता रहा।

12 जब गल्लियो अखिया सूबे का सुबेदार था, यहूदी एका करके पौलुस पर चढ़ आए, और उसे अदालत में ले

† 17:31 17:31 आदमी (ईसा) जो इंसान बना * 18:2 18:2 ये वाकया ईसा के सलीबी मौत के बाद 49 में हुआ

जा कर। ¹³ कहने लगे “कि ये शख्स लोगों को तरगीब देता है, कि शरी'अत के बरखिलाफ़ खुदा की इबादत करें।”

¹⁴ जब पौलुस ने बोलना चाहा, तो गल्लियो ने यहूदियों से कहा, ऐ यहूदियो, अगर कुछ जुल्म या बड़ी शरारत की बात होती तो वाजिब था, कि मैं सब्र करके तुम्हारी सुनता। ¹⁵ लेकिन जब ये ऐसे सवाल हैं जो लफ़्ज़ों और नामों और खास तुम्हारी शरी'अत से तअ'ल्लुक रखते हैं तो तुम ही जानो। मैं ऐसी बातों का मुन्सिफ़ बनना नहीं चाहता।

¹⁶ और उस ने उन्हें अदालत से निकला दिया। ¹⁷ फिर सब लोगों ने इबादतखाने के सरदार सोस्थिनेस को पकड़ कर अदालत के सामने मारा, मगर गल्लियो ने इन बातों की कुछ परवाह न की।

¹⁸ पस, पौलुस बहुत दिन वहाँ रहकर भाइयों से रुख़सत हुआ; चूँकि उस ने मन्नत मानी थी, इसलिए किन्खरिया शहर में सिर मुंडवाया और जहाज़ पर सूरिया सूबे को खाना हुआ; और पिरस्किल्ला और अक्विला उस के साथ थे। ¹⁹ और इफ़िसुस में पहुँच कर उस ने उन्हें वहाँ छोड़ा और आप इबादतखाने में जाकर यहूदियों से बहस करने लगा।

²⁰ जब उन्होंने उस से दरखास्त की, और कुछ अरसे हमारे साथ रह तो उस ने मंज़ूर न किया। ²¹ बल्कि ये कह कर उन से रुख़सत हुआ अगर खुदा ने चाहा तो तुम्हारे पास फिर आऊँगा और इफ़िसुस से जहाज़ पर खाना हुआ।

²² फिर कैसरिया में उतर कर येरूशलेम को गया, और कलीसिया को सलाम करके अन्ताकिया में आया।

²³ और चन्द रोज़ रह कर वहाँ से खाना हुआ, और तरतीब वार गलतिया सूबे के इलाक़े और फ़रुगिया सूबे से गुज़रता हुआ सब शागिर्दों को मज़बूत करता गया।

²⁴ फिर अपुल्लोस नाम के एक यहूदी इसकन्दरिया शहर की पैदाइश खुशतकरीर किताब — ए — मुक़द्दस का माहिर इफ़िसुस में पहुँचा। ²⁵ इस शख्स ने खुदावन्द की राह की ता'लीम पाई थी, और रूहानी जोश से कलाम करता और ईसा की वजह से सहीह सहीह ता'लीम देता था। मगर सिर्फ़ यूहन्ना के बपतिस्मे से वाकिफ़ था। ²⁶ वो इबादतखाने में दिलेरी से बोलने लगा, मगर पिरस्किल्ला और अक्विला उसकी बातें सुनकर उसे अपने घर ले गए। और उसको खुदा की राह और अच्छी तरह से बताई।

²⁷ जब उस ने इरादा किया कि पार उतर कर अखिया को जाए तो भाइयों ने उसकी हिम्मत बढ़ाकर शागिर्दों को लिखा कि उससे अच्छी तरह मिलना। उस ने वहाँ

पहुँचकर उन लोगों की बड़ी मदद की जो फ़ज़ल की वजह से ईमान लाए थे। ²⁸ क्योंकि वो किताब — ए — मुक़द्दस से ईसा का मसीह होना साबित करके बड़े ज़ोर शोर से यहूदियों को ऐलानिया कायल करता रहा।

19

????? ?? ?????? ???? ?

¹ और जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो ऐसा हुआ कि पौलुस ऊपर के पहाड़ी मुल्कों से गुज़र कर इफ़िसुस में आया और कई शागिर्दों को देखकर। ² उन से कहा “क्या तुमने ईमान लाते वक़्त रूह — उल — कुद्दूस पाया?” उन्होंने उस से कहा “कि हम ने तो सुना नहीं। कि रूह — उल — कुद्दूस नाज़िल हुआ है।”

³ उस ने कहा “तुम ने किस का बपतिस्मा लिया?” उन्होंने कहा “यूहन्ना का बपतिस्मा।” ⁴ पौलुस ने कहा, यूहन्ना ने लोगों को ये कह कर तौबा का बपतिस्मा दिया कि जो मेरे पीछे आने वाला है उस पर या'नी ईसा पर ईमान लाना।

⁵ उन्होंने ने ये सुनकर खुदावन्द ईसा के नाम का बपतिस्मा लिया। ⁶ जब पौलुस ने अपने हाथ उन पर रखे तो रूह — उल — कुद्दूस उन पर नाज़िल हुआ, और वह तरह तरह की ज़बाने बोलने और नबुव्वत करने लगे। ⁷ और वो सब तकरीबन बारह आदमी थे।

⁸ फिर वो इबादतखाने में जाकर तीन महीने तक दिलेरी से बोलता और खुदा की बादशाही के बारे में बहस करता और लोगों को कायल करता रहा। ⁹ लेकिन जब कुछ सख़्त दिल और नाफ़रमान हो गए। बल्कि लोगों के सामने इस तरीक़े को बुरा कहने लगे, तो उस ने उन से किनारा करके शागिर्दों को अलग कर लिया, और हर रोज़ तुरन्नुस के मदरसे में बहस किया करता था। ¹⁰ दो बरस तक यही होता रहा, यहाँ तक कि आसिया के रहने वालों क्या यहूदी क्या यूनानी सब ने खुदावन्द का कलाम सुना।

¹¹ और खुदा पौलुस के हाथों से खास खास मोजिज़े दिखाता था। ¹² यहाँ तक कि रूमाल और पटके उसके बदन से छुआ कर बीमारों पर डाले जाते थे, और उन की बीमारियाँ जाती रहती थीं, और बदरूहें उन में से निकल जाती थीं।

¹³ मगर कुछ यहूदियों ने जो झाड़ फूँक करते फिरते थे। ये इस्तिyar किया कि जिन में बदरूहें हों “उन पर खुदावन्द ईसा का नाम ये कह कर फूँकें। कि जिस ईसा की पौलुस ऐलान करता है, मैं तुम को उसकी क़सम देता हूँ” ¹⁴ और सिकवा, यहूदी सरदार काहिन, के सात बेटे ऐसे किया करते थे।

15 बदरूह ने जवाब में उन से कहा, ईसा को तो मैं जानती हूँ, और पौलुस से भी वाकिफ़ हूँ “मगर तुम कौन हो?” 16 और वो शख्स जिस में बदरूह थी, कूद कर उन पर जा पड़ा और दोनों पर ग़ालिब आकर ऐसी ज्यादाती की कि वो नंगे और ज़ख्मी होकर उस घर से निकल भागे। 17 और ये बात इफ़िसुस के सब रहने वाले यहूदियों और यूनानियों को मा'लूम हो गई। पस, सब पर खौफ़ छा गया, और खुदावन्द ईसा के नाम की बड़ाई हुई।

18 और जो ईमान लाए थे, उन में से बहुतों ने आकर अपने अपने कामों का इकरार और इज़हार किया। 19 और बहुत से जादूगरों ने अपनी अपनी किताबें इकट्ठी करके सब लोगों के सामने जला दीं, जब उन की कीमत का हिसाब हुआ तो पचास हज़ार रुपए की निकली। 20 इसी तरह खुदा का कलाम ज़ोर पकड़ कर फैलता और ग़ालिब होता गया।

21 जब ये हो चुका तो पौलुस ने पाक रूह में हिम्मत पाई कि मकिदुनिया और अखिया से हो कर येरुशलेम को जाऊँगा। और कहा, “वहाँ जाने के बाद मुझे रोमा भी देखना ज़रूर है।”

22 पस, अपने खिदमतगुज़ारों में से दो शख्स या'नी तीमुथियुस और इरास्तुस को मकिदुनिया में भेजकर आप कुछ अर्सा, आसिया में रहा।

23 उस वक़्त इस तरीके की वजह से बड़ा फ़साद हुआ। 24 क्योंकि देमेत्रियुस नाम एक सुनार था, जो अरतमिस कि रूपहले मन्दिर बनवा कर उस पेशेवालों को बहुत काम दिलवा देता था। 25 उस ने उन को और उनके मुता'ल्लिक और पेशेवालों को जमा कर के कहा, ऐ लोगों! तुम जानते हो कि हमारी आसूदगी इसी काम की बदौलत है। 26 तुम देखते और सुनते हो कि सिर्फ़ इफ़िसुस ही में नहीं बल्कि तकरीबन तमाम आसिया में इस पौलुस ने बहुत से लोगों को ये कह कर समझा बुझा कर और गुमराह कर दिया है, कि हाथ के बनाए हुए हैं, खुदा “नहीं हैं। 27 पस, सिर्फ़ यही ख़तरा नहीं कि हमारा पेशा बेक़द्र हो जाएगा, बल्कि बड़ी देवी अरतमिस का मन्दिर भी नाचीज़ हो जाएगा, और जिसे तमाम आसिया और सारी दुनिया पूजती है, खुद उसकी अज़मत भी जाती रहेगी।”

28 वो ये सुन कर क्रूर से भर गए और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे, कि इफ़िसियों की अरतमिस बड़ी है! 29 और तमाम शहर में हलचल पड़ गई, और लोगों ने ग्युस और अरिस्तरखुस मकिदुनिया वालों को जो पौलुस के हम — सफ़र थे, पकड़ लिया और एक दिल हो कर तमाशा गाह को दौड़े।

30 जब पौलुस ने मज्मे में जाना चाहा तो शागिर्दों ने जाने न दिया। 31 और आसिया के हाकिमों में से उस के कुछ दोस्तों ने आदमी भेजकर उसकी मिन्नत की कि तमाशा गाह में जाने की हिम्मत न करना। 32 और कुछ चिल्लाए और मजलिस दरहम बरहम हो गई थी, और अक्सर लोगों को ये भी ख़बर न थी, कि हम किस लिए इकट्ठे हुए हैं।

33 फिर उन्होंने ने इस्कन्दर को जिसे यहूदी पेश करते थे, भीड़ में से निकाल कर आगे कर दिया, और इस्कन्दर ने हाथ से इशारा करके मज्मे कि सामने उज़र बयान करना चाहा।

34 जब उन्हें मा'लूम हुआ कि ये यहूदी है, तो सब हम आवाज़ होकर कोई दो घंटे तक चिल्लाते रहे “कि इफ़िसियों की अरतमिस बड़ी है!” 35 फिर शहर के मुहरिर ने लोगों को ठन्डा करके कहा, ऐ इफ़िसियो! कौन सा आदमी नहीं जानता कि इफ़िसियों का शहर बड़ी देवी अरतमिस के मन्दिर और उस मूरत का मुहाफ़िज़ है, जो ज्यूस की तरफ़ से गिरी थी। 36 पस, जब कोई इन बातों के खिलाफ़ नहीं कह सकता तो वाजिब है कि तुम इत्मीनान से रहो, और बे सोचे कुछ न करो। 37 क्योंकि ये लोग जिन को तुम यहाँ लाए हो न मन्दिर को लूटने वाले हैं, न हमारी देवी की बदगोई करनेवाले।

38 पस, अगर देमेत्रियुस और उसके हम पेशा किसी पर दा'वा रखते हों तो अदालत खुली है, और सुबेदार मौजूद हैं, एक दूसरे पर नालिश करें। 39 और अगर तुम किसी और काम की तहक़ीक़ात चाहते हो तो बाज़ाबता मजलिस में फ़ैसला होगा। 40 क्योंकि आज के बवाल की वजह से हमें अपने ऊपर नालिश होने का अन्देशा है, इसलिए कि इसकी कोई वजह नहीं है, और इस सूरत में हम इस हँगामे की जवाबदेही न कर सकेंगे। 41 ये कह कर उसने मजलिस को बरखास्त किया।

20

????? ?? ??????????? ?? ?????

1 जब बवाल कम हो गया तो पौलुस ने ईमानदारों को बुलवा कर नसीहत की, और उन से रुख़सत हो कर मकिदुनिया को खाना हुआ। 2 और उस इलाके से गुज़र कर और उन्हें बहुत नसीहत करके यूनान में आया। 3 जब तीन महीने रह कर सूरिया की तरफ़ जहाज़ पर खाना होने को था, तो यहूदियों ने उस के बरखिलाफ़ साज़िश की, फिर उसकी ये सलाह हुई कि मकिदुनिया होकर वापस जाए।

4 और पुरुस का बेटा सोपत्रुस जो बिरिया कसबे का था, और थिस्सलुनीकियों में से अरिस्तरखुस और

सिकुन्दस और गयुस जो दिरबे शहर का था, और तीमुथियुस और आसिया का तुखिकुस और त्रुफ़िमुस आसिया तक उसके साथ गए। ⁵ ये आगे जा कर त्रोआस में हमारी राह देखते रहे। ⁶ और ईद — ए — फ़तीर के दिनों के बाद हम फ़िलिप्पी से जहाज़ पर खाना होकर पाँच दिन के बाद त्रोआस में उन के पास पहुँचे और सात दिन वहीं रहे।

⁷ सबत की शाम जब हम रोटी तोड़ने के लिए जमा हुए, तो पौलुस ने दूसरे दिन खाना होने का इरादा करके उन से बातें कीं और आधी रात तक कलाम करता रहा। ⁸ जिस बालाखाने पर हम जमा थे, उस में बहुत से चरागा जल रहे थे।

⁹ और यूतुखुस नाम एक जवान खिड़की में बैठा था, उस पर नींद का बड़ा गल्बा था, और जब पौलुस ज्यादा देर तक बातें करता रहा तो वो नींद के गल्बे में तीसरी मंज़िल से गिर पड़ा, और उठाया गया तो मुर्दा था। ¹⁰ पौलुस उतर कर उस से लिपट गया, और गले लगा कर कहा, घबराओ नहीं इस में जान है।

¹¹ फिर ऊपर जा कर रोटी तोड़ी और खा कर इतनी देर तक बातें करता रहा कि सुबह हो गई, फिर वो खाना हो गया।

¹² और वो उस लड़के को ज़िंदा लाए और उनको बड़ा इत्मीनान हुआ।

¹³ हम जहाज़ तक आगे जाकर इस इरादा से अस्सुस शहर को खाना हुए कि वहाँ पहुँच कर पौलुस को चढ़ा लें, क्योंकि उस ने पैदल जाने का इरादा करके यही तज्वीज़ की थी। ¹⁴ पस, जब वो अस्सुस में हमें मिला तो हम उसे चढ़ा कर मितुलेने शहर में आए।

¹⁵ वहाँ से जहाज़ पर खाना होकर दूसरे दिन खियुस टापू के सामने पहुँचे और तीसरे दिन सामुस टापू तक आए और अगले दिन मिलेतुस शहर में आ गए। ¹⁶ क्योंकि पौलुस ने ये ठान लिया था, कि इफ़िसुस के पास से गुज़रे, ऐसा न हो कि उसे आसिया में देर लगे; इसलिए कि वो जल्दी करता था, कि अगर हो सके तो पिन्तेकुस्त के दिन येरूशलेम में हो।

¹⁷ और उस ने मिलेतुस से इफ़िसुस में कहला भेजा, और कलीसिया के बुज़ुर्गों को बुलाया। ¹⁸ जब वो उस के पास आए तो उन से कहा,

तुम खुद जानते हो कि पहले ही दिन से कि मैंने आसिया में क्रदम रखवा हर वक़्त तुम्हारे साथ किस तरह रहा। ¹⁹ या'नी कमाल फ़रोतनी से और आँसू बहा बहा कर और उन आजमाइशों में जो यहूदियों की साज़िश की वजह से मुझ पर वा'के हुई खुदावन्द की खिदमत

करता रहा। ²⁰ और जो जो बातें तुम्हारे फ़ाइदे की थीं उनके बयान करने और एलानिया और घर घर सिखाने से कभी न झिझका। ²¹ बल्कि यहूदियों और यूनानियों के रू — ब — रू गवाही देता रहा कि खुदा के सामने तौबा करना और हमारे खुदावन्द ईसा मसीह पर ईमान लाना चाहिए।

²² और अब देखो मैं रूह में बँधा हुआ येरूशलेम को जाता हूँ, और न मा'लूम कि वहाँ मुझ पर क्या क्या गुज़रे। ²³ सिवा इसके कि रूह — उल — कुदूस हर शहर में गवाही दे दे कर मुझ से कहता है। कि क्रैद और मुसीबतें तेरे लिए तैयार हैं। ²⁴ लेकिन मैं अपनी जान को अज़ीज़ नहीं समझता कि उस की कुछ क्रदर करूँ; बावजूद इसके कि अपना दौर और वो खिदमत जो खुदावन्द ईसा से पाई है, पूरी करूँ। या'नी खुदा के फ़ज़ल की खुशख़बरी की गवाही दूँ।

²⁵ और अब देखो मैं जानता हूँ कि तुम सब जिनके दर्मियान मैं बादशाही का एलान करता फिरा, मेरा मुँह फिर न देखोगे। ²⁶ पस, मैं आज के दिन तुम्हें क्रतई कहता हूँ कि सब आदमियों के खून से پاک हूँ। ²⁷ क्योंकि मैं खुदा की सारी मर्जी तुम से पूरे तौर से बयान करने से न झिझका। ²⁸ पस, अपनी और उस सारे गल्ले की खबरदारी करो जिसका रूह — उल कुदूस ने तुम्हें निगहबान ठहराया ताकि खुदा की कलीसिया की गल्ले कि रख वाली करो, जिसे उस ने खास अपने खून से खरीद लिया। ²⁹ मैं ये जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िये तुम में आएंगे जिन्हें गल्ले पर कुछ तरस न आएगा; ³⁰ आप के बीच से भी आदमी उठ कर सच्चाई को तोड़ — मरोड़ कर बयान करेंगे ताकि शागिर्दों को अपने पीछे लगा लें।

³¹ इसलिए जागते रहो, और याद रखो कि मैं तीन बरस तक रात दिन आँसू बहा बहा कर हर एक को समझाने से बा'ज़ न आया। ³² अब मैं तुम्हें खुदा और उसके फ़ज़ल के कलाम के सुपुर्द करता हूँ, जो तुम्हारी तरक्की कर सकता है, और तमाम मुक़द्दसों में शरीक करके मीरास दे सकता है।

³³ मैंने किसी के पैसे या कपड़े का लालच नहीं किया। ³⁴ तुम आप जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की हाज़तपूरी कीं। ³⁵ मैंने तुम को सब बातें करके दिखा दीं कि इस तरह मेहनत करके कमज़ोरों को संभालना और खुदावन्द ईसा की बातें याद रखना चाहिए, उस ने खुद कहा, **“देना लेने से मुबारक है।”**

³⁶ उस ने ये कह कर घुटने टेके और उन सब के साथ दुआ की। ³⁷ और वो सब बहुत रोए और पौलुस के गले

लग लगकर उसके बोसे लिए।³⁸ और खास कर इस बात पर ग़मगीन थे, जो उस ने कही थी, कि तुम फिर मेरा मुँह न देखोगे फिर उसे जहाज़ तक पहुँचाया।

21

?????? ?? ?????????? ?? ???????

¹ जब हम उनसे बमुश्किल जुदा हो कर जहाज़ पर खाना हुए, तो ऐसा हुआ की सीधी राह से कोस टापू में आए, और दूसरे दिन रूदुस में, और वहाँ से पतरा शहर में।² फिर एक जहाज़ सीधा फ़ीनिके को जाता हुआ मिला, और उस पर सवार होकर खाना हुए।

³ जब कुप्रुस शहर नज़र आया तो उसे बाएँ हाथ छोड़कर सुरिया को चले, और सूर शहर में उतरे, क्योंकि वहाँ जहाज़ का माल उतारना था।⁴ जब शागिर्दों को तलाश कर लिया तो हम सात रोज़ वहाँ रहे; उन्होंने ने रूह के जरिए पौलुस से कहा, कि येरुशलेम में क़दम न रखना।

⁵ और जब वो दिन गुज़र गए, तो ऐसा हुआ कि हम निकल कर खाना हुए, और सब ने बीवियों बच्चों समेत हम को शहर से बाहर तक पहुँचाया। फिर हम ने समुन्दर के किनारे घुटने टेककर दुआ की।⁶ और एक दूसरे से विदा होकर हम तो जहाज़ पर चढ़े, और वो अपने अपने घर वापस चले गए।

⁷ और हम सूर से जहाज़ का सफ़र पूरा कर के पतुलिमयिस सूबा में पहुँचे, और भाइयों को सलाम किया, और एक दिन उनके साथ रहे।⁸ दूसरे दिन हम खाना होकर कैसरिया में आए, और फ़िलिप्पुस मुबशिशर के घर जो उन सातों में से था, उतर कर उसके साथ रहे,⁹ उस की चार कुंवारी बेटियाँ थीं, जो नबुव्वत करती थीं।

¹⁰ जब हम वहाँ बहुत रोज़ रहे, तो अगबुस नाम एक नबी यहूदिया से आया।¹¹ उस ने हमारे पास आकर पौलुस का कमरबन्द लिया और अपने हाथ पाँव बाँध कर कहा, रूह — उल — कुहूस यूँ फ़रमाता है “कि जिस शख्स का ये कमरबन्द है उस को यहूदी येरुशलेम में इसी तरह बाँधेंगे और ग़ैर क़ौमों के हाथ में सुपुर्द करेंगे।”

¹² जब ये सुना तो हम ने और वहाँ के लोगों ने उस की मिन्नत की, कि येरुशलेम को न जाए।¹³ मगर पौलुस ने जवाब दिया, कि तुम क्या करते हो? क्यों रो रो कर मेरा दिल तोड़ते हो? मैं तो येरुशलेम में खुदावन्द ईसा मसीह “के नाम पर न सिर्फ़ बाँधे जाने बल्कि मरने को भी तैयार हूँ।”¹⁴ जब उस ने न माना तो हम ये कह कर चुप हो गए “कि खुदावन्द की मर्ज़ी पूरी हो।”

¹⁵ उन दिनों के बाद हम अपने सफ़र का सामान तैयार करके येरुशलेम को गए।¹⁶ और कैसरिया से भी कुछ शागिर्द हमारे साथ चले और एक पुराने शागिर्द मनासोन कुप्रुस के रहने वाले को साथ ले आए, ताकि हम उस के मेहमान हों।

¹⁷ जब हम येरुशलेम में पहुँचे तो ईमानदार भाई बड़ी खुशी के साथ हम से मिले।¹⁸ और दूसरे दिन पौलुस हमारे साथ या'कूब के पास गया, और सब बुज़ुर्ग वहाँ हाज़िर थे।¹⁹ उस ने उन्हें सलाम करके जो कुछ खुदा ने उस की खिदमत से ग़ैर क़ौमों में किया था, एक एक कर के बयान किया।

²⁰ उन्होंने ये सुन कर खुदा की तारीफ़ की फिर उस से कहा, ऐ भाई तू देखता है, कि यहूदियों में हज़ारों आदमी ईमान ले आए हैं, और वो सब शरी'अत के बारे में सरगर्म हैं।²¹ और उन को तेरे बारे में सिखा दिया गया है, कि तू ग़ैर क़ौमों में रहने वाले सब यहूदियों को ये कह कर मूसा से फिर जाने की ता'लीम देता है, कि न अपने लड़कों का ख़तना करो न मूसा की रस्मों पर चलो।

²² पस, क्या किया जाए? लोग ज़रूर सुनेंगे, कि तू आया है।²³ इसलिए जो हम तुझ से कहते हैं वो कर; हमारे यहाँ चार आदमी ऐसे हैं, जिन्होंने ने मन्नत मानी है।²⁴ उन्हें ले कर अपने आपको उन के साथ पाक कर और उनकी तरफ़ से कुछ खर्च कर, ताकि वो सिर मुँडाएँ, तो सब जान लेंगे कि जो बातें उन्हें तेरे बारे में सिखाई गई हैं, उन की कुछ असल नहीं बल्कि तू खुद भी शरी'अत पर अमल करके दुरुस्ती से चलता है।

²⁵ मगर ग़ैर क़ौमों में से जो ईमान लाए उनके बारे में हम ने ये फ़ैसला करके लिखा था, कि वो सिर्फ़ बुतों की कुर्बानी के गोश्त से और लहू और गला घोंटे हुए जानवरों और हरामकारी से अपने आप को बचाए रखें।²⁶ इस पर पौलुस उन आदमियों को लेकर और दूसरे दिन अपने आपको उनके साथ पाक करके हैकल में दाख़िल हुआ और खबर दी कि जब तक हम में से हर एक की नज़र न चढ़ाई जाए तक्रहुस के दिन पूरे करेंगे।

²⁷ जब वो सात दिन पूरे होने को थे, तो आसिया के यहूदियों ने उसे हैकल में देखकर सब लोगों में हलचल मचाई और यूँ चिल्लाकर उस को पकड़ लिया।²⁸ कि “ऐ इस्राईलियो; मदद करो ये वही आदमी है, जो हर जगह सब आदमियों को उम्मत और शरी'अत और इस मुक़ाम के खिलाफ़ ता'लीम देता है, बल्कि उस ने यूनानियों को भी हैकल में लाकर इस पाक मुक़ाम को नापाक किया है।”²⁹ (उन्होंने उस से पहले त्रुफ़िमुस इफ़िसी को

उसके साथ शहर में देखा था। उसी के बारे में उन्होंने खयाल किया कि पौलुस उसे हैकल में ले आया है।)

30 और तमाम शहर में हलचल मच गई, और लोग दौड़ कर जमा हुए, और पौलुस को पकड़ कर हैकल के दरवाज़े के फाटक से बाहर घसीट कर ले गए, और फ़ौरन दरवाज़े बन्द कर लिए गए। 31 जब वो उसे क़त्ल करना चाहते थे, तो ऊपर सौ फ़ौजियों के सरदार के पास खबर पहुँची “कि तमाम येरूशलेम में खलबली पड़ गई है।”

32 वो उसी वक़्त सिपाहियों और सूबेदारों को ले कर उनके पास नीचे दौड़ा आया। और वो पलटन के सरदार और सिपाहियों को देख कर पौलुस की मार पीट से बाज़ आए। 33 इस पर पलटन के सरदार ने नज़दीक आकर उसे गिरफ़्तार किया “और दो ज़ंजीरों से बाँधने का हुक्म देकर पूछने लगा, ये कौन है, और इस ने क्या किया है?”

34 भीड़ में से कुछ चिल्लाए और कुछ पस जब हुल्लड़ की वजह से कुछ हकीकत दरियाफ़्त न कर सका, तो हुक्म दिया कि उसे क़िले में ले जाओ। 35 जब सीढ़ियों पर पहुँचा तो भीड़ की ज़बरदस्ती की वजह से सिपाहियों को उसे उठाकर ले जाना पड़ा। 36 क्योंकि लोगों की भीड़ ये चिल्लाती हुई उसके पीछे पड़ी “कि उसका काम तमाम कर।”

37 “और जब पौलुस को क़िले के अन्दर ले जाने को थे? उस ने पलटन के सरदार से कहा क्या मुझे इजाज़त है कि तुझ से कुछ कहूँ? उस ने कहा तू यूनानी जानता है? 38 क्या तू वो मिस्री नहीं? जो इस से पहले गाज़ियों में से चार हज़ार आदमियों को बागी करके जंगल में ले गया।”

39 पौलुस ने कहा “मैं यहूदी आदमी किलकिया के मशहूर सूबा तरसुस शहर का बाशिन्दा हूँ, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे लोगों से बोलने की इजाज़त दे।” 40 जब उस ने उसे इजाज़त दी तो पौलुस ने सीढ़ियों पर खड़े होकर लोगों को इशारा किया। जब वो चुप चाप हो गए, तो इब्रानी ज़बान में यूँ कहने लगा।

22

1 ऐ भाइयों और बुज़ुर्गों, मेरी बात सुनो, जो अब तुम से बयान करता हूँ।

2 जब उन्होंने सुना कि हम से इब्रानी ज़बान में बोलता है तो और भी चुप चाप हो गए। पस उस ने कहा।

3 मैं यहूदी हूँ, और किलकिया के शहर तरसुस में पैदा हुआ हूँ, मगर मेरी तरबियत इस शहर में गमलीएल के क़दमों में हुई, और मैंने बा'प दादा की शरी'अत की खास पाबन्दी की ता'लीम पाई, और खुदा की राह में ऐसा

सरगर्म रहा था, जैसे तुम सब आज के दिन हो। 4 चुनाँचे मैंने मर्दों और औरतों को बाँध बाँधकर और कैदखाने में डाल डालकर मसीही तरीक़े वालों को यहाँ तक सताया है कि मरवा भी डाला। 5 चुनाँचे सरदार काहिन और सब बुज़ुर्ग मेरे गवाह हैं, कि उन से मैं भाइयों के नाम खत ले कर दमिशक़ को खाना हुआ, ताकि जितने वहाँ हों उन्हें भी बाँध कर येरूशलेम में सज़ा दिलाने को लाऊँ।

6 जब मैं सफ़र करता करता दमिशक़ शहर के नज़दीक पहुँचा तो ऐसा हुआ कि दोपहर के करीब यकायक एक बड़ा नूर आसमान से मेरे आस — पास आ चमका। 7 और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा, और ये आवाज़ सुनी कि “ऐ साऊल, ऐ साऊल। तू मुझे क्यों सताता है?” 8 मैं ने जवाब दिया कि ‘ऐ खुदावन्द, तू कौन हैं?’ उस ने मुझ से कहा “मैं ईसा नासरी हूँ जिसे तू सताता है।”

9 और मेरे साथियों ने नूर तो देखा लेकिन जो मुझ से बोलता था, उस की आवाज़ न समझ सके। 10 मैं ने कहा, ‘ऐ खुदावन्द, मैं क्या करूँ? खुदावन्द ने मुझ से कहा, “उठ कर दमिशक़ में जा। और जो कुछ तेरे करने के लिए मुकर्रर हुआ है, वहाँ तुझ से सब कहा जाए गा।” 11 जब मुझे उस नूर के जलाल की वजह से कुछ दिखाई न दिया तो मेरे साथी मेरा हाथ पकड़ कर मुझे दमिशक़ में ले गए।

12 और हननियाह नाम एक शख्स जो शरी'अत के मुवाफ़िक़ दीनदार और वहाँ के सब रहने वाले यहूदियों के नज़दीक नेक नाम था 13 मेरे पास आया और खड़े होकर मुझ से कहा, ‘भाई साऊल फिर बीना हो, उसी वक़्त बीना हो कर मैंने उस को देखा।

14 उस ने कहा, ‘हमारे बाप दादा के खुदा ने तुझ को इसलिए मुकर्रर किया है कि तू उस की मर्जी को जाने और उस रास्तबाज़ को देखे और उस के मुँह की आवाज़ सुने। 15 क्योंकि तू उस की तरफ़ से सब आदमियों के सामने उन बातों का गवाह होगा, जो तूने देखी और सुनी हैं। 16 अब क्यों देर करता है? उठ बपतिस्मा ले, और उस का नाम ले कर अपने गुनाहों को धो डाल।

17 जब मैं फिर येरूशलेम में आकर हैकल में दुआ कर रहा था, तो ऐसा हुआ कि मैं बेखुद हो गया। 18 और उस को देखा कि मुझ से कहता है, “जल्दी कर और फ़ौरन येरूशलेम से निकल जा, क्योंकि वो मेरे हक़ में तेरी गवाही कुबूल न करेंगे।”

19 मैंने कहा, ‘ऐ खुदावन्द! वो खुद जानते हैं, कि जो तुझ पर ईमान लाए हैं, उन को कैद कराता और जा'बजा इबादतखानों में पिटाता था। 20 और जब तेरे शहीद स्तिफ़नुस का खून बहाया जाता था, तो मैं भी वहाँ खड़ा

था। और उसके क़त्ल पर राजी था, और उसके क़ातिलों के कपड़ों की हिफ़ाज़त करता था। ²¹ उस ने मुझ से कहा, “जा मैं तुझे ग़ैर क़ौमों के पास दूर दूर भेजूँगा।”

²² वो इस बात तक तो उसकी सुनते रहे फिर बुलन्द आवाज़ से चिल्लाए कि ऐसे शख्स को ज़मीन पर से ख़त्म कर दे! उस का ज़िन्दा रहना मुनासिब नहीं, ²³ जब वो चिल्लाते और अपने कपड़े फ़ेंकते और खाक उड़ाते थे।

????? ?? ????? ???? ?? ???????
??????????

²⁴ तो पलटन के सरदार ने हुक्म दे कर कहा, कि उसे क़िले में ले जाओ, और कोड़े मार कर उस का इज़हार लो ताकि मुझे मा'लूम हो कि वो किस वजह से उसकी मुख़ालिफ़त में यूँ चिल्लाते हैं।

²⁵ जब उन्होंने उसे रस्सियों से बाँध लिया तो, पौलुस ने उस सिपाही से जो पास खड़ा था कहा, “खुदावन्द क्या तुम्हें जायज़ है कि एक रोमी आदमी को कोड़े मारो और वो भी कुसूर साबित किए बग़ैर?” ²⁶ सिपाही ये सुन कर पलटन के सरदार के पास गया और उसे ख़बर दे कर कहा, तू क्या करता है? ये तो रोमी आदमी है।

²⁷ पलटन के सरदार ने उस के पास आकर कहा, मुझे बता तो क्या तू रोमी है? उस ने कहा, हाँ। ²⁸ पलटन के सरदार ने जवाब दिया कि मैं ने बड़ी रक़म दे कर रोमी होने का रुत्बा हासिल किया पौलुस ने कहा, “मैं तो पैदाइशी हूँ।” ²⁹ पस, जो उस का इज़हार लेने को थे, फ़ौरन उस से अलग हो गए। और पलटन का सरदार भी ये मा'लूम करके डर गया, कि जिसको मैंने बाँधा है, वो रोमी है।

³⁰ सुबह को ये हकीकत मा'लूम करने के इरादे से कि यहूदी उस पर क्या इल्ज़ाम लगाते हैं। उस ने उस को खोल दिया। और सरदार काहिन और सब सदर — ए — आदालत वालों को जमा होने का हुक्म दिया, और पौलुस को नीचे ले जाकर उनके सामने खड़ा कर दिया।

23

¹ पौलुस ने सदर — ए आदालत वालों को ग़ौर से देख कर कहा “ऐ भाइयों, मैंने आज तक पूरी नेक निती से खुदा के वास्ते अपनी उम्र गुज़ारी है।” ² सरदार काहिन हननियाह ने उन को जो उस के पास खड़े थे, हुक्म दिया कि उस के मुँह पर तमाचा मारो। ³ पौलुस ने उस से कहा, ऐ सफ़ेदी फिरी हुई दीवार! खुदा “तुझे मारेगा! तू शरी'अत के मुवाफ़िक़ मेरा इन्साफ़ करने को बैठा है, और क्या शरी'अत के बर — खिलाफ़ मुझे मारने का हुक्म देता है।”

⁴ जो पास खड़े थे, उन्होंने कहा, “क्या तू खुदा के सरदार काहिन को बुरा कहता है?” ⁵ पौलुस ने कहा, ऐ भाइयों, मुझे मालूम न था कि ये सरदार काहिन है, क्यूँकि लिखा है कि,

अपनी क़ौम के सरदार को बुरा न कह।

⁶ जब पौलुस ने ये मा'लूम किया कि कुछ सदूकी हैं और कुछ फ़रीसी तो अदालत में पुकार कर कहा, ऐ भाइयों, मैं फ़रीसी और फ़रीसियों की औलाद हूँ। मुद्दों की उम्मीद और क़यामत के बारे में मुझ पर मुक़द्दमा हो रहा है, ⁷ जब उस ने ये कहा तो फ़रीसियों और सदूकियों में तकरार हुई, और मजमें में फूट पड़ गई। ⁸ क्यूँकि सदूकी तो कहते हैं कि न क़यामत होगी, न कोई फ़रिश्ता है, न रूह मगर फ़रीसी दोनों का इक़रार करते हैं।

⁹ पस, बड़ा शोर हुआ। और फ़रीसियों के फ़िरके के कुछ आलिम उठे “और यूँ कह कर झगड़ने लगे कि हम इस आदमी में कुछ बुराई नहीं पाते और अगर किसी रूह या फ़रिश्ते ने इस से कलाम किया हो तो फिर क्या?” ¹⁰ और जब बड़ी तकरार हुई तो पलटन के सरदार ने इस ख़ौफ़ से कि उस वक़्त पौलुस के टुकड़े कर दिए जाएँ, फ़ौज को हुक्म दिया कि उतर कर उसे उन में से ज़बरदस्ती निकालो और क़िले में ले जाओ।

¹¹ उसी रात खुदावन्द उसके पास आ खड़ा हुआ, और कहा, “इत्मीनान रख; कि जैसे तू ने मेरे बारे में ये रूशलेम में गवाही दी है वैसे ही तुझे रोमा में भी गवाही देनी होगी।”

?????? ?? ??????? ?? ???

¹² जब दिन हुआ तो यहूदियों ने एका कर के और ला'नत की क़सम खाकर कहा “कि जब तक हम पौलुस को क़त्ल न कर लें न कुछ खाएँगे न पीएँगे।” ¹³ और जिन्होंने आपस में ये साज़िश की वो चालीस से ज्यादा थे।

¹⁴ पस, उन्होंने ने सरदार काहिनों और बुज़ुर्गों के पास जाकर कहा “कि हम ने सख़्त ला'नत की क़सम खाई है कि जब तक हम पौलुस को क़त्ल न कर लें कुछ न चखेंगे।” ¹⁵ पस, अब तुम सदर — ए — अदालत वालों से मिलकर पलटन के सरदार से अर्ज़ करो कि उसे तुम्हारे पास लाए। गोया तुम उसके मु'अमिले की हकीकत ज्यादा मालूम करना चाहते हो, और हम उसके पहुँचने से पहले उसे मार डालने को तैयार हैं”

¹⁶ लेकिन पौलुस का भांजा उनकी घात का हाल सुन कर आया और क़िले में जाकर पौलुस को ख़बर दी।

¹⁷ पौलुस ने सुबेदारों में से एक को बुला कर कहा “इस

जवान को पलटन के सरदार के पास ले जाए उस से कुछ कहना चाहता है।”

18 उस ने उस को पलटन के सरदार के पास ले जा कर कहा कि पौलुस कैदी ने मुझे बुला कर दरखास्त की कि जवान को तेरे पास लाऊँ। कि तुझ से कुछ कहना चाहता है। 19 पलटन के सरदार ने उसका हाथ पकड़ कर और अलग जा कर पूछा “कि मुझ से क्या कहना चाहता है?”

20 उस ने कहा “यहूदियों ने मशवरा किया है, कि तुझ से दरखास्त करें कि कल पौलुस को सदर — ए — अदालत में लाए। गोया तू उस के हाल की और भी तहकीकात करना चाहता है। 21 लेकिन तू उन की न मानना, क्योंकि उन में चालीस शख्स से ज्यादा उस की घात में हैं जिन्होंने ला'नत की कसम खाई है, कि जब तक उसे मार न डालें न खाएँगे न पीएँगे और अब वो तैयार हैं, सिर्फ तेरे वादे का इन्तज़ार है।”

22 पस, सरदार ने जवान को ये हुक्म दे कर रुखसत किया कि किसी से न कहना कि तू ने मुझ पर ये ज़ाहिर किया।

23 और दो सुबेदारों को पास बुला कर कहा कि “दो सौ सिपाही और सत्तर सवार और दो सौ नेज़ा बरदार पहर रात गए, कैसरिया जाने को तैयार कर रखना। 24 और हुक्म दिया पौलुस की सवारी के लिए जानवरों को भी हाज़िर करें, ताकि उसे फ़ेलिक्स हाकिम के पास सहीह सलामत पहुँचा दें।”

25 और इस मज्मून का खत लिखा।

26 क्लोदियुस लूसियास का फ़ेलिक्स बहादुर हाकिम को सलाम। 27 इस शख्स को यहूदियों ने पकड़ कर मार डालना चाहा मगर जब मुझे मा'लूम हुआ कि ये रोमी है तो फ़ौज समेत चढ़ गया, और छुड़ा लाया।

28 और इस बात की दरियाफ़्त करने का इरादा करके कि वो किस वजह से उस पर ला'नत करते हैं; उसे उन की सदर — ए — अदालत में ले गया। 29 और मा'लूम हुआ कि वो अपनी शरी'अत के मस्लों के बारे में उस पर नालिश करते हैं; लेकिन उस पर कोई ऐसा इल्ज़ाम नहीं लगाया गया कि क़त्ल या क़ैद के लायक हो। 30 और जब मुझे इत्तला हुई कि इस शख्स के बर — खिलाफ़ साज़िश होने वाली है, तो मैंने इसे फ़ौरन तेरे पास भेज दिया है और इस के मुद्द, इयों को भी हुक्म दे दिया है कि तेरे सामने इस पर दा'वा करें।

31 पस, सिपाहियों ने हुक्म के मुवाफ़िक़ पौलुस को लेकर रातों रात अन्तिपत्रिस में पहुँचा दिया। 32 और दूसरे दिन सवारों को उसके साथ जाने के लिए छोड़ कर

आप किले की तरफ़ मुड़े। 33 उन्होंने ने कैसरिया में पहुँच कर हाकिम को खत दे दिया, और पौलुस को भी उस के आगे हाज़िर किया।

34 उस ने खत पढ़ कर पूछा कि ये किस सूबे का है और ये मा'लूम करके कि किलकिया का है। 35 उस से कहा “कि जब तेरे मुद्द'ई भी हाज़िर होंगे; मैं तेरा मुक़दमा करूँगा।” और उसे हेरोदेस के किले में क़ैद रखने का हुक्म दिया।

24

?????? ?? ?????????? ?? ??????? ???? ?????

1 पाँच दिन के बाद हननियाह सरदार काहिन के कुछ बुज़ुर्गों और तिरतुलुस नाम एक वकील को साथ ले कर वहाँ आया, और उन्होंने हाकिम के सामने पौलुस के खिलाफ़ फ़रियाद की। 2 जब वो बुलाया गया तो तिरतुलुस इल्ज़ाम लगा कर कहने लगा कि ऐ फ़ेलिक्स बहादुर चूँकि तेरे वसीले से हम बड़े अमन में हैं और तेरी दूर अन्देशी से इस क्रौम के फ़ाइदे के लिए खराबियों की इस्लाह होती है।

3 हम हर तरह और हर जगह कमाल शुक्र गुज़ारी के साथ तेरा एहसान मानते हैं।

4 मगर इस लिए कि तुझे ज्यादा तकलीफ़ न दूँ, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू मेहरबानी से दो एक बातें हमारी सुन ले। 5 क्योंकि हम ने इस शख्स को फ़साद करने वाला और दुनिया के सब यहूदियों में फ़ितना अंगेज़ और नासरियों की बिद'अती फ़िरके का सरगिरोह पाया। 6 इस ने हैकल को नापाक करने की भी कोशिश की थी, और हम ने इसे पकड़ा। और हम ने चाहा कि अपनी शरी'अत के मुवाफ़िक़ इस की अदालत करें।

7 लेकिन लूसियास सरदार आकर बड़ी ज़बरदस्ती से उसे हमारे हाथ से छीन ले गया। 8 और उसके मुद्द'इयों को हुक्म दिया कि तेरे पास जाएँ इसी से तहकीक़ करके तू आप इन सब बातों को मालूम कर सकता है, जिनका हम इस पर इल्ज़ाम लगाते हैं। 9 और दूसरे यहूदियों ने भी इस दा'वे में मुत्तफ़िक़ हो कर कहा कि ये बातें इसी तरह हैं।

10 जब हाकिम ने पौलुस को बोलने का इशारा किया तो उस ने जवाब दिया, चूँकि मैं जानता हूँ, कि तू बहुत बरसों से इस क्रौम की अदालत करता है, इसलिए मैं खुद से अपना उज़र बयान करता हूँ। 11 तू मालूम कर सकता है, कि बारह दिन से ज्यादा नहीं हुए कि मैं येरुशलेम में इबादत करने गया था। 12 और उन्होंने मुझे न हैकल में किसी के साथ बहस करते या लोगों में फ़साद कराते

पाया न इबादतखानों में न शहर में। ¹³ और न वो इन बातों को जिन का मुझ पर अब इल्जाम लगाते हैं, तेरे सामने साबित कर सकते हैं।

¹⁴ लेकिन तेरे सामने ये इकरार करता हूँ, कि जिस तरीके को वो बिद'अत कहते हैं, उसी के मुताबिक मैं अपने बाप दादा के खुदा की इबादत करता हूँ, और जो कुछ तौरत और नबियों के सहीफों में लिखा है, उस सब पर मेरा ईमान है। ¹⁵ और खुदा से उसी बात की उम्मीद रखता हूँ, जिसके वो खुद भी मुन्तज़िर हैं, कि रास्तबाज़ों और नारास्तों दोनों की क्रयामत होगी। ¹⁶ इसलिए मैं खुद भी कोशिश में रहता हूँ, कि खुदा और आदमियों के बारे में मेरा दिल मुझे कभी मलामत न करे।

¹⁷ बहुत बरसों के बाद मैं अपनी क़ौम को ख़ैरात पहुँचाने और नज़रें चढ़ाने आया था। ¹⁸ उन्होंने बग़ैर हँगामे या बवाल के मुझे तहारत की हालत में ये काम करते हुए हैकल में पाया, यहाँ आसिया के चन्द यहूदी थे। ¹⁹ और अगर उन का मुझ पर कुछ दा'वा था, तो उन्हें तेरे सामने हाज़िर हो कर फ़रियाद करना वाजिब था।

²⁰ या यही खुद कहें, कि जब मैं सदर — ए — अदालत के सामने खड़ा था, तो मुझ में क्या बुराई पाई थी। ²¹ सिवा इस बात के कि मैं ने उन में खड़े हो कर बुलन्द आवाज़ से कहा था कि मुद्दों की क्रयामत के बारे में आज मुझ पर मुक़दमा हो रहा है।

²² फ़ेलिक्स ने जो सहीह तौर पर इस तरीके से वाक़िफ़ था “ये कह कर मुक़दमे को मुल्तवी कर दिया कि जब पलटन का सरदार लूसियास आएगा तो मैं तुम्हारा मुक़दमा फ़ैसला करूँगा।” ²³ और सुबेदार को हुक्म दिया कि उस को कैद तो रख मगर आराम से रखना और इसके दोस्तों में से किसी को इसकी ख़िदमत करने से मनह' न करना।

²⁴ और चन्द रोज़ के बाद फ़ेलिक्स अपनी बीवी दुसिल्ला को जो यहूदी थी, साथ ले कर आया, और पौलुस को बुलवा कर उस से मसीह ईसा के दीन की कैफ़ियत सुनी। ²⁵ और जब वो रास्तबाज़ी और परहेज़गारी और आइन्दा अदालत का बयान कर रहा था, तो फ़ेलिक्स ने दहशत खाकर जवाब दिया, कि इस वक़्त तू जा; फुरसत पाकर तुझे फिर बुलाऊँगा।

²⁶ उसे पौलुस से कुछ रुपए मिलने की उम्मीद भी थी, इसलिए उसे और भी बुला बुला कर उस के साथ गुफ़्तगू किया करता था। ²⁷ लेकिन जब दो बरस गुज़र गए तो पुरकियुस फ़ेस्तुस फ़ेलिक्स की जगह मुकर्रर हुआ और फ़ेलिक्स यहूदियों को अपना एहसान मन्द करने की गरज़ से पौलुस को कैद ही में छोड़ गया।

25

????? ?

¹ पस, फ़ेस्तुस सूबे में दाख़िल होकर तीन रोज़ के बाद कैसरिया से येरूशलेम को गया। ² और सरदार काहिनों और यहूदियों के रईसों ने उस के यहाँ पौलुस के खिलाफ़ फ़रियाद की। ³ और उस की मुख़ालिफ़त में ये रि'आयत चाही कि उसे येरूशलेम में बुला भेजे; और घात में थे, कि उसे राह में मार डालें।

⁴ मगर फ़ेस्तुस ने जवाब दिया कि पौलुस तो कैसरिया में कैद है और मैं आप जल्द वहाँ जाऊँगा। ⁵ पस तुम में से जो इख़्तियार वाले हैं वो साथ चलें और अगर इस शख्स में कुछ बेजा बात हो तो उस की फ़रियाद करें।

⁶ वो उन में आठ दस दिन रह कर कैसरिया को गया, और दूसरे दिन तख़्त — ए — अदालत पर बैठकर पौलुस के लाने का हुक्म दिया। ⁷ जब वो हाज़िर हुआ तो जो यहूदी येरूशलेम से आए थे, वो उस के आस पास खड़े होकर उस पर बहुत सख़्त इल्जाम लगाने लगे, मगर उन को साबित न कर सके। ⁸ लेकिन पौलुस ने ये उज़र किया “मैंने न तो कुछ यहूदियों की शरी'अत का गुनाह किया है, न हैकल का न कैसर का।”

⁹ मगर फ़ेस्तुस ने यहूदियों को अपना एहसानमन्द बनाने की गरज़ से पौलुस को जवाब दिया “क्या तुझे येरूशलेम जाना मन्ज़ूर है? कि तेरा ये मुक़दमा वहाँ मेरे सामने फ़ैसला हो”

¹⁰ पौलुस ने कहा, मैं कैसर के तख़्त — ए — अदालत के सामने खड़ा हूँ, मेरा मुक़दमा यहीं फ़ैसला होना चाहिए यहूदियों का मैं ने कुछ कुसूर नहीं किया। चुनाँचे तू भी खूब जानता है।

¹¹ अगर बदकार हूँ, या मैंने क़त्ल के लायक़ कोई काम किया है तो मुझे मरने से इन्कार नहीं! लेकिन जिन बातों का वो मुझ पर इल्जाम लगाते हैं अगर उनकी कुछ अस्ल नहीं तो उनकी रि'आयत से कोई मुझ को उनके हवाले नहीं कर सकता। मैं कैसर के यहाँ दरख्वास्त करता हूँ। ¹² फिर फ़ेस्तुस ने सलाहकारों से मशवरा करके जवाब दिया, “तू ने कैसर के यहाँ फ़रियाद की है, तो कैसर ही के पास जाएगा।”

¹³ और कुछ दिन गुज़रने के बाद अग्रिप्पा बादशाह और बिरनीकि ने कैसरिया में आकर फ़ेस्तुस से मुलाक़ात की। ¹⁴ और उनके कुछ अर्से वहाँ रहने के बाद फ़ेस्तुस ने पौलुस के मुक़दमे का हाल बादशाह से ये कह कर बयान किया। कि एक शख्स को फ़ेलिक्स कैद में छोड़ गया है। ¹⁵ जब मैं येरूशलेम में था, तो सरदार काहिनों

और यहूदियों के बुजुर्गों ने उसके खिलाफ़ फ़रियाद की; और सज़ा के हुक्म की दरखास्त की। ¹⁶ उनको मैंने जवाब दिया कि “रोमियों का ये दस्तूर नहीं कि किसी आदमियों को रि'आयतन सज़ा के लिए हवाले करें, जब कि मुद्द'अलिया को अपने मुद्द'इयों के रू — ब — रू हो कर दा, वे के जवाब देने का मौक़ा न मिले।”

¹⁷ पस, जब वो यहाँ जमा हुए तो मैंने कुछ देर न की बल्कि दूसरे ही दिन तख़्त — ए अदालत पर बैठ कर उस आदमी को लाने का हुक्म दिया। ¹⁸ मगर जब उसके मुद्द'ई खड़े हुए तो जिन बुराइयों का मुझे गुमान था, उनमें से उन्होंने किसी का इल्ज़ाम उस पर न लगाया। ¹⁹ बल्कि अपने दीन और किसी शख्स ईसा के बारे में उस से बहस करते थे, जो मर गया था, और पौलुस उसको ज़िन्दा बताता है। ²⁰ चूँकि मैं इन बातों की तहक़ीकात के बारे में उलझन में था, इस लिए उस से पूछा क्या तू येरूशलेम जाने को राज़ी है, कि वहाँ इन बातों का फ़ैसला हो?

²¹ मगर जब पौलुस ने फ़रियाद की, कि मेरा मुक़द्दमा शहन्शाह की अदालत में फ़ैसला हो तो, मैंने हुक्म दिया कि जब तक उसे कैसर के पास न भेजूँ, कैद में रहे। ²² अगिरप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, मैं भी उस आदमी की सुनना चाहता हूँ, उस ने कहा “तू कल सुन लेगा।”

²³ पस, दूसरे दिन जब अगिरप्पा और बिरनीकि बड़ी शान — ओ शौकत से पलटन के सरदारों और शहर के र'ईसों के साथ दिवान खाने में दाख़िल हुए। तो फ़ेस्तुस के हुक्म से पौलुस हाज़िर किया गया। ²⁴ फिर फ़ेस्तुस ने कहा, ऐ अगिरप्पा बादशाह और ऐ सब हाज़रीन तुम इस शख्स को देखते हो, जिसके बारे में यहूदियों के सारे ग़िरोह ने येरूशलेम में और यहाँ भी चिल्ला चिल्ला कर मुझ से अर्ज़ की कि इस का आगे को ज़िन्दा रहना मुनासिब नहीं।

²⁵ लेकिन मुझे मा'लूम हुआ कि उस ने क़त्ल के लायक़ कुछ नहीं किया; और जब उस ने खुद शहन्शाह के यहाँ फ़रियाद की तो मैं ने उस को भेजने की तज्वीज़ की। ²⁶ उसके बारे में मुझे कोई ठीक बात मा'लूम नहीं कि सरकार — ए — आली को लिखूँ इस वास्ते मैंने उस को तुम्हारे आगे और खासकर — ऐ — अगिरप्पा बादशाह तेरे हुज़ूर हाज़िर किया है, ताकि तहक़ीकात के बाद लिखने के काबिल कोई बात निकले। ²⁷ क्यूँकि कैदी के भेजते वक़्त उन इल्ज़ामों को जो उस पर लगाए गए हैं, जाहिर न करना मुझे खिलाफ़ — ए — अक़ल मा'लूम होता है।

26

¹ अगिरप्पा ने पौलुस से कहा, तुझे अपने लिए बोलने की इजाज़त है; पौलुस अपना हाथ बढ़ाकर अपना जवाब यूँ पेश करने लगा कि,

² ऐ अगिरप्पा बादशाह जितनी बातों की यहूदी मुझ पर ला'नत करते हैं; आज तेरे सामने उनकी जवाबदेही करना अपनी खुशनसीबी जानता हूँ। ³ खासकर इसलिए कि तू यहूदियों की सब रस्मों और मसलों से वाकिफ़ है; पस, मैं मिन्नत करता हूँ, कि तहम्मील से मेरी सुन ले।

⁴ सब यहूदी जानते हैं कि अपनी क़ौम के दर्मियान और येरूशलेम में शुरू जवानी से मेरा चालचलन कैसा रहा है। ⁵ चूँकि वो शुरू से मुझे जानते हैं, अगर चाहें तो गवाह हो सकते हैं, कि मैं फ़रीसी होकर अपने दीन के सब से ज्यादा पाबन्द मज़हबी फ़िरके की तरह ज़िन्दगी गुज़ारता था।

⁶ और अब उस वा'दे की उम्मीद की वजह से मुझ पर मुक़द्दमा हो रहा है, जो खुदा ने हमारे बाप दादा से किया था। ⁷ उसी वा'दे के पूरा होने की उम्मीद पर हमारे बारह के बारह क़बीले दिल'ओ जान से रात दिन इबादत किया करते हैं, इसी उम्मीद की वजह से ऐ बादशाह यहूदी मुझ पर नालिश करते हैं। ⁸ जब कि खुदा मुर्दों को जिलाता है, तो ये बात तुम्हारे नज़दीक क्यूँ ग़ैर मो'तबर समझी जाती है?

⁹ मैंने भी समझा था, कि ईसा नासरी के नाम की तरह तरह से मुखालिफ़त करना मुझ पर फ़र्ज़ है। ¹⁰ चुनाँचे मैंने येरूशलेम में ऐसा ही किया, और सरदार काहिनों की तरफ़ से इख़्तियार पाकर बहुत से मुक़द्दसों को कैद में डाला और जब वो क़त्ल किए जाते थे, तो मैं भी यही मशवरा देता था। ¹¹ और हर इबादत खाने में उन्हें सज़ा दिला दिला कर ज़बरदस्ती उन से कूफ़र कहलवाता था, बल्कि उन की मुखालिफ़त में ऐसा दिवाना बना कि ग़ैर शाहरों में भी जाकर उन्हें सताता था।

¹² इसी हाल में सरदार काहिनों से इख़्तियार और परवाने लेकर दमिश्क़ को जाता था। ¹³ तो ऐ बादशाह मैंने दो पहर के वक़्त राह में ये देखा कि सूरज के नूर से ज्यादा एक नूर आसमान से मेरे और मेरे हमसफ़रों के गिर्द आ चमका। ¹⁴ जब हम सब ज़मीन पर गिर पड़े तो मैंने इब्रानी ज़बान में ये आवाज़ सुनी कि “ऐ साऊल, ऐ साऊल, तू मुझे क्यूँ सताता है? अपने आप पर लात मारना तेरे लिए मुश्किल है।”

¹⁵ मैं ने कहा 'ऐ खुदावन्द, तू कौन हैं? 'खुदावन्द ने फ़रमाया “मैं ईसा हूँ, जिसे तू सताता है। ¹⁶ लेकिन उठ अपने पाँव पर खड़ा हो, क्यूँकि मैं इस लिए तुझ

पर जाहिर हुआ हूँ, कि तुझे उन चीजों का भी खादिम और गवाह मुकर्रर करूँ जिनकी गवाही के लिए तू ने मुझे देखा है, और उन का भी जिनकी गवाही के लिए मैं तुझ पर जाहिर हुआ करूँगा।¹⁷ और मैं तुझे इस उम्मत और ग़ैर क़ौमों से बचाता रहूँगा। जिन के पास तुझे इसलिए भेजता हूँ।¹⁸ कि तू उन की आँखें खोल दे ताकि अन्धेरे से रोशनी की तरफ़ और शैतान के इस्तिथार से खुदा की तरफ़ रुजू लाएँ, और मुझ पर ईमान लाने के ज़रिए गुनाहों की मु'आफ़ी और मुक़दसों में शरीक हो कर मीरास पाएँ।”

¹⁹ इसलिए ऐ अग्रिप्पा बादशाह! मैं उस आसमानी रोया का नाफ़रमान न हुआ।²⁰ बल्कि पहले दमिशकियों को फिर येरूशलेम और सारे मुल्क यहूदिया के बाशिन्दों को और ग़ैर क़ौमों को समझाता रहा। कि तौबा करें और खुदा की तरफ़ रुजू लाकर तौबा के मुवाफ़िक़ काम करें।²¹ इन्ही बातों की वजह से कुछ यहूदियों ने मुझे हैकल में पकड़ कर मार डालने की कोशिश की।

²² लेकिन खुदा की मदद से मैं आज तक क़ाईम हूँ, और छोटे बड़े के सामने गवाही देता हूँ, और उन बातों के सिवा कुछ नहीं कहता जिनकी पेशीनगोई नबियों और मूसा ने भी की है।²³ कि “मसीह को दुःखः उठाना ज़रूर है और सब से पहले वही मुर्दों में से ज़िन्दा हो कर इस उम्मत को और ग़ैर क़ौमों को भी नूर का इश्तिहार देगा।”

²⁴ जब वो इस तरह जवाबदेही कर रहा था, तो फ़ेस्तुस ने बड़ी आवाज़ से कहा “ऐ पौलुस तू दिवाना है; बहुत इल्म ने तुझे दिवाना कर दिया है।”²⁵ पौलुस ने कहा, ऐ फ़ेस्तुस बहादुर; मैं दिवाना नहीं बल्कि सच्चाई और होशियारी की बातें कहता हूँ।²⁶ चुनाँचे बादशाह जिससे मैं दिलेराना कलाम करता हूँ, ये बातें जानता है और मुझे यक़ीन है कि इन बातों में से कोई उस से छिपी नहीं। क्योंकि ये माजरा कहीं कोने में नहीं हुआ।

²⁷ ऐ अग्रिप्पा बादशाह, क्या तू नबियों का यक़ीन करता है? मैं जानता हूँ, कि तू यक़ीन करता है।²⁸ अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, तू तो थोड़ी ही सी नसीहत कर के मुझे मसीह कर लेना चाहता है।²⁹ पौलुस ने कहा, मैं तो खुदा से चाहता हूँ, कि थोड़ी नसीहत से या बहुत से सिर्फ़ तू ही नहीं बल्कि जितने लोग आज मेरी सुनते हैं, मेरी तरह हो जाएँ, सिवा इन जंजीरों के।

³⁰ तब बादशाह और हाकिम और बरनीकि और उनके हमनशीन उठ खड़े हुए,³¹ और अलग जाकर एक दूसरे

से बातें करने और कहने लगे, कि ये आदमी ऐसा तो कुछ नहीं करता जो क़त्ल या क़ैद के लायक़ हो।³² अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, कि अगर ये आदमी कैसर के यहाँ फ़रियाद न करता तो छूट सकता था।

27

27:1-27:12

¹ जब जहाज़ पर इतालिया को हमारा जाना ठहराया गया तो उन्होंने पौलुस और कुछ और कैदियों को शहन्शाही पलटन के एक सुबेदार अगस्तुस ने यूलियुस नाम के हवाले किया।² और हम अदरमुतय्युस के एक जहाज़ पर जो आसिया के किनारे के बन्दरगाहों में जाने को था। सवार होकर रवाना हुए और थिस्सलुनीकियों का अरिस्तरखुस मकिदुनी हमारे साथ था।

³ दूसरे दिन सैदा में जहाज़ ठहराया, और यूलियुस ने पौलुस पर मेहरबानी करके दोस्तों के पास जाने की इजाज़त दी। ताकि उस की खातिरदारी हो।⁴ वहाँ से हम रवाना हुए और कुप्रुस की आड़ में होकर चले इसलिए कि हवा मुखालिफ़ थी।⁵ फिर किलकिया और पम्फ़ीलिया सूबे के समुन्दर से गुज़र कर लूकिया के शहर मूरा में उतरे।⁶ वहाँ सुबेदार को इस्कन्दरिया का एक जहाज़ इतालिया जाता हुआ, मिला पस, हमको उस में बैठा दिया।

⁷ और हम बहुत दिनों तक आहिस्ता आहिस्ता चलकर मुश्किल से कनिदुस शहर के सामने पहुँचे तो इसलिए कि हवा हम को आगे बढ़ने न देती थी सलमूने के सामने से हो कर करते टापू की आड़ में चले।⁸ और बमुश्किल उसके किनारे किनारे चलकर हसीन — बन्दर नाम एक मक़ाम में पहुँचे जिस से लसया शहर नज़दीक़ था।

⁹ जब बहुत अरसा गुज़र गया और जहाज़ का सफ़र इसलिए ख़तरनाक हो गया कि रोज़ा का दिन गुज़र चुका था। तो पौलुस ने उन्हें ये कह कर नसीहत की।¹⁰ कि ऐ साहिबो। मुझे मालूम होता है, कि इस सफ़र में तकलीफ़ और बहुत नुक्सान होगा, न सिर्फ़ माल और जहाज़ का बल्कि हमारी जानों का भी।¹¹ मगर सुबेदार ने नाखुदा और जहाज़ के मालिक की बातों पर पौलुस की बातों से ज्यादा लिहाज़ किया।

¹² और चूँकि वो बन्दरगाह जाड़ों में रहने कि लिए अच्छा न था, इसलिए अक्सर लोगों की सलाह ठहरी कि वहाँ से रवाना हों, और अगर हो सके तो फ़ेनिक्स शहर में पहुँच कर जाड़ा काटें; वो करते का एक बन्दरगाह है जिसका रुख़ शिमाल मशरिक् और जुनूब मशरिक् को है।

13 जब कुछ कुछ दक्खिना हवा चलने लगी तो उन्होंने ने ये समझ कर कि हमारा मतलब हासिल हो गया लंगर उठाया और करते के किनारे के करीब करीब चले।

14 लेकिन थोड़ी देर बाद एक बड़ी तुफानी हवा जो यूरकुलोन कहलाती है करते पर से जहाज़ पर आई। 15 और जब जहाज़ हवा के क्राबू में आ गया, और उस का सामना न कर सका, तो हम ने लाचार होकर उसको बहने दिया। 16 और कौदा नाम एक छोटे टापू की आड़ में बहते बहते हम बड़ी मुश्किल से डोंगी को क्राबू में लाए।

17 और जब मल्लाह उस को उपर चढ़ा चुके तो जहाज़ की मजबूती की तदबीरें करके उसको नीचे से बाँधा, और सूरतिस के चोर बालू में धंस जाने के डर से जहाज़ का साज़ो सामान उतार लिया। और उसी तरह बहते चले गए। 18 मगर जब हम ने आँधी से बहुत हिचकोले खाए तो दूसरे दिन वो जहाज़ का माल फेंकने लगे।

19 और तीसरे दिन उन्होंने ने अपने ही हाथों से जहाज़ के कुछ आलात — ओ — 'असबाब भी फेंक दिए। 20 जब बहुत दिनों तक न सूरज नज़र आया न तारे और शिदत की आँधी चल रही थी, तो आखिर हम को बचने की उम्मीद बिल्कुल न रही।

21 और जब बहुत फ़ाका कर चुके तो पौलुस ने उन के बीच में खड़े हो कर कहा, ऐ साहिबो; लाज़िम था, कि तुम मेरी बात मान कर करते से खाना न होते और ये तकलीफ़ और नुक़सान न उठाते।

22 मगर अब मैं तुम को नसीहत करता हूँ कि इत्मीनान रखो; क्यूँकि तुम में से किसी का नुक़सान न होगा मगर जहाज़ का। 23 क्यूँकि खुदा जिसका मैं हूँ, और जिसकी इबादत भी करता हूँ, उसके फ़रिश्ते ने इसी रात को मेरे पास आकर। 24 कहा, पौलुस, न डर। ज़रूरी है कि तू कैसर के सामने हाज़िर हो, और देख जितने लोग तेरे साथ जहाज़ में सवार हैं, उन सब की खुदा ने तेरी खातिर जान बख़्शी की। 25 इसलिए “ऐ साहिबो; इत्मीनान रखो; क्यूँकि मैं खुदा का यक़ीन करता हूँ, कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा। 26 लेकिन ये ज़रूर है कि हम किसी टापू में जा पड़ें”

27 जब चौधवीं रात हुई और हम बहर — ए — अदिरया में टकराते फिरते थे, तो आधी रात के करीब मल्लाहों ने अंदाज़े से मा'लूम किया कि किसी मुल्क के नज़दीक पहुँच गए। 28 और पानी की थाह लेकर बीस पुर्सा पाया और थोड़ा आगे बढ़ कर और फिर थाह लेकर पन्द्रह पुर्सा पाया। 29 और इस डर से कि पथरीली

चट्टानों पर जा पड़ें, जहाज़ के पीछे से चार लंगर डाले और सुबह होने के लिए दुआ करते रहे।

30 और जब मल्लाहों ने चाहा कि जहाज़ पर से भाग जाएँ, और इस बहाने से कि गलही से लंगर डालें, डोंगी को समुन्दर में उतारें। 31 तो पौलुस ने सुबेदार और सिपाहियों से कहा “अगर ये जहाज़ पर न रहेंगे तो तुम नहीं बच सकते।” 32 इस पर सिपाहियों ने डोंगी की रस्सियाँ काट कर उसे छोड़ दिया।

33 और जब दिन निकलने को हुआ तो पौलुस ने सब की मिन्नत की कि खाना खालो और कहा कि तुम को इन्तज़ार करते करते और फ़ाका करते करते आज चौदह दिन हो गए; और तुम ने कुछ नहीं खाया। 34 इसलिए तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि खाना खालो, इसी में तुम्हारी बहतरी मौकूफ़ है, और तुम में से किसी के सिर का बाल बाका न होगा। 35 ये कह कर उस ने रोटी ली और उन सब के सामने खुदा का शुक्र किया, और तोड़ कर खाने लगा।

36 फिर उन सब की खातिर जमा हुई, और आप भी खाना खाने लगे। 37 और हम सब मिलकर जहाज़ में दो सौ छिहत्तर आदमी थे। 38 जब वो खा कर सेर हुए तो गेहूँ को समुन्दर में फेंक कर जहाज़ को हल्का करने लगे।

39 जब दिन निकल आया तो उन्होंने उस मुल्क को न पहचाना, मगर एक खाड़ी देखी, जिसका किनारा साफ़ था, और सलाह की कि अगर हो सके तो जहाज़ को उस पर चढ़ा लें। 40 पस, लंगर खोल कर समुन्दर में छोड़ दिए, और पत्वारों की भी रस्सियाँ खोल दी; और अगला पाल हवा के रुख पर चढ़ा कर उस किनारे की तरफ़ चले। 41 लेकिन एक ऐसी जगह जा पड़े जिसके दोनों तरफ़ समुन्दर का ज़ोर था; और जहाज़ ज़मीन पर टिक गया, पस गलही तो धक्का खाकर फ़ंस गई; मगर दुम्बाला लहरों के ज़ोर से टूटने लगा।

42 और सिपाहियों की ये सलाह थी, कि कैदियों को मार डालें, कि ऐसा न हो कोई तैर कर भाग जाए। 43 लेकिन सुबेदार ने पौलुस को बचाने की गरज़ से उन्हें इस इरादे से बाज़ रखवा; और हुक्म दिया कि जो तैर सकते हैं, पहले कूद कर किनारे पर चले जाएँ। 44 बाक़ी लोग कुछ तरख़्तों पर और कुछ जहाज़ की और चीज़ों के सहारे से चले जाएँ; इसी तरह सब के सब खुशकी पर सलामत पहुँच गए।

28

?????? ??????? ?? ????? ??

1 जब हम पहुँच गए तो जाना कि इस टापू का नाम मिलिते है, 2 और उन अजनबियों ने हम पर खास

महरबानी की, क्योंकि बारिश की झड़ी और जाड़े की वजह से उन्होंने आग जलाकर हम सब की खातिर की।

3 जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठा जमा करके आग में डाला तो एक साँप गर्मी पा कर निकला और उसके हाथ पर लिपट गया। 4 जिस वक्त उन अजनबियों ने वो कीड़ा उसके हाथ से लटका हुआ देखा तो एक दूसरे से कहने लगे, बेशक ये आदमी खूनी है: अगरचे समुन्दर से बच गया तो भी अदल उसे जीने नहीं देता।

5 पस, उस ने कीड़े को आग में झटक दिया और उसे कुछ तकलीफ न पहुँची। 6 मगर वो मुन्तज़िर थे, कि इस का बदन सूज जाएगा: या ये मरकर यकायक गिर पड़ेगा लेकिन जब देर तक इन्तज़ार किया और देखा कि उसको कुछ तकलीफ न पहुँची तो और खयाल करके कहा, ये तो कोई देवता है।

7 वहाँ से करीब पुबलियुस नाम उस टापू के सरदार की मिलिक्यत थी; उस ने घर लेजाकर तीन दिन तक बड़ी महरबानी से हमारी मेहमानी की। 8 और ऐसा हुआ, कि पुबलियुस का बाप बुखार और पेचिश की वजह से बीमार पड़ा था; पौलुस ने उसके पास जाकर दुआ की और उस पर हाथ रखकर शिफा दी। 9 जब ऐसा हुआ तो बाक़ी लोग जो उस टापू में बीमार थे, आए और अच्छे किए गए। 10 और उन्होंने हमारी बड़ी 'इज्जत की और चलते वक्त जो कुछ हमें दरकार था; जहाज़ पर रख दिया।

11 तीन महीने के बाद हम इसकन्दरिया के एक जहाज़ पर रवाना हुए जो जाड़े भर 'उस टापू में रहा था जिसका निशान दियुसकूरी था 12 और सुरकूसा में जहाज़ ठहरा कर तीन दिन रहे।

13 और वहाँ से फेर खाकर रेगियूम बन्दरगाह में आए। एक रोज़ बाद दक्खिन हवा चली तो दूसरे दिन पुतियुली शहर में आए। 14 वहाँ हम को भाई मिले, और उनकी मिन्नत से हम सात दिन उन के पास रहे; और इसी तरह रोमा तक गए। 15 वहाँ से भाई हमारी खबर सुनकर अप्पियुस के चौक और तीन सराय तक हमारे इस्तक़बाल को आए। पौलुस ने उन्हें देखकर खुदा का शुक्र किया और उसके खातिर जमा हुई।

16 जब हम रोम में पहुँचे तो पौलुस को इजाज़त हुई, कि अकेला उस सिपाही के साथ रहे, जो उस पर पहरा देता था।

17 तीन रोज़ के बाद ऐसा हुआ कि उस ने यहूदियों के रईसों को बुलवाया और जब जमा हो गए, तो उन से कहा, ऐ भाइयों हर वक्त पर मैंने उम्मत और बाप दादा की रस्मों के खिलाफ़ कुछ नहीं किया। तोभी येरूशलेम से कैदी होकर रोमियों के हाथ हवाले किया

गया। 18 उन्होंने मेरी तहक़ीकात करके मुझे छोड़ देना चाहा; क्योंकि मेरे क़त्ल की कोई वजह न थी।

19 मगर जब यहूदियों ने मुखालिफ़त की तो मैंने लाचार होकर कैसर के यहाँ फ़रियाद की मगर इस वास्ते नहीं कि अपनी क़ौम पर मुझे कुछ इल्ज़ाम लगाना है, 20 पस, इसलिए मैंने तुम्हें बुलाया है कि तुम से मिलूँ और गुफ़्तगू करूँ, क्योंकि इस्राईल की उम्मीद की वजह से मैं इस ज़ंजीर से जकड़ा हुआ हूँ,

21 उन्होंने कहा “न हमारे पास यहूदिया से तेरे बारे में ख़त आए, न भाइयों में से किसी ने आ कर तेरी कुछ ख़बर दी न बुराई बयान की। 22 मगर हम मुनासिब जानते हैं कि तुझ से सुनें, कि तेरे खयालात क्या हैं; क्योंकि इस फ़िके की वजह हम को मा'लूम है कि हर जगह इसके खिलाफ़ कहते हैं।”

23 और वो उस से एक दिन ठहरा कर कसरत से उसके यहाँ जमा हुए, और वो खुदा की बादशाही की गवाही दे दे कर और मूसा की तौरेत और नबियों के सहीफ़ों से ईसा की वजह समझा समझा कर सुबह से शाम तक उन से बयान करता रहा। 24 और कुछ ने उसकी बातों को मान लिया, और कुछ ने न माना।

25 जब आपस में मुत्तफ़िक़ न हुए, तो पौलुस की इस एक बात के कहने पर रुख़्सत हुए; कि रूह — उल कुदूस ने यसा'याह नबी के ज़रिए तुम्हारे बाप दादा से खूब कहा कि। 26 इस उम्मत के पास जाकर कह कि तुम कानों से सुनोगे और हर्गिज़ न समझोगे और आँखों से देखोगे और हर्गिज़ मा'लूम न करोगे।

27 क्योंकि इस उम्मत के दिल पर चर्बी छा गई है,

'और वो कानों से ऊँचा सुनते हैं,

और उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर ली हैं,

कहीं ऐसा न हो कि आँखों से मा'लूम करें,

और कानों से सुनें,

और दिल से समझें,

और रुजू लाएँ,

और मैं उन्हें शिफ़ा बख़्शूँ।

28 “पस, तुम को मा'लूम हो कि खुदा! की इस नजात का पैग़ाम ग़ैर क़ौमों के पास भेजा गया है, और वो उसे सुन भी लेंगी”

29 [जब उस ने ये कहा तो यहूदी आपस में बहुत बहस करते चले गए।]

30 और वो पूरे दो बरस अपने किराए के घर में रहा।

31 और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा; और कमाल दिलेरी से बग़ैर रोक टोक के खुदा की

बादशाही का ऐलान करता और खुदावन्द ईसा मसीह
की बातें सिखाता रहा।

रोमियों के नाम पौलूस रसूल का खत

रोमियों 1:1 इशरा करती है कि रोमिया के खत का

मुसन्निफ़ पौलूस था, 16 साल से चल रही पुरानी रोम की सलतन में नीरो बादशाह हुकूमत करता था, उस के तीन साल गुज़रने के बाद पौलूस ने यूनानी शहर कुरिन्थ से यह खत रोमियों के नाम लिखा। मशहूर — ओमारूफ़ यूनानी शहर रोम भी जिन्सी ता'लुकात और बुतपरस्ती के लिए अड़्डा माना जाता था। सो जब पौलूस ने इंसान की गुनाहगारी की बाबत रोम के लोगों को लिखा तो साथ ही यह भी लिखा कि खुदा का किस मु'जिज़ाना तरीके से लोगों की जिन्दगियाँ बदलता है। पौलूस के मोज़ुआत मसीही मनादी की बुनियादी बातों को बैरूनी खाका पेश करत हैं। खुदा की पाकीज़गी, बनी इंसान के गुनाह के साथ मुजाहिमत नहीं कर सकती। इस लिए येसू मसीह के ज़रिए बचाने वाला फ़ज़ल पेश किया गया।

इस खत को कुरिन्थ से लिखे जाने की तारीख़ तक्ररीबन 57 ईस्वी है।

लिखे जाने की खास जगह रोम भी हो सकती है।

तमाम रोमियों के लिए जो खुदा के अज़ीज़ हैं और

उस के पाक लोग कहलाए जाते हैं यानी रोम शहर के कलीसिया के अर्कान (रोमियों 1:7) रोमी सल्तनत का पाय तख़्त।

रोमियों के नाम खत पौलूस की तरफ़ से साफ़ तौर

से और बा — उसूल, बा — काइदा तौर से लिखी गई मसीही इल्म — ए — इलाही की पेशकश है। पौलूस ने बहस की शुरूआत बनी इंसान की गुनाहगारी से की। खुदा के खिलाफ़ हमारे गुनाहों की बगावत के सबब से तमाम बनी इन्सान मुजरिम ठहराए गए हैं। किसी तरह खुदा अपने फ़ज़ल में होकर उस के बेटे येसू मसीह पर ईमान लाने के वसीले से रास्तबाज़ी इनायत करता है। जब हम खुदा के ज़रिए रास्तबाज़ ठहराए जाते हैं तो हम छुटकारा या नजात हासिल करते हैं क्योंकि मसीह का खून हमारे गुनाहों को ढांप देता है। पौलूस के बताव के इन मुआमलात को एक उसूली और मुकम्मल तौर से पेश किया गया है कि किस तरह एक शख्स चाहे वह मर्द

हो या औरत गुनाह की सज़ा और ताक़त से बच सकता या सकती है।

खुदा की रास्तबाज़ी।

बैरूनी खाका

1. गुनाह की सज़ा की हालत और रास्तबाज़ी की ज़रूरत — 1:18-3:20
2. रास्तबाज़ी को हक़ बजानिब मंसूब किया गया — 3:21-5:21
3. रास्तबाज़ी ने पाकीज़गी को ज़ाहिर किया — 6:1-8:39
4. बनी इसाईल के लिए इलाही मुहय्या — 9:1-11:36
5. रास्तबाज़ शख्स की ता'भील का दस्तूर — 12:1-15:13
6. खात्मा:शख्सि पैग़ाम — 15:14-16:27

1 पौलूस की तरफ़ से जो ईसा मसीह का बन्दा है

और रसूल होने के लिए बुलाया गया और खुदा की उस खुशख़बरी के लिए अलग किया गया। 2 पस मैं तुम को भी जो रोमा में हों खुशख़बरी सुनाने को जहाँ तक मेरी ताक़त है मैं तैयार हूँ। 3 अपने बेटे खुदावन्द ईसा मसीह के बारे में वा'दा किया था जो जिस्म के ऐ'तिबार से तो दाऊद की नस्ल से पैदा हुआ।

4 लेकिन पाकीज़गी की रूह के ऐतबार से मुदों में से जी उठने की वजह से कुदरत के साथ खुदा का बेटा ठहरा। 5 जिस के ज़रिए हम को फ़ज़ल और रिसालत मिली ताकि उसके नाम की खातिर सब क्रौमों में से लोग ईमान के ताबे हों। 6 जिन में से तुम भी ईसा मसीह के होने के लिए बुलाए गए हो।

7 उन सब के नाम जो रोम में खुदा के प्यारे हैं और मुक़दस होने के लिए बुलाए गए हैं; हमारे बाप खुदा और खुदावन्द ईसा मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इत्मीनान हासिल होता रहे।

8 पहले, तो मैं तुम सब के बारे में ईसा मसीह के वसीले से अपने खुदा का शुक्र करता हूँ कि तुम्हारे ईमान का तमाम दुनिया में नाम हो रहा है। 9 चुनाँचे खुदा जिस की इबादत में अपनी रूह से उसके बेटे की खुशख़बरी देने में करता हूँ वही मेरा गवाह है कि मैं बिला नागा तुम्हें याद करता हूँ। 10 और अपनी दुआओं में हमेशा ये गुज़ारिश करता हूँ कि अब आखिरकार खुदा की मर्ज़ी से मुझे तुम्हारे पास आने में किसी तरह कामियाबी हो।

11 क्योंकि मैं तुम्हारी मुलाकात का मुश्ताक़ हूँ, ताकि तुम को कोई रूहानी ने'मत दूँ जिस से तुम मज़बूत हो

जाओ। ¹² गरज मैं भी तुम्हारे दर्मियान हो कर तुम्हारे साथ उस ईमान के ज़रिए तसल्ली पाऊँ जो तुम में और मुझ में दोनों में है।

¹³ और ऐ भाइयों; मैं इस से तुम्हारा ना वाकिफ़ रहना नहीं चाहता कि मैंने बार बार तुम्हारे पास आने का इरादा किया ताकि जैसा मुझे और ग़ैर क्रौमों में फल मिला वैसा ही तुम में भी मिले मगर आज तक रुका रहा।

¹⁴ मैं युनानियों और ग़ैर यूनानियों दानाओं और नादानों का क़र्ज़दार हूँ। ¹⁵ पस मैं तुम को भी जो रोमा में हों खुशख़बरी सुनाने को जहाँ तक मेरी ताक़त है मैं तैयार हूँ।

¹⁶ क्यूँकि मैं इन्जील से शर्माता नहीं इसलिए कि वो हर एक ईमान लानेवाले के वास्ते पहले यहूदियों फिर यूनानी के वास्ते नज़ात के लिए खुदा की कुदरत है।

¹⁷ इस वास्ते कि उसमें खुदा की रास्तबाज़ी ईमान से “और ईमान के लिए ज़ाहिर होती है जैसा लिखा है रास्तबाज़ ईमान से जीता रहेगा”

¹⁸ क्यूँकि खुदा का ग़ज़ब उन आदमियों की तमाम बेदीनी और नारास्ती पर आसमान से ज़ाहिर होता है।

¹⁹ क्यूँकि जो कुछ खुदा के बारे में मालूम हो सकता है वो उनको बातिन में ज़ाहिर है इसलिए कि खुदा ने उनको उन पर ज़ाहिर कर दिया।

²⁰ क्यूँकि उसकी अनदेखी सिफ़तें या'नी उसकी अज़ली कुदरत और खुदाइयत दुनिया की पैदाइश के वक़्त से बनाई हुई चीज़ों के ज़रिए मा'लूम हो कर साफ़ नज़र आती हैं यहाँ तक कि उन को कुछ बहाना बाक़ी नहीं। ²¹ इसलिए कि अग़र्चे खुदाई के लायक़ उसकी बड़ाई और शुक्रगुज़ारी न की बल्कि बेकार के ख़याल में पड़ गए, और उनके नासमझ दिलों पर अंधेरा छा गया।

²² वो अपने आप को अक्लमन्द समझ कर बेवकूफ़ बन गए। ²³ और ग़ैर फ़ानी खुदा के जलाल को फ़ानी इंसान और परिन्दों और चौपायों और कीड़ों मकोड़ों की सूरत में बदल डाला

²⁴ इस वास्ते खुदा ने उनके दिलों की ख़्वाहिशों के मुताबिक़ उन्हें नापाकी में छोड़ दिया कि उन के बदन आपस में बेइज़्जत किए जाएँ। ²⁵ इसलिए कि उन्होंने खुदा की सच्चाई को बदल कर झूठ बना डाला और मस्लूक़ात की ज़्यादा इबादत की बनिस्बत उस ख़ालिक़ के जो हमेशा तक महमूद है; आमीन।

²⁶ इसी वजह से खुदा ने उनको गन्दी आदतों में छोड़ दिया यहाँ तक कि उनकी औरतों ने अपने तब; ई काम को खिलाफ़'ए तब'आ काम से बदल डाला। ²⁷ इसी तरह मर्द भी औरतों से तब; ई काम छोड़ कर आपस की शहवत

से मस्त हो गए; या'नी आदमियों ने आदमियों के साथ रुसिहाई का काम कर के अपने आप में अपने काम के मुआफ़िक़ बदला पाया।

²⁸ और जिस तरह उन्होंने खुदा को पहचानना नापसन्द किया उसी तरह खुदा ने भी उनको नापसन्दीदा अक्ल के हवाले कर दिया कि नालायक़ हरकतें करें।

²⁹ पस वो हर तरह की नारास्ती बदी लालच और बदख्वाही से भर गए, खूनरेजी, झगड़े, मक्कारी और अदावत से मा'मूर हो गए, और ग़ीबत करने वाले।

³⁰ बदग़ो खुदा की नज़र में नफ़रती औरों को बे'इज़्जत करनेवाला, मगरूर, शेखीबाज़, बंदियों के बानी, माँ बाप के नाफ़रमान, ³¹ बेवकूफ़, वादा खिलाफ़, तबई तौर से मुहब्बत से ख़ाली और बे रहम हो गए।

³² हालाँकि वो खुदा का हुक्म जानते हैं कि ऐसे काम करने वाले मौत की सज़ा के लायक़ हैं फिर भी न सिर्फ़ खुद ही ऐसे काम करते हैं बल्कि और करनेवालों से भी खुश होते हैं।

2

????? ?? ????? ???? ? ? ?

¹ पस ऐ इल्ज़ाम लगाने वाले तू कोई क्यूँ न हो तेरे पास कोई बहाना नहीं क्यूँकि जिस बात से तू दूसरे पर इल्ज़ाम लगाता है उसी का तू अपने आप को मुजरिम ठहराता है इसलिए कि तू जो इल्ज़ाम लगाता है खुद वही काम करता है। ² और हम जानते हैं कि ऐसे काम करने वालों की अदालत खुदा की तरफ़ से हक़ के मुताबिक़ होती है।

³ ऐ भाई! तू जो ऐसे काम करने वालों पर इल्ज़ाम लगाता है और खुद वही काम करता है क्या ये समझता है कि तू खुदा की अदालत से बच जाएगा। ⁴ या तू उसकी महरबानी और बरदाश्त और सबर की दौलत को नाचीज़ जानता है और नहीं समझता कि खुदा की महरबानी तुझ को तौबा की तरफ़ माएल करती है।

⁵ बल्कि तू अपने सख़्त और न तोबा करने वाले दिल के मुताबिक़ उस क़हर के दिन के लिए अपने वास्ते ग़ज़ब का काम कर रहा है जिस में खुदा की सच्ची अदालत ज़ाहिर होगी। ⁶ वो हर एक को उस के कामों के मुवाफ़िक़ बदला देगा। ⁷ जो अच्छे काम में साबित क़दम रह कर जलाल और इज़्जत और बक्रा के तालिब होते हैं उनको हमेशा की ज़िन्दगी देगा।

⁸ मगर जो ना इत्तफ़ाक़ी अन्दाज़ और हक़ के न माननेवाले बल्कि नारास्ती के माननेवाले हैं उन पर ग़ज़ब और क़हर होगा। ⁹ और मुसीबत और तंगी हर एक

बदकार की जान पर आएगी पहले यहूदी की फिर यूनानी की।

10 मगर जलाल और इज्जत और सलामती हर एक नेक काम करने वाले को मिलेगी; पहले यहूदी को फिर यूनानी को। 11 क्योंकि खुदा के यहाँ किसी की तरफ़दारी नहीं। 12 इसलिए कि जिन्होंने बग़ैर शरी'अत पाए गुनाह किया वो बग़ैर शरी'अत के हलाक भी होगा और जिन्होंने शरी'अत के मातहत होकर गुनाह किया उन की सज़ा शरी'अत के मुवाफ़िक़ होगी

13 क्योंकि शरी'अत के सुननेवाले खुदा के नज़दीक रास्तबाज़ नहीं होते बल्कि शरी'अत पर अमल करनेवाले रास्तबाज़ ठहराए जाएँगे। 14 इसलिए कि जब वो क्रौमें जो शरी'अत नहीं रखती अपनी तबी'अत से शरी'अत के काम करती हैं तो बावजूद शरी'अत रखने के अपने लिए खुद एक शरी'अत हैं।

15 चुनाँचे वो शरी'अत की बातें अपने दिलों पर लिखी हुई दिखाती हैं और उन का दिल भी उन बातों की गवाही देता है और उनके आपसी खयालात या तो उन पर इल्जाम लगाते हैं या उन को माज़ूर रखते हैं। 16 जिस रोज़ खुदा खुशख़बरी के मुताबिक़ जो मैं ऐलान करता हूँ ईसा मसीह की मारिफ़त आदमियों की छुपी बातों का इन्साफ़ करेगा।

17 पस अगर तू यहूदी कहलाता और शरी'अत पर भरोसा और खुदा पर फ़ख़र करता है। 18 और उस की मज़ी जानता और शरी'अत की ता'लीम पाकर उम्दा बातें पसन्द करता है। 19 और अगर तुझको इस बात पर भी भरोसा है कि मैं अंधों का रहनुमा और अंधेरे में पड़े हुएों के लिए रोशनी। 20 और नादानों का तरबियत करनेवाला और बच्चों का उस्ताद हूँ और 'इल्म और हक़ का जो नमूना शरी'अत में है वो मेरे पास है।

21 पस तू जो औरों को सिखाता है अपने आप को क्यों नहीं सिखाता? तू जो बताता है कि चोरी न करना तब तू खुद क्यों चोरी करता है? तू जो कहता है जिना न करना; तब तू क्यों जिना करता है? 22 तू जो बुतों से नफ़रत रखता है? तब खुद क्यों बुतख़ानों को लूटता है?

23 तू जो शरी'अत पर फ़ख़र करता है? शरी'अत की मुख़ालिफ़त से खुदा की क्यों बे'इज्जती करता है? 24 क्योंकि तुम्हारी वजह से ग़ैर क्रौमों में खुदा के नाम पर कुफ़र बका जाता है “चुनाँचे ये लिखा भी है।”

25 ख़तने से फ़ाइदा तो है ब'शर्त तू शरी'अत पर अमल करे लेकिन जब तू ने शरी'अत से मुख़ालिफ़त किया तो तेरा ख़तना ना मख़्तूनी ठहरा। 26 पस अगर नामख़्तून शख्स शरी'अत के हुक़मों पर अमल करे तो क्या उसकी

ना मख़्तूनी ख़तने के बराबर न गिनी जाएगी। 27 और जो शख्स क्रौमियत की वजह से ना मख़्तून रहा अगर वो शरी'अत को पूरा करे तो क्या तुझे जो बावजूद कलाम और ख़तने के शरी'अत से मुख़ालिफ़त करता है कुसूरवार न ठहरेगा।

28 क्योंकि वो यहूदी नहीं जो ज़ाहिर का है और न वो ख़तना है जो ज़ाहिरी और जिस्मानी है। 29 बल्कि यहूदी वही है जो बातिन में है और ख़तना वही है जो दिल का और रूहानी है न कि लफ़ज़ी ऐसे की ता'रीफ़ आदमियों की तरफ़ से नहीं बल्कि खुदा की तरफ़ से होती है।

3

????? ?????? ?????????? ?????? ???

1 उस यहूदी को क्या दर्जा है और ख़तने से क्या फ़ाइदा? 2 हर तरह से बहुत खास कर ये कि खुदा का कलाम उसके सुपुर्द हुआ।

3 मगर कुछ बेवफ़ा निकले तो क्या हुआ क्या उनकी बेवफ़ाई खुदा की वफ़ादारी को बेकार करती है? 4 हरगिज़ नहीं बल्कि खुदा सच्चा ठहरे और हर एक आदमी झूठा क्योंकि लिखा है “तू अपनी बातों में रास्तबाज़ ठहरे और अपने मुक़द्दमे में फ़तह पाए।”

5 अगर हमारी नारास्ती खुदा की रास्तबाज़ी की खूबी को ज़ाहिर करती है, तो हम क्या करें? क्या ये कि खुदा बेवफ़ा है जो ग़ज़ब नाज़िल करता है मैं ये बात इंसान की तरह करता हूँ। 6 हरगिज़ नहीं वरना खुदा क्योंकर दुनिया का इन्साफ़ करेगा।

7 अगर मेरे झूठ की वजह से खुदा की सच्चाई उसके जलाल के वास्ते ज़्यादा ज़ाहिर हुई तो फिर क्यों गुनाहगार की तरह मुझ पर हुक़म दिया जाता है? 8 और “हम क्यों बुराई न करें ताकि भलाई पैदा हो” चुनाँचे हम पर ये तोहमत भी लगाई जाती है और कुछ कहते हैं इनकी यही कहावत है मगर ऐसों का मुजरिम ठहरना इन्साफ़ है।

9 पस क्या हुआ; क्या हम कुछ फ़ज़ीलत रखते हैं? बिल्कुल नहीं क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर पहले ही ये इल्जाम लगा चुके हैं कि वो सब के सब गुनाह के मातहत हैं। 10 चुनाँचे लिखा है “एक भी रास्तबाज़ नहीं।”

11 कोई समझदार नहीं

कोई खुदा का तालिब नहीं।

12 सब गुमराह हैं सब के सब निकम्मे बन गए;

कोई भलाई करनेवाला नहीं एक भी नहीं।

13 उनका गला खुली हुई क़बर है

उन्होंने अपनी ज़बान से धोखा दिया

उन के होंटों में साँपों का ज़हर है।

14 उन का मुँह ला'नत और कड़वाहट से भरा है।

15 उन के क़दम खून बहाने के लिए तेज़ी से बढ़ने वाले हैं।

16 उनकी राहों में तबाही और बदहाली है।

17 और वह सलामती की राह से वाकिफ़ न हुए।

18 उन की आँखों में खुदा का ख़ौफ़ नहीं।”

19 अब हम जानते हैं कि शरी'अत जो कुछ कहती है उनसे कहती है जो शरी'अत के मातहत हैं ताकि हर एक का मुँह बन्द हो जाए और सारी दुनिया खुदा के नज़दीक सज़ा के लायक ठहरे। 20 क्योंकि शरी'अत के अमल से कोई बशर उसके हज़ूर रास्तबाज़ नहीं ठहरेगी इसलिए कि शरी'अत के वसीले से तो गुनाह की पहचान हो सकती है।

21 मगर अब शरी'अत के बग़ैर खुदा की एक रास्तबाज़ी ज़ाहिर हुई है जिसकी गवाही शरी'अत और नबियों से होती है। 22 यानी खुदा की वो रास्तबाज़ी जो ईसा मसीह पर ईमान लाने से सब ईमान लानेवालों को हासिल होती है; क्योंकि कुछ फ़र्क नहीं।

23 इसलिए कि सब ने गुनाह किया और खुदा के जलाल से महरूम हैं। 24 मगर उसके फ़ज़ल की वजह से उस मख़लसी के वसीले से जो मसीह ईसा में है मुफ़्त रास्तबाज़ ठहराए जाते हैं।

25 उसे खुदा ने उसके खून के ज़रिए एक ऐसा कफ़़ारा ठहराया जो ईमान लाने से फ़ाइदामन्द हो ताकि जो गुनाह पहले से हो चुके थे? और जिसे खुदा ने बर्दाश्त करके तरज़ीह दी थी उनके बारे में वो अपनी रास्तबाज़ी ज़ाहिर करे। 26 बल्कि इसी वक़्त उनकी रास्तबाज़ी ज़ाहिर हो ताकि वो खुद भी आदिल रहे और जो ईसा पर ईमान लाए उसको भी रास्तबाज़ ठहराने वाला हो।

27 पस फ़ख़र कहाँ रहा? इसकी गुन्जाइश ही नहीं कौन सी शरी'अत की वजह से? क्या आमाल की शरी'अत से? ईमान की शरी'अत से? 28 चुनाँचे हम ये नतीजा निकालते हैं कि इंसान शरी'अत के आमाल के बग़ैर ईमान के ज़रिए से रास्तबाज़ ठहरता है।

29 क्या खुदा सिर्फ़ यहूदियों ही का है ग़ैर क़ौमों का नहीं? बेशक ग़ैर क़ौमों का भी है।

30 क्योंकि एक ही खुदा है मख़्तूनो को भी ईमान से और नामख़्तूनो को भी ईमान ही के वसीले से रास्तबाज़ ठहराएगा। 31 पस क्या हम शरी'अत को ईमान से बातिल करते हैं। हरगिज़ नहीं बल्कि शरी'अत को क़ाईम रखते हैं।

4

???????? ??

1 पस हम क्या कहें कि हमारे जिस्मानी बाप अब्रहाम को क्या हासिल हुआ? 2 क्योंकि अगर अब्रहाम आमाल से रास्तबाज़ ठहराया जाता तो उसको फ़ख़र की जगह होती; लेकिन खुदा के नज़दीक नहीं। 3 किताब ए मुक़द्दस क्या कहती है “ये कि अब्रहाम खुदा पर ईमान लाया। ये उसके लिए रास्तबाज़ी गिना गया।”

4 काम करनेवाले की मज़दूरी बख़्शिश नहीं बल्कि हक़ समझी जाती है।

5 मगर जो शख्स काम नहीं करता बल्कि बेदीन के रास्तबाज़ ठहराने वाले पर ईमान लाता है उस का ईमान उसके लिए रास्तबाज़ी गिना जाता है।

6 चुनाँचे जिस शख्स के लिए खुदा बग़ैर आमाल के रास्तबाज़ शुमार करता है दाऊद भी उसकी मुबारिक़ हाली इस तरह बयान करता है।

7 “मुबारिक़ वो हैं जिनकी बदकारियाँ मुआफ़ हुई और जिनके गुनाह छुपाए गए।

8 मुबारिक़ वो शख्स है जिसके गुनाह खुदावन्द शुमार न करेगा।”

9 पस क्या ये मुबारिक़बादी मख़्तूनो ही के लिए है या नामख़्तूनो के लिए भी? क्योंकि हमारा दावा ये है कि अब्रहाम के लिए उसका ईमान रास्तबाज़ी गिना गया। 10 पस किस हालत में गिना गया? मख़्तूनी में या नामख़्तूनी में? मख़्तूनी में नहीं बल्कि नामख़्तूनी में।

11 और उसने ख़तने का निशान पाया कि उस ईमान की रास्तबाज़ी पर मुहर हो जाए जो उसे नामख़्तूनी की हालत में हासिल था, वो उन सब का बाप ठहरे जो बावज़ूद नामख़्तून होने के ईमान लाते हैं 12 और उन मख़्तूनो का बाप हो जो न सिर्फ़ मख़्तून हैं बल्कि हमारे बाप अब्रहाम के उस ईमान की भी पैरवी करते हैं जो उसे ना मख़्तूनी की हालत में हासिल था।

13 क्योंकि ये वादा किया वो कि दुनिया का वारिस होगा न अब्रहाम से न उसकी नस्ल से शरी'अत के वसीले से किया गया था बल्कि ईमान की रास्तबाज़ी के वसीले से किया गया था। 14 क्योंकि अगर शरी'अत वाले ही वारिस हों तो ईमान बेफ़ाइदा रहा और वादा से कुछ हासिल न ठहरेगा। 15 क्योंकि शरी'अत तो मज़ब पैदा करती है और जहाँ शरी'अत नहीं वहाँ मुख़ालिफ़त — ए — हुक्म भी नहीं।

16 इसी वास्ते वो मीरास ईमान से मिलती है ताकि फ़ज़ल के तौर पर हो; और वो वादा कुल नस्ल के लिए क़ाईम रहे सिर्फ़ उस नस्ल के लिए जो शरी'अत वाली है बल्कि उसके लिए भी जो अब्रहाम की तरह ईमान

वाली है वही हम सब का बाप है। ¹⁷ चुनाँचे लिखा है (“मैंने तुझे बहुत सी क्रौमों का बाप बनाया”) उस खुदा के सामने जिस पर वो ईमान लाया और जो मुर्दों को ज़िन्दा करता है और जो चीज़ें नहीं हैं उन्हें इस तरह से बुला लेता है कि गोया वो हैं।

¹⁸ वो ना उम्मीदी की हालत में उम्मीद के साथ ईमान लाया ताकि इस क्रौल के मुताबिक कि तेरी नस्ल ऐसी ही होगी “वो बहुत सी क्रौमों का बाप हो।” ¹⁹ और वो जो तकरीबन सौ बरस का था, बावजूद अपने मुर्दा से बदन और सारह के रहम की मुर्दाहालत पर लिहाज़ करने के ईमान में कमज़ोर न हुआ।

²⁰ और न बे ईमान हो कर खुदा के वादे में शक किया बल्कि ईमान में मज़बूत हो कर खुदा की बड़ाई की। ²¹ और उसको कामिल ऐतिक्राद हुआ कि जो कुछ उसने वादा किया है वो उसे पूरा करने पर भी क़ादिर है। ²² इसी वजह से ये उसके लिए रास्तबाज़ी गिना गया।

²³ और ये बात कि ईमान उस के लिए रास्तबाज़ी गिना गया; न सिर्फ़ उसके लिए लिखी गई। ²⁴ बल्कि हमारे लिए भी जिनके लिए ईमान रास्तबाज़ी गिना जाएगा इस वास्ते के हम उस पर ईमान लाए हैं जिस ने हमारे खुदावन्द ईसा को मुर्दों में से जिलाया। ²⁵ वो हमारे गुनाहों के लिए हवाले कर दिया गया और हम को रास्तबाज़ ठहराने के लिए जिलाया गया।

5

????? ?? ?????? ??????

¹ पस जब हम ईमान से रास्तबाज़ ठहरे, तो खुदा के साथ अपने खुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से सुलह रखें। ² जिस के वसीले से ईमान की वजह से उस फ़ज़ल तक हमारी रिसाई भी हुई जिस पर क़ाईम हैं और खुदा के जलाल की उम्मीद पर फ़ख़र करें।

³ और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि मुसीबतों में भी फ़ख़र करें ये जानकर कि मुसीबत से सबर पैदा होता है। ⁴ और सबर से पुख़्तगी और पुख़्तगी से उम्मीद पैदा होती है। ⁵ और उम्मीद से शर्मिन्दगी हासिल नहीं होती क्योंकि रूह — उल — कुद्स जो हम को बख़्शा गया है उसके वसीले से खुदा की मुहब्बत हमारे दिलों में डाली गई है।

⁶ क्योंकि जब हम कमज़ोर ही थे तो ऐ'न वक़्त पर मसीह बे'दीनों की खातिर मरा। ⁷ किसी रास्तबाज़ की खातिर भी मुश्किल से कोई अपनी जान देगा मगर शायद किसी नेक आदमी के लिए कोई अपनी जान तक दे देने की हिम्मत करे;

⁸ लेकिन खुदा अपनी मुहब्बत की खूबी हम पर यूँ ज़ाहिर करता है कि जब हम गुनाहगार ही थे, तो मसीह हमारी खातिर मरा। ⁹ पस जब हम उसके खून के ज़रिए अब रास्तबाज़ ठहरे तो उसके वसीले से ग़ज़ब 'ए इलाही से ज़रूर बचेंगे।

¹⁰ क्योंकि जब बावजूद दुश्मन होने के खुदा से उसके बेटे की मौत के वसीले से हमारा मेल हो गया तो मेल होने के बाद तो हम उसकी ज़िन्दगी की वजह से ज़रूर ही बचेंगे। ¹¹ और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि अपने खुदावन्द ईसा मसीह के तुफ़ैल से जिसके वसीले से अब हमारा खुदा के साथ मेल हो गया खुदा पर फ़ख़र भी करते हैं।

¹² पस जिस तरह एक आदमी की वजह से गुनाह दुनिया में आया और गुनाह की वजह से मौत आई और यूँ मौत सब आदमियों में फैल गई इसलिए कि सब ने गुनाह किया। ¹³ क्योंकि शरी'अत के दिए जाने तक दुनिया में गुनाह तो था मगर जहाँ शरी'अत नहीं वहाँ गुनाह शूमार नहीं होता।

¹⁴ तो भी आदम से लेकर मूसा तक मौत ने उन पर भी बादशाही की जिन्होंने उस आदम की नाफ़रमानी की तरह जो आनेवाले की मिसाल था गुनाह न किया था।

¹⁵ लेकिन गुनाह का जो हाल है वो फ़ज़ल की नेअ'मत का नहीं क्योंकि जब एक शख्स के गुनाह से बहुत से आदमी मर गए तो खुदा का फ़ज़ल और उसकी जो बख़्शिश एक ही आदमी या'नी ईसा मसीह के फ़ज़ल से पैदा हुई और बहुत से आदमियों पर ज़रूर ही इफ़रात से नाज़िल हुई।

¹⁶ और जैसा एक शख्स के गुनाह करने का अंजाम हुआ बख़्शिश का वैसा हाल नहीं क्योंकि एक ही की वजह से वो फ़ैसला हुआ जिसका नतीजा सज़ा का हुक्म था; मगर बहुतेरे गुनाहों से ऐसी नेअ'मत पैदा हुई जिसका नतीजा ये हुआ कि लोग रास्तबाज़ ठहरे। ¹⁷ क्योंकि जब एक शख्स के गुनाह की वजह से मौत ने उस एक के ज़रिए से बादशाही की तो जो लोग फ़ज़ल और रास्तबाज़ी की बख़्शिश इफ़रात से हासिल करते हैं “वो एक शख्स या'नी ईसा” मसीह के वसीले से हमेशा की ज़िन्दगी में ज़रूर ही बादशाही करेंगे।

¹⁸ ग़रज़ जैसा एक गुनाह की वजह से वो फ़ैसला हुआ जिसका नतीजा सब आदमियों की सज़ा का हुक्म था; वैसे ही रास्तबाज़ी के एक काम के वसीले से सब आदमियों को वो ने'मत मिली जिससे रास्तबाज़ ठहराकर ज़िन्दगी पाएँ। ¹⁹ क्योंकि जिस तरह एक ही शख्स की नाफ़रमानी से बहुत से लोग गुनाहगार ठहरे,

उसी तरह एक की फ़रमाँबरदारी से बहुत से लोग रास्तबाज़ ठहरे।

²⁰ और बीच में शरी'अत आ मौजूद हुई ताकि गुनाह ज्यादा हो जाए मगर जहाँ गुनाह ज्यादा हुआ फ़ज़ल उससे भी निहायत ज्यादा हुआ। ²¹ ताकि जिस तरह गुनाह ने मौत की वजह से बादशाही की उसी तरह फ़ज़ल भी हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से हमेशा की ज़िन्दगी के लिए रास्तबाज़ी के ज़रिए से बादशाही करे।

6

?????? ?? ????? ????? ?? ????? ??

¹ पस हम क्या कहें? क्या गुनाह करते रहें ताकि फ़ज़ल ज्यादा हो? ² हरगिज़ नहीं हम जो गुनाह के ऐ'तिबार से मर गए क्यूँकर उस में फिर से ज़िन्दगी गुज़रें? ³ क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह ईसा में शामिल होने का बपतिस्मा लिया तो उस की मौत में शामिल होने का बपतिस्मा लिया?

⁴ पस मौत में शामिल होने के बपतिस्मे के वसीले से हम उसके साथ दफ़न हुए ताकि जिस तरह मसीह बाप के जलाल के वसीले से मुर्दा में से जिलाया गया; उसी तरह हम भी नई ज़िन्दगी में चलें। ⁵ क्यूँकि जब हम उसकी मुशाबहत से उसके साथ जुड़ गए, तो बेशक उसके जी उठने की मुशाबहत से भी उस के साथ जुड़े होंगे।

⁶ चुनाँचे हम जानते हैं कि हमारी पुरानी इंसान ियत उसके साथ इसलिए मस्तूब की गई कि गुनाह का बदन बेकार हो जाए ताकि हम आगे को गुनाह की गुलामी में न रहें। ⁷ क्यूँकि जो मरा वो गुनाह से बरी हुआ।

⁸ पस जब हम मसीह के साथ मरे तो हमें यक़ीन है कि उसके साथ जिएँगे भी। ⁹ क्यूँकि ये जानते हैं कि मसीह जब मुर्दा में से जी उठा है तो फिर नहीं मरने का; मौत का फिर उस पर इस्तिyar नहीं होने का।

¹⁰ क्यूँकि मसीह जो मरा गुनाह के ऐ'तिबार से एक बार मरा; मगर अब जो ज़िन्दा हुआ तो खुदा के ऐ'तिबार से ज़िन्दा है। ¹¹ इसी तरह तुम भी अपने आपको गुनाह के ऐ'तिबार से मुर्दा; मगर खुदा के ऐ'तिबार से मसीह ईसा में ज़िन्दा समझो।

¹² पस गुनाह तुम्हारे फ़ानी बदन में बादशाही न करे; कि तुम उसकी ख्वाहिशों के ताबे रहो। ¹³ और अपने आ'ज़ा नारास्ती के हथियार होने के लिए गुनाह के हवाले न करो; बल्कि अपने आपको मुर्दा में से ज़िन्दा जानकर खुदा के हवाले करो और अपने आ'ज़ा रास्तबाज़ी के हथियार होने के लिए खुदा के हवाले करो।

¹⁴ इसलिए कि गुनाह का तुम पर इस्तिyar न होगा;

क्यूँकि तुम शरी'अत के मातहत नहीं बल्कि फ़ज़ल के मातहत हो।

¹⁵ पस क्या हुआ? क्या हम इसलिए गुनाह करें कि शरी'अत के मातहत नहीं बल्कि फ़ज़ल के मातहत हैं? हरगिज़ नहीं; ¹⁶ क्या तुम नहीं जानते, कि जिसकी फ़रमाँबरदारी के लिए अपने आप को गुलामों की तरह हवाले कर देते हो, उसी के गुलाम हो जिसके फ़रमाँबरदार हो चाहे गुनाह के जिसका अंजाम मौत है चाहे फ़रमाँबरदारी के जिस का अंजाम रास्तबाज़ी है?

¹⁷ लेकिन खुदा का शुक्र है कि अगरचे तुम गुनाह के गुलाम थे तोभी दिल से उस ता'लीम के फ़रमाँबरदार हो गए; जिसके साँचे में ढाले गए थे। ¹⁸ और गुनाह से आज़ाद हो कर रास्तबाज़ी के गुलाम हो गए।

¹⁹ मैं तुम्हारी इंसानी कमज़ोरी की वजह से इंसानी तौर पर कहता हूँ; जिस तरह तुम ने अपने आ'ज़ा बदकारी करने के लिए नापाकी और बदकारी की गुलामी के हवाले किए थे उसी तरह अब अपने आ'ज़ा पाक होने के लिए रास्तबाज़ी की गुलामी के हवाले कर दो। ²⁰ क्यूँकि जब तुम गुनाह के गुलाम थे, तो रास्तबाज़ी के ऐ'तिबार से आज़ाद थे। ²¹ पस जिन बातों पर तुम अब शर्मिन्दा हो उनसे तुम उस वक़्त क्या फल पाते थे? क्यूँकि उन का अंजाम तो मौत है।

²² मगर अब गुनाह से आज़ाद और खुदा के गुलाम हो कर तुम को अपना फल मिला जिससे पाकीज़गी हासिल होती है और इस का अंजाम हमेशा की ज़िन्दगी है। ²³ क्यूँकि गुनाह की मज़दूरी मौत है मगर खुदा की बख़्शिश हमारे खुदावन्द ईसा मसीह में हमेशा की ज़िन्दगी है।

7

?????? ????? ????? ?? ????? ????? ?????

¹ ऐ भाइयों, क्या तुम नहीं जानते मैं उन से कहता हूँ जो शरी'अत से वाकिफ़ हैं कि जब तक आदमी जीता है उसी वक़्त तक शरी'अत उस पर इस्तिyar रखती है?

² चुनाँचे जिस औरत का शौहर मौजूद है वो शरी'अत के मुवाफ़िक़ अपने शौहर की ज़िन्दगी तक उसके बन्द में है; लेकिन अगर शौहर मर गया तो वो शौहर की शरी'अत से छूट गई। ³ पस अगर शौहर के जीते जी दूसरे मर्द की हो जाए तो ज़ानिया कहलाएगी लेकिन अगर शौहर मर जाए तो वो उस शरी'अत से आज़ाद है; यहाँ तक कि अगर दूसरे मर्द की हो भी जाए तो ज़ानिया न ठहरेगी।

⁴ पस ऐ मेरे भाइयों; तुम भी मसीह के बदन के वसीले से शरी'अत के ऐ'तिबार से इसलिए मुर्दा बन गए, कि

उस दूसरे के हो; जाओ जो मुर्दों में से जिलाया गया ताकि हम सब खुदा के लिए फल पैदा करें। ⁵ क्योंकि जब हम जिस्मानी थे गुनाह की स्वाहिशों जो शरी'अत के ज़रिए पैदा होती थीं मौत का फल पैदा करने के लिए हमारे आ'जा में तासीर करती थी।

⁶ लेकिन जिस चीज़ की कैद में थे उसके ऐ'तिबार से मर कर अब हम शरी'अत से ऐसे छूट गए, कि रूह के नए तौर पर न कि लफ़्ज़ों के पुराने तौर पर खिदमत करते हैं।

⁷ पस हम क्या करें क्या शरी'अत गुनाह है? हरगिज़ नहीं बल्कि बग़ैर शरी'अत के मैं गुनाह को न पहचानता मसलन अगर शरी'अत ये न कहती कि तू लालच न कर तो मैं लालच को न जानता। ⁸ मगर गुनाह ने मौक़ा पाकर हुक्म के ज़रिए से मुझ में हर तरह का लालच पैदा कर दिया; क्योंकि शरी'अत के बग़ैर गुनाह मुर्दा है।

⁹ एक ज़माने में शरी'अत के बग़ैर मैं ज़िन्दा था, मगर अब हुक्म आया तो गुनाह ज़िन्दा हो गया और मैं मर गया। ¹⁰ और जिस हुक्म की चाहत ज़िन्दगी थी, वही मेरे हक़ में मौत का ज़रिया बन गया।

¹¹ क्योंकि गुनाह ने मौक़ा पाकर हुक्म के ज़रिए से मुझे बहकाया और उसी के ज़रिए से मुझे मार भी डाला। ¹² पस शरी'अत पाक है और हुक्म भी पाक और रास्ता भी अच्छा है।

¹³ पस जो चीज़ अच्छी है क्या वो मेरे लिए मौत ठहरी? हरगिज़ नहीं बल्कि गुनाह ने अच्छी चीज़ के ज़रिए से मेरे लिए मौत पैदा करके मुझे मार डाला ताकि उसका गुनाह होना ज़ाहिर हो; और हुक्म के ज़रिए से गुनाह हद से ज्यादा मकरूह मा'लूम हो। ¹⁴ क्या हम जानते हैं कि शरी'अत तो रूहानी है मगर मैं जिस्मानी और गुनाह के हाथ बिका हुआ हूँ।

¹⁵ और जो मैं करता हूँ उसको नहीं जानता क्योंकि जिसका मैं इरादा करता हूँ वो नहीं करता बल्कि जिससे मुझको नफ़रत है वही करता हूँ। ¹⁶ और अगर मैं उस पर अमल करता हूँ जिसका इरादा नहीं करता तो मैं मानता हूँ कि शरी'अत उम्दा है।

¹⁷ पस इस सूरत में उसका करने वाला मैं न रहा बल्कि गुनाह है जो मुझ में बसा हुआ है। ¹⁸ क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझ में या'नी मेरे जिस्म में कोई नेकी बसी हुई नहीं; अलबत्ता इरादा तो मुझ में मौजूद है, मगर नेक काम मुझ में बन नहीं पड़ते।

¹⁹ चुनाँचे जिस नेकी का इरादा करता हूँ वो तो नहीं करता मगर जिस बदी का इरादा नहीं करता उसे कर

लेता हूँ। ²⁰ पस अगर मैं वो करता हूँ जिसका इरादा नहीं करता तो उसका करने वाला मैं न रहा बल्कि गुनाह है; जो मुझ में बसा हुआ है। ²¹ गरज़ मैं ऐसी शरी'अत पाता हूँ कि जब नेकी का इरादा करता हूँ तो बदी मेरे पास आ मौजूद होती है।

²² क्योंकि बातिनी इंसान ियत के ऐतबार से तो मैं खुदा की शरी'अत को बहुत पसन्द करता हूँ। ²³ मगर मुझे अपने आ'जा में एक और तरह की शरी'अत नज़र आती है जो मेरी अक्ल की शरी'अत से लड़कर मुझे उस गुनाह की शरी'अत की कैद में ले आती है; जो मेरे आ'जा में मौजूद है।

²⁴ हाय मैं कैसा कम्बख़्त आदमी हूँ इस मौत के बदल से मुझे कौन छुड़ाएगा? ²⁵ अपने खुदावन्द ईसा मसीह के वासीले से खुदा का शुक्र करता हूँ; गरज़ मैं खुद अपनी अक्ल से तो खुदा की शरी'अत का मगर जिस्म से गुनाह की शरी'अत का गुलाम हूँ।

8

???? ???? ?????????? ????????

¹ पस अब जो मसीह ईसा में है उन पर सज़ा का हुक्म नहीं क्योंकि जो जिस्म के मुताबिक़ नहीं बल्कि रूह के मुताबिक़ चलते हैं? ² क्योंकि ज़िन्दगी की पाक रूह को शरी'अत ने मसीह ईसा में मुझे गुनाह और मौत की शरी'अत से आज़ाद कर दिया।

³ इसलिए कि जो काम शरी'अत जिस्म की वजह से कमज़ोर हो कर न कर सकी वो खुदा ने किया; या'नी उसने अपने बेटे को गुनाह आलूदा जिस्म की सूरत में और गुनाह की कुर्बानी के लिए भेज कर जिस्म में गुनाह की सज़ा का हुक्म दिया। ⁴ ताकि शरी'अत का तक्राज़ा हम में पूरा हो जो जिस्म के मुताबिक़ नहीं बल्कि रूह के मुताबिक़ चलता है। ⁵ क्योंकि जो जिस्मानी है वो जिस्मानी बातों के खयाल में रहते हैं; लेकिन जो रूहानी हैं वो रूहानी बातों के खयाल में रहते हैं।

⁶ और जिस्मानी नियत मौत है मगर रूहानी नियत ज़िन्दगी और इत्मीनान है। ⁷ इसलिए कि जिस्मानी नियत खुदा की दुश्मन है क्योंकि न तो खुदा की शरी'अत के ताबे है न हो सकती है। ⁸ और जो जिस्मानी है वो खुदा को खुश नहीं कर सकते।

⁹ लेकिन तुम जिस्मानी नहीं बल्कि रूहानी हो बशर्ते कि खुदा का रूह तुम में बसा हुआ है; मगर जिस में मसीह का रूह नहीं वो उसका नहीं। ¹⁰ और अगर मसीह तुम में है तो बदल तो गुनाह की वजह से मुर्दा है मगर रूह रास्तबाज़ी की वजह से ज़िन्दा है।

11 और अगर उसी का रूह तुझ में बसा हुआ है जिसने ईसा को मुर्दों में से जिलाया; वो जिसने मसीह को मुर्दों में से जिलाया, तुम्हारे फ़ानी बदनो को भी अपने उस रूह के वसीले से ज़िन्दा करेगा जो तुम में बसा हुआ है।

12 पस ऐ भाइयों! हम कर्ज़दार तो हैं मगर जिस्म के नहीं कि जिस्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें। 13 क्योंकि अगर तुम जिस्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो ज़रूर मरोगे; और अगर रूह से बदन के कामों को नेस्तोनाबूद करोगे तो जीते रहोगे।

14 क्योंकि जो भी खुदा की रूह के मुताबक़ चलाए जाते हैं, वो खुदा के फ़र्ज़न्द हैं। 15 क्योंकि तुम को गुलामी की रूह नहीं मिली जिससे फिर डर पैदा हो बल्कि लेपालक होने की रूह मिली जिस में हम अब्बा या'नी ऐ बाप कह कर पुकारते हैं।

16 पाक रूह हमारी रूह के साथ मिल कर गवाही देता है कि हम खुदा के फ़र्ज़न्द हैं। 17 और अगर फ़र्ज़न्द हैं तो वारिस भी हैं या'नी खुदा के वारिस और मसीह के हम मीरास बशर्ते कि हम उसके साथ दुःख उठाएँ ताकि उसके साथ जलाल भी पाएँ।

18 क्योंकि मेरी समझ में इस ज़माने के दुःख दर्द इस लायक़ नहीं कि उस जलाल के मुक़ाबिले में हो सकें जो हम पर ज़ाहिर होने वाला है। 19 क्योंकि मख़्लूक़ात पूरी आरज़ू से खुदा के बेटों के ज़ाहिर होने की राह देखती है।

20 इसलिए कि मख़्लूक़ात बतालत के इस्तिथार में कर दी गई थी न अपनी खुशी से बल्कि उसके ज़रिए से जिसने उसको। 21 इस उम्मीद पर बतालत के इस्तिथार कर दिया कि मख़्लूक़ात भी फ़ना के कब्ज़े से छूट कर खुदा के फ़र्ज़न्दों के जलाल की आज्ञादी में दाख़िल हो जाएगी। 22 क्योंकि हम को मा'लूम है कि सारी मख़्लूक़ात मिल कर अब तक कराहती है और दर्द — ए — ज़ेह में पड़ी तड़पती है।

23 और न सिर्फ़ वही बल्कि हम भी जिन्हें रूह के पहले फल मिले हैं आप अपने बातिन में कराहते हैं और लेपालक होने या'नी अपने बदन की मख़लसी की राह देखते हैं। 24 चुनाँचे हमें उम्मीद के वसीले से नजात मिली मगर जिस चीज़ की उम्मीद है जब वो नज़र आ जाए तो फिर उम्मीद कैसी? क्योंकि जो चीज़ कोई देख रहा है उसकी उम्मीद क्या करेगा? 25 लेकिन जिस चीज़ को नहीं देखते अगर हम उसकी उम्मीद करें तो सब्र से उसकी राह देखते रहें।

26 इसी तरह रूह भी हमारी कमज़ोरी में मदद करता है क्योंकि जिस तौर से हम को दुआ करना चाहिए हम नहीं जानते मगर रूह खुद ऐसी आहें भर भर कर हमारी

शफ़ा'अत करता है जिनका बयान नहीं हो सकता। 27 और दिलों का परखने वाला जानता है कि रूह की क्या नियत है; क्योंकि वो खुदा की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ मुक़द्दसों की शफ़ा'अत करता है।

28 और हम को मा'लूम है कि सब चीज़ें मिल कर खुदा से मुहब्बत रखनेवालों के लिए भलाई पैदा करती है; या'नी उनके लिए जो खुदा के इरादे के मुवाफ़िक़ बुलाए गए। 29 क्योंकि जिनको उसने पहले से जाना उनको पहले से मुक़र्रर भी किया कि उसके बेटे के हमशक्ल हों, ताकि वो बहुत से भाइयों में पहलौठा ठहरे। 30 और जिन को उसने पहले से मुक़र्रर किया उनको बुलाया भी; और जिनको बुलाया उनको रास्तबाज़ भी ठहराया, और जिनको रास्तबाज़ ठहराया; उनको जलाल भी बख़्शा।

31 पस हम इन बातों के बारे में क्या कहें? अगर खुदा हमारी तरफ़ है; तो कौन हमारा मुख़ालिफ़ है? 32 जिसने अपने बेटे ही की परवाह न की? बल्कि हम सब की खातिर उसे हवाले कर दिया वो उसके साथ और सब चीज़ें भी हमें किस तरह न बख़्शेगा।

33 खुदा के बरगुज़ीदों पर कौन शिकायत करेगा? खुदा वही है जो उनको रास्तबाज़ ठहराता है। 34 कौन है जो मुजरिम ठहराएगा? मसीह ईसा वो है जो मर गया बल्कि मुर्दों में से जी उठा और खुदा की दहनी तरफ़ है और हमारी शफ़ा'अत भी करता है।

35 कौन हमें मसीह की मुहब्बत से जुदा करेगा? मुसीबत या तंगी या ज़ुल्म या काल या नंगापन या ख़तरा या तलवार। 36 चुनाँचे लिखा है “हम तेरी खातिर दिन भर जान से मारे जाते हैं; हम तो ज़बह होने वाली भेड़ों के बराबर गिने गए।”

37 मगर उन सब हालतों में उसके वसीले से जिसने हम सब से मुहब्बत की हम को जीत से भी बढ़कर ग़लबा हासिल होता है। 38 क्योंकि मुझे यक़ीन है कि खुदा की जो मुहब्बत हमारे खुदावन्द ईसा मसीह में है उससे हम को न मौत जुदा कर सकेगी न ज़िन्दगी, 39 न फ़रिश्ते, न हुकूमतें, न मौजूदा, न आने वाली चीज़ें, न कुदरत, न ऊँचाई, न गहराई, न और कोई मख़्लूक़।

9

????? ?? ????????? ?? ??????

1 मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता, और मेरा दिल भी रूह — उल — कुद्स में इस की गवाही देता है 2 कि मुझे बड़ा ग़म है और मेरा दिल बराबर दुःखता रहता है।

3 क्योंकि मुझे यहाँ तक मंज़ूर होता कि अपने भाइयों की खातिर जो जिस्म के ऐतबार से मेरे करीबी हैं मैं खुद

मसीह से महसूस हो जाता।⁴ वो इस्राईल हैं, और लेपालक होने का हक और जलाल और ओहदा और शरी'अत और इबादत और वा'दे उन ही के हैं।⁵ और क्रौम के बुजुर्ग उन ही के हैं और जिस्म के ऐतबार से मसीह भी उन ही में से हुआ, जो सब के ऊपर और हमेशा तक खुदा'ए महमूद है; आमीन।

⁶ लेकिन ये बात नहीं कि खुदा का कलाम बातिल हो गया इसलिए कि जो इस्राईल की औलाद हैं वो सब इस्राईली नहीं।⁷ और न अब्रहाम की नस्ल होने की वजह से सब फ़र्ज़न्द ठहरे बल्कि ये लिखा है; “कि इज्हाक ही से तेरी नस्ल कहलाएगी।”

⁸ या'नी कि जिस्मानी फ़र्ज़न्द खुदा के फ़र्ज़न्द नहीं बल्कि वा'दे के फ़र्ज़न्द नस्ल गिने जाते हैं।⁹ क्योंकि वा'दे का क़ौल ये है “मैं इस वक़्त के मुताबिक़ आऊँगा और सारा के बेटा होगा।”

¹⁰ और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि रबेका भी एक शख्स या'नी हमारे बाप इज्हाक से हामिला थी।¹¹ और अभी तक न तो लड़के पैदा हुए थे और न उन्होंने नेकी या बदी की थी, कि उससे कहा गया, बड़ा छोटे की खिदमत करेगा।¹² ताकि खुदा का इरादा जो चुनाव पर मुन्हसिर है “आ'माल पर म्वनी न ठहरे बल्कि बुलानेवाले पर।”¹³ चुनाँचे लिखा है “मैंने याकूब से तो मुहब्बत की मगर ऐसों को नापसन्द।”

¹⁴ पस हम क्या कहें? क्या खुदा के यहाँ बे'इन्साफ़ी है? हरगिज़ नहीं; ¹⁵ क्योंकि वो मूसा से कहता है “जिस पर रहम करना मंज़ूर है और जिस पर तरस खाना मंज़ूर है उस पर तरस खाऊँगा।”¹⁶ पर ये न इरादा करने वाले पर मुन्हसिर है न दौड़ धूप करने वाले पर बल्कि रहम करने वाले खुदा पर।

¹⁷ क्योंकि किताब — ए — मुक़द्दस में खुदा ने फिर'औन से कहा “मैंने इसी लिए तुझे खड़ा किया है कि तेरी वजह से अपनी कुदरत ज़ाहिर करूँ, और मेरा नाम तमाम रू'ए ज़मीन पर मशहूर हो।”¹⁸ पर वो जिस पर चाहता है रहम करता है, और जिसे चाहता है उसे सख़्त करता है।

¹⁹ पर तू मुझ से कहेगा, “फिर वो क्यों ऐब लगाता है? कौन उसके इरादे का मुक़ाबिला करता है?”²⁰ ऐ'इंसान, भला तू कौन है जो खुदा के सामने जवाब देता है? क्या बनी हुई चीज़ बनाने वाले से कह सकती है “तूने मुझे क्यों ऐसा बनाया?”²¹ क्या कुम्हार को मिट्टी पर इस्तियार नहीं? कि एक ही लौन्दे में से एक बरतन इज्जत के लिए बनाए और दूसरा बे'इज्जती के लिए?

²² पस क्या त'अज्जुब है अगर खुदा अपना ग़ज़ब ज़ाहिर करने और अपनी कुदरत ज़ाहिर करने के इरादे से ग़ज़ब के बरतनों के साथ जो हलाकत के लिए तैयार हुए थे, निहायत तहम्मील से पेश आए।²³ और ये इसलिए हुआ कि अपने जलाल की दौलत रहम के बरतनों के ज़रिए से ज़ाहिर करे जो उस ने जलाल के लिए पहले से तैयार किए थे।²⁴ या'नी हमारे ज़रिए से जिनको उसने न सिर्फ़ यहूदियों में से बल्कि ग़ैर क्रौमों में से भी बुलाया।

²⁵ चुनाँचे होसे की किताब में भी खुदा यूँ फ़रमाता है, “जो मेरी उम्मत नहीं थी उसे अपनी उम्मत कहूँगा” और जो प्यारी न थी उसे प्यारी कहूँगा।

²⁶ और ऐसा होगा कि जिस जगह उनसे ये कहा गया था कि तुम मेरी उम्मत नहीं हो, उसी जगह वो ज़िन्दा खुदा के बेटे कहलाएँगे।”

²⁷ और यसायाह इस्राईल के बारे में पुकार कर कहता है चाहे बनी इस्राईल का शुमार समुन्दर की रेत के बराबर हो तोभी उन में से थोड़े ही बचेंगे।²⁸ क्योंकि खुदावन्द अपने कलाम को मुकम्मल और खत्म करके उसके मुताबिक़ ज़मीन पर अमल करेगा।²⁹ चुनाँचे यसायाह ने पहले भी कहा है कि अगर रब्बुल अफ़वाज़ हमारी कुछ नस्ल बाक़ी न रखता तो हम सदूम की तरह और अमूरा के बराबर हो जाते।

³⁰ पस हम क्या कहें? ये कि ग़ैर क्रौमों ने जो रास्तबाज़ी की तलाश न करती थीं, रास्तबाज़ी हासिल की या'नी वो रास्तबाज़ी जो ईमान से है।³¹ मगर इस्राईल जो रास्बाज़ी की शरी'अत तक न पहुँचा।

³² किस लिए? इस लिए कि उन्होंने ईमान से नहीं बल्कि गोया आ'माल से उसकी तलाश की; उन्होंने उसे ठोकर खाने के पत्थर से ठोकर खाई।³³ चुनाँचे लिखा है देखो;

“मैं सिय्यून में ठेस लगाने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान रखता हूँ

और जो उस पर ईमान लाएगा वो शर्मिन्दा न होगा।”

10

¹ ऐ भाइयों; मेरे दिल की आरजू और उन के लिए खुदा से मेरी दुआ है कि वो नजात पाएँ।² क्योंकि मैं उनका गवाह हूँ कि वो खुदा के बारे में ग़ैरत तो रखते हैं; मगर समझ के साथ नहीं।³ इसलिए कि वो खुदा की रास्तबाज़ी से नावाक़िफ़ हो कर और अपनी रास्तबाज़ी क़ाईम करने की कोशिश करके खुदा की रास्तबाज़ी के ताबे न हुए।

4 क्योंकि हर एक ईमान लानेवाले की रास्तबाज़ी के लिए मसीह शरी'अत का अंजाम है।

2222 2222 2222 22

5 चुनाँचे मूसा ने ये लिखा है “कि जो शख्स उस रास्तबाज़ी पर अमल करता है जो शरी'अत से है वो उसी की वजह से ज़िन्दा रहेगा।”

6 अगर जो रास्तबाज़ी ईमान से है वो यूँ कहती है, “तू अपने दिल में ये न कह कि आसमान पर कौन चढ़ेगा?” या 'नी मसीह के उतार लाने को। 7 या “गहराव में कौन उतरेगा?” यानी मसीह को मुर्दों में से जिला कर ऊपर लाने को।

8 बल्कि क्या कहती है; ये कि कलाम तेरे नज़दीक है बल्कि तेरे मुँह और तेरे दिल में है कि,

ये वही ईमान का कलाम है जिसका हम ऐलान करते हैं। 9 कि अगर तू अपनी ज़बान से ईसा के खुदावन्द होने का इक़रार करे और अपने दिल से ईमान लाए कि खुदा ने उसे मुर्दों में से जिलाया तो नज़ात पाएगा। 10 क्योंकि रास्तबाज़ी के लिए ईमान लाना दिल से होता है और नज़ात के लिए इक़रार मुँह से किया जाता है।

11 चुनाँचे किताब — ए — मुक़द्दस ये कहती है “जो कोई उस पर ईमान लाएगा वो शर्मिन्दा न होगा।”

12 क्योंकि यहूदियों और यूनानियों में कुछ फ़र्क नहीं इसलिए कि वही सब का खुदावन्द है और अपने सब दुआ करनेवालों के लिए फ़र्याज़ है। 13 क्योंकि “जो कोई खुदावन्द का नाम लेगा नज़ात पाएगा।”

14 मगर जिस पर वो ईमान नहीं लाए उस से क्यूँकर दुआ करें? और जिसका ज़िक्र उन्होंने सुना नहीं उस पर ईमान क्यूँ लाएँ? और बग़ैर ऐलान करने वाले की क्यूँकर सुनें? 15 और जब तक वो भेजे न जाएँ ऐलान क्यूँकर करें? चुनाँचे लिखा है “क्या ही खुशनुमा हैं उनके क़दम जो अच्छी चीज़ों की खुशख़बरी देते हैं।”

16 लेकिन सब ने इस खुशख़बरी पर कान न धरा चुनाँचे यसायाह कहता है “ऐ खुदावन्द हमारे पैग़ाम का किसने यक़ीन किया है?” 17 पस ईमान सुनने से पैदा होता है और सुनना मसीह के कलाम से।

18 लेकिन मैं कहता हूँ, क्या उन्होंने नहीं सुना? चुनाँचे लिखा है, “उनकी आवाज़ तमाम रू'ए ज़मीन पर और उनकी बातें दुनिया की इन्तिहा तक पहुँची।”

19 फिर मैं कहता हूँ, क्या इस्राईल वाकिफ़ न था? पहले तो मूसा कहता है, “उन से तुम को ग़ैरत दिलाऊँगा जो क्रौम ही नहीं एक नादान क्रौम से तुम को गुस्सा दिलाऊँगा।”

20 फिर यसायाह बड़ा दिलेर होकर ये कहता है जिन्होंने मुझे नहीं ढूँडा उन्होंने मुझे पा लिया जिन्होंने मुझ से नहीं पूछा उन पर मैं ज़ाहिर हो गया।

21 लेकिन इस्राईल के हक़ में यूँ कहता है “मैं दिन भर एक नाफ़रमान और हुज्जती उम्मत की तरफ़ अपने हाथ बढ़ाए रहा।”

11

22222222 22 222222 22 2222

1 पस मैं कहता हूँ क्या खुदा ने अपनी उम्मत को रद्द कर दिया? हरगिज़ नहीं क्यूँकि मैं भी इस्राईली अब्रहाम की नस्ल और बिनयामीन के क़बीले में से हूँ। 2 खुदा ने अपनी उस उम्मत को रद्द नहीं किया जिसे उसने पहले से जाना क्या तुम नहीं जानते कि किताब — ए — मुक़द्दस एलियाह के ज़िक्र में क्या कहती है; कि वो खुदा से इस्राईल की यूँ फ़रियाद करता है? 3 “ऐ खुदावन्द उन्होंने तेरे नबियों को क़त्ल किया और तेरी कुरबानगाहों को ढा दिया; अब मैं अकेला बाक़ी हूँ और वो मेरी जान के भी पीछे हैं।”

4 मगर जवाब'ए 'इलाही उसको क्या मिला? ये कि मैंने “अपने लिए सात हज़ार आदमी बचा रखे हैं जिन्होंने बा'ल के आगे घुटने नहीं टेके।” 5 पस इसी तरह इस वक़्त भी फ़ज़ल से बरगुज़ीदा होने के ज़रिए कुछ बाक़ी हैं।

6 और अगर फ़ज़ल से बरगुज़ीदा हैं तो आ'माल से नहीं; वर्ना फ़ज़ल फ़ज़ल न रहा। 7 पस नतीजा क्या हुआ? ये कि इस्राईल जिस चीज़ की तलाश करता है वो उस को न मिली मगर बरगुज़ीदों को मिली और बाक़ी सख़्त किए गए। 8 चुनाँचे लिखा है, खुदा ने उनको आज के दिन तक सुस्त तबी'अत दी और ऐसी आँखें जो न देखें और ऐसे कान जो न सुनें।

9 और दाऊद कहता है, उनका दस्तरख़्वान उन के लिए जाल और फ़न्द़ा और ठोकर खाने और सज़ा का ज़रिया बन जाए। 10 उन की आँखों पर अँधेरा छा जाए ताकि न देखें और तू उनकी पीठ हमेशा झुकाए रख।

11 पस मैं पूछता हूँ क्या यहूदियों ने ऐसी ठोकर खाई कि गिर पड़ें? हरगिज़ नहीं; बल्कि उनकी ग़लती से ग़ैर क्रौमों को नज़ात मिली ताकि उन्हें ग़ैरत आए। 12 पस जब उनका लड़खड़ाना दुनिया के लिए दौलत का ज़रिया और उनका घटना ग़ैर क्रौमों के लिए दौलत का ज़रिया हुआ तो उन का भरपूर होना ज़रूर ही दौलत का ज़रिया होगा

13 मैं ये बातें तुम ग़ैर क्रौमों से कहता हूँ, चूँकि मैं ग़ैर क्रौमों का रसूल हूँ इसलिए अपनी खिदमत की बड़ाई करता हूँ। 14 ताकि किसी तरह से अपनी क्रौम वालों से ग़ैरत दिलाकर उन में से कुछ को नजात दिलाऊँ।

15 क्योंकि जब उनका अलग हो जाना दुनिया के आ मिलने का ज़रिया हुआ तो क्या उन का मक़बूल होना मुर्दा में से जी उठने के बराबर न होगा? 16 जब नज़र का पहला पेड़ा पाक ठहरा तो सारा गुंधा हुआ आटा भी पाक है, और जब जड़ पाक है तो डालियाँ भी पाक ही हैं।

17 लेकिन अगर कुछ डालियाँ तोड़ी गई, और तू जंगली ज़ैतून होकर उनकी जगह पैवन्द हुआ, और ज़ैतून की रौगनदार जड़ में शरीक हो गया। 18 तो तू उन डालियों के मुक़ाबिले में फ़ख़र न कर और अगर फ़ख़र करेगा तो जान रख कि तू जड़ को नहीं बल्कि जड़ तुझ को संभालती है।

19 पस तू कहेगा, “डालियाँ इसलिए तोड़ी गई कि मैं पैवन्द हो जाऊँ।” 20 अच्छा, वो तो बे'ईमानी की वजह से तोड़ी गई, और तू ईमान की वजह से क़ाईम है; पस मगरूर न हो बल्कि ख़ौफ़ कर। 21 क्योंकि जब खुदा ने असली डालियों को न छोड़ा तो तुझ को भी न छोड़ेगा।

22 पस खुदा की महरबानी और सख्ती को देख सख्ती उन पर जो गिर गए हैं; और खुदा की महरबानी तुझ पर बशर्ते कि तू उस महरबानी पर क़ाईम रहे, वरना तू भी काट डाला जाएगा।

23 और वो भी अगर बे'ईमान न रहें तो पैवन्द किए जाएंगे क्योंकि खुदा उन्हें पैवन्द करके बहाल करने पर क़ादिर है। 24 इसलिए कि जब तू ज़ैतून के उस दरख़्त से काट कर जिसकी जड़ ही जंगली है जड़ के बरखिलाफ़ अच्छे ज़ैतून में पैवन्द हो गया तो वो जो जड़ डालियाँ हैं अपने ज़ैतून में ज़रूर ही पैवन्द हो जाएंगी।

25 ऐ भाइयों! कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने आपको अक्लमन्द समझ लो इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम इस राज़ से ना वाकिफ़ रहो कि इस्राईल का एक हिस्सा सख़्त हो गया है और जब तक ग़ैर क्रौमों पूरी पूरी दाख़िल न हों वो ऐसा ही रहेगा।

26 और इस सूरत से तमाम इस्राईल नजात पाएगा; चुनाँचे लिखा है,
छुड़ाने वाला सिय्यून से निकलेगा
और बेदीनी को या'क़ूब से दफ़ा करेगा।

27 “और उनके साथ मेरा ये अहद होगा जब कि मैं उनके गुनाहों को दूर करूँगा।”

28 इज़ील के ऐ'तिबार से तो वो तुम्हारी खातिर दुश्मन हैं लेकिन बरगुज़ीदगी के ऐ'तिबार से बाप दादा की खातिर प्यार करें। 29 इसलिए कि खुदा की ने'अमत और बुलावा ना बदलने वाला है।

30 क्योंकि जिस तरह तुम पहले खुदा के नाफ़रमान थे मगर अब यहूदियों की नाफ़रमानी की वजह से तुम पर रहम हुआ। 31 उसी तरह अब ये भी नाफ़रमान हुए ताकि तुम पर रहम होने के ज़रिए अब इन पर भी रहम हो। 32 इसलिए कि खुदा ने सब को नाफ़रमानी में गिरफ़्तार होने दिया ताकि सब पर रहम फ़रमाए।

33 वाह! खुदा की दौलत और हिक्मत और इल्म क्या ही अज़ीम है उसके फ़ैसले किस क़दर पहुँच से बाहर हैं और उसकी राहें क्या ही बे'निशान हैं।

34 खुदावन्द की अक्ल को किसने जाना?
या कौन उसका सलाहकार हुआ?

35 या किसने पहले उसे कुछ दिया है,
जिसका बदला उसे दिया जाए?

36 क्योंकि उसी की तरफ़ से, और उसी के वसीले से और उसी के लिए सब चीज़ें हैं; उसकी बड़ाई हमेशा तक होती रहे आमीन।

12

????? ?? ????? ?? ????????? ??????????

1 ऐ भाइयों! मैं खुदा की रहमतें याद दिला कर तुम से गुज़ारिश करता हूँ कि अपने बदन ऐसी कुर्बानी होने के लिए पेश करो जो ज़िन्दा और पाक और खुदा को पसन्दीदा हो यही तुम्हारी मा'कूल इबादत है।

2 और इस जहान के हमशक्ल न बनो बल्कि अक्ल नई हो जाने से अपनी सूरत बदलते जाओ ताकि खुदा की नेक और पसन्दीदा और कामिल मर्ज़ी को तज़ुर्बा से मा'लूम करते रहो।

3 मैं उस तौफ़ीक़ की वजह से जो मुझ को मिली है तुम में से हर एक से कहता हूँ, कि जैसा समझना चाहिए उससे ज्यादा कोई अपने आपको न समझे बल्कि जैसा खुदा ने हर एक को अन्दाज़े के मुवाफ़िक़ ईमान तक्सीम किया है ऐ'तिदाल के साथ अपने आप को वैसा ही समझे।

4 क्योंकि जिस तरह हमारे एक बदन में बहुत से आ'ज़ा होते हैं और तमाम आ'ज़ा का काम एक जैसा नहीं।

5 उसी तरह हम भी जो बहुत से हैं मसीह में शामिल होकर एक बदन हैं और आपस में एक दूसरे के आ'ज़ा।

6 और चूँकि उस तौफ़ीक़ के मुवाफ़िक़ जो हम को दी गई; हमें तरह तरह की ने'अमतें मिली इसलिए जिस

को नबुव्वत मिली हो वो ईमान के अन्दाजे के मुवाफ़िक़ नबुव्वत करें। ⁷ अगर ख़िदमत मिली हो तो ख़िदमत में लगा रहे अगर कोई मुअल्लिम हो तो ता'लीम में मशगूल हो। ⁸ और अगर नासेह हो तो नसीहत में, ख़ैरात बाँटने वाला सखावत से बाँटे, पेशवा सरगर्मी से पेशवाई करे, रहम करने वाला खुशी से रहम करे।

⁹ मुहब्बत बे 'रिया हो बदी से नफ़रत रखो नेकी से लिपटे रहो। ¹⁰ बिरादराना मुहब्बत से आपस में एक दूसरे को प्यार करो इज्जत के ऐतबार से एक दूसरे को बेहतर समझो।

¹¹ कोशिश में सुस्ती न करो रूहानी जोश में भरे रहो; खुदावन्द की ख़िदमत करते रहो। ¹² उम्मीद में खुश मुसीबत में साबिर दुआ करने में मशगूल रहो। ¹³ मुक़द्दसों की ज़रूरतें पूरी करो।

¹⁴ जो तुम्हें सताते हैं उनके वास्ते बर्क़त चाहो ला'नत न करो। ¹⁵ खुशी करनेवालों के साथ खुशी करो रोने वालों के साथ रोओ। ¹⁶ आपस में एक दिल रहो ऊँचे ऊँचे खयाल न बाँधो बल्कि छोटे लोगों से रिफ़ाक़त रखो अपने आप को अक्लमन्द न समझो।

¹⁷ बदी के बदले किसी से बदी न करो; जो बातें सब लोगों के नज़दीक अच्छी हैं उनकी तदबीर करो। ¹⁸ जहाँ तक हो सके तुम अपनी तरफ़ से सब आदमियों के साथ मेल मिलाप रखो।

¹⁹ “ऐ' अज़ीज़ो! अपना इन्तिक़ाम न लो बल्कि ग़ज़ब को मौक़ा दो क्योंकि ये लिखा है खुदावन्द फ़रमाता है इन्तिक़ाम लेना मेरा काम है बदला मैं ही दूँगा।”

²⁰ बल्कि अगर तेरा दुश्मन भूखा हो तो उस को खाना खिला
“अगर प्यासा हो तो उसे पानी पिला
क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।”

²¹ बदी से मग़लूब न हो बल्कि नेकी के ज़रिए से बदी पर ग़ालिब आओ।

13

?????????? ?? ?????? ????????????

¹ हर शख्स आ'ला हुकूमतों का ता'बेदार रहे क्योंकि कोई हुकूमत ऐसी नहीं जो खुदा की तरफ़ से न हो और जो हुकूमतें मौजूद हैं वो खुदा की तरफ़ से मुक़र्रर है। ² पस जो कोई हुकूमत का सामना करता है वो खुदा के इन्तिज़ाम का मुख़ालिफ़ है और जो मुख़ालिफ़ है वो सज़ा पाएगा।

³ नेक — ओ कारों को हाकिमों से ख़ौफ़ नहीं बल्कि बदकार को है, पस अगर तू हाकिम से निडर रहना चाहता है तो नेकी कर उसकी तरफ़ से तेरी तारीफ़ होगी।

⁴ क्योंकि वो तेरी बेहतरी के लिए खुदा का खादिम है लेकिन अगर तू बदी करे तो डर, क्योंकि वो तलवार बे'फ़ाइदा लिए हुए नहीं और खुदा का खादिम है कि उसके ग़ज़ब के मुवाफ़िक़ बदकार को सज़ा देता है ⁵ पस ताबे दार रहना न सिर्फ़ ग़ज़ब के डर से ज़रूर है बल्कि दिल भी यही गवाही देता है।

⁶ तुम इसी लिए लगान भी देते हो कि वो खुदा का खादिम है और इस खास काम में हमेशा मशगूल रहते हैं। ⁷ सब का हक़ अदा करो जिस को लगान चाहिए लगान दो, जिसको महसूल चाहिए महसूल जिससे डरना चाहिए उस से डरो, जिस की इज्जत करना चाहिए उसकी इज्जत करो।

⁸ आपस की मुहब्बत के सिवा किसी चीज़ में किसी के क़र्ज़दार न हो क्योंकि जो दूसरे से मुहब्बत रखता है उसने शरी'अत पर पूरा अमल किया। ⁹ क्योंकि ये बातें कि ज़िना न कर, खून न कर, चोरी न कर, लालच न कर और इसके सिवा और जो कोई हुक्म हो उन सब का खुलासा इस बात में पाया जाता है “अपने पड़ोसी से अपनी तरह मुहब्बत रख।” ¹⁰ मुहब्बत अपने पड़ोसी से बदी नहीं करती इस वास्ते मुहब्बत शरी'अत की ता'मील है।

¹¹ वक़्त को पहचानकर ऐसा ही करो इसलिए कि अब वो घड़ी आ पहुँची कि तुम नींद से जागो; क्योंकि जिस वक़्त हम ईमान लाए थे उस वक़्त की निस्बत अब हमारी नजात नज़दीक है। ¹² रात बहुत गुज़र गई, और दिन निकलने वाला है पस हम अंधेरे के कामों को तर्क करके रौशनी के हथियार बाँध लें।

¹³ जैसा दिन को दस्तूर है संजीदगी से चलें न कि नाच रंग और नशेबाज़ी से न ज़िनाकारी और शहवत परस्ती से और न झगड़े और हसद से। ¹⁴ बल्कि खुदावन्द ईसा मसीह को पहन लो और जिस्म की ख़वाहिशों के लिए तदबीरें न करो।

14

?? ?????? ?? ???????????

¹ कमज़ोर ईमान वालों को अपने में शामिल तो कर लो, मगर शक' और शुबह की तक़ारों के लिए नहीं। ² हरएक का मानना है कि हर चीज़ का खाना जाएज़ है और कमज़ोर ईमानवाला साग पात ही खाता है।

³ खाने वाला उसको जो नहीं खाता हक़ीर न जाने और जो नहीं खाता वो खाने वाले पर इल्ज़ाम न लगाए; क्योंकि खुदा ने उसको कुबूल कर लिया है। ⁴ तू कौन है, जो दूसरे के नौकर पर इल्ज़ाम लगाता है? उसका क्राईम रहना या गिर पड़ना उसके मालिक ही से मुता'ल्लिक़

है; बल्कि वो क्राईम ही कर दिया जाए क्योंकि खुदावन्द उसके क्राईम करने पर कादिर है।

5 कोई तो एक दिन को दूसरे से अफ़ज़ल जानता है और कोई सब दिनों को बराबर जानता है हर एक अपने दिल में पूरा ऐ'तिक्राद रखे। 6 जो किसी दिन को मानता है वो खुदावन्द के लिए मानता है और जो खाता है वो खुदावन्द के वास्ते खाता है क्योंकि वो खुदा का शुक्र करता है और जो नहीं खाता वो भी खुदावन्द के वास्ते नहीं खाता, और खुदावन्द का शुक्र करता है।

7 क्योंकि हम में से न कोई अपने वास्ते जीता है, न कोई अपने वास्ते मरता है। 8 अगर हम जीते हैं तो खुदावन्द के वास्ते जीते हैं और अगर मरते हैं तो खुदावन्द के वास्ते मरते हैं; पस हम जिएँ या मरें खुदावन्द ही के हैं। 9 क्योंकि मसीह इसलिए मरा और ज़िन्दा हुआ कि मुर्दों और ज़िन्दों दोनों का खुदावन्द हो।

10 मगर तू अपने भाई पर किस लिए इल्ज़ाम लगाता है? या तू भी किस लिए अपने भाई को हक़ीर जानता है? हम तो सब खुदा के तख़्त — ए — अदालत के आगे खड़े होंगे। 11 चुनाँचे ये लिखा है; खुदावन्द फ़रमाता है मुझे अपनी हयात की क्रसम, हर एक घुटना मेरे आगे झुकेगा और हर एक ज़बान खुदा का इक्रार करेगी।

12 पस हम में से हर एक खुदा को अपना हिसाब देगा।

13 पस आइन्दा को हम एक दूसरे पर इल्ज़ाम न लगाएँ बल्कि तुम यही ठान लो कि कोई अपने भाई के सामने वो चीज़ न रखे जो उसके ठोकर खाने या गिरने का ज़रिया हो।

14 मुझे मा'लूम है बल्कि खुदावन्द ईसा में मुझे यक़ीन है कि कोई चीज़ बजाहित हराम नहीं लेकिन जो उसको हराम समझता है उस के लिए हराम है। 15 अगर तेरे भाई को तेरे खाने से रंज पहुँचता है तो फिर तू मुहब्बत के का'बदे पर नहीं चलता; जिस शख्स के वास्ते मसीह मरा तू अपने खाने से हलाक न कर।

16 पस तुम्हारी नेकी की बदनामी न हो। 17 क्योंकि खुदा की बादशाही खाने पीने पर नहीं बल्कि रास्तबाज़ी और मेल मिलाप और उस खुशी पर मौकूफ़ है जो रूह — उल — कुदूस की तरफ़ से होती है।

18 जो कोई इस तौर से मसीह की खिदमत करता है; वो खुदा का पसन्दीदा और आदमियों का मक़बूल है। 19 पस हम उन बातों के तालिब रहें; जिनसे मेल मिलाप और आपसी तरक्की हो।

20 खाने की खातिर खुदा के काम को न बिगाड़ हर चीज़ पाक तो है मगर उस आदमी के लिए बुरी है; जिसको उसके खाने से ठोकर लगती है।

21 यही अच्छा है कि तू न गोश्त खाए न मय पिए न और कुछ ऐसा करे जिस की वजह से तेरा भाई ठोकर खाए।

22 जो तेरा ऐ'तिक्राद है वो खुदा की नज़र में तेरे ही दिल में रहे, मुबारिक वो है जो उस चीज़ की वजह से जिसे वो जायज़ रखता है अपने आप को मुल्ज़िम नहीं ठहराता। 23 मगर जो कोई किसी चीज़ में शक रखता है अगर उस को खाए तो मुजरिम ठहरता है इस वास्ते कि वो ऐ'तिक्राद से नहीं खाता, और जो कुछ ऐ'तिक्राद से नहीं वो गुनाह है।

15

?????? ?? ???? ???? ?? ???? ???? ?

1 गरज़ हम ताक़तवरों को चाहिए कि कमज़ोरों के कमज़ोरियों की रि'आयत करें न कि अपनी खुशी करें।

2 हम में हर शख्स अपने पड़ोसी को उसकी बेहतरी के वास्ते खुश करे; ताकि उसकी तरक्की हो।

3 क्योंकि मसीह ने भी अपनी खुशी नहीं की “बल्कि यूँ लिखा है; तेरे लान तान करनेवालों के लान'तान मुझ पर आ पड़े।” 4 क्योंकि जितनी बातें पहले लिखी गईं, वो हमारी ता'लीम के लिए लिखी गईं, ताकि सब् और किताब'ए मुक़द्दस की तसल्ली से उम्मीद रखे।

5 और खुदा सब् और तसल्ली का चश्मा तुम को ये तौफ़ीक़ दे कि मसीह ईसा के मुताबिक़ आपस में एक दिल रहो। 6 ताकि तुम एक दिल और एक ज़बान हो कर हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के खुदा और बाप की बड़ाई करो।

7 पस जिस तरह मसीह ने खुदा के जलाल के लिए तुम को अपने साथ शामिल कर लिया है उसी तरह तुम भी एक दूसरे को शामिल कर लो।

8 में कहता हूँ कि खुदा की सच्चाई साबित करने के लिए मसीह मख़्तूनो का खादिम बना ताकि उन वा'दों को पूरा करूँ जो बाप दादा से किए गए थे। 9 और ग़ैर क्रौमों भी रहम की वजह से खुदा की हम्द करें चुनाँचे लिखा है,

“इस वास्ते मैं ग़ैर क्रौमों में तेरा इक्रार करूँगा और तेरे नाम के गीत गाऊँगा।”

10 और फिर वो फ़रमाता

है “ऐ'ग़ैर क्रौमों उसकी उम्मत के साथ खुशी करो।”

11 फिर ये

“ऐ, ग़ैर क्रौमों खुदावन्द की हम्द करो

और उम्मतें उसकी सिताइश करें!”

12 और यसायाह भी कहता है

यस्सी की जड़ ज़ाहिर होगी

या'नी वो शख्स जो ग़ैर क्रौमों पर हुकूमत करने को उठेगा,

उसी से ग़ैर क़ौमों में उम्मीद रखेंगी।

¹³ पस खुदा जो उम्मीद का चश्मा है तुम्हें ईमान रखने के ज़रिए सारी खुशी और इत्मीनान से मा'मूर करे ताकि रूह — उल कुदूस की कुदरत से तुम्हारी उम्मीद ज्यादा होती जाए।

¹⁴ ऐ मेरे भाइयों; मैं खुद भी तुम्हारी निस्वत यक्रीन रखता हूँ कि तुम आप नेकी से मा'मूर और मुकम्मल मा'रिफ़त से भरे हो और एक दूसरे को नसीहत भी कर सकते हो।

¹⁵ तोभी मैं ने कुछ जगह ज्यादा दिलेरी के साथ याद दिलाने के तौर पर इसलिये तुम को लिखा; कि मुझ को खुदा की तरफ़ से ग़ैर क़ौमों के लिए मसीह ईसा मसीह के खादिम होने की तौफ़ीक़ मिली है। ¹⁶ कि मैं खुदा की खुशख़बरी की ख़िदमत इमाम की तरह अंजाम दूँ ताकि ग़ैर क़ौमों में नज़र के तौर पर रूह — उल कुदूस से मुक़दस बन कर मक़बूल हो जाएँ।

¹⁷ पस मैं उन बातों में जो खुदा से मुतल्लिक हैं मसीह ईसा के ज़रिए फ़ख़र कर सकता हूँ। ¹⁸ क्यूँकि मुझे किसी और बात के ज़िक़र करने की हिम्मत नहीं सिवा उन बातों के जो मसीह ने ग़ैर क़ौमों के ताबे करने के लिए क़ौल और फ़ैल से निशानों और मोज़िज़ों की ताक़त से और रूह — उल कुदूस की कुदरत से मेरे वसीले से कीं। ¹⁹ यहाँ तक कि मैंने येरूशलेम से लेकर चारों तरफ़ इल्लुरिकुम सूबे तक मसीह की खुशख़बरी की पूरी पूरी मनादी की।

²⁰ और मैं ने यही हौसला रखा कि जहाँ मसीह का नाम नहीं लिया गया वहाँ खुशख़बरी सुनाऊँ ताकि दूसरे की बुनियाद पर इमारत न उठाऊँ। ²¹ बल्कि जैसा लिखा है वैसा ही हो जिनको उसकी ख़बर नहीं पहुँची वो देखेंगे; और जिन्होंने नहीं सुना वो समझेंगे।

²² इसी लिए मैं तुम्हारे पास आने से बार बार रुका रहा। ²³ मगर चूँकि मुझ को अब इन मुल्कों में जगह बाक़ी नहीं रही और बहुत बरसों से तुम्हारे पास आने का मुश्ताक़ भी हूँ।

²⁴ इसलिये जब इस्फ़ानिया मुल्क को जाऊँगा तो तुम्हारे पास होता हुआ जाऊँगा; क्यूँकि मुझे उम्मीद है कि उस सफ़र में तुम से मिलूँगा और जब तुम्हारी सोहबत से किसी क़दर मेरा जी भर जाएगा तो तुम मुझे उस तरफ़ ख़ाना कर दोगे। ²⁵ लेकिन फ़िलहाल तो मुक़दसों की ख़िदमत करने के लिए येरूशलेम को जाता हूँ।

²⁶ क्यूँकि मकिदुनिया और अखिया के लोग येरूशलेम के ग़रीब मुक़दसों के लिए कुछ चन्दा करने को रज़ामन्द

हुए। ²⁷ किया तो रज़ामन्दी से मगर वो उनके क़र्ज़दार भी हैं क्यूँकि जब ग़ैर क़ौमों रूहानी बातों में उनकी शरीक हुई हैं तो लाज़िम है कि जिस्मानी बातों में उनकी ख़िदमत करें।

²⁸ पस मैं इस ख़िदमत को पूरा करके और जो कुछ हासिल हुआ उनको सौंप कर तुम्हारे पास होता हुआ इस्फ़ानिया को जाऊँगा। ²⁹ और मैं जानता हूँ कि जब तुम्हारे पास आऊँगा तो मसीह की कामिल बर्क़त लेकर आऊँगा।

³⁰ ऐ, भाइयों; मैं ईसा मसीह का जो हमारा खुदावन्द है वास्ता देकर और रूह की मुहब्बत को याद दिला कर तुम से गुज़ारिश करता हूँ कि मेरे लिए खुदा से दुआ करने में मेरे साथ मिल कर मेहनत करो। ³¹ कि मैं यहूदिया के नाफ़रमानों से बचा रहूँ, और मेरी वो ख़िदमत जो येरूशलेम के लिए है मुक़दसों को पसन्द आए। ³² और खुदा की मर्ज़ी से तुम्हारे पास खुशी के साथ आकर तुम्हारे साथ आराम पाऊँ।

³³ खुदा जो इत्मीनान का चश्मा है तुम सब के साथ रहे; आमीन।

16

~~~~~

<sup>1</sup> मैं तुम से फ़ीबे की जो हमारी बहन और किन्खरिया शहर की कलीसिया की खादिमा है सिफ़ारिश करता हूँ। <sup>2</sup> कि तुम उसे खुदावन्द में कुबूल करो, जैसा मुक़दसों को चाहिए और जिस काम में वो तुम्हारी मोहताज हो उसकी मदद करो क्यूँकि वो भी बहुतों की मददगार रही है; बल्कि मेरी भी।

<sup>3</sup> पिरस्का और अक्विला से मेरा सलाम कहो वो मसीह ईसा में मेरे हमख़िदमत हैं। <sup>4</sup> उन्होंने मेरी जान के लिए अपना सिर दे रख़ा था; और सिर्फ़ में ही नहीं बल्कि ग़ैर क़ौमों की सब कलीसियाएँ भी उनकी शुक्रगुज़ार हैं। <sup>5</sup> और उस कलीसिया से भी सलाम कहो जो उन के घर में है; मेरे प्यारे अपीनितुस से सलाम कहो जो मसीह के लिए आसिया का पहला फल है।

<sup>6</sup> मरियम से सलाम कहो; जिसने तुम्हारे वास्ते बहुत मेहनत की। <sup>7</sup> अन्दरनीकुस और यून्यास से सलाम कहो वो मेरे रिश्तेदार हैं और मेरे साथ कैद हुए थे, और रसूलों में नामवर हैं और मुझ से पहले मसीह में शामिल हुए। <sup>8</sup> अम्पलियातुस से सलाम कहो जो खुदावन्द में मेरा प्यारा है।

<sup>9</sup> उरबानुस से जो मसीह में हमारा हमख़िदमत है और मेरे प्यारे इस्तख़ुस से सलाम कहो। <sup>10</sup> अपिल्लेस से

सलाम कहो जो मसीह में मक़बूल है अरिस्तुबुलुस के घर वालों से सलाम कहो। <sup>11</sup> मेरे रिश्तेदार हेरोदियून से सलाम कहो; नरकिस्सुस के उन घरवालों से सलाम कहो जो खुदावन्द में हैं। <sup>12</sup> त्रफ़ैना त्रुफ़ोसा से सलाम कहो जो खुदावन्द में मेहनत करती है प्यारी परसिस से सलाम कहो जिसने खुदावन्द में बहुत मेहनत की। <sup>13</sup> रूफ़ुस जो खुदावन्द में बरगुज़ीदा है और उसकी माँ जो मेरी भी माँ है दोनों से सलाम कहो। <sup>14</sup> असुंकिरतुस और फ़लिगोन और हिरमेस और पत्रुबास और हिरमास और उन भाइयों से जो उनके साथ हैं सलाम कहो। <sup>15</sup> फ़िलुलुगुस और यूलिया और नयरयूस और उसकी बहन और उलुम्पास और सब मुक़द्दसों से जो उन के साथ हैं सलाम कहो। <sup>16</sup> आपस में पाक बोसा लेकर एक दूसरे को सलाम करो मसीह की सब कलीसियाएँ तुम्हें सलाम कहती हैं।

<sup>17</sup> अब ऐ, भाइयों मैं तुम से गुज़ारिश करता हूँ कि जो लोग उस ता'लीम के बरख़िलाफ़ जो तुम ने पाई फ़ूट पड़ने और ठोकर खाने का ज़रिया हैं उन को पहचान लो और उनसे किनारा करो। <sup>18</sup> क्योंकि ऐसे लोग हमारे खुदावन्द मसीह की नहीं बल्कि अपने पेट की खिदमत करते हैं और चिकनी चुपड़ी बातों से सादा दिलों को बहकाते हैं,

<sup>19</sup> क्योंकि हमारी फ़रमाबरदारी सब में मशहूर हो गई है इसलिए मैं तुम्हारे बारे में खुश हूँ लेकिन ये चाहता हूँ कि तुम नेकी के ऐ'तिबार से अक्लमंद बन जाओ और बदी के ऐ'तिबार से भोले बने रहो। <sup>20</sup> खुदा जो इत्मीनान का चश्मा है शैतान तुम्हारे पाँव से जल्द कुचलवा देगा। हमारे खुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़ल तुम पर होता रहे।

<sup>21</sup> मेरे हमखिदमत तीमुथियुस और मेरे रिश्तेदार लूकियुस और यासोन और सोसिपत्रुस तुम्हें सलाम कहते हैं। <sup>22</sup> इस ख़त का कातिब तिरतियुस तुम को खुदावन्द में सलाम कहता है।

<sup>23</sup> गयुस मेरा और सारी कलीसिया का मेहमानदार तुम्हें सलाम कहता है इरास्तुस शहर का ख़ज़ांची और भाई क्वारतुस तुम को सलाम कहते हैं। <sup>24</sup> हमारे खुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़ल तुम सब के साथ हो; आमीन।

<sup>25</sup> अब खुदा जो तुम को मेरी खुशख़बरी या'नी ईसा मसीह की मनादी के मुवाफ़िक़ मज़बूत कर सकता है, उस राज़ के मुक़ाशिफ़ा के मुताबिक़ जो अज़ल से पोशीदा रहा। <sup>26</sup> मगर इस वक़्त ज़ाहिर हो कर खुदा'एँ अज़ली के हुक्म के मुताबिक़ नबियों की किताबों के ज़रिए से सब क़ौमों को बताया गया ताकि वो ईमान के ताबे हो जाएँ।

<sup>27</sup> उसी वाहिद हकीम खुदा की ईसा मसीह के वसीले से हमेशा तक बड़ाई होती रहे। आमीन।

## कुरिन्थियों के नाम पौलूस रसूल का पहला खत

कुरिन्थियों के नाम पौलूस रसूल का पहला खत

1 पौलूस को इस किताब का मुसन्निफ़ बतौर तस्लीम किया गया है। (1 कुरिन्थियों 1:1 — 2; 16:21) पौलूस रसूल का खत बतौर भी जाना गया है। कुछ अर्सा पहले या फिर पौलूस जब इफ़सुस में था तो उस ने कुरिन्थियों को एक खत लिखा जो 1 कुरिन्थियों 5:10 1 — 2; 11 को तरजीह देता था और कुरिन्थ लोग इस खत की बाबत ग़लत फ़हमी में थे और बद किसमती से वह खत महफूज़ न रह पाया। इस पहले खत का मज़मून था (जैसे बुलाए गए थे) जिस की बाबत पूरी तरह से उन्हें मा'लूम नहीं था। इस खत से पहले कुरिन्थ की कलीसिया के लोगों ने भी पौलूस को एक खत लिखा जिसे पौलूस ने हासिल किया था उसी के जवाब का यह पहला कुरिन्थियों का खत है।

कुरिन्थियों के नाम पौलूस रसूल का पहला खत

इस के तस्नीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 55 - 56 ईस्वी है।

इस खत को इफ़सुस से लिखा गया (1 कुरिन्थियों 16:8)।

कुरिन्थियों के नाम पौलूस रसूल का पहला खत

पहला कुरिन्थियों के मख़सूस शुदा कारिईन खुदा की कलीसिया जो कुरिन्थ में थी उस के अर्कान थे (1 कुरिन्थियों 1:2) हालांकि पौलूस खुद ही मख़सूस शुदा कारिईन को इस बतौर लिखते हुए शामिल करता है कि खुदा की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थिस में है, यानी उन के नाम जो मसीह येसू में पाक किए गये हैं (1:2)।

कुरिन्थियों के नाम पौलूस रसूल का पहला खत

पौलूस ने कई एक ज़रायों से कुरिन्थ की कलीसिया की मौजूदा हालात की बाबत मा'लूमात हासिल कर रखी थी तब उन्हें नसीहत देने के लिए उस ने यह खत लिखा। इस खत के लिखने का मक़सद था कि उन्हें नसीहत दे, उन की ज़िन्दगियों में जहां कमियाँ पाई जाती थीं वहाँ उन्हें बहाल करे, सुधारे, खास तौर से तफ़रिक्कों के मुग़ालते दूर करे (1 कुरिन्थियों 1:10 — 4:21) और क़्यामत की बाबत जो ग़लत ता'लीम दी गई थी उस की तसीह करे। (1 कुरिन्थियों 15 बाब) बे दीनी के खिलाफ़ उन्हें नसीहत दे (1 कुरिन्थियों 5, 6:12 — 20) और अशा — ए — रब्बानी के ग़लत इस्ते'माल

की बाबत होशियार करे (1 कुरिन्थियों 11:17 — 34) कुरिन्थियों की कलीसिया खुदा की ने'मतों से सरफ़राज़ थी (1:4 — 7) मगर ना कामिल और ग़ैर रूहानी थी (3:1 — 4) सो पौलूस ने एक अहम नमूने का किरदार निभाया कि कलीसिया अपने बीच गुनाह के मसले को अपने हाथ में ले और उन का हल करे। इलाक़ाई तफ़रिक्के और सब तरह की बेदीनी की तरफ़ आंखमचोली खेलने के बनिस्वत उस ने मस्लाज़ात की तरफ़ ध्यान देने को कहा।

कुरिन्थियों के नाम पौलूस रसूल का पहला खत

ईमानदार की सीरत।

बैरूनी खाका

1. तआरुफ़ — 1:1-9
2. कुरिन्थ की कलीसिया में तफ़रिक्के — 1:10-4:21
3. अख़लाकी ना मुवाफ़िक़त — 5:1-6:20
4. शादी के उसूल — 7:1-40
5. शागिर्दी की आज़ादी — 8:1-11:1
6. इबादत के लिए हिदायात — 11:2-34
7. रूहानी तौहफ़े — 12:1-14:40
8. क़्यामत के लिए इल्म — ए — इलाही — 15:1-16:24

कुरिन्थियों के नाम पौलूस रसूल का पहला खत

1 पौलूस रसूल की तरफ़ से, जो खुदा की मर्ज़ी से ईसा मसीह का रसूल होने के लिए बुलाया गया है और भाई सोस्थिनेस की तरफ़ से, ये खत, <sup>2</sup> खुदा की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस शहर में है, या'नी उन के नाम जो मसीह ईसा में पाक किए गए, और मुक़दस होने के लिए बुलाए गए हैं, और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने खुदावन्द ईसा मसीह का नाम लेते हैं। <sup>3</sup> हमारे बाप खुदा और खुदावन्द ईसा मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इत्मीनान हासिल होता रहे।

<sup>4</sup> मैं तुम्हारे बारे में खुदा के उस फ़ज़ल के ज़रिए जो मसीह ईसा में तुम पर हुआ हमेशा अपने खुदा का शुक्र करता हूँ। <sup>5</sup> कि तुम उस में होकर सब बातों में कलाम और इल्म की हर तरह की दौलत से दौलतमन्द हो गए, हो। <sup>6</sup> चुनाँचे मसीह की गवाही तुम में क़ाईम हुई।

<sup>7</sup> यहाँ तक कि तुम किसी ने'मत में कम नहीं, और हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के ज़हूर के मुन्तज़िर हो।

<sup>8</sup> जो तुम को आखिर तक क़ाईम भी रखेगा, ताकि तुम हमारे खुदावन्द 'ईसा' मसीह के दिन बे'इल्ज़ाम ठहरो।

<sup>9</sup> खुदा सच्चा है जिसने तुम्हें अपने बेटे हमारे खुदावन्द 'ईसा मसीह की शराक़त के लिए बुलाया है।

<sup>10</sup> अब ऐ भाइयों! ईसा मसीह जो हमारा खुदावन्द है, उसके नाम के वसीले से मैं तुम से इल्तिमास करता



हूँ कि सब एक ही बात कहो, और तुम में तफ़रके न हों, बल्कि एक साथ एक दिल और एक राय हो कर कामिल बने रहो। <sup>11</sup>क्योंकि ऐ भाइयों! तुम्हारे ज़रिए मुझे खलोए के घर वालों से मा'लूम हुआ कि तुम में झगड़े हो रहे हैं।

<sup>12</sup> मेरा ये मतलब है कि तुम में से कोई तो अपने आपको पौलुस का कहता है कोई अपुल्लोस का कोई कैफ़ा का कोई मसीह का। <sup>13</sup>क्या मसीह बट गया? क्या पौलुस तुम्हारी खातिर मस्तूब हुआ? या तुम ने पौलुस के नाम पर बपतिस्मा लिया?

<sup>14</sup>खुदा का शुक्र करता हूँ कि क्रिसपुस और गयुस के सिवा मैंने तुम में से किसी को बपतिस्मा नहीं दिया। <sup>15</sup>ताकि कोई ये न कहे कि तुम ने मेरे नाम पर बपतिस्मा लिया। <sup>16</sup>हाँ स्तिफ़नास के खानदान को भी मैंने बपतिस्मा दिया बाकी नहीं जानता कि मैंने किसी और को बपतिस्मा दिया हो।

<sup>17</sup>क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं भेजा बल्कि खुशखबरी सुनाने को और वो भी कलाम की हिक्मत से नहीं ताकि मसीह की सलीबी मौत बे'ताशीर न हो।

<sup>18</sup>क्योंकि सलीब का पैग़ाम हलाक होने वालों के नज़दीक तो बे'वकूफी है मगर हम नज़ात पानेवालों के नज़दीक खुदा की कुदरत है। <sup>19</sup>क्योंकि लिखा है, "मैं हकीमों की हिक्मत को नेस्त और अक्लमन्दों की अक्ल को रद्द करूँगा।"

<sup>20</sup>कहाँ का हकीम? कहाँ का आलिम? कहाँ का इस जहान का बहस करनेवाला? क्या खुदा ने दुनिया की हिक्मत को बे'वकूफी नहीं ठहराया? <sup>21</sup>इसलिए कि जब खुदा की हिक्मत के मुताबिक़ दुनियाँ ने अपनी हिक्मत से खुदा को न जाना तो खुदा को ये पसन्द आया कि इस मनादी की बेवकूफी के वसीले से ईमान लानेवालों को नज़ात दे।

<sup>22</sup>चुनाँचे यहूदी निशान चाहते हैं और यूनानी हिक्मत तलाश करते हैं। <sup>23</sup>मगर हम उस मसीह मस्तूब का ऐलान करते हैं जो यहूदियों के नज़दीक ठोकर और ग़ैर क्रौमों के नज़दीक बेवकूफी है।

<sup>24</sup>लेकिन जो बुलाए हुए हैं यहूदी हों या यूनानी उन के नज़दीक मसीह खुदा की कुदरत और खुदा की हिक्मत है। <sup>25</sup>क्योंकि खुदा की बेवकूफी आदमियों की हिक्मत से ज्यादा हिक्मत वाली है और खुदा की कमज़ोरी आदमियों के ज़ोर से ज्यादा ताक़तवर है।

<sup>26</sup>ऐ भाइयों! अपने बुलाए जाने पर तो निगाह करो कि जिस्म के लिहाज़ से बहुत से हकीम बहुत से इस्तिहार वाले बहुत से अशराफ़ नहीं बुलाए गए।

<sup>27</sup>बल्कि खुदा ने दुनिया के बेवकूफ़ों चुन लिया कि हकीमों को शर्मिन्दा करे और खुदा ने दुनिया के कमज़ोरों को चुन लिया कि ज़ोरआवरों को शर्मिन्दा करे।

<sup>28</sup>और खुदा ने दुनिया के कमीनों और हक़ीरों को बल्कि बेवजूदों को चुन लिया कि मौजूदों को नेस्त करे।

<sup>29</sup>ताकि कोई बशर खुदा के सामने फ़ख़र न करे।

<sup>30</sup>लेकिन तुम उसकी तरफ़ से मसीह ईसा में हो, जो हमारे लिए खुदा की तरफ़ से हिक्मत ठहरा, या'नी रास्तबाज़ी और पाकीज़गी और मख़्लसी। <sup>31</sup>ताकि जैसा लिखा है "वैसा ही हो जो फ़ख़र करे वो खुदावन्द पर फ़ख़र करे।"

## 2

222222 22 22222222222 222 222222

<sup>1</sup>ऐ भाइयों! जब मैं तुम्हारे पास आया और तुम में खुदा के भेद की मनादी करने लगा तो आ'ला दर्जे की तक़रीर या हिक्मत के साथ नहीं आया। <sup>2</sup>क्योंकि मैंने ये इरादा कर लिया था कि तुम्हारे दर्मियान ईसा मसीह, मसलूब के सिवा और कुछ न जानूँगा।

<sup>3</sup>और मैं कमज़ोरी और ख़ौफ़ और बहुत थर थराने की हालत में तुम्हारे पास रहा। <sup>4</sup>और मेरी तक़रीर और मेरी मनादी में हिक्मत की लुभाने वाली बातें न थीं बल्कि वो रूह और कुदरत से साबित होती थीं। <sup>5</sup>ताकि तुम्हारा ईमान इंसान की हिक्मत पर नहीं बल्कि खुदा की कुदरत पर मौकूफ़ हो।

<sup>6</sup>फिर भी कामिलों में हम हिक्मत की बातें कहते हैं लेकिन इस जहान की और इस जहान के नेस्त होनेवाले हाकिमों की अक्ल नहीं। <sup>7</sup>बल्कि हम खुदा के राज़ की हक़ीक़त बातों के तौर पर बयान करते हैं, जो खुदा ने जहान के शुरू से पहले हमारे जलाल के वास्ते मुक़रर की थी।

<sup>8</sup>जिसे इस दुनिया के सरदारों में से किसी ने न समझा क्योंकि अगर समझते तो जलाल के खुदावन्द को मस्तूब न करते। <sup>9</sup>"बल्कि जैसा लिखा है वैसा ही हुआ

जो चीज़ें न आँखों ने देखीं

न कानों ने सुनीं

न आदमी के दिल में आई वो सब

खुदा ने अपने मुहब्बत रखनेवालों के लिए तैयार कर दी।"

<sup>10</sup>लेकिन हम पर खुदा ने उसको रूह के ज़रिए से ज़ाहिर किया क्योंकि रूह सब बातें बल्कि खुदा की तह की बातें भी दरियाफ़्त कर लेता है। <sup>11</sup>क्योंकि इंसान ों में से कौन किसी इंसान की बातें जानता है सिवा इंसान

की अपनी रूह के जो उस में है? उसी तरह खुदा के रूह के सिवा कोई खुदा की बातें नहीं जानता।

12 मगर हम ने न दुनिया की रूह बल्कि वो रूह पाया जो खुदा की तरफ से है; ताकि उन बातों को जानें जो खुदा ने हमें इनायत की हैं। 13 और हम उन बातों को उन अल्फ़ाज़ में नहीं बयान करते जो इंसानी हिक्मत ने हम को सिखाए हों बल्कि उन अल्फ़ाज़ में जो रूह ने सिखाए हैं और रूहानी बातों का रूहानी बातों से मुकाबिला करते हैं।

14 मगर जिस्मानी आदमी खुदा के रूह की बातें कुबूल नहीं करता क्योंकि वो उस के नज़दीक बेवकूफ़ी की बातें हैं और न वो इन्हें समझ सकता है क्योंकि वो रूहानी तौर पर परखी जाती हैं। 15 लेकिन रूहानी शख्स सब बातों को परख लेता है; मगर खुदा किसी से परखा नहीं जाता।

16 “खुदावन्द की अक़ल को किसने जाना कि उसको ता'लीम दे सके? मगर हम में मसीह की अक़ल है।”

### 3

????? ?? ?????????????, ????? ??  
???????

1 ऐ भाइयों! मैं तुम से उस तरह कलाम न कर सका जिस तरह रूहानियों से बल्कि जैसे जिस्मानियों से और उन से जो मसीह में बच्चे हैं। 2 मैंने तुम्हें दूध पिलाया और खाना न खिलाया क्योंकि तुम को उसकी बर्दाश्त न थी, बल्कि अब भी नहीं।

3 क्योंकि अभी तक जिस्मानी हो इसलिए कि जब तुम मैं हसद और झगड़ा है तो क्या तुम जिस्मानी न हुए और इंसानी तरीके पर न चले? 4 इसलिए कि जब एक कहता है “मैं पौलुस का हूँ” और दूसरा कहता है मैं अपुल्लोस का हूँ तो क्या तुम इंसान न हुए?

5 अपुल्लोस क्या चीज़ है? और पौलुस क्या? खादिम जिनके वसीले से तुम ईमान लाए और हर एक को वो हैसियत है जो खुदावन्द ने उसे बख़्शी।

6 मैंने दरख़्त लगाया और अपुल्लोस ने पानी दिया मगर बढ़ाया खुदा ने। 7 पस न लगाने वाला कुछ चीज़ है न पानी देनेवाला मगर खुदा जो बढ़ाने वाला है।

8 लगानेवाला और पानी देनेवाला दोनों एक हैं लेकिन हर एक अपना अज़र अपनी मेहनत के मुवाफ़िक़ पाएगा। 9 क्योंकि हम खुदा के साथ काम करनेवाले हैं तुम खुदा की खेती और खुदा की इमारत हो। 10 मैंने उस तौफ़ीक़ के मुवाफ़िक़ जो खुदा ने मुझे बख़्शी अक़लमंद मिस्त्री की तरह नींव रखी, और दूसरा उस पर इमारत उठाता है पस हर एक ख़बरदार रहे, कि वो कैसी इमारत

उठाता है। 11 क्यूँकि सिवा उस नींव के जो पड़ी हुई है और वो ईसा मसीह है कोई शख्स दूसरी नहीं रख सकता।

12 और अगर कोई उस नींव पर सोना या चाँदी या बेशकीमती पत्थरों या लकड़ी या घास या भूसे का रद्दा रखे। 13 तो उस का काम ज़ाहिर हो जाएगा क्यूँकि जो दिन आग के साथ ज़ाहिर होगा वो उस काम को बता देगा और वो आग खुद हर एक का काम आजमा लेगी कि कैसा है।

14 जिस का काम उस पर बना हुआ बाक़ी रहेगा, वो अज़र पाएगा। 15 और जिस का काम जल जाएगा, वो नुक्सान उठाएगा; लेकिन खुद बच जाएगा मगर जलते जलते।

16 क्या तुम नहीं जानते कि तुम खुदा का मक़दिस हो और खुदा का रूह तुम में बसा हुआ है? 17 अगर कोई खुदा के मक़दिस को बरबाद करेगा तो खुदा उसको बरबाद करेगा, क्यूँकि खुदा का मक़दिस پاک है और वो तुम हो।

18 कोई अपने आप को धोखा न दे अगर कोई तुम में अपने आप को इस जहान में हकीम समझे, तो बेवकूफ़ बने ताकि हकीम हो जाए। 19 क्यूँकि दुनियाँ की हिक्मत खुदा के नज़दीक बेवकूफ़ी है: चुनाँचे लिखा है, “वो हकीमों को उन ही की चालाकी में फँसा देता है।” 20 और ये भी, खुदावन्द हकीमों के खयालों को जानता है “कि बातिल हैं।”

21 पस आदमियों पर कोई फ़ख़र न करो क्यूँकि सब चीज़ें तुम्हारी हैं। 22 चाहे पौलुस हो, चाहे अपुल्लोस, चाहे कैफ़ा, चाहे दुनिया, चाहे ज़िन्दगी, चाहे मौत, चाहे हाल, की चीज़ें, चाहे इस्तक़बाल की, 23 सब तुम्हारी हैं और तुम मसीह के हो, और मसीह खुदा का है।

### 4

????????? ?? ??? ?????? ?? ????????

1 आदमी हम को मसीह का खादिम और खुदा के हिक्मत का मुख़्तार समझे। 2 और यहाँ मुख़्तार में ये बात देखी जाती है के दियानतदार निकले।

3 लेकिन मेरे नज़दीक ये निहायत छोटी बात है कि तुम या कोई इंसानी अदालत मुझे परखें: बल्कि मैं खुद भी अपने आप को नहीं परखता। 4 क्यूँकि मेरा दिल तो मुझे मलामत नहीं करता मगर इस से मैं रास्तबाज़ नहीं ठहरता, बल्कि मेरा परखने वाला खुदावन्द है।

5 पस जब तक खुदावन्द न आए, वक़्त से पहले किसी बात का फ़ैसला न करो; वही तारीकी की पोशीदा बातें रौशन कर देगा और दिलों के मन्सूबे ज़ाहिर कर देगा

और उस वक्त हर एक की ता'रीफ़ खुदा की तरफ़ से होगी।

6 ऐ भाइयों! मैंने इन बातों में तुम्हारी खातिर अपना और अपुल्लोस का ज़िक्र मिसाल के तौर पर किया है, ताकि तुम हमारे वसीले से ये सीखो कि लिखे हुए से बढ़ कर न करो

और एक की ताईद में दूसरे के बरखिलाफ़ शेखी न मारो।

7 तुझ में और दूसरे में कौन फ़र्क़ करता है? और तेरे पास कौन सी ऐसी चीज़ है जो तू ने दूसरे से नहीं पाई? और जब तूने दूसरे से पाई तो फ़ख़र क्यों करता है कि गोया नहीं पाई?

8 तुम तो पहले ही से आसूदा हो और पहले ही से दौलतमन्द हो और तुम ने हमारे बग़ैर बादशाही की: और क़ाश कि तुम बादशाही करते ताकि हम भी तुम्हारे साथ बादशाही करते। 9 मेरी दानिस्त में खुदा ने हम रसूलों को सब से अदना ठहराकर उन लोगों की तरह पेश किया है जिनके क़त्ल का हुक्म हो चुका हो; क्योंकि हम दुनिया और फ़रिश्तों और आदमियों के लिए एक तमाशा ठहरे।

10 हम मसीह की खातिर बेवकूफ़ हैं मगर तुम मसीह में अक़लमन्द हो: हम कमज़ोर हैं और तुम ताक़तवर तुम इज़्ज़त दार हो: और हम बे'इज़्ज़त। 11 हम इस वक्त तक भुखे प्यासे नंगे हैं और मुक्के खाते और आवारा फिरते हैं।

12 और अपने हाथों से काम करके मशक्क़त उठाते हैं लोग बुरा कहते हैं हम दुआ देते हैं वो सताते हैं हम सहते हैं। 13 वो बदनाम करते हैं हम मिन्नत समाजत करते हैं हम आज तक दुनिया के कूड़े और सब चीज़ों की झड़न की तरह हैं।

14 मैं तुम्हें शर्मिन्दा करने के लिए ये नहीं लिखता: बल्कि अपना प्यारा बेटा जानकर तुम को नसीहत करता हूँ। 15 क्योंकि अगर मसीह में तुम्हारे उस्ताद दस हज़ार भी होते तोभी तुम्हारे बाप बहुत से नहीं: इसलिए कि मैं ही इन्ज़ील के वसीले से मसीह ईसा में तुम्हारा बाप बना। 16 पस मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि मेरी तरह बनो।

17 इसी वास्ते मैंने तीमुथियुस को तुम्हारे पास भेजा; कि वो खुदावन्द में मेरा प्यारा और दियानतदार बेटा है और मेरे उन तरीक़ों को जो मसीह में हैं तुम्हें याद दिलाएगा; जिस तरह मैं हर जगह हर कलीसिया में ता'लीम देता हूँ। 18 कुछ ऐसी शेखी मारते हैं गोया कि तुम्हारे पास आने ही का नहीं।

19 लेकिन खुदावन्द ने चाहा तो मैं तुम्हारे पास जल्द आऊँगा और शेखी बाज़ों की बातों को नहीं, बल्कि उनकी कुदरत को मा'लूम करूँगा। 20 क्योंकि खुदा की बादशाही बातों पर नहीं, बल्कि कुदरत पर मौकूफ़ है। 21 तुम क्या चाहते हो कि मैं लकड़ी लेकर तुम्हारे पास आऊँ या मुहब्बत और नर्म मीज़ाज़ी से?

## 5

22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

1 यहाँ तक कि सुनने में आया है कि तुम में हरामकारी होती है बल्कि ऐसी हरामकारी जो ग़ैर क्रौमों में भी नहीं होती: चुनाँचे तुम में से एक शख्स अपने बाप की दूसरी बीवी को रखता है। 2 और तुम अफ़सोस तो करते नहीं ताकि जिस ने ये काम किया वो तुम में से निकाला जाए बल्कि शेखी मारते हो।

3 लेकिन मैं अगरचे जिस्म के ऐ'तिबार से मौजूद न था, मगर रूह के ऐ'तिबार से हाज़िर होकर गोया बहालत — ए — मौजूदगी ऐसा करने वाले पर ये हुक्म दे चुका हूँ। 4 कि जब तुम और मेरी रूह हमारे खुदावन्द ईसा मसीह की कुदरत के साथ जमा हो तो ऐसा शख्स हमारे खुदावन्द ईसा के नाम से। 5 जिस्म की हलाकत के लिए शैतान के हवाले किया जाए ताकि उस की रूह खुदावन्द ईसा के दिन नजात पाए।

6 तुम्हारा फ़ख़र करना खूब नहीं क्या तुम नहीं जानते कि थोड़ा सा खमीर सारे गुंधे हुए आटे को खमीर कर देता है। 7 पुराना खमीर निकाल कर अपने आप को पाक कर लो ताकि ताज़ा गुंधा हुआ आटा बन जाओ चुनाँचे तुम बे खमीर हो क्योंकि हमारा भी फ़सह या'नी मसीह कुर्बान हुआ। 8 पस आओ हम ईद करें न पुराने खमीर से और न बदी और शरारत के खमीर से, बल्कि साफ़ दिली और सच्चाई की बे खमीर रोटी से।

9 मैंने अपने ख़त में तुम को ये लिखा था कि हरामकारों से सुहबत न रखना। 10 ये तो नहीं कि बिल्कुल दुनिया के हरामकारों या लालचियों या ज़ालिमों या बुतपरस्तों से मिलना ही नहीं; क्योंकि इस सूरत में तो तुम को दुनिया ही से निकल जाना पड़ता।

11 यहाँ तक कि सुनने में आया है कि तुम में हरामकारी होती है बल्कि ऐसी हरामकारी जो ग़ैर क्रौमों में भी नहीं होती: चुनाँचे तुम में से एक शख्स अपने बाप की बीवी को रखता है। लेकिन मैंने तुम को दर हक़ीक़त ये लिखा था कि अगर कोई भाई कहलाकर हरामकार या लालची या बुतपरस्त या गाली देने वाला शराबी या ज़ालिम हो तो उस से सुहबत न रखो; बल्कि ऐसे के साथ खाना

तक न खाना। <sup>12</sup> क्यूँकि मुझे कलीसिया के बाहर वालों पर हुक्म करने से क्या वास्ता? क्या ऐसा नहीं है कि तुम तो कलीसिया के अन्दर वालों पर हुक्म करते हो। <sup>13</sup> मगर बाहर वालों पर खुदा हुक्म करता है, पस उस शरीर आदमी को अपने दर्मियान से निकाल दो।

## 6

~~~~~

¹ क्या तुम में से किसी को ये जुर'अत है कि जब दूसरे के साथ मुकद्दमा हो तो फ़ैसले के लिए बेदीन आदिलों के पास जाए; और मुकद्दसों के पास न जाए। ² क्या तुम नहीं जानते कि मुकद्दस लोग दुनिया का इन्साफ़ करेंगे? पस जब तुम को दुनिया का इन्साफ़ करना है तो क्या छोटे से छोटे झगड़ों के भी फ़ैसले करने के लायक नहीं हो? ³ क्या तुम नहीं जानते कि हम फ़रिश्तों का इन्साफ़ करेंगे? तो क्या हम दुनियावी मु'आमिले के फ़ैसले न करें?

⁴ पस अगर तुम में दुनियावी मुकद्दमे हों तो क्या उन को मुंसिफ़ मुक़र्रर करोगे जो कलीसिया में हकीर समझे जाते हैं। ⁵ मैं तुम्हें शर्मिन्दा करने के लिए ये कहता हूँ; क्या वाक़'ई तुम में एक भी समझदार नहीं मिलता जो अपने भाइयों का फ़ैसला कर सके। ⁶ बल्कि भाई भाइयों में मुकद्दमा होता है और वो भी बेदीनों के आगे!

⁷ लेकिन दर'असल तुम में बड़ा नुक्स ये है कि आपस में मुकद्दमा बाज़ी करते हो; ज़ुल्म उठाना क्यूँ नहीं बेहतर जानते? अपना नुक्सान क्यूँ नहीं कुबूल करते? ⁸ बल्कि तुम ही ज़ुल्म करते और नुक्सान पहुँचाते हो और वो भी भाइयों को।

⁹ क्या तुम नहीं जानते कि बदकार खुदा की बादशाही के वारिस न होंगे धोखा न खाओ न हरामकार खुदा की बादशाही के वारिस होंगे न बुतपरस्त, न ज़िनाकार, न अय्याश, न लौंडे बाज़, ¹⁰ न चोर, न लालची, न शराबी, न गालियाँ बकने वाले, न ज़ालिम, ¹¹ और कुछ तुम में ऐसे ही थे भी, 'मगर तुम खुदावन्द ईसा मसीह के नाम से और हमारे खुदा के रूह से धूल गए और पाक हुए और रास्तबाज़ भी ठहरे।

¹² सब चीज़ें मेरे लिए जायज़ तो हैं मगर सब चीज़ें मुफ़ीद नहीं; सब चीज़ें मेरे लिए जायज़ तो हैं; लेकिन मैं किसी चीज़ का पाबन्द न हूँगा। ¹³ खाना पेट के लिए हैं और पेट खाने के लिए लेकिन खुदा उसको और इनको नेस्त करेगा मगर बदन हरामकारी के लिए नहीं बल्कि खुदावन्द के लिए है और खुदावन्द बदन के लिए।

¹⁴ और खुदा ने खुदावन्द को भी जिलाया और हम को भी अपनी कुदरत से जिलाएगा। ¹⁵ क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बदन मसीह के आ'ज़ा है? पस क्या मैं मसीह के आ'ज़ा लेकर कस्बी के आ'ज़ा बनाऊँ हरगिज़ नहीं।

¹⁶ क्या तुम नहीं जानते कि जो कोई कस्बी से सुहबत करता है वो उसके साथ एक तन होता है? क्यूँकि वो फ़रमाता है, "वो दोनों एक तन होंगे।" ¹⁷ और जो खुदावन्द की सुहबत में रहता है वो उसके साथ एक रूह होता है।

¹⁸ हरामकारी से भागो जितने गुनाह आदमी करता है वो बदन से बाहर हैं; मगर हरामकार अपने बदन का भी गुनाहगार है।

¹⁹ क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा बदन रूह — उल — कुदूस का मक़दिस है जो तुम में बसा हुआ है और तुम को खुदा की तरफ़ से मिला है? और तुम अपने नहीं।

²⁰ क्यूँकि क्रीमत से खरीदे गए हो; पस अपने बदन से खुदा का जलाल ज़ाहिर करो।

7

~~~~~

<sup>1</sup> जो बातें तुम ने लिखी थीं उनकी वजह ये हैं मर्द के लिए अच्छा है कि औरत को न छुए। <sup>2</sup> लेकिन हरामकारी के अन्देशे से हर मर्द अपनी बीवी और हर औरत अपना शौहर रखे।

<sup>3</sup> शौहर बीवी का हक़ अदा करे और वैसे ही बीवी शौहर का। <sup>4</sup> बीवी अपने बदन की मुख्तार नहीं बल्कि शौहर है इसी तरह शौहर भी अपने बदन का मुख्तार नहीं बल्कि बीवी।

<sup>5</sup> तुम एक दूसरे से जुदा न रहो मगर थोड़ी मुद्दत तक आपस की रज़ामन्दी से, ताकि दुआ के लिए वक़्त मिले और फिर इकट्ठे हो जाओ ऐसा न हो कि ग़ल्बा — ए — नफ़्स की वजह से शैतान तुम को आज़माए।

<sup>6</sup> लेकिन मैं ये इजाज़त के तौर पर कहता हूँ हुक्म के तौर पर नहीं। <sup>7</sup> और मैं तो ये चाहता हूँ कि जैसा मैं हूँ वैसे ही सब आदमी हों लेकिन हर एक को खुदा की तरफ़ से खास तौफ़ीक़ मिली है किसी को किसी तरह की किसी को किसी तरह की।

<sup>8</sup> पस मैं बे'ब्याहों और बेवाओं के हक़ में ये कहता हूँ; कि उनके लिए ऐसा ही रहना अच्छा है जैसा मैं हूँ। <sup>9</sup> लेकिन अगर सब्र न कर सकें तो शादी कर लें; क्यूँकि शादी करना मस्त होने से बेहतर है।

<sup>10</sup> मगर जिनकी शादी हो गई है उनको मैं नहीं बल्कि खुदावन्द हुक्म देता है कि बीवी अपने शौहर से जुदा न



हो। <sup>11</sup> (और अगर जुदा हो तो बे'निकाह रहे या अपने शौहर से फिर मिलाप कर ले) न शौहर बीवी को छोड़े।

<sup>12</sup> बाकियों से मैं ही कहता हूँ न खुदावन्द कि अगर किसी भाई की बीवी बा'ईमान न हो और उस के साथ रहने को राजी हो तो वो उस को न छोड़े। <sup>13</sup> और जिस 'औरत का शौहर बा'ईमान न हो और उसके साथ रहने को राजी हो तो वो शौहर को न छोड़े। <sup>14</sup> क्योंकि जो शौहर बा'ईमान नहीं वो बीवी की वजह से पाक ठहरता है; और जो बीवी बा'ईमान नहीं वो मसीह शौहर के ज़रिए पाक ठहरती है वरना तुम्हारे बेटे नापाक होते मगर अब पाक हैं।

<sup>15</sup> लेकिन मर्द जो बा'ईमान न हो अगर वो जुदा हो तो जुदा होने दो ऐसी हालत में कोई भाई या बहन पाबन्द नहीं और खुदा ने हम को मेल मिलाप के लिए बुलाया है। <sup>16</sup> क्योंकि ऐ 'औरत तुझे क्या खबर है कि शायद तू अपने शौहर को बचा ले? और ऐ मर्द तुझे क्या खबर है कि शायद तू अपनी बीवी को बचा ले।

<sup>17</sup> मगर जैसा खुदावन्द ने हर एक को हिस्सा दिया है और जिस तरह खुदा ने हर एक को बुलाया है उसी तरह वो चले; और मैं सब कलीसियाओं में ऐसा ही मुक़र्रर करता हूँ। <sup>18</sup> जो मख़्तून बुलाया गया वो नामख़्तून न हो जाए जो नामख़्तूनी की हालत में बुलाया गया वो मख़्तून न हो जाए। <sup>19</sup> न ख़तना कोई चीज़ है नामख़्तूनी बल्कि खुदा के हुक्मों पर चलना ही सब कुछ है।

<sup>20</sup> हर शख्स जिस हालत में बुलाया गया हो उसी में रहे। <sup>21</sup> अगर तू गुलामी की हालत में बुलाया गया तो फ़िक्र न कर लेकिन अगर तू आज़ाद हो सके तो इसी को इस्तिyar कर। <sup>22</sup> क्योंकि जो शख्स गुलामी की हालत में खुदावन्द में बुलाया गया है वो खुदावन्द का आज़ाद किया हुआ है; इसी तरह जो आज़ादी की हालत में बुलाया गया है वो मसीह का गुलाम है। <sup>23</sup> तुम मसीह के ज़रिए ख़ास क़ीमत से ख़रीदे गए हो आदमियों के गुलाम न बनो। <sup>24</sup> ऐ भाइयों! जो कोई जिस हालत में बुलाया गया हो वो उसी हालत में खुदा के साथ रहे।

<sup>25</sup> कुँवारियों के हक़ में मेरे पास खुदावन्द का कोई हुक्म नहीं लेकिन दियानतदार होने के लिए जैसा खुदावन्द की तरफ़ से मुझ पर रहम हुआ उसके मुवाफ़िक़ अपनी राय देता हूँ। <sup>26</sup> पस मौजूदा मुसीबत के खयाल से मेरी राय में आदमी के लिए यही बेहतर है कि जैसा है वैसा ही रहे।

<sup>27</sup> अगर तेरी बीवी है तो उस से जुदा होने की कोशिश न कर और अगर तेरी बीवी नहीं तो बीवी की तलाश न कर। <sup>28</sup> लेकिन तू शादी करे भी तो गुनाह नहीं और

अगर कुँवारी ब्याही जाए तो गुनाह नहीं मगर ऐसे लोग जिस्मानी तकलीफ़ पाएँगे, और मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ।

<sup>29</sup> मगर ऐ भाइयों! मैं ये कहता हूँ कि वक़्त तंग है पस आगे को चाहिए कि बीवी वाले ऐसे हों कि गोया उनकी बीवियाँ नहीं। <sup>30</sup> और रोने वाले ऐसे हों गोया नहीं रोते; और खुशी करने वाले ऐसे हों गोया खुशी नहीं करते; और ख़रीदने वाले ऐसे हों गोया माल नहीं रखते।

<sup>31</sup> और दुनियावी कारोबार करनेवाले ऐसे हों कि दुनिया ही के न हो जाएँ; क्योंकि दुनिया की शक़ल बदलती जाती है।

<sup>32</sup> पस मैं ये चाहता हूँ कि तुम बेफ़िक्र रहो, बे ब्याहा शख्स खुदावन्द की फ़िक्र में रहता है कि किस तरह खुदावन्द को राजी करे। <sup>33</sup> मगर शादी हुआ शख्स दुनिया की फ़िक्र में रहता है कि किस तरह अपनी बीवी को राजी करे। <sup>34</sup> शादी और बेशादी में भी फ़र्क़ है बे शादी खुदावन्द की फ़िक्र में रहती है ताकि उसका जिस्म और रूह दोनों पाक हों मगर ब्याही हुई औरत दुनिया की फ़िक्र में रहती है कि किस तरह अपने शौहर को राजी करे।

<sup>35</sup> ये तुम्हारे फ़ाइदे के लिए कहता हूँ न कि तुम्हें फ़साने के लिए; बल्कि इसलिए कि जो ज़ेबा है वही अमल में आए और तुम खुदावन्द की ख़िदमत में बिना शक किए मशगूल रहो।

<sup>36</sup> अगर कोई ये समझे कि मैं अपनी उस कुँवारी लड़की की हक़तल्फ़ी करता हूँ जिसकी जवानी ढल चली है और ज़रूरत भी मा'लूम हो तो इस्तिyar है इस में गुनाह नहीं वो उसकी शादी होने दे। <sup>37</sup> मगर जो अपने दिल में पुख़्ता हो और इस की कुछ ज़रूरत न हो बल्कि अपने इरादे के अंजाम देने पर क़ादिर हो और दिल में अहद कर लिया हो कि मैं अपनी लड़की को बेनिकाह रखूँगा वो अच्छा करता है। <sup>38</sup> पस जो अपनी कुँवारी लड़की को शादी कर देता है वो अच्छा करता है और जो नहीं करता वो और भी अच्छा करता है।

<sup>39</sup> जब तक कि 'औरत का शौहर जीता है वो उस की पाबन्द है पर जब उसका शौहर मर जाए तो जिससे चाहे शादी कर सकती है मगर सिर्फ़ खुदावन्द में। <sup>40</sup> लेकिन जैसी है अगर वैसी ही रहे तो मेरी राय में ज्यादा खुश नसीब है और मैं समझता हूँ कि खुदा का रूह मुझ में भी है।

## 8

222222 22 222222 2222 2222 2222

1 अब बुतों की कुर्बानियों के बारे में ये है हम जानते हैं कि हम सब इल्म रखते हैं इल्म गुरुर पैदा करता है लेकिन मुहब्बत तरक्की का ज़रिया है। 2 अगर कोई गुमान करे कि मैं कुछ जानता हूँ तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता। 3 लेकिन जो कोई खुदा से मुहब्बत रखता है उस को खुदा पहचानता है।

4 पस बुतों की कुर्बानियों के गोश्त खाने के ज़रिए हम जानते हैं कि बुत दुनिया में कोई चीज़ नहीं और सिवा एक के और कोई खुदा नहीं। 5 अगरचे आसमान — ओ — ज़मीन में बहुत से खुदा कहलाते हैं चुनाँचे बहुत से खुदा और बहुत से खुदावन्द हैं।

6 लेकिन हमारे नज़दीक तो एक ही खुदा है या'नी बाप जिसकी तरफ़ से सब चीज़ें हैं और हम उसी के लिए हैं

और एक ही खुदावन्द है या'नी 'ईसा मसीह जिसके वसीले से सब चीज़ें मौजूद हुई और हम भी उसी के वसीले से हैं।

7 लेकिन सब को ये इल्म नहीं बल्कि कुछ को अब तक बुतपरस्ती की आदत है इसलिए उस गोश्त को बुत की कुर्बानी जान कर खाते हैं और उसका दिल, चुँकि कमज़ोर है, गन्दा हो जाता है।

8 खाना हमें खुदा से नहीं मिलाएगा; अगर न खाएँ तो हमारा कुछ नुक़सान नहीं और अगर खाएँ तो कुछ फ़ाइदा नहीं। 9 लेकिन होशियार रहो ऐसा न हो कि तुम्हारी आज़ादी कमज़ोरों के लिए ठोकर का ज़रिया हो जाए। 10 क्योंकि अगर कोई तुझ साहिब'ए इल्म को बुत खाने में खाना खाते देखे और वो कमज़ोर शख्स हो तो क्या उस का दिल बुतों की कुर्बानी खाने पर मज़बूत न हो जाएगा?

11 गरज़ तेरे इल्म की वजह से वो कमज़ोर शख्स या'नी वो भाई जिसकी खातिर मसीह मरा, हलाक हो जाएगा। 12 और तुम इस तरह भाइयों के गुनाहगार होकर और उनके कमज़ोर दिल को घायल करके मसीह के गुनाहगार ठहरते हो। 13 इस वजह से अगर खाना मेरे भाई को ठोकर खिलाए तो मैं कभी हरगिज़ गोश्त न खाऊँगा, ताकि अपने भाई के लिए ठोकर की वजह न बनूँ।

## 9

?????? ?? ????? ?? ?? ???????

1 क्या मैं आज़ाद नहीं? क्या मैं रसूल नहीं? क्या मैंने 'ईसा को नहीं देखा जो हमारा खुदावन्द है? क्या तुम खुदावन्द में मेरे बनाए हुए नहीं? 2 अगर मैं औरों के

लिए रसूल नहीं तो तुम्हारे लिए बे'शक हूँ क्योंकि तुम खुदावन्द में मेरी रिसालत पर मुहर हो।

3 जो मेरा इम्तिहान करते हैं उनके लिए मेरा यही जवाब है। 4 क्या हमें खाने पीने का इस्तियार नहीं? 5 क्या हम को ये इस्तियार नहीं कि किसी मसीह बहन को शादी कर के लिए फ़िरें, जैसा और रसूल और खुदावन्द के भाई और कैफ़ा करते हैं। 6 या सिर्फ़ मुझे और बरनबास को ही मेहनत मुशक्कत से बाज़ रहने का इस्तियार नहीं।

7 कौन सा सिपाही कभी अपनी गिरह से खाकर जंग करता है? कौन बाग़ लगाकर उसका फल नहीं खाता या कौन भेड़ों को चरा कर उन भेड़ों का दूध नहीं पीता? 8 क्या मैं ये बातें इंसानी अंदाज़ ही के मुताबिक़ कहता हूँ? क्या तौरेत भी यही नहीं कहती?

9 चुनाँचे मूसा की तौरेत में लिखा है “दाएँ में चलते हुए बैल का मुँह न बाँधना” क्या खुदा को बैलों की फ़िक्र है? 10 या ख़ास हमारे वास्ते ये फ़रमाता है हाँ ये हमारे वास्ते लिखा गया क्योंकि मुनासिब है कि जोतने वाला उम्मीद पर जोते और दाएँ चलाने वाला हिस्सा पाने की उम्मीद पर दाएँ चलाए। 11 पस जब हम ने तुम्हारे लिए रूहानी चीज़ें बोई तो क्या ये कोई बड़ी बात है कि हम तुम्हारी जिस्मानी चीज़ों की फ़सल काटें।

12 जब औरों का तुम पर ये इस्तियार है, तो क्या हमारा इस से ज़्यादा न होगा? लेकिन हम ने इस इस्तियार से काम नहीं किया; बल्कि हर चीज़ की बर्दाश्त करते हैं, ताकि हमारी वजह मसीह की खुशख़बरी में हर्ज न हो। 13 क्या तुम नहीं जानते कि जो मुक़द्दस चीज़ों की ख़िदमत करते हैं वो हैकल से खाते हैं? और जो कुर्बानगाह के ख़िदमत गुज़ार हैं वो कुर्बानगाह के साथ हिस्सा पाते हैं? 14 इस तरह खुदावन्द ने भी मुक़र्रर किया है कि खुशख़बरी सुनाने खुशख़बरी वाले के वसीले से गुज़ारा करें।

15 लेकिन मैंने इन में से किसी बात पर अमल नहीं किया और न इस गरज़ से ये लिखा कि मेरे वास्ते ऐसा किया जाए; क्योंकि मेरा मरना ही इस से बेहतर है कि कोई मेरा फ़ख़र खो दे। 16 अगर खुशख़बरी सुनाऊँ तो मेरा कुछ फ़ख़र नहीं क्योंकि ये तो मेरे लिए ज़रूरी बात है बल्कि मुझ पर अफ़सोस है अगर खुशख़बरी न सुनाऊँ।

17 क्योंकि अगर अपनी मर्जी से ये करता हूँ तो मेरे लिए अज़र है और अगर अपनी मर्जी से नहीं करता तो मुस्तारी मेरे सुपुर्द हुई है। 18 पस मुझे क्या अज़र मिलता है? ये कि जब इंजील का ऐलान करूँ तो खुशख़बरी को

मुफ्त कर दूँ ताकि जो इस्त्रियार मुझे खुशखबरी के बारे में हासिल है उसके मुवाफ़िक़ पूरा अमल न करूँ।

19 अगरचे मैं सब लोगों से आज़ाद हूँ फिर भी मैंने अपने आपको सबका गुलाम बना दिया है ताकि और भी ज्यादा लोगों को खींच लाऊँ। 20 मैं यहूदियों के लिए यहूदी बना, ताकि यहूदियों को खींच लाऊँ, जो लोग शरी'अत के मातहत हैं उन के लिए मैं शरी'अत के मातहत हुआ; ताकि शरी'अत के मातहतों को खींच लाऊँ अगरचे खुद शरी'अत के मातहत न था।

21 बेशरा लोगों के लिए बेशरा' बना ताकि बेशरा' लोगों को खींच लाऊँ; (अगरचे खुदा के नज़दीक बेशरा' न था; बल्कि मसीह की शरी'अत के ताबे था) 22 कमज़ोरों के लिए कमज़ोर बना, ताकि कमज़ोरों को खींच लाऊँ; मैं सब आदमियों के लिए सब कुछ बना हुआ हूँ; ताकि किसी तरह से कुछ को बचाऊँ। 23 मैं सब कुछ इन्जील की खातिर करता हूँ, ताकि औरों के साथ उस में शरीक हूँ।

24 क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में दौड़ने वाले दौड़ते तो सभी हैं मगर इन'आम एक ही ले जाता है? तुम भी ऐसा ही दौड़ो ताकि जीतो। 25 हर पहलवान सब तरह का परहेज़ करता है वो लोग तो मुरझाने वाला सेहरा\* पाने के लिए ये करते हैं मगर हम उस सेहरे के लिए ये करते हैं जो नहीं मुरझाता। 26 पस मैं भी इसी तरह दौड़ता हूँ या'नी बैठकाना नहीं; मैं इसी तरह मुक्कों से लड़ता हूँ; यानी उस की तरह नहीं जो हवा को मारते हैं। 27 बल्कि मैं अपने बदन को मारता कूटता और उसे क़ाबू में रखता हूँ; ऐसा न हो कि औरों में ऐलान कर के आप ना मक़बूल ठहरूँ।

## 10

???????? ?? ?????????? ?? ??? ?????

1 ऐ भाइयों! मैं तुम्हारा इस से नावाफ़िक़ रहना नहीं चाहता कि हमारे सब बाप दादा बादल के नीचे थे; और सब के सब लाल समुन्दर में से गुज़रे। 2 और सब ही ने उस बादल और समुन्दर में मूसा का बपतिस्मा लिया। 3 और सब ने एक ही रूहानी खुराक खाई। 4 और सब ने एक ही रूहानी पानी पिया क्योंकि वो उस रूहानी चट्टान में से पानी पीते थे जो उन के साथ साथ चलती थी और वो चट्टान मसीह था।

5 मगर उन में अक्सरों से खुदा राज़ी न हुआ चुनाँचे वो वीराने में ढेर हो गए। 6 ये बातें हमारे लिए इब्रत

\* 9:25 9:25 सेहरा

ठहरी, ताकि हम बुरी चीज़ों की ख्वाहिश न करें, जैसे उन्होंने ने की।

7 और तुम बुतपरस्त न बनो जिस तरह कुछ उनमें से बन गए थे चुनाँचे लिखा है। “लोग खाने पीने को बैठे फिर नाचने कूदने को उठे।” 8 और हम हरामकारी न करें जिस तरह उनमें से कुछ ने की, और एक ही दिन में तेईस हज़ार मर गए।

9 और हम खुदा वन्द की आजमाइश न करें जैसे उन में से कुछ ने की और साँपों ने उन्हें हलाक किया। 10 और तुम बड़बड़ाओ नहीं जिस तरह उन में से कुछ बड़बड़ाए और हलाक करने वाले से हलाक हुए।

11 ये बातें उन पर 'इब्रत के लिए वाक़े' हुई और हम आख़री ज़माने वालों की नसीहत के वास्ते लिखी गई। 12 पस जो कोई अपने आप को क़ाईम समझता है, वो ख़बरदार रहे के गिर न पड़े। 13 तुम किसी ऐसी आजमाइश में न पड़े जो इंसान की आजमाइश से बाहर हो खुदा सच्चा है वो तुम को तुम्हारी ताक़त से ज्यादा आजमाइश में पड़ने न देगा, बल्कि आजमाइश के साथ निकलने की राह भी पैदा कर देगा, ताकि तुम बर्दाश्त कर सको।

14 इस वजह से ऐ मेरे प्यारो! बुतपरस्ती से भागो। 15 मैं अक्लमन्द जानकर तुम से कलाम करता हूँ; जो मैं कहता हूँ, तुम आप उसे परखो। 16 वो बर्क़त का प्याला जिस पर हम बर्क़त चाहते हैं क्या मसीह के खून की शराक़त नहीं? वो रोटी जिसे हम तोड़ते हैं क्या मसीह के बदन की शराक़त नहीं? 17 चूँकि रोटी एक ही है इस लिए हम जो बहुत से हैं एक बदन हैं क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में शरीक होते हैं।

18 जो जिस्म के ऐ'तिबार से इस्राईली हैं उन पर नज़र करो क्या कुर्बानी का गोश्त खानेवाले कुर्बानगाह के शरीक नहीं? 19 पस मैं क्या ये कहता हूँ कि बुतों की कुर्बानी कुछ चीज़ है या बुत कुछ चीज़ है?

20 नहीं बल्कि मैं ये कहता हूँ कि जो कुर्बानी ग़ैर क्रौमें करती हैं शयातीन के लिए कुर्बानी करती हैं; न कि खुदा के लिए, और मैं नहीं चाहता कि तुम शयातीन के शरीक हो। 21 तुम खुदावन्द के प्याले और शयातीन के प्याले दोनों में से नहीं पी सकते; खुदावन्द के दस्तरख़्वान और शयातीन के दस्तरख़्वान दोनों पर शरीक नहीं हो सकते। 22 क्या हम खुदावन्द की ग़ैरत को जोश दिलाते हैं? क्या हम उस से ताक़तवर हैं?

23 सब चीज़ें जाएज़ तो हैं, मगर सब चीज़ें मुफ़ीद नहीं; जाएज़ तो हैं मगर तरक्की का ज़रिया नहीं।

24 कोई अपनी बेहतरी न ढूँडे बल्कि दूसरे की।

25 जो कुछ क्रस्साबों की दुकानों में बिकता है वो खाओ और दीनी इम्तियाज की वजह से कुछ न पूछो। 26 “क्योंकि ज़मीन और उसकी मा'मूरी खुदावन्द की है।” 27 अगर बे'इमानों में से कोई तुम्हारी दा'वत करे और तुम जाने पर राज़ी हो तो जो कुछ तुम्हारे आगे रखवा जाए उसे खाओ और दीनी इम्तियाज की वजह से कुछ न पूछो।

28 लेकिन अगर कोई तुम से कहे; ये कुर्बानी का गोश्त है, तो उस की वजह से न खाओ। 29 दीनी इम्तियाज से मेरा मतलब तेरा इम्तियाज नहीं बल्कि उस दूसरे का; भला मेरी आज़ादी दूसरे शख्स के इम्तियाज से क्यों परखी जाए? 30 अगर मैं शुक्र कर के खाता हूँ तो जिस चीज़ पर शुक्र करता हूँ उसकी वजह से किस लिए बदनाम किया जाता हूँ?

31 पस तुम खाओ या पियो जो कुछ करो खुदा के जलाल के लिए करो। 32 तुम न यहूदियों के लिए ठोकर का ज़रिया बनो; न यूनानियों के लिए, न खुदा की कलीसिया के लिए। 33 चुनाँचे में भी सब बातों में सब को खुश करता हूँ और अपना नहीं बल्कि बहुतों का फ़ाइदा ढूँडता हूँ, ताकि वो नज़ात पाएँ।

## 11

1 तुम मेरी तरह बनो जैसा मैं मसीह की तरह बनता हूँ।

???????? ?? ????? ?????????

2 मैं तुम्हारी ता'रीफ़ करता हूँ कि तुम हर बात में मुझे याद रखते हो और जिस तरह मैंने तुम्हें रिवायतें पहुँचा दीं, उसी तरह उन को बरकरार रखो। 3 पस मैं तुम्हें खबर करना चाहता हूँ कि हर मर्द का सिर मसीह और 'औरत का सिर मर्द और मसीह का सिर खुदा है। 4 जो मर्द सिर ढके हुए दुआ या नबुव्वत करता है वो अपने सिर को बेहुरमत करता है।

5 और जो 'औरत बे सिर ढके दुआ या नबुव्वत करती है वो अपने सिर को बेहुरमत करती है; क्योंकि वो सिर मुंडी के बराबर है। 6 अगर 'औरत ओढ़नी न ओढ़े तो बाल भी कटाए; अगर 'औरत का बाल कटाना या सिर मुंडाना शर्म की बात है तो ओढ़नी ओढ़े।

7 अलबत्ता मर्द को अपना सिर ढाँकना न चाहिए क्योंकि वो खुदा की सूरत और उसका जलाल है, मगर 'औरत मर्द का जलाल है। 8 इसलिए कि मर्द 'औरत से नहीं बल्कि 'औरत मर्द से है।

9 और मर्द 'औरत के लिए नहीं बल्कि 'औरत मर्द के लिए पैदा हुई है। 10 पस फ़रिश्तों की वजह से 'औरत को चाहिए कि अपने सिर पर महकूम होने की अलामत\* रखे।

11 तोभी खुदावन्द में न 'औरत मर्द के बग़ैर है न मर्द 'औरत के बग़ैर। 12 क्योंकि जैसे 'औरत मर्द से है वैसे ही मर्द भी 'औरत के वसीले से है मगर सब चीज़ें खुदा की तरफ़ से हैं।

13 तुम आप ही इन्साफ़ करो; क्या 'औरत का बे सिर ढाँके खुदा से दुआ करना मुनासिब है। 14 क्या तुम को तब'ई तौर पर भी मा'लूम नहीं कि अगर मर्द लम्बे बाल रखे तो उस की बेहुरमती है। 15 अगर 'औरत के लम्बे बाल हों तो उसकी ज़ीनत है, क्योंकि बाल उसे पर्दे के लिए दिए गए हैं। 16 लेकिन अगर कोई हुज्जती निकले तो ये जान ले कि न हमारा ऐसा दस्तूर है न खुदावन्द की कलीसियाओं का।

17 लेकिन ये हुक्म जो देता हूँ उस में तुम्हारी ता'रीफ़ नहीं करता इसलिए कि तुम्हारे जमा होने से फ़ाइदा नहीं, बल्कि नुक़सान होता है। 18 क्योंकि अव्वल तो मैं ये सुनता हूँ कि जिस वक़्त तुम्हारी कलीसिया जमा होती है तो तुम में तफ़रके होते हैं और मैं इसका किसी क़दर यकीन भी करता हूँ। 19 क्योंकि तुम में बिद'अतों का भी होना ज़रूरी है ताकि ज़ाहिर हो जाए कि तुम में मक़बूल कौन से हैं।

20 पस तुम सब एक साथ जमा होते हो तो तुम्हारा वो खाना अशा'ए — रब्बानी नहीं हो सकता। 21 क्योंकि खाने के वक़्त हर शख्स दूसरे से पहले अपना हिस्सा खा लेता है और कोई तो भूखा रहता है और किसी को नशा हो जाता है। 22 क्यों? खाने पीने के लिए तुम्हारे पास घर नहीं? या खुदा की कलीसिया को ना चीज़ जानते और जिनके पास नहीं उन को शर्मिन्दा करते हो? मैं तुम से क्या कहूँ? क्या इस बात में तुम्हारी ता'रीफ़ करूँ? मैं ता'रीफ़ नहीं करता।

23 क्योंकि ये बात मुझे खुदावन्द से पहुँची और मैंने तुमको भी पहुँचा दी कि खुदावन्द ईसा ने जिस रात वो पकड़वाया गया रोटी ली। 24 और शुक्र करके तोड़ी और कहा; **लो खाओ ये मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए तोड़ा गया है; मेरी यादगारी के वास्ते यही किया करो।**

25 इसी तरह उस ने खाने के बाद प्याला भी लिया और कहा, **ये प्याला मेरे खून में नया अहद है जब कभी पियो मेरी यादगारी के लिए यही किया करो।** 26 क्योंकि जब कभी तुम ये रोटी खाते और इस प्याले में से पीते हो तो

\* 11:10 11:10 ये सर ढकना इस्लियार के अन्दर रहने को दिखाता है



खुदावन्द की मौत का इजहार करते हो; जब तक वो न आए।

<sup>27</sup> इस वास्ते जो कोई नामुनासिब तौर पर खुदावन्द की रोटी खाए या उसके प्याले में से पिए; वो खुदा वन्द के बदन और खून के बारे में कुसूरवार होगा। <sup>28</sup> पस आदमी अपने आप को आजमा ले और इसी तरह उस रोटी में से खाए और उस प्याले में से पिए। <sup>29</sup> क्योंकि जो खाते पीते वक्त खुदा वन्द के बदन को न पहचाने वो इस खाने पीने से सजा पाएगा। <sup>30</sup> इसी वजह से तुम में बहुत सारे कमजोर और बीमार हैं और बहुत से सो भी गए।

<sup>31</sup> अगर हम अपने आप को जाँचते तो सजा न पाते। <sup>32</sup> लेकिन खुदा हमको सजा देकर तरबियत करता है, ताकि हम दुनिया के साथ मुजरिम न ठहरें।

<sup>33</sup> पस ऐ मेरे भाइयों! जब तुम खाने को जमा हो तो एक दूसरे की राह देखो। <sup>34</sup> अगर कोई भूखा हो तो अपने घर में खाले, ताकि तुम्हारा जमा होना सजा का जरिया न हो; बाकी बातों को मैं आकर दुरुस्त कर दूँगा।

## 12

?????? ???? ?

<sup>1</sup> ऐ भाइयों! मैं नहीं चाहता कि तुम पाक रूह की नेमतों के बारे में बेखबर रहो। <sup>2</sup> तुम जानते हो कि जब तुम ग़ैर क्रौम थे, तो गूंगे बुतों के पीछे जिस तरह कोई तुम को ले जाता था; उसी तरह जाते थे। <sup>3</sup> पस मैं तुम्हें बताता हूँ कि जो कोई खुदा के रूह की हिदायत से बोलता है; वो नहीं कहता कि ईसा मलाऊन है; और न कोई रूह उल — कुदूस के बग़ैर कह सकता है कि ईसा खुदावन्द है।

<sup>4</sup> नेअमते तो तरह तरह की हैं मगर रूह एक ही है। <sup>5</sup> और खिदमतें तो तरह तरह की हैं मगर खुदावन्द एक ही है। <sup>6</sup> और तासीरें भी तरह तरह की हैं मगर खुदा एक ही है जो सब में हर तरह का असर पैदा करता है।

<sup>7</sup> लेकिन हर शख्स में पाक रूह का जाहिर होना फ़ाइदा पहुँचाने के लिए होता है। <sup>8</sup> क्योंकि एक को रूह के वसीले से हिक्मत का कलाम इनायत होता है और दूसरे को उसी रूह की मर्जी के मुवाफ़िक़ इल्मियत का कलाम।

<sup>9</sup> किसी को उसी रूह से ईमान और किसी को उसी रूह से शिफ़ा देने की तौफ़ीक़। <sup>10</sup> किसी को मोजिज़ों की कुदरत, किसी को नबुव्वत, किसी को रूहों का इम्तियाज़, किसी को तरह तरह की ज़बाने, किसी को ज़बानों का तर्जुमा करना। <sup>11</sup> लेकिन ये सब तासीरें वही एक रूह करता है; और जिस को जो चाहता है बाँटता है,

<sup>12</sup> क्योंकि जिस तरह बदन एक है और उस के आ'जा बहुत से हैं, और बदन के सब आ'जा गरचे बहुत से हैं, मगर हमसब मिलकर एक ही बदन हैं; उसी तरह मसीह भी है। <sup>13</sup> क्योंकि हम सब में चाहे यहूदी हों, चाहे यूनानी, चाहे गुलाम, चाहे आज़ाद, एक ही रूह के वसीले से एक बदन होने के लिए बपतिस्मा लिया और हम सब को एक ही रूह पिलाया गया।

<sup>14</sup> चुनाँचे बदन में एक ही आ'जा नहीं बल्कि बहुत से हैं <sup>15</sup> अगर पाँव कहे चुँकि मैं हाथ नहीं इसलिए बदन का नहीं तो वो इस वजह से बदन से अलग तो नहीं। <sup>16</sup> और अगर कान कहे चुँकि मैं आँख नहीं इसलिए बदन का नहीं तो वो इस वजह से बदन से अलग तो नहीं। <sup>17</sup> अगर सारा बदन आँख ही होता तो सुनना कहाँ होता? अगर सुनना ही सुनना होता तो सूँघना कहाँ होता?

<sup>18</sup> मगर हकीकत में खुदा ने हर एक 'उज्व को बदन में अपनी मर्जी के मुवाफ़िक़ रखवा है। <sup>19</sup> अगर वो सब एक ही 'उज्व होते तो बदन कहाँ होता? <sup>20</sup> मगर अब आ'जा तो बहुत हैं लेकिन बदन एक ही है।

<sup>21</sup> पस आँख हाथ से नहीं कह सकती, “मैं तेरी मोहताज नहीं,” और न सिर पाँव से कह सकता है, “मैं तेरा मोहताज नहीं।” <sup>22</sup> बल्कि बदन के वो आ'जा जो औरों से कमजोर मा'लूम होते हैं बहुत ही ज़रूरी हैं। <sup>23</sup> और बदन के वो आ'जा जिन्हें हम औरों की तरह ज़लील जानते हैं उन्हीं को ज़्यादा इज़्जत देते हैं और हमारे नाज़ेबा आ'जा बहुत ज़ेबा हो जाते हैं। <sup>24</sup> हालाँकि हमारे ज़ेबा आ'जा मोहताज नहीं मगर खुदा ने बदन को इस तरह मुरक्कब किया है, कि जो 'उज्व मोहताज है उसी को ज़्यादा 'इज़्जत दी जाए।

<sup>25</sup> ताकि बदन में जुदाई न पड़े, बल्कि आ'जा एक दूसरे की बराबर फ़िक्र रखें। <sup>26</sup> पस अगर एक 'उज्व दुःख पाता है तो सब आ'जा उस के साथ दुःख पाते हैं। <sup>27</sup> इसी तरह तुम मिल कर मसीह का बदन हो और फ़र्दन आ'जा हो।

<sup>28</sup> और खुदा ने कलीसिया में अलग अलग शख्स मुकर्रर किए पहले रसूल दूसरे नबी तीसरे उस्ताद फिर मोजिज़े दिखाने वाले फिर शिफ़ा देने वाले मददगार मुन्तज़िम तरह तरह की ज़बाने बोलने वाले। <sup>29</sup> क्या सब रसूल हैं? क्या सब नबी हैं? क्या सब उस्ताद हैं? क्या सब मोजिज़े दिखानेवाले हैं?

<sup>30</sup> क्या सब को शिफ़ा देने की ताक़त हासिल हुई? क्या सब तरह की ज़बाने बोलते हैं? क्या सब तर्जुमा करते हैं? <sup>31</sup> तुम बड़ी से बड़ी नेमत की आरज़ू रखो, लेकिन और भी सब से उम्दा तरीका तुम्हें बताता हूँ।

13

?????? ???? ???? ??

1 अगर मैं आदमियों और फ़रिश्तों की ज़बाने बोलूँ और मुहब्बत न रखूँ, तो मैं ठनठनाता पीतल या झनझनाती झाँझ हूँ। 2 और अगर मुझे नबुव्वत मिले और सब भेदों और कुल इल्म की वाक्फ़ियत हो और मेरा ईमान यहाँ तक कामिल हो कि पहाड़ों को हटा दूँ और मुहब्बत न रखूँ तो मैं कुछ भी नहीं। 3 और अगर अपना सारा माल ग़रीबों को खिला दूँ या अपना बदन जलाने को दूँ और मुहब्बत न रखूँ तो मुझे कुछ भी फ़ाइदा नहीं।

4मुहब्बत साबिर है और मेहरबान, मुहब्बत हसद नहीं करती, मुहब्बत शेखी नहीं मारती और फूलती नहीं; 5नाज़ेबा काम नहीं करती, अपनी बेहतरी नहीं चाहती, झुँझलाती नहीं, बदगुमानी नहीं करती; 6बदकारी में खुश नहीं होती, बल्कि रास्ती से खुश होती है; 7सब कुछ सह लेती है, सब कुछ यक़ीन करती है, सब बातों की उम्मीद रखती है, सब बातों में बर्दाश्त करती है।

<sup>8</sup> मुहब्बत को ज़वाल नहीं, नबुव्वतें हों तो मौकूफ़ हो जाएँगी, जबाने हों तो जाती रहेंगी; इल्म हो तो मिट जाएँगे। <sup>9</sup> क्योंकि हमारा इल्म नाक़िस है और हमारी नबुव्वत ना तमाम। <sup>10</sup> लेकिन जब कामिल आएगा तो नाक़िस जाता रहेगा।

11 जब मैं बच्चा था तो बच्चों की तरह बोलता था बच्चों की सी तबियत थी बच्चो सी समझ थी; लेकिन जब जवान हुआ तो बचपन की बातें तर्क कर दीं। 12 अब हम को आइने में धुन्धला सा दिखाई देता है, मगर जब मसीह दुबारा आएगा तो उस वक्त रू ब रू देखेंगे; इस वक्त मेरा इल्म नाकिस है, मगर उस वक्त ऐसे पूरे तौर पर पहचानूँगा जैसे मैं पहचानता आया हूँ। 13 गरज ईमान, उम्मीद, मुहब्बत ये तीनों हमेशा हैं; मगर अफ़ज़ल इन में मुहब्बत है।

## 14

?????? ???? ? ? ???? ?

1 मुहब्बत के तालिब हो और रूहानी नेमतों की भी आरज़ू रखो खुसूसन इसकी नबुव्वत करो। 2 क्योंकि जो बेगाना ज़बान में बातें करता है वो आदमियों से बातें नहीं करता, बल्कि खुदा से; इस लिए कि उसकी कोई नहीं समझता, हालाँकि वो अपनी पाक रूह के वसीले से राज़ की बातें करता है। 3 लेकिन जो नबुव्वत करता है वो आदमियों से तरक्की और नसीहत और तसल्ली की बातें करता है। 4 जो बेगाना ज़बान में बातें करता है वो अपनी तरक्की करता है और जो नबुव्वत करता है वो कलीसिया की तरक्की करता है।

5 अगरचे मैं ये चाहता हूँ कि तुम सब बेगाना ज़बान में बातें करो, लेकिन ज्यादातर यही चाहता हूँ कि नबुव्वत करो; और अगर बेगाना ज़बाने बोलने वाला कलीसिया की तरक्की के लिए तर्जुमा न करे, तो नबुव्वत करने वाला उससे बड़ा है।

6 पस ऐ भाइयो! अगर मैं तुम्हारे पास आकर बेगाना ज़बानों में बातें करूँ और मुकाशिला या इल्म या नबुव्वत या तालीम की बातें तुम से न कहूँ; तो तुम को मुझ से क्या फ़ाइदा होगा? 7 चुनाँचे बे'जान चीज़ों में से भी जिन से आवाज़ निकलती है, मसलन बाँसुरी या बरबत अगर उनकी आवाज़ों में फ़र्क़ न हो तो जो फूँका या बजाए जाता है वो क्यूँकर पहचाना जाए? 8 और अगर तुरही की आवाज़ साफ़ न हो तो कौन लड़ाई के लिए तैयारी करेगा? 9 ऐसे ही तुम भी अगर ज़बान से कुछ बात न कहो तो जो कहा जाता है क्यूँकर समझा जाएगा? तुम हवा से बातें करनेवाले ठहरोगे।

10 दुनिया में चाहे कितनी ही मुश्तलिफ़ ज़बाने हों उन में से कोई भी बे'मानी न होगी।

11 पस अगर मैं किसी ज़बान के मा' ने ना समझूँ, तो बोलने वाले के नज़दीक मैं अजनबी ठहरेगा और बोलने वाला मेरे नज़दीक अजनबी ठहरेगा। 12 पस जब तुम रूहानी नेअ'मतों की आरजू रखते हो तो ऐसी कोशिश करो, कि तुम्हारी नेअ'मतों की अफ़ज़ूनी से कलीसिया की तरक्की हो। 13 इस वजह से जो बेगाना ज़बान से बातें करता है वो दुआ करे कि तर्जुमा भी कर सके। 14 इसलिए कि अगर मैं किसी बेगाना ज़बान में दुआ करूँ तो मेरी रूह तो दुआ करती है मगर मेरी अक्ल बेकार है।

15 पस क्या करना चाहिए? मैं रूह से भी दुआ करूँगा और अक्ल से भी दुआ करूँगा; रूह से भी गाऊँगा और अक्ल से भी गाऊँगा। 16 वर्ना अगर तू रूह ही से हम्द करेगा तो नावाकिफ़ आदमी तेरी शुक्र गुजारी पर “आमीन” क्यूँकर कहेगा? इस लिए कि वो नहीं जानता कि तू क्या कहता है।

17 तू तो बेशक अच्छी तरह से शुक्र करता है, मगर दूसरे की तरक्की नहीं होती। 18 मैं खुदा का शुक्र करता हूँ, कि तुम सब से ज्यादा ज़बाने बोलता हूँ। 19 लेकिन कलीसिया में बेगाना ज़बान में दस हज़ार बातें करने से मुझे ये ज्यादा पसन्द है, कि औरों की ता'लीम के लिए पाँच ही बातें अक्ल से कहूँ।

20 ऐ भाइयों! तुम समझ में बच्चे न बनो; बदी में बच्चे रहो, मगर समझ में जवान बनो। 21 पाक कलाम में लिखा है  
खुदावन्द फ़रमाता है,

“मैं बेगाना ज़बान और बेगाना होंटों से इस उम्मत से बातें करूँगा तोभी वो मेरी न सुनेंगे।”

22 पस बेगाना ज़बाने ईमानदारों के लिए नहीं बल्कि बे'ईमानों के लिए निशान है और नबुव्वत बे'ईमानों के लिए नहीं, बल्कि ईमानदारों के लिए निशान है। 23 पस अगर सारी कलीसिया एक जगह जमा हो और सब के सब बेगाना ज़बाने बोलें और नावाक्रिफ़ या बे'ईमान लोग अन्दर आ जाएँ, तो क्या वो तुम को दिवाना न कहेंगे।

24 लेकिन अगर जब नबुव्वत करें और कोई बे'ईमान या नावाक्रिफ़ अन्दर आ जाए, तो सब उसे कायल कर देंगे और सब उसे परख लेंगे; 25 और उसके दिल के राज़ जाहिर हो जाएँगे; तब वो मुँह के बल गिर कर सज्दा करेगा, और इक्रार करेगा कि बेशक खुदा तुम में है।

26 पस ऐ भाइयों! क्या करना चाहिए? जब तुम जमा होते हो, तो हर एक के दिल में मज्मूर या ता'लीम या मुक्राशिफ़ा, या बेगाना, ज़बान या तर्जुमा होता है; सब कुछ रूहानी तरक्की के लिए होना चाहिए। 27 अगर बेगाना ज़बान में बातें करना हो तो दो दो या ज्यादा से ज्यादा तीन तीन शख्स बारी बारी से बोलें और एक शख्स तर्जुमा करे। 28 और अगर कोई तर्जुमा करने वाला न हो तो बेगाना ज़बान बोलनेवाला कलीसिया में चुप रहे और अपने दिल से और खुदा से बातें करे।

29 नबियों में से दो या तीन बोलें और बाकी उनके कलाम को परखें। 30 लेकिन अगर दूसरे पास बैठने वाले पर वही उतरे तो पहला खामोश हो जाए।

31 क्योंकि तुम सब के सब एक एक करके नबुव्वत करते हो, ताकि सब सीखें और सब को नसीहत हो। 32 और नबियों की रूहें नबियों के ताबे हैं। 33 क्योंकि खुदा अबतरी का नहीं, बल्कि सुकून का बानी है

जैसा मुक़द्दसों की सब कलीसियाओं में है। 34 औरतें कलीसिया के मज्मे में खामोश रहें, क्योंकि उन्हें बोलने का हुक्म नहीं बल्कि ताबे रहें जैसा तौरत में भी लिखा है। 35 और अगर कुछ सीखना चाहें तो घर में अपने अपने शौहर से पूछें, क्योंकि औरत का कलीसिया के मज्मे में बोलना शर्म की बात है। 36 क्या खुदा का कलाम तुम में से निकला या सिर्फ़ तुम ही तक पहुँचा है।

37 अगर कोई अपने आपको नबी या रूहानी समझे तो ये जान ले कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ वो खुदावन्द के हुक्म हैं। 38 और अगर कोई न जाने तो न जानें।

39 पस ऐ भाइयों! नबुव्वत करने की आरज़ू रखो और ज़बाने बोलने से मनह न करो। 40 मगर सब बातें शाइस्तगी और करीने के साथ अमल में लाएँ।

## 15

2222 22 222 22 22222222 2222

1 ऐ भाइयों! मैं तुम्हें वही खुशखबरी बताए देता हूँ जो पहले दे चुका हूँ जिसे तुम ने कबूल भी कर लिया था और जिस पर क्राईम भी हो। 2 उसी के वसीले से तुम को नजात भी मिली है बशर्ते कि वो खुशखबरी जो मैंने तुम्हें दी थी याद रखते हो वरना तुम्हारा ईमान लाना बेफ़ाइदा हुआ।

3 चुनाँचे मैंने सब से पहले तुम को वही बात पहुँचा दी जो मुझे पहुँची थी; कि मसीह किताब — ए — 'मुक़द्दस के मुताबिक़ हमारे गुनाहों के लिए मरा। 4 और दफ़्न हुआ और तीसरे दिन किताब ऐ 'मुक़द्दस के मुताबिक़ जी उठा।

5 और कैफ़ा और उस के बाद उन बारह को दिखाई दिया। 6 फिर पाँच सौ से ज्यादा भाइयों को एक साथ दिखाई दिया जिन में अक्सर अब तक मौजूद हैं और कुछ सो गए। 7 फिर या'कूब को दिखाई दिया फिर सब रसूलों को।

8 और सब से पीछे मुझ को जो गोया अधूरे दिनों की पैदाइश हूँ दिखाई दिया। 9 क्योंकि मैं रसूलों में सब से छोटा हूँ, बल्कि रसूल कहलाने के लायक़ नहीं इसलिए कि मैंने खुदा की कलीसिया को सताया था।

10 लेकिन जो कुछ हूँ खुदा के फ़ज़ल से हूँ और उसका फ़ज़ल जो मुझ पर हुआ वो बेफ़ाइदा नहीं हुआ बल्कि मैंने उन सब से ज्यादा मेहनत की और ये मेरी तरफ़ से नहीं हुई बल्कि खुदा के फ़ज़ल से जो मुझ पर था। 11 पस चाहे मैं हूँ चाहे वो हों हम यही ऐलान करते हैं और इसी पर तुम ईमान भी लाए।

12 पस जब मसीह की ये मनादी की जाती है कि वो मुर्दों में से जी उठा तो तुम में से कुछ इस तरह कहते हैं कि मुर्दों की क़यामत है ही नहीं। 13 अगर मुर्दों की क़यामत नहीं तो मसीह भी नहीं जी उठा है। 14 और अगर मसीह नहीं जी उठा तो हमारी मनादी भी बेफ़ाइदा है और तुम्हारा ईमान भी बेफ़ाइदा है।

15 बल्कि हम खुदा के झूठे गवाह ठहरे क्योंकि हम ने खुदा के बारे में ये गवाही दी कि उसने मसीह को जिला दिया हालाँकि नहीं जिलाया अगर बिलफ़र्ज़ मुर्दे नहीं जी उठते। 16 और अगर मुर्दे नहीं जी उठते तो मसीह भी नहीं जी उठा। 17 और अगर मसीह नहीं जी उठा तो तुम्हारा ईमान बेफ़ाइदा है तुम अब तक अपने गुनाहों में गिरफ़्तार हो।

18 बल्कि जो मसीह में सो गए हैं वो भी हलाक हुए।  
19 अगर हम सिर्फ इसी ज़िन्दगी में मसीह में उम्मीद रखते हैं तो सब आदमियों से ज्यादा बदनसीब हैं।

20 लेकिन फ़िलवक्त मसीह मुर्दों में से जी उठा है और जो सो गए हैं उन में पहला फल हुआ। 21 क्योंकि अब आदमी की वजह से मौत आई तो आदमी की वजह से मुर्दों की क़यामत भी आई।

22 और जैसे आदम में सब मरते हैं वैसे ही मसीह में सब ज़िन्दा किए जाएंगे। 23 लेकिन हर एक अपनी अपनी बारी से; पहला फल मसीह फिर मसीह के आने पर उसके लोग।

24 इसके बाद आखिरत होगी; उस वक्त वो सारी हुकूमत और सारा इस्त्रियार और कुदरत नेस्त करके बादशाही को खुदा या'नी बाप के हवाले कर देगा। 25 क्योंकि जब तक कि वो सब दुश्मनों को अपने पाँव तले न ले आए उस को बादशाही करना ज़रूरी है। 26 सब से पिछला दुश्मन जो नेस्त किया जाएगा वो मौत है।

27 क्योंकि खुदा ने सब कुछ उसके पाँव तले कर दिया है; मगर जब वो फ़रमाता है कि सब कुछ उसके ताबे' कर दिया गया तो ज़ाहिर है कि जिसने सब कुछ उसके ताबे' कर दिया; वो अलग रहा। 28 और जब सब कुछ उसके ताबे' कर दिया जाएगा तो बेटा खुद उसके ताबे' हो जाएगा जिसने सब चीज़ें उसके ताबे' कर दीं ताकि सब में खुदा ही सब कुछ है।

29 वर्ना जो लोग मुर्दों के लिए बपतिस्मा लेते हैं; वो क्या करेंगे? अगर मुर्दे जी उठते ही नहीं तो फिर क्यूँ उन के लिए बपतिस्मा लेते हो? 30 और हम क्यूँ हर वक्त खतरे में पड़े रहते हैं?

31 ऐ भाइयों! उस फ़ख़र की क़सम जो हमारे ईसा मसीह में तुम पर है मैं हर रोज़ मरता हूँ। 32 जैसा कि कलाम में लिखा है कि अगर मैं इंसान की तरह इफ़िसुस में दरिन्दों से लड़ा तो मुझे क्या फ़ाइदा? अगर मुर्दे न जिलाए जाएँगे “तो आओ खाएँ पीएँ क्योंकि कल तो मर ही जाएँगे।”

33 धोखा न खाओ “बुरी सोहबतें अच्छी आदतों को बिगाड़ देती हैं।”

34 रास्तबाज़ होने के लिए होश में आओ और गुनाह न करो, क्योंकि कुछ खुदा से नावाक़िफ़ हैं; मैं तुम्हें शर्म दिलाने को ये कहता हूँ।

35 अब कोई ये कहेगा, “मुर्दे किस तरह जी उठते हैं? और कैसे जिस्म के साथ आते हैं?” 36 ऐ, नादान! तू खुद जो कुछ बोता है जब तक वो न मरे ज़िन्दा नहीं किया जाता।

37 और जो तू बोता है, ये वो जिस्म नहीं जो पैदा होने वाला है बल्कि सिर्फ़ दाना है; चाहे गेहूँ का चाहे किसी और चीज़ का। 38 मगर खुदा ने जैसा इरादा कर लिया वैसा ही उसको जिस्म देता है और हर एक बीज को उसका खास जिस्म। 39 सब गोश्त एक जैसा गोश्त नहीं; बल्कि आदमियों का गोश्त और है, चौपायों का गोश्त और; परिन्दों का गोश्त और है मछलियों का गोश्त और।

40 आसमानी भी जिस्म हैं, और ज़मीनी भी मगर आसमानियों का जलाल और है, और ज़मीनियों का और। 41 आफ़ताब का जलाल और है, माहताब का जलाल और, सितारों का जलाल और, क्यूँकि सितारे सितारे के जलाल में फ़र्क़ है।

42 मुर्दों की क़यामत भी ऐसी ही है; जिस्म फ़ना की हालत में बोया जाता है, और हमेशा की हालत में जी उठता है। 43 बेहुरमती की हालत में बोया जाता है, और जलाल की हालत में जी उठता है, कमज़ोरी की हालत में बोया जाता है और कुव्वत की हालत में जी उठता है।

44 नफ़्सानी जिस्म बोया जाता है, और रूहानी जिस्म जी उठता है जब नफ़्सानी जिस्म है तो रूहानी जिस्म भी है।

45 चुनाँचे कलाम लिखा भी है, “पहला आदमी या'नी आदम ज़िन्दा नफ़स बना पिछला आदम ज़िन्दगी बरख़्शने वाली रूह बना।” 46 लेकिन रूहानी पहले न था बल्कि नफ़्सानी था इसके बाद रूहानी हुआ।

47 पहला आदमी ज़मीन से या'नी खाकी था दूसरा आदमी आसमानी है। 48 जैसा वो खाकी था वैसे ही और खाकी भी हैं और जैसा वो आसमानी है वैसे ही और आसमानी भी हैं। 49 और जिस तरह हम इस खाकी की सूरत पर हुए उसी तरह उस आसमानी की सूरत पर भी होंगे।

50 ऐ भाइयों! मेरा मतलब ये है कि गोश्त और खून खुदा की बादशाही के वारिस नहीं हो सकते और न फ़ना बक्रा की वारिस हो सकती है। 51 देखो मैं तुम से राज़ की बात कहता हूँ हम सब तो नहीं सोएँगे मगर सब बदल जाएँगे।

52 और ये एक दम में, एक पल में पिछला नरसिंगा फूँकते ही होगा क्यूँकि नरसिंगा फूँका जाएगा और मुर्दे ग़ैर फ़ानी हालत में उठेंगे और हम बदल जाएँगे।

53 क्यूँकि ज़रूरी है कि ये फ़ानी जिस्म बक्रा का जामा पहने और ये मरने वाला जिस्म हमेशा की ज़िन्दगी का जामा पहने।

54 जब ये फ़ानी जिस्म बक्रा का जामा पहन चुकेगा और ये मरने वाला जिस्म हमेशा हमेशा का जामा पहन चुकेगा तो वो क्रौल पूरा होगा जो कलाम लिखा है



“मौत फ़तह का लुक़्मा हो जाएगी।

55 ऐ मौत तेरी फ़तह कहाँ रही?

ऐ मौत तेरा डंक कहाँ रहा?”

56 मौत का डंक गुनाह है और गुनाह का ज़ोर शरीर'अत है। 57 मगर खुदा का शुक्र है, जो हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से हम को फ़तह बख़्शता है।

58 पस ऐ मेरे अज़ीज़ भाइयों! साबित क़दम और क़ाईम रहो और खुदावन्द के काम में हमेशा बढ़ते रहो क्योंकि ये जानते हो कि तुम्हारी मेहनत खुदावन्द में बेफ़ाईदा नहीं है।

## 16

???????? ?? ????? ?????? ?????? ?????

1 अब उस चन्दे के बारे में जो मुक़द्दसों के लिए किया जाता है; जैसा मैं ने ग़लतिया की कलीसियाओं को हुक्म दिया वैसे ही तुम भी करो। 2 हफ़्ते के पहले दिन तुम में से हर शख्स अपनी आमदनी के मुवाफ़िक़ कुछ अपने पास रख छोड़ा करे ताकि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े।

3 और जब मैं आऊँगा तो जिन्हें तुम मंज़ूर करोगे उनको मैं ख़त देकर भेज दूँगा कि तुम्हारी ख़ैरात येरूशलेम को पहुँचा दें। 4 अगर मेरा भी जाना मुनासिब हुआ तो वो मेरे साथ जाएँगे।

5 मैं मकिदुनिया होकर तुम्हारे पास आऊँगा; क्योंकि मुझे मकिदुनिया हो कर जाना तो है ही। 6 मगर रहूँगा शायद तुम्हारे पास और जाड़ा भी तुम्हारे पास ही काटूँ ताकि जिस तरफ़ मैं जाना चाहूँ तुम मुझे उस तरफ़ रवाना कर दो।

7 क्योंकि मैं अब राह में तुम से मुलाक़ात करना नहीं चाहता बल्कि मुझे उम्मीद है कि खुदावन्द ने चाहा तो कुछ अरसे तुम्हारे पास रहूँगा। 8 लेकिन मैं ईद'ए पिन्तेकुस्त तक इफ़िसुस में रहूँगा। 9 क्योंकि मेरे लिए एक वसी' और कार आमद दरवाज़ा खुला है और मुख़ालिफ़ बहुत से हैं।

10 अगर तीमुथियुस आ जाए तो ख़्याल रखना कि वो तुम्हारे पास बेख़ौफ़ रहे क्योंकि वो मेरी तरह खुदावन्द का काम करता है। 11 पस कोई उसे हक़ीर न जाने बल्कि उसको सही सलामत इस तरफ़ रवाना करना कि मेरे पास आजाए क्योंकि मैं मुन्तज़िर हूँ कि वो भाइयों समेत आए।

12 और भाई अपुल्लोस से मैंने बहुत इल्तिमास किया कि तुम्हारे पास भाइयों के साथ जाए; मगर इस वक़्त जाने पर वो अभी राज़ी न हुआ लेकिन जब उस को मौक़ा मिलेगा तो जाएगा।

13 जागते रहो ईमान में क़ाईम रहो मर्दानगी करो मज़बूत हो। 14 जो कुछ करते हो मुहब्बत से करो।

15 ऐ भाइयों! तुम स्तिफ़नास के खानदान को जानते हो कि वो अख़िया के पहले फल हैं और मुक़द्दसों की ख़िदमत के लिए तैयार रहते हैं। 16 पस मैं तुम से इल्तिमास करता हूँ कि ऐसे लोगों के ताबे रहो बल्कि हर एक के जो इस काम और मेहनत में शरीक हैं।

17 और मैं स्तिफ़नास और फ़रतूनातूस और अख़ीकुस के आने से खुश हूँ क्योंकि जो तुम में से रह गया था उन्होंने पूरा कर दिया। 18 और उन्होंने मेरी और तुम्हारी रूह को ताज़ा किया पस ऐसों को मानो।

19 आसिया की कलीसिया तुम को सलाम कहती है अक्विला और पिरस्का उस कलीसिया समेत जो उन के घर में हैं, तुम्हें खुदावन्द में बहुत बहुत सलाम कहते हैं।

20 सब भाई तुम्हें सलाम कहते हैं पाक बोसा लेकर आपस में सलाम करो।

21 मैं पौलुस अपने हाथ से सलाम लिखता हूँ। 22 जो कोई खुदावन्द को अज़ीज़ नहीं रखता मला'ऊन हो हमारा खुदावन्द आने वाला है। 23 खुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़ल तुम पर होता रहे। 24 मेरी मुहब्बत ईसा मसीह में तुम सब से रहे। आमीन।

## कुरिन्थियों के नाम पौलूस रसूल का दूसरा खत

2222222222 22 222222

1 पौलूस ने अपनी ज़िन्दगी की कमज़ोर और ग़ैर महफूज़ हालत में इस खत को लिखा। उस ने जान लिया था कि कुरिन्थ की कलीसिया कश्मकश से गुज़र रही है। तब उस ने यह क़दम उठाया कि मक़ामी ईमानदारों की कलीसिया के इतिहाद की मुहाफ़िज़त की जाए। जब पौलूस ने इस खत को लिखा तो कुरिन्थ के ईमानदारों के लिए मुहब्बत रखने के सबब से मुसीबत और जिस्मानी तकलीफ़ें उठाईं। मुसीबतें आदमी के हिस्से में उस की कमज़ोरियों को ज़ाहिर करते हैं मगर आसूदगी खुदा के हिस्से में। चुनांचि वह कहता है कि खुदा ने मुझ से कहा मेरा फ़ज़ल तेरे लिए काफ़ी है क्योंकि मेरी कुदरत तेरी कमज़ोरी में पूरी होती है। (2 कुरिन्थियों 12:7 — 10) इस खत में पौलूस पुर जोश तरीक़े से अपनी ख़िदमत और रसूल होने के इस्तिyार की हिमायत करता है। वह इस खत को इस सच्चई की बिना पर दुबारा तौसीक़ करते हुए शुरू करता है कि वह खुदा की मर्ज़ी से मसीह येसू का रसूल है। (2 कुरिन्थियों 1:1) पौलूस के ज़रिए से यह खत रिसालत और मसीही ईमान की बाबत बहुत कुछ ज़ाहिर करती है।

22222 22222 22 22222222 22 2222

इस के लिखे जाने की तारीख़ तक्रीबन 55 - 56 ईस्वी के बीच है।

कुरिन्थियों के नाम पौलूस रसूल का यह खत मकिदुनिया से लिखा गया था।

222222 22222222222 22222 22222

यह खत खुदा की कलीसिया जो कुरिन्थ और अखिया में थी उन के लिये लिखा गया था। अखिया रोम का एक रियासत था जिस का पाय — तख़्त कुरिन्थ था।

2222 22222222

इस खत को लिखते वक़्त पौलूस के दिमाग़ में कई एक खुशी और तसल्ली की बातें थीं जिन्हें वह ज़ाहिर करना चाहता था इस लिए कि कुरिन्थियों ने पौलूस की इस दर्द भरे खत का बड़े ही लुत्फ़ — ओ — करम से जवाब दिया था; (1:3 — 4; 7:8 — 9; 12:13) कि वह लोग मा'लूम करें कि पौलूस ने आसिया की रियासत में कितनी शिद्दत से खुश ख़बरी की मनादी की खातिर तकलीफ़ें उठाईं। (1:8 — 11) उन से दरख्वास्त करने के लिए कि सदमा पहुंचाने वालों को मुआफ़ कर दें (2; 5

— 11) उन्हें यह ख़बरदार करने के लिए कि वे — ईमान के साथ ना हम्वार जुए में न जुतें (6:14; 7:1) सच्ची मसीही ख़िदमत गुज़ारी की आला बुलाहट की फ़ितरत और सीरत को समझाने के लिए (2:14 — 7:4) कुरिन्थ के लोगों को ख़ैरात और हदिया देने के फ़ज़ल की बाबत ता'लीम देने के लिए और यह यक़ीन दिलाने के लिए कि उन्होंने यरूशलेम के ग़रीब मसीहियों के लिए ख़ैराती पूंजी पूरा किया है या नहीं। (2 कुरिन्थियों) (बाब 8-9)।

222222

पौलूस अपनी रिसालत का बचाव करता है।

**बैरूनी खाका**

1. पौलूस का अपनी ख़िदमत की बाबत समझाना — 1:1-7:16
2. यरूशलेम के ग़रीब मसीहियों के लिए चन्दा जमा करना — 8:1-9:15
3. पौलूस का अपने इस्तिyार का बचाव करना — 10:1-13:10
4. खुदा — ए — तस्लीस के बर्क़त के कलिमात के साथ खात्मा — 13:11-14

222222 22 22222 22 222222

1 पौलूस की तरफ़ जो खुदा की मर्ज़ी से मसीह ईसा का रसूल है और भाई तीमुथियुस की तरफ़ से खुदा की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस शहर में है और तमाम अखिया के सब मुक़द्दसों के नाम पौलूस का खत।<sup>2</sup> हमारे बाप खुदा और खुदावन्द ईसा मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इत्मीनान हासिल होता रहे; आमीन।

<sup>3</sup> हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के खुदा और बाप की हम्द हो जो रहमतों का बाप और हर तरह की तसल्ली का खुदा है।<sup>4</sup> वो हमारी सब मुसीबतों में हम को तसल्ली देता है; ताकि हम उस तसल्ली की वजह से जो खुदा हमें बख़्शता है उनको भी तसल्ली दे सकें जो किसी तरह की मुसीबत में हैं।

<sup>5</sup> क्यूँकि जिस तरह मसीह के दुःख हम को ज्यादा पहुँचते हैं; उसी तरह हमारी तसल्ली भी मसीह के वसीले से ज्यादा होती है।<sup>6</sup> अगर हम मुसीबत उठाते हैं तो तुम्हारी तसल्ली और नजात के वास्ते और अगर तसल्ली पाते हैं तो तुम्हारी तसल्ली के वास्ते; जिसकी तासीर से तुम सब के साथ उन दुखों को बर्दाश्त कर लेते हो; जो हम भी सहते हैं।<sup>7</sup> और हमारी उम्मीद तुम्हारे बारे में मज़बूत है; क्यूँकि हम जानते हैं कि जिस तरह तुम दुःखों में शरीक हो उसी तरह तसल्ली में भी हो।

<sup>8</sup> ऐ, भाइयों! हम नहीं चाहते कि तुम उस मुसीबत से ना वाकिफ़ रहो जो आसिया में हम पर पड़ी कि हम हद से ज्यादा और ताक़त से बाहर पस्त हो गए; यहाँ तक

कि हम ने ज़िन्दगी से भी हाथ धो लिए।<sup>9</sup> बल्कि अपने ऊपर मौत के हुक्म का यक़ीन कर चुके थे ताकि अपना भरोसा न रखें बल्कि खुदा का जो मुर्दों को जिलाता है।<sup>10</sup> चुनाँचे उसी ने हम को ऐसी बड़ी हलाकत से छुड़ाया और छुड़ाएगा; और हम को उसी से ये उम्मीद है कि आगे को भी छुड़ाता रहेगा।

<sup>11</sup> अगर तुम भी मिलकर दुआ से हमारी मदद करोगे ताकि जो नेअ'मत हम को बहुत लोगों के वसीले से मिली उसका शुक्र भी बहुत से लोग हमारी तरफ़ से करें।

<sup>12</sup> क्योंकि हम को अपने दिल की इस गवाही पर फ़ख़र है कि हमारा चाल चलन दुनिया में और खासकर तुम में जिस्मानी हिक्मत के साथ नहीं बल्कि खुदा के फ़ज़ल के साथ ऐसी पाकीज़गी और सफ़ाई के साथ रहा जो खुदा के लायक़ है।<sup>13</sup> हम और बातें तुम्हें नहीं लिखते सिवा उन के जिन्हें तुम पढ़ते या मानते हो, और मुझे उम्मीद है कि आख़िर तक मानते रहोगे।<sup>14</sup> चुनाँचे तुम में से कितनों ही ने मान भी लिया है कि हम तुम्हारा फ़ख़र हैं; जिस तरह हमारे खुदावन्द ईसा के दिन तुम भी हमारा फ़ख़र रहोगे।

<sup>15</sup> और इसी भरोसे पर मैंने ये इरादा किया था, कि पहले तुम्हारे पास आऊँ; ताकि तुम्हें एक और नेअ'मत मिले।<sup>16</sup> और तुम्हारे शहर से होता हुआ मकिदुनिया सूबे को जाऊँ और मकिदुनिया से फिर तुम्हारे पास आऊँ, और तुम मुझे यहूदिया की तरफ़ ख़ाना कर दो।

<sup>17</sup> पस मैंने जो इरादा किया था शोखमिज़ाजी से किया था? या जिन बातों का इरादा करता हूँ क्या जिस्मानी तौर पर करता हूँ कि हाँ हाँ भी करूँ और नहीं नहीं भी करूँ? <sup>18</sup> खुदा की सच्चाई की कसम कि हमारे उस कलाम में जो तुम से किया जाता है हाँ और नहीं दोनों पाई नहीं जाती।

<sup>19</sup> क्योंकि खुदा का बेटा ईसा मसीह जिसकी मनादी हम ने या'नी मैंने और सिलवानुस और तीमुथियुस ने तुम में की उस में हाँ और नहीं दोनों न थीं बल्कि उस में हाँ ही हाँ हुई।<sup>20</sup> क्योंकि खुदा के जितने वादे हैं वो सब उस में हाँ के साथ हैं। इसी लिए उसके ज़रिए से आमीन भी हुई; ताकि हमारे वसीले से खुदा का जलाल ज़ाहिर हो।

<sup>21</sup> और जो हम को तुम्हारे साथ मसीह में क्राईम करता है और जिस ने हम को मसह किया वो खुदा है।<sup>22</sup> जिसने हम पर मुहर भी की और पेशगी में रूह को हमारे दिलों में दिया।

<sup>23</sup> मैं खुदा को गवाह करता हूँ कि मैं अब तक कुरिन्थुस में इस वास्ते नहीं आया कि मुझे तुम पर रहम आता है।<sup>24</sup> ये नहीं कि हम ईमान के बारे में तुम पर हुक्मत जताते हैं बल्कि खुशी में तुम्हारे मददगार हैं क्योंकि तुम ईमान ही से क्राईम रहते हो।

## 2

<sup>1</sup> मैंने अपने दिल में ये इरादा किया था कि फिर तुम्हारे पास ग़मगीन हो कर न आऊँ।<sup>2</sup> क्योंकि अगर मैं तुम को ग़मगीन करूँ तो मुझे कौन खुश करेगा? सिवा उसके जो मेरी वजह से ग़मगीन हुआ।

<sup>3</sup> और मैंने तुम को वही बात लिखी थी ताकि ऐसा न हो कि मुझे आकर जिन से खुश होना चाहिए था, मैं उनकी वजह से ग़मगीन हूँ; क्योंकि मुझे तुम सब पर इस बात का भरोसा है कि जो मेरी खुशी है वही तुम सब की है।<sup>4</sup> क्योंकि मैंने बड़ी मुसीबत और दिलगीरी की हालत में बहुत से आँसू बहा बहा कर तुम को लिखा था, लेकिन इस वास्ते नहीं कि तुमको ग़म हो बल्कि इस वास्ते कि तुम उस बड़ी मुहब्बत को मा'लूम करो जो मुझे तुम से है।

?????????? ?? ????? ?????????

<sup>5</sup> और अगर कोई शख्स ग़म का बा'इस हुआ है तो वो मेरे ही ग़म का नहीं बल्कि, (ताकि उस पर ज्यादा सख्ती न करूँ) किस क़दर तुम सब के ग़म का ज़रिया हुआ।<sup>6</sup> यही सज़ा जो उसने अक्सरों की तरफ़ से पाई ऐसे शख्स के वास्ते काफ़ी है।<sup>7</sup> पस बर'अक्स इसके यही बेहतर है कि उस का कुसूर मु'आफ़ करो और तसल्ली दो ताकि वो ग़म की कसरत से तबाह न हो।

<sup>8</sup> इसलिए मैं तुम से गुज़ारिश करता हूँ कि उसके बारे में मुहब्बत का फ़तवा दो।<sup>9</sup> क्योंकि मैंने इस वास्ते भी लिखा था कि तुम्हें आजमा लूँ; कि सब बातों में फ़रमानबरदार हो या नहीं।

<sup>10</sup> जिसे तुम मु'आफ़ करते हो उसे मैं भी मु'आफ़ करता हूँ क्योंकि जो कुछ मैंने मु'आफ़ किया; अगर किया, तो मसीह का क्राईम मुक़ाम हो कर तुम्हारी खातिर मु'आफ़ किया।<sup>11</sup> ताकि बुरे लोगों का हम पर दाव न चले क्योंकि हम उसकी चालों से नावाकिफ़ नहीं।

<sup>12</sup> और जब मैं मसीह की खुशख़बरी देने को त़्रोआस शहर में आया और खुदावन्द में मेरे लिए दरवाज़ा खुल गया।<sup>13</sup> तो मेरी रूह को आराम न मिला; इसलिए कि मैंने अपने भाई तितुस को न पाया; पस उन ईमानदारों से रुख़सत होकर मकिदुनिया सूबे को चला गया।

14 मगर खुदा का शुक्र है जो मसीह में हम को हमेशा क्रैदियों की तरह गश्त कराता है और अपने इल्म की खुशबू हमारे वसीले से हर जगह फैलाता है। 15 क्योंकि हम खुदा के नज़दीक नज़ात पानेवालों और हलाक होने वालों दोनों के लिए मसीह की खुशबू हैं।

16 कुछ के वास्ते तो मरने के लिए मौत की बू और कुछ के वास्ते जीने के लिए ज़िन्दगी की बू हैं और कौन इन बातों के लायक हैं। 17 क्योंकि हम उन बहुत लोगों की तरह नहीं जो खुदा के कलाम में मिलावट करते हैं बल्कि दिल की सफ़ाई से और खुदा की तरफ़ से खुदा को हाज़िर जान कर मसीह में बोलते हैं।

### 3

1 क्या हम फिर अपनी नेक नामी जताना शुरू करते हैं या हम को कुछ लोगों की तरह नेक नामी के खत तुम्हारे पास लाने या तुम से लेने की ज़रूरत है। 2 हमारा जो खत हमारे दिलों पर लिखा हुआ है; वो तुम हो और उसे सब आदमी जानते और पढ़ते हैं। 3 ज़ाहिर है कि तुम मसीह का वो खत जो हम ने खादिमों के तौर पर लिखा; स्याही से नहीं बल्कि ज़िन्दा खुदा के रूह से पत्थर की तस्वियों पर नहीं बल्कि गोश्त या 'नी दिल की तस्वियों पर।

4 हम मसीह के ज़रिए खुदा पर ऐसा ही भरोसा रखते हैं। 5 ये नहीं कि बज़ात — ए — खुद हम इस लायक हैं कि अपनी तरफ़ से कुछ खयाल भी कर सकें बल्कि हमारी लियाक़त खुदा की तरफ़ से है। 6 जिसने हम को नए अहद के खादिम होने के लायक भी किया लफ़्ज़ों के खादिम नहीं बल्कि रूह के क्योंकि लफ़्ज़ मार डालते हैं मगर रूह ज़िन्दा करती है।

222 222 22 2222

7 और जब मौत का वो अहद जिसके हुरूफ़ पत्थरों पर खोदे गए थे ऐसा जलाल वाला हुआ कि इस्राईली लोग मूसा के चेहरे पर उस जलाल की वजह से जो उसके चहरे पर था गौर से नज़र न कर सके हालाँकि वो घटता जाता था। 8 तो पाक रूह का अहद तो ज़रूर ही जलाल वाला होगा।

9 क्योंकि जब मुजरिम ठहराने वाला अहद जलाल वाला था तो रास्तबाज़ी का अहद तो ज़रूर ही जलाल वाला होगा। 10 बल्कि इस सूरत में वो जलाल वाला इस बे'इन्तिहा जलाल की वजह से बे'जलाल ठहरा। 11 क्योंकि जब मिटने वाली चीज़ें जलाल वाली थी तो बाक़ी रहने वाली चीज़ें तो ज़रूर ही जलाल वाली होंगी।

12 पस हम ऐसी उम्मीद करके बड़ी दिलेरी से बोलते हैं। 13 और मूसा की तरह नहीं हैं जिसने अपने चेहरे

पर नक्काब डाला ताकि बनी इस्राईल उस मिटने वाली चीज़ के अन्जाम को न देख सकें।

14 लेकिन उनके खयालात कसीफ़ हो गए, क्योंकि आज तक पुराने 'अहदनामे को पढ़ते वक़्त उन के दिलों पर वही पर्दा पड़ा रहता है, और वो मसीह में उठ जाता है। 15 मगर आज तक जब कभी मूसा की किताब पढ़ी जाती है तो उनके दिल पर पर्दा पड़ा रहता है। 16 लेकिन जब कभी उन का दिल खुदा की तरफ़ फिरेगा तो वो पर्दा उठ जाएगा।

17 और खुदावन्द रूह है, और जहाँ कहीं खुदावन्द की रूह है वहाँ आज़ादी है। 18 मगर जब हम सब के बे'नक्काब चेहरों से खुदावन्द का जलाल इस तरह ज़ाहिर होता है; जिस तरह आइने में, तो उस खुदावन्द के वसीले से जो रूह है हम उसी जलाली सूरत में दर्जा ब दर्जा बदलते जाते हैं।

### 4

222222 222222 22 222222 222 222222

1 पस जब हम पर ऐसा रहम हुआ कि हमें ये खिदमत मिली, तो हम हिम्मत नहीं हारते। 2 बल्कि हम ने शर्म की छिपी बातों को तर्क कर दिया और मक्कारी की चाल नहीं चलते न खुदा के कलाम में मिलावट करते हैं बल्कि हक़ ज़ाहिर करके खुदा के रु — ब — रु हर एक आदमी के दिल में अपनी नेकी बिठाते हैं।

3 और अगर हमारी खुशख़बरी पर पर्दा पड़ा है तो हलाक होने वालों ही के वास्ते पड़ा है। 4 या 'नी उन बे'इमानों के वास्ते जिनकी अक़लों को इस जहान के खुदा ने अंधा कर दिया है ताकि मसीह जो खुदा की सूरत है उसके जलाल की खुशख़बरी की रौशनी उन पर न पड़े।

5 क्योंकि हम अपनी नहीं बल्कि मसीह ईसा का ऐलान करते हैं कि वो खुदावन्द है और अपने हक़ में ये कहते हैं कि ईसा की खातिर तुम्हारे गुलाम हैं। 6 इसलिए कि खुदा ही है जिसने फ़रमाया कि “तारीकी में से नूर चमके” और वही हमारे दिलों पर चमका ताकि खुदा के जलाल की पहचान का नूर ईसा मसीह के चहरे से जलवागर हो।

7 लेकिन हमारे पास ये खज़ाना मिट्टी के बरतनों में रखवा है ताकि ये हद से ज़्यादा कुदरत हमारी तरफ़ से नहीं बल्कि खुदा की तरफ़ से मा'लूम हो। 8 हम हर तरफ़ से मुसीबत तो उठाते हैं लेकिन लाचार नहीं होते हैरान तो होते हैं मगर ना उम्मीद नहीं होते। 9 सताए तो जाते हैं मगर अकेले नहीं छोड़े जाते; गिराए तो जाते हैं, लेकिन हलाक नहीं होते। 10 हम हर वक़्त अपने बदन में ईसा की मौत लिए फिरते हैं ताकि ईसा की ज़िन्दगी भी हमारे बदन में ज़ाहिर हो।



11 क्योंकि हम जीते जी ईसा की खातिर हमेशा मौत के हवाले किए जाते हैं ताकि ईसा की ज़िन्दगी भी हमारे फ़ानी जिस्म में ज़ाहिर हो। 12 पस मौत तो हम में असर करती है और ज़िन्दगी तुम में।

13 और चूँकि हम में वही ईमान की रूह है जिसके बारे में कलाम में लिखा है कि मैं ईमान लाया और इसी लिए बोला; पस हम भी ईमान लाए और इसी लिए बोलते हैं।

14 क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने खुदावन्द ईसा मसीह को जिलाया वो हम को भी ईसा के साथ शामिल जानकर जिलाएगा; और तुम्हारे साथ अपने सामने हाज़िर करेगा। 15 इसलिए कि सब चीज़ें तुम्हारे वास्ते हैं ताकि बहुत से लोगों के ज़रिए से फ़ज़ल ज्यादा हो कर खुदा के जलाल के लिए शुक्र गुज़ारी भी बढ़ाए।

16 इसलिए हम हिम्मत नहीं हारते बल्कि चाहे हमारी ज़ाहिरी इंसानियत जाहिल हो जाती है फिर भी हमारी बातिनी इंसानियत रोज़ ब, रोज़ नई होती जाती है। 17 क्योंकि हमारी दम भर की हल्की सी मुसीबत हमारे लिए अज़, हद भारी और अबदी जलाल पैदा करती है। 18 जिस हाल में हम देखी हुई चीज़ों पर नहीं बल्कि अनदेखी चीज़ों पर नज़र करते हैं; क्योंकि देखी हुई चीज़ें चन्द रोज़ हैं; मगर अनदेखी चीज़ें अबदी हैं।

## 5

222 222222

1 क्योंकि हम जानते हैं कि जब हमारा खेमे का घर जो ज़मीन पर है गिराया जाएगा तो हम को खुदा की तरफ़ से आसमान पर एक ऐसी इमारत मिलेगी जो हाथ का बनाया हुआ घर नहीं बल्कि अबदी है। 2 चुनाँचे हम इस में कराहते हैं और बड़ी आरज़ू रखते हैं कि अपने आसमानी घर से मुलब्स हो जाएँ। 3 ताकि मुलब्स होने के ज़रिए नंगे न जाएँ।

4 क्योंकि हम इस खेमे में रह कर बोझ के मारे कराहते हैं इसलिए नहीं कि ये लिबास उतारना चाहते हैं बल्कि इस पर और पहनना चाहते हैं ताकि वो जो फ़ानी है ज़िन्दगी में शर्क हो जाए। 5 और जिस ने हम को इसी बात के लिए तैयार किया वो खुदा है और उसी ने हमें रूह पेशगी में दिया।

6 पस हमेशा हम मुतमईन रहते हैं और ये जानते हैं कि जब तक हम बदन के वतन में हैं खुदावन्द के यहाँ से जिला वतन हैं। 7 क्योंकि हम ईमान पर चलते हैं न कि आँखों देखे पर। 8 गरचे, हम मुतमईन हैं और हम को

बदन के वतन से जुदा हो कर खुदावन्द के वतन में रहना ज्यादा मंज़ूर है।

9 इसी वास्ते हम ये हौसला रखते हैं कि वतन में हूँ चाहे जेला वतन उसको खुश करें। 10 क्योंकि ज़रूरी है कि मसीह के तख़्त — ए — अदालत के सामने जाकर हम सब का हाल ज़ाहिर किया जाए ताकि हर शख्स अपने उन कामों का बदला पाए; जो उसने बदन के वसीले से किए हों; चाहे भले हों चाहे बुरे हों।

11 पस हम खुदावन्द के खौफ़ को जान कर आदमियों को समझाते हैं और खुदा पर हमारा हाल ज़ाहिर है और मुझे उम्मीद है कि तुम्हारे दिलों पर भी ज़ाहिर हुआ होगा। 12 हम फिर अपनी नेक नामी तुम पर नहीं जताते बल्कि हम अपनी वजह से तुम को फ़ख़र करने का मौक़ा देते हैं ताकि तुम उनको जवाब दे सको जो ज़ाहिर पर फ़ख़र करते हैं और बातिन पर नहीं।

13 अगर हम बेखुद हैं तो खुदा के वास्ते हैं और अगर होश में हैं तो तुम्हारे वास्ते। 14 क्योंकि मसीह की मुहब्बत हम को मजबूर कर देती है इसलिए कि हम ये समझते हैं कि जब एक सब के वास्ते मरा तो सब मर गए। 15 और वो इसलिए सब के वास्ते मरा कि जो जीते हैं वो आगे को अपने लिए न जिए बल्कि उसके लिए जो उन के वास्ते मरा और फिर जी उठा।

16 पस अब से हम किसी को जिस्म की हैसियत से न पहचानेंगे; हाँ अगरचे मसीह को भी जिस्म की हैसियत से जाना था मगर अब से नहीं जानेगे। 17 इसलिए अगर कोई मसीह में है तो वो नया मख़लूक है पुरानी चीज़ें जाती रहीं; देखो वो नई हो गई।

18 और वो सब चीज़ें खुदा की तरफ़ से हैं जिसने मसीह के वसीले से अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया और मेल मिलाप की खिदमत हमारे सुपुर्द की। 19 मतलब ये है कि खुदा ने मसीह में हो कर अपने साथ दुनिया का मेल मिलाप कर लिया और उन की तक्सीरों को उनके ज़िम्मे न लगाया और उसने मेल मिलाप का पैग़ाम हमें सौंप दिया।

20 पस हम मसीह के एल्ची हैं और गोया हमारे वसीले से खुदा इल्तिमास करता है; हम मसीह की तरफ़ से मिन्नत करते हैं कि खुदा से मेल मिलाप कर लो। 21 जो गुनाह से वाकिफ़ न था; उसी को उसने हमारे वास्ते गुनाह ठहराया ताकि हम उस में हो कर खुदा के रास्तबाज़ हो जाएँ।

## 6

1 हम जो उस के साथ काम में शरीक हैं, ये भी गुज़ारिश करते हैं कि खुदा का फ़ज़ल जो तुम पर हुआ

बे फ़ाइदा न रहने दो। <sup>2</sup>क्योंकि वो फ़रमाता है कि मैंने कुबूलियत के वक़्त तेरी सुन ली और नजात के दिन तेरी मदद की; देखो अब कुबूलियत का वक़्त है; देखो ये नजात का दिन है।

222222 22 22222222

<sup>3</sup>हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई मौका नहीं देते ताकि हमारी खिदमत पर हफ़े न आए।

<sup>4</sup>बल्कि खुदा के खादिमों की तरह हर बात से अपनी खूबी ज़ाहिर करते हैं बड़े सबर से मुसीबत, से एहतियात से तंगी से। <sup>5</sup>कोड़े खाने से, कैद होने से, हंगामों से, मेहनतों से, बेदारी से, फ़ाकों से, <sup>6</sup>पाकीज़गी से, इल्म से, तहम्मील से, मेहरबानी से, रूह उल कुद्स से, बे — रिया मुहब्बत से, <sup>7</sup>कलाम'ए हक़ से, खुदा की कुदरत से, रास्तबाज़ी के हथियारों के वसीले से, जो दहने बाएँ हैं।

<sup>8</sup>इज़्ज़त और बे'इज़्ज़ती के वसीले से, बदनामी और नेक नामी के वसीले से, जो गुमराह करने वाले मा'लूम होते हैं फिर भी सच्चे हैं। <sup>9</sup>गुमनामों की तरह हैं, तो भी मशहूर हैं, मरते हुआ की तरह हैं, मगर देखो जीते हैं, मार खानेवालों की तरह हैं, मगर जान से मारे नहीं जाते। <sup>10</sup>ग़मगीनों की तरह हैं, लेकिन हमेशा खुश रहते हैं, कंगालों की तरह हैं, मगर बहुतेरों को दौलतमन्द कर देतग़ हैं, नादानों की तरह हैं, तौ भी सब कुछ देखते हैं।

<sup>11</sup>ऐ कुरन्थस के ईमानदारों; हम ने तुम से खुल कर बातें कहीं और हमारा दिल तुम्हारी तरफ़ से खुश हो गया। <sup>12</sup>हमारे दिलों में तुम्हारे लिए तंगी नहीं मगर तुम्हारे दिलों में तंगी है। <sup>13</sup>पस मैं फ़र्ज़न्द जान कर तुम से कहता हूँ कि तुम भी उसके बदले में कुशादा दिल हो जाओ।

<sup>14</sup>बे'ईमानों के साथ ना हमवार जूए में न जुतो, क्योंकि रास्तबाज़ी और बेदीनी में क्या मेल ज़ोल? या रौशनी और तारीकी में क्या रिश्ता? <sup>15</sup>वो मसीह को बली'आल के साथ क्या मुवाफ़िक़ या ईमानदार का बे'ईमान से क्या वास्ता? <sup>16</sup>और खुदा के मक्दिस को बुतों से क्या मुनासिबत है? क्योंकि हम ज़िन्दा खुदा के मक्दिस हैं चुनाँचे खुदा ने फ़रमाया है, "मैं उनमें बसूँगा और उन में चला फिरा करूँगा और मैं उनका खुदा हूँगा और वो मेरी उम्मत होंगे।"

<sup>17</sup>इस वास्ते खुदावन्द फ़रमाता है कि उन में से निकल कर अलग रहो और नापाक चीज़ को न छुओ

तो मैं तुम को कुबूल करूँगा।

<sup>18</sup>मैं तुम्हारा बाप हूँगा

और तुम मेरे बेटे — बेटियाँ होंगे,

खुदावन्द क़ादिर — ए — मुतल्लिक़ का क़ौल है।

7

<sup>1</sup>पस ऐ' अज़ीज़ो चुँकि हम से ऐसे वा'दे किए गए, आओ हम अपने आपको हर तरह की जिस्मानी और रूहानी आलूदगी से पाक करें और खुदा के बेख़ौफ़ के साथ पाकीज़गी को कमाल तक पहुँचाए।

<sup>2</sup>हम को अपने दिल में जगह दो हम ने किसी से बेइन्साफ़ी नहीं की किसी को नहीं बिगाड़ा किसी से दगा नहीं की। <sup>3</sup>मैं तुम्हें मुजरिम ठहराने के लिए ये नहीं कहता क्योंकि पहले ही कह चुका हूँ कि तुम हमारे दिलों में ऐसे बस गए हो कि हम तुम एक साथ मरें और जिएँ। <sup>4</sup>मैं तुम से बड़ी दिलेरी के साथ बातें करता हूँ मुझे तुम पर बड़ा फ़ख़र है मुझको पूरी तसल्ली हो गई है; जितनी मुसीबतें हम पर आती हैं उन सब में मेरा दिल खुशी से लबरेज़ रहता है।

22222222 22 2222 2222 22 222222 22 222222

<sup>5</sup>क्योंकि जब हम मकिदुनिया में आए उस वक़्त भी हमारे जिस्म को चैन न मिला बल्कि हर तरफ़ से मुसीबत में गिरफ़्तार रहे बाहर लड़ाइयाँ थीं और अन्दर दहशतें। <sup>6</sup>तोभी आजिज़ों को तसल्ली बरख़्शने वाले या'नी खुदा ने तितुस के आने से हम को तसल्ली बरख़्शी। <sup>7</sup>और न सिर्फ़ उसके आने से बल्कि उसकी उस तसल्ली से भी जो उसको तुम्हारी तरफ़ से हुई और उसने तुम्हारा इश्तियाक़ तुम्हारा ग़म और तुम्हारा जोश जो मेरे बारे में था हम से बयान किया जिस से मैं और भी खुश हुआ।

<sup>8</sup>गरचे, मैंने तुम को अपने ख़त से ग़मगीन किया मगर उससे पछताता नहीं अगरचे पहले पछताता था चुनाँचे देखता हूँ कि उस ख़त से तुम को ग़म हुआ गरचे थोड़े ही असें तक रहा। <sup>9</sup>अब मैं इसलिए खुश नहीं हूँ कि तुम को ग़म हुआ, बल्कि इस लिए कि तुम्हारे ग़म का अन्जाम तौबा हुआ क्योंकि तुम्हारा ग़म खुदा परस्ती का था, ताकि तुम को हमारी तरफ़ से किसी तरह का नुक़सान न हो। <sup>10</sup>क्योंकि खुदा परस्ती का ग़म ऐसी तौबा पैदा करता है; जिसका अन्जाम नजात है और उस से पछताना नहीं पड़ता मगर दुनिया का ग़म मौत पैदा करता है।

<sup>11</sup>पस देखो इसी बात ने कि तुम खुदा परस्ती के तौर पर ग़मगीन हुए तो मैं किस क़दर सरगर्मी और उज़्र और ख़फ़ा और ख़ौफ़ और इश्तियाक़ और जोश और इन्तिक़ाम पैदा किया; तुम ने हर तरह से साबित कर

दिखाया कि तुम इस काम में बरी हो। <sup>12</sup> पस अगरचे मैंने तुम को लिखा था मगर न उसके बारे में लिखा जिसने बे इन्साफ़ी की और न उसके ज़रिए जिस पर बे इन्साफ़ी हुई बल्कि इस लिए कि तुम्हारी सरगर्मी जो हमारे वास्ते है खुदा के हुज़ूर तुम पर ज़ाहिर हो जाए।

<sup>13</sup> इसी लिए हम को तसल्ली हुई है

और हमारी इस तसल्ली में हम को तितुस की खुशी की वजह से और भी ज्यादा खुशी हुई क्योंकि तुम सब के ज़रिए उसकी रूह फिर ताज़ा हो गई। <sup>14</sup> और अगर मैंने उसके सामने तुम्हारे बारे में कुछ फ़ख़र किया तो शर्मिन्दा न हुआ बल्कि जिस तरह हम ने सब बातें तुम से सच्चाई से कहीं उसी तरह जो फ़ख़र हम ने तितुस के सामने किया वो भी सच निकला।

<sup>15</sup> और जब उसको तुम सब की फ़रमाबरदारी याद आती है कि तुम किस तरह डरते और काँपते हुए उस से मिले तो उसकी दिली मुहब्बत तुम से और भी ज्यादा होती जाती है। <sup>16</sup> मैं खुश हूँ कि हर बात में तुम्हारी तरफ़ से मुतमईन हूँ।

## 8

2222 222 22 222 2222

<sup>1</sup> ऐ, भाइयों! हम तुम को खुदा के उस फ़ज़ल की ख़बर देते हैं जो मकिदुनिया सूबे की कलीसियाओं पर हुआ है।

<sup>2</sup> कि मुसीबत की बड़ी आजमाइश में उनकी बड़ी खुशी और सख़्त ग़रीबी ने उनकी सखावत को हद से ज्यादा कर दिया।

<sup>3</sup> और मैं गवाही देता हूँ, कि उन्होंने हैसियत के मुवाफ़िक़ बल्कि ताक़त से भी ज्यादा अपनी खुशी से दिया। <sup>4</sup> और इस ख़ैरात और मुक़द्दसों की ख़िदमत की शिराकत के ज़रिए हम से बड़ी मिन्नत के साथ दरखास्त की। <sup>5</sup> और हमारी उम्मीद के मुवाफ़िक़ ही नहीं दिया बल्कि अपने आप को पहले खुदावन्द के और फिर खुदा की मर्ज़ी से हमारे सुपुर्द किया।

<sup>6</sup> इस वास्ते हम ने तितुस को नसीहत की जैसे उस ने पहले शुरू किया था वैसे ही तुम में इस ख़ैरात के काम को पूरा भी करे। <sup>7</sup> पस जैसे तुम हर बात में ईमान और कलाम और इल्म और पूरी सरगर्मी और उस मुहब्बत में जो हम से आगे हो गए हो, वैसे ही इस ख़ैरात के काम में आगे ले जाओ।

<sup>8</sup> मैं हुक्म के तौर पर नहीं कहता बल्कि इसलिए कि औरों की सरगर्मी से तुम्हारी सच्चाई को आजमाऊँ।

<sup>9</sup> क्योंकि तुम हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के फ़ज़ल को

जानते हो कि वो अगरचे दौलतमन्द था मगर तुम्हारी खातिर ग़रीब बन गया ताकि तुम उसकी ग़रीबी की वजह से दौलतमन्द हो जाओ।

<sup>10</sup> और मैं इस अम्र में अपनी राय देता हूँ, क्योंकि ये तुम्हारे लिए फ़ाइदामन्द है, इसलिए कि तुम पिछले साल से न सिर्फ़ इस काम में बल्कि इसके इरादे में भी अब्बल थे। <sup>11</sup> पस अब इस काम को पूरा भी करो ताकि जैसे तुम इरादा करने में मुस्त'इद थे वैसे ही हैसियत के मुवाफ़िक़ पूरा भी करो। <sup>12</sup> क्योंकि अगर नियत हो तो ख़ैरात उसके मुवाफ़िक़ मक़बूल होगी जो आदमी के पास है न उसके मुवाफ़िक़ जो उसके पास नहीं।

<sup>13</sup> ये नहीं कि औरों को आराम मिले और तुम को तकलीफ़ हो। <sup>14</sup> बल्कि बराबरी के तौर पर इस वक़्त तुम्हारी दौलत से उनकी कमी पूरी हो ताकि उनकी दौलत से भी तुम्हारी कमी पूरी हो और इस तरह बराबरी हो जाए। <sup>15</sup> चुनाँचे कलाम में लिखा है,

“जिस ने बहुत मन्ना\* जमा किया उस का कुछ ज्यादा न निकला और जिस ने थोड़ा जमा किया उसका कुछ कम न निकला।”

<sup>16</sup> खुदा का शुक्र है जो तितुस के दिल में तुम्हारे वास्ते वैसे ही सरगर्मी पैदा करता है। <sup>17</sup> क्योंकि उसने हमारी नसीहत को मान लिया बल्कि बड़ा सरगर्म हो कर अपनी खुशी से तुम्हारी तरफ़ रवाना हुआ।

<sup>18</sup> और हम ने उस के साथ उस भाई को भेजा जिस की तारीफ़ खुशख़बरी की वजह से तमाम कलीसियाओं में होती है। <sup>19</sup> और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि वो कलीसियाओं की तरफ़ से इस ख़ैरात के बारे में हमारा हमसफ़र मुक़रर हुआ और हम ये ख़िदमत इसलिए करते हैं कि खुदावन्द का जलाल और हमारा शौक़ ज़ाहिर हो।

<sup>20</sup> और हम बचते रहते हैं कि जिस बड़ी ख़ैरात के बारे में ख़िदमत करते हैं उसके बारे में कोई हम पर हफ़ न लाए। <sup>21</sup> क्योंकि हम ऐसी चीज़ों की तदबीर करते हैं जो न सिर्फ़ खुदावन्द के नज़दीक भली हैं बल्कि आदमियों के नज़दीक भी।

<sup>22</sup> और हम ने उनके साथ अपने उस भाई को भेजा है जिसको हम ने बहुत सी बातों में बार हा आजमाकर सरगर्म पाया है मगर चूँकि उसको तुम पर बड़ा भरोसा है इसलिए अब बहुत ज्यादा सरगर्म है। <sup>23</sup> अगर कोई तितुस की बारे में पुछे तो वो मेरा शरीक और तुम्हारे वास्ते मेरा हम ख़िदमत है और अगर भाइयों के बारे में पूछा जाए तो वो कलीसियाओं के क्रासिद और मसीह

\* 8:15 8:15 मन्ना एक आसमानी खाना था जो खुदा ने इस्राईलियों के लिए रेगिस्तान में दिया

का जलाल है। <sup>24</sup> पस अपनी मुहब्बत और हमारा वो फ़ख़र जो तुम पर है कलीसियाओं के रू — ब — रू उन पर साबित करो।

## 9

?????????? ?? ????? ?????????? ??? ???????  
???? ?????

<sup>1</sup> जो खिदमत मुक़द्दसों के वास्ते की जाती है, उसके ज़रिए मुझे तुम को लिखना फ़ज़ूल है। <sup>2</sup> क्यूँकि मैं तुम्हारा शौक जानता हूँ, जिसकी वजह से मकिदुनिया के लोगों के आगे तुम पर फ़ख़र करता हूँ कि अखिया के लोग पिछले साल से तैयार हैं और तुम्हारी सरगर्मी ने अकसर लोगों को उभारा।

<sup>3</sup> लेकिन मैंने भाइयों को इसलिए भेजा कि हम जो फ़ख़र इस बारे में तुम पर करते हैं वो बे'असल न ठहरे बल्कि तुम मेरे कहने के मुवाफ़िक़ तैयार रहो। <sup>4</sup> ऐसा न हो कि अगर मकिदुनिया के लोग मेरे साथ आएँ

और तुम को तैयार न पाएँ तो हम ये नहीं कहते कि तुम उस भरोसे की वजह से शर्मिन्दा हो। <sup>5</sup> इसलिए मैंने भाइयों से ये दरख़्वास्त करना ज़रूरी समझा कि वो पहले से तुम्हारे पास जाकर तुम्हारी मो'ऊदा बख़्शिश को पहले से तैयार कर रखें ताकि वो बख़्शिश की तरह तैयार रहें न कि ज़बरदस्ती के तौर पर।

<sup>6</sup> लेकिन बात ये है कि जो थोड़ा बोता है वो थोड़ा काटेगा और जो बहुत बोता है वो बहुत काटेगा। <sup>7</sup> जिस क़दर हर एक ने अपने दिल में ठहराया है उसी क़दर दे, न दरेग करके न लाचारी से क्यूँकि खुदा खुशी से देने वाले को अज़ीज़ रखता है।

<sup>8</sup> और खुदा तुम पर हर तरह का फ़ज़ल कसरत से कर सकता है। ताकि तुम को हमेशा हर चीज़ ज्यादा तौर पर मिला करे और हर नेक काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ मौजूद रहा करे। <sup>9</sup> चुनाँचे कलाम में लिखा है कि उसने बिखेरा है उसने कंगालों को दिया है उसकी रास्तबाज़ी हमेशा तक बाक़ी रहेगी।

<sup>10</sup> पस जो बोलने वाले के लिए बीज और खाने के लिए रोटी एक दुसरे को पहुँचाता है वही तुम्हारे लिए बीज बहम पहुँचाएगा; और उसी में तरक्की देगा और तुम्हारी रास्तबाज़ी के फलों को बढ़ाएगा। <sup>11</sup> और तुम हर चीज़ को बहुतायत से पाकर सब तरह की सखावत करोगे; जो हमारे वसीले से खुदा की शुक्रगुज़ारी के ज़रिए होती है।

<sup>12</sup> क्यूँकि इस खिदमत के अन्जाम देने से न सिर्फ़ मुक़द्दसों की ज़रूरतें पूरी होती हैं बल्कि बहुत लोगों की तरफ़ से खुदा की शुक्रगुज़ारी होती है। <sup>13</sup> इस लिए कि

जो नियत इस खिदमत से साबित हुई उसकी वजह से वो खुदा की बड़ाई करते हैं कि तुम मसीह की खुशख़बरी का इक़रार करके उस पर ता'बेदारी से अमल करते हो और उनकी और सब लोगों की मदद करने में सखावत करते हो। <sup>14</sup> और वो तुम्हारे लिए दुआ करते हैं और तुम्हारे मुश्ताक़ हैं इसलिए कि तुम पर खुदा का बड़ा ही फ़ज़ल है। <sup>15</sup> शुक्र खुदा का उसकी उस बख़्शिश पर जो बयान से बाहर है।

## 10

?????? ?? ????? ?? ?? ?????????? ?????

<sup>1</sup> मैं पौलुस जो तुम्हारे रू — ब — रू आजिज़ और पीठ पीछे तुम पर दिलेर हूँ मसीह का हलीम और नमी याद दिलाकर खूद तुम से गुज़ारिश करता हूँ। <sup>2</sup> बल्कि मिन्नत करता हूँ कि मुझे हाज़िर होकर उस बेबाकी के साथ दिलेर न होना पड़े जिससे मैं कुछ लोगों पर दिलेर होने का क़स्द रखता हूँ जो हमें यूँ समझते हैं कि हम जिस्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

<sup>3</sup> क्यूँकि हम अगरचे जिस्म में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं मगर जिस्म के तौर पर लड़ते नहीं। <sup>4</sup> इस लिए कि हमारी लड़ाई के हथियार जिस्मानी नहीं बल्कि खुदा के नज़दीक़ क़िलों को ढा देने के काबिल हैं।

<sup>5</sup> चुनाँचे हम तसव्वुरात और हर एक उँची चीज़ को जो खुदा की पहचान के बरख़िलाफ़ सर उठाए हुए हैं ढा देते हैं और हर एक खयाल को क़ैद करके मसीह का फ़रमाँबरदार बना देते हैं। <sup>6</sup> और हम तैयार हैं कि जब तुम्हारी फ़रमाँबरदारी पूरी हो तो हर तरह की नाफ़रमानी का बदला लें।

<sup>7</sup> तो तुम उन चीज़ों पर नज़र करते हो जो आँखों के सामने हैं अगर किसी को अपने आप पर ये भरोसा है कि वो मसीह का है तो अपने दिल में ये भी सोच ले कि जैसे वो मसीह का है वैसे ही हम भी हैं। <sup>8</sup> क्यूँकि अगर मैं इस इख़्तियार पर कुछ ज्यादा फ़ख़र भी करूँ जो खुदावन्द ने तुम्हारे बनाने के लिए दिया है; न कि बिगाड़ने के लिए तो मैं शर्मिन्दा न हूँगा।

<sup>9</sup> ये मैं इस लिए कहता हूँ, कि ख़तों के ज़रिए से तुम को डराने वाला न ठहरूँ। <sup>10</sup> क्यूँकि कुछ लोग कहते हैं कि पौलुस के ख़त तो अलबत्ता असरदार और ज़बरदस्त हैं लेकिन जब खूद मौजूद होता है तो कमज़ोर सा मा'लूम होता है और उसकी तक़रीर लचर है।

<sup>11</sup> पस ऐसा कहने वाला समझ रखे कि जैसा पीठ पीछे ख़तों में हमारा कलाम है वैसा ही मौजूदगी के वक़्त हमारा काम भी होगा।



12 क्योंकि हमारी ये हिम्मत नहीं कि अपने आप को उन चन्द लोगों में शुमार करें या उन से कुछ निस्वत दें जो अपनी नेक नामी जताते हैं लेकिन वो खुद अपने आप को आपस में वज्रन कर के और अपने आप को एक दूसरे से निस्वत देकर नादान ठहराते हैं।

13 लेकिन हम अन्दाजे से ज्यादा फ़ख़र न करेंगे, बल्कि उसी इलाक़े के अन्दाजे के मुवाफ़िक़ जो खुदा ने हमारे लिए मुकर्रर किया है जिस में तुम भी आगए, हो। 14 क्योंकि हम अपने आप को हद से ज्यादा नहीं बढ़ाते जैसे कि तुम तक न पहुँचने की सूरत में होता बल्कि हम मसीह की खुशख़बरी देते हुए तुम तक पहुँच गए थे।

15 और हम अन्दाजे से ज्यादा या'नी औरों की मेहनतों पर फ़ख़र नहीं करते लेकिन उम्मीदवार हैं कि जब तुम्हारे ईमान में तरक्की हो तो हम तुम्हारी वजह से अपने इलाक़े के मुवाफ़िक़ और भी बढ़े 16 ताकि तुम्हारी सरहद से आगे बढ़ कर खुशख़बरी पहुँचा दें न कि ग़ैर इलाक़ा में बनी बनाई हुई चीज़ों पर फ़ख़र करें 17 गरज़ जो फ़ख़र करे वो खुदावन्द पर फ़ख़र करे। 18 क्योंकि जो अपनी नेकनामी जताता है वो मक़बूल नहीं बल्कि जिसको खुदावन्द नेकनाम ठहराता है वही मक़बूल है।

## 11

### ????? ?? ???? ???? ?

1 काश कि तुम मेरी थोड़ी सी बेवकूफी की बर्दाश्त कर सकते; हाँ तुम मेरी बर्दाश्त करते तो हो। 2 मुझे तुम्हारे ज़रिए खुदा की सी ग़ैरत है क्योंकि मैंने एक ही शौहर के साथ तुम्हारी निस्वत की है ताकि तुम को पाक दामन कुंवारी की तरह मसीह के पास हाज़िर करूँ।

3 लेकिन मैं डरता हूँ कहीं ऐसा न हो कि जिस तरह साँप ने अपनी मक्कारी से हव्वा को बहकाया उसी तरह तुम्हारे खयालात भी उस खुलूस और पाकदामनी से हट जाएँ जो मसीह के साथ होनी चाहिए। 4 क्योंकि जो आता है अगर वो किसी दूसरे ईसा का ऐलान करता है जिसका हमने ऐलान नहीं किया या कोई और रूह तुम को मिलती है जो न मिली थी या दूसरी खुशख़बरी मिली जिसको तुम ने कुबूल न किया था; तो तुम्हारा बर्दाश्त करना बजा है।

5 मैं तो अपने आप को उन अफ़ज़ल रसूलों से कुछ कम नहीं समझता। 6 और अगर तक्ररीर में बेशोऊर हूँ तो इल्म के एतबार से तो नहीं बल्कि हम ने इस को हर बात में तमाम आदमियों में तुम्हारी खातिर ज़ाहिर कर दिया।

7 क्या ये मुझ से ख़ता हुई कि मैंने तुम्हें खुदा की खुशख़बरी मुफ़्त पहुँचा कर अपने आप को नीचे किया ताकि तुम बुलन्द हो जाओ। 8 मैंने और कलीसियाओं को लूटा या'नी उनसे उज़रत ली ताकि तुम्हारी ख़िदमत करूँ। 9 और जब मैं तुम्हारे पास था और हाज़त मंद हो गया था, तो भी मैंने किसी पर बोझ नहीं डाला क्योंकि भाइयों ने मकिदुनिया से आकर मेरी ज़रूरत को पूरा कर दिया था; और मैं हर एक बात में तुम पर बोझ डालने से बाज़ रहा और रहूँगा।

10 मसीह की सदाक़त की क़सम जो मुझ में है अख़िया के इलाक़ा में कोई शख्स मुझे ये करने से न रोकेगा। 11 किस वास्ते? क्या इस वास्ते कि मैं तुम से मुहब्बत नहीं रखता? इसको खुदा जानता है। 12 लेकिन जो करता हूँ वही करता रहूँगा ताकि मौक़ा ढूँडने वालो को मौक़ा न दूँ बल्कि जिस बात पर वो फ़ख़र करते हैं उस में हम ही जैसे निकलें। 13 क्योंकि ऐसे लोग झूठे रसूल और दगा बाज़ी से काम करने वाले हैं और अपने आपको मसीह के रसूलों के हमशक्ल बना लेते हैं।

14 और कुछ अजीब नहीं शैतान भी अपने आपको नूरानी फ़रिश्ते का हम शक्ल बना लेता है। 15 पस अगर उसके खादिम भी रास्तबाज़ी के खादिमों के हमशक्ल बन जाएँ तो कुछ बड़ी बात नहीं लेकिन उनका अन्जाम उनके कामों के मुवाफ़िक़ होगा।

16 मैं फिर कहता हूँ कि मुझे कोई बेवकूफ़ न समझे और न बेवकूफ़ समझ कर मुझे कुबूल करो कि मैं भी थोड़ा सा फ़ख़र करूँ। 17 जो कुछ मैं कहता हूँ वो खुदावन्द के तौर पर नहीं बल्कि गोया बेवकूफी से और उस हिम्मत से कहता हूँ जो फ़ख़र करने में होती है। 18 जहाँ और बहुत सारे जिस्मानी तौर पर फ़ख़र करते हैं मैं भी करूँगा।

19 क्योंकि तुम को अक़लमन्द हो कर खुशी से बेवकूफ़ों को बर्दाश्त करते हो। 20 जब कोई तुम्हें गुलाम बनाता है या खा जाता है या फँसा लेता है या अपने आपको बड़ा बनाता है या तुम्हारे मुँह पर तमाचा मारता है तो तुम बर्दाश्त कर लेते हो। 21 मेरा ये कहना ज़िल्लत के तौर पर सही कि हम कमज़ोर से थे मगर जिस किसी बात में कोई दिलेर है (अगरचे ये कहना बेवकूफी है) मैं भी दिलेर हूँ।

22 क्या वही इब्रानी हैं? मैं भी हूँ, क्या वही अब्रहाम की नस्ल से हैं? मैं भी हूँ। 23 क्या वही मसीह के खादिम हैं? (मेरा ये कहना दीवानगी है) मैं ज्यादा तर हूँ मेहनतों

में ज्यादा कैद में ज्यादा कोड़े खाने में हद से ज्यादा बारहा मौत के खतरों में रहा हूँ।

24 मैंने यहूदियों से पाँच बार एक कम चालीस चालीस कोड़े खाए। 25 तीन बार बेंत लगे एक बार पथराव किया गया तीन मर्तबा जहाज़ टूटने की बला में पड़ा रात दिन समुन्दर में काटा। 26 मैं बार बार सफ़र में दरियाओं के खतरों में डाकूओं के खतरों में अपनी क्रौम से खतरों में ग़ैर क्रौमों के खतरों में शहर के खतरों में वीरान के खतरों में समुन्दर के खतरों में झूठे भाइयों के खतरों में।

27 मेहनत और मशक्कत में बारहा बेदारी की हालत में भूख और प्यास की मुसीबत में बारहा फ़ाका कशी में सर्दी और नंगे पन की हालत में रहा हूँ। 28 और बातों के अलावा जिनका मैं ज़िक्र नहीं करता सब कलीसियाओं की फ़िक्र मुझे हर रोज़ आती है। 29 किसी की कमज़ोरी से मैं कमज़ोर नहीं होता, किसी के ठोकर खाने से मेरा दिल नहीं दुःखता?

30 अगर फ़ख़र ही करना ज़रूर है तो उन बातों पर फ़ख़र करूँगा जो मेरी कमज़ोरी से मुताल्लिक हैं। 31 खुदावन्द ईसा का खुदा और बाप जिसकी हमेशा तक हम्द हो जानता है कि मैं झूठ नहीं कहता।

32 दमिश्क के शहर में उस हाकिम ने जो बादशाह अरितास की तरफ़ से था मेरे पकड़ने के लिए दमिश्कियों के शहर पर पहरा बिठा रखा था। 33 फिर मैं टोकरे में खिड़की की राह दिवार पर से लटका दिया गया और मैं उसके हाथों से बच गया।

## 12

?????? ?? ?????? ?? ?????? ?? ??????

1 मुझे फ़ख़र करना ज़रूरी हुआ अगरचे मुफ़ीद नहीं पस जो रोया और मुकाशफ़ा खुदावन्द की तरफ़ से इनायत हुआ उनका मैं ज़िक्र करता हूँ। 2 मैं मसीह में एक शख्स को जानता हूँ चौदह बरस हुए कि वो यकायक तीसरे आसमान तक उठा लिया गया न मुझे ये मा'लूम कि बदन समेत न ये मा'लूम कि बग़ैर बदन के ये खुदा को मा'लूम है।

3 और मैं ये भी जानता हूँ कि उस शख्स ने बदन समेत या बग़ैर बदन के ये मुझे मा'लूम नहीं खुदा को मा'लूम है। 4 यकायक फ़िरदौस में पहुँचकर ऐसी बातें सुनी जो कहने की नहीं और जिनका कहना आदमी को रवा नहीं। 5 मैं ऐसे शख्स पर तो फ़ख़र करूँगा लेकिन अपने आप पर सिवा अपनी कमज़ोरी के फ़ख़र करूँगा।

6 और अगर फ़ख़र करना चाहूँ भी तो बेवकूफ़ न ठहरूँगा इसलिए कि सच बोलूँगा मगर तोभी बा'ज़

रहता हूँ ताकि कोई मुझे इस से ज्यादा न समझे जैसा मुझे देखा है या मुझ से सुना है।

7 और मुकाशफ़ा की ज़ियादती के ज़रिए मेरे फूल जाने के अन्देशे से मेरे जिस्म में कांटा चुभोया गया या'नी शैतान का कासिद ताकि मेरे मुक्के मारे और मैं फूल न जाऊँ।

8 इसके बारे में मैंने तीन बार खुदावन्द से इल्तिमास किया कि ये मुझ से दूर हो जाए। 9 मगर उसने मुझ से कहा कि **मेरा फ़ज़ल तेरे लिए काफ़ी है क्योंकि मेरी कुदरत कमज़ोरी में पूरी होती है** पस मैं बड़ी खुशी से अपनी कमज़ोरी पर फ़ख़र करूँगा ताकि मसीह की कुदरत मुझ पर छाई रहे। 10 इसलिए मैं मसीह की खातिर कमज़ोरी में बेइज्जती में, एहतियाज में, सताए जाने में, तंगी में, खुश हूँ क्योंकि जब मैं कमज़ोर होता हूँ उसी वक़्त ताक़तवर होता हूँ।

11 मैं बेवकूफ़ तो बना मगर तुम ही ने मुझे मजबूर किया, क्योंकि तुम को मेरी तारीफ़ करना चाहिए था इसलिए कि उन अफ़ज़ल रसूलों से किसी बात में कम नहीं अगरचे कुछ नहीं हूँ। 12 सच्चा रसूल होने की अलामतें कमाल सबर के साथ निशानों और अजीब कामों और मोज़िज़ों के वसीले से तुम्हारे दर्मियान ज़ाहिर हुईं। 13 तुम कौन सी बात में और कलीसियाओं में कम ठहरे बा वजूद इसके मैंने तुम पर बोझ न डाला? मेरी ये बेइन्साफ़ी मु'आफ़ करो।

14 देखो ये तीसरी बार मैं तुम्हारे पास आने के लिए तैयार हूँ और तुम पर बोझ न डालूँगा इसलिए कि मैं तुम्हारे माल का नहीं बल्कि तुम्हारा चहेता हूँ, क्योंकि लड़कों को माँ बाप के लिए जमा करना नहीं चाहिए, बल्कि माँ बाप को लड़कों के लिए। 15 और मैं तुम्हारी रूहों के वास्ते बहुत खुशी से खर्च करूँगा, बल्कि खुद ही खर्च हो जाऊँगा। अगर मैं तुम से ज्यादा मुहब्बत रखूँ तो क्या तुम मुझ से कम मुहब्बत रखोगे।

16 लेकिन मुम्किन है कि मैंने खुद तुम पर बोझ न डाला हो मगर मक्कार जो हुआ इसलिए तुम को धोखा देकर फँसा लिया हो। 17 भला जिन्हें मैंने तुम्हारे पास भेजा कि उन में से किसी की ज़रिए दगा के तौर पर तुम से कुछ लिया? 18 मैंने तितुस को समझा कर उनके साथ उस भाई को भेजा पस क्या तितुस ने तुम से दगा के तौर पर कुछ लिया? क्या हम दोनों का चाल चलन एक ही रूह की हिदायत के मुताबिक़ न था; क्या हम एक ही नक़्शे क़दम पर न चले।

19 तुम अभी तक यही समझते होगे कि हम तुम्हारे सामने उज़र कर रहे हैं? हम तो खुदा को हाज़िर जानकर मसीह में बोलते हैं और ऐ, प्यारो ये सब कुछ तुम्हारी तरक्की के लिए है।

20 क्योंकि मैं डरता हूँ कहीं ऐसा न हो कि आकर जैसा तुम्हें चाहता हूँ वैसा न पाऊँ और मुझे भी जैसा तुम नहीं चाहते वैसा ही पाओ कि तुम में, झगड़ा, हसद, गुस्सा, तफ़रके, बद गोइयाँ, ग़ीबत, शेखी और फ़साद हों। 21 और फिर जब मैं आऊँ तो मेरा खुदा तुम्हारे सामने आज़िज़ करे और मुझे बहुतों के लिए अफ़सोस करना पड़े जिन्होंने पहले गुनाह किए हैं और उनकी नापाकी और हरामकारी और शहवत परस्ती से जो उन से सरज़द हुई तौबा न की।

### 13

????? ?? ?????? ???????

1 ये तीसरी बार मैं तुम्हारे पास आता हूँ। दो या तीन गवाहों\* कि ज़बान से हर एक बात साबित हो जाएगी।

2 जैसे मैंने जब दूसरी दफ़ा हाज़िर था तो पहले से कह दिया था, वैसे ही अब ग़ैर हाज़िरी में भी उन लोगों से जिन्होंने पहले गुनाह किए हैं और सब लोगों से, पहले से कहे देता हूँ कि अगर फिर आऊँगा तो दर गुज़र न करूँगा।

3 क्योंकि तुम इसकी दलील चाहते हो कि मसीह मुझ में बोलता है, और वो तुम्हारे लिए कमज़ोर नहीं बल्कि तुम में ताक़तवर है। 4 हाँ, वो कमज़ोरी की वजह से मस्तबूब किया गया, लेकिन खुदा की कुदरत की वजह से ज़िन्दा है; और हम भी उसमें कमज़ोर तो हैं, मगर उसके साथ खुदा कि उस कुदरत कि वजह से ज़िन्दा होंगे जो तुम्हारे लिए है।

5 तुम अपने आप को आजमाओ कि ईमान पर हो या नहीं। अपने आप को जाँचो तुम अपने बारे में ये नहीं जानते हो कि ईसा मसीह तुम में है? वरना तुम नामक्रबूल हो। 6 लेकिन मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम मा'लूम कर लोगे कि हम तो नामक्रबूल नहीं।

7 हम खुदा से दुआ करते हैं कि तुम कुछ बदी न करो ना इस वास्ते कि हम मक्रबूल मालूम हों' बल्कि इस वास्ते कि तुम नेकी करो चाहे हम नामक्रबूल ही ठहरें।

8 क्योंकि हम हक़ के बारख़िलाफ़ कुछ नहीं कर सकते, मगर सिर्फ़ हक़ के लिए कर सकते हैं।

9 जब हम कमज़ोर हैं और तुम ताक़तवर हो, तो हम खुश हैं और ये दुआ भी करते हैं कि तुम कामिल बनो।

10 इसलिए मैं ग़ैर हाज़िरी में ये बातें लिखता हूँ ताकि हाज़िर होकर मुझे उस इख़्तियार के मुवाफ़िक़ सख्ती न करना पड़े जो खुदावन्द ने मुझे बनाने के लिए दिया है न कि बिगाड़ने के लिए।

11 ग़रज़ ऐ भाइयों! खुश रहो, कामिल बनो, इत्मीनान रखो, यकदिल रहो, मेल — मिलाप रखो तो खुदा, मुहब्बत और मेल — मिलाप का चश्मा तुम्हारे साथ होगा। 12 आपस में पाक बोसा लेकर सलाम करो।

13 सब मुक़द्दस लोग तुम को सलाम कहते हैं।

14 खुदावन्द येसू मसीह का फज़ल और खुदा की मौहब्बत और रूहुलकुद्दस की शिराकत तुम सब के साथ होती रहे।

\* 13:1 13:1 दो या तीन गवाहों मूसा की शरी'अत में किसे बात को सच साबित करने के लिए दो या तीन गवाहों की ज़रूरत होती थी

## गलातियों के नाम पौलूस रसूल का खत

गलातियों के नाम पौलूस रसूल का खत

1 पौलूस रसूल इस खत का मुसन्निफ़ है, यह इब्लिदाई कलीसिया की एक ज़बान रखने वाली कलीसिया थी। पौलूस ने जुनूबी गलतिया की कलीसिया को तब लिखा जब उन्होंने उस के पहले मिशनरी सफ़र में जो एशिया माइनर की तरफ़ तै की थी उस का साथ दिया था। गलतिया, रोम या कुरिन्थ की तरह एक शहर नहीं था बल्कि एक रोमी रियासत था जिस के कई एक शहर थे और कसीर ता'दाद में कलीसियाएं थीं। गलतिया के लोग जिन्हें पौलूस ने खत लिखे थे वह पौलूस ही के ज़रिए मसीह में आये थे।

गलातियों के नाम पौलूस रसूल का खत

तक़रीबन इस को 48 ईस्वी के बीच लिखी गई थी।

पौलूस ने गालिबन गलतियों के नाम खत को अन्ताकिया से लिखा जबकि यह घरेलू बुनियाद पर था।

गलातियों के नाम पौलूस रसूल का खत

गलतियों के नाम का खत गलतिया की कलीसिया के अर्कान को लिखा गया था (गलतियों 1:1-2)।

गलातियों के नाम पौलूस रसूल का खत

इस खत को लिखने का मक़सद था, यहूदियत बरतने वालों की झूटी इन्जील को गलत ठहराना, एक इन्जील जिसको पढ़ने के बाद यहूदी मसीहियों ने महसूस किया था कि नजात के लिए खतना कराना ज़रूरी है। और मक़सद यह भी था कि गलतियों को उनके नजात की हकीकत को याद दिलाना था। पौलूस ने अपनी रिसालत के इख़्तियार को कायम करने के ज़रिए साफ़ तौर से उन के हर सवाल का जवाब दिया जिस की बदौलत दलील पेश करते हुए उसने इन्जील की मनादी की थी। ईमान के वसीले से सिर्फ़ फ़ज़ल के ज़रिए लोग रास्तबाज़ ठहराए जाते हैं। और यह सिर्फ़ ईमान के ज़रिए ही रूह की आज़ादी में उन्हें नई ज़िन्दगी जीने की ज़रूरत है।

गलातियों के नाम पौलूस रसूल का खत

मसीह में आज़ादी।

बैरूनी खाका

1. तआरुफ़ — 1:1-10
2. इन्जील की तस्दीक़ व तौसीक़ — 1:11-2:21
3. ईमान के ज़रिए रास्तबाज़ ठहराया जाना — 3:1-4:31
4. ईमान की ज़िन्दगी को अमल में लाना और मसीह में आज़ादी — 5:1-6:18

गलातियों के नाम पौलूस रसूल का खत

1 पौलूस की तरफ़ से जो ना इंसान ों की जानिब से ना इंसान की वजह से, बल्कि ईसा 'मसीह और खुदा बाप की वजह से जिसने उसको मुदों में से जिलाया, रसूल है; 2 और सब भाइयों की तरफ़ से जो मेरे साथ हैं, गलतिया सूबे की कलीसियाओं को खत:

3 खुदा बाप और हमारे खुदावन्द ईसा मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इतमिनान हासिल होता रहे। 4 उसी ने हमारे गुनाहों के लिए अपने आप को दे दिया; ताकि हमारे खुदा और बाप की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ हमें इस मौजूदा खराब जहान से खलासी बरख़्शे। 5 उसकी बड़ाई हमेशा से हमेशा तक होती रहे आमीन।

6 मैं ताअ'ज्जुब करता हूँ कि जिसने तुम्हें मसीह के फ़ज़ल से बुलाया, उससे तुम इस क़दर जल्द फिर कर किसी और तरह की खुशख़बरी की तरफ़ माइल होने लगे, 7 मगर वो दूसरी नहीं; अलबत्ता कुछ ऐसे हैं जो तुम्हें उलझा देते और मसीह की खुशख़बरी को बिगाड़ना चाहते हैं।

8 लेकिन हम या आसमान का कोई फ़रिश्ता भी उस खुशख़बरी के सिवा जो हमने तुम्हें सुनाई, कोई और खुशख़बरी सुनाए तो मला'उन हो। 9 जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूँ कि उस खुशख़बरी के सिवा जो तुम ने कुबूल की थी, अगर तुम्हें और कोई खुशख़बरी सुनाता है तो मला'उन हो। 10 अब मैं आदमियों को दोस्त बनाता हूँ या खुदा को? क्या आदमियों को खुश करना चाहता हूँ? अगर अब तक आदमियों को खुश करता रहता, तो मसीह का बन्दा ना होता।

11 ऐ भाइयों! मैं तुम्हें बताए देता हूँ कि जो खुशख़बरी मैं ने सुनाई वो इंसान की नहीं। 12 क्यूँकि वो मुझे इंसान की तरफ़ से नहीं पहुँची, और न मुझे सिखाई गई, बल्कि खुदा' मसीह की तरफ़ से मुझे उसका मुक़ाशफ़ा हुआ।

13 चुनाँचे यहूदी तरीक़े में जो पहले मेरा चाल — चलन था, तुम सुन चुके हो कि मैं खुदा की कलीसिया को अज़ हद सताता और तबाह करता था। 14 और मैं यहूदी तरीक़े में अपनी क़ौम के अक्सर हम उम्रों से बढ़ता जाता था, और अपने बुज़ुर्गों की रिवायतों में निहायत सरगर्म था।

15 लेकिन जिस खुदा ने मेरी माँ के पेट ही से मख़सूस कर लिया, और अपने फ़ज़ल से बुला लिया, जब उसकी ये मर्ज़ी हुई 16 कि अपने बेटे को मुझ में ज़ाहिर करे ताकि मैं ग़ैर — क़ौमों में उसकी खुशख़बरी दूँ, तो न मैंने गोश्त और खून से सलाह ली, 17 और न येरूशलेम में उनके



पास गया जो मुझ से पहले रसूल थे, बल्कि फ़ौरन अरब मुल्क को चला गया फिर वहाँ से दमिश्क शहर को वापस आया।

18 फिर तीन बरस के बाद मैं कैफ़ा से मुलाकात करने को गया और पन्द्रह दिन तक उसके पास रहा। 19 मगर और रसूलों में से खुदावन्द के भाई या 'कूब के सिवा किसी से न मिला। 20 जो बातें मैं तुम को लिखता हूँ, खुदा को हाज़िर जान कर कहता हूँ कि वो झूठी नहीं। 21 इसके बाद मैं सीरिया और किलकिया के इलाकों में आया;

22 और यहूदिया सूबा की कलीसियाएँ, जो मसीह में थीं मुझे सूरत से न जानती थी, 23 मगर ये सुना करती थीं, जो हम को पहले सताता था, वो अब उसी दीन की खुशखबरी देता है जिसे पहले तबाह करता था। 24 और वो मेरे ज़रिए खुदा की बड़ाई करती थी।

## 2

?????? ?? ???? ?? ???? ??

1 आखिर चौदह बरस के बाद मैं बरनबास के साथ फिर येरूशलेम को गया और तितुस को भी साथ ले गया।

2 और मेरा जाना मुकाशिका के मुताबिक़ हुआ; और जिस खुशखबरी की ग़ैर — क्रौमों में मनादी करता हूँ वो उन से बयान की, मगर तन्हाई में उन्हीं के लोगों से जो कुछ समझे जाते थे, कहीं ऐसा ना हो कि मेरी इस वक्त की या अगली दौड़ धूप बेफ़ाइदा जाए।

3 लेकिन तितुस भी जो मेरे साथ था और यूनानी है खतना करने पर मजबूर न किया गया। 4 और ये उन झूठे भाइयों की वजह से हुआ जो छिप कर दाखिल हो गए थे, ताकि उस आज्ञादी को जो तुम्हें मसीह ईसा में हासिल है, जासूसों के तौर पर मालूम करके हमें गुलामी में लाएँ। 5 उनके ताबे रहना हम ने पल भर के लिए भी मंज़ूर ना किया, ताकि खुशखबरी की सच्चाई तुम में काईम रहे।

6 और जो लोग कुछ समझे जाते थे, चाहे वो कैसे ही थे मुझे इससे कुछ भी वास्ता नहीं; खुदा किसी आदमी का तरफ़दार नहीं उनसे जो कुछ समझे जाते थे मुझे कुछ हासिल ना हुआ। 7 लेकिन बर'अक्स इसके जब उन्होंने ये देखा कि जिस तरह यहूदी मख्तूनो को खुशखबरी देने का काम पतरस के सुपुर्द हुआ 8 क्योंकि जिस ने मख्तूनो की रिसालत के लिए पतरस में असर पैदा किया, उसी ने ग़ैर — यहूदी न मख्तून क्रौमों के लिए मुझ में भी असर पैदा किया।

9 और जब उन्होंने उस तौफ़ीक़ को मा'लूम किया जो मुझे मिली थी, तो या'कूब और कैफ़ा और याहुन ने जो कलीसिया के सुतून समझे जाते थे, मुझे और बरनबास

को दहना हाथ देकर शरीक कर लिया, ताकि हम ग़ैर क्रौमों के पास जाएँ और वो मख्तूनो के पास; 10 और सिर्फ़ ये कहा कि ग़रीबों को याद रखना, मगर मैं खुद ही इसी काम की कोशिश में हूँ,

11 और जब कैफ़ा अंताकिया शहर में आया तो मैंने रु — ब — रु होकर उसकी मुखालिफ़त की, क्योंकि वो मलामत के लायक़ था। 12 इस लिए कि या'कूब की तरफ़ से चन्द लोगों के आने से पहले तो वो ग़ैर — क्रौम वालों के साथ खाया करता था, मगर जब वो आ गए तो मख्तूनो से डर कर बाज़ रहा और किनारा किया।

13 और बाक़ी यहूदी ईमानदारों ने भी उसके साथ होकर रियाकारी की यहाँ तक कि बरनबास भी उसके साथ रियाकारी में पड़ गया। 14 जब मैंने देखा कि वो खुशखबरी की सच्चाई के मुताबिक़ सीधी चाल नहीं चलते, तो मैंने सब के सामने कैफ़ा से कहा, “जब तू बावजूद यहूदी होने के ग़ैर क्रौमों की तरह ज़िन्दगी गुज़ारता है न कि यहूदियों की तरह तो ग़ैर क्रौमों को यहूदियों की तरह चलने पर क्यूँ मजबूर करता है?”

15 जबकि हम पैदाइश से यहूदी हैं, और गुनहगार ग़ैर क्रौमों में से नहीं। 16 तोभी ये जान कर कि आदमी शरी'अत के आमाल से नहीं बल्कि सिर्फ़ ईसा मसीह पर ईमान लाने से रास्तबाज़ ठहरता है खुद भी मसीह ईसा पर ईमान लाने से रास्तबाज़ ठहरें न कि शरी'अत के आमाल से क्यूँकि शरी'अत के अमाल से कोई भी बशर रास्त बाज़ न ठहरेगा।

17 और हम जो मसीह में रास्तबाज़ ठहरना चाहते हैं, अगर खुद ही गुनाहगार निकलें तो क्या मसीह गुनाह का ज़रिया है? हरगिज़ नहीं! 18 क्यूँकि जो कुछ मैंने शरी'अत को ढा दिया अगर उसे फिर बनाऊँ, तो अपने आप को कुसुरवार ठहराता हूँ। 19 चुनाँचे मैं शरी'अत ही के वसीले से शरी'अत के ए'तिबार से मारा गया, ताकि खुदा के ए'तिबार से ज़िंदा हो जाऊँ।

20 मैं मसीह के साथ मसलूब हुआ हूँ; और अब मैं ज़िंदा न रहा बल्कि मसीह मुझ में ज़िंदा है; और मैं जो अब जिस्म में ज़िन्दगी गुज़ारता हूँ तो खुदा के बेटे पर ईमान लाने से गुज़ारता हूँ, जिसने मुझ से मुहब्बत रखी और अपने आप को मेरे लिए मौत के हवाले कर दिया। 21 मैं खुदा के फ़ज़ल को बेकार नहीं करता, क्यूँकि रास्तबाज़ी अगर शरी'अत के वसीले से मिलती, तो मसीह का मरना बेकार होता।

## 3

?????? ?? ???? ?? ???? ??

1 ऐ नादान गलतियों, किसने तुम पर जादू कर दिया? तुम्हारी तो गोया आँखों के सामने ईसा मसीह सलीब पर दिखाया गया। 2 मैं तुम से सिर्फ़ ये गुज़ारिश करना चाहता हूँ: कि तुम ने शरी'अत के आ'माल से पाक रूह को पाया या ईमान की खुशखबरी के पैग़ाम से? 3 क्या तुम ऐसे नादान हो कि पाक रूह के तौर पर शुरू करके अब जिस्म के तौर पर काम पूरा करना चाहते हो?

4 क्या तुमने इतनी तकलीफ़ें बे फ़ाइदा उठाई? मगर शायद बे फ़ाइदा नहीं। 5 पर जो तुम्हें पाक रूह बख़्शता और तुम में मोजिज़े ज़ाहिर करता है, क्या वो शरी'अत के आ'माल से ऐसा करता है या ईमान के खुशखबरी के पैग़ाम से?

6 चुनाँचे “अब्रहाम खुदा पर ईमान लाया और ये उसके लिए रास्तबाज़ी गिना गया।” 7 पस जान लो कि जो ईमानवाले हैं, वही अब्रहाम के फ़रज़न्द हैं। 8 और किताब — ए — मुक़द्दस ने पहले से ये जान कर कि खुदा ग़ैर क़ौमों को ईमान से रास्तबाज़ ठहराएगा, पहले से ही अब्रहाम को ये खुशखबरी सुना दी, “तेरे ज़रिए सब क़ौमों बर्क़त पाएँगी।” 9 इस पर जो ईमान वाले हैं, वो ईमानदार अब्रहाम के साथ बर्क़त पाते हैं।

10 क्यूँकि जितने शरी'अत के आ'माल पर तकिया करते हैं, वो सब ला'नत के मातहत हैं; चुनाँचे लिखा है, “जो कोई उन सब बातों को जो किताब में से लिखी हैं; क़ाईम न रहे वो ला'नती है।” 11 और ये बात साफ़ है कि शरी'अत के वसीले से कोई इंसान खुदा के नज़दीक रास्तबाज़ नहीं ठहरता, क्यूँकि कलाम में लिखा है, रास्तबाज़ ईमान से जीता रहेगा। 12 और शरी'अत को ईमान से कुछ वास्ता नहीं, बल्कि लिखा है, “जिसने इन पर 'अमल किया, वो इनकी वजह से जीता रहेगा।”

13 मसीह जो हमारे लिए ला'नती बना, उसने हमे मोल लेकर शरी'अत की ला'नत से छुड़ाया, क्यूँकि कलाम में लिखा है, “जो कोई लकड़ी पर लटकाया गया वो ला'नती है।” 14 ताकि मसीह ईसा में अब्रहाम की बर्क़त ग़ैर क़ौमों तक भी पहुँचे, और हम ईमान के वसीले से उस रूह को हासिल करें जिसका वा'दा हुआ है।

15 ऐ भाइयों! मैं इंसान ियत के तौर पर कहता हूँ कि अगर आदमी ही का 'अहद हो, जब उसकी तस्दीक़ हो गई हो तो कोई उसको बातिल नहीं करता और ना उस पर कुछ बढ़ाता है। 16 पस अब्रहाम और उसकी नस्ल से वा'दे किए गए। वो ये नहीं कहता, नस्लों से, जैसा बहुतों के वास्ते कहा जाता है: बल्कि जैसा एक के वास्ते, तेरी नस्ल को और वो मसीह है।

17 मेरा ये मतलब है: जिस 'अहद की खुदा ने पहले से तस्दीक़ की थी, उसको शरी'अत चार सौ तीस बरस के बाद आकर बातिल नहीं कर सकती कि वो वा'दा लअहासिल हो। 18 क्यूँकि अगर मीरास शरी'अत की वजह से मिली है तो वा'दे की वजह से ना हुई, मगर अब्रहाम को खुदा ने वा'दे ही की राह से बख़्शी।

19 पस शरी'अत क्या रही? वो नाफ़रमानी की वजह से बाद में दी गई कि उस नस्ल के आने तक रहे, जिससे वा'दा किया गया था; और वो फ़रिश्तों के वसीले से एक दर्मियानी की मा'रिफ़त मुक़र्रर की गई। 20 अब दर्मियानी एक का नहीं होता, मगर खुदा एक ही है।

21 पस क्या शरी'अत खुदा के वा'दों के खिलाफ़ है? हरगिज़ नहीं! क्यूँकि अगर कोई ऐसी शरी'अत दी जाती जो ज़िन्दगी बख़्श सकती तो, अलबत्ता रास्तबाज़ी शरी'अत की वजह से होती। 22 मगर किताब — ए — मुक़द्दस ने सबको गुनाह के मातहत कर दिया, ताकि वो वा'दा जो ईसा मसीह पर ईमान लाने पर मौकूफ़ है, ईमानदारों के हक़ में पूरा किया जाए।

23 ईमान के आने से पहले शरी'अत की मातहतती में हमारी निगहबानी होती थी, और उस ईमान के आने तक जो ज़ाहिर होनेवाला था, हम उसी के पाबन्द रहे। 24 पस शरी'अत मसीह तक पहुँचाने को हमारा उस्ताद बनी, ताकि हम ईमान की वजह से रास्तबाज़ ठहरें। 25 मगर जब ईमान आ चुका, तो हम उस्ताद के मातहत ना रहे।

26 क्यूँकि तुम उस ईमान के वसीले से जो मसीह ईसा में है, खुदा के फ़रज़न्द हो।

27 और तुम सब, जितनों ने मसीह में शामिल होने का बपतिस्मा लिया मसीह को पहन लिया 28 न कोई यहूदी रहा, न कोई यूनानी, न कोई गुलाम, ना आज़ाद, न कोई मर्द, न औरत, क्यूँकि तुम सब मसीह 'ईसा में एक ही हो। 29 और अगर तुम मसीह के हो तो अब्रहाम की नस्ल और वा'दे के मुताबिक़ वारिस हो।

## 4

1 और मैं ये कहता हूँ कि वारिस जब तक बच्चा है, अगरचे वो सब का मालिक है, उसमें और गुलाम में कुछ फ़र्क़ नहीं। 2 बल्कि जो मि'आद बाप ने मुक़र्रर की उस वक़्त तक सरपरस्तों और मुख्तारों के इख्तियार में रहता है।

3 इसी तरह हम भी जब बच्चे थे, तो दुनियावी इब्तिदाई बातों के पाबन्द होकर गुलामी की हालत में रहे। 4 लेकिन जब वक़्त पूरा हो गया, तो खुदा ने अपने बेटे को भेजा जो 'औरत से पैदा हुआ और शरी'अत के मातहत पैदा हुआ, 5 ताकि शरी'अत के मातहतों को

मोल लेकर छुड़ा ले और हम को लेपालक होने का दर्जा मिले।

<sup>6</sup> और चूँकि तुम बेटे हो, इसलिए खुदा ने अपने बेटे का रूह हमारे दिलों में भेजा जो 'अब्बा 'या'नी ऐ बाप, कह कर पुकारता है। <sup>7</sup> पस अब तू गुलाम नहीं बल्कि बेटा है, और जब बेटा हुआ तो खुदा के वसीले से वारिस भी हुआ।

???????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>8</sup> लेकिन उस वक़्त खुदा से नवाक़िफ़ होकर तुम उन मा'बूदों की गुलामी में थे जो अपनी ज़ात से खुदा नहीं, <sup>9</sup> मगर अब जो तुम ने खुदा को पहचाना, बल्कि खुदा ने तुम को पहचाना, तो उन कमज़ोर और निकम्मी शुरुआती बातों की तरफ़ किस तरह फिर रुजू होते हो, जिनकी दुबारा गुलामी करना चाहते हो?

<sup>10</sup> तुम दिनों और महीनों और मुक़र्रर वक़्तों और बरसों को मानते हो। <sup>11</sup> मुझे तुम्हारे बारे में डर लगता है, कहीं ऐसा न हो कि जो मेहनत मैंने तुम पर की है बेकार न हो जाए

<sup>12</sup> ऐ भाइयों! मैं तुमसे गुज़ारिश करता हूँ कि मेरी तरह हो जाओ, क्योंकि मैं भी तुम्हारी तरह हूँ; तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं। <sup>13</sup> बल्कि तुम जानते हो कि मैंने पहली बार 'जिस्म की कमज़ोरी की वजह से तुम को खुशख़बरी सुनाई थी। <sup>14</sup> और तुम ने मेरी उस जिस्मानी हालत को, जो तुम्हारी आजमाईश का ज़रिया थी, ना हक़ीर जाना, न उससे नफ़रत की; और खुदा के फ़रिश्ते बल्कि मसीह ईसा की तरह मुझे मान लिया।

<sup>15</sup> पस तुम्हारा वो खुशी मनाना कहाँ गया? मैं तुम्हारा गवाह हूँ कि हो सकता तो तुम अपनी आँखें भी निकाल कर मुझे दे देते। <sup>16</sup> तो क्या तुम से सच बोलने की वजह से मैं तुम्हारा दुश्मन बन गया?

<sup>17</sup> वो तुम्हें दोस्त बनाने की कोशिश तो करते हैं, मगर नेक नियत से नहीं; बल्कि वो तुम्हें अलग करना चाहते हैं, ताकि तुम उन्हीं को दोस्त बनाने की कोशिश करो। <sup>18</sup> लेकिन ये अच्छी बात है कि नेक अम्र में दोस्त बनाने की हर वक़्त कोशिश की जाए, न सिर्फ़ जब मैं तुम्हारे पास मौजूद हूँ।

<sup>19</sup> ऐ मेरे बच्चों, तुम्हारी तरफ़ से मुझे फिर बच्चा जनने के से दर्द लगे हैं, जब तक कि मसीह तुम में सूरत न पकड़ ले। <sup>20</sup> जी चाहता है कि अब तुम्हारे पास मौजूद होकर और तरह से बोलूँ क्योंकि मुझे तुम्हारी तरफ़ से शुभ है।

<sup>21</sup> मुझ से कहो तो, तुम जो शरी'अत के मातहत होना चाहते हो, क्या शरी'अत की बात को नहीं सुनते <sup>22</sup> ये

कलाम में लिखा है कि अब्रहाम के दो बेटे थे; एक लौंडी से और एक आज़ाद से। <sup>23</sup> मगर लौंडी का जिस्मानी तौर पर, और आज़ाद का बेटा वा'दे के वजह से पैदा हुआ।

<sup>24</sup> इन बातों में मिसाल पाई जाती है: इसलिए ये 'औरतें गोया दो; अहद हैं। एक कोह-ए-सीना पर का जिस से गुलाम ही पैदा होते हैं, वो हाजरा है। <sup>25</sup> और हाजरा 'अरब का कोह-ए-सीना है, और मौजूदा येरूशलेम उसका जवाब है, क्योंकि वो अपने लड़कों समेत गुलामी में है।

<sup>26</sup> मगर 'आलम — ए — बाला का येरूशलेम आज़ाद है, और वही हमारी माँ है। <sup>27</sup> क्योंकि लिखा है, "कि ऐ बाँझ, जिसके औलाद नहीं होती खुशी मनह, तू जो दर्द — ए — ज़िह से नावाक़िफ़ है, आवाज़ ऊँची करके चिल्ला;

क्योंकि बेकस छोड़ी हुई की औलाद है शौहर वाली की औलाद से ज्यादा होगी।

<sup>28</sup> पस ऐ भाइयों! हम इज्हाक़ की तरह वा'दे के फ़र्जन्द हैं। <sup>29</sup> और जैसे उस वक़्त जिस्मानी पैदाइश वाला रूहानी पैदाइश वाले को सताता था, वैसे ही अब भी होता है।

<sup>30</sup> मगर किताब — ए — मुक़द्दस क्या कहती है? ये कि "लौंडी और उसके बेटे को निकाल दे, क्योंकि लौंडी का बेटा आज़ाद के साथ हरगिज़ वारिस न होगा।" <sup>31</sup> पस ऐ भाइयों! हम लौंडी के फ़र्जन्द नहीं, बल्कि आज़ाद के हैं।

## 5

????? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

<sup>1</sup> मसीह ने हमे आज़ाद रहने के लिए आज़ाद किया है; पस क़ाईम रहो, और दोबारा गुलामी के जुवे में न जुतो।

<sup>2</sup> सुनो, मैं पौलुस तुमसे कहता हूँ कि अगर तुम ख़तना कराओगे तो मसीह से तुम को कुछ फ़ाइदा न होगा।

<sup>3</sup> बल्कि मैं हर एक ख़तना करने वाले आदमी पर फिर गवाही देता हूँ, कि उसे तमाम शरी'अत पर'अमल करना फ़र्ज़ है।

<sup>4</sup> तुम जो शरी'अत के वसीले से रास्तबाज़ ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग हो गए और फ़ज़ल से महरूम। <sup>5</sup> क्योंकि हम पाक रूह के ज़रिए, ईमान से रास्तबाज़ी की उम्मीद बर आने के मुन्तज़िर हैं। <sup>6</sup> और मसीह ईसा में न तो ख़तना कुछ काम का है न नामख़्तूनी मगर ईमान जो मुहब्बत की राह से असर करता है।

7 तुम तो अच्छी तरह दौड़ रहे थे किसने तुम्हें हक के मानने से रोक दिया। 8 ये तरगीब खुदा जिसने तुम्हें बुलाया उस की तरफ से नहीं है।

9 थोड़ा सा खमीर सारे गूँधे हुए आटे को खमीर कर देता है। 10 मुझे खुदावन्द में तुम पर ये भरोसा है कि तुम और तरह का खयाल न करोगे; लेकिन जो तुम्हें उलझा देता है, वो चाहे कोई हो सज़ा पाएगा।

11 और ऐ भाइयों! अगर मैं अब तक खतना का एलान करता हूँ, तो अब तक सताया क्यों जाता हूँ? इस सूरत में तो सलीब की ठोकर तो जाती रही। 12 काश कि तुम्हें बेक्रार करने वाले अपना तअल्लुक तोड़ लेते।

13 ऐ भाइयों! तुम आज्ञादी के लिए बुलाए तो गए हो, मगर ऐसा न हो कि ये आज्ञादी जिस्मानी बातों का मौक़ा, बने; बल्कि मुहब्बत की राह पर एक दूसरे की खिदमत करो। 14 क्योंकि पूरी शरी'अत पर एक ही बात से 'अमल हो जाता है, या; नी इससे कि "तू अपने पड़ोसी से अपनी तरह मुहब्बत रख।" 15 लेकिन अगर तुम एक दूसरे को फाड़ खाते हो, तो खबरदार रहना कि एक दूसरे को खत्म न कर दो।

16 मगर मैं तुम से ये कहता हूँ, रूह के मुताबिक़ चलो तो जिस्म की ख्वाहिश को हरगिज़ पूरा न करोगे। 17 क्योंकि जिस्म रूह के खिलाफ़ ख्वाहिश करता है और रूह जिस्म के खिलाफ़ है, और ये एक दूसरे के मुखालिफ़ हैं, ताकि जो तुम चाहो वो न करो। 18 और अगर तुम पाक रूह की हिदायत से चलते हो, तो शरी'अत के मातहत नहीं रहे।

19 अब जिस्म के काम तो ज़ाहिर हैं, या'नी कि हरामकारी, नापाकी, शहवत परस्ती, 20 बुत परसती, जादूगरी, अदावतें, झगड़ा, हसद, गुस्सा, तफ़रेके, जुदाइयाँ, बिद'अतें, 21 अदावत, नशाबाज़ी, नाच रंग और इनकी तरह, इनके ज़रिए तुम्हें पहले से कहे देता हूँ जिसको पहले बता चुका हूँ कि ऐसे काम करने वाले खुदा की बादशाही के वारिस न होंगे।

22 मगर पाक रूह का फल मुहब्बत, खुशी, इत्मीनान, सब्र, मेहरबानी, नेकी, ईमानदारी 23 हलीम, परहेज़गारी है; ऐसे कामों की कोई शरी; अत मुखालिफ़ नहीं। 24 और जो मसीह ईसा के हैं उन्होंने जिस्म को उसकी रगवतों और ख्वाहिशों समेत सलीब पर खींच दिया है।

25 अगर हम पाक रूह की वजह से ज़िंदा हैं, तो रूह के मुवाफ़िक़ चलना भी चाहिए। 26 हम बेजा फ़ख़र करके न एक दूसरे को चिढ़ाएँ, न एक दूसरे से जलें।

## 6

?? ?? ???? ???? ???? ???? ??

1 ऐ भाइयों! अगर कोई आदमी किसी कुसूर में पकड़ा भी जाए तो तुम जो रूहानी हो, उसको नर्म मिज़ाजी से बहाल करो, और अपना भी खयाल रख कहीं तू भी आज्ञमाइश में न पड़ जाए। 2 तुम एक दूसरे का बोझ उठाओ, और यूँ मसीह की शरी'अत को पूरा करो।

3 क्योंकि अगर कोई शख्स अपने आप को कुछ समझे और कुछ भी न हो, तो अपने आप को धोखा देता है।

4 पस हर शख्स अपने ही काम को आज्ञमाले, इस सूरत में उसे अपने ही बारे में फ़ख़र करने का मौक़ा होगा न कि दूसरे के बारे में। 5 क्योंकि हर शख्स अपना ही बोझ उठाएगा।

6 कलाम की ता'लीम पानेवाला, ता'लीम देनेवाले को सब अच्छी चीज़ों में शरीक करे। 7 धोखा न खाओ; खुदा ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि आदमी जो कुछ बोता है वही काटेगा। 8 जो कोई अपने जिस्म के लिए बोता है, वो जिस्म से हलाकत की फ़सल काटेगा; और जो रूह के लिए बोता है, वो पाक रूह से हमेशा की ज़िन्दगी की फ़सल काटेगा।

9 हम नेक काम करने में हिम्मत न हारें, क्योंकि अगर बेदिल न होंगे तो 'सही वक़्त पर काटेंगे। 10 पस जहाँ तक मौक़ा मिले सबके साथ नेकी करें खासकर अहले ईमान के साथ।

11 देखो, मैंने कैसे बड़े बड़े हरफों में तुम को अपने हाथ से लिखा है। 12 जितने लोग जिस्मानी ज़ाहिर होना चाहते हैं वो तुम्हें खतना कराने पर मजबूर करते हैं, सिर्फ़ इसलिए कि मसीह की सलीब के वजह से सताए न जाएं। 13 क्योंकि खतना कराने वाले खुद भी शरी'अत पर अमल नहीं करते, मगर तुम्हारा खतना इस लिए कराना चाहते हैं, कि तुम्हारी जिस्मानी हालत पर फ़ख़र करें।

14 लेकिन खुदा न करे कि मैं किसी चीज़ पर फ़ख़र, करूँ सिवा अपने खुदावन्द मसीह ईसा की सलीब के, जिससे दुनिया मेरे ए'तिबार से। 15 क्योंकि न खतना कुछ चीज़ है न नामख़्तूनी, बल्कि नए सिरे से मख़लूक होना। 16 और जितने इस क़ईदे पर चलें उन्हें, और खुदा के इस्राईल को इत्मीनान और रहम हासिल होता रहे।

17 आगे को कोई मुझे तकलीफ़ न दे, क्योंकि मैं अपने जिस्म पर मसीह के दाग़ लिए फिरता हूँ।

18 ऐ भाइयों! हमारे खुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़ल तुम्हारे साथ रहे। अमीन



## इफ़िसियों के नाम पौलूस रसूल का खत

?????????? ?? ?????

1 इफ़िसियों 1:1 पौलूस रसूल को इफ़िसियों की किताब का मुसन्निफ़ बतौर पहचान कराता है। इफ़िसियों की किताब जिस को पौलूस ने लिखा था इस को कलीसिया के इबदाई दिनों से ही ऊँचा मक़ाम दिया गया था और नामी बुज़ूर्गों जैसे क्लेमेन्ट आफ़ रोम, इग्नेशियस, हरमेस, और पाली कार्प इस किताब का हवाला पेश करते थे।

????? ????? ?? ??????? ?? ???

इस किताब को तक्ररीबन 60 ईस्वी के बीच लिखा गया।

उन दिनों जब पौलूस रोम में कैद थ तब उसने लिखा होगा।

?????? ????????????? ?????

इफ़िसियों की कलीसिया के लोग सबसे पहले इस किताब के क़बूल कुनिन्दा पाने वाले थे। पौलूस साफ़ तौर से इशारा करता है कि उस के मख्सूस करदा कारिर्इन ग़ैर यहूदी थे। इफ़िसियों 2:11 — 13 में पौलूस ख़ास तौर से बयान करता है कि उस के कारिर्इन जिस्म के रू से ग़ैर कौम वाले थे (2:11) और इस लिए वह यहूदियों की नज़र में वायदा के अहदों से नावाक़िफ़ बतौर थे (2:12) इसी तरह इफ़िसियों 3:1 में पौलूस इतला करता है कि उस के मख्सूस करदा कारिर्इन ग़ैर क़ौम के लोग थे जिन के सबब से वह कैद में था।

???? ?????????

पौलूस का इरादा था कि वह सब जो मसीह के जैसे कामिलियत का तवक्को रखते हैं वह इस तहरीर को हासिल करेंगे। इफ़िसियों की किताब में जो मल्फूफ़ है वह है: ज़हनी और अखलाकी तरबियत जिस में बढ़ना और तरक्की करना खुदा के सच्चे फ़र्जन्दों के लिए ज़रूरी है। इस के अलावा इफ़िसियों की किताब का मुताला एक ईमान्दार को कुब्वत अमल पैदा करने और ईमान में कायम रहने में मदद करेगा ताकि वह खुदा के मक़सद और बुलाहट को जो उस के लिए है पूरा कर सके। इफ़सुस के ईमान्दारों को पौलूस ने मख्सूस किया कि वह अपने मसीही ईमान में मजबूत हों सो उस ने कलीसिया की फ़ितरत और मक़सद को उन्हें समझाया। पौलूस ने इफ़िसियों की किताब में कई ऐसे अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल किया जो ग़ैर क़ौम से आये मसीही कारिर्इन

के जाने पहचाने अल्फ़ाज़ थे जैसे बदन का सिर, मा'भूरी, भेद, उम्र, हाकिम वग़ैरा वग़ैरा। उस ने इन अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल किया कि अपने कारिर्इन पर इस बात को ज़ाहिर करे कि मसीह सब बातों में अहम तीरन और आ'ला है कि वह तमाम मलाइक से, मज्हबी हुकूमत, कलीसियाई हुकूमत, पादरियों की दर्जावार तर्तीब इन सब से ऊँचा और आ'ला मर्तबा रखता है।

??????

मसीह में बर्कतें।

बैरूनी ख़ाका

कलीसिया के लोगों लिये इल्म-ए- इलाही — 1:1-

3:21

कलीसिया के लोगों लिये ज़िम्मेदारियां — 4:1-6:24

?????? ?? ?????

1 पौलूस की तरफ़ से जो खुदा की मर्ज़ी से ईसा मसीह का रसूल है, उन मुक़दसों के नाम खत जो इफ़िसुस शहर में हैं और ईसा मसीह में ईमान्दार हैं: 2 हमारे बाप खुदा और खुदावन्द ईसा मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इत्मीनान हासिल होता रहे।

3 हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के खुदा और बाप की हम्द हो, जिसने हम को मसीह में आसमानी मुक़ामों पर हर तरह की रूहानी बर्कत बख़्शी। 4 चुनाँचे उसने हम को दुनियाँ बनाने से पहले उसमें चुन लिया, ताकि हम उसके नज़दीक मुहब्बत में पाक और बे'ऐब हों!

5 खुदा अपनी मर्ज़ी के नेक इरादे के मुवाफ़िक् हमें अपने लिए पहले से मुक़र्रर किया कि ईसा मसीह के वसीले से खुदा लेपालक बेटे हों, 6 ताकि उसके उस फ़ज़ल के जलाल की सिताइश हो जो हमें उस 'अज़ीज़ में मुफ़्त बख़्शा।

7 हम को उसमें 'ईसा के खून के वसीले से मखलसी, या'नी कुसूरों की मु'आफ़ी उसके उस फ़ज़ल की दौलत के मुवाफ़िक् हासिल है, 8 जो खुदा ने हर तरह की हिक्मत और दानाई के साथ कसरत से हम पर नाज़िल किया

9 चुनाँचे उसने अपनी मर्ज़ी के राज़ को अपने उस नेक इरादे के मुवाफ़िक् हम पर ज़ाहिर किया, जिसे अपने में ठहरा लिया था 10 ताकि ज़मानो के पूरे होने का ऐसा इन्तिज़ाम हो कि मसीह में सब चीज़ों का मजमू'आ हो जाए, चाहे वो आसमान की हों चाहे ज़मीन की।

11 उसी में हम भी उसके इरादे के मुवाफ़िक् जो अपनी मर्ज़ी की मसलेहत से सब कुछ करता है, पहले से मुक़र्रर होकर मीरास बने। 12 ताकि हम जो पहले से मसीह की उम्मीद में थे, उसके जलाल की सिताइश का ज़रिया हो

13 और उसी में तुम पर भी, जब तुम ने कलाम — ए — हक़ को सुना जो तुम्हारी नजात की खुशख़बरी है और उस पर ईमान लाए, वादा की हुई पाक रूह की मुहर लगी। 14 पाक रूह ही खुदा की मिल्लियत की मख़लसी के लिए हमारी मीरास की पेशगी है, ताकि उसके जलाल की सिताइश हो।

15 इस वजह से मैं भी उस ईमान का, जो तुम्हारे दरमियान खुदावन्द ईसा' पर है और सब मुक़द्दसों पर ज़ाहिर है, हाल सुनकर। 16 तुम्हारे ज़रिए शुक़र करने से बा'ज़ नहीं आता, और अपनी दु'आओं में तुम्हें याद किया करता हूँ।

17 कि हमारे खुदावन्द ईसा' मसीह का खुदा जो जलाल का बाप है, तुम्हें अपनी पहचान में हिक्मत और मुक़ाशफ़ा की रूह बरख़्शे; 18 और तुम्हारे दिल की आँखें रौशन हो जाएँ ताकि तुम को मालूम हो कि उसके बुलाने से कैसी कुछ उम्मीद है, और उसकी मीरास के जलाल की दौलत मुक़द्दसों में कैसी कुछ है, 19 और हम ईमान लानेवालों के लिए उसकी बड़ी कुदरत क्या ही अज़ीम है। उसकी बड़ी कुव्वत की तासीर के मुवाफ़िक़, 20 जो उसने मसीह में की, जब उसे मुर्दों में से जिला कर अपनी दहनी तरफ़ आसमानी मुक़ामों पर बिठाया, 21 और हर तरह की हुकूमत और इख़्तियार और कुदरत और रियासत और हर एक नाम से बहुत ऊँचा किया, जो न सिर्फ़ इस जहान में बल्कि आनेवाले जहान में भी लिया जाएगा;

22 और सब कुछ उसके पाँव तले कर दिया; और उसको सब चीज़ों का सरदार बनाकर कलीसिया को दे दिया, 23 ये 'ईसा का बदन है, और उसी की मा'मूरी जो हर तरह से सबका मा'मूर करने वाला है।

## 2

2222 22 222 2222222 2222 222

1 और उसने तुम्हें भी ज़िन्दा किया जब अपने कुसूरों और गुनाहों की वजह से मुर्दा थे। 2 जिनमें तुम पहले दुनियाँ की रविश पर चलते थे, और हवा की 'अमलदारी के हाकिम या'नी उस रूह की पैरवी करते थे जो अब नाफ़रमानी के फ़रज़न्दों में तासीर करती है। 3 इनमें हम भी सबके सब पहले अपने जिस्म की ख़्वाहिशों में ज़िन्दगी गुज़ारते और जिस्म और 'अक्ल के इरादे पुरे करते थे, और दूसरों की तरह फ़ितरत ग़ज़ब के फ़र्ज़न्द थे।

4 मगर खुदा ने अपने रहम की दौलत से, उस बड़ी मुहब्बत की वजह से जो उसने हम से की, 5 कि अगर्चे हम अपने गुनाहों में मुर्दा थे तो भी उसने हमें मसीह

के साथ ज़िन्दा कर दिया आपको खुदा के फ़ज़ल ही से नजात मिली है 6 और मसीह ईसा में शामिल करके उसके साथ जिलाया, और आसमानी मुक़ामों पर उसके साथ बिठाया। 7 ताकि वो अपनी उस महरबानी से जो मसीह ईसा में हम पर है, आनेवाले ज़मानों में अपने फ़ज़ल की अज़ीम दौलत दिखाए।

8 क्योंकि तुम को ईमान के वसीले फ़ज़ल ही से नजात मिली है; और ये तुम्हारी तरफ़ से नहीं, खुदा की बारिख़िश है, 9 और न आ'माल की वजह से है, ताकि कोई फ़ख़र न करे। 10 क्योंकि हम उसकी कारीगरी हैं, और ईसा मसीह में उन नेक आ'माल के वास्ते पैदा हुए जिनको खुदा ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया था।

11 पस याद करो कि तुम जो जिस्मानी तौर से ग़ैर — कौम वाले हो (और वो लोग जो जिस्म में हाथ से किए हुए ख़तने की वजह से कहलाते हैं, तुम को नामख़तून कहते हैं) 12 अगले ज़माने में मसीह से जुदा, और इस्राईल की सल्तनत से अलग, और वा'दे के 'अहदों से नावाक़िफ़, और नाउम्मीद और दुनियाँ में खुदा से जुदा थे।

13 मगर तुम जो पहले दूर थे, अब ईसा मसीह' में मसीह के खून की वजह से नज़दीक हो गए हो।

14 क्योंकि वही हमारी सुलह है, जिसने दोनों को एक कर लिया और जुदाई की दीवार को जो बीच में थी ढा दिया, 15 चुनाँचे उसने अपने जिस्म के ज़रिए से दुश्मनी, या'नी वो शरी'अत जिसके हुक्म ज़ाबितों के तौर पर थे, मौकूफ़ कर दी ताकि दोनों से अपने आप में एक नया इंसान पैदा करके सुलह करा दे; 16 और सलीब पर दुश्मनी को मिटा कर और उसकी वजह से दोनों को एक तन बना कर खुदा से मिलाए।

17 और उसने आ कर तुम यहूदी जो खुदा के नज़दीक थे, और ग़ैर यहूदी जो खुदा से दूर थे दोनों को सुलह की खुशख़बरी दी। 18 क्योंकि उसी के वसीले से हम दोनों की, एक ही रूह में बाप के पास रसाई होती है।

19 पस अब तुम परदेसी और मुसाफ़िर नहीं रहे, बल्कि मुक़द्दसों के हमवतन और खुदा के घराने के हो गए। 20 और रसूलों और नबियों की नींव पर, जिसके कोने के सिरे का पत्थर खुद ईसा मसीह है, तामीर किए गए हो। 21 उसी में हर एक 'इमारत मिल — मिलाकर खुदावन्द में एक पाक मक्बिदस बनता जाता है। 22 और तुम भी उसमें बाहम ता'मीर किए जाते हो, ताकि रूह में खुदा का मस्कन बनो।

## 3

?????? ?? ????? ?????????? ?????????? ?????

1 इसी वजह से मैं पौलुस जो तुम ग़ैर — क्रौम वालों की खातिर ईसा मसीह का कैदी हूँ। 2 शायद तुम ने खुदा के उस फ़ज़ल के इन्तज़ाम का हाल सुना होगा, जो तुम्हारे लिए मुझ पर हुआ।

3 या'नी ये कि वो भेद मुझे मुकाशफ़ा से मा'लूम हुआ। चुनाँचे मैंने पहले उसका थोड़ा हाल लिखा है, 4 जिसे पढ़कर तुम मा'लूम कर सकते हो कि मैं मसीह का वो राज़ किस क़दर समझता हूँ। 5 जो और ज़मानो में बनी आदम को इस तरह मा'लूम न हुआ था, जिस तरह उसके मुक़द्दस रसूलों और नबियों पर पाक रूह में अब ज़ाहिर हो गया है;

6 या'नी ये कि ईसा मसीह में ग़ैर — क्रौम खुशख़बरी के वसीले से मीरास में शरीक और बदन में शामिल और वा'दों में दाख़िल हैं। 7 और खुदा के उस फ़ज़ल की बख़्शिश से जो उसकी कुदरत की तासीर से मुझ पर हुआ, मैं इस खुशख़बरी का खादिम बना।

8 मुझ पर जो सब मुक़द्दसों में छोटे से छोटा हूँ, फ़ज़ल हुआ कि ग़ैर — क्रौमों को मसीह की बेक़यास दौलत की खुशख़बरी दूँ। 9 और सब पर ये बात रोशन करूँ कि जो राज़ अज़ल से सब चीज़ों के पैदा करनेवाले खुदा में छुपा रहा उसका क्या इन्तज़ाम है।

10 ताकि अब कलीसिया के वसीले से खुदा की तरह तरह की हिक्मत उन हुकूमतवालों और इस्तिyार वालों को जो आसमानी मुक़ामों में हैं, मा'लूम हो जाए। 11 उस अज़ली इरादे के जो उसने हमारे खुदावन्द ईसा मसीह में किया था,

12 जिसमें हम को उस पर ईमान रखने की वजह से दिलेरी है और भरोसे के साथ रसाई। 13 पस मैं गुज़ारिश करता हूँ कि तुम मेरी उन मुसीबतों की वजह से जो तुम्हारी खातिर सहता हूँ हिम्मत न हारो, क्यूँकि वो तुम्हारे लिए 'इज्जत का ज़रिया हैं।

14 इस वजह से मैं उस बाप के आगे घुटने टेकता हूँ, 15 जिससे आसमान और ज़मीन का हर एक खानदान नामज़द है। 16 कि वो अपने जलाल की दौलत के मुवाफ़िक़ तुम्हें ये 'इनायत करे कि तुम खुदा की रूह से अपनी बातिनी इंसान ियत में बहुत ही ताक़तवर हो जाओ,

17 और ईमान के वसीले से मसीह तुम्हारे दिलों में सुकूनत करे ताकि तुम मुहब्बत में जड़ पकड़ के और बुनियाद काईम करके, 18 सब मुक़द्दसों समेत बख़ूबी

मा'लूम कर सको कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई और ऊँचाई और गहराई कितनी है, 19 और मसीह की उस मुहब्बत को जान सको जो जानने से बाहर है ताकि तुम खुदा की सारी मा'मूरी तक मा'मूर हो जाओ।

20 अब जो ऐसा क़ादिर है कि उस कुदरत के मुवाफ़िक़ जो हम में तासीर करती है, हमारी गुज़ारिश और खयाल से बहुत ज़्यादा काम कर सकता है, 21 कलीसिया में और ईसा मसीह में पुश्त — दर — पुश्त और हमेशा हमेशा उसकी बड़ाई होती रहे। आमीन।

## 4

?? ??????? ??? ??????

1 पस मैं जो खुदावन्द में कैदी हूँ, तुम से गुज़ारिश करता हूँ कि जिस बुलावे से तुम बुलाए गए थे उसके मुवाफ़िक़ चाल चलो, 2 या'नी कमाल दरियाई और नर्मदिल के साथ सबर करके मुहब्बत से एक दुसरे की बर्दाश्त करो; 3 सुलह सलामती के बंधन में रहकर रूह की सौग़ात काईम रखने की पूरी कोशिश करें

4 एक ही बदन है और एक ही रूह; चुनाँचे तुम्हें जो बुलाए गए थे, अपने बुलाए जाने से उम्मीद भी एक ही है। 5 एक ही खुदावन्द, है एक ही ईमान है, एक ही बपतिस्मा, 6 और सब का खुदा और बाप एक ही है, जो सब के ऊपर और सब के दर्मियान और सब के अन्दर है।

7 और हम में से हर एक पर मसीह की बाख़्शिश के अंदाज़े के मुवाफ़िक़ फ़ज़ल हुआ है। 8 इसी वास्ते वो फ़रमाता है,

“जब वो 'आलम — ए — बाला पर चढ़ा तो कैदियों को साथ ले गया, और आदमियों को इन'आम दिए।”

9 (उसके चढ़ने से और क्या पाया जाता है? सिवा इसके कि वो ज़मीन के नीचे के 'इलाक़े में उतरा भी था। 10 और ये उतरने वाला वही है जो सब आसमानों से भी ऊपर चढ़ गया, ताकि सब चीज़ों को मा'मूर करे)।

11 और उसी ने कुछ को रसूल, और कुछ को नबी, और कुछ को मुबशिशर, और कुछ को चरवाहा और उस्ताद बनाकर दे दिया। 12 ताकि मुक़द्दस लोग कामिल बनें और ख़िदमत गुज़ारी का काम किया जाए, और मसीह का बदन बढ़ जाएँ 13 जब तक हम सब के सब खुदा के बेटे के ईमान और उसकी पहचान में एक न हो जाएँ और पूरा इंसान न बनें, या'नी मसीह के पुरे क़द के अन्दाज़े तक न पहुँच जाएँ।

14 ताकि हम आगे को बच्चे न रहें और आदमियों की बाज़ीगरी और मक्कारी की वजह से उनके गुमराह करनेवाले इरादों की तरफ़ हर एक ता'लीम के झोंके से

मौजों की तरह उछलते बहते न फिरें <sup>15</sup> बल्कि मुहब्बत के साथ सच्चाई पर काईम रहकर और उसके साथ जो सिर है, या; नी मसीह के साथ, पैवस्ता हो कर हर तरह से बढ़ते जाएँ। <sup>16</sup> जिससे सारा बदन, हर एक जोड़ की मदद से पैवस्ता होकर और गठ कर, उस तासीर के मुवाफ़िक़ जो बक्रदर — ए — हर हिस्सा होती है, अपने आप को बढ़ाता है ताकि मुहब्बत में अपनी तरक्की करता जाए।

<sup>17</sup> इस लिए मैं ये कहता हूँ और खुदावन्द में जताए देता हूँ कि जिस तरह ग़ैर — कौमें अपने बेहूदा खयालात के मुवाफ़िक़ चलती हैं, तुम आइन्दा को उस तरह न चलना। <sup>18</sup> क्योंकि उनकी 'अक्ल तारीक़ हो गई है, और वो उस नादानी की वजह से जो उनमें है और अपने दिलों की सख्ती के ज़रिए खुदा की ज़िन्दगी से अलग हैं। <sup>19</sup> उन्होंने खामोशी के साथ शहवत परस्ती को इस्तिyar किया, ताकि हर तरह के गन्दे काम बड़े शोक से करें।

<sup>20</sup> मगर तुम ने मसीह की ऐसी ता'लीम नहीं पाई। <sup>21</sup> बल्कि तुम ने उस सच्चाई के मुताबिक़ जो ईसा में है, उसी की सुनी और उसमें ये ता'लीम पाई होगी। <sup>22</sup> कि तुम अपने अगले चाल — चलन की पुरानी इंसान ियत को उतार डालो, जो धोखे की शहवतों की वजह से खराब होती जाती है

<sup>23</sup> और अपनी 'अक्ल की रूहानी हालात में नए बनते जाओ, <sup>24</sup> और नई इंसान ियत को पहनो जो खुदा के मुताबिक़ सच्चाई की रास्तबाज़ी और पाकीज़गी में पैदा की गई है।

<sup>25</sup> पस झूठ बोलना छोड़ कर हर एक शख्स अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के 'बदन हैं। <sup>26</sup> गुस्सा तो करो, मगर गुनाह न करो। सूरज के डूबने तक तुम्हारी नाराज़गी न रहे, <sup>27</sup> और इब्लीस को मौक़ा न दो।

<sup>28</sup> चोरी करने वाला फिर चोरी न करे, बल्कि अच्छा हुनर इस्तिyar करके हाथों से मेहनत करे ताकि मुहताज को देने के लिए उसके पास कुछ हो। <sup>29</sup> कोई गन्दी बात तुम्हारे मुँह से न निकले, बल्कि वही जो ज़रूरत के मुवाफ़िक़ तरक्की के लिए अच्छी हो, ताकि उससे सुनने वालों पर फ़ज़ल हो। <sup>30</sup> और खुदा के पाक रूह को ग़मगीन न करो, जिससे तुम पर रिहाई के दिन के लिए मुहर हुई।

<sup>31</sup> हर तरह की गर्म मिज़ाजी, और क्रहर, और गुस्सा, और शोर — ओ — गुल, और बुराई, हर किसम की बद ख्वाही समेत तुम से दूर की जाएँ। <sup>32</sup> और एक दूसरे पर मेहरबान और नर्मदिल हो, और जिस तरह खुदा ने मसीह

में तुम्हारे कुसूर मु'आफ़ किए हैं, तुम भी एक दूसरे के कुसूर मु'आफ़ करो।

## 5

????? ??? ???? ?

<sup>1</sup> पस 'अज़ीज़ बेटों की तरह खुदा की तरह बनो, <sup>2</sup> और मुहब्बत से चलो जैसे मसीह ने तुम से मुहब्बत की, और हमारे वास्ते अपने आपको खुशबू की तरह खुदा की नज़र करके कुर्बान किया।

<sup>3</sup> जैसे के मुक़दसों को मुनासिब है, तुम में हरामकारी और किसी तरह की नापाकी या लालच का ज़िक़र तक न हो; <sup>4</sup> और न बेशर्मी और बेहूदा गोई और ठट्ठा बाज़ी का, क्योंकि यह लायक़ नहीं; बल्कि बर'अक्स इसके शुक्र गुज़ारी हो।

<sup>5</sup> क्योंकि तुम ये खूब जानते हो कि किसी हरामकार, या नापाक, या लालची की जो बुत परस्त के बराबर है, मसीह और खुदा की बादशाही में कुछ मीरास नहीं। <sup>6</sup> कोई तुम को बे फ़ाइदा बातों से धोखा न दे, क्योंकि इन्हीं गुनाहों की वजह से नाफ़रमानों के बेटों पर खुदा का ग़ज़ब नाज़िल होता है। <sup>7</sup> पस उनके कामों में शरीक न हो।

<sup>8</sup> क्योंकि तुम पहले अंधेरे थे; मगर अब खुदावन्द में नूर हो, पस नूर के बेटे की तरह चलो, <sup>9</sup> (इसलिए कि नूर का फल हर तरह की नेकी और रास्तबाज़ी और सच्चाई है) <sup>10</sup> और तज़ुर्बे से मा'लूम करते रहो के खुदावन्द को क्या पसन्द है। <sup>11</sup> और अंधेरे के बे फल कामों में शरीक न हो, बल्कि उन पर मलामत ही किया करो। <sup>12</sup> क्योंकि उन के छुपे हुए कामों का ज़िक़र भी करना शर्म की बात है।

<sup>13</sup> और जिन चीज़ों पर मलामत होती है वो सब नूर से ज़ाहिर होती है, क्योंकि जो कुछ ज़ाहिर किया जाता है वो रोशन हो जाता है। <sup>14</sup> इसलिए वो कलाम में फ़रमाता है,

“ऐ सोने वाले, जाग

और मुर्दों में से जी उठ, तो मसीह का नूर तुझ पर चमकेगा।”

<sup>15</sup> पस ग़ौर से देखो कि किस तरह चलते हो, नादानों की तरह नहीं बल्कि अक्लमंदों की तरह चलो; <sup>16</sup> और वक़्त को ग़नीमत जानो क्योंकि दिन बुरे हैं। <sup>17</sup> इस वजह से नादान न बनो, बल्कि खुदावन्द की मर्ज़ी को समझो कि क्या है।

<sup>18</sup> और शराब में मतवाले न बनो क्योंकि इससे बदचलनी पेश आती है, बल्कि पाक रूह से मा'मूर होते जाओ, <sup>19</sup> और आपस में दु'आएँ और गीत और रूहानी



गरज़लें गाया करो, और दिल से खुदावन्द के लिए गाते बजाते रहा करो। <sup>20</sup> और सब बातों में हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के नाम से हमेशा खुदा बाप का शुक्र करते रहो। <sup>21</sup> और मसीह के खौफ़ से एक दुसरे के फ़रमाबरदार रहो।

<sup>22</sup> ऐ बीवियो, अपने शौहरों की ऐसी फ़रमाबरदार रहो जैसे खुदावन्द की। <sup>23</sup> क्यूँकि शौहर बीवी का सिर है, जैसे के मसीह कलीसिया का सिर है और वो खुद बदन का बचाने वाला है। <sup>24</sup> लेकिन जैसे कलीसिया मसीह की फ़रमाबरदार है, वैसे बीवियाँ भी हर बात में अपने शौहरों की फ़रमाबरदार हों।

<sup>25</sup> ऐ शौहरो! अपनी बीवियों से मुहब्बत रखो, जैसे मसीह ने भी कलीसिया से मुहब्बत करके अपने आप को उसके वास्ते मौत के हवाले कर दिया, <sup>26</sup> ताकि उसको कलाम के साथ पानी से गुस्ल देकर और साफ़ करके मुक़द्दस बनाए, <sup>27</sup> और एक ऐसी जलाल वाली कलीसिया बना कर अपने पास हाज़िर करे, जिसके बदन में दाग़ या झुर्री या कोई और ऐसी चीज़ न हो, बल्कि पाक और बे'ऐब हो।

<sup>28</sup> इसी तरह शौहरों को ज़रूरी है कि अपनी बीवियों से अपने बदन की तरह मुहब्बत रखें। जो अपने बीवी से मुहब्बत रखता है, वो अपने आप से मुहब्बत रखता है। <sup>29</sup> क्यूँकि कभी किसी ने अपने जिस्म से दुश्मनी नहीं की बल्कि उसको पालता और परवरिश करता है, जैसे कि मसीह कलीसिया को। <sup>30</sup> इसलिए कि हम उसके बदन के हिस्सा हैं।

<sup>31</sup> “इसी वजह से आदमी बाप से और माँ से जुदा होकर अपनी बीवी के साथ रहेगा, और वो दोनों एक जिस्म होंगे।” <sup>32</sup> ये राज़ तो बड़ा है, लेकिन मैं मसीह और कलीसिया के ज़रिए कहता हूँ। <sup>33</sup> बहरहाल तुम में से भी हर एक अपनी बीवी से अपनी तरह मुहब्बत रखे, और बीवी इस बात का खयाल रखे कि अपने शौहर से डरती रहे।

## 6

?????????? ?? ???-???

<sup>1</sup> ऐ फ़र्जन्दों! खुदावन्द में अपने माँ — बाप के फ़रमाबरदार रहो, क्यूँकि यह ज़रूरी है। <sup>2</sup> “अपने बाप और माँ की इज्जत कर (ये पहला हुक्म है जिसके साथ वा'दा भी है) <sup>3</sup> ताकि तेरा भला हो, और तेरी ज़मीन पर उम्र लम्बी हो।”

<sup>4</sup> ऐ औलाद वालो! तुम अपने फ़र्जन्दों को गुस्सा न दिलाओ, बल्कि खुदावन्द की तरफ़ से तरबियत और नसीहत दे देकर उनकी परवरिश करो।

<sup>5</sup> ऐ नौकरो! जो जिस्मानी तौर से तुम्हारे मालिक हैं, अपनी साफ़ दिली से डरते और काँपते हुए उनके ऐसे फ़रमाबरदार रहो जैसे मसीह के; <sup>6</sup> और आदमियों को खुश करनेवालों की तरह दिखावे के लिए खिदमत न करो, बल्कि मसीह के बन्दों की तरह दिल से खुदा की मर्ज़ी पूरी करो। <sup>7</sup> और खिदमत को आदमियों की नहीं बल्कि खुदावन्द की जान कर, जी से करो। <sup>8</sup> क्यूँकि, तुम जानते हो कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे गुलाम हो या चाहे आज़ाद, खुदावन्द से वैसा ही पाएगा।

<sup>9</sup> और ऐ मलिको! तुम भी धमकियाँ छोड़ कर उनके साथ ऐसा सुलूक करो; क्यूँकि तुम जानते हो उनका और तुम्हारा दोनों का मालिक आसमान पर है, और वो किसी का तरफ़दार नहीं।

<sup>10</sup> गरज़ खुदावन्द में और उसकी कुदरत के ज़ोर में मज़बूत बनो। <sup>11</sup> खुदा के सब हथियार बाँध लो ताकि तुम इब्नीस के इरादों के मुक़ाबिले में क़ाईम रह सको।

<sup>12</sup> क्यूँकि हमें खून और गोश्त से कुशती नहीं करना है, बल्कि हुकूमतवालों और इस्त्रियार वालों और इस दुनियाँ की तारीकी के हाकिमों और शरारत की उन रूहानी फ़ौजों से जो आसमानी मुक़ामों में है। <sup>13</sup> इस वास्ते खुदा के सब हथियार बाँध लो ताकि बुरे दिन में मुक़ाबिला कर सको, और सब कामों को अंजाम देकर क़ाईम रह सको।

<sup>14</sup> पस सच्चाई से अपनी कमर कसकर, और रास्तबाज़ी का बख़्तर लगाकर, <sup>15</sup> और पाँव में सुलह की खुशख़बरी की तैयारी के जूते पहन कर, <sup>16</sup> और उन सब के साथ ईमान की सिपर लगा कर क़ाईम रहो, जिससे तुम उस शरीर के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको;

<sup>17</sup> और नजात का टोप, और रूह की तलवार, जो खुदा का कलाम है ले लो; <sup>18</sup> और हर वक़्त और हर तरह से रूह में दुआ और मिन्नत करते रहो, और इसी गरज़ से जागते रहो कि सब मुक़द्दसों के वास्ते बिला नागा दुआ किया करो,

<sup>19</sup> और मेरे लिए भी ताकि बोलने के वक़्त मुझे कलाम करने की तौफ़ीक़ हो, जिससे मैं खुशख़बरी के राज़ को दिलेरी से ज़ाहिर करूँ, <sup>20</sup> जिसके लिए ज़ंजीर से जकड़ा हुआ एल्वी हूँ, और उसको ऐसी दिलेरी से बयान करूँ जैसा बयान करना मुझ पर फ़र्ज है।

<sup>21</sup> तुख़िकुस जो प्यारा भाई खुदावन्द में दियानतदार खादिम है, तुम्हें सब बातें बता देगा ताकि तुम भी मेरे हाल से वाक़िफ़ हो जाओ कि मैं किस तरह रहता हूँ।

<sup>22</sup> उसको मैं ने तुम्हारे पास इसी वास्ते भेजा है कि तुम

हमारी हालत से वाकिफ़ हो जाओ और वो तुम्हारे दिलों को तसल्ली दे।

<sup>23</sup> खुदा बाप और खुदावन्द ईसा मसीह की तरफ़ से भाइयों को इत्मीनान हासिल हो, और उनमें ईमान के साथ मुहब्बत हो। <sup>24</sup> जो हमारे खुदावन्द ईसा मसीह से लाज़वाल मुहब्बत रखते हैं, उन सब पर फ़ज़ल होता रहे।

## फ़िलिप्पियों के नाम पौलूस रसूल का खत

?????????? ?? ?????

1 पौलूस इस किताब का मुसन्निफ़ होने का दावा करता है (1:1) और तमाम बोल चाल की जुबान, तहरीरी उसलूब और तारीकी हकीकत — ए — वाकिआत उस के मुसन्निफ़ होने की तस्दीक करते हैं। इब्तिदाई कलीसिया भी पौलूस को इस किताब का मुसन्निफ़ होने की पहचान और इस्तियार की बाबत बा — वज़ा' बा — उसूल दावा पेश करते हैं। फ़िलिप्पियों के नाम खत मसीह के मिज़ाज को वाज़ेह करती है; 2:1-11 इस खत को लिखने के दौरान हालांकि पौलूस कैदी था मगर वह खुशी से भरपूर था। यह खत हम को सिखाता है कि दुख तकलीफ़ और मुसीबत के वक़्त भी खुश और शादमान रह सकते हैं। हम शादमान हैं इसलिए कि मसीह में हम को उम्मीद है।

????? ????? ?? ????????? ?? ???

इस के तस्नीफ़ की तारीख़ तक्रीबन 61 ईस्वी के बीच है।

फ़िलिप्पियों के इस खत को पौलूस ने रोम से लिखा जब वह वहां के जेलखाने में कैद था (आमाल 28:30) फ़िलिप्पियों के नाम खत को इपफ़रूदितुस के हाथ भिजवाना था जो फ़िलिप्पी की कलीसिया से माली इम्दाद लेकर पौलूस के पास रोम में आया था (फ़िलिप्पियों 2:25; 4:18) मगर रोम में इपफ़रूदितुस के आने के दौरान वह बीमार पड़ गया था जिस के सबब से उस के घर पहुंचने में देर हो गई थी और इस लिए यह खत भी फ़िलिप्पी की कलीसिया को देर में हासिल हुई थी (2:26-27)।

?????? ????????????? ?????? ?????

फ़िलिप्पी शहर में मसीहियों की कलीसिया या फ़िलिप्पी जो मकिदुनिया जिले का एक तरक्की याफ़ता शहर था।

??? ?????????

पौलूस इस कलीसिया की बाबत जानना चाहता था कि उस के कैद की हालत में कैसा कुछ चल रहा था; (1:12-26) और उस के क्या मनसूबे थे? क्या वह रिहा होने वाला था? (फ़िलिप्पियों 2:23 — 24) कलीसिया में ऐसा लग रहा था कि कुछ इख़तिलाफ़ और तफ़रिक् हो रहे थे इसलिए पौलूस हौसला अफ़ज़ाई और हलीमी

बरतने के लिए लिखता है कि आपस में इतिहाद कायम रखा जाए; (2:1 — 18; 4:2 — 3) पौलूस जो राइयाना इल्म — ए — इलाही का माहिर था उन रहनुमाओं को लिखता है जो मनफ़ी ता'लीम देते थे और झूठे उस्तादों के अंजाम की बाबत बताता है; (3:2-3) में पौलूस फ़िलिप्पी की कलीसिया को लिखता है वह तीमुथियुस को उन के पास भेजेगा ताकि वह कलीसिया का हाल दर्याफ़्त करे और इपफ़रादितुस की सेहत और उसके मनसूबे की बाबत बताए; (2:19 — 30) में पौलूस ने उन्हें उस का ख़्याल रखने और जो नज़राना भेजा गया था उसके लिए उनका शुकरिया अदा करने के लिए भी लिखा (4:10-20)।

??????

1 मसीह में खुशहाल ज़िन्दगी।

बैरूनी खाका

1. सलाम से मुता'ल्लिक — 1:1, 2

2. पौलूस की हालत और कलीसिया के लिए हौसला अफ़ज़ाई — 1:3-2:30

3. झूटी ता'लीम के ख़िलाफ़ तंबीह — 3:1-4:1

4. आखरी नसीहतें — 4:2-9

5. शुकरिया के अल्फ़ाज़ — 4:10-20

6. आखरी सलाम — 4:21-23

?????? ?? ?????

1 मसीह ईसा के बन्दों पौलूस और तीमुथियुस की तरफ़ से, फ़िलिप्पियों शहर के सब मुक़द्दसों के नाम जो मसीह ईसा में हैं; निगहबानों \*और खादिमों समेत खत।  
2 हमारे बाप खुदा और खुदावन्द 'ईसा मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इत्मीनान हासिल होता रहे।

3 मैं जब कभी तुम्हें याद करता हूँ, तो अपने खुदा का शुक्र बजा लाता हूँ; 4 और हर एक दुआ में जो तुम्हारे लिए करता हूँ, हमेशा खुशी के साथ तुम सब के लिए दरख्वास्त करता हूँ। 5 इस लिए कि तुम पहले दिन से लेकर आज तक खुशख़बरी के फैलाने में शरीक रहे हो। 6 और मुझे इस बात का भरोसा है कि जिस ने तुम में नेक काम शुरू किए हैं, वो उसे ईसा मसीह के आने तक पूरा कर देगा।

7 चुनाँचे ज़रूरी है कि मैं तुम सब के बारे में ऐसा ही खयाल करूँ, क्योंकि तुम मेरे दिल में रहते हो, और कैद और खुशख़बरी की जवाब दिही और सुबूत में तुम सब मेरे साथ फ़ज़ल में शरीक हो। 8 खुदा मेरा गवाह है कि मैं ईसा मसीह जैसी महब्वत करके तुम सब को चाहता हूँ।

\* 1:1 1:1 निगहबानों बिशप, पासवान या खादिम होते थे

9 और ये दुआ करता हूँ कि तुम्हारी मुहब्बत 'इल्म और हर तरह की तमीज़ के साथ और भी ज्यादा होती जाए, 10 ताकि 'अच्छी अच्छी बातों को पसन्द कर सको, और मसीह के दीन में पाक साफ़ दिल रहो, और ठोकर न खाओ; 11 और रास्तबाज़ी के फल से जो ईसा मसीह के ज़रिए से है, भरे रहो, ताकि खुदा का जलाल ज़ाहिर हो और उसकी सिताइश की जाए।

12 ए भाइयों! मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो कि जो मुझ पर गुज़रा, वो खुशख़बरी की तरक्की का ज़रिए हुआ। 13 यहाँ तक कि मैं कैसरी सिपाहियों की सारी पलटन और बाकी सब लोगों में मशहूर हो गया कि मैं मसीह के वास्ते कैद हूँ; 14 और जो खुदावन्द में भाई हैं, उनमें अक्सर मेरे कैद होने के ज़रिए से दिलेर होकर बेखौफ़ खुदा का कलाम सुनाने की ज्यादा हिम्मत करते हैं।

15 कुछ तो हसद और झगड़े की वजह से मसीह का ऐलान करते हैं और कुछ नेक निती से। 16 एक तो मुहब्बत की वजह से मसीह का ऐलान करते हैं कि मैं खुशख़बरी की जवाबदेही के वास्ते मुक़र्रर हूँ। 17 अगर दूसरे तफ़रके की वजह से न कि साफ़ दिली से, बल्कि इस ख़याल से कि मेरी कैद में मेरे लिए मुसीबत पैदा करें।

18 पस क्या हुआ? सिर्फ़ ये की हर तरह से मसीह की मनादी होती है, चाहे बहाने से हो चाहे सच्चाई से, और इस से मैं खुश हूँ और रहूँगा भी। 19 क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी दुः आ और 'ईसा मसीह के रूह के इन'आम से इन का अन्जाम मेरी नजात होगा।

20 चुनाँचे मेरी दिली आरज़ू और उम्मीद यही है कि, मैं किसी बात में शर्मिन्दा न हूँ बल्कि मेरी कमाल दिलेरी के ज़रिए जिस तरह मसीह की ताज़ीम मेरे बदन की वजह से हमेशा होती रही है उसी तरह अब भी होगी, चाहे मैं ज़िंदा रहूँ चाहे मरूँ। 21 क्योंकि ज़िंदा रहना मेरे लिए मसीह और मरना नफ़ा'।

22 लेकिन अगर मेरा जिस्म में ज़िंदा रहना ही मेरे काम के लिए फ़ाइदा है, तो मैं नहीं जानता किसे पसन्द करूँ। 23 मैं दोनों तरफ़ फँसा हुआ हूँ; मेरा जी तो ये चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूँ, क्योंकि ये बहुत ही बेहतर है; 24 मगर जिस्म में रहना तुम्हारी खातिर ज्यादा ज़रूरी है।

25 और चूँकि मुझे इसका यकीन है इसलिए मैं जानता हूँ कि ज़िंदा रहूँगा, ताकि तुम ईमान में तरक्की करो और उस में खुश रहो; 26 और जो तुम्हें मुझ पर फ़ख़र है वो

मेरे फिर तुम्हारे पास आनेसे मसीह ईसा में ज्यादा हो जाए

27 सिर्फ़ ये करो कि मसीह में तुम्हारा चाल चलन मसीह के खुशख़बरी के मुवाफ़िक़ रहे ताकि; चाहे मैं आऊँ और तुम्हें देखूँ चाहे न आऊँ, तुम्हारा हाल सुनूँ कि तुम एक रूह में क़ाईम हो, और ईन्जील के ईमान के लिए एक जान होकर कोशिश करते हो,

28 और किसी बात में मुखालिफ़ों से दहशत नहीं खाते। ये उनके लिए हलाकत का साफ़ निशान है; लेकिन तुम्हारी नजात का और ये खुदा की तरफ़ से है। 29 क्योंकि मसीह की खातिर तुम पर ये फ़जल हुआ कि न सिर्फ़ उस पर ईमान लाओ बल्कि उसकी खातिर दुःख भी सहो; 30 और तुम उसी तरह मेहनत करते रहो जिस तरह मुझे करते देखा था, और अब भी सुनते हो की मैं वैसा ही करता हूँ।

## 2

2222 22 2222222 222

1 पर अगर कुछ तसल्ली मसीह में और मुहब्बत की दिलजम'ई और रूह की शराकत और रहमदिली और — दर्द मन्दी है, 2 तो मेरी खुशी पूरी करो कि एक दिल रहो, यक़साँ मुहब्बत रखो एक जान हो, एक ही ख़याल रखो।

3 तफ़रके और बेजा फ़ख़र के बारे में कुछ न करो, बल्कि फ़रोतनी से एक दूसरे को अपने से बेहतर समझो। 4 हर एक अपने ही अहवाल पर नहीं, बल्कि हर एक दूसरों के अहवाल पर भी नज़र रखे।

5 वैसा ही मिज़ाज रखो जैसा मसीह ईसा का भी था;

6 उसने अगरचे खुदा की सूरत पर था,

खुदा के बराबर होने को क़ब्जे के

रखने की चीज़ न समझा।

7 बल्कि अपने आप को ख़ाली कर दिया

और खादिम की सूरत इस्तिyar की

और इंसान ों के मुशाबह हो गया।

8 और इंसानी सूरत में ज़ाहिर होकर अपने आप को पस्त

कर दिया और यहाँ तक फ़रमाँबरदार रहा कि

मौत बल्कि

सलीबी मौत गंवारा की।

9 इसी वास्ते खुदा ने भी उसे बहुत सर बुलन्द किया

और उसे वो नाम बख़्शा जो सब नामों से आ'ला है

10 ताकि 'ईसा के नाम पर हर एक घुटना झुके;

चाहे आसमानियों का हो चाहे ज़मीनियों का, चाहे उनका जो ज़मीन के नीचे हैं।

11 और खुदा बाप के जलाल के लिए

हर एक ज़बान इक़रार करे कि 'ईसा मसीह खुदावन्द है।



12 पस ए मेरे अजीजो जिस तरह तुम हमेशा से फ़रमाबरदारी करते आए हो उसी तरह न सिर्फ़ मेरी हाज़िरी में, बल्कि इससे बहुत ज्यादा मेरी ग़ैर हाज़िरी में डरते और काँपते हुए अपनी नजात का काम किए जाओ; 13 क्योंकि जो तुम में नियत और 'अमल दोनों को, अपने नेक इरादे को अन्जाम देने के लिए पैदा करता वो खुदा है।

14 सब काम शिकायत और तकरार बग़ैर किया करो, 15 ताकि तुम बे ऐब और भोले हो कर टेढ़े और कजरी लोगों में खुदा के बेनुक्स फ़र्जन्द बने रहो [जिनके बीच दुनिया में तुम चराग़ों की तरह दिखाई देते हो, 16 और ज़िन्दगी का कलाम पेश करते हो]; ताकि मसीह के वापस आने के दिन मुझे तुम पर फ़ख़र हो कि न मेरी दौड़ — धूप बे फ़ाइदा हुई, न मेरी मेहनत अकारत गई।

17 और अगर मुझे तुम्हारे ईमान की कुर्बानी और ख़िदमत के साथ अपना खून भी बहाना पड़े, तो भी खुश हूँ और तुम सब के साथ खुशी करता हूँ। 18 तुम भी इसी तरह खुश हो और मेरे साथ खुशी करो।

19 मुझे खुदावन्द' ईसा में खुशी है उम्मीद है कि तीमुथियुस को तुम्हारे पास जल्द भेजूंगा, ताकि तुम्हारा अहवाल दरयाफ़्त करके मेरी भी खातिर जमा हो। 20 क्योंकि कोई ऐसा हम खयाल मेरे पास नहीं, जो साफ़ दिली से तुम्हारे लिए फ़िक्रमन्द हो। 21 सब अपनी अपनी बातों के फ़िक्र में हैं, न कि ईसा मसीह की।

22 लेकिन तुम उसकी पुख्तगी से वाकिफ़ हो कि जैसा बेटा बाप की ख़िदमत करता है, वैसे ही उसने मेरे साथ खुशख़बरी फैलाने में ख़िदमत की। 23 पस मैं उम्मीद करता हूँ कि जब अपने हाल का अन्जाम मालूम कर लूंगा तो उसे फ़ौरन भेज दूंगा। 24 और मुझे खुदावन्द पर भरोसा है कि मैं आप भी जल्द आऊंगा।

25 लेकिन मैं ने ईपफ़रूदीतुस को तुम्हारे पास भेजना ज़रूरी समझा। वो मेरा भाई, और हम ख़िदमत, और मसीह का सिपाही, और तुम्हारा कासिद, और मेरी हाज़त रफ़ा'करने के लिए खादिम है। 26 क्योंकि वो तुम सब को बहुत चाहता था, और इस वास्ते बे करार रहता था कि तूने उसकी बीमारी का हाल सुना था। 27 बेशक वो बीमारी से मरने को था, मगर खुदा ने उस पर रहम किया, सिर्फ़ उस ही पर नहीं बल्कि मुझ पर भी ताकि मुझे ग़म पर ग़म न हो।

28 इसी लिए मुझे उसके भेजने का और भी ज्यादा खयाल हुआ कि तुम भी उसकी मुलाकात से फिर खुश हो जाओ, और मेरा भी ग़म घट जाए। 29 पस तुम

उससे खुदावन्द में कमाल खुशी के साथ मिलना, और ऐसे शख्सों की' इज़्जत किया करो, 30 इसलिए कि वो मसीह के काम की खातिर मरने के करीब हो गया था, और उसने जान लगा दी ताकि जो कमी तुम्हारी तरफ़ से मेरी ख़िदमत में हुई उसे पूरा करे।

### 3

???? ? ? ???? ???? ???? ???? ?

1 गरज मेरे भाइयों! खुदावन्द में खुश रहो। तुम्हें एक ही बात बार — बार लिखने में मुझे तो कोई दिक्कत नहीं, और तुम्हारी इस में हिफ़ाज़त है। 2 कुत्तों\* से खबरदार रहो, बदकारों से खबरदार रहो कटवाने वालों से खबरदार रहो। 3 क्योंकि मख़्तून तो हम हैं जो खुदा की रूह की हिदायत से खुदा की इबादत करते हैं, और मसीह पर फ़ख़र करते हैं, और जिस्म का भरोसा नहीं करते।

4 अगर्चे मैं तो जिस्म का भी भरोसा कर सकता हूँ। अगर किसी और को जिस्म पर भरोसा करने का खयाल हो, तो मैं उससे भी ज्यादा कर सकता हूँ। 5 आठवें दिन मेरा खतना हुआ, इस्राईल की क़ौम और बिनयामीन के कबीले का हूँ, इबरानियो, का इब्रानी और शरी'अत के ऐ'तिबार से फ़रीसी हूँ

6 जोश के एतबार से कलीसिया का, सतानेवाला, शरी'अत की रास्तबाज़ी के एतबार से बे 'ऐब था, 7 लेकिन जितनी चीज़ें मेरे नफ़े' की थी उन्हीं को मैंने मसीह की खातिर नुक्सान समझ लिया है।

8 बल्कि मैंने अपने खुदावन्द मसीह 'ईसा की पहचान की बड़ी खूबी की वजह से सब चीज़ों का नुक्सान उठाया और उनको कूड़ा समझता हूँ ताकि मसीह को हासिल करूँ 9 और उस में पाया जाऊँ, न अपनी उस रास्तबाज़ी के साथ जो शरी'अत की तरफ़ से है, बल्कि उस रास्तबाज़ी के साथ जो मसीह पर ईमान लाने की वजह से है और खुदा की तरफ़ से ईमान पर मिलती है; 10 और मैं उसको और उसके जी उठने की कुदरत को, और उसके साथ दुखों में शरीक होने को मा'लूम करूँ, और उसकी मौत से मुशाबहत पैदा करूँ 11 ताकि किसी तरह मुर्दों में से जी उठने के दर्जे तक पहुँचूँ।

12 अगर्चे ये नहीं कि मैं पा चुका या कामिल हो चुका हूँ, बल्कि उस चीज़ को पकड़ने को दौड़ा हुआ जाता हूँ जिसके लिए मसीह 'ईसा ने मुझे पकड़ा था। 13 ऐ भाइयों! मेरा ये गुमान नहीं कि पकड़ चुका हूँ; बल्कि सिर्फ़ ये करता हूँ कि जो चीज़ें पीछे रह गई उनको भूल कर, आगे की चीज़ों की तरफ़ बढ़ा हुआ। 14 निशाने की

\* 3:2 3:2 कुत्तों झूठी तालीम देने वाले

तरफ़ दौड़ा हुआ जाता हूँ, ताकि उस इनाम को हासिल करूँ जिसके लिए खुदा ने मुझे मसीह ईसा में ऊपर बुलाया है।

15 पस हम में से जितने कामिल हैं यही खयाल रखें, और अगर किसी बात में तुम्हारा और तरह का खयाल हो तो खुदा उस बात को तुम पर भी ज़ाहिर कर देगा।

16 बहरहाल जहाँ तक हम पहुँचे हैं उसी के मुताबिक चलें।

17 ऐ भाइयों! तुम सब मिलकर मेरी तरह बनो, और उन लोगों की पहचान रखो जो इस तरह चलते हैं जिसका नमूना तुम हम में पाते हो; 18 क्योंकि बहुत सारे ऐसे हैं जिसका ज़िक्र मैंने तुम से बराबर किया है, और अब भी रो रो कर कहता हूँ कि वो अपने चाल — चलन से मसीह की सलीब के दुश्मन हैं। 19 उनका अन्जाम हलाकत है, उनका खुदा पेट है, वो अपनी शर्म की बातों पर फ़ख़र करते हैं और दुनिया की चीज़ों के खयाल में रहते हैं।

20 मगर हमारा वतन असमान पर है हम एक मुन्जी यानी खुदावन्द 'ईसा मसीह के वहाँ से आने के इन्तिज़ार में हैं। 21 वो अपनी उस ताक़त की तासीर के मुवाफ़िक़, जिससे सब चीज़ें अपने ताबे'कर सकता है, हमारी पस्त हाली के बदन की शक़ल बदल कर अपने जलाल के बदन की सूरत बनाएगा।

## 4

1 इस वास्ते ऐ मेरे प्यारे भाइयों! जिनका मैं मुश्ताक़ हूँ जो मेरी खुशी और ताज हो। ऐ प्यारो! खुदावन्द में इसी तरह क़ाईम रहो।

?????? ?????????? ?? ???????????

2 मैं यहूदिया को भी नसीहत करता हूँ और सुनतुखे को भी कि वो खुदावन्द में एक दिल रहे। 3 और ऐ सच्चे हमख़िदमत, तुझ से भी दरख़्वास्त करता हूँ कि तू उन 'औरतों की मदद कर, क्योंकि उन्होंने खुशख़बरी फैलाने में क्लेमैंस और मेरे बाकी उन हम ख़िदमतों समेत मेहनत की, जिनके नाम किताब — ए — हयात में दर्ज हैं।

4 खुदावन्द में हर वक़्त खुश रहो; मैं फिर कहता हूँ कि खुश रहो। 5 तुम्हारी नर्म मिज़ाजी सब आदमियों पर ज़ाहिर हो, खुदावन्द करीब है। 6 किसी बात की फ़िक्र न करो, बल्कि हर एक बात में तुम्हारी दरख़्वास्तें दुआ और मिन्नत के वसीले से शुक्रगुज़ारी के साथ खुदा के सामने पेश की जाएँ। 7 तो खुदा का इत्मीनान जो समझ से बिल्कुल बाहर है, वो तुम्हारे दिलो और खयालों को मसीह 'ईसा में महफूज़ रखेगा।

8 गरज़ ऐ भाइयों! जितनी बातें सच हैं, और जितनी बातें शराफ़त की हैं, और जितनी बातें वाजिब हैं, और जितनी बातें पाक हैं, और जितनी बातें पसन्दीदा हैं, और जितनी बातें दिलक़श हैं; गरज़ जो नेकी और ता 'रीफ़ की बातें हैं, उन पर ग़ौर किया करो। 9 जो बातें तुमने मुझ से सीखीं, और हासिल की, और सुनीं, और मुझ में देखीं, उन पर अमल किया करो, तो खुदा जो इत्मीनान का चश्मा है तुम्हारे साथ रहेगा।

10 मैं खुदावन्द में बहुत खुश हूँ कि अब इतनी मुद्दत के बाद तुम्हारा खयाल मेरे लिए सरसब्ज़ हुआ; बेशक तुम्हें पहले भी इसका खयाल था, मगर मौक़ा न मिला। 11 ये नहीं कि मैं मोहताजी के लिहाज़ से कहता हूँ; क्योंकि मैंने ये सीखा है कि जिस हालत में हूँ उसी पर राज़ी रहूँ 12 मैं पस्त होना भी जनता हूँ और बढ़ना भी जनता हूँ; हर एक बात और सब हालतों में मैंने सेर होना, भूखा रहना और बढ़ना घटना सीखा है। 13 जो मुझे ताक़त बख़्शता है, उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।

14 तो भी तुम ने अच्छा किया जो मेरी मुसीबतों में शरीक हुए। 15 और ऐ फ़िलिप्प्यों! तुम खुद भी जानते हो कि खुशख़बरी के शुरू में, जब मैं मकिदुनिया से ख़ाना हुआ तो तुम्हारे सिवा किसी कलीसिया ने लेने — देने में मेरी मदद न की। 16 चुनाँचे थिस्सलुनीकियों में भी मेरी एहतियाज़ रफ़ा' करने के लिए तुमने एक दफ़ा' नहीं, बल्कि दो दफ़ा' कुछ भेजा था। 17 ये नहीं कि मैं ईनाम चाहता हूँ बल्कि ऐसा फल चाहता हूँ जो तुम्हारे हिसाब से ज्यादा हो जाए

18 मेरे पास सब कुछ है, बल्कि बहुतायत से है; तुम्हारी भेजी हुई चीज़ों इप्सिदतुस के हाथ से लेकर मैं आसूदा हो गया हूँ, वो खुशबू और मक़बूल कुर्बानी हैं जो खुदा को पसन्दीदा है। 19 मेरा खुदा अपनी दौलत के मुवाफ़िक़ जलाल से मसीह 'ईसा में तुम्हारी हर एक कमी रफ़ा' करेगा। 20 हमारे खुदा और बाप की हमेशा से हमेशा तक बड़ाई होती रहे आमीन

21 हर एक मुक़द्दस से जो मसीह ईसा में है सलाम कहो। जो भाई मेरे साथ हैं तुम्हें सलाम कहते हैं। 22 सब मुक़द्दस खुसूसन, कैसर के घर वाले तुम्हें सलाम कहते हैं।

23 खुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़ल तुम्हारी रूह के साथ रहे।

## कुलुस्सियों के नाम पौलुस रसूल का खत

?????????? ?? ?????

कुलुस्सियों का खत पौलुस का खरा और असली खत है (1:1) इबतिदाई कलीसिया में सब जो मुसन्निफ़ के पहचान की बाबत चर्चा करते हैं तो वह पौलुस का जिक्र करते हैं। कुलुस्सियों की कलीसिया को खुद पौलुस ने कायम नहीं किया था। पौलुस का हमखिदमत इपफ़रदितुस ने सब से पहले कुलुस्सी की कलीसिया में प्रचार किया था (4:12, 13) जो झूटे उस्ताद थे वह कुलुस्सी में एक अजीब और नई इल्म — ए — इलाही लेकर आये थे। उन्होंने ग़ैर क़ौमी फ़लसफ़ा और यहूदियत को मसीहियत के साथ आमेज़िश कर दिया था। पौलुस ने इस झूटी तालीम की मुखालफ़त की यह जताते हुए कि मसीह सब चीज़ों में आला और अबतर है। कुलुस्सियों का खत नये अहदनामे मे सब से ज्यादा मसीह पर मर्कज़ माना जाता है। यह बताता है कि मसीह येसू खिलक़त की तमाम चीज़ों का सिर है।

????? ?????? ?? ??????? ?? ???? ?

इस को लिखे जाने की तारीख़ तक्ररीबन 60 ईस्वी के बीच है।

पौलुस ने हो सकता है पहली बार कैद होने के दौरान लिखा हो।

?????? ??????????? ?????? ?????

पौलुस ने इस खत को कुलुस्सी की कलीसिया के लिए लिखा सो हम इसे इस तरह पढ़ते हैं पौलुस की तरफ़ से जो खुदा की मर्ज़ी से मसीह येसू का रसूल है और भाई तीमुथियुस की तरफ़ से, मसीह में उन मुक़द्दस और ईमानदार भाइयों के नाम जो कुलुस्से में हैं (1:1 — 2) वह कलीसिया जो इफ़सुस से 100 मील की दूरी पर था और लैसस वादी के बीचों बीच था पौलुस रसूल ने इस कलीसिया में कभी मुलाक़ात नहीं की थी (1:4; 2:1)।

??? ?????????

पौलुस कुलुस्से की कलीसिया को जिस के अन्दर मसीही उसूल के खिलाफ़ जो एक ख़तरनाक अक़ीदा चला था उसकी बाबत यह नसीहत देने के लिए लिखा कि इन बिदअती मुआमलात का बराह — ए — रास्त मुक़ाबला करें और दावा करें कि मसीह अन्देखे खुदा की सूरत और तमाम मखलूक़ात से पहले मौलूद है; (1:15; 3:4) अपने कारिर्इन की हौसला अफ़ज़ाई के लिए कि मसीह को तमाम मखलूक़ासत में सब से आला

व बर्तर मानते हुए अपनी ज़िन्दगी जिएं; (3:5; 4:6) और अपनी कलीसिया की हौसला अफ़ज़ाई के लिए कि वह दुरुस्त और मुनासिब मसीही ज़िन्दगी बरकरार रखें और झूटे उस्तादों की धमकियों का मुक़ाबला करते हुए मसीह के ईमान में कायम रहें (2:2-5)।

??????

मसीह की बरतरी।

बैरूनी खाका

1. पौलुस की दुआ — 1:1-14

2. मसीह में शख्स के लिए पौलुस का उसूल — 1:15-23

3. खुदा के मन्सूबे और मक़सद में पौलुस का हिस्सा — 1:24-2:5

4. झूटी तालीम के खिलाफ़ तंबीह — 2:6-15

5. बिदअत की धमकियों के साथ पौलुस का मुक़ाबला — 2:16-3:4

6. मसीह में नया इंसान बन्ने का बयान — 3:5-25

7. तारीफ़ व सिफ़ारिश और आख़री सलाम — 4:1-18

?????? ?? ?????

<sup>1</sup> यह खत पौलुस की तरफ़ से है जो खुदा की मर्ज़ी से मसीह ईसा का रसूल है। साथ ही यह भाई तीमुथियुस की तरफ़ से भी है। <sup>2</sup> मैं कुलुस्से शहर के मुक़द्दस भाइयों को लिख रहा हूँ जो मसीह पर ईमान लाए हैं: खुदा हमारा बाप आप को फ़ज़ल और सलामती बख़्शे।

<sup>3</sup> जब हम तुम्हारे लिए दुआ करते हैं तो हर वक़्त खुदा अपने खुदावन्द ईसा मसीह के बाप का शुक्र करते हैं,

<sup>4</sup> क्योंकि हमने तुम्हारे मसीह ईसा पर ईमान और तुम्हारी तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत के बारे में सुन लिया है। <sup>5</sup> तुम्हारा यह ईमान और मुहब्बत वह कुछ ज़ाहिर करता है जिस की तुम उम्मीद रखते हो और जो आस्मान पर तुम्हारे लिए महफूज़ रखा गया है। और तुम ने यह उम्मीद उस वक़्त से रखी है जब से तुम ने पहली मर्तबा सच्चाई का कलाम यानी खुदा की खुशख़बरी सुनी। <sup>6</sup> यह पैग़ाम जो तुम्हारे पास पहुँच गया पूरी दुनिया में फल ला रहा और बढ़ रहा है, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह यह तुम में भी उस दिन से काम कर रहा है जब तुम ने पहली बार इसे सुन कर खुदा के फ़ज़ल की पूरी हक़ीक़त समझ ली।

<sup>7</sup> तुम ने हमारे अज़ीज़ हमखिदमत इपफ़रास से इस खुशख़बरी की तालीम पा ली थी। मसीह का यह वफ़ादार खादिम हमारी जगह तुम्हारी खिदमत कर रहा है। <sup>8</sup> उसी ने हमें तुम्हारी उस मुहब्बत के बारे में बताया जो रूह — उल — कुद्दूस ने तुम्हारे दिलों में डाल दी है।

9 इस वजह से हम तुम्हारे लिए दुआ करने से बाज नहीं आए बल्कि यह माँगते रहते हैं कि खुदा तुम को हर रुहानी हिक्मत और समझ से नवाज़ कर अपनी मर्ज़ी के इल्म से भर दे। 10 क्योंकि फिर ही तुम अपनी ज़िन्दगी खुदावन्द के लायक गुज़ार सकोगे और हर तरह से उसे पसन्द आओगे। हाँ, तुम हर किस्म का अच्छा काम करके फल लाओगे और खुदा के इल्म — ओ — 'इरफ़ान में तरक्की करोगे।

11 और तुम उस की जलाली कुदरत से मिलने वाली हर किस्म की ताक़त से मज़बूती पा कर हर वक़्त साबितक़दमी और सबर से चल सकोगे। 12 और बाप का शुक्र करते रहो जिस ने तुम को उस मीरास में हिस्सा लेने के लायक बना दिया जो उसकी रोशनी में रहने वाले मुक़द्दीसीन को हासिल है।

13 क्योंकि वही हमें अंधेरे की गिरफ़्त से रिहाई दे कर अपने प्यारे फ़र्ज़न्द की बादशाही में लाया, 14 उस एक शख्स के इस्तिथार में जिस ने हमारा फ़िदया दे कर हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया।

15 खुदा को देखा नहीं जा सकता, लेकिन हम मसीह को देख सकते हैं जो खुदा की सूरत और कायनात का पहलौठा है। 16 क्योंकि खुदा ने उसी में सब कुछ पैदा किया, चाहे आस्मान पर हो या ज़मीन पर, आँखों को नज़र आए या न नज़र आए, चाहे शाही तख़्त, कुव्वतें, हुक्मरान या इस्तिथार वाले हों। सब कुछ मसीह के ज़रिए और उसी के लिए पैदा हुआ। 17 वही सब चीज़ों से पहले है और उसी में सब कुछ काईम रहता है।

18 और वह बदन यानी अपनी जमाअत का सर भी है। वही शुरुआत है, और चूँकि पहले वही मुद्दों में से जी उठा इस लिए वही उन में से पहलौठा भी है ताकि वह सब बातों में पहले हो। 19 क्योंकि खुदा को पसन्द आया कि मसीह में उस की पूरी मामूरी सुकूनत करे 20 और वह मसीह के ज़रिए सब बातों की अपने साथ सुलह करा ले, चाहे वह ज़मीन की हों चाहे आस्मान की। क्योंकि उस ने मसीह के सलीब पर बहाए गए खून के वसीले से सुलह — सलामती काईम की।

21 तुम भी पहले खुदा के सामने अजनबी थे और दुश्मन की तरह सोच रख कर बुरे काम करते थे। 22 लेकिन अब उस ने मसीह के इंसानी बदन की मौत से तुम्हारे साथ सुलह कर ली है ताकि वह तुमको मुक़द्दस, बेदाग़ और बेइल्जाम हालत में अपने सामने खड़ा करे। 23 बेशक अब ज़रूरी है कि तुम ईमान में काईम रहो, कि तुम ठोस बुनियाद पर मज़बूती से खड़े रहो और उस खुशख़बरी की उम्मीद से हट न जाओ जो तुम ने सुन ली है। यह वही पैग़ाम है जिस का एलान दुनिया में हर

मख़्लूक के सामने कर दिया गया है और जिस का खादिम मैं पौलुस बन गया हूँ।

24 अब मैं उन दुखों के ज़रिए खुशी मनाता हूँ जो मैं तुम्हारी खातिर उठा रहा हूँ। क्योंकि मैं अपने जिस्म में मसीह के बदन यानी उस की जमाअत की खातिर मसीह की मुसीबतों की वह कमियाँ पूरी कर रहा हूँ जो अब तक रह गई हैं। 25 हाँ, खुदा ने मुझे अपनी जमाअत का खादिम बना कर यह ज़िम्मेदारी दी कि मैं तुम को खुदा का पूरा कलाम सुना दूँ, 26 वह बातें जो शुरू से तमाम गुज़री नसलों से छुपा रहा था लेकिन अब मुक़द्दीसीन पर ज़ाहिर की गई हैं। 27 क्योंकि खुदा चाहता था कि वह जान लें कि ग़ैरयहूदियों में यह राज़ कितना बेशक़ीमती और जलाली है। और यह राज़ है क्या? यह कि मसीह तुम में है। वही तुम में है जिस के ज़रिए हम खुदा के जलाल में शरीक होने की उम्मीद रखते हैं।

28 यूँ हम सब को मसीह का पैग़ाम सुनाते हैं। हर मुम्किन हिक्मत से हम उन्हें समझाते और तालीम देते हैं ताकि हर एक को मसीह में कामिल हालत में खुदा के सामने पेश करें। 29 यही मक्सद पूरा करने के लिए मैं सख़्त मेहनत करता हूँ। हाँ, मैं पूरे जद्द — ओ — जद्द करके मसीह की उस ताक़त का सहारा लेता हूँ जो बड़े ज़ोर से मेरे अन्दर काम कर रही है।

## 2

1 मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो कि मैं तुम्हारे लिए किस क़दर जाँफ़िशानी कर रहा हूँ — तुम्हारे लिए, लौदीकिया शहर वालों के लिए और उन तमाम ईमानदारों के लिए भी जिन की मेरे साथ मुलाक़ात नहीं हुई। 2 मेरी कोशिश यह है कि उन की दिली हौसला अफ़ज़ाई की जाए और वह मुहब्बत में एक हो जाएँ, कि उन्हें वह ठोस भरोसा हासिल हो जाए जो पूरी समझ से पैदा होता है। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि वह खुदा का राज़ जान लें। राज़ क्या है? मसीह खुद। 3 उसी में हिक्मत और इल्म — ओ — 'इरफ़ान के तमाम खज़ाने छुपे हैं।

4 गरज़ ख़बरदार रहें कि कोई तुमको बज़ाहिर सही और मीठे मीठे अल्फ़ाज़ से धोखा न दे। 5 क्योंकि गरचे मैं जिस्म के लिहाज़ से हाज़िर नहीं हूँ, लेकिन रूह में मैं तुम्हारे साथ हूँ। और मैं यह देख कर खुश हूँ कि तुम कितनी मुनज़ज़म ज़िन्दगी गुज़ारते हो, कि तुम्हारा मसीह पर ईमान कितना पुख़्ता है।

22222222 22 22222222 22 22222 2222 22222222



6 तुमने ईसा मसीह को खुदावन्द के तौर पर क़बूल कर लिया है। अब उस में ज़िन्दगी गुज़ारो। 7 उस में जड़ पकड़ो, उस पर अपनी ज़िन्दगी तामीर करो, उस ईमान में मजबूत रहो जिस की तुमको तालीम दी गई है और शुक्रगुज़ारी से लबरेज़ हो जाओ।

8 होशियार रहो कि कोई तुम को फ़ल्सफ़ियाना और महज़ धोखा देने वाली बातों से अपने जाल में न फँसा ले। ऐसी बातों का सरचश्मा मसीह नहीं बल्कि इंसानी रिवायतें और इस दुनियाँ की ताक़तें हैं। 9 क्यूँकि मसीह में खुदाइयत की सारी मा'मूरी मुजस्सिम हो कर सुकूनत करती है।

10 और तुम को जो मसीह में हैं उस की मामूरी में शरीक कर दिया गया है। वही हर हुक्मरान और इस्लियार वाले का सर है। 11 उस में आते वक़्त तुम्हारा ख़तना भी करवाया गया। लेकिन यह ख़तना इंसानी हाथों से नहीं किया गया बल्कि मसीह के वसीले से। उस वक़्त तुम्हारी पुरानी निस्वत उतार दी गई, 12 तुम को बपतिस्मा दे कर मसीह के साथ दफ़नाया गया और तुम को ईमान से ज़िन्दा कर दिया गया। क्यूँकि तुम खुदा की कुदरत पर ईमान लाए थे, उसी कुदरत पर जिस ने मसीह को मुर्दाँ में से ज़िन्दा कर दिया था।

13 पहले तुम अपने गुनाहों और नामख़तून जिस्मानी हालत की वजह से मुर्दाँ थे, लेकिन अब खुदा ने तुमको मसीह के साथ ज़िन्दा कर दिया है। उस ने हमारे तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है। 14 और अहक़ाम की वह दस्तावेज़ जो हमारे खिलाफ़ थी उसे उस ने रद्द कर दिया। हाँ, उस ने हम से दूर करके उसे कीलों से सलीब पर जड़ दिया। 15 उस ने हुक्मरानों और इस्लियार वालों से उन का हथियार छीन कर सब के सामने उन की रुस्वाई की। हाँ, मसीह की सलीबी मौत से वह खुदा के कैदी बन गए और उन्हें फ़तह के जुलूस में उस के पीछे, पीछे चलना पड़ा।

16 चुनाँचे कोई तुमको इस वजह से मुजरिम न ठहराए कि तुम क्या क्या खाते — पीते या कौन कौन सी ईदें मनाते हो। इसी तरह कोई तुम्हारी अदालत न करे अगर तुम हक़ की ईद या सबत का दिन नहीं मनाते। 17 यह चीज़ें तो सिर्फ़ आने वाली हक़ीक़त का साया ही हैं जबकि यह हक़ीक़त खुद मसीह में पाई जाती है।

18 ऐसे लोग तुम को मुजरिम न ठहराएँ जो ज़ाहिरी फ़रोतनी और फ़रिश्तों की इबादत पर इसरार करते हैं। बड़ी तफ़सील से अपनी रोयाओं में देखी हुई बातें बयान करते करते उन के ग़ैररुहानी ज़हन ख़्वाह — म — ख़्वाह फूल जाते हैं। 19 यूँ उन्होंने ने मसीह के साथ लगे रहना छोड़ दिया अगरचे वह बदन का सिर है। वही जोड़ों

और पट्टों के ज़रिए पूरे बदन को सहारा दे कर उस के मुख़्तलिफ़ हिस्सों को जोड़ देता है। यूँ पूरा बदन खुदा की मदद से तरक्की करता जाता है।

20 तुम तो मसीह के साथ मर कर दुनियाँ की ताक़तों से आज़ाद हो गए हो। अगर ऐसा है तो तुम ज़िन्दगी ऐसे क्यूँ गुज़ारते हो जैसे कि तुम अभी तक इस दुनिया की मिलिक़यत हो? तुम क्यूँ इस के अहक़ाम के ताबे रहते हो? 21 मसलन “इसे हाथ न लगाना, वह न चखना, यह न छूना।” 22 इन तमाम चीज़ों का मक्सद तो यह है कि इस्तेमाल हो कर ख़त्म हो जाएँ। यह सिर्फ़ इंसानी अहक़ाम और तालीमात हैं। 23 बेशक यह अहक़ाम जो गढ़े हुए मज्हबी फ़राइज़, नाम — निहाद फ़रोतनी और जिस्म के सख़्त दबाओ का तकाज़ा करते हैं हिक्मत पर मुन्हसिर तो लगते हैं, लेकिन यह बेकार हैं और सिर्फ़ जिस्म ही की ख़्वाहिशात पूरी करते हैं।

### 3

????????????????

1 तुम को मसीह के साथ ज़िन्दा कर दिया गया है, इस लिए वह कुछ तलाश करो जो आस्मान पर है जहाँ मसीह खुदा के दहने हाथ बैठा है। 2 दुनियावी चीज़ों को अपने खयालों का मर्कज़ न बनाओ बल्कि आस्मानी चीज़ों को। 3 क्यूँकि तुम मर गए हो और अब तुम्हारी ज़िन्दगी मसीह के साथ खुदा में छुपी है। 4 मसीह ही तुम्हारी ज़िन्दगी है। जब वह ज़ाहिर हो जाएगा तो तुम भी उस के साथ ज़ाहिर हो कर उस के जलाल में शरीक हो जाओगे।

5 चुनाँचे उन दुनियावी चीज़ों को मार डालो जो तुम्हारे अन्दर काम कर रही हैं: जिनाकारी, नापाकी, शहवतपरस्ती, बुरी ख़्वाहिशात और लालच (लालच तो एक क्रिस्म की बुतपरस्ती है) 6 खुदा का ग़ज़ब ऐसी ही बातों की वजह से नाज़िल होगा। 7 एक वक़्त था जब तुम भी इन के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारते थे, जब तुम्हारी ज़िन्दगी इन के क़ाबू में थी। 8 लेकिन अब वक़्त आ गया है कि तुम यह सब कुछ यानी गुस्सा, तैश, बदसलूकी, बुह्तान और गन्दी ज़बान ख़स्ताहाल कपड़े की तरह उतार कर फेंक दो।

9 एक दूसरे से बात करते वक़्त झूठ मत बोलना, क्यूँकि तुमने अपनी पुरानी फ़ितरत उस की हरकतों समेत उतार दी है। 10 साथ साथ तुमने नई फ़ितरत पहन ली है, वह फ़ितरत जिस की ईजाद हमारा ख़ालिक़ अपनी सूरत पर करता जा रहा है ताकि तुम उसे और बेहतर तौर पर जान लो। 11 जहाँ यह काम हो रहा है

वहाँ लोगों में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे कोई ग़ैरयहूदी हो या यहूदी, मस्खून हो या नामस्खून, ग़ैरयूनानी हो या स्कूती, गुलाम हो या आज़ाद। कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, सिर्फ़ मसीह ही सब कुछ और सब में है।

12 खुदा ने तुम को चुन कर अपने लिए खास — और पाक कर लिया है। वह तुम से मुहब्बत रखता है। इस लिए अब तरस, नेकी, फ़रोतनी, नर्मदिल और सबर को पहन लो। 13 एक दूसरे को बर्दाश्त करो, और अगर तुम्हारी किसी से शिकायत हो तो उसे मुआफ़ कर दो। हाँ, यूँ मुआफ़ करो जिस तरह खुदावन्द ने आप को मुआफ़ कर दिया है। 14 इन के अलावा मुहब्बत भी पहन लो जो सब कुछ बाँध कर कामिलियत की तरफ़ ले जाती है।

15 मसीह की सलामती तुम्हारे दिलों में हुकूमत करे। क्योंकि खुदा ने तुम को इसी सलामती की ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए बुला कर एक बदन में शामिल कर दिया है। शुक्रगुज़ार भी रहो। 16 तुम्हारी ज़िन्दगी में मसीह के कलाम की पूरी दौलत घर कर जाए। एक दूसरे को हर तरह की हिक्मत से तालीम देते और समझाते रहो। साथ साथ अपने दिलों में खुदा के लिए शुक्रगुज़ारी के साथ ज़बूर, हम्द — ओ — सना और रुहानी गीत गाते रहो। 17 और जो कुछ भी तुम करो ख्वाह ज़बानी हो या अमली वह खुदावन्द ईसा का नाम ले कर करो। हर काम में उसी के वसीले से खुदा बाप का शुक्र करो।

18 बीवियो, अपने शौहर के ताबे रहें, क्योंकि जो खुदावन्द में है उस के लिए यही मुनासिब है। 19 शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखो। उन से तल्लख़ मिज़ाजी से पेश न आओ। 20 बच्चे, हर बात में अपने माँ — बाप के ताबे रहें, क्योंकि यही खुदावन्द को पसन्द है। 21 वालिदो, अपने बच्चों को गुस्सा न करें, वरना वह बेदिल हो जाएंगे।

22 गुलामों, हर बात में अपने दुनियावी मालिकों के ताबे रहो। न सिर्फ़ उन के सामने ही और उन्हें खुश रखने के लिए खिदमत करें बल्कि खुलूसदिली और खुदावन्द का खौफ़ मान कर काम करें। 23 जो कुछ भी तुम करते हो उसे पूरी लगन के साथ करो, इस तरह जैसा कि तुम न सिर्फ़ इंसानों की बल्कि खुदावन्द की खिदमत कर रहे हो। 24 तुम तो जानते हो कि खुदावन्द तुम को इस के मुआवज़े में वह मीरास देगा जिस का वादा उस ने किया है। हक़ीक़त में तुम खुदावन्द मसीह की ही खिदमत कर रहे हो। 25 लेकिन जो ग़लत काम करे उसे अपनी ग़लतियों का मुआवज़ा भी मिलेगा। खुदा तो किसी की भी तरफ़दारी नहीं करता।

## 4

1 मालिको, अपने गुलामों के साथ मलिकाना और जायज़ सुलूक करें। तुम तो जानते हो कि आस्मान पर तुम्हारा भी एक ही मालिक और वो खुदा है।

222 2222 22 2222 222222 2222

2 दुआ में लगे रहो। और दुआ करते वक़्त शुक्रगुज़ारी के साथ जागते रहो। 3 साथ साथ हमारे लिए भी दुआ करो ताकि खुदा हमारे लिए कलाम सुनाने का दरवाज़ा खोले और हम मसीह का राज़ पेश कर सकें। आखिर मैं इसी राज़ की वजह से कैद में हूँ। 4 दुआ करो कि मैं इसे यूँ पेश करूँ जिस तरह करना चाहिए, कि इसे साफ़ समझा जा सके।

5 जो अब तक ईमान न लाए हों उन के साथ अक्लमन्दी का सुलूक करो। इस सिलसिले में हर मौक़े से फ़ाइदा उठाओ। 6 तुम्हारी बातें हर वक़्त मेहरबान हो, ऐसी कि मज़ा आए और तुम हर एक को मुनासिब जवाब दे सको।

7 जहाँ तक मेरा ताल्लुक है हमारा अज़ीज़ भाई तुख़िकुस तुमको सब कुछ बता देगा। वह एक वफ़ादार खादिम और खुदावन्द में हमखिदमत रहा है। 8 मैंने उसे खासकर इस लिए तुम्हारे पास भेज दिया ताकि तुम को हमारा हाल मालूम हो जाए और वह तुम्हारी हौसला अफ़ज़ाई करे। 9 वह हमारे वफ़ादार और अज़ीज़ भाई उनेसिमुस के साथ तुम्हारे पास आ रहा है, वही जो तुम्हारी जमाअत से है। दोनों तुमको वह सब कुछ सुना देंगे जो यहाँ हो रहा है।

10 अरिस्तरख़ुस जो मेरे साथ कैद में है तुम को सलाम कहता है और इसी तरह बरनबास का चचेरा भाई मरकुस भी। (तुम को उस के बारे में हिदायत दी गई है। जब वह तुम्हारे पास आए तो उसे खुशआमदीद कहना)। 11 ईसा जो यूस्तुस कहलाता है भी तुम को सलाम कहता है। उन में से जो मेरे साथ खुदा की बादशाही में खिदमत कर रहे हैं सिर्फ़ यह तीन मर्द यहूदी हैं। और यह मेरे लिए तसल्ली का ज़रिया रहे हैं।

12 मसीह ईसा का खादिम इपफ़्रास भी जो तुम्हारी जमाअत से है सलाम कहता है। वह हर वक़्त बड़ी ज़द — ओ — जह्द के साथ तुम्हारे लिए दुआ करता है। उस की खास दुआ यह है कि तुम मज्बूती के साथ खड़े रहो, कि तुम बालिग़ मसीही बन कर हर बात में खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ चलो। 13 मैं खुद इस की तस्दीक़ कर सकता हूँ कि उस ने तुम्हारे लिए सख़्त मेहनत की है बल्कि लौदीकिया और हियरापुलिस की जमाअतों

के लिए भी। <sup>14</sup> हमारे अजीज़ तबीब लूका और देमास तुमको सलाम कहते हैं।

<sup>15</sup> मेरा सलाम लौदीकिया की जमाअत को देना और इसी तरह नुम्फ़ास को उस जमाअत समेत जो उस के घर में जमा होती है। <sup>16</sup> यह पढ़ने के बाद ध्यान दें कि लौदीकिया की जमाअत में भी यह खत पढ़ा जाए और तुम लौदीकिया का खत भी पढ़ो। <sup>17</sup> अर्खिप्पुस को बता देना, खबरदार कि तुम वह खिदमत उस पाए तकमील तक पहुँचाओ जो तुम को खुदावन्द में सौंपी गई है।

<sup>18</sup> मैं अपने हाथ से यह अल्फ़ाज़ लिख रहा हूँ। मेरा यानी पौलुस की तरफ़ से सलाम। मेरी जंजीरें मत भूलना! खुदा का फ़ज़ल तुम्हारे साथ होता रहे।

## थिस्सलुनीकियों के नाम पौलूस रसूल पहला का खत

११११११११११ ११ ११११११

1 दो बार पौलूस रसूल इस खत का मुसन्निफ़ होने बतौर पहचाना गया है; (1:1; 2:18) सिलास और तीमुथियुस (3:2, 6) पौलूस के दूसरे मिशनरी सफ़र में हमसफ़र थे उस वक़्त इस कलीसिया की बुनियाद डली थी (आमाल 17:1, 9) सो पौलूस ने थिस्सलुनीका छोड़ने के कुछ ही महिने बाद इस खत को लिखा। वाज़ेह तौर से थिस्सलुनी के में पौलूस की खिदमत गुज़ारी ने न सिर्फ़ यहूदियों पर बल्कि ग़ैर यहूदियों पर भी असर डाला था। कलीसिया में कई एक ग़ैर क्रौम वाले बुतपरस्ती से बाहर आये थे इस के बावजूद भी उस वक़्त के यहूदियों के लिए यह कोई खास मसला नहीं था (1 थिस्सलुनीकियों 1:9)।

१११११ १११११ ११ ११११११११ ११ ११११

इस खत को तक्ररीबन 51 ईस्वी के बीच लिखा गया था।

पौलूस ने 1 थिस्सलुनीकियों के खत को जो वहां की कलीसिया के नाम थी कुरिन्थ शहर से लिखा।

११११११ ११११११११११ १११११ १११११

1 थिस्सलुनीकियों 1:1 का हवाला इस कलीसिया के लिए पहले खत के कारिडिन बतौर पहचान करती है जबकि आम तौर से देखा जाए तो यह खत तमाम मसीहियों के लिए है।

११११ ११११११११

इस खत को लिखने का पौलूस का मक़सद यह था कि नए मसीहियों की उनकी आज्मायशों के दौरान हौसला अफ़जाई करें (3:4 — 5) उन्हें परहेज़गारी की ज़िन्दगी की बाबत नसीहत दे (4:1 — 12) और जो मसीह की दुबारा आमद से पहले मरते हैं उन्हें मुस्तक़बिल की ज़िन्दगी का यक़ीन दिलाने के लिए (4:13 — 18) और दीगर अख़लाक़ी और अमली मुआमलों को सुधारने के लिए।

१११११११

कलीसिया के लिए फ़िक्र।

**बैरूनी खाका**

1. शुक्रगुज़ारी — 1:1-10
2. रिसालती अमल का बचाव — 2:1-3:13
3. थिस्सलुनीके की कलीसिया के लिए नसीहत — 4:1-5:22
4. इख़तितामी दुआ और बर्कत के कलिमात — 5:23-28

११११११ ११ १११११

1 पौलूस और सिलास और तीमुथियुस की तरफ़ से थिस्सलुनीकियों शहर की कलीसिया के नाम खत, जो खुदा बाप और खुदा वन्द ईसा मसीह में है, फ़ज़ल और इत्मीनान तुम्हें हासिल होता रहे।

2 तुम सब के बारे में हम खुदा का शुक्र बजा लाते हैं और अपनी दुआओं में तुम्हें याद करते हैं। 3 और अपने खुदा और बाप के हज़ूर तुम्हारे ईमान के काम और मुहब्बत की मेहनत और उस उम्मीद के सबर को बिला नागा याद करते हैं जो हमारे खुदावन्द ईसा मसीह की वजह से है।

4 और ऐ भाइयों! खुदा के प्यारों हम को मा'लूम है; कि तुम चुने हुए हो। 5 इसलिए कि हमारी खुशख़बरी तुम्हारे पास न फ़क़त लफ़ज़ी तौर पर पहुँची बल्कि कुदरत और रूह — उल — कुदूस और पूरे यक़ीन के साथ भी चुनाँचे तुम जानते हो कि हम तुम्हारी खातिर तुम में कैसे बन गए थे।

6 और तुम कलाम को बड़ी मुसीबत में रूह — उल — कुदूस की खुशी के साथ कुबूल करके हमारी और खुदावन्द की मानिन्द बने। 7 यहाँ तक कि मकिदुनिया और अखिया के सब ईमानदारों के लिए नमूना बने।

8 क्यूँकि तुम्हारे हाँ से न फ़क़त मकिदुनिया और अखिया में खुदावन्द के कलाम का चर्चा फैला है, बल्कि तुम्हारा ईमान जो खुदा पर है हर जगह ऐसा मशहूर हो गया है कि हमारे कहने की कुछ ज़रूरत नहीं। 9 इसलिए कि वो आप हमारा ज़िक्र करते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ और तुम बुतों से फिर कर खुदा की तरफ़ मुखातिब हुए ताकि ज़िन्दा और हक़ीक़ी खुदा की बन्दगी करो। 10 और उसके बेटे के आसमान पर से आने के इन्तिज़ार में रहो, जिसे उस ने मुर्दों में से जिलाया या'नी ईसा मसीह के जो हम को आने वाले ग़ज़ब से बचाता है।

## 2

११११११ ११ १११११ ११११ ११ ११११ १११११

1 ऐ भाइयों! तुम आप जानते हो कि हमारा तुम्हारे पास आना बेफ़ाइदा न हुआ। 2 बल्कि तुम को मा'लूम ही है कि बावजूद पहले फ़िलिप्पी में दुःख उठाने और बेइज़्ज़त होने के हम को अपने खुदा में ये दिलेरी हासिल हुई कि खुदा की खुशख़बरी बड़ी जाँफ़िशानी से तुम्हें सुनाएँ।

3 क्यूँकि हमारी नसीहत न गुमराही से है न नापाकी से न धोखे के साथ। 4 बल्कि जैसे खुदा ने हम को मक़बूल



करके खुशखबरी हमारे सुपुर्द की वैसे ही हम बयान करते हैं; आदमियों को नहीं बल्कि खुदा को खुश करने के लिए जो हमारे दिलों को आजमाता है।

<sup>5</sup> क्योंकि तुम को मा'लूम ही है कि न कभी हमारे कलाम में खुशामद पाई गई न लालच का पर्दा बना खुदा इसका गवाह है! <sup>6</sup> और हम न आदमियों से इज्जत चाहते हैं न तुम से न औरों से अगरचे मसीह के रसूल होने की वजह तुम पर बोझ डाल सकते थे।

<sup>7</sup> बल्कि जिस तरह माँ अपने बच्चों को पालती है उसी तरह हम तुम्हारे दर्मियान नर्मी के साथ रहे। <sup>8</sup> और उसी तरह हम तुम्हारे बहुत अहसानमंद होकर न फ़क़त खुदा की खुशखबरी बल्कि अपनी जान तक भी तुम्हें देने को राज़ी थे; इस वास्ते कि तुम हमारे प्यारे हो गए थे! <sup>9</sup> क्योंकि ऐ भाइयों! तुम को हमारी मेहनत और मशक्क़त याद होगी कि हम ने तुम में से किसी पर बोझ न डालने की गरज़ से रात दिन मेहनत मज़दूरी करके तुम्हें खुदा की खुशखबरी की मनादी की।

<sup>10</sup> तुम भी गवाह हो और खुदा भी कि तुम से जो ईमान लाए हो हम कैसी पाकीज़गी और रास्तबाज़ी और बे'ऐबी के साथ पेश आए। <sup>11</sup> चुनाँचे तुम जानते हो। कि जिस तरह बाप अपने बच्चों के साथ करता है उसी तरह हम भी तुम में से हर एक को नसीहत करते और दिलासा देते और समझाते रहे। <sup>12</sup> ताकि तुम्हारा चालचलन खुदा के लायक़ हो जो तुम्हें अपनी बादशाही और जलाल में बुलाता है।

<sup>13</sup> इस वास्ते हम भी बिला नाशा खुदा का शुक्र करते हैं कि जब खुदा का पैग़ाम हमारे ज़रिए तुम्हारे पास पहुँचा तो तुम ने उसे आदमियों का कलाम समझ कर नहीं बल्कि जैसा हकीक़त में है खुदा का कलाम जान कर कुबूल किया और वो तुम में जो ईमान लाए हो असर भी कर रहा है।

<sup>14</sup> इसलिए कि तुम ऐ भाइयों!, खुदा की उन कलीसियाओं की तरह बन गए जो यहूदिया में मसीह ईसा में हैं क्योंकि तुम ने भी अपनी क्रौम वालों से वही तकलीफ़ें उठाई जो उन्होंने यहूदियों से। <sup>15</sup> जिन्होंने खुदावन्द ईसा को भी मार डाला और हम को सता सता कर निकाल दिया वो खुदा को पसन्द नहीं आते और सब आदमियों के खिलाफ़ हैं। <sup>16</sup> और वो हमें ग़ैर क्रौमों को उनकी नजात के लिए कलाम सुनाने से मनह करते हैं ताकि उन के गुनाहों का पैमाना हमेशा भरता रहे; लेकिन उन पर इन्तिहा का ग़ज़ब आ गया।

<sup>17</sup> ऐ भाइयों! जब हम थोड़े अर्से के लिए ज़ाहिर में न कि दिल से तुम से जुदा हो गए तो हम ने कमाल आरज़ू

से तुम्हारी सूरत देखने की और भी ज्यादा कोशिश की। <sup>18</sup> इस वास्ते हम ने या'नी मुझ पौलुस ने एक दफ़ा' नहीं बल्कि दो दफ़ा' तुम्हारी पास आना चाहा मगर शैतान ने हमें रोके रखा। <sup>19</sup> भला हमारी उम्मीद और खुशी और फ़ख़र का ताज क्या है? क्या वो हमारे खुदावन्द के सामने उसके आने के वक़्त तुम ही न होगे। <sup>20</sup> हमारा जलाल और खुशी तुम्हीं तो हो।

### 3

<sup>1</sup> इस वास्ते जब हम ज्यादा बर्दाश्त न कर सके तो अथेने शहर में अकेले रह जाना मन्ज़ूर किया। <sup>2</sup> और हम ने तीमुथियुस को जो हमारा भाई और मसीह की खुशखबरी में खुदा का खादिम है इसलिए भेजा कि वो तुम्हें मज़बूत करे और तुम्हारे ईमान के बारे में तुम्हें नसीहत करे। <sup>3</sup> कि इन मुसीबतों के ज़रिए से कोई न घबराए, क्योंकि तुम आप जानते हो कि हम इन ही के लिए मुक़र्रर हुए हैं।

<sup>4</sup> बल्कि पहले भी जब हम तुम्हारे पास थे, तो तुम से कहा करते थे; कि हमें मुसीबत उठाना होगा, चुनाँचे ऐसा ही हुआ और तुम्हें मा'लूम भी है। <sup>5</sup> इस वास्ते जब मैं और ज्यादा बर्दाश्त न कर सका तो तुम्हारे ईमान का हाल दरियाफ़्त करने को भेजा; कहीं ऐसा न हो कि आजमाने वाले ने तुम्हें आजमाया हो और हमारी मेहनत बेफ़ाइदा रह गई हो।

<sup>6</sup> मगर अब जो तीमुथियुस ने तुम्हारे पास से हमारे पास आकर तुम्हारे ईमान और मुहब्बत की और इस बात की खुशखबरी दी कि तुम हमारा ज़िक़र ख़ैर हमेशा करते हो और हमारे देखने के ऐसे मुश्ताक़ हो जैसे कि हम तुम्हारे। <sup>7</sup> इसलिए ऐ भाइयों! हम ने अपनी सारी एहतियाज़ और मुसीबत में तुम्हारे ईमान के ज़रिए से तुम्हारे बारे में तसल्ली पाई।

<sup>8</sup> क्योंकि अब अगर तुम खुदावन्द में काईम हो तो हम ज़िन्दा हैं। <sup>9</sup> तुम्हारी वजह से अपने खुदा के सामने हमें जिस क़दर खुशी हासिल है, उस के बदले में किस तरह तुम्हारे ज़रिए खुदा का शुक्र अदा करें। <sup>10</sup> हम रात दिन बहुत ही दुआ करते रहते हैं कि तुम्हारी सूरत देखें और तुम्हारे ईमान की कमी पूरी करें।

<sup>11</sup> अब हमारा खुदा और बाप खुद हमारा खुदावन्द ईसा तुम्हारी तरफ़ से हमारी रहनुमाई करे। <sup>12</sup> और खुदावन्द ऐसा करे कि जिस तरह हम को तुम से मुहब्बत है उसी तरह तुम्हारी मुहब्बत भी आपस में और सब आदमियों के साथ ज्यादा हो और बढ़े <sup>13</sup> ताकि वो तुम्हारे दिलों को ऐसा मज़बूत कर दे कि जब हमारा खुदावन्द

ईसा अपने सब मुक़दसों के साथ आए तो वो हमारे खुदा और बाप के सामने पाकीज़गी में बेऐब हों।

## 4

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

1 मगर ऐ भाइयों!, हम तुम से दरखास्त करते हैं और खुदावन्द ईसा में तुम्हें नसीहत करते हैं कि जिस तरह तुम ने हम से मुनासिब चाल चलने और खुदा को खुश करने की ता'लीम पाई और जिस तरह तुम चलते भी हो उसी तरह और तरक्की करते जाओ। 2 क्योंकि तुम जानते हो कि हम ने तुम को खुदावन्द ईसा की तरफ़ से क्या क्या हुक्म पहुँचाए।

3 चुनाँचे खुदा की मर्जी ये है कि तुम पाक बनो, या'नी हरामकारी से बचे रहो। 4 और हर एक तुम में से पाकीज़गी और इज्जत के साथ अपने ज़रफ़ को हासिल करना जाने। 5 न बुरी ख्वाहिश के जोश से उन कौमों की तरह जो खुदा को नहीं जानतीं 6 और कोई शख्स अपने भाई के साथ इस काम में ज्यादाती और दगा न करे क्योंकि खुदावन्द इन सब कामों का बदला लेने वाला है चुनाँचे हम ने पहले भी तुम को करके जता दिया था।

7 इसलिए कि खुदा ने हम को नापाकी के लिए नहीं बल्कि पाकीज़गी के लिए बुलाया। 8 पस, जो नहीं मानता वो आदमी को नहीं बल्कि खुदा को नहीं मानता जो तुम को अपना पाक रूह देता है।

9 मगर भाई — चारे की मुहब्बत के ज़रिए तुम्हें कुछ लिखने की हाजत नहीं क्योंकि तुम ने आपस में मुहब्बत करने की खुदा से ता'लीम पा चुके हो। 10 और तमाम मकिदुनिया के सब भाइयों के साथ ऐसा ही करते हो लेकिन ऐ भाइयों! हम तुम्हें नसीहत करते हैं कि तरक्की करते जाओ। 11 और जिस तरह हम ने तुम को हुक्म दिया चुप चाप रहने और अपना कारोबार करने और अपने हाथों से मेहनत करने की हिम्मत करो। 12 ताकि बाहर वालों के साथ संजीदगी से बरताव करो और किसी चीज़ के मोहताज न हो।

13 ऐ भाइयों! हम नहीं चाहते कि जो सोते हैं उनके बारे में तुम नावाक़िफ़ रहो ताकि औरों की तरह जो ना उम्मीद है ग़म ना करो। 14 क्योंकि जब हमें ये यक़ीन है कि ईसा मर गया और जी उठा तो उसी तरह खुदा उन को भी जो सो गए हैं ईसा के वसीले से उसी के साथ ले आएगा। 15 चुनाँचे हम तुम से दावन्द के कलाम के मुताबिक़ कहते हैं कि हम जो ज़िन्दा हैं और दावन्द के आने तक बाक़ी रहेंगे सोए हुआँ से हरगिज़ आगे न बढ़ेंगे।

16 क्योंकि खुदावन्द खुद आसमान से लल्कार और खास फ़रिश्ते की आवाज़ और खुदा के नरसिंगे के साथ

उतर आएगा और पहले तो वो जो मसीह में मरे जी उठेंगे। 17 फिर हम जो ज़िन्दा बाक़ी होंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएँगे; ताकि हवा में खुदावन्द का इस्तक्रबाल करें और इसी तरह हमेशा दावन्द के साथ रहेंगे। 18 पस, तुम इन बातों से एक दूसरे को तसल्ली दिया करो।

## 5

1 मगर ऐ भाइयों! इसकी कुछ ज़रूरत नहीं कि वक्त्रों और मौक़ों के ज़रिए तुम को कुछ लिखा जाए। 2 इस वास्ते कि तुम आप खुद जानते हो कि खुदावन्द का दिन इस तरह आने वाला है जिस तरह रात को चोर आता है। 3 जिस वक्त्र लोग कहते होंगे कि सलामती और अम्न है उस वक्त्र उन पर इस तरह हलाक़त आएगी जिस तरह हामिला को दर्द होता है और वो हरगिज़ न बचेंगे।

4 लेकिन तुम ऐ भाइयों, अंधेरे में नहीं हो कि वो दिन चोर की तरह तुम पर आ पड़े। 5 क्योंकि तुम सब नूर के फ़र्जन्द और दिन के फ़र्जन्द हो, हम न रात के हैं न तारीकी के। 6 पस, औरों की तरह सोते न रहो, बल्कि जागते और होशियार रहो। 7 क्योंकि जो सोते हैं रात ही को सोते हैं और जो मतवाले होते हैं रात ही को मतवाले होते हैं।

8 मगर हम जो दिन के हैं ईमान और मुहब्बत का बख़्तर लगा कर और निजात की उम्मीद कि टोपी पहन कर होशियार रहें। 9 क्योंकि खुदा ने हमें ग़ज़ब के लिए नहीं बल्कि इसलिए मुकर्रर किया कि हम अपने खुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से नजात हासिल करें। 10 वो हमारी खातिर इसलिए मरा, कि हम जागते हों या सोते हों सब मिलकर उसी के साथ जिएँ। 11 पस, तुम एक दूसरे को तसल्ली दो और एक दूसरे की तरक्की की वजह बनो चुनाँचे तुम ऐसा करते भी हो।

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100

12 और ऐ भाइयों, हम तुम से दरखास्त करते हैं, कि जो तुम में मेहनत करते और खुदावन्द में तुम्हारे पेशवा हैं और तुम को नसीहत करते हैं उन्हें मानो। 13 और उनके काम की वजह से मुहब्बत के साथ उन की बड़ी इज्जत करो; आपस में मेल मिलाप रखो। 14 और ऐ भाइयों, हम तुम्हें नसीहत करते हैं कि बे क़ाइदा चलने वालों को समझाओ कम हिम्मतों को दिलासा दो कमज़ोरों को संभालो सब के साथ तहम्मील से पेश आओ।

15 ख़बरदार कोई किसी से बदी के बदले बदी न करे बल्कि हर वक्त्र नेकी करने के दर पै रहो आपस में भी और सब से। 16 हर वक्त्र खुश रहो। 17 बिला नागा दुआ करो। 18 हर एक बात में शुक्र गुज़ारी करो क्योंकि मसीह ईसा में तुम्हारे बारे में खुदा की यही मर्जी है।

<sup>19</sup> रूह को न बुझाओ। <sup>20</sup> नबुव्वतों की हिकारत न करो। <sup>21</sup> सब बातों को आजमाओ, जो अच्छी हो उसे पकड़े रहो। <sup>22</sup> हर किस्म की बदी से बचे रहो।

<sup>23</sup> खुदा जो इत्मीनान का चश्मा है आप ही तुम को बिल्कुल पाक करे, और तुम्हारी रूह और जान और बदन हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के आने तक पूरे पूरे और बेऐब महफूज रहें। <sup>24</sup> तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है वो ऐसा ही करेगा।

<sup>25</sup> ऐ भाइयों! हमारे वास्ते दुआ करो।

<sup>26</sup> पाक बोसे के साथ सब भाइयों को सलाम करो।

<sup>27</sup> मैं तुम्हें खुदावन्द की कसम देता हूँ, कि ये खत सब भाइयों को सुनाया जाए।

<sup>28</sup> हमारे खुदावन्द ईसा मसीह का फ़जल तुम पर होता रहे।

## थिस्सलुनीकियों के नाम पौलूस रसूल का दूसरा खत

2222222222 22 222222

1 थिस्सलुनीकों की तरह ही यह खत भी पौलूस, सीलास और तीमुथियुस की तरफ से है इस खत के लिखने वाले ने वही तरीका इस्तेमाल किया जैसे 1 थिस्सलुनीकों के लिए और दीगर खुतूत के लिए किया जिन्हें पौलूस ने लिखे थे। यह बताता है कि पौलूस खास मुसन्निफ था। सीलास और तीमुथियुस को शुरूआती सलाम में शामिल किया गया है (2 थिस्सलुनीकियों 1:1) इस की कई एक आयतों में 'हम' और 'हमारे' का लफ्ज इस्तेमाल हुआ है जो यह बताता है कि वह तीनों उन बातों के लिए राजी थे। खुशखत पौलूस की नहीं थी जबकि उस ने सिर्फ आखरी सलाम और दुआ के अल्फाज लिखे थे (2 थिस्सलुनीकियों 3:17) ऐसा लगता है कि पौलूस ने तीमुथियुस और सीलास को लिखने की हिदायत दी थी।

22222 22222 22 22222222 22 2222

इस के लिखे जाने की तारीख तक्ररीबन 51 - 52 ईस्वी के बीच था।

2 थिस्सलुनीकियों के खत को पौलूस ने कुरिन्थ में लिखवाया था जब 1 थिस्सलुनीकियों लिखा जा रहा था।

222222 22222222222 22222 22222

2 थिस्सलुनीकियों 1:1 का हवाला इस कलीसिया के लिए दूसरे खत के क्लारिईन बतौर पहचान करती है।

2222 22222222

इसे लिखने का मक्सद था खुदावन्द की दूसरी आमद की बाबत मसीही एतकादी उसलू की गलती को सुधारना। ईमानदारों की ईमान की हिफाजत में उन की तौसीफ व तारीफ करने और उनकी हौसला अफजाई करने और खुदावन्द की दूसरी आमद की बाबत जो गलतफहमी थी उन्हें दूर करने के लिए पौलूस ने इस खत को लिखवाया।

2222222

उम्मीद में जीना।

बैरूनी खाका

1. सलाम — 1:1, 2

2. मुसीबत में दिलासा — 1:3-12

3. खुदावन्द की दूसरी आमद की बाबत सही तसव्वुर पेश करना — 2:1-12

4. उन के मुकद्दर की बाबत याद दिहानी (याददाशत) 2:13-17

5. अमली मुआमलों से मुताल्लिक नसीहतें — 3:1-15

6. आखरी सलाम — 3:16-18

2222222 22 222222

1 पौलूस, और सिलास और तीमुथियुस की तरफ से थिस्सलुनीकियों शहर की कलीसिया के नाम खत जो हमारे बाप खुदा और खुदावन्द 'ईसा मसीह' में है।

2 फ़ज़ल और इत्मीनान खुदा' बाप और खुदावन्द 'ईसा मसीह' की तरफ से तुम्हें हासिल होता रहे।

3 ऐ भाइयों! तुम्हारे बारे में हर वक़्त खुदा का शुक्र करना हम पर फ़र्ज़ है, और ये इसलिए मुनासिब है, कि तुम्हारा ईमान बहुत बढ़ता जाता है; और तुम सब की मुहब्बत आपस में ज्यादा होती जाती है। 4 यहाँ तक कि हम आप खुदा की कलीसियाओं में तुम पर फ़ख़र करते हैं कि जितने ज़ुल्म और मुसीबतें तुम उठाते हो उन सब में तुम्हारा सब् और ईमान ज़ाहिर होता है। 5 ये खुदा की सच्ची अदालत का साफ़ निशान है; ताकि तुम खुदा की बादशाही के लायक ठहरो जिस के लिए तुम तकलीफ़ भी उठाते हो।

6 क्योंकि खुदा के नज़दीक ये इन्साफ़ है के बदले में तुम पर मुसीबत लाने वालों को मुसीबत। 7 और तुम मुसीबत उठाने वालों को हमारे साथ आराम दे; जब खुदावन्द 'ईसा' अपने मज़बूत फ़रिश्तों के साथ भड़कती हुई आग में आसमान से ज़ाहिर होगा। 8 और जो खुदा को नहीं पहचानते और हमारे खुदावन्द 'ईसा' की खुशख़बरी को नहीं मानते उन से बदला लेगा।

9 वह खुदावन्द का चेहरा और उसकी कुदरत के जलाल से दूर हो कर हमेशा हलाकत की सज़ा पाएँगे 10 ये उस दिन होगा जबकि वो अपने मुक़द्दसों में जलाल पाने और सब ईमान लाने वालों की वजह से ता'अज्जुब का बाइस होने के लिए आएगा; क्योंकि तुम हमारी गवाही पर ईमान लाए।

11 इसी वास्ते हम तुम्हारे लिए हर वक़्त दुआ भी करते रहते हैं कि हमारा खुदा तुम्हें इस बुलावे के लायक जाने और नेकी की हर एक ख़्वाहिश और ईमान के हर एक काम को कुदरत से पूरा करे। 12 ताकि हमारे खुदा और खुदावन्द 'ईसा मसीह' के फ़ज़ल के मुवाफ़िक़ हमारे खुदावन्द 'ईसा' का नाम तुम में जलाल पाए और तुम उस में।

2

2222222222222 22 2222 22 22222 22222 22222 22222



1 ऐ भाइयों! हम अपने खुदा वन्द ईसा मसीह के आने और उस के पास जमा होने के बारे में तुम से दरखास्त करते हैं। 2 कि किसी रूह या कलाम या खत से जो गोया हमारी तरफ से हो ये समझ कर कि खुदावन्द के वापस आने का दिन आ पहुँचा है तुम्हारी अकल अचानक परेशान न हो जाए और न तुम घबराओ।

3 किसी तरह से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वो दिन नहीं आएगा जब तक कि पहले बरगस्तगी न हो और वो गुनाह का शख्स या 'नी हलाकत का फ़र्जन्द ज़ाहिर न हो। 4 जो मुखालिफ़त करता है और हर एक से जो खुदा या मा'बूद कहलाता है अपने आप को बड़ा ठहराता है; यहाँ तक कि वो खुदा के मक़िदस में बैठ कर अपने आप को खुदा ज़ाहिर करता है।

5 क्या तुम्हें याद नहीं कि जब मैं तुम्हारे पास था तो तुम से ये बातें कहा करता था? 6 अब जो चीज़ उसे रोक रही है ताकि वो अपने खास वक़्त पर ज़ाहिर हो उस को तुम जानते हो। 7 क्योंकि बेदीनी का राज़ तो अब भी तासीर करता जाता है मगर अब एक रोकने वाला है और जब तक कि वो दूर न किया जाए रोके रहेगा।

8 उस वक़्त वो बेदीन ज़ाहिर होगा, जिसे खुदावन्द येसू अपने मुँह की फूँक से हलाक और अपनी आमद के जलाल से मिटा देगा। 9 और जिसकी आमद शैतान की तासीर के मुवाफ़िक़ हर तरह की झूठी कुदरत और निशानों और अजीब कामों के साथ, 10 और हलाक होने वालों के लिए नारास्ती के हर तरह के धोखे के साथ होगी इस वास्ते कि उन्होंने ने हक़ की मुहब्बत को इस्तिyar न किया जिससे उनकी नजात होती।

11 इसी वजह से खुदा उन के पास गुमराह करने वाली तासीर भेजेगा ताकि वो झूठ को सच जानें। 12 और जितने लोग हक़ का यक़ीन नहीं करते बल्कि नारास्ती को पसन्द करते हैं; वो सज़ा पाएंगे।

13 लेकिन तुम्हारे बारे में ऐ भाइयों! खुदावन्द के प्यारों हर वक़्त खुदा का शुक्र करना हम पर फ़र्ज है क्योंकि खुदा ने तुम्हें शुरू से ही इसलिए चुन लिया था कि रूह के ज़रिए से पाकीज़ा बन कर और हक़ पर ईमान लाकर नजात पाओ। 14 जिस के लिए उस ने तुम्हें हमारी खुशख़बरी के वसीले से बुलाया ताकि तुम हमारे खुदा वन्द 'ईसा मसीह का जलाल हासिल करो। 15 पस ऐ भाइयों! साबित क़दम रहो, और जिन रवायतों की तुम ने हमारी ज़बानी या खत के ज़रिए से ता'लीम पाई है उन पर क़ाईम रहो।

16 अब हमारा खुदावन्द 'ईसा मसीह खुद और हमारा बाप खुदा जिसने हम से मुहब्बत रखी और फ़ज़ल से

हमेशा तसल्ली और अच्छी उम्मीद बख़्शी 17 तुम्हारे दिलों को तसल्ली दे और हर एक नेक काम और कलाम में मज़बूत करे।

### 3

22222 22 222 2222 22 22222  
2222222222

1 गरज़ ऐ भाइयों और बहनों! हमारे हक़ में दुआ करो कि खुदावन्द का कलाम जल्द ऐसा फैल जाए और जलाल पाए; जैसा तुम में। 2 और कजरौ और बुरे आदमियों से बचे रहें क्योंकि सब में ईमान नहीं। 3 मगर खुदावन्द सच्चा है वो तुम को मज़बूत करेगा; और उस शरीर से महफूज़ रखेगा।

4 और खुदावन्द में हमें तुम पर भरोसा है; कि जो हुक्म हम तुम्हें देते हैं उस पर अमल करते हो और करते भी रहोगे। 5 खुदावन्द तुम्हारे दिलों को खुदा की मुहब्बत और मसीह के सबर की तरफ़ हिदायत करे।

6 ऐ भाइयों! हम अपने खुदावन्द 'ईसा मसीह के नाम से तुम्हें हुक्म देते हैं कि हर एक ऐसे भाई से किनारा करो जो बे क़ाइदा चलता है और उस रिवायत पर अमल नहीं करता जो उस को हमारी तरफ़ से पहुँची। 7 क्योंकि आप जानते हो कि हमारी तरह किस तरह बनना चाहिए इसलिए कि हम तुम में बे क़ाइदा न चलते थे। 8 और किसी की रोटी मुफ़्त न खाते थे, बल्कि मेहनत और मशक्कत से रात दिन काम करते थे ताकि तुम में से किसी पर बोझ न डालें। 9 इसलिए नहीं कि हम को इस्तिyar न था बल्कि इसलिए कि अपने आपको तुम्हारे वास्ते नमूना ठहराएँ ताकि तुम हमारी तरह बनो

10 और जब हम तुम्हारे पास थे उस वक़्त भी तुम को ये हुक्म देते थे; कि जिसे मेहनत करना मन्ज़ूर न हो वो खाने भी न पाए। 11 हम सुनते हैं कि तुम में कुछ बेक़ाइदा चलते हैं और कुछ काम नहीं करते; बल्कि औरों के काम में दख़ल अंदाज़ी करते हैं। 12 ऐसे शख्सों को हम खुदावन्द 'ईसा मसीह में हुक्म देते और सलाह देते हैं कि चुप चाप काम कर के अपनी ही रोटी खाएँ।

13 और तुम ऐ भाइयों! नेक काम करने में हिम्मत न हारो। 14 और अगर कोई हमारे इस खत की बात को न माने तो उसे निगाह में रखो और उस से त'अल्लुक न रखो ताकि वो शर्मिन्दा हो। 15 लेकिन उसे दुश्मन न जानो बल्कि भाई समझ कर नसीहत करो।

16 अब खुदावन्द जो इत्मीनान का चश्मा है आप ही तुम को हमेशा और हर तरह से इत्मीनान बख़्शे; खुदावन्द तुम सब के साथ रहे। 17 मैं, पौलुस अपने हाथ से सलाम लिखता हूँ; हर खत में मेरा यही निशान है; मैं

इसी तरह लिखता हूँ। <sup>18</sup> हमारे खुदावन्द 'ईसा मसीह  
का फ़ज़ल तुम सब पर होता रहे।

## तीमुथियुस के नाम पौलूस रसूल का पहला खत

?????????? ??

मुसन्निफ़ की पहचान इस खत का मुसन्निफ़ पौलूस है। 1 तीमुथियुस की इबारत साफ़ बयान करती है कि इसे पौलूस के ज़रिए लिखा गया था। “पौलूस की तरफ़ से मसीह येशू के हुक्म से उस का रसूल है।” (1 तीमुथियुस 1:1) इब्तिदाई कलीसिया ने साफ़ तौर से क़बूल किया कि इस खत को पौलूस ने लिखा।

????? ?????? ??

इस खत को तक्ररीबन 62 - 64 ईस्वी के बीच लिखा गया था।

जब पौलूस ने तीमुथियुस को इफ़सुस में छोड़ा था तो पौलूस मकिदुनिया रवाना हो गया था, वहीं पर उसने उसे खत लिखा। (1 तीमुथियुस 1:3; 3:14,15)।

????? ?????????? ?????

पहला तीमुथियुस इस तरह नाम इस लिए दिया गया क्योंकि कुछ अर्से बाद इस खत के ज़रिए पहली बार उस से मुखातब हुआ था। तीमुथियुस पौलूस के कई एक सफ़र में हमसफ़र और उस का मुआविन था। तीमुथियुस और कलीसिया दोनों मिलकर 1 तीमुथियुस खत के मख़्तूबा क़ारिर्दन थे।

????

तीमुथियुस को यह नसीहत देने के लिए कि खुदा का ख़ान्दान वह ख़ान्दान जो खुदा में पाया जाता है। अपने आप में चलाया जाना चाहिए; (3:14, 15) और तीमुथियुस को इन नसीहतों पर अमल करना था। यह आयतें तीमुथियुस के खत के लिए पौलूस का इरादा बतौर बयान करते हैं। वह बयान करता है कि वह इसलिए लिख रहा है लोग जानेंगे कि किस तरह लोग खुदा के ख़ान्दान में खुद को चलाएं यह खुदा का ख़ान्दान ज़िन्दा खुदा की कलीसिया है जो सच्चाई का खम्बा और बुनियाद है। यह इबारत बताता है कि पौलूस खुतूत भेजता था और अपने लोगों को नसीहत देता था कि किस तरह ईमान में मजबूत रहकर कलीसियाओं की ताभिर करें।

?????

एक जवान शागिर्द के लिए नसीहतें  
बैरूनी खाका

1. खिदमत के लिये अम्ली — 1:1-20

2. खिदमत करने के बुनियादी उसूल — 2:1-3:16

### 3. खिदमत की ज़िम्मदारियां — 4:1-6:21

?????? ??

1 पौलूस की तरफ़ से जो हमारे मुन्जी खुदा और हमारे उम्मीद गाह मसीह ईसा के हुक्म से मसीह ईसा का रसूल है, 2 तीमुथियुस के नाम जो ईमान के लिहाज़ से मेरा सच्चा बेटा है: फ़ज़ल, रहम और इत्मीनान खुदा बाप और हमारे खुदावन्द मसीह ईसा की तरफ़ से तुझे हासिल होता रहे।

3 जिस तरह मैंने मकिदुनिया जाते वक़्त तुझे नसीहत की थी, कि ईफ़िसुस में रह कर कुछ को शख्सों हुक्म कर दे कि और तरह की ता'लीम न दें, 4 और उन कहानियों और बे इन्तिहा नसब नामों पर लिहाज़ न करें, जो तकरार का ज़रिया होते हैं, और उस इंतज़ाम — ए — इलाही के मुवाफ़िक़ नहीं जो ईमान पर म्वनी है, उसी तरह अब भी करता हूँ।

5 हुक्म का मक़सद ये है कि पाक दिल और नेक नियत और बिना दिखावा ईमान से मुहब्बत पैदा हो। 6 इनको छोड़ कर कुछ शख्स बेहूदा बकवास की तरफ़ मुतवज्जह हो गए, 7 और शरी'अत के मु'अल्लिम बनना चाहते हैं, हालाँकि जो बातें कहते हैं और जिनका यक़ीनी तौर से दावा करते हैं, उनको समझते भी नहीं। 8 मगर हम जानते हैं कि शरी'अत अच्छी है, बशर्ते कि कोई उसे शरी'अत के तौर पर काम में लाए।

9 या'नी ये समझकर कि शरी'अत रास्तबाज़ों के लिए मुक़रर नहीं हुई, बल्कि बेशरा' और सरकश लोगों, और बेदीनों, और गुनहगारों, और नापाक, और रिन्दों, और माँ — बाप के क्रातिलों, और खूनियों, 10 और हारामकारों, और लौंडे — बाज़ों, और बर्दा — गुलाम फ़रोशों, और झूठों, और झूठी क़सम खानेवालों, और इनके सिवा सही ता'लीम के और बरख़िलाफ़ काम करनेवालों के वास्ते है। 11 ये खुदा — ए — मुबारिक़ के जलाल की उस खुशख़बरी के मुवाफ़िक़ है जो मेरे सुपुर्द हुई।

12 मैं अपनी ताक़त बख़्शने वाले खुदावन्द मसीह ईसा का शुक्र करता हूँ कि उसने मुझे दियानतदार समझकर अपनी खिदमत के लिए मुक़रर किया। 13 अगरचे मैं पहले कुफ़र बकने वाला, और सताने वाला, और बे'इज़्ज़त करने वाला था; तोभी मुझ पर रहम हुआ, इस वास्ते कि मैंने बेईमानी की हालत में नादानी से ये काम किए थे। 14 और हमारे खुदावन्द का फ़ज़ल उस ईमान और मुहब्बत के साथ जो मसीह ईसा में है बहुत ज़्यादा हुआ।

15 ये बात सच और हर तरह से कुबूल करने के लायक है कि मसीह ईसा गुनहगारों को नजात देने के लिए दुनिया में आया, उन गुनहगारों में से सब से बड़ा मैं हूँ, 16 लेकिन मुझ पर रहम इसलिए हुआ कि ईसा मसीह मुझ बड़े गुनहगार में अपना सब्र ज़ाहिर करे, ताकि जो लोग हमेशा की ज़िन्दगी के लिए उस पर ईमान लाएँगे उन के लिए मैं नमूना बनूँ। 17 अब हमेशा कि बादशाही या'नी ना मिटने वाली, नादीदा, एक खुदा की 'इज्जत और बड़ाई हमेशा से हमेशा तक होती रहे। आमीन।

18 ऐ फ़र्ज़न्द तीमुथियुस! उन पेशीनगोइयों के मुवाफ़िक़ जो पहले तेरे ज़रिए की गई थीं, मैं ये हुक्म तेरे सुपुर्द करता हूँ ताकि तू उनके मुताबिक़ अच्छी लड़ाई लड़ता रहे; और ईमान और उस नेक नियत पर काईम रहे, 19 जिसको दूर करने की वजह से कुछ लोगों के ईमान का जहाज़ ग़र्क़ हो गया। 20 उन ही में से हिमुन्युस और सिकन्दर हैं, जिन्हें मैंने शैतान के हवाले किया ताकि कुफ़र से बा'ज़ रहना सीखें।

## 2

???????? ???? ?? ?????????

1 पस मैं सबसे पहले ये नसीहत करता हूँ, कि मुनाज़ातें, और दू'आएँ और, इल्लिजाएँ और शुक्रगुज़ारियाँ सब आदमियों के लिए की जाएँ, 2 बादशाहों और सब बड़े मरतबे वालों के वास्ते इसलिए कि हम कमाल दीनदारी और सन्जीदगी से चैन सुकून के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें। 3 ये हमारे मुन्जी खुदा के नज़दीक 'उम्दा और पसन्दीदा है। 4 वो चाहता है कि सब आदमी नजात पाएँ, और सच्चाई की पहचान तक पहुंचें।

5 क्यूँकि खुदा एक है, और खुदा और इंसान के बीच में दर्मियानी भी एक या'नी मसीह ईसा जो इंसान है। 6 जिसने अपने आपको सबके फ़िदया में दिया कि मुनासिब वक्तों पर इसकी गवाही दी जाए। 7 मैं सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता, कि मैं इसी गरज से ऐलान करने वाला और रसूल और ग़ैर — क्रौमों को ईमान और सच्चाई की बातें सिखाने वाला मुकर्रर हुआ।

8 पस मैं चाहता हूँ कि मर्द हर जगह, बग़ैर गुस्सा और तकरार के पाक हाथों को उठा कर दुआ किया करें। 9 इसी तरह 'औरतें हयादार लिबास से शर्म और परहेज़गारी के साथ अपने आपको सँवारें; न कि बाल गूँधने, और सोने और मोतियों और क्रीमती पोशाक से, 10 बल्कि नेक कामों से, जैसा खुदा परस्ती का इक्रार करने वाली 'औरतों को मुनासिब है।

11 'औरत को चुपचाप कमाल ताबेदारी से सीखना चाहिए। 12 और मैं इजाज़त नहीं देता कि 'औरत सिखाए या मर्द पर हुक्म चलाए, बल्कि चुपचाप रहे।

13 क्यूँकि पहले आदम बनाया गया, उसके बाद हव्वा; 14 और आदम ने धोखा नहीं खाया, बल्कि 'औरत धोखा खाकर गुनाह में पड़ गई; 15 लेकिन औलाद होने से नजात पाएंगी, बशर्ते कि वो ईमान और मुहब्बत और पाकीज़गी में परहेज़गारी के साथ काईम रहें।

## 3

???????? ???? ?????????

1 और ये बात सच है, कि जो शरूस निगहबान का मर्तबा चाहता है, वो अच्छे काम की ख्वाहिश करता है। 2 पस निगहबान को बेइल्जाम, एक बीवी का शौहर, परहेज़गार, खुदापरस्त, शाइस्ता, मुसाफ़िर परवर, और ता'लीम देने के लायक होना चाहिए। 3 नशे में शोर मचाने वाला या मार — पीट करने वाला न हो; बल्कि नर्मदिल, न तकरारी, न ज़रदोस्त।

4 अपने घर का अच्छी तरह बन्दोबस्त करता हो, और अपने बच्चों को पूरी नर्मी से ताबे रखता हो। 5 (जब कोई अपने घर ही का बन्दोबस्त करना नहीं जानता तो खुदा कि कलीसिया की देख भाल क्या करेगा?)

6 नया शागिर्द न हो, ताकि घमण्ड करके कहीं इब्नीस की सी सज़ा न पाए। 7 और बाहर वालों के नज़दीक भी नेक नाम होना चाहिए, ताकि मलामत में और इब्नीस के फन्दे में न फँसे

8 इसी तरह खादिमों को भी नर्म होना चाहिए दो ज़बान और शराबी और नाज़ायज़ नफ़ा का लालची ना हो 9 और ईमान के भेद को पाक दिल में हिफ़ाज़त से रखें। 10 और ये भी पहले आजमाए जाएँ, इसके बाद अगर बे गुनाह ठहरें तो खिदमत का काम करें।

11 इसी तरह 'औरतों को भी संजीदा होना चाहिए; तोहमत लगाने वाली न हों, बल्कि परहेज़गार और सब बातों में ईमानदार हों। 12 खादिम एक एक बीवी के शौहर हों और अपने अपने बच्चों और घरों का अच्छी तरह बन्दोबस्त करते हों। 13 क्यूँकि जो खिदमत का काम बखूबी अंजाम देते हैं, वो अपने लिए अच्छा मर्तबा और उस ईमान में जो मसीह ईसा पर है, बड़ी दिलेरी हासिल करते हैं।

14 मैं तेरे पास जल्द आने की उम्मीद करने पर भी ये बातें तुझे इसलिए लिखता हूँ, 15 कि अगर मुझे आने में देर हो, तो तुझे मा'लूम हो जाए कि खुदा के घर, या'नी ज़िन्दा खुदा की कलीसिया में जो हक़ का सुतून और बुनियाद है, कैसा बर्ताव करना चाहिए।

16 इस में कलाम नहीं कि



दीनदारी का भेद बड़ा है, या'नी  
 वो जो जिस्म में जाहिर हुआ,  
 और रूह में रास्तबाज ठहरा,  
 और फ़रिश्तों को दिखाई दिया,  
 और ग़ैर — क़ौमों में उसकी मनादी हुई,  
 और दुनिया में उस पर ईमान लाए,  
 और जलाल में ऊपर उठाया गया।

## 4

लेकिन पाक रूह साफ़ फ़रमाता है कि आइन्दा ज़मानो में कुछ लोग गुमराह करनेवाली रूहों, और शयातीन की ता'लीम की तरफ़ मुतवज्जह होकर ईमान से फिर जाएँ।<sup>2</sup> ये उन झूठे आदमियों की रियाकारी के ज़रिए होगा, जिनका दिल गोया गर्म लोहे से दागा गया है;

<sup>3</sup> ये लोग शादी करने से मनह' करेंगे, और उन खानों से परहेज़ करने का हुक्म देंगे, जिन्हें खुदा ने इसलिए पैदा किया है कि ईमानदार और हक़ के पहचानने वाले उन्हें शुक्रगुजारी के साथ खाएँ।<sup>4</sup> क्योंकि खुदा की पैदा की हुई हर चीज़ अच्छी है, और कोई चीज़ इनकार के लायक नहीं; बशर्ते कि शुक्रगुजारी के साथ खाई जाए, <sup>5</sup> इसलिए कि खुदा के कलाम और दुआ से पाक हो जाती है।

<sup>6</sup> अगर तू भाइयों को ये बातें याद दिलाएगा, तो मसीह ईसा का अच्छा खादिम ठहरेगा; और ईमान और उस अच्छी ता'लीम की बातों से जिसकी तू पैरवी करता आया है, परवरिश पाता रहेगा।<sup>7</sup> लेकिन बेहूदा और बूढ़ियों की सी कहानियों से किनारा कर, और दीनदारी के लिए मेहनत कर।<sup>8</sup> क्योंकि जिस्मानी मेहनत का फ़ाइदा कम है, लेकिन दीनदारी सब बातों के लिए फ़ाइदामन्द है, इसलिए कि अब की और आइन्दा की ज़िन्दगी का वा'दा भी इसी के लिए है।

<sup>9</sup> अगर तू भाइयों को ये बातें याद दिलाएगा, तो मसीह ईसा का अच्छा खादिम ठहरेगा; और ईमान और उस अच्छी ता'लीम की बातों से जिसकी तू पैरवी करता आया है, परवरिश पाता रहेगा।<sup>7</sup> लेकिन बेहूदा और बूढ़ियों की सी कहानियों से किनारा कर, और दीनदारी के लिए मेहनत कर।<sup>8</sup> क्योंकि जिस्मानी मेहनत का फ़ाइदा कम है, लेकिन दीनदारी सब बातों के लिए फ़ाइदामन्द है, इसलिए कि अब की और आइन्दा की ज़िन्दगी का वा'दा भी इसी के लिए है।

<sup>9</sup> ये बात सच है और हर तरह से कुबूल करने के लायक।<sup>10</sup> क्योंकि हम मेहनत और कोशिश इस लिए करते हैं कि हमारी उम्मीद उस ज़िन्दा खुदा पर लगी हुई है, जो सब आदमियों का खास कर ईमानदारों का मुन्जी है।

<sup>11</sup> इन बातों का हुक्म कर और ता'लीम दे।

<sup>12</sup> कोई तेरी जवानी की हिक़ारत न करने पाए; बल्कि तू ईमानदारों के लिए कलाम करने, और चाल चलन, और मुहब्बत, और पाकीज़गी में नमूना बन।<sup>13</sup> जब तक मैं

न आऊँ, पढ़ने और नसीहत करने और ता'लीम देने की तरफ़ मुतवज्जह रह।

<sup>14</sup> उस ने 'अमत से गाफ़िल ना रह जो तुझे हासिल है, और नबुव्वत के ज़रिए से बुज़ुर्गों के हाथ रखते वक़्त तुझे मिली थी।<sup>15</sup> इन बातों की फ़िक्र रख, इन ही में मशगूल रह, ताकि तेरी तरक्की सब पर जाहिर हो।<sup>16</sup> अपना और अपनी ता'लीम की ख़बरदारी कर। इन बातों पर क़ाईम रह, क्योंकि ऐसा करने से तू अपनी और अपने सुनने वालों को झूठे उस्ताद की ता'लीम से भी नजात का ज़रिया होगा।

## 5

किसी बड़े उम्र वाले को मलामत न कर, बल्कि बाप जान कर नसीहत कर; <sup>2</sup> और जवानों को भाई जान कर, और बड़ी उम्र वाली 'औरतों को माँ जानकर, और जवान 'औरतों को कमाल पाकीज़गी से बहन जानकर।

<sup>3</sup> उन बेवाओं की, जो वाक़'ई बेवा हैं इज्जत कर।<sup>4</sup> और अगर किसी बेवा के बेटे या पोते हों, तो वो पहले अपने ही घराने के साथ दीनदारी का बर्ताव करना, और माँ — बाप का हक़ अदा करना सीखें, क्योंकि ये खुदा के नज़दीक पसन्दीदा है।

<sup>5</sup> जो वाक़'ई बेवा है और उसका कोई नहीं, वो खुदा पर उम्मीद रखती है और रात — दिन मुनाजात और दुआ में मशगूल रहती है; <sup>6</sup> मगर जो 'ऐश — ओ — अशरत में पड़ गई है, वो जीते जी मर गई है।

<sup>7</sup> इन बातों का भी हुक्म कर ताकि वो बेइल्जाम रहें।<sup>8</sup> अगर कोई अपनों और खास कर अपने घराने की ख़बरगीरी न करे, तो ईमान का इंकार करने वाला और बे — ईमान से बदतर है।

<sup>9</sup> वही बेवा फ़र्द में लिखी जाए जो साठ बरस से कम की न हो, और एक शौहर की बीवी हुई हो, <sup>10</sup> और नेक कामों में मशहूर हो, बच्चों की तरबियत की हो, परदेसियों के साथ मेहमान नवाज़ी की हो, मुक़द्दसों के पाँव धोए हों, मुसीबत ज़दों की मदद की हो और हर नेक काम करने के दरपै रही हो।

<sup>11</sup> मगर जवान बेवाओं के नाम दर्ज न कर, क्योंकि जब वो मसीह के खिलाफ़ नफ़्स के ताबे'हो जाती हैं, तो शादी करना चाहती हैं, <sup>12</sup> और सज़ा के लायक ठहरती हैं, इसलिए कि उन्होंने अपने पहले ईमान को छोड़ दिया।

<sup>13</sup> और इसके साथ ही वो घर घर फिर कर बेकार रहना सीखती हैं, और सिर्फ़ बेकार ही नहीं रहती बल्कि बक बक करती रहती हैं औरों के काम में दख़ल भी देती हैं और बेकार की बातें कहती हैं।<sup>14</sup> पस मैं ये चाहता हूँ

कि जवान बेवाएँ शादी करें, उनके औलाद हों, घर का इन्तिजाम करें, और किसी मुखालिफ़ को बदगोई का मौक़ा न दें। <sup>15</sup> क्योंकि कुछ गुमराह हो कर शैतान के पीछे हो चुकी हैं। <sup>16</sup> अगर किसी ईमानदार औरत के यहाँ बेवाएँ हों, तो वही उनकी मदद करे और कलीसिया पर बोझ न डाला जाए, ताकि वो उनकी मदद कर सके जो वाक़ई बेवा हैं।

<sup>17</sup> जो बुजुर्ग अच्छा इन्तिजाम करते हैं, खास कर वो जो कलाम सुनाने और ता'लीम देने में मेहनत करते हैं, दुगनी इज्जत के लायक़ समझे जाएँ। <sup>18</sup> क्योंकि किताब — ए — मुक़द्दस ये कहती है, “दाएँ में चलते हुए बैल का मुँह न बाँधना,” और “मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है।”

<sup>19</sup> जो दा'वा किसी बुजुर्ग के बरख़िलाफ़ किया जाए, बग़ैर दो या तीन गवाहों के उसको न सुन। <sup>20</sup> गुनाह करने वालों को सब के सामने मलामत कर ताकि औरों को भी ख़ौफ़ हो।

<sup>21</sup> खुदा और मसीह ईसा और बरगुज़ीदा फ़रिश्तों को गवाह करके मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि इन बातों पर बिला ता'अस्सूब अमल करना, और कोई काम तरफ़दारी से न करना। <sup>22</sup> किसी शख्स पर जल्द हाथ न रखना, और दूसरों के गुनाहों में शरीक न होना, अपने आपको पाक रखना।

<sup>23</sup> आइन्दा को सिर्फ़ पानी ही न पिया कर, बल्कि अपने में दे और अक्सर कमज़ोर रहने की वजह से ज़रा सी मय भी काम में लाया कर। <sup>24</sup> कुछ आदमियों के गुनाह ज़ाहिर होते हैं, और पहले ही अदालत में पहुँच जाते हैं कुछ बाद में जाते हैं। <sup>25</sup> इसी तरह कुछ अच्छे काम भी ज़ाहिर होते हैं, और जो ऐसे नहीं होते वो भी छिप नहीं सकते।

## 6

<sup>1</sup> जितने नौकर जुए के नीचे हों, अपने मालिकों को कमाल इज्जत के लाइक़ जानें, ताकि खुदा का नाम और ता'लीम बदनाम न हो। <sup>2</sup> और जिनके मालिक ईमानदार हैं वो उनको भाई होने की वजह से हक़ीर न जानें,

~~~~~

बल्कि इस लिए ज्यादातर उनकी ख़िदमत करें कि फ़ाइदा उठानेवाले ईमानदार और अज़ीज़ हैं तू इन बातों की ता'लीम दे और नसीहत कर।

³ अगर कोई शख्स और तरह की ता'लीम देता है और सही बातों को, या'नी खुदावन्द ईसा मसीह की बातें और उस ता'लीम को नहीं मानता जो दीनदारी के मुताबिक़ है, ⁴ वो मगरूर है और कुछ नहीं जानता; बल्कि उसे

बहस और लफ़्ज़ी तकरार करने का मर्ज़ है, जिनसे हसद और झगड़े और बदगोइयाँ और बदगुमानियाँ, ⁵ और उन आदमियों में रहो बदल पैदा होता है जिनकी अक्ल बिगड़ गई है और वो हक़ से महरूम है और दीनदारी को नफ़े ही का ज़रिया समझते हैं

⁶ हाँ दीनदारी सबर के साथ बड़े नफ़े का ज़रिया है।

⁷ क्योंकि न हम दुनियाँ में कुछ लाए और न कुछ उसमें से ले जा सकते हैं। ⁸ पस अगर हमारे पास खाने पहनने को है, तो उसी पर सबर करें।

⁹ लेकिन जो दौलतमन्द होना चाहते हैं, वो ऐसी आजमाइश और फन्दे और बहुत सी बेहूदा और नुक्सान पहुँचाने वाली ख्वाहिशों में फँसते हैं, जो आदमियों को तबाही और हलाकत के दरिया में गर्क कर देती हैं। ¹⁰ क्योंकि माल की दोस्ती हर किस्म की बुराई की जड़ है जिसकी आरजू में कुछ ने ईमान से गुमराह होकर अपने दिलों को तरह तरह के ग़मों से छलनी कर लिया।

¹¹ मगर ऐ मर्द — ए — खुदा, तू इन बातों से भाग और रास्तबाज़ी, दीनदारी, ईमान, मुहब्बत, सबर और नर्म दिली का तालिब हो। ¹² ईमान की अच्छी कुशती लड़; उस हमेशा की ज़िन्दगी पर क़ब्ज़ा कर ले जिसके लिए तू बुलाया गया था, और बहुत से गवाहों के सामने अच्छा इक़रार किया था।

¹³ मैं उस खुदा को, जो सब चीज़ों को ज़िन्दा करता है, और मसीह ईसा को, जिसने पुनित्युस पिलातुस के सामने अच्छा इक़रार किया था, गवाह करके तुझे नसीहत करता हूँ। ¹⁴ कि हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के उस मसीह के आने तक हुक्म को बेदाग़ और बेइल्जाम रख,

¹⁵ जिसे वो मुनासिब वक़्त पर नुमायाँ करेगा, जो मुबारक़ और वाहिद हाकिम, बादशाहों का बादशाह और खुदावन्दों का खुदा है; ¹⁶ बक़ा सिर्फ़ उसी की है, और वो उस नूर में रहता है जिस तक किसी की पहुँच नहीं हो सकती, न उसे किसी इंसान ने देखा और न देख सकता है; उसकी इज्जत और सल्लतनत हमेशा तक रहे। आमीन।

¹⁷ इस मौजूदा ज़हान के दौलतमन्दों को हुक्म दे कि मगरूर न हों और नापाएदार दौलत पर नहीं, बल्कि खुदा पर उम्मीद रखें जो हमें लुत्फ़ उठाने के लिए सब चीज़ें बहुतायत से देता है। ¹⁸ और नेकी करें, और अच्छे कामों में दौलतमन्द बनें, और सखावत पर तैयार और इम्दाद पर मुस्तईद हों, ¹⁹ और आइन्दा के लिए अपने वास्ते एक अच्छी बुनियाद काईम कर रखें ताकि हक़ीक़ी ज़िन्दगी पर क़ब्ज़ा करें।

²⁰ ऐ तीमुथियुस, इस अमानत को हिफाजत से रख;
और जिस 'इल्म को इल्म कहना ही ग़लत है, उसकी
बेहूदा बकवास और मुखालिफ़त पर ध्यान न कर।

²¹ कुछ उसका इक़रार करके ईमान से फिर गए हैं तुम
पर फ़ज़ल होता रहे।

तीमुथियुस के नाम पौलुस रसूल का दूसरा खत

?????????? ??

मुसन्निफ़ की पहचान रोम में पौलूस की कैद से रिहाई के बाद और उसकी चौथी मिशनरी सफ़र के बाद उसने 1 तीमुथियुस लिखा था। फिर से नीरो बादशाह के तहत कैद में डाला गया। यह वह वक्त था जब उसने दूसरा खत तीमुथियुस के नाम लिखा। पौलूस की पहली कैद में जब वह रोम में था तो उस को एक किराये के मकान में रहना पड़ा था (आमाल 28:30) इस के मुक़ाबले में यह दूसरी कैद जो नीरो के तहत थी इस में उसको ईजाएँ देकर कमज़ोर कर दिया गया, एक ठंडे तहख़ाने में रखा गया (4:13) और एक आम मुजरिम की तरह ज़न्जीरों से बंधा हुआ था (1:16; 2:9) पौलूस जानता था कि उसने अपनी खिदमत पूरी कर ली थी और उस के कूच का वक्त आ गया था (4:6-8)।

????? ???? ??

इसके लिखे जाने की तारीख़ तक्ररीबत ईस्वी 66 - 67 के बीच है।

पौलूस जब दूसरी बार हवालात में था तो उसने इस खत को लिखा जबकि वह शहादत का जाम पीने के इन्तज़ार में था।

????? ???? ???? ???? ???? ???? ?

इस खत को सब से पढ़ने वाला शख्स तीमुथियुस था और यक़ीनी तौर से उस ने इस खत को अपनी कलीसिया में पढ़ कर सुनाया।

??? ???? ?

तीमुथियुस के पास एक आख़री हौसला अफ़ज़ाई और नसीहत छोड़ने के लिए ताकि पौलूस ने जिस काम को उसके भरोसे छोड़ रखा था वह उसे बा — अज़्म और दिलेरी से पूरा कर सके (1:13 — 14), पूरे ध्यान के साथ (2:1 — 26) और साबित क़दमी और इस्तिक़्लाल के साथ करे (3:14-17)।

?????

1 एक ईमानदार खिदमत का सौंपा जाना।
बैरूनी खाका

1. खिदमत करने की तश्वीश — 1:1-18
2. खिदमत का नमूना — 2:1-26
3. झुठे उस्तादों के खिलाफ़ आगाह करना — 3:1-17
4. हौसला अफ़ज़ाही के अल्फ़ाज़ और बरकतें — 4:1-22

????? ??

1 पौलुस की तरफ़ से जो उस ज़िन्दगी के वा'दे के मुताबिक़ जो मसीह ईसा में है खुदा की मर्ज़ी से मसीह 'ईसा का रसूल है। 2 प्यारे बेटे तीमुथियुस के नाम खत:फ़ज़ल रहम और इत्मीनान खुदा बाप और हमारे खुदावन्द 'ईसा मसीह की तरफ़ से तुझे हासिल होता रहे।

3 जिस खुदा की इबादत में साफ़ दिल से बाप दादा के तौर पर करता हूँ; उसका शुक्र है कि अपनी दुआओं में बिला नागा तुझे याद रखता हूँ। 4 और तेरे आँसुओं को याद करके रात दिन तेरी मुलाक़ात का मुश्ताक़ रहता हूँ ताकि खुशी से भर जाऊँ। 5 और मुझे तेरा वो बे रिया ईमान याद दिलाया गया है जो पहले तेरी नानी लूइस और तेरी माँ यूनीके रखती थीं और मुझे यक़ीन है कि तू भी रखता है।

6 इसी वजह से मैं तुझे याद दिलाता हूँ कि तू खुदा की उस ने'अमत को चमका दे जो मेरे हाथ रखने के ज़रिए तुझे हासिल है। 7 क्योंकि खुदा ने हमें दहशत की रूह नहीं बल्कि कुदरत और मुहब्बत और तरबियत की रूह दी है।

8 पस, हमारे खुदावन्द की गवाही देने से और मुझ से जो उसका कैदी हूँ शर्म न कर बल्कि खुदा की कुदरत के मुताबिक़ खुशख़बरी की खातिर मेरे साथ दु:ख उठा। 9 जिस ने हमें नजात दी और पाक बुलावे से बुलाया हमारे कामों के मुताबिक़ नहीं बल्कि अपने खास इरादा और उस फ़ज़ल के मुताबिक़ जो मसीह 'ईसा में हम पर शुरू से हुआ। 10 मगर अब हमारे मुन्जी मसीह 'ईसा के आने से ज़ाहिर हुआ जिस ने मौत को बरबाद और बाक़ी ज़िन्दगी को उस खुशख़बरी के वसीले से रौशन कर दिया। 11 जिस के लिए मैं ऐलान करने वाला और रसूल और उस्ताद मुक़र्रर हुआ। 12 इसी वजह से मैं ये दु:ख भी उठाता हूँ, लेकिन शर्माता नहीं क्योंकि जिसका मैं ने यक़ीन किया है उसे जानता हूँ और मुझे यक़ीन है कि वो मेरी अमानत की उस दिन तक हिफ़ाज़त कर सकता है।

13 जो सही बातें तू ने मुझ से सुनी उस ईमान और मुहब्बत के साथ जो मसीह ईसा में है उन का खाका याद रख। 14 रूह — उल — कुदुस के वसीले से जो हम में बसा हुआ है इस अच्छी अमानत की हिफ़ाज़त कर।

15 तू ये जानता है कि आसिया सूबे के सब लोग मुझ से खफ़ा हो गए; जिन में से फ़ूगलुस और हरमुगिनेस हैं। 16 खुदावन्द उनेस्फ़रुस के घराने पर रहम करे क्योंकि उस ने बहुत मर्तबा मुझे ताज़ा दम किया और मेरी कैद से शर्मिन्दा न हुआ। 17 बल्कि जब वो रोमा शहर में आया तो कोशिश से तलाश करके मुझ से मिला। 18 खुदावन्द

उसे ये बख्शे कि उस दिन उस पर खुदावन्द का रहम हो और उस ने इफ़िसुस में जो जो ख़िदमतें कीं तू उन्हें खूब जानता है।

2

????? ?? ?? ?????? ???????

1 पस, ऐ मेरे बेटे, तू उस फ़ज़ल से जो मसीह 'ईसा' में है मज़बूत बन। 2 और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं उनको ऐसे ईमानदार आदमियों के सुपुर्द कर जो औरों को भी सिखाने के काबिल हों।

3 पस मसीह 'ईसा' के अच्छे सिपाही की तरह मेरे साथ दुःख उठा। 4 कोई सिपाही जब लड़ाई को जाता है अपने आपको दुनिया के मु'आमिलों में नहीं फँसाता ताकि अपने भरती करने वाले को खुश करे। 5 दंगल में मुक़ाबिला करने वाला भी अगर उस ने बा' काइदा मुक़ाबिला न किया हो तो सेहरा नहीं पाता।

6 जो किसान मेहनत करता है, पैदावार का हिस्सा पहले उसी को मिलना चाहिए। 7 जो मैं कहता हूँ उस पर ग़ौर कर क्योंकि खुदावन्द तुझे सब बातों की समझ देगा।

8 'ईसा मसीह' को याद रख जो मुर्दों में से जी उठा है और दाऊद की नस्ल से है मेरी उस खुशख़बरी के मुवाफ़िक़। 9 जिसके लिए मैं बदकार की तरह दुःख उठाता हूँ यहाँ तक कि कैद हूँ मगर खुदा का कलाम कैद नहीं। 10 इसी वजह से मैं नेक लोगों की खातिर सब कुछ सहता हूँ ताकि वो भी उस नज़ात को जो मसीह 'ईसा' में है अबदी जलाल समेत हासिल करें।

11 ये बात सच है कि

जब हम उस के साथ मर गए तो उस के साथ जिएँगे भी।

12 अगर हम दुःख सहेंगे तो उस के साथ बादशाही भी करेंगे

अगर हम उसका इन्कार करेंगे; तो वो भी हमारा इन्कार करेगा।

13 अगर हम बेवफ़ा हो जाएँगे तो भी वो वफ़ादार रहेगा, क्योंकि वो अपने आप का इन्कार नहीं कर सकता।

14 ये बातें उन्हें याद दिला और खुदावन्द के सामने नसीहत कर के लफ़्ज़ी तकरार न करें जिस से कुछ हासिल नहीं बल्कि सुनने वाले बिगड़ जाते हैं। 15 अपने आपको खुदा के सामने मक़बूल और ऐसे काम करने वाले की तरह पेश करने की कोशिश कर; जिसको शर्मिन्दा होना न पड़े, और जो हक़ के कलाम को दुरुस्ती से काम में लाता हो।

16 लेकिन बेकार बातों से परहेज़ कर क्योंकि ऐसे शरख़्स और भी बेदीनी में तरक्की करेंगे। 17 और उन का कलाम

सड़े घाव की तरह फैलता चला जाएगा; हुमिनयुस और फ़िलेतुस उन ही में से हैं। 18 वो ये कह कर कि क़यामत हो चुकी है; हक़ से गुमराह हो गए हैं और कुछ का ईमान बिगाड़ते हैं। 19 तो भी खुदा की मज़बूत बुनियाद काईम रहती है और उस पर ये मुहर है, “खुदावन्द अपनों को पहचानता है,” और “जो कोई खुदावन्द का नाम लेता है नारास्ती से बाज़ रहे।” 20 बड़े घर में न सिर्फ़ सोने चाँदी ही के बरतन होते हैं बल्कि लकड़ी और मिट्टी के भी कुछ 'इज़्ज़त और कुछ ज़िल्लत के लिए। 21 पस, जो कोई इन से अलग होकर अपने आप को पाक करेगा वो 'इज़्ज़त का बरतन और मुक़द्दस बनेगा और मालिक के काम के लायक और हर नेक काम के लिए तैयार होगा। 22 जवानी की ख्वाहिशों से भाग और जो पाक दिल के साथ खुदावन्द से दुआ करते हैं; उन के साथ रास्तबाज़ी और ईमान और मुहब्बत और मेलमिलाप की चाहत हो। 23 लेकिन बेवकूफी और नादानी की हुज्जतों से किनारा कर क्योंकि तू जानता है; कि उन से झगड़े पैदा होते हैं।

24 और मुनासिब नहीं कि खुदावन्द का बन्दा झगड़ा करे बल्कि सब के साथ रहम करे और ता'लीम देने के लायक और हलीम हो। 25 और मुखालिफ़ों को हलीमी से सिखाया करे शायद खुदा उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ बख्शे ताकि वो हक़ को पहचानें 26 और खुदावन्द के बन्दे के हाथ से खुदा की मर्ज़ी के कैदी हो कर इब्लीस के फन्दे से छूटें।

3

?????? ?????? ?? ??????

1 लेकिन ये जान रख कि आखिरी ज़माने में बुरे दिन आएँगे। 2 क्योंकि आदमी खुदगर्ज़ एहसान फ़रामोश, शेखीबाज़, मगरूर बदग़ो, माँ बाप का नाफ़रमान' नाशुक्र, नापाक, 3 ज़ाती मुहब्बत से ख़ाली संगदिल तोहमत लगानेवाले बेज़ब्त तुन्द मिज़ाज नेकी के दुश्मन। 4 दगाबाज़, ढीठ, घमण्ड करने वाले, खुदा की निस्बत ऐश — ओ — अशरत को ज़्यादा दोस्त रखने वाले होंगे।

5 वो दीनदारी का दिखावा तो रखेंगे मगर उस पर अमल न करेंगे ऐसों से भी किनारा करना। 6 इन ही में से वो लोग हैं जो घरों में दबे पाँव घुस आते हैं और उन बद चलन 'औरतों को काबू कर लेते हैं जो गुनाहों में दबी हुई हैं और तरह तरह की ख्वाहिशों के बस में हैं। 7 और हमेशा ता'लीम पाती रहती हैं मगर हक़ की पहचान उन तक कभी नहीं पहुँचती।

8 और जिस तरह के यतरेस और यम्बरेस ने मूसा की मुखालिफ़त की थी ये ऐसे आदमी हैं जिनकी अक्ल

बिगड़ी हुई है और वो ईमान के ऐतिहास से खाली हैं। 9 मगर इस से ज्यादा न बढ़ सकेंगे इस वास्ते कि इन की नादानी सब आदमियों पर जाहिर हो जाएगी जैसे उन* की भी हो गई थी।

10 लेकिन तू ने ता'लीम, चाल चलन, इरादा, ईमान, तहम्मील, मुहब्बत, सबर, सताए जाने और दुःख उठाने में मेरी पैरवी की। 11 या'नी ऐसे दुःखों में जो अन्ताकिया और इकुनियुस और लुस्तरा शहरों में मुझ पर पड़े दीगर दुःखों में भी जो मैंने उठाए हैं मगर खुदावन्द ने मुझे उन सब से छुड़ा लिया। 12 बल्कि जितने मसीह ईसा में दीनदारी के साथ जिन्दगी गुज़ारना चाहते हैं वो सब सताए जाएंगे। 13 और बुरे और धोखेबाज़ आदमी फ़रेब देते और फ़रेब खाते हुए बिगड़ते चले जाएंगे।

14 मगर तू उन बातों पर जो तू ने सीखी थीं, और जिनका यकीन तुझे दिलाया गया था, ये जान कर काईम रह कि तू ने उन्हें किन लोगों से सीखा था। 15 और तू बचपन से उन पाक नविशतों से वाकिफ़ है, जो तुझे मसीह 'ईसा पर ईमान लाने से नजात हासिल करने के लिए दानाई बरख़्श सकते हैं।

16 हर एक सहीफ़ा जो खुदा के इल्हाम से है ता'लीम और इल्ज़ाम और इस्लाह और रास्तबाज़ी में तरबियत करने के लिए फ़ाइदे मन्द भी है। 17 ताकि मर्दे खुदा कामिल बने और हर एक नेक काम के लिए बिल्कुल तैयार हो जाए।

4

1 खुदा और मसीह 'ईसा को जो जिन्दों और मुर्दों की अदालत करेगा; गवाह करके और उस के ज़हूर और बादशाही को याद दिला कर मैं तुझे नसीहत करता हूँ। 2 कि तू कलाम की मनादी कर वक़्त और बे वक़्त मुस्त'इद रह, हर तरह के तहम्मील और ता'लीम के साथ समझा दे और मलामत और नसीहत कर।

3 क्योंकि ऐसा वक़्त आएगा कि लोग सही ता'लीम की बर्दाश्त न करेंगे; बल्कि कानों की खुजली के ज़रिए अपनी अपनी ख़्वाहिशों के मुवाफ़िक़ बहुत से उस्ताद बना लेंगे। 4 और अपने कानों को हक़ की तरफ़ से फ़ेर कर कहानियों पर मुतवज्जह होंगे। 5 मगर तू सब बातों में होशियार रह, दुःख उठा बशारत का काम अन्जाम दे अपनी खिदमत को पूरा कर।

6 क्योंकि मैं अब कुर्बान हो रहा हूँ, और मेरे जाने का वक़्त आ पहुँचा है। 7 मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका, मैंने दौड़ को ख़त्म कर लिया, मैंने ईमान को महफूज़ रखवा।

* 3:9 3:9 ये दोनों ज़मबीस और ज़न्नीस दो जादूगर थे जो मूसा के खिलाफ़ खड़े हुए थे

8 आइन्दा के लिए मेरे वास्ते रास्तबाज़ी का वो ताज़ रखा हुआ है, जो आदिल मुन्सिफ़ या'नी खुदावन्द मुझे उस दिन देगा और सिर्फ़ मुझे ही नहीं बल्कि उन सब को भी जो उसके ज़हूर के आरज़ूमन्द हों।

22222 22 22222 22222222

9 मेरे पास जल्द आने की कोशिश कर। 10 क्योंकि देमास ने इस मौजूदा ज़हान को पसन्द करके मुझे छोड़ दिया और थिस्सलुनीकियों के शहर को चला गया और क़ेसकेन्स ग़लतिया सूबे को और तितुस दलमतिया सूबे को।

11 सिर्फ़ लूका मेरे पास है मरकुस को साथ लेकर आजा; क्योंकि खिदमत के लिए वो मेरे काम का है। 12 तुखिकुस को मैंने इफ़िसुस भेज दिया है। 13 जो चोगा में त्रोआस में करपुस के यहाँ छोड़ आया हूँ जब तू आए तो वो और किताबें खास कर रक्क के तुमार लेता आइये।

14 सिकन्दर ठठरे ने मुझ से बहुत बुराइयाँ कीं खुदावन्द उसे उसके कामों के मुवाफ़िक़ बदला देगा। 15 उस से तू भी खबरदार रह, क्योंकि उस ने हमारी बातों की बड़ी मुखालिफ़त की। 16 मेरी पहली जवाबदेही के वक़्त किसी ने मेरा साथ न दिया; बल्कि सब ने मुझे छोड़ दिया काश कि उन्हें इसका हिसाब देना न पड़े।

17 मगर खुदावन्द मेरा मददगार था, और उस ने मुझे ताक़त बरख़्शी ताकि मेरे ज़रिए पैग़ाम की पूरी मनादी हो जाए और सब ग़ैर क़ौमों सुन लें और मैं शेर के मुँह से छुड़ाया गया। 18 खुदावन्द मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा और अपनी आसमानी बादशाही में सही सलामत पहुँचा देगा उसकी बड़ाई हमेशा से हमेशा तक होती रहे आमीन।

19 पिरस्का और अक्विला से और अनेसफ़ुरुस के ख़ानदान से सलाम कह। 20 इरास्तुस कुरिन्थुस शहर में रहा, और त्रुफ़िमुस को मैंने मीलेतुस टापू में बीमार छोड़ा। 21 जाइों से पहले मेरे पास आ जाने की कोशिश कर यूबूलुस और पूदेस और लीनुस और क्लोदिया और सब भाई तुझे सलाम कहते हैं।

22 खुदावन्द तेरी रूह के साथ रहे तुम पर फ़ज़ल होता रहे।

तितुस के नाम पौलूस रसूल का खत

तितुस के नाम पौलूस रसूल का खत

1 पौलूस ने खुद ही तितुस के नाम खत के लिए मुसन्निफ़ होने की पहचान कराई इस बतौर कि पौलूस की तरफ़ से जो “खुदा का बन्दा और येसू मसीह का रसूल है।” (1:1) तितुस के साथ पौलूस के शुरूआती रिश्ते को भेद बतौर पर्दे में रखा गया था। हालांकि हम इसे जमा कर सकते हैं कि वह पौलूस की खिदमत का फल है पौलूस की मनादी के ज़रिए वह मसीह में आया था। चुनांचि वह कहता है ईमान की शिर्कत के रू से सच्चे फ़र्ज़न्द तितुस के नाम (1:4) पौलूस साफ़ तौर से तीतुस को एक ओहदे में लेकर एक दोस्त और इन्जील की मनादी में साथ काम करने वाला बतौर कहकर उसे बड़ी इज्जत देता है उसकी शफ़क़त, मुस्तअदी, और दूसरों को तसल्ली देने वाला बतौर उसकी तारीफ़ करता है।

तितुस के नाम पौलूस रसूल का खत

इसके लिखे जाने की तारीख़ तक्ररीबन 63 - 65 ईस्वी के बीच है।

असल मकसूद पौलूस ने तितुस के नाम अपना खत पहली बार रोम के कैद से छूटने के बाद लिखा।

तितुस के नाम पौलूस रसूल का खत

यह खत तितुस को लिखा गया, एक और पौलूस का हम खिदमत, मसीह में उसका फ़र्ज़न्द जिस को उस ने करते में छोड़ा था।

तितुस के नाम पौलूस रसूल का खत

करते की नई कलीसियाओं में जो कमियां थीं उन्हें सुधारने की बाबत तीतुस को नसीहत देने के लिए, कलीसिया नये बुज़ुर्गों की तक्रररी के लिए, करते में ग़ैर ईमानदारों के सामने ईमान की अच्छी गवाही के वासते तैयार करने के लिए।

तितुस के नाम पौलूस रसूल का खत

चालचलन का किताब।

बैरूनी खाका

1. सलाम — 1:1-4

2. बुज़ुर्गों की तक्रररी — 1:5-16

3. फ़रक़ फ़रक़ उम्र वालां को हिदायात — 2:1-3:11

4. इख़तितामी मुलाहज़ा — 3:12-15

तितुस के नाम पौलूस रसूल का खत

1 पौलूस की तरफ़ से तीतुस को खत, जो खुदा का बन्दा और 'ईसा मसीह का रसूल है। खुदा के बरगुज़ीदों

के ईमान और उस हक़ की पहचान के मुताबिक़ जो दीनदारी के मुताबिक़ है।² उस हमेशा की ज़िन्दगी की उम्मीद पर जिसका वा'दा शुरू ही से खुदा ने किया है जो झूठ नहीं बोल सकता।³ और उस ने मुनासिब वक्तों पर अपने कलाम को जो हमारे मुन्जी खुदा के हुक्म के मुताबिक़ मेरे सुपुर्द हुआ।

4 ईमान की शिर्कत के रूह से सच्चे फ़र्ज़न्द तितुस के नाम फ़ज़ल और इत्मीनान खुदा बाप और हमारे मुन्जी 'ईसा मसीह की तरफ़ से तुझे हासिल होता रहे।

5 मैंने तुझे करते में इस लिए छोड़ा था, कि तू बक़िया बातों को दुरुस्त करे और मेरे हुक्म के मुताबिक़ शहर बा शहर ऐसे बुज़ुर्गों को मुकर्रर करे।

6 जो बे इल्ज़ाम और एक एक बीबी के शौहर हों और उन के बच्चे ईमानदार और बदचलनी और सरकशी के इल्ज़ाम से पाक हों।⁷ क्यूँकि निगहबान को खुदा का मुख्तार होने की वजह से बेइल्ज़ाम होना चाहिए; न खुदराय हो न गुस्सावर, न नशे में गुल मचानेवाला, न मार पीट करने वाला और न नाजायज़ नफ़े का लालची;

8 बल्कि मुसाफ़िर परवर, खैर दोस्त, परहेज़गार, मुन्सिफ़ मिज़ाज, पाक और सबर करने वाला हो;⁹ और ईमान के कलाम पर जो इस ता'लीम के मुवाफ़िक़ है क़ाईम हो ताकि सही ता'लीम के साथ नसीहत भी कर सके और मुख़ालिफ़ों को क़ायल भी कर सके।

10 क्यूँकि बहुत से लोग सरकश और बेहूदा गो और दगाबाज़ हैं खासकर ईमानदार यहूदी मख्तूनो में से।

11 इन का मुँह बन्द करना चाहिए ये लोग नाजायज़ नफ़े की खातिर नशाइस्ता बातें सीखकर घर के घर तबाह कर देते हैं।

12 उन ही में से एक शख्स ने कहा है, जो खास उन का नबी था “करेती हमेशा झूठे, मूज़ी जानवर, वादा खिलाफ़ होते हैं।”¹³ ये गवाही सच है, पस, उन्हें सख्त मलामत किया कर ताकि उन का ईमान दुरुस्त होजाए।

14 और वो यहूदियों की कहानियों और उन आदमियों के हुक्मों पर तवज्जह न करें, जो हक़ से गुमराह होते हैं।

15 पाक लोगों के लिए सब चीज़ें पाक हैं, मगर गुनाह आलूदा और बेईमान लोगों के लिए कुछ भी पाक नहीं, बल्कि उन की 'अक्ल और दिल दोनों गुनाह आलूदा हैं।

16 वो खुदा की पहचान का दा'वा तो करते हैं, मगर अपने कामों से उसका इन्कार करते हैं क्यूँकि वो मकरूह और नाफ़रमान हैं, और किसी नेक काम के काबिल नहीं।

2

तितुस के नाम पौलूस रसूल का खत

1 और तू वो बातें बयान कर जो सही ता'लीम के मुनासिब हैं। 2 या'नी ये कि बूढ़े मर्द परहेज़गार, सन्जीदा और मुहाबती हों और उन का ईमान और मुहब्बत और सबर दुरुस्त हो।

3 इसी तरह बूढ़ी 'औरतों की भी वज़'अ मुक़दसों सी हों, इल्जाम लगाने वाली और ज्यादा मय पीने में मशगूल न हों, बल्कि अच्छी बातें सिखाने वाली हों; 4 ताकि जवान 'औरतों को सिखाएँ कि अपने शौहरों को प्यार करें बच्चों को प्यार करें; 5 और परहेज़गार और पाक दामन और घर का कारोबार करने वाली, और मेहरबान हों अपने और अपने शौहर के ताबे रहें, ताकि खुदा का कलाम बदनाम न हो।

6 जवान आदमियों को भी इसी तरह नसीहत कर कि परहेज़गार बनें। 7 सब बातों में अपने आप को नेक कामों का नमूना बना तेरी ता'लीम में सफ़ाई और सन्जीदगी 8 और ऐसी सेहत कलामी पाई जाए जो मलामत के लायक न हो ताकि मुखालिफ़ हम पर 'ऐब लगाने की कोई वजह न पाकर शर्मिन्दा होजाए।

9 नौकरों को नसीहत कर कि अपने मालिकों के ताबे' रहें और सब बातों में उन्हें खुश रखें, और उनके हुक्म से कुछ इन्कार न करें, 10 चोरी चालाकी न करें बल्कि हर तरह की ईमानदारी अच्छी तरह ज़ाहिर करें, ताकि उन से हर बात में हमारे मुन्जी खुदा की ता'लीम को रौनक हो।

11 क्योंकि खुदा का वो फ़ज़ल ज़ाहिर हुआ है, जो सब आदमियों की नज़ात का ज़रिया है, 12 और हमें तालीम देता है ताकि बेदीनी और दुनियावी ख्वाहिशों का इन्कार करके इस मौजूदा जहान में परहेज़गारी और रास्तबाज़ी और दीनदारी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें; 13 और उस मुबारिक उम्मीद या'नी अपने बुज़ुर्ग़ खुदा और मुन्जी ईसा मसीह के जलाल के ज़ाहिर होने के मुन्तज़िर रहें।

14 जिस ने अपने आपको हमारे लिए दे दिया, ताकि फ़िदया होकर हमें हर तरह की बेदीनी से छुड़ाले, और पाक करके अपनी खास मिलकियत के लिए ऐसी उम्मत बनाए जो नेक कामों में सरगर्म हो।

15 पूरे इस्लियार के साथ ये बातें कह और नसीहत दे और मलामत कर। कोई तेरी हिक़ारत न करने पाए।

3

????? ??????? ???

1 उनको याद दिला कि हाकिमों और इस्लियारवालों के ताबे रहें और उनका हुक्म मानें, और हर नेक काम के लिए मुस्त'इद रहें, 2 किसी की बुराई न करें तक़रारी न

हों; बल्कि नर्म मिज़ाज़ हों और सब आदमियों के साथ कमाल हलीमी से पेश आएँ।

3 क्योंकि हम भी पहले नादान नाफ़रमान फ़रेब खाने वाले रंग बिरंग की ख्वाहिशों और ऐश — ओ — अशरत के बन्दे थे, और बदख्वाही और हसद में ज़िन्दगी गुज़ारते थे, नफ़रत के लायक़ थे और आपस में जलन रखते थे।

4 मगर जब हमारे मुन्जी खुदा की मेहरबानी और इंसान के साथ उसकी उल्फ़त ज़ाहिर हुई। 5 तो उस ने हम को नज़ात दी; मगर रास्तबाज़ी के कामों के ज़रिए से नहीं जो हम ने खुद किए, बल्कि अपनी रहमत के मुताबिक़ पैदाइश के गुस्ल और रूह — उल — कुद्स के हमें नया बनाने के वसीले से।

6 जिसे उस ने हमारे मुन्जी 'ईसा मसीह के ज़रिए हम पर इफ़रात से नाज़िल किया, 7 ताकि हम उसके फ़ज़ल से रास्तबाज़ ठहर कर हमेशा की ज़िन्दगी की उम्मीद के मुताबिक़ वारिस बनें।

8 ये बात सच है, और मैं चाहता हूँ, कि तू इन बातों का याक़ीनी तौर से दावा कर ताकि जिन्होंने खुदा का यक़ीन किया है, वो अच्छे कामों में लगे रहने का खयाल रखें ये बातें भली और आदमियों के लिए फ़ाइदामन्द हैं।

9 मगर बेवकूफी की हुज्जतों और नसबनामों और झगड़ों और उन लड़ाइयों से जो शरी'अत के बारे में हों परहेज़ करे इसलिए कि ये ला हासिल और बेफ़ाइदा हैं।

10 एक दो बार नसीहत करके झूठी ता'लीम देने वाले शख्स से किनारा कर, 11 ये जान कर कि ऐसा शख्स मुड़ गया है और अपने आपको मुजरिम ठहरा कर गुनाह करता रहता है।

12 जब मैं तेरे पास अरतिमास या तुख़िकुस को भेजूँ तो मेरे पास नीकुपुलिस शहर आने की कोशीश करना क्योंकि मैंने वहीं जाड़ा काटने का इरादा कर लिया है।

13 जेनास आलिम — ए — शरा और अपुल्लोस को कोशिश करके खाना कर दे इस तौर पर कि उन को किसी चीज़ की कमी न रही।

14 और हमारे लोग भी ज़रूरतों को रफ़ा करने के लिए अच्छे कामों में लगे रहना सीखें ताकि बेफल न रहें।

15 मेरे सब साथी तुझे सलाम कहते हैं। जो ईमान के रूह से हमें 'अज़ीज़ रखते हैं उन से सलाम कह। तुम सब पर फ़ज़ल होता रहे।

फ़िलेमोन के नाम पौलूस रसूल का खत

फ़िलेमोन की किताब का मुसन्निफ़ पौलूस रसूल था

(1:1) फ़िलेमोन को लिखे गए खत में पौलूस कहता है वह उनेसमुस को वापस फ़िलेमोन के पास भेज रहा है और कुलुस्सियों 4:9 में उनेसमुस को इस बतौर पहचाना गया है कि उस को तखिकुस के साथ कुलुस्से भेजा गया है। (तखिकुस के हाथ कुलुस्से की कलीसिया के लिए खत भेजा गया था)। यह दिलचस्प है कि पौलूस खुद ही अपने हाथों से इस खत को लिखा यह जताने के लिए कि उनेसमुस उस के लिए कितना अहम था।

इस खत के लिखे जाने की तारीख़ तक़रीबन ईस्वी 60 के बीच है।

पौलूस ने रोम में फ़िलेमोन को खत लिखा। जब वह इस खत को लिख रहा था तो उस वक़्त वह रोम के हवालात में बन्द था।

पौलूस ने फ़िलेमोन, अफ़िया, अरखिपुस और कलीसिया को लिखा जो अरखिपुस के घर में जमा होती थी। खत के मज़मून से यह साफ़ हो जाता है कि फ़िलेमोन सब से पहला मख़्तूबा क़ारी था।

पौलूस ने फ़िलेमोन को क़ायल करने के लिए लिखा कि उनेसमुस को वापस अपने घर में रख ले। (इस उनेसमुस ने फ़िलेमोन के घर के सामान की चोरी की थी और भाग गया था वह गुलाम था और उसने ख़म्याज़ा भी नहीं भरा था); (10 — 12, 17) इस के अलावा पौलूस चाहता था कि फ़िलेमोन उनेसमुस के साथ गुलाम की तरह बर्ताव न करे बल्कि अज़ीज़ भाई की तरह (15 — 16) उनेसमुस अभी भी फ़िलेमोन की जायेदाद था क्योंकि वह उसका गुलाम था। और पौलूस ने फ़िलेमोन को इतनी नर्मी से लिखा कि उनेसमुस वापस अपने मालिक के पास चला जाए। पौलूस के इस तरह से सिफ़ारिश करने के ज़रिए उनेसमुस एक मसीही बन गया था (1:10)।

मुआफ़ी

पौलूस ने फ़िलेमोन को क़ायल करने के लिए लिखा कि उनेसमुस को वापस अपने घर में रख ले। (इस उनेसमुस ने फ़िलेमोन के घर के सामान की चोरी की थी और भाग गया था वह गुलाम था और उसने ख़म्याज़ा भी नहीं भरा था); (10 — 12, 17) इस के अलावा पौलूस चाहता था कि फ़िलेमोन उनेसमुस के साथ गुलाम की तरह बर्ताव न करे बल्कि अज़ीज़ भाई की तरह (15 — 16) उनेसमुस अभी भी फ़िलेमोन की जायेदाद था क्योंकि वह उसका गुलाम था। और पौलूस ने फ़िलेमोन को इतनी नर्मी से लिखा कि उनेसमुस वापस अपने मालिक के पास चला जाए। पौलूस के इस तरह से सिफ़ारिश करने के ज़रिए उनेसमुस एक मसीही बन गया था (1:10)।

मुआफ़ी

बैरूनी खाका

1. सलाम — 1:1-3

2. शुकरिया अदा करना — 1:4-7

3. उनेसमुस के लिए सिफ़ारिश — 1:8-22

4. आख़री अल्फ़ाज़ — 1:23-25

पौलूस की तरफ़ से जो मसीह ईसा का कैदी है, और भाई तीमुथियुस की तरफ़ से अपने 'अज़ीज़ और हम ख़िदमत फ़िलेमोन, और बहन अफ़िया, और अपने हम सफ़र आख़िप्पुस और फ़िलेमोन के घर की कलीसिया के नाम खत: फ़ज़ल और इत्मीनान हमारे बाप खुदा और खुदावन्द 'ईसा मसीह की तरफ़ से तुम्हें हासिल होता रहे।

1 पौलूस की तरफ़ से जो मसीह ईसा का कैदी है, और भाई तीमुथियुस की तरफ़ से अपने 'अज़ीज़ और हम ख़िदमत फ़िलेमोन, और बहन अफ़िया, और अपने हम सफ़र आख़िप्पुस और फ़िलेमोन के घर की कलीसिया के नाम खत: फ़ज़ल और इत्मीनान हमारे बाप खुदा और खुदावन्द 'ईसा मसीह की तरफ़ से तुम्हें हासिल होता रहे।

4 मैं तेरी उस मुहब्बत का और ईमान का हाल सुन कर, जो सब मुक़दसों के साथ और खुदावन्द ईसा पर है' हमेशा अपने खुदा का शुक्र करता हूँ, और अपनी दु'आओं में तुझे याद करता हूँ। 6 ताकि तेरे ईमान की शिराकत तुम्हारी हर खूबी की पहचान में मसीह के वास्ते मु'अस्सिर हो। 7 क्योंकि ऐ भाई! मुझे तेरी मुहब्बत से बहुत खुशी और तसल्ली हुई, इसलिए कि तेरी वजह से मुक़दसों के दिल ताज़ा हुए हैं।

8 पस अगरचे मुझे मसीह में बड़ी दिलेरी तो है कि तुझे मुनासिब हुक्म दूँ। 9 मगर मुझे ये ज़्यादा पसन्द है कि मैं बूढ़ा पौलूस, बल्कि इस वक़्त मसीह 'ईसा का कैदी भी होकर मुहब्बत की राह से इल्तिमास करूँ।

10 सो अपने फ़र्ज़न्द उनेसमुस के बारे में जो कैद की हालत में मुझ से पैदा हुआ, तुझसे इल्तिमास करता हूँ। 11 पहले तो तेरे कुछ काम का ना था मगर अब तेरे और मेरे दोनों के काम का है। 12 खुद उसी को या'नी अपने कलेजे के टुकड़े को, मैंने तेरे पास वापस भेजा है। 13 उसको मैं अपने ही पास रखना चाहता था, ताकि तेरी तरफ़ से इस कैद में जो खुशख़बरी के ज़रिए है मेरी ख़िदमत करे।

14 लेकिन तेरी मर्ज़ी के बग़ैर मैंने कुछ करना न चाहा, ताकि तेरे नेक काम लाचारी से नहीं बल्कि खुशी से हों। 15 क्योंकि मुम्किन है कि वो तुझ से इसलिए थोड़ी देर के वास्ते जुदा हुआ हो कि हमेशा तेरे पास रहे। 16 मगर अब से गुलाम की तरह नहीं बल्कि गुलाम से बेहतर होकर या'नी ऐसे भाई की तरह रहे जो जिस्म में भी और खुदावन्द में भी मेरा निहायत 'अज़ीज़ हो और तेरा इससे भी कही ज़्यादा।

17 पस अगर तू मुझे शरीक जानता है, तो उसे इस तरह कुबूल करना जिस तरह मुझे। 18 और अगर उस ने तेरा कुछ नुक्सान किया है, या उस पर तेरा कुछ आता है, तो उसे मेरे नाम से लिख ले। 19 मैं पौलूस अपने हाथ

से लिखता हूँ कि खुद अदा करूँगा, इसके कहने की कुछ ज़रूरत नहीं कि मेरा कर्ज़ जो तुझे पर है वो तू खुद है
20 ऐ भाई! मैं चाहता हूँ कि मुझे तेरी तरफ़ से खुदावन्द में खुशी हासिल हो। मसीह में मेरे दिल को ताज़ा कर।

21 मैं तेरी फ़रमाँबरदारी का यकीन करके तुझे लिखता हूँ, और जानता हूँ कि जो कुछ मैं कहता हूँ, तू उस से भी ज्यादा करेगा। 22 इसके सिवा मेरे लिए ठहरने की जगह तैयार कर, क्योंकि मुझे उम्मीद है कि मैं तुम्हारी दु'आओं के वसीले से तुम्हें बख़्शा जाऊँगा।

23 इपफ़्रास जो मसीह ईसा में मेरे साथ कैद है, 24 और मरकुस और अरिस्तरखुस और दोमास और लुक्रा, जो मेरे हम खिदमत हैं तुझे सलाम कहते हैं।

25 हमारे खुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़ल तुम्हारी रूह पर होता रहे। आमीन।

इब्रानियों के नाम खत

?????????? ?? ???????

इब्रानियों के खत के मुसन्निफ़ का नाम अभी तक भेद बतौर पर्दे में रखा गया है। कुछ उलमा के ज़रिए पौलूस इस किताब के मुसन्निफ़ होने बतौर इम्कान पेश करते हैं। इब्रानियों के अलावा कोई और किताब मसीह की मसीहियत का काहिन बतौर इतने वाज़ेह तौर से पेश नहीं करती क्योंकि यह मसीह को हारून की कहानत से भी ऊपर ले जाती है, शरीयत और नबियों की कामिलियत का दावा पेश करती हैं यह किताब मसीह को ईमान का बानी और कामिल करने वाला पेश करती है (इब्रानियों 12:2)।

????? ?????? ?? ?????????? ?? ???

इसके लिखे जाने की तारीख़ तक्ररीबन ईस्वी 64 - 70 के बीच है।

इब्रानियों के खत को हज़रत मसही के आस्मान पर सऊद फ़र्माने के बाद और यरूशलेम की बर्बादी से पहले लिख गया था।

?????? ?????????????? ?????? ??????

इस खत को सब से पहले यहूदी मसीहियों के लिए लिखा गया था जो पुराने अहदनामे से वाक्किफ़कार थे जो दुबारा से यहूदियत की तरफ़ फिर जाने की आज्माइश में थे। माना जाता है कि इस के क़बूल कुनिन्दा पाने वाले काहिनों की एक बड़ी जमाअत भी थी जो मसीही ईमान में आकर उस की इताअत करते थे (आमाल 6:7)।

????? ??????????

इब्रानियों का मुसन्निफ़ अपने कारिईन को नसीहत देने के लिए लिखा कि वह मक्कामी यहूदी तालीम का इन्कार करे और मसीह येसू में ईमान्दार बने रहें और यह जताएं कि येसू मसीह सब से आला है। खुदा का बेटा, फ़रिश्तों, काहिनों, पुराने अहदनामे के रहनुमाओं या दुनिया के तमाम मज़ाहिब से ऊंचा और बेहतर है। सलीब पर मरने और मुर्दों में से जी उठने के ज़रिए येसू ईमान्दों के लिए नजात और हमेशा की जिन्दगी का वायदा करता है। मसीह की कुर्बानी हमारे गुनाहों के लिए पूरी तरह से कामिल थी। ईमान में क़ायम रहना खुदा को खुश करता है। हम अपना ईमान खुदा के ताबे होने के ज़रिए ज़ाहिर करते हैं।

???????

मसीह की बरतरी।

बैरूनी खाका

1. येसू मसीह तमाम फ़रिश्तों से आला है — 1:1-2:18
2. येसू मसीह शरिअत और पुराने अहद से आला है — 3:1-10:18
3. हर हालत में वफ़ादार रहने और आज्मायशों की बर्दाश्त के लिए एक बुलाहट — 10:19-12:29
4. आख़री नसीहतें और सलाम — 13:1-25

????? ?????????? ?? ?????? ??

¹ पुराने ज़माने में खुदा ने बाप — दादा से हिस्सा — ब — हिस्सा और तरह — ब — तरह नबियों के ज़रिए कलाम करके, ² इस ज़माने के आख़िर में हम से बेटे के ज़रिए कलाम किया, जिसे उसने सब चीज़ों का वारिस ठहराया और जिसके वसीले से उसने आलम भी पैदा किए। ³ वो उसके जलाल की रोशनी और उसकी ज़ात का नक्श होकर सब चीज़ों को अपनी कुदरत के कलाम से संभालता है। वो गुनाहों को धोकर 'आलम — ए — बाला पर खुदा की दहनी तरफ़ जा बैठा,

⁴ और फ़रिश्तों से इस क़दर बड़ा हो गया, जिस क़दर उसने मीरास में उनसे अफ़ज़ल नाम पाया।

⁵ क्योंकि फ़रिश्तों में से उसने कब किसी से कहा,

“तू मेरा बेटा है,
आज तू मुझ से पैदा हुआ?”

और फिर ये,
“मैं उसका बाप हूँगा?”

⁶ और जब पहलौटे को दुनियाँ में फिर लाता है, तो कहता है, “खुदा के सब फ़रिश्ते उसे सिज्दा करें।” ⁷ और वो अपने फ़रिश्तों के बारे में ये कहता है,
“वो अपने फ़रिश्तों को हवाएँ,
और अपने खादिमों को आग के शोले बनाता है।”

⁸ मगर बेटे के बारे में कहता है,
“ऐ खुदा, तेरा तख़्त हमेशा से हमेशा तक रहेगा,
और तेरी बादशाही की 'लाठी रास्तबाज़ी की 'लाठी है।

⁹ तू ने रास्तबाज़ी से मुहब्बत और बदकारी से 'अदावत रखी,

इसी वजह से खुदा, या'नी तेरे खुदा ने खुशी के तेल से तेरे साथियों की बनिस्बत तुझे ज्यादा मसह किया।”

¹⁰ और ये कि, “ऐ खुदावन्द! तू ने शुरू में ज़मीन की नीव डाली,

और आसमान तेरे हाथ की कारीगरी है।

¹¹ वो मिट जाएँगे, मगर तू बाक़ी रहेगा; और वो सब पोशाक की तरह पुराने हो जाएँगे।

¹² तू उन्हें चादर की तरह लपेटेगा,
और वो पोशाक की तरह बदल जाएँगे:

मगर तू वही रहेगा

और तेरे साल खत्म न होंगे।”

13 लेकिन उसने फ़रिश्तों में से किसी के बारे में कब कहा,

“तू मेरी दहनी तरफ़ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँव तले की चौकी न कर दूँ?”

14 क्या वो सब खिदमत गुज़ार रूहें नहीं, जो नजात की मीरास पानेवालों की खातिर खिदमत को भेजी जाती हैं?

2

???? ???? ? ? ???? ?

1 इसलिए जो बातें हम ने सुनी, उन पर और भी दिल लगाकर ग़ौर करना चाहिए, ताकि बहक कर उनसे दूर न चले जाएँ। 2 क्योंकि जो कलाम फ़रिश्तों के ज़रिए फ़रमाया गया था, जब वो क्राईम रहा और हर कुसूर और नाफ़रमानी का ठीक ठीक बदला मिला, 3 तो इतनी बड़ी नजात से गाफ़िल रहकर हम क्यूँकर चल सकते हैं? जिसका बयान पहले खुदावन्द के वसीले से हुआ, और सुनने वालों से हमें पूरे — सबूत को पहुँचा। 4 और साथ ही खुदा भी अपनी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ निशानों, और 'अजीब कामों, और तरह तरह के मोजिज़ों, और रूह — उल — कुदूस की नेमतों के ज़रिए से उसकी गवाही देता रहा।

5 उसने उस आनेवाले जहान को जिसका हम ज़िक्र करते हैं, फ़रिश्तों के ताबे' नहीं किया। 6 बल्कि किसी ने किसी मौक़े पर ये बयान किया है,

“इंसान क्या चीज़ है जो तू उसका खयाल करता है?

या आदमज़ाद क्या है जो तू उस पर निगाह करता है?

7 तू ने उसे फ़रिश्तों से कुछ ही कम किया;

तू ने उस पर जलाल और 'इज़ज़त का ताज रखवा, और अपने हाथों के कामों पर उसे इस्तिyार बरूखा।

8 तू ने सब चीज़ें ताबे' करके उसके क़दमों तले कर दी हैं।”

पस जिस सूरत में उसने सब चीज़ें उसके ताबे' कर दीं, तो उसने कोई चीज़ ऐसी न छोड़ी जो उसके ताबे, न हो। मगर हम अब तक सब चीज़ें उसके ताबे' नहीं देखते।

9 अलबत्ता उसको देखते हैं जो फ़रिश्तों से कुछ ही कम किया गया, या'नी ईसा को मौत का दुःख सहने की वजह से जलाल और 'इज़ज़त का ताज उसे पहनाया गया है, ताकि खुदा के फ़ज़ल से वो हर एक आदमी के लिए मौत का मज़ा चखे।

10 क्यूँकि जिसके लिए सब चीज़ें हैं और जिसके वसीले से सब चीज़ें हैं, उसको यही मुनासिब था

कि जब बहुत से बेटों को जलाल में दाखिल करे, तो उनकी नजात के बानी को दुखों के ज़रिए से कामिल कर ले।

11 इसलिए कि पाक करने वाला और पाक होनेवाला सब एक ही नस्ल से हैं, इसी ज़रिए वो उन्हें भाई कहने से नहीं शरमाता। 12 चुनाँचे वो फ़रमाता है, “तेरा नाम मैं अपने भाइयों से बयान करूँगा, कलीसिया में तेरी हम्द के गीत गाऊँगा।”

13 और फिर ये,

“देख मैं उस पर भरोसा रखूँगा।”

और फिर ये,

“देख मैं उन लड़कों समेत जिन्हें खुदा ने मुझे दिया।”

14 पस जिस सूरत में कि लड़के खून और गोश्त में शरीक हैं, तो वो खुद भी उनकी तरह उनमें शरीक हुआ, ताकि मौत के वसीले से उसको जिसे मौत पर कुदरत हासिल थी, या'नी इब्लीस को, तबाह कर दे; 15 और जो उम्र भर मौत के डर से गुलामी में गिरफ़्तार रहे, उन्हें छुड़ा ले।

16 क्यूँकि हक़ीक़त में वो फ़रिश्तों का नहीं, बल्कि अब्रहाम की नस्ल का साथ देता है। 17 पस उसको सब बातों में अपने भाइयों की तरह बनना ज़रूरी हुआ, ताकि उम्मत के गुनाहों का कफ़़ारा देने के वास्ते, उन बातों में जो खुदा से ता'अल्लुक़ रखती है, एक रहम दिल और दियानतदार सरदार काहिन बने। 18 क्यूँकि जिस सूरत में उसने खुद की आजमाइश की हालत में दुःख उठाया, तो वो उनकी भी मदद कर सकता है जिनकी आजमाइश होती है।

3

???? ???? ? ? ???? ?

1 पस ऐ पाक भाइयों! तुम जो आसमानी बुलावे में शरीक हो, उस रसूल और सरदार काहिन ईसा पर ग़ौर करो जिसका हम करते हैं; 2 जो अपने मुक़र्रर करनेवाले के हक़ में दियानतदार था, जिस तरह मूसा खुदा के सारे घर में था। 3 क्यूँकि वो मूसा से इस क़दर ज्यादा 'इज़ज़त के लायक़ समझा गया, जिस क़दर घर का बनाने वाला घर से ज्यादा इज़ज़तदार होता है। 4 चुनाँचे हर एक घर का कोई न कोई बनाने वाला होता है, मगर जिसने सब चीज़ें बनाई वो खुदा है।

5 मूसा तो उसके सारे घर में खादिम की तरह दियानतदार रहा, ताकि आइन्दा बयान होनेवाली बातों की गवाही दे। 6 लेकिन मसीह बेटे की तरह उसके घर का मालिक है, और उसका घर हम हैं; बशर्ते कि अपनी

दिलेरी और उम्मीद का फ़ख़र आख़िर तक मज़बूती से काईम रखें।

⁷ पस जिस तरह कि पाक रूह कलाम में फ़रमाता है, “अगर आज तुम उसकी आवाज़ सुनो,

⁸ तो अपने दिलों को सख़्त न करो,

जिस तरह गुस्सा दिलाने के वक़्त

आज़माइश के दिन जंगल में किया था।

⁹ जहाँ तुम्हारे बाप — दादा ने मुझे जाँचा

और आज़माया और चालीस बरस तक मेरे काम देखे।

¹⁰ इसलिए मैं उस पीढ़ी से नाराज़ हुआ,

और कहा, ‘इनके दिल हमेशा गुमराह होते रहते हैं,

और उन्होंने मेरी राहों को नहीं पहचाना।

¹¹ चुनाँचे मैंने अपने गुस्से में क्रसम खाई,

‘ये मेरे आराम में दाख़िल न होने पाएँगे’।”

¹² ऐ भाइयों! ख़बरदार! तुम में से किसी का ऐसा बुरा और बे — ईमान दिल न हो, जो ज़िन्दा खुदा से फिर जाए। ¹³ बल्कि जिस रोज़ तक आज का दिन कहा जाता है, हर रोज़ आपस में नसीहत किया करो, ताकि तुम में से कोई गुनाह के धोखे में आकर सख़्त दिल न हो जाए।

¹⁴ क्यूँकि हम मसीह में शरीक हुए हैं, बशर्ते कि अपने शुरुआत के भरोसे पर आख़िर तक मज़बूती से काईम रहें।

¹⁵ चुनाँचे कलाम में लिखा है

“अगर आज तुम उसकी आवाज़ सुनो,

तो अपने दिलों को सख़्त न करो, जिस तरह कि गुस्सा दिलाने के वक़्त किया था।”

¹⁶ किन लोगों ने आवाज़ सुन कर गुस्सा दिलाया? क्या उन सब ने नहीं जो मूसा के वसीले से मिस्र से निकले थे? ¹⁷ और वो किन लोगों से चालीस बरस तक नाराज़ रहा? क्या उनसे नहीं जिन्होंने गुनाह किया, और उनकी लाशें वीराने में पड़ी रहीं? ¹⁸ और किनके बारे में उसने क्रसम खाई कि वो मेरे आराम में दाख़िल न होने पाएँगे, सिवा उनके जिन्होंने नाफ़रमानी की? ¹⁹ गरज़ हम देखते हैं कि वो बे — ईमानी की वजह से दाख़िल न हो सके।

4

?????? ?? ???? ?? ???? ???? ?? ???? ??

¹ पस जब उसके आराम में दाख़िल होने का वादा बाक़ी है तो हमें डरना चाहिए ऐसा न हो कि तुम में से कोई रहा हुआ मालूम हो ² क्यूँकि हमें भी उन ही की तरह खुशख़बरी सुनाई गई, लेकिन सुने हुए कलाम ने उनको इसलिए कुछ फ़ाइदा न दिया कि सुनने वालों के दिलों में ईमान के साथ न बैठा।

³ और हम जो ईमान लाए, उस आराम में दाख़िल होते हैं;

जिस तरह उसने कहा, “मैंने अपने गुस्से में क्रसम खाई कि ये मेरे आराम में दाख़िल न होने पाएँगे।” अगरचे दुनिया बनाने के वक़्त उसके काम हो चुके थे।

⁴ चुनाँचे उसने सातवें दिन के बारे में कलाम में इस तरह कहा,

“खुदा ने अपने सब कामों को पूरा करके, सातवें दिन आराम किया।” ⁵ और फिर इस मुक़ाम पर है,

“वो मेरे आराम में दाख़िल न होने पाएँगे।”

⁶ पस जब ये बात बाक़ी है कि कुछ उस आराम में दाख़िल हों, और जिनको पहले खुशख़बरी सुनाई गई थी वो नाफ़रमानी की वजह से दाख़िल न हुए, ⁷ तो फिर एक खास दिन ठहर कर इतनी मुद्दत के बाद दा‘ऊद की किताब में उसे आज का दिन कहता है। जैसा पहले कहा गया,

“और आज तुम उसकी आवाज़ सुनो,

तो अपने दिलों को सख़्त न करो।”

⁸ और अगर ईसा ने उन्हें आराम में दाख़िल किया होता, तो वो उसके बाद दुसरे दिन का ज़िक्र न करता।

⁹ पस खुदा की उम्मत के लिए सबत का आराम बाक़ी है’ ¹⁰ क्यूँकि जो उसके आराम में दाख़िल हुआ, उसने

भी खुदा की तरह अपने कामों को पूरा करके आराम किया। ¹¹ पस आओ, हम उस आराम में दाख़िल होने की कोशिश करें, ताकि उनकी तरह नाफ़रमानी कर के कोई शख्स गिर न पड़े।

¹² क्यूँकि खुदा का कलाम ज़िन्दा, और असरदार, और हर एक दोधारी तलवार से ज्यादा तेज़ है; और जान और रूह और बन्द, बन्द और गूदे

को जुदा करके गुज़र जाता है, और दिल के खयालों और इरादों को जाँचता है। ¹³ और खुदा की नज़र में मख़्लूक़ात की कोई चीज़ छिपी नहीं, बल्कि जिससे हम

को काम है उसकी नज़रों में सब चीज़ें खुली और बेपर्दा हैं। ¹⁴ पस जब हमारा एक ऐसा बड़ा सरदार काहिन है जो आसमानों से गुज़र गया, या‘नी खुदा का बेटा ईसा,

तो आओ हम अपने इक़रार पर काईम रहें। ¹⁵ क्यूँकि हमारा ऐसा सरदार काहिन नहीं जो हमारी कमज़ोरियों में हमारा हमदर्द न हो सके; बल्कि वो सब बातों में हमारी

तरह आज़माया गया, तोभी बेगुनाह रहा। ¹⁶ पस आओ, हम फ़ज़ल के तख़्त के पास दिलेरी से चलें, ताकि हम पर

रहम हो और फ़ज़ल हासिल करें जो ज़रूरत के वक़्त हमारी मदद करे।

5

¹ अब इंसान ों में से चुने गए इमाम — ए — आज़म को इस लिए मुक़र्रर किया जाता है कि वह उन

की खातिर खुदा की खिदमत करे, ताकि वह गुनाहों के लिए नजराने और कुर्बानियाँ पेश करे।² वह जाहिल और आवारा लोगों के साथ नर्म सुलूक रख सकता है, क्योंकि वह खुद कई तरह की कमजोरियों की गिरफ्त में होता है।³ यही वजह है कि उसे न सिर्फ क्रौम के गुनाहों के लिए बल्कि अपने गुनाहों के लिए भी कुर्बानियाँ चढ़ानी पड़ती हैं।⁴ और कोई अपनी मर्जी से इमाम — ए — आजम का 'इज्जत वाला ओहदा नहीं अपना सकता बल्कि जरूरी है कि खुदा उसे हारून की तरह बुला कर मुकर्रर करे।⁵ इसी तरह मसीह ने भी अपनी मर्जी से इमाम — ए — आजम का 'इज्जत वाला ओहदा नहीं अपनाया। इस के बजाए खुदा ने उस से कहा, “तू मेरा बेटा है आज तू मुझसे पैदा हुआ है।”⁶ कहीं और वह फ़रमाता है, “तू अबद तक इमाम है, ऐसा इमाम जैसा मलिक — ए — सिद्क़ था।”⁷ जब ईसा इस दुनिया में था तो उस ने जोर जोर से पुकार कर और आँसू बहा बहा कर उसे दुआएँ और इल्तिजाएँ पेश कीं जो उसको मौत से बचा सकता था और खुदा तरसी की वजह से उसकी सुनी गई।⁸ वह खुदा का फ़र्ज़न्द तो था, तो भी उस ने दुःख उठाने से फ़रमाँवरदारी सीखी।⁹ जब वह कामिलियत तक पहुँच गया तो वह उन सब की अबदी नजात का सरचश्मा बन गया जो उस की सुनते हैं।¹⁰ उस वक़्त खुदा ने उसे इमाम — ए — आजम भी मुतअय्युन किया, ऐसा इमाम जैसा मलिक — ए — सिद्क़ था।

?????? ???? ??

¹¹ इस के बारे में हम ज्यादा बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन हम मुश्किल से इस का खुलासा कर सकते हैं, क्योंकि आप सुनने में सुस्त हैं।¹² असल में इतना वक़्त गुज़र गया है कि अब आप को खुद उस्ताद होना चाहिए। अफ़सोस कि ऐसा नहीं है बल्कि आप को इस की जरूरत है कि कोई आप के पास आ कर आप को खुदा के कलाम की बुनियादी सच्चाइयाँ दुबारा सिखाए। आप अब तक सख़्त ग़िज़ा नहीं खा सकते बल्कि आप को दूध की जरूरत है।¹³ जो दूध ही पी सकता है वह अभी छोटा बच्चा ही है और वह रास्तबाज़ी की तालीम से ना समझ है।¹⁴ इस के मुक़ाबिले में सख़्त ग़िज़ा बालिग़ों के लिए है जिन्होंने अपनी बलूगत के ज़रिए अपनी रुहानी ज़िन्दगी को इतनी तर्बियत दी है कि वह भलाई और बुराई में पहचान कर सकते हैं।

6

¹ इस लिए आएँ, हम मसीह के बारे में बुनियादी

तालीम को छोड़ कर बलूगत की तरफ़ आगे बढ़ें। क्योंकि ऐसी बातें दोहराने की जरूरत नहीं होनी चाहिए जिन से ईमान की बुनियाद रखी जाती है, मसलन मौत तक पहुँचाने वाले काम से तौबा,² बपतिस्मा क्या है, किसी पर हाथ रखने की तालीम, मुर्दों के जी उठने और हमेशा सज़ा पाने की तालीम।³ चुनाँचे खुदा की मर्जी हुई तो हम यह छोड़ कर आगे बढ़ेंगे।⁴ नामुमकिन है कि उन्हें बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाया जाए जिन्होंने अपना ईमान छोड़ दिया हो। उन्हें तो एक बार खुदा के नूर में लाया गया था, उन्होंने ने आसमान की ने'अमत का मज़ा चख लिया था, वह रूह — उल — कुद्स में शरीक हुए,⁵ उन्होंने ने खुदा के कलाम की भलाई और आने वाले ज़माने की ताक़तों का तज़ुर्बा किया था।⁶ और फिर उन्होंने ने अपना ईमान छोड़ दिया! ऐसे लोगों को बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाना नामुमकिन है। क्योंकि ऐसा करने से वह खुदा के फ़र्ज़न्द को दुबारा मस्तूब करके उसे लान — तान का निशाना बना देते हैं।⁷ खुदा उस ज़मीन को बर्क़त देता है जो अपने पर बार बार पड़ने वाली बारिश को ज़ब्ब करके ऐसी फ़सल पैदा करती है जो खेतीबाड़ी करने वाले के लिए फ़ाइदामन्द हो।⁸ लेकिन अगर वह सिर्फ़ कांटे दार पौदे और ऊँटकटारे पैदा करे तो वह बेकार है और इस ख़तरे में है कि उस पर ला'नत भेजी जाए। अन्जाम — ए — कार उस पर का सब कुछ जलाया जाएगा।

⁹ लेकिन ऐ अज़ीज़ो! अगरचे हम इस तरह की बातें कर रहे हैं तो भी हमारा भरोसा यह है कि आप को वह बेहतरीन बर्क़तें हासिल हैं जो नजात से मिलती हैं।¹⁰ क्योंकि खुदा बेइन्साफ़ नहीं है। वह आप का काम और वह मुहब्बत नहीं भूलेगा जो आप ने उस का नाम ले कर ज़ाहिर की जब आप ने पाक लोगों की खिदमत की बल्कि आज तक कर रहे हैं।

¹¹ लेकिन हमारी बड़ी ख़्वाहिश यह है कि आप में से हर एक इसी सरगर्मी का इज़हार आख़िर तक करता रहे ताकि जिन बातों की उम्मीद आप रखते हैं वह हक़ीक़त में पूरी हो जाएँ।¹² हम नहीं चाहते कि आप सुस्त हो जाएँ बल्कि यह कि आप उन के नमूने पर चलें जो ईमान और सबर से वह कुछ मीरास में पा रहे हैं जिस का वादा खुदा ने किया है।

?????? ??

¹³ जब खुदा ने क़सम खा कर अब्रहाम से वादा किया तो उस ने अपनी ही क़सम खा कर यह वादा किया। क्योंकि कोई और नहीं था जो उस से बड़ा था जिस की क़सम वह खा सकता।¹⁴ उस वक़्त उस ने कहा, “मैं

जरूर तुझे बहुत बर्कत दूँगा, और मैं यकीनन तुझे ज्यादा औलाद दूँगा।” ¹⁵ इस पर अब्रहाम ने सबर से इन्तिज़ार करके वह कुछ पाया जिस का खुदा ने वादा किया था।

¹⁶ क्रसम खाते वक़्त लोग उस की क्रसम खाते हैं जो उन से बड़ा होता है। इस तरह से क्रसम में बयानकरदा बात की तस्दीक़ बहस — मुबाहसा की हर गुन्जाइश को ख़त्म कर देती है। ¹⁷ खुदा ने भी क्रसम खा कर अपने वादे की तस्दीक़ की। क्योंकि वह अपने वादे के वारिसों पर साफ़ ज़ाहिर करना चाहता था कि उस का इरादा कभी नहीं बदलेगा। ¹⁸ गरज़, यह दो बातें क़ाईम रही हैं, खुदा का वादा और उस की क्रसम। वह इन्हें न तो बदलेगा न इन के बारे में झूठ बोलेगा। यूँ हम जिन्होंने उस के पास पनाह ली है बड़ी तसल्ली पा कर उस उम्मीद को मज़बूती से थामे रख सकते हैं जो हमें पेश की गई है।

¹⁹ क्योंकि यह उम्मीद हमारी जान के लिए मज़बूत लंगर है। और यह आसमानी बैत — उल — मुक़द्दस के पाकतरीन कमरे के पर्दे में से गुज़र कर उस में दाख़िल होती है। ²⁰ वहीं ईसा हमारे आगे आगे जा कर हमारी खातिर दाख़िल हुआ है। यूँ वह मलिक — ए — सिद्क़ की तरह हमेशा के लिए इमाम — ए — आज़म बन गया है।

7

2222 — 2 — 222222 2222222 22 2222 22

¹ यह मलिक — ए — सिद्क़, सालिम का बादशाह और खुदा — ए — तआला का इमाम था। जब अब्रहाम चार बादशाहों को शिकस्त देने के बाद वापस आ रहा था तो मलिक — ए — सिद्क़ उस से मिला और उसे बर्क़त दी। ² इस पर अब्रहाम ने उसे तमाम लूट के माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया। अब मलिक — ए — सिद्क़ का मतलब रास्तबाज़ी का बादशाह है। दूसरे, सालिम का बादशाह का मतलब सलामती का बादशाह। ³ न उस का बाप या माँ है, न कोई नसबनामा। उसकी ज़िन्दगी की न तो शुरुआत है, न खातिमा। खुदा के फ़र्ज़न्द की तरह वह हमेशा तक इमाम रहता है।

⁴ ग़ौर करें कि वह कितना अज़ीम था। हमारे बापदादा अब्रहाम ने उसे लूटे हुए माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया। ⁵ अब शरी'अत माँग करती है कि लावी की वह औलाद जो इमाम बन जाती है क़ौम यानी अपने भाइयों से पैदावार का दसवाँ हिस्सा ले, हालाँकि उन के भाई अब्रहाम की औलाद हैं। ⁶ लेकिन मलिक — ए — सिद्क़ लावी की औलाद में से नहीं था। तो भी उस ने

अब्रहाम से दसवाँ हिस्सा ले कर उसे बर्क़त दी जिस से खुदा ने वादा किया था।

⁷ इस में कोई शक़ नहीं कि कम हैसियत शख्स को उस से बर्क़त मिलती है जो ज्यादा हैसियत का हो। ⁸ जहाँ लावी इमामों का ताल्लुक़ है ख़त्म होने वाले इंसान दसवाँ हिस्सा लेते हैं। लेकिन मलिक — ए — सिद्क़ के मु'आमले में यह हिस्सा उस को मिला जिस के बारे में गवाही दी गई है कि वह ज़िन्दा रहता है। ⁹ यह भी कहा जा सकता है कि जब अब्रहाम ने माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया तो लावी ने उस के ज़रिए भी यह हिस्सा दिया, हालाँकि वह खुद दसवाँ हिस्सा लेता है। ¹⁰ क्योंकि अगरचे लावी उस वक़्त पैदा नहीं हुआ था तो भी वह एक तरह से अब्रहाम के जिस्म में मौजूद था जब मलिक — ए — सिद्क़ उस से मिला।

¹¹ अगर लावी की कहानित (जिस पर शरी'अत मुन्हसिर थी) कामिलियत पैदा कर सकती तो फिर एक और किस्म के इमाम की क्या ज़रूरत होती, उस की जो हारून जैसा न हो बल्कि मलिक — ए — सिद्क़ जैसा? ¹² क्योंकि जब भी कहानित बदल जाती है तो लाज़िम है कि शरी'अत में भी तब्दीली आए।

¹³ और हमारा खुदावन्द जिस के बारे में यह बयान किया गया है वह एक अलग क़बीले का फ़र्द था। उस के क़बीले के किसी भी फ़र्द ने इमाम की ख़िदमत अदा नहीं की। ¹⁴ क्योंकि साफ़ मालूम है कि खुदावन्द मसीह यहूदाह क़बीले का फ़र्द था, और मूसा ने इस क़बीले को इमामों की ख़िदमत में शामिल न किया।

¹⁵ मुआमला ज्यादा साफ़ हो जाता है। एक अलग इमाम ज़ाहिर हुआ है जो मलिक — ए — सिद्क़ जैसा है। ¹⁶ वह लावी के क़बीले का फ़र्द होने से इमाम न बना जिस तरह शरी'अत की चाहत थी, बल्कि वह न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी की कुव्वत ही से इमाम बन गया। ¹⁷ क्योंकि कलाम — ए — मुक़द्दस फ़रमाता है, कि तू मलिक — ए — सिद्क़ के तौर पर अबद तक काहिन है।

¹⁸ यूँ पुराने हुक्म को रद्द कर दिया जाता है, क्योंकि वह कमज़ोर और बेकार था। ¹⁹ (मूसा की शरी'अत तो किसी चीज़ को कामिल नहीं बना सकती थी) और अब एक बेहतर उम्मीद मुहय्या की गई है जिस से हम खुदा के करीब आ जाते हैं।

²⁰ और यह नया तरीक़ा खुदा की क्रसम से क़ाईम हुआ। ऐसी कोई क्रसम न खाई गई जब दूसरे इमाम बने। ²¹ लेकिन ईसा एक क्रसम के ज़रिए इमाम बन गया जब खुदा ने फ़रमाया।

“खुदा ने कसम खाई है और वो इससे अपना मन नहीं बदलेगा:
तुम अबद तक के लिये इमाम है।”

22 इस कसम की वजह से ईसा एक बेहतर अहद की जमानत देता है। 23 एक और बदलाव, पुराने निजाम में बहुत से इमाम थे, क्योंकि मौत ने हर एक की खिदमत महुदूद किए रखी। 24 लेकिन चूँकि ईसा हमेशा तक जिन्दा है इस लिए उस की कहानित कभी भी खत्म नहीं होगी।

25 यूँ वह उन्हें अबदी नजात दे सकता है जो उस के वसीले से खुदा के पास आते हैं, क्योंकि वह अबद तक जिन्दा है और उन की शफ़ाअत करता रहता है। 26 हमें ऐसे ही इमाम — ए — आजम की ज़रूरत थी। हाँ, ऐसा इमाम जो मुक़द्दस, बेकुसूर, बेदाग़, गुनाहगारों से अलग और आसमानों से बुलन्द हुआ है।

27 उसे दूसरे इमामों की तरह इस की ज़रूरत नहीं कि हर रोज़ कुर्बानियाँ पेश करे, पहले अपने लिए फिर क्रौम के लिए। बल्कि उस ने अपने आप को पेश करके अपनी इस कुर्बानी से उन के गुनाहों को एक बार सदा के लिए मिटा दिया। 28 मूसा की शरी'अत ऐसे लोगों को इमाम — ए — आजम मुक़र्रर करती है जो कमज़ोर हैं। लेकिन शरी'अत के बाद खुदा की कसम फ़र्ज़न्द को इमाम — ए — आजम मुक़र्रर करती है, और यह खुदा का फ़र्ज़न्द हमेशा तक कामिल है।

8

2222 22222 2222 — 2 — 2222 22

1 जो कुछ हम कह रहे हैं उस की खास बात यह है, हमारा एक ऐसा इमाम — ए — आजम है जो आसमान पर जलाली खुदा के तख़्त के दहने हाथ बैठा है। 2 वहाँ वह मक्बिदस में खिदमत करता है, उस हक़ीक़ी मुलाक़ात के खेमे* में जिसे इंसानी हाथों ने खड़ा नहीं किया बल्कि खुदा ने।

3 हर इमाम — ए — आजम को नज़राने और कुर्बानियाँ पेश करने के लिए मुक़र्रर किया जाता है। इस लिए लाज़िम है कि हमारे इमाम — ए — आजम के पास भी कुछ हो जो वह पेश कर सके। 4 अगर यह दुनिया में होता तो इमाम — ए — आजम न होता, क्योंकि यहाँ इमाम तो हैं जो शरी'अत के लिहाज़ से नज़राने पेश करते हैं। 5 जिस मक्बिदस में वह खिदमत करते हैं वह उस मक्बिदस की सिर्फ़ नक़ली सूरत और साया है जो आसमान पर है। यही वजह है कि खुदा ने मूसा को मुलाक़ात का

खेमा बनाने से पहले आगाह करके यह कहा, “शौर कर कि सब कुछ बिल्कुल उस नमूने के मुताबिक़ बनाया जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।”

6 लेकिन जो खिदमत ईसा को मिल गई है वह दुनिया के इमामों की खिदमत से कहीं बेहतर है, उतनी बेहतर जितना वह अहूद जिस का दरमियानी ईसा है पुराने अहूद से बेहतर है। क्योंकि यह अहूद बेहतर वादों की बुनियाद पर बाँधा गया।

7 अगर पहला अहूद बेइलज़ाम होता तो फिर नए अहूद की ज़रूरत न होती।

8 लेकिन खुदा को अपनी क्रौम पर इलज़ाम लगाना पड़ा। उस ने कहा,
“खुदावन्द फ़रमाता है कि देख! वो दिन आते हैं कि मैं इस्राईल के घराने और यहूदाह के घराने से एक नया 'अहूद बाँधूंगा।

9 यह उस अहूद की तरह नहीं होगा जो मैंने उनके बाप दादा से उस दिन बाँधा था,
जब मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाने के लिए उनका हाथ पकड़ा था,
इस वास्ते कि वो मेरे अहूद पर क्राईम नहीं रहे और खुदा वन्द फ़रमाता है कि मैंने उनकी तरफ़ कुछ तबज्जह न की।

10 खुदावन्द फ़रमाता है कि,
जो अहूद इस्राईल के घराने से उनदिनों के बाद बाँधूंगा,
वो ये है

कि मैं अपने क़ानून उनके ज़हन में डालूंगा,
और उनके दिलों पर लिखूंगा,
और मैं उनका खुदा हूँगा,
और वो मेरी उम्मत होंगे।

11 और हर शख्स अपने हम वतन और अपने भाई को ये तालीम न देगा कि तू खुदावन्द को पहचान,
क्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे।

12 क्योंकि मैं उन का कुसूर मुआफ़ करूँगा।
और मैं उनके गुनाहों को याद ना रखूँगा।”

13 इन अल्फ़ाज़ में खुदा एक नए अहूद का ज़िक़र करता है और यूँ पुराने अहूद को रद्द कर देता है। और जो रद्द किया और पुराना है उस का अन्जाम करीब ही है।

9

22222222 2222 22 2222222 222222

* 8:2 8:2 खेमे इबादत की जगह थी जब तक सुलैमान ने हैकल नहीं बनाया था

1 जब पहला अहद बाँधा गया तो इबादत करने के लिए हिदायत दी गई। ज़मीन पर एक मक्ब्रस भी बनाया गया, 2 एक खेमा जिस के पहले कमरे में शमादान, मेज़ और उस पर पड़ी मख्सूस की गई रोटियाँ थीं। उस का नाम “मुक़दस कमरा” था।

3 उस के पीछे एक और कमरा था जिस का नाम “पाकतरीन कमरा” था। पहले और दूसरे कमरे के दरमियान बाक़ी दरवाज़े पर पर्दा लगा था। 4 इस पिछले कमरे में बख़ूर जलाने के लिए सोने की कुर्बानगाह और अहद का सन्दूक था। अहद के सन्दूक पर सोना मढ़ा हुआ था और उस में तीन चीज़ें थीं: सोने का मर्तबान जिस में मन भरा था, हारून की वह लाठी जिस से कोंपलें फूट निकली थीं और पत्थर की वह दो तख्तियाँ जिन पर अहद के अहकाम लिखे थे। 5 सन्दूक पर इलाही जलाल के दो करूबी फ़रिश्ते लगे थे जो सन्दूक के ढकने को साया देते थे जिस का नाम “कफ़फ़ारा का ढकना” था। लेकिन इस जगह पर हम सब कुछ मज़ीद तफ़सील से बयान नहीं करना चाहते।

6 यह चीज़ें इसी तरतीब से रखी जाती हैं। जब इमाम अपनी ख़िदमत के फ़राइज़ अदा करते हैं तो बाक़ाइदगी से पहले कमरे में जाते हैं। 7 लेकिन सिर्फ़ इमाम — ए — आज़म ही दूसरे कमरे में दाख़िल होता है, और वह भी साल में सिर्फ़ एक दफ़ा। जब भी वह जाता है वह अपने साथ खून ले कर जाता है जिसे वह अपने और क्रौम के लिए पेश करता है ताकि वह गुनाह मिट जाएँ जो लोगों ने भूलचूक में किए होते हैं।

8 इस से रूह — उल — कुदूस दिखाता है कि पाकतरीन कमरे तक रसाई उस वक़्त तक ज़ाहिर नहीं की गई थी जब तक पहला कमरा इस्तेमाल में था। 9 यह मिजाज़न मौजूदा ज़माने की तरफ़ इशारा है। इस का मतलब यह है कि जो नज़राने और कुर्बानियाँ पेश की जा रही हैं वह इबादत गुज़ार दिल को पाक — साफ़ करके कामिल नहीं बना सकतीं। 10 क्योंकि इन का ताल्लुक सिर्फ़ खाने — पीने वाली चीज़ों और गुस्ल की मुस्ललिफ़ रस्मों से होता है, ऐसी ज़ाहिरी हिदायत जो सिर्फ़ नए निज़ाम के आने तक लागू हैं।

11 लेकिन अब मसीह आ चुका है, उन अच्छी चीज़ों का इमाम — ए — आज़म जो अब हासिल हुई हैं। जिस खेमे में वह ख़िदमत करता है वह कहीं ज्यादा अज़ीम और कामिल है। यह खेमा इंसानी हाथों से नहीं बनाया गया यानी यह इस कायनात का हिस्सा नहीं है। 12 जब मसीह एक बार सदा के लिए खेमे के पाकतरीन कमरे में दाख़िल हुआ तो उस ने कुर्बानियाँ पेश करने के लिए बकरों और बछड़ों का खून इस्तेमाल न किया। इस के

बजाए उस ने अपना ही खून पेश किया और यूँ हमारे लिए हमेशा की नज़ात हासिल की।

13 पुराने निज़ाम में बैल — बकरों का खून और जवान गाय की राख नापाक लोगों पर छिड़के जाते थे ताकि उन के जिस्म पाक — साफ़ हो जाएँ। 14 अगर इन चीज़ों का यह असर था तो फिर मसीह के खून का क्या ज़बरदस्त असर होगा! अज़ली रूह के ज़रिए उस ने अपने आप को बेदाश कुर्बानी के तौर पर पेश किया। यूँ उस का खून हमारे ज़मीर को मौत तक पहुँचाने वाले कामों से पाक — साफ़ करता है ताकि हम ज़िन्दा खुदा की ख़िदमत कर सकें। 15 यही वजह है कि मसीह एक नए अहद का दरमियानी है। मक्सद यह था कि जितने लोगों को खुदा ने बुलाया है उन्हें खुदा की वादा की हुई और हमेशा की मीरास मिले। और यह सिर्फ़ इस लिए मुम्किन हुआ है कि मसीह ने मर कर फ़िदया दिया ताकि लोग उन गुनाहों से छुटकारा पाएँ जो उन से उस वक़्त सरज़द हुए जब वह पहले अहद के तहत थे।

16 जहाँ वसीयत है वहाँ ज़रूरी है कि वसीयत करने वाले की मौत की तस्दीक़ की जाए। 17 क्योंकि जब तक वसीयत करने वाला ज़िन्दा हो वसीयत बे असर होती है। इस का असर वसीयत करने वाले की मौत ही से शुरू होता है।

18 यही वजह है कि पहला अहद बाँधते वक़्त भी खून इस्तेमाल हुआ। 19 क्योंकि पूरी क्रौम को शरी'अत का हर हुक्म सुनाने के बाद मूसा ने बछड़ों का खून पानी से मिला कर उसे ज़ूफ़े के गुच्छे और क़िरमिज़ी रंग के धागे के ज़रिए शरी'अत की किताब और पूरी क्रौम पर छिड़का। 20 उस ने कहा, “यह खून उस अहद की तस्दीक़ करता है जिस की पैरवी करने का हुक्म खुदा ने तुम्हें दिया है।”

21 इसी तरह मूसा ने यह खून मुलाकात के खेमे और इबादत के तमाम सामान पर छिड़का। 22 न सिर्फ़ यह बल्कि शरी'अत तक्राज़ा करती है कि तक्ररीबन हर चीज़ को खून ही से पाक — साफ़ किया जाए बल्कि खुदा के हुज़ूर खून पेश किए बग़ैर मुआफ़ी मिल ही नहीं सकती।

23 गरज़, ज़रूरी था कि यह चीज़ें जो आसमान की असली चीज़ों की नक़ली सूरतें हैं पाक — साफ़ की जाएँ। लेकिन आसमानी चीज़ें खुद ऐसी कुर्बानियों की तलब करती हैं जो इन से कहीं बेहतर हों। 24 क्योंकि मसीह सिर्फ़ इंसानी हाथों से बने मक्ब्रस में दाख़िल नहीं हुआ जो असली मक्ब्रस की सिर्फ़ नक़ली सूरत थी

बल्कि वह आसमान में ही दाखिल हुआ ताकि अब से हमारी खातिर खुदा के सामने हाज़िर हो।

25 दुनिया का इमाम — ए — आज़म तो सालाना किसी और (यानी जानवर) का खून ले कर पाकतरीन कमरे में दाखिल होता है। लेकिन मसीह इस लिए आसमान में दाखिल न हुआ कि वह अपने आप को बार बार कुर्बानी के तौर पर पेश करे। 26 अगर ऐसा होता तो उसे दुनिया की पैदाइश से ले कर आज तक बहुत बार दुःख सहना पड़ता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि अब वह ज़मानों के खातिर पर एक ही बार सदा के लिए ज़ाहिर हुआ ताकि अपने आप को कुर्बान करने से गुनाह को दूर करे।

27 एक बार मरना और खुदा की अदालत में हाज़िर होना हर इंसान के लिए मुक़रर है। 28 इसी तरह मसीह को भी एक ही बार बहुतों के गुनाहों को उठा कर ले जाने के लिए कुर्बान किया गया। दूसरी बार जब वह ज़ाहिर होगा तो गुनाहों को दूर करने के लिए ज़ाहिर नहीं होगा बल्कि उन्हें नज़ात देने के लिए जो शिद्दत से उस का इन्तिज़ार कर रहे हैं।

10

22222 2222 22 2222 22 22222222 22 2222222222

1 मूसा की शरी'अत आने वाली अच्छी और असली चीज़ों की सिर्फ़ नक़ली सूरत और साया है। यह उन चीज़ों की असली शक़ल नहीं है। इस लिए यह उन्हें कभी भी कामिल नहीं कर सकती जो साल — ब — साल और बार बार खुदा के हुज़ूर आ कर वही कुर्बानियाँ पेश करते रहते हैं। 2 अगर वह कामिल कर सकती तो कुर्बानियाँ पेश करने की ज़रूरत न रहती। क्योंकि इस सूरत में इबादत करने से एक बार सदा के लिए पाक — साफ़ हो जाते और उन्हें गुनाहगार होने का शऊर न रहता। 3 लेकिन इस के बजाए यह कुर्बानियाँ साल — ब — साल लोगों को उन के गुनाहों की याद दिलाती हैं। 4 क्योंकि मुम्किन ही नहीं कि बैल — बकरों का खून गुनाहों को दूर करे।

5 इस लिए मसीह दुनिया में आते वक़्त खुदा से कहता है, कि तूने—

कुर्बानी और नज़र को पसन्द ना किया
बल्कि मेरे लिए एक बदन तैयार किया।

6 राख होने वाली कुर्बानियाँ और गुनाह की कुर्बानियों से तू खुश न हुआ।”

7 फिर मैं बोल उठा, ऐ खुदा, मैं हाज़िर हूँ ताकि तेरी मज़ी पूरी करूँ।

8 पहले मसीह कहता है, “न तू कुर्बानियाँ, नज़रें, राख होने वाली कुर्बानियाँ या गुनाह की कुर्बानियाँ चाहता था, न उन्हें पसन्द करता था।” अगरचे शरी'अत इन्हें पेश करने का मुतालबा करती है। 9 फिर वह फ़रमाता है, “मैं हाज़िर हूँ ताकि तेरी मज़ी पूरी करूँ।” यूँ वह पहला निज़ाम ख़त्म करके उस की जगह दूसरा निज़ाम क़ाईम करता है। 10 और उस की मज़ी पूरी हो जाने से हमें ईसा मसीह के बदन के वसीले से खास — ओ — मुक़द्दस किया गया है। क्योंकि उसे एक ही बार सदा के लिए हमारे लिए कुर्बान किया गया।

11 हर इमाम रोज़ — ब — रोज़ मक़िदस में खड़ा अपनी खिदमत के फ़राइज़ अदा करता है। रोज़ाना और बार बार वह वही कुर्बानियाँ पेश करता रहता है जो कभी भी गुनाहों को दूर नहीं कर सकतीं। 12 लेकिन मसीह ने गुनाहों को दूर करने के लिए एक ही कुर्बानी पेश की, एक ऐसी कुर्बानी जिस का असर सदा के लिए रहेगा। फिर वह खुदा के दहने हाथ बैठ गया। 13 वहीं वह अब इन्तिज़ार करता है जब तक खुदा उस के दुश्मनों को उस के पाँओ की चौकी न बना दे। 14 यूँ उस ने एक ही कुर्बानी से उन्हें सदा के लिए कामिल बना दिया है जिन्हें पाक किया जा रहा है।

15 रूह — उल — कुद्दूस भी हमें इस के बारे में गवाही देता है। पहले वह कहता है,

16 “खुदा फ़रमाता है कि, जो 'अहद मैं उन दिनों के बाद उनसे बाँधूंगा वो ये है कि मैं अपने क़ानून उन के दिलों पर लिखूंगा और उनके ज़हन में डालूंगा।”

17 फिर वह कहता है, “उस वक़्त से मैं उन के गुनाहों और बुराइयों को याद नहीं करूँगा।”

18 और जहाँ इन गुनाहों की मुआफ़ी हुई है वहाँ गुनाहों को दूर करने की कुर्बानियों की ज़रूरत ही नहीं रही।

19 चुनाँचे भाइयों, अब हम ईसा के खून के वसीले से पूरे यक़ीन के साथ पाकतरीन कमरे में दाखिल हो सकते हैं। 20 अपने बदन की कुर्बानी से ईसा ने उस कमरे के पर्दे में से गुज़रने का एक नया और ज़िन्दगीबख़्श रास्ता खोल दिया। 21 हमारा एक अज़ीम इमाम — ए — आज़म है जो खुदा के घर पर मुक़रर है। 22 इस लिए आएँ, हम खुलूसदिली और ईमान के पूरे यक़ीन के साथ खुदा के हुज़ूर आएँ। क्योंकि हमारे दिलों पर मसीह का खून छिड़का गया है ताकि हमारे मुजरिम दिल साफ़ हो

जाएँ। और, हमारे बदनों को पाक — साफ़ पानी से धोया गया है।

23 आएँ, हम मज़बूती से उस उम्मीद को थामे रखें जिस का इकरार हम करते हैं। हम लड़खड़ा न जाएँ, क्योंकि जिस ने इस उम्मीद का वादा किया है वह वफ़ादार है। 24 और आएँ, हम इस पर ध्यान दें कि हम एक दूसरे को किस तरह मुहब्बत दिखाने और नेक काम करने पर उभार सकें। 25 हम एकसाथ जमा होने से बाज़ न आएँ, जिस तरह कुछ की आदत बन गई है। इस के बजाए हम एक दूसरे की हौसला अफ़जाई करें, खासकर यह बात मह — ए — नज़र रख कर कि खुदावन्द के दिन के आने तक।

26 खबरदार! अगर हम सच्चाई जान लेने के बाद भी जान — बूझ कर गुनाह करते रहें तो मसीह की कुर्बानी इन गुनाहों को दूर नहीं कर सकेगी। 27 फिर सिर्फ़ खुदा की अदालत की हौलनाक उम्मीद बाक़ी रहेगी, उस भड़कती हुई आग की जो खुदा के मुखालिफ़ों को ख़त्म कर डालेगी।

28 जो मूसा की शरी'अत रद्द करता है उस पर रहम नहीं किया जा सकता बल्कि अगर दो या इस से ज्यादा लोग इस जुर्म की गवाही दें तो उसे सज़ा — ए — मौत दी जाए। 29 तो फिर क्या खयाल है, वह कितनी सख्त सज़ा के लायक होगा जिस ने खुदा के फ़र्ज़न्द को पाँओ तले रौंदा? जिस ने अहूद का वह खून हक़ीर जाना जिस से उसे खास — ओ — मुक़द्दस किया गया था? और जिस ने फ़ज़ल के रूह की बेइज्जती की?

30 क्योंकि हम उसे जानते हैं जिस ने फ़रमाया, “इन्तिक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।” उस ने यह भी कहा, “खुदा अपनी क्रौम का इन्साफ़ करेगा।” 31 यह एक हौलनाक बात है अगर ज़िन्दा खुदा हमें सज़ा देने के लिए पकड़े।

32 ईमान के पहले दिन याद करें जब खुदा ने आप को रौशन कर दिया था। उस वक़्त के सख्त मुक़ाबिले में आप को कई तरह का दुःख सहना पड़ा, लेकिन आप साबितक़दम रहे। 33 कभी कभी आप की बेइज्जती और अवाम के सामने ही ईज़ा रसानी होती थी, कभी कभी आप उन के साथी थे जिन से ऐसा सुलूक हो रहा था। 34 जिन्हें जेल में डाला गया आप उन के दुःख में शरीक हुए और जब आप का माल — ओ — ज़ेवर लूटा गया तो आप ने यह बात खुशी से बर्दाश्त की। क्योंकि आप जानते थे कि वह माल हम से नहीं छीन लिया गया जो पहले की तरह कहीं बेहतर है और हर सूरत में क़ाईम रहेगा।

35 चुनाँचे अपने इस भरोसे को हाथ से जाने न दें क्योंकि इस का बड़ा अज़र मिलेगा। 36 लेकिन इस के लिए आप को साबित क़दमी की ज़रूरत है ताकि आप खुदा की मर्ज़ी पूरी कर सकें और यूँ आप को वह कुछ मिल जाए जिस का वादा उस ने किया है।

37 और कलाम में लिखा है “अब बहुत ही थोड़ा वक़्त बाक़ी है कि

आने वाला आएगा और देर न करेगा।

38 लेकिन मेरा रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा, और अगर वो हटेगा तो मेरा दिल उससे खुश न होगा।”

39 लेकिन हम उन में से नहीं हैं जो पीछे हट कर तबाह हो जाएँगे बल्कि हम उन में से हैं जो ईमान रख कर नज़ात पाते हैं।

11

???? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 ईमान क्या है? यह कि हम उस में क़ाईम रहें जिस पर हम उम्मीद रखते हैं और कि हम उस का यक़ीन रखें जो हम नहीं देख सकते। 2 ईमान ही से पुराने ज़मानों के लोगों को खुदा की क़बूलियत हासिल हुई। 3 ईमान के ज़रिए हम जान लेते हैं कि कायनात को खुदा के कलाम से पैदा किया गया, कि जो कुछ हम देख सकते हैं नज़र आने वाली चीज़ों से नहीं बना।

4 यह ईमान का काम था कि हाबिल ने खुदा को एक ऐसी कुर्बानी पेश की जो क़ाइन की कुर्बानी से बेहतर थी। इस ईमान की बिना पर खुदा ने उसे रास्तबाज़ ठहरा कर उस की अच्छी गवाही दी, जब उस ने उस की कुर्बानियों को क़बूल किया। और ईमान के ज़रिए वह अब तक बोलता रहता है हालाँकि वह मुर्दा है।

5 यह ईमान का काम था कि हनूक न मरा बल्कि ज़िन्दा हालत में आसमान पर उठाया गया। कोई भी उसे ढूँड कर पा न सका क्योंकि खुदा उसे आसमान पर उठा ले गया था। वजह यह थी कि उठाए जाने से पहले उसे यह गवाही मिली कि वह खुदा को पसन्द आया। 6 और ईमान रखे बग़ैर हम खुदा को पसन्द नहीं आ सकते। क्योंकि ज़रूरी है कि खुदा के हुज़ूर आने वाला ईमान रखे कि वह है और कि वह उन्हें अज़र देता है जो उस के तालिब हैं।

7 यह ईमान का काम था कि नूह ने खुदा की सुनी जब उस ने उसे आने वाली बातों के बारे में आगाह किया, ऐसी बातों के बारे में जो अभी देखने में नहीं आई थीं। नूह ने खुदा का ख़ौफ़ मान कर एक नाव बनाई ताकि उस का ख़ानदान बच जाए। यूँ उस ने अपने ईमान के ज़रिए

दुनिया को मुजरिम करार दिया और उस रास्तबाज़ी का वारिस बन गया जो ईमान से हासिल होती है।

8 यह ईमान का काम था कि अब्रहाम ने खुदा की सुनी जब उस ने उसे बुला कर कहा कि वह एक ऐसे मुल्क में जाए जो उसे बाद में मीरास में मिलेगा। हाँ, वह अपने मुल्क को छोड़ कर खाना हुआ, हालाँकि उसे मालूम न था कि वह कहाँ जा रहा है। 9 ईमान के ज़रिए वह वादा किए हुए मुल्क में अजनबी की हैसियत से रहने लगा। वह खेमों में रहता था और इसी तरह इज़्हाक और याकूब भी जो उस के साथ उसी वादे के वारिस थे। 10 क्योंकि अब्रहाम उस शहर के इन्तिज़ार में था जिस की मज़बूत बुनियाद है और जिस का नक्शा बनाने और तामीर करने वाला खुद खुदा है।

11 यह ईमान का काम था कि अब्रहाम बाप बनने के काबिल हो गया, हालाँकि वह बुढ़ापे की वजह से बाप नहीं बन सकता था। इसी तरह सारा भी बच्चे जन नहीं सकती थी। लेकिन अब्रहाम समझता था कि खुदा जिस ने वादा किया है वफ़ादार है। 12 अगरचे अब्रहाम तक़रीबन मर चुका था तो भी उसी एक शख्स से बेशुमार औलाद निकली, तह्दाद में आसमान पर के सितारों और साहिल पर की रेत के ज़रों के बराबर।

13 यह तमाम लोग ईमान रखते रखते मर गए। उन्हें वह कुछ न मिला जिस का वादा किया गया था। उन्होंने ने उसे सिर्फ़ दूर ही से देख कर खुश हुए। 14 जो इस किस्म की बातें करते हैं वह ज़ाहिर करते हैं कि हम अब तक अपने वतन की तलाश में हैं।

15 अगर उन के ज़हन में वह मुल्क होता जिस से वह निकल आए थे तो वह अब भी वापस जा सकते थे। 16 इस के बजाए वह एक बेहतर मुल्क यानी एक आसमानी मुल्क की तमन्ना कर रहे थे। इस लिए खुदा उन का खुदा कहलाने से नहीं शर्माता, क्योंकि उस ने उन के लिए एक शहर तैयार किया है।

17 यह ईमान का काम था कि अब्रहाम ने उस वक़्त इज़्हाक को कुर्बानी के तौर पर पेश किया जब खुदा ने उसे आजमाया। हाँ, वह अपने इकलौते बेटे को कुर्बान करने के लिए तैयार था अगरचे उसे खुदा के वादे मिल गए थे 18 “कि तेरी नस्ल इज़्हाक ही से काईम रहेगी।” 19 अब्रहाम ने सोचा, खुदा मुर्दों को भी ज़िन्दा कर सकता है, और तबियत के लिहाज़ से उसे वाक़ई इज़्हाक मुर्दों में से वापस मिल गया।

20 यह ईमान का काम था कि इज़्हाक ने आने वाली चीज़ों के लिहाज़ से याकूब और 'ऐसव को बर्क़त दी।

21 यह ईमान का काम था कि याकूब ने मरते वक़्त यूसुफ़

के दोनों बेटों को बर्क़त दी और अपनी लाठी के सिरे पर टेक लगा कर खुदा को सिज्दा किया। 22 यह ईमान का काम था कि यूसुफ़ ने मरते वक़्त यह पेशगोई की कि इस्राईली मिस्र से निकलेंगे बल्कि यह भी कहा कि निकलते वक़्त मेरी हड्डियाँ भी अपने साथ ले जाओ।

23 यह ईमान का काम था कि मूसा के माँ — बाप ने उसे पैदाइश के बाद तीन माह तक छुपाए रखा, क्योंकि उन्होंने ने देखा कि वह खूबसूरत है। वह बादशाह के हुक्म की खिलाफ़ वरज़ी करने से न डरे। 24 यह ईमान का काम था कि मूसा ने परवान चढ़ कर इन्कार किया कि उसे फिर'औन की बेटी का बेटा ठहराया जाए। 25 आरिज़ी तौर पर गुनाह से लुत्फ़ अन्दोज़ होने के बजाए उस ने खुदा की क्रौम के साथ बदसुलूकी का निशाना बनने को तर्ज़ीह दी। 26 वह समझा कि जब मेरी मसीह की खातिर रुस्वाई की जाती है तो यह मिस्र के तमाम खज़ानों से ज्यादा कीमती है, क्योंकि उस की आँखें आने वाले अज़र पर लगी रहीं।

27 यह ईमान का काम था कि मूसा ने बादशाह के गुस्से से डरे बग़ैर मिस्र को छोड़ दिया, क्योंकि वह गोया अनदेखे खुदा को लगातार अपनी आँखों के सामने रखता रहा। 28 यह ईमान का काम था कि उस ने फ़सह की ईद मनह कर हुक्म दिया कि खून को चौखटों पर लगाया जाए ताकि हलाक करने वाला फ़रिश्ता उन के पहलौटे बेटों को न छुए।

29 यह ईमान का काम था कि इस्राईली बहर — ए — कुलज़ूम में से यूँ गुज़र सके जैसे कि यह खुशक ज़मीन थी। जब मिस्रियों ने यह करने की कोशिश की तो वह डूब गए। 30 यह ईमान का काम था कि सात दिन तक यरीहू शहर की फ़सील के गिर्द चक्कर लगाने के बाद पूरी दीवार गिर गई। 31 यह भी ईमान का काम था कि राहब फ़ाहिशा अपने शहर के बाक़ी नाफ़रमान रहने वालों के साथ हलाक न हुई, क्योंकि उस ने इस्राईली जासूसों को सलामती के साथ खुशआमदीद कहा था।

32 मैं ज्यादा क्या कुछ कहूँ? मेरे पास इतना वक़्त नहीं कि मैं जिदाऊन, बरक़, सम्सून, इफ़ताह, दाऊद, समूएल और नबियों के बारे में सुनाता रहूँ। 33 यह सब ईमान की वजह से ही कामियाब रहे। वह बादशाहों पर ग़ालिब आए और इन्साफ़ करते रहे। उन्हें खुदा के वादे हासिल हुए। उन्होंने ने शेर बबरों के मुँह बन्द कर दिए 34 और आग के भड़कते शोलों को बुझा दिया। वह तलवार की ज़द से बच निकले। वह कमज़ोर थे लेकिन उन्हें ताक़त हासिल हुई। जब जंग छिड़ गई तो वह इतने

ताक़तवर साबित हुए कि उन्होंने ने ग़ैरमुल्की लश्करों को शिकस्त दी।

³⁵ ईमान रखने के ज़रिए से औरतों को उन के मुर्दा अज़ीज़ ज़िन्दा हालत में वापस मिले। ³⁶ कुछ को लान — तान और कोड़ों बल्कि जंजीरों और कैद का भी सामना करना पड़ा। ³⁷ उनपर पथराव किया गया, उन्हें आरे से चीरा गया, उन्हें तलवार से मार डाला गया। कुछ को भेड़ — बकरियों की खालों में घूमना फिरना पड़ा। ज़रूरतमन्द हालत में उन्हें दबाया और उन पर ज़ुल्म किया जाता रहा। ³⁸ दुनिया उन के लायक नहीं थी! वह वीरान जगहों में, पहाड़ों पर, ग़ारों और गड्ढों में आवारा फिरते रहे।

³⁹ इन सब को ईमान की वजह से अच्छी गवाही मिली। तो भी इन्हें वह कुछ हासिल न हुआ जिस का वादा खुदा ने किया था। ⁴⁰ क्योंकि उस ने हमारे लिए एक ऐसा मन्सूबा बनाया था जो कहीं बेहतर है। वह चाहता था कि यह लोग हमारे बग़ैर कामिलियत तक न पहुँचें।

12

????? ?? ?????????? ?????? ?? ?????????
?? ?????? ?????? ??

¹ गरज़, हम गवाहों के इतने बड़े लश्कर से घिरे रहते हैं, इस लिए आएँ, हम सब कुछ उतारें जो हमारे लिए रुकावट का ज़रिया बन गया है, हर गुनाह को जो हमें आसानी से उलझा लेता है। आएँ, हम साबितक़दमी से उस दौड़ में दौड़ते रहें जो हमारे लिए मुक़रर की गई है।

² और दौड़ते हुए हम ईसा को तकते रहें, उसे जो ईमान का बानी भी है और उसे पाए तक़मील तक पहुँचाने वाला भी। याद रहे कि गो वह खुशी हासिल कर सकता था तो भी उस ने सलीबी मौत की शर्मनाक बेइज़्जती की परवाह न की बल्कि उसे बर्दाश्त किया। और अब वह खुदा के तख़्त के दहने हाथ जा बैठा है!

³ उस पर ग़ौर करें जिस ने गुनाहगारों की इतनी मुख़ालिफ़त बर्दाश्त की। फिर आप थकते थकते बेदिल नहीं हो जाएँगे। ⁴ देखें, आप गुनाह से लड़े तो हैं, लेकिन अभी तक आप को जान देने तक इस की मुख़ालिफ़त नहीं करनी पड़ी। ⁵ क्या आप कलाम — ए — मुक़द्दस की यह हिम्मत बढ़ाने वाली बात भूल गए हैं जो आप को खुदा के फ़र्ज़न्द ठहरा कर बयान करती है, ⁶ क्योंकि जो खुदा को प्यारा है उस की वह हिदायत करता है, क्योंकि जिसको फ़रज़न्द बनालेता है उसके कोड़े भी लगाता है।

⁷ अपनी मुसीबतों को इलाही तर्बियत समझ कर बर्दाश्त करें। इस में खुदा आप से बेटों का सा सुलूक कर रहा है। क्या कभी कोई बेटा था जिस की उस के बाप

ने तर्बियत न की? ⁸ अगर आप की तर्बियत सब की तरह न की जाती तो इस का मतलब यह होता कि आप खुदा के हक़ीक़ी फ़र्ज़न्द न होते बल्कि नाजायज़ औलाद।

⁹ देखो, जब हमारे इंसानी बाप ने हमारी तर्बियत की तो हम ने उस की इज़्जत की। अगर ऐसा है तो कितना ज़्यादा ज़रूरी है कि हम अपने रुहानी बाप के ताबे हो कर ज़िन्दगी पाएँ। ¹⁰ हमारे इंसानी बापों ने हमें अपनी समझ के मुताबिक़ थोड़ी देर के लिए तर्बियत दी। लेकिन खुदा हमारी ऐसी तर्बियत करता है जो फ़ाइदे का ज़रिया है और जिस से हम उस की कुदूसियात में शरीक होने के काबिल हो जाते हैं।

¹¹ जब हमारी तर्बियत की जाती है तो उस वक़्त हम खुशी महसूस नहीं करते बल्कि ग़म। लेकिन जिन की तर्बियत इस तरह होती है वह बाद में रास्तबाज़ी और सलामती की फ़सल काटते हैं।

¹² चुनाँचे अपने थके हारे बाज़ू और कमज़ोर घुटनों को मज़बूत करें। ¹³ अपने रास्ते चलने के काबिल बना दें ताकि जो अज्व लंगड़ा है उस का जोड़ उतर न जाए।

¹⁴ सब के साथ मिल कर सुलह — ओ — जहूद करते रहें, क्योंकि जो पाक नहीं है वह खुदावन्द को कभी नहीं देखेगा। ¹⁵ इस पर ध्यान देना कि कोई खुदा के फ़ज़ल से महरूम न रहे। ऐसा न हो कि कोई कड़वी जड़ फ़ूट निकले और बढ़ कर तकलीफ़ का ज़रिया बन जाए और बहुतों को नापाक कर दे। ¹⁶ ग़ौर करें कि कोई भी जिनाकार या 'ऐसव जैसा दुनियावी शख्स न हो जिस ने एक ही खाने के बदले अपने वह मौरूसी हुकूक बेच डाले जो उसे बड़े बेटे की हैसियत से हासिल थे। ¹⁷ आप को भी मालूम है कि बाद में जब वह बर्क़त विरासत में पाना चाहता था तो उसे रद्द किया गया। उस वक़्त उसे तौबा का मौक़ा न मिला हालाँकि उस ने आँसू बहा बहा कर यह बर्क़त हासिल करने की कोशिश की।

¹⁸ आप उस तरह खुदा के हुज़ूर नहीं आए जिस तरह इस्राईली जब वह सीना पहाड़ पर पहुँचे, उस पहाड़ के पास जिसे छुआ जा सकता था। वहाँ आग भड़क रही थी, अँधेरा ही अँधेरा था और आँधी चल रही थी। ¹⁹ जब नरसिंगे की आवाज़ सुनाई दी और खुदा उन से हमकलाम हुआ तो सुनने वालों ने उस से गुज़ारिश की कि हमें ज़्यादा कोई बात न बता। ²⁰ क्योंकि वह यह हुक्म बर्दाश्त नहीं कर सकते थे कि “अगर कोई जानवर भी पहाड़ को छू ले तो उसपर पथराव करना है।” ²¹ यह मन्ज़र इतना डरावना था कि मूसा ने कहा, “मैं खौफ़ के मारे काँप रहा हूँ।”

22 नहीं, आप सिय्यून पहाड़ के पास आ गए हैं, यानी ज़िन्दा खुदा के शहर आसमानी येरूशलेम के पास। आप बेशुमार फ़रिश्तों और जश्न मनाने वाली जमाअत के पास आ गए हैं, 23 उन पहलौठों की जमाअत के पास जिन के नाम आसमान पर दर्ज किए गए हैं। आप तमाम इंसानों के मुन्सिफ़ खुदा के पास आ गए हैं और कामिल किए गए रास्तबाज़ों की रूहों के पास। 24 नेज़ आप नए अहूद के बीच ईसा के पास आ गए हैं और उस छिड़के गए खून के पास जो हाबिल के खून की तरह बदला लेने की बात नहीं करता बल्कि एक ऐसी मुआफ़ी देता है जो कहीं ज्यादा असरदार है।

25 चुनाँचे खबरदार रहें कि आप उस की सुनने से इन्कार न करें जो इस वक़्त आप से हमकलाम हो रहा है। क्योंकि अगर इस्राईली न बचे जब उन्होंने दुनियावी पैग़म्बर मूसा की सुनने से इन्कार किया तो फिर हम किस तरह बचेंगे अगर हम उस की सुनने से इन्कार करें जो आसमान से हम से हमकलाम होता है। 26 जब खुदा सीना पहाड़ पर से बोल उठा तो ज़मीन काँप गई, लेकिन अब उस ने वादा किया है, “एक बार फिर मैं न सिर्फ़ ज़मीन को हिला दूँगा बल्कि आसमान को भी।”

27 “एक बार फिर” के अल्फ़ाज़ इस तरफ़ इशारा करते हैं कि पैदा की गई चीज़ों को हिला कर दूर किया जाएगा और नतीजे में सिर्फ़ वह चीज़ें काईम रहेंगी जिन्हें हिलाया नहीं जा सकता। 28 चुनाँचे आएँ, हम शुक्रगुज़ार हों। क्योंकि हमें एक ऐसी बादशाही हासिल हो रही है जिसे हिलाया नहीं जा सकता। हाँ, हम शुक्रगुज़ारी की इस रूह में एहतिराम और ख़ौफ़ के साथ खुदा की पसन्दीदा इबादत करें, 29 क्योंकि हमारा खुदा हकीक़तन राख़ कर देने वाली आग़ है।

13

????? ?????????

1 एक दूसरे से भाइयों की सी मुहब्बत रखते रहें। 2 मेहमान — नवाज़ी मत भूलना, क्योंकि ऐसा करने से कुछ ने अनजाने तौर पर फ़रिश्तों की मेहमान — नवाज़ी की है।

3 जो कैद में हैं, उन्हें यूँ याद रखना जैसे आप खुद उन के साथ कैद में हों। और जिन के साथ बदसलूकी हो रही है उन्हें यूँ याद रखना जैसे आप से यह बदसलूकी हो रही हो। 4 ज़रूरी है कि सब के सब मिली हुई ज़िन्दगी का एहतिराम करें। शौहर और बीवी एक दूसरे के वफ़ादार रहें, क्योंकि खुदा ज़िनाकारों और शादी का बंधन तोड़ने वालों की अदालत करेगा।

5 आप की ज़िन्दगी पैसों के लालच से आज्ञाद हो। उसी पर इकतिफ़ा करें जो आप के पास है, क्योंकि खुदा ने फ़रमाया है, मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा, “मैं तुझे कभी तर्क नहीं करूँगा।” 6 इस लिए हम यकीन से कह सकते हैं “कि खुदावन्द मेरा मददगार है, मैं ख़ौफ़ न करूँगा इंसान मेरा क्या करेगा?”

7 अपने राहनुमाओं को याद रखें जिन्होंने आप को खुदा का कलाम सुनाया। इस पर ग़ौर करें कि उन के चाल — चलन से कितनी भलाई पैदा हुई है, और उन के ईमान के नमूने पर चलें। 8 ईसा मसीह कल और आज और हमेशा तक यक्साँ है।

9 तरह तरह की और बेगाना तालीमात आप को इधर उधर न भटकाएँ। आप तो खुदा के फ़ज़ल से ताक़त पाते हैं और इस से नहीं कि आप मुख़्तलिफ़ खानों से परहेज़ करते हैं। इस में कोई खास फ़ाइदा नहीं है। 10 हमारे पास एक ऐसी कुर्बानगाह है जिस की कुर्बानी खाना मुलाक़ात के ख़ेमे में ख़िदमत करने वालों के लिए मनह है। 11 क्योंकि अगरचे इमाम — ए — आज़म जानवरों का खून गुनाह की कुर्बानी के तौर पर पाक तरीन कमरे में ले जाता है, लेकिन उन की लाशों को खेमागाह के बाहर जलाया जाता है।

12 इस वजह से ईसा को भी शहर के बाहर सलीबी मौत सहनी पड़ी ताकि क्रौम को अपने खून से खास — ओ — पाक करे। 13 इस लिए आएँ, हम खेमागाह से निकल कर उस के पास जाएँ और उस की बेइज़्जती में शरीक हो जाएँ। 14 क्योंकि यहाँ हमारा कोई काईम रहने वाला शहर नहीं है बल्कि हम आने वाले शहर की शदीद आरज़ु रखते हैं।

15 चुनाँचे आएँ, हम ईसा के वसीले से खुदा को हम्द — ओ — सना की कुर्बानी पेश करें, यानी हमारे होंटों से उस के नाम की तारीफ़ करने वाला फल निकले। 16 नेज़, भलाई करना और दूसरों को अपनी बर्क़तों में शरीक करना मत भूलना, क्योंकि ऐसी कुर्बानियाँ खुदा को पसन्द हैं।

17 अपने राहनुमाओं की सुनें और उन की बात मानें। क्योंकि वह आप की देख — भाल करते करते जागते रहते हैं, और इस में वह खुदा के सामने जवाबदेह हैं। उन की बात मानें ताकि वह खुशी से अपनी ख़िदमत सरअन्जाम दें। वर्ना वह कराहते कराहते अपनी ज़िम्मेदारी निभाएँगे, और यह आप के लिए मुफ़ीद नहीं होगा।

18 हमारे लिए दुआ करें, गरचे हमें यकीन है कि हमारा ज़मीर साफ़ है और हम हर लिहाज़ से अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारने के ख्वाहिशमन्द हैं। 19 मैं खासकर इस पर ज़ोर

देना चाहता हूँ कि आप दुआ करें कि खुदा मुझे आप के पास जल्द वापस आने की तौफ़ीक़ बख़्शे।

²⁰ अब सलामती का खुदा जो अबदी 'अहूद के खून से हमारे खुदावन्द और भेड़ों के अजीम चरवाहे ईसा को मुर्दों में से वापस लाया ²¹ वह आप को हर अच्छी चीज़ से नवाज़े ताकि आप उस की मर्जी पूरी कर सकें। और वह ईसा मसीह के ज़रिए हम में वह कुछ पैदा करे जो उसे पसन्द आए। उस का जलाल शुरू से हमेशा तक होता रहे! आमीन।

²² भाइयों! मेहरबानी करके नसीहत की इन बातों पर सन्जीदगी से ग़ौर करें, क्योंकि मैंने आप को सिर्फ़ चन्द अल्फ़ाज़ लिखे हैं। ²³ यह बात आप के इल्म में होनी चाहिए कि हमारे भाई तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है। अगर वह जल्दी पहुँचे तो उसे साथ ले कर आप से मिलने आऊँगा।

²⁴ अपने तमाम राहनुमाओं और तमाम मुक़द्दसीन को मेरा सलाम कहना। इतालिया मुल्क के ईमानदार आप को सलाम कहते हैं। ²⁵ खुदा का फ़ज़ल आप सब के साथ रहे।

12 मुबारिक वो शख्स है जो आजमाइश की बर्दाश्त करता है क्योंकि जब मक़बूल ठहरा तो ज़िन्दगी का वो ताज* हासिल करेगा जिसका खुदावन्द ने अपने मुहब्बत करने वालों से वा'दा किया है 13 जब कोई आजमाया जाए तो ये न कहे कि मेरी आजमाइश खुदा की तरफ़ से होती है क्यों कि न तो खुदा बदी से आजमाया जा सकता है और न वो किसी को आजमाता है।

14 हाँ हर शख्स अपनी ही ख्वाहिशों में खिंचकर और फ़ाँस कर आजमाया जाता है। 15 फिर ख्वाहिश हामिला हो कर गुनाह को पैदा करती है और गुनाह जब बढ़ गया तो मौत पैदा करता है। 16 ऐ, मेरे प्यारे भाइयों धोखा न खाना।

17 हर अच्छी बख़्शिश और कामिल इनाम ऊपर से है और नूरों के बाप की तरफ़ से मिलता है जिस में न कोई तब्दीली हो सकती है और न गरदिश के वजह से उस पर साया पड़ता है। 18 उसने अपनी मर्ज़ी से हमें कलाम — ऐ — हक़ के वसीले से पैदा किया ताकि उसकी मुख़ालिफ़त में से हम एक तरह के फल हो।

19 ऐ, मेरे प्यारे भाइयों ये बात तुम जानते हो; पस हर आदमी सुनने में तेज़ और बोलने में धीमा और क्रहर में धीमा हो। 20 क्योंकि इंसान का क्रहर खुदा की रास्तबाज़ी का काम नहीं करता। 21 इसलिए सारी नजासत और बदी की गंदगी को दूर करके उस कलाम को नर्मदिल से कुबूल कर लो जो दिल में बोया गया और तुम्हारी रूहों को नजात दे सकता है।

22 लेकिन कलाम पर अमल करने वाले बनो, न महज़ सुनने वाले जो अपने आपको धोखा देते हैं। 23 क्योंकि जो कोई कलाम का सुनने वाला हो और उस पर अमल करने वाला न हो वो उस शख्स की तरह है जो अपनी कुदरती सूरत आइँना में देखता है। 24 इसलिए कि वो अपने आप को देख कर चला जाता और भूल जाता है कि मैं कैसा था। 25 लेकिन जो शख्स आज़ादी की कामिल शरी'अत पर ग़ौर से नज़र करता रहता है वो अपने काम में इसलिए बर्क़त पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं बल्कि अमल करता है।

26 अगर कोई अपने आपको दीनदार समझे और अपनी ज़बान को लगाम न दे बल्कि अपने दिल को धोखा दे तो उसकी दीनदारी बातिल है। 27 हमारे खुदा और बाप के नज़दीक ख़ालिस और बेऐब दीनदारी ये है कि यतीमों और बेवाओं की मुसीबत के वक़्त उनकी ख़बर लें; और अपने आप को दुनिया से बे'दाग़ रखें।

2

?????????? ?? ?????????? ?????????? ?????

* 1:12 1:12 ज़िन्दगी का ताज — हमेशा की ज़िन्दगी है

1 ऐ, मेरे भाइयों; हमारे खुदावन्द जुल्जलाल 'ईसा मसीह' का ईमान तुम पर तरफ़दारी के साथ न हो। 2 क्योंकि अगर एक शख्स तो सोने की अँगूठी और 'उम्दा पोशाक' पहने हुए तुम्हारी जमा'अत में आए और एक ग़रीब आदमी मैले कुचेले पहने हुए आए। 3 और तुम उस 'उम्दा पोशाक' वाले का लिहाज़ कर के कहो तू यहाँ अच्छी जगह बैठ और उस ग़रीब शख्स से कहो तू वहाँ खड़ा रह या मेरे पाँव की चौकी के पास बैठ। 4 तो क्या तुम ने आपस में तरफ़दारी न की और बद नियत मुन्सिफ़ न बने?

5 ऐ, मेरे प्यारे भाइयों सुनो; क्या खुदा ने इस जहान के ग़रीबों को ईमान में दौलतमन्द और उस बादशाही के वारिस होने के लिए बरगुज़ीदा नहीं किया जिसका उसने अपने मुहब्बत करने वालों से वा'दा किया है। 6 लेकिन तुम ने ग़रीब आदमी की बे'इज़्जती की; क्या दौलतमन्द तुम पर जुल्म नहीं करते और वही तुम्हें आदालतों में घसीट कर नहीं ले जाते। 7 क्या वो उस बुज़ुर्ग नाम पर कुफ़र नहीं बकते जिससे तुम नाम ज़द हो।

8 तोभी अगर तुम इस लिखे हुए के मुताबिक़ अपने पड़ोसी से अपनी तरह मुहब्बत रखो उस बादशाही शरी'अत को पूरा करते हो तो अच्छा करते हो। 9 लेकिन अगर तुम तरफ़दारी करते हो तो गुनाह करते हो और शरी'अत तुम को क्रसूरवार ठहराती है

10 क्योंकि जिसने सारी शरी'अत पर अमल किया और एक ही बात में ख़ता की वो सब बातों में क्रसूरवार ठहरा। 11 इसलिए कि जिसने ये फ़रमाया कि ज़िना न कर उसी ने ये भी फ़रमाया कि खून न कर पस अगर तू ने ज़िना तो न किया मगर खून किया तोभी तू शरी'अत का इन्कार करने वाला ठहरा।

12 तुम उन लोगों की तरह कलाम भी करो और काम भी करो जिनका आज़ादी की शरी'अत के मुवाफ़िक़ इन्साफ़ होगा। 13 क्योंकि जिसने रहम नहीं किया उसका इन्साफ़ बग़ैर रहम के होगा रहम इन्साफ़ पर ग़ालिब आता है।

14 ऐ, मेरे भाइयों; अगर कोई कहे कि मैं ईमानदार हूँ मगर अमल न करता हो तो क्या फ़ाइदा? क्या ऐसा ईमान उसे नजात दे सकता है। 15 अगर कोई भाई या बहन नंगे हो और उनको रोज़ाना रोटी की कमी हो। 16 और तुम में से कोई उन से कहे कि सलामती के साथ जाओ गर्म और सेर रहो मगर जो चीज़ें तन के लिए ज़रूरी हैं वो उन्हें न दे तो क्या फ़ाइदा। 17 इसी तरह

ईमान भी अगर उसके साथ आ'माल न हों तो अपनी ज्ञात से मुर्दा है।

18 बल्कि कोई कह सकता है कि तू तो ईमानदार है और मैं अमल करने वाला हूँ अपना ईमान बगैर आ'माल के मुझे दिखा और मैं अपना ईमान आ'माल से तूझे दिखाऊँगा। 19 तू इस बात पर ईमान रखता है कि खुदा एक ही है खैर अच्छा करता है शियातीन भी ईमान रखते और थर थराते हैं। 20 मगर ऐ, निकम्मे आदमी क्या तू ये भी नहीं जानता कि ईमान बगैर आ'माल के बेकार है।

21 जब हमारे बाप अब्रहाम ने अपने बेटे इज्हाक को कुर्बानगाह पर कुर्बान किया तो क्या वो आ'माल से रास्तबाज़ न ठहरा। 22 पस तूने देख लिया कि ईमान ने उसके आ'माल के साथ मिल कर असर किया और आ'माल से ईमान कामिल हुआ। 23 और ये लिखा पूरा हुआ कि अब्रहाम खुदा पर ईमान लाया और ये उसके लिए रास्तबाज़ी गिना गया और वो खुदा का दोस्त कहलाया। 24 पस तुम ने देख लिया के इंसान सिर्फ ईमान ही से नहीं बल्कि आ'माल से रास्तबाज़ ठहरता है।

25 इसी तरह राहब फ़ाहिशा भी जब उसने कासिदों को अपने घर में उतारा और दूसरे रास्ते से रुख्सत किया तो क्या काम से रास्तबाज़ न ठहरी। 26 गरज़ जैसे बदन बगैर रुह के मुर्दा है वैसे ही ईमान भी बगैर आ'माल के मुर्दा है।

3

?????? ?? ??????? ??

1 ऐ, मेरे भाइयों; तुम में से बहुत से उस्ताद न बने क्योंकि जानते हो कि हम जो उस्ताद हैं ज्यादा सज़ा पाएँगे। 2 इसलिए कि हम सब के सब अक्सर खता करते हैं; कामिल शख्स वो है जो बातों में खता न करे वो सारे बदन को भी क़ाबू में रख सकता है;

3 देखो हम अपने क़ाबू में करने के लिए घोड़ों के मुँह में लगाम देते हैं तो उनके सारे बदन को भी घुमा सकते हैं। 4 और जहाज़ भी अगरचे बड़े बड़े होते हैं और तेज़ हवाओं से चलाए जाते हैं तोभी एक निहायत छोटी सी पतवार के जरिए माँझी की मर्जी के मुवाफ़िक़ घुमाए जाते हैं।

5 इसी तरह ज़बान भी एक छोटा सा 'उज्व है और बड़ी शेखी मारती है। देखो थोड़ी सी आग से कितने बड़े जंगल में आग लग जाती है। 6 ज़बान भी एक आग है ज़बान हमारे आज्ञा में शरारत का एक आ'लम है और सारे जिस्म को दाग़ लगाती है और दाइरा दुनिया को आग लगा देती है और जहन्नुम की आग से जलती रहती है।

7 क्योंकि हर किस्म के चौपाए और परिन्दे और कीड़े मकोड़े और दरियाई जानवर तो इंसान के क़ाबू में आ सकते हैं और आए भी हैं। 8 मगर ज़बान को कोई क़ाबू में नहीं कर सकता वो एक बला है जो कभी रुकती ही नहीं ज़हर — ए — क़ातिल से भरी हुई है।

9 इसी से हम खुदावन्द अपने बाप की हम्द करते हैं और इसी से आदमियों को जो खुदा की सूरत पर पैदा हुए हैं बहुआ देते हैं। 10 एक ही मुँह से मुबारिक़ बाद और बहुआ निकलती है! ऐ मेरे भाइयों; ऐसा न होना चाहिए।

11 क्या चश्मे के एक ही मुँह से मीठा और खारा पानी निकलता है। 12 ऐ, मेरे भाइयों! क्या अंजीर के दरख्त में ज़ैतून और अँगूर में अंजीर पैदा हो सकते हैं? इसी तरह खारे चश्मे से मीठा पानी नहीं निकल सकता।

13 तुम में दाना और फ़हीम कौन है? जो ऐसा हो वो अपने कामों को नेक चाल चलन के वसीले से उस हलीमी के साथ ज़ाहिर करें जो हिक्मत से पैदा होता है। 14 लेकिन अगर तुम अपने दिल में सख्त हसद और तफ़रक़े रखते हो तो हक़ के खिलाफ़ न शेखी मारो न झूठ बोलो।

15 ये हिक्मत वो नहीं जो ऊपर से उतरती है बल्कि दुनियावी और नफ़सानी और शैतानी है। 16 इसलिए कि जहाँ हसद और तफ़रक़ा होता है फ़साद और हर तरह का बुरा काम भी होता है। 17 मगर जो हिक्मत ऊपर से आती है अव्वल तो वो पाक होती है फिर मिलनसार नर्मदिल और तरबियत पज़ीर रहम और अच्छे फलों से लदी हुई बेतरफ़दार और बे — रिया होती है। 18 और सुलह करने वालों के लिए रास्तबाज़ी का फल सुलह के साथ बोया जाता है।

4

?????? ?? ???????

1 तुम में लड़ाइयाँ और झगड़े कहाँ से आ गए? क्या उन ख्वाहिशों से नहीं जो तुम्हारे आज्ञा में फ़साद करती हैं। 2 तुम ख्वाहिश करते हो, और तुम्हें मिलता नहीं, खून और हसद करते हो और कुछ हासिल नहीं कर सकते; तुम लड़ते और झगड़ते हो। तुम्हें इसलिए नहीं मिलता कि माँगते नहीं। 3 तुम माँगते हो और पाते नहीं इसलिए कि बुरी नियत से माँगते हो: ताकि अपनी ऐश — ओ — अशरत में ख़र्च करो।

4 ऐ, नाफ़रमानी करने वालो क्या तुम्हें नहीं मा'लूम कि दुनिया से दोस्ती रखना खुदा से दुश्मनी करना है? पस जो कोई दुनिया का दोस्त बनना चाहता है वो अपने आप को खुदा का दुश्मन बनाता है। 5 क्या तुम

ये समझते हो कि किताब — ऐ — मुकद्दस बे'फ़ाइदा कहती है? जिस पाक रूह को उसने हमारे अन्दर बसाया है क्या वो ऐसी आरजू करती है जिसका अन्जाम हसद हो।

6 वो तो ज्यादा तौफ़ीक़ बख़्शता है इसी लिए ये आया है कि खुदा मगरूरों का मुक़ाबिला करता है मगर फ़िरोतनों को तौफ़ीक़ बख़्शता है। 7 पस खुदा के ताबे हो जाओ और इबलीस का मुक़ाबिला करो तो वो तुम से भाग जाएगा।

8 खुदा के नज़दीक जाओ तो वो तुम्हारे नज़दीक आएगा; ऐ, गुनाहगारो अपने हाथों को साफ़ करो और ऐ, दो दिलो अपने दिलों को पाक करो। 9 अफ़सोस करो और रोओ तुम्हारी हँसी मातम से बदल जाए और तुम्हारी खुशी ऊदासी से। 10 खुदावन्द के सामने फ़िरोतनी करो, वो तुम्हें सरबलन्द करेगा।

11 ऐ, भाइयों एक दूसरे की बुराई न करो जो अपने भाई की बुराई करता या भाई पर इल्ज़ाम लगाता है; वो शरी'अत की बुराई करता और शरी'अत पर इल्ज़ाम लगाता है और अगर तू शरी'अत पर इल्ज़ाम लगाता है तो शरी'अत पर अमल करने वाला नहीं बल्कि उस पर हाकिम ठहरा। 12 शरी'अत का देने वाला और हाकिम तो एक ही है जो बचाने और हलाक करने पर कादिर है तू कौन है जो अपने पड़ोसी पर इल्ज़ाम लगाता है।

13 तुम जो ये कहते हो कि हम आज या कल फ़लाँ शहर में जा कर वहाँ एक बरस ठहरेंगे और सौदागरी करके नफ़ा उठाएँगे। 14 और ये जानते नहीं कि कल क्या होगा; ज़रा सुनो तो; तुम्हारी ज़िन्दगी चीज़ ही क्या है? बुख़ारात का सा हाल है अभी नज़र आए अभी ग़ायब हो गए।

15 यूँ कहने की जगह तुम्हें ये कहना चाहिए अगर खुदावन्द चाहे तो हम ज़िन्दा भी रहेंगे और ये और वो काम भी करेंगे। 16 मगर अब तुम अपनी शेखी पर फ़ख़र करते हो; ऐसा सब फ़ख़र बुरा है। 17 पस जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता उसके लिए ये गुनाह है।

5

?????? ?? ???????

1 ऐ, दौलतमन्दों ज़रा सुनो; तुम अपनी मुसीबतों पर जो आने वाली हैं रोओ; और मातम करो; 2 तुम्हारा माल बिगड़ गया और तुम्हारी पोशाकों को कीड़ा खा गया। 3 तुम्हारे सोने चाँदी को ज़ँग लग गया और वो ज़ँग तुम पर गवाही देगा और आग की तरह तुम्हारा

गोशत खाएगा; तुम ने आख़िर ज़माने में खज़ाना जमा किया है।

4 देखो जिन मज़दूरों ने तुम्हारे खेत काटे उनकी वो मज़दूरी जो तुम ने धोखा करके रख छोड़ी चिल्लाती है और फ़सल काटने वालों की फ़रियाद रब्ब'उल अफ़वाज़ के कानों तक पहुँच गई है। 5 तुम ने ज़मीन पर ऐश'ओ — अशरत की और मज़े उड़ाए तुम ने अपने दिलों को जबह के दिन मोटा ताज़ा किया। 6 तुम ने रास्तबाज़ शख्स को कुसूरवार ठहराया और क़त्ल किया वो तुम्हारा मुक़ाबिला नहीं करता।

7 पस, ऐ भाइयों; खुदावन्द की आमद तक सब्र करो देखो किसान ज़मीन की कीमती पैदावार के इन्तज़ार में पहले और पिछले बारिश के बरसने तक सब्र करता रहता है। 8 तुम भी सब्र करो और अपने दिलों को मज़बूत रखो, क्यूँकि खुदावन्द की आमद करीब है।

9 ऐ, भाइयों! एक दूसरे की शिकायत न करो ताकि तुम सज़ा न पाओ, देखो मुन्सिफ़ दरवाजे पर खड़ा है। 10 ऐ, भाइयों! जिन नबियों ने खुदावन्द के नाम से कलाम किया उनको दुःख उठाने और सब्र करने का नमूना समझो। 11 देखो सब्र करने वालों को हम मुबारक़ कहते हैं; तुम ने अय्यूब के सब्र का हाल तो सुना ही है और खुदावन्द की तरफ़ से जो इसका अन्जाम हुआ उसे भी मा'लूम कर लिया जिससे खुदावन्द का बहुत तरस और रहम ज़ाहिर होता है।

12 मगर ऐ, मेरे भाइयों; सब से बढ़कर ये है क़सम न खाओ, न आसमान की न ज़मीन की न किसी और चीज़ की बल्कि हाँ की जगह हाँ करो और नहीं की जगह नहीं ताकि सज़ा के लायक़ न ठहरो।

13 अगर तुम में कोई मुसीबत ज़दा हो तो दुआ करो, अगर खुश हो तो हम्द के गीत गाए। 14 अगर तुम में कोई बीमार हो तो कलीसिया के बुज़ुर्गों को बुलाए और वो खुदावन्द के नाम से उसको तेल मलकर उसके लिए दुःआ करें। 15 जो दुःआ ईमान के साथ होगी उसके ज़रिए बीमार बच जाएगा; और खुदावन्द उसे उठा कर खड़ा करेगा, और अगर उसने गुनाह किए हों, तो उनकी भी मु'आफ़ी हो जाएगी।

16 पस तुम आपस में एक दूसरे से अपने अपने गुनाहों का इक्रार करो और एक दूसरे के लिए दुःआ करो ताकि शिफ़ा पाओ रास्तबाज़ की दुःआ के असर से बहुत कुछ हो सकता है। 17 एलियाह हमारी तरह इंसान था, उसने बड़े जोश से दुःआ की कि पानी न बरसे, चुनाँचे साढ़े तीन बरस तक ज़मीन पर पानी न बरसा। 18 फिर उसी ने दुःआ की तो आसमान से पानी बरसा और ज़मीन में पैदावार हुई।

19 ऐ, मेरे भाइयों! अगर तुम में कोई राहे हक़ से गुमराह हो जाए और कोई उसको वापस लाए। 20 तो वो ये जान ले कि जो कोई किसी गुनाहगार को उसकी गुमराही से फेर लाएगा; वो एक जान को मौत से बचा लेगा और बहुत से गुनाहों पर पर्दा डालेगा।

पतरस का पहला 'आम खत'

?????????? ?? ?????

शुरूआती आयत इशारा करती है कि पतरस, येसू मसीह का रसूल इस खत का मुसन्निफ़ है। जो खुद को येसू मसीह का रसूल कहलाता था (1 पतरस 1:1) मसीह के दुखों की बाबत उसके अक्सर हवालाजात; (2:21 — 24; 3:18; 4:1; 5:1) दिखाते हैं कि दुख उठाने वाले खादिम की सूरत उस की याददाश्त पर गहराई से थी। वह मरकुस को अपना बेटा कहता है (5:13) (आमाल 12:12) में एक जवान के लिए उस पर शफ़क़त जाहिर करते हुए उस ने उस के खान्दान का जिक्र किया। यह सच्चाइयाँ फ़ितरी तौर से इस नतीजे पर पहुंचाती हैं कि पतरस ने ही इस खत को लिखा।

????? ?????? ?? ?????????? ?? ?????

तक़रीबन 60 - 64 ईस्वी के बीच लिखा गया।

5:13 में मुसन्निफ़ बाबुल की कलीसिया की तरफ़ से सलाम पहुंचाता है।

??????? ?????????????? ?????? ??????

पतरस ने इस खत को मसीहियों की एक जमाअत को लिखा जो एशिया माइनर के तमाम शुमाली इलाकों में जा — बजा फैले हुए थे। उस ने एक ऐसी जमाअत को भी लिखा जो ग़ालिबन यहूदी और ग़ैर यहूदी दोनों थे।

????? ??????????

पतरस ने इस के लिखने के मक़सद को बताया है, जैसे कि कारिर्न की हौसला अफ़ज़ाई जो अपने ईमान के लिए सताव का सामना कर रहे थे। वह उन्हें पूरी तरह से यक़ीन दिलाना चाहता था जहाँ मसीहियत है वहाँ खुदा का फ़ज़ल भी पाया जाता है, और इसलिए उन्हें ईमान से बर्गुशता होने की ज़रूरत नहीं है। जिस तरह 1 पतरस 5:12 में जिक्र किया गया है कि मैं ने यह मुख़्तसर सा खत लिखवा कर तुम्हें भेजा है कि ताकि तुम्हारी हौसला अफ़ज़ाई हो, मैं गवाही देता हूँ कि खुदा का सच्चा फ़ज़ल यही है। उस पर काइम रहना सबूत के साथ यह सताव उसके कारिर्न के बीच फैलता जा रहा था। पहला पतरस मसीहियों के सताव को पूरे शुमाली एशिया माइनर में मुन्'अकिस करता है।

???????

1 मुसीबतों के लिए जवाब दिया जाना।

बैरूनी खाका

1. सलाम के अल्फ़ाज़ — 1:1, 2

2. खुदा के फ़ज़ल के लिए उसकी हम्द — ओ — तारीफ़ — 1:3-12

3. ज़िन्दगी की पाकीज़ी के लिए नसीहत — 1:13-5:12

4. आख़री सलाम के अल्फ़ाज़ — 5:13, 14

????? ?? ?????

1 पतरस की तरफ़ से जो ईसा मसीह का रसूल है, उन मुसाफ़ि़रों के नाम खत, जो पुन्तुस, ग़लतिया, कप्पुदुकिया, असिया और बीथुइनिया सूबे में जा बजा रहते हैं, ² और खुदा बाप के 'इल्म — ए — साबिक़ के मुवाफ़िक़ रूह के पाक करने से फ़रमाँबरदार होने और ईसा मसीह का खून छिड़के जाने के लिए बरगुज़ीदा हुए हैं। फ़ज़ल और इत्मीनान तुम्हें ज़्यादा हासिल होता रहे।

³ हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के खुदा और बाप की हम्द हो, जिसने ईसा मसीह के मुदों में से जी उठने के ज़रिए, अपनी बड़ी रहमत से हमें ज़िन्दा उम्मीद के लिए नए सिरे से पैदा किया, ⁴ ताकि एक ग़ैरफ़ानी और बेदाग़ और लाज़वाल मीरास को हासिल करें; ⁵ वो तुम्हारे वास्ते [जो खुदा की कुदरत से ईमान के वसीले से, उस नजात के लिए जो आख़री वक़्त में जाहिर होने को तैयार है, हिफ़ाज़त किए जाते हो] आसमान पर महफूज़ है।

⁶ इस की वजह से तुम खुशी मनाते हो, अगरचे अब चन्द रोज़ के लिए ज़रूरत की वजह से, तरह तरह की आज्माइशों की वजह से ग़मज़दा हो; ⁷ और ये इस लिए कि तुम्हारा आजमाया हुआ ईमान, जो आग से आजमाए हुए फ़ानी सोने से भी बहुत ही बेशक़ीमती है, ईसा मसीह के ज़हूर के वक़्त तारीफ़ और जलाल और 'इज़ज़त का ज़रिया ठहरे।

⁸ उससे तुम अनदेखी मुहब्बत रखते हो और अगरचे इस वक़्त उसको नहीं देखते तो भी उस पर ईमान लाकर ऐसी खुशी मनाते हो जो बयान से बाहर और जलाल से भरी है; ⁹ और अपने ईमान का मक़सद या'नी रूहों की नजात हासिल करते हो।

¹⁰ इसी नजात के बारे में नबियों ने बड़ी तलाश और तहक़ीक़ की, जिन्होंने उस फ़ज़ल के बारे में जो तुम पर होने को था नबुव्वत की।

¹¹ उन्होंने इस बात की तहक़ीक़ की कि मसीह का रूह जो उस में था, और पहले मसीह के दुखों और उनके ज़िन्दा हो उठने के बाद उसके जलाल की गवाही देता था, वो कौन से और कैसे वक़्त की तरफ़ इशारा करता था। ¹² उन पर ये जाहिर किया गया कि वो न अपनी बल्कि तुम्हारी ख़िदमत के लिए ये बातें कहा करते थे, जिनकी ख़बर अब तुम को उनके ज़रिए मिली जिन्होंने रूह — उल — कुदुस के वसीले से, जो आसमान पर से

भेजा गया तुम को खुशखबरी दी; और फ़रिश्ते भी इन बातों पर ग़ौर से नज़र करने के मुश्ताक़ हैं।

13 इस वास्ते अपनी 'अक़ल की कमर बाँधकर और होशियार होकर, उस फ़ज़ल की पूरी उम्मीद रखो जो ईसा मसीह के ज़हूर के वक़्त तुम पर होने वाला है। 14 और फ़रमाँबरदार बेटा होकर अपनी जहालत के ज़माने की पुरानी ख़्वाहिशों के ताबे' न बनो।

15 बल्कि जिस तरह तुम्हारा बुलानेवाला पाक, है, उसी तरह तुम भी अपने सारे चाल — चलन में पाक बनो; 16 क्योंकि पाक कलाम में लिखा है, “पाक हो, इसलिए कि मैं पाक हूँ।” 17 और जब कि तुम 'बाप' कह कर उससे दुआ करते हो, जो हर एक के काम के मुवाफ़िक़ बग़ैर तरफ़दारी के इन्साफ़ करता है, तो अपनी मुसाफ़िरत का ज़माना ख़ौफ़ के साथ गुज़ारो।

18 क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल — चलन जो बाप — दादा से चला आता था, उससे तुम्हारी ख़लासी फ़ानी चीज़ों या'नी सोने चाँदी के ज़रिए से नहीं हुई; 19 बल्कि एक बे'ऐब और बेदाग़ बर्रे, या'नी मसीह के बेश क़ीमत खून से।

20 उसका 'इल्म तो दुनियाँ बनाने से पहले से था, मगर ज़हूर आखिरी ज़माने में तुम्हारी खातिर हुआ, 21 कि उस के वसीले से खुदा पर ईमान लाए हो, जिसने उस को मुदों में से जिलाया और जलाल बख़्शा ताकि तुम्हारा ईमान और उम्मीद खुदा पर हो।

22 चूँकि तुम ने हक़ की ताबे 'दारी से अपने दिलों को पाक किया है, जिससे भाइयों की बे'रिया मुहब्बत पैदा हुई, इसलिए दिल — ओ — जान से आपस में बहुत मुहब्बत रखो। 23 क्योंकि तुम मिटने वाले बीज से नहीं बल्कि ग़ैर फ़ानी से खुदा के कलाम के वसीले से, जो ज़िंदा और क़ाईम है, नए सिर से पैदा हुए हो।

24 चुनाँचे हर आदमी घास की तरह है, और उसकी सारी शान — ओ — शौकत घास के फूल की तरह।

घास तो सूख जाती है, और फूल गिर जाता है।

25 लेकिन खुदावन्द का कलाम हमेशा तक क़ाईम रहेगा।

ये वही खुशखबरी का कलाम है जो तुम्हें सुनाया गया था।

2

1 पस हर तरह की बदख्वाही और सारे फ़रेब और रियाकारी और हसद और हर तरह की बदगोई को दूर करके, 2 पैदाइशी बच्चों की तरह खालिस रूहानी दूध के इंतज़ार में रहो, ताकि उसके ज़रिए से नजात हासिल

करने के लिए बढ़ते जाओ, 3 अगर तुम ने खुदावन्द के मेहरबान होने का मज़ा चखा है।

4 उसके या'नी आदमियों के रद्द किए हुए, पर खुदा के चुने हुए और क़ीमती ज़िन्दा पत्थर के पास आकर, 5 तुम भी ज़िन्दा पत्थरों की तरह रूहानी घर बनते जाते हो, ताकि काहिनों का मुक़द्दस फ़िरका बनकर ऐसी रूहानी कुर्बानियाँ चढ़ाओ जो ईसा मसीह के वसीले से खुदा के नज़दीक मक़बूल होती है।

6 चुनाँचे किताब — ए — मुक़द्दस में आया है: देखो, मैं सिय्यून में कोने के सिर का चुना हुआ और क़ीमती पत्थर रखता हूँ; जो उस पर ईमान लाएगा हरगिज़ शर्मिन्दा न होगा।

7 पस तुम ईमान लाने वालों के लिए तो वो क़ीमती है, मगर ईमान न लाने वालों के लिए जिस पत्थर को राजगीरों ने रद्द किया वही कोने के सिर का पत्थर हो गया।

8 और ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान हुआ, क्योंकि वो नाफ़रमान होकर कलाम से ठोकर खाते हैं और इसी के लिए मुक़र्रर भी हुए थे।

9 लेकिन तुम एक चुनी हुई नस्ल, शाही काहिनों का फ़िरका, मुक़द्दस क़ौम, और ऐसी उम्मत हो जो खुदा की ख़ास मिल्कियत है ताकि उसकी खूबियाँ ज़ाहिर करो जिसने तुम्हें अंधेरे से अपनी 'अजीब रौशनी में बुलाया है।

10 पहले तुम कोई उम्मत न थे मगर अब तुम खुदा की उम्मत हो, तुम पर रहमत न हुई थी मगर अब तुम पर रहमत हुई।

11 ऐ प्यारों! मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि तुम अपने आप को परदेसी और मुसाफ़िर जान कर, उन जिस्मानी ख़्वाहिशों से परहेज़ करो जो रूह से लड़ाई रखती हैं। 12 और ग़ैर — क़ौमों में अपना चाल — चलन नेक रखो, ताकि जिन बातों में वो तुम्हें बदकार जानकर तुम्हारी बुराई करते हैं, तुम्हारे नेक कामों को देख कर उन्हीं की वजह से मुलाहिज़ा के दिन खुदा की बड़ाई करें।

13 खुदावन्द की खातिर इंसान के हर एक इन्तिज़ाम के ताबे' रहो; बादशाह के इसलिए कि वो सब से बुज़ुर्ग है, 14 और हाकिमों के इसलिए कि वो बदकारों को सज़ा और नेकोकारों की ता'रीफ़ के लिए उसके भेजे हुए हैं।

15 क्योंकि खुदा की ये मर्जी है कि तुम नेकी करके नादान आदमियों की जहालत की बातों को बन्द कर दो। 16 और अपने आप को आजाद जानो, मगर इस आजादी को बदी का पर्दा न बनाओ; बल्कि अपने आप को खुदा के बन्दे जानो। 17 सबकी 'इज्जत करो, बिरादरी से मुहब्बत रखो, खुदा से डरो, बादशाह की 'इज्जत करो।

18 ऐ नौकरों! बड़े खौफ़ से अपने मालिकों के ताबे' रहो, न सिर्फ़ नेकों और हलीमों ही के बल्कि बद मिज़ाजों के भी। 19 क्योंकि अगर कोई खुदा के खयाल से बेइन्साफी के बा'इस दुःख उठाकर तकलीफ़ों को बर्दाश्त करे तो ये पसन्दीदा है। 20 इसलिए कि अगर तुम ने गुनाह करके मुक्के खाए और सब्र किया, तो कौन सा फ़ख़र है? हाँ, अगर नेकी करके दुःख पाते और सब्र करते हो, तो ये खुदा के नज़दीक पसन्दीदा है।

21 और तुम इसी के लिए बुलाए गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे वास्ते दुःख उठाकर तुम्हें एक नमूना दे गया है ताकि उसके नक़्श — ए — क़दम पर चलो।

22 न उसने गुनाह किया

और न ही उसके मुँह से कोई मक़र की बात निकली,

23 न वो गालियाँ खाकर गाली देता था और न दुःख पाकर किसी को धमकाता था; बल्कि अपने आप को सच्चे इन्साफ़ करने वाले खुदा के सुपुर्द करता था।

24 वो आप हमारे गुनाहों को अपने बदन पर लिए हुए सलीब पर चढ़ गया, ताकि हम गुनाहों के ऐ'तबार से जिएँ; और उसी के मार खाने से तुम ने शिफ़ा पाई।

25 अगर कोई कुछ कहे तो ऐसा कहे कि गोया खुदा का कलाम है, अगर कोई ख़िदमत करे तो उस ताक़त के मुताबिक़ करे जो खुदा दे, ताकि सब बातों में ईसा मसीह के वसीले से खुदा का जलाल ज़ाहिर हो। जलाल और सल्तनत हमेशा से हमेशा उसी की है। आमीन।

3

??????

1 ऐ बीवियों! तुम भी अपने शौहर के ताबे' रहो, 2 इसलिए कि अगर कुछ उनमें से कलाम को न मानते हों, तोभी तुम्हारे पाकीज़ा चाल — चलन और खौफ़ को देख कर बग़ैर कलाम के अपनी अपनी बीवी के चाल — चलन से खुदा की तरफ़ खिंच जाएँ।

3 और तुम्हारा सिंगार ज़ाहिरी न हो, या'नी सर गूँधना और सोने के ज़ेवर और तरह तरह के कपड़े पहनना, 4 बल्कि तुम्हारी बातिनी और पोशीदा इंसानियत, हलीम और नर्म मिज़ाज की ग़ुरबत की ग़ैरफ़ानी आराइश से आरास्ता रहे, क्योंकि खुदा के नज़दीक इसकी बड़ी क़द्र है।

5 और अगले ज़माने में भी खुदा पर उम्मीद रखनेवाली मुक़द्दस 'औरतें, अपने आप को इसी तरह संवारती और अपने अपने शौहर के ताबे' रहती थीं। 6 चुनाँचे सारह अब्रहाम के हुक्म में रहती और उसे खुदावन्द कहती थी। तुम भी अगर नेकी करो और किसी के डराने से न डरो, तो उसकी बेटियाँ हुई।

7 ऐ शौहरों! तुम भी बीवियों के साथ 'अक़्लमन्दी से बसर करो, और 'औरत को नाज़ुक ज़रफ़ जान कर उसकी 'इज्जत करो, और यूँ समझो कि हम दोनों ज़िन्दगी की ने'मत के वारिस हैं, ताकि तुम्हारी दु'आएँ रुक न जाएँ।

8 गरज़ सब के सब एक दिल और हमदर्द रहो, बिरादराना मुहब्बत रखो, नर्म दिल और फ़रोतन बनो।

9 बदी के 'बदले बदी न करो और गाली के बदले गाली न दो, बल्कि इसके बर'अक्स बर्क़त चाहो, क्योंकि तुम बर्क़त के वारिस होने के लिए बुलाए गए हो। 10 चुनाँचे “जो कोई ज़िन्दगी से खुश होना और अच्छे दिन देखना चाहे, वो ज़बान को बदी से और होंटों को मक़र की बात कहने से बाज़ रखे।

11 बदी से किनारा करे और नेकी को 'अमल में लाए, सुलह का तालिब हो, और उसकी कोशिश में रहे।

12 क्योंकि खुदावन्द की नज़र रास्तबाज़ों की तरफ़ है, और उसके कान उनकी दु'आ पर लगे हैं, मगर बदकार खुदावन्द की निगाह में हैं।”

13 अगर तुम नेकी करने में सरगर्म हो, तो तुम से बदी करनेवाला कौन है? 14 और अगर रास्तबाज़ी की खातिर दुःख सहो भी तो तुम मुबारिक़ हो, न उनके डराने से डरो और न घबराओ;

15 बल्कि मसीह को खुदावन्द जानकर अपने दिलों में मुक़द्दस समझो; और जो कोई तुम से तुम्हारी उम्मीद की वजह पूछे, उसको जवाब देने के लिए हर वक़्त मुस्त'ईद रहो, मगर हलीमी और खौफ़ के साथ। 16 और नियत भी नेक रखो ताकि जिन बातों में तुम्हारी बदगोई होती है, उन्हीं में वो लोग शर्मिन्दा हों जो तुम्हारे मसीही नेक चाल — चलन पर ला'न ता'न करते हैं। 17 क्योंकि अगर खुदा की यही मर्जी हो कि तुम नेकी करने की वजह से दुःख उठाओ, तो ये बदी करने की वजह से दुःख उठाने से बेहतर है।

18 इसलिए कि मसीह ने भी या'नी रास्तबाज़ ने नारास्तों के लिए, गुनाहों के बा'इस एक बार दुःख उठाया ताकि हम को खुदा के पास पहुँचाए; वो जिस्म के ऐ'तबार से मारा गया, लेकिन रूह के ऐ'तबार से तो ज़िन्दा किया गया। 19 इसी में से उसने जा कर उन क़ैदी रूहों में मनादी की, 20 जो उस अगले ज़माने में

नाफ़रमान थीं जब खुदा नूह के वक़्त में तहम्मील करके ठहरा रहा था और वो नाव तैयार हो रही थी, जिस पर सवार होकर थोड़े से आदमी या'नी आठ जानें पानी के वसीले से बचीं।

21 और उसी पानी का मुशाबह भी या'नी बपतिस्मा, ईसा मसीह के जी उठने के वसीले से अब तुम्हें बचाता है, उससे जिस्म की नजासत का दूर करना मुराद नहीं बल्कि ख़ालिस नियत से खुदा का तालिब होना मुराद है। 22 वो आसमान पर जाकर खुदा की दहनी तरफ़ बैठा है, और फ़रिश्ते और इस्त्रियारात और कुदरतें उसके ताबे की गई हैं।

4

?????? ?? ????? ?????

1 पस जबकि मसीह ने जिस्म के ऐ'तिबार से दुःख उठाया, तो तुम भी ऐसे ही मिज़ाज इस्त्रियार करके हथियारबन्द बनो; क्योंकि जिसने जिस्म के ऐ'तिबार से दुःख उठाया उसने गुनाह से छुटकारा पाया। 2 ताकि आइन्दा को अपनी बाकी जिस्मानी ज़िन्दगी आदमियों की ख़्वाहिशों के मुताबिक़ न गुज़ारे बल्कि खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़।

3 इस वास्ते कि ग़ैर — क़ौमों की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ काम करने और शहवत परस्ती, बुरी ख़्वाहिशों, मयख़्वारी, नाचरंग, नशेबाज़ी और मकरूह बुत परस्ती में जिस क्रूर हम ने पहले वक़्त गुज़ारा वही बहुत है।

4 इस पर वो ताअ'ज्जुब करते हैं कि तुम उसी सख़्त बदचलनी तक उनका साथ नहीं देते और ला'न ता'न करते हैं, 5 उन्हें उसी को हिसाब देना पड़ेगा जो ज़िन्दों और मुर्दों का इन्साफ़ करने को तैयार है। 6 क्योंकि मुर्दों को भी खुशख़बरी इसलिए सुनाई गई थी कि जिस्म के लिहाज़ से तो आदमियों के मुताबिक़ उनका इन्साफ़ हो, लेकिन रूह के लिहाज़ से खुदा के मुताबिक़ ज़िन्दा रहें।

7 सब चीज़ों का ख़ातिमा जल्द होने वाला है, पस होशियार रहो और दुआ करने के लिए तैयार। 8 सबसे बढ़कर ये है कि आपस में बड़ी मुहब्बत रखो, क्योंकि मुहब्बत बहुत से गुनाहों पर पर्दा डाल देती है। 9 बग़ैर बड़बड़ाए आपस में मुसाफ़िर परवरी करो।

10 जिनको जिस जिस क्रूर ने'मत मिली है, वो उसे खुदा की मुख़्तलिफ़ ने'मतों के अच्छे मुख़्तारों की तरह एक दूसरे की ख़िदमत में सफ़र करें। 11 अगर कोई कुछ कहे तो ऐसा कहे कि गोया खुदा का कलाम है, अगर कोई ख़िदमत करे तो उस ताक़त के मुताबिक़ करे जो खुदा दे, ताकि सब बातों में ईसा मसीह के वसीले से खुदा

का जलाल ज़ाहिर हो। जलाल और सल्तनत हमेशा से हमेशा उसी की है। आमीन।

12 ऐ प्यारो! जो मुसीबत की आग तुम्हारी आजमाइश के लिए तुम में भड़की है, ये समझ कर उससे ता'ज्जुब न करो कि ये एक अनोखी बात हम पर ज़ाहिर हुई है। 13 बल्कि मसीह के दुखों में जूँ जूँ शरीक हो खुशी करो, ताकि उसके जलाल के ज़हूर के वक़्त भी निहायत खुश — ओ — खुर्म हो। 14 अगर मसीह के नाम की वजह से तुम्हें मलामत की जाती है तो तुम मुबारक हो, क्योंकि जलाल का रूह या'नी खुदा का रूह तुम पर साया करता है।

15 तुम में से कोई शख्स खूनी या चोर या बदकार या औरों के काम में दख़ल अन्दाज़ होकर दुःख न पाए।

16 लेकिन अगर मसीही होने की वजह से कोई शख्स पाए तो शरमाए नहीं, बल्कि इस नाम की वजह से खुदा की बड़ाई करे।

17 क्योंकि वो वक़्त आ पहुँचा है कि खुदा के घर से 'अदालत शुरू' हो, और जब हम ही से शुरू होगी तो उनका क्या अन्जाम होगा जो खुदा की खुशख़बरी को नहीं मानते? 18 और

“जब रास्तबाज़ ही मुश्किल से नजात पाएगा, तो बेदीन और गुनाहगार का क्या ठिकाना?”

19 पस जो खुदा की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ दुःख पाते हैं, वो नेकी करके अपनी जानों को वफ़ादार ख़ालिक़ के सुपुर्द करें।

5

?????????????? ?? ????? ??????? ?? ?????

1 तुम में जो बुज़ुर्ग हैं, मैं उनकी तरह बुज़ुर्ग और मसीह के दुखों का गवाह और ज़ाहिर होने वाले जलाल में शरीक होकर उनको ये नसीहत करता हूँ। 2 कि खुदा के उस गल्ले की गल्लेबानी करो जो तुम में है; लाचारी से निगहबानी न करो, बल्कि खुदा की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ खुशी से और नाजायज़ नफ़े के लिए नहीं बल्कि दिली शौक से। 3 और जो लोग तुम्हारे सुपुर्द हैं उन पर हुकूमत न जताओ, बल्कि गल्ले के लिए नमूना बनो। 4 और जब सरदार गल्लेबान ज़ाहिर होगा, तो तुम को जलाल का ऐसा सहारा मिलेगा जो मुरझाने का नहीं।

5 ऐ जवानो! तुम भी बुज़ुर्गों के ताबे रहो, बल्कि सब के सब एक दूसरे की ख़िदमत के लिए फ़रोतनी से कमर बस्ता रहो, इसलिए कि

“खुदा मगरूरों का मुक़ाबिला करता है, मगर फ़रोतनों को तौफ़ीक़ बख़्शता है।” 6 पस खुदा के मज़बूत हाथ के नीचे फ़रोतनी से रहो, ताकि

वो तुम्हें वक्त पर सबलन्द करे।⁷ अपनी सारी फ़िक्र उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारी फ़िक्र है।

⁸ तुम होशियार और बेदार रहो; तुम्हारा मुखालिफ़ इब्लीस गरजने वाले शेर — ए — बबर की तरह ढूँडता फिरता है कि किसको फाड़ खाए।⁹ तुम ईमान में मज़बूत होकर और ये जानकर उसका मुक़ाबिला करो कि तुम्हारे भाई जो दुनिया में हैं ऐसे ही दुःख उठा रहे हैं

¹⁰ अब खुदा जो हर तरह के फ़ज़ल का चश्मा है, जिसने तुम को मसीह ईसा में अपने अबदी जलाल के लिए बुलाया, तुम्हारे थोड़ी मुद्दत तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें कामिल और क़ाईम और मज़बूत करेगा।¹¹ हमेशा से हमेशा तक उसी की सल्लतनत रहे। आमीन।

¹² मैंने सिलवानुस के ज़रिए, जो मेरी दानिस्त में दियानतदार भाई है, मुख्तसर तौर पर लिख कर तुम्हें नसीहत की और ये गवाही दी कि खुदा का सच्चा फ़ज़ल यही है, इसी पर क़ाईम रहो।¹³ जो बाबुल में तुम्हारी तरह बरगुज़ीदा है, वो और मेरा मरकुस तुम्हें सलाम कहते हैं।¹⁴ मुहब्बत से बोसा ले लेकर आपस में सलाम करो।

तुम सबको जो मसीह में हो, इत्मीनान हासिल होता रहे।

पतरस का दूसरा 'आम खत'

?????????? ?? ?????

2 पतरस का मुसन्निफ़ पतरस है जिस तरह 2 पतरस 1:1 में जिक्र किया गया है। वह इस का दावा 3:1 में करता है। 2 पतरस का मुसन्निफ़ येसू मसीह की तब्दील — ए — हैयत का गवाह होने का भी दावा पेश करता है। (1:16 — 18) मुलख़िख़स अनाजील के मुताबिक पतरस उन तीन शागिर्दों में से था जो येसू के ज्यादा करीब में रहा करते थे (दीगर दो यूहन्ना और याकूब थे) 2 पतरस का मुसन्निफ़ इस सच्चाई का भी हवाला देता है कि उसको शहीदी मौत मरने के लिए पहले ही से (1:14); यूहन्ना 21:18 — 19 में येसू पेश बीनी करता है कि पतरस शहीदी मौत मरेगा उन दिनों जब सताव चोटी पर पहुंचेगा।

????? ?????? ?? ?????????? ?? ???? ?

इस के लिखे जाने की तारीख़ तकरीबन 65 - 68 ईस्वी के बीच है।

गालिबन इस को रोम से लिखा गया जहां पतरस रसूल अपनी ज़िन्दगी के आख़री अय्याम गुज़ार रहा था।

??????? ?????????????? ?????? ??????

इस खत को बिल्कुल इसी तरह पहले पतरस के कारिडन को भी लिखा जा सकता था जो एशिया माइनर के शुमाल में रहते थे।

????? ??????????

मसीही ईमान की एक याद्दाश्त की बुनियाद फ़राहम करने के लिए पतरस ने इस खत को लिखा; (1:12 — 13, 16 — 21) मुस्तक्रबिल में वह ईमानदारों की नसल जो ईमान में पाए जाएंगे उन्हें नसीहत देने के लिए (1:15) उसके रिसालत की रिवायत पर तौसीक करते हुए पतरस ने इस खत को लिखा क्योंकि उसका वक़्त कम था और वह जानता था कि खुदा के लोग बहुत सारे खतरो का सामना कर रहे हैं; (1:13 — 14; 2:1 — 3) में पतरस ने उन्हें आने वाले दिनों में झूटे उस्तादों से होशियार और खबरदार रहने के लिए भी इस खत को लिखा; (2:1 — 22) यह झूटे उस्ताद खुदा की आमद जल्दी होने का इन्कार करने वाले थे (3:3-4)।

???????

झूटे उस्तादों के खिलाफ़ तंबीह।

बैरूनी खाका

1. सलाम के अल्फ़ाज़ — 1:1, 2

2. मसीही नेक कामों में तरक्की — 1:3-11

3. पतरस के पैग़ाम का मक्सद — 1:12-21

4. झूटे उस्तादों के खिलाफ़ तंबीह — 2:1-22

5. मसही की आमद — 3:1-16

6. खातिमा — 3:17, 18

????? ?? ?????

1 शमौन पतरस की तरफ़ से, जो ईसा मसीह का बन्दा और रसूल है, उन लोगों के नाम खत, जिन्होंने हमारे खुदा और मुंजी ईसा मसीह की रास्तबाज़ी में हमारा सा कीमती ईमान पाया है। 2 खुदा और हमारे खुदावन्द ईसा की पहचान की वजह से फ़ज़ल और इत्मीनान तुम्हें ज्यादा होता रहे।

3 क्यूँकि खुदा की इलाही कुदरत ने वो सब चीज़ें जो ज़िन्दगी और दीनदारी के मुताल्लिक हैं, हमें उसकी पहचान के वसीले से 'इनायत की, जिसने हम को अपने खास जलाल और नेकी के ज़रिए से बुलाया। 4 जिनके ज़रिए उसने हम से कीमती और निहायत बड़े वादे किए; ताकि उनके वसीले से तुम उस खराबी से छूटकर, जो दुनिया में बुरी ख्वाहिश की वजह से है, ज़ात — ए — इलाही में शरीक हो जाओ।

5 पस इसी ज़रिए तुम अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश करके अपने ईमान से नेकी, और नेकी से मा'रिफ़त, 6 और मा'रिफ़त से परहेज़गारी, और परहेज़गारी से सब्र और सब्र से दीनदारी, 7 और दीनदारी से बिरादराना उत्फ़त, और बिरादराना उत्फ़त से मुहब्बत बढ़ाओ।

8 क्यूँकि अगर ये बातें तुम में मौजूद हों और ज्यादा भी होती जाएँ, तो तुम को हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के पहचानने में बेकार और बेफल न होने देंगी। 9 और जिसमें ये बातें न हों, वो अन्धा है और कोताह नज़र अपने पहले गुनाहों के धोए जाने को भूले बैठा है।

10 पस ऐ भाइयों! अपने बुलावे और बरगुज़ीदगी को साबित करने की ज्यादा कोशिश करो, क्यूँकि अगर ऐसा करोगे तो कभी टोकर न खाओगे; 11 बल्कि इससे तुम हमारे खुदावन्द और मुन्जी ईसा मसीह की हमेशा बादशाही में बड़ी 'इज़्ज़त के साथ दाखिल किए जाओगे।

12 इसलिए मैं तुम्हें ये बातें याद दिलाने को हमेशा मुस्त'इद रहूँगा, अगरचे तुम उनसे वाकिफ़ और उस हक़ बात पर काईम हो जो तुम्हें हासिल है। 13 और जब तक मैं इस खेमे में हूँ, तुम्हें याद दिला दिला कर उभारना अपने ऊपर वाजिब समझता हूँ। 14 क्यूँकि हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के बताने के मुवाफ़िक़, मुझे मा'लूम है कि मेरे खेमे के गिराए जाने का वक़्त जल्द आनेवाला है। 15 पस मैं ऐसी कोशिश करूँगा कि मेरे

इन्तकाल के बाद तुम इन बातों को हमेशा याद रख सको।

16 क्योंकि जब हम ने तुम्हें अपने खुदा वन्द ईसा मसीह की कुदरत और आमद से वाकिफ़ किया था, तो दगाबाज़ी की गद्दी हुई कहानियों की पैरवी नहीं की थी बल्कि खुद उस कि अज़मत को देखा था 17 कि उसने खुदा बाप से उस वक़्त 'इज़्ज़त और जलाल पाया, जब उस अफ़ज़ल जलाल में से उसे ये आवाज़ आई, “ये मेरा प्यारा बेटा है, जिससे मैं खुश हूँ।” 18 और जब हम उसके साथ मुक़द्दस पहाड़ पर थे, तो आसमान से यही आवाज़ आती सुनी।

19 और हमारे पास नबियों का वो कलाम है जो ज्यादा मौ'तबर ठहरा। और तुम अच्छा करते हो, जो ये समझ कर उसी पर ग़ौर करते हो कि वो एक चराग़ है जो अन्धेरी जगह में रौशनी बख़्शता है, जब तक सुबह की रौशनी और सुबह का सितारा तुम्हारे दिलों में न चमके। 20 और पहले ये जान लो कि किताब — ए — मुक़द्दस की किसी नबुव्वत की बात की तावील किसी के ज़ाती इस्तियार पर मौकूफ़ नहीं, 21 क्योंकि नबुव्वत की कोई बात आदमी की ख़्वाहिश से कभी नहीं हुई, बल्कि आदमी रूह — उल — कुद्दुस की तहरीक की वजह से खुदा की तरफ़ से बोलते थे।

2

???? ???? ???? ??

1 जिस तरह उस उम्मत में झूठे नबी भी थे उसी तरह तुम में भी झूठे उस्ताद होंगे, जो पोशीदा तौर पर हलाक करने वाली नई — नई बातें निकालेंगे, और उस मालिक का इन्कार करेंगे जिसने उन्हें ख़रीद लिया था, और अपने आपको जल्द हलाकत में डालेंगे। 2 और बहुत सारे उनकी बुरी आदतों की पैरवी करेंगे, जिनकी वजह से राह — ए — हक़ की बदनामी होगी। 3 और वो लालच से बातें बनाकर तुम को अपने नफ़े की वजह ठहराएँगे, और जो ज़माने से उनकी सज़ा का हुक्म हो चुका है उसके आने में कुछ देर नहीं, और उनकी हलाकत सोती नहीं।

4 क्योंकि जब खुदा ने गुनाह करने वाले फ़रिश्तों को न छोड़ा, बल्कि जहन्नुम भेज कर तारीक़ ग़ारों में डाल दिया ताकि 'अदालत के दिन तक हिरासत में रहें, 5 और न पहली दुनिया को छोड़ा, बल्कि बेदीन दुनिया पर तूफ़ान भेजकर रास्तबाज़ी के ऐलान करने वाले नूह समेत सात आदमियों को बचा लिया; 6 और सद्म और 'अमूरा के शहरों को मिट्टी में मिला दिया और उन्हें हलाकत की सज़ा दी और आइन्दा ज़माने के बेदीनों के लिए जा — ए — इब्रत बना दिया,

7 और रास्तबाज़ लूत को जो बेदीनों के नापाक चाल — चलन से बहुत दुखी था रिहाई बख़्शी। 8 [चुनाँचे वो रास्तबाज़ उनमें रह कर और उनके बेशरा'कामों को देख देख कर और सुन सुन कर, गोया हर रोज़ अपने सच्चे दिल को शिकंजे में खींचता था।] 9 तो खुदावन्द दीनदारों को आजमाइश से निकाल लेना और बदकारों को 'अदालत के दिन तक सज़ा में रखना जानता है,

10 खुसूसन उनको जो नापाक ख़्वाहिशों से जिस्म की पैरवी करते हैं और हुकूमत को नाचीज़ जानते हैं। वो गुस्ताख़ और नाफ़रमान हैं, और 'इज़्ज़तदारों पर ला'न ता'न करने से नहीं डरते, 11 बावजूद ये कि फ़रिश्ते जो ताक़त और कुदरत में उनसे बड़े हैं, खुदावन्द के सामने उन पर ला'न ता'न के साथ नालिश नहीं करते।

12 लेकिन ये लोग बे'अक्ल जानवरों की तरह हैं, जो पकड़े जाने और हलाक होने के लिए हैवान — ए — मुतल्लिक पैदा हुए हैं, जिन बातों से नावाकिफ़ हैं उनके बारे में औरों पर ला'न ता'न करते हैं, अपनी ख़राबी में खुद ख़राब किए जाएँगे। 13 दूसरों को बुरा करने के बदले इन ही का बुरा होगा। इनको दिन दहाड़े अय्याशी करने में मज़ा आता है। ये दागा बाज़ और ऐबदार हैं। जब तुम्हारे साथ खाते पीते हैं, तो अपनी तरफ़ से मुहब्बत की ज़ियाफ़त करके 'ऐश — ओ — अशरत करते हैं। 14 उनकी आँखें जिनमें ज़िनाकार 'औरतें बसी हुई हैं, गुनाह से रुक नहीं सकतीं; वो बे क़याम दिलों को फँसाते हैं। उनका दिल लालच का मुश्ताक़ है, वो ला'नत की औलाद हैं।

15 वो सीधी राह छोड़ कर गुमराह हो गए हैं, और बऊर के बेटे बिल'आम की राह पर हो लिए हैं, जिसने नारास्ती की मज़दूरी को 'अज़ीज़ जाना; 16 मगर अपने कुसूर पर ये मलामत उठाई कि एक बेज़बान गध़ी ने आदमी की तरह बोल कर उस नबी को दीवानगी से बाज़ रखवा।

17 वो अन्धे कुँए हैं, और ऐसे बादल है जिसे आँधी उड़ाती है; उनके लिए बेहद तारीकी घिरी है।

18 वो घमण्ड की बेहूदा बातें बक बक कर बुरी आदतों के ज़रिए से, उन लोगों को जिस्मानी ख़्वाहिशों में फँसाते हैं जो गुमराही में से निकल ही रहे हैं। 19 जो उनसे तो आज़ादी का वा'दा करते हैं और आप ख़राबी के गुलाम बने हुए हैं, क्योंकि जो शख्स जिससे मग़लूब है वो उसका गुलाम है।

20 जब वो खुदावन्द और मुन्जी ईसा मसीह की पहचान के वसीले से दुनिया की आलूदगी से छुट कर, फिर उनमें फँसे और उनसे मग़लूब हुए, तो उनका

पिछला हाल पहले से भी बदतर हुआ। ²¹ क्यूँकि रास्तबाज़ी की राह का न जानना उनके लिए इससे बेहतर होता कि उसे जान कर उस पाक हुक्म से फिर जाते, जो उन्हें सौंपा गया था। ²² उन पर ये सच्ची मिसाल सादिक आती है, कुत्ता अपनी क़ै की तरफ़ रुजू करता है, और नहलाई हुई सूअरनी दलदल में लोटने की तरफ़।

3

2222222222 22 222 222222 22

¹ ऐ 'अज़ीज़ो! अब मैं तुम्हें ये दूसरा ख़त लिखता हूँ, और याद दिलाने के तौर पर दोनों ख़तों से तुम्हारे साफ़ दिलों को उभारता हूँ, ² कि तुम उन बातों को जो पाक नबियों ने पहले कही, और खुदावन्द और मुन्जी के उस हुक्म को याद रखो जो तुम्हारे रसूलों की ज़रिए आया था।

³ और पहले जान लो कि आखिरी दिनों में ऐसी हँसी ठट्ठा करनेवाले आएँगे जो अपनी ख्वाहिशों के मुवाफ़िक़ चलेंगे, ⁴ और कहेंगे, “उसके आने का वा'दा कहाँ गया? क्यूँकि जब से बाप — दादा सोए हैं, उस वक़्त से अब तक सब कुछ वैसा ही है जैसा दुनिया के शुरू से था।”

⁵ वो तो जानबूझ कर ये भूल गए कि खुदा के कलाम के ज़रिए से आसमान पहले से मौजूद है, और ज़मीन पानी में से बनी और पानी में काईम है; ⁶ इन ही के ज़रिए से उस ज़माने की दुनिया डूब कर हलाक हुई। ⁷ मगर इस वक़्त के आसमान और ज़मीन उसी कलाम के ज़रिए से इसलिए रखे हैं कि जलाए जाएँ; और वो बेदीन आदमियों की 'अदालत और हलाकत के दिन तक महफूज़ रहेंगे

⁸ ऐ 'अज़ीज़ो! ये ख़ास बात तुम पर पोशीदा न रहे कि खुदावन्द के नज़दीक एक दिन हज़ार बरस के बराबर है, और हज़ार बरस एक दिन के बराबर। ⁹ खुदावन्द अपने वा'दे में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; बल्कि तुम्हारे बारे में हलाकत नहीं चाहता बल्कि ये चाहता है कि सबकी तौबा तक नौबत पहुँचे।

¹⁰ लेकिन खुदावन्द का दिन चोर की तरह आ जाएगा, उस दिन आसमान बड़े शोर — ओ — गुल के साथ बरबाद हो जाएँगे, और अजराम — ए — फ़लक हरारत की शिद्दत से पिघल जाएँगे, और ज़मीन और उस पर के काम जल जाएँगे।

¹¹ जब ये सब चीज़ें इस तरह पिघलने वाली हैं, तो तुम्हें पाक चाल — चलन और दीनदारी में कैसे कुछ होना चाहिए, ¹² और खुदा की 'अदालत के दिन के आने

का कैसा कुछ मुन्तज़िर और मुश्ताक़ रहना चाहिए, जिसके ज़रिए आसमान आग से पिघल जाएँगे, और अजराम — ए — फ़लक हरारत की शिद्दत से गल जाएँगे। ¹³ लेकिन उसके वादे के मुवाफ़िक़ हम नए आसमान और नई ज़मीन का इन्तज़ार करते हैं, जिनमें रास्तबाज़ी बसी रहेगी।

¹⁴ पस ऐ 'अज़ीज़ो! चूँकि तुम इन बातों के मुन्तज़िर हो, इसलिए उसके सामने इत्मीनान की हालत में बेदाग़ और बे — ऐब निकलने की कोशिश करो, ¹⁵ और हमारे खुदावन्द के तहम्मील को नजात समझो, चुनाँचे हमारे प्यारे भाई पौलुस ने भी उस हिक्मत के मुवाफ़िक़ जो उसे 'इनायत हुई, तुम्हें यही लिखा है ¹⁶ और अपने सब ख़तों में इन बातों का ज़िक़र किया है, जिनमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना मुश्किल है, और जाहिल और बे — क़याम लोग उनके मा'नों को और सहीफ़ों की तरह खींच तान कर अपने लिए हलाकत पैदा करते हैं।

¹⁷ पस ऐ 'अज़ीज़ो! चूँकि तुम पहले से आगाह हो, इसलिए होशियार रहो, ताकि बे — दीनों की गुमराही की तरफ़ खींच कर अपनी मज़बूती को छोड़ न दो। ¹⁸ बल्कि हमारे खुदावन्द और मुन्जी ईसा मसीह के फ़ज़ल और 'इरफ़ान में बढ़ते जाओ। उसी की बड़ाई अब भी हो, और हमेशा तक होती रहे। आमीन।

यूहन्ना का पहला 'आम खत'

यूहन्ना 1:1-4

यह खत मुसन्निफ़ की पहचान नहीं करती मगर एक मजबूत बा उसूल और कलीसिया की सब से पहली गवाही मन्सूब करते हैं कि इस का मुसन्निफ़ यूहन्ना रसूल और शागिर्द है। (लूका 6:13, 14) हालांकि इन तीनों खतों में कहीं भी यूहन्ना के नाम का जिक्र नहीं है इस के बावजूद भी तीन मजबूर करने वाले हुक्क़ सामने आते हैं जो उसके मुसन्निफ़ होने की तरफ़ इशारा करते हैं। पहला है इब्तिदाई दूसरी सदी के लिखने वाले जो यूहन्ना के मुसन्निफ़ होने का हवाला पेश करते हैं दूसरा है खुतूत के फ़रहंग बिल्कुल वैसी है जैसी कि यूहन्ना की इन्जील। तीसरा यह कि मुसन्निफ़ ने खुद लिखा कि उसने येसू मसीही को देख है और उस के जिस्म को छुआ है जो कि यक्रीन दिलाता है कि वह यूहन्ना रसूल ही है (1 यूहन्ना 1:1 — 4; 4:14)।

यूहन्ना 1:1-4

इस के लिखे जाने की तारीख़ तक्रीबन 85 - 95 के बीच है।

इस खत को यूहन्ना ने इफ़सस में रहते हुए लिखा जहां वह अपनी बुढ़ापे की ज़िन्दगी गुज़ार रहा था।

यूहन्ना 1:1-4

1 यूहन्ना के सामईन की बाबत खास तौर से खत में कोई इशारा नहीं किया गया है। किसी तरह इस खत के मज्मून इशारा करते हैं कि यूहन्ना ने यह खत मसीही ईमानदारों को लिखा है (1 यूहन्ना 1:3 — 4; 2:12 — 14) यह मुमकिन है कि उसने कई एक इलाकों में रहने वाले खुदा रसीदा लोगों को लिखा हो। आम तौर से तमाम मसीहियों के लिए जो हर जगह पाये जाते हैं, 2:1, “मेरे छोटे बच्चों।”

यूहन्ना 1:1-4

यूहन्ना ने यह खत रिफ़ाक़त को बढ़ाने और उस की तक़वियत के लिए लिखा ताकि हम खुशी से भर जाएं, और हम गुनाहों से बाज़ रहें, हमें नजात का यक्रीन दिलाने के लिए और ईमानदार को मसीह के साथ एक शख़्सी रिफ़ाक़त में लाने के लिए। यूहन्ना खास तौर से झूठे उस्तादों का मुद्दा उठाता है जो कलीसिया से अलग हो चुके थे और लोगों को इन्जील की सच्चाई से गुमराह करने की कोशिश कर रहे थे।

यूहन्ना 1:1-4

खुदा के साथ रिफ़ाक़त।

बैरूनी खाका

1. तजस्सुसम की हकीक़त — 1:1-4
2. रिफ़ाक़त — 1:5-2:17
3. फ़रेब की पहचान — 2:18-27
4. पाकीज़ा ज़िन्दगी के लिए ज़माना — ए — हाल में तहरीक़ किया जाना — 2:28-3:10
5. मुहब्बत यक्रीन के लिए बुनियाद बतौर — 3:11-24
6. बुरी रूह की बसीरत — 4:1-6
7. मख़्सूसियत के लिए ज़रूरी बातें — 4:7-5:21

यूहन्ना 1:1-4

1 उस ज़िन्दगी के कलाम के बारे में जो शुरू से था, और जिसे हम ने सुना और अपनी आँखों से देखा बल्कि, ग़ौर से देखा और अपने हाथों से छुआ। ² [ये ज़िन्दगी ज़ाहिर हुई और हम ने देखा और उसकी गवाही देते हैं, और इस हमेशा की ज़िन्दगी की तुम्हें ख़बर देते हैं जो बाप के साथ थी और हम पर ज़ाहिर हुई है]।

³ जो कुछ हम ने देखा और सुना है तुम्हें भी उसकी ख़बर देते हैं, ताकि तुम भी हमारे शरीक हो, और हमारा मेल मिलाप बाप के साथ और उसके बेटे ईसा मसीह के साथ है। ⁴ और ये बातें हम इसलिए लिखते हैं कि हमारी खुशी पूरी हो जाए।

⁵ उससे सुन कर जो पैग़ाम हम तुम्हें देते हैं, वो ये है कि खुदा नूर है और उसमें ज़रा भी तारीकी नहीं। ⁶ अगर हम कहें कि हमारा उसके साथ मेल मिलाप है और फिर तारीकी में चलें, तो हम झूठे हैं और हक़ पर 'अमल नहीं करते। ⁷ लेकिन जब हम नूर में चलें जिस तरह कि वो नूर में हैं, तो हमारा आपस में मेल मिलाप है, और उसके बेटे ईसा का खून हमें तमाम गुनाह से पाक करता है।

⁸ अगर हम कहें कि हम बेगुनाह हैं तो अपने आपको धोखा देते हैं, और हम में सच्चाई नहीं। ⁹ अगर अपने गुनाहों का इक़रार करें, तो वो हमारे गुनाहों को मु'आफ़ करने और हमें सारी नारास्ती से पाक करने में सच्चा और 'आदिल है। ¹⁰ अगर कहें कि हम ने गुनाह नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं और उसका कलाम हम में नहीं है।

2

1 ऐ मेरे बच्चों! ये बातें मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ तुम गुनाह न करो; और अगर कोई गुनाह करे, तो बाप के पास हमारा एक मददगार मौजूद है, या'नी ईसा मसीह रास्तबाज़; ² और वही हमारे गुनाहों का कफ़फ़ारा है, और न सिर्फ़ हमारे ही गुनाहों का बल्कि तमाम दुनिया के गुनाहों का भी।

उससे ये उम्मीद रखता है, अपने आपको वैसा ही पाक करता है जैसा वो पाक है।

4 जो कोई गुनाह करता है, वो शरी'अत की मुखालिफ़त करता है; और गुनाह शरी'अत की मुखालिफ़त ही है।⁵ और तुम जानते हो कि वो इसलिए जाहिर हुआ था कि गुनाहों को उठा ले जाए, और उसकी ज़ात में गुनाह नहीं।⁶ जो कोई उसमें क़ाईम रहता है वो गुनाह नहीं करता; जो कोई गुनाह करता है, न उसने उसे देखा है और न जाना है।

7 ऐ बच्चों! किसी के धोखे में न आना। जो रास्तबाज़ी के काम करता है, वही उसकी तरह रास्तबाज़ है।⁸ जो शरू'स गुनाह करता है वो शैतान से है, क्योंकि शैतान शुरु' ही से गुनाह करता रहा है। खुदा का बेटा इसलिए जाहिर हुआ था कि शैतान के कामों को मिटाए।

9 जो कोई खुदा से पैदा हुआ है वो गुनाह नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है; बल्कि वो गुनाह कर ही नहीं सकता क्योंकि खुदा से पैदा हुआ है।¹⁰ इसी से खुदा के फ़र्जन्द और शैतान के फ़र्जन्द जाहिर होते हैं। जो कोई रास्तबाज़ी के काम नहीं करता वो खुदा से नहीं, और वो भी नहीं जो अपने भाई से मुहब्बत नहीं रखता।

?? ????? ?? ????????? ?

11 क्योंकि जो पैग़ाम तुम ने शुरु' से सुना वो ये है कि हम एक दूसरे से मुहब्बत रखें।¹² और क़ाइन की तरह न बनें जो उस शरीर से था, और जिसने अपने भाई को क़त्ल किया; और उसने किस वास्ते उसे क़त्ल किया? इस वास्ते कि उसके काम बुरे थे, और उसके भाई के काम रास्ती के थे।

13 ऐ भाइयों! अगर दुनिया तुम से 'दुश्मनी रखती है तो ताअ'ज्जुब न करो।¹⁴ हम तो जानते हैं कि मौत से निकलकर ज़िन्दगी में दाख़िल हो गए, क्योंकि हम भाइयों से मुहब्बत रखते हैं। जो मुहब्बत नहीं रखता वो मौत की हालत में रहता है।¹⁵ जो कोई अपने भाई से 'दुश्मनी रखता है, वो खूनी है और तुम जानते हो कि किसी खूनी में हमेशा की ज़िन्दगी मौजूद नहीं रहती।

16 हम ने मुहब्बत को इसी से जाना है कि उसने हमारे वास्ते अपनी जान दे दी, और हम पर भी भाइयों के वास्ते जान देना फ़र्ज है।¹⁷ जिस किसी के पास दुनिया का माल हो और वो अपने भाई को मोहताज देखकर रहम करने में देर करे, तो उसमें खुदा की मुहब्बत क्यूँकर क़ाईम रह सकती है? ¹⁸ ऐ बच्चों! हम कलाम और ज़बान ही से नहीं, बल्कि काम और सच्चाई के ज़रिए से भी मुहब्बत करें।

19 इससे हम जानेगे कि हक़ के हैं, और जिस बात में हमारा दिल हमें इल्ज़ाम देगा, उसके बारे में हम उसके हुज़ूर अपनी दिलजम'ई करेंगे;²⁰ क्योंकि खुदा हमारे दिल से बड़ा है और सब कुछ जानता है।²¹ ऐ 'अज़ीज़ो! जब हमारा दिल हमें इल्ज़ाम नहीं देता, तो हमें खुदा के सामने दिलेरी हो जाती है;²² और जो कुछ हम माँगते हैं वो हमें उसकी तरफ़ से मिलता है, क्यूँकि हम उसके हुक्मों पर अमल करते हैं और जो कुछ वो पसन्द करता है उसे बजा लाते हैं।

23 और उसका हुक्म ये है कि हम उसके बेटे ईसा मसीह के नाम पर ईमान लाएँ, जैसा उसने हमें हुक्म दिया उसके मुवाफ़िक़ आपस में मुहब्बत रखें।²⁴ और जो उसके हुक्मों पर 'अमल करता है, वो इस में और ये उसमें क़ाईम रहता है; और इसी से या'नी उस पाक रूह से जो उसने हमें दिया है, हम जानते हैं कि वो हम में क़ाईम रहता है।

4

???? ????????? ?? ?????????

1 ऐ 'अज़ीज़ो! हर एक रूह का यक़ीन न करो, बल्कि रूहों को आजमाओ कि वो खुदा की तरफ़ से हैं या नहीं; क्यूँकि बहुत से झूठे नबी दुनियाँ में निकल खड़े हुए हैं।² खुदा के रूह को तुम इस तरह पहचान सकते हो कि जो कोई रूह इक़्रार करे कि ईसा मसीह मुजस्सिम होकर आया है, वो खुदा की तरफ़ से है;³ और जो कोई रूह ईसा का इक़्रार न करे, वो खुदा की तरफ़ से नहीं और यही मुखालिफ़ — ऐ — मसीह की रूह है; जिसकी ख़बर तुम सुन चुके हो कि वो आनेवाली है, बल्कि अब भी दुनिया में मौजूद है।

4 ऐ बच्चों! तुम खुदा से हो और उन पर ग़ालिब आ गए हो, क्यूँकि जो तुम में है वो उससे बड़ा है जो दुनिया में है।⁵ वो दुनिया से हैं इस वास्ते दुनियाँ की सी कहते हैं, और दुनियाँ उनकी सुनती है।⁶ हम खुदा से हैं। जो खुदा को जानता है, वो हमारी सुनता है; जो खुदा से नहीं, वो हमारी नहीं सुनता। इसी से हम हक़ की रूह और गुमराही की रूह को पहचान लेते हैं।

7 ऐ अज़ीज़ों! हम इस वक़्त खुदा के फ़र्जन्द हैं, और अभी तक ये जाहिर नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वो जाहिर होगा तो हम भी उसकी तरह होंगे, क्यूँकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वो है।⁸ जो मुहब्बत नहीं रखता वो खुदा को नहीं जानता, क्यूँकि खुदा मुहब्बत है।

9 जो मुहब्बत खुदा को हम से है, वो इससे जाहिर हुई कि खुदा ने अपने इकलौते बेटे को दुनिया में भेजा है ताकि हम उसके वसीले से ज़िन्दा रहें। 10 मुहब्बत इस में नहीं कि हम ने खुदा से मुहब्बत की, बल्कि इस में है कि उसने हम से मुहब्बत की और हमारे गुनाहों के कफ़ारे के लिए अपने बेटे को भेजा।

11 ऐ 'अज़ीज़ो! जब खुदा ने हम से ऐसी मुहब्बत की, तो हम पर भी एक दूसरे से मुहब्बत रखना फ़र्ज़ है।

12 खुदा को कभी किसी ने नहीं देखा; अगर हम एक दूसरे से मुहब्बत रखते हैं, तो खुदा हम में रहता है और उसकी मुहब्बत हमारे दिल में कामिल हो गई है। 13 चूँकि उसने अपने रूह में से हमें दिया है, इससे हम जानते हैं कि हम उसमें काईम रहते हैं और वो हम में। 14 और हम ने देख लिया है और गवाही देते हैं कि बाप ने बेटे को दुनिया का मुन्जी करके भेजा है।

15 जो कोई इकरार करता है कि ईसा खुदा का बेटा है, खुदा उसमें रहता है और वो खुदा में। 16 जो मुहब्बत खुदा को हम से है उसको हम जान गए और हमें उसका यकीन है। खुदा मुहब्बत है, और जो मुहब्बत में काईम रहता है वो खुदा में काईम रहता है, और खुदा उसमें काईम रहता है।

17 इसी वजह से मुहब्बत हम में कामिल हो गई, ताकि हमें 'अदालत के दिन दिलेरी हो; क्योंकि जैसा वो है वैसे ही दुनिया में हम भी है। 18 मुहब्बत में खौफ़ नहीं होता, बल्कि कामिल मुहब्बत खौफ़ को दूर कर देती है; क्योंकि खौफ़ से 'अज़ाब होता है और कोई खौफ़ करनेवाला मुहब्बत में कामिल नहीं हुआ।

19 हम इस लिए मुहब्बत रखते हैं कि पहले उसने हम से मुहब्बत रखी। 20 अगर कोई कहे, "मैं खुदा से मुहब्बत रखता हूँ" और वो अपने भाई से 'दुश्मनी रखे तो झूठा है: क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है मुहब्बत नहीं रखता, वो खुदा से भी जिसे उसने नहीं देखा मुहब्बत नहीं रख सकता। 21 और हम को उसकी तरफ़ से ये हुक्म मिला है कि जो खुदा से मुहब्बत रखता है वो अपने भाई से भी मुहब्बत रखे।

5

22222 22 2222 2222 2222 2222

1 जिसका ये ईमान है कि ईसा ही मसीह है, वो खुदा से पैदा हुआ है; और जो कोई बाप से मुहब्बत रखता है, वो उसकी औलाद से भी मुहब्बत रखता है। 2 जब हम खुदा से मुहब्बत रखते और उसके हुक्मों पर 'अमल करते हैं, तो इससे मा'लूम हो जाता है कि खुदा के फ़र्ज़न्दों से

भी मुहब्बत रखते हैं। 3 और खुदा की मुहब्बत ये है कि हम उसके हुक्मों पर 'अमल करें, और उसके हुक्म सख्त नहीं।

4 जो कोई खुदा से पैदा हुआ है, वो दुनिया पर ग़ालिब आता है; और वो ग़ल्बा जिससे दुनिया मग़लूब हुई है, हमारा ईमान है। 5 दुनिया को हराने वाला कौन है? सिवा उस शख्स के जिसका ये ईमान है कि ईसा खुदा का बेटा है।

6 यही है वो जो पानी और खून के वसीले से आया था, या'नी ईसा मसीह: वो न फ़क़त पानी के वसीले से, बल्कि पानी और खून दोनों के वसीले से आया था। 7 और जो गवाही देता है वो रूह है, क्योंकि रूह सच्चाई है। 8 और गवाही देनेवाले तीन हैं: रूह पानी और खून; ये तीन एक बात पर मुत्तफ़िक़ हैं।

9 जब हम आदमियों की गवाही कुबूल कर लेते हैं, तो खुदा की गवाही तो उससे बढ़कर है; और खुदा की गवाही ये है कि उसने अपने बेटे के हक़ में गवाही दी है। 10 जो खुदा के बेटे पर ईमान रखता है, वो अपने आप में गवाही रखता है। जिसने खुदा का यकीन नहीं किया उसने उसे झूठा ठहराया, क्योंकि वो उस गवाही पर जो खुदा ने अपने बेटे के हक़ में दी है, ईमान नहीं लाया

11 और वो गवाही ये है, कि खुदा ने हमें हमेशा की ज़िन्दगी बख़्शी, और ये ज़िन्दगी उसके बेटे में है। 12 जिसके पास बेटा है, उसके पास ज़िन्दगी है, और जिसके पास खुदा का बेटा नहीं, उसके पास ज़िन्दगी भी नहीं।

13 मैंने तुम को जो खुदा के बेटे के नाम पर ईमान लाए हो, ये बातें इसलिए लिखी कि तुम्हें मा'लूम हो कि हमेशा की ज़िन्दगी रखते हो।

14 और हमें जो उसके सामने दिलेरी है, उसकी वजह ये है कि अगर उसकी मज़ी के मुवाफ़िक़ कुछ माँगते हैं, तो वो हमारी सुनता है। 15 और जब हम जानते हैं कि जो कुछ हम माँगते हैं, वो हमारी सुनता है, तो ये भी जानते हैं कि जो कुछ हम ने उससे माँगा है वो पाया है।

16 अगर कोई अपने भाई को ऐसा गुनाह करते देखे जिसका नतीजा मौत न हो तो दुआ करे खुदा उसके वसीले से ज़िन्दगी बख़्शेगा। उन्हीं को जिन्होंने ऐसा गुनाह नहीं किया जिसका नतीजा मौत हो, गुनाह ऐसा भी है जिसका नतीजा मौत है; इसके बारे में दुआ करने को मैं नहीं कहता। 17 है तो हर तरह की नारास्ती गुनाह, मगर ऐसा गुनाह भी है जिसका नतीजा मौत नहीं।

18 हम जानते हैं कि जो कोई खुदा से पैदा हुआ है, वो गुनाह नहीं करता; बल्कि उसकी हिफ़ाज़त वो करता है

जो खुदा से पैदा हुआ और शैतान उसे छूने नहीं पाता।

19 हम जानते हैं कि हम खुदा से हैं, और सारी दुनिया उस शैतान के कब्जे में पड़ी हुई है।

20 और ये भी जानते हैं कि खुदा का बेटा आ गया है, और उसने हमें समझ बख्शी है ताकि उसको जो हकीकती है जानें और हम उसमें जो हकीकती है, या'नी उसके बेटे ईसा मसीह में हैं। हकीकती खुदा और हमेशा की ज़िन्दगी यही है। 21 ऐ बच्चों! अपने आपको बुतों से बचाए रखो।

यूहन्ना का दूसरा 'आम खत'

2222222222 22 222222

इस का मुसन्निफ़ यूहन्ना रसूल है। 2 यूहन्ना 1:1 में वह खुद ही बुज़ुर्ग यूहन्ना बतौर बयान करता है। खत का उन्वान दूसरा यूहन्ना है और यह उस के तीन खुतूत के सिलसिलों में से दूसरा है जो यूहन्ना रसूल के नाम से हैं। 2 यूहन्ना जिस खास बात पर हमारा ध्यान ले जाता है वह है झूठे उस्ताद जो यूहन्ना की कलीसिया के दर्मियान खानाबदोशों की तरह रहकर इज्जाज़ करते ताकि कुछ लोगों को अपनी तरफ़ रूजूअ कर सकें और कलीसिया की मेहमान नवाज़ी का फ़ाइदा उठा सकें जिस से कि उन का मक्सद हल हो जाए।

22222 22222 22 22222222 22 2222

इस के लिखे जाने की तारीख़ तक्रीबन 85 - 95 ईस्वी के बीच है।

लिखे जाने की जगह ग़ालिलेन इफ़सुस है।

222222 2222222222 22222 22222

2 यूहन्ना एक खत है जो कलीसिया की एक खातून और उस के बच्चों के नाम मुखातिब है।

2222 22222222

यूहन्ना ने यह दूसरा खत उस खातून और उसके बच्चों के ईमानदारी की क़द्रशनासी को दिखाने या जताने के लिए लिखा। और उसकी हौसला अफ़ज़ाई के लिए भी कि वह खुदावन्द के प्यार और फ़र्मानबर्दारी में लगातार चलती रहे। वह उस खातून को झूठे उस्तादों से ख़बरदार और होशियार कराता है और यह इतला देता है कि बहुत जल्द वह उस से मुलाक़ात करेगा। यूहन्ना उस खातून की बहन को भी सलाम लिखता है।

222222

ईमानदार की बसीरत।

बैरूनी खाका

1. सलाम के अलफ़ाज़ — 1:1-3
2. खुदा की महब्वत में होकर सच्चाई को कायम रखना — 1:4-11
3. तबीह — 1:5-11
4. आखरी सलाम — 1:12, 13

22222222

1 मुझ बुज़ुर्ग की तरफ़ से उस बरगुज़ीदा बीवी और उसके फ़र्जन्दों के नाम खत, जिनसे मैं उस सच्चाई की वजह से सच्ची मुहब्वत रखता हूँ, जो हम में क़ाईम रहती है, और हमेशा तक हमारे साथ रहेगी, 2 और सिर्फ़

मैं ही नहीं बल्कि वो सब भी मुहब्वत रखते हैं, जो हक़ से वाकिफ़ हैं। 3 खुदा बाप और बाप के बेटे 'ईसा मसीह' की तरफ़ से फ़ज़ल और रहम और इत्मीनान, सच्चाई और मुहब्वत समेत हमारे शामिल — ए — हाल रहेंगे।

4 मैं बहुत खुश हुआ कि मैंने तेरे कुछ लड़कों को उस हुक्म के मुताबिक़, जो हमें बाप की तरफ़ से मिला था, हक़ीक़त में चलते हुए पाया। 5 अब ऐ बीवी! मैं तुझे कोई नया हुक्म नहीं, बल्कि वही जो 'शुरू' से हमारे पास है लिखता और तुझ से मिन्नत करके कहता हूँ कि आओ, हम एक दूसरे से मुहब्वत रखें। 6 और मुहब्वत ये है कि हम उसके हुक्मों पर चलें। ये वही हुक्म है जो तुम ने 'शुरू' से सुना है कि तुम्हें इस पर चलना चाहिए।

7 क्यूँकि बहुत से ऐसे गुमराह करने वाले दुनिया में निकल खड़े हुए हैं, जो 'ईसा मसीह' के मुजस्सिम होकर आने का इक़्रार नहीं करते। गुमराह करनेवाला मुख़ालिफ़ — ए — मसीह यही है। 8 अपने आप में ख़बरदार रहो, ताकि जो मेहनत हम ने की है वो तुम्हारी वजह से ज़ाया न हो जाए, बल्कि तुम को पूरा अज़र मिले।

9 जो कोई आगे बढ़ जाता है और मसीह की ता'लीम पर क़ाईम नहीं रहता, उसके पास खुदा नहीं। जो उस ता'लीम पर क़ाईम रहता है, उसके पास बाप भी है और बेटा भी। 10 अगर कोई तुम्हारे पास आए और ये ता'लीम न दे, तो न उसे घर में आने दो और न सलाम करो। 11 क्यूँकि जो कोई ऐसे शख्स को सलाम करता है, वो उसके बुरे कामों में शरीक होता है।

12 मुझे बहुत सी बातें तुम को लिखना है, मगर काग़ज़ और स्याही से लिखना नहीं चाहता; बल्कि तुम्हारे पास आने और रू — ब — रू बातचीत करने की उम्मीद रखता हूँ, ताकि तुम्हारी खुशी कामिल हो। 13 तेरी बरगुज़ीदा बहन के लड़के तुझे सलाम कहते हैं।

यूहन्ना का तीसरा 'आम खत'

?????????? ?? ???????

1 यूहन्ना का तीसरा खत यक्रीनी तौर से एक ही शख्स का लिखा हुआ है और बहुत से उलमा इतिफ़ाक़ रखते और तय करते हैं कि यूहन्ना ही इन तीनों खत का मुसन्निफ़ है। यूहन्ना कलीसिया में अपने ओहदे के सबब से और अपने उम्ररसीदा होने का लिहाज़ करते हुए खुद को बुज़ुर्ग कहता है। और यहां तक कि खत की शुरूआत खात्मा और लिखने का तरीका और ढंग यह सब दूसरा यूहन्ना के जैसा ही है। दूसरे और तीसरे खत को लेकर थोड़ाबहुत शक हो सकता है मगर इन दोनों की इबारत इसे रफ़ा करता है।

????? ?????? ?? ?????????? ?? ?????

इस खत को तक्ररीबन 85 - 95 ईस्वी के बीच लिखा गया था।

इस खत को यूहन्ना ने इफ़सुस और एशिया माईनर में लिखा।

?????? ?????????????? ?????? ??????

तीसरा यूहन्ना के खत को गय्युस के नाम लिखा गया, यह गय्युस यूहन्ना ने जिन कलीसियाओं को कायम किया था उन में से किसी कलीसिया का मशहूर — ओ — मारूफ़ रुकुन था। यह मेहमानों की खातिरदारी के लिए मशहूर था।

????? ??????????

यूहन्ना ने जिन कलीसियाओं को कायम किया था गय्युस उन में से किसी कलीसिया का मशहूर — ओ — मारूफ़ रुकुन था। मकामी कलीसिया की रहनुमाई में खुद सरफ़राज़ी और खुद बीनी के खिलाफ़ खबरदार और होशियार करने के लिए, गय्युस को सच्चाई के खादिमों की ज़रूरतों को पूरा करने में मदद के लिए ज़िम्मेदारी सौंपने के लिए (आयत 5 — 8) दियुत्रिफ़ेस की ज़लील हक़तों के खिलाफ़ होशियार करने के लिए जो कि कलीसिया का सरदार बन्ना चाहता था (आयत 9) एक सफ़र का उस्ताद बतौर दिमेत्रियुस को इस तीसरे खत को सही जगह पर पहुंचाने की ज़िम्मेदारी सौंपने के लिए (आयत 12), अपने कारिर्दन को इतला देने के लिए कि वह बहुत जल्द उनकी मुलाक़ात के लिए आ रहा है (आयत 14)।

?????????

ईमानदारों की मेहमान नवाज़ी।
बैरूनी खाका

1. ताआरूफ़ — 1:1-4

2. सफ़र करते खदिमों की मेहमान नवाज़ी और खातिरदारी — 1:5-8

3. बुराई की नहीं बल्कि भलाई की इत्त्वा करना — 1:9-12

4. खात्मा — 1:13-15

?????

1 मुझ बुज़ुर्ग की तरफ़ से उस प्यारे गियुस के नाम खत, जिससे मैं सच्ची मुहब्बत रखता हूँ।

2 ऐ प्यारे! मैं ये दुआ करता हूँ कि जिस तरह तू रूहानी तरक्की कर रहा है, इसी तरह तू सब बातों में तरक्की करे और तन्दरुस्त रहे।³ क्योंकि जब भाइयों ने आकर तेरी उस सच्चाई की गवाही दी, जिस पर तू हक़ीक़त में चलता है, तो मैं निहायत खुश हुआ।⁴ मेरे लिए इससे बढ़कर और कोई खुशी नहीं कि मैं अपने बेटों को हक़ पर चलते हुए सुनूँ।

5 ऐ प्यारे! जो कुछ तू उन भाइयों के साथ करता है जो परदेसी भी हैं, वो ईमानदारी से करता है।⁶ उन्होंने कलीसिया के सामने तेरी मुहब्बत की गवाही दी थी। अगर तू उन्हें उस तरह खाना करेगा, जिस तरह खुदा के लोगों को मुनासिब है तो अच्छा करेगा।⁷ क्योंकि वो उस नाम की खातिर निकले हैं, और ग़ैर — क़ौमों से कुछ नहीं लेते।⁸ पस ऐसों की खातिरदारी करना हम पर फ़र्ज़ है, ताकि हम भी हक़ की ताईद में उनके हम खिदमत हों।

9 मैंने कलीसिया को कुछ लिखा था, मगर दियुत्रिफ़ेस जो उनमें बड़ा बनना चाहता है, हमें कुबूल नहीं करता।¹⁰ पस जब मैं आऊँगा तो उसके कामों को जो वो कर रहा है, याद दिलाऊँगा, कि हमारे हक़ में बुरी बातें बकता है; और इन पर सबर न करके खुद भी भाइयों को कुबूल नहीं करता, और जो कुबूल करना चाहते हैं उनको भी मनह' करता है और कलीसिया से निकाल देता है।

11 ऐ प्यारे! बदी की नहीं बल्कि नेकी की पैरवी कर। नेकी करनेवाला खुदा से है; बदी करनेवाले ने खुदा को नहीं देखा।¹² देमेत्रियुस के बारे में सब ने और खुद हक़ ने भी गवाही दी, और हम भी गवाही देते हैं, और तू जानता है कि हमारी गवाही सच्ची है।

13 मुझे लिखना तो तुझे को बहुत कुछ था, मगर स्याही और क़लम से तुझे लिखना नहीं चाहता।

14 बल्कि तुझ से जल्द मिलने की उम्मीद रखता हूँ, उस वक़्त हम रू — ब — रू बातचीत करेंगे।¹⁵ तुझे इत्मीनान हासिल होता रहे। यहाँ के दोस्त तुझे सलाम

कहते हैं। तू वहाँ के दोस्तों से नाम — ब — नाम सलाम
कह।

यहूदाह का 'आम खत

यहूदाह का आम खत

कातिब खुद ही खुद की पहचान कराता है कि वह यहूदाह है जो येसू मसीह का भाई और याकूब का भाई है (1:1)। ग़ालिबन यह यहूदाह बारह रसूलों में से एक हो सकता है जिसका ज़िक्र यूहन्ना 14:22 में है। मगर वह आम तौर से येसू का भाई बतौर ही समझा जाता था। वह शुरू में एक ग़ैर ईमानदार था (यूहन्ना 7:5) इस पर भी वह आगे चल कर वह अपनी मां और दीगर रसूलों के साथ येसू के आस्मान पर सऊद फ़र्माने के बाद बाला खाने में नज़र आता है (आमाल 1:14)।

यहूदाह का आम खत

इस खत को तक्ररीबन 60 - 80 ईस्वी के बीच लिखा गया।

मफ़रूज़ा मक़ामात जहां यहूदा के खत को लिखा गया वह इसकन्दरिया से लेकर रोम तक फैला हुआ था।

यहूदाह का आम खत

एक आम पुर मा'नी मक्रोला (जुमला) जो यहूदा ने लिखा उन लोगों के नाम जो खुदा बाप की मुहब्बत और येसू मसीह की हिफ़ाज़त में रहने के लिए बुलाए गए हैं। यह तमाम मसीहियों की तरफ़ इशारा करता है इस के बावजूद भी झूठे उस्तादों की बावत जब हम उस के पैग़ाम की जांच करते हैं तो ऐसा लगता है कि वह उन्हीं की तरफ़ मुखातब है किसी और जमाअत की तरफ़ नहीं।

यहूदाह का आम खत

यहूदा ने यह खत कलीसिया को याद दिलाने के लिए लिखा कि वक़्त की नज़ाकत को समझें और लगातार होशियारी बरतें ताकि ईमान में मजबूत पाए जाएं और बिदअत का मुकाबला करें। यहूदाह ने इस लिए लिखा कि तमाम मसीहियों को कायल करे जिस से कि वह मुतहर्रिक हो जाएं। वह चाहता था कि तमाम मसीही झूठी ता'लीम के खतरे को पहचाने ताकि अपनी और दीगर ईमानदारों की हिफ़ाज़त कर सकें और जो पहले से धोका खा चुके हैं उन्हें बाहर खींच कर वापस ला सकें। यहूदा ने उन बे — दीन उस्तादों के खिलाफ़ लिखा जो कहते थे कि मसीही लोग खुदा की सज़ा के खौफ़ के बग़ैर उसे खुश कर सकते हैं।

यहूदाह का आम खत

ईमान के लिए ज़द — ओ — जहद करना।

बेरूनी खाका

1. तआरूफ़ — 1:1, 2

2. झूठे उस्तादों की मुक़द्दर का बयान — 1:3-16

3. मसीह में ईमानदारों की हौसला — अफ़ज़ाई — 1:17-25

यहूदाह का आम खत

1 यहूदाह की तरफ़ से जो मसीह 'ईसा का बन्दा और या'कूब का भाई, और उन बुलाए हुआओं के नाम जो खुदा बाप में प्यारे और 'ईसा मसीह के लिए महफूज़ हैं।

2 रहम, इत्मीनान और मुहब्बत तुम को ज्यादा हासिल होती रहे।

3 ऐ प्यारों! जिस वक़्त मैं तुम को उस नज़ात के बारे में लिखने में पूरी कोशिश कर रहा था जिसमें हम सब शामिल हैं, तो मैंने तुम्हें ये नसीहत लिखना ज़रूर जाना कि तुम उस ईमान के वास्ते मेहनत करो जो मुक़द्दसों को एक बार सौंपा गया था।⁴ क्योंकि कुछ ऐसे शख्स चुपके से हम में आ मिले हैं, जिनकी इस सज़ा का ज़िक्र पाक कलाम में पहले से लिखा गया था: ये बेदीन हैं, और हमारे खुदा के फ़ज़ल को बुरी आदतों से बदल डालते हैं, और हमारे वाहिद मालिक और खुदावन्द ईसा मसीह का इन्कार करते हैं।

5 पस अगरचे तुम सब बातें एक बार जान चुके हो, तोभी ये बात तुम्हें याद दिलाना चाहता हूँ कि खुदावन्द ने एक उम्मत को मुल्क — ए — मिस्र में से छुड़ाने के बाद, उन्हें हलाक किया जो ईमान न लाए।⁶ और जिन फ़रिश्तों ने अपनी हुकूमत को क़ाईम न रख्वा बल्कि अपनी खास जगह को छोड़ दिया, उनको उसने हमेशा की कैद में अंधेरे के अन्दर रोज़ — ए — 'अज़ीम की 'अदालत तक रख्वा है

7 इसी तरह सद्म और 'अमूरा और उसके आसपास के शहर, जो इनकी तरह ज़िनाकारी में पड़ गए और ग़ैर जिस्म की तरफ़ राग़िब हुए, हमेशा की आग की सज़ा में गिरफ़्तार होकर जा — ए — 'इबरत ठहरे हैं।⁸ तोभी ये लोग अपने वहमों में मशगूल होकर उनकी तरह जिस्म को नापाक करते, और हुकूमत को नाचीज़ जानते, और 'इज़ज़तदारों पर ला'न ता'न करते हैं।

9 लेकिन मुक़र्रब फ़रिश्ते मीकाईल ने मूसा की लाश के बारे में इब्नीस से बहस — ओ — तकरार करते वक़्त, ला'न ता'न के साथ उस पर नालिश करने की हिम्मत न की, बल्कि ये कहा, "खुदावन्द तुझे मलामत करे।"¹⁰ मगर ये जिन बातों को नहीं जानते उन पर ला'न ता'न करते हैं, और जिनको बे अक्ल जानवरों की तरह मिज़ाजी तौर पर जानते हैं, उनमें अपने आप को खराब करते हैं।¹¹ इन पर आफ़सोस! कि ये क़ाईन की राह पर चले, और मज़दूरी के लिए बड़ी लालच से

बिल'आम की सी गुमराही इस्त्रियार की, और कोरह की तरह मुखालिफ़त कर के हलाक हुए।

12 ये तुम्हारी मुहब्बत की दावतों में तुम्हारे साथ खाते — पीते वक़्त, गोया दरिया की छिपी चट्टानें हैं। ये बेधड़क अपना पेट भरनेवाले चरवाहे हैं। ये बे — पानी के बादल हैं, जिन्हें हवाएँ उड़ा ले जाती हैं। ये पतझड़ के बे — फल दरख़्त हैं, जो दोनों तरफ़ से मुर्दा और जड़ से उखड़े हुए 13 ये समुन्दर की पुर जोश मौजें, जो अपनी बेशर्मी के झाग उछालती हैं। ये वो आवारा गर्द सितारे हैं, जिनके लिए हमेशा तक बेहद तारीकी धरी है।

14 इनके बारे में हनूक ने भी, जो आदम से सातवीं पुश्त में था, ये पेशीनगोई की थी, “देखो, खुदावन्द अपने लाखों मुक़द्दसों के साथ आया, 15 ताकि सब आदमियों का इन्साफ़ करे, और सब बेदीनों को उनकी बेदीनी के उन सब कामों के ज़रिए से, जो उन्होंने बेदीनी से किए हैं, और उन सब सख़्त बातों की वजह से जो बेदीन गुनाहगारों ने उसकी मुखालिफ़त में कही हैं कुसूरवार ठहराए।” 16 ये बड़बड़ाने वाले और शिकायत करने वाले हैं, और अपनी ख्वाहिशों के मुवाफ़िक़ चलते हैं, और अपने मुँह से बड़े बोल बोलते हैं, और फ़ाइदे' के लिए लोगों की ता'रीफ़ करते हैं।

17 लेकिन ऐ प्यारो! उन बातों को याद रखो जो हमारे खुदावन्द 'ईसा मसीह के रसूल पहले कह चुके हैं। 18 वो तुम से कहा करते थे कि, “आखिरी ज़माने में ऐसे ठट्ठा करने वाले होंगे, जो अपनी बेदीनी की ख्वाहिशों के मुवाफ़िक़ चलेंगे।” 19 ये वो आदमी हैं जो फूट डालते हैं, और नफ़सानी हैं और रूह से बे — बहरा।

20 मगर तुम ऐ प्यारों! अपने पाक तरीन ईमान में अपनी तरक्की करके और रूह — उल — कुदूस में दुआ करके, 21 अपने आपको 'खुदा' की मुहब्बत में क़ाईम रखो; और हमेशा की ज़िन्दगी के लिए हमारे खुदावन्द 'ईसा मसीह की रहमत के इन्तिज़ार में रहो।

22 और कुछ लोगों पर जो शक़ में हैं रहम करो; 23 और कुछ को झपट कर आग में से निकालो, और कुछ पर खौफ़ खाकर रहम करो, बल्कि उस पोशाक से भी नफ़रत करो जो जिस्म की वजह से दागी हो गई हो।

24 अब जो तुम को ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपने पुर जलाल हुज़ूर में कमाल खुशी के साथ बे'ऐब करके खड़ा कर सकता है, 25 उस खुदा — ए — वाहिद का जो हमारा मुन्जी है, जलाल और 'अज़मत और सल्लनत और इस्त्रियार, हमारे खुदावन्द 'ईसा मसीह के वसीले से, जैसा पहले से है, अब भी हो और हमेशा रहे। आमीन।

यूहन्ना 'आरिफ़ का मुक्ताशिका

॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥

यूहन्ना रसूल खुदा नाम देता है कि जो कुछ खुदावन्द के फ़रिश्ते के ज़रिए मुझ से लिखवाया उस ने लिखा। इब्तिदाई कलीसिया के मुसन्निफ़ीन जैसे जसटिन शहीद, इरेनियस, हिपालिटस, टेस्टुल्लियन इसकन्दरीया का क्लोमेन्ट और मुरिटोरियन इन सब ने मन्सूब किया है कि मुक्ताशिका का मुसन्निफ़ यूहन्ना रसूल है। मुक्ताशिका की किताब को अददी और तस्वीरी ज़ूबान में लिखा गया है जो कि यहूदी तस्नीफ़ की एक किसम है जो (खुदा के आखरी फ़तह के दौरान) उन के लिए जो सताव की हालत में हैं उम्मीद के राबिते के लिए अलामती तसव्वुरात को इस्तेमाल किया जाता है।

॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥ ॥॥॥॥

इस किताब को तक्ररीबन 95 - 96 ईस्वी के बीच लिखा गया था।

यूहन्ना इशारा करता है कि जब वह पतमुस नाम के जज़ीरे में जिलावत्नी के औक्रात गुज़ार रहा था तब उस ने इस नबुव्वत को हासिल किया। यह जज़ीरा एगियन समुन्दर में वाक़े है (1:9)।

॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥ ॥॥॥॥

यूहन्ना ने कहा है कि नबुव्वत एशिया के सात कलीसियाओं को मुखातिब थी (1:4)।

॥॥॥ ॥॥॥॥॥॥॥

उसने बयान किया कि इस मुक्ताशिका को लिखने का मक्सद येसू मसीह को ज़ाहिर करना है (1:1) उसकी शख्सियत और उसकी कुदरत के साथ उसके खादिमों की बाबत जिन के साथ बहुत जल्द वाक़े होने वाला है। मुक्ताशिका की किताब आखरी तंबीह है कि यक्कीनन दुनिया का खात्मा होगा और यक्कीनी तौर से दुनिया के लोगों की अदालत होगी। यह किताब आस्मानी मक़ाम (जन्नतुल फ़िरदौस) के तमाम जाह — ओ — जलाल की एक झलक पेश करती है जो उन लोगों के इन्तज़ार में है जिन्होंने अब तक अपने जामे येसू के खून से धोकर साफ़ सुथरे और सफ़ेद रखे हैं। मुक्ताशिका की किताब हमको बड़ी मुसीबत के अय्याम और उस के तमाम रंज — ओ — आलाम और उस खैफ़नाक और दहशतनाक आग की झील की तरफ़ ले जाती है जिस का सामना सर्कश लोग अपने आखरी इंसफ़ के बाद अबदियत में करेंगे। यह किताब बार — बार शैतान और उसके

फ़रिश्तों के ज़वाल, फ़ना और तबाही का ज़िक्र करती है जो मसीह की दुबारा आमद के बाद ज़ंजीरों से बांधे जाएंगे।

॥॥॥॥॥

इनकिशाफ़ किया जाना।

बैरूनी खाका

1. मसीह का मुक्ताशिका और येसू की गवाही — 1:1-8
2. वह बातें जिन्हें तू ने देखीं हैं — 1:9-20
3. सात मक़ामी कलीसियाएं — 2:1-3:22
4. वह बातें जो होने जा रही हैं — 4:1-22:5
5. खुदावन्द की आखरी तंबीह और यूहन्ना रसूल की आखरी दुआ — 22:6-21

॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥॥॥॥॥

¹ ईसा मसीह का मुक्ताशिका, जो उसे खुदा की तरफ़ से इसलिए हुआ कि अपने बन्दों को वो बातें दिखाए जिनका जल्द होना ज़रूरी है; और उसने अपने फ़रिश्ते को भेज कर उसकी मा'रिफ़त उन्हें अपने अपने बन्दे यूहन्ना पर ज़ाहिर किया। ² यूहन्ना ने खुदा का कलाम और ईसा मसीह की गवाही की या'नी उन सब चीज़ों की जो उसने देखीं थीं गवाही दी। ³ इस नबुव्वत की किताब का पढ़ने वाले और उसके सुनने वाले और जो कुछ इस में लिखा है, उस पर अमल करने वाले मुबारक हैं; क्योंकि वक़्त नज़दीक है।

⁴ यूहन्ना की जानिब से उन सात कलीसियाओं के नाम जो आसिया सूबा में हैं। उसकी तरफ़ से जो है, और जो था, और जो आनेवाला है, और उन सात रुहों की तरफ़ से जो उसके तख़्त के सामने हैं। ⁵ और ईसा मसीह की तरफ़ से जो सच्चे गवाह और मुदौं में से जो उठनेवालों में पहलौठा और दुनियाँ के बादशाहों पर हाकिम है, तुम्हें फ़ज़ल और इत्मीनान हासिल होता रहे। जो हम से मुहब्बत रखता है, और जिसने अपने खून के वसीले से हम को गुनाहों से मु'आफ़ी बख़्शी, ⁶ और हम को एक बादशाही भी दी और अपने खुदा और बाप के लिए काहिन भी बना दिया। उसका जलाल और बादशाही हमेशा से हमेशा तक रहे। आमीन। ⁷ देखो, वो बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आँख उसे देखेगी, और उसे छेदा था वो भी देखेंगे, और ज़मीन पर के सब क़बीले उसकी वजह से सीना पीटेंगे। बेशक। आमीन। ⁸ खुदावन्द खुदा जो है और जो था और जो आनेवाला है, या'नी कादिर — ए — मुत्ल्क फ़रमाता है, "मैं अल्फ़ा और ओमेगा हूँ।"

⁹ मैं यूहन्ना, जो तुम्हारा भाई और ईसा की मुसीबत और बादशाही और सब्र में तुम्हारा शरीक हूँ, खुदा के

कलाम और ईसा के बारे में गवाही देने के जरिए उस टापू में था, जो पत्मुस कहलाता है, कि ¹⁰ खुदावन्द के दिन रूह में आ गया और अपने पीछे नरसिंगे की सी ये एक बड़ी आवाज सुनी, ¹¹ “जो कुछ तू देखता है उसे एक किताब में लिख कर उन सातों शहरों की सातों कलीसियाओं के पास भेज दे या 'नी इफिसुस, और सुमरना, और परिगमुन, और थुवातीरा, और सरदीस, और फ़िलदित्फ़िया, और लौदीकिया में।” ¹² मैंने उस आवाज देनेवाले को देखने के लिए मुँह फेरा, जिसने मुझ से कहा था; और फिर कर सोने के सात चिरागदान देखे, ¹³ और उन चिरागदानों के बीच में आदमज़ाद सा एक आदमी देखा, जो पाँव तक का जामा पहने हुए था। ¹⁴ उसका सिर और बाल सफ़ेद ऊन बल्कि बर्फ़ की तरह सफ़ेद थे, और उसकी आँखें आग के शो'ले की तरह थीं। ¹⁵ और उसके पाँव उस खालिस पीतल के से थे जो भट्टी में तपाया गया हो, और उसकी आवाज जोर के पानी की सी थी। ¹⁶ और उसके दहने हाथ में सात सितारे थे, और उसके मुँह में से एक दोधारी तेज़ तलवार निलकती थी; और उसका चेहरा ऐसा चमकता था जैसे तेज़ी के वक्रत आफ़ताब। ¹⁷ जब मैंने उसे देखा तो उसके पाँव में मुर्दा सा गिर पड़ा। और उसने ये कहकर मुझ पर अपना दहना हाथ रखवा, “खौफ़ न कर; मैं अब्बल और आखिर, ¹⁸ और ज़िन्दा हूँ। मैं मर गया था, और देख हमेशा से हमेशा तक रहूँगा; और मौत और 'आलम — ए — अर्वाह की कुन्जियाँ मेरे पास हैं। ¹⁹ पस जो बातें तू ने देखीं और जो हैं और जो इनके बाद होने वाली हैं, उन सब को लिख ले। ²⁰ या 'नी उन सात सितारों का भेद जिन्हें तू ने मेरे दहने हाथ में देखा था, और उन सोने के सात चिरागदानों का: वो सात सितारे तो सात कलीसियाओं के फ़रिश्ते हैं, और वो सात चिरागदान कलीसियाएँ हैं।”

2

?????? ?? ??????? ?? ???????

¹ “इफिसुस की कलीसिया के फ़रिश्ते को ये लिख: जो अपने दहने हाथ में सितारे लिए हुए है, और सोने के सातों चिरागदानों में फिरता है, वो ये फ़रमाया है कि। ² मैं तेरे काम और तेरी मशक्कत और तेरा सब्र तो जानता हूँ; और ये भी कि तू बंदियों को देख नहीं सकता, और जो अपने आप को रसूल कहते हैं और हैं नहीं, तू ने उनको आजमा कर झूठा पाया। ³ और तू सब्र करता है, और मेरे नाम की खातिर मुसीबत उठाते उठाते थका नहीं। ⁴ मगर मुझे को तुझ से ये शिकायत है कि तू ने अपनी पहली सी मुहब्बत छोड़ दी। ⁵ पस खयाल कर कि तू

कहाँ से गिरा। और तौबा न करेगा, तो मैं तेरे पास आकर तेरे चिरागदान को उसकी जगह से हटा दूँगा। ⁶ अलबत्ता तुझ में ये बात तो है कि तू निकुलियों* के कामों से नफ़रत रखता है, जिनसे मैं भी नफ़रत रखता हूँ। ⁷ जिसके कान हों वो सुने कि रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है। जो ग़ालिब आए, मैं उसे उस ज़िन्दगी के दरख़्त में से जो खुदा की जन्नत में है, फल खाने को दूँगा।”

⁸ “और समुरना की कलीसिया के फ़रिश्ते को ये लिख: जो अब्बल — ओ — आखिर है, और जो मर गया था और ज़िन्दा हुआ, वो ये फ़रमाता है कि, ⁹ मैं तेरी मुसीबत और ग़रीबी को जानता हूँ (मगर तू दौलतमन्द है), और जो अपने आप को यहूदी कहते हैं, और हैं नहीं बल्कि शैतान के गिरोह हैं, उनके ला'न ता'न को भी जानता हूँ। ¹⁰ जो दुःख तुझे सहने होंगे उनसे खौफ़ न कर, देखो शैतान तुम में से कुछ को कैद में डालने को है ताकि तुम्हारी आजमाइश पूरी हो और दस दिन तक मुसीबत उठाओगे जान देने तक वफ़ादार रहो तो मैं तुझे ज़िन्दगी का ताज दूँगा। ¹¹ जिसके कान हों वो सुने कि पाक रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है। जो ग़ालिब आए, उसको दूसरी मौत से नुक्सान न पहुँचेगा।”

¹² “और परिगमुन की कलीसिया के फ़रिश्ते को ये लिख: जिसके पास दोधारी तेज़ तलवार है, वो फ़रमाता है कि ¹³ मैं ये तो जानता हूँ कि शैतान की तख़्त गाह में सुकूनत रखता है, और मेरे नाम पर क्राईम रहता है; और जिन दिनों में मेरा वफ़ादार शहीद इन्तपास तुम में उस जगह क़त्ल हुआ था जहाँ शैतान रहता है, उन दिनों में भी तू ने मुझे पर ईमान रखने से इनकार नहीं किया। ¹⁴ लेकिन मुझे चन्द बातों की तुझ से शिकायत है, इसलिए कि तेरे यहाँ कुछ लोग बिल'आम की ता'लीम माननेवाले हैं, जिसने बलक़ को बनी — इस्राईल के सामने ठोकर खिलाने वाली चीज़ रखने की ता'लीम दी, या 'नी ये कि वो बुतों की कुर्बानियाँ खाएँ और हरामकारी करें। ¹⁵ चुनाँचे तेरे यहाँ भी कुछ लोग इसी तरह निकुलियों की ता'लीम के माननेवाले हैं। ¹⁶ पस तौबा कर, नहीं तो मैं तेरे पास जल्द आकर अपने मुँह की तलवार से उनके साथ लड़ूँगा। ¹⁷ जिसके कान हों वो सुने कि पाक रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है। जो ग़ालिब आएगा, मैं उसे आसमानी खाने में से दूँगा, और एक सफ़ेद पत्थर दूँगा। उस पत्थर पर एक नया नाम लिखा हुआ होगा, जिसे पानेवाले के सिवा कोई न जानेगा।”

* 2:6 2:6 निकुलियों ये लोग कलीसिया के बाहर बुत परस्ती करते थे

18 “और थुवातीरा की कलीसिया के फ़रिश्ते को ये लिख: खुदा का बेटा जिसकी आँखें आग के शो'ले की तरह और पाँव खालिस पीतल की तरह हैं, ये फ़रमाता है कि 19 मैं तेरे कामों और मुहब्बत और ईमान और खिदमत और सब्'र को तो जानता हूँ, और ये भी कि तेरे पिछले काम पहले कामों से ज्यादा हैं। 20 पर मुझे तुझ से ये शिकायत है कि तू ने उस औरत ईज़बिल को रहने दिया है जो अपने आपको नबिया कहती है, और मेरे बन्दों को हरामकारी करने और बुतों की कुर्बानियाँ खाने की ता'लीम देकर गुमराह करती है 21 मैंने उसको तौबा करने की मुहलत दी, मगर वो अपनी हरामकारी से तौबा करना नहीं चाहती। 22 देख, मैं उसको बिस्तर पर डालता हूँ; और जो जिना करते हैं अगर उसके से कामों से तौबा न करें, तो उनको बड़ी मुसीबत में फँसाता हूँ; 23 और उसके मानने वालों को जान से मारूँगा, और सब कलीसियाओं को मा'लूम होगा कि गुर्दों और दिलों का जाँचने वाला मैं ही हूँ, और मैं तुम में से हर एक को उसके कामों के जैसा बदला दूँगा। 24 मगर तुम थुवातीरा के बाक़ी लोगों से, जो उस ता'लीम को नहीं मानते और उन बातों से जिन्हें लोग शैतान की गहरी बातें कहते हैं ना जानते हो, ये कहता हूँ कि तुम पर और बोझ न डालूँगा। 25 अलबत्ता, जो तुम्हारे पास है, मेरे आने तक उसको थामे रहो। 26 जो ग़ालिब आए और जो मेरे कामों के जैसा आखिर तक 'अमल करे, मैं उसे क़ौमों पर इस्ति'यार दूँगा; 27 और वो लोहे के 'असा से उन पर हुकूमत करेगा, जिस तरह कि कुम्हार के बरतन चकना चूर हो जाते हैं: चुनाँच मैंने भी ऐसा इस्ति'यार अपने बाप से पाया है, 28 और मैं उसे सुबह का सितारा दूँगा। 29 जिसके कान हों वो सुने कि रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है।”

3

????? ?? ?????????? ?? ??????

1 “और सरदीस की कलीसिया के फ़रिश्ते को ये लिख कि जिसके पास खुदा की सात रूहें और सात सितारे हैं”

2 “जागता रहता, और उन चीज़ों को जो बाक़ी है और जो मिटने को थीं मज़बूत कर, क्योंकि मैंने तेरे किसी काम को अपने खुदा के नज़दीक पूरा नहीं पाया। 3 पस याद कर कि तू ने किस तरह ता'लीम पाई और सुनी थी, और उस पर क़ाईम रह और तौबा कर। और अगर तू जागता न रहेगा तो मैं चोर की तरह आ जाऊँगा, और तुझे हरगिज़ मा'लूम न होगा कि किस वक़्त तुझ पर आ पड़ेगा। 4 अलबत्ता, सरदीस में तेरे यहाँ थोड़े से ऐसे शख्स हैं जिन्हें ने अपनी पोशाक आलूदा नहीं की। वो

सफ़ेद पोशाक पहने हुए मेरे साथ सैर करेंगे, क्योंकि वो इस लायक हैं। 5 जो ग़ालिब आए उसे इसी तरह सफ़ेद पोशाक पहनाई जाएगी, और मैं उसका नाम किताब — ए — हयात से हरगिज़ न काटूँगा, बल्कि अपने बाप और उसके फ़रिश्तों के सामने उसके नाम का इक़रार करूँगा। 6 जिसके कान हों वो सुने कि रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है।”

7 “और फ़िलदिलफ़िया की कलीसिया के फ़रिश्ते को ये लिख: जो कुद्दूस और बरहक़ है, और दाऊद की कुन्जी रखता है, जिसके खोले हुए को कोई बन्द नहीं करता और बन्द किए हुए को कोई खोलता नहीं, वो ये फ़रमाता है कि 8 मैं तेरे कामों को जानता हूँ (देख, मैंने तेरे सामने एक दरवाज़ा खोल रखवा है, कोई उसे बन्द नहीं कर सकता) कि तुझ में थोड़ा सा ज़ोर है और तू ने मेरे कलाम पर अमल किया और मेरे नाम का इन्कार नहीं किया। 9 देख, मैं शैतान की उन जमा'त वालों को तेरे क़ाबू में कर दूँगा, जो अपने आपको यहूदी कहते हैं और हैं नहीं, बल्कि झूठ बोलते हैं — देख, मैं ऐसा करूँगा कि वो आकर तेरे पाँव में सिज्दा करेंगे, और जानेगे कि मुझे तुझ से मुहब्बत है। 10 चूँकि तू ने मेरे सब्'र के कलाम पर 'अमल किया है, इसलिए मैं भी आजमाइश के उस वक़्त तेरी हिफ़ाज़त करूँगा जो ज़मीन के रहनेवालों के आजमाने के लिए तमाम दुनियाँ पर आनेवाला है। 11 मैं जल्द आनेवाला हूँ। जो कुछ तेरे पास है थामे रह, ताकि कोई तेरा ताज न छीन ले। 12 जो ग़ालिब आए, मैं उसे अपने खुदा के मक़्दस में एक सुतून बनाऊँगा। वो फिर कभी बाहर न निकलेगा, और मैं अपने खुदा का नाम और अपने खुदा के शहर, या'नी उस नए येरूशलेम का नाम जो मेरे खुदा के पास से आसमान से उतरने वाला है, और अपना नया नाम उस पर लिखूँगा। 13 जिसके कान हों वो सुने कि रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है।”

14 “और लौदीकिया की कलीसिया के फ़रिश्ते को ये लिख: जो आमीन और सच्चा और बरहक़ गवाह और खुदा की कायनात की शुरुआत है, वो ये फ़रमाता है कि 15 मैं तेरे कामों को जानता हूँ कि न तू सर्द है न गर्म। क़ाश कि तू सर्द या गर्म होता! 16 पस चूँकि तू न तो गर्म है न सर्द बल्कि नीम गर्म है, इसलिए मैं तुझे अपने मुँह से निकाल फेंकने को हूँ। 17 और चूँकि तू कहता है कि मैं दौलतमन्द हूँ और मालदार बन गया हूँ और किसी चीज़ का मोहताज नहीं; और ये नहीं जानता कि तू कमबख़्त और आवारा और ग़रीब और अन्धा और नंगा है। 18 इसलिए मैं तुझे सलाह देता हूँ कि मुझ से आग में तपाया हुआ सोना खरीद ले, ताकि तू उसे पहन कर नंगे

पन के जाहिर होने की शर्मिन्दगी न उठाए; और आँखों में लगाने के लिए सुर्मा ले, ताकि तू बीना हो जाए।¹⁹ मैं जिन जिन को 'अज़ीज़ रखता हूँ, उन सब को मलामत और हिदायत करता हूँ; पस सरगर्म हो और तौबा कर।²⁰ देख, मैं दरवाज़े पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; अगर कोई मेरी आवाज़ सुनकर दरवाज़ा खोलेगा, तो मैं उसके पास अन्दर जाकर उसके साथ खाना खाऊँगा और वो मेरे साथ।²¹ जो ग़ालिब आए मैं उसे अपने साथ तख्त पर बिठाऊँगा, जिस तरह मैं ग़ालिब आकर अपने बाप के साथ उसके तख्त पर बैठ गया।²² जिसके कान हों वो सुने कि रूह कलीसियाओं से क्या फ़रमाता है।”

4

????? ?? ???????

¹ इन बातों के बाद जो मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि आसमान में एक दरवाज़ा खुला हुआ है, और जिसको मैंने पहले नरसिंगो की सी आवाज़ से अपने साथ बातें करते सुना था, वही फ़रमाता है, “यहाँ ऊपर आ जा; मैं तुझे वो बातें दिखाऊँगा, जिनका इन बातों के बाद होना ज़रूर है।”² फ़ौरन मैं रूह में आ गया; और क्या देखता हूँ कि आसमान पर एक तख्त रखवा है, और उस तख्त पर कोई बैठा है।³ और जो उस पर बैठा है वो संग — ए — यशब और 'अक्रीक सा मा'लूम होती है, और उस तख्त के गिर्द ज़मरुद की सी एक धनुक मा'लूम होता है।⁴ उस तख्त के पास चौबीस बुज़ुर्ग सफ़ेद पोशाक पहने हुए बैठे हैं, और उनके सिरों पर सोने के ताज हैं।

⁵ उस तख्त में से बिजलियाँ और आवाज़ें और गरजें पैदा होती हैं, और उस तख्त के सामने आग के सात चिराग जल रहे हैं; ये खुदा की साथ रूहें हैं,⁶ और उस तख्त के सामने गोया शीशे का समुन्दर बिल्लौर की तरह है। और तख्त के बीच में और तख्त के पास चार जानवर हैं, जिनके आगे — पीछे आँखें ही आँखें हैं।⁷ पहला जानवर बबर की तरह है, और दूसरा जानदार बछड़े की तरह, और तीसरे जानदार का इंसान का सा है, और चौथा जानदार उड़ते हुए 'उकाब की तरह है।⁸ और इन चारों जानदारों के छः छः पर हैं; और रात दिन बग़ैर आराम लिए ये कहते रहते हैं,

“कुद्स, कुद्स, कुद्स, खुदावन्द खुदा क़ादिर — ए — मुतल्लिक,

जो था और जो है और जो आनेवाला है!”

⁹ और जब वो जानदार उसकी बड़ाई — ओ — 'इज़्जत और तम्जीद करेंगे, जो तख्त पर बैठा है और हमेशा से हमेशा ज़िन्दा रहेगा;¹⁰ तो वो चौबीस बुज़ुर्ग

उसके सामने जो तख्त पर बैठा है गिर पड़ेंगे और उसको सिज्दा करेंगे, जो हमेशा हमेशा ज़िन्दा रहेगा और अपने ताज ये कहते हुए उस तख्त के सामने डाल देंगे,

¹¹ “ऐ हमारे खुदावन्द और खुदा, तू ही बड़ाई और 'इज़्जत और कुदरत के लायक है; क्योंकि तू ही ने सब चीज़ें पैदा कीं और वो तेरी ही मर्ज़ी से थीं और पैदा हुईं।”

5

????? ?? ??????? ?? ??????

¹ जो तख्त पर बैठा था, मैंने उसके दहने हाथ में एक किताब देखी जो अन्दर से और बाहर से लिखी हुई थी, और उसे सात मुहरें लगाकर बन्द किया गया था² फिर मैंने एक ताक़तवर फ़रिश्ते को ऊँची आवाज़ से ये ऐलान करते देखा, “कौन इस किताब को खोलने और इसकी मुहरें तोड़ने के लायक है?”³ और कोई शख्स, आसमान पर या ज़मीन के नीचे, उस किताब को खोलने या उस पर नज़र करने के काबिल न निकला।⁴ और मैं इस बात पर ज़ार ज़ार रोने लगा कि कोई उस किताब को खोलने और उस पर नज़र करने के लायक न निकला।⁵ तब उन बुज़ुर्गों में से एक ने कहा मत रो, यहूदा के क़बीले का वो बबर जो दाऊद की नस्ल है उस किताब और उसकी सातों मुहरों को खोलने के लिए ग़ालिब आया।⁶ और मैंने उस तख्त और चारों जानदारों और उन बुज़ुर्गों के बीच में, गोया ज़बह किया हुआ एक बरी खड़ा देखा। उसके सात सींग और सात आँखें थीं; ये खुदा की सातों रूहें हैं जो तमाम रु — ए — ज़मीन पर भेजी गई हैं।⁷ उसने आकर तख्त पर बैठे हुए दाहिने हाथ से उस किताब को ले लिया।⁸ जब उसने उस किताब को लिया, तो वो चारों जानदार और चौबीस बुज़ुर्ग उस बर्रे के सामने गिर पड़े; और हर एक के हाथ में बर्बत और 'ऊद से भरे हुए सोने के प्याले थे, ये मुक़द्दसों की दु'आएँ हैं।⁹ और वो ये नया गीत गाने लगे,

“तू ही इस किताब को लेने, और इसकी मुहरें खोलने के लायक है;

क्योंकि तू ने ज़बह होकर अपने खून से हर क़बीले और अहले ज़बान और उम्मत और क़ौम में से खुदा के वास्ते लोगों को ख़रीद लिया।

¹⁰ और उनको हमारे खुदा के लिए एक बादशाही और काहिन बना दिया, और वो ज़मीन पर बादशाही करते हैं।”

¹¹ और जब मैंने निगाह की, तो उस तख्त और उन जानदारों और बुज़ुर्गों के आस पास बहुत से फ़रिश्तों की आवाज़ सुनी, जिनका शुमार लाखों और करोड़ों था,

12 और वो ऊँची आवाज़ से कहते थे, “जबह किया हुआ बर्रा की कुदरत और दौलत और हिक्मत और ताक़त और 'इज्जत और बड़ाई और तारीफ़ के लायक़ है!”

13 फिर मैंने आसमान और ज़मीन और ज़मीन के नीचे की, और समुन्दर की सब मख़्लूक़ात को या'नी सब चीज़ों को उनमें हैं ये कहते सुना, “जो तख़्त पर बैठा है उसकी और बर्र की, तारीफ़ और इज्जत और बड़ाई और बादशाही हमेशा हमेशा रहे!” 14 और चारों जानदारों ने आमीन कहा, और बुज़ुर्गों ने गिर कर सिज्दा किया।

6

????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 फिर मैंने देखा कि बर्र ने उन सात मुहरों में से एक को खोला, और उन चारों जानदारों में से एक गरजने कि सी ये आवाज़ सुनी, आ! 2 और मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि एक सफ़ेद घोड़ा है, और उसका सवार कमान लिए हुए है। उसे एक ताज दिया गया, और वो फ़तह करता हुआ निकला ताकि और भी फ़तह करे।

3 जब उसने दूसरी मुहर खोली, तो मैंने दुसरे जानदार को ये कहते सुना, “आ!” 4 फिर एक और घोड़ा निकला जिसका रंग लाल था। उसके सवार को ये इस्तिyार दिया गया कि ज़मीन पर से सुलह उठा ले ताकि लोग एक दुसरे को क़त्ल करें; और उसको एक बड़ी तलवार दी गई।

5 जब उसने तीसरी मुहर खोली, तो मैंने तीसरे जानदार को ये कहते सुना, “आ!” और मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि एक काला घोड़ा है, और उसके सवार के हाथ में एक तराजू है। 6 और मैंने गोया उन चारों जानदारों के बीच में से ये आवाज़ आती सुनी, गेहूँ दीनार के सेर भर, और जौ दीनार के तीन सेर, और तेल और मय का नुक्सान न कर।

7 जब उन्होंने चौथी मुहर खोली, तो मैंने चौथे जानदार को ये कहते सुना, “आ!” 8 मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि एक ज़र्द सा घोड़ा है, और उसके सवार का नाम 'मौत' है और 'आलम — ए — अर्वाह' उसके पीछे पीछे है; और उनको चौथाई ज़मीन पर ये इस्तिyार दिया गया कि तलवार और काल और वबा और ज़मीन के दरिन्दों से लोगों को हलाक़ करें।

9 जब उसने पाँचवीं मुहर खोली, तो मैंने कुर्बानगाह के नीचे उनकी रूहें देखी जो खुदा के कलाम की वजह से और गवाही पर काईम रहने के ज़रिए मारे गए थे। 10 और बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर बोलीं, ए मालिक, “ए कुदूस — ओ — बरहक़, तू कब तक इन्साफ़ न करेगा और ज़मीन के रहनेवालों से हमारे खून का बदला न लेगा?”

11 और उनमें से हर एक को सफ़ेद जामा दिया गया, और

उनसे कहा गया कि और थोड़ी मुद्दत आराम करो, जब तक कि तुम्हारे हमख़िदमत और भाइयों का भी शुमार पूरा न हो ले, जो तुम्हारी तरह क़त्ल होनेवाले हैं।

12 जब उसने छठी मुहर खोली, तो मैंने देखा कि एक बड़ा भुन्वाल आया, और सूरज कमल की तरह काला और सारा चाँद खून सा हो गया। 13 और आसमान के सितारे इस तरह ज़मीन पर गिर पड़े, जिस तरह ज़ोर की आँधी से हिल कर अंजीर के दरख़्त में से कच्चे फल गिर पड़ते हैं। 14 और आसमान इस तरह सरक गया, जिस तरह ख़त लपेटने से सरक जाता है; और हर एक पहाड़ और टापू अपनी जगह से टल गया। 15 और ज़मीन के बादशाह और अमीर और फ़ौजी सरदार, और मालदार और ताक़तवर, और तमाम गुलाम और आज़ाद पहाड़ों के ग़ारों और चट्टानों में जा छिपे, 16 और पहाड़ों और चट्टानों से कहने लगे, “हम पर गिर पड़ो, और हमें उनकी नज़र से जो तख़्त पर बैठा हुआ है और बर्र के ग़ज़ब से छिपा लो। 17 क्यूँकि उनके ग़ज़ब का दिन 'अज़ीम आ पहुँचा, अब कौन ठहर सकता है?”

7

????? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ? ?

1 इसके बाद मैंने ज़मीन के चारों कोनों पर चार फ़रिश्ते खड़े देखे। वो ज़मीन की चारों हवाओं को थामे हुए थे, ताकि ज़मीन या समुन्दर या किसी दरख़्त पर हवा न चले। 2 फिर मैंने एक और फ़रिश्ते को, जिन्दा खुदा की मुहर लिए हुए मशरिक़ से ऊपर की तरफ़ आते देखा; उसने उन चारों फ़रिश्तों से, जिन्हें ज़मीन और समुन्दर को तकलीफ़ पहुँचाने का इस्तिyार दिया गया था, ऊँची आवाज़ से पुकार कर कहा, 3 “जब तक हम अपने खुदा के बन्दों के माथे पर मुहर न कर लें, ज़मीन और समुन्दर और दरख़्तों को तकलीफ़ न पहुँचाना।”

4 और जिन पर मुहर की गई उनका शुमार सुना, कि बनी — इस्राईल के सब क़बीलों में से एक लाख चवालीस हज़ार पर मुहर की गई: 5 यहूदाह के क़बीले में से बारह हज़ार पर मुहर की गई: रोबिन के क़बीले में से बारह हज़ार पर, ज़द के क़बीले में से बारह हज़ार पर, 6 आशर के क़बीले में से बारह हज़ार पर, नफ़ताली के क़बीले में से बारह हज़ार पर, मनस्सी के क़बीले में से बारह हज़ार पर, 7 शमौन के क़बीले में से बारह हज़ार पर, लावी के क़बीले में से बारह हज़ार, इश्कार के क़बीले में से बारह हज़ार पर, 8 जबलून के क़बीले में से बारह हज़ार पर, युसूफ़ के क़बीले में से बारह हज़ार पर, बिनयामीन के क़बीले में से बारह हज़ार पर मुहर की गई।

9 इन बातों के बाद जो मैंने निगाह की, तो क्या देखता हूँ कि हर एक क्रौम और कबीला और उम्मत और अहल — ए — जबान की एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई शुमार नहीं कर सकता, सफ़ेद जामे पहने और खजूर की डालियाँ अपने हाथों में लिए हुए तख्त और बर्रे के आगे खड़ी है, 10 और बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर कहती है, नजात हमारे खुदा की तरफ़ से! 11 और सब फ़रिश्ते उस तख्त और बुज़ुर्गों और चारों जानदारों के पास खड़े हैं, फिर वो तख्त के आगे मुँह के बल गिर पड़े और खुदा को सिज्दा कर के 12 कहा, आमीन! तारीफ़ और बड़ाई और हिक्मत और शुक्र और 'इज़्ज़त और कुदरत और ताक़त हमेशा से हमेशा हमारे खुदा की हो! आमीन। 13 और बुज़ुर्गों में से एक ने मुझ से कहा, ये सफ़ेद जामे पहने हुए कौन हैं, और कहाँ से आए हैं? 14 मैंने उससे कहा, “ऐ मेरे खुदावन्द, तू ही जानता है।” उसने मुझ से कहा, ये वही हैं; उन्होंने अपने जामे बर्रे के कुर्बानी के खून से धो कर सफ़ेद किए हैं। 15 “इसी वजह से ये खुदा के तख्त के सामने हैं, और उसके मक्ब्रदस में रात दिन उसकी इबादत करते हैं, और जो तख्त पर बैठा है, वो अपना खेमा उनके ऊपर तानेगा। 16 इसके बाद न कभी उनको भूख लगेगी न प्यास और न धूप सताएगी न गर्मी। 17 क्योंकि जो बरी तख्त के बीच में है, वो उनकी देखभाल करेगा, और उन्हें आब — ए — हयात के चश्मों के पास ले जाएगा और खुदा उनकी आँखों के सब आँसू पोंछ देगा।”

8

?????? ?? ??????? ????? ???????

1 जब उसने सातवीं मुहर खोली, तो आधे घंटे के करीब आसमान में खामोशी रही। 2 और मैंने उन सातों फ़रिश्तों को देखा जो खुदा के सामने खड़े रहते हैं, और उन्हें सात नरसिंगे दिए गए। 3 फिर एक और फ़रिश्ता सोने का 'बख़ूरदान लिए हुए आया और कुर्बानगाह के ऊपर खड़ा हुआ, और उसको बहुत सा 'ऊद दिया गया, ताकि अब मुक़द्दसों की दु'आओं के साथ उस सुनहरी कुर्बानगाह पर चढ़ाए जो तख्त के सामने है। 4 और उस 'ऊद का धुवाँ फ़रिश्ते के सामने है। 5 और फ़रिश्ते ने 'बख़ूरदान को लेकर उसमें कुर्बानगाह की आग भरी और ज़मीन पर डाल दी, और गरजें और आवाज़ें और बिजलियाँ पैदा हुईं और भुन्चाल

????? ??? ?????????? ?????? ?????

आया। 6 और वो सातों फ़रिश्ते जिनके पास वो सात नरसिंगे थे, फूँकने को तैयार हुए।

7 जब पहले ने नरसिंगा फूँका, तो खून मिले हुए ओले और आग पैदा हुई और ज़मीन जल गई, और तिहाई दरख्त जल गए, और तमाम हरी घास जल गई।

8 जब दूसरे फ़रिश्ते ने नरसिंगा फूँका, गोया आग से जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ समुन्दर में डाला गया; और तिहाई समुन्दर खून हो गया। 9 और समुन्दर की तिहाई जानदार मखलूक़ात मर गई, और तिहाई जहाज़ तबाह हो गए।

10 जब तीसरे फ़रिश्ते ने नरसिंगा फूँका, तो एक बड़ा सितारा मशा'ल की तरह जलता हुआ आसमान से टूटा, और तिहाई दरियाओं और पानी के चश्मों पर आ पड़ा।

11 उस सितारे का नाम नागदौना कहलाता है; और तिहाई पानी नागदौने की तरह कड़वा हो गया, और पानी के कड़वे हो जाने से बहुत से आदमी मर गए।

12 जब चौथे फ़रिश्ते ने नरसिंगा फूँका, तो तिहाई सूरज चाँद और तिहाई सितारों पर सदमा पहुँचा, यहाँ तक कि उनका तिहाई हिस्सा तारीक हो गया, और तिहाई दिन में रौशनी न रही, और इसी तरह तिहाई रात में भी। 13 जब मैंने फिर निगाह की, तो आसमान के बीच में एक 'उक्काब को उड़ते और बड़ी आवाज़ से ये कहते सुना, “उन तीन फ़रिश्तों के नरसिंगों की आवाज़ों की वजह से, जिनका फूँकना अभी बाक़ी है, ज़मीन के रहनेवालों पर अफ़सोस, अफ़सोस, अफ़सोस!”

9

????????? ?????????? ?? ??????? ??????

1 जब पाँचवें फ़रिश्ते ने नरसिंगा फूँका, तो मैंने आसमान से ज़मीन पर एक सितारा गिरा हुआ देखा, और उसे अथाह गड़दे की कूजी दी गई। 2 और जब उसने अथाह गड़दे को खोला तो गड़दे में से एक बड़ी भट्ठी का सा धुवाँ उठा, और गड़दे के धुवें के ज़रिए से सूरज और हवा तारीक हो गई। 3 और उस धुवें में से ज़मीन पर टिड्डियाँ निकल पड़ीं, और उन्हें ज़मीन के बिच्छुओं की सी ताक़त दी गई। 4 और उससे कहा गया कि उन आदमियों के सिवा जिनके माथे पर खुदा की मुहर नहीं, ज़मीन की घास या किसी हरियाली या किसी दरख्त को तकलीफ़ न पहुँचे। 5 और उन्हें जान से मारने का नहीं, बल्कि पाँच महीने तक लोगों को तकलीफ़ देने का इस्तिथार दिया गया; और उनकी तकलीफ़ ऐसी थी जैसे बिच्छू के डंक मारने से आदमी को होती है। 6 उन दिनों में आदमी मौत ढूँढ़े मगर हरगिज़ न पाएँगे, और मरने की आरज़ू करेंगे और मौत उनसे भागेगी। 7 उन टिड्डियों की सूरतें उन घोड़ों की सी थीं जो लड़ाई के लिए तैयार

किए गए हों, और उनके सिरों पर गोया सोने के ताज थे, और उनके चहरे आदमियों के से थे, ⁸ और बाल 'औरतों के से थे, और दाँत बबर के से। ⁹ उनके पास लोहे के से बख्तर थे, और उनके परो की आवाज़ ऐसी थी रथों और बहुत से घोड़ों की जो लड़ाई में दौड़ते हों। ¹⁰ और उनकी दुमें बिच्छुओं की सी थीं और उनमें डंक भी थे, और उनकी दुमों में पाँच महीने तक आदमियों को तकलीफ़ पहुँचाने की ताक़त थी। ¹¹ अथाह गड़ढे का फ़रिश्ता उन पर बादशाह था; उसका नाम 'इब्राही अबदून और यूनानी में अपुल्ल्योन* है। ¹² पहला अफ़सोस तो हो चुका, देखो, उसके बाद दो अफ़सोस और होने हैं।

????? ?????? ?? ?????? ???? ?

¹³ जब छठे फ़रिश्ते ने नरसिंगा फूँका, तो मैंने उस सुनहरी कुर्बानगाह के चारों कोनों के सींगों में से जो खुदा के सामने है, ऐसी आवाज़ सुनी ¹⁴ कि उस छठे फ़रिश्ते से जिसके पास नरसिंगा था, कोई कह रहा है, बड़े दरिया, “या'नी फ़ुरात के पास जो चार फ़रिश्ते बँधे हैं उन्हें खोल दे।” ¹⁵ पस वो चारों फ़रिश्ते खोल दिए गए, जो खास घड़ी और दिन और महीने और बरस के लिए तिहाई आदमियों के मार डालने को तैयार किए गए थे; ¹⁶ और फ़ौजों के सवार में बीस करोड़ थे; मैंने उनका शुमार सुना। ¹⁷ और मुझे उस रोया में घोड़े और उनके ऐसे सवार दिखाई दिए जिनके बख्तर से आग और धुवाँ और गंधक निकलती थी। ¹⁸ इन तीनों आफ़तों यानी आग, धुआँ, और गंधक, सी जो उनके मुँह से निकलती थी, तिहाई लोग मारे गए। ¹⁹ क्योंकि उन घोड़ों की ताक़त उनके मुँह और उनकी दुमों में थी, इसलिए कि उनकी दुमें साँपों की तरह थीं और दुमों में सिर भी थे, उन्हीं से वो तकलीफ़ पहुँचाते थे। ²⁰ और बाक़ी आदमियों ने जो इन आफ़तों से न मरे थे, अपने हाथों के कामों से तौबा न की, कि शयातीन की और सोने और चाँदी और पीतल और पत्थर लकड़ी के बुतों की इबादत करने से बा'ज़ आते, जो न देख सकती हैं न सुन सकती हैं न चल सकती हैं; ²¹ और जो खून और जादूगरी और हरामकारी और चोरी उन्हीं की थी, उनसे तौबा न की।

10

????? ?????? ?? ?? ?????? ?????? ?

¹ फिर मैंने एक और ताक़तवर फ़रिश्ते को बादल ओढ़े हुए आसमान से उतरते देखा। उसके सिर पर धनुक थी, और उसका चेहरा आफ़ताब की तरह था, और उसका पाँव आग के सुतूनों की तरह। ² और उसके हाथ में एक छोटी सी खुली हुई किताब थी। उसने अपना दहना पैर

तो समुन्दर पर रखवा और बायाँ खुशकी पर। ³ और ऐसी ऊँची आवाज़ से चिल्लाया जैसे बबर चिल्लाता है और जब वो चिल्लाया तो सात आवाज़ें सुनाई दीं ⁴ जब गरज की सात आवाज़ें सुनाई दे चुकीं तो मैंने लिखने का इरादा किया, और आसमान पर से ये आवाज़ आती सुनी, जो बातें गरज की इन सात आवाज़ों से सुनी हैं, उनको छुपाए रख और लिख मत। ⁵ और जिस फ़रिश्ते को मैंने समुन्दर और खुशकी पर खड़े देखा था उसने अपना दहना हाथ आसमान की तरफ़ उठाया ⁶ जो हमेशा से हमेशा ज़िन्दा रहेगा और जिसने आसमान और उसके अन्दर की चीज़ें, और ज़मीन और उसके ऊपर की चीज़ें, और समुन्दर और उसके अन्दर की चीज़ें, पैदा की हैं, उसकी कसम खाकर कहा कि अब और देर न होगी। ⁷ बल्कि सातवें फ़रिश्ते की आवाज़ देने के ज़माने में, जब वो नरसिंगा फूँकने को होगा, तो खुदा का छुपा हुआ मतलब उस खुशख़बरी के जैसा, जो उसने अपने बन्दों, नबियों को दी थी पूरा होगा। ⁸ और जिस आवाज़ देनेवाले को मैंने आसमान पर बोलते सुना था, उसने फिर मुझ से मुखातिब होकर कहा, जा, “उस फ़रिश्ते के हाथ में से जो समुन्दर और खुशकी पर खड़ा है, वो खुली हुई किताब ले ले।” ⁹ तब मैंने उस फ़रिश्ते के पास जाकर कहा, ये छोटी किताब मुझे दे दे। उसने मुझ से कहा, “ले, इसे खाले; ये तेरा पेट तो कड़वा कर देगी, मगर तेरे मुँह में शहद की तरह मीठी लगेगी।” ¹⁰ पस मैं वो छोटी किताब उस फ़रिश्ते के हाथ से लेकर खा गया। वो मेरे मुँह में तो शहद की तरह मीठी लगी, मगर जब मैं उसे खा गया तो मेरा पेट कड़वा हो गया। ¹¹ और मुझ से कहा गया, “तुझे बहुत सी उम्मतों और क्रौमों और अहल — ए — ज़बान और बादशाहों पर फिर नबुव्वत करना ज़रूर है।”

11

?? ???? ?

¹ और मुझे 'लाठी की तरह एक नापने की लकड़ी दी गई, और किसी ने कहा, उठकर खुदा के मक्दिस और कुर्बानगाह और उसमें के इबादत करने वालों को नाप। ² और उस सहन को जो मक्दिस के बाहर है अलग कर दे, और उसे न नाप क्योंकि वो ग़ैर — क्रौमों को दे दिया गया है; वो मुक़द्दस शहर को बयालीस महीने तक पामाल करेंगी। ³ “और मैं अपने दो गवाहों को इस्तिyार दूँगा, और वो टाट ओढ़े हुए एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक नबुव्वत करेंगे।” ⁴ ये वही ज़ैतून के दो दरख़्त और दो चिराग़दान हैं जो ज़मीन के खुदाबन्द के सामने खड़े हैं। ⁵ और अगर कोई उन्हें तकलीफ़ पहुँचाना चाहता है, तो

* 9:11 9:11 अबदून और यूनानी में अपुल्ल्योन बरबादी और बरबाद करने वाला

उनके मुँह से आग निकलकर उनके दुश्मनों को खा जाती है; और अगर कोई उन्हें तकलीफ पहुँचाना चाहेगा, तो वो जरूर इसी तरह मारा जाएगा।⁶ उनको इस्त्रियार है आसमान को बन्द कर दें, ताकि उनकी नबुव्वत के ज़माने में पानी न बरसे, और पानियों पर इस्त्रियार है कि उनको खून बना डालें, और जितनी दफ़ा चाहें ज़मीन पर हर तरह की आफ़त लाएँ।⁷ जब वो अपनी गवाही दे चुकेंगे, तो वो हैवान जो अथाह गड़ढे से निकलेगा, उनसे लड़कर उन पर ग़ालिब आएगा और उनको मार डालेगा।⁸ और उनकी लाशें उस येरूशलेम के बाज़ार में पड़ी रहेंगी, जो रूहानी ऐतिबार से सदूम और मिस्र कहलाता है, जहाँ उनका खुदावन्द भी मस्तूब हुआ था।⁹ उम्मतों और क़बीलों और अहल — ए — ज़बान और क़ौमों में से लोग उनकी लाशों को साढ़े तीन दिन तक देखते रहेंगे, और उनकी लाशों को क़ब्र में न रखने देंगे।¹⁰ और ज़मीन के रहनेवाले उनके मरने से खुशी मनाएँगे और शादियाने बजाएँगे, और आपस में तुहफ़े भेजेंगे, क्योंकि इन दोनों नबियों ने ज़मीन के रहनेवालों को सताया था।¹¹ और साढ़े तीन दिन के बाद खुदा की तरफ़ से उनमें ज़िन्दगी की रूह दाख़िल हुई, और वो अपने पाँव के बल खड़े हो गए और उनके देखनेवालों पर बड़ा ख़ौफ़ छा गया।¹² और उन्हें आसमान पर से एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी, “यहाँ ऊपर आ जाओ!” पस वो बादल पर सवार होकर आसमान पर चढ़ गए और उनके दुश्मन उन्हें देख रहे थे।¹³ फिर उसी वक़्त एक बड़ा भुन्चाल आ गया, और शहर का दसवाँ हिस्सा गिर गया, और उस भुन्चाल से सात हज़ार आदमी मरे और बाक़ी डर गए, और आसमान के खुदा की बड़ाई की।¹⁴ दूसरा अफ़सोस हो चुका; देखो, तीसरा अफ़सोस जल्द होने वाला है।

¹⁵ जब सातवें फ़रिश्ते ने नरसिंगा फूँका, तो आसमान पर बड़ी आवाज़ें इस मज़मून की पैदा हुई: “दुनियाँ की बादशाही हमारे खुदावन्द और उसके मसीह की हो गई, और वो हमेशा बादशाही करेगा।”¹⁶ और चौबीसों बुज़ुर्गों ने जो खुदा के सामने अपने अपने तख़्त पर बैठे थे, मुँह के बल गिर कर खुदा को सिज्दा किया।¹⁷ और कहा,

“ऐ खुदावन्द खुदा, क़ादिर — ए — मुतल्लिक! जो है और जो था,

हम तेरा शुक्र करते हैं क्योंकि तू

ने अपनी बड़ी कुदरत को हाथ में लेकर बादशाही की।

¹⁸ और क़ौमों को गुस्सा आया, और तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ,

और वो वक़्त आ पहुँचा है कि मुर्दों का इन्साफ़ किया जाए,

और तेरे बन्दों, नबियों और मुक़द्दसों

और उन छोटे बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं बदला दिया जाए और ज़मीन के तबाह करने वालों को तबाह किया जाए।”

¹⁹ और खुदा का जो मक़्दिस आसमान पर है वो खोला गया, और उसके मक़्दिस में उसके 'अहद का सन्दूक' दिखाई दिया; और बिजलियाँ और आवाज़ें और गरजें पैदा हुई, और भुन्चाल आया और बड़े ओले पड़े।

12

???? ? ? ? ? ?

¹ फिर आसमान पर एक बड़ा निशान दिखाई दिया, या'नी एक 'औरत नज़र आई जो अफ़ताब को ओढ़े हुए थी, और चाँद उसके पाँव के नीचे था, और बारह सितारों का ताज उसके सिर पर।² वो हामिला थी और दर्द — ए — ज़ेह में चिल्लाती थी, और बच्चा जनने की तकलीफ़ में थी।³ फिर एक और निशान आसमान पर दिखाई दिया, या'नी एक बड़ा लाल अज़दहा, उसके सात सिर और दस सींग थे, और उसके सिरों पर सात ताज; ⁴ और उसकी दुम ने आसमान के तिहाई सितारे खींच कर ज़मीन पर डाल दिए। और वो अज़दहा उस औरत के आगे जा खड़ा हुआ जो जनने को थी, ताकि जब वो जने तो उसके बच्चे को निगल जाए।⁵ और वो बेटा जनी, या'नी वो लड़का जो लोहे के 'लाठी' से सब क़ौमों पर हुकूमत करेगा, और उसका बच्चा यकायक खुदा और उसके तख़्त के पास तक पहुँचा दिया गया; ⁶ और वो 'औरत उस जंगल को भाग गई, जहाँ खुदा की तरफ़ से उसके लिए एक जगह तैयार की गई थी, ताकि वहाँ एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक उसकी परवरिश की जाए।

⁷ फिर आसमान पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके फ़रिश्ते अज़दहा से लड़ने को निकले; और अज़दहा और उसके फ़रिश्ते उनसे लड़े, ⁸ लेकिन ग़ालिब न आए, और इसके बाद आसमान पर उनके लिए जगह न रही।⁹ और बड़ा अज़दहा, या'नी वही पुराना साँप जो इब्लीस और शैतान कहलाता है और सारे दुनियाँ को गुमराह कर देता है, ज़मीन पर गिरा दिया गया और उसके फ़रिश्ते भी उसके साथ गिरा दिए गए।¹⁰ फिर मैंने आसमान पर से ये बड़ी आवाज़ आती सुनी, अब हमारे खुदा की नज़ात और कुदरत और बादशाही, और उसके मसीह का इस्त्रियार ज़ाहिर हुआ, क्योंकि हमारे भाइयों पर इल्ज़ाम लगाने वाला जो रात दिन हमारे खुदा के आगे उन पर इल्ज़ाम लगाया करता है, गिरा दिया गया।

¹¹ और वो बर्रे के खून और अपनी गवाही के कलाम के ज़रिए उस पर ग़ालिब आए; और उन्होंने अपनी जान

को 'अज़ीज़ न समझा, यहाँ तक कि मौत भी गंवारा की। ¹² “पस ऐ आसमानों और उनके रहनेवालो, खुशी मनाओ। ऐ खुशकी और तरी, तुम पर अफ़सोस, क्योंकि इब्नीस बड़े क़हर में तुम्हारे पास उतर कर आया है, इसलिए कि जानता है कि मेरा थोड़ा ही सा वक़्त बाकी है।”

13 और जब अज़दहा ने देखा कि मैं ज़मीन पर गिरा दिया गया हूँ, तो उस 'औरत को सताया जो बेटा जनी थी। 14 और उस 'औरत को बड़े; उक्काब के दो पर दिए गए, ताकि साँप के सामने से उड़ कर वीराने में अपनी उस जगह पहुँच जाए, जहाँ एक ज़माना और ज़मानो और आधे ज़माने तक उसकी परवरिश की जाएगी। 15 और साँप ने उस 'औरत के पीछे अपने मुँह से नदी की तरह पानी बहाया, ताकि उसको इस नदी से बहा दे। 16 मगर ज़मीन ने उस 'औरत की मदद की, और अपना मुँह खोलकर उस नदी को पी लिया जो अज़दहा ने अपने मुँह से बहाई थी। 17 और अज़दहा को 'औरत पर गुस्सा आया, और उसकी बाक़ी औलाद से, जो खुदा के हुक्मों पर 'अमल करती है और ईसा की गवाही देने पर क़ाईम है, लड़ने को गया और समुन्दर की रेत पर जा खड़ा हुआ। 18

13

□□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□

1 और मैंने एक हैवान को समुन्दर में से निकलते हुए, देखा, उसके दस सींग और सात सिर थे; और उसके सींगों पर दस ताज और उसके सिरों पर कुफ़र के नाम लिखे हुए थे। 2 और जो हैवान मैंने देखा उसकी शक्ति तेन्दवे की सी थी, और पाँव रीछ के से और मुँह बबर का सा, और उस अज़दहा ने अपनी कुदरत और अपना तख़्त और बड़ा इस्तियार उसे दे दिया। 3 और मैंने उसके सिरों में से एक पर गोया ज़ख्म — ए — कारी अच्छा हो गया, और सारी दुनियाँ ता'ज्जुब करती हुई उस हैवान के पीछे पीछे हो ली। 4 और चूँकि उस अज़दहा ने अपना इस्तियार उस हैवान को दे दिया था इस लिए उन्होंने अज़दहे की इबादत की और उस हैवान की भी ये कहकर इबादत की कि इस के बराबर कौन है कौन है जो इस से लड़ सकता है। 5 और बड़े बोल बोलने और कुफ़र बकने के लिए उसे एक मुँह दिया गया, और उसे बयालीस महीने तक काम का इस्तियार दिया गया। 6 और उसने खुदा की निस्वत कुफ़र बकने के लिए मुँह खोला कि उसके नाम और उसके खेमे, या'नी आसमान के रहनेवालों की निस्वत कुफ़र बके। 7 और उसे ये इस्तियार दिया गया के मुक़द्दसों से लड़े और उन पर ग़ालिब आए, और उसे हर क़बीले

और उम्मत और अहल — ए — ज़बान और क़ौम पर इस्लियार दिया गया।⁸ और ज़मीन के वो सब रहनेवाले जिनका नाम उस बर्र की किताब — ए — हयात में लिखे नहीं गए जो दुनियाँ बनाने के वक़्त से जबह हुआ है, उस हैवान की इबादत करेंगे⁹ जिसके कान हों वो सुने।

10 जिसको कैद होने वाली है, वो कैद में पड़ेगा।
जो कोई तलवार से क़त्ल करेगा, वो ज़रूर तलवार से
क़त्ल किया जाएगा।

पाक लोग के सब् र और ईमान का यही मौक़ा' है।

11 फिर मैंने एक और हैवान को ज़मीन में से निकलते हुए देखा। उसके बर्रे के से दो सींग थे और वो अज़दहा की तरह बोलता था। 12 और ये पहले हैवान का सारा इस्तिथार उसके सामने काम में लाता था, और ज़मीन और उसके रहनेवालों से उस पहले हैवान की इबादत कराता था, जिसका ज़रूम — ए — कारी अच्छा हो गया था। 13 और वो बड़े निशान दिखाता था, यहाँ तक कि आदमियों के सामने आसमान से ज़मीन पर आग नाज़िल कर देता था। 14 और ज़मीन के रहनेवालों को उन निशानों की वजह से, जिनके उस हैवान के सामने दिखाने का उसको इस्तिथार दिया गया था, इस तरह गुमराह कर देता था कि ज़मीन के रहनेवालों से कहता था कि जिस हैवान के तलवार लगी थी और वो ज़िन्दा हो गया, उसका बुत बनाओ। 15 और उसे उस हैवान के बुत में रूह फूँकने का इस्तिथार दिया गया ताकि वो हैवान का बुत बोले भी, और जितने लोग उस हैवान के बुत की इबादत न करें उनको क़त्ल भी कराए। 16 और उसने सब छोटे — बड़ों, दौलतमन्दों और ग़रीबों, आज़ादों और गुलामों के दहने हाथ या उनके माथे पर एक एक छाप करा दी, 17 ताकि उसके सिवा जिस पर निशान, या 'नी उस हैवान का नाम या उसके नाम का 'अदद हो, न कोई ख़रीद — ओ — फ़रोख़्त न कर सके। 18 हिक्मत का ये मौक़ा है: जो समझ रखता है वो आदमी का 'अदद गिन ले, क्योंकि वो आदमी का 'अदद है, और उसका 'अदद छः सौ छियासठ है।

14

1,44,000

1 फिर मैंने निगाह की, तो क्या देखता हूँ कि वो बर्बाद कोहे सिय्यून पर खड़ा है, और उसके साथ एक लाख चवालीस हजार शख्स हैं, जिनके माथे पर उसका और उसके बाप का नाम लिखा हुआ है। 2 और मुझे आसमान पर से एक ऐसी आवाज़ सुनाई दी जो ज़ोर के पानी और बड़ी गरज की सी आवाज़ मैंने सुनी वो ऐसी थी जैसी बर्बत नवाज़ बर्बत बजाते हों। 3 वो तख्त के सामने और

चारों जानदारों और बुजुर्गों के आगे गोया एक नया गीत गा रहे थे; और उन एक लाख चवालीस हजार शरूखों के सिवा जो दुनियाँ में से खरीद लिए गए थे, कोई उस गीत को न सीख सका।⁴ ये वो हैं जो 'औरतों के साथ अलूदा नहीं हुए, बल्कि कुँवारे हैं। ये वो हैं जो बर्रे के पीछे पीछे चलते हैं, जहाँ कहीं वो जाता है; ये खुदा और बर्रे के लिए पहले फल होने के वास्ते आदमियों में से खरीद लिए गए हैं।⁵ और उनके मुँह से कभी झूठ न निकला था, वो बे'ऐब हैं।

2222 22222222

⁶ फिर मैंने एक और फ़रिश्ते को आसमान के बीच में उड़ते हुए देखा, जिसके पास ज़मीन के रहनेवालों की हर क्रौम और कबीले और अहल — ए — ज़बान और उम्मत के सुनाने के लिए हमेशा की खुशखबरी थी।⁷ और उसने बड़ी आवाज़ से कहा, “खुदा से डरो और उसकी बड़ाई करो, क्योंकि उसकी 'अदालत का वक़्त आ पहुँचा है; और उसी की इबादत करो जिसने आसमान और ज़मीन और समुन्दर और पानी के चश्मे पैदा किए।”⁸ फिर इसके बाद एक और दूसरा फ़रिश्ता ये कहता आया, “गिर पड़ा, वह बड़ा शहर बाबुल गिर पड़ा, जिसने अपनी हरामकारी की ग़ज़बनाक मय तमाम क्रौमों को पिलाई है।”⁹ फिर इन के बाद एक और, तीसरे फ़रिश्ते ने आकर बड़ी आवाज़ से कहा, “जो कोई उस हैवान और उसके बुत की इबादत करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले ले; ¹⁰ वो खुदा के क्रहर की उस खालिस मय को पिएगा जो उसके गुस्से के प्याले में भरी गई है, और पाक फ़रिश्तों के सामने और बर्रे के सामने आग और गन्धक के 'अज़ाब में मुब्तिला होगा। ¹¹ और उनके 'अज़ाब का धुवाँ हमेशा ही उठता रहेगा, और जो उस हैवान और उसके बुत की इबादत करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उनको रात दिन चैन न मिलेगा।”¹² मुक़द्दसों या'नी खुदा के हुक्मों पर 'अमल करनेवालों और ईसा पर ईमान रखनेवालों के सबर का यही मौक़ा है। ¹³ फिर मैंने आसमान में से ये आवाज़ सुनी, “लिख! मुबारिक हैं वो मुर्दे जो अब से खुदावन्द में मरते हैं।” रूह फ़रमाता है, “बेशक, क्योंकि वो अपनी मेहनतों से आराम पाएँगे, और उनके आ'माल उनके साथ साथ होते हैं!”

2222 22 22222

¹⁴ फिर मैंने निगाह की, तो क्या देखता हूँ कि एक सफ़ेद बादल है, और उस बादल पर आदमज़ाद की तरह कोई बैठा है, जिसके सिर पर सोने का ताज और हाथ में तेज़ दरान्ती है। ¹⁵ फिर एक और फ़रिश्ते ने मक्बिदस से निकलकर उस बादल पर बैठे हुए एक बड़ी आवाज़

के साथ पुकार कर कहा, “अपनी दरान्ती चलाकर काट, क्योंकि काटने का वक़्त आ गया, इसलिए कि ज़मीन की फ़सल बहुत पक गई।”¹⁶ पस जो बादल पर बैठा था उसने अपनी दरान्ती ज़मीन पर डाल दी, और ज़मीन की फ़सल कट गई।¹⁷ फिर एक और फ़रिश्ता उस मक्बिदस में से निकला जो आसमान पर है, उसके पास भी तेज़ दरान्ती थी। ¹⁸ फिर एक और फ़रिश्ता कुर्बानगाह से निकला, जिसका आग पर इस्त्रियार था; उसने तेज़ दरान्ती वाले से बड़ी आवाज़ से कहा, अपनी तेज़ दरान्ती चलाकर ज़मीन के अंगूर के दरख़्त के गुच्छे काट ले जो बिल्कुल पक गए हैं।¹⁹ और उस फ़रिश्ते ने अपनी दरान्ती ज़मीन पर डाली, और ज़मीन के अंगूर के दरख़्त की फ़सल काट कर खुदा के क्रहर के बड़े हौज़ में डाल दी; ²⁰ और शहर के बाहर उस हौज़ में अंगूर रौंदे गए, और हौज़ में से इतना खून निकला कि घोड़ों की लगामों तक पहुँच गया, और 300 सौ क़िलो मीटर तक वह निकाला।

15

2222 22 22222 22 2222

¹ फिर मैंने आसमान पर एक और बड़ा और 'अजीब निशान, या'नी सात फ़रिश्ते सातों पिछली आफ़तों को लिए हुए देखे, क्योंकि इन आफ़तों पर खुदा का क्रहर ख़त्म हो गया है। ² फिर मैंने शीशे का सा एक समुन्दर देखा जिसमें आग मिली हुई थी; और जो उस हैवान और उसके बुत और उसके नाम के 'अदद पर ग़ालिब आए थे, उनको उस शीशे के समुन्दर के पास खुदा की बर्बतें लिए खड़े हुए देखा। ³ और वो खुदा के बन्दे मूसा का गीत, और बर्रे का गीत गा गा कर कहते थे, “ऐ खुदा! क़ादिर — ए — मुतल्लिक! तेरे काम बड़े और 'अजीब हैं। ऐ अज़ली बादशाह! तेरी राहें रास्त और दुरुस्त हैं।”⁴ “ऐ खुदावन्द! कौन तुझ से न डरेगा? और कौन तेरे नाम की बड़ाई न करेगा? क्योंकि सिर्फ़ तू ही कुदूस है; और सब क्रौमों आकर तेरे सामने सिज्दा करेंगी, क्योंकि तेरे इन्साफ़ के काम ज़ाहिर हो गए हैं।”

⁵ इन बातों के बाद मैंने देखा कि शहादत के खेमे का मक्बिदस आसमान में खोला गया; ⁶ और वो सातों फ़रिश्ते जिनके पास सातों आफ़तें थीं, आबदार और चमकदार जवाहर से आरास्ता और सीनों पर सुनहरी सीना बन्द बाँधे हुए मक्बिदस से निकले। ⁷ और उन चारों जानदारों में से एक ने सात सोने के प्याले, हमेशा ज़िन्दा रहनेवाले

खुदा के क्रहर से भरे हुए, उन सातों फ़रिश्तों को दिए; 8 और खुदा के जलाल और उसकी कुदरत की वजह से मक्बिदस धुएँ से भर गया और जब तक उन सातों फ़रिश्तों की सातों मुसीबतें ख़त्म न हों चुकीं कोई उस मक्बिदस में दाख़िल न हो सका।

16

1 फिर मैंने मक्बिदस में से किसी को बड़ी आवाज़ से ये कहते सुना, जाओ! खुदा के क्रहर के सातों प्यालों को ज़मीन पर उलट दो।

2 पस पहले ने जाकर अपना प्याला ज़मीन पर उलट दिया, और जिन आदमियों पर उस हैवान की छाप थी और जो उसके बुत की इबादत करते थे, उनके एक बुरा और तकलीफ़ देनेवाला नासूर पैदा हो गया।

3 दूसरे ने अपना प्याला समुन्दर में उलटा, और वो मुर्दे का सा खून बन गया, और समुन्दर के सब जानदार मर गए।

4 तीसरे ने अपना प्याला दरियाओं और पानी के चश्मों पर उलटा और वो खून बन गया। 5 और मैंने पानी के फ़रिश्ते को ये कहते सुना,

“ऐ कुदूस! जो है और जो था, तू 'आदिल है कि तू ने ये इन्साफ़ किया।

6 क्यूँकि उन्होंने मुक़द्दसों और नबियों का खून बहाया था,

और तू ने उन्हें खून पिलाया;

वो इसी लायक़ हैं।”

7 फिर मैंने कुर्बानगाह में से ये आवाज़ सुनी,
“ऐ खुदावन्द खुदा!, क़ादिर — ए — मुतल्लिक़!
बेशक़ तेरे फ़ैसले दुरुस्त और रास्त हैं।”

8 चौथे ने अपना प्याला सूरज पर उलटा, और उसे आदमियों को आग से झुलस देने का इस्ति़यार दिया गया। 9 और आदमी सख़्त गर्मी से झुलस गए, और उन्होंने खुदा के नाम के बारे में कुफ़र बका जो इन आफ़तों पर इस्ति़यार रखता है, और तौबा न की कि उसकी बड़ाई करते।

10 पाँचवें ने अपना प्याला उस हैवान के तख़्त पर उलटा, और लोग अपनी ज़बाने काटने लगे, 11 और अपने दुखों और नासूरों के ज़रिए आसमान के खुदा के बारे में कुफ़र बकने लगे, और अपने कामों से तौबा न की।

12 छठे ने अपना प्याला बड़े दरिया या 'नी फ़ुरात पर पलटा, और उसका पानी सूख गया ताकि मशरिक़् से आने वाले बादशाहों के लिए रास्ता तैयार हो जाए।

13 फिर मैंने उस अज़दहा के मुँह से, और उस हैवान के मुँह से, और उस झूठे नबी के मुँह से तीन बदरूहें मँडकों

की सूरत में निकलती देखीं। 14 ये शयातीन की निशान दिखानेवाली रूहें हैं, जो क़ादिर — ए — मुतल्लिक़ खुदा के रोज़ — ए — 'अज़ीम की लड़ाई के वास्ते जमा करने के लिए, सारी दुनियाँ के बादशाहों के पास निकल कर जाती हैं। 15 “(देखो, मैं चोर की तरह आता हूँ; मुबारिक़ वो है जो जागता है और अपनी पोशाक की हिफ़ाज़त करता है ताकि नंगा न फ़िरे, और लोग उसका नंगापन न देखें)” 16 और उन्होंने उनको उस जगह जमा किया, जिसका नाम 'इब्रानी में हरमजदोन है।

17 सातवें ने अपना प्याला हवा पर उलटा, और मक्बिदस के तख़्त की तरफ़ से बड़े ज़ोर से ये आवाज़ आई, “हो चूका!” 18 फिर बिजलियाँ और आवाज़ें और गरजें पैदा हुईं, और एक ऐसा बड़ा भुन्चाल आया कि जब से इंसान ज़मीन पर पैदा हुए ऐसा बड़ा और सख़्त भुन्चाल कभी न आया था। 19 और उस बड़े शहर के तीन टुकड़े हो गए, और क़ौमों के शहर गिर गए; और बड़े शहर — ए — बाबुल की खुदा के यहाँ याद हुई ताकि उसे अपने सख़्त गुस्से की मय का जाम पिलाए। 20 और हर एक टापू अपनी जगह से टल गया और पहाड़ों का पता न लगा। 21 और आसमान से आदमियों पर मन मन भर के बड़े बड़े ओले गिरे, और चूँकि ये आफ़त निहायत सख़्त थी इसलिए लोगों ने ओलों की आफ़त के ज़रिए खुदा की निस्वत कुफ़र बका।

17

????? ??????

1 और सातों फ़रिश्तों में से, जिनके पास सात प्याले थे, एक ने आकर मुझ से ये कहा, इधर आ! मैं तुझे उस बड़ी कस्बी की सज़ा दिखाऊँ, जो बहुत से पानियों पर बैठी हुई है; 2 और जिसके साथ ज़मीन के बादशाहों ने हरामकारी की थी, और ज़मीन के रहनेवाले उसकी हरामकारी की मय से मतवाले हो गए थे। 3 पस वो मुझे पाक रूह में जंगल को ले गया, वहाँ मैंने क़िरमिज़ी रंग के हैवान पर, जो कुफ़र के नामों से लिपा हुआ था और जिसके सात सिर और दस सींग थे, एक 'औरत को बैठे हुए देखा। 4 ये औरत इर्ग़वानी और क़िरमिज़ी लिबास पहने हुए सोने और जवाहर और मोतियों से आरास्ता थी और एक सोने का प्याला मकरूहात का जो उसकी हरामकारी की नापकियों से भरा हुआ था उसके हाथ में था। 5 और उसके माथे पर ये नाम लिखा हुआ था “राज़; बड़ा शहर — ए — बाबुल कस्बियों और ज़मीन की मकरूहात की माँ।” 6 और मैंने उस 'औरत को मुक़द्दसों

का खून और ईसा के शहीदों का खून पीने से मतवाला देखा, और उसे देखकर सख्त हैरान हुआ।

7 उस फ़रिश्ते ने मुझ से कहा, “तू हैरान क्यों हो गया मैं इस औरत और उस हैवान का, जिस पर वो सवार है जिसके सात सिर और दस सींग हैं, तुझे भेद बताता हूँ। 8 ये जो तू ने हैवान देखा है, ये पहले तो था मगर अब नहीं है; और आइन्दा अथाह गड्ढे से निकलकर हलाकत में पड़ेगा, और ज़मीन के रहनेवाले जिनके नाम दुनियाँ बनाने से पहले के वक्त से किताब — ए — हयात में लिखे नहीं गए, इस हैवान का ये हाल देखकर कि पहले था और अब नहीं और फिर मौजूद हो जाएगा, ता'अज्जुब करेंगे। 9 यही मौक़ा है उस ज़हन का जिसमें हिक्मत है: वो सातों सिर पहाड़ हैं, जिन पर वो 'औरत बैठी हुई है। 10 और वो सात बादशाह भी हैं, पाँच तो हो चुके हैं, और एक मौजूद, और एक अभी आया भी नहीं और जब आएगा तो कुछ 'अरसे तक उसका रहना ज़रूर है। 11 और जो हैवान पहले था और अब नहीं, वो आठवाँ है और उन सातों में से पैदा हुआ, और हलाकत में पड़ेगा। 12 और वो दस सींग जो तू ने देखे दस बादशाह हैं। अभी तक उन्होंने बादशाही नहीं पाई, मगर उस हैवान के साथ घड़ी भर के वास्ते बादशाहों का सा इस्तिyार पाएँगे। 13 इन सब की एक ही राय होगी, और वो अपनी कुदरत और इस्तिyार उस हैवान को दे देंगे।”

14 “वो बर्रे से लड़ेंगे और बर्ग़ उन पर ग़ालिब आएगा, क्योंकि वो खुदावन्दों का खुदावन्द और बादशाहों का बादशाह है; और जो बुलाए हुए और चुने हुए और वफ़ादार उसके साथ हैं, वो भी ग़ालिब आएँगे।” 15 फिर उसने मुझ से कहा, जो पानी तू ने देखा जिन पर कस्बी बैठी है, वो उम्मतें और गिरोह और क्रौमें और अहले ज़बान हैं। 16 और जो दस सींग तू ने देखे, वो और हैवान उस कस्बी से 'अदावत रखेंगे, और उसे बेबस और नंगा कर देंगे और उसका गोश्त खा जाएँगे, और उसको आग में जला डालेंगे। 17 “क्योंकि खुदा उनके दिलों में ये डालेगा कि वो उसी की राय पर चलें, वो एक — राय होकर अपनी बादशाही उस हैवान को दे दें। 18 और वो 'औरत जिसे तू ने देखा, वो बड़ा शहर है जो ज़मीन के बादशाहों पर हुक्मत करता है।”

18

?????? ?? ????????

1 इन बातों के बाद मैंने एक और फ़रिश्ते को आसमान पर से उतरते देखा, जिसे बड़ा इस्तिyार था; और ज़मीन

उसके जलाल से रौशन हो गई। 2 उसने बड़ी आवाज़ से चिल्लाकर कहा,

“गिर पड़ा, बड़ा शहर बाबुल गिर पड़ा! और शयातीन का मस्कन

और हर नापाक और मकरूह परिन्दे का अंडा हो गया।

3 क्योंकि उसकी हरामकारी की ग़ज़बनाक मय के ज़रिए तमाम क्रौमें गिर गई हैं

और ज़मीन के बादशाहों ने उसके साथ हरामकारी की है, और दुनियाँ के सौदागर उसके 'ऐशो — ओ — अशरत की बदौलत दौलतमन्द हो गए।”

4 फिर मैंने आसमान में किसी और को ये कहते सुना, “ऐ मेरी उम्मत के लोगो! उसमें से निकल आओ, ताकि तुम उसके गुनाहों में शरीक न हो, और उसकी आफ़तों में से कोई तुम पर न आ जाए।

5 क्योंकि उसके गुनाह आसमान तक पहुँच गए हैं, और उसकी बदकारियाँ खुदा को याद आ गई हैं।

6 जैसा उसने किया वैसा ही तुम भी उसके साथ करो, और उसे उसके कामों का दो चन्द बदला दो, जिस क़दर उसने प्याला भरा तुम उसके लिए दुगना भर दो।

7 जिस क़दर उसने अपने आपको शानदार बनाया, और अय्याशी की थी, उसी क़दर उसको 'अज़ाब और ग़म में डाल दो; क्योंकि वो अपने दिल में कहती है, 'मैं मलिका हो बैठी हूँ, बेवा नहीं; और कभी ग़म न देखूँगी।’

8 इसलिए उस एक ही दिन में आफ़तें आएँगी, या'नी मौत और ग़म और काल; और वो आग में जलकर खाक कर दी जाएगी, क्योंकि उसका इन्साफ़ करनेवाला खुदावन्द खुदा ताक़तवर है।”

9 “और उसके साथ हरामकारी और 'अय्याशी करनेवाले ज़मीन के बादशाह, जब उसके जलने का धुवाँ देखेंगे तो उसके लिए रोएँगे और छाती पीटेंगे। 10 और उसके 'अज़ाब के डर से दूर खड़े हुए कहेंगे, 'ऐ बड़े शहर! अफ़सोस! अफ़सोस! घड़ी ही भर में तुझे सज़ा मिल गई।”

11 “और दुनियाँ के सौदागर उसके लिए रोएँगे और मातम करेंगे, क्योंकि अब कोई उनका माल नहीं ख़रीदने का; 12 और वो माल ये है: सोना, चाँदी, जवाहर, मोती, और महीन कतानी, और इर्ग़वानी और रेशमी और क़िरमिज़ी कपड़े, और हर तरह की खुशबूदार लकड़ियाँ, और हाथीदाँत की तरह की चीज़ें, और निहायत बेशक़ीमती लकड़ी, और पीतल और लोहे और संग — ए — मरमर की तरह तरह की चीज़ें, 13 और दाल चीनी और मसाले और 'ऊद और 'इत्र और लुबान, और

मय और तेल और मैदा और गेहूँ, और मवेशी और भेड़ें और घोड़े, और गाड़ियाँ और गुलाम और आदमियों की जानें। 14 अब तेरे दिल पसन्द मेवे तेरे पास से दूर हो गए, और सब लजीज़ और तोहफ़ा चीज़ें तुझ से जाती रहीं, अब वो हरगिज़ हाथ न आएँगी। 15 इन दिनों के सौदागर जो उसके वजह से मालदार बन गए थे, उसके 'अज़ाब ले ख़ौफ़ से दूर खड़े हुए रोएँगे और ग़म करेंगे।

16 और कहेंगे, अफ़सोस! अफ़सोस! वो बड़ा शहर जो महीन कतानी, और इर्शवानी और क़िरमिज़ी कपड़े पहने हुए,

और सोने और जवाहर और मोतियों से सजा हुआ था।

17 घड़ी ही भर में उसकी इतनी बड़ी दौलत बरबाद हो गई,'

और सब नाखुदा और जहाज़ के सब मुसाफ़िर,"

"और मल्लाह और जितने समुन्दर का काम करते हैं,

18 जब उसके जलने का धुवाँ देखेंगे, तो दूर खड़े हुए चिल्लाएँगे और कहेंगे, 'कौन सा शहर इस बड़े शहर की तरह है? 19 और अपने सिरों पर खाक डालेंगे, और रोते हुए और मातम करते हुए चिल्ला चिल्ला कर कहेंगे,

'अफ़सोस! अफ़सोस! वो बड़ा शहर जिसकी दौलत से समुन्दर के सब जहाज़ वाले दौलतमन्द हो गए, घड़ी ही भर में उजड़ गया।'

20 ऐ आसमान, और ऐ मुक़द्दसों

और रसूलों और नबियों! उस पर खुशी करो,

क्योंकि खुदा ने इन्साफ़ करके उससे तुम्हारा बदला ले लिया!"

21 फिर एक ताक़तवर फ़रिश्ते ने बड़ी चक्की के पाट की तरह एक पत्थर उठाया, और ये कहकर समुन्दर में फेंक दिया,

"बाबुल का बड़ा शहर भी इसी तरह ज़ोर से गिराया जाएगा,

और फिर कभी उसका पता न मिलेगा।

22 और बर्बत नवाज़ों, और मुतरिबों, और बाँसुरी बजानेवालों और नरसिंगा फूँकने वालों की आवाज़ फिर कभी तुझ में न सुनाई देगी;

और किसी काम का कारीगर तुझ में फिर कभी पाया न जाएगा।

और चक्की की आवाज़ तुझ में फिर कभी न सुनाई देगी।

23 और चिराग़ की रौशनी तुझ में फिर कभी न चमकेगी, और तुझ में दुल्हे और दुल्हन की आवाज़ फिर कभी सुनाई न देगी;

क्योंकि तेरे सौदागर ज़मीन के अमीर थे,

और तेरी जादूगरी से सब क्रौमें गुमराह हो गई।

24 और नबियों और मुक़द्दसों, और ज़मीन के सब मक़तूलों का खून उसमें पाया गया।"

19

~~~~~

1 इन बातों के बाद मैंने आसमान पर गोया बड़ी जमा'अत को ऊँची आवाज़ से ये कहते सुना, "हालैलूया! नजात और जलाल और कुदरत हमारे खुदा की है।

2 क्योंकि उसके फ़ैसले सहीह और दुरुस्त हैं, इसलिए कि उसने उस बड़ी कस्बी का इन्साफ़ किया जिसने अपनी हरामकारी से दुनियाँ को ख़राब किया था, और उससे अपने बन्दों के खून का बदला लिया।"

3 फिर दूसरी बार उन्होंने कहा, "हल्लेलुइया! और उसके जलने का धुवाँ हमेशा उठता रहेगा।"

4 और चौबीसों बुज़ुर्गों और चारों जानदारों ने गिर कर खुदा को सिज्दा किया, जो तख़्त पर बैठा था और कहा, "आमीन! हल्लेलुइया!"

5 और तख़्त में से ये आवाज़ निकली, "ऐ उससे डरनेवाले बन्दों! हमारे खुदा की तम्ज़ीद करो!

चाहे छोटे हो चाहे बड़े!"

6 फिर मैंने बड़ी जमा'अत की सी आवाज़, और ज़ोर की सी आवाज़, और सख़्त गरजने की सी आवाज़ सुनी: "हल्लेलुइया! इसलिए के खुदावन्द हमारा खुदा कादिर — ए — मुतल्लिक़ बादशाही करता है।

7 आओं, हम खुशी करें और निहायत शादमान हों, और उसकी बड़ाई करें;

इसलिए कि बरें की शादी आ पहुँची,

और उसकी बीवी ने अपने आपको तैयार कर लिया;

8 और उसको चमकदार और साफ़ महीन कतानी कपड़ा पहनने का इस्तिyार दिया गया,"

क्योंकि महीन कतानी कपड़ों से मुक़द्दस लोगों की रास्तबाज़ी के काम मुराद हैं।

9 और उसने मुझ से कहा, "लिख, मुबारिक़ हैं वो जो बरें की शादी की दावत में बुलाए गए हैं।" फिर उसने मुझ से कहा, "ये खुदा की सच्ची बातें हैं।" 10 और मैं उसे सिज्दा करने के लिए उसके पाँव पर गिरा। उसने मुझ से कहा, "ख़बरदार! ऐसा न कर। मैं भी तेरा और तेरे उन भाइयों का हमख़िदमत हूँ, जो ईसा की गवाही देने पर क़ाईम हैं। खुदा ही को सिज्दा कर।" क्योंकि ईसा की गवाही नबुव्वत की रूह है।

11 फिर मैंने आसमान को खुला हुआ, देखा, और क्या देखता हूँ कि एक सफ़ेद घोड़ा है; और उस पर एक सवार है जो सच्चा और बरहक कहलाता है, और वो सच्चाई के साथ इन्साफ़ और लड़ाई करता है। 12 और उसकी आँखें आग के शो'ले हैं, और उसके सिर पर बहुत से ताज हैं। और उसका एक नाम लिखा हुआ है, जिसे उसके सिवा और कोई नहीं जानता। 13 और वो खून की छिड़की हुई पोशाक पहने हुए है, और उसका नाम कलाम — ए — खुदा कहलाता है। 14 और आसमान की फ़ौजें सफ़ेद घोड़ों पर सवार, और सफ़ेद और साफ़ महीन कतानी कपड़े पहने हुए उसके पीछे पीछे हैं। 15 और क्रौमों के मारने के लिए उसके मुँह से एक तेज़ तलवार निकलती है; और वो लोहे की लाठी से उन पर हुकूमत करेगा, और कादिर — ए — मुतल्लिक़ खुदा के तख़्त ग़ज़ब की मय के हौज़ में अंगूर रौंदेगा। 16 और उसकी पोशाक और रान पर ये नाम लिखा हुआ है: “बादशाहों का बादशाह और खुदावन्दों का खुदावन्द।”

17 फिर मैंने एक फ़रिश्ते को आफ़ताब पर खड़े हुए देखा। और उसने बड़ी आवाज़ से चिल्ला कर आसमान में के सब उड़नेवाले परिन्दों से कहा, “आओ, खुदा की बड़ी दावत में शरीक होने के लिए जमा हो जाओ; 18 ताकि तुम बादशाहों का गोश्त, और फ़ौजी सरदारों का गोश्त, और ताक़तवरों का गोश्त, और घोड़ों और उनके सवारों का गोश्त, और सब आदमियों का गोश्त खाओ; चाहे आज़ाद हों चाहे गुलाम, चाहे छोटे हों चाहे बड़े।” 19 फिर मैंने उस हैवान और ज़मीन के बादशाहों और उनकी फ़ौजों को, उस घोड़े के सवार और उसकी फ़ौज से जंग करने के लिए इकट्ठे देखा। 20 और वो हैवान और उसके साथ वो झूठा नबी पकड़ा गया, जिनसे उसने हैवान की छाप लेनेवालों और उसके बुत की इबादत करनेवालों को गुमराह किया था। वो दोनों आग की उस झील में ज़िन्दा डाले गए, जो गंधक से जलती है। 21 और बाक़ी उस घोड़े के सवार की तलवार से, जो उसके मुँह से निकलती थी क़त्ल किए गए; और सब परिन्दे उनके गोश्त से सेर हो गए।

## 20

????? ???? ?

1 फिर मैंने एक फ़रिश्ते को आसमान से उतरते देखा, जिसके हाथ में अथाह गड्ढे की कुंजी और एक बड़ी जंजीर थी। 2 उसने उस अज़दहा, या'नी पुराने साँप को जो इब्नीस और शैतान है, पकड़ कर हज़ार बरस के लिए बाँधा, 3 और उसे अथाह गड्ढे में डाल कर बन्द कर दिया

और उस पर मुहर कर दी, ताकि वो हज़ार बरस के पूरे होने तक क्रौमों को फिर गुमराह न करे। इसके बाद ज़रूर है कि थोड़े 'अरसे के लिए खोला जाए।

4 फिर मैंने तख़्त देखे, और लोग उन पर बैठ गए और 'अदालत उनके सुपुर्द की गई; और उनकी रूहों को भी देखा जिनके सिर ईसा की गवाही देने और खुदा के कलाम की वजह से काटे गए थे, और जिन्होंने न उस हैवान की इबादत की थी न उसके बुत की, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी। वो ज़िन्दा होकर हज़ार बरस तक मसीह के साथ बादशाही करते रहे। 5 और जब तक ये हज़ार बरस पूरे न हो गए बाक़ी मुर्दे ज़िन्दा न हुए। पहली क़यामत यही है। 6 मुबारिक़ और मुक़द्दस वो है, जो पहली क़यामत में शरीक हो। ऐसों पर दूसरी मौत का कुछ इस्तिyar नहीं, बल्कि वो खुदा और मसीह के काहिन होंगे और उसके साथ हज़ार बरस तक बादशाही करेंगे।

7 जब हज़ार बरस पूरे हो चुकेंगे, तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। 8 और उन क्रौमों को जो ज़मीन की चारों तरफ़ होंगी, या'नी जूज और माजूज को गुमराह करके लड़ाई के लिए जमा करने को निकाले; उनका शुमार समुन्दर की रेत के बराबर होगा। 9 और वो तमाम ज़मीन पर फैल जाएंगी, और मुक़द्दसों की लश्करगाह और 'अज़ीज़ शहर को चारों तरफ़ से घेर लेंगी, और आसमान पर से आग नाज़िल होकर उन्हें खा जाएगी। 10 और उनका गुमराह करने वाला इब्नीस आग और गंधक की उस झील में डाला जाएगा, जहाँ वो हैवान और झूठा नबी भी होगा; और रात दिन हमेशा से हमेशा तक 'अज़ाब में रहेंगे।

11 फिर मैंने एक बड़ा सफ़ेद तख़्त और उसको जो उस पर बैठा हुआ था देखा, जिसके सामने से ज़मीन और आसमान भाग गए, और उन्हें कहीं जगह न मिली। 12 फिर मैंने छोटे बड़े सब मुर्दों को उस तख़्त के सामने खड़े हुए देखा, और किताब खोली गई, या'नी किताब — ए — हयात; और जिस तरह उन किताबों में लिखा हुआ था, उनके आ'माल के मुताबिक़ मुर्दों का इन्साफ़ किया गया। 13 और समुन्दर ने अपने अन्दर के मुर्दों को दे दिया, और मौत और 'आलम — ए — अर्वाह ने अपने अन्दर के मुर्दों को दे दिया, और उनमें से हर एक के आ'माल के मुताबिक़ उसका इन्साफ़ किया गया। 14 फिर मौत और 'आलम — ए — अर्वाह आग की झील में डाले गए। ये आग की झील आखरी मौत है, 15 और जिस किसी का नाम किताब — ए — हयात में लिखा हुआ न मिला, वो आग की झील में डाला गया।



## 21

2122 21222222

1 फिर मैंने एक नए आसमान और नई ज़मीन को देखा, क्योंकि पहला आसमान और पहली ज़मीन जाती रही थी, और समुन्दर भी न रहा। 2 फिर मैंने शहर — ए — मुक़द्दस नए येरूशलेम को आसमान पर से खुदा के पास से उतरते देखा, और वो उस दुल्हन की तरह सजा था जिसने अपने शौहर के लिए सिंगार किया हो। 3 फिर मैंने तख़्त में से किसी को उनको ऊँची आवाज़ से ये कहते सुना, “देख, खुदा का खेमा आदमियों के दर्मियान है। और वो उनके साथ सुकूनत करेगा, और वो उनके साथ रहेगा और उनका खुदा होगा। 4 और उनकी आँखों के सब आँसू पोंछ देगा; इसके बाद न मौत रहेगी, और न मातम रहेगा, न आह — ओ — नाला न दर्द; पहली चीज़ें जाती रहें।” 5 और जो तख़्त पर बैठा हुआ था, उसने कहा, “देख, मैं सब चीज़ों को नया बना देता हूँ।” फिर उसने कहा, “लिख ले, क्योंकि ये बातें सच और बरहक़ हैं।” 6 फिर उसने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गई। मैं अल्फ़ा और ओमेगा, या'नी शुरू और आखिर हूँ। मैं प्यासे को आब — ए — हयात के चश्मे से मुफ़्त पिलाऊँगा। 7 जो ग़ालिब आए वही इन चीज़ों का वारिस होगा, और मैं उसका खुदा हूँगा और वो मेरा बेटा होगा। 8 मगर बुज़दिलों, और बेईमान लोगों, और धिनौने लोगों, और खूनियों, और हरामकारों, और जादूगरों, और बुत परस्तों, और सब झूठों का हिस्सा आग और गन्धक से जलने वाली झील में होगा; ये दूसरी मौत है।

9 फिर इन सात फ़रिश्तों में से जिनके पास प्याले थे, एक ने आकर मुझ से कहा, “इधर आ, मैं तुझे दुल्हन, या'नी बर्रे की बीवी दिखाऊँ।”

10 और वो मुझे रूह में एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और शहर — ए — मुक़द्दस येरूशलेम को आसमान पर से खुदा के पास से उतरते दिखाया। 11 उसमें खुदा का जलाल था, और उसकी चमक निहायत कीमती पत्थर, या'नी उस यशब की सी थी जो बिल्लौर की तरह शफ़ाफ़ हो। 12 और उसकी शहरपनाह बड़ी और ऊँची थी, और उसके बारह दरवाज़े और दरवाज़ों पर बारह फ़रिश्ते थे, और उन पर बनी — इस्राईल के बारह क़बीलों के नाम लिखे हुए थे। 13 तीन दरवाज़े मशरिफ़ की तरफ़ थे, तीन दरवाज़े शुमाल की तरफ़, तीन दरवाज़े जुनूब की तरफ़, और तीन दरवाज़े मग़रिब की तरफ़। 14 और उस शहर की शहरपनाह की बारह बुनियादें थीं, और उन पर बर्रे के बारह रसूलों के बारह नाम लिखे थे। 15 और जो मुझ से कह रहा था, उसके

पास शहर और उसके दरवाज़ों और उसकी शहरपनाह के नापने के लिए एक पैमाइश का आला, या'नी सोने का गज़ था। 16 और वो शहर चौकोर वाक़े' हुआ था, और उसकी लम्बाई चौड़ाई के बराबर थी; उसने शहर को उस गज़ से नापा, तो बारह हज़ार फ़रलांग निकला: उसकी लम्बाई और चौड़ाई बराबर थी। 17 और उसने उसकी शहरपनाह को आदमी की, या'नी फ़रिश्ते की पैमाइश के मुताबिक़ नापा, तो एक सौ चवालीस हाथ निकली। 18 और उसकी शहरपनाह की ता'मीर यशब की थी, और शहर ऐसे ख़ालिस सोने का था जो साफ़ शीशे की तरह हो। 19 और उस शहर की शहरपनाह की बुनियादें हर तरह के जवाहर से आरास्ता थीं; पहली बुनियाद यशब की थी, दूसरी नीलम की, तीसरी शब चिराग़ की, चौथी ज़मुरूद की, 20 पाँचवीं 'आक़ीक़ की, छठी ला'ल की, सातवीं सुन्हरे पत्थर की, आठवीं फ़ीरोज़ की, नवीं ज़बरजद की, और बारहवीं याकूत की। 21 और बारह दरवाज़े बारह मोतियों के थे; हर दरवाज़ा एक मोती का था, और शहर की सड़क साफ़ शीशे की तरह ख़ालिस सोने की थी।

22 और मैंने उसमें कोई मक़्दिस न देखे, इसलिए कि खुदावन्द खुदा क़ादिर — ए — मुतल्लिक़ और बर्ग़ उसका मक़्दिस हैं। 23 और उस शहर में सूरज या चाँद की रौशनी की कुछ हाज़त नहीं, क्योंकि खुदा के जलाल ने उसे रौशन कर रखवा है, और बर्ग़ उसका चिराग़ है। 24 और क़ौमों उसकी रौशनी में चले फिरंगी, और ज़मीन के बादशाह अपनी शान — ओ — शौकत का सामान उसमें लाएँगे। 25 और उसके दरवाज़े दिन को हरगिज़ बन्द न होंगे, और रात वहाँ न होगी। 26 और लोग क़ौमों की शान — ओ — शौकत और इज़ज़त का सामान उसमें लाएँगे। 27 और उसमें कोई नापाक या झूठी बातें घढ़ता है, हरगिज़ दाख़िल न होगा, मगर वही जिनके नाम बर्रे की किताब — ए — हयात में लिखे हुए हैं।

## 22

1 फिर उसने मुझे बिल्लौर की तरह चमकता हुआ आब — ए — हयात का एक दरिया दिखाया, जो खुदा और बर्रे के तख़्त से निकल कर उस शहर की सड़क के बीच में बहता था। 2 और दरिया के पार ज़िन्दगी का दरख़्त था। उसमें बारह क़िस्म के फल आते थे और हर महीने में फलता था, और उस दरख़्त के पत्तों से क़ौमों को शिफ़ा होती थी। 3 और फिर ला'नत न होगी, और खुदा और बर्रे का तख़्त उस शहर में होगा, और उसके बन्दे उसकी इबादत करेंगे। 4 और वो उसका मुँह देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। 5 और फिर रात न होगी, और वो चिराग़ और सूरज की रौशनी

के मुहताज न होंगे, क्योंकि खुदावन्द खुदा उनको रौशन करेगा और वो हमेशा से हमेशा तक बादशाही करेंगे।

6 फिर उसने मुझ से कहा, “ये बातें सच और बरहक़ हैं; चुनाँचे खुदावन्द ने जो नबियों की रूहों का खुदा है, अपने फ़रिश्ते को इसलिए भेजा कि अपने बन्दों को वो बातें दिखाए जिनका जल्द होना ज़रूर है।”

2222 2 222 22

7 “और देख मैं जल्द आने वाला हूँ। मुबारक़ है वो जो इस किताब की नबुव्वत की बातों पर 'अमल करता है।’”  
8 मैं वही युहन्ना हूँ, जो इन बातों को सुनता और देखता था; और जब मैंने सुना और देखा, तो जिस फ़रिश्ते ने मुझे ये बातें दिखाई, मैं उसके पैर पर सिज्दा करने को गिरा। 9 उसने मुझ से कहा, खबरदार! ऐसा न कर, मैं भी तेरा और तेरे नबियों और इस किताब की बातों पर 'अमल करनेवालों का हम ख़िदमत हूँ। खुदा ही को सिज्दा कर। 10 फिर उसने मुझ से कहा, इस किताब की नबुव्वत की बातों को छुपाए न रख; क्योंकि वक़्त नज़दीक़ है, 11 “जो बुराई करता है, वो बुराई ही करता जाए; और जो नजिस है, वो नजिस ही होता जाए; और जो रास्तबाज़ है, वो रास्तबाज़ी करता जाए; और जो पाक है, वो पाक ही होता जाए।”

12 “देख, मैं जल्द आने वाला हूँ; और हर एक के काम के मुताबिक़ देने के लिए बदला मेरे पास है। 13 मैं अल्फ़ा

और ओमेगा, पहला और आखिर, इब्तिदा और इन्तिहा हूँ। 14 मुबारक़ है वो जो अपने जामे धोते हैं, क्योंकि ज़िन्दगी के दरख़्त के पास आने का इख़्तियार पाएँगे, और उन दरवाज़ों से शहर में दाख़िल होंगे। 15 मगर कुत्ते, और जादूगर, और हरामकार, और खूनी, और बुत परस्त, और झूठी बात का हर एक पसन्द करने और गढ़ने वाला बाहर रहेगा। 16 मुझ ईसा ने, अपना फ़रिश्ता इसलिए भेजा कि कलीसियाओं के बारे में तुम्हारे आगे इन बातों की गवाही दे। मैं दाऊद की अस्ल — ओ — नस्ल और सुबह का चमकता हुआ सितारा हूँ।” 17 और रूह और दुल्हन कहती हैं, “आ!” और सुननेवाला भी कहे, “आ!” “आ!” और जो प्यासा हो वो आए, और जो कोई चाहे आब — ए — हयात मुफ़्त ले।

18 मैं हर एक आदमी के आगे, जो इस किताब की नबुव्वत की बातें सुनता है, गवाही देता हूँ: अगर कोई आदमी इनमें कुछ बढ़ाए, तो खुदा इस किताब में लिखी हुई आफ़तें उस पर नाज़िल करेगा। 19 और अगर कोई इस नबुव्वत की किताब की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो खुदा उस ज़िन्दगी के दरख़्त और मुक़द्दस शहर में से, जिनका इस किताब में ज़िक़र है, उसका हिस्सा निकाल डालेगा। 20 जो इन बातों की गवाही देता है वो ये कहता है, “बेशक़, मैं जल्द आने वाला हूँ।” आमीन! ऐ खुदावन्द ईसा आ! 21 खुदावन्द ईसा का फ़ज़ल मुक़द्दसों के साथ रहे। आमीन।